Fatawa Razviya With verification and translation of Arabic passages Imam Ahmed Raza Barelvi (May his secret be sanctified) 4 Raza Foundation Jamia Nizamia Razviya Inside Lohari Gate, Lahore-8 Pakistan (54000)

फ़तावा रज़विया अरबी इबारत के तख़रीज और तर्जुमे के साथ इमाम अहमद रज़ा बरेलवी (कुद्दिस सर्रहु) ४ रज़ा फ़ाउंडेशन जामिया निज़ामिया रज़विया अन्दरून लोहारी दरवाज़ा, लाहौर-८ पाकिस्तान (५४०००)

فتاویٰ رضویہ مع تخریج و ترجمہ عربی عبارات امام احمد رضا بریلوی قدس سرہ ۴ رضا فاؤنڈیشن جامعہ نظامیہ رضویہ اندرون لوہاری دروازہ لاہور، ۸ پاکستان (۵۴۰۰۰)

Volume 4 Fatawa Razawiyya

Contents Summary Index 4
Symbols 5
Preface ..... 6 A Glimpse into Fatawa Razawiyya, Book of Purification ..... 6 Glorious Benefits ..... 8 Index of Volume 4 ..... 10 Chapters and Issues ..... 10 Index of Subsidiary Issues ..... 22 Treatise: Al-Tullabah al-Badee'ah fi Qawl Sadr al-Shari'ah 1335 AH (A unique quest related to the words of Sadr al-Shari'ah) ..... 190 Treatise: Mujalli al-Sham'ah li-Jami' Hadath wa Lum'ah 1326 AH (A candle-brightener for one who has hadath and lum'ah) ..... 284 Sub-section: Chapter on Ablution (Wudu) ..... 322 Sub-section: Chapter on Bathing (Ghusl) ..... 324 Sub-section: Chapter on Water ..... 328 Section on the Well ..... 340 Chapter on Wiping over Leather Socks (Khuffayn) ..... 346 Chapter on Menstruation (Hayd) ..... 350 Section on the Excused Person (Ma'dhur) ..... 368 Chapter on Impurities (Statement on Impurities) ..... 378 Treatise: Salb al-Thalb 'an al-Qa'ileen bi-Taharat al-Kalb 1313 AH (Exposing the defects of those who claim the physical purity of dogs) ..... 400 Treatise: Al-Ahla min al-Sukkar li-Tullabah Sukarrosar 1303 AH (This treatise is sweeter than sugar for the seeker of [the legal ruling on] sugar-sorcery) .... 474 Conclusion of Introductions (The introductions are complete) ..... 537 Establishing a General Rule in this Chapter and Distinguishing the Ruling on Bones and Alcohol (Statement of the general rule in this chapter and statement on the difference in rulings between alcohol and bones) ..... 537 Conclusion: ..... 548 May Allah grant us a good end. Amen. 548

खंड 4 फतावा रजविया

विषय सूची संक्षिप्त सूची 4
प्रतीक 5
प्रस्तावना ..... 6 फतावा रजविया,
किताब-उत-तहारत (पवित्रता की पुस्तक) पर एक नज़र .....
6 महान लाभ ..... 8 खंड 4 की
सूची ..... 10 अध्याय और
मसले ..... 10 सहायक मसलों की
सूची ..... 22 रिसाला: अत-तुलबतुल बदीअह फी कौले सदरुश शरीअह 1335 हिजरी (सदरुश शरीअह के कथन से संबंधित अनोखा लक्ष्य) ..... 190 रिसाला: मुजल्लिश शमअह ले-जामेअ हदस व लुमअह 1326 हिजरी (हदस और लुमअह रखने वाले से संबंधित शमअ-अफ़रोज़) ..... 284 वज़ू के अध्याय का उप-भाग ..... 322 ग़ुस्ल (स्नान) के अध्याय का उप-भाग ..... 324 पानी के अध्याय का उप-भाग ..... 328 कुएं से संबंधित
अनुभाग ..... 340 मोज़ों (ख़ुफ़ैन) पर
मसह करने का अध्याय ..... 346 मासिक धर्म
(हैज़) का अध्याय ..... 350 मअज़ूर
(विवश व्यक्ति) से संबंधित अनुभाग 368
नजासत (अशुद्धियों) का अध्याय ..... 378 रिसाला: सल्बुल सल्ब अनुल काइलीना बे-तहारतिल कल्ब 1313 हिजरी (कुत्ते की शारीरिक शुद्धता के कायल लोगों के दोषों को उजागर करने का वर्णन) ..... 400 रिसाला: अल-अहला मिनस सुक्कर ले-तुलबत सुक्कररोसर 1303 हिजरी (यह रिसाला सुक्कररोसर के चाहने वाले [शरिया हुक्म] के लिए चीनी से अधिक मीठा है) .... 474 प्रस्तावनाओं का समापन (प्रस्तावनाएं पूरी हो
गईं) ..... 537 इस अध्याय में एक सामान्य नियम स्थापित करना और हड्डियों और शराब के हुक्म में अंतर (इस अध्याय में सामान्य नियम का वर्णन और शराब और हड्डियों के हुक्म में अंतर का

वर्णन) 537
उपसंहार: ..... 548 अल्लाह हमें
अच्छा अंत प्रदान करे। आमीन। 548

جلد چہارم فتاویٰ رضویہ

Contents اجمالی فہرست .....

4 رموز ..... 5 پیش

لفظ ..... 6 فتاویٰ رضویہ، کتاب

الطھارۃ پر ایک نظر ..... 6 فوائد

جلیلہ ..... 8 فہرست جلد

چہارم ..... 10 ابواب و

مسائل ..... 10 فہرست ضمنی

مسائل ..... 22 رسالہ الطلبۃ البدیعۃ فی قول

صدر الشریعۃ ۱۳۳۵ھ کلام صدر الشریعہ سے متعلق انوکھا مطلوب (ت) ..... 190 رسالہ

مجلی الشمعۃ لجامع حدث ولمعۃ ۱۳۲۶ھ (حدث اور لمعہ رکھنے والے سے متعلق شمع

افروز) ..... 284 ذیل باب

الوضوء ..... 322 ذیل باب

الغسل ..... 324 ذیل باب

المیاہ ..... 328 فصل فی

البئر ..... 340 باب المسح علی

الخفین ..... 346 باب

الحیض ..... 350 فصل فی

المعذور ..... 368 باب الانجاس

(نجاستوں کا بیان) ..... 378 رسالہ سلب الثلب عن القائلین بطھارۃ الکلب ۱۳۱۳ھ کتے کی طہارت عین کے قائلین سے عیب دُور کرنے کا بیان ..... 400 رسالہ الاحلی من السکر لطلبۃ سکرروسر ۱۳۰۳ھ (یہ رسالہ شکرروسر کے طالب (حکم شرعی) کیلئے شکر سے زیادہ میٹھا ہے).... 474 تمت المقدمات (مقدمات پورے ہو گئے۔ ت) ..... 537 وضع ضابطہ کلیہ دریں باب و تفرقہ در حکم عظام و شراب اس باب میں ضابطہ کلیہ کا بیان اور شراب اور ہڈیوں کے حکم میں فرق کا بیان 537

خاتمہ: ..... 548 رزقنا اللہ حسنھا آمین 548

Fatawa Razawiyya Volume Four Chapter on Istinja (This is regarding the description of Istinja) ..... 577 Sources and References 749

फ़तावा रज़विया जिल्द चार बाब-उल-इस्तिनजा (यह इस्तिनजा के बयान में है) ..... 577 माखिज़ व मराजे' 749

पृष्ठ 2 का 763

فتاوی رضویہ جلد چہارم بَابُ الْاِسْتِنْجَاءِ (یہ بات استنجا کے بیان میں ہے) ..... 577 مآخذ و

مراجع 749

صفحہ 2 از 763

Volume Four Fatawa Rizvia Fatawa Rizvia With citations and translation of Arabic passages Imam Ahmed Raza Barelvi (May his secret be sanctified) Raza Foundation Jamia Nizamia Razavia www.dawateislami.net Inside Lohari Gate Lahore No. 8 Pakistan (54000) I.T. Majlis of Dawateislami Page 1 of 761

जिल्द चार (खंड 4) फ़तावा रज़विया फ़तावा रज़विया अरबी उद्धरणों के संदर्भ और अनुवाद के साथ इमाम अहमद रज़ा बरेलवी (कुद्दसा सिर्रहु) रज़ा फाउंडेशन जामिया निज़ामिया रज़विया www.dawateislami.net अंदरूनी लोहारी दरवाजा लाहौर नंबर 8 पाकिस्तान (54000) आई.टी. मजलिस-ए-दावत-ए-इस्लामी पृष्ठ 1 / 761

جلد چہارم فتاویٰ رضویہ فتاویٰ رضویہ مع تخریج و ترجمہ عربی عبارات امام احمد رضا بریلوی قدس سرہ رضا فاؤنڈیشن جامعہ نظامیہ رضویہ www.dawateislami.net اندرون لوہاری دروازہ لاہور نمبر ۸ پاکستان (۵۴۰۰۰) آئی ٹی مجلس دعوتِ اسلامی صفحہ ۱ از ۷۶۱

Fatawa Rizvia Volume 4 "Whomever Allah intends good for, He gives him understanding of the religion" (Hadith) Al-Ataya al-Nabawiyya fi al-Fatawa al-Ridawiyya With referencing and translation of Arabic passages. Volume 4 A magnificent jurisprudence encyclopedia of the 14th century, containing rare research. Imam Ahmad Raza Bareilvi (may his secret be sanctified) 1272 AH —— 1340 AH 1856 AD —— 1921 AD Raza Foundation, Jamia Nizamia Razvia Inside Lohari Gate, Lahore, Pakistan (54000) Phone number: 7353174 I.T. Majlis of Dawat-e-Islami www.dawateislami.net Page 2 of 761

फतावा रज़विया खण्ड 4 "जिसके साथ अल्लाह भलाई का इरादा करता है, उसे दीन की समझ अता फ़रमाता है" (हदीस) अल-अताया अन-नबविय्या फ़िल-फ़तावा अर-रज़विय्या अरबी इबारतों के तख़रीज और तर्जुमे के साथ। खण्ड 4 चौदहवीं सदी का एक महान फ़िक़्ही (न्यायशास्त्र) विश्वकोश, जिसमें दुर्लभ शोध शामिल हैं। इमाम अहमद रज़ा बरेलवी (कुद्दिस सिर्रहु अल-अज़ीज़) १२७२ हिजरी —— १३४० हिजरी १८५६ ईस्वी —— १९२१ ईस्वी रज़ा फ़ाउंडेशन, जामिया निज़ामिया रज़विया अंदरून लोहारी दरवाज़ा, लाहौर, पाकिस्तान (५४०००) फ़ोन नंबर: ७३५३१७४ I.T. मजलिस-ए-दावत-ए-इस्लामी www.dawateislami.net पृष्ठ 2 का 761

فتاویٰ رضویہ جلد چہارم مَنْ یُرِدِ اللّٰہُ بِہٖ خَیْرًا یُفَقِّھْہُ فِي الدِّیْنِ (الحدیث) الْعَطَایَا النَّبَوِیَّۃُ فِي الْفَتَاوَی الرَّضَوِیَّۃِ مع تخریج و ترجمہ عربی عبارات جلد چہارم تحقیقاتِ نادرہ پر مشتمل چودہویں صدی کا عظیم الشان فقہی انسائیکلوپیڈیا امام احمد رضا بریلوی قدس سرہ العزیز ۱۲۷۲ھ ـــــ ۱۳۴۰ھ ۱۸۵۶ء ـــــ ۱۹۲۱ء رضا فاؤنڈیشن، جامعہ نظامیہ رضویہ اندرون لوہاری دروازہ، لاہور، پاکستان (۵۴۰۰۰) فون نمبر: ۷۳۵۳۱۷۴ آئی ٹی مجلسِ دعوتِ اسلامی

Fatawa Rizvia Volume Four In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful (All rights reserved by the publisher) Book: Fatawa Rizvia Volume Four Author: Sheikh-ul-Islam Imam Ahmed Raza Qadri Barelvi (May his secret be sanctified) Translation of Arabic passages: Maulana Muhammad Ahmed Misbahi, Maulana Muhammad Siddiq Hazarvi Foreword: Hafiz Abdul Sattar Saeedi, Director of Education Jamia Nizamia, Lahore Sublime Benefits (Arrangement & Categorization): Hafiz Abdul Sattar Saeedi, Director of Education Jamia Nizamia, Lahore Verification & Correction: 1. Maulana Nazir Ahmed Saeedi 2. Maulana Muhammad Umar Hazarvi Under Supervision & Patronage: Maulana Mufti Muhammad Abdul Qayyum, Chief Administrator Tanzeem-ul-Madaris Ahle Sunnat Pakistan Table of Contents Arrangement: Maulana Hafiz Muhammad Abdul Sattar Saeedi, Director of Education Jamia Nizamia, Lahore Calligraphy: Muhammad Sharif Gul, Katial Kalan (Gujranwala) Proofreading: Maulana Sardar Ahmed Hasan Saeedi Publication: January 1993 Pages: 760 Press: _____ Publisher: Raza Foundation, Jamia Nizamia Rizvia, Lahore Price: 250

Addresses to obtain: * Raza Foundation, Jamia Nizamia Rizvia, Inside Lohari Gate, Lahore. 0300/9415300, 765772 * Maktaba Ahle Sunnat Jamia Nizamia Rizvia, Inside Lohari Gate, Lahore. * Zia-ul-Quran Publications, Ganj Bakhsh Road, Lahore. * Shabbir Brothers, 40-B, Urdu Bazar, Lahore.

Page 3 of 761

फतावा रिज़विया खंड चार अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत दयालु और दयावान है। (सभी अधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं) पुस्तक: फतावा रिज़विया खंड चार लेखक: शेख-उल-इस्लाम इमाम अहमद रज़ा कादरी बरेलवी (अल्लाह उन पर अपनी कृपा बनाए रखे) अरबी अंशों का अनुवाद: मौलाना मुहम्मद अहमद मिस्बाही, मौलाना मुहम्मद सिद्दीक हजारवी प्रस्तावना: हाफिज अब्दुल सत्तार सईदी, शिक्षा निदेशक जामिया निजामिया, लाहौर सुदामा लाभ (क्रमबद्धता एवं वर्गीकरण): हाफिज अब्दुल सत्तार सईदी, शिक्षा निदेशक जामिया निजामिया, लाहौर सत्यापन एवं सुधार: १_ मौलाना नज़ीर अहमद सईदी २_ मौलाना मुहम्मद उमर हजारवी पर्यवेक्षण एवं संरक्षण: मौलाना मुफ्ती मुहम्मद अब्दुल कय्यूम, मुख्य प्रशासक तंजीम-उल-मदारिस अहले सुन्नत पाकिस्तान अनुक्रमणिका व्यवस्था: मौलाना हाफिज मुहम्मद अब्दुल सत्तार सईदी, शिक्षा निदेशक जामिया निजामिया, लाहौर सुलेख: मुहम्मद शरीफ गुल, कटियाल कलां (गुजरांवाला) प्रूफ रीडिंग: मौलाना सरदार अहमद हसन सईदी प्रकाशन: जनवरी १९९३ पृष्ठ: ७६० प्रेस: _____ प्रकाशक: रज़ा फाउंडेशन, जामिया निजामिया रिज़विया, लाहौर मूल्य: २५०

प्राप्ति के पते: * रज़ा फाउंडेशन, जामिया निजामिया रिज़विया, लोहारी गेट के अंदर, लाहौर। ०३००/९४१५३००, ७६५७७२ * मकतबा अहले सुन्नत जामिया निजामिया रिज़विया, लोहारी गेट के अंदर, लाहौर। * ज़िया-उल-क़ुरान पब्लिकेशन्स, गंज बख्श रोड, लाहौर। * शब्बीर ब्रदर्स, ४०-बी, उर्दू बाज़ार, लाहौर।

पृष्ठ ३/७६१

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ (جملہ حقوق بحق ناشر محفوظ ہیں) کتاب: فتاوٰی رضویہ جلد چہارم تصنیف: شیخ الاسلام امام احمد رضا قادری بریلوی قدس سرہ العزیز ترجمہ عربی عبارات: مولانا محمد احمد مصباحی، مولانا محمد صدیق ہزاروی پیش لفظ: حافظ عبدالستار سعیدی، ناظم تعلیمات جامعہ نظامیہ، لاہور فوائد جلیلہ (ترتیب و تبویب): حافظ عبدالستار سعیدی، ناظم تعلیمات جامعہ نظامیہ، لاہور تخریج و تصحیح: ۱_ مولانا نظیر احمد سعیدی ۲_ مولانا محمد عمر ہزاروی باہتمام و سرپرستی: مولانا مفتی محمد عبدالقیوم ناظم اعلیٰ تنظیم المدارس اہلسنت پاکستان ترتیب فہرست: مولانا حافظ محمد عبدالستار سعیدی، ناظم تعلیمات جامعہ نظامیہ، لاہور کتابت: محمد شریف گل، کٹیال کلاں (گوجرانوالہ) پروف ریڈنگ: مولانا سردار احمد حسن سعیدی اشاعت: جنوری ۱۹۹۳ء صفحات: ۷۶۰ مطبع: ____ ناشر: رضا فاؤنڈیشن جامعہ نظامیہ رضویہ لاہور قیمت: ۲۵۰

ملنے کے پتے: * رضا فاؤنڈیشن، جامعہ نظامیہ رضویہ، اندرون لوہاری دروازہ، لاہور۔ 0300/9415300، 765772 * مکتبہ اہلسنت جامعہ نظامیہ رضویہ، اندرون لوہاری دروازہ، لاہور۔ * ضیاء القرآن پبلیکیشنز گنج بخش روڈ، لاہور۔ * شبیر برادرز، ۴۰ بی، اردو بازار، لاہور۔

Volume Four Fatawa Razawiyya

Summary Table of Contents

Foreword ..... 5 Chapter on Tayammum ..... 31 Chapter on Wiping over Leather Socks ..... 445 Chapter on Menstruation ..... 469 Chapter on Impurities ..... 477 Chapter on Istinja (Cleaning after relief) ..... 575 Great Benefits ..... 611 Sources and References 747

List of Treatises O Husn at-Ta'ammum ..... From 311 Vol 3 to 320 Vol 4 O Qawanin al-Ulama ..... 31 to 187 O At-Talaba al-Badi'ah ..... 189 to 282 O Majla ash-Sham'ah ..... 283 to 320 O Salb ath-Thalb ..... 399 to 464 O Al-Ahla min as-Sukkar ..... 473 to 553

जिल्द चतुर्थ फ़तावा रज़विया

संक्षिप्त विषय-सूची

प्रस्तावना ..... ५ तयम्मुम का बयान ..... ३१ मोज़ों पर मसह का बयान ..... ४४५ हैज़ का बयान ..... ४६९ नजासतों का बयान ..... ४७७ इस्तिंजा का बयान ..... ५७५ फ़वाइद-ए-जलीला ..... ६११ माख़ज़ और मराजअ ७४७

पुस्तिकाओं (रसाइल) की सूची O हुस्न-उत-तअम्मम ..... ३११ जिल्द ३ से ३२० जिल्द ४ तक O क़वानीन-उल-उलमा ..... ३१ से १८७ O अत-तलबत-उल-बदीआ ..... १८९ से २८२ O मज्ला-अश-शमआ ..... २८३ से ३२० O सल्ब-उत-तल्ब ..... ३९९ से ४६४ O अल-अहला मिन-अस-सुक्कर ..... ४७३ से ५५३

पृष्ठ ४ / ७६१

جلد چہارم فتاویٰ رضویہ

اجمالی فہرست پیش

لفظ ..... ۵ تیمم کا

بیان ..... ۳۱ موزوں پر مسح

کا بیان ..... ۴۴۵ حیض کا

بیان ..... ۴۶۹ نجاستوں کا

بیان ..... ۴۷۷ استنجاء کا

بیان ..... ۵۷۵ فوائد

جلیلہ ..... ۶۱۱ مآخذ و

مراجع ۷۴۷

فہرست رسائل O حسن التعمم ..... از ۳۱۱ جلد سوم تا ۳۲۰ جلد

چہارم O قوانین العلماء ..... ۳۱ تا ۱۸۷ O

الطلبة البديعة ..... ۱۸۹ تا ۲۸۲ O مجلی

الشمعة ..... ۲۸۳ تا ۳۲۰ O سلب

الثلب ..... ۳۹۹ تا ۴۶۴ O الاحلی من

السکر ..... ۴۷۳ تا ۵۵۳

Fatawa Razawiya Volume Four

Symbols (Abbreviations)

Muhaqqiq: Allama Kamal al-Din ibn al-Humam, author of Fath al-Qadir H: Allama Muhammad Ibrahim bin Muhammad al-Halabi, author of Ghunyat al-Mustamli Sh: Allama Muhammad Amin ibn Abidin al-Shami, author of Radd al-Muhtar T: Allama Sayyid Ahmad al-Tahtawi, author of the marginalia on al-Durr al-Mukhtar and Maraqi al-Falah Al-Durr: Al-Durr al-Mukhtar, Allama Muhammad Ala al-Din al-Haskafi Al-Durar: Al-Durar Sharh al-Ghurar, Mulla Khusraw Allama Muhammad bin Faramuz Bahr: Al-Bahr al-Ra'iq, Allama Zayn al-Din ibn Nujaym Hindiya: Fatawa Alamgiri, Group of Hanafi Scholars Nahr: Al-Nahr al-Fa’iq, Siraj al-Din Umar bin Tamim Fath: Fath al-Qadir, Allama Kamal al-Din ibn al-Humam Ghunyah: Ghunyat al-Mustamli, Allama Muhammad Ibrahim bin Muhammad al-Halabi Hilya: Hilyat al-Mahalli, Ibn Amir al-Hajj

www.dawateislami.net I.T. Majlis of DawateIslami

Page 5 of 761

फतावा रज़विया जिल्द चौथी

रुमूज़ (संकेत चिह्न)

मुहक़्क़िक़: अल्लामा कमालुद्दीन इब्ने हुमाम, फतहुल क़दीर के लेखक ह: अल्लामा मुहम्मद इब्राहिम बिन मुहम्मद अल-हलबी, गुन्यातुल मुस्तमली के लेखक श: अल्लामा मुहम्मद अमीन इब्ने आबिदीन अल-शामी, रद्दुल मुह्तार के लेखक त: अल्लामा सैय्यद अहमद अत्तहतावी, हाशियतुल दुर्रिल मुख्तार और हाशियत मराक़िल फलाह के लेखक दुर्र: दुर्रुल मुख्तार, अल्लामा मुहम्मद अलाउद्दीन अल-हसकफी दुरर: दुरर शरह अल-ग़ुरर, मुल्ला खुसरु अल्लामा मुहम्मद बिन फरामोज़ बहर: अल-बहरुल रईक़, अल्लामा ज़ैनुद्दीन इब्ने नुजैम हिंदीया: फतावा आलमगीरी, हनफी उलेमाओं का समूह नहर: अन-नहरुल फाईक़, सिराजुद्दीन उमर बिन तमीम फतह: फतहुल क़दीर, अल्लामा कमालुद्दीन इब्ने हुमाम गुन्या: गुन्यातुल मुस्तमली, अल्लामा मुहम्मद इब्राहिम बिन मुहम्मद अल-हलबी हिल्या: हिल्यातुल महल्ली, इब्न अमीर अल-हज

www.dawateislami.net दावते इस्लामी की आई.टी. मज्लिस

पृष्ठ ७६१ का ५

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم

رموز

محقق: علامہ کمال الدین ابن ہمام صاحب فتح القدیر ح: علامہ محمد ابراہیم بن محمد الحلبی صاحب غنیۃ المستملی ش: علامہ محمد امین ابن عابدین الشامی صاحب ردالمحتار ط: علامہ سید احمد الطحطاوی صاحب حاشیہ الدرالمختار و حاشیہ مراقی الفلاح الدر: الدرالمختار، علامہ محمد علاء الدین الحصفکی الدرر: الدرر شرح الغرر، ملا خسرو علامہ محمد بن فراموز بحر: البحر الرائق، علامہ زین الدین ابن نجیم ہندیہ: فتاوٰی عالمگیری، جماعت علماء احناف نہر: النہر الفائق، سراج الدین عمر بن تمیم فتح: فتح القدیر، علامہ کمال الدین ابن ہمام غنیہ: غنیۃ المستملی، علامہ محمد ابراہیم بن محمد الحلبی حلیہ: حلیۃ المحلی، ابن امیر الحاج

www.dawateislami.net I.T. Majlis of DawateIslami

Volume IV Fatawa Razawiya In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful Foreword A few years ago, the grand project for the publication of Fatawa Razawiya according to modern requirements, initiated under the patronage and supervision of the Benefactor of Ahl-e-Sunnat, Grand Mufti of Pakistan, Chief Administrator of Tanzim-ul-Madaris (Ahl-e-Sunnat), Sheikh-ul-Hadith Hazrat Allama Mufti Muhammad Abdul Qayyum Hazarvi (may Allah sanctify his secret), in the name of Raza Foundation, is progressing through its developmental stages with full splendor, by the grace of Almighty Allah. To date, the Book of Purity (Kitab al-Tahara) of Fatawa Razawiya (complete) has been published in four volumes, adorned with the beauty of print. The Book of Purity was spread over the complete first volume and approximately one hundred and fifty pages of the second volume of the twelve ancient volumes. Fatawa Razawiya, A Glance at the Book of Purity Generally, in books of jurisprudence and fatwas, matters related to the following chapters are recorded under the Book of Purity: (1) Wudu (Ablution), (2) Nullifiers of Wudu, (3) Ghusl (Ritual Bath), (4) Description of Waters, (5) Description of Wells, (6) Tayammum (Dry Ablution), (7) Masah over Leather Socks, (8) Menstruation, (9) Impurities, (10) Istinja. However, the style and manner of Fatawa Razawiya is unique and distinguished among books of fatwas. In this great jurisprudential and scholarly masterpiece, in addition to the matters related to the aforementioned ten chapters under the Book of Purity, thousands of issues related to the following forty-two chapters are also mentioned incidentally: 1. Prayer, 2. Rulings of the Mosque, 3. Funerals, 4. Zakat, 5. Fasting, 6. Hajj, 7. Marriage, 8. Divorce, 9. Manumission, 10. Oaths, 11. Prescribed Punishments (Hudud), 12. Captives, 13. Partnership, 14. Endowment (Waqf), 15. Sales (Buyu'), 16. Testimony, 17. Agency (Wakalat), 18. Claims, 19. Gifts (Hiba), 20. Leasing (Ijarah), 21. Legal Restriction (Hajr), 22. Usurpation (Ghasab), 23. Partition, 24. Hunting, Slaughter, and Sacrifice, 25. Prohibition and Permission, 26. Cultivation of Wasteland, 27. Drinking Rulings, 28. Blood Money (Diyat), 29. Debts, 30. Executor (Wasi), 31. Inheritance (Faraid), 32. Juristic Benefits, 33. Protocol of the Mufti, 34. Beliefs, 35. Theology (Kalam), 36. Refutation of Innovators, 37. Benefits of Hadith, 38. Biographical Evaluation (Asma-ur-Rijal), 39. Virtues and Merits, 40. Principles of Jurisprudence, 41. Physics, 42. Geometry and Mathematics. The Book of Purity of Fatawa Razawiya consists of 3621 researches under the titles of answers to 1246 inquiries (istifta'at), "I say" (aqool), "qultu" (I said), etc.

जिल्द चौथी फतावा रज़विया बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम प्रस्तावना कुछ साल पहले सुन्नत के संरक्षक, पाकिस्तान के मुफ्ती-ए-आज़म, तंज़ीम-उल-मदारिस (अहले सुन्नत) के मुख्य प्रशासक, शेख-उल-हदीस हज़रत अल्लामा मुफ्ती मोहम्मद अब्दुल कय्यूम हज़ारवी (अल्लाह उनकी कब्र को रोशन करे) के संरक्षण और देखरेख में आधुनिक युग की आवश्यकताओं के अनुसार फतावा रज़विया के प्रकाशन की जो महान परियोजना रज़ा फाउंडेशन के नाम से शुरू की गई थी, अल्लाह के फजल से वह पूरी शान ओ शौकत के साथ अपने विकास के पड़ाव तय कर रही है। अब तक, फतावा रज़विया की 'किताबुत तहारत' (संपूर्ण) चार जिल्दों में छपकर सामने आ चुकी है। किताबुत तहारत पुरानी बारह जिल्दों में से पहली जिल्द पूरी और दूसरी जिल्द के लगभग डेढ़ सौ पृष्ठों पर फैली हुई थी। फतावा रज़विया, किताबुत तहारत पर एक नज़र आमतौर पर फ़िक़्ह और फ़तवे की किताबों में किताबुत तहारत के तहत निम्नलिखित अध्यायों से संबंधित मसले दर्ज होते हैं: (१) वुज़ू (२) वुज़ू तोड़ने वाली चीज़ें (३) ग़ुस्ल (४) पानी का बयान (५) कुएं का बयान (६) तयम्मुम (७) चमड़े के मोज़ों पर मसह (८) हैज़ (मासिक धर्म) (९) नजासत (१०) इस्तिंजा। लेकिन फतावा रज़विया का अंदाज़ और शैली फ़तवे की किताबों में अनोखी और बेमिसाल है। इस महान फ़िक़्ही और वैज्ञानिक शाहकार में किताबुत तहारत के तहत ऊपर बताए गए दस अध्यायों से संबंधित मसलों के अलावा निम्नलिखित बयालीस अध्यायों से संबंधित भी हज़ारों मसले बीच-बीच में बताए गए हैं: १. नमाज़, २. मस्जिद के अहकाम, ३. जनाज़ा, ४. ज़कात, ५. रोज़ा, ६. हज, ७. निकाह, ८. तलाक, ९. ग़ुलाम की आज़ादी, १०. क़सम, ११. हुदूद (दंड), १२. कैदी, १३. भागीदारी, १४. वक्फ, १५. ख़रीद ओ फ़रोख्त (बय), १६. गवाही, १७. वकालत, १८. दावा, १९. हिबा (उपहार), २०. इजारा (किराया), २१. हज्र (पाबंदी), २२. ग़सब (छीनना), २३. तक़्सीम (बंटवारा), २४. शिकार, ज़िबह और कुर्बानी, २५. हज्र ओ इबाहत, २६. एहया-ए-मवात, २७. पीने के अहकाम, २८. दियत (खूंबहा), २९. कर्ज़ (मदैनत), ३०. वसीयत करने वाला (वसी), ३१. फराइज़ (विरासत), ३२. फ़िक़्ही फायदे, ३३. रस्म-उल-मुफ्ती, ३४. अक़ाइद, ३५. कलाम, ३६. गुमराहों का खंडन, ३७. हदीस के फायदे, ३८. अस्मा-उर-रिजाल, ३९. फ़ज़ाइल ओ मनाक़िब, ४०. उसूली फ़ायदे, ४१. भौतिकी (फिजिक्स), ४२. ज्यामिति और गणित। फतावा रज़विया की 'किताबुत तहारत' में १२४६ फ़तवों के जवाब, "मैं कहता हूँ" (अक़ूल) और "मैंने कहा" (कुल्तु) आदि के शीर्षक से ३६२१ शोध शामिल हैं।

पेज ६ ऑफ़ ७६१

جلد چہارم فتاوی رضویہ بسم اللہ الرحمن الرحیم پیش لفظ چند سال قبل محسنِ اہلسنّت مفتی اعظم پاکستان ناظم اعلیٰ تنظیم المدارس (اہلسنت) شیخ الحدیث حضرت علامہ مفتی محمد عبدالقیوم ہزاروی قدس سرہ العزیز کی سرپرستی اور نگرانی میں فتاویٰ رضویہ کی جدید دور کے تقاضوں کے مطابق اشاعت کا جو عظیم منصوبہ رضا فاؤنڈیشن کے نام سے شروع کیا گیا تھا بفضلہ تعالی پوری آب و تاب کے ساتھ اپنی ارتقائی منازل طے کر رہا ہے ، اب تک فتاویٰ رضویہ کی کتاب الطھارۃ (مکمل) چار جلدوں میں زیورِ طباعت سے مزین ہو کر منظر عام پر آچکی ہے۔ کتاب الطہارت بارہ قدیم مجلدات میں سے جلد اول مکمل اور جلد دوم کے تقریباً ڈیڑھ سو صفحات پر پھیلی ہوئی تھی۔ فتاویٰ رضویہ ، کتاب الطہارۃ پر ایک نظر عام طور پر فقہ و فتاویٰ کی کتابوں میں کتاب الطہارت کے تحت مندرجہ ذیل ابواب سے متعلق مسائل مندرج ہوتے ہیں: (۱) وضو (۲) نواقضِ وضو (۳) غسل (۴) پانیوں کا بیان (۵) کنوئیں کا بیان (۶) تیمم (۷) مسح خفین (۸) حیض (۹) انجاس (۱۰) استنجاء۔ لیکن فتاویٰ رضویہ کا انداز واسلوب کتبِ فتاویٰ میں منفرد اور ممتاز ہے۔ اس عظیم فقہی و علمی شاہکار میں کتاب الطہارۃ کے تحت مذکورہ الصدر دس ابواب سے متعلق مسائل کے علاوہ مندرجہ ذیل بیالیس ابواب سے متعلق بھی ضمناً ہزاروں مسائل مذکور ہیں: ۱۔نماز، ۲۔احکامِ مسجد، ۳۔جنائز، ۴۔زکوۃ، ۵۔روزہ، ۶۔حج، ۷۔نکاح، ۸۔طلاق، ۹۔عتق، ۱۰۔قسم، ۱۱۔حدود، ۱۲۔اسیر، ۱۳۔شرکت، ۱۴۔وقف، ۱۵۔بیوع، ۱۶۔شہادت، ۱۷۔وکالت، ۱۸۔دعویٰ، ۱۹۔ہبہ، ۲۰۔اجارہ، ۲۱۔حجر، ۲۲۔غصب، ۲۳۔قسمت، ۲۴۔شکار و ذبیحہ و قربانی، ۲۵ حظر و اباحت، ۲۶۔احیاء موات، ۲۷۔شرب، ۲۸ دیت، ۲۹۔مدائینات، ۳۰۔وصی، ۳۱۔فرائض، ۳۲۔فوائد فقہیہ، ۳۳ رسم المفتی، ۳۴۔عقائد، ۳۵۔کلام، ۳۶۔ردِّ بد مذہباں، ۳۷۔فوائدِ حدیثیہ، ۳۸۔اسماء الرجال، ۳۹۔فضائل ومناقب، ۴۰۔

فوائدِ اصولیہ، ۴۱ طبعیات، ۴۲ ہندسہ و ریاضی۔ فتاویٰ رضویہ کی کتاب الطہارۃ ۱۲۴۶ استفتاءات کے جوابات، اقول اور قلت وغیرہ کے عنوان سے ۳۶۲۱ تحقیقات پر مشتمل ہے۔

Volume Four Fatawa-e-Razvia And the investigations of the author (may Allah have mercy on him), consisting of 1945 presentations and footnotes, and 30 treatises. One of these treatises, "The Chapter of Beliefs and Theology," which was on pages 735 to 794 of the old first volume, has been removed from the Book of Purification. In the new edition, it will be included in the volume on beliefs and theology. Fatawa-e-Razvia Volume Four The present volume spans from page 797 of the old first volume, starting with the treatise "Rules for the Scholars Regarding the One Who Performs Tayammum and Knows Zaid Has Water," until the end, i.e., page 849, and from the beginning of the old second volume to page 145, which is the end of the Book of Purification. This volume contains answers to 132 questions, 495 research points titled "I say" (Aqul) and "I say" (Qultu), 45 footnotes and presentations, and contains the following five magnificent treatises featuring extremely fine and precise great discussions: (1) Qawanin al-Ulama fi Mutayammim 'Alima 'inda Zaidin Ma'an: The ruling for a person performing tayammum who knows that someone else has water. (2) Al-Talabah al-Badi'ah fi Qawli Sadr al-Shari'ah: A scholarly discussion on a passage from Imam Sadr al-Shari'ah, the author of Sharh al-Wiqayah. (3) Majla al-Shub'ah li-Jami' Hadathin wa Lum'ah: An explanation of 98 scenarios involving the combination of major and minor ritual impurity. (4) Salb al-Thalab 'an al-Qa'ilina bi-Taharat al-Kalb: An explanation of the impurity of dogs. (5) Al-Ahla min al-Sukkar li-Talabati Sukkar Roser: An explanation regarding sugar refined using animal bones. In addition to numerous incidental issues, five independent chapters are discussed in detail in this volume: (1) Tayammum (Its discussion continues from page 729 of the third volume). (2) Mash al-Khuffayn (Wiping over leather socks). (3) Haid (Rulings regarding menstruating women). (4) Anjas (An explanation of impurities). (5) Istinja (The prescribed method for performing istinja). Page 7 of 761

खंड चार फ़तावा-ए-रज़विया लेखक (रहमतुल्लाहि अलैहि) की जाँच-पड़ताल, 1945 प्रस्तुतियाँ और टिप्पणियाँ और 30 शोध-निबंधों पर आधारित है। इनमें से एक निबंध "अक़ायद और कलाम का अध्याय", जो पुराने प्रथम खंड के पृष्ठ 735 से 794 तक था, उसे 'किताब-उत-तहारत' (पवित्रता की पुस्तक) से बाहर कर दिया गया है। नए संस्करण में इसे अक़ायद और कलाम वाले खंड में शामिल किया जाएगा। फ़तावा-ए-रज़विया खंड चार वर्तमान खंड, पुराने प्रथम खंड के पृष्ठ 797 से निबंध "क़वानीनुल उलमा फ़ी मुतयम्मम इलम इंदा ज़ैद मा" से अंत तक यानी पृष्ठ 849 तक और पुराने दूसरे खंड की शुरुआत से पृष्ठ 145 यानी 'किताब-उत-तहारत' के अंत तक है। इस खंड में 132 सवालों के जवाब, "अक़ूल" और "क़ुलतु" के शीर्षक से 495 शोध बिंदु, 45 टिप्पणियाँ और प्रस्तुतियाँ और अत्यंत सूक्ष्म और सटीक महान चर्चाओं वाले निम्नलिखित पाँच शानदार शोध-निबंध शामिल हैं: (१) क़वानीनुल उलमा फ़ी मुतयम्मम इलमा इंदा ज़ैदिन माअन: उस तयम्मुम करने वाले का आदेश जिसे पता हो कि दूसरे के पास पानी है। (२) अत-तलबतुल बदीआ फ़ी क़ौलि सद्रुश शरीआ: इमाम सद्रुश शरीआ (शराह विकाया के लेखक) के एक कथन पर शोधपूर्ण चर्चा। (३) मज्लश्शुब'आ लि-जामिअ' हदथिन व लुमअह: जनाबत (बड़ी नापाकी) और हदस (छोटी नापाकी) दोनों के एक साथ होने की 98 स्थितियों का विवरण। (४) सल्बुल् थलब अनिल् क़ाइलीना बितहारतुल कल्ब: कुत्ते के नापाक होने का विवरण। (५) अल-अहला मिनस्सक्कर लितलबति सक्कर रोसर: जानवरों की हड्डियों से साफ़ की गई चीनी का विवरण। इस खंड में कई उप-मुद्दों के अलावा पाँच स्वतंत्र अध्यायों पर विस्तार से चर्चा की गई है: (१) तयम्मुम (इसकी चर्चा तीसरे खंड के पृष्ठ 729 से चली आ रही है)। (२) मसह खुफ़्फ़ैन (चमड़े के मोजों पर मसह का विवरण)। (३) हैज़ (मासिक धर्म वाली महिला के आदेशों का विवरण)। (४) अन्जास (नापाकियों का विवरण)। (५) इस्तिन्जा (इस्तिन्जा करने का सुन्नत तरीक़ा)। पृष्ठ 761 का 7

جلد چہارم فتاوی رضویہ وتدقیقات مصنف رحمہ اللہ تعالٰی، ۱۹۴۵ معروضات و تطفلات اور ۳۰ رسائل پر مشتمل ہے جن میں سے ایک رسالہ "باب العقائد والکلام" جو جلد اول قدیم کے صفحہ ۷۳۵ تا ۷۹۴ پر تھا کتاب الطہارۃ سے خارج کردیا گیا ہے جدید ایڈیشن میں اسے عقائد و کلام والی جلد میں شامل کیا جائے گا۔ فتاوی رضویہ جلد چہارم پیش نظر جلد، جلد اول قدیم کے صفحہ ۷۹۷ رسالہ "قوانین العلماء في متیمم علم عند زید ماء" سے آخر یعنی صفحہ ۸۴۹ تک اور جلد دوم قدیم کے شروع سے صفحہ ۱۴۵ یعنی کتاب الطہارۃ کے آخر تک ہے۔ یہ جلد ۱۳۲ سوالوں کے جوابات، اقول اور قلت کے عنوان سے ۴۹۵ تحقیقی نکات، ۴۵ تطفلات و معروضات اور انتہائی نفیس ودقیق مباحث جلیلہ کے حامل مندرجہ ذیل پانچ عظیم الشان رسائل پر مشتمل ہے، (۱) قَوَانِینُ الْعُلَمَاءِ فِي مُتَیَمِّمٍ عَلِمَ عِنْدَ زَیْدٍ مَاءً۔ اس تیمم کرنے والے کا حکم جس کو علم ہو کہ دوسرے کے پاس پانی ہے۔ (۲) الطَّلَبَۃُ الْبَدِیْعَۃُ فِي قَوْلِ صَدْرِ الشَّرِیعَۃِ۔ امام صدر الشریعہ صاحب شرح وقایہ کی ایک عبارت پر محققانہ بحث (۳) مَجْلَی الشَّبْعَۃِ لِجَامِعِ حَدَثٍ وَّلُمْعَۃٍ۔ جنابت وحدث دونوں کے جمع ہونے کی ۹۸ صورتوں کا بیان۔ (۴) سَلْبُ الثَّلَبِ عَنِ الْقَائِلِیْنَ بِطَھَارَۃِ الْکَلْبِ۔ کتّے کے نجس ہونے کا بیان۔ (۵) الْأَحْلَی مِنَ السُّکَّرِ لِطَلَبَۃِ سُکَّرِ رَوْسُرَ۔ جانوروں کی ہڈیوں سے صاف کردہ چینی کا بیان۔ اس جلد میں متعدد ضمنی مسائل کے علاوہ پانچ مستقل ابواب پر تفصیل سے بحث کی گئی ہے: (۱) تیمم (اس کی بحث جلد سوم کے صفحہ ۷۲۹ سے چلی آرہی ہے) (۲) مسح خفین (موزوں پر مسح کا بیان) (۳) حیض (حائضہ عورت کے احکام کا بیان) (۴) انجاس (نجاستوں کا بیان) (۵) استنجاء (استنجاء کرنے کا مشروع طریقہ) Page 7 of 761

Fatawa Rizvia Volume 4

Fawaid-e-Jalila

In the margins of the old first volume of Fatawa Rizvia, Ala Hazrat (may Allah have mercy on him) mentioned several independent issues related to various jurisprudential, theological, ethical, reformative, social, and transactional chapters. Some of these are indicated within the book, while others are mentioned as additional benefits quite independently. These are mentioned in the table of contents but are not present within the main body of the book; rather, they are in the margins. Since the new printing only includes the main text of the book or related footnotes, the independent issues present in the margins were not included. Therefore, they have been separately transcribed and appended at the end of the current volume as an independent treatise named "Fawaid-e-Jalila". The task of arranging and categorizing them was performed by the author on the orders of His Eminence, the Honorable Mufti Sahib (may his blessings continue). The total number of these benefits is 1148. For the convenience of readers, the page number and benefit number from the old first volume published by Raza Academy Bombay have also been included at the end of each issue. Maulana Hafiz Muhammad Sulaiman Saidi and Maulana Muhammad Yunus provided full cooperation in transcribing these Fawaid-e-Jalila.

The translation of Arabic passages from the first volume (old) included in this volume was done by the great researcher, Hazrat Allama Muhammad Ahmad Misbahi (may his holiness be blessed), Sheikh-ul-Adab, Darul Uloom Jamia Ashrafia Mubarakpur, India, whose brief introduction has already appeared in the foreword of the third volume. Whereas, the translation of Arabic passages from 145 pages of the second volume (old) was carried out by the renowned scholar, former advisor to the Federal Shariat Court of Pakistan, Hazrat Allama Muhammad Siddique Hazarvi, teacher at Darul Uloom Jamia Nizamia Razvia Lahore (may his glory increase). Maulana Hazarvi is counted among the swift-writing and prolific scholars; he has written translations and summaries of numerous books besides dozens of independent works. Many of your research articles have been published in newspapers and journals, and this sequence is still ongoing. May Allah Almighty grant the Honorable Mufti Sahib (may his blessings continue) a long life like that of Khidr and bring this great publishing project to completion under his supervision to make Fatawa Rizvia Sharif beneficial for all. Ameen!

Hafiz Muhammad Abdul Sattar Saidi Director of Education, Jamia Nizamia Razvia, Lahore 11 Jumada al-Ula 1413 AH / 7 November 1992 AD

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

फ़वाइद-ए-जलीला

फ़तावा रज़विया की पुरानी पहली जिल्द के हाशिए (मार्जिन) पर आला हज़रत (रहमतुल्लाह अलैह) ने विभिन्न फ़िक़्ही (न्यायशास्त्र), कलामी (ईश्वरमीमांसा), अख़्लाक़ी (नैतिक), इस्लाही (सुधारात्मक), मुआशरती (सामाजिक) और मुआमुलाती अध्यायों से संबंधित कई स्वतंत्र मसले ज़िक्र फ़रमाए हैं। इनमें से कुछ का संकेत किताब के भीतर मौजूद है और कुछ बिल्कुल स्वतंत्र रूप से अतिरिक्त लाभ के तौर पर वर्णित हैं जिनका उल्लेख सूची में तो है लेकिन वे किताब के मुख्य पाठ में नहीं बल्कि हाशिए पर मौजूद हैं। चूंकि नई छपाई में केवल किताब का मूल पाठ या उससे संबंधित टिप्पणियां ही दी गई हैं, हाशिए पर मौजूद स्वतंत्र मसले नहीं दिए गए, इसलिए उनकी अलग से लिखावट करवाकर "फ़वाइद-ए-जलीला" के नाम से एक स्वतंत्र लघु-ग्रंथ के रूप में वर्तमान जिल्द के अंत में जोड़ दिया गया है। इनके संकलन और वर्गीकरण का दायित्व हज़रत क़िबला मुफ़्ती साहब (दामत बरकातुहुमुल आलिया) के आदेश पर लेखक ने निभाया है। इन फ़वाइद की कुल संख्या 1148 है। पाठकों की सुविधा के लिए प्रत्येक मसले के अंत में रज़ा अकादमी बंबई द्वारा प्रकाशित पुरानी पहली जिल्द का पृष्ठ और फ़ायदा नंबर भी दर्ज कर दिया गया है। इन फ़वाइद-ए-जलीला की नक़ल करने में मौलाना हाफ़िज़ मुहम्मद सुलेमान सईदी और मौलाना मुहम्मद यूनुस ने भरपूर सहयोग दिया।

इस जिल्द में शामिल पहली जिल्द (पुरानी) के अरबी अंशों का अनुवाद भी महान शोधकर्ता हज़रत अल्लामा मुहम्मद अहमद मिसबाही (दामत बरकातुहुमुल कुदसिया), शेखुल अदब दारुल उलूम जामिया अशरफ़िया मुबारकपुर भारत ने किया है, जिनका संक्षिप्त परिचय तीसरी जिल्द की प्रस्तावना में आ चुका है। जबकि दूसरी जिल्द (पुरानी) के145 पृष्ठों के अरबी अंशों के अनुवाद का कार्य प्रसिद्ध विद्वान, पाकिस्तान के संघीय शरीयत अदालत के पूर्व सलाहकार हज़रत अल्लामा मुहम्मद सिद्दीक़ हज़ारवी, शिक्षक जामिया निज़ामिया रज़विया लाहौर (ज़ैद मजदहु) ने संपन्न किया है। मौलाना हज़ारवी की गणना शीघ्र लिखने वाले और बहुत अधिक रचनाएं करने वाले विद्वानों में होती है; अब तक दर्जनों स्वतंत्र पुस्तकों के अलावा कई पुस्तकों के अनुवाद और सारांश लिख चुके हैं। समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में आपके कई शोध लेख प्रकाशित हो चुके हैं और यह सिलसिला अभी भी जारी है। अल्लाह तबारक व तआला हज़रत मुफ़्ती साहब (दामत बरकातुहुमुल आलिया) को हज़रत खिज़र

जैसी लंबी उम्र प्रदान करे और उनकी देखरेख में फ़तावा रज़विया शरीफ़ को जन-जन के लिए लाभकारी बनाने के लिए इस महान प्रकाशन परियोजना को पूर्णता तक पहुँचाए। आमीन!

हाफ़िज़ मुहम्मद अब्दुल सत्तार सईदी निदेशक शिक्षा, जामिया निज़ामिया रज़विया, लाहौर 11 जमादी-उल-उला 1413 हिजरी / 7 नवंबर 1992 ईस्वी

पेज 8 ऑफ़ 761

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم

فوائد جلیلہ

فتاویٰ رضویہ جلد اول قدیم کے حاشیہ پر اعلٰیحضرت رحمۃ اللہ علیہ نے مختلف فقہی، کلامی، اخلاقی، اصلاحی، معاشرتی اور معاملاتی ابواب سے متعلق متعدد مستقل مسائل ذکر فرمائے جن میں سے بعض کی طرف کتاب کے اندر اشارہ موجود ہوتا ہے اور بعض بالکل مستقل حیثیت میں کتاب سے علاوہ فائدہ کے طور پر مذکور ہیں جن کا ذکر فہرست میں ہے لیکن وہ کتاب کے اندر موجود نہیں بلکہ حاشیہ پر موجود ہیں۔ نئی طباعت میں چونکہ صرف متن کتاب یا اس سے متعلق حواشی ہی دیئے گئے ہیں حاشیہ پر موجود مستقل مسائل نہیں دیئے گئے لہٰذا ان کی علیحدہ کتابت کروا کے "فوائد جلیلہ" کے نام سے مستقل رسالہ کی صورت میں پیشِ نظر جلد کے آخر میں لگا دیئے گئے ہیں جن کی ترتیب و تبویب کا فریضہ حضرت قبلہ مفتی صاحب دامت برکاتہم العالیہ کے حکم پر راقم نے سرانجام دیا ہے۔ ان فوائد کی مجموعی تعداد ۱۱۴۸ ہے۔ قارئین کی سہولت کیلئے ہر مسئلہ کے آخر میں پرانی جلد اول مطبوعہ رضا اکیڈمی بمبئی کا صفحہ اور فائدہ نمبر بھی درج کر دیا گیا ہے۔ ان فوائد جلیلہ کو نقل کرنے میں مولانا حافظ محمد سلیمان سعیدی اور مولانا محمد یونس نے بھر پور تعاون فرمایا۔

اس جلد میں شامل جلد اول (قدیم) کی عربی عبارات کا ترجمہ بھی محقق جلیل حضرت علامہ محمد احمد مصباحی دامت برکاتہم القدسیہ شیخ الادب دارالعلوم جامعہ اشرفیہ مبارکپور ہندوستان نے فرمایا جن کا مختصر تعارف جلد سوم کے پیشِ لفظ میں گزر چکا ہے، جبکہ جلد دوم (قدیم) کے ۱۴۵ صفحات کی عربی عبارات کے ترجمہ کے فرائض فاضل شہیر، سابق مشیر وفاقی شرعی

عدالت پاکستان حضرت علامہ محمد صدیق ہزاروی مدرس دارالعلوم جامعہ نظامیہ رضویہ لاہور زید مجدہ، نے سرانجام دیئے ہیں۔ مولانا ہزاروی کا شمار سریع القلم اور کثیر التصانیف فضلاء میں ہوتا ہے اب تک متعدد کتب کے تراجم و تلخیصات کے علاوہ بیسیوں مستقل تصانیف تحریر فرما چکے ہیں۔ اخبارات و رسائل میں آپ کے بہت سے تحقیقی مضامین شائع ہو چکے ہیں اور یہ سلسلہ ابھی جاری ہے۔ اللہ تبارک و تعالٰی حضرت مفتی صاحب دامت برکاتہم العالیہ کو عمر خضر عطا فرمائے اور ان کی سرپرستی میں فتاویٰ رضویہ شریفہ کو نافع عام بنانے کیلئے اس عظیم اشاعتی منصوبے کو پایہ تکمیل تک پہنچائے۔ آمین!

حافظ محمد عبدالستار سعیدی ناظم تعلیمات جامعہ نظامیہ رضویہ، لاہور ۱۱ جمادی الاولیٰ ۱۴۱۳ھ / ۷ نومبر ۱۹۹۲ء

Fatawa Razawiyya - Volume 4

Index Volume 4 Chapters and Issues

Chapter on Tayammum

- **Left Column:**
  - If after performing prayer with tayammum it is found that someone else had water, the prayer is valid. If he gives water now, the tayammum will break for the future. (Page 34, 671)
  - If 100 people were praying and a person brought water and told one specific person to take it, then only his [prayer] is invalidated. If he was the Imam, then everyone's is. (Page 671)
  - If a disbeliever (kaafir) says during prayer 'take water', it is not reliable. Complete the prayer and then ask for water; if he gives, then repeat the prayer. (Page 671)
  - If for some reason it is known that the disbeliever is not saying it in mockery, then one should break the intention (stop the prayer). (Page 671)
  - If there is a suspicion about a transgressing joker (fasiq maskhara) that he is saying it out of mockery, then breaking the intention is not permitted. (Page 671)
  - If during prayer it is found or remembered that someone else has water, if the dominant thought is that he will give it if asked, then break the intention, otherwise it is not permissible. (Page 34, 671)
- **Right Column:**
  - If while praying with tayammum, one's gaze falls upon a mirage during the prayer, what should he do? (Page 34, 671)
  - If there is a dominant thought that he will give [water] if asked, then breaking the intention is obligatory. (Page 35, 672)
  - Prayer with tayammum is complete; tayammum is a complete purification. (Page 35, 672)
  - If one saw water during prayer and completed it, if there is doubt about him giving it, then asking is recommended (mustahabb). If the dominant thought is that he will not give, then even asking is not recommended. (Page 36, 672)

- If the dominant thought is that water is less than one mile away, then searching is obligatory (wajib). If there is doubt, then it is recommended, otherwise not even recommended. (Page 37, 672)
- If water is seen with someone else during prayer and the dominant thought is that he will give if asked, then although breaking the intention is obligatory, if the prayer was completed and then asked and he did not give, the prayer is valid and tayammum remains. (Page 37, 672)

फ़तावा रज़विया - जिल्द चार (चौथा)

जिल्द चार की फेहरिस्त अध्याय और मसले

बाबुत तयम्मुम (तयम्मुम का अध्याय)

- **बायां कॉलम:**
  - तयम्मुम से नमाज़ पढ़ लेने के बाद मालूम हुआ कि दूसरे के पास पानी मौजूद था, नमाज़ हो गई। अगर वो अब पानी देगा तो आइंदा के लिए तयम्मुम टूट जाएगा। (पृष्ठ 34, 671)
  - अगर 100 लोग नमाज़ पढ़ रहे थे, एक व्यक्ति पानी लाया और किसी खास एक से कहा कि ये पानी ले लो, तो सिर्फ उसी की नमाज़ गई। और अगर वो इमाम हो तो सबकी गई। (पृष्ठ 671)
  - नमाज़ में काफ़िर कहे कि पानी ले लो, तो उसका एतबार नहीं। नमाज़ पूरी करके पानी मांगे, अगर दे दे तो दोबारा पढ़े। (पृष्ठ 671)
  - अगर किसी वजह से मालूम हो कि काफ़िर मज़ाक में नहीं कह रहा, तो नियत तोड़ देनी चाहिए। (पृष्ठ 671)
  - अगर किसी फ़ासिक़ (पापी) मज़ाकिया पर गुमान (संदेह) हो कि मज़ाक के तौर पर कह रहा है, तो नियत तोड़ने की इजाज़त नहीं। (पृष्ठ 671)
  - नमाज़ में मालूम हुआ या याद आया कि दूसरे के पास पानी है, अगर प्रबल संभावना (ज़न-ए-ग़ालिब) हो कि मांगने पर दे देगा, तो नियत तोड़ दे, वर्ना जाइज़ नहीं। (पृष्ठ 34, 671)
- **दायां कॉलम:**
  - तयम्मुम से नमाज़ पढ़ता था, नमाज़ में मृगतृष्णा (सराब) पर नज़र पड़ी तो क्या करे? (पृष्ठ 34, 671)
  - प्रबल संभावना हो कि मांगने पर दे देगा, तो नियत तोड़ना वाजिब है। (पृष्ठ 35, 672)
  - तयम्मुम से नमाज़ कामिल (पूर्ण) है, तयम्मुम कामिल तहारत (पवित्रता) है। (पृष्ठ 35, 672)

- नमाज़ में पानी देखा और पूरी कर ली। अगर देने में शक हो तो मांगना मुस्तहब (पसंदीदा) है, और अगर प्रबल संभावना हो कि नहीं देगा, तो मुस्तहब भी नहीं। (पृष्ठ 36, 672)
- अगर प्रबल संभावना हो कि पानी एक मील से कम की दूरी पर है तो तलाश करना वाजिब है, और अगर शक हो तो मुस्तहब है, वर्ना मुस्तहब भी नहीं। (पृष्ठ 37, 672)
- नमाज़ में दूसरे के पास पानी देखा और प्रबल संभावना है कि मांगने पर दे देगा, तो हालांकि नियत तोड़ना वाजिब है, लेकिन अगर नमाज़ पूरी करके मांगा और उसने नहीं दिया, तो नमाज़ हो गई और तयम्मुम बाक़ी है। (पृष्ठ 37, 672)

पृष्ठ 761 का 10 आई.टी. मजलिस दावत-ए-इस्लामी

فتاویٰ رضویہ - جلد چہارم

فہرست جلد چہارم ابواب و مسائل

باب التیمم

- **بایاں کالم:**
  - تیمم سے نماز پڑھ لینے کے بعد معلوم ہوا کہ دوسرے کے پاس پانی موجود تھا نماز ہو گئی اگر وہ اب پانی دے گا آئندہ کے لیے تیمم ٹوٹے گا۔ (صفحہ ۳۴، ۶۷۱)
  - سو ۱۰۰ آدمی نماز پڑھ رہے تھے ایک شخص پانی لایا اور خاص ایک سے کہا کہ یہ پانی لے اسی کی گئی اور اگر وہ امام ہو تو سب کی گئی۔ (صفحہ ۶۷۱)
  - نماز میں کافر کہے کہ پانی لے تو اس کا اعتبار نہیں پوری کر کے پانی مانگے دے دے تو پھیرے۔ (صفحہ ۶۷۱)
  - اگر کسی وجہ سے معلوم ہو کہ کافر تمسخر سے نہیں کہتا تو نیت توڑنی چاہئے۔ (صفحہ ۶۷۱)
  - اگر کسی فاسق مسخرہ پر ظن ہو کہ براہِ تمسخر کہتا ہے تو نیت توڑنے کی اجازت نہیں۔ (صفحہ ۶۷۱)
  - نماز میں معلوم ہوا یا یاد آیا کہ دوسرے کے پاس پانی ہے اگر ظن غالب ہو کہ مانگے سے دے دے گا نیت توڑ دے ورنہ جائز نہیں۔ (صفحہ ۳۴، ۶۷۱)
- **دایاں کالم:**
  - تیمم سے نماز پڑھتا تھا نماز میں سراب پر نظر پڑی تو کیا کرے۔ (صفحہ ۳۴، ۶۷۱)

- گمان غالب ہو کہ مانگے سے دے دے گا نیت توڑنا واجب ہے۔ (صفحہ ۳۵، ۶۷۲)
- تیمم سے نماز کامل ہے تیمم طہارت کاملہ ہے۔ (صفحہ ۳۵، ۶۷۲)
- نماز میں پانی دیکھا اور پوری کرلی اگر دینے میں شک ہو تو مانگنا مستحب ہے اور ظن غالب ہو کہ نہ دے گا تو مستحب بھی نہیں۔ (صفحہ ۳۶، ۶۷۲)
- اگر ظن غالب ہو کہ پانی ایک میل سے کم ہے تو تلاش واجب ہے اور شک ہو تو مستحب ہے ورنہ مستحب بھی نہیں۔ (صفحہ ۳۷، ۶۷۲)
- نماز میں دوسرے کے پاس پانی دیکھا اور ظن غالب ہے کہ مانگے سے دے دے گا تو اگر چہ نیت توڑنا واجب ہے لیکن اگر نماز پوری کر کے مانگا اور اس نے نہ دیا تو نماز ہوگئی اور تیمم باقی ہے۔ (صفحہ ۳۷، ۶۷۲)

- **Volume 4**
- **Fatawa Rizwia**
- (Right Column)
    - 39, 672: A person gifted water jointly to several people and they took possession of it; in this case, no one's Tayammum will be invalidated.
    - 40, 672: If he gifted it to only one of them, then after taking possession, his Tayammum is invalidated, but if he was the Imam, then everyone's prayer is valid even if the Tayammum of others was not invalidated.
    - 40, 672: A congregation is taking place with Tayammum, and a person brought water and said, "I have gifted this to all of you," or said to someone other than the Imam, "I have gifted this to you." After the Imam's salam, he asked for water and the person gave it; the prayer of all is valid.
    - 42, 673: Before starting prayer, if it's known someone else has water and there is a strong belief they will give it if asked, then asking is mandatory (wajib). If there's doubt, it's recommended (mustahab), otherwise, it's not even recommended.
    - 58, 673: Water for purification is not freely shared during travel because providing it involves much difficulty.
    - 59, 673: Ten scenarios in which there is a strong presumption that water will be given.
    - 69, 673: An item that prevents Tayammum, if found while in a state of Tayammum, will break the Tayammum.
    - 72, 673: Here, the actual giving or not giving of water is what matters, regardless of what his belief was. Yes, if the actual situation is not revealed, then it depends on his belief.
- (Left Column)
    - 3, 7, 72: In the wilderness, the proximity of water was unknown. He asked a knowledgeable person but they didn't disclose it. He prayed after Tayammum; the prayer is valid.
    - 4, 7, 72: A person who knew was present, but he did not ask and performed the prayer. Later he inquired and the person told him water was nearby; the prayer is not valid.
    - 4, 7, 72: He asked, and the person heard but remained silent. After the prayer, they mentioned the water; the prayer is valid.

    - 4, 674: There was a strong belief that he wouldn't give it, so he prayed with Tayammum. In the meantime, abundant water reached him and he gave it. What is the ruling?
    - 4, 674: There was a strong belief that he would give it. After the prayer, he asked, but the person refused because the water had been consumed and was low. What is the ruling?
    - 76: Power over water, which makes Tayammum impermissible, is obtained in five ways.
    - 77, 676: He saw water with someone but did not strongly believe they would give it. After the prayer, he asked, and the person said it's finished, "If you had asked earlier, I would have given." This is of no consequence. If the person with water falsely claimed it's finished, it has no effect.
    - 9, 7, 676: By promising to give water, one is considered capable of having water for that specific time only; it will not affect any future time.
- **Page 11 of 761**

• **भाग 4**

• **फ़तावा रज़विया**

• (दायाँ कॉलम)

  ◦ 39, 672: एक व्यक्ति ने कुछ लोगों को संयुक्त रूप से पानी दान (हिबा) किया और उन्होंने उस पर कब्ज़ा कर लिया; इस स्थिति में भी किसी का तयम्मुम समाप्त नहीं होगा।
  ◦ 40, 672: अगर उनमें से केवल एक को दान दिया, तो कब्ज़ा करने के बाद उसका तयम्मुम समाप्त हो जाएगा, लेकिन अगर वह इमाम था तो सबकी नमाज़ हो गई, भले ही औरों का तयम्मुम समाप्त न हुआ हो।
  ◦ 40, 672: तयम्मुम से जमाअत हो रही है और एक व्यक्ति पानी लाया और कहा, "यह मैंने तुम सबको दान किया," या इमाम के सिवा किसी और से कहा, "यह मैंने तुझे दान किया।" सलाम के बाद इमाम ने उससे पानी माँगा और उसने दे दिया; सबकी नमाज़ हो गई।
  ◦ 42, 673: नमाज़ शुरू होने से पहले मालूम हुआ कि दूसरे के पास पानी है। अगर प्रबल संभावना (गालिब गुमान) हो कि माँगने पर दे देगा, तो माँगना वाजिब है। अगर शक हो तो मुस्तहब है, वर्ना मुस्तहब भी नहीं।
  ◦ 58, 673: सफ़र में वज़ू का पानी आसानी से नहीं दिया जाता क्योंकि उसे देने में बहुत परेशानी होती है।
  ◦ 59, 673: दस स्थितियाँ जिनमें पानी मिलने की प्रबल संभावना होती है।
  ◦ 69, 673: जिस चीज़ के मौजूद होने पर तयम्मुम नहीं हो सकता, अगर तयम्मुम की हालत में वह चीज़ मिल जाए, तो वह तयम्मुम को तोड़ देगी।
  ◦ 72, 673: यहाँ वास्तव में पानी देने या न देने का विचार है, भले ही उसका गुमान कुछ भी हो। हाँ, अगर असलियत सामने न आए तो उसके गुमान पर ही दारोमदार है।

• (बायाँ कॉलम)

  ◦ 3, 7, 72: जंगल में पानी की नज़दीकी मालूम नहीं थी। जानने वाले से पूछा, उसने नहीं बताया। तयम्मुम से नमाज़ पढ़ ली, नमाज़ हो गई।
  ◦ 4, 7, 72: बताने वाला मौजूद था और उसने नहीं पूछा और नमाज़ पढ़ ली, फिर पूछताछ की और उसने पानी नज़दीक बताया; नमाज़ नहीं हुई।

- 4, 7, 72: उसने पूछा और उसने सुना और कुछ न बोला, नमाज़ के बाद पानी का बताया; नमाज़ हो गई।
- 4, 674: प्रबल संभावना थी कि वह नहीं देगा, तयम्मुम से नमाज़ पढ़ ली। इसी बीच उसके पास बहुत सारा पानी आ गया और उसने दे दिया, तो क्या हुक्म है।
- 4, 674: प्रबल संभावना थी कि वह दे देगा। नमाज़ के बाद माँगा तो उसने मना कर दिया क्योंकि इसी बीच पानी खर्च होकर कम रह गया था, तो क्या हुक्म है।
- 76: पानी पर अधिकार जिससे तयम्मुम नाजायज़ हो जाता है, पाँच तरह से प्राप्त होता है।
- 77, 676: किसी के पास पानी देखा और उसे मिलने की प्रबल संभावना नहीं थी। नमाज़ के बाद माँगा तो उसने कहा कि खर्च हो गया, "पहले माँगते तो दे देता"; इसका कोई एतबार नहीं। पानी जिसके पास है उसने ग़लत बहाना किया कि खर्च हो गया, तो उसका कोई असर नहीं।
- 9, 7, 676: पानी देने का वादा करने से उसी समय के लिए पानी पर समर्थ माना जाएगा; भविष्य के किसी समय पर इसका कोई प्रभाव नहीं होगा।

• **पृष्ठ 11 का 761**

- **جلد چہارم**
- **فتاویٰ رضویہ**
- (دایاں کالم)
  - ۳۹، ۶۷۲: ایک شخص نے چند آدمیوں کو پانی مشترکاً ہبہ کیا اور انہوں نے قبضہ کر لیا جب بھی تیمم کسی کا نہ جائے گا۔
  - ۴۰، ۶۷۲: اگر ان میں صرف ایک کو ہبہ کیا تو بعد قبضہ اسی کا تیمم جاتا رہا لیکن اگر وہ امام تھا تو نماز سب کی گئی اگرچہ اوروں کا تیمم نہ گیا۔
  - ۴۰، ۶۷۲: تیمم سے جماعت ہو رہی ہے اور ایک شخص پانی لایا اور کہا یہ میں نے تم سب کو ہبہ کیا، یا امام کے سوا کسی اور کو کہا یہ میں نے تجھے ہبہ کیا، بعد سلام امام نے اس سے پانی مانگا اس نے دے دیا سب کی نماز گئی۔
  - ۴۲، ۶۷۳: شروع نماز سے پہلے دوسرے کے پاس پانی معلوم ہوا اگر غالب گمان ہو کہ مانگے سے دے دے گا تو مانگنا واجب، شک ہے تو مستحب، ورنہ مستحب بھی نہیں۔
  - ۵۸، ۶۷۳: آبِ طہارت سفر میں مبذول نہیں کہ اس کے دینے میں بہت تکلف ہوتا ہے۔
  - ۵۹، ۶۷۳: دس صورتیں جن میں پانی دے دینے کا ظنِ غالب ہوتا ہے
  - ۶۹، ۶۷۳: جس چیز کے ہوتے ہوئے تیمم نہ ہو سکتا ہو تیمم کی حالت میں جب وہ شے پائی جائے گی اسے توڑ دے گی۔
  - ۷۲، ۶۷۳: یہاں واقعی پانی دینے نہ دینے کا اعتبار ہے اسے گمان کچھ ہو۔ ہاں اگر واقع کا حال نہ کھلا تو اس کے گمان پر مدار ہے۔

- (بایاں کالم)

    - ۳، ۷، ۷۲: جنگل میں پانی کا قرب معلوم نہ تھا جاننے والے سے پوچھا اس نے نہ بتایا تیمم سے پڑھ لی نماز ہو گئی۔
    - ۴، ۷، ۷۲: بتانے والا موجود تھا اور اس نے نہ پوچھا اور نماز پڑھ لی پھر دریافت کیا اور اس نے پانی قریب بتایا نماز نہ ہوئی۔
    - ۴، ۷، ۷۲: اس نے پوچھا اور اس نے سنا اور کچھ نہ بولا بعد نماز پانی بتایا نماز ہوگئی۔
    - ۴، ۶۷۴: گمان غالب تھا کہ نہ دے گا تیمم سے نماز پڑھ لی اتنے میں اس کے پاس پانی کثیر آگیا اور دے دیا تو کیا حکم ہے۔
    - ۴، ۶۷۴: گمان غالب تھا کہ دے دے گا بعد نماز مانگا اس نے انکار کر دیا اس لیے کہ اتنے میں پانی خرچ ہو کر کم رہ گیا تھا تو کیا حکم ہے۔
    - ۷۶: پانی پر قدرت جس سے تیمم ناجائز ہو پانچ طرح حاصل ہوتی ہے۔
    - ۷۷، ۶۷۶: کسی کے پاس پانی دیکھا اور دینے کا غالب گمان نہ ہوا بعد نماز مانگا اس نے کہا خرچ ہو گیا پہلے مانگتے تو دے دیتا اس کا کچھ اعتبار نہیں۔ پانی جس کے پاس ہے اس نے غلط حیلہ کر دیا کہ خرچ ہو گیا تو اس کا کچھ اثر نہیں۔
    - ۹، ۷، ۶۷۶: پانی دینے کا وعدہ کرنے سے اسی وقت کیلئے پانی پر قادر سمجھا جائے گا کسی آئندہ وقت پر اس کا اثر نہ ہوگا۔

- **صفحہ 11 از 761**

Fatawa Razawiya Volume 4

Topic	Page/ Ref	Topic	Page/ Ref
Power will be established from the promised time, not before.	80, 672	Remaining silent upon being asked is also a refusal if there is no evidence to the contrary.	118, 677
It is the beginning of the time and water is a mile away; even if there is a presumption of reaching there by mid-time, delay is not obligatory but only recommended (mustahabb).	82, 674	Consideration of the state of the time, the asker, and the silent person, and their mutual relations is necessary, as it sometimes reveals that silence was not based on refusal.	119, 677
Meaning of having power over water.	84, 675	Description of indications due to which refusal is not established.	120
There are fourteen (14) situations regarding the hope of getting water at the end of the time, in which the ruling is that waiting until the disliked (makruh) time arrives is recommended.	98, 675	Details of six (6) situations of silence upon asking for water and their rulings, with research by the author.	121
In the wilderness, if it's unknown whether water is a mile away or less, and one performed Tayammum and prayed, the prayer is valid. Searching is not mandatory unless there's a strong assumption it's less than a mile.	107, 676	If one saw water but didn't ask, neither before nor after prayer, and learned of its need after the time passed, and then brought water, the prayer should be repeated.	123, 677
It is known that water is less than two miles away and one will reach it during the	107, 676	If one saw water, didn't ask, and prayed with	124, 677

Topic	Page/ Ref	Topic	Page/ Ref
recommended time, but it's unknown if it's one mile or less; it's permissible to perform Tayammum and pray. Even if it later turns out to be less than a mile, the prayer is valid. However, if there was a strong presumption it's less than a mile and one didn't search and prayed with Tayammum, the prayer is invalid even if it's later found to be a mile or more away.		Tayammum while watching it, and water was given after the time, then apparently, the prayer must still be repeated.	
A promise to give water after the time is not effective. A promise giving hope of getting water within the time, if made before prayer, is absolutely effective even if it is not fulfilled later.	114, 677	General rules regarding giving water after prayer.	125
What is the ruling if the promise to give within the time is fulfilled after the prayer?	114, 677	Giving water after refusal is not useful unless it is given before the prayer is completed.	25, 1, 677
Situations indicating refusal through conduct.	117, 677	If water was given but its use was forbidden, how far is this prohibition effective? Situations with research by the author.	126
He asked for water, and the person gave it to someone else; what is the ruling?	118, 677	Twenty-five (25) situations in which Tayammum is permitted despite the presence of water.	127

फ़तावा रज़विया, खंड 4

विषय	पृष्ठ/संदर्भ
शक्ति वादे के समय से स्थापित होगी, पहले से नहीं।	80, 672
आरंभिक समय है और पानी एक मील की दूरी पर है; भले ही मध्य समय तक वहां पहुंचने का गुमान हो, विलंब अनिवार्य नहीं बल्कि केवल मुस्तहब (पसंदीदा) है।	82, 674
पानी पर शक्ति होने का अर्थ।	84, 675
समय के अंत में पानी मिलने की आशा की चौदह (14) स्थितियाँ हैं, जिनमें नियम यह है कि मकरूह (नापसंदीदा) समय आने तक प्रतीक्षा करना मुस्तहब है।	98, 675
जंगल में ज्ञात नहीं कि पानी एक मील दूर है या कम, तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली, तो हो गई; उस पर तलाश करना भी आवश्यक नहीं जब तक कि एक मील से कम होने का प्रबल अनुमान न हो।	107, 676
मांगे जाने पर चुप रहना भी इनकार है यदि इसके विपरीत कोई संकेत न हो।	118, 677
समय, मांगने वाले और चुप रहने वाले की स्थितियों और आपसी संबंधों पर नज़र डालना ज़रूरी है, क्योंकि इससे कभी-कभी ज़ाहिर होता है कि चुप्पी इनकार पर आधारित नहीं थी।	119, 677
उन संकेतों का वर्णन जिनके कारण इनकार साबित नहीं होता।	120
पानी मांगने पर चुप्पी की छह (6) स्थितियाँ और उनके नियमों का विवरण, लेखक के शोध के साथ।	121
पानी देखा और न मांगा न नमाज़ से पहले न बाद में और समय निकलने के बाद उसकी आवश्यकता का पता चला और पानी लाया तो नमाज़ दोहरानी चाहिए।	123, 677

विषय	पृष्ठ/संदर्भ	विषय	पृष्ठ/संदर्भ
ज्ञात है कि पानी दो मील से कम है और मुस्तहब समय में वहां पहुंच जाएगा और यह ज्ञात नहीं कि एक मील है या उससे भी कम, तो तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ना जायज़ है। फिर भले ही एक मील से कम ही निकले नमाज़ हो गई; हाँ, अगर यह प्रबल अनुमान था कि एक मील से कम है और तलाश नहीं की और तयम्मुम से नमाज़ पढ़ ली तो नमाज़ नहीं हुई भले ही बाद में एक मील या उससे अधिक दूर होना ज़ाहिर हो।	107, 676	पानी देखा और न मांगा और तयम्मुम से पढ़ी और वह देखता रहा और पानी समय के बाद दिया गया तो ज़ाहिर है अब भी नमाज़ का इआदा (दोहराना) चाहिए।	124, 677
यह वादा कि समय के बाद दूंगा, प्रभावी नहीं है। वह वादा जिससे समय में पानी मिलने की आशा हो, यदि नमाज़ से पहले हो तो बिल्कुल प्रभावी है भले ही बाद में वादा पूरा न हो।	114, 677	नमाज़ के बाद पानी देने में नियमों का प्रबंध।	125
समय में देने का वादा यदि नमाज़ के बाद हो तो क्या नियम है?	114, 677	इनकार के बाद देना लाभदायक नहीं है सिवाय इसके कि नमाज़ पूरी होने से पहले दे दे।	25, 1, 677
देने से इनकार की सांकेतिक स्थितियाँ।	117, 677	पानी दिया और उपयोग से मना कर दिया तो यह मनाही कहाँ तक प्रभावी है? इसकी स्थितियाँ, लेखक के शोध के साथ।	126
उसने मांगा और उसने पानी दूसरे को दे दिया तो क्या नियम है?	118, 677	पच्चीस (25) स्थितियाँ जिनमें पानी होते हुए भी तयम्मुम का नियम है।	127

فتاوی رضویہ جلد چہارم

عنوان	صفحہ
وقت وعدہ سے قدرت ثابت ہوگی پہلے سے نہیں۔	۸۰، ۶۷۲
اول وقت ہے اور پانی ایک میل فاصلہ پر ہے اگرچہ وسط وقت میں وہاں تک پہنچ جانے کا گمان ہو تاخیر واجب نہیں صرف مستحب ہے۔	۸۲، ۶۷۴
پانی پر قدرت کے معنی	۸۴، ۶۷۵
آخر وقت میں پانی ملنے کی امید کی چودہ ۱۴ صورتیں ہیں جن میں حکم ہے کہ وقت کراہت نہ آنے تک انتظار مستحب ہے۔	۹۸، ۶۷۵
مانگنے پر چپ رہنا بھی انکار ہے اگر کوئی قرینہ خلاف پر نہ ہو۔	۱۱۸، ۶۷۷
اس وقت اور مانگنے والے اور سکوت کرنے والے کی حالتوں اور باہمی تعلقات پر نظر ضرور ہے کہ اس سے کبھی ظاہر ہوتا ہے کہ سکوت بر بنائے منع نہ تھا۔	۱۱۹، ۶۷۷
ان قرینوں کا بیان جن کے سبب انکار ثابت نہیں ہوتا۔	۱۲۰
پانی مانگنے پر سکوت کی چھ ۶ صورتیں اور ان کے احکام کی تفصیل تحقیق مصنف سے۔	۱۲۱

عنوان	صفحہ
جنگل میں معلوم نہیں کہ پانی ایک میل دور ہے یا کم ، تیمم کرکے نماز پڑھ لی ، ہو گئی ، اس پر تلاش کرنا بھی لازم نہیں جب تک ایک میل سے کم کا ظن نہ ہو۔	۱۰۷، ۶۷۶
معلوم ہے کہ پانی دو میل سے کم ہے وقت مستحب میں اس تک پہنچ جاؤں گا اور یہ معلوم نہیں کہ ایک میل ہے یا اس سے بھی کم جائز ہے کہ تیمم کرکے پڑھ لے پھر اگرچہ ایک میل سے کم ہی نکلے نماز ہو گئی ، ہاں اگر یہ ظن غالب تھا کہ ایک میل سے کم ہے اور تلاش نہ کیا اور تیمم سے پڑھ لی نماز نہ ہوئی اگرچہ بعد کو ایک میل یا زیادہ ہی دور ہونا ظاہر ہو۔	۱۰۷، ۶۷۶
یہ وعدہ کہ وقت کے بعد دوں گا کچھ موثر نہیں۔ وہ وعدہ جس سے وقت میں پانی ملنے کی امید ہو اگر نماز سے پہلے ہو امطلقاً موثر ہے اگر چہ بعد کو وفا بھی نہ ہو۔	۱۱۴، ۶۷۷
پانی دیکھا اور نہ مانگا نہ نماز سے پہلے نہ بعد اور اسے وقت نکل جانے کے بعد اس کی حاجت پر اطلاع ہوئی اور پانی لایا تو نماز پھیرنا چاہیے۔	۱۲۳، ۶۷۷
پانی دیکھا اور نہ مانگا اور تیمم سے پڑھی اور وہ دیکھتا رہا اور پانی بعد وقت دیا تو ظاہر اب بھی اعادہ نماز چاہیے۔	۱۲۴، ۶۷۷
نماز کے بعد پانی دینے میں ضابطہ احکام۔	۱۲۵

عنوان	صفحہ
وقت میں دینے کا وعدہ اگر بعد نماز ہو تو کیا حکم ہے۔	۱۱۴، ۶۷۷
دینے سے دلالتہ انکار کی صورتیں۔	۱۱۷، ۶۷۷
اس نے مانگا اس نے پانی دوسرے کو دے دیا تو کیا حکم ہے۔	۱۱۸، ۶۷۷

عنوان	صفحہ
انکار کے بعد دینا مفید نہیں مگر یہ کہ نماز پوری ہونے سے پہلے دے دے۔	۲۵، ۶۷۷،۱
پانی دیا اور استعمال سے منع کر دیا تو یہ منع کہاں تک موثر ہے اس کی صورتیں تحقیق مصنف سے۔	۱۲۶
پچیس ۲۵ صورتیں جن میں پانی ہوتے ہوئے تیمم کا حکم ہے۔	۱۲۷

Fatawa Razawiyya Volume 4

Page 13 of 761

- Whether prayer is valid or not after investigating that there is a high probability of finding water but performing Tayammum without asking for it? (Ref: 128, 197, 682)
- A person in a state of major ritual impurity (Junub) had only enough water for Wudu (ablution). He only performed Tayammum. Now, if a minor ritual impurity (Hadath) occurs, he must perform Wudu. (Ref: 682)
- What is the ruling for a person in a forest who prays without asking someone present who knows about the water situation? (Ref: 155, 678, 199, 682)
- If some part of the body remains dry during bathing and water runs out, perform Tayammum. If a minor ritual impurity occurs after this, perform a second Tayammum. (Ref: 682)
- 19 rules from the author's research on the matters of asking for water, giving it, or refusing to give it. (Ref: 678, 203, 682)
- During bathing, if some part of the body remains dry and water is finished, then whatever water is obtained should be poured over that spot so that the state of Janabat (major ritual impurity) is reduced. (Ref: 682)
- If someone is in a state of Janabat along with minor ritual impurity and cannot bathe but can perform Wudu, then even Wudu should not be performed; only Tayammum is sufficient. (Ref: 681, 190, 203, 682)
- During bathing, if the organs for Wudu and some other part of the body remain dry, and then enough water is obtained which is sufficient for only one of them, then one can use it for whichever part they wish, and performing Wudu is better. (Ref: 682)
- Further support for Tayammum due to shortage of time. (Ref: 190, 231, 682)
- A Junub (one in state of Janabat) performed Wudu and there was no more water left, so he performed Tayammum. Now, whatever water he finds, he does not need to wash the Wudu organs; he should wash the rest of the body, and the Ghusl (ritual bath) will be complete. The organs that were washed first have become pure in the sense that they do not need to be washed again, not that the actions forbidden for a Junub become permissible for them. (Ref: 682)
- Water and soil cannot be combined in one act of purification. (Ref: 681, 191, 258, 682)

- A Junub took a bath but some part of the back remained dry, then a minor impurity occurred. He should perform one Tayammum for both. If enough water is found for only one of them, then Tayammum will break for that one but remain valid for the other. If water is enough for only one and cannot suffice for both, he should wash for Janabat and, according to the more correct opinion, redo Tayammum for the minor impurity. (Ref: 682)
- Every impurity, whether small or large, arrives simultaneously and leaves simultaneously; there are no segments in it. (Ref: 681, 191, 262, 682)
- In the same situation, if Janabat was not washed but Wudu was performed, then by consensus, Tayammum for Janabat must be performed again. (Ref: 682)
- If most of the organs for Wudu are injured, only perform Tayammum; similarly, if most of the body is injured, only perform Tayammum. (Ref: 681, 191, 266, 683)
- Any minor impurity occurring before Ghusl or Tayammum for Janabat will also be removed by that Ghusl or Tayammum. However, if a Junub washed the Wudu organs and then a minor impurity occurred, washing the rest of the body will complete his Ghusl, but this minor impurity will not be removed; Wudu or Tayammum is necessary for it. (Ref: 683)
- If in Wudu or Ghusl a spot the size of a fingernail remains dry, perform Tayammum. Washing that much of the body is not enough, but when enough water is obtained to pour over that fingernail-sized spot, Tayammum will break; pouring it there will complete the Ghusl. (Ref: 681, 191, 266, 683)
- Water purifies only the spot it passes over, while in Tayammum, soil passes over the face and hands and purifies the entire body. (Ref: 683)

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

पृष्ठ 13/761

- इसकी जाँच कि क्या पानी मिलने का प्रबल अनुमान होने पर बिना मांगे तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ लेने से नमाज़ होगी या नहीं। (संदर्भ: १२८, १९७, ६८२)
- जुनुब (जनाबत की अवस्था में व्यक्ति) के पास सिर्फ वज़ू के लायक पानी था, उसने केवल तयम्मुम किया, अब अगर हदस (लघु अशुद्धि) हो जाए तो वज़ू करे। (संदर्भ: ६८२)
- जंगल में जिससे पानी के बारे में पूछा जा सकता है वह मौजूद है और बिना पूछे पढ़ ली तो क्या हुक्म है। (संदर्भ: १५५, ६७८, १९९, ६८२)
- नहाने में कुछ जगह रह गई और पानी नहीं रहा, तयम्मुम करे। इसके बाद हदस हो तो दूसरा तयम्मुम करे। (संदर्भ: ६८२)
- पानी मांगने और देने-न देने के मसलों में लेखक के शोध से १९ नियम। (संदर्भ: ६७८, २०३, ६८२)
- नहाने में कुछ बदन बाकी रह गया और पानी खत्म हो गया, अब जितना पानी मिले, उस जगह पर बहा ले ताकि जनाबत (बड़ी अशुद्धि) कम हो जाए। (संदर्भ: ६८२)
- जनाबत के साथ हदस भी है और नहा नहीं सकता, वज़ू कर सकता है तो वज़ू भी न करे, सिर्फ तयम्मुम काफी है। (संदर्भ: ६८१, १९०, २०३, ६८२)
- नहाने में वज़ू के अंग और कुछ और बदन बाकी रह गया, फिर इतना पानी मिला कि उनमें से एक के लिए काफी है, तो जिसमें चाहे खर्च करे और वज़ू बेहतर है। (संदर्भ: ६८२)
- समय की तंगी के लिए तयम्मुम का और अधिक समर्थन। (संदर्भ: १९०, २३१, ६८२)
- जुनुब ने वज़ू कर लिया और पानी नहीं रहा, तयम्मुम किया। अब जो पानी मिले तो वज़ू के अंगों को धोने की उसे आवश्यकता नहीं, बाकी बदन धो ले, ग़ुस्ल (धार्मिक स्नान) उतर जाएगा। जो अंग पहले धो लिए उनकी पवित्रता इसी अर्थ में हो चुकी कि उन्हें दोबारा धोने की ज़रूरत नहीं, न कि उनसे वे काम जायज़ हो जाएँ जो जुनुब को नाजायज़ थे। (संदर्भ: ६८२)
- एक ही पवित्रता (तहारत) की क्रिया में पानी और मिट्टी एक साथ जमा नहीं हो सकते। (संदर्भ: ६८१, १९१, २५८, ६८२)
- जुनुब नहाया और पीठ का कुछ हिस्सा बाकी था, फिर हदस हुआ, दोनों के लिए एक तयम्मुम करे। पानी उनमें से जिसके लिए काफी मिलेगा, उसके हक़ में तयम्मुम टूट जाएगा, दूसरे के

हक़ में बाकी रहेगा। और अगर एक के लिए काफी है, दोनों के लिए नहीं, तो जनाबत धोए और मज़हबे राजह (अधिक सही मत) में हदस का तयम्मुम फिर से करे। (संदर्भ: ६८२)

- हर हदस (अशुद्धि) चाहे वह छोटी हो या बड़ी, एक साथ आती है और एक साथ जाता है, इसमें टुकड़े नहीं होते। (संदर्भ: ६८१, १९१, २६२, ६८२)
- इसी स्थिति में अगर जनाबत नहीं धोयी बल्कि वज़ू कर लिया तो सर्वसम्मति से जनाबत का तयम्मुम फिर से करना होगा। (संदर्भ: ६८२)
- अगर वज़ू के अधिकांश अंग घायल हैं तो सिर्फ तयम्मुम करे, इसी तरह अगर शरीर का अधिकांश भाग घायल है तो सिर्फ तयम्मुम करे। (संदर्भ: ६८१, १९१, २६६, ६८३)
- जनाबत के लिए ग़ुस्ल और तयम्मुम से पहले जो हदस होगा, वह ग़ुस्ल या तयम्मुम उसे भी खत्म कर देगा। लेकिन जुनुब ने वज़ू के अंग धो लिए, इसके बाद हदस हो तो बाकी शरीर धोने से उसका ग़ुस्ल उतर जाएगा, यह हदस नहीं जाएगा, इसके लिए वज़ू या तयम्मुम ज़रूरी है। (संदर्भ: ६८३)
- वज़ू या ग़ुस्ल में अगर नाखून बराबर जगह सूखी रह गई, तयम्मुम करे। उतना शरीर धोना काफी न हुआ, लेकिन जब इतना पानी मिले कि उस नाखून बराबर जगह पर बहने के लिए काफी हो, तो तयम्मुम टूट जाएगा, उसी पर बहाने से ग़ुस्ल हो जाएगा। (संदर्भ: ६८१, १९१, २६६, ६८३)
- पानी केवल उसी स्थान को शुद्ध करता है जहाँ से वह गुजरता है, जबकि तयम्मुम में मिट्टी चेहरे और हाथों पर गुजर कर पूरे शरीर को शुद्ध कर देती है। (संदर्भ: ६८३)

فتاوی رضویہ جلد چہارم

- اس کی تحقیق کہ پانی دینے کا ظن غالب ہو تو بے مانگے تیمّم سے پڑھ لینے سے نماز ہوگی یا نہیں۔ (۱۲۸، ۱۹۷، ۶۸۲)
- جنب کے پاس صرف وضو کے قابل پانی تھا اس نے فقط تیمّم کیا اب حدث ہوا تو وضو کرے۔ (۶۸۲)
- جنگل میں جس سے پانی کا حال پوچھا جاتا ہے موجود ہے اور بے پوچھے پڑھ لی تو کیا حکم ہے۔ (۱۵۵، ۶۷۸، ۱۹۹، ۶۸۲)
- نہانے میں کچھ جگہ رہ گئی اور پانی نہ رہا تیمّم کرے اس کے بعد حدث ہو تو دوسرا تیمّم کرے۔ (۶۸۲)
- پانی مانگنے اور دینے نہ دینے کے مسائل میں ۱۹ قاعدے تحقیقات مصنف سے۔ (۶۷۸، ۲۰۳، ۶۸۲)
- نہانے میں کچھ بدن باقی رہ گیا اور پانی ختم ہو چکا اب جتنا پانی پائے، اس جگہ پر بہا لے کہ جنابت کم ہو جائے۔ (۶۸۲)
- جنابت کے ساتھ حدث بھی ہے اور نہا نہیں سکتا وضو کر سکتا ہے تو وضو بھی نہ کرے صرف تیمّم کافی ہے۔ (۶۸۱، ۱۹۰، ۲۰۳، ۶۸۲)
- نہانے میں اعضائے وضو اور کچھ اور بدن باقی رہ گیا پھر اتنا پانی ملا کہ اُن میں ایک کو کافی ہے تو جس میں چاہے خرچ کرے اور وضو بہتر۔ (۶۸۲)
- تنگی وقت کے لیے تیمّم کی تائید مزید۔ (۱۹۰، ۲۳۱، ۶۸۲)

- جنب نے وضو کرلیا اور پانی نہ رہا تیمّم کیا اب جو پانی ملے تو اعضائے وضو دھونے کی اسے حاجت نہیں بقیہ بدن دھو لے غسل اتر جائے گا۔ جو اعضا پہلے دھولیے ان کی طہارت اسی معنی پر ہو چکی کہ دوبارہ اُن کے دھونے کی حاجت نہیں نہ یہ کہ ان سے وہ کام جائز ہوجائیں جو جنب کو ناجائز تھے۔ (۶۸۲)
- ایک طہارت میں پانی اور مٹی جمع نہیں ہو سکتے۔ (۶۸۱، ۱۹۱، ۲۵۸، ۶۸۲)
- جنب نہایا اور پیٹھ کا کچھ حصہ باقی تھا پھر حدث ہوا دونوں کیلئے ایک تیمّم کرے پانی اُن میں سے جس کیلئے کافی ملے گا تیمّم اس کے حق میں ٹوٹ جائے گا دوسرے کے حق میں باقی رہے گا اور اگر ایک کو کافی ہے دونوں نہ ہو سکیں تو جنابت دھوئے اور مذہبِ راجح میں حدث کا تیمّم پھر کرے۔ (۶۸۲)
- ہر حدث چھوٹا ہو یا بڑا آتا ہے تو ایک ساتھ، جاتا ہے تو ایک ساتھ، اس میں ٹکڑے نہیں۔ (۶۸۱، ۱۹۱، ۲۶۲، ۶۸۲)
- اسی صورت میں اگر جنابت نہ دھوئی بلکہ وضو کرلیا تو جنابت کا تیمّم بالاتفاق پھر کرنا ہوگا۔ (۶۸۲)
- اکثر اعضائے وضو زخمی ہیں تو صرف تیمّم کرے یوں ہی اکثر بدن زخمی ہے تو فقط تیمّم کرے۔ (۶۸۱، ۱۹۱، ۲۶۶، ۶۸۳)
- جنابت کیلئے غسل و تیمّم سے پہلے جو حدث ہوگا وہ غسل یا تیمّم اسے بھی زائل کردے گا لیکن جنب نے اعضائے وضو دھو لیے اس کے بعد حدث ہو تو بقیہ بدن دھونے سے اس کا غسل اتر جائے گا یہ حدث نہ جائے گا اس کیلئے وضو یا تیمّم ضرور ہے۔ (۶۸۳)

- وضو یا غسل میں اگر ناخن بھر جگہ پانی بننے سے رہ گئی تیمّم کرے اُتنا جسم دھونا کافی نہ ہو ا مگر جب اتنا پانی ملے کہ اس ناخن بھر جگہ پر بہنے کو کافی ہو تیمّم ٹوٹ جائے گا اسی پر بہانے سے غسل اُتر جائے گا۔ (۶۸۱، ۱۹۱، ۲۶۶، ۶۸۳)
- پانی اُتنی ہی جگہ کو پاک کرتا ہے جہاں گزرے اور مٹی چہرہ و دست پر گزر کر سارے بدن کو۔ (۶۸۳)

Fatawa Razawiyya Volume 4

- Performing Tayammum for ritual impurity (Janabat), then minor impurity (Hadath) occurs, then Wudu is performed, then bathing water is found but the person doesn't bathe. Ritual impurity returns, but the limbs washed during Wudu remain pure. (Page 267, 683) | Research into the two types of combined Hadath and Janabat and their rulings. (Page 275)
- In the aforementioned case, if ritual impurity returns and then minor impurity occurs again and water for Wudu is available, Wudu must be performed in any case. (Page 268, 6, 83) | Twelve (12) cases of 'Hadath Mundaraj' (subordinate minor impurity). Ten (10) cases of 'Hadath Mustaqil' (independent minor impurity) that is not subordinate to Janabat. (Page 276)
- In the same situation, if water for Wudu was not available and Tayammum was done for Janabat, the Hadath will also be removed, but only until water for Wudu is found. (Page 268, 684) | General rule for a minor impurity to be independent (Mustaqil). (Page 276)
- Description of subordinate (Tabi') and independent (Mustaqil) Hadath and the rulings for independent Hadath. | Subordinate Hadath has no separate ruling. 16 issues detailing it and independent Hadath from the author's benefits. (Page 277)
- Rulings for subordinate (Tabi') Hadath. (Page 268, 684) | Subordinate Hadath has no separate ruling. 16 issues detailing it and independent Hadath from the author's benefits. (Page 277)
- A person in a state of Janabat performed Tayammum, then minor impurity occurred and they did not perform Wudu. They found water for bathing but didn't bathe, so Janabat returned. They moved away more than a mile from the water, and now only have enough water for Wudu; Wudu is not needed. (Page 268, 684) | Types and rulings of independent Hadath. (Page 280)
- In the aforementioned case, for any Hadath that occurs after Janabat returns, the Tayammum for Janabat is sufficient. However, if minor impurity occurs after Tayammum or Wudu, Wudu is mandatory. (Page 270, 6, 84) | A person in a state of Janabat performed Wudu, then minor impurity occurred, then they performed full Wudu except for one segment of a finger. Although they will perform Tayammum for Janabat, if they find water sufficient for that finger segment, they must wash it; Tayammum will not be enough. (Page 280, 285)

- A person in a state of Janabat prayed after Tayammum, then minor impurity occurred. They performed Wudu and wore socks (Khuffs). Then they passed water but didn't bathe, moved a mile away. At prayer time, water for Wudu is available. Wudu is not needed; they should perform Tayammum for Janabat. If minor impurity occurs after that, they must perform Wudu and take off their socks to wash their feet, because wiping over socks is not allowed for someone in Janabat. (Page 270, 684) | If a person with minor impurity finds only enough water to wash limbs once, they cannot perform Tayammum. If they were in a state of Tayammum and found that much water, it is voided. (Page 282, 285)
- Research on whether minor impurity occurs before, with, or after Janabat, and an explanation of the cases. (Page 274) | Whether it is minor impurity, Janabat, or both, a single Tayammum with the intention of any of them is sufficient. (Page 285)

फ़तावा रज़विया जिल्द 4

- जनाबत के लिए तैयम्मुम किया फिर हदस (नापाकी) हुई, वज़ू किया फिर नहाने का पानी पाया और न नहाया तो जनाबत लौट आई मगर वज़ू के अंगों की पाकी (शुद्धता) न गई। (पृष्ठ 267, 683) | इस पर शोध कि हदस और जनाबत के जमा होने की दो किस्में हैं और उनके हुक्मों का बयान। (पृष्ठ 275)
- उक्त सूरत में अगर जनाबत लौटने के बाद फिर हदस हुआ और वज़ू के लायक पानी मिला, तो बहरहाल वज़ू करना होगा। (पृष्ठ 268, 6, 83) | हदस-ए-मुन्दरज यानी जनाबत के ताबे (अधीन) हदस की बारह 12 सूरतें हैं। हदस-ए-मुस्तकिल जो जनाबत के ताबे न हो उसकी दस सूरतें हैं। (पृष्ठ 276)
- इसी सूरत में अगर वज़ू के लायक पानी न था और जनाबत के लिए तैयम्मुम किया तो हदस भी उठ जाएगा मगर सिर्फ उस वक्त तक कि वज़ू के काबिल पानी पाए। (पृष्ठ 268, 684) | हदस मुस्तकिल होने का ज़ाबता-ए-कुल्लिया (सामान्य नियम)। (पृष्ठ 276)
- हदस-ए-ताबे और मुस्तकिल का बयान और हदस-ए-मुस्तकिल के अहकाम। | हदस-ए-मुन्दरज कोई हुक्म नहीं रखता और उसकी और हदस-ए-मुस्तकिल की तफ़सील अहकाम में 16 मसले मुसन्निफ़ के अफ़ादात से। (पृष्ठ 277)
- हदस-ए-ताबे के अहकाम। (पृष्ठ 268, 684) | हदस-ए-मुन्दरज कोई हुक्म नहीं रखता और उसकी और हदस-ए-मुस्तकिल की तफ़सील अहकाम में 16 मसले मुसन्निफ़ के अफ़ादात से। (पृष्ठ 277)
- जुनुब ने तैयम्मुम किया फिर हदस हुआ और उसके लिए वज़ू न किया था कि नहाने के काबिल पानी मिला और न नहाया जिससे जनाबत लौटकर बाकी रही और पानी छोड़कर मील भर से ज़्यादा चला गया और अब पानी सिर्फ वज़ू के काबिल पाया, वज़ू की हाजत नहीं। (पृष्ठ 268, 684) | हदस मुस्तकिल की सूरतें और उनके अहकाम। (पृष्ठ 280)
- उक्त सूरत में जनाबत लौटने के बाद जितने हदस होंगे उनके लिए वही तैयम्मुम-ए-जनाबत काफी है, हाँ अगर तैयम्मुम या वज़ू के बाद फिर हदस हो तो वज़ू लाज़िम है। (पृष्ठ 270, 6, 84) | जुनुब ने वज़ू किया फिर हदस हुआ फिर सारा वज़ू किया मगर एक उंगली की एक पोर छोड़ दी, तो अगरचे जनाबत के लिए तैयम्मुम करेगा मगर उस पोर के काबिल पानी मिले तो उसे धोना ज़रूरी है, तैयम्मुम काफी न होगा। (पृष्ठ 280, 285)

- जुनुब ने तैयम्मुम से नमाज़ पढ़ी फिर हदस हुआ और वज़ू करके मोज़े पहने फिर पानी पर गुज़रा और बे-नहाए एक मील चला गया और नमाज़ का वक्त आया, वज़ू को पानी मौजूद है, वज़ू की हाजत नहीं, जनाबत का तैयम्मुम करे। हाँ, उसके बाद हदस हो तो वज़ू करे और उसमें मोज़े उतारकर पाँव धोए कि जुनुब के लिए मोज़ों का मसह नहीं। (पृष्ठ 270, 684) | मुहदिस ने अगर सिर्फ एक बार अंग धोने लायक पानी पाया तो तैयम्मुम नहीं कर सकता और अगर तैयम्मुम था और इतना पानी मिला तो तैयम्मुम टूट गया। (पृष्ठ 282, 285)
- इसकी तहक़ीक़ कि हदस कभी जनाबत से पहले होता है कभी साथ, कभी बाद और उसकी सूरतों का बयान। (पृष्ठ 274) | हदस हो या जनाबत या दोनों, एक तैयम्मुम उनमें से जिसकी नियत से चाहे कर ले काफी है। (पृष्ठ 285)

فتاویٰ رضویہ جلد چہارم

- جنابت کیلئے تیمم کیا پھر حدث ہوا وضو کیا پھر نہانے کا پانی پایا اور نہ نہایا تو جنابت لوٹ آئی مگر اعضائے وضو کی طہارت نہ گئی۔ ۲۶۷، ۶۸۳ | اس کی تحقیق کہ حدث وجنابت جمع ہونے کی دو قسمیں ہیں اور ان کے احکام کا بیان۔ ۲۷۵
- صورت مذکورہ میں اگر جنابت لوٹ آنے کے بعد پھر حدث ہوا اور قابل وضو پانی پائے، بہر حال وضو کرنا ہوگا۔ ۲۶۸، ۶، ۸۳ | حدث مندرج یعنی تابع جنابت کی بارہ ۱۲ صورتیں ہیں۔ حدث مستقل کہ تابع جنابت نہ ہو اس کی دس صورتیں ہیں۔ ۲۷۶
- اسی صورت میں اگر قابل وضو پانی نہ تھا اور جنابت کیلئے تیمم کیا تو حدث بھی اٹھ جائے گا مگر صرف اس وقت تک کہ وضو کے قابل پانی پائے۔ ۲۶۸، ۶۸۴ | حدث مستقل ہونے کا ضابطہ کلیہ۔ ۲۷۶
- حدث تابع و مستقل کا بیان اور حدث مستقل کے احکام۔ | حدث مندرج کوئی حکم نہیں رکھتا اور اس کی اور حدث مستقل کی تفصیل احکام میں ۱۶ مسئلے افادات مصنف سے۔ ۲۷۷
- حدث تابع کے احکام۔ ۲۶۸، ۶۸۴ | حدث مندرج کوئی حکم نہیں رکھتا اور اس کی اور حدث مستقل کی تفصیل احکام میں ۱۶ مسئلے افادات مصنف سے۔ ۲۷۷
- جنب نے تیمم کیا پھر حدث ہوا اور اس کے لئے وضو نہ کیا تھا کہ پانی نہانے کے قابل ملا اور نہ نہایا جس سے جنابت عود کر کے باقی رہی اور پانی چھوڑ کر میل بھر سے زیادہ چلا گیا اور اب پانی صرف وضو کے قابل پایا وضو کی حاجت نہیں۔ ۲۶۸، ۶۸۴ | حدث مستقل کی صورتیں اور ان کے احکام۔ ۲۸۰

- صورت مذکورہ میں عود جنابت کے بعد جتنے حدث ہوں گے ان کے لئے وہی تیمم جنابت کافی ہے، ہاں اگر تیمم یا وضو کے بعد پھر حدث ہو تو وضو لازم ہے۔ ۲۷۰، ۶، ۸۴ | جنب نے وضو کیا پھر حدث ہوا پھر سارا وضو کیا مگر ایک انگلی کی ایک پور چھوڑ دی تو اگرچہ جنابت کیلئے تیمم کرے گا مگر اس پور کے قابل پانی ملے تو اسے دھونا ضرور ہے تیمم کافی نہ ہوگا۔ ۲۸۰، ۲۸۵
- جنب نے تیمم سے نماز پڑھی پھر حدث ہوا اور وضو کر کے موزے پہنے پھر پانی پر گزرا اور بے نہائے ایک میل چلا گیا اور نماز کا وقت آیا وضو کو پانی موجود ہے وضو کی حاجت نہیں جنابت کا تیمم کرے، ہاں اس کے بعد حدث ہو تو وضو کرے اور اس میں موزے اتار کر پاؤں دھوئے کہ جنب کیلئے موزوں کا مسح نہیں۔ ۲۷۰، ۶۸۴ | محدث نے اگر صرف ایک بار اعضاء دھونے کے لائق پانی پایا تیمم نہیں کر سکتا اور تیمم تھا اور اتنا پانی ملا لوٹ گیا۔ ۲۸۲، ۲۸۵
- اس کی تحقیق کہ حدث کبھی جنابت سے پہلے ہوتا ہے کبھی ساتھ، کبھی بعد اور اس کی صورتوں کا بیان۔ ۲۷۴ | حدث ہو یا جنابت یا دونوں ایک تیمم ان میں سے جس کی نیت سے چاہے کرلے کافی ہے۔ ۲۸۵

Fatawa Razawiyya Volume 4

[Right Column] - If one is traveling and needs wudu, and there is impurity on the clothes in an amount that prevents prayer, and water is only enough to either perform wudu or wash the impurity. It is obligatory upon him to wash the impurity and perform tayammum (dry ablution) for the state of impurity (hadath). (Pages: 209, 685) - The mercy of Allah Almighty that He took into account every single penny of the needy servant, saying: if water is not available for kneading dough, perform tayammum. If water for cleaning after defecation (paisa) is available, and it is not an excessive burden, perform tayammum. (Pages: 317, 685) - It is better to perform tayammum after washing the impurity, and if it was done before, then repeat it. (Pages: 317, 685) - If the remains of major ritual impurity (janabat) persist along with minor ritual impurity (hadath), and water is only sufficient for one, it is mandatory to first wash the remains of janabat and then perform tayammum for hadath. If tayammum was performed first and then water is consumed in that washing, tayammum must be repeated. (Pages: 318, 686) - [Heading] Wiping over Leather Socks (Masah Khaffain) - Wiping over socks is invalidated by removing the socks. If minor ritual impurity (hadath) did not occur after wudu and one removed the socks themselves, or it became necessary to remove them because the duration for wiping expired, just wash the feet. Yes, if minor ritual impurity had occurred after wudu, then you must perform the entire wudu. (Page: 685) - Ruling on wiping over cotton socks. (Page: 345) - Ruling on wiping over boots. (Page: 347) - [Heading] Statement of Menstruation (Haidh) - Ruling on menstruation starting during prayer. (Page: 339) - A woman can perform meditation (muraqaba) during menstruation. (Page: 351) - When is sexual intercourse permissible if menstruation stops in less than ten days? (Page: 352) - Ruling on seeking fulfillment on a woman's back, thighs, etc. (Page: 353)

[Left Column] - Ruling on bread cooked by a menstruating woman and eating with her. (Page: 355) - Ruling for a woman if she becomes clean from postnatal bleeding (nifaas) in eight days. (Page: 356) - Kaffarah (expiation) for having sexual intercourse during menstruation or postnatal bleeding. (Page: 356) - Statement of various narrations and their interpretations regarding the aforementioned kaffarah. (Page: 356) - The value/measure of Sharia Dinar and Sharia Dirham. (Page: 364) - How it is permissible to fulfill sexual needs during the state of menstruation. (Page: 365) - Method of responding to greeting (salam) in a state of major ritual impurity (janabat). (Page: 365) - Is it permissible for a person without wudu to touch a newspaper or book if a Quranic verse is written in it? (Page: 366) - [Heading] Statement of Excused

Person (Ma'zoor) - Rulings for one suffering from hemorrhoids. (Page: 371) - An excused person cannot pray the Ishraq prayer with the wudu performed for the Fajr prayer. (Page: 374) - [Heading] Statement of Impurities (Najasat) - Use of ivory is permissible. (Page: 377)

फतावा रज़विया जिल्द चारम

[दायां कॉलम] - यदि कोई यात्रा में है और वज़ू की ज़रूरत है, और कपड़ों पर नमाज़ में बाधा डालने वाली मात्रा में कोई नजासत (गंदगी) है, और पानी इतना ही है कि या तो वज़ू कर ले या नजासत धो ले। तो उस पर अनिवार्य है कि नजासत धोए और हदस (अशुद्धि) के लिए तयम्मुम करे। (पृष्ठ: २०९, ६८५) - अल्लाह अज़्वजल की दया कि मोहताज बंदे के एक-एक पैसे का लिहाज़ फरमाया कि यदि आटा गूँधने के लिए पानी न रहे तो तयम्मुम करो। यदि ढेले का पानी (शौच के बाद सफाई का पानी) पैसे से मिलता हो और वह भारी बोझ न हो, तो तयम्मुम कर लो। (पृष्ठ: ३१७, ६८५) - बेहतर यह है कि नजासत धोने के बाद तयम्मुम करे, और यदि पहले कर चुका हो तो दोबारा करे। (पृष्ठ: ३१७, ६८५) - यदि जनाबत (बड़ी अशुद्धि) का कुछ हिस्सा बाकी है और हदस (छोटी अशुद्धि) भी है, और पानी केवल एक के लिए पर्याप्त है, तो अनिवार्य है कि पहले जनाबत का हिस्सा धोए और फिर हदस के लिए तयम्मुम करे। यदि पहले तयम्मुम कर लिया और फिर धोने में पानी खर्च हो गया, तो दोबारा तयम्मुम अनिवार्य है। (पृष्ठ: ३१८, ६८६) - [शीर्षक] मसह खफ़्फ़ैन (मोज़ों पर मसह) - मोज़ा उतारने से मोज़े का मसह टूट जाता है। यदि वज़ू के बाद हदस नहीं हुआ और मोज़ा खुद ही उतार दिया या मसह की अवधि समाप्त होने के कारण उतारना आवश्यक हुआ, तो केवल पैर धो लें। हाँ, यदि वज़ू के बाद हदस हुआ था, तो पूरा वज़ू करें। (पृष्ठ: ६८५) - सूती मोज़ों पर मसह का हुक्म। (पृष्ठ: ३४५) - बूट पर मसह का हुक्म। (पृष्ठ: ३४७) - [शीर्षक] हैज़ (मासिक धर्म) का बयान - नमाज़ में हैज़ आ जाने का हुक्म। (पृष्ठ: ३३९) - स्त्री मासिक धर्म की स्थिति में मुराक़बा (ध्यान) कर सकती है। (पृष्ठ: ३५१) - दस दिन से कम हैज़ आने की स्थिति में सहवास कब जायज़ होगा? (पृष्ठ: ३५२) - स्त्री की पीठ, जांघ आदि अंगों पर सुख प्राप्त करने का हुक्म। (पृष्ठ: ३५३)

[बायां कॉलम] - मासिक धर्म वाली स्त्री के हाथ की पकी रोटी और उसे अपने साथ खिलाने का हुक्म। (पृष्ठ: ३५५) - यदि स्त्री प्रसवोत्तर रक्तस्राव (निफास) से आठ दिन में फारिग हो जाए, तो उसका हुक्म। (पृष्ठ: ३५६) - मासिक धर्म और निफास की स्थिति में सहवास करने का कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित)। (पृष्ठ: ३५६) - उक्त कफ़्फ़ारा के बारे में विभिन्न हदीसों और उनके अर्थों का वर्णन। (पृष्ठ: ३५६) - शरई दीनार और शरई दिरहम की मात्रा। (पृष्ठ: ३६४) - मासिक धर्म की स्थिति में ज़रूरत पूरी करना किस प्रकार जायज़ है। (पृष्ठ: ३६५) - जनाबत की स्थिति में सलाम का जवाब देने का तरीका। (पृष्ठ: ३६५) - यदि समाचार पत्र या पुस्तक में कुरान की आयत लिखी हो, तो बिना वज़ू के उसे छूना जायज़ है या नहीं? (पृष्ठ: ३६६) - [शीर्षक] माज़ूर (मजबूर/बीमार) का बयान - बवासीर वाले के अहकाम। (पृष्ठ:

३७१) - माज़ूर व्यक्ति फज्र के वज़ू से इशराक़ की नमाज़ नहीं पढ़ सकता। (पृष्ठ: ३७४) - [शीर्षक] नजासतों (गंदगी) का बयान - हाथी के दांत का उपयोग जायज़ है। (पृष्ठ: ३७७)

فتاویٰ رضویہ جلد چہارم

[دایاں کالم] - سفر میں ہے وضو کی حاجت ہے اور کپڑے پر بقدر مانع نماز کوئی نجاست اور پانی اتنا ہے کہ چاہے وضو کرلے چاہے نجاست دھو لے اس پر لازم ہے کہ نجاست دھوئے اور حدث کیلئے تیمم کرلے۔ (صفحات: ۲۰۹، ۶۸۵) - اللہ عزوجل کی رحمت کہ محتاج بندے کے ایک ایک پیسے کا لحاظ فرمایا کہ آٹا گوندھنے کو پانی نہ رہے گا تو تیمم کرو ڈھیلے کا پانی پیسے کو ملتا ہو تو ہمیلہ زیادہ نہ ہو تیمم کرلو۔ (صفحات: ۳۱۷، ۶۸۵) - افضل یہ ہے کہ نجاست دھونے کے بعد تیمم کرے اور پہلے کر چکا ہو تو دوبارہ کرلے۔ (صفحات: ۳۱۷، ۶۸۵) - اگر جنابت کا بقیہ باقی ہے اور حدث بھی اور پانی ایک ہی کے قابل ملا تو لازم ہے کہ پہلے بقیہ جنابت دھوئے اس کے بعد حدث کا تیمم کرے اگر پہلے تیمم کر لیا تو پانی اس دھونے میں خرچ ہو جانے کے بعد دوبارہ تیمم لازم ہے۔ (صفحات: ۳۱۸، ۶۸۶) - [عنوان] مسح خفین - موزہ اتارنے سے موزہ کا مسح ٹوٹ جاتا ہے اگر وضو کے بعد حدث نہ ہوا اور موزہ خود ہی اتارا یا مسح کی مدت ختم ہونے کے سبب اتارنا ضرور ہوا صرف پاؤں دھو لے ہاں اگر بعد وضو حدث ہوا تھا تو آپ ہی سارا وضو کرے گا۔ (صفحہ: ۶۸۵) - سوتی موزوں پر مسح کا حکم۔ (صفحہ: ۳۴۵) - بوٹ پر مسح کا حکم۔ (صفحہ: ۳۴۷) - [عنوان] حیض کا بیان - نماز میں حیض آجانے کا حکم۔ (صفحہ: ۳۳۹) - عورت بحالت حیض مراقبہ کر سکتی ہے۔ (صفحہ: ۳۵۱) - دس دن سے کم حیض آنے کی صورت میں صحبت کب جائز ہو گی؟ (صفحہ: ۳۵۲) - عورت کے پیٹھ ران وغیرہ اعضاء پر فراغت حاصل کرنے کا حکم۔ (صفحہ: ۳۵۳)

[بایاں کالم] - حیض والی کے ہاتھ کی پکی روٹی اور اس کو اپنے ساتھ کھلانے کا حکم۔ (صفحہ: ۳۵۵) - عورت اگر نفاس سے آٹھ دن میں فارغ ہو جائے تو اس کا حکم۔ (صفحہ: ۳۵۶) - بحالت

حیض و نفاس صحبت کرنے کا کفارہ۔ (صفحہ: ۳۵۶) - درباره کفاره مذکور مختلف روایات اور ان کے محامل کا بیان۔ (صفحہ: ۳۵۶) - دینار شرعی اور درم شرعی کی مقدار۔ (صفحہ: ۳۶۴) - حالت حیض میں ضرورت کو پورا کرنا کس طرح جائز ہے۔ (صفحہ: ۳۶۵) - بحالت جنابت جواب سلام کا طریقہ۔ (صفحہ: ۳۶۵) - اخبار یا کتاب میں آیت قرآن کریم لکھی ہو تو اس کا چھونا بے وضو کیلئے جائز ہے یا نہیں؟ (صفحہ: ۳۶۶) - [عنوان] معذور کا بیان - بواسیر والے کے احکام (صفحہ: ۳۷۱) - معذور صبح کے وضو سے اشراق کی نماز نہیں پڑھ سکتا۔ (صفحہ: ۳۷۴) - [عنوان] نجاستوں کا بیان - ہاتھی دانت کا استعمال جائز ہے۔ (صفحہ: ۳۷۷)

Fatawa Rizvia, Volume 4

- If a mouse falls into wine, the ruling and two methods to purify it: 378 | A dog is not 'Najis al-Ayn' (intrinsically impure), this is the preferred view, and the reasons for preference, Part 1: 431
- In a state of ritual impurity (Janabat), if one sweats and clothes get wet, will they become impure or not?: 380 | Second, third, fourth: 437, 483
- Explanation of colors becoming pure: 381 | Fifth, sixth, seventh: 440, 441
- Widespread occurrence (Umum-i Balwa) in universally agreed-upon impurity, even in a clear textual matter, is a cause for mitigation: 381 | Weakening of the arguments for dogs being 'Najis al-Ayn' for several reasons: 444
- It is not permissible to throw away impure sugar candy, and the method of purifying it: 382 | Reason 1: 444
- Ruling on sugar from tree sap/vinegar juice: 382 | Reason 2, 3: 446
- If a lizard falls into vinegar and is taken out alive, what is the ruling on such vinegar?: 383 | Reason 4: 447
- The method of purifying a liquid thing if it becomes impure: 384 | Part 5: 451
- Is prayer valid in clothes dyed with packet dyes or not?: 389 | Note on Al-Tibi and Majma' al-Bihar: 449
- Is chicken vomit pure or impure?: 390 | General principle: no impurity carries the ruling of impurity in its source: 455
- Does an impure thing become pure in one washing or not?: 392 | There are two meanings for 'so much' (itna) on a thing: 455
- The method of purifying shoes if urine falls on them: 395 | Name of this treatise: 'Removing the Reward from Those Proclaiming the Purity of Dogs': 463
- Nothing becomes impure due to doubt: 396 | The method of purifying if some blood comes out of a scab or pimple: 462
- What is the ruling if mouse droppings are found in cooked khichri, rice, or lime?: 398 | Note on Radd al-Muhtar: 470
- Investigation into whether dogs are 'Najis al-Ayn' or not: 399 | Ruling on the bones of every animal: 471
- Note on Al-Bahr, Al-Durar etc.: 423 | Ruling if a miswak (tooth-stick) is made of elephant ivory bone: 474
- Adhering to disagreement is valid by consensus: 47
- Note on Radd al-Muhtar: 424 | Ruling if a roof plastered with dung leaks and that water touches clothes or other items: 477

- Note on Abi al-Sa'ud: 427

फतवा रज़विया, खंड 4

- यदि चूहा शराब में गिर जाए तो उसका हुक्म और उसे शुद्ध करने के दो तरीके 378 | कुत्ता 'नजिस-अल-ऐन' (मूलतः अशुद्ध) नहीं है, यही प्रबल विचार है, और वरीयता के कारण, प्रथम भाग: 431
- जनाबत (धार्मिक अशुद्धि) की स्थिति में पसीना आने और कपड़े भीगने पर वे अशुद्ध होंगे या नहीं?: 380 | द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ: 437, 483
- रंगों के शुद्ध होने का वर्णन: 381 | पंचम, षष्ठम, सप्तम: 440, 441
- सार्वजनिक आवश्यकता (उमूम-ए-बलवा) सर्वसम्मत अशुद्धि या स्पष्ट पाठ्य साक्ष्य में भी राहत का कारण बनती है: 381 | कुत्ते के मूलतः अशुद्ध होने के तर्कों का कई कारणों से खंडन: 444
- अशुद्ध मिश्री को फेंकना जायज़ नहीं है और उसे शुद्ध करने का तरीका: 382 | कारण 1: 444
- पेड़ के रस/सिरके के रस से बनी चीनी का हुक्म: 382 | कारण 2, 3: 446
- यदि सिरके में छिपकली गिर जाए और उसे जीवित बाहर निकाल लिया जाए तो ऐसे सिरके का क्या हुक्म है?: 383 | चतुर्थ: 447
- बहने वाली चीज़ अशुद्ध हो जाए तो उसे शुद्ध करने का तरीका: 384 | पंचम: 451
- पुड़िया से रंगे हुए कपड़े में नमाज़ सही है या नहीं?: 389 | अल-तिबी और मजमा अल-बिहार पर नोट: 449
- मुर्गी की उल्टी शुद्ध है या अशुद्ध?: 390 | सामान्य नियम कि कोई अशुद्धि अपने स्रोत में अशुद्धि का हुक्म नहीं पाती: 455
- अशुद्ध चीज़ एक बार धोने से शुद्ध हो जाती है या नहीं?: 392 | किसी चीज़ पर 'इतना' के दो अर्थ हैं: 455
- जूते पर पेशाब गिर जाए तो उसे शुद्ध करने का तरीका: 395 | इस शोध-पत्र का नाम 'कुत्तों की शुद्धता कहने वालों से इनाम छीनना' है: 463
- संदेह से कोई चीज़ अशुद्ध नहीं होती: 396 | दाद या फुंसी से खून निकलने पर उसे शुद्ध करने का तरीका: 462
- पकी हुई खिचड़ी, चावल या चूने में चूहे की लेंडी मिले तो क्या हुक्म है?: 398 | रद्द अल-मुह्तार पर नोट: 470

- कुत्ते के मूलतः अशुद्ध होने या न होने की जांच: 399 | प्रत्येक जानवर की हड्डी का हुक्म: 471
- अल-बहर, अल-दुरार आदि पर नोट: 423 | मिसवाक में हाथी दांत की हड्डी हो तो उसका हुक्म: 474
- मतभेद का सम्मान करना सर्वसम्मति से मान्य है: 47
- रद्द अल-मुह्तार पर नोट: 424 | छत पर गोबर से लिपाई की गई हो और वह टपके और पानी कपड़ों आदि पर लगे तो हुक्म: 477
- अबी अल-सऊद पर नोट: 427

पृष्ठ १६/७६१

فتاویٰ رضویہ، جلد چہارم

- چوہا شراب میں گر جائے تو اس کا حکم اور اس کے پاک کرنے کے دو طریقے ۳۷۸ | کتا نجس العین نہیں، یہی راجح ہے اور اس کی وجوہ ترجیح، اول۔ ۴۳۱
- بحالت جنابت پسینہ آئے اور کپڑے تر ہو جائیں تو ناپاک ہوں گے یا نہیں۔ ۳۸۰ | دوم، سوم، چہارم، ۴۳۷، ۴۸۳
- رنگوں کے پاک ہونے کا بیان۔ ۳۸۱ | پنجم، ششم، ہفتم۔ ۴۴۰، ۴۴۱
- عموم بلوی نجاست متفق علیہا میں بلکہ موضع نص قطعی میں بھی باعث تخفیف ہوتا ہے۔ ۳۸۱ | کتے کے نجس العین ہونے کے دلائل کی تضعیف بچند وجوہ۔ ۴۴۴
- ناپاک مصری کا پھینک دینا روانہیں اور اس کے پاک کرنے کا طریقہ۔ ۳۸۲ | وجہ اول۔ ۴۴۴
- روسر کی شکر کا حکم۔ ۳۸۲ | وجہ دوم، سوم۔ ۴۴۶
- چھپکلی سرکہ میں گر گئی اور زندہ نکال لی گئی تو ایسے سرکہ کا کیا حکم ہے؟ ۳۸۳ | چہارم۔ ۴۴۷
- بہتی چیز ناپاک ہو جائے تو اس کے پاک کرنے کا طریقہ۔ ۳۸۴ | پنجم۔ ۴۵۱
- پڑیا کے رنگے ہوئے کپڑے سے نماز درست ہے یا نہیں۔ ۳۸۹ | التنبیه علی الطیبي ومجمع البحار۔ ۴۴۹
- مرغی کی قے پاک ہے یا ناپاک؟ ۳۹۰ | قاعدہ کلیہ کہ کوئی نجاست اپنے معدن میں حکم نجاست نہیں پاتی۔ ۴۵۵
- نجس چیز ایک مرتبہ میں پاک ہو جاتی ہے یا نہیں۔ ۳۹۲ | کسی شے پر اتنا کے دو معنی ہیں۔ ۴۵۵

- جوتے پر اگر پیشاب پڑ جائے تو اس کے پاک کرنے کا طریقہ۔ ۳۹۵ | اس رسالے کا نام سلب الثاب عن القائلین بطھارۃ الکلب۔ ۴۶۳
- شبہ سے کوئی چیز ناپاک نہیں ہوتی۔ ۳۹۶ | داد یا پھنسی سے اگر کچھ لہو نکلے تو اس کے پاک کرنے کا طریقہ۔ ۴۶۲
- پکی ہوئی کھچڑی یا چاول یا چونے میں چوہے کی مینگنی نکلے تو کیا حکم ہے؟ ۳۹۸ | التنبیه علی ردالمحتار۔ ۴۷۰
- کتے کے نجس العین ہونے اور نہ ہونے کی تحقیق۔ ۳۹۹ | ہر جانور کی ہڈی کا حکم۔ ۴۷۱
- التنبیه علی البحر والدرر وغیرھما۔ ۴۲۳ | مسواک میں ہاتھی دانت ہڈی ہو تو اس کا حکم۔ ۴۷۴
- رعایت خلاف بالاجماع معتبر ہے۔ ۴۷
- التنبیه علی ردالمحتار۔ ۴۲۴ | چھت پر گوبر سے لپسائی کی گئی پھر وہ چھت ٹپکی اور پانی کپڑے وغیرہ کسی چیز کو لگا تو اس کا حکم۔ ۴۷۷
- التنبیه علی ابی السعود۔ ۴۲۷

Fatawa Razawiyya | Volume Four

493 | Detailed ruling on sugar refined with animal bones when the source animal is unknown. | 473 | Two forms of dominant probability. First form. 497 | First premise: Except for pigs, bones of every animal, whether edible and slaughtered or non-edible and unslaughtered, are pure. | 475 | Definitions of doubt (shak), probability (zann), and whim (wahm) and subtle objections to them. 497 | Second premise: Purity and lawfulness are original states in Sharia and don't need evidence for establishment, while prohibition and impurity are accidental states needing specific evidence for proof. | 476 | Clear Razawi definition for each. 498 | Prohibition is the original state (asl) regarding blood, private parts, and harms. | 476 | Second form of dominant probability. 498 | Subsequent probability does not revoke the ruling of prior certainty. More than 3/4 of jurisprudence is based on this rule. | 477 | Ruling for this case. 501 | Third premise: Caution lies in accepting permissibility (ibahat), as that is the original certain state. | 478 | The slaughtered animal of a Magian is prohibited; there is no harm in other foods. 505 | Fourth premise: Market rumors are not reliable nor the basis for Sharia rulings. | 479 | Great benefit: Disliked action (Makruh-e-Tanzihi) is neither a major sin nor a minor sin. Its committer is not fundamentally deserving of reproach. 507 | Fifth premise: Lawfulness, prohibition, purity, and impurity are religious rulings, and mere reports are unreliable in religious rulings. | 481 | Eighth premise: Certainty of impurity and prohibition in a type or class due to contact with something impure can cause prohibition for every individual unit when the contact is known to be general and inclusive. 511 | Sixth premise: A thing being far from caution or a community being careless does not necessitate that it be declared absolutely impure or prohibited, or that items used/made by them be declared so. | 483 | Ninth premise: When lawful and prohibited items are mixed in the market without distinguishing marks, Sharia does not prohibit purchasing. 512 | Water in which a child puts their hand or foot is pure until impurity is verified. | 486 | Tenth premise: The Almighty has not burdened us to use only things that are pure and lawful in reality, for such certainty is beyond our power. 513 | Ruling on foods prepared by non-believers (kuffar) and sweets made by them. | 487 | Rather, the command is only to use what is inherently lawful and pure, with no known occurrence of impurity. 515 | Ruling on the clothes of non-believers and transgressors. | 490 | The incident of Hazrat Farooq-e-Azam (Radi Allahu Anhu) passing a pond and preventing companions from asking the owner about predator visits, and the reasons for prohibition. --- | Seventh premise: Extreme lack of caution

causes dominant probability, and dominant probability is religiously reliable. | 493 |

Page 17 of 761

फ़तावा रिज़विया | जिल्द चतुर्थ

493 | हड्डियों से साफ़ की गई चीनी का हुक्म, जब यह पता न हो कि वे हड्डियाँ किस जानवर की हैं; इसके हुक्म का पूर्ण विवरण। | 473 | ज़न्ने ग़ालिब (प्रबल संभावना) के दो रूप। पहला रूप। 497 | पहला मुक़द्दिमा: कि सूअर के अलावा हर जानवर की हड्डियाँ, चाहे खाने योग्य ज़िबह किए हुए की हों या न खाने योग्य बिना ज़िबह किए हुए की, पाक हैं। | 475 | शक, ज़न्न और वहम की परिभाषाएँ और उन पर सूक्ष्म आक्षेप। 497 | दूसरा मुक़द्दिमा: शरीयत में पाकी और हलाल मूल अवस्थाएँ हैं जिन्हें प्रमाण की आवश्यकता नहीं, जबकि हराम और नापाकी आकस्मिक हैं जिन्हें विशेष प्रमाण चाहिए। | 476 | प्रत्येक की स्पष्ट रिज़वी परिभाषा। 498 | रक्त, निजी अंगों और हानियों में निषिद्धता ही मूल अवस्था (अस्ल) है। | 476 | ज़न्ने ग़ालिब का दूसरा रूप। 498 | बाद की संभावना पिछले यकीन के हुक्म को खत्म नहीं करती। फ़िक़्ह का 3/4 से अधिक हिस्सा इसी नियम पर आधारित है। | 477 | इस सूरत का हुक्म। 501 | तीसरा मुक़द्दिमा: सावधानी इबाहत (अनुमति) स्वीकार करने में है, क्योंकि वही मूल निश्चित अवस्था है। | 478 | मजूसी का ज़बीहा हराम है; अन्य भोजनों में कोई हर्ज नहीं। 505 | चौथा मुक़द्दिमा: बाज़ारी अफ़वाहें विश्वसनीय नहीं हैं और न ही शरीयत के आदेशों का आधार हैं। | 479 | महत्वपूर्ण लाभ: मकरूहे तंज़ीही न तो बड़ा पाप है और न छोटा। इसका कर्ता मूलतः फटकार का पात्र नहीं है। 507 | पाँचवाँ मुक़द्दिमा: हलाल, हराम, पाकी और नापाकी धार्मिक आदेश हैं, और धार्मिक आदेशों में केवल अफ़वाह विश्वसनीय नहीं है। | 481 | आठवाँ मुक़द्दिमा: किसी वस्तु की श्रेणी में नापाक से मिलने या मिश्रण के कारण हराम होने का निश्चय हर इकाई से बचने का कारण बन सकता है, यदि वह संपर्क व्यापक हो। 511 | छठा मुक़द्दिमा: किसी वस्तु का सावधानी के स्थान से दूर होना या किसी समूह की लापरवाही उसे अनिवार्य रूप से नापाक या हराम नहीं बनाती, न ही उनके द्वारा निर्मित वस्तुओं को। | 483 | नवाँ मुक़द्दिमा: जब बाज़ार में हलाल और हराम मिश्रित हों और कोई भेदक चिन्ह न मिले, तो शरीयत खरीदारी से नहीं रोकती। 512 | जिस पानी में बच्चे ने हाथ या पैर डाला हो वह पाक है जब तक नापाकी सिद्ध न हो। | 486 | दसवाँ मुक़द्दिमा: अल्लाह ने हमें वास्तविकता में शुद्ध चीज़ें ही उपयोग करने का कष्ट नहीं दिया, क्योंकि ऐसा निश्चय हमारी शक्ति से बाहर है। 513 | काफ़िरों द्वारा तैयार भोजन और उनके द्वारा बनाई गई मिठाइयों का हुक्म। | 487 | बल्कि केवल यह आदेश है कि ऐसी चीज़ें उपयोग करें जो मूलतः हलाल व शुद्ध हों और उनकी नापाकी का ज्ञान हमें न हो। 515 | काफ़िरों और फासिक़ों के कपड़ों का हुक्म। | 490 | हज़रत फ़ारूक़े आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) का एक तालाब से गुज़रने

का वाक़या और साथियों को तालाब के मालिक से दरिंदों के बारे में पूछने से मना करना और उसके कारण। --- | सातवाँ मुक़द्दिमा: अत्यधिक लापरवाही प्रबल संभावना (ज़न्ने ग़ालिब) का कारण बनती है और ज़न्ने ग़ालिब शरीयत में मान्य है। | 493 | ---

पृष्ठ 17 का 761

فتاوی رضویہ | جلد چہارم

۴۹۳ | چینی جو ہڈیوں سے صاف کی جاتی ہے نہ معلوم وہ ہڈیاں کس جانور کی ہوتی ہیں اس کے حکم کی کامل تفصیل۔ | ۴۷۳ | ظن غالب کی دو صورتیں۔ پہلی صورت۔ ۴۹۷ | مقدمہ اولیٰ کہ بجز خنزیر ہر جانور کی ہڈیاں خواہ ماکول و مذبوح ہو یا غیر ماکول اور نامذبوح پاک ہیں۔ | ۴۷۵ | شک، ظن، وہم کی تعریفیں اور ان پر ایرادات لطیفہ ۴۹۷ | مقدمہ ثانیہ کہ شریعت میں طہارت وحلّت اصل ہیں کہ اپنے اثبات میں کسی دلیل کی محتاج نہیں اور حرمت و نجاست عارضی ہیں کہ اپنے ثبوت میں محتاج دلیل خاص۔ | ۴۷۶ | ہر ایک کی بے غبار تعریف رضوی۔ ۴۹۸ | دماء، فروج، مضار میں حرمت اصل ہے۔ | ۴۷۶ | ظن غالب کی دوسری صورت۔ ۴۹۸ | ظن لاحق یقین سابق کے حکم کو رفع نہیں کرتا۔ ۴/۳ سے زائد فقہ اس ضابطے پر مبنی ہے۔ | ۴۷۷ | اس صورت کا حکم۔ ۵۰۱ | مقدمہ ثالثہ کہ احتیاط اباحت ماننے میں ہے کہ وہی اصل متیقن۔ | ۴۷۸ | مجوس کا ذبیحہ حرام ہے دوسرے کھانوں میں حرج نہیں۔ ۵۰۵ | مقدمہ رابعہ کو بازاری افواہ قابل اعتبار اور احکام شرع کی مناط ومدار نہیں۔ | ۴۷۹ | فائدہ جلیلہ کہ مکروہ تنزیہی نہ گناہ کبیرہ ہے نہ صغیرہ۔ اس کا مرتکب اصلا عتاب کا مستحق نہیں۔ ۵۰۷ | مقدمہ خامسہ کہ حلت حرمت طہارت نجاست احکام دینی ہیں اور احکام دینی میں خبر محض نا معتبر۔ | ۴۸۱ | مقدمہ ثامنہ کہ کسی شے کی نوع یا صنف میں بوجہ ملاقات نجس یا اختلاط حرام نجاست وحرمت کا تیقن اس کے ہر فرد سے منع واحتراز کا موجب ہو سکتا ہے جب معلوم ہو کہ یہ ملاقات بروجہ عموم وشمول ہے۔ ۵۱۱ | مقدمہ سادسہ کہ کسی شے کا محل احتیاط سے دور ہونا یا کسی قوم کا بے احتیاطی ہونا اسے مستلزم نہیں کہ وہ شے مطلقاً نا پاک یا حرام قرار پائے یا اس قوم کی استعمالی خواہ بنائی ہوئی چیزیں نا پاک یا حرام قرار پائیں۔ | ۴۸۳ | مقدمہ تاسعہ کہ جب بازار میں حلال و حرام مطلقاً

یا کسی جنس میں مختلط ہوں اور کوئی علامت فارقہ نہ ملے تو شریعت خریداری سے منع نہیں کرتی۔ ۵۱۲ | جس پانی میں بچہ ہاتھ یا پاؤں ڈال دے پاک ہے جب تک نجاست تحقیق نہ ہو۔ | ۴۸۶ | مقدمہ عاشرہ کہ حق جل مجدہ نے ہمیں یہ تکلیف نہ دی کہ ایسی ہی چیزیں استعمال کریں جو نفس الامر میں طاہر وحلال ہوں کہ اس کا یقین ہماری قدرت سے باہر ہے۔ ۵۱۳ | کفار کے تیار کردہ کھانوں اور ان کی بنائی ہوئی مٹھائیوں کا حکم۔ | ۴۸۷ | بلکہ صرف اس قدر حکم ہے کہ وہ چیز تصرف میں لائیں جو اپنی اصل میں حلال و طیب ہو اور اسے مانع نجاست کا عارض ہونا ہمارے علم میں نہ ہو۔ ۵۱۵ | کفار وفساق کے کپڑوں کا حکم۔ | ۴۹۰ | حضرت فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا ایک حوض پر گزرنا اور ہمراہیوں سے حضرت عمرو بن عاص کا صاحب حوض سے دریافت کرنا کہ اس حوض پر درندے آتے ہیں یا نہیں اور حضرت فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا صاحب حوض کو بتانے سے منع فرمادینے کا واقعہ اور منع کرنے کے وجوہ۔ --- | مقدمہ سابعہ کہ شدت بے احتیاطی باعث ظن غالب ہے اور ظن غالب شرعاً معتبر۔ | ۴۹۳ | ---

Volume Four | Fatawa Rizvia

- Whether the mentioned pond was small or large. 516 | Ruling on tincture (English medicine). 542
- It is not permissible for one Mujtahid to compel another Mujtahid to follow him. 519 | Conclusion. 546
- Conversation between Imam Malik (may Allah be pleased with him) and Harun al-Rashid regarding the Muwatta Sharif. 519 | Facilitating ease is among the established rules. 547
- Neither a Mujtahid nor even a commoner will be forced to follow the opinion of another in matters delegated to the opinion of the practitioner. 519 | Hadith: "You are in a time where whoever leaves a tenth of what he is commanded..." narrated by Tirmidhi and others. 548
- In the pure Sharia, removing harm through detailed consideration of benefit is more paramount. For example, if a Muslim invited someone, etc. 525 | Caution/ Admonition. 552
- Two hadiths regarding dealing kindly with people. 527 | Whether sweets touched by a Christian's hand are usable or not. 553
- An essential general rule to preserve: give priority to performing obligatory acts and avoiding forbidden acts over pleasing people, and in these matters, do not care for anyone's opinion at all. Regarding performing recommended acts and avoiding non-preferable acts, consider it important to be kind and considerate of hearts, and strictly avoid causing discord, hatred, harm, or fear. 528 | In the religion of Christians, nothing is impure except menstrual blood. 554
- Establishing a general rule in this regard and the distinction in the ruling regarding bones and wine. 535 | Usage of things touched by a Christian is religiously disliked (Makruh). 554
- Let it be clear that certainty regarding the mixing of something prohibited or impure into another thing is of two types: first, specific; second, generic. Then generic is of two types: first, summary; second, total. 535 | Zaid said to Amr, "If you keep the clay pot clean, I will stab you with a knife." What is the ruling on this? 555
- And those things as well, hearing about the mixing of which in any food, drink, or other consumable items causes hesitation, worry, questioning, and investigation. They are of two types: first, that which is safe from prohibition;

second, that which is prohibited. 535 | Is the urine of a nursing infant pure or impure? 556
- Summary of the mentioned rule. 536 | What is the ruling if impurity touches the body and swelling occurs there? 556
- Starting the answer with the grace of Al-Wahhab (the Bestower). 537 | If quilts, mattresses, or other cotton-filled clothes become impure, how will they be purified? 556
- Among the narrators of a 'Mutawatir' report, Islam is not a condition according to the majority. 547

- क्या उल्लेखित तालाब छोटा था या बड़ा। ५१६ | टिंचर का हुक्म (अंग्रेज़ी दवा)। ५४२
- एक मुजतहिद के लिए यह जायज़ नहीं है कि वह दूसरे मुजतहिद को अपनी तक़लीद पर मजबूर करे। ५१९ | निष्कर्ष। ५४६
- मुअत्ता शरीफ़ के बारे में इमाम मालिक (रज़ियल्लाहु अन्हु) और हारून रशीद के बीच बातचीत। ५१९ | आसानी पैदा करना स्थापित नियमों में से है। ५४७
- न तो मुजतहिद और न ही किसी आम आदमी को उन मामलों में किसी और की राय का पालन करने के लिए मजबूर किया जाएगा जो अभ्यास करने वाले की राय पर सौंपे गए हैं। ५१९ | हदीस: "तुम एक ऐसे ज़माने में हो जहाँ जो कोई उसे दिए गए हुक्मों का दसवां हिस्सा भी छोड़ देगा..." तिर्मिज़ी और अन्य द्वारा वर्णित। ५४८
- पवित्र शरीयत में, लाभ के विस्तृत विवरण के साथ नुकसान को दूर करना अधिक प्राथमिकता रखता है। उदाहरण के लिए, यदि एक मुसलमान ने दावत की आदि। ५२५ | चेतावनी। ५५२
- लोगों के साथ व्यवहार करने के बारे में दो हदीसें। ५२७ | क्या ईसाई के हाथ से छुई हुई मिठाई प्रयोग करने योग्य है या नहीं। ५५३
- एक अनिवार्य सामान्य नियम: अनिवार्य कार्यों को करने और वर्जित कार्यों को छोड़ने को लोगों की प्रसन्नता पर प्राथमिकता दें, और इन मामलों में किसी की भी परवाह न करें। मुस्तहब (पसंदीदा) कार्यों को करने और ग़ैर-औला (अनापयुक्त) कार्यों को छोड़ने के मामले में, लोगों के दिलों का ख्याल रखना और नरमी बरतना महत्वपूर्ण समझें और फ़ितना, घृणा, कष्ट और भय पैदा करने से बचें। ५२८ | ईसाइयों के धर्म में मासिक धर्म के खून के अलावा कुछ भी नापाक नहीं है। ५५४
- इस संबंध में एक सामान्य नियम बनाना और हड्डियों तथा शराब के हुक्म में अंतर। ५३५ | ईसाई द्वारा छुई गई चीज़ का उपयोग करना शरई तौर पर मकरूह (नापसंद) है। ५५४
- स्पष्ट हो कि किसी हराम या नापाक चीज़ के दूसरी चीज़ में मिलने का यक़ीन दो प्रकार का होता है: पहला व्यक्तिगत, दूसरा श्रेणीगत। फिर श्रेणीगत दो प्रकार का होता है: पहला संक्षिप्त, दूसरा कुल। ५३५ | ज़ैद ने अम्र से कहा कि "तुम मिट्टी के बर्तन को पाक करके रखो तो मैं चाकू मार दूंगा।" इसका क्या हुक्म है? ५५५

- और वे चीज़ें भी, जिनका किसी खाने-पीने या अन्य इस्तेमाल की चीज़ों में मिलना सुना जाना दुविधा, चिंता, सवाल और जाँच का कारण बने। वे दो प्रकार की हैं: पहली वह जिससे बचना मुमकिन है, दूसरी वह जिससे बचना मुमकिन नहीं। ५३५ | दूध पीते बच्चे का पेशाब पाक है या नापाक। ५५६
- उल्लेखित नियम का सारांश। ५३६ | अगर शरीर पर नजासत (गंदगी) लग जाए और वहां सूजन हो जाए तो क्या हुक्म है। ५५६
- अल-वहाब (दाता) की कृपा से उत्तर की शुरुआत। ५३७ | रज़ाई, गद्दे आदि रुईदार कपड़े अगर नापाक हो जाएं तो वे किस तरह पाक होंगे। ५५६
- मुतवातिर (लगातार) रिपोर्ट के वर्णन करने वालों में बहुमत के अनुसार इस्लाम की शर्त नहीं है। ५४७

पृष्ठ १८ ऑफ़ ७६१

- واقعہ مذکورہ میں حوض صغیر تھایا کبیر۔ ۵۱۶ | ٹینچر کا حکم۔ (انگریزی دوا) ۵۴۲
- ایک مجتہد کے لئے جائز نہیں کہ دوسرے مجتہد کو اپنی تقلید پر آمادہ کرے۔ ۵۱۹ | خاتمہ ۵۴۶
- امام مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ اور ہارون رشید کی گفتگو درباره مؤطا شریف۔ ۵۱۹ | جلب تیسیر قواعد مسلمہ ہے۔ ۵۴۷
- مجتہد بلکہ عامی کو بھی ظن غیر کی تقلید پر مجبور نہ کیا جائے گا ان امور میں جو مبتلی کی رائے پر مفوض ہوتے ہیں۔ ۵۱۹ | حدیث انکم فی زمان من ترك منکم عشر ما امر به الخ اخرج الترمذی وغیرہ۔ ۵۴۸
- شریعت مطہرہ میں مصلحت کی تفصیل سے مفسدہ کا ازالہ مقدم تر ہے۔ مثلاً مسلمان نے دعوت کی الخ۔ ۵۲۵ | تنبیہ ۵۵۲
- دو حدیث بابت مدارات خلق۔ ۵۲۷ | عیسائی کے ہاتھ کی چھوئی ہوئی شیرینی قابلِ استعمال ہے یا نہیں۔ ۵۵۳
- ضابطہ کلیہ واجبہ الحفظ کہ فعلِ فرائض و ترکِ محرمات کو رضائے خلق پر مقدم رکھے اور ان امور میں کسی کی مطلقاً پرواہ نہ کرے اور اتیانِ مستحب و ترکِ غیر اولیٰ پر مدارات و مراعات قلوب کو اہم جانے اور فتنہ و نفرت و ایذا و وحشت کا باعث ہونے سے بہت بچے۔ ۵۲۸ | نصاریٰ کے مذہب میں خونِ حیض کے سوا کوئی چیز ناپاک نہیں۔ ۵۵۴
- وضع ضابطہ کلیہ دریں باب و تفرقہ در حکم عظام و شراب۔ ۵۳۵ | عیسائی کی چھوئی ہوئی چیز کا استعمال شرعاً مکروہ ہے۔ ۵۵۴

- واضح ہو کہ کسی شے حرام خواہ نجس کے دوسری چیز میں خلط ہونے پر یقین دو قسم ہے: اول شخصی، دوم نوعی پھر نوعی دو قسم ہے اول اجمالی، دوم کلی۔ ۵۳۵ | زید نے عمرو سے کہا کہ تم مٹی کے برتن کو پاک کر کے رکھو تو چاقو ماردوں گا۔ اس کا حکم کیا ہے؟ ۵۵۵
- اور وہ اشیاء بھی جن کا کسی ماکول و مشروب یا اور استمالی چیزوں میں خلط سنا جانا موجبِ تردد و تشویش و باعثِ سوال و تفتیش ہو۔ دو قسم ہیں: اول مامنہ محذور۔ دوم ماہو محذور۔ ۵۳۵ | شیر خوار بچہ کا پیشاب پاک ہے ناپاک۔ ۵۵۶
- خلاصہ ضابطہ مذکورہ۔ ۵۳۶ | اگر جسم پر نجاست لگ جائے اور وہاں ورم ہو تو کیا حکم۔ ۵۵۶
- الشروع فی الجواب بتوفیق الوہاب۔ ۵۳۷ | لحاف، توشک وغیرہ روئی دار کپڑے ناپاک ہو جائیں تو پاک کس طرح ہوں گے۔ ۵۵۶
- خبر متواتر کے مخبرین میں جمہور کے نزدیک اسلام شرط نہیں۔ ۵۴۷

Fatawa Razawiya Volume Four

Page	Topic	Page	Topic
556	Method of purifying impure yarn.	567	Whether a washroom pitcher becomes impure by placing it on the ground. And the ruling regarding a person who calls himself a Mawlawi.
557	Whether it is disliked (Makruh) or not to use a pitcher after a child has taken water from it and then washing it.	568	A dog was standing near food; no one saw it touch the food, but there are some signs, etc. What is the ruling?
558	If one bathes wearing a loincloth (tahband) after washing impurity, will the loincloth remain pure or not?	568	What is the ruling regarding the water collected in tanks for the purpose of sprinkling on roads.
558	Is it permissible or not to eat and drink sweets or milk from confectioners whose cauldrons are licked by dogs?	568	The 'Nafrin' and 'Afrin' (dislike and praise) of disbelievers is not reliable.
558	Method of purifying clay pots if they become impure.	569	What is the ruling if a sweeper touches a water-carrier's wet leather bag?
559	Can a Muslim use a leather bucket used by disbelievers after washing it or not?	569	Ruling on ghee in which a dog has put its mouth.
560	What is necessary for purifying the body.	569	Ruling on things touched by a scavenger (bhangi).
563	If droplets of bullock urine fall on clothes, will prayer be valid or not?	570	Ruling on water drunk by an elephant.
563	Three methods of purifying impure ghee.	570	Semen is absolutely impure, but the sperm from which Prophets were created, and the semen and all excretions of the Prophets themselves, are pure.
565		570	Ruling on droplets of bullock urine.

Page	Topic
	If impurity gets on a finger, will it become pure by licking it or not?
565	Sharia ruling on wet and dry items from a Hindu's place.
566	If impure land becomes pure by sunlight, will the feet become impure by stepping on it with wet feet or not?
567	On land where children urinate/ defecate, liquid sugar (rab) fell and was then made into sugar; is it pure or impure?
567	What is the ruling if a mouse's dropping or a piece of its meat comes out in food?
572	Whether new clothes can be used without washing or not.
572	Ruling on local and foreign soap.
	Bab al-Istinja (Chapter of Cleansing after Excretion)
575	Ruling on performing major or minor Istinja with leftover wudu water.
575	Drinking leftover wudu water is a cure for seventy illnesses.

फ़तावा रज़विया खण्ड चार

पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय
५५६	नापाक सूत को पाक करने का तरीक़ा।	५६७	ग़ुसल खाने का घड़ा ज़मीन पर रख देने से नापाक होगा या नहीं। और जो व्यक्ति अपने आप को मौलवी कहलाए, उसका हुक्म।
५५७	ग़ुसल खाने के जिस बच्चे का पानी घड़े से निकालना, फिर उस घड़े को धोकर इस्तेमाल करना मकरूह है या नहीं।	५६८	खाने के पास कुत्ता खड़ा था, किसी ने मुँह डालते नहीं देखा लेकिन कुछ निशान हैं इत्यादि, तो क्या हुक्म है?
५५८	नापाकी धोने के बाद तहबंद बाँध कर ग़ुसल करे तो तहबंद पाक रहेगा या नहीं।	५६८	सड़कों पर छिड़काव करने के उद्देश्य से जो पानी हौज़ों में जमा किया जाता है, उसका क्या हुक्म है।
५५८	जिन हलवाइयों की कड़ाहियों को कुत्ते चाटते हैं, उनके यहाँ की मिठाई या दूध लेकर खाना-पीना दुरुस्त है या नहीं।	५६८	काफ़िरों की नफ़रीन (घृणा) और आफ़रीन (प्रशंसा) विश्वसनीय नहीं।
५५८	मिट्टी के बर्तन नापाक हो जाएँ तो उनके पाक करने का तरीक़ा।	५६९	अगर सफ़ाई कर्मचारी भिश्ती (सक़्क़े) की गीली मश्क छू दे तो क्या हुक्म है?
५५९	काफ़िरों का इस्तेमाल किया हुआ चमड़े का डोल धोकर मुसलमान इस्तेमाल कर सकता है या नहीं।	५६९	जिस घी में कुत्ता मुँह डाल दे, उसका हुक्म।
५६०	बदन पाक करने में क्या ज़रूरी है।	५६९	भंगी की छुई चीज़ का हुक्म।
५६३	अगर कपड़े पर बैलों के पेशाब की छींटें पड़ी हों तो नमाज़ होगी या नहीं।	५७०	हाथी के पिए हुए पानी का हुक्म।
५६३	नापाक घी को पाक करने के तीन तरीक़े।	५७०	वीर्य (मनी) पूर्णतः नापाक है, मगर अम्बिया किराम की रचना जिस नुतफ़े से हुई वह और स्वयं अम्बिया किराम का वीर्य, बल्कि तमाम अपशिष्ट पदार्थ पाक हैं।

पृष्ठ	विषय
५६५	उँगली पर नजासत लग जाए तो चाट कर पाक हो जाएगी या नहीं।
५६५	हिन्दू के यहाँ की वस्तुओं (गीली व सूखी) का शरीअत के अनुसार हुक्म।
५६६	नापाक ज़मीन धूप से पाक हो जाए, फिर गीला पैर रखने से पैर नापाक होगा या नहीं।
५६७	जिस ज़मीन पर बच्चे पेशाब-पाख़ाना करते हैं, उस पर राब गिर गई, फिर उसकी शक्कर बनाई गई, वह पाक है या नापाक।
५६७	चूहे की मेंगनी या मांस का टुकड़ा खाने में निकल आए तो क्या हुक्म है?
५७०	बैलों के पेशाब की छींटों का हुक्म।
५७२	नया कपड़ा बिना धोए इस्तेमाल किया जा सकता है या नहीं।
५७२	देशी और विलायती साबुन का हुक्म।
	बाब अल-इस्तिंजा (शौच का अध्याय)
५७५	वज़ू के बचे हुए पानी से बड़ा या छोटा इस्तिंजा करने का हुक्म।
५७५	वज़ू का बचा हुआ पानी पीना सत्तर रोगों से शिफ़ा (उपचार) है।

صفحہ	موضوع
۵۵۶	ناپاک سوت کے پاک کرنے کا طریقہ۔
۵۵۷	غسل خانے کے جو بچہ کا پانی گھڑے سے نکالنا پھر اس گھڑے کو دھو کر استعمال کرنا مکروہ ہے یا نہیں۔
۵۵۸	ناپاکی دھونے کے بعد تہبند باندھ کر غسل کرے تو تہبند پاک رہے گا یا نہیں۔
۵۵۸	جن حلوائیوں کی کڑاہیوں کو کتے چاٹتے ہیں ان کے یہاں کی شیرینی یا دودھ لے کر کھانا پینا درست ہے یا نہیں۔
۵۵۸	مٹی کے برتن ناپاک ہو جائیں تو ان کے پاک کرنے کا طریقہ۔
۵۵۹	
۵۶۷	غسل خانہ کا گھڑا زمین پر رکھ دینے سے ناپاک ہوگا یا نہیں۔ اور جو شخص اپنے کو مولوی کہلوائے اس کا حکم۔
۵۶۸	کھانے کے پاس کتا کھڑا تھا کسی نے منہ ڈالتے نہیں دیکھا لیکن کچھ نشانات ہیں الخ تو کیا حکم ہے؟
۵۶۸	سڑکوں پر چھڑکاؤ کرنے کے غرض سے جو پانی حوضوں میں جمع کیا جاتا ہے اس کا کیا حکم ہے۔
۵۶۸	کفار کی نفریں اور آفریں معتبر نہیں۔
۵۶۹	خاکروب اگر سقے کی تر مشک چھودے تو کیا حکم ہے؟
۵۶۹	جس گھی میں کتا منہ ڈال دے اس کا حکم۔

صفحہ	موضوع
	کفار کا استعمال کیا ہوا ڈول چرمی دھو کر مسلمان استعمال کر سکتا ہے یا نہیں۔
۵۶۰	بدن پاک کرنے میں کیا ضروری ہے۔
۵۶۳	اگر کپڑے پر بیلوں کے پیشاب کی پھینٹیں پڑی ہوں تو نماز ہوگی یا نہیں۔
۵۶۳	ناپاک گھی کو پاک کرنے کے تین طریقے۔
۵۶۵	انگلی پر نجاست لگ جائے تو چاٹ کر پاک ہو جائے گی یا نہیں۔
۵۶۵	ہندو کے یہاں کی اشیائے تر و خشک کا حکم شرعی۔
	ناپاک زمین دھوپ سے پاک ہو جائے
۵۶۶	پھر گیلا پیر رکھنے سے پیر ناپاک ہوگا یا نہیں۔
۵۶۷	باب الاستنجاء
۵۶۹	بھنگی کی چھوئی چیز کا حکم۔
۵۷۰	ہاتھی کے پیئے ہوئے پانی کا حکم۔
۵۷۰	منی مطلقاً ناپاک ہے مگر انبیاء کرام کی تخلیق جس نطفے سے ہوئی وہ اور خود انبیاء کرام کی منی بلکہ تمام فضلات پاک ہیں۔
۵۷۰	بیلوں کے پیشاب کی چھینٹوں کا حکم۔
۵۷۲	نیا کپڑا بغیر دھوئے استعمال کیا جا سکتا ہے یا نہیں۔
۵۷۲	دیسی اور ولایتی صابون کا حکم۔

صفحہ	موضوع
۵۶۷	جس زمین پر بچے پیشاب پاخانہ کرتے ہیں اس پر راب گر گئی پھر اس کی شکر بنائی گئی وہ پاک ہے یا ناپاک۔
۵۶۷	چوہے کی مینگنی یا پلے کی کرسی کھانے میں نکل آئے تو کیا حکم ہے؟
۵۷۵	وضو کے بچے ہوئے پانی سے بڑا یا چھوٹا استنجاء کرنے کا حکم۔
۵۷۵	بقیہ وضو کا پینا ستر مرض سے شفاء ہے۔

Fatawa Razawiyyah Volume 4

Topic/Text	Page	Topic/Text	Page
Ruling on the prayer and leadership (Imamat) of a person who cannot perform Istinja (cleaning after relief) with their left hand due to an excuse.	576	Eight answers to the Hadith of Hudhayfah (may Allah be pleased with him) which mentions that the Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him and his family) went to a waste-dump and urinated while standing.	589
Description of the habit of the Prophet and the Companions regarding Istinja after urination.	578	The first answer is that it is abrogated. Remarks by Allama Asqalani and Allama Ayni on this, and the Razawi response to those remarks.	590
It is preferable to perform Istinja with both a clod (dheela) and water.	579	Second answer.	591
What things should be used to dry after Istinja, and what should not be used.	579	Third answer mentioned by Imam Mundhiri and its Razawi correction.	591
Solution to a passage from the book Munyat al-Musalli.	580	Allama Abhari's fourth answer and its Razawi correction.	592
Explanation of the literal and technical meanings of the word "Makhraj" (outlet).	581	Razawi critique on the clarification of the fifth answer.	592
Reason for calling a dangerous desert "mafaza".	581	Razawi disapproval of the sixth answer.	592
If the Quran or honored names are inscribed on a ring, it is better to take it off before entering the toilet.	581	Razawi objection to the seventh answer and then its correction.	595
Whether trousers or loincloth become impure if one performs Istinja only with water after urinating, and how is the	583	Eighth answer.	596

Topic/Text	Page	Topic/Text	Page
leadership (Imamat) of such a person.			
Reason for the prohibition of performing Istinja with a bone.	583	Giving preference to the above-mentioned four Hadiths over the Hadith of Hudhayfah (may Allah be pleased with him) through the Razawi method.	596
Account of the food for the Jinn and their animals.	584	Is Istinja and Wudu valid with one lota (vessel) of water or not.	597
Ruling on urinating while standing and the four harms involved.	585	Books of Deobandi beliefs are worse than Hindu scriptures, and the jurists' writing that "It is permissible to perform Istinja with pages of Logic" is not correct.	598
It is disliked (Makruh) to have sexual intercourse again without washing the private parts after the first time.	585	How is it to say Salam or reply to Salam while using a clod (kulukh) after urinating, or to greet someone using a clod.	598
Razawi resolution of the problem faced by the authors of Fath al-Bari and Umdat al-Qari regarding the Hadith of Siddiqa (may Allah be pleased with her).	587	Is it permissible for a Muslim to urinate while standing or not?	599
Four authentic Hadiths stating that urinating while standing is prohibited, disrespectful, and against the Sunnah.	587	Is it permissible to clean the outlet (mabraz) with paper after finishing or not?	599
		Ruling on honoring paper even if it is blank.	599

फ़तावा रज़विया जिल्द 4

विषय/पाठ	पृष्ठ
ऐसे व्यक्ति की नमाज़ और इमामत का हुक्म जो किसी उज़्र (बहाने/कारण) के कारण बाएँ हाथ से इस्तिन्जा न कर सके।	५७६
पेशाब के बाद इस्तिन्जा के बारे में नबी की आदत और सहाबा किराम की आदत का बयान।	५७८
ढेले और पानी दोनों से इस्तिन्जा करना अफ़ज़ल है।	५७९
इस्तिन्जा किन चीज़ों से खुश्क करना चाहिए, और किन से नहीं किया जाना चाहिए।	५७९
किताब 'मुनियतुल मुसल्ली' की एक इबारत का हल।	५८०
लफ़्ज़ 'मखरज' (निकास) के लुग़वी (शाब्दिक) और इस्तिलाही (तकनीकी) अर्थ का बयान।	५८१
मोहलिक बयाबाँ (विनाशकारी रेगिस्तान) को 'मफ़ाज़ा' कहने की वजह।	५८१
अंगूठी पर अगर क़ुरआन या अस्मा-ए-मुअज़्ज़मीन (सम्मानित नाम) लिखे हों	५८१
हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) की हदीस के आठ जवाब जिसमें ज़िक्र है कि हुज़ूर सैयदे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) किसी कूड़े के ढेर पर तशरीफ़ ले गए और वहाँ खड़े होकर पेशाब किया।	५८९
पहला जवाब यह कि यह मंसूख (निरस्त) है। इस पर अल्लामा असक़लानी और अल्लामा ऐनी की टिप्पणी और उस पर रज़वी जवाब।	५९०
दूसरा जवाब।	५९१
इमाम मुन्ज़िरी द्वारा बयान किया गया तीसरा जवाब और उसकी रज़वी सुधार।	५९१
अल्लामा अहरी का चौथा जवाब और उसकी रज़वी सुधार।	५९२
पाँचवें जवाब के स्पष्टीकरण पर रज़वी एतराज़।	५९२
छठे जवाब पर रज़वी नापसंदगी।	५९२
सातवें जवाब पर रज़वी एतराज़ फिर उसका सुधार।	५९५

विषय/पाठ	पृष्ठ	विषय/पाठ	पृष्ठ
तो उसे उतार कर बैतुल खला (शौचालय) जाना अफ़ज़ल है।			
पेशाब के बाद सिर्फ पानी से इस्तिन्जा करे तो पाजामा या तहबन्द नजिस (नापाक) होता है या नहीं और उसकी इमामत कैसी है।	५८३	आठवाँ जवाब।	५९६
हड्डी से इस्तिन्जा करने की मनाही का सबब (कारण)।	५८३	उपर्युक्त चार हदीसों को हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) की हदीस पर रज़वी तरीक़े से तरजीह देना।	५९६
क़ौम जिन्न और उनके जानवरों की खुराक का बयान।	५८४	एक लोटे पानी से इस्तिन्जा और वज़ू दुरुस्त है या नहीं।	५९७
खड़े होकर पेशाब करने का हुक्म और यह कि इसमें चार हर्ज (नुकसान) हैं।	५८५	देवबंदी अक़ाइद (आस्था) की किताबें हनूद (हिंदुओं) की पोथियों से बदतर हैं और फ़ुक़हाए किराम का यह लिखना कि "मंतिक़ के पन्नों से इस्तिन्जा जायज़ है" सही नहीं है।	५९८
एक बार जिमा (संभोग) करने के बाद दोबारा बिना ग़ुस्ल (नहाए) आले-जिमा (गुप्तांग) साफ़ किए बिना संभोग करना मकरूह है।	५८५	पेशाब के बाद ढेले (कलोख) के इस्तेमाल की हालत में सलाम करना या सलाम का जवाब देना या कलोख करते हुए को सलाम करना कैसा है।	५९८
उस इशकाल (शंका) का रज़वी निवारण जो साहिबे फ़तहुल बारी और साहिबे उम्दतुल क़ारी को हदीस-ए-सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु अन्हा) में पेश आया।	५८७	मुसलमान को खड़े होकर पेशाब करना जायज़ है या नहीं।	५९९
चार अहादीस-ए-सहीहा इस बारे में कि खड़े होकर पेशाब करना ममनू	५८७	और फ़राग़त (निवृत्त होने) के बाद मबरज़ (निकास द्वार) को काग़ज़ से पाक करना जायज़ है या नहीं।	५९९

विषय/पाठ	पृष्ठ	विषय/पाठ	पृष्ठ
(वर्जित), बे-अदबी और सुन्नत के ख़िलाफ़ है।			
		काग़ज़ की ताज़ीम (सम्मान) का हुक्म है अगरचे वह सादा हो।	५९९

पृष्ठ ७६१ का २०

فتاوی رضویہ جلد چہارم

ٹاپک / متن	صفحہ
ایسے شخص کی نماز وامامت کا حکم جو بوجہ عذر بائیں ہاتھ سے استنجاء نہ کرسکے۔	۵۷۶
بعد پیشاب دربارہ استنجاء نبوی عادت اور صحابہ کرام کی عادت کا بیان۔	۵۷۸
ڈھیلے اور پانی دونوں سے استنجاء کرنا افضل ہے۔	۵۷۹
استنجا کن کن چیزوں سے خشک کرنا چاہیے، اور کن کن سے خشک نہ کیا جائے۔	۵۷۹
کتاب منیہ المصلی کی ایک عبارت کا حل۔	۵۸۰
لفظ مخرج کے معنی لغوی و اصطلاحی کا بیان۔	۵۸۱

ٹاپک / متن	صفحہ
حدیث حذیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے آٹھ جواب جس میں وارد کہ حضور سید عالم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کسی گھورے پر تشریف لے گئے اور وہاں کھڑے ہو کر پیشاب فرمایا۔	۵۸۹
اول جواب یہ کہ منسوخ ہے۔ اس پر علامہ عسقلانی و علامہ عینی کا تعقب اور تعقب کا جواب رضوی۔	۵۹۰
جواب دوم	۵۹۱
جواب سوم بیان کردہ امام منذری اور اس کی اصلاح رضوی۔	۵۹۱
علامہ ابہری کا جواب چہارم اور اس کی اصلاح رضوی۔	۵۹۲
جواب پنجم کی ایضاح پر قدح رضوی۔	۵۹۲

ٹاپک / متن	صفحہ
مہلک بیاباں کو مفازہ کہنے کی وجہ۔	۵۸۱
انگوٹھی پر اگر قرآن یا اسمائے معظمین لکھے ہوں تو اُس کو اتار کر بیت الخلا جانا افضل ہے۔	۵۸۱
بعد پیشاب صرف پانی سے استنجاء کرے تو پاجامہ یا تہبند نجس ہوتا ہے یا نہیں اور اس کی امامت کیسی ہے۔	۵۸۳
ہڈی سے استنجاء کرنے کی ممانعت کا سبب۔	۵۸۳
قوم جن اور اُن کے جانوروں کی خوراک کا بیان۔	۵۸۴
کھڑے ہو کر پیشاب کرنے کا حکم اور یہ کہ اس میں چار حرج ہیں۔	۵۸۵
ایک مرتبہ جماع کرنے کے بعد دوبارہ بغیر غسل آلہ جماع کرنا مکروہ ہے۔	۵۸۵
جواب ششم پر رضوی ناپسندیدگی۔	۵۹۲
جواب ہفتم پر اعتراض رضوی پھر اس کی اصلاح۔	۵۹۵
جواب ہشتم	۵۹۶
مذکورہ بالا چار احادیث کو حدیث حذیفہ رضی اللہ تعالی عنہ پر بہ طریق ترجیح رضوی۔	۵۹۶
ایک لوٹے پانی سے استنجا اور وضو درست ہے یا نہیں۔	۵۹۷
دیوبندی عقائد کی کتابیں ہنود کی پوتھیوں سے بدتر ہیں اور فقہائے کرام کا یہ تحریر کرنا کہ "یجوز الاستنجاء باوراق المنطق" درست نہیں۔	۵۹۸
بعد پیشاب بحالت کلوخ سلام کرنا یا سلام کا جواب دینا یا کلوخ کرتے ہوئے کو سلام کرنا کیسا ہے۔	۵۹۸

ٹاپک / متن	صفحہ	ٹاپک / متن	صفحہ
اُس اشکال کا دفع رضوی جو صاحب فتح الباری اور صاحب عمدۃ القاری کو حدیث صدیقہ رضی اللہ تعالی عنہا میں پیش آیا۔	۵۸۷	مسلمان کو کھڑے ہو کر پیشاب کرنا جائز ہے یا نہیں۔	۵۹۹
چار احادیث صحیحہ اس بارہ میں کہ کھڑے ہو کر پیشاب کرنا ممنوع، بے ادبی، خلاف سنت ہے۔	۵۸۷	اور بعد فراغت مبرز کو کاغذ سے پاک کرنا جائز ہے یا نہیں۔	۵۹۹
		کاغذ کی تعظیم کا حکم ہے اگر چہ سادہ ہو۔	۵۹۹

Fatawa Rizvia, Volume 4

Page	Topic
600	Letters of the alphabet are Quran; they were revealed to Prophet Hud (peace be upon him).
600	Forgetting to wash with water after using an earthen lump (kulokh) for urine and performing prayer, or remembering during prayer; is the prayer valid or not?
600	Whether it is valid to perform Istinja (cleansing) with only water in the same sitting after urinating, or if using a lump is a condition.
601	Istibra is obligatory, and its definition.
601	Ruling on mosque toilets facing east or west if the community doesn't change them despite scholars' prohibition, and whether the person who uses them can lead prayer.
601	Whether a person performing dry Istinja should respond if someone greets them (Salam).
602	Answer to a question regarding the mosque courtyard.
603	

Page	Topic
605	The ruling for a preacher (Khatib) who, during the sermon, suspects a drop of urine came out, or after the sermon touches the private part and finds no moisture, yet leads the prayer.
605	A Hadith states that the devil spits to deceive, causing suspicion of moisture.
606	When a drop is stopped by a Langar or Langot (loincloth), it becomes obligatory to tie it.
607	Istinja with baked brick is forbidden and disliked; a lump used for minor Istinja can be reused once dried.
607	Ruling if a drop of urine always follows Istinja with a lump and water.
607	How is it to face north while urinating or defecating.
607	The direction towards Bait-ul-Maqdis and Baghdad Sharif is also included from here.
608	Ruling on placing a small Hamail Sharif (miniature Quran) in a tin box,

Page	Topic
	Ruling on performing Istinja with absorbent material like blotting paper.
604	Ruling for someone performing major or minor Istinja with only water.
604	Ruling on spitting in the toilet.

Page	Topic
	sewing it in cloth, and putting it around children's necks.
610	Writing the Quran in a small format or making a Hamail is religiously disliked and undesirable.

फ़तावा रज़विया, जिल्द चहारुम (भाग 4)

पृष्ठ	विषय
600	हुरूफ़-ए-हिजा (वर्णमाला के अक्षर) क़ुरान हैं, हज़रत हूद अलैहिस्सलाम पर नाज़िल हुए थे।
600	पेशाब के बाद कुलौख (मिट्टी का ढेला) लिया और पानी से पाक करना भूल गया और नमाज़ अदा कर ली या नमाज़ में याद आया तो नमाज़ हो गई या नहीं।
600	पेशाब करके उसी जलसे (बैठक) में सिर्फ पानी से इस्तिन्जा करना दुरुस्त है या नहीं या कुलौख लेना शर्त है।
601	इस्तिब्रा वाजिब है और उसकी तारीफ़।
601	मस्जिद के पेशाब खानों का रुख़ अगर पूर्व या पश्चिम की ओर हो और अहल-ए-महल्ला मनाही के बावजूद उलमा के कहने पर बदलने की कोशिश न करें तो उनका क्या हुक्म है, और क्या उस शख़्स की इमामत जाएज़ है जो उनमें पेशाब वग़ैरह करता हो।
601	जो शख़्स इस्तिन्जा खुश्क करता हो अगर उसको कोई शख़्स सलाम करे तो वह जवाब दे या नहीं।
605	ख़तीब को ख़ुत्बा पढ़ते वक़्त शक हुआ कि क़तरा उतरा या ख़ुत्बे के बाद आज़ा-ए-तनासुल (लिंग) को छुआ तो तरी (नमी) मालूम न हुई और नमाज़ पढ़ा दी तो क्या हुक्म है।
605	ह़दीस में वारिद है कि शैतान धोखा देने को थूक देता है जिससे तरी का शुबा होता है।
606	जब लंगर या लंगोट से क़तरा बंद हो जाता है तो उसका बांधना वाजिब है।
607	पुख़्ता ईंट से इस्तिन्जा मना और मकरूह है; जिस ढेले से छोटा इस्तिन्जा किया, सूखने के बाद दोबारा उससे इस्तिन्जा कर सकते हैं।
607	ढेले और पानी से इस्तिन्जा करने पर क़तरा पेशाब का हमेशा आ जाता हो तो ऐसी सूरत में क्या हुक्म है।
607	पेशाब या पाख़ाना करते समय उत्तर की ओर मुँह करना कैसा है।

पृष्ठ	विषय
602	सहन-ए-मस्जिद के बारे में एक सवाल का जवाब।
603	जाज़िब यानी ब्लाटिंग पेपर से इस्तिन्जा करने का हुक्म।
604	बड़ा या छोटा इस्तिन्जा महज़ (सिर्फ़) पानी से करने वाले का हुक्म।
604	पाख़ाना में थूकने का हुक्म।
पृष्ठ 761 में से 21 आई.टी. मजलिस-ए-दावत-ए-इस्लामी	

पृष्ठ	विषय
607	यहाँ से बैतुल मुक़द्दस और बग़दाद शरीफ़ की सिम्त (दिशा) भी शामिल है।
608	छोटी ह़मायल शरीफ़ टीन के डब्बे में रख कर फिर कपड़े में सी कर बच्चों के गले में डालने का हुक्म।
610	क़ुरान छोटी तक़्तीअ (आकार) पर लिखना, ह़मायल बनाना शरअ़न मकरूह और नापसंद है।

فتاویٰ رضویہ (جلد چہارم)

صفحہ	موضوع
600	حروف ہجا قرآن ہیں، حضرت ہود علیہ الصلوۃ والسلام پر نازل ہوئے تھے۔
600	پیشاب کے بعد کلوخ لیا اور پانی سے پاک کرنا بھول گیا اور نماز ادا کر لی یا نماز میں یاد آیا تو نماز ہو گئی یا نہیں۔
600	پیشاب کر کے اسی جلسہ میں صرف پانی سے استنجا کرنا درست ہے یا نہیں یا کلوخ لینا شرط ہے۔
601	استبراء واجب ہے اور اس کی تعریف۔
605	خطیب کو خطبہ پڑھتے وقت شک ہوا کہ قطرہ اترا یا بعد خطبہ آلہ تناسل کو چھوا تو تری معلوم نہ ہوئی اور نماز پڑھا دی تو کیا حکم ہے۔
605	حدیث میں وارد کہ شیطان دھوکا دینے کو تھوک دیتا ہے جس سے تری کا شبہ ہوتا ہے۔
606	جب لنگر یا لنگوٹ سے قطرہ بند ہو جاتا ہے تو اس کا باندھنا واجب ہے۔
607	پختہ اینٹ سے استنجا منع و مکروہ ہے جس ڈھیلے سے چھوٹا استنجا کیا، بعد خشکی دوبارہ اس سے استنجا کر سکتے ہیں۔

صفحہ	موضوع
601	مسجد کے پیشاب خانوں کا رخ اگر بسوئے مشرق یا مغرب ہو اور اہل محلہ باوجود ممانعت علماء بدلنے کی کوشش نہ کریں تو ان کا کیا حکم ہے نیز اس شخص کی امامت جائز ہے یا نہیں جو ان میں پیشاب وغیرہ کرتا ہو۔
601	جو شخص استنجاء خشک کرتا ہو اگر اس کو کوئی شخص سلام کرے تو وہ جواب دے یا نہیں۔
602	صحن مسجد کے بارے میں ایک سوال کا جواب۔
603	جاذب یعنی بلائٹنگ سے استنجاء کرنے کا حکم۔
604	بڑا یا چھوٹا استنجاء محض پانی سے کرنے والے کا حکم۔
604	پاخانہ میں تھوکنے کا حکم۔
607	ڈھیلے اور پانی سے استنجا کرنے پر قطرہ پیشاب کا ہمیشہ آ جاتا ہو تو ایسی صورت میں کیا حکم ہے۔
607	بروقت پیشاب یا پاخانہ رُو بشمال کرنا کیسا ہے۔
607	یہاں سے بیت المقدس اور بغداد شریف کی سمت بھی شامل ہے۔
608	چھوٹی حمائل شریف ٹین کے ڈبے میں رکھ کر پھر کپڑے میں سی کر بچوں کے گلے میں ڈالنے کا حکم۔
610	قرآن چھوٹی تقطیع پر لکھنا، حمائل بنانا شرعاً مکروہ و ناپسند ہے۔

Fatawa Razawiyya - Volume 4

Index of Subsidiary Issues

Chapter on Ablution (Bab al-Wudu)	Page	Chapter on Bathing (Bab al-Ghusl)	Page
To wipe (Masah) in ablution means to make it wet in any way, whether by rain falling or by immersion.	237, 622	If lime or catechu is stuck on the teeth, will bathing be valid without removing it or not?	323
Washing the head instead of wiping it in ablution is contrary to the Sunnah.	237, 622	After every ejaculation, one should bathe after urinating.	196, 634
Does water coming from the eyes nullify ablution or not?	321	After intercourse, if one neither urinated, nor slept, nor walked enough for the remaining semen to come out, and then bathed, but the remainder came out later, one must bathe again, even if it comes out without desire.	196, 634
Section on Nullifiers		Every semen that comes out with desire, Madhy (pre-seminal fluid) must come out before it.	234, 634
If several events occur that require ablution, does one ablution suffice for all of them, not just the first one?	299	If menstruation, wet dream, intercourse, and ejaculation all occur together, then one bath is sufficient for all of them.	252, 634
Minor impurity (Hadath Asghar) is that which only makes ablution obligatory, not bathing.	235	What is intention (niyyah) in bathing and how is it made?	323
Research on the fact that every cause for bathing is also a cause for ablution.	236	Ruling on bathing naked in a secluded place.	323
The author's research that partial impurity (Hadath Mutajazzi) is of two types: comprehensive and limited. (The author's research is	265		

that partial impurity is of two types (1) Shamil, (2) Muqtassar).

फ़तावा रज़विया - जिल्द चहारम (खंड 4)

सहायक मसलों की फ़ेहरिस्त (सूची)

बाबुल वुज़ू (वुज़ू का अध्याय)	पृष्ठ
वुज़ू में मसह से मुराद किसी भी तरह से तरी पहुँचाना है, चाहे बारिश होने से हो या गोता लगाने से।	237, 622
वुज़ू में मसह की जगह सर धोना सुन्नत के ख़िलाफ़ है।	237, 622
आँख से पानी निकलना वज़ू को तोड़ता है या नहीं।	321
फ़स्ल फ़िन-नवाक़िज़ (वुज़ू तोड़ने वाली चीज़ों का अनुभाग)	
कई ह़दथ (अशुद्धियां) हुए, वुज़ू किया, क्या वह सब की तरफ़ से है न कि सिर्फ पहले वाले की?	299
ह़दथ-ए-अस़्ार (छोटी अशुद्धि) वही है जिससे सिर्फ़ वुज़ू वाजिब हो, नहाना नहीं।	235
इस बात की तह़क़ीक़ (खोज) कि हर गुस्ल का कारण वुज़ू का भी कारण है।	236
मुसन्निफ़ (लेखक) की तह़क़ीक़ कि ह़दथ-ए-मुतजज़्ज़ी दो क़िस्मों पर है: शामिल और मुक़्तसर। (लेखक की	265

बाबुल गुस्ल (गुस्ल का अध्याय)	पृष्ठ
चूना या कत्था अगर दांतों पर जम जाए तो क्या उसे छुड़ाए बिना गुस्ल हो जाएगा या नहीं?	323
हर इंजाल (वीर्यपात) के बाद पेशाब करके नहाना चाहिए।	196, 634
जिमा (संभोग) के बाद न पेशाब किया, न सोया, न इतना चला कि बचा हुआ वीर्य निकल जाता और नहा लिया, अब अगर बचा हुआ वीर्य निकला तो दोबारा नहाना होगा, चाहे वह बिना शहवत (कामवासना) के निकले।	196, 634
हर वह वीर्य जो शहवत से निकले, उससे पहले मज़ी ज़रूर निकलती है।	234, 634
अगर हैज़, एहतलाम, जिमा और इंजाल सब एक साथ हो जाएं तो सबके लिए एक ही गुस्ल काफी है।	252, 634
गुस्ल में नियत क्या है और वह कैसे होती है?	323
परदे की जगह में नग्न होकर नहाने का हुक्म।	323

बाबुल वुज़ू (वुज़ू का अध्याय)	पृष्ठ	बाबुल गुस्ल (गुस्ल का अध्याय)	पृष्ठ
तह़क़ीक़ कि ह़दथ-ए-मुतजज़्ज़ी दो प्रकार के हैं (1) शामिल, (2) मुक़्तसर) पृष्ठ 22 / 761			

فتاویٰ رضویہ - جلد چہارم

فہرست ضمنی مسائل

باب الوضو	صفحہ
مسح کہ وضو میں ہے اس سے مراد تری پہنچانا ہے کسی طرح ہو اگرچہ مینہ پڑنے یا غوطہ لگانے سے۔	۲۳۷، ۶۲۲
وضو میں مسح کی جگہ سر دھونا خلاف سنت ہے۔	۲۳۷، ۶۲۲
آنکھ سے پانی نکلنا ناقضِ وضو ہے یا نہیں۔	۳۲۱
فصل فی النواقض	
کئی حدث ہوئے وضو کیا وہ سب سے ہے نہ فقط اول سے۔	۲۹۹
	۲۳۵

باب الغسل	صفحہ
چونا کتھا اگر دانتوں پر جم جائے تو بغیر چھڑائے غسل ہوگا یا نہیں۔	۳۲۳
ہر انزال میں پیشاب کے بعد نہانا چاہیے۔	۱۹۶، ۶۳۴
بعد جماع نہ پیشاب کیا نہ سویا نہ اتنا چلا کہ بقیہ منی نکل جاتا اور نہا لیا اب بقیہ نکلا دوبارہ نہانا ہو گا اگرچہ بے شہوت نکلے۔	۱۹۶، ۶۳۴
ہر منی کہ شہوت سے نکلے اس سے پہلے مذی ضرور نکلتی ہے۔	۲۳۴، ۶۳۴
اگر حیض واحتلام وجماع وانزال سب جمع ہوں تو سب کو ایک ہی غسل کافی ہے۔	۲۵۲، ۶۳۴
	۳۲۳

باب الوضو	صفحہ
حدث اصغر وہی ہے جس سے فقط وضو واجب ہو نہا نہ ہو۔	
اس کی تحقیق کہ ہر موجب غسل موجب وضو ہے۔	۲۳۶
تحقیق المصنف ان الحدث المتجزی علی قسمین شامل ومقتصر۔ (مصنف کی تحقیق کہ حدث متجزی دو قسم پر ہے (۱) شامل، (۲) مقتصر)	۲۶۵

باب الغسل	صفحہ
غسل میں نیت کیا ہے اور وہ کیسے ہوتی ہے؟	
پردے کی جگہ برہنہ غسل کرنے کا حکم۔	۳۲۳

Fatawa Razawiya --- Volume 4

Ruling on nocturnal emission without excitement and desire. --- 344 | Rulings on wells. --- 339 Ruling on the slaughtered animal of an adulterer. --- 344 | If Wudu or Ghusl was performed with impure water, how long should prayers be repeated upon finding out. --- 340 If a non-believer embraces Islam, they will be commanded to take a bath. --- 345 | When will well water be considered 'dah dar dah' (a specific quantity). --- 344 Ruling on bathing naked in the bathroom. --- 346 | What is the ruling if a dog falls into a well? --- 344 Description of Water | Prayer Issues Ruling on the leftover water of a non-believer. --- 347 | A person performing Tayammum found water during prayer; the prayer is invalidated even if it's after At-tahiyyat. --- 32, 705 Ruling on a 'dah dar dah' pond when the water level is not 'dah dar dah'. --- 348 | If water was found after turning for one Salam, the prayer is complete. --- 32, 705 How much depth, length, and width are required for a 'dah dar dah' pond, and is its ruling still in effect or not. --- 348 | A person following the sequence (Sahib-e-Tarteeb) remembered a missed prayer, and there was enough time, but they prayed the current time's prayer against the rule; will that current prayer be considered valid or what? --- 131 Ruling on rainwater. --- 331 | In a place of residence, the Imam led a four-rak'ah prayer as two and left, and the followers did not know if he was a resident or a traveler; their prayer is not valid even if they are travelers themselves. Yes, if this happened in a forest or at a stop, then it's valid for them too; the resident should complete their four rak'ahs. --- 705 Ruling on water from a pond built with forbidden money. --- 333 | Investigation: The aforementioned knowledge of the Imam's state is a condition for the ruling on the validity of following, not a condition for the act of following itself. --- 145 (Footnote) Researched position of Imam Azam (mercy of Allah be upon him) regarding used water. --- 335 | Funerals Ruling on drops of Wudu water falling on clothes or in the mosque. --- 336 | If a person in a state of major ritual impurity (Janabah) or menstruation (Haiz), who was required to bathe, dies in that state, then a single funeral bath (Ghusl-e-Mayyit) will suffice for all. --- 252 Ruling on hookah water. --- 337 | Divorce Issues Description of Wells | Someone was asked, 'Did you divorce your wife?' and he said 'I divorced'. The divorce took place. But if he said 'I divorced' in an irritated and rebuking tone, it will not happen. --- 712, 119

फ़तावा रज़विया --- खंड 4

बिना उत्तेजना और कामेच्छा के स्वप्नदोष का नियम। --- 344 | कुओं के नियम। --- 339 ज़ानी (व्यभिचारी) के ज़िबह (बलि किए गए जानवर) का नियम। --- 344 | अशुद्ध पानी से वज़ू या ग़ुस्ल किया, तो पता चलने पर कब तक की नमाज़ें दोहराई जाएँगी। --- 340 यदि कोई काफ़िर इस्लाम स्वीकार करता है, तो उसे ग़ुस्ल करने का आदेश दिया जाएगा। --- 345 | कुएं का पानी 'दह दर दह' (एक विशेष मात्रा) कब होगा। --- 344 ग़ुस्लखाने में नग्न नहाने का नियम। --- 346 | यदि कुएं में कुत्ता गिर जाए तो क्या नियम है? --- 344 पानी का वर्णन | नमाज़ के मसले काफ़िर के जूठे पानी का नियम। --- 347 | तयम्मुम करने वाले ने नमाज़ के दौरान पानी पाया तो नमाज़ टूट गई, चाहे अत-तहियात के बाद ही क्यों न हो। --- 32, 705 दह दर दह हौज का नियम जबकि पानी दह दर दह न हो। --- 348 | एक सलाम फेरने के बाद पानी पाया तो नमाज़ हो गई। --- 32, 705 दह दर दह हौज में गहराई, लंबाई और चौड़ाई कितनी आवश्यक है, और इसका नियम लागू है या नहीं। --- 348 | साहिब-ए-तरतीब (क्रम का पालन करने वाला) को क़ज़ा नमाज़ याद थी और वक़्त में गुंजाइश थी, फिर भी उसने वक़्त वाली नमाज़ पढ़ी, तो क्या उस वक़्त वाली नमाज़ को सही कहा जाएगा? --- 131 बारिश के पानी का नियम। --- 331 | निवास स्थान में इमाम चार रकअत की नमाज़ दो पढ़कर चला गया और मुक्तदियों को उसका हाल मालूम न हुआ कि वह मुक़ीम है या मुसाफ़िर, तो उनकी नमाज़ नहीं हुई, भले ही वे स्वयं मुसाफ़िर हों। हाँ, अगर जंगल में या पड़ाव पर ऐसा हुआ तो उनकी भी हो गई; मुक़ीम अपनी चार पूरी कर ले। --- 705 हराम पैसे से बनवाए गए हौज के पानी का नियम। --- 333 | शोध: इमाम की स्थिति का उल्लेखित ज्ञान इक़्तेदा (अनुसरण) की शुद्धता के नियम के लिए शर्त है, न कि स्वयं इक़्तेदा की शर्त। --- 145 (हाशिया/फुटनोट) इमाम आज़म (उन पर अल्लाह की रहमत हो) का इस्तेमालशुदा पानी के बारे में शोधपूर्ण मत। --- 335 | जनाज़ा (अंतिम संस्कार) वज़ू के पानी की बूंदें कपड़ों पर गिरने या मस्जिद में गिराने का नियम। --- 336 | जुनुब (अशुद्ध अवस्था) या हाएज़ा (ऋतुस्त्राव वाली स्त्री) जिस पर ग़ुस्ल अनिवार्य था, उसी अवस्था में मर जाए, तो एक ही ग़ुस्ल-ए-मय्यित सब की ओर से पर्याप्त होगा। --- 252 हुक्के के पानी का नियम। --- 337 | तलाक़ के मसले कुएं का वर्णन | किसी से कहा गया कि 'तूने अपनी औरत को तलाक़ दी', उसने कहा 'मैंने तलाक़ दी', तो तलाक़ हो गई। लेकिन अगर झुंझलाकर झिड़कने की आवाज़ में कहा 'मैंने तलाक़ दी', तो नहीं होगी। --- 712, 119

पृष्ठ 23 का 761

فتاویٰ رضویہ --- جلد چہارم

بغیر دفق و شہوت احتلام کا حکم۔ --- ۳۴۴ | کنویں کے احکام۔ --- ۳۳۹ زانی کے ذبیحہ کا حکم۔ --- ۳۴۴ | ناپاک پانی سے وضو یا غسل کیا، تو معلوم ہونے پر کب تک نمازیں دہرائی جائیں۔ --- ۳۴۰ اگر کافر اسلام لائے تو غسل کا حکم دیا جائے گا۔ --- ۳۴۵ | آبِ کنواں دہ دردہ کب ہوگا۔ --- ۳۴۴ غسل خانہ میں ننگے نہانے کا حکم۔ --- ۳۴۶ | کتا اگر کنویں میں گر جائے تو کیا حکم ہے؟ --- ۳۴۴ پانی کا بیان | مسائل نماز کا فرکے جھوٹے پانی کا حکم۔ --- ۳۴۷ | تیمم والے نے نماز میں پانی پایا نماز ٹوٹ گئی اگرچہ التحیات کے بعد۔ --- ۳۲، ۷۰۵ دہ دردہ حوض کا حکم جبکہ پانی دہ دردہ نہ ہو۔ --- ۳۴۸ | ایک سلام پھیرنے کے بعد پانی پایا نماز ہوگئی۔ --- ۳۲، ۷۰۵ دہ دردہ حوض میں عمق، طول و عرض کتنا لازم ہے، اور اس کا حکم جاری ہے یا نہیں۔ --- ۳۴۸ | صاحبِ ترتیب کو قضا نماز یاد تھی اور وقت میں گنجائش اور اس سے خلافِ حکم وقت کی پڑھی تو اس وقتیہ کو صحیح کہیں گے یا کیا۔ --- ۱۳۱ مینہ کے پانی کا حکم۔ --- ۳۳۱ | محل اقامت میں امام چار رکعت کی نماز دو پڑھ کر چلا گیا اور مقتدیوں کو اس کا حال نہ معلوم ہوا کہ مقیم ہے یا مسافر ان کی نماز نہ ہوئی اگرچہ یہ خود مسافر ہوں، ہاں اگر جنگل میں یا منزل پر ایسا ہوا تو ان کی بھی ہوگئی جو مقیم ہے اپنی چار پوری کر لے۔ --- ۷۰۵ حرام پیسے سے بنوائے گئے حوض کے پانی کا حکم۔ --- ۳۳۳ | التحقیق ان العلم المذکور بحال الامام شرط الحکم بصحۃ الاقتداء لا شرط نفس الاقتداء۔ --- ۱۴۵ (حاشیہ) مستعمل پانی کے بارے میں امام اعظم علیہ الرحمہ کا مذہب محقق۔ --- ۳۳۵ | جنائز آبِ وضو کے قطرے کپڑے پر گرنے یا مسجد میں گرانے کا حکم۔ --- ۳۳۶ | جنب یا حائضہ جس پر نہانا نہانا لازم تھا اسی حالت میں مر جائے تو ایک ہی غسل میت سب کو ادا کردے گا۔ --- ۲۵۲ حقے کے پانی کا حکم۔ --- ۳۳۷ | مسائل طلاق کنویں کا بیان | کسی سے کہا

تونے اپنی عورت کو طلاق دی اس نے کہا میں نے طلاق دی طلاق ہوگئی اور جھنجھلا کر جھڑکنے کی آواز سے کہا میں نے طلاق دی، نہ ہوگی۔ --- ۷۱۲، ۱۱۹

Fatawa Razawiya, Volume 4

Page 24 of 761

Issues of Claims (Masa'il Da'wa)

A woman asked for divorce; he refused. She asked again, and he said it harshly; it didn't happen. If he said it in a soft voice, it happened.	712, 119
The judge asked the defendant for an oath; he remained silent. This is also considered a refusal unless he is mute or deaf.	118, 719
Warning: It is known from here that matters of divorce are very sensitive. Forget about an addition or subtraction of a letter; the ruling changes with a change in tone. Strict caution is required.	712
In this case, it is recommended that the judge ask him for an oath three times. If he remains silent, it will be considered a refusal and a decree will be given in favor of the claimant.	118, 719

Issues of Oaths (Masa'il Qasam)

Issues of Gifts (Masa'il Hibah)

Swore an oath: "I will not refuse to give you such-and-such thing." She asked for it, and he promised. What is the ruling?	114, 713
He asked the woman: "Have you forgiven the dowry?" She said: "Forgiven, forgiven." Witnesses said: "Shall we witness?" He said: "Yes, be witnesses." It will be known through context whether this was genuine or sarcastic. If sarcastic, it is not forgiven.	119, 719
Swore an oath: "I will not give such-and-such thing to Zaid." Zaid asked for it, and he promised. The oath will not break until he actually gives it.	115, 713

Issues of Hiring (Masa'il Ijarah)

It is not enough for the expiation of an oath to feed ten poor people. If he can give to five, he should only fast for three days.	200, 713
Employment for serving an infidel is not permissible.	728
Swore an oath that he would not perform ablution if a nosebleed occurred. Then he urinated, and later his nose bled.	229, 737

Issues of Claims (Masa'il Da'wa)

He performed ablution; he will be considered to have violated his oath.	
Wages for reciting the Holy Quran at a grave are not permissible, and the stratagem for its permissibility.	721

Issues of Buying and Selling (Masa'il Bai')

Issues of Restriction and Permission (Masa'il Hazr-o-Ibaha)

The seller set a condition in the sale: "I have the option to maintain or cancel the sale for three days." During this period, the sold item will remain his property. The buyer will not be allowed to dispose of it. This condition is permissible for a maximum of three days; more than that is forbidden and makes the sale void.	126, 717
It is not permissible for a Muslim to voluntarily humiliate themselves.	47, 728
Said to someone: "Free your slave on my behalf in exchange for a thousand rupees." He did so. This is a sale, but it does not require offer and acceptance nor the conditions of a sale.	257, 717 (footnote)

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4

पृष्ठ 761 का 24

दावे के मामले (मसाइल-ए-दावा)

एक औरत ने तलाक़ माँगी, उसने नहीं माना। उसने फिर कहा, उसने सख़्ती से कह दिया, तो नहीं हुई; और अगर नरम आवाज़ से कहा तो हो गई।	712, 119
हाकिम ने मुद्दई-अलैह (प्रतिवादी) से हलफ़ (शपथ) के लिए कहा, वह चुप रहा, यह भी इंकार है, बशर्ते कि वह गूँगा या बहरा न हो।	118, 719
चेतावनी: यहाँ से मालूम हुआ कि तलाक़ के मसाइल बहुत नाज़ुक हैं। एक हर्फ़ की कमी-बेशी तो दूर, लहज़े के बदलने से हुक्म बदल जाता है। सख़्त एहतियात की ज़रूरत है।	712
इस सूरत में मुस्तहब (पसंदीदा) है कि क़ाज़ी उससे तीन बार हलफ़ के लिए कहे। अगर वह ख़ामोश रहे तो इसे इंकार समझकर मुद्दई (दावेदार) के पक्ष में डिक्री दे दे।	118, 719

क़सम के मामले (मसाइल-ए-क़सम)

हिबा (उपहार) के मामले (मसाइल-ए-हिबा)

क़सम खाई: "फलाँ चीज़ तुझे देने से इंकार न करूँगा।" उसने माँगी, उसने वादा किया, तो क्या हुक्म है?	114, 713
औरत से कहा: "तूने महर बख़्श (माफ़ कर) दिया?" उसने कहा: "बख़्श दिया, बख़्श दिया।" गवाहों ने कहा: "हम गवाह बन जाएँ?" उसने कहा: "बन जाओ, बन जाओ।" क़रीने (संदर्भ) से मालूम होगा कि उसका यह कहना वाक़ई है या तंज़ (व्यंग्य) से। अगर तंज़ से है, तो नहीं बख़्शा गया।	119, 719
क़सम खाई कि फलाँ चीज़ ज़ैद को न दूँगा। उसने माँगी, उसने वादा कर लिया। क़सम तब तक नहीं टूटेगी जब तक दे न दे।	115, 713

इजारा (किराया/मज़दूरी) के मामले (मसाइल-ए-इजारा)

200, 713

दावे के मामले (मसाइल-ए-दावा)

क़सम का कफ़्फ़ारा देने के लिए इतना नहीं है कि दस मिस्कीनों को खाना दे। अगर पाँच को दे सकता है तो सिर्फ़ तीन रोज़े रखे।	
काफ़िर की ख़िदमतगारी की नौकरी जाइज़ नहीं है।	728
क़सम खाई कि नकसीर फूटने से वुज़ू न करेगा। फिर पेशाब किया, फिर नाक से ख़ून निकला। उसने वुज़ू किया, तो वह ह़ानिस (क़सम तोड़ने वाला) हो जाएगा।	229, 737
क़ब्र पर क़ुरआन मजीद पढ़ने की उजरत (मज़दूरी) जाइज़ नहीं है और इसके जाइज़ होने का हीला (तरीक़ा)।	721

बैय (ख़रीद-फरोख़्त) के मामले (मसाइल-ए-बैय)

हज़्र व इबाहत (प्रतिबंध और अनुमति) के मामले (मसाइल-ए-हज़्र व इबाहत)

बाइ (विक्रेता) ने बैय में शर्त रखी कि: "तीन दिन तक मुझे बैय क़ायम रखने या न रखने का इख़्तियार है।" इस मुद्दत तक मबी (बिकी हुई चीज़) उसी की मिल्कियत रहेगी। मुश्तरी (ख़रीदार) को तसर्रुफ़ (इस्तेमाल) का हक़ न होगा। यह शर्त ज़्यादा से ज़्यादा तीन दिन के लिए जाइज़ है; इससे ज़्यादा के लिए हराम और मुफ़्सिद (बैय को ख़राब करने वाली) है।	126, 717
मुसलमान को जाइज़ नहीं कि जानबूझकर अपने आप को ज़िल्लत में डाले।	47, 728
किसी से कहा: "अपनी तरफ़ से मेरा ग़ुलाम एक हज़ार रुपये के बदले आज़ाद कर दो।" उसने कर दिया। यह बैय तो हुई लेकिन इसमें ईजाब-ओ-क़बूल और बैय की शर्तें दरकार नहीं।	257, 717 (हाशिया)

فتاویٰ رضویہ جلد چہارم

صفحہ 24 از 761

مسائل دعوی

عورت نے طلاق مانگی اس نے نہ مانا اس نے پھر کہا دی اس نے سختی سے کہادی، نہ ہوئی، اور نرم آواز سے کہا تو ہو گئی۔ ۷۱۲، ۱۱۹

حاکم نے مدعیٰ علیہ سے حلف کو کہا وہ چپ رہا، یہ بھی انکار ہے جبکہ گونگا یا بہرانہ ہو۔ ۷۱۹، ۱۱۸

تنبیہ: یہاں سے معلوم ہوا کہ طلاق کے مسائل بہت نازک ہیں ایک حرف کی کمی بیشی درکنار لہجہ کے بدلنے سے حکم بدلتا ہے سخت احتیاط درکار ہے۔ ۷۱۲

اس صورت میں مستحب ہے کہ قاضی اس سے تین بار حلف کو کہے اگر سکوت کرے انکار ٹھہرا کر مدعی کو ڈگری دے دے۔ ۷۱۹، ۱۱۸

مسائل قسم مسائل ہبہ

قسم کھائی فلاں چیز تجھے دینے سے انکار نہ کروں گا اس نے مانگی، اس نے وعدہ کیا تو کیا حکم ہے۔ ۷۱۳، ۱۱۴

عورت سے کہا تو نے مہر بخشا، اس نے کہا بخشا بخشا، گواہوں نے کہا ہم گواہ ہوجائیں، کہا ہو جاؤ ہو جاؤ، قرینہ سے معلوم ہوگا کہ اس کا یہ کہنا واقعی ہے یا طنز سے، طنز سے ہے تو نہ بخشا گیا۔ ۷۱۹، ۱۱۹

۷۱۳، ۱۱۵

مسائل دعوی

قسم کھائی کہ فلاں چیز زید کو نہ دوں گا اس نے مانگی اس نے وعدہ کرلیا قسم نہ ٹوٹے گی جب تک دے نہیں۔

مسائل اجارہ

قسم کا کفارہ دینے کو اتنا نہیں کہ دس مسکینوں کو کھانا دے پانچ کو دے سکتا ہے تو صرف تین روزے رکھے۔ ۲۰۰، ۷۱۳

کافر کی خدمت گاری کی نوکری جائز نہیں۔ ۷۲۸

قسم کھائی کہ نکسیر پھوٹنے سے وضو نہ کرے گا، پھر پیشاب کیا پھر ناک سے خون نکلا اس نے وضو کیا حانث ہوجائے گا۔ ۲۲۹، ۷۳۷

قبر پر قرآن مجید پڑھنے کی اُجرت جائز نہیں اور اس کے جواز کا حیلہ۔ ۷۲۱

مسائل بیع

مسائل حظر و اباحت

بائع نے بیع میں شرط کر لی کہ تین دن تک مجھے بیع قائم رکھنے نہ رکھنے کا اختیار ہے اس مدت تک مبیع اسی کی ملک رہے گی مشتری کو تصرف جائز نہ ہوگا ۱۲۶، ۷۱۷

یہ شرط انتہا درجہ تین دن کے لیے جائز ہے زیادہ کیلئے حرام و مفسد بیع۔

مسلمان کو جائز نہیں کہ باختیار خود اپنے کو ذلت میں ڈالے۔ ۴۷، ۷۲۸

کسی سے کہا اپنا غلام میری طرف سے بعوض ہزار روپے کے آزاد کردے، اس نے کردیا یہ بیع تو ہوئی مگر اسے نہ ایجاب و قبول درکار نہ بیع کے شرائط (حاشیہ) ۲۵۷، ۷۱۷

Fatawa Razawiyya - Volume Four

Page 48, 728: If a Muslim is dying of hunger or thirst, helping him is obligatory for Muslims. In such a state, if he finds food or water with someone else, it is obligatory for him to ask for it, and if he [the owner] is not himself compelled by need, it is obligatory for him to give it. Page 196: The jurists (Fuqaha) in rulings often do not take into account rare cases.

Page 200, 728: Wasting water is forbidden. Page 207: Commentaries (Ash-Shuruh) take precedence over the Fatawa.

Page 202, 728: Wasting wealth is forbidden. Page 208: Mention of most of the reliable primary texts (Mutun) in the school of thought (Madhab).

Section: Jurisprudential Benefits (Fawaid Fiqhiyya) Page 208: 'Al-Munyah' is not among the primary texts (Mutun), rather it is counted among the Fatawa.

Page 121: Indication (Dalalat) is also like an explicit statement (Sarih), but when an explicit statement contradicts it, it is not reliable. Page 208: 'Al-Tanwir' is not among those primary texts.

Page 256: Two similar things whose objectives do not differ; when they combine, they overlap. Page 208: 'Al-Ashbah wa al-Naza'ir' is not among the primary texts, rather its status is in Fatawa or in Commentaries.

Page 257: The subordinate (Tabi') is not singled out with a ruling. Page 208: 'Al-Hidayah', despite being a commentary, is counted among the primary texts.

Page 257: With the fall of the followed (Matbu'), the follower (Tabi') falls. Page 209: Mention of many reliable commentaries.

Page 257: When a thing becomes void, what is within it becomes void. Page 209: Mention of some [texts] that are not relied upon.

Page 257: The conditions of the containing (Mutadammin - with kasra) are observed, not the contained (Mutadamman - with fatha). Page 209: Mention of many reliable Fatawa.

Section: Protocol of the Mufti (Rasm al-Mufti) Page 210: Mention of some [texts] that are not relied upon.

Page 33: Often they point to the intended meaning through examples. Page 210: Mention of submissions (Ma'rudat).

Page 39: Sometimes 'void' (Batil) is said in the sense that it 'will become void' (Sa-yabtul). Page 210: Mention of what they said that it is not relied upon.

Page 53: The fact that a narration is 'apparent' (Zahir) does not necessitate its opposite being 'rare' (Nadir). Page 210: The term 'Shaykhayn' may sometimes be used for the two companions (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad).

Page 94: It is Imam Muhammad's habit to provide evidence for a conflicting view with conflicting evidence for clarification. Page 251, 736: Repetition of issues in scholarly benefits is not defective.

Page 138: Understandings (Mafahim) are taken from restrictions mentioned in the ruling, not in the reasoning (Ta'lil), unless evidence indicates so. Page 307: Every citation followed by 'kadha' (so-and-so) in Al-Hindiyya is a verbatim quote, and what it follows with 'hakadha' (like this) is a citation of the meaning.

फ़तावा रज़विया - जिल्द चौथी

पृष्ठ ४८, ७२८: यदि کوئی मुसलमान भूख या प्यास से मर रहा हो, तो उसकी सहायता करना मुसलमानों पर अनिवार्य है। ऐसी स्थिति में यदि वह किसी दूसरे के पास भोजन-पानी पाता है, तो उसे माँगना उसके लिए अनिवार्य है, और यदि देने वाला स्वयं विवश या मोहताज न हो, तो उसे देना अनिवार्य है। पृष्ठ १९६: फ़क़ीह (विधिवेत्ता) अक्सर आदेशों में दुर्लभ स्थितियों पर विचार नहीं करते हैं।

पृष्ठ २००, ७२८: पानी बर्बाद करना हराम है। पृष्ठ २०७: व्याख्याएँ(अश-शुरुह) फ़तावा पर वरीयता रखती हैं।

पृष्ठ २०२, ७२८: धन बर्बाद करना हराम है। पृष्ठ २०८: पंथ (मज़हब) में अधिकांश विश्वसनीय ग्रंथों (मुतून) का उल्लेख।

अनुभाग: फ़िक़ही लाभ (फ़वाइद-ए-फ़िक़हिया) पृष्ठ २०८: 'अल-मुन्या' मूल ग्रंथों (मुतून) में से नहीं है, बल्कि फ़तावा में गिनी जाती है।

पृष्ठ १२१: संकेत (दलालत) भी स्पष्ट कथन (सरीह) के समान है, लेकिन जब स्पष्ट कथन इसके विपरीत हो, तो यह विश्वसनीय नहीं है। पृष्ठ २०८: 'अल-तनवीर' उन मूल ग्रंथों में से नहीं है।

पृष्ठ २५१: दो समान चीजें जिनके उद्देश्य भिन्न नहीं होते; जब वे साथ मिलती हैं, तो वे एक-दूसरे में समा जाती हैं। पृष्ठ २०८: 'अल-अश्बाह व अन-नज़ैर' मूल ग्रंथों में से नहीं है, बल्कि इसका स्थान फ़तावा या व्याख्याओं में है।

पृष्ठ २५७: अधीनस्थ (ताबा) को अकेले किसी आदेश के लिए अलग नहीं किया जाता। पृष्ठ २०८: 'अल-हिदाया' व्याख्या होने के बावजूद मूल ग्रंथों में गिनी जाती है।

पृष्ठ २५७: नेता (मत्बूअ) के गिरने से अनुयायी (ताबा) भी गिर जाता है। पृष्ठ २०९: कई विश्वसनीय व्याख्याओं का उल्लेख।

पृष्ठ २५७: जब कोई चीज़ अमान्य हो जाती है, तो उसके भीतर की चीज़ भी अमान्य हो जाती है। पृष्ठ २०९: कुछ का उल्लेख जिन पर भरोसा नहीं किया जाता।

पृष्ठ २५७: समाहित करने वाले (मुतदम्मिन) की शर्तों का पालन करना, न कि समाहित किए गए (मुतदम्मन) की। पृष्ठ २०९: कई विश्वसनीय फ़तावा का उल्लेख।

अनुभाग: मुफ़्ती का प्रोटोकॉल (रस्म-उल-मुफ़्ती) पृष्ठ २१०: कुछ का उल्लेख जिन पर भरोसा नहीं किया जाता।

पृष्ठ ३३: अक्सर वे उदाहरणों के माध्यम से वांछित अर्थ की ओर संकेत करते हैं। पृष्ठ २१०: 'मारूज़ात' (प्रस्तुतियों) का उल्लेख।

पृष्ठ ३९: कभी-कभी 'बातिल' (शून्य) का उपयोग इस अर्थ में किया जाता है कि वह अमान्य हो जाएगा। पृष्ठ २१०: उल्लेख कि उन्होंने क्या कहा जिस पर भरोसा नहीं किया जाता।

पृष्ठ ५३: किसी विवरण का 'ज़ाहिर' (स्पष्ट) होना यह आवश्यक नहीं बनाता कि उसका विपरीत 'नादिर' (दुर्लभ) हो। पृष्ठ २१०: 'शेखैन' शब्द का उपयोग कभी-कभी दोनों साथियों (इमाम अबू यूसुफ और इमाम मुहम्मद) के लिए किया जा सकता है।

पृष्ठ ९४: इमाम मुहम्मद की आदत है कि वे स्पष्टीकरण के लिए विरोधाभासी साक्ष्यों के साथ विरोधाभासी दृष्टिकोण का प्रमाण प्रदान करते हैं। पृष्ठ २५१, ७३६: विद्वत्तापूर्ण लाभों में मुद्दों की पुनरावृत्ति दोषपूर्ण नहीं है।

पृष्ठ १३८: समझ (मफ़ाहीम) आदेश में उल्लिखित प्रतिबंधों से ली जाती है, न कि कारण (तलील) से, जब तक कि प्रमाण ऐसा संकेत न दे। पृष्ठ ३०७: अल-हिन्दिया में 'कज़ा' (वैसा) के साथ दी गई हर उद्धरण उसका शब्दशः उद्धरण है, और जो 'हकज़ा' (ऐसा) के साथ है, वह अर्थ का उद्धरण है।

पृष्ठ ७६१ का २५

فتاویٰ رضویہ - جلد چہارم

۴۸، ۷۲۸: اگر کوئی مسلمان بھوک یا پیاس سے مرتا ہو اس کی اعانت مسلمانوں پر فرض ہے ایسی حالت میں اگر وہ دوسرے کے پاس کھانا پانی پائے اس پر مانگنا فرض ہے اور یہ خود مجبور نہ محتاج نہ ہو تو اس پر دینا فرض ہے۔ ۱۹۶: فقہائے کرام احکام میں اکثر نادر صورتوں کا لحاظ نہیں فرماتے۔

۲۰۰، ۷۲۸: پانی ضائع کرنا حرام ہے۔ ۲۰۷: الشروح مقدمۃ علی الفتاویٰ۔

۲۰۲، ۷۲۸: مال ضائع کرنا حرام ہے۔ ۲۰۸: ذکراکثر المتون المعتمدۃ فی المذہب۔

عنوان: فوائد فقہیہ ۲۰۸: المنیۃ لیست من المتون بل عدادھا فی الفتاویٰ۔

۱۲۱: دلالت بھی مثل صریح ہے مگر جب صریح اس کے خلاف ہو تو معتبر نہیں۔ ۲۰۸: لیس التنویر من تلك المتون۔

۲۵۶: متجانسان لایختلف مقصودھما اذا اجتمعتا تداخلا۔ ۲۰۸: الاشباہ والنظائر لیست من المتون بل مرتبتھا فی الفتاوی او فی الشروح۔

۲۵۷: لا یفرد التابع بحکم۔ ۲۰۸: الھدایۃ مع انھا شرح معدودۃ فی المتون۔

۲۵۷: بسقوط المتبوع یسقط التابع ۲۰۹: ذکر کثیر من الشروح المعتمدۃ۔

۲۵۷: اذا بطل شیئی بطل ما فی ضمنہ۔ ۲۰۹: ذکر بعض ما لایعتمد۔

۲۵۷: تراعی شروط المتضمن بالکسر دون المتضمن۔ ۲۰۹: ذکر کثیر من الفتاوی المعتمدۃ۔

عنوان: رسم المفتی ۲۱۰: ذکر بعض ما لایعتمد۔

۳۳: کثیرا ما یشیرون بالمثال الی المراد۔ ۲۱۰: ذکر المعروضات۔

۳۹: ربما یقال باطل بمعنی سیبطل۔ ۲۱۰: ذکر ما قالوا انه لا یعتمد۔

۵۳: کون روایة ظاهره لا یقضی بکون خلافها نادره۔ ۲۱۰: قد یطلق لفظ الشیخین علی الصاحبین۔

۹۴: عادة محمد الاستشهاد علی خلافیة بخلافیة ایضاحا۔ ۲۵۱، ۷۳۶: افادات علمیہ میں تکرار مسائل معیوب نہیں۔

۱۳۸: المفاهیم تؤخذ من قیود تذکر في الحکم لا فی التعلیل الا اذا دل الدلیل۔ ۳۰۷: کل نقل ذیله فی الهندیة بقوله کذا فهو نقل عنه بلفظه وما ذیله بقوله هکذا فنقل عنه بالمعنی۔

صفحہ ۲۵ از ۷۶۱

Volume Four | Fatawa Razawiyya

Subject/Topic Description	Page No.
Imam al-Halabi, author of al-Hilyah, is not among the masters of preference (tarjih).	416
Beliefs (Aqa'id)	
The Messenger of Allah (peace and blessings be upon him and his family) has more authority over the believers than their own lives.	47, 438
The Messenger of Allah (peace and blessings be upon him and his family) is the master of the lives and wealth of the believers.	47, 438
If he requests something from any Muslim, it is not—God forbid—a simple asking, but rather it is certainly like a master taking something from his slave's earnings, for the slave and all his earnings are the property of the master.	48, 438
Theological Issues (Masail-e-Kalamiyah)	
A possibility without evidence does not negate certainty (yaqin) in its broader sense.	70
Refutation of Deviants (Radd-e-Bad Mazhaban)	
	132

Legal Principles (Fawaid Usuliyah) / Statements	Page No.
Legal Principles (Fawaid Usuliyah)	
The informative form (sighat al-ikhbar) is more emphatic than the imperative (amr).	35
The informative form, even if its literal meaning is obligation (wujub), may sometimes be used for recommendation (mandub).	54
A possibility, if not based on evidence, does not contradict the apparent meaning (zahir).	70
As long as definitive evidence (dalil qat'i) is easily available, acting upon presumptive evidence (dalil zanni) is not permissible.	132, 74
'Ma'a' (with) can sometimes mean 'ba'd' (after).	227
It is permissible for multiple Sharia causes to converge on a single effect (ma'lul).	229
Specifying something with something else can happen in two ways.	229

Subject/Topic Description	Page No.	Legal Principles (Fawaid Usuliyah) / Statements	Page No.
Non-muqallids who claim to abandon following the Imams and act upon Hadith, leave definitive evidence and turn towards presumptive evidence, and this is forbidden.		Precedence (qabliyah) does not necessitate the existence of what follows it.	292 (Footnote)
Hadith Benefits (Fawaid-e-Hadithiya)		Giving a choice (takhyir) does not negate obligation (wujub).	292
Mention of some authentic (sahah) books of Hadith and those that are not counted among them.	210	Maltreatment (isa'ah) is below 'dislike of prohibition' (karahah al-tahrim) and above 'dislike of purification' (karahah al-tanzih).	314
Mention of Sunan books.	210	'Awla' (better/preferable) may sometimes be applied to an obligation (wajib), or even an absolute duty (fard).	314
Mention of some works of our Imams in Hadith and that they are not inferior to Sunan but superior to some of them.	210	It is no wonder to apply 'isa'ah' (maltreatment) to abandoning a 'wajib' (obligation).	315
Mention of Musanid books.	211	'Wujub' (obligation) may sometimes be used in the sense of emphasis (takid), or even simple establishment (subut).	316

विषय/विवरण	पृष्ठ संख्या
इमाम अल-हलबी, अल-हिल्या के लेखक, तरजीह (प्राथमिकता देने) के उस्तादों में से नहीं हैं।	416
आस्था (अक़ाइद)	
अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उनके परिवार पर शांति हो) का मुसलमानों पर उनकी अपनी जान से अधिक अधिकार है।	47, 438
अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उनके परिवार पर शांति हो) मुसलमानों के जान और माल के मालिक हैं।	47, 438
यदि वह किसी मुसलमान से कुछ मांगते हैं, तो वह - अल्लाह न करे - केवल एक सवाल नहीं है, बल्कि निश्चित रूप से ऐसा है जैसे कोई मालिक अपने गुलाम की कमाई से कुछ लेता है, क्योंकि गुलाम और उसकी सारी कमाई मालिक की ही संपत्ति है।	48, 438
धर्मशास्त्रीय मुद्दे (मसाइल-ए-कलामिया)	227

सैद्धांतिक लाभ (फ़वाइद उसूलिया) / कथन	पृष्ठ संख्या
सैद्धांतिक लाभ (फ़वाइद उसूलिया)	
सूचनात्मक रूप (सिगा-ए-इख़बार) आदेशात्मक रूप (अम्र) से अधिक प्रभावशाली है।	35
सूचनात्मक रूप, भले ही इसका स्पष्ट अर्थ अनिवार्यता (वुजूब) हो, कभी-कभी अनुशंसा (नदब) के लिए भी आता है।	54
यदि संभावना किसी साक्ष्य पर आधारित नहीं है, तो वह प्रत्यक्ष अर्थ (ज़ाहिर) का विरोध नहीं करती है।	70
जब तक निश्चित प्रमाण (दलील-ए-क़तई) आसानी से उपलब्ध हो, तब तक संभावित प्रमाण (दलील-ए-ज़न्नी) पर अमल करना जायज़ नहीं है।	132, 74

विषय/विवरण	पृष्ठ संख्या	सैद्धांतिक लाभ (फ़वाइद उसूलिया) / कथन	पृष्ठ संख्या
		'मआ' (साथ) कभी-कभी 'बा'द' (बाद में) के अर्थ में भी हो सकता है।	
बिना किसी प्रमाण के संभावना, व्यापक अर्थ में निश्चितता (यक़ीन) को नहीं नकारती।	70	एक ही कार्य (मअ़लूल) पर कई शरीयत कारणों का एकत्र होना संभव है।	229
विपथगामियों का खंडन (रद्द-ए-बद मज़हबां)		किसी चीज़ को किसी चीज़ के साथ विशिष्ट करना दो तरह से होता है।	229
गैर-मुक़ल्लिद जो इमामों की पैरवी छोड़कर हदीस पर अमल करने का दावा करते हैं, वे निश्चित प्रमाण छोड़कर संभावित की ओर जाते हैं और यह हराम है।	132	पूर्वता (क़ब्लिया) अपने बाद आने वाली चीज़ के अस्तित्व की आवश्यकता नहीं बताती।	292 (हाशिया)
हदीस के लाभ (फ़वाइद-ए-हदीसिया)		विकल्प देना (तख़यीर) अनिवार्यता (वुजूब) को नहीं नकारता।	292
हदीस की कुछ प्रामाणिक (सिहाह) पुस्तकों का उल्लेख और जो उनमें नहीं गिनी जातीं।	210	बुरा व्यवहार (इसाअत), मकरूह-ए-तहरीमी से नीचे और मकरूह-ए-तन्ज़ीही से ऊपर है।	314
सुनन (पुस्तकों) का उल्लेख।	210	'औला' (बेहतर) शब्द कभी-कभी वाजिब, बल्कि फ़र्ज़ पर भी बोला जा सकता है।	314
हदीस में हमारे इमामों की कुछ रचनाओं का उल्लेख और यह कि वे सुनन से कम नहीं बल्कि उनमें से कुछ से बेहतर हैं।	210	वाजिब को छोड़ने पर 'इसाअत' (बुरा व्यवहार) शब्द बोलने में कोई आश्चर्य नहीं है।	315

विषय/विवरण	पृष्ठ संख्या	सैद्धांतिक लाभ (फ़वाइद उसूलिया) / कथन	पृष्ठ संख्या
		'वुजूब' (अनिवार्यता) का उपयोग कभी-कभी ताकीद	
मुसानिद (पुस्तकों) का उल्लेख।	211	(ज़ोर देने) के अर्थ में, बल्कि केवल अस्तित्व (सुबूत) के अर्थ में भी हो सकता है।	316

पृष्ठ 26/761

فوائد اصولیہ

فوائد اصولیہ

الامام الحلبی صاحب الحلیة لیس من ارباب الترجیح۔ ۴۱۶

عقائد

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم مسلمانوں پر اُن کی جانوں سے زیادہ اختیار رکھتے ہیں۔ ۴۷، ۴۳۸

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم مسلمانوں کی جان و مال کے مالک ہیں۔ ۴۷، ۴۳۸

اگر وہ کسی مسلمان سے کچھ طلب فرمائیں وہ معاذ اللہ سوال نہیں بلکہ یقینا ایسا ہے جیسے مولیٰ اپنے غلام سے اس کی کمائی کا کچھ لے کر غلام اور اس کی کمائی سب ملک مولیٰ ہے۔ ۴۸، ۴۳۸

مسائل کلامیہ

احتمال بلا دلیل لا ینا في الیقین بالمعنی الاعم۔ ۷۰

رَدِّ بد مذہباں

صیغة الاخبار آکد من الامر۔ ۳۵

صیغة الاخبار وانکان ظاھرھا الوجوب ربما تأتی للندب۔ ۵۴

الاحتمال اذا لم یکن عن دلیل لم یعارض الظاھر۔ ۷۰

جب تک دلیل قطعی بآسانی ملے دلیل ظنی پر عمل جائز نہیں ۱۳۲، ۷۴

قد تکون مع بمعنی بعد۔ ۲۲۷

یجوز اجتماع علل شرعیة علی معلول ۲۲۹

۲۲۹

فوائد اصولیہ

اختصاص شیئ بشیئ

علی وجھین۔

غیر مقلدین کہ تقلید ائمہ چھوڑ کر عمل بالحدیث کے

مدعی ہیں دلیل قطعی چھوڑ کر ظنی کی طرف جاتے ہیں ۱۳۲

اور یہ حرام ہے۔

فوائد حدیثیہ

ذکر بعض الصحاح من کتب الحدیث وما لا یعد منھا۔ ۲۱۰

ذکر السنن۔ ۲۱۰

ذکر بعض تصانیف ائمتنا في الحدیث وانھا لیست بدون

السنن بل فوق بعضھا۔ ۲۱۰

ذکر المسانید۔ ۲۱۱

القبلیة لا تقتضی وجود

مدخولھا (حاشیہ) ۲۹۲

التخییر لا ینا في

الوجوب۔ ۲۹۲

الاسائة دون کراھة

التحریم وفوق کراھة

التنزیہ۔ ۳۱۴

قد یطلق الاولی علی

الواجب بل علی الفرض۔ ۳۱۴

لا غرو في اطلاق

الاساعة علی ترك

الواجب۔ ۳۱۵

قد یطلق الوجوب بمعنی

التأکید بل مجرد الثبوت۔ ۳۱۶

Fatawa Razawiya Volume 4

Summary List of Treatises

Treatise 1: Laws of the Scholars regarding Tayammum when water is found: Unparalleled research by the author on the detailed rulings for a person performing prayer with Tayammum who becomes aware of water belonging to another person before, during, or after the prayer. It mentions the laws laid down by the scholars and then the author formulates a law for the same. Page: 31

Discussion: When is the consideration of his thought of refusal or giving valid? Discussion with 'Al-Bada'i' and 'Al-Hilya'. Page: 75

Prelude of twelve (12) unique issues to manifest the ruling, and discussion with 'An-Nahr', 'Ash-Shami', 'Al-Fath', and others. Page: 32

Discussion: Obtaining power over water through a promise, containing five notes and verification of rulings not found in the books. Page: 77

Discussion: Is seeking mandatory if one knows about it before prayer? Discussion with 'Al-Ghuniyah' and 'Al-Mabsut', containing two stations. Page: 44

An objection by the author regarding the issue of promise. Page: 82

Station 1: The words of the scholars here follow three paths. Discussion with 'An-Nihayah', 'Al-Bahr', 'Ash-Shami', 'Al-Mabsut', and many others, including those who provide detail, those who make it mandatory, 'Al-Hilya', and 'Sadr ash-Shari'ah'. Page: 50

Discussion: The issue of hoping for water at the end of the time. Discussion with Imam al-Ayni in fifteen aspects, and with Imam Malik al-Ulama and the illustrious Imams: al-Bukhari, al-Kaki, al-Akmal, and al-Kamal. Page: 89

Station 2: Is doubt annexed to the thought of giving and refusal? Discussion with 'Al-Jawharah' in five aspects along with 'Sadr ash-Shari'ah'. Page: 62

Author's division of the promise into 'refusal-based' (aba'i) and 'hope-based' (raja'i), and verification of the ruling therein. Page: 114

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

संक्षिप्त पत्र सूची

रिसाला 1: तयम्मुम में पानी पाए जाने पर विद्वानों के नियम: तयम्मुम के साथ नमाज़ पढ़ने वाले व्यक्ति के लिए नमाज़ से पहले, दौरान या बाद में किसी दूसरे के पानी के बारे में पता चलने पर विस्तृत नियमों पर लेखक द्वारा बेमिसाल शोध। इसमें विद्वानों द्वारा निर्धारित नियमों का उल्लेख है और फिर लेखक ने इसके लिए एक नियम बनाया है। पृष्ठ: 31

चर्चा: उसके मना करने या देने के विचार पर कब ध्यान देना मान्य है? 'अल-बदाइ' और 'अल-हिलया' के साथ चर्चा। पृष्ठ: 75

नियम को स्पष्ट करने के लिए बारह (12) अनूठे मसलों की भूमिका, और 'अन-नहर', 'अश-शामी', 'अल-फत्ह' आदि के साथ चर्चा। पृष्ठ: 32

चर्चा: वादे के माध्यम से पानी पर शक्ति प्राप्त करना, जिसमें पांच चेतावनियां और उन नियमों का शोध है जो किताबों में नहीं मिलते। पृष्ठ: 77

चर्चा: क्या नमाज़ से पहले इसके बारे में पता होने पर तलाश करना अनिवार्य है? 'अल-ग़ुनिया' और 'अल-मबसूत' के साथ चर्चा, जिसमें दो पड़ाव हैं। पृष्ठ: 44

वादे के मसले पर लेखक द्वारा एक आपत्ति। पृष्ठ: 82

पड़ाव 1: यहाँ विद्वानों के कथन तीन रास्तों पर आधारित हैं। 'अन-निहाया', 'अल-बह्र', 'अश-शामी', 'अल-मबसूत' और कई अन्य लोगों के साथ चर्चा, जिनमें विस्तार करने वाले, अनिवार्य करने वाले, 'अल-हिलया' और 'सद्रुश शरीया' शामिल हैं। पृष्ठ: 50

चर्चा: समय के अंत में पानी की आशा करने का मसला। इमाम अल-ऐनी के साथ पंद्रह पहलुओं में चर्चा, और इमाम मलिकुल उलमा और महान इमामों: अल-बुखारी, अल-काकी, अल-अकमल और अल-कमाल के साथ चर्चा। पृष्ठ: 89

पड़ाव 2: क्या संदेह देने या मना करने के विचार के साथ जुड़ा हुआ है? 'अल-जौहरा' के साथ पांच पहलुओं में और 'सद्रुश शरीया' के साथ चर्चा। पृष्ठ: 62

लेखक द्वारा वादे को 'इनकारी' (अबाई) और 'उमीदी' (रजई) में विभाजित करना, और इसमें नियम का शोध। पृष्ठ: 114

पृष्ठ ७६१ का २७

فتاویٰ رضویہ جلد چہارم

مجمل فہرست رسائل

رسالہ ۱: قوانین العلماء فی تیمم عند زیدماء تیمم کرنے والا نماز میں یا اس سے پہلے یا بعد دوسرے کے پانی پر مطلع ہو اس کی تفصیل احکام میں بے نظیر تحقیقات مصنف علماء کے قانون کا ذکر پھر مصنف کا اس کیلئے قانون وضع کرنا۔ صفحہ: ۳۱

بحث متی العبرة بظنه المنع او العطاء والكلام مع البدائع والحلية۔ صفحہ: ۷۵

اظہارِ حکم کے لئے بارہ ۱۲ مسائل کی تمہید بے ندید والكلام مع النهر والشامي والفتح وغیرھم۔ صفحہ: ۳۲

بحث حصول القدرة على الماء بالوعد وفيه خمس تنبيهات وتحقيق احكام لم توجد في الكتب۔ صفحہ: ۷۷

بحث هل يجب الطلب اذا علمه قبل الصلاة والكلام مع الغنية والمبسوط وفيه مقامان۔ صفحہ: ۴۴

اشکال للمصنف على مسألة الوعد۔ صفحہ: ۸۲

المقام ۱: كلمات العلماء ههنا على ثلثة مسالك والكلام مع النهاية والبحر والشامی والمبسوط وكثيرين والمفصلين والموجبين والحلية وصدر الشريعة۔ صفحہ: ۵۰

بحث مسألة رجاء الماء أخر الوقت والكلام مع الامام العينى بخمسة عشر وجهاً ومع الامام ملك العلماء والائمة الجلة البخارى والكاكى والاكمل والكمال۔ صفحہ: ۸۹

المقام ۲: هل الشك ملحق بظن العطاء والمنع والكلام مع الجوهرة بخمسة وجوه مع صدر الشريعة۔ صفحہ: ۶۲

تقسیم المصنّف الوعد الی الابائی والرجائی وتحقیق الحکم فیه۔ صفحہ: ۱۱۴

صفحہ ۲۷ از ۷۶۱

Fatawa Razawiya Volume 4

Page 213, Entry 117: The author's research on 'Man'a Dilalah' and details not found in other books. Texts on the claim.

Page 216, Entry 128: Discussion on whether the obligation of seeking (water) is a condition for the validity of Tayammum; the author's research on it and discussion with the masters of Al-Azhar, etc. Speech of Imam Sadr al-Shari'ah and objections of observers to it.

Page 231: Twelve benefits from the author regarding the interpretations of scholars on the speech of Sadr al-Shari'ah, clarifying the matter and discussing it with Al-Barjandi with four points, with Al-Fadil Qara Baghi with eight points, objections to Ghayat al-Hawashi with seven points, and refutation of Al-Lakhnawi with twenty-five points.

Page 252, Entry 133: The law of Imam Sadr al-Shari'ah and the discussion on it from three aspects, with Akhi Chalabi, and refutation of Al-Lakhnawi. Noble observations of the author.

Page 258, Entry 138: The law of Al-Bahr al-Ra'iq and discussion on it from eleven aspects. Clearing profound doubts with shining observations.

Page 267, Entry 166: The law of Allama al-Halabi and discussion on it from nine aspects. Research of the author regarding one who was in a state of major ritual impurity (Janabah), performed Tayammum, then had a minor ritual impurity (Hadath), then performed Wudu, then passed by a river and did not bathe: that when he finds water for Wudu, he performs Wudu and performs Tayammum for Janabah, and discussion with Al-Khaniyah.

Page 271, Entry 171: The Razawi Law: collecting 264 types into 10 and describing 19 principles. The author's interpretation of the speech of Sadr al-Shari'ah.

Page 272, Entry 185: Description of 138 types and encompassing their rulings, and reference to countless types and encompassing their rulings. The author's commentary on the speech of Sadr al-Shari'ah.

Page 283, Entry 189: Treatise 2: 'Al-Tulbah al-Badi'ah' regarding the statement of Sadr al-Shari'ah at the beginning of the chapter of Tayammum. The passage of Imam Sadr al-Shari'ah in 'Sharh al-Aqa'id', which has been controversial from that day to this; its exquisite research is among the author's special contributions. Treatise 3: 'Mujalli al-

Sham'ah' for combining ritual impurities: 98 cases where both minor and major ritual impurities are combined, and glorious researches into their rulings.

Page 283, Entry 191: The author establishing seven arguments for the claim that if someone has both major and minor ritual impurity and cannot bathe but can perform Wudu, they should not perform Wudu either, but only perform Tayammum. Discussion with Al-Bada'i', Al-Halabi, Al-Shami, Malik al-Ulama, Al-Kafi, Al-Zayla'i, Al-Fath, Al-Hilyah, Al-Bahr, Al-Shurunbulali, Chalabi, Al-Tahtawi, and refutation of Al-Kankohi.

फ़तावा रज़विया खंड 4

पृष्ठ 213, प्रविष्टि 117: 'मना दिलालह' पर लेखक का शोध और वह विवरण जो अन्य पुस्तकों में नहीं मिलता। दावे पर मूल पाठ।

पृष्ठ 216, प्रविष्टि 128: क्या तयम्मुम की वैधता के लिए (पानी की) तलाश की अनिवार्यता एक शर्त है; इस पर लेखक का शोध और अल-अज़हर के स्वामियों आदि के साथ चर्चा। इमाम सद्र अल-शरिया का कथन और उस पर निरीक्षकों की आपत्तियां।

पृष्ठ 231: सद्र अल-शरिया के कथन पर विद्वानों की व्याख्याओं पर लेखक के बारह लाभ, मामले को स्पष्ट करना और अल-बरजंदी के साथ चार पहलुओं पर चर्चा, अल-फादिल करा बागी के साथ आठ पहलुओं पर, गायत अल-हवाशी पर सात पहलुओं पर आपत्तियां, और अल-लखनवी का पच्चीस पहलुओं के साथ खंडन।

पृष्ठ 252, प्रविष्टि 133: इमाम सद्र अल-शरिया का कानून और उस पर तीन पहलुओं से चर्चा, अख़ी चल्पी के साथ, और अल-लखनवी का खंडन। लेखक के श्रेष्ठ विचार।

पृष्ठ 258, प्रविष्टि 138: अल-बहर अल-राईक का कानून और उस पर ग्यारह पहलुओं से चर्चा। चमकते विचारों के साथ गहरे संदेहों का निवारण।

पृष्ठ 267, प्रविष्टि 166: अल्लामा अल-हलबी का कानून और उस पर नौ पहलुओं से चर्चा। लेखक का शोध उस व्यक्ति के बारे में जिसे बड़ी नापाकी (जनाबत) थी, उसने तयम्मुम किया, फिर छोटी नापाकी (हदथ) हुई, फिर वुज़ू किया, फिर एक नदी के पास से गुज़रा और स्नान नहीं किया: कि जब उसे वुज़ू के लिए पानी मिले, तो वह वुज़ू करे और जनाबत के लिए तयम्मुम करे, और अल-खानिया के साथ चर्चा।

पृष्ठ 271, प्रविष्टि 171: रज़वी कानून: 264 प्रकारों को 10 में एकत्रित करना और 19 सिद्धांतों का वर्णन। सद्र अल-शरिया के कथन पर लेखक की व्याख्या।

पृष्ठ 272, प्रविष्टि 185: 138 प्रकारों का वर्णन और उनके नियमों का समावेश, और अनगिनत प्रकारों का संदर्भ और उनके नियमों का समावेश। सद्र अल-शरिया के कथन पर लेखक की व्याख्या।

पृष्ठ 283, प्रविष्टि 189: ग्रंथ 2: 'अल-तुलबा अल-बदीया', तयम्मुम के अध्याय की शुरुआत में सद्र अल-शरिया के कथन के संबंध में। 'शरह अल-अकाएद' में इमाम सद्र अल-शरिया का अंश, जो उस दिन से आज तक विवाद का विषय रहा है; इसका उत्कृष्ट शोध लेखक के विशेष योगदानों में से है। ग्रंथ 3: नापाकियों के संयोजन के लिए 'मुजल्ली अल-शमा': 98 स्थितियाँ जहाँ छोटी और बड़ी दोनों नापाकियाँ संयुक्त होती हैं, और उनके नियमों में शानदार शोध।

पृष्ठ 283, प्रविष्टि 191: इस दावे पर लेखक के सात तर्क कि यदि किसी के पास बड़ी और छोटी दोनों नापाकियाँ हैं और वह स्नान नहीं कर सकता लेकिन वुज़ू कर सकता है, तो उसे वुज़ू भी नहीं करना चाहिए, केवल तयम्मुम करना चाहिए। अल-बदाई, अल-हलबी, अल-शामी, मलिक अल-उलेमा, अल-काफी, अल-ज़ैलाई, अल-फतह, अल-हिल्या, अल-बहर, अल-शुरुनबुलाली, चल्पी, अल-तह्तावी के साथ चर्चा, और अल-कनकोही का खंडन।

पृष्ठ 28/761

فتاوی رضویه جلد چہارم

صفحہ ۲۱۳، نمبر ۱۱۷: منع دلالة میں مصنف کی تحقیق اور وہ تفصیل کہ کتابوں میں نہ ملے گی۔ مدعا پر نصوص۔

صفحہ ۲۱۶، نمبر ۱۲۸: بحث هل وجوب الطلب بمعنی الاشتراط لحصة التیمم وتحقیق المصنف فیه والکلام مع السادات الازهری وط وش۔ کلام الامام صدر الشریعة واعتراضات النظار علیه۔

صفحہ ۲۳۱: تاویلات العلماء لکلام صدر الشریعة ثنتا عشرة افادة من المصنف لتحقیق المقام والکلام مع البر جندی باربعة وجوه ومع الفاضل قره باغی بثمانیة وجوه والا عتراض علی غایة الحواشی بسبعة وجوه والرد علی اللکنوی بخمسة وعشرین وجها۔

صفحہ ۲۵۲، نمبر ۱۳۳: قانون الامام صدر الشریعة والکلام علیه بثلثة وجوه ومع اخی چلپی والرد علی اللکنوی۔ انظار شریفة للمصنف

صفحہ ۲۵۸، نمبر ۱۳۸: قانون البحر الرائق والکلام علیه باحد عشر وجها۔ کشف شبهات بالغة بانظار بازغة۔

صفحہ ۲۶۷، نمبر ۱۶۶: قانون العلامة الحلبی والکلام علیه بتسعة وجوه۔ تحقیق المصنف فی من اجنب فتیمم فاحدث فتوضا فمر بنهر ولم یغتسل انه اذا وجد وضوء یتوضو ویتیمم للجنابة والکلام مع الخانیة۔

صفحہ ۲۷۱، نمبر ۱۷۱: القانون الرضوی ۲۶۴ قسموں کو دس امیں جمع کر دینا اور انیس ۱۹ قاعدوں کا بیان۔ تاویل المصنف کلام صدر الشریعۃ۔

صفحہ ۲۷۲، نمبر ۱۸۵: ۱۳۸ قسموں کا بیان اور ان کے احکام کا احاطہ اور بے شمار قسموں کا اشارہ اور ان کے احکام کا احاطہ۔ شرح المصنف کلام صدر الشریعۃ۔

صفحہ ۲۸۳، نمبر ۱۸۹: رسالہ ۲: الطلبۃ البدیعۃ فی قول صدر الشریعۃ-شروع باب التیمم شرح عقائد میں امام صدر الشریعتہ کی عبارت کہ اس روز سے آج تک معرکتہ الآراء رہی اُس کی نفیس تحقیق افادات خاصہ مصنف سے۔ رسالہ ۳: مجلی الشمعۃ لجامع حدث ولمعۃ جنابت وحدث دونوں جمع ہونے کی ۹۸ صورتیں اور اُن کے احکام میں جلیل تحقیقیں۔

صفحہ ۲۸۳، نمبر ۱۹۱: مصنف کا اس مدعا پر سات دلیلیں قائم کرنا کہ جنابت کے ساتھ حدث بھی ہو اور غسل نہ کر سکے وضو کر سکتا ہو تو وضو بھی نہ کرے صرف تیمم کرے والکلام مع البدائع والحلبی والشامی وملك العلماء والکافی والزیلعی والفتح والحلیۃ والبحر والشرنبلالی و چلپی و الطحطاوی والرد علی الکنکوھی۔

Fatawa Razawiyya Volume Four

Page (Ref)	Subject Matter	Page
284	Three types of issues and discussion with Sharh al-Tahawi, Khulasat al-Kafi, al-Hindiyyah, and Sharh al-Wiqayah.	309
	Discussion on the meeting of real (Haqiqi) and ritual (Hukmi) impurity where water is sufficient for only one, and discussion with al-Siraj al-Wahhaj, al-Hilyah, and many others.	
289	Quoting statements of scholars.	317
	Preference for Imam Muhammad's view when major (Akbar) and minor (Asghar) ritual impurities coincide and water is sufficient for only one of them.	
292	Author's explanations.	317
	Summary of investigation * Praise be to Allah, the Merciful Lord, the Friend * Blessings and peace be upon the guide of the path * and his family and companions, the masters of success * And praise be to Allah, Lord of the worlds.	
297	List of rulings.	399
	Treatise 4: Salb al-Thalb 'an al-Qa'ilin bi-Taharat al-Kalb (Removing the Fault from those claiming the purity of dogs). Detailed discussion on whether a dog is physically pure or impure.	
300	Author's general rule.	473
	Treatise 5: Al-Ahla min al-Sukkar... (Sweeter than Sugar). The ruling on sugar obtained from animal bones and its complete discussion.	
301	Mention of differences and inconsistencies and discussion with Sharh al-Tahawi, al-Shami, and al-Ghaniyah.	

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

पृष्ठ (संदर्भ)	विषय सामग्री	पृष्ठ
284	मसले की तीन किस्में और शरह अल-तहावी, खुलासत अल-काफी, अल-हिन्दिया और शरह अल-विकाया के साथ चर्चा।	309
	वास्तविक (हकीकी) और कानूनी (हुक्मी) अशुद्धि के मिलने पर चर्चा और पानी केवल एक के लिए पर्याप्त होना, तथा अल-सिराज अल-वहाज, अल-हिलिया और कई अन्य के साथ चर्चा।	
289	विद्वानों के कथनों का उद्धरण।	317
	इमाम मुहम्मद के दृष्टिकोण की प्राथमिकता जब बड़ी (अकबर) और छोटी (असगर) अशुद्धियाँ एक साथ हों और पानी केवल एक के लिए पर्याप्त हो।	
292	लेखक का स्पष्टीकरण।	317
	शोध का निष्कर्ष * और प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो दयालु रब और मित्र है * और शांति और आशीर्वाद मार्ग के मार्गदर्शक पर हो * और उनके परिवार और साथियों पर, जो सफलता के स्वामी हैं * और प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो दुनिया का रब है।	
297	आदेशों की सूची।	399
	रिसाला 4: सलब अल-थलब 'अन अल-का'इलीन बि-तहारत अल-कल्ब (कुत्ते की पवित्रता के बारे में कहने वालों से दोष हटाना)। कुत्ते की शारीरिक शुद्धता या अशुद्धता पर विस्तृत चर्चा।	
300	लेखक का सामान्य नियम।	473
	रिसाला 5: अल-अहला मिन अस-सुक्कर... (चीनी से भी मीठा)। जानवरों की हड्डियों से प्राप्त चीनी का हुक्म और उसकी पूरी चर्चा।	
301	मतभेदों और विसंगतियों का उल्लेख और शरह अल-तहावी, अल-शामी और अल-ग़निया के साथ चर्चा।	

فتاوی رضویہ جلد چہارم

صفحہ	مضمون	صفحہ
۲۸۴	مسئلہ کی تین قسمیں اور کلام مع شرح الطحاوی و خلاصۃ الکافی والھندیۃ وشرح الوقایہ۔	۳۰۹
	بحث اجتماع النجاسۃ الحقیقۃ والحکمیۃ والماء یکفی لاحدھما والکلام مع السراج الوھاج والحلیۃ وکثیرین۔	
۲۸۹	نقل عبارات علماء۔	۳۱۷
	ترجیح قول محمد فیما اذا اجتمع الحدثان الاکبر والاصغر والماء کاف لاحدھما۔	
۲۹۲	توضیحات مصنف۔	۳۱۷
	حاصل التحقیق والحمد للہ رب الرحیم الرفیق والصلوۃ والسلام علی ھادی الطریق وآلہ وصحبہ اولی التوفیق والحمد للہ رب العلمین۔	
۲۹۷	فہرست احکام۔	۳۹۹
	رسالہ ۴: سلب الثلب عن القائلین بطھارۃ الکلب۔ کتے کے طاہر العین یا نجس العین ہونے کی مفصل بحث۔	
۳۰۰	مصنف کا ضابطہ کلیہ۔	۴۷۳
	رسالہ ۵: الاحلی من السکر الطلبۃ سکرر و سر۔ جانوروں کی ہڈیوں سے حاصل شدہ چینی کا حکم اور اس کی کامل بحث۔	
۳۰۱	ذکر اختلافات واضطرابات والکلام مع شرح الطحاوی والشامی والغنیۃ۔	

Fatawa Rizvia Volume 4 In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful Treatise Qawanin al-Ulama fi Mutayammim 'alayhi 'Ilm 'inda Zaid Maa' 1335 AH Laws of the Scholars regarding the one performing Tayammum who comes to know that water is available with Zaid (T) In the fifth benefit of Sharh Ta'rif Rizvi, this issue was mentioned incidentally: if one found water with someone else and did not ask for it and prayed with Tayammum, then asked and that person gave it, the prayer was not valid; if the person did not give it, it was valid. The detail and research of this issue was written there to the extent that it became a treatise in itself. Due to its length, it was separated from there and a reference to the treatise was given. This is that treatise, and success is through Allah. In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful [Arabic Box]: Praise be to Allah who sent from the ocean of His generosity the water of His guidance with His chosen one (Mustafa), so He gave us without asking and purified us with it from filth. [Urdu Box]: All praise is for God who, from His ocean of generosity, sent the water of guidance with His Mustafa, gave to us without asking, and with it [purified us] from the filth of misguidance. Note: I say: one who is already with Tayammum and one who intends to perform Tayammum, the term 'Mutayammim' applies to both, and in these issues, both are mentioned. Then 'knowledge' (ilm) was mentioned, not 'seeing', as they said knowledge is a condition, seeing is not necessary, just as water might be behind a barrier or a person might be blind and yet come to know that another person has water. And 'Zaid' was mentioned, not 'companion' (rafiq), as they said being a companion is not a condition. 12 From the author, may he be forgiven. (M) Page 32 of 761

फ़तावा रिज़विया जिल्द चौथी (भाग 4) बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम रिसाला (लघु पुस्तक) क़वानीनुल उलेमा फी मुतयम्मम 'अलेह इल्म 'इन्दा ज़ैद मा' 1335 हिजरी उलेमा के क़ानून उस तयम्मुम करने वाले के बारे में जिसे मालूम हुआ कि ज़ैद के पास पानी है (त) शरह त'रीफ़ रिज़वी के इफ़ादा पंजुम (पांचवें लाभ) में प्रसंगवश इस मसले का ज़िक्र आया कि अगर किसी और के पास पानी पाया और माँगा नहीं और तयम्मुम से नमाज़ पढ़ ली, फिर माँगा और उसने दे दिया तो नमाज़ नहीं हुई, और अगर नहीं दिया तो हो गई। इस मसले का विवरण और शोध वहाँ इतना लिखा गया कि वह अपने आप में एक रिसाला बन गया। लम्बाई के कारण उसे वहाँ से अलग कर दिया गया और रिसाले का हवाला (संदर्भ) दिया गया। यह वही रिसाला है, और सफलता अल्लाह की ओर से है। बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम [अरबी]: अल्हम्दुलिल्लाहिल्लज़ी अर्सला मिन बहरी निदाहु मा-अ हुदाहु म'अ मुस्तफ़ाहु फ़'अताना बिला सुआल व तहरना बिही मिन दनस [उर्दू]: तमाम तारीफ़ ख़ुदा के लिए जिसने अपने सखावत के समंदर से, हिदायत का पानी, अपने मुस्तफ़ा के साथ भेजा, तो हमें बिना माँगे अता किया और उससे हमें गुमराहों की गंदगी से (पवित्र किया) नोट: मैं कहता हूँ: जो तयम्मुम कर चुका हो और जो तयम्मुम करना चाहता हो, मुतयम्मम शब्द दोनों पर लागू होता है और इन मसलों में दोनों का ज़िक्र है। फिर 'इल्म' (जानकारी) कहा गया, 'देखना' नहीं, जैसा कि उन्होंने कहा कि इल्म शर्त है, देखना ज़रूरी नहीं। जैसे पानी किसी ओट में हो या व्यक्ति अंधा हो और उसे पता चले कि दूसरे के पास पानी है। और 'ज़ैद' कहा गया, 'रफ़ीक़' (साथी) नहीं, क्योंकि उन्होंने कहा कि साथी होना कोई शर्त नहीं है। 12 लेखक की ओर से, उनकी मग़फ़िरत (क्षमा) हो। (म) पृष्ठ 32 / 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم بسم اللہ الرحمن الرحیم رسالہ قوانین العلماء فی متیمم عہ علم عند زید ماء ۱۳۳۵ھ علماء کے قوانین اس تیمم کرنے والے کے بارے میں جسے معلوم ہوا کہ زید کے پاس پانی ہے (ت) شرح تعریف رضوی کے افادہ پنجم میں ضمناً اس مسئلہ کا ذکر آیا کہ اگر دوسرے کے پاس پانی پایا اور نہ مانگا اور تیمم سے پڑھ لی پھر مانگا اور اُس نے دے دیا تو نماز نہ ہوئی، نہ دیا تو ہوگئی۔ اس مسئلہ کی تفصیل و تحقیق وہاں لکھی کہ بجائے خود ایک رسالہ ہوگئی طول کے سبب اُسے وہاں سے جُدا کیا اور رسالہ کا حوالہ دیا۔ یہ وہ رسالہ ہے وباللہ التوفیق۔ بسم اللہ الرحمن الرحیم الحمد للہ الذی ارسل من بحر نداہ ماء ھداہ مع مصطفاہ فاعطانا بلا سؤال وطھرنا بہ من دنس تمام تعریف خدا کیلئے جس نے اپنے بحرِ سخا سے، آبِ ہدی، اپنے مصطفٰی کے ساتھ بھیجا، تو ہمیں بے مانگے عطا کیا اور اس سے ہمیں گمراہی کے میل سے عہ: اقول: جو تیمم سے ہو اور جو تیمم کرنا چاہتا ہو، تیمم دونوں پر صادق ہے اور ان مسائل میں دونوں کا ذکر ہے پھر علم کہا ہی نہ کہا کما قالو ا کہ علم شرط ہے دیکھنا ضرور نہیں جیسے پانی اس سے آڑ میں ہے یا یہ اندھا ہے اور اسے علم آیا کہ دوسرے کے پاس پانی ہے اور زید کہا رفیق نہ کہا کما قالو ا کہ رفیق ہونا کچھ شرط نہیں ۱۲منہ غفر لہ۔(م) Page 32 of 761

Volume 4 Fatawa Razawiya

[Arabic]: ...misguidance. May Allah Exalted send prayers, peace, blessings, honor, glory, and nobility upon him continuously, successively, and incessantly, forever and ever, from the beginning of time to the end of time. And upon his family and companions, who are the best family and companions.

[Urdu]: ...purified. May the Supreme God send blessings and peace upon him and grant blessing, honor, greatness, and dignity. Continuously, repeatedly, and constantly, for eternity of eternities, from the pre-eternity of pre-eternities. And upon his family and companions, who are the best family and companions. (T)

The issue of performing Tayammum when another person has water is a very contentious and extensively debated matter. Many books mention some of its specific details. Imam Sadr al-Shariah in Sharh al-Wiqayah, then the researcher Ibrahim al-Halabi in Ghunyat al-Mustamli (Sharh Munyat al-Musalli), then the researcher Zayn al-Abidin in al-Bahr al-Ra'iq, may Allah the Exalted have mercy on them and have mercy on us through their blessings (T), wished to establish general rules that cover all branches. First, this humble servant will mention a few issues that are necessary to consider in every rule; they are the material of every rule despite their differences. Then, the rules of the scholars, what is for them and what is against them, then what has flowed into the heart of this humble servant by the grace of the Almighty. All praise is for Allah, and Allah is the source of help, and upon Him is reliance. (T)

Issue 1: If it was not known that someone else had enough water to suffice for purification and beyond their need, and one performed Tayammum and prayed, and it became known after the prayer, it has no effect on the prayer; the prayer is valid, even if after the prayer they give the water themselves or upon request.

[Arabic]: As you have known that there is no ability except with knowledge, such that if water were placed in his luggage and he forgot it and prayed, it is complete. If he remembers it after that, he does not repeat, as previously detailed in number (?).

[Urdu]: The reason for this is what has been stated: that there is no capability without knowledge and awareness. To the extent that if someone kept water in their tent and forgot and prayed, the prayer is complete. If they remember after the prayer, repetition is not required, as detailed in number 158. (T)

It is in Khaniyah:

[Arabic]: The one praying with Tayammum, if he finds water after finishing the prayer, repetition is not obligatory for him. If he finds it during the prayer, it is invalidated. Similarly (2) if he finds it after the Tashahhud before the Salaam. And if (3) he finds it after...

[Urdu]: For the one who performed prayer with Tayammum, when they find water after being free from prayer, repetition is not necessary for them. If they find water during the prayer, the prayer becomes void. Similarly, if they find it after Tashahhud before the Salaam. If after one Salaam...

जिल्द 4 फतावा रज़विया

[अरबी]: ...गुमराही। अल्लाह तआला उन पर दुरूद और सलाम नाज़िल फरमाए और बरकत, शराफत, बुज़ुर्गी और करामत अता फरमाए। मुसलसल, लगातार और हमेशा, अबदों के अबद तक, अज़लों के अज़ल से। और उनकी आल और असहाब पर जो बेहतरीन आल और असहाब हैं।

[उर्दू]: ...पाक किया। खुदा-ए-बरतर उन पर दुरूद व सलाम नाज़िल फरमाए और बरकत व शराफत, बुज़ुर्गी व करामत बख्शे। पे बह पे, लगातार और पैहम, अबदों के अबद तक, अज़लों के अज़ल से। और उनकी आल व असहाब पर जो बेहतर आल व असहाब हैं। (त)

तयम्मुम कि दूसरे के पास पानी पाए, यह मसला बहुत बहस वाला और लंबा है। अक्सर किताबों में इसके कुछ हिस्से ज़िक्र हैं। इमाम सदरुश्शरिया ने शरह विक़ाया में, फिर मोहक्किक इब्राहिम हलबी ने गुनिया शरह मुनिया में, फिर मोहक्किक ज़ैनुल आबिदीन ने बहरुर राइक में, रहिमहुमुल्लाह तआला व रहमना बिहिम (अल्लाह तआला उन पर रहम फरमाए और उनकी बरकत से हम पर रहम फरमाए—त), इसके लिए कुल्लिया (सामान्य नियम) बनाने चाहे जो तमाम पहलुओं को शामिल हों। फकीर (लेखक) पहले चंद मसले ज़िक्र करे जिनका लिहाज़ हर नियम में ज़रूरी है, वही अपने मतभेदों के बावजूद हर नियम का आधार हैं। फिर उलमा के नियम और उनके फायदे व नुकसान, फिर वह जो अल्लाह के फज़्ल से फकीर के दिल पर इल्हाम हुआ। तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं और अल्लाह ही मदद करने वाला है और उसी पर भरोसा है। (त)

मसला 1: अगर दूसरे के पास इतना पानी होना कि उसकी पाकी के लिए काफी और उसकी ज़रूरत से ज़्यादा हो, मालूम न था और तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली, नमाज़ के बाद मालूम हुआ तो नमाज़ पर इसका कोई असर नहीं, नमाज़ हो गई, चाहे नमाज़ के बाद वह उसे पानी खुद दे दे या मांगने पर दे।

[अरबी]: जैसा कि आप जान चुके हैं कि इल्म के बिना कोई कुदरत नहीं है, यहाँ तक कि अगर उसके सामान में पानी रखा हो और वह उसे भूल जाए और नमाज़ पढ़ ले, तो वह पूरी है। अगर उसके बाद याद आए तो वह दोहराएगा नहीं जैसा कि पहले नंबर (?) में विस्तार से बताया गया है।

[उर्दू]: इसकी वजह वही है जो बयान हुई कि बगैर इल्म व इत्तेला के कुदरत नहीं। यहाँ तक कि अगर अपने खैमे में पानी रखा और भूल गया और नमाज़ पढ़ ली तो पूरी हो गई। अगर नमाज़ के बाद याद आया तो इआदा (दोहराना) नहीं जैसा कि नंबर 158 में तफसील से गुज़रा। (त)

खानिया में है:

[अरबी]: तयम्मुम से नमाज़ पढ़ने वाला अगर नमाज़ पूरी करने के बाद पानी पाए तो उस पर दोहराना लाज़िम नहीं है। और अगर नमाज़ के दौरान पानी पाए तो नमाज़ बातिल हो जाएगी। और इसी तरह (2) अगर तशहुद के बाद सलाम से पहले पाए। और अगर (3) बाद में पाए...

[उर्दू]: तयम्मुम से नमाज़ अदा करने वाले को जब नमाज़ से फारिग होने के बाद पानी मिले तो उस पर इआदा लाज़िम नहीं और अगर नमाज़ के दरमियान पानी पाए तो नमाज़ फासिद हो गई। इसी तरह अगर तशहुद के बाद सलाम से पहले पाए। अगर एक सलाम...

पेज 33 का 761

جلد چہارم فتاوٰی رضویہ

الضلال صلی اللہ تعالی علیہ وسلم وبارك وشرف ومجد وکرم علی التوالی والتواتر والاتصال الی ابد الآباد من ازل الآزال وعلی الہ وصحبہ خیر صحب وآل

پاک کیا۔ خدائے برتر ان پر درود و سلام نازل فرمائے اور برکت وشرافت، بزرگی و کرامت بخشے۔ پے بہ پے، لگاتار اور پیہم، ابدوں کے ابد تک، ازلوں کے ازل سے۔ اور ان کی آل و اصحاب پر جو بہتر آل و اصحاب ہیں۔ (ت)

تیمم کہ دوسرے کے پاس پانی پائے یہ مسئلہ بہت معرکتہ الآراء وطویلۃ الاذیا ل ہے اکثر کتب میں اُس کے بعض جزئیات مذکور ہیں امام صدر الشریعۃ نے شرح وقایہ پھر محقق ابراہیم حلبی نے غنیہ شرح منیہ میں پھر محقق زین العابدین نے بحر الرائق میں رحمہم اللہ تعالی ورحمنا بھم (خدائے برتر ان پر رحمت فرمائے اور ان کی برکت سے ہم پر رحمت فرمائے۔ ت) اُس کیلئے قوانین کلیہ وضع فرمانا چاہے کہ جمیع شقوق کو حاوی ہوں۔ فقیر اولاً چند مسائل ذکر کرے جن کا لحاظ ہر ضابطہ میں ضروری ہے وہی اپنے اختلافات پر مادہ ہر ضابطہ ہیں پھر قوانین علماء اور ما لہا و ما علیہا پھر وہ جو فیض قدیر سے قلبِ فقیر پر فائض ہوا وللہ الحمد واللہ المستعان وعلیہ التکلان (اور خدا ہی کیلئے ساری حمد ہے اور خدا ہی مستعان ہے اور اسی پر بھروسہ ہے۔ ت)

مسئلہ ۱: اگر دوسرے کے پاس اتنا پانی ہو نا کہ اس کی طہارت کو کافی اور اس کی حاجت سے زائد ہو معلوم نہ تھا اور تیمم کرکے نماز پڑھ لی نماز کے بعد معلوم ہوا تو نماز پر اس کا کچھ اثر نہیں نماز ہوگئی اگرچہ بعد نماز وہ اسے پانی خود یا اس کے مانگنے سے دے بھی دے۔

لما علمت ان لا قدرة الا بالعلم حتی لووضع فی رحلہ ماء و نسیہ وصلی تمت وان تذکر بعدھا لم یعد کما تقدم مفصلا فی نمرۃ ۔

اس کی وجہ وہی ہے جو بیان ہوئی کہ بغیر علم و اطلاع کے قدرت نہیں۔ یہاں تک کہ اگر اپنے خیمہ میں پانی رکھا اور بھول گیا اور نماز پڑھ لی تو پوری ہوگئی۔ اگر بعد نماز یاد آیا تو اعادہ نہیں جیسا کہ نمبر ۱۵۸ میں تفصیل سے گزرا۔ (ت)

خانیہ میں ہے:

المصلی بالتیمم اذا وجد الماء بعد الفراغ من الصلاۃ لا تلزمہ الاعادۃ ولو وجد فی خلال الصلاۃ فسدت وکذا (۲) لو وجد بعد التشھد قبل السلام وان (۳) وجد بعد

تیمم سے نماز ادا کرنے والے کو جب نماز سے فارغ ہونے کے بعد پانی ملے تو اس پر اعادہ لازم نہیں اور اگر نماز کے درمیان پانی پائے تو نماز فاسد ہوگئی۔ اسی طرح اگر تشہد کے بعد سلام سے پہلے پائے۔ اگر ایک سلام

[Arabic]: As long as one has performed a single salutation, it (the prayer) is not invalidated. - 1 | [Urdu]: If water is found after turning for the salutation, the prayer is not invalidated. (T)

Problem 2: If during prayer someone brings water and places it, saying 'take this,' or says generally 'whoever wishes may perform ablution with this,' the tayammum is broken and the prayer is gone. This was mentioned incidentally in number 161. However, here is an exquisite exception; Imam Faqih al-Nafs said: if the person saying this is a Christian, do not break the intention (of prayer) because what weight does his word carry? Perhaps he says it out of mockery. Yes, ask him for it after the prayer; if he gives it, repeat the prayer, otherwise it is done. It is in Khaniya:

[Arabic]: When a person praying with tayammum is told by a Christian 'Take the water,' he should continue his prayer and not cut it off, because his speech might be by way of mockery, so he should not cut it off based on doubt. When he finishes the prayer, he should ask him; if he gives it, he repeats the prayer, otherwise not. - 2 | [Urdu]: When someone performing prayer with tayammum is told by a Christian 'take water,' he should continue praying and not break it, because his speech can also be as a mockery, so do not break it on the basis of doubt. When free from prayer, ask him; if he gives it, repeat the prayer, otherwise not. (T)

Similarly, it is in 'Khulasa' from 'Ziyadat' and 'Fatawa Razeen'. I say: The noble scholars mostly suffice with mentioning the 'mazannah' (place of suspicion) instead of the 'manat' (legal cause) and show the way to the objective through examples. Here, there is neither a specific assignment to a Christian nor a specialty of a disbeliever; rather, the pivot is the suspicion of mockery. If a Christian or any disbeliever is his servant, subordinate, subject, or student, or has hope of some need from him, or fears him, then in these cases, there will be no suspicion of mockery; the intention must be broken. Yes, if after asking he does not give, then tayammum remains. 'And that is because power over water has become apparent presumably, without anything to oppose it' (that is because ostensibly the power to get water appeared, and there is no reason to doubt it. T). And if some wicked, bold person is accustomed to mocking, saying such things to people and then not giving, then it is not permitted to break the intention at his word.

[Arabic]: Because nullifying an action is forbidden, and the presumption of power was not achieved by the word of such a person from among the mean mockers. |

[Urdu]: Because to invalidate an action is forbidden, and from the word of such a mean joker, the presumption of power was not attained. (T)

Yes, if he gives it after the prayer, it must be repeated; otherwise, the prayer is done and the tayammum also remains. And Allah Almighty knows best.

1 Fatawa Qadi Khan, Chapter on what is permissible for Tayammum, Nawal Kishore Press, Lucknow, 1/72. 2 Fatawa Qadi Khan, Chapter on what Tayammum is permitted with, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/30.

चौथा खंड | फ़तावा रज़विया

[अरबी]: जब तक एक सलाम फेरा गया हो, वह (नमाज़) फ़ासिद (अमान्य) नहीं होती। - 1 | [उर्दू]: सलाम फेरने के बाद (पानी) मिले तो नमाज़ फ़ासिद न हुई। (त)

मसाला २: अगर नमाज़ पढ़ते समय कोई पानी लाकर रखे कि 'यह ले लो' या आम तौर पर कहे कि 'जिसका जी चाहे इससे वुज़ू कर ले' तो तयम्मुम टूट गया, नमाज़ जाती रही। इसका ज़िक्र प्रसंगवश नंबर १६१ में हो चुका है। मगर यहाँ एक बेहतरीन अपवाद है; इमाम फ़क़ीह-उन-नफ़्स ने फ़रमाया: अगर वह कहने वाला नस्रानी (ईसाई) हो तो नीयत न तोड़े कि उसकी बात का क्या एतबार? शायद मज़ाक में कह रहा हो। हाँ, नमाज़ के बाद उससे मांगे; अगर वह दे दे तो नमाज़ दोहराए वरना हो गई। खानिया में है:

[अरबी]: तयम्मुम के साथ नमाज़ पढ़ने वाले से जब कोई नस्रानी कहे 'पानी ले लो', तो वह अपनी नमाज़ जारी रखे और उसे न तोड़े, क्योंकि उसकी बात मज़ाक के तौर पर भी हो सकती है, इसलिए शक की बिना पर न तोड़े। जब नमाज़ से फ़ारिग हो जाए तो उससे मांगे; अगर वह दे दे तो नमाज़ लौटाए वरना नहीं। - 2 | [उर्दू]: तयम्मुम से नमाज़ अदा करने वाले से जब कोई नस्रानी कहे 'पानी ले लो' तो नमाज़ पढ़ता रहे, क़ता (बंद) न करे, इसलिए कि उसका कलाम मज़ाक के तौर पर भी होता है, तो शक की बुनियाद पर क़ता न करे। जब नमाज़ से फ़ारिग हो जाए तो उससे तलब करे; अगर दे दे तो नमाज़ का एआदा (दोहराना) करे वरना नहीं। (त)

इसी तरह 'ख़ुलासा' में 'ज़ियादात' और 'फ़तावा रज़ीन' से है। मैं कहता हूँ: उलेमा-ए-किराम अक्सर 'मनात' (कानूनी कारण) के बजाय 'मज़न्ना' (संदेह का स्थान) के उल्लेख पर इक्तिफ़ा (बस) करते हैं और मिसाल से मक़सूद का रास्ता दिखाते हैं। यहाँ न नस्रानी की विशेषता है न काफ़िर की ख़ुसूसियत, बल्कि मदार (आधार) मज़ाक का गुमान (संदेह) है। अगर नस्रानी या कोई काफ़िर उसका नौकर या मातहत या रियाया (प्रजा) या उसका शागिर्द है, या उससे किसी ज़रूरत की उम्मीद रखता है या डरता है, तो इन सूरतों में उस पर मज़ाक का गुमान न होगा, नीयत तोड़नी होगी। हाँ, अगर फिर मांगने पर न दे तो तयम्मुम बाक़ी है। 'और यह इसलिए कि ज़ाहिरी तौर पर पानी पर कुदरत (शक्ति) ज़ाहिर हो गई और उसका कोई विरोधी मौजूद नहीं' (अर्थात ज़ाहिरी तौर पर पानी पाने की शक्ति प्रकट हुई और कोई संदेह का कारण नहीं है। त)। और अगर कोई फ़ासिक बेबाक मज़ाक का

आदी है, लोगों से यूँ ही कहा करता है फिर नहीं देता है, तो उसके कहने पर नीयत तोड़ने की इजाज़त न होगी।

[अरबी]: क्योंकि अमल को बातिल (व्यर्थ) करना हराम है और कमीने मज़ाक करने वालों जैसे की बात से कुदरत का ज़न (प्रबल संदेह) हासिल नहीं हुआ। | [उर्दू]: इसलिए कि अमल का बातिल करना हराम है और इस जैसे कमीने मज़ाक करने वाले की बात से कुदरत का ज़न हासिल न हुआ। (त)

हाँ, बाद नमाज़ दे दे तो एआदा करनी होगी वरना नमाज़ भी हो गई और तयम्मुम भी बाक़ी। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

1 फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, तयम्मुम के लिए जायज़ चीज़ों का बयान, नवल किशोर प्रेस लखनऊ, 1/72 2 फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, तयम्मुम का बयान, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/30

ماسلم تسلیمة واحدة لم تفسد - 1 | پھیرنے کے بعد پائے تو نماز فاسد نہ ہوئی ۔ (ت)

مسئلہ ۲: اگر نماز پڑھتے میں اس نے پانی لاکر رکھا کہ یہ لے لے یا مطلق کہا کہ جس کے جی میں آئے اس سے وضو کرے تو تیمم ٹوٹ گیا نماز جاتی رہی اس کا ذکر ضمناً نمبر ۱۶۱ میں گزرا مگر یہاں ایک استثناء نفیس ہے امام فقیہ النفس نے فرمایا ۲ اگر وہ کہنے والا نصرانی ہو نیت نہ توڑے کہ اس کے کہنے کا کیا اعتبار شاید مسخرہ پن سے کہتا ہو، ہاں نماز کے بعد اس سے مانگے دے دے تو نماز پھیرے ورنہ ہو گئی۔ خانیہ میں ہے:

المصلی بالتیمم اذا قال له نصرانی خذ الماء فانه یمضی علی صلاته ولا یقطع لان کلامه قد یکون علی وجه الاستهزاء فلا یقطع بالشك فاذا فرغ من الصلاة سأله ان اعطاه اعاد الصلاة والافلا - 2 | تیمم سے نماز ادا کرنے والے سے جب کوئی نصرانی کہے پانی لے لو تو نماز پڑھتا رہے قطع نہ کرے اس لئے کہ اس کا کلام بطور استہزاء بھی ہوتا ہے تو شک کی بنیاد پر قطع نہ کرے۔ جب نماز سے فارغ ہو جائے تو اس سے طلب کرے اگر دے دے تو نماز کا اعادہ کرے ورنہ نہیں۔ (ت)

اسی طرح خلاصہ میں زیادات وفتاوی رزین سے ہے اقول: علمائے ۳ کرام اکثر بجائے مناطِ ذکر مظنہ پر اکتفاء فرماتے اور مثال سے مقصود کی راہ دکھاتے ہیں یہاں نہ نصرانی کی تخصیص نہ کافر کی خصوصیت بلکہ مدار ظن استہزاء ہے اگر نصرانی ۴ یا کوئی کافر اس کا نوکر یا ماتحت یار عیت یا اس کی شاگردی میں ہے یا اس سے کسی حاجت کی طمع رکھتا ہے یا خوف کرتا ہے تو ان صورتوں میں اُس پر گمان استہزانہ ہوگا نیت توڑنی ہو گی ہاں اگر پھر مانگنے پر نہ دے تو تیمم باقی ہے وذلك لظهور القدرة علی الماء ظنا مع عدم ما یعارضه (وہ اس لئے کہ ظنی طور پر پانی پر

قدرت ظاہر ہو گئی اور اس کا کوئی معارض موجود نہیں۔ ت) اور اگر کوئی ۵ فاسق بیباک تمسخر کا عادی ہے لوگوں سے یونہی کہا کرتا پھر نہیں دیتا ہے تو اس کے کہنے پر نیت توڑنے کی اجازت نہ ہوگی۔

لان ابطال العمل حرام ولم یحصل الظن علی القدرۃ بقول مثلہ من المستھزئین اللئام ۔ | اس لئے کہ عمل کا باطل کرنا حرام ہے اور اس جیسے کمینے تمسخر کرنے والے کی بات سے قدرت کا ظن حاصل نہ ہوا۔ (ت)

ہاں بعد نماز دے دے تو اعادہ کرنی ہو گی ورنہ نماز بھی ہو گئی اور تیمم بھی باقی واللہ تعالٰی اعلم۔

1 فتاوی قاضی خان فصل فیما یجوز لہ التیمم مطبع نولکشور لکھنؤ ۱/ ۷۲ 2 فتاوی قاضی خان، فصل فیما بہ التیمم، مطبع نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۰

Fatawa Razawiya, Volume 4

Problem 3: If he did not ask him for water, but during the prayer itself he became aware that there was sufficient water with him. I say: although recollection—that he previously knew there was water with him but had forgotten, so he performed tayammum and started the prayer, and during the prayer he remembered that so-and-so has water—this is very clear. (t) So there are two situations: if he has a strong presumption (ghalib guman) that if asked, he will give it, then he should break the intention and ask. And if there is a strong presumption that he will not give it, or there is no preponderance of opinion either way (a state of doubt), then permission to break the intention cannot be given. Sadr al-Shari'ah in 'Ziyadat' states:

Arabic	Urdu
The traveler performing tayammum, if he sees a lot of water with someone while in prayer, and he strongly believes that he will not give it to him or is in doubt, he continues his prayer because its commencement was valid, so he should not break it due to doubt. If he strongly believes that he will give it, he breaks the prayer and requests water from him. ^1	A traveler performing tayammum, when he sees plenty of water with someone during prayer and strongly suspects that the person will not give it to him or is in doubt, he should continue praying because his starting was correct, so he should not break the intention due to doubt. But if he strongly suspects that the person will give it, he should break the prayer and ask for water from him. (t)

In exactly the same way, in 'Bada'i' and 'Hilya', from 'Jami' al-Karkhi':

Arabic	Urdu
Except that it does not explicitly mention the presumption of giving, but rather indicates breaking the prayer through implication.	But in it, the situation of presumption of giving is not explicitly mentioned. From the implication, it is understood that the ruling in this case is to break the prayer. (t)

In 'Bazzaziyya' it is:

Arabic	Urdu
If he knows that he will give, he breaks it; and if it is problematic/ ambiguous, no. ^2	If he knows that he will give it, he should break the prayer, and if there is a situation of problem or ambiguity, he should not break it. (t)

In 'Fatawa Imam Qazi Khan' it is:

Arabic	Urdu
The one praying (2) with tayammum, if he sees a mirage, if it was...	While performing prayer with tayammum, if [he sees] a mirage (the appearance of water)...

1. Sharh al-Wiqayah, Section on what is permissible for tayammum, Rashidiya Press, Delhi, 1/101.
2. Fatawa Bazzaziyya with 'Alamgiri, Fifth Section on tayammum, Nurani Kutub Khana Press, Peshawar, 4/16.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4

मस्अला 3: अगर उसने उससे पानी माँगने के लिए नहीं कहा, लेकिन नमाज़ के दौरान ही उसे पता चला कि उसके पास पर्याप्त पानी है। मैं कहता हूँ: हालांकि यह याद आना—कि उसे पहले से पता था कि उसके पास पानी है लेकिन भूल गया था, इसलिए उसने तयम्मुम करके नमाज़ शुरू की और नमाज़ में याद आया कि फलां के पास पानी है—यह बहुत ज़ाहिर (स्पष्ट) है। (त) तो इसकी दो सूरतें हैं: अगर उसे ग़ालिब गुमान (प्रबल संभावना) हो कि माँगने पर वह दे देगा, तो नियत तोड़ दे और माँगे। और अगर ग़ालिब गुमान हो कि वह नहीं देगा या किसी भी तरफ़ राय का झुकाव न हो (संदेह की स्थिति हो), तो नियत तोड़ने की इजाज़त नहीं दी जा सकती। सदरुश शरीअह 'ज़ियादात' में फ़रमाते हैं:

अरबी	उर्दू
तयम्मुम करने वाला मुसाफ़िर जब नमाज़ की हालत में किसी के पास बहुत पानी देखे और उसे प्रबल गुमान हो कि वह उसे नहीं देगा या संदेह हो, तो वह अपनी नमाज़ जारी रखे क्योंकि उसकी शुरुआत सही थी, इसलिए वह संदेह के कारण उसे न तोड़े। और अगर उसे प्रबल गुमान हो कि वह दे देगा, तो नमाज़ तोड़ दे और उससे पानी माँगे। ^1	तयम्मुम वाला मुसाफ़िर हालत-ए-नमाज़ में जब किसी के पास बहुत पानी देखे और ग़ालिब गुमान हो कि वह उसे पानी नहीं देगा या शक हो तो नमाज़ पढ़ता रहे इसलिए कि उसका शुरू करना सही है तो शक की वजह से नियत न तोड़ेगा और अगर ग़ालिब गुमान हो कि पानी दे देगा तो नमाज़ तोड़ दे और उससे पानी तलब करे। (त)

इसी तरह 'बदाए' और 'हुलिया' में 'जामे करखी' से है:

अरबी	उर्दू
सिवाय इसके कि इसमें स्पष्ट रूप से देने के गुमान का उल्लेख नहीं है, बल्कि निहितार्थ के माध्यम से नमाज़ तोड़ने का संकेत दिया गया है।	मगर इसमें देने का गुमान होने वाली सूरत सराहतन मज़कूर (स्पष्ट रूप से वर्णित) नहीं। मफ़हूम (अर्थ) से मालूम होता है कि इस सूरत में नमाज़ तोड़ देने का हुक्म है। (त)

'बज़ाज़िया' में है:

अरबी	उर्दू
अगर उसे पता हो कि वह देगा, तो तोड़ दे; और अगर समस्या/अस्पष्टता हो, तो नहीं। ^2	अगर यह जानता हो कि वह दे देगा तो नमाज़ तोड़ दे और अगर इशकाल व इशतिबाह (समस्या या संदेह) की सूरत हो तो न तोड़े। (त)

'फ़तावा इमाम क़ाज़ी ख़ान' में है:

अरबी	उर्दू
तयम्मुम के साथ नमाज़ पढ़ने वाला (2) अगर सराब (मृगतृष्णा) देखे, अगर वह था...	तयम्मुम से नमाज़ अदा करते हुए अगर सराब (पानी की शक्ल)...

---

1. शरह अल-विकाया, फ़स्ल उसमें जो तयम्मुम के लिए जायज़ है, मतबा रशीदिया दिल्ली, 1/101
2. फ़तावा बज़ाज़िया म'अ आलमगीरी, फ़स्ल पंचम तयम्मुम में, मतबा नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 4/16

مسئلہ ۳: اگر اس نے اس سے پانی لینے کو نہ کہا مگر عین نماز میں اسے اس کے پاس کافی پانی ہونے کا علم ہوا اقول: اگر چہ تذکّر سے کہ پہلے اس کے پاس پانی ہونا معلوم تھا یاد نہ رہا تیمم کرکے نماز شروع کی نماز میں یاد آیا کہ فلاں کے پاس پانی ہے وہذا اظھر جدا (اور یہ بہت ظاہر ہے۔ ت) تو دو صورتیں ہیں اگر اسے گمان غالب ہو کہ مانگے سے دے دے گا۔ تو نیت توڑے اور مانگے اور اگر گمان غالب ہو کہ نہ دے گا یا کسی طرف غلبہ ظن نہ ہو شک کی حالت ہو تو نیت توڑنے کی اجازت نہیں ہو سکتی۔ صدر الشریعہ میں زیادات سے ہے:

عربی	اردو
المتیمم المسافر اذا رأی مع رجل ماء	تیمم والا مسافر حالتِ نماز میں جب کسی کے پاس کثیر
کثیرا وھو في الصلاۃ وغلب علی ظنہ	پانی دیکھے اور غالب گمان ہو کہ وہ اسے پانی نہ دے گا
انہ لایعطیہ اوشك مضی علی صلاتہ	یا شک ہو تو نماز پڑھتا رہے اس لئے کہ اس کا شروع
لانہ صح شروعہ فلایقطع بالشك وان	کرنا صحیح ہے تو شک کی وجہ سے نیت نہ توڑے گا
غلب علی ظنہ انہ یعطیہ قطع الصلاۃ	اور اگر غالب گمان ہو کہ پانی دے دے گا تو نماز توڑ دے
وطلب منہ الماء 1۔	اور اس سے پانی طلب کرے۔ (ت)

بعینہ اسی طرح بدائع و حلیہ میں جامع کرخی سے ہے:

عربی	اردو
غیر انه لیس فیه ذکر ظن العطاء صریحا وانمادل علی القطع فیه بالمفهوم -	مگر اس میں دینے کا گمان ہونے والی صورت صراحۃً مذکور نہیں ۔ مفہوم سے معلوم ہوتا ہے کہ اس صورت میں نماز توڑ دینے کا حکم ہے۔ (ت)

بزازیہ میں ہے:

عربی	اردو
ان علم انه یعطیه قطع وان اشکل لا 2-	اگر یہ جانتا ہو کہ وہ دے دے گا تو نماز توڑ دے اور اگر اشکال و اشتباہ کی صورت ہو تو نہ توڑے۔ (ت)

فتاوٰی امام قاضی خان میں ہے:

عربی	اردو
المصلی (۲) بالتیمم اذا رأی سرابا ان کان تیمم سے نماز ادا کرتے ہوئے اگر سراب (پانی کی شکل)	

---

1 شرح الوقایہ فصل فیما یجوز لہ التیمم مطبع رشیدیہ دہلی ۱۰۱/۱ 2 فتاوٰی بزازیہ مع عالمگیری، فصل الخامس فی التیمم، مطبع نورانی کتب خانہ پشاور ۱۶/۴

Fatawa Rizwia, Volume 4

[Top Section] Arabic Text: If his strongest opinion is that it is water, it is permissible for him to leave (the prayer), but if both possibilities are equal, it is not lawful for him to break the prayer. If after finishing the prayer it becomes clear that it was indeed water, then he must repeat it; otherwise, he does not have to. Urdu Translation: If (it is seen in sand), then if one has a predominant opinion that it is water, it is permissible for him to break the prayer. But if both opinions are equal, it is not permissible to break the prayer. And if after finishing the prayer it becomes clear that it was indeed water, then repeating it is necessary, otherwise not. (T)

[Middle Section] Arabic Text: Warning - I say: The apparent meaning of the statements in the state of a predominant opinion of being given water is the obligation of breaking (the prayer), because (2) a declarative form is more emphatic than an imperative form. And because with the opinion of being given water, even if one does not yet have power over the water for the tayammum to become void, it has nonetheless created a strong doubt about its persistence. Thus, it is not lawful to proceed with it until the invalidity of that doubt becomes clear. And because prayer with tayammum (3) is complete according to us, just like prayer with wudu. Therefore, (4) it is valid for a person with wudu to follow a person with tayammum, rather it is permissible without dislike, even if the opposite is better. So this breaking (of prayer) is not for completeness but for invalidation. Urdu Translation: Warning - I say: The apparent meaning of the statements in the state of a predominant opinion of being given water is the obligation of breaking. There are several reasons for this: (1) Because a declarative word is more emphatic than an imperative word. (2) Because he has a suspicion of being given water, so with just this much he hasn't gained power over the water such that his tayammum would become void, but this suspicion has certainly created a strong doubt about the tayammum remaining valid. So, staying with that tayammum will not be lawful until the falsehood of that doubt becomes clear. (3) Because according to us, performing prayer with tayammum is complete just like performing prayer with wudu. Therefore, it is correct, rather permissible without dislike, for a person with wudu...

[Bottom Section] Arabic Text: Note: If you say, "Have they not said it is recommended for one who hopes for water to delay the prayer until the end of the preferred time so that the performance occurs with the more complete of the two purifications?" I say: The more complete is above the complete, and the breaking is only for the sake of completion, not for additional perfection after completeness. As stated in al-

Binaya on the saying... Urdu Translation: Note: If this objection is raised: "Did the scholars not say that if there is hope of finding water, it is recommended to delay the prayer until the end of the preferred time so that the prayer is performed with that purification which is more complete?" I say: (The answer is) that the degree of 'more complete' (akmal) is above 'complete' (kamil), and breaking the prayer is only to achieve completeness. After achieving completeness, it is not for the sake of additional perfection. (Remaining on next page)

[Footnote] 1. Fatawa Qadi Khan, Chapter on what makes Tayammum permissible, printed by Naval Kishore Lucknow, 1/28. Page 36 of 761

फतावी रज़विया, जिल्द चौथी

[शीर्ष अनुभाग] अरबी पाठ: यदि उसका प्रबल विचार यह है कि वह पानी है, तो उसके लिए नमाज़ छोड़ना जायज़ है, लेकिन यदि दोनों संभावनाएँ बराबर हैं, तो उसके लिए नमाज़ तोड़ना हलाल नहीं है। यदि नमाज़ पूरी करने के बाद यह स्पष्ट हो जाए कि वह वास्तव में पानी ही था, तो उसके लिए इसे दोहराना आवश्यक है; अन्यथा नहीं। उर्दू अनुवाद: यदि (रेत में) दिखाई दे, तो यदि उसका प्रबल विचार (ग़ालिब गुमान) हो कि यह पानी है, तो उसके लिए नमाज़ तोड़ना जायज़ है। और यदि दोनों विचार बराबर हों तो नमाज़ तोड़ना जायज़ नहीं है। और नमाज़ से फ़ारिग होने के बाद यदि स्पष्ट हो जाए कि वह पानी ही है, तो उसे दोहराना (इयादा) लाज़िम है, वरना नहीं। (त)

[मध्य अनुभाग] अरबी पाठ: चेतावनी - मैं कहता हूँ: पानी मिलने के प्रबल विचार की स्थिति में स्पष्ट कथनों का अर्थ नमाज़ तोड़ने की अनिवार्यता (वजुब) है, क्योंकि (2) सूचनात्मक रूप आदेशात्मक रूप से अधिक पुष्ट है। और क्योंकि पानी मिलने के विचार के साथ, भले ही उसे अभी पानी पर अधिकार प्राप्त नहीं हुआ है कि उसका तयम्मुम अमान्य (बातिल) हो जाए, फिर भी इसने इसके बने रहने में एक गहरा संदेह उत्पन्न कर दिया है। अतः इसके साथ आगे बढ़ना तब तक हलाल नहीं होगा जब तक कि उस संदेह की अमान्यता स्पष्ट न हो जाए। और क्योंकि हमारे निकट तयम्मुम के साथ नमाज़ (3) वज़ू के साथ नमाज़ की तरह ही पूर्ण है। इसलिए, (4) वज़ू वाले व्यक्ति के लिए तयम्मुम वाले व्यक्ति के पीछे नमाज़ पढ़ना सही है, बल्कि यह बिना किसी अरुचि (कराहत) के जायज़ है, भले ही इसका विपरीत बेहतर हो। अतः यह नमाज़ तोड़ना पूर्णता के लिए नहीं बल्कि अमान्यता को रोकने के लिए है। उर्दू अनुवाद: चेतावनी - मैं कहता हूँ: ज़ाहिर-ए-इबारात बहालत-ए-ज़न-ए-ग़ालिब अता-ए-वजुब-ए-क़ते है। इसके कई कारण हैं: (1) इसलिए कि सिग़ा-ए-ख़बर, सिग़ा-ए-अम्र से ज़्यादा मोअक्कद है। (2) इसलिए कि उसे पानी मिलने का गुमान है, तो इतने से उसे पानी पर कुदरत हासिल नहीं हो गई कि उसका तयम्मुम बातिल हो जाए, लेकिन इस गुमान से तयम्मुम के बाकी रह जाने में एक मज़बूत शक ज़रूर पैदा हो गया। तो इस तयम्मुम पर बरकरार रहना हलाल न होगा जब तक कि इस शक का बातिल होना ज़ाहिर न हो जाए। (3) इसलिए कि हमारे नज़दीक तयम्मुम से नमाज़ की अदायगी कामिल है जैसे वज़ू से नमाज़ कामिल है। इसीलिए यह दुरुस्त बल्कि बिला-कराहत जायज़ है कि वज़ू वाला...

[निचला अनुभाग] अरबी पाठ: नोट: यदि आप कहें, "क्या उन्होंने यह नहीं कहा है कि पानी की आशा रखने वाले के लिए नमाज़ को पसंदीदा समय के अंत तक टालना पसंदीदा (मंदूब) है ताकि अदायगी

दोनों पवित्रताओं में से अधिक पूर्ण (अकमल) के साथ हो?" मैं कहता हूँ: 'अधिक पूर्ण' पूर्णता से ऊपर है, और नमाज़ तोड़ना केवल पूर्णता (कामिल) प्राप्त करने के लिए है, पूर्णता के बाद अतिरिक्त श्रेष्ठता के लिए नहीं। जैसा कि अल-बिनाया में इस कथन पर कहा गया है... उर्दू अनुवाद: नोट: अगर यह एतराज़ किया जाए कि क्या उलमा ने यह नहीं फरमाया कि पानी मिलने की उम्मीद हो तो आख़िर वक़्त मुस्तहब तक नमाज़ मुअख़र करना मंदूब है ताकि नमाज़ की अदायगी दोनों तहारतों में से उस तहारत से हो जो ज़्यादा कामिल है? अकुल: (जवाब यह है कि) ज़्यादा कामिल का दर्जा कामिल से ऊपर है और नमाज़ तोड़ना कामिल करने ही के लिए है। कामिल हो जाने के बाद ज़्यादती-ए-कमाल के लिए नहीं है। (बाकी अगले सफ़हे पर)

[पाद-टिप्पणी] 1. फतावी क़ाज़ी खान, फ़स्ल फ़ीमा यजूज़ लहुत तयम्मुम, नवल किशोर लखनऊ द्वारा मुद्रित, 1/28. पृष्ठ 36/761

[بالائی حصہ] عربی عبارت: اکبر رأیه انه ماء یباح له ان ینصرف وان استوی الظنان لایحل له قطع الصلاۃ واذافرغ من الصلاۃ ان ظهر انه کان ماء یلزمه الاعادۃ والا فلا - 1 اردو ترجمہ: (میں ریت) دکھائی دے تو اگر اس کا غالب گمان ہو کہ یہ پانی ہے تو اس کیلئے نماز توڑنا جائز ہے اور اگر دونوں گمان برابر ہوں تو نماز توڑنا جائز نہیں، اور نماز سے فارغ ہونے کے بعد ظاہر ہوجائے کہ پانی ہی ہے تو اعادہ لازم ہے ورنہ نہیں۔ (ت)

[درمیانی حصہ] عربی عبارت: تنبیه - اقول : ظاهر عبارات بحالت ظن غالب عطاء وجوب قطع ہے، لان (۲) صیغة الاخبار اکد من صیغة الامر ولان بظن العطاء وان لم یقدر علی الماء حتی یبطل تیممه لکن اورث شبهة قویة فی بقائه فلا یحل المضي علیه حتی یظهر بطلانها ولان الصلاۃ بالتیمم (۳) کاملة عندنا کالصلاۃ بالوضوء ولذا (۴) صح اقتداء المتوضئ بالمتیمم بل جاز بلاکراهة وان کان العکس افضل فهذا القطع لیس عه للاکمال بل للابطال و اردو ترجمہ: تنبیہ ۔ اقول : ظاہرِ عبارات بحالتِ ظنِ غالب عطاء وجوبِ قطع ہے، اس کی چند وجہیں ہیں (۱) اس لئے کہ صیغہ خبر صیغہ امر سے زیادہ مؤکد ہے (۲) اس لئے کہ دینے کا اسے گمان ہے تو اتنے سے پانی پر اسے قدرت نہیں حاصل ہوگئی کہ اس کا تیمم باطل ہوجائے لیکن اس گمان سے تیمم باقی رہ جانے میں ایک قوی شبہ ضرور پیدا ہوگیا تو اس تیمم پر برقرار رہنا حلال نہ ہوگا جب تک کہ اس شبہ کا بطلان ظاہر نہ ہوجائے (۳) اس لئے کہ ہمارے نزدیک تیمم سے نماز کی ادائیگی کامل ہے جیسے وضو سے نماز کامل ہے اسی لئے یہ درست بلکہ بلا کراہت جائز ہے کہ وضو والا

[نچلا حصہ] عربی عبارت: عه فان قلت الیس قد قالوا ندب لراجي الماء تأخیر الصلاۃ الی آخر الوقت المستحب لیقع الاداء باکمل الطهارتین اقول الاکمل فوق الکامل والقطع انما جاء للاکمال لا للزیادۃ بعد

الكمال قال في البناية على قول اردو ترجمہ: عہ اگر یہ اعتراض کیا جائے کہ کیا علماء نے یہ نہیں فرمایا کہ پانی ملنے کی امید ہو تو آخر وقت مستحب تک نماز مؤخر کرنا مندوب ہے تاکہ نماز کی ادائیگی دونوں طہارتوں میں سے اس طہارت سے ہو جو زیادہ کامل ہے اقول: (جواب یہ ہے کہ) زیادہ کامل کا درجہ کامل سے اوپر ہے اور نماز توڑنا کامل کرنے ہی کیلئے ہے کامل ہوجانے کے بعد زیادتی کمال کیلئے نہیں ہے (باقی بر صفحہ آئندہ)

[حاشیہ] 1 فتاویٰ قاضی خان فصل فیما یجوز لہ التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ۲۸/۱ صفحہ 36 از 761

Fatawa Razawiya - Volume 4

"There is no harm in continuing the prayer that needs to be removed. Such a cessation [of prayer], if it were not obligatory, would not be permissible due to the word of Allah Almighty: 'And do not invalidate your deeds.' And Allah the Exalted knows best." | Follow the one who performed Tayammum, although the reverse is better. Breaking the prayer based on this suspicion is not to make it complete, but rather to invalidate it. Remaining in prayer there causes no harm that needs to be removed. Breaking the prayer is an act that, if not obligatory, would not be permissible, because the Almighty says: "And do not invalidate your deeds." And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 41: This ruling was regarding the cessation and completion of the prayer. As for whether asking for water is obligatory for him or not, I say: in the case of a strong presumption of it being given, there is no doubt about its obligatoriness, which is why the command to break the intention was given. In the other two cases, the summary of the text is that regarding the difference in the obligatoriness or non-obligatoriness of asking for water upon seeing it outside of prayer, it stated after writing further issues:

"All this is before starting the prayer. If one starts with Tayammum during travel and then sees a man with plenty of water, if he knows the man will give it to him, he should break the prayer. If he knows he will not give it, he should continue his prayer. If it is uncertain, he should continue his prayer, then ask him. If he gives it, he should repeat the prayer; if he refuses, his prayer is complete." | All this ruling is for before starting the prayer. If one has started prayer with Tayammum during travel and then sees someone who has plenty of water, then if he knows that the person will give him water, he should break the prayer. If he knows he will not give it, he should keep praying. If there is doubt, he should still keep praying and then ask him after finishing; if he gives it, repeat the prayer, and if he refuses, the prayer is complete. (T)

Similarly, it is in 'Al-Hindiya' from 'Al-Muhit al-Sarakhsi': "Except that he did not mention the case of suspecting refusal" (i.e., they did not describe the situation where one suspects being denied. T). Its implication is that in the case of suspecting refusal, there is essentially no need to ask, and in the case of doubt [about] prayer...

(Continued from previous page's footnote) "Al-Hidayah: 'With the most complete of the two purifications,' which is Wudu. The 'Af'al' (superlative) form indicates that Tayammum is also a complete purification, but Wudu is more complete than it.

Ended. May he be forgiven (M)." | The words of Al-Hidayah, "With the most complete of the two purifications," based on 'Al-Binayah', are: "It is Wudu, and the superlative form indicates that Tayammum is also a complete purification, but Wudu is more complete than it." Ended. 12 Aminah, may she be forgiven. (T)

1. Khulasat al-Fatawa, Chapter 5 on Tayammum, printed in Nawal Kishore, Lucknow, 1/33.
2. Fatawa Hindiyya, end of Chapter 1, printed in Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/29.
3. Al-Binayah fi Sharh al-Hidayah, Chapter on Tayammum, Al-Maktabat al-Imdadiyya, Makkah al-Mukarramah, 1/326.

फतावा रज़विया - जिल्द चौथी

"प्रार्थना (नमाज़) जारी रखने में कोई ऐसा नुकसान नहीं है जिसे दूर करने की आवश्यकता हो। इस तरह का विराम (नमाज़ तोड़ना), यदि अनिवार्य न होता, तो अल्लाह के इस आदेश के कारण अनुमत नहीं होता: 'और अपने कर्मों को व्यर्थ न करो।' और अल्लाह सबसे अधिक जानने वाला है।" | तयम्मुम करने वाले का अनुसरण करें, हालांकि इसका विपरीत बेहतर है। इस धारणा के कारण नमाज़ तोड़ना उसे पूर्ण करने के लिए नहीं बल्कि रद्द करने के लिए है, और वहाँ नमाज़ पढ़ते रहने में उसका कोई नुकसान भी नहीं है जिसे दूर करना हो। नमाज़ तोड़ना ऐसा कार्य है जो यदि अनिवार्य न होता तो इसकी अनुमति ही न होती, क्योंकि ईश्वर का आदेश है: "और अपने कर्मों को व्यर्थ न करो"। और अल्लाह सबसे अधिक जानने वाला है। (त)

मसला ४१: यह आदेश नमाज़ को तोड़ने और पूर्ण करने के बारे में था। जहाँ तक सवाल है कि उससे पानी माँगना उस पर अनिवार्य है या नहीं, मैं कहता हूँ: पानी मिलने की प्रबल संभावना की स्थिति में इसके अनिवार्य होने में कोई संदेह नहीं है, इसीलिए नियत तोड़ने का आदेश दिया गया। शेष दो स्थितियों में, पाठ का सारांश यह है कि नमाज़ के बाहर पानी देखकर पानी माँगने के अनिवार्य होने या न होने के मतभेद के बारे में आगे के मसलों को लिखकर कहा:

"यह सब नमाज़ शुरू करने से पहले है। यदि कोई यात्रा के दौरान तयम्मुम के साथ नमाज़ शुरू कर दे और फिर किसी व्यक्ति को देखे जिसके पास प्रचुर मात्रा में पानी हो, यदि वह जानता है कि वह उसे पानी देगा, तो उसे नमाज़ तोड़ देनी चाहिए। यदि वह जानता है कि वह नहीं देगा, तो अपनी नमाज़ जारी रखे। यदि संदेह हो, तो अपनी नमाज़ जारी रखे, फिर उससे माँगे। यदि वह दे दे, तो नमाज़ दोहराए; यदि वह मना कर दे, तो उसकी नमाज़ पूरी है।" | यह सारा आदेश नमाज़ शुरू करने से पहले के लिए है। और यदि यात्रा में तयम्मुम से नमाज़ शुरू कर दी, फिर किसी को देखा कि उसके पास बहुत पानी है, तो यदि यह जानता हो कि वह उसे पानी दे देगा तो नमाज़ तोड़ दे। और अगर जानता हो कि नहीं देगा तो नमाज़ पढ़ता रहे और अगर संदेह हो तो भी नमाज़ पढ़ता रहे, फिर नमाज़ से फारिग होकर (निबटकर) उससे माँगे; अगर वह दे दे तो नमाज़ दोहराए और अगर मना कर दे तो नमाज़ पूर्ण हो गई। (त)

इसी प्रकार 'हन्दिया' में 'मुहीत सरखसी' से है: "सिवाय इसके कि उन्होंने मना किए जाने के संदेह वाली स्थिति का उल्लेख नहीं किया" (अर्थात उन्होंने मना और इनकार की संभावना वाली स्थिति का

वर्णन नहीं किया। त)। इसका अर्थ यह है कि इनकार के संदेह की स्थिति में माँगने की मूल रूप से कोई आवश्यकता नहीं है और संदेह की स्थिति में नमाज़...

(पिछले पृष्ठ के फुटनोट का शेष) "अल-हिदाया: 'दोनों शुद्धियों में से सबसे पूर्ण के साथ' जो कि वुज़ू है। 'अफ़अल' (सर्वश्रेष्ठता) का रूप यह दर्शाता है कि तयम्मुम भी एक पूर्ण शुद्धि है, लेकिन वुज़ू उससे अधिक पूर्ण है। समाप्त। उसे क्षमा किया जाए (म)।" | हिदाया के शब्द "दोनों शुद्धियों में से सबसे पूर्ण के साथ" पर 'बिनाया' के शब्द ये हैं: वह वुज़ू है और 'अफ़अल' का रूप यह बता रहा है कि तयम्मुम भी पूर्ण शुद्धि है लेकिन वुज़ू उससे अधिक पूर्ण है। समाप्त। १२ आमिना, उसे क्षमा किया जाए। (त)

1. खुलासा अल-फतावा, तयम्मुम पर पांचवां अध्याय, नवल किशोर, लखनऊ में मुद्रित, १/३३।
2. फतावा हिन्दिया, प्रथम अध्याय का अंत, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर में मुद्रित, १/२९।
3. अल-बिनाया फी शरह अल-हिदाया, तयम्मुम का अध्याय, अल-मकतबत अल-इमदादिया, मक्का अल-मुकर्रमा, १/३२६।

पेज ३७ ऑफ ७६१

لیس ثمہ في المضي علی الصلاۃ ضرر علیہ یزال ومثل القطع لولم یجب لم یجز لقولہ تعالی ولا تبطلوا اعمالکم واللہ سبحنہ اعلم۔ | تیمم والے کی اقتدا کرے اگرچہ اس کا عکس افضل ہے۔ تو اس گمان کے باعث نماز توڑنا اسے کامل کرنے کیلئے نہیں بلکہ باطل کرنے کیلئے ہے اور وہاں نماز پڑھتے رہنے میں اس کا کوئی نقصان بھی نہیں جسے دُور کرنا ہو، اور نماز توڑنا ایسا عمل ہے کہ اگر واجب نہ ہوتا تو اس کا جواز ہی نہ ہوتا اس لئے کہ باری تعالٰی کا فرمان ہے: "اور تم اپنے عملوں کو باطل نہ کرو"۔ اور اللہ تعالٰی خوب جاننے والا ہے۔(ت)

مسئلہ ۴۱: یہ حکم نماز کے قطع واتمام کا تھا۔ رہا یہ کہ اس سے پانی مانگنا اس پر واجب ہے یا نہیں اقول: بحال ظن عطا تو وجوب میں شبہ نہیں کہ اسی کیلئے نیت توڑنے کا حکم ہوا باقی دو حالتوں میں عبارت خلاصہ یہ ہے بیرون نماز پانی دیکھ کر مانگنا واجب ہونے نہ ہونے کا اختلاف آئندہ اور مسائل لکھ کر فرمایا:

ھذا کلہ قبل الشروع فی الصلاۃ ولو شرع بالتیمم فی السفر فرأی رجلا معہ ماء کثیر ان علم انہ یعطیہ یقطع الصلاۃ وان علم انہ لا یعطیہ یمضی علی صلاتہ وان اشکل یمضی علی صلاتہ ثم یسألہ ان اعطاہ اعاد الصلاۃ وان ابی فصلاتہ تامۃ۔ | یہ سارا حکم نماز شروع کرنے سے پہلے ہے اور اگر سفر میں تیمم سے نماز شروع کر دی پھر کسی کو دیکھا کہ اس کے پاس بہت سا پانی ہے تو اگر یہ جانتا ہو کہ وہ اسے پانی دے دے گا تو نماز توڑ دے۔ اور اگر جانتا ہو کہ نہ دے گا تو نماز پڑھتا رہے اور اگر اشتباہ ہو تو بھی نماز پڑھتا رہے پھر فارغ ہو کر اس سے مانگے اگر دے دے تو نماز کا اعادہ کرے اور انکار کرے تو نماز کامل ہوگئی۔(ت)

اسی طرح ہندیہ میں محیط سرخسی سے ہے غیر انہ لم یذکر ظن المنع ۲ (مگر انہوں نے منع وانکار کا گمان ہونے والی صورت نہ بیان کی۔ ت) اس کا یہ مفاد کہ بحالِ ظن منع سوال کی اصلاً حاجت نہیں اور بحالِ شک نماز

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) الھدایۃ باکمل الطھارتین وھو الوضوء صیغۃ افعل تدل علی ان التیمم طھارۃ کاملۃ ولکن الوضوء اکمل منھا ۳ اہ منہ غفر لہ (م) | ہدایہ کی عبارت "باکمل الطھارتین" (دونوں سے اکمل طہارت کے ذریعہ) پر بنا یہ کے الفاظ یہ ہیں: وہ وضو ہے اور افعل کا صیغہ یہ بتا رہا ہے کہ تیمم بھی طہارتِ کاملہ ہے لیکن وضو اس سے زیادہ کامل ہے اھ ۱۲ امنہ غفر لہ (ت)

1 خلاصۃ الفتاوی الفصل الخامس فی التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنو ۱/۳۳ 2 فتاوی ہندیہ آخر فصل اول مطبوعہ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۲۹ 3 البنایہ فی شرح الہدایہ باب التیمم المکتبۃ الامدادیہ مکہ المکرمہ ۱/۳۲۶

Fatawa Razawiyya Volume IV ...did not clearly state whether asking after completing is obligatory (Wajib) or recommended (Mustahabb). I say, however, Issue (1) regarding the supposition of water being nearby specifies that if proximity is doubtful, seeking is not obligatory but only recommended. It is stated in Durr al-Mukhtar:

"Unless the thought of its proximity prevails, it is not obligatory but recommended if there is hope, otherwise not even recommended." (Translation: If there is no strong belief that water is nearby, seeking it is not obligatory but recommended if one has hope, otherwise it is not even recommended. - T)

In the fifth benefit of Sharh Ta'rif-e-Razvi and some other passages, it is also stated usefully, and in Jawhara-e-Nayyara it says: "In case of doubt, seeking is recommended." (T) Similarly, in Hindiyya from Siraj-ul-Wahaj, and in Bahr from Badai it is stated:

"When a strong belief in its proximity does not prevail, it is not obligatory but recommended when there is some greed/hope for the presence of water." (Translation: If there is no strong belief in the proximity of water, seeking it is not obligatory but recommended when one has some hope that water is present. - T)

Many supporting points for this will follow soon, God willing. So the summarized ruling is: seeking water is obligatory when there is a strong belief it will be given, recommended in case of doubt, and not even recommended when there is a strong belief it will be refused. And Allah knows best.

Issue 5: The correct, reliable, and apparent position (Zahir al-Riwaya) is that while in prayer, if there's a strong belief that water will be given, even though there's a command to break the intention, the Tayammum and the prayer do not break just by this strong belief. This holds until if the prayer is completed and then one asks and is refused, the prayer remains valid and the Tayammum remains intact, as it became clear that the belief was wrong. I say: This ruling itself is apparent from the aforementioned texts like Ziyadat, Jami al-Karkhi, Muhit Sarakhsi, Khulasa, Bazzaziya, Sadr al-Shari'a, Huliya, and Hindiyya, which mentioned cutting the prayer. Breaking occurs only to what is still existing; what is already void is non-existent, so what is there to break?

In Al-Bahr, it says:

"If he is in prayer and a strong belief of being given [water] prevails over him, it does not become invalid; rather, if he completes it, asks him, and he is not given, his prayer is complete because it became clear that his belief was a mistake. Thus it is in Sharh al-Wiqaya." (Translation: When one is inside prayer and has a strong belief that he will be given [water], the prayer does not become invalid because of it. Instead, in this situation, if he completes the prayer then asks and is not given, the prayer is complete because it became clear [that the belief was wrong].)

1. Durr al-Mukhtar, Chapter on Tayammum, published by Mujtabai Delhi, 1/72.
2. Al-Jawhara an-Nayyara, Chapter on Tayammum, Maktaba Imdadia Multan, 1/28.
3. Al-Bahr ar-Ra'iq, Chapter on Tayammum, published by H.M. Saeed Company Karachi, 1/161.

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी ...साफ़ नहीं फ़रमाया कि (नमाज़) पूरी करके मांगना वाजिब है या मुस्तहब। मैं कहता हूँ, मगर मसला (1) पानी के पास होने के गुमान के बारे में स्पष्ट है कि अगर पास होना संदेहास्पद हो तो तलाश करना वाजिब नहीं, सिर्फ मुस्तहब है। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

"जब तक उसके पास होने का प्रबल गुमान न हो, तलाश करना वाजिब नहीं बल्कि मुस्तहब (मंदूब) है अगर उम्मीद हो, अन्यथा मुस्तहब भी नहीं।" (अनुवाद: अगर पानी के पास होने का प्रबल गुमान न हो तो मांगना वाजिब नहीं बल्कि मंदूब है अगर उम्मीद रखता हो, वर्ना मंदूब भी नहीं। - त)

'शरह तारीफ़े रज़वी' के पाँचवें फ़ायदे में और कुछ अन्य इबारतें भी इसमें उपयोगी गुज़रीं और 'जौहरा नय्यरा' में है: "संदेह की स्थिति में तलाश करना मुस्तहब है।" (त) इसी तरह 'हिन्दिया' में 'सिराजुल वहाज' से है, 'बहर' में 'बदाइ' से है:

"जब उसके पास होने का प्रबल गुमान न हो तो वाजिब नहीं बल्कि मुस्तहब है जब कि उसे पानी मौजूद होने की कुछ उम्मीद हो।" (अनुवाद: पानी के नज़दीक होने का प्रबल गुमान न हो तो तलाश वाजिब नहीं बल्कि मुस्तहब है जब कि पानी मिलने की उसे कुछ उम्मीद हो। - त)

इसके बहुत से समर्थन जल्द ही आएँगे, इंशाअल्लाह। तो हासिल हुक्म यह निकला कि पानी मिलने का प्रबल गुमान होने पर मांगना वाजिब है, शक की स्थिति में मुस्तहब है और मना होने के प्रबल गुमान की स्थिति में मुस्तहब भी नहीं। वल्लाह तआला आलम (और अल्लाह बेहतर जानता है)।

मसला ५: सही, विश्वसनीय और ज़ाहिरुल रिवायत यह है कि नमाज़ के दौरान पानी मिलने का प्रबल गुमान होने पर यद्यपि नीयत तोड़ने का हुक्म है, मगर सिर्फ इस प्रबल गुमान से न तैयम्मुम टूटेगा न नमाज़ जाएगी, यहाँ तक कि अगर नमाज़ पूरी कर ली और फिर मांगा और उसने नहीं दिया, तो नमाज़ भी सही रही और तैयम्मुम भी बाकी रहा, क्योंकि ज़ाहिर हो गया कि वह गुमान ग़लत था। मैं कहता हूँ: यह हुक्म खुद उन्हीं उपर्युक्त इबारतों 'ज़ियादात', 'जामे कर्खी', 'मुहीते सरख़्सी', 'ख़ुलासा', 'बज़ज़िया', 'सदरुश शरीया', 'हुलिया' और 'हिन्दिया' से ज़ाहिर है कि नमाज़ तोड़ने (क़त्अ) को फ़रमाया, और तोड़ना उसी चीज़ का होगा जो अभी बाकी है; बातिल (अमान्य) चीज़ तो स्वयं ही लुप्त हो गई, तो क्या तोड़ा जाएगा?

'बहर' में है:

"जब वह नमाज़ में हो और उसे (पानी) मिलने का प्रबल गुमान हो तो नमाज़ बातिल नहीं होती; बल्कि जब वह उसे पूरा कर ले और माँगे और वह न दे, तो उसकी नमाज़ पूरी हो गई क्योंकि ज़ाहिर हो गया कि उसका गुमान एक ग़लती थी। ऐसा ही 'शरह अल-विक़ाया' में है।" (अनुवाद: जब नमाज़ के अंदर हो और उसे प्रबल गुमान हुआ कि वह दे देगा, तो इससे नमाज़ बातिल नहीं हो जाती बल्कि इस सूरत में जब नमाज़ पूरी कर ले फिर मांगे और वह न दे, तो नमाज़ पूरी हो गई क्योंकि ज़ाहिर हो गया (कि गुमान ग़लत था)।)

1 दुर्रे मुख्तार, बाब-अत-तैयम्मुम, मुजतबाई दिल्ली, 1/72 2 अल-जौहरा-तुन-नय्यरा, बाब-अत-तैयम्मुम, मकतबा इमदादिया मुल्तान, 1/28 3 अल-बहर-उर-राईक़, बाब-अत-तैयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/161

पृष्ठ 38/761

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم پوری کرکے مانگے یہ صاف نہ فرمایا کہ مانگنا واجب ہے یا مستحب اقول مگر مسئلہ (1) ظن قرب آب میں تصریح ہے کہ اگر قرب مشکوک ہو طلب واجب نہیں صرف مستحب ہے، درمختار میں ہے:

الا یغلب علی ظنہ قربہ لایجب بل یندب ان رجاوالالا۔ اگر قرب آب کا غالب گمان نہ ہو تو طلب واجب نہیں بلکہ مندوب ہے اگر امید رکھتا ہو ورنہ مندوب بھی نہیں۔(ت)

شرح تعریف رضوی کے افادہ پنجم میں اور بعض عبارات بھی اس کے مفید گزریں اور جوہرہ نیرہ میں ہے :اذاشك یستحب لہ الطلب 2(شک کی صورت میں طلب مستحب ہے۔ت) اسی طرح ہندیہ میں سراج وہاج سے ہے ، بحر میں بدائع سے ہے:

اذالم یغلب علی ظنہ قربہ لایجب بل یستحب اذا کان علی طمع من وجود الماء 3۔ قرب آب کا غالب گمان نہ ہو تو طلب واجب نہیں بلکہ مستحب ہے جب کہ پانی موجود ہونے کی اسے کچھ امید ہو۔ (ت)

اس کے بکثرت مؤیدات عنقریب آتے ہیں ان شاء اللہ تعالٰی تو حاصل حکم یہ نکلا کہ بحال ظنِ عطا مانگنا واجب اور بحال شک مستحب اور بحال ظنِ منع مستحب بھی نہیں واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۵ : صحیح و معتمد وظاہر الروایتہ یہ ہے کہ نماز میں بحال غلبہ ظنِ عطا اگر چہ نیت توڑنے کا حکم ہے مگر فقط اس غلبہ ظن سے نہ تیمم ٹوٹے نہ نماز جائے یہاں تک کہ اگر پوری کرلی اور پھر مانگا اور اُس نے نہ دیا تو نماز بھی صحیح اور تیمم بھی باقی کہ ظاہر ہوا کہ وہ ظن غلط تھا۔ اقول: یہ حکم خود انہیں عبارات مذکورہ زیادات و جامع کرخی و محیط سرخسی و خلاصہ و بزازیہ

و صدر الشریعہ وحلیہ وہندیہ سے ظاہر کہ قطع نماز کو فرمایا اور قطع وہی کی جائے گی کہ ہنوز باقی ہے باطل خود ہی معدوم ہو گئی قطع کیا ہو بحر میں ہے:

اذاکان فی الصلاۃ وغلب علی ظنہ الاعطاء لاتبطل بل اذااتمھاسأله ولم یعطه تمت صلاته لانه ظھر ان ظنہ کان خطاء کذا فی شرح الوقایۃ جب اندرونِ نماز ہو اور اسے غالب گمان ہوا کہ دے دے گا تو اس سے نماز باطل نہیں ہو جاتی بلکہ اس صورت میں جب نماز پوری کرلے پھر مانگے اور وہ نہ دے تو نماز پوری ہو گئی اس لئے کہ ظاہر ہو گیا

1 در مختار باب التیمم مطبوعہ مجتبائی دہلی ۷۲/۱ 2 الجوہرۃ النیرہ باب التیمم، مکتبہ امدادیہ ملتان، ۲۸/۱ 3 البحر الرائق باب التیمم مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۶۱/۱

Page 38 of 761

Fatawa Ridawiyyah, Volume 4

[Arabic Section]: From this it is known that what is mentioned in Fath al-Qadir regarding the invalidity of prayer merely due to the overwhelming thought that water would be given is not the apparent [correct] view, except that Qadi Khan in his Fatawa mentioned invalidity in this situation based merely on the thought [opinion] of Imam Muhammad (1). -

[Urdu Section]: That his thought was incorrect. It is similarly mentioned in Sharh al-Wiqayah. From this it became known that the statement in Fath al-Qadir about the invalidity of prayer due to a mere overwhelming thought of being given water is not the apparent view, but Qadi Khan has narrated the invalidity of prayer due to a mere thought from Imam Muhammad in his Fatawa. (T)

[Arabic Section]: Similarly, it is mentioned in Radd al-Muhtar from al-Nahr: He [the author of al-Nahr] said: It is not invalidated as was determined by al-Zaila'i and others. Therefore, what is in al-Fath [Fath al-Qadir] is subject to scrutiny. Yes, in al-Khaniyyah from [Imam] Muhammad, it is reported that it is invalidated by a mere thought, so with an overwhelming thought it is even more likely [to be invalidated], and what is in al-Fath is understood to be based on this (2). End quote.

[Urdu Section]: They said: The prayer does not become void as Imam al-Zaila'i and others have affirmed, so what is written in Fath al-Qadir is debatable. Yes, there is a narration from Imam Muhammad in al-Khaniyyah that prayer becomes void by a mere thought, so it will become void all the more so with an overwhelming thought, and what is in Fath al-Qadir is based on this. (T)

[Arabic Section]: I say: (1) The text of al-Khaniyyah is: 'If a traveler begins prayer with tayammum, then a person comes with water, he should continue his prayer. After the salutation, he should ask for it; if it is refused, his prayer is valid, and if it is given, it becomes void.' From Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him), it is reported: 'If he sees water with someone else while in prayer and his overwhelming thought is that they will give it to him, his prayer becomes void' (3). End quote. So there is nothing in it from Muhammad about its invalidation [merely due to his seeing it].

[Urdu Section]: I say: (I say) the text of al-Khaniyyah is this: 'When a traveler starts prayer with tayammum then someone comes who has water, he should keep praying. When he turns for salam, he should ask him for water. If he doesn't give it,

his prayer is done, and if he gives it, it became void. And it is narrated from Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) that "when he sees water with someone else during prayer and his dominant thought is that he will give it to him, his prayer became void." Inside this statement from Imam Muhammad (may Allah Almighty...)'

---

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter on Tayammum, Matba Sa'eed Company, Karachi, 1/154
2. Radd al-Muhtar, Chapter on Tayammum, Matba Mustafa al-Babi, Egypt, 1/85
3. Fatawa Qadi Khan, Section on when Tayammum is Permissible, Matba Nawal Kishore, Lucknow, 1/72

फ़तावा रज़विया, खंड 4

[अरबी अनुभाग]: इससे पता चला कि फ़त्ह अल-क़दीर में जो महज़ पानी मिलने के प्रबल विचार (ग़लबा-ए-ज़न्न) से नमाज़ के बातिल होने की बात है, वह ज़ाहिर (सही) नहीं है, सिवाय इसके कि क़ाज़ी ख़ान ने अपने फ़तावा में इमाम मुहम्मद से इस सूरत में महज़ गुमान की वजह से नमाज़ के बातिल होने का उल्लेख किया है (1)। -

[उर्दू अनुभाग]: कि उसका गुमान ग़लत था। शरह वक़ाया में भी ऐसा ही है। इससे पता चला कि महज़ अता (पानी मिलने) के प्रबल विचार से नमाज़ के बातिल होने की जो बात फ़त्ह अल-क़दीर में है, वह ज़ाहिर नहीं है, लेकिन क़ाज़ी ख़ान ने इस सूरत में महज़ गुमान की वजह से इमाम मुहम्मद से नमाज़ के बातिल होने की बात अपने फ़तावा में नक़ल की है। (त)

[अरबी अनुभाग]: इसी तरह रद अल-मुहतार में 'नहर' से है: उन्होंने कहा: [नमाज़] बातिल नहीं होती जैसा कि अज़-ज़ैलई और अन्य लोगों ने दृढ़ता से कहा है। अतः'अल-फ़त्ह' [फ़त्ह अल-क़दीर] में जो है वह विचारणीय है। हाँ, 'अल-ख़ानिया' में इमाम मुहम्मद से वर्णित है कि यह महज़ गुमान से बातिल हो जाती है, तो प्रबल विचार के साथ तो और भी अधिक [बातिल होगी], और 'अल-फ़त्ह' में जो कुछ है उसे इसी पर आधारित माना जाएगा (2)। समाप्त।

[उर्दू अनुभाग]: उन्होंने कहा: नमाज़ बातिल नहीं हो जाती जैसा कि इमाम ज़ैलई आदि ने इस पर दृढ़ता व्यक्त की है, तो फ़त्ह अल-क़दीर में जो लिखा है वह विचारणीय है। हाँ, ख़ानिया में इमाम मुहम्मद से एक रिवायत है कि महज़ गुमान से नमाज़ बातिल हो जाती है, तो प्रबल विचार (ग़लबा-ए-ज़न्न) से तो और भी पहले (बदरजा-ए-औला) बातिल हो जाएगी और फ़त्ह अल-क़दीर में जो है, उसे इसी पर माना जाएगा। (त)

[अरबी अनुभाग]: मैं कहता हूँ: (1) अल-ख़ानिया की इबारत (पाठ) यह है: 'जब मुसाफ़िर तयम्मुम के साथ नमाज़ शुरू कर दे, फिर कोई आदमी आए जिसके पास पानी हो, तो वह अपनी नमाज़ जारी रखे। जब वह सलाम फेर ले तो उससे पानी माँगे; अगर उसने मना कर दिया तो उसकी नमाज़ जायज़ (मान्य) है, और अगर उसने दे दिया तो बातिल हो गई।' और इमाम मुहम्मद (अल्लाह तआला उन पर रहम करे) से रिवायत है कि 'जब वह नमाज़ के दौरान किसी और के पास पानी देखे और उसका प्रबल विचार यह हो कि वह उसे दे देगा, तो उसकी नमाज़ बातिल हो गई' (3)। समाप्त। तो इसमें मुहम्मद से इसके बातिल होने के बारे में कुछ नहीं है।

[उर्दू अनुभाग]: मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) ख़ानिया की इबारत यह है: 'मुसाफ़िर जब तयम्मुम से नमाज़ शुरू कर दे फिर कोई आदमी आए जिसके पास पानी हो तो वह नमाज़ पढ़ता रहे। जब सलाम फेर ले तो उससे पानी माँगे। अगर न दे तो उसकी नमाज़ हो गई और अगर दे दे तो बातिल हो गई। और इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैहि से रिवायत है कि "जब नमाज़ के अंदर दूसरे के पास पानी देखे और उसका प्रबल गुमान यह हो कि वह उसे दे देगा तो उसकी नमाज़ बातिल हो गई"। इस इबारत के अंदर इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह तआला से'

---

1. अल-बहर अल-राइक़, बाब अत-तयम्मुम, मतबा सईद कंपनी, कराची, 1/154
2. रद अल-मुहतार, बाब अत-तयम्मुम, मतबा मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/85
3. फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, फ़स्ल फ़ीमा यजूज़ लहुत तयम्मुम, मतबा नवल किशोर, लखनऊ, 1/72

पृष्ठ 39/761

فتاوٰی رضویہ، جلد چہارم

[Arabic Section]: فعلم منه ان مافی فتح القدیر من بطلانها بمجرد غلبة ظن الاعطاء لیس بظاهر الا ان قاضیخان في فتاواه ذکر البطلان في هذه الصورة بمجرد الظن عن محمد ۱ -

[Urdu Section]: کہ اس کا گمان غلط تھا۔ ایسا ہی شرح وقایہ میں ہے۔ اس سے معلوم ہوا کہ محض غلبہ ظن عطاء سے بطلان نماز کی بات جو فتح القدیر میں ہے وہ ظاہر نہیں مگر قاضی خان نے اس صورت میں محض گمان کی وجہ سے بطلان نماز امام محمد سے اپنے فتاوٰی میں نقل فرمایا ہے۔ (ت)

[Arabic Section]: اسی طرح ردالمحتار میں نہر سے ہے : قال لاتبطل کماجزم به الزیلعي وغیره فما في الفتح فیه نظر نعم في الخانیة عن محمد انها تبطل بمجرد الظن فمع غلبته اولی وعلیه یحمل ما في الفتح ۲ اھ

[Urdu Section]: انہوں نے کہا: نماز باطل نہیں ہو جاتی جیسا کہ اس پر امام زیلعی وغیرہ نے جزم کیا ہے تو فتح القدیر میں جو لکھا ہے وہ محلِ نظر ہے۔ ہاں خانیہ میں امام محمد سے ایک روایت ہے کہ محض گمان سے نماز باطل ہو جاتی ہے تو غلبہ ظن سے بدرجہ اولٰی باطل ہو جائے گی اور اسی پر محمول ہے وہ جو فتح القدیر میں ہے۔ (ت)

[Arabic Section]: اقول:(۱) عبارة الخانیة المسافر اذا شرع في الصلاة بالتیمم ثم جاء انسان معه ماء فانه یمضی في صلاته فاذا سلم فسأله ان منع جازت صلاته وان اعطاه بطلت وعن محمد رحمه الله تعالی اذارأی في الصلاة مع غیره ماء وفی غالب ظنه انه یعطیه بطلت صلاته ۳ اھ فلیس فیها عن محمد بطلانها

[Urdu Section]: اقول: (میں کہتا ہوں) خانیہ کی عبارت یہ ہے: "مسافر جب تیمم سے نماز شروع کر دے پھر کوئی آدمی آئے جس کے پاس پانی ہو تو وہ نماز پڑھتا رہے جب سلام پھیر لے تو اس سے پانی مانگے اگر نہ دے تو اس کی نماز ہو گئی اور اگر دے دے تو باطل ہو گئی۔ اور امام محمد رحمۃ اللہ علیہ سے روایت ہے کہ "جب اندرون نماز دوسرے کے پاس پانی دیکھے اور اس کا غالب گمان یہ ہے کہ وہ اسے دے دے گا تو اس کی نماز باطل ہو گئی"۔ اس عبارت کے اندر امام محمد رحمۃ اللہ تعالیٰ سے

1۔ البحر الرائق باب التیمم مطبع سعید کمپنی کراچی ۱/۱۵۴ 2۔ ردالمحتار باب التیمم، مطبع مصطفٰی البابی مصر، ۱/۸۵ 3۔ فتاویٰ قاضی خان فصل فیما یجوز لہ التیمم مطبع نولکشور لکھنؤ ۱/۷۲

Fatawa Razawiyya, Volume 4

In the sense intended by the author of 'An-Nahr' (al-Faiq), there is no mention of the invalidation of prayer due to 'mere suspicion'. On the contrary, it explicitly includes the condition of 'preponderant suspicion' (Ghalabat-uz-Zann). Even if this condition were not present, 'preponderant suspicion' would still be the intended meaning of 'suspicion', because weak suspicion is included in 'doubt', as scholars have clarified. How can a prayer, which was certainly valid at its commencement, become invalid due to doubt? It appears that the author of 'An-Nahr' did not consult 'Al-Khaniya' himself and relied on the statement of his brother (the author of 'Al-Bahr'): "mention of invalidation by mere suspicion", taking its meaning as suspicion devoid of preponderance, whereas it is not so. By 'mere suspicion', he means only a thought, i.e., he has not yet asked so that the correctness and success or failure of the thought could be revealed. (T)

Furthermore, I say: the narration reported from Imam Muhammad (may Allah Ta'ala have mercy on him) allows for two interpretations: First, the phrase 'it became invalid' (batala) means 'it will soon become invalid', as this meaning is well-known and recognized in the writings of these scholars in numerous places. We have explained this in our treatise 'Fasl al-Qada fi Rasm al-Ifta'. Second, the ruling of this very scenario is that the prayer has become invalid, to the extent that if he did nothing more and completed his prayer without even asking afterwards, the prayer would be ruled invalid, whether the owner of the water gave it to him without asking or not. And the text of 'Al-Fath' is as follows: There is a group of people who performed Tayammum, the owner of the water gifted it to them, and they took possession of it; the Tayammum of none of them is broken because their speech does not suffice according to their (the two Imams') view, and according to the view of Abu Hanifa (may Allah be pleased with him)...

फ़तावा रज़विया, खंड 4

उस अर्थ में 'केवल संदेह' (मुजर्रद ज़न्न) से नमाज़ के बातिल होने का उल्लेख नहीं है जो 'साहब-ए-नहर अल-फ़ाइक़' ने लिया है, बल्कि इसमें तो साफ़ तौर पर 'ग़लबा-ए-ज़न्न' (प्रबल संदेह) की शर्त मौजूद है। और अगर यह शर्त न भी होती, तो भी संदेह से 'ग़लबा-ए-ज़न्न' ही मुराद होता, क्योंकि कमज़ोर संदेह तो 'शक' में शामिल है, जैसा कि विद्वानों ने इसकी स्पष्ट व्याख्या की है। तो शक से ऐसी नमाज़ कैसे बातिल हो जाएगी जिसका शुरू करना निश्चित रूप से सही था? ऐसा मालूम होता है कि 'साहब-ए-नहर' ने स्वयं 'ख़ानिया' को नहीं देखा और अपने भाई ('साहब-ए-बहर') के कथन "ज़िक्र अल-बुतलान बि-मुजर्रद अज़-ज़न्न" (केवल संदेह से बातिल होने का उल्लेख) पर भरोसा करते हुए इसका अर्थ यह ले लिया कि संदेह प्रबलता से ख़ाली है, जबकि ऐसा नहीं है। केवल संदेह से उनकी मुराद यह है कि वह केवल एक विचार हो, यानी अभी माँगा नहीं है कि उस विचार की सत्यता और सफलता या विफलता प्रकट हो। (त)

फिर मैं कहता हूँ: इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैहि) से जो रिवायत आई है, उसमें दो व्याख्याएँ हो सकती हैं: पहली यह कि "बातिल हुई" का अर्थ यह है कि "अभी बातिल हो जाएगी", जैसा कि इन महानुभावों के लेखों में और कई स्थानों पर यह अर्थ प्रसिद्ध और ज्ञात है। और हमने इसे अपने रिसाला "फ़स्ल अल-क़ज़ा फ़ी रस्म अल-इफ़्ता" में बयान किया है। दूसरी यह कि स्वयं इस स्थिति का हुक्म यह है कि नमाज़ बातिल हो गई, यहाँ तक कि अगर उसने इससे ज़्यादा कुछ न किया और नमाज़ पढ़ ली, बाद में माँगा भी नहीं, तो उस नमाज़ के बातिल होने का हुक्म होगा, चाहे पानी वाला बिना माँगे उसे दे या न दे। और 'फ़तह अल-क़दीर' की इबारत इस प्रकार है: तयम्मुम करने वालों की एक जमात है, उन्हें पानी के मालिक ने पानी हिबा (उपहार) कर दिया जिस पर वे काबिज़ (अधिकार प्राप्त) हैं; उनमें से किसी का तयम्मुम नहीं टूटता क्योंकि उनके(दोनों इमामों के) मत के अनुसार उनकी बातचीत पर्याप्त नहीं है, और इमाम अबू हनीफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) के मत के अनुसार...

पृष्ठ 40 / 761

اُس معنی میں مجرد ظن سے بطلان نماز کا ذکر نہیں جو صاحب النہر الفائق نے مراد لیا بلکہ اس میں تو صاف غلبہ ظن کی قید موجود ہے اور اگر یہ قید نہ ہوتی تو بھی ظن سے غلبہ ظن ہی مراد ہوتا اس لئے کہ ظن ضعیف تو شک میں شامل ہے جیسا کہ علما نے اس کی صراحت فرمائی ہے تو شک سے ایسی نماز کیسے باطل ہوجائے گی جسے شروع کرنا یقینی طور پر درست بھی ہوا ہے۔ ایسا معلوم ہوتا ہے کہ صاحبِ نہر نے خود خانیہ کی مراجعت نہ فرمائی اور اپنے برادر (صاحبِ بحر) کی عبارت "ذکر البطلان بمجرد الظن" (مجرد ظن سے بطلان کا ذکر کیا ہے) پر اعتماد کرتے ہوئے اس کا معنی یہ لے لیا کہ گمان غلبہ سے خالی ہو حالانکہ ایسا نہیں۔ مجرد ظن سے ان کی مراد یہ ہے کہ محض گمان ہو۔ یعنی ابھی مانگا نہیں کہ گمان کی درستی و کامیابی یا ناکامی منکشف ہو۔ (ت)

ثم اقول: امام محمد رحمہ اللہ تعالٰی سے جو روایت آئی ہے اس میں دو تاویلیں ہوسکتی ہیں: اول یہ کہ "باطل ہوئی" کا معنی یہ ہے کہ ابھی باطل ہوجائے گی جیسا کہ ان حضرات کی عبارتوں اور متعدد جگہوں میں یہ معنی معلوم و معروف ہے۔ اور ہم نے اسے اپنے رسالہ "فصل القضاء فی رسم الافتاء" میں بیان کیا ہے۔ دوم یہ کہ خود اس صورت کا حکم یہ ہے کہ نماز باطل ہوگئی یہاں تک کہ اگر اس نے اس سے زیادہ کچھ نہ کیا اور نماز پڑھ لی، بعد میں مانگا بھی نہیں تو اس نماز کے باطل ہونے کا حکم ہوگا خواہ پانی والا بغیر مانگے اسے دے یا نہ دے۔ اور فتح القدیر کی عبارت اس طرح ہے: تیمم والوں کی جماعت ہورہی ہے انہیں پانی کے مالک نے پانی ہبہ کردیا جس پر وہ قابض

Fatawa Razawiyya Volume 4

[Arabic Column]: ...Allah Ta'ala from them, this gift is not valid due to joint ownership (shuyu'), and if (1) the donor specified one of them, his Tayammum becomes void but not theirs, to the extent that if he was the Imam, the prayer of all would be void. Similarly (2) if he was not the Imam, except that when the people finished, the Imam asked him and he gave it to him, the prayer is invalidated according to everyone because it became clear that he prayed while having access to water. Know that they have derived the ruling: if someone prays with Tayammum and a man appears with water, if he strongly suspects he will give it to him, his prayer is void even before asking. If he strongly suspects he won't give it, he should continue his prayer. If he is unsure, he should continue and then ask. If he gives it, even by selling at a fair price or similar, he must repeat the prayer, otherwise, it is complete. Similarly, if he gives it after a refusal, but in this case, he will perform Wudu for another prayer. Based on this, stating the absolute invalidity of prayer when the Imam asks would either be interpreted as a state of doubt or that the non-invalidity when suspecting a refusal is conditional on the fact that the act of giving has not yet become apparent. And you know that (3) this expression is far from those two interpretations; as for the first, it is clear, and as for the second, because the meaning of what was narrated from him is that when suspecting giving or refusal, it does not depend on asking, rather it was valid when suspecting refusal and void when suspecting giving, whether he asked or not. The matter only depends on asking in cases of doubt and ambiguity, and thus they understood.

[Urdu Column]: Even if they all become [owners], the Tayammum of none of them will be broken because each will not receive enough [water] that would be sufficient for him. This ruling is according to the view of the Sahabayn (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad). And according to the view of Imam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him), this gift itself is not valid due to joint ownership (shuyu'). And if the donor specified one of them, his Tayammum will become void, but not the others'. To the extent that if that specified person was the Imam, the prayer of all would be void. Similarly, if he were not the Imam. However, when the people finished the prayer, the Imam asked him for water and he gave it, then according to everyone's view, the prayer became invalid because it became clear that he performed the prayer despite having the power to obtain water. It should be known that the scholars have derived this subsidiary rule: if someone started the prayer with Tayammum and then a person appeared before him who had water, if his strong suspicion is that he will give

the water, the prayer becomes void even before asking. And if the strong suspicion is that he will not give it, he should complete the prayer. In case of doubt, he should complete the prayer and then ask him. If he gives it, whether by sale in exchange for a fair price or similar, he should repeat the prayer, otherwise, the prayer is complete. Similarly, if he gives it after a refusal, but in this case, he will perform Wudu for some other prayer here. So, stating the absolute invalidity of prayer in the case of the Imam asking would either be interpreted as a state of doubt, or that the lack of invalidity in the case of strong suspicion of refusal is restricted by the fact that the state of his giving water had not yet become apparent. To the observer...

---

1. Fath al-Qadir, Chapter of Tayammum, published by Nuriya Razawiyya Sukkur, 1/119.

फतावा रज़विया खंड 4

[अरबी कॉलम]: ...अल्लाह तआला उनसे, यह उपहार संयुक्त स्वामित्व (शुरू) के कारण मान्य नहीं है, और यदि (1) दाता ने उनमें से किसी एक को निर्दिष्ट किया, तो उसका तयम्मुम अमान्य हो जाता है लेकिन उनका नहीं, इस हद तक कि यदि वह इमाम था, तो सभी की नमाज़ अमान्य हो जाएगी। इसी प्रकार (2) यदि वह इमाम नहीं था, सिवाय इसके कि जब लोग फारिग हुए तो इमाम ने उससे माँगा और उसने उसे दे दिया, तो सभी के मत के अनुसार नमाज़ अमान्य हो गई क्योंकि यह स्पष्ट हो गया कि उसने पानी तक पहुँच होने के बावजूद नमाज़ पढ़ी। जान लें कि उन्होंने यह नियम निकाला है: यदि कोई तयम्मुम के साथ नमाज़ पढ़ता है और पानी के साथ एक व्यक्ति आता है, यदि उसे प्रबल संदेह है कि वह उसे दे देगा, तो माँगने से पहले ही उसकी नमाज़ अमान्य है। यदि उसे प्रबल संदेह है कि वह नहीं देगा, तो उसे अपनी नमाज़ जारी रखनी चाहिए। यदि वह अनिश्चित है, तो उसे जारी रखना चाहिए और फिर माँगना चाहिए। यदि वह इसे देता है, भले ही उचित मूल्य पर बेचकर या इसी तरह, तो उसे नमाज़ दोहरानी होगी, अन्यथा, यह पूर्ण है। इसी प्रकार, यदि वह इनकार के बाद देता है, लेकिन इस मामले में, वह यहाँ दूसरी नमाज़ के लिए वुज़ू करेगा। इस आधार पर, इमाम द्वारा माँगने की स्थिति में नमाज़ की पूर्ण अमान्यता बताना या तो संदेह की स्थिति के रूप में व्याख्यायित किया जाएगा या यह कि इनकार का संदेह होने पर अमान्यता न होना इस तथ्य पर निर्भर है कि देने का कार्य अभी स्पष्ट नहीं हुआ है। और आप जानते हैं कि (3) यह अभिव्यक्ति उन दो व्याख्याओं से दूर है; जहाँ तक पहले का सवाल है, यह स्पष्ट है, और जहाँ तक दूसरे का सवाल है, क्योंकि उससे जो वर्णित किया गया है उसका अर्थ यह है कि देने या इनकार करने के संदेह के समय, यह माँगने पर निर्भर नहीं करता है, बल्कि इनकार का संदेह होने पर यह मान्य था और देने का संदेह होने पर अमान्य था, चाहे उसने माँगा हो या न माँगा हो। मामला केवल संदेह और अस्पष्टता के मामलों में माँगने पर निर्भर करता है, और इस प्रकार वे समझ गए।

[उर्दू कॉलम]: यदि वे सभी [स्वामी] बन जाते हैं, तो उनमें से किसी का भी तयम्मुम नहीं टूटेगा क्योंकि प्रत्येक को पर्याप्त [पानी] नहीं मिलेगा जो उसके लिए पर्याप्त हो। यह नियम साहिबैन (इमाम अबू यूसुफ और इमाम मुहम्मद) के विचार के अनुसार है। और इमाम अबू हनीफा (रज़ियल्लाहु अन्हु) के विचार के अनुसार, संयुक्त स्वामित्व (शुरू) के कारण यह उपहार स्वयं मान्य नहीं है। और यदि दाता ने उनमें से किसी एक को निर्दिष्ट किया, तो उसका तयम्मुम अमान्य हो जाएगा, लेकिन दूसरों का नहीं। यहाँ तक कि यदि वह निर्दिष्ट व्यक्ति इमाम था, तो सभी की नमाज़ अमान्य हो जाएगी। इसी

तरह, यदि वह इमाम नहीं था। हालांकि, जब लोग नमाज़ से फारिग हो गए, तो इमाम ने उससे पानी माँगा और उसने दे दिया, तो सभी के विचार के अनुसार, नमाज़ अमान्य हो गई क्योंकि यह स्पष्ट हो गया कि उसने पानी प्राप्त करने की शक्ति होने के बावजूद नमाज़ अदा की। यह ज्ञात होना चाहिए कि विद्वानों ने यह उप-नियम निकाला है: यदि किसी ने तयम्मुम के साथ नमाज़ शुरू की और फिर उसके सामने एक व्यक्ति आया जिसके पास पानी है, यदि उसका प्रबल संदेह यह है कि वह पानी दे देगा, तो माँगने से पहले ही नमाज़ अमान्य हो जाती है। और यदि प्रबल संदेह यह है कि वह नहीं देगा, तो उसे नमाज़ पूरी करनी चाहिए। संदेह की स्थिति में, उसे नमाज़ पूरी करनी चाहिए और फिर उससे माँगना चाहिए। यदि वह इसे देता है, चाहे उचित मूल्य के बदले बिक्री आदि के माध्यम से, तो उसे नमाज़ दोहरानी चाहिए, अन्यथा नमाज़ पूरी है। इसी प्रकार, यदि वह इनकार के बाद देता है, लेकिन इस स्थिति में, वह यहाँ किसी अन्य नमाज़ के लिए वुज़ू करेगा। तो, इमाम के माँगने की स्थिति में नमाज़ की पूर्ण अमान्यता बताना या तो संदेह की स्थिति के रूप में माना जाएगा, या यह कि इनकार के प्रबल संदेह की स्थिति में अमान्यता की कमी इस बात से प्रतिबंधित है कि उसके पानी देने की स्थिति अभी तक स्पष्ट नहीं हुई थी। देखने वाले को...

---

1. फतह अल-कादिर, तयम्मुम का अध्याय, नूरिया रज़विया सुक्कुर द्वारा प्रकाशित, 1/119।

فتاویٰ رضویہ جلد چہارم

[عربی کالم]: تعالیٰ عنهم لاتصح هذه الهبة للشيوع ولو (١) عين الواهب واحدا منهم يبطل تيممه دونهم حتى لو كان اماما بطلت صلاة الكل وكذا (٢) لو كان غير امام الا انه لما فرغ القوم سأله الامام فاعطاه تفسد على قول الكل لتبين انه صلى قادرا على الماء واعلم انهم فرعو الوصلى بتيمم فطلع عليه رجل معه ماء فان غلب على ظنه انه يعطيه بطلت قبل السؤال وان غلب ان لا يعطيه يمضى على صلاته وان اشكل عليه يمضى ثم يسأله فان اعطاه ولو ببيع بثمن المثل ونحوه اعاد والا فهى تامة وكذا لواعطاه بعد المنع الا انه يتوضأ هنال صلاة اخرى وعلى هذا فإطلاق فساد الصلاة فى صورة سؤال الامام امان يكون محمولا على حالة الاشكال اوان عدم الفساد عند غلبة ظن عدم الاعطاء مقيد بما اذا لم يظهر له بعد اعطاؤه ١ اه وانت تعلم ان (٣) هذه العبارة بعيدة عن ذينك التأويلين اما الاول فظاهر واما الثانى فلان مفاد ماحكاه عنده ان عند ظن العطاء او المنع لا توقف على السؤال بل صحت فى ظن المنع وبطلت فى ظن العطاء سأل او لم يسأل انما يتوقف الامر على السؤال عند الشك والاشكال ولذا فهم

[اردو کالم]: بھی ہو گئے تو ان میں سے کسی کا تیمم نہ ٹوٹے گا اس لئے کہ ہر ایک کو اتنا نہ پہنچے گا جو اس کیلئے کافی ہو یہ حکم بر قول صاحبین ہے۔ اور امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہم کے قول پر یہ ہبہ ہی شیوع کی وجہ سے صحیح نہیں، اور اگر ہبہ کرنے والے نے ان میں سے کسی ایک کو معین کر دیا تو اس کا تیمم باطل ہو جائے گا باقی لوگوں کا نہیں یہاں تک کہ وہ شخص معین اگر امام تھا تو سب کی نماز باطل ہو گئی۔ اسی طرح اگر غیر امام ہو۔ مگر یہ کہ جب لوگ نماز سے فارغ ہو گئے تو امام نے اس سے پانی مانگا اس نے دے دیا تو سب کے قول پر نماز فاسد ہو گئی اس لئے کہ ظاہر ہو گیا کہ اس نے پانی پر قدرت ہوتے ہوئے نماز ادا کی۔ جاننا چاہئے کہ مشائخ نے یہ تفریع فرمائی ہے کہ اگر کسی نے تیمم سے نماز شروع کی پھر اس کے سامنے

ایسا شخص نمودار ہوا جس کے پاس پانی ہے تو اگر اس کا غالب گمان یہ ہو کہ وہ پانی دے دے گا تو مانگنے سے پہلے ہی نماز باطل ہو گئی اور اگر غالب گمان یہ ہو کہ نہ دے گا تو نماز پوری کرے اور اگر اشتباہ کی صورت ہو تو نماز پوری کرے پھر اس سے مانگے اگر دے دے خواہ ثمن مثل کے بدلے بیع وغیرہ سے ہی دے تو نماز کا اعادہ کرے ورنہ نماز کامل ہو گئی۔ اسی طرح اگر انکار کرنے کے بعد دے مگر اس صورت میں وہ یہاں کسی دوسری نماز کیلئے وضو کرے گا۔ تو امام کے مانگنے کی صورت میں فساد نماز کو مطلقاً کہنا یا تو حالت اشتباہ پر محمول ہو گا یا اس پر کہ نہ دینے کا غلبہ ظن ہونے کی صورت میں عدمِ فساد اس سے مقید ہے کہ ابھی اس کے دینے کا حال ظاہر نہ ہوا ہو، ناظر کو

---

۱ فتح القدیر، باب التیمم مطبوعہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/۱۱۹

[Top Margin] Volume Four | Fatawa Razawiyya

[Main Body] The contradiction between it and the branching issue of the Imam's questioning, where they ruled that their prayer is void if he gives to him, and this in its generality includes whether the Imam during his prayer had an assumption of being given, or refused, or had a doubt. Thus, the validity in the case of assuming a refusal also depended on what becomes clear of the situation after the inquiry. Therefore, the reconciliation was shifted between two positions: either the branched issue is restricted to the state of doubt, so the dependence on questioning is valid; or it is said that in the case of assuming a refusal as well, the ruling of validity is removed upon the emergence of his error after the prayer. This is what he (may Allah Almighty have mercy on him) understood and aimed for, and it is not woven in the pattern of what was narrated from the Imam Rabbani (may Allah Almighty have mercy on him). How can it be, when he attributed it to the scholars, stating that they are the ones who branched it out (1)? And you know that what he related is exactly what is in 'Al-Khulasa', except that it mentions therein that if he knows he will give it to him, he should terminate the prayer; whereas it occurred in 'Al-Fath' instead as "it became void before the questioning." Its implication is not invalidity merely due to the assumption of being given, nor is it absolute certainty of validity in the case of assuming a refusal, such that you would not repeat it if he gave. There is no restriction of referring the ruling to what becomes clear after questioning to only the state of ambiguity; rather, it is general, including all forms of ambiguity, as the reality of the situation manifests in all that by the help of the Lord of Majesty. And the apparent view—and Allah Almighty knows best—is that he (may Allah Almighty have mercy on him) relied...

It is known that this passage of the author of 'Fath al-Qadir' is far from both of these interpretations. The remoteness of the first interpretation is obvious. The second is because what he narrated on his own implies that in the case of having an assumption of giving or not giving, nothing is dependent on asking. Rather, the ruling is that if there is an assumption of refusal, the prayer is valid, and if there is an assumption of giving, it becomes void, whether he asks or not. Only in the case of doubt and ambiguity does the matter remain dependent on asking. Therefore, he perceived a contradiction between this issue and the issue of the Imam asking, because in that, the scholars have ruled that everyone's prayer is void when the water-carrier gives water to the Imam upon asking. And this ruling, due to its generality, includes all cases during the prayer: the Imam's assumption of being

given, assumption of refusal, and doubt. So, in the case of an assumption of refusal as well, the validity of the prayer remained dependent on the situation that becomes apparent after asking. For this reason, he established a reconciliation between two applications: either the specific case is restricted to the state of doubt, so the validity of the prayer will depend on asking; or it is said that the ruling of prayer's validity is also terminated in the case of an assumption of refusal because the error of the assumption becomes apparent after the prayer. This is what the author of 'Fath al-Qadir' (may Allah Almighty have mercy on him) understood and intended. All this discourse of his is not according to the method of the narration reported from Imam Rabbani (may Allah Almighty have mercy on him). And how can it be said so, when he clearly attributes it to the master scholars, stating that these gentlemen are the ones who made this branching out? It is also known...

[Bottom] Page 42 of 761

[ऊपरी मार्जिन] खंड चार | फ़तावा रज़विया

[मुख्य भाग] इमाम के प्रश्न की शाखा और इसके बीच विरोधाभास है, जहाँ उन्होंने यह फैसला सुनाया कि यदि वह उसे देता है तो उनकी प्रार्थना अमान्य है। यह अपनी व्यापकता में उस स्थिति को भी शामिल करता है जहाँ इमाम ने अपनी प्रार्थना के दौरान देने या इनकार करने की धारणा रखी हो, या उसे संदेह हुआ हो। इस प्रकार, इनकार की धारणा की स्थिति में भी प्रार्थना की वैधता उस स्थिति पर निर्भर थी जो प्रश्न के बाद स्पष्ट होती है। इसलिए, दो स्थितियों के बीच सामंजस्य बनाया गया: या तो इस शाखा को संदेह की स्थिति तक सीमित रखा जाए, तो प्रश्न पर निर्भरता मान्य है; या यह कहा जाए कि इनकार की धारणा की स्थिति में भी, प्रार्थना के बाद उनकी त्रुटि प्रकट होने पर वैधता का नियम समाप्त हो जाता है। यह वही है जो उन्होंने (अल्लाह उन पर दया करे) समझा और जिसका लक्ष्य रखा, और यह इमाम रब्बानी (अल्लाह उन पर दया करे) से वर्णित तरीके के अनुरूप नहीं है। यह कैसे हो सकता है, जबकि उन्होंने इसे विद्वानों से जोड़ा है, यह कहते हुए कि वे ही हैं जिन्होंने इसे शाखा के रूप में निकाला (1)? और आप जानते हैं कि उन्होंने जो वर्णन किया है वह वही है जो 'अल-खुलासा' में है, सिवाय इसके कि उसमें उल्लेख है कि यदि वह जानता है कि वह उसे देगा, तो उसे प्रार्थना समाप्त कर देनी चाहिए; जबकि 'अल-फथ' में इसके बजाय यह आया कि "प्रश्न से पहले ही अमान्य हो गई।" इसका अर्थ केवल देने की धारणा मात्र से अमान्य होना नहीं है, और न ही इनकार की धारणा की स्थिति में पूर्ण वैधता का निश्चय है, ताकि यदि वह दे दे तो आप उसे न दोहराएं। और न ही निर्णय को प्रश्न के बाद स्पष्ट होने वाली स्थिति पर संदर्भित करना केवल संदिग्ध स्थितियों तक सीमित है; बल्कि यह व्यापक है, जिसमें सभी प्रकार की संदिग्ध स्थितियां शामिल हैं, जैसा कि प्रतापी प्रभु की सहायता से उस सब में स्थिति की वास्तविकता प्रकट होती है। और स्पष्ट विचार—और अल्लाह बेहतर जानता है—यह है कि उन्होंने (अल्लाह उन पर दया करे) भरोसा किया...

यह ज्ञात है कि 'फ़तह अल-क़दीर' के लेखक का यह कथन इन दोनों व्याख्याओं से दूर है। पहली व्याख्या की दूरी स्पष्ट है। दूसरी इसलिए क्योंकि उन्होंने अपने तौर पर जो वर्णन किया है उसका अर्थ यह है कि देने या न देने की धारणा होने की स्थिति में, पूछने पर कुछ भी निर्भर नहीं है। बल्कि नियम यह है कि यदि इनकार की धारणा हो तो प्रार्थना सही है, और यदि देने की धारणा हो तो अमान्य हो गई, चाहे वह पूछे या न पूछे। केवल संदेह और संशय की स्थिति में ही मामला पूछने पर निर्भर रहता है। इसलिए, उन्होंने इस मुद्दे और इमाम के पूछने के मुद्दे में अंतर समझा, क्योंकि उसमें विद्वानों ने सभी की प्रार्थना अमान्य होने का आदेश दिया है जब इमाम के पूछने पर पानी वाला उसे पानी दे दे।

और यह आदेश अपनी व्यापकता के कारण प्रार्थना के दौरान इमाम की देने की धारणा, इनकार की धारणा और संदेह की सभी स्थितियों को शामिल करता है। तो इनकार की धारणा की स्थिति में भी, पूछने के बाद प्रकट होने वाली स्थिति पर प्रार्थना की वैधता निर्भर रही। इसी कारण उन्होंने दो अनुप्रयोगों के बीच सामंजस्य स्थापित किया: या तो विशेष मामले को संदेह की स्थिति तक सीमित किया जाए, तो प्रार्थना की वैधता पूछने पर निर्भर रहेगी; या यह कहा जाए कि प्रार्थना के बाद धारणा की त्रुटि प्रकट हो जाने से इनकार की धारणा की स्थिति में भी प्रार्थना की वैधता का आदेश समाप्त हो जाता है। यह वही है जो 'फ़तह अल-क़दीर' (अल्लाह उन पर दया करे) के लेखक ने समझा और जिसका इरादा किया। उनकी यह सारी बातचीत इमाम रब्बानी (अल्लाह उन पर दया करे) से वर्णित पद्धति के अनुसार नहीं है। और ऐसा कैसे कहा जा सकता है, जबकि वह स्पष्ट रूप से इसका श्रेय उस्ताद विद्वानों को दे रहे हैं, यह कहते हुए कि इन्हीं सज्जनों ने यह शाखा निकाली है। यह भी ज्ञात है...

[नीचे] पृष्ठ 42/761

[متن] المخالفة بينه وبين فرع سؤال الامام حيث حكموا فيه ببطلان صلاتهم اذا اعطاه وهو باطلاقه يشمل ما اذا كان الامام ظن فی صلاته عطاء اومنعا اوشك فتوقفت الصحة فی ظن المنع ایضا علی ما يتبين من الحال بعد السؤال ولذا ردد التوفيق بين حدين اما ان يخص الفرع بصورة الشك فيصح التوقف علی السؤال اويقال ان فی ظن المنع ایضا يزول حكم الصحة بظهور خطائه بعد الصلاة فهذا ما فهمه ورامه رحمه الله تعالی وهو غير منسوج علی منوال ماروی عن الامام الربانی رحمه الله تعالی كيف وقد نسبه الی المشايخ انهم هم الذين فرعوه (۱) وانت تعلم ان ما حكاه عين مافی الخلاصة سوی ان فيها ان علم انه يعطيه يقطع الصلاة ووقع بدله فی الفتح بطلت قبل السؤال وليس مفادها البطلان بمجرد ظن العطاء ولا الجزم بالصحة مطلقا فی ظن المنع حتی لاتعادو ان اعطی ولا تخصيص احالة الحكم علی ما يتبين بعد السؤال بصورة الاشكال بل هو عام يشمل جميع الاشكال كما يتجلی فی كل ذلك حقيقة الحال بعون المولی ذی الجلال والظاهر (۲) والله تعالی اعلم انه رحمه الله تعالی اعتمد

معلوم ہے کہ یہ عبارت صاحب فتح القدیر کی ان دونوں تاویلوں سے بعید ہے۔ پہلی تاویل کا بعد تو ظاہر ہے دوسری اس طرح کہ اپنے طور پر انہوں نے جو حکایت فرمائی اس کا مفاد یہ ہے کہ دینے یا نہ دینے کا ظن ہونے کی صورت میں مانگنے پر کچھ موقوف نہیں بلاتکہ حکم یہ ہے کہ نہ دینے کا ظن ہو تو نماز صحیح اور دینے کا ظن ہو تو باطل ہو گئی مانگے یا نہ مانگے ۔ صرف شک و اشکال کی صورت میں مانگنے پر معاملہ موقوف رہتا ہے۔ اس لئے انہوں نے اس مسئلہ میں اور امام کے مانگنے کے مسئلہ میں اختلاف سمجھا کیوں کہ اس میں علما نے سبھی کی نماز باطل ہونے کا حکم کیا ہے جب امام کو مانگنے پر پانی والا پانی دے دے۔ اور یہ حکم اپنے اطلاق کی وجہ سے دوران نماز امام کے ظنِ عطا، ظنِ منع اور شک تمام صورتوں کو شامل ہے تو ظنِ منع

کی صورت میں بھی مانگنے کے بعد ظاہر ہونے والے حال پر نماز کی صحت موقوف رہی اور اسی لئے انہوں نے دو حمل کے درمیان تطبیق دائر فرمائی کہ یا تو جزئیہ کو صورتِ شک سے خاص کیا جائے تو صحت نماز مانگنے پر موقوف رہے گی یا یہ کہا جائے کہ بعدِ نماز گمان کی خطا ظاہر ہو جانے سے صحت نماز کا حکم ظنِ منع کی صورت میں بھی ختم ہو جاتا ہے۔ یہ وہ ہے جو صاحب فتح القدیر رحمہ اللہ تعالیٰ نے سمجھا اور مراد لیا۔ ان کا یہ سارا کلام امام ربانی رحمہ اللہ تعالیٰ سے نقل شدہ روایت کے طریقہ پر وارد نہیں اور یہ کیسے کہا جا سکتا ہے جبکہ وہ صاف اس کی نسبت مشائخ کی طرف فرما رہے ہیں کہ ان ہی حضرات نے یہ تفریح کی ہے۔ یہ بھی معلوم ہے

(Arabic): Here, according to what was in his mind, he did not refer back to their [the scholars'] words. Therefore, he hesitated in reconciling [the views], even though the first possibility is untenable and the latter (1) is what is explicitly stated in the books of the [Hanafi] school, as will be discussed soon, if Allah wills.

(Urdu): The account narrated by the author of Fath al-Qadir is exactly the same as what is written in Khulasa. The difference is that in Khulasa it says: "If he knows that he will give it, he should break the prayer." Instead of this, in Fath al-Qadir, it is written: "The prayer became invalid even before asking." However, the implication of this text is not that the prayer becomes invalid merely by the thought of being given [water], nor is there an absolute certainty of the prayer's validity in the case of a thought of refusal such that the prayer need not be repeated even after water is given. Nor is it that the ruling regarding the situation that becomes apparent after asking is exclusive to the state of doubt; rather, this ruling is general and encompasses all situations, as the reality of the matter will be clarified with the help of the Majestic Lord. It appears, and Allah the Most High knows best, that the author of Fath al-Qadir (may Allah have mercy on him) relied on his memory here and did not refer to the words of the scholars. That is why he adopted a skeptical approach in reconciliation, whereas the first possibility has no basis at all and the latter is explicitly stated in the books of the school, as will soon be mentioned if the Exalted Lord wills. (T)

Issue 6: If it is known before starting the prayer that another person has water, is it obligatory to ask him for it or not? There is a variation in narrations here to the point of confusion. What has become clear to this humble person through the study of books and consideration of evidence is that the same ruling applies here as mentioned in Issue 4. That is, if there is a dominant thought (Zann-e-Ghalib) that he will give it, then asking is obligatory and performing Tayammum without asking is not permissible. Otherwise, it is not obligatory, and the prayer is valid without asking; however, in a state of doubt, asking is recommended. This is the actual research and reconciliation in both scenarios of thought, and in the case of doubt, this is the opinion of the majority and the most correct according to research. To verify both claims, some passages concerning this difference in narrations are presented at two places, and success is from Allah. It is stated in Al-Hidayah:

(Arabic): (If water is with his companion, he should ask him for it before performing Tayammum) because refusal is generally not common. (And if he performs Tayammum before asking, it is valid according to Abu Hanifa, may Allah be pleased with him) because he is not required to ask from another's property. The two companions (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad) said: It is not sufficient because water is usually given and spent. [1]

(Urdu): If a travel companion has water, one should ask for it before performing Tayammum, as usually it is not refused. And if one performed Tayammum without asking, it would be valid according to Imam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him), because asking from someone else's property is not mandatory for him. The Sahihain (the two companions) said Tayammum will not be valid because water is commonly spent and given. (T)

1 Hidayah with Fath al-Qadir, Chapter on Tayammum, Matba Nooria Razvia, Sukkur, 1/125. Page 43 of 761

फ़तावा रज़विया, जिल्द चार (खंड 4)

(अरबी): यहाँ, जो उनके मन में था उसके अनुसार, उन्होंने उनके(विद्वानों के) शब्दों को फिर से नहीं देखा। इसलिए, उन्होंने सामंजस्य बिठाने में झिझक दिखाई, जबकि पहली संभावना असंभव है और बाद वाली (1) वह है जो स्कूल (हनफी मज़हब) की किताबों में स्पष्ट रूप से बताई गई है, जैसा कि इंशा अल्लाह जल्द ही आएगा।

(उर्दू): फ़तहुल कदीर के लेखक ने जो वर्णन किया है, वह वही है जो खुलासा में लिखा गया है। अंतर यह है कि खुलासा में है: "अगर वह जानता है कि वह दे देगा तो नमाज़ तोड़ दे"। इसके बजाय फ़तहुल कदीर में यह है कि "मांगने से पहले ही नमाज़ बातिल (अमान्य) हो गई"। हालाँकि, इस इबारत (लेख) का अर्थ यह नहीं है कि केवल देने के गुमान (विचार) से नमाज़ बातिल हो गई, और न ही मना करने के गुमान की स्थिति में नमाज़ के सही होने का पूर्ण निश्चय है, यहाँ तक कि पानी मिल जाने पर भी नमाज़ दोबारा पढ़ने की ज़रूरत न हो। और न ही यह कि मांगने के बाद प्रकट होने वाली स्थिति पर हुक्म का हवाला केवल शक की सूरत के साथ विशेष है, बल्कि यह हुक्म आम है और सभी सूरतों को शामिल करता है, जैसा कि इस सिलसिले में हकीकत-ए-हाल (वास्तविकता) मौला-ए-ज़ी-जलाल की मदद से रोशन हो जाएगी। ज़ाहिर यह है और अल्लाह तआला ही बेहतर जानने वाला है कि साहिब-ए-फ़तहुल कदीर रहमतुल्लाह अलैह ने यहाँ अपनी याददाश्त पर भरोसा किया है और विद्वानों के शब्दों को फिर से नहीं देखा, इसीलिए सामंजस्य (ततबीक) में संदेह का तरीका अपनाया, जबकि पहली सूरत की तो कोई गुंजाइश ही नहीं है और अंतिम सूरत पर तो मज़हब की किताबों में नसर (स्पष्ट प्रमाण) मौजूद है, जैसा कि जल्द ही आएगा अगर अल्लाह तआला ने चाहा। (त)

मसला 6: अगर नमाज़ शुरू करने से पहले दूसरे के पास पानी होने का पता चले, तो क्या उससे मांगना वाजिब है या नहीं? यहाँ रिवायतों में काफ़ी मतभेद है। किताबों के अध्ययन और दलीलों पर गौर करने से मुझ तुच्छ (फ़कीर) पर जो बात स्पष्ट हुई है, वह यह है कि यहाँ भी वही हुक्म है जो मसला 4 में गुज़रा। यानी अगर ज़न-ए-ग़ालिब (प्रबल विचार) हो कि वह दे देगा, तो मांगना वाजिब है और बिना मांगे तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ना हलाल (जायज़) नहीं है, वरना वाजिब नहीं है और बिना सवाल नमाज़ जायज़ है। हाँ, शक की हालत में सवाल करना मुस्तहब (पसंदीदा) है। दोनों गुमानों में खुद यही तहकीक (शोध) और तौफ़ीक (सामंजस्य) है, और शक के मसले में यही जमहूर (बहुमत) का कौल है और तहकीक के अनुसार राजी (प्रबल) है। इस रिवायतों के मतभेद के संबंध में कुछ

इबारतें दिखाकर अपने दोनों दावों की दो जगहों पर तहकीक करेंगे, वबिल्लाहि तौफ़ीक। हिदाया में है:

(अरबी): (अगर उसके साथी के पास पानी हो, तो वह तयम्मुम करने से पहले उससे मांगे) क्योंकि मना करना आमतौर पर कम ही होता है। (और अगर उसने मांगने से पहले ही तयम्मुम कर लिया, तो इमाम अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के नज़दीक यह जायज़ है) क्योंकि उसे दूसरे की संपत्ति से मांगना लाज़िम नहीं है। और साहिबैन (इमाम अबू यूसुफ और इमाम मुहम्मद) ने कहा कि यह पर्याप्त नहीं है क्योंकि पानी आमतौर पर दिया और खर्च किया जाता है। 1

(उर्दू): अगर सफ़र के साथी के पास पानी हो, तो तयम्मुम से पहले उससे मांगे क्योंकि आमतौर पर इससे इनकार नहीं होता। और अगर बिना मांगे तयम्मुम कर लिया तो इमाम अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के नज़दीक हो जाएगा (नमाज़ हो जाएगी)। इसलिए कि दूसरे की मिल्क (स्वामित्व) से मांगना उस पर लाज़िम नहीं। और साहिबैन ने फ़रमाया कि तयम्मुम नहीं होगा क्योंकि पानी आमतौर पर खर्च किया जाता है और दिया जाता है। (त)

1 हिदाया मय फ़तहुल कदीर, बाबूत्तयम्मुम, मतबा नूरियह रज़वियह सक्खर 1/125 पृष्ठ 761 का 43

فتاوی رضویہ جلد چہارم

ھھنا علی مافي صدرہ ولم یراجع کلماتھم ولذا ردد في التوفیق مع ان الشق الاول لا مساغ لہ والاخیر (۱) ھو المنصوص علیہ في کتب المذھب کما سیأتي ان شاء اللہ تعالٰی۔

کہ صاحب فتح القدیر نے جو حکایت فرمائی بعینہ وہی ہے جو خلاصہ میں تحریر ہوئی۔ فرق یہ ہے کہ خلاصہ میں ہے "اگر جانتا ہو کہ دے دے گا تو نماز توڑدے"۔ اس کے بدلہ فتح القدیر میں یہ ہے کہ "مانگنے سے پہلے ہی نماز باطل ہو گئی۔ حالانکہ اس عبارت کا مفاد یہ نہیں کہ محض ظن عطاء سے نماز باطل ہو گئی ، نہ ہی ظن منع کی صورت میں مطلقاً صحت نماز کا جزم ہے یہاں تک کہ دے دینے پر بھی اعادہ نماز نہ ہو ، نہ ہی یہ کہ مانگنے کے بعد ظاہر ہونے والی حالت پر حکم کا حوالہ صرف صورت شک کے ساتھ خاص ہے بلکہ یہ حکم عام اور تمام صورتوں کو شامل ہے جیسا کہ اس سلسلہ میں حقیقت حال بعون مولائے ذی الجلال روشن ہو گی۔ ظاہر یہ ہے اور خدائے برتر ہی جاننے والا ہے کہ صاحب فتح القدیر رحمہ اللہ تعالٰی نے یہاں اپنی یاد پر اعتماد فرمایا ہے کلماتِ علماء کی مراجعت نہ فرمائی اسی لئے تطبیق میں تردید کی صورت اختیار کی حالانکہ شق اول کی تو کوئی گنجائش ہی نہیں اور اخیر پر تو کتب مذہب میں نص موجود ہے جیسا کہ عنقریب آئے گا اگر خدائے برتر نے چاہا۔ (ت)

مسئلہ ۶ : اگر شروع نماز سے پہلے دوسرے کے پاس پانی معلوم ہوا تو آیا اس سے مانگنا واجب ہے یا نہیں یہاں اختلاف روایت تاحدِ اضطراب ہے اور وہ کہ مطالعہ کتب و نظرِ دلائل سے فقیر کو منتقح ہوا یہ کہ یہاں بھی وہی حکم ہے جو مسئلہ ۴ میں گزرا یعنی ظن غالب ہو کہ دے دے گا تو سوال واجب اور بے مانگے تیمم کر کے نماز پڑھنا حلال نہیں ورنہ واجب نہیں اور بلا سوال نماز حلال ہاں بحالِ شک سوال مستحب مسئلہ ہر دو ظن میں خود یہی تحقیق و توفیق ہے اور مسئلہ شک

میں یہی قولِ جمہور و راجح علی التحقیق ہے اس اختلاف روایات کے متعلق بعض عبارات دکھا کر اپنے دونوں دعووں کو دو مقاموں میں تحقیق کریں و باللہ التوفیق۔ ہدایہ میں ہے :

(ان کان مع رفیقه ماء طلب منه قبل ان یتیمم) لعدم المنع غالباً(ولوتیمم قبل الطلب اجزأه عند ابي حنیفة رضی الله تعالی عنه) لانه لایلزمه الطلب من ملك الغیر وقالا لا یجزیه لان الماء مبذول عادة ۱۔

اگر رفیق سفر کے پاس پانی ہو تو قبل تیمم اس سے طلب کرے کیونکہ عموماً اس سے انکار نہیں ہوتا۔ اور اگر بغیر مانگے تیمم کر لیا تو امام ابو حنیفہ رضی اللہ عنہ کے نزدیک ہو جائے گا۔ اس لئے کہ دوسرے کی ملک سے مانگنا اس پر لازم نہیں۔ اور صاحبین نے فرمایا تیمم نہ ہو گا اس لئے کہ پانی عموماً خرچ کیا اور دیا جاتا ہے۔ (ت)

۱ ہدایہ مع الفتح، باب التیمم، مطبع نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۱۲۵ Page 43 of 761

Fatawa Razawiyyah Volume Four

It is stated in 'Inayah' and 'Binayah':

Arabic Text	Urdu Translation
Mention of the difference in 'al-Idah', 'al-Taqrib' and 'Sharh al-Aqta' between Abu Hanifa and his two companions as mentioned in the book. And it is stated in 'al-Mabsut': If a companion has water with him, he must ask him for it according to the opinion of Hasan bin Ziyad, for he used to say that asking is humiliation and involves some hardship, and Tayammum was only prescribed to remove hardship.[1]	In 'Idah', 'Taqrib' and 'Sharh al-Aqta'', the difference between Imam Abu Hanifa and the two companions (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad) is mentioned as explained in the book. And in 'Mabsut' it is stated: If a companion has water, he should ask him for it, but according to the saying of Hasan bin Ziyad, it is not so; he used to say that asking is a degrading act and involves some difficulty, whereas the legality of Tayammum is for the very purpose of removing difficulty. (T)

It is stated in 'Fath al-Qadir':

Arabic Text	Urdu Translation
Power over water [is established] by owning it, or owning its price if it is being sold, or by permission. As for when it belongs to a companion, it is not so, because ownership is an impediment, thus inability is established.[2]	Control over water is such that one either owns it himself, or if it is being sold, he owns the substitute [price], or there is permission for its use. But if the water is the property of a travel companion, then it is not so, because ownership is a barrier, so inability is proven. (T)

In it, and also in 'Zakhiroh' of Imam Burhan al-Din and 'Binayah' etc. numerous books, it is mentioned:

Arabic Text	Urdu Translation
Reported from Al-Jassas: There is no disagreement among them. Abu Hanifa's intention is when he strongly suspects refusal, and their [the two companions'] intention is when one suspects no refusal, because according	It is narrated from Jassas that there is no disagreement among the Imams. Imam Abu Hanifa's meaning is when the dominant thought is of refusal, and the meaning of the two companions is when the thought is of non-refusal, because

Arabic Text	Urdu Translation
to him, power is established through permission in the case of water, but not in other things.[3]	according to the Imam [Abu Hanifa], power is established through permission in water, but not in other things. (T)

[1] Al-Inayah with Fath al-Qadir, Chapter of Tayammum, Nuriya Razawiyyah Press, Sukkur 1/125 [2] Fath al-Qadir, Chapter of Tayammum, Nuriya Razawiyyah Press, Sukkur 1/125 [3] Fath al-Qadir, Chapter of Tayammum, Nuriya Razawiyyah Press, Sukkur 1/125

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

'इनाया' और 'बिनाया' में है:

अरबी पाठ

'अल-ईज़ाह', 'अल-तकरीब' और 'शरह अल-अक़्ता' में इमाम अबू हनीफ़ा और उनके दो साथियों के बीच मतभेद का उल्लेख है, जैसा कि किताब में वर्णित है। और 'मबसूद' में कहा गया है: यदि साथी के पास पानी हो, तो उसे उससे मांगना चाहिए, सिवाय हसन बिन ज़ियाद के मत के, क्योंकि वे कहते थे कि मांगना अपमान है और इसमें कुछ कठिनाई है, जबकि तयम्मुम की अनुमति केवल कठिनाई को दूर करने के लिए दी गई है।[1]

उर्दू अनुवाद

'ईज़ाह', 'तकरीब' और 'शरह अल-अक़्ता' में इमाम अबू हनीफ़ा और साहिबैन (इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद) के बीच मतभेद का ज़िक्र है जैसा कि किताब में बयान किया गया है। और 'मबसूद' में फ़रमाया: अगर रफ़ीक़ (साथी) के पास पानी हो तो उस पर यह है कि रफ़ीक़ से मांगे मगर हसन बिन ज़ियाद के क़ौल पर ऐसा नहीं, वे कहते थे कि मांगना ज़िल्लत (अपमान) का काम है और इसमें कुछ हर्ज (कठिनाई) भी है जबकि तयम्मुम की मशरूइयत (वैधता) दफ़ा-ए-हर्ज (कठिनाई दूर करने) ही के लिए है। (त)

'फ़तह अल-क़दीर' में है:

अरबी पाठ

पानी पर शक्ति [स्थापित] होती है उसके स्वामित्व से, या उसके बदले (क़ीमत) के स्वामित्व से यदि वह बेचा जा रहा हो, या अनुमति से। जहाँ तक सफ़र के साथी के स्वामित्व की बात है, तो ऐसा नहीं है, क्योंकि स्वामित्व एक बाधा है, इसलिए अक्षमता सिद्ध हो गई।[2]

उर्दू अनुवाद

पानी पर क़ुदरत (शक्ति) यूँ होती है कि ख़ुद उसका मालिक हो या फ़रोख़्त (बिक्री) हो रहा हो तो उसके बदल (क़ीमत) का मालिक हो या उसके इस्तेमाल की इबाहत (अनुमति) हो। लेकिन पानी रफ़ीक़-ए-सफ़र की मिलक (स्वामित्व) हो तो ऐसा नहीं इसलिए कि मिलक मानअ (बाधक) है तो उज्र (अक्षमता) साबित हो गया। (त)

इसमें तथा इमाम बुरहानुद्दीन की 'ज़ख़ीरा' और 'बिनाया' आदि अनेक पुस्तकों में है:

अरबी पाठ

जस्सास से वर्णित है: उनके बीच कोई मतभेद नहीं है। अबू हनीफ़ा का अभिप्राय तब है जब उन्हें इनकार का प्रबल संदेह हो, और उन दोनों (साहिबैन) का अभिप्राय तब है जब इनकार न होने का संदेह हो, क्योंकि उनके (इमाम साहब) निकट पानी में अनुमति से शक्ति स्थापित हो जाती है, अन्य चीज़ों में नहीं। [3]

उर्दू अनुवाद

जस्सास से मन्क़ूल (वर्णित) है कि अइम्मा (इमामों) में कोई इख़्तिलाफ़ (मतभेद) नहीं। इमाम अबू हनीफ़ा की मुराद यह है कि ग़ालिब गुमान न देने का हो और साहिबैन की मुराद यह है कि अदम-ए-इन्कार (इनकार न होना) का गुमान हो इसलिए कि इमाम साहब के नज़दीक पानी में इबाहत (अनुमति) से क़ुदरत साबित हो जाती है दूसरी चीज़ों में नहीं। (त)

[1] अल-इनाया मअ फ़तह अल-क़दीर, बाबुत तयम्मुम, मतबअ नूरिया रज़विया, सक्खर 1/125 [2] फ़तह अल-क़दीर, बाबुत तयम्मुम, मतबअ नूरिया रज़विया, सक्खर 1/125 [3] फ़तह अल-क़दीर, बाबुत तयम्मुम, मतबअ नूरिया रज़विया, सक्खर 1/125

पृष्ठ 44 / 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

عنایہ وبنایہ میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
ذکر الاختلاف فی الایضاح والتقریب وشرح الاقطع بین ابی حنیفہ و صاحبیہ کما ذکر فی الکتاب وقال فی المبسوط ان کان مع رفیقہ ماء فعلیہ ان یسألہ الاعلی قول الحسن بن زیاد فانہ کان یقول السؤال ذل وفیہ بعض الحرج وما شرع التیمم الا لدفع الحرج۔ 1	ایضاح، تقریب اور شرح اقطع میں امام ابوحنیفہ اور صاحبین کے درمیان اختلاف ذکر کیا ہے جیسے کتاب میں بیان کیا ہے۔ اور مبسوط میں فرمایا: اگر رفیق کے پاس پانی ہو تو اس پر یہ ہے کہ رفیق سے مانگے مگر حسن بن زیاد کے قول پر ایسا نہیں وہ کہتے تھے کہ مانگنا ذلت کا کام ہے اور اس میں کچھ حرج بھی ہے جبکہ تیمم کی مشروعیت دفع حرج ہی کیلئے ہے۔ (ت)

فتح القدیر میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
القدرۃ علی الماء بملکہ او بملک بدلہ اذا کان یباع اوبالاباحۃ اما مع ملک الرفیق فلا لان الملك حاجز فثبت العجز۔ 2	پانی پر قدرت یوں ہوتی ہے کہ خود اس کا مالک ہو یا فروخت ہو رہا ہو تو اس کے بدل کا مالک ہو یا اس کے استعمال کی اباحت ہو۔ لیکن پانی رفیق سفر کی ملک ہو تو ایسا نہیں اس لئے کہ ملک مانع ہے تو عجز ثابت ہو گیا۔ (ت)

اس میں نیز ذخیرہ امام برہان الدین سے بنایہ وغیرہ کتب کثیرہ میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
عن الجصاص لا خلاف بینھم فمراد ابی حنیفہ اذا غلب علی ظنہ منعہ ومرادھما اذاظن عدم المنع لثبوت القدرۃ بالاباحۃ فی الماء لا فی غیرہ عندہ۔ 3	جصاص سے منقول ہے کہ ائمہ میں کوئی اختلاف نہیں۔ امام ابوحنیفہ کی مراد یہ ہے کہ غالب گمان نہ دینے کا ہو اور صاحبین کی مراد یہ ہے کہ عدم انکار کا گمان ہو اس لئے کہ امام صاحب کے نزدیک پانی میں اباحت سے قدرت ثابت ہو جاتی ہے دوسری چیزوں میں نہیں۔ (ت)

1 العنایہ مع فتح القدیر باب التیمم مطبع نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۱۲۵ 2 فتح القدیر باب التیمم مطبع نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۱۲۵ 3 فتح القدیر باب التیمم مطبع نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۱۲۵

Fatawa Rizvia Volume 4

In 'Nihayah' of Imam Saghnaqi, then in 'Binayah' of Imam Aini, and 'Zakheera' of Akhi Chalpi, it is stated:

Arabic Text	English Translation
لم يذكر في عامة النسخ قول ابى حنيفة رضى الله تعالىٰ عنه فى هذا الموضع بل قيل لايجور التيمم قبل الطلب اذاكان غالب ظنه ان يعطيه مطلقا من غير ذكر الخلاف بين علمائنا الثلثة رضى الله تعالىٰ عنهم الا فى الايضاح ١ اهـ هذا نقل الذخيرة ولم يذكر فى البناية قوله الا فى الايضاح وذكر مكانه الاعلى قول الحسن بن زياد فانه يقول السؤال ذلة وفيه ضرر ٢۔	In most versions, the saying of Imam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him) is not mentioned in this place. Rather, it is said that Tayammum (dry ablution) is not permissible before asking [for water] when it is most likely thought that he will give it. This is mentioned absolutely without any difference of opinion among our three scholars (may Allah be pleased with them). However, in 'Al-Idah', the difference of opinion is mentioned. This is the quotation from 'Al-Zakheera'. And in 'Al-Binayah', the phrase "Except in Al-Idah" is not present; instead, it says: But according to the saying of Hasan bin Ziyad, it is not like this, for he says that asking is a humiliation and there is harm in it. (T)

Also in 'Aini' it is:

Arabic Text	English Translation
ذكر الزوزنى وغيره لوتيمم قبل الطلب اجزاه عند ابى حنيفة فى رواية الحسن عنه ٣۔	Al-Zauzani and others have mentioned that if someone performs Tayammum before asking, then according to the narration of Hasan from Imam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him), the Tayammum will be valid. (T)

In 'Al-Bahr' it is:

Arabic Text	English Translation
اعلم ان ظاہر الروایة عن اصحابنا الثلثة وجوب السؤال من الرفيق كما يفيده مافى المبسوط قال واذا كان مع رفيقه ماء فعليه ان يسأله الا على قول الحسن بن زياد فانه كان يقول السؤال ذل وفيه بعض الحرج وماشرع التيمم الا لدفع	Know that the apparent narration from our three companions is the obligation of asking the companion [for water], as is inferred from what is in 'Al-Mabsut'. He said: When his companion has water, he must ask him, except according to the saying of Hasan bin Ziyad, for he used to say that asking is humiliation and in it is some hardship, and Tayammum was only

Arabic Text	English Translation
الحرج ولكننا نقول ماء الطهارة مبذول	legislated to remove hardship. But we say that water for purification is [usually] freely given.

1. Zakheera-tul-Uqba, Chapter of Tayammum, Islami Press, Lahore, 1/180.
2. Aini, Sharh al-Hidayah, Chapter of Tayammum, Al-Maktabah al-Imdadiyyah, Makkah, 1/471.
3. Aini, Sharh al-Hidayah, Chapter of Tayammum, Al-Maktabah al-Imdadiyyah, Makkah, 1/471.

फ़तावा रज़विया खंड 4

निहाया इमाम सघनाक़ी, फिर बिनाया इमाम ऐनी और ज़ख़ीरा अखी चलपी में है:

अरबी पाठ

لم يذكر في عامة النسخ قول ابى حنيفة رضى الله تعالىٰ عنه فى هذا الموضع بل قيل لايجور التيمم قبل الطلب اذاكان غالب ظنه ان يعطيه مطلقا من غير ذكر الخلاف بين علمائنا الثلثة رضى الله تعالىٰ عنهم الا فى الايضاح ١ اهـ بذا نقل الذخيرة ولم يذكر فى البناية قوله الا فى الايضاح وذكر مكانه الاعلى قول الحسن بن زياد فانه يقول السؤال ذلة وفيه ضرر ٢۔

हिंदी अनुवाद

अधिकांश प्रतियों में इस स्थान पर इमाम अबू हनीफा (रज़ियल्लाहु अन्हु) का कथन वर्णित नहीं है। बल्कि यह कहा गया है कि मांगने से पहले तयम्मुम जायज़ नहीं है जबकि प्रबल अनुमान यह हो कि वह दे देगा। यह हमारे तीनों विद्वानों (रज़ियल्लाहु अन्हुम) के बीच बिना किसी मतभेद के पूर्णतः वर्णित है। लेकिन 'अल-ईज़ाह' में मतभेद का उल्लेख है। यह 'अल-ज़ख़ीरा' का उद्धरण है। और 'बिनाया' में "इल्ला फ़िल ईज़ाह" नहीं है, उसकी जगह यह है: लेकिन हसन बिन ज़ियाद के कथन पर ऐसा नहीं है, वे कहते हैं कि मांगना अपमान है और इसमें हानि है। (त)

साथ ही 'ऐनी' में है:

अरबी पाठ

ذكر الزوزنى وغيره لوتيمم قبل الطلب اجزاه عند ابى حنيفة فى رواية الحسن عنه ٣۔

हिंदी अनुवाद

ज़ौज़नी और अन्य लोगों ने उल्लेख किया है कि यदि मांगने से पहले तयम्मुम कर लिया जाए, तो इमाम अबू हनीफा के पास उस रिवायत में जो हसन ने उनसे की है, तयम्मुम हो जाएगा। (त)

'बह्र' में है:

अरबी पाठ

اعلم ان ظاہر الرواية عن اصحابنا الثلثة وجوب السؤال من الرفيق كما يفيده مافى المبسوط قال واذا كان مع رفيقه ماء فعليه ان يسأله الا

हिंदी अनुवाद

जान लें कि हमारे तीनों साथियों से ज़ाहिर रिवायत यह है कि साथी से मांगना वाजिब है जैसा कि इससे प्रमाणित होता है जो 'अल-मबसूत' में है। वे कहते हैं: जब उसके साथी के पास पानी हो तो उसे उससे मांगना चाहिए, सिवाय हसन

अरबी पाठ	हिंदी अनुवाद
على قول الحسن بن زياد فانہ كان يقول السؤال ذل وفيه بعض الحرج وماشرع التيمم الا لدفع الحرج ولكننا نقول ماء الطهارة مبذول	बिन ज़ियाद के कथन के, क्योंकि वे कहते थे कि मांगना अपमान है और इसमें कुछ कठिनाई है, जबकि तयम्मुम की शरीयत कठिनाई दूर करने के लिए है। लेकिन हम कहते हैं कि पवित्रता के लिए पानी उदारतापूर्वक दिया जाता है।

1. ज़ख़ीरा-तुल-उक़्बा, बाब अत-तयम्मुम, मतबा अल-इस्लामिया, लाहौर, 1/180.
2. ऐनी, शरह अल-हिदाया, बाब अत-तयम्मुम, अल-मकतब अल-इमदादिया, मक्का, 1/471.
3. ऐनी, शरह अल-हिदाया, बाब अत-तयम्मुम, अल-मकतब अल-इमदादिया, मक्का, 1/471.

فتاوی رضویہ جلد چہارم

نہایہ امام سغناقی پھر بنایہ امام عینی وذخیرہ اخی چلپی میں ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ
لم یذکر في عامۃ النسخ قول ابی حنیفۃ رضی اللہ تعالیٰ عنہ فی ہذا الموضع بل قیل لایجور التیمم قبل الطلب اذاکان غالب ظنہ ان یعطیہ مطلقا من غیر ذکر الخلاف بین علمائنا الثلثۃ رضی اللہ تعالیٰ عنہم الا فی الایضاح ۱ اھ ہذا نقل الذخیرۃ ولم یذکر فی البنایۃ قولہ الا فی الایضاح وذکر مکانہ الاعلی قول الحسن بن زیاد فانہ یقول السؤال ذلۃ وفیہ ضرر ۲۔	اکثر نسخوں میں اس جگہ امام ابی حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا قول مذکور نہیں بلکہ یہ کہا گیا کہ مانگے بغیر تیمم جائز نہیں جبکہ غالب گمان یہ ہو کہ دے دے گا۔ یہ ہمارے تینوں علماء رضی اللہ تعالیٰ عنہم کے درمیان کوئی اختلاف بتائے بغیر مطلقاً مذکور ہے۔ مگر ایضاح میں ذکر خلاف ہے اھ یہ ذخیرہ کی عبارت ہے اور بنایہ میں "الا فی الایضاح" نہیں اس کی جگہ یہ ہے: مگر حسن بن زیاد کے قول پر ایسا نہیں وہ کہتے ہیں کہ مانگنا ذلت ہے اور اس میں ضرر ہے۔ (ت)

نیز عینی میں ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ
ذکر الزوزنی وغیرہ لوتیمم قبل الطلب اجزاہ عند ابی حنیفۃ فی روایۃ الحسن عنہ ۳۔	زوزنی وغیرہ نے ذکر کیا ہے کہ اگر مانگے بغیر تیمم کر لیا تو امام ابوحنیفہ کے نزدیک اس میں جو حسن نے ان سے روایت کی ، تیمم ہو جائے گا۔ (ت)

بحر میں ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ
اعلم ان ظاہر الروایۃ عن اصحابنا الثلثۃ وجوب السؤال من الرفیق کما یفیدہ مافی المبسوط قال واذا کان مع رفیقہ ماء فعلیہ ان یسألہ الا علی قول الحسن بن زیاد فانہ کان یقول السؤال ذل وفیہ بعض الحرج وماشرع التیمم الا لدفع الحرج ولکننا نقول ماء الطھارۃ مبذول	معلوم ہو کہ ہمارے تینوں اصحاب سے ظاہر روایت یہ ہے کہ رفیق سے مانگنا واجب ہے جیسا کہ یہ اس سے مستفاد ہوتا ہے جو مبسوط میں ہے، فرماتے ہیں: جب اس کے رفیق سے مانگے مگر حسن بن زیاد کے قول پر ایسا نہیں اس لئے کہ وہ کہتے تھے کہ مانگنا ذلت ہے اور اس میں کچھ حرج ہے جبکہ تیمم کی مشروعیت دفع حرج

۱ ذخیرہ العقبی باب التیمم مطبع الاسلامیہ لاہور ۱۸۰/۱ ۲ عینی شرح الہدایۃ باب التیمم مطبع المکتبۃ الامدادیہ مکہ مکرمہ ۴۷۱/۱ ۳ عینی شرح الہدایۃ باب التیمم مطبع المکتبۃ الامدادیہ مکہ مکرمہ ۴۷۱/۱

Fatawa Razvia - Volume Four

[Arabic Text Section 1] It is common among people, and there is no humiliation in asking for what one needs. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) asked others for some of his needs. This refutes what was mentioned in 'Al-Hidayah' and 'Sharh al-Aqta' regarding the disagreement between Imam Abu Hanifa and his two companions (Sahibayn). According to him, asking is not obligatory, while according to them, it is. It also refutes what is in 'Ghayat al-Bayan' that Hasan's opinion is good, and what is quoted in 'al-Dhakhira' from al-Jassas that there is no disagreement between Imam Abu Hanifa and his companions. His meaning refers to a situation where one strongly suspects a refusal, while their meaning refers to a situation where one strongly suspects that water will not be withheld. In 'al-Mujtaba', it states that usually, water is not withheld, to the point that if one is in a place where water is withheld, asking is not obligatory. (T)

[Arabic Text Section 2] In 'Ghunyah' it is mentioned: If one performs Tayammum and prays without asking for water, then according to Imam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him), the prayer is valid in all cases (i.e., whether one suspects it will be given or refused, or is in doubt). But the two companions (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad) say: it is not valid. The correct view involves more detail, as Abu Nasr al-Saffar stated: asking is only obligatory in a place where water is not scarce, because in such a case it...

---

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company Press, Karachi 1/162. Page 46 of 761

फतावा रजविया - खंड चार

[अरबी पाठ खंड 1] यह लोगों के बीच आम है, और जिसकी आवश्यकता है उसे माँगने में कोई अपमान नहीं है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने दूसरों से अपनी कुछ ज़रूरतें माँगी थीं। यह 'अल-हिदाया' और 'शरह अल-अक्ता' में इमाम अबू हनीफा और उनके दो साथियों (साहिबैन) के बीच मतभेद के बारे में जो उल्लेख किया गया है, उसका खंडन करता है। उनके अनुसार, माँगना अनिवार्य नहीं है, जबकि उनके अनुसार यह अनिवार्य है। यह 'गायत अल-बयान' में हसन की राय को अच्छा बताने वाली बात और 'अल-ज़खिरा' में अल-जस्सास से उद्धृत बात का भी खंडन करता है कि इमाम अबू हनीफा और उनके साथियों के बीच कोई मतभेद नहीं है। इमाम साहब का तात्पर्य उस स्थिति से है जब किसी को दृढ़ता से मना किए जाने का संदेह हो, जबकि उनके साथियों का तात्पर्य उस स्थिति से है जब दृढ़ता से संदेह हो कि पानी देने से इनकार नहीं किया जाएगा। 'अल-मुजतबा' में है कि अक्सर पानी देने में कंजूसी नहीं की जाती, यहाँ तक कि अगर कोई ऐसी जगह हो जहाँ पानी देने में कंजूसी की जाती हो, तो वहाँ माँगना अनिवार्य नहीं है। (त)

[अरबी पाठ खंड 2] 'गुनिया' में उल्लेख है: यदि कोई तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ले और पानी न माँगे, तो इमाम अबू हनीफा (रज़ियल्लाहु अन्हु) के अनुसार उसकी नमाज़ सभी स्थितियों में सही है (अर्थात चाहे पानी मिलने का संदेह हो या न मिलने का, या संदेह की स्थिति हो)। लेकिन दोनों साथी (इमाम अबू यूसुफ और इमाम मुहम्मद) कहते हैं: नमाज़ मान्य नहीं होगी। सही बात यह है कि विस्तार से देखा जाए, जैसा कि अबू नस्र अल-सफ़्फ़ार ने कहा: माँगना केवल ऐसी जगह अनिवार्य है जहाँ पानी की कमी न हो, क्योंकि ऐसी स्थिति में वह...

---

1. अल-बहर अल-रैक, अध्याय तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी प्रेस, कराची 1/162। पृष्ठ 46/761

فتاوی رضویہ - جلد چہارم

[عربی متن حصہ 1] عادہ بین الناس و لیس فی سؤال مـایحتاج الیہ مذلۃ فقد سأل رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم بعض حوائجہ من غیرہ اھـ فاندفع بھذا ما وقع فی الھدایۃ و شرح الاقطع من الخلاف بین ابی حنیفۃ و صاحبیہ فعندہ لا یلزمہ الطلب وعندھما یلزمہ، واندفع ما فی غایۃ البیان من ان قول الحسن حسن وفی الذخیرۃ نقلاً عن الجصاص انہ لا خلاف بین ابی حنیفۃ وصاحبیہ فمرادہ فیما اذا غلب علی ظنہ منعہ ایاہ و مرادھما عند غلبۃ الظن بعدم المنع وفی المجتبی الغالب عدم الظنۃ بالماء حتی لو کان فی موضع تجری الظنۃ علیہ لا یجب الطلب منہ اھـ (اردو ترجمہ: ہی کیلئے ہوتی ہے۔ لیکن ہم یہ کہتے ہیں کہ طہارت کا پانی لوگوں کے درمیان عادۃً لیا دیا جاتا ہے اور جس چیز کا ضرورت مند ہو اس کے مانگنے میں ذلت نہیں کیونکہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے بھی اپنی ضرورت کی بعض چیزیں دوسرے سے مانگی ہیں۔ اھ اس سے وہ دفع ہوگیا جو ہدایہ اور شرح اقطع میں امام ابوحنیفہ اور صاحبین کے درمیان اختلاف کا ذکر واقع ہوا کہ امام صاحب کے نزدیک طلب لازم نہیں اور صاحبین کے نزدیک لازم ہے اور وہ بھی دفع ہوگیا جو غایۃ البیان میں ہے کہ حسن کا قول حسن ہے اور وہ بھی جو ذخیرہ میں جصاص سے منقول ہے کہ امام ابوحنیفہ اور صاحبین میں کوئی اختلاف نہیں۔ امام صاحب کی مراد وہ صورت ہے جب اس کا غالب گمان ہو کہ اسے نہ دے گا اور صاحبین کی مراد وہ صورت ہے جب غالب گمان ہو کہ انکار نہ کرے گا۔ مجتبیٰ میں ہے اکثر یہی ہے کہ پانی میں بخل نہیں کیا جاتا یہاں تک کہ اگر کسی ایسی جگہ ہو جہاں پانی میں بخل ہوتا ہے تو اس سے مانگنا واجب نہیں۔ اھ (ت))

[عربی متن حصہ 2] غنیہ میں ہے: اذا تیمم و صلی و لم یسأل فعلی قول ابی حنیفۃ رضی اللہ تعالی عنہ صلاتہ صحیحۃ فی الوجوہ کلھا (ای سواء ظن منحاً اومنعاً اوشك) وقالا لا یجزئہ والوجہ ھو

التفصیل کما قال ابونصر الصفار انه انما یجب السؤال فی غیر موضع عزة الماء فأنہ (اردو ترجمہ: جب تیمم کرکے نماز پڑھ لے اور طلب نہ کرے تو امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے قول پر اس کی نماز تمام صورتوں میں صحیح ہے (یعنی خواہ دینے کا گمان ہو یا نہ دینے کا یا شک کی صورت ہو) اور صاحبین فرماتے ہیں: نماز نہ ہوگی۔ اور وجہ صواب یہ ہے کہ تفصیل کی جائے، جیسا کہ ابو نصر صفار نے فرمایا کہ مانگنا ایسی ہی جگہ واجب ہے جہاں پانی کم یاب نہ ہو کیونکہ ایسی صورت میں وہ)

---

۱ البحر الرائق باب التیمم مطبع ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۶۲ صفحہ 46 از 761

Volume IV Fatawa Razawiya

[Left Column - Arabic] At that moment, what both [Imams] said will be verified: that it [water] is commonly provided; otherwise, the customary provision of water in every place is clearly denied, as witnessed by everyone who has endured the hardships of travel. Therefore, it is appropriate that seeking [water] be obligatory, and prayer is not valid without it in cases where giving [water] is expected due to the strength of their evidence, but not in cases where refusal is expected because it is in a place where water is scarce. — End of quote. Author says: Al-Saffar (1) did not introduce a statement contrary to their opinions; rather, it is like an explanation for them, as Imam al-Jassas did. If he had noticed this, he would not have needed to depart from the opinions of all the leaders of the school of thought through distribution and combination. He said: "As for when there is doubt in a place where water is scarce or denial is expected elsewhere, then precaution lies in their [the two Imams'] statement, and ease lies in his [Imam Abu Hanifa's] statement, because there is humiliation in asking. And the statement of those who say there is no humiliation in asking for what is needed is rejected." — End of quote. Author says: Therefore (2), the matter leads back to the absolute preference of the Imam's statement, and the choice of their [the two Imams'] statement when giving is expected falls away, because humiliation is something to be avoided absolutely, and it has been established in...

[Right Column - Urdu Translation] The matter is verified as both companions [Imams] stated: that water is given and taken; otherwise, the customary provision of water everywhere is clearly deniable and refutable, as witnessed by every person who has borne the hardships of travel. So the ruling should be that asking is mandatory and prayer without it is not valid in circumstances where there is an expectation of giving, because in this situation the evidence of both companions is clear, but not in circumstances where there is an expectation of refusal, as that would be a place of water scarcity. — End of quote (T). Author says: Saffar did not invent any new opinion contrary to the Imams' views; instead, it serves as an explanation of those very opinions, as Imam al-Jassas did. If the author of Ghunyah had considered this, he would not have found it necessary to depart from all the opinions of the Imams of the school through distribution and combination. He writes: "But when it is such a place where water is scarce or it is not such a place but refusal is expected, then precaution lies in the opinion of the two companions, and latitude lies in the opinion of Imam Sahib [Abu Hanifa], because there is certainly a sense of humiliation in

asking, and we do not accept the claim that there is no humiliation in asking for a necessity." — End of quote (T). Author says: Thus, the matter comes to the point that Imam Sahib's opinion has absolute preference, and the opinion of the two companions will not remain chosen even in the case of expected giving, because humiliation is something that should be avoided absolutely.

[Footnotes] 1. Ghunyat al-Mustamli, Chapter on Tayammum, Matba Suhail Academy, Lahore, p. 69. 2. Ghunyat al-Mustamli, Chapter on Tayammum, Matba Suhail Academy, Lahore, p. 69.

जिल्द चौथी फ़तावा रज़विया

[बायां कॉलम - अरबी] उस समय वह बात सिद्ध हो जाएगी जो साहिबैन (इमामों) ने कही थी कि पानी दिया-लिया जाता है; अन्यथा हर स्थान पर पानी का प्रथागत रूप से सुलभ होना स्पष्ट रूप से अस्वीकार्य है, जिसका साक्षी यात्रा की कठिनाइयां झेलने वाला हर व्यक्ति है। अतः यह उचित है कि पानी मांगना अनिवार्य हो, और इसके बिना नमाज़ मान्य नहीं है, उस स्थिति में जब मिलने की संभावना हो, क्योंकि ऐसी स्थिति में साहिबैन का तर्क स्पष्ट है, लेकिन उस स्थिति में नहीं जब न मिलने की संभावना हो क्योंकि यह पानी की कमी वाला स्थान होगा। — उद्धरण समाप्त। लेखक का कथन: सफ़्फ़ार (१) ने अइम्मा के कथनों के विरुद्ध कोई नया कथन नहीं दिया, बल्कि यह उनके कथनों की व्याख्या की तरह है जैसा कि इमाम जस्सास ने किया। यदि उन्होंने इस पर ध्यान दिया होता, तो उन्हें अइम्मा-ए-मज़हब के सभी कथनों से हटकर वितरण और मिश्रण की आवश्यकता नहीं पड़ती। उन्होंने कहा: "रहा सवाल उस स्थिति का जब पानी की कमी वाली जगह में संदेह हो या अन्य जगहों पर मना करने की संभावना हो, तो सावधानी साहिबैन के कथन में है और सुगमता इमाम साहब के कथन में है, क्योंकि मांगने में निश्चित रूप से अपमान है। और उन लोगों का कथन जो कहते हैं कि आवश्यकता की वस्तु मांगने में कोई अपमान नहीं है, वह अस्वीकार्य है।" — उद्धरण समाप्त। लेखक का कथन: तो (२) मामला इस पर आ जाएगा कि इमाम साहब के कथन को पूर्णतः वरीयता प्राप्त है, और मिलने की संभावना की स्थिति में साहिबैन का कथन मान्य नहीं रहेगा, क्योंकि अपमान से पूर्णतः बचना ही उचित है, और यह साबित हो चुका है...

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद] बात सिद्ध हो गई जो साहिबैन ने फ़रमाई कि पानी लिया दिया जाता है; अन्यथा हर जगह पानी का प्रथागत रूप से सुलभ होना साफ़ तौर पर खंडन योग्य है जिस पर सफ़रों की तक़लीफ़ उठाने वाला हर व्यक्ति गवाह है। तो आदेश यह होना चाहिए कि मांगना अनिवार्य है और इसके बिना नमाज़ सही नहीं है उस स्थिति में जब देने की संभावना हो क्योंकि उस स्थिति में साहिबैन का तर्क स्पष्ट है, लेकिन उस स्थिति में नहीं जब न देने की संभावना हो क्योंकि वह पानी की किल्लत वाली जगह होगी। — उद्धरण समाप्त (त)। लेखक का कथन: सफ़्फ़ार ने अइम्मा के कथनों के विरुद्ध कोई नया कथन नहीं बनाया, बल्कि यह उन्हीं कथनों की व्याख्या की तरह है जैसा कि इमाम जस्सास ने किया। साहब-ए-गुनिया अगर इस पर ध्यान देते तो उन्हें वितरण और मिश्रण करके अइम्मा-ए-मज़हब के सभी कथनों से हटने की ज़रूरत न पड़ती। वे लिखते हैं: "लेकिन जब ऐसी जगह हो जहाँ पानी दुर्लभ हो या ऐसी जगह न हो लेकिन इनकार का अंदेशा हो, तो सावधानी

साहिबैन के कथन में है और विस्तार इमाम साहब के कथन में है, क्योंकि मांगने में एक अपमान ज़रूर है, और हमें यह बात स्वीकार नहीं कि ज़रूरत की चीज़ मांगने में कोई अपमान नहीं है।" — उद्धरण समाप्त (त)। लेखक का कथन: तो मामला इस पर आ जाएगा कि इमाम साहब के कथन को पूर्णतः वरीयता है और मिलने की संभावना की स्थिति में साहिबैन का कथन मान्य नहीं रहेगा क्योंकि अपमान से पूर्णतः बचना ही उचित है।

[पाद लेख] १. ग़ुनियतुल मुस्तमली, बाबुत तयम्मुम, मतबा सुहैल एकेडमी, लाहौर, पृष्ठ ६९। २. ग़ुनियतुल मुस्तमली, बाबुत तयम्मुम, मतबा सुहैल एकेडमी, लाहौर, पृष्ठ ६९।

[بایاں کالم - عربی] حینئذ یتحقق ما قالاہ من انہ مبذول والا فکونہ مبذولا عادۃ في کل موضع ظاہر المنع علی مایشہد بہ کل من عانی الاسفار فینبغی ان یجب الطلب ولا تصح الصلاۃ بدونہ فیما اذاظن الاعطاء لظہور دلیلہما دون ما اذا ظن عدمہ لکونہ فی موضع عزۃ الماء اھ اقول: الصفار (۱) لم یحدث قولا خلاف اقوالہم بل ہو کالشرح لہا کما فعل الامام الجصاص فلولاحظ ہذا لما احتاج الی الخروج عن اقوال ائمۃ المذہب جمیعاً بالتوزیع والتلفیق قال اما اذا شک فی موضع عزۃ الماء اوظن المنع فی غیرہ فالاحتیاط فی قولہما والتوسعۃ فی قولہ لان فی السؤال ذلا وقول من قال لا ذل فی سؤال ما یحتاج الیہ ممنوع اھ اقول: فاذن (۲) یؤل الامر الی ترجیح قول الامام مطلقاویذہب اختیار قولہماعند ظن العطاء لان الذل محترز عنہ مطلقا وقد ثبت فی

[دایاں کالم - اردو] بات متحقق ہوگئی جو صاحبین نے فرمائی کہ پانی لیا دیا جاتا ہے ورنہ ہر جگہ پانی کا عادۃً مبذول ہونا (لیا دیا جانا) کھلے طور پر قابل رد و منع ہے جس پر سفروں کی زحمت اٹھانے والا ہر شخص شاہد ہے۔ تو حکم یہ ہونا چاہیے کہ مانگنا واجب ہے اور اس کے بغیر نماز صحیح نہیں اس صورت میں جبکہ دینے کا گمان ہو کیونکہ اس صورت میں صاحبین کی دلیل ظاہر ہے مگر اس صورت میں نہیں جبکہ نہ دینے کا گمان ہو اس لئے کہ یہ پانی کی کمیابی کی جگہ ہوگا اہ (ت)۔ اقول: صفار نے اقوال ائمہ کے برخلاف کوئی نیا قول ایجاد نہ کیا بلکہ یہ ان ہی اقوال کی شرح کی حیثیت رکھتا ہے جیسا کہ امام جصاص نے کیا ہے۔ صاحب غنیہ اگر اس کا خیال فرماتے تو انہیں توزیع و تلفیق کر کے ائمہ مذہب کے سارے اقوال سے خروج کی ضرورت نہ پیش آتی وہ لکھتے ہیں: "لیکن جب ایسی جگہ ہو جہاں پانی کمیاب ہو یا ایسی جگہ نہ ہو لیکن انکار کا گمان ہو تو احتیاط صاحبین کے قول میں ہے اور وسعت امام صاحب کے قول میں ہے اس لئے

کہ مانگنے میں ایک ذلت ضرور ہے اور یہ بات ہمیں تسلیم نہیں کہ ضرورت کی چیز مانگنے میں کوئی ذلت نہیں "اہ (ت) اقول: تو معاملہ اس پر آجائے گا کہ امام صاحب کے قول کو مطلقا ترجیح ہے اور ظن عطا کی صورت میں صاحبین کا قول مختار نہ رہ جائے گا اس لئے کہ ذلت مطلقا پرہیز کیے جانے کے لائق ہے

[حواشی] 1 غنیہ المستملی باب التیمم مطبع سہیل اکیڈمی لاہور ص ۶۹ 2 غنیہ المستملی باب التیمم مطبع سہیل اکیڈمی لاہور ص ۶۹

Fatawa Ridawiyya, Volume 4

The Hadith (1) forbids the believer from humiliating himself unless it is said that humiliation (2) only occurs through asking in circumstances where [the item] is dear because it is then something begrudged. Thus, if the person asked refuses, it is an manifest humiliation, and if he gives, it is a present humiliation due to bearing the obligation of a favor. This is in contrast to a situation where it is not dear, for they exchange it among themselves, and refusal is not expected, nor is there any sense of obligation in giving. Based on this, it is said regarding this case that the evidence for both of them (the Two Imams) is apparent. He said: And the argument that he (peace and blessings of Allah be upon him) asked for some of his needs from others is rebutted because he (peace and blessings of Allah be upon him) was more entitled to the believers than their own selves (2). Thus, no one else can be compared to him because if he asks, it becomes obligatory upon the one asked to give, and it is not so for others. Ends.

The Hadith also prohibits a believer from humiliating themselves. However, it can be said that humiliation from asking (for water) occurs where water is scarce. This is because in such a case, water becomes something over which stinginess and refusal occur. Now, if the person asked does not give, it is an open humiliation for the one asking. And if they do give, it will be a favor, and taking a favor at a time of need is a form of humiliation. This is contrary to a place where water is not scarce, because people there exchange water among themselves, and refusal or denial is not expected. Nor will there be a situation of reminding someone of a favor after giving. Therefore, the author of 'Ghuniyah' said regarding this situation that the evidence of the two companions (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad) is apparent in it. He further writes: "And the argument that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him)..."

(1) Al-Tabarani in 'Mu'jam al-Kabir' from Abu Dharr (may Allah be pleased with him) said: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: Whoever willingly humbles himself without compulsion is not of us. (12, from him, may Allah forgive him). (M) (2) This became apparent to me, then I saw Allama Shurunbulali pointing to this distinction as will come shortly in the statements of the third opinion. (12, from him, may Allah forgive him). (M)

Imam Tabarani has narrated from Hazrat Abu Dharr (may Allah be pleased with him) in 'Mu'jam al-Kabir' that he said: The Messenger of Allah (peace and blessings of

Allah be upon him) said: Whoever willingly humbles himself without compulsion is not of us. (12, from him, may Allah forgive him). (T) This thought came to my mind, and then I saw that Allama Shurunbulali has already pointed towards this distinction, as will soon appear in the texts of the third opinion. (12, from him, may Allah forgive him). (T)

1. Ghuniyat al-Mustamli, Chapter on Tayammum, Sohail Academy Lahore, p. 69.
2. Majma' al-Zawa'id citing Tabarani 10/8, 247; Al-Targhib wa al-Tarhib citing Tabarani 4/179. Page 48 of 761

फ़तावा रज़विया, खंड 4

हदीस (1) मोमिन को अपने आप को अपमानित करने से मना करती है, सिवाय इसके कि यह कहा जाए कि अपमान (2) केवल ऐसी स्थिति में माँगने से होता है जहाँ [वस्तु] मूल्यवान हो क्योंकि तब वह ऐसी चीज़ होती है जिसे देने में संकोच हो। अत; यदि जिससे माँगा गया वह मना कर दे, तो यह स्पष्ट अपमान है, और यदि वह दे दे, तो अहसान के बोझ के कारण यह तत्काल अपमान है। यह उस स्थिति के विपरीत है जहाँ वह मूल्यवान नहीं है, क्योंकि वे इसे आपस में साझा करते हैं, और इनकार की उम्मीद नहीं की जाती है, न ही देने में किसी एहसान की भावना होती है। इसी आधार पर, इस मामले के बारे में कहा गया है कि उन दोनों (दो इमामों) के लिए साक्ष्य स्पष्ट है। उन्होंने कहा: और यह तर्क कि उन्होंने (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) दूसरों से अपनी कुछ ज़रूरतें माँगीं, खंडित है क्योंकि वे (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मोमिनों के लिए उनकी अपनी जानों से भी बढ़कर थे (2)। इसलिए, किसी और की तुलना उनसे नहीं की जा सकती क्योंकि यदि वे माँगते हैं, तो माँगे गए व्यक्ति पर देना अनिवार्य हो जाता है, और दूसरों के लिए ऐसा नहीं है। समाप्त।

हदीस में इस बात से भी मना किया गया है कि मोमिन अपने आप को ज़िल्लत (अपमान) में डाले। मगर यह कहा जा सकता है कि माँगने से ज़िल्लत वहाँ होगी जहाँ पानी की कमी हो क्योंकि ऐसी स्थिति में पानी ऐसी चीज़ बन जाता है जिसमें कंजूसी और इनकार होता है। अब जिससे माँगा गया अगर वह न दे तो इसमें माँगने वाले की खुली ज़िल्लत है और अगर दे दे तो उसका अहसान होगा और अहसान लेना भी एक प्रकार की ज़िल्लत है। इसके विपरीत ऐसी जगह जहाँ पानी की कमी न हो क्योंकि लोग वहाँ आपस में पानी लेते-देते होंगे और इनकार या मना करने की उम्मीद नहीं होगी और देने में अहसान जताने की स्थिति भी नहीं होगी। इसीलिए 'गुनिया' के लेखक ने इस स्थिति के बारे में कहा है कि इसमें साहिबैन (इमाम अबू यूसुफ और इमाम मुहम्मद) की दलील ज़ाहिर है। आगे लिखते हैं: "और इस बात से दलील कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने..."

(1) अल-तबरानी 'मोजम अल-कबीर' में अबू ज़र (रज़ियल्लाहु अन्हु) से कहते हैं: रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: जो स्वेच्छा से बिना किसी दबाव के अपने आप को अपमानित करता है, वह हम में से नहीं है। (12, उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे)। (म) (2) यह मुझ पर ज़ाहिर हुआ, फिर मैंने अल्लामा शुरनबुलाली को इस अंतर की ओर इशारा करते हुए देखा जैसा कि तीसरे मत के बयानों में जल्द ही आएगा। (12, उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे)। (म)

इमाम तबरानी ने 'मोजम कबीर' में हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि वह फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है: जो अपनी मर्ज़ी से बिना किसी दबाव के अपने आप को अपमानित करता है, वह हम में से नहीं है। (12, उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे)। (त) यह विचार मेरे मन में आया था, फिर मैंने देखा कि अल्लामा शुरनबुलाली पहले ही इस अंतर की ओर इशारा कर चुके हैं, जैसा कि तीसरे मत के कथनों में जल्द ही आएगा। (12, उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे)। (त)

1. गुनियातुल मुस्तमली, तयम्मुम का अध्याय, सुहैल अकादमी लाहौर, पृ. 69।
2. मजमा-उज़-ज़वाइद तबरानी के हवाले से 10/8, 247; अत-तरगीब वत-तरहीब तबरानी के हवाले से 4/179। पेज 48 / 761

الحدیث ع۱ نہٰی (۱) المؤمن عن ان یذل نفسه الا ان یقال انما یذل ع۲ بالسؤال حیث یعز لانہ اذن شیئ مضنون به فالمسئول منه ان منع فهذا ذل ظاهر وان دفع ومن تحمل المنة ذل حاضر بخلاف موضع لا یعز فیه فانهم یتباذلون به فیه ولا یتوقع المنع ولا الامتنان في الدفع وعن هذا قال فیه لظهور دلیلهما قال واستدلاله بانه صلی الله تعالی علیه وسلم قد سأل بعض حوائجه من غیره مستدرك لانه صلی الله تعالی علیه وسلم کان بالمؤمنین (۲) اولی من انفسهم فلا یقاس غیره علیه لانه اذا سال افترض علی المسئول البذل ولا کذلك غیره اهـ

حدیث میں بھی اس بات سے ممانعت آئی ہے کہ مؤمن اپنے کو ذلت میں ڈالے۔ مگر یہ کہا جاسکتا ہے کہ مانگنے سے ذلت وہاں ہوگی جہاں پانی کمیاب ہو اس لئے کہ ایسی صورت میں پانی ایسی چیز ٹھہرے گا جس میں بخل وانکار ہوتا ہے اب جس سے مانگا گیا اگر نہ دے تو اس میں مانگنے والے کی کھلی ہوئی ذلت ہے اور اگر دے دے تو اس کا احسان ہوگا اور احسان لینا بوقت ذلت ہے۔ بخلاف ایسی جگہ کے جہاں پانی کمیاب نہ ہو کیونکہ لوگ وہاں آپس میں پانی لیتے دیتے ہوں گے اور انکار ومنع متوقع نہ ہوگا اور دے دینے میں احسان جتلانے کی صورت بھی نہ ہوگی۔ اسی لئے صاحب غنیہ نے اس صورت سے متعلق فرمایا کہ اس میں صاحبین کی دلیل ظاہر ہے۔ مزید لکھتے ہیں: "اور اس بات سے استدلال کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے۔۔۔"

ع۱ الطبرانی فی المعجم الکبیر عن ابي ذر رضی الله تعالیٰ عنه قال قال رسول الله صلی الله تعالیٰ علیه وسلم من اعطی الذلة من نفسه طائعا غیر مکره فلیس منا ۱۲ منه غفرله (م) ع۲ ظهر لی هذا ثم رأیت العلامة الشرنبلالی اشار الی هذا الفرق کما یاتی انفا في عبارات القول الثالث ۱۲ منه غفر له (م)

امام طبرانی نے معجم کبیر میں حضرت ابو ذر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا ہے وہ فرماتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کا ارشاد ہے: جو اپنی ذات کو ذلت بخوشی بغیر اکراہ کے دے دے وہ ہم میں سے نہیں ۱۲ منہ غفر لہ (ت) یہ کلام میرے ذہن میں آیا تھا پھر میں نے دیکھا کہ علامہ شرنبلالی اس فرق کی طرف اشارہ فرما چکے ہیں جیسا کہ قول سوم کی عبارتوں میں ابھی آئے گا ۱۲ منہ غفر لہ (ت)

1 غنیۃ المستملی باب التیمم مطبع سہیل اکیڈمی لاہور ص ۶۹ 2 مجمع الزوائد بحوالہ طبرانی ۸/۱۰ ۲۴۷ الترغیب والترہیب بحوالہ طبرانی ۴/۱۷۹

Fatawa Razawiyya - Volume 4

[Left Column] I say: There is (1) none like him, peace and blessings of Allah be upon him, in any of the attributes, and among them is honor/jealousy (Ghairat). So he, peace and blessings of Allah be upon him, is the most honorable of all creation of Allah, and Allah Almighty is more honorable than him. It is impossible for a noble and honorable soul to engage in anything that is considered humiliation. Thus, it is proven that asking for a need is not always humiliation, otherwise, it would not have occurred from him, peace and blessings of Allah be upon him. There is no role (2) in this for the assumption of giving or not giving being obligatory. Sometimes it might become obligatory (3) in the case of someone other than him, peace and blessings of Allah be upon him, such as feeding (4) a person in extreme hunger. This can be benefited from based on what is in Al-Mabsut.

And I say: The answer that (5) he, peace and blessings of Allah be upon him, has more right over the believers than their own selves is on another subtle point, which is (6) that their properties are his property since their very souls are the property of him, peace and blessings of Allah be upon him. There is no possibility of humiliation in a master asking his slave for something in his hand, for he and what...

[Right Column] Asking for some things of one's need from another is worthy of consideration, because the Holy Prophet, peace and blessings of Allah be upon him, has more authority over the believers than their own lives. Therefore, no one else can be compared to the Holy Prophet, because when he asks, it becomes obligatory for the one he asked to give. This is not the case for anyone else. (T)

I say: In any attribute, there is no person like the Holy Prophet, peace and blessings of Allah be upon him. One attribute of the Holy Prophet is also "honor" (Ghairat). So, the Holy Prophet, peace and blessings of Allah be upon him, is the most honorable among all the creations of God, and the Almighty God is more honorable than him. And it is not possible for any honorable nature to engage in an action that is considered humiliation. From this, it is proven that asking for something of need is sometimes such that it is not counted as humiliation; otherwise, it would never have occurred from the Holy Prophet, peace and blessings of Allah be upon him. And whether giving is obligatory or not has no bearing on this; sometimes it becomes obligatory even for those other than the Holy Prophet, peace and blessings of Allah be upon him, such as giving food to someone in extreme hunger. Support for the discourse in Al-Mabsut can be drawn from this discussion. (T)

And I say (the answer to the point that "the Holy Prophet, peace and blessings of Allah be upon him, is more the owner of the believers than their own lives") is in another subtle way. It is that the possessions of the believers are themselves the property of the Prophet, because the lives of the believers themselves are the property of the Holy Prophet, peace and blessings of Allah be upon him. And there is no possibility of humiliation in a master asking his slave for something in his hand, because the slave himself and whatever...

फ़तावा रज़विया - जिल्द चौथी

[बायां कॉलम] मैं कहता हूँ: (१) उनके(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) जैसा गुणों में कोई दूसरा नहीं है, और उनमें से एक 'गैरत' (सम्मान) भी है। अतः वे (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह की सारी सृष्टि में सबसे अधिक गैरतमंद हैं और अल्लाह तआला उनसे भी अधिक गैरतमंद है। एक सम्मानित और गैरतमंद आत्मा के लिए यह असंभव है कि वह किसी ऐसे कार्य में संलग्न हो जिसे अपमान माना जाए। अतः यह सिद्ध हुआ कि आवश्यकता की चीज़ मांगना अपमान नहीं है, अन्यथा यह उनसे (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) घटित नहीं होता। और इसमें (२) देने के अनिवार्य होने या न होने का कोई दखल नहीं है। कभी-कभी यह उनके(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अलावा किसी और के मामले में भी अनिवार्य हो सकता है (३), जैसे कि अत्यधिक भूख से पीड़ित व्यक्ति को भोजन कराना (४)। इससे अल-मबसूत की सामग्री के आधार पर लाभ उठाया जा सकता है।

और मैं कहता हूँ: (५) यह जवाब कि वह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मोमिनों पर उनकी अपनी जानों से अधिक अधिकार रखते हैं, एक अन्य सूक्ष्म बिंदु पर आधारित है, और वह यह है कि (६) उनकी संपत्तियां उनकी अपनी संपत्ति हैं क्योंकि उनकी अपनी जान भी उनकी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) संपत्ति है। और एक मालिक द्वारा अपने गुलाम से उसके हाथ में मौजूद चीज़ माँगने में अपमान की कोई संभावना नहीं है, क्योंकि गुलाम खुद और जो कुछ...

[दायां कॉलम] अपनी ज़रूरत की कुछ चीज़ें दूसरे से माँगना विचारणीय है, क्योंकि हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मोमिनों पर उनकी जानों से ज़्यादा अधिकार है। अतः हुज़ूर पर किसी और की तुलना नहीं की जा सकती, क्योंकि जब वे माँगते हैं, तो जिससे माँगा गया उस पर देना अनिवार्य हो जाता है। यह स्थिति किसी और की नहीं है। (त)

मैं कहता हूँ: किसी भी गुण में हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जैसा कोई दूसरा व्यक्ति नहीं है। हुज़ूर का एक गुण "गैरत" भी है। तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ईश्वर की समस्त सृष्टि में सबसे अधिक गैरतमंद हैं और परमेश्वर उनसे भी बढ़कर गैरतमंद है। और किसी भी सम्मानित स्वभाव वाले व्यक्ति से यह नहीं हो सकता कि वह किसी ऐसे कार्य में संलग्न हो जो अपमान माना जाता हो। इससे यह सिद्ध हुआ कि ज़रूरत की चीज़ माँगना कभी ऐसा भी होता है जो अपमान में नहीं गिना जाता, अन्यथा हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ऐसा कभी न होता। और इसमें देना अनिवार्य होने या न होने का कोई दखल नहीं है; अनिवार्य तो कभी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम के अलावा अन्य लोगों के हक में भी हो जाता है, जैसे भूख की तीव्रता वाले को खाना देना। इस चर्चा से कलाम-ए-मबसूत के समर्थन में लाभ उठाया जा सकता है। (त)

और मैं कहता हूँ ("हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मोमिनों के उनकी जानों से ज़्यादा मालिक हैं", इस बात का उत्तर) एक दूसरे सूक्ष्म अंदाज़ में है। वह यह कि मोमिनों की मिलकियतें (स्वामित्व) स्वयं हुज़ूर की मिल्कियत हैं, क्योंकि स्वयं मोमिनों की जान हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मिल्कियत है। और इसमें किसी ज़िल्लत (अपमान) की संभावना नहीं है कि आका अपने गुलाम से उसके हाथ की कोई चीज़ तलब (माँग) करे, क्योंकि गुलाम खुद और जो कुछ...

فتاوی رضویہ - جلد چہارم

[بایاں کالم] اقول: لیس (۱) کمثلہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم غیرہ فی شیئ من الصفات ومنھا الغیرۃ فھو صلی اللہ تعالی علیہ وسلم اغیر خلق اللہ واللہ تعالی اغیر منہ ومحال من نفس کریمۃ غیراء ان تتعرض لشیئ مما یعد ذلا فثبت ان من سؤال الحاجۃ مالیس بذل والالمّا وقع منہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم ولا دخل (۲) فی ھذا لافتراض البذل وعدمہ وقد یفترض (۳) فی حق غیرہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم ایضاً کاطعام (۴) ذی مخمصۃ فھذا قد ینتفع بہ لما فی المبسوط -

وانا اقول: انما (۵) الجواب فی انہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم اولی بالمؤمنین من انفسھم علی منزع اخر دقیق وھو ان (۶) املاکھم املاکہ اذھم انفسھم املاکہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم ولا احتمال لذل فی سؤال المولی بعض عبیدہ مما فی یدہ فانہ وما

[دایاں کالم] اپنی ضرورت کی کچھ چیزیں دوسرے سے مانگیں قابل استدراک ہے اس لئے کہ حضور اقدس صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کو مومنوں پر ان کی جانوں سے زیادہ اختیار ہے تو حضور پر کسی اور کا قیاس نہیں ہو سکتا اس لئے کہ وہ جب طلب کریں تو جس سے طلب فرمایا اس پر دینا فرض ہو گیا۔ یہ حال کسی اور کا نہیں اھ (ت)

اقول: کسی بھی صفت میں حضور اقدس صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کی مثل دوسرا شخص نہیں۔ حضور کی ایک صفت "غیرت" بھی ہے تو حضور صلی اللہ تعالی علیہ وسلم تمام خلق خدا میں سب سے زیادہ غیرت مند ہیں اور خدائے برتر ان سے بڑھ کر غیرت والا ہے، اور کسی بھی باعزت طبیعت سے یہ نہیں ہو سکتا کہ کسی ایسے فعل سے تعرض کرے جو ذلت شمار ہوتا ہو۔ اس سے ثابت ہوا کہ ضرورت کی چیز مانگنا کبھی ایسا بھی ہوتا ہے جس کا ذلت میں شمار نہیں ہوتا ورنہ

حضور اقدس صلی اللہ تعالی علیہ وسلم سے واقع ہی نہ ہوتا۔ اور اس میں دینا فرض ہونے نہ ہونے کا کوئی دخل نہیں فرض تو کبھی غیر حضور صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کے حق میں بھی ہو جاتا ہے، جیسے بھوک کی شدت والے کو کھانا دینا اس گفتگو سے کلام مبسوط کی حمایت میں فائدہ اٹھایا جا سکتا ہے۔ (ت)

اور میں کہتا ہوں (اس بات کا جواب کہ "حضور اقدس صلی اللہ تعالی علیہ وسلم مومنوں کے ان کی جانوں سے زیادہ مالک ہیں" ایک دوسرے دقیق انداز پر ہے۔ وہ یہ کہ مومنوں کی ملکیتیں خود حضور کی ملک ہیں اس لئے کہ خود مومنین کی جانیں حضور اقدس صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کی ملک ہیں اور اس میں کسی ذلت کا احتمال نہیں کہ آقا اپنے غلام سے اس کے ہاتھ کی کوئی چیز طلب کرے اس لئے کہ خود غلام اور جو کچھ

Fatawa Razawiya Volume 4

[Table Header: Left Column - Arabic Text | Right Column - Urdu Translation] In his hand is the property of his master, so it is not asking at all; rather, it is taking service. This statement justifies the purpose of the author of 'Ghuniyah' and clarifies his words. Then he writes: 'But the non-obligatoriness of asking from a companion has been attributed to Imam Abu Hanifa by the authors of 'Al-Hidayah' and 'Al-Idah', as mentioned before. However, Shams al-A'immah in 'Al-Mabsut' attributed it to Hasan bin Ziyad, for he says asking is a humiliation and involves some hardship. A reconciliation can be made: Hasan narrated it from Imam Abu Hanifa in a non-Zahir al-Riwayah (non-obvious transmission) and Hasan himself adopted it. Thus, 'Al-Mabsut' relied on Zahir al-Riwayah, while the authors of 'Al-Hidayah' and 'Al-Idah' considered Hasan's narration because it is more consistent with Imam Abu Hanifa's school regarding not considering capability through others and considering the present state of inability. And Allah Almighty knows best. (T)'

I say: For me (1) there is a discussion in this which is coming soon (T). It is in 'Hilyah':

In 'Al-Ikhtiyar', it is permissible (i.e., Tayammum before asking) according to Imam Abu Hanifa, and according to Imam Abu Yusuf, it is not permissible. He did not mention Imam Muhammad; he only mentioned that according to him (i.e., the author of Al-Ikhtiyar. 12-T).

'Ah' means the author of Al-Ikhtiyar.

---

1 Ghuniyat al-Mustamli, Chapter on Tayammum, Suhail Academy Press Lahore, p. 69

फ़तावा रज़विया खंड 4

[टेबल हेडर: बायां कॉलम - अरबी पाठ | दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद] उसके हाथ में जो कुछ है वह उसके मालिक की मिल्कियत है, तो वास्तव में यह माँगना है ही नहीं बल्कि सेवा लेना है। इस कथन से साहिबे 'ग़ुनिया' के उद्देश्य का औचित्य सिद्ध होता है और उनके कलाम का स्पष्टीकरण हो जाता है। फिर लिखते हैं: 'लेकिन साथी से माँगना वाजिब न होने को साहिबे 'हिदाया' और साहिबे 'ईज़ाह' ने इमाम अबू हनीफ़ा की ओर मंसूब किया है जैसा कि पहले गुज़रा। लेकिन शम्सुल अइम्मा ने 'मबसूत' में इसे हसन बिन ज़ियाद की ओर मंसूब किया है कि वही यह कहते हैं कि माँगने में ज़िल्लत है और इसमें कुछ हर्ज है। सामंजस्य इस प्रकार दिया जा सकता है कि हसन ने इसे इमाम अबू हनीफ़ा से ग़ैर ज़ाहिरुर रिवायत में रिवायत किया और स्वयं हसन ने इसी को अपनाया। तो मबसूत में ज़ाहिरुर रिवायत पर भरोसा किया गया और साहिबे हिदाया व साहिबे ईज़ाह ने रिवायते हसन का एतबार किया क्योंकि वह इस बारे में इमाम अबू हनीफ़ा के मज़हब से अधिक अनुकूलता रखती है कि सामर्थ्य का एतबार दूसरे के लिहाज़ से नहीं होता और इस बारे में कि वर्तमान में जो मजबूरी है उसी का एतबार है। और अल्लाह पाक ही सबसे बेहतर जानता है। (त)'

मैं कहता हूँ: मेरे पास (1) इसमें एक चर्चा है जो जल्द ही आ रही है (त)। 'हिलिया' में है:

'अल-इख्तियार' में है कि इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक (माँगने से पहले तयम्मुम) जायज़ है और इमाम अबू यूसुफ़ के नज़दीक जायज़ नहीं है। उन्होंने इमाम मुहम्मद का ज़िक्र नहीं किया, सिर्फ़ यह ज़िक्र किया कि उनके(यानी साहिबे इख्तियार ने 12-त)

'अह' यानी साहिबे इख्तियार

---

1 ग़ुनियतुल मुस्तमली, बाबुत तयम्मुम, मतबअ सुहेल एकेडमी लाहौर, पृष्ठ 69

पृष्ठ 50 का 761

[ٹیبل ہیڈر: بایاں کالم - عربی متن | دایاں کالم - اردو ترجمہ] فی یدہ ملك مولاہ فلیس من السؤال فی شیئ بل استخدام فبھذا یتجہ مرامہ ویتضح کلامہ ثم قال لکن عدم وجوب الطلب من الرفیق نسبہ صاحب الھدایۃ وصاحب الایضاح الی ابی حنیفۃ کما تقدم واما شمس الائمۃ فی المبسوط فانہ نسبہ الی الحسن بن زیاد فانہ یقول السؤال ذل وفیہ بعض الحرج وربما یوفق بان الحسن رواہ عن ابی حنیفۃ فی غیر ظاہر الروایۃ واخذوا بہ فاعتمد فی المبسوط ظاہر الروایۃ واعتبر صاحب الھدایۃ والایضاح روایۃ الحسن لکونھا انسب بمذھب ابی حنیفۃ في عدم اعتبار القدرۃ بالغیر وفي اعتبار العجز للحال واللہ سبحانہ تعالی اعلم اھـ

اس کے ہاتھ میں ہے سب اس کے آقا کی ملکیت ہے تو دراصل یہ مانگنا ہے ہی نہیں بلکہ یہ خدمت لینا ہے۔ اس بیان سے صاحب غنیہ کے مقصد کی توجیہ اور ان کے کلام کی توضیح ہو جاتی ہے۔ پھر لکھتے ہیں: 'لیکن رفیق سے مانگنا واجب نہ ہونے کو صاحب ہدایہ اور صاحب ایضاح نے امام ابوحنیفہ کی طرف منسوب کیا ہے جیسا کہ پہلے گزرا۔ لیکن شمس الائمہ نے مبسوط میں اسے حسن بن زیاد کی طرف منسوب کیا ہے کہ وہی یہ کہتے ہیں کہ مانگنے میں ذلت ہے اور اس میں کچھ حرج ہے تطبیق یوں دی جاسکتی ہے کہ حسن نے اسے امام ابوحنیفہ سے غیر ظاہر الروایہ میں روایت کیا اور خود حسن نے اسی کو لیا۔ تو مبسوط میں ظاہر الروایہ پر اعتماد کیا اور صاحب ہدایہ وصاحب ایضاح نے روایت حسن کا اعتبار کیا اس لئے کہ وہ اس بارے میں امام ابوحنیفہ کے مذہب سے زیادہ مناسبت رکھتی ہے کہ قدرت کا اعتبار دوسرے کے لحاظ سے نہیں ہوتا اور اس بارے میں کہ فی الحال جو عجز ہے اسی کا اعتبار ہے۔ اور خدائے پاک ہی خوب جاننے والا ہے اھـ (ت)'

اقول: ولی (۱) فیہ کلام سیاتی (اس میں مجھے کلام ہے جو عنقریب آرہا ہے۔ ت) حلیہ میں ہے:

في الاختيار جاز (ای التیمم قبل الطلب) عند ابي حنيفة وعند ابي يوسف لا يجوز ولم يذكر محمدا وانما ذ كران قياس قوله عہ

اختیار میں ہے کہ امام ابوحنیفہ کے نزدیک (مانگنے سے پہلے تیمم) جائز ہے اور امام ابویوسف کے نزدیک جائز نہیں۔ امام محمد کا ذکر نہ کیا صرف یہ ذکر کیا کہ ان کے (یعنی صاحب اختیار نے ۱۲-ت)

عہ ای صاحب الاختیار (یعنی صاحب اختیار نے)

---

1 غنیۃ المستملی باب التیمم مطبع سہیل اکیڈمی لاہور ص ۶۹

Volume Four Fatawa Rizvia

If one strongly suspects that they will give it, it is not permissible; otherwise, it is permissible. [Arabic Quote] The implication of this statement's analogy is that if a person has a strong suspicion that it will be given, then it is not permissible, otherwise it is permissible. [Urdu Translation]

I say: Thus the debate continues, and there is no need to multiply the quotes. Rather, we address these two points to provide a final resolution, by the grace of our Lord, the Supreme Guardian. [Arabic] I say: Similarly, the discussion continues. There is no need to bring more quotes; instead, by the grace of our Supreme Guardian Lord, we come to these two points for a detailed explanation: [Urdu]

First Point: The statements of the scholars here have converged on three paths: [Arabic] First Point: Here, the statements of scholars have been frequently reported in three paths. [Urdu]

First Path: Asking is not mandatory at all. This is the statement of our master, the Imam, contrary to his two companions, or it is the statement of the two sides (Imam Abu Hanifa and Imam Muhammad) contrary to the second (Imam Abu Yusuf), may Allah Almighty be pleased with them. [Arabic] First Path: Asking is not mandatory at all. And this is the statement of our Imam, contrary to the two companions. Or this is the statement of the two sides, contrary to Imam Abu Yusuf (may Allah be pleased with them). [Urdu]

My statement "at all" includes those who explicitly state absolute permissibility, as mentioned in Jami' al-Rumuz from al-Tajrid: Dry ablution (tayammum) is valid before asking a companion for water even if one thinks he will give it, as Imam Abu Hanifa said, contrary to Abu Yusuf. [Arabic] Included in my saying "at all" are those who explicitly state absolute permissibility and all those who mention this ruling without any restriction. Explicit absolute permission is as found in Jami' al-Rumuz with reference to Tajrid that tayammum is valid before asking a companion for water even if one has the suspicion that it will be given, as is the statement of Imam Abu Hanifa, contrary to Imam Abu Yusuf. [Urdu]

Close to it is the previous statement in al-Ikhtiyar, where it mentions the permissibility according to the Imam absolutely and contrasts it with a detailed explanation based on Imam Muhammad's analogy. Similar to it is the statement of al-Jawhara which is following. [Arabic] Close to this is the previous passage of

"Ikhtiyar" in which the permissibility of the Imam has been mentioned absolutely, and in contrast, a detailed explanation has been given based on the analogy of Imam Muhammad's statement, and similar to it is the statement of Jawhara which is coming. [Urdu]

---

1. Al-Ikhtiyar li-Ta'lil al-Mukhtar, Chapter of Tayammum, Dar Firas for Publishing and Distribution, Beirut, 1/22.
2. Jami' al-Rumuz, Chapter of Tayammum, Matba' Iran, 1/58.

खंड चार फ़तावा रज़विया

यदि प्रबल अनुमान हो कि वह दे देगा तो यह जायज़ नहीं, अन्यथा जायज़ है। [अरबी उद्धरण] कथन के कयास का तकाज़ा यह है कि यदि उसे प्रबल अनुमान हो कि वह दे देगा तो जायज़ नहीं है, अन्यथा जायज़ है। [उर्दू अनुवाद]

मैं कहता हूँ: इसी प्रकार वाद-विवाद जारी है, और कथनों को बढ़ाने की कोई आवश्यकता नहीं है। बल्कि, हम अपने सर्वोच्च रक्षक प्रभु की तौफीक से मामले के निपटारे के लिए इन दो बिंदुओं पर आते हैं। [अरबी] मैं कहता हूँ: इसी तरह चर्चा जारी है। और अधिक कथनों को लाने की कोई आवश्यकता नहीं है, बल्कि हम अपने सर्वोच्च रक्षक पालनहार की तौफीक से विवरण के लिए इन दो बिंदुओं पर आते हैं: [उर्दू]

पहला बिंदु: यहाँ विद्वानों के वचन तीन मार्गों पर एकत्रित हुए हैं: [अरबी] पहला बिंदु: यहाँ विद्वानों के कथन बहुतायत से तीन मार्गों पर आए हैं। [उर्दू]

पहला मार्ग: माँगना बिल्कुल अनिवार्य नहीं है। यह हमारे स्वामी इमाम साहब का कथन है, उनके दो साथियों के विपरीत, या यह दोनों पक्षों का कथन है, दूसरे (इमाम अबू यूसुफ) के विपरीत, अल्लाह उन पर प्रसन्न हो। [अरबी] पहला मार्ग: बिल्कुल भी माँगना अनिवार्य नहीं है। और यह हमारे इमाम साहब का कथन है, साहबैन के विपरीत। या यह तरफैन का कथन है, इमाम अबू यूसुफ (रज़ियल्लाहु अन्हुम) के विपरीत। [उर्दू]

मेरे "बिल्कुल" कहने में वे लोग भी शामिल हैं जो पूर्ण अनुमति को स्पष्ट करते हैं, जैसा कि जामी-अल-रुमुज़ में तजरीद के हवाले से है: साथी से पानी माँगने से पहले तयम्मुम सही है भले ही वह देने का गुमान रखता हो, जैसा कि इमाम अबू हनीफ़ा ने कहा, अबू यूसुफ के विपरीत। [अरबी] मेरे "बिल्कुल" कहने में वे सभी लोग शामिल हैं जो पूर्ण अनुमति को स्पष्ट करते हैं और जो बिना किसी प्रतिबंध के इस नियम का उल्लेख करते हैं। पूर्ण अनुमति का स्पष्ट उल्लेख जैसे जामी-अल-रुमुज़ में तजरीद के हवाले से है कि साथी से पानी माँगने से पहले तयम्मुम सही है चाहे वह देने का गुमान रखता हो जैसा कि इमाम अबू हनीफ़ा का कथन है, इमाम अबू यूसुफ के विपरीत। [उर्दू]

इसके निकट 'अल-इख्तियार' का पिछला कथन है जहाँ इमाम साहब की अनुमति को बिना शर्त उल्लेख किया गया है और इसके विपरीत इमाम मुहम्मद के कयास पर विस्तार से बताया गया है। इसी के समान 'जौहरा' का कथन है जो आगे आ रहा है। [अरबी] इसके करीब 'इख्तियार' का पिछला

उद्धरण है कि उसमें इमाम साहब की अनुमति का पूर्ण रूप से उल्लेख किया गया है और उसके मुकाबले में इमाम मुहम्मद के कथन के कयास पर विवरण बयान किया गया है और इसी के समान जौहरा का उद्धरण है जो आ रहा है। [उर्दू]

---

1. अल-इख्तियार ली-तालील अल-मुख्तार, तयम्मुम का अध्याय, दार फिरास प्रकाशन, बेरूत, 1/22।
2. जामी-अल-रुमुज़, तयम्मुम का अध्याय, ईरान प्रेस, 1/58।

ان غلب علی ظنه انه یعطیه لا یجوز والا یجوز اھ قول کے قیاس کا اقتضا یہ ہے کہ اگر اسے غالب گمان ہو کہ دے دے گا تو جائز نہیں ورنہ جائز ہے اھ (ت)

اقول: ھکذا جری القیل والقال ولا حاجة الی استکثار الاقوال بل نأتی علی المقامین لفصل المقال بتوفیق ربنا المھیمن المتعال اقول: اسی طرح قیل و قال جاری ہے۔ اور زیادہ اقوال لانے کی کوئی ضرورت نہیں بلکہ ہم اپنے برتر نگہبان پروردگار کی توفیق سے تفصیل کلام کیلئے ان دو مقاموں پر آتے ہیں:

المقام الاول: تظافرت ھھنا کلمات العلماء علی ثلثة مسالك: مقام اول: یہاں کلمات علماء تین مسالک پر کثرت سے وارد ہوئے ہیں۔

اولھا: لا یجب الطلب مطلقا وانه قول سیدنا الامام خلافا لصاحبیه او قول الطرفین خلافا للثاني رضی اللہ تعالی عنھم۔ مسلک اول: مطلقاً مانگنا واجب نہیں۔ اور یہ ہمارے امام صاحب کا قول ہے بخلاف صاحبین۔ یا یہ طرفین کا قول ہے بخلاف امام ابویوسف رضی اللہ تعالی عنہم۔

ودخل في قولی مطلقا من صرح بالاطلاق کما فی جامع الرموز عن التجرید یصح قبل الطلب من الرفیق وان ظن الاعطاء کما قال ابوحنیفة خلافا لابي یوسف اھ میرے "مطلقاً" کہنے میں اطلاق کی تصریح کرنے والے اور اس حکم کو بلا قید ذکر کرنے والے سبھی لوگ داخل ہیں۔ اطلاق کی تصریح جیسے جامع الرموز میں تجرید کے حوالہ سے ہے کہ رفیق سے پانی مانگنے سے پہلے تیمم صحیح ہے اگر چہ دینے کا گمان رکھتا ہو جیسا کہ امام ابوحنیفہ کا قول ہے، بخلاف امام ابویوسف"۔ اھ

ویقرب منه قول الاختیار البارحیث اطلق الجواز عند الامام وقابله بالتفصیل علی قیاس قول محمد و مثلها عبارة الجوهرة الآتیة ومن اس سے قریب "اختیار" کی گزشتہ عبارت ہے کہ اس میں امام صاحب کے جواز کو مطلق ذکر کیا ہے اور اس کے مقابلہ میں قول امام محمد کے قیاس پر تفصیل بیان کی ہے اور اسی کے مثل جوہرہ کی عبارت ہے جو آرہی ہے

---

1 الاختیار لتعلیل المختار، باب التیمم، دار فراس للنشر والتوزیع بیروت ۲۲/۱ 2 جامع الرموز باب التیمم مطبع ایران ۵۸/۱

Fatawa Razawiyya, Volume 4

[Right Column - Urdu Translation] Those who narrated it unconditionally are the majority. It is stated in al-Wiqayah: "It is permissible before searching for it, contrary to the view of the two Companions (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad) (ah)." In al-Nuqayah, it is written: "Correct before searching (ah)." And the passage from al-Hidayah has already been mentioned: "If one performed tayammum before searching, it is valid according to Imam Abu Hanifa." In Bada'i' Malik al-Ulama: "If a travel companion had water and he was unaware of it, then according to us, asking for it is not obligatory. And if he knew about it but did not have the means to pay for it, then it is the same according to Imam Abu Hanifa, while Imam Abu Yusuf says that he must ask for it. The reason for his (Abu Yusuf's) view is that water is usually given freely. Imam Abu Hanifa's argument is that helplessness is certain and ability is imaginary because, during travel, water is the rarest of things (ah)." In al-Khaniyah: "If he saw water with his companion and then performed tayammum and prayed before asking, it is permissible (ah)." In al-Khulasah: "In Al-Asl (al-Mabsut) it is stated: If a travel companion has water, he should ask for it. In al-Tajrid, it says that according to Imam Abu Hanifa, asking is not obligatory, while according to Imam Abu Yusuf, it is..."

[Left Column - Arabic Text] Arsalu' Arsala and they are the majority. In al-Wiqayah: before seeking it, it is permissible, contrary to them both[1] (ah). In al-Nuqayah: it is valid before seeking[2] (ah). A passage from al-Hidayah has passed: tayammum before seeking was sufficient for him according to Abu Hanifa[3]. In Bada'i' Malik al-Ulama: If his companion had water and he did not know about it, seeking is not obligatory for us. And if he knew about it but it had no price for him, likewise according to Abu Hanifa. Abu Yusuf said: the question is upon him. The reasoning for his statement is that water is usually bestowed. According to Abu Hanifa, inability is realized and capability is illusory because water is among the most precious things in travel[4] (ah). In al-Khaniyah: if he saw water with his companion, and performed tayammum before asking and prayed, it is permissible [5] (ah). In al-Khulasah: and in Al-Asl, if there was water with his companion, then he should ask him. It says in al-Tajrid: asking is not obligatory according to Abu Hanifa, and Abu Yusuf said it is obligatory [6] (ah). The wording of al-Binayah from al-Tajrid is: seeking from the companion is not obligatory according to Abu Hanifa and...

[Footnotes] 1. Sharh al-Wiqayah, Chapter on Tayammum, Matba' Rashidiya Delhi, 1/101 2. Nuqayah Mukhtasar al-Wiqayah, Book of Purification, Noor Muhammad

Karkhana Tijarat Kutub Karachi, 6 3. Al-Hidayah with Al-Ayni, Book of Purification, Al-Maktabah al-Imdadiya Mecca, 1/337 4. Bada'i' as-Sana'i', Book of Purification, H.M. Saeed Company Karachi, 1/28 5. Fatawa Qazi Khan, Chapter on what permits Tayammum, Naval Kishore Press Lucknow, 1/26 6. Khulasat al-Fatawa, Section 5 on Tayammum, Naval Kishore Press Lucknow, 1/32

फतावा रज़विया, जिल्द 4

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद] बिना किसी शर्त के ज़िक्र करने वाले हज़रात ज़्यादा हैं। 'विकाया' में है: "मांगने से पहले जायज़ है, साहबैन (इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद) के बरअक्स (अह)।" 'नुकाया' में है: "खोजने से पहले (तयम्मुम) सही है (अह)।" और 'हिदाया' की इबारत गुज़र चुकी है: "अगर मांगने से पहले तयम्मुम किया, तो इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक हो गया।" 'बदाये' मलिकुल उलमा में है: "अगर उसके सफ़र के साथी के पास पानी था और उसे पता नहीं था, तो हमारे नज़दीक मांगना वाजिब नहीं है। और अगर उसे पता हो लेकिन उसके पास पैसे न हों, तो भी इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक यही हुक्म है। जबकि इमाम अबू यूसुफ़ का कौल है कि उस पर मांगना वाजिब है। उनके कौल की वजह यह है कि पानी आमतौर पर मुफ़्त दे दिया जाता है। इमाम अबू हनीफ़ा की दलील यह है कि बेबसी (عجز) निश्चित है और पानी पाने की शक्ति केवल एक कल्पना है, क्योंकि सफ़र में पानी सबसे दुर्लभ चीज़ है (अह)।" 'खानिया' में है: "अगर अपने साथी के पास पानी देखा, फिर मांगने से पहले तयम्मुम किया और नमाज़ पढ़ ली, तो जायज़ है (अह)।" 'खुलासा' में है: "अस्ल (मबसूत) में है कि अगर सफ़र के साथी के पास पानी हो, तो वह मांगेगा। 'तजरीद' में है कि इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक मांगना वाजिब नहीं है और इमाम अबू यूसुफ़ का..."

[बायां कॉलम - अरबी पाठ] 'अरलसू इरसाला' और वे बहुसंख्यक हैं। 'विकाया' में: इसे खोजने से पहले, यह जायज़ है, उन दोनों के विपरीत[1] (अह)। 'नुकाया' में: यह खोजने से पहले मान्य है[2] (अह)। 'हिदाया' से एक अंश बीत चुका है: अबू हनीफ़ा[3] के अनुसार खोजने से पहले तयम्मुम उसके लिए पर्याप्त था। 'बदाये' मलिकुल उलमा में: यदि उसके साथी के पास पानी था और उसे इसके बारे में पता नहीं था, तो हमारे लिए खोजना अनिवार्य नहीं है। और अगर उसे पता था लेकिन इसकी कोई कीमत नहीं थी, तो अबू हनीफ़ा के अनुसार भी ऐसा ही है। अबू यूसुफ़ ने कहा: प्रश्न उन पर है। उनके कथन का तर्क यह है कि पानी आमतौर पर प्रदान किया जाता है। अबू हनीफ़ा के अनुसार, अक्षमता वास्तविक है और क्षमता काल्पनिक है क्योंकि सफ़र में पानी सबसे कीमती चीज़ों में से है[4] (अह)। 'खानिया' में: यदि उसने अपने साथी के पास पानी देखा, और पूछने से पहले तयम्मुम किया और नमाज़ पढ़ी, तो यह जायज़ है [5] (अह)। 'खुलासा' में: और 'अस्ल' में, यदि उसके साथी के साथ पानी था, तो उसे उससे पूछना चाहिए। 'तजरीद' में लिखा है: अबू हनीफ़ा के अनुसार पूछना अनिवार्य नहीं है, और अबू यूसुफ़ ने कहा कि यह अनिवार्य है [6] (अह)। 'तजरीद' से 'बिनाया' के शब्द हैं: अबू हनीफ़ा के अनुसार साथी से खोजना अनिवार्य नहीं है और...

[पाद टिप्पणियाँ] 1. शरह अल-विकाया, तयम्मुम का अध्याय, मतबा रशीदिया दिल्ली, 1/101 2. नुकाया मुख्तसर अल-विकाया, शुद्धिकरण की पुस्तक, नूर मुहम्मद कारखाना तिजारत कुतुब कराची, 6 3. अल-हिदाया अल-ऐनी के साथ, शुद्धिकरण की पुस्तक, अल-मकतबा अल-इमदादिया मक्का, 1/337 4. बदाये अस-सनाये, शुद्धिकरण की पुस्तक, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/28 5. फतावा काज़ी खान, तयम्मुम की अनुमति देने वाले खंड, नवल किशोर लखनऊ, 1/26 6. खुलासात अल-फतावा, तयम्मुम पर खंड 5, नवल किशोर लखनऊ, 1/32

ارسلوا ارسالا وھم الاکثرون ففي الوقایة قبل طلبه جاز خلافهما[1] اه وفي النقایة یصح قبل الطلب[2] اه و مر عن الهدایة تیمم قبل الطلب اجزأه عند ابي حنیفة[3]، وفي بدائع ملك العلماء لو كان مع رفیقه ماء ولم یعلم به لا یجب الطلب عندنا وان علم به ولكن لا ثمن له فكذلك عند ابي حنیفة وقال ابو یوسف علیه السؤال وجه قوله ان الماء مبذول عادة ولابی حنیفة ان العجز متحقق والقدرة موھومة لان الماء من اعز الاشیاء في السفر[4] اه وفي الخانیة لورأی مع رفیقه ماء فتیمم قبل ان یسأل وصلی جاز [5] اه وفي الخلاصة وفی الاصل لو كان مع رفیقه ماء فأنه یسأل قال في التجرید السؤال لیس بواجب عند ابي حنیفة وقال ابو یوسف واجب [6] اه و لفظ البنایة عن التجرید لا یجب الطلب من الرفیق عند ابي حنیفة و

بلا قید ذکر کرنے والے حضرات زیادہ ہیں۔ وقایہ میں ہے : "مانگنے سے پہلے جائز ہے، بخلاف صاحبین اھ "۔ نقایہ میں ہے : " قبل طلب صحیح ہے" اھ اور ہدایہ کی عبارت گزر چکی : "مانگنے سے پہلے تیمم کیا تو امام ابو حنیفہ کے نزدیک ہو گیا۔" بدائع ملک العلماء میں ہے: "اگر اس کے رفیق سفر کے پاس پانی تھا اور اسے علم نہ ہوا تو ہمارے نزدیک مانگنا واجب نہیں اور اگر اسے علم ہو لیکن اس کا دام نہیں رکھتا تو بھی امام ابو حنیفہ کے نزدیک یہی ہے اور امام ابو یوسف کا قول ہے کہ اس پر مانگنا ہے۔ ان کے قول کی وجہ یہ ہے کہ پانی عادۃً دے دیا جاتا ہے اور امام ابو حنیفہ کی دلیل یہ ہے کہ عجز متحقق ہے اور قدرت موہوم ہے اس لئے کہ سفر میں پانی سب سے کم یاب شے ہے اھ خانیہ میں ہے: "اگر اپنے رفیق کے پاس پانی دیکھا پھر مانگنے سے پہلے تیمم کیا اور نماز پڑھ لی تو جائز ہے " اھ خلاصہ میں ہے : "اصل (مبسوط) میں ہے : اگر رفیق سفر کے پاس پانی ہو تو مانگے گا۔ تجرید میں ہے کہ امام ابو حنیفہ کے نزدیک مانگنا واجب نہیں اور امام ابو یوسف کا

1 شرح الوقایہ باب التیمم مطبع رشیدیہ دہلی ۱۰۱/۱ 2 نقایہ مختصر الوقایہ کتاب الطھارۃ نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ۶ 3 الہدایۃ مع العینی کتاب الطھارۃ المکتبۃ الامدادیہ مکہ مکرمہ ۱/ ۳۳۷ 4 بدائع الصنائع کتاب الطھارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۲۸ 5 فتاوی قاضی خان فصل فیما یجوز لہ التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنو ۱/ ۲۶ 6 خلاصۃ الفتاوی الفصل الخامس فی التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنو ۱/ ۳۲

Muhammad, contrary to Abu Yusuf (may Allah Almighty have mercy on them), said that it is obligatory. (1) Citing 'Al-Tajrid', the words of 'Al-Binayah' are: "Asking a companion is not obligatory according to Imam Abu Hanifah and Imam Muhammad. This is contrary to Imam Abu Yusuf (may Allah Almighty have mercy on them)." In 'Multaqa al-Abhur', it is said: "If one performs Tayammum before asking for water, it is valid." In 'Al-Islah': "It is correct to perform Tayammum before asking for water from one's companion who has it, contrary to both [the companions of the Imam]." It is said in 'Sh': "And the Imam's view is certain in 'Al-Majma', 'Al-Multaqa', 'Al-Wiqayah', and 'Ibn al-Kamal'." Allamah Shami writes: "The certainty is on the view of the Imam himself in Majma, Multaqa, Wiqayah, and Ibn al-Kamal." Allamah al-Wazir in 'Al-Idah' writes: "This is according to what is in 'Al-Hidayah', 'Al-Idah', 'Al-Taqrib', and others (i.e., like the commentary of 'Al-Aqta' as previously mentioned from the references of 'Al-Inayah', 'Al-Binayah', and 'Al-Bahr'). And in 'Al-Tajrid', Muhammad is mentioned with Abu Hanifah." Then it mentions the harmonization of Imam al-Jassas, then the text from 'Al-Mabsut' which was mentioned in the phrases of 'Al-Inayah' and 'Al-Bahr', followed by the text from 'Al-Badai' which just passed. (T)

I say: (1) From these texts, the weakness in the statement of 'Al-Nihayah' becomes apparent, which said: "Disagreement is only mentioned in Al-Idah." Similarly, it will be said to Allamah Bahr that these texts and foundational works: Bidayah, Wiqayah, Islah, Majma, Tajrid, Idah, Taqrib, and...

---

1. Aini Sharh al-Hidayah, Chapter of Tayammum, Matba'ah al-Maktabah al-Imdadiyyah, Makkah al-Mukarramah, 1/33.
2. Multaqa al-Abhur, Chapter of Tayammum, Muassasah al-Risalah, Beirut, 1/32.
3. Islah al-Idah.
4. Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/183.

फ़तावा रज़विया - जिल्द चहारम

मुहम्मद, अबू यूसुफ़ (अल्लाह तआला उन पर रहम करे) के विपरीत, कहते हैं कि यह वाजिब है। (1) 'तजरीद' का हवाला देते हुए 'बिनाया' के शब्द ये हैं: "साथी से मांगना इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मुहम्मद के नज़दीक वाजिब नहीं। बरख़िलाफ़ इमाम अबू यूसुफ़ (रहमतुल्लाह अलैह)।" 'मुल्तका अल-अबहुर' में है: "अगर मांगने से पहले तयम्मुम कर लिया तो हो गया।" 'अल-इस्लाह' में है: "अपने किसी रफ़ीक (साथी) से पानी मांगने से पहले तयम्मुम कर लेना सही है, साहिबैन के बरख़िलाफ़।" 'श' में कहा गया है: "और इमाम का दृष्टिकोण 'मजमा', 'मुल्तका', 'विकाया' और 'इब्न अल-कमाल' में निश्चित है।" अल्लामा शामी लिखते हैं: "इमाम साहब ही के कौल पर मजमा, मुल्तका, विकाया और इब्न अल-कमाल का जज़्म है।" अल्लामा वज़ीर 'ईज़ाह' में लिखते हैं: "यह उसके मुताबिक़ है जो 'हिदाया', 'ईज़ाह', 'तकरीब' और उनके अलावा (यानी जैसे 'शरह अक्ता' जैसा कि 'इनाया', 'बिनाया' और 'बहर' के हवालों से गुज़रा) में है। और तजरीद में इमाम मुहम्मद को इमाम अबू हनीफ़ा के साथ ज़िक्र किया गया है।" फिर इमाम जस्सास की तत्बीक़ (सामंजस्य) ज़िक्र की है फिर 'मबसूत' का कलाम जो 'इनाया' व 'बहर' की इबारतों में गुज़रा उसके बाद 'बदाई' की इबारत लिखी है जो अभी गुज़री। (त)

अक़ूल (मैं कहता हूँ): (1) इन नसूस (नियमों/ग्रंथों) से 'निहाया' के इस कौल की खामी ज़ाहिर हो गई कि "सिर्फ़ ईज़ाह में इख़्तिलाफ़ का ज़िक्र आया है।" इसी तरह अल्लामा बहर से भी अर्ज़ किया जाएगा कि ये मुतून व अमाइद (मूल पाठ और आधार): बिदाया, विकाया, इस्लाह, मजमा, तजरीद, ईज़ाह, तक़रीब, और...

---

1. ऐनी शरह अल-हिदाया, बाब अत-तयम्मुम, मतबा अल-मकतब अल-इमदादिया मक्का मुकर्रमा 1/33।
2. मुल्तका अल-अबहुर, बाब अत-तयम्मुम, मुअस्ससा अर-रिसाला बैरुत 1/32।
3. इस्लाह अल-ईज़ाह।
4. रद अल-मुह्तार, बाब अत-तयम्मुम, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र 1/183।

पृष्ठ 53 का 761

محمد خلافا لابی یوسف رحمہم اللہ تعالی اھ وفی | قول ہے کہ واجب ہے "اھ ملتقی الابحر ان تیمم قبل الطلب اجزاہ اھ وفی | تجرید کا حوالہ دیتے ہوئے بنایہ کے الفاظ یہ ہیں: "رفیق سے الاصلاح ویصح قبل طلبہ من رفیق لہ ماء | مانگنا امام ابو حنیفہ وامام محمد کے نزدیک واجب نہیں۔ بخلاف خلافا لھما اھ قال ش وبقول الامام جزم فی | امام ابو یوسف ۔ رحمہم اللہ تعالٰی اھ ملتقی البحر میں ہے: "اگر المجمع والملتقی والوقایۃ وابن الکمال اھ وقال | مانگنے سے پہلے تیمم کرلیا تو ہو گیا" اھ اصلاح میں العلامۃ الوزیر فی الایضاح ھذا علی وفق ما فی | ہے: "اپنے کسی رفیق سے پانی مانگنے سے پہلے تیمم کرلینا صحیح الھدایۃ والایضاح والتقریب وغیرھا (ای | ہے۔ بخلاف صاحبین "اھ علامہ شامی لکھتے ہیں: "امام صاحب کشرح الاقطع کما تقدم عن العنایۃ والبنایۃ | ہی کے قول پر مجمع ، ملتقی ، وقایہ اور ابن الکمال کا جزم ہے" اھ والبحر قال) وفی التجرید ذکر محمدا مع ابی | علامہ وزیر ایضاح میں رقمطراز ہیں: "یہ اس کے مطابق ہے حنیفۃ اھ ثم ذکر توفیق الجصاص ثم کلام | جو ہدایہ ، ایضاح، تقریب اور ان کے علاوہ (یعنی جیسے شرح المبسوط المار فی عبارۃ العنایۃ والبحر ثم اعقبہ | اقطع جیسا کہ عنایہ، بنایہ اور بحر کے حوالوں سے گزرا) میں بکلام البدائع المار۔ | ہے۔ اور تجرید میں امام محمد کو امام ابو حنیفہ کے ساتھ ذکر کیا اقول: (۱) وبھذہ النصوص ظھر ما فی قول النھایۃ | ہے" اھ پھر امام جصاص کی تطبیق ذکر کی ہے پھر مبسوط کا کلام لم یذکر الخلاف الا فی الایضاح وکذ لك یقال | جو عنایہ وبحر کی عبارتوں میں گزرا اس کے بعد بدائع کی للعلامۃ البحر ھؤلاء المتون والعمائد البدایۃ و | عبارت لکھی ہے جو ابھی گزری۔ (ت) الوقایۃ والاصلاح والمجمع والتجرید والایضاح | اقول: ان ہی نصوص سے نہایہ کے اس قول کی خامی ظاہر والتقریب و | ہو گئی کہ "صرف ایضاح میں اختلاف کا ذکر آیا ہے۔ اسی طرح | علامہ

بحر سے بھی عرض کیا جائے گا کہ یہ متون وعمائد | بدایہ، وقایہ، اصلاح، مجمع، تجرید، ایضاح، تقریب،

---

1 عینی شرح الهداية باب التيمم مطبع المكتبة الامدادية مکہ مکرمہ ۱/ ۳۳ 2 ملتقى الابحر باب التيمم مؤسسة الرسالة بيروت ۱/ ۳۲ 3 اصلاح الايضاح 4 ردالمختار باب التيمم مصطفى البابى مصر ۱/ ۱۸۳

Fatawa Razawiyya, Volume 4

Sharh al-Aqta', al-Bada'i, al-Khulasa, al-Fath, al-Ikhtiyar, and al-Jawhara all explicitly state the disagreement between the Imam [Abu Hanifa] and his two disciples [Sahibayn]. The eminent Imam Abu Bakr al-Jassas reconciles the statement of the Imam and his disciples. In 'al-Burhan', the commentary on 'Mawahib al-Rahman', it is said: 'The more apparent view is that of the two disciples.' Then the reconciliation of al-Jassas was mentioned and supported by saying: 'For this reason, al-Kafi did not narrate a disagreement.' This was quoted by Allama al-Shurunbulali in 'Ghuniyat Dhawi al-Ahkam'. How can the statement of all these [scholars] be rejected merely because 'al-Mabsut' did not attribute the disagreement except to Hasan? Are not those who affirm [a difference], and they are a group, prioritized over a single negator? Is it not so that 'Zahir al-Riwaya' (manifest narrations) may sometimes be multiple on a single issue? And this statement of mine [multiplicity of Zahir al-Riwaya] is better than the reconciliation in 'Ghuniyat' mentioned in its phrase: 'These [scholars] considered the rare narration (nadir al-riwaya) because it is more suitable to the Imam's school of thought.' For considering it for this reason is one thing, and making it the Imam's statement and establishing a disagreement in the school between him and his two disciples is another thing altogether. Even though Allama Shami also maintained the reconciliation of 'Ghuniyat' in 'Radd al-Muhtar' and 'Minhat al-Khaliq'. And Allah, Glorified be He, is the Granter of success. (T)

Second: It is absolutely obligatory to ask, and this is the 'Zahir al-Riwaya' from our three Imams (may Allah be pleased with them). And this is what was mentioned with reference to 'al-Mabsut'.

Footnote: 1. Ghuniyat al-Mustamli, Chapter on Tayammum, Matba' Ahmad Kamil, Dar al-Sa'ada, 1/32

फतावा रज़विया, खंड 4

शरह अल-अक्ता', अल-बदाइ', अल-खुलासा, अल-फतह, अल-इख्तियार और अल-जौहरा सभी यह स्पष्ट करते हैं कि इमाम [अबू हनीफा] और उनके दो शिष्यों [साहिबैन] के बीच मतभेद है। और महान इमाम अबू बक्र अल-जस्सास इमाम साहब और उनके शिष्यों के कथनों के बीच सामंजस्य (ततबीक) स्थापित करते हैं। 'अल-बुरहान', जो 'मवाहिब अल-रहमान' की व्याख्या है, में कहा गया है: 'अधिक स्पष्ट मत दोनों शिष्यों का है।' फिर अल-जस्सास के सामंजस्य का उल्लेख किया गया और इसका समर्थन करते हुए कहा गया: 'इसीलिए अल-काफी ने किसी मतभेद का उल्लेख नहीं किया।' इसे अल्लामा अल-शुरुनबुलाली ने 'ग़ुनियत ज़वी अल-अहकाम' में उद्धृत किया है। इन सभी विद्वानों की बात को केवल इस आधार पर कैसे खारिज किया जा सकता है कि 'अल-मबसूत' में मतभेद का श्रेय केवल हसन को दिया गया है? क्या वे लोग जो मतभेद की पुष्टि करते हैं, और वे एक समूह हैं, एक अकेले नकारने वाले पर प्राथमिकता नहीं रखते? क्या ऐसा नहीं है कि 'ज़ाहिर अल-रवाया' (स्पष्ट कथन) कभी-कभी एक ही मसले पर अनेक हो सकते हैं? मेरा यह कथन 'ग़ुनियत' के उस सामंजस्य से बेहतर है जो उसके इस वाक्य में आया है: 'इन विद्वानों ने दुर्लभ कथन (नादिर अल-रवाया) पर विचार किया क्योंकि वह इमाम के संप्रदाय के अधिक अनुकूल है।' क्योंकि इस कारण से उस पर विचार करना एक बात है, और उसे इमाम का कथन घोषित करना और संप्रदाय में उनके और उनके शिष्यों के बीच मतभेद स्थापित करना दूसरी बात है। हालाँकि अल्लामा शामी ने भी 'रद्द अल-मुह्तार' और 'मिन्हात अल-खालिक़' में 'ग़ुनियत' के सामंजस्य को बरकरार रखा है। और अल्लाह ही सफलता देने वाला है। (त)

दूसरा बिंदु: माँगना पूर्णतः अनिवार्य है, और यह हमारे तीनों इमामों (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से 'ज़ाहिर अल-रवाया' है। और यही वह है जिसका उल्लेख 'अल-मबसूत' के संदर्भ से किया गया है।

फुटनोट: 1. ग़ुनियत अल-मुस्तमली, तयम्मुम का अध्याय, मतबा अहमद कामिल, दार अल-सआदा, 1/32

पृष्ठ 54 का 761

فتاوی رضویہ ، جلد چہارم

شرح الاقطع والبدائع والخلاصة والفتح والاختیار والجوهرة کلهم ناصون بالخلاف بین الامام وصاحبیه والامام الاجل ابوبکر الجصاص یوفق بین قول الامام وصاحبیه وقال في البرهان شرح مواهب الرحمن الاظهر قولهما ثم ذکر توفیق الجصاص وایده بقوله ولهذا لم یحك الکافی خلافا اهـ نقله العلامة الشرنبلالی فی غنیة ذوی الاحکام کیف یرد قولهم جمیعا بمجرد ان فی المبسوط لم ینسب الخلاف الا الی الحسن الیس المثبتون وهم عصبة مقدمین علی ناف واحد الیس ان ظاهر (۱) الروایة ربما (۲) تتعدد فی مسألة واحدة وقولی هذا اولی من توفیق الغنیة المار فی عبارتها ان هؤلاء اعتبروا الروایة النادرة لکونها انسب بمذهب الامام فاعتبارها لهذا شیئی وجعلها قول الامام ونصب الخلاف بینه وبین صاحبیه في المذهب شیئی آخر وان (۳) اقره فی ردالمحتار ومنحة الخالق واللہ سبحنه الموفق۔

شرح اقطع، بدائع، خلاصہ، فتح، اختیار، جوہرہ سب کے سب اس پر نص کر رہے ہیں کہ امام اعظم اور صاحبین کے درمیان اختلاف ہے۔ اور امام اجل ابوبکر جصاص امام صاحب اور صاحبین کے قول میں تطبیق دے رہے تھے۔ اور برہان شرح مواہب الرحمن میں فرمایا: زیادہ ظاہر قول صاحبین ہے، پھر جصاص کی تطبیق ذکر کی ہے اور اپنے اس قول سے اس کی تائید کی ہے کہ اسی لئے "کافی" نے کسی اختلاف کی حکایت نہ کی اھ، اسے علامہ شرنبلالی نے غنیۃ ذوی الاحکام میں نقل کیا۔ ان تمام حضرات کا قول صرف اس وجہ سے کیسے رد کر دیا جائے گا کہ "مبسوط نے محض حسن کی طرف اختلاف کی نسبت کی ہے" کیا اثبات کرنے والے وہ طاقتور بھی ہیں ایک نفی کرنے والے پر مقدم نہیں؟ کیا ایسا نہیں کہ بارہا ایک مسئلہ میں ظاہر الروایہ متعدد بھی ہوتی ہے۔ میرا یہ قول (تعدد ظاہر الروایۃ) غنیہ کی اس تطبیق سے بہتر ہے جو اس کی عبارت میں گزری کہ "ان حضرات نے روایت نادرہ کا اعتبار کیا اس لئے کہ وہ مذہب امام سے زیادہ مناسبت رکھتی

ہے"۔ اس وجہ سے اس کا اعتبار کرنا اور چیز ہے۔ اور اسے امام کا قول قرار دینا اور ان کے اور صاحبین کے درمیان مذہب میں اختلاف قائم کرنا اور چیز ہے۔ اگر چہ غنیہ کی تطبیق کو علامہ شامی نے بھی ردالمحتار اور منحۃ الخالق میں برقرار رکھا ہے، اور خدائے پاک ہی توفیق بخشنے والا ہے۔ (ت)

وثانیھا: یجب مطلقا وانه ظاھر الروایة عن ائمتنا الثلثة رضی اللہ تعالی عنھم وذلك مامر عن المبسوط

مسلک دوم: مانگنا مطلقاً واجب ہے اور یہ کہ یہ ہمارے تینوں ائمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے ظاہر الروایہ ہے۔ اور یہی وہ ہے جو مبسوط کے حوالہ سے

۱ غنیة المستملی باب التیمم مطبع احمد کامل الکائنہ فی دار السعادة ۳۲/۱

Fatawa Razawiyyah, Volume 4

(Arabic Text/Urdu Translation): ...Passed. And in 'At-Tanweer', following his Sheikh, he relied on this and wrote: "He shall not perform tayammum before asking him, based on the manifest view" end quote. It is stated in 'Ad-Durr al-Mukhtar': "Manifest (Zahir) refers to 'Zahir ar-Riwayah' from our companions, because water is customarily given freely, and the fatwa is based on this" end quote (T).

(I say): I have not seen this specific phrasing with anyone else, nor have the commentators of 'Ad-Durr' attributed it to anyone. It is stated in 'At-Tabyin': "If he becomes aware of it outside of prayer and yet performs prayer with tayammum before asking, it does not suffice for him" end quote. Then they mentioned the narration of Hasan and then the reconciliation by Al-Jassas. In 'Jawahir al-Akhlati' it says: "His companion has water and he started praying before asking, it is not permissible. And it is said it is permissible based on the analogy of the Imam's view, contrary to the judge (Qadi)" end quote (T).

(I say): Here are some other phrases that are not as explicit, as previously mentioned from 'Al-Khulasah' via 'Al-Asl' that "he shall ask," for although the command form (imperative) manifest obligation (Wujub), it often comes to denote recommendation (Mandub) or preference (Mustahabb), as is not hidden from those who have served (studied) their words. Close to this are these phrases: (1) If water is with his companion, he should ask him before performing tayammum; if he refuses him, then he performs tayammum (end quote from Quduri). And also 'As-Sirajiyyah'.

Footnotes: 1. Ad-Durr al-Mukhtar, Chapter of Tayammum, Delhi Press, 1/44 2. Tabyin al-Haqa’iq, Chapter of Tayammum, Azhariyah Press, Egypt, 1/44 3. Jawahir al-Akhlati, Section on Tayammum (Manuscript), 1/31 4. Quduri, Chapter of Tayammum, Kanpur Press, p. 12

फ़तावा रज़विया, खंड 4

(अरबी पाठ/उर्दू अनुवाद): ...गुज़रा। और 'अत-तन्वीर' में अपने शेख का अनुसरण करते हुए उन्होंने इसी पर भरोसा किया और लिखा कि: "वह मांगने से पहले ज़ाहिर (स्पष्ट मत) के आधार पर तयम्मुम नहीं करेगा" अंत। 'अद-दुर्र अल-मुख्तार' में कहा गया है: "ज़ाहिर से मुराद हमारे साथियों से ज़ाहिर अर-रिवाया है, क्योंकि पानी आमतौर पर दिया जाता है, और इसी पर फतवा है" अंत (त)।

(मैं कहता हूँ): मैंने यह शब्द किसी और के यहाँ नहीं देखा, और न ही 'अद-दुर्र' के हाशिया-लेखकों ने इसे किसी का हवाला दिया। 'अत-तबीन' में है: "अगर नमाज़ के बाहर उसे इसका ज्ञान हो गया, फिर भी मांगने से पहले तयम्मुम से नमाज़ पढ़ ली, तो यह उसके लिए पर्याप्त नहीं हो सकता" अंत। फिर उन्होंने हसन की रिवायत और जस्सास का मिलान (ततबीक) ज़िक्र किया। 'जवाहर अल-अखलाती' में है: "उसके साथी के पास पानी है और मांगने से पहले नमाज़ शुरू कर दी, तो जायज़ नहीं। और कहा गया कि इमाम के कौल के कयास पर जायज़ है, ख़िलाफ़ काज़ी के" अंत (त)।

(मैं कहता हूँ): यहाँ कुछ और इबारतें भी हैं जो उतनी स्पष्ट नहीं हैं जैसा कि 'खुलासा' से बहवाला 'असल' गुज़रा कि "वह मांगेगा," इसलिए कि ख़बर का सीगा (वाक्य रूप) यद्यपि वजूब (अनिवार्यता) में ज़ाहिर है, लेकिन मन्दूब व इस्तेहबाब (सिफारिश) के लिए भी कसरत से आता है, जैसा कि उलमा के शब्दों की सेवा करने वालों पर छिपा नहीं। इससे करीब ये इबारतें भी हैं: (१) अगर उसके साथी के पास पानी हो तो तयम्मुम करने से पहले उससे (मांगे, अगर वह उसे मना कर दे तो तयम्मुम करे - कुदूरी)। और 'सिराजिया' में भी।

पाद-टिप्पणियाँ: 1. अद-दुर्र अल-मुख्तार, बाब अत-तयम्मुम, मतबा दिल्ली, १/४४ 2. तबीन अल-हक़ायक़, बाब अत-तयम्मुम, मतबा अल-अज़हरिया, मिस्र, १/४४ 3. जवाहर अल-अखलाती, फ़स्ल फ़ी अत-तयम्मुम (क़लमी नुस्खा), १/३१ 4. कुदूरी, बाब अत-तयम्मुम, मतबा कानपुर, पृ. १२

पृष्ठ ७६१ में से ५५

فتاوی رضویہ جلد چہارم

گزرا۔ اور تنویر میں اپنے شیخ کا اتباع کرتے ہوئے اسی پر اعتماد کیا تو یہ لکھا کہ "اس سے مانگنے سے پہلے ظاہر کی بنیاد پر تیمم نہیں کرے گا" اھ در مختار میں فرمایا: "ظاہر سے مراد ہمارے اصحاب سے ظاہر الروایہ، اس لئے کہ پانی عادتاً دیا جاتا ہے اور اسی پر فتویٰ ہے" اھ (ت)

اقول: یہ لفظ میں نے کسی اور کے یہاں نہ دیکھا، اور نہ ہی در مختار کے محشی حضرات نے اس پر کسی کا حوالہ دیا۔ تبیین میں ہے: اگر خارج نماز اسے اس کا علم ہو گیا پھر بھی مانگنے سے پہلے تیمم سے نماز پڑھ لی تو یہ اس کیلئے کفایت نہیں کر سکتا" اھ پھر انہوں نے حسن کی روایت اور جصاص کی تطبیق ذکر کی۔

جواہر الاخلاطی میں ہے: "اس کے رفیق کے پاس پانی ہے اور مانگنے سے پہلے نماز شروع کر دی تو جائز نہیں اور کہا گیا کہ قولِ امام کے قیاس پر جائز ہے، بخلاف قاضی کے۔ اھ (ت)

اقول: یہاں کچھ اور عبارتیں بھی ہیں جو صریح نہیں جیسے خلاصہ سے بحوالہ اصل گزرا کہ "وہ مانگے گا" اس لئے کہ صیغہ خبر اگرچہ وجوب میں ظاہر ہے لیکن ندب و استحباب کے لئے بھی کثرت سے آتا ہے جیسا کہ کلماتِ علماء کے خدمت گزاروں پر مخفی نہیں۔ اس سے قریب یہ عبارتیں بھی ہیں (۱) اگر اس کے رفیق کے پاس پانی ہو تو تیمم کرنے سے پہلے اس سے (مانگے، اگر وہ اسے منع کر دے تو تیمم کرے - قدوری)۔ والسراجیۃ۔

حواشی: 1 در مختار، باب التیمم، مطبع دہلی، ۱/۴۴ 2 تبیین الحقائق باب التیمم مطبع الازہریۃ مصر ۱/۴۴ 3 جواہر الاخلاطی فصل فی التیمم (قلمی نسخہ) ۱/۳۱ 4 قدوری باب التیمم مطبع کان پور ص ۱۲

Fatawa Rizwia Volume 4

"If one finds water with his companion, he should ask him for it. If he does not give it, he should perform Tayammum and pray." - Al-Quduri. (2) "If one finds water with his companion, he should ask him; if he refuses, he should perform Tayammum and pray." - Al-Sirajia. (3) "He should seek water from his companion; if he does not give it, he should perform Tayammum." - Kanz al-Daqaiq. How can this imperative form be for obligation (wujub) when a similar statement is made in Al-Multaqa, yet their reliance is on the Imam's school of thought? Their text is: "If water is with his companion, he should seek it. If he refuses, he should perform Tayammum. And if he performs Tayammum before asking, it is valid." - (T)

Note: My statement here "obligatory absolutely" means that scholars mentioned it unconditionally (mursal) and did not restrict it as mentioned in the third opinion. This is because this is what occurs in the text of Al-Mabsut and those who followed it (i.e., it is unconditional, not restricted). Yes, Imam Sadr al-Shari'ah interpreted it as explicit generalization, as will be mentioned in the discussion of his rule along with its weakness, God willing. Near to this is what was previously cited from Al-Ghunya, regarding interpreting both the opinions of the Imam and his two companions as generalization until 'talfiq' becomes possible for him. It has already been stated that this is not a verified research. (T)

Third path: To base the matter on his conjecture; if he thinks the companion will give it, then asking becomes obligatory, and it is not permissible otherwise.

1. Fatawa Sirajia, Chapter on Tayammum, published by Naval Kishore, Lucknow, p. 12.
2. Kanz al-Daqaiq with al-Tabyin, Chapter on Tayammum, Al-Azhar Press, Bulaq, Egypt, 1/44.
3. Multaqa al-Abhur with Majma' al-Anhur, Chapter on Tayammum, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, 1/44.

फ़तावा रज़विया जिल्द 4

"यदि कोई अपने साथी के पास पानी पाए, तो उसे उससे मांगे। यदि वह न दे, तो तयम्मुम करे और नमाज़ पढ़े।" - अल-कुदूरी। (2) "अपने साथी के पास पानी पाए तो उससे मांगे, अगर न दे तो तयम्मुम करे और नमाज़ पढ़े।" - अल-सिराजिया। (3) "अपने साथी से पानी मांगे, अगर न दे तो तयम्मुम करे।" - कंज़ अल-दक़ाएक़। यह हुक्म अनिवार्यता (वुजूब) के लिए कैसे हो सकता है जबकि अल-मुल्तक़ा में भी वैसा ही कहा गया है, फिर भी उनका भरोसा इमाम के मज़हब पर है। उनकी इबारत यह है: "यदि उसके साथी के पास पानी हो तो उससे मांगे, अगर न दे तो तयम्मुम करे। और यदि मांगने से पहले ही तयम्मुम कर लिया तो भी हो गया।" - (त)

चेतावनी: यहाँ मेरे "मुलतक़न वाजिब" कहने से तात्पर्य यह है कि विद्वानों ने इसे बिना किसी शर्त के (मुर्सल) उल्लेख किया है और इसे उस शर्त के साथ नहीं जोड़ा है जो तीसरे मत में आ रही है। क्योंकि 'मबसूत' और उसके अनुयायियों के कलाम में यही स्थिति है (अर्थात यह मुर्सल है, मुकय्यद नहीं)। हाँ, इमाम सद्र अल-शरिया ने इसे स्पष्ट व्यापकता (तामीम) पर आधारित किया है, जैसा कि इंशा अल्लाह उनके नियम के ज़िक्र में उसकी कमज़ोरी के साथ आएगा। और इसके करीब वह भी है जो 'ग़ुनिया' से गुज़रा कि उन्होंने इमाम और उनके दोनों साथियों के कथनों को व्यापकता पर रखा यहाँ तक कि उनके लिए 'तल्फ़ीक़' की गुंजाइश निकल आई। वहाँ बताया जा चुका है कि यह शोधपूर्ण नहीं है। (त)

तीसरा तरीका: मामला उसके अनुमान (गुमान) पर निर्भर करना कि यदि उसे देने का अनुमान हो तो मांगना अनिवार्य है, अन्यथा अनुमति नहीं है।

1. फ़तावा सिराजिया, अध्याय तयम्मुम, नवल किशोर प्रेस लखनऊ, पृ. 12।
2. कंज़ अल-दक़ाएक़ म'अ अल-तबीन, अध्याय तयम्मुम, अल-अज़हरिया प्रेस, बुलाक़ मिस्र 1/44।
3. मुल्तक़ा अल-अब्हुर म'अ मजमा अल-अन्स्तूर, अध्याय तयम्मुम, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी 1/44।

पृष्ठ 56 का 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

اذا وجد مع رفیقه ماء فانه یسأله فان لم یعطه تیمم وصلی ۱ اھ۔ والکنز یطلبه من رفیقه فان منعه تیمم ۲ اھ کیف وقد قال مثله فی الملتقی واعتمد مذھب الامام وھذا نصه ان کان مع رفیقه ماء طلبه وان منعه تیمم وان تیمم قبل الطلب اجزأه ۳ اھ۔

طلب کرے اگر نہ دے تو تیمم کرے "اھ قدوری۔ (۲) "اپنے رفیق کے پاس پانی پائے تو اس سے مانگے اگر نہ دے تو تیمم کرے اور نماز پڑھے "اھ سراجیہ۔ (۳) "اپنے رفیق سے پانی طلب کرے اگر نہ دے تو تیمم کرے "اھ کنز الدقائق۔ یہ صیغہ ہاں وجوب کیلئے کیسے ہو سکتا ہے جب کہ ملتقی میں بھی اسی کے مثل فرمایا پھر بھی ان کا اعتماد مذہب امام پر ہے ، ان کی عبارت یہ ہے : "اگر اس کے رفیق کے پاس پانی ہو تو اس سے طلب کرے ، اگر نہ دے تو تیمم کرے اور اگر مانگنے سے پہلے تیمم کر لیا تو بھی ہو گیا۔" اھ (ت)

تنبیہ : میرے "مطلقاً واجب" کہنے سے مراد یہ ہے کہ علما نے اسے مرسل ذکر کیا ہے اور وہ قید نہیں لگائی ہے جو تیسرے قول میں آرہی ہے۔ اس لئے کہ مبسوط اور اس کے اتباع کے کلام میں یہی صورت واقع ہے (یعنی ارسال ہے تقیید نہیں)۔ ہاں امام صدر الشریعہ نے اسے صریح تعمیم پر محمول کیا ہے جیسا کہ ان کے قانون کے ذکر میں تضعیف کے ساتھ اس کا ذکر آرہا ہے ان شاء اللہ تعالٰی۔ اور اس سے قریب وہ بھی ہے جو غنیہ سے گزرا کہ انہوں نے امام اور صاحبین کے دونوں قولوں کو تعمیم پر رکھا یہاں تک کہ ان کیلئے تلفیق کی گنجائش نکل آئی وہاں گزر چکا کہ یہ تحقیق نہیں۔ (ت)

وثالثها: ادارة الامر علی ظنه فان ظن العطاء وجب الطلب ولم یجز مسلک سوم : معاملہ اس کے گمان پر دائر رکھنا کہ اگر اسے دینے کا گمان ہو تو مانگنا واجب ہے

۱ فتاوی سراجیہ باب التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ص ۱۲ ۲ کنز الدقائق مع التبیین باب التیمم المطبعة الازہریہ بولاق مصر ۱ / ۴۴ ۳ ملتقی الابحر مع مجمع الانہر باب التیمم داراحیاء التراث العربی ۱/ ۴۴

Fatawa Ridawiyya - Volume 4

[Arabic Text Section]: Tayammum before this [seeking water] was mentioned in the text of al-Nihayah, and texts from al-Bahr al-Muheet, al-Munyah, al-Khazanah, and al-Barjandi will follow. In al-Khaniyah and Khazanat al-Muftin, it is stated: "If someone sees water with his companion and strongly believes that if he asks for it, he will give it, it is not permissible for him to perform Tayammum; rather, he should ask for it." End quote. In al-Kafi: "If water is with his companion and he thinks that if he asks him, he will give it, Tayammum is not permissible. If he thinks that he will not give it, he may perform Tayammum. If he is in doubt, performs Tayammum, prays, and then asks and is given the water, he must repeat the prayer." End quote. In al-Hindiyyah, after citing the above: "And similarly in al-'Attabi's commentary on al-Ziyadat." End quote. In al-Barjandi, it is narrated from Qadi al-Imam Abu Zayd (may Allah have mercy on him) that seeking water is obligatory in a place where water is not scarce, but not in a place where it is scarce. End quote. In al-Munyah and Sharh Miskeen lil-Kanz, it is narrated from Abu Nasr al-Saffar (may Allah have mercy on him): "When in a place where water is scarce, it is better to ask one's companion, but if he does not ask, it [Tayammum] suffices him. If he is in a place where water is not scarce, it will not suffice him before seeking it." End quote. In al-Munyah, this addition was made: "And al-Shurunbulali relied on this in his text and commentary, saying: 'It is obligatory to seek it from whoever is with him.'"

[Urdu Text Section]: And performing Tayammum before this is not permissible. In this regard, the text of al-Nihayah has passed, and the texts of Bahr al-Muheet, Munyah, Khazanah, and Barjandi are coming. In Khaniyah and Khazanat al-Muftin, it is stated: "If one sees water with his companion and thinks that if asked, he will give it, then Tayammum is not permissible; rather, he should ask for it." End quote. And in al-Kafi, it is stated that if his companion has water and he believes that if asked, he will give it, then Tayammum is not permissible, and if he believes that he will not give it, he may perform Tayammum. If he has doubt and performs Tayammum and prays, then asks and is given water, he must repeat the prayer. End quote. In al-Hindiyyah, after quoting the above text, it is written: "Similarly, it is in al-'Attabi's commentary on al-Ziyadat." End quote. In Barjandi, it is narrated from Qadi Imam Abu Zayd (may Allah have mercy on him) that "Asking is obligatory in such a place where water is not scarce, not in a place where it is scarce." End quote. In Munyah and Sharh Miskeen lil-Kanz, it is stated from Abu Nasr al-Saffar that when in a place where water is scarce, it is better to ask one's companion, and if he did not ask, it will suffice him. If he is in

a place where water is not scarce, it will not suffice him before asking. End quote. In Munyah, this was added:

[Footnotes]: 1. Fatawa Qadi Khan, Chapter on what makes Tayammum permissible, printed by Naval Kishore, Lucknow, 1/26. 2. Fatawa Hindiyyah with reference to al-Kafi, Chapter One on Tayammum, printed by Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/29. 3. Fatawa Hindiyyah with reference to al-Kafi, Chapter One on Tayammum, printed by Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/29. 4. Sharh al-Wiqayah by al-Barjandi, Chapter on Tayammum, printed by Naval Kishore, Lucknow, 1/48. 5. Sharh Miskeen lil-Kanz with the marginal notes of Fath al-Mu'in, Chapter on Tayammum, Saeed Company, Karachi, 1/79. 6. Munyat al-Musalli, Chapter on Tayammum, Maktaba Qadriah, Jamia Nizamia, Lahore, 50.

फ़तावा रज़विया - जिल्द चौथा

[अरबी पाठ अनुभाग]: इससे पहले तयम्मुम के बारे में निहाया के पाठ में उल्लेख किया गया है, और अल-बह्र अल-मुहीत, अल-मुन्या, अल-खज़ाना और अल-बरजंदी के पाठ आगे आएंगे। अल-खनियाह और खज़ानत अल-मुफ़्तीं में है: "यदि कोई अपने साथी के पास पानी देखता है और उसे प्रबल विश्वास है कि यदि वह मांगेगा तो वह दे देगा, तो उसके लिए तयम्मुम करना जायज़ नहीं है; बल्कि उसे मांगना चाहिए।" अंत। और अल-काफ़ी में है: "यदि उसके साथी के पास पानी है और उसे लगता है कि यदि वह उससे मांगेगा तो वह दे देगा, तो तयम्मुम जायज़ नहीं है। यदि उसे लगता है कि वह नहीं देगा, तो वह तयम्मुम कर सकता है। यदि उसे संदेह है, तयम्मुम करता है, नमाज़ पढ़ता है और फिर मांगता है और पानी मिल जाता है, तो उसे नमाज़ दोहरानी होगी।" अंत। अल-हिन्दिया में उपरोक्त उद्धरण के बाद लिखा है: "और इसी तरह अल-अत्ताबी की शर्ह अल-ज़ियादात में है।" अंत। अल-बरजंदी में काज़ी अल-इमाम अबू ज़ैद (अल्लाह उन पर रहम करे) से वर्णित है कि पानी मांगना ऐसी जगह अनिवार्य है जहाँ पानी की कमी न हो, न कि ऐसी जगह जहाँ पानी दुर्लभ हो। अंत। अल-मुन्या और शर्ह मिस्कीन लिल-कन्ज़ में अबू नसर अल-सफ़्फ़ार (अल्लाह उन पर रहम करे) से है: "जब ऐसी जगह हो जहाँ पानी की कमी हो, तो अपने साथी से मांगना बेहतर है, लेकिन अगर उसने नहीं माँगा, तो यह (तयम्मुम) उसके लिए पर्याप्त होगा। यदि वह ऐसी जगह है जहाँ पानी की कमी नहीं है, तो मांगने से पहले यह उसके लिए पर्याप्त नहीं होगा।" अंत। अल-मुन्या में यह जोड़ा गया: "और अल-शुरुनबुलाली ने अपने मूल पाठ और व्याख्या में इस पर भरोसा किया और कहा: 'जो उसके साथ है उससे मांगना अनिवार्य है।'"

[उर्दू पाठ अनुभाग]: और इससे पहले तयम्मुम जायज़ नहीं है। इस संबंध में निहाया का पाठ गुजर चुका है, और बह्र अल-मुहीत, मुन्या, खज़ाना और बरजंदी के पाठ आ रहे हैं। खनियाह और खज़ानत अल-मुफ़्तीं में कहा गया है: "यदि कोई अपने साथी के पास पानी देखता है और सोचता है कि अगर वह मांगेगा तो वह दे देगा, तो तयम्मुम जायज़ नहीं है; बल्कि उसे मांगना चाहिए।" अंत। और अल-काफ़ी में कहा गया है कि यदि उसके साथी के पास पानी है और वह मानता है कि मांगे जाने पर वह दे देगा, तो तयम्मुम जायज़ नहीं है, और यदि वह मानता है कि वह नहीं देगा, तो वह तयम्मुम कर सकता है। यदि उसे संदेह है और वह तयम्मुम करता है और नमाज़ पढ़ता है, फिर मांगता है और पानी मिल जाता है, तो उसे नमाज़ दोहरानी होगी। अंत। अल-हिन्दिया में उपरोक्त पाठ को उद्धृत करने के बाद लिखा है: "इसी तरह यह अल-अत्ताबी की शर्ह अल-ज़ियादात में है।" अंत। बरजंदी में

काज़ी इमाम अबू ज़ैद (अल्लाह उन पर रहम करे) से वर्णित है कि "मांगना ऐसी जगह अनिवार्य है जहाँ पानी दुर्लभ न हो, न कि ऐसी जगह जहाँ वह दुर्लभ हो।" अंत। मुन्या और शर्ह मिस्कीन लिल-कन्ज़ में अबू नसर अल-सफ़्फ़ार से कहा गया है कि जब ऐसी जगह हो जहाँ पानी दुर्लभ हो, तो अपने साथी से मांगना बेहतर है, और यदि उसने नहीं माँगा, तो यह उसके लिए पर्याप्त होगा। यदि वह ऐसी जगह है जहाँ पानी दुर्लभ नहीं है, तो मांगने से पहले यह उसके लिए पर्याप्त नहीं होगा। अंत। मुन्या में यह जोड़ा गया:

[पाद टिप्पणियाँ]: 1. फ़तावा काज़ी खान, तयम्मुम के जायज़ होने के अध्याय में, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, 1/26। 2. फ़तावा हिन्दिया अल-काफ़ी के संदर्भ में, तयम्मुम का पहला अध्याय, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 1/29। 3. फ़तावा हिन्दिया अल-काफ़ी के संदर्भ में, तयम्मुम का पहला अध्याय, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 1/29। 4. शर्ह अल-विकाया अल-बरजंदी द्वारा, तयम्मुम का अध्याय, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, 1/48। 5. शर्ह मिस्कीन लिल-कन्ज़ हाश्या फ़तह अल-मुईन के साथ, तयम्मुम का अध्याय, सईद कंपनी, कराची, 1/79। 6. मुन्यत अल-मुसल्ली, तयम्मुम का अध्याय, मकतबा कादरिया, जामिया निज़ामिया, लाहौर, 50।

[عربی متن]: التیمم قبله تقدم فیه نص النهایة وستأتی نصوص البحر المحیط والمنیة والخزانة والبرجندی وفی الخانیة وخزانة المفتین رأی مع رفیقه ماء ان کان غالب ظنه انه یطیه لا یجوز له ان یتیمم بل یسأله اهـ وفی الکافی مع رفیقه ماء وظن انه ان سأله اعطاه لم یجز التیمم وان کان عنده انه لا یعطیه تیمم وان شك وتیمم وصلی فسأل فاعطی یعید اهـ وفی الهندیة بعد نقله وهکذا في شرح الزیادات للعتابی اهـ وفی البرجندی نقل عن القاضي الامام ابی زید رحمه الله تعالی انه یجب الطلب في موضع لا یعز الماء فیه لافی موضع یعز اهـ وفی المنیة وشرح مسکین للکنز وعن ابي نصر الصفار رحمه الله تعالی اذا کان في موضع یعز فیه الماء فالافضل ان یسأل من رفیقه وان لم یسأل اجزأه فان کان في موضع لا یعز الماء فیه لا یجزئه قبل الطلب اهـ زاد فی المنیة کما في عمران ات واعتمدة الشرنبلالی فی متنه وشرحه فقال یجب طلبه ممن هو معه.

[اردو ترجمہ و تشریح]: اور اس سے پہلے تیمم جائز نہیں۔ اس بارے میں نہایہ کی عبارت گزر چکی اور بحر محیط، منیہ، خزانہ اور برجندی کی عبارتیں آ رہی ہیں۔ خانیہ اور خزانہ المفتین میں ہے: "اپنے رفیق کے پاس پانی دیکھا اور گمان کیا کہ اگر اس سے مانگے تو دے دے گا تو تیمم جائز نہیں بلکہ اس سے طلب کرے" اھ اور کافی میں ہے اگر اس کے رفیق کے پاس پانی ہو اور اسے گمان ہو کہ اگر طلب کرے تو دے دے گا تو تیمم جائز نہیں اور اگر اس کے گمان میں یہ ہو کہ نہیں دے گا تو تیمم کرے اور اگر شک رکھتا ہو اور تیمم کر کے نماز پڑھ لے پھر مانگے اور وہ دے دے تو اعادہ کرے "اھ ہندیہ میں مذکورہ بالا عبارت نقل کرنے کے بعد لکھا ہے: "اسی طرح عتابی کی شرح زیادات میں ہے "اھ ۔ برجندی میں قاضی امام ابوزید رحمہ اللہ تعالی سے نقل ہے کہ " مانگنا ایسی جگہ واجب ہے جہاں پانی کمیاب نہ ہو ایسی جگہ نہیں جہاں کمیاب ہو" اھ ۔

منیہ اور شرح مسکین للکنز میں ہے کہ ابو نصر صفار سے ہے کہ جب ایسی جگہ ہو جہاں پانی کم یاب ہو تو بہتر یہ ہے کہ اپنے رفیق سے طلب کرے اور اگر طلب نہ کیا تو یہ اس کو کفایت کرے گا اور اگر وہ ایسی جگہ ہو جہاں پانی کمیاب نہیں ہوتا تو طلب سے پہلے اسے کفایت نہیں کرے گا اھ منیہ میں یہ اضافہ کیا:

[حواشی]: 1. فتاویٰ قاضی خان فصل فیما یجوز لہ التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنو ۱ / ۲۶ 2. فتاویٰ ہندیۃ بحوالہ الکافی الفصل الاول من التیمم مطبوعہ نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۲۹ 3. فتاویٰ ہندیۃ بحوالہ الکافی الفصل الاول من التیمم مطبوعہ نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۲۹ 4. شرح الوقایۃ للبر جندی فصل فی التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنو ۱ / ۴۸ 5. شرح مسکین للکنز علی حاشیۃ فتح المعین فصل فی التیمم سعید کمپنی کراچی ۱ / ۷۹ 6. منیتہ المصلی فصل فی التیمم مکتبہ قادریہ جامعہ نظامیہ لاہور ۵۰

Fatawa Razawiyya, Volume 4

(Left Column - Arabic Context) Because it is customarily given, so there is no humiliation in requesting it if it is in a place where people are not stingy with it. Ah. Among them are the expressions we presented in the third and fourth issues from az-Ziyadat, Muhit as-Sarakhsi, al-Khaniyah, al-Khulasah, al-Bazzaziyah, Sadr ash-Shari'ah, al-Bahr, and al-Hindiyah explicitly, and Jami' al-Karkhi, al-Bada'i, and al-Hilyah conceptually, from the command to break the prayer when expecting it to be given. For it necessitates obligation, because if it were not so, breaking it would not be permissible. Opposite to it is the absolute text of al-Khaniyah and Khizanat al-Muftin: "He began with dry ablution (tayammum), then a person came with water, he should continue in his prayer." Ah.

I say: And you have known that they shoot from one bow, which is the obligation of seeking [water] where it is likely to be given, and not otherwise. The difference only arose from the disagreement over whether water is customarily given during travel like in cities or not. So whoever said yes, said it is absolutely obligatory. And whoever said no, said it is not. And whoever made a distinction, made a distinction, so no difference remained in the outcome.

Note: As is benefited from what we presented about the establishment of the obligation to break [prayer] in the third issue. 12 [dated] from him, may God forgive him. (M)

(Right Column - Urdu Translation) "Like in settlements" Ah. And Shurunbulali relied on this in his text and commentary, saying: "It is obligatory for him to ask his companion, because water is customarily given, so there is no humiliation in asking for it if it is in a place where stinginess regarding water is not found in people's temperaments." Ah. Among them are also those expressions which we previously stated explicitly from the references of Ziyadat, Muhit Sarakhsi, Khaniyah, Khulasah, Bazzaziyah, Sadr ash-Shari'ah, Bahr and Hindiyah, and conceptually from the references of Jami' Karkhi, Bada'i and Hilyah, that there is a command to break the prayer at the time of expecting a gift [of water], because this necessitates the obligation of asking, since if there were no obligation, breaking the prayer would not be permissible. Against these expressions is this expression of Khaniyah and Khizanat-ul-Muftin: "Started prayer with tayammum then someone came who has water, so he should keep praying" Ah (T)

I say: It has become known that all these gentlemen are shooting from the same bow. That is, it is obligatory to ask in a place where there is an expectation of gift, not elsewhere. The disagreement only arose from the difference of opinion whether water is customarily given in travel as well, like in stay (hadar), or not? Those who said yes, became proponents of absolute obligation. And those who said no, are not proponents of obligation, and...

As is derived from this discourse on the obligation of breaking [prayer] which we presented in the third issue. 12 [dated] from him, may God forgive him. (T)

---

1. Maraqi al-Falah with Hashiyah at-Tahawi, al-Azhariyah Press, Egypt, p. 71.
2. Fatawa Khaniyah, Chapter on what makes tayammum permissible, Naval Kishore Press, Lucknow, 1/27.

फ़तावा रज़विया, खंड 4

(बायाँ कॉलम - अरबी संदर्भ) क्योंकि यह आमतौर पर दिया जाता है, इसलिए इसे मांगने में कोई अपमान नहीं है यदि यह ऐसी जगह पर हो जहाँ लोग इसके प्रति कंजूस न हों। अह। इनमें वे अभिव्यक्तियाँ भी शामिल हैं जिन्हें हमने तीसरे और चौथे मसले में 'अज़-ज़ियादात', 'मुहीत अस-सरखसी', 'अल-खनिया', 'अल-खुलासा', 'अल-बज़्ज़ाज़िया', 'सद्र अश-शरिया', 'अल-बहर' और 'अल-हिंदिया' से स्पष्ट रूप से, और 'जामि अल-करखी', 'अल-बदाए' और 'अल-हिलिया' से वैचारिक रूप से प्रस्तुत किया था, जो पानी मिलने की उम्मीद होने पर नमाज़ तोड़ने के आदेश से संबंधित हैं। क्योंकि यह अनिवार्यता (वजुब) को लागू करता है, क्योंकि यदि ऐसा न होता तो नमाज़ तोड़ना जायज़ न होता। इसके विपरीत 'अल-खनिया' और 'खिज़ानतुल मुफ़्तीन' का निरपेक्ष पाठ है: "उसने तयम्मुम के साथ नमाज़ शुरू की, फिर कोई व्यक्ति पानी लेकर आया, तो वह अपनी नमाज़ जारी रखे।" अह।

मैं कहता हूँ: और आप जान चुके हैं कि वे सभी एक ही कमान से तीर चला रहे हैं, और वह यह है कि जहाँ पानी मिलने की संभावना हो वहाँ उसे मांगना वाजिब है, अन्यथा नहीं। मतभेद केवल इस बात के अंतर से पैदा हुआ कि क्या सफ़र में भी पानी आमतौर पर वैसे ही दिया जाता है जैसे आबादी (हज़र) में, या नहीं? जिन्होंने कहा हाँ, वे पूर्ण रूप से वाजिब होने के कायल हुए। और जिन्होंने कहा नहीं, वे वाजिब के कायल नहीं हुए, और...

नोट: जैसा कि नमाज़ तोड़ने की अनिवार्यता की उस व्याख्या से लाभ उठाया जाता है जिसे हमने तीसरे मसले में पेश किया है। 12 [दिनांक] उनकी ओर से, ईश्वर उन्हें क्षमा करे। (म)

(दायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद) "जैसे बस्तियों में" अह। और शुरुनबुलाली ने अपने मूल पाठ और व्याख्या में इसी पर भरोसा करते हुए कहा: "उसके लिए अपने साथी से मांगना वाजिब है क्योंकि पानी आमतौर पर दिया जाता है, इसलिए इसे मांगने में कोई अपमान नहीं है यदि वह ऐसी जगह हो जहाँ पानी के मामले में लोगों के स्वभाव में कंजूसी नहीं पाई जाती"। अह। उन्हीं में से वे इबारतें (अभिव्यक्तियाँ) भी हैं जो पहले हमने तीसरे और चौथे मसले में ज़ियादात, मुहीत सरखसी, खनिया, खुलासा, बज़्ज़ाज़िया, सद्रुश शरिया, बहर और हिंदिया के हवालों से स्पष्ट रूप से और जामि करखी, बदाए और हिलिया के हवालों से मफ़हूमन (वैचारिक रूप से) बयान कीं कि पानी मिलने के गुमान के समय नमाज़ तोड़ने का हुक्म है, क्योंकि यह हुक्म मांगने के वजुब (अनिवार्यता) को लाज़िम करता है क्योंकि अगर वजुब न होता तो नमाज़ तोड़ना जायज़ न होता। इन इबारतों के मुक़ाबले में खनिया

और खिज़ानतुल मुफ़्तीन की यह इबारत है: "तयम्मुम से नमाज़ शुरू की फिर कोई आदमी आया जिसके पास पानी है तो वह नमाज़ पढ़ता रहे" अह (त)

मैं कहता हूँ: मालूम हो चुका कि सभी हज़रात एक ही कमान से तीर चला रहे हैं। वह यह कि ज़न्ने अता (पानी मिलने की उम्मीद) की जगह मांगना वाजिब है दूसरी जगह नहीं। खिलाफ (मतभेद) सिर्फ इस बारे में इख़्तलाफ़ से पैदा हुआ कि क्या पानी सफ़र में भी हज़र की तरह आमतौर पर दिया जाता है या ऐसा नहीं? जिन्होंने कहा हाँ, वे मुतलक़न (पूर्ण रूप से) वजुब के क़ायल हुए। और जिन्होंने कहा नहीं, वे वजुब के क़ायल नहीं, और...

जैसा कि वजुब-ए-क़तअ (नमाज़ तोड़ने की अनिवार्यता) की इस तक़रीर (लेख) से मुस्तफ़ाद (प्राप्त) होता है जो हमने मसला सोम (तीसरे मसले) में पेश की। 12मिन्हु गफ़र लहु (त)

---

1. मराक़ी अल-फ़लाह मय हाशियह अत-तहावी, अल-अज़हरिया प्रेस, मिस्र, पृ. 71।
2. फ़तावा खनिया, तयम्मुम के जायज़ होने का अध्याय, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, 1/27।

पृष्ठ 58/761

فتاویٰ رضویہ، جلد چہارم

(بایاں کالم - عربی عبارت کا ترجمہ) کیونکہ یہ عام طور پر دیا جاتا ہے، لہٰذا اس کے طلب کرنے میں کوئی ذلت نہیں اگر وہ ایسی جگہ ہو جہاں لوگ اس میں بخل نہ کرتے ہوں۔ اھ اور انہی میں سے وہ عبارتیں ہیں جو ہم نے تیسرے اور چوتھے مسئلہ میں زیادات، محیط سرخسی، خانیہ، خلاصہ، بزازیہ، صدر الشریعہ، البحر اور الہندیہ سے صراحۃً، اور جامع الکرخی، البدائع اور الحلیہ سے مفہوماً پیش کیں، جو نماز توڑنے کے حکم سے متعلق ہیں جب پانی ملنے کا گمان ہو۔ کیونکہ یہ وجوب کا تقاضا کرتا ہے، اس لئے کہ اگر وجوب نہ ہوتا تو نماز توڑنا جائز نہ ہوتا۔ اور ان کے مقابلے میں خانیہ اور خزانہ المفتین کی مطلق عبارت ہے کہ: "تیمم کے ساتھ نماز شروع کی پھر ایک شخص پانی لے کر آیا تو وہ اپنی نماز جاری رکھے۔" اھ

اقول: اور تم جان چکے کہ یہ سب ایک ہی رخ پر ہیں، اور وہ یہ کہ جہاں پانی ملنے کا گمان ہو وہاں طلب کرنا واجب ہے، نہ کہ اس کے علاوہ۔ اور اختلاف صرف اس بات میں فرق سے پیدا ہوا کہ کیا پانی سفر میں بھی حضر کی طرح عام طور پر دیا جاتا ہے یا نہیں؟ تو جس نے کہا ہاں، وہ مطلقاً وجوب کا قائل ہوا۔ اور جس نے کہا نہیں، اس نے وجوب کی نفی کی، اور جس نے تفصیل کی اس نے تفصیل کی۔ لہٰذا حاصل کلام میں کوئی فرق نہ رہا۔

عہ: جیسا کہ اس تقریر سے فائدہ حاصل ہوتا ہے جو ہم نے مسئلہ سوم میں وجوبِ قطع کے متعلق پیش کی ۱۲منہ غفر لہ (م)

(دایاں کالم - اردو اصل) "جیسے آبادیوں میں" اھ اور شرنبلالی نے اپنے متن وشرح میں اسی پر اعتماد کرتے ہوئے فرمایا: "اسے اپنے ساتھی سے مانگنا واجب ہے اس لئے کہ پانی عادۃً دیا جاتا

ہے تو اسے مانگنے میں کوئی ذلت نہیں اگر ایسی جگہ ہو جہاں پانی کے معاملہ میں طبیعتوں میں بخل نہیں پایا جاتا"۔ اھـ ان ہی میں سے وہ عبارتیں بھی ہیں جو پہلے ہم نے تیسرے اور چوتھے مسئلہ میں زیادات، محیط سرخسی، خانیہ، خلاصہ، بزازیہ، صدر الشریعہ، بحر اور ہندیہ کے حوالوں سے صراحۃً اور جامع کرخی، بدائع اور حلیہ کے حوالوں سے مفہوماً بیان کیں کہ ظنِ عطا کے وقت نماز توڑنے کا حکم ہے، اس لئے کہ یہ حکم مانگنے کا وجوب لازم کرتا ہے کیونکہ اگر وجوب نہ ہوتا تو نماز توڑنا جائز نہ ہوتا۔ ان عبارتوں کے مقابلہ میں خانیہ اور خزانۃ المفتین کی یہ عبارت ہے: "تیمم سے نماز شروع کی پھر کوئی آدمی آیا جس کے پاس پانی ہے تو وہ نماز پڑھتا رہے" اھـ (ت)

اقول: معلوم ہو چکا کہ سبھی حضرات ایک ہی کمان سے تیر چلارہے ہیں۔ وہ یہ ظنِ عطا کی جگہ مانگنا واجب ہے دوسری جگہ نہیں۔ خلاف صرف اس بارے میں اختلاف سے پیدا ہوا کہ کیا پانی سفر میں بھی حضر کی طرح عادۃً دیا جاتا ہے یا ایسا نہیں؟ جنہوں نے کہا ہاں، وہ مطلقاً وجوب کے قائل ہوئے۔ اور جنہوں نے کہا نہیں، وہ وجوب کے قائل نہیں، اور

جیسا کہ وجوبِ قطع کی اس تقریر سے مستفاد ہوتا ہے جو ہم نے مسئلہ سوم میں پیش کی ۱۲منہ غفرلہ (ت)

---

1 مراقی الفلاح مع حاشیۃ الطحاوی مطبعۃ الازھریۃ مصر ص ۷۱ 2 فتاوٰی خانیہ فصل فیما یجوز لہ التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنو ۱/ ۲۷

...towards correctness, except for the unraveling of the knot of this basis. Those who detailed it relied on the places of suspicion, which is the clear path. As for those who affirmed it, they looked at the condition of residence (Hadr) and travel in places with water sources and drinking water. And as for those who denied it, they looked at the condition of travel in places with little water and scarcity of purifying water.

And I say: And with Allah is the guidance; what is usually given is only drinking water, especially in residence. As for purifying water, especially for bathing (Ghusl), many people even in residence are stingy with it towards strangers, fearing that what they have will run out and they will then need the water carrier (saqqa) to come or they will have to face the hardship of drawing water themselves. In fact, even if one of them were at the head of a well and a stranger or wayfarer asked him for water for bathing, or even for ablution (Wudu), he would say: "Do you not have hands? Are you not at the well?" This is the state in residence, so how would it be during travel?

Furthermore, dry ablution (Tayammum) is not permissible except when water is a mile away. We know for certain that a resident in his city would preserve water just as he preserves food if the water were at such a distance from him. So how about one who is on a journey? For stinginess is the prevalent state, and...

...सत्य की ओर, सिवाय इस आधार की गाँठ को सुलझाने के। जिन लोगों ने इसका विस्तार किया, उन्होंने अनुमान के स्थानों पर भरोसा किया, जो स्पष्ट मार्ग है। जहाँ तक इसे सिद्ध करने वालों की बात है, उन्होंने उन स्थानों पर निवास और यात्रा की स्थिति को देखा जहाँ जल स्रोत और पीने का पानी उपलब्ध था। और जहाँ तक इसे नकारने वालों की बात है, उन्होंने उन स्थानों पर यात्रा की स्थिति को देखा जहाँ पानी कम था और शुद्ध करने वाले जल की कमी थी।

और मैं कहता हूँ: और अल्लाह ही से तौफ़ीक़ है; जो आमतौर पर दिया जाता है वह केवल पीने का पानी है, विशेष रूप से निवास (हज़र) के दौरान। जहाँ तक शुद्धि के जल की बात है, विशेष रूप से स्नान (ग़ुस्ल) के लिए, तो बहुत से लोग निवास के दौरान भी अजनबियों के प्रति कंजूसी करते हैं, इस डर से कि उनके पास जो पानी है वह खत्म हो जाएगा और फिर उन्हें मशक से पानी भरने वाले (बहिश्ती) के आने तक ज़हमत उठानी पड़ेगी या खुद पानी खींचने का कष्ट उठाना पड़ेगा। बल्कि अगर उनमें से कोई किसी कुएं पर ही हो और कोई अजनबी या मुसाफिर उससे स्नान, यहाँ तक कि वज़ू के लिए भी पानी मांगे, तो वह कहेगा: "क्या तुम्हारे हाथ नहीं हैं? क्या तुम्हारे सामने कुआँ नहीं है?" यह तो निवास का हाल है, फिर यात्रा का क्या हाल होगा?

फिर यह देखिए कि तयम्मुम की अनुमति कब होती है? जब पानी एक मील की दूरी पर हो। और हम निश्चित रूप से जानते हैं कि जब पानी इतनी दूरी पर होगा, तो शहर में रहने वाला निवासी पानी की रक्षा वैसे ही करेगा जैसे वह भोजन की रक्षा करता है। फिर उसका क्या हाल होगा जो यात्रा पर है? क्योंकि कंजूसी ही प्रबल स्थिति है, और...

पेज 59/761

جنہوں نے اس میں تفصیل کی، اس میں بھی تفصیل کی تو صواب اور درستی تک رسائی کی راہ میں صرف اس مبنی کی گرہ کشائی حاصل رہی۔ تفصیل کرنے والوں نے ظن کی جگہوں پر اعتماد کیا۔ یہ صاف راستہ ہے۔ اور اثبات کرنے والوں نے حضر اور پنکھٹ اور پینے کے پانی والی جگہوں میں سفر کی حالت پر نظر کی۔ اور نفی کرنے والوں نے کم پانی والی اور آب طہارت کی قلت والی جگہوں میں سفر کی حالت پر نظر کی۔ (ت)

اور میں کہتا ہوں: اور خدا ہی سے توفیق ہے۔ جو عادۃً دیا جاتا ہے وہ صرف پینے کا پانی ہے، خصوصاً حضر میں رہا طہارت خصوصاً غسل کا پانی تو اس میں بہت سے لوگ حضر میں بھی اجنبی لوگوں پر بخل کرتے ہیں اس اندیشہ سے کہ ان کا پانی ختم ہوجائے گا تو انہیں بہشتی کے آنے تک زحمت و مشقت ہوگی یا خود پانی کھینچنے کی زحمت اٹھانے کی ضرورت ہوگی بلکہ اگر کوئی شخص کسی کنویں ہی پر ہو اور اس سے کوئی مسافر یا راہ گیر اس کا پانی غسل بلکہ وضو کیلئے بھی مانگے تو وہ کہے گا کیا تمہارے پاس ہاتھ نہیں؟ کیا تمہارے سامنے کنواں نہیں؟ یہ تو حضر کا حال ہے پھر سفر کا کیا حال ہوگا؟ (ت)

پھر یہ دیکھئے کہ تیمم کا جواز کب ہوتا ہے؟ جب پانی ایک میل دوری پر ہو اور یہ ہمیں قطعاً معلوم ہے کہ جب پانی اس قدر دور ہوگا تو مقیم اپنے شہر میں پانی کی ویسے ہی حفاظت رکھے گا جیسے کھانے کی حفاظت رکھتا ہے پھر اس کا کیا ہوگا جو سفر میں

Fatawa Rizwia Volume 4

...be? Then, during travel, there will mostly be stinginess. And in travel, there is no place for water to be offered except in a few select instances; for example, (1) the owner of the water is his descendant, (2) or his full brother, (3) or a friend, (4) or an employee, (5) or a subject, (6) or he fears him, (7) or he has some interest in him that he wishes to act upon, (8) or he knows that this person is not stingy, low-spirited, or an opponent, and he has enough water that if he gives me some of it, enough will remain for him to reach home while fulfilling his needs without any deficiency or parsimony, (9) or he is disabled, or for example, his hand is paralyzed and he is at the wellhead, (10) or he knows that he is noble-souled and feels bashful about refusing a seeker, especially if he is among those who prefer others over themselves even if they are in severe need. Thus, in such instances, his assumption of a gift, which is considered in Sharia, will be correct; this is the predominant thought (Ghalib Guman) which is joined with certainty in practice, not the weak thought that is included in doubt. Undoubtedly, these instances are much fewer and smaller than other instances. Then how can it be said that water for purification is customarily given? Rather, it is mostly characterized by stinginess. Yes, the scarcity of these instances has not reached the limit of rarity such that it would be necessary to completely disregard them and link the ruling to the place of assumption. Therefore, it became necessary to keep the matter revolving around his own assumption, as he knows his own state better; so for the scarcity of water...

फतावा रज़विया जिल्द चौथी

...होगा? तो यात्रा में अधिकतर कंजूसी ही होगी। और यात्रा में पानी मिलने का कोई अवसर नहीं है सिवाय कुछ गिनी-चुनी स्थितियों के, उदाहरण के लिए: (1) पानी का मालिक उसकी संतान हो, (2) या उसका सगा भाई हो, (3) या मित्र हो, (4) या कर्मचारी हो, (5) या उसकी प्रजा हो, (6) या वह उससे डरता हो, (7) या उसे उससे कोई स्वार्थ हो जिसे वह पूरा करना चाहता हो, (8) या जानता हो कि यह व्यक्ति कंजूस, नीच स्वभाव का या विरोधी नहीं है और उसके पास इतना पानी है कि यदि वह मुझे उसमें से कुछ दे दे, तो उसके पास इतना पर्याप्त बच जाएगा जिससे वह अपनी आवश्यकताओं को बिना किसी कमी या कोताही के पूरा करते हुए घर पहुँच जाएगा, (9) या वह अपाहिज हो या मान लीजिए कि उसका हाथ सुन्न हो और वह कुएँ पर हो, (10) या वह जानता हो कि वह नेक दिल (सज्जन) है और मांगने वाले को मना करने में संकोच करता है, विशेषकर यदि वह उन लोगों में से हो जो दूसरों को स्वयं पर वरीयता देते हैं चाहे वे स्वयं भारी अभाव में ही क्यों न हों। तो ऐसी स्थितियों में दान मिलने का उसका अनुमान, जिसका शरीयत में महत्व है, सही होगा और यह एक प्रबल धारणा (ग़ालिब गुमान) है जो व्यवहार में निश्चितता से जुड़ी है, न कि वह कमज़ोर धारणा जो संदेह का हिस्सा है। निस्संदेह ये स्थितियाँ अन्य स्थितियों की तुलना में बहुत कम और नगण्य हैं। फिर यह कैसे कहा जा सकता है कि पवित्रता के लिए जल सामान्यतः दिया जाता है? बल्कि, इसमें तो अक्सर कंजूसी ही होती है। हाँ, इन स्थितियों की कमी दुर्लभता की उस सीमा तक नहीं पहुँची है कि उन्हें पूरी तरह से नज़रअंदाज़ कर दिया जाए और हुक्म (आदेश) को केवल अनुमान के स्थान से जोड़ना अनिवार्य हो जाए। अतः मामले को उसके स्वयं के अनुमान पर केंद्रित रखना आवश्यक हुआ क्योंकि वह अपनी स्थिति को अधिक बेहतर जानता है; तो पानी की कमी के लिए...

पृष्ठ 60 का 761

ہو؟ تو سفر میں زیادہ تر بخل ہی ہوگا۔ اور سفر میں پانی کے مبذول ہونے کی کوئی جگہ نہیں مگر چند گنی چنی صورتوں میں مثلاً یہ کہ (۱) پانی کا مالک اس کی اولاد سے ہو، (۲) یا اس کا سگا بھائی ہو (۳) یا دوست ہو ، (۴) یا ملازم ہو (۵) یا رعیت ہو (۶) یا اس سے ڈرتا ہو (۷) یا اسے اس سے کوئی طمع ہو جسے وہ بروئے کار لانا چاہتا ہو (۸) یا جانتا ہو کہ یہ آدمی بخیل، پست ہمت اور میرا مخالف نہیں اور اس کے پاس پانی بھی اتنا ہے کہ اگر مجھے اس میں سے دے دے تو اتنا بچ رہے گا جس سے وہ اپنی ضروریات بغیر کوتاہی و کمی کے پورا کرتا ہوا گھر پہنچ جائے گا (۹) یا یہ اپاہج ہو یا مثلاً ہاتھ شل ہو اور وہ کنویں پر ہے (۱۰) یا جانتا ہو کہ وہ کریم النفس ہے سائل کو رد کرنے سے حیا رکھتا ہے خصوصاً جب کہ ان لوگوں میں سے ہو جو اپنے اوپر دوسرے کو ترجیح دیتے ہیں اگر چہ انہیں سخت احتیاج ہی کیوں نہ ہو۔ تو ایسی صورتوں میں اس کا ظن عطاء جس کا شریعت میں اعتبار ہے درست ہوگا اور یہ غالب گمان ہے جو عمل میں یقین سے ملحق ہے ، ضعیف گمان نہیں جو شک میں شامل ہے بلاشبہ یہ صورتیں دوسری صورتوں سے بہت زیادہ قلیل وکمتر ہیں۔ پھر یہ کیسے کہا جاسکتا ہے کہ آب طہارت عادۃً کیا دیا جاتا ہے۔ بلکہ اس میں تو اکثر بخل ہی ہوتا ہے۔ ہاں ان صورتوں کی قلت حد ندرت تک نہ پہنچی کہ انہیں بالکل نظر انداز کر دینا اور حکم کو جائے گمان سے متعلق کرنا لازم ہو تو خود اسی کے گمان پر معاملہ کو دائر رکھنا ضروری ہوا اور وہ خود اپنی حالت زیادہ جانتا ہے تو پانی کے کمیاب

Fatawa Razawiya, Volume 4

As for reconciliation (tatbiq), I say: And success is through Allah. There is no surprise in stating a ruling in absolute terms based on what is predominant and frequent; for how many parallels are there for this in jurisprudence! Thus, our Master the Imam (may Allah be pleased with him) stated the ruling on the non-obligatory nature of seeking [water] in absolute terms, looking at what was predominant. Al-Hasan narrated it as he heard it, and the main texts and general books circulated it as it occurred. Al-Hasan's legal reasoning (ijtihad) led him to accept its validity in its absolute sense, so he advocated it. Similarly, some others had a similar impression and interpreted 'absolute' as 'general', though they are few. The two companions (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad) narrated from their teacher (Imam Abu Hanifa), and since they knew the intended meaning, they explained it and followed that view. Now, some scholars looked at the Imam's absolute statement and the two companions' detailed explanation, thus establishing a disagreement between these Imams; this is the path of the author of 'Al-Hidayah' and many others. Others looked at the underlying objective and saw that the detail is what is intended by the absolute statement; they explicitly mentioned agreement or did not point to any disagreement. This is the way of 'Al-Mabsut', 'Al-Kafi', and those scholars from whom the majority cited in 'Al-Nihayah'. Among them are those who considered both the wording and the purpose, thus affirming a verbal disagreement but denying a conceptual one, opting for reconciliation. This is the path of Imam Al-Jassas, which is the clear and authentic research. For this reason, you see that the author of 'Al-Khaniyah' followed both statements with certainty, not pointing towards any disagreement in either place, as we have quoted their texts in the first two paths and...

फ़तवा रज़विया, जिल्द 4

जहाँ तक सामंजस्य (ततबीक़) का संबंध है, मैं कहता हूँ: और अल्लाह से ही सफलता है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि प्रबल और बहुसंख्यक स्थितियों को देखते हुए किसी हुक्म को मुतलक़ (निरपेक्ष) रूप में बयान कर दिया जाए; क्योंकि न्यायशास्त्र (फ़िक़्ह) में इसके कितने ही उदाहरण हैं! इस प्रकार, हमारे स्वामी इमाम (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) ने पानी माँगने की गैर-अनिवार्यता के हुक्म को मुतलक़ रूप में बयान किया, यह देखते हुए कि क्या प्रबल था। हसन ने इसे वैसा ही रिवायत किया जैसा उन्होंने सुना था, और मुख्य ग्रंथों और सामान्य पुस्तकों में यह वैसे ही आया जैसे यह घटित हुआ था। हसन का इज्तिहाद इसे इसके मुतलक़ अर्थ में ही रखने की ओर गया, इसलिए उन्होंने इसे ही अपनाया। इसी तरह, कुछ अन्य लोगों ने भी ऐसा ही सोचा और मुतलक़ की व्याख्या 'आम' (सामान्य) के रूप में कर दी; और ऐसे लोग कम ही हैं। दोनों साथियों (इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद) ने अपने उस्ताद से रिवायत की और वे उनके मक़सद को जानते थे, इसलिए उन्होंने इसकी तफ़सील (विस्तृत व्याख्या) की और स्वयं उसी तफ़सील के समर्थक बने। अब, कुछ लोगों ने इमाम के मुतलक़ बयान और दोनों साथियों की तफ़सील को देखा और इन इमामों के बीच मतभेद पेश कर दिया। यह 'हिदाया' के लेखक और कई अन्य लोगों का मार्ग है। कुछ अन्य लोगों ने मक़सद पर ध्यान दिया और देखा कि मुतलक़ से भी मुराद तफ़सील ही है, तो उन्होंने स्पष्ट रूप से सहमति व्यक्त की या किसी मतभेद की ओर इशारा नहीं किया। यह 'मबसूत', 'काफ़ी' और उन लोगों का मार्ग है जिनका ज़िक्र 'निहाया' में है, जो बहुमत हैं। उनमें से कुछ वे हैं जिन्होंने शब्दों और मक़सद दोनों को देखा, इस प्रकार एक शाब्दिक मतभेद की पुष्टि की लेकिन अर्थगत मतभेद का खंडन किया, और सामंजस्य की ओर बढ़े। यह इमाम अल-जस्सास का मार्ग है, और यही उज्ज्वल शोध है। इसी कारण से, आप देखते हैं कि 'ख़ानिया' के लेखक ने दोनों कथनों को निश्चितता के साथ अपनाया है, बिना किसी भी स्थान पर मतभेद की ओर संकेत किए, जैसा कि हमने पहले दो मार्गों में उनके ग्रंथों को उद्धृत किया है और...

पृष्ठ 61 का 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

اما التوفیق فأقول: وباللہ التوفیق لاغرو فی اطلاق الحکم بالنظر الی الغالب الکثیر وکم لہ في الفقہ من نظیر فکان سیدنا الامام رضی اللہ تعالی عنہ اطلق الحکم بعدم وجوب الطلب نظر لما غلب ورواہ الحسن کما سمع وتداولتہ المتون والعامۃ کما وقع * وذھب اجتھاد الحسن الی اجزائہ علی اطلاقہ فقال بہ وکذلك ظن بعض ففسروا الاطلاق بالعموم وقلیل ماھم ورواہ الصاحبان عن شیخھما وقد عرفا المراد ففسراہ وقالا بہ فمنھم من نظر الاطلاق عن الامام والتفصیل عنھما فنصب بینھم الخلاف وھو مسلك الھدایۃ و کثیرین ومنھم من نظر المرام وان التفصیل ھو المراد بالاطلاق فصرح بالوفاق اولم یؤم الی خلاف وھو مسلك المبسوط والکافی ومن حکی عنھم فی النھایۃ وھم الاکثرون علی مافیھا، ومنھم من نظر الی جانبی اللفظ والمقصود فاثبت الخلاف لفظا ونفاہ معنی فذھب الی التوفیق وھو مسلك الامام الجصاص وھو التحقیق الناصع ولذاتری الخانیۃ مشی علی کلا القولین جازمًا بہ غیر مؤم الی خلاف فی شیئ من الموضعین کما نقلنا نصوصھما في المسلکین الاول و

یا وافر ہونے کی جگہ سے حکم مقید نہ ہوگا۔ تو اس میں شک نہ رہا کہ وجہ صواب تفصیل ہی ہے یہ تو حکم سے متعلق کلام ہوا۔ رہ گئی تطبیق تو میں کہتا ہوں اور خدا ہی سے توفیق ہے یہ کوئی تعجب کی بات نہیں کہ غالب و کثیر پر نظر کرتے ہوئے حکم مطلق بیان کر دیا جائے۔ فقہ میں اس کی بہت سی نظیریں ہیں۔ تو ایسا معلوم ہوتا ہے کہ ہمارے امام صاحب رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے غالب و کثیر پر نظر کرتے ہوئے مانگنے کے عدمِ وجوب کا حکم مطلق بیان فرمایا دیا اور حسن نے اسے جیسا سنا روایت کردیا اور متون و عامہ کتب نے جیسا وقوع میں آیا ویسا ہی پیش کردیا۔ اور حسن کا اجتہاد اس طرف گیا کہ اسے اطلاق ہی پر جاری رکھا جائے تو وہ اسی کے قائل ہوئے۔ ایسے ہی کچھ اور حضرات کا بھی گمان ہوا تو انہوں نے اطلاق کی تفسیر عموم سے کردی۔

اور ایسے حضرات کم ہی ہیں۔ اور صاحبنین نے اپنے شیخ سے مراد سمجھ کر اس کی روایت کی تو انہوں نے اس کی تفسیر کردی اور خود اسی تفسیر کے قائل ہوئے۔ اب بعض حضرات نے امام کے اطلاق اور صاحبین کی تفصیل پر نظر کی اور ان ائمہ کے درمیان اختلاف پیش کردیا۔ یہ صاحبِ ہدایت اور بہت سے حضرات کا مسلک ہے۔ اور بعض حضرات نے مقصد پر نظر کی اور یہ دیکھا کہ اطلاق سے بھی مراد تفصیل ہی ہے تو انہوں نے اتفاق کی تصریح کردی یا کسی خلاف کی جانب اشارہ نہ کیا۔ یہ مبسوط، کافی اور ان حضرات کا مسلک ہے جن سے نہایہ میں حکایت کی۔ اور

[Right Column - Urdu Text Translation] These people are the majority, as mentioned in 'An-Nihayah'. Some scholars considered both the words and the objective; they established a verbal difference but denied a semantic one, thus opting for reconciliation. This is the school of thought of Imam Jassas, and this is pure research. Therefore, you will see that in 'Al-Khaniyah', they proceeded by confirming both statements without indicating any disagreement between the two places, just as we cited its texts in the first and third schools of thought. They were followed in 'Khizanat al-Muftin', as is known. All these scholars are correct, though some are more appropriate than others, except for those few who explicitly generalized the non-obligation. Meanwhile, there is unanimous agreement that if there is a presumption of water being nearby, searching for it is mandatory. My fear is that this matter crept into the text of 'At-Tajrid' narrated in 'Jami' al-Rumuz' from Al-Quhistani, in such a way that he transcribed it according to his understanding of the meaning. This is because the text of 'At-Tajrid' quoted by two great Imams in 'Al-Khulasah' and 'Al-Binayah', as previously mentioned, contains no trace or sign of this generalization. And Allah Almighty knows everything best. Its counterpart on the side of obligation is the method of Sadr al-Shariah, and on both sides, the practice of 'Al-Ghunyah'. And Allah Almighty knows best. (Note: In 'Al-Hilyah', the opinions were made four, such that Al-Saffar's opinion was counted separately from the opinion of presumption, whereas the reader knows they are the same. It is just that they placed 'presumption' ...

[Left Column - Arabic Text Translation] Thirdly, and he followed it in 'Khizanat al-Muftin' as you have known, and all of them are on the right path, and some are more appropriate than others, except for a small group (1) who explicitly stated the generalization of non-obligation despite their unanimous agreement on the obligation of seeking [water] in case of suspected proximity. And I fear that this [generalization] in the text of 'At-Tajrid' mentioned in 'Jami' al-Rumuz' is a meaning-based transcription by Al-Quhistani based on what he understood. For the text of 'At-Tajrid', which was quoted by two great Imams in 'Al-Khulasah' and 'Al-Binayah' as previously mentioned, shows no trace of this generalization. And Allah Almighty is Knower of all things. A similar case (2) on the side of obligation is the approach of Sadr al-Shariah, and on both sides, the approach of 'Al-Ghunyah'. And Allah Almighty knows best. Note: In 'Al-Hilyah', the opinions were listed as four, thus separating the

opinion of Al-Saffar from the opinion of presumption, whereas you know that they are the same. He merely established the presumption...

[Bottom Section] I say: It will be known (3) by whoever encompasses the past and future texts and passages that the speech of the scholars here has two aspects. Some of them explicitly distinguished between negation and affirmation (Continued on the next page).

[दायां कॉलम - उर्दू पाठ अनुवाद] ये लोग बहुसंख्यक हैं जैसा कि 'निहाया' में है। और कुछ विद्वानों ने शब्दों और उद्देश्य दोनों पर विचार किया, तो शाब्दिक मतभेद साबित किया और अर्थ में इसका खंडन किया, तो वे समन्वय के मार्ग पर चले। यह इमाम जस्सास का मत है और यही शुद्ध शोध है। इसीलिए आप देखेंगे कि 'खालिया' में दोनों कथनों पर दृढ़ता से चलते हुए और दोनों स्थानों पर किसी मतभेद का संकेत दिए बिना चले हैं, जैसा कि हमने इसके उद्धरण पहले और तीसरे मत में दिए और 'खज़ानतुल मुफ़्तीन' में उन्हीं का अनुसरण किया, जैसा कि ज्ञात हुआ। और ये सभी विद्वान सही मार्ग पर हैं और कुछ, कुछ से श्रेष्ठ हैं, सिवाय उन गिने-चुने लोगों के जिन्होंने अनिवार्यता न होने के सामान्यीकरण को स्पष्ट किया। जबकि इस पर सब सहमत हैं कि यदि पानी पास होने का अनुमान हो तो उसकी तलाश अनिवार्य है। और मेरी आशंका यह है कि यह बात 'जामेउर रुमूज़' में 'तजरीद' के उद्धृत विवरण में कुहिस्तानी की ओर से आ गई है, इस तरह कि उन्होंने अपनी समझ के अनुसार इसे अर्थ के रूप में उद्धृत कर दिया। क्योंकि 'तजरीद' का जो विवरण दो महान इमामों ने 'ख़ुलासा' और 'बिनाया' में उद्धृत किया, जैसा कि बीत चुका, उसमें इस सामान्यीकरण का कोई निशान या पता नहीं है। और ईश्वर ही सब कुछ जानने वाला है। इसी का उदाहरण अनिवार्यता की ओर 'सद्रुश शरीआ' का तरीका भी है और दोनों ओर 'ग़ुनिया' का कार्य है। और ईश्वर ही सबसे बेहतर जानने वाला है। (त) चेतावनी: 'हुलिया' में मतों को चार कर दिया गया, इस प्रकार कि 'सफ़्फ़ार' के कथन को 'अनुमान (ज़न्न)' के कथन से अलग गिना गया, जबकि पाठक को पता है कि यह वही है। बस यह है कि उन्होंने अनुमान... [अगले पृष्ठ पर जारी]

[बायां कॉलम - अरबी पाठ अनुवाद] तीसरा, और उसने 'खज़ानतुल मुफ़्तीन' में इसका अनुसरण किया जैसा कि आपने जाना है, और वे सभी सही रास्ते पर हैं, और कुछ दूसरों की तुलना में अधिक उपयुक्त हैं, सिवाय एक छोटे समूह (1) के जिन्होंने निकटता के संदेह के मामले में [पानी] खोजने की अनिवार्यता पर उनकी सर्वसम्मति के बावजूद गैर-अनिवार्यता के सामान्यीकरण को स्पष्ट रूप से बताया। और मुझे डर है कि 'जामेउर रुमूज़' में उल्लिखित 'तजरीद' के पाठ में यह [सामान्यीकरण] अल-कुहिस्तानी द्वारा उनकी समझ के आधार पर अर्थ-आधारित प्रतिलेखन है। क्योंकि 'तजरीद' का पाठ, जिसे दो महान इमामों द्वारा 'खुलासा' और 'बिनाया' में उद्धृत किया गया था, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, इस सामान्यीकरण का कोई निशान नहीं दिखाता है। और अल्लाह सर्वशक्तिमान हर चीज़ का ज्ञाता है। दायित्व के पक्ष में एक समान मामला (2) सद्रुश शरीआ का

दृष्टिकोण है, और दोनों पक्षों में, 'ग़ुनिया' का दृष्टिकोण है। और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे अच्छा जानता है। चेतावनी: 'हुलिया' में मतों को चार के रूप में सूचीबद्ध किया गया था, इस प्रकार अल-सफ़्फ़ार की राय को 'ज़न्न' (अनुमान) की राय से अलग कर दिया गया, जबकि आप जानते हैं कि वे एक ही हैं। उसने केवल अनुमान स्थापित किया...

[नीचे का भाग] मैं कहता हूँ: पिछले और आने वाले उद्धरणों और विवरणों को समझने वाले को पता चलेगा (3) कि यहाँ विद्वानों के कथन के दो पहलू हैं। उनमें से कुछ ने निषेध और पुष्टि के बीच स्पष्ट रूप से अंतर किया... (अगले पृष्ठ पर जारी)।

[دایاں کالم] یہ لوگ اکثر ہیں جیسا کہ نہایہ میں ہے۔ اور بعض حضرات نے الفاظ اور مقصود دونوں جانب نظر کی تو لفظاً اختلاف ثابت کیا اور معنیٰ اس کی نفی کی تو وہ تطبیق کی راہ پر گئے۔ یہ امام جصاص کا مسلک ہے اور یہی تحقیق خالص ہے۔ اسی لئے آپ دیکھیں گے کہ خانیہ میں دونوں ہی قول پر جزم کرتے ہوئے اور دونوں جگہوں میں سے کسی خلاف کا اشارہ کئے بغیر چلے ہیں جیسا کہ ہم نے اس کی عبارتیں مسلک اول اور مسلک سوم میں نقل کیں اور خزانتہ المفتین میں ان ہی کی پیروی کی، جیسا کہ معلوم ہوا، اور یہ سبھی حضرات درستی پر ہیں اور بعض، بعض سے اولیٰ ہیں مگر وہ گنتی کے لوگ جنہوں نے عدم وجوب کی تعمیم کی صراحت کی۔ جبکہ اس پر سب کا اتفاق ہے کہ پانی قریب ہونے کا گمان ہو تو طلب واجب ہے۔ اور میرا اندیشہ یہ ہے کہ یہ بات جامع الرموز میں تجرید کی حکایت کردہ عبارت میں قہستانی کی طرف سے در آئی ہے اس طرح کہ انہوں نے اپنے فہم کے مطابق اسے معنیً نقل کردیا اس لئے کہ تجرید کی جو عبارت دو بزرگ اماموں نے خلاصہ وبنایہ میں نقل فرمائی جیسا کہ گزری اس میں اس تعمیم کا کوئی نشان، پتا نہیں اور خدائے برتر ہی ہر چیز کو جاننے والا ہے۔ اسی کی نظیر جانب ایجاب میں صدر الشریعہ کا طریقہ بھی ہے اور دونوں ہی جانب میں غنیہ کا عمل اور خدائے برتر ہی خوب جاننے والا ہے۔ (ت) تنبیہ: حلیہ میں اقوال چار کر دئے اس طرح کہ صفار کا قول، قول بالظن سے جدا شمار کر دیا جبکہ ناظر کو معلوم ہے کہ یہ وہی ہے۔ بس یہ ہے کہ انہوں نے ظن

[بایاں کالم] الثالث وتبعه فی خزانة المفتین کما علمت وکلهم علی الصواب وبعضهم اولی به من بعض الا شرذمة (۱) صرحوا بتعمیم عدم الوجوب مع اتفاقهم جمیعا علی وجوب الطلب فی مظنة القرب واخاف ان یکون هذا فی عبارة التجرید المحکیة فی جامع الرموز من قبل القهستانی نقل بالمعنی علی ما

فهم فان عبارة التجريد التى اثرها امامان جليلان فى الخلاصة والبناية كما مر لا اثر فيها لهذا التعميم والله تعالى بكل شيئ عليم - ونظيره فى (٢) جانب الايجاب صنيع صدر الشريعة وفى الجانبين صنيع الغنية والله تعالى اعلم- تنبيه: جعل فى الحلية الاقوال اربعة فافرز قول الصفار عن القول بالظن وانت تعلم انه هوه فانما اقام المظنة

[نیچے والا حصہ] عه اقول: سيعلم (٣) من احاط بنصوص مرت وتأتى ان لكلامهم ههنا وجهتين فمنهم من رد دبين نفى اثبات صريحا نحوان اقول: گزشتہ وآئندہ نصوص وعبارات کا احاطہ کرنے والے کو معلوم ہوگا کہ یہاں کلام علما کے دو رُخ ہیں۔ بعض حضرات نے صراحتاً نفی واثبات کے درمیان (باقی بر صفحہ آئندہ)

Fatawa Razawiyya - Volume 4

[Main Text Block] (Right Side - Urdu Translation of Arabic): ...has placed 'Mazanna' (place of assumption) instead, as it is not hidden. I have already explained this in the footnote of number 144. (T) Second point: It has become clear that if there is a likelihood (assumption) of receiving, then asking is obligatory, and if there is a likelihood of not receiving, then it is not obligatory. As for the ruling on doubt, it entered the discussion here, and regarding attaching it to either the assumption of giving or the assumption of refusal...

(Left Side - Arabic Text): ...the place of suspicion/assumption, as is not hidden, and I have already presented it in the footnote of number [144]. The second point: We have explained that if there is an assumption of giving, then seeking (asking) is obligatory, or if there is an assumption of refusal, [seeking is not required]; [but what about] when doubt remains? Thus, doubt has entered into it, and the expressions [of jurists] have come in two ways regarding attaching it to one of [the two assumptions].

[Bottom Section - Continued Footnote] (Right Side - Urdu Translation of Arabic): ...has negated it; for example, 'If there is a likelihood of receiving, seeking is obligatory, otherwise not,' as in Al-Bahr, Al-Muheet, Al-Ikhtiyar, and Al-Mubtaghi. Or it has been negated implicitly; for example, 'If there is a likelihood of giving, Tayammum is not permissible,' as in Al-Nihaya, Al-Khaniya, Khazanat-ul-Muftiyeen, and Al-Khizana, etc. Thus, these scholars indicated attaching doubt to the 'assumption of refusal'. Some scholars mentioned the ruling for both assumptions (giving and refusal) and omitted the mention of doubt, as in Al-Kafi, Al-Munya, and Al-Hindiya, quoting from Al-Atabi, and it is also in Al-Ziyadat as per the clarification in Al-Hilya. In Al-Hilya, there is a discussion under this statement about attaching doubt to one of the two assumptions; it was considered possible for both, but preference was given to attaching it to refusal. The statements of Imam Saffar and Imam Abu Zaid are not outside of this, so there is no reason to count them separately except by looking at the difference in wording. 12 [From him, May Allah forgive him]. (T)

(Left Side - Arabic Text): (Continuation of the footnote from the previous page) ...Assumption of giving makes seeking obligatory, otherwise not, as in Al-Bahr Al-Muheet, Al-Ikhtiyar, and Al-Mubtaghi. Or implicitly, such as: if the assumption is of giving, Tayammum is not allowed, as in Al-Nihaya, Al-Khaniya, Khazanat-ul-Muftiyeen, Al-Khizana, and others. They benefited [us] by attaching doubt to the assumption of

refusal. Some of them mentioned the ruling for the two assumptions and omitted mentioning doubt, like Al-Kafi, Al-Munya, and Al-Hindiya from Al-Atabi, and Al-Ziyadat as well, by the clarification of Al-Hilya. Al-Hilya has discussed in this statement about attaching doubt to one of the two assumptions, making everything possible, and preferred attaching it to the refusal. The saying of the two Imams, Al-Saffar and Abu Zaid, does not go outside of this, so there is no reason to count it separately except by looking at the variation in wording. 12 From him, May Allah forgive him. (M)

फतावा रज़विया - जिल्द चौथी

[मुख्य पाठ ब्लॉक] (दाहिनी ओर - अरबी का उर्दू अनुवाद): ...की जगह 'मज़न्ना' (अनुमान का स्थान) रखा है जैसा कि गुप्त नहीं है। मैं पहले नंबर 144 के हाशिये (फुटनोट) में भी इसे बयान कर चुका हूँ। (त) दूसरा मुकाम: यह स्पष्ट हो चुका कि अगर देने का गुमान (अनुमान) हो तो मांगना वाजिब है और न देने का गुमान हो तो वाजिब नहीं। शक का हुक्म रह गया तो इसमें शक आ गया और इसे 'ज़न्ने अता' (देने का अनुमान) या 'ज़न्ने मना' (मना करने का अनुमान) में से किसी एक के साथ जोड़ने के बारे में...

(बाईं ओर - अरबी पाठ): ...अनुमान का स्थान जैसा कि छिपा नहीं है और मैंने इसे नंबर [144] के हाशिये में पहले ही पेश कर दिया है। दूसरा मुकाम: हमने स्पष्ट कर दिया है कि अगर देने का अनुमान हो तो मांगना (तलब करना) वाजिब है, या मना करने का अनुमान हो [तो मांगना वाजिब नहीं]; [लेकिन क्या होगा] जब शक बना रहे? इस प्रकार, इसमें शक आ गया है और इसे [दोनों अनुमानों में से] किसी एक के साथ जोड़ने के बारे में इबारतें (कथन) दो तरह से आई हैं।

[नीचे का खंड - शेष हाशिया] (दाहिनी ओर - अरबी का उर्दू अनुवाद): ...ने इसका खंडन किया है; उदाहरण के लिए, 'अगर अता (देने) का गुमान हो तो तलब (मांगना) वाजिब है वरना नहीं', जैसा कि अल-बहर, अल-मुहीत, अल-इख्तियार और अल-मुब्तगी में है। या अर्थ के रूप में खंडन किया है; उदाहरण के लिए, 'अगर देने का गुमान हो तो तैयम्मुम जायज़ नहीं', जैसा कि निहाया, खानिया, खज़ानतुल मुफ्तीन और अल-ख़िज़ाना आदि में है। तो इन महानुभावों ने शक को 'ज़न्ने मना' (मना करने के अनुमान) के साथ जोड़ने का लाभ दिया। और कुछ विद्वानों ने दोनों गुमानों (अता और मना) का हुक्म बयान कर दिया और शक का ज़िक्र छोड़ दिया, जैसा कि काफी, मुनिया और हिंदिया में अताबी से नक़ल करते हुए है, और यह हिलिया की स्पष्टता के अनुसार ज़ियादात में भी है। हिलिया के अंदर इस कथन के तहत शक को किसी एक गुमान के साथ जोड़ने के बारे में चर्चा की गई है, तो सभी को संभव (मुह्तमल) रखा गया और मना करने के साथ जोड़ने को प्राथमिकता दी गई। इमाम सफ़ार और इमाम अबू ज़ैद का कथन इससे बाहर नहीं है, इसलिए इसे अलग से गिनने का कोई कारण नहीं है सिवाय इसके कि शब्दों के अंतर पर नज़र हो। 12 [उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे]। (त)

(बाईं ओर - अरबी पाठ): (पिछले पृष्ठ के हाशिये का शेष भाग) ...देने का गुमान तलब को वाजिब बनाता है, अन्यथा नहीं, जैसा कि अल-बहर अल-मुहीत, अल-इख्तियार और अल-मुब्तगी में है। या स्पष्ट रूप से नहीं बल्कि अर्थ के रूप में, जैसे: यदि देने का गुमान हो तो तैयम्मुम की अनुमति नहीं है, जैसा कि अल-निहाया, अल-खानिया, खज़ानतुल मुफ्तीयेन, अल-खिज़ाना और अन्य में है। उन्होंने शक को मना करने के गुमान के साथ जोड़ने का लाभ दिया। उनमें से कुछ ने दोनों गुमानों के हुक्म का उल्लेख किया और शक के उल्लेख को छोड़ दिया, जैसे अल-काफी, अल-मुनिया और अल-हिंदिया ने अल-अताबी से, और अल-ज़ियादात ने भी, अल-हिलिया के स्पष्टीकरण द्वारा। अल-हिलिया ने इस कथन में शक को दो गुमानों में से एक के साथ जोड़ने के बारे में चर्चा की है, सब कुछ संभव बनाया है, और इसे मना करने के साथ जोड़ने को प्राथमिकता दी है। दो इमामों, अल-सफ़ार और अबू ज़ैद का कहना इससे बाहर नहीं जाता है, इसलिए शब्दों में भिन्नता को देखने के अलावा इसे अलग से गिनने का कोई कारण नहीं है। 12 उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (म)

पृष्ठ 761 में से 63

[مین ٹیکسٹ بلاک] (دائیں کالم - اردو): کی جگہ مظنہ رکھا ہے جیسا کہ مخفی نہیں۔ میں پہلے نمبر ۱۴۴ کے حاشیہ میں بھی اسے بیان کر چکا ہوں۔ (ت) مقام دوم: یہ واضح ہو چکا کہ اگر دینے کا گمان ہو تو مانگنا واجب ہے اور نہ دینے کا گمان ہو تو واجب نہیں۔ شک کا حکم رہ گیا تو اس میں شک در آیا اور اسے ظن عطا و ظن منع کسی ایک سے ملحق کرنے سے

(بائیں کالم - عربی): مقام الظن کما لایخفی وقد قدمتہ فی حاشیۃ نمرہ۔ المقام الثانی: قد بینا ان ظن العطاء وجب الطلب اوالمنع لابقی الشك فاعتری فیه الشك وجاءت العبارات علی وجهین في الحاقه باحد

[نیچے کا حصہ - بقیہ حاشیہ] (دائیں کالم - اردو): تردید کی ہے مثلاً یہ کہ "اگر عطا کا گمان ہو طلب واجب ہے ورنہ نہیں" جیسے بحر، محیط، اختیار اور مبتغی میں ہے۔ یا مفہوماً تردید کی ہے مثلاً یوں کہ "اگر دینے کا گمان ہو تو تیمم جائز نہیں" جیسے نہایہ، خانیہ، خزانۃ المفتین اور خزانہ وغیرہ میں ہے تو ان حضرات نے شک کو ظن منع سے ملحق کرنے کا افادہ فرمایا اور بعض حضرات نے دونوں ظن (ظنِ عطا و ظنِ منع) کا حکم بیان کر دیا اور شک کا ذکر چھوڑ دیا، جیسے کافی، منیہ اور ہندیہ میں عتابی سے نقل کرتے ہوئے ہے اور حلیہ کی تصریح کے مطابق زیادات میں بھی ہے۔ اور حلیہ کے اندر اس قول کے تحت شک کو کسی ایک ظن سے لاحق کرنے سے متعلق بحث کی ہے تو محتمل ہر ایک کو رکھا اور منع سے لاحق کرنے کو ترجیح دی اور امام صفار و امام ابوزید کا قول اس سے باہر نہیں تو اسے علیحدہ شمار کرنے کی کوئی وجہ نہیں سوائے اس کے کہ لفظوں کے اختلاف پر نظر ہو ۱۲ منہ غفر لہ۔ (ت)

(بائیں کالم - عربی): (بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) ظن العطاء وجب الطلب والالا كالبحر المحيط والاختيار والمبتغى او مفهوماً نحوان ظن العطاء لم يجز التيمم كالنهاية والخانية وخزانة المفتين والخزانة وغيرهم فافادوا الحاق الشك بظن المنع ومنهم من ذكر حكم الظنين واهمل ذكر الشك كالكافى والمنية والهندية عن العتابي والزيادات ايضاً بتصريح الحلية وقد بحث فى الحلية فى هذا القول عن الحاق الشك باحد الظنين جعل الكل محتملا ورجح الالحاق بالمنع ولا يخرج قول الامامين الصفار وابى زيد عن هذا فلاوجه لعده عليحدة الابالنظر الى تغاير فى اللفظ ١٢ منه غفرلہ (م)

صفحہ 63 از 761

Fatwa Razviya - Volume 4

Related passages appeared in two ways:

First: Sadr al-Sharia said: "It is in Az-Ziyadat that if he is outside of prayer and has not sought (water) and performed Tayammum, it is not permissible for him to start (the prayer) with doubt, for both the ability and inability are doubted." In this passage, doubt is equated with the expectation of being given (water). Just as Tayammum is not permissible in the case of expecting to be given (water), similarly it is the same in the case of doubt. However, it is explicitly stated in al-Hilyah that "the ruling for the case of doubt is not textually mentioned in Az-Ziyadat." And what is mentioned in al-Bahr, and presented as the conclusion of Az-Ziyadat and others, is contrary to what is in Sharh al-Wiqayah. The passage in Sharh al-Wiqayah is: "It is in Az-Ziyadat that the traveler performing Tayammum until the end of what we quoted in the third issue. There it says after his words 'so do not break (the prayer) due to doubt' - he should not break the prayer because of doubt - it is also written: 'contrary to the case when it is outside of prayer until the end of what we have quoted here'. Perhaps the phrase 'contrary to...' was inserted by Imam Sadr al-Sharia between the two issues of Az-Ziyadat, as required by the discourse in al-Hilyah and al-Bahr. That is why it was attributed to him in al-Hilyah. And Allah Almighty knows best. This should be kept in mind. Al-Khadimi.

Footnotes: 1. Sharh al-Wiqayah, Chapter on Tayammum, Al-Maktabat-ul-Rasheediyah Printing Press, Delhi, 1/101. 2. Al-Hilyah. 3. Durar Sharh al-Ghurar, Chapter on Tayammum, Dar al-Sa'adat Printing Press, Beirut, 1/32.

फ़तावा रज़विया - खंड 4

संबंधित इबारतें (अनुच्छेद) दो प्रकार से आई हैं:

पहला: सदरुश शरीया ने फ़रमाया: "ज़ियादात में है कि जब नमाज़ से बाहर हो और पानी की तलाश न करे और तयम्मुम करे, तो शक के साथ नमाज़ शुरू करना उसके लिए जायज़ नहीं है, क्योंकि सामर्थ्य और असमर्थता दोनों में शक है।" इस इबारत में शक को 'ज़न्न-ए-अता' (पानी मिलने की संभावना) से जोड़ा गया है, जैसे ज़न्न-ए-अता की सूरत में तयम्मुम जायज़ नहीं है, वैसे ही शक की सूरत में भी। लेकिन 'हुलिया' में साफ़ तौर पर लिखा है कि "शक की सूरत का हुक्म 'ज़ियादात' में स्पष्ट रूप से नहीं है।" और 'बहर' में जो ज़िक्र है, जिसे 'ज़ियादात' आदि का निष्कर्ष बताया गया है, वह उसके विपरीत है जो 'शरह-ए-विकाया' में है। 'शरह-ए-विकाया' की इबारत यह है: "'ज़ियादात' में है कि तयम्मुम वाला मुसाफ़िर, जैसा कि हमने तीसरे मसले के अंत तक नक़ल किया है। उसमें 'फ़ला यकताअु बिश-शक्क' (तो शक की वजह से नमाज़ न तोड़े) के बाद यह भी लिखा है: 'इसके विपरीत जब नमाज़ से बाहर हो...' जो हमने यहाँ अंत तक नक़ल किया है। शायद 'बखिलाफ़ अलख' (इसके विपरीत आदि) वाली इबारत इमाम सदरुश शरीया की तरफ़ से 'ज़ियादात' के दो मसलों के बीच जोड़ी गई है, जैसा कि 'हुलिया' और 'बहर' के शब्दों से पता चलता है। इसीलिए 'हुलिया' में इसे उन्हीं की तरफ़ मंसूब (जुड़ा हुआ) किया गया है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। इसे ज़हन-नशीन (याद) रखें। - खादिमी।

फुटनोट्स: 1. शरह अल-विकाया, बाबुल-तयम्मुम, अल-मकतबतुल रशीदिया प्रेस, दिल्ली, 1/101. 2. हुलिया। 3. दुरर शरह अल-गुरर, बाबुल-तयम्मुम, दारुस-सआदत प्रेस, बेरूत, 1/32.

पृष्ठ 64 / 761

فتاوی رضویہ - جلد چہارم

متعلق عبارتیں دو طرح آئیں:

اول: صدر الشریعت نے فرمایا: "زیادات میں ہے کہ جب بیرونِ نماز ہو اور طلب نہ کرے اور تیمم کرے تو شک کے ساتھ شروع کرنا اس کے لئے جائز نہیں اس لئے کہ قدرت و عجز دونوں میں شک ہے " اھ اس عبارت میں شک کو ظنِ عطا سے ملحق کیا ہے جیسے ظنِ عطا کی صورت میں تیمم جائز نہیں۔ اسی طرح شک کی صورت میں لیکن حلیہ میں تصریح ہے کہ "صورتِ شک کا حکم زیادات میں منصوص نہیں" اھ، اور بحر میں جو ذکر کیا ہے اسے زیادات وغیرہ کا حاصل قرار دیا ہے وہ اس کے برخلاف ہے جو شرح وقایہ میں ہے شرح وقایہ کی عبارت یہ ہے: "زیادات میں ہے کہ تیمم والا مسافر اس کے آخر تک جو ہم نے مسئلہ سوم میں نقل کیا۔ اس میں "فلا یقطع بالشك" تو شک کی وجہ سے نماز نہ توڑے۔" کے بعد یہ بھی لکھا ہے: "بخلاف اس صورت کے جب بیرونِ نماز ہو اس کے آخر تک جو ہم نے یہاں نقل کیا شاید عبارت" بخلاف الخ" امام صدر الشریعت کی طرف سے زیادات کے دونوں مسئلوں کے درمیان درج ہوئی ہے جیسا کہ حلیہ اور بحر کے کلام کا اقتضا ہے اسی لئے اسے حلیہ میں ان ہی کی طرف منسوب کیا۔ اور خدائے برتر ہی خوب جاننے والا ہے۔ یہ ذہن نشین رہے۔ خادمی

حواشی: 1. شرح الوقایة باب التیمم مطبع المکتبة الرشیدیة دہلی ۱۰۱/۱ 2. حلیة 3. درر شرح الغرر باب التیمم مطبع دارالسعادت کامل بیروت ۳۲/۱

صفحہ 64 از 761

Fatawa Razawiya Volume 4

[Top Left Arabic Text] The corrected view is that if there is hope of him giving it, he should repeat it; otherwise, not. This was not attributed to anyone, nor have I seen it in any reliable work. And Allah Almighty knows best.

[Top Right Urdu Text] In the narration, it is mentioned that equating doubt with the thought of giving is a corrected view. It is stated in 'Durr': "Performing tayammum before asking is permissible. This was adopted in Hidayah and it was also said: It is not permissible. This was adopted in Mabsut." On this, Al-Khadmi wrote: "The corrected view is that if there is hope or doubt of him giving, then he should repeat [the prayer]; otherwise, not." No reference was given for this, nor did I find it in the words of any reliable authority. So Allah the Exalted knows best. (T)

[Middle Left Arabic Text] Secondly: It is stated in 'Al-Mubtagha' (with the letter Ghain) that if a companion has water and one thinks he will give it, one should not perform tayammum; otherwise, perform tayammum. Thus, he associated it with the thought of refusal, and this is the implication of what is in 'Al-Munyah' when it says: "If his companion has water, it is not permissible for him to perform tayammum before asking for it if his predominant thought is that he will give it." In 'Al-Barjandi' from 'Al-Khazanah': "If his predominant thought is that he will give it, it is not permissible for him to perform tayammum before asking." In 'Jami' al-Rumuz' from 'Al-Bahr al-Muhit': "If he thinks [he will give], asking is obligatory; otherwise, not." And this is what was preferred in 'Al-Hilyah' when it said: "The possibility of associating doubt with the thought of refusal is more likely, as appears from the reasoning for this."

[Middle Right Urdu Text] Second: In 'Mubtagha' (with the dot on the Ghain) it is stated: "A traveling companion has water; if it is thought he will give it, then do not perform tayammum, otherwise do." They associated doubt with the thought of refusal. This is also the requirement of the text in 'Munyah'. It says: "If his companion has water, then it is not permissible for him to perform tayammum before asking if his predominant thought is that he will give it." In 'Barjandi', referring to 'Khazanah', it is said: "If his predominant thought is that he will give it, then performing tayammum for it before asking is not permissible." In 'Jami' al-Rumuz', referring to 'Bahr al-Muhit', it says: "If giving is expected, then asking is obligatory; otherwise, not." This is what...

[Bottom Middle Text] Note: In my copy of 'Al-Hilyah', it is written "with the thought of giving". I say: this is a slip of the pen or an error by the scribes. (Remainder on the next page)

[Footnotes] 1. Hashiya ala ad-Durar, Bab al-Tayammum, Matba Uthmania Beirut, p. 29 2. Al-Mubtagha 3. Munya al-Musalli, Fasl fi al-Tayammum, Maktaba Qadiriyah, Jamia Nizamia, Lahore, p. 49 4. Al-Barjandi, Fasl fi al-Tayammum, Matbu'a Nawal Kishore, Lucknow, 1/48 5. Jami' al-Rumuz, Fasl fi al-Tayammum, Maktaba Islamia, Iran, 1/70

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

[ऊपर बायाँ अरबी पाठ] सही विचार यह है कि यदि उसके देने की आशा हो तो वह दोहराए, अन्यथा नहीं। यह किसी एक के नाम नहीं किया गया है और न ही मैंने इसे किसी विश्वसनीय कार्य में देखा है। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।

[ऊपर दायाँ उर्दू पाठ] रिवायत में आया है कि शक को 'अता' के गुमान के साथ जोड़ना सही पाया गया है। 'दुर्र' में कहा गया है: "मांगने से पहले तयम्मुम जायज़ है। हिदाया में इसी को अपनाया गया और कहा गया: जायज़ नहीं है। मबसूत में इसी को अपनाया गया।" इस पर अल-खदमी ने लिखा: "सही यह है कि अगर देने की उम्मीद या शक हो तो वह (नमाज़) दोहराए, वरना नहीं।" इस पर कोई हवाला नहीं दिया गया, न ही मैंने किसी विश्वसनीय अधिकार के शब्दों में इसे पाया। तो अल्लाह जो सबसे ऊंचा है वही बेहतर जानने वाला है। (त)

[बीच का बायाँ अरबी पाठ] दूसरा: 'अल-मुबत़ा' (ग़ैन के साथ) में कहा गया है कि यदि किसी साथी के पास पानी है और कोई सोचता है कि वह दे देगा, तो उसे तयम्मुम नहीं करना चाहिए; अन्यथा, तयम्मुम करे। इस प्रकार, उसने इसे मना करने के विचार से जोड़ा, और यही 'अल-मुनिया' में है जब वह कहता है: "यदि उसके साथी के पास पानी है, तो उसके लिए तयम्मुम करना जायज़ नहीं है जब तक कि वह उससे मांग न ले, यदि उसका प्रबल विचार यह है कि वह उसे दे देगा।" 'खज़ाना' से 'अल-बरजंदी' में: "यदि उसका प्रबल विचार यह है कि वह दे देगा, तो मांगने से पहले तयम्मुम करना जायज़ नहीं है।" 'बह्र अल-मुहीत' से 'जामि' अल-रुमूज़' में: "यदि वह सोचता है (कि वह देगा), तो मांगना अनिवार्य है; अन्यथा, नहीं।" और 'अल-हिल्या' में इसी को प्राथमिकता दी गई थी जब उसने कहा: "मना करने के गुमान के साथ शक को जोड़ने की संभावना अधिक है, जैसा कि इसके तर्क से प्रकट होता है।"

[बीच का दायाँ उर्दू पाठ] दूसरा: 'मुबत़ी' (ग़ैन मुअज्जमा से) में फरमाया: "सफर के साथी के पास पानी है; अगर गुमान हो कि वह दे देगा तो तयम्मुम न करे, वरना तयम्मुम करे।" उन्होंने शक को मना करने के गुमान से जोड़ा। यही इबारत 'मुनिया' की भी मांग है। उसमें लिखा है: "अगर उसके रफ़ीक़ (साथी) के पास पानी हो तो उसके लिए उससे मांगने से पहले तयम्मुम जायज़ नहीं जब कि उसका ग़ालिब गुमान यह हो कि वह दे देगा।" 'बरजंदी' में 'खज़ाना' के हवाले से यह है: "अगर उसका ग़ालिब गुमान यह हो कि उसे दे देगा तो मांगने से पहले उसके लिए तयम्मुम करना जायज़ नहीं।"

'जामि' अल-रुमूज़' में 'बह्र मुहीत' के हवाले से लिखा है: "अगर देने का गुमान हो तो मांगना वाजिब है वरना नहीं।" यही वह है जिसे...

[नीचे का मध्य पाठ] नोट: 'अल-हिल्या' के मेरे नुस्खे (प्रति) में "ब-ज़न्नुल अता" (देने के गुमान से) लिखा हुआ है। मैं कहता हूँ: यह कलम की फिसलन है या लेखकों की गलती। (बाकी अगले पेज पर)

[पाद टिप्पणियाँ] 1. हाशिया अला अद-दुरर, बाब अल-तयम्मुम, मतबा उस्मानिया बेरूत, पृ. 29 2. अल-मुबत्ता 3. मुनिया अल-मुसल्ली, फ़स्ल फी अल-तयम्मुम, मकतबा कादिरिया, जामिया निजामिया, लाहौर, पृ. 49 4. अल-बरजंदी, फ़स्ल फी अल-तयम्मुम, मतबुआ नवल किशोर, लखनऊ, 1/48 5. जामि' अल-रुमूज़, फ़स्ल फी अल-तयम्मुम, मकतबा इस्लामिया, ईरान, 1/70

[اوپر بائیں جانب عربی عبارت کا ترجمہ] صحیح یہ ہے کہ اگر دینے کی امید ہو تو لوٹائے ورنہ نہیں، اور اسے کسی ایک کی طرف منسوب نہیں کیا اور نہ ہی میں نے کسی معتمد کی بات میں اسے دیکھا ہے، اللہ تعالٰی خوب جاننے والا ہے۔

[اوپر دائیں جانب اردو عبارت] میں حکایۃ آیا ہے کہ شک کو ظن عطا سے لاحق کرنا تصحیح یافتہ ہے۔ درر میں فرمایا: "مانگنے سے پہلے تیمم جائز ہے۔ اسی کو ہدایت میں اختیار کیا اور کہا گیا: جائز نہیں۔ اس کو مبسوط میں اختیار کیا" اھ اس پر خادمی نے لکھا کہ: "تصحیح یافتہ یہ ہے کہ اگر دینے کی امید یا شک ہو تو اعادہ کرے ورنہ نہیں اھ"۔ اور اس پر کسی کا حوالہ نہ دیا، نہ ہی میں نے کسی معتمد کے کلام میں اسے پایا، تو خدائے برتر ہی خوب جاننے والا ہے۔ (ت)

[درمیانی بائیں جانب عربی عبارت کا ترجمہ] دوسرا یہ کہ: المبتغی (غین کے ساتھ) میں فرمایا کہ اپنے رفیق کے پاس پانی ہو اور گمان ہو کہ وہ اسے دے دے گا تو تیمم نہ کرے ورنہ تیمم کرلے، پس اس نے اسے منع کے گمان کے ساتھ لاحق کیا، اور یہی منیہ کی عبارت کا مقتضی ہے جب اس نے کہا کہ اگر اس کے رفیق کے پاس پانی ہو تو اس کے لئے اس سے مانگنے سے پہلے تیمم جائز نہیں ہے جب کہ اس کا غالب گمان یہ ہو کہ وہ اسے دے دے گا، اور برجندی میں خزانہ کے حوالے سے ہے کہ اگر اس کا غالب گمان یہ ہو کہ وہ اسے دے دے گا تو مانگنے سے پہلے تیمم کرنا اس کے لئے جائز نہیں، اور جامع الرموز میں بحر محیط کے حوالے سے ہے کہ اگر اس کا گمان (دینے کا) ہو تو مانگنا واجب ہے ورنہ نہیں، اور یہی وہ ہے جسے حلیہ میں ترجیح دی گئی جب کہا کہ شک کو منع کے گمان کے ساتھ لاحق کرنے کا احتمال زیادہ راجح ہے جیسا کہ اس کی توجیہ سے ظاہر ہوتا ہے۔

[درمیانی دائیں جانب اردو عبارت] دوم: مبتنی (غین معجمہ سے) میں فرمایا: "ہم سفر کے پاس پانی ہے اگر گمان ہو کہ وہ دے دے گا تو تیمم نہ کرے ورنہ تیمم کرے"۔ اھ انہوں نے شک کو ظن منع سے لاحق کیا۔ یہی عبارت منیہ کا بھی مقتضی ہے۔ اس میں یہ لکھا ہے: "اگر اس کے رفیق کے پاس پانی ہو تو اس کیلئے اس سے مانگنے سے پہلے تیمم جائز نہیں جب کہ اس کا غالب گمان یہ ہو کہ دے دے گا"۔ اھ بر جندی میں خزانہ کے حوالہ سے یہ ہے: "اگر اس کا غالب گمان یہ ہو کہ اسے دے دے گا تو مانگنے سے پہلے اس کیلئے تیمم کرنا جائز نہیں" اھ جامع الرموز میں بحر محیط کے حوالہ سے لکھا ہے: "اگر دینے کا گمان ہو تو مانگنا واجب ہے ورنہ نہیں" اھ یہی وہ ہے جسے

[نیچے کی عبارت] عه وقع في نسختي الحلية بظن العطاء اقول وهو سبق قلم او من خطأ النساخ حلیہ کے میرے نسخے میں "بظن العطاء" لکھا ہوا ہے اقول: یہ سبقتِ قلم ہے یا کاتبوں کی (باقی برصفحہ آئندہ)

[حواشی] 1. حاشیہ علی الدرر باب التیمم مطبع عثمانیہ بیروت ص ۲۹ 2. المبتغی 3. منیۃ المصلی فصل فی التیمم مکتبہ قادریہ جامعہ نظامیہ لاہور ص ۴۹ 4. البرجندی فصل فی التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ۱/ ۴۸ 5. جامع الرموز فصل فی التیمم مکتبہ اسلامیہ ایران ۱/ ۷۰

Fatawa Razawiya, Volume 4

(Left Column) The detail, even if it is in Sharh al-Wiqayah by Sadr al-Shari'ah, is that it is not permissible for him to begin (the prayer) with doubt, because ability and inability are both doubtful in this case. Thereafter, he mentioned the reasoning by saying: It is not far-fetched to say that the first opinion (i.e., basing the matter on his presumption) is more appropriate because water is not generally given away for use during travels, especially in places where it is scarce. Thus, inability is established considering that. And because another's ownership prevents disposal, and ability is merely imagined. Therefore, it is correct to hold onto this principle as a permission for Tayammum as long as nothing contradicts its requirement, which is the presumption of refusal. End. This is taken from 'Al-Fath', and we have already quoted its text before the first section, and from 'Al-Bada'i', and we have quoted its text there.

(Right Column) Preference was given in 'Hilyah'. They write: "The probability of linking doubt to the presumption of refusal is more likely, as will become clear from the explanation of its reasoning. Although it is stated in Sadr al-Shari'ah's Sharh Wiqayah that starting the prayer with doubt is not permissible because there is doubt in both ability and inability." Then he mentioned the reasoning thus: "It would not be far-fetched to say that the first (i.e., keeping the matter dependent on one's presumption) is better because in travels it mostly happens that water is not given for use, especially in places where water is scarce, so considering this, inability is established. The second reason is that another's ownership prevents disposal and ability is imaginary. So, holding onto this rule for the permissibility of Tayammum is correct as long as there is nothing contrary to it that brings it out of its requirement, which is the presumption of giving." End. This reasoning is derived from 'Fath al-Qadir'. We have already quoted its wording before the first section, and it is derived from 'Bada'i'. Its...

(Footnote Section) (Remainder of previous page's footnote) And the correct thing is 'presumption of refusal', for linking it to 'presumption of giving' is what is in Sadr al-Shari'ah, not what contradicts it. The matter becomes clear by what was mentioned of the reasoning, for it establishes linking doubt with 'presumption of refusal' as you see. 12 [Author] May he be forgiven (M). The error is correct: it is "presumption of refusal" because linking it with the presumption of giving is what is in the commentary of Sadr al-Shari'ah, not its opposite. Next, the reasoning mentioned by the author of 'Hilyah' makes the matter clear because from this reasoning, it is

proven to link doubt with the presumption of refusal as is under consideration. 12 [Author] May he be forgiven (T). 1. Hilyah

फ़तावा रज़विया, खंड 4

(बायां कॉलम) विवरण, भले ही वह सद्र अल-शरिया की शरह अल-विकाया में हो, यह है कि उसके लिए संदेह के साथ (नमाज़) शुरू करना जायज़ नहीं है, क्योंकि ऐसी स्थिति में क्षमता और अक्षमता दोनों संदिग्ध हैं। इसके बाद, उन्होंने यह कहते हुए तर्क का उल्लेख किया: यह कहना दूर की बात नहीं है कि पहला मत (यानी मामले को उसके अनुमान पर आधारित करना) अधिक उपयुक्त है क्योंकि यात्राओं के दौरान पानी आमतौर पर उपयोग के लिए नहीं दिया जाता है, खासकर उन स्थानों पर जहाँ इसकी कमी होती है। इस प्रकार, उस पर विचार करते हुए अक्षमता सिद्ध होती है। और क्योंकि दूसरे का स्वामित्व उपयोग को रोकता है, और क्षमता केवल काल्पनिक है। इसलिए, तैयम्मुम की अनुमति के रूप में इस सिद्धांत को बनाए रखना सही है जब तक कि इसकी आवश्यकता के विरुद्ध कुछ न हो, जो कि इनकार का अनुमान है। समाप्त। यह 'अल-फ़तह' से लिया गया है, और हमने पहले खंड से पहले इसका पाठ उद्धृत किया है, और 'अल-बदई' से, और हमने वहाँ इसका पाठ उद्धृत किया है।

(दायां कॉलम) 'हिलिया' में प्राथमिकता दी गई। वे लिखते हैं: "संदेह को इनकार के अनुमान से जोड़ने की संभावना अधिक प्रबल है, जैसा कि इसके तर्क के स्पष्टीकरण से स्पष्ट होगा। यद्यपि सद्र अल-शरिया की शरह विकाया में यह कहा गया है कि संदेह के साथ नमाज़ शुरू करना जायज़ नहीं है क्योंकि क्षमता और अक्षमता दोनों में संदेह है।" फिर उन्होंने तर्क का इस प्रकार उल्लेख किया: "यह कहना दूर की बात नहीं होगा कि पहला (यानी मामले को अपने अनुमान पर निर्भर रखना) बेहतर है क्योंकि यात्राओं में ज्यादातर ऐसा होता है कि पानी उपयोग के लिए नहीं दिया जाता है, खासकर उन जगहों पर जहाँ पानी की कमी होती है, इसलिए इसे देखते हुए अक्षमता सिद्ध होती है। दूसरा कारण यह है कि दूसरे का स्वामित्व उपयोग को रोकता है और क्षमता काल्पनिक है। इसलिए, तैयम्मुम की स्वीकार्यता के लिए इस नियम को मानना तब तक सही है जब तक कि इसके विपरीत कुछ न हो जो इसे इसकी आवश्यकता से बाहर ले आए, और वह है देने का अनुमान।" समाप्त। यह तर्क'फ़तह अल-क़दीर' से लिया गया है। हमने पहले खंड से पहले इसके शब्दों को उद्धृत किया है, और यह 'बदई' से लिया गया है। इसकी...

(फुटनोट अनुभाग) (पिछले पृष्ठ के फुटनोट का शेष) और सही बात 'इनकार का अनुमान' है, क्योंकि इसे 'देने के अनुमान' से जोड़ना सद्र अल-शरिया में है, न कि इसके विपरीत। जो तर्क दिया गया है उससे मामला स्पष्ट हो जाता है, क्योंकि जैसा कि आप देखते हैं, यह संदेह को 'इनकार के अनुमान'

के साथ जोड़ने की पुष्टि करता है। 12 [लेखक] उसे क्षमा किया जाए (M)। त्रुटि सही है: यह "इनकार का अनुमान" है क्योंकि इसे देने के अनुमान के साथ जोड़ना ही सद्र अल-शरिया की व्याख्या में है, न कि इसका विलोम। आगे, 'हिलिया' के लेखक द्वारा उल्लिखित तर्क मामले को स्पष्ट कर देता है क्योंकि इस तर्क से संदेह को इनकार के अनुमान से जोड़ना सिद्ध होता है जैसा कि विचाराधीन है। 12 [लेखक] उसे क्षमा किया जाए (T)। 1. हिलिया

पृष्ठ 66 / 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

(بائیں کالم کی عبارت) التفصیل وان کان فی شرح الوقایۃ لصدر الشریعہ (تفصیل اگرچہ صدر الشریعہ کی شرح وقایہ میں ہے کہ) انہ لایحل لہ الشروع بالشك فان القدرۃ والعجز مشکوك فیھما اھ (شک کے ساتھ شروع کرنا اس کے لیے حلال نہیں کیونکہ قدرت اور عجز دونوں میں شک ہے)۔ ثم ذکر التوجیہ بقولہ (پھر انہوں نے توجیہ یہ کہہ کر ذکر کی کہ) ولا یبعد القول بأن الاولی (ای ادارۃ الامر علی ظنہ) اوجہ (یہ کہنا بعید نہیں کہ اول یعنی معاملے کو اس کے گمان پر رکھنا زیادہ بہتر ہے) لان الماء لیس بمبذول للاستعمال غالبًا فی الاسفار وخصوصًا فی مواضع عزتہ (کیونکہ سفروں میں پانی عام طور پر استعمال کے لیے نہیں دیا جاتا بالخصوص ان جگہوں پر جہاں وہ نایاب ہو) فالعجز متحقق نظرًا الی ذلک (تو اس کے پیش نظر عجز متحقق ہے) ولان ملک الغیر عاجز عن التصرف والقدرۃ موھومۃ (اور اس لیے کہ دوسرے کی ملکیت تصرف سے عاجز کر دیتی ہے اور قدرت صرف ایک وہم و خیال ہے) فیصلح التمسک بھذا الاصل مبیحًا للتیمم مالم یعارضہ ما یخرجہ عن مقتضاہ (تو اس اصل کے ساتھ تمسک کرنا تیمم کو مباح قرار دینے کے لیے صحیح ہے جب تک کہ کوئی ایسی چیز معارض نہ ہو جو اسے اس کے مقتضا سے نکال دے) وھو ظن دفعہ اہ (اور وہ اسے دینے کا گمان ہے)۔ وھو مأخوذ عن الفتح وقدمنا نصہ قبل المقام الاول وعن البدائع وقد منّا نصہ فیہ۔

(دائیں کالم کی عبارت) حلیہ میں ترجیح دی۔ لکھتے ہیں: "شک کو ظن منع سے لاحق کرنے کا احتمال زیادہ راجح ہے، جیسا کہ اس کی تفصیل کی توجیہ سے ظاہر ہوگا۔ اگرچہ صدر الشریعۃ کی شرح وقایہ میں یہ ہے کہ شک کے ساتھ اس کیلئے نماز شروع کرنا جائز نہیں اس لئے کہ قدرت و عجز میں شک ہے اھ"۔ پھر توجیہ یوں ذکر کی: "یہ کہنا بعید نہ ہوگا کہ اول (یعنی اس کے گمان پر

معاملہ کو دائر رکھنا) زیادہ بہتر ہے اس لئے کہ سفروں میں زیادہ تر یہی ہوتا ہے کہ پانی استعمال کیلئے نہیں دیا جاتا خصوصاً ایسی جگہوں میں جہاں پانی کم یاب ہو تو اس بات پر نظر کرتے ہوئے عجز متحقق ہے۔ دوسری وجہ یہ ہے کہ ملک غیر، تصرف سے مانع ہے اور قدرت موہوم ہے۔ تو تیمم کے جواز کیلئے اس قاعدہ سے تمسک بجا ہے جب تک کہ اس کے معارض کوئی ایسی چیز نہ ہو جو اس کے مقتضی سے اسے باہر لائے اور وہ یہ ہے کہ دینے کا گمان ہو" اھ یہ توجیہ فتح القدیر سے ماخوذ ہے۔ اس کی عبارت مقام اول سے قبل ہم نقل کر آئے اور بدائع سے ماخوذ ہے۔ اس کی

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) وانما صوابه بظن المنع فأن الحاقه بظن العطاء هو الذی فی صدر الشریعة لاخلافه ویتضح الامر بما ذکر من التوجیه فأنه یثبت الحاقه بظن المنع کماتری ۱۲ منه غفر له (م) خطا صحیح "بظن المنع" ہی ہے کیونکہ ظن عطا سے لاحق کرنا ہی تو صدر الشریعہ کی شرح میں ہے اس کا مقابل نہیں۔ آگے صاحب حلیہ نے جو توجیہ ذکر کی ہے اس سے معاملہ واضح ہوجاتا ہے اس لئے کہ اس توجیہ سے شک کو ظن منع سے ہی لاحق کرنا ثابت ہوتا ہے جیسا کہ پیش نظر ہے ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

1 حلیہ صفحہ 66 از 761

Fatawa Razawiyya, Volume 4

I say: And this is also the preferred view. Firstly, because there is a parallel witness to it, which is the issue of searching for water within the distance of a 'ghalwa' (the distance of an arrow shot). In this matter, all scholars have clearly stated that if one has a strong suspicion (ghalib guman) that water is nearby, it is obligatory to search; otherwise, it is not. It is stated in Imam Quduri's Mukhtasar and al-Hidayah: "It is not necessary for the person performing tayammum to search for water when they do not have a strong suspicion that water is near them. And if they have a strong suspicion, then tayammum is not permissible until they search for it."[1] In al-Wiqayah, al-Nuqayah, al-Islah, al-Kanz, al-Wafi, al-Multaqa, al-Ghurar, al-Tanwir, and Nur al-Idah, it says: "It is obligatory to search for water up to the distance of a ghalwa (the distance an arrow reaches when shot) if one suspects water is nearby, otherwise not."[2] Al-Nuqayah has expressed this conceptually, and it is the clearest of all, and all the commentators and annotators have unanimously confirmed it. We have already cited the specific text for this from al-Bada'i' and al-Siraj al-Wahhaj.

Note: Except that in al-Jawharah it is stated: 'According to Abu Hanifa, if there is doubt, searching is obligatory.'[3] I say: This transmission is strange (gharib) and exceedingly obscure, especially with the wording 'inda' (according to). It appears that this is a scribal error (tas-hif) for 'an' (from) by the copier. If it is a narration, then it would be an isolated (shadh) and unique report. And Allah Almighty knows best. (12) From him, may he be forgiven. (M)

---

1. Quduri, Chapter of Tayammum, Mujtabai Press, Kanpur, p. 12.
2. Sharh al-Wiqayah, Chapter of Tayammum, Published by Maktaba al-Rashidiya, Delhi, 1/107.
3. Al-Jawharat al-Nayyirah, Chapter of Tayammum, Published by Maktaba Imdadiya, Multan, 1/28, 29.

फ़तावा रज़विया, खंड 4

मैं कहता हूँ: और यही प्रबल विचार भी है। पहले इसलिए क्योंकि इसका एक उदाहरण मौजूद है, जो 'ग़लवा' (एक तीर फेंकने की दूरी के बराबर) की दूरी के भीतर पानी खोजने का मामला है। इस मामले में, सभी विद्वानों ने स्पष्ट रूप से कहा है कि यदि किसी को दृढ़ अनुमान (ग़ालिब गुमान) हो कि पानी पास में है, तो खोजना अनिवार्य है; अन्यथा नहीं। इमाम क़ुदूरी की 'मुख़्तसर' और 'हिदाया' में है: "तयम्मुम करने वाले के लिए पानी खोजना आवश्यक नहीं है जब उसका यह दृढ़ अनुमान न हो कि उसके पास पानी है। और यदि उसका दृढ़ अनुमान हो, तो जब तक वह खोज न ले, तयम्मुम जायज़ नहीं है।"[1] 'वक़ाया', 'नक़ाया', 'इस्लाह', 'कन्ज़', 'वाफ़ी', 'मुल्तक़ा', 'ग़ुरर', 'तनवीर' और 'नूरुल ईज़ाह' में लिखा है: "एक ग़लवा (तीर जहाँ तक पहुँचे, उतनी दूरी) की मात्रा तक पानी खोजना अनिवार्य है यदि वह पानी पास होने का अनुमान करता हो, अन्यथा नहीं।"[2] 'नक़ाया' ने इसे अर्थपूर्ण ढंग से व्यक्त किया है और यह सबसे स्पष्ट है, और सभी टीकाकारों और टिप्पणीकारों ने सर्वसम्मति से इसकी पुष्टि की है। हमने पहले ही 'बदाए' और 'सिराजुल वह्वाज' से इस पर स्पष्ट पाठ का उल्लेख किया है।

नोट: इसके अलावा 'जौहरा' में है: 'इमाम अबू हनीफ़ा के अनुसार जब संदेह (शक) हो, तो उस पर खोजना अनिवार्य है।'[3] मैं कहता हूँ: यह रिवायत अत्यंत दुर्लभ (ग़रीब) है और बहुत ही अनोखी है, विशेष रूप से 'अिन्द' (के अनुसार) शब्द के साथ। ऐसा प्रतीत होता है कि यह लेखक की कलम से 'अन' (से) की जगह एक त्रुटि (तस-हीफ़) है। यदि यह एक रिवायत है, तो यह कोई अलग-थलग (शाज़) रिवायत होगी। और अल्लाह सर्वशक्तिमान ही बेहतर जानने वाला है। 12 उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए। (म)

---

1. क़ुदूरी, तयम्मुम का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, कानपुर, पृष्ठ 12।
2. शरह अल-वक़ाया, तयम्मुम का अध्याय, मकतबा अल-रशीदिया, दिल्ली, 1/107।
3. अल-जौहरतुल नय्यिरा, तयम्मुम का अध्याय, मकतबा इमदादिया, मुल्तान, 1/28, 29।

اقول: اور یہی راجح بھی ہے۔ اولاً اس لئے کہ اس پر اس کی ایک نظیر شاہد ہے وہ بقدر غلوہ (تیر پھینکنے کی دوری کے برابر) پانی تلاش کرنے کا مسئلہ ہے۔ اس میں سبھی حضرات نے تصریح فرمائی ہے کہ اگر اسے غالب گمان ہو کہ قریب میں پانی ہے تو تلاش کرنا واجب ہے ورنہ نہیں۔ امام قدوری کی مختصر اور ہدایہ میں ہے: "تیمّم والے پر پانی تلاش کرنا لازم نہیں جب اس کا غالب گمان یہ نہ ہو کہ اس کے قریب میں پانی ہے۔ اور اگر اس کا غالب گمان یہ ہو تو جب تک تلاش نہ کر لے تیمّم جائز نہیں ۔" ۱ھ وقایہ، نقایہ، اصلاح، کنز، وافی، ملتقٰی، غرر، تنویر اور نور الایضاح میں ہے: "غلوہ (تیر پھینکنے پر جہاں تک پہنچے اتنی دوری) کی مقدار پانی تلاش کرنا واجب ہے اگر وہ پانی قریب گمان کرتا ہو ورنہ نہیں۔" ۲ھ نقایہ نے اسے مفہومًا وافصح الکل واقربہم الشراح والمحشون قاطبۃ عہ وقدمنا فی المسألۃ الرابعۃ التنصیص بہ عن البدائع والسراج الوہاج

عہ غیر ان فی الجوہرۃ عند ابی حنیفۃ اذا شک وجب علیہ الطلب ۳اہ اقول وھو نقل غریب متوغل فی الاغراب لاسیما بلفظۃ عند والظاہر انہا تصحیف عن من عند الناسخ فلعلہا ان کانت فروایۃ شاذۃ فاذۃ واللہ تعالٰی اعلم ۱۲ منہ غفرلہ (م)

---

۱ قدوری باب التیمم مطبع مجتبائی کان پور ص ۱۲ ۲ شرح الوقایہ باب التیمم مطبوعہ مکتبہ الرشیدیہ دہلی ۱/ ۱۰۷ ۳ الجوہرۃ النیرہ باب التیمم مطبع مکتبہ امدادیہ ملتان ۲۸، ۲۹/ ۱

Volume Four Fatawa Razawiyya

We have presented the text in the first place. (T) In *Al-Jawharah al-Nayyira*, *Al-Bahr*, *Al-Dur*, and *Al-Hindiyyah* as well, and similarly in countless others, they have reached a consensus on linking doubt (shak) with the assumption of unavailability (zann-e-bu'd). It was stated, and everyone has explicitly mentioned it, and all commentators and annotators have maintained it. In the fourth issue, we have also presented clarifications from *Bada'i*, *Siraj*, *Wahaj*, *Jawharah Nayyira*, *Bahr*, *Durr-e-Mukhtar*, and *Hindiyyah*. Countless other books are similar, thus there is a consensus on linking doubt with the assumption of unavailability. (T)

Secondly: Because it is explicitly stated in many great books. We have previously presented the texts from *An-Nihayah*, *Al-Khaniyah*, *Khizanat al-Muftin*, and *Al-Ikhtiyar Sharh al-Mukhtar*. And just now, we mentioned texts from *Al-Mubtaghi*, *Al-Munyah*, *Al-Bahr al-Muhit*, and *Al-Khizanah*. We have not encountered anything to the contrary except in *Sharh al-Wiqayah*.

However, in *Al-Jawharah*, the linking of doubt with the expectation of a gift is attributed to the Sahabain (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad), contrary to the opinion of Imam Azam (radi Allahu Ta'ala 'anhum). It states: "Asking is obligatory (wajib)" - this is the opinion of the Sahabain. According to Imam Abu Hanifa, it is not obligatory because asking for someone else's property is a humiliation if they refuse, and it puts one under an obligation of favor if they give. Even according to the Sahabain, if the predominant thought (ghalib guman) is that he will not give, then asking is not obligatory. If there is a state of doubt, it is obligatory. A corollary (tafri') based on Imam Abu Hanifa's opinion is that when asking is not obligatory and one performs tayammum before asking, it is valid. And a corollary based on the Sahabain's opinion regarding the obligation of asking is that when there is doubt...

1. *Al-Jawharah al-Nayyira Sharh Quduri*, Chapter on Tayammum, Maktaba Imdadia Multan, 1/29. Page 68 of 761

जिल्द चौथा फ़तावा रज़विया

इबारत (टेक्स्ट) हमने पहले स्थान पर पेश की। (त) अल-जौहरा अन-नय्यारा, अल-बहर, अद-दुर और अल-हिंदिया में भी, और इसके समान बेशुमार अन्य किताबों में, उन्होंने संदेह (शक) को अनुपलब्धता के गुमान (ज़न्ने-बुअद) से जोड़ने पर इत्तेफाक किया है। बताया और सब लोगों ने स्पष्ट रूप से इसे बयान किया और सभी व्याख्याकारों और टिप्पणीकारों ने उन्हें बरकरार रखा। और हम चौथे मसले में 'बदाए', 'सिराज', 'वहाज', 'जौहरा नय्यारा', 'बहर', 'दुर्रे-मुख्तार' और 'हिंदिया' से भी इसकी तसरीह (स्पष्टीकरण) पेश कर आए हैं। और इसी के समान बेशुमार किताबों में है तो शक को ज़न्ने-बुअद से जोड़ने पर सबका इत्तेफाक मौजूद है। (त)

दूसरे: क्योंकि कई महान पुस्तकों में इसी का स्पष्ट उल्लेख है। हम 'निहाया', 'खनिया', 'खिज़ानतुल-मुफ्तीन' और 'इख्तियार शरह अल-मुख्तार' के अंश पहले पेश कर चुके हैं और 'मुब्तगी', 'मुन्या', 'बहर मुहित' और 'खिजाना' के अंश अभी बयान किए। और इसके विपरीत कहीं कोई जानकारी नहीं मिली सिवाय 'शरह अल-विकाया' के।

हाँ, 'जौहरा' में शक को उपहार (अता) की उम्मीद से जोड़ने का श्रेय साहबैन (इमाम अबू युसुफ और इमाम मुहम्मद) को दिया गया है, जो इमाम आज़म (रज़ी अल्लाहु तआला अन्हुम) के मत के विपरीत है। उसमें लिखा है: "मांगना वाजिब है" - यह साहबैन का कौल (कथन) है। इमाम अबू हनीफा के नज़दीक वाजिब नहीं है क्योंकि दूसरे की मिल्कियत मांगना अपमान है यदि वह इनकार कर दे, और यदि वह दे दे तो एहसान के बोझ तले दबना है। और साहबैन के नज़दीक भी अगर उसका गालिब गुमान (प्रबल संभावना) हो कि वह नहीं देगा तो मांगना वाजिब नहीं है। और शक की सूरत हो तो वाजिब है। इमाम अबू हनीफा के कौल पर तफरीअ (उप-नियम) यह है कि जब मांगना वाजिब न हो और मांगले से पहले तयम्मुम कर ले तो वह हो गया। और साहबैन के कौल में मांगना वाजिब होने पर तफरीअ यह है कि जब शक हो...

1. अल-जौहरा अन-नय्यारा शरह कुदूरी, बाब अत-तयम्मुम, मकतबा इमदादिया मुल्तान, 1/29 पृष्ठ 68 का 761

عبارت ہم نے مقام اول میں پیش کی۔ (ت) والجوھرۃ النیرۃ والبحر والدر والہندیۃ ایضاً ومثلہ فی مالایحصی فقد اطبقوا علی الحاق الشک بظن البعد بتایا اور سب لوگوں نے صراحتہ بیان کیا اور تمام شارحین و محشین نے انہیں برقرار رکھا۔ اور ہم مسئلہ چہارم میں بدائع، سراج و ہاج، جوہرہ نیرہ، بحر، در مختار اور ہندیہ سے بھی اس کی تصریح پیش کر آئے ہیں۔ اور اسی کے مثل بے شمار کتابوں میں ہے تو شک کو ظن بعد سے لاحق کرنے پر سب کا اتفاق موجود ہے۔ (ت)

واماثانیاً: فلانہ ھو المصرح بہ فی غیر ما کتاب جلیل فقد قدمنا نصوص النھایۃ والخانیۃ وخزانۃ المفتین والاختیار شرح المختار سالفاً ثانیاً: اس لئے کہ متعدد جلیلہ میں اسی کی تصریح موجود ہے۔ ہم نہایہ، خانیہ، خزانہ المفتین اور اختیار شرح مختار کی عبارتیں پہلے پیش کر چکے اور مبتغی، منیہ، بحر محیط اور خزانہ کی عبارتیں ابھی بیان کیں اور اس کے خلاف سے کہیں آشنائی نہ ہوئی مگر شرح وقایہ میں۔ وذکرنا نصوص المبتغی والمنیۃ والبحر المحیط والخزانۃ آنفاً وخلافہ لم یعرف الا فی شرح الوقایۃ۔

بلی نسب الحاق الشک بظن العطاء فی الجوھرۃ الی الصاحبین علی خلاف قول الامام رضی اللہ تعالٰی عنھم فقال وجوب الطلب قولھما وعند ابی حنیفۃ لایجب لان سؤال ملک الغیر ذل عند المنع وتحمل منۃ عند الدفع وعندھما ان غلب علی ظنّہ انہ لایعطیہ لایجب علیہ الطلب ایضاً وان شک وجب وتفریع قول ابی حنیفۃ اذ لم یجب الطلب وتیمم قبلہ اجزاہ وتفریع قولھما فی وجوب الطلب اذا شک وصلی ثم سألہ ہاں جوہرہ میں شک کو ظن عطا سے لاحق کرنے کی نسبت صاحبین کی طرف کی ہے۔ برخلاف قول امام اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہم۔ اس میں لکھا ہے: "مانگنا واجب ہے یہ صاحبین کا قول ہے۔ امام ابوحنیفہ کے نزدیک واجب نہیں اس لئے کہ غیر کی ملک مانگنے میں ذلت ہے اگر وہ انکار

کردے اور احسان سے زیر بار ہونا ہے اگر وہ دے دے۔ اور صاحبیں کے نزدیک بھی اگر اس کا غالب گمان ہو کہ نہیں دے گا تو مانگنا واجب نہیں۔ اور شک کی صورت ہو تو واجب ہے امام ابو حنیفہ کے قول پر تفریع یہ ہے کہ جب طلب واجب نہ ہو اور قبل طلب تیمم کر لے تو ہو گیا۔ اور وجوب طلب میں قول صاحبین پر تفریع یہ ہے کہ جب شک

1. الجوہرۃ النیرۃ شرح قدوری باب التیمم مکتبہ امدادیہ ملتان ۲۹/۱ Page 68 of 761

Fatawa Rizwia Volume 4

(Arabic text column): ...and he gave it to him, then repetition is mandatory according to both of them (the Sahabayn). If he refused him, then according to Abu Yusuf his prayer is valid and according to Muhammad he repeats it. If his prevailing thought was that he would refuse him, and he prayed then he gave it to him, he performs ablution and repeats. If his prevailing thought was that he would give it to him, so he prayed then asked him and he refused him, he repeats according to Muhammad and according to Abu Yusuf, no. 1 Ah. I say: His statement "in the thought of refusal then he gave it to him, he repeats" means according to both of them. And if he did not give it, no, by consensus. The summary of Muhammad's view, as he narrated, is that if he thought giving was likely or was in doubt, he repeats absolutely, whether he was given after the prayer or refused. And if he thought of refusal, then if he was given, he repeats, otherwise no. Its conclusion is that he stipulates for the validity of tayammum a thought of refusal that does not appear contrary afterwards. The summary of Abu Yusuf's view is that if he was given, he repeats, and if refused, no, whether he thought of giving, refusal, or was in doubt.

(Urdu text column): ...should be the case and he performs prayer then asks and he gives, then by consensus of Sahabayn (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad) repetition is mandatory for him. If he does not give, then according to Imam Abu Yusuf his prayer is correct, and according to Imam Muhammad he has to repeat. And if his prevailing thought was that he would not give, so he performed prayer then he gave, then he should perform wudu and repeat the prayer. And if there was a prevailing thought of giving, at that time he performed prayer (with tayammum) then asked and he did not give, then according to Imam Muhammad he has to repeat and according to Imam Abu Yusuf there is no repetition. "Ah (T) I say: In "thought of refusal," the meaning of their phrase "then he gave, so he should repeat" is that by consensus of Sahabayn its ruling is repetition, and if he did not give then by consensus there is no repetition. And according to the narration of Jawhara, the summary of Imam Muhammad's view is that if he had a thought or doubt of giving, then he must repeat absolutely, whether he gives after prayer or not. And if there was a thought of refusal, then if he gives after prayer, he repeats, otherwise not. And the result of this is that they stipulate for the validity of tayammum such a thought of refusal that is not proven wrong afterwards. And the summary of Imam Abu Yusuf's statement is that after prayer if he gives, then repeat, and if he does not give then

not, whether previously there was a thought of giving or not giving, or there was doubt. (T)

1. Al-Jawhara al-Nayyira Sharh Quduri, Chapter of Tayammum, Maktaba Imdadia Multan 1/29

फ़तावा रिज़विया जिल्द चौथी

(अरबी पाठ स्तंभ): ...और उसने उसे दे दिया, तो दोनों (साहबैन) के अनुसार [नमाज़] दोहराना अनिवार्य है। यदि उसने उसे मना कर दिया, तो अबू यूसुफ़ के अनुसार उसकी नमाज़ जायज़ है और मुहम्मद के अनुसार वह दोहराए। यदि उसका प्रबल विचार था कि वह उसे मना कर देगा, और उसने नमाज़ पढ़ी फिर उसने उसे दे दिया, तो वह वुज़ू करे और दोहराए। यदि उसका प्रबल विचार था कि वह उसे दे देगा, तो उसने नमाज़ पढ़ी फिर उससे माँगा और उसने उसे मना कर दिया, तो वह मुहम्मद के अनुसार दोहराए और अबू यूसुफ़ के अनुसार नहीं। 1 अह। मैं कहता हूँ: उनका कथन "मना करने के विचार में फिर उसने उसे दे दिया, वह दोहराए" का अर्थ है दोनों के अनुसार। और यदि उसने नहीं दिया, तो सर्वसम्मति से नहीं। मुहम्मद के मत का सार, जैसा कि उन्होंने वर्णित किया, यह है कि यदि उसने सोचा कि देना संभावित है या संदेह में था, तो वह पूर्णतः दोहराता है, चाहे उसने नमाज़ के बाद दिया हो या मना किया हो। और यदि उसने मना करने का सोचा था, तो यदि उसने दिया, तो वह दोहराता है, अन्यथा नहीं। इसका निष्कर्ष यह है कि वे तयम्मुम की वैधता के लिए मना करने के ऐसे विचार की शर्त रखते हैं जो बाद में विपरीत न दिखाई दे। अबू यूसुफ़ के मत का सार यह है कि यदि उसने दिया, तो वह दोहराता है, और यदि मना किया, तो नहीं, चाहे उसने देने, मना करने का सोचा हो, या संदेह में रहा हो।

(उर्दू पाठ स्तंभ): ...स्थिति ऐसी हो कि वह नमाज़ पढ़ ले फिर माँगे और वह दे दे, तो दोनों साहबैन (इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद) की सहमति के अनुसार, उस पर दोहराना अनिवार्य है। यदि वह नहीं देता है, तो इमाम अबू यूसुफ़ के अनुसार उसकी नमाज़ सही है, और इमाम मुहम्मद के अनुसार उसे दोहराना होगा। और यदि उसका प्रबल विचार था कि वह नहीं देगा, तो उसने नमाज़ अदा की फिर उसने दे दिया, तो उसे वुज़ू करना चाहिए और नमाज़ लौटानी चाहिए। और यदि देने का प्रबल विचार रहा हो, उस समय उसने (तयम्मुम के साथ) नमाज़ अदा की फिर माँगा और उसने नहीं दिया, तो इमाम मुहम्मद के अनुसार उसे दोहराना होगा और इमाम अबू यूसुफ़ के अनुसार दोहराना नहीं है। "अह (त) मैं कहता हूँ: "मना करने के विचार" में, उनके वाक्यांश "फिर उसने दे दिया, तो उसे दोहराना चाहिए" का अर्थ यह है कि साहबैन की सहमति के अनुसार इसका नियम दोहराना है, और यदि उसने नहीं दिया तो सर्वसम्मति से दोहराना नहीं है। और जौहरा के वर्णन के अनुसार, इमाम मुहम्मद के मत का सार यह है कि यदि उसे देने का विचार या संदेह था, तो उसे पूर्णतः दोहराना होगा, चाहे वह नमाज़ के बाद दे या न दे। और यदि मना करने का विचार था, तो यदि

वह नमाज़ के बाद देता है, तो दोहराए, अन्यथा नहीं। और इसका परिणाम यह है कि वे तयम्मुम की वैधता के लिए मना करने के ऐसे विचार की शर्त रखते हैं जो बाद में गलत सिद्ध न हो। और इमाम अबू यूसुफ़ के कथन का सार यह है कि नमाज़ के बाद यदि वह देता है, तो दोहराए, और यदि वह नहीं देता है तो नहीं, चाहे पहले देने का विचार रहा हो या न देने का, या संदेह रहा हो। (त)

1. अल-जौहरा अल-नय्यिरा शरह कुदूरी, तयम्मुम का अध्याय, मकतबा इमदादिया मुल्तान 1/29

पृष्ठ 761 का 69

(عربی کالم): واعطاه وجب علیه الاعادة باتفاقهما وان منعه فعند ابي یوسف صلاته جائزة وعند محمد یعید وان غلب علی ظنه انه یمنعه فصلی ثم اعطاه توضأ واعاد وان غلب علی ظنه الدفع الیه فصلی ثم سأله فمنعه اعاد عند محمد وعند ابی یوسف لا 1اھ اقول: قوله فی ظن المنع ثم اعطاه اعاد ای باتفاقهما وان لم یعط لا بالا جماع وحاصل قول محمد علی ما حکاه انه ان ظن العطاء اوشك اعاد مطلقا اعطی بعد الصلاة او منع وان ظن المنع فان اعطی اعاد والا لا ومحصوله انه یشترط لجواز التیمم ظن منع لا یظهر خلافه وحاصل قول ابی یوسف انه ان اعطی اعاد وان منع لا سواء ظن عطاء او منع او شک۔

(اردو کالم): کی صورت ہو اور نماز پڑھ لے پھر مانگے اور وہ دے دے تو بالاتفاق صاحبین اس پر اعادہ واجب ہے اور اگر نہ دے تو امام ابو یوسف کے نزدیک اس کی نماز صحیح ہے۔ اور امام محمد کے نزدیک اسے اعادہ کرنا ہے۔ اور اگر اس کا غالب گمان ہو کہ نہیں دے گا تو اس نے نماز پڑھ لی پھر اس نے دے دیا تو وضو کرے اور نماز لوٹائے۔ اور اگر دینے کا غالب گمان رہا ہو اس وقت اس نے نماز (تیمم سے) پڑھ لی پھر مانگا اس نے نہ دیا تو امام محمد کے نزدیک اسے اعادہ کرنا ہے اور امام ابو یوسف کے نزدیک اعادہ نہیں۔ "اھ (ت) اقول: ظن منع میں ان کی عبارت "پھر اس نے دے دیا تو اعادہ کرے " کا معنی یہ ہے کہ بالاتفاق صاحبین اس کا حکم اعادہ ہے اور اگر نہ دیا تو بالاجماع اعادہ نہیں۔ اور حکایت جوہرہ کے مطابق قول امام محمد کا حاصل یہ ہے کہ اگر اسے عطا کا گمان یا شک ہو تو مطلقاً اعادہ کرنا ہے بعد نماز دے یا نہ دے اور اگر منع کا ظن رہا ہو تو اگر بعد نماز دے دے اعادہ کرے ورنہ نہیں۔ اور اس کا محصول یہ ہے کہ وہ جواز تیمم کیلئے ایسے ظن منع کی شرط لگاتے ہیں جس کے خلاف بعد میں ظاہر نہ ہو۔ اور امام ابویوسف

کے قول کا حاصل یہ ہے کہ بعد نماز اگر دے دے تو اعادہ کرے اور اگر نہ دے تو نہیں پہلے خواہ دینے کا ظن رہا ہو یا نہ دینے کا، یا شک رہا ہو۔ (ت)

1 الجوھرۃ النیرۃ شرح قدوری باب التیمم مکتبہ امدادیہ ملتان ۱/ ۲۹

Fatawa Ridawiyya, Volume 4

There are several points regarding the discussion on 'Al-Jawharah': Firstly: The ruling on the obligation of seeking (water) was that tayammum (dry ablution) should not be sufficient before it, just as it is written in the sub-division of the Imam's statement: "When seeking is not obligatory, tayammum will be valid." We have already quoted from 'Al-Siraj' and 'Al-Jawharah' in the fifth benefit of the commentary on 'Al-Hadd Al-Ridawi' that where seeking is obligatory and one does not seek, then tayammum is not permissible, even if water is not found later. In view of this, in a situation of doubt, the obligation of seeking is only apparent according to the opinion narrated from Imam Muhammad; it is not apparent according to the opinion of Imam Abu Yusuf.

However, if we base it on the research that we will express with the grace of the Supreme God, then 'obligation' here does not have the same meaning as it does there. The result of this will be that tayammum will be invalid if there was a presumption or doubt of a gift (water) being given and water was not sought before or after. And the Supreme God knows best.

Secondly: The implication, or rather the explicit meaning as discovered from this narration from Imam Muhammad, is that if one saw (water) during prayer and had a presumption or doubt of it being given, then his prayer became invalid immediately, without waiting for whether it was given or denied later. This is because something whose presence prevents tayammum, its occurrence will be an invalidator of tayammum. As it is stated in 'Al-Badai', 'Al-Bahr', 'Al-Durr Al-Mukhtar', etc. And this, as has become known, is a rare narration from Imam Muhammad, and we have already discussed it. In this narration, there is either an interpretation...

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4

'अल-जौहरा' के बयान पर कुछ कलाम है: प्रथम: तलब (खोज) वाजिब होने का हुक्म यह था कि उससे पहले तयम्मुम पर्याप्त न हो जैसा कि इमाम के कौल की तफ़रीअ में लिखा है कि "जब तलब वाजिब न हो तयम्मुम हो जाएगा।" हमने 'तअरीफ़-ए-रज़वी' की शरह के इफ़ादा-ए-पंजुम में उनकी 'सिराज' और 'जौहरा' से नक़ल कर आए हैं कि जहाँ तलब वाजिब हो और तलब न करे तो तयम्मुम जाइज़ नहीं चाहे बाद में पानी न मिले। तो इसके पेश-ए-नज़र शक की सूरत में वजूब-ए-तलब सिर्फ़ उस कौल पर ज़ाहिर है जो उन्होंने इमाम मुहम्मद से हिकायत किया, इमाम अबू यूसुफ़ के कौल पर ज़ाहिर नहीं।

मगर यह कि इस तहक़ीक़ पर बुनियाद रखें जिसका हम ब-तौफ़ीक़-ए-ख़ुदा-ए-बरतर इज़हार करेंगे कि यहाँ पर वजूब का वह मअनी नहीं जो वहाँ पर है। और इसका समरा यह होगा कि तयम्मुम बातिल होगा जब देने का गुमान या शक रहा हो और पानी न पहले तलब किया हो न बाद में। और ख़ुदा-ए-बरतर ही खूब जानने वाला है।

द्वितीय: इमाम मुहम्मद से इस हिकायत का लाज़िम बल्कि सरीह जैसा कि मालूम हुआ, यह है कि अगर नमाज़ के अंदर देखा और देने का गुमान या शक हुआ तो बाद में देने या न देने पर कुछ मौक़ूफ़ रहे बग़ैर अभी उसकी नमाज़ बातिल हो गई। इसलिए कि जिस चीज़ की मौजूदगी तयम्मुम से मानिअ हो, उसका हुदूथ तयम्मुम का नाकिज़ होगा। जैसा कि 'बदाइअ', 'बहर', 'दुर्र-ए-मुख्तार' वग़ैरहा में है। और यह जैसा कि मालूम हुआ, इमाम मुहम्मद से एक नादिर रिवायत है और हम पहले इस पर बहस कर चुके हैं। इस रिवायत में या तो तावील...

पृष्ठ 70 ऑफ़ 761

فتاوی رضویہ، جلد چہارم

جوہرہ کے بیان پر چند کلام ہے: اول: طلب واجب ہونے کا حکم یہ تھا کہ اس سے پہلے تیمم کفایت نہ کرے جیسا کہ قول امام کی تفریع میں لکھا کہ "جب طلب واجب نہ ہو تیمم ہو جائے گا۔" ہم تعریف رضوی کی شرح کے افادہ پنجم میں ان کی سراج اور جوہرہ سے نقل کر آئے ہیں کہ جہاں طلب واجب ہو اور طلب نہ کرے تو تیمم جائز نہیں اگرچہ بعد میں پانی نہ ملے۔ تو اس کے پیش نظر صورت شک میں وجوب طلب صرف اس قول پر ظاہر ہے جو انہوں نے امام محمد سے حکایت کیا امام ابو یوسف کے قول پر ظاہر نہیں۔

مگر یہ کہ اس تحقیق پر بنیاد رکھیں جس کا ہم بتوفیق خدائے برتر اظہار کریں گے کہ یہاں پر وجوب کا وہ معنی نہیں جو وہاں پر ہے۔ اور اس کا ثمرہ یہ ہو گا کہ تیمم باطل ہو گا جب دینے کا گمان یا شک رہا ہو اور پانی نہ پہلے طلب کیا ہو نہ بعد میں۔ اور خدائے برتر ہی خوب جاننے والا ہے۔

دوم: امام محمد سے اس حکایت کا لازم بلکہ صریح جیسا کہ معلوم ہوا، یہ ہے کہ اگر نماز کے اندر دیکھا اور دینے کا گمان یا شک ہوا تو بعد میں دینے، نہ دینے پر کچھ موقوف رہے بغیر ابھی اس کی نماز باطل ہوگئی۔ اس لئے کہ جس چیز کی موجودگی تیمم سے مانع ہو اس کا حدوث تیمم کا ناقض ہوگا۔ جیسا کہ بدائع، بحر، در مختار و غیرہا میں ہے۔ اور یہ جیسا کہ معلوم ہوا، امام محمد سے ایک نادر روایت ہے اور ہم پہلے اس پر بحث کر چکے ہیں۔ اس روایت میں یا تو تاویل

Fatawa Razvia, Volume 4

[Left Column - Arabic Text] ...interpreted or abandoned. I say: (1) Interpretation does not work here because of the explicit statement of not paying attention to what appears afterwards, so nothing remains but abandonment. Thirdly: (2) Rather, even that rare report, by its implication—that this applies when giving is presumed, not when doubted—contradicts this story which equates the presumption of giving with doubt. Fourthly: (3) It is contradicted by what was previously mentioned from 'Al-Ikhtiyar' regarding the analogy of Imam Muhammad's view, in which only the presumption of giving is considered. It is also explicitly contradicted by what was mentioned from 'Al-Nihayah' that the position in which no disagreement is reported among our three scholars (may Allah be pleased with them), except in 'Al-Idah', is that the obligation of seeking is restricted to the presumption of giving. The disagreement mentioned in 'Al-Idah' and elsewhere is that according to the Imam (Abu Hanifa), there is no obligation at all. Thus, according to neither side was the presumption of giving and doubt considered equal, neither by Imam Muhammad nor by Imam Abu Yusuf. Therefore, observe with insight. All praise belongs to Allah. As for thirdly: I say: And with Allah is success. This is the solution through verification: if (4) something is apparent and its contrary is possible, not from...

[Right Column - Urdu Translation] ...be done, or this narration is abandoned and discarded. (T) I say: And interpretation cannot work here because they are explicitly stating that no attention is paid to what appears later. So, it remains that this narration is abandoned and discarded here. Third: Rather, even that rare narration, by its implication, opposes this story which claims equality between the presumption of giving and doubt, stating that this applies when there is a presumption of giving, not when there is doubt. Fourth: Opposing it is also what was stated regarding the analogy of Imam Muhammad's view from 'Al-Ikhtiyar', that only the presumption of giving is considered in it. And it is explicitly contradicted by what was mentioned from 'Al-Nihayah' that the position (madhhab) in which no difference of opinion is reported among our three scholars (May Allah Almighty be pleased with them), except in 'Al-Idah', is that the obligation of seeking is limited only to the presumption of giving. And the disagreement reported in 'Al-Idah' and others is that according to the Imam (Abu Hanifa), there is no obligation at all. Thus, according to neither of the two parties was the presumption of giving and doubt stated as equal, neither according to Imam Muhammad nor according to Imam Abu Yusuf. Therefore, it should be looked at with an eye of insight. And all praise is for Allah alone. (T) Third: I say, and

with Allah is the guidance (I say, and success is from God alone), and this is also the solution by way of investigation. When something is apparent and its...

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4

[बायाँ कॉलम - अरबी पाठ] ...व्याख्या की जाए या त्याग दी जाए। मैं कहता हूँ: (1) यहाँ व्याख्या संभव नहीं है क्योंकि बाद में जो प्रकट हो उसकी ओर ध्यान न देने का स्पष्ट उल्लेख है, इसलिए केवल त्याग ही शेष रहता है। तीसरा: (2) बल्कि वह दुर्लभ रिवायत भी अपने अर्थ में—कि यह तब है जब दान की संभावना हो, न कि जब संदेह हो—इस किस्से का विरोध करती है जो दान की संभावना और संदेह को बराबर बताता है। चौथा: (3) यह 'अल-इख्तियार' के हवाले से इमाम मुहम्मद के उस कथन की तुलना के विरुद्ध है जिसमें केवल दान की संभावना का ही विचार किया गया है। और स्पष्ट रूप से इसके विपरीत वह है जो 'निहाया' के हवाले से बताया गया है कि वह मत (मज़हब) जिसमें 'अल-ईदाह' के अलावा हमारे तीनों विद्वानों (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के बीच कोई मतभेद नहीं बताया गया है, वह यह है कि माँगने की अनिवार्यता केवल दान की संभावना तक ही सीमित है। और 'अल-ईदाह' आदि में जो मतभेद बताया गया है वह यह है कि इमाम साहब (अबू हनीफा) के निकट कोई अनिवार्यता नहीं है। अतः दोनों पक्षों में से किसी के निकट भी दान की संभावना और संदेह को न तो इमाम मुहम्मद के निकट बराबर बताया गया और न ही इमाम अबू यूसुफ के निकट। इसलिए इसे विवेकपूर्ण दृष्टि से देखना चाहिए। अल्लाह के लिए ही सब प्रशंसा है। जहाँ तक तीसरे का सवाल है: मैं कहता हूँ: और अल्लाह की सहायता से। और जाँच के तौर पर यही समाधान है: यदि (4) कोई चीज़ स्पष्ट हो और उसके विपरीत होना संभव हो, न कि...

[दायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद] ...की जाए या यह रिवायत छोड़ दी गई और त्याग दी गई है। (त) मैं कहता हूँ: और यहाँ व्याख्या काम नहीं कर सकती क्योंकि वे स्पष्ट कर रहे हैं कि बाद में जो प्रकट हो उसकी ओर कुछ ध्यान नहीं दिया जाता। तो यही रह गया कि यहाँ यह रिवायत छोड़ दी गई और त्याग दी गई हो। तीसरा: बल्कि वह दुर्लभ रिवायत भी अपने अर्थ से दान की संभावना और संदेह में बराबरी बताने वाली इस कहानी का विरोध कर रही है कि यह उस समय है जब दान का अनुमान हो, उस समय नहीं जब संदेह हो। चौथा: इसके विपरीत वह भी है जो 'इख्तियार' के संदर्भ से इमाम मुहम्मद के कथन का अनुमान बताया गया कि उसमें केवल दान की संभावना का ही विचार है। और स्पष्ट रूप से इसके विपरीत वह है जो 'निहाया' के संदर्भ से बताया गया कि वह मत जिसमें 'ईदाह' के अलावा किसी से भी हमारे तीनों विद्वानों (रज़ी अल्लाहु तआला अन्हुम) के बीच कोई मतभेद नहीं बताया गया, यह है कि माँगने की अनिवार्यता केवल दान की संभावना में ही सीमित है। और 'ईदाह' आदि में जो मतभेद बताया गया है वह यह है कि इमाम साहब के निकट बिल्कुल भी अनिवार्यता नहीं

है। तो दोनों पक्षों में से किसी के निकट भी दान की संभावना और संदेह को न इमाम मुहम्मद के निकट बराबर बताया गया और न इमाम अबू यूसुफ के निकट। तो इसे अंतर्दृष्टि से देखना चाहिए। और खुदा के लिए ही प्रशंसा है। (त) तीसरा: मैं कहता हूँ, और अल्लाह ही से सफलता है (मैं कहता हूँ, और खुदा ही से तौफीक है) और जाँच के तौर पर यही समाधान भी है। जब कोई चीज़ स्पष्ट हो और उसके..

पृष्ठ 71 का 761

فتاوی رضویہ، جلد چہارم

[بایاں کالم - عربی متن] مؤولة اومهجورة۔ اقول: (۱) والتأویل لا یتمشی هنا لتصریحه بعدم الالتفات لما یظهر بعد فلم یبق الا الهجر۔ وثالثا: (۲) بل تلك النادرة ایضا بمفهومها ان هذا اذا ظن العطاء لا اذا شک تخالف هذه الحکایة المسویة بین ظن الاعطاء والشک۔ ورابعا: (۳) ینافیه مامرر عن الاختیار من قیاس قول محمد المعتبر فیه ظن الاعطاء فقط ویناقضه صریحا ما مر عن النهایة ان المذهب الغیر المنقول فیه خلاف بین اصحابنا الثلثة رضی اللہ تعالی عنهم الا فی الایضاح هو قصر الوجوب علی ظن الاعطاء والخلاف الذی فی الایضاح وغیره هو عدم الوجوب عند الامام مطلقا فلیس عند احد من الفریقین تسویة ظن العطاء والشک عند محمد ولا عند ابی یوسف فتبصر واللہ الحمد۔ واما ثالثا: فاقول: وباللہ التوفیق وهو الحل علی وجه التحقیق اذا(۴) کان شیئ ظاهرا وخلافه محتملا لا عن

[دایاں کالم - اردو ترجمہ] کی جائے یا یہ روایت مہجور و متروک ہے۔ (ت) اقول: اور یہاں تاویل نہیں چل سکتی اس لئے کہ وہ صراحت کررہے ہیں کہ اس کی طرف کچھ التفات نہیں جو بعد میں ظاہر ہو تو یہی رہ گیا کہ یہاں یہ روایت مہجور و متروک ہو۔ سوم: بلکہ وہ نادر روایت بھی اپنے مفہوم سے ظنِ عطا اور شک میں برابری بتانے والی اس حکایت کی مخالفت کر رہی ہے کہ یہ اس وقت ہے جب عطا کا گمان ہو اس وقت نہیں جب شک ہو۔ چہارم: اس کے منافی وہ بھی ہے جو اختیار کے حوالہ سے قول امام محمد کا قیاس بیان ہوا کہ اس میں صرف ظنِ عطا کا اعتبار ہے۔ اور صراحۃً اس کے مناقض وہ ہے جو نہایہ کے حوالہ سے بیان ہوا کہ مذہب جس میں سوائے ایضاح کے کسی سے بھی ہمارے تینوں اصحاب رضی اللہ تعالی عنہم کے درمیان کوئی اختلاف منقول نہیں، یہ ہے کہ وجوب طلب صرف ظنِ عطا میں محدود ہے۔ اور ایضاح وغیرہ میں جو خلاف منقول ہے وہ یہ ہے کہ امام صاحب کے نزدیک مطلقاً وجوب نہیں۔ تو فریقین میں سے کسی

کے نزدیک بھی ظنِ عطا اور شک کو نہ امام محمد کے نزدیک برابر بتایا گیا نہ امام ابویوسف کے نزدیک۔ تو اسے نگاہِ بصیرت سے دیکھنا چاہئے۔ اور خدا ہی کیلئے حمد ہے۔ (ت) ثالثا: فاقول: وباللہ التوفیق، (میں کہتا ہوں، اور خدا ہی سے توفیق ہے) اور بطورِ تحقیق یہی حل بھی ہے۔ جب کوئی چیز ظاہر ہو اور اس کے

Fatawa Razawiya Volume 4

If the possibility of contradiction is without evidence, it will not oppose the apparent (Zahir). Consequently, doubt will not occur in that apparent because the two sides are not equal. Scholars have explicitly stated in Ilm al-Kalam (theology) that "a possibility without evidence does not contradict certainty in a general sense." So how can it contradict a presumption (Zann)? Doubt regarding a gift/provision (Ata) only occurs when the side of provision cannot be favored by any evidence; in such a case, the side of provision remains a possibility without evidence. Therefore, it does not create doubt in the known apparent inability (Ajz). This is in contrast to a situation where there is a presumption (Zann) of provision, because that is based on evidence, and it is a necessary matter. Thus, the apparent will oppose the apparent, and the inability will remain doubtful, so the condition for Tayammum will not be fulfilled. This is similar to someone who doubts the proximity of water; this doubt of his does not make the inability doubtful to the point that Tayammum becomes permissible for him without searching [for water], whereas it is not permissible for one who presumes the proximity of water, as mentioned previously. Through this investigation, the brilliant answer to the statement of Sadr al-Shariah—that "both power (Qudrat) and inability (Ajz) are doubtful"—has become manifest. It has become clear that such a doubt does not oppose the manifest inability. Thus, it is necessary to disregard this doubt and associate it with the presumption of prohibition (Man'a). All praise belongs to Allah. Then, after a few nights, I saw the confirmation of my reasoning in the words of Imam Malik al-Ulama, as will appear towards the end of the eighth issue. All praise belongs to Allah. (T)

1. Sharh al-Wiqayah, Chapter on Tayammum, Maktabah al-Rashidiyyah, Delhi, 1/102 Page 72 of 761

फ़तावा रज़विया, खंड 4

यदि विरोध की संभावना बिना किसी प्रमाण के हो, तो वह उस ज़ाहिर (स्पष्ट) के विरुद्ध नहीं होगी। इसलिए उस ज़ाहिर में संदेह उत्पन्न नहीं होगा क्योंकि दोनों पक्ष बराबर नहीं हैं। विद्वानों ने इल्म-ए-कलाम (धर्मशास्त्र) में स्पष्ट रूप से कहा है कि "बिना प्रमाण की संभावना सामान्य अर्थ में यक़ीन (निश्चितता) के विरुद्ध नहीं है।" तो यह ज़न्न (धारणा) के विरुद्ध कैसे हो सकती है? अता (प्राप्ति) में संदेह केवल तभी होता है जब प्राप्ति के पक्ष को किसी प्रमाण से प्राथमिकता प्राप्त न हो सके; ऐसी स्थिति में प्राप्ति का पक्ष बिना प्रमाण के मात्र एक संभावना रह जाएगा। अत; यह उस ज्ञात ज़ाहिर अज्ज़ (अक्षमता) में संदेह पैदा नहीं करेगा। यह उस स्थिति के विपरीत है जहाँ प्राप्ति का ज़न्न (धारणा) हो, क्योंकि वह एक प्रमाण पर आधारित है और यह एक आवश्यक बात है। अतः ज़ाहिर ज़ाहिर के विरुद्ध हो जाएगा और अक्षमता संदिग्ध रहेगी, जिससे तयम्मुम की शर्त पूरी नहीं हो पाएगी। यह बिल्कुल वैसा ही है जैसे किसी को पानी के निकट होने का संदेह हो; उसका यह संदेह अक्षमता को संदिग्ध नहीं बनाता, यहाँ तक कि पानी की तलाश किए बिना उसके लिए तयम्मुम करना जायज़ हो जाता है, जबकि उसके लिए जायज़ नहीं है जिसे पानी के पास होने का गुमान (धारणा) हो, जैसा कि पहले बताया जा चुका है। इस शोध से सद्र-उश-शरीअह के उस कथन का स्पष्ट उत्तर सामने आ गया कि "कुदरत (क्षमता) और अज्ज़ (अक्षमता) दोनों में संदेह है।" और यह स्पष्ट हो गया कि ऐसा संदेह अक्षमता के प्रकट होने के विरुद्ध नहीं है। अतः इस संदेह को नज़रअंदाज़ करना और इसे 'मनाही' की धारणा के साथ जोड़ना अनिवार्य है। और अल्लाह ही के लिए सब प्रशंसा है। फिर कुछ रातों के बाद मैंने अपने इस तर्क की पुष्टि इमाम मलिक-उल-उलेमा के शब्दों में देखी, जैसा कि आठवें मसले के अंत में आ रहा है। और अल्लाह ही के लिए सब प्रशंसा है। (त)

1. शरह अल-विक़ायाह, तयम्मुम का अध्याय, मकतबा अल-रशीदिया, दिल्ली, 1/102 पृष्ठ 72/761

خلاف کا احتمال بلا دلیل ہو تو یہ اس ظاہر کے معارض نہ ہوگا تو اس ظاہر میں شک نہ واقع ہوگا اس لئے کہ طرفین برابر نہیں۔ علما نے علم کلام میں تصریح فرمائی ہے کہ "احتمال بلا دلیل یقین بمعنی اعم کے منافی نہیں " تو ظن کے منافی کیسے ہوگا ۔ اور عطا میں شک نہ ہو گا مگر اسی وقت جب کہ جانب عطا کو کسی دلیل سے ترجیح حاصل نہ ہو سکے تو جانب عطا محتمل بلا دلیل رہ جائے گی تو اس سے اس عجز میں شک نہ پیدا ہوگا جس کا ظاہر معلوم ہے بخلاف اس صورت کے جب عطا کا ظن ہو اس لئے کہ یہ ایک دلیل سے ہے اور یہ لازمی امر ہے تو ظاہر ، ظاہر کے معارض ہو جائے گا اور عجز مشکوک رہے گا تو تیمم کی شرط متحقق نہ ہو سکے گی۔ اور یہ ایسے ہی ہے جیسے کسی کو پانی کے قریب ہونے کا شک ہو کہ اس کا یہ شک اس کے عجز کو مشکوک نہیں بنا دیتا یہاں تک کہ پانی تلاش کئے بغیر اس کیلئے تیمم روا ہے اور اس کیلئے روا نہیں جسے پانی کے قریب ہونے کا گمان ہو جیسا کہ پہلے بیان ہوا۔ اس تحقیق سے صدر الشریعہ کے اس کلام کا روشن جواب عیاں ہو گیا کہ "قدرت و عجز دونوں میں شک ہے"۔ اور واضح ہو گیا کہ ایسا شک ظہور عجز کے معارض نہیں ۔ تو اس شک کو نظر انداز کرنا اور ظن منع سے لاحق کرنا لازم ہے۔ اور خدا ہی کیلئے حمد ہے پھر میں نے چند راتوں کے بعد اپنی اس تعلیل کی تصدیق امام ملک العلماء کے کلام میں دیکھی جیسا کہ مسئلہ ہشتم کے اواخر میں آ رہا ہے اور خدا ہی کیلئے حمد ہے ۔ (ت)

۱ شرح الوقایہ باب التیمم مکتبۃ الرشیدیہ دہلی ۱/ ۱۰۲ صفحہ 72 از 761

Fatawa-e-Razwiya Volume 4 Issue 77: In the fifth benefit of the 'Explanation of Razwi Definition', it was mentioned that here the actual occurrence is considered. If one had a strong assumption (or doubt) that the owner would not give water, and they performed prayer with Tayammum, but later the owner gave water (either voluntarily or upon request), then the prayer (Footnote 1) was not valid and must be repeated. If one had a strong assumption that the owner would give water, but (contrary to the command) they did not ask and performed prayer with Tayammum, and later asked but the owner did not give, then the prayer (Footnote 2) was valid. The excerpt from 'Sharh Waqaya' was cited there, and other regulatory texts will appear later, Insha-Allah. Yes, if they asked neither before nor after, the situation of refusal or giving would not be revealed. I say: In the case where there was no assumption of receiving water, they neither spent nor threw away the water, nor in the state of doubt or assuming refusal did the owner give it after the prayer without a prior refusal. In such a case, their assumption will certainly be considered; if the assumption was that water would be given, the prayer was not valid, otherwise, it was.

Footnote 1: The dear son, Maulana Mustafa Raza Khan (may the Majestic and Exalted protect him and elevate him to the stages of perfection), suggested a fine refinement here: that new water might not have reached the owner after that time; otherwise, giving from plenty of water would not negate the assumption or doubt that existed during the state of water scarcity. And this was during the preparation of the treatise for printing on the 16th of Muharram al-Haram, 1336 AH, and all praise is for Allah. (And this advice was given on the 16th of Muharram, 1336 AH, during the preparation of the treatise for printing, and all praise is for Allah alone. - T) I say: This condition is certainly worthy of consideration, though it hasn't been encountered in books, as scholars have discussed the existing state. Here, such detail is appropriate: if that assumption of refusal was based on water scarcity, then giving after it becomes plentiful would not prove that assumption wrong. But if it was for other reasons, for example, a grudge against the water owner, unfamiliarity, or assuming him to be miserly, then the error of that assumption would certainly be revealed, as is not hidden. And Allah knows best. Let it be reviewed and recorded. (12th, from him - as is not hidden and Allah knows best, so let it be reviewed and clarified. - T) (M)
Footnote 2: Based on the analogy of the same suggestion by the dear son, it may also be said here: if this refusal to give was because the water had decreased due to being spent in the meantime, then this refusal would not indicate the error of the assumption that water would be given. I say: There are two possibilities here. If this

spending was such that someone asked before and he gave it, and now very little remains so he refused, then undoubtedly the error of that assumption will not be proven. Apparently, the prayer should be repeated. And if he spent it on his own needs, then now not giving will negate that assumption [that he would have given], for he required that much for himself, and he refused from what remained. Let it be reviewed and recorded. (12th, from him, may he be forgiven - so let it be reviewed and clarified. - T) (M) Page 73 of 761

फतावा-ए-रज़विया जिल्द चौथी मसला ७७: 'शरह-ए-तारीफ़-ए-रज़विया' के पाँचवें इफ़ादा (फ़ायदे) में गुज़रा कि यहाँ असल वाकये (जो वास्तव में हुआ) का एतबार है। अगर उसे ग़ालिब गुमान (प्रबल धारणा) था कि पानी नहीं देगा (या शक था) और उसने तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली, उसके बाद उसने पानी दे दिया (चाहे खुद से या माँगने पर) तो नमाज़ (हाशिया १) नहीं हुई, उसका एआदा (दोहराना) करे। और अगर ग़ालिब गुमान था कि दे देगा और (हुक्म के ख़िलाफ़ करते हुए) उसने नहीं माँगा और तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली, बाद में माँगा और उसने नहीं दिया, तो नमाज़ (हाशिया २) हो गई। 'शरह वक़ाया' की इबारत वहीं गुज़री और अन्य इबारतें क़वानीन (नियमों) में आएँगी, इंशा-अल्लाह। हाँ, अगर उसने न पहले माँगा न बाद में, तो मना करने या देने का हाल कैसे खुलता। मैं कहता हूँ: न तो देने के गुमान की सूरत में उसने पानी ख़र्च कर लिया या फेंक दिया, न ही शक या मना करने के गुमान की हालत में उसने नमाज़ के बाद पिछले इनकार के बिना पानी दे दिया, तो यकीनन उसके गुमान का एतबार होगा। अगर देने का गुमान था तो नमाज़ नहीं हुई, वर्ना हो गई।

हाशिया १: प्यारे बेटे मौलवी मुस्तफ़ा रज़ा खाँ (अल्लाह उन्हें सलामत रखे और कमाल के दरजों तक पहुँचाए) ने यहाँ एक बेहतरीन मशविरा दिया कि पानी के मालिक के पास उस वक़्त के बाद नया पानी न आ गया हो, वर्ना ज़्यादा पानी में से दे देना उस गुमान और शक को दूर नहीं करेगा जो पानी की कमी की हालत में था। और यह रिसाले (लेख) को छपाई के लिए तैयार करते समय १६ मुहर्रमुल हराम १३३६ हिजरी को हुआ, और तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं। (और यह मशविरा छपाई की तैयारी के वक़्त १६ मुहर्रम १३३६ हिजरी को दिया गया, और हम्द सिर्फ अल्लाह तआला के लिए ही है। - त) मैं कहता हूँ: यह शर्त यकीनन गौर करने के काबिल है, हालाँकि किताबों में नज़र से नहीं गुज़री क्योंकि उलेमा ने उसी मौजूदा हालत पर कलाम (चर्चा) फ़रमाया है। और यहाँ इस तरह विस्तार मुनासिब है कि अगर वह मनाही का गुमान पानी की कमी की वजह से था, तो पानी ज़्यादा होने के बाद देना उस गुमान को ग़लत साबित नहीं करेगा। और अगर वह अन्य कारणों से था, मिसाल के तौर पर पानी के मालिक से रंजिश या नावाकिफ़ियत या उसके बारे में कंजूसी का गुमान, तो ज़रूर उस गुमान की ग़लती ज़ाहिर हो गई जैसा कि छिपा नहीं है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। इस पर गौर किया जाए और इसे तहरीर किया जाए। (१२वीं तारीख, उन्हीं की तरफ से - जैसा कि छिपा नहीं है और अल्लाह बेहतर जानता है, तो इस पर दोबारा गौर और वज़ाहत कर ली जाए। - त) (म) हाशिया २: क्या प्यारे बेटे के उसी मशविरे के कयास (अनुमान) पर यहाँ भी कहा जाएगा कि अगर यह न देना इस बिना पर हो कि इतनी देर में पानी उसके पास ख़र्च होकर कम रह

गया, तो यह मना करना देने के उस गुमान की ग़लती नहीं बताएगा। मैं कहता हूँ: यहाँ २ सूरतें हैं। अगर यह ख़र्च हो जाना इस तरह हो कि इससे पहले किसी ने माँगा और उसने दे दिया, अब कम रह गया इसलिए मना कर दिया, तो बेशक उस गुमान की ख़ता (ग़लती) साबित न होगी। ज़ाहिरा तौर पर नमाज़ दोहरानी चाहिए। और अगर उसने खुद अपनी ज़रूरत में ख़र्च किया, तो अब न देना उस गुमान को रद्द (नकारना) कर देगा कि इतना तो उसे खुद दरकार (ज़रूरत) था और जो बाकी रहा उससे उसने इनकार किया। इस पर गौर किया जाए और इसे तहरीर किया जाए। (१२वीं तारीख, उन्हीं की तरफ से, अल्लाह उन्हें बख्शे - तो इस पर दोबारा गौर और वज़ाहत कर ली जाए। - त) (म)
पेज ७३ ऑफ़ ७६१

فتاوی رضویہ جلد چہارم مسئلہ ۷۷ : شرحِ تعریف رضوی کے افادہ پنجم میں گزرا کہ یہاں اعتبار واقع کا ہے اگر اسے ظن غالب تھا کہ نہ دے گا (یا شک تھا) اور اس نے تیمم سے پڑھ لی بعدہ، اس نے پانی دے دیا (بطور خود خواہ) اس کے مانگنے سے تو نماز عہ۱ نہ ہوئی اعادہ کرے اور اگر ظن غالب تھا کہ دے دے گا اور (خلاف حکم کرکے) اس نے نہ مانگا اور تیمم سے پڑھ لی بعد کو مانگا اور اس نے نہ دیا تو نماز عہ۲ ہوگئی شرح وقایہ کی عبارت وہیں گزری اور دیگر عبارات قوانین میں آئیں گی ان شاء اللہ تعالیٰ۔ ہاں اگر اس نے نہ اول مانگانہ بعد کو کہ منع وعطا کا حال کھلتا۔ اقول: نہ ظنِ عطا کی صورت میں اُس نے پانی خرچ کرلیا یا پھینک دیا نہ شک یا ظن منع کی حالت میں اس نے بعد نماز بے انکار سابق دے دیا تو البتہ اس کے ظن کا اعتبار ہے اگر ظن عطا تھا نماز نہ ہوئی ورنہ ہوگئی،

عہ۱ ولد عزیز مولوی مصطفیٰ رضا خاں سلمہ ذوالجلال ور قاہ الی مدارج الکمال نے یہاں ایک تفنیذِ حسن کا مشورہ دیا کہ صاحب آب کے پاس اس وقت کے بعد نیا پانی اور نہ آگیا ہو ورنہ آب کثیر میں سے دے دینا اُس ظن وشک کو کہ قلتِ آب کی حالت میں تھا دفع نہ کرے گا وکان ذلک عند تبییض الرسالۃ للطبع في ۱۶ من المحرم الحرام ۱۳۳۶ھ وللہ الحمد (اور یہ مشورہ طباعت کیلئے رسالے کی تیاری کے وقت ۱۳۳۶ھ ماہِ محرم کی ۱۶ تاریخ کو دیا اور حمد اللہ تعالیٰ ہی کیلئے ہے۔ ت) اقول: یہ قید ضرور قابلِ لحاظ ہے اگرچہ کتابوں میں نظر سے نہ گزری کہ علما نے اُسی حالتِ موجودہ پر کلام فرمایا اور یہاں یوں تفصیل مناسب کہ اگر وہ ۲ ظن منع بر بنائے قلتِ آب تھا تو بعد کثرت دینا اس کا تخطیہ نہ کرے گا اور اگر اور وجوہ سے تھا مثلاً صاحب آب سے رنجش یا ناشناسائی یا اس کی نسبت گمان بخل تو ضرور اس گمان کی غلطی ظاہر ہوگئی کمالایخفی واللہ تعالیٰ اعلم فلیراجع ولیحرر ۱۲ منہ (جیسا کہ مخفی نہیں اور اللہ تعالیٰ خوب جانتا ہے تو اس کی

مراجعت اور وضاحت کر لی جائے۔ ت) (م) عہ ۲ آیا اسی مشورہ ولد عزیز کے قیاس پر یہاں بھی کہا جائے کہ اگر یہ نہ دینا اس بنا پر ہو کہ اتنی دیر میں پانی اس کے پاس خرچ ہو کر کم رہ گیا تو یہ منع اس ظن عطا کی خطا نہ بتائے گا۔ اقول: یہاں ۲ صورتیں ہیں اگر یہ خرچ ہو جانا اس طور پر ہو کہ اس سے پہلے کسی نے مانگا اسے دے دیا اب کم رہ گیا منع کر دیا تو بے شک اس ظن کی خطا ثابت نہ ہوگی ظاہراً اعادہ نماز چاہئے اور اگر خود اس نے اپنی حاجت میں خرچ کیا تو اب نہ دینا اُس ظن کا رد کرے گا کہ اتنا تو اُسے خود درکار تھا اور جو باقی رہا اُس سے انکار ہے فلیراجع ولیحرر ۱۲ منہ غفرلہ (تو اس کی مراجعت اور وضاحت کر لی جائے۔ ت) (م) Page 73 of 761

Fatawa Rizvia, Volume 4

Because by the presumption of giving, he was apparently capable of obtaining water, and the error of this presumption did not become clear, so he acts upon it because the attainment of reality was missed. (T)

It is mentioned in 'Hilya': Only the presumption is considered and nothing else as long as the reality of this presumption has not been uncovered. Then when investigation is done and the matter appears contrary to that presumption, the situation will be according to what appeared. (Ah) For this, he presented testimony from the texts of 'Badai' and 'Kafi'. Then, he extended the discussion by presenting a long question and answer. The gist of the question is that sometimes it may be that his presumption is correct and the opinion of the owner of the water changes, so the error of his presumption will not appear. The gist of the answer is that the principle is non-change, and presumption sometimes errs. In the question, he cited some texts of the Madhhab (school of thought) as evidence: "If there is someone in his presence whom he can ask about water, so he asked him, and he did not inform him, so he performed Tayammum and prayed, then he (the person) informed him (about the water), there is no repetition (of prayer) due for him." (Ah) Meaning, by informing later, he does not become knowledgeable of the past situation when he was asked and did not inform. Similarly, by giving later, he was not [capable] in the previous [time] when he presumed denial, and the answer yielded that he did what was in...

---

1 Hilya 2 Hilya

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4

क्योंकि देने के गुमान के कारण वह ज़ाहिर तौर पर पानी पर सक्षम था और इस गुमान की गलती स्पष्ट नहीं हुई तो उसे इसी पर अमल करना है क्योंकि हक़ीक़त तक पहुंचना छूट गया। (त)

'हिलिया' में है: केवल गुमान (धारणा) पर ही विचार किया जाता है और कुछ नहीं जब तक कि इस गुमान की वास्तविकता का पता न चल जाए। फिर जब जांच हो जाए और मामला उस गुमान के विपरीत प्रकट हो, तो स्थिति वैसी ही होगी जैसा प्रकट हुआ। (अह) इसके लिए उन्होंने 'बदाइ' और 'काफ़ी' के उद्धरणों से गवाही पेश की है। फिर उन्होंने एक सवाल और जवाब लाकर लंबी चर्चा की है। सवाल का सार यह है कि कभी ऐसा होगा कि उसका गुमान सही हो और पानी के मालिक की राय बदल जाए, तो उसके गुमान की गलती ज़ाहिर नहीं होगी। जवाब का सार यह है कि सिद्धांत न बदलना है, और गुमान में कभी गलती भी होती है। सवाल में उन्होंने मज़हब (विचारधारा) के कुछ ग्रंथों से प्रमाण दिया है कि "यदि उसकी उपस्थिति में कोई ऐसा हो जिससे वह पानी के बारे में पूछ सके तो उसने उससे पूछा, उसने नहीं बताया, तो उसने तयम्मुम किया और नमाज़ पढ़ ली, फिर उसने बताया, तो उस पर (नमाज़ का) दोहराव नहीं है।" (अह) यानी बाद में बताने से वह पिछले समय में जब उससे पूछा गया था और उसने नहीं बताया था, जानकार नहीं हो गया। इसी तरह बाद में देने से वह पिछले समय में सक्षम नहीं हो गया जब उसने मनाही का गुमान किया था, और जवाब ने यह लाभ दिया कि उसने वह किया जो उसके..

---

1 हिलिया 2 हिलिया

पेज 74 of 761

لانه بظن العطاء کان قادرا فی الظاهر علی الماء ولم یتبین غلط هذا الظن فیعمل به لفوت درك الحقیقة۔ اس لئے کہ وہ ظنّ عطاء کے باعث پانی پر بظاہر قادر تھا اور اس ظن کی غلطی واضح نہ ہوئی تو اس کو اسی پر عمل کرنا ہے کیوں کہ حقیقت تک رسائی فوت ہوگئی۔ (ت)

حلیہ میں ہے: انما یکون الملحوظ ظنا لیس غیر عند عدم الاستکشاف له فاذا وجد وظهر الامر بخلاف کان الحال علی ماظهر اھ واستشهد له بعبارات البدائع والکافی ثم اطال رحمه الله تعالی بأبداء سؤال ودفعه حاصل السؤال قد یکون ظنه مصیباً ویتبدل رأی صاحب الماء فلایظهر خطاء ظنه وحاصل الجواب ان الاصل عدم التبدل والظن ربما یخطئ واستشهد في السؤال بنصوص فی المذهب انه ان کان بحضرته من یسأله عن الماء فسأله فلم یخبره فتیمم وصلی ثم اخبره به لااعادة علیه اھ ای فلم یکن بالاخبار اللاحق عالماً فی السابق حین سأله فلم یخبره فکذا لایکون بالعطاء اللاحق قادراً فی السابق حین ظن منعه وافاد الجواب انه فعل مافی ظن ہی ملحوظ ہوتا ہے کچھ اور نہیں جبکہ اس ظن کی حقیقت منکشف نہ کر لی ہو۔ پھر جب تحقیق ہوجائے اور معاملہ اس ظن کے برخلاف ظاہر ہو تو جو ظاہر ہو اسی کے مطابق حال ہوگا اھ اس پر انہوں نے بدائع اور کافی کی عبارتوں سے شہادت پیش کی ہے پھر ایک سوال و جواب لا کر طویل گفتگو کی ہے۔ سوال کا حاصل یہ ہے کہ کبھی ایسا ہوگا کہ اس کا گمان درست ہو اور پانی والے کی رائے بدل جائے تو اس کے گمان کی خطا ظاہر نہ ہوگی جواب کا حاصل یہ ہے کہ اصل نہ بدلنا ہے اور ظن میں کبھی خطا بھی ہوتی ہے۔ سوال میں کچھ نصوصِ مذہب سے استشہاد کیا ہے کہ "اگر اس کے پاس کوئی ایسا ہو جس سے پانی کے بارے میں دریافت کر سکے تو اس سے دریافت کیا، اس نے نہ بتایا، اس نے تیمم کیا اور نماز نہ پڑھ لی،

پھر اس نے بتایا تو اس پر اعادہ نہیں" اھ یعنی بعد میں بتانے سے وہ سابق میں جبکہ اس سے پوچھا تھا اور اس نے نہ بتایا، واقف نہ ہو گیا تو اسی طرح بعد میں دینے سے وہ سابق

---

1 حلیہ 2 حلیہ

[Left Column - Arabic/Urdu]: ...his capacity before the action, so it occurs permissibly to remove hardship, and it does not then turn into being impermissible. He said: In other words, when he refuses, the inability becomes confirmed, so subsequent capability is not taken into account. This is mentioned in Al-Walwalijiyah. And because he is being stubborn, and the word of a stubborn person is not considered, unlike our case under discussion, where he did not exhaust his efforts in inquiry. End of quote. I say: The question neglected some texts of the school of thought which were similar in form to our case here. That is, if there was someone near him (1) whom he could ask but he didn't, prayed, then asked him and was informed about water nearby, his prayer becomes void. This is as we previously mentioned in point number 159 from 'Al-Hilya' quoting 'Al-Muhit'. Similar instances are found in 'Al-Bada'i', 'At-Tabyin', 'Ad-Dur', etc. Thus, his knowledge that this person is someone who can be asked about water here is like his expectation of being given (water) in this case. Omitting the question is like that case, and the subsequent informing is like the subsequent giving. So his prayer becomes void just as it became void there. And his statement 'when he refuses' means about informing. I say: This includes (2) if he asked him...

[Right Column - Urdu]: ...while he had the expectation of being given (water), he became incapable. It is derived from the answer that whatever was in his power before the action, he did it. So, in view of removing hardship, it will occur as permissible and will not then change to impermissible. They say: In other words, 'When he refused, the inability became confirmed, then after that, having power/capability is not considered.' This is mentioned in Al-Walwalijiyah. And because he is one who practices severity/stubbornness, and such a person's word is not considered, contrary to our case under discussion where he did not spend his full effort in inquiry. End of quote. (T) I say: There were some other texts of the madhhab (school of thought) there which were similar to the case here, which were left out in the question. That is, if he has someone whom he could ask and he didn't, prayed, then asked him and he told him about water nearby, his prayer became void. As we presented the text of Hilya quoted from Al-Muhit in number 159. Similar to it is in Bada'i, Tabyin, Durr al-Mukhtar etc. So his knowing that this person is such that water can be inquired about from him here is just like the assumption of 'giving' (Ata) in this issue. And not asking is just like not asking here, and telling afterwards is just like giving afterwards here. So here too his prayer became void just as it became void

there. (T) The author of Hilya's phrase 'Idha Aba' (when he refuses) means refusing to tell. I say: This is its...

Footnote: 1. Hilya

[बायां कॉलम - अरबी/उर्दू]: ...कार्य से पहले उसकी क्षमता, तो कठिनाई दूर करने के लिए वह जायज़ हो जाता है, अतः वह नाजायज़ में नहीं बदलता। उसने कहा: दूसरे शब्दों में, यदि वह इंकार कर दे तो विवशता पक्की हो जाती है, अतः उसके बाद क्षमता पर विचार नहीं किया जाता। इसे 'वलवालिजिया' में उल्लेख किया गया है। और क्योंकि वह हठधर्मी है और हठधर्मी की बात का कोई वजन नहीं होता, हमारे वर्तमान मामले के विपरीत जहाँ उसने खोजबीन में पूरा प्रयास नहीं किया। समाप्ति। मैं कहता हूँ: प्रश्न ने मज़हब के उन ग्रंथों की उपेक्षा की जो यहाँ वाली स्थिति के समान थे। वह यह कि यदि (१) उसके पास कोई ऐसा व्यक्ति हो जिससे वह पूछ सके और उसने नहीं पूछा और नमाज़ पढ़ ली, फिर उससे पूछा तो उसने पास में पानी होने की सूचना दी, तो उसकी नमाज़ बातिल हो गई जैसा कि हमने 'मुहीत' के हवाले से 'हिलिया' के बारे में संख्या १५९ में बताया है। और इसी तरह 'बदाए', 'तबीन' और 'दुर' आदि में भी है। तो उसकी यह जानकारी कि यह व्यक्ति ऐसा है जिससे पानी के बारे में पूछा जा सकता है, इस मामले में पानी मिलने (अता) के गुमान के समान है। और प्रश्न का त्याग करना यहाँ प्रश्न न करने के समान है, और बाद में सूचना मिलना बाद में मिलने के समान है। अतः उसकी नमाज़ बातिल हो जाएगी जैसे वहाँ बातिल हुई। और फिर यह— और उनका कथन 'जब वह इंकार करे' यानी सूचना देने से। मैं कहता हूँ: इसमें शामिल है (२) यदि उसने उससे पूछा—

[दायां कॉलम - उर्दू]: ...जबकि उसे दिए जाने का गुमान था, वह असमर्थ हो गया। और उत्तर से यह प्राप्त हुआ कि कार्य से पहले जो कुछ उसके वश में था उसने कर लिया, तो कठिनाई दूर करने के उद्देश्य से वह जायज़ ही माना जाएगा, फिर नाजायज़ में परिवर्तित नहीं होगा। वे कहते हैं: दूसरे शब्दों में, 'जब उसने इंकार कर दिया तो विवशता पक्की हो गई, फिर उसके बाद क्षमता होने का कोई विचार नहीं।' इसे 'वलवालिजिया' में वर्णित किया गया है। और इसलिए कि वह हठ करने वाला है और ऐसे व्यक्ति की बात का कोई महत्व नहीं, हमारे विचाराधीन मामले के विपरीत जहाँ उसने पूछताछ करने में अपनी पूरी शक्ति नहीं लगाई। समाप्ति। (त) मैं कहता हूँ: वहाँ मज़हब के कुछ और ग्रंथ थे जो यहाँ वाली स्थिति के अनुरूप थे, जिन्हें प्रश्न में छोड़ दिया गया। वह यह कि यदि उसके पास ऐसा व्यक्ति हो जिससे वह पूछताछ कर सके और उसने नहीं की, नमाज़ पढ़ ली, फिर उससे पूछा और उसने पास में पानी होने की जानकारी दी, तो उसकी नमाज़ बाहिल (अमान्य) हो गई। जैसा कि हमने संख्या १५९ में 'मुहीत' से उद्धृत 'हिलिया' का पाठ प्रस्तुत किया। इसी के समान 'बदाए',

'तबीन', 'दुर्रे मुख्तार' आदि में भी है। तो उसे यह ज्ञात होना कि यह व्यक्ति ऐसा है जिससे यहाँ पानी के बारे में पूछा जा सकता है, ठीक वैसा ही है जैसे इस मसले में पानी दिए जाने (अता) का गुमान है। और प्रश्न न करना वैसा ही है जैसे यहाँ प्रश्न न करना, और बाद में बताया जाना वैसा ही है जैसे यहाँ बाद में दिया जाना। तो यहाँ भी उसकी नमाज़ बातिल हो गई जैसे वहाँ बातिल हुई थी। (त) हिलिया के लेखक का वाक्यांश 'इज़ा अबा' (जब वह इंकार करे) यानी बताने से इंकार करे। मैं कहता हूँ: यह उस...

पाद-टिप्पणी: 1. हिलिया

पृष्ठ 75/761

[بایاں کالم - عربی/اردو]: وسعه قبل الفعل فيقع جائزا دفعا للحرج فلا ينقلب غير جائز قال وبعبارة اخرى انه اذا ابى تأكد العجز فلا تعتبر القدرة بعد ذلك ذكره في الولوالجية ولانه متعنت ولا قول للمتعنت بخلاف مانحن فيه فأنه لم يستفرغ الوسع بالاستكشاف اهـ اقول: اغفل السؤال نصوصا في المذهب ثمه موافقة في الصورة لمانهنا وهي انه ان كان(۱) عنده من يسأله فلم يسأله وصلى ثم سأله فاخبره بماء قريب بطلت صلاته كما قدمنا في نمرة عن الحلية عن المحيط ومثله في البدائع والتبيين والدر وغيرها فعلمه ان هذا ممن يسأل هنا عن حال الماء كظنه العطاء في هذه المسألة وترك السؤال كمثله فيها والاخبار اللاحق كالعطاء اللاحق فتبطل صلاته كما بطلت ثم هذا۔ وقوله اذا ابى اى عن الاخبار اقول: يشمل (۲) ما اذا سأله

[دایاں کالم - اردو]: میں جبکہ اس نے دینے کا گمان تھا، قادر نہ ہو گیا۔ اور جواب سے یہ مستفاد ہوا کہ اس نے عمل سے پہلے جو کچھ اس کے بس میں تھا کر لیا تو دفع حرج کے پیش نظر وہ جائز ہی واقع ہو گا پھر ناجائز میں تبدیل نہ ہوگا۔ فرماتے ہیں: بعبارت دیگر "اس نے جب انکار کر دیا تو عجز مؤکد ہو گیا پھر اس کے بعد قدرت ہونے کا اعتبار نہیں۔ اسے ولو الجیہ میں ذکر کیا ہے۔ اور اس لئے کہ وہ تشدد برتنے والا ہے اور ایسے شخص کی بات کا اعتبار نہیں، بخلاف ہمارے زیر بحث صورت کے کہ اس نے دریافت کرنے میں اپنی پوری کوشش صرف نہ کی۔" اھـ (ت) اقول: وہاں کچھ نصوصِ مذہب اور تھے جو یہاں والی صورت کے موافق تھے انہیں سوال میں چھوڑ دیا وہ یہ کہ اگر اس کے پاس ایسا شخص ہو جس سے دریافت کر سکے اور دریافت نہ کیا، نماز پڑھ لی، پھر اس سے پوچھا، اس نے قریب میں پانی بتایا تو اس کی نماز باطل ہو گئی۔ جیسا کہ ہم نے نمبر ۱۵۹ میں محیط سے نقل کردہ حلیہ کی عبارت پیش کی۔ اسی کے مثل بدائع، تبیین،

درمختار وغیرہم میں بھی ہے تو اسے یہ علم ہونا کہ یہ شخص ایسا ہے جس سے پانی کے بارے میں یہاں دریافت کیا جا سکتا ہے ایسا ہی ہے جیسے اس مسئلہ میں عطا کا ظن ہے اور سوال نہ کرنا ایسا ہی ہے جیسے یہاں سوال نہ کرنا اور بعد میں بتانا ایسا ہی ہے جیسے یہاں بعد میں دینا تو یہاں بھی اس کی نماز باطل ہو گئی جیسے وہاں باطل ہوئی۔(ت) صاحب حلیہ کی عبارت "اذا ابی" (جب انکار کرے) یعنی بتانے سے انکار کرے اقول: یہ اس

حاشیہ: 1 حلیہ

Fatawa-e-Razviya Volume 4

It also includes the situation when someone is asked and remains silent after hearing. This is because the scholars' statement "he did not inform" applies to him. In 'Hilyah', it is expressed as refusal because silence at the time of need is conventionally considered a refusal. The scholars have also explicitly stated the issue of refusal here: if one asked before the prayer, he refused, and then gave it after the prayer, his prayer is complete. Giving after refusal is of no consequence. (T) The author of 'Hilyah' said he is being stubborn; he took this from 'Badai'. I have a comment on this: I say this is not determined or proven. It's possible he forgot at that time and then remembered. As far as possible, a Muslim's state should be interpreted in the best way. And God Almighty knows best. He says: then after a while, it appeared to this weak servant and he wrote it down, I saw that Sadr al-Shariah had already explicitly stated what we mentioned regarding the ruling in these two issues and its cause in the case where the prayer is completed with the expectation of the gift, then he asked and it was given. So we both arrived at the same conclusion. (T)

I say: (2) This is a slip of the pen. Rather, he only mentioned the reason in the case where he asked and he refused, saying: because it appeared that his thought...

Page 76 of 761 1 Hilyah

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 4

इसमें वह स्थिति भी शामिल है जब उससे सवाल किया जाए और वह सुनकर चुप रहे। क्योंकि उस पर विद्वानों का यह कथन सत्य है कि "उसने नहीं बताया"। 'हिल्यह' में इसे इनकार के रूप में व्यक्त किया गया है क्योंकि आवश्यकता के समय मौन रहना प्रथागत रूप से इनकार ही है। और विद्वानों ने यहाँ भी इनकार के मसले को स्पष्ट किया है कि यदि उसने नमाज़ से पहले उससे माँगा, उसने इनकार किया और फिर नमाज़ के बाद उसे दे दिया, तो उसकी नमाज़ पूरी हो गई। और इनकार के बाद देने का कोई महत्व नहीं है। (त) 'हिल्यह' के लेखक ने कहा कि वह हठ कर रहा है; उन्होंने इसे 'बदाइ' से लिया है। इस पर मेरी एक टिप्पणी है: मैं कहता हूँ कि यह निश्चित या सिद्ध नहीं है। हो सकता है वह उस समय भूल गया हो और फिर उसे याद आया हो। जहाँ तक संभव हो, एक मुसलमान की स्थिति को अच्छाई और सुधार पर ही आधारित माना जाना चाहिए। और अल्लाह ताला सबसे बेहतर जानने वाला है। उन्होंने कहा: फिर कुछ समय बाद इस कमज़ोर सेवक के सामने यह बात आई और उसने इसे लिखा, मैंने देखा कि 'सद्र अल-शरिया' ने पहले ही उन दो मसलों में हमारे द्वारा बताए गए हुक्म और उसके कारण को स्पष्ट कर दिया था, उस स्थिति में जब अता (दान) की उम्मीद के बावजूद नमाज़ पूरी कर ली गई फिर माँगा और उसने दे दिया। तो इस पर हमारा और उनका मेल हो गया। (त)

मैं कहता हूँ: (2) यह कलम की फिसलन (लिखने की गलती) है। बल्कि उन्होंने कारण केवल उस स्थिति में बताया है जब उसने माँगा और उसने इनकार कर दिया, वे कहते हैं: क्योंकि यह स्पष्ट हो गया कि उसका विचार...

पृष्ठ 76 का 761 1 हिल्यह

فتاوی رضویہ جلد چہارم

صورت کو بھی شامل ہے جب اس سے سوال کرے اور وہ سُن کر خاموش رہے۔ کیونکہ اس پر علماء کا یہ قول صادق ہے کہ "اس نے نہ بتایا" اسے حلیہ میں انکار سے اس لئے تعبیر کیا کہ ضرورت کے وقت سکوت عرفاً انکار ہی ہے۔ اور علماء نے یہاں بھی مسئلہ انکار کی صراحت فرمائی ہے کہ اگر اس نے قبل نماز اس سے مانگا، اس نے انکار کیا پھر بعد نماز اسے دے دیا تو اس کی نماز پوری ہوگئی۔ اور انکار کے بعد دینے کا کوئی اعتبار نہیں۔ (ت) صاحب حلیہ نے فرمایا وہ تشدد برتنے والا ہے اسے انہوں نے بدائع سے لیا ہے۔ اس پر مجھے کلام ہے فاقول یہ متعین اور ثابت نہیں۔ ہوسکتا ہے اس وقت بھول گیا ہو پھر اسے یاد آیا ہو جہاں تک ہوسکے مسلمان کی حالت کو صلاح ودرستی ہی پر محمول کیا جائے گا۔ اور خدائے برتر خوب جاننے والا ہے۔ صاحب حلیہ لکھتے ہیں: بندہ ضعیف کے ذہن میں یہ آیا اور اسے رقم کیا پھر کچھ عرصہ بعد دیکھا کہ صدر الشریعۃ اس کی تصریح کر چکے ہیں جو ہم نے ان دونوں مسئلوں میں حکم بیان کیا اور اس کی علت بھی بتا چکے ہیں اس صورت میں جب کہ ظنِ عطا کے باوجود نماز پوری کرلی پھر مانگا اور اس نے دے دیا۔ تو اس پر ہمارا ان کا توارد ہو گیا۔ھ (ت)

اقول: یہ سبقت قلم ہے۔ صدر الشریعہ نے علت صرف اس صورت میں بیان کی ہے جب اس نے مانگا اور اس نے انکار کردیا۔ فرماتے ہیں: اس لئے

[Boxed Text] "It was an error. (End of quote). It has become apparent that his assumption was wrong (so in the text of Al-Hilyah, instead of 'then he asked him and he gave', it should be 'then he asked him and he refused'). This is similar to what was mentioned in the text of Al-Hilyah that linking doubt with the preponderance of thought of 'giving' is more correct. The correct word is 'prohibition' as was stated. (T)"

Note: The issue of giving after prayer which necessitates repeating the prayer absolutely, even if the person praying has a suspicion of prohibition, and whether giving after the prayer time has passed also has this effect or not, its explanation comes in the ninth issue, and success is from Allah.

Issue 8: It was mentioned in the sixth issue from Imam Muhaqqiq Alal Itlaq that power over water is of three types: First: It should be in one's own possession. I say: Meaning, free from necessary needs, and the power to use it is a condition everywhere. Second: If it is sold, he should have power over the price. I say: Meaning on those grounds mentioned before, that the seller does not ask for much more than the market price, and if the person does not have the price present, the seller agrees to give it on credit. Third: Permissibility (Ibahat). I say: This is a passive infinitive, meaning the water being permissible, whether by original permissibility like rain and river water, or by someone's endowment (Waqf) for the general public or for a specific group to which this person belongs, or the owner has made it permissible for purification if it's needed for purification, or the owner specifically makes it permissible for this person. Then I say: There are two more forms of power: Fourth: Gift (Hiba), which is transfer of ownership without consideration. In contrast to permissibility (Ibahat) where the object remains in the owner's possession and is only used with his permission. Fifth: The owner's promise that "I will give you water", to the extent that in the school of thought of the three Imams (may Allah be pleased with them), waiting is necessary even if the time passes, because in a promise there is an apparent fulfilment, and power over water is also obtained through permissibility, so apparently he is capable, therefore Tayammum is not permissible. This was mentioned in number 90, and following Imam Zufar, the ruling is that when he sees the time passing, he should perform Tayammum and pray, as mentioned in number 91.

---

1 Sharh al-Wiqayah, Chapter on Tayammum, 1/103.

[बॉक्स किया हुआ पाठ] "यह एक गलती थी। (अंत) यह स्पष्ट हो गया कि उसका अनुमान गलत था (तो 'हिल्या' के पाठ में 'फिर उसने उससे मांगा और उसने दे दिया' के स्थान पर 'फिर उसने उससे मांगा और उसने मना कर दिया' होना चाहिए)। और यह उसी का उदाहरण है जो 'हिल्या' के पाठ में बीत चुका है कि संदेह को 'देने' के प्रबल विचार के साथ जोड़ना अधिक सही है। सही शब्द 'मनाही' है जैसा कि बताया गया। (त)"

चेतावनी: नमाज़ के बाद वह देना जिससे नमाज़ को पूर्णतः दोहराना अनिवार्य होता है, भले ही नमाजी को निषेध का संदेह हो, और क्या नमाज़ का समय बीत जाने के बाद देना भी यह प्रभाव रखता है या नहीं, इसका वर्णन नवें मसले में आता है, और सफलता अल्लाह की ओर से है।

मसला ८: इमाम मुहाक्किक़ अलल इतलाक़ की ओर से छठे मसले में बीत चुका है कि पानी पर अधिकार तीन तरह का होता है: पहला: स्वयं अपने स्वामित्व में हो। मैं कहता हूँ: यानी ज़रूरी ज़रूरतों से मुक्त हो, और उपयोग पर अधिकार तो हर जगह शर्त है। दूसरा: अगर बिकता है तो कीमत पर सक्षम हो। मैं कहता हूँ: यानी उन्हीं आधारों पर जो पहले बीते, कि विक्रेता बाज़ार मूल्य से बहुत अधिक न मांगे और यदि कीमत पास उपलब्ध न हो तो उधार देने पर सहमत हो। तीसरा: इबाहत (अनुमति)। मैं कहता हूँ: यह मज़दर मबनी लिल-मफ़ऊल (कर्मवाच्य संज्ञा) है, यानी पानी का मुबाह (जायज़) होना, चाहे इबाहते असलिया (प्राकृतिक अनुमति) के कारण हो जैसे बारिश और नदी का पानी, या किसी के वक़्फ़ (दान) किए हुए से आम लोगों के लिए या किसी विशेष समुदाय के लिए जिनमें यह व्यक्ति शामिल हो, या मालिक ने पवित्रता के लिए मुबाह किया हो यदि उसे पवित्रता की आवश्यकता है, या मालिक विशेष रूप से उस व्यक्ति के लिए मुबाह करे। फिर मैं कहता हूँ: अधिकार के दो और रूप हैं: चौथा: हिबा (उपहार) जो बिना किसी प्रतिफल के स्वामित्व का हस्तांतरण है। इसके विपरीत इबाहत (अनुमति) में वस्तु मालिक के ही स्वामित्व में रहती है, केवल उसकी अनुमति से उसका उपयोग किया जाता है। पाँचवाँ: मालिक का वादा करना कि 'मैं तुझे पानी दूँगा', यहाँ तक कि तीनों इमामों (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के मज़हब में प्रतीक्षा करना आवश्यक है भले ही समय निकल जाए, क्योंकि वादे में स्पष्ट रूप से वफ़ादारी (वादा निभाना) है और पानी पर अधिकार इबाहत से भी प्राप्त होता है तो ज़ाहिर तौर पर वह सक्षम है, इसलिए तयम्मुम जायज़ नहीं है। इसका उल्लेख संख्या ९० में बीत चुका है, और इमाम ज़ुफ़र के अनुसरण में हुक्म यह है कि जब समय बीतता देखे तो तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ले, जैसा कि संख्या ९१ में बीत चुका है।

1 शरह अल-विक़ाया, बाब अत-तयम्मुम, १/१०३।

[عبارت در جدول] کان خطأ 1 اھ وھذا نظیر ما سبق ان الحاق الشك بغلبة الظن للعطاء ارجح و انما صوابه المنع کما مر۔ | کہ ظاہر ہو گیا کہ اس کا گمان غلط تھا اھ (تو عبارت حلیہ میں "ثم سألہ فاعطاہ" کی جگہ "ثم سألہ فابی" ہونا چاہئے) اور یہ اسی کی نظیر ہے جو عبارت حلیہ میں گزرا کہ شک کو "عطا" کے غلبہ ظن سے لاحق کرنا زیادہ راجح ہے۔ صحیح "منع" ہے جیسا کہ بیان ہوا۔ (ت)

تنبیہ: نماز کے بعد وہ دینا جس سے مطلقاً نماز اعادہ کرنی ہوتی ہے اگرچہ مصلی کو ظن منع ہو کونسا ہے اور وقت نماز گزر جانے کے بعد دینا بھی یہ اثر رکھتا ہے یا نہیں، اس کا بیان مسئلہ نہم میں آتا ہے وباللہ التوفیق۔

مسئلہ ۸: امام محقق علی الاطلاق سے مسئلہ ششم میں گزرا کہ پانی پر قدرت تین ۳ طرح ہوتی ہے: اول: خود اپنی ملک میں ہو۔ اقول: یعنی حاجت ضرور ی سے فارغ اور استعمال پر قدرت تو ہر جگہ شرط ہے۔ دوم: اگر بکتا ہے تو قیمت پر قادر ہو۔ اقول: یعنی انہیں وجوہ پر کہ گزریں کہ قیمت مثل سے بہت زیادہ نہ مانگے اور قیمت اس کے پاس حاضر نہیں تو اُدھار دینے پر راضی ہو۔ سوم: اباحت۔ اقول: یہ مصدر مبنی للمفعول ہے یعنی پانی کا مباح ہونا خواہ باباحتِ اصلیہ جیسے بارش و دریا کا پانی یا کسی کے وقف کیے سے یا بلا وقف عام لوگوں یا کسی خاص قوم کیلئے جن میں یہ داخل ہے مالک نے طہارت کیلئے مباح کیا ہو اگر اسے طہارت درکار ہے یا مالک خاص اس شخص کو مباح کرے۔ ثم اقول: دو صورتیں قدرت کی اور ہیں: چہارم: ہبہ کہ تملیک بلا عوض ہے۔ بخلاف اباحت کہ شے ملکِ مالک ہی پر رہتی ہے اُس کی اجازت سے صرف کی جاتی ہے۔ پنجم: مالک کا وعدہ کرنا کہ میں تجھے پانی دوں گا یہاں تک کہ ائمہ ثلاثہ رضی اللہ تعالیٰ عنہم کے

مذہب میں انتظار لازم ہے اگرچہ وقت نکل جائے کہ وعدہ میں ظاہر وفا ہے اور پانی پر قدرت اباحت سے بھی حاصل تو ظاہراً قادر ہے لہٰذا تیمم جائز نہیں اس کا ذکر نمبر ۹۰ میں گزرا اور باتباع امام زفر حکم یہ ہے کہ جب وقت جاتا دیکھے تیمم کرکے پڑھ لے جیسا کہ نمبر ۹۱ میں گزرا۔

---

1 شرح الوقایہ، باب التیمم ۱/۱۰۳

Volume 4 Fatawa Razawiyya

Now here are a few necessary warnings:

First Warning: A promise made after the water is no longer available is not reliable. For example, during prayer someone saw water with another person but did not have a strong presumption that they would give it, completed the prayer, and then asked for it afterwards. The person said, "I had water, but it's spent now. If you had asked then, I would have surely given it." This promise is not taken into account; the prayer is valid. And if he saw it before prayer and did not have a strong presumption of being given and had already performed Tayammum or performed it then, and afterwards asked, and received the same answer—"It's gone now, would have given if asked then"—even with this promise, the Tayammum will not be invalidated. He should pray with it. This is the most correct view because a promise after the water is gone is not evidence that he would have actually given it. When an item is present, a promise suggests an intention to give. After it's gone, why would even someone unwilling to give say "I wouldn't have given"? Rather, it's a cost-free favor to say "If I had it, I would have surely given it." In Bahr al-Ra'iq it is stated:

[Arabic Quote]: In Al-Mujtaba: He saw water in someone else's hand during his prayer, then it was gone from him before completion. He asked, and they said, "If you had asked me, I would have given it to you." There is no repetition [of prayer] for him. If the promise was before starting, he repeats because of doubt in the validity of starting. The more correct view is that he does not repeat, because a promise after disappearance does not indicate giving before it. 1 End.

In Al-Mujtaba it is: "He saw water in someone else's hand during his prayer. Then it ran out from him before he finished. Then he asked him. So he said: If you had asked me, I would have given it to you. In this case, there is no repetition for him. And if the promise was before starting the prayer, let him repeat. Because doubt occurred in the validity of starting. And the more correct view is that he does not have to repeat, because a promise after it is finished is not evidence that he would have given it before." End. (T)

[Arabic Quote]: I say: This derivative issue needs explanation, and what we have depicted has become clear. So his saying 'then it was gone from him', i.e., the water from its owner by spending it, for example, before completion of this prayer of his. So he asked him after his prayer and he said, 'It's exhausted, and if you had asked me before...'

I say: This specific point needs explanation, and it becomes clear from the way we have presented the case. The explanation will be as follows: His saying 'then it finished with him' means the water finished with the owner of the water, for example he spent it before he was finished, meaning before finishing his prayer. Then he asked him. Meaning after performing the prayer...

---

1 Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, Maktaba H.M. Saeed Company, Karachi 1/162

जिल्द 4 फ़तावा रज़विया

अब यहाँ कुछ ज़रूरी नसीहतें (चेतावनी) हैं:

पहली चेतावनी: वह वादा जो पानी न रहने के बाद हो, विश्वसनीय नहीं है। उदाहरण के लिए, नमाज़ के दौरान किसी ने दूसरे के पास पानी देखा और उसे मिलने की प्रबल संभावना नहीं थी, नमाज़ पूरी की और फिर माँगा। उस व्यक्ति ने कहा, "मेरे पास पानी था लेकिन अब खर्च हो गया है। अगर तुम उस वक्त माँगते तो मैं ज़रूर देता।" इस वादे का कोई महत्व नहीं है; नमाज़ हो गई। और अगर नमाज़ से पहले देखा और मिलने की प्रबल संभावना नहीं थी और पहले ही तयम्मुम कर चुका था या अब कर लिया, फिर माँगा, और वही जवाब मिला कि "अब नहीं रहा, उस वक्त माँगते तो दे देता" - इस वादे से भी तयम्मुम नहीं टूटेगा। वह उसी से नमाज़ पढ़े। यही सबसे सही विचार है कि चीज़ खत्म होने के बाद का वादा इस बात का सबूत नहीं है कि वह वाकई दे देता। जब चीज़ मौजूद हो, तो वादे का मतलब है कि देने की नीयत है। चीज़ खत्म होने के बाद, न देने वाला भी भला क्यों कहे कि "मैं न देता", बल्कि यह तो मुफ्त की मेहरबानी जताना है कि "होता तो ज़रूर देता"। अल-बह्र-उर-रैक में है:

[अरबी उद्धरण]: अल-मुज्तबा में है: उसने अपनी नमाज़ के दौरान किसी दूसरे के हाथ में पानी देखा, फिर फारिग होने (समाप्त करने) से पहले वह खत्म हो गया। उसने माँगा तो उन्होंने कहा, "अगर तुम मुझसे माँगते तो मैं तुम्हें दे देता।" उस पर नमाज़ लौटाना लाज़िम नहीं। अगर वादा शुरू करने से पहले था, तो नमाज़ लौटाए क्योंकि शुरुआत की शुद्धता में संदेह पैदा हो गया। और सही यह है कि वह न लौटाए, क्योंकि खत्म होने के बाद का वादा पहले देने का सबूत नहीं है। 1 अंत।

मुज्तबा में है: "अपनी नमाज़ के अंदर दूसरे के हाथ में पानी देखा। फिर उसके पास से खत्म हो गया इससे पहले कि फारिग हो। फिर उससे माँगा। तो उसने कहा: अगर तुमने मुझसे माँगा होता तो मैं तुम्हें दे देता। इस स्थिति में उस पर लौटाना नहीं। और अगर वादा नमाज़ शुरू करने से पहले हुआ तो लौटाए। इसलिए कि शुरुआत की शुद्धता में शक पैदा हो गया और सही यह है कि उसे लौटाना नहीं है क्योंकि खत्म होने के बाद वादा इस बात की दलील नहीं कि वह पहले दे देता।" अंत। (त)

[अरबी उद्धरण]: मैं कहता हूँ: इस उप-मसले (फ़रा) को स्पष्टीकरण की ज़रूरत है और हमने जिस तरह इसे चित्रित किया है उससे यह स्पष्ट हो गया है। तो उसका कहना 'फिर उससे चला गया' यानी पानी उसके मालिक के पास से खर्च होने के कारण खत्म हो गया, उदाहरण के लिए, उसकी नमाज़

पूरी होने से पहले। फिर उसने अपनी नमाज़ के बाद उससे माँगा और उसने कहा, 'खत्म हो गया, और अगर तुम मुझसे पहले माँगते...'

मैं कहता हूँ: इस विशिष्ट बिंदु (जुज़इया) की व्याख्या करने की आवश्यकता है और हमने जिस तरह मसले के रूप में पेश किया है उससे यह स्पष्ट हो जाता है। व्याख्या इस प्रकार होगी: उसका कहना 'फिर उसके पास से खत्म हो गया' यानी पानी पानी वाले के पास से खत्म हो गया, उदाहरण के लिए उसने उसे खर्च कर दिया इससे पहले कि फारिग हो, यानी उसकी अपनी नमाज़ से फारिग होने से पहले। फिर उससे माँगा। यानी नमाज़ अदा करने के बाद...

---

1 अल-बह्र-उर-रैक, बाब-उत-तयम्मुम, मकतबा एच.एम. सईद कंपनी, कराची 1/162

اب یہاں چند ضروری تنبیہات ہیں:

تنبیہ اول: وہ وعدہ کہ پانی نہ رہنے کے بعد ہو معتبر نہیں مثلاً نماز میں اس نے کسی کے پاس پانی دیکھا اور دینے کا ظن غالب نہ ہوا نماز پوری کی اس کے بعد مانگا اس نے کہا میرے پاس پانی تھا تو مگر خرچ ہو گیا اگر اس وقت مانگتے میں ضرور دیتا تو اس وعدہ کا اعتبار نہیں نماز ہو گئی اور اگر نماز سے پہلے دیکھا اور دینے کا ظن غالب نہ ہوا اور تیمم پہلے کر چکا تھا یا اب کر لیا پھر مانگا تو اس نے وہی جواب دیا کہ اب نہ رہا اس وقت مانگتے تو دے دیتا اس وعدے سے بھی وہ تیمم نہ جائے گا اسی سے نماز پڑھے یہی اصح ہے کہ نہ رہنے کے بعد وعدہ اس پر دلیل نہیں کہ دے بھی دیتا ، شے موجود ہوتے وقت وعدہ سے یہ سمجھا جاتا ہے کہ دینا منظور ہے اور نہ رہنے کے بعد نہ دینے والا بھی یہ کیوں کہے کہ میں نہ دیتا بلکہ مفت کرم داشتن ہے کہ ہوتا تو ضرور دیتا ، بحرالرائق میں ہے:

فی المجتبٰی رأی فی صلاته ماء فی ید غیره ثم ذهب منه قبل الفراغ فسأله فقال لو سألتنی لاعطیتك فلا اعادة علیه وان کانت العدة قبل الشروع یعید لوقوع الشك فی صحة الشروع والاصح انه لایعید لان العدة بعد الذهاب لاتدل علی الاعطاء قبله 1 اه

مجتبیٰ میں ہے: "اپنی نماز کے اندر دوسرے کے ہاتھ میں پانی دیکھا۔ پھر اس کے پاس سے ختم ہوگیا اس سے پہلے کہ فارغ ہو۔ پھر اس سے مانگا۔ تو اس نے کہا: اگر تم نے مجھ سے مانگا ہوتا تو تم کو میں دے دیتا۔ اس صورت میں اس پر اعادہ نہیں۔ اور اگر وعدہ نماز شروع کرنے سے پہلے ہوا تو اعادہ کرے۔ اس لئے کہ صحت شروع میں شک واقع ہوگیا اور اصح یہ ہے کہ اسے

اعادہ نہیں کرنا ہے اس لئے کہ ختم ہونے کے بعد وعدہ اس کی دلیل نہیں کہ وہ پہلے دے دیتا"۔ اھ (ت)

اقول: ھذا الفرع یحتاج لہ الشرح وقد تبین مما صورنا ہ فقولہ ثم ذھب منہ ای الماء من صاحبہ بانفاقہ مثلا قبل الفراغ لھذا من صلاتہ فسألہ بعد صلاتہ فقال نفد ولو سألتنی قبل

اقول: اس جزئیہ کی شرح کرنے کی ضرورت ہے اور ہم نے جس طرح مسئلہ کی صورت میں پیش کی ہے اس سے واضح ہو جاتا ہے۔ شرح اس طرح ہوگی: قولہ پھر اس کے پاس سے ختم ہوگیا یعنی پانی پانی والے کے پاس سے ختم ہو گیا مثلاً اسے خرچ کردیا اس سے پہلے کہ فارغ ہو یعنی اس کے اپنی نماز سے فارغ ہونے سے پہلے۔ پھر اس سے مانگا۔ یعنی نماز ادا کرنے کے

---

1 البحر الرائق باب التیمم مکتبہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۶۲

Fatawa Razawiyya, Volume 4

'I would have given it to you,' his statement, even if the promise was before starting (the prayer). I say: Its depiction is in two forms that we have mentioned: (1) He performed Tayammum and then saw (the source), or (2) he saw (the source) and then performed Tayammum. Then he asked him after a while, and he said, 'I have spent it, and had you asked, I would have given it.' It does not mean that he saw and then asked and he answered, then he performed Tayammum, because that Tayammum is definitely valid as it occurred after the inability to find water became apparent, unlike those two forms. Regarding them, it was said that he should not pray with that Tayammum, but should perform Tayammum again. If he prayed with the first one, he should repeat it because of the occurrence of doubt regarding the validity of starting the prayer with it. This is because if his promise did not manifest capability, it does not fail to cause doubt regarding the inability. Thus, doubt occurred in the persistence of Tayammum, so starting with a doubtful purity was not valid for him. This is contrary to when he sees (water) during the prayer, because the start was valid with certainty, so it does not cease except with something similar. The most correct view is that he does not repeat it, because the promise after it is gone and exhausted does not indicate the giving before it.

I say: This is because, as we have established, such a promise is not heavy even for a stingy person. Therefore, if the aspect of giving is not preferred by this promise, its existence and non-existence are equal, thus not causing doubt in the inability, as we have previously established at the end of the sixth issue. This is what pertains to its explanation, and there is no harm in pointing out some points.

Page 79 of 761

फ़तावा रज़विया, खंड 4

'मैं तुम्हें दे देता,' उनका कथन, भले ही वादा (नमाज़) शुरू करने से पहले था। मैं कहता हूँ: इसके दो रूप हैं जिनका हमने उल्लेख किया है: (1) उसने तैयम्मुम किया और फिर देखा (स्रोत को), या (2) उसने देखा और फिर तैयम्मुम किया। फिर कुछ देर बाद उसने उससे माँगा, तो उसने कहा, 'मैंने खर्च कर दिया है, और अगर तुम माँगते, तो मैं दे देता।' इसका मतलब यह नहीं है कि उसने देखा और फिर माँगा और उसने उत्तर दिया, फिर उसने तैयम्मुम किया, क्योंकि वह तैयम्मुम निश्चित रूप से सही है क्योंकि यह पानी की असमर्थता प्रकट होने के बाद हुआ, उन दो रूपों के विपरीत। उनके बारे में कहा गया कि उसे उस तैयम्मुम के साथ नमाज़ नहीं पढ़नी चाहिए, बल्कि फिर से तैयम्मुम करना चाहिए। यदि उसने पहले वाले से नमाज़ पढ़ ली, तो उसे उसे दोहराना चाहिए क्योंकि उसके साथ नमाज़ शुरू करने की वैधता में संदेह पैदा हो गया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि यदि उसके वादे से सामर्थ्य प्रकट नहीं हुआ, तो वह असमर्थता में संदेह पैदा करने से पीछे नहीं रहता। इस प्रकार, तैयम्मुम के बने रहने में संदेह पैदा हुआ, इसलिए संदिग्ध पवित्रता के साथ शुरू करना उसके लिए वैध नहीं था। यह उस स्थिति के विपरीत है जब वह नमाज़ के दौरान (पानी) देखता है, क्योंकि शुरुआत निश्चितता के साथ सही हुई थी, इसलिए यह तब तक समाप्त नहीं होती जब तक कि कुछ वैसा ही न हो। और सबसे सही बात यह है कि उसे इसे दोहराना नहीं है, क्योंकि जाने और समाप्त होने के बाद का वादा उससे पहले देने का संकेत नहीं देता है।

मैं कहता हूँ: इसका कारण वह है जिसे हमने स्थापित किया है कि एक कंजूस व्यक्ति के लिए भी ऐसा वादा करना भारी नहीं है। इसलिए, यदि इस वादे से देने का पक्ष प्रबल नहीं होता, तो उसका होना और न होना बराबर है, इस प्रकार असमर्थता में संदेह पैदा नहीं होता, जैसा कि हमने पहले छठे मुद्दे के अंत में स्थापित किया है। यह इसके स्पष्टीकरण से संबंधित है, और कुछ बिंदुओं की ओर इशारा करने में कोई बुराई नहीं है।

पृष्ठ 79 का 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

لاعطيتك قوله وان كانت العدة قبل الشروع، بعد مانگا۔ تو اس نے کہا : ختم ہوگیا ، اور پہلے اگر تم نے مجھ سے مانگا ہوتا ، تو تم کو میں دے دیتا۔ قولہ اور اگر وعدہ نماز شروع کرنے سے پہلے ہوا۔

اقول: تصويره بصورتين ذكرناهما انه تيمم ثم رأى اورأى ثم تيمم ثم سأله بعد حين فقال انفقت ولو سألت لاعطيت وليس المراد انه رأى فسأل فأجاب فتيمم لانه تيمم صحيح قطعاً لوقوعه بعد ظهور العجز عن الماء بخلاف تينك الصورتين ففيهما قيل ليس له ان يصلى بذلك التيمم بل يتيمم ثانيا ولوصلى بالاول يعيد لوقوع الشك في صحة الشروع به في الصلاة لانه ان لم يظهر بوعده القدرة فلا يقعد عن ايراث الشك في العجز فوقع الشك في بقاء التيمم فلم يصح له الشروع بطهارة مشكوكة بخلاف ما اذا رأى في الصلاة لان الشروع صح باليقين فلا يزول الابمثله والاصح انه لا يعيد لان العدة بعد الذهاب والنفاد لا تدل على الاعطاء قبله، اقول: اس کی تصویر دو صورتوں میں ہے جو ہم نے بیان کیں (۱) اس نے تیمم کر لیا پھر دیکھا (۲) یا دیکھنے کے بعد تیمم کر لیا پھر اس سے کچھ دیر بعد مانگا تو اس نے کہا: میں نے خرچ کر دیا اگر تم نے مانگا ہوتا تو دے دیتا۔ یہ مراد نہیں کہ اس نے دیکھتے ہی مانگا، اس نے وہ جواب دیا، اس نے اب تیمم کیا۔ اس لئے کہ یہ تیمم تو قطعاً صحیح ہے اس لئے کہ یہ پانی سے عجز ظاہر ہونے کے بعد ہوا ہے۔ بخلاف ان دونوں صورتوں کے کہ ان ہی کے بارے میں یہ کہا گیا کہ اس کیلئے اس تیمم سے نماز پڑھنا جائز نہیں بلکہ دوبارہ تیمم کرے گا۔ اور اگر پہلے تیمم سے نماز پڑھ لی تو اعادہ کرے اس لئے کہ اس تیمم سے نماز شروع کرنے کی صحت میں شک واقع ہو گیا۔ اس کی وجہ یہ ہے کہ اگر وہ اپنے وعدہ سے قدرت بروئے ظہور نہ لاسکا تو کم از کم عجز میں شک پیدا کرنے سے قاصر نہ رہا اس طرح بقائے تیمم میں شک واقع ہو گیا تو

مشکوک طہارت سے نماز شروع کرنا اس کیلئے جائز نہ ہوا۔ بخلاف اس صورت کے جب اندرون نماز پانی دیکھا ہو اس لئے کہ شروع بالیقین صحیح ہوا ہے تو اس کا زوال بھی ویسی ہی چیز سے ہوگا۔ اور اصح یہ ہے کہ اسے اعادہ نہیں کرنا ہے اس لئے کہ ختم ہونے کے بعد وعدہ اس کی دلیل نہیں کہ وہ پہلے دے دیتا۔

اقول: لما قررنا من ان الشحیح ایضا لا یثقل علیه مثل هذا الوعد فاذا لم یترجح به جانب العطاء کان وجوده وعدمه سواء فلم یورث شکا في العجز کما قدمنا تحقیقه آخر المسألة السادسة فهذا ما یتعلق بشرحه ولا بأس بالتنبیه علی نکت۔ اقول: اس کی وجہ وہ ہے جس کی ہم نے تقریر کی کہ بخیل کے لئے بھی ایسا وعدہ کرنا کوئی مشکل اور گراں نہیں تو جب اس وعدہ سے جانب عطا کو ترجیح نہ ملی تو اس کا ہونا نہ ہونا۔

Fatawa Razawiya, Volume 4

...is equal, therefore this could not bring any doubt in inability as we have already researched this at the end of the sixth problem. This discourse was related to the explanation, now if warning is given on some points then there is no harm. (T)

I say (First point): Mentioning it by the name of "promise" is due to similarity (mushakala), otherwise a promise is for the future.

Second point: In the case scenario, saying that the water finished is incidental. Otherwise, if the water did not actually finish and he made an excuse by giving this answer, then the ruling remains the same; in fact, this ruling applies even more strongly. Because this is a worse form of denial and refusal.

Third point: In my view, it is necessary to apply the restriction of 'lack of expectation of gift' in both scenarios, as I mentioned in the depiction of the problem. Because when there is an expectation of a gift and its contrary does not appear, it prevents the validity of Tayammum (dry ablution) and prayer, as has passed and will come. And by this promise, if its fulfillment is not apparent, then its contrary is also not apparent with greater reason, hence repeating the prayer will be obligatory. And Allah Almighty knows best. (T)

Second Warning: I say: The 'promise of water' which by the consensus of our Imams (may Allah be pleased with them) was considered a cause for power over water, apparently this ruling is for that specific time. For a time-bound need, a promise in one time is considered a promise for that very time, not that they will give it at some point, even if after a year. At the expiration of time, it will be considered a breach of promise that they said they would give and didn't. If that promise and his being empowered over water because of it were considered for future times as well, then a whole month might pass and he wouldn't be allowed to pray because the promise remains, so power remains, and thus Tayammum is impermissible. Our Imams agree that he should wait even if the time passes, so this ruling will remain at every time and...

फ़तावा रज़विया, खंड 4

...बराबर है, इसलिए यह विवशता में कोई संदेह नहीं ला सका जैसा कि हम छठे मसले के अंत में इसकी शोध कर चुके हैं। यह चर्चा व्याख्या से संबंधित थी, अब कुछ बिंदुओं पर चेतावनी दे दी जाए तो कोई हर्ज नहीं। (त)

मैं कहता हूँ (पहला बिंदु): इसे "वादा" के नाम से उल्लेख करना समानता (मुशाकला) के कारण है, अन्यथा वादा तो भविष्य के लिए होता है।

दूसरा बिंदु: मसले की सूरत में जो कहा गया कि पानी खत्म हो गया, यह संयोगवश है। अन्यथा, यदि पानी वास्तव में खत्म नहीं हुआ था और उसने यह उत्तर देकर बहाना बनाया, तो भी हुक्म (नियम) यही है, बल्कि यह हुक्म और भी दृढ़ता से लागू होगा। क्योंकि यह इनकार और मना करने का बदतर रूप है।

तीसरा बिंदु: मेरे विचार में, दोनों स्थितियों में 'दान की उम्मीद न होने' की शर्त लगाना आवश्यक है जैसा कि मैंने मसले के चित्रण में कहा था। क्योंकि जब दान की उम्मीद हो और इसके विपरीत कुछ न दिखाई दे, तो यह तयम्मुम और नमाज़ की वैधता में बाधक है, जैसा कि पहले उल्लेख हो चुका है और आगे भी आएगा। और इस वादे से यदि इसकी पूर्ति स्पष्ट नहीं हुई, तो इसके विपरीत भी अधिक स्पष्ट नहीं हुआ, इसलिए नमाज़ को दोहराना अनिवार्य होगा। और अल्लाह सबसे बेहतर जानने वाला है। (त)

दूसरी चेतावनी: मैं कहता हूँ: 'पानी का वादा' जिसे हमारे इमामों (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) की सर्वसम्मति से पानी पर नियंत्रण का कारण माना गया है, स्पष्ट रूप से यह हुक्म उस विशेष समय के लिए है। किसी समय-बद्ध आवश्यकता के लिए, एक समय में किया गया वादा उसी समय के लिए माना जाता है, यह नहीं कि वे कभी भी दे देंगे, भले ही एक साल बाद। समय बीतने पर इसे वादे के खिलाफ माना जाएगा कि देने के लिए कहा था और नहीं दिया। यदि उस वादे और उसके कारण पानी पर नियंत्रण को भविष्य के समय के लिए भी माना जाए, तो पूरा महीना बीत सकता है और उसे नमाज़ पढ़ने की अनुमति नहीं होगी क्योंकि वादा बरकरार है, इसलिए नियंत्रण बरकरार है, और तयम्मुम अवैध है। हमारे इमामों की सहमति है कि वह प्रतीक्षा करे चाहे समय निकल जाए, इसलिए हर समय यही हुक्म रहेगा और...

पेज 80/761

فتاوٰی رضویہ، جلد چہارم

برابر ہے اس لئے یہ عجز میں کوئی شک نہ لاسکا جیسا کہ ہم مسئلہ ششم کے آخر میں اس کی تحقیق کرچکے ہیں۔ یہ کلام تو شرح سے متعلق تھا، اب کچھ نکات پر تنبیہ کردی جائے تو کوئی حرج نہیں۔ (ت)

فاقول: نکتہ اولی: اسے "وعدہ" کے نام سے ذکر کرنا مشاکلہ کی وجہ سے ہے ورنہ وعدہ تو مستقبل کیلئے ہوتا ہے۔

نکتہ دوم: صورت مسئلہ میں جو کہا گیا کہ پانی ختم ہوگیا یہ اتفاقاً ہے۔ ورنہ اگر پانی واقع میں ختم نہ ہوا اور اس نے یہ جواب دے کر بہانہ کیا تو بھی حکم یہی ہے بلکہ درجہ اولٰی یہ حکم ہوگا۔ اس لئے کہ یہ بدتر انکار و منع ہے۔

نکتہ سوم: میرے نزدیک دونوں صورتوں میں عدم ظن عطا کی قید لگانا ضروری ہے جیسا کہ میں نے تصویر مسئلہ میں کہا۔ اس لئے کہ جب عطا کا گمان ہو اور اس کے خلاف ظاہر نہ ہو تو یہ تیمم اور نماز کی صحت سے مانع ہے جیسا کہ گزر اور آئندہ بھی آئے گا اور اس وعدہ سے اس گمان کی اگر موافقت ظاہر نہ ہوئی تو اس کی مخالفت بھی بدرجہ اولٰی ظاہر نہ ہوئی اس لئے نماز کا اعادہ واجب ہوگا۔ اور خدائے برتر خوب جاننے والا ہے۔ (ت)

فاقول اولا: كان تسميته وعد اللمشاكلة والا فالوعد للمستقبل۔ وثانيا: التصوير بذهاب الماء خرج وفاقا والا فالحكم كذلك لولم يذهب واحتال بهذا الجواب بل بالأولى لانه منع اشنع۔ وثالثا: لابد عندى من التقييد بعدم ظن العطاء في الوجهين كمافعلت لان ظن العطاء اذالم يظهر خلافه يمنع صحة التيمم

والصلاۃ کمامر ویأتی وبھذا الوعد ان لم یظھر وفاقہ لم یظھر خلافہ ایضاً بالأولی فتجب اعادۃ الصلاۃ واللہ تعالٰی اعلم۔

تنبیہ دوم: اقول 'وعدہ آب کہ ہمارے ائمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہم کے اجماع سے پانی پر قدرت کا موجب سمجھا گیا ظاہر آ یہ حکم وقت کے وقت تک ہے کہ کسی موقت حاجت کیلئے ایک وقت میں وعدہ اُسی وقت کا وعدہ سمجھا جاتا ہے نہ یہ کہ کبھی دے دیں گے اگرچہ سال بھر بعد۔ خروج وقت پر خلفِ وعدہ سمجھا جائے گا کہ دینے کا کہا تھا اور نہ دیا آئندہ اوقات کیلئے بھی وہ وعدہ اور اُس کے سبب اس کا پانی پر قادر ہونا سمجھا جائے تو مہینہ بھر کامل گزر جائے اور اُسے نماز پڑھنے کی اجازت نہ ہو کہ وعدہ باقی ہے تو قدرت باقی ہے تو تیمم ناجائز ہے اور ہمارے ائمہ کا اتفاق ہے کہ انتظار کرے اگرچہ وقت نکل جائے تو ہر وقت یہی حکم رہے گا اور

Fatawa Razawiya Volume Four There would be a ruling for remaining suspended from prayer for weeks and months. By no means can this be an issue of the pure Shari'ah. Necessarily, the effect of the promise will remain only until that specific time and that's it.

Arabic

And this is very apparent, and whoever has the privilege of serving Fiqh (jurisprudence) will see its support in many issues in the Book of Divorce and the Book of Oaths. And Allah Almighty knows best.

Urdu

And this is very clear; one who has been granted the service of jurisprudence will find its support in many issues from the Book of Divorce and the Book of Oaths. And God Almighty knows best. (T)

Third Caution: I say, it is apparent that the promise establishes the fixed power, meaning from the time of the promise and not retroactively, i.e., from the time of knowing about the water. And that is because it is the cause of its establishment, so it is not established before it, because the effect does not precede the cause. (This is because the promise itself is the cause of establishing the power, so power will not be established before it, as the effect does not precede the cause. T) It is obvious that a promise is for the future; so what effect can it have on the past? In fact, if the promise is upon his request, even then it will not indicate that if he had asked earlier, he would have given it, because even now he did not give upon asking, he only made a promise. So how can it be understood that he would have given it earlier? In short, a promise is not an actual gift that all the rulings of a gift should be implemented, rather it is in reality a non-gift; only on the hope that since a Muslim's promise is apparently fulfilled, he is considered apparently capable of using water.

Arabic

Based on what has passed in 'Al-Zafar' regarding the saying of Zufar, from 'Al-Bahr' from 'Al-Bada'i' from Muhammad, that apparently fulfillment of the promise is what matters, so he was apparently capable of usage.

Urdu

The reason for this was stated in the treatise "Al-Zafar li-Qawl Zufar" with reference to 'Al-Bahr'. 'Al-Bahr' narrated from 'Al-Bada'i' and they narrated from Imam Muhammad that apparently fulfilling a promise is the norm, so he was considered apparently capable of use. (T)

So before the promise, there will be no power, nor will it be apparent from the promise upon asking that if he had asked earlier, he would have given it.

Arabic	Urdu
This is what appeared, so let it be reviewed and clarified, and the knowledge of the truth is with the Most High, the Great.	This is what came to my mind, so it should be reviewed and clarified. And the knowledge of the truth belongs only to God, the Most High and Great. (T)

I say: However, there is a strong doubt in this that the scholars have considered the fact of giving water after prayer as a proof for this.

---

1 Bada'i al-Sana'i, Chapter: Conditions of the Pillar, Types, Maktaba HM Saeed Company, Karachi, 29/1 Page 81 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी हफ्तों और महीनों नमाज़ से वंचित रहने का हुक्म होगा, यह पाक शरीयत का मसला नहीं हो सकता। लाज़िम है कि वादे का असर सिर्फ उसी एक वक़्त तक रहेगा और बस।

अरबी	उर्दू
और यह बहुत साफ़ ज़ाहिर है, और जिसने फ़िक़्ह (धर्मशास्त्र) की सेवा की है वह निकाह के किताब और कसमों के किताब के कई मसलों में इसकी तस्दीक देखेगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।	और यह बहुत स्पष्ट है; जिसे फ़िक़्ह की सेवा नसीब हुई उसे किताबुत्तलाक़ और किताबुल ईमान के बहुत से मसलों में इसकी ताईद नज़र आएगी। और ख़ुदाए बरतर ख़ूब जानने वाला है। (त)

तीसरी चेतावनी: मैं कहता हूँ कि ज़ाहिर यह है कि वादा निर्धारित शक्ति स्थापित करेगा यानी वादे के समय से, न कि पिछले समय से यानी पानी के बारे में जानने के समय से। और वह इसलिए कि यही इसके साबित होने का कारण है, तो यह उससे पहले साबित नहीं होगा क्योंकि कार्य कारण से पहले नहीं होता। (वह इसलिए कि यह वादा ही शक्ति के साबित होने का कारण है तो शक्ति उससे पहले साबित न होगी, इसलिए कि मुसबब (कार्य), सबब (कारण) से मुक़द्दम (पहले) नहीं होता। त) ज़ाहिर है कि वादा भविष्य के लिए होता है तो अतीत पर उसका क्या असर, बल्कि अगर वादा उसके मांगने पर हो तो यह भी इस बात का प्रमाण नहीं होगा कि अगर वह पहले माँगता तो दे देता, क्योंकि अब भी तो माँगने पर नहीं दिया सिर्फ़ वादा ही किया तो यह कैसे समझा जाए कि पहले दे ही देता। संक्षेप में, वादा वास्तव में देना नहीं है कि देने के सारे नियम लागू हों बल्कि वह वास्तव में न देना है; सिर्फ़ इस उम्मीद पर कि मुसलमान के वादे में ज़ाहिर वफ़ा (वफ़ादारी) है उसे ज़ाहिरी तौर पर पानी पर सक्षम माना गया है।

अरबी	उर्दू
जैसा कि 'अल-ज़फ़र' में जुफ़र के कौल के बारे में 'अल-बहर' के माध्यम से 'अल-बदाए' से मुहम्मद के हवाले से गुज़रा कि ज़ाहिर वादे को निभाना है, तो वह ज़ाहिरी तौर पर इस्तेमाल पर सक्षम हुआ।	इसकी वजह रिसाला "अल-ज़फ़र लि-क़ौल जुफ़र" में बहर के हवाले से बयान हुई। बहर ने बदाए से और उन्होंने इमाम मुहम्मद से नक़्ल किया कि ज़ाहिर वादे को निभाना है तो वह ज़ाहिरी तौर पर इस्तेमाल पर क़ादिर हुआ। (त)

तो वादे से पहले न शक्ति होगी न माँगने पर वादे से यही ज़ाहिर हो कि पहले माँगता तो दे देता।

अरबी	उर्दू
यह वह है जो ज़ाहिर हुआ, तो इस पर विचार और स्पष्टीकरण किया जाना चाहिए, और सत्य का ज्ञान सबसे उच्च और महान (अल्लाह) के पास है।	यह वह है जो मेरे ज़हन में आया तो इसकी समीक्षा और व्याख्या कर ली जाए। और हक़ का इल्म ख़ुदाए बरतर व बुज़ुर्ग ही को है। (त)

मैं कहता हूँ: मगर इसमें यह प्रबल संदेह है कि विद्वानों ने नमाज़ के बाद माँगने पर पानी दे देने को इस पर दलील ठहराया है।

---

1 बदाए-उस-सनाए, फ़स्ल: अरकान की शर्तें, किस्में, मकतबा एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 29/1 पृष्ठ 761 का 81

فتاوی رضویہ جلد چہارم ہفتوں مہینوں نماز سے معطل رہنے کا حکم ہوگا حاشایہ شریعت مطہرہ کا مسئلہ نہیں ہوسکتا لاجرم وعدہ کا اثر اس ایک ہی وقت تک رہے گا و بس،

عربی	اردو
وھذا ظاھر جدا ومن خدم الفقه یری تأییده في مسائل کثیرة من کتاب الطلاق وکتاب الایمان واللہ تعالی اعلم۔	اور یہ بہت واضح ہے جسے فقہ کی خدمت نصیب ہوئی اسے کتاب الطلاق اور کتاب الایمان کے بہت سے مسائل میں اس کی تائید نظر آئے گی۔ اور خدائے برتر خوب جاننے والا ہے۔ (ت)

تنبیہ سوم: اقول ظاہر یہ ہے کہ وعدہ قدرت مقررہ ثابت کرے گا یعنی وقت وعدہ سے نہ مستندہ یعنی وقت علم بہ آب سے وذلک لانہ ھو سبب ثبوتھا فلاتثبت قبلہ لان المسبب لایتقدم السبب (وہ اس لئے کہ یہ وعدہ ہی ثبوت قدرت کا سبب ہے تو قدرت اس سے پہلے ثابت نہ ہوگی، اس لئے کہ مسبّب، سبب سے مقدّم نہیں ہوتا۔ ت) ظاہر ہے کہ وعدہ آئندہ کیلئے ہوتا ہے تو ماضی پر اس کا کیا اثر بلکہ اگر وعدہ اس کے سوال پر ہو تو یہ بھی دلالت نہ کرے گا اس سے پہلے مانگتا تو دے دیتا کہ اب بھی تو مانگنے پر نہ دیا نرا وعدہ ہی کیا تو یہ کیونکر مفہوم ہو کہ پہلے دے ہی دیتا بالجملہ وعدہ حقیقتہ عطا نہیں کہ سب احکام عطا نافذ ہوں بلکہ وہ حقیقتہ عدم عطا ہے صرف اس اُمید پر کہ مسلمان کے وعدے میں ظاہر وفا ہے اسے ظاہراً پانی پر قادر مانا گیا ہے،

عربی	اردو
لما مر في الظفر لقول زفر عن البحر عن البدائع عن محمد ان الظاھر الوفاء	اس کی وجہ رسالہ "الظفر لقول زفر" میں بحر کے حوالہ سے بیان ہوئی۔ بحر نے بدائع سے انہوں نے امام محمد

عربی	اردو
بالوعد فکان قادرا علی الاستعمال ظاھرا1۔	سے نقل کیا کہ ظاہر وفائے وعدہ ہے تو وہ ظاہراً استعمال پر قادر ہوا۔ (ت)

تو پیش از وعدہ نہ قدرت ہوگی نہ مانگنے پر وعدے سے یہی ظاہر ہو کہ پہلے مانگتا تو دے دیتا۔

عربی	اردو
ھذا ما ظھر فلیراجع ولیحرر والعلم بالحق عند العلی الاکبر۔	یہ وہ ہے جو میرے ذہن میں آیا تو اس کی مراجعت اور وضاحت کر لی جائے۔ اور حق کا علم خدائے برتر و بزرگ ہی کو ہے۔ (ت)

اقول: مگر اس میں یہ قوی شک ہے کہ علما نے بعد نماز مانگنے پر پانی دے دینے کو اس پر دلیل ٹھہرایا ہے

---

1 بدائع الصنائع فصل ما شرائط الرکن فانواع مکتبہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۲۹ Page 81 of 761

Fatawa Ridawiyya, Volume 4

...that he would have given even if asked before.

[Table/Box Content] Arabic: كما ياتي في المسألة الآتية عن الزيادات وجامع الكرخي والبدائع والحلية ان البذل بعد الفراغ دليل البذل قبله Urdu: As will be mentioned in the following problem with reference to Al-Ziyadat, Jami' al-Karkhi, Bada'i', and Al-Hilya, giving after finishing the prayer is evidence of giving before it. (T)[1]

[Main Body Text] Why should it not be said in this way that the promise upon asking after the prayer is evidence that if he had asked before, he would have made a promise. And since the promise itself is considered a cause of capability, just as by giving water afterwards, previous capability was proved—that if he had asked before, he would have received it and thus the water was under his power—similarly, through a subsequent promise, it will be proved that if he had asked before, a promise would have been made. Since the promise was a cause of capability, capability would have been attained and the water would have been under his power. And when this is the ruling upon a mere promise after asking, then a promise without asking is even more so. Here there is a possibility that since he made a promise without being asked, it wouldn't be surprising if he had given it if asked before. Although in this priority, this statement is clear that 'perhaps' and 'it wouldn't be surprising' are not useful; manifestation is required. The words of Imam Muhammad just passed: 'fakaana qaadiran zaahiran' (so he was apparently capable. T).

I say: But there is a clear difference between giving (bazl) and promising. From current giving, previous giving is presumed, and giving certainly necessitates capability, so capability was presumed. This is contrary to a promise, which is not a definitive cause of capability. Backing out is possible, and it is also possible for the giver to present some excuse. Do you not see that Imam Muhammad only says 'innal dhaahira al-wafa' (Behold, Imam Muhammad says that the apparent state is the fulfillment of the promise. T). Thus, a promise is only a source of presumption of capability, and the previous state from the current promise is also not certain, only presumed. Therefore, from the promise at that time, there was no presumption of capability in the previous time, but rather a presumption of a presumption, and the 'presumption of a presumption' is not 'presumption of the thing'. Thus, presumption of capability for the previous time was not proved, so it was not found to be contrary to the apparent inability, and Tayammum and the prayer will remain valid. This

discourse also includes the case where he makes a promise after [the prayer] without being asked, as is not hidden (kama la yakfa). In short, the position is difficult, and what is apparent is what this humble one has submitted. And Allah (Glorified and Exalted) knows best.

Then I say: Rather, the reality of the matter is that the issue of the promise itself is difficult; even clearer than that is the issue of hope (raja) and the difference between it and the issue of 'presumption of closeness'. Great researchers such as Imam Al-Ajal Abdul Aziz Bukhari, Imam Qawam al-Kaki, Imam Akmal al-Babarti, Imam Kamal ibn al-Humam and others (may Allah Almighty have mercy on them) considered it difficult and left it unsolved.

---

[1] Bada'i al-Sana'i, chapter on the conditions of the pillar, types, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/29.

फ़तावा रज़विया, खंड 4

...कि वह पहले मांगने पर भी दे देता।

[तालिका/बॉक्स सामग्री] अरबी: كما ياتي في المسألة الآتية عن الزيادات وجامع الكرخي والبدائع والحلية ان البذل بعد الفراغ دليل البذل قبله[1]. उर्दू अनुवाद: जैसा कि अगले मसले में ज़ियादात, जामे करख़ी, बदायअ और हिलिया के हवाले से आ रहा है कि नमाज़ से फ़ारिग होने के बाद दे देना इस बात की दलील है कि वह पहले भी दे देता। (त)

[मुख्य पाठ] तो क्यों न ऐसा कहा जाए कि नमाज़ के बाद मांगने पर वादा इस बात की दलील है कि अगर पहले मांगता तो भी वादा कर लेता। और स्वयं वादे को शक्ति का कारण माना गया है, तो जिस तरह बाद में पानी दे देने से पिछली शक्ति सिद्ध हुई कि अगर पहले मांगता तो मिल जाता और पानी शक्ति के अधीन था, वैसे ही बाद के वादे से सिद्ध होगा कि अगर पहले मांगता तो वादा हो जाता और वादा शक्ति का कारण था तो शक्ति प्राप्त हो जाती और पानी शक्ति के अधीन होता। और जब मांगने पर केवल वादे से यह हुक्म हो, तो बिना मांगे वादे से तो और भी अधिक (बदरजा औला), क्योंकि यहाँ तो यह संभावना है कि जब बिना मांगे वादा कर लिया तो कोई आश्चर्य नहीं कि पहले मांगने पर दे ही देता। यद्यपि इस प्राथमिकता में यह बात स्पष्ट है कि 'शायद' और 'क्या आश्चर्य' उपयोगी नहीं हैं; प्रकटीकरण (ज़ुहूर) आवश्यक है। इमाम मुहम्मद का कलाम अभी गुज़रा: 'फकाना क़ादिरन ज़ाहिरन' (तो वह ज़ाहिर तौर पर सक्षम हुआ। त)।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): लेकिन देने (बज़्ल) और वादे में स्पष्ट अंतर है। वर्तमान में देने से पहले देने का अनुमान होता है और देना निश्चित रूप से शक्ति का कारण है, अतः शक्ति का अनुमान हुआ। इसके विपरीत वादा है कि वह शक्ति का निश्चित कारण नहीं है; वादाखिलाफी भी संभव है और देने वाले का कोई बहाना पेश करना भी संभव है। क्या आप नहीं देखते कि इमाम मुहम्मद केवल यह कहते हैं 'इन्नज़ ज़ाहिरा अल-वफ़ा' (देखो, इमाम मुहम्मद फ़रमाते हैं कि ज़ाहिर वादे को पूरा करना है। त)। तो वादा केवल शक्ति के अनुमान का स्रोत है, और वर्तमान वादे से पिछली स्थिति भी निश्चित नहीं है, केवल अनुमानित है। तो उस समय के वादे से पहले शक्ति का अनुमान नहीं हुआ बल्कि अनुमान का अनुमान (ज़न-ए-ज़न) हुआ, और 'अनुमान का अनुमान' किसी चीज़ का अनुमान नहीं होता। अतः पहले के लिए शक्ति का अनुमान सिद्ध नहीं हुआ, तो यह ज़ाहिर लाचारी (अज्र) के विपरीत नहीं पाया गया, और तयम्मुम व नमाज़ सही रहेगी। यह व्याख्या उस स्थिति को भी शामिल करती है जब वह

बाद में बिना मांगे वादा करे, जैसा कि छिपा नहीं है (कमा ला यख़्फ़ा)। संक्षेप में, यह मक़ाम (विषय) कठिन है और ज़ाहिर वही है जो इस फ़क़ीर ने निवेदन किया, और अल्लाह सुब्हानहू व तआला सबसे बेहतर जानता है।

थुम्मा अक़ूल (फिर मैं कहता हूँ): बल्कि हक़ीक़त यह है कि वादे का मसला स्वयं कठिन है, बल्कि इससे भी स्पष्टतर मसला 'रजा' (आशा) का है और उसका और 'निकटता के अनुमान' (ज़न-ए-क़ुर्ब) के मसले का अंतर बड़े शोधकर्ताओं (मुहक़्क़िक़ीन) जैसे इमाम अजल अब्दुल अज़ीज़ बुखारी, इमाम क़वाम काकी, इमाम अकमल बाबरती, इमाम कमाल इब्न अल-हुमाम आदि (अल्लाह तआला उन पर रहमत फ़रमाए) ने कठिन समझा और अनसुलझा छोड़ दिया।

---

[1] बदायअ अस-सनायअ, फ़स्ल मा शराइत अर-रुक़्न, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/29.

فتاوی رضویہ جلد چہارم

کہ پہلے مانگتا جب بھی دے دیتا۔

[جدول/باکس متن] عربی: كما ياتي في المسألة الآتية عن الزيادات وجامع الكرخي والبدائع والحلية ان البذل بعد الفراغ دليل البذل قبله [1]۔ اردو: جیسا کہ اگلے مسئلہ میں زیادات، جامع کرخی، بدائع اور حلیہ کے حوالے سے آرہا ہے کہ نماز سے فارغ ہونے کے بعد دے دینا اس کی دلیل ہے کہ پہلے بھی دے دیتا۔ (ت)

[اصل عبارت] تو یوں ہی کیوں نہ کہا جائے کہ بعد نماز مانگنے پر وعدہ اس کی دلیل ہے کہ پہلے مانگتا جب بھی وعدہ کر لیتا اور نفس وعدہ کو موجب قدرت مانا ہے تو جس طرح بعد کو پانی دے دینے سے قدرت سابقہ ثابت ہوئی کہ پہلے مانگتا تو مل جاتا تو پانی زیر قدرت تھا یونہی بعد کے وعدے سے ثابت ہو گی کہ پہلے مانگتا تو وعدہ ہو جاتا اور وعدہ موجب قدرت تھا تو قدرت مل جاتی تو پانی زیر قدرت تھا اور جب مانگنے پر نرے وعدے سے یہ حکم ہو تو بے مانگے وعدے سے بدرجہ اولیٰ کہ یہاں تو یہ احتمال ہے کہ جب بے مانگے وعدہ کر لیا عجب نہیں کہ پہلے مانگنے پر دے ہی دیتا اگرچہ اس اولویت میں یہ کلام واضح ہے کہ شاید اور کیا عجب مفید نہیں ظہور درکار ہے کلام امام محمد سے ابھی گزرا فکان قادراً ظاہرا (تو ظاہراً قادر ہوا۔ ت)

اقول: مگر بذل و وعدہ میں فرق بین ہے بذل حال سے بذل سابق مظنون ہوا اور بذل قطعاً موجب قدرت ہے تو قدرت مظنون ہوئی بخلاف وعدہ کہ قدرت کا موجب قطعی نہیں خلف بھی ممکن ہے دینے والے کو کوئی عذر پیش آنا بھی ممکن ہے الاتری ان محمداً انما یقول ان الظاھر الوفاء (یہ دیکھئے امام محمد فرماتے ہیں کہ ظاہر وفائے وعدہ ہے۔ ت) تو وعدہ صرف مورث ظن قدرت ہے

اور وعدہ حال سے سابقہ بھی یقینی نہیں صرف مظنون ہے تو اس وقت کے وعدے سے سابق میں ظن قدرت نہ ہوا بلکہ ظنِ ظن ہوا اور ظنِ ظن شیئٌ ظن شیئی نہیں تو سابق کیلئے ظنِ قدرت ثابت نہ ہوا تو عجز ظاہر کا معارض نہ پایا گیا اور تیمم و نماز صحیح رہے اور یہ تقریر اس صورت کو بھی شامل کہ بعد کو بے مانگے وعدہ کرے کما لایخفی (جیسا کہ مخفی نہیں ۔ت) بالجملہ مقام مشکل ہے اور ظاہر وہ ہے جو فقیر نے گزارش کیا واللہ سبحنہ وتعالیٰ اعلم۔

ثم اقول: بلکہ حقیقت امر یہ ہے کہ مسئلہ وعدہ خود ہی مشکل ہے بلکہ اس سے بھی صاف تر مسئلہ رجا اور اس کا اور مسئلہ ظن قرب کا فرق اکابر محققین امام اجل عبدالعزیز بخاری اور امام قوام کاکی وامام اکمل بابرتی وامام کمال ابن الہمام و غیرہم رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہم نے مشکل سمجھا اور لاحل چھوڑ دیا،

---

[1] بدائع الصنائع فصل ما شرائط الرکن فانو اع مکتبہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲۹/۱

Fatawa Ridawiyya Volume 4

And from Allah alone is the request for the solution to every difficulty and the removal of every complication. And there is no power or strength except from Allah, the High, the Great, the Supreme. (T)

As for the issue of the promise, I have always considered it problematic. This is because a promise only generates hope for the future, and hope for the future does not eliminate the inability realized in the present. Then how can it be said that merely by a promise, one becomes capable of [attaining] water? It is stated in *Tabyin*: For one who hopes for water, it is recommended (*Mustahabb*) to delay the prayer, but not obligatory (*Wajib*), because the non-existence [of water] is established in reality, so its ruling will not be removed by doubt. In *Hidayah*, it is stated: "It is narrated from Imam Abu Hanifa and Imam Abu Yusuf (may Allah be pleased with them both) in a non-original narration (*Ghayr Riwayat al-Asul*) that delaying is mandatory (*Lazim*) because a dominant opinion is like a realized fact. The reason for the apparent narration (*Zahir al-Riwayah*) is that inability is established in reality, so its ruling will not be removed without certainty."

Note: I say: By 'doubt' he meant what is the opposite of 'certainty', as evidenced by the text of *Hidayah* that follows. It is mentioned in *Binayah* and in *Shalbiya* with reference to *Dirayah*, and both *Binayah* and *Dirayah* narrate from *Al-Izah* that by 'hope' is meant 'preponderance of belief' (*Ghaliba-e-Zann*), i.e., his dominant thought is that he will find water by the end of the time. And similar to this is found in *Al-Bahr*, etc. 12 May he be forgiven (T).

Footnotes: 1. Tabyin al-Haqa’iq, Chapter of Tayammum, Matba’a Amira Bulaq Egypt 1/41 2. Hashiya Shalbi ‘ala Tabyin al-Haqa’iq, Chapter of Tayammum, Matba’a Amira Bulaq Egypt 1/41 3. Al-Hidayah, Chapter of Tayammum, Maktaba Arabiya Karachi 1/36

Page 83 of 761

फ़तावा रिज़विया जिल्द चौथी

और अल्लाह ही से हर मुश्किल के हल और हर पेचीदगी को दूर करने की दुआ है। और कोई ताक़त व कुव्वत नहीं मगर बुलंद व अज़मत वाले ख़ुदा की तरफ़ से। (त)

वादे का मसला तो मैं हमेशा मुश्किल समझता रहा। इसलिए कि वादा सिर्फ़ आने वाले ज़माने में उम्मीद पैदा करता है और भविष्य की उम्मीद वर्तमान में मौजूद बेबसी (अज्ज़) को ख़त्म नहीं करती, फिर ये कैसे कहा जा सकता है कि वह महज़ वादे से पानी पर कादिर हो गया। तबीन में है: पानी की उम्मीद रखने वाले के लिए नमाज़ में देरी करना मुस्तहब (पसंदीदा) है, वाजिब (अनिवार्य) नहीं। इसलिए कि पानी का न होना हक़ीक़तन साबित है, तो शक से उसका हुक्म खत्म नहीं होगा। हिदाया में है: "इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम अबू यूसुफ़ (रज़ियल्लाहु अन्हा) से गैर-रिवायत-ए-असूल में वर्णित है कि देरी करना लाज़िम है क्योंकि प्रबल गुमान (ग़ालिब गुमान) हक़ीक़त की तरह है। ज़ाहिर रिवायत की वजह यह है कि बेबसी हक़ीक़तन साबित है, तो इसका हुक्म बिना यक़ीन के ज़ायल (खत्म) नहीं होगा।"

नोट: मैं कहता हूँ: शक से वह मुराद लिया है जो यक़ीन के विपरीत हो, इसकी दलील हिदाया की इबारत है जो इसके बाद आ रही है। बिनाया और शलबिया में दराया के हवाले से, फिर बिनाया और दराया दोनों ही ईज़ाह से नक़्ल करते हैं कि उम्मीद से मुराद ग़ालिब-ए-ज़न्न (प्रबल संभावना) है, यानी उसका प्रबल गुमान यह हो कि वक़्त के आख़िर में पानी मिल जाएगा, और इसी तरह अल-बहर वगैरह में है। १२ उनकी मग़फ़िरत हो (त)।

पादलेख: 1. तबीन अल-हक़ायिक़, बाब-उत-तयम्मुम, मतबआ अमीरा बुलाक मिस्र 1/41 2. हाशिया शलबी अला तबीन अल-हक़ायिक़, बाब-उत-तयम्मुम, मतबआ अमीरा बुलाक मिस्र 1/41 3. अल-हिदाया, बाब-उत-तयम्मुम, मकतबा अरबिया कराची 1/36

पेज 83 का 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

واللہ المسئول لحل کل اشکال ودفع کل اعضال ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم المتعال* اور خدا ہی سے ہر اشکال کے حل، اور ہر پیچیدگی کے دفعیہ کا سوال ہے۔ اور کوئی طاقت و قوت نہیں مگر بلند با عظمت برتر خدا ہی سے۔ (ت)

اما مسالۃ الوعد فلم ازل استشکلھا لان الوعد لا یورث الرجاء فی المآل والرجاء فی القابل لا یرفع العجز المتحقق فی الحال فکیف یقال انہ بمجرد الوعد صار قادرا علی الماء قال فی التبیین راجی (۱) الماء یستحب لہ التأخیر ولا یجب لان العدم ثابت حقیقۃ فلا یزول حکمہ بالشک عہ اہ وفی الھدایۃ وعن ابی حنیفۃ وابی یوسف رضی اللہ تعالی عنھما فی غیر روایۃ الاصول ان التأخیر حتم لان غالب الرأی کالمتحقق وجہ الظاھر ان العجز ثابت حقیقۃ فلا یزول حکمہ الا بیقین مثلہ اہ مسئلہ وعدہ کو تو میں ہمیشہ مشکل سمجھتا رہا۔ اس لئے کہ وعدہ صرف زمانہ آئندہ میں امید پیدا کرتا ہے اور مستقبل میں امید حال میں متحقق عجز کو ختم نہیں کرتی پھر یہ کیسے کہا جا سکتا ہے کہ وہ محض وعدہ سے پانی پر قادر ہو گیا۔ تبیین میں ہے: پانی کی امید رکھنے والے کیلئے نماز کو مؤخر کرنا مستحب ہے، واجب نہیں۔ اس لئے کہ پانی کا نہ ہونا حقیقتاً ثابت ہے تو شک سے اس کا حکم زائل نہ ہوگا اہ۔ ہدایہ میں ہے: "امام ابوحنیفہ اور امام ابویوسف رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے غیر روایت اصول میں مروی ہے کہ مؤخر کرنا لازم ہے اس لئے کہ غالب گمان، متحقق کی طرح ہے۔ ظاہر روایت کی وجہ یہ ہے کہ عجز حقیقتاً ثابت ہے تو اس کا حکم ویسے ہی یقین کے بغیر زائل نہ ہوگا۔"

عہ اقول: اراد بالشک ما یقابل الیقین بدلیل ما یتلوہ من نص الھدایۃ وقد قال فی البنایۃ وفی الشلبیۃ عن الدرایۃ کلیھما عن الایضاح المراد بالرجاء غلبۃ الظن ای یغلب علی ظنہ انہ یجد الماء فی آخر الوقت اہ ومثلہ فی البحر وغیرہ منھ غفر لہ (م) شک سے وہ مراد لیا ہے جو یقین کا مقابل ہو اس کی دلیل

ہدایہ کی عبارت ہے جو اس کے بعد آرہی ہے۔ بنایہ میں ہے اور شلبیہ میں درایہ کے حوالہ سے پھر بنایہ و درایہ دونوں ہی ایضاح سے ناقل ہیں کہ امید سے مراد غلبہ ظن ہے یعنی اس کا غالب گمان یہ ہو کہ آخر وقت میں پانی مل جائے گا اور اسی کے مثل بحر وغیرہ میں ہے ۱۲ منہ غفر لہ (ت)

1 تبیین الحقائق باب التیمم مطبعہ امیرہ بولاق مصر ۴۱/۱ 2 حاشیہ شلبی علی تبیین الحقائق باب التیمم مطبعہ امیرہ بولاق مصر ۴۱/۱ 3 الہدایہ باب التیمم مکتبہ عربیہ کراچی ۳۶/۱

Fatawa Razawiya - Volume Four

[Column 1 - Arabic] He attributed it in 'al-Hilya' to it and to others. This issue is well-known and frequently cited in the basic texts, commentaries, and fatwas. It definitively establishes that the hope of attaining capability in the future does not remove the current state of inability, according to the consensus of our companions in the fundamental reports (Riwayat al-Usul). Therefore, one must not be considered capable merely by a promise. Rather, it is recommended to wait if the promise is made before the prayer. If the promise is made after the prayer, it does not invalidate a prayer performed with certainty, just as it wouldn't if one hoped to find [water] at the end of the time after having prayed. For what does not prevent Tayammum by its existence cannot invalidate it upon its occurrence, let alone what preceded it. As for the distinction that capability over water is established by consensus through permission (ibahah), thus making waiting obligatory—unlike other things like clothes and a bucket where it is not established according to the Imam (Abu Hanifa), so waiting is only recommended, while according to the two companions (Sahibayn) it is established, thus making waiting obligatory—I say: A promise is not permission in the present; rather, it creates hope for it in the future. There is a vast difference between someone saying "I gave" and "I will give." As for the point that fulfillment of the promise is expected, thus he was apparently capable of using water, I say: water is still non-existent for him.

[Column 2 - Urdu] In 'al-Hilya', a reference to 'Hidaya' and another book is also given for this. This issue is well-known and circulates frequently in texts, commentaries, and fatwas, and from it, it is known with certainty that the hope of capability in the future does not end the currently existing inability. On this, there is a consensus of our companions in the fundamental reports. So it is necessary that due to a promise, he should not be counted as capable; he will only be ordered to wait as a recommendation if the promise happened before the prayer. And if the promise happened after the prayer, it cannot invalidate such a prayer that was certainly performed correctly, as in the case when after performing the prayer, hope of finding water arose at the end of the time. This is because something whose presence does not prevent Tayammum cannot end Tayammum even at the time of its occurrence, let alone ending it at a prior time. This difference—that capability over water is established by consensus through permission, so waiting for it is obligatory, while the situation is not the same for other things like clothes and buckets where according to the Imam (Abu Hanifa) capability is not established by permission, so

waiting is only recommended, and according to the two companions (Sahibayn) capability is established in those as well, so waiting is obligatory (on this, I have something to say)—I say: A promise is not permission in the present; rather, it only creates hope for the future. There is an open difference between someone saying "I gave" and saying "I will give." (T) Now regarding the point that fulfillment of the promise is apparent, so he was apparently capable of using water, I say (to that I say that) the water near him...

फ़तावा रज़विया - चौथा खंड

[कॉलम १ - अरबी] 'अल-हिल्या' में इसका संदर्भ इसके और अन्य के लिए दिया गया है। यह मसला मतून, शरूहात और फ़तावा में प्रसिद्ध और व्यापक रूप से प्रचलित है। यह निश्चित रूप से स्पष्ट करता है कि भविष्य में सामर्थ्य की आशा वर्तमान की अक्षमता को समाप्त नहीं करती है, जैसा कि हमारे विद्वानों की मौलिक रिवायतों (रिवायातुल उसूल) में इजमा है। इसलिए, व्यक्ति को केवल वादे के कारण सक्षम नहीं माना जाना चाहिए। बल्कि, यदि प्रार्थना से पहले वादा हुआ हो, तो उसे केवल मुस्तहब (पसंदीदा) के रूप में प्रतीक्षा करने का आदेश दिया जाएगा। और यदि प्रार्थना के बाद वादा हुआ, तो यह उस प्रार्थना को अमान्य नहीं करता जो निश्चितता के साथ की गई थी, ठीक उसी तरह जैसे नमाज़ पढ़ने के बाद समय के अंत में पानी मिलने की उम्मीद जागने पर होता है। क्योंकि जिस चीज़ की मौजूदगी तयम्मुम को नहीं रोकती, उसकी उत्पत्ति उसे समाप्त नहीं कर सकती, पहले की बात तो दूर की है। जहाँ तक इस अंतर का सवाल है कि पानी पर सामर्थ्य इजमा से 'इबाहत' (अनुमति) द्वारा सिद्ध होती है, इसलिए प्रतीक्षा अनिवार्य (वाजिब) है, अन्य चीज़ों जैसे कपड़े और डोल के विपरीत जहाँ इमाम (अबू हनीफ़ा) के अनुसार इबाहत से सामर्थ्य सिद्ध नहीं होती, इसलिए प्रतीक्षा केवल मुस्तहब है, और साहिबैन के अनुसार इसमें भी सिद्ध होती है इसलिए प्रतीक्षा वाजिब है—मैं कहता हूँ: वादा वर्तमान में इबाहत नहीं है, बल्कि भविष्य के लिए उसकी आशा पैदा करना है। किसी के यह कहने कि "मैंने दिया" और "मैं दूँगा" के बीच एक बड़ा अंतर है। जहाँ तक इस बात का प्रश्न है कि वादे का पूरा होना ज़ाहिर है, इसलिए वह ज़ाहिर तौर पर पानी के उपयोग में सक्षम हो गया, तो मैं कहता हूँ: पानी अभी भी उसके पास अनुपलब्ध है।

[कॉलम २ - उर्दू] 'अल-हिल्या' में इस पर 'हिदाया' और दूसरी किताब का भी संदर्भ दिया गया है। यह मसला मतून, शरूहात और फ़तावा में प्रसिद्ध और व्यापक रूप से चर्चित है, और इससे निश्चित रूप से यह पता चलता है कि भविष्य में सामर्थ्य की उम्मीद, वर्तमान की अक्षमता को समाप्त नहीं करती। इस पर मौलिक रिवायतों में हमारे साथियों का इजमा है। तो आवश्यक है कि वादे के कारण उसे सक्षम न माना जाए, उसे केवल मुस्तहब के रूप में प्रतीक्षा का आदेश दिया जाएगा यदि नमाज़ से पहले वादा हुआ हो। और यदि नमाज़ के बाद वादा हुआ, तो यह ऐसी नमाज़ को अमान्य नहीं कर सकता जो निश्चित रूप से सही अदा हुई हो, जैसे उस स्थिति में जब नमाज़ पढ़ने के बाद समय के अंत में पानी मिलने की उम्मीद जगी हो। इसलिए कि जिस चीज़ की मौजूदगी तयम्मुम में बाधक नहीं होती, उसकी उत्पत्ति उस समय भी तयम्मुम को समाप्त नहीं कर सकती, पहले की बात तो छोड़ ही

दें। यह अंतर कि पानी पर सामर्थ्य इजमा से इबाहत (अनुमति) से सिद्ध हो जाती है तो उसकी प्रतीक्षा वाजिब है, जबकि अन्य चीज़ों जैसे कपड़े और डोल का यह हाल नहीं है जिसमें इमाम साहब के अनुसार इबाहत से सामर्थ्य सिद्ध नहीं होती इसलिए प्रतीक्षा केवल मुस्तहब है, और साहिबैन के अनुसार इनमें भी सामर्थ्य सिद्ध होती है इसलिए प्रतीक्षा वाजिब है (इस पर मुझे कुछ कहना है)—मैं कहता हूँ: वादा वर्तमान में इबाहत नहीं है बल्कि इससे केवल भविष्य में उम्मीद पैदा होती है। किसी के यह कहने कि "मैंने दिया" और यह कहने कि "मैं भविष्य में दूँगा" के बीच स्पष्ट अंतर है। (त) अब रही यह बात कि वादे का पूरा होना ज़ाहिर है तो वह ज़ाहिर तौर पर पानी के उपयोग में सक्षम हो गया, तो मैं कहता हूँ (तो इस पर मैं कहता हूँ कि) पानी उसके पास...

पृष्ठ ८४/७६१

فتاویٰ رضویہ - جلد چہارم

[كالم 1 - عربی] وعزاه في الحلية لها ولغيرها والمسألة معلومة دوّارة في المتون والشروح والفتاوى وهي تعطي قطعاً ان رجاء القدرة في المآل لا يرفع العجز في الحال باجماع اصحابنا في روايات الاصول فيجب ان لا يعد قادرا بالوعد وانما يؤمر بالانتظار استحباباً ان وقع الوعد قبل الصلاة وان وعد بعدها لم يبطل صلاة صحت بيقين كما لو حصل له رجاء الوجدان آخر الوقت بعد ما صلى فان مالا يمنع التيمم وجوده لا يرفعه حدوثه حين حدث فضلا عما سبق اما الفرق بأن القدرة على الماء تثبت بالاباحة اجماعاً فيجب الانتظار بخلاف غيره كثوب ودلو فلا تثبت عند الامام فيستحب وعندهما نعم فيجب فأقول: الوعد ليس اباحة في الحال بل ايراث رجائها في المآل فبون بين بين قوله اعطيت وقوله ساعطي۔ اما ان الظاهر الوفاء فكان قادراً على استعمال الماء ظاهراً فأقول: الماء معدوم عنده بعد

[كالم 2 - اردو] حلیہ میں اس پر ہدایہ اور دوسری کتاب کا بھی حوالہ دیا ہے۔ اور یہ مسئلہ معلوم ومعروف ہے متون، شروح اور فتاویٰ میں کثرت سے گردش کرنے والا ہے، اور اس سے قطعی طور پر یہ پتا چلتا ہے کہ مستقبل میں قدرت کی امید، حال میں پائے جانے والے عجز کو ختم نہیں کرتی۔ اس پر روایات اصول میں ہمارے اصحاب کا اجماع ہے۔ تو ضروری ہے کہ وعدہ کی وجہ سے اسے قادر نہ شمار کیا جائے، صرف استحباباً اسے انتظار کا حکم دیا جائے گا اگر قبل نماز وعدہ ہوا، اور اگر بعد نماز وعدہ ہوا تو یہ ایک ایسی نماز کو باطل نہیں کر سکتا جو بالیقین صحیح ادا ہوئی جیسے اس صورت میں جب کہ ادائے نماز کے بعد آخر وقت میں اسے پانی ملنے کی امید پیدا ہوئی اس لئے کہ جس چیز کی موجودگی تیمم سے مانع نہیں ہوتی اس کا حدوث بوقت حدوث بھی تیمم کو ختم نہیں کر سکتا بوقت سابق ختم کرنا تو دور کنار۔ یہ فرق کہ پانی پر قدرت بالاجماع اباحت سے ثابت ہو جاتی ہے تو اس کا انتظار واجب ہے، دوسری چیز جیسے کپڑے اور ڈول کا یہ

حال نہیں اس میں امام صاحب کے نزدیک اباحت سے قدرت ثابت نہیں ہوتی تو انتظار صرف مستحب ہے اور صاحبین کے نزدیک اس میں بھی قدرت ثابت ہوتی ہے تو انتظار واجب ہے (اس پر مجھے کلام ہے) فاقول: وعدہ فی الحال اباحت نہیں بلکہ اس سے صرف آئندہ زمانہ میں امید پیدا ہوتی ہے۔ کسی کے یہ کہنے میں کہ "میں نے دیا" اور یہ کہنے میں کہ "آئندہ دوں گا" کھلا ہوا فرق ہے۔ (ت) اب رہی یہ بات کہ ظاہر وفائے وعدہ ہے تو ظاہراً پانی کے استعمال پر قادر ہوا فاقول (تو اس پر میں کہتا ہوں کہ) پانی اس کے نزدیک

Fatawa Razawiyya Volume IV

[Arabic Text column] And there is no power over the non-existent. How [can there be], when it has been stated in 'Al-Bahr [al-Ra'iq]' regarding the issue of one who forgets water in his saddlebag, that this is because there is no power without knowledge? For the one capable of an action is he who, if he wanted to achieve it, would be able to do so, and there is no obligation without capability[1] (end quote). It is known that for the one to whom a promise is made, the matter is not in his hands such that it would be possible for him to perform ablution by his will; rather, it is in the hands of the promisor, so capability is not established.

If you say: Is it not that if he gives it to him after the prayer without refusal, [the prayer] is invalidated? Thus, he is considered capable in the past due to the subsequent gift. Clarification of this will come from references to 'Az-Ziyadat', 'Jami' al-Karkhi', 'Al-Bada'i'', and 'Al-Hilyah' that it became clear he was capable because providing it after completion is evidence of providing it before it[2] (end quote), even though the water was non-existent with him then, and the non-existent is not within power. So why is he not made capable by the promise, even if the water is non-existent with him afterwards? Nay, this is more appropriate because it is on the verge of being obtained, unlike what has passed, for it is impossible to make what was not obtained into something obtained.

[Urdu Text column] Even now it is non-existent, and there is no power over the non-existent. How can this be? While in 'Al-Bahr al-Ra'iq', regarding the problem of a person who forgets water kept in his tent or saddlebag, it is written: "This is because there is no power without knowledge, for the one capable of an action is he who, if he wants to bring that action into existence, can do so; and without power, no one is burdened (mukallaf)." End quote. It is known that for the person who has been promised, the matter is not in his hands that he may perform ablution if he wishes; rather, it is in the hands of the one who made the promise, so power was not established. (T)

If the question arises: Is it not the case that when he gives it to him after the prayer without denial, the prayer became invalid? From this, it became clear that by giving it later, he was counted as capable in the past. Its clear statement is coming with references to 'Ziyadat', 'Jami' al-Karkhi', 'Bada'i'', and 'Hilya' that "it became clear that he was capable, because giving it after finishing the prayer is evidence that he would have given it before as well." End quote. Despite the fact that water was non-existent

with him at that time and the non-existent is not under power. So why should he not be declared capable because of the promise, even though the water is still non-existent with him? Rather, this would be a fortiori (to a higher degree), because it is on the way to being obtained in the future, and in the time that has passed, it is not possible at all to make the un-obtained into something obtained. (T)

---

[1] Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter on Tayammum, Maktabah HM Saeed Company, Karachi, 1/160 [2] Al-Bada'i' as-Sana'i', Chapter on Tayammum, Maktabah HM Saeed Company, Karachi, 1/49

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

[अरबी पाठ स्तंभ] और जो मौजूद नहीं है उस पर कोई शक्ति नहीं है। यह कैसे संभव है, जबकि 'अल-बहर अल-रईक़' में अपने सामान में पानी भूल जाने वाले व्यक्ति के मसले में यह कहा गया है कि यह इसलिए है क्योंकि ज्ञान के बिना शक्ति नहीं है? क्योंकि कार्य करने में सक्षम वह है जो, यदि वह उसे प्राप्त करना चाहता, तो उसके लिए वह संभव होता, और शक्ति के बिना कोई दायित्व नहीं है[1] (समाप्त)। और यह ज्ञात है कि जिससे वादा किया गया है, मामला उसके हाथ में नहीं है कि वह अपनी इच्छा से वुज़ू प्राप्त कर सके, बल्कि यह वादा करने वाले के हाथ में है, इसलिए शक्ति सिद्ध नहीं हुई।

यदि आप कहें: क्या ऐसा नहीं है कि यदि वह उसे नमाज़ के बाद बिना किसी इनकार के दे देता है, तो वह (नमाज़) अमान्य हो गई? इस प्रकार उसे बाद में मिलने वाले उपहार के कारण अतीत में सक्षम माना गया। इसका स्पष्ट उल्लेख 'अज़-ज़ियादात', 'जामिअल-करखी', 'अल-बदाई' और 'अल-हिल्या' के संदर्भों से आएगा कि यह स्पष्ट हो गया कि वह सक्षम था क्योंकि पूरा होने के बाद देना उससे पहले देने का प्रमाण है[2] (समाप्त), भले ही पानी उस समय उसके पास मौजूद नहीं था, और जो मौजूद नहीं है वह शक्ति के अधीन नहीं है। तो वादे के माध्यम से उसे सक्षम क्यों नहीं बनाया जाता, भले ही पानी बाद में उसके पास मौजूद न हो? बल्कि, यह अधिक उचित है क्योंकि यह प्राप्त होने के कगार पर है, न कि जो बीत चुका है उसके विपरीत, क्योंकि अप्राप्त को प्राप्त बनाना असंभव है।

[उर्दू पाठ स्तंभ] अब भी मौजूद नहीं है और जो मौजूद नहीं है उस पर शक्ति नहीं। यह कैसे हो सकता है जबकि 'अल-बहर अल-रईक़' में अपने तंबू या काठी में रखे हुए पानी को भूल जाने वाले के मसले में यह लिखा है: "यह इसलिए कि बिना ज्ञान के शक्ति नहीं है, इसलिए कि कार्य पर सक्षम वही है कि अगर इस कार्य को अस्तित्व में लाना चाहे तो ला सके, और शक्ति के बिना कोई जवाबदेह (मुकल्लफ़) नहीं होता।" समाप्त। यह ज्ञात है कि जिस व्यक्ति से वादा किया गया है मामला उसके हाथ में नहीं है कि वह चाहे तो वुज़ू करे, बल्कि यह वादा करने वाले के हाथ में है तो शक्ति सिद्ध नहीं हुई। (त)

यदि यह प्रश्न हो कि क्या ऐसा नहीं है कि जब नमाज़ के बाद उसे बिना किसी इनकार के दे दे तो नमाज़ अमान्य हो गई, इससे यह स्पष्ट हुआ कि बाद में देने से उसे पहले सक्षम गिना गया। इसकी स्पष्ट व्याख्या 'ज़ियादात', 'जामे करखी', 'बदई' और 'हिल्या' के संदर्भों से आ रही है कि "स्पष्ट हो गया

कि वह सक्षम था क्योंकि नमाज़ से मुक्त होने के बाद दे देना इस बात का प्रमाण है कि पहले भी दे देता।" समाप्त। बावजूद इसके कि पानी उस समय उसके पास मौजूद नहीं था और जो मौजूद नहीं है वह शक्ति के अधीन नहीं। तो वादे के कारण भी उसे सक्षम क्यों न घोषित किया जाए भले ही उसके पास पानी अब भी मौजूद न हो। बल्कि यह अधिक उचित होगा क्योंकि वह भविष्य में प्राप्ति की राह में है और जो समय बीत चुका है उसमें तो अप्राप्त को प्राप्त बनाना संभव ही नहीं। (त)

---

[1] अल-बहर अर-रईक़, बाबुत-तयम्मुम, मकतबा एच.एम. सईद कंपनी कराची १/ १६० [2] अल-बदई अस-सनई, बाबुत-तयम्मुम, मकतबा एच.एम. सईद कंपनी कराची १/ ४९

पृष्ठ ८५ / ७६१

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم

ولا قدرة على المعدوم كيف وقد قال في البحر في مسألة من نسى الماء في رحله هذا لانه لاقدرة بدون العلم لان القادر على الفعل هو الذى لواراد تحصيله يتأتى له ذلك ولاتكليف بدون القدرة [1] اه ومعلوم ان الموعود له ليس الامر بيده حتى يتأتى له تحصيل الوضؤ بأرادته بل هو بيد الواعد فلم تثبت القدرة۔

فان قلت اليس اذا اعطاه بعد الصلاة بلا اباء بطلت فقد عد بالعطاء اللاحق قادرا في السابق وسياتى التصريح به عن الزيادات وجامع الكرخي والبدائع والحلية انه ظهر انه كان قادرا لان البذل بعد الفراغ دليل البذل قبله [2] اه مع ان الماء كان معدوما عنده اذ ذاك والمعدوم غير مقدور فلم لا يجعل قادرا بالوعد وان كان الماء معدوما عنده بعد بل هذا اولى لانه على شرف الحصول اماماً مضى فلايمكن ان يجعل غير الحاصل فيه حاصلاً۔

اب بھی معدوم ہے اور معدوم پر قدرت نہیں۔ یہ کیسے ہوسکتا ہے جبکہ البحر الرائق میں اپنے خیمہ یا کجاوہ میں رکھا ہوا پانی بھول جانے والے کے مسئلہ میں یہ لکھا ہے: "یہ اس لئے کہ بغیر علم کے قدرت نہیں اس لئے کہ فعل پر قادر وہی ہے کہ اگر اس فعل کو بروئے ثبوت لانا چاہے تو لائے اور قدرت کے بغیر کوئی مکلف نہیں ہوتا" اھ یہ معلوم ہے کہ جس سے وعدہ کیا گیا ہے معاملہ اس کے ہاتھ میں نہیں کہ وہ چاہے تو وضو کرے بلکہ یہ وعدہ کرنے والے کے ہاتھ میں ہے تو قدرت ثابت نہ ہوئی۔ (ت)

اگر یہ سوال ہو کہ کیا ایسا نہیں ہے کہ جب بعد نماز اسے بلا انکار دے دے تو نماز باطل ہو گئی، اس سے ظاہر ہوا کہ بعد میں دینے سے سابق میں اس کو قادر شمار کیا گیا۔ اس کی تصریح زیادات، جامع کرخی، بدائع اور حلیہ کے حوالوں سے آ رہی ہے کہ "ظاہر ہو گیا کہ وہ قادر تھا اس

لئے کہ نماز سے فارغ ہونے کے بعد دے دینا اس بات کی دلیل ہے کہ پہلے بھی دے دیتا"۔ اھ باوجودیکہ پانی اس وقت اس کے پاس معدوم تھا اور معدوم مقدور نہیں۔ تو وعدے کی وجہ سے بھی اس کو قادر کیوں نہ قرار دیا جائے اگر چہ اس کے پاس پانی اب بھی معدوم ہے۔ بلکہ یہ بدرجہ اولیٰ ہوگا اس لئے کہ وہ آئندہ حصول کی راہ میں ہے اور جو زمانہ گزر چکا اس میں تو غیر حاصل کو حاصل بنانا ممکن ہی نہیں۔ (ت)

1۔ البحر الرائق باب التیمم مکتبہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۶۰ 2۔ البدائع الصنائع باب التیمم مکتبہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۴۹

Fatawa Razawiya, Volume 4

I say: And success is from Allah. The "power" that prevents tayammum is not meant in the sense of absolute capability, for that does not exist before the act itself, even if the water were in one's hand. Rather, (1) it is meant in the sense of the soundness of means and tools, such that nothing necessary for obtaining water remains outside one's control. Thus, one is considered "capable" in the sense that its acquisition is within their reach. Additionally, the condition of "lack of hardship" (adam al-haraj) is required. For instance, someone who is a mile away from water and is able to walk has the necessary means, yet is considered "incapable" due to the hardship involved. Furthermore, a strong probability (Ghalib Zann) is treated like certainty. Notice that anyone who assumes water is nearby is considered capable of obtaining it, even though they don't know it for certain; and assumptions can often be mistaken. Knowing this, if someone is given water later, it implies they would have had the assumption of receiving it earlier had they asked. Thus, it is proven by probability—which is akin to certainty—that they were capable of obtaining water through asking. They were "capable" because physical power in this context comes from being given, and the only barrier between them and receiving it was the act of asking, as demonstrated by the subsequent gift upon asking. Even if it was given without asking, it would be even more so. The act of asking was within their power, yet they neglected it despite knowing water was available. They were like someone at the edge of a well with water, holding a bucket and rope, capable of drawing water, yet they abandoned it and performed tayammum. In summary, the later gift shows that had they intended to obtain it earlier, it would have been possible.

Page 86 of 761

फ़तावा रज़विया, जिल्द चौथी

मैं कहता हूँ: और सफलता अल्लाह से ही है। वह 'शक्ति' जो तयम्मुम को रोकती है, वह 'इस्तेताअत' (पूर्ण क्षमता) के अर्थ में नहीं है। क्योंकि यह कार्य से पहले अस्तित्व में नहीं होती, भले ही पानी व्यक्ति की हथेली में ही क्यों न हो। बल्कि (1) यह शक्ति साधनों और उपकरणों की सलामती के अर्थ में है, इस प्रकार कि पानी प्राप्त करने के लिए आवश्यक कोई भी चीज़ व्यक्ति के नियंत्रण से बाहर न रहे। अतः, वह इस अर्थ में "सक्षम" होगा कि पानी प्राप्त करना उसके हाथ में है। इसके साथ ही, "कठिनाई की अनुपस्थिति" की शर्त भी आवश्यक है। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति जो पानी से एक मील दूर है और चलने में सक्षम है, उसके पास साधन तो मौजूद हैं, फिर भी कठिनाई के कारण उसे "अक्षम" माना जाता है। इसके अलावा, प्रबल संभावना (ग़ालिब ज़न) को निश्चितता के समान माना जाता है। देखिये, जिसे पानी पास होने का अनुमान हो, उसे पानी प्राप्त करने में सक्षम माना जाता है, भले ही उसे वास्तव में इसका ज्ञान न हो; और अनुमान अक्सर गलत भी हो सकते हैं। यह जानने के बाद, यदि किसी को बाद में पानी दिया जाता है, तो यह दर्शाता है कि यदि उसने पहले मांगा होता, तो उसे मिलने की प्रबल संभावना होती। इस प्रकार, संभावना से यह सिद्ध होता है—जो निश्चितता के समान है—कि वह मांगने के माध्यम से पानी प्राप्त करने में सक्षम था। वह "सक्षम" था क्योंकि भौतिक शक्ति देने से ही आती है, और उसके और पानी प्राप्त करने के बीच केवल मांगने का फासला था, जैसा कि मांगने पर बाद में मिलने से स्पष्ट हुआ। यदि बिना मांगे ही मिल जाता, तो यह और भी बड़ी बात होती। मांगना उसके वश में था, फिर भी उसने पानी की उपस्थिति को जानते हुए इसे छोड़ दिया। वह उस व्यक्ति की तरह था जो कुएं के मुहाने पर खड़ा हो, जिसमें पानी हो और उसके हाथ में बाल्टी और रस्सी हो, पानी निकालने में सक्षम हो, फिर भी वह उसे छोड़ दे और तयम्मुम करे। संक्षेप में, बाद में मिलने वाले उपहार से यह स्पष्ट हुआ कि यदि वह पहले इसे प्राप्त करने का इरादा करता, तो यह संभव होता।

पेज 86 ऑफ़ 761

[عربی عبارت] اقول: وباللہ التوفیق لیست القدرۃ المانعۃ للتیمم بمعنی الاستطاعۃ فانہا لا تکون قبل الفعل و ان کان الماء بکفہ بل (۱) بمعنی سلامۃ الاسباب والالات بحیث لا یبقی شیئ مما یتوقف علیہ تحصیل الماء خارجاً عن قبضتہ فیکون قادراً بمعنی ان تحصیلہ بیدہ ویشترط مع ذلك عدم الحرج فمن بعد الماء عنہ میلا وھو قادر علی المشی فقد سلمت لہ الاسباب وعد عاجزا للحرج ثم غالب الظن کالیقین الا تری ان من ظن قرب الماء عد قادراً علیہ مع انہ لایعلمہ حقیقۃ والظن ربما یخطی اذا علمت ھذا فمن اعطی لاحقاً حصل لہ الظن علی العطاء سابقاً لو سأل فثبت ظناً وھو کالثبوت یقیناً انہ کان قادراً علی الماء لان تحصیل الماء بالسؤال فکان قادراً علی الماء لان القدرۃ الحسیۃ بالعطاء وماکان بینہ وبین العطاء الا السؤال کماظھر بالبذل اللاحق بالسؤال وان کان بدون سؤال فبالاولی وقد کان السؤال بیدہ وترکہ عالماً بالماء عندہ فکان کمن یکون علی راس البئر وفیہا ماء وبیدہ الدلو والرشاد وھو قادر علی الاستقاء فترك وتیمم وبالجملۃ ظھر بالبذل اللاحق انہ لواراد تحصیلہ سابقاً لتأتیٰ

[اردو ترجمہ] میں اس کے جواب میں کہوں گا اور خدا ہی سے توفیق ہے ، وہ قدرت جو تیمم سے مانع ہے بمعنی استطاعت نہیں ۔ اس لئے کہ یہ تو فعل سے پہلے ہوتی ہی نہیں اگرچہ پانی اس کی ہتھیلی میں ہی کیوں نہ ہو۔ بلکہ یہ قدرت بمعنی سلامت اسباب وآلات ہے اس طرح کہ جتنی چیزوں پر تحصیل آب موقوف ہے ان میں سے کوئی بھی اس کے قبضہ سے باہر نہ رہ جائے تو وہ قادر ہوگا اس معنی میں کہ اس کی تحصیل اس کے ہاتھ میں ہے ۔ اس کے ساتھ یہ شرط بھی ہوگی کہ حرج نہ ہو کیونکہ پانی جس سے ایک میل دُور ہے اور اسے چلنے کی قدرت بھی ہے تو اس کیلئے سلامت اسباب تو موجود ہے پھر بھی حرج کے باعث اسے عاجز شمار کیا گیا۔ یہ بھی ملحوظ رہے کہ غالب ظن ، یقین کی طرح ہے ۔ دیکھئے جسے پانی قریب ہونے کا ظن ہو اسے

پانی پر قادر شمار کیا گیا ہے حالانکہ حقیقتہً اسے پانی کا علم نہیں۔ اور ظن تو بارہا غلط بھی ہوتا ہے ۔ جب یہ سب معلوم ہو گیا تو اب دیکھئے جسے بعد میں پانی دے دیا گیا اسے یہ گمان حاصل ہوا کہ اگر مانگتا تو وہ پہلے بھی دے دیتا تو ظنّاً ثبوت ہوا اور یہ یقیناً ثبوت کی طرح ہے۔ کہ وہ اس وقت کے سوال کے ذریعہ تحصیلِ آب پر قادر تھا ، تو وہ پانی پر قادر ہوا اس لئے کہ حسّی قدرت تو دینے ہی سے ہوتی ہے۔ اور اس کے اور دینے کے درمیان صرف سوال ہی کا فاصلہ تھا۔ جیسے اس کا قادر ہونا بعد میں سوال پر دینے سے ظاہر ہوتا ہے اور بغیر سوال دینا ہو تو بدرجہ اولیٰ ۔ اور سوال اس کے ہاتھ میں تھا۔ حاصل کلام یہ کہ بعد میں دینے سے ظاہر ہوا کہ اگر پہلے تحصیل کا ارادہ کرتا تو ممکن تھا۔

Fatawa Razawiyya - Volume 4

[Right Column] ...held it in his hand, he abandoned it while knowing that he had water. So he became like a person who is at a well which contains water and he has a bucket and rope in his hand, and he has the power to draw water, but he did not draw water and performed dry ablution (Tayammum) instead. In short, it became clear after he was given [water later] that if he had wanted to obtain water previously, it would have been available to him because it depended only on his asking, and asking was certainly within his power. This is the meaning of 'power' as well. This is contrary to the person who was promised water because there, the dependence is on fulfillment, and fulfillment is not in his hands. From this explanation, the difference between the two became clear. And all praises are for God, the Lord of all worlds. (T)

If the question arises: Is it not so that the jurists (Fuqaha) have made it obligatory to seek water and declared the performance of prayer before it invalid when one is in a populated area or near it, or in a desert when one is told that water is near or gains a strong suspicion by some other way like seeing greenery etc., as has been explained in the fifth benefit of the commentary 'Ta'reef-e-Razawi'? And there, it is also narrated from 'Al-Hilya' that "if there is certain or apparent knowledge of water being near, it brings it to the status of water being present with him, so performing Tayammum is not permissible for him just as it is not permissible in the presence of water." Thus, here as well, although water is currently absent, the expectation of fulfillment (of a promise)—since that is what is apparent from a Muslim—will keep bringing it to the status of being present, so Tayammum will not be permissible for him. (T)

[Left Column] ...due to it not depending on anything except his asking, which is within his power. This is the meaning of 'power' (Qudrah), unlike the one who is promised, for dependence here is on fulfillment, and fulfillment is not in his hands. Thus the difference has appeared. Praise be to Allah, Lord of the worlds.

If you say: Have they not made seeking [water] obligatory and invalidated the prayer before it in cases where one is in urban areas or near them absolutely, or in the desert when informed of the proximity of water or suspecting it by another means like seeing greenery etc., as I have previously mentioned in the fifth benefit of the commentary 'Al-Hadd Al-Razawi'? And I have quoted there from 'Al-Hilya' that the certain or apparent knowledge of the proximity of water places it in the status of water being present with him. So likewise here, even if the water is non-existent, the

expectation of fulfillment—since that is what is expected from a Muslim—places it in the status of what is present, so Tayammum is not permissible for him.

---

1 Hilya Page 87 of 761

फ़तावा रज़विया - खंड 4

[दायां कॉलम] ...हाथ में थामे उसने उसे छोड़ दिया जबकि वह जानता था कि उसके पास पानी है। तो वह उस व्यक्ति की तरह हो गया जो किसी कुएं पर हो जिसमें पानी भी हो और उसके हाथ में डोल और रस्सी भी मौजूद हो, पानी खींचने की शक्ति भी हो लेकिन उसने पानी नहीं निकाला और तयम्मुम कर लिया। संक्षेप में यह कि बाद में पानी मिलने से स्पष्ट हो गया कि यदि वह पहले पानी प्राप्त करना चाहता तो वह मिल जाता क्योंकि यह केवल उसके मांगने पर निर्भर था और मांगना उसके अधिकार में था। यही 'सक्षमता' का अर्थ भी है। इसके विपरीत वह व्यक्ति जिससे पानी का वादा किया गया है, क्योंकि वहां निर्भरता वादे को पूरा करने पर है और वादा पूरा करना उसके हाथ में नहीं है। इस वर्णन से दोनों के बीच का अंतर स्पष्ट हो गया। और सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे जहानों का मालिक है। (त)

यदि यह प्रश्न हो कि क्या ऐसा नहीं है कि फ़ुकहा (इस्लामी न्यायविदों) ने पानी खोजना अनिवार्य किया है और उससे पहले नमाज़ पढ़ने को अमान्य घोषित किया है जब व्यक्ति आबादी में या उसके पास हो, या जंगल में हो जब उसे बताया गया हो कि पानी पास है या किसी अन्य माध्यम जैसे हरियाली देखकर उसे अनुमान हुआ हो, जैसा कि 'शरह तारीफ-ए-रज़वी' के पांचवें लाभ में बताया जा चुका है? और वहां 'अल-हिल्या' से यह भी उद्धृत किया गया है कि "पानी के पास होने का निश्चित या स्पष्ट ज्ञान हो जाना उसे पानी की मौजूदगी के स्तर पर ले आता है, अतः उसके लिए तयम्मुम करना जायज़ नहीं है जैसे कि पानी मौजूद होने की स्थिति में जायज़ नहीं होता।" तो इसी प्रकार यहाँ भी भले ही पानी अभी मौजूद नहीं है, लेकिन वादे के पूरा होने की उम्मीद—चूंकि एक मुसलमान से यही अपेक्षित है—उसे पानी की मौजूदगी के स्तर पर बनाए रखेगी, अतः उसके लिए तयम्मुम जायज़ नहीं होगा। (त)

[बायां कॉलम] ...क्योंकि इसकी निर्भरता केवल उसके मांगने पर थी जो उसके अधिकार में है। यही 'कुदरत' (सक्षमता) का अर्थ है, उस व्यक्ति के विपरीत जिससे वादा किया गया हो, क्योंकि वहां निर्भरता वादे के पूरा होने पर है और वह उसके हाथ में नहीं है। अतः अंतर स्पष्ट हो गया। सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो सारे जहान का रब है।

यदि आप कहें: क्या उन्होंने पानी की खोज को अनिवार्य नहीं किया और उससे पहले की नमाज़ को उन स्थितियों में बाटल (अमान्य) नहीं किया जब वह आबादी वाले क्षेत्रों में या उसके पास हो, या

रेगिस्तान में हो और उसे पानी के करीब होने की सूचना दी गई हो या हरियाली देखने जैसे किसी अन्य तरीके से इसका अनुमान हो, जैसा कि मैंने 'शरह अल-हद्द अल-रज़वी' के पांचवें लाभ में उल्लेख किया है? और मैंने वहां 'अल-हिल्या' से यह भी उद्धृत किया है कि पानी के करीब होने का निश्चित या स्पष्ट ज्ञान उसे पानी की उपस्थिति के स्तर पर ले आता है। तो इसी तरह यहाँ भी, भले ही पानी न हो, वादे के पूरा होने की उम्मीद—चूंकि एक मुसलमान से वही ज़ाहिर है—उसे मौजूद के स्तर पर ले आती है, अतः उसके लिए तयम्मुम करना जायज़ नहीं है।

---

1 हिल्या पृष्ठ 87 का 761

[دایاں کالم] ہاتھ میں تھامے اس نے ترک کردیا جبکہ جانتا تھا کہ اس کے پاس پانی ہے تو یہ اس شخص کی طرح ہوا جو کسی کنوئیں پر ہو جس میں پانی بھی ہے اور اس کے ہاتھ میں ڈول رسی موجود ہے، پانی کھینچنے پر قدرت بھی ہے مگر اس نے پانی نہ نکالا اور تیمم کر لیا۔ مختصر یہ کہ بعد میں دینے سے ظاہر ہو گیا کہ اگر وہ سابق میں پانی حاصل کرنا چاہتا تو میسر آ جاتا کیونکہ وہ صرف اس کے مانگنے پر موقوف تھا اور مانگنا اس کی قدرت میں ضرور تھا۔ یہی قدرت کا معنی بھی ہے۔ بخلاف اس شخص کے جس سے پانی کا وعدہ ہوا اس لئے کہ یہاں موقوفی وفا پر ہے اور وفا اس کے ہاتھ میں نہیں۔ اس بیان سے دونوں میں فرق واضح ہو گیا۔ اور ساری خوبیاں سارے جہانوں کے مالک خدا ہی کیلئے ہیں۔ (ت)

اگر یہ سوال ہو کہ کیا ایسا نہیں کہ فقہاء نے پانی تلاش کرنا واجب اور اس سے پہلے ادائے نماز کو باطل قرار دیا ہے جب وہ آبادی یا قرب آبادی میں ہو تو مطلقاً بیابان میں ہو تو اس وقت جب اسے بتایا گیا ہو کہ پانی قریب ہے یا کسی دوسرے طریقہ مثلاً ہریالی وغیرہ دیکھ کر اسے گمان ہوا ہو جیسا کہ شرح تعریف رضوی کے افادہ پنجم میں اس کا بیان ہو چکا ہے اور وہاں حلیہ سے یہ بھی نقل ہوا ہے کہ "پانی قریب ہونے کا قطعاً یا ظاہراً علم ہو جائے تو یہ پانی اس کے پاس موجود ہونے کی منزل میں لاتا ہے تو اسے تیمم کرنا جائز نہیں ہوتا جیسے پاس موجود ہونے کی صورت میں جائز نہیں ہوتا" اھ تو اسی طرح یہاں پانی اگرچہ معدوم ہے ظنِ وفا اس لئے کہ مسلم سے وہی ظاہر ہے اسے موجود کی منزل میں لاتا رہے گا تو اس کے لئے تیمم جائز نہ ہوگا۔ (ت)

[بایاں کالم] لہ لعدم توقفہ الاعلی سؤالہ المقدور لہ وھذا ھو معنی القدرۃ بخلاف الموعود لہ فان التوقف ھھنا علی الوفاء ولیس الوفاء بیدہ فقد ظھر الفرق والحمد للہ رب العلمین۔

فان قلت اليس قد اوجبوا الطلب و ابطلوا الصلوة قبله فيما اذا كان في العمرانات اوقربها مطلقاً او في الفلاة وقد اخبر بقرب الماء او ظنه بوجه آخر من رؤية خضرة وغيرها كما قدمته في خامس افادات شرح الحد الرضوي واثرت ثمه عن الحلية ان العلم بقرب الماء قطعاً او ظاهراً ينزله منزلة كون الماء موجوداً بحضرته اهـ فكذلك ههنا وان كان الماء معدوماً ينزله ظن الوفاء لانه هو الظاهر من المسلم منزلة الموجود فلا يجوز له التيمم.

I say: (In reply I will say) And all praise is for my Lord alone. He was questioned by someone well-informed, but he erred in his reasoning. There is a vast difference between the two issues. Both the proximity of water and the offer of water prevent one from performing Tayammum, as both grant control over water. This is because the Pure Shariah has decreed that water within a distance of less than one mile is equivalent to water being held in one's hand. Otherwise, it would be permissible for someone living on the seashore to perform Tayammum if they did not find water inside their house, as previously mentioned in citation 91 from 'al-Inayah'. Preponderant suspicion (Zann-e-Ghalib) holds the status of certainty in the context of action. And when there is certainty of an impediment, there is no scope for Tayammum. However, since proximate water is legally considered available in reality at present, as has been shown, the suspicion of proximity is the suspicion that water is available at that time and is considered to be with the person according to the Pure Shariah. Whereas here, the expectation of a promise being fulfilled is the suspicion that water will be available in the future, coupled with the absolute knowledge that it is not available at present. Thus, it is known that the impediment (lack of water) exists. This is the knowledge that an impediment will arise if the promise is kept, and the expectation of a future impediment does not prevent Tayammum. (T) I have already stated this in the treatise "al-Zafar li-Qawl Zafar" that when the time for prayer arrives and one wishes to perform it, they should not be stopped, and only their current state should be considered. Previously in that treatise, I wrote that obedience is according to one's capacity, as our Blessed Lord said...

मैं कहता हूँ: (उत्तर में मैं कहूँगा) और सारी प्रशंसा केवल मेरे रब के लिए है। किसी जानकार से प्रश्न किया गया, परंतु उसने तर्क(कयास) में गलती की। इन दो मसलों में बहुत बड़ा अंतर है। पानी की निकटता और पानी का दिया जाना दोनों ही तयम्मुम (मिट्टी से वज़ू) को रोकते हैं क्योंकि दोनों ही स्थितियों में (पानी पर) सामर्थ्य प्राप्त हो जाता है। इसका कारण यह है कि पावन शरीअत ने एक मील से कम दूरी पर स्थित पानी को उस पानी के समान माना है जो हाथ में हो। अन्यथा, समुद्र के किनारे रहने वाले व्यक्ति के लिए यह जायज़ होता कि यदि उसे घर में पानी न मिले तो वह तयम्मुम कर ले, जैसा कि 'इनाया' के संदर्भ से संख्या 91 में उल्लेख किया गया है। और अमल (कार्य) के मामले में प्रबल अनुमान (ज़न्न-ए-ग़ालिब) यक़ीन (निश्चितता) का स्थान रखता है। और जब किसी रुकावट का यक़ीन हो, तो तयम्मुम की कोई गुंजाइश नहीं होती। लेकिन बात यह है कि निकटवर्ती पानी चूंकि शरीअत की दृष्टि से वर्तमान में वास्तव में उपलब्ध है, जैसा कि ज्ञात हुआ है, तो निकटता का गुमान इस बात का गुमान है कि पानी उस समय उपलब्ध है और पावन शरीअत के अनुसार वह व्यक्ति के पास ही है। जबकि यहाँ वादे के पूरा होने का गुमान इस बात का गुमान है कि पानी भविष्य में प्राप्त होगा, साथ ही इस बात का निश्चित ज्ञान है कि वह वर्तमान में प्राप्त नहीं है। तो यह ज्ञात है कि रुकावट (पानी की अनुपलब्धता) मौजूद है। और यह इस बात का ज्ञान है कि रुकावट तब पैदा होगी जब वादा पूरा हो जाएगा, और भविष्य में रुकावट पैदा होने की संभावना तयम्मुम से नहीं रोकती। (त) यही बात मैं अपने शोधपत्र "अज़-ज़फ़र ली-क़ौल ज़फ़र" में स्पष्ट कर चुका हूँ कि जब नमाज़ का समय हो जाए और व्यक्ति नमाज़ पढ़ना चाहे, तो उसे ऐसा करने से नहीं रोका जाएगा और केवल उसकी वर्तमान स्थिति देखी जाएगी। उससे पहले उस शोधपत्र में मैंने लिखा है कि इबादत सामर्थ्य के अनुसार है, जैसा कि हमारे बरकत वाले रब ने फ़रमाया है...

فتاوی رضویہ جلد چہارم اقول: ولربي الحمد على الخبير سقطت وفي القياس غلطت فرق عظيم بين المسألتين القرب والعطاء كلاهما مانع عن التيمم لحصول القدرة بهما فان الشرع المطهر جعل ماكان دون ميل كالذى بيده والالجاز لمن بيتہ على شط البحر التيمم اذالم يجد الماء في بيتہ كما تقدم في نمرة عن العنايۃ والظن الغالب في العمل كالعلم ومع علم المانع لايساغ للتيمم بيدان القريب لماكان مقدورا حقيقۃ شرعا فی الحال كما علمت كان ظن القرب ظن انه مقدور الان وانه حاصل بحضرته في اعتبار الشرع المطهر وههنا ظن الوفاء ظن انه سيحصل مع العلم القطعی بانه غير حاصل في الحال فذلك علم ان المانع موجود وہٰذا علم انه سيحدث ان وفی توقع حدوث المانع لايمنع التيمم۔ وهذا ما قدمت فی الظفر لقول زفر انه اذا ادرك الوقت فاراد الصلاۃ لاينهی عنها ولاينظر الا الی حالتہ الراهنۃ وقلت قبله فيہ ان الطاعۃ بحسب الاستطاعۃ قال ربنا تبارک و اقول: (جواباً میں کہوں گا) اور میرے رب ہی کیلئے حمد ہے باخبر سے سوال کیا اور قیاس میں غلطی کی۔ دونوں مسئلوں میں عظیم فرق ہے قربِ آب اور عطائے آب دونوں ہی تیمم سے مانع ہیں کیونکہ دونوں سے قدرت حاصل ہو جاتی ہے۔ اس لئے کہ جو پانی ایک میل سے کم دوری پر ہو شرع مطہر نے اسے اس پانی کی طرح قرار دیا ہے جو ہاتھ میں موجود ہو۔ ورنہ سمندر کے کنارے جس کا گھر ہو اس کیلئے یہ جائز ہوتا کہ گھر میں پانی نہ پائے تو تیمم کرلے جیسا کہ نمبر 91 میں عنایہ کے حوالہ سے گزرا۔ اور ظنِ غالب حقِ عمل میں یقین کی حیثیت رکھتا ہے۔ اور مانع کا یقین ہوتے ہوئے تیمم کی کوئی گنجائش نہیں۔ مگر یہ ہے کہ آبِ قریب چونکہ از روئے شرع فی الحال حقیقۃً مقدور ہے جیسا کہ معلوم ہوا تو قرب کا گمان اس امر کا گمان ہے کہ پانی اس وقت مقدور ہے اور وہ شرع مطہر کے اعتبار میں اس کے پاس حاصل ہے اور یہاں وفائے وعدہ کا گمان اس بات کا گمان ہے کہ پانی آئندہ حاصل ہو گا۔ ساتھ ہی اس بات کا قطعی علم ہے کہ وہ فی الحال حاصل نہیں۔ تو اس بات کا علم ہے کہ مانع موجود ہے۔

اور یہ اس بات کا کہ مانع پیدا ہو گا اگر اس نے وعدہ وفا کر دیا اور مانع کے پیدا ہونے کی توقع تیمم سے مانع نہیں۔(ت) یہی بات میں رسالہ "الظفر لقول زفر" میں بیان کر چکا ہوں کہ جب وقت ہو گیا اور اس نے نماز ادا کرنی چاہی تو اسے اس سے روکا نہ جائے گا اور صرف اس کی موجودہ حالت دیکھی جائے گی۔ اس سے پہلے اس رسالہ میں میں نے لکھا ہے کہ

فتاویٰ رضویہ | جلد چہارم (Arabic Text): "The Almighty says: 'So fear Allah as much as you can' [Quran 64:16] and one should only look at the current state. And I cited as evidence for this the issue of the one who hopes [for water], that it is not obligatory for him to delay [the prayer]. And with the issue from 'al-Durr' where the physician ordered him to lie flat on his back, etc. And seven issues will come from 'al-Binayah', and from our additions are seven others that testify to this. Among them is what passed in No. 90, regarding the issue of a naked person who has been promised clothing, that he may pray naked and not wait. This is the school of thought of the Imam of the Madhhab, may Allah be pleased with him. And now I have seen in 'al-Ghunyah' regarding the issue of the hopeful one himself: '(It is recommended that he delays)' and if he did not and performed tayammum and prayed, it is permissible because he performed it according to the capacity he had when its cause was established, and that is what is connected to the performance. [End of quote]. Then, by the grace of my Lord and praise be to Him, I saw a short while later from the great Imam Abu al-Barakat al-Nasafi, may Allah Almighty have mercy on him, in 'al-Kafi', he distinguished exactly as my Lord guided me: between what is attained and what will be attained, as I will mention his text, God willing. Praise be to Allah in the first and the last. This was what was troubling my heart regarding the issue of the promise."

(Urdu Text): "Obedience is according to one's capacity. The command of our Lord, Blessed and Exalted is: 'So fear Allah as much as you can', and only the current situation will be considered. On this, I have also cited the case of the one who hopes for water as evidence, that it is not obligatory for him to delay the prayer. And from the case in 'al-Durr' where the physician advised him to lie flat on his back, etc. Soon, seven issues will be cited with reference to 'al-Binayah'. And from our additions, another seven, all of which testify to this. Among them is the issue mentioned in No. 90, that if someone is naked and has been promised clothes, it is permissible for him to perform the prayer naked and not wait. This is the school of thought of the Imam of the Madhhab, may Allah be pleased with him. And now I have seen in 'al-Ghunyah' the issue of the one who hopes for water himself, which is as follows: '(Delaying is recommended)' and if he did not delay and performed tayammum and prayed, it is permissible because he performed his prayer according to the capacity he had at the time the prayer was established, and the cause of prayer is the time immediately followed by the performance of the prayer (end of quote). Then, by the grace of the Lord and thanks to Him, a short while later I saw that the most venerable Imam Abu al-Barakat al-Nasafi (may Allah have mercy on him) in 'al-Kafi' stated exactly the same

distinction that my Lord guided me to: the difference between what is already attained and what will be attained in the future. I will soon quote his text, if the Almighty God wills. And praise be to Allah in this world and the hereafter. These were the matters concerning the issue of the promise that were troubling my heart. (t)"

1 Quran 64:16 2 Ghunyat al-Mustamli, Chapter on Tayammum, published by Sohail Academy Lahore, p. 74 Page 89 of 761

جلد چہارم | फ़तावा रज़विया (अरबी पाठ का अनुवाद): "अल्लाह तआला फरमाता है: 'अतः अल्लाह से डरो जितना तुम कर सको' [क़ुरआन 64:16] और केवल वर्तमान स्थिति पर ही विचार किया जाएगा। और मैंने इसके प्रमाण के रूप में पानी की आशा रखने वाले के मामले का उल्लेख किया है, कि उस पर [नमाज़] विलंबित करना अनिवार्य नहीं है। और 'अल-दुर्र' के उस मसले से जहाँ चिकित्सक ने उसे पीठ के बल लेटने का आदेश दिया था, इत्यादि। और 'अल-बिनाया' के हवाले से सात मसले आएँगे, और हमारे अतिरिक्त सात और हैं जो इस बात के गवाह हैं। उनमें से वह भी है जो नंबर 90 में गुज़रा, उस नग्न व्यक्ति के बारे में जिसे कपड़ों का वादा किया गया है, कि वह नग्न होकर नमाज़ पढ़ ले और इंतज़ार न करे। यही इमाम-ए-मज़हब (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) का मज़हब है। और अब मैंने 'अल-ग़ुनिया' में स्वयं उसी आशावान के मसले में देखा: '(देरी करना मुस्तहब है)' और यदि उसने ऐसा नहीं किया और तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली तो यह जायज़ है क्योंकि उसने अपनी उस क्षमता के अनुसार इसे अदा किया जो इसके कारण (सबब) के स्थापित होने के समय मौजूद थी, और वह वही है जो अदायगी से जुड़ा है। [उद्धरण समाप्त]। फिर, मेरे रब की कृपा और उसकी प्रशंसा के साथ, मैंने कुछ समय बाद महान इमाम अबू अल-बरकात अल-नसफ़ी (अल्लाह उन पर रहम करे) के'अल-काफ़ी' में देखा, उन्होंने बिल्कुल वैसा ही अंतर बताया जैसा मेरे रब ने मुझे निर्देशित किया था: जो हासिल है और जो हासिल होगा के बीच का अंतर, जैसा कि मैं उनके पाठ को उद्धृत करूँगा, यदि अल्लाह ने चाहा। और अल्लाह ही के लिए प्रशंसा है आदि और अंत में। यही वे बातें थीं जो वादे के मसले के बारे में मेरे दिल में खटक रही थीं।"

(उर्दू पाठ): "आज्ञापालन अपनी क्षमता के अनुसार होता है। हमारे रब, जो धन्य और सर्वोच्च है, का आदेश है: 'अतः अल्लाह से डरो जितना तुम कर सको', और केवल वर्तमान स्थिति ही देखी जाएगी। इस पर मैंने पानी की आशा रखने वाले के इस मसले से प्रमाण भी दिया है कि उस पर नमाज़ में देरी करना अनिवार्य नहीं है। और 'दर-ए-मुख्तार' के उस मसले से कि चिकित्सक ने उसे पीठ के बल लेटने की सलाह दी, इत्यादि। शीघ्र ही 'बिनाया' के हवाले से सात मसले आ रहे हैं। और हमारे अतिरिक्त सात और, वे सब इस पर गवाह हैं। उन्हीं में से वह मसला भी है जो नंबर 90 में गुज़रा कि कोई नग्न शरीर वाला है जिसे कपड़े का वादा किया गया है, उसके लिए नग्न नमाज़ अदा करना और इंतज़ार न करना जायज़ है। यही इमाम-ए-मज़हब (अल्लाह उन पर प्रसन्न हों) का मज़हब है। और अब मैंने 'ग़ुनिया' में स्वयं पानी की आशा वाले का मसला देखा जो इस प्रकार है: '(देरी मुस्तहब है)' और अगर न की और तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली तो जायज़ है इसलिए कि उसने अपनी उस

शक्ति के अनुसार नमाज़ अदा की जो नमाज़ के शुरू होने के समय मौजूद थी और नमाज़ का कारण वह समय है जिससे ठीक बाद नमाज़ अदा हुई (अंत)। फिर रब्बानी इनाम और उसके शुक्र के साथ, थोड़े दिनों बाद मैंने देखा कि इमाम-ए-अजल अबू अल-बरकात नसफ़ी (अल्लाह उन पर रहम करे) ने 'काफ़ी' में बिल्कुल वही अंतर बयान किया है जिसकी मेरे रब ने मुझे तौफ़ीक़ दी: कि कहाँ वह जो हासिल है और कहाँ वह जो भविष्य में हासिल होगा। जैसा कि उनकी इबारत (पाठ) जल्द ही ज़िक्र करूँगा अगर महान ईश्वर की इच्छा हुई। और अल्लाह ही के लिए प्रशंसा है दुनिया और आख़िरत में। ये वे बातें हैं जो वादे के मसले से संबंधित मेरे दिल में हलचल कर रही थीं। (त)"

1 क़ुरआन 64:16 2 ग़ुनियत अल-मुस्तमली, तयम्मुम का अध्याय, सुहेल एकेडमी लाहौर द्वारा प्रकाशित, पृष्ठ 74 पृष्ठ 89 / 761

جلد چہارم | فتاویٰ رضویہ تعالیٰ فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ 1 ولا ينظر الا الى الحالة الراهنة واستشهدت عليه بمسألة الراجى هذه ان ليس عليه التأخير وبمسألة الدر امره الطبيب بالاستلقاء الخ وستأتى عن البناية سبع مسائل ومن زياداتنا سبع أخر تشهد لهذا ومن ذلك مامر في نمرة، من مسألة عارٍ وُعدثو باله ان يصلى عارياً ولا ينتظر هذا هو مذهب امام المذهب رضى الله تعالى عنه، والآن رأيت في الغنية في مسألة الراجى نفسها (يستحب ان يؤخر) ولو لم يفعل وتيمم وصلى جاز لانه اداها بحسب قدرته لموجودة عند انعقاد سببها وهو ما اتصل به الاداء 2 اه ثم بنعمة ربى وله الحمد رأيت بعد قليل من الحين لامام الاجل اباالبركات النسفى رحمه الله تعالى في الكافي فرّق بعين ما وفقنى ربى من انه اين الحاصل مما سيحصل كما سأذكر نصه ان شاء الله تعالى ولله الحمد في الاولى والاخرى هذا ما كان يتخالج صدرى في مسألة الوعد۔

"طاعت، حسبِ استطاعت ہوتی ہے۔ ہمارے رب تبارک و تعالیٰ کا ارشاد ہے، تو تم خدا سے ڈرو جتنی تمہیں استطاعت ہو اور موجودہ حالت ہی دیکھی جائے گی۔ اس پر میں نے پانی کی امید رکھنے والے کے اس مسئلہ سے استشہاد بھی کیا ہے کہ اس پر نماز مؤخر کرنا لازم نہیں۔ اور درمختار کے اس مسئلہ سے کہ طبیب نے اسے چت لیٹنے کا مشورہ دیا الخ۔ عنقریب بنایہ کے حوالہ سے سات مسائل آرہے ہیں۔ اور ہمارے اضافہ سے سات اور، وہ سب اس پر شاہد ہیں۔ اسی میں سے وہ مسئلہ بھی ہے جو نمبر ۹۰ میں گزرا کہ کوئی برہنہ بدن ہے جس سے کپڑے کا وعدہ کیا گیا ہے اس کیلئے برہنہ نماز ادا کرنا اور انتظار نہ کرنا، جائز ہے۔ یہی امام مذہب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا مذہب ہے۔ اور اب میں نے غنیہ میں خود امیدِ آب والے کا مسئلہ دیکھا جو اس طرح ہے: (تاخیر مستحب ہے) اور اگر نہ کی اور تیمم کرکے نماز پڑھ لی تو جائز ہے اس لئے کہ اس نے اپنی اس قدرت کے مطابق نماز ادا کی جو سبب نماز کے انعقاد کے وقت موجود تھی اور سبب

نماز وہ وقت ہے جس سے متصل نماز ادا ہوئی اھ پھر بانعامِ ربانی اور اس کا شکر ہے۔ تھوڑے دنوں بعد میں نے دیکھا کہ امام اجل ابو البرکات نسفی رحمہ اللہ تعالیٰ نے کافی میں بعینہ وہی فرق بیان کیا ہے جس کی میرے رب نے مجھے توفیق دی کہ کہاں وہ جو حاصل ہے اور کہاں وہ جو آئندہ حاصل ہوگا۔ جیسا کہ ان کی عبارت عنقریب ذکر کروں گا اگر خدائے برتر کی مشیت ہوئی۔ اور خدا ہی کیلئے حمد ہے دنیا و آخرت میں۔ یہ وہ باتیں ہیں جو مسئلہ وعد سے متعلق میرے دل میں خلجان کر رہی تھیں۔ (ت)

1 القرآن ۱۶/۶۴ 2 غنیۃ المستملی فصل فی التیمم مطبوعہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۷۴ Page 89 of 761

Volume 4 Fatawa Razawiyya

[Main Text] Now, the issue of "hope" (regarding prayer times) and its reasoning as stated in *Al-Hidayah* are discussed. The great Imam Sheikh Abdul Aziz, then Imam Qawamuddin Al-Kaki, then Imam Akmaluddin Al-Babarti, and then the absolute researcher Imam (Al-Muhaqqiq al-Mutlaq) have objected to it for two reasons. In *Fath al-Qadir*, regarding the mentioned text of *Al-Hidayah*, the discourse is: "His statement: 'Because...'"

[Arabic Marginal Note 1] The reasoning is subject to both objections, but the ruling is subject only to the first objection, as will be seen later. (May Allah forgive him).

[Urdu Commentary on Note 1] Both reasons object to the reasoning, and only the first reason objects to the ruling, as is coming ahead. (From him, may he be forgiven).

[Arabic Marginal Note 2] His statement "His statement" is the subject (*mubtada*), its predicate (*khabar*) is "necessitates" (*yaqtadi*). And his phrase "although it is subject to discussion" is related to the word "necessitates". I say: The intention is to object based on *Zahir al-Riwaya* (the well-known tradition). The reasoning of the rare tradition (*Riwaya Nadira*) was included only because the first objection is based on the fact that *Zahir al-Riwaya* did not consider it. Thus, there are two points of view. The gist of the first is: how can you say it does not disappear except with a similar certainty, yet you did not treat the preponderant opinion as verified fact, while you considered it so in the two issues of urban developments and...

[Urdu Commentary on Note 2] In his text, "His statement" is the subject (*mubtada*), its predicate is "necessitates". And his phrase "although it is subject to discussion" is related to "necessitates". I say: The purpose is to object to the reasoning of *Zahir al-Riwaya*. Along with it, the reasoning of the rare tradition was included because the first objection is based on the fact that *Zahir al-Riwaya* did not consider it. Thus, there are two objections. The gist of the first is that you... (Continued on next page)

[Footnote] 1. In the case of "hope," the ruling in the rare tradition is that delaying the prayer is obligatory (*wajib*). Its reasoning in *Al-Hidayah* is that "preponderant opinion is like verified certainty," meaning a strong presumption holds the status of certainty in practical action. However, the ruling in *Zahir al-Riwaya* is that delaying is only recommended (*mustahab*), not obligatory. Its reasoning in *Al-Hidayah* is that "since actual inability is established, the ruling will not disappear without certainty." These

matters have been discussed at the beginning of the discourse on the issue of promise. — Muhammad Ahmad Misbahi.

Page 90 of 761

खण्ड 4 फतावा रज़विय्या

[मुख्य पाठ] अब नमाज़ के समय के संदर्भ में "उम्मीद" के मसले और अल-हिदाया में वर्णित इसके तर्क(तअलील) पर चर्चा की जाती है। महान इमाम शेख अब्दुल अज़ीज़, फिर इमाम कवामुद्दीन अल-काकी, फिर इमाम अकमलुद्दीन अल-बाबरती, और फिर इमाम अल-मुहक्किक़ अल-मुतलक़ ने दो कारणों से इस पर आपत्ति की है। फ़तह अल-क़दीर में, अल-हिदाया के उक्त कथन पर चर्चा इस प्रकार है: "उनका कथन: 'क्योंकि...'"

[अरबी हाशिये का नोट १] तर्क पर दोनों कारणों से आपत्ति होती है, लेकिन हुक्म (नियम) पर केवल पहले कारण से आपत्ति होती है, जैसा कि आगे आएगा। (अल्लाह उन्हें क्षमा करे)।

[उर्दू हाशिये की व्याख्या १] तर्क पर दोनों कारणों से आपत्ति होती है और हुक्म पर केवल पहले कारण से आपत्ति होती है, जैसा कि आगे आ रहा है। (उसे क्षमा किया जाए)।

[अरबी हाशिये का नोट २] उनका कथन "उनका कथन" उद्देश्य (मुबतदा) है, इसका विधेय (ख़बर) "यक़्तदी" (आवश्यक बनाता है) है। और उनका वाक्यांश "यद्यपि यह विचारणीय है" शब्द "यक़्तदी" से संबंधित है। मैं कहता हूँ: उद्देश्य ज़ाहिर अल-रिवाया (प्रसिद्ध परंपरा) के आधार पर आपत्ति करना है। दुर्लभ परंपरा (रिवाया नादिरा) के तर्क को केवल इसलिए शामिल किया गया क्योंकि पहली आपत्ति इस तथ्य पर आधारित है कि ज़ाहिर अल-रिवाया ने इस पर विचार नहीं किया। इस प्रकार, दो दृष्टिकोण हैं। पहले का सार यह है: आपने कैसे कहा कि यह समान निश्चितता के बिना समाप्त नहीं होता, और आपने प्रबल राय को सत्यापित तथ्य की तरह नहीं माना, जबकि आपने इसे शहरी विकास के दो मसलों में माना और...

[उर्दू हाशिये की व्याख्या २] उनके पाठ में "उनका कथन" उद्देश्य (मुबतदा) है, इसका विधेय "यक़्तदी" है। और उनका वाक्यांश "यद्यपि यह विचारणीय है" शब्द "यक़्तदी" से संबंधित है। मैं कहता हूँ: उद्देश्य ज़ाहिर अल-रिवाया के तर्क पर आपत्ति करना है। इसके साथ, दुर्लभ परंपरा के तर्क को इसलिए शामिल किया गया क्योंकि पहली आपत्ति इस तथ्य पर आधारित है कि ज़ाहिर अल-रिवाया ने इस पर विचार नहीं किया। इस प्रकार, दो आपत्तियाँ हैं। पहली का सार यह है कि आपने...
(अगले पृष्ठ पर जारी)

[पाद-टिप्पणी] १. "उम्मीद" की स्थिति में, दुर्लभ परंपरा में नियम यह है कि नमाज़ में देरी करना अनिवार्य (वाजिब) है। हिदाया में इसका तर्क यह है कि "प्रबल राय सत्यापित तथ्य की तरह है," अर्थात व्यवहार में प्रबल अनुमान को निश्चितता का दर्जा प्राप्त है। लेकिन ज़ाहिर अल-रिवाया में नियम यह है कि देरी करना केवल वांछनीय (मुस्तहब) है, अनिवार्य नहीं। हिदाया में इसका तर्क यह है कि "चूंकि वास्तविक असमर्थता स्थापित है, इसलिए निश्चितता के बिना नियम समाप्त नहीं होगा।" वादे के मसले पर चर्चा की शुरुआत में ये बातें पहले ही आ चुकी हैं। — मुहम्मद अहमद मिसबाही।

पृष्ठ 90 का 761

[عبارت] اب مسئلہ امید اور ہدایہ میں بیان شدہ اس کی تعلیل پر کلام کیا جاتا ہے۔ اس پر امام اجل شیخ عبدالعزیز، پھر امام قوام الدین کاکی، پھر امام اکمل الدین بابرتی، پھر امام محقق علی الاطلاق نے دو وجہوں سے اعتراض کیا ہے۔ فتح القدیر میں ہدایہ کی مذکورہ عبارت پر یہ کلام ہے: "ان کا قول: "اس لئے"

وامّا مسألة الرجاء وما عللها به في الهداية، فاعترضه الامام الاجل الشيخ عبدالعزيز ثم الامام قوام الدين الكاكى ثم الامام اكمل الدين البابرتى ثم الامام المحقق على الاطلاق بوجهين عـ١ قال في الفتح على عبارة الهداية المذكورة قوله عـ٢ لان

[حاشیہ عـ١] التعليل يرد عليه الوجهان وعلى الحكم الوجه الاول فقط كما سيأتي ١٢ منه غفرله (م)

تعلیل پر دونوں وجہوں سے اعتراض ہوتا ہے اور حکم پر صرف وجہ اول سے اعتراض ہوتا ہے جیسا کہ آرہا ہے ١٢ منہ غفرلہ (ت)

[حاشیہ عـ٢] قوله قوله مبتدء خبره يقتضى وقوله مع انه منظور فيه متعلق بقوله يقتضى اقول: والمقصود الايراد على وجه ظاهر الرواية وانما اشرك معه تعليل الرواية النادرة لان النظر الاول يبتنى على ان ظاهر الرواية لم يعتبره فهما نظران حاصل الاول كيف قلتم لا يزول الا بيقين مثله ولم تجعلوا غالب الرأى كالمحقق مع انكم اعتبرتموه في مسألتى العمرانـات و

ان کی عبارت میں "قولہ" (ان کا قول) مبتدا ہے، اس کی خبر ہے "یقتضی" (مقتضی ہے) اور ان کی عبارت "مع انہ منظور فیہ" (باوجودیکہ اس میں کلام ہے) ان کی عبارت "یقتضی" سے متعلق ہے اقول: مقصد ظاہر الروایۃ کی وجہ پر اعتراض کرنا ہے۔ اس کے ساتھ روایت نادرہ کی تعلیل کو

اس لئے شریک کر لیا کہ پہلا اعتراض اس پر مبنی ہے کہ ظاہر الروایۃ نے اس کا اعتبار نہ کیا تو یہ دو اعتراض ہوئے۔ پہلے کا حاصل یہ ہے کہ آپ نے (باقی بر صفحہ آئندہ)

[فٹ نوٹ] لے امید کی صورت میں روایت نادرہ میں یہ حکم ہے کہ نماز مؤخر کرنا واجب ہے جس کی تعلیل ہدایہ میں یہ ہے کہ "غالب رائے محقق کی طرح ہے" یعنی غلبہ ظن کو حق عمل میں یقین کی حیثیت حاصل ہے۔ اور ظاہر الروایۃ میں اس کا حکم یہ ہے کہ تاخیر صرف مستحب ہے واجب نہیں، ہدایہ میں اس کی تعلیل یہ ہے کہ "عجز حقیقۃ ثابت ہے تو ویسے ہی یقین کے بغیر اس کا حکم زائل نہ ہوگا" مسئلہ وعدہ پر کلام کے شروع میں یہ باتیں گزر چکی ہیں ۱۲ محمد احمد مصباحی

Fatawa Razawiyya, Volume 4

[Arabic Quote]: "Preponderant opinion is like verified certainty. With his statement regarding the rationale of Zahir al-Riwayah (evident narrations) that 'actual inability is established, so its ruling shall not be removed except by similar certainty', it is observed that performing Tayammum in populated areas and in deserts is not permissible before seeking water if one is informed of its proximity or strongly suspects it through other means. Treating preponderant opinion like certainty implies that if one is certain of water's presence at the end of the prayer time, delaying the prayer becomes obligatory according to Zahir al-Riwayah. However, what is explicitly stated is contrary to this. As mentioned earlier in the chapter, if the distance between him and the water is one mile, Tayammum is permissible without further detail. In 'Al-Khulasah', it is mentioned that if a traveler is certain or strongly believes water will be available at the end of the time, yet he performs Tayammum and prays at the beginning of the time, it is permissible if the water is at least one mile away. If it is less but he fears the time will lapse, he should not perform Tayammum. End of quote. This has been detailed thoroughly."

[Urdu Commentary]: That preponderant opinion is like verified certainty. Along with their statement in the context of Zahir al-Riwayah that "Actual inability is established, so its ruling will not lapse without similar certainty", there are two points: First, because preponderant opinion is treated like certainty, Tayammum is not permissible in populated areas before searching for water. Similarly, in deserts, when one is informed of water's proximity or has a strong suspicion of its presence through other means. (Second, that their statement) necessitates that if he is certain he will find water at the end of the time, it would be mandatory for him to delay the prayer according to Zahir al-Riwayah. But contrary to this, as mentioned at the beginning of the chapter, there is an explicit statement that if there is a distance of one mile between him and the water, Tayammum is permissible. There is no further detail in this. In 'Al-Khulasah', it says that even if a traveler has certainty or a strong suspicion of finding water at the end of the time, he can still perform Tayammum in the early time...

(Remainder of previous page's footnote): [Arabic Quote]: "...the desert. The summary of the second point is that your statement implies that if one is certain of finding water at the end of the time, Tayammum would not be permissible for him, because it is then countered by a similar certainty, despite the fact that what is explicitly stated is contrary to it." 12 from him, may Allah forgive him. (M)

[Urdu text]: ...how it was said that it will not lapse without similar certainty. You did not treat preponderant opinion as verified certainty, whereas you accepted it in both problems of populated areas and deserts. The summary of the second objection is that your statement implies that if he is certain of finding water at the end of the time, Tayammum would not be permissible for him, because in such a case, similar certainty would counter it, whereas explicit statements exist to the contrary. (T)

1. Fath al-Qadir, Chapter on Tayammum, Nooria Razawiyya Sukkur, 1/120. Page 91 of 761

फ़तावा रज़विया, खंड 4

[अरबी उद्धरण]: "प्रबल राय सत्यापित निश्चितता की तरह है। ज़ाहिर अल-रिवायह के तर्क के संबंध में उनके इस कथन के साथ कि 'वास्तविक असमर्थता स्थापित है, इसलिए उसका हुक्म वैसी ही निश्चितता के बिना समाप्त नहीं होगा', यह देखा गया है कि आबादी वाले क्षेत्रों और रेगिस्तानों में पानी की तलाश से पहले तयम्मुम जायज़ नहीं है यदि उसे पानी की निकटता की सूचना दी गई हो या किसी अन्य तरीके से उसे पानी का प्रबल संदेह (गुमान-ए-गालिब) हुआ हो। प्रबल राय को निश्चितता की तरह मानने का अर्थ यह है कि यदि उसे यकीन हो कि समय के अंत में पानी मिल जाएगा, तो ज़ाहिर अल-रिवायह के अनुसार उसके लिए नमाज़ में देरी करना अनिवार्य होगा। लेकिन जो स्पष्ट रूप से वर्णित है वह इसके विपरीत है। जैसा कि अध्याय के प्रारंभ में उल्लेख किया गया है, यदि उसके और पानी के बीच की दूरी एक मील है, तो बिना किसी विस्तार के तयम्मुम जायज़ है। 'अल-खुलासा' में है कि यदि किसी यात्री को यकीन या प्रबल संदेह हो कि समय के अंत में पानी मिल जाएगा, फिर भी उसने समय के प्रारंभ में तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली, तो यदि पानी एक मील की दूरी पर हो तो यह जायज़ है। यदि यह कम है लेकिन उसे समय बीत जाने का डर है, तो वह तयम्मुम न करे। इति। इसका विस्तार से वर्णन किया गया है।"

[उर्दू व्याख्या]: कि प्रबल राय सत्यापित की तरह है, ज़ाहिर अल-रिवायह के तर्क में उनके इस कथन के साथ कि "वास्तविक असमर्थता स्थापित है तो इसका हुक्म वैसे ही निश्चितता के बिना समाप्त नहीं होगा" के बावजूद, एक तो इसमें यही चर्चा है कि प्रबल संदेह को निश्चितता की तरह मानने के कारण पानी तलाश करने से पहले बस्तियों में तयम्मुम जायज़ नहीं है। इसी तरह रेगिस्तानों में भी जब उसे यह बताया गया हो कि पास में पानी है या किसी और तरह से उसे पानी का प्रबल संदेह हुआ हो। (दूसरा यह कि उनका वह कथन) यह मांग करता है कि यदि उसे यकीन हो कि समय के अंत में पानी मिल जाएगा तो ज़ाहिर अल-रिवायह के अनुसार उसे नमाज़ में देरी करना ज़रूरी है, लेकिन इसके विपरीत जैसा कि पहले अध्याय में बीत चुका है, यह स्पष्ट उल्लेख मौजूद है कि जब उसके और पानी के बीच एक मील की दूरी हो तो तयम्मुम जायज़ है। इसमें कोई विस्तार नहीं है और 'खुलासा' में है कि मुसाफिर को जब समय के अंत में पानी मिलने का यकीन या प्रबल संदेह हो, फिर भी वह प्रथम समय में तयम्मुम...

(पिछले पृष्ठ के हाशिए का शेष भाग): [अरबी उद्धरण]: "...रेगिस्तान। दूसरे का निष्कर्ष यह है कि आपका यह कहना यह मांग करता है कि यदि उसे समय के अंत में पानी मिलने का यकीन हो तो

उसके लिए तयम्मुम जायज़ न हो क्योंकि यह वैसी ही निश्चितता के विरुद्ध है, जबकि स्पष्ट रूप से जो वर्णित है वह इसके विपरीत है।" 12 उनसे, अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (म)

[उर्दू हाशिए का अनुवाद]: ...कैसे कहा कि वैसे ही निश्चितता के बिना समाप्त नहीं होगा और आपने प्रबल राय को सत्यापित की तरह नहीं माना जबकि बस्तियों और रेगिस्तानों के दोनों मसलों में आपने इसे माना है। और दूसरे एतराज़ (आपत्ति) का सारांश यह है कि आपका यह कथन यह मांग करता है कि यदि उसे अंतिम समय में पानी मिलने का यकीन हो तो उसके लिए तयम्मुम जायज़ न हो क्योंकि ऐसी स्थिति में वैसा ही यकीन उसके विरुद्ध मिल गया जबकि स्पष्ट उल्लेख इसके विपरीत मौजूद है। (त)

1. फ़तह अल-क़दीर, बाब अल-तयम्मुम, नूरिया रज़विया सुक्कुर 1/120. पृष्ठ 761 का 91

غالب الرأی کالمتحقق مع قوله فی وجه ظاهر الروایة ان العجز ثابت حقیقة فلا یزول حکمه الا بیقین مثله انه منظور فیه بان التیمم فی العمرانات وفی الفلاة اذا اخبر بقرب الماء او غلب علی ظنه بغیر ذلك لا یجوز قبل الطلب اعتبار الغالب الظن کالیقین یقتضی انه لو تیقن وجود الماء فی اخر الوقت لزمه التأخیر علی ظاهر الروایة لکن المصرح به خلافه علی ما تقدم اول الباب انه اذا کان بینه وبین الماء میل جاز التیمم من غیر تفصیل وفی الخلاصة المسافر اذا کان علی تیقن من وجود الماء او غالب ظنه علی ذلك فی اخر الوقت فتیمم فی اول الوقت وصلی ان کان بینه وبین الماء مقدار میل جاز وان کان اقل ولکن یخاف الفوت لا یتیمم اهـ وقد فصله اتم تفصیل۔ کہ غالب رائے متحقق کی طرح ہے، ظاہر الروایہ کی وجہ میں ان کے اس قول کے ساتھ کہ "عجز حقیقی ثابت ہے تو اس کا حکم ویسے ہی یقین کے بغیر زائل نہ ہو گا" باوجودیکہ ایک تو اس میں یہی کلام ہے کہ غالب ظن کو یقین کی طرح ماننے کے باعث پانی تلاش کرنے سے پہلے آبادیوں میں تیمم جائز نہیں اسی طرح بیابانوں میں بھی جبکہ اسے یہ بتایا گیا ہو کہ قریب میں پانی ہے یا کسی اور طرح اسے پانی کا غلبہ ظن ہوا ہو (دوسرے یہ کہ ان کا وہ قول) اس کا مقتضی ہے کہ اگر اسے یقین ہو کہ آخر وقت میں پانی مل جائے گا تو ظاہر الروایہ کے مطابق اسے نماز مؤخر کرنا لازم ہے لیکن اس کے برخلاف جیسا کہ اول باب میں گزرا یہ تصریح موجود کہ جب اس کے اور پانی کے درمیان ایک میل کا فاصلہ ہو تو تیمم جائز ہے اس میں کوئی تفصیل نہیں اور خلاصہ میں ہے کہ مسافر کو جب آخر وقت میں پانی ملنے کا یقین یا غلبہ ظن ہو پھر بھی وہ اول وقت میں تیمم

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) الفلاة وحاصل الثانی ان قولکم هذا یقتضی ان لو تیقن وجدان الماء فی اخر الوقت لم یجز له التیمم لانه معارض اذن بیقین مثله مع ان المصرح به خلافه ۱۲ منه غفر له (م) کیے

کہا کہ ویسے ہی یقین کے بغیر زائل نہ ہو گا اور آپ نے غالب رائے متحقق کی طرح نہ قرار دیا جب کہ آبادیوں اور بیابانوں کے دونوں مسئلوں میں آپ نے اس کو مانا ہے اور دوسرے اعتراض کا حاصل یہ ہے کہ آپ کا یہ قول اس کا مقتضی ہے کہ اگر اسے آخر وقت میں پانی ملنے کا یقین ہو تو اس کیلئے تیمم جائز نہ ہو کیونکہ ایسی صورت میں ویسا ہی یقین اس کے معارض مل گیا حالانکہ تصریح اس کے برخلاف موجود ہے۔ (ت)

1. فتح القدیر باب التیمم نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۱۲۰ صفحہ 91 از 761

Page Header: Fatawa Rizvia Volume 4

Text on the right column: ...perform prayer. So, if there is a distance of one mile between him and the water, it is permissible. And if it is less, but there is a risk of missing the prayer, he should not perform Tayammum. "End quote." The Great Imam Abdul Aziz Bukhari has provided a full detail of this, and his discourse is quoted in Al-Inaya and Al-Diraya. The words of Al-Akmal al-Din Babarti are these: His saying, "because the predominant opinion is like the verified fact." On this, Sheikh Abdul Aziz said: There is a problem in this reasoning because it implies that it would be mandatory to delay even in the case of certainty at the end of the time despite the distance in the apparent narrations, so that it could be correctly compared to it, whereas there is no such ruling. Because at the beginning of the chapter, they have stated that "for one who is outside the city, Tayammum is permissible when there is a distance of one mile or more between him and the water." And in Al-Khulasa and general books, it is stated: "When the traveler is certain or has a strong suspicion of finding water at the end of the time, Tayammum is permissible for him as long as there is a distance of one mile or more between him and the water, and if the distance is less than that, Tayammum is not permissible even if there is a fear of missing the prayer." So, if the interpretation of this reasoning were that "it means that in narrations other than the foundational ones, since Tayammum is not permissible even in the case of verification, therefore in this narration, the strong suspicion has also been joined with it," even then it doesn't work. Because for the apparent narration, they have stated the reason that "inability is established in reality, so its ruling does not cease except with a certainty like it."

Text on the left column: The Great Imam Al-Bukhari, and his words were quoted in Al-Inaya and Al-Diraya. These are the words of Al-Akmal (Al-Babarti): He said, his words "because the predominant opinion is like the verified fact". Sheikh Abdul Aziz said: This reasoning is problematic because it implies that it would be mandatory to delay when there is certainty at the end of the time despite the distance in the apparent narrations, so that it can be correctly compared to it. But it is not so, for he mentioned at the beginning of the chapter that whoever is outside the city is allowed to perform Tayammum if there is a mile or more between him and water. And in Al-Khulasa and the general texts, "the traveler, when he is certain of the presence of water at the end of the time or has a strong suspicion of it, Tayammum is permissible for him if there is a mile or more between him and the water. If it is less, it is not permissible even if he fears missing the prayer." So, if this reasoning is interpreted to

mean that Tayammum is not permissible in verified cases in narrations other than the foundational ones, and strong suspicion in this narration is made joined to it, that also doesn't hold up. This is because he reasoned the aspect of the apparent narration by saying that inability is established in reality, so its ruling does not cease except by a certainty like it. This implies that the ruling of inability, which is the permissibility of Tayammum, ceases upon the certainty of water's presence in the apparent narration, but that's not the case as we have explained. And if it's interpreted to mean this is when the distance to that place is less than a mile, it also doesn't hold up because there is no difference.

पेज हेडर: फतावा रिज़विया खंड 4

दाएं कॉलम का टेक्स्ट: ...नमाज़ पढ़ ले। तो अगर उसके और पानी के बीच एक मील की दूरी हो, तो यह जायज़ है। और अगर कम हो, लेकिन नमाज़ छूटने का डर हो, तो तयम्मुम न करे। "इति।" महान इमाम अब्दुल अज़ीज़ बुखारी ने इसका पूरा विवरण दिया है, और उनका प्रवचन अल-इनाया और अल-दिराया में उद्धृत है। अल-अकमल अल-दीन बाबरती के शब्द ये हैं: उनका कहना है, "क्योंकि प्रबल राय सत्यापित तथ्य की तरह है।" इस पर, शेख अब्दुल अज़ीज़ ने कहा: इस तर्क में एक समस्या है क्योंकि इसका तात्पर्य यह है कि स्पष्ट वर्णनों में दूरी के बावजूद समय के अंत में निश्चितता के मामले में भी देरी करना अनिवार्य होगा, ताकि इसकी सही तुलना की जा सके, जबकि ऐसा कोई नियम नहीं है। क्योंकि अध्याय की शुरुआत में, उन्होंने कहा है कि "जो शहर के बाहर है, उसके लिए तयम्मुम तब जायज़ है जब उसके और पानी के बीच एक मील या उससे अधिक की दूरी हो।" और अल-खुलासा और सामान्य किताबों में कहा गया है: "जब यात्री को समय के अंत में पानी मिलने का यकीन या प्रबल अनुमान हो, तो उसके लिए तयम्मुम जायज़ है जब तक कि उसके और पानी के बीच एक मील या उससे अधिक की दूरी हो, और यदि दूरी उससे कम है, तो तयम्मुम जायज़ नहीं है भले ही नमाज़ छूटने का डर हो।" इसलिए, यदि इस तर्क की व्याख्या यह होती कि "इसका मतलब यह है कि बुनियादी रिवायत के अलावा अन्य रिवायतों में, क्योंकि सत्यापन के मामले में भी तयम्मुम जायज़ नहीं है, इसलिए इस रिवायत में, प्रबल संदेह को भी इसके साथ जोड़ दिया गया है," तो भी यह काम नहीं करता है। क्योंकि स्पष्ट रिवायत के लिए, उन्होंने कारण बताया है कि "अक्षमता वास्तव में स्थापित है, इसलिए इसका हुक्म खत्म नहीं होता सिवाय उसके जैसी ही निश्चितता के।"

बाएं कॉलम का टेक्स्ट: महान इमाम अल-बुखारी, और उनके शब्दों को अल-इनाया और अल-दिराया में उद्धृत किया गया था। ये अल-अकमल (अल-बबर्ती) के शब्द हैं: उन्होंने कहा, उनके शब्द 'क्योंकि प्रबल राय सत्यापित तथ्य की तरह है'। शेख अब्दुल अजीज ने कहा: यह तर्क समस्याग्रस्त है क्योंकि इसका अर्थ यह है कि समय के अंत में निश्चितता होने पर दूरी के बावजूद स्पष्ट वर्णन (ज़ाहिर रिवायत) में देरी करना अनिवार्य होना चाहिए, ताकि इसे सही ढंग से इसके साथ तुलना की जा सके। लेकिन ऐसा नहीं है, क्योंकि उन्होंने अध्याय की शुरुआत में उल्लेख किया है कि जो कोई शहर के बाहर है, उसे तयम्मुम करने की अनुमति है यदि उसके और पानी के बीच एक मील या उससे अधिक की दूरी हो। और अल-खुलासा और सामान्य ग्रंथों में, 'यात्री, जब उसे समय के अंत में पानी की उपस्थिति का यकीन या प्रबल अनुमान हो, तो उसके लिए तयम्मुम जायज़ है यदि उसके और पानी के बीच एक

मील या उससे अधिक की दूरी हो। यदि यह कम है, तो यह जायज़ नहीं है भले ही उसे नमाज़ छूट जाने का डर हो।' तो, अगर इस तर्क का अर्थ यह लिया जाए कि बुनियादी रिवायत के अलावा अन्य रिवायत में चूंकि पुख्ता होने की स्थिति में भी तयम्मुम जायज़ नहीं है, और इस रिवायत में प्रबल धारणा को भी उससे जोड़ दिया गया है, तो भी बात नहीं बनती। ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्होंने ज़ाहिर रिवायत का कारण यह बताया है कि अक्षमता वास्तविकता में साबित है, इसलिए उसका हुक्म खत्म नहीं होता सिवाय उसके जैसी ही निश्चितता के। इसका तात्पर्य यह है कि अक्षमता का हुक्म, जो तयम्मुम की अनुमति है, ज़ाहिर रिवायत में पानी की उपस्थिति की निश्चितता होने पर खत्म हो जाता है, लेकिन ऐसा नहीं है जैसा कि हमने बताया है। और अगर इसे इस तरह लिया जाए कि यह उस स्थिति में है जब उस स्थान की दूरी एक मील से कम हो, तो भी यह सही नहीं बैठता क्योंकि इसमें कोई अंतर नहीं है।

फुटर: पेज 761 में से 92

فتاوی رضویہ جلد چہارم

دائیں کالم کا متن: کرکے نماز پڑھ لے تو اگر اس کے اور پانی کے درمیان ایک میل کا فاصلہ ہو تو جائز ہے۔ اور اگر کم ہو لیکن نماز فوت ہونے کا اندیشہ ہو تو تیمّم نہ کرے۔ "اھ امام اجل عبدالعزیز بخاری نے اس کی بھرپور تفصیل فرمائی ہے اور ان کا کلام عنایہ اور درایہ میں نقل ہوا ہے۔ عنایہ اکمل الدین بابرتی کے الفاظ یہ ہیں: ان کا قول "اس لئے کہ غالب رائے محقق کی طرح ہے"۔ اس پر شیخ عبدالعزیز نے فرمایا: اس تعلیل میں اشکال ہے اس لئے کہ اس کا اقتضا یہ ہے کہ آخر وقت میں یقین کی صورت میں بُعد مسافت کے باوجود ظاہر روایات میں مؤخر کرنا واجب ہوتا کہ وہ مقیس علیہ ہو سکے حالانکہ ایسا حکم نہیں۔ اس لئے کہ شروع باب میں وہ بتا چکے ہیں کہ "جو بیرون شہر ہو اس کیلئے تیمم جائز ہے جب کہ اس کے اور پانی کے درمیان ایک میل یا زیادہ کا فاصلہ ہو" اور خلاصہ و عامہ کتب میں ہے کہ "مسافر کو جب آخر وقت میں پانی ملنے کا یقین یا غالب گمان ہو تو اس کیلئے تیمم جائز ہے جبکہ اس کے اور پانی کے درمیان ایک میل یا زیادہ کا فاصلہ ہو اور اگر اس سے کم فاصلہ ہو تو تیمم جائز نہیں اگرچہ نماز فوت ہو جانے کا اندیشہ ہو"۔ تو اگر اس کا یعنی تعلیل کا محمل یہ ہو کہ "مراد یہ ہے کہ غیر روایت اصول میں چونکہ بصورتِ تحقق بھی تیمم جائز نہیں اس لئے اس روایت میں غالب ظن کو بھی اس سے ملحق کر دیا گیا ہے" تو بھی بات نہیں بنتی۔ اس لئے کہ ظاہر روایت کی انہوں نے علت یہ بتائی ہے کہ "عجز حقیقۃً ثابت ہے تو ویسے ہی یقین کے

بائیں کالم کا متن: الامام الاجل البخاری ونقل کلامه في العناية والدراية وهذا لفظ الاكمل قال قوله لان غالب الرأی كالمتحقق قال الشيخ عبدالعزيز هذا التعليل مشكل لانه يقتضی ان يجب التأخير عند التحقق في آخر الوقت مع بعد المسافة في الروايات الظاهرة ليصح مقيسا عليه وليس كذلك فانه ذكر في اول

الباب ان من كان خارج المصر يجوز له التيمم اذاكان بينه وبين الماء ميل او اكثر، وفي الخلاصة وعامة النسخ المسافر اذا كان على تيقن من وجود الماء فى اخر الوقت او غالب ظنه ذلك جاز له التيمم اذا كان بينه وبين الماء ميل او اكثر وان كان اقل لايجوز وان خاف فوت الصلاة فلو حمل هذا يعنى التعليل على ان المراد ان التيمم لا يجوز في المتحقق في غير رواية الاصول فالحق به غالب الظن في هذه الرواية لم يستقم ايضا لانه علل وجه ظاہر الرواية بان العجز ثابت حقيقة فلايزول حكمه الابيقين مثله وذلك يقتضى ان حكم العجز وہو جواز التيمم يزول عند التيقن بوجود الماء في ظاهر الرواية وليس كذلك على مابينا ولو حمل على ان ہذا فيما اذاكان بينه وبين ذلك الموضع اقل من ميل لم يستقم ايضا لانه لافرق

Fatawa Razawiya - Volume 4

In the reasoning of Zahir al-Riwayah between the predominance of opinion (ghalbat al-zhann) and certainty (yaqin) when the distance is less than a mile regarding the non-permissibility of Tayammum (dry ablution), just as there is no difference between them when the distance is more than a mile regarding the permissibility of Tayammum. It has been explicitly stated at the end of this chapter that if it prevails in one's opinion that water is nearby, Tayammum is not allowed, just as if one were certain of it. Thus, it is known that a problematic point remains. Another interpretation is to apply this to a situation where it is not known whether the distance is near or far. So, if it is established that one is certain of the existence of water at the end of the time, then the fear of missing the prayer is removed. Since the long distance was not established due to doubt, the permissibility of Tayammum is also not established, and delaying the prayer becomes obligatory. However, if one has a predominance of opinion about it, then according to the Shaykhayn (Imam Abu Hanifa and Imam Abu Yusuf) in non-foundational reports, the ruling is the same because inability is actually established due to the lack of water. The ruling for this inability, which is the permissibility of Tayammum, does not cease except by a certainty similar to it, which is the certainty of the presence of water at the end of time. Since this is not present, delay is not obligatory. However, this interpretation is not without complexity, and it implies a distinction here between predominance of opinion and certainty in Zahir al-Riwayah, while no distinction was made between them when it was predominantly thought that water is nearby regarding the non-permissibility of Tayammum, nor when the distance was far regarding the permissibility of Tayammum, as we have explained. He said, therefore the more apparent view is...

"will not be removed without [certainty]." This reasoning implies that in Zahir al-Riwayah, the ruling of inability (permissibility of Tayammum) should be removed at the time of certainty of finding water. However, it is not so, as we have already pointed out. And if its context is that "this is in the case when the distance between him and that place is less than a mile," then it still does not hold. Because in the reasoning of Zahir al-Riwayah, in the case of a distance of less than a mile, there is no difference between predominance of opinion and certainty regarding the impermissibility of Tayammum, just as there is no difference between them in the case of distance being more than a mile regarding the permissibility of Tayammum. They themselves have explicitly stated at the end of this chapter that when one has a

predominance of opinion that water is nearby, Tayammum is not permissible, just as if it were certain, Tayammum would not be permissible. It becomes clear that this reasoning has difficulties. One more situation remains, which is that its context is a situation where it is not known whether the distance is near or far. If it is established that he is certain of finding water at the end of time, then he has gained fearlessness regarding the prayer being missed, and since distance is not established due to doubt, the permissibility of Tayammum is also not established; therefore, delaying the prayer is mandatory. But if he has a predominance of opinion regarding it, even then, in non-original reports, the ruling according to the Shaykhayn is the same because the inability is actually established due to the absence of water, and of this inability...

फ़तावा रज़विया - जिल्द 4

ज़ाहिर अर-रिवायाह में राय की प्रबलता (ग़लबत अज़-ज़न) और निश्चितता (यक़ीन) के बीच के तर्क के संबंध में, जब दूरी तयम्मुम की अनुमति न होने के मामले में एक मील से कम हो, जैसे कि तयम्मुम की अनुमति के मामले में जब दूरी एक मील से अधिक हो, तो उन दोनों के बीच कोई अंतर नहीं है। इस अध्याय के अंत में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि यदि किसी की राय में यह प्रबल हो कि पानी पास में है, तो तयम्मुम की अनुमति नहीं है, जैसे कि वह इसके बारे में निश्चित हो। अत; यह ज्ञात होता है कि एक समस्या बनी हुई है। दूसरा पहलू यह है कि इसे उस स्थिति पर लागू किया जाए जहाँ यह ज्ञात न हो कि दूरी पास है या दूर। तो, यदि यह सिद्ध हो जाए कि समय के अंत में पानी होने का निश्चित ज्ञान है, तो नमाज़ छूटने का डर दूर हो गया। चूँकि संदेह के कारण दूरी का अधिक होना सिद्ध नहीं हुआ, इसलिए तयम्मुम की अनुमति भी सिद्ध नहीं हुई, अतः नमाज़ में देरी करना अनिवार्य है। हालांकि, अगर इस बारे में राय प्रबल हो, तो भी गैर-मूल रिपोर्टों में शैखैन (इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम अबू यूसुफ़) के अनुसार यही नियम है क्योंकि पानी न होने के कारण लाचारी वास्तव में सिद्ध है। इस लाचारी का हुक्म, जो कि तयम्मुम की अनुमति है, तब तक समाप्त नहीं होता जब तक कि उसके समान कोई निश्चितता न हो, और वह समय के अंत में पानी की मौजूदगी का निश्चित होना है। चूंकि यह मौजूद नहीं है, इसलिए देरी अनिवार्य नहीं है। लेकिन यह पहलू पेचीदगी से खाली नहीं है और इससे यह पता चलता है कि यहाँ ज़ाहिर अर-रिवायाह में राय की प्रबलता और निश्चितता के बीच अंतर किया गया है, जबकि उनके बीच कोई अंतर नहीं किया गया था जब यह प्रबल राय थी कि पानी निकटता में है (तयम्मुम की अनुमति न होने के मामले में), और न ही जब दूरी अधिक थी (तयम्मुम की अनुमति के मामले में), जैसा कि हमने स्पष्ट किया है। उन्होंने कहा, अतः अधिक स्पष्ट विचार है...

"बगैर ज़ाइल न होगा (बिना निश्चितता के समाप्त नहीं होगा)"। यह तर्क इस बात का तकाज़ा करता है कि ज़ाहिर अर-रिवायाह में लाचारी (तयम्मुम की अनुमति) का हुक्म पानी मिलने की निश्चितता के समय समाप्त हो जाना चाहिए। हालांकि ऐसा नहीं है जैसा कि हम बता चुके हैं। और यदि इसका संदर्भ यह हो कि "यह उस स्थिति में है जब उसके और उस स्थान के बीच की दूरी एक मील से कम हो", तो भी बात नहीं बनती। क्योंकि ज़ाहिर अर-रिवायाह के तर्क में एक मील से कम दूरी होने की स्थिति में, तयम्मुम के नाजायज़ होने के मामले में राय की प्रबलता और निश्चितता के बीच कोई अंतर नहीं है, जैसे कि उन दोनों के बीच एक मील से अधिक दूरी होने की स्थिति में तयम्मुम के जायज़ होने के मामले में कोई अंतर नहीं है। उन्होंने स्वयं इस अध्याय के अंत में स्पष्ट कर दिया है कि जब उसे

पास में पानी होने की राय प्रबल हो, तो तयम्मुम जायज़ नहीं है, जैसे कि यदि यक़ीन हो तो तयम्मुम जायज़ नहीं है। ज्ञात हुआ कि यह तर्क पेचीदा है। एक और स्थिति बचती है, वह यह कि इसका संदर्भ वह स्थिति हो जब उसे यह न मालूम हो कि दूरी पास है या दूर। तो यदि यह सिद्ध हो जाए कि उसे अंतिम समय में पानी मिलने का यक़ीन है, तो नमाज़ के फ़ौत (छूटने) होने से उसे बेख़ौफ़ी हासिल हो गई और शक की वजह से जब दूरी का अधिक होना सिद्ध नहीं हुआ, तो तयम्मुम का जायज़ होना भी सिद्ध नहीं हुआ, तो नमाज़ को मुअख़र (देरी) करना वाजिब है। लेकिन अगर उसे इसकी राय प्रबल हो, तो भी गैर-रिवायत उसूल में शैखैन के नज़दीक यही हुक्म है क्योंकि पानी न होने की वजह से लाचारी हक़ीक़तन साबित है और इस लाचारी का...

فی تعلیل ظاھر الروایۃ بین غلبۃ الظن والیقین فیما اذا کانت المسافۃ اقل من میل في عدم جواز التیمم کما انہ لافرق بینھما فیما اذا کانت المسافۃ اکثر من میل في جواز التیمم، وقد صرح في آخر ھذا الباب انہ اذا غلب علی ظنہ ان بقربہ ماء لا یجوز التیمم کمالو تیقن بذلك فعلم انہ مشکل بقی وجہ اخر وھو ان یحمل ھذا علی ما اذا لم یعلم ان المسافۃ قریبۃ او بعیدۃ فلو ثبت انہ تیقن بوجود الماء في آخر الوقت فقد امن الفوات ولما لم یثبت بعد المسافۃ لتشکیك فیہ لم یثبت جواز التیمم فیجب التأخیر اما لو غلب علی ظنہ ذلك وکذلك عندھما في غیر روایۃ الاصول لان الغالب کالمتحقق وفی ظاھر الروایۃ لا یجب التأخیر لان العجز ثابت لعدم الماء حقیقۃ وحکم ھذا العجز وھو جواز التیمم لا یزول الا بیقین مثلہ وھو التیقن بوجود الماء في آخر الوقت ولم یوجد فلا یجب التأخیر ولکن ھذا الوجہ لا یخلو عن تمحل ویلزم علیہ انہ فرق ھھنا بین غلبۃ الظن والیقین في ظاھر الروایۃ ولم یفرق بینھما فیما اذا غلب علی ظنہ ان بقربہ ماء في عدم جواز التیمم ولا فیما اذا کانت المسافۃ بعیدۃ في جواز التیمم کما بینا قال فالأظھر

بغیر زائل نہ ہوگا"۔ یہ تعلیل اس کی مقتضی ہے کہ ظاہر الروایۃ میں حکم عجز جوازِ تیمم پانی ملنے کے یقین کے وقت زائل ہو جائے۔ حالانکہ ایسا نہیں جیسا کہ ہم بتا چکے۔ اور اگر اس کا محمل یہ ہو کہ "یہ اس صورت میں ہے جب اس کے اور اس جگہ کے درمیان ایک میل سے کم فاصلہ ہو" تو بھی بات نہیں بنتی۔ اس لئے کہ تعلیل ظاہر الروایۃ میں ایک میل سے کم فاصلہ ہونے کی صورت میں، تیمم نا جائز ہونے کے معاملہ میں غلبہ ظن اور یقین کے درمیان کوئی فرق نہیں جیسے کہ ان دونوں کے درمیان ایک میل سے زیادہ مسافت ہونے کی صورت میں تیمم جائز ہونے کے معاملہ میں کوئی فرق نہیں۔ وہ خود اس باب کے آخر میں صراحت کر چکے ہیں کہ جب اسے قریب میں پانی ہونے کا غلبہ ظن ہو تو تیمم جائز نہیں جیسے اگر اس کا یقین ہو تو تیمم جائز نہیں

معلوم ہوا کہ یہ تعلیل اشکال رکھتی ہے۔ ایک صورت اور رہ گئی وہ یہ کہ اس کا محمل وہ صورت ہو جب اسے یہ معلوم نہ ہو کہ مسافت قریب ہے یا بعید تو اگر یہ ثابت ہو کہ اسے آخر وقت میں پانی ملنے کا یقین ہے تو نماز کے فوت ہونے سے اس کو بے خوفی حاصل ہوگئی اور شک کی وجہ سے جب بُعدِ مسافت ثابت نہیں تو جوازِ تیمم بھی ثابت نہیں، تو نماز مؤخر کرنا واجب ہے۔ لیکن اگر اُس کو اِس کا غلبہ ظن ہو تو بھی غیر روایت اصول میں شیخین کے نزدیک یہی حکم ہے اس لئے کہ پانی نہ ہونے کی وجہ سے عجز حقیقتًا ثابت ہے اور اس عجز کا

Fatawa Razawiyya, Volume 4

The issue remains [1] 'ah' (ending of a quote), the pronoun in 'qala' (he said) refers to Imam al-Bukhari. Both the great scholars, al-Kaki and al-Babarti, have endorsed it, may Allah have mercy on them all and have mercy on us through them. Ameen.

And I say: The direction of the discourse is towards 'Zahir al-Riwayah' (the mainstream school of thought) and its reasoning. However, the Shaykh, out of respect for it, diverted it towards 'Riwayah an-Nadirah' (rare narrations) and its evidence, providing four interpretations for it and refuting them all. I intend to summarize it with clarification, as it remained obscure even to some of the great elders.

So I say: And with Allah is the success. He made its first interpretation the premise that the obligation of delaying [the prayer] when there is certainty of finding water at the end of the time is agreed upon between the 'Zahir' (mainstream) and 'Nadir' (rare) narrations. The disagreement is only in the case of conjecture (Zann), so the 'Nadir' narration was analogized with the agreed-upon case. And he refuted it with the invalidity of this premise due to the mutawatir (widely transmitted) textual evidence on the permissibility of Tayammum if the water is a mile away.

I say: meaning, perhaps one might be certain of finding water at the end of the time.

[Translation of Urdu Column] The ruling on the permissibility of Tayammum will not be voided without certainty. And it is this: that there is certainty of obtaining water at the end of the time, and if certainty is not found, then delaying is not obligatory. However, this situation is not without affectation/burden, and the objection will necessarily follow that in Zahir al-Riwayah, they differentiated between 'Ghaliba az-Zann' (preponderant conjecture) and 'Yaqeen' (certainty), and they did not differentiate between the two in the non-permissibility of Tayammum in this case when there is a preponderant conjecture of water being nearby, nor in the permissibility of Tayammum when the distance is far, as we have stated. He said: "So the most apparent is that the issue remains." The pronoun in 'he said' is for Imam Bukhari. This statement was also upheld by Allama Kaki and Allama Babarti. May Allah have mercy on all these gentlemen and may He have mercy on us too by their blessings. O Allah! Accept. (T) And I say: The direction of the discourse is towards Zahir al-Riwayah and its reasoning, but the Shaykh, in view of its greatness, turned the direction towards 'Riwayah Nadirah' and its evidence. And he extracted four interpretations for it, and simultaneously refuted each one. I want to summarize this

discourse along with an explanation, because it was not clear to some great elders. (T) So I say: (And I say) and from God alone is the success: The first interpretation: He made the first interpretation this premise that if there is certainty of finding water at the end of the time, then the Zahir and Nadir narrations all agree on the obligation of delaying the prayer. The difference is only in the case of conjecture, so in the Nadir narration, the case of conjecture is analogized to the case which is agreed upon. And its refutation is that it is wrong to believe this (that whenever there is certainty of finding water at the end of the time, then by consensus delay is obligatory) because there has come mutawatir clarification that water...

---

[1] Al-Inayah with Fath al-Qadeer, Chapter of Tayammum, Maktabah Nooria Razawiyya, Sukkur 120/1 Page 94 of 761

फ़तावा रज़विया, खंड 4

शंका बनी हुई है [1] 'अह' (उद्धरण का अंत), 'का़ला' (उसने कहा) में सर्वनाम इमाम बुखारी की ओर है। दोनों महान विद्वानों, अल-काकी और अल-बाबरती ने इसका समर्थन किया है, अल्लाह उन सभी पर दया करे और उनके माध्यम से हम पर भी दया करे। आमीन।

और मैं कहता हूँ: प्रवचन का रुख़ ज़ाहिर अल-रिवाया और उसके तर्क की ओर है। हालाँकि, शेख ने इसके सम्मान में इसे 'रिवायाह अल-नादिरा' (दुर्लभ वर्णन) और इसके साक्ष्य की ओर मोड़ दिया, इसके लिए चार व्याख्याएँ प्रदान कीं और उन सभी का खंडन किया। मैं स्पष्टीकरण के साथ इसका सारांश देना चाहता हूँ, क्योंकि यह कुछ महान बुजुर्गों के लिए भी अस्पष्ट रहा।

तो मैं कहता हूँ: और अल्लाह से ही सफलता है। उन्होंने इसकी पहली व्याख्या इस आधार को बनाया कि समय के अंत में पानी मिलने की निश्चितता होने पर देरी [प्रार्थना की] करने की अनिवार्यता ज़ाहिर और नादिर रिवायतों के बीच सर्वसम्मत है। असहमति केवल धारणा (ज़न्न) के मामले में है, इसलिए नादिर रिवायत को सर्वसम्मत मामले के साथ जोड़ा गया था। और उन्होंने इस आधार की अमान्यता के साथ इसका खंडन किया क्योंकि एक मील की दूरी पर पानी होने पर तयम्मुम की अनुमति पर मुतवातिर (व्यापक रूप से प्रसारित) पाठ्य प्रमाण मौजूद हैं।

मैं कहता हूँ: अर्थात, शायद समय के अंत में पानी मिलने का निश्चित विश्वास हो।

[उर्दू कॉलम का अनुवाद] तयम्मुम की अनुमति का नियम बिना निश्चितता के समाप्त नहीं होगा। और वह यह है कि समय के अंत में पानी मिलने का निश्चित विश्वास हो, और यदि निश्चितता न पाई जाए तो देरी करना अनिवार्य नहीं है। लेकिन यह स्थिति बनावट से खाली नहीं है और इस पर यह आपत्ति अनिवार्य रूप से आएगी कि ज़ाहिर अल-रिवाया में उन्होंने यहाँ 'ग़ालबा-ए-ज़न्न' (प्रबल धारणा) और 'यकीन' (निश्चितता) के बीच अंतर किया है, और इन दोनों के बीच इस स्थिति में तयम्मुम की अनुमति न होने में कोई अंतर नहीं किया जब पानी पास होने की प्रबल धारणा हो, और न ही तयम्मुम की अनुमति में उस स्थिति में कोई अंतर किया जब दूरी अधिक हो, जैसा कि हमने वर्णन किया है। उन्होंने कहा: "तो सबसे स्पष्ट यही है कि शंका बनी हुई है।" 'कहा' (क़ाला) का सर्वनाम इमाम बुखारी के लिए है। इस कथन को अल्लामा काकी और अल्लामा बाबरती ने भी बरकरार रखा। अल्लाह इन सभी सज्जनों पर दया करे और उनके आशीर्वाद से हम पर भी दया करे। हे अल्लाह! स्वीकार कर। (टी) और मैं कहता हूँ: प्रवचन की दिशा ज़ाहिर अल-रिवाया और उसके तर्क की ओर ही है, लेकिन

शेख ने इसकी महानता को देखते हुए इसका रुख़ रिवायत-ए-नादिरा और उसके साक्ष्य की ओर मोड़ दिया है। और उन्होंने इसके चार अर्थ निकाले और साथ ही प्रत्येक को खारिज भी कर दिया। मैं इस प्रवचन का सारांश स्पष्टीकरण के साथ देना चाहता हूँ, क्योंकि यह कुछ महान बुजुर्गों पर स्पष्ट नहीं हो सका। (टी) तो मैं कहता हूँ: (तो मैं कहता हूँ) और अल्लाह से ही सफलता है: प्रथम अर्थ: प्रथम अर्थ इस आधार को माना कि समय के अंत में पानी मिलने की निश्चितता होने पर नमाज़ में देरी करने की अनिवार्यता पर ज़ाहिर और नादिर सभी रिवायतें सहमत हैं। मतभेद केवल धारणा (ज़न्न) की स्थिति में है, तो नादिर रिवायत में धारणा की स्थिति की तुलना उस स्थिति से की गई है जो सर्वसम्मत है। और इसका खंडन इस प्रकार किया कि यह मानना ही गलत है (कि जब भी समय के अंत में पानी मिलने की निश्चितता हो, तो सर्वसम्मति से देरी अनिवार्य है) क्योंकि इसका मुतवातिर स्पष्टीकरण आया है कि पानी...

---

[1] अल-इनायाह मा फ़तह अल-क़दीर, तयम्मुम का अध्याय, मकतबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर 120/1 पृष्ठ 94 का 761

فتاوی رضویه، جلد چہارم

بقاء الاشکال ۱ اھ ضمیر قال الی الامام البخاری وقد اقره العلامتان الکاکی والبابرتي رحم الله الجمیع ورحمنا بهم آمین۔ واقول: انما وجه الکلام الی ظاهر الروایة وتعلیلها وصرفه الشیخ اجلالالها الی الروایة النادرة ودلیلها وجعل لها اربعة محامل ورد الکل وانا ارید تلخیصه مع الایضاح فقد خفی علی بعض اجلة الکبراء۔ فأقول: وبالله التوفیق جعل محمله الاول تقدیر ان وجوب التأخیر عند تیقن الوجدان فی آخر الوقت متفق علیه بین الروایات الظاهرة والنادرة انما الخلاف عند الظن فقاسته النادرة علی الوفاقیة ورده ببطان هذا التقدیر للتنصیص المتواتر علی جواز التیمم اذا بعد الماء میلا۔ اقول؛ ای وربما یتیقن فیه الوجدان فی آخر الوقت

[حاشیہ دایاں] حکم جواز تیمم ویسے ہی یقین کے بغیر زائل نہ ہوگا۔ اور وہ یہ ہے کہ آخر وقت میں پانی ملنے کا یقین ہو اور یقین نہ پایا گیا تو تاخیر واجب نہیں لیکن یہ صورت تکلف سے خالی نہیں اور اس پر یہ اعتراض لازم آئے گا کہ ظاہر الروایہ میں انہوں نے یہاں غلبہ ظن اور یقین کے درمیان فرق کیا اور ان دونوں کے درمیان عدم جواز تیمم میں اس صورت میں فرق نہ کیا جب اسے قریب میں پانی ہونے کا غلبہ ظن ہو نہ ہی جواز تیمم میں اُس صورت میں فرق کیا جب مسافت بعید ہو جیسا کہ ہم نے بیان کیا۔ فرمایا: "تو اظہر یہی ہے کہ اشکال باقی ہے" اھ "فرمایا" کی ضمیر امام بخاری کیلئے ہے۔ اس کلام کو علامہ کاکی اور علامہ بابرتی نے بھی برقرار رکھا۔ خدا ان سب حضرات پر رحمت فرمائے اور ان کی برکت سے ہم پر بھی رحمت فرمائے۔ الہی! قبول فرما۔ (ت) واقول: کلام کا رخ ظاہر الروایۃ اور اس کی تعلیل کی جانب ہی ہے مگر شیخ نے اس کی عظمت کے پیش نظر رخ روایت نادرہ اور اس کی دلیل کی طرف پھیر دیا ہے۔ اور اس کے چار محمل نکالے ساتھ ہی ہر ایک کو رد بھی کر دیا میں اس کلام کی تلخیص کرنا چاہتا ہوں ، ساتھ ہی توضیح

بھی ، کیونکہ یہ بعض جلیل بزرگوں پر واضح نہ ہو سکا۔ (ت) فاقول: (تو میں کہتا ہوں) اور خدا ہی سے توفیق ہے: محمل اول: پہلا محمل اس تقدیر کو قرار دیا کہ آخر وقت میں پانی ملنے کا یقین ہو تو تاخیر نماز کے وجوب پر ظاہر و نادر سبھی روایات متفق ہیں۔ اختلاف صرف ظن کی صورت میں ہے تو روایت نادرہ میں صورت ظن کا قیاس اُس صورت پر ہے جو متفق علیہ ہے۔ اور اس کا رد یوں کیا کہ یہ ماننا ہی غلط ہے (کہ جب بھی آخر وقت میں پانی ملنے کا یقین ہو تو بالاتفاق تاخیر واجب ہے) اس لئے کہ اس کی متواتر تصریح آئی ہے کہ پانی

---

۱ العنایۃ مع فتح القدیر باب التیمم مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/۱۲۰ Page 94 of 761

Fatawa Razawiyya Volume 4

[Arabic Section] For a mile is covered at an average pace in less than half an hour, and the time for Fajr and Maghrib is more than double that, let alone other times. Second: Indeed, in both of them there is a difference, and the rare (Nadira) narration has joined one of the differences to the other. I say: and this is among the most remote interpretations, because in this case, it does not remain a reasoning but an illustration of a controversial matter by another, as is the habit (1) of Imam al-Rabbani Muhammad in his books, and his rebuttal was that the answer of the Zahir is then by the difference between suspicion, where dry ablution (Tayammum) is not permissible, and certainty, where it is permissible, and its falsehood has been known. I say: It is possible to make it a rejection of the association only, even if it was remote like that interpretation. Third: The rare narration only mandates the delay when there is a suspicion of finding [water] when the separation is less than a mile. I say: Its meaning is that if water is known to be near, it is not permissible for him to perform dry ablution if he suspects finding it; otherwise, if the time has become short, it is permissible as is the saying of Zufar, and he rebutted it by saying that the school of thought (Madhhab) only distinguished by proximity and distance, not the predominance of suspicion of finding it or certainty, as indicated by what he mentioned.

[Urdu Section] In the case of being one mile away, Tayammum (dry ablution) is permissible. I say (the author says): What is meant here is that in this situation, it will often happen that he is certain to find water at the end of the time, because a distance of one mile can be covered at a medium pace in less than half an hour, while the time for Fajr and Maghrib is also more than double that, and for other times it is even longer. (T) Second Interpretation: There is a difference in both, and the rare (Nadira) narration has associated one differing view with another. I say: This is the most remote interpretation because then this would no longer be a reasoning but rather an explanation of one controversial issue by another controversial issue, as is the method of Imam Rabbani Muhammad bin al-Hasan in his works. The rebuttal to this is that the response of Zahir al-Riwayah would then be that there is a difference between suspicion (Zann) and certainty (Yaqin). In the case of suspicion, Tayammum is not permissible, and in the case of certainty, it is permissible, although the invalidity of this distinction is already known. I say: It can also be considered a rejection of the association alone, even if this is as remote as that interpretation. (T) Third Interpretation: In the case of suspecting to find water, the rare narration

mandates delaying the prayer when the distance is less than a mile. I say: Its meaning is that if he knows that water is nearby, then if he expects to find water within the prayer time, Tayammum is not permissible; and if he does not have this expectation, such that the time has become short, then Tayammum is permissible, as is the saying of Imam Zufar. The rebuttal to this is that the school of thought only...

फतावा रज़विया जिल्द चौथी

[अरबी अनुभाग] क्योंकि एक मील औसत गति से आधे घंटे से भी कम समय में तय किया जा सकता है, और फज्र और मग़रिब की नमाज़ का समय इससे दोगुने से अधिक होता है, अन्य नमाज़ों के समय की तो बात ही क्या। दूसरा: वास्तव में, दोनों में मतभेद है और दुर्लभ (नादिरह) रिवायत ने एक मतभेद को दूसरे के साथ जोड़ दिया है। मैं कहता हूँ: और यह सबसे दूरस्थ व्याख्याओं में से है, क्योंकि इस मामले में, यह एक तर्क(तअलील) नहीं रहता बल्कि एक विवादास्पद मामले का दूसरे विवादास्पद मामले के माध्यम से स्पष्टीकरण बन जाता है, जैसा कि इमाम रब्बानी मुहम्मद की अपनी किताबों में आदत (1) है, और उनका खंडन यह था कि ज़ाहिर का जवाब तब संदेह (ज़न्न) और निश्चितता (यक़ीन) के बीच के अंतर के आधार पर होता है, जहाँ संदेह की स्थिति में तयम्मुम जायज़ नहीं है, और निश्चितता की स्थिति में जायज़ है, जबकि इसकी अमान्यता ज्ञात हो चुकी है। मैं कहता हूँ: इसे केवल उस जुड़ाव (इल्हाक़) का खंडन भी माना जा सकता है, भले ही वह उस व्याख्या की तरह दूरस्थ हो। तीसरा: दुर्लभ रिवायत केवल तभी देरी को अनिवार्य करती है जब पानी मिलने का संदेह हो और दूरी एक मील से कम हो। मैं कहता हूँ: इसका अर्थ यह है कि यदि पानी निकट होने का ज्ञात हो, तो उसके लिए तयम्मुम जायज़ नहीं है यदि उसे इसके मिलने का संदेह हो; अन्यथा यदि समय कम हो गया, तो यह जायज़ है जैसा कि इमाम ज़ुफ़र का कहना है, और उन्होंने इसका खंडन किया कि मज़हब ने केवल निकटता और दूरी के आधार पर अंतर किया है, न कि पानी मिलने के संदेह की प्रबलता या निश्चितता के आधार पर, जैसा कि उनके द्वारा उल्लेखित बातों से स्पष्ट होता है।

[उर्दू अनुभाग] एक मील दूर होने की स्थिति में तयम्मुम जायज़ है। अक़ूल (मैं कहता हूँ): कहना यह चाहते हैं कि इस स्थिति में कई बार ऐसा भी होगा कि उसे अंतिम समय में पानी मिल जाने का यकीन होगा क्योंकि एक मील का फासला औसत गति से आधे घंटे से कम में तय हो जाता है जबकि फज्र और मग़रिब का समय भी इसके दोगुने से ज्यादा है, अन्य समयों का तो और भी अधिक होगा। (त) दूसरा महमल (व्याख्या): दोनों में ही मतभेद है और रिवायते नादिरह ने एक इख़्तिलाफ़ी (विवादास्पद) को दूसरे इख़्तिलाफ़ी से जोड़ दिया है। अक़ूल: यह सबसे दूर का महमल है क्योंकि फिर यह तअलील (तर्क) नहीं रह जाएगी बल्कि एक इख़्तिलाफ़ी मसले की दूसरे इख़्तिलाफ़ी मसले से व्याख्या होगी जैसा कि इमाम रब्बानी मुहम्मद बिन अल-हसन का अपनी किताबों में तरीका है। इस पर खंडन यह है कि फिर ज़ाहिर अल-रिवायह का उत्तर यह होगा कि ज़न्न (अनुमान) और यक़ीन (निश्चितता) में अंतर है। ज़न्न की सूरत में तयम्मुम जायज़ नहीं और यक़ीन की सूरत में जायज़ है

जबकि इस अंतर का गलत होना मालूम हो चुका है। अक़ूल: इसे सिर्फ इल्हाक़ का रद्द भी माना जा सकता है भले ही यह भी इसी महमल की तरह दूर की बात है। (त) तीसरा महमल: पानी मिलने का अनुमान होने की सूरत में रिवायते नादिरह नमाज़ में देरी को उस समय अनिवार्य करती है जब दूरी एक मील से कम हो। अक़ूल: इसका अर्थ यह है कि अगर उसे मालूम हो कि पानी पास है तो अगर उसे यह अनुमान हो कि नमाज़ के वक्त के अंदर पानी मिल जाएगा तो तयम्मुम जायज़ नहीं और अगर यह अनुमान न हो इस तरह कि वक्त कम हो गया हो तो तयम्मुम जायज़ है जैसा कि यह इमाम ज़ुफ़र का कौल है। इस पर रद्द यह है कि मज़हब में सिर्फ़..

पृष्ठ 95/761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

[عربی متن] فان الميل يقطع بسير الوسط في اقل من نصف ساعة ووقت الصبح والمغرب اوسع من ضعف ذلك فضلا عن سائر الاوقات۔ والثاني: ان في كليهما الاختلاف والحقت النادرة احد المختلفين بالاخر اقول وهو من ابعد المحامل اذلا يبقى على هذا تعليلا بل ايضاحاً لخلافية باخرى كعادة(1) الامام الربانی محمد فی کتبہ ورده بأن جواب الظاهر اذن بالفرق بين الظن فلا يجوز فيه التيمم واليقين فيجوز وقد علم بطلانہ اقول: ويمكن ان يجعل ردالاللحاق فقط وان كان بعيدا كذالك المحمل۔ والثالث: ان النادرة انما توجب التأخير عند ظن الوجدان فيما اذكان الفصل اقل من ميل اقول: معناه ان علم الماء قريبا لا يجوز له التيمم ان ظن وجدانہ والابان ضاق الوقت جاز كما هو قول زفر ورده بان المذهب انما فرق بالقرب والبعد دون غلبة ظن الوجدان واليقين كما يعطيه ماذكره

[اردو متن] ایک میل دُور ہونے کی صورت میں تیمّم جائز ہے۔ اقول: کہنا یہ چاہتے ہیں کہ اس صورت میں بارہا ایسا بھی ہوگا کہ اسے آخر وقت میں پانی مل جانے کا یقین ہے اس لئے کہ ایک میل کا فاصلہ متوسط رفتار سے آدھ گھنٹہ سے کم میں طے ہو جاتا ہے جبکہ فجر و مغرب کا بھی وقت اس کے دو گنا سے زیادہ ہے دیگر اوقات کا تو اور بھی زیادہ ہوگا۔ (ت) محمل دوم: دونوں ہی میں اختلاف ہے اور روایتِ نادرہ نے ایک اختلافی کو دوسرے اختلافی سے لاحق کر دیا اقول: یہ سب سے بعید تر محمل ہے اس لئے کہ پھر یہ تعلیل نہ رہ جائے گی بلکہ ایک اختلافی مسئلہ کی دوسرے اختلافی مسئلہ سے توضیح ہوگی جیسا کہ امام ربانی محمد بن الحسن کا اپنی تصانیف میں طریقہ ہے۔ اس پر رد یہ ہے کہ پھر ظاہر الروایہ کا جواب یہ ہوگا کہ ظن ویقین میں فرق ہے۔ ظن کی صورت میں تیمّم جائز نہیں اور یقین کی صورت میں جائز ہے حالانکہ اس فرق کا بطلان معلوم ہو چکا ہے۔ اقول: اسے صرف الحاق کا رد بھی قرار دیا جا سکتا ہے اگرچہ یہ بھی اسی محمل کی

طرح بعید ہے۔ (ت) محمل سوم: پانی ملنے کا گمان ہونے کی صورت میں روایتِ نادرہ تاخیرِ نماز کو اس وقت لازم کرتی ہے جب ایک میل سے کم فاصلہ ہو۔ اقول: اس کا مطلب یہ ہے کہ اگر اسے علم ہو کہ پانی قریب ہے تو اگر اسے یہ گمان ہو کہ وقتِ نماز کے اندر پانی مل جائے گا تو تیمّم جائز نہیں اور اگر یہ گمان نہ ہو اس طرح کہ وقت تنگ ہو چکا ہو تو تیمّم جائز ہے جیسا کہ یہ امام زفر کا قول ہے۔ اس پر رد یہ ہے کہ مذہب میں صرف

In the context of the apparent [ruling], if the distance is a mile or more, it is permissible absolutely; otherwise, it is not permissible absolutely. It was explained that the school's position is the invalidity of Tayammum when one expects closeness, as stated at the end of this chapter. So how can it be permitted with knowledge of closeness, due to the lack of certainty of finding [water]? Its meaning is not that one expects to find it because they think the water is closer than a mile; for its being closer is an assumption based on this interpretation, and its explanation will follow.

The fourth point: The rare [report] is concerning the case when the distance is unknown. The reasoning for its proof is that Tayammum has a permitting factor and a hindering factor. As for the permitting factor, it is knowledge of the vastness of the distance. As for the hindering factor, it is knowledge that one will find water at the end of the time. The permitting factor here is unknown by assumption. If the hindering factor were certain, Tayammum would definitely not be permissible because there's no fear of missing [the prayer]. Here, it is suspected [not certain]. Suspected is like certain, so it is also not permissible, and delaying is obligatory. The summary of the response for the apparent [ruling] is that Tayammum has a correcter and a hinderer. The correcter is the inability to find water, and this is definitively present because water is non-existent in reality. The hinderer is the knowledge of finding it at the end of the time, and this is not certain. Even if it is suspected, it does not contradict the certain [fact]. Its rebuttal is that it involves artificiality in its restriction.

The differentiation is in the distance and proximity, not in the predominance of thought and certainty of finding water, as is understood from what was mentioned in the reasoning of Zahir al-Riwayah: that if the distance is a mile or more, then Tayammum is permissible absolutely; otherwise, it is not permissible absolutely. The second rebuttal is that the madhab (school of thought) is that if there is a suspicion of water being near, then Tayammum is invalid, as explicitly stated at the end of this chapter. Therefore, despite having knowledge of [water] being near, how can they say Tayammum is permissible on the basis that there is no certainty of getting water within the time? This does not mean that because of the suspicion of it being less than a mile, one thought they would get water; because in this interpretation, being less than a mile is already an assumption. Further explanation of this is coming. (T)

Fourth Interpretation: The rare narration relates to the situation where he does not know the distance. The presentation of its argument is that there is one thing that makes Tayammum permissible and one thing that forbids it. The correct view is that there should be knowledge of the distance. The forbidding factor is the knowledge that water will be available at the end of the time. And it is assumed that the permitting factor (i.e., distance) is unknown here. If the forbidding factor were certain, then Tayammum would definitely not be permissible for him because there is no fear of missing the prayer. And here, the forbidding factor is not certain, it is suspected. Since suspected is also like certain, even then Tayammum is not permissible and delaying the prayer is obligatory. The gist of the answer of Zahir al-Riwayah is that one thing makes Tayammum valid and one thing forbids Tayammum. The correcter is...

ज़ाहिर (प्रसिद्ध मत) के अनुसार, यदि दूरी एक मील या उससे अधिक है, तो यह पूर्णतः वैध है, अन्यथा पूर्णतः वैध नहीं है। यह स्पष्ट किया गया है कि पंथ (मज़हब) का रुख यह है कि जब निकटता का अनुमान हो तो तैयम्मुम अमान्य है, जैसा कि इस अध्याय के अंत में स्पष्ट किया गया है। तो निकटता के ज्ञान के बावजूद, इसे केवल इसलिए कैसे वैध कहा जा सकता है कि पानी मिलने का निश्चित विश्वास नहीं है? इसका अर्थ यह नहीं है कि वह पानी मिलने की उम्मीद करता है क्योंकि वह सोचता है कि पानी एक मील से कम की दूरी पर है; क्योंकि इस व्याख्या में एक मील से कम होना तो पहले से ही माना गया है, और इसकी विस्तृत व्याख्या आगे आएगी।

चौथा: दुर्लभ (रिवायत) उस स्थिति के बारे में है जब दूरी का ज्ञान न हो। इसके प्रमाण का तर्क यह है कि तैयम्मुम के लिए एक अनुमति देने वाला कारक है और एक रोकने वाला। जहाँ तक अनुमति देने वाले कारक का प्रश्न है, वह है दूरी की अधिकता का ज्ञान। और जहाँ तक रोकने वाले कारक का प्रश्न है, वह यह ज्ञान है कि समय के अंत में पानी मिल जाएगा। यहाँ अनुमति देने वाला कारक अनुमानतः अज्ञात है। यदि रोकने वाला कारक निश्चित होता, तो तैयम्मुम निश्चित रूप से वैध नहीं होता क्योंकि (नमाज़) छूट जाने का कोई डर नहीं है। यहाँ यह केवल संदिग्ध है। संदिग्ध भी निश्चित के समान ही माना जाता है, इसलिए यह भी अनुमति योग्य नहीं है और नमाज़ में देरी करना अनिवार्य है। ज़ाहिर के उत्तर का सार यह है कि तैयम्मुम के लिए एक सही करने वाला कारक है और एक रोकने वाला। सही करने वाला कारक पानी की कमी है, जो निश्चित रूप से मौजूद है क्योंकि पानी वास्तव में नहीं है। रोकने वाला कारक समय के अंत में पानी पाने का ज्ञान है, और यह निश्चित नहीं है। भले ही यह संदिग्ध हो, यह निश्चित का विरोध नहीं करता। इसका प्रत्युत्तर यह है कि इसके प्रतिबंध में बनावटीपन है।

समीपता और दूरी में अंतर है, पानी मिलने के विचार की प्रबलता और निश्चितता में अंतर नहीं है, जैसा कि ज़ाहिर अल-रिवाया के तर्क में वर्णित है: कि यदि दूरी एक मील या उससे अधिक है तो तैयम्मुम पूर्णतः जायज़ है अन्यथा पूर्णतः जायज़ नहीं है। दूसरा खंडन यह है कि पंथ का मत यह है कि यदि पानी पास होने की संभावना हो तो तैयम्मुम अमान्य है, जैसा कि इस अध्याय के अंत में स्पष्ट किया गया है। फिर पास होने का ज्ञान होने के बावजूद, किस आधार पर तैयम्मुम को इस वजह से जायज़ कहेंगे कि समय पर पानी मिलने का यकीन नहीं है? इसका मतलब यह नहीं है कि एक मील से कम

होने की संभावना की वजह से उसे पानी मिल जाने का गुमान हुआ, क्योंकि इस संदर्भ में एक मील से कम होना तो कल्पना ही की गई है। इसकी और अधिक व्याख्या आ रही है। (त)

चौथी व्याख्या: दुर्लभ रिवायत उस स्थिति से संबंधित है जब उसे दूरी का पता न हो। इसकी दलील की व्याख्या यह है कि तैयम्मुम को एक चीज़ मुबाह (वैध) करने वाली है और एक चीज़ मना करने वाली है। सही यह है कि दूरी का ज्ञान हो। मना करने वाली चीज़ यह है कि इस बात का इल्म हो कि अंतिम समय में पानी मिल जाएगा, और मान लिया गया है कि मुबीह (यानी दूरी) यहाँ अज्ञात है। और अगर मना करने वाली चीज़ निश्चित हो तो निश्चित रूप से उसके लिए तैयम्मुम जायज़ न होगा क्योंकि नमाज़ छूटने की आशंका नहीं है, और यहाँ मना करने वाली चीज़ निश्चित नहीं है बल्कि संदिग्ध है। संदिग्ध भी निश्चित की ही तरह है तो भी तैयम्मुम की अनुमति नहीं है और नमाज़ में देरी करना अनिवार्य है। और ज़ाहिर अल-रिवाया के जवाब का निचोड़ यह है कि एक चीज़ तैयम्मुम को सही ठहराने वाली है और एक चीज़ तैयम्मुम को मना करने वाली है। सही ठहराने वाली चीज़ यह है...

جلد چہارم فتاوٰی رضویہ في وجه الظاهر فان كان الفصل ميلا او اكثر جاز مطلقا والا لا مطلقا وبان المذهب بطلان التيمم عند ظن القرب كما صرح به اخر هذا الباب فكيف يجيزه مع العلم بالقرب لعدم التيقن بالوجدان وليس معناه ان يظن الوجدان لظنه الماء اقرب من ميل فان كونه اقرب مفروض على هذا المحمل وسيأتي ايضاحه۔ والرابع: ان النادرة فيما اذا جهل الفصل وتقريره دليلها ان للتيمم مبيحاً ومانعاً اما المبيح فالعلم ببعد المسافة واما المانع فالعلم بأنه يجد الماء في اخر الوقت والمبيح ههنا غير معلوم بالفرض والمانع لو كان متيقناً لم يجز له التيمم قطعاً لامن من الفوات وههنا هو مظنون والمظنون كالمتيقن فلا يجوز ايضاً وجب التأخير وحاصل جواب الظاهر ان للتيمم مصححاً ومانعاً فالمصحح العجز عن الماء وهو حاصل قطعاً لان الماء معدوم حقيقة والمانع العلم بوجدانه في اخر الوقت وهو غير متيقن وان كان مظنوناً فلا يعارض المتيقن ورده بأن فيه تمحلا لتقييده

قُرب و بُعد کی تفریق ہے پانی ملنے کے غلبہ ظن و یقین میں تفریق نہیں جیسا کہ یہ اس سے معلوم ہو رہا ہے جو ظاہر الروایہ کی وجہ میں ذکر کیا کہ اگر فاصلہ ایک میل یا زیادہ ہو تو مطلقاً تیمم جائز ہے ورنہ مطلقاً جائز نہیں۔ دوسرا رد یہ ہے کہ مذہب یہ ہے کہ پانی قریب ہونے کا گمان ہو تو تیمم باطل ہے جیسا کہ اس باب کے آخر میں اس کی تصریح فرمائی ہے پھر قریب ہونے کا علم ہونے کے باوجود اس وجہ سے تیمم کیسے جائز کہہ دیں گے کہ وقت میں پانی ملنے کا یقین نہیں۔ یہ معنی نہیں کہ ایک میل سے کم ہونے کے گمان کی وجہ سے اسے پانی مل جانے کا گمان ہوا اس لئے کہ اس محمل میں ایک میل سے کم ہونا تو فرض ہی کیا گیا ہے اس کی مزید توضیح بھی آرہی ہے۔(ت) محمل چہارم : روایتِ نادرہ اس صورت سے متعلق ہے جب اسے فاصلہ معلوم نہ ہو۔ اس کی دلیل کی تقریر یہ ہے کہ تیمم کو ایک چیز مباح کرنے والی ہے اور ایک چیز ممنوع کرنے والی ہے۔ صحیح یہ ہے کہ بُعد مسافت کا علم ہو۔ مانع یہ ہے کہ اس بات کا علم ہو کہ آخر وقت میں

پانی مل جائے گا اور فرض کیا گیا ہے کہ مبیح (یعنی بعد مسافت) یہاں نامعلوم ہے۔ اور مانع اگر متیقن ہو تو قطعاً اس کیلئے تیمم جائز نہ ہوگا اس لئے کہ فوتِ نماز کا اندیشہ نہیں اور یہاں مانع متیقن نہیں مظنون ہے۔ مظنون بھی متیقن ہی کی طرح ہے تو بھی تیمم کا جواز نہیں اور نماز مؤخر کرنا واجب ہے۔ اور ظاہر الروایہ کے جواب کا حاصل یہ ہے کہ ایک چیز تیمم کو صحیح قرار دینے والی ہے اور ایک چیز تیمم کو ممنوع کرنے والی ہے۔ مصحح یہ ہے

Fatawa Rizvia Volume IV

[Right Column - Urdu Translation/Commentary] ...that he is unable to get water. And this is definitely achieved because the water is physically non-existent. And the hindrance is the knowledge of finding water at the end of the time, and this is not certain even if it is suspected, so it will not oppose the certain. The rebuttal to this is that it involves pretension because it restricts the absolute narrations with such a restriction that has no hint in the words of any of the two parties. And that restriction is being unaware of the state of the proximity and distance of the distance. And also because it is very far-fetched to understand this from the expression. The second rebuttal is that this objection will necessarily follow that 'Zahir al-Riwayah' has differentiated between suspicion and certainty here, despite maintaining equality between the two in the matters of proximity and distance, such that if there is a suspicion of proximity, it is not permissible, and if there is a suspicion of distance, it is permissible, just as the ruling of knowledge and certainty is in both cases. So the problem remains in any case. This is the clarification of Sheikh Abdul Aziz's (may Allah's mercy be upon him) words. And it has become known that on every ground, the discourse is directed towards the justification of 'Zahir al-Riwayah' because the problem lies in it. Just as Imam Kamaluddin ibn al-Humam followed this path. Imam al-Ayni mentioned this entire discourse of 'al-Inayah' in 'al-Binayah'. The only difference is that he changed Imam Abdul Aziz al-Bukhari's phrase "but if his overwhelming suspicion is that, then it is likewise according to them both" (meaning: if he has a predominant suspicion of that, then it is the same according to the two Sheikhs) to "but". He made the reference point the proximity of distance.

And he made it his summary even though he did not leave out anything from it. It seems that Imam al-Ayni (may Allah's mercy be upon him) initially intended to summarize but then thought it better to present the entire discourse. (T)

[Left Column - Original Arabic Text] He applied the narrations with a restriction that was not alluded to in the words of anyone from the two parties, which is ignorance of the state of distance in terms of proximity and distance. And because it is far from being understood from the phrasing, and because it necessitates that the manifest narration (Zahir al-Riwayah) distinguished here between suspicion (zann) and certainty (yaqin) even though it treated them equally in the two cases of proximity and distance. So it is not permissible with a suspicion of proximity, and it is permissible with a suspicion of distance, like knowledge in both cases. Thus, the problem remains in every case. This is the clarification of his speech, may Allah

Almighty have mercy on him. And you have known that speech, may Allah Almighty have mercy on him, in every aspect is only directed towards the justification of the manifest narration. So in it is the problem as pursued by Imam al-Kamal. And Imam al-Ayni mentioned in 'Al-Binayah' the words of 'Al-'Inayah' in its entirety. However, he changed the words of Imam al-Bukhari "but if his overwhelming suspicion is that, then it is likewise according to them both" or "if his overwhelming suspicion is the lack of distance, then it is likewise according to them both" (End). So he made the reference point the proximity of the distance.

[Footnote]: He made it his summary even though he did not omit anything from it. It was as if he, may Allah Almighty have mercy on him, intended to summarize it and then full transcription appeared better to him. (From him, may He forgive him.) (M)

[Footer]: 1 Al-Binayah, known as Ayni Sharh al-Hidayah, Chapter of Tayammum, Maktabah al-Imdadiyyah, Makkah al-Mukarramah, 1/327. Page 97 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

[दायां स्तंभ - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] ...कि वह पानी पाने में असमर्थ है। और यह निश्चित रूप से प्राप्त है क्योंकि पानी भौतिक रूप से विद्यमान नहीं है। और बाधा यह है कि समय के अंत में पानी मिलने का ज्ञान हो, और यह निश्चित नहीं है भले ही इसकी संभावना (गुमान) हो, इसलिए यह निश्चित ज्ञान का विरोध नहीं करेगा। इस पर प्रतिवाद यह है कि इसमें बनावट है क्योंकि यह बिना किसी संकेत के रिवायतों (वर्णनों) को प्रतिबंधित करता है। और वह प्रतिबंध यह है कि दूरी की निकटता और दूरी की स्थिति का पता न हो। और इसलिए भी कि शब्दों से यह समझना बहुत दूर की बात है। दूसरा प्रतिवाद यह है कि यह आपत्ति आवश्यक रूप से आएगी कि 'ज़ाहिर अर-रिवायत' ने यहाँ संदेह (ज़न) और निश्चितता (यक़ीन) के बीच अंतर किया है, जबकि निकटता और दूरी के मामलों में दोनों के बीच समानता रखी है, कि यदि निकटता का संदेह हो तो यह जायज़ नहीं है और यदि दूरी का संदेह हो तो यह जायज़ है, ठीक वैसे ही जैसे दोनों मामलों में ज्ञान और निश्चितता का आदेश है। तो समस्या किसी भी स्थिति में बनी रहती है। यह शेख अब्दुल अज़ीज़ (रहमतुल्लाह अलैह) के शब्दों का स्पष्टीकरण है। और यह स्पष्ट हो चुका है कि हर आधार पर चर्चा 'ज़ाहिर अर-रिवायत' के औचित्य की ओर ही निर्देशित है क्योंकि समस्या उसी में है। जैसा कि इमाम कमालुद्दीन इब्न अल-हुमाम इसी मार्ग पर चले हैं। इमाम अल-ऐनी ने 'अल-बिनाया' में 'अल-इनाया' के इस पूरे कथन का उल्लेख किया है। अंतर केवल इतना है कि उन्होंने इमाम अब्दुल अज़ीज़ बुखारी के वाक्यांश "लेकिन यदि उसे इसका प्रबल संदेह हो तो दोनों शेखों के निकट यही आदेश है" को बदलकर "लेकिन" लिख दिया। उन्होंने निर्देश की वस्तु दूरी की निकटता को बनाया।

और उन्होंने इसे उसका सारांश कहा जबकि इसमें से कुछ भी कम नहीं किया गया। ऐसा लगता है कि इमाम अल-ऐनी (रहमतुल्लाह अलैह) का पहले सारांश देने का इरादा था फिर विचार आया कि पूरा कथन ही प्रस्तुत कर दिया जाए। (त)

[बायां स्तंभ - मूल अरबी पाठ] उन्होंने रिवायतों को एक ऐसे प्रतिबंध के साथ लागू किया जिसका संकेत दोनों पक्षों में से किसी के शब्दों में नहीं था, जो कि निकटता और दूरी के मामले में दूरी की स्थिति से अनभिज्ञता है। और क्योंकि वाक्यांश से यह समझना दूर की बात है, और क्योंकि यह आवश्यक बनाता है कि स्पष्ट वर्णन (ज़ाहिर अर-रिवायत) ने यहाँ संदेह (ज़न) और निश्चितता (यक़ीन) के बीच अंतर किया है जबकि इसने निकटता और दूरी के दो मामलों में उन्हें समान माना है। इसलिए निकटता के संदेह के साथ यह जायज़ नहीं है, और दूरी के संदेह के साथ यह जायज़ है, जैसा कि

दोनों मामलों में ज्ञान है। अतः समस्या हर हाल में बनी रहती है। यह उनके भाषण का स्पष्टीकरण है, अल्लाह उन पर दया करे। और आप जान चुके हैं कि वह भाषण, अल्लाह उन पर दया करे, हर पहलू से केवल स्पष्ट वर्णन के औचित्य की ओर निर्देशित है। तो इसमें समस्या है जैसा कि इमाम अल-कमाल ने अपनाया है। और इमाम अल-ऐनी ने 'अल-बिनाया' में 'अल-इनाया' के शब्दों का पूरा उल्लेख किया है। हालांकि, उन्होंने इमाम अल-बुखारी के शब्दों को बदल दिया "लेकिन यदि उसका प्रबल संदेह वह है, तो उनके निकट भी वैसा ही है" या "यदि उसका प्रबल संदेह दूरी की कमी है, तो उनके निकट वही है" (समाप्त)। तो उन्होंने निर्देश की वस्तु दूरी की निकटता को बनाया।

[पाद टिप्पणी]: उन्होंने इसे अपना सारांश बनाया भले ही उन्होंने इसमें से कुछ भी नहीं छोड़ा। ऐसा लग रहा था कि वे, अल्लाह उन पर दया करे, इसे संक्षेप में प्रस्तुत करना चाहते थे और फिर पूर्ण प्रतिलेखन उन्हें बेहतर लगा। (उनकी ओर से, वह उन्हें क्षमा करे।) (म)

[फुटर]: 1 अल-बिनाया, जो ऐनी शरह अल-हिदाया के नाम से जानी जाती है, तयम्मुम का अध्याय, मकतबा अल-इमदादिया, मक्का अल-मुकर्रमा, 1/327। पृष्ठ 97/761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

[دائیں جانب - اردو وضاحت و ترجمہ] کہ پانی سے عاجز ہو۔ اور یہ قطعاً حاصل ہے اس لئے کہ پانی حقیقۃً معدوم ہے۔ اور مانع یہ ہے کہ آخر وقت میں پانی ملنے کا علم ہو اور یہ یقینی نہیں اگرچہ مظنون ہے تو یہ متیقن کے معارض نہ ہوگا۔ اس پر رَد یہ ہے کہ اس میں تکلف ہے اس لئے کہ اس میں اطلاق روایات کی ایسی قید سے تقیید ہے جس کا فریقین میں سے کسی کے کلام میں کوئی اشارہ بھی نہیں۔ اور وہ یہ قید ہے کہ مسافت کے قرب و بعد کی حالت کا پتا نہ ہو۔ اور اس لئے بھی کہ عبارت سے یہ سمجھ میں آنا بہت بعید ہے۔ اس پر دوسرا رد یہ ہے کہ یہ اعتراض لازم آئے گا کہ ظاہر الروایہ نے یہاں تو ظن ویقین کے درمیان فرق رکھا باوجودیکہ ان دونوں کے درمیان قرب و بعد کے مسئلوں میں برابری رکھی کہ قرب کا ظن ہو تو جائز نہیں اور بعد کا ظن ہو تو جائز ہے ویسے ہی جیسے کہ دونوں صورتوں میں علم ویقین کا حکم ہے۔ تو اشکال بہر حال باقی رہا۔ یہ شیخ عبدالعزیز رحمہ اللہ تعالیٰ کے کلام کی توضیح ہے۔ اور یہ معلوم ہو چکا کہ ہر وجہ پر کلام ظاہر الروایہ کی تعلیل کی جانب ہی متوجہ ہے کیونکہ اشکال اسی میں ہے۔ جیسا کہ اسی راہ پر امام کمال الدین ابن الہمام چلے ہیں۔ امام عینی نے بنایہ میں عنایہ کا یہ کلام مکمل ذکر کیا۔ صرف یہ فرق ہے کہ امام عبدالعزیز بخاری کی عبارت "اما لو غلب علی ظنه ذلك فكذلك عندهما" (اگر اسے اس پر غلبہ ظن ہو تو بھی شیخین کے نزدیک یہی حکم ہے) کو بدل کر یہ لکھ دیا "اما"۔ مشار الیہ قرب مسافت کو بنا دیا۔

اور انہوں نے اسے اس کا ملخص قرار دیا باوجودیکہ اس میں سے کچھ بھی کم نہ کیا ایسا معلوم ہوتا ہے کہ امام عینی رحمہ اللہ تعالیٰ کا پہلے تلخیص کا ارادہ تھا پھر یہ خیال ہوا کہ پورا کلام ہی بیان کردیں۔ (ت)\n [بائیں جانب - اصل عربی عبارت] اطلق الروايات بقيد لا اشارت اليه في كلام

احد من الفريقين وهو الجهل بحال المسافة قرباً و بعداً ولانه بعيد الانفهام من العبارة وبانه يلزم ان ظاہر الرواية فرقت ههنا بين الظن واليقين مع انها سوت بينهما في مسألتى القرب والبعد فلا يجوز مع ظن القرب ويجوز مع ظن البعد كالعلم في الفصلين فبقى الاشكال على كل حال هذا توضيح كلامه رحمه الله تعالى وقد علمت ان الكلام رحمه الله تعالى وقد علمت ان الكلام على كل وجه انما يتوجه الى تعليل ظاہر الرواية ففيه الاشكال كما سلكه الامام الكمال * وذكر الامام العينى فى البناية كلام العناية هذا برمته عه غيرانہ غير قول الامام البخارى اما لو غلب على ظنه ذلك فكذلك عندهما او غلب على ظنه عدم بعد المسافة فذلك عندهما ١ اهـ فجعل المشار اليه قرب المسافة۔

عه وجعله ملخصه مع انه لم يخرم منه شيئا وكأنه رحمه الله تعالى اراد تلخيصه ثم بداله الاستيفاء ١٢ منه غفرلہ۔ (م)

[حاشيہ]: 1 البنايہ المعروف عينى شرح ہدايہ باب التيمم المكتبۃ الامداديتہ مكہ المكرمہ ٣٢٧/١

Fatawa Rizwia - Volume Four

Main Text (Translation from Arabic and Urdu components):

I say: And this is absolutely false, for indeed when proximity is suspected, delaying (the prayer) is mandatory by consensus; the books of the school are filled with this because it is a rare narration and the school's position is contrary to it. Rather, the indication of the presence of water at the end of the time is that if this prevails in his estimation, then it is the same for both of them, as is not hidden. And it has been clarified by his statement in 'Jawab al-Zahir': 'It is not removed except by a certainty like it,' which is the certainty of the presence of water at the end of the time. This is what 'Al-Zahir' stipulated as certainty according to what the reasoning of 'Al-Hidayah' requires, while the 'Nadirah' (rare narration) sufficed with a preponderance of opinion. So that was what was referred to by his saying: 'If his opinion prevails over that.' Know this. Then he said, meaning Imam al-Ayni: 'And the author of al-Dirayah also mentioned all of this, quoting his teacher. And the wonder is at the teacher (meaning Imam al-Bukhari) as he did not mention a way out of it, despite being among the great researchers. Similarly, the authors of al-Dirayah and al-Akmal mentioned this and remained silent about it. So we say, and with Allah is success, we mention a way by which this problem is resolved, and it is that it is considered...'

Side Commentary (Urdu): If he has a preponderance of belief that the distance is not great, then according to them (the two Sheikhs), the ruling is the same. (Note: It appears from this change that they understood the word 'dhalik' [that] in Imam Bukhari's statement as referring to 'proximity of distance').

I say: While this idea is absolutely false, because if the proximity of distance is suspected, it is mandatory by consensus to delay the prayer. The books of the school are full of this statement. It is not that this is some rare narration and the original position of the school is against it. The correct view is that 'dhalik' refers to 'the presence of water at the end of the time'. That is, if he has a preponderance of belief in it, then according to the two Sheikhs, the ruling is the same. This is not hidden. And they have clarified this under 'Jawab al-Zahir' in this statement: 'Similarly, it will not be removed without certainty, and there is certainty of the availability of water at the end of time.' This is the same point where the condition of having certainty was found in 'Zahir al-Riwayah' according to the requirement of the reasoning in 'Hidayah', and in the 'Nadirah' narration, only preponderance of opinion was sufficient. So his statement 'if his opinion prevails over that' points towards this. This

should be known. Then Imam Ayni writes: 'The author of Dirayah has also stated all this, quoting from his teacher. And it is surprising that the teacher, meaning Imam Bukhari, that...'

Footnote: 1. Ayni, Sharh al-Hidayah, Chapter of Tayammum, Maktabah al-Imdadiyyah, Makkah al-Mukarramah, 7/32.

फ़तावा रज़विया - जिल्द चार

मुख्य पाठ:

मैं कहता हूँ: और यह पूरी तरह से गलत है, क्योंकि जब निकटता का संदेह हो, तो सर्वसम्मति से (नमाज़ में) देरी करना अनिवार्य है; मज़हब की किताबें इससे भरी हुई हैं क्योंकि यह एक दुर्लभ रिवायत है और मज़हब की स्थिति इसके विपरीत है। बल्कि, समय के अंत में पानी की मौजूदगी का संकेत यह है कि यदि उसके विचार में यह प्रबल हो, तो उन दोनों के लिए भी वैसा ही है, जैसा कि छिपा नहीं है। और उसने 'जवाब अल-ज़ाहिर' में अपने इस कथन से इसे स्पष्ट कर दिया है: 'यह उसी तरह के निश्चित ज्ञान (यक़ीन) के बिना नहीं हटेगा,' जो समय के अंत में पानी की मौजूदगी का यक़ीन है। यही वह चीज़ है जिसे 'ज़ाहिर' ने यक़ीन के रूप में शर्त दी है, जैसा कि 'अल-हिदाया' का तर्क मांगता है, जबकि 'नादिरा' (दुर्लभ रिवायत) ने राय की प्रबलता को ही पर्याप्त माना। तो यह वही था जिसकी ओर उनके इस कथन ने संकेत किया: 'यदि उनकी राय उस पर प्रबल हो।' इसे जान लो। फिर उन्होंने कहा, यानी इमाम अल-ऐनी ने: 'और अल-दिराया के लेखक ने भी अपने शिक्षक से उद्धृत करते हुए यह सब उल्लेख किया है। और आश्चर्य शिक्षक (यानी इमाम अल-बुखारी) पर है क्योंकि उन्होंने इससे बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं बताया, जबकि वे महान शोधकर्ताओं में से हैं। इसी तरह, अल-दिराया और अल-अकमल के लेखकों ने इसका उल्लेख किया और इस पर चुप रहे। तो हम कहते हैं, और अल्लाह की मदद से, हम एक ऐसा तरीका बताते हैं जिससे यह समस्या हल हो जाती है, और वह यह है कि इसे माना जाता है...'

पार्श्व टिप्पणी (उर्दू से अनुवादित): यदि उसे इस बात का प्रबल संदेह हो कि दूरी अधिक नहीं है, तो उन दोनों (शेखैन) के यहाँ भी यही हुक्म है। (नोट: इस बदलाव से पता चलता है कि उन्होंने इमाम बुखारी के कथन में 'ज़ालिक' (वह) शब्द का इशारा 'दूरी की निकटता' की ओर समझा)।

मैं कहता हूँ: जबकि यह विचार पूरी तरह से गलत है, क्योंकि यदि दूरी की निकटता का अनुमान हो, तो सर्वसम्मति से नमाज़ में देरी करना वाजिब है। मज़हब की किताबें इस बयान से भरी हुई हैं। ऐसा नहीं है कि यह कोई दुर्लभ रिवायत है और मूल मज़हब इसके खिलाफ है। सही यह है कि 'ज़ालिक' का इशारा 'समय के अंत में पानी की मौजूदगी' की ओर है। यानी अगर उसे इसका प्रबल संदेह हो, तो भी शेखैन के नज़दीक यही हुक्म है। यह कुछ छिपा हुआ नहीं है। और उन्होंने इसे 'जवाब ज़ाहिर-उर-रिवाया' के तहत अपने इस बयान में स्पष्ट भी कर दिया है कि 'वैसे ही यक़ीन के बिना ज़ायल न

होगा और आखिरी वक्त में पानी की दस्तयाबी का यक़ीन है'। यही वह बात है जिसका यक़ीन होने की शर्त 'ज़ाहिर-उर-रिवाया' में 'हिदाया' के तर्क की आवश्यकता के अनुसार पाई गई और 'रिवायत-ए-नादिरा' में केवल प्रबल संदेह (ग़ल्बा-ए-ज़न) पर ही संतोष किया गया। तो उनके कथन 'अगर उसे इस पर प्रबल संदेह हो' में इशारा इसी की ओर था। यह ज्ञात रहना चाहिए। फिर इमाम ऐनी लिखते हैं: 'यह सब साहिब-ए-दिराया ने भी अपने शेख से नक़्ल करते हुए बयान किया है। और शेख यानी इमाम बुखारी पर ताज्जुब है कि...'

पादलेख: 1. ऐनी, शरह अल-हिदाया, बाब अल-तयम्मुम, मकतबा अल-इमदादिया, मक्का अल-मुकर्रमा, 7/32.

اقول: وھو (۱) باطل قطعاً فان عندظن القرب یجب التأخیر اجماعاً طفحت بذلك کتب المذھب لانھا روایة نادرة والمذھب خلافھا بل الاشارة الی وجود الماء فی آخر الوقت انه ان غلب ھذا علی ظنه فکذلك عندھما کما لایخفی وقد (۲) اوضحه بقوله فی جواب الظاھر لایزول الابیقین مثله وھو التیقن بوجود الماء فی آخر الوقت اھ فھذا ھو الذی شرط الظاھر تیقنه علی ما یقتضیه تعلیل الھدایة واکتفت النادرة بغلبته علی الظن فکان ھو المشار الیه بقوله ان غلب علی ظنه ذلك فاعلم ذلك ثم قال اعنی الامام العینی وقد ذکر ھذا کله صاحب الدرایة ایضاً ناقلا عن شیخه والعجب من الشیخ (یرید الامام البخاری) حیث لم یذکر وجه التخلص منه مع کونه من المحققین الکبار وکذا صاحب الدرایة والاکمل ذکرا ھذا وسکتا علیه فنقول وباللہ التوفیق نذکر وجھاً ینحل منه ھذا الاشکال وھو انه یعتبر

لوغلب علی ظنه عدم بعد المسافة فذلك عندھما (اگر اسے مسافت بعید نہ ہونے کا غلبہ ظن ہو تو بھی شیخین کے یہاں یہی حکم ہے۔ ت) اس تبدیلی سے معلوم ہوتا ہے کہ انہوں نے امام بخاری کی عبارت میں لفظ "ذلك" کا اشارہ "قرب مسافت" کی جانب سمجھا۔(ت) اقول : جبکہ یہ خیال قطعاً باطل ہے اس لئے کہ اگر قُرب مسافت کا گمان ہو تو بالاجماع نماز مؤخر کرنا واجب ہے اس بیان سے کتب مذہب بھری ہوئی ہیں ایسا نہیں کہ یہ کوئی نادر روایت ہے اور اصل مذہب اس کے برخلاف ہے۔ صحیح یہ ہے کہ "ذلک" کا اشارہ وجود الماء فی آخر الوقت (آخر وقت میں پانی کی دستیابی) کی طرف ہے کہ اگر اسے اس کا غلبہ ظن ہو تو بھی شیخین کے نزدیک یہی حکم ہے یہ کچھ پوشیدہ نہیں۔ اور اسے انہوں نے جواب ظاہر الروایہ کے تحت اپنی اس عبارت میں واضح بھی کردیا ہے کہ "ویسے ہی یقین کے بغیر زائل نہ ہو گا اور آخر وقت میں پانی کی دستیابی کا یقین ہے"۔ یہی وہ بات ہے جس کا یقین ہونے کی شرط ظاہر الروایہ میں تعلیلِ ہدایہ کے اقتضا کے

مطابق پائی گئی اور روایتِ نادرہ میں صرف غلبہ ظن پر اکتفا ہوئی تو ان کی عبارت "ان غلب علی ظنہ ذلک" (اگر اسے "اس کا" غلبہ ظن ہو) میں اشارہ اسی کی طرف ہوا۔ یہ معلوم رہنا چاہیے۔ پھر امام عینی لکھتے ہیں : "یہ سب صاحب درایہ نے بھی اپنے شیخ سے نقل کرتے ہوئے بیان کیا ہے۔ اور شیخ یعنی امام بخاری پر تعجب ہے کہ"

1 عینی شرح الہدایہ باب التیم المکتبۃ الامدادیہ مکہ المکرمہ ۷ / ۳۲ Page 98 of 761

Fatawa Razawiya Volume Four

Hope for water or lack of hope for it due to reasons other than distance. For instance, if there are moist clouds in the sky and one strongly suspects it will rain and they will be able to get water at the end of the time, then delaying the prayer is recommended (Mustahabb) according to Zahir al-Riwayah. However, in other than the Riwayah al-Usul, it is obligatory (Wajib), as it would be if water's presence were certain. Or water is far away, but someone has been sent to fetch it, and one strongly suspects, based on visible signs, that the messenger will return by the end of the time. Or the water is in a well but there is no equipment for drawing it, yet one strongly suspects it will be obtained by the end of the time. Or the water is near but its location is unknown, or there is the presence of the price to buy the water. 1 —

(I say: This is how it appears in the defective printed edition, and there is an omission. The phrasing should likely be: "and its location is unknown, and he is unable to search for it in every direction due to weakness. If he knew its location, he could have gone to a specific direction. He did go to one direction, for example, but did not find it and returned exhausted, yet he still strongly suspects...")

They did not provide a way out of this dilemma, even though they are among the great researchers. Similarly, the author of al-Diraya and Akmal al-Din also mentioned it and chose to remain silent. So now we say, and success is from Allah, we state a case that resolves this issue. That is, hope and lack of hope for water are due to factors other than the proximity or distance of travel. For example: (1) There are moist clouds in the sky and one has a strong suspicion that it will rain and at the end of the time he will have power over water. For this, delaying the prayer is recommended according to Zahir al-Riwayah and obligatory according to other than the Riwayah al-Usul, just as it is obligatory in the case of certainty of finding water. (2) Water is far away but someone has been sent to bring water, and there is a strong suspicion that the person sent will be present at the end of the time. There are some signs of this that are apparent to him. (3) Water is inside a well. He does not have the equipment to extract it, but there is a strong suspicion that it will be obtained by the end of the time. (4) Water is near but he doesn't know its location, or the existence of the price with which to buy water. (T)

(I say: In the defective printed edition, it is like this. Something has been omitted. It is thought that the phrasing will be: "and he does not know its location. And since he is afflicted with weakness, he cannot search in every direction. If he knew the location

of the water, he could go in a fixed direction. He went to one side (for instance) but did not find it,")

1 Meaning Sharh al-Hidayah, Chapter of Tayammum, al-Maktabah al-Imdadiyyah, Makkah al-Mukarramah 1/328 Page 99 of 761

दूरी की निकटता या दूरी के अलावा अन्य कारणों से पानी की आशा या निराशा। उदाहरण के लिए, यदि आकाश में नम बादल हों और उसे पूरा विश्वास हो कि वर्षा होगी और वह समय के अंत में पानी प्राप्त करने में सक्षम होगा, तो ज़ाहिर अल-रिवायत के अनुसार नमाज़ में देरी करना मुस्तहब (पसंदीदा) है। हालाँकि, रिवायत अल-उसूल के अलावा अन्य में यह वाजिब (अनिवार्य) है, ठीक वैसे ही जैसे पानी की निश्चितता होने पर होता है। या पानी दूर है, लेकिन किसी को पानी लाने के लिए भेजा गया है, और स्पष्ट संकेतों के आधार पर यह प्रबल विश्वास है कि भेजने वाला समय के अंत तक लौट आएगा। या पानी कुएं में है लेकिन उसे निकालने के लिए कोई उपकरण नहीं है, फिर भी प्रबल विश्वास है कि समय के अंत तक उपकरण मिल जाएगा। या पानी पास ही है लेकिन उसका स्थान ज्ञात नहीं है, या पानी खरीदने के लिए मूल्य उपलब्ध है। 1 —

(लेखक कहते हैं: दोषपूर्ण मुद्रित संस्करण में यह इसी तरह है, और इसमें कुछ छूट गया है। वाक्यांश संभवतः इस प्रकार होना चाहिए: "और उसका स्थान ज्ञात नहीं है, और वह अपनी दुर्बलता के कारण हर दिशा में खोज नहीं कर सकता। यदि उसे पानी का स्थान ज्ञात होता, तो वह एक निश्चित दिशा में जा सकता था। वह एक तरफ (उदाहरण के लिए) गया भी, लेकिन उसे मिला नहीं और वह थक कर वापस आ गया, फिर भी उसे प्रबल विश्वास था...")

उन्होंने इस दुविधा से निकलने का रास्ता नहीं बताया, हालाँकि वे बड़े शोधकर्ताओं में से हैं। इसी प्रकार दिराया और अकमल अल-दीन के लेखक ने भी इसका उल्लेख किया और मौन रहना ही उचित समझा। अब हम कहते हैं, और सफलता अल्लाह से है, हम एक ऐसी स्थिति बताते हैं जिससे यह समस्या हल हो जाए। वह यह है कि पानी की आशा और निराशा दूरी के निकट या दूर होने के अलावा अन्य कारणों से भी होती है। उदाहरण के लिए: (1) आकाश में नम बादल और नमाज़ के समय के अंत तक वर्षा होने का प्रबल विश्वास और वह पानी पर सक्षम हो जाएगा। इसके लिए ज़ाहिर अल-रिवायत में नमाज़ में देरी करना मुस्तहब है और रिवायत अल-उसूल के अलावा अन्य में वाजिब है, जैसे पानी मिलने के निश्चित होने की स्थिति में वाजिब है। (2) पानी दूर हो लेकिन किसी ऐसे व्यक्ति को भेजा गया है जो उसके लिए पानी भर लाए और उसे प्रबल विश्वास है कि जिसे भेजा है वह समय के अंत में उपस्थित हो जाएगा। इसके कुछ ऐसे संकेत हैं जो उस पर स्पष्ट हैं। (3) पानी कुएं के अंदर है। उसके पास निकालने का सामान नहीं है लेकिन प्रबल विश्वास है कि समय के अंत में मिल जाएगा।

(4) पानी पास ही है लेकिन उसे उसकी जगह मालूम नहीं, या ऐसे मूल्य का अस्तित्व जिससे पानी खरीदे। (त)

(लेखक कहते हैं: मुद्रण के दोषपूर्ण संस्करण में यह इसी तरह है। इसमें कुछ छूट गया है। विचार है कि वाक्यांश इस प्रकार होगा: "और उसे उसकी जगह मालूम नहीं। और चूंकि उसे कमजोरी है इसलिए वह हर तरफ तलाश नहीं कर सकता। अगर उसे पानी की जगह मालूम होती तो एक निश्चित दिशा में जा सकता था। एक तरफ (मसलन) गया भी मगर उसे मिला नहीं,")

1 अर्थात शराह अल-हिदाया, तैयमुम का अध्याय, अल-मकतब अल-इमदादिया, मक्का अल-मुकर्रमा 1/328 पेज 99 of 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

رجاء الماء وعدم رجائہ باسباب أخر غیر بعد المسافۃ او قربہا وھو ان یکون فی السماء غیم رطب وغلب علی ظنہ انہ یمطر ویقدر علی الماء فی آخر الوقت فانہ یستحب لہ التأخیر فی ظاہر الروایۃ ویجب علیہ فی غیر روایۃ الاصول کمالو تحقق بوجود الماء او یکون الماء بعیدا لکن ارسل من یستقی لہ وغلب علی ظنہ حضور من ارسلہ فی اخر الوقت بائمارات ظہرت لہ او کان الماء فی بئر ولم تکن لہ اٰلۃ الاستقاء لکن غلب علی ظنہ وجدانہ فی اخر الوقت او کان الماء بقرب منہ ولم یعلم مکانہ وجود ثمن یشتری بہ الماء 1 -

(اقول: ھکذا فی نسخۃ الطبع السقیمۃ وفیہ سقط وکان العبارۃ ھکذا ولم یعلم مکانہ لایستطیع طلبہ فی کل جھۃ لما بہ من ضعف ولو علم مکانہ لامکنہ الذھاب الی جھۃ معینۃ وقد ذھب الی جھۃ مثلا فلم یجدہ فرجع وھو حسیر وغلب علی ظنہ)

انہوں نے اس اشکال سے چھٹکارے کی صورت بیان نہ کی، حالانکہ وہ کبار محققین میں شامل ہیں۔ اس طرح صاحب درایہ اور اکمل الدین نے بھی اسے ذکر کیا اور اس پر سکوت ہی اختیار کیا۔ تو اب ہم کہتے ہیں اور خدا ہی سے توفیق ہے ہم ایسی صورت بیان کرتے ہیں جس سے یہ اشکال حل ہو جائے۔ وہ یہ کہ پانی کی امید اور عدم امید مسافت کے قرب و بعد کے علاوہ کچھ اور اسباب سے بھی ہوتی ہے۔ مثلا: (1) یہ کہ آسمان میں ابرِ تر ہو اور اسے غالب گمان ہو کہ بارش ہوگی اور آخر وقت میں وہ پانی پر قادر ہو جائے گا۔ تو اس کے لئے ظاہر الروایہ میں نماز مؤخر کرنا مستحب ہے اور غیر روایتِ اصول میں واجب ہے جیسے پانی ملنے کے یقین کی صورت میں واجب ہے۔ (2) پانی دُور ہو لیکن کسی ایسے شخص کو بھیجا ہے جو اس کیلئے پانی بھر لائے اور اسے غالب گمان ہے کہ جسے بھیجا ہے وہ آخر وقت میں حاضر ہو جائے گا۔ اس کی کچھ ایسی علامات ہیں

جو اس پر ظاہر ہیں۔ (3) پانی کنوئیں کے اندر ہے۔ اس کے پاس نکالنے کا سامان نہیں لیکن غالب گمان ہے کہ آخر وقت میں مل جائے گا۔ (4) پانی قریب ہی ہے مگر اسے اس کی جگہ معلوم نہیں ایسے ثمن کا وجود جس سے پانی خریدے۔ (ت)

(اقول : طباعت کے سقیم نسخہ میں اسی طرح ہے۔ اس میں کچھ چھوٹ گیا ہے۔ خیال ہے کہ عبارت اس طرح ہوگی "اور اسے اس کی جگہ معلوم نہیں۔ اور چونکہ اسے ضعف لاحق ہے اس لئے ہر طرف تلاش نہیں کر سکتا۔ اگر اسے پانی کی جگہ معلوم ہوتی تو ایک معین سمت جا سکتا تھا ایک طرف (مثلاً) گیا بھی مگر اسے ملا نہیں،

1 یعنی شرح الہدایہ باب التیمم المکتبۃ الامدادیۃ مکہ المکرمہ ۳۲۸/۱ Page 99 of 761

Volume 4 Fatawa Rizvia

...that someone will reach him at the end of the time who informs him about it or brings it to him, | He returned tired and has a strong belief that at the end of the time, such a or water was being sold and he has no money, but he has a strong belief | person will come who will show the location of water or bring water. (5) Or water in the existence of a price with which to buy water at the end of the time, or something | is being sold and he does not have money, and has a strong belief that similar to that which conveys this meaning, then another copy should be consulted. | he will get the money at the end of the time with which he will buy water. Or any other such He said, or he has something prepared for thirst and has a strong belief in the existence | wording from which this meaning can be conveyed, then reference should be made to of other water not occupied with basic needs, or the water was | another copy. They further state (6) He has water kept to quench thirst near thieves or predatory animals or someone he fears | and has a strong belief that at the end of the time, for himself or his wealth, and has a strong belief in the removal of the obstacle at the end of | other water will be available which will be in excess of the basic need. (7) Water is at a the time. And analogize other reasons based on this. | place where there are thieves or predatory animals or such a person from whom (I say: like darkness whose removal is hoped for and the finding of | he fears for his life or wealth, and has a strong belief that at the end of a lantern, or he is sick or paralyzed or crippled or an elderly person | the time the obstacle will be removed. Analogize other causes upon this requiring someone to | too. (T) perform ablution for him or draw water for him, and his son or servant has gone for a need | (I say: (8) For example, there is darkness which is hoped to dissipate or there is and he hopes for his return at the end of the time, or he is afflicted with a shivering fever | hope of finding a lantern. (9) He is sick, or his hand is paralyzed, or he is crippled, for an hour or two during which he cannot perform ablution or | or is an aged old man. Similarly, other afflictions due to which he ghusl or draw water, and its cessation is hoped for at the end of the time, | needs such a person who can help him perform ablution or draw water for him, or the water belongs to someone else who is absent on some errand and he thinks he will give | and his son or servant has gone for some work. There is hope for it and return at the end of the time, or the person in a state of major ritual impurity does not find | his return at the end of the time. (10) He gets a shivering fever for an hour or two during which he cannot perform ablution or ghusl.

It is hoped that it will go away at the end of the time. (11) The water belongs to another; he is away

---

1 Aini, Sharh al-Hidaya, Chapter of Tayammum, Al-Maktaba al-Imdadiya, Makkah al-Mukarramah, 1/328 **Page 100 of 761**

...कि समय के अंत में उसके पास कोई ऐसा व्यक्ति पहुँचेगा जो उसे इसके बारे में बताएगा या उसके लिए लाएगा, | वह थक कर लौट आया और उसे प्रबल संभावना है कि समय के अंत में ऐसा या पानी बेचा जा रहा था और उसके पास पैसे नहीं थे, लेकिन उसे प्रबल संभावना थी | व्यक्ति आ जाएगा जो पानी की जगह बता देगा या पानी ले आएगा। (5) या पानी समय के अंत में पानी खरीदने के लिए धन की उपलब्धता की, या इसके| बेचा जा रहा है और उसके पास पैसे नहीं हैं और प्रबल संभावना है कि समान कुछ जिससे यह अर्थ निकलता हो, तो दूसरी प्रति देखनी चाहिए। | समय के अंत में उसे धन मिल जाएगा जिससे वह पानी खरीदेगा। या ऐसी ही उन्होंने कहा, या उसके पास प्यास के लिए कुछ रखा है और उसे प्रबल संभावना है | कोई और इबारत (वाक्य) जिससे यह अर्थ व्यक्त हो सके तो किसी दूसरे नुस्खे (प्रति) की अन्य पानी की उपलब्धता की जो बुनियादी ज़रूरतों के लिए न हो, या पानी | ओर रुजू करना चाहिए। आगे फरमाते हैं (6) उसके पास प्यास बुझाने चोरों या हिंसक जानवरों या किसी ऐसे व्यक्ति के पास था जिससे उसे | के लिए पानी रखा हुआ है और प्रबल संभावना है कि समय के अंत में अपनी जान या माल का डर था, और उसे प्रबल संभावना थी कि समय के अंत में बाधा दूर | दूसरा पानी मिल जाएगा जो मूल आवश्यकता से अधिक होगा। (7) पानी ऐसी हो जाएगी। और इसी पर अन्य कारणों का अनुमान लगाएँ। | जगह है जहाँ चोर या दरिंदे हैं या ऐसा आदमी है जिससे उसे (मैं कहता हूँ: जैसे अंधेरा जिसके दूर होने की उम्मीद हो और | अपनी जान या माल के लिए खतरा है और प्रबल संभावना है कि समय के अंत लालटेन मिलने की, या वह बीमार हो या हाथ सुन्न (पक्षाघात) हो या अपंग हो या कोई बहुत बूढ़ा व्यक्ति हो | में बाधा दूर हो जाएगी। इसी पर दूसरे कारणों का अनुमान जिसे ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता हो जो उसे | लगा लो। (त) वज़ू करा दे या उसके लिए पानी निकाले, और उसका बेटा या सेवक किसी काम से गया हो | (मैं कहता हूँ: (8) मिसाल के तौर पर अंधेरा हो जिसके छंट जाने या कोई और समय के अंत में उसकी वापसी की उम्मीद हो, या उसे एक या दो घंटे के लिए कँपकँपी वाली | लालटेन मिल जाने की उम्मीद हो। (9) बीमार है या हाथ सुन्न है या लंगड़ा है बुखार आती हो जिसके दौरान वह वज़ू या | या बहुत अधिक बूढ़ा है। ऐसे ही अन्य कारण जिनकी वजह से उसे ग़ुस्ल (स्नान) नहीं कर सकता या पानी नहीं निकाल सकता, और समय के अंत में उसके खत्म होने की उम्मीद हो, | ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो वज़ू करा दे या उसके लिए पानी निकाल या पानी किसी और का है जो किसी काम से बाहर गया है और उसे लगता है कि वह दे देगा | दे और उसका पुत्र या सेवक किसी काम से गया हुआ है।

समय के अंत और समय के अंत में वापस आ जाएगा, या जुनुब (अशुद्ध व्यक्ति) को नहीं मिलता | में उसकी वापसी की उम्मीद है। (10) बारी से घंटा दो घंटा जाड़ा (बुखार) आता है जिसके होते हुए वज़ू या ग़ुस्ल नहीं कर सकता। उम्मीद है कि समय के अंत में जाता रहेगा। (11) पानी दूसरे का है वह अपने

---

1 ऐनी, शरह अल-हिदाया, बाब अत-तयम्मुम, अल-मकतबा अल-इमदादिया, मक्का अल-मुकर्रमा, 1/328 **पृष्ठ 761 का 100**

انہ یلحقه في آخر الوقت من یخبره اویاتیه به | تھک کر لوٹ آیا اور اسے غالب گمان ہے کہ آخر وقت میں ایسا او کان الماء یباع ولا ثمن عنده ولا غلب علی ظنه | شخص آ جائے گا جو پانی کی جگہ بتا دے یا پانی لے آئے ۔ (۵) یا پانی وجود ثمن یشتری به الماء فی اخر الوقت اونحو | فروخت ہو رہا ہے اور اس کے پاس دام نہیں اور غالب گمان ہے کہ ذلك مما یؤدی هذا المعنی فلتراجع نسخة اخری | آخر وقت میں ثمن مل جائے گا جس سے پانی خریدے گا یا ایسی ہی قال او عنده ما یعد للعطش و غلب علی ظنه وجود | کچھ اور عبارت جس سے یہ معنی ادا ہو سکے تو کسی دوسرے نسخے کی ماء آخر غیر مشغول بالحاجة الاصلیة او کان | مراجعت کرنی چاہئے آگے فرماتے ہیں (۶) اس کے پاس پیاس دور الماء عند اللصوص او السباع او من یخاف منه | کرنے کیلئے پانی رکھا ہوا ہے اور غالب گمان ہے کہ آخر وقت میں علی نفسه او ماله وغلب علی ظنه زوال المانع آخر | دوسرا پانی مل جائے گا جو حاجت اصلیہ سے زائد ہوگا (۷) پانی ایسی الوقت وقس علی هذا اسبابا أخر ۔ | جگہ ہے جہاں چور یا درندے ہیں یا ایسا آدمی ہے جس سے اس کو (اقول: کأن تکون ظلمة یرجو زوالها ووجود | اپنی جان یا مال کے لئے خطرہ ہے اور غالب گمان ہے کہ آخر وقت فانوس او هو مریض او اشل او مقعد او شیخ کبیر | میں مانع دور ہو جائے گا اسی پر دوسرے اسباب کا قیاس الی غیر ذلك من عوارض یحتاج بها الی من | کرلو۔ (ت) یوضئه او یستقی له وذهب ولده او خادمه لحاجة | (اقول: (۸) مثلاً یہ کہ تاریکی ہو جس کے چھٹ جانے یا کوئی ویرجو عوده وأخر الوقت او تعاوده حمی نافضة | فانوس مل جانے کی امید ہو (۹) بیمار ہے یا ہاتھ شل ہے یا لنگڑا ہے ساعة او ساعتین لا یستطیع معها الوضوء او | یا سن رسیدہ بوڑھا ہے۔ ایسے ہی اور عوارض جن کی وجہ سے اس الغسل او الاستقاء ورجا ذها بها في اواخر الوقت | کو ایسے شخص کی ضرورت

ہے جو وضو کرا دے یا اس کیلئے پانی نکال او الماء لغیرہ وھو غائب فی حاجة لہ ویظن عطاء | دے اور اس کا فرزند یا خدمت گار کسی کام سے گیا ہوا ہے۔ آخر وقت ہ وعودہ فی آخر الوقت او لا یجد الجنب او | میں اس کی واپسی کی امید ہے۔ (۱۰) باری سے گھنٹہ دو گھنٹہ جاڑا آتا ہے جس کے ہوتے ہوئے وضو یا غسل نہیں کر سکتا۔ امید ہے کہ اواخر وقت میں جاتا رہے گا (۱۱) پانی دوسرے کا ہے وہ اپنے

---

1 عینی شرح الہدایہ باب التیمم المکتبۃ الامدادیہ مکہ المکرمۃ ۱ / ۳۲۸ **Page 100 of 761**

Fatawa Razvia, Volume 4

(Arabic Section): ...the woman in minor ritual impurity hiding from those present who will leave, or (13) one who cannot go to fetch water due to property or children and hopes for the arrival of a guardian, or (11) water is in the mosque and the person in major ritual impurity (junub) hopes that at the end of the time someone will come to bring it to him. These are seven situations along with the other seven, and all are supported by what is explicitly mentioned by the Imam of the school (Madhhab), that one who was promised a bucket and rope is not obliged to wait. This was mentioned in point number 90. Al-Ayni said: And the author, may Allah the Almighty have mercy on him, did not restrict hope or its absence by the distance or closeness, but kept it general. So it must be interpreted in a way that no objection arises. There is nothing in his words suggesting the restriction the Sheikh made, which would lead to an unavoidable objection. End.

(Urdu Section): Someone is absent for some work. It is expected that he will return by the end of the time and provide water. A woman who is in ritual impurity or without ablution is not getting a screen from the people present, and these people will leave by the end of the time. One cannot go to fetch water because of property or children and hopes that a guardian will arrive by the end of the time. Water is inside the mosque and the person in major ritual impurity hopes that by the end of the time someone will be found to bring it. Along with those seven, these are seven more situations; all are supported by this issue which is explicitly stated by the Imam of the school (may Allah be pleased with him) that "one who was promised a bucket or rope, waiting is not obligatory for him." This issue has passed in number 90. Further, Allama Ayni says: "The author (may Allah the Almighty have mercy on him) did not restrict hope and lack of hope by the closeness and distance of the path but kept it absolute. So it is obligatory to apply it to such a situation upon which no objection occurs. The restriction that Sheikh Abdul Aziz applied has no indication in the author's words, for that objection to occur from which there is no way of escape. End. (T)

(Author's Commentary): I say: May Allah have mercy on Imam Badr al-Din al-Ayni and may He have mercy on us too through his blessings in every coming and going. The detailed rulings he previously provided benefited us in what we previously stated, that only the current state should be considered. This is sufficient for doubt on the issue of promise. As for the solution to the problem he intended, it is very far. Its

explanation is that wherever the mention of distance is repeated in the words of Imam Bukhari, Zahab and Hal-ul-Allama (went and reached)...

---

1. Ayni Sharh al-Hidayah, Chapter of Tayammum, Malik Sons Faisalabad, 1/328. Page 101 of 761

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4

(अरबी खंड): ...मौजूदा लोगों से छिपने वाली बे-वज़ू औरत जो चले जाएँगे, या (13) वह जो माल या बच्चों की वजह से पानी लेने नहीं जा सकता और उसे उम्मीद है कि वक्त के अंत तक कोई निगहबान आ जाएगा, या (11) पानी मस्जिद के अंदर है और जुनुब (बड़ी नापाकी वाला) को उम्मीद है कि वक्त के अंत तक कोई उसे पानी लाकर देने वाला मिल जाएगा। ये उन सात के साथ और सात सूरतें हैं, और इन सब की ताईद उस मसले से होती है जो इमाम-ए-मज़हब से स्पष्ट रूप से वर्णित है कि जिसे डोल और रस्सी का वादा किया गया हो, उस पर इंतज़ार करना वाजिब नहीं है। यह नंबर 90 में गुज़र चुका है। ऐनी ने कहा: और लेखक (अल्लाह उन पर रहम करे) ने उम्मीद या उसके अभाव को दूरी या नज़दीकी से सीमित नहीं किया, बल्कि इसे मुतलक़ (सामान्य) रखा। इसलिए इसे ऐसे तरीके से समझा जाना चाहिए जिस पर कोई आपत्ति न हो। उनके शब्दों में ऐसा कुछ नहीं है जो उस पाबंदी का संकेत दे जो शेख ने लगाई थी, जिससे ऐसी आपत्ति पैदा हो जिसका कोई समाधान न हो। समाप्त।

(उर्दू खंड): कोई काम से गायब है। गुमान है कि आखिर वक्त में वापस आ जाएगा और पानी दे देगा। जुनुब को या बे-वज़ू औरत को हाज़िरीन से आड़ नहीं मिल रही है और आखिर वक्त में ये लोग चले जाएंगे। माल या औलाद की वजह से पानी लाने के लिए जा नहीं सकता और उम्मीद है कि आखिर वक्त में कोई निगहबान आ जाएगा। पानी मस्जिद के अंदर है और जुनुब को उम्मीद है कि आखिर वक्त में कोई लाने वाला मिल जाएगा। इन सात के साथ ये मज़ीद सात सूरतें हैं; सभी की ताईद इस मसले से हो रही है जो इमाम-ए-मज़हब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से सराहतन मन्सूस है कि "जिससे डोल या रस्सी का वादा हुआ उस पर इंतज़ार वाजिब नहीं।" यह मसला नंबर 90 में गुज़र चुका। आगे अल्लामा ऐनी फरमाते हैं: "मुसन्निफ़ रहमतुल्लाही तआला ने उम्मीद और अदम-ए-उम्मीद को मुसाफ़त के क़ुर्ब-ओ-बुअद से मुक़य्यद न किया बल्कि मुतलक़ रखा तो इसे ऐसी सूरत पर महमूल करना वाजिब है जिस पर इश्काल न वारिद हो। शेख अब्दुल अज़ीज़ ने जो क़ैद लगाई उसकी मुसन्निफ़ के कलाम में कोई निशानदेही तो है नहीं कि उन पर वो इश्काल वारिद हो जिससे कोई राह-ए-ख़लास न हो। अहत (त)

(लेखक की टिप्पणी): मैं कहता हूँ: खुदा इमाम बदरुद्दीन ऐनी पर रहमत फरमाए और उनकी बरकत से हम पर भी हर हाज़िरी और वापसी में रहमत फरमाए। उन्होंने साबिक़न जिन जुज़इयात का अफ़ादा फरमाया उससे हमें यह फायदा मिला कि सिर्फ हालत-ए-मौजूदा पर नज़र की जाएगी।

मसला-ए-वादा पर शुबहा के लिए यही काफी है। इश्काल का हल जो उनका मक़सूद था वो तो बहुत दूर है। उसका...

---

1. ऐनी शरह अल-हिदाया, बाब अत-तयम्मुम, मलिक संस फैसलाबाद, 1/328. पेज 101/761

المحدثة سترا عن حضار سیغیبون او ۱۳ کسی کام سے غائب ہے۔ گمان ہے کہ آخر وقت میں واپس لا یستطیع الذهاب للاستقاء لاجل مال او ولد آجائے گا اور پانی دے دے گا جنب کو یا بے وضو عورت کو ویرجو حضور حافظ او ۱۱ الماء في المسجد ویرجو حاضرین سے آڑ نہیں مل رہی ہے اور آخر وقت میں یہ لوگ الجنب ان وجد في آخر الوقت من یاتیه به فهي چلے جائیں گے مال یا اولاد کی وجہ سے پانی لانے کیلئے جا نہیں سبعة مع سبعة ویؤید الکل ماهو منصوص سکتا اور امید ہے کہ آخر وقت میں کوئی نگہبان آجائے گا پانی صریحا من امام المذهب ان من وعد بدلوا مسجد کے اندر ہے اور جنب کو امید ہے کہ آخر وقت میں کوئی ورشاء لا یجب علیه الانتظار وقدم في نمرة ۹۰ لانے والا مل جائے گا ان سات کے ساتھ یہ مزید سات قال العیني والمصنف رحمه الله تعالی لم صورتیں ہیں سبھی کی تائید اس مسئلہ سے ہورہی ہے جو امام یقید الرجاء وعدمه ببعد المسافة وقربها بل مذہب رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے صراحتاً منصوص ہے کہ "جس اطلق فوجب حمله علی وجه لا یرد علیه الاشکال سے ڈول یا رسی کا وعدہ ہوا اس پر انتظار واجب نہیں۔ یہ مسئلہ ولیس في کلامه اشعار بما قید الشیخ حتی یرد نمبر ۹۰ میں گزر چکا۔ آگے علامہ عینی فرماتے ہیں:) "مصنف علیه من الاشکال مالا مخلص له ۱ اھ رحمۃ اللہ تعالیٰ نے امید وعدم امید کو مسافت کے قُرب وبعد سے مقید نہ کیا بلکہ مطلق رکھا تو اسے ایسی صورت پر محمول اقول: رحم الله الامام البدر* ورحمنا به في کل کرنا واجب ہے جس پر اشکال نہ وارد ہو۔ شیخ عبدالعزیز نے جو ورد وصدر * قد انتفعنا بما افاد من الفروع فیما قید لگائی اس کی مصنف کے کلام میں کوئی نشان دہی تو ہے قدمنا ان لانظر الا الی الحالة الراهنة وکفی به نہیں کہ ان پر وہ اشکال وارد ہو جس سے کوئی راہِ خلاص نہ ہو شبهة علی مسألة الوعد اما (۱) ما رام من حل اھ "(ت) اقول: خدا امام بدرالدین عینی پر رحمت

فرمائے اور الاشکال فهیهات بیان ذلك انه حیث ان کی برکت سے ہم پر بھی ہر حاضری و واپسی میں رحمت تکرر ذکر المسافة في کلام الامام البخاری ذهب فرمائے۔ انہوں نے سابقاً جن جزئیات کا افادہ فرمایا اس سے وهل العلامة الی ہمیں یہ فائدہ ملا کہ صرف حالتِ موجودہ پر نظر کی جائے گی۔ مسئلہ وعدہ پر شبہ کیلئے یہی کافی ہے۔ اشکال کا حل جوان کا مقصود تھا وہ تو بہت دُور ہے۔ اس کا

---

۱ عینی شرح الہدایہ باب التیمم ملک سنز فیصل آباد ۱ / ۳۲۸ صفحہ ۱۰۱ از ۷۶۱

Fatawa Rizwia - Volume 4

[Left Column - Arabic] Indeed, he made the subject of disagreement between the 'Zahira' (apparent) and 'Nadira' (rare) narrations to be the case when hope is due to the proximity of distance. Therefore, he placed in the position of the demonstrative pronoun in his discourse "absence of remoteness of distance". Since it was known that according to this estimation, there is no escape from the objection of the expert Imam (Bukhari), as clarified at the end of the writing, he turned the rein towards presenting scenarios in which hope is not due to the proximity of water, thinking that they would provide relief from this objection, but there is no truth to any of that. As for the first, meaning the Imam's making the disagreement as mentioned—I say firstly: Imam Bukhari mentioned four interpretations for it, and in none of them is there anything that implies that the intention is hope due to the proximity of water, except the third, in which proximity is assumed. Thus, it proves that the rest are not based on his assumption; so how can hope due to proximity be what is meant generally? And secondly: Rather, in the fourth, there is an explicit statement to the contrary, as the discourse is assumed for the case when proximity and distance are unknown, then he made it about hope with his saying, "As for if his strong presumption prevails regarding that, etc." And the wonder is that you turned this, which is the clearest contradiction to that interpretation, towards the prevalence of the thought of proximity. Glory be to Allah.

[Right Column - Urdu Commentary] The statement is that in the words of Imam Bukhari, distance is mentioned repeatedly. This led Allama Ayni to think that he made the subject of the disputed issue between the 'Zahira' and 'Nadira' reports to be the situation where hope arose due to the closeness of the distance. For this reason, Allama Ayni replaced the demonstrative pronoun in Imam Bukhari's text with "absence of distance" (distance not being far). Then, when he realized that under this interpretation, there was no escape from the objection of this expert Imam, as he himself clarified at the end of the text, he turned the course of the discourse towards presenting scenarios in which hope is not due to the closeness of water, thinking that these scenarios would provide relief from that objection, whereas neither of these two notions is correct. (Author's Note) The first notion of the aforementioned Imam was to consider the matter mentioned as a point of disagreement. I say: (In response to this) Firstly, Imam Bukhari described four interpretations for it, and in none of them is there anything to indicate that hope due to the proximity of water is intended. Only the third interpretation, in which proximity is assumed, shows that in

the other interpretations this is not assumed; so how could hope solely due to proximity be generally intended? (Author's Note) Secondly: Rather, in the fourth interpretation, there is an explicit statement to the contrary, in that the discourse is assumed for a case where proximity or distance is not known, then he applied it to hope with his phrase "but if his preponderance of opinion is such, etc." (but if he has a strong presumption, etc.). It is astonishing.

फ़तावा रज़विया - भाग 4

[बायाँ कॉलम - अरबी] वास्तव में, उन्होंने 'ज़ाहिरा' और 'नादिरा' रिवायतों के बीच विवाद का विषय उस स्थिति को माना है जब आशा दूरी की निकटता के कारण हो। इसलिए, उन्होंने अपने कलाम में संकेतवाचक शब्द के स्थान पर "दूरी का अभाव" रख दिया। चूँकि यह ज्ञात था कि इस व्याख्या के अनुसार इस विशेषज्ञ इमाम (बुखारी) की आपत्ति से कोई बचाव नहीं है, जैसा कि लेख के अंत में स्पष्ट किया गया है, उन्होंने चर्चा की दिशा ऐसी स्थितियाँ प्रस्तुत करने की ओर मोड़ दी जिनमें आशा पानी की निकटता के कारण न हो, यह सोचकर कि वे इस आपत्ति से राहत दिलाएँगी, लेकिन इनमें से किसी में भी सच्चाई नहीं है। जहाँ तक पहले का संबंध है, अर्थात इमाम द्वारा विवाद को वर्णित करना —तो मैं पहले कहता हूँ: इमाम बुखारी ने इसके चार पहलू बताए हैं, और उनमें से किसी में भी ऐसा कुछ नहीं है जो यह संकेत दे कि पानी की निकटता के कारण आशा अभिप्रेत है, सिवाय तीसरे के, जिसमें निकटता मानी गई है। अत; यह सिद्ध होता है कि शेष उनकी धारणा पर आधारित नहीं हैं; तो फिर केवल निकटता के कारण आशा को सामान्य रूप से कैसे अभिप्रेत माना जा सकता है? और दूसरा: बल्कि, चौथे पहलू में, इसके विपरीत स्पष्ट कथन है, क्योंकि चर्चा उस स्थिति के लिए मानी गई है जब निकटता और दूरी अज्ञात हो, फिर उन्होंने इसे अपनी बात से आशा पर लागू किया, "लेकिन यदि उसकी प्रबल धारणा प्रबल हो, आदि।" और आश्चर्य की बात यह है कि आपने इसे, जो उस व्याख्या का स्पष्ट खंडन है, निकटता के विचार की प्रबलता की ओर मोड़ दिया। सुभान अल्लाह।

[दायाँ कॉलम - उर्दू कमेंटरी] बयान यह है कि इमाम बुखारी के कलाम में दूरी का ज़िक्र बार-बार आया है। इससे अल्लामा ऐनी का ध्यान इस ओर गया कि उन्होंने 'ज़ाहिरा' और 'नादिरा' रिवायतों के बीच विवादास्पद मसले का विषय उस स्थिति को माना है जब दूरी की निकटता के कारण आशा पैदा हुई हो। इसी कारण से, अल्लामा ऐनी ने इमाम बुखारी के पाठ में संकेतवाचक शब्द के स्थान पर "दूरी का अभाव" (दूरी का दूर न होना) रख दिया। फिर जब उन्हें पता चला कि इस व्याख्या के अनुसार इस विशेषज्ञ इमाम की आपत्ति से कोई बचाव नहीं है, जैसा कि उन्होंने स्वयं लेख के अंत में स्पष्ट किया है, तो उन्होंने चर्चा की दिशा ऐसी स्थितियाँ प्रस्तुत करने की ओर मोड़ दी जिनमें आशा पानी की निकटता के कारण न हो, यह सोचकर कि ये स्थितियाँ उस आपत्ति से राहत दिलाएँगी, जबकि इन दो विचारों में से कोई भी सही नहीं है। (लेखक का नोट) उक्त इमाम का पहला विचार उल्लिखित मामले को विवादास्पद मानना था। तो मैं कहता हूँ: (इस पर मैं कहता हूँ) प्रथम, इमाम बुखारी ने इसके चार पहलू बताए हैं, और उनमें से किसी में भी ऐसा कुछ नहीं है जिससे यह ज्ञात हो

कि पानी की निकटता के कारण आशा अभिप्रेत है। केवल तीसरा पहलू, जिसमें निकटता मानी गई है, यह दर्शाता है कि अन्य पहलुओं में यह पूर्वकल्पित नहीं है; तो फिर केवल निकटता के कारण आशा ही पूर्णतः अभिप्रेत कैसे हो गई? (लेखक का नोट) द्वितीय: बल्कि, चौथे पहलू में इसके विपरीत स्पष्ट कथन मौजूद है, इस प्रकार कि चर्चा उस स्थिति के लिए मानी गई है जब निकटता या दूरी का ज्ञान न हो, फिर उन्होंने इसे अपनी इस इबारत से आशा पर लागू किया है "लेकिन अगर उसका प्रबल विचार ऐसा हो, आदि" (लेकिन अगर उसकी धारणा प्रबल हो, आदि)। यह आश्चर्यजनक है।

पृष्ठ 102 / 761

[بایاں کالم - عربی] بے شک انہوں نے روایتِ ظاہرہ و نادرہ کے درمیان مسئلہ خلافیہ کا موضوع اس صورت کو قرار دیا ہے جب امید قربِ مسافت کی وجہ سے ہو۔ اسی لئے انہوں نے اپنے کلام میں اسمِ اشارہ کی جگہ "عدم بعد المسافتہ" (دوری کا نہ ہونا) رکھ دیا۔ چونکہ یہ معلوم تھا کہ اس تقدیر پر اس امامِ ماہر (امام بخاری) کے اشکال سے کوئی مخلصی نہیں ہے جیسا کہ تحریر کے آخر میں اس کی تصریح کی گئی، تو انہوں نے عنانِ کلام ایسی صورتیں پیش کرنے کی جانب موڑی جن میں امید قربِ آب کی وجہ سے نہ ہو، یہ سوچ کر کہ یہ صورتیں اس اشکال سے خلاصی عطا کریں گی، حالانکہ اس میں سے کچھ بھی درست نہیں۔ جہاں تک پہلے امر کا تعلق ہے، یعنی امام کا مذکورہ بالا اختلاف کو موضوع بنانا—تو میں پہلے کہتا ہوں: امام بخاری نے اس کے چار محمل بیان کئے ہیں اور ان میں سے کسی میں بھی ایسی کوئی بات نہیں ہے جو یہ بتائے کہ قربِ آب کی وجہ سے امید مراد ہے، سوائے تیسرے محمل کے جس میں قرب فرض کیا گیا ہے۔ پس یہ ثابت ہوا کہ باقی محمل اس مفروضے پر نہیں ہیں؛ تو کیوں کر صرف قرب کی وجہ سے امید مطلقاً مراد ہو گئی؟ اور ثانیاً: بلکہ چوتھے محمل میں تو اس کے برخلاف تصریح موجود ہے، کیونکہ وہاں کلام اس صورت میں فرض کیا گیا ہے جب قرب و بعد کچھ معلوم نہ ہو، پھر انہوں نے اسے اپنی اس بات سے امید پر منطبق کیا، "لیکن اگر اس کے گمان میں یہ بات غالب ہو الخ۔" اور حیرت کی بات یہ ہے کہ آپ لوگوں نے اس بات کو، جو اس محمل کی صریح مخالفت ہے، غلبہء ظنِ قرب کی طرف پھیر دیا۔ سبحان اللہ۔

[دایاں کالم - اردو شرح] بیان یہ ہے کہ امام بخاری کے کلام میں مسافت کا ذکر بار بار آیا اس سے علامہ عینی کا خیال اس طرف چلا گیا کہ انہوں نے روایت ظاہرہ و نادرہ کے درمیان مسئلہ خلافیہ

کا موضوع اس صورت کو قرار دیا ہے جب مسافت کے قرب کی وجہ سے امید پیدا ہوئی ہو۔ اسی لئے امام بخاری کے کلام میں جو اسم اشارہ تھا اس کی جگہ علامہ عینی نے "عدم بعد المسافتہ" (مسافت کا دُور نہ ہونا) رکھ دیا۔ پھر جب انہیں پتا چلا کہ اس تقدیر پر اس امام ماہر کے اشکال سے چھٹکارا نہیں جیسا کہ خود آخر تحریر میں اس کی تصریح کی ہے تو عنان کلام کچھ ایسی صورتیں پیش کرنے کی جانب موڑی جن میں امید، قرب آب کی وجہ سے نہ ہو اور یہ خیال فرمایا کہ یہ صورتیں اس اشکال سے خلاصی عطا کر دیں گی حالانکہ ان دو خیالوں میں سے ایک بھی صحیح نہیں۔ (ت) پہلا خیال امام موصوف کا امر مذکور کو اختلافی قرار دینا۔ فاقول: (اس پر میں کہتا ہوں) اولا امام بخاری نے اس کے چار محمل بیان کئے ان میں سے کسی میں کوئی ایسی بات نہیں جس سے یہ معلوم ہو کہ قرب آب کی وجہ سے امید مراد ہے مگر صرف تیسرا محمل جس میں قرب فرض کیا گیا ہے اس سے پتا چلا کہ باقی محملوں میں یہ مفروض نہیں تو کیوں کر صرف امید بوجہ قرب مطلقاً مراد ہو گئی۔ (ت) ثانیاً: بلکہ چوتھے محمل میں تو اس کے برخلاف تصریح موجود ہے اس طرح کہ اس میں کلام اس صورت میں فرض کیا گیا ہے جب قرب و بعد کچھ معلوم نہ ہو پھر اس کو امید پر اپنی اس عبارت سے منطبق کیا ہے "اما لو غلب علی ظنہ ذلک الخ" (لیکن اگر اس کو اس کا غلبہ ظن ہو الخ) حیرت ہے

Fatawa Razawiyya Volume Four

Allah! When a person's prevailing opinion (Ghalib-un-Zan) is that of proximity, how can it be said that he does not know whether the distance is near or far, for a prevailing opinion is equivalent to knowledge. (T)

If it is said: Rather, knowledge here means certainty (Yaqeen). Its negation was assumed and opinion (Zann) was established so that it becomes a matter of disagreement between the 'Nadirah' narration, which considers it, and the 'Zahirah' narration, which invalidates it and stipulates definitive certainty. The result is that when he is not certain about proximity or distance, but his prevailing opinion is proximity, it is like the certainty of proximity according to the 'Nadirah' narration. The 'Zahirah' narration differentiated between the two, allowing Tayammum in the case of thinking proximity and forbidding it in the case of certainty. (T)

I say: In what context does he say, 'Another aspect remains'? For this is the first interpretation in which certainty was made a point of agreement and opinion a point of disagreement. (T)

Note: If you say, how do you differentiate between the interpretations? I say: The first two are on the assumption of a long distance, as indicated in the first one, and the difference between them is by making certainty a point of agreement or disagreement. The third is on the assumption of its proximity, and the fourth is on the assumption that he does not know proximity or distance. 12 From him, may he be forgiven. (T)

Page 103 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द चहारुम (चौथी)

अल्लाह! जब किसी व्यक्ति का प्रबल विचार (ग़ालिब-उज़-ज़न) निकटता का हो, तो यह कैसे कहा जा सकता है कि उसे पता नहीं कि दूरी निकट है या दूर, क्योंकि प्रबल विचार ही ज्ञान (इल्म) है। (त)

अगर यह कहा जाए कि नहीं, यहाँ ज्ञान का अर्थ निश्चितता (यक़ीन) है। यक़ीन का खंडन माना गया है और विचार (ज़न) को साबित किया गया है ताकि यह एक विवादास्पद मुद्दा बन सके। यह 'नादिरा' रिवायत (दुर्लभ वर्णन) के बीच है जो ज़न को मानती है, और 'ज़ाहिरा' रिवायत (प्रसिद्ध वर्णन) के बीच है जो ज़न को बेकार मानती है और निश्चित यक़ीन की शर्त लगाती है। तो परिणाम यह निकला कि जब निकटता या दूरी का यक़ीन न हो, लेकिन निकटता का प्रबल विचार हो, तो यह 'नादिरा' रिवायत के अनुसार निकटता के यक़ीन की तरह होगा। 'ज़ाहिरा' रिवायत ने दोनों में अंतर रखा है कि निकटता के विचार की स्थिति में तैयमुम की अनुमति दी और यक़ीन की स्थिति में मना किया। (त)

अक़ूल: (मैं कहता हूँ) फिर वह किसके बारे में कह रहे हैं 'बक़ी वजह आखर' (एक और सूरत रह गई)। यही तो वह पहला पहलू है जिसमें यक़ीन को सहमति वाला और ज़न को विवादास्पद माना गया है। (त)

पाद-टिप्पणी: अगर यह प्रश्न हो कि फिर इन पहलुओं में अंतर कैसे किया जाएगा? अक़ूल: पहले दो पहलू दूरी के अनुमान पर आधारित हैं जैसा कि पहले में संकेत दिया गया है। और इन दोनों में यक़ीन को सहमति या विवाद का विषय रखने से अंतर होगा। तीसरा पहलू निकटता के अनुमान पर है, और चौथा पहलू यह मानकर है कि उसे न निकट होने का पता है न दूर होने का। 12 उनकी ओर से, ईश्वर उन्हें क्षमा करे। (त)

पृष्ठ ७६१ का १०३

فتاوی رضویہ جلد چہارم

اللہ! اذا غلب علی ظنہ القرب کیف یقال لم یعلم ان المسافة قریبة او بعیدة فان الظن الغالب علم ۔ کہ یہ جو اس حمل کے مخالف ہونے پر سب سے زیادہ روشن وواضح ہے اسے آپ نے قرب کے غلبہ ظن کی جانب پھیر دیا۔ سبحان اللہ ! جب اسے قرب کا غلبہ ظن ہوگا تو یہ کیسے کہا جائے گا کہ اسے علم نہیں کہ مسافت قریب ہے یا بعید ۔ ظن غالب تو علم ہے ۔ (ت)

فان قیل بل العلم ھنا بمعنی الیقین فرض نفیہ واثبت الظن لتکون خلافیة بین النادرة المعتبرة ایاہ والظاھرة الملغیة لہ الشارطة للیقین القطعی فالحاصل انہ اذالم یتیقن القرب والبعد لکن غلب علی ظنہ القرب کان کیقین القرب علی النادرة وفرقت الظاھرة فجوزت التیمم في ظن القرب ومنعتہ عند الیقین ۔ اگر یہ کہا جائے کہ نہیں یہاں علم بمعنی یقین ہے۔ یقین کی نفی فرض کی ہے اور ظن کا اثبات تاکہ یہ اختلافی مسئلہ ہوسکے روایت نادرہ کے درمیان جو ظن کا اعتبار کرتی ہے اور روایت ظاہرہ کے درمیان جو ظن کو بیکار قرار دیتی ہے اور یقین قطعی کی شرط لگاتی ہے تو حاصل یہ ہوا کہ جب قرب و بُعد کا یقین نہ ہو لیکن قُرب کا غالب گمان ہو تو یہ روایت نادرہ پر یقینِ قُرب ہی کی طرح ہوگا اور روایت ظاہرہ نے دونوں میں فرق رکھا ہے کہ قرب کے ظن کی صورت میں تیمم کو جائز قرار دیا اور یقین کی صورت میں ممنوع رکھا۔ (ت)

اقول: ففیم یقول بقی عہ وجہ اخر فان ھذا ھو المحمل الاول الذي جعل فیہ الیقین وفاقیا والظن خلافیا ۔ اقول: (میں کہوں گا) پھر کس کے بارے میں وہ فرمارہے ہیں "بقی وجہ آخر" (ایک صورت رہ گئی ۔ یہی تو وہ پہلا محمل ہے جس میں یقین کو اتفاقی اور ظن کو اختلافی قرار دیا ہے۔ (ت)

عه فان قلت فكيف تفرق انت بين المحامل اقول: الاولان على فرض بعد المسافة كما اشار اليه في الاول والفرق بينهما بجعل اليقين وفاقيا و خلافيا والثالث بفرض قربها والرابع بفرض انه لا يعلم قربا ولا بعدا ١٢ منہ غفرلہ (م) اگر یہ سوال ہوا کہ پھر ان محملوں میں کیسے فرض کیا جائے گا اقول : پہلے دونوں محمل بعد مسافت کے مفروضہ پر ہیں جیسا کہ محمل اول میں اس طرف اشارہ کیا ہے۔ اور ان دونوں میں یقین کو اتفاقی اور اختلافی رکھنے سے فرق ہوگا۔ تیسرا محمل قرب مسافت کے مفروضہ پر ہے اور چوتھا محمل یہ فرض کر کے ہے کہ وہ نہ قریب ہونا جانتا ہے نہ دُور ہونا ١٢منہ غفرلہ (ت)

Fatawa Ridawiyya, Volume 4

Thirdly: (1) In fact, the first interpretation also contains an explicit statement to the contrary. He says: "This implies that delay is obligatory upon verification at the end of the time, despite the distance, according to the apparent narrations, etc." Thus, he clearly stated that the discussion is regarding the distance of travel. How then can the basis of hope be proximity? Even if we concede, the statement would be general, encompassing both proximity and distance. Otherwise, there would be no room for his words "despite the long distance." In any case, it is void to claim that the specific hope intended is due to proximity.

Fourthly: (2) Nay, the second interpretation also testifies to its invalidity. For he estimated therein that the rare narration is what prevents Tayammum in cases of doubt and certainty, whereas the apparent narration contradicts it in both. If this were due to proximity of distance, the meaning would be that the apparent narration permits Tayammum even if the water is definitely close. No sane person would utter this. So how can it be permissible for this glorious Imam, whom you have said is among the great researchers, to include it in interpretations?

Fifthly: (3) Oh, how strange! He was not content with just making it an interpretation, but rejected it by stating that this would imply that the permissibility of Tayammum ceases upon certainty, which is not the case.

Page 104 of 761

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4

तीसरा: (1) वास्तव में, पहली व्याख्या में भी इसके विपरीत स्पष्ट कथन मौजूद है। वह कहते हैं: "इसका तात्पर्य यह है कि ज़ाहिर रिवायतों के अनुसार दूरी के बावजूद समय के अंत में निश्चितता होने पर देरी करना अनिवार्य है, इत्यादि।" इस प्रकार, उन्होंने स्पष्ट रूप से बताया कि चर्चा यात्रा की दूरी के बारे में है। फिर आशा का आधार निकटता कैसे हो सकता है? यदि हम मान भी लें, तो कथन सामान्य होगा, जिसमें निकटता और दूरी दोनों शामिल होंगी। अन्यथा उनके शब्दों "दूरी के बावजूद" के लिए कोई गुंजाइश नहीं होगी। किसी भी स्थिति में, यह दावा करना अमान्य है कि अभिप्रेत विशेष आशा निकटता के कारण है।

चौथा: (2) बल्कि दूसरी व्याख्या भी इसकी अमान्यता का प्रमाण है। क्योंकि उन्होंने इसमें अनुमान लगाया है कि दुर्लभ रिवायत वह है जो संदेह और निश्चितता में तयम्मुम को रोकता है, जबकि ज़ाहिर रिवायत दोनों में इसके विपरीत है। यदि यह दूरी की निकटता के कारण होता, तो इसका अर्थ यह होता कि ज़ाहिर रिवायत तयम्मुम की अनुमति देती है भले ही पानी निश्चित रूप से निकट हो। कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति ऐसा नहीं कहेगा। तो इस महान इमाम के लिए यह कैसे मुमकिन होगा, जिनके बारे में आपने कहा है कि वे बड़े शोधकर्ताओं में से हैं, कि वे इसे व्याख्याओं में शामिल करें?

पांचवां: (3) ओह, कितने आश्चर्य की बात है! वह इसे केवल एक व्याख्या बनाने से संतुष्ट नहीं थे, बल्कि इसे यह कहते हुए खारिज कर दिया कि इसका तात्पर्य यह होगा कि निश्चितता होने पर तयम्मुम की अनुमति समाप्त हो जाती है, जबकि ऐसा नहीं है।

पृष्ठ 104 का 761

وثالثاً: (۱) بل قد نص في الاول ایضاً علی خلافه اذ قال یقتضی ان یجب التأخیر عند التحقق في آخر الوقت مع بعد المسافة في الروایات الظاهرة الخ فافصح ان الکلام عند بعد المسافة فکیف یکون مبنی الرجاء قربها وان تنزلنا یکن الکلام مطلقاً یشمل القرب والبعد والا لم یکن لقوله مع بعد المسافة مساغ وعلی الکل یبطل ان المراد خصوص الرجاء لاجل القرب۔ ثالثاً: بلکہ محمل اول میں بھی اس کے برخلاف تصریح موجود ہے کہ وہ فرماتے ہیں: "یہ اس کا مقتضی ہے کہ ظاہر روایات پر بُعد مسافت کے باوجود آخر وقت میں یقین کی صورت میں تاخیر واجب ہو"۔ اس میں صاف بتا دیا کہ بُعد مسافت کی صورت میں کلام ہے پھر قربِ مسافت امید کا مبنی کیسے ہوگا؟ اگر ہم تنزل اختیار کریں تو کلام مطلق ہو کر قرب و بُعد دونوں کو شامل ہوگا ورنہ ان کے الفاظ "مع بعد المسافة" (بُعد مسافت کے باوجود) کی کوئی گنجائش نہ نکل سکے گی۔ بہر صورت یہ باطل ہے کہ خاص وہی امید مراد ہے جو قرب مسافت کے باعث ہو۔

ورابعاً: بل (۲) الثاني ایضاً شاهد علی بطلانه فانه قدّر فیه ان النادرة هي التي تمنع التیمم في الظن والیقین والظاهرة تخالفها فیهما لو کان هذا لاجل قرب المسافة کان المعنی ان الروایة الظاهرة تجیز التیمم وان کان الماء قریباً بالیقین وهذا لا یتفوه به عاقل فکیف یجوز لهذا الامام الجلیل الذي قد قلتم انه من المحققین الکبار ان یدخله في المحامل۔ (ت) رابعاً: بلکہ محمل دوم بھی اس کے بطلان پر شاہد ہے۔ اس لئے کہ اس میں انہوں نے یہ فرض کیا ہے کہ روایت نادرہ ہی ظن و یقین دونوں میں مانعِ تیمم ہے اور روایتِ ظاہر دونوں میں اس کے برخلاف ہے اگر یہ قربِ مسافت کی وجہ سے ہوتا تو معنی یہ ہوتا کہ روایتِ ظاہرہ تیمم کو جائز قرار دیتی ہے اگرچہ پانی یقیناً قریب ہو۔ یہ تو کوئی

ہوشمند نہیں بول سکتا پھر امام جلیل کیلئے یہ کیسے ممکن ہوگا جن کے بارے میں آپ فرما چکے کہ وہ کبار محققین میں سے ہیں یہ کیسے ممکن ہوگا کہ اسے محملوں میں داخل فرمائیں۔

وخامساً: یا (۳) للعجب لم یقنع بجعله محملاً بل رده بأن ذلك یقتضی ان جواز التیمم یزول عند التیقن ولیس۔ (ت) خامساً: یا للعجب! اسے محمل بتانے ہی پر قناعت نہ کی بلکہ اس کی تردید اس طرح فرمائی کہ اس کا مقتضی یہ ہے کہ یقین کی صورت میں جوازِ تیمم (ختم ہو جائے)۔

Fatawa Razawiyya Volume Four Likewise, he claimed that Tayammum (dry ablution) is permissible despite the certainty of proximity [of water]. Is there anything more corrupt than this? Sixth: He refers it (1) to what has been explained, and what was explained was the permissibility in the case of distance. Thus, the reference was invalid and impossible. Seventh: Rather, in the third [context] also, there is an indication to the contrary. Because he made the subject of the issue the case where the distance is less than a mile, not when one thinks it is less than a mile. The subject is taken as an assumed and settled matter. So how can it vary with suspicion (zann) and certainty (yaqin)? And how can its absence be made possible in one of the two ways? While he has already said: (3) There is no difference in the manifest narration (Zahir al-Riwayah) between suspicion and certainty if the distance is less than a mile. So, if the meaning was based on the suspicion of proximity, it would lead to there being no difference between suspicion and certainty at the time of suspicion. In short, all his contexts and all his speech refute this meaning which the scholar (Allama) intended. (T) As for the second, meaning the claim of a way out from it as he presented. I say: No, and not even (4) half a way out. Because what results from this is that the rare narration necessitates Tayammum when one thinks there is water available, except for proximity to water.

फ़तावा रज़विया खंड चार इसी तरह, उन्होंने दावा किया कि निकटता के निश्चित ज्ञान کے बावजूद तयम्मुम जायज़ है। क्या वहां इससे भी अधिक कुछ भ्रष्ट है? छठा: वह इसे (1) उस पर संदर्भित करता है जो स्पष्ट किया गया है, जबकि स्पष्टीकरण दूरी की स्थिति में जायज़ होने का था। अत; संदर्भ अमान्य और असंभव था। सातवां: बल्कि, तीसरे [संदर्भ] में भी इसके विपरीत संकेत मौजूद है। क्योंकि उन्होंने मसले का विषय उस स्थिति को बनाया जब दूरी एक मील से कम हो, न कि जब यह संदेह हो कि वह एक मील से कम है। विषय को एक कल्पित और तय मामला माना जाता है। फिर इसमें संदेह (ज़न्न) और निश्चितता (यक़ीन) के साथ अंतर कैसे हो सकता है? और एक स्थिति में इसके अभाव को संभावित कैसे बनाया जा सकता है? जबकि वह पहले ही कह चुके हैं: (3) ज़ाहिरुल रिवायत में संदेह और निश्चितता के बीच कोई अंतर नहीं है यदि दूरी एक मील से कम हो। इसलिए, यदि अर्थ निकटता के संदेह पर आधारित होता, तो इसका परिणाम यह होता कि संदेह के समय संदेह और निश्चितता के बीच कोई अंतर नहीं होता। संक्षेप में, उनके सभी संदर्भ और उनकी पूरी बातचीत उस अर्थ का खंडन करती है जिस ओर अल्लामा का ध्यान गया। (त) जहाँ तक दूसरे का प्रश्न है, यानी जैसा कि उन्होंने प्रस्तुत किया है, उससे बचाव का दावा। मैं कहता हूँ: नहीं, और (4) आधा बचाव भी नहीं होता। क्योंकि इसका परिणाम यह निकलता है कि दुर्लभ रिवायत पानी उपलब्ध होने के संदेह पर तयम्मुम को अनिवार्य बनाती है, पानी की निकटता के अलावा।

पृष्ठ 105 of 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم کذلك فقد ادعی ان التیمم جائز مع تیقن القرب وھل ثم شیئ افسد منہ۔ ختم ہوجائے حالانکہ ایسا نہیں یہ کہہ کر انہوں نے یہ دعوی کردیا کہ یقین قرب کے باوجود تیمم جائز ہے۔ کیا وہاں کوئی چیز فساد میں اس سے بالاتر بھی ہے؟ وسادسا: یحیلہ (۱) علی مابین وانما بین الجواز عند البعد فکانت الاحالۃ * باطلۃ محالۃ * سادساً: اس پر حوالہ یہ دے رہے ہیں کہ جیسا کہ بیان ہوا اور بیان یہ کیا ہے کہ دوری کی صورت میں جواز ہے تو حوالہ باطل و محال ہوا۔ وسابعاً: بل (۲) فی الثالث ایضاً اشعار الی خلافہ فأنہ جعل موضوع المسألۃ ما اذا کان الفصل اقل من میل لا اذ اظنہ اقل من میل والموضوع مأخوذ مفروض مفروغ عنہ فکیف یختلف فیہ بظن ویقین ویجعل عدمہ محتملا علی احد الوجھین وقد قال لا (۳) فرق فی ظاھر الروایۃ بین الظن والیقین اذا کانت المسافۃ اقل من میل فلو کان المعنی علی ظن القرب أل الی انہ لا فرق بین الظن والیقین عند الظن وبالجملۃ جمیع محاملہ وکل کلامہ یرد ھذا المعنی الذی ذھب الیہ وھل العلامۃ۔ سابعاً: بلکہ محمل سوم میں بھی اس کے خلاف کی نشان دہی موجود ہے اس لئے کہ انہوں نے مسئلہ کا موضوع اس صورت کو بنایا، جب فاصلہ ایک میل سے کم ہو اس صورت کو نہیں جب اس کا گمان ایک میل سے کم کا ہو اور موضوع پوری گفتگو میں ماخوذ مفروض ہوتا ہے اس پر بحث سے فراغ رہتا ہے پھر اس میں ظن ویقین کا اختلاف کیسے کریں گے اور ایک صورت میں اس کے عدم کو محتمل کیسے بنائیں گے؟ جب کہ یہ فرما چکے ہیں کہ مسافت ایک میل سے کم ہونے کی صورت میں ظاہر الروایہ میں ظن ویقین کے درمیان کوئی فرق نہیں تو اگر ظن قرب کی بنیاد پر معنی لیا جائے تو مآل یہ ہوگا کہ ظن کی صورت میں ظن و یقین کے درمیان کوئی فرق نہیں۔ مختصر یہ کہ امام موصوف کے سبھی محمل اور ان کا پورا کلام اس معنی کی تردید کر رہا ہے جس کی طرف علامہ کا خیال گیا۔(ت)

واما الثانی اعنی زعم المخلص منہ علی ما ابدی۔ فأقول: لا ولا (۴) نصف مخلص فأن الحاصل علی

هذا ان النادرة توجب التيمم عند ظن وجدان الماء خیال دوم پیش کردہ صورتوں کے ذریعہ اشکال سے چھٹکارا۔ فأقول: (اس پر میں کہتا ہوں) نہیں آدھا چھٹکارا بھی نہیں ہوتا۔ اس لیے کہ اس طور پر حاصل یہ ہوا کہ روایت نادرہ قرب آب کے علاوہ

Fatawa Ridawiyya, Volume 4

At the end of the time, due to one of the mentioned reasons other than the proximity of water, and the apparent view says that there is no consideration for the preponderance of thought (Ghalaba-e-Zann) of finding water through them; the consideration is only for the certainty (Yaqeen) of it. This is the point of both objections as they were. For they stated that the thought of proximity prevents tayammum, thus they considered thought there, so how did they nullify it here? And they stated (1) that when water is a mile away, tayammum is permissible for him without detail, despite the certainty that he might be sure of reaching water at the end of the time. Yet they did not consider certainty there, so how did they consider it here? Thus it is established that his effort (may Allah have mercy on him) did not lead to any benefit, and his wonder at those great people returns to his noble self.

Then I say: Perhaps you have realized from what we have presented to you that the last objection—meaning the one regarding the state of certainty with the issue of being a mile away—only applies to what was reasoned in Al-Hidayah regarding the Zahir al-Riwayah. As for the issue itself, there is no doubt regarding it from the perspective of objection, for the school of thought (Madhhab) is the non-obligation of delaying prayer, whether one has a thought (Zann) or certainty (Yaqeen), as was previously explicitly mentioned from Al-Khulasah by the narration of the Imams.

Page 106 of 761

फ़तावा रज़विया, खंड 4

समय के अंत में, पानी की निकटता के अलावा उल्लिखित कारणों में से किसी एक के कारण, और ज़ाहिर रिवायत कहती है कि उनके माध्यम से पानी मिलने की प्रबल संभावना (ग़लबा-ए-ज़न्न) का कोई विचार नहीं है; विचार केवल इसके निश्चित होने (यक़ीन) का है। यही दोनों आपत्तियों का आधार है जैसा कि वे थीं। क्योंकि उन्होंने स्पष्ट किया है कि पानी के पास होने का अनुमान (ज़न्न) तयम्मुम से रोकता है, तो उन्होंने वहाँ अनुमान पर विचार किया, फिर यहाँ इसे कैसे निरस्त कर दिया? और उन्होंने स्पष्ट किया (1) कि जब पानी एक मील दूर हो, तो बिना किसी विवरण के उसके लिए तयम्मुम जायज़ है, जबकि यह निश्चित है कि उसे समय के अंत में पानी तक पहुँचने का यक़ीन हो सकता है। फिर भी उन्होंने वहाँ यक़ीन पर विचार नहीं किया, तो यहाँ कैसे विचार किया? अतः यह सिद्ध हुआ कि उनका प्रयास (अल्लाह उन पर रहम करे) किसी लाभ में नहीं बदला, और उन महान विभूतियों पर उनका आश्चर्य स्वयं उनके अपने महान व्यक्तित्व पर वापस आता है।

फिर मैं कहता हूँ: शायद आप हमारे द्वारा प्रस्तुत की गई बातों से समझ गए होंगे कि अंतिम आपत्ति —अर्थात् एक मील की दूरी वाले मसले के साथ यक़ीन की स्थिति पर आपत्ति—केवल उसी पर लागू होती है जिसका तर्क अल-हिदाया में ज़ाहिर अर-रिवायत के संबंध में दिया गया था। जहाँ तक स्वयं मसले का प्रश्न है, तो उस पर आपत्ति की ओर से कोई संदेह नहीं है, क्योंकि मज़हब (विचारधारा) यही है कि नमाज़ में देरी करना वाजिब नहीं है, चाहे अनुमान हो या यक़ीन, जैसा कि पहले इमामों के हवाले से अल-ख़ुलासा से स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है।

पृष्ठ 106/761

مذکورہ اسباب میں سے کسی ایک کی وجہ سے آخر وقت میں پانی ملنے کا گمان ہونے کی صورت میں تیمم واجب کرتی ہے اور روایتِ ظاہر ہ یہ بتاتی ہے کہ ان اسباب کی وجہ سے پانی ملنے کے غلبہ ظن کا کوئی اعتبار نہیں۔ اعتبار تو صرف اس یقین کا ہے کہ پانی مل جائے گا اس حاصل پر دونوں اعتراض جیسے پہلے وارد ہورہے تھے اب بھی وارد ہیں (۱) اس لئے کہ ان حضرات نے نص فرمایا ہے کہ قربِ آب کا ظن مانعِ تیمم ہے تو انہوں نے وہاں ظن کا اعتبار کیا پھر یہاں اسے کیسے بیکار قرار دیا؟ اور ان حضرات نے تصریح فرمائی ہے کہ پانی ایک میل دور ہو تو تیمم جائز ہے۔ اس میں کوئی تفریق و تفصیل نہ فرمائی۔ باوجودیکہ یہ قطعی امر ہے کہ بعض اوقات اسے یقین ہوگا کہ وہ آخر وقت میں پانی تک پہنچ جائے گا۔ تو وہاں ان حضرات نے یقین کا اعتبار نہ کیا پھر یہاں کیسے اعتبار کرلیا۔ تو ثابت ہوا کہ علامہ رحمہ اللہ تعالیٰ کی یہ کاوش کچھ سُودمند نہ ہوسکی اور ان بزرگوں پر انہوں نے جس تعجب کا اظہار فرمایا وہ خود ان کی ذاتِ گرامی پر عائد ہوتا ہے۔ (ت)

ثم اقول: ہمارے بیان سے ناظرین نے یہ سمجھ لیا ہوگا کہ دوسرا اعتراض یعنی ایک میل دوری والے مسئلہ سے صورتِ یقین پر اعتراض صرف اس تعلیل پر وارد ہوتا ہے جو صاحبِ ہدایہ نے ظاہر الروایہ سے متعلق پیش کی۔ لیکن نفسِ مسئلہ پر جانبِ اعتراض سے کوئی غبار نہیں آتا اس لئے کہ مذہب یہی ہے کہ تاخیرِ نماز واجب نہیں خواہ اسے ظن ہو یا یقین جیسا کہ اس کی تشریح خلاصہ سے

Fatawa Razawiyya, Volume 4

[Left Column - Arabic] Al-Bukhari, al-Kaki, al-Babarti, and al-Siwasi, and their establishment of it. Yes, the first objection which arises regarding the scenario of 'supposition' (dhann) based on the issue of 'supposition of proximity' (dhann al-qurb), applies to both the reasoning (ta'leel) and the issue together, due to the need for a distinction between them. For they did not consider 'supposition' here, nor even 'certainty' (yaqin), while they prohibited its consequence based purely on 'preponderant supposition' (ghalbat al-dhann). For this reason, I said that they found both the issue and the reasoning problematic, even if they only directed their words toward this reasoning. And I saw that the Imam, Malik al-Ulama, established the issue in 'al-Bada'i' such that this objection does not apply to it, and he removed the disagreement between the manifest and rare narrations. He said: 'Our associates said: If a traveler has hope for water at the end of the time, he should delay tayammum until the end of the time. If not, he should not delay it.' Thus did al-Mu'alla narrate from Abu Hanifa and Abu Yusuf (may Allah Almighty be pleased with them). And it is mentioned in 'al-Asl': 'It is more beloved to me that he delays until the end of the time,' without distinguishing between whether he hopes for water or not. This does not necessitate a difference in narration; rather, al-Mu'alla's narration is made into an explanation for what was stated generally in 'al-Asl'. If he performs tayammum at the beginning of the time and prays, while knowing that water is near —such that between him and the water is less than a mile—his prayer is not valid without disagreement, because he is considered to have found water. If it is a mile or more, it is permitted.

[Right Column - Urdu] The discourse of Khulasah by Imam Bukhari, Imam Kaki, Imam Babarti, and Imam Siwasi has passed, and they quoted and maintained it. Yes, the first objection which arises regarding the scenario of 'supposition' based on the issue of 'supposition of proximity' applies to both the reasoning and the issue itself because there is a need to differentiate between the two: why was neither 'supposition' nor even 'certainty' considered here, while there it was forbidden solely based on 'preponderant supposition'? That's why I said that the scholars found the issue and the reasoning both problematic, even if the direction of their discourse was only towards this reasoning. (T) I saw that Imam Malik al-Ulama formulated the issue in 'Bada'i' in such a way that this objection does not arise. And he also removed the contradiction between the 'manifest' (dhahirah) and 'rare' (nadirah) narrations. He writes: "Our associates said that if a traveler has hope for water at the end of the

time, he should delay tayammum until the end of the time. And if there is no such hope, he should not delay it. Similarly, al-Mu'alla narrated from Imam Abu Hanifa and Imam Abu Yusuf (may Allah Almighty be pleased with them). And it is mentioned in the 'Asl' (Mabsut): 'In my view, it is more preferable to delay until the end of the time,' and he did not mention the difference between having hope for water or not. This does not necessitate a contradiction in narration; rather, al-Mu'alla's narration is considered an explanation of the general statement in Mabsut. And if one performs tayammum and prays at the beginning of the time, and he knew that water is near, such that between him and...

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4

[बायां कॉलम - अरबी] अल-बुखारी, अल-काकी, अल-बाब्रती, और अल-सिवासी, और उन पर उनकी व्याख्या। हाँ, 'ज़न' (संभावना) की सूरत पर 'ज़न-ए-क़ुर्ब' (निकटता की संभावना) के मसले से वारिद होने वाला पहला ऐतराज़ दलील (तअ'लील) और मसला दोनों पर एक साथ वारिद होता है, क्योंकि उनके बीच फ़र्क करने की आवश्यकता है। क्योंकि उन्होंने यहाँ न तो 'ज़न' और न ही 'यक़ीन' का एतबार किया, जबकि उन्होंने महज़ 'ग़लब-ए-ज़न' (प्रबल संभावना) के आधार पर इसके परिणाम को वर्जित किया। इसी कारण से, मैंने कहा कि उन्होंने मसले और दलील दोनों को संदिग्ध पाया, भले ही उन्होंने अपनी बात केवल इस दलील की ओर निर्देशित की हो। और मैंने देखा कि इमाम मलिकुल उलेमा ने 'अल-बदाए' में मसले को इस तरह स्थापित किया कि उस पर यह ऐतराज़ लागू नहीं होता, और उन्होंने ज़ाहिरा और नादिरा रिवायतों के बीच मतभेद को दूर कर दिया। उन्होंने कहा: 'हमारे साथियों ने कहा: यदि मुसाफ़िर को आख़िरी वक़्त में पानी मिलने की उम्मीद हो, तो उसे तयम्मुम को आख़िरी वक़्त तक मुअख़्ख़र (देर) करना चाहिए। यदि नहीं, तो वह देर न करे।' इसी तरह मुअल्ला ने अबू हनीफ़ा और अबू यूसुफ़ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) से रिवायत की है। और 'अल-अस्ल' में उल्लेख है: 'मेरे नज़दीक यह अधिक प्रिय है कि वह आख़िरी वक़्त तक देर करे,' बिना इस बात में अंतर किए कि उसे पानी की उम्मीद है या नहीं। इससे रिवायत में कोई मतभेद पैदा नहीं होता; बल्कि मुल्ला की रिवायत को 'अल-अस्ल' में सामान्य रूप से कही गई बात की व्याख्या माना जाता है। यदि वह वक़्त के शुरू में तयम्मुम करता है और नमाज़ पढ़ता है, जबकि उसे पता था कि पानी क़रीब है—जैसे कि उसके और पानी के बीच की दूरी एक मील से कम हो—तो बिना किसी मतभेद के उसकी नमाज़ जाइज़ नहीं है, क्योंकि उसे पानी प्राप्त करने वाला माना जाता है। यदि यह एक मील या उससे अधिक है, तो जाइज़ है।

[दायां कॉलम - उर्दू] खुलासा, इमाम बुखारी, इमाम काकी, इमाम बाब्रती और इमाम सिवासी का कलाम गुजर चुका है, उन्होंने इसे नक़्ल किया और बरकरार रखा। हाँ, पहला ऐतराज़ जो 'ज़न' की सूरत पर 'ज़न-ए-क़ुर्ब' के मसले से वारिद होता है, वह दलील और मसला दोनों पर ही वारिद होता है क्योंकि दोनों के बीच फ़र्क करने की ज़रूरत है कि यहाँ क्यों 'ज़न' बल्कि 'यक़ीन' का भी एतबार न किया और वहाँ महज़ 'ग़लब-ए-ज़न' की वजह से मना कर दिया। इसीलिए मैंने कहा कि हज़रात-ए-उलेमा ने मसले और दलील दोनों में ही इश्काल क़रार दिया अगरचे कलाम का रुख सिर्फ उस दलील की जानिब था। (त) मैंने देखा कि इमाम मलिकुल उलेमा ने 'बदाए' में मसले की तक़रीर इस

तरह फ़रमाई है कि उस पर यह इश्काल पेश नहीं आता। और उन्होंने रिवायात-ए-ज़ाहिरा व नादिरा का इख्तिलाफ़ भी दूर कर दिया है, लिखते हैं: "हमारे साथियों ने फ़रमाया कि अगर मुसाफ़िर को आख़िरी वक़्त में पानी की उम्मीद हो तो तयम्मुम आख़िरी वक़्त तक मुअख़्ख़र करे। और अगर ऐसी उम्मीद न हो तो मुअख़्ख़र न करे। ऐसे ही मुअल्ला ने इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम अबू यूसुफ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत की है। और 'अस्ल' (मबसूत) में ज़िक्र फ़रमाया है कि मेरे नज़दीक ज़्यादा पसंदीदा यह है कि आख़िरी वक़्त तक मुअख़्ख़र करे। और पानी की उम्मीद होने और न होने का फ़र्क बयान नहीं किया। इससे रिवायत का इख्तिलाफ़ लाज़िम नहीं आता बल्कि मुअल्ला की रिवायत मबसूत के इतलाक़ की तफ़्सीर क़रार पाती है। और अगर शुरू वक़्त में तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली तो अगर उसे इल्म था कि पानी क़रीब है इस तरह कि उसके और...

[بایاں کالم - عربی] البخاری والکاکی والبابرتي والسیواسی وتقریرھم ایاہ نعم الایراد الاول علی صورۃ الظن بمسألۃ ظن القرب یرد علی التعلیل والمسألۃ معاً للاحتیاج الی الفرق بینھما حیث لم یعتبروا ھھنا الظن بل ولا الیقین وقد منعوا اثمہ لمحض غلبۃ الظن ولاجل ھذا قلت انھم استشکلوا المسألۃ والتعلیل معاوان کانوا انما وجھوا الکلام الی التعلیل ھذا۔ ورأیت الامام ملك العلماء قرر المسألۃ فی البدائع بحیث لایتوجہ الیہ ھذا الاشکال ورفع الخلاف عن الظاھرۃ والنادرۃ فقال قد قال اصحابنان المسافران کان علی طمع من الماء فی آخر الوقت یؤخر التیمم الی آخر الوقت وان لم یکن لایؤخر ھکذا روی المعلی عن ابی حنیفۃ وابی یوسف رضی اللہ تعالیٰ عنھما وذکر فی الاصل احب الی ان یؤخر الی آخر الوقت ولم یفصل بین ما اذا کان یرجو الماء اولا یرجو وھذا لایوجب اختلاف الروایۃ بل یجعل روایۃ المعلی تفسیرالما اطلقہ فی الاصل ولو تیمم اول الوقت وصلی ان کان عالماً ان الماء قریب بان کان بینہ وبین الماء اقل من میل لم تجز صلاتہ بلا خلاف لانہ واجد للماء وان کان میلا فصاعد اجازت

[دایاں کالم - اردو] گزر چکی خلاصہ کا کلام امام بخاری، امام کاکی، امام بابرتی اور امام سیواسی نے نقل کیا اور اسے برقرار رکھا ہاں پہلا اعتراض جو صورتِ ظن پر ظنِ قرب کے مسئلہ سے وارد ہوتا ہے وہ تعلیل اور مسئلہ دونوں ہی پر وارد ہوتا ہے اس لئے کہ دونوں میں فرق کرنے کی ضرورت ہے کہ یہاں پر کیوں ظن بلکہ یقین کا بھی اعتبار نہ کیا اور وہاں محض غلبہ ظن کی وجہ سے منع کردیا۔ اس لئے میں نے کہا کہ حضرات علماء نے مسئلہ اور تعلیل دونوں ہی میں اشکال قرار دیا اگرچہ کلام کا رخ صرف اس تعلیل کی جانب کیا۔ (ت) میں نے دیکھا کہ امام ملک العلماء نے بدائع میں مسئلہ کی تقریر اس طرح فرمائی ہے کہ اس پر یہ اشکال پیش نہیں آتا۔ اور انہوں نے روایت ظاہرہ و نادرہ کا اختلاف بھی دور کردیا ہے، رقمطراز ہیں: "ہمارے اصحاب نے فرمایا کہ

مسافر کو اگر آخر وقت میں پانی کی امید ہو تو تیمم آخر وقت تک مؤخر کرے۔ اور اگر ایسی امید نہ ہو تو مؤخر نہ کرے۔ ایسے ہی معلی نے امام ابو حنیفہ اور امام ابو یوسف رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کی ہے۔ اور اصل (مبسوط) میں ذکر فرمایا ہے کہ میرے نزدیک زیادہ پسندیدہ یہ ہے کہ آخر وقت تک مؤخر کرے۔ اور پانی کی امید ہونے اور نہ ہونے کا فرق نہ بیان کیا۔ اس سے اختلاف روایت لازم نہیں آتا بلکہ معلی کی روایت مبسوط کے اطلاق کی تفسیر قرار پاتی ہے۔ اور اگر اول وقت میں تیمم کر کے نماز پڑھ لی تو اگر اسے علم تھا کہ پانی قریب ہے اس طرح کہ اس کے اور

Fatawa Razawiya - Volume 4

[Arabic Text]: And if (1) he does not know of the proximity or distance of water, his prayer is valid, whether he expects water at the end of the time or not, whether it was after searching or before, according to us, contrary to ash-Shafi'i, for the reason that non-existence is established outwardly, and the possibility of existence is a possibility without evidence, so it does not oppose the outward appearance. End.

[Urdu Text]: If the distance to the water is less than one mile, then his prayer is not valid. There is no disagreement on this because water is available to him. And if the distance is one mile or more, then his prayer is valid. And if he has no knowledge of the proximity or distance of the water, then his prayer is valid, whether he hopes for water at the end of the time or not, whether it was after searching for water or before. This ruling is contrary to Imam Shafi'i according to us. The reason for this has been mentioned before, that non-existence is apparently established, and the possibility of finding water is a possibility for which there is no evidence, so it will not oppose the apparent. (T)

[Arabic Text]: I say: However, (1) for this poor servant, there is a *pause at the last reasoning*, for whoever (2) knows at the beginning of the time of Dhuhr or Isha, for example, that the water from here is at a distance of less than two miles or three miles, and knows that he will reach it within the breadth of time, and does not know if it is at a distance of a mile or less, then it is true of him that he does not know the proximity of water nor its distance, and he expects water not from a possibility without evidence, but rather from evidence, so it opposes the outward appearance and prevents Tayammum, and it is not so; Tayammum is only prevented by the thought that the water is near*, and he is in a suspicious doubt about it. This.

[Urdu Text]: I say: But this needy servant has some hesitation in the last reasoning because, for example, someone who knows at the beginning of Dhuhr or Isha time that water is at a distance of less than two miles or three miles from here, and he also knows that he will reach there while there is still ample time, and he does not know if it is a distance of one mile or less, then it is true of him that he has no knowledge of the proximity or distance of the water. And his hope for water is not due to a baseless possibility but due to evidence, so this will oppose the apparent probability and become a barrier to tayammum, whereas it is not so. Only the thought that water is near prevents tayammum, and in that very matter, he is faced with a troubling doubt. Keep this in mind. (T)

[Arabic Text]: And how excellent is the solution to the problem regarding the issue of hope that was established by the great Imam, Abu al-Barakat.

[Urdu Text]: The best solution to the problem of hope is what was explained by the great Imam Abu al-Barakat.

---

1. Bada'i al-Sana'i, Chapter on explaining the time of Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi 1/54 Page 108 of 761

फ़तावा रज़विया - जिल्द चहारुम

[अरबी पाठ]: और अगर (१) उसे पानी के समीप होने या दूर होने का ज्ञान नहीं है, तो उसकी नमाज़ जायज़ है, चाहे उसे समय के अंत में पानी की उम्मीद हो या न हो, चाहे पानी की तलाश के बाद हो या पहले, हमारे नज़दीक यह इमाम शाफ़ई के विपरीत है, क्योंकि बाहरी तौर पर पानी की अनुपस्थिति सिद्ध है और अस्तित्व की संभावना बिना किसी प्रमाण की संभावना है, इसलिए यह प्रत्यक्ष (ज़ाहिर) के विरुद्ध नहीं होगी। समाप्त।

उर्दू पाठ: पानी के दरमियान एक मील से कम फासला है तो उसकी नमाज़ जायज़ नहीं। इसमें कोई मतभेद नहीं क्योंकि पानी उसके लिए उपलब्ध है। और अगर एक मील या उससे अधिक का फासला हो तो उसकी नमाज़ हो गई। और अगर उसे पानी के करीब या दूर होने का ज्ञान नहीं है तो उसकी नमाज़ जायज़ है चाहे उसे समय के अंत में पानी मिलने की उम्मीद हो या न हो, चाहे पानी तलाश करने के बाद हो या पहले। यह हुक्म इमाम शाफ़ई के विपरीत हमारे नज़दीक है। इसकी वजह गुज़र चुकी है कि पानी का न होना ज़ाहिरी तौर पर साबित है और पानी मिलने की संभावना ऐसी संभावना है जिस पर कोई दलील नहीं है, तो वह ज़ाहिर के मुक़ाबिल (विपरीत) नहीं होगी। (त)

[अरबी पाठ]: अक़ूल (मैं कहता हूँ): लेकिन (१) इस बंदे मोहताज के लिए अंतिम तर्क में कुछ तवक्कुफ़ (हिचकिचाहट) है, क्योंकि जिसे (२) ज़ुहर या ईशा के समय के शुरू में मिसाल के तौर पर यह पता चला कि पानी यहाँ से दो मील या तीन मील से कम की दूरी पर है और उसे यह भी मालूम है कि समय के विस्तार में वह वहाँ पहुँच जाएगा, और उसे यह नहीं मालूम कि दूरी एक मील है या उससे कम, तो उस पर यह बात सही साबित होती है कि उसे पानी की निकटता या दूरी का ज्ञान नहीं है, और वह पानी की उम्मीद बिना किसी प्रमाण की संभावना से नहीं बल्कि प्रमाण के साथ कर रहा है, तो यह ज़ाहिर के विरुद्ध होगा और तयम्मुम से रोकेगा, जबकि ऐसा नहीं है। तयम्मुम से रोकने वाली चीज़ केवल यह गुमान है कि पानी करीब है*, और इसी मामले में वह संदेहास्पद शक में है। यह।

[अरबी पाठ]: और उम्मीद के मसले की कठिनाई का सबसे अच्छा समाधान वह है जिसे इमाम जलील अबू अल-बरकात ने मुक़र्रर किया है।

उर्दू पाठ: उम्मीद के मसले का बेहतरीन हल वह है जिसकी तक़रीर इमाम जलील अबू अल-बरकात ने की है।

1. बदाए-उस-सनाए, तयम्मुम का वक़्त बताने वाला अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी कराची १/५४ पेज १०८ / ७६१

فتاوی رضویہ - جلد چہارم

[عربی متن]: وان (۱) لم یکن عالماً بقرب الماء او بعدہ تجوز صلاتہ سواء کان یرجوا الماء في آخر الوقت اولا سواء کان بعد الطلب او قبلہ عندنا خلافاً للشافعي لبامر ان العدم ثابت ظاھرا واحتمال الوجود احتمال لادلیل علیہ فلا یعارض الظاھر اھـ

[اردو متن]: پانی کے درمیان ایک میل سے کم فاصلہ ہے تو اس کی نماز جائز نہیں۔ اس میں کوئی اختلاف نہیں اس لئے کہ پانی اس کیلئے دستیاب ہے۔ اور اگر ایک میل یا زیادہ کا فاصلہ ہو تو اس کی نماز ہو گئی۔ اور اگر اسے پانی کے قرب و بُعد کا علم نہیں تو اس کی نماز جائز ہے خواہ آخر وقت میں پانی کی امید ہو یا نہ ہو خواہ پانی تلاش کرنے کے بعد ہو یا پہلے ہو۔ یہ حکم امام شافعی کے برخلاف ہمارے نزدیک ہے اس کی وجہ گزر چکی کہ عدم ظاہراً ثابت ہے اور پانی ملنے کا احتمال ایسا احتمال ہے جس پر کوئی دلیل نہیں تو وہ ظاہر کے معارض نہ ہو گا۔ (ت)

[عربی متن]: اقول: لکن (۱) للعبد الفقیر توقف فی التعلیل الاخیر فان من (۲) علم في اول وقت الظھر او العشاء مثلا ان الماء من ھنا علی مسافۃ اقل من میلین او ثلثۃ امیال وعلم انہ یصل الیہ فی سعۃ الوقت ولم یعلم انہ علی فصل میل او اقل فصادق علیہ انہ لا یعلم قرب الماء ولا بعدہ وھو یرجوا الماء لامن احتمال بلادلیل بل عن دلیل فیعارض الظاھر ویمنع التیمم ولیس کذلك انما یمنع التیمم ظن ان الماء قریب* وھو منہ في شك مریب ھذا۔

[اردو متن]: اقول: لیکن بندہ محتاج کو تعلیلِ اخیر میں کچھ توقف ہے اس لئے کہ مثلاً جسے وقتِ ظہر یا وقتِ عشاء کے شروع میں علم ہوا کہ پانی یہاں سے دو میل یا تین میل سے کم مسافت پر ہے اور اسے یہ بھی علم ہے کہ وقت میں وسعت رہتے ہوئے وہاں تک پہنچ جائے گا اور اسے یہ

معلوم نہیں کہ ایک میل کا فاصلہ ہے یا کم تو اس پر یہ صادق ہے کہ پانی کے قرب و بُعد کا اسے علم نہیں۔ اور اس کو پانی کی امید بلا دلیل احتمال کے باعث نہیں بلکہ دلیل کے باعث ہے تو یہ احتمالِ ظاہر کے معارض اور تیمم سے مانع ہو جائے گا، حالانکہ ایسا نہیں۔ تیمم سے مانع صرف اس بات کا گمان ہے کہ پانی قریب ہے اور اسی میں تو اسے پریشان کن شک درپیش ہے۔ یہ ذہن نشین رہے۔ (ت)

[عربی متن]: ولنعم حل الاشکال عن مسئلة الرجاء ما قرره الامام الجلیل ابو البرکات

[اردو متن]: مسئلہ امید کے اشکال کا بہترین حل وہ ہے جس کی تقریر امام الجلیل ابو البرکات

---

1 بدائع الصنائع فصل و اما بیان وقت التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۵۴ Page 108 of 761

Fatawa Razawiyya Volume Four

[Text Section] ...may Allah Almighty have mercy on him, in "Al-Kafi," where he turned away from the reasoning of "Al-Hidayah" and provided an extremely beautiful reasoning, saying: "A traveler who overwhelmingly thinks that water is near him, it is mandatory to search for it. It is not mandatory without the dominance of thought (Ghalba-e-Zann) or information, because absence is established both in reality and apparently due to the lack of evidence pointing to existence from an apparent perspective; for in wildernesses, the apparent state is the absence of water. This is in contrast to populated areas; for if one performs Tayammum before searching in them, it is not permissible. Because even if absence is established in reality, it is not established apparently due to the presence of evidence for it, which is the population, as its existence depends on water. Similarly, if his thought predominates or an informer tells him, because a predominant opinion is like something verified in terms of the obligation of action. Therefore, action becomes mandatory based on solitary reports (Akhbar-e-Ahad), analogies (Qiyasat), interpreted and specified verses (Ay-e-Muwawwala wa Makhsoosa), and clear evidences (Bayyinat). If it is said: if the predominant opinion were like something verified here, it would have been mandatory to delay in a case where he overwhelmingly thinks he will find water at the end of the time. We say, on the authority of Abu Hanifa and Abu Yusuf (may Allah be pleased with them), that delaying is for the end (of time), and because his predominant thought then is that he will soon be near water, and this predominant thought is that he is near water now." This ends his noble discourse. And this, by the grace of Allah Almighty, is exactly what became apparent.

[Urdu Commentary Section] Nasafi (may Allah have mercy on him) stated in "Al-Kafi." He deviated from the reasoning of "Al-Hidayah" and presented an extremely excellent reasoning himself. He says: "There is a traveler who has a dominant thought that water is near him; then searching for it is mandatory. Without the dominance of thought or someone informing, searching is not mandatory because the absence of water is established both in reality and apparently, since apparently there is no evidence indicating the presence of water, as in deserts, the apparent state is the absence of water. The situation in populated areas is contrary to this. If one performs Tayammum before searching for water within populated areas, it is not permissible. Because although its non-existence is established in reality, it is not established apparently because the evidence for the presence of water—the population—is present. The reason is that the establishment of populations is due to water.

Similarly, if there is a dominant thought of water or an informer gives news (then also performing Tayammum before searching is not permissible) because a predominant opinion holds the status of being certain and verified in the context of the obligation of action. That is why the obligation of action is established from solitary reports, analogies, interpreted and specialized verses, and clear proofs and witnesses. If the question arises that if the predominant opinion achieved the status of being verified here, then in this case, it would be mandatory to delay the prayer when one has a dominant [thought]..."

1 Al-Kafi 2 Al-Kifayah 'ala al-Hidayah with Al-Fath al-Qadir, Chapter of Tayammum, Maktabah Nooria Razawiyya, Sukkur, 1/125

फ़तावा रज़विया जिल्द चार

[पाठ अनुभाग] ...अल्लाह तआला उन पर रहम फरमाए, "अल-काफी" में, जहाँ उन्होंने "अल-हिदाया" के तर्क से हटकर खुद एक अत्यंत सुंदर तर्क पेश किया है, वे कहते हैं: "एक मुसाफिर जिसका प्रबल विचार (गालिब गुमान) यह है कि उसके पास पानी है, तो तलाश करना अनिवार्य (वाजिब) है। प्रबल विचार या किसी की सूचना के बिना तलाश अनिवार्य नहीं है क्योंकि पानी का न होना वास्तव में और स्पष्ट रूप से सिद्ध है, क्योंकि ज़ाहिरी तौर पर अस्तित्व को इंगित करने वाला कोई प्रमाण नहीं है; क्योंकि जंगलों में ज़ाहिरी स्थिति पानी की अनुपस्थिति ही है। आबादी वाले क्षेत्रों का मामला इसके विपरीत है; क्योंकि यदि आबादी के भीतर पानी खोजने से पहले कोई तयम्मुम कर ले, तो यह जायज़ नहीं है। क्योंकि भले ही वास्तव में अनुपस्थिति सिद्ध हो, लेकिन ज़ाहिरी तौर पर सिद्ध नहीं है क्योंकि इसके लिए साक्ष्य मौजूद है, जो कि आबादी है, क्योंकि आबादी का अस्तित्व पानी पर निर्भर है। इसी तरह, यदि उसका विचार प्रबल हो जाए या कोई सूचना देने वाला उसे बताए, क्योंकि एक प्रबल राय कार्य की अनिवार्यता के संबंध में सत्यापित वस्तु की तरह होती है। इसलिए, एकल रिपोर्टों (अखबार-ए-आहाद), उपमाओं (क़ियासात), व्याख्यायित और विशिष्ट आयतों और स्पष्ट प्रमाणों (बय्यिनात) के आधार पर कार्य अनिवार्य हो जाता है। यदि यह कहा जाए: यदि यहाँ प्रबल राय सत्यापित वस्तु की तरह होती, तो उस मामले में देरी करना अनिवार्य होता जहाँ उसका प्रबल विचार यह हो कि वह समय के अंत में पानी पाएगा। हम कहते हैं, अबू हनीफा और अबू यूसुफ (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के अधिकार पर, कि देरी करना अंत (समय) के लिए है, और क्योंकि उसका तत्कालीन प्रबल विचार यह है कि वह जल्द ही पानी के पास होगा, और यह प्रबल विचार यह है कि वह अभी पानी के पास है।" यह उनका श्रेष्ठ प्रवचन समाप्त होता है। और यह, अल्लाह तआला के अनुग्रह से, बिल्कुल वही है जो स्पष्ट हुआ।

[उर्दू व्याख्या अनुभाग] नस्फी (अल्लाह उन पर रहम फरमाए) ने "अल-काफी" में फरमाया। उन्होंने "हिदाया" के तर्क से हटकर स्वयं एक अत्यंत उत्कृष्ट तर्क प्रस्तुत किया। वे कहते हैं: "एक मुसाफिर है जिसका प्रबल विचार है कि उसके पास पानी है, तो तलाश करना अनिवार्य है। प्रबल विचार या किसी के बताए बिना तलाश अनिवार्य नहीं है क्योंकि पानी का न होना वास्तव में और ज़ाहिरी तौर पर सिद्ध है क्योंकि ज़ाहिर में ऐसा कोई प्रमाण नहीं है जो पानी होने का पता दे, क्योंकि बियाबानों (जंगलों) में ज़ाहिर में पानी का न होना ही है। आबादी का हाल इसके विपरीत है। यदि आबादी के अंदर पानी तलाश करने से पहले तयम्मुम कर ले तो जायज़ नहीं। इसलिए कि न होना अगरचे हकीकत में सिद्ध

है मगर ज़ाहिर में सिद्ध नहीं क्योंकि पानी होने का प्रमाण आबादी मौजूद है, वजह यह है कि आबादी का कायम होना पानी से होता है। इसी तरह अगर पानी का गालिब गुमान हो या कोई खबर देने वाला खबर दे (तो भी पानी तलाश करने से पहले तयम्मुम जायज़ नहीं) क्योंकि गालिब राय अमल के वाजिब होने के हक में यकीनी और मुहक़्क़क़ (सत्यापित) की हैसियत रखती है। इसीलिए अखबार-ए-आहाद, क़ियासात, तावील व तख़्सीस याफ्ता आयात और बय्यिनात व गवाहों से अमल का वाजिब होना सिद्ध हो जाता है। अगर यह सवाल हो कि अगर गालिब राय को यहाँ मुहक़्क़क़ की हैसियत हासिल हुई तो इस सूरत में नमाज़ को टालना वाजिब होता जब उसे इस बात का गालिब..."

1 काफी 2 अल-किफाया अलल हिदाया मअ अल-फतहुल कदीर, बाबूत्तयम्मुम, मकतबा नूरिया रज़विया, सक्खर, 1/125

पेज 109 का 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

[متن کا حصہ] رحمہ اللہ تعالیٰ فی الکافی حیث عدل عن تعلیل الہدایۃ* وعلل بتعلیل حسن الی الغایۃ اذ قال مسافر غلب علی ظنہ ان بقربہ ماء وجب الطلب ولایجب بغیر غلبۃ الظن اواخبار لان العدم ثابت حقیقۃ و ظاہراً لفوات الدلیل الدال علی الوجود من حیث الظاہر اذ الظاہر فی المفاوز عدم الماء بخلاف العمرانات فانہ لو تیمم قبل الطلب فیہا لم یجز لان العدم وان کان ثابتاً حقیقۃ لم یثبت ظاہراً لقیام الدلیل علیہ وہو العمارۃ اذ قیامہا بالماء وکذا لو غلب علی ظنہ اواخبرہ مخبرلان غالب الرأی کالمتحقق فی حق وجوب العمل 1 ولہذا وجب العمل باخبار الآحاد والاقیسۃ والأی المؤولۃ والمخصوصۃ والبینات فان قیل لوکان غالب الرأی کالمتحقق ہنا لوجب التأخیر فیما اذا غلب علی ظنہ انہ یجد الماء فی آخر الوقت قلنا عن ابی حنیفہ و ابی یوسف رضی اللہ تعالیٰ عنہما ان التأخیر ختم ولان غلبۃ ظنہ ثم انہ سیصیر بقرب الماء وھذا غلبۃ ظنہ انہ بقرب الماء 2 اہ کلامہ الشریف، وھذا بحمد اللہ تعالیٰ عین ما ظہر

[اردو تشریح کا حصہ] نسفی رحمہ اللہ تعالیٰ نے کافی میں فرمائی۔ انہوں نے ہدایہ کی تعلیل سے ہٹ کر خود ایک انتہائی عمدہ تعلیل پیش کی ، فرماتے ہیں: ایک مسافر ہے جس کا غالب گمان یہ ہے کہ اس کے قریب پانی ہے تو تلاش کرنا واجب ہے۔ غلبہ ظن یا کسی کے بتائے بغیر تلاش واجب نہیں اس لئے کہ پانی نہ ہونا حقیقۃً اور ظاہراً ثابت ہے کیونکہ بظاہر ایسی کوئی دلیل نہیں جو پانی ہونے کا پتا دے اس لئے کہ بیابانوں میں ظاہر پانی کا نہ ہونا ہی ہے۔ آبادیوں کا حال اس کے برخلاف ہے۔ اگر آبادیوں کے اندر پانی تلاش کرنے سے پہلے تیمم کر لے تو جائز نہیں۔ اس لئے کہ نہ ہونا اگرچہ حقیقۃً ثابت ہے مگر ظاہراً ثابت نہیں کیونکہ پانی ہونے کی دلیل آبادی موجود ہے وجہ یہ ہے کہ آبادیوں کا قیام پانی سے ہوتا ہے۔ اسی طرح اگر پانی کا غلبہ ظن ہو یا کوئی خبر دے

(تو بھی پانی تلاش کرنے سے پہلے تیمم جائز نہیں) کیونکہ غالب رائے وجوب عمل کے حق میں یقینی و محقق کی حیثیت رکھتی ہے۔ اسی لئے اخبار آحاد، قیاسات، تأویل و تخصیص یافتہ آیات اور بنیات و گواہان سے وجوب عمل ثابت ہو جاتا ہے۔ اگر یہ سوال ہو کہ اگر غالب رائے کو یہاں متحقق کی حیثیت حاصل ہوئی تو اس صورت میں نماز کو مؤخر کرنا واجب ہوتا جب اسے اس بات کا غالب

1 کافی 2 الکفایہ علی الہدایہ مع الفتح القدیر باب التیمم مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/۱۲۵

Fatawa Razvia Volume 4

(Arabic Column Translation): ...for the weak servant in what I mentioned and similar to it in Al-Kifayah, it has become clear that the issue of hope does not refer to someone who hopes due to proximity, because for him Tayammum is unanimously not permissible. Rather, it refers to someone who hopes to arrive at the end of the time despite currently being far. This is not a suspicion of proximity but a suspicion that he will become near, so it is not considered. And the issue of 'suspicion of proximity' does not contradict it, as it has been explicitly stated in many reliable books that it pertains to being at a distant distance. In Ad-Dirayah and then Ash-Shilbi: "This recommendation applies when there is a distance of one mile or more between him and the place he hopes for. If it is less, Tayammum does not suffice him, even if he fears the elapsing of the prayer time." Similar is mentioned in Al-Bahr and Ad-Durr. In Al-Binayah: "This applies when water is far; if it is near, he does not perform Tayammum even if he fears the end of time." The jurist Abu Ja'far said: "Our three Imams agreed on this." Then he (Al-Ayni) said: "It is said if there is between him and the place he hopes for..." to the end of what we cited earlier from Ad-Dirayah.

(Urdu Column Translation): ...it would be thought that he will find water at the end of the time. We say in reply that this is a narration from Imam Abu Hanifa and Imam Abu Yusuf (may Allah be pleased with them) that delaying the prayer is mandatory. The reason is that there, his predominant thought is that he will be near water after some time, while here his predominant thought is that he is currently near water. This concludes the blessed words of Imam Nasafi. By Allah's praise, this is exactly what occurred to the mind of this weak servant, as previously mentioned. The same meaning is found in Al-Kifayah. It has thus become clear that in the 'ruling of hope,' it does not mean someone who hopes due to proximity to water, because Tayammum is unanimously not permissible for such a person. Rather, it refers to someone who hopes to reach water by the end of time despite being far from it presently. So it is not a suspicion of proximity, but rather a suspicion that he will become near water in the future. This suspicion is not credible and cannot be contested by the 'suspicion of proximity' ruling. Many reliable books explicitly state that the ruling of 'hope' is placed in the context of being at a distant distance. In Ad-Dirayah and then Ash-Shilbi: "This recommendation applies when there is a distance of one mile or more between him and the place where he hopes for water. If it is less, Tayammum is not permissible for him even if there is a risk of the prayer time passing." Similar is in Al-Bahr and its...

Footnotes: 1. Ash-Shilbi on Al-Kanz with Tabyin al-Haqa'iq, Chapter of Tayammum, Amiriya Press, Egypt, 1/41. 2. Al-Binayah Sharh al-Hidayah, Chapter of Tayammum, Malik Sons Faisalabad, 1/325. 3. Al-Binayah Sharh al-Hidayah, Chapter of Tayammum, Al-Imdadiya Al-Mukarramah Press, 1/325.

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

(अरबी कॉलम का अनुवाद): ...कमज़ोर सेवक के लिए जैसा कि मैंने उल्लेख किया और वैसा ही 'किफ़ाया' में, यह स्पष्ट हो गया कि 'उम्मीद' (रजा) के मसले से तात्पर्य वह व्यक्ति नहीं है जो निकटता के कारण उम्मीद करता है, क्योंकि उसके लिए सर्वसम्मति से तयम्मुम जायज़ नहीं है। बल्कि वह मुराद है जो अभी दूर होने के बावजूद अंत समय में पहुँचने की उम्मीद रखता है। तो यह निकटता का गुमान नहीं है, बल्कि यह गुमान है कि वह निकट हो जाएगा, इसलिए इसे विश्वसनीय नहीं माना जाता। और 'निकटता के गुमान' का मसला इस पर आपत्ति नहीं करता, क्योंकि कई विश्वसनीय किताबों में स्पष्ट किया गया है कि इसे लंबी दूरी की स्थिति में रखा गया है। 'दिराया' और फिर 'शल्बी' में है: "यह मुस्तहब तब है जब उसके और उस स्थान के बीच जिसकी वह उम्मीद करता है, एक मील या उससे अधिक की दूरी हो। यदि यह कम है, तो उसे तयम्मुम पर्याप्त नहीं है, भले ही उसे नमाज़ का समय निकल जाने का डर हो।" इसी के समान 'बहर' और 'दुर्र' में है। 'बिनाया' में: "यह तब है जब पानी दूर हो; यदि वह निकट हो तो वह तयम्मुम नहीं करेगा भले ही उसे समय निकलने का डर हो।" फ़क़ीह अबू जाफ़र ने कहा: "हमारे तीनों इमामों ने इस पर सहमति जताई है।" फिर उन्होंने कहा, यानी अल-ऐनी ने: "और कहा गया है कि यदि उसके और उस स्थान के बीच जिसकी वह उम्मीद करता है..." 'दिराया' से पहले उद्धृत किए गए अंश के अंत तक।

(उर्दू कॉलम का अनुवाद): ...अनुमान होता कि अंत समय में उसे पानी मिल जाएगा। तो हम उत्तर में कहेंगे कि यह इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम अबू यूसुफ़ (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से एक रिवायत है कि नमाज़ को टालना वाजिब है। और कारण यह है कि वहाँ उसका प्रबल विचार (ग़लबा-ए-ज़न्न) यह है कि वह कुछ समय बाद पानी के पास होगा, जबकि यहाँ उसका प्रबल विचार यह है कि वह वर्तमान में पानी के पास है। यहाँ इमाम नसफ़ी का मुबारक कलाम समाप्त हुआ। अल्लाह की स्तुति से, यह बिल्कुल वही बात है जो इस कमज़ोर सेवक के मन में आई थी, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है। 'किफ़ाया' में भी यही अर्थ है। अतः यह स्पष्ट हो गया कि 'उम्मीद के मसले' में इसका मतलब वह व्यक्ति नहीं है जिसे पानी की निकटता के कारण उम्मीद हो, क्योंकि उसके लिए सर्वसम्मति से तयम्मुम जायज़ नहीं है। बल्कि इसका मतलब वह व्यक्ति है जिसे उम्मीद है कि समय के अंत में पानी के पास पहुँच जाएगा, हालांकि इस समय वह पानी से दूर है। तो यह पानी की निकटता का गुमान नहीं है बल्कि यह गुमान है कि वह भविष्य में पानी के करीब हो जाएगा। इसलिए यह गुमान विश्वसनीय नहीं है और इस पर 'निकटता के गुमान' वाले मसले से कोई आंच नहीं आती। कई

प्रामाणिक पुस्तकों में स्पष्ट है कि 'उम्मीद' का मसला दूरी की स्थिति के लिए है। 'दिराया' और फिर 'शल्बी' में है: "यह मुस्तहब तब है जब उसके और जहाँ पानी की उम्मीद है उस स्थान के बीच एक मील या उससे अधिक का अंतर हो। यदि इससे कम है तो तयम्मुम जायज़ नहीं है भले ही नमाज़ का समय निकलने का डर हो।" इसी तरह 'बहर' में और उसके..

पाद टिप्पणियाँ: 1. अल-शल्बी अलल-कन्ज़ मअ तबीइनुल हक़ाइक़, बाबुल तयम्मुम, मतबअ अमीरिया मिस्र, 1/41। 2. अल-बिनाया शरह हिदाया, बाबुल तयम्मुम, मलिक संस फ़ैसलाबाद, 1/325। 3. अल-बिनाया शरह हिदाया, बाबुल तयम्मुम, मतबअ अल-इमदादिया अल-मुकर्रमा, 1/325।

पेज 110/761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

(بایاں کالم - عربی): للعبد الضعیف فیما ذکرت ونحوہ فی الکفایة فقد ظھر ان مسألة الرجاء لیس المراد فیھا من رجا لاجل القرب فانه لا یجوز له التیمم اجماعاً بل من رجا الوصول فی اخر الوقت مع بعدہ الآن فھذا لیس بظن القرب بل ظن انه سیقرب فلا یعتبر(۱) ولا یعکر علیه بمسألة ظن القرب وقد صرح بکونھا موضوعة فی بعد المسافة فی غیر ما کتاب معتمد ففی الدرایة ثم الشلبیة ھذا الاستحباب اذا کان بینه وبین موضع یرجوہ میل اوا کثر فان کان اقل لا یجزیه التیمم وان خاف فوت وقت الصلاة ۱ اھ ومثلہ فی البحر و نحوہ فی الدر وفی البنایة ھذا اذا کان الماء بعید وان کان قریباً لا یتیمم وان خاف خروج الوقت قال الفقیه ابو جعفر اجمع اصحابنا الثلثة علی ھذا ۲ اھ ثم قال اعنی العینی وقیل اذا کان بینه وبین موضع یرجوہ ۳ الی اخر ما قدمنا عن الدرایة -

(دایاں کالم - اردو): گمان ہوتا کہ آخر وقت میں اسے پانی مل جائے گا۔ تو ہم جواباً کہیں گے کہ یہ امام ابوحنیفہ و امام ابویوسف رضی اللہ تعالٰی عنہما سے ایک روایت ہے کہ نماز مؤخر کرنا واجب ہے۔ اور وجہ یہ ہے کہ وہاں اس کا غلبہ ظن یہ ہے کہ وہ کچھ دیر بعد پانی کے قریب ہو جائے گا اور یہاں اس کا غلبہ ظن یہ ہے کہ وہ بر وقت پانی کے قریب ہے اھ امام نسفی کا مبارک کلام ختم ہوا۔ یہ بحمد اللہ تعالٰی بعینہ وہی بات ہے جو بندہ ضعیف کے ذہن میں آئی جیسا کہ سابقاً ذکر کیا اسی کے ہم معنی کفایہ میں بھی ہے تو یہ واضح ہوگیا کہ مسئلہ امید میں یہ مراد نہیں کہ جسے قرب آب کی وجہ سے امید ہو کیونکہ اس کے لئے بالاجماع تیمم جائز نہیں بلکہ جسے امید ہے کہ آخر وقت میں پانی کے پاس پہنچ جائے گا باوجودیکہ اس وقت پانی سے دُور ہے تو اسے قرب آب کا گمان ہی نہیں بلکہ یہ گمان ہے کہ وہ آئندہ پانی کے قریب ہوجائے گا تو یہ گمان معتبر نہیں اور اس پر ظنِ قرب کے مسئلہ سے کوئی گرد نہیں ڈالی جاسکتی۔ متعدد معتمد کتابوں میں اس بات کی تصریح

موجود ہے کہ مسئلہ اُمید بُعد مسافت کی صورت میں رکھا گیا ہے۔ درایہ پھر شلبیہ میں ہے: "یہ استحباب اُس وقت ہے جب اس کے درمیان اور اس جگہ کے درمیان جہاں پانی کی امید ہے ایک میل یا زیادہ کا فاصلہ ہو اگر اس سے کم ہو تو اس کیلئے تیمم جائز نہیں اگرچہ وقتِ نماز نکل جانے کا خطرہ ہو۔" اسی کے مثل بحر میں اور اس کے

1 الشلبی علی الکنز مع تبیین الحقائق باب التیمم مطبعہ امیریہ مصر ۴۱/۱ 2 البنایہ شرح ہدایہ باب التیمم ملک سنز فیصل آباد ۳۲۵/۱ 3 البنایہ شرح ہدایہ باب التیمم مطبعہ الامدادیہ المکرمہ ۳۲۵/۱

Fatawa-e-Razvia - Volume 4

I say: (1) I do not know the difference between this and what was stated: "This is when water is distant, etc.", to the extent that he affirmed this and weakened that, considering it a separate opinion, while there is no difference except in wording.

It is mentioned in Durr al-Mukhtar with the same meaning, and in al-Binayah it is as follows: "This is for when water is far away. If it is nearby, one should not perform tayammum even if there is a fear of the time passing. Faqih Abu Ja'far said: Our three companions and Imams have reached a consensus on this." End quote. Further, Allama Ayni, the author of al-Binayah, writes: "And it was said: when between him and the place where he hopes for water... until the end of what we presented with reference to al-Dirayah." (T)

I say: I do not know what the difference is between their statement "This is for when water is far, etc." and this current statement, such that they asserted the former firmly and used "it was said" (qila) for the latter to weaken it and make it a separate opinion, whereas there is no difference between the two except in words. (T)

I say: (1) The text of al-Khulasa and the discourse of the eminent Imams have already established that assumption (zann) and certainty (yaqin) are equal in this regard; delaying the prayer is not obligatory upon him even if he is certain of finding water at the end of the time. Since that rare narration made it obligatory in the case of assumption, then certainty is even more deserving. Thus, it becomes clear that out of the four interpretations, the second is the actual one, even if it seems more distant considering the literal meaning. As for the statement in the rare narration that a predominant opinion is like a verified fact, we say: Yes, but even if it were verified, it would not be effective because he only became certain that it will be near in the future, not that it is currently near. With this, the difficulty raised against the reasoning in al-Hidayah regarding the established narration (Zahir al-Riwayah) is resolved.

I say: The text of al-Khulasa and the discourse of the great Imams have already been mentioned, stating that assumption and certainty are equal in this matter. It is not obligatory to delay the prayer even if there is certainty of finding water at the end of the time. When this rare narration made it obligatory in the case of assumption, then certainty is even greater than that. From this, it is clear that of the four interpretations presented by Imam Bukhari, the second is the actual one, although it seems more remote based on the literal wording. Now, regarding the saying about

the rare narration that a predominant opinion is like a verified fact, we say: Yes, and even if it is certain and verified, it is still not effective because he only became certain that it will be near in the future, not that it is currently near. From this, the difficulty arising against the reasoning in Hidayah regarding Zahir al-Riwayah is resolved. (T) I say: This can also be interpreted according to the fourth interpretation. Because from the distance...

I say: Also, it is possible to interpret it according to the fourth interpretation, for whoever is ignorant...

फ़तावा-ए-रज़विया - भाग 4

मैं कहता हूँ: (1) मैं नहीं जानता कि इसमें और इस कथन में क्या अंतर है: "यह तब है जब पानी दूर हो, आदि", यहाँ तक कि उन्होंने उस पर तो दृढ़ता व्यक्त की और इसे कमज़ोर (तमरीज़) माना और इसे एक अलग राय बना दिया, जबकि शब्दों के अलावा दोनों में कोई अंतर नहीं है।

दुर्र-ए-मुख़्तार के समान अर्थ में 'बिनाया' में इस प्रकार है: "यह उस समय के लिए है जब पानी दूर हो। यदि करीब हो तो तयम्मुम न करे चाहे समय निकल जाने का अंदेशा हो, फ़क़ीह अबू जाफ़र ने कहा: इस पर हमारे तीनों साथियों और इमामों का सर्वसम्मति (इज्मा) है।" (अहा)। आगे अल्लामा ऐनी साहब 'बिनाया' में लिखते हैं: "और कहा गया जब उसके और उस स्थान के बीच जहाँ उसे पानी की आशा है... उस के अंत तक जो हमने दिराया के हवाले से पेश किया। (त)"

मैं कहता हूँ: पता नहीं उनके कथन "यह उस समय है जब पानी दूर हो आदि" और इस कथन में क्या अंतर है कि उन्होंने उस पर तो दृढ़ता दिखाई और 'क़ील' (कहा गया) के माध्यम से इसे कमज़ोर व अशक्त बनाया और इसे एक अलग राय बना दिया, जबकि दोनों में शब्दों के सिवाय कोई अंतर नहीं है। (त)

मैं कहता हूँ: (1) और अल-खुलासा का पाठ और महान इमामों का कथन पहले आ चुका है कि इस मामले में धारणा (ज़न्न) और निश्चितता (यक़ीन) समान हैं; उस पर नमाज़ में देरी करना अनिवार्य नहीं है, भले ही उसे समय के अंत में पानी मिलने का यक़ीन हो। चूँकि उस दुर्लभ रिवायत ने धारणा की स्थिति में इसे अनिवार्य किया, तो निश्चितता तो इसके और भी अधिक पात्र है। अतः यह स्पष्ट होता है कि पेश किए गए चार अर्थों में से दूसरा अर्थ ही वास्तविक है, यद्यपि शब्दों के प्रत्यक्ष अर्थ के अनुसार यह अधिक दूर प्रतीत होता है। जहाँ तक दुर्लभ प्रबल राय के एक प्रमाणित तथ्य की तरह होने की बात है, तो हम कहते हैं: हाँ, और यदि यह निश्चित और प्रमाणित भी हो, तब भी यह प्रभावी नहीं है क्योंकि उसे केवल इसी बात का यक़ीन हुआ कि भविष्य में वह करीब होगा, न कि इसका कि वह वर्तमान में करीब है। इसी के साथ ज़ाहिर-उर-रिवायत के संबंध में हिदाया के तर्क पर उठने वाली आपत्ति समाप्त हो जाती है।

मैं कहता हूँ: अल-खुलासा का पाठ और महान इमामों का कथन पहले गुज़र चुका है कि इस बारे में धारणा और निश्चितता समान हैं। इस पर नमाज़ में देरी करना अनिवार्य नहीं है, भले ही समय के अंत में पानी मिलने का यक़ीन हो। जब इस दुर्लभ रिवायत ने धारणा की स्थिति में इसे अनिवार्य किया, तो

निश्चितता तो उससे बढ़कर है। इससे स्पष्ट हुआ कि इमाम बुखारी द्वारा पेश किए गए चार अर्थों में से वास्तविक अर्थ दूसरा है, यद्यपि प्रत्यक्ष शब्दों के अनुसार यह अधिक दूर मालूम होता है। अब दुर्लभ रिवायत से संबंधित इस कथन का क्या कि प्रबल राय प्रमाणित तथ्य की तरह है? हम कहते हैं हाँ, और यदि यह निश्चित और प्रमाणित हो तब भी प्रभावी नहीं है क्योंकि उसे केवल इसी बात का यक़ीन हुआ कि भविष्य में वह करीब होगा, इसका नहीं कि वह अभी करीब है। इसी से ज़ाहिर-उर-रिवायत से संबंधित हिदाया के तर्क पर आने वाली आपत्ति समाप्त हो जाती है। (त) मैं कहता हूँ: इसे चौथे अर्थ पर भी लागू किया जा सकता है। क्योंकि जो दूरी से...

मैं कहता हूँ: और इसे चौथे अर्थ पर भी लागू किया जा सकता है, क्योंकि जो अज्ञानी हो...

اقول: (۱) ولا ادری ما الفرق بینه وبین ما قال هذا اذا کان الماء بعیدا الخ حتی جزم بذلك ومرّض هذا وجعله قولا اخر مع انه لاتفاوت الا في اللفظ۔

ہم معنی دُرّ مختار میں ہے اور بنایہ میں اس طرح ہے: "یہ اُس وقت ہے جب پانی دُور ہو۔ اگر قریب ہو تو تیمّم نہ کرے اگرچہ اسے وقت نکل جانے کا اندیشہ ہو، فقیہ ابوجعفر نے فرمایا: اس پر ہمارے تینوں اصحاب و ائمہ کا اجماع ہے" اھ۔ آگے علامہ عینی صاحب بنایہ لکھتے ہیں: "اور کہا گیا جب اس کے اور اس جگہ کے درمیان جہاں اُسے پانی کی امید ہے اس کے آخر تک جو ہم نے درایہ کے حوالہ سے پیش کیا۔ (ت)"

اقول: پتا نہیں ان کے کلام "یہ اُس وقت ہے جب پانی دُور ہو الخ اور اس کلام میں فرق کیا ہے کہ انہوں نے اُس پر تو جزم کیا اور قیل (کہا گیا) سے اس کی تمریض وتضعیف کی اور اسے ایک الگ قول بنا دیا جب کہ دونوں میں سوائے الفاظ کے کوئی تفاوت نہیں۔ (ت)"

اقول: (۱) وقد تقدم نص الخلاصة وتقریر الائمة الجلة ان الظن والیقین في ذلك سواء لا یجب علیه التأخیر وان تیقن بوجدان الماء في آخر الوقت وتلك النادرة حیث اوجبت في الظن فالیقین اولی فتدظهر ان الواقع من المحامل الاربعة هو الثانی وان کان ابعد بالنظر الی ظاهر العبارة اما قول النادرة غالب الرأی کالمتحقق قلنا نعم ولو کان متحققاً لم یؤثر لانه انما تیقن انه سیقرب لا انه قریب وبهذا یعوز الاشکال علی تعلیل الهدایة لظاهر الروایة۔

اقول: خلاصہ کی عبارت اور بزرگ ائمہ کی تقریر پہلے گزر چکی کہ ظن ویقین اس بارے میں یکساں ہیں۔ اس پر نماز مؤخر کرنا واجب نہیں اگرچہ آخر وقت میں پانی ملنے کا یقین ہو اور اس

روایت نادرہ نے جب ظن کی صورت میں واجب کیا تو یقین تو اس سے بڑھا ہوا ہے۔ اس سے واضح ہوا کہ امام بخاری کے پیش کردہ چاروں محملوں میں سے واقع محمل دوم ہے اگرچہ ظاہر عبارت کے لحاظ سے بعید تر معلوم ہوتا ہے اب رہا روایت نادرہ سے متعلق یہ قول کہ غالب رائے متحقق کی طرح ہے۔ ہم کہتے ہیں ہاں اور اگر یہ یقینی و متحقق ہو جب بھی مؤثر نہیں اس لئے کہ اسے صرف اسی بات کا یقین ہوا کہ آئندہ وہ قریب ہوگا، اس کا نہیں کہ وہ قریب ہے۔ اسی سے ظاہر الروایہ سے متعلق ہدایہ کی تعلیل پر پیش آنے والا اشکال ختم ہو جاتا ہے۔ (ت) اقول: اسے محمل چہارم پر بھی محمول کیا جا سکتا ہے۔ اس لئے کہ جو مسافت سے

اقول: وایضا یمکن حملہ علی المحمل الرابع فان من جھل

Fatawa Razawiyya Volume IV

[Arabic Text Section Translation]: Distance: it is permissible for him to perform Tayammum in the wildernesses even if he hopes to reach water by the end of the prayer time, as we have previously mentioned from 'al-Badai'. This is because what prevents Tayammum is the certainty or strong likelihood of water being near, and both are absent here. The answer to the proof of the rare narration and the objection to the reasoning in 'al-Hidaya' remains as it was, because here too, Tayammum is permitted for him even if he is certain of reaching water at the end of the time, as we previously explained under the cited passage of 'al-Badai'. Up to this point, the resolution of the objection regarding the ruling has become clear, and the difference between the case of hope (of finding water) and the case of the thought of proximity has become evident. As for the reasoning in 'al-Hidaya', I say: Interpretation is better than disregard. It can be interpreted that 'certainty' refers to 'jurisprudential certainty' (al-yaqin al-fiqhi) which includes overwhelming probability (ghalabat az-zann). Thus, the intention here is not to distinguish between thought and certainty, as you have learned they are equal here according to both narrations. Rather, the meaning is to deny that it has any effect here. This is because incapacity (to find water) is established in reality and in Shariah. In reality because water is non-existent, and apparently because, in the case of being unfamiliar with the distance, there is no evidence of the proximity of water. As for the case of knowing or suspecting distance, the established Shariah ruling of the permissibility of Tayammum does not vanish except with certainty.

[Urdu Text Section Translation]: If one is unaware of the distance, then Tayammum is permissible for him in the wilderness even if he hopes that he will reach water by the end of the time. We have just presented this with reference to 'Badai'. The reason for this is that the hindrance to Tayammum is the proximity of water, either by certainty or by strong likelihood, and both these matters are absent here. And the answer to the proof of the rare narration and the objection to the reasoning in 'Hidaya' will remain as it was before. This is because here too, Tayammum is permissible for him even if he is certain of reaching the water by the end of the time, as we have explained under the aforementioned passage of 'Badai'. Up to this point, two things have been settled: first, the solution to the objection regarding the ruling has become clear; second, the difference between the issue of hope and the issue of suspected proximity has become evident. (T) Now, as for the matter of the reasoning in 'Hidaya', I say: it is better to interpret a statement than to render it absurd and

useless. Its interpretation can be that certainty refers to jurisprudential certainty which also includes overwhelming suspicion (ghalaba-e-zann), such that the intention here is not to differentiate between suspicion and certainty because it has become known that here, in both narrations, suspicion and certainty are equal. The intention is only to deny that that certainty has any influence here. This is because incapacity is established in reality and in Shariah. Shariah-wise because water is non-existent in reality, and apparently because, in the case of being unfamiliar with the distance, there is no proof of being near water.

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

[अरबी पाठ अनुभाग का अनुवाद]: दूरी: उसके लिए बीहड़ों में तयम्मुम करना जायज़ है, भले ही वह समय के अंत तक पानी तक पहुँचने की उम्मीद रखता हो, जैसा कि हमने पहले 'बदाए' के हवाले से बताया है। इसका कारण यह है कि तयम्मुम को रोकने वाली चीज़ पानी का नज़दीकी होना है, चाहे वह यक़ीनन हो या प्रबल संभावना (ग़ालिब ज़न्न) के तौर पर, और यहाँ दोनों ही अनुपस्थित हैं। दुर्लभ रिवायत के प्रमाण का उत्तर और 'हिदाया' के तर्क पर आपत्ति वैसी ही बनी हुई है, क्योंकि यहाँ भी उसके लिए तयम्मुम की अनुमति है, भले ही उसे समय के अंत में पानी तक पहुँचने का यक़ीन हो, जैसा कि हमने 'बदाए' के उद्धृत अंश के तहत पहले समझाया है। यहाँ तक, आदेश के संबंध में आपत्ति का समाधान स्पष्ट हो गया है, और उम्मीद (पानी मिलने की) तथा नज़दीकी के विचार के बीच का अंतर साफ़ हो गया है। जहाँ तक 'हिदाया' के तर्क का प्रश्न है, मैं कहता हूँ: व्याख्या करना उपेक्षा से बेहतर है। इसकी व्याख्या यह की जा सकती है कि 'यक़ीन' का अर्थ 'फ़िक़्ही यक़ीन' (न्यायशास्त्रीय निश्चितता) है जिसमें प्रबल संभावना (ग़लबात अज़्न-ज़न्न) भी शामिल है। अत; यहाँ उद्देश्य सोच और निश्चितता के बीच अंतर करना नहीं है, जैसा कि आपने जाना है कि दोनों रिवायतों के अनुसार वे यहाँ समान हैं। बल्कि, अर्थ यहाँ किसी भी प्रभाव होने से इनकार करना है। ऐसा इसलिए है क्योंकि अक्षमता (पानी खोजने में) वास्तव में और शरीयत में स्थापित है। वास्तव में इसलिए क्योंकि पानी अस्तित्वहीन है, और प्रत्यक्ष रूप से इसलिए क्योंकि, दूरी से अपरिचित होने की स्थिति में, पानी की निकटता का कोई प्रमाण नहीं है। जहाँ तक दूरी जानने या संदेह करने के मामले का प्रश्न है, तयम्मुम की अनुमति का स्थापित शरई आदेश यक़ीन के बिना समाप्त नहीं होता।

[उर्दू पाठ अनुभाग का अनुवाद]: यदि कोई दूरी से नावाकिफ़ हो, तो उसके लिए बीहड़ों में तयम्मुम करना जायज़ है, भले ही वह उम्मीद रखता हो कि समय के अंत तक वह पानी तक पहुँच जाएगा। हमने अभी 'बदाए' के हवाले से इसे प्रस्तुत किया है। इसका कारण यह है कि तयम्मुम में बाधा पानी की निकटता है, चाहे यक़ीनन हो या प्रबल संभावना के तौर पर, और ये दोनों मामले यहाँ अनुपस्थित हैं। और दुर्लभ रिवायत के प्रमाण का उत्तर और 'हिदाया' के तर्क पर आपत्ति पहले की तरह ही रहेगी। ऐसा इसलिए है क्योंकि यहाँ भी उसके लिए तयम्मुम अनुमेय है, भले ही उसे समय के अंत तक पानी पहुँचने का यक़ीन हो, जैसा कि हमने 'बदाए' के उपर्युक्त अंश के तहत समझाया है। यहाँ तक, दो बातें तय हो गई हैं: पहली, आदेश के संबंध में आपत्ति का समाधान स्पष्ट हो गया है; दूसरी, उम्मीद के मसले और निकटता के संदेह के मसले के बीच का अंतर साफ़ हो गया है। (त) अब,

'हिदाया' के तर्क के मामले में, मैं कहता हूँ: किसी कथन को निरर्थक और बेकार बनाने के बजाय उसकी व्याख्या करना बेहतर है। इसकी व्याख्या यह हो सकती है कि यक़ीन का तात्पर्य 'यक़ीने फ़िक़्ही' से है जिसमें प्रबल संदेह (ग़लबा-ए-ज़न्न) भी शामिल है, ताकि यहाँ संदेह और यक़ीन के बीच अंतर करना मक़सद न हो क्योंकि यह ज्ञात हो चुका है कि यहाँ, दोनों रिवायतों में, संदेह और यक़ीन बराबर हैं। मक़सद केवल यह इनकार करना है कि उस यक़ीन का यहाँ कोई प्रभाव है। ऐसा इसलिए है क्योंकि लाचारी वास्तव में और शरीयत में स्थापित है। शरीयत के अनुसार इसलिए क्योंकि पानी वास्तव में नदारद है, और ज़ाहिरी तौर पर इसलिए क्योंकि दूरी से नावाकिफ़ होने की स्थिति में, पानी के करीब होने का कोई सबूत नहीं है।

पृष्ठ 112 / 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

المسافة جاز له التيمم فی المفاوز وان كان يرجو الوصول اليه فی اخر الوقت كما قدمناه انفا عن البدائع وذلك لان المانع عن التيمم هو قرب الماء يقينا او ظنا غالبا وقد انتفيا والجواب عن دليل النادرة والاشكال على تعليل الهداية كما كان لان ههنا ايضا يباح له التيمم وان تيقن الوصول اليه فی آخر الوقت كما اسلفنا تقريره تحت عبارة البدائع المذكورة الى ههنا ظهر انحلال الاشكال عن الحكم واستبان الفرق بين مسألتی الرجاء وظن القرب۔ اما تعليل الهداية فأقول: التأويل خير من التعطيل يمكن ان يؤول بان المراد باليقين هو اليقين الفقهی الشامل لغلبة الظن فليس المقصود التفرقة ههنا بين الظن واليقين لما علمت انهما سواء ههنا على كلتا الروايتين وانما المعنى انكار ان يكون له اثرههنا وذلك ان العجز ثابت حقيقة شرعا لانعدام الماء حقيقة وظاهرا لعدم الدليل على قربه ان جهل المسافة وقيام الدليل على عدمه ان علم او ظن البعد فلا يزول حكمه الثابت شرعا وهو جواز التيمم الا بيقين

ناواقف ہو اس کیلئے بیابانوں میں تیمم جائز ہے اگرچہ امید رکھتا ہو کہ آخر وقت میں پانی تک پہنچ جائے گا ، اسے بدائع کے حوالہ سے ہم ابھی پیش کر آئے اس کی وجہ یہ ہے کہ تیمم سے مانع پانی کا قریب ہونا ہے بطور یقین یا بطور ظن غالب اور یہ دونوں ہی امر یہاں مفقود ہیں۔ اور روایت نادرہ کی دلیل کا جواب اور ہدایہ کی تعلیل پر اشکال جیسے پہلے تھا اب بھی رہے گا۔ اس لئے کہ یہاں بھی تیمم اس کیلئے مباح ہے اگر چہ آخر وقت میں پانی تک پہنچنے کا اسے یقین ہے جیسا کہ اس کی تقریر ہم بدائع کی مذکورہ عبارت کے تحت کر آئے یہاں تک دو باتیں طے ہو گئیں ایک تو حکم پر جو اشکال تھا اس کا حل واضح ہو گیا دوسرے مسئلہ امید اور مسئلہ ظن قرب کے درمیان فرق روشن ہو گیا۔ (ت) اب رہا تعلیل ہدایہ کا معاملہ فاقول (تو میں کہتا ہوں) کسی کلام کی تاویل کرنا اسے لغو و بیکار کرنے سے بہتر ہے اس کی یہ تاویل ہو سکتی ہے کہ یقین سے مراد یقین

فقہی ہے جو غلبہ ظن کو بھی شامل ہوتا ہے کہ یہاں ظن و یقین کے درمیان فرق کرنا مقصود نہیں اس لئے کہ معلوم ہو چکا کہ یہاں دونوں ہی روایتوں پر ظن و یقین یکساں ہیں مقصود صرف اس بات کا انکار ہے کہ یہاں وہ یقین کچھ اثر انداز ہے وہ اس لئے کہ عجز حقیقۃً ثابت ہے ، شرعاً اس لئے کہ پانی حقیقت میں معدوم اور ظاہراً اس لئے کہ مسافت سے نا آشنائی کی صورت میں پانی کے قریب ہونے پر کوئی دلیل نہیں۔

Fatawa-e-Razawiyya Volume IV

Legal certainty is such that if one gains a presumption of its proximity, and if not, then it is not. For there is no consideration for the presumption that it will be near soon, nor for its certainty. This is what occurs in the hope of reaching or certainty of it, but without the presumption of proximity that prevents Tayammum (dry ablution) and opposes the manifest inability. This is its explanation, and there is nothing in the expression to deny it. Therefore, it is necessary to interpret it as such, and praise be to Allah, the difficulty regarding the issue of 'hope'—both in its ruling and its reasoning—is resolved.

I say: The issue of 'promise' is also completed based on sub-derivation and foundational principles. It is known with absolute certainty that a promise does not procure [the object]; rather, it only creates hope. It is established in the Madhhab (school of thought) that for one who hopes for water, Tayammum is permissible and it is not obligatory for him to delay the prayer. Now, if someone claims that a promise procures the thing instantly, he is in conflict with an undeniable self-evidence. What promise can be like the promise of Allah (Mighty and Majestic) and His Messenger (Peace and blessings of Allah be upon him)? Paradise has been promised to the pious; do you think they have entered it now, enjoying its bounties in this world, and have obtained the Houries?

And for the pious...

फ़तावा-ए-रजविया जिल्द-4

फिक्ही यक़ीन इस तरह है कि उसे निकटता का गुमान हो जाए, और जब यह नहीं है तो वह भी नहीं है। क्योंकि इस गुमान का कोई ऐतबार नहीं है कि वह भविष्य में निकट हो जाएगा, और न ही उसके यक़ीन का कोई ऐतबार है। पानी तक पहुँचने की उम्मीद में यही गुमान या यक़ीन पाया जाता है। हर समय पानी निकट होने का गुमान, जो तयम्मुम से रोकता है और स्पष्ट लाचारी के विपरीत है, यह नहीं पाया जाता। यह इस स्पष्टीकरण से संबंधित तावील (व्याख्या) की व्याख्या हुई और इबारत में ऐसा कोई शब्द नहीं है जो इस व्याख्या का खंडन करता हो, इसलिए कलाम को इसी पर आधारित करना आवश्यक है। अल्लाह ही के लिए समस्त प्रशंसाएँ हैं, इससे 'उम्मीद' के मुद्दे के हुक्म और दलील दोनों से संबंधित उलझन हल हो गई।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): और उपशाखाओं (तफ़री'अ) और मूल सिद्धांतों (तासील) के लिहाज़ से 'वादे' का मसला यहाँ पूरा हुआ। क्योंकि यह निश्चित रूप से स्पष्ट है कि वादा वस्तु को प्राप्त नहीं करा देता, बल्कि केवल वस्तु प्राप्त होने की उम्मीद पैदा करता है। और मज़हब में यह तय है कि पानी की उम्मीद रखने वाले के लिए तयम्मुम कर लेना जायज़ है और उस पर नमाज़ में देरी करना वाजिब नहीं है। अब अगर कोई यह सोचे कि वादा वर्तमान में ही वस्तु को प्राप्त करा देता है, तो वह एक ऐसी हक़ीक़त से टकरा रहा है जिसे झुठलाया नहीं जा सकता। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के वादे जैसा कौन सा वादा हो सकता है? परहेज़गारों से जन्नत का वादा किया गया है; क्या आपको लगता है कि वे अभी इसमें प्रवेश कर चुके हैं और दुनिया में इसकी नेमतों का आनंद ले रहे हैं और हूरें प्राप्त कर चुके हैं?

और मुत्तक़ियों (परहेज़गारों) से...

فقہی مثلہ بان یحصل لہ ظن القرب واذ لیس فلیس فانہ لاعبرۃ بظن انہ سیقرب ولا باستیقانہ وانما ھذا ھو الحاصل في رجاء الوصول او تیقنہ دون ظن القرب المانع عن التیمم المعارض للعجز الظاھر فھذا تقریرہ ولیس في العبارۃ ما ینکرہ فوجب الحمل علیہ فقد انحل الاشکال وللہ الحمد عن مسألۃ الرجاء حکما وتعلیلا اور دوری کا یقین یا ظن غالب ہونے کی صورت میں اس کے عدم پر دلیل موجود ہے۔ تو اس کا حکم جواز تیمم جو شرعاً ثابت تھا زائل نہ ہوگا مگر ایسے یقین فقہی سے جو اس کے مثل ہو اس طرح کہ اسے قرب کا ظن ہو جائے اور جب یہ نہیں تو وہ بھی نہیں (قرب کا ظن نہیں تو حکم عجز کا زوال یعنی عدم جواز تیمم بھی نہیں ۱۲ م الف) اس لئے کہ اس کا یہ گمان کہ کہ وہ آئندہ قریب ہو جائے گا ، کوئی اعتبار نہیں ، نہ ہی اس کے یقین ہی کا کوئی اعتبار ہے اور پانی تک پہنچنے کی امید میں یہی گمان یا یقین پایا جاتا ہے۔ ہر وقت پانی قریب ہونے کا گمان جو تیمم سے مانع اور عجز ظاہر کا معارض ہے یہ نہیں پایا جاتا یہ اس تعلیل سے متعلق تاویل کی تقریر ہوئی اور عبارت میں ایسا کوئی لفظ نہیں جو اس تاویل کی تردید کرتا ہو تو کلام کو اسی پر محمول کرنا لازم ہے۔ خدا ہی کیلئے ساری خوبیاں ہیں اس سے مسئلہ امید کے حکم اور تعلیل دونوں ہی سے متعلق اشکال حل ہو گیا۔ (ت) اقول: وتم علی مسألۃ الوعد تفریعا وتأصیلا فمعلوم قطعاً بداھۃ ان الوعد لا یحصّل وانما یرجی وقد نقرر في المذھب ان راجی الماء یجوز لہ التیمم ولا یجب علیہ التأخیر وان زعم الآن زاعم ان الوعد محصل للشیئ في الحال فقد صادم بداھۃ غیر مکذوبۃ واي وعد مثل وعد اللہ ورسولہ جل وعلا وصلی اللہ تعالی علیہ وسلم وتلك الجنۃ قد وعدھا المتقون افتراھم دخلوھا الآن وتنعموا بنعیمھا في الدنیا وحصلوا الحور اقول: اور تفریع و تاصیل کے لحاظ سے مسئلہ وعدہ یہاں پر تمام ہوا اس لئے کہ قطعاً بداہۃً معلوم ہے کہ وعدہ پانی حاصل نہیں کرادیتا۔ پانی حاصل ہونے کی

صرف اُمید پیدا کرتا ہے۔ اور مذہب میں یہ طے شدہ ہے کہ پانی کی اُمید رکھنے والے کیلئے تیمم کر لینا جائز ہے اور اس پر نماز مؤخر کرنا واجب نہیں اب اگر کوئی یہ خیال کرے کہ وعدہ فی الحال شیئ کو حاصل کر دیتا ہے تو وہ نا قابل تکذیب بداہت سے تصادم میں مبتلا ہے خدائے بزرگ و برتر اور اس کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم کے وعدے جیسا کون سا وعدہ ہو سکتا ہے اور متقیوں سے اس

Fatawa Rizwia, Volume 4

Paradise has been promised, so have they entered Paradise now and attained the pleasures of its comforts in this world? And have they already obtained the houris, palaces, milk, wine, silk, and thrones? This is a clear sophistry. When this is the case with His promise, for which breaking the promise is impossible, then what will be the state of the promises of servants? In short, my limited understanding could not reach the depth of this issue, nor does anyone appear to have spoken about it to reveal its hidden secret. However, being a clear text (Nass) of the Madhhab (school of thought), we have no room for debate. The issue is definitely accepted because an original text exists for it, as cited in 'Al-Khulasa'. But none of the issues, sub-issues, and their justifications of the Madhhab that have come to my knowledge indicate that a 'stable power' (qudrah mustandah) is established through a promise. Rather, what has appeared from the evidence demands that 'fixed power' (qudrah muqarrarah) will be established through it, as was known at the beginning of the third warning. So I seek guidance from Allah Almighty (Istikhara) in this matter, and purity is for Allah alone; I do not make a definitive statement on it, nor do I establish it as a ruling. I still say what I said before: that this is what came to my mind, so there is a need for its review, refinement, and research. And Allah, the Pure and Most High, knows best. And may Allah send blessings and peace upon our Master and Lord, and upon his family and companions. O Allah! Accept it. (T)

Warning Four: I say: Apparently, it is considered that a promise establishes power. The condition for it is that it should either be absolute, for example, 'I will give', or restricted to the present time, for example, 'I am giving now', not that which is restricted to a future time, for example, 'I will give tomorrow'.

फ़तावा रज़विया, खंड 4

जन्नत का वादा हुआ है, तो क्या वे अभी जन्नत में दाखिल हो गए और इसकी सुख-सुविधाओं का आनंद इसी दुनिया में पा लिया? और हूर, महल, दूध, शराब, रेशम और तख्त सब अभी हासिल कर लिए? यह एक स्पष्ट कुतर्क(सफ़सता) है। तो जब यह उसके वादे का मामला है, जिसके लिए वादा खिलाफी असंभव है, तो बंदों के वादों का क्या हाल होगा? संक्षेप में, मेरी अल्प बुद्धि इस मसले की गहराई तक नहीं पहुँच सकी और न ही कोई ऐसा व्यक्ति नज़र आता है जिसने इस मसले के छिपे रहस्य को खोलने के लिए इसमें कुछ कहा हो। मगर यह मज़हब (विचारधारा) का स्पष्ट पाठ (नस्स) होने के नाते, हमें बहस की कोई गुंजाइश नहीं है। मसला तो निश्चित रूप से स्वीकार्य है क्योंकि मूल रूप से इस पर स्पष्ट पाठ मौजूद है, जैसा कि 'ख़ुलासा' ने इसका हवाला दिया है। लेकिन इस मसले और मज़हब के जितने भी मसले, विवरण और उनके तर्क मेरे ज्ञान में आए हैं, उनमें से किसी का भी इस बात पर कोई संकेत नहीं है कि वादे से 'स्थिर शक्ति' (कुदरते मुस्तन्दा) साबित होती है। बल्कि प्रमाण से जो कुछ ज़ाहिर हुआ वह इसी की मांग करता है कि इससे 'नियत शक्ति' (कुदरते मुकर्ररा) साबित होगी, जैसा कि (तीसरी चेतावनी के शुरू में) ज्ञात हुआ। तो मैं इस बारे में अल्लाह तआला से इस्तिखारा करता हूँ और अल्लाह ही के लिए पाकी है; मैं इस बारे में कोई अंतिम बात नहीं कहता, और न ही इसे कोई हुक्म (आदेश) करार देता हूँ। मैं अब भी वही कहता हूँ जो पहले कह चुका हूँ कि यह वह बात है जो मेरे ज़हन में आई, तो इसकी समीक्षा, शुद्धिकरण और शोध की आवश्यकता है। और अल्लाह पाक और बुलंद ही बेहतर जानने वाला है। और अल्लाह तआला दरूद और सलाम नाज़िल फरमाए हमारे आका और मौला पर और उनकी आल और असहाब पर। ऐ अल्लाह! स्वीकार फरमा। (त)

चेतावनी चार: मैं कहता हूँ: स्पष्टतः वादे से शक्ति का साबित होना माना गया है। उसमें शर्त यह है कि वह या तो मुतलक (स्वतंत्र) हो, जैसे 'दूँगा', या वर्तमान समय से जुड़ा हो, जैसे 'अभी देता हूँ', न कि वह जो भविष्य के समय से जुड़ा हो, जैसे 'कल दूँगा'।

جنت کا وعدہ ہوا ہے تو کیا وہ ابھی جنت میں داخل ہو گئے اور اس کی آسائشوں کی لذت دنیا ہی میں پا گئے اور حور و قصور، شیر و شراب، ریشم و تخت سب ابھی حاصل کر لئے یہ کھلا ہوا سفسطہ ہے تو جب یہ اس کے وعدہ کا معاملہ ہے جس سے وعدہ خلافی محال ہے تو بندوں کے وعدوں کا کیا حال ہو گا۔ المختصر میرا فہم قاصر اس مسئلہ کی تہہ تک نہ پہنچ سکا نہ ہی کوئی ایسا نظر آتا جس نے اس مسئلہ کا راز سربستہ کھولنے کیلئے اس میں کلام کیا ہو مگر یہ نص مذہب ہوتے ہوئے ہمیں مجال کلام نہیں۔ مسئلہ تو قطعاً مسلم ہے کیوں کہ اصل میں اس پر نص موجود ہے جیسا کہ خلاصہ نے اس کا حوالہ دیا لیکن یہ مسئلہ اور مذہب کے جتنے بھی مسائل و جزئیات اور ان کی تعلیلات میرے علم میں آئیں کسی کی کوئی دلالت اس پر نہیں کہ وعدہ سے قدرت مستندہ ثابت ہوتی ہے بلکہ دلیل سے جو کچھ ظاہر ہوا وہ اسی کا مقتضی ہے کہ اس سے قدرت مقررہ ثابت ہوگی جیسا کہ (تنبیہ سوم کے شروع میں) معلوم ہوا تو میں خدا تعالٰی سے اس بارے میں استخارہ کرتا ہوں اور خدا ہی کیلئے پاکی ہے، میں اس بارے میں قطعی قول نہیں کرتا، نہ ہی اسے کوئی حکم قرار دیتا۔ میں اب بھی وہی کہتا ہوں جو پہلے کہہ چکا کہ یہ وہ ہے کہ جو میرے ذہن میں آیا تو اس کی مراجعت اور تنقیح و تحقیق کی ضرورت ہے اور خدائے پاک وبرتر ہی خوب جاننے والا ہے۔ اور اللہ تعالٰی درود وسلام نازل فرمائے ہمارے آقا و مولٰی اور ان کی آل و اصحاب پر الٰہی! قبول فرما۔ (ت)

تنبیہ چہارم: اقول : ظاہرًا وعدہ کی مثبت قدرت مانا گیا ہے اُس میں شرط ہے کہ یا تو مطلق ہو مثلاً دوں گا یا وقت حاضر سے مقید مثلاً ابھی دیتا ہوں نہ وہ کہ وقت آئندہ سے مقید ہو مثلاً کل دوں گا۔

Fatawa Rizwia, Volume 4

To take it in the evening or after an hour while only half an hour remains of the prayer time, such a promise would not inherently grant the ability [to perform wudu] whether it's before or after the prayer. This is because it is truly a combination of two things: a refusal at the present time and giving hope for a future time. So for the current time, it is indeed a refusal, not a promise. Otherwise, it would be necessary that if someone says 'I will give it after ten years', then for ten years, there should be a ruling for him to remain suspended from prayer, as was previously explained in the second note, and this is very clear. (T)

In short, such a promise is a refusal with respect to the present time. So if previously there was a suspicion of giving, its error will be proven. If there was a suspicion of refusal, it will be confirmed. And if there was doubt, it will be changed into the knowledge of refusal. And Allah the Almighty knows best. Name this promise 'Wa'dah Iba'i' (Refusal Promise) and name the absolute or restricted promise for the current time 'Wa'dah Raja'i' (Hopeful Promise).

Fifth Note: I say: If a 'Hopeful Promise' is made before prayer, it is absolutely effective. If it is before tayammum, it will prevent tayammum. If after, it will nullify it. And if during prayer, it will invalidate it, whether fulfilled or not—meaning time passes and no water is given—because our Imams have declared waiting to be mandatory even if the time elapses. However, if this promise is made after prayer, whether because it was asked for afterward or not asked at all and the person promised on their own, there are two scenarios. If it is given within the time, the prayer must be repeated.

[Table Content]

Column 1 (Arabic): For giving within the time is absolutely invalidating, even without a promise.

And the promise only adds to its confirmation.

If you say, how is it so when a promise is not free from immediate refusal? Because its essence is 'I will not give you now but after a while', for he who answers immediately, what would he promise for? So this is giving after refusal, hence it should not be considered. I say: A promise for the time of need is not considered a refusal conventionally or legally. So if one swore (3) not to refuse Zaid such a thing, then Zaid asked him...

Column 2 (Urdu Translation/Explanation): Because giving within the time invalidates it absolutely, even without a promise. If there was a promise too, it only provided further support. (T) If the question arises, how is this possible when a promise is not free from refusal in the present? Because the summary of it is: 'I will not give to you now, I will give in a while,' because one who acts immediately, why would he make a promise? So this is giving after a refusal, therefore it will not be considered. (T) I say: (In answer I will say) a promise to give at the time of need will not be considered a refusal conventionally, nor legally. If someone swore an oath not to refuse Zaid such a thing, and Zaid asked him...

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4

शाम को लेना या एक घंटे बाद मिलेगा जबकि नमाज़ के समय में सिर्फ़ आधा घंटा बाकी है, ऐसा वादा मूल रूप से क्षमता (वुज़ू करने की) प्रदान करने वाला नहीं होगा, चाहे नमाज़ से पहले हो या बाद में। क्योंकि यह वास्तविकता में दो चीज़ों का मिश्रण है: वर्तमान समय में मना करना और भविष्य के लिए आशा दिलाना। तो वर्तमान समय के लिए तो यह मना करना ही हुआ, वादा नहीं। अन्यथा यह अनिवार्य होगा कि यदि कोई कहे 'मैं दस साल बाद दूँगा', तो दस साल तक उसे नमाज़ से रुके रहने का हुक्म हो, जैसा कि दूसरी चेतावनी में इसकी व्याख्या की गई और यह बहुत स्पष्ट है। (त)

संक्षेप में, वर्तमान समय के संदर्भ में ऐसा वादा मनाही है। तो यदि पहले देने का गुमान (संदेह) था तो उसकी गलती सिद्ध होगी, और यदि मना करने का गुमान था तो उसकी पुष्टि होगी, और यदि संदेह था तो वह मनाही के ज्ञान में बदल जाएगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। इस वादे का नाम 'वादा इबाई' (मनाही वाला वादा) रखें और वर्तमान समय के लिए मुतलक या मुक़य्यद (पूर्ण या प्रतिबंधित) वादे का नाम 'वादा रजाई' (उम्मीद वाला वादा) रखें।

पाँचवीं चेतावनी: मैं कहता हूँ: यदि 'वादा रजाई' नमाज़ से पहले हो तो यह ज़रूर मुतलकन (पूर्ण रूप से) प्रभावी है। यदि तयम्मुम से पहले है तो तयम्मुम के लिए बाधक होगा, और यदि बाद में है तो उसे तोड़ने वाला होगा। और यदि नमाज़ के बीच में है तो उसे शून्य करने वाला होगा, चाहे वादा पूरा हो या न हो—अर्थात समय बीत जाए और पानी न दे—क्योंकि हमारे इमामों ने इंतज़ार करना अनिवार्य बताया है चाहे समय निकल जाए। लेकिन यदि यह वादा नमाज़ के बाद हो, चाहे इसलिए कि उसने बाद में ही माँगा या माँगा ही नहीं और उसने खुद से वादा कर लिया, यहाँ दो स्थितियाँ हैं। यदि समय के अंदर दे दिया तो ज़रूर नमाज़ दोहराई जाएगी।

[सारणी की सामग्री]

कॉलम 1 (अरबी): निश्चित रूप से समय के भीतर देना पूर्णतः बातिल (अमान्य) कर देता है, भले ही वादे के बिना हो।

और वादे ने इसकी पुष्टि में और इज़ाफ़ा ही किया।

यदि तुम कहो कि यह कैसे, जबकि वादा वर्तमान में मनाही से खाली नहीं होता? क्योंकि इसका सार यह होता है कि 'मैं तुम्हें अभी नहीं दूँगा बल्कि कुछ समय बाद दूँगा', क्योंकि जो तुरंत काम कर दे वह

भला किस बात का वादा करेगा। तो यह इनकार के बाद देना है, इसलिए इसका ऐतबार नहीं होगा। मैं कहता हूँ: ज़रूरत के समय देने का वादा न तो प्रथागत (उर्फ़ी) रूप से और न ही शरीयत के अनुसार मनाही माना जाएगा। अतः यदि किसी ने कसम खाई (3) कि वह ज़ैद को फलां चीज़ के लिए मना नहीं करेगा, फिर ज़ैद ने उससे माँगा...

कॉलम 2 (उर्दू अनुवाद/व्याख्या): इसलिए कि समय के अंदर दे देना पूर्णतः बातिल कर देता है, चाहे बिना वादे के हो। यदि वादा भी हुआ तो इसकी और अधिक पुष्टि ही हुई। (त) अगर यह सवाल हो कि यह कैसे जब कि वादा वर्तमान में मनाही से खाली नहीं होता, इसलिए कि इसका हासिल यह होता है कि तुमको अभी न दूँगा कुछ बाद में दूँगा, क्योंकि जो फ़ौरन काम कर दे वह वादा किस बात का करेगा। तो यह इनकार के बाद देना है, लिहाज़ा इसका ऐतबार न होगा। (त) मैं कहता हूँ: (जवाब में मैं कहूँगा) ज़रूरत के वक्त देने का वादा उर्फ़न मना नहीं शुमार होगा, न ही शरअन। अगर किसी ने कसम खाई ज़ैद से फलां चीज़ के लिए...

पृष्ठ 115 का 761

شام کو لینا یا گھنٹہ بھر بعد ملے گا اور وقت میں نصف ہی گھنٹہ ہے ایسا وعدہ اصلاً مثبت قدرت نہ ہوگا قبل نماز ہو یا بعد کہ وہ حقیقۃً دو چیزوں سے مرکب ہے وقت حاضر میں منع اور وقت آئندہ کیلئے امید دلانا تو وقت حاضر کیلئے منع ہی ہوا نہ وعدہ ورنہ لازم ہو کہ اگر وہ کہے دس برس بعد دوں گا تو دس برس تک اسے نماز سے معطل رہنے کا حکم ہو کما تقدم تقریرہ فی التنبیہ الثانی وھذا ظاہر جدا (جیسا کہ تنبیہ دوم میں اس کی تقریر پیش ہوئی اور یہ بہت واضح ہے۔ت)

بالجملہ ایسا وعدہ بنظر وقت حاضر منع ہے تو اگر پہلے ظنِ عطا تھا اس کی خطا ثابت ہوگی اور ظن منع تھا تو اس کی تصدیق ہوگی اور شک تھا تو علم منع سے بدل جائے گا واللہ تعالٰی اعلم اس وعدے کا نام وعدہ ابائی رکھئے اور مطلق یا مقید بوقت حاضر کا نام وعدہ رجائی۔

تنبیہ پنجم : اقول : وعدہ رجائی اگر قبل نماز ہو ضرور مطلقاً موثر ہے اگر تیمم سے پہلے ہے تیمم کا مانع ہوگا اور بعد ہے تو اس کا ناقض اور عین نماز میں ہے تو اس کا مبطل اگر چہ وفا ہو یا نہ ہو یعنی وقت گزر جائے اور پانی نہ دے کہ ہمارے ائمہ نے انتظار واجب فرمایا اگر چہ وقت نکل جائے لیکن اگر یہ وعدہ بعد نماز ہو خواہ یوں کہ اس نے مانگا ہی بعد یا اصلاً نہ مانگا اور اس نے بطورِ خود وعدہ کر لیا یہاں دو صورتیں ہیں اگر وقت کے اندر دے دیا ضرور اعادہ نماز کرے گا۔

[ٹیبل کا مواد]

پہلا کالم (عربی): فان العطاء فی الوقت مبطل مطلقا ولو بلا وعد وما زادہ الوعد الاتأییدا۔ فان قلت کیف ولا یخلوا لوعد عن منع فی الحال لان حاصلہ لا اعطیك الأن بل بعد حین فان من یجیب من فورہ

فیم یعد فھذا عطاء بعد اباء فلا یعتبر۔ اقول : الوعد لوقت الحاجة لا یعد منعا عرفا ولا شرعا فمن حلف (۳) لا یمنع زیدا کذا فسألہ زید

دوسرا کالم (اردو ترجمہ): اس لئے کہ وقت میں دے دینا مطلقاً باطل کر دیتا ہے اگر چہ بلا وعدہ ہو۔ وعدہ بھی ہوا تو اس کی اور زیادہ تائید ہی ہوئی۔ (ت) اگر یہ سوال ہو کہ یہ کیسے جب کہ وعدہ حال میں منع سے خالی نہیں ہوتا اس لئے کہ اس کا حاصل یہ ہوتا ہے کہ تم کو ابھی نہ دوں گا کچھ بعد میں دوں گا، کیونکہ جو فوراً کام کر دے وہ وعدہ کس بات کا کرے گا۔ تو یہ انکار کے بعد دینا ہے لہٰذا اس کا اعتبار نہ ہوگا۔ (ت) اقول : (جواباً میں کہوں گا) ضرورت کے وقت دینے کا وعدہ عرفاً منع نہیں شمار ہوگا، نہ ہی شرعاً۔ اگر کسی نے قسم کھائی زید سے فلاں چیز

[Arabic Text]: ...His promise for the time of his need does not break the oath definitively, and by this, it becomes clear that a promise is other than giving. Thus, if (1) one swears an oath not to give, he does not break it merely by promising. It is a matter between two things; just as the rulings of giving are not established for it, rather it is like hope (raja') as we mentioned. However, the authority lies with what is transmitted (manqool), even if it is not apparent to the intellects.

[Urdu Translation]: ...I will not refuse. Now Zaid requested that thing from him. He promised that he would give it when needed, so his oath will certainly not be broken. From this, it also became clear that a promise is different from giving. If he took an oath that he would not give him such-and-such a thing, then merely by promising, his oath will not be broken. A promise is an intermediate matter, so just as the rules of prohibition will not be established for it, similarly the rules of giving will not be established, but it is like hope (raja') as we have stated. However, the authority lies with the transmitted text (manqool), even if it is not clear to the intellects. (T)

And if it was not given at the time, there are two possibilities: either the breach of promise will be evident because time passed and it was intentionally not given, then this promise will not be effective.

[Arabic Text]: Because he did not give, and what the promise granted of the assumption of giving vanished with the breach, and there is no consideration for an assumption whose error is manifest. If before it he assumed giving, then he failed; or refusal, then he was truthful; or he doubted, then it changed to the knowledge of refusal.

[Urdu Translation]: This is because he did not give, and the expectation of giving that the promise had provided ended with the breach of promise, and there is no consideration for an assumption whose error is clear. If previously he assumed it would be given, he failed; or if he assumed refusal, it came true; or if there was doubt, it turned into certainty of refusal. (T)

And if the breach of promise was not evident, for example, the promise was like, "Come and take it after two hours," and he did not go within that time, or a need arose for him to go elsewhere, thus a separation occurred and he could not give, then in this situation, the apparent rule is—and Allah Almighty knows best—that the order is for absolute repetition of the prayer.

[Arabic Text]: For reality remained hidden, so the matter revolved around assumption. If he assumed giving, it multiplied by the promise, and if he assumed refusal, it became weak, rather it dissipated by it, because a promise certainly bequeaths the assumption of giving, as Imam Muhammad said that...

[Urdu Translation]: Because the reality remained hidden, therefore the matter was based on assumption; now if he had an assumption of being given, it increased because of the promise, and if he had an assumption of refusal, it became weaker, rather dissipated, because a promise undoubtedly creates an assumption of giving, as...

[अरबी मूल]: ...उसकी ज़रूरत के समय के लिए उसका वादा निश्चित रूप से शपथ नहीं तोड़ता, और इससे यह स्पष्ट होता है कि वादा प्रदान करने से अलग है। अत; यदि (१) कोई शपथ ले कि वह नहीं देगा, तो वह केवल वादा करने से शपथ नहीं तोड़ता। यह दो चीज़ों के बीच का मामला है; जैसे प्रदान करने के नियम इसके लिए स्थापित नहीं होते, बल्कि यह उम्मीद (रजा) की तरह है जैसा कि हमने उल्लेख किया है। लेकिन मान्यता शास्त्र में वर्णित (मनक़ूल) की है, भले ही वह बुद्धियों पर स्पष्ट न हो।

[उर्दू अनुवाद]: ...मैं इनकार नहीं करूँगा। अब ज़ैद ने उससे वह चीज़ माँगी। उसने वादा किया कि जब ज़रूरत होगी दे दूँगा, तो उसकी शपथ (क़सम) निश्चित रूप से नहीं टूटेगी। इससे यह भी स्पष्ट हो गया कि वादा करना अलग है और देना अलग। यदि उसने शपथ ली कि वह अमुक वस्तु उसे नहीं देगा, तो केवल वादा करने से उसकी शपथ नहीं टूटेगी। वादा एक मध्यवर्ती मामला है, तो जैसे इसके लिए निषेध के नियम सिद्ध नहीं होंगे, वैसे ही प्रदान करने के नियम भी सिद्ध नहीं होंगे, बल्कि यह आशा (रजा) के समान है जैसा कि हमने उल्लेख किया है। लेकिन मान्यता शास्त्रों में वर्णित (मनक़ूल) की है, चाहे वह बुद्धियों पर स्पष्ट न हो। (त)

और यदि समय पर नहीं दिया गया, तो दो स्थितियाँ हैं: या तो वादा-खिलाफी स्पष्ट होगी कि समय बीत गया और जानबूझकर नहीं दिया गया, तो यह वादा प्रभावी नहीं होगा।

[अरबी मूल]: क्योंकि उसने नहीं दिया, और वादे ने देने का जो अनुमान प्रदान किया था, वह वादा-खिलाफी से समाप्त हो गया, और ऐसे अनुमान का कोई महत्व नहीं जिसकी गलती स्पष्ट हो। यदि इससे पहले उसने देने का अनुमान लगाया था, तो वह विफल रहा; या इनकार का, तो वह सच साबित हुआ; या संदेह था, तो वह इनकार के ज्ञान में बदल गया।

[उर्दू अनुवाद]: इसलिए कि उसने दिया नहीं, और वादे ने देने की जो संभावना (ज़न) पैदा की थी, वह वादा-खिलाफी से समाप्त हो गई, और ऐसे अनुमान का कोई महत्व नहीं जिसकी गलती स्पष्ट हो। यदि पहले उसे देने का अनुमान था तो वह विफल रहा, या यदि इनकार का अनुमान था तो वह सच हुआ, या यदि संदेह था तो वह इनकार के यकीन में बदल गया। (त)

और यदि वादा-खिलाफी स्पष्ट नहीं हुई, उदाहरण के लिए वादा ऐसा था कि "दो घड़ी बाद आकर ले जाना", वह समय के भीतर नहीं गया या उसे कहीं जाने की आवश्यकता पड़ गई, इस प्रकार जुदाई

हो गई और वह दे न सका, तो इस स्थिति में ज़ाहिर यह है—और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है—कि पूर्ण रूप से नमाज़ लौटाने का हुक्म हो।

[अरबी मूल]: क्योंकि वास्तविकता छिपी रही, अतः मामला अनुमान पर आधारित रहा। यदि उसे देने का अनुमान था, तो वादे से वह और बढ़ गया, और यदि इनकार का अनुमान था, तो वह इससे कमज़ोर बल्कि समाप्त हो गया, क्योंकि वादा निश्चित रूप से देने का अनुमान पैदा करता है, जैसा कि इमाम मुहम्मद ने कहा कि...

[उर्दू अनुवाद]: इसलिए कि वास्तविकता तो ओझल ही रही, अतः मामले का आधार अनुमान पर रहा; अब यदि उसे देने का अनुमान था तो वह वादे से और बढ़ गया, और यदि इनकार का अनुमान था तो वह उससे कमज़ोर बल्कि समाप्त हो गया, क्योंकि वादा निस्संदेह देने का अनुमान पैदा करता है, जैसा कि...

पृष्ठ ११६ / ७६१

[Arabic Text]: فوعدہ لوقت حاجتہ لا یحنث قطعاً و بہ تبین ان الوعد غیر العطاء ایضا فلو (۱) حلف لایعطی لایحنث بمجرد الوعد ایضا فھو امر بین بین فکما لا تثبت ایضا احکام العطا بل الرجاء کما ذکرنا ولکن العبرۃ بالمنقول وان لم یظھر للعقول۔

[Urdu Translation]: کا انکار نہ کروں گا۔ اب زید نے اس سے وہ چیز طلب کی۔ اس نے وعدہ کیا کہ جب ضرورت ہوگی دے دوں گا تو ہر گز اس کی قسم نہ ٹوٹے گی۔ اسی سے یہ بھی واضح ہو گیا کہ وعدہ اور ہے دینا اور۔ اگر قسم کھائی کہ فلاں چیز اسے نہ دے گا تو صرف وعدہ کرنے سے اس کی قسم نہ ٹوٹے گی۔ وعدہ ایک درمیانی امر ہے تو جیسے اس کیلئے منع کے احکام ثابت نہ ہوں گے ایسے ہی عطا کے احکام بھی نہ ثابت ہوں گے بلکہ رجا کے جیسا کہ ہم نے بیان کیا۔ لیکن اعتبار منقول کا ہے اگرچہ عقلوں پر واضح نہ ہو۔ (ت)

اور اگر وقت میں نہ دیا تو دو صورتیں ہیں یا تو اس کا خلف ظاہر ہوگا کہ وقت گزر گیا اور قصدا نہ دیا تو یہ وعدہ موثر نہ ہوگا۔

[Arabic Text]: لانہ لم یعط وما اعطاہ الوعد من ظن الاعطاء زال بالخلاف ولا عبرۃ بالظن البین خطؤہ فان کان قبلہ یظن عطاء فقد خاب او منعا فقد صدق او یشک فتبدل بعلم المنع۔

[Urdu Translation]: اس لئے کہ اس نے دیا نہیں اور وعدہ نے جو ظن عطا بخشا تھا وہ وعدہ خلافی سے ختم ہو گیا اور ایسے گمان کا اعتبار نہیں جس کی غلطی واضح ہو۔ اگر پہلے اسے عطا کا گمان تھا تو وہ ناکام ہوا، یا منع کا گمان تھا تو سچ ہوا، یا شک تھا تو وہ منع کے یقین سے بدل گیا۔ (ت)

اور اگر اس کا خلف ظاہر نہ ہوا، مثلاً وعدہ یوں تھا کہ دو گھڑی بعد آ کر لے جانا یہ نہ گیا وقت کے اندر اسے یا اسے کہیں جانے کی ضرورت لاحق ہوئی یوں افتراق ہو گیا اور نہ دے سکا تو اس صورت میں ظاہر یہ ہے واللہ تعالیٰ اعلم کہ مطلقاً اعادہ نماز کا حکم ہو۔

[Arabic Text]: فان الحقیقہ بقیت فی الستر فدار الامر علی الظن فان کان یظن العطاء فقد تضاعف بالوعد وان کان یظن المنع فقد تضعف بل اضمحل بہ لان الوعد یورث ظن العطاء قطعاً کما قال الامام محمد ان

[Urdu Translation]: اس لئے کہ حقیقت تو روپوش ہی رہ گئی اس لئے مدار امر ظن پر ہوا اب اگر اسے عطا کا گمان تھا تو وہ وعدہ سے اور بڑھ گیا اور اگر منع کا گمان تھا تو وہ اس سے ضعیف بلا بلکہ مضمحل ہو گیا اس لئے کہ وعدہ بلاشبہ ظن عطا پیدا کرتا ہے، جیسا کہ

Fatawa Ridawiyya, Volume 4

The outward appearance is fulfillment, and it is impossible for the predominant assumption (zann al-ghalib) to relate to both sides. So, when the assumption of giving arises, the assumption of prevention ceases. The same applies to doubt because preponderance invalidates equality. Thus, nothing remains upon which the validity of his prayer can be based. The fundamental principle regarding water is permissibility. It has become clear that the negligence was his for not asking due to an assumption of prevention or doubt that turned out to be misplaced. Therefore, the prayer must be repeated so that exoneration occurs with certainty. For prayer is among those matters of religion for which caution is observed. This is what appeared to me, and the knowledge of truth is with the Manifest Truth.

In short, the discussion on this eighth issue has been lengthy, but by my life, it was not devoid of returning benefit; rather, by the praise of my Lord, it contained brilliant pearls that were never strung by the finger of explanation, and exquisite brides whom no human or jinn before me has touched. The summary of what we have established is that a stern promise (al-wa'd al-aba'i) has no effect absolutely, and a hopeful promise (al-raja'i) is effective absolutely, except when it is after the prayer and its non-fulfillment becomes apparent. And Allah, the Glorified and Exalted, knows best. (T)

All these discussions are those which were inspired into the mind of this humble servant by the grace of the Almighty. A thousand regrets that in current books, no mention of them is found in any form at all. The same is the case with the forthcoming issue of silence; unavoidably in both...

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4

ज़ाहिर वफ़ा है, और यह मुमकिन नहीं कि प्रबल धारणा (ज़न्न-ए-ग़ालिब) का संबंध दोनों पक्षों से हो। तो जब देने की धारणा उत्पन्न होगी, तो रोकने की धारणा समाप्त हो जाएगी। यही हाल संदेह का है क्योंकि प्रधानता समानता को समाप्त कर देती है। अब ऐसा कोई आधार शेष नहीं रहा जिस पर उसकी नमाज़ की वैधता की नींव रखी जा सके। और पानी में मूल सिद्धांत अनुमति (इबाहत) है। और यह स्पष्ट हो गया कि कमी उसकी ओर से थी कि उसने उस धारणा या संदेह के कारण प्रश्न ही नहीं किया जिसका गलत होना स्पष्ट हो गया। अतः नमाज़ को दोहराना होगा ताकि निश्चितता (यक़ीन) के साथ जिम्मेदारी से मुक्ति हो सके। क्योंकि नमाज़ दीन के उन कार्यों में से है जिनमें एहतियात (सावधानी) बरती जाती है। यह वह है जो मेरे मस्तिष्क में आया और सत्य का ज्ञान सत्य (अल्लाह) के पास है।

संक्षेप में, इस आठवें मसले पर चर्चा लंबी हो गई लेकिन, मेरे जीवन की कसम, यह लाभ से खाली नहीं रही, बल्कि मेरे रब की प्रशंसा से, इसमें ऐसे अनमोल मोती शामिल हुए जिन्हें कभी वर्णन की उंगली से पिरोया नहीं गया था, और ऐसी सुंदर दुल्हनें (नये शोध) जिन्हें मुझसे पहले न किसी मनुष्य ने छुआ और न किसी जिन्न ने। और हमारे द्वारा स्थापित किए गए का निष्कर्ष यह है कि 'अबाई' (कठोर) वादा पूर्णतः बेअसर है और 'रजाई' (आशाजनक) वादा पूर्णतः प्रभावी है, सिवाय इसके कि जब नमाज़ के बाद हो और उसका विपरीत होना स्पष्ट हो जाए। और अल्लाह पाक और सर्वोच्च बेहतर जानता है। (त)

ये तमाम शोध वे हैं जो अल्लाह के अनुग्रह से इस फ़क़ीर के ज़ेहन में आए। हज़ारों अफ़सोस कि वर्तमान पुस्तकों में इनका किसी भी तरह से ज़िक्र नहीं मिलता। यही हाल आने वाले खामोशी के मसले का है, लाचारी में दोनों में...

الظاہر الوفاء ولا مکان لتعلق الظن الغالب بکلا الطرفین فاذا حدث ظن العطاء فقد زال ظن المنع وکذا الشک لان الرجحان یبطل التساوی فلم یبق ما تبنی علیہ صحۃ صلاتہ والاصل فی الماء الاباحۃ وقد تبین ان التقصیر منہ لترکہ السؤال لاجل ظن منع او شک ظہر کونہما فی غیر المحل فتعاد الصلاۃ لتقع البراءۃ بیقین فان الصلاۃ من اجل مایحتاط لہ فی الدین ھذا ما ظہر لی والعلم بالحق عند الحق المبین۔

امام محمد رحمہ اللہ تعالٰی نے فرمایا کہ "ظاہر وفاء ہے" اور یہ ممکن نہیں کہ ظنِ غالب کا تعلق دونوں ہی جانب سے ہو۔ تو جب ظنِ عطا پیدا ہوگا ظنِ منع ختم ہوجائے گا۔ یہی حال شک کا ہے اس لئے کہ جب ایک طرف رجحان پیدا ہوگا تو وہ دونوں جانب کی باہمی مساوات باطل کردے گا۔ اب ایسا کوئی امر باقی نہ رہا جس پر اس کی نماز کی صحت کی بنیاد رکھی جاسکے۔ اور پانی میں اصل اباحت ہے۔ اور واضح ہوگیا کہ کوتاہی اس کی ہے کہ اس نے سوال ہی نہ کیا اس ظن سے یا شک کے باعث جن (دونوں) کا بے جا ہونا عیاں ہوگیا تو نماز کا اعادہ کرنا ہوگا تاکہ یقینی طور پر عہدہ برآ ہو جائے اس لئے کہ دین کے جن کاموں میں احتیاط برتی جاتی ہے ان میں نماز سب سے بزرگ ہے۔ یہ وہ ہے جو میرے ذہن میں آیا اور حق کا علم حق مبین کو ہے۔

وبالجملۃ لقد طال الکلام فی ھذہ المسألۃ الثامنۃ ولعمری لم یخل عن فائدہ عائدۃ بل اشتمل ولوجہ ربی الحمد علی غرر درر لم تنظم بننان البیان ونفائس عرائس لم یطمثھن انس قبلی ولا جان وحاصل ما قررنا فیہ ان الوعد الابائی لا یؤثر مطلقاً والرجائی مؤثر مطلقاً الا اذا کان بعد الصلاۃ وظہر خلفہ واللہ سبحانہ وتعالیٰ اعلم۔

بالجملہ اس آٹھویں مسئلہ میں کلام طویل ہوگیا مگر نفع بخش فائدے سے خالی نہ رہا بلکہ ایسے آبدار گوہروں پر مشتمل ہوا جو کبھی انگشت بیان سے پروئے نہ گئے اور ایسی نفیس و حسین عروسوں پر جنہیں مجھ سے پہلے نہ کسی انسان نے ہاتھ لگایا نہ کسی جن نے۔ اور ساری حمد میرے رب کی ذات کیلئے ہے۔ اور اس بارے میں ہم نے جو کچھ ثابت کیا اس کا حاصل یہ ہوا کہ وعدہ ابائی مطلقاً بے اثر ہے اور وعدہ رجائی مطلقاً مؤثر ہے مگر جب کہ ادائے نماز کے بعد ہو اور اس کا خلف ظاہر ہوجائے۔ اور خدائے پاک و برتر خوب جاننے والا ہے۔ (ت)

یہ تمام مباحث وہ ہیں کہ ذہنِ فقیر پر فیض قدیر سے القا ہوئے۔ ہزار ہزار حسرت کہ کتبِ حاضرہ میں ان میں سے کسی صورت سے اصلاً تعرض نہ پایا یہی حال آئندہ مسئلہ سکوت کا ہے ناچار دونوں میں۔

Fatawa Razawiya, Volume 4

The necessity of these researches became apparent; far be it from us to consider ourselves qualified to pass independent judgments on legal rulings, nor is such reliance placed upon them. The tracking of reference books and the consecutive observations of people of insight are essential.

| And Allah is the one whose help is sought, and in Him is reliance, and there is no power or strength except with Allah, the Most High, the Magnificent. And may Allah Almighty send blessings upon our Master and Lord Muhammad and upon all his family and companions, Amen. | And help is sought from God alone, and reliance is upon Him. There is no power or might except from God, the Highest and Grandest. And may Allah Almighty send mercy upon our Lord and Master Muhammad and his family and companions all. O Allah, accept it. (T) |

Issue 9: Refusal, i.e., refusing to give, is of two types. One is explicit (Sarahatan), where one clearly says "I will not give" or uses words that convey this meaning. I say: Refusal by abstaining (Aba'i), which we mentioned in the fourth warning, falls into this category as it is the specific implication of speech. The second is implicit (Dalalatan), i.e., any other act that indicates refusal. In 'Durr al-Mukhtar,' an example of this is given as waste/consumption (Istihlak), meaning consuming the water or throwing it away so that the capacity to give it no longer remains.

| As he said: He asks for it from the one who is with him. If he refuses him, even if implicitly by wasting it, he performs Tayammum. [1] | Their words are: "He will ask for water from his companion; if he refuses, even if implicitly such that he finishes the water, then he should perform Tayammum." (T) |

Similarly, if he used some of it and the remaining amount is not sufficient for the required purification, as stated in at-Tahawi:

| Or he wasted some of it and the rest is insufficient. [2] | Or he finished some of it and what remains is insufficient. (T) |

I say: We added the condition of 'required' because if one has finished bathing and, for example, a spot on the back remains dry which requires one handful of water, then if only one handful remains, it is sufficient for the purification of the bath (ghusl). But if a full bath is needed, even half a pot is not sufficient. And if he asked for it and the owner did not give it to him but gave it to Zaid instead, would this also be considered as waste in ruling and an implicit refusal or not?

| I say: I have not seen it (in texts), and I mention what has appeared to me... | I say: This has not come across my sight; now |

[1] Durr al-Mukhtar, Chapter of Tayammum, Mujtabai Press, Delhi, 1/44. [2] Hashiyat al-Tahawi ala al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Tayammum, Beirut edition, 1/321.

फ़तावा रज़विया, जिल्द चौथी

इन शोधों की आवश्यकता सामने आई; खुदा न करे कि हुक्मों में अपनी राय थोपना हमारा काम है, और न ही इस पर भरोसा किया जाए। किताबों की छानबीन और सूझ-बूझ वाले लोगों के लगातार अवलोकन अनिवार्य हैं।

| अल्लाह ही से मदद मांगी जाती है और उसी पर भरोसा है, और कोई शक्ति या बल नहीं है सिवाय अल्लाह के जो बुलंद और अज़ीम है। और अल्लाह तआला रहमत नाज़िल फरमाए हमारे आका और मौला मुहम्मद पर और उनकी आल और असहाब सब पर, आमीन। | और खुदा ही से मदद मांगी जाती है और उसी पर भरोसा है। कोई ताकत और कुव्वत नहीं है सिवाय अल्लाह के जो सब से बरतर और अज़मत वाला है। और अल्लाह तआला रहमत नाज़िल फरमाए हमारे आका व मौला मुहम्मद और उन की आल व असहाब सब पर। ऐ अल्लाह! इसे कुबूल फरमा। (त) |

मसला ९: मना करना यानी देने से इनकार करना दो प्रकार का है। एक 'सराहतन' (स्पष्ट रूप से), कि साफ़ कह दे "नहीं दूँगा" या ऐसे शब्द जो यही अर्थ देते हों। मैं कहता हूँ: इनकार करने वाला मना (मना अबा'ई), जिसका ज़िक्र हमने चौथी चेतावनी में किया, इसी श्रेणी में आता है क्योंकि वह बातचीत का विशिष्ट अर्थ है। दूसरा 'दलालतन' (संकेत से), यानी कोई और बात जो मना करने की ओर संकेत करे। 'दुर्रे मुख्तार' में इसका उदाहरण 'इस्तिहलाक' (नष्ट करना/खर्च करना) से दिया गया है, यानी पानी खर्च कर लेना या फेंक देना ताकि अब देने की क्षमता ही न रहे।

| जहाँ उन्होंने कहा: वह उससे मांगेगा जिसके पास (पानी) है। अगर वह उसे मना कर दे, भले ही संकेत से, इस तरह कि उसे खत्म कर दे, तो वह तयम्मुम करे। [1] | उनके शब्द ये हैं: "पानी अपने साथी से मांगेगा; अगर वह मना कर दे, भले ही संकेत के तौर पर इस तरह कि वह पानी खत्म कर दे, तो तयम्मुम करे।" (त) |

इसी तरह अगर कुछ खर्च कर दिया और बाकी आवश्यक पवित्रता के लिए काफी नहीं रहा, तो 'तहावी' में है:

| या कुछ नष्ट कर दिया और बाकी अपर्याप्त है। [2] | या कुछ खत्म कर दिया और जो बचा वह नाकाफ़ी है। (त) |

मैं कहता हूँ: 'आवश्यक' की शर्त हमने इसलिए लगाई कि अगर कोई नहा चुका है और मान लीजिए पीठ पर इतनी जगह सूखी रह गई है जिसके लिए एक चुल्लू पानी चाहिए, तो अगर सिर्फ एक चुल्लू ही बचा है तो वह ग़ुस्ल की पाकी के लिए काफी है। और अगर पूरा नहाना है तो आधा घड़ा भी काफी नहीं। और अगर उसने माँगा और उसने उसे नहीं दिया बल्कि ज़ैद को दे दिया, तो क्या यह भी कानूनी तौर पर नष्ट करना और संकेत से मना करना होगा या नहीं?

| मैं कहता हूँ: मैंने इसे नहीं देखा, और मैं वही ज़िक्र करता हूँ जो मुझ पर ज़ाहिर हुआ... | मैं कहता हूँ: यह मेरी नज़र से नहीं गुज़रा; अब |

1. दुर्रे मुख्तार, बाबुत तयम्मुम, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, १/४४।
2. हाशिया अत-तहावी अलल दुर्रिल मुख्तार, बाबुत तयम्मुम, बेरुत संस्करण, १/३२१।

पृष्ठ ११४/७६१

ان ابحاث کی احتیاج نے منہ دکھایا یا حاشا احکام میں رائے زنی نہ ہمارا منصب نہ اس پر اعتبار تتبع اسفار و تلاحق انظار اولی الابصار ضرور درکار۔

| واللہ المستعان * وعلیہ التکلان * ولاحول ولاقوۃ الا باللہ العلی العظیم وصلی اللہ تعالٰی علی سیدنا مولنا محمد وآلہ وصحبہ اجمعین امین۔ | اور خدا ہی سے مدد طلب کی جاتی ہے اور اسی پر بھروسہ ہے اور کوئی طاقت و قوت نہیں مگر خدائے برتر و باعظمت ہی سے۔ اور اللہ تعالٰی رحمت نازل فرمائے ہمارے آقا و مولٰی محمد اور ان کی آل و اصحاب سب پر الٰہی قبول فرما۔ (ت) |

مسئلہ ۹ منع یعنی دینے سے انکار دو قسم ہے ایک صراحۃً کہ صاف کہہ دے نہ دوں گا یا اور الفاظ کہ ان معنی کو مودی ہوں۔ اقول: منع ابائی کہ ہم نے ابھی تنبیہ چہارم میں ذکر کیا اسی قسم میں ہے کہ وہ خاص مدلول کلام ہے۔ دوسرا دلالۃً یعنی اور کوئی امر کہ منع پر دلالت کرے۔ در مختار میں اس کی مثال استہلاک سے دی یعنی پانی خرچ کرلینا یا پھینک دینا کہ اب دینے کی صلاحیت ہی نہ رہی۔

| حیث قال یطلبہ ممن ھو معہ فان منعہ ولو دلالۃ بان استھلکہ تیمم [1] | ان کے الفاظ یہ ہیں: "پانی اپنے ساتھی سے طلب کرے گا اگر وہ انکار کرے اگرچہ دلالۃً اس طرح کہ وہ پانی ختم کر ڈالے تو تیمم کرے۔" (ت) |

یونہی اگر بعض خرچ کر دیا اور باقی طہارت مطلوبہ کو کافی نہ رہا طحاوی میں ہے:

| او استھلك البعض والباقی غیر کافی [2] | یا کچھ ختم کر ڈالا اور جو بچا وہ ناکافی ہے۔ (ت) |

اقول: مطلوب کی قید ہم نے اس لئے لگائی کہ اگر نہا چکا اور مثلاً پیٹھ پر اتنی جگہ خشک رہی جسے ایک چلو پانی درکار ہے تو اگر ایک ہی چلو باقی ہے طہارتِ غسل کو کافی ہے اور اگر پورا نہانا ہے تو آدھا گھڑا بھی کافی نہیں۔ اور اگر اس نے مانگا اور اس نے اسے نہ دیا زید کو دے دیا تو یہ بھی حکماً استہلاک اور دلالۃً منع ہو گا یا نہیں۔

| اقول: لم اره واذکر ماظهر لی | اقول: یہ میری نظر سے نہ گزرا، اب |

[1] در مختار، باب التیمم، مطبوعہ مجتبائی دہلی، ۱/۴۴ [2] طحاوی علی الدر المختار باب التیمم مطبوعہ بیروت، ۱/۳۲۱

(Arabic): With the guidance of Allah, the Majestic and Most High, and I hope it will be correct if Allah Almighty wills. (Urdu): I state what has become clear to me through the guidance of Allah the Great and Exalted, and I hope that if the Exalted God wills, it will be correct. (t)

If it was given to another as permission (ibāḥat), then this is forbidden, because it became clear that he did not want to give it, and the one to whom it was permitted cannot give it because he did not become the owner through permission. And if he gave it as a complete gift (hibba) or sale, then although it was forbidden from that particular person, the issue of finding water with someone else still applies. Now, if the current owner is likely to give it upon request, then asking for it is mandatory; otherwise, it is not. And all those rulings regarding giving and withholding will return. And Allah Almighty knows best.

Then I say: Apparently, rather, if Allah the Almighty wills, certainly the third form of implied refusal (man’ dalālatan) is silence. If someone asked and he did not explicitly refuse but remained silent, then at the time of need, silence will be understood as a refusal to give.

(Arabic): It has already been mentioned what they said regarding the one from whom the person performing tayammum asked for water, and he did not inform him; this includes silence, and it was expressed as 'refusal' in 'al-Hilya'. (Urdu): The statements of the noble scholars have passed regarding one from whom a person intending tayammum asked about water, and he did not inform him. This includes the state of silence, and in 'al-Hilya', this is expressed as refusal. (t)

An example of this is the silence of a defendant when, at the claimant's request, an oath is required of him, and the judge asks him for an oath, and he remains silent. This silence will be considered a refusal if it is not due to an inability to hear or speak. Therefore, it is recommended (mustahabb) that the judge ask him three times. If he remains silent, it is considered a refusal to take the oath (nukul), and the judge should decree in favor of the claimant. It is stated in Tanwir al-Absar and Durr al-Mukhtar:

(Arabic): The judge (decides against him upon his refusal once) literally (by him saying "I will not swear" or) legally, such as (if he remains silent without any ailment) like muteness or deafness, according to the correct opinion. [This is from] 'al-Siraj', and

the oath is offered thrice, then the judgment is more cautious. Sh. said, i.e., as a recommendation. (Urdu): The judge (will give a decision against him due to refusal of the oath once). This refusal may be literal (such as saying "I will not take an oath") or legal (for example, remaining silent without any disability or calamity like muteness or deafness). This is the correct view.

---

1 Al-Durr al-Mukhtar with al-Shami, Book of Claims, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 4/174. 2 Radd al-Muhtar, Book of Claims, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 4/417.

(अरबी): अल्लाह के मार्गदर्शन के साथ, जो महान और सर्वोच्च है, और मुझे आशा है कि यदि अल्लाह सर्वशक्तिमान ने चाहा तो यह सही होगा। (उर्दू): मैं वही बयान कर रहा हूँ जो अल्लाह महान और सर्वोच्च के मार्गदर्शन से मुझ पर ज़ाहिर हुआ, और मुझे उम्मीद है कि यदि ईश्वर ने चाहा तो यह दुरुस्त ही होगा। (त)

अगर दूसरे को अनुमति (इबाहत) के रूप में दिया गया है, तो यह मना है, क्योंकि यह साफ़ पता चला कि उसने देना नहीं चाहा, और जिसे अनुमत किया गया वह उसे दे नहीं सकता क्योंकि वह अनुमति से मालिक नहीं बना। और अगर उसने उसे पूर्ण दान (हिबा) या बिक्री के रूप में दे दिया, तो यद्यपि यह उस विशिष्ट व्यक्ति की ओर से मना किया गया था, लेकिन किसी और के पास पानी मिलने का मामला पहले की तरह ही रहेगा। अब जो इसका मालिक बना है, अगर प्रबल संभावना (ज़न्न-ए-ग़ालिब) हो कि वह माँगने पर दे देगा, तो उससे माँगना वाजिब है, अन्यथा नहीं। और अब उसके देने और मना करने में वे सभी नियम वापस आएंगे। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

फिर मैं कहता हूँ: ज़ाहिर है, बल्कि इंशाअल्लाह मौला तआला यक़ीनन सांकेतिक मनाही (मना दलालतन) का तीसरा रूप चुप्पी (सुकूत) भी है। उसने माँगा और उसने साफ़ इनकार तो न किया लेकिन चुप रहा, तो ज़रूरत के समय चुप्पी से यही समझा जाएगा कि देना मंज़ूर नहीं है।

(अरबी): उनके उस कथन के बारे में पहले चर्चा हो चुकी है जिसमें तयम्मुम करने वाले ने पानी माँगा और उसने उसे नहीं बताया। इसमें चुप्पी भी शामिल है और 'अल-हिल्या' में इसे इनकार से व्यक्त किया गया है। (उर्दू): माननीय विद्वानों का कथन उससे संबंधित गुज़र चुका है जिससे तयम्मुम वाले ने पानी के बारे में पूछा तो उसने ख़बर न दी। यह स्थिति चुप्पी को भी शामिल करती है और 'हिल्या' में इसकी व्याख्या इनकार से की गई है। (त)

इसकी मिसाल प्रतिवादी (मुद्दा-अलैह) की चुप्पी है जब वादी (मुद्दई) की माँग पर उस पर शपथ (हलफ़) अनिवार्य हो और काज़ी उससे शपथ माँगे और वह चुप रहे। यह चुप्पी इनकार समझी जाएगी बशर्ते कि वह सुनने या बोलने में असमर्थता के कारण न हो। इसलिए मुस्तहब (पसंदीदा) है कि काज़ी उससे तीन बार कहे। अगर वह चुप रहे तो शपथ से इनकार (नुकूल) मानकर वादी के पक्ष में फ़ैसला (डिक्री) दे दे। तनवीरुल अबसार और दुर्रे मुख़्तार में है:

(अरबी): काज़ी (एक बार इनकार करने पर उसके विरुद्ध फ़ैसला दे देगा) वास्तव में (उसके यह कहने से कि "मैं शपथ नहीं लूँगा" या) कानूनी तौर पर जैसे कि (वह बिना किसी बीमारी के चुप रहे) जैसे गूँगापन या बहरापन, सही राय के अनुसार। [यह] 'अल-सिराज' [से है], और शपथ तीन बार पेश की जाती है फिर फ़ैसला अधिक एहतियात वाला है। शैख़ ने कहा, यानी सिफ़ारिश (नदबन) के तौर पर। (उर्दू): काज़ी (शपथ से एक बार इनकार की वजह से उसके ख़िलाफ़ फ़ैसला दे देगा)। यह इनकार हक़ीक़तन हो (इस तरह कि वह कहे "मैं शपथ न खाऊँगा", या) हुक्मन हो (मसलन वह गूँगेपन और बहरेपन जैसी किसी अक्षमता व संकट के बिना ख़ामोश रहे)। यही सही कथन है।

---

1 अद-दुर्र अल-मुख्तार म'अ अल-शामी, किताबुद दावा, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, 4/174। 2 रद अल-मुह्तार, किताबुद दावा, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, 4/417।

بتوفیقه جل وعلا و ارجو ان یکون صواباً ان شاء الله تعالی۔ میں وہ بیان کرتا ہوں جو خدائے بزرگ وبرتر کی توفیق سے مجھ پر ظاہر ہوا اور مجھے امید ہے کہ اگر خدائے برتر نے چاہا تو درست ہی ہوگا۔ (ت)

اگر دوسرے کو اباحۃً دے دیا تو یہ منع ہے کہ صاف معلوم ہوا کہ اسے دینا نہ چاہا اور جسے مباح کیا وہ اسے دے نہیں سکتا کہ وہ اباحت سے مالک نہ ہوا اور اگر اُس کے ہاتھ ہبہ تامہ بیع کر دیا تو اگر چہ یہ اس خاص شخص کی طرف سے منع ہوا مگر یہ مسئلہ کہ دوسرے کے پاس پانی پایا بدستور متوجہ ہے کہ اب جو اس کا مالک ہوا اگر ظن غالب ہو کہ یہ مانگنے سے دے دے گا تو اس سے مانگنا واجب ورنہ نہیں اور اب اس کے عطا و منع میں وہ سب احکام عود کریں گے واللہ تعالیٰ اعلم۔

ثم اقول: ظاہرا بلکہ ان شاء اللہ مولیٰ تعالی یقینا منع دلالۃً کی تیسری صورت سکوت بھی ہے اس نے مانگا اور اس نے صاف انکار تو نہ کیا مگر چپ رہا تو حاجت کے وقت سکوت سے یہی سمجھا جائے گا کہ دینا منظور نہیں

وقد تقدم قولهم فی من سألة المتیمم عن الماء فلم یخبره وهو یشمل السکوت وقد عبر عنه في الحلیة بالآباء۔ حضرات علماء کرام کا کلام اُس سے متعلق گزر چکا جس سے تیمم والے نے پانی کے بارے میں پوچھا تو اس نے خبر نہ دی یہ صورت سکوت کو بھی شامل ہے اور حلیہ میں اس کی تعبیر انکار سے کی ہے۔ (ت)

اس کی نظیر سکوت مدعا علیہ ہے جب بطلب مدعی اس پر حلف متوجہ ہوا اور قاضی نے اُس سے حلف طلب کیا وہ چپ رہا یہ سکوت انکار سمجھا جائے گا جبکہ نہ سننے یا نہ بول سکنے کے باعث نہ ہو ولہذا مستحب ہے کہ قاضی اس سے تین بار کہے اگر سکوت کرے حلف سے نکول ٹھہرا کر مدعی کو ڈگری دے دے تنویر الابصار ودر مختار میں ہے:

(قضی) القاضی (علیه بنکوله مرة) حقیقة (بقوله لا احلف او) حکما کأن (سکت من غیر افة) کخرس وطرش فی الصحیح سراج و عرض الیمین ثلثا ثم القضاء احوط اھ قال ش ای ندبا۔ قاضی (قسم سے ایک بار انکار کی وجہ سے اس کے خلاف فیصلہ دے دے گا) یہ انکار حقیقۃً ہو (اس طرح کہ وہ کہے میں قسم نہ کھاؤں گا، یا) حکماً ہو مثلاً وہ گونگے پن اور بہرے پن جیسی کسی معذوری و آفت کے بغیر خاموش رہے) یہی صحیح قول ہے۔

---

1 الدر المختار مع الشامی کتاب الدعوی مطبع مصطفی البابی مصر ۴ / ۱۷۴ 2 رد المحتار کتاب الدعوی مطبع مصطفی البابی مصر ۴ / ۴۱۷

Fatawa Rizvia, Volume 14

Siraj - And presenting the oath three times and then giving a decision is a more cautious method. Allama Shami said: i.e., as a recommendation. (T)

I say: However, the use of contextual clues is necessary; they become apparent from the time and condition of the questioner and the person questioned and their relationships. This is silence; in explicit speech, the use of contextual clues is mandatory. The very same words, word for word, the very same sentence, can sometimes mean an admission and sometimes a denial. Zaid said to Amr, 'You divorced your wife.' He said in a soft, low voice, 'I divorced.' This is an admission, divorce occurred. And if he said with a harsh and heated voice, in a tone of surprise or rebuke, 'I divorced!', this is a denial, divorce did not occur. The words are exactly the same, and the ruling changed from affirmation to negation. Similarly, if a woman said 'divorce me', he refused; the woman asked 'did you give?', he said 'yes' in a harsh tone of scolding; divorce did not happen, otherwise it would have.

It is in Fatawa Imam Qazi Khan:

(Arabic Text)	**(Urdu Translation)**
A woman said to her husband 'divorce me', he refused, she said 'Dadi' (did you give?), he said 'Dadam' (I gave). If there is any heaviness in his saying 'Dadam', divorce does not occur. 1	A woman said to her husband, "Give me divorce." He refused. Then the woman said, "Have you given?" He said, "I have given." If there is some heaviness in the husband's words, then divorce will not occur. (T)

Similarly, a husband said to his wife in front of witnesses: 'May Allah bless you, you have gifted me the dower (mahr).' She said, 'Yes, I have gifted.' She repeated 'Yes, I have gifted.' The witnesses said, 'Should we be witnesses that you have gifted the dower?' She said, 'Yes, be witnesses, yes be witnesses.' Scholars say these words of hers are capable of both admission and denial. Witnesses [missing text/continued]...

Fatawa Nasfi, then Fatawa Zakhira, then Fatawa Hindiyya did not place the restriction of twice, and stated the woman's response to witnesses as 'let a thousand people be witnesses'. I say: This word is more inclined towards a sarcastic meaning. The text of Alamgiri in the Book of Gifts, Chapter 11, is this:

(Arabic Text)	(Urdu Translation)
In Fatawa al-Nasafi, a man said to his wife in the presence of...	In Fatawa Imam Nasafi, it is written that a person (remaining on next page)

1. Fatawa Qazi Khan, Book of Divorce, printed by Nawal Kishore, Lucknow, 2/212

फतावा रज़विया, जिल्द 14

सिराज - और तीन बार कसम पेश करना फिर फ़ैसला देना ज़्यादा एहतियाती तरीक़ा है। अल्लामा शामी ने फ़रमाया: यानी इस्तिहबाबन (सिफारिशी तौर पर)। (त)

मैं कहता हूँ: लेकिन संदर्भ (क़राइन) का उपयोग ज़रूरी है, वे उस समय और पूछने वाले और जिससे पूछा गया की स्थिति और उनके रिश्तों से ज़ाहिर होते हैं। यह तो चुप्पी है; स्पष्ट वाणी में संदर्भ का उपयोग अनिवार्य है। बिलकुल वही शब्द, अक्षर दर अक्षर, वही वाक्य, कभी इक़रार (स्वीकृति) का अर्थ देता है और कभी इंकार का। ज़ैद ने अम्र से कहा, 'तूने अपनी औरत को तलाक़ दी।' उसने नरम आवाज़ और दबे लहजे में कहा, 'मैंने तलाक़ दी।' यह इक़रार है, तलाक़ हो गई। और अगर उसने गुस्से और गर्मी में, ताज्जुब या डांट-डपट के लहजे में कहा, 'मैंने तलाक़ दी!', तो यह इंकार है, तलाक़ नहीं हुई। शब्द बिलकुल वही हैं और हुक्म सुबूत (हाँ) से नफ़ी (ना) में बदल गया। इसी तरह अगर औरत ने कहा 'मुझे तलाक़ दे', उसने नहीं माना; औरत ने पूछा 'दी?', उसने झिड़कने के लहजे में सख़्ती से कहा 'दी', तो तलाक़ नहीं हुई, वरना हो जाती।

फ़तावा इमाम क़ाज़ी ख़ान में है:

(अरबी पाठ)

एक औरत ने अपने पति से कहा 'मुझे तलाक़ दो', उसने मना कर दिया, उसने कहा 'दादी' (क्या दी?), उसने कहा 'दादम' (दी)। अगर उसके'दादम' कहने में ज़रा भी भारीपन हो, तो तलाक़ नहीं होती। 1

(उर्दू अनुवाद)

किसी औरत ने अपने शौहर से कहा "मुझे तलाक़ दे दे"। उसने इंकार किया। फिर औरत ने कहा "तुमने दी?" उसने कहा "मैंने दी"। अगर शौहर के क़ौल (कथन) में कुछ भारीपन हो तो तलाक़ न होगी। (त)

इसी तरह शौहर ने गवाहों के सामने औरत से कहा: अल्लाह तेरा भला करे तूने मुझे महर बख़्श दिया। वह बोली 'हाँ मैंने बख़्शा', 'हाँ मैंने बख़्शा'। गवाहों ने कहा 'क्या हम गवाह हो जाएँ कि तूने महर बख़्श दिया?' वह बोली 'हाँ गवाह हो जाओ, हाँ गवाह हो जाओ'। उलेमा फ़रमाते हैं उसके ये अलफ़ाज़ इक़रार और इंकार दोनों का एहतिमाल (संभावना) रखते हैं। गवाह उसकी...

फ़तावा नसफ़ी, फिर फ़तावा ज़ख़ीरा, फिर फ़तावा हिन्दिया में दो-दो बार की क़ैद नहीं लगाई और गवाहों के जवाब में औरत का यह क़ौल बताया कि 'हज़ार आदमी गवाह हो जाओ'। मैं कहता हूँ: यह

लफ़्ज़ तंज़ (व्यंग्य) के मानी की तरफ ज़्यादा माइल (झुका हुआ) है। आलमगीरी की इबारत 'किताबुल हिबा' बाब 11 में यह है:

(अरबी पाठ)	**(उर्दू अनुवाद)**
फ़तावा अन-नसफ़ी में है कि एक आदमी ने अपनी पत्नी से कहा...	फ़तावा इमाम नसफ़ी में है कि एक शख़्स ने (बाक़ी अगले सफ़हे पर)

1. फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, किताबुत तलाक़, मतबुआ नवल किशोर, लखनऊ, 2/212

पृष्ठ 120 / 761

فتاوٰی رضویہ جلد چہاردہم

سراج۔ اور تین بار قسم پیش کرنا پھر فیصلہ دینا زیادہ محتاط طریقہ ہے اھ علامہ شامی نے فرمایا: یعنی استحبابا۔ (ت)

اقول: مگر استعمالِ قرائن ضرور ہے وہ اُس وقت وحالتِ سائل و مسئول عنہ اور ان کے تعلقات سے اُن پر ظاہر ہوتے ہیں۔ یہ تو سکوت ہے قول صریح میں استعمالِ قرائن لازم ہے ایک ہی بات حرف بحرف ایک ہی جملہ اور اُس سے کبھی اقرار مفہوم ہوتا ہے کبھی انکار۔ زید نے عمرو سے کہا تُو نے اپنی عورت کو طلاق دی اُس نے نرم آواز دبے لہجے میں کہا میں نے طلاق دی۔ یہ اقرار ہے طلاق ہوگئی اور اگر اُس نے ترش و گرم ہو کر سخت آواز سے تعجب یا زجر و توبیخ کے لہجے میں کہا میں نے طلاق دی۔ یہ انکار ہے طلاق نہ ہوئی۔ الفاظ بعینہ وہی ہیں اور حکم اثبات سے نفی تک بدل گیا۔ یوں ہی اگر عورت نے کہا مجھے طلاق دے اس نے نہ مانا عورت نے پوچھا دی، اس نے جھڑکنے کے لہجے میں سختی سے کہا ہی، طلاق نہ ہوئی ورنہ ہوگئی۔

فتاوٰی امام قاضی خان میں ہے:

1۔ | امرأۃ قالت لزوجہا طلقنی فابی فقالت دادی قال دادم ان کان فی قولہ دادم ادنی تثقیل لا یقع الطلاق | کسی عورت نے اپنے شوہر سے کہا "مجھے طلاق دے دے" اس نے انکار کیا۔ پھر عورت نے کہا "تم نے دی" اس نے کہا "میں نے دی"۔ اگر شوہر کے قول میں کچھ گرانباری ہو تو طلاق نہ ہوگی۔ (ت) |

یونہی شوہر نے گواہوں کے سامنے عورت سے کہا: اللہ تیرا بھلا کرے تُو نے مجھے مہر بخش دیا۔ وہ بولی ہاں میں نے بخشا عہ ہاں میں نے بخشا، گواہوں نے کہا کیا ہم گواہ ہوجائیں کہ تُو نے مہر

بخش دیا۔ بولی ہاں گواہ ہو جاؤ ہاں گواہ ہو جاؤ۔ علما فرماتے ہیں اس کے یہ الفاظ اقرار و انکار دونوں کو محتمل ہیں گواہ اس کی

عہ فتاویٰ نسفی پھر فتاویٰ ذخیرہ پھر فتاویٰ ہندیہ میں دو دو بار کی قید نہ لگائی اور گواہوں کے جواب میں عورت کا یہ قول بتایا کہ ہزار آدمی گواہ ہو جاؤ۔ اقول: یہ لفظ معنی طنز کی طرف زیادہ مائل ہے عالمگیری کی عبارت کتاب الہبہ باب ۱۱ میں یہ ہے:

| فی فتاوی النسفی رجل قال لامرأته بین یدی | فتاویٰ امام نسفی میں ہے کہ ایک شخص نے (باقی بر صفحہ آئندہ) |

1 فتاویٰ قاضی خان کتاب الطلاق مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ۲۱۲/۲

Fatawa Razawiyya, Volume 4

They will distinguish by the manner whether serious research is intended or if she is speaking sarcastically. In Al-Wajiz by Imam al-Kardari, the Book of Marriage, Section 12, it is stated:

[Arabic: He said to her in front of witnesses: "May Allah Almighty reward you with good, you have gifted me the dower." She said twice: "Arey, I have gifted it." Then the witnesses said to her: "Shall we witness your gift?" She said twice: "Arey, be witnesses." This carries the possibility of both rejection and acceptance, and the witnesses will recognize that. If she said it as an affirmation, it will be taken as acceptance, otherwise, it will be taken as rejection. (T)]

[Urdu: He said to his wife in front of witnesses: "May God reward you with good, you have forgiven my dower." She replied: "Yes, I have forgiven it," saying it twice. Upon this, the witnesses asked: "Should we become witnesses that you have forgiven it?" She said twice: "Yes, be witnesses." In this, there is a possibility of both rejection and acceptance. The witnesses will be able to identify this. If she said it by way of affirmation, it will be construed as acceptance; otherwise, it will be construed as rejection. (T)]

Therefore, if previous, current, or subsequent circumstances indicate that this silence was not by way of refusal, it will not be ruled as a denial. A previous circumstance is when his habit is known; although he accepts a request, he remains silent and proceeds with the work. Thus, until refusal is clearly established, the silence of such a person will not be considered evidence of refusal. A current circumstance is that at that time, he is occupied with some significant task or is reciting a litany...

(Continuation of the footnote from the previous page) [Arabic: The witnesses said: "May Allah forgive you, as you have gifted me the dower which was due from me to you." She said: "Arey, I have gifted it." Then the witnesses said: "Shall we witness your gift?" She said: "Let a thousand people be witnesses." He [the scholar] said: "The rejection and confirmation will be known from the manner of her speech; so it should be construed according to what you perceive." Similar is in Al-Dhakhirah, 12, from him, may He forgive him. (M)]

[Urdu: He said to his wife in front of witnesses: "May Allah do good to you, have you gifted me my obligation of your dower?" The woman said: "Yes, I have gifted it." At this, the witnesses said: "Should we become witnesses that you have gifted your right

of dower?" The woman said: "Let a thousand people be witnesses." He [the scholar] said: "In this situation, the identification of rejection or confirmation will be through the woman's manner of speech; it will be construed as what you conclude after consideration. It is the same in Al-Dhakhirah." 12 Minhu Ghafar Allah (T)]

1. Fatawa Bazzaziyya with al-Hindiyya, Section 12 regarding Dower, Matba' Noorani Kutub Khana Peshawar, 2/132.
2. Fatawa Bazzaziyya with al-Hindiyya, Section 12 regarding Dower, Matba' Noorani Kutub Khana Peshawar, 2/132.
3. Fatawa al-Hindiyya, Book of Gifts, Chapter 11, Matba' Noorani Kutub Khana Peshawar, 4/233.

फतावा रज़विया, खंड 4

वे इस बात का अंतर करेंगे कि क्या वह गंभीरता से शोध कर रही है या व्यंग्य में कह रही है। इमाम अल-करदरी की अल-वजीज़, विवाह की पुस्तक, धारा 12 में कहा गया है:

[अरबी: उसने गवाहों के सामने उससे कहा: "अल्लाह सर्वशक्तिमान आपको अच्छा प्रतिफल दे, आपने मुझे महर उपहार में दे दिया है।" उसने दो बार कहा: "अरे, मैंने इसे दे दिया है।" फिर गवाहों ने उससे कहा: "क्या हम आपके उपहार के गवाह बनें?" उसने दो बार कहा: "अरे, गवाह बनो।" इसमें अस्वीकार और स्वीकार दोनों की संभावना है, और गवाह इसे पहचान लेंगे। यदि उसने इसे पुष्टि के रूप में कहा, तो इसे स्वीकार माना जाएगा, अन्यथा इसे अस्वीकार माना जाएगा। (टी)]

[उर्दू: उसने गवाहों के सामने अपनी पत्नी से कहा: "ईश्वर आपको अच्छा फल दे, आपने मेरा महर माफ कर दिया।" उसने दो बार कहा: "हाँ, मैंने माफ कर दिया।" इस पर गवाहों ने पूछा: "क्या हम गवाह बनें कि आपने माफ कर दिया है?" उसने दो बार कहा: "हाँ, गवाह बनो।" इसमें अस्वीकार और स्वीकार दोनों की संभावना है। गवाह इसकी पहचान कर सकेंगे। यदि उसने पुष्टि के तौर पर कहा तो इसे स्वीकार माना जाएगा वरना अस्वीकार माना जाएगा। (टी)]

इसलिए, यदि पिछले, वर्तमान या बाद के हालात यह संकेत देते हैं कि यह चुप्पी इनकार के तौर पर नहीं थी, तो इसे इनकार का आदेश नहीं माना जाएगा। पिछला हालात यह है कि उसकी आदत ज्ञात है; हालाँकि वह किसी अनुरोध को मान लेता है, फिर भी चुप रहता है और काम कर देता है। इसलिए, जब तक इनकार स्पष्ट रूप से स्थापित न हो जाए, ऐसे व्यक्ति की चुप्पी इनकार का प्रमाण नहीं मानी जाएगी। वर्तमान हालात यह है कि उस समय वह किसी बड़े कार्य में व्यस्त है या वजीफ़ा (प्रार्थना) पढ़ रहा है...

(पिछले पृष्ठ के फुटनोट से निरंतरता) [अरबी: गवाहों ने कहा: "अल्लाह आपको क्षमा करे, क्योंकि आपने मुझे वह महर उपहार में दिया है जो मुझ पर आपका बकाया था।" उसने कहा: "अरे, मैंने इसे दे दिया है।" फिर गवाहों ने कहा: "क्या हम आपके उपहार के गवाह बनें?" उसने कहा: "हज़ार लोग गवाह बनें।" उसने [विद्वान ने] कहा: "अस्वीकार और पुष्टि उसके बोलने के तरीके से जानी जाएगी; इसलिए इसे उसी के अनुसार समझा जाना चाहिए जो आप महसूस करते हैं।" अल-ज़खिरा, 12 में भी ऐसा ही है, अल्लाह उसे क्षमा करे। (एम)]

[उर्दू: गवाहों के सामने अपनी पत्नी से कहा: "अल्लाह तुम्हारा भला करे, क्या तुमने मुझ पर वाजिब अपना महर का अधिकार माफ कर दिया?" औरत ने कहा: "हाँ, मैंने माफ कर दिया।" इस पर गवाहों ने कहा: "क्या हम गवाह बन जाएँ कि तुमने अपना महर का हक माफ कर दिया।" औरत ने कहा: "हज़ार आदमी गवाह बन जाओ।" फ़रमाया: "इस स्थिति में औरत के बात करने के अंदाज़ से इनकार या पुष्टि की पहचान होगी; इसे उस पर आधारित माना जाएगा जो आप गौर करने के बाद निष्कर्ष निकालते हैं। अल-ज़खिरा में भी ऐसा ही है।" 12 मिन्हु गुफ़र अल्लाह (टी)]

1. फतावा बज़ाज़िया अल-हिन्दिया के साथ, महर के संबंध में धारा 12, मतबा नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 2/132।
2. फतावा बज़ाज़िया अल-हिन्दिया के साथ, महर के संबंध में धारा 12, मतबा नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 2/132।
3. फतावा अल-हिन्दिया, उपहार की पुस्तक, अध्याय 11, मतबा नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 4/233।

पृष्ठ 121/761

فتاوٰی رضویہ، جلد چہارم

طرز سے بچائیں گے کہ تحقیق مقصود ہے یا طنز سے کہہ رہی ہے۔ وجیز امام کر دری کتاب النکاح فصل ۱۲ میں ہے:

[عربی: قال لها عند الشهود جزاك الله تعالیٰ خیرا وهبت المهر فقالت ارے بخشیدم مرتین فقال الشهود لها انشهد علی هبتك فقالت مرتین ارے گواہ باشید فہذا یحتمل الرد والاجابة والشهود یعرفون ذلك ان قالت علی وجہ التقریر حملت علی الاجابة والاعلی الرد - 1, 2, 3]

[اردو: بیوی سے گواہوں کے سامنے کہا خدا تجھے جزائے خیر عطا فرمائے تو نے مجھے مہر بخش دیا، وہ بولی "ہاں میں نے بخش دیا" دو بار کہا۔ اس پر گواہوں نے کہا کہ کیا ہم گواہ ہو جائیں کہ تُو نے بخش دیا ۔ وہ دو بار بولی "ہاں گواہ ہو جاؤ"۔ تو اس میں رَد و قبول دونوں کا احتمال ہے۔ گواہان اس کی شناخت کر سکیں گے۔ اگر اس نے بطورِ اثبات کہا تو قبول پر محمول ہو گا ورنہ رَد پر محمول ہوگا۔ (ت)]

فلذا اگر قرینہ سابقہ یا حاضرہ یا لاحقہ دلالت کرے کہ یہ سکوت بروجہ منع نہ تھا تو حکمِ انکار میں نہ ٹھہرے گا۔ قرینہ سابقہ یہ کہ اس کی عادت معلوم ہے کہ سوال اگر چہ مانے سکوت کرتا اور کام کر دیتا ہے تو جب تک نہ دینا متحقق نہ ہو ایسے کا سکوت دلیلِ منع نہ ہوگا۔ قرینہ حاضرہ یہ ہے کہ اُس وقت وہ کسی امرِ عظیم میں مشغول ہے یا وظیفہ پڑھ

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) [عربی: الشهود غفرالله لك حیث وهبت لی المهر الذی لك علی فقالت ارے بخشیدم فقال الشهود هل نشهد علی هبتك فقالت ہزار تن گواہ باشید قال یعرف الرد والتصدیق فی اثناء کلامها فے حمل علی ماترون کذا فی الذخیرة ۱۲ منہ غفرلہ (م)]

[اردو: گواہوں کے سامنے اپنی عورت سے کہا اللہ تیرا بھلا کرے کیا تُو نے مجھ پر لازم اپنا حق مہر بخش دیا؟ تو عورت نے کہا: ہاں میں نے بخش دیا۔ اس پر گواہوں نے کہا کیا ہم گواہ ہو جائیں کہ تُو نے اپنا حق مہر بخش دیا۔ عورت نے کہا ہزار آدمی گواہ ہو جاؤ۔ فرمایا اس صورت میں عورت کے طرز کلام سے انکار یا تصدیق کی پہچان ہوگی اس کو اس پر محمول کیا جائے گا جو تم غور کے بعد نتیجہ اخذ کرو ذخیرہ میں ایسے ہی ہے ۱۲ منہ غفرلہ (ت)]

1 فتاوٰی بزازیہ مع الہندیۃ الثانی عشر فی المہر مطبع نورانی کتب خانہ پشاور ۲/۱۳۲ 2 فتاوٰی بزازیہ مع الہندیۃ الثانی عشر فی المہر مطبع نورانی کتب خانہ پشاور ۲/۱۳۲ 3 فتاوٰی الہندیۃ کتاب الہبۃ باب ۱۱ مطبع نورانی کتب خانہ پشاور ۴/۲۳۳

Volume Four Fatawa Razvia ...is worried or distressed or in severe anger about something, then in these circumstances silence is not proof of refusal. A subsequent indication is that although nothing was apparent from his state at that time, a short while later within the [prayer] time he brought water, even if during this interval the person [who asked] had quickly performed the prayer with tayammum out of his sight; because providing it within the time is explicit acceptance, so the refusal that was understood from silence will not be contradictory to the explicit [action]. In Fatawa of Imam Qazi Khan and others, it is stated: "The explicit [action] excels over implicit indication" (The explicit is superior to the implicit indication. - T). And it will not be considered that the silence was indeed for refusal and then the opinion changed, because this is contrary to the original principle. It is in "Al-Hilya": "If it is said that it is possible that the state of the person questioned has changed, I would say: The principle is the absence of change, so the matter will continue as it is until full evidence to the contrary is established, and it has not been found." (T)

I say: The detail of the matter, by the grace of the All-Knowing, is that after silence, either he will not give at all, or he will give after the time for that prayer has passed, or he will give within the time but after the person has prayed with tayammum, for instance, by seeing him perform tayammum and pray and not giving him water at that time, or giving it without being aware of him, or he will give during the prayer, or before the prayer. These are six scenarios. In the first one, the ruling is clear: no contradiction to the indication of refusal was found; rather, its proof was established, so both the prayer and tayammum remain valid. The last two are also not debatable: when water is found before the end of the prayer, the ruling is to perform wudu and pray, and the ruling for the fourth case has just passed—that it is acceptance. Two scenarios remain: the second and third. In these, the apparent [ruling] is that the indication of silence as refusal has become established; far from there being any indication to the contrary, evidence supporting it was found; the prayer was valid and repetition is not required. In the second case, it is because need is renewed at every moment; when he let the time of that need pass and did not give despite the request, it became known that giving at that time was not intended. Giving at the time of another need does not signify acceptance of that [previous] request nor the establishment of capability at its time. At that time, inability was apparent, and silence at the time of the request for need gave the presumption of refusal. His need, his request, and his presumption were all relative to the present time. Giving at another time did not prove that presumption wrong but rather confirmed and

verified it; and here the rule "no consideration is given to a presumption whose error is manifest" (A presumption whose clear error is revealed is not reliable) [is mentioned]. (T)

1 Durr al-Mukhtar, Kitab al-Hiba, published by Mujtabai Delhi, 159/2 2 Al-Hilya

जिल्द चहारुम फ़तावा रज़विया ...रहा है या परेशान है या किसी बात पर सख्त गुस्से में है कि इन हालात में ख़ामोशी मना करने की दलील नहीं होती। बाद का करी़ना यह है कि उस वक़्त की हालत से तो कुछ ज़ाहिर न हुआ मगर थोड़ी देर बाद वक़्त के अंदर वह पानी ले आया, चाहे वह इतनी देर में जल्दी करके उसकी नज़रों से दूर नमाज़ तयम्मुम से पढ़ चुका हो, क्योंकि वक़्त पर देना साफ़ इज़ाज़त (स्वीकृति) है, तो वह मना जो ख़ामोशी से समझा गया था साफ़ इज़ाज़त के मुक़ाबले में नहीं होगा। फ़तावा इमाम क़ाज़ी खान वग़ैरहुमा में है: 'अस्सरीहु यफ़ोक़ुद्देलालाह' (साफ़ बयान इशारे से बढ़कर है। -त)। और यह नहीं माना जाएगा कि वह ख़ामोशी मना करने के लिए ही थी फिर राय बदल गई क्योंकि यह असल (सिद्धांत) के ख़िलाफ़ है, 'हिल्या' में है: 'अगर कहा जाए कि मुमकिन है जिससे सवाल किया गया उसकी हालत बदल गई हो। मैं कहूँगा: असल हालत का न बदलना है, तो मामला उसी पर जारी रहेगा जब तक उसके ख़िलाफ़ कोई मुकम्मल दलील न मिल जाए और वह नहीं मिली।' (त)

अक़ूल: तफ़सील मक़ाम बतौफ़ीलुल अल्लाम यह है कि ख़ामोशी के बाद या तो वह बिल्कुल नहीं देगा, या उस नमाज़ का वक़्त गुज़ल जाने के बाद देगा, या वक़्त में देगा मगर उसके तयम्मुम से पढ़ लेने के बाद, जैसे उसे तयम्मुम करते और नमाज़ पढ़ते देखा और उस वक़्त पानी न दिया, या उस पर मुत्तला न होकर दिया, या नमाज़ के दौरान देगा, या नमाज़ से पहले। ये छह सूरतें हैं। इनमें पहली का हुक्म तो ज़ाहिर है कि मना की दलाली का कोई मुक़ाबिल नहीं मिला बल्कि वह साबित हो गया, तो नमाज़ और तयम्मुम दोनों सही रहे। आख़िरी दो भी बहस के क़ाबिल नहीं कि जब नमाज़ ख़त्म होने से पहले पानी मिल गया तो ख़ुद ही वज़ू करके पढ़ने का हुक्म है और चौथी का हुक्म अभी गुज़रा कि वह इज़ाज़त है। बाक़ी दो सूरतें रहीं, दूसरी और तीसरी, इनमें ज़ाहिर यही है कि ख़ामोशी की मना पर दलाली मुस्तक़र (स्थापित) हो गई, कोई करी़ना इसके मुक़ाबले में होना तो दूर, उसका मुअय्यिद (समर्थक) पाया गया, नमाज़ सही हुई इआदा (दोहराना) नहीं होगा। दूसरी सूरत में यूँ कि हाजत हर वक़्त नई होती है, जब उस हाजत का वक़्त गुज़ार दिया और मांगने पर भी न दिया तो मालूम हुआ कि उस वक़्त देना मंज़ूर न था। दूसरी हाजत के वक़्त देना न इस सवाल की इज़ाज़त है न उसके वक़्त क़ुदरत का सुबूत। उस वक़्त बेबसी ज़ाहिर थी और हाजत के सवाल पर ख़ामोशी ने मना का गुमान दिया था। उसकी हाजत, उसका सवाल, उसका गुमान सब मौजूद वक़्त के लिहाज़ से थे। दूसरे वक़्त देने ने उस गुमान को ग़लत नहीं किया बल्कि साबित और मुहक़्क़क़ (सत्यापित) कर दिया और यहाँ 'ला इबरता बिज़न्नील बय्यिनि ख़ताउह' (उस गुमान का एतबार नहीं जिसकी ख़ता वाज़ेह हो)। (त)

1 दुर्रे मुख़्तार किताबुल हिबा मतबुआ मुज्तबाई देहली 159/2 2 हिल्या

पेज 122 ऑफ़ 761

جلد چہارم فتاوی رضویہ رہا ہے یا پریشان ہے یا کسی بات پر سخت غصہ میں ہے کہ ان حالات کا سکوت دلیل منع نہیں ہوتا۔ قرینہ لاحقہ یہ کہ اُس وقت کی حالت سے تو کچھ ظاہر نہ ہوا مگر تھوڑی دیر بعد وقت کے اندر وہ پانی لے آیا اگرچہ یہ اتنی دیر میں جلدی کر کے اُس کی نگاہ سے جُدا نماز تیمم سے پڑھ چکا ہو کہ وقت پر دینا صریح اجابت ہے تو منع کہ سکوت سے مفہوم ہوتا تھا صریح کے معارض نہ ہوگا۔ فتاوٰی امام قاضی خان وغیرہما میں ہے: الصریح یفوق الدلالۃ 1 (صریح، دلالت سے بڑھا ہوا ہے۔ت) اور یہ نہ ٹھہرائیں گے کہ وہ سکوت بفرض منع ہی تھا پھر رائے بدل گئی کہ یہ خلاف اصل ہے، حلیہ میں ہے: فان قلت من الجائز تبدل حال المسئول قلت | اگر یہ کہا جائے کہ ہو سکتا ہے جس سے سوال ہوا اس کی حالت الاصل عدم التبدل فیجری علیہ مالم یتم | بدل گئی ہو۔ میں کہوں گا۔ اصل عدم تبدل ہے تو وہ امر اسی پر الدلیل علی خلافہ و لم یوجد 2 ۔ | جاری ہوگا جس کے خلاف پر دلیل تام نہ ہوئی اور نہ پائی گئی۔ (ت)

اقول: تفصیل مقام بتوفیق العلام یہ ہے کہ سکوت کے بعد یا تو وہ اصلاً نہ دے گا یا اُس نماز کا وقت نکل جانے کے بعد دے گا یا وقت میں دے گا مگر بعد اس کے کہ یہ تیمم سے پڑھ چکا یوں کہ اسے تیمم کرتے اُس سے نماز پڑھتے دیکھا اور اُس وقت پانی نہ دیا یا اُس پر مطلع نہ ہو کر دیا یا حین نماز میں دے گا یا نماز سے قبل۔ یہ چھ صورتیں ہیں ان میں پہلی کا حکم تو ظاہر ہے کہ دلالت منع کا کوئی معارض نہ پایا گیا بلکہ اُس کا ثبوت ہو گیا تو نماز و تیمم دونوں صحیح رہے اور اخیر دو بھی قابل بحث نہیں کہ جب ختم نماز سے پہلے پانی مل گیا آپ ہی وضو کر کے پڑھنے کا حکم اور چہارم کا حکم ابھی گزرا کہ اجابت ہے باقی دو صورتیں رہیں دوم و سوم ان میں ظاہر یہی ہے کہ منع پر سکوت کی دلالت مستقر ہوگئی کوئی قرینہ اس کے معارض ہونا درکنار اُس کا موید پایا گیا نماز صحیح ہوئی اعادہ نہ ہو گا دوم میں یوں کہ حاجت ہر وقت متجدد ہوتی ہے جب اس حاجت

کا وقت گزار دیا اور مانگے نہ دیا معلوم ہوا کہ اس وقت دینا منظور نہ تھا دوسری حاجت کے وقت دینا نہ اس سوال کی اجابت کرے نہ اس کے وقت قدرت کے اثبات۔ اس وقت عجز ظاہر تھا اور وقت حاجت سوال پر سکوت نے ظن منع دیا تھا اس کی حاجت اس کا سوال اس کا ظن سب وقت حاضر کی نسبت تھے دوسرے وقت دینے نے اس ظن کو غلط نہ کیا بلکہ ثابت و محقق کر دیا اور یہاں لاعبرۃ بالظن البین خطؤہ (اس گمان کا اعتبار نہیں جس کی خطا واضح ہو۔) (ت)

1 در مختار کتاب الہبۃ مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱۵۹/۲ 2 حلیہ

...otherwise, it would mean that if he gives it after a month, all those 150 prayers would become invalid, because after the time is over, one time is like a thousand times. This is a hardship, and averting hardship is necessary. There was no negligence on his part because his only power was to ask, which he already did. It was just mentioned from *Al-Muheet* and *Al-Bahr* that his prayer is valid because he performed what was required of him. (His prayer was valid because he fulfilled what was incumbent upon him. - T) From *Al-Hulyah*:

He performed what was in his power before the action, so it occurs validly to avert hardship, and it does not then turn into being invalid[2].	He performed what was in his power before the action, so in view of avoiding hardship, his action was performed validly. Now it will not change into invalidity. (T)

And thirdly, because by this giving, limited power was established, meaning at the time of giving, not retroactive to the past; because his remaining silent upon being asked and seeing him performing *tayammum* and starting the prayer with *tayammum*, and still remaining silent, confirmed his inability. Now, new power will not invalidate it. From *Al-Walwalijiyyah* and *Al-Hulyah*:

Indeed, when he refused, the inability became confirmed, so power after that is not taken into account[3].	When he refused, the inability became confirmed; now, power coming after that is not considered. (T)

As before, asking was within his power, and he did it. Now there is no blame on him, as just mentioned from *Al-Muheet*, *Al-Bahr*, and *Al-Hulyah*. If you say that he asked and walked away, and hurriedly, for example out of his sight, prayed in his tent with *tayammum*, then asking was also incumbent on him which he performed, why is there blame on him?

I say: Asking is not the goal in itself nor the ultimate objective that once asked, one is absolved, whatever the answer may be. Rather, it is for the purpose of discovering the situation, so that whether refusal or acceptance is apparent from the answer, it can be acted upon. Here, acceptance became apparent by the timely giving, *kama taqaddam* (as mentioned before. T), so merely asking will not absolve him.

Do you not see that *Al-Hulyah* made the confirmation of inability another expression for this meaning, i.e., doing	See that *Al-Hulyah* used the confirmation of inability as another expression for the meaning of doing what was in one's

what is in one's power, as mentioned before in the seventh issue.	power, as mentioned in the seventh issue. (T)

1. Al-Bahr ar-Ra'iq, Sharh Kanz ad-Daqai'q, Bab at-Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi, 1/162
2. Al-Hulyah
3. Al-Hulyah

...वरना इसका अर्थ यह होगा कि यदि वह एक महीने के बाद देता है, तो उसकी वे डेढ़ सौ नमाज़ें सब बातिल (अमान्य) हो जाएँगी, क्योंकि समय बीत जाने के बाद जैसे एक समय, वैसे ही हज़ार। यह एक कठिनाई (हर्ज) है, और कठिनाई को टालना आवश्यक है। उसकी ओर से कोई लापरवाही नहीं थी क्योंकि उसके वश में केवल माँगना ही था, जिसे उसने कर लिया। 'मुहीत' और 'बह्र' से अभी गुज़रा है कि उसकी नमाज़ जायज़ है क्योंकि उसने वह किया जो उसके ज़िम्मे था (उसकी नमाज़ हो गई क्योंकि उसके ज़िम्मे जो था वह उसने अदा कर दिया। - त)। 'हुलिया' से गुज़रा:

उसने कार्य से पूर्व वह किया जो उसकी सामर्थ्य में था, अतः कठिनाई को दूर करने के लिए यह जायज़ हुआ, और अब यह नाजायज़ में नहीं बदलेगा।[2]	उसके बस में जो था उसने कार्य से पहले कर लिया, तो कठिनाई को टालने के लिहाज़ से उसका कार्य जायज़ ही अदा हुआ, तो अब वह नाजायज़ में तब्दील नहीं होगा। (त)

और तीसरा यह कि उस देने से भी सीमित सामर्थ्य (कुदरत मुक्तसरा) सिद्ध हो गई, यानी देने के समय से, न कि पिछले समय से; क्योंकि माँगने पर उसका चुप रहना और उसे तयम्मुम करते और तयम्मुम से नमाज़ शुरू करते देखना और अब भी चुप रहना उसकी लाचारी (अज्र) को पुख्ता (मोअक्कद) कर गया। अब नई सामर्थ्य उसे अमान्य नहीं करेगी। 'वलवालजिया' और 'हुलिया' से गुज़रा:

वास्तव में जब उसने मना कर दिया तो लाचारी पुख्ता हो गई, अतः उसके बाद सामर्थ्य का विचार नहीं किया जाएगा।[3]	जब उसने इनकार कर दिया तो लाचारी पुख्ता हो गई, अब इसके बाद सामर्थ्य होने का कोई एतबार नहीं। (त)

दस्तूर के अनुसार माँगना उसके वश में था जिसे उसने किया, अब उस पर कोई दोष नहीं है जैसा कि अभी 'मुहीत', 'बह्र' और 'हुलिया' से गुज़रा। यदि आप कहें कि वह माँग कर चला आया और जल्दी करके उदाहरण के तौर पर उसकी नज़रों से ओझल होकर अपने ख़ेमे में तयम्मुम से नमाज़ पढ़ ली, तो उसके ज़िम्मे भी माँगना ही था जिसे उसने पूरा किया, तो उस पर दोष क्यों है?

मैं कहता हूँ: माँगना स्वयं में उद्देश्य या अंतिम लक्ष्य नहीं है कि बस माँग लिया और ज़िम्मेदारी पूरी हो गई, चाहे उत्तर कुछ भी हो। बल्कि यह स्थिति का पता लगाने के उद्देश्य से है, ताकि उत्तर से जो

इनकार या स्वीकृति प्रकट हो, उस पर अमल किया जा सके। यहाँ समय पर देने से स्वीकृति प्रकट हुई, 'कमा तक़द्दम' (जैसा कि गुज़रा। त), तो केवल माँग लेना उसे दोषमुक्त नहीं करेगा।

क्या आप नहीं देखते कि 'हुलिया' ने लाचारी के पुख्ता होने को इसी अर्थ की दूसरी अभिव्यक्ति माना है, यानी अपनी सामर्थ्य के अनुसार कार्य करना, जैसा कि सातवें मसले में गुज़रा।	देखिए कि इस अर्थ के लिए कि उसके बस में जो था उसने किया, 'हुलिया' ने लाचारी के पुख्ता होने को दूसरी अभिव्यक्ति करार दिया, जैसा कि सातवें मसले में गुज़रा। (त)

---

1. अल-बह्र अर-रईक़, शरह कंज़ अद-दक़ाइक़, बाब अत-तयम्मुम, एच. एम. सईद कंपनी कराची, 1/162
2. हुलिया
3. हुलिया

صادق نہ آیا ورنہ چاہے کہ وہ مہینہ بھر بعد دے تو اس کی یہ ڈیڑھ سو نمازیں سب باطل ہو جائیں کہ بعد وقت جیسا ایک وقت ویسے ہی ہزار یہ حرج ہے اور دفع حرج لازم اور اس کی طرف سے تقصیر نہیں کہ اس کے قابو میں سوال ہی تھا یہ اسے بجا لا چکا محیط و بحر سے ابھی گزرا جازت صلاتہ لانہ فعل ما علیہ 1 (اس کی نماز ہو گئی اس لئے کہ اس کے ذمہ جو تھا وہ بجالا یا۔ ت) حلیہ سے گزرا:

فعل مافی وسعہ قبل الفعل فیقع جائزا دفعاً للحرج فلا ینقلب غیر جائز 2۔ اس کے بس میں جو تھا فعل سے قبل بجالا یا تو دفع حرج کے پیش نظر اس کا عمل جائز ہی ادا ہوا تو اب ناجائز میں تبدیل نہ ہوگا ۔ (ت)

اور سوم میں یوں کہ اس دینے سے بھی قدرت مقتصرہ ثابت ہو گئی یعنی وقت عطا سے نہ مستندہ یعنی سابق سے کہ مانگنے پر اس کا چپ رہنا اور اسے تیمم کرتے اور نماز تیمم سے شروع کرتے دیکھنا اور اب بھی خاموش رہنا اس کے عجز کو مؤکد کر گیا اب قدرت جدیدہ اُسے نقض نہ کرے گی۔ ولوالجیہ وحلیہ سے گزرا:

انہ اذا ابي تأکد العجز فلا تعتبر القدرۃ بعد ذلك 3۔ اس نے جب انکار کردیا تو عجز مؤکد ہوگیا اب اس کے بعد قدرت ہونے کا اعتبار نہیں۔ (ت)

بدستور اس کے قابو میں سوال تھا اسے بجالا یا اب اس پر الزام نہیں جیسا کہ ابھی محیط و بحر و حلیہ سے گزرا اگر کہیے وہ کہ مانگ کر چلا آیا اور جلدی کر کے اُس کی نگاہ سے مجد امثلاً اپنے خیمہ میں تیمم سے پڑھ لی اُس کے ذمہ بھی سوال ہی تھا جسے بجالا یا اُس پر کیوں الزام ہے۔

اقول : سوال مطلوب بالذات و منتہای مقصد نہیں کہ سوال کر لیا اور عہدہ برآ ہو گئے جواب کچھ بھی ہو بلکہ وہ بغرض استکشاف حال ہے کہ جواب سے منع واجابت جو ظاہر ہو اُس پر عمل کیا جائے یہاں عطا بروقت سے اجابت ظاہر ہوئی کما تقدم (جیسا کہ گزرا۔ت) تو مجرد سوال کر لینا اُسے بری الذمہ نہ کرے گا۔

الاتری ان الحلیہ جعلت تأکد العجز عبارۃ دیکھئے کہ اس معنی کہ اس کے بس میں جو تھا بجالایا اخری عن ھذا المعنی اعنی فعل مافی وسعہ کی دوسری تعبیر حلیہ نے عجزِ مؤکد ہونے کے قرار کما تقدم فی المسألۃ السابعۃ۔ دیا جیسا کہ مسئلہ ہفتم میں گزرا۔ (ت)

1۔ البحر الرائق، شرح کنز الدقائق، باب التیمم، ایچ ایم سعید کمپنی کراچی، ۱/۱۶۲ 2۔ حلیہ 3۔ حلیہ

...unlike the second and third scenarios where refusal was apparent, as established (already passed - T). And unlike the case where one assumed the person with knowledge of water didn't know; he asked him, he heard but didn't reply, and after prayer, he informed him that not replying to a question for information is exactly like not informing. And silence on a request for a item is not exactly like a refusal to give, the reasons for which have been mentioned above. And success is from Allah, and Allah Almighty knows best.

Then I say: All of this was in the case where he asked and the other remained silent. But if he saw the water and didn't ask at all, and after the time passed, he became aware of his need for it and brought the water, in this scenario, it is undoubtedly presumed that if he had asked, he would have surely given it. The negligence is on his part for not asking; so he should repeat one or however many prayers he performed. In number 159, it passed from 'Muheet':

Arabic	**Urdu**
His prayer was not valid because he was capable of using it through asking. Since he did not ask him, the negligence came from his side. - 1	His prayer was not valid because he could have used that water by asking for it. By not asking, the negligence was from his side. (T)

Recently passed from 'Hulyah':

Arabic	**Urdu**
For he did not exert his full effort in investigation. - 2	Because he did not utilize his full effort through investigation. (T)

Rather, if he kept watching him performing Tayammum and despite being aware, did not give water or gave it after the time, even then it is not apparent that he would not have given if asked. Not giving without being asked does not verify the suspicion of refusal. Refusal is when one does not give upon being asked. Often, people do not care to give on their own without being asked, but if asked, they give. In fact, here, not giving at another time without request inclines towards the aspect that if he had asked, he would have definitely given. This is unlike the case of silence, where he had already asked and he did not give at that time, so it became apparent that he did not intend to give. It is in 'Ziyadat', 'Jami-e-Karkhi', 'Badai', and 'Hulyah':

Arabic

When his overwhelming suspicion is that he will not give it to him, or he is in doubt, he should proceed with his prayer. Then, when he is finished, he should ask him. If he gives it to him, he should perform Wudu and repeat the prayer, because it became apparent...

1 Muheet 2 Hulyah

Urdu

When he has an overwhelming suspicion that he will not give, or in case of doubt, he should remain steadfast in his prayer. When he finishes, he should ask him. If he gives, he should perform Wudu and repeat the prayer, because it became apparent...

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

...दूसरी और तीसरी सूरत के विपरीत जहाँ मना करना स्पष्ट था, जैसा कि तय हुआ (जैसा कि बीत चुका है - T)। और उस सूरत के विपरीत जहाँ यह गुमान किया गया कि जिसे पानी की ख़बर है वह नहीं जानता; उसने उससे पूछा, उसने सुना और जवाब नहीं दिया, नमाज़ के बाद बताया कि जानकारी के सवाल पर जवाब न देना बिल्कुल सूचना न देने के समान है। और किसी चीज़ के सवाल पर खामोशी बिल्कुल देने से इनकार नहीं है, जिसके कारण ऊपर गुज़र चुके हैं। और अल्लाह ही तौफीक देने वाला है, और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

फिर मैं कहता हूँ: यह सब उस सूरत में था जब उसने माँगा और वह खामोश रहा। और अगर उसने पानी देखा और बिल्कुल नहीं माँगा और समय बीतने के बाद उसे इसकी ज़रूरत का पता चला और वह पानी लाया, तो इस सूरत में निस्संदेह यह समझा जाएगा कि अगर यह माँगता तो वह ज़रूर देता। कोताही उसकी तरफ से है कि उसने सवाल नहीं किया, इसलिए उसे एक या जितनी नमाज़ें पढ़ीं सबका एआदा (दोहराना) करना चाहिए, नंबर १५९ में 'मुहीत' से गुज़रा:

अरबी	**उर्दू**
उसकी नमाज़ जायज़ नहीं है क्योंकि वह पूछने के माध्यम से इसे इस्तेमाल करने में सक्षम था। चूँकि उसने उससे नहीं पूछा, कोताही उसकी अपनी तरफ से हुई। - १	उसकी नमाज़ नहीं हुई इसलिए कि वह माँग कर उस पानी को इस्तेमाल कर सकता था। न माँगा तो कोताही उसी की जानिब से हुई। (T)

'हुलिया' से अभी गुज़रा:

अरबी	**उर्दू**
क्योंकि उसने छानबीन में अपनी पूरी कोशिश नहीं की। - २	इसलिए कि उसने तफ्तीश (जाँच-पड़ताल) के ज़रिए अपनी पूरी कोशिश सर्फ(खर्च) नहीं की। (T)

बल्कि अगर वह उसे देखता रहे कि वह तयम्मुम से नमाज़ पढ़ रहा है और पानी की जानकारी होने के बावजूद पानी न दिया या वक्त के बाद दिया, तब भी यह ज़ाहिर नहीं होता कि माँगने पर भी न देता। बिना माँगे न देना, 'मना' के गुमान की पुष्टि नहीं करता। मना करना यह है कि माँगने पर न दे। अक्सर ऐसा होता है कि लोग बिना माँगे खुद परवाह नहीं करते और अगर माँगा जाए तो दे देते हैं। बल्कि यहाँ दूसरे वक्त बिना तलब किए न देने से यही पहलू प्रबल होता है कि अगर माँगता तो ज़रूर

देता। इसके विपरीत खामोशी की सूरत कि वह सवाल कर चुका था और उसने उस वक्त न दिया, तो ज़ाहिर हुआ कि देना मंज़ूर न था। 'ज़ियादात', 'जामे कर्खी', 'बदाए' और 'हुलिया' में है:

अरबी	उर्दू
जब उसे यह प्रबल गुमान हो कि वह उसे नहीं देगा, या शक हो, तो वह अपनी नमाज़ जारी रखे। फिर जब वह फारिग हो जाए, तो उससे माँगे। अगर वह दे दे, तो वुज़ू करे और नमाज़ फिर से पढ़े, क्योंकि ज़ाहिर हुआ...	जब उसे ग़लबा-ए-ज़न्न (प्रबल गुमान) हो कि न देगा या शक की सूरत हो तो अपनी नमाज़ पर बरकरार रहे, जब फारिग हो जाए उससे माँगे। अगर वह दे दे तो वुज़ू करके(नमाज़ फिर से पढ़े) क्योंकि ज़ाहिर हुआ...

१ मुहीत २ हुलिया

पृष्ठ १२४ / ७६१

بخلاف صورتِ دوم و سوم کہ وہاں منع ظاہر ہوا، کما تقرر (جیسا کہ گزرا۔ت) اور بخلاف اُس صورت کے کہ جسے پانی کی خبر ہو نا گمان کیا اُس سے پوچھا اُس نے سُنا اور جواب نہ دیا بعد نماز بتایا کہ سوال خبر پر جواب نہ دینا بعینہ ترکِ اخبار ہے اور سوال شے پر سکوت بعینہ انکارِ عطا نہیں جس کی وجوہ اوپر گزریں وباللہ التوفیق واللہ تعالٰی اعلم۔

ثم اقول : یہ سب اُس صورت میں تھا کہ اُس نے مانگا اور اُس نے سکوت کیا تھا اور اگر اس نے پانی دیکھا اور اصلاً نہ مانگا اور اُسے بعد خروج وقت اس کی حاجت پر اطلاع ہوئی اور پانی لایا اس صورت میں بلاشبہ مظنون ہے کہ اگر یہ مانگتا ضرور دیتا اور تقصیر اس کی طرف سے ہے کہ سوال نہ کیا تو ایک یا جتنی نمازیں پڑھیں سب کا اعادہ چاہئے، نمبر ۱۵۹ میں محیط سے گزرا:

عربی	اردو
لم تجز صلاته لانه كان قادرا على استعماله بواسطة السؤال فاذا لم يسأله جاء التقصير من قبله - 1	اس کی نماز نہ ہوئی اس لئے کہ وہ مانگ کر اس پانی کو استعمال کرسکتا تھا۔ نہ مانگا تو کوتاہی اسی کی جانب سے ہوئی۔ (ت)

حلیہ سے ابھی گزرا:

عربی	اردو
فانه لم يستفرغ الوسع بالاستكشاف - 2	اس لئے کہ اس نے تفتیش کے ذریعہ اپنی پوری کوشش صرف نہ کی۔ (ت)

بلکہ اگر وہ اسے دیکھتا رہا کہ تیمم سے پڑھتا ہے اور باوصف اطلاع پانی نہ دیا یا بعد وقت دیا جب بھی یہ ظاہر نہیں ہوتا کہ مانگنے پر بھی نہ دیتا تو بلا سوال نہ دینا ظن منع کی تحقیق نہیں کرتا منع یہ ہے کہ مانگے سے نہ دے اور بارہا ہوتا ہے کہ لوگ بے مانگے خود پرواہ نہیں کرتے اور مانگا جائے تو دے دیں بلکہ یہاں دوسرے وقت بے طلب دینے سے یہی پہلو رجحان پاتا ہے کہ مانگتا تو ضرور دیتا۔ بخلاف صورتِ سکوت کہ یہ سوال کر چکا تھا اور اُس نے اُس وقت نہ دیا تو ظاہر ہوا کہ دینا منظور نہ تھا زیادات وجامع کرخی وبدائع وحلیہ میں ہے:

عربی	اردو
اذا غلب على ظنه انه لا يعطيه او شك مضى على صلاته فاذا فرغ سأله فان اعطاه توضأ واستقبل الصلاة لانه ظهر	جب اسے غلبہ ظن ہو کہ نہ دے گا یا شک کی صورت ہو تو اپنی نماز پر برقرار رہے جب فارغ ہو جائے اس سے مانگے۔ اگر وہ دے دے وضو کرکے

1 محیط 2 حلیہ

Fatawa Rizvia - Volume Four

Text from Arabic: He was capable because giving it after finishing is evidence of giving it before, and if he refused, then his prayer is passed (valid) because the inability has been established. End.

Urdu Translation/Explanation: He should perform the prayer anew. Because it has become apparent that he was capable, since giving it after finishing the prayer is evidence that he would have given it before as well. And if he refuses, then his prayer is complete (valid) because the inability has been established. (T)

I say (Aqool): Its establishment is that the default state of water is permissibility, and prohibition is incidental, as mentioned in 'Al-Hilyah' and other sources regarding the evidence for the Imam's saying: 'If someone promises to give him water, it is obligatory to wait even if the time passes.' Refusal of water occurs due to stinginess or because he himself needs it, and by him giving it at this time, the absence of both these reasons is clear. This indicates that if he had been asked before, he would have given it, because the specificity of time is dismissed. In fact, delaying the time is a stronger indication of giving it before, because if he had needed it himself earlier, he would have used it or would still be in need of it now. Since this is the case with giving after a request, and scholars have mentioned it generally without restricting it to 'when he has not seen him praying with Tayammum,' then giving it without being asked is even more significant, as is clear. And Allah Almighty knows best. (T)

And here there are two scenarios of a promise: one is that before the prayer, either upon his request or on his own initiative, he promised to give water and gave it after the time expired; or at the time when he had already finished praying with Tayammum, whether he saw him or not. In neither case is there room for debate because our scholars have considered the promise itself as a cause for capability; within the time for him with Tayammum...

---

1. Bada'i al-Sana'i, Chapter on the conditions of the pillar of Tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/28. Page 125 of 761

फतावा रज़विया - जिल्द चार

अरबी पाठ: वह सक्षम था क्योंकि फारिग (नमाज़ पूरी करने) के बाद देना, उससे पहले भी देने की दलील है। और अगर वह इनकार करे तो उसकी नमाज़ मुकम्मल है क्योंकि लाचारी साबित हो गई। इति।

उर्दू अनुवाद/व्याख्या: वह नए सिरे से नमाज़ अदा करे। क्योंकि ज़ाहिर हो गया कि वह सक्षम था, इसलिए कि नमाज़ से फारिग होने के बाद दे देना इस बात की दलील है कि वह उससे पहले भी दे देता। और अगर वह इनकार करे तो उसकी नमाज़ मुकम्मल है क्योंकि लाचारी साबित हो गई। (त)

अकूल (मैं कहता हूँ): इसकी तक़रीर यह है कि पानी में असल मुबाह (अनुमेय) होना है, और निषेध एक आकस्मिक (आरज़ी) चीज़ है, जैसा कि 'हिलिया' आदि ने इमाम के इस कथन के प्रमाण में उल्लेख किया है: 'जब कोई उसे पानी देने का वादा करे तो इंतज़ार करना वाजिब है, भले ही वक़्त निकल जाए।' पानी से इनकार कंजूसी (बुख्ल) के कारण होता है या इसलिए कि उसे स्वयं इसकी आवश्यकता है, और इस समय इसे देने से इन दोनों कारणों का अभाव स्पष्ट हो गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि यदि उससे पहले भी माँगा गया होता, तो वह दे देता, क्योंकि वक़्त की विशिष्टता निरस्त है। वास्तव में, समय की देरी करना पहले देने का अधिक प्रबल प्रमाण है, क्योंकि यदि उसे पहले स्वयं इसकी आवश्यकता होती, तो उसने इसे खर्च कर दिया होता या वह अब भी इसका ज़रूरतमंद होता। जब माँगने के बाद देने का यह मामला है और विद्वानों ने इसे सामान्य रूप से (मुतलक) उल्लेख किया है, और यह शर्त नहीं लगाई कि 'जब उसे तयम्मुम से नमाज़ पढ़ते हुए न देखा हो', तो बिना माँगे देना और भी अधिक महत्वपूर्ण है, जैसा कि स्पष्ट है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

और यहाँ वादे की दो स्थितियाँ हैं: एक यह कि नमाज़ से पहले, उसके अनुरोध पर या अपनी पहल पर, उसने पानी देने का वादा किया और समय बीतने के बाद दिया; या उस समय जब वह तयम्मुम के साथ नमाज़ पढ़ चुका था, चाहे उसने उसे देखा हो या न देखा हो। इनमें से किसी भी स्थिति में बहस की गुंजाइश नहीं है क्योंकि हमारे विद्वानों ने स्वयं वादे को ही सक्षमता का कारण माना है; समय के भीतर तयम्मुम के साथ...

1. बदाइ-उस-सनाइ, तयम्मुम के रुकन की शर्तों का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/28। पृष्ठ 125 का 761

فتاوی رضویہ - جلد چہارم

عربی متن: انه کان قادرا لان البذل بعد الفراغ دلیل البذل قبله وان ابی فصلاته ماضیة لان العجز قد تقرر اھ -

اردو ترجمہ و وضاحت: از سر نو نماز ادا کرے۔ کیونکہ ظاہر ہوگیا کہ وہ قادر تھا اس لئے کہ نماز سے فارغ ہونے کے بعد دے دینا اس بات کی دلیل ہے کہ اس سے پہلے بھی دے دیتا۔ اور اگر انکار کرے تو اس کی نماز تام ہے اس لئے کہ عاجز ہونا ثابت ہو گیا۔ (ت)

اقول: تقرره ان الاصل في الماء الاباحة والحظر عارض کما قالوه في الحلیة وغیرها في دلیل قول الامام اذا وعده احد اعطاء الماء یجب الانتظار وان فات الوقت وانما یمنع لحاجة او شح وقد ظهر انتفاؤهما ببذله الآن فظهر انه لوسئل قبل لبذل لان خصوصیة الوقت ملغاة قبل تأخر الوقت ادل علی البذل قبله اذ لو کان محتاجاً الیه قبل لانفقه او بقی محتاجاً الیه الآن فاذا کان هذا في البذل بعد السؤال وقد ارسلوه ارسالاً ولم یقیدوه بما اذالم یره یصلی متیمماً فالبذل بدون سؤال اولی کما لا یخفی واللہ تعالی اعلم۔

اقول: اس کی تقریر یہ ہے کہ پانی میں اصل اباحت ہے۔ اور منع عارضی چیز ہے۔ جیسا کہ حلیہ وغیرہ نے اسے بیان کیا ہے۔ امام اعظم کے اس قول کے تحت: "جب اس سے کوئی پانی دینے کا وعدہ کرے تو انتظار واجب ہے اگرچہ وقت نکل جائے" پانی سے انکار بخل کی وجہ سے ہوتا ہے یا اس لئے کہ خود اسے ضرورت ہے اور اس وقت دے دینے سے دونوں باتوں کا نہ ہونا ظاہر ہو گیا۔ اس سے یہ ظاہر ہوا کہ اگر پہلے بھی اس سے مانگا جاتا تو وہ دے دیتا۔ اس لئے کہ خصوصیتِ وقت ساقط و بیکار ہے۔ بلکہ وقت کا مؤخر کرنا اس سے پہلے دے دینے پر زیادہ دلالت

کرتا ہے اس لئے کہ اگر پہلے اسے خود اس کی ضرورت ہوتی تو خرچ کر لیا ہوتا یا اب بھی اس کا ضرورت مند رہتا۔ جب یہ مانگنے کے بعد دینے کا معاملہ ہے اور علماء نے اسے ارسالًا ذکر کیا یہ قید نہ لگائی کہ "جب اسے تیمم سے نماز ادا کرتے دیکھا نہ ہو" تو بغیر مانگے دے دینا تو اس سے بڑھا ہوا ہے جیسا کہ واضح ہے اور خدائے برتر خوب جاننے والا ہے۔ (ت)

اور یہاں دو صورتیں وعدہ کی ہیں ایک یہ کہ نماز سے پہلے اس کے سوال پر خواہ بطور خود اس نے پانی دینے کا وعدہ کیا اور بعدِ خروجِ وقت دیا یا اُس وقت کہ یہ تیمم کرکے پڑھ چکا تھا خواہ اس نے اسے دیکھا یا نہ دیکھا اس میں کوئی صورت محلِ بحث نہیں کہ وعدہ کو ہمارے علماء نے خود ہی موجبِ قدرت جانا ہے وقت میں اُسے تیمم سے۔

---

1 بدائع الصنائع فصل فی شرائط رکن التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲۸/۱ Page 125 of 761

Fatawa Razawiyya Volume 4 The prayer is not valid at all, whether he gives water eventually or not, except following Imam Zufar, who says that he will pray with Tayammum at the end of the time, and there is a ruling for its repetition by himself.

Secondly, he promised after the prayer and gave it after the time had passed. It was mentioned in the fifth warning that this should have no effect on the prayer. In short, 'giving it after the prayer within the time' [Note 1] means repeating the prayer unconditionally, unless he gave it after refusing before or after the prayer, or remained silent initially and saw him performing Tayammum and praying with Tayammum and remained silent at that time too, then gave it after the prayer; this too is legally considered giving after refusal, and it will soon be mentioned that it is not beneficial. And giving it after the time has expired [Note 2] does not absolutely invalidate the prayer, except in the case where he saw it and did not ask at all and gave it after the time. All these discussions from beginning to end, except for the issue of destruction, were explained in 'Durr-e-Mukhtar'. This humble servant of the court of Prophecy (may the best prayers and greetings be upon him) has refined and corrected them.

Arabic	**Urdu translation**
So let it be reviewed and corrected; if I am correct, then it is from my Lord and to Him belongs all praise.	So let its review and refinement be done. If I have stated correctly, then it is from the side of my Lord.
And if I have erred, then it is from me and from Satan. And Allah and His Messenger are free from it.	And if I have committed an error, then it is from me and from the whispers of Satan.
Exalted is He, and may Allah Almighty send blessings and peace upon him. And Allah, Glory be to Him, the Most High, knows best.	Allah, the Great and Most High, and His Noble Messenger (peace and blessings of Allah be upon him) are free from it. And the Pure and Most High Allah knows best. (T)

Problem 10: Giving after refusal is not beneficial, as stated in Al-Ziyadat, Sadr-al-Shariah, Al-Ghuniya, and Al-Bahr (it is coming). (As Ziyadat, Sadr-al-Shariah, Ghuniya, and Bahr have mentioned and it will come again. T)

I say: The detail is that if he asked before prayer and he refused, then gave it before prayer, whether on his own or upon asking again, whether this second asking was before Tayammum or after, in any case, this giving is beneficial and valid because this giving has revoked that refusal. If he has already performed Tayammum, it is broken;

he should perform Wudu and pray. And if he refused before prayer and gave it after prayer, paying attention to him or his request is not valid because of the inability caused by his refusal.

Note 1: He did not say 'absolutely invalidating the prayer' because in the case of a promise, giving this water will not invalidate the prayer as it was already void. 12 Minhu Ghafara Lahu (M) Note 2: This case also includes a promise, as the prayer itself was void, not that this water was the invalidator. 12 Minhu Ghafara Lahu (M)

फ़तावा रज़विया जिल्द 4 नमाज़ जायज़ ही नहीं है, चाहे वह पानी कभी दे या न दे, सिवाय इमाम ज़ुफ़र के अनुसरण के कि वह समय के अंत में तैयममुम के साथ पढ़ेगा, इसके स्वयं दोहराने का हुक्म है।

दूसरा यह कि नमाज़ के बाद वादा किया और समय निकलने के बाद दिया, पाँचवीं चेतावनी में गुज़रा कि इसका नमाज़ पर कोई प्रभाव नहीं होना चाहिए। संक्षेप में, 'नमाज़ के बाद समय के भीतर देना' [नोट 1] पूर्णतः नमाज़ का दोहराव है, सिवाय इसके कि नमाज़ से पहले या बाद में इनकार करके दिया, या पहले खामोश रहा और उसे तैयममुम करते और तैयममुम से नमाज़ पढ़ते देखा और उस समय भी खामोश रहा, फिर नमाज़ के बाद दिया, तो यह भी कानूनी तौर पर मना करने के बाद देना है, और जल्द ही आएगा कि वह लाभदायक नहीं है। और समय निकलने के बाद देना [नोट 2] पूर्णतः नमाज़ को अमान्य नहीं करता, सिवाय उस स्थिति में जब उसने देखा और बिलकुल नहीं माँगा और उसने समय के बाद दे दिया। ये तमाम बहसें शुरू से आखिर तक, विनाश के मुद्दे के अलावा, 'दुर-ए-मुख्तार' में स्पष्ट थीं। इस रिसालत की दरगाह के फ़क़ीर (उन पर बेहतरीन दुरूद और सलाम हों) ने इनकी तहक़ीक़ की है।

अरबी

अतः इसकी समीक्षा और संशोधन कर लिया जाए; यदि मैं सही हूँ, तो यह मेरे रब की ओर से है और उसी के लिए सारी प्रशंसा है।

और अगर मैंने गलती की है, तो वह मेरी तरफ से और शैतान की ओर से है। और अल्लाह और उसके रसूल इससे बरी हैं।

वह महान और उच्च है, और अल्लाह तआला उन पर दुरूद और सलाम भेजे। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है।

उर्दू अनुवाद

अतः इसकी समीक्षा और संशोधन कर लिया जाए। अगर मैंने सही बयान किया तो वह मेरे रब की ओर से है।

और अगर मैंने गलती की तो वह मेरी तरफ से और शैतान के वसवसों से है।

अल्लाह महान और उच्च और उसके रसूल अनवर उन पर अल्लाह की तरफ से सलाम और रहमत हो, इससे बरी हैं और अल्लाह पाक और बरतर खूब जानने वाला है। (त)

मसला 10: मना करने के बाद देना लाभदायक नहीं है जैसा कि अल-ज़ियादात, सदर-अल-शरीया, अल-ग़ुनिया और अल-बहर में है (जैसा कि ज़ियादात, सदर-अल-शरीया, ग़ुनिया और बहर ने ज़िक्र किया और आगे भी आएगा। त)

मैं कहता हूँ: इसका विवरण यह है कि यदि उसने नमाज़ से पहले माँगा और उसने मना कर दिया, फिर नमाज़ से पहले ही दे दिया, चाहे अपनी मर्जी से या दोबारा माँगने पर, चाहे यह दोबारा माँगना तैयममुम से पहले हो या बाद में, हर हाल में यह देना लाभदायक और मान्य है क्योंकि इस देने ने उस मनाही को निरस्त कर दिया है। यदि वह तैयममुम कर चुका है तो वह टूट गया, वज़ू करके नमाज़ पढ़े। और यदि नमाज़ से पहले इनकार किया और नमाज़ के बाद दिया, तो आप या उसके माँगने पर ध्यान देना मान्य नहीं है क्योंकि उसके इनकार के कारण मजबूरी थी।

नोट 1: पूर्णतः नमाज़ को अमान्य नहीं कहा क्योंकि वादे की सूरत में यह पानी देना नमाज़ को अमान्य नहीं करेगा क्योंकि वह स्वयं ही अमान्य थी। 12 मिन्हु गुफ़रा लहू (म) नोट 2: यह सूरत वादे को भी शामिल है कि वह नमाज़ स्वयं ही अमान्य थी, न कि यह पानी अमान्य करने वाला था। 12 मिन्हु गुफ़रा लहू (म)

पृष्ठ 126 / 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم نماز جائز ہی نہیں خواہ وہ پانی کبھی دے یا کبھی نہ دے مگر باتباع امام زفر کہ اخیر وقت تیمم سے پڑھے گا اس کے خود اعادہ کا حکم ہے۔

دوسرے یہ کہ بعد نماز وعدہ کیا اور بعد خروج وقت دیا، تنبیہ پنجم میں گزرا کہ اس کا نماز پر کچھ اثر نہ ہونا چاہئے بالجملہ ،نماز کے بعد وقت کے اندر دینے میں عہ ۱ مطلقاً نماز کا اعادہ ہے مگر یہ کہ نماز سے پہلے یا بعد انکار کر کے دیا یا پہلے سکوت کیا اور اسے تیمم کرتے اور تیمم سے نماز پڑھتے دیکھا اور اُس وقت بھی ساکت رہا بعد نماز دیا کہ یہ بھی حکماً عطا بعد منع ہے اور عنقریب آتا ہے کہ وہ مفید نہیں اور بعد خروج وقت دینا عہ ۲ مطلقاً مبطلِ نماز نہیں مگر اس حالت میں کہ اُس نے دیکھا اور اصلاً نہ مانگا اور اُس نے بعد وقت دے دیا یہ تمام مباحث اول تا آخر سوائے استہلاک کہ دُرِ مختار میں مصرح تھا اس فقیر بارگاہِ رسالت علیہ افضل الصلاۃ والتحیۃ نے تنقیح زد کیں

عربی متن	اردو ترجمہ
فلیراجع ولیحرر فان اصبت فمن ربی و لہ الحمد	تو اس کی مراجعت اور تنقیح کرلی جائے۔ اگر میں نے ٹھیک
وان اخطأت فمنی ومن الشیطان* واللہ ورسولہ	بیان کیا تو میرے رب کی جانب سے ہے اور اگر میں نے خطا
عنہ بریان* جل وعلا وصلی اللہ تعالی علیہ	کی تو یہ میری طرف سے اور شیطان کے وساوس سے ہے
وسلم* واللہ سبحنہ و تعالی اعلم۔	

عربی متن **اردو ترجمہ**

خدائے بزرگ و برتر اور اس کے رسول انور ان پر

خدائے برتر

کی طرف سے سلام ورحمت ہو اس سے بری ہیں اور

خدائے

پاک و برتر خوب جاننے والا ہے۔ (ت)

مسئلہ ۱۰: منع ۲ کے بعد دینا مفید نہیں کما فی الزِیادات وصدر الشریعہ والغنیۃ والبحر یاتی (جیسا کہ زیادات، صدر الشریعہ، غنیہ اور بحر نے ذکر کیا اور آگے بھی آئے گا۔ ت)

اقول: اس کی تفصیل یہ ہے کہ اگر اس نے نماز سے پہلے مانگا اور اُس نے انکار کر دیا پھر نماز سے پہلے ہی دے دیا خواہ بطور خود یا اس کے دوبارہ مانگنے پر خواہ یہ دوبارہ مانگنا تیمم سے پہلے ہو یا بعد ہر حال میں یہ دینا مفید و معتبر ہے کہ اس عطا نے اس منع کو منسوخ کر دیا اگر تیمم کر چکا ہے ٹوٹ گیا وضو کر کے نماز پڑھے اور اگر نماز سے پہلے انکار کیا اور نماز کے بعد دیا آپ یا اس کے مانگنے پر توجہ دینا معتبر نہیں کہ اس کے انکار کے سبب عجز

عہ ۱ مطلقاً مبطلِ نماز نہ کہا کہ بصورتِ وعدہ یہ پانی دینا مبطلِ نماز نہ ہو گا کہ وہ خود ہی باطل تھی ۱۲ منہ غفر لہ (م) عہ ۲ یہ صورت وعدہ کو بھی شامل کہ وہ نماز خود ہی باطل تھی نہ کہ یہ پانی مبطل ۱۲ منہ غفر لہ (م)

Fatawa Razawiyya - Volume 4

...has been established and Tayammum is valid and prayer has been performed correctly. The legal principle is: "Whoever strives to annul what was completed from his side, his effort is turned back upon him." (He who tries to break a matter that was completed on his part, his attempt will revert to himself. - T) When there was a prior refusal, how can a subsequent gift prove prior ability? Yes, ability will be proven at present; now, at the time of giving, Tayammum will break and one should perform Wudu for the future. And if he refused before prayer and said during the prayer "take it", then both prayer and Tayammum are lost because although prior ability was not established, it is established at present. And even in the middle of prayer, even if it is after the last Tashahhud before Taslim, being capable of water for Tayammum invalidates the prayer and Tayammum, as previously mentioned from Al-Khaniya (as previously passed with reference to Khaniya. - T).

Issue 11: I say: Prohibiting after giving is useful, and its benefit is only to the extent that if Tayammum had become invalid due to the gift, it would now become valid. It does not nullify any other effect of that gift. For example, after Tayammum he gave water, Tayammum broke; now by prohibiting, it will not return. Similarly, if he gave before the completion of prayer or without precedence, and prohibited after the prayer time, the prayer is gone; now by prohibiting, it will not become correct. And if Tayammum itself was prohibited by this gift, then this prohibition will not be useful at all because its benefit was the permissibility of Tayammum, and that is already achieved. Furthermore, that benefit is only when the water has not yet been used and remains in the giver's possession, and the receiver is not prohibited from disposing of it. For example, water was given by way of permissibility but he had already done Tayammum, it was lost, he had not yet completed Wudu when he prohibited it, so now the use of water is no longer permissible for him. Similarly, if he gifted water and possession had not yet taken place when he prohibited it, because a gift before possession was incomplete and he has the right to prohibit. And in this case also, if he had already done Tayammum, it is nullified, because mere permissibility of water, rather just a promise, is a nullifier of Tayammum, not just the gift. Yes, if he had taken possession, then his prohibition is useless because his ownership has ceased and he has no right to retract without consent or judgment. Contrary to the case where water was sold to him and the seller had stipulated an option (Khiyar ash-Shart), and he had not yet used the water when he (the seller) canceled the sale, because here he did not have the right of disposal from the

beginning. The previous Tayammum remains because in a sale where the seller has the option of condition, the sold item neither leaves his ownership nor is the buyer allowed to dispose of it, even if he has taken possession with the seller's permission. It is stated in Al-Hidaya:

Arabic	English Translation
The seller's option prevents the exit of the sold item from his ownership, and the buyer does not own the right to dispose of it even if he took possession with the seller's permission.	The seller's option prevents the exit of the sold item from his ownership, and the buyer does not own the right to dispose of it even if he took possession with the seller's permission. (T)

[1] Al-Hidaya, Chapter on Khiyar ash-Shart, Maktaba Arabiya Karachi, 2/531, Part 3.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 4

...तय हो चुका है और तयम्मुम जायज़ है और नमाज़ सही हो चुकी है। शरीयत का क़ायदा है कि: "जिसने अपनी ओर से जो मुकम्मल हो गया उसे तोड़ने की कोशिश की, उसकी कोशिश उसी पर पलट दी जाएगी।" (जो ऐसे मामले को तोड़ने की कोशिश करे जो उसकी तरफ से मुकम्मल हो गया, उसकी कोशिश उसी पर पलट जाएगी। - त) जब पिछला इंकार है, तो बाद वाला देना पिछली कुदरत (सामर्थ्य) को कैसे साबित कर सकता है? हाँ, फ़िलहाल कुदरत साबित होगी; अब देते समय तयम्मुम टूटेगा और भविष्य के लिए वज़ू करेगा। और अगर नमाज़ से पहले इंकार किया और ऐन नमाज़ में कहा "ले ले", तो नमाज़ और तयम्मुम दोनों जाते रहे, क्योंकि हालाँकि पिछली कुदरत साबित नहीं हुई थी, फ़िलहाल तो साबित हो गई। और नमाज़ के बीच में, भले ही आखिरी क़दा के बाद सलाम से पहले, तयम्मुम के लिए पानी पर कादिर होना नमाज़ और तयम्मुम को बातिल कर देता है, जैसा कि पहले खानिया के हवाले से गुज़रा। (त)

मसला 11: मैं कहता हूँ: देने के बाद रोकना मुफीद (फायदेमंद) है और इसका फायदा केवल इतना है कि अगर तयम्मुम देने की वजह से नाजायज़ हुआ था, तो अब जायज़ हो जाएगा। यह उस अता (देने) के किसी और असर को ज़ायल (खत्म) नहीं करता। मिसाल के तौर पर, तयम्मुम के बाद उसने पानी दिया, तयम्मुम टूट गया; अब मना करने से वह वापस नहीं आएगा। वैसे ही अगर नमाज़ पूरी होने से पहले दिया या बिना किसी पहल के नमाज़ के समय के बाद मना किया, तो नमाज़ जाती रही; अब मना करने से वह सही नहीं हो जाएगी। और अगर इस अता से तयम्मुम खुद ही ममनू (वर्जित) हुआ था, तो यह मना करना कुछ भी मुफीद न होगा क्योंकि इसका फायदा तयम्मुम की इबाहत (अनुमति) था और वह पहले से हासिल है। फिर इतना फायदा भी उस समय है जब पानी अभी खर्च न हुआ हो और देने वाले की मिल्क (स्वामित्व) में बाकी हो, और लेने वाला उसमें तसर्रुफ़ (उपयोग) से ममनू न हो। मिसाल के तौर पर, पानी इबाहत के तौर पर दिया गया लेकिन वह तयम्मुम पहले कर चुका था, वह जाता रहा, अभी वज़ू पूरा नहीं किया था कि उसने मना कर दिया, अब उसके लिए पानी का इस्तेमाल जायज़ न रहा। इसी तरह अगर पानी हिबा (दान) किया था और अभी उस पर कब्ज़ा नहीं हुआ था कि उसने मना कर दिया, क्योंकि कब्ज़े से पहले हिबा अधूरा था और उसे मना करने का अधिकार प्राप्त है। और इस सूरत में भी अगर वह पहले तयम्मुम कर चुका था, तो वह ज़ायल हो गया, क्योंकि पानी की केवल इबाहत, बल्कि केवल वादा ही तयम्मुम को तोड़ने वाला है, न कि केवल हिबा। हाँ, अगर वह कब्ज़ा कर चुका होता, तो अब उसका मना करना बेकार है क्योंकि उसका

मालिकाना हक खत्म हो चुका है और बिना रज़ामंदी या फैसले के उसे वापस लेने का अधिकार नहीं है। इसके विपरीत उस सूरत में जहाँ पानी उसे बेचा गया और बेचने वाले (बाइ') ने अपना ख्यार-ए-शर्त (शर्त का विकल्प) रखा था, और उसने अभी पानी इस्तेमाल नहीं किया था कि उसने बिक्री रद्द कर दी, क्योंकि यहाँ उसे शुरू से ही तसर्रुफ़ का अधिकार नहीं था। पिछला तयम्मुम बाकी रहा क्योंकि ऐसी बिक्री में जहाँ बेचने वाले का ख्यार-ए-शर्त हो, बेची गई चीज़ न तो उसके स्वामित्व से बाहर होती है और न ही खरीदार को उसमें तसर्रुफ़ की अनुमति होती है, भले ही उसने बेचने वाले की अनुमति से कब्ज़ा कर लिया हो। हिदाया में इरशाद फ़रमाया:

अरबी	**हिंदी अनुवाद**
خيار البائع يمنع خروج المبيع عن ملكه ولا يملك المشترى التصرف فيه وان قبضه باذن البائع	बाइ' (विक्रेता) का ख्यार बेची गई वस्तु के उसके स्वामित्व से निकलने में बाधक है और खरीदार उसमें तसर्रुफ़ (उपयोग) का मालिक नहीं है, भले ही उसने विक्रेता की अनुमति से उस पर कब्ज़ा कर लिया हो। (त)

[1] अल-हिदाया, ख्यार-ए-शर्त का अध्याय, मकतबा अरबिया कराची, 2/531, भाग 3.

متحقق اور تیمم جائز اور نماز صحیح ہوچکی اور قاعدہ شرعیہ ہے کہ من سعی فی نقض ماتم من جہتہ فسعیہ مردود علیہ (جو ایسے امر کو توڑنے کی کوشش کرے جو اس کی جانب سے مکمل ہوگیا اس کی کوشش اسی پر پلٹ جائے گی۔ت) جب انکارِ سابق ہے تو عطائے لاحق قدرتِ سابقہ کیونکر ثابت کرسکتی ہے ہاں فی الحال قدرت ثابت ہوگی اب دیتے وقت تیمم ٹوٹے گا اور آئندہ کیلئے وضو کرے گا۔اور اگر نماز سے پہلے انکار کیا اور عین نماز میں کہا لے لے نماز و تیمم دونوں جاتے رہے کہ اگرچہ قدرتِ سابقہ ثابت نہ ہوئی فی الحال تو ثابت ہوئی اور وسط نماز میں اگرچہ قعدہ اخیرہ کے بعد سلام سے پہلے تیمم کا پانی پر قادر ہونا نماز و تیمم کو باطل کرتا ہے کما تقدم عن الخانیۃ (جیسا کہ پہلے خانیہ کے حوالہ سے گزرا۔ت)

مسئلہ ۱۱: اقول دینے کے بعد منع مفید ہے اور اس کا فائدہ صرف اس قدر ہے کہ تیمم اگر بوجہ عطا نا جائز ہوا تھا اب جائز ہو جائے اس سے زیادہ وہ عطا کے کسی اثر کو زائل نہیں کرتا مثلاً تیمم کے بعد اس نے پانی دیا تیمم ٹوٹ گیا اب منع کرنے سے واپس نہ آئے گا یونہی اگر قبل تمام نماز دیا یا بے سبقت منع بعد نماز وقت دیا نماز جاتی رہی اب منع کرنے سے صحیح نہ ہو جائے گی۔ اور اگر اس عطا سے تیمم خود ہی ممنوع ہوا تھا جب تو یہ منع کچھ بھی مفید نہ ہوگا کہ اس کا فائدہ اباحتِ تیمم تھا اور وہ پہلے سے حاصل ہے پھر اتنا فائدہ بھی اُس وقت ہے جب کہ پانی ابھی خرچ نہ ہوا اور دینے والے کی ملک پر باقی ہو اور لینے والا اُس میں تصرف سے ممنوع نہ ہو مثلاً پانی بطورِ اباحت دیا مگر یہ تیمم پہلے کر چکا تھا جاتا رہا ہنوز وضو پورا نہ کیا تھا کہ اس نے منع کر دیا اب اسے پانی کا استعمال جائز نہ رہا یونہی اگر پانی ہبہ کیا تھا اور ابھی اس کا قبضہ نہ ہوا تھا کہ اس نے منع کردیا کہ ہبہ قبل قبضہ ناتمام تھا اور اس کو منع کا اختیار حاصل

اور اس صورت میں بھی تیمم اگر پہلے کر چکا تھا زائل کہ مجرد اباحتِ آب بلکہ نرا وعدہ ناقضِ تیمم ہے نہ کہ ہبہ ہاں اگر یہ قبضہ کر چکا تو اب اُس کا منع بیکار ہے کہ اس کی ملک زائل ہو چکی اور بے رضا یا قضا اسے رجوع کا اختیار نہیں۔ بخلاف اس صورت کے کہ پانی اُس کے ہاتھ بیچا اور بائع نے اپنا خیار شرط کیا تھا اور یہ ابھی پانی استعمال نہ کرنے پایا تھا کہ اُس نے بیع فسخ کر دی کہ یہاں اُسے اختیار تصرف پہلے ہی سے نہ تھا تیمم سابق باقی رہا کہ بیع ۲ میں جب بائع کا خیار شرط ہو مبیع نہ اُس کی ملک سے خارج ہو نہ مشتری کو اُس میں تصرف جائز اگرچہ باذنِ بائع قبضہ کر چکا ہو۔ ہدایہ میں ارشاد فرمایا:

عربی	**اردو ترجمہ**
خیار البائع یمنع خروج المبیع عن ملکہ ولایملک المشتری التصرف فیہ وان قبضہ باذن البائع ۱۔	بائع کا خیار اس کی ملک سے مبیع کے نکلنے سے مانع ہے اور اس میں مشتری تصرف کا مالک نہیں اگرچہ بائع کی اجازت سے اس پر قبضہ کر چکا ہو۔(ت)

۱ الہدایۃ خیار شرط مکتبہ عربیہ کراچی ۲ / ۵۳۱ جز ۳

Fatawa-e-Razvia Volume 4

...necessity (52) on the purity of specific people at a time and this is not among them (53) a foreign land in which this fourth situation is also included (54) bathing is required but there is no privacy (55) a woman needs to perform Wudu but there is no privacy (63) water is outside and the woman has no sheet (84) no Mahram is available to help her dismount or mount (86) descending will cause a wound to flow during prayer (87) purification with water would cause a certain confirmed act to be missed without a substitute (101) fear of a transgressor arriving (124) clothes became wet leading to immodesty (133) water is in the mosque and this person is in a state of major ritual impurity (160 & 161) avoiding opposition from the father (162 to 166) Tayammum for hermaphrodites, females, and male deceased; these twenty-one and those three that passed in numbers (51 and 128 and the caution after number 161) make twenty-four. And the twenty-fifth situation is that an impure person bathed and some part of the body remained unwashed, water finished, and he performed Tayammum. Then a minor ritual impurity occurred for which he performed Tayammum. Now two things are obligatory upon him: washing the part that remained from the bath, and performing Wudu because minor impurity occurred after the Tayammum for major impurity. Now he found water with which either that part can be washed or Wudu can be performed, but it's not enough for both. He is commanded to wash that part. According to Imam Abu Yusuf, the Tayammum for minor impurity will not be nullified because although the water was sufficient for it, legally he could not perform Wudu with it as it was obligatory to spend it on the remaining part. We have discussed this issue in detail at the end of our treatise "Al-Tulbatul Badi'ah", let it be seen there, and we have preferred the view of Imam Muhammad therein. (T)

Issue 12: Essential Say: There are two issues here. First, if there is a strong presumption (Zann-e-Ghalib) that water is nearby, then seeking i.e., searching for it is mandatory (Wajib); Tayammum without searching is not permissible. Second, if someone is known to have water and there is a strong presumption that he will give it if asked, then seeking i.e., asking for it is mandatory; Tayammum without asking is not permissible. Regarding the first issue, we have already researched in the fifth benefit of Sharh Ta'rif Razvi that this obligation is in the sense of a condition, i.e., searching is a condition for the validity of Tayammum. Without it, Tayammum and prayer are absolutely void for the time being, even if it later becomes clear that there was no water.

[Boxed Text] Arabic: And the great masters Abu al-Sa'ud, Tahthawi, and Shami have adopted this in the marginalia of Al-Kanz and Al-Durr, as stated in the reliable books: that if one prays with Tayammum while there was someone present to ask, and then he is informed about the water, he must repeat the prayer, otherwise not, as in Al-Durr, and we have already presented this in the seventh issue. Urdu translation: Syed Abu al-Sa'ud, Syed Tahthawi, and Syed Shami have adopted this in the marginalia of Kanz and Durr-e-Mukhtar, as explicitly stated in reliable books: that if prayer was performed with Tayammum while there was someone present from whom he could have asked about water, then he...

---

1. Durr-e-Mukhtar, Chapter of Tayammum, Maktaba Mujtabai Delhi, 1/44. Page 129 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द ४

...की आवश्यकता (५२) विशिष्ट लोगों की पवित्रता पर समय और यह उनमें से नहीं (५३) पराया देश जिसमें यह चौथी स्थिति भी शामिल है (५४) नहाना है और परदा नहीं (५५) औरत को वुज़ू करना है और परदा नहीं (६३) पानी बाहर है और औरत के पास चादर नहीं (८४) सवारी से उतारने-चढ़ाने को महरम नहीं (८६) उतरने से ज़ख्म का रिसाव नमाज़ में रहेगा (८७) पानी से पाकी हासिल करना किसी पक्की सुन्नत को बिना किसी विकल्प के छुड़ा देगा (१०१) किसी पापी के आ जाने का डर (१२४) कपड़े भीग कर बेपर्दगी हो गई (१३३) पानी मस्जिद में है और यह नापाक (जुनुब) है (१६० और १६१) पिता के विरोध से बचना (१६२ से १६६) उभयलिंगी, स्त्री और मृत पुरुष का तयम्मुम; ये इक्कीस और वे तीन जो नंबर (५१ और १२८ और १६१ के बाद की चेतावनी) में गुज़रे, कुल चौबीस हुए। और पच्चीसवीं सूरत यह कि एक नापाक व्यक्ति नहाया और शरीर का कुछ हिस्सा धुलने से रह गया, पानी खत्म हो गया, उसने तयम्मुम किया। फिर उसे लघु अशुद्धि (ह़दथ) हुई, उसके लिए भी तयम्मुम किया। अब उस पर दो चीज़ें लाज़िम हैं: नहाने में जो हिस्सा रह गया था उसे धोना, और वुज़ू करना क्योंकि जनाबत के तयम्मुम के बाद ह़दथ हुआ है। अब उसे पानी मिला जिससे या तो वह हिस्सा धुल सकता है या वुज़ू हो सकता है, पर दोनों के लिए काफी नहीं। उसे हुक्म है कि वह हिस्सा धोए। इमाम अबू यूसुफ के नज़दीक ह़दथ का तयम्मुम खत्म नहीं होगा क्योंकि पानी हालांकि इसके लिए काफी था मगर शरीअत के अनुसार वह इससे वुज़ू नहीं कर सकता था क्योंकि उसे उस बाकी हिस्से पर खर्च करना वाजिब था। यह मसला हमने अपने रिसाले "अल-तुलबतुल बदीआ" के अंत में विस्तार से बयान किया है, वहां देखा जाए और हमने उसमें इमाम मुहम्मद के कौल को प्राथमिकता दी है। (त)

मसला १२: ज़रूरी बात: यहाँ दो मसले हैं। एक यह कि अगर पानी करीब होने का प्रबल अनुमान (ज़न्न-ए-गालिब) हो तो तलाश वाजिब है; बिना तलाश के तयम्मुम जायज़ नहीं। दूसरा यह कि किसी के पास पानी होने का पता हो और प्रबल अनुमान हो कि माँगने पर दे देगा, तो माँगना वाजिब है; बिना माँगे तयम्मुम जायज़ नहीं। पहले मसले के बारे में हम 'शरह तारीफ़ रज़वी' के पाँचवें फायदे में शोध कर चुके हैं कि यह वाजिबात शर्त के अर्थ में है, यानी तलाश करना तयम्मुम की शुद्धता की शर्त है। इसके बिना तयम्मुम और नमाज़ फ़िलहाल बिल्कुल बातिल (अमान्य) हैं, भले ही बाद में यह पता चले कि पानी नहीं था।

[बॉक्स वाला पाठ] अरबी: सय्यद अबू अल-सऊद, सय्यद तहतावी और सय्यद शामी ने कंज़ और दुर्र के हाशिये में इसे ही अपनाया है, जैसा कि प्रामाणिक किताबों में स्पष्ट किया गया है: कि यदि किसी ने

तयम्मुम के साथ नमाज़ पढ़ी जबकि वहाँ कोई ऐसा व्यक्ति मौजूद था जिससे पानी के बारे में पूछा जा सकता था, और फिर उसे पानी के बारे में पता चला, तो वह नमाज़ दोहराए, अन्यथा नहीं, जैसा कि दुर्र में है, और हमने सातवें मसले में इसे पहले ही प्रस्तुत कर दिया है। उर्दू अनुवाद: सय्यद अबू अल-सऊद, सय्यद तहतावी और सय्यद शामी ने कंज़ और दुर्रे मुख्तार के हाशिये में इसी को लिया है जैसा कि प्रामाणिक किताबों में इसका स्पष्ट विवरण आया है कि अगर तयम्मुम से नमाज़ पढ़ ली जबकि वहां ऐसा कोई शख्स मौजूद था जिससे पानी के बारे में पूछ सकता था, फिर उसने...

---

1. दुर्रे मुख्तार, बाब अल-तयम्मुम, मकतबा मुज्तबाई दिल्ली, १/४४ पृष्ठ १२९ (७६१ में से)

فتاوی رضویہ جلد چہارم

کی ضرورت (۵۲) خاص لوگوں کی طہارت پر وقت اور یہ ان میں نہیں (۵۳) ملک غیر جس میں یہ صورت چہارم بھی داخل (۵۴) نہانا ہے اور ستر نہیں (۵۵) عورت کو وضو کرنا ہے اور ستر نہیں (۶۳) پانی باہر ہے اور عورت کے پاس چادر نہیں (۸۴) سواری سے اتارنے چڑھانے کو محرم نہیں (۸۶) اترنے سے زخم کا سیلان نماز میں رہے گا (۸۷) پانی سے طہارت کسی مؤکد کو بے بدل فوت کرے گی (۱۰۱) فاسق کے آجانے کا اندیشہ (۱۲۴) کپڑے بھیگ کر بے ستری ہو گئی (۱۳۳) پانی مسجد میں ہے اور یہ جنب (۱۶۰ و ۱۶۱) مزاحمت پدر سے احتراز (۱۶۲ تا ۱۶۶) خنثی و انثی و مرد میت کا تیمم اکیس یہ اور تین وہ کہ نمبر (۵۱) و ۱۲۸ و تنبیہ بعد نمبر ۱۶۱) میں گزریں چوبیس ۲۴ ہوئیں اور پچیسویں ۲۵ یہ صورت کہ جنب نہایا اور بدن کا کچھ حصہ دھونے سے رہ گیا پانی ختم ہو گیا تیمم کیا پھر حدث ہوا اس کیلئے تیمم کیا اب اس پر دو واجب ہیں جو حصہ نہانے میں رہ گیا تھا اس کا دھونا اور تیمم جنابت کے بعد حدث ہوا ہے لہٰذا اس کیلئے وضو کرنا اب اس نے پانی پایا جس سے وہ حصہ دھل سکتا ہے یا وضو کرے تو وضو ہو سکتا ہے مگر مجموع کیلئے کافی نہیں اسے حکم ہے کہ وہ حصہ دھوئے اور امام ابو یوسف کے نزدیک حدث کا تیمم نہ جائے گا کہ پانی اگرچہ اس کیلئے کافی تھا مگر شرعاً یہ اس سے وضو نہ کر سکتا تھا کہ اسے اس باقی حصے میں صرف کرنا واجب تھا۔ یہ مسئلہ ہم نے اپنے رسالہ "الطلبة البديعة" کے آخر میں مفصل ذکر کیا ہے وہاں دیکھا جائے و قد رجحنا فیھا قول محمد (اس میں ہم نے امام محمد کے قول کو ترجیح دی ہے ۔ت)

مسئلہ ۱۲: ضرورية اقول: یہاں دو مسئلے ہیں ایک یہ کہ پانی قریب ہونے کا ظنِ غالب ہو تو طلب یعنی تلاش واجب ہے بے تلاش تیمم جائز نہیں دوسرا یہ کہ کسی کے پاس پانی معلوم ہو اور ظنِ

غالب ہے کہ مانگنے سے دے دے گا تو طلب یعنی مانگنا واجب ہے بے مانگے تیمم جائز نہیں۔ پہلے مسئلے کی نسبت شرح تعریف رضوی کے فائدہ پنجم میں ہم تحقیق کر آئے کہ یہ وجوب بمعنی اشتراط ہے یعنی تلاش کرنا شرط صحت تیمم ہے بے اس کے تیمم و نماز مطلقاً فی الحال باطل اگرچہ بعد کو یہی ظاہر ہو کہ پانی نہ تھا۔

[Boxed Text] وقداخذ به السادسة الجلة ابو السعود وط وش فی حواشی الکنز والدر علی مانص علیه في المعتمدات ان لوصلی بتیمم وثمه من یسأله ثم اخبره بالماء اعاد والا لا کما فی الدر وقد منا فی المسألة السابعة سید ابو السعود، سید طحطاوی اور سید شامی نے کنز اور در مختار کے حواشی میں اسی کو لیا ہے جیسا کہ معتمد کتابوں میں اس کی تصریح آئی ہے کہ اگر تیمم سے نماز پڑھ لی جب کہ وہاں ایسا کوئی شخص موجود تھا جس سے یہ پانی کے بارے میں پوچھ سکتا تھا پھر اس نے

---

1 در مختار، باب التیمم، مکتبہ مجتبائی دہلی، ۱/۴۴ Page 129 of 761

Volume Four

Fatawa Razawiyya

[Right Column - Urdu Translation/Commentary] If [someone] informed [him] about water, he should repeat the prayer, otherwise not, as mentioned in 'Durr-e-Mukhtar'. Regarding the seventh issue, we have already cited 'Muheet', 'Hilyah', 'Zayla'i', and 'Bada'i'. The source of these masters of commentaries is that in 'Al-Bahr', citing 'As-Siraj', it is mentioned: If one performed Tayammum without searching when searching was mandatory and prayed, and then searched but did not find water, repeating the prayer is still mandatory for him. These are the words of 'Shami', and similar points are found in 'Hashiyah Tahtawi' and 'Fath Allah al-Mu'in'.

I say: (I say) May God have mercy on these gentlemen and have mercy on us through their blessing. Where and how is searching mandatory here when he does not even know whether the water is near or not? Having a predominant suspicion (Ghalaba-e-Zann) of proximity is out of the question; here, the only obligation is to ask such a person about whom one suspects that he might know something about the state of the water. There is a clear difference between these two issues. Because one who suspects the proximity of water suspects his own power over water, so his Tayammum is invalid unless he searches before Tayammum so that the error of his suspicion is revealed. However, one who suspects that a person has some knowledge regarding water does not know whether, if he inquires from that person, he will tell him that the water is near or far. Therefore...

[Left Column - Arabic Text] Citing 'Al-Muheet', 'Al-Hilyah', 'Az-Zayla'i', and 'Al-Bada'i' as well, for in 'Al-Bahr' from 'As-Siraj': If one performed Tayammum without a search while searching was obligatory, prayed, and then searched but did not find [water], repetition [of prayer] is mandatory for him (1). This means that repetition is mandatory here even if no one informed him (2). These are the words of 'Sh' [Ash-Shami], and similar is in 'T' [At-Tahtawi] and 'Fath Allah al-Mu'in'.

I say: May Allah Almighty have mercy on them and have mercy on us through them. Where is the obligation of searching here and how is it mandatory when he does not know if the water is near or not, let alone having a predominant suspicion of proximity? Rather, the obligation here is to ask someone who he thinks has knowledge of the state of the water. There is a clear difference between the two issues. One who suspects proximity has suspected his ability over water, so his Tayammum is void unless he searches before Tayammum, so the error of his

suspicion becomes apparent. As for one who suspects that someone has knowledge of the state of water, he does not know that if he asks him, he will inform him of the proximity of water or its distance. Thus, proximity has no share in the suspicion, and no contradiction exists to his apparent inability. Therefore, his Tayammum was correct and his prayer complete, unless proximity is revealed, in which case repetition is mandatory because the negligence came from his side by omitting the question.

1. Al-Bahr ar-Ra'iq, Maktaba HM Saeed Company Karachi 1/161
2. Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Mustafa al-Babi, Egypt 1/181

जिल्द 4

फ़तावा रज़विया

[दायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] यदि [किसी ने] पानी के बारे में सूचित किया, तो वह नमाज़ दोहराए, अन्यथा नहीं, जैसा कि 'दुर्र-ए-मुख्तार' में है। और सातवें मसले में हम 'मुहीत', 'हिलिया', 'ज़ैलई' और 'बदाइ' का भी हवाला दे चुके हैं। इन हाशिया निगारों का स्रोत यह है कि 'अल-बहर' में 'अस-सिराज' के हवाले से है कि: यदि किसी ने खोज किए बिना तयम्मुम किया जबकि खोज करना अनिवार्य था और नमाज़ पढ़ ली, फिर खोज की लेकिन पानी नहीं मिला, तो भी उसके लिए नमाज़ दोहराना अनिवार्य है। ये 'शामी' के शब्द हैं और इसी तरह की बात 'हाशिया तहतावी' और 'फ़तह अल्लाह अल-मुईन' में भी है।

मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) ख़ुदा इन हज़रात पर रहमत फ़रमाए और उनकी बरकत से हम पर भी रहमत फ़रमाए। यहाँ पर तलाश कहाँ वाजिब है और कैसे वाजिब होगी जब कि वह जानता ही नहीं कि पानी करीब है या नहीं? करीब का ग़लबा-ए-ज़न्न (प्रबल अनुमान) होना तो दूर की बात है; यहाँ पर वाजिब सिर्फ यह है कि ऐसे शख़्स से दरियाफ़्त (पूछताछ) करे जिसके बारे में उसका यह गुमान हो कि वह पानी की हालत के बारे में कुछ जानता होगा। इन दोनों मसलों में साफ़ फ़र्क़ है। क्योंकि जिसे कुर्ब-ए-आब (पानी की निकटता) का गुमान है, उसे पानी पर अपनी कुदरत का गुमान है, तो उसका तयम्मुम बातिल (अमान्य) है जब तक कि वह तयम्मुम से पहले तलाश न कर ले ताकि उसके गुमान की ग़लती साफ़ हो जाए। लेकिन जिसे यह गुमान हो कि इस शख़्स को पानी से मुताल्लिक कुछ आगाही (जानकारी) होगी, तो उसे यह पता नहीं कि अगर वह इस शख़्स से दरियाफ़्त करे तो वह पानी का करीब होना बताएगा या दूर होना बताएगा। इसलिए...

[बायाँ कॉलम - अरबी पाठ] इसे 'अल-मुहीत', 'अल-हिलिया', 'अज़-ज़ैलई' और 'अल-बदाइ' की ओर भी संदर्भित किया गया है, क्योंकि 'अल-बहर' में 'अस-सिराज' से उद्धृत है: यदि किसी ने बिना खोज के तयम्मुम किया जबकि खोज अनिवार्य थी, नमाज़ पढ़ी, फिर खोज की और पानी नहीं मिला, तो उसके लिए दोहराना अनिवार्य है (1)। इसका अर्थ है कि यहाँ दोहराना अनिवार्य है भले ही उसे किसी ने न बताया हो (2)। ये 'श' (अश-शामी) के शब्द हैं, और इसी तरह 'त' (अत-तहतावी) और 'फ़तह अल्लाह अल-मुईन' में भी है।

मैं कहता हूँ: अल्लाह सर्वशक्तिमान उन पर दया करे और उनके माध्यम से हम पर भी दया करे। यहाँ खोज की अनिवार्यता कहाँ और कैसे वाजिब होगी जब उसे पता ही नहीं कि पानी पास है या नहीं, समीपता के प्रबल अनुमान की बात तो दूर है? बल्कि, यहाँ अनिवार्यता केवल उस व्यक्ति से पूछना है जिसके बारे में वह सोचता है कि उसे पानी की स्थिति का ज्ञान है। इन दो मसलों के बीच स्पष्ट अंतर है। जिसने समीपता का अनुमान लगाया, उसने पानी पर अपनी क्षमता का अनुमान लगाया, इसलिए उसका तयम्मुम तब तक शून्य है जब तक वह तयम्मुम से पहले खोज न ले, ताकि उसके अनुमान की त्रुटि स्पष्ट हो जाए। जहाँ तक उस व्यक्ति का प्रश्न है जो यह अनुमान लगाता है कि किसी के पास पानी की स्थिति का ज्ञान है, वह यह नहीं जानता कि यदि वह उससे पूछेगा, तो वह उसे पानी की समीपता या उसकी दूरी के बारे में सूचित करेगा। इस प्रकार, अनुमान में समीपता का कोई हिस्सा नहीं है, और उसकी स्पष्ट अक्षमता का कोई विरोधाभास मौजूद नहीं है। अत; उसका तयम्मुम सही था और उसकी नमाज़ पूरी हुई, जब तक कि समीपता प्रकट न हो जाए, जिस स्थिति में दोहराना अनिवार्य है क्योंकि कोताही सवाल न पूछने के कारण उसकी ओर से हुई थी।

1. अल-बहर अर-राइक, मकतबा एचएम सईद कंपनी कराची 1/161
2. रद्द अल-मुह्तार, तयम्मुम का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र 1/181

पृष्ठ 130 का 761

جلد چہارم

فتاوی رضویہ

[دایاں کالم - اردو] پانی کی خبر دی تو نماز کا اعادہ کرے ورنہ نہیں جیسا کہ در مختار میں ہے اور مسئلہ ہفتم میں ہم اس پر محیط، حلیہ، زیلعی اور بدائع کا بھی حوالہ دے چکے ہیں ان سادات محشین کا ماخذ یہ ہے کہ بحر میں سراج کے حوالہ سے ہے کہ: اگر بغیر تلاش کیے تیمم کر لیا جبکہ تلاش واجب تھی اور نماز پڑھ لی پھر تلاش کیا مگر پانی نہ ملا تو بھی اس پر اعادہ واجب ہے اہ یہ شامی کے الفاظ ہیں اور اسی کے مثل حاشیہ طحطاوی اور فتح اللہ المعین میں بھی ہے۔ اقول: (میں کہتا ہوں) خدا ان حضرات پر رحمت فرمائے اور ان کی برکت سے ہم پر بھی رحمت فرمائے یہاں پر تلاش کہاں واجب ہے اور کیسے واجب ہوگی جب کہ وہ جانتا ہی نہیں کہ پانی قریب ہے یا نہیں؟ قریب کا غلبہ ظن ہونا تو دُور کی بات ہے یہاں پر واجب صرف یہ ہے کہ ایسے شخص سے دریافت کرے جس کے بارے میں اس کا یہ گمان ہو کہ وہ پانی کی حالت کچھ جانتا ہوگا اور ان دونوں مسئلوں میں کھلا ہوا فرق ہے۔ اس لئے کہ جسے قربِ آب کا گمان ہے اسے پانی پر اپنی قدرت کا گمان ہے تو اس کا تیمم باطل ہے جبکہ قبلِ تیمم تلاش نہ کرلے کہ اس کے گمان کی غلطی ظاہر ہو لیکن جسے یہ گمان ہو کہ اس شخص کو پانی سے متعلق کچھ آگاہی ہوگی تو اسے یہ پتا نہیں کہ اگر اس شخص سے دریافت کرے تو وہ پانی کا قریب ہونا بتائے گا یا دُور ہونا بتائے گا تو

[بایاں کالم - عربی] عزوہ للمحیط والحلیۃ والزیلعی والبدائع ایضا بان فی البحر عن السراج لوتیمم من غیر طلب وکان الطلب واجبا وصلی ثم طلب فلم یجد و جبت علیہ الاعادۃ ۱ اہ و مفادہ ان تجب الاعادۃ ھنا وان لم یخبرہ ۲ اہ ھذا لفظ ش و مثلہ فی ط وفتح اللہ المعین ۔ اقول: رحمھم (ا) اللہ تعالی ورحمنا

بهم این ههنا وجوب الطلب وکیف یجب وهو لا یدری ان الماء قریب ام لا فضلا عن غلبة الظن بالقرب انما الواجب ههنا السؤال عمن یظن ان عنده علما بحال الماء وفرق بیّن بین المسألتین فان من ظن القرب فقد ظنه قادرا علی الماء فبطل تیممه مالم یطلب قبل التیمم فیظهر خطؤ ظنه امامن ظن ان عنده علما بحال الماء فهو لا یدری انه ان سأله یخبره بقرب الماء او بعده فلم یکن للقرب حظ من الظن فلم یوجد معارض لعجزه الظاهر فصح تیممه و تمت صلاته الا ان یظهر القرب فتجب الاعادة لان التفریط جاء من قبله بترك السؤال ۔

۱۔ البحر الرائق مکتبہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۶۱/۱ ۲۔ رد المحتار باب التیمم مصطفی البابی، مصر ۱۸۱/۱

Fatawa Razawiyya - Volume 4

If the presumption of proximity was not obtained in any way, then it does not contradict his apparent inability. Therefore, his tayammum is valid and his prayer is complete. However, if the proximity of water is later revealed, repetition (of the prayer) will be necessary because the negligence was on his part as he did not enquire. (T)

The discussion in the second issue is whether the obligation here is also in the sense of a condition, such that if he performs tayammum while presuming he would be given water even without asking, it would not be valid from the start and the prayer would be void, even if it later appears that it would not have been given. Or is it not so? It is strange that here the passages lean towards stating it as a condition, both in terms of the requirement and the ruling on the validity of tayammum and prayer. On the other hand, the statements of Kafi, Khaniya, Siraj al-Muftiyyin, Nihaya, Halabi, Khazana, and Burjandi, in which regarding tayammum it says 'la yajuz' (it is not permissible), for example: "Tayammum before seeking is not permissible." (T) Even if the meaning is considered potentially as a negation of lawfulness, the texts of Imam Saffar, Quduri, Hidaya, Tabyin, Munya, Ghunya, and Harawi on Al-Kanz explicitly state 'la yujzi' (it is not sufficient). For example: "If he prayed with tayammum before seeking, it does not suffice him." (T) This is not open to interpretation. Munya quoted the comparison from the first issue from Imam Saffar that: "It does not suffice him before seeking, as in urban areas." (T) Close to these are the passages of Mabsut, Sharh al-Wiqaya, Jawahir al-Ikhlati, etc., in which the lack of permissibility is in relation to prayer, such that: "If he did not seek and prayed, it is not valid." And the wording of Al-Jawahir is: "If he started the prayer before seeking, it is not permissible." (T) The discussion of Allama Ibrahim Halabi has passed: "The prayer is not valid without it." (T) In Al-Hilya, under the issue of a person in a state of major ritual impurity finding water in a mosque... (T)

1. Al-Burjandi, Section on Tayammum, Naval Kishore Press, Balsarur, 1/28
2. Al-Mukhtasar lil-Quduri, Chapter on Tayammum, Maktaba Mujtabai Kanpur, p. 12
3. Ghunyat al-Mustamli, Chapter on Tayammum, Suhail Academy Lahore, p. 70
4. Sharh al-Wiqaya, Chapter on Tayammum, Maktaba Rashidiya Delhi, 1/101
5. Jawahir al-Ikhlati (Manuscript), Chapter on Tayammum, 13
6. Ghunyat al-Mustamli, Chapter on Tayammum, Suhail Academy Lahore, p. 69

7. Hilya

यदि निकटता का किसी भी तरह से अनुमान नहीं हुआ, तो यह उसकी स्पष्ट असमर्थता के विपरीत नहीं हुआ। इसलिए उसका तयम्मुम सही है और उसकी नमाज़ पूरी है। लेकिन यदि पानी का निकट होना स्पष्ट हो जाए, तो (नमाज़ का) दोहराना आवश्यक होगा क्योंकि कोताही (लापरवाही) उसी की ओर से हुई कि उसने पता नहीं किया। (त)

चर्चा दूसरे मसले में है कि यहाँ भी अनिवार्यता इसी शर्त के अर्थ में है कि देने के अनुमान की स्थिति में यदि बिना माँगे तयम्मुम कर ले तो वह शुरू से ही सही न हो और नमाज़ बातिल (अमान्य) हो जाए, भले ही बाद में न देना ही स्पष्ट हो। या ऐसा नहीं है? आश्चर्य यह है कि यहाँ इबारतें (लिखावटें) शर्त होने के पक्ष में आईं और तयम्मुम और नमाज़ की शुद्धि के आदेश के पक्ष में। उधर कानी, खानिया, सिराजुल मुफ़्तीयीन, निहाया, हलबी, खज़ाना और बुर्जंदी की इबारतें जिनमें तयम्मुम के संबंध में 'ला यजूज़' (जायज़ नहीं) है, उदाहरण के लिए: "तयम्मुम माँगने से पहले जायज़ नहीं।" (त) यदि इसके अर्थ को वैधता के निषेध के संभावित भी माना जाए, तो इमाम सफ़ार, कुदूरी, हिदाया, तबयीन, मुनिया, गुनिया और हरवी अल-कंज के ग्रंथों में स्पष्ट रूप से 'ला युजज़ी' (पर्याप्त नहीं) है। उदाहरण के लिए: "यदि उसने माँगने से पहले तयम्मुम के साथ नमाज़ पढ़ी, तो यह उसे पर्याप्त नहीं है।" (त) यह व्याख्या के योग्य नहीं है। मुनिया ने इमाम सफ़ार से पहले मसले की समानता उद्धृत की कि: "माँगने से पहले यह उसे काम नहीं दे सकता जैसे बस्तियों (शहरी क्षेत्रों) में।" (त) इन्हीं के करीब मबसूद, शरह विक़ाया और जवाहिरे इख्लाती आदि की इबारतें हैं जिनमें नमाज़ के संबंध में अमान्यता है कि: "यदि उसने नहीं माँगा और नमाज़ पढ़ ली, तो वह मान्य नहीं।" और जवाहिरे के शब्द ये हैं: "माँगने से पहले नमाज़ शुरू कर दी तो यह जायज़ नहीं।" (त) अल्लामा इब्राहिम हलबी की चर्चा गुज़री: "इसके बिना नमाज़ सही नहीं है।" (त) हिल्या में ज़ेर-ए-मसला जुनुब (महा-अशुद्धि वाला व्यक्ति) जिसे मस्जिद में पानी मिला... (त)

1. अल-बुर्जंदी, फ़स्ल फ़ी अत-तयम्मुम, मतबा नवल किशोर, बालसरूर, 1/28
2. अल-मुख्तसर लिल-क़ुदूरी, बाब अत-तयम्मुम, मकतबा मुज्तबाई कानपुर, पृष्ठ 12
3. गुनियातुल मुस्तमली, बाब अत-तयम्मुम, सुहैल अकादमी लाहौर, पृष्ठ 70
4. शरह अल-विक़ाया, बाब अत-तयम्मुम, मकतबा रशीदिया दिल्ली, 1/101
5. जवाहिरे इख्लाती (हस्तलिखित), बाब अत-तयम्मुम, 13

6. गुनियातुल मुस्तमली, बाब अत-तयम्मुम, सुहैल अकादमी लाहौर, पृष्ठ 69
7. हिल्या

पृष्ठ 131/761

قرب کا ظن کسی طرح نہ حاصل ہوا تو یہ اس کے عجزِ ظاہر کے معارض نہ ہوا اس لئے اس کا تیمّم صحیح ہے اور اس کی نماز تمام ہے مگر یہ کہ پانی کا قریب ہونا منکشف ہو تو اعادہ لازم ہوگا اس لئے کہ کوتاہی اسی کی جانب سے ہوئی اس نے دریافت نہ کیا۔ (ت)

کلام دوسرے مسئلہ میں ہے کہ یہاں بھی وجوب اسی معنی اشتراط پر ہے کہ بحالِ ظنِ عطا گربے مانگے تیمّم کرلے سرے سے صحیح ہی نہ ہو اور نماز باطل ہو اگرچہ بعد کو نہ دینا ہی ظاہر ہو یا ایسا نہیں عجب یہ ہے کہ یہاں عبارات جانبِ مبنی افادہ اشتراط پر آئیں اور جانب حکم صحت تیمّم و نماز پر۔ اُدھر کانی و خانیہ و سراجیہ المفتیین و نہایہ و حلبی و خزانہ و برجندی کی عبارتیں جن میں تیمّم کی نسبت لا یجوز ہے مثلاً لا یجوز التیمم قبل الطلب (قبل طلب تیمّم جائز نہیں۔ ت) اگر معنی نفی حل کو محتمل بھی رکھے جائیں تو امام صفار و قدوری و ہدایہ و تبیین و منیہ و غنیہ و ہروی علی الکنز کے نصوص جن میں صراحتًہ لا یجزئیہ (کفایت نہیں کر سکتا۔) ہے۔ مثلاً صلی بالتیمم قبل الطلب لایجزئہ (قبل طلب تیمّم سے نماز ادا کرلی تو یہ اسے کفایت نہیں کر سکتا۔ت) قابلِ تاویل نہیں۔ منیہ نے مسئلہ اولی سے اس کی تشبیہ امام صفار سے نقل کی کہ لایجزئہ قبل الطلب کما فی عمرانات (قبل طلب یہ اسے کام نہیں دے سکتا جیسے آبادیوں میں۔ ت) انہیں کے قریب ہے مبسوط و شرح وقایہ و جواہر اخلاطی وغیرہ کی عبارتیں جن میں عدم جواز بہ نسبت نماز ہے کہ ان لم یطلب وصلی لم یجز و لفظ الجواھر شرع في الصلاۃ قبل الطلب لایجوز (اگر طلب نہ کیا اور نماز ادا کرلی تو جائز نہیں۔ اور جواہر کے الفاظ یہ ہیں: طلب کرنے سے پہلے نماز شروع کردی تو یہ جائز نہیں۔ ت) بحث علامہ ابراہیم حلبی سے گزرا لا تصح الصلاۃ بدونہ (اس کے بغیر نماز

درست نہیں۔ ت) حلیہ میں زیرِ مسئلہ جنب وجد الماء فی المسجد (جنابت والا جسے مسجد میں پانی ملا۔ ت) اسی

1 البرجندی فصل فی التیمم مطبع نولکشور بالسرور ۲۸/۱ 2 المختصر للقدوری باب التیمم مکتبہ مجتبائی کانپور ص ۱۲ 3 غنیہ المستملی باب التیمم سہیل اکیڈمی لاہور ص ۷۰ 4 شرح الوقایۃ باب التیمم مکتبہ رشیدیہ دہلی ۱۰۱/۱ 5 جواہر اخلاطی (قلمی) باب التیمم ۱۳ 6 غنیہ المستملی باب التیمم سہیل اکیڈمی لاہور ص ۶۹ 7 حلیہ

Fatawa Razawiyya, Volume 4 In the issue regarding a question from a companion, it is stated in the elaborations: "And where it (asking) is obligatory, Tayammum is not valid except after refusal." Where asking is mandatory, Tayammum is not valid until after a refusal. For those for whom it is necessary, Tayammum without asking will not be valid at all, and the prayer will be absolutely void, even if the error in thinking they would be given is revealed later, i.e., they don't give upon asking. On the other hand, from the fifth issue in Ziyadat, Jami al-Karkhi, Muhit al-Sarakhsi, Khulasa, Wajeez, Sharh al-Wiqaya, Hilya, Alamgiriya, and Bahr, and from the seventh issue in Hilya, Sadr al-Shariah, Ghunya (Note 1), and Bahr, it became clear that the ruling of absolute invalidity of prayer is not correct. The correct and reliable view of Zahir al-Riwayah is that neither Tayammum nor prayer becomes void merely due to a predominant thought of receiving water. Even if the thought of receiving water turns out to be wrong, both remain valid and complete. Current books have not paid attention to this clear contradiction. And I say: And through Allah's guidance (I say with the guidance of Allah Almighty - Trans.), the essence is what we mentioned in the interpretation of the rare report of Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him). In the state of thinking that water will be given, the apparent and current ruling is the invalidity of the prayer, unless one asks later and is not given (Note 2). In the state of doubt and thinking that water will be refused, the apparent and current ruling is validity, unless one asks later and receives it or they give it themselves. In short, the ruling of invalidity in the first case and validity in the second is a suspended ruling. If the contrary does not manifest, it remains; otherwise, it changes. Just as a 'Sahib-e-Tarteeb' (one who must pray missed prayers in order) remembers a missed prayer (Faiqa) while having enough time for the current prayer (Waqtiya). If he prays the current prayer, a ruling of invalidity is given, but this invalidity is suspended. If he prays four more current prayers before making up the missed one, and the time for the last one passes, all will become valid. But if he makes up the missed prayer in between, all the current prayers (one to five) he prayed before it will lose their status as obligatory (Farz) and remain as voluntary (Nafil) prayers, as clearly stated in its respective section. As for the difference that in the first issue his thought was considered even if it was contrary to reality, and here it is not, what is the reason for this? I say: Water being near is legally within one's power, so thinking it is near is essentially thinking one has the power. A thought connected to certainty is known power, and when power is known, Tayammum is legally non-existent, and non-existent Tayammum does not become valid. This is contrary to the thought of being given water, where inability is known, and the

thought is that if I ask, they will give. Power will not be achieved except after being given. So this was not a thought of having power, but rather a thought that it might be available in the future. This is analogous to what we presented in the issue of 'Promise'. We found the clarification for this in the issue of 'Hope' in Al-Kafi and Al-Kifaya. Note 1: These phrases are the laws referred to in the seventh issue. 12 (m) Note 2: This includes all five forms of refusal, whether explicit or implicit. 12 Minhu Ghaffara lahu (m) Footnote 1: Hilyat al-Mahalli Page 132 of 761

फ़तावा रज़विया, जिल्द चौथी साथी के एक प्रश्न के मसले पर तफ़रीहात में फ़रमाया गया: "और जहाँ (माँगना) वाजिब है, वहाँ इन्कार के बाद ही तयम्मुम सही होगा।" जहाँ माँगना वाजिब है, वहाँ इन्कार के बिना तयम्मुम सही नहीं होगा। जिनके लिए यह ज़रूरी है, उनके लिए बिना माँगे तयम्मुम होगा ही नहीं, तो नमाज़ मुतलक़न बातिल (अमान्य) होगी, भले ही बाद में यह ज़ाहिर हो जाए कि उन्हें पानी मिलने का जो गुमान था वह ग़लत था, यानी माँगने पर नहीं दिया गया। दूसरी ओर, 'ज़ियादात', 'जामे कर्खी', 'मुहीत सरख़सी', 'ख़ुलासा', 'वजीज़', 'शरह विक़ाया', 'हिल्या', 'आलमगीरिया' और 'बहर' के पाँचवें मसले से, तथा 'हिल्या', 'सद्रुश शरीआ', 'गुनिया' (टिप्पणी 1) और 'बहर' के सातवें मसले से यह साफ़ हुआ कि सिरे से नमाज़ के बातिल होने का हुक्म सही नहीं है। ज़ाहिरुर रिवायत का सही और मोतमिद (विश्वसनीय) क़ौल यही है कि सिर्फ अता के ग़लबा-ए-ज़न्न (प्रबल विचार) से न तयम्मुम बातिल होगा और न नमाज़। अगर अता का गुमान ग़लत भी साबित हो जाए, तब भी दोनों सही और कामिल हैं। मौजूदा किताबों में इस साफ़ तआरुज़ (अंतर्विरोध) की तरफ़ कोई ध्यान नहीं दिया गया। वाना अक़ूलु (और मैं कहता हूँ): व बिल्लाहित तौफ़ीक़ (मैं अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ से कहता हूँ। त) खुलासा वही है जिसका ज़िक्र हमने इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाहि तआला अलैह) की नादिर (दुर्लभ) रिवायत की तावील में किया कि अता के गुमान की सूरत में ज़ाहिरी और मौजूदा हुक्म नमाज़ के सही न होने का है, बशर्ते कि वह बाद में माँगे और उसे न दिया जाए (टिप्पणी 2)। और शक व इन्कार के गुमान की सूरत में ज़ाहिरी और मौजूदा हुक्म सेहत (सही होने) का है, बशर्ते कि बाद में माँगने पर वह दे दे या खुद ही दे दे। संक्षेप में, पहले में फ़साद (ख़राबी) और दूसरे में सेहत का हुक्म मौक़ूफ़ (निलंबित) है। अगर ख़िलाफ़ ज़ाहिर न हो तो वही रहेगा, वरना बदल जाएगा। जैसे 'साहिबे तरतीब' (जिसे छूटी नमाज़ें तरतीब से पढ़नी हों) को कोई छूटी नमाज़ (फ़ाइक़ा) याद आए और वक़्त में गुंजाइश हो, और वह वक़्ती नमाज़ पढ़ ले, तो उसके फ़साद का हुक्म दिया जाएगा, लेकिन यह फ़साद मौक़ूफ़ है। अगर वह फ़ाइक़ा की क़ज़ा से पहले चार और वक़्ती नमाज़ें पढ़ ले और सबमें आख़िरी का वक़्त निकल जाए, तो सब सही हो जाएँगी। और अगर इस बीच वह फ़ाइक़ा की क़ज़ा कर ले, तो उससे पहले उसने एक से पाँच तक जितनी वक़्ती नमाज़ें पढ़ी थीं, सबकी फ़र्ज़ियत बातिल होकर नफ़्ल रह जाएँगी, जैसा कि इसके मौक़े पर साफ़ बयान मौजूद है। रहा यह फ़र्क़ कि पहले मसले में उसके गुमान का एतबार रहा चाहे वह वाक़े के ख़िलाफ़ ही क्यों न हो, और यहाँ नहीं, तो इसकी क्या वजह है? अक़ूलु (मैं कहता हूँ): क़रीब पानी शरीयत की दृष्टि से वश (मक़दूर) में है, तो नज़दीक होने का गुमान ही असल में.क़ुदरत (शक्ति) का गुमान है। और यक़ीन के दर्जे का गुमान तो 'मालूम.क़ुदरत' है, और जब.क़ुदरत मालूम हो तो तयम्मुम शरीयत की दृष्टि से मादूम (ग़ैर-मौजूद) है,

और माद्दूम सही नहीं हो जाएगा। इसके विपरीत अता का गुमान है कि वहाँ बेबसी (अज्ज़) मालूम है और गुमान यह है कि अगर माँगूँ तो दे देगा, और.क़ुद्दरत अता के बाद ही हासिल होगी। तो यह उसका यह गुमान नहीं हुआ कि उसे.क़ुद्दरत हासिल है, बल्कि यह कि भविष्य में हासिल हो सकती है। यह उस मिसाल की तरह है जो हमने 'वादे' के मसले में पेश की थी, और इसकी सराहत हमने 'काफ़ी' और 'किफ़ाया' में 'उम्मीद' के मसले में पाई है। (टिप्पणी 1: ये इबारतें क़वानीन (नियम) हैं जिनका हवाला सातवें मसले में है। 12 (म)) (टिप्पणी 2: इसमें इन्कार की पाँचों सूरतें शामिल हैं, चाहे वे साफ़ तौर पर हों या हुक्म के तौर पर। 12 मिन्हु ग़ुफ़िरा लहू (म)) पद-टिप्पणी 1: हिल्यतुल महल्ली पेज 132/761

فتاوی رضویہ جلد چہارم مسئلہ سوال از رفیق پر تفریحات میں فرمایا وحیث یجب لایصح تیممہ الابعد المنع ۱ جہاں مانگنا واجب ہے اس کا تیمم درست نہیں مگر بعد انکار جن سے لازم کو بے مانگے تیمم ہو گا ہی نہیں تو نماز مطلقاً باطل ہو گی اگر چہ بعد کو ظن عطا کی خطا ظاہر ہو جائے کہ مانگنے سے نہ دے۔ ادھر مسئلہ پنجم میں زیادات و جامع کرخی و محیط سرخسی و خلاصہ و وجیز و شرح وقایہ و حلیہ و عالمگیریہ و بحر اور مسئلہ ہفتم میں حلیہ و صدر الشریعۃ وغنیہ عہ ۱ و بحر سے روشن ہوا کہ سرے سے بطلان نماز کا حکم صحیح نہیں صحیح و معتمد ظاہر الروایۃ یہی ہے کہ صرف غلبہ ظن عطا سے نہ تیمم باطل ہو نہ نماز اگر ظن عطا کی خطا ظاہر ہو دونوں صحیح و تام ہیں۔ کتب حاضرہ میں اس صاف تعارض کی طرف کوئی توجہ مبذول نہ ہوئی۔ وانا اقول: وباللہ التوفیق (میں اللہ تعالٰی کی توفیق سے کہتا ہوں۔ ت) مخلص وہی ہے کہ ہم نے تاویل روایت نادرہ امام محمد رحمۃ اللہ تعالٰی میں ذکر کیا بحال ظن عطا حکم ظاہر و حاضر عدم صحت نماز ہے مگر یہ کہ بعد کو مانگے اور نہ دے (عہ ۲) اور بحال شک و ظن منع حکم ظاہر و حاضر صحت ہے مگر یہ کہ بعد کو مانگنے سے یا آپ دے دے بالجملہ اول میں فساد اور ثانی میں صحت کا حکم حکم موقوف ہے ظہور خلاف نہ ہو تو رہے گا ورنہ بدل جائے گا جیسے 'صاحبِ ترتیب کو فائقہ یاد اور وقت میں وسعت ہے اور وقتیہ پڑھ لی اس کے فساد کا حکم دیا جائے گا مگر فساد موقوف اگر قبلِ قضائے فائقہ چار وقتیہ اور پڑھ لے گا اور سب میں پچھلی کا وقت نکل جائے گا سب صحیح ہو جائیں گی اور اگر اس بیچ میں فائقہ کی قضا کرلے گا تو اُس سے پہلے ایک سے پانچ تک جتنی وقتیہ پڑھی تھیں سب کی فرضیت باطل ہو کر نفل رہ جائیں گی کما مصرح بہ فی محلہ (جیسا کہ اس کے موقع پر اس کی صاف صراحت موجود ہے۔ ت) رہا فرق کہ پہلے مسئلے میں اُس کے ظن کا اعتبار رہا اگرچہ واقع اُس کے خلاف ہوا اور یہاں نہیں اس کی کیا وجہ ہے؟

اقول: قریب پانی شرعاً مقدور ہے تو ظنِ قرب عین ظنِ قدرت ہے اور ظنِ ملتحق بیقین تو قدرت معلوم تو تیمم شرعاً معدوم اور معدوم صحیح نہ ہو جائے گا۔ بخلاف ظنِ عطا کہ عجز معلوم اور ظن اس کا ہے کہ اگر مانگوں تو دے دے گا اور قدرت نہ ہو گی مگر بعدِ عطا تو یہ اس کا ظن نہ ہوا کہ قدرت ہے بلکہ اس کا کہ آئندہ ہو سکتی ہے نظیر ما قدمناہ فی مسئلۃ الوعد ووجدنا التصریح بہ فی مسألۃ الرجاء فی الکافی والکفایۃ (یہ اسی کی نظیر ہے جو مسئلہ وعدہ میں ہم نے پیش کیا اور جس کی تصریح ہمیں کافی و کفایہ میں مسئلہ اُمید کے عہ ۱: یہ عبارت قوانین ہیں جن کا حوالہ مسئلہ ہفتم میں ہے ۱۲ (م) عہ ۲: اس میں منع کی پانچوں صورتیں داخل ہیں صراحۃً ہو یا حکماً ۱۲ منہ غفر لہ (م) ۱ حلیۃ المحلی Page 132 of 761

Fatawa Razawiyya Volume 4 (Within domestic matters - Trans.) Therefore, this conjecture (zann) did not become the basis of the ruling except when the reality is not manifest, because at the time of the loss of means, conjecture is practiced in the science of jurisprudence. One explanation, along with an indication of its weakness, was mentioned in the fifth point on page 661 of the first edition, that as long as knowledge is attainable, acting upon conjecture is not permitted. In Fath al-Qadir, under the discussion of facing the Qiblah, it states:

Resorting to the speculative evidence (ad-dalil az-zanni) and abandoning the decisive evidence (al-qati') while it is possible is not permissible. (1) Abandoning decisive evidence despite it being available and taking speculative evidence is not permissible. (Trans.)

In the matter of proximity and distance, the attainment of knowledge is not possible without difficulty, hence it relied on conjecture. But in the matter of giving and withholding, it is available, so conjecture was not considered reliable except when reaching the truth is impossible.

I indicated its weakness with my words "it is possible that it be explained." I say: The reason for its weakness is that it necessitates questioning even when withholding is conjectured, thus it would be a preference for the second of the opinions of the sixth issue. Rather, the preponderant opinion, or that to which all return through reconciliation, is the third opinion: that there is no obligation except when giving is conjectured. I pointed out the weakness of this by saying "it can be explained this way." I say: The reason for the weakness of this explanation is that it implies that one should ask even if there's a strong conjecture of refusal. This would favor the second opinion among the opinions of the sixth issue, whereas the preferred opinion, and the final destination of all opinions after reconciliation, is the third opinion: that questioning is only obligatory in case of conjecture of giving. (Trans.)

If you say: "Then what is the answer to what has passed about the prohibition based on conjecture while the attainment of knowledge was possible?" I say: It is not easy when giving is not conjectured because asking from someone who refuses is a severe humiliation, and it is either conjectured or equally probable here. The Pure Lawgiver has forbidden the believer from exposing himself to humiliation. If the question is "What is the answer to what was mentioned before, that acting upon conjecture is not permissible when certainty is attainable?" I say: In the absence of conjecture of giving, attaining certainty is neither easy nor accessible because asking

someone who does not give is a severe humiliation. Here, there is either a predominant conjecture of it or an equal probability. And the Pure Law (Shari'ah) has stopped a believer from putting himself in a position of humiliation. (Trans.)

As mentioned in the sixth issue. 12 - From him, may Allah forgive him. (M) (As mentioned in the sixth issue. 12 - From him, may Allah forgive him. (Trans.)

1. Fath al-Qadir, Chapter: Conditions of Prayer, Maktaba Nooria Razvia, Sukkur, 1/235. Page 133 of 761

फ़तावा रज़विया खंड 4 (राष्ट्रीय मामलों के भीतर - अनु.) इसलिए, यह अनुमान (ज़न्न) हुक्म का आधार नहीं बना, सिवाय इसके कि जब वास्तविकता ज़ाहिर न हो, क्योंकि ज़रिए के अभाव के समय फ़िकह के इल्म में अनुमान पर अमल किया जाता है। एक व्याख्या, इसकी कमज़ोरी की ओर संकेत के साथ, पहली प्रिंटिंग के पेज 661 पर पांचवें फ़ायदे में गुज़री कि जब तक ज्ञान प्राप्त करना संभव हो, अनुमान पर अमल जायज़ नहीं। 'फ़तह अल-क़दीर' में किबला की ओर मुंह करने की चर्चा में है:

निर्णायक प्रमाण के संभव होने के बावजूद अनुमानित प्रमाण की ओर जाना जायज़ नहीं है। (1) निर्णायक प्रमाण (दलील-ए-क़तई) उपलब्ध होने के बावजूद उसे छोड़ना और अनुमानित प्रमाण (दलील-ए-ज़न्नी) को लेना जायज़ नहीं है। (अनु.)

निकटता और दूरी के मामले में, कठिनाई के बिना ज्ञान प्राप्त करना संभव नहीं है, इसलिए अनुमान पर निर्भर रहा। लेकिन देने और रोकने के मामले में यह उपलब्ध है, इसलिए अनुमान विश्वसनीय नहीं माना गया जब तक कि सच्चाई तक पहुँचना संभव न हो।

मैंने "इसकी व्याख्या की जा सकती है" कहकर इसकी कमज़ोरी की ओर संकेत किया। मैं कहता हूँ: इसकी कमज़ोरी का कारण यह है कि यह मनाही के अनुमान के समय भी सवाल (मांगने) को अनिवार्य बनाता है, तो यह छठे मसले के कथनों में से दूसरे कथन की प्राथमिकता होगी। बल्कि प्रबल (राजिह), बल्कि सब कथनों का मेल-मिलाप के बाद निचोड़ तीसरा कथन है कि सवाल केवल देने के अनुमान के समय ही अनिवार्य है। मैंने "इसकी यह व्याख्या की जा सकती है" कहकर इसकी कमज़ोरी की ओर इशारा किया। मैं कहता हूँ: इस व्याख्या की कमज़ोरी की वजह यह है कि इससे यह लाज़िम आता है कि इनकार का प्रबल अनुमान होने पर भी सवाल करे, तो इससे छठे मसले के कथनों में से दूसरे कथन की तरजीह होगी। जबकि राजिह बल्कि सभी कथनों का सार और निचोड़ तीसरा कथन है कि सिर्फ देने के अनुमान (ज़न्न-ए-अता) की सूरत में सवाल वाजिब है। (अनु.)

यदि आप कहें: "फिर उसका क्या जवाब है जो अनुमान के आधार पर मनाही के बारे में गुज़रा जबकि ज्ञान प्राप्त करना संभव था?" मैं कहता हूँ: यह तब आसान नहीं है जब देने का अनुमान न हो, क्योंकि उस व्यक्ति से मांगना जो मना कर दे, बहुत अपमानजनक है और यहाँ या तो इसका प्रबल अनुमान है या बराबर की संभावना। और पवित्र शरीयत ने मोमिन को खुद को अपमान के हवाले करने से रोका है। अगर सवाल हो कि "फिर यह जो गुज़रा कि यक़ीन प्राप्त करना मुमकिन होने के बावजूद ज़न्न पर अमल जायज़ नहीं, इसका क्या जवाब है?" मैं कहता हूँ: देने के अनुमान न होने की सूरत में

यक़ीन हासिल करना मुमकिन और आसान नहीं है, क्योंकि ऐसे व्यक्ति से मांगना जो न दे, सख्त ज़िल्लत है। यहाँ इसका या तो प्रबल अनुमान है या बराबर की संभावना। और शरीयत-ए-मुतह्हरा ने मोमिन को इससे रोका है कि वह अपनी ज़ात को ज़िल्लत के घेरे में लाए। (अनु.)

जैसा कि छठे मसले में गुज़रा। 12 - उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें माफ़ करे। (म) (जैसा कि छठे मसले में गुज़रा। 12 - उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें माफ़ करे। (अनु.)

1. फ़तह अल-क़दीर, अध्याय: नमाज़ की शर्तें, मकतबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 1/235 पृष्ठ 133 / 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم اندر ملی ت) لہٰذا یہ ظن مناطِ حکم نہ ہوا مگر جب کہ واقع نہ ظاہر ہو کہ ہنگامِ فوات ذریعہ علم فقہیات میں ظن معمول بہ ہے، اور ایک توجیہ مع اشارہ تضعیف افادہ پنجم صفحہ ۶۶۱ طبع اول میں گزری کہ جب تک علم میسر ہو ظن پر عمل نہیں۔ فتح القدیر بحث استقبال میں ہے:

المصیر (۱) الی الدلیل الظني وترك القاطع مع امکانه لا یجوز ۱۔ دلیلِ قطعی میسر ہونے کے باوجود اسے چھوڑنا اور دلیلِ ظنی کو لینا جائز نہیں۔ (ت)

مسئلہ قرب وبُعد میں تحصیلِ علم بے دقت میسر نہیں لہٰذا ظن پر مدار رہا اور مسئلہ عطا و منع میں میسر لہٰذا ظن معتبر نہ ہوا مگر جب کہ درکِ حقیقت نہ ہو۔

اشرت الی ضعفه بقولی یمکن ان یوجہ اقول: ووجہ ضعفه انه یوجب السؤال عند ظن المنع ایضا فیکون ترجیحاً للثانی من اقوال المسألة السادسة وانما الراجح بل الراجع الیہ الکل بالتوفیق ھو القول الثالث ان لا وجوب الا عند ظن العطاء۔ میں نے "یمکن ان یوجہ" (اس کی یہ توجیہ کی جاسکتی ہے) کہہ کر اس کے ضعف کی طرف اشارہ کیا اقول: اس توجیہ کے ضعف کی وجہ یہ ہے کہ اس سے لازم ہوتا ہے کہ انکار کا ظن غالب ہو جب بھی سوال کرے تو اس سے مسئلہ ششم کے اقوال میں سے دوسرے قول کی ترجیح ہو گی جب کہ راجح بلکہ بعد تطبیق سبھی اقوال کا مرجع و مآل تیسرا قول ہے کہ صرف ظنِ عطا کی صورت میں سوال واجب ہے۔ (ت)

فان قلت اذن ما الجواب عما مر من منع بالظن مع تیسر تحصیل العلم اقول: لا تیسر اذالم یظن العطاء لان السؤال ممن یمنع ذلة شدیدة وھی مظنونة ھنا او محتملة علی سواء وقد نھی عہ المشرع المطہر المؤمن عن عرض نفسہ للذل۔ اگر سوال ہو کہ پھر یہ جو گزرا کہ تحصیل یقین میسر ہوتے ہوئے

ظن پر عمل جائز نہیں، اس کا کیا جواب ہے؟ اقول: ظنِ عطا نہ ہونے کی صورت میں تحصیلِ یقین میسر و آسان نہیں اس لئے کہ ایسے شخص سے مانگنا جو نہ دے سخت ذلت ہے اور یہاں اس کا یا تو ظنِ غالب ہے یا احتمال مساوی۔ اور شرعِ مطہر نے مومن کو اس سے روکا ہے کہ وہ اپنی ذات کو معرضِ ذلت میں لائے۔ (ت)

عہ كما تقدم في المسألة السادسة ۱۲ منہ غفرلہ (م) | (جیسا کہ مسئلہ ششم میں گزرا۔ ۱۲ منہ غفر لہ (ت)

1 فتح القدیر باب شروط الصلوۃ مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱ / ۲۳۵ Page 133 of 761

Fatawa Rizvia, Volume 4

If it is argued that in case of a presumption of prohibition, the matter must be based on one's conjecture because attaining certainty is difficult, so that his prayer remains valid even if he gives [permission] later; then the preferred view would be what the Absolute Researcher understood from the sub-rules of the masters in 'Al-Khulasah' and other books, as mentioned in the fifth issue. I say (in response): The original rule was to make asking mandatory because it is inherently easy and accessible. This command was only waived due to an accidental circumstance. Once the reality becomes apparent, it will take effect, and the accidental rule of substituting conjecture for reality will also cease, as previously mentioned with reference to Sadr al-Shariah. This is what we promised there—that there is a supplement to the discussion. All this is what appeared to my humble heart, and the knowledge of the truth is with my Lord. Indeed, my Lord is All-Knowing of everything. May Allah Almighty send blessings upon the Noble Beloved, and his honorable family and companions. And all praise is due to Allah, the Lord of the worlds. (T)

These are the issues intended to be presented here.

Mention of Rules: By the grace of Allah, these issues have been explained in such a way that a perceptive scholar can derive rules from them and also evaluate established laws, seeing which opinion they are based on in disputed matters and what should be based on refined opinions. Keeping this standard in view, the laws should be studied by scholars:

The Legal Authority, Imam al-Sadri | First Law of Imam Sadr al-Shariah: Imam Sadr al-Shariah first quoted from Al-Mabsut that: "If he did not ask and performed the prayer, it is not permissible because..."

Page 134 of 761

फतावा रज़विया, जिल्द 4

अब अगर यह सवाल हो कि फिर तो मनाही के गुमान की सूरत में दारोमदार उसके गुमान पर रखना ज़रूरी होगा क्योंकि यकीन हासिल करना मुश्किल है। तो अगर वह बाद में दे दे तब भी उसकी नमाज़ सही रहेगी तो राजह (वरीयता प्राप्त) वही होगा जो 'ख़ुलासा' वग़ैरा की तफ़रीआत में मशाईख से 'मुहक्क़िक़ अलल इतलाक' ने समझा जिसका ज़िक्र पांचवें मसले में गुज़रा। अक़ूल (जवाबन मैं कहूंगा): असल तो यही था कि मांगना वाजिब किया जाए क्योंकि फ़ि नफ़्सिही (स्वयं में) यह मयस्सर और आसान है और आरिज़ (आकस्मिक कारण) की वजह से यह हुक्म इससे उठा लिया गया। फिर जब हक़ीक़त ज़ाहिर हो जाएगी तो वह अपना काम करेगी और गुमान को हक़ीक़त के क़ायम मक़ाम रखने का जो हुक्म आरिज़ की वजह से था वह भी ख़त्म हो जाएगा, जैसा कि 'सद्रुश शरीआ' के हवाले से बयान हुआ। यही वह है जिसका हमने वहां (अफ़ादा पांचवां, सफ़ा 662, पहली छपाई में) वादा किया था कि इस कलाम का कुछ तक़्मला (पूरक) भी है। यह सब वह है जो फ़क़ीर के दिल पर ज़ाहिर हुआ और हक़ का इल्म मेरे रब के पास है। बेशक मेरा रब हर चीज़ का इल्म रखता है। ख़ुदाए बरतर अपने हबीबे करीम और उनकी मुकर्रम आल व असहाब पर दुरूद नाज़िल फ़रमाए। और सब ख़ूबियां सारे जहानों के मालिक ख़ुदा ही के लिए हैं। (त)

ये हैं वे मसाइल जिनका यहाँ लाना मंज़ूर था।

क़ानूनों का ज़िक्र: ये मसाइल अल्लाह के फ़ज़्ल से ऐसी वजह पर बयान हुए कि समझदार विद्वान इनसे ख़ुद क़ानून बना सकता है और बनाए गए क़ानूनों की जाँच भी, और यह कि मतभेदों में वे किस किस क़ौल पर आधारित हैं और परिष्कृत कथनों पर क्या होना चाहिए। यह मापदंड ध्यान में रखकर विद्वान क़ानूनों का अध्ययन करें:

अल-इमाम अल-क़ानून अल-सदरी | इमाम सद्रुश शरीआ का पहला क़ानून: इमाम सद्रुश शरीआ ने पहले 'मब्सूत' से यह इबारत नक़ल की: "अगर उसने तलब (मांग) न किया और नमाज़ अदा कर ली तो जायज़ नहीं क्योंकि..."

فان قلت اذن یجب ادارۃ الامر علی ظنہ فی ظن المنع لتعسر تحصیل العلم فتصح صلاتہ وان اعطی بعد فیترجح ما فھمہ المحقق من تفریعاتھم فی الخلاصۃ وغیرھا کما مر فی المسألۃ الخامسہ اقول: وقد کان الاصل ایجاب السؤال لتیسرہ فی نفسہ وانما رفع عنہ لعارض فاذا ظھرت الحقیقۃ عملت عملھا وزال ما کان لعارض وھو اقامۃ الظن مقامھا کما تقدم عن صدر الشریعۃ وھذا ما وعدنا ثمہ * من ان للکلام تتمۃ * ھذا کلہ ما ظھر للقلبی * والعلم بالحق عند ربی * ان ربی کل شیئ علیم * وصلی اللہ تعالی علی الحبیب الکریم * وآلہ وصحبہ اولی التکریم * والحمد للہ رب العلمین۔

اب اگر یہ سوال ہو کہ پھر تو ظن منع کی صورت میں مدار اس کے گمان پر رکھنا ضروری ہوگا کیونکہ تحصیل یقین دشوار ہے تو اگر وہ بعد میں دے دے جب بھی اس کی نماز صحیح رہے گی تو رائج وہی ہوگا جو خلاصہ وغیرہما کی تفریعات مشائخ سے محقق علی الاطلاق نے سمجھا جس کا ذکر مسئلہ پنجم میں گزرا اقول: (جواباً میں کہوں گا) اصل تو یہی تھا کہ مانگنا واجب کیا جائے کیونکہ فی نفسہ یہ میسر و آسان ہے اور عارض کی وجہ سے یہ حکم اس سے اٹھا لیا گیا پھر جب حقیقت ظاہر ہو جائے تو وہ اپنا کام کرے گی اور ظن کو حقیقت کے قائم مقام رکھنے کا جو حکم عارض کی وجہ سے تھا وہ بھی ختم ہوجائے گا، جیسا کہ صدر الشریعہ کے حوالے سے بیان ہوا۔ یہی وہ ہے جس کا ہم نے وہاں (افادہ پنجم صفحہ ۶۶۲ طبع اول میں) وعدہ کیا تھا کہ اس کلام کا کچھ تکملہ بھی ہے۔ یہ سب وہ ہے جو قلبِ فقیر پر ظاہر ہوا اور حق کا علم میرے رب کے پاس ہے۔ بلا شبہ میرے رب کو ہر چیز کا علم ہے خدائے برتر اپنے حبیب کریم اور ان کی مکرم آل و اصحاب پر درود نازل فرمائے۔ اور سب خوبیاں سارے جہانوں کے مالک خدا ہی کیلئے ہیں۔ (ت)

یہ ہیں وہ مسائل جن کا یہاں لانا منظور تھا۔ ذکر قوانین : یہ مسائل بفضلہ تعالیٰ ایسی وجہ پر بیان ہوئے کہ فہیم ذی علم ان سے خود وضع قانون بھی کر سکتا ہے اور قوانین موضوعہ کی جانچ بھی، اور یہ کہ خلافیات میں وہ کس کس قول پر مبنی ہیں اور اقوال منقحہ پر کیا ہونا چاہئے۔ یہ معیار پیش نظر رکھ کر قوانین علما مطالعہ ہوں :

الامام القانون الصدری | اوّل قانون امام صدر الشریعہ: الامام صدر الشریعة نقل اولا عن المبسوط ان | امام صدر الشریعہ نے پہلے مبسوط سے یہ عبارت نقل کی : لم یطلب وصلی لم یجز لان | "اگر اس نے طلب نہ کیا اور نماز ادا کرلی تو جائز نہیں کیونکہ"

Volume 4 Fatawa Razawiyya Water is usually available, and from another place on it, he must ask the highest [authority]. This is the saying of Hasan bin Ziyad, for asking is humility, and we say that the water for purification is usually available. Then, from *Az-Ziyadaat*, what was previously mentioned in the third issue: he should break his prayer if he thinks [the water] will be given, otherwise no. And he included in it what passed in the second stage about the necessity of asking even in doubt if he sees it outside the prayer, because the inability is doubtful. He then said in *Az-Ziyadaat*: "If he finishes his prayer, asks him, and he gives it to him, or gives it at the normal price and he is able to afford it, he should restart the prayer. If [the person] refuses, his prayer is complete. Similarly, if he refuses and then gives it, but now his tayammum becomes invalid." Then he (Allah have mercy on him) said: "I say, if you want to encompass all the categories, then know that if he sees water outside the prayer and prays without asking after the prayer to clarify the inability or ability, then based on what is mentioned in *Al-Mabsut*, whether he strongly suspects it would be given, or not, or is in doubt about both, this is the issue mentioned in the text. And when he sees it during prayer and after prayer..."

"then it is not permissible because water is usually given." And from another part of the same *Mabsut*, this text also: "Upon this, he should ask, but according to the saying of Hasan bin Ziyad, he should not, because there is humiliation in asking. And we say that the water for purification is usually given." Then, the speech was quoted from *Ziyadaat* that passed in the third issue: "If there is a presumption of giving, he should break the prayer, otherwise not." And in it, that matter was also added from his side which passed in the second place that "asking is necessary even in the case of doubt when seen outside the prayer because inability is doubtful." He wrote that it is written in *Ziyadaat*: "Then when he finishes the prayer and asks him, he gives it or insists on the market price, and he is capable of this market price, then he should pray anew. And if he refuses, his prayer is complete. Similarly, when he refuses and then (later) gives it, but now his tayammum will break." Then Sadr al-Shariah (may Allah Almighty have mercy on him) wrote: "I say if an encompassing of all categories is intended, then it should be known that when he saw water outside the prayer and prayed, and did not even ask after the prayer so that the inability or power could be revealed, then its ruling is what was mentioned in *Al-Mabsut*. Whether he had a

thought of giving it, or of not giving it, or doubt in both. This is the problem that is mentioned in the text. And when he saw inside the prayer and after prayer..."

1. Sharh al-Wiqayah, Chapter on Tayammum, printed by Maktabah Rashidiya, Delhi, 1/101. Page 135 of 761

खंड 4 फ़तावा रज़विया पानी आमतौर पर उपलब्ध होता है, और इसके दूसरे स्थान से उस पर यह है कि वह उच्च [प्राधिकारी] से पूछे। यह हसन बिन ज़ियाद का कथन है, क्योंकि पूछना विनय है, और हम कहते हैं कि शुद्धिकरण का पानी आमतौर पर उपलब्ध होता है। फिर, 'अज़-ज़ियादात' से, जो तीसरे मुद्दे में पहले बताया गया था: कि वह अपनी प्रार्थना तोड़ दे यदि उसे लगता है कि [पानी] दिया जाएगा, अन्यथा नहीं। और उन्होंने इसमें वह बात भी शामिल की जो दूसरे चरण में गुज़री थी कि संदेह की स्थिति में भी पूछना आवश्यक है यदि वह इसे प्रार्थना के बाहर देखता है, क्योंकि असमर्थता संदिग्ध है। उन्होंने फिर 'अज़-ज़ियादात' में कहा: "यदि वह अपनी प्रार्थना समाप्त करता है, उससे पूछता है, और वह उसे दे देता है, या सामान्य मूल्य पर देता है और वह इसे वहन करने में सक्षम है, तो उसे फिर से प्रार्थना शुरू करनी चाहिए। यदि [व्यक्ति] मना कर देता है, तो उसकी प्रार्थना पूर्ण है। इसी तरह, यदि वह मना करता है और फिर देता है, लेकिन अब उसका तयम्मुम अमान्य हो जाता है।" फिर उन्होंने (अल्लाह उन पर दया करें) कहा: "मैं कहता हूँ, यदि आप सभी श्रेणियों को शामिल करना चाहते हैं, तो जान लें कि यदि वह प्रार्थना के बाहर पानी देखता है और प्रार्थना के बाद असमर्थता या क्षमता को स्पष्ट करने के लिए पूछे बिना प्रार्थना करता है, तो 'अल-मबसूत' में जो उल्लेख किया गया है, उसके आधार पर, चाहे उसे दृढ़ता से संदेह हो कि वह दिया जाएगा, या नहीं, या दोनों के बारे में संदेह हो, यह वही मुद्दा है जो पाठ में वर्णित है। और जब वह प्रार्थना के दौरान और प्रार्थना के बाद देखता है..."

"तो यह जायज़ नहीं है क्योंकि पानी आमतौर पर दे दिया जाता है।" और मबसूत के ही दूसरे स्थान से यह इबारत भी: "इस पर यह है कि मांगे मगर हसन बिन ज़ियाद के क़ौल पर यह नहीं क्योंकि मांगने में ज़िल्लत (अपमान) है। और हम यह कहते हैं कि तहारत (शुद्धता) का पानी आमतौर पर दे दिया जाता है।" फिर ज़ियादात से वह कलाम नक़ल किया जो तीसरे मसले में गुज़रा कि "अगर देने का गुमान (संभावना) हो तो नमाज़ तोड़ दे वर्ना नहीं।" और इसी में वह बात भी अपनी तरफ़ से दर्ज कर दी जो दूसरे मुक़ाम में गुज़री कि "शक की सूरत में भी मांगना ज़रूरी है जब कि नमाज़ के बाहर देखा हो इसलिए कि इज़्ज़ (असमर्थता) मशकूक (संदिग्ध) है।" तहरीर फ़रमाया कि फिर ज़ियादात में यह लिखा है: "फिर जब नमाज़ से फ़ारिग़ होकर उससे मांगा उसने दे दिया या समन-ए-मिसल (बाज़ार मूल्य) पर ज़ोर दिया और यह समन-ए-मिसल पर क़ादिर (सक्षम) है तो वह अज़-सरे-नौ (नए सिरे से) नमाज़ पढ़े और इंकार कर दिया तो उसकी नमाज़ पूरी हो गई। इसी तरह जब इंकार करे फिर (बाद में) दे दे लेकिन अब उसका तयम्मुम टूट जाएगा।" फिर सदरुश शरीआ (रहमतुल्लाह

अलैहि) ने तहरीर फ़रमाया: "मैं कहता हूँ अगर सारी क़िस्मों का अहाता (घेरा) मंज़ूर हो तो मालूम हो कि जब उसने बेरून-ए-नमाज़ (नमाज़ के बाहर) पानी देखा और नमाज़ पढ़ ली, बाद नमाज़ मांगा भी नहीं कि इज़्ज़ या क़ुदरत का इंकिशाफ़ (रहस्योद्घाटन) हो तो उसका हुक्म वह है जो मबसूत में ज़िक्र हुआ। ख़्वाह उसे देने का गुमान हो या न देने का या दोनों में शक हो। यह वह मसला है जो मतन (मूल पाठ) में मज़कूर (उल्लिखित) है। और जब अंदरून-ए-नमाज़ (नमाज़ के अंदर) देखा और बाद-ए-नमाज़..."

1. शरह अल-विक़ाया, बाब अत-तयम्मुम, मतबुआ मकतबा रशीदिया दिल्ली 1/101 पृष्ठ 135 of 761

جلد چہارم فتاوئ رضویہ الماء مبذول عادة وعن موضع اخر منه علیه ان یسأل الاعلی قول حسن بن زیاد فان السؤال ذل ونقول ماء الطهارة مبذول عادة۱۔ ثم عن الزیادات ماتقدم فی المسألة الثالثة من انه یقطع الصلاة ان ظن العطاء والا لـا وادرج فیه مامر فی المقام الثانی من وجوب السؤال فی الشك ایضا اذا رأی خارج الصلاة لان العجز مشکوک۔ قال ثم قال فی الزیادات فاذا فرغ من صلاته فسأله فاعطاه اواعطی بثمن المثل وهو قادر علیه استأنف الصلٰوة واذا ابی تمت صلاته وکذا اذا ابی ثم اعطی لکن ینتقض تیممه الان۔ ثم قال رحمه الله تعالی اقول ان اردت ان تستوعب الاقسام کلها فاعلم انه اذا رأی الماء خارج الصلاة وصلی ولم یسأل بعد الصلٰوة لیظهر العجز والقدرة فعلی ماذکر فی المبسوط سواء غلب علی ظنه الاعطاء اوعدمه اوشك فیهما وهی مسألة المتن۔ واذا رأی فی الصلاة ولم

تو جائز نہیں اس لئے کہ پانی عادۃً دے دیا جاتا ہے"۔ اور مبسوط ہی کے دوسرے مقام سے یہ عبارت بھی: "اس پر یہ ہے کہ مانگے مگر حسن بن زیاد کے قول پر یہ نہیں اس لئے کہ مانگنے میں ذلت ہے۔ اور ہم یہ کہتے ہیں کہ طہارت کا پانی عادۃً دے دیا جاتا ہے"۔ پھر زیادات سے وہ کلام نقل کیا جو مسئلہ سوم میں گزرا کہ "اگر دینے کا گمان ہو تو نماز توڑ دے ورنہ نہیں"۔ اور اسی میں وہ بات بھی اپنی طرف سے درج کردی جو مقام دوم میں گزری کہ "شک کی صورت میں بھی مانگنا ضروری ہے جب کہ نماز کے باہر دیکھا ہو اس لئے کہ عجز مشکوک ہے"۔ تحریر فرمایا کہ پھر زیادات میں یہ لکھا ہے: "پھر جب نماز سے فارغ ہو کر اس سے مانگا اس نے دے دیا یا ثمن مثل پر زور دیا اور یہ ثمن مثل پر قادر ہے تو وہ ازسرنو نماز پڑھے اور انکار کردیا تو اس کی نماز پوری ہو گئی۔ اسی طرح جب انکار کرے پھر (بعد میں) دے دے لیکن اب اس کا تیمم ٹوٹ جائے گا"۔ پھر صدر الشریعۃ رحمہ اللہ تعالی نے تحریر فرمایا: "میں کہتا ہوں اگر ساری قسموں کا احاطہ منظور ہو تو معلوم ہو کہ جب اس نے بیرونِ نماز پانی دیکھا اور نماز پڑھ لی، بعد

نماز مانگا بھی نہیں کہ عجز یا قدرت کا انکشاف ہو تو اس کا حکم وہ ہے جو مبسوط میں ذکر ہوا۔ خواہ اسے دینے کا گمان ہو یا نہ دینے کا یا دونوں میں شک ہو۔ یہ وہ مسئلہ ہے جو متن میں مذکور ہے۔ اور جب اندرونِ نماز دیکھا اور بعدِ نماز

Fatawa Razawiyya, Volume 4

If he asks after it, the ruling is the same. And if he saw [water] outside of prayer and did not ask, prayed, then asked; if it is given, his prayer is void, and if refused, it is complete, whether he thought it would be given or withheld, or was in doubt about both. If he saw it during prayer, the ruling is as mentioned in 'Al-Ziyadat'. However, two cases remain: one is that he broke his prayer thinking he would be refused or being in doubt, then asked; if given, his tayammum is void, and if refused, it remains valid. The other is that if he completed his prayer thinking he would be given, then asked; if given, his prayer is void, and if refused, it is complete because it turned out his assumption was wrong, unlike the case of 'Tahari' until the end of what was mentioned in the fifth benefit. Regarding the statement "incapacity is doubtful": the discussion on this has passed. Regarding the statement "so when he finished his prayer": I say that the text of 'Al-Ziyadat' was not cited consistently. If the referent of "finished" is identified as the person who expected refusal or was in doubt, then that is it; otherwise, it refers to the person praying in general, especially as...

(Explanation from the Urdu column): Even if he did not ask, the ruling is the same. If he saw it outside prayer and did not ask, prayed, and then asked, if he gives it now, his prayer becomes void. If he refuses, it is complete, whether he previously expected to be given it or expected refusal, or remained in doubt about both. If he saw it during prayer, the ruling is as described in 'Ziyadat'. However, two scenarios remain: first, he breaks the prayer due to expecting refusal or having doubt, then asks; if he gives it, tayammum becomes void, if refused, it remains valid. Second, expecting it to be given, he finishes the prayer then asks; if given, prayer is void, if refused, it's complete, as his expectation was proven wrong. Contrary to the issue of investigative effort (tahari), the rest is explained under the fifth benefit. (1) The discussion on Sadr-ush-Sharia's statement in Ziyadat (incapacity is doubtful) has already passed. (2) Regarding the words in Ziyadat "then when he finishes his prayer", I say: Sadr-ush-Sharia did not mention the text of Ziyadat in a sequential order. In his text, if the referent for the pronoun in "faragh" (he will finish) is "the one who expected refusal or was in doubt" (the one who suspected that he would not be given...

---

1. Sharh al-Wiqaya, Chapter of Tayammum, Maktabah Rashidiyah Delhi, 1/102. Page 136 of 761

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4

यदि वह उसके बाद माँगता है, तो हुक्म वही है। और यदि उसने नमाज़ के बाहर देखा और नहीं माँगा, नमाज़ पढ़ ली फिर माँगा; यदि दिया गया, तो उसकी नमाज़ बातिल है, और यदि मना कर दिया गया, तो वह पूरी है, चाहे उसने पहले देने का गुमान किया हो या रोकने का, या दोनों में संदेह रहा हो। और यदि उसने नमाज़ के दौरान देखा, तो हुक्म वैसा ही है जैसा 'अल-ज़ियादात' में वर्णित है। हालाँकि, दो स्थितियाँ शेष हैं: एक यह कि उसने नमाज़ रोक दी जब उसने सोचा कि उसे मना कर दिया जाएगा या वह संदेह में था, फिर माँगा; यदि दिया गया, तो उसका तयम्मुम बातिल हो जाता है, और यदि मना कर दिया गया, तो वह मान्य रहता है। दूसरी यह कि यदि उसने नमाज़ पूरी कर ली जब उसने सोचा कि उसे दिया जाएगा, फिर माँगा; यदि दिया गया, तो उसकी नमाज़ बातिल है, और यदि मना कर दिया गया, तो वह पूरी है क्योंकि यह स्पष्ट हो गया कि उसका विचार त्रुटिपूर्ण था, 'तहरी' (खोज) के मुद्दे के विपरीत, पाँचवें लाभ में पहले जो बताया गया है उसके अंत तक। कथन "अक्षमता संदिग्ध है" के संबंध में: इस पर चर्चा हो चुकी है। कथन "इसलिए जब उसने अपनी नमाज़ पूरी की" के संबंध में: मैं कहता हूँ कि 'अल-ज़ियादात' का पाठ सुसंगत रूप से उद्धृत नहीं किया गया था। यदि "पूरी की" का संदर्भ उस व्यक्ति के रूप में पहचाना जाता है जिसने इनकार की अपेक्षा की थी या संदेह में था, तो वह बात है; अन्यथा, यह सामान्य रूप से नमाज़ पढ़ने वाले व्यक्ति को संदर्भित करता है, विशेष रूप से...

(उर्दू कॉलम से स्पष्टीकरण): यदि उसने नहीं माँगा, तो भी यही हुक्म है। और यदि नमाज़ के बाहर देखा और नहीं माँगा, नमाज़ पढ़ ली फिर माँगा; अब यदि वह दे दे तो उसकी नमाज़ बातिल (अमान्य) हो गई, और यदि इनकार कर दे तो पूरी हो गई, चाहे पहले उसे मिलने का गुमान रहा हो या न मिलने का, या दोनों में शक रहा हो। और यदि नमाज़ के अंदर देखा, तो हुक्म वही है जो 'ज़ियादात' में बयान हुआ। लेकिन इसमें दो सूरतें रह जाती हैं: एक यह कि उसने न मिलने के गुमान या शक की सूरत में नमाज़ तोड़ दी फिर उससे माँगा; अब यदि वह दे दे तो उसका तयम्मुम बातिल हो गया, और यदि इनकार कर दे तो बाक़ी है। दूसरी सूरत यह कि मिलने के गुमान की सूरत में उसने नमाज़ पूरी कर ली फिर माँगा; अब यदि वह दे दे तो उसकी नमाज़ बातिल हो गई, और यदि इनकार कर दे तो पूरी हो गई क्योंकि ज़ाहिर हो गया कि उसका गुमान ग़लत था। 'तहरी' (खोज/प्रयास) के मसले के बरख़िलाफ़, इसके बाद आख़िर तक वही बयान है जो पाँचवें फ़ायदे के तहत गुज़रा। (1) ज़ियादात की इबारत में सदर-उश-शरिया के दर्ज कौल (अक्षमता संदिग्ध है) पर कलाम गुज़र चुका। (2)

ज़ियादात की इबारत के ये शब्द "फिर जब वह अपनी नमाज़ से फ़ारिग हो जाए" मैं कहता हूँ: सदर-उश-शरिया ने ज़ियादात की इबारत को तरतीबवार और मुसलसल ज़िक्र नहीं किया। उसकी इबारत में अगर "फ़रग़" (फ़ारिग हो जाएगा) ज़मीर का मरजअ "मन ज़न्न मनअन् औ शक" (जिसने न देने का गुमान किया या शक किया...)

---

1. शरह अल-विक़ाया, बाबूत्तयम्मुम, मकतबा रशीदिया दिल्ली, 1/102. पेज 136 ऑफ़ 761

يسأل بعدها فكذا وان رأى خارج الصلاة ولم يسأل وصلى ثم سأله فان اعطى بطلت صلاته وان ابى تمت سواء ظن الاعطاء اوالمنع اوشك فيهما وان رأى في الصلاة فكما ذكر في الزيادات لكن يبقى صورتان احدهما انه قطع الصلاة فيما اذا ظن المنع اوشك فسأله فان اعطى بطل تيممه وان ابى فهو باق والاخرى انه اذا اتم الصلاة فيما اذاظن انه يعطى ثم سأل فان اعطى بطل صلاته وان ابى تمت لانه ظهران ظنه كان خطاء بخلاف مسألة التحرى ا لى آخر ما تقدم في الافادة الخامسة ۔ قوله العجز مشكوك) تقدم مافيه قوله فإذا فرغ من صلاته اقول: لم ينقل عبارة الزيادات متسقة فان تعين فيهما مرجع فرغ الى من ظن منعاً وشك فذاك والا فهو للمصلى مطلقا لاسيما وقد

(اردو کالم): طلب نہ کیا تو بھی یہی حکم ہے اور اگر بیرونِ نماز دیکھا اور طلب نہ کیا ، نماز پڑھ لی پھر مانگا تو اب اگر دے دے اس کی نماز باطل ہو گئی اور انکار کر دے تو پوری ہو گئی خواہ پہلے اسے عطا کا گمان رہا ہو یا منع کا ، یا دونوں میں شک رہا ہو اور اگر اندرونِ نماز دیکھا تو حکم وہی ہے جو زیادات میں بیان ہوا۔ لیکن اس میں دو صورتیں رہ جاتی ہیں: ایک یہ کہ اس نے ظن منع یا شک کی صورت میں نماز توڑ دی پھر اس سے مانگا اب اگر وہ دے دے تو اس کا تیمم باطل ہو گیا اور انکار کر دے تو باقی ہے۔ دوسری صورت یہ کہ ظن عطا کی صورت میں اس نے نماز پوری کر لی پھر مانگا اب اگر وہ دے دے تو اس کا نماز باطل ہو گئی اور انکار کر دے تو پوری ہو گئی کیونکہ ظاہر ہو گیا کہ اس کا گمان غلط تھا۔ برخلاف مسئلہ تحری کے اس کے بعد آخر تک وہ بیان کیا ہے جو افادہ پنجم کے تحت گزرا۔ (۱) عبارت زیادات میں صدر الشریعہ کے مندرج قول (عجز مشکوک ہے) پر کلام گزر چکا (۲) عبارت زیادات کے یہ الفاظ "پھر جب وہ اپنی نماز فارغ ہو جائے" اقول : صدر الشریعہ نے زیادات کی عبارت مرتب و مسلسل نہ ذکر کی۔

اس کی عبارت میں اگر "فرغ" (فارغ ہو جائے گی) ضمیر کا مرجع "من ظن منعا اوشک" (جونہ دینے کا گمان کرے---

---

1 شرح الوقایة باب التیمم مکتبہ رشیدیہ دہلی ۱۰۲/۱ صفحہ 136 از 761

Fatawa Rizvia, Volume 4

[Arabic Section] It occurred after his statement "and if he has a strong presumption that he will give it to him," so it includes the other case which he (may Allah have mercy on him) mentioned as being abandoned.

His statement: "And likewise if he refused then gave": I say, the discussion is about the state after the prayer, but being 'after' is only necessary for the giving, whether the refusal was before the prayer—as if he asked before it and he refused, so he performed tayammum and prayed, then he gave it upon his request or without it—or after the prayer—as if he knew [about the water] during it and completed it, then asked him and he refused, then he gave it upon the request of another or without it—the prayer is valid in both cases. However, if the giving occurred before the completion of the prayer after the refusal, then it absolutely nullifies the previous refusal, as we have previously stated in the tenth issue.

His statement: "So based on what is mentioned in al-Mabsut": i.e., his prayer is not valid because he abandoned seeking [water]. Akhi Chalpi suggested that what is meant by "what is in al-Mabsut" might be the opinion of al-Hasan. I say: Only that which the author relies upon is attributed to the book, not what he merely mentions and then refutes.

[Urdu Section] (Or if he has doubt) then the ruling is fixed just as Sadr-ush-Shari'ah wrote. Otherwise, this pronoun will refer generally to the "Musalli" (one praying), especially since these words follow: "And if he has a strong presumption that he will give it to him." According to this interpretation, this discourse of 'Ziyadaat' would also include that second case which Sadr-ush-Shari'ah stated is abandoned. (T)

(3) Phrase from Ziyadaat: (Likewise when he refuses then gives). I say: The discourse pertains to the states after prayer, but being 'after' is only necessary for the act of giving. Whether the refusal occurred before the prayer—for instance, if he asked before the prayer and was refused, then he performed tayammum and prayed, after which [the water] was given either upon request or without it—or after the prayer—for instance, if he became aware [of the water] during the prayer, finished it, then asked and was refused, and later it was given either upon request or without it—the prayer is valid in both cases. However, if the giving after the refusal occurs before the completion of the prayer, then this giving will absolutely nullify the previous refusal, as we explained in the tenth issue. (T)

(4) The words of Sadr-ush-Shari'ah: (Then its ruling is what is mentioned in al-Mabsut), meaning his prayer was not valid because he abandoned seeking. Akhi Chalpi said it is possible that by "what is in al-Mabsut," the opinion of Imam Hasan is intended. I say: Only that which the author relies upon is attributed to the book, not what he cited and then refuted. (T)

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4

[अरबी खंड] यह उनके इस कथन के बाद आया कि "और यदि उसे प्रबल धारणा हो कि वह उसे दे देगा," इसलिए इसमें वह दूसरी स्थिति भी शामिल है जिसे उन्होंने (अल्लाह उन पर रहम करे) छोड़ी हुई बताया है।

उनका कथन: "और इसी तरह यदि उसने इनकार किया फिर दे दिया": मैं कहता हूँ, चर्चा नमाज़ के बाद की स्थितियों के बारे में है, लेकिन 'बाद' होना केवल देने के लिए आवश्यक है, चाहे इनकार नमाज़ से पहले हुआ हो—जैसे कि उसने पहले माँगा और उसने मना कर दिया, फिर उसने तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली, और बाद में उसके माँगने पर या बिना माँगे उसने दे दिया—या नमाज़ के बाद हुआ हो—जैसे कि उसे नमाज़ के दौरान पता चला और उसने नमाज़ पूरी की, फिर माँगा और उसने मना कर दिया, और फिर किसी और के माँगने पर या बिना माँगे उसने दे दिया—दोनों स्थितियों में नमाज़ मान्य है। हालाँकि, यदि इनकार के बाद देना नमाज़ पूरी होने से पहले हो जाता है, तो यह देना पिछले इनकार को पूरी तरह से रद्द कर देगा, जैसा कि हमने दसवें मसले में पहले बताया है।

उनका कथन: "तो अल-मबसूत में जो उल्लेख किया गया है उसके आधार पर": अर्थात उसकी नमाज़ मान्य नहीं हुई क्योंकि उसने पानी की तलाश छोड़ दी थी। अखी चल्पी ने सुझाव दिया कि "मबसूत में जो है" से तात्पर्य इमाम हसन का विचार हो सकता है। मैं कहता हूँ: किताब की ओर केवल उसी बात का श्रेय दिया जाता है जिस पर लेखक ने भरोसा किया हो, न कि उस बात का जिसे उसने केवल उल्लेख किया और फिर उसका खंडन कर दिया।

[उर्दू खंड] (या उसे संदेह हो) तब तो बात वैसी ही है जैसे सद्रुश-शरिया ने लिखा है, अन्यथा यह ज़मीर (सर्वनाम) आमतौर पर "मुसल्ली" (नमाज़ पढ़ने वाले) के लिए होगा, विशेष रूप से तब जब इसके बाद ये शब्द आए हैं: "और अगर उसे प्रबल धारणा हो कि वह दे देगा।" इस व्याख्या के अनुसार, 'ज़ियादात' का यह कथन उस दूसरी स्थिति को भी शामिल करेगा जिसे सद्रुश-शरिया ने बताया है कि वह छोड़ा हुआ है। (त)

(3) ज़ियादात की इबारत: (इसी तरह जब वह इनकार करे फिर दे दे)। मैं कहता हूँ: चर्चा नमाज़ के बाद के हालात से संबंधित है, लेकिन 'बाद' होना केवल देने में ज़रूरी है। इनकार चाहे नमाज़ से पहले हो—जैसे यह सूरत हो कि नमाज़ से पहले उसने माँगा तो उसने मना कर दिया, अब उसने तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली, फिर उसने माँगने पर या बिना माँगे दे दिया—या नमाज़ के बाद हो—

जैसे यह सूरत हो कि उसे नमाज़ के अंदर पता चला तो उसने नमाज़ पूरी कर ली, फिर उससे माँगा और उसने मना कर दिया, उसके बाद दोबारा उसके माँगने पर या बिना माँगे दे दिया—तो दोनों सूरतों में नमाज़ हो गई। लेकिन अगर इनकार के बाद देना नमाज़ पूरी होने से पहले हो गया, तो यह देना पिछले इनकार को पूरी तरह से निरस्त (منسوخ) कर देगा जैसा कि हमने दसवें मसले में बयान किया। (त)

(4) सद्रुश-शरिया के शब्द: (तो उसका हुक्म वह है जो मबसूत में ज़िक्र हुआ), यानी उसकी नमाज़ जायज़ नहीं हुई क्योंकि उसने तलब (माँगना) छोड़ दी। अखी चल्पी ने कहा है कि हो सकता है कि (मबसूत में जो है) से मुराद इमाम हसन का कौल हो। मैं कहता हूँ: किताब की तरफ उसी बात का निस्बत (श्रेय) दिया जाएगा जिस पर उसने एतमाद (भरोसा) किया, न कि वह जिसे उसने नक़ल करके उसकी तरदीद (खंडन) भी कर दी। (त)

पृष्ठ 137/761

فتاوی رضویه، جلد چہارم

[عربی حصہ] وقع بعد قوله وان غلب علی ظنه انه یعطیه فیشمل الصورة الاخری التی ذکر رحمه الله تعالی انها متروکة۔

قوله وکذا اذا ابی ثم اعطی) اقول الکلام فیما بعد الصلاة لکن البعدیة انما تلزم فی العطاء سواء کان الاباء قبل الصلاة کما اذا سأل قبلها فابی فتیمم فصلی ثم اعطی بسؤاله او بدونه او بعد الصلاة کما اذا علم فیها فاتمها ثم سأله فابی ثم اعطی سؤال الاخر او بغیره مضت الصلاة في الوجهین اما لوکان العطاء قبل تمام الصلوة بعد الاباء فانه ینسخ الاباء مطلقا کما قد منا فی المسألة العاشرة۔

قوله فعلی ماذکر في المبسوط) ای لم تجز صلاته لترکه الطلب وجوز اخی چلپی ان یکون المراد بما فی المبسوط قول الحسن اقول : انما (۱) یسند الی الکتاب ما اعتمده لاما اورده ورده۔

[اردو حصہ] یا اسے شک ہو) متعین ہے تب تو کلام ویسے ہی ہے جیسے صدر الشریعہ نے لکھا ورنہ یہ ضمیر مطلقاً "مصلی" کیلئے ہوگی خصوصاً جبکہ اس کے بعد یہ الفاظ آئے ہیں "اور اگر اسے غالب گمان ہو کہ دے دے گا" اس تقدیر پر یہ کلام زیادات اُس صورت دوم کو بھی شامل ہوگا جسے صدر الشریعہ نے بتایا کہ وہ متروک ہے۔ (ت)

(۳) عبارتِ زیادات (اسی طرح جب وہ انکار کرے پھر دے دے) اقول: کلام بعد نماز کے احوال سے متعلق ہے لیکن بعدیت صرف دینے میں لازم ہے۔ انکار خواہ قبل نماز ہو جیسے یہ صورت ہو کہ قبل نماز اس نے مانگا تو اس نے انکار کر دیا اب اس نے تیمم کرکے نماز پڑھ لی پھر اس نے مانگنے پر یا بغیر مانگے دے دیا یا بعد نماز ہو جیسے یہ صورت ہو کہ اسے اندرونِ نماز علم ہوا تو اس نے نماز پوری کرلی پھر اس سے مانگا اس نے انکار کر دیا اس کے بعد دوبارہ اس کے

مانگنے پر یا بغیر مانگے دے دیا تو دونوں صورتوں میں نماز ہو گئی۔ لیکن اگر بعدِ انکار دینا نماز پوری ہونے سے قبل ہو گیا تو یہ دینا انکارِ سابق کو مطلقاً منسوخ کر دے گا جیسا کہ مسئلہ دہم میں ہم نے بیان کیا۔ (ت)

(۴) صدر الشریعہ کے الفاظ (تو اس کا حکم وہ ہے جو مبسوط میں ذکر ہوا) یعنی اس کی نماز جائز نہ ہوئی کیونکہ اس نے طلب ترک کر دی اخی چلپی نے فرمایا ہے کہ ہو سکتا ہے (مافی المبسوط جو مبسوط میں ہے) سے مراد حسن کا قول ہو۔ اقول کتاب کی طرف سے اسی بات کی نسبت کی جائے گی جس پر اس نے اعتماد کیا نہ وہ جس کو اس نے نقل کر کے اس کی تردید بھی کر دی۔ (ت)

Volume Four Fatawa Razawiyya

(5) Words of Sadr al-Shari'ah (which is the issue of the text: this is the issue mentioned in the text). This phrase became problematic for Akhi Chalpi, as it is mentioned in Al-Mabsut that "prayer is not valid before asking (for water)" and that this is agreed upon by our three Imams (may Allah Almighty be pleased with them). However, the wording of the text is "prayer is valid before asking" and "the ruling according to the two companions is contrary to this." Thus, there is a difference in both ruling and narration between Al-Mabsut and the text. So how can it be said that "what is in Al-Mabsut is the issue of the text"? Now Akhi Chalpi interpreted this expression as follows: "Its meaning is that absolute disagreement is definitely established in it. The most that can be said is that the narration of the text is contrary to the narration of Al-Mabsut in explaining the disagreement." (1) Ah, for this reason, he allowed that "what is mentioned in Al-Mabsut" could mean the saying of Hasan so that harmony is achieved between it and the ruling of the text. I say: How can it be correct to make two opposites into one merely because of agreement in absolute disagreement? The meaning of "it is the issue of the text" is that the scenario mentioned in Al-Mabsut is the same as the one mentioned in the text, which is seeing water outside of prayer, even if Al-Mabsut and the text differ in both ruling and narration in this regard. (T) (6) The word of Sadr al-Shari'ah "Fakadhaa" (so too is this the ruling), meaning his prayer is not valid whether [it is a case of] giving or withholding.

(Quote: and it is the issue of the text) the objection of this phrase is against Akhi Chalpi because in Al-Mabsut there is the lack of permissibility before asking, and that is by the consensus of our three Imams (may Allah Almighty be pleased with them). The wording of the text is: it was permissible before asking it, contrary to them (the two companions), so they differ in ruling and narration together. So how can it be said that what is in Al-Mabsut is the issue of the text? So he interpreted it by his saying: its meaning is that the absolute disagreement is established in it; the end of what is in the matter is that the narration of the text is contrary to the narration of Al-Mabsut in explaining the disagreement (1) Ah. For this reason, it was allowed for the intended meaning to be the saying of Hasan so that harmony is achieved between it and the ruling of the text. I say: How is it correct, for the mere agreement in absolute disagreement, to make two opposites one? Rather, the meaning is that the mentioned form in Al-Mabsut is the mentioned one in the text, and it is the seeing outside the prayer, even if they differ in it in ruling and narration together.

Quote: (Fakadhaa) i.e., his prayer is not valid whether he thought of giving or withholding.

---

1 Dhakhirat al-Uqba, Chapter of Tayammum, Maktabah Islamiyyah Lahore, 1/182

जिल्द चहारुम फ़तावा रज़विया

(५) सद्र-उश-शरिया के शब्द (वही मस्अला अल-मतन: यह वह मस्अला है जो मतन (मूल पाठ) में वर्णित है)। यह शब्द अखी चलपी के लिए जटिल साबित हुआ, क्योंकि अल-मबसूत में उल्लेख है कि "माँगने से पहले नमाज़ जायज़ नहीं है" और यह भी कि इस पर हमारे तीनों इमामों (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) की सर्वसम्मति है। लेकिन मतन के शब्द हैं कि "माँगने से पहले नमाज़ जायज़ है" और "साहिबैन (दो इमामों) के निकट हुक्म इसके विपरीत है"। तो अल-मबसूत और मतन के बीच हुक्म और रिवायत दोनों का अंतर मौजूद है। फिर यह कैसे कहा जा सकता है कि "जो अल-मबसूत में है वही मतन का मस्अला है"? अब अखी चलपी ने इस अभिव्यक्ति की व्याख्या इस प्रकार की: "इसका अर्थ यह है कि इसमें पूर्ण मतभेद निश्चित रूप से सिद्ध है। अधिक से अधिक यह है कि मतभेद के वर्णन में मतन की रिवायत, अल-मबसूत की रिवायत के विपरीत है।" (१) अः, इसी कारण उन्होंने कहा कि हो सकता है कि "मा ज़ुकिरा फिल-मबसूत" (जो अल-मबसूत में वर्णित है) से तात्पर्य इमाम हसन का कथन हो ताकि उसमें और मतन के हुक्म में सामंजस्य हो जाए। मैं कहता हूँ: केवल पूर्ण मतभेद में सहमति के कारण दो परस्पर विरोधी बातों को एक कैसे माना जा सकता है? "वही मतन का मस्अला है" का अर्थ यह है कि जो स्थिति अल-मबसूत में वर्णित है वही मतन में वर्णित है, वह है नमाज़ के बाहर पानी देखना, भले ही अल-मबसूत और मतन के बीच इस बारे में हुक्म और रिवायत दोनों का मतभेद हो। (त) (६) सद्र-उश-शरिया का शब्द "फ़कज़ा" (तो भी यही हुक्म है), यानी उसकी नमाज़ जायज़ नहीं है चाहे देने की स्थिति हो या रोकने की।

(उनका कथन: यह मतन का मस्अला है) इस शब्द का आक्षेप अखी चलपी पर है क्योंकि मबसूत में माँगने से पहले की अपात्रता का उल्लेख है, और वह हमारे तीन इमामों की सर्वसम्मति से है (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो)। मतन के शब्द हैं: इसे माँगने से पहले जायज़ है, उनके(साहिबैन) विपरीत, तो वे हुक्म और रिवायत दोनों में भिन्न हैं। तो यह कैसे कहा जा सकता है कि जो मबसूत में है वह मतन का मस्अला है? तो उन्होंने इसकी व्याख्या करते हुए कहा: इसका अर्थ यह है कि इसमें पूर्ण मतभेद सिद्ध है; मामले में अंतिम बात यह है कि मतन की रिवायत मतभेद के स्पष्टीकरण में मबसूत की रिवायत के विपरीत है। (१) अः, इसी कारण से यह अनुमत था कि इसका अर्थ हसन का कथन हो ताकि उनके और मतन के हुक्म के बीच सहमति हो जाए। मैं कहता हूँ: केवल पूर्ण मतभेद में सहमति के लिए दो विरोधाभासों को एक कैसे बनाया जा सकता है? बल्कि अर्थ यह है कि मबसूत में वर्णित

स्वरूप वही है जो मतन में वर्णित है, और वह नमाज़ के बाहर देखना है, भले ही वे हुक्म और रिवायत में एक साथ भिन्न हों।

उनका कथन: (फ़कज़ा) यानी उसकी नमाज़ जायज़ नहीं है, चाहे उसने देने का सोचा हो या रोकने का।

---

१ ज़ख़ीरतुल उक़्बा, बाब अत-तयम्मुम, मक्तबा इस्लामिया लाहौर १/१८२

पृष्ठ १३८ / ७६१

جلد چہارم فتاوی رضویہ

قولہ وہی مسألۃ المتن) اعتراض ہذا اللفظ علی اخی چلپی فان فی المبسوط عدم الجواز قبل الطلب وانہ باتفاق ائمتنا الثلثۃ رضی اللہ تعالیٰ عنہم ولفظ المتن قبل طلبہ جاز خلافا لہما فہما مختلفان حکما و روایۃ معا فکیف یقال ان ما فی المبسوط ہی مسألۃ المتن فاو لہ بقولہ معناہ ان الخلاف المطلق ثابت فیہا غایۃ ما فی الباب ان روایۃ المتن علی خلاف روایۃ المبسوط فی بیان الاختلاف ۱ اہ ولاجل ہذا جوز ان یکون المراد بہ قول الحسن کی یحصل الوفاق بینہ وبین حکم المتن اقول: وکیف یصح لمجرد الاتفاق فی مطلق الاختلاف جعل نقیضین واحدا وانما المعنی ان الصورۃ المذکورۃ فی المبسوط ہی المذکورۃ فی المتن وہی الرؤیۃ خارج الصلاۃ وان اختلفا فیہا حکما و روایۃ۔

قولہ فکذا) ای لم تجز صلاتہ سواء ظن منحا او منعا

(۵) الفاظ صدر الشریعہ (وہی مسألۃ المتن یہ وہ مسئلہ ہے جو متن میں مذکور ہے) یہ لفظ اخی چلپی کیلئے پیچیدہ ثابت ہوا اس طرح کہ مبسوط میں ذکر ہے کہ "قبل طلب نماز جائز نہیں" اور یہ بھی کہ اس پر ہمارے تینوں اصحاب رضی اللہ تعالیٰ عنہم کا اتفاق ہے اور متن میں یہ ہے کہ "قبل طلب نماز جائز ہے" اور "صاحبین کے نزدیک حکم اس کے برخلاف ہے"۔ تو مبسوط اور متن کے درمیان حکم اور روایت دونوں ہی کا اختلاف موجود ہے۔ پھر یہ کیسے کہا جا سکتا ہے کہ "جو مبسوط میں ہے وہی مسئلہ متن ہے۔ اب اخی چلپی نے اس تعبیر کی یوں تاویل فرمائی: "اس کا مطلب ہے کہ اس میں مطلق اختلاف تو یقیناً ثابت ہے۔ زیادہ سے زیادہ یہ ہے کہ بیان اختلاف میں متن کی روایت، مبسوط کی روایت کے برخلاف ہے "اہ اسی لئے انہوں نے کہا کہ ہو سکتا ہے کہ "ماذکر فی المبسوط" (مبسوط میں جو مذکور ہے) سے مراد حسن کا قول ہوتا کہ اس میں اور حکم متن میں مطابقت ہو جائے۔ اقول محض مطلق اختلاف میں اتفاق کی وجہ سے نقیضین کو ایک قرار

دینا کیسے صحیح ہو سکتا ہے؟ وہی مسألة المتن (یہی مسئلہ متن ہے) کا معنی یہ ہے کہ جو صورت مبسوط میں مذکور ہے وہی متن میں مذکور ہے وہ ہے بیرونِ نماز پانی دیکھنا اگرچہ مبسوط و متن کے درمیان اس بارے میں حکم اور روایت دونوں کا اختلاف ہے۔ (ت) (۶) لفظ صدر الشریعہ "فکذا" (تو بھی یہی حکم ہے) یعنی اس کی نماز جائز نہیں خواہ دینے

---

۱ ذخیرة العقبی باب التیمم مکتبہ اسلامیہ لاہور ۱/ ۱۸۲

Fatawa Ridawiyya, Volume 4

...or doubt. (T)

(Phrase: And if he saw in the prayer) I say: i.e., and he asked after it, so that it differs from what was mentioned previously, and because this is what is mentioned in Al-Ziyadat.

(Phrase: As mentioned in Al-Ziyadat) I say: i.e., if he gave it to him, he should restart [the prayer], and if he refused, it is complete. Here, "likewise" (so the ruling is the same) was not said as it was said before. The reason is that there, what is mentioned in Al-Mabsut was stated first, so it was attributed to it. Then another case was mentioned which agreed with it in ruling, so it was referred to the ruling above. But here, what is not in Al-Ziyadat was mentioned first, then when he came to the description of what is in Ziyadat, he attributed it to it. And with the following words, the commentator explained it: "Meaning, the ruling is according to the aforementioned detail. That is, if he has a strong presumption of giving, he should break the prayer, otherwise not." End. The point is that the discussion is about one who asks after the prayer. And (when he has already prayed), what remains for him that it can be said "he breaks" or "he completes"? (T)

(i.e., the author of Umdat al-Ri'ayah 12 T) i.e., Maulana Abdul Hayy Farangi Mahalli (d. 1304 AH).

---

1. Umdat al-Ri'ayah, Marginalia of Sharh al-Wiqayah, Chapter on Tayammum, Maktaba al-Rashidiya, 1/103.

फतावा रज़विया, जिल्द 4

...या संदेह की स्थिति हो। (त)

(वाक्य: और अगर नमाज़ में देखा) मैं कहता हूँ: यानी और नमाज़ के बाद माँगा ताकि यह उस सूरत से अलग हो जाए जिसका ज़िक्र पहले हुआ है और इसलिए भी कि ज़ियादात में यही वर्णित है। (त)

(वाक्य: जैसा कि ज़ियादात में वर्णित है) मैं कहता हूँ: यानी अगर उसने उसे दे दिया तो नए सिरे से नमाज़ पढ़े और अगर इनकार कर दिया तो उसकी नमाज़ पूरी हो गई। यहाँ पर "वैसे ही" (तो भी यही हुक्म है) नहीं कहा गया जैसा पहले कहा गया था। इसकी वजह यह है कि वहाँ पहले वह ज़िक्र किया गया जो मबसूत में वर्णित है, तो उसका संबंध उसकी ओर किया गया। फिर एक और सूरत ज़िक्र की गई जो हुक्म में उसके अनुकूल थी, तो उसके लिए ऊपर वाले हुक्म का हवाला दे दिया गया। लेकिन यहाँ पहले वह ज़िक्र किया गया है जो ज़ियादात में नहीं है, फिर जब उसके वर्णन पर आए जो ज़ियादात में है, तो उसे उसकी ओर मंसूब किया। और निम्नलिखित शब्दों में व्याख्या करने वाले ने समझाया: "यानी हुक्म वर्णित विवरण के अनुसार है। वह यह है कि अगर उसे देने का प्रबल अनुमान हो तो नमाज़ तोड़ दे वरना नहीं।" इति। बात यह है कि चर्चा उसके बारे में हो रही है जो नमाज़ के बाद माँगे। और (जब वह नमाज़ पढ़ चुका है तो) उसके लिए क्या बचा कि "तोड़े" या "पूरा करे" बोला जा सके। (त)

(यानी उमदतुल रेआया के लेखक 12 त) यानी मौलाना अब्दुल हई फिरंगी महली (मृत्यु 1304 हिजरी)।

---

1. उमदतुल रेआया हाशिया शरह अल-विकाया, तयम्मुम का अध्याय, अल-मकतबा अल-रशीदिया, 1/103

पृष्ठ 139 का 761

فتاوی رضویہ، جلد چہارم

او شک۔

قولہ وان رأی فی الصلاۃ) اقول: ای وسأل بعدھا لیفارق المذکور سابقا ولانہ المذکور فی الزِیادات۔

قولہ فکما ذکر فی الزِیادات اقول: ای ان اعطاہ استأنف وان ابی تمت و لم یقل ھھنا فکذا کما قال قبل لان ثمہ ذکرا ولا ما ھو مذکور فی المبسوط فأسندہ الیہ ثم صورۃ اخری یوافقہ فی الحکم فأحالھا علیہ اما ھھنا فذکرا ولا ما لیس فی الزِیادات فاذا اتی علی ما فیھا اسندہ الیھا ولم یفھم الکلام من عہ فسرہ بقولہ ای الحکم علی التفصیل المذکور وھو انہ ان غلب علی ظنہ الاعطاء قطع الصلاۃ والا لا اھ فان (1) الکلام فیمن سأل بعد الصلاۃ وما ذا بقی لہ حتی یقال یقطع او یتم۔

کا ظن ہو یا نہ دینے کا یا شک کی صورت ہو۔ (ت) (۷) الفاظ صدر الشریعۃ وان رأی فی الصلاۃ (اور اگر اندرونِ نماز دیکھا اقول یعنی اور بعد نماز طلب کیا تاکہ یہ صورت اس سے جدا ہو جو پہلے ذکر ہوئی اور اس لئے بھی کہ زیادات میں یہی مذکور ہے۔ (ت) (۸) الفاظ صدر الشریعۃ (تو حکم وہی ہے جو زیادات میں بیان ہوا) اقول: یعنی اگر اسے دے دیا تو از سر نو نماز پڑھے اور انکار کردیا تو اس کی نماز پوری ہو گئی یہاں پر "فکذا" (تو بھی یہی حکم ہے) نہ کہا جیسے پہلے کہا۔ وجہ یہ ہے کہ وہاں پر پہلے وہ ذکر کیا جو مبسوط میں مذکور ہے تو اس کی نسبت اس کی طرف کی۔ پھر ایک اور صورت ذکر کی جو حکم میں اس کے موافق تھی تو اس کیلئے اوپر والے حکم کا حوالہ دے دیا لیکن یہاں پر پہلے وہ ذکر کیا ہے جو زیادات میں نہیں پھر جب اس کے بیان پر آئے جو زیادات میں ہے تو اسے اس کی طرف منسوب کیا۔ اور بالفاظ ذیل اس کی تفسیر کرنے والے نے سمجھائی نہیں: "یعنی حکم بر تفصیل مذکور ہے۔ وہ یہ ہے کہ اگر اسے غالب گمان دینے

کا ہو تو نماز توڑ دے ورنہ نہیں" اھ بات یہ ہے کہ کلام اس کے بارے میں ہو رہا ہے جو نماز کے بعد مانگے۔ اور (جب وہ نماز پڑھ چکا ہے تو) اس کیلئے باقی کیا رہا کہ "توڑے" یا "مکمل کرے" بولا جاسکے۔ (ت)

(یعنی صاحب عمدۃ الرعایۃ ۱۲ ت) یعنی مولانا عبدالئی فرنگی محلی م ۱۳۰۴ھ

---

1 عمدۃ الرعایۃ حاشیہ شرح الوقایہ باب التمیم المکتبۃ الرشیدیہ ۱ / ۱۰۳

Regarding the statement: "But two forms remain." I say: The other (1) is that if it is assumed that it was omitted in 'Al-Ziyadat,' then it was not omitted in your words, because whoever saw within the prayer and requested after it certainly includes it. Referring to 'Al-Ziyadat' is for the ruling, not for the illustration of the form. (T)

Regarding the statement: "One of them," my brother Chalpi said: "These two can be understood from his words: 'And likewise if he refused and then gave,' because it is explicit that giving is a nullifier and refusing is a completer. So, reflect." I say: His words (2) "Likewise" mean his prayer is complete. So where in it is there evidence that giving is a nullifier? Rather, it implies that giving after refusal is in vain. Yes, if he had said: "They can be understood from his words: 'If he gave, he should restart, and if he refused, it is complete,'" then it would be explicit, etc. Perhaps it was a slip of the pen. Among the deficiencies (3) is the statement of the author of 'Umdat al-Ri'ayah': "There is no explicit mention of them in previous phrases, even if the statement of 'Al-Ziyadat' 'And if he refused, it is complete' indicates their ruling in general." So why did he omit his words "If he gave, he should restart" to indicate the ruling for both cases in the two forms? (Note: The author of 'Umdat al-Ri'ayah' is Maulana Abdul Hai Farangi Mahalli).

(9) Words of Sadr al-Shariah (But two forms remain) I say: If it is assumed that the second form is omitted in the Ziyadat, then it is not omitted in your speech because "whoever saw during the prayer and requested after the prayer" definitely includes this second form. As for the reference to Ziyadat, it pertains to the ruling, not to the description of the form. (T)

(10) The word of Sadr al-Shariah "One of them" (One form is that etc.) Brother Chalpi said: "This form can be understood from his statement 'And similarly when he refuses then gives' because it is explicit regarding this that giving is a nullifier and refusal makes the prayer complete. Reflect." I say: His word is "Kaza" (Similarly) meaning his prayer was completed. Where does it say here that giving is a nullifier according to the words of Ziyadat (And if he refused it is complete and if he refused the prayer is completed)? Rather, it means that giving after refusal is meaningless. Yes, if they had said that from their statement (when he gives he should perform it anew and if he refuses the prayer is completed) this second form can be understood because it is explicit about this that giving is a nullifier and refusal is what completes the prayer", then this statement would be correct. Perhaps it is a slip of the pen that

it is a shortcoming to say that "there is no explicit mention of these two forms in the previous phrases although (the speaker is the author of Umdat al-Ri'ayah (Maulana Abdul Hai Farangi Mahalli) 12. T)"

Footnote: He is the author of Umdat al-Ri'ayah 12 (M)

1. Dhakhirat al-Uqba, Chapter on Tayammum, Islami Press Lahore, 1/182.
2. Umdat al-Ri'ayah, Hashiya Sharh al-Wiqayah, Chapter on Tayammum, Al-Maktaba al-Rashidiyya, 1/103.

कथन: "लेकिन दो रूप शेष रह जाते हैं।" मैं कहता हूँ: दूसरा (1) यह है कि यदि यह मान लिया जाए कि ज़ियादात में इसे छोड़ दिया गया है, तो यह आपके कलाम में नहीं छूटा है, क्योंकि जिसने नमाज़ के दौरान देखा और उसके बाद माँगा, वह निश्चित रूप से इसमें शामिल है। ज़ियादात का संदर्भ हुक्म के लिए है, न कि रूप के चित्रण के लिए। (त)

कथन: "उनमें से एक," मेरे भाई कल्पी ने कहा: "इन्हें उनके इस कथन से समझा जा सकता है: 'और इसी तरह जब वह मना करे और फिर दे दे,' क्योंकि यह स्पष्ट है कि देना नमाज़ तोड़ने वाला है और मना करना पूर्ण करने वाला है। अतः विचार करें।" मैं कहता हूँ: उनका शब्द (2) "इसी तरह" का अर्थ है कि उसकी नमाज़ पूरी हो गई। तो इसमें यह कहाँ है कि देना नमाज़ तोड़ने वाला है? बल्कि इसमें यह है कि मना करने के बाद देना व्यर्थ है। हाँ, यदि वे यह कहते: "इन्हें उनके इस कथन से समझा जा सकता है: 'यदि उसने दिया तो नए सिरे से शुरू करे, और यदि उसने मना किया तो पूरी हो गई,'" तो यह स्पष्ट होता। शायद यह लिखने की त्रुटि है। कमियों (3) में से एक 'उमदतुल रियाया' के लेखक का कथन है: "पिछली इबारतों में इनका कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं है, भले ही ज़ियादात का यह कथन 'और यदि उसने मना किया तो पूरी हो गई' उनके हुक्म को सामान्य रूप से इंगित करता है।" तो उन्होंने अपना यह कथन क्यों छोड़ दिया कि 'यदि उसने दिया तो नए सिरे से शुरू करे' ताकि दोनों रूपों में दोनों पक्षों का हुक्म स्पष्ट हो सके? (नोट: 'उमदतुल रियाया' के लेखक मौलाना अब्दुल हई फ़रंगी महली हैं)।

(9) सदरुश शरीअह के शब्द (लेकिन दो सूरतें रह जाती हैं) अक़ूल: अगर फ़र्ज़ कर लिया जाए कि दूसरी सूरत ज़ियादात में मतरूक है तो आप के कलाम में मतरूक नहीं इस लिए कि "जिस ने अंदरून-ए-नमाज़ देखा और बाद-ए-नमाज़ तलब किया" यह सूरत इस दूसरी सूरत को भी क़तअन शामिल है। रह गया ज़ियादात का हवाला तो वह हुक्म से मुताल्लिक़ है, बयान-ए-सूरत से मुताल्लिक़ नहीं। (त)

(10) लफ़्ज़ सदरुश शरीअह "अहदहुमा" (एक सूरत यह कि इलख) अख़ी चल्पी ने कहा: "यह सूरत उन के क़ौल 'और इसी तरह जब इंकार करे फिर दे दे' से समझ में आ सकती है इस लिए कि वह इस बारे में सरीह है कि देना नाक़िज़ है और इंकार से नमाज़ ताम हो जाती है फ़तअम्मुल। अक़ूल: उन का लफ़्ज़ है 'कज़ा' (इसी तरह) यानी उस की नमाज़ पूरी हो गई। इस में यह कहाँ है कि देना

नाक़िज़ है बज़ियादात के अल्फ़ाज़ (वन अबा तम्मत और अगर इंकार कर दे तो नमाज़ पूरी हो गई) बल्कि इस में यह है कि इंकार के बाद देना ढोल है। हाँ अगर ये कहते कि उन के क़ौल (जब दे दे तो अज़-सरे-नौ अदा करे और इंकार कर दे तो नमाज़ पूरी हो गई) से यह दूसरी सूरत समझ में आ सकती है इस लिए कि वह इस बारे में सरीह है कि देना नाक़िज़ है और इंकार नमाज़ को तमाम कर देने वाला है" तो यह कहना दुरुस्त होता। शायद यह सबक़त-ए-क़लम है यह कहने में तक़्सीर है कि "इन दोनों सूरतों का साबिक़ा इबारतों में सराहतन कोई ज़िक्र नहीं अगरचे (क़ायल साहब-ए-उमदतुल रियाया (मौलाना अब्दुल हई फ़रंगी महली) हैं 12. त)"

हाशिया: वह साहब-ए-उमदतुल रियाया हैं 12 (म)

1. ज़खीरतुल उक़्बा, बाब अत-तयम्मुम, मतबअ इस्लामिया लाहौर, 1/182।
2. उमदतुल रियाया, हाशिया शरह अल-विकाया, बाब अत-तयम्मुम, अल-मकतबा अल-रशीदिया, 1/103।

पेज 140/761

قوله لكن تبقى صورتان اقول: الاخرى(1) ان فرض تركها في الزيادات فلم تترك في كلامكم لان من رأى في الصلاة وسأل بعدها يشملها قطعا والاحالة على الزيادات للحكم لالتصوير۔ قوله احدهما) قال اخي چلپی يمكن انفهامهما من قوله وكذا ابى ثم اعطى لانه صريح في ان الاعطاء ناقض والاباء متمم فتأمل ١ اه اقول: قوله(٢) كذا اى تمت صلاته فأين فيه ان الاعطاء ناقض بل فيه ان الاعطاء بعد الاباء هباء نعم لو قال يمكن انفهامهما من قوله اذا اعطاه استأنف واذا ابى تمت فانه صريح الخ لاتجه ولعله سبق قلم ومن التقصير (٣) قول من عه قال لاذكر لهما في العبارات السابقة صريحاً وان كان قول الزيادات وان ابى تمت يدل على حكمهما باطلاقه واشارته ٢ اه فلم ترك قوله اذا اعطى استأنف ليدل على حكم الوجهين في الصورتين۔

(۹) الفاظ صدر الشریعہ (لیکن دو صورتیں رہ جاتی ہیں) اقول: اگر فرض کر لیا جائے کہ دوسری صورت میں زیادات میں متروک ہے تو آپ کے کلام میں متروک نہیں اس لئے کہ "جس نے اندرون نماز دیکھا اور بعد نماز طلب کیا" یہ صورت اس دوسری صورت کو بھی قطعاً شامل ہے۔ رہ گیا زیادات کا حوالہ تو وہ حکم سے متعلق ہے، بیان صورت سے متعلق نہیں۔ (ت) (۱۰) لفظ صدر الشریعہ "احدہما" (ایک صورت یہ کہ الخ) اخی چلپی نے کہا: "یہ صورت ان کے قول "اور اسی طرح جب انکار کرے پھر دے دے" سے سمجھ میں آسکتی ہے اس لئے کہ وہ اس بارے میں صریح ہے کہ دینا ناقض ہے اور انکار سے نماز تام ہو جاتی ہے فتأمل اھ، اقول: ان کا لفظ ہے "کذا" (اسی طرح) یعنی اس کی نماز پوری ہوگئی۔ اس میں یہ کہاں ہے کہ دینا ناقض ہے بزیادات کے الفاظ (وان ابی تمت اور اگر انکار کر دے تو نماز پوری ہوگئی) بلکہ اس میں یہ ہے کہ انکار کے بعد دینا ڈھول ہے۔ ہاں اگر یہ کہتے کہ ان کے قول (جب دے دے تو از سر نو ادا کرے اور

انکار کردے تو نماز پوری ہوگئی) سے یہ دوسری صورت سمجھ میں آسکتی ہے اس لئے کہ وہ اس بارے میں صریح ہے کہ دینا ناقض ہے اور انکار نماز کو تمام کر دینے والا ہے" تو یہ کہنا درست ہوتا۔ شاید یہ سبقت قلم ہے یہ کہنے میں تقصیر ہے کہ "ان دونوں صورتوں کا سابقہ عبارتوں میں صراحتہ کوئی ذکر نہیں اگرچہ (قائل صاحب عمدة الرعایۃ (مولانا عبدالحی فرنگی محلی) ہیں ۱۲۔ت)"

عه وہو صاحب عمدة الرعایۃ ۱۲ (م)

1 ذخیرة العقبی باب التیمم مطبع اسلامیہ لاہور ۱/ ۱۸۲ 2 عمدة الرعایۃ حاشیۃ شرح الوقایۃ باب التیمم المکتبۃ الرشیدیہ ۱/ ۱۰۳

Fatawa Rizvia Volume IV

Why were the words of *Ziyadat* (if he gives, he should restart - *Iza a'ta istanaf*) not mentioned so that the indication of both forms of both cases would be clear? (T) Then, if in the text of *Ziyadat*, the reference for "finished his prayer" (*faragha min salatih*) is the worshipper in general, then it is not correct to say that "there is no explicit mention of these two cases in the previous texts." And if its reference is specifically "the one who suspects or doubts a refusal," then saying "by its absolute application" (*bi itlaqih*) is not correct. Because a distinct thing does not enter into the absolute application of its distinct counterpart. (T) If you say that perhaps they mentioned it as a distribution and division, so for the one who suspects a gift and completes the prayer, they used the word "allusion" (*isharah*), and for the one who suspects or doubts a refusal and breaks the prayer, they used the word "absolute application" (*itlaq*). (T) I say: (I would say) this is also not correct because breaking the prayer is distinct from finishing the prayer and being free from it, so how will it enter into "absolute application"? Let it be noted that I say: The summary of the entire discourse of Imam Sadr al-Sharia in half a line is that "if he does not ask or if the person gives it to him, then the Tayammum and prayer he performed become void, and if the person refuses, it is complete." Thus, the first condition includes the case where he did not ask and the person gave or did not give, and also the case where he asked and the person gave. For the second condition, what remains is when he asked but the person did not give, and by its absolute application, it indicates that it is equal.

Furthermore, if in the statement of *Ziyadat*, the reference for "finished his prayer" is the worshipper in general, then his statement "there is no explicit mention of them in the previous statements" would not be correct. And if its reference is specifically one who suspects or doubts a refusal, then his statement "by its absolute application" would not be correct, for a distinct thing does not enter into the absolute application of its distinct counterpart. If you say, perhaps he distributed them, assigning to the one who expects a gift and completes [the prayer] the "allusion," and to the one who expects or doubts a refusal and cuts [the prayer] the "absolute application." I say: This is not correct because cutting off is distinct from finishing, so how can it enter into the absolute application? Here I say, the summary of all the speech of this Imam in half a line is: if he did not ask or was given, what he did of Tayammum and prayer is void, and if [the person] refused, it is complete. So the first condition includes if he did not ask and was given or not given, and if he asked and was given. What remains

for the second is if he asked and was not given, and its absolute application indicates that it is the same.

ज़ियादात के शब्द (यदि वह दे दे, तो पुनः आरम्भ करे - इज़ा अता इस्तानाफ़) का उल्लेख क्यों नहीं किया गया ताकि दोनों स्थितियों के दोनों रूपों का संकेत स्पष्ट हो सके? (त) फिर, यदि ज़ियादात के पाठ में "अपनी नमाज़ से फ़ारिग हो" (फ़रग़ा मिन सलातिह) का संदर्भ सामान्य रूप से नमाज़ी है, तो यह कहना सही नहीं है कि "पिछली इबारतों में इन दोनों स्थितियों का कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं है।" और यदि इसका संदर्भ विशेष रूप से "वह व्यक्ति है जिसे मना करने का गुमान या संदेह हो" है, तो "अपने इत्लाक़ (पूर्णता/व्यापकता) से" कहना सही नहीं है। क्योंकि एक भिन्न वस्तु अपनी दूसरी भिन्न वस्तु के इत्लाक़ में शामिल नहीं होती। (त) यदि आप कहें कि शायद उन्होंने इसे वितरण और विभाजन के रूप में उल्लेख किया हो, तो जिसे उपहार मिलने का गुमान हो और नमाज़ पूरी कर ले, उसके लिए शब्द "इशारा" रखा, और जिसे मना करने का गुमान या संदेह हो और नमाज़ तोड़ दे, उसके लिए शब्द "इत्लाक़" रखा। (त) अक़ूल (मैं कहूँगा): यह भी सही नहीं है क्योंकि नमाज़ तोड़ना, नमाज़ पढ़ चुकने और उससे फ़ारिग होने से भिन्न (मबाइन) है, तो यह "इत्लाक़" में कैसे प्रवेश करेगा? यह ध्यान रहे, अक़ूल: इमाम सद्रुश-शरीअत के पूरे कलाम का सारांश आधी पंक्ति में यह है कि "यदि वह प्रश्न न करे या वह उसे दे दे, तो उसने जो तयम्मुम और नमाज़ अदा की वह बातिल (अमान्य) हो गई, और यदि वह मना कर दे तो पूर्ण हो गई।" अतः पहली शर्त उस स्थिति को शामिल करती है जब उसने माँगा नहीं और उसने दे दिया या नहीं दिया, और उस स्थिति को भी जब उसने माँगा और उसने दे दिया। दूसरी शर्त के लिए वह स्थिति रह जाती है जब उसने माँगा परंतु उसने नहीं दिया, और अपने इत्लाक़ से यह संकेत मिलता है कि वह समान है।

इसके अतिरिक्त, यदि ज़ियादात के कथन में "अपनी नमाज़ से फ़ारिग हो" का संदर्भ सामान्य रूप से नमाज़ी है, तो उनका यह कहना कि "पिछली इबारतों में उनका कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं है" सही नहीं होगा। और यदि इसका संदर्भ विशेष रूप से वह है जो मना करने का गुमान या संदेह करता है, तो उनका "अपने इत्लाक़ से" कहना सही नहीं होगा, क्योंकि एक भिन्न वस्तु अपनी दूसरी भिन्न वस्तु के इत्लाक़ में शामिल नहीं होती। यदि आप कहें, शायद उन्होंने इसे वितरित किया, तो उपहार की अपेक्षा रखने वाले और पूर्ण करने वाले के लिए "इशारा" और मना करने का गुमान या संदेह करने वाले और नमाज़ तोड़ने वाले के लिए "इत्लाक़" नियत किया। अक़ूल: यह सही नहीं है क्योंकि नमाज़ तोड़ना फ़ारिग होने से भिन्न है, तो इत्लाक़ में प्रवेश कैसे होगा? यहाँ मैं कहता हूँ, इस इमाम के पूरे कलाम का सारांश आधी पंक्ति में यह है: यदि उसने नहीं माँगा या उसे दिया गया, तो उसने जो

तयम्मुम और नमाज़ की वह बातिल है, और यदि मना किया गया, तो पूर्ण है। तो पहली शर्त शामिल करती है यदि उसने नहीं माँगा और दिया गया या नहीं दिया गया, और यदि उसने माँगा और दिया गया। दूसरे के लिए वह बचता है यदि उसने माँगा और नहीं दिया गया, और इसका इत्लाक़ दर्शाता है कि यह एक समान है।

فتاوی رضویہ جلد چہارم

زیادات کے الفاظ (اذا اعطی استأنف جب دے دے تو از سر نو پڑھے) کو بھی کیوں نہ ذکر کیا کہ دونوں صورتوں کی دونوں شکلوں پر دلالت ظاہر ہو۔ (ت) پھر اگر زیادات کی عبارت میں فرغ من صلاتہ (وہ اپنی نماز سے فارغ ہو) کا مرجع مطلقاً مصلی ہے تو یہ کہنا درست نہیں کہ "سابقہ عبارتوں میں صریحاً ان دونوں صورتوں کا کوئی ذکر نہیں" اور اگر اس کا مرجع خاص من ظن منعا اوشک" (وہ جسے انکار کا گمان یا شک ہو) ہے تو "باطلاقہ" (اپنے اطلاق سے) کہنا درست نہیں۔ اس لئے کہ مباین اپنے مباین کے اطلاق میں داخل نہیں ہوتا۔ (ت) اگر یہ کہو کہ شاید انہوں نے بطور توزیع و تقسیم ذکر کیا ہو تو جسے عطا کا گمان ہو اور نماز پوری کرلے اس کے لئے لفظ "اشارہ" رکھا اور جسے انکار کا گمان ہو یا شک ہو اور نماز توڑ دے اس کیلئے لفظ "اطلاق" رکھا۔ (ت) اقول: (میں کہوں گا) یہ بھی صحیح نہیں اس لئے کہ نماز توڑنا نماز پڑھ چکنے اور اس سے فارغ ہونے کے مباین ہے تو "اطلاق" میں کیسے داخل ہوگا۔ یہ ذہن نشین رہے اقول: امام صدر الشریعہ کے پورے کلام کا ضبط نصف سطر میں یہ ہے کہ "اگر وہ سوال نہ کرے یا اسے دے دے تو جو تیمم اور نماز اس نے ادا کیا وہ باطل ہو گیا اور اگر انکار کردے تو تمام ہوا" تو پہلی شرط اس صورت کو شامل ہے جب اس نے مانگا نہیں اور اس نے دے دیا یا نہ دیا اور اس صورت کو بھی جب اس کے

ثم ان کان فی (ا) قول الزیادات مرجع فرغ من صلاته المصلی مطلقا لم یصح قوله لا ذکر لهما في العبارات السابقة صریحاً وان کان مرجعه خصوص من ظن منعاً اوشك لم یصح قوله باطلاقه فان المباین لا یدخل في اطلاق مباینه فانقلت لعله وزع فلمن ظن عطاء واتم الاشارة ولمن ظن منعاً اوشك وقطع الاطلاق۔ اقول : ولا یصح فأن القطع یباین الفراغ فاین الدخول فی الاطلاق۔ هذا واقول ضبط کل

كلام هذا الامام فى نصف سطر انه ان لم يسأل اواعطاه بطل ما فعل من تيمم وصلاة وان ابى تم فالشرط الاول يشمل ما اذالم يسأل فاعطى اولم يعط وما اذا سأل فاعطى ويبقى للثانى ما اذا سأل فلم يعط ويدل باطلاقه على انه سواء

(Left Column - Arabic Text) In every such case, whether one assumes a gift (of water) or denial, or is in doubt, and sees it outside of prayer or within it, then he should either cut short (the prayer) or complete it. If we intend to increase upon what was previously mentioned regarding the additions, we add to the other condition: "And if he gave it after the prayer, then the giving remains in the first case restricted by the condition that it was not after the prayer following a refusal. For the second case, two possibilities remain: he asked but was not given, or he was given after the prayer preceded by a refusal. Then we add after it: regardless of whether he assumed a gift or denial, or was in doubt, except that if he assumed a gift, he breaks the prayer, otherwise not." I say: And this does not exclude the case where he asked but was not given, yet he did not refuse but remained silent. This is because we have already mentioned that if he gave it after the silence before seeing him praying with Tayammum, the silence was not a refusal. So, it falls under the first category, namely "he gave it," even if this was after the prayer, for no refusal preceded it. In this case, the ruling is for the gift rather than the silence. Otherwise, it was a refusal and thus falls under the second category, and the ruling was for the silence in that regard.

(Right Column - Urdu Text) ...are indicative of their ruling through their general application and hint. (Ending of quote). On asking, he did not give, and under the second condition, that situation remains when, upon his asking, he did not give. And the speech, by its general application, will also tell that in these matters all these situations are equal: whether he had a suspicion of giving, or of not giving, or had doubt, and he saw it outside the prayer, or saw it inside the prayer and broke the prayer, or completed it. And regarding the additions they mentioned earlier, if we also want to add that, then in the second conditional sentence, we should add these words: "even if it was given to him after the prayer," then in the first conditional sentence, "giving" will be restricted by this: that it should not be after the prayer following a refusal. And under the second sentence, two branches will remain: (1) not giving upon asking, (2) or giving after the prayer after refusal. Then after that, we add: "whether he had a suspicion of giving or of refusal, or had doubt, but the thing is if there is a suspicion of giving, then break the prayer, otherwise not." (The Compiler). I say: This will not exclude the situation when, upon asking, he neither gave nor refused but remained silent. This is because we have already explained that if after remaining silent, he gave it before seeing him pray from Tayammum, then this silence is not a refusal. So this is included in the first, i.e., "gave it" (he gave him).

And if this is after prayer, then no refusal was found before this giving. And in this case, the ruling is of giving, not of silence. Otherwise (if after silence it was not given before seeing him pray from Tayammum), that silence will be a refusal and will be included in the second condition. And in this case, the ruling...

(बायाँ कॉलम - अरबी पाठ) ऐसी हर स्थिति में, चाहे कोई उपहार (पानी का) मान ले या इनकार, या संदेह में हो, और उसे प्रार्थना के बाहर या उसके भीतर देखता है, तो उसे या तो (प्रार्थना) बीच में ही छोड़ देनी चाहिए या पूरी करनी चाहिए। यदि हम अतिरिक्त बातों के बारे में पहले जो उल्लेख किया गया है, उसमें वृद्धि करना चाहते हैं, तो हम दूसरी शर्त में जोड़ते हैं: "और यदि उसने प्रार्थना के बाद उसे दिया, तो देना पहले मामले में इस शर्त के साथ सीमित रहता है कि वह इनकार के बाद प्रार्थना के बाद नहीं था। दूसरे मामले के लिए, दो संभावनाएँ शेष रहती हैं: उसने माँगा लेकिन नहीं दिया गया, या इनकार के बाद प्रार्थना के बाद दिया गया। फिर हम इसके बाद जोड़ते हैं: चाहे उसने उपहार या इनकार माना हो, या संदेह में था, सिवाय इसके कि यदि उसने उपहार माना, तो वह प्रार्थना तोड़ देता है, अन्यथा नहीं।" मैं कहता हूँ: और इसमें वह मामला शामिल नहीं है जहाँ उसने माँगा लेकिन नहीं दिया गया, फिर भी उसने इनकार नहीं किया बल्कि चुप रहा। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम पहले ही उल्लेख कर चुके हैं कि यदि उसने तयम्मुम के साथ प्रार्थना करते हुए देखने से पहले चुप्पी के बाद उसे दिया, तो चुप्पी इनकार नहीं थी। अत; यह पहली श्रेणी के अंतर्गत आता है, अर्थात् "उसने उसे दिया," भले ही यह प्रार्थना के बाद था, क्योंकि इससे पहले कोई इनकार नहीं था। इस मामले में, फैसला चुप्पी के बजाय उपहार के लिए है। अन्यथा, यह एक इनकार था और इस प्रकार दूसरी श्रेणी के अंतर्गत आता है, और उस संबंध में निर्णय चुप्पी के लिए था।

(दायाँ कॉलम - उर्दू पाठ) ...अपनी व्यापकता और संकेत के माध्यम से उनके आदेश का संकेत दे रहे हैं। (उद्धरण का अंत)। माँगने पर उसने नहीं दिया, और दूसरी शर्त के तहत वह स्थिति रहेगी जब उसके माँगने पर उसने नहीं दिया। और यह कथन अपनी व्यापकता से यह भी बताएगा कि इन बातों में ये सभी स्थितियाँ समान हैं: उसे देने का अनुमान रहा हो या न देने का या शंका रही हो, और उसने नमाज़ के बाहर देखा हो या नमाज़ के अंदर देखकर नमाज़ तोड़ दी हो या पूरी की हो। और उन्होंने अधिकताओं के संदर्भ में जो पहले वर्णन किया, यदि हम उसका भी इज़ाफ़ा करना चाहें तो दूसरे शर्तिया जुमले में ये शब्द बढ़ा दें "चाहे नमाज़ के बाद उसे दे दिया हो," तो पहले शर्तिया जुमले में देना इससे सीमित रहेगा कि इनकार करके नमाज़ के बाद देना न हो। और दूसरे जुमले के तहत दो स्थितियाँ रह जाएँगी: (1) माँगने पर दिया नहीं, (2) या इनकार करके नमाज़ के बाद दिया। फिर इसके बाद हम यह बढ़ा दें "चाहे उसे देने का अनुमान रहा हो या इनकार का, या शंका रही हो, मगर यह है कि अगर देने का अनुमान हो तो नमाज़ तोड़ दे वरना नहीं"। (त) मैं कहता हूँ: इससे वह सूरत

बाहर न होगी जब माँगने पर उसने न दिया न इनकार किया बल्कि खामोश रहा। यह इसलिए कि हम बता चुके कि अगर खामोश रहने के बाद उसे तयम्मुम से नमाज़ पढ़ते हुए देखने से पहले दे दिया तो यह खामोशी इनकार नहीं, तो यह अव्वल यानी "अअताहु" (उसे दे दिया) में दाखिल है। और अगर यह नमाज़ के बाद है तो इस देने से पहले इनकार न पाया गया और इस सूरत में हुक्म अता का है सुकूत का नहीं। वरना (अगर सुकूत के बाद तयम्मुम से उसे नमाज़ पढ़ते हुए देखने से पहले देना न हुआ) वह सुकूत इनकार होकर शर्त-ए-सानी में दाखिल होगा। और इस सूरत में हुक्म...

पृष्ठ 142 का 761

(بایاں کالم - عربی متن) فی کل ذلك ظن منحاً اومنعاً اوشك ورأه خارج الصلاة اوفیها فقطع اواتم وان اردنا زیادة ما قدم عن الزیادات زدنا في الشرط الاخری ولواعطاه بعد الصلاة فیبقی العطاء في الاولی مقیدا بما اذالم یکن بعد الصلاة عقیب اباء ویبقی للثانیة شقان سأل فلم یعط او اعطی بعد الصلاة مسبوقاً باباء ثم زدنا بعده سواء ظن منحاً اومنعاً اوشك غیر انہ ان ظن العطاء قطع الصلاة والا لا۔ اقول: ولا یخرج منه مااذا سأل فلم یعط ولم یاب بل سکت وذلك لما قدمنا ان اعطاه بعد السکوت قبل ان یراه یصلی بالتیمم لم یکن السکوت اباء فدخل في الاول اعنی اعطاه وان کان هذا بعد الصلاة فلم یتقدمه اباء وکان الحکم ح للعطاء دون السکوت والا کان اباء فدخل في الثاني وکان الحکم للسکوت من جهة انه

(دایاں کالم - اردو متن) اپنے اطلاق اور اشارہ سے ان کے حکم پر دال ہیں۔ اھ مانگنے پر اس نے نہ دیا اور دوسری شرط کے تحت وہ صورت رہے گی جب اس کے مانگنے پر اس نے نہ دیا اور کلام اپنے اطلاق سے یہ بھی بتائے گا کہ ان باتوں میں یہ سب صورتیں یکساں ہیں اسے دینے کا گمان رہا ہو یا نہ دینے کا یا شک رہا ہو اور اس نے بیرونِ نماز دیکھا ہو یا اندرونِ نماز دیکھ کر نماز توڑ دی ہو یا پوری کی ہو۔ اور انہوں نے زیادات کے حوالہ سے جو پہلے بیان کیا اگر ہم اس کا بھی اضافہ کرنا چاہیں تو دوسرے جملہ شرطیہ میں یہ الفاظ بڑھادیں "اگرچہ بعد نماز اسے دے دیا ہو" تو پہلے جملہ شرطیہ میں دینا اس سے مقید رہے گا کہ انکار کرکے بعد نماز دینا نہ ہو اور دوسرے جملہ کے تحت دو شقیں رہ جائیں گی (1) مانگنے پر دیا نہیں (2) یا انکار کرکے بعد نماز دیا پھر اس کے بعد ہم یہ بڑھادیں "خواہ اسے دینے کا گمان رہا ہو یا انکار کا، یا شک رہا ہو مگر یہ ہے کہ اگر دینے کا گمان ہو تو نماز توڑ دے ورنہ نہیں"۔ (ت) اقول: اس سے وہ صورت خارج نہ ہوگی جب مانگنے پر اس نے نہ دیا نہ انکار کیا بلکہ خاموش رہا یہ اس لئے کہ ہم بتاچکے کہ

اگر خاموش رہنے کے بعد اسے تیمم سے نماز پڑھتے ہوئے دیکھنے سے قبل دے دیا تو یہ خاموشی انکار نہیں تو یہ اول یعنی "اعطاہ" (اسے دے دیا) میں داخل ہے اور اگر یہ بعد نماز ہے تو اس دینے سے پہلے انکار نہ پایا گیا اور اس صورت میں حکم عطا کا ہے سکوت کا نہیں۔ ورنہ (اگر بعد سکوت تیمم سے اسے نماز پڑھتے ہوئے دیکھنے سے پہلے دینا نہ ہوا) وہ سکوت انکار ہو کر شرط ثانی میں داخل ہوگا۔ اور اس صورت میں حکم

Proof of Prohibition.

(Right Column - Urdu Text) Silence is because it is an evidence of refusal. However, first, a case remains: when one asks, and the owner neither gives nor refuses but promises, then goes against it. If this promise was made before or during prayer, the tayammum (dry ablution) is absolutely nullified, even if he didn't receive the water. This does not fall under the phrase "if he didn't ask or if he gave" (an lam yas'al au a'tah), because he did ask and was not given. Similarly, if this promise was made after prayer, absolute invalidity of the prayer is chosen. Although, as is apparent and Allah the Supreme knows best, we said that the prayer is valid if the breach of promise became apparent later, as this is a case of a completed prayer. It does not fall under "if he refused" (an aba) because it is not said of one who promises that he prevented or refused. But if it is claimed that a promise is a gift (ataa), then this case falls under the first condition. However, this claim requires proof. And where is the proof? Rather, proof exists to the contrary, as we explained. (T) If one says, "We choose to consider a broken promise as a refusal," then this case would fall under the second condition. And considering the final outcome, this would not be far-fetched. I say (Aqool): If a promise is not deemed a gift, it is not beneficial; and if it is deemed a gift, then there is no need for it. The reason is that if breaking a promise is a documented refusal, i.e., from the time of the promise...

(Left Column - Arabic Text) Proof of prohibition. However, first, there remains (1) what happens if one asks and is neither given nor refused, but promised, and then the promise is broken. If this promise was before or during the prayer, his tayammum is absolutely void, even if he wasn't given [water]. It does not enter under the statement "if he didn't ask or if he gave," because he asked and was not given. Similarly, if it occurred after it, its absolute invalidity is chosen. And if we say, as is apparent—and Allah Almighty knows best—that the prayer is valid if the breach appears afterwards, then this is a case of completed prayer. It does not enter under his statement "if he refused," because one who promises is not said to have prevented or refused, unless it is claimed that a promise is a gift, then it would enter the first [category]. But it needs proof, and where is the proof? Rather, the proof is to the contrary, as we explained. If you say: "Rather, we choose that the broken promise is a refusal," then it enters the second [category], and perhaps this is not far-fetched looking at what the matter leads to. I say: If the promise is not made a gift, it does

not benefit, and if it is made a gift, there is no need for it. This is because if the breach is a refusal based on the time the promise was made...

खंड चार | फतावा रजविया

निषेध का प्रमाण।

(दायाँ कॉलम - उर्दू पाठ) चुप्पी इसलिए है क्योंकि यह इनकार का प्रमाण है। हालाँकि, पहले एक मामला शेष है: जब कोई माँगता है, और मालिक न तो देता है और न ही मना करता है, बल्कि वादा करता है, फिर उसके खिलाफ जाता है। यदि यह वादा नमाज़ से पहले या उसके दौरान किया गया था, तो तयम्मुम (मिट्टी से वज़ू) पूरी तरह से अमान्य हो जाता है, भले ही उसे पानी न मिला हो। यह इस वाक्यांश के अंतर्गत नहीं आता कि "यदि उसने नहीं माँगा या यदि उसने दे दिया" (अन लम यस्अल औ अताह), क्योंकि उसने माँगा था और उसे नहीं दिया गया। इसी तरह, यदि यह वादा नमाज़ के बाद किया गया था, तो नमाज़ की पूर्ण अमान्यता को चुना गया है। हालाँकि, जैसा कि स्पष्ट है और अल्लाह सर्वोच्च सबसे बेहतर जानता है, हमने कहा कि नमाज़ मान्य है यदि वादे का उल्लंघन बाद में स्पष्ट हुआ, क्योंकि यह एक पूर्ण नमाज़ का मामला है। यह "यदि उसने मना कर दिया" (अन अबा) के अंतर्गत नहीं आता क्योंकि वादा करने वाले के बारे में यह नहीं कहा जाता कि उसने रोका या मना किया। लेकिन अगर यह दावा किया जाए कि वादा एक उपहार (अता) है, तो यह मामला पहली शर्त के अंतर्गत आता है। हालाँकि, इस दावे के लिए प्रमाण की आवश्यकता है। और प्रमाण कहाँ है? बल्कि, इसके विपरीत प्रमाण मौजूद है, जैसा कि हमने समझाया है। (त) यदि कोई कहे, "हम टूटे हुए वादे को इनकार मानने का विकल्प चुनते हैं," तो यह मामला दूसरी शर्त के अंतर्गत आएगा। और अंतिम परिणाम को देखते हुए, यह अकल्पनीय नहीं होगा। मैं कहता हूँ (अक़ूल): यदि वादे को उपहार नहीं माना जाता है, तो यह फायदेमंद नहीं है; और यदि इसे उपहार माना जाता है, तो इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। कारण यह है कि यदि वादा तोड़ना एक प्रमाणित इनकार है, अर्थात वादे के समय से...

(बायाँ कॉलम - अरबी पाठ) निषेध का प्रमाण। हालाँकि, पहले (1) वह शेष रहता है जब कोई माँगता है और उसे न तो दिया जाता है और न ही मना किया जाता है, बल्कि वादा किया जाता है, और फिर वादा तोड़ दिया जाता है। यदि यह वादा नमाज़ से पहले या दौरान था, तो उसका तयम्मुम निश्चित रूप से शून्य है, भले ही उसे [पानी] नहीं दिया गया हो। यह इस कथन के अंतर्गत नहीं आता कि "यदि उसने नहीं माँगा या यदि उसने दे दिया," क्योंकि उसने माँगा और उसे नहीं दिया गया। इसी तरह, यदि यह उसके बाद हुआ, तो इसकी पूर्ण अमान्यता को चुना गया है। और यदि हम कहें, जैसा कि स्पष्ट है—और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है—कि नमाज़ मान्य है यदि उल्लंघन बाद

में प्रकट होता है, तो यह पूर्ण नमाज़ का मामला है। यह उनके इस कथन के अंतर्गत नहीं आता कि "यदि उसने मना कर दिया," क्योंकि वादा करने वाले के बारे में यह नहीं कहा जाता कि उसने रोका या मना किया, जब तक कि यह दावा न किया जाए कि वादा एक उपहार है, तब यह पहले [श्रेणी] में प्रवेश करेगा। लेकिन इसके लिए प्रमाण की आवश्यकता है, और प्रमाण कहाँ है? बल्कि, प्रमाण इसके विपरीत है, जैसा कि हमने समझाया। यदि आप कहें: "बल्कि, हम यह चुनते हैं कि टूटा हुआ वादा एक इनकार है," तो यह दूसरे [श्रेणी] में प्रवेश करता है, और शायद यह अकल्पनीय नहीं है कि मामला किस ओर जाता है। मैं कहता हूँ: यदि वादे को उपहार नहीं बनाया जाता है, तो यह लाभ नहीं पहुँचाता है, और यदि इसे उपहार बनाया जाता है, तो इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि यदि उल्लंघन वादे के समय के आधार पर एक इनकार है...

पृष्ठ 143 / 761

دلیل المنع۔

(دایاں کالم) سکوت کا ہے اس وجہ سے کہ وہ دلیل انکار ہے۔ لیکن اولاً وہ صورت رہ گئی جب اس نے مانگا تو اس نے نہ دیانہ انکار کیا بلکہ وعدہ کیا پھر اس کے خلاف کیا تو اگر یہ وعدہ نماز سے پہلے یا نماز کے دوران ہوا ہو تو اس کا تیمم قطعاً باطل ہو گیا اگر چہ اس نہ دیا اور یہ "ان لم یسأل او اعطاہ" (اگر اس نے نہ مانگا یا اس نے دے دیا) کے تحت داخل نہ ہوا۔ اس لئے کہ اس نے مانگا اور اس نے نہ دیا اسی طرح اگر یہ وعدہ بعد نماز ہوا۔ اس میں مطلقاً بطلان نماز اختیار کیا گیا ہے اگرچہ ہم نے جیسا کہ ظاہر ہے اور خدائے برتر خوب جاننے والا ہے یہ کہا کہ نماز ہوگئی اگر وعدہ خلاف ظاہر ہوئی کہ یہ نماز تام ہونے کی صورت ہے اور "ان ابی" (اگر انکار کیا) کے تحت داخل نہیں اس لئے کہ جس نے وعدہ کیا اس کے بارے میں یہ نہ کہا جائے گا کہ اس نے منع و انکار کیا لیکن اگر یہ دعویٰ کیا جائے کہ وعدہ عطا ہے تو یہ صورت شرط اول کے تحت داخل ہے۔ لیکن اس دعویٰ پر دلیل کی ضرورت ہے۔ اور دلیل کہاں؟ بلکہ دلیل تو اس کے خلاف پر موجود ہے جیسا کہ ہم نے بیان کیا۔ (ت) اگر یہ کہے کہ ہم یہ اختیار کرتے ہیں کہ وہ وعدہ جس کے خلاف عمل ہو وہ انکار ہی ہے تو یہ صورت شرط ثانی کے تحت داخل ہو گی۔ اور یہ مال کار کے اعتبار سے کچھ بعید بھی نہ ہو گا۔ اقول: (میں کہوں گا) اگر وعدہ کو عطا نہ قرار دیا جائے تو سود مند نہیں اور اگر عطا قرار دیا جائے تو اس کی ضرورت نہیں۔ وجہ یہ ہے کہ وعدہ خلافی اگر انکار مستند ہے یعنی وقت وعدہ سے،

(بایاں کالم) دلیل المنع۔ لکن اولا بقی (۱)ما اذا سأل فلا اعطی ولا ابی بل وعد ثم اخلف فان کان ھذا الوعد قبل الصلاۃ او فیھا بطل تیممہ قطعاً وان لم یعطہ ولم یدخل فی قولہ ان لم یسأل او اعطاہ لانہ سأل

ولم يعط وكذلک ان وقع بعدها واختير بطلانها مطلقاً وان قلنا كماهو الظاهر والله تعالٰى اعلم ان الصلاة ماضية ان ظهر خلفہ فهذه صورة تمام الصلاة ولم تدخل فی قوله ان ابی لان من وعد لايقال انہ منع و ابی الا ان يدعی ان الوعد عطاء فتدخل فی الاول ولكن يحتاج الی دليل و اين الدليل بل الدليل علی خلافہ كما بينا۔ فان قلت بل نختار ان الوعد المخلف اباء فتدخل فی الثانی ولعل هذا غير بعيد بالنظر الی مآل اليه الامر۔ اقول: ان لم يجعل الوعد عطاء لم ينفع وان جعل لم يحتج اليه وذلک لان الاخلاف ان كان اباء مستند ای من حين وعد

Fatawa Razawiyya Volume 4

The first issue arose when a promise was made before the completion of the prayer and then broken. Thus, it had an effect despite being a refusal, even if the refusal was limited, i.e., from the moment the promise was broken, and there was no giving when it occurred. It was also raised because he asked and was not given, so the condition for nullification was not met. Why then was it nullified? There is no commendable explanation except to consider the promise itself as the act of giving, which is contrary to reason and meaning. And Allah knows best.

Secondly, the fact that (1) water for purification is customarily provided in every place —its invalidity is self-evident, known even to the foolish and children. The status of "Al-Mabsut" is too high for such a meaning to be intended. Therefore, it is necessary to refer it to what the great Imams—Abu Bakr al-Jassas, Abu Zayd al-Dabbusi, and Abu Nasr al-Asghar (may mercy and forgiveness be upon them)—have agreed upon: that the intended place is one where water is not scarce. Thus, the discourse of "Al-Mabsut" applies where giving is expected. How then can it be said that (failing to ask) is a nullifier regardless of whether he strongly expected to be given, or not, or was in doubt?

Thirdly, is it that asking is absolutely mandatory for him, whether he has an expectation or a doubt, but not a condition for the validity of the prayer, or is it a condition for it? On the second premise, how was it correct for him to start the prayer without asking? And for the one who suspects refusal or has a doubt...

Page 144 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द 4

पहला मसला तब पैदा हुआ जब नमाज़ पूरी होने से पहले वादा किया गया और फिर उसे तोड़ दिया गया। इस प्रकार, इनकार होने के बावजूद इसका प्रभाव पड़ा, भले ही इनकार सीमित था, यानी उस समय से जब वादा तोड़ा गया, और वादा होने के समय देना नहीं हुआ। यह सवाल इसलिए भी उठा क्योंकि उसने माँगा और उसे नहीं दिया गया, तो अमान्य होने की शर्त नहीं पाई गई। फिर नमाज़ क्यों अमान्य हुई? इसका कोई सराहनीय समाधान नहीं है सिवाय इसके कि वादे को ही देना मान लिया जाए, जो तर्क और अर्थ दोनों के खिलाफ है। और अल्लाह बेहतर जानता है।

दूसरा: यह कि (1) वुज़ू का पानी आमतौर पर हर जगह दे दिया जाता है—इस बात का अमान्य होना स्पष्ट है, जिसे मूर्ख और बच्चे भी जानते हैं। "अल-मबस्त" का दर्जा ऐसा अर्थ लेने से बहुत ऊँचा है। इसलिए इसे उन महान इमामों—इमाम अबू बक्र जस्सास, इमाम अबू ज़ैद दबूसी और इमाम अबू नस्र अस़गर (रहमत और मग़फ़िरत उन पर हो)—के अनुकूल मोड़ना ज़रूरी है जिन्होंने तालमेल बिठाया कि मुराद ऐसी जगह है जहाँ पानी दुर्लभ न हो। अतः"अल-मबस्त" की बात वहाँ लागू होगी जहाँ पानी दिए जाने का गुमान हो। फिर यह कैसे कहा जा सकता है कि (सवाल न करना) अमान्य करने वाला है, चाहे उसे दिए जाने का गुमान हो या न दिए जाने का या शक की स्थिति हो?

तीसरा: क्या ऐसा है कि माँगना, चाहे गुमान हो या शक, उस पर पूरी तरह से वाजिब है लेकिन नमाज़ की सेहत की शर्त नहीं है, या वह इसकी शर्त भी है? दूसरी सूरत में, बिना माँगे उसकी नमाज़ शुरू करना कैसे सही हुआ? और मना किए जाने के गुमान या शक वाले के लिए...

पेज 144 का 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

وردت المسألة الاولی حیث وعد قبل تمام الصلاۃ واخلف فقد اثر مع کونہ اباء وان کان اباء مقتصرا ای من حین اخلف ولم یکن اعطاء حین وقع وردت ایضاً لانہ سأل ولم یعط فلم توجد شریطة الابطال فلم بطلت فلاحمید الاجعل الوعد عطاء بعینہ وھو خلاف المعقول والمدلول واللہ تعالی اعلم۔

تو پہلا سوال وارد ہوگا کیوں کہ اس نے قبل تمام نماز وعدہ کیا اور خلاف کیا تو یہ انکار ہونے کے باوجود اثر انداز ہوا (جب کہ صورتِ انکار میں نماز تمام ہوتی ہے) اور اگر انکار مقتصر ہو یعنی وقت عدمِ وفا سے، اور جب وعدہ ہوا ہے اس وقت دینا نہ ہو تو بھی پہلا سوال وارد ہوگا۔ اس لئے کہ "اس نے مانگا اور اس نے نہ دیا" تو ابطال کی جو شرط تھی (نہ مانگا یا اس نے دے دیا) وہ نہ پائی گئی پھر نماز کیوں باطل ہوئی تو کوئی مفر نہیں سوا اس کے کہ وہ وعدہ کو بعینہ عطا قرار دیں اور یہ معقول ومدلول دونوں کے خلاف ہے۔ (ت)

ثانیا: کون (1) ماء الطھارۃ مبذولا عادۃ فی کل مکان * بطلانہ غنی عن البیان * یعرفہ البلہ والصبیان وشان المبسوط یجل عن ارادتہ فوجب ردہ الی ماوفق بہ الائمۃ الجلۃ ابوبکر الجصاص وابوزید الدبوسي وابونصر الاصغر علیھم رحمۃ الغفران المراد موضع لایعز فیہ الماء فاذن کلام المبسوط حیث یظن العطاء فکیف یقال سواء غلب علی ظنہ الاعطاء او عدمہ او شك۔

ثانیا: آبِ طہارت ہر جگہ عادۃً دے دیا جاتا ہے اس کا بطلان بیان سے بے نیاز ہے بے وقوفوں اور بچوں کو بھی معلوم ہے اور مبسوط کا مقام ایسا معنی مراد لینے سے بلند ہے تو اس کے کلام کو اسی طرف پھیرنا ضروری ہے جس سے امام ابوبکر جصاص، امام ابوزید دبوسی اور امام ابونصر صغار علیہم الرحمۃ نے تطبیق دی کہ مراد ایسی جگہ ہے جہاں پانی کم یاب نہ ہو اب مبسوط کا

کلام یہ ہوگا کہ (ایسی جگہ سوال نہ کیا) جہاں پانی دینے کا گمان ہو۔ پھر یہ کیسے کہا جائے گا کہ (عدمِ سوال مبطل ہے) خواہ اسے دینے کا ظن ہو یا نہ دینے کا یا شک کی صورت ہو۔

وثالثا: هل (٢) السؤال مطلقا سواء ظن ظنا اوشك واجب عليه غير مشترط لصحة الصلاة ام هو شرطها على الثانى كيف صح الشروع فيها بلا سؤال وكيف جاز المضي فيها لمن ظن

ثالثا: کیا ایسا ہے کہ مانگنا خواہ کوئی گمان ہو یا شک ہو مطلقاً اس پر واجب ہے مگر صحتِ نماز کی شرط نہیں یا اس کی شرط بھی ہے۔ بر تقدیر ثانی بغیر مانگے اس کا نماز شروع کرنا کیسے صحیح ہوا؟ اور ظنِ منع یا شک والے کیلئے

Fatawa Razawiyya Volume Four

[Left Column - Arabic] Prevented and doubted, rather, how did you say regarding one who expects a gift that it cuts it off? Verily, cutting off is for what has been established. What is the benefit of the difference here between the expectation of a gift and something else? Abandoning a condition is absolutely nullifying. How did you allow it when he asked after it and he refused, even if he expected the gift? Indeed, what occurred as void due to the loss of one of the conditions of validity does not turn into valid afterwards, like one who thought of the proximity of water but did not seek it, and prayed with Tayammum, then sought and did not find it; it is also void, as previously mentioned from 'As-Siraj al-Wahhaj' and 'Al-Jawharah'. Rather, how can a question that was a condition for it be delayed, and the condition is not delayed from...

[Right Column - Urdu Translation/Explanation] How did it become permissible to continue performing this prayer? Rather, the question is also: for someone who has an expectation of a gift, why did you say that he should break the prayer? Breaking is only for that which has already been tied and established. What is the use of the difference between the expectation of a gift and anything else here? Abandoning a condition is absolutely nullifying. And in this case, you declared the prayer complete when he asked after the prayer and the other person refused, even though he had been expecting a gift. The question on this is: how did you declare the prayer complete? An action that occurred as void due to the lack of a condition for validity cannot change into a valid form afterwards. Its situation is like someone who expected the proximity of water but did not search for water. He prayed with Tayammum, then searched and did not find it; even then his prayer is void, as stated with reference to 'Siraj al-Wahhaj' and 'Jawharah'. Rather, how can the question, which was a condition for the prayer, be delayed after the prayer? A condition cannot be delayed from the thing conditioned (mashroot).

[Bottom Section - Arabic Text] Note: If you say, how do you say this despite their explicit statement that (1) the follower's knowledge of the imam's state of travel or residency is a condition for the validity of following (iqtida), as in al-Khaniyah, al-Bahr, al-Durr, and others, then they explicitly stated that its attainment from the beginning is not a condition, but rather its attainment after the prayer is sufficient, for example, by the imam's information that he...

[Bottom Section - Urdu Translation] If the question is, how are you saying this when the jurists have explicitly stated that for the follower to know the imam's state of travel or residency is a "condition for the validity of following," as it is in Khaniyah, Bahr, and Dur Mukhtar, etc. Then it is also explicitly stated that it is not a condition to have this knowledge from the very beginning, but even knowing it after the prayer is sufficient; for example, if the imam (after the prayer) says that he... (continued on the next page)

[बायां कॉलम - अरबी] मना किया गया और संदेह किया गया, बल्कि आपने उस व्यक्ति के बारे में कैसे कहा जो उपहार की उम्मीद रखता है कि यह उसे काट देता है? वास्तव में, काटना उसी के लिए है जो स्थापित हो चुका है। यहाँ उपहार की अपेक्षा और अन्य के बीच के अंतर का क्या लाभ है? शर्त को छोड़ना पूर्णतः अमान्यकारी है। आपने इसकी अनुमति कैसे दी जब उसने इसके बाद माँगा और उसने मना कर दिया, भले ही वह उपहार की उम्मीद कर रहा था? वास्तव में, वैधता की शर्तों में से एक के अभाव के कारण जो अमान्य हुआ, वह बाद में वैध नहीं हो जाता, जैसे कि वह जिसने पानी की निकटता के बारे में सोचा लेकिन उसकी तलाश नहीं की, और तयम्मुम के साथ प्रार्थना की, फिर खोजा और नहीं पाया; यह भी अमान्य है, जैसा कि पहले 'अस-सिराज अल-वहाज' और 'अल-जौहरा' से उल्लेख किया गया है। बल्कि, वह प्रश्न जो इसके लिए एक शर्त था, कैसे विलंबित हो सकता है, और शर्त...

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] इस नमाज़ की अदायगी पर बरक़रार रहना कैसे जायज़ हुआ? बल्कि यह सवाल भी है कि जो अता (दान) की उम्मीद रखता हो उसके लिए आपने यह क्यों कहा कि नमाज़ तोड़ दे? तोड़ना तो उसी का होता है जो बंध चुका हो और जिसका इनेक़ाद (शुरुआत) हो गया हो और यहाँ अता की उम्मीद और इसके अलावा में फ़र्क़ से क्या फ़ायदा? शर्त का तर्क(छोड़ना) तो मुतलक़न मुब्तिल (अमान्य करने वाला) है और इस सूरत में आपने नमाज़ को ताम (पूर्ण) क़रार दिया जब उसने बाद-ए-नमाज़ तलब किया और उसने इनकार कर दिया अगरचे उसे अता का गुमान रहा हो। इस पर सवाल यह है कि आपने नमाज़ को ताम कैसे क़रार दिया? जो अमल किसी शर्ते-सेहत (वैधता की शर्त) के फ़क़दान (अभाव) की वजह से बातिल (अमान्य) वाक़े हुआ वह बाद में जायज़ की सूरत में तब्दील नहीं हो सकता। ऐसे ही उसका हाल है जिसे क़ुर्बे-आब (पानी की निकटता) का गुमान था और उसने पानी तलाश न किया। तयम्मुम से नमाज़ पढ़ ली फिर तलाश किया तो न पाया तब भी उसकी नमाज़ बातिल है जैसा कि सिराज वह्ाज और जौहरा के हवाले से बयान हुआ। बल्कि जो सवाल नमाज़ की शर्त था वह नमाज़ से मुअख़्ख़र (बाद में) कैसे होगा? शर्त तो मशरूत से मुअख़्ख़र...

[नीचे का भाग - अरबी पाठ] नोट: यदि आप कहें, आप उनके स्पष्ट कथन के बावजूद यह कैसे कहते हैं कि (1) इमाम की यात्रा या निवास की स्थिति के बारे में अनुयायी का ज्ञान इक्तिदा (पीछे चलने) की वैधता के लिए एक शर्त है, जैसा कि अल-खानिया, अल-बहर, अल-दुर्र और अन्य में है, फिर उन्होंने

स्पष्ट रूप से कहा कि शुरुआत से इसकी प्राप्ति एक शर्त नहीं है, बल्कि प्रार्थना के बाद इसकी प्राप्ति पर्याप्त है, उदाहरण के लिए, इमाम की जानकारी से कि वह...

[नीचे का भाग - उर्दू अनुवाद] अगर यह सवाल हो कि आप यह कैसे कह रहे हैं कि फ़ुक़हा (धर्मशास्त्रियों) ने सराहत (स्पष्टता) फ़रमाई है कि मुक्तदी को इमाम की हालत-ए-सफ़र व इक़ामत का इल्म होना 'सेहते-इक्तिदा की शर्त है' जैसा कि खानिया, बहर और दुर्रे-मुख़्तार वग़ैरह में है। फिर यह भी सराहत फ़रमाई है कि शुरू ही से यह इल्म होना शर्त नहीं बल्कि बाद-ए-नमाज़ यह इल्म हो जाना भी काफ़ी है मसलन इस तरह कि इमाम (बाद-ए-नमाज़) बता दे कि वह (बाक़ी अगले सफ़हे पर)

فتاوی رضویه جلد چهارم

[بایاں کالم - عربی] منعاوشک بل وکیف قلتم فیمن یظن العطاء یقطعها وانما القطع لما انعقد وما ذا نفع الفرق ههنا بین ظن العطاء وغیره فترك الشرط مبطل مطلقاً وکیف امضیتموها اذا سأل بعدها فابی وان کان یظن العطاء فان ما وقع باطلا لفقد شرط من شروط الصحة لا ینقلب جائزا بعد کمن ظن قربه ولم یطلب وصلی بالتیمم ثم طلب فلم یجد بطلت ایضاً کما تقدم عن السراج الوهاج والجوهرة- بل کیف یتأخر عنها سؤال کان شرطالها والشرط لا یتأخر عن

[دایاں کالم - اردو] اس نماز کی ادائیگی پر برقرار رہنا کیسے جائز ہوا؟ بلکہ یہ سوال بھی ہے کہ جو عطاء کا ظن رکھتا ہو اس کیلئے آپ نے یہ کیوں کہا کہ نماز توڑ دے؟ توڑنا تو اسی کا ہوتا ہے جو بندھ چکا ہو اور جس کا انعقاد ہو گیا ہو اور یہاں ظن عطا اور اس کے ماسوا میں فرق سے کیا فائدہ؟ شرط کا ترک تو مطلقاً مبطل ہے اور اس صورت میں آپ نے نماز کو تام قرار دیا جب اس نے بعد نماز طلب کیا اور اس نے انکار کردیا اگرچہ اسے عطا کا گمان رہا ہو اس پر سوال یہ ہے کہ آپ نے نماز کو تام کیسے قرار دیا؟ جو عمل کسی شرط صحت کے فقدان کی وجہ سے باطل واقع ہوا وہ بعد میں جائز کی صورت میں تبدیل نہیں ہو سکتا۔ ایسے اس کا حال ہے جسے قرب آب کا ظن تھا اور اس نے پانی تلاش نہ کیا۔ تیمم سے نماز پڑھ لی پھر تلاش کیا تو نہ پایا جب بھی اس کی نماز باطل ہے جیسا کہ سراج وہاج اور جوہرہ کے حوالہ سے بیان ہوا۔ بلکہ جو سوال نماز کی شرط تھا وہ نماز سے مؤخر کیسے ہوگا؟ شرط تو مشروط سے مؤخر

[نیچے کا حصہ - عربی] عه فان قلت کیف تقول هذا مع تصریحهم بأن (۱) علم المقتدی بحال الامام من سفر واقامة شرط صحة الاقتداء کما فی الخانیة والبحر والدر وغیرها ثم صرحوا بأنه لا یشترط حصوله من الابتداء بل یکفی حصوله بعد الصلاة باخبار الامام مثلا انه

[نیچے کا حصہ - اردو] اگر یہ سوال ہو کہ آپ یہ کیسے کہہ رہے ہیں کہ فقہاء نے صراحت فرمائی ہے کہ مقتدی کو امام کی حالت سفر واقامت کا علم ہونا "صحت اقتدا کی شرط ہے" جیسا کہ خانیہ، بحر اور در مختار وغیرہ میں ہے۔ پھر یہ بھی صراحت فرمائی ہے کہ شروع ہی سے یہ علم ہونا شرط نہیں بلکہ بعد نماز یہ علم ہو جانا بھی کافی ہے مثلاً اس طرح کہ امام (بعد نماز) بتا دے کہ وہ (باقی بر صفحہ آئندہ)

Regarding the "condition" (al-mashrut): On the first premise, why did you say that his prayer becomes void by failing to ask after it, even if he suspects a refusal or is in a state of doubt? A person's omission of some obligations does not invalidate his prayer as long as it does not disturb any of the conditions for its validity.

It does not. On the first premise, why did you say that after the prayer, by omitting the request, his prayer became void, even if he has a suspicion of refusal or it is a case of doubt? Omitting an obligation does not invalidate the prayer as long as it does not interfere with any condition of the prayer's validity.

If it is said: How did you judge his prayer to be void when he expected to be given but did not ask, while he only omitted something that is not a condition for the validity of prayer?

If this question arises: when he had a suspicion of receiving a gift and did not ask for it, how did you rule his prayer to be void, whereas he omitted an act that is not a condition for the validity of the prayer?

I say: Yes, the condition for the validity of prayer is purification (taharah), and the condition for this purification is the appearance of...

I say: (I will say) Why not? The condition for the validity of prayer is purification, and for this purification...

(Continuation of the footnote from the previous page) ...a traveler, as indicated in the core texts (mutun) and explicitly stated in 'al-Tawshih', 'al-Nihayah', 'al-Siraj', 'al-Tatarkhaniyah', 'al-Bahr', 'al-Durr', and others. They have permitted the condition to come after the thing being conditioned. I say: It is not so; rather, the research (1) into it is that it is a condition for the ruling on the validity of following (al-iqtida), not a condition for the act itself. This is the intent behind their mention of conditioning, as explained in 'al-Fath'. We have clarified this in the section on the traveler's prayer in our Fatawa. And success is from Allah. (12 from him, may Allah forgive him [m])

It is a traveler, as indicated in the texts regarding this scenario, and explicitly mentioned in al-Tawshih, Nihayah, Siraj, Tatarkhaniyah, Bahr, and Durr al-Mukhtar, etc. These scholars allowed the condition to follow the thing being conditioned. I say: (I will say in response) the matter is not like this. Rather, the research on this is that it is a condition for knowing the ruling on the validity of following (iqtida), not a

condition for the validity of iqtida itself. This is what the scholars meant by mentioning it as a condition, as derived from Fath al-Qadir. We have clarified this in the description of the traveler's prayer within our Fatawa. And success is from God alone. (21 from him, may Allah forgive him [t])

'मशरुत' (शर्त लगा हुआ) के बारे में: पहले आधार पर, आपने यह क्यों कहा कि प्रार्थना के बाद पूछना छोड़ने से उसकी प्रार्थना अमान्य हो गई, भले ही उसे इनकार का संदेह हो या संदेह की स्थिति हो? किसी व्यक्ति द्वारा कुछ अनिवार्यताओं को छोड़ देने से उसकी प्रार्थना तब तक अमान्य नहीं होती जब तक कि वह इसकी वैधता की किसी शर्त में बाधा न डाले।

नहीं होती। पहले आधार पर, आपने यह क्यों कहा कि प्रार्थना के बाद याचना छोड़ देने से उसकी नमाज़ अमान्य हो गई, भले ही उसे इनकार का संदेह हो या संदेह की स्थिति हो? वाजिब कार्य को छोड़ने से नमाज़ तब तक अमान्य नहीं होती जब तक वह नमाज़ की वैधता की किसी शर्त में बाधा न डाले।

यदि यह पूछा जाए: जब उसे मिलने की आशा थी और उसने नहीं माँगा, तो आपने उसकी प्रार्थना को अमान्य कैसे घोषित किया, जबकि उसने केवल वही छोड़ा जो प्रार्थना की वैधता के लिए शर्त नहीं है?

यदि यह प्रश्न हो कि जब उसे कुछ मिलने की आशा थी और उसने नहीं माँगा, तो आपने उसकी नमाज़ के अमान्य होने का आदेश कैसे दे दिया, जबकि उसने एक ऐसा काम छोड़ा जो नमाज़ की वैधता की शर्त नहीं है?

मैं कहता हूँ: हाँ, प्रार्थना की वैधता की शर्त पवित्रता (तहारत) है और इस पवित्रता की शर्त है प्रकट होना...

मैं कहता हूँ: (मैं कहूँगा) क्यों नहीं? नमाज़ के सही होने की शर्त पवित्रता है और इस पवित्रता की...

(पिछले पृष्ठ के फुटनोट का शेष भाग) ...मुसाफिर जैसा कि मूल ग्रंथों (मुतून) में संकेत दिया गया है और 'अल-तौशीह', 'अल-निहाया', 'अल-सिराज', 'अल-तातारखनियाह', 'अल-बहर', 'अल-दुर्र' आदि में स्पष्ट रूप से बताया गया है। उन्होंने मशरुत (जिस पर शर्त लगी हो) के बाद शर्त के आने को स्वीकार किया है। मैं कहता हूँ: ऐसा नहीं है; बल्कि इस पर शोध (1) यह है कि यह इक्तिदा (पीछे नमाज़ पढ़ने) की वैधता के नियम की शर्त है, स्वयं इक्तिदा की शर्त नहीं है। शर्त लगाने के उनके उल्लेख के पीछे यही उद्देश्य है, जैसा कि 'अल-फ़तह' में बताया गया है। हमने अपने फ़तावा में मुसाफिर की नमाज़ के विवरण में इसे स्पष्ट किया है। और सफलता अल्लाह की ओर से है। (12 उनसे, अल्लाह उन्हें क्षमा करे [म])

मुसाफिर है जैसा कि ग्रंथों में इस स्थिति की ओर संकेत किया गया है और तौशीह, निहाया, सिराज, तातारखनियाह, बहर और दुर्रे मुख्तार आदि में इसका स्पष्ट उल्लेख है। इन विद्वानों ने मशरुत के बाद शर्त का आना जायज़ माना है। मैं कहता हूँ: (मैं उत्तर में कहूँगा) मामला इस तरह नहीं है। बल्कि इस बारे में शोध यह है कि वह इक्तिदा की वैधता जानने के नियम के लिए शर्त है, स्वयं इक्तिदा की वैधता की शर्त नहीं। विद्वानों ने जो शर्त होने का उल्लेख किया है उससे यही तात्पर्य है जैसा कि फ़तह अल-क़दीर से प्राप्त होता है। हमने अपने फ़तावा के भीतर मुसाफिर की नमाज़ के बयान में इसे स्पष्ट किया है। और सफलता केवल ईश्वर से है। (21 उनसे, अल्लाह उन्हें क्षमा करे [त])

المشروط وعلی الاول لم قلتم بطلت صلاته بترك السؤال بعدها وان ظن منعا اوشك فترك المرء بعض ما يجب عليه لا يفسد صلاته مالم يخل ذلك بشيئ من شروط صحتها۔

نہیں ہوتی۔ بر تقدیر اول آپ نے یہ کیوں فرمایا کہ بعد نماز ترک سوال سے اس کی نماز باطل ہو گئی اگر چہ اسے انکار کا گمان ہو یا شک کی صورت ہو۔ ترک واجب سے نماز فاسد نہیں ہو جاتی جب کہ یہ صحت نماز کی کسی شرط میں خلل انداز نہ ہو۔

فان قلت کیف حکمتم ببطلان صلاته اذا ظن العطاء ولم یسأل فبامنه الاترك مالیس شرطا لصحة الصلاة۔

اگر یہ سوال ہو کہ جب اسے عطا کا ظن ہو اور نہ مانگے تو آپ نے اس کی نماز باطل ہونے کا کیسے حکم کردیا جبکہ اس نے ایک ایسا ہی کام ترک کیا جو صحت نماز کی شرط نہیں۔

اقول: بلی شرط صحة الصلاة الطهارة وشرط طهارته هذه ظهور

اقول: (میں کہوں گا) کیوں نہیں نماز صحیح ہونے کی شرط طہارت ہے اور اس طہارت کی...

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) مسافر کما اشیر الیه فی المتون وصرح به في التوشیح والنهایة والسراج والتتارخانیة والبحر والدر وغیرها فقد جوزوا تأخر الشرط عن المشروط اقول لیس هکذا بل التحقیق (۱) فیه انه شرط الحکم بصحة الاقتداء لاشرط نفسه وهو مراد ما ذکروا من الاشتراط کما افاده في الفتح واوضحناه في صلاة المسافر من فتاؤنا وبالله التوفیق ۱۲ منه غفرلہ (م)

مسافر ہے جیسا کہ متون میں اس صورت کی طرف اشارہ آیا ہے اور توشیح، نہایہ، سراج، تاتارخانیہ، بحر اور در مختار وغیرہما میں اس کی صراحت آئی ہے تو ان حضرات نے مشروط

سے شرط کا مؤخر ہونا جائز رکھا اقول: (میں جواباً کہوں گا) معاملہ اس طرح نہیں بلکہ اس بارے میں تحقیق یہ ہے کہ وہ علم صحت اقتدا کے حکم کیلئے شرط ہے خود صحت اقتدا کی شرط نہیں۔ علماء نے جو شرط ہونا ذکر کیا اس سے یہی مراد ہے جیسا کہ فتح القدیر سے یہ مستفاد ہے اور ہم نے اپنے فتاوی کے اندر نماز مسافر کے بیان میں اسے واضح کیا ہے اور خدا ہی سے توفیق ہے ۲۱ منہ غفرلہ (ت)

(Right Column translation) The condition is that the inability (ajz) must be manifest. The manifestation of inability is terminated by a suspicion of giving (ata) against which no contrary evidence appears. Thus, when one suspects a gift, it shall be ruled that the invalidity of the prayer is suspended until something contrary to that suspicion appears; then the prayer becomes correct. Otherwise, if nothing contrary appears, the prayer becomes definitively invalid, as I mentioned in the last ruling. When he did not ask and no contradiction to his suspicion of giving appeared, the invalidity of the prayer became certain, not because asking is a condition, but because the manifestation of inability is absent. This contrasts with the case of suspecting refusal, because no contradiction to the manifestation of inability was found there. This is clear. Similarly, as long as doubt remains, because it is a possibility without evidence, it will not contradict the apparent, as I researched at the end of the sixth ruling. All praise is for Allah. (T)

I say: Now observe that here, at first glance, several objections arise against the apparent wording of Imam Sadr al-Shari'ah, which we wish to mention and then refute. First Objection: You have equated doubt in giving and withholding with doubt in capability and inability. In this respect, the suspicion of withholding would be the suspicion of inability. Yet, you stated that for the sake of ease, the predominance of suspicion (ghalaba al-zhann) is placed in the position of the reality and certainty of capability and inability. Then, when a contradiction appears, it no longer stands in their place. This implies that if no contradiction appears, it continues to stand in their place. So why did you say that he who suspects withholding and does not ask afterward and is not given...

(Left Column translation) Inability and the manifestation of inability cease with a suspicion of giving as long as no contrary appears. So, if he suspects a gift, the judgment of the invalidity of his prayer is suspended until the contrary appears; then it is corrected, or otherwise, it is definitively invalidated as I explained at the end of the issues. Thus, if he does not ask, the contrary is not manifest, and its invalidity is definitive, not because asking is a condition, but due to the absence of the manifestation of inability. This is contrary to when he suspects withholding, for then no contradiction to the manifestation of inability is found, and it is manifest. Likewise, if he doubts because it is a possibility without evidence, it does not contradict the manifest, as I established at the end of the sixth issue, and praise be to Allah.

I say: Furthermore, here are several questions that arise regarding the apparent speech of the Imam at first glance. We intend to state them and refute them. First: You made doubt in giving and withholding a doubt in capability and inability. Therefore, suspicion of withholding is suspicion of inability. You have said that the predominance of suspicion is placed in place of the reality of capability and inability for facilitation. So, when the contrary appears, it no longer remains in their place. Thus, you informed us that if the contrary does not appear, it remains in their place. Then why did you say that he who suspects withholding and did not ask afterward and was not given...

(दाहिनी कॉलम का अनुवाद) शर्त यह है कि उसकी बेबसी (अज्ज़) ज़ाहिर हो। और बेबसी का ज़ाहिर होना देने (अता) के ऐसे गुमान से ख़त्म हो जाता है जिसके ख़िलाफ़ ज़ाहिर न हो। तो जब उसे अता का गुमान हो जाए, तो हुक्म दिया जाएगा कि उसकी नमाज़ का फ़ासिद (अमान्य) होना मुल्तवी रहेगा, यहाँ तक कि उस अता के गुमान के ख़िलाफ़ ज़ाहिर हो, तो नमाज़ सही हो जाएगी। या अगर उसके ख़िलाफ़ ज़ाहिर न हो, तो नमाज़ निश्चित रूप से फ़ासिद हो जाएगी, जैसा कि मैंने आख़िरी मसले में बयान किया। जब उसने सवाल नहीं किया और उसकी अता के गुमान के ख़िलाफ़ कुछ ज़ाहिर नहीं हुआ, तो नमाज़ का फ़साद निश्चित हो गया। इसलिए नहीं कि सवाल शर्त है, बल्कि इसलिए कि बेबसी का ज़ाहिर होना मौजूद नहीं है। इसके विपरीत उस स्थिति में जब इनकार का गुमान हो, क्योंकि वहाँ बेबसी के ज़ाहिर होने का कोई विरोधी नहीं पाया गया। यह तो स्पष्ट है। इसी तरह जब तक संदेह रहे, क्योंकि यह बिना दलील की एक संभावना है, तो यह ज़ाहिर के विरोधी नहीं होगा, जैसा कि मैंने छठे मसले के अंत में इसकी तहक़ीक़ की है। और अल्लाह ही के लिए प्रशंसा है। (त)

मैं कहता हूँ: अब यह देखिए कि यहाँ इमाम सदरुश्शरिया के ज़ाहिरी कलाम पर पहली नज़र में कुछ आपत्तियाँ आती हैं, जिन्हें हम ज़िक्र करके उनका खंडन करना चाहते हैं। पहली आपत्ति: देने और रोकने में शक को आपने.क़ुदरत (शक्ति) और अज्ज़ (बेबसी) में शक क़रार दिया है। इस लिहाज़ से रोकने का गुमान बेबसी का गुमान होगा, जबकि आपने फ़रमाया है कि 'ग़लबा-ए-ज़न्न' (प्रबल धारणा) को आसानी के लिए.क़ुदरत और अज्ज़ की हक़ीक़त और यक़ीन के स्थान पर रखा गया है। फिर जब इसके ख़िलाफ़ ज़ाहिर हो जाए, तो वह.क़ुदरत और अज्ज़ की हक़ीक़त का स्थान लेने वाला नहीं रहता। इससे यह सिद्ध हुआ कि जब इसके ख़िलाफ़ ज़ाहिर न हो, तो वह उनके स्थान पर बना रहता है। फिर आपने क्यों कहा कि जिसने रोकने का गुमान किया और उसके बाद नहीं माँगा और उसे नहीं दिया गया...

(बाईं कॉलम का अनुवाद) बेबसी और बेबसी का ज़ाहिर होना अता के गुमान से मिट जाता है जब तक कि उसके विपरीत ज़ाहिर न हो। तो जब वह अता का गुमान करता है, तो उसकी नमाज़ के फ़ासिद होने का हुक्म मुल्तवी रहता है जब तक कि विपरीत ज़ाहिर न हो। फिर पहले सही होती है, फिर पूरी तरह फ़ासिद हो जाती है जैसा कि मैंने मसलों के अंत में स्पष्ट किया है। अतः यदि वह नहीं माँगता है, तो विपरीत ज़ाहिर नहीं होता, और इसका फ़साद निश्चित हो जाता है, सवाल के शर्त होने के कारण नहीं, बल्कि बेबसी के ज़ाहिर न होने के कारण। इसके विपरीत जब वह रोकने का गुमान

करता है, क्योंकि तब बेबसी के ज़ाहिर होने का कोई विरोधी नहीं मिलता, और वह ज़ाहिर है। इसी तरह यदि वह संदेह करता है क्योंकि यह बिना प्रमाण के एक संभावना है, तो यह ज़ाहिर का विरोध नहीं करता, जैसा कि मैंने छठे मसले के अंत में प्रमाणित किया है, और अल्लाह का शुक्र है।

मैं कहता हूँ: इसके अलावा, यहाँ इमाम के ज़ाहिरी कलाम पर पहली नज़र में कई सवाल उठते हैं। हमने उन्हें पेश करके और उनका खंडन करके उत्तर दिया। पहला: आपने देने और रोकने में शक को.क़ुद्दरत और अज्ज़ में शक बना दिया। इसलिए रोकने का गुमान बेबसी का गुमान है। आपने कहा है कि प्रबल धारणा को सरलता के लिए.क़ुद्दरत और अज्ज़ की वास्तविकता के स्थान पर रखा गया है। तो जब इसके विपरीत ज़ाहिर होता है, तो वह उनके स्थान पर नहीं रहता। इस प्रकार आपने बताया कि यदि विपरीत ज़ाहिर न हो, तो वह उनके स्थान पर बना रहता है। फिर आपने क्यों कहा कि जिसने रोकने का गुमान किया और उसके बाद नहीं माँगा और उसे नहीं दिया गया...

(دائیں جانب کا کالم) شرط یہ ہے کہ اس کا عجز ظاہر ہو۔ اور ظہور عجز ایسے ظن عطا سے ختم ہو جاتا ہے جس کے خلاف ظاہر نہ ہو۔ تو جب اسے عطا کا گمان ہو جائے حکم کیا جائے گا کہ اس کی نماز کا فاسد ہونا موقوف رہے گا یہاں تک کہ اس گمان عطا کے خلاف ظاہر ہو تو نماز صحیح ہو جائے گی یا اس کے خلاف ظاہر نہ ہو تو نماز قطعی طور پر فاسد ہو جائے گی جیسا کہ میں نے آخری مسئلہ میں بیان کیا جب اس نے سوال نہ کیا اس کے ظن عطا کے خلاف ظاہر نہ ہوا تو فسادِ نماز قطعی ہو گیا اس لئے نہیں کہ سوال شرط ہے بلکہ اس لئے کہ ظہور عجز مفقود ہے۔ بخلاف اس صورت کے جب انکار کا ظن ہو اس لئے کہ ظہور عجز کا کوئی معارض نہ پایا گیا یہ تو واضح ہے اسی طرح جب تک رہا ہو اس لئے کہ یہ احتمال بلا دلیل ہے تو ظاہر کے معارض نہ ہو گا جیسا کہ میں نے مسئلہ ششم کے آخر میں اس کی تحقیق کی ہے۔ اور خدا ہی کیلئے حمد ہے۔

(ت) اقول: اب یہ دیکھئے کہ یہاں امام صدر الشریعہ کے ظاہر کلام پر بادی النظر میں چند اعتراض وارد ہوتے ہیں جنہیں ہم ذکر کر کے ان کی تردید کر دینا چاہتے ہیں۔ پہلا اعتراض: عطاء و منع میں شک کو آپ نے قدرت و عجز میں شک قرار دیا ہے اس لحاظ سے ظن منع ظن عجز ہو گا جبکہ آپ نے فرمایا ہے کہ غلبہ ظن کو آسانی کیلئے قدرت و عجز کی حقیقت ویقین کے قائم مقام رکھا گیا ہے پھر جب اس کے خلاف ظاہر ہو جائے تو وہ حقیقت قدرت و عجز کے قائم مقام نہیں رہ جاتا اس سے یہ مستفاد ہوا کہ جب اس کے خلاف نہ ظاہر ہو تو وہ

(بائیں جانب کا کالم) العجز و ظهور العجز يزول بظن عطاء لم يظهر خلافه فاذ اظن العطاء حكم بفساد صلاته موقوفا الى ان يظهر خلافه فتصح اولا فتفسد باتا كما بينت آخر المسائل فأذا لم يسأل لم يظهر فبت فسادها لالاتشراط السؤال بل لفقدان ظهور العجز بخلاف ما اذا ظن المنع فأنه لم يوجد

معارض لظهور العجز وهو ظاهر وكذا اذا شك لكونه احتمالا لامن دليل فلا يعارض الظاهر كما حققت آخر المسألة السادسة ولله الحمد. اقول: ثم ههنا عدة اسئلة ترد على ظاهر كلام الامام في النظر الظاهر اجبنا ان نوردها و نردها الاول جعلتم الشك فى الاعطاء والمنع شكا في القدرة والعجز فأذن ظن المنع ظن العجز وقد قلتم ان غلبة الظن اقيم مقام حقيقة القدرة والعجز تيسيرا فاذا ظهر خلافه لم يبق قائما مقامهما فقد افدتم انه اذالم يظهر خلافه يبقى قائما مقامهما فلم قلتم ان من ظن المنع و لم يسأل بعد و لم يعطه

Volume 4 | Fatawa Rizvia

(Top text excerpt) Arabic: His prayer is voided, even though he had the assumption of incapacity and nothing contrary to it appeared; thus, it stands in place of the reality of incapacity. Urdu Explanation: Both stand in each other's place. Then how did you state that for one who assumes refusal, and hasn't asked yet, nor has the owner of the water given it to him, his prayer becomes void? This is despite the fact that he has the assumption of incapacity, and nothing contrary to it has appeared, so it should stand in place of the reality of incapacity.

Second Objection: He saw water while praying and assumed it would be refused, so he completed the prayer as you commanded. When he finished, he found that the owner had left and he didn't know his location. So when do you make it obligatory for him to ask? If during prayer, then breaking the prayer would be obligatory, while you have forbidden that. Or if after prayer, then he has already left and disappeared. In such a case, making asking obligatory is to make an impossible matter obligatory. Inevitably, one must maintain that the ruling revolves around his assumption.

Third Objection: If you make asking obligatory in every case, and if he doesn't ask, you rule absolute invalidity, then there is no doubt that his assumption is isolated from the ruling when asking is omitted. And if he asks, the reality is revealed and the assumption leaves the scene. So when is it established in its (reality's) place, while it (assumption) has nothing but disappearance?

Page 148 of 761

(शीर्ष पाठ का अंश) अरबी: "उसकी नमाज़ बातिल (अमान्य) हो गई, जबकि उसके पास असमर्थता का अनुमान था और उसके विपरीत कुछ भी प्रकट नहीं हुआ; अतः यह (अनुमान) असमर्थता की वास्तविकता के स्थान पर खड़ा होता है।" उर्दू व्याख्या: इन दोनों के स्थान पर रहता है। फिर आपने यह कैसे कहा कि जिसे इनकार का गुमान (संदेह) हो और उसने अभी माँगा नहीं और पानी वाले ने उसे दिया भी नहीं तो उसकी नमाज़ बातिल हो गई, बावजूद इसके कि उसे असमर्थता का गुमान है और इसके विपरीत प्रकट भी नहीं हुआ, तो वह असमर्थता की वास्तविकता के स्थान पर रहेगा।

दूसरा एतराज: उसने नमाज़ पढ़ते समय पानी देखा और उसे इनकार का गुमान हुआ, तो जैसा कि आपने आदेश दिया उसने नमाज़ पूरी कर ली। जब वह फारिग हुआ तो देखा कि पानी वाला चला गया है, अब वह कहाँ है पता नहीं। तो अब उसके ज़िम्मे आप माँगना कब अनिवार्य करते हैं? यदि नमाज़ के दौरान ही अनिवार्य करते हैं, तो नमाज़ तोड़ना अनिवार्य होगा, जबकि आपने इससे मना किया है। और यदि नमाज़ के बाद अनिवार्य करते हैं, तो अब वह चला गया और गायब हो गया। ऐसी स्थिति में उससे माँगने को अनिवार्य करना एक असंभव कार्य को अनिवार्य करना है। लाज़मी तौर पर उसके गुमान (संदेह) पर ही हुक्म (आदेश) का आधार रखने का कायल होना पड़ेगा।

तीसरा एतराज: जब आपने हर हाल में माँगना अनिवार्य किया और यदि नहीं माँगा तो पूर्णतः बातिल होने का हुक्म दिया, तो इसमें कोई संदेह नहीं कि सवाल (पूछने) को छोड़ने की स्थिति में उसका गुमान हुक्म से अलग है। और यदि सवाल किया तो वास्तविकता स्वयं प्रकट हो जाती है और गुमान मैदान से बाहर हो जाता है। तो गुमान को वास्तविकता के स्थान पर कब रखा गया जबकि उसके हिस्से में ज़वाल (समाप्ति) के सिवा कुछ भी नहीं है?

पृष्ठ 148 का 761

(بالائی عبارت کا اقتباس) صاحبه بطلت صلاته مع ان عنده ظن العجز و لم یظهر خلافه فیکون قائماً مقام حقیقة العجز۔ اردو تشریح: ان دونوں کے قائم مقام رہتا ہے پھر آپ نے یہ کیسے فرمایا کہ جسے انکار کا گمان ہو اور اس نے ابھی مانگا نہیں اور پانی والے نے اسے دیا بھی نہیں تو اس کی نماز باطل ہو گئی باوجودیکہ اسے عجز کا گمان ہے اور اس کے خلاف ظاہر بھی نہ ہوا تو وہ حقیقت عجز کے قائم مقام رہے گا۔

الثاني: رأی الماء وهو یصلی وظن المنع فأتم کما امرتم فلما فرغ وجد صاحبه قد ذهب ولا یدری مکانه فمتی توجبون علیه السؤال افی صلاته فیجب القطع وقد نهیتموه ام بعدها وقد ذهب وغاب فایجاب السؤال ایجاب المحال فوجب القول بإدارة الحکم علی ظنه۔ دوسرا اعتراض: اس نے نماز پڑھتے وقت پانی دیکھا اور اسے انکار کا گمان ہوا تو جیسا کہ آپ نے حکم دیا ہے اس نے نماز پوری کر لی جب فارغ ہوا تو دیکھا کہ پانی والا چلا گیا اب کہاں ہے پتا نہیں۔ تو اب اس کے ذمہ آپ مانگنا کب واجب کرتے ہیں اگر نماز کے دوران ہی واجب کرتے ہیں تو نماز توڑنا واجب ہو گا جب کہ اس سے آپ نے منع فرمایا ہے اور اگر بعد نماز واجب کرتے ہیں تو اب وہ چلا گیا اور غائب ہو گیا ایسی صورت میں اس سے مانگنے کو واجب کرنا ایک امر محال کو واجب کرنا ہے لامحالہ اس کے ظن ہی پر مدارِ حکم رکھنے کا قائل ہونا پڑے گا۔

الثالث: اذا اوجبتم السؤال بکل حال وان لم یسأل حکمتم مطلقاً بالابطال فلاشك ان ظنه بمعزل عن الحکم عند ترك السؤال واذا سأل ظهرت الحقیقة وانسلّ الظن عن المجال فمتی اقیم مقامها وماله الا الزوال* تیسرا اعتراض: جب آپ نے ہر حال میں مانگنا واجب کیا اور اگر نہ مانگا تو مطلقاً ابطال کا حکم دیا اب دو ہی صورتیں ہیں سوال یا ترک سوال۔ ترکِ سوال کی صورت میں تو صاف ظاہر ہے کہ

اس کے ظن کا حکم سے کوئی تعلق نہیں اور سوال کی صورت میں حقیقت خود ہی منکشف ہو جاتی ہے اور ظن میدان سے نکل جاتا ہے تو ظن کو حقیقت کے قائم مقام کب رکھا گیا جبکہ اس کے حصہ میں زوال کے سوا کچھ بھی نہیں۔

صفحہ 148 از 761

Volume 4 | Fatawa Rizvia

I say: The answer to all in a single word is that asking is mandatory as long as it is possible. When it is difficult, the ruling depends on one's assumption. And Sadr al-Shari'ah's statement "if its contrary appeared" (so when its opposite appeared) does not fall under the ruling for its meaning to be taken; rather, it is under the reasoning for a matter, and what occurred in it was the appearance of its contrary, so the matter was based on that. And Allah Almighty knows best. (T)

I say: The answer to all in a single word is that in the case of possibility, asking is mandatory. When it is difficult, the basis of the ruling is on assumption (dhan). And Sadr al-Shari'ah's statement "Fa'idha dhahara khilafahu" (so when its contrary appeared) is not under the ruling so that its meaning is taken, but rather it is under the reasoning of a matter, and what happened in it was that its contrary appeared, so the basis of the work was kept on it, and the Supreme God is the Knower of all. (T)

Second: The Maritime Law | Second: Law of Allama Sahib al-Bahr

He (may Allah have mercy on him) said: "When the person who performed tayammum sees sufficient water with a man, it is not without two situations: either he is in prayer or outside it. In each of them, he either strongly assumes giving, or not giving, or he is in doubt. In each of them, he either asked him first or not. In each of them, he either gave him first or not. So these are twenty-four scenarios. If he is in prayer and strongly assumes giving, he should break [the prayer] and ask for water. If he gives, he performs wudu; otherwise, his tayammum remains. If he completes it and then asks, if he gives, he restarts [the prayer]; if he refuses, it is complete. Likewise, if he refuses and then gives. If he strongly assumes not giving or is in doubt, he does not break his prayer. If he breaks and asks, if he gives, he performs wudu; otherwise, his tayammum remains. If he completes and then asks, if he gives, it becomes invalid; if he refuses, it is complete."

Sahib al-Bahr (may Allah Almighty have mercy on him) said: "It became known that when the person who performed tayammum sees sufficient water with a person, it is not free from two situations: either this seeing will be inside the prayer or outside the prayer. And in each, there will either be a predominance of assumption (dhan) of giving or there will be doubt. And in each of these, he will either have asked of him or not. And in each, either he will have given or not given, so these are twenty-four (24) situations. If it is inside the prayer and there is a predominance of assumption of giving, then he should break the prayer and ask for water. If he gives, then he should

perform wudu, otherwise his tayammum remains. If he completes the prayer and then asks, then if he gives, he should pray anew, and if he refuses, then his prayer is complete. Similarly, when he refuses and then gives. And if he has a predominance of assumption of him not giving or there is doubt, then the prayer..."

जिल्द 4 | फ़तावा रज़विया

मैं कहता हूँ: सबका उत्तर एक ही शब्द में यह है कि जहाँ तक संभव हो पूछना अनिवार्य है। जब यह कठिन हो जाए, तो आदेश धारणा (ज़न) पर निर्भर करता है। और सद्रुश-शरीअह का कथन "फ़ज़ा ज़हरा ख़िलाफ़ुहू" (तो जब इसके विपरीत प्रकट हुआ) आदेश के अंतर्गत नहीं है कि इसका अर्थ लिया जाए, बल्कि यह एक मसले की तअलील (तर्क) के तहत है, और इसमें वास्तव में यही हुआ था कि इसके विपरीत प्रकट हुआ, इसलिए कार्य का आधार इसी पर रखा गया। और सर्वोच्च ईश्वर बेहतर जानने वाला है। (त)

मैं कहता हूँ: एक शब्द में सबका जवाब यह है कि संभावना की स्थिति में सवाल वाजिब है जब यह मुश्किल हो जाए तो हुक्म का दारोमदार गुमान पर है। और सद्रुश-शरीअह का कौल "फ़ज़ा ज़हरा ख़िलाफ़ुहू" (तो जब इसके खिलाफ ज़ाहिर हुआ) हुक्म के तहत नहीं कि इसका मफ़हूम लिया जाए बल्कि वह एक मसले की तअलील के तहत है और उसमें वाक़े यही था कि इसके खिलाफ ज़ाहिर हुआ, तो बिना-ए-कार इसी पर रखी और ख़ुदा-ए-बर्तर ख़ूब जानने वाला है। (त)

द्वितीय: समुद्री कानून | दूसरा: अल्लामा साहब अल-बहर का कानून

उन्होंने (अल्लाह उन पर रहम करे) कहा: "जब तयम्मुम करने वाला किसी व्यक्ति के पास पर्याप्त पानी देखे, तो यह दो स्थितियों से मुक्त नहीं है: या तो वह नमाज़ में होगा या उससे बाहर। और प्रत्येक में, या तो वह देने का प्रबल अनुमान लगाएगा, या न देने का, या उसे संदेह होगा। और प्रत्येक में, या तो उसने पहले उससे माँगा होगा या नहीं। और प्रत्येक में, या तो उसने उसे पहले दिया होगा या नहीं। तो ये चौबीस स्थितियाँ हैं। यदि वह नमाज़ में है और देने का प्रबल अनुमान लगाता है, तो उसे [नमाज़] तोड़ देनी चाहिए और पानी माँगना चाहिए। यदि वह देता है, तो वह वुज़ू करता है; अन्यथा, उसका तयम्मुम बना रहता है। यदि वह इसे पूरा करता है और फिर माँगता है, यदि वह देता है, तो वह [नमाज़] फिर से शुरू करता है; यदि वह मना करता है, तो यह पूर्ण है। इसी तरह, यदि वह मना करता है और फिर देता है। यदि वह न देने का प्रबल अनुमान लगाता है या संदेह में है, तो वह अपनी नमाज़ नहीं तोड़ता। यदि वह तोड़ता है और माँगता है, यदि वह देता है, तो वह वुज़ू करता है; अन्यथा, उसका तयम्मुम बना रहता है। यदि वह पूरा करता है और फिर माँगता है, यदि वह देता है, तो वह अमान्य हो जाता है; यदि वह मना करता है, तो वह पूर्ण है।"

साहब-ए-बहर (रहमतुल्लाह अलैहि) ने फ़रमाया: "मालूम हुआ कि तयम्मुम वाला जब किसी आदमी के साथ आब-ए-काफी (पर्याप्त पानी) देखे तो दो सूरतों से खाली नहीं या तो यह देखना अंदरून-ए-नमाज़ होगा या बैरून-ए-नमाज़ होगा। और हर एक में या तो देने का गलबा-ए-ज़न (प्रबल धारणा) होगा या शक होगा। और उनमें से हर एक में या तो उससे तलब किया होगा या न किया होगा। और हर एक में या तो उसने दिया होगा या न दिया होगा तो ये चौबीस २४ सूरतें हुईं। अगर अंदरून-ए-नमाज़ हो और देने का गलबा-ए-ज़न हो तो नमाज़ तोड़ दे और पानी तलब करे। अगर दे दे तो वुज़ू करे वरना उसका तयम्मुम बाकी है अगर नमाज़ पूरी कर ली फिर माँगा तो अगर दे दे अज़ सर-ए-नौ (नए सिरे से) नमाज़ पढ़े और अगर इनकार कर दे तो उसकी नमाज़ पूरी हो गई। इसी तरह जब इनकार कर दे फिर दे दे। और अगर उसे न देने का गलबा-ए-ज़न हो या शक हो तो नमाज़..."

جلد چہارم | فتاوی رضویہ

اقول: والجواب عن الكل في حرف واحد ان السؤال واجب مهما امكن فاذا تعذر دار الامر على الظن* وقوله (1) فاذا ظهر خلافه ليس فى الحكم حتى يؤخذ مفهومه بل فى تعليل مسألة وكان الواقع فيها ظهور خلافه فبنى الامر عليه والله تعالى اعلم۔ | اقول: ایک حرف میں سب کا جواب یہ ہے کہ بصورتِ امکان سوال واجب ہے جب یہ متعذر ہو تو حکم کا مدار ظن پر ہے۔ اور صدر الشریعۃ کا قول "فاذا ظهر خلافه" (تو جب اس کے خلاف ظاہر ہوا) حکم کے تحت نہیں کہ اس کا مفہوم لیا جائے بلکہ وہ ایک مسئلہ کی تعلیل کے تحت ہے اور اس میں واقع یہی تھا کہ اس کے خلاف ظاہر ہوا، تو بنائے کار اسی پر رکھی اور خدائے برتر خوب جاننے والا ہے۔ (ت)

الثانی القانون البحری | دوم: قانون علامہ صاحب البحر

قال رحمه الله تعالى ان المتيمم اذا رأى مع رجل ماء كافيا فلا يخلو امااان يكون فى الصلاة او خارجها وفى كل منهما اما ان يغلب على ظنه الاعطاء او عدمه او يشك وفي كل منها اما ان سأله اولا وفى كل منها اما ان اعطاه اولا فهى اربعة وعشرون فان كان فى الصلاة وغلب على ظنه الاعطاء قطع وطلب الماء فان اعطاه توضأ والا فتيممه باق فلو اتمها ثم سأله فان اعطاه استأنف وان ابى تمت وكذا اذا ابى ثم اعطى وان غلب على ظنه عدم الاعطاء او شك لا يقطع صلاته فان قطع وسأل فان اعطاه توضأ والا فتيممه باق وان اتم ثم سأل فان اعطاه بطلت وان ابى تمت | صاحبِ بحر رحمہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا: "معلوم ہوا کہ تیمم والا جب کسی آدمی کے ساتھ آبِ کافی دیکھے تو دو صورتوں سے خالی نہیں یا تو یہ دیکھنا اندرونِ نماز ہوگا یا بیرونِ نماز ہوگا۔ اور ہر ایک میں یا تو دینے کا غلبہ ظن ہوگا یا شک ہوگا۔ اور ان میں سے ہر ایک میں یا تو اس سے طلب کیا ہوگا یا نہ کیا ہوگا۔ اور ہر ایک میں یا تو اس نے دیا ہوگا یا نہ دیا ہوگا تو یہ چوبیس ۲۴ صورتیں ہوئیں۔ اگر اندرونِ نماز ہو اور دینے

کا غلبہ ظن ہو تو نماز توڑ دے اور پانی طلب کرے۔ اگر دے دے تو وضو کرے ورنہ اس کا تیمم باقی ہے اگر نماز پوری کر لی پھر مانگا تو اگر دے دے از سر نو نماز پڑھے اور اگر انکار کر دے تو اس کی نماز پوری ہو گئی۔ اسی طرح جب انکار کر دے پھر دے دے۔ اور اگر اسے نہ دینے کا غلبہ ظن ہو یا شک ہو تو نماز

[Left Column - Arabic Text]: And if it is outside the prayer: if he did not ask, performed tayammum, and prayed, then the prayer is valid according to what is in al-Hidayah, but not valid according to what is in al-Mabsut. If he asked afterwards and was given, he repeats the prayer; otherwise, not, regardless of whether he thought he would be given, denied, or was in doubt. If he asked, and was given, he performs wudu. If he was denied, he performs tayammum and prays. If he was given afterwards, he does not need to repeat it, but his tayammum is broken. In this case, there is no place for thinking or doubting. This is the summary of what is in az-Ziyadat and others. This systematic approach is among the characteristics of this book. His brother and disciple, the meticulous researcher in al-Nahr, followed him, and it was narrated from him by Sh [Allama Shami] and confirmed. I say: Firstly: (1) Rather, following his method, there are sixty-six cases. His speech included the explanation of fifty-four, and twelve remained. This is because he either sees it during the prayer or before it. In each case, he either thinks he will be given, denied, or is in doubt, making six cases. In each of these, there are eleven scenarios, because he either asks before the prayer or after it, or not at all, how... and he advanced upon this.

[Right Column - Urdu Text]: ...does not break. And if he broke it and asked, if it was given, he should perform wudu, otherwise his tayammum remains valid. And if he completed it and then asked, if it was given, the prayer is void, and if refused, it is complete. If it is outside the prayer, and he did not ask and performed prayer with tayammum, the prayer is valid according to the text of Hidayah but invalid according to the explanation in Mabsut. If he asked after the prayer and was given, he should repeat it, otherwise not, whether there was an expectation of being given, refusal, or doubt. And if he asked, in the case of being given, he should perform wudu, and in the case of refusal, perform tayammum and pray. Now, if it is given after the prayer, there is no repetition for him, but the tayammum will break. In this category, there is no possibility of thought or doubt; all this is the summary of what is in Ziyadat etc. And this method of record-keeping is among the specialities of this book. His brother, the meticulous disciple, followed this in Al-Nahr al-Faiq. Allama Shami quoted from them and maintained it. (T) I say: Firstly: rather, according to their way of discourse, there are sixty-six (66) cases, of which fifty-four (54) cases are covered in their discourse, and twelve (12) cases remained. That is because he will see it either during the prayer or before the prayer. And in both cases, he will either have a presumption

of being given, or refusal, or doubt. These are six (6) cases, and in each of them there are eleven (11) cases because he will either ask before the prayer...

[Footer]: 1 Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi, 1/154. Page 150 of 761

[बायां कॉलम - अरबी पाठ का अनुवाद]: और यदि वह नमाज़ के बाहर हो: यदि उसने नहीं मांगा, तयम्मुम किया और नमाज़ पढ़ी, तो अल-हिदाया के अनुसार नमाज़ जायज़ है, लेकिन अल-मबसूत के अनुसार जायज़ नहीं है। यदि उसने बाद में मांगा और उसे दिया गया, तो वह नमाज़ दोहराएगा; अन्यथा नहीं, चाहे उसने सोचा हो कि उसे दिया जाएगा, मना किया जाएगा, या वह संदेह में था। यदि उसने मांगा और उसे दिया गया, तो वह वूज़ू करता है। यदि उसे मना कर दिया गया, तो वह तयम्मुम करता है और नमाज़ पढ़ता है। यदि उसे बाद में दिया गया, तो उसे दोहराने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन उसका तयम्मुम टूट जाता है। इस स्थिति में, सोचने या संदेह करने का कोई स्थान नहीं है। यह अज़-ज़ियादात और अन्य में जो है उसका सारांश है। यह व्यवस्थित दृष्टिकोण इस पुस्तक की विशेषताओं में से है। अल-नहर में उनके भाई और उनके शिष्य, सूक्ष्म शोधकर्ता ने उनका अनुसरण किया, और श [अल्लामा शामी] द्वारा उनसे इसे उद्धृत किया गया और इसकी पुष्टि की गई। मैं कहता हूँ: प्रथमतः: (१) बल्कि, उनके तरीके का अनुसरण करते हुए, छियासठ स्थितियां हैं। उनके भाषण में चौवन का स्पष्टीकरण शामिल था, और बारह शेष रह गईं। ऐसा इसलिए है क्योंकि वह इसे या तो नमाज़ के दौरान देखता है या उससे पहले। प्रत्येक स्थिति में, वह या तो सोचता है कि उसे दिया जाएगा, मना किया जाएगा, या संदेह में है, जिससे छह स्थितियां बनती हैं। इनमें से प्रत्येक में, ग्यारह परिदृश्य हैं, क्योंकि वह या तो नमाज़ से पहले मांगता है या उसके बाद, या बिल्कुल नहीं, कैसे... और उसने इस पर प्रगति की।

[दायां कॉलम - उर्दू पाठ का अनुवाद]: ...न तोड़े। और अगर तोड़ दी और मांगा तो अगर दे दे वज़ू करे वरना उसका तयम्मुम बाक़ी है। और अगर पूरी कर ली फिर मांगा तो अगर दे दे नमाज़ बातिल हो गई और अगर इनकार कर दे तो तमाम है और अगर बैरून-ए-नमाज़ हो तो अगर न मांगा और तयम्मुम से नमाज़ अदा कर ली तो कलाम-ए-हिदाया के मुताबिक़ नमाज़ हो गई और बयान-ए-मबसूत के मुताबिक़ न हुई। अगर बाद-ए-नमाज़ मांगा तो अगर वह दे दे इआदा करे वरना नहीं ख़्वाह अता का गुमान रहा हो या मना का या शक रहा हो। और अगर मांगा तो देने की सूरत में वज़ू करे और इनकार की सूरत में तयम्मुम करे और नमाज़ पढ़े। अब अगर बाद-ए-नमाज़ दे दे तो उस पर इआदा नहीं, तयम्मुम टूट जाएगा। इस क़िस्म में ज़न या शक की सूरत ही नहीं यह सब उसका हासिल है जो ज़ियादात वग़ैरा में है। और यह अंदाज़-ए-ज़ब्त इस किताब की ख़ुसूसियात से है। उनके बिरादर-ए-तल्मीज़-ए-मुदक़्क़िक़ ने अन्नहरुल फ़ाएक़ में इसी की पैरवी की। उनसे अल्लामा शामी ने

नक़ल किया और बरक़ार रखा। (त) अक़ूल (मैं कहता हूँ): अव्वलन: बल्कि यह उनकी रविश-ए-क़ायदा के मुताबिक़ छियासठ (६६) सूरतें हैं जिनमें से चव्वन (५४) सूरतों का बयान उनके कलाम के ज़िम में आ गया और बारह (१२) सूरतें रह गईं। वह इसलिए कि या तो वह अन्दरून-ए-नमाज़ देखेगा या क़बल-ए-नमाज़। और बहर दो सूरत या तो उसे अता का ज़न होगा या इनकार का, या शक होगा। यह छह (६) सूरतें हुईं और उनमें से हर एक ग्यारह (११) सूरतें हैं इसलिए कि वह या तो क़बल-ए-नमाज़ मांगेगा...

[फ़ुटर]: 1 अल-बहरर राइक़, बाबुत तयम्मुम, एच.एम. सईद कम्पनी कराची, 1/154. पृष्ठ 150/761

[بایاں کالم - عربی متن کا ترجمہ]: اور اگر نماز کے باہر ہو: تو اگر نہ مانگا اور تیمم کر کے نماز پڑھ لی تو ہدایہ کے مطابق نماز جائز ہو گئی اور مبسوط کے مطابق جائز نہیں، پھر اگر نماز کے بعد مانگا اور اس نے دے دیا تو نماز کا اعادہ کرے ورنہ نہیں، برابر ہے کہ اسے عطا کا گمان ہو یا منع کا یا شک ہو۔ اور اگر مانگا اور اس نے دے دیا تو وضو کرے، اور اگر اس نے منع کر دیا تو تیمم کرے اور نماز پڑھے، پھر اگر نماز کے بعد اسے مل گیا تو اس پر اعادہ نہیں ہے اور اس کا تیمم ٹوٹ جائے گا، اور اس قسم میں ظن یا شک پیش نہیں آتا۔ یہ زیادات وغیرہ کا خلاصہ ہے، اور یہ ضبط اس کتاب کی خصوصیات میں سے ہے، اور النہر میں ان کے بھائی اور ان کے شاگرد مدقق نے ان کی پیروی کی ہے، علامہ شامی نے ان سے اسے نقل کیا اور اسے برقرار رکھا۔ اقول: اولاً: (۱) بلکہ یہ ان کی اختیار کردہ روش پر چھیاسٹھ صورتیں ہیں، ان کے کلام میں چون کا بیان آ گیا اور بارہ رہ گئیں۔ وہ اس لیے کہ یا تو وہ اسے نماز میں دیکھے گا یا اس سے پہلے، اور ہر صورت میں یا تو اسے عطا کا ظن ہو گا یا منع کا یا شک کا، تو یہ چھ صورتیں ہوئیں، اور ان میں سے ہر ایک کی گیارہ صورتیں ہیں کیونکہ وہ یا تو نماز سے پہلے مانگے گا یا اس کے بعد یا بالکل نہیں، کیسے... اور اس پر اسے مقدم کیا۔

[دایاں کالم - اردو متن]: نہ توڑے۔ اور اگر توڑ دی اور مانگا تو اگر دے دے وضو کرے ورنہ اس کا تیمم باقی ہے۔ اور اگر پوری کر لی پھر مانگا تو اگر دے دے نماز باطل ہو گئی اور اگر انکار کر دے تو تمام ہے اور اگر بیرونِ نماز ہو تو اگر نہ مانگا اور تیمم سے نماز ادا کر لی تو کلامِ ہدایہ کے مطابق نماز ہو گئی اور بیانِ مبسوط کے مطابق نہ ہوئی اگر بعدِ نماز مانگا تو اگر وہ دے دے اعادہ کرے ورنہ نہیں خواہ عطا کا گمان رہا ہو یا منع کا یا شک رہا ہو۔ اور اگر مانگا تو دینے کی

صورت میں وضو کرے اور انکار کی صورت میں تیمم کرے اور نماز پڑھے۔ اب اگر بعدِ نماز دے دے تو اس پر اعادہ نہیں، تیمم ٹوٹ جائے گا۔ اس قسم میں ظن یا شک کی صورت ہی نہیں یہ سب اس کا حاصل ہے جو زیادات وغیرہ میں ہے۔ اور یہ اندازِ ضبط اس کتاب کی خصوصیات سے ہے اھ ان کے برادر تلمیذ مدقق نے النہر الفائق میں اسی کی پیروی کی۔ ان سے علامہ شامی نے نقل کیا اور برقرار رکھا۔ (ت) اقول: اولا: بلکہ یہ ان کی روشِ کلام کے مطابق چھیاسٹھ ۲۶ صورتیں ہیں جن میں سے چن ۵۴ صورتوں کا بیان ان کے کلام کے ضمن میں آگیا اور بارہ ۱۲ صورتیں رہ گئیں۔ وہ اس لئے کہ یا تو وہ اندرونِ نماز دیکھے گا یا قبلِ نماز۔ اور بہر دو صورت یا تو اسے عطا کا ظن ہو گا یا انکار کا، یا شک ہو گا۔ یہ چھ ۶ صورتیں ہوئیں اور ان میں سے ہر ایک گیارہ ۱۱ صورتیں ہیں اس لئے کہ وہ یا تو قبلِ نماز مانگے گا

[فٹر]: 1 البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۵۴ صفحہ 150 از 761

Fatawa Rizvia Volume 4

[Arabic Column] The division in his statement "cut and asked" then if he completed and then asked, and in his statement "cut and asked" even if he completed and then asked, and in his statement "if he asked after them" and if he asked i.e. before them, and he said "if he did not ask" i.e. at all (and I mean by asking before prayer, before its completion, whether it was before its commencement or by cutting it when he saw it during it). On each of the first two, he gives first, and on the third, he gives before prayer, or during it, or after it, or not at all. These are eight, and one of them becomes four, which is if he asked before it and he refused, for he will either repeat the question after it or not, and in each case, he gives first. So it becomes eleven, reaching sixty-six. I am depicting for you one of the sixths so that you can measure the others by it, by placing the suspicion of denial in place of the suspicion of giving, then doubt, so it is thirty-three. Then place the opinion "before it" in place of the opinion "during prayer," so it is another thirty-three. And this is its form.

[Urdu Column] Or after prayer or neither before prayer nor after prayer. How can these forms not be when their way of explanation in the following statements follows this same division (see their statements underlined words 12 m-Alif). (1) Breaks the prayer and asks for water; if he completes the prayer then asks. (2) Broke it and asked, and if he completes it then asks. (3) If he asked after prayer and if he asked (3) if he asked after prayer and if he asked i.e. before prayer, and he said: so if he didn't ask i.e. didn't ask at all (neither before prayer nor after prayer). In my statement, where "before prayer" appears, my meaning from it is "from the completion of prayer" whether it is before starting the prayer or whether when seeing water during prayer he has broken the prayer (now join the chain of speech from there 12 m-Alif). And in each of the first two of them, under every estimation, either he will give or he will not give, and on the third estimation he will give before prayer, or during prayer, or after prayer, or he will not give at all. These became eight forms, and among them is one which will become four forms. This is the case of refusal upon asking before prayer, because in this case, he will either ask again after prayer or he will not ask, and under every estimation, either he will give or he will not give. So eleven forms will become sixty-six. Now, one form of the sixth (eleven) is presented among them so that the rest can be estimated upon it in such a way that if you put suspicion of denial in place of suspicion of giving, then doubt, then these will be thirty-three forms. Then if you put "saw before prayer" in place of "saw during prayer," these will be another thirty-three forms. The chart is this:

[अरबी कॉलम] उनके कथन "काट दिया और माँगा" में विभाजन, तो यदि उसने पूरा किया फिर माँगा, और उनके कथन "काट दिया और माँगा" में यदि उसने पूरा किया फिर माँगा, और उनके कथन "यदि उसने उनके बाद माँगा" और यदि उसने माँगा अर्थात उनसे पहले, और उन्होंने कहा "यदि उसने नहीं माँगा" अर्थात बिल्कुल नहीं (और नमाज़ से पहले माँगने से मेरा तात्पर्य उसकी पूर्णता से पहले है, चाहे वह उसके शुरू होने से पहले हो या उसे काटने से जब उसने उसमें देखा हो)। पहले दोनों में से प्रत्येक पर वह पहले देता है, और तीसरे पर वह नमाज़ से पहले, या उसमें, या उसके बाद, या बिल्कुल नहीं देता है। ये आठ हैं, और उनमें से एक चार हो जाती है, जो वह है जब उसने उससे पहले माँगा और उसने मना कर दिया, क्योंकि वह या तो उसके बाद प्रश्न दोहराएगा या नहीं, और प्रत्येक मामले में वह पहले देता है। तो यह ग्यारह हो गया, छियासठ तक पहुँच गया। मैं आपके लिए छठा भाग (ग्यारह) का एक रूप चित्रित कर रहा हूँ ताकि आप दूसरों को उस पर माप सकें देने के संदेह के स्थान पर इनकार का संदेह रखकर, फिर संदेह, तो वह तैंतीस है। फिर नमाज़ के दौरान की राय के स्थान पर "उससे पहले" की राय रखें, तो यह एक और तैंतीस है। और यह उसका रूप है।

[उर्दू कॉलम] या नमाज़ के बाद या न नमाज़ से पहले न नमाज़ के बाद। ये सूरतें कैसे न होंगी जबकि उनकी शैली निम्नलिखित इबारतों में इसी विभाजन पर जारी है (देखिये उनकी इबारत रेखांकित शब्द 12 म-अलिफ़)। (1) नमाज़ तोड़ दे और पानी माँगे अगर नमाज़ पूरी कर ली फिर माँगा (2) तोड़ दी और माँगा और अगर पूरी कर ली फिर माँगा (3) अगर नमाज़ के बाद माँगा और अगर माँगा (3) अगर नमाज़ के बाद माँगा और अगर माँगा यानी नमाज़ से पहले और फ़रमाया: तो अगर न माँगा यानी बिल्कुल माँगा ही नहीं (न नमाज़ से पहले न नमाज़ के बाद)। मेरी इबारत में जो "नमाज़ से पहले" आया है उससे मेरी मुराद है "नमाज़ मुकम्मल करने से पहले" चाहे यूँ कि नमाज़ शुरू करने से पहले हो या यूँ कि जब नमाज़ के अंदर पानी देखना नमाज़ तोड़ दी हो (अब सिलसिला-ए-कलाम वहीं से मिला लीजिये 12 म-अलिफ़) और उन में की पहली दोनों में से हर तक़दीर पर या तो वह देगा या न देगा और तीसरी तक़दीर पर नमाज़ से पहले देगा, या नमाज़ के अंदर, या नमाज़ के बाद, या बिल्कुल न देगा। ये आठ सूरतें हुईं और उन में से एक वह है जिसकी चार सूरतें बन जाएँगी। ये नमाज़ से पहले माँगने पर इनकार वाली सूरत है क्योंकि इस सूरत में या तो नमाज़ के बाद दोबारा माँगेगा, या न माँगेगा और हर तक़दीर पर या तो वह देगा या न देगा। तो ग्यारह सूरतें होकर छियासठ को पहुँच जाएँगी अब इन में से एक सुदुस (ग्यारह) की शक्ल पेश की जाती है ताकि बक़िया को इसी पर क़यास

किया जा सके इस तरह कि ज़न-ए-अता की जगह ज़न-ए-मना फिर शक रख दें तो ये तैंतीस 33 सूरतें हो जाएँगी, फिर "अंदरून-ए-नमाज़ देखा" की जगह "क़ब्ल-ए-नमाज़ देखा" रख दें तो ये दूसरी तैंतीस 33 सूरतें हो जाएँगी। नक़्शा ये है:

[عربی کالم] التقسیم في قوله قطع وطلب فلوا تم ثم سأل وفی قوله قطع وسأل وان اتم ثم سأل وفي قوله فان سأل بعدهاوان سأل ای قبلها وقال فان لم یسأل ای اصلا (واعنی بالسؤال قبل الصلاة قبل تمامهاسواء کان قبل شروعهااو بقطعها اذا رأه فیها)وعلی کل من الاولین یعطی اولا وعلی الثالث یعطی قبل الصلاة اوفیها اوبعدها اولا اصلا فهی ثمان وواحدة منهاتصیراربعاوهی مااذا سأل قبلها فأبی فانه اما ان یعید السؤال بعدها اولا وعلی کل یعطی اولا فصارت احدی عشرة فبلغت ستا وستین وانا اصورك احدی الاسداس لتقیس علیها سائرها بان تضع ظن المنع مقام ظن العطاء ثم الشک فهی ثلاث وثلثون ثم تضع رأی قبلها مکان رأی فی الصلاة فهی ثلاث وثلثون اخری وهذه صورته۔

[اردو کالم] یا بعد نماز یا نہ قبل نماز نہ بعد نماز۔ یہ صورتیں کیسے نہ ہونگی جب کہ ان کی روش بیان درج ذیل عبارتوں میں اسی تقسیم پر جاری ہے (دیکھئے ان کی عبارت خط کشیدہ الفاظ ۱۲ م۔ الف) (۱) نماز توڑ دے اور پانی طلب کرے اگر نماز پوری کرلی پھر مانگا (۲) توڑ دی اور مانگا اور اگر پوری کرلی پھر مانگا (۳) اگر بعد نماز مانگا اور اگر مانگا (۳) اگر بعد نماز مانگا اور اگر مانگا یعنی قبل نماز اور فرمایا: تو اگر نہ مانگا یعنی بالکل مانگا ہی نہیں (نہ قبل نماز نہ بعد نماز) میری عبارت میں جو "قبل نماز" آیا ہے اس سے میری مراد ہے "تکمیل نماز سے" خواہ یوں کہ نماز شروع کرنے سے پہلے ہو یا یوں کہ جب اندرونِ نماز پانی دیکھنا نماز توڑ دی ہو (اب سلسلہ کلام وہیں سے ملا لیجئے ۱۲ م۔ الف) اور ان میں کی پہلی دونوں میں سے ہر تقدیر پر یا تو وہ دے گا یا نہ دے گا اور تیسری تقدیر پر قبل نماز دے گا، یا اندرونِ نماز، یا بعد نماز، یا بالکل نہ دے گا۔ یہ آٹھ صورتیں ہوئیں اور ان میں سے ایک وہ ہے جس کی چار صورتیں بن جائیں گی۔ یہ قبل نماز مانگنے پر انکار والی صورت ہے کیونکہ اس صورت میں یا تو بعد نماز دوبارہ مانگے گا، یا نہ

مانگے گا اور بہر تقدیر یا تو وہ دے گا یا نہ دے گا۔ تو گیارہ صورتیں ہو کر چھاسٹھ کو پہنچ جائیں گی اب ان میں سے ایک سدس (گیارہ) کی شکل پیش کی جاتی ہے تاکہ بقیہ کو اسی پر قیاس کیا جاسکے اس طرح کہ ظن عطا کی جگہ ظن منع پھر شک رکھ دیں تو یہ تینتیس ۳۳ صورتیں ہو جائیں گی، پھر "اندرونِ نماز دیکھا" کی جگہ "قبل نماز دیکھا" رکھ دیں تو یہ دوسری تینتیس ۳۳ صورتیں ہو جائیں گی۔ نقشہ یہ ہے:

Fatawa Razawiya, Volume 4

[Diagram 1 - Arabic Terminology] Opinion During Prayer - Saw before it - Assumption of refusal, Doubt - Assumption of giving - Did not ask - Asked - Before prayer - Gave, Refused - After prayer - Gave, Did not give - Asked after it - Gave, Refused - Did not ask - Gave, Did not give - Categories: Before prayer, During it, After it Numbers: 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 11, 11 Totals: 33 + 33 = 66

[Diagram 2 - Urdu Terminology] - Saw before prayer - Assumption of refusal, Doubt occurred - Saw during prayer - Assumption of giving occurred - Asked - Before prayer - Gave, Refused - After prayer - Gave, Did not give - Did not ask - Gave, Did not give - Asked again after prayer - Gave, Refused - Categories: Before prayer, During prayer, After prayer Numbers: 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 11, 11 Totals: 33 + 33 = 66

I.T. Majlis of Dawat-e-Islami Page 152 of 761

फ़तावा रज़विया, खंड 4

[आरेख 1 - अरबी शब्दावली] नमाज़ के दौरान राय - इससे पहले देखा - मना होने का अनुमान, संदेह - देने का अनुमान - नहीं मांगा - मांगा - नमाज़ से पहले - दिया, मना किया - नमाज़ के बाद - दिया, नहीं दिया - इसके बाद मांगा - दिया, मना किया - नहीं मांगा - दिया, नहीं दिया - श्रेणियां: नमाज़ से पहले, इसके दौरान, इसके बाद अंक: १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, ११, ११ योग: ३३ + ३३ = ६६

[आरेख 2 - उर्दू शब्दावली] - नमाज़ से पहले देखा - मना होने का अनुमान हुआ, संदेह हुआ - नमाज़ के दौरान देखा - देने का अनुमान हुआ - मांगा - नमाज़ से पहले - दिया, इनकार किया - नमाज़ के बाद - दिया, नहीं दिया - नहीं मांगा - दिया, नहीं दिया - नमाज़ के बाद फिर मांगा - दिया, इनकार किया - श्रेणियां: नमाज़ से पहले, नमाज़ के दौरान, नमाज़ के बाद अंक: १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, ११, ११ योग: ३३ + ३३ = ६६

आई.टी. मजलिस-ए-दावत-ए-इस्लामी पृष्ठ 152/761

فتاویٰ رضویہ، جلد چہارم

[نقشہ 1 - عربی اصطلاحات] رأی فی الصلوۃ رأی قبلہا | ظن المنع شک ظن العطاء لم یسئال | سأل قبل الصلاۃ | بعد الصلاۃ اعط | ابی | اعط | لم یعط سأل بعدہا | لم یسئال اعط | ابی | اعط | لم یعط | اعط | ابی قبل الصلاۃ | فیہا | بعدہا ١ ٢ ٣ ٤ ٥ ٦ ٧ ٨ ٩ ١٠ ١١ ١١ ١١ ٣٣ + ٣٣ = ٦٦

[نقشہ 2 - اردو اصطلاحات] قبل نماز دیکھا | اندرون نماز دیکھا ظن منع ہوا شک ہوا | ظن عطا ہوا مانگا | نہ مانگا قبل نماز | بعد نماز دیا | انکار کیا | دیا | نہ دیا بعد نماز پھر مانگا | نہ مانگا دیا | انکار کیا | دیا | نہ دیا | انکار کیا قبل نماز | اندرون نماز | بعد نماز ١ ٢ ٣ ٤ ٥ ٦ ٧ ٨ ٩ ١٠ ١١ ١١ ١١ ٣٣ + ٣٣ = ٦٦

آئی ٹی مجلسِ دعوتِ اسلامی صفحہ 152 از 761

Fatawa Rizvia - Volume 4

[Left Column - Arabic] And he did not mention concerning seeing [water] during prayer except the question before it or after it. So it remains that he does not ask at all and his companion gives it to him before the prayer, during it, or after it initially. These are four for each of the two forms: assumption and doubt. So they became twelve that he did not mention. If you say: there is no benefit in making divisions after refusal before prayer by saying whether he asked after it or initially, and in every case he gave initially, for the ruling does not differ, which is the validity of his prayer because giving after refusal is not useful as previously mentioned in the tenth problem. I say: Its benefit is evident in giving this ruling. Don't you see his statement in the rule regarding seeing during prayer, as well as if he refuses then gives, and regarding seeing outside it, if he withheld it then gave it afterwards, there is no repetition (of prayer) [1]. End. Therefore, Al-Muhaqqiq Al-Halabi included it in the divisions of his rule as will come, God Almighty willing. And if it is assumed useless, then the discussion follows the path of [the author of Al-Bahr] (may God Almighty have mercy on him), and he did not consider the distinctness of rulings within the categories as will be explained. And if we accept, they are forty-eight: eight in six as you see. His speech included the ruling of thirty-six and omitted twelve.

[Right Column - Urdu Translation/Commentary] Allama Sahib Bahr has only mentioned asking upon the estimation of seeing [water] during prayer, whether it is before or after prayer. And this form remained: that he did not ask at all and the owner of the water gave it to him before prayer, during prayer, or after prayer, or did not give it. Thus, based on each of the assumptions of giving, refusal, and doubt, there are four scenarios for each, totaling twelve that he did not mention. (T) If the question arises that there is no benefit in extracting these divisions after refusal before prayer, whether he asked after prayer or not, and in any case, whether he gave or not. This is because the ruling does not differ; the ruling is that his prayer is valid because giving after refusal is not useful, as mentioned in the tenth problem. (T) I say: Why not? Giving this ruling is its benefit. Look at the statement of the author of Al-Bahr in the rule: under the category of seeing during prayer, it says "and similarly when he refuses then gives," and under seeing outside prayer, it says "so if he did not give (at that time) and gave after prayer, there is no repetition." End. For this reason, Al-Muhaqqiq Al-Halabi also included it in the divisions of his rule as his statement will appear, God Almighty willing. And if it is assumed to be without benefit, then the discussion here follows the path of the author of Al-Bahr (may God Almighty have

mercy on him), and he did not consider the distinctness of rulings within the categories, as will be explained. And if we accept it, these are forty-eight (48) scenarios: eight in six, 8 * 6 = 48, as is evident, and his discourse covers only thirty-six (36) scenarios. He left out twelve (12) scenarios. (T)

[Footnote] 1. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter on Tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/152.

फतावा रिज़विया - जिल्द चौथी

[बायाँ कॉलम - अरबी] और उन्होंने नमाज़ में [पानी] देखने के बारे में ज़िक्र नहीं किया सिवाय इसके कि उससे पहले पूछा गया या उसके बाद। तो यह बाक़ी रहा कि उसने बिल्कुल नहीं पूछा और उसके साथी ने उसे नमाज़ से पहले, उसके दौरान, या बाद में शुरू में ही दे दिया। ये चार (सूरतें) हैं हर एक के लिए: गुमान और शक। तो ये बारह (सूरतें) हो गईं जिनका उन्होंने ज़िक्र नहीं किया। अगर आप कहें: नमाज़ से पहले इनकार के बाद ये टुकड़े करने में कोई फ़ायदा नहीं है कि उसने बाद में पूछा या शुरू में, और हर मामले में उसने शुरू में दिया, क्योंकि हुक्म नहीं बदलता, जो कि उसकी नमाज़ की वैधता (सेहत) है क्योंकि इनकार के बाद देना लाभदायक नहीं है जैसा कि दसवें मसले में गुज़रा। मैं कहता हूँ: इसका फ़ायदा इस हुक्म को देने में स्पष्ट है। क्या आप नियम (ज़ाबिते) में उनके इस कथन को नहीं देखते कि नमाज़ में देखने के बारे में, और ऐसे ही अगर वह इनकार करे फिर दे दे, और नमाज़ के बाहर देखने के बारे में, कि अगर उसने रोक लिया और फिर बाद में दिया तो (नमाज़ का) एआदा (दोहराना) नहीं है [1]। समाप्त। इसीलिए मोहक़्क़िक ह़लबी ने इसे अपने नियम के टुकड़ों में शामिल किया जैसा कि इंशा अल्लाह तआला आएगा। और अगर इसे बेकार मान लिया जाए, तो चर्चा [बहर के लेखक] के मार्ग पर है, और उन्होंने श्रेणियों के भीतर हुक्मों के अंतर पर विचार नहीं किया जैसा कि बयान किया जाएगा। और अगर हम स्वीकार करें, तो वे अड़तालीस हैं: छह में आठ जैसा कि आप देख रहे हैं। उनके कलाम में छत्तीस के हुक्म शामिल थे और बारह छोड़ दिए गए।

[दायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद/टीका] अल्लामा साहब बहर ने नमाज़ के दौरान देखने की सूरत पर सिर्फ माँगने का ज़िक्र किया है, चाहे नमाज़ से पहले हो या बाद में। और यह सूरत रह गई कि बिल्कुल न माँगा और पानी वाले ने उसे नमाज़ से पहले, नमाज़ के दौरान या नमाज़ के बाद दे दिया, या न दिया, तो अता का गुमान (ज़न्न-ए-अता), मना का गुमान (ज़न्न-ए-मनअ) और शक, हर एक पर ये चार-चार सूरतें होकर बारह ऐसी सूरतें हुईं जिनका उन्होंने ज़िक्र नहीं किया। (त) अगर यह सवाल हो कि नमाज़ से पहले इनकार हो जाने के बाद ये शक्लें निकालने में कोई फ़ायदा नहीं कि नमाज़ के बाद उसने माँगा या नहीं माँगा और हर सूरत में उसने दिया या नहीं दिया। क्योंकि हुक्म अलग नहीं है, हुक्म यही है कि उसकी नमाज़ सही है क्योंकि इनकार के बाद देना फ़ायदेमंद नहीं जैसा कि दसवें मसले में गुज़रा। (त) अक़ुल: क्यों नहीं। यह हुक्म देना ही इसका फ़ायदा है। ज़ाबिते में साहब-ए-बहर का कलाम देखिये, नमाज़ के अंदर देखने के तहत है "और ऐसे ही जब इनकार कर दे फिर दे दे" और नमाज़ के बाहर देखने के तहत है "तो अगर (उस वक़्त) न दिया और नमाज़ के बाद दे दिया तो

एआदा (दोहराना) नहीं है"। इसीलिए मोहक़्क़िक ह़लबी ने भी इसे अपने ज़ाबिते की शक्लों में लिया है जैसा कि उनका कलाम इंशा अल्लाह तआला आएगा। और अगर बेफ़ायदा ही मान लिया जाए तो यहाँ कलाम साहब-ए-बहर रह़मतुल्लाह तआला के मसलक पर है और उन्होंने क़िस्मों के अंदर अह़काम के अलग-अलग होने का एतबार नहीं किया है जैसा कि उसका बयान आ रहा है और अगर हम मान ही लें तो ये अड़तालीस (48) सूरतें हैं, छह में आठ: 8 * 6 = 48 जैसा कि सामने है और उनका कलाम सिर्फ छत्तीस (36) सूरतों के हुक्म पर मुश्तमिल है। बारह (12) सूरतें उन्होंने छोड़ दीं। (त)

[पादलेख] 1. अल-बहर अल-राइक़, बाब अल-तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/152.

[بایاں کالم - عربی] ولم یذکر فیما اذارأی فی الصلاۃ الا السؤال قبلھا او بعدھا فبقی ان لایسأل اصلا وصاحبہ یعطیہ قبل الصلاۃ او فیھا او بعدھا اولاً فھی اربع علی کل من صور الظنین والشک فکانت اثنتی عشرۃ لم یذکرھا۔ فان قلت لافائدۃ فی التشقیق بعد الاباء قبل الصلاۃ بأنہ سأل بعدھا اولا وعلی کل اعطی اولافان الحکم لایختلف وھو صحۃ صلاتہ لان العطاء بعد الاباء غیر مفید کما مر فی المسألۃ العاشرۃ۔ اقول: ببی فائدتہ اعطاء ھذا الحکم الاتری الی قولہ فی الضابطۃ فیما اذارأی فی الصلاۃ وکذا اذا ابی ثم اعطی وفیما اذا رأی خارجھا فان منعہ واعطاہ بعدھا لااعادۃ ۱ اہ ولذا اخذہ المحقق الحلبی فی شقوق ضابطتہ کما سیأتی ان شاء اللہ تعالی وان فرض فالکلام علی مسلکہ رحمہ اللہ تعالی وھو لم یعتبر فی الاقسام تمایز الاحکام کما سیاتی وان سلمنا فھی ثمان واربعون ثمان فی ست کماتری وقد تضمن کلامہ حکم ست وثلثین وترك اثنتی عشرۃ۔

[دایاں کالم - اردو ترجمہ و تشریح] علامہ صاحب بحر نے اندرون نماز دیکھنے کی تقدیر پر صرف مانگنے کا ذکر کیا ہے قبل نماز ہو یا بعد نماز۔ اور یہ شکل رہ گئی کہ بالکل نہ مانگا اور پانی والے نے اسے قبل نماز یا اندرون نماز یا بعد نماز دے دیا، یا نہ دیا تو ظن عطا، ظن منع اور شک ہر ایک پر یہ چار چار صورتیں ہو کر بارہ ایسی ہوئیں جن کو انہوں نے نہیں ذکر کیا۔ (ت) اگر یہ سوال ہو کہ قبل نماز انکار ہو جانے کے بعد یہ شقیں نکالنے میں کوئی فائدہ نہیں کہ بعد نماز اس نے مانگا یا نہ مانگا اور بہر تقدیر اس نے دیا یا نہ دیا۔ اس لئے کہ حکم مختلف نہیں، حکم یہی ہے کہ اس کی نماز صحیح ہے اس لئے کہ انکار کے بعد دینا مفید نہیں جیسا کہ مسئلہ دہم میں گزرا۔ (ت) اقول: کیوں نہیں۔ یہ حکم دینا ہی اس کا فائدہ ہے۔ ضابطہ میں صاحب بحر کا کلام دیکھئے، اندرون نماز دیکھنے کے تحت ہے "اور ایسے ہی جب انکار کر دے پھر دے دے" اور

بیرون نماز دیکھنے کے تحت ہے "تو اگر (اس وقت) نہ دیا اور بعد نماز دے دیا تو اعادہ نہیں" اھ اسی لئے محقق حلبی نے بھی اسے اپنے ضابطہ کی شقوں میں لیا ہے جیسا کہ ان کا کلام ان شاء اللہ تعالٰی آئے گا۔ اور اگر بے فائدہ ہی فرض کر لیا جائے تو یہاں کلام صاحب بحر رحمۃ اللہ تعالٰی کے مسلک پر ہے اور انہوں نے قسموں کے اندر احکام کے جُدا گانہ ہونے کا اعتبار نہیں کیا ہے جیسا کہ اس کا بیان آرہا ہے اور اگر ہم تسلیم ہی کرلیں تو یہ اڑتالیس ۸ صور تیں ہیں چھ میں آٹھ ۸*۶ = ۴۸ جیسا کہ پیش نظر ہے اور ان کا کلام صرف چھبیس ۳۶ صورتوں کے حکم پر مشتمل ہے۔ بارہ ۱۲ صورتیں انہوں نے چھوڑ دیں۔ (ت)

[حاشیہ] ۱ البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۵۲/۱

Fatawa Razawiyya, Volume 4

Secondly: (1) The reconciliation was cited from 'Ad-Dhakhirah' via Imam Al-Jassas, which is the correct investigation. Despite this, leaving the scenario of remaining outside of prayer and not asking at all as a matter of difference of opinion without presenting a decisive statement is inappropriate.

Thirdly: (2) They followed the same principle regarding one who sees someone while inside prayer: if there is a strong expectation (dhann) of receiving a gift, they should break the prayer, otherwise not. The basis for this is the same reconciliation: that asking is obligatory if there is an expectation of a gift, otherwise not, as we have stated. Thus, having followed the reconciliation here, they then made everything a matter of difference of opinion. The appropriate way would have been to either refer this to the difference of opinion as well or to give a decisive statement in that case too.

Fourthly: (3) Regarding the scenario: "Upon seeing someone outside of prayer, he asked but was not given, then he performed tayammum and prayed." Regarding this, they said: "In this category, there is no situation of expectation or doubt." This statement is a major point of doubt and objection. If the meaning is that after refusal there is no expectation or doubt, then refusal is not unique to this category, rather it is even more applicable [elsewhere], because the matter is concluded. In a case of refusal, there is the possibility that he takes this refusal as relating to the current situation and maintains an expectation or doubt about being given or not given after that. And if the meaning is that there is absolutely no expectation or doubt—which is what appears from their words—then the critique is that the absence of expectation or doubt after refusal does not prevent its existence before the refusal. They have made (4) categories...

फ़तावा रज़विया, जिल्द चहारुम (भाग 4)

दूसरा: (1) 'अज़-ज़खीरा' के माध्यम से इमाम अल-जस्सास से सामंजस्य (ततबीक़) को उद्धृत किया गया। यही सही शोध है। इसके बावजूद, नमाज़ के बाहर रहते हुए बिल्कुल न माँगने वाली स्थिति को बिना किसी निर्णायक राय के विवादास्पद छोड़ देना उचित नहीं है।

तीसरा: (2) उन्होंने उसी सिद्धांत का पालन किया है जो नमाज़ के दौरान किसी को देखता है: यदि मिलने की प्रबल संभावना (ज़न्न-ए-अता) हो तो नमाज़ तोड़ देनी चाहिए, अन्यथा नहीं। इसका आधार वही सामंजस्य है कि माँगना अनिवार्य है यदि उपहार की संभावना हो, अन्यथा नहीं, जैसा कि हमने वर्णन किया है। इस प्रकार, यहाँ सामंजस्य का पालन करने के बाद, उन्होंने फिर सब कुछ विवादास्पद (ख़िलाफ़ी) बना दिया। उचित तरीका यह होता कि या तो इसे भी मतभेद के हवाले करते या इसमें भी एक निश्चित (क़तई) राय देते।

चौथा: (3) यह स्थिति कि "नमाज़ के बाहर देखने पर उसने माँगा पर उसने नहीं दिया, फिर उसने तयम्मुम किया और नमाज़ पढ़ी।" इसके बारे में उन्होंने कहा कि "इस श्रेणी में प्रबल संभावना (ज़न्न) या संदेह (शक) की कोई स्थिति नहीं है।" यह कथन बड़े संदेह और आपत्ति का विषय है। यदि इसका अर्थ यह है कि मना करने के बाद कोई संभावना या संदेह नहीं रहता, तो मनाही केवल इसी श्रेणी के लिए विशेष नहीं है, बल्कि अन्यत्र और भी अधिक लागू होती है, क्योंकि कार्य संपन्न हो चुका है। मनाही की स्थिति में, यह संभावना है कि वह इस मनाही को वर्तमान स्थिति से संबंधित माने और उसके बाद दिए जाने या न दिए जाने की संभावना या संदेह बनाए रखे। और यदि इसका अर्थ यह है कि पूर्णतः कोई संभावना या संदेह नहीं होता—जैसा कि उनके शब्दों से प्रतीत होता है—तो इस पर आलोचना यह है कि मनाही के बाद संभावना या संदेह का न होना इस बात को नहीं रोकता कि मनाही से पहले संभावना या संदेह रहा हो। उन्होंने (4) श्रेणियाँ बनाई हैं...

पृष्ठ 154 / 761

وثانیاً: نقل (۱) التوفیق عن الذخیرۃ عن الجصاص وھو التحقیق فار سالہ ماذا کان خارج الصلاۃ ولم یسأل اصلا خلافیۃ غیر مقطوع فیھا بقول مما لا ینبغی۔ ثانیاً: ذخیرہ کے ذریعہ امام جصاص سے تطبیق نقل کی۔ وہی تحقیق بھی ہے اس کے باوجود بیرون نماز رہ کر بالکل نہ مانگنے والی صورت کو کوئی قطعی قول پیش کیے بغیر اختلافی چھوڑ دینا مناسب نہیں۔

وثالثاً: قد (۲) مشی علیہ فیمن رأی فی الصلاۃ یقطع ان ظن العطاء والالا ومامبناہ الاذلك التوفیق انہ یجب السؤال ان ظن العطاء والالا کما قد منا فقد مشی علی التوفیق ثم جعل الکل خلافیۃ وانما کان الوجہ ان یحیل ھذہ ایضا علی الخلاف او یقطع القول فی تلك ایضا۔ ثالثاً: اسی پر اس کے بارے میں چلے ہیں جو اندرونِ نماز دیکھے تو اگر ظن عطا ہو نماز توڑ دے ورنہ نہیں۔ اس کی بنیاد وہی تطبیق ہے کہ مانگنا واجب ہے اگر عطا کا گمان ہو ورنہ نہیں جیسا کہ ہم نے بیان کیا تو یہاں تطبیق پر چلے پھر سب کو خلافی بنا دیا۔ مناسب طریقہ یہی تھا کہ یا تو اسے بھی اختلاف کے حوالے کرتے یا اُس میں بھی قطعی قول کرتے۔

ورابعاً: قولہ (۳) فیما اذارأی خارجھا فسأل فمنع فتیمم فصلی انہ لایتأتی فیہ الظن والشك فیہ شك ای شك فان اراد عدم تأتیھما بعد المنع فالمنع لا یختص بھذا القسم وایضاً لاتأتی لھما بعد الاعطاء ایضاً بل اولی لانہ تم الامر وفی المنع یحتمل ان یحملہ علی حالۃ راھنۃ ویظن بہ عطاء او منعاً ویشك فیما بعد ذلك وان اراد مطلقاً وھو الظاھر من کلامہ فعدم تأتیھما بعد المنع لا یمنع تأتیھما قبلہ وقد جعل (۴) الاقسام رابعاً: یہ صورت کہ "بیرونِ نماز دیکھنے پر مانگا تو اس نے نہ دیا پھر تیمم کرکے نماز پڑھ لی"۔ اس کے بارے میں انہوں نے فرمایا کہ "اس قسم میں ظن یا شک کی صورت نہیں" یہ کلام بڑے شک و اعتراض کا محل ہے اگر یہ مراد ہے کہ بعدِ منع ظن یا شک نہیں ہوتا تو منع اسی

قسم کے ساتھ خاص نہیں بلکہ بدرجہ اولیٰ نہیں، اس لئے کہ کام پورا ہو گیا۔ اور منع میں تو یہ احتمال ہے کہ اس منع کو موجودہ حالت پر محمول کرے اور اس کے بعد اس سے دینے یا نہ دینے کا گمان یا شک رکھے۔ اور اگر یہ مراد ہے کہ مطلقاً ظن یا شک نہیں ہوتا۔ یہی ان کے کلام سے ظاہر بھی ہے تو اس پر یہ کلام ہے کہ بعدِ منع ظن و شک کی صورت نہ ہو نا اس سے مانع نہیں کہ قبل منع ظن یا شک رہا ہو۔ انہوں

Fatawa Razawiyyah Volume 4

[Arabic Column Translation] Firstly, it will be in the prayer or outside of it, and on each it is presumed to be a gift, a refusal, or a doubt. Then its explanation was detailed into asking and not asking, and giving and refusal. So how does this fall outside the scope of presumption and doubt? And if it is outside, how do they become twenty-four? Fifthly: Seeing inside the prayer does not differ from seeing outside it in any of the rulings, nor do the categories of seeing inside the prayer differ among themselves, except that it is certain that if one presumes a gift or a refusal, what would have been included in the branches would prolong the matter. It would have been better to collect everything (1) he said, rather, with additions and encompassing the six omitted ones, by saying: Whoever knows of water with someone else that is sufficient for his purification before or during prayer; if he does not ask, it is according to the disagreement, and if he asks and is given, he performs ablution, and if he had performed tayammum, it is invalidated, and if he had prayed, it is voided. If he is refused, he performs tayammum, or it is not invalidated, or [the prayer] has passed. There is no consideration for the gift after the refusal in both cases. In all of that, if the presumption of a gift interrupts the prayer, otherwise not. This is about one-third of his lines, but one-third is a lot.

[Urdu Column Translation] ...made six (6) categories first, such that it would be inside the prayer (1) or outside the prayer (2), and in both scenarios, he would either have a presumption of gift, or a presumption of refusal (3), or doubt. Then, in each of these, there is a detail of questioning vs non-questioning, and giving vs non-giving. So how will this division be outside of presumption and doubt? And if it is outside, how will twenty-four (24) cases be formed? Fifthly: There is no difference in the rulings between seeing inside the prayer and seeing outside the prayer, and in the categories of seeing inside the prayer, except that if he has a presumption of gift, he should break the prayer, otherwise not. Therefore, it was not appropriate to prolong it by including all these in branches. If he had spoken like this, his entire statement, with additions and the encompassing of the six omitted cases, would have been summarized: "One who knows that someone has water sufficient for purification, before prayer or during prayer; then if he did not ask, there is a disagreement in this case. And if he asked and the person gave it, he should perform wudu (ablution), and if he had performed tayammum, it was broken. And if he had offered the prayer, it became void. And if he did not give it, he should perform tayammum or his tayammum was not broken at all, or the prayer was completed. And in both forms,

giving after refusal has no consideration. And in all these cases, whether he has a suspicion of gift or refusal, or doubt, but the thing is that if there is a presumption of gift, he should break the prayer, otherwise not." So this is close to one-third of his lines, but one-third is more. (T)

[अरबी कॉलम का अनुवाद] पहला, यह नमाज़ के भीतर होगा या उसके बाहर, और प्रत्येक पर यह उपहार (अता), इनकार (मना), या संदेह (शक) माना जाता है। फिर इसके स्पष्टीकरण को प्रश्न और उसके अभाव, और उपहार और इनकार में विस्तृत किया गया। तो यह अनुमान (ज़न) और संदेह (शक) के दायरे से बाहर कैसे हो जाता है? और यदि यह बाहर है, तो वे चौबीस कैसे हो जाते हैं? पाँचवाँ: नमाज़ के अंदर देखने और उसके बाहर देखने के किसी भी नियम में कोई अंतर नहीं है, और न ही नमाज़ के अंदर देखने की श्रेणियों में आपस में कोई अंतर है, सिवाय इसके कि यह निश्चित है कि यदि कोई उपहार या इनकार का अनुमान लगाता है, तो जो शाखाओं में शामिल किया गया होता, वह मामले को लम्बा कर देता। यह बेहतर होता कि वह सब कुछ (१) जो उसने कहा, इकट्ठा कर लिया जाता, बल्कि परिवर्धन और छोड़ी गई छह स्थितियों के समावेश के साथ, यह कहकर: जो कोई भी नमाज़ से पहले या नमाज़ के दौरान किसी अन्य के पास अपनी पवित्रता के लिए पर्याप्त पानी के बारे में जानता है; यदि वह नहीं पूछता है, तो यह असहमति के अनुसार है, और यदि वह पूछता है और उसे दिया जाता है, तो वह वज़ू करता है, और यदि उसने तैयम्मुम किया था, तो वह अमान्य हो जाता है, और यदि उसने नमाज़ पढ़ी थी, तो वह शून्य हो जाती है। यदि उसे मना कर दिया जाता है, तो वह तैयम्मुम करता है, या यह अमान्य नहीं होता है, या [नमाज़] बीत चुकी होती है। दोनों मामलों में इनकार के बाद उपहार के लिए कोई विचार नहीं है। उन सब में, यदि उपहार का अनुमान नमाज़ को बाधित करता है, अन्यथा नहीं। यह उनकी पंक्तियों का लगभग एक-तिहाई है, जबकि एक-तिहाई बहुत अधिक है।

[उर्दू कॉलम का अनुवाद] ...ने पहले छह ६ किस्में बनाई हैं इस तरह कि वह नमाज़ के अंदर १ होगा या नमाज़ के बाहर २, और दोनों ही स्थितियों में उसे या तो देने का अनुमान (ज़न) होगा या न देने का अनुमान ३ या संदेह (शक) होगा। फिर उनमें से प्रत्येक में प्रश्न और प्रश्न न करने, और देने और न देने का विस्तार है। तो फिर यह किस्म अनुमान और संदेह से बाहर कैसे होगी? और यदि बाहर है तो चौबीस २४ स्थितियाँ कैसे बनेंगी? पाँचवाँ: नमाज़ के अंदर और नमाज़ के बाहर देखने में और नमाज़ के अंदर देखने की किस्मों में आपस में नियमों का कोई अंतर नहीं है, सिवाय इसके कि यदि उसे देने का अनुमान हो तो नमाज़ तोड़ दे, अन्यथा नहीं। तो उन सब को शाखाओं (शकों) में शामिल करके लंबा करना उचित नहीं था। यदि वह इस तरह कहते, तो उनकी पूरी बात इज़ाफ़े(वृद्धि) और छोड़ी गई छह स्थितियों के घेरे के साथ सिमट आती: "जिसे किसी के पास पवित्रता के लिए पर्याप्त पानी

होने का नमाज़ से पहले या नमाज़ के दौरान ज्ञान हुआ; तो यदि उसने नहीं माँगा तो इस स्थिति में मतभेद है। और यदि उसने माँगा और उसने दे दिया, तो वह वज़ू करे, और यदि तैयम्मुम था तो वह टूट गया। और यदि नमाज़ पढ़ ली तो वह बातिल (अमान्य) हो गई। और यदि नहीं दिया तो वह तैयम्मुम करे या तैयम्मुम टूटा ही नहीं, या नमाज़ भी हो गई। और दोनों ही स्थितियों में इनकार के बाद देने का कोई महत्व नहीं है। और इन सब स्थितियों में चाहे उसे देने का गुमान हो या मना करने का, या शक हो, लेकिन बात यह है कि यदि देने का अनुमान (ज़न) हो तो नमाज़ तोड़ दे, अन्यथा नहीं।" तो यह उनकी पंक्तियों के लगभग एक तिहाई के करीब है, लेकिन यह है कि एक तिहाई ज़्यादा है। (त)

पृष्ठ १५५ का ७६१

فتاوی رضویہ جلد چہارم

[عربی کالم]: اولاً ستایکون فی الصلاۃ اوخارجھا وعلی کل یظن عطاءً اومنعاً اویشك ثم فصل کلامھا الی السؤال وعدمہ والعطاء والاباء فکیف یخرج ھذا من الظن والشك وان خرج کیف تصیر اربعاً وعشرین۔ وخامساً: لاتخالف الرؤیۃ فی الصلاۃ وخارجھا فی شیئ من الاحکام ولا اقسام الرؤیۃ فی الصلاۃ فیما بینھا غیر انہ یقطع ان ظن العطاء والاباء فما کان لیدخل في الشقوق فیطول الامر وکان یجمع جمیع(۱) ماقالہ بل مع الزیادۃ واحاطۃ الست المتروکۃ ان یقول من علم مع غیرہ ماءً یکفی لطھرہ قبل الصلاۃ اوفیھا فان لم یسأل فعلی الخلاف وان سأل فان اعطی توضأ وان کان تیمم انتقض وان کان صلی بطلت وان منع تیمم اولم ینتقض اومضت ولا عبرۃ بالعطاء بعد الاباء فی الوجھین وسواء فی کل ذلك ظن عطاء قطع الصلاۃ والالافھذا نحو ثلث سطورہ بیدان الثلث کثیر۔

[اردو کالم]: نے پہلے چھ ۶ قسمیں بنائی ہیں اس طرح کہ وہ اندرونِ ۱ نماز ہو گا یا بیرونِ ۲ نماز اور بہر دو تقدیر یا تو اسے ظنِ عطا ہو گا یا ظنِ منع ۳ یا شک ہو گا ۔ پھر ان میں سے ہر ایک میں سوال و عدم سوال اور عطا و عدم عطا کی تفصیل ہے تو یہ قسم ظن و شک سے خارج کیسے ہوگی اور اگر خارج ہو تو چوبیس ۲۴ صورتیں کیسے بنیں گی؟ خامساً : اندرونِ نماز و بیرونِ نماز دیکھنے میں اور اندرونِ نماز دیکھنے کی قسموں میں باہم احکام کا کوئی فرق نہیں سوائے اس کے کہ اگر اسے عطا کا ظن ہو نماز توڑ دے ورنہ نہیں تو ان سب کو شقوں میں داخل کر کے طویل کرنا مناسب نہ تھا اگر یوں کہتے تو ان کی پوری بات مع اضافے اور متروکہ چھ صورتوں کے احاطے کے سمٹ آتی: "جسے کسی کے پاس طہارت کیلئے کفایت کرنے والے پانی کا قبل نماز یا اندرونِ نماز علم ہوا تو اگر نہ مانگا تو اس صورت میں اختلاف ہے اور اگر مانگا اس نے دے دیا تو وضو کرے اور اگر تیمم تھا تو ٹوٹ گیا اور اگر نماز پڑھ لی تو باطل ہو گئی اور اگر نہ دیا تو

تیمم کرے یا تیمم ٹوٹا ہی نہیں یا نماز بھی ہو گئی اور دونوں ہی شکلوں میں انکار کے بعد دینے کا کوئی اعتبار نہیں اور ان سب صورتوں میں خواہ اسے عطا کا گمان ہو یا منع کا ، یا شک ہو مگر یہ ہے کہ اگر ظن عطا ہو نماز توڑ دے ورنہ نہیں۔ تو یہ ان کی سطروں کے تہائی کے قریب ہے مگر یہ کہ تہائی زیادہ ہے۔(ت)

صفحہ ۱۵۵ از ۷۶۱

Sixth: Regarding the situation outside of prayer, his statement (1) "If he did not ask, performed tayammum, and prayed." By this, as we pointed out, he means he didn't ask before the prayer nor after it, because he will mention these two later. As it is known, this comprises twelve categories: whether he thinks the person will give it or not, or he is in doubt about being given. In any case, the owner of water will give it before the prayer, during the prayer, or after the prayer, or will not give it at all. If it's assumed there's a difference of opinion, it's only in three cases. This is when it wasn't given at all, and also with the condition that no promise was made before the completion of prayer; otherwise, it would be a preventative, a nullifier, and an invalidator (it would prevent tayammum, and if tayammum exists, it would break it; if prayer was performed with tayammum, it would invalidate it). If it's given before prayer, wudu is mandatory, and if there was tayammum, it's broken. If given during prayer, one must perform wudu and start over. If given after prayer, it's invalidated by consensus because the consensus of our companions (may Allah be pleased with them) is that permission gives power over water, so why not through a gift? A gift is a gift even if it's without asking, like in the case where there is someone nearby whom he could have asked but didn't, prayed, and then that person told him voluntarily or upon being asked. In any case, he must repeat the prayer. As Durr al-Mukhtar excellently expressed: "If a prayer with tayammum..."

---

(1) Durr al-Mukhtar, Chapter of Tayammum, Mujtabai Press, Delhi, 1/44. Page 156 of 761

छठा: नमाज़ के बाहर वाली स्थिति के तहत उनका कथन (1) "अगर नहीं मांगा और तयम्मुम किया और नमाज़ पढ़ ली"। इससे जैसा कि हमने इशारा किया, उनकी मुराद यह है कि न नमाज़ से पहले मांगा न नमाज़ के बाद, क्योंकि वह आगे इन दोनों का ज़िक्र कर रहे हैं। जैसा कि ज्ञात हुआ, यह बारह 12 श्रेणियों पर आधारित है: उसे देने का गुमान होगा या नहीं, देने का संदेह होगा और किसी भी स्थिति में पानी वाला उसे नमाज़ से पहले देगा या नमाज़ के दौरान या नमाज़ के बाद, या बिल्कुल नहीं देगा। अगर माना जाए कि मतभेद है तो उनमें से केवल तीन स्थितियों में होगा। यह तब है जब बिल्कुल नहीं दिया गया और यह भी इस शर्त के साथ कि नमाज़ पूरी होने से पहले वादा न पाया जाए, अन्यथा वह निवारक, रद्दे-तयम्मुम और अमान्य करने वाला होगा (तयम्मुम से रोकेगा और अगर तयम्मुम है तो उसे तोड़ देगा; अगर तयम्मुम से नमाज़ पढ़ ली है तो उसे बातिल भी कर देगा)। अगर नमाज़ से पहले दिया तो वज़ू वाजिब है और अगर तयम्मुम था तो वह टूट गया। नमाज़ के दौरान दिया तो वज़ू करके नए सिरे से नमाज़ पढ़ना ज़रूरी है। नमाज़ के बाद दिया तो सब सर्वसम्मति से बातिल हो गया क्योंकि हमारे साथियों (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) की सर्वसम्मति है कि अनुमति से पानी पर शक्ति प्राप्त हो जाती है, तो दान से क्यों नहीं होगी? और दान दान ही है चाहे बिना मांगे हो, जैसे उस स्थिति में जब उसके पास कोई ऐसा व्यक्ति हो जिससे वह पूछ सके लेकिन न पूछा और नमाज़ पढ़ ली, फिर उसने स्वयं बताया या पूछने पर बताया, हर स्थिति में नमाज़ दोहराए। जैसा कि दुर्रे मुख़्तार ने यह उत्कृष्ट व्याख्या की: "अगर तयम्मुम से नमाज़..."

---

(1) दुर्रे मुख़्तार, बाबुल तयम्मुम, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/44। पेज 156 / 761

وسادسا: قولہ(۱) فی خارج الصلوۃ ان لم یسأل ویتیمم وصلی یرید بہ کما اشرنا الیہ ما اذا لم یسأل قبلہا ولابعدہا لانہ سیذکرھما من بعد فھو مشتمل علی اثنی عشر قسماً کما علمت یظن منحاً اومنعاً ویشک علی کل یعطیہ صاحبہ قبل الصلوۃ اوفیہا اوبعدہا اولا اصلا ولاخلاف ان کان الا فی ثلث منہا وہی ما اذا لم یعطہ اصلاً و ھذا ایضاً بشرط ان لایوجد الوعد قبل تمام الصلوۃ والا لمنع ونقض وابطل ولو اعطی قبل الصلوۃ وجب الوضوء وان کان تیمم انتقض اوفیہا وجب الاستئناف بعد التوضی او بعدہا بطلت کل ذلک بالاجماع لان القدرۃ علی الماء تحصل باجماع اصحابنا رضی اللہ تعالیٰ عنہم بالاباحۃ فکیف بالعطاء والعطاء عطاء وان لم یکن عن سؤال کما اذا کان عندہ من یسألہ فلم یسأل وصلی فاخبرہ مبتدئاً اومجیباً اعاد مطلقاً کما تقدم وقد( ) احسن الدراذقال لوصلی بتیمم وثم سألہ فاخبرہ لاجرم ان قال فی الجوھرۃ النیرۃ رأی رجلاً معہ ماء فلم یسألہ فصلی ثم اعطاہ بعد فراغہ من غیر سؤال توضأ و

سادسا: بیرونِ نماز والی صورت کے تحت ان کا قول "اگر نہ مانگا اور تیمم کیا اور نماز پڑھ لی"۔ اس سے جیسا کہ ہم نے اشارہ کیا ان کی مراد یہ ہے کہ نہ قبلِ نماز مانگا نہ بعدِ نماز' اس لئے کہ آگے ان دونوں کو ذکر کررہے ہیں جیسا کہ معلوم ہوا یہ بارہ ۱۲ قسموں پر مشتمل ہے: اسے دینے کا ظن ہوگا یا نہ ' دینے کا شک ہوگا اور بہر تقدیر پانی والا اسے قبلِ نماز دے گا یا اندرونِ نماز یا بعدِ نماز، یا بالکل نہ دے گا اگر مانا جائے کہ اختلاف ہے تو ان میں سے صرف تین صورتوں میں ہوگا یہ جب کہ بالکل نہ دیا اور یہ بھی اس شرط کے ساتھ کہ قبلِ تکمیلِ نماز وعدہ نہ پایا جائے ورنہ وہ مانع، ناقض اور مبطل ہوگا (تیمم سے مانع ہوگا اور اگر تیمم ہے تو اسے توڑ دے گا تیمم سے نماز پڑھ لی تو اسے باطل بھی کردے گا) اگر قبلِ نماز دیا تو وضو واجب ہے اور اگر تیمم تھا تو ٹوٹ گیا اندرونِ نماز دیا تو وضو کر کے ازسر نو پڑھنا ضروری ہے بعدِ نماز دیا تو سب

بالاجماع باطل ہو گیا اس لئے کہ ہمارے اصحاب رضی اللہ تعالیٰ عنہم کا اجماع ہے کہ اباحت سے پانی پر قدرت ہو جاتی ہے تو عطا سے کیوں نہ ہوگی اور عطاء عطاء ہی ہے اگرچہ بغیر سوال ہو، جیسے اس صورت میں جب کہ اس کے پاس کوئی ایسا شخص ہو جس سے دریافت کرسکے مگر نہ دریافت کیا اور نماز پڑھ لی پھر اس نے از خود بتایا یا پوچھنے پر بتایا بہر صورت اعادہ کرے۔ جیسا کہ درمختار نے یہ عمدہ تعبیر کی: "اگر تیمم سے نماز"

---

1 در مختار باب التیمم مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۴۴ Page 156 of 761

Fatawa Razawiya - Volume 4

[Arabic Section]: He repeated the prayer, and if he was not given (water), his prayer is complete. Thus, declaring it absolutely controversial in nine out of twelve cases is not sound. And if the 'omitted' cases are also taken, as we have done, then there are eighteen cases. That is, according to this division; however, if the cases of 'promise' are included, they will be very many, as will be discussed later. Seventhly: Omission of (1) cases of promise and silence, even though they contain important discussions. Thus, the categories according to the method followed are not twenty-four or sixty-six, but four hundred and twenty-six. This is because either (1) he asks before Tayammum, or (2) after it before starting the prayer, or (3) during it by interrupting it, or (4) after it, or (5) not at all. These are five categories. The first two only occur with knowledge before the prayer, and the rest allow for the possibility of knowledge during or before it, so they are eight. In every estimation, he either has a presumption of being given, or a presumption of being denied, or he is in doubt. Thus, they are twenty-four cases. The category of 'asking' includes eighteen of them, and the category of 'not asking' includes six. Asking before Tayammum or after it before the prayer is a three-fold division...

[Urdu Section]: He prayed while someone was present from whom he could have enquired. Then that person informed him about water, so he should repeat it. It wasn't said, 'Then he asked and the person informed him.' Consequently, it is said in Al-Jawhara al-Nayira: 'He saw someone with water but did not ask him. He performed the prayer. Then, after finishing his prayer, if the person gave it without being asked, he should perform wudu and repeat it, and if not, his prayer is complete.' End. So, declaring it absolutely controversial in nine out of twelve cases is not correct. And if the omitted cases are also included as we have done, then there are eighteen cases. Meaning, on this division, but if cases of promise are also included, they will be many more, as will be mentioned. (T) Seventhly: The cases of promise and silence were left out while they contain important discussions, so according to their style, the categories would be neither twenty-four nor sixty-six but four hundred and twenty-six. This is because the question will either be before tayammum, or after tayammum before starting prayer, or inside the prayer such that he breaks the prayer, or after prayer, or there will be no question at all; these are five cases. The first two cases will not be without knowledge before prayer, and in the rest there is a possibility that it is known inside prayer or before prayer. So these became eight and in every case he will have presumption of giving or presumption of withholding or there will be doubt

so these became twenty-four cases. Out of these, eighteen are of asking and six are of not asking, involving presumption of giving, withholding, and doubt...

Footnote: 1 Al-Jawhara al-Nayira, Chapter of Tayammum, Maktaba Imdadiya Multan 29/1 Page 157 of 761

फतावा रज़विया - खंड 4

[अरबी खंड]: उसने नमाज़ दोहराई, और यदि उसे (पानी) नहीं दिया गया, तो उसकी नमाज़ मुकम्मल है। अत; बारह में से नौ स्थितियों में इसे पूर्णतः विवादास्पद घोषित करना सही नहीं है। और यदि 'छोड़े गए' मामलों को भी लिया जाए, जैसा कि हमने किया, तो अठारह मामले होंगे। अर्थात्, इस विभाजन के अनुसार; हालाँकि, यदि 'वादे' की स्थितियों को शामिल किया जाता है, तो वे बहुत अधिक होंगी, जैसा कि बाद में चर्चा की जाएगी। सातवाँ: वादे और चुप्पी की स्थितियों का लोप (1), हालाँकि उनमें महत्वपूर्ण चर्चाएँ हैं। इस प्रकार, अपनाई गई पद्धति के अनुसार श्रेणियाँ न चौबीस हैं और न ही छियासठ, बल्कि चार सौ छब्बीस हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि या तो (1) वह तयम्मुम से पहले पूछता है, या (2) उसके बाद नमाज़ शुरू करने से पहले, या (3) नमाज़ के दौरान उसे बाधित करके, या (4) उसके बाद, या (5) बिल्कुल नहीं। ये पाँच श्रेणियाँ हैं। पहली दो केवल नमाज़ से पहले ज्ञान के साथ होती हैं, और बाकी नमाज़ के दौरान या उससे पहले ज्ञान की संभावना की अनुमति देती हैं, इसलिए वे आठ हैं। हर अनुमान में, उसे या तो दिए जाने का गुमान होता है, या मना किए जाने का गुमान होता है, या वह संदेह में होता है। इस प्रकार, वे चौबीस मामले हैं। 'पूछने' की श्रेणी में उनमें से अठारह शामिल हैं, और 'न पूछने' की श्रेणी में छह शामिल हैं। तयम्मुम से पहले या उसके बाद नमाज़ से पहले पूछना तीन स्तरीय विभाजन है...

[उर्दू खंड]: उसने नमाज़ पढ़ ली जबकि वहाँ कोई ऐसा था जिससे वह पूछ सकता था। फिर उस व्यक्ति ने पानी की सूचना दी तो वह नमाज़ दोहराए। यह नहीं कहा गया कि 'फिर उसने सवाल किया तो उस व्यक्ति ने बताया'। अतः अल-जौहरा अल-नैयिरा में कहा गया है: 'उसने किसी ऐसे व्यक्ति को देखा जिसके पास पानी था, पर उसने उससे नहीं माँगा। नमाज़ पढ़ ली। फिर नमाज़ पूरी करने के बाद अगर उस व्यक्ति ने बिना माँगे पानी दे दिया, तो वह वुज़ू करके नमाज़ दोहराए, और अगर नहीं दिया तो उसकी नमाज़ मुकम्मल है।' समाप्त। इसलिए, बारह में से नौ स्थितियों में इसे पूरी तरह विवादास्पद घोषित करना सही नहीं है। और अगर छोड़े गए मामलों को भी शामिल कर लिया जाए जैसा कि हमने किया, तो अठारह स्थितियां होंगी। यानी इस विभाजन पर, लेकिन यदि वादे की स्थितियों को भी ले लिया जाए, तो वे बहुत अधिक हो जाएंगी, जैसा कि आगे बताया जाएगा। (त) सातवाँ: वादे और इस चुप्पी की स्थितियों को छोड़ दिया गया जबकि उनमें महत्वपूर्ण चर्चाएँ हैं, तो उनके तरीके के अनुसार श्रेणियाँ न चौबीस होंगी न छियासठ बल्कि चार सौ छब्बीस होंगी। वह इसलिए कि सवाल या तो तयम्मुम से पहले होगा, या तयम्मुम के बाद नमाज़ शुरू करने से पहले, या

नमाज़ के अंदर इस तरह कि वह नमाज़ तोड़ दे, या नमाज़ के बाद, या सवाल बिल्कुल नहीं होगा; ये पाँच स्थितियाँ हुईं। पहली दो स्थितियाँ नमाज़ से पहले ज्ञान के बिना नहीं होंगी, और बाकी में यह संभावना है कि नमाज़ के अंदर मालूम हो या नमाज़ से पहले। तो ये आठ हुईं और हर सूरत में उसे देने का गुमान होगा या मना करने का गुमान होगा या संदेह होगा, तो ये चौबीस स्थितियाँ हुईं। इनमें से अठारह सवाल वाली हैं और छह बिना सवाल वाली, जिनमें देने का गुमान, रोकने का गुमान और शक शामिल है...

फुटनोट: 1 अल-जौहरा अल-नैयिरा, बाब-उत-तयम्मुम, मकतबा इमदादिया मुल्तान 29/1 पृष्ठ 157 का 761

[عربی حصہ]: اعاد وان لم یعط فصلاته تامة اھ فجعلها خلافیة مطلقاً غیر سدید فی تسعة من اثنی عشر وان (۱) اخذت المتروکات ایضاً کما فعلنا ففی ثمانیة عشر ای علی هذا التقسیم اما علی اخذ صور الوعد فکثیر جدا کما یأتی۔ وسابعاً: ترك (۱) صور الوعد والسکوت وفیها مباحث تهم فالاقسام علی ماسلك لا اربعة وعشرون ولا ستة وستون بل اربعمائة وستة وعشرون وذلك لانه اما (۱) ان یسأل قبل التیمم او (۲) بعده قبل الشروع فی الصلاة او (۳) فیها بقطعها او (۴) بعدها اولاً (۵) اصلا فهی خمس ولایکون الاولان الا بالعلم قبل الصلاة والبواقی تحتمل العلم فیها وقبلها فهی ثمانیة وعلی کل تقدیر یظن منحاً او منعاً او یشك فهی اربعة وعشرون - فریق السؤال منها ثمانیة عشر وفریق عدمه ستة والسؤال قبل التیمم او بعده قبل الصلاة ثلاثی

[اردو حصہ]: پڑھ لی جبکہ وہاں کوئی ایسا تھا جس سے دریافت کرلے پھر اس نے پانی کی خبر دی تو اعادہ کرے "۔ یہ نہ فرمایا کہ " پھر اس نے سوال کیا تو اس نے بتایا "۔ لاجرم جوہرہ نیرہ میں یہ کہا: کسی ایسے شخص کو دیکھا جس کے پاس پانی ہے اس سے طلب نہ کیا۔ نماز پڑھ لی۔ پھر اس کی نماز سے فارغ ہونے کے بعد اس نے بغیر مانگے دے دیا تو وضو کر کے اعادہ کرے اور اگر نہ دیا تو اس کی نماز تمام ہے " اھ تو اسے بارہ میں سے نو صورتوں میں مطلقاً خلافی قرار دینا درست نہیں۔ اور اگر متروکات بھی لے لیے جائیں جیسا کہ ہم نے کیا تو اٹھارہ صورتوں میں۔ یعنی اس تقسیم پر لیکن وعدہ کی صورتیں بھی لی جائیں تو بہت زیادہ ہوجائیں گی، جیسا کہ ذکر آرہا ہے۔ (ت) سابعاً: وعدہ اس سکوت کی صورتیں چھوڑ دیں جبکہ اس میں اہم بحثیں ہیں تو ان کے طرز پر قسمیں نہ چوبیس ہوں گی نہ چھیاسٹھ بلکہ چار سو چھبیس ہوں گی۔ وہ اس لئے کہ سوال یا تو قبل تیمم ہوگا، یا بعد تیمم قبل شروع نماز، یا اندرون نماز اس طرح کہ نماز توڑ دے، یا

بعد نماز یا سوال بالکل نہ ہوگا یہ پانچ صورتیں ہوئیں پہلی دونوں صورتیں قبل نماز علم کے بغیر نہ ہوں گی اور بقیہ میں احتمال ہے کہ اندرون نماز معلوم ہو یا قبل نماز ہو۔ تو یہ آٹھ ہوئیں اور بہر تقدیر اسے ظن عطا ہوگا یا ظن منع یا شک ہوگا تو یہ چوبیس صورتیں ہوئیں۔ ان میں سے اٹھارہ سوال والی ہیں اور چھ عدم سوال والی اور ظن عطا و منع اور شک کے

حاشیہ: 1 الجوھرۃ النیرۃ باب التیمم مکتبہ امدادیہ ملتان ۲۹/۱ صفحہ 157 از 761

Volume 4 | Fatawa Razvia

[Arabic Text:] In view of suspicion, doubt, and questioning during or after it, each case is six-fold by adding whether the sight [of water] occurs during the prayer or before it, and the scenario of not questioning covers both aspects as you will soon learn. Then, for every question, either he gives immediately, which is 'Immediate Gift' (Al-Ata Al-A'ajil), or he promises, remains silent, or refuses. After each of these three, either he gives, which is 'Delayed Gift' (Al-Ata Al-Aajil), or he does not. If he does not give according to the promise, then either his breach of promise becomes apparent or not, as we previously mentioned in the fifth warning. Thus, for every question, there are eight [عه] ways. As for the immediate gift, it does not separate from the question in its time. Regarding the delayed gift without a promise, it is possible that it occurs (1) before Tayammum, or (2) after it before the prayer, or (3) during the prayer, or (4) after it within the time before gaining information about his Tayammum and prayer, or (5) after that, or (6) after the time. As for the case of a promise, there are only two possibilities: giving within the time or after it, because a promise necessitates waiting until the expiry of the time. So, whenever he promised, it was not for him to perform Tayammum or pray, whether initially or repeatedly. Once you have understood this...

[Urdu Explanation:] From the perspective of questioning before or after Tayammum and before prayer, there are three scenarios each. And for questioning during or after prayer, there are six scenarios each, such that the addition of the sight being during or before prayer will be made. The scenario of not questioning covers both forms, as will be known. (T) Then, for every question, he will either give immediately, which is named 'Immediate Gift' (Ata-e-A'ajil), or he will promise, remain silent, or refuse. After each of these three, he will either give, which is 'Delayed Gift' (Ata-e-Aajil), or he will not give. When he does not give in the case of a promise, either a breach will be apparent or not, as we have already stated in the fifth warning. Thus, there are eight^ scenarios for every question. The immediate gift is not separate in time from the question, while for the delayed gift without a promise, there is a possibility that it occurs before Tayammum, or after Tayammum [2] before prayer, or during prayer [3], or after prayer [4] within the time before the information of his Tayammum and prayer, or after that [5], or after the time [6]. However, in a promise, there are only two forms: giving within the time or after the time. This is because a promise makes waiting mandatory until the time expires. So when...

عه [Arabic Note:] (1) Gives immediately (2) Promises and then gives (3) Or does not give (4) breaching the promise or not (5) Remains silent and then gives (6) Or does not (7) Refuses and then gives (8) Or does not. 12 Minhu (M) [Urdu Note:] (1) Gives immediately (2) Promises then gives. (3) Does not give by breaching the promise (4) Or gives without breaching (5) Maintains silence then gives (6) Or does not give (7) Refuses then gives (8) Or does not give. 12 Minhu (T)

Page 158 of 761

जिल्द चहारम | फ़तावा रिज़विया

[अरबी पाठ:] संदेह, शंका और उसके दौरान या बाद में सवाल करने के विचार से, प्रत्येक मामला छह-गुना है, इस बात को जोड़ते हुए कि क्या दृष्टि [पानी की] नमाज़ के दौरान है या उससे पहले, और सवाल न करने का रूप दोनों पहलुओं को शामिल करता है जैसा कि आप जल्द ही जानेंगे। फिर, प्रत्येक अनुरोध पर, वह या तो तुरंत देता है, जो 'तत्काल उपहार' (अल-अता अल-आजिल) है, या वादा करता है, या चुप रहता है, या मना कर देता है। इन तीनों में से प्रत्येक के बाद, वह या तो देता है, जो 'विलंबित उपहार' (अल-अता अल-आज़िल) है, या नहीं देता है। यदि वह वादे के अनुसार नहीं देता है, तो या तो उसका वादा तोड़ना प्रकट होता है या नहीं, जैसा कि हमने पहले पांचवीं चेतावनी में बताया था। इस प्रकार, प्रत्येक अनुरोध के लिए आठ [عه] तरीके हैं। जहाँ तक तत्काल उपहार का सवाल है, वह अपने समय में सवाल से अलग नहीं होता है। बिना वादे के विलंबित उपहार के संबंध में, यह संभव है कि वह (1) तयम्मुम से पहले हो, या (2) उसके बाद नमाज़ से पहले, या (3) नमाज़ के दौरान, या (4) उसके बाद समय के भीतर उसके तयम्मुम और नमाज़ की जानकारी मिलने से पहले, या (5) उसके बाद, या (6) समय के बाद हो। जहाँ तक वादे के मामले का सवाल है, केवल दो ही संभावनाएँ हैं: समय के भीतर देना या उसके बाद, क्योंकि वादा समय की समाप्ति तक प्रतीक्षा करना अनिवार्य बनाता है। इसलिए, जब भी उसने वादा किया, तो उसके लिए तयम्मुम करना या शुरू में या बार-बार नमाज़ पढ़ना नहीं था। जब आप यह जान लें...

[उर्दू अनुवाद/व्याख्या:] तयम्मुम से पहले या बाद और नमाज़ से पहले सवाल करने के लिहाज़ से तीन-तीन सूरतें हैं। और नमाज़ के अंदर या नमाज़ के बाद सवाल करने की छह-छह सूरतें हैं, इस तरह कि नमाज़ के अंदर या नमाज़ से पहले दृष्टि होने का इज़ाफ़ा (जोड़) होगा। और सवाल न करने वाली सूरत दोनों शक्लों को शामिल है, जैसा कि मालूम होगा। (त) फिर हर सवाल पर या तो उसे फ़ौरन दे देगा इसका नाम 'अता-ए-आजिल' है या वादा या सुकूत (खामोशी) या इंकार करेगा। और इन तीनों में से हर एक के बाद या तो दे देगा और यह 'अता-ए-आज़िल' है या न देगा। और जब वादे की सूरत में न देगा तो या तो इसके ख़िलाफ़ ज़ाहिर होगा या नहीं जैसा कि तनबीह (चेतावनी) पंचम में हम पहले बयान कर चुके हैं, तो हर सवाल में आठ^ सूरतें हुईं। अता-ए-आजिल तो सवाल से वक़्त में जुदा नहीं होती और अता-ए-आज़िल बिना वादे के उसमें एहतमाल (संभावना) है कि तयम्मुम से पहले हो या बादे तयम्मुम [२] नमाज़ से पहले या अंदरूने नमाज़ [३] या बा'दे नमाज़ [४] अंदरूने वक़्त उसके तयम्मुम व नमाज़ पर इत्तिला से क़ब्ल या बा'द [५] या वक़्त के बा'द [६] लेकिन वादे में दो ही

शक्लें हैं। वक़्त में या बा'द-ए-वक़्त देना, इस लिए कि वादा वक़्त निकलने तक इंतज़ार वाजिब करता है तो जब उससे...

عہ [अरबी नोट:] (1) तुरंत देता है (2) वादा करता है और फिर देता है (3) या नहीं देता (4) वादा तोड़ते हुए या बिना तोड़े (5) चुप रहता है और फिर देता है (6) या नहीं देता (7) मना करता है और फिर देता है (8) या नहीं देता। 12 मिन्हु (म) [उर्दू नोट:] (1) फ़ौरन दे दे (2) वादा करे फिर दे दे। (3) वादा खिलाफी करते हुए न दे (4) या बग़ैर वादा खिलाफी के न दे (5) सुकूत इख़्तियार करे फिर दे दे (6) या न दे (7) इंकार करे फिर दे दे (8) या न दे। 12 मिन्हु (त)

पृष्ठ 158/761

باعتبار الظنین والشك والسؤال فیها او بعدها کل سداسی باضافة کون الرؤیة فی الصلاة او قبلها وصورة عدم السؤال تشمل الوجهین کما ستعرف - ثم علی کل سؤال اما ان یعطی من فوره وهو العطاء العاجل او یعد او یسکت او یأبی وبعد کل من الثلثة اما ان یعطی وهو العطاء الأجل اولا واذا لم یعط فی الوعد فاما ان یظهر خلفه اولا کما قدمنا فی التنبیه الخامس ففی کل سؤال ثمانیة عه وجوه اما العطاء العاجل فلا یفارق السؤال فی زمانه والأجل فی غیر الوعد یحتمل ان (۱) یکون قبل التیمم او (۲) بعده قبل الصلاة او (۳) فیها او (۴) بعدها فی الوقت قبل الاطلاع علی تیممه وصلاته او (۵) بعده او (۶) بعد الوقت اما فی الوعد فلا الا وجهین وهما العطاء فی الوقت او بعده لان الوعد یوجب الانتظار الی خروج الوقت فمهما وعد لم یکن له ان یتیمم او یصلی بداء او عودا اذا عرفت هذا

اعتبار سے سوال قبل تیمم یا بعد تیمم قبل نماز کی تین تین صورتیں ہیں اور نماز کے اندر یا نماز کے بعد سوال کی چھ چھ صورتیں ہیں اس طرح کہ رؤیت اندرونِ نماز یا قبل نماز ہونے کا اضافہ ہو گا اور عدمِ سوال والی صورت دونوں شکلوں کو شامل ہے، جیسا کہ معلوم ہوگا۔ (ت) پھر ہر سوال پر یا تو اسے فوراً دے دے گا اس کا نام عطائے عاجل ہے یا وعدہ یا سکوت یا انکار کرے گا۔ اور ان تینوں میں سے ہر ایک کے بعد یا تو دے دے گا اور یہ عطائے آجل ہے یا نہ دے گا اور جب صورتِ وعدہ میں نہ دے گا تو یا تو اس کے خلاف ظاہر ہوگا یا نہیں جیسا کہ تنبیہ پنجم میں ہم پہلے بیان کر چکے تو ہر سوال میں آٹھ۸ صورتیں ہوئیں، عطائے عاجل تو سوال سے وقت میں جدا نہیں ہوتی اور عطائے آجل غیرِ وعدہ میں احتمال ہے کہ قبل تیمم ہو یا بعد تیمم ۲ قبل نماز یا اندرونِ نماز ۳ یا بعدِ نماز ۴ اندرونِ وقت اس کے تیمم و نماز پر اطلاع سے قبل یا بعد ۵ یا وقت کے بعد ۶

لیکن وعدہ میں دو ہی شکلیں ہیں۔ وقت میں یا بعدِ وقت دینا، اس لئے کہ وعدہ وقت نکلنے تک انتظار واجب کرتا ہے تو جب اس سے

عه یعطی عاجلاً (۱) یعد فیعطی (۲) اولا یعطی (۳) مخلفاً او غیر مخلف (۴) یسکت فیعطی (۵) اولا (۶) یأبی فیعطی (۷) اولا (۸) ۱۲ منه (م) (۱) فوراً دے دے (۲) وعدہ کرے پھر دے دے۔ (۳) وعدہ خلافی کرتے ہوئے نہ دے (۴) یا بغیر وعدہ خلافی کے نہ دے (۵) سکوت اختیار کرے پھر دے دے (۶) یا نہ دے (۷) انکار کرے پھر دے دے (۸) یا نہ دے ۱۲ منه (ت)

Fatawa Rizvia, Volume 4

Arabic Text (Top Column): If the question (about the availability of water) arises before performing Tayammum, all options are permissible. Its eight (forms) become nineteen (19) by making each delayed provision six-fold in cases other than a promise, and doubling it in a promise, along with four forms of non-provision and one form of immediate provision. Because it is three-fold, it becomes fifty-seven (57). (2) If the question is after Tayammum but before prayer, the first form of the six delayed provisions is excluded, which is provision before Tayammum. Thus, in both silence and refusal, there are five scenarios each, the sixth being non-provision, totaling twelve. The four scenarios for a promise remain as they were, i.e., giving within the time, or after it, or not giving by breaking the promise, or not giving without breaking the promise. Including the one scenario for immediate provision, there are seventeen (17) scenarios. When tripled, these become fifty-one (51). (3) If it is during the prayer, the divisions are like the previous seventeen, but since this is sixfold, it becomes one hundred and two (102).

Urdu Text (Top Column): If a promise was made, it is not permissible for him to perform tayammum or pray, whether for the first time or again. When this is known, see: when the question is before tayammum, all scenarios can occur. So, there are eight scenarios: with six scenarios for each delayed provision without a promise and two scenarios for a promise, four for non-provision, and one for immediate provision, totaling nineteen (19) scenarios. Due to being three-fold, they became fifty-seven (57). And when the question is after tayammum before prayer, the first form out of the six delayed provisions will be excluded, which is that provision was made before tayammum. Now, in both silence and refusal, there are five scenarios each; the sixth form is non-provision, so there were twelve scenarios. The four promise scenarios remained as they were before, i.e., giving within time, or after it, or not giving while breaking the promise, or not giving without breaking the promise. And there is one scenario of immediate provision.

Arabic Footnote: Note: Because in a promise, it is given in time or after time, or it is not given, breaking the promise or not; these are four. In each of silence and refusal, it is either not given, or given before Tayammum, or before prayer, or during it, or after it in time (either before or after notification), or after the time. So they are seven in both. These fourteen and one immediate provision make nineteen (19) scenarios. (May He be forgiven).

Urdu Footnote: Because in the case of a promise, he will either give within the time, or after the time, or not give while breaking the promise, or not give without breaking the promise. These are four scenarios. In both silence and refusal, he will either not give, or give before tayammum, or before prayer, or during prayer, or after prayer (either before or after notification within the time), or after the time. So there are seven scenarios for each, totaling fourteen (14). Including these fourteen and one immediate provision, there are nineteen (19) scenarios in total. (May He be forgiven).

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4

अरबी पाठ (ऊपरी स्तंभ): यदि प्रश्न (पानी की उपलब्धता के बारे में) तयम्मुम करने से पहले उत्पन्न होता है, तो सभी विकल्प जायज़ हैं। इसके आठ (रूप) उन्नीस (19) हो जाते हैं, प्रत्येक विलंबित प्रावधान को बिना वादे के छह गुना और वादे में दोगुना करने के साथ-साथ न देने के चार रूपों और तत्काल प्रावधान के एक रूप के साथ। क्योंकि यह तीन गुना है, यह सत्तावन (57) हो जाता है। (2) यदि प्रश्न तयम्मुम के बाद लेकिन नमाज़ से पहले हो, तो छह विलंबित प्रावधानों में से पहला रूप बाहर हो जाता है, जो कि तयम्मुम से पहले का प्रावधान है। इस प्रकार, चुप्पी और इनकार दोनों में पाँच-पाँच स्थितियाँ हैं, छठी न देने की है, जिससे कुल बारह हो जाती हैं। वादे की चार स्थितियाँ वैसी ही रहती हैं जैसी वे पहले थीं, यानी समय के भीतर देना, या उसके बाद, या वादा तोड़कर न देना, या वादा तोड़े बिना न देना। तत्काल प्रावधान की एक स्थिति सहित, सत्रह (17) स्थितियाँ होती हैं। तीन गुना होने पर, ये इक्यावन (51) हो जाती हैं। (3) यदि यह नमाज़ के दौरान हो, तो विभाजन पिछले सत्रह की तरह ही होगा, लेकिन चूंकि यह छह गुना है, इसलिए यह एक सौ दो (102) हो जाता है।

उर्दू पाठ (ऊपरी स्तंभ): यदि वादा किया गया था, तो उसके लिए तयम्मुम करना या नमाज़ पढ़ना जायज़ नहीं है, चाहे पहली बार हो या दोबारा। जब यह ज्ञात हो जाए, तो देखें: जब प्रश्न तयम्मुम से पहले हो, तो सभी स्थितियाँ हो सकती हैं। तो, आठ स्थितियाँ हैं: बिना वादे के प्रत्येक विलंबित प्रावधान के लिए छह स्थितियाँ और वादे के लिए दो स्थितियाँ, न देने की चार, और तत्काल प्रावधान की एक, कुल उन्नीस (19) स्थितियाँ। तीन गुना होने के कारण, वे सत्तावन (57) हो गईं। और जब प्रश्न तयम्मुम के बाद नमाज़ से पहले हो, तो छह विलंबित प्रावधानों में से पहला रूप निकल जाएगा, जो कि तयम्मुम से पहले किया गया प्रावधान था। अब, चुप्पी और इनकार दोनों में पाँच-पाँच स्थितियाँ हैं; छठा रूप न देने का है, इसलिए बारह स्थितियाँ हुईं। वादे की चार स्थितियाँ वैसी ही रहीं जैसी वे पहले थीं, यानी समय के भीतर देना, या उसके बाद, या वादा तोड़ते हुए न देना, या बिना वादा तोड़े न देना। और तत्काल प्रावधान की एक स्थिति है।

अरबी फ़ुटनोट: नोट: क्योंकि वादे में, यह समय पर या समय के बाद दिया जाता है, या वादा तोड़कर या बिना तोड़े नहीं दिया जाता है; ये चार हैं। चुप्पी और इनकार में से प्रत्येक में, यह या तो नहीं दिया जाता है, या तयम्मुम से पहले दिया जाता है, या नमाज़ से पहले, या उसके दौरान, या समय के भीतर (अधिसूचना से पहले या बाद में), या समय के बाद दिया जाता है। तो वे दोनों में सात हैं। ये चौदह और एक तत्काल प्रावधान उन्नीस (19) स्थितियाँ बनाते हैं। (अल्लाह उन्हें क्षमा करे)।

उर्दू फ़ुटनोट: क्योंकि वादे के मामले में, वह या तो समय के भीतर देगा, या समय के बाद देगा, या वादा तोड़ते हुए नहीं देगा, या बिना वादा तोड़े नहीं देगा। ये चार स्थितियाँ हुईं। चुप्पी और इनकार दोनों में, वह या तो नहीं देगा, या तयम्मुम से पहले देगा, या नमाज़ से पहले देगा, या नमाज़ के दौरान देगा, या नमाज़ के बाद (समय के भीतर सूचना से पहले या बाद में), या समय के बाद देगा। तो प्रत्येक के लिए सात-सात स्थितियाँ हैं, कुल चौदह (14)। इन चौदह और एक तत्काल प्रावधान को मिलाकर कुल उन्नीस (19) स्थितियाँ हुईं। (अल्लाह उन्हें क्षमा करे)।

पृष्ठ 159 / 761

جلد چہارم فتاوی رضویہ

عربی متن (اوپر کالم): فاذا كان السؤال قبل التيمم ساغ الكل فثمانيته صار بتسديس كل عطاء اجل فی غير الوعد وتثنيته فيه مع اربعة وجوه عدم العطاء ووجه واحد للعطاء العاجل تسعة عشر عه ولكونه ثلاثيا سبعة وخمسين (۵۷) ۔ (۲) اذا كان بعده قبل الصلاة خرج الاول من ستة العطاء الأجل وهو العطاء قبل التيمم فهو فی كل من السكوت والاباء خمسة سادسها عدم العطاء صارت اثنی عشر وللوعد اربعة كما كانت ای يعطی فی الوقت او بعده او لا يعطی مخلفا او غير مخلف وواحد هو العطاء العاجل فهی سبعة عشر وبالتثليث احد و خمسون (۵۱) و (۳) اذا كان فيها فالاقسام كسابقه سبعة عشر غير ان هذا سداسي فصارت مائة (۱۰۲) واثنين -

اردو متن (اوپر کالم): وعدہ ہوا تو اسے روا نہیں کہ تیمّم کرے یا نماز پڑھے خواہ ابتداءً یا دوبارہ جب یہ معلوم ہو گیا تو دیکھئے جب سوال قبل تیمّم ہو تو سب صورتیں ہو سکتی ہیں۔ تو اس کی آٹھ صورتیں ہر عطائے آجل غیر وعدہ کی چھ صورتوں کے ساتھ اور وعدہ کی دو صورتیں عدم عطا کی چار اور عطائے آجل کی ایک صورت کے ساتھ کُل انیس ۱۹ صورتیں ہوئیں اور ثلاثی ہونے کی وجہ سے ستاون ۵۷ ہوئیں۔ اور جب سوال بعد تیمّم قبل نماز ہو تو عطائے آجل کی چھ میں سے پہلی شکل نکل جائے گی اور وہ یہ کہ عطا قبل تیمّم ہو اب سکوت و انکار ہر ایک میں پانچ صورتیں ہیں چھٹی شکل عدم عطا ہے تو بارہ صورتیں ہوئیں اور وعدہ کی چار صورتیں رہیں جیسے پہلے تھیں یعنی وقت کے اندر دے یا اس کے بعد یا وعدہ خلافی کرتے ہوئے نہ دے یا بغیر وعدہ خلافی کے نہ دے اور ایک عطائے عاجل والی صورت ہے۔

عربی حاشیہ: عه لانه فی الوعد یعطی فی الوقت او بعده اولا یعطی مخلفا او غیر مخلف هذه اربعة وفي كل من السكوت والاباء لا یعطی او یعطی قبل التیمم او قبل الصلاة او فیها او بعدها فی الوقت فهی سبعة فی کلیهما فاربعة مع اربعة عشر وواحد هو العطاء العاجل صارت تسعة عشر ۱۲منہ غفر له (م)

اردو حاشیہ: اس لئے کہ بصورت وعدہ یا تو وقت میں دے گا یا بعدِ وقت دے گا یا وعدہ خلافی کرتے ہوئے یا بغیر وعدہ خلافی کے نہ دے گا۔ یہ چار صورتیں ہوئیں اور سکوت و انکار ہر ایک میں یا تو نہ دے گا یا قبلِ تیمم دے گا یا قبلِ نماز یا دورانِ نماز یا بعدِ نماز وقت میں اطلاع سے قبل یا بعد، یا بعدِ وقت ۔ تو دونوں میں یہ سات سات صورتیں ہیں تو چودہ ۱۴ صورتیں، ان چودہ صورتوں کے ساتھ اور ایک صورت عطائے عاجل کے ساتھ کُل انیس ۱۹ صورتیں ہوئیں ۱۲منہ غفرلہ (ت)

Volume Four Fatawa Rizwia

[Right Column - Urdu Text] So there were 17 scenarios, and multiplying by three makes fifty-one (51). And when the question arises during prayer, there will be 17 scenarios here as well, similar to the previous case, but each of them has six scenarios, making one hundred and two (102) scenarios. When it is after prayer, the first three of the silence and refusal gift scenarios will be excluded, so in each, there will be four for non-gift and four for promise as before. These are twelve scenarios, and there are two forms of immediate gift here: giving it after seeing him performing tayammum and praying, or not being aware of it. This division is necessary to dispel the notion that if he saw him and remained silent, it would be evidence of prohibition, and giving afterwards would not be beneficial. We have cleared this doubt in the ninth problem. So, there are fourteen (14) scenarios which, when multiplied by six, become eighty-four (84). Thus, the total in the questioning section is two hundred and ninety-four (294) scenarios. (T) And when he does not ask, he either gives without a promise, or promises, or neither gives nor promises. Here, this gift itself follows the six forms of delayed gift there. The first two are tripartite, and the rest are hexapartite, like the third of these categories, meaning no gift and no promise. So, there were thirty-six (36) scenarios. In the promise, there are five forms: the first two are tripartite, and the next three are hexapartite. This is because a promise without a question at another time has no connection to this prayer. So, there were twenty-four (24) scenarios. Then, for each promise, there are four (4) scenarios as before. These are ninety-six (96).

[Left Column - Arabic Text] And if it was after it, the first three scenarios of silence and refusal gifts are excluded. In each, with the non-gift, there are four, and in the promise, there are four like the diagram. So, they are twelve. Immediate gift here has two aspects: giving it after seeing him perform tayammum and pray with it, or not knowing about it. This division is needed to refute the illusion that if he had seen him and kept silent, it would indicate prohibition, so giving after it would not benefit. We have already removed it in the ninth issue. So it became fourteen, and by hexapartition, they became eighty-four. Thus, the questioning group is two hundred and ninety-four. And if he does not ask, he gives without a promise or promises first. Here, this gift itself has six aspects: the deferred gift, then the first two of them are tripartite and the rest are hexapartite like the third of these divisions, i.e., neither nor. So it was thirty-six. And the promise has five aspects: the first two tripartite and the following three are hexapartite because the promise without asking at another time

has no connection with this prayer. So it was twenty-four. Then in each promise, there are four as per the diagram, so it is ninety-six. And with the mentioned thirty-six...

[दायां कॉलम - उर्दू पाठ] तो सत्रह (17) सूरतें हुईं और तीन में गुणा करने से इक्यावन (51) हो गईं। और जब सवाल नमाज़ के दौरान हो तो इससे पहले वाले की तरह यहाँ भी सत्रह (17) सूरतें होंगी लेकिन उनमें से प्रत्येक में छह सूरतें हैं तो एक सौ दो (102) सूरतें हो गईं। और जब नमाज़ के बाद हो तो खामोशी और इनकार वाली अता की सूरतों में से पहली तीन निकल जाएँगी, तो प्रत्येक में अता न होने के साथ चार और वादे में पहले की तरह चार रहेंगी। ये बारह सूरतें हैं और अता-ए-आज़िल (तत्काल दान) की यहाँ दो शक्लें हैं: उसे तयम्मुम करते और नमाज़ पढ़ते हुए देखने के बाद दिया या उससे अवगत नहीं हुआ। और इस विभाजन की आवश्यकता इस वहम (भ्रम) को दूर करने के लिए है कि यदि उसे देखकर चुप रहता तो यह मना करने की दलील होती, फिर उसके बाद देना लाभप्रद न होता। मसला नंबर नौ में हम यह वहम दूर कर आए हैं। तो चौदह (14) सूरतें हुईं जिन्हें छह में गुणा करने से चौरासी (84) बनीं। इस तरह सवाल के हिस्से में कुल दो सौ चौरानवे (294) सूरतें हुईं। (त) और जब सवाल न करे तो वह या तो बिना वादा किए दे देगा या वादा करेगा या न देगा न वादा करेगा। यहाँ स्वयं यह अता वहाँ की अता-ए-आजिल (विलंबित दान) की छह सूरतों पर आधारित है। उनमें से पहली दो त्रिगुणीय (थलाथी) हैं और बाकी षडगुणीय (सुदासी) हैं जैसे इन श्रेणियों में से तीसरी, यानी न अता हो न वादा, तो छत्तीस (36) सूरतें हुईं। और वादे में पांच सूरतें हैं, पहली दो त्रिगुणीय और उसके बाद तीन षडगुणीय। इसलिए कि दूसरे समय में बिना सवाल के वादे का इस नमाज़ से कोई संबंध नहीं है, तो ये चौबीस (24) सूरतें हुईं। फिर प्रत्येक वादे पर पहले की तरह चार (4) सूरतें। ये छियानवे (96) सूरतें हुईं।

[बायां कॉलम - अरबी पाठ] और यदि इसके बाद हो, तो खामोशी और इनकार की अता की पहली तीन सूरतें निकल जाती हैं। प्रत्येक में अता की अनुपस्थिति के साथ चार हैं और वादे में रेखाचित्र के अनुसार चार हैं। तो वे बारह हैं। तत्काल अता के यहाँ दो पहलू हैं: उसे तयम्मुम करते और नमाज़ पढ़ते हुए देखने के बाद उसे दिया या उसके बारे में नहीं जाना। और इस विभाजन की आवश्यकता इस भ्रम को दूर करने के लिए है कि यदि उसने उसे देखा होता और चुप रहा होता, तो यह मनाही का संकेत होता, इसलिए उसके बाद देना कोई लाभ नहीं देगा। हमने इसे नौवें मुद्दे में पहले ही हटा दिया है। तो यह चौदह हो गया, और षडगुणीकरण द्वारा, वे चौरासी हो गए। इस प्रकार, पूछताछ समूह दो सौ चौरानवे है। और यदि वह नहीं पूछता है, तो वह बिना वादे के देता है या पहले वादा करता है। यहाँ, यह अता स्वयं छह पहलुओं पर है: विलंबित अता, फिर उनमें से पहले दो त्रिगुणीय हैं और बाकी

इन विभाजनों के तीसरे की तरह षडगुणीय हैं, यानी न यह न वह। तो यह छत्तीस था। और वादे के पांच पहलू हैं: पहले दो त्रिगुणीय और निम्नलिखित तीन षडगुणीय हैं क्योंकि दूसरी बार पूछने के बिना वादा इस नमाज़ के साथ कोई संबंध नहीं रखता है। तो यह चौबीस था। फिर प्रत्येक वादे में, चित्र के अनुसार चार होते हैं, इसलिए यह छियानवे है। और उल्लिखित छत्तीस के साथ...

पृष्ठ 160/761

[دایاں کالم - اردو متن] تو سترہ ۱۷ صورتیں ہوئیں اور تین میں ضرب دینے سے اکیاون ۵۱ ہو گئیں۔ اور جب سوال اندرون نماز ہو تو اس سے پہلے والے کی طرح یہاں بھی سترہ ۱۷ صورتیں ہوں گی مگر یہ کہ ان میں سے ہر ایک میں چھ صورتیں ہیں تو ایک سو دو ۱۰۲ صورتیں ہو گئیں ، اور جب بعد نماز ہو تو سکوت وانکار کی عطا والی صورتوں میں سے پہلی تین نکل جائیں گی تو ہر ایک میں عدم عطا کے ساتھ چار اور وعدہ میں بدستور چار رہیں گی۔ یہ بارہ صورتیں ہیں اور عطائے عاجل کی یہاں دو شکلیں ہیں اسے تیمّم کرتے اور نماز پڑھتے ہوئے دیکھنے کے بعد دیا یا اس پر مطلع نہ ہوا اور اس تقسیم کی ضرورت یہ وہم دفع کرنے کیلئے ہے کہ اگر اسے دیکھ کر سکوت کرتا تو یہ دلیل منع ہوتا اس کے بعد دینا کار آمد نہ ہوتا۔ مسئلہ نہم میں ہم یہ وہم دور کر آئے ہیں تو چودہ ۱۴ صورتیں ہوئیں جو چھ میں ضرب دینے سے چوراسی ۸۴ بنیں۔ اس طرح سوال کی شق میں کل دو سو چورانوے ۲۹۴ صورتیں ہوئیں۔ (ت) اور جب سوال نہ کرے تو وہ یا تو بغیر وعدہ کیے دے دے گا یا وعدہ کرے گا یا نہ دے گا نہ وعدہ کرے گا۔ یہاں خود یہ عطا وہاں کی عطائے آجل کی چھ صورتوں پر ہے۔ ان میں سے پہلی دو، ثلاثی ہیں اور باقی سداسی ہیں جیسے ان اقسام میں سے تیسری ، یعنی نہ عطا ہو نہ وعدہ تو چھتیں ۳۶ صورتیں ہوئیں۔ اور وعدہ میں پانچ صورتیں ہیں پہلی دو ، ثلاثی اور ان کے بعد تین سداسی۔ اس لئے کہ دوسرے وقت میں بلا سوال وعدہ کو اس نماز سے کوئی تعلق نہیں تو یہ چوبیس ۲۴ صورتیں ہوئیں۔ پھر ہر وعدہ پر بدستور چار ۴ صورتیں۔ یہ چھیانوے ۹۶

[بایاں کالم - عربی متن] واذا کان بعدھا خرج من عطایا السکوت والاباء الثلثۃ الاول ففي کل مع عدم العطاء اربعۃ وفی الوعد اربعۃ کالرسم فھی اثنا عشر والعطاء العاجل ھھنا وجھان اعطاہ بعد مارآہ

يتيمم ويصلى به او لم يطلع عليه ويحتاج الى هذا التقسيم لدفع توهم ان لورآه فسكت دل على المنع فلاينفع العطاء بعده وقد ازحناه في المسألة التاسعة فصارت اربعة عشر بالتسديس اربعة وثمانين ففريق السؤال مائتان واربعة وتسعون. و اذا لم يسأل فيعطى من دون وعد اويعد اولا ولاوههنا نفس هذا العطاء على ستة وجوه العطاء الأجل ثم الاولان منها ثلاثيان وسائر هن سداسيات كثالث هذه الاقسام اعنى لاولا فكانت ستة وثلثين والوعد على خمسة وجوه الاولين الثلاثين وثلثة تليها سداسيات لان الوعد بلاسؤال فى وقت اخر لا تعلق له بهذه الصلاة فكانت اربعة وعشرين ثم فى كل وعد اربعة كالرسم فهى ستة وتسعون و مع ستة وثلثين المزبورات

Fatawa Razawiyya Volume IV

[Left Column Text]: One hundred and thirty-two, so with the scenarios of the question, it becomes four hundred and twenty-six. I say: Know that what is apparent from their words (may Allah Almighty benefit us through their blessings) is the restriction of consideration to giving and refusal. In both cases, they expressed this in 'Al-Ziyadat', 'Jami al-Imam al-Karkhi', 'Bada’i Malik al-Ulama', 'Hilyat al-Muhaqqiq', and the regulation of Imam Sadr al-Shari’ah, as you have heard their texts. Al-Muhaqqiq al-Halabi in 'Al-Ghunya' sometimes said regarding the depiction, 'either he gives or he refuses', and sometimes said in the depiction, 'either he gives or he refuses', and sometimes said 'either he gives first'. Then when he came to the ruling, he said 'if he asks, he gives, and if he asks, he refuses' and did not mention an intermediary state, as you will hear his text, God-willing. Similarly, Al-Muhaqqiq al-Bahr said in 'Al-Shuquq', 'he gave to him first', and in the statement of rulings regarding what if he sees (the need) during prayer, he brought negation and affirmation twice, and twice 'if he gave and if he refused'. Outside the prayer, he did it once like the first and once like the second. His brother in 'Al-Nahr' summarized his speech and expressed in two places regarding his words 'and if he refused' by saying 'and it is better not to adjust a regulation for it correspondingly'. Thus, it becomes clear that their intention here by negation of giving is refusal, so there is no objection against Al-Bahr.

[Right Column Text]: ...scenarios, and combined with the aforementioned thirty-six (36), they make one hundred and thirty-two (132) scenarios. Then, combined with the two hundred and ninety-four (294) scenarios of the question, the total becomes four hundred and twenty-six (426) scenarios. (T) I say: It should be known that from the words of these noble figures (may God benefit us with their blessings), it appears that they restricted their focus to giving and refusal. The terms 'Ata' (giving) and 'Iba' (refusal) were used in Al-Ziyadat, Jami al-Karkhi, Bada’i Malik al-Ulama, Hilyat al-Muhaqqiq, and the regulation of Imam Sadr al-Shari’ah, as their statements have been presented. In Al-Ghunya, while describing the scenarios, Muhaqqiq al-Halabi sometimes said 'either he gives or he prevents' (either he will give or he will refuse) and sometimes said 'either he gives first' (either he gives or not). Then, when he came to stating the ruling, he said 'if he asks, he gives, and if he asks, he prevents' (if asked, he gave, and if asked, he refused) and did not mention any intermediate state, as his statement will be presented, God-willing. Similarly, Muhaqqiq al-Bahr, while outlining the divisions, said 'he gave to him first' (he will give to him or not). (And in the statement of rulings regarding seeing inside the prayer, he brought negation and

affirmation twice, and twice brought 'if he gave and if he refused' (if he gave, if he denied). And in the case of seeing outside the prayer, once in the style of the first and once in the style of the second. His brother in Al-Nahr al-Faiq...

फ़तावा रज़विया जिल्द चहारुम

[बायाँ कॉलम]: एक सौ बत्तीस, तो प्रश्न के चित्रों के साथ मिलकर चार सौ छब्बीस हो गए। मैं कहता हूँ: जान लीजिए कि उनके शब्दों (अल्लाह तआला हमें उनकी बरकतों से लाभान्वित करे) से यह स्पष्ट है कि उन्होंने देने और मना करने तक ही अपनी दृष्टि सीमित रखी। उन्होंने 'अल-ज़ियादात', 'जामे अल-इमाम अल-करख़ी', 'बदाए मलिक उल उलमा', 'हुलिया अल-मोहक़्क़िक़' और इमाम सदरुश-शरिया के नियम में इसी प्रकार व्यक्त किया है जैसा कि आपने उनके मूल पाठ सुने हैं। मोहक़्क़िक़ हलब्री ने 'ग़ुनिया' में चित्रण करते हुए कभी कहा 'या तो वह देगा या मना करेगा', और कभी चित्रण में कहा 'या तो वह देगा या मना करेगा', और कभी कहा 'या तो वह पहले देगा'। फिर जब वह नियम पर आए तो कहा 'यदि वह माँगता है तो वह देता है, और यदि वह माँगता है तो वह मना करता है' और किसी मध्यस्थ स्थिति का उल्लेख नहीं किया, जैसा कि आप इंशाअल्लाह उनका मूल पाठ सुनेंगे। इसी तरह मोहक़्क़िक़ अल-बह्र ने 'अल-शुक़ूक़' में कहा 'उसे पहले दिया', और प्रार्थना के दौरान देखने की स्थिति में नियमों के विवरण में वह दो बार निषेध और पुष्टि लाए, और दो बार 'यदि उसने दिया और यदि उसने मना किया' लाए। प्रार्थना के बाहर, उन्होंने इसे एक बार पहले की तरह और एक बार दूसरे की तरह किया। 'अल-नहर' में उनके भाई ने उनकी बात को संक्षेप में प्रस्तुत किया और उनके शब्दों 'और यदि उसने मना किया' के संबंध में दो स्थानों पर यह कहकर व्यक्त किया कि 'और बेहतर यह है कि इसके लिए समान रूप से कोई नियम निर्धारित न किया जाए'। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि यहाँ देने के निषेध से उनका तात्पर्य मना करना ही है, अतः 'अल-बह्र' पर कोई आपत्ति नहीं होती।

[दायाँ कॉलम]: ...सूरतें हैं और मज़कूरा छत्तीसों ३६ के साथ मिल कर एक सौ बत्तीस १३२ सूरतें बनती हैं फिर सवाल की (२९४) सूरतों के साथ मिल कर कुल चार सौ छब्बीस ४२६ सूरतें हो जाती हैं। (त) मैं कहता हूँ: मालूम रहे कि इन हज़रात (ख़ुदा हमें उनकी बरकात से नफ़ा बख़्शे) के कलमात से ज़ाहिर यह है कि उन्होंने अता व इंकार पर नज़र महदूद रखी है। अता व इबा से ही ज़ियादात, जामे करख़ी, बदाए मलिक उल उलमा, हुलिया मोहक़्क़िक़, और ज़ाबता इमाम सदरुश शरीया में ताबीर आई, जैसा कि उनकी इबारतें पेश हुईं। मोहक़्क़िक़ हलब्री ने ग़ुनिया के अंदर बयान-ए-सूरत में कभी कहा इम्मा अन युअ्ती औ यमनाअ (या तो देगा या मना करेगा) और कभी कहा इम्मा अन युअ्ती औला (या तो देगा या न दे) फिर जब बयान-ए-हुक्म पर आए तो कहा इन स-अला फ़-अअ्ता व इन स-अला फ़-मनाअ (अगर माँगा तो दे दिया, और अगर माँगा तो मना हुआ) और कोई वास्ता ज़िक्र न

किया, जैसा कि उनकी इबारत इनशा अल्लाह तआला पेश होगी। इसी तरह मोहक़्क़िक़ बहर ने शुक़ूक़ को बताते हुए कहा अअ्ताहु अव्वलन (उसे देगा या न देगा) (और बयान-ए-अहकाम में अंदरून-ए-नमाज़ देखने की सूरत में दो बार नफ़ी व इस्बात लाए और दो बार 'इन अअ्ता व इन अबा' (अगर दिया, अगर इंकार किया) लाए। और बैरून-ए-नमाज़ देखने की सूरत में एक बार ब-तर्ज़े अव्वल और एक बार ब-तर्ज़े सानी। उनके बिरादर ने अन-नहरुल फ़ाएक़ में...

पृष्ठ १६१/७६१

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم

[بایاں کالم]: مائة واثنان وثلثون فصارت مع صور السؤال اربعمائة وستة وعشرین۔ اقول: واعلم ان الظاهر من كلماتهم نفعنا الله تعالٰی ببركاتهم قصر النظر على الاعطاء والاباء فيهما عبروا في الزيادات وجامع الامام الكرخي وبدائع ملك العلماء وحلية المحقق وضابطة الامام صدر الشريعة كما سمعت نصوصهم والمحقق الحلبي في الغنية تارة قال في التصوير اما ان يعطي او يمنع تارة قال في التصوير اما ان يعطى او يمنع وتارة قال اما ان يعطي اولا فاذا اتي على الحكم قال ان سأل فاعطى وان سأل فمنع ولم يذكر الواسطة كما ستسمع نصه ان شاء الله تعالٰی وكذلك المحقق البحر قال في الشقوق اعطاه اولا وفى بيان الاحكام في ما اذا رأى فى الصلاة اتى مرتين بالنفى والاثبات ومرتين بان اعطى وان ابى وفى خارج الصلاة مرة كالاول ومرة كالثاني واخوه في النهر لخص كلامه فعبر في موضعين عن قوله وان ابى بقوله والاولى الم نعدله ضابطة بحيالها فظهران مرادهم ههنا بنفى الاعطاء هو الاباء فلايرد على البحر

[دایاں کالم]: صورتیں ہیں اور مذکورہ چھتیں ۳۶ کے ساتھ مل کر ایک سو بتیس ۱۳۲ صورتیں بنتی ہیں پھر سوال کی (۲۹۴) صورتوں کے ساتھ مل کر کُل چار سو چھبیس ۴۲۶ صورتیں ہو جاتی ہیں۔ (ت) اقول: معلوم رہے کہ ان حضرات (خدا ہمیں ان کی برکات سے نفع بخشے) کے کلمات سے ظاہر یہ ہے کہ انہوں نے عطا و انکار پر نظر محدود رکھی ہے۔ عطا و اباء سے ہی زیادات، جامع کرخی، بدائع ملک العلماء، حلیہ محقق، اور ضابطہ امام صدر الشریعہ میں تعبیر آئی، جیسا کہ ان کی عبارتیں پیش ہوئیں۔ محقق حلبی نے غنیہ کے اندر بیانِ صورت میں کبھی کہا اما ان یعطی او یمنع (یا تو دے گا یا منع کرے گا) اور کبھی کہا اما ان یعطی اولا (یا تو دے گا یا نہ دے) پھر جب بیانِ حکم پر آئے تو کہا ان سأل فاعطی وان سأل فمنع (اگر مانگا تو دے دیا، اور اگر مانگا

تو مانع ہوا) اور کوئی واسطہ ذکر نہ کیا، جیسا کہ ان کی عبارت ان شاء اللہ تعالٰی پیش ہوگی۔ اسی طرح محقق بحر نے شقوق کو بتاتے ہوئے کہا اعطاہ اولا (اسے دے گا یا نہ دے گا) (اور بیانِ احکام میں اندرونِ نماز دیکھنے کی صورت میں دو بار نفی و اثبات لائے اور دوبار "ان اعطی وان ابی" (اگر دیا، اگر انکار کیا) لائے۔ اور بیرونِ نماز دیکھنے کی صورت میں ایک بار بطرز اول اور ایک بار بطرز ثانی۔ ان کے برادر نے النھر الفائق میں

Volume 4 Fatawa Razawiyya

[Arabic Text Translation] ...nor upon *Al-Ghunyah*, as both of them mentioned giving and not giving in the classification, while *Al-Bahr* restricted the discussion in *Nisf al-Ahkam* to giving and refusal, and *Al-Ghunyah* did not mention anything other than these two. Nor is there an objection to the statement of *Al-Bahr* repeated twice that "if he gives it, he performs Wudu, otherwise his Tayammum remains [valid]." Similarly, the statement of *Al-Nahr* that "if he does not give it, his Tayammum remains" holds true in cases where he does not give it but rather makes a promise and then does not give even after the promise, for example; although his Tayammum becomes invalid by the consensus of our companions (may Allah be pleased with them) once he knows this. So, whoever examines it will find it clear and will immediately see that *Al-Bahr* omitted [many] cases. It has become evident that (1) establishing "not asking" as an absolute point of disagreement between *Al-Hidayah* and *Al-Mabsut* is incorrect in fifty-one out of sixty-six cases. This is because the types of "not asking" before tripling and sextupling are twenty-seven. Among them, six (Note 1) make thirty (Note 2), and four sextuplets of giving water also make thirty (Note 3). In twelve cases, there is a promise before the prayer.

[Urdu Commentary/Translation] Their discourse has been summarized here: in two places, their statement "if he refuses" is expressed as "otherwise." Therefore, we did not count it as an independent rule. Thus, it became clear that by "negation of giving," these scholars mean "refusal." Therefore, no objection will be raised against *Al-Bahr* and *Al-Ghunyah* that both mentioned giving and non-giving in the explanation of categories, yet *Al-Bahr* in *Nisf al-Ahkam* restricted it to giving and refusal, and *Al-Ghunyah* mentioned nothing besides giving and refusal. (T) Neither will the objection stand that *Al-Bahr* stated again "if he gives it, he performs Wudu, otherwise his Tayammum remains [valid]." Similarly, *Al-Nahr's* statement "if he does not give it, his Tayammum remains" is also applicable when there is no gift but a promise; for example, a promise was made and even after the promise he does not give, despite the fact that his Tayammum would break. Our companions (may Allah be pleased with them) are in consensus on this. Once this is known, whoever investigates will discover how many cases *Al-Bahr* has left out. It also becomes clear that declaring "not asking" as an absolute point of disagreement between *Hidayah* and *Mabsut* is not correct in 51 out of 66 cases. This is because by multiplying three and six, the types of "not asking" before [the act] are twenty-seven.

Footnotes: Note 1: These are the cases depicted in the diagram under "gave" (12, from the author. T). Note 2: Two cases depicted under "before prayer" (12, from the author. T). Note 3: Those depicted under "promise" from 7 to 18 (from the author. T).

खण्ड 4 फ़तावा रज़विया

[अरबी पाठ का अनुवाद] ...न ही अल-ग़ुनिया पर [कोई आपत्ति है], क्योंकि उन दोनों ने वर्गीकरण में 'देने' और 'न देने' का उल्लेख किया है, जबकि अल-बहर ने निस्फ़ अल-अहकाम में इसे केवल 'देने' और 'इनकार' तक सीमित रखा है, और अल-ग़ुनिया ने इन दोनों के अतिरिक्त कुछ भी उल्लेख नहीं किया है। न ही अल-बहर के दो बार दोहराए गए इस कथन पर कोई आपत्ति है कि "यदि वह उसे दे दे तो वह वुज़ू करे, अन्यथा उसका तयम्मुम शेष रहता है"। इसी प्रकार अल-नहर का यह कहना कि "यदि वह उसे नहीं देता है, तो उसका तयम्मुम शेष रहता है", उन मामलों में भी सच होता है जहाँ वह नहीं देता है बल्कि वादा करता है और वादे के बाद भी नहीं देता है, उदाहरण के तौर पर; जबकि हमारे साथियों (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) की सर्वसम्मति के अनुसार उसका तयम्मुम टूट जाता है जब वह यह जान लेता है। अत; जो कोई इसकी जाँच करेगा, उसके लिए यह स्पष्ट हो जाएगा और वह तुरंत देखेगा कि अल-बहर ने कई स्थितियों को छोड़ दिया है। यह स्पष्ट हो गया कि (1) "न माँगने" को अल-हिदाया और अल-मबसूत के बीच पूर्ण रूप से मतभेद का कारण मानना 66 में से 51 स्थितियों में सही नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि तिगुना और छह गुना करने से पहले "न माँगने" की श्रेणियाँ सत्ताइस हैं। उनमें से छह (टिप्पणी 1), तीस (टिप्पणी 2) और पानी देने की चार छह गुना स्थितियाँ तीस बनाती हैं (टिप्पणी 3)। बारह में नमाज़ से पहले वादा है।

[उर्दू व्याख्या/अनुवाद] उनके कलाम (भाषण) का सारांश यह है कि दो स्थानों पर उनके कथन "अगर इनकार करें" की अभिव्यक्ति "वरना" से की गई है। इसीलिए हमने इसे एक स्वतंत्र नियम के रूप में नहीं गिना। तो यह स्पष्ट हुआ कि यहाँ "देने की मनाही" से इन महानुभावों का अर्थ "इनकार" है। अत; बहर और ग़ुनिया पर यह आपत्ति नहीं होगी कि दोनों ने श्रेणियों के विवरण में "देना" और "न देना" का उल्लेख किया, जबकि बहर ने निस्फ़ अल-अहकाम के भीतर केवल "देने" और "इनकार" पर संतोष किया, और ग़ुनिया ने "देने" और "इनकार" के अलावा कुछ भी उल्लेख नहीं किया। (त) न ही यह आपत्ति होगी कि बहर का फिर से यह कहना "यदि वह दे दे तो वुज़ू करे, अन्यथा उसका तयम्मुम शेष है"। इसी तरह नहर का कहना "यदि वह न दे तो उसका तयम्मुम शेष है" (उस स्थिति में भी सच है जब देना न हो बल्कि वादा हो; उदाहरण के लिए वादा हुआ और वादे के बाद भी नहीं दिया, बावजूद इसके कि उसका तयम्मुम टूट जाएगा)। इस पर हमारे साथियों (रज़ियल्लाहु अन्हुम) की सर्वसम्मति है। जब यह ज्ञात हो गया, तो जो कोई जाँच करेगा उस पर यह प्रकट होगा कि बहर ने कितनी अधिक स्थितियाँ छोड़ दी हैं। यह भी स्पष्ट हो गया कि "न माँगने" को

हिदाया और मबसूत के बीच पूर्ण रूप से मतभेद वाला ठहराना 66 में से 51 स्थितियों में सही नहीं है। क्योंकि तीन और छह में गुणा करने से पहले "न माँगने" की किस्में (प्रकार) सत्ताइस हैं।

पादलेख: टिप्पणी 1: ये वे स्थितियाँ हैं जो चित्र में "अता" (दिया) के नीचे दर्ज हैं (12, लेखक से। त)। टिप्पणी 2: दो स्थितियाँ जो "नमाज़ से पहले" के नीचे दर्ज हैं (12, लेखक से। त)। टिप्पणी 3: जो "वादा" के नीचे 7 से 18 तक दर्ज हैं (लेखक से। त)।

ولاعلی الغنیة انهما ذکرافي التشقیق العطاء وعدمه واقتصر البحر في نصف الاحکام علی العطاء والاباء والغنیة لم تذکر غیرهما۔ ولا ان قول البحر مرتین ان اعطاه توضأ والافتیممه باق وکذا قول النهر ان لم یعطه بقی تیممه صادق بما اذا لم یعط بل وعدو لم یعط بعد الوعد ایضا مثلا مع ان تیممه ینتقض باجماع اصحابنا رضی اللہ تعالٰی عنهم اذا علم هذا فمن سبر ظهر لہ وفوراً ترك البحر من الصور واستبان ان(۱) جعله عدم السوال خلافیة بین الهدایة والمبسوط مطلقا لایصح فی احد وخمسین من ستة وستین لان اقسام عدم السؤال قبل التثلیث والتسدیس سبعة وعشرون فی ستة عہ۱ منها ثلاثین عہ۲ واربعة سداسیات عطاء الماء فهی ثلثون عہ۳،وفی اثنی عشر الوعد قبل الصلاة

انہی کے کلام کی تلخیص کی ہے تو دو جگہ ان کے قول "وان ابی" (اگر انکار کریں) کی تعبیر "والا" (ورنہ) سے کی ہے اسی لئے ہم نے ان کا کوئی مستقل ضابطہ نہ شمار کیا تو ظاہر ہوا کہ یہاں نفی عطاء سے ان حضرات کی مراد انکار ہے۔ تو بحر اور غنیہ پر یہ اعتراض نہ وارد ہوگا کہ دونوں نے شقوں کے بیان میں عطاء و عدم عطاء ذکر کیا اور بحر میں نصف احکام کے اندر عطاء واباء پر اقتصار کیا۔ اور غنیہ نے عطا واباء کے سوا کچھ ذکر ہی نہ کیا۔(ت) نہ ہی یہ اعتراض ہوگا کہ دوبارہ بحر کا یہ کہنا "ان اعطاہ توضأ والافتیممہ باق" (اگر دے دے وضو کرے ورنہ اس کا تیمم باقی ہے) اسی طرح نہر کا کہنا ان لم یعطہ بقی تیممہ (اگر نہ دے تو اس کا تیمم باقی ہے اس صورت میں بھی صادق ہے جب عطا نہ ہو بلکہ وعدہ ہو مثلاً وعدہ ہوا اور بعد وعدہ بھی نہ دے باوجودیکہ اس کا تیمم ٹوٹ جائے گا۔ اس پر ہمارے اصحاب رضی اللہ تعالٰی عنہم کا اجماع ہے۔ جب یہ معلوم ہو گیا تو جو جانچ کرے گا اس پر منکشف ہو گا کہ بحر نے کتنی زیادہ صورتیں چھوڑ دیں یہ بھی روشن ہو گیا کہ عدم سوال کو ہدایہ ومبسوط کے درمیان مطلقاً خلافی

ٹھہرانا چھیاسٹھ ۶۶ میں سے اکیاون ۵۱ صورتوں میں صحیح نہیں۔ اس لئے کہ تین اور چھ میں ضرب دینے سے پہلے عدم سوال کی قسمیں ستائیس ۲۷

عہ۱ وھی المرسومة فی التصویر تحت اعطی ۱۲ منہ ۔ م (یہ وہ صورتیں ہیں جو نقشے میں اعطی (دیا) کے تحت درج ہیں ۱۲ منہ۔ت) عہ۲ مرسومتین تحت قبل الصلاة ۱۲ منہ۔م (جو قبل صلاۃ کے تحت درج ہیں ۱۲ منہ۔ت) عہ۳ المرسومات تحت وعد من ۷ الی ۱۸۔م (جو وعدہ کے تحت ۷ سے ۱۸ تک درج ہیں۔ ت)

Volume 4 Fatawa Ridawiyya

[Arabic Text Section] In it, there are eight (cases)1, of which some are 'thalathiyat' (triangular) and four are 'sudasiyat' (hexagonal), so they are forty-eight. Thus, these seventy-eight cases, no one doubts that the invalidity of prayer in them is an agreed-upon matter. The disagreement of Al-Hidayah and Al-Mabsut does not apply here because giving (water) or a prior promise before the completion of prayer are both impediments to Tayammum, nullifiers of it, and invalidators of prayer without disagreement, whether it is given after the promise within the time or after it, or not given at all, whether breaking the promise or not (1). Similarly, regarding a promise after prayer, there are two scenarios of giving4 within the time, because it is an invalidator even if there was no promise, and the promise only increases its force. Likewise (2), there are two scenarios of not giving5 within it, since its contradiction has not appeared, because a promise creates an expectation of giving and no contradiction has appeared, and the realization of truth has been missed, so the matter was based on his expectation. So, these are four cases, all of which are 'sudasi', totaling twenty-four. Along with the previous ones, they are one hundred and two. However, Al-Bahr specialized the discussion for when he sees (water) outside of prayer, so it was halved, and from the twenty-seven, only five remained: four in the promise after prayer when4 he gave after the time or did not5 give, breaking the promise, and the giving after...

[Urdu Text Section] There are (cases), among them six2 scenarios where water is to be given in two 'thalathi' and four 'sudasi', so these are thirty3 scenarios. In twelve scenarios, there is a promise before or during prayer, among them are eight 'thalathi' and four 'sudasi', so these became forty-eight4 scenarios. Thus, there are a total of seventy-eight8 scenarios such that no one will have a doubt that the invalidity of prayer in them is an agreed-upon matter, in which the difference of Hidayah and Mabsut is not applicable. This is because both giving and promising before the completion of prayer are impediments to Tayammum, for which it is a nullifier and an invalidator for prayer, in which there is no difference whether it is given within the time after the promise or after the time, or not given while breaking the promise or without breaking the promise. Similar to these are the two scenarios of giving within the time after a promise post-prayer, because giving makes it void even if there was no promise, and if there is a promise as well, it will only add to its force. Similarly, there are two6 scenarios of non-giving within the time when the breaking of the promise is not apparent, because the promise of giving creates an expectation, and

nothing contrary to it appeared, and since the perception of reality was not in hand, the basis of the action will be on his expectation. So, these four, in which all are 'sudasi', became twenty-four24 previous ones.

[Footnotes] Note 1: Same as 7 to 14. (M) (These are from 7 to 14. T) Note 2: Both 19 and 23. (M) (These are 19 and 23. T) Note 3: Both 22 and 26. (M) (These are 22 and 26. T) Note 4: Both 20 and 24. (M) (These are 20 and 24. T) Note 5: Both 21 and 25. (M) (These are 21 and 25. T)

जिल्द चौथी फ़तावा रिज़विया

[अरबी पाठ अनुभाग] इसमें आठ1 मामले हैं, जिनमें से कुछ 'थलाथियात' (त्रिकोणीय) और चार 'सुदासियात' (षटकोणीय) हैं, तो वे अड़तालीस हैं। इस प्रकार ये अठहत्तर मामले ऐसे हैं कि इनमें नमाज़ का अमान्य होना सर्वसम्मत है, इसमें किसी को कोई संदेह नहीं है। इसमें 'अल-हिदाया' और 'अल-मबसूत' का मतभेद लागू नहीं होता क्योंकि नमाज़ पूरी होने से पहले पानी देना या उसका वादा करना, दोनों ही तयम्मुम के लिए बाधक हैं, उसे तोड़ने वाले हैं और बिना किसी विवाद के नमाज़ को अमान्य करने वाले हैं, चाहे वादे के बाद समय के भीतर दिया जाए या उसके बाद, या नहीं दिया जाए, वादा खिलाफी करके या बिना उसके(1)। इसी प्रकार नमाज़ के बाद वादे के मामले में, समय के भीतर पानी देने4 की दो स्थितियाँ हैं, क्योंकि यह नमाज़ को अमान्य कर देता है भले ही वादा न किया गया हो, और वादा तो केवल इसकी प्रबलता को ही बढ़ाएगा। इसी प्रकार (2) समय के भीतर पानी न देने5 की दो स्थितियाँ हैं क्योंकि अभी वादा खिलाफी ज़ाहिर नहीं हुई है, क्योंकि देने के वादे से पानी मिलने की उम्मीद पैदा होती है और इसके विपरीत कुछ ज़ाहिर नहीं हुआ है, और हक़ीक़त का पता नहीं चल सका, इसलिए मामले को उसकी उम्मीद (ज़न) पर रखा गया। तो ये चार स्थितियाँ हैं, ये सभी षटकोणीय (सुदासी) हैं, कुल चौबीस हुईं। पिछले मामलों को मिलाकर ये एक सौ दो हो जाती हैं। लेकिन 'अल-बहर' ने चर्चा को केवल उस स्थिति तक सीमित रखा है जब वह नमाज़ के बाहर (पानी) देखता है, तो यह आधा रह गया और सताइस में से केवल पाँच शेष रहे: चार नमाज़ के बाद वादे की स्थिति में जब4 समय के बाद दिया गया हो या न5 दिया गया हो, वादा खिलाफी करते हुए, और बाद में देना...

[उर्दू पाठ अनुभाग] होती हैं, उनमें से छह2 स्थितियों, दो थलाथी और चार सुदासी में पानी देना है, तो ये तीस3 स्थितियाँ हुईं। और बारह स्थितियों में नमाज़ से पहले या दौरान नमाज़ वादा है, उनमें से आठ थलाथी और चार सुदासी हैं, तो ये अड़तालीस4 स्थितियाँ हुईं। तो कुल अठहत्तर8 स्थितियाँ ऐसी हैं कि किसी को शक न होगा कि उनमें नमाज़ का अमान्य होना सर्वसम्मत है, जिसमें हिदाया और मबसूत का मतभेद लागू नहीं होता। इसलिए कि नमाज़ पूरी होने से पहले अता (देना) और वादा दोनों ही तयम्मुम के लिए बाधक हैं, इसके लिए तोड़ने वाले और नमाज़ के लिए अमान्य करने वाले हैं, जिसमें कोई मतभेद नहीं है, चाहे वादे के बाद समय में दे या समय के बाद, या वादा खिलाफी करते हुए या बिना वादा खिलाफी के न दे। उन्हीं की तरह नमाज़ के बाद वादे के साथ समय के अंदर देने की दो स्थितियाँ हैं, इसलिए कि देना बातिल (अमान्य) कर देता है चाहे वादा न भी हुआ हो, और वादा

भी हो तो इसकी ताकत में इज़ाफ़ा (बढ़ोतरी) ही करेगा। इसी तरह समय के अंदर अता न होने की दो6 स्थितियाँ हैं जबकि वादा खिलाफी ज़ाहिर न हो, इसलिए कि वादे से अता (मिलने) की उम्मीद (ज़न) पैदा होती है और उसके खिलाफ ज़ाहिर न हुआ, और हकीकत की समझ हाथ में न रही तो काम की बुनियाद उसकी उम्मीद पर होगी। तो ये चार जिनमें सब सुदासी होकर चौबीस24 हुईं पिछली...

[पादलेख] नोट 1: वही 7 से 14. (म) (ये 7 से 14 तक हैं। त) नोट 2: वे 19 और 23 हैं। (म) (ये 19 और 23 हैं। त) नोट 3: वे 22 और 26 हैं। (म) (ये 22 और 26 हैं। त) नोट 4: वे 20 और 24 हैं। (म) (ये 20 और 24 हैं। त) नोट 5: वे 21 और 25 हैं। (म) (ये 21 और 25 हैं। त)

[عربی متن] اوفيها ثمانية عہ١ منها ثلاثيات واربعة سداسيات فهي ثمانية واربعون فهذه الثمانية والسبعون لايشك احد ان بطلان الصلاة فيها متفق عليه لايجرى فيها خلاف الهداية والمبسوط لان العطاء والوعد السابق على تمام الصلاة كليهما مانع للتيمم وناقض له ومبطل للصلاة بلاخلاف سواء اعطى بعد الوعد في الوقت او بعده اولم يعط مخلفا او غير مخلف (١) ومثلها فى الوعد بعد الصلاة صورتا العطاء عہ٤ فى الوقت لانه مبطل وان لم يكن وعد ولم يزده الوعد الاقوة وكذلك (٢) صورتا عدم العطاء عہ٥ فيه اذ الم يظهر خلفه لان الوعد يورث ظن العطاء ولم يظهر خلافه وقد فات درك الحقيقة فبنى الامر على ظنه فهذه اربعة كلهن سداسى فكانت اربعة وعشرين ومع السابقات مائة واثنين لكن البحر خص الكلام بما اذا رأى خارج الصلاة فانتصفت ولم يبق من السبع والعشرين الاخمس اربع فى الوعد بعد الصلاة اذا عہ٤ اعطى بعد الوقت اولم عہ٥ يعط مخلفاً، والعطاء بعد

[اردو متن] ہوتی ہیں ،ان میں سے چھ٢ صورتوں دو ثلاثی اور چار سداسی میں پانی دینا ہے تو یہ تیس٣٠ صورتیں ہیں، اور بارہ صورتوں میں قبل نماز یا دوران نماز وعدہ ہے ان میں سے آٹھ ثلاثی اور چار سداسی ہیں تو یہ اڑتالیس٤٨ صورتیں ہوئیں تو کل اٹھتر٧٨ صورتیں ایسی ہیں کہ کسی کو شک نہ ہوگا کہ ان میں نماز کا بطلان متفق علیہ ہے جس میں ہدایہ و مبسوط کا اختلاف جاری نہیں اس لئے کہ تکمیل نماز سے پہلے عطا اور وعدہ دونوں ہی تیمم سے مانع اس کیلئے ناقض اور نماز کے لئے مبطل ہیں جس میں کوئی اختلاف نہیں خواہ بعد وعدہ وقت میں دے یا بعد وقت یا وعدہ خلافی کرتے ہوئے یا بلا وعدہ خلافی کے نہ دے ان ہی کی مثل وعدہ بعد نماز میں وقت کے اندر دینے کی دو صورتیں ہیں اس لئے کہ دینا باطل کر دیتا ہے اگر چہ وعدہ نہ ہوا، اور وعدہ بھی ہے تو اس کی قوت میں اور اضافہ ہی کرے گا اسی طرح وقت کے اندر عدم عطا کی دو ٦ صورتیں

جبکہ وعدہ خلافی نہ ظاہر ہو اس لئے کہ وعدہ عطا کا ظن پیدا کرتا ہے اور اس کے خلاف ظاہر نہ ہوا اور حقیقت کا ادراک ہاتھ میں نہ رہا تو بنائے کار اس کے ظن پر ہو گی تو یہ چار جن میں سب سداسی ہو کر چوبیس ۲۴ ہوئیں سابقہ

[حواشی] عہ۱ وہی ۷ الی ۱۴۔ (م) (یہ ۷ سے ۱۴ تک ہیں۔ ت) عہ۲ ہما ۱۹ و ۲۳۔ (م) (یہ ۱۹ و ۲۳ ہیں۔ ت) عہ۳ ہما ۲۲ و ۲۶ (م) (یہ ۲۲ و ۲۶ ہیں۔ ت) عہ۴ ہما ۲۰ و ۲۴ (م) (یہ ۲۰ و ۲۴ ہیں۔ ت) عہ۵ ہما ۲۱ و ۲۵ (م) (یہ ۲۱ و ۲۵ ہیں۔ ت)

صفحہ 163 کا 761

Fatawa Razawiya - Volume 4

(Arabic Text Translation): Similarly, there is a contradiction in time as mentioned before. Fifthly: Neither a promise was made nor was anything given. In these cases, disagreement occurs assuming the question remains. The author of Al-Mabsut says the prayer is void due to the omission of asking, while Al-Hidayah states it is valid because asking is not mandatory, and neither was a gift given nor a promise made, or the assumption of a promise vanished due to its breach. Since each of these five cases consists of six variations, the total is thirty. According to Al-Bahr's division, it becomes fifteen. All this is based on my deduction that a promise after prayer, if its contradiction appears later, does not affect the past prayer. If this is not accepted, there remains no room for disagreement except in one scenario out of twenty-seven: when neither a promise nor a gift was given. Thus, error would occur in sixty-three out of sixty-six cases. If we complete it by including their omitted parts as we did before, the error would be in one hundred and twenty-six out of one hundred and thirty-two. Here, I present their diagrams to make it easier for you to visualize. And success is through Allah.

(Urdu Text Translation): Together with 'Ayn', it becomes one hundred and two (102). However, Al-Bahr discussed specifically this case when viewed outside prayer, then they were reduced by half and only five remained out of twenty-seven (27). Four relate to a promise made after prayer, when given after the time or not given while breaking the promise. Giving after the time is also considered breaking a promise, as I explained earlier. The fifth case is where there is neither a promise nor a gift. These are the scenarios where disagreement persists. If we assume the disagreement remains, then the position of Al-Mabsut is that the prayer is void because of the failure to ask, whereas Al-Hidayah's position is that it is correct because asking is not obligatory, and no gift was received nor a promise made, or if there was an expectation of a promise, it was nullified by the breach. Since each of these five is a 'sudasi' (sixfold), there are thirty (30) cases in total. Due to Al-Bahr's halving, they become fifteen (15). All this is based on the foundation that I stated: it is apparent that a breach of promise after prayer, when it becomes clear, will not affect the prayer already performed. If my view is not accepted, then out of twenty-seven (27) cases, disagreement will not remain anywhere except in one case. That case is when there is neither a promise nor a gift. Thus, in sixty-six (66) cases, error will be established in sixty-three (63). If we complete them by taking their omitted parts as we did before, then the mistake would be in one hundred and twenty-six (126) out of

one hundred and thirty-two (132). A map of these cases is presented so that it is easy to memorize them. And from God alone is the guidance (success). (T)

Footnote: 'Ayn' - that is 27. (M) (This is 27. T)

Page 164 of 761

फ़तावा रज़विया - जिल्द 4

(अरबी पाठ का अनुवाद): इसी तरह, समय में विरोधाभास है जैसा कि पहले बताया गया है। पाँचवाँ: न कोई वादा किया गया और न ही कुछ दिया गया। इन मामलों में, इस धारणा पर असहमति होती है कि प्रश्न बना रहता है। अल-मबसूत के लेखक का कहना है कि पूछने की चूक के कारण प्रार्थना अमान्य है, जबकि अल-हिदाया में कहा गया है कि यह मान्य है क्योंकि पूछना अनिवार्य नहीं है, और न ही कोई उपहार दिया गया था और न ही कोई वादा किया गया था, या वादे की धारणा इसके उल्लंघन के कारण समाप्त हो गई थी। चूंकि इन पांच मामलों में से प्रत्येक में छह विविधताएं शामिल हैं, इसलिए कुल तीस हैं। अल-बहर के विभाजन के अनुसार, यह पंद्रह हो जाता है। यह सब मेरे इस निष्कर्ष पर आधारित है कि प्रार्थना के बाद का वादा, यदि उसका विरोधाभास बाद में प्रकट होता है, तो पिछली प्रार्थना को प्रभावित नहीं करता है। यदि इसे स्वीकार नहीं किया जाता है, तो सत्ताईस में से एक परिदृश्य को छोड़कर असहमति के लिए कोई जगह नहीं बचती है: जब न तो वादा किया गया था और न ही उपहार दिया गया था। इस प्रकार, छियासठ में से तिरसठ मामलों में त्रुटि होगी। यदि हम उनके छोड़े गए हिस्सों को शामिल करके इसे पूरा करते हैं जैसा कि हमने पहले किया था, तो त्रुटि एक सौ बत्तीस में से एक सौ छब्बीस में होगी। यहाँ, मैं उन्हें समझना आपके लिए आसान बनाने के लिए उनके चित्र प्रस्तुत करता हूँ। और सफलता अल्लाह के माध्यम से है।

(उर्दू पाठ का अनुवाद): 'ऐन' के साथ मिलकर यह एक सौ दो (102) हो गए। हालांकि, अल-बहर ने विशेष रूप से इस मामले पर चर्चा की है जब प्रार्थना के बाहर देखा गया हो, तो वे आधे रह गए और सत्ताईस (27) में से केवल पांच बचे। चार प्रार्थना के बाद किए गए वादे से संबंधित हैं, जब समय के बाद दिया गया हो, या वादा तोड़ते हुए नहीं दिया गया हो। समय के बाद देना भी वादा तोड़ना ही माना जाता है, जैसा कि मैंने पहले बताया। पांचवां मामला वह है जहां न तो वादा है और न ही उपहार। ये वे स्थितियां हैं जिनमें असहमति बनी रहेगी। यदि हम मान लें कि मतभेद बना हुआ है, तो मबसूत का कहना है कि प्रश्न न पूछने के कारण नमाज़ बातिल (अमान्य) है और हिदाया का कहना है कि यह सही है क्योंकि प्रश्न पूछना अनिवार्य नहीं है और न ही उपहार मिला और न ही वादा हुआ, या यदि वादे का गुमान था तो वादा खिलाफी के कारण वह खत्म हो गया। चूंकि इन पांचों में से प्रत्येक सुदासी (छह गुना) है, इसलिए कुल तीस (30) सूरतें हुईं। और अल-बहर के आधा बयान करने के कारण पंद्रह (15) हुईं। यह सब इस आधार पर है कि मैंने कहा कि ज़ाहिर (स्पष्ट) यह है कि नमाज़ के बाद वादे के खिलाफ जब ज़ाहिर हो जाए तो वह अदा की गई नमाज़ पर असर नहीं डालेगा। अगर

मेरा यह ख्याल तस्लीम न हो तो सत्ताईस (27) में से एक सूरत के अलावा कहीं इख्तिलाफ (मतभेद) नहीं रह जाएगा। वह सूरत यह है कि न वादा हो न अता (उपहार)। तो छियासठ (66) में से तिरसठ (63) में गलती साबित होगी और अगर उनके मतरूकात (छोड़े गए अंशों) को लेकर हम मुकम्मल करें जैसा कि पहले हमने किया तो गलती एक सौ बत्तीस (132) में से एक सौ छब्बीस (126) में होगी। इन सूरतों का एक नक्शा पेश किया जाता है ताकि उन्हें ज़हन नशीन करने में सहूलियत हो। और खुदा ही से तौफीक है। (त)

पाद टिप्पणी: 'ऐन' - वही 27. (म) (यह 27 है। त)

पेज 164/761

(عربی عبارت): الوقت ایضا خلف کما قدمت، والخامس: لا وعد ولا اعطی فهذه یجری فیها الخلاف علی فرض بقائه فالمبسوط یقول بطلت لترك السؤال والهدایة صحت لان السؤال غیر واجب ولم یوجد عطاء ولا وعد او زال ظن الوعد بالاخلاف ولاجل ان کل هذه الخمس سداسیات هي ثلثون وعلی تشطیر البحر خمسة عشر هذا کله علی استظهاری ان الوعد بعد الصلاة اذا ظهر خلفه لم یؤثر فی صلاة مضت فان لم یسلم لم یبق للخلاف محل غیر صورة واحدة من السبع والعشرین وهی ما اذا لم یعد ولم یعط فیکون الغلط في ثلثة وستین من ستة وستین وان اکملنا بأخذ متروکا ته کما فعلنا کان الغلط فی مائة واثنین اومائة وستة وعشرین من مائة واثنین وثلثین وها انالك اصورها کي یسهل علیك تصورها وبالله التوفیق*

(اردو ترجمہ و تشریح): عہ کے ساتھ مل کر ایک سو دو ۱۰۲ ہوگئیں لیکن بحر نے خاص اس صورت پر کلام کیا ہے جب بیرونِ نماز دیکھا ہو تو آدھی رہ گئیں اور ستائیس ۲۷ میں سے صرف پانچ بچیں چار وعدہ بعد نماز میں جب کہ بعد وقت دیا، یا وعدہ خلافی کرتے ہوئے نہ دیا۔ اور بعد وقت دینا بھی وعدہ خلافی ہی ہے جیسا کہ میں نے پہلے بیان کیا۔ اور پانچویں صورت وہ کہ نہ وعدہ ہو نہ عطا ۔ یہ وہ صورتیں ہیں جن میں اختلاف جاری ہو گا اگر یہ مانیں کہ اختلاف باقی ہے تو مبسوط کا قول ہے کہ ترک سوال کی وجہ سے نماز باطل ہے اور ہدایہ کا قول ہے کہ صحیح ہے اس لئے کہ سوال واجب نہیں اور عطا نہ پائی گئی نہ ہی وعدہ ہوا یا ہوا ظن وعدہ ، خلف کی وجہ سے زائل ہو گیا۔ چونکہ ان پانچ میں سے ہر ایک سداسی ہے کل تیس ۳۰ صورتیں ہوئیں اور بحر کے آدھے بیان کی وجہ سے پندرہ ۱۵ ہوئیں یہ سب اس بنیاد پر ہے کہ میں نے کہا کہ ظاہر یہ ہے کہ بعد نماز وعدہ کے خلاف جب ظاہر ہوجائے تو وہ ادا شدہ نماز میں اثر انداز نہ ہوگا۔ اگر میرا یہ

خیال تسلیم نہ ہو تو ستائیس۲۷ میں سے ایک صورت کے سوا کہیں اختلاف نہ رہ جائے گا۔ وہ صورت یہ ہے کہ نہ وعدہ ہو نہ عطا ہو۔ تو چھیاسٹھ ۶۶ میں سے تریسٹھ ۶۳ میں خطا ثابت ہوگی اور اگر ان کی متروکات کو لے کر ہم کامل کریں جیسا کہ پہلے ہم نے کیا تو غلطی ایک سو بتیس ۱۳۲ میں سے ایک سو چھبیس ۱۲۶ میں ہوگی ان صورتوں کا ایک نقشہ پیش کیا جاتا ہے تاکہ انہیں ذہن نشین کرنے میں سہولت ہو اور خدا ہی سے توفیق ہے۔ (ت)

حاشیہ: عہ وھی ۲۷- (م) (یہ ۲۷ ہے۔ ت)

If he was not asked at all and saw [water] during prayer or before it, and suspected a hindrance or suspected a hindrance or was in doubt.

[Diagrammatic Classification] - Three-fold (Thulathi) | Six-fold (Sudasi) - Before Prayer | After Prayer | Before Tayammum | After Tayammum - Within the time | After the time | Before discovery | After discovery - Promised | No and No | During it | After it | In the prayer

[The Tripling Section] - Suspected gift | Suspected prevention | Doubt - Within the time | After the time | Contradictory | Non-contradictory

[The Six-fold Section] Saw: - Before Tayammum - After [Tayammum] but before Prayer - During Prayer - Before Discovery - After Discovery - Suspected gift | Suspected prevention | Doubt

[Summary Text] - The Three-fold sets are ten: 1 and 2, and from 7 to 13, thus they are thirty. - The Six-fold sets are seventeen: from 3 to 6, and from 15 to the end, thus they are one hundred and two. - So the grand total is 132.

यदि उससे बिल्कुल नहीं पूछा गया और उसने नमाज़ के दौरान या उससे पहले [पानी] देख लिया, और रुकावट का संदेह किया या रुकावट का संदेह किया या शंका में रहा।

[आरेखीय वर्गीकरण] - तीन-गुना (थुलथी) | छह-गुना (सुदासी) - नमाज़ से पहले | नमाज़ के बाद | तयम्मुम से पहले | तयम्मुम के बाद - समय के भीतर | समय के बाद | पता चलने से पहले | पता चलने के बाद - वादा किया गया | न यह न वह | इसके दौरान | इसके बाद | नमाज़ में

[त्रि-विभाजन अनुभाग] - उपहार का संदेह | रुकावट का संदेह | शंका - समय के भीतर | समय के बाद | विरोधाभासी | गैर-विरोधाभासी

[षड-विभाजन अनुभाग] देखा: - तयम्मुम से पहले - [तयम्मुम] के बाद लेकिन नमाज़ से पहले - नमाज़ के दौरान - पता चलने से पहले - पता चलने के बाद - उपहार का संदेह | रुकावट का संदेह | शंका

[सारांश पाठ] - तीन-गुना (थुलथियात) दस हैं: 1 और 2, और 7 से 13 तक, अतः वे तीस हुए। - छह-गुना (सुदासियात) सत्रह हैं: 3 से 6 तक, और 15 से अंत तक, अतः वे एक सौ दो हुए। - अतः कुल योग 132 है।

لو لم یسأل اصلا وقد رأی فی الصلاۃ او قبلھا وظن منعا او منعا او شک (اگر بالکل نہ پوچھا گیا ہو اور نماز میں یا اس سے پہلے دیکھ لیا ہو اور رکاوٹ کا گمان کیا ہو یا رکاوٹ کا یا شک کیا ہو۔)

[نقشہ کی تقسیم] - ثلاثی | سداسی - قبل الصلاۃ | بعد الصلاۃ | قبل التیمم | بعد التیمم - فی الوقت | بعد الوقت | قبل الاطلاع | بعد الاطلاع - وعد | لا ولا | فیھا | بعدھا | فی الصلاۃ

[التثلیث (تین گنا صورتیں)] - ظن عطا | ظن منع | شک - فی الوقت | بعد الوقت | مخلفا | غیر مخلف

[التسدیس (چھ گنا صورتیں)] رأی (دیکھا): - قبل التیمم - بعد التیمم قبل الصلاۃ - فی الصلاۃ - قبل الاطلاع - بعد الاطلاع - ظن عطا | ظن منع | شک

[خلاصہ کلام] - ثلاثیات عشرہ ۱ و ۲ ومن ۷ الی ۱۳ فھی ثلثون (ثلاثیات (تین گنا صورتیں) دس ہیں: ۱ اور ۲، اور ۷ سے ۱۳ تک، پس یہ ۳۰ ہوئیں۔) - السداسیات سبعۃ عشر من ۳ الی ۶ ومن ۱۵ الی الآخر فھی مائۃ واثنان (سداسیات (چھ گنا صورتیں) سترہ ہیں: ۳ سے ۶ تک، اور ۱۵ سے آخر تک، پس یہ ۱۰۲ ہوئیں۔) - فالمجموع ۱۳۲ (پس کل مجموعہ ۱۳۲ ہے۔)

Fatawa Razawiyyah Volume 4

Totally did not ask when seen during prayer or before prayer and there was a suspicion of giving or refusal, or a doubt arose.

(Diagram structure:) Triadic: Giving; Neither giving nor promise Hexadic: Promise

Sub-categories: - Before prayer, During prayer, After prayer - Before Tayammum, After Tayammum - Within time, After time - Before notification, After notification - Gave, Did not give

Tripartition (Tathleeth): Suspicion of giving, Suspicion of refusal, Doubt

(Table detailing various states based on timing, Tayammum, and fulfillment of promise, containing numbered cases from 1 to 27 and further details up to 126.)

Summary: - There are ten triadics: 1, 2, 4, and from 7 to 11. So these are thirty-three. - There are seventeen hexadics: from 12 to 16, and from fifteen to the end. So these are one hundred and two. Total: 132

I.T. Majlis of Dawateislami Page 166 of 761

फ़तावा रिज़विया खंड 4

बिल्कुल नहीं माँगा जब नमाज़ में या नमाज़ से पहले देखा और देने या मना करने का गुमान (संदेह) हुआ या शक हुआ।

(आरेख संरचना:) त्रय (ثلاثی): देना; न देना न वादा करना षष्ठ (سداسی): वादा

उप-श्रेणियाँ: - नमाज़ से पहले, नमाज़ के दौरान, नमाज़ के बाद - तयम्मुम से पहले, तयम्मुम के बाद - समय के भीतर, समय के बाद - सूचना से पहले, सूचना के बाद - दिया, नहीं दिया

त्रिभाजन (तथलीथ): देने का गुमान, मना करने का गुमान, शक

(समय, तयम्मुम और वादे की पूर्ति के आधार पर विभिन्न स्थितियों का विवरण देने वाली तालिका, जिसमें 1 से 27 तक के क्रमांकित मामले और 126 तक के आगे के विवरण शामिल हैं।)

सारांश: - त्रय (ثلاثیات) दस हैं: 1, 2, 4, और 7 से 11 तक। तो ये तैंतीस (33) हैं। - षष्ठ (سداسیات) सत्रह हैं: 12 से 16 तक और पंद्रह से अंत तक। तो ये एक सौ दो (102) हैं। कुल 132

आई.टी. मजलिस-ए-दावत-ए-इस्लामी पेज 166 / 761

فتاویٰ رضویہ جلد چہارم

بالکل نہ مانگا جبکہ نماز میں یا قبلِ نماز دیکھا اور عطا یا منع کا ظن ہوا یا شک ہوا

(ڈایا گرام کے اجزاء:) ثلاثی: عطا؛ نہ عطا نہ وعدہ سداسی: وعدہ

ذیلی تقسیم: - قبل نماز، اندرون نماز، بعد نماز - قبل تیمم، بعد تیمم - وقت میں، بعد وقت - قبل اطلاع، بعد اطلاع - دیا، نہ دیا

تثلیث: ظن عطا، ظن منع، شک

(جدول جس میں وقت، تیمم اور وعدہ وفائی کی بنیاد پر مختلف مسائل کی تفصیل ہے، جس میں 1 سے 27 تک کے نمبرز اور آگے 126 تک کی تفصیلات موجود ہیں۔)

خلاصہ: - ثلاثیات دس ہیں۔ ۱ و ۲- ۴- اور ۷ سے ۱۱ تک۔ تو یہ تینتیس ہیں۔ - سداسیات سترہ ہیں۔ ۱۲ سے ۱۶ تک اور پندرہ سے آخر تک۔ تو یہ ایک سو دو ہیں۔ کُل ۱۳۲

آئی ٹی مجلسِ دعوتِ اسلامی صفحہ 166 از 761

Fatawa Razawiya Volume 4

Third: The Principle of the researcher Ibrahim al-Halabi

Researcher al-Halabi (may Allah Almighty have mercy on him) says: "This has several forms: either his dominant thought (ghalbah-e-zann) is of giving or withholding, or both are equal. In any case, he will either ask or perform tayammum and pray without asking. In the case of asking, either it will be given or withheld. If withheld before the prayer, there will be another request after the prayer or not. In both cases, he will give or not. And when he performed tayammum and prayed, will he ask after the prayer or not? In both cases, he will give or not. So there are twenty-seven (27) types. If he performed tayammum and prayed without asking, then asked and he gave, or he gave without asking, then in any case, repetition (of prayer) is mandatory for him. In the case of expectation of giving, the reason is obvious. In other cases, it is because the doubt is removed and the error of the thought becomes apparent. If he was refused and denied upon asking, his prayer is valid, whether the asking was before or after the prayer. This is because the inability was established from the beginning. And there is no benefit in giving after the prayer after a refusal before the prayer. And when he performed tayammum and prayed without asking and did not ask later either to reveal the situation, then according to the saying of Imam Abu Hanifa (may Allah Almighty be pleased with him), his prayer is correct in all cases. The Sahibayn (the two companions) said: This cannot suffice him. The appropriate way is to provide a detailed explanation. So it should be that requesting is mandatory and without it the prayer..."

Page 167 of 761

फतावा रज़विया जिल्द 4

तीसरा: शोधकर्ता इब्राहिम अल-हलबी का सिद्धांत

शोधकर्ता हलबी (अल्लाह उन पर रहम फरमाए) फरमाते हैं: "इसकी कई सूरतें हैं: या तो उसे देने या मना करने का प्रबल विचार (गल्बा-ए-ज़न्न) होगा या दोनों बराबर होंगे। हर स्थिति में या तो वह मांगेगा या बिना मांगे तयम्मुम और नमाज़ अदा करेगा। मांगने की सूरत में या तो दिया जाएगा या मना किया जाएगा। यदि नमाज़ से पहले मना कर दिया गया, तो नमाज़ के बाद फिर से मांगना होगा या नहीं। दोनों स्थितियों में वह देगा या नहीं। और जब उसने तयम्मुम किया और नमाज़ पढ़ ली, तो नमाज़ के बाद पूछेगा या नहीं। दोनों स्थितियों में वह देगा या नहीं। तो सत्ताईस (27) किस्में हुईं। अगर बिना मांगे तयम्मुम किया और नमाज़ पढ़ ली, फिर मांगा और उसने दे दिया, या बिना मांगे दे दिया, तो हर स्थिति में उस पर (नमाज़ का) दोहराना वाजिब है। देने की उम्मीद की सूरत में तो कारण स्पष्ट है। इसके अलावा अन्य स्थितियों में इसलिए कि संदेह दूर हो गया और विचार की गलती स्पष्ट हो गई। अगर मांगने पर मना और इनकार किया गया तो उसकी नमाज़ हो गई, चाहे मांगना नमाज़ से पहले हो या बाद में। इसलिए कि अक्षमता शुरू से ही सिद्ध हो गई। और नमाज़ से पहले इनकार के बाद, नमाज़ के बाद देने में कोई लाभ नहीं है। और जब बिना मांगे तयम्मुम किया और नमाज़ पढ़ ली और बाद में भी नहीं मांगा कि स्थिति स्पष्ट हो जाए, तो इमाम अबू हनीफा (रज़ियल्लाहु अन्हु) के अनुसार सभी सूरतों में उसकी नमाज़ सही है। और साहिबैन (दो साथियों) ने फरमाया: यह उसे पर्याप्त नहीं होगा। उचित तरीका यह है कि इसका विस्तार किया जाए। तो होना यह चाहिए कि मांगना वाजिब हो और उसके बिना नमाज़..."

पृष्ठ 167 / 761

فتاویٰ رضویہ جلد چہارم

الثالث القانون الحلبی

سوم: قانون محقق ابراہیم حلبی محقق حلبی رحمہ اللہ تعالٰی فرماتے ہیں: "اس کی چند صورتیں ہیں یا تو اسے عطا یا منع کا غلبہ ظن ہوگا یا دونوں میں برابری ہوگی بہر تقدیر یا تو مانگے گا یا بغیر مانگے تیمم و نماز ادا کرے گا بصورت سوال یا تو عطا ہوگی یا منع اور منع قبل نماز ہو تو بعد نماز پھر سوال ہوگا یا نہ ہوگا بہر دو تقدیر وہ دے گا یا نہ دے گا۔ اور جب تیمم کیا اور نماز پڑھ لی تو بعد نماز سوال کرے گا یا نہیں۔ بہر دو تقدیر وہ دے گا یا نہیں۔ تو ستائیس، ۲۷ قسمیں ہوئیں۔ اگر مانگے بغیر تیمم کیا اور نماز پڑھ لی پھر مانگا تو اس نے دے دیا یا مانگے بغیر دے دیا تو بہر تقدیر اس پر اعادہ لازم ہے۔ ظنِ عطا کی صورت میں تو وجہ ظاہر ہے۔ اس کے علاوہ میں اس لئے کہ شک زائل ہو گیا اور ظن کی خطا ظاہر ہو گئی اگر مانگنے پر منع و انکار کیا تو اس کی نماز ہو گئی خواہ مانگنا قبل نماز ہو یا بعد نماز۔ اس لئے کہ عجز ابتدا سے ہی متحقق ہو گیا۔ اور نماز سے پہلے انکار کے بعد، نماز کے بعد دینے میں کوئی فائدہ نہیں اور جب بغیر مانگے تیمم کیا اور نماز پڑھ لی۔ بعد میں بھی نہ مانگا کہ حال منکشف ہو تو امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالٰی عنہ کے قول پر تمام صورتوں میں اس کی نماز صحیح ہے۔ اور صاحبین نے فرمایا: یہ اسے کفایت نہیں کر سکتا۔ اور مناسب طریقہ یہ ہے کہ تفصیل کی جائے۔ تو ہونا یہ چاہے کہ طلب واجب ہو اور اس کے بغیر نماز

Fatawa Razawiyya Volume 4

[In the case of] a place where water is scarce, if there is doubt about it being a place of scarcity or a suspicion of denial [of water] elsewhere, then caution lies in the statement of the two companions (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad), and latitude lies in the statement of Imam [Abu Hanifa]. Its discussion has already passed comprehensively in the sixth issue. (T)

I say: He covered all the branches mentioned, except that he omitted the ruling for when one asks before prayer and is given [water], due to its clarity. For if it is before tayammum, it prevents it; or if after, it invalidates it; or during prayer, it nullifies it. Indeed, it is the same whether that giving is immediate or later, after a promise, silence, or refusal as we mentioned before. So what is meant by 'before prayer' is before its completion, even if it is during it or before it after tayammum or before it. And his presenting the scenario of omitting the request as absolute from the condition of non-giving and making it a matter of scholarly difference has been rectified by his statement before it 'or he was given without asking.' Thus it is known that the discussion here is regarding what was neither asked for nor given. In short, it is the best rule I have seen, were it not that it contains:

Firstly: The omission of (1) scenarios of promise and (2) silence, even though they contain that which the voice cannot suffice for. If they had mentioned them, they would have benefited us and delivered us from...

---

1. Ghunyat al-Mustamli, Chapter on Tayammum, Suhail Academy Press, Lahore, p. 68 Page 168 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द 4

[उस स्थिति में जहाँ] पानी की कमी हो, यदि पानी की कमी के स्थान के बारे में संदेह हो या कहीं और मनाही का गुमान हो, तो सावधानी साहिबैन (इमाम अबू यूसुफ और इमाम मुहम्मद) के कथन में है और सुगमता इमाम साहब के कथन में है। इसकी चर्चा मसला छठे में पूरी तरह से हो चुकी है। (त)

अक़ूल (मैं कहता हूँ): पहले जो शक्लें ज़िक्र की गईं, उन सभी के हुक्म बयान कर दिए, लेकिन उस सूरत का हुक्म छोड़ दिया जब नमाज़ से पहले माँगने पर उसने दे दिया। इसलिए कि इस सूरत का हुक्म ज़ाहिर है। क्योंकि अगर यह तैयम्मुम से पहले है तो तैयम्मुम से रोकेगा, और अगर तैयम्मुम के बाद है तो उसे तोड़ देगा, और अगर नमाज़ के दौरान है तो उसे बातिल कर देगा, चाहे यह देना तुरंत हो या बाद में, वादे के बाद हो या ख़ामोशी के बाद या इनकार के बाद, जैसा कि हमने पहले बयान किया। तो नमाज़ से पहले से मुराद नमाज़ मुकम्मल होने से पहले है, चाहे दौरान-ए-नमाज़ हो या नमाज़ से पहले तैयम्मुम के बाद हो या उससे पहले। उन्होंने मुतलक़न (बिना शर्त) सवाल न करने की सूरत में अदम-ए-अता (न देने) की क़ैद नहीं लगाई और इसे इख़्तिलाफ़ी (मतभेद वाला) क़रार दिया, मगर उससे पहले अपनी इबारत "अवा आ'ता बिला सुआल" (या बिना माँगे दे दिया) से इसका तदारुक (भरपाई) कर दिया, जिससे मालूम हुआ कि यहाँ कलाम उस सूरत में है जब न माँगा गया हो न दिया गया हो। कुल मिलाकर, यह सबसे उम्दा ज़ाबता (नियम) है जो मेरी नज़र से गुज़रा, अगर इसमें ये चंद बातें न होतीं:

अव्वलन: वादे और सुकूत (ख़ामोशी) की सूरतें छोड़ दीं, जबकि उनमें वह कुछ है जिससे ख़ामोशी काम नहीं दे सकती। अगर ये हज़रात इन सूरतों को...

---

1. ग़ुनियतुल मुस्तमली, बाबुत तैयम्मुम, मतबअ सुहैल एकेडमी लाहौर, सफ़्हा 68 पृष्ठ 168 / 761

جلد چہارم فتاوٰی رضویہ موضع عزة الماء اما اذا شك في موضع عزة الماء او ظن المنع في غيره فالاحتياط في قولهما والتوسعة في قوله اه وقد مر بحثه مستوعباً في المسألة السادسة۔ صحیح نہ ہو جبکہ اسے عطا کا گمان رہا ہو۔ اس صورت میں جبکہ پانی کی کمیابی کی جگہ ہونے کی وجہ سے اس کو عدم عطا کا گمان رہا ہو اور جب پانی کی کمیابی کی جگہ شک کی صورت ہو یا دوسری جگہ منع کا ظن ہو تو احتیاط صاحبین کے قول میں ہے اور وسعت امام صاحب کے قول میں ہے "اھ اس کی بحث مکمل طور پر مسئلہ ششم میں گزر چکی۔ (ت)

اقول: اتی علی جمیع ماذکر في الشقوق غیر انه ترك حکم ما اذا سأل قبل الصلاة فأعطی لظهور فانه ان کان قبل التیمم منعه او بعده نقضه او فی الصلاة ابطلها بل وسواء کان ذلك عطاء عاجلا او آجلا بعده عدا وسکوت او اباء کما قدمنا فالمراد بما قبل الصلاة قبل اتمامها ولو فیها او قبلها بعد التیمم او قبله وارسالہ صورة ترك السؤال مطلقة عن قید عدم العطاء وجعلها خلافیة قد تدارکه قوله قبلها او اعطی بلا سؤال فعلم ان الکلام هنا في مالم یسأل ولم یعط وبالجملة هي احسن ضابطة رأیت لولا ان فیها: اقول: پہلے جو شقیں ذکر کیں سبھی کے احکام بیان کردئے مگر اس صورت کا حکم چھوڑ دیا جب قبل نماز مانگنے پر اس نے دے دیا۔ اس لئے کہ اس صورت کا حکم ظاہر ہے۔ کیونکہ اگر یہ قبل تیمم ہے تو تیمم سے مانع ہوگا اور اگر بعد تیمم ہے تو اسے توڑ دے گا اور اگر اندرون نماز ہے تو اسے باطل کردے گا خواہ یہ دینا فوراً ہو یا دیر میں، وعدہ کے بعد ہو یا سکوت کے بعد یا انکار کے بعد جیسا کہ پہلے ہم نے بیان کیا تو قبل نماز سے مراد قبل تکمیل نماز ہے اگرچہ دوران نماز ہو یا قبل نماز تیمم کے بعد ہو یا اس سے پہلے انہوں نے مطلقاً سوال نہ کرنے کی صورت میں عدم عطا کی قید نہ لگائی اور اسے اختلافی قرار دیا مگر اس سے پہلے اپنی عبارت "او اعطی بلا سؤال" (یا بغیر مانگے دے دیا) سے اس کا تدارک کر دیا جس سے معلوم ہوا کہ یہاں کلام اس

صورت میں ہے جب نہ مانگا ہو نہ دیا ہو بالجملہ یہ سب سے عمدہ ضابطہ ہے جو میری نظر سے گزرا اگر اس میں یہ چند باتیں نہ ہوتیں:

اوّلاً: ترک (۱) صور الوعد والسکوت (۲) مع ان فیھا مالایغنی عنه الصوت * فلو انھم ذکروھا لافادونا وخلصونا عن اوّلاً: وعدہ اور سکوت کی صورتیں ترک کردیں جب کہ ان میں وہ کچھ ہے جس سے سکوت کام نہیں دے سکتا اگر یہ حضرات ان صورتوں کو

---

1 غنیۃ المستملی باب التیمم مطبع سہیل اکیڈمی لاہور ص ۶۸ Page 168 of 761

Fatawa Rizvia - Volume 4

[Arabic Section] ...hesitation in their rulings, and they did not compel someone like me to look into them. Secondly: By omitting them (1), the scenario of 'not asking' includes when a promise was made but not fulfilled, although this case is not disputed if the promise occurred before the completion of the prayer; rather, it is unanimously a hindrance, a nullifier, and an invalidator, whether its opposite appeared or not. These are six cases, four of them (Note 1) are tripartite, and two (Note 2) are hexapartite, because his speech is not exclusive to what is outside the prayer like the speech of 'Al-Bahr'. Thus, they are twenty-four. Likewise (2), if he promised after it and the opposite did not appear—and they are two (Note 3)—both are hexapartite, so the error spread to thirty-six divisions. And if my inference and considering the promise, even if it were later, as absolutely invalidating is not accepted, then two more (Note 4), I mean twelve more, will be added, and the error will encompass forty-eight. Thirdly: His saying (3) "and if he asked and it was refused," as clarified by the question before prayer.

[Urdu Section] ...if they had mentioned it, they would have benefitted us and saved us from hesitation in their rulings, and someone like me would not have needed to deliberate on them. Secondly: By omitting these cases, the scenario of 'no questioning' includes the situation where a promise was made but not fulfilled, even though this scenario is not disputed if the promise occurred before the completion of the prayer; rather, it is unanimously considered a hindrance, a nullifier, and an invalidator, whether the contrary was apparent or not. These are six scenarios, out of which four are tripartite and two are hexapartite. This is because his speech, like the speech of the author of 'Al-Bahr', is not specific to outside the prayer, so there are twenty-four (24) scenarios in total. Similarly, if a promise was made after the prayer and the contrary did not appear—and these are two scenarios, both of which are hexapartite—then the error spread to thirty-six (36) categories. And if my inference and the categorization of a promise, even if it were later, as absolutely invalidating is not accepted, then twelve (12) more scenarios will be added, and the error will encompass forty-eight (48) scenarios. Thirdly: His statement "and if he asked and it was refused," as they have clarified regarding the question before prayer.

[Footnotes] Note 1: These are 9, 10, 13, and 14. Note 2: These are 17 and 18. Note 3: These are 22 and 26. Note 4: These are 21 and 25.

फ़तावा रज़विया - जिल्द चहारुम (खंड 4)

[अरबी खंड] ...उनके फैसलों में संशय होता और उन्होंने मुझ जैसे को उनमें गहराई से देखने के लिए मजबूर नहीं किया। दूसरा: उन्हें छोड़ने (1) के कारण, सवाल न करने की स्थिति में वह भी शामिल है जब वादा किया गया हो और दिया न गया हो, हालाँकि यह स्थिति विवादास्पद नहीं है जबकि वादा नमाज़ पूरी होने से पहले हुआ हो, बल्कि यह सर्वसम्मति से रुकावट डालने वाला, तोड़ने वाला और अमान्य करने वाला है चाहे उसके खिलाफ ज़ाहिर हो या न हो। ये छह स्थितियाँ हैं जिनमें से चार (नोट 1) त्रिपक्षीय हैं और दो (नोट 2) षटपक्षीय हैं, क्योंकि उनकी बात 'बह्र' की बात की तरह नमाज़ के बाहर तक ही सीमित नहीं है, तो कुल चौबीस स्थितियाँ हुईं। इसी तरह (2) जब नमाज़ के बाद वादा हुआ और उसके खिलाफ ज़ाहिर नहीं हुआ और ये दो (नोट 3) स्थितियाँ हैं, दोनों ही षटपक्षीय हैं, तो गलती छत्तीस प्रकारों तक फैल गई। और यदि मेरा यह निष्कर्ष और वादे को, चाहे वह बाद में ही क्यों न हो, पूर्णतः अमान्य घोषित करना स्वीकार न हो, तो दो (नोट 4) यानी बारह अन्य स्थितियों का इज़ाफ़ा होगा और गलती अड़तालीस को शामिल हो जाएगी। तीसरा: उनका कहना (3) "अगर माँगने पर उसने इनकार किया" जैसा कि उन्होंने नमाज़ से पहले सवाल करने के बारे में स्पष्ट किया।

[उर्दू खंड] ...जिक्र करते तो हमें फायदा पहुँचाते और उनके अहकाम (नियमों) में संशय से निजात देते और मुझ जैसे को उनमें गौर करने की ज़रूरत न होती। दूसरा: इन सूरतों (स्थितियों) को छोड़ देने की वजह से 'सवाल न करने' की सूरत में वह भी शामिल है जब वादा किया गया हो और दिया न गया हो, हालाँकि यह सूरत विवादास्पद नहीं है जबकि वादा नमाज़ मुकम्मल (पूर्ण) होने से पहले हो गया हो, बल्कि यह सर्वसम्मति से मानि (बाधा), नाक़िज़ (तोड़ने वाला) और मुब्तिल (अमान्य करने वाला) है चाहे इसके ख़िलाफ़ ज़ाहिर हो या न हो। ये छह सूरतें हैं जिनमें से चार सुलासी (त्रिपक्षीय) और दो सुदासी (षटपक्षीय) हैं क्योंकि उनका कलाम, साहिबे-बह्र के कलाम की तरह नमाज़ से बाहर के लिए ही खास नहीं है, तो कुल चौबीस २४ सूरतें हुईं। इसी तरह जब नमाज़ के बाद वादा हुआ और उसके ख़िलाफ़ ज़ाहिर न हुआ और ये दो सूरतें हैं, दोनों ही सुदासी हैं तो छत्तीस ३६ किस्मों तक ग़लती फैल गई। और अगर मेरा इस्तिज़हार (निष्कर्ष) और वादे को, चाहे वह बाद ही में हो, मुतलक़न (पूर्णत:) मुब्तिल करार देना तस्लीम न हो तो १२ यानी बारह सूरतों का और इज़ाफ़ा (वृद्धि) होगा और ग़लती अड़तालीस ४८ सूरतों को शामिल हो जाएगी। तीसरा: उनका क़ौल "वइन सअला फ़-मना" (और अगर उसने माँगा फिर उसने मना कर दिया) जैसा कि उन्होंने नमाज़ से पहले सवाल करने के बारे में स्पष्ट किया।

[पाद-टिप्पणियाँ] नोट 1: ये 9, 10, 13 और 14 हैं। नोट 2: ये 17 और 18 हैं। नोट 3: ये 22 और 26 हैं। नोट 4: ये 21 और 25 हैं।

पृष्ठ 169 का 761

التردد فی احکامها ولم یحوجوا مثلی الی النظر فیها۔ | ذکر کرتے تو ہمیں مستفید فرماتے اور ان کے احکام میں تردد سے نجات دیتے اور مجھ جیسے کو ان میں نظر کی ضرورت نہ ہوتی۔ وثانیًا: بترکها (۱) اشتملت صورة عدم السؤال ما اذا | ثانیًا: ان صورتوں کو چھوڑ دینے کی وجہ سے عدم سوال کی صورت وعد ولم یعط ولیست خلافیة اذا وقع الموعد قبل | اسے بھی شامل ہے جب وعدہ کیا ہو اور نہ دیا ہو حالانکہ یہ صورت تمام الصلوة بل یمنع وینقض ویبطل اتفاقًا سواء | اختلافی نہیں جبکہ وعدہ تکمیل نماز سے پہلے ہو گیا ہو بلکہ یہ بالاتفاق ظهر خلفه اولاً فهی ستة اربعة عہ1 منها ثلاثیات | مانع، ناقض اور مبطل ہے خواہ اس کے خلاف ظاہر ہو یا نہ ہو۔ یہ و اثنان عہ2 سداسیان لان کلامه لایختص بخارج | چھ صورتیں ہیں جن میں سے چار ثلاثی اور دو سداسی ہیں اس لئے الصلوة ککلام البحر فهی اربعة وعشرون وکذلک | کہ ان کا کلام، صاحبِ بحر کے کلام کی طرح خارج نماز سے خاص (۲) اذا وعد بعدها و لم یظهر خلفه و هما عہ3 اثنان | نہیں تو کل چوبیس ۲۴ صورتیں ہوئیں۔ اسی طرح جب بعد نماز کلاهما سداسی فسری الغلط الی ستة وثلثین قسماً | وعدہ ہوا اور اس کے خلاف نہ ظاہر ہوا اور یہ دو صورتیں ہیں دونوں و ان لم یسلم استظهاری وجعل الوعد ولو کان بعدُ | ہی سداسی ہیں تو چھتیس ۳۶ قسموں تک غلطی سرایت کر آئی۔ اور مبطلاً مطلقاً زاد اثنان عہ4 اعنی اثنی عشر | اگر میرا استظہار اور وعدہ کو اگرچہ بعد ہی میں ہو مطلقاً مبطل قرار أخر وشمل الغلط ثمانیة واربعین۔ | دینا تسلیم نہ ہو تو ۱۲ یعنی بارہ صورتوں کا اور اضافہ ہوگا اور غلطی وثالثًا: قوله (۳) وان سأل فمنع کما صرح به | اڑتالیس ۴۸ صورتوں کو شامل ہو جائے گی۔ السؤال قبل الصلاة | ثالثاً: ان کا قول "وان سأل فمنع" (اگر مانگنے پر اس نے انکار کیا) جیسا کہ انہوں نے

عہ١ هي ٩ و ١٠ و ١٣ و ١٤ (م) (یہ ٩، ١٠، ١٣، ١٤ ہیں۔ت) عہ٢ هما ١٧ و ١٨ (م) (یہ ١٧ اور ١٨ ہیں۔ت) عہ٣ هما ٢٢ و ٢٦ (م) (یہ ٢٢ اور ٢٦ ہیں۔ت) عہ٤ هما ٢١ و ٢٥ (م) (یہ ٢١ اور ٢٥ ہیں۔ت)

...and after it, so the prohibition includes before and after it. Specifying the prohibition to before it in his statement 'and there is no benefit etc.' has no benefit in it; rather, it may give the impression that the ruling is not so if he refused after it then gave, but it is not so as we previously stated in the commentary on the Qanoon al-Sadri and the tenth issue. So the appropriate way is to omit the word 'before it'.

The explanation covers asking both before and after prayer. Thus, it also includes refusal before and after prayer. In his statement "And there is no benefit in giving after it, after the refusal before it" (meaning there is no benefit in giving after prayer if he had refused before prayer), specifying the refusal to before prayer has no benefit. Instead, it creates a delusion that if he refused after prayer and then gave, this ruling would not apply, whereas this is not the case as explained in the commentary on Qanoon Sadr-ush-Shari'ah and in the tenth issue. Therefore, it was appropriate that the word "before it" (qablaha) be omitted.

Fourthly: There was no need to create divisions between suspicion (zann) and doubt (shakk) from the very beginning, because the need for it only arises when he did not ask, and was not given, and was not promised, and this is a matter of disagreement if disagreement is assumed.

Fourthly: From the beginning, there was no need to extract branches of suspicion and doubt. The need for this arises when he has not asked, and has not been given, nor promised, and this is the controversial scenario if it is assumed that there is a disagreement.

Fifthly: He structured his speech on this, meaning what he made a matter of disagreement, on the basis that if he thinks giving [water] is likely (zann), then the chosen position is the school of the Two Companions, i.e., whether the place is a place of water scarcity or a place of its being granted, due to the absolute mention here and the detailed explanation in refusal and doubt. If he thinks refusal is likely, then if the place is a place of scarcity, the chosen position is the school of the Imam. And if it is a place of being granted or he doubts a place of scarcity, then their (the two companions) statement is more cautious and his (the Imam's) statement is more expansive. I do not know why he omitted mentioning doubt in the place of being granted. (T)

Fifthly: Regarding what has been declared as disagreement, he based his discourse on the point that if there is a probability (zann) of being given, then the chosen opinion is that of the 'Sahibain' (the two companions), meaning whether that place is of water scarcity or a place where water is provided. The proof for this is its absolute mention here and the detailed breakdown in the case of refusal and doubt. If refusal is probable (zann), then if the place is one of water scarcity, the chosen opinion is that of the Imam. And if the place is one where water is provided or there is doubt about it being a place of scarcity, then the statement of the 'Sahibain' is more cautious, while the Imam's statement is more expansive. It is not known why the mention of doubt in a place of provision (bazl) was omitted. (T)

...और उसके बाद, तो निषेध इसके पहले और बाद दोनों को शामिल करता है। उनके इस कथन में कि 'और कोई लाभ नहीं आदि', निषेध को पहले तक सीमित करने का कोई लाभ नहीं है, बल्कि इससे यह भ्रम हो सकता है कि यदि उसने बाद में मना किया और फिर दे दिया तो नियम वैसा नहीं है, जबकि ऐसा नहीं है जैसा कि हमने पहले कानून सदरी की व्याख्या और दसवें मसले में बताया है। तो उचित यही है कि शब्द 'पहले' को हटा दिया जाए।

स्पष्टीकरण नमाज़ से पहले और बाद दोनों समय माँगने को शामिल करता है, तो नमाज़ से पहले और बाद में इनकार को भी शामिल करेगा। उनके अपने वाक्य "नमाज़ से पहले इनकार के बाद नमाज़ के बाद देने में कोई लाभ नहीं" में निषेध को नमाज़ से पहले के साथ खास करने का कोई लाभ नहीं है, बल्कि इससे यह भ्रम पैदा होता है कि यदि नमाज़ के बाद इनकार किया और फिर दे दिया तो यह हुक्म नहीं होगा, जबकि ऐसा नहीं है जैसा कि कानून सदरुश्शरिया की व्याख्या और दसवें मसले में बयान किया जा चुका है। तो उचित यही था कि शब्द 'क़ब्लहा' (उससे पहले) को हटा दिया जाता।

चौथा: शुरुआत से ही संदेह (ज़न्न) और शक के बीच भेद करने की कोई आवश्यकता नहीं थी क्योंकि इसकी आवश्यकता केवल तभी होती है जब उसने न माँगा हो, न उसे दिया गया हो और न ही वादा किया गया हो, और यदि मतभेद मान लिया जाए तो यह एक विवादास्पद मामला है।

चौथा: पहले ही मामले से ज़न्न और शक की शाखाएं निकालने की कोई आवश्यकता नहीं थी, इसकी आवश्यकता तो उस समय होती है जब उसने न माँगा हो और न ही उसे दिया गया हो और न ही वादा किया गया हो, और यही विवादास्पद स्थिति है यदि यह मान लिया जाए कि इसमें मतभेद है।

पाँचवाँ: उन्होंने अपनी बात को इस पर आधारित किया, यानी जिसे उन्होंने विवादास्पद बनाया, कि यदि उसे मिलने की संभावना (ज़न्न) है, तो मुख़्तार (चुना हुआ) मज़हब साहिबैन (दो साथियों) का है, यानी चाहे वह जगह पानी की कमी वाली हो या पानी मिलने वाली जगह हो, क्योंकि यहाँ इसका उल्लेख बिना किसी शर्त के है और मना करने व शक होने के मामले में विस्तार से बताया गया है। यदि उसे मना किए जाने की संभावना (ज़न्न) हो, तो यदि वह जगह पानी की कमी वाली है, तो मुख़्तार मज़हब इमाम साहब का है। और यदि वह पानी मिलने वाली जगह है या उसे पानी की कमी वाली जगह होने में शक है, तो साहिबैन का कहना अधिक सावधानी वाला है और इमाम साहब का कहना

अधिक व्यापक है। पता नहीं क्यों 'बज़्ल' (पानी देने वाली जगह) में शक के उल्लेख को छोड़ दिया गया। (त)

पाँचवाँ: जिसे विवाद के रूप में पेश किया गया है, उसमें अपना तर्क इस पर रखा कि यदि पानी मिलने की संभावना (ज़न्न) हो, तो साहिबैन का मज़हब चुना गया है, चाहे वह स्थान पानी की कमी वाला हो या पानी मिलने वाला हो। इसका प्रमाण यहाँ इसे बिना शर्त उल्लेख करना और इनकार व संदेह में विस्तार से वर्णन करना है। यदि इनकार की संभावना हो, और यदि वह स्थान पानी की कमी वाला हो, तो इमाम साहब का मज़हब चुना गया है। और यदि स्थान पानी मिलने वाला हो या पानी की कमी वाले स्थान के बारे में संदेह हो, तो साहिबैन का कथन अधिक एहतियात वाला है और इमाम साहब का कथन अधिक व्यापक है। पता नहीं बज़्ल (पानी देने) के स्थान पर संदेह के उल्लेख को क्यों छोड़ दिया गया। (त)

पृष्ठ 170 / 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

وبعدها فيشمل المنع قبلها وبعدها فتخصيص المنع بما قبلها في قوله ولا فائدة الخ لا فائدة فيه بل قد يوهم ان ليس الحكم كذا ان منع بعدها ثم اعطى وليس كذلك كما قدمنا في شرح القانون الصدري والمسألة العاشرة فالوجه اسقاط لفظة قبلها۔

تصریح کی قبل نماز اور بعد نماز دونوں وقت مانگنے کو شامل ہے تو قبل نماز اور بعد نماز انکار کو بھی شامل ہوگا تو اپنی عبارت "ولافائدة في العطاء بعدها بعد المنع قبلها" (بعد نماز دینے میں کوئی فائدہ نہیں اس کے بعد کہ نماز سے پہلے انکار کردیا ہو) میں منع کو قبل نماز سے خاص کرنے میں کوئی فائدہ نہیں بلکہ اس سے یہ وہم پیدا ہوتا ہے کہ اگر بعد نماز انکار کیا پھر دے دیا تو یہ حکم نہیں حالانکہ ایسا نہیں جیسا کہ قانون صدر الشریعہ کی شرح اور مسئلہ دہم میں بیان کر چکے۔ تو مناسب یہی تھا کہ لفظ "قبلها" ساقط کر دیا جاتا۔

ورابعاً: لم تكن (1) حاجة الى التشقيق بالظنين والتشكيك من اول الامر لانه انما تمس اليه الحاجة فيما اذا لم يسأل ولم يعط ولم يعد وهي خلافية على فرض الخلاف۔

رابعاً: اول امر سے ہی دونوں ظن اور شک کی شقیں نکالنے کی کوئی ضرورت نہ تھی اس کی ضرورت تو اس وقت ہوتی ہے جب اس نے نہ مانگا اور اس نے نہ دیا نہ وعدہ کیا اور یہی اختلافی صورت ہے اگر فرض کیا جائے کہ خلاف ہے۔

وخامساً: حط (2) كلامه في هذا اعنى الذى جعله خلافية على انه ان ظن العطاء فالمختار مذهب الصاحبين اى سواء كان الموضع موضع عزة الماء او موضع بذله بدليل اطلاق هنا والتفصيل في المنع

والشك وان ظن المنع فان كان الموضع موضع العزة فالمختار مذهب الامام وان كان موضع البذل اوشك في موضع العزة فقولهما احوط وقوله اوسع ولا ادری لم ترك الشك في موضع البذل۔

خامساً: جس کو خلاف قرار دیا ہے اس میں اپنا کلام اس پر اتارا کہ اگر اسے ظن عطا ہو تو مختار صاحبین کا مذہب ہے یعنی خواہ وہ جگہ پانی کی کمیابی کی ہو یا پانی دئے جانے کی جگہ ہو اس کی دلیل یہاں اس کو مطلق ذکر کرنا اور منع وشک میں تفصیل کرنا ہے اگر اسے ظن منع ہو اگر وہ جگہ پانی کی کمیابی کی ہو تو مختار امام صاحب کا مذہب ہے اور اگر جگہ پانی خرچ کیے جانے کی ہو یا اسے پانی کی کمیابی کی جگہ میں شک ہو تو صاحبین کے قول میں زیادہ احتیاط ہے اور امام صاحب کے قول میں زیادہ وسعت ہے۔ پتا نہیں بذل کی جگہ شک ہونے کا ذکر کیوں چھوڑ دیا۔ (ت)

[Arabic Column] If it is said: The original rule for water is permissibility, so doubt does not arise except in a place of scarcity. I say: Then why is the suspicion of prohibition mentioned in the place of giving? If that was allowed for external reasons, then doubt is even more prioritized. Sixthly: Why (1) was their (the two companions') opinion more cautious only in case of suspicion of prohibition in the place of giving, not in the place of scarcity? We have established in the sixth issue that mentioning a location is mentioning a place of suspicion, whereas the actual pivot is the reality of one's suspicion. Sometimes one might suspect giving in a place of prohibition, and prohibition in a place of giving—a correct, truthful suspicion arising from reliable evidence. If the matter is based on his suspicion, as is the research, the difference based on the state of the location falls away, and their opinion would be absolutely more cautious whenever there is doubt in any location, not just when prohibition is suspected, even if it is a place of giving. And if the ruling is based on suspicion irrespective of his own thought, then why did you choose their opinion as the preferred one in the case of suspicion of giving, even if it was in a place of scarcity? Seventhly: If (2) by 'more cautious' (ahwat) is meant that which ensures certainty in fulfilling the obligation, then their opinion is absolutely more cautious. But if by it is meant the stronger evidence, then how can it be more cautious in case of doubt? We have established at the end of the sixth issue that doubt...

[Urdu Column] If it is said that the original state of water is permissibility, then doubt would only arise in a place where water is scarce. I say: (I will say) Then why was the mention of suspicion of prohibition made in the place of giving (donating)? If its mention was permissible due to external matters, then doubt would be of an even higher priority. Sixthly: Why is the 'more cautious' opinion of the Sahibayn (two companions) regarding the suspicion of prohibition limited only to places of scarcity? We have researched in the sixth issue that the mention of a place is the mention of a place of suspicion; otherwise, the basis is the reality of suspicion. It is possible that sometimes in a place of prohibition, he suspects giving, and in a place of giving, he suspects prohibition—such a correct suspicion that has arisen from a reliable proof. So if the basis of the work is on his suspicion, as is the research, then the difference in the state of the location will be abolished, and the opinion of the Sahibayn will be absolutely more cautious when there is doubt in any place, not just when there is a suspicion of prohibition even if it is a place of giving. And if the ruling is on the place of suspicion regardless of his suspicion, then how did you declare the opinion of the

Sahibayn as preferred in this situation when he suspected giving even though it was a place of scarcity? Seventhly: If 'ahwat' (more cautious) means that which ensures discharge of responsibility with certainty, then the opinion of the Sahibayn will be absolutely 'ahwat'. And if it means that whose proof is stronger, then how will it be 'ahwat' at the time of doubt? We have researched at the end of the sixth issue that doubt...

[अरबी कॉलम] यदि कहा जाए: जल का मूल नियम वैधता है, इसलिए संदेह केवल कमी वाले स्थान पर ही उत्पन्न होता है। मैं कहता हूँ: फिर दान देने के स्थान पर निषेध के संदेह का उल्लेख क्यों किया गया? यदि यह बाहरी कारणों से अनुमत था, तो संदेह तो और भी प्राथमिकता रखता है। छठा: दान देने के स्थान पर निषेध के संदेह के मामले में उनका (दो साथियों का) विचार ही क्यों 'अहवत' (अधिक सावधान) था, न कि कमी वाले स्थान पर? हमने छठे मसले में सिद्ध किया है कि स्थान का उल्लेख केवल संदेह के स्थान का उल्लेख है, जबकि वास्तविक आधार व्यक्ति के संदेह की वास्तविकता है। कभी-कभी निषेध के स्थान पर दान का संदेह हो सकता है, और दान के स्थान पर निषेध का—एक सही, सच्चा संदेह जो विश्वसनीय प्रमाण से उत्पन्न हुआ हो। यदि मामला व्यक्ति के संदेह पर आधारित है, जैसा कि शोध है, तो स्थान की स्थिति के आधार पर अंतर समाप्त हो जाता है, और उनका विचार किसी भी स्थान पर संदेह होने पर पूरी तरह से अधिक सावधान होगा, न कि केवल तब जब निषेध का संदेह हो, भले ही वह दान का स्थान हो। और यदि निर्णय उसके अपने विचार की परवाह किए बिना संदेह पर आधारित है, तो आपने दान के संदेह की स्थिति में उनके विचार को पसंदीदा के रूप में क्यों चुना, भले ही वह कमी वाला स्थान रहा हो? सातवां: यदि (2) 'अहवत' (अधिक सावधान) से तात्पर्य वह है जो दायित्व को पूरा करने में निश्चितता सुनिश्चित करता है, तो उनका विचार पूरी तरह से अधिक सावधान है। लेकिन यदि इससे तात्पर्य अधिक पुख्ता प्रमाण से है, तो संदेह की स्थिति में यह अधिक सावधान कैसे हो सकता है? हमने छठे मसले के अंत में सिद्ध किया है कि संदेह...

[उर्दू कॉलम] अगर यह कहा जाए कि पानी में मूल वैधता है, तो संदेह केवल उसी स्थान पर होगा जहाँ पानी की कमी हो। अक़ूल: (मैं कहूँगा) फिर दान (दिए जाने) के स्थान पर निषेध के संदेह का उल्लेख कैसे किया गया? यदि बाहरी मामलों के आधार पर इसके उल्लेख की अनुमति थी, तो संदेह तो और भी अधिक प्राथमिकता वाला होगा। छठा: साहिबैन के विचार में निषेध के संदेह के समय केवल पानी की कमी वाले स्थान पर ही अधिक सावधानी क्यों है? हमने छठे मसले में शोध किया है कि स्थान का उल्लेख केवल संदेह के स्थान का उल्लेख है; अन्यथा आधार वास्तव में संदेह पर है। हो सकता है कि कभी निषेध के स्थान पर उसे दान का संदेह हो और दान के स्थान पर निषेध का, ऐसा सही संदेह जो विश्वसनीय प्रमाण से उत्पन्न हुआ हो। तो यदि कार्य का आधार उसके संदेह पर है जैसा कि यही शोध है, तो स्थान की स्थिति का अंतर समाप्त हो जाएगा और साहिबैन के विचार में पूरी तरह

से अधिक सावधानी होगी जब किसी भी स्थान पर संदेह हो, न कि केवल तब जब उसे निषेध का संदेह हो भले ही वह दान का स्थान हो। और यदि उसके संदेह की परवाह किए बिना संदेह के स्थान पर निर्णय है, तो आपने इस स्थिति में साहिबैन के विचार को पसंदीदा कैसे ठहराया जब उसे दान का संदेह हुआ भले ही वह कमी वाला स्थान हो? सातवां: यदि 'अहवत' (अधिक सावधान) से तात्पर्य वह है जिससे निश्चित रूप से जिम्मेदारी पूरी हो जाए, तो साहिबैन का विचार पूरी तरह से 'अहवत' होगा और यदि इससे तात्पर्य वह है जिसका प्रमाण अधिक पुख्ता है तो वह संदेह के समय 'अहवत' कैसे होगा? हमने तो छठे मसले के अंत में शोध किया है कि संदेह...

[عربی کالم] فان قیل الاصل في الماء الاباحة فلایعتری الشك الا في محل العزة۔ اقول: فکیف ظن المنع في محل البذل فان جاز ذلك لامور خارجة فالشك اولی۔ وسادسا: لم (۱) کان الاحوط قولهما عند ظن المنع في محل البذل لافی محل العزة فقد حققنا في المسألة السادسة ان ذکر الموضع ذکر المظنة والمناط حقیقة ظنه ولربما یظن العطاء في محل المنع والمنع في محل العطاء ظنا صحیحا صادقا ناشئا عن دلیل معتمد فان ادیر الامر علی ظنه کما هو التحقیق سقط الفرق بحال المحل وکان الاحوط قولهما اذاشك في محل ما مطلقا لا اذا ظن المنع ولو في محل البذل وان حکم بالمظنة مع قطع النظر عن ظنه فلم جعلتم المختار قولهما في ظن العطاء ولوکان في محل العزة۔ وسابعا:ان (۲) ارید بالاحوط مافیه الخروج عن العهدة بیقین کان قولهما احوط مطلقا وان اریدبه الاقوی دلیلا فکیف یکون احوط عند الشك فقد حققنا آخر المسألة السادسة

[اردو کالم] اگر کہا جائے کہ پانی میں اصل اباحت ہے تو شک صرف اسی جگہ ہو گا جہاں پانی کم یاب ہو۔ اقول: (میں کہوں گا) پھر بذل (دے دیئے جانے) کی جگہ ظن منع کا ذکر کیسے کیا؟ اگر خارجی امور کی بنا پر اس کے ذکر کا جواز تھا تو شک کا بدرجہ اولیٰ ہو گا۔ سادسا: قول صاحبین میں زیادہ احتیاط ظن منع کے وقت صرف کم یابی ہی کی جگہ کیوں ہے؟ ہم نے مسئلہ ششم میں تحقیق کی ہے کہ جگہ کا ذکر ایک جائے گمان کا ذکر ہے ورنہ مدار حقیقت ظن پر ہے۔ ہو سکتا ہے کہ کبھی منع کی جگہ اسے عطا کا گمان ہو اور عطا کی جگہ منع کا، ایسا صحیح گمان جو کہ معتمد دلیل سے پیدا ہوا ہو۔ تو اگر مدار کار اس کے گمان پر ہو جیسا کہ یہی تحقیق ہے تو حالتِ محل کا فرق ساقط ہو جائے گا اور قول صاحبین میں مطلقاً زیادہ احتیاط ہوگی جبکہ کسی بھی جگہ شک ہو نہ اس وقت جبکہ اسے منع کا ظن ہو اگرچہ بذل کی جگہ۔ اور اگر اس کے ظن سے قطع

نظر کر کے مظنہ پر حکم ہے تو آپ نے صاحبین کا قول اس صورت میں مختار کیسے ٹھہرایا جبکہ اسے ظن عطا ہوا اگرچہ وہ کم یابی کی جگہ ہو۔ سابعا: اگر احوط سے مراد وہ ہو جس میں یقینی طور پر عہدہ برآ ہونا ہو تو صاحبین کا قول مطلقاً احوط ہو گا اور اگر اس سے مراد وہ ہو جس کی دلیل زیادہ قوی ہے تو وہ شک کے وقت احوط کیسے ہوگا؟ ہم نے تو مسئلہ ششم کے آخر میں تحقیق کی ہے کہ شک

Fatawa Razawiyya Volume Four Doubt is attached to the presumption of prohibition. Up to here, the laws of the scholars along with the explanation of benefits and mentions of objections are completed. Now, we mention that which has been bestowed upon this humble mendicant by the grace of the All-Powerful. I say (and success is from Allah Almighty): Fourth: Razavi Law Giving after the time has passed does not affect what has already been executed.

(Footnote): For the purpose of brevity, it was not mentioned by way of classification because the phrasing would become lengthy. For example, it would be said: It will not be free from either giving (1), or promising (2), or refusing (3), or remaining silent (4), or there being nothing (5). On the first supposition, he will give either during the time or after it. If he gives within the time (1), he will either give after finishing the prayer, following a real or legal refusal that existed before or after the prayer, or it will not be so (2). And if it is after the time (3), it is not without the fact that either knowledge occurred within the time and he did not ask for it, or it will not be so (4). And on the second (5) supposition, he will either promise after the prayer and his breach will become apparent, or it will not be so (6). And on the third supposition (7), the refusal will be before some action, for example, Tayammum and prayer, or after it (8). And on the fourth supposition (9), either the gift will reach him in time (Continued on the next page).

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी संदेह निषेध की धारणा से जुड़ा है। यहाँ तक विद्वानों के नियम, लाभों की व्याख्या और आपत्तियों के उल्लेख के साथ समाप्त हुए। अब हम वह वर्णन करते हैं जो सर्वशक्तिमान की कृपा से इस तुच्छ फ़कीर को प्राप्त हुआ। मैं कहता हूँ (और सफलता अल्लाह तआला की ओर से है): चौथा: रज़वी कानून समय बीत जाने के बाद देना, जो पहले ही निष्पादित हो चुका है, उसमें प्रभावी नहीं होता।

(पाद टिप्पणी): संक्षेप करने के इरादे से वर्गीकरण के तौर पर इसका उल्लेख नहीं किया गया क्योंकि इसमें शब्दावली लंबी हो जाती। उदाहरण के तौर पर यों कहा जाए: यह इससे खाली न होगा कि या तो दे (१), या वादा करे (२), या इनकार करे (३), या चुप रहे (४), या कुछ न हो (५)। पहली स्थिति में या तो वह समय के भीतर देगा या उसके बाद। यदि वह समय (१) के भीतर देता है, तो या तो वह नमाज़ खत्म करने के बाद देगा उस वास्तविक या कानूनी इनकार के बाद जो नमाज़ से पहले या नमाज़ के बाद रहा हो, या ऐसा (२) नहीं होगा। और यदि वह समय (३) के बाद हो, तो यह इससे खाली नहीं कि या तो समय के भीतर ज्ञान हुआ और उसने माँगा नहीं, या ऐसा (४) नहीं होगा। और दूसरी (५) स्थिति में या तो वह नमाज़ के बाद वादा करेगा और उसका उल्लंघन ज़ाहिर होगा, या ऐसा (६) नहीं होगा। और तीसरी स्थिति (७) में इनकार किसी क्रिया जैसे तयम्मुम और नमाज़ से पहले होगा या उसके बाद (८)। और चौथी स्थिति (९) में या तो दान उसे समय पर (बाकी अगले पृष्ठ पर)।

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم ظن منع سے ملحق ہے۔ یہاں تک قوانینِ علماء مع شرح فوائد وذکر ایرادات تمام ہوئے۔ اب ہم وہ بیان کرتے ہیں جو فیضِ قدیر سے عاجز فقیر پر فائز ہوا۔ فاقول: (میں کہتا ہوں) اور توفیق اللہ تعالٰی سے ہے۔ (ت) چوتھا: قانونِ رضوی وقت کے بعد دینا جو نافذ ہو چکا اس میں مؤثر نہیں۔

(حاشیہ): اختصار کے ارادہ سے تشقیق کے طور پر اس کا ذکر نہ ہوا اس لئے کہ اس میں عبارت لمبی ہو جاتی ہے۔ مثلاً یوں کہا جائے۔ اس سے خالی نہ ہو گا کہ یا تو دے (۱) یا وعدہ (۲) کرے یا انکار (۳) کرے یا خاموش (۴) رہے یا کچھ (۵) نہ ہو بر تقدیر اول یا تو وقت میں دے گا یا اس کے بعد اگر وقت (۱) میں دے تو یا تو ختم نماز کے بعد دے گا اس انکار حقیقی یا حکمی کے بعد جو نماز سے پہلے رہا ہو یا نماز کے بعد یا ایسا (۲) نہیں ہو گا اور اگر وقت (۳) کے بعد ہو تو اس سے خالی نہیں کہ یا تو وقت کے اندر علم ہوا اور اس سے نہ مانگا یا ایسا (۴) نہ ہو گا اور بر تقدیر (۵) ثانی یا تو بعد نماز وعدہ کرے گا اور اس کا خلف ظاہر ہو گا یا ایسا (۶) نہ ہو گا اور بر تقدیر سوم (۷) انکار کسی فعل مثلاً تیمم و نماز سے پہلے ہو گا یا اس (۸) کے بعد اور بر تقدیر رابع (۹) یا تو عطا اسے وقت کے (باقی بر صفحہ آئندہ)

Fatawa Razawiya, Volume Four

[Top Table - Left Column (Arabic)] Unless he knew and did not ask at all, and it has an absolute effect. Except when it was after the prayer, following a previous or subsequent refusal, even if it were constructive. A promise is like this, except when it is after the prayer and its opposite becomes apparent, i.e., the gift [of water] within the time. Prohibition does not prevent anything nor does it remove it. Silence is prohibition unless a gift follows it within the time, before he sees him performing Tayammum and praying. Even if he is not given, nor promised, nor does he ask, if he expected a gift, the prayer is void; otherwise, it is complete.

[Top Table - Right Column (Urdu)] Not unless there is knowledge and he does not ask at all within the time; and giving within the time is absolutely effective, except when it is after prayer following a prior or subsequent refusal, whether it be a constructive refusal. A promise is also like this (giving in time), except when it is after the prayer and its contrary becomes evident. And prohibition does not stop or end anything, and silence is indeed prohibition except when giving follows within time before seeing him performing Tayammum and praying. And if he neither gave nor promised nor was he asked, if there was an expectation of giving, the prayer is void; otherwise, it is complete.

[Bottom Section - Left Column (Arabic)] (Remainder of previous Safiyya marginal note) Within the time before he performs Tayammum and prays or not (10). And according to (11) the fifth, either he expects a gift or not (12). So these are twelve, no more, and there is no need. This is the explanation of the divisions, then it proceeds to the explanation of the rulings, so the discourse would be prolonged. Thus, we merged the types into the explanation of the rulings and shortened the discourse while maintaining complete comprehensiveness. Praise be to Allah, the Possessor of Majesty and Honor. You have known that we did not divide into two parts except where they differ in ruling. We have confined the four hundred and twenty-six into twelve; rather, we reduced them in the text to ten, as you see. Praise be to Allah. 12 From him, may he be forgiven (M).

[Bottom Section - Right Column (Urdu)] It will occur within the time before performing Tayammum and prayer or not. And on the estimation of the "fifth", either he will have an expectation of giving or not. These are 12 forms, no more. And there is no need for it because this is the explanation of the branches. Then the explanation of the rulings will follow, otherwise the discourse will be longer.

Therefore, we included the types in the explanation of rulings itself and despite complete coverage, kept the discourse brief. All praise is for the Almighty God, the Lord of Honor and Greatness. It was also known that we have made two types only where their rulings differ. In this way, we have confined four hundred and twenty-six (426) into twelve (12), rather in the text, we have turned twelve (12) towards ten (10) as is in view. And all praise is for Allah Almighty. 12 From him, may he be forgiven (T).

फतावा रज़विया, जिल्द चार

[शीर्ष तालिका - बायाँ कॉलम (अरबी)] सिवाय इसके कि जब यह ज्ञात हो और उसने इसके बारे में बिल्कुल नहीं पूछा, और इसमें पूर्ण प्रभाव है। सिवाय इसके कि जब वह प्रार्थना के बाद पिछले या बाद के इनकार के बाद था, भले ही वह रचनात्मक इनकार हो। एक वादा भी इसी तरह का है, सिवाय इसके कि जब वह नमाज़ के बाद हो और उसका विपरीत प्रकट हो जाए, यानी समय के भीतर पानी देना। निषेध किसी चीज़ को रोकता नहीं है और न ही उसे हटाता है। चुप्पी निषेध है जब तक कि वह समय के भीतर तैयमुम और नमाज़ से पहले देने के बाद न हो। भले ही उसे नहीं दिया गया था, और उसने वादा नहीं किया था, और उसने नहीं पूछा था, फिर यदि उसे पानी मिलने की उम्मीद थी, तो नमाज़ अमान्य है; अन्यथा, यह पूर्ण है।

[शीर्ष तालिका - दायाँ कॉलम (उर्दू)] जब तक ज्ञान न हो और वह समय के भीतर बिल्कुल न मांगे; और समय के भीतर देना पूर्णतः प्रभावी है, सिवाय इसके कि जब वह पूर्व या पश्चात के इनकार के बाद नमाज़ के बाद हो, चाहे वह रचनात्मक इनकार ही क्यों न हो। वादा भी इसी तरह का है (समय पर देना), सिवाय इसके कि जब वह नमाज़ के बाद हो और उसका विपरीत स्पष्ट हो जाए। और निषेध किसी चीज़ को रोकता या समाप्त नहीं करता है, और चुप्पी वास्तव में निषेध है जब तक कि तैयमुम और नमाज़ करते हुए देखने से पहले समय के भीतर देना न हो। और यदि उसने न तो दिया और न ही वादा किया और न ही उससे पूछा गया, यदि देने की संभावना थी, तो नमाज़ अमान्य है; अन्यथा, यह पूर्ण है।

[निचला भाग - बायाँ कॉलम (अरबी)] (पिछली सफ़िया हाशिये का शेष भाग) तैयमुम करने और नमाज़ पढ़ने से पहले समय के भीतर या नहीं (10)। और (11) पांचवें के अनुसार, या तो वह देने की उम्मीद करता है या नहीं (12)। तो ये बारह हैं, अधिक नहीं, और कोई आवश्यकता नहीं है। यह विभाजनों का स्पष्टीकरण है, फिर यह नियमों के स्पष्टीकरण की ओर बढ़ता है, जिससे भाषण लंबा हो जाएगा। इस प्रकार, हमने प्रकारों को नियमों के स्पष्टीकरण में मिला दिया और पूर्ण व्यापकता बनाए रखते हुए भाषण को छोटा कर दिया। महिमा और सम्मान के स्वामी अल्लाह की स्तुति हो। आप जानते हैं कि हमने दो भागों में विभाजित नहीं किया है सिवाय इसके कि जहां वे नियम में भिन्न हों। हमने चार सौ छब्बीस को बारह में सीमित कर दिया है; बल्कि, हमने उन्हें पाठ में दस तक कम कर दिया है, जैसा कि आप देख रहे हैं। अल्लाह की स्तुति हो। 12 उसकी ओर से, उसे क्षमा किया जाए (M)।

[निचला भाग - दायाँ कॉलम (उर्दू)] यह तैयमुम और नमाज़ करने से पहले समय के भीतर होगा या नहीं। और "पांचवें" के अनुमान पर, या तो उसे देने की उम्मीद होगी या नहीं। ये 12 रूप हैं, अधिक नहीं। और इसकी कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह शाखाओं का स्पष्टीकरण है। फिर नियमों का स्पष्टीकरण होगा, अन्यथा भाषण बहुत लंबा होगा। इसलिए, हमने प्रकारों को नियमों के स्पष्टीकरण में ही शामिल किया और पूर्ण कवरेज के बावजूद, विवरण संक्षिप्त रखा। सारी प्रशंसा सर्वशक्तिमान ईश्वर के लिए है, जो सम्मान और महानता के स्वामी हैं। यह भी ज्ञात हुआ कि हमने केवल वहीं दो प्रकार बनाए हैं जहाँ उनके नियम भिन्न हैं। इस प्रकार, हमने चार सौ छब्बीस (426) को बारह (12) में सीमित कर दिया है, बल्कि पाठ में, हमने बारह (12) को दस (10) की ओर मोड़ दिया है जैसा कि सामने है। और सारी प्रशंसा अल्लाह सर्वशक्तिमान के लिए है। 12 उसकी ओर से, उसे क्षमा किया जाए (T)।

पृष्ठ 173/761

الا اذاعلم ولم یسأل فیه اصلا وفیه مؤثر مطلقا | نہیں مگر جبکہ علم ہو اور وقت کے اندر بالکل نہ مانگے اور وقت الا اذا کان بعد الصلاۃ عقیب اباء سابق اولا حق | کے اندر دینا مطلقاً مؤثر ہے مگر جبکہ نماز کے بعد انکار سابق یا ولوحکمیاوالوعدکھذا الا اذا کان بعد الصلاۃ | لاحق کے بعد ہو خواہ انکار حکمی ہی ہو وعدہ بھی اسی (وقت میں وظھر خلفه ای العطاء فی الوقت والمنع لایمنع | دینے) کی طرح ہے مگر جب کہ نماز کے بعد ہو اور اس کے شیئا ولا یرفع والسکوت منع الا اذا لحقه العطاء | خلاف ظاہر ہو جائے اور منع کسی چیز کو روکنے اور ختم کرنے فی الوقت قبل ان یراہ یتیمم ویصلی وان لم یعط | والا نہیں اور سکوت منع ہی ہے مگر جب کہ اسے وقت کے اندر ولم یعد ولم یسأل فان ظن العطاء بطلت | دینا لاحق ہو اس سے پہلے کہ اسے تیمّم کرتے اور نماز پڑھتے والاتمت۔ | دیکھے اور اگر نہ دیا نہ وعدہ کیا نہ اس نے مانگا اگر دینے کا ظن رہا | ہو نماز باطل ہو گئی ورنہ تام ہے۔ (بقیه حاشیه صفیه گذشته) | اندر تیمّم و نماز کی ادائی گی سے پہلے لاحق ہو گی یا ایسا نہ ہوگا اور فی الوقت قبل ان یتیمم ویصلی اولا (۱۰) وعلی (۱۱) | بر تقدیر "خامس" یا تو اسے ظن عطا ہو گا یا نہیں ۱۲ یہ بارہ " صورتیں الخامس اما ان یظن العطاء اولا (۱۲) فھی اثنا | ہیں زیادہ نہیں۔ اور اس کی حاجت نہیں کیونکہ یہ تو شقوں کا بیان ہے عشر لاتزید ولاحاجة فھذا بیان الشقوق ثم | پھر احکام کا بیان چلے گا تو کلام اور دراز ہو گا اس لئے ہم نے اقسام کو یفیض فی بیان الاحکام فیطول الکلام فادمجنا | بیان احکام ہی میں ملا دیا اور مکمل احاطہ کے باوجود کلام مختصر رکھا اور الاقسام فی بیان الاحکام واختصرنا الکلام مع | ساری حمد عزت و بزرگی کے مالک خدائے برتر ہی کیلئے ہے یہ بھی الاستیعاب التام والحمدالله ذی الجلال والاکرام | معلوم ہوا کہ ہم نے دو قسمیں وہیں کی ہیں جہاں ان دونوں کا حکم وقد علمت انا لم نقسم

قسمین الاحیث یختلفا فی | مختلف ہو اس طرح چار سو چھبیس (۴۲۶) کو ہم نے بارہ ۱۲ میں محصور الحکم وحصرنا الاربعمائة والستة والعشرین فی | کیا بلکہ متن میں بارہ ۱۲ کو بھی دس ۱۰ کی جانب پھیر دیا جیسا کہ پیش اثنی عشر بل رددناھا فی المتن الی عشرة کماتری | نظر ہے۔ اور خدا تعالیٰ ہی کیلئے ساری تعریف ہے ۱۲ منہ غفر لہ وللہ الحمد ۱۲ منه غفر له (م) | (ت)

Fatawa Razawiya - Volume 4

[Left Column - Arabic] With this, the comprehensive rule for all four hundred and twenty-six (426) scenarios is completed. Its explanation is that I have reduced all types to ten, because he will either give, promise, remain silent, refuse, or do nothing. The third (silence) only occurs after a request, and the fifth (doing nothing) occurs without one. The first two (giving and promising) include both cases, so they are suitable for doubling by being either after a request or without one.

Thus, giving is one category, and it is not the deferred kind that comes after a significant time following the request, for such must be preceded by a promise, silence, or refusal. This is the counterpart to those in the division. Therefore, it must be immediate, i.e., right upon the request, or neither immediate nor deferred, but without any request.

And the promise—meaning the hopeful one during the presence of water, as is understood from its general usage—is of three types: because it occurs either before the completion of prayer or after it, and in this, the breach of promise either appears or it doesn't.

And silence is of two types: because he will give after it within the time before knowing of his tayammum and prayer, or he won't.

[Right Column - Urdu Translation] With these words, the rule for all four hundred and twenty-six (426) regulated situations is completed. Its explanation is that I have turned all categories towards ten situations; this is because either he will give, or promise, or remain silent, or refuse, or do nothing. The third situation will only be after a request, and the fifth will be without a request. The first two include both cases of request and no request, so they have the capacity to be two each, in such a way that each will be after a request or without a request. (T)

Thus, giving is one type, and this is not a deferred gift that occurs some time after the request, so it is necessary that it be preceded by a promise, silence, or denial. And this in division is opposite to all those, so it is necessary that it be immediate. That is, it should be given as soon as the request is made, or neither immediate nor deferred, but without a request.

By promise, it means a hopeful promise that occurs during the state of water availability, as is evident from the general usage. There are three types because it will

be either before the completion of prayer or after completion, and in this, either its breach will be apparent or it will not be so.

There are two types of silence because he will give water after silence within the time before being informed of his tayammum and prayer, or it will not be so.

[बायां कॉलम - अरबी] इसके साथ, सभी चार सौ छब्बीस (426) परिदृश्यों के लिए व्यापक नियम पूरा हो गया है। इसका विवरण यह है कि मैंने सभी प्रकारों को दस स्थितियों में कम कर दिया है, क्योंकि वह या तो देगा, या वादा करेगा, या चुप रहेगा, या मना करेगा, या कुछ नहीं करेगा। तीसरा (मौन) केवल अनुरोध के बाद होता है, और पाँचवाँ (कुछ नहीं करना) बिना अनुरोध के होता है। पहले दो (देना और वादा करना) दोनों मामलों को शामिल करते हैं, इसलिए वे अनुरोध के बाद या बिना अनुरोध के होने के कारण दोगुने होने के लिए उपयुक्त हैं।

इस प्रकार, देना एक श्रेणी है, और यह उस प्रकार का विलंबित देना नहीं है जो अनुरोध के बाद काफी समय बाद आता है, क्योंकि उससे पहले वादा, चुप्पी या इनकार होना चाहिए। यह विभाजन में उनके प्रतिरूप है। इसलिए, यह तत्काल होना चाहिए, यानी अनुरोध पर तुरंत, या न तो तत्काल और न ही विलंबित, बल्कि बिना किसी अनुरोध के।

और वादा—अर्थात जल की उपस्थिति के दौरान आशापूर्ण वादा, जैसा कि इसके सामान्य उपयोग से समझा जाता है—तीन प्रकार का है: क्योंकि यह या तो नमाज़ पूरी होने से पहले होता है या उसके बाद, और इसमें, या तो वादे का उल्लंघन प्रकट होता है या नहीं।

और मौन दो प्रकार का है: क्योंकि वह उसके बाद समय के भीतर उसके तयम्मुम और नमाज़ की जानकारी से पहले पानी देगा, या नहीं देगा।

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद] इन्हीं शब्दों के साथ, सभी चार सौ छब्बीस (426) विनियमित स्थितियों के लिए नियम पूरा हो गया है। इसका विवरण यह है कि मैंने सभी श्रेणियों को दस स्थितियों की ओर मोड़ दिया है; ऐसा इसलिए है क्योंकि या तो वह देगा, या वादा करेगा, या चुप रहेगा, या मना करेगा, या कुछ नहीं करेगा। तीसरी स्थिति केवल अनुरोध के बाद होगी, और पांचवीं बिना अनुरोध के होगी। पहले दो में अनुरोध और अनुरोध न होने के दोनों मामले शामिल हैं, इसलिए उनमें दो-दो होने की क्षमता है, इस तरह कि प्रत्येक अनुरोध के बाद या बिना अनुरोध के होगा। (त)

अत: देना एक प्रकार है, और यह विलंबित उपहार नहीं है जो अनुरोध के कुछ समय बाद होता है, इसलिए यह आवश्यक है कि इससे पहले वादा, चुप्पी या इनकार हो। और विभाजन में यह उन सभी के विपरीत है, इसलिए इसका तत्काल होना आवश्यक है। यानी अनुरोध करते ही दिया जाना चाहिए, या न तत्काल और न ही विलंबित, बल्कि बिना अनुरोध के।

वादे से तात्पर्य एक आशापूर्ण वादे से है जो पानी की उपलब्धता की स्थिति के दौरान होता है, जैसा कि सामान्य उपयोग से स्पष्ट है। इसके तीन प्रकार हैं क्योंकि यह या तो नमाज़ पूरी होने से पहले होगा या पूरा होने के बाद, और इसमें, या तो इसका उल्लंघन स्पष्ट होगा या ऐसा नहीं होगा।

मौन के दो प्रकार हैं क्योंकि वह मौन के बाद उसके तयम्मुम और नमाज़ की सूचना मिलने से पहले समय के भीतर पानी देगा, या ऐसा नहीं होगा।

पृष्ठ 174 का 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

[بایاں کالم - عربی] وبه تمّت الضابطة لجميع الصور الاربعمائة والستة والعشرين ضابطة بيانه انى رددت الاقسام طرا الى عشرة لانه اما ان يعطى او يعد او يسكت او يمنع اولاشيئ ولايكون الثالث الابعد السؤال ولاالخامس الابدونه والاولان شاملان لهما فيصلحان للتثنية بكون كل بعد السؤال او بلا سؤال۔

فالعطاء قسم واحد وهو غير الأجل الذى يتأخر عن السؤال بزمان فلابد ان يتقدمه وعد اوصمت اومنع وهذا مقابل لها فى التقسيم فلا جرم ان يكون عاجلا اى على فور السؤال اولا عاجلا ولا آجلا بل بدون سؤال۔

والوعد والمراد به الرجائى حال بقاء الماء كما هو المتبادر من اطلاقه ثلثة اقسام لانه اما قبل تمام الصلاة او بعده وفى هذا ظهر خلفه اولا۔

والسكوت قسمان لانه يعطى بعده فى الوقت قبل الاطلاع على تيممه وصلاته اولا۔

[دایاں کالم - اردو ترجمہ] ان ہی الفاظ میں تمام چار سو چھبیس (۴۲۶) منضبط صورتوں کے لئے ضابطہ مکمل ہو گیا اس کا بیان یہ ہے کہ میں نے ساری قسموں کو دس صورتوں کی جانب پھیر دیا ہے وہ اس لئے کہ یا تو وہ دے گا یا وعدہ کرے گا یا سکوت کرے گا یا منع کرے گا یا کچھ نہ کرے گا۔ اور تیسری صورت سوال کے بعد ہی ہوگی ، اور پانچویں بلا سوال ہی ہوگی۔ اور پہلی دونوں، سوال وعدم سوال دونوں کو شامل ہیں تو وہ دو دو ہونے کی صلاحیت رکھتی ہیں اس طرح کہ ہر ایک بعد سوال ہو گی یا بلا سوال۔ (ت)

تو عطا ایک قسم ہے اور یہ عطائے آجل نہیں جو زمان میں سوال سے کچھ بعد میں ہوتی ہے تو ضروری ہے کہ اس سے پہلے وعدہ یا خاموشی یا انکار ہو۔ اور یہ تقسیم میں ان سب کے مقابل ہے تو ضروری ہے کہ عاجل ہو۔ یعنی سوال ہوتے ہی دینا ہو یا نہ عاجل ہو نہ آجل بلکہ بغیر سوال ہو۔

وعدہ اس سے مراد ہے وعدہ رجائی جو بقائے آب کی حالت میں ہو جیسا کہ اطلاق سے یہی متبادر ہوتا ہے اس کی تین قسمیں ہیں اس لئے کہ یا تو قبلِ تکمیل نماز ہو گا یا بعدِ تکمیل اور اس میں یا تو اس کا خلف ظاہر ہو گا یا ایسا نہ ہوگا۔

سکوت کی دو قسمیں ہیں اس لئے کہ وہ بعدِ سکوت وقت کے اندر اس کے تیمم و نماز پر اطلاع سے پہلے پانی دے گا یا ایسا نہ ہوگا۔

Volume Four | Fatawa Razvia Denial is of two types: either he will give [the water] before completing the prayer or he will not give it. The fifth category also has two types: whether he thought he would be given it or not. Thus, there are ten scenarios, and each is distinct from the other in its legal ruling, for they were separated only due to the difference in their rulings. (T)

Explanation of the Comprehensive Categories | (T) The explanation that these scenarios encompass all categories. (1) There are six occasions for non-deferred giving: (1) before tayammum (dry ablution), (2) after tayammum but before prayer, (3) during prayer, (4) after prayer within the time but before the mentioned information, (5) after the mentioned information, or (6) after the time. The first two cases are tripartite based on the two assumptions and doubt, while the rest are sextuplicate by adding the factor of seeing [water] during or before prayer, totaling thirty. Doubling these for being after a request or without a request should have resulted in sixty. However, the last six cases—specifically those after the prayer time—cannot be doubled because a request regarding the prayer of that time cannot occur after the time has elapsed. Thus, fifty-four scenarios remain: twenty-four with a request and thirty without a request.

The ruling is "effectiveness," meaning if it occurs before tayammum, it prevents it; if after, it nullifies it; if during prayer, it interrupts it; if after prayer, it invalidates it. However, invalidation in the case of asking within the prayer is attributed to the request itself.

The ruling of this giving is that it is effective (in any case). That is: (1) if this giving occurs before tayammum, it prevents tayammum. (2) If it is after tayammum, it will break it. (3) If it occurs during prayer, it will interrupt it. (4) If it is after prayer, it will invalidate it. Except that in the case of asking during prayer...

जिल्द चौथी | फतावा रज़विया इन्कार की भी दो किस्में हैं: या तो वह नमाज़ मुकम्मल होने से पहले देगा या नहीं देगा। पाँचवीं किस्म की भी दो किस्में हैं: उसे अता (देने) का गुमान था या नहीं। ये दस सूरतें हैं और हर सूरत हुक्म (नियम) में दूसरी से अलग है, क्योंकि हुक्म अलग होने की वजह से ही उन्हें अलग-अलग किया गया है। (त)

श्रेणियों की व्यापकता का बयान | (त) इसका बयान कि ये सूरतें तमाम किस्मों को घेरे हुए हैं। (1) अता-ए-ग़ैर आजिल (बिना देरी के देना) के मवाके(अवसर) छह हैं: (1) तयम्मुम से पहले, (2) तयम्मुम के बाद नमाज़ से पहले, (3) नमाज़ के दौरान, (4) नमाज़ के बाद वक़्त के अंदर ज़िक्र की गई इत्तला से पहले, (5) ज़िक्र की गई इत्तला के बाद, या (6) वक़्त बीतने के बाद। पहली दोनों सूरतें दो गुमानों और शक की वजह से सुलासी (तीन-तीन) हैं और नमाज़ के दौरान देखने या उससे पहले देखने के इज़ाफ़े(जुड़ने) की वजह से बाकी सब सुदासी (छह-छह) हैं, तो कुल तीस हुईं। और अता के बाद सवाल (पूछने) या बिला सवाल (बिना पूछे) होने के आधार पर हर एक को दोगुना करने से साठ हो जानी चाहिए थीं, मगर आखिरी छह सूरतें यानी जो वक़्त के लिए माँगना है वह वक़्त के बाद नहीं होगा, तो चौवन सूरतें रह जाएँगी: चौबीस सवाल वाली और तीस बिला सवाल वाली।

इसका हुक्म "तासीर" (प्रभाव) है, यानी अगर यह तयम्मुम से पहले हो तो उसे रोकता है; अगर बाद में हो तो उसे तोड़ देता है; अगर नमाज़ के दौरान हो तो उसे काट देता है; अगर नमाज़ के बाद हो तो उसे बातिल (अमान्य) कर देता है। सिवाय इसके कि नमाज़ के दौरान माँगने की सूरत में इसे सवाल की तरफ मंसूब किया जाता है।

इस अता का हुक्म यह है कि यह (बहरहाल) मुअस्सिर (प्रभावी) है। यानी (1) अगर यह देना तयम्मुम से पहले हो तो तयम्मुम से मानेअ (बाधक) होगा। (2) अगर तयम्मुम के बाद हो तो उसे तोड़ देगा। (3) अगर दौरान-ए-नमाज़ हो तो उसे कतअ (खत्म) कर देगा। (4) नमाज़ के बाद हो तो उसे बातिल कर देगा। मगर यह कि नमाज़ के अंदर माँगने की सूरत में...

पृष्ठ ७६१ का १७५

جلد چہارم | فتاوی رضویہ والمنع قسمان يُعطي قبل تمام الصلاة و اولا-والخامس قسمان كان يظن العطاء اولا فهي عشرة وكل منحاز عن صاحبه بحكم فما فرقت الا لافتراق الحكم۔ انکار کی بھی دو قسمیں ہیں یا تو قبل تکمیل نماز دے گا یا نہ دے گا۔ پانچویں کی بھی دو قسمیں ہیں۔ اسے ظن عطا تھا یا نہیں۔ یہ دس صورتیں ہیں اور ہر صورت دوسری سے حکم میں جدا ہے کیونکہ حکم الگ ہونے ہی کی وجہ سے ان کو الگ الگ کیا گیا ہے۔(ت)

بیان احاطتها الاقسام | (ت) اس کا بیان کہ یہ صورتیں ساری قسموں کو محیط ہیں۔ (۱) العطاء غیر أجل مواقعه ستة قبل التیمم او بعده قبل الصلاة او فیها او بعدها في الوقت قبل الاطلاع المذکور او بعده او بعد الوقت الاولان ثلاثیان بالظنین والشك والبواقی سداسیات باضافة الرؤیة فی الصلاة او قبلها فکانت ثلثین وبتثنیة کونه بعد سؤال او بدونه کان ینبغی ان تکون ستین غیران الستة الاخیرة اعنی التی بعد الوقت لاتثنی لان السؤال بصلاة الوقت لا یکون بعد الوقت فتبقی اربعة (۵۴) وخمسین اربعة وعشرون منها بالسؤال وثلثون بلا سؤال۔ (۱) عطا غیر آجل کے مواقع چھ ہیں: (۱) قبل تیمم (۲) بعد تیمم قبل نماز (۳) یا اندرون نماز (۴) یا بعد نماز وقت کے اندر اطلاع مذکور سے پہلے (۵) یا اطلاع مذکور کے بعد (۶) یا وقت کے بعد پہلی دونوں صورتیں ظن عطا و منع اور شک کی وجہ سے ثلاثی ہیں اور نماز کے اندر دیکھنے یا اس سے قبل دیکھنے کے اضافہ کی وجہ سے باقی سب سداسی ہیں تو تیس ہوئیں۔ اور عطا کے بعد سوال یا بلا سوال ہونے سے ہر ایک کو دو کر کے ساٹھ ہو جانا چاہئے تھا مگر آخری چھ صورتیں یعنی جو وقت کے لیے مانگنا وقت کے بعد نہ ہوگا تو چون صورتیں رہ جائیں گی، چوبیس سوال والی اور تیس بلا سوال۔

حکمه التأثیر ای ان وقع قبل التیمم منعه او بعده نقضه او فی الصلاة قطعها او بعدها ابطلها غیر ان الابطال فیما اذا سأل فی الصلاة مضاف الی السؤال اس عطا کا حکم یہ ہے کہ (بہر حال) مؤثر ہے۔

یعنی (۱) اگر یہ دینا قبل تیمم ہو تو تیمم سے مانع ہوگا۔ (۲) اگر بعد تیمم ہو تو اسے توڑ دے گا (۳) اگر دوران نماز ہو تو اسے قطع کردے گا (۴) بعد نماز ہو تو اسے باطل کردے گا۔ مگر یہ کہ اندرون نماز مانگنے کی صورت میں

Fatawa Razawiyya, Volume 4

Since the relation of invalidation is towards the request, the breaking of tayammum due to the giving (ata) will persist.

(2) A promise made before the completion of prayer; its locations are the first three. They are triple-fold (thulathi) then six-fold (sudasi), and for each, there is a probability of four scenarios, no more, as we previously explained under the 'Law of the Sea'. (1) He will give within the time, (2) he will give after the time, (3) he will not give, so the breach of promise will become apparent, or (4) it will not become apparent. Thus, in the first two cases, these become twenty-four (24). In the third case, they will be the same, totaling forty-eight (48). In a quarter of them, i.e., twelve (12), the giving occurs after the time. These will not be doubled, as is known, and the remaining thirty-six (36) will be doubled (two for each), totaling eighty-four (84).

The ruling is the same as the three mentioned narrations. (3) A promise after prayer whose breach became apparent. It has two scenarios: either (1) not giving at all without any excuse, or (2) giving after the time. This is because we have already explained that a promise for a time-bound need is specifically related to that time. In both cases, it will either be after the mentioned awareness (3) or without it (3), and every scenario is six-fold (sudasi), totaling twenty-four (24) scenarios. Out of these, the first half, i.e., those in which giving occurs, will be doubled to become twenty-four (24). The other half, i.e., giving after the time, will not be doubled for the reason already mentioned. So the total will be thirty-six (36), of which twelve pertain to the question.

Page 176 of 761

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4

चूंकि इबताल (अमान्य ठहराने) का संबंध माँगने की ओर है, इसलिए अता (दान) की वजह से तयम्मुम का टूटना बना रहेगा।

(2) नमाज़ पूरी होने से पहले का वादा; इसके स्थान वे पहले तीन स्थान हैं। वे त्रिपक्षीय (थलासी) हैं फिर षट्पक्षीय (सुदासी), और प्रत्येक में चार संभावनाओं की संभावना है, जैसा कि हमने पहले 'क़ानून-ए-बहर' के तहत बयान किया है। (1) समय पर देगा, (2) समय के बाद देगा, (3) नहीं देगा तो उसका वादा-ख़िलाफ़ ज़ाहिर होगा या (4) ज़ाहिर नहीं होगा। तो पहली दो स्थितियों में ये चौबीस (24) हो गईं। तीसरी में भी इसी तरह होंगी तो अड़तालीस (48) हो गईं। उनके चौथाई यानी बारह (12) में अता समय के बाद है। और ये दोगुनी नहीं होंगी जैसा कि मालूम हुआ, और शेष छत्तीस (36) दो-दो होंगी तो कुल अस्सी-चार (84) हुईं।

हुक्म वही तीनों असर (वर्णनों) जैसा है। (3) नमाज़ के बाद का वादा जिसका वादा-ख़िलाफ़ ज़ाहिर हुआ। इसकी दो सूरतें हैं: (1) या तो बिल्कुल न दे बिना किसी उज़्र (बहाने) के, या (2) समय के बाद दे। क्योंकि हम बता चुके हैं कि वक़्ती ज़रूरत के लिए वादा ख़ास वक़्त से संबंधित होता है। और दोनों सूरतों में या तो इत्तला (जानकारी) (3) के बाद होगा या उसके बिना (3), और हर सूरत षट्पक्षीय (सुदासी) है तो चौबीस (24) सूरतें हुईं। उनमें से पहला आधा यानी वे जिनमें अता है, डबल होकर चौबीस (24) हो जाएँगी। और दूसरा आधा यानी समय के बाद अता वाली डबल नहीं होंगी जिसकी वजह बताई जा चुकी है। तो कुल छत्तीस (36) हो जाएँगी जिनमें से बारह सवाल वाली हैं।

पृष्ठ 176 का 761

ابطال کی نسبت مانگنے کی جانب ہے تو عطاء کی وجہ سے تیمم ٹوٹنا رہے گا۔

(۲) وعدہ قبل تکمیل نماز اس کے مواقع وہ پہلے تینوں مواقع ہیں وہ ثلاثی پھر ایک سداسی ہے ، اور ہر ایک میں چار صورتوں کا احتمال ہے۔ زیادہ نہیں جیسا کہ قانونِ بحر کے تحت ہم نے پہلے بیان کیا۔ (۱) وقت میں دے دے گا (۲) بعد وقت دے گا (۳) نہ دے گا تو اس کا خلف ظاہر ہوگا (۴) یا نہ ظاہر ہوگا تو پہلی دونوں میں یہ چوبیس "۲۴" ہوگئیں۔ ان ہی کے مثل تیسری میں ہوں گی تو اڑتالیس "۴۸" ہوئیں ان کی چوتھائی یعنی بارہ "۱۲" میں عطا بعد وقت ہے۔ اور یہ دوگنا نہ ہوں گی جیسا کہ معلوم ہوا، اور باقی چھتیس "۳۶" دو دو ہوں گی تو کل چوراسی "۸۴" ہوئیں۔

حکم وہی تینوں اثرات بطریق مذکور (۳) وعدہ بعد نماز جس کا خلف ظاہر ہوا۔ اس کی دو صورتیں ہیں ، یا (۱) تو بالکل نہ دے بغیر کسی عذر کے یا (۲) وقت کے بعد دے اس لئے کہ ہم بتا چکے کہ وقتی حاجت کے لئے وعدہ خاص وقت سے متعلق ہوتا ہے اور بہر دو صورت یا تو بعد (۳) اطلاع مذکور ہو گا یا اس (۳) کے بغیر اور ہر صورت سداسی ہے تو چوبیس "۲۴" صورتیں ہوئیں ، ان میں سے نصف اول یعنی وہ جن میں عطا نہیں ڈبل ہو کر چوبیس "۲۴" ہو جائیں گی اور نصف دیگر یعنی عطا بعد وقت والی ڈبل نہ ہوں گی وجہ گزر چکی تو کل چھتیس "۳۶" ہوجائیں گی جن میں سے بارہ سوال والی ہیں۔

Fatawa Razawiyya, Volume 4

Ruling: [The prayer] is complete.

(4) (1) Its successor did not appear either. There are also two aspects: he gives within the time or he does not give, due to the types of reasons we previously mentioned in the eighth issue. For example, if he said to him, "Come at such and such a time, I will give you," and he did not go. The categories here are forty-eight, because the division is like the previous one, and here both parties are doubled.

Ruling: He repeats the prayer.

(5) He remained silent and gave within the time before the mentioned notice, since the silence is preceded by a request. The request has four instances: (1) before tayammum, (2) before the prayer, (3) during it, or (4) after it. According to the first estimation, giving has four categories likewise; according to the second, it is threefold by dropping the first; and according to the third, it is the same because he interrupted the prayer by asking while his tayammum was not voided. So, giving will be before the new prayer to be started, or during it, or after it. According to the fourth, there is only one case because he does not have to repeat the prayer due to silence. The first two are triple, so their seven combined will be twenty-one, and the last two are six-fold, so their four will be twenty-four, and the total will be forty-five.

Ruling: The three effects.

Page 177 of 761

फ़तावा रज़विया, जिल्द चौथी (खंड 4)

हुक्म: नमाज़ मुकम्मल (पूरी) है।

(4) (1) उसका विकल्प (बदला) भी प्रकट नहीं हुआ। इसके भी दो पहलू हैं: वह समय के भीतर दे देगा या नहीं देगा, उन्हीं कारणों से जो हमने आठवें मसले में बयान किए। उदाहरण के लिए, उसने उससे कहा था, "फलां समय पर आना, मैं तुम्हें दूँगा," और वह नहीं गया। यहाँ अड़तालीस श्रेणियाँ हैं, क्योंकि विभाजन पिछले विभाजन की तरह है और यहाँ दोनों पक्ष दोगुने हैं।

हुक्म: नमाज़ दोहराना (एआदा) लाज़िम है।

(5) वह खामोश रहा और उल्लेखित सूचना से पहले समय के भीतर दे दिया, क्योंकि खामोशी से पहले सवाल (अनुरोध) होता है। सवाल के चार अवसर हैं: (१) तयम्मुम से पहले, (२) नमाज़ से पहले, (३) नमाज़ के दौरान, या (४) उसके बाद। पहली स्थिति में देने की भी चार ही सूरतें हैं; दूसरी स्थिति में पहली सूरत को हटाकर तीन हैं; और तीसरी स्थिति में भी ऐसा ही है क्योंकि उसने माँगकर नमाज़ तोड़ दी जबकि उसका तयम्मुम अभी नहीं टूटा था। इसलिए देना नई नमाज़ से पहले होगा, या उसके दौरान, या उसके बाद। चौथी स्थिति में केवल एक ही संभावना है क्योंकि खामोशी के कारण उसे नमाज़ दोहरानी नहीं पड़ती। पहले दो तीन-तीन वाले हैं, इसलिए उनके सात मिलकर इक्कीस (21) होंगे। अंतिम दो छह-छह वाले हैं, इसलिए उनके चार मिलकर चौबीस (24) होंगे। कुल पैंतालीस (45) होंगे।

हुक्म: तीनों असर (प्रभाव)।

पेज 177 का 761

حکمہ تمت۔ حکم نماز تام ہے۔

(۴) (۱) لم یظھر خلفه له ایضا وجهان یعطی في الوقت اولا یعطی لنحو وجوه قدمنا في المسألة الثامنة کأن کان قال له تعال في الوقت الفلانی اعطك فلم یذهب هذا والاقسام ههنا ثمانیة واربعون لان التقسیم کسابقه وههنا الفریقان مثنیان۔ (۴) اس کا خلف ظاہر نہ ہوا۔ اس کی بھی دو صورتیں ہیں وقت کے اندر دے دے گا یا نہ دے گا۔ اور اسی قسم کی وجہوں کے باعث جو ہم نے مسئلہ ہشتم میں بیان کیں۔ مثلاً اس سے کہا تھا فلاں وقت آنا تمہیں دوں گا۔ یہ نہ گیا قسمیں یہاں اڑتالیس ہیں۔ اس لئے کہ تقسیم اس سے پہلے والی کی طرح ہے اور یہاں دونوں ہی فریق ڈبل ہیں۔

حکمہ یعید الصلاۃ۔ حکم اعادہ نماز ہے۔

(۵) سکت واعطی في الوقت قبل الاطلاع حیث ان السکوت یتقدمه السؤال فللسؤال اربعة مواقع قبل التیمم او الصلاة او فیها او بعدها والعطاء علی الاول رباعي کذلك وعلی الثانی ثلاثي باسقاط الاول وعلی الثالث کذلك لانه قطع الصلاة بالسؤال ولم ینتقض تیممه فالعطاء اما ان یکون قبل المستأنفة اوفیها او بعدها وعلی الرابع ماله الاوجه واحد لانه لا یعید الصلاة بالسکوت والاولیان ثلاثیان فسبعتهما احد وعشرون والاخیران سداسیان فاربعتهما اربعة وعشرون والکل خمسة واربعون۔ (۵) خاموش رہا اور وقت کے اندر قبل اطلاع مذکور دے دیا۔ چونکہ سکوت سے پہلے سوال ہوگا۔ تو سوال کے چار مواقع ہیں (۱) قبل تیمم (۲) قبل نماز (۳) دوران نماز (۴) بعد نماز اور برتقدیر اول عطا کی بھی ایسے ہی چار ۴ چار صورتیں ہیں، اور برتقدیر دوم ثلاثی ہے باسقاط اول اور برتقدیر سوم بھی ایسا ہی ہے۔ اس لئے کہ اس نے مانگ کر نماز توڑ دی اور اس کا تیمم ابھی نہ ٹوٹا تو دینا از سر نو

پڑھی جانے والی نماز سے پہلے ہو گا یا اس کے اندر یا اس کے بعد اور برتقدیر چہارم اس کی صرف ایک صورت ہے اس لئے کہ سکوت کی وجہ سے اس کو نماز کا اعادہ نہیں کرنا ہے پہلی دونوں ثلاثی ہیں تو ان کی ساتوں مل کر اکیس ۲۱ ہوں گی اور آخر والی دونوں سداسی ہیں تو ان کی چاروں چوبیس ۲۴ ہوں گی اور کُل پینتالیس ۴۵ ہوں گی۔

حکمہ الآثار الثالثة۔ حکم تینوں اثرات۔

Fatawa Razawiya Volume Four

(6) Silent (1) and did not give in the time before notice, so whether in the time after notice or after it first, not at all, and in all of them the question is upon its four locations. So each of the first two triplets with three ways of giving and not giving is nine, and each of the last two hexads is eighteen, so they are fifty-four (54). Ruling: Prayer is complete. (7) Refusal (2), so he gave before the completion of prayer due to a question at three locations other than the last. Similarly for giving on the first, and on the remaining two there are two [options], because by breaking the prayer he restarts it, so they are seven. And each in the first two is a triplet, so their five is fifteen (15), and the two types of the third are hexads, so they are twelve (12). Total is twenty-seven (27). Ruling: Three effects apply due to the fact that the gift was given, not because of the initial refusal. (8) Refusal (3) and did not give before it, so whether after it in the time before notice or after notice, or after the time first, or it would not be like that. In this, the four locations of the question are the same: two triplets, so multiplying by four results in twenty-four (24) cases, and two hexads are forty-eight (48). Total is seventy-two (72).

(6) He remained silent and did not give within the time before the aforementioned notification, or did not give within the time after the notification, or did not give after the time, or did not give at all; in each of these cases, the question exists at all four of its locations. Thus, for each of the first two triplets (thulathi), considering the three forms of giving or not giving, there will be nine (9) instances, and for each of the latter two hexads (sudasi), there will be eighteen (18). Therefore, the total will be fifty-four (54). Ruling: The prayer is complete. (7) He refused, then gave before the completion of the prayer. There are three positions for his question, excluding the last one. Similarly, in this situation, there are positions for giving, and in the remaining two, there are two, because since the prayer was interrupted, he must perform it anew. Thus, these become seven (7). Since each of the first ones is a triplet, their five will result in fifteen (15), and the two types of the third category are hexads, which will be twelve (12). The total will be twenty-seven (27). Ruling: Three effects apply due to the fact that the gift was given, not because of the initial refusal. (8) He refused and did not give before the completion of the prayer. This will occur either after the prayer within the allotted time before notification, or after notification, or after the time has passed, or it will not be so. In this, the same four positions for the question apply. Two triplets multiplied by four results in twenty-four

(24) cases, and there are two hexads, totaling forty-eight (48). The overall total will be seventy-two (72).

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

(६) वह खामोश रहा और वक्त के भीतर उल्लिखित सूचना से पहले नहीं दिया, या वक्त के भीतर सूचना के बाद नहीं दिया, या वक्त के बाद नहीं दिया, या बिल्कुल नहीं दिया और इनमें से प्रत्येक स्थिति में सवाल अपने चारों स्थानों पर है। तो पहली दोनों 'त्रिक' (थलाथी) में से प्रत्येक दान देने और न देने की तीन स्थितियों के साथ नौ (९) होगी और बाद वाली दोनों 'षट्क' (सुदासी) में से प्रत्येक अठारह (१८) होगी। तो कुल चौवन (५४) होंगी। हुक्म: नमाज़ मुकम्मल (पूरी) है। (७) इनकार किया फिर नमाज़ पूरी होने से पहले दे दिया। इसके सवाल के तीन स्थान हैं, आख़िरी को छोड़कर। इसी तरह इसी स्थिति में दान के स्थान और बाक़ी दो में दो हैं क्योंकि नमाज़ तोड़ देने के कारण वह इसे नए सिरे से अदा करेगा। तो ये सात (७) हुईं। और पहले वालों में से प्रत्येक त्रिक है तो उनकी पाँचों पंद्रह (१५) होगी और तीसरे की दोनों किस्में षट्क हैं तो बारह (१२) होंगी। कुल सत्ताईस (२७) होंगी। हुक्म: तीनों प्रभाव इस कारण लागू होते हैं कि दान दिया गया, न कि इस कारण कि इनकार हुआ। (८) इनकार किया और नमाज़ पूरी होने से पहले नहीं दिया। यह या तो नमाज़ के बाद वक्त के भीतर सूचना से पहले या सूचना के बाद होगा, या वक्त के बाद होगा या ऐसा नहीं होगा। इसमें सवाल के वही चारों स्थान हैं। दो त्रिक को चार से गुणा करने पर चौबीस (२४) स्थितियाँ होंगी और दो षट्क हैं तो अड़तालीस (४८) होंगे। कुल बहत्तर (७२) होंगे।

पृष्ठ १७८ का ७६१

(۶) سکت (۱) ولم یعط فی الوقت قبل الاطلاع فاماً فی الوقت بعد الاطلاع او بعدہ اولاً اصلا وفی کلھا السؤال علی مواقعہ الاربعہ فکل من الاولین الثلاثین بثلثۃ وجوہ العطاء وعدمہ تسعۃ وکل من الا خیرین السداسیین ثمانیۃ عشر فھی اربعۃ ۵۴ و خمسون۔ حکمہ تمت۔ (۷) منع (۲) فاعطی قبل تمام الصلاۃ لسؤال ثلثۃ مواقع غیر الاخیر وکذا للعطاء علی الاول وعلی الباقین اثنان لانہ بقطع الصلاۃ یستأنفھا فھی سبعۃ وکل فی الاولین الثالث سداسیان باثنی عشر فھی سبعۃ ۲۷ و عشرون۔ حکمہ الاثار الثلثۃ لاجل لعطاء لا للمنع۔ (۸) منع (۳) ولم یعط قبلہ فاماً بعدھا فی الوقت قبل الاطلاع او بعدہ او بعد الوقت اولاً ولسؤالہ المواقع الاربعۃ ثلاثیان فیضرب اربعۃ اربعۃ و عشرون و سداسیان ثمانیۃ واربعون کلھا اثنان ۷۲ و سبعون۔

(۶) خاموش رہا اور وقت کے اندر اطلاع مذکور سے قبل نہ دیا یا تو وقت کے اندر بعد اطلاع نہ دیا یا وقت کے بعد نہ دیا یا بالکل نہ دیا اور ان میں سے ہر ایک میں سوال اپنے چاروں مواقع پر ہے۔ تو پہلی دونوں ثلاثی میں سے ہر ایک عطا و عدم عطا کی تین صورتوں کے ساتھ نو ہوگی اور بعد والی دونوں سُداسی میں سے ہر ایک اٹھارہ ہوگی۔ تو کُل چون ۵۴ ہوں گی۔ حکم نماز تام ہے۔ (۷) انکار کیا پھر قبل تکمیل نماز دے دیا۔ اس کے سوال کے تین مواقع ہیں آخری چھوڑ کر اسی طرح یہی صورت میں عطا کے مواقع اور باقی دو میں دو ہیں اس لئے کہ نماز توڑ دینے کی وجہ سے اس کو از سر نو ادا کرے گا۔ تو یہ سات ۷ ہوئیں۔ اور اولین میں سے ہر ایک ثلاثی ہے تو ان کی پانچوں پندرہ ۱۵ ہوگی اور سوم کی دونوں قسمیں سداسی ہیں تو بارہ ۱۲ ہوں گی کل ستائیس ۲۷ ہوں گی۔ حکم تینوں اثرات، اس وجہ سے کہ عطا ہوئی، اس وجہ سے نہیں کہ انکار ہوا۔ (۸) انکار کیا اور قبل تکمیل نماز نہ دیا۔ یہ یا تو بعد نماز وقت کے اندر قبل اطلاع یا بعد اطلاع ہوگا، یا بعد

وقت ہوگا یا ایسا نہ ہوگا اس میں سوال کے وہی چاروں مواقع ہیں دو ثلاثی تو چار سے ضرب دینے سے چوبیس ۲۴ صورتیں ہوں گی اور دو سداسی ہیں تو اڑتالیس ۴۸ ہوں گی۔ کُل بہتر ۷۲ ہوں گی۔

Fatawa Ridawiyya Volume Four

Its ruling is complete. (9) Nothing happened, yet he surmised it was a gift; there are two scenarios based on seeing it either during prayer or before prayer. Its ruling is that he should repeat the prayer. (10) Nothing happened, and he did not even surmise it was a gift. Combining these two cases with either the surmise of prevention or doubt yields four scenarios. Its ruling is that the prayer is complete. With this, the comprehensive list of categories along with their rulings is finished. *This concludes the encompassing of the categories.

Note: This is a summary table based on the first division into five categories. This is a summary chart according to the five categories of the first division.

Category	Count	With Request	Without Request
Gift (Ata)	54	24	30
Promise (Wa'd)	168	72	96
Silence (Sukut)	99	99	-
Prevention (Man'a)	99	99	-
Fifth (Khamis)	6	4	2
Total (Meezan)	426	298	128

And this is exactly what was obtained through the first division under the Law of Al-Bahr. The consensus of the jurists (fatwa of fuqaha), despite the vast differences in their approaches, is a proof of correctness and thorough investigation. 12 (From him, may he be forgiven). Exactly this was obtained from the first division under the Law of Al-Bahr, so the mutual agreement of both despite the severe disparity in the method is a proof of correctness and investigation. 12 From him, may he be forgiven.

Page 179 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

इसका हुक्म पूरा हुआ। (९) कुछ नहीं हुआ और उसे लगा कि यह तोहफ़ा है। नमाज़ के दौरान या नमाज़ से पहले देखने की संभावना की वजह से इसकी दो सूरतें हैं। हुक्म यह है कि नमाज़ दोबारा पढ़े। (१०) कुछ नहीं हुआ और उसे तोहफ़े का गुमान भी नहीं था। इन दोनों वजहों को मना करने के गुमान या शक के साथ मिलाकर इसकी चार सूरतें होंगी। नमाज़ मुकम्मल है। इसी के साथ अहकाम (नियमों) के बयान के साथ श्रेणियों का समावेश पूरा हुआ। *इसके साथ श्रेणियों का समावेश समाप्त हुआ।

नोट: यह पहली श्रेणी के पाँच प्रकारों के आधार पर एक संक्षिप्त तालिका है। पाँच श्रेणियों की तरफ पहली तक़्सीम (विभाजन) के एतबार से यह एक संक्षिप्त नक़्शा है।

श्रेणी	**संख्या**	**प्रश्न के कारण**	**बिना प्रश्न के**
उपहार (अता)	५४	२४	३०
वादा (वअद)	१६८	७२	९६
मौन (सुकूत)	९९	९९	-
निषेध (मना)	९९	९९	-
पाँचवाँ (ख़ामिस)	६	४	२
कुल (मीज़ान)	४२६	२९८	१२८

और यह बिल्कुल वही है जो क़ानून-ए-बहर के तहत पहले विभाजन से हासिल हुआ था। फ़ुक़हा (धर्मशास्त्रियों) का फ़तवा, उनके रास्तों में भारी अंतर के बावजूद, सत्यता और शोध का प्रमाण है। १२ उनसे, अल्लाह उन्हें माफ़ करे। हु-ब-हू यही क़ानून बहर के तहत पहले विभाजन से प्राप्त हुआ, तो तरीक़े में भारी अंतर के बावजूद दोनों का आपस में सहमत होना सत्यता और शोध का प्रमाण है। १२ उनसे, अल्लाह उन्हें माफ़ करे।

पृष्ठ १७९/७६१

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم

حکمہ تمّت۔ (۹) لم یکن شیئ و ظن العطاء ہو علی وجھین بالرؤیۃ فی الصلواۃ او قبلہا۔ حکمہ یعید۔ (۱۰) لم یکن شیئ ولا ظن عطاء ہی اربعۃ بالوجھین مع ظن المنع او الشک۔ حکمہ تمّت۔ وبہ تمت احاطۃ عہ الاقسام*

حکم نماز تام ہے۔ (۹) کچھ نہ ہوا اور اسے عطا کا گمان تھا۔ نماز کے اندر یا نماز سے قبل دیکھنے کی تقدیر کی وجہ سے اس کی دو صورتیں ہیں۔ حکم نماز کا اعادہ کرے۔ (۱۰) کچھ نہ ہوا اور اسے ظن عطا بھی نہ تھا۔ دونوں وجہوں کو ظن منع یا شک کے ساتھ ملا کر اس کی چار صورتیں ہوں گی۔ حکم نماز تام ہے۔ اسی سے احاطہ اقسام مع بیان احکام مکمل ہو گیا۔

عہ : وھذا جدول الاجمال باعتبار التقسیم الاول الی خمسۃ اقسام پانچ اقسام کی طرف تقسیم اول کے اعتبار سے یہ اجمالی نقشہ ہے۔

قسم	تعداد بوجہ سوال	بغیر سوال
عطا	۵۴ ۲۴	۳۰
وعدہ	۱۶۸ ۷۲	۹۶
سکوت	۹۹ ۹۹	-
منع	۹۹ ۹۹	-
خامس	۶ ۴	۲
میزان	۴۲۶ ۲۹۸	۱۲۸

وھذا بعینه ما حصل بالتقسیم الاول تحت قانون البحر فتوا فقہا مع شدة تباینہما فی الطریق دلیل الصحۃ و التحقیق ۱۲ منه غفر له (م) بعینہ یہی قانون بحر کے تحت تقسیم اول سے حاصل ہوا تو طریق میں شدید مباینت کے باوجود دونوں کا باہم موافق ہو جانا صحت و تحقیق کی دلیل ہے ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

Fatawa Razawiyya Volume Four

With the clarification of rulings. And eternal praise is for the Master of Favours, the Possessor of Majesty and Honour. And the most excellent blessings and peace be upon the Master, the Great Bestower, and his noble family, his great companions, and his Ummah until the Day of Resurrection. O Allah, accept!

Note: In omitting the following types of promises, we have also followed these gentlemen: (1) A promise made by expressing the depletion of water, (2) A parental promise (Wa’da-e-Abai), (3) Withholding after giving—whereas these gentlemen have mentioned giving after withholding.

If it is said that this has no effect because a promise after depletion is not considered, and a parental promise has no effect at the present time but rather at the promised time, and if withholding after giving has an effect, it is only that the Tayammum which was prohibited due to the gift [of water] will now become permissible; there will be no other effect as explained in the tenth problem.

I say: Is this not an effect? And whatever the promise may be, if the gift reaches him before the completion of the prayer, all three effects will be achieved, even if they are achieved through the gift, just as before, from giving after withholding. If the gift does not reach him, then his Tayammum is valid and remains, and the prayer is complete. The scholars have mentioned the refusal, and it has no effect other than this, and mentioning the refusal is not useful because it is a refusal of a promise.

Page 180 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

अहकाम (नियमों) के बयान के साथ। और शाश्वत प्रशंसा अनुग्रह के स्वामी, सम्मान और महानता के मालिक के लिए है। और सर्वश्रेष्ठ दुरूद और सलाम बहुत अनुग्रह करने वाले आका, और उनके महान परिवार, उनके महान साथियों और उनकी उम्मत पर कयामत के दिन तक, ऐ अल्लाह! स्वीकार फ़रमा।

चेतावनी: वादों के निम्नलिखित प्रकारों को छोड़ने में हमने भी इन्हीं हज़रात का अनुसरण किया है: (१) पानी खत्म होने का इज़हार करके वादा, (२) वादा-ए-अबाई (पैतृक वादा), (३) देने के बाद मना करना - जबकि इन हज़रात ने मना करने के बाद देने का ज़िक्र किया है।

अगर यह कहा जाए कि इसका कोई प्रभाव नहीं है क्योंकि खत्म होने के बाद वादे का कोई महत्व नहीं है और वर्तमान समय में वादा-ए-अबाई का कोई प्रभाव नहीं है बल्कि वादा किए गए समय में है, और यदि देने के बाद इनकार का कोई प्रभाव होगा, तो वह केवल यही है कि वह तयम्मुम जो देने की वजह से मना था, अब जायज़ हो जाएगा; इसके अलावा और कोई प्रभाव नहीं होगा जैसा कि दसवें मसले में बयान किया गया।

मैं कहता हूँ: क्या यह प्रभाव नहीं है? और वादा जैसा भी हो, अगर नमाज़ पूरी होने से पहले उसे अता (उपहार/पानी) मिल गया तो तीनों प्रभाव प्राप्त होंगे, भले ही वे अता के माध्यम से प्राप्त हों, जैसा कि पहले, मना करने के बाद देने से। अगर अता न मिले तो उसका तयम्मुम जायज़ और बाकी है और नमाज़ पूरी है। उलेमा ने इनकार का ज़िक्र किया है और इसका इसके अलावा कोई प्रभाव नहीं है और इनकार का ज़िक्र करना कारगर नहीं है क्योंकि वह वादे से (इन्कार) है।

पृष्ठ ७६१ का १८०

مع بیان الاحکام۔ اور دائمی حمد ہے ولی انعام مالکِ عزّت و بزرگی کیلئے۔ اور افضل درود وسلام بہت انعام فرمانے والے آقا، اور ان کی کریم آل، عظیم اصحاب اور ان کی امت پر روزِ قیامت تک الٰہی قبول فرما !

تنبیہ: درج ذیل قسموں کو ترک کرنے میں ہم نے بھی ان ہی حضرات کی پیروی کی۔ (۱) پانی ختم ہونے کا اظہار کرکے وعدہ (۲) وعدہ ابائی (۳) منع بعد عطا -- جبکہ ان حضرات نے عطا بعد منع کو ذکر کیا ہے۔

اگر کہا جائے کہ اس کا کوئی اثر نہیں اس لئے کہ ختم ہونے کے بعد وعدہ کا اعتبار نہیں اور موجودہ وقت میں وعدہ ابائی کا کوئی اثر نہیں بلکہ وقتِ موعود میں ہے اور دینے کے بعد انکار اگر اثر کرے گا تو یہی کہ وہ تیمم جو عطا سے ممنوع ہو گیا تھا اب مباح ہو جائے گا کچھ اور اثر نہ ہوگا جیسا کہ مسئلہ دہم میں بیان ہوا۔

اقول (میں کہتا ہوں): کیا یہ اثر نہیں۔ اور وعدہ جیسا بھی ہو اگر قبل تکمیلِ نماز اسے عطا لاحق ہوئی تو تینوں اثرات حاصل ہوں گے اگرچہ یہ عطا سے حاصل ہوں گے جیسا کہ اس سے قبل، منع کے بعد دینے سے اگر عطا نہ لاحق ہو تو اس کا تیمم جائز و باقی اور نماز تام ہے۔ علماء نے انکار کا ذکر کیا ہے اور اس کا سوائے اس کے کوئی اثر نہیں اور انکار کا ذکر کارآمد نہیں اس لئے کہ وہ وعدہ سے (انکار) ہے۔

Fatawa Ridawiyya, Volume 4

Then they mentioned the gift after refusal and specifically the gift after prayer, and it has no effect at all. They only mentioned it to clarify its lack of effect. If we want to include it, we will add to the rule that the promise upon showing exhaustion and the parental promise are both without effect, unless a gift follows before the completion of the prayer. And a prohibition after a gift is not heard unless water remains and has not left the ownership of the giver; thus, Tayammum becomes permissible if the gift prevents it. And then the types of promise become seven. Because, by showing the exhaustion of water or without it, according to the first, it is given before ending the prayer, interpreted by his forgetfulness, for example, first. And according to the second, if he makes a parental promise, he gives it after it before the completion of the prayer, because delaying his promise does not prevent its acceleration initially. And as for a hopeful promise, it occurs before its completion or after it, and in this, his breaking [of the promise] appears initially. And the prohibition is of three types with addition.

Footnotes: Note: This is to exclude a sale with the seller's option, as previously mentioned in the tenth issue. (12 منه غفر له) (M) This is to exclude a sale with the condition of the seller's option, as passed in the tenth issue. (12 منه غفر له) (T)

फ़तावा रज़विया, खंड 4

फिर उन्होंने इनकार के बाद उपहार का उल्लेख किया और विशेष रूप से नमाज़ के बाद के उपहार का, और इसका कोई प्रभाव नहीं है। उन्होंने इसका उल्लेख केवल इसके प्रभावहीन होने को स्पष्ट करने के लिए किया है। यदि हम इसे भी शामिल करना चाहते हैं, तो हम नियम में यह जोड़ देंगे कि पानी समाप्त होने की घोषणा पर वादा और पैतृक वादा दोनों प्रभावहीन हैं, जब तक कि नमाज़ पूरी होने से पहले उपहार न मिल जाए। और उपहार के बाद का निषेध तब तक मान्य नहीं है जब तक कि पानी शेष न हो और देने वाले के स्वामित्व से बाहर न गया हो; इस प्रकार तैयमम अनुमेय हो जाता है यदि उपहार उसे रोकता है। और अब वादे के सात प्रकार हो जाते हैं। क्योंकि, पानी समाप्त होने की घोषणा के साथ या उसके बिना, पहले के अनुसार, नमाज़ खत्म होने से पहले दिया जाएगा, उदाहरण के लिए अपनी भूल का बहाना करते हुए, पहले। और दूसरे के अनुसार, यदि वह पैतृक वादा करता है जिसके बाद वह नमाज़ पूरी होने से पहले दे देता है, क्योंकि वादे को विलंबित करना उसकी शीघ्रता को नहीं रोकता (4) या ऐसा नहीं होगा (5) या आशाजनक वादा करेगा जो नमाज़ पूरी होने से पहले होगा (6) या उसके बाद होगा, और इसमें उसका वादा तोड़ना प्रकट होगा (7) या ऐसा नहीं होगा। और निषेध की तीन प्रकार की वृद्धि हो जाएगी।

पादलेख: नोट: यह विक्रेता के विकल्प के साथ बिक्री को बाहर करने के लिए है, जैसा कि दसवें मसले में पहले बताया गया है। (12 मिन्हु गुफ़िरा लहू) (म) विक्रेता की शर्त के साथ बिक्री से बचाव है, जैसा कि दसवें मसले में गुज़रा। (12 मिन्हु गुफ़िरा लहू) (त)

पृष्ठ 181/761

ثم قد ذكروا العطاء بعد الاباء و خصوه بالعطاء بعد الصلاة و هو لا اثر له اصلاً و انما ذكروه لبيان خلوه عن الاثر فان اردنا ايرادها زدنا في الضابطة ان الوعد باظهار النفاد والوعد الابائي كلاهما لا اثر له الا اذا لحقه العطاء قبل تمام الصلاة ولا يسمع منع بعد عطاء الا اذا بقى الماء ولم يخرج عن ملك المعطى فيبيح التيمم ان منعه عه العطاء واذن تصير اقسام الوعد سبعة لانه باظهار نفاد الماء او بدونه على الاول يعطى قبل ختم الصلاة مؤولا بسهوه مثلاً اولا و على الثانى ام ان يعد ابائيا يعطى بعده قبل تمام الصلاة لان تاجيل وعده لا يمنعه عن تعجيله اولاً واما رجائيا وقع قبل تمامها او بعده وفى هذا ظهر خلفه اولاً ۔ والمنع ثلثة باضافة

ہے۔ تو معاملہ اس میں مشتبہ ہو جائے گا۔ پھر عطا بعد انکار کا ذکر کیا ہے اور اسے عطا بعد نماز سے خاص کیا ہے۔ اس کا بھی کوئی اثر نہیں۔ اس کی بے اثری بتانے ہی کیلئے علما نے اسے ذکر کیا ہے۔ اگر ہم اسے بھی لانا چاہیں تو ضابطہ میں یہ اضافہ کر دیں گے کہ ختم ہونے کا اظہار کر کے وعدہ اور وعدہ ابائی دونوں بے اثر ہیں مگر جب کہ قبل تکمیل نماز انہیں عطا لاحق ہو۔ اور منع بعد عطا مسموع نہیں مگر جب کہ پانی باقی ہو اور دینے والے کی ملک سے باہر نہ ہوا ہو تو تیمم کو مباح کر دے گا اگر عطا اس سے مانع ہو۔ اور اب وعدہ کی قسمیں سات ہو جائیں گی اس لئے کہ وعدہ پانی ختم ہونے کا اظہار کے ساتھ ہو گا یا اس کے بغیر ہوگا بر تقدیر اول ختم نماز سے پہلے۔ مثلاً اپنے بھول جانے کا عذر کرتے ہوئے دے دے گا۔ (۲) یا نہیں۔ بر تقدیر ثانی (۳) یا تو ایسا وعدہ ابائی کرے گا جس کے بعد قبل تکمیل نماز دے دے اس لئے کہ وعدہ کو مؤجل کرنا اس کی تعجیل سے مانع نہیں (۴) یا ایسا نہ ہوگا (۵) یا وعدہ رجائی کرے گا جو قبل تکمیل نماز

واقع ہو (۶) یا اس کے بعد ہو ، اور اس میں اس کا خلف ظاہر ہو (۷) یا ایسا نہ ہو۔ اور منع کی تین ۳ قسمیں ہو جائیں گی اس کا اضافہ

عه: احتراز عن البیع بخیار البائع کما تقدم فی المسألة العاشرة ۱۲ منه غفر له (م) بیع بشرط خیار بائع سے احتراز ہے، جیسا کہ مسئلہ دہم میں گزرا ۱۲منہ غفرلہ (ت)

Fatawa Razawiyya - Volume 4

...regarding the refusal [of water] after it was [initially] given, while the water and its ownership still remained. Conversely, if the refusal occurs after the water is exhausted or after it has left the ownership of the refuser, then there is no need to include it in the categories because such a refusal and denial is not expected from anyone except a madman. Now, the total categories will become fifteen (15). However, regarding the types of these five added ones, I say (Fa-Aqool):

(11) Promised while showing exhaustion [of water] and gave it before the completion of the prayer. There are forty-eight (48) scenarios for this. Its ruling: It is effective.

(12) Similarly promised but did not give before completion. There are 162 scenarios for this. Ruling: The prayer is complete. This will become clear to you from the following two types, because this promise does not contradict any "Abai" (refusal) promise in terms of rulings, categories, summary, or detail.

(13) Made an "Abai" promise and gave before the completion of the prayer. There are three instances for this: (i) before Tayammum, (ii) before prayer, or (iii) during it. In the first ternary, there are three instances for giving, and in the second ternary, there are two (2). So, multiplying five by three gives fifteen (15) scenarios, and by doubling fifteen...

Page 182 of 761

फतावा रज़विया - जिल्द चौथी

...देने के बाद पानी की कमी के कारण जो इनकार किया गया जबकि पानी और मालिकाना हक़ बरकरार था। इसके विपरीत, वह इनकार जो पानी खत्म होने के बाद या इनकार करने वाले के मालिकाना हक़ से निकल जाने के बाद हो, तो उसे श्रेणियों में शामिल करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि ऐसा इनकार और अस्वीकृति एक पागल व्यक्ति के अलावा किसी और से अपेक्षित नहीं है। अब कुल श्रेणियां पंद्रह (15) हो जाएंगी। लेकिन इन पांच अतिरिक्त श्रेणियों के प्रकारों के बारे में मैं कहता हूँ:

(11) पानी की समाप्ति दिखाकर वादा किया और नमाज़ पूरी होने से पहले दे दिया। इसकी अड़तालीस (48) स्थितियां हैं। इसका निर्णय: प्रभावी (Mutathir) है।

(12) इसी तरह वादा किया लेकिन नमाज़ पूरी होने से पहले नहीं दिया। इसकी 162 स्थितियां हैं। निर्णय: नमाज़ पूरी है। यह बात आपके लिए बाद वाली दोनों श्रेणियों से स्पष्ट हो जाएगी क्योंकि यह वादा किसी भी 'अबाई' (इनकार वाले) वादे के फैसलों, श्रेणियों, सारांश या विस्तार के विपरीत नहीं है।

(13) 'अबाई' वादा किया और नमाज़ पूरी होने से पहले दे दिया। इसके तीन अवसर हैं: (i) तयम्मुम से पहले, (ii) नमाज़ से पहले, या (iii) नमाज़ के दौरान। पहले त्रय (ternary) में देने के तीन अवसर हैं और दूसरे त्रय में दो (2) हैं। तो पाँच को तीन से गुणा करने पर पंद्रह (15) स्थितियां होंगी और पंद्रह को दो से गुणा करने पर...

पृष्ठ 761 में से 182

فتاویٰ رضویہ - جلد چہارم

...کر دینے کی وجہ سے جو منع بعدِ عطا پانی اور ملک باقی رہنے کے ساتھ ہو۔ لیکن اس کا خلاف، وہ یہ کہ پانی ختم ہونے کے بعد یا مانع کی ملک سے نکل جانے کے بعد منع ہو، تو اسے داخلِ اقسام کرنے کی ضرورت نہیں کہ ایسا منع وانکار مجنون کے سوا کسی سے متوقع نہیں۔ اب کل اقسام پندرہ ۱۵ ہو جائیں گی۔ لیکن ان اضافہ شدہ پانچ کی نوعیں فاقول: (تو میں کہتا ہوں):

(۱۱) ختم ہونا ظاہر کر کے وعدہ کیا اور تکمیلِ نماز سے پہلے دے دیا۔ اس کی اڑتالیس ۴۸ صورتیں ہیں۔ اس کا حکم مؤثر ہے۔

(۱۲) اسی طرح وعدہ کیا اور قبلِ تکمیلِ نماز نہ دیا۔ اس کی ۱۶۲ صورتیں ہیں۔ حکم نماز تام ہے۔ یہ اپنے بعد والی دونوں قسموں سے واضح ہوگی اس لئے کہ یہ وعدہ احکام، اقسام، اجمال، تفصیل کسی وعدہ ابائی کے برخلاف نہیں۔

(۱۳) وعد ابائیا واعطی قبل تمام الصلاۃ مواقعہ ثلثۃ: (i) قبل التیمم (ii) او الصلاۃ (iii) او فیھا۔ تداولِ ثلاثی میں عطا کے تینوں مواقع ہیں۔ اور دوم ثلاثی میں دو ۲ ہیں تو پانچ کو تین میں ضرب دینے سے پندرہ ۱۵ صورتیں ہوں گی اور پندرہ کو دو میں ضرب دینے سے...

Fatawa Rizvia, Volume 4

Thirty: As for the third, there are two facets to it, because if the promise during prayer was upon a request, then it becomes mandatory to restart the prayer, otherwise it continues, because this promise does not invalidate the Tayammum. According to the second, there is only one possibility for the gift: that it is given before the completion of this prayer. According to the first, it is possible that it is given before starting the restarted prayer or during it. Thus, the third becomes hexagonal with three facets, resulting in eighteen (18). Combined with the thirty, it makes forty-eight (48). Rule: Delay is not because of the promise, for that is prohibited regarding the time, but rather because of the gift.

(13) He promised to refuse and gave it before the completion of the prayer. There are three instances of this: (i) Before Tayammum, (ii) Before prayer, (iii) During prayer. There will be thirty. In the third scenario, there are two possibilities, because if the promise in the prayer was made upon his request, then it is necessary to read it anew, otherwise it was executed and completed because this promise does not break the Tayammum. So in the second case, there will be only one form of gift, which is that it is given before the completion of the prayer. In the first case, there is a possibility that it is given before starting the prayer to be recited anew or within that prayer. Thus, the third which is hexagonal, becomes eighteen on three forms. These, combined with thirty, total forty-eight. Rule: Delay is not due to the promise because it is prohibited regarding the time, but rather due to the gift.

(14) He promised to refuse and did not give before the completion of the prayer. By adding the case of not giving after the prayer (4) whether by informing or not informing (5), there will be five instances. If it is before Tayammum or prayer, there will be four possibilities in it: (1) Giving him information after the prayer, within the time. (2) Giving without information. (3) Giving after the time. (4) Nothing like this happens. If it is after the prayer before notification, then the first possibility will be excluded, and if it is after notification, then the second possibility will be excluded. Because in both of these, the gift is not contrary to the promise. Because the notification refers to the time when Tayammum was done and prayer was offered with it, so that there is a suspicion or proof of silence being a reason for prohibition.

Page 183 of 761

फतावा रिज़विया, जिल्द 4

तीस: जहाँ तक तीसरे का संबंध है, इसमें दो पहलू हैं क्योंकि यदि नमाज़ के दौरान वादा किसी अनुरोध पर था, तो नमाज़ को फिर से शुरू करना अनिवार्य हो जाता है, अन्यथा यह जारी रहती है, क्योंकि यह वादा तयम्मुम को नहीं तोड़ता है। दूसरे के अनुसार, अता (दान) की केवल एक संभावना है: कि वह इस नमाज़ के पूरा होने से पहले दी जाए। पहले के अनुसार, यह संभव है कि वह फिर से शुरू की गई नमाज़ शुरू करने से पहले दी जाए या उसके दौरान। इस प्रकार, तीसरा तीन पहलुओं वाला षट्कोणीय हो जाता है, जिसके परिणामस्वरूप अठारह (18) होते हैं। तीस के साथ मिलकर यह अड़तालीस (48) हो जाते हैं। नियम: देरी वादे के कारण नहीं है, क्योंकि समय के संबंध में यह मना है, बल्कि अता (दान) के कारण है।

(13) उसने मना करने का वादा किया और नमाज़ पूरी होने से पहले दे दिया। इसके तीन अवसर हैं: (i) तयम्मुम से पहले, (ii) नमाज़ से पहले, (iii) नमाज़ के दौरान। तीस होंगे। तीसरे परिदृश्य में दो स्थितियाँ हैं क्योंकि यदि नमाज़ में वादा उसके माँगने पर हुआ, तो उसे नए सिरे से पढ़ना ज़रूरी है, अन्यथा वह लागू और पूर्ण हो गई क्योंकि यह वादा तयम्मुम को नहीं तोड़ता। तो दूसरी स्थिति में अता का केवल एक रूप होगा, वह यह कि नमाज़ पूरी होने से पहले दे दे। पहली स्थिति में संभावना है कि नए सिरे से पढ़ी जाने वाली नमाज़ शुरू करने से पहले दे या उसी नमाज़ के अंदर दे। तो तीसरा जो षट्कोणीय है, तीन रूपों पर होकर अठारह (18) हो गया। ये तीस के साथ मिलकर कुल अड़तालीस (48) हुए। हुक्म: देरी वादे की वजह से नहीं है क्योंकि यह समय के लिहाज़ से मना है बल्कि अता की वजह से है।

(14) उसने मना करने का वादा किया और नमाज़ पूरी होने से पहले नहीं दिया। नमाज़ के बाद (4) सूचित होकर या बिना सूचित (5) रहे न देने की स्थिति को जोड़कर इसके पाँच अवसर होंगे। यदि तयम्मुम या नमाज़ से पहले हो तो उसमें चार संभावनाएं होंगी: (1) नमाज़ के बाद, समय के अंदर उसे सूचित करना। (2) बिना सूचना दिए देना। (3) समय के बाद देना। (4) ऐसा कुछ न हो। यदि नमाज़ के बाद सूचना से पहले हो तो पहली संभावना बाहर हो जाएगी और यदि सूचना के बाद हो तो दूसरी संभावना बाहर हो जाएगी। क्योंकि इन दोनों में अता वादे के खिलाफ नहीं है। क्योंकि सूचना का अर्थ उस समय से है जब तयम्मुम किया गया और उससे नमाज़ पढ़ी गई ताकि यह भ्रम या मौन का प्रमाण मनाही का कारण बने।

فتاوی رضویہ جلد چہارم

ثلثون عن اما الثالث ففیہ وجہان لان الوعد فی الصلوٰۃ ان کان بسوال فقد لزمہ استئناف الصلوٰۃ والامضت لان ھذا الوعد لا ینقض التیمم فعلی الثانی مااللعطاء الاوجہ واحد ان یعطٰی قبل تمام ھذہ الصلوٰۃ وعلی الاول یحتمل ان یعطی قبل شروع الصلوٰۃ المستأنفۃ اوفیھا فصار الثالث وھو سداسی علی ثلثہ وجوہ بثمانیۃ عشر ومع الثلثین ثمانیۃ واربعون ۴۸۔ حکمہ التأخیر فاللوعد فانہ منع بالنظر للوقت بل للعطاء۔

(۱۳) وعدہ ابائی کیا اور قبل تکمیل نماز دے دیا۔ اس کے تین مواقع ہیں: (i) قبل تیمم (ii) قبل نماز (iii) اندرون نماز تیمیں ہوں گی۔ تقدیر سوم پر دو ۲ صورتیں ہیں اس لئے کہ نماز میں وعدہ اگر اس کے مانگنے پر ہوا تو اس پر از سر نو پڑھنا لازم ہے ورنہ نافذ و تمام ہو گئی اس لئے کہ یہ وعدہ تیمم نہیں توڑتا۔ تو دوسری صورت میں عطا کی صرف ایک شکل ہو گی وہ یہ کہ قبل تکمیل نماز دے دے اور پہلی صورت میں احتمال ہے کہ از سر نو پڑھی جانے والی نماز شروع کرنے سے پہلے دے یا اس نماز کے اندر ہی دے تو سوم جو سداسی ہے تین شکلوں پر ہو کر اٹھارہ ۱۸ ہو گئی۔ یہ تئیں ۳۰ کے ساتھ مل کر کُل اڑتالیس ۴۸ ہوئیں۔ حکم: تاخیر وعدہ کی وجہ سے نہیں کیونکہ یہ تو بنظرِ وقت منع ہے بلکہ عطا کی وجہ سے۔

(۱۴) وعدہ ابائی کیا اور قبل تکمیل نماز نہ دیا نماز (۴) کے بعد مطلع ہو کر یا غیر مطلع (۵) رہ کر نہ دینے کی صورت کا اضافہ کرکے اس کے پانچ مواقع ہوں گے اگر تیمم یا نماز سے پہلے ہو تو اس میں چار ۴ احتمال ہوں گے: (۱) نماز کے بعد، وقت کے اندر اسے اطلاع دینا۔ (۲) بغیر اطلاع دینا (۳) بعد وقت دینا (۴) ایسا کچھ نہ ہو۔ اگر بعد نماز قبل اطلاع ہو تو احتمال اول خارج ہو جائے گا اور اگر بعد اطلاع ہو تو احتمال دوم خارج ہو جائے گا۔ اس لئے کہ ان دونوں میں عطا

خلافِ وعدہ نہیں۔ کیونکہ مراد ہے اس وقت اطلاع جب تیمم کیا اور اس سے نماز ادا کی تاکہ یہ وہم یا ثبوت السکوت اذ ذاک دلیل المنع۔

صفحہ 183 از 761

Fatawa Razawiyya Volume 4

"So then, each of the first two triples equals twelve, and each of the latter two sextets equals eighteen, totaling sixty. When doubled, it becomes one hundred and twenty." It could be that silence at that time is evidence of refusal. Now, each of the first two triples equals twelve, and each of the following two sextets equals eighteen, so these are sixty (60) forms, and by multiplying by two, they become one hundred and twenty (120).

"The third middle part remains, which is when the promise is made during prayer. If it is not in response to a request, there is a possibility that it is given within the time or after it, or not at all. If it is in response to a request, then due to restarting the prayer, the possibility arises of giving it after the restarted prayer within the time with information or without it, or after the time, or not at all. These are seven sextets, totaling forty-two, and the overall total is one hundred and sixty-two." The third middle one remains, which is when the promise is during prayer. So if it is not at his request, there is a possibility that after the construction [of prayer], he gives it within the time or after the time, or does not give it. And if it is at his request, then due to the resumption of prayer, the possibility arose that he gives it within the time after the freshly performed prayer, with or without information, or gives it after the time or does not give it. These became seven (7) possibilities, all are sextets, so they became forty-two (42), and the total became one hundred and sixty-two (162).

"The ruling is: it [the prayer] is complete, and his dry ablution (tayammum) is nullified now if he gives it." Ruling: The prayer is complete, and tayammum will break at that time if he gives it.

"(15) He gave it, then refused, yet his ownership and the water remain. In this giving, there is a possibility that it was without a request, or immediately after a request, or after a promise and silence, or refusal. In any case, it would be before tayammum, or before prayer, or during it, or after it, with information or without it, or after the time." (15) He gave it, then refused, and his ownership and the water remain. In this gift, there is a possibility that it was without a request, or immediately after a request, or after a promise, silence, or refusal. In any case, giving would be before tayammum, or before prayer, or inside the prayer, or after prayer with information, or without information, or after the time.

"In short, all the forms of giving coming in the other past categories, some of which have one of the three effects, and they are: all of the first category are fifty-four, and

three-sevenths of the second are thirty-six, because giving is before tayammum, or prayer, or during it, all within the time." In short, all the upcoming forms of giving are present in all the past categories. Some of them have one of the three effects. All these belong to the first category, numbering fifty-four (54), and thirty-six (36) from the second (6/3) because giving will be before tayammum, or before prayer, or inside the prayer, and each within the time.

फ़तावा रज़विया जिल्द चार (खंड 4)

"अत: पहले दो त्रिगुटों में से प्रत्येक बारह है और बाद के दो षटकों में से प्रत्येक अठारह है, तो वे साठ हुए और दो से गुणा करने पर एक सौ बीस हुए।" हो सकता है कि उस समय चुप्पी इनकार का प्रमाण हो। अब पहले दोनों त्रिगुटों (ثلاثی) में से प्रत्येक बारह, और बाद वाले दोनों षटकों (سُداسی) में से प्रत्येक अठारह, तो ये साठ ६० सूरतें हुईं और दो में गुणा करने से एक सौ बीस १२० हुईं।

"तीसरा बीच वाला हिस्सा बचा रहा कि वादा नमाज़ में हो, तो अगर उसके सवाल पर न हो तो संभावना है कि उसे समय के भीतर या समय के बाद दे या न दे। और अगर उसके सवाल पर हो, तो नमाज़ को फिर से शुरू करने के कारण संभावना पैदा हुई कि नए सिरे से पढ़ी जाने वाली नमाज़ के बाद समय में जानकारी के साथ या बिना जानकारी के दे दे, या समय के बाद दे या न दे। ये सात षटक हुए जो बयालीस होते हैं और कुल एक सौ बासठ हुए।" तीसरी दरमियानी बाकी रह गई वह यह कि वादा नमाज़ में हो, तो अगर उसके सवाल पर न हो तो संभावना है कि बाद में समय के अंदर या समय के बाद दे दे या न दे और अगर उसके सवाल पर है तो इस्तिनाफ़े नमाज़ (नमाज़ फिर से शुरू करना) की वजह से संभावना पैदा हुई कि नए सिरे से पढ़ी जाने वाली नमाज़ के बाद वक्त में जानकारी के साथ या बिना जानकारी के दे दे, या वक्त के बाद दे या न दे। ये सात ७ संभावनाएँ हुईं, सब षटक हैं तो बयालीस ४२ हुए और कुल एक सौ बासठ १६२ हुए।

"उसका हुक्म यह है: नमाज़ मुकम्मल हुई और उसका तैयम्मुम अब टूट जाएगा अगर वह दे दे।" हुक्म: नमाज़ मुकम्मल है और तैयम्मुम उस समय टूट जाएगा अगर वह दे दे।

"(१५) दिया फिर मना कर दिया और उसकी मिल्कियत और पानी बाकी है। इस अता (प्रदान) में संभावना है कि बिना सवाल के हो या सवाल के फौरन बाद हो या वादे और खामोशी के बाद हो या इनकार के बाद हो, और किसी भी स्थिति में देना तैयम्मुम से पहले होगा या नमाज़ से पहले या उसमें या उसके बाद जानकारी के साथ या उसके बिना या वक्त के बाद।" (१५) दिया फिर मना किया और उसकी मिल्कियत और पानी बाकी है। इस अता में संभावना है कि बिना सवाल के हो या सवाल के फौरन बाद हो या वादे या खामोशी या इनकार के बाद हो और हर सूरत में देना या तो तैयम्मुम से पहले होगा या नमाज़ से पहले या नमाज़ के दौरान या नमाज़ के बाद जानकारी के साथ या बिना जानकारी के या वक्त के बाद।

"संक्षेप में, अता की आने वाली सभी सूरतें पिछली सभी श्रेणियों में मौजूद हैं, जिनमें से कुछ तीन प्रभावों में से किसी एक से प्रभावित होती हैं। वे सभी पहली श्रेणी की चौवन हैं और दूसरी के तीन-सातवें छत्तीस हैं, क्योंकि अता तैयम्मुम से पहले या नमाज़ से पहले या उसमें है और सभी वक्त के भीतर हैं।" संक्षेप में, अता की आने वाली सारी सूरतें पिछली सारी श्रेणियों में हैं, उनमें से कुछ तीनों प्रभावों में से कोई एक प्रभाव भी रखती हैं। और ये पहली श्रेणी की सभी हैं जिनकी संख्या चौवन ५४ है और दूसरी की छत्तीस ३६ (६/३) क्योंकि अता तैयम्मुम से पहले होगी या नमाज़ से पहले या नमाज़ के अंदर, और हर एक वक्त के अंदर।

पृष्ठ 184 कुल 761 में से

فاذن کل من الاولین الثلاثین اثنا عشر وکل من الآخرین السداسیین ثمانیة عشر فھی ستون وبالتثنیة مائة وعشرون۔ ہو سکے کہ اس وقت سکوت دلیل منع ہے۔ اب پہلی دونوں ثلاثی میں سے ہر ایک بارہ، اور بعد والی دونوں سُداسی میں سے ہر ایک اٹھارہ، تو یہ ساٹھ ۶۰ صورتیں ہوئیں اور دو میں ضرب دینے سے ایک سو بیس ۱۲۰ ہوئیں۔

بقی الثالث الوسطانی ان یکون الوعد فی الصلاۃ فان لم یکن عن سؤالہ احتمل ان یعطی بعدھا فی الوقت او بعدہ اولا وان کان بسؤالہ فلاجل الاستئناف احتمل ان یعطی فی الوقت بعد المستأنفة مع الاطلاع او بغیرہ او بعد الوقت اولا فھذہ سبعة سداسیات باثنین واربعین والکل مائة واثنان وستون۔ تیسری درمیانی باقی رہ گئی وہ یہ کہ وعدہ نماز میں ہو، تو اگر اس کے سوال پر نہ ہو تو احتمال ہے کہ بنا کہ بعد وقت کے اندر یا بعد وقت دے دے یا نہ دے اور اگر اس کے سوال پر ہے تو استیناف نماز کی وجہ سے احتمال پیدا ہوا کہ از سر نو پڑھی جانے والی نماز کے بعد وقت میں بحالت اطلاع یا بلا اطلاع دے دے، یا بعد وقت دے یا نہ دے۔ یہ سات ۷ احتمالات ہوئے سب سُداسی ہیں تو بیالیس ۴۲ ہوئے اور کُل ایک سو باسٹھ ۱۶۲ ہوئے۔

حکمہ تمت وینتقض تیممہ الآن ان اعطی۔ حکم: نماز تام ہے اور تیمم اس وقت ٹوٹ جائے گا اگر دے دے۔

(۱۵) اعطی ثم منع وملکہ والماء باق ھذا العطاء یحتمل ان یکون بلا سؤال او بعدہ عاجلا او بعد وعد وصمت او منع وعلی کل یکون قبل التیمم او الصلاۃ او فیھا او بعدھا بالاطلاع او بدونہ او بعد الوقت۔
(۱۵) دیا پھر منع کیا اور اس کی ملک اور پانی باقی ہے۔ اس عطا میں احتمال ہے کہ بلا سوال ہو یا

بعد سوال فوراً ہو یا وعدہ یا خاموشی یا انکار کے بعد ہو اور بہر تقدیر یا تو دینا قبل تیمم ہوگا یا قبل نماز یا اندرون نماز یا بعد نماز بحالت اطلاع یا بلا اطلاع یا بعد الوقت۔

وبالجملة جميع صور العطاء الآتية فى سائر الاقسام الماضية ومنها مؤثرات باحد الآثار الثلثة وهى كل القسم الاول اربعة وخمسون وثلثة اسباع الثانى ستة وثلثون لان العطاء قبل التيمم او الصلاة او فيها وكل فى الوقت بالجملہ آنے والی عطا کی ساری صورتیں گذشتہ ساری اقسام میں ہے ان میں سے کچھ تینوں اثرات میں سے کوئی ایک اثر بھی رکھتی ہیں اور یہ قسم اول کی سبھی ہیں جن کی تعداد چون ۵۴ ہے اور ثانی کی ۶/۳ چھتیں ۳۶ اس لئے کہ عطا تیمم سے پہلے ہو گی یا نماز سے پہلے یا نماز کے اندر، اور ہر ایک وقت کے اندر۔

Fatawa Razawiyya Volume 4

(Arabic Text Column): After a question or without a question, or after the time, then there are three cases in each. The first two are 'thulathi' (triple), the third is 'sudasi' (sextuple), and half of the fourth is twenty-four. All of the fifth is forty-five, the seventh is twenty-seven, and the twelfth is forty-eight. Their total sum is two hundred and thirty-four. Among these, some are ineffective because they occur after the time. These include one-third of the third, which is twelve, and one-third of the sixth, which is eighteen; because there are two ways for 'Ata' (granting) and one way for its absence, and half of 'Ata' after the time makes it one-third of the total. One-fourth of the eighth is eighteen; because there is one way for the absence of 'Ata' and three ways for 'Ata', among which two ways are within the time. Thus, due to the lack of time, it becomes one-fourth of the total. And from the thirteenth, forty-eight, whose sum will be ninety-six, and including the effective cases, it is three hundred and thirty (330). Let them be collected, for in these there is no difference in the location of 'Man' (prevention) and 'Ata'. As for the second group, it is obvious because since the 'Ata' is after the time, the 'Man' will also be after the time. As for the group of effective cases, it is because the obligation is to prevent it before use. If it was given before Tayammum (dry ablution), it would not be permissible for him to perform Tayammum until the prevention occurs after Tayammum. And if it was given before the prayer, it would not be permissible for him to offer the prayer until the prevention occurs within the prayer. Analogous conclusions can be drawn from this.

(Urdu Text Column): After a question or without a question, and after the time, then in each of these there are three. The first two are 'thulathi' (triple), the third is 'sudasi' (sextuple), half of the fourth is twenty-four (24), all of the fifth is forty-five (45), the seventh is twenty-seven (27), and the twelfth is forty-eight (48). Total is two hundred thirty-four (234). Among these, some are ineffective because they are after the time. These are: one-third of the third is twelve, and one-third of the sixth is eighteen because it has two forms of 'Ata' (granting) and one form of non-granting, and half of 'Ata' after the time makes it one-third of the total. And one-fourth of the eighth is eighteen because it has one case of non-granting and three cases of 'Ata'. Two cases are within the time. So for the lack of time, it became one-fourth of the total. And from the thirteenth, forty-eight (48), the sum of which will be ninety-six (96), and with the effective ones, three hundred and thirty (330). Let them be collected because among them there is no difference in the location of prevention and granting. In the second group, it is obvious because since the granting is after the time, the

prevention will also be after the time. And in the group of effective ones, because it is assumed that it was prevented before use. So if it was given before Tayammum, it would not be permissible for him to perform Tayammum until the prevention occurs after Tayammum. And if it was given before the prayer, it would not be permissible for him to offer prayer until the prevention occurs within the prayer. And let it be deduced accordingly.

फतावा रज़विया जिल्द चौथा

(अरबी पाठ स्तंभ): प्रश्न के बाद या उसके बिना, या समय के बाद, प्रत्येक में तीन मामले हैं। पहले दो 'थुलाथी' हैं, तीसरा 'सुदासी' है, और चौथे का आधा चौबीस है। पांचवें के सभी पैंतालीस हैं, सातवें के सत्ताईस और बारहवें के अड़तालीस हैं। उनका कुल योग दो सौ चौंतीस है। इनमें से कुछ अप्रभावी हैं क्योंकि वे समय के बाद होते हैं। इनमें तीसरे का एक-तिहाई शामिल है, जो बारह है, और छठे का एक-तिहाई, जो अठारह है; क्योंकि 'अता' (अनुदान) के लिए दो तरीके हैं और इसके अभाव के लिए एक तरीका है, और समय के बाद आधा 'अता' इसे कुल का एक-तिहाई बना देता है। आठवें का एक-चौथाई अठारह है; क्योंकि 'अता' के अभाव के लिए एक तरीका और 'अता' के लिए तीन तरीके हैं, जिनमें से दो तरीके समय के भीतर हैं। इस प्रकार, समय की कमी के कारण, यह कुल का एक-चौथाई हो जाता है। और तेरहवें से अड़तालीस, जिसका योग छियानवे होगा, और प्रभावी मामलों सहित, यह तीन सौ तीस (330) है। उन्हें एकत्रित किया जाए, क्योंकि इनमें 'मन' (रोकथाम) और 'अता' के स्थान में कोई अंतर नहीं है। जहाँ तक दूसरे समूह का प्रश्न है, यह स्पष्ट है क्योंकि चूँकि 'अता' समय के बाद है, 'मन' भी समय के बाद ही होगा। जहाँ तक प्रभावी मामलों के समूह का प्रश्न है, ऐसा इसलिए है क्योंकि उपयोग से पहले इसे रोकना अनिवार्य है। यदि यह तयम्मुम (शुद्धिकरण) से पहले दिया गया था, तो उसके लिए तयम्मुम करना तब तक जायज़ नहीं होगा जब तक कि तयम्मुम के बाद रोक न लग जाए। और यदि यह नमाज़ से पहले दिया गया था, तो उसके लिए नमाज़ अदा करना तब तक जायज़ नहीं होगा जब तक कि नमाज़ के भीतर रोक न लग जाए। इससे मिलते-जुलते निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं।

(उर्दू पाठ स्तंभ): प्रश्न के बाद या बिना प्रश्न के, और समय के बाद, तो इनमें से प्रत्येक में ये तीन हैं और पहले दो 'थुलाथी' (तिगुनी) हैं, तीसरी 'सुदासी' (छह गुना) है, और चौथे का आधा चौबीस (24) है, पाँचवें के सभी पैंतालीस (45) हैं, सातवें के सत्ताईस (27) और बारहवें के अड़तालीस (48) हैं। कुल दो सौ चौंतीस (234) हैं। इनमें से कुछ अप्रभावी हैं क्योंकि वे समय के बाद हैं। ये हैं: तीसरे का एक-तिहाई बारह है और छठे का एक-तिहाई अठारह है क्योंकि इसमें 'अता' (प्रदान करने) के दो रूप हैं और न देने का एक रूप है, और समय के बाद आधा 'अता' कुल का एक-तिहाई हो गया। और आठवें का एक-चौथाई अठारह है क्योंकि इसमें न देने का एक मामला और 'अता' के तीन मामले हैं। दो मामले समय के भीतर के हैं। तो समय की कमी के कारण यह कुल का एक-चौथाई हो गया। और तेरहवें से अड़तालीस (48), जिनका योग छियानवे (96) होगा, और प्रभावी मामलों के साथ तीन सौ

तीस (330) होगा। उन्हें एकत्रित कर लिया जाए क्योंकि उनके बीच 'मना' (रोकथाम) और 'अता' के स्थान में कोई अंतर नहीं है। दूसरे समूह में तो यह स्पष्ट है क्योंकि चूँकि 'अता' समय के बाद है, तो 'मना' भी समय के बाद ही होगा। और प्रभावी समूह में इसलिए क्योंकि यह माना गया है कि उपयोग से पहले उसे मना कर दिया गया हो। तो यदि उसे तयम्मुम से पहले दिया गया, तो उसके लिए तयम्मुम करना रवा न होगा जब तक कि तयम्मुम के बाद मनाही न हो जाए। और यदि नमाज़ से पहले दिया गया, तो उसके लिए नमाज़ अदा करना रवा न होगा जब तक कि नमाज़ के दौरान मनाही न हो जाए। और इसी पर कयास लगा लिया जाए।

पृष्ठ 185 का 761

(عربی متن): بعد السؤال او بدونه اوبعد الوقت فهی ثلثة فی کل والاولان ثلاثیان والثالث سداسی ونصف الرابع اربعة وعشرون وکل الخامس خمسة واربعون والسابع سبعة وعشرون والثانی عشر ثمانیة واربعون مجموعها مائتان واربعة وثلثون۔ ومنها مالاۓثر لکونه بعد الوقت وهو ثلث الثالث اثنا عشر وثلث السادس ثمانیة عشرلان فیه وجهین للعطاء ووجها لعدمه ونصف العطاء بعد الوقت فکان ثلث الکل۔ وربع الثامن ثمانیة عشرلان فیه وجها لعدم العطاء وثلثة وجوه للعطاء منها وجهان لما فی الوقت فکان لعدم الوقت ربع الکل ومن الثالث عشر ثمانیة وعشرون مجموعها ستة وتسعون ومع المؤثرات ثلثمائة ۳۳۰ وثلثون فلتخزن فان هذه لایفارق فیها المنع والعطاء فی الموقع اما فی الفریق الثانی فظاهر لان العطاء بعد الوقت فلا یکون المنع الا بعده۔ واما فی فریق المؤثرات فلان الفرض منعه قبل الاستعمال فان اعطی قبل التیمم لایکون له ان یتیمم حتی یقع المنع بعد التیمم وان اعطاه قبل الصلاة لایکون له ان یصلی حتی یقع فی الصلاة وقس علیه و

(اردو متن): بعد سوال یا بلا سوال اور بعد وقت تو ہر ایک میں یہ تین ہیں اور پہلی دونوں ثلاثی ہیں تیسری سداسی ہے اور چہارم کی نصف چوبیس ۲۴ اور خامس کی سبھی پینتالیس ۴۵ اور سابع کی ستائیس ۲۷ اور بارہویں کی اڑتالیس ۴۸۔ کل دوسو چونتیس ۲۳۴۔ ان میں سے کچھ غیر مؤثر ہیں کیونکہ بعد وقت ہیں، یہ سوم کی تہائی بارہ ہیں اور ششم کی تہائی اٹھارہ اس لئے کہ اس میں عطائی دو شکلیں ہیں اور عدم عطا کی ایک شکل ہے اور نصف عطا بعد وقت تو کل کی تہائی ہوئیں۔ اور ہشتم کی چوتھائی اٹھارہ اس لئے کہ اس میں عدم عطا کی ایک صورت، اور عطا کی تین صورتیں ہیں۔ دو صورتیں اس کی ہیں جو وقت کے اندر ہو۔ تو عدم وقت کے لئے کل کی چوتھائی ہوئی اور تیرھویں سے اڑتالیس ۴۸ جن کا مجموعہ چھیانوے ۹۶ ہوگا اور مؤثرات کے ساتھ تین

سو تیس ۳۳۰۔ انہیں جمع کر لیا جائے کہ ان کے اندر منع و عطا میں موقع کا اختلاف نہیں۔ فریق ثانی میں تو ظاہر ہے اس لئے کہ عطا بعد وقت ہے تو منع بھی بعد وقت ہی ہوگا۔ اور فریق مؤثرات میں اس لئے کہ فرض یہ کیا گیا ہے کہ استعمال سے پہلے منع کردیا ہو تو اگر تیمم سے پہلے دے دیا اسے تیمم کرنا روا نہ ہوگا یہاں تک کہ تیمم کے بعد منع واقع ہو اور اگر نماز سے پہلے دے دیا تو اس کیلئے نماز ادا کرنا روا نہ ہوگا یہاں تک کہ منع اندرونِ نماز واقع ہو اور اسی پر قیاس کر لیا جائے۔

And among them are those which occur during the time but are not effective. These are one-third of the sixth [category], which is eighteen; half of the eighth [category], which is thirty-six; and forty-eight from the thirteenth [category]. Their total is one hundred and two. In these cases, separation is possible because if he gives during the time and it is not effective, then he has the right not to use the water now and store it for the future time. Thus, the prohibition before its use after the time will be valid. These are divided into two types: prohibition during the time and after it. So they become two hundred and four. Combined with the stored ones, they become five hundred and thirty-four. These are the aspects of this fifteenth category.

Ruling: Its ruling is the permissibility of Tayammum now if the giving was preventing it. There is no effect on what has passed of Tayammum or prayer; rather, if there is an effect, it will be due to the previous giving. The sum of these five categories is nine hundred and fifty-four, and with the previous ones, it becomes one thousand three hundred and eighty. And Allah Almighty knows best.

Another Addition: I say: And here are other aspects, for there are four states: giving (ata), promise (wa'da), silence (sukoot), and prohibition (man'). They mentioned giving after prohibition, and we mentioned in the aspects of their rules giving after a promise and after silence, and we added prohibition after giving. So...

और उनमें से कुछ वे हैं जो समय के भीतर हैं और प्रभावी नहीं हैं। ये छठे के एक तिहाई हैं, जो अठारह हैं; आठवें का आधा हैं, जो छत्तीस हैं; और तेरहवें से अड़तालीस हैं। इनका कुल योग एक सौ दो है। इनमें अलगाव संभव है क्योंकि यदि वह समय के दौरान देता है और यह प्रभावी नहीं होता है, तो उसे यह अधिकार है कि वह उस समय पानी का उपयोग न करे और उसे भविष्य के लिए संचित रखे। अत; समय के बाद इसके उपयोग से पहले निषेध मान्य होगा। इन्हें दो प्रकारों में विभाजित किया गया है: समय के भीतर निषेध और उसके बाद निषेध। तो वे दो सौ चार हो जाते हैं। संचित रूपों के साथ मिलकर वे पाँच सौ चौंतीस हो जाते हैं। ये इस पंद्रहवें खंड के पहलू हैं।

नियम (हुक्म): इस समय तयम्मुम की अनुमति है यदि प्रदान करना इसे रोक रहा था। और पिछले तयम्मुम या नमाज़ पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। बल्कि, यदि कोई प्रभाव होगा, तो वह पिछले दान के कारण होगा। इन पाँचों श्रेणियों का योग नौ सौ चौवन है, और पिछली श्रेणियों के साथ मिलकर यह एक हज़ार तीन सौ अस्सी हो जाता है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

अन्य परिशिष्ट: मैं कहता हूँ: और यहाँ कुछ अन्य पहलू हैं, क्योंकि चार स्थितियाँ हैं: दान (अता), वादा, चुप्पी (सकूत), और निषेध (मना)। विद्वानों ने निषेध के बाद दान का भी उल्लेख किया है, और हमने उनके नियमों के पहलुओं के भीतर वादे के बाद और चुप्पी के बाद दान का भी उल्लेख किया है, और दान के बाद निषेध का इज़ाफ़ा किया है। तो...

ومنها ما فی الوقت ولا یؤثر وھی ثلث السادس ثمانیة عشر ونصف الثامن ستة وثلثون ومن الثالث عشر ثمانیة واربعون مجموعها مائة واثنان ففی هذه یمکن الافتراق لانه اذا اعطی فی الوقت ولم یؤثر فله ان لا یستعمل لماء الآن ویدخره للوقت الآتی فیصح المنع قبل استعماله بعد الوقت فهذه تنقسم الی قسمین المنع فی الوقت وبعده فتصیر مائتین و اربعة و مع المخزونات خمسمائة واربعة وثلثین هذه وجوه هذا القسم الخامس عشر۔

اور ان میں سے کچھ وہ ہیں جو وقت میں ہوں اور مؤثر نہ ہوں یہ ششم کی تہائی اٹھارہ ہیں اور ہشتم کی نصف چھتیس ۳۶ اور تیرھویں سے اڑتالیس۔ کل ایک سو دو ۱۰۲ ہیں۔ ان میں افتراق ہو سکتا ہے۔ اس لئے کہ اگر وہ وقت میں دے اور مؤثر نہ ہو تو اسے حق ہے کہ اس وقت پانی استعمال نہ کرے اور وقت آئندہ کیلئے ذخیرہ کر رکھے تو بعد وقت اس کے استعمال سے پہلے منع صحیح ہوگا۔ تو ان کی دو قسمیں ہوں گی منع اندرونِ وقت، منع بعد وقت تو دو سو چار ۲۰۴ ہو جائیں گی اور جمع شدہ کو ملا کر پانچ سو چونتیس ۵۳۴ ہونگی یہ اس پندرہویں قسم کی صورتیں ہیں۔

حکمه اباحة التیمم الآن ان کان العطاء منعه ولا اثره علی ما مضی من تیمم او صلاة بل ان کان فللعطاء السابق مجموع هذه الاقسام الخمسة تسعمائة واربعة وخمسون ومع السابقات الف وثلثمائة وثمانون واللہ تعالی اعلم۔

حکم: اس وقت تیمم مباح ہونا ہے اگر عطا اس سے مانع تھی۔ اور گزشتہ تیمم یا نماز پر اس کا کوئی اثر نہیں۔ بلکہ اگر اثر ہوگا تو عطائے سابق کا ہوگا۔ ان پانچوں اقسام کا مجموعہ نو سو چون ۹۵۴

ہوا اور سابقہ قسموں کو ملا کر ایک ہزار تین سو اسی ۱۳۸۰ ہوا اور خدائے برتر خوب جاننے والا ہے۔

اضافہ دیگر / اضافة اخری اقول: وھھنا وجوہ أخر فان احوال اربعة: عطا، وعد، سکوت، منع۔ وقد ذکروا العطاء بعد المنع و ذکرنا فی وجوہ قوانینھم العطاء بعد الوعد وبعد السکوت وزدنا المنع بعد العطاء فمن

اقول: یہاں کچھ اور صورتیں ہیں۔ اس لئے کہ حالتیں چار ہیں۔ عطا، وعدہ، سکوت، منع۔ علما نے عطا بعد منع بھی ذکر کیا ہے اور ہم نے ان کے قوانین کی صورتوں کے اندر عطا بعد وعدہ وبعد سکوت بھی ذکر کیا ہے اور منع بعد عطا کا اضافہ کیا ہے۔ تو

Fatawa Razawiyya Volume 4

[Right Column - Urdu Translation/Commentary] In comparison, there are also combinations of promise then refusal, refusal then promise, silence then refusal, or promise. So these are four other dual combinations, but counting them beyond dual combinations is not possible. Great is He Who has kept count of everything. Now, if we go into the explanation of the divisions of these four, we will exceed moderation. For one who has understood our approach in clarifying categories, this will not be difficult. So, we will limit ourselves to explaining the general rulings, basing our discourse on our previous evidentially supported points, but we will not give a definitive word on what pertains to our research.

I say: 'When one makes a promise and then refuses, if the promise was before Tayammum, and in this case, the refusal will also be before Tayammum. Because the promise creates an obstacle for Tayammum, this refusal will make Tayammum permissible. And if the promise was after Tayammum, it would break it. Then the refusal will not bring it back but will make its renewal permissible. Similarly, if the promise is during prayer, it will break the prayer, and refusal after it will not restore it. And if the promise was after the prayer, the prayer is complete, and the fear that was associated with the promise, that something contrary to it might appear, is gone.

(2) And if he refuses and then promises, if the promise occurred before the completion of the prayer, it will annul the refusal and be a preventative, nullifier, and interrupter. And if it occurred after the prayer...

[Left Column - Original Arabic Text] And similarly, promise then refusal, and refusal then promise, and silence then refusal or promise; these are four other dual combinations. Beyond dual combinations, it is impossible to count them. Glory be to Him who counted everything in number. Delving into the explanation of the divisions of these four also deviates from the intended purpose. Whoever understands our method in clarifying the categories will not find it difficult. So, let us restrict ourselves to explaining the general rulings, building upon our previous manifest evidence, without being definitive in what pertains to our research.

I say: If he promises then refuses, if the promise was before Tayammum and the refusal likewise was before it, because the promise is a barrier to Tayammum, this refusal makes Tayammum permissible. If the promise was after Tayammum, it invalidated it, and the refusal does not restore it but allows for its renewal. Similarly, if it was during prayer, he breaks it, and the refusal after it does not mend it. If it was

after it, the prayer is complete, and what was feared from the side of the promise is gone if no contradiction appears.

And if he refused then promised, then if the promise occurred before the completion of prayer, it rescinds the refusal and prevents, nullifies, and interrupts. And if it occurred after it...

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/टीका] इसके विपरीत वादा फिर इनकार, इनकार फिर वादा, खामोशी फिर इनकार, या वादा भी हैं। तो ये चार अन्य द्विआधारी (dual) संयोजन हुए, लेकिन द्विआधारी से ऊपर उनकी गणना संभव नहीं है। वह महान है जिसने हर चीज़ की गणना रखी है। अब यदि हम इन चारों के विभाजनों की व्याख्या में जाएँ तो हम संयम से बाहर हो जाएँगे। श्रेणियों को स्पष्ट करने में हमारे तरीके को जिसने समझ लिया है, उसके लिए यह मुश्किल नहीं होगा। इसलिए हम सामान्य नियमों को समझाने तक ही सीमित रहेंगे, हमारा प्रवचन हमारे पिछले स्पष्ट प्रमाणों पर आधारित होगा, लेकिन जो हमारे शोध से संबंधित है उस पर हम कोई अंतिम शब्द नहीं देंगे।

मैं कहता हूँ: 'जब कोई वादा करे फिर इनकार कर दे, तो यदि वादा तयम्मुम (Tayammum) से पहले हो और इस स्थिति में इनकार भी तयम्मुम से पहले ही होगा। क्योंकि वादा तयम्मुम में बाधा डालता है, तो यह इनकार तयम्मुम को जायज़ कर देगा। और यदि वादा तयम्मुम के बाद हो तो वह उसे तोड़ देगा। फिर इनकार उसे वापस नहीं लाएगा बल्कि उसके नवीनीकरण (renewal) को जायज़ कर देगा। इसी तरह यदि वादा नमाज़ के भीतर हो तो नमाज़ को तोड़ देगा, तो उसके बाद इनकार उसे जोड़ नहीं पाएगा। और यदि वादा नमाज़ के बाद हो तो नमाज़ पूरी है और वह डर खत्म हो गया है जो वादे के कारण रहता है कि इसके विपरीत कुछ प्रकट न हो जाए।

(२) और यदि वह इनकार करे फिर वादा करे, तो यदि वादा नमाज़ के पूरा होने से पहले हुआ, तो वह इनकार को रद्द कर देगा और बाधक, अमान्य करने वाला और बाधित करने वाला होगा। और यदि नमाज़ के बाद हुआ...

[बायां कॉलम - मूल अरबी पाठ] वही: वादा फिर इनकार, और इनकार फिर वादा, और खामोशी फिर इनकार या वादा; ये चार अन्य द्विआधारी संयोजन हैं। द्विआधारी संयोजनों से परे, उनकी गणना करना असंभव है। उसकी महिमा हो जिसने संख्या में सब कुछ गिना। इन चारों के विभाजनों की व्याख्या में विस्तार करना भी उद्देश्य से भटकना है। जो श्रेणियों को स्पष्ट करने में हमारी पद्धति को समझता है, उसके लिए यह कठिन नहीं होगा। तो आइए हम सामान्य नियमों को समझाने तक स्वयं को सीमित रखें, जो हमारे पिछले प्रत्यक्ष साक्ष्यों पर आधारित हैं, हमारे शोध से संबंधित विषयों में निश्चित हुए बिना।

मैं कहता हूँ: यदि वह वादा करता है फिर इनकार करता है, यदि वादा तयम्मुम से पहले था और इनकार भी उसी तरह उससे पहले था, क्योंकि वादा तयम्मुम के लिए एक बाधा है, तो यह इनकार तयम्मुम को जायज़ बनाता है। यदि वादा तयम्मुम के बाद था, तो उसने उसे अमान्य कर दिया, और इनकार उसे बहाल नहीं करता है बल्कि उसके नवीनीकरण की अनुमति देता है। इसी प्रकार, यदि यह नमाज़ के दौरान था, तो वह उसे तोड़ देता है, और इसके बाद इनकार इसे ठीक नहीं करता है। यदि यह इसके बाद था, तो नमाज़ पूरी हो गई, और वादे की ओर से जो डर था वह दूर हो गया यदि कोई विरोधाभास प्रकट नहीं होता है।

और यदि उसने इनकार किया फिर वादा किया, फिर यदि वादा नमाज़ पूरा होने से पहले हुआ, तो यह इनकार को रद्द कर देता है और रोकता है, अमान्य करता है और बाधित करता है। और यदि यह इसके बाद हुआ...

पृष्ठ 187 का 761

فتاویٰ رضویہ جلد چہارم

[دایاں کالم] اسی کے مقابلہ میں وعدہ پھر انکار، انکار پھر وعدہ، سکوت پھر انکار، یا وعدہ بھی ہیں۔ تو یہ چار دوسری ثنائی ترکیبیں ہوئیں لیکن ثنائی سے اوپر تو ان کا شمار ممکن نہیں۔ بزرگ ہے وہ جس نے ہر چیز کا شمار رکھا ہے۔ اب ان چاروں کی تقسیموں کی توضیح میں چلیں تو اعتدال سے باہر ہو جائیں گے۔ توضیح اقسام میں ہمارا تصرف جس نے سمجھ لیا اس کیلئے یہ مشکل نہ ہوگا۔ تو ہم احکام کلیہ کے بیان پر اقتصار کریں بنائے کلام ہمارے سابقہ استظہاروں پر ہوگی مگر جو ہماری ابحاث سے متعلق ہے اس میں ہم قطعی قول نہ کریں گے۔

فاقول: 'جب وعدہ کرے پھر انکار کر دے تو اگر وعدہ قبل تیمم ہو اور اس صورت میں انکار بھی قبل تیمم ہی ہوگا۔ اس لئے کہ وعدہ تیمم میں رکاوٹ ڈالتا ہے تو یہ انکار تیمم مباح کر دے گا اور اگر وعدہ تیمم کے بعد ہو تو اسے توڑ دے گا۔ تو انکار اسے واپس نہ لائے گا بلکہ اس کی تجدید جائز کر دے گا اسی طرح اگر وعدہ نماز کے اندر ہو تو نماز کو توڑ دے گا تو اس کے بعد انکار اسے جوڑ نہ دے گا اور اگر وعدہ بعد نماز ہو تو نماز تام ہے اور وہ زائل ہے جس کا وعدہ کی جانب سے خطرہ رہتا ہے کہ اس کے خلاف نہ ظاہر ہو۔

(۲) اور اگر انکار کرے پھر وعدہ کرے تو اگر وعدہ قبل تکمیل نماز واقع ہوا انکار کو منسوخ کر دے گا اور مانع، ناقض اور قاطع ہوگا اور اگر بعد نماز ہوا

[بایاں کالم] وزانها الوعد ثم الاباء والاباء ثم الوعد والسکوت ثم الاباء اوالوعد فهذه اربعة ترکیبات أخر ثنائیات اماماً فوق الثنائی فلا امکان لاحصائه جل من احصی کل شیئ عددا والاسترسال فی بیان تقاسیم

هذه الاربعة ايضاً مخرج عن القصد ومن عرف تصرفنا فى ابانة الاقسام لم يعسر عليه فلنقتصر على بيان الاحكام الكلية بانين على استظهاراً تنا السالفة غير قاطعى القول فيما يتعلق بابحاثنا۔

فاقول: ' اذا وعد ثم ابى فان كان الوعد قبل التيمم واذن لا يكون الاباء ايضاً الاقبه لان الوعد حاجز عن التيمم فهذا الاباء يبيح التيمم وان كان الوعد بعد التيمم نقضه فلايعيده الاباء بل يجيز تجديده وكذا ان كان فى الصلاة قطعها فلايصلها الاباء بعده وان كان بعدها تمت الصلاة وزال ماكان يخشى عليه من جانب الوعد ان لم يظهر خلفہ۔

وان ' ابى ثم وعد فان وقع الوى قبل تمام الصلاة نسخ الاباء ومنع و نقض وقطع وان وقع بعدها

(Arabic Column): It would not be effective because giving after prayer is not harmful when it is after denial, so what of a promise? And if one remains silent and then refuses, the silence itself was a proof of refusal, and now the explicit [refusal] has come. And if one remains silent and then promises, if the silence could possibly be due to non-refusal as we described in its discussions, then this promise makes that possibility definite, so its effect of the three consequences will be implemented. Otherwise, if not, then the Tayammum (dry ablution) is correct and the prayer is complete. And Allah, Glory be to Him and Exalted is He, knows best, and His knowledge is more complete and firmer. And may Allah's peace, blessings, and salutations be upon our master and leader Muhammad, and upon his family, companions, children, and group, forever and ever, at every moment and time. And all praise belongs to Allah, the Lord of all the worlds.

(Urdu Column): So it will not be effective because giving after prayer is not harmful, whereas after refusal it would be. So what would be the state of a promise? (3) If he remained silent then refused, the silence itself was a proof of refusal and now it is explicit. (4) If he remained silent then promised, and if in silence there is a possibility that it was not due to refusal, as we mentioned in its discussions, then this promise will make that possibility certain. It will do its job of producing the three effects. Otherwise, the Tayammum is valid and the prayer is complete. And Allah the Holy and Exalted knows best; the knowledge of that Great Majesty is more complete and firm. And from Allah the Most High, may there be perpetual blessings, grace, and peace upon our master and lord Muhammad, his family, companions, offspring, and group, at every moment and every instant. And all praises are for God, the Lord of all worlds. (T)

(अरबी कॉलम): यह प्रभावी नहीं होगा क्योंकि नमाज़ के बाद देना हानिकारक नहीं है जब वह मना करने के बाद हो, तो वादे का क्या? और अगर कोई चुप रहता है और फिर मना कर देता है, तो चुप्पी ही इनकार का प्रमाण थी, और अब स्पष्ट [इनकार] आ गया है। और अगर कोई चुप रहता है और फिर वादा करता है, तो अगर चुप्पी संभवतः गैर-इनकार के कारण हो सकती है जैसा कि हमने इसकी चर्चाओं में वर्णित किया है, तो यह वादा उस संभावना को निश्चित कर देता है, इसलिए तीन परिणामों का प्रभाव लागू किया जाएगा। अन्यथा, यदि नहीं, तो तैयम्मुम (सूखा वज़ू) सही है और नमाज़ पूरी है। और अल्लाह, वह महिमावान और सर्वोच्च है, सबसे अच्छा जानता है, और उसका ज्ञान अधिक पूर्ण और दृढ़ है। और अल्लाह की शांति, आशीर्वाद और सलाम हमारे आका और नेता मुहम्मद पर, और उनके परिवार, साथियों, बच्चों और समूह पर, हमेशा और हमेशा, हर पल और समय पर हों। और सभी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सभी लोकों का पालनहार है।

(उर्दू कॉलम): तो यह प्रभावी नहीं होगा क्योंकि नमाज़ के बाद देना हानिकारक नहीं है, जबकि मना करने के बाद हो। तो वादे का क्या हाल होगा। (3) यदि वह चुप रहा फिर मना कर दिया, तो चुप्पी ही इनकार का प्रमाण थी और अब तो स्पष्ट हो गया। (4) यदि वह चुप रहा फिर वादा किया, और यदि चुप्पी में यह संभावना हो कि यह इनकार के कारण नहीं था जैसा कि हमने इसकी चर्चाओं में बताया है, तो यह वादा उस संभावित को निश्चित कर देगा। तो यह अपना काम करेगा कि तीनों प्रभाव डालेगा। अन्यथा, तैयम्मुम सही है और नमाज़ पूर्ण होगी। और अल्लाह पाक और सर्वोच्च बेहतर जानता है, उस महान गरिमा वाले का ज्ञान अधिक पूर्ण और दृढ़ है। और अल्लाह तआला की ओर से हमारे आका और मौला मुहम्मद और उनकी आल, असहाब, संतान और समूह पर हमेशा-हमेशा, हर पल और हर क्षण दरूद और बरकत और सलाम हो। और सारी प्रशंसाएं सारे जहानों के मालिक खुदा के लिए हैं। (त)

पृष्ठ 188 / 761

(عربی کالم): لم یؤثر لان العطاء بعد الصلاۃ لایضر اذا کان بعد المنع فکیف بالوعد۔ وان سکت ثم ابی فالسکوت کان نفسہ دلیل الاباء والآن قد اتی الصریح وان سکت ثم وعد فان کان السکوت یحتمل ان یکون لاللاباء کما وصفنا في ابحاثہ فھذا الوعد جعل ذلك المحتمل متعینا فیعمل عملہ من الآثار الثلثہ والا لافصح التیمم وتمت الصلاۃ واللہ سبحانہ وتعالی اعلم وعلمہ اتم واحکم وصلی اللہ تعالی علی سیدنا و مولینا محمد والہ و صحبہ وابنہ وحزبہ وبارك وسلم الی ابد الابدین في کل آن و حین والحمد للہ رب العلمین

(اردو کالم): تو مؤثر نہ ہوگا اس لئے کہ بعد نماز عطا مضر نہیں جبکہ بعد منع ہو۔ تو وعدہ کا کیا حال ہوگا۔ (۳) اگر خاموش رہا پھر انکار کیا تو سکوت خود ہی دلیل انکار تھا اور اب تو صریح ہوگا۔ (۴) اگر خاموش رہا پھر وعدہ کیا تو اگر سکوت میں یہ احتمال ہو کہ انکار کی وجہ سے نہ ہوگا جیسا کہ اس کی بحثوں میں ہم نے بتایا تو یہ وعدہ اس محتمل کو متعین کردے گا۔ تو اپنا کام کرے گا کہ تینوں اثرات ڈالے گا۔ ورنہ نہیں تو تیمم صحیح اور نماز تام ہوگی۔ اور خدائے پاک وبر تر خوب جاننے والا ہے اس مجد بزرگ والے کا علم زیادہ تام اور محکم ہے، اور خدائے برتر کی طرف سے ہمارے آقا و مولیٰ محمد اور ان کی آل، اصحاب، فرزند اور گروہ پر ہمیشہ ہمیشہ، ہر لمحہ و ہر آن درود اور برکت و سلام ہو۔ اور ساری تعریفیں سارے جہانوں کے مالک خدا کیلئے ہیں۔ (ت)

Volume Four Fatawa Ridawiyyah

Treatise Al-Talatul Badia fi Qawli Sadrush Sharia 1335 AH A unique desired object related to the speech of Sadr al-Sharia (T)

In issue number 17, it was stated that if a bath (ghusl) is mandatory and water is only sufficient for ablution (wudu), then one should only perform dry ablution (tayammum). Here, a passage from Sharh Wiqayah by Imam Sadr al-Sharia (may Allah have mercy on him) made this issue controversial. Besides its marginalia, attention was drawn to it in other books such as Sharh Nuqayah Quhistani, Durar of Allama Khusraw, Durr-e-Mukhtar, and others. This discussion was separated from there to form this treatise. And success is from Allah.

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful.

All praise is for Allah, and He is the One whose help is sought, Who opened the heart for Sharia and faith by sending the master of humans and jinn as a protection for believers from fire, and purified us through him from the impurity of disbelief and the state of misguidance, and forbade us from wasting water and wealth.

Page 190 of 761

जिल्द चौथी फतावा रज़विया

रिसाला अत-तुलबतुल बदीआ फी क़ौलि सदरुश शरीआ़ १३३५ हि. सदरुश शरीआ़ के कलाम से मुताल्लिक़ अनोखा मतलब (त)

नंबर १७ में था कि नहाना वाजिब हो और पानी सिर्फ़ वज़ू के लायक़ हो तो सिर्फ़ तयम्मुम करे। यहाँ 'शरह विक़ाया' इमाम सदरुश शरीआ़ (रहमतुल्लाह अलैहि) की एक इबारत ने इस मसले को बहस का मौज़ू बना दिया। इसके हाशिये के अलावा दूसरी किताबों जैसे 'शरह नुक़ाया कुहिस्तानी', अ़ल्लामा खुसरौ की 'दुरर', 'दुर्रे मुख़्तार' वगैरह में इसकी तरफ़ तवज्जो दिलाई गई। इस बहस को भी वहाँ से अलग किया गया ताकि यह एक रिसाला बन जाए। और कामयाबी अल्लाह ही की तरफ़ से है।

बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम

सारी खूबियाँ अल्लाह के लिए हैं और वही है जिससे मदद माँगी जाती है, जिसने जिन्नो इंसान के सरदार को भेजकर मोमिनों को आग से बचाने के लिए शरीअ़त और ईमान का सीना खोल दिया। और उनके ज़रिए हमें कुफ़्र की नजासत और गुमराही की हालत से पाक किया, और हमें पानी और माल बर्बाद करने से मना फ़रमाया।

पेज १९० का ७६१

جلد چہارم فتاوٰی رضویہ

رسالہ الطلبة البديعة في قول صدر الشريعة ١٣٣٥ھ کلام صدر الشریعہ سے متعلق انوکھا مطلوب (ت)

نمبر ١٧ میں تھا کہ نہانا ہوا اور پانی صرف وضو کے قابل ہے تو فقط تیمم کرے۔ یہاں شرح وقایہ امام صدر الشریعہ رحمۃ اللہ علیہ کی ایک عبارت نے اس مسئلہ کو معرکہ الآراء کر دیا اس کے حواشی کے علاوہ اور کتب مثل شرح نقایہ قہستانی و درر علامہ خسرو و در مختار و غیرہا میں اس کی طرف توجہ مبذول ہوئی اس بحث کو بھی وہاں سے جدا کیا کہ یہ رسالہ ہو وباللہ التوفیق۔

بسم اللہ الرحمن الرحیم

الحمد لله وهو المستعان الذي شرح صدر الشريعة والايمان بارسال سيد الانس والجان وقاية للمؤمنين من النيران وطهرنا به عن خبث الكفر وحدث الضلال ونهانا عن اضاعة الماء والمال ساری خوبیاں خدا کیلئے اور وہی ہے جس سے مدد طلب کی جاتی ہے جس نے جن و انس کے سردار کو نار سے اہل ایمان کو بچانے کیلئے بھیج کر شریعت اور ایمان کا سینہ کھولا ۔ اور ان کے ذریعہ ہمیں کفر کے خبث اور ضلالت کے حدث سے پاک کیا۔ اور ہمیں پانی اور مال برباد کرنے سے منع فرمایا

صفحہ ١٩٠ از ٧٦١

Fatawa Rizvia, Volume 4

[Arabic Text]: Upon him and upon his pure family and his companions who were purified and who purify others, and those who follow them with excellence until the Day of Judgement, may the blessings and peace of Allah be upon them every moment and every second, from the eternity of eternities to the infinity of infinities. Amen. And upon us for their sake, O Most Merciful of those who show mercy.

[Urdu Text]: Upon him and upon his pure household, pure and purifying companions, and upon those who follow these gentlemen with goodness until the Day of Judgment, may Allah accept prayers and peace every moment and every second, from the beginning of eternities to the end of infinities, and for their sake, have mercy on us too, O Most Merciful of all. (T)

I say: And with Allah is success (I say with the help of Allah Almighty). If a person is in a state of major ritual impurity (janaba) and also has an event that makes minor ablution (wudu) obligatory, e.g., he urinated after intercourse, or woke up after a nocturnal emission and then urinated, and the situation is such that he cannot bathe but can perform wudu, whether because he is in a wilderness and water is only sufficient for wudu, or because he is ill and bathing is harmful but wudu is not, or because he woke up late in the morning and if he bathes the time will pass but there is time for wudu; in this case, the fatwa (legal opinion) is according to the saying of Imam Zufar: he should perform Tayamum (dry ablution) to preserve the time as a precaution. Then, respecting the original school of thought, after the time has passed, he should perform purification with water and repeat it (the prayer), as was described in our treatise 'Al-Zafar li-Qawl Zufar'. And now, by the grace of Allah Almighty, strong support for it has been found in the exalted and reliable books: Al-Muheet, Al-Zakheerah, and Al-Binayah of Imam Ayni.

[Boxed Text - Arabic]: Tayamum (dry ablution) was legislated to remove hardship and to protect the time from passing away [1]. [Boxed Text - Urdu]: Tayamum was legislated to remove hardship and to save the time from being missed. (T)

In Al-Kifayah, it is stated:

[Boxed Text - Arabic]: Tayamum was legislated to protect the prayer from being missed (until he said) so when the Sharia allowed Tayamum due to the fear of missing it, then it is more appropriate to allow it when the missing of it is certain [2]. [Boxed Text - Urdu]: Tayamum was legislated so that the prayer is protected from

being missed (until it was said) so when the Sharia allowed Tayamum due to the apprehension of it being missed, it will be permissible to a higher degree at the time of verification and certainty of it being missed. (T)

[1] Al-Binayah Sharh al-Hidayah, Chapter of Tayamum, Malik Sons Press, Faisalabad, 1/32 [2] Al-Kifayah with Fath al-Qadir, Chapter of Tayamum, Nooria Rizvia Press, Sukkur, 1/166

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4

[अरबी पाठ]: उन पर और उनके पवित्र परिवार और उनके साथियों पर जिन्हें पवित्र किया गया और जो दूसरों को पवित्र करते हैं, और जो प्रलय के दिन तक उत्कृष्टता के साथ उनका अनुसरण करते हैं, उन पर अल्लाह की कृपा और शांति हर पल और हर क्षण हो, अनादि काल से अनंत काल तक। आमीन। और उनके वास्ते हम पर भी, ऐ दया करने वालों में सबसे दयालु।

[उर्दू पाठ]: उन पर और उनकी पाकीज़ा आल, पाकीज़ा किए हुए पाकीज़ा करने वाले असहाब, और रोज़-ए-जज़ा तक भलाई के साथ इन हज़रात की पैरवी करने वालों पर ख़ुदा की जानिब से हर लम्हा ओ बहर आन, अज़लों के अज़ल से, अबदों के अबद तक दरूद ओ सलाम क़बूल फ़रमा और उनके तुफ़ैल हम पर भी ऐ सब रहम करने वालों से बढ़ कर रहम फ़रमाने वाले। (त)

अक़ूल: वबिल्लाह इत्तौफ़ीक़ (मैं कहता हूँ अल्लाह तआला की मदद से। त) अगर कोई शख़्स जुनूब (अपवित्र) हो और उसके साथ कोई ऐसा हादसा भी हो जो वज़ू वाजिब करे मसलन पेशाब किया था उसके बाद जिमा (सहवास) किया या एहतलाम (स्वप्नदोष) से उठा फिर पेशाब किया और हालत ये हो कि वो नहा न सके और वज़ू कर सके ख़्वाह यूँ कि जंगल में है और पानी सिर्फ़ वज़ू के क़ाबिल है या यूँ कि मरीज़ है नहाना मुज़िर (हानिकारक) है वज़ू से ज़रर नहीं या यूँ कि सुबह तंग वक़्त मोह्तलम उठा नहाए तो वक़्त निकल जाएगा और वज़ू की गुंजाइश है इस सूरत में क़ौल-ए-इमाम ज़ुफ़र पर फ़तवा है कि मुहाफ़ज़त-ए-वक़्त (वक़्त बचाने) के लिये तयम्मुम से नमाज़ पढ़ ले एहतियातन इस पर अमल करे फिर रियायत-ए-अस्ल मज़हब बाद ख़ुरूज-ए-वक़्त पानी से तहारत (शुद्धि) करके इ'आदा (दोहराव) करे जिसका बयान हमारे रिसाला 'अज़-ज़फ़र लि-क़ौल ज़ुफ़र' में गुज़रा। और अब बहम्द-ए-तआला इसकी और ताईद-ए-क़वी (पुख्ता समर्थन) पाई कुतुब-ए-जलीला मो'तमिदा मुहीत ओ ज़ख़ीरा ओ बनाय इमाम ऐनी में है।

[बॉक्स अरबी]: तयम्मुम हर्ज को दूर करने और वक़्त को फ़ौत होने से बचाने के लिये मशरूअ' (निर्धारित) हुआ है[1]। [बॉक्स उर्दू]: तयम्मुम हर्ज के दफ़ियह और वक़्त को फ़ौत होने से बचाने के लिये मशरूअ' हुआ है। (त)

किफ़ाया में है:

[बॉक्स अरबी]: तयम्मुम नमाज़ को फ़ौत होने से बचाने के लिये मशरूअ' हुआ (यहाँ तक कि कहा) पस जब शरीअत ने फ़ौत होने के वहम की वजह से तयम्मुम जाएज़ किया, तो फ़ौत होने के तहक़्क़ुक़

और यक़ीन के वक़्त बदरजा-ए-औला जाएज़ होगा[2]। [बॉक्स उर्दू]: तयम्मुम इसलिए मशरूअ' हुआ कि फ़ौत होने से नमाज़ की हिफ़ाज़त हो (यहाँ तक कि फ़रमाया) तो जब शरीअत ने फ़ौत होने के वहम की वजह से तयम्मुम जाएज़ किया तो फ़ौत होने के तहक़्क़ुक़ ओ यक़ीन के वक़्त बदरजा-ए-औला (प्रमुखता से) जाएज़ होगा। (त)

[1] अल-बिनाया शरह अल-हिदाया, बाब-ए-तयम्मुम, मतबअ' मलिक संज़, फ़ैसलाबाद, 1/32 [2] अल-किफ़ाया म'अ फ़तह अल-क़दीर, बाब-ए-तयम्मुम, मतबअ' नूरिया रज़विया, सक्खर, 1/166

[عربی متن]: علیه وعلی آله الطیبین واصحابه المطیبین المطببین وتابعیهم باحسان الی یوم الدین صلاة الله وسلامه کل أن وحین من ازل الآزال الی ابد الأبدین آمین وعلینا بهم یا ارحم الراحمین*

[اردو ترجمہ]: ان پر اور ان کی پاکیزہ آل، پاکیزہ کیے ہوئے پاکیزہ کرنے والے اصحاب، اور روزِ جزا تک بھلائی کے ساتھ ان حضرات کی پیروی کرنے والوں پر خدا کی جانب سے ہر لمحہ وبہر آن، ازلوں کے ازل سے، ابدوں کے ابد تک درود وسلام قبول فرما اور ان کے طفیل ہم پر بھی اے سب رحم کرنے والوں سے بڑھ کر رحم فرمانے والے۔ (ت)

اقول: وباللہ التوفیق (میں کہتا ہوں اللہ تعالٰی کی مدد سے۔ ت) اگر کوئی شخص جنب ہواور اس کے ساتھ کوئی ایسا حادث بھی ہو جو وضو واجب کرے مثلاً پیشاب کیا تھا اس کے بعد جماع کیا یا احتلام سے اٹھا پھر پیشاب کیا اور حالت یہ ہو کہ وہ نہا نہ سکے اور وضو کر سکے خواہ یوں کہ جنگل میں ہے اور پانی صرف وضو کے قابل ہے یا یوں کہ مریض ہے نہانا مضر ہے وضو سے ضرر نہیں یا یوں کہ صبح تنگ وقت محتلم اٹھا نہائے تو وقت نکل جائے گا اور وضو کی گنجائش ہے اس صورت میں قول امام زفر پر فتوٰی ہے کہ محافظت وقت کیلئے تیمم سے پڑھ لے احتیاطاً اس پر عمل کرے پھر رعایت اصل مذہب بعد خروج وقت پانی سے طہارت کرکے اعادہ کرے جس کا بیان ہمارے رسالہ "الظفر لقول زفر" میں گزرا۔ اور اب بحمدہ تعالٰی اس کی اور تائید قوی پائی کتب جلیلہ معتمدہ محیط وذخیرہ وبنایہ امام عینی میں ہے

[عربی اقتباس]: شرع التیمم لدفع الحرج وصیانة الوقت عن الفوات[1]۔ [اردو ترجمہ]: تیمم حرج کے دفعیہ اور وقت کو فوت ہونے سے بچانے کیلئے مشروع ہوا ہے۔ (ت)

کفایہ میں ہے:

[عربی اقتباس]: التیمم شرع لصیانة الصلاة عن الفوات (الی ان قال) فلما جوز الشرع التیمم لتوھم الفوات لأن یجوز عند تحقق الفوات اولی[2]۔ [اردو ترجمہ]: تیمم اس لئے مشروع ہوا کہ فوت ہونے سے نماز کی حفاظت ہو (یہاں تک کہ فرمایا) تو جب شریعت نے فوت ہونے کے وہم کی وجہ سے تیمم جائز کیا تو فوت ہونے کے تحقق ویقین کے وقت بدرجہ اولیٰ جائز ہوگا۔ (ت)

1 البنایة شرح الھدایة باب التیمم مطبع ملک سنز، فیصل آباد 32/1 2 الکفایة مع فتح القدیر باب التیمم مطبع نوریہ رضویہ سکھر 166/1

Fatawa Razawiyya Volume 4 In all these cases, the ruling is to perform only Tayammum (dry ablution). Even if ablution with water is not harmful and there is enough water available and enough time as well, one should not perform it at all. The same Tayammum performed for major impurity (Janabat) will also suffice for minor impurity (Hadath). There are numerous proofs for this in the books of the school of thought: First Proof: It is explicitly stated in general reliable books that according to our Imams (may Allah be pleased with them), water and soil cannot be combined in one purification. For example, if a person in a state of minor impurity has enough water to wash their face and hands, or a person in a state of major impurity has enough water to perform ablution or wash the whole body except for a few fingers' width, the ruling for them is to perform only Tayammum. There is absolutely no need to use water in those places because as long as an area even the size of a fingernail remains unwashed, the states of minor and major impurity will persist as they were. There will not be even an iota of reduction in them because every impurity, small or large, comes all at once and leaves all at once. There are no parts to it such that some part of the body is currently affected by minor or major impurity and some are not, or that it leaves some parts now and others after some time. And when after use, the impurity remains exactly as it was, then why use water? Similarly, if most of the limbs for ablution of a person in minor impurity or most of the body of a person in major impurity are injured, they should perform Tayammum. It is not that they wash the healthy parts and perform Tayammum for the rest. It is stated in Tabyin al-Haqa'iq by Imam Fakhruddin al-Zayla'i: "Allah Almighty commanded us with one of the two purifications as a substitute and did not command us to combine them. Whoever combines them has combined the original and the substitute, thus acting contrary to the text." Translation: Allah Almighty gave us the command for one of the two purifications as a substitute, and did not command to combine both. One who brings both together has combined the original and the substitute and acted contrary to the clear text (Nass). (T) It is stated in Al-Binayah by Imam Ayni: "He became unable to perform part of the original, so its count along with the substitute in one state is dropped, just like one who is unable to provide part of a neck in expiation. And it is not necessary to object in this case if he had washed some limbs and then the water ran out, because what preceded is dropped and he becomes the one fulfilling the obligation through Tayammum specifically." Translation: He became unable to perform part of the original, so its consideration along with the substitute at the same time is dropped, like two people who become unable to provide some part of a slave in expiation. An objection will not

be necessary in this case when he has washed some limbs and then the water is finished, because what happened before will be dropped and he will be the one fulfilling the obligation specifically with Tayammum. (T)

1 Tabyin al-Haqa'iq, Chapter of Tayammum, Amiriya Press, Egypt, 1/21. 2 Al-Binayah Sharh al-Hidayah, Chapter on Water with which Ablution is Permissible, Malik Sons Faisalabad, 1/322. Page 192 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द 4 इन सब सूरतों में हुक्म यह है कि सिर्फ तयम्मुम करे और वुज़ू अगरचे मुज़िर (नुकसानदेह) नहीं और इसके काबिल पानी भी मौजूद है और वक्त में भी इसकी वुसअत (गुंजाइश) है, असला न करे। वही तयम्मुम जो जनाबत (बड़ी नापाकी) के लिए करेगा, हदस (छोटी नापाकी) के लिए भी काफी हो जाएगा। कुतुबे मज़हब (मज़हब की किताबों) से इस पर दलायले कसीरा (अनेक प्रमाण) हैं: दलील अव्वल: आम मोअतमादात (विश्वसनीय पुस्तकों) में तसरीह (स्पष्ट व्याख्या) है कि हमारे आइम्मा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के नज़दीक एक तहारत (पवित्रता) में पानी और मिट्टी जमा नहीं हो सकते। मसलन मुहदिस (बिना वुज़ू वाले) के पास इतना पानी है कि हाथ-मुँह धो ले या जुनबी (जिस पर गुस्ल वाजिब हो) के पास इतना कि वुज़ू कर ले या सारा बदन धो ले मगर चंद उंगल जगह रह जाए तो उसे हुक्म है कि सिर्फ तयम्मुम करे। उन मवाज़े (जगहों) में पानी खर्च करने की असलन हाजत नहीं कि जब तक नाख़ुन भर जगह बाकी रह जाएगी, हदस व जनाबत बदस्तूर रहेंगे। उनमें ज़र्रा भर भी कम न होगा कि हर हदस छोटा या बड़ा आता है तो एक साथ और जाता है तो एक साथ। इसमें हिस्से नहीं कि बाज़ बदन को हदस या जनाबत अब लाहिक (लगी) हो बाज़ को फिर या बाज़ बदन से अब दूर हो जाए और बाज़ से कुछ देर में। और जब धोने के बाद भी हदस बदस्तूर है तो पानी का खर्च क्या ज़रूरी? यूँ ही अगर मुहदिस के अक्सर आज़ाए वुज़ू या जुनबी का अक्सर बदन मजरूह (ज़ख्मी) हो तो तयम्मुम करें। यह नहीं कि जितना बदन सही है उतना धोएँ और बाकी के लिए तयम्मुम। तबीयुल हकइिक इमाम फखरुद्दीन ज़ैलई में है: "अल्लाह तआला ने हमें बदल (विकल्प) के तौर पर दो तहारतों में से एक का हुक्म दिया और हमें उन दोनों को जमा करने का हुक्म नहीं दिया। और जिसने उन दोनों को जमा किया, उसने असल और बदल को यकजा (इकट्ठा) कर दिया, तो वह नस्स (स्पष्ट आदेश) के खिलाफ हो गया।" अनुवाद: अल्लाह तआला ने हमें बतौर बदल दो तहारतों में से एक का हुक्म दिया, दोनों को जमा करने का हुक्म न दिया। जो दोनों को इकट्ठा करे वह असल और बदल को यकजा करके नस्स का मुखालिफ (विरोधी) हुआ। (त) बनाया इमाम ऐनी में है: "वह असल के कुछ हिस्से से आजिज़ (असमर्थ) हो गया, तो बदल के साथ एक ही हालत में उसका शुमार साकित (निरस्त) है, जैसे जो कफ़्फ़ारे में गर्दन के कुछ हिस्से से आजिज़ हो जाए। और इस सूरत में एतराज़ लाज़िम नहीं आएगा जब वह कुछ आज़ा (अंग) धो चुका हो और फिर पानी खत्म हो गया हो, क्योंकि जो पहले हुआ वह साकित हो जाएगा और वह खास तौर पर तयम्मुम से फ़र्ज़ अदा करने वाला होगा।" अनुवाद: वह असल के कुछ हिस्से से आजिज़ हो गया तो बदल के साथ बैक वक्त उसका शुमार साकित है जैसे दो शख्स कफ़्फ़ारे में बरदा (गुलाम) के बाज़ हिस्से से आजिज़ हो जाए। इस पर इस सूरत से एतराज़ न लाज़िम आएगा जब कुछ आज़ा धो चुका हो फिर पानी खत्म हो

गया, इसलिए कि जो पहले हुआ वह साकित हो जाएगा और वह खास तयम्मुम से फ़र्ज़ अदा करने वाला होगा। (त)

1 तबीयुल हकइिक, बाबुत्तयम्मुम, मतबअ अमीरिया मिस्र, 1/21 2 अल-बिनाया शरह अल-हिदाया, बाबुल माअल्लज़ी यजूज़ु बिहिल वुज़ू, मलिक संस फ़ैसलाबाद, 1/322 पेज 192/761

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم ان سب صورتوں میں حکم یہ ہے کہ صرف تیمم کرے اور وضو اگر چہ مضر نہیں اور اس کے قابل پانی بھی موجود اور وقت میں بھی اس کی وسعت ہے اصلا نہ کرے وہی تیمم کہ جنابت کیلئے کرے گا حدث کے لئے بھی کافی ہو جائے گا۔ کتب مذہب سے اس پر دلائل کثیرہ ہیں: دلیل اول: عامہ معتمدات میں تصریح ہے کہ ہمارے ائمہ رضی اللہ تعالٰی عنہم کے نزدیک ایک طہارت میں پانی اور مٹی جمع نہیں ہوسکتے مثلاً محدث کے پاس اتنا پانی ہے کہ ہاتھ منہ دھو لے یا جنب کے پاس اتنا کہ وضو کر لے یا سارا بدن دھو لے مگر چند انُگل جگہ رہ جائے تو اسے حکم ہے کہ صرف تیمم کرے ان مواضع میں پانی خرچ کرنے کی اصلاً حاجت نہیں کہ جب تک ناخن بھر جگہ باقی رہ جائے گی حدث وجنابت بدستور رہیں گے ان میں ذرہ بھر بھی کم نہ ہو گا کہ ہر حدث ۲ چھوٹا یا بڑا آتا ہے تو ایک ساتھ اور جاتا ہے تو ایک ساتھ اس میں حصے نہیں کہ بعض بدن کو حدث یا جنابت اب لاحق ہو بعض کو پھر یا بعض بدن سے اب دُور ہو جائے اور بعض سے کچھ دیر میں اور جب بعد صرف بھی حدث بدستور تو پانی کا خرچ کیا ضرور۔ یوں ۳ ہی اگر محدث کے اکثر اعضائے وضو یا جنب کا اکثر بدن مجروح ہو تیمم کریں یہ نہیں کہ جتنا بدن صحیح ہے اتنا دھوئیں اور باقی کے لئے تیمم۔ تبیین الحقائق امام فخر الدین زیلعی میں ہے: انہ تعالٰی امرنا باحدی الطہارتین علی البدل ولم یامرنا بالجمع بینہما ومن جمع بینہما فقد جمع بین الاصل والبدل فصار مخالفاً للنص ۱۔ اللہ تعالٰی نے ہمیں بطور بدل دو طہارتوں میں سے ایک کا حکم دیا ، دونوں کو جمع کرنے کا حکم نہ دیا۔ جو دونوں کو اکٹھا کرے وہ اصل اور بدل کو یکجا کر کے نص کا مخالف ہوا۔ (ت) بنایہ امام عینی میں ہے : انہ عجز عن بعض الاصل فیسقط الاعتداد بہ مع البدل فی حالۃ واحدۃ کمن عجز عن بعض الرقبۃ فی الکفارۃ ولا یلزم (۴) اذا غسل بعض الاعضاء ثم نضب الماء لان ماتقدم یسقط ویصیر مؤدیا للفرض بالتیمم خاصۃ ۲۔ وہ اصل کے کچھ حصہ سے

عاجز ہو گیا تو بدل کے ساتھ بیک وقت اس کا شمار ساقط ہے جیسے دو شخص کفارہ میں بردہ کے بعض حصہ سے عاجز ہو جائے اس پر اس صورت سے اعتراض نہ لازم آئے گا جب کچھ اعضاء دھو چکا ہو پھر پانی ختم ہو گیا اس لئے کہ جو پہلے ہوا وہ ساقط ہو جائے گا اور وہ خاص تیمم سے فرض ادا کرنے والا ہوگا۔ (ت)

۱ تبیین الحقائق، باب التیمم، مطبعہ امیریہ مصر ۱ / ۲۱ ۲ البنایہ شرح الہدایہ، باب الماء الذی یجوز بہ الوضوء، ملک سنز فیصل آباد ۱ / ۳۲۲ Page 192 of 761

Fatawa Razawiya Volume Four

It is stated in Hulya of the researcher Ibn Amir al-Hajj: [Arabic Text:] "Know that the answer to these issues branches out from a religious principle, which is that combining the performance of a single purification with both water and dust together is not permissible according to our companions. This is because water is the original and dust is the substitute, and combining the original and the substitute in a single ruling has no parallel in Islamic law. Do you not see that (1) expiation with wealth is not completed with fasting, nor vice versa, and (2) the waiting period ('iddah) of a menstruating woman is not completed with months, nor is the waiting period of those who count by months completed with menstruation."[1] [Urdu Translation:] It should be clear that the answer to these issues is based on a religious principle. That is, mixing both water and dust at the same time for performing a single purification is impermissible according to our scholars. This is because water is the original and dust is its deputy. And there is no precedent in Shariah for combining the original and the substitute within one command. See, the payment of expiation through wealth is not completed by fasting. Similarly, vice versa is also not true. In the same way, the waiting period of a menstruating woman is not completed by months, nor is the waiting period of those who count by months completed by menstruation. (T)

It is stated in Ikhtiyar Sharh al-Mukhtar, then in Khazanat al-Muftiyeen: [Arabic Text:] "One who has a wound and is obliged to take a bath should wash his body except for the wounded area and should not perform tayammum. Similarly, if the wound is on the limbs of wudu (ablution), for combining both is a combination of the substitute and the substituted, and there is no parallel for it in Shariah."[2] [Urdu Translation:] A person who has a wound and needs to perform ghusl (bath) should wash his body except for that spot and should not do tayammum. Likewise, when there is a wound on the limbs of wudu, (he should wash the rest, leaving that spot) because combining both is combining the substitute and the substituted, and there is no precedent for it in Shariah. (T)

It is stated in Bada'i al-Sana'i of Imam Malik al-Ulama: [Arabic Text:] "If there is a wound or smallpox on some limbs of a person in a state of major ritual impurity (junub), if the majority is affected, he should perform tayammum, because consideration is given to the majority. He does not wash the healthy part according to us, unlike Imam Shafi'i, because combining ghusl and..." [Urdu Translation:] If a person in a state of junub has wounds or smallpox on some parts of the body, if most

of it is affected, he should perform tayammum, because the majority part is what counts. And according to us, there is no need to wash the healthy part. This is contrary to Imam Shafi'i. The reason is that washing and performing tayammum both...

Footnotes: [1] Hulya [2] Ikhtiyar Sharh al-Mukhtar, end of Chapter on Tayammum, Matba al-Babi Egypt, 1/23.

फ़तावा रज़विया जिल्द चहारम

मुहक़्क़िक़ इब्ने अमीर अल-हाज की 'हुलिया' में है: [अरबी पाठ:] "जान लें कि इन समस्याओं का उत्तर एक धार्मिक सिद्धांत से निकलता है, वह यह है कि पानी और मिट्टी दोनों के साथ एक ही शुद्धि (तहारत) की अदायگی को मिलाना हमारे साथियों (विद्वानों) के निकट जायज़ नहीं है। क्योंकि पानी मूल (अस्ल) है और मिट्टी उसका विकल्प (बदल) है, और एक ही हुक्म के अंदर मूल और विकल्प दोनों को जमा करने का शरीयत में कोई उदाहरण नहीं है। क्या आप नहीं देखते कि (1) माल के ज़रिये कफ़्फ़ारा की अदायगी रोज़े से पूरी नहीं होती और न ही इसके विपरीत, और (2) मासिक धर्म वाली महिला की इद्दत महीनों से और महीनों वाली की इद्दत मासिक धर्म से पूरी नहीं होती।"[1] [उर्दू अनुवाद:] स्पष्ट हो कि इन समस्याओं का उत्तर एक धार्मिक नियम पर आधारित है। वह यह कि एक ही तहारत की अदायगी एक साथ पानी और मिट्टी दोनों से मिला कर करना हमारे असहाब (विद्वानों) के निकट नाजायज़ (नामशरू) है। इसलिए कि पानी अस्ल है और मिट्टी नायब (प्रतिनिधि/विकल्प) है। और एक हुक्म के अंदर अस्ल और बदल दोनों को जमा करने की शरीयत में कोई नज़ीर (मिसाल) नहीं है। देखिये, माल के ज़रिये कफ़्फ़ारे की अदायगी रोज़े से पूरी नहीं की जाती। इसी तरह इसके विपरीत भी नहीं होता। वैसे ही हैज़ (मासिक धर्म) वाली की इद्दत महीनों से और महीनों वाली की इद्दत हैज़ से मुकम्मल नहीं होती। (त)

'इख़्तियार शरह मुख़्तार', फिर 'खज़ानतुल मुफ़्तीन' में है: [अरबी पाठ:] "जिसे घाव हो और उस पर ग़ुस्ल अनिवार्य हो, तो वह उस स्थान को छोड़कर अपने शरीर को धो ले और तयम्मुम न करे। इसी तरह जब वुज़ू के अंगों में घाव हो, क्योंकि दोनों को जमा करना बदल और मुबदल (जिसका विकल्प हो) को जमा करना है, और शरीयत में इसकी कोई नज़ीर नहीं है।"[2] [उर्दू अनुवाद:] जिसे ज़ख़्म हो और उसे ग़ुस्ल करना हो तो वह उस जगह को छोड़ कर अपने बदन को धोए और तयम्मुम न करे। इसी तरह जब अंगों के वुज़ू में घाव (जराहत) हो (तो वह जगह छोड़ कर बाक़ी धोए), इसलिए कि दोनों को जमा करना बदल और मुबदल को जमा करना है और शरीयत में इसकी कोई नज़ीर (मिसाल) नहीं। (त)

इमाम मलिकुल उलमा की 'बदाए-उस-सनाए' में है: [अरबी पाठ:] "यदि जुनुब (जिस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो) के कुछ अंगों में ज़ख़्म या चेचक हो, तो यदि अधिकांश हिस्सा प्रभावित हो तो वह तयम्मुम करे, क्योंकि एतबार अधिकांश (ग़ालिब) का होता है। और हमारे नज़दीक स्वस्थ हिस्से को धोना आवश्यक नहीं है, इमाम शाफ़ई के विपरीत। वजह यह है कि धोना और तयम्मुम दोनों को..." [उर्दू अनुवाद:]

जुनुब के कुछ अंगों में ज़ख़्म या चेचक हो तो अगर अक्सर हिस्सा सक़ीम (बीमार/प्रभावित) है तो तयम्मुम करे, इसलिए कि एतबार अक्सर का है और सही हिस्से को हमारे नज़दीक धोना नहीं है। इमाम शाफ़ई के ख़िलाफ़। वजह यह है कि धोना और तयम्मुम दोनों को...

पाद-टिप्पणी: 1 हुलिया 2 इख़्तियार शरह मुख़्तार, तयम्मुम के अध्याय के अंत में, मतबा अल-बाबी मिस्र, 1/23.

पृष्ठ 193 / 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

حلیہ محقق ابن امیر الحاج میں ہے: اعلم ان الجواب في هذه المسائل يتفرع على اصل مذهبي وهو ان تلفيق اقامة الطهارة الواحدة بالماء والتراب معاً غير مشروع عند اصحابنا لان الماء اصل والتراب خلف والجمع بين الاصل والبدل في حكم واحد لا نظير له في الشرع الا ترى ان (۱) التكفير بالمال لا يكمل بالصوم ولا بالعكس ولا عدة (۲) الحائض بالأشهر ولا ذوات الاشهر بالحيض 1. واضح ہو کہ ان مسائل کا جواب ایک مذہبی قاعدہ پر متفرع ہے۔ وہ یہ کہ ایک ہی طہارت کی ادائیگی بیک وقت پانی اور مٹی دونوں سے مخلوط کرنا ہمارے اصحاب کے نزدیک نامشروع ہے۔ اس لئے کہ پانی اصل ہے اور مٹی نائب ہے۔ اور ایک حکم کے اندر اصل اور بدل دونوں کو جمع کرنے کی شریعت میں کوئی نظیر نہیں دیکھئے مال کے ذریعہ کفارہ کی ادائیگی روزے سے پوری نہیں کی جاتی۔ اسی طرح برعکس بھی نہیں یونہی حیض والی کی عدت مہینوں سے اور مہینوں والی کی عدت حیض سے تکمیل نہیں پاتی۔ (ت)

اختیار شرح مختار پھر خزانہ المفتیین میں ہے: من به جراحة وعليه الغسل غسل بدنه الا موضعها ولا يتيمم وكذلك اذا كانت في اعضاء الوضوء لان الجمع بينهما جمع بين البدل والمبدل ولا نظير له في الشرع 2. جسے زخم ہو اور اس کو غسل کرنا ہے تو وہ جگہ چھوڑ کر اپنے بدن کو دھوئے اور تیمم نہ کرے۔ اسی طرح جب اعضائے وضو میں جراحت ہو (تو وہ جگہ چھوڑ کر باقی دھوئے) اس لئے کہ دونوں کو جمع کرنا بدل اور مبدل کو جمع کرنا ہے اور شریعت میں اس کی کوئی نظیر نہیں۔ (ت)

بدائع امام ملک العلماء میں ہے: لو كان ببعض اعضاء الجنب جراحة او جدرى فان كان الغالب هو السقيم تيمم لان العبرة للغالب ولا يغسل الصحيح عندنا خلافا للشافعي لان الجمع بين الغسل و جنب کے

بعض اعضاء میں زخم یا چیچک ہو تو اگر اکثر حصہ سقیم ہے تیمم کرے اس لئے کہ اعتبار اکثر کا ہے اور صحیح حصہ کو ہمارے نزدیک دھونا نہیں ہے۔ بخلاف امام شافعی کے۔ وجہ یہ ہے کہ دھونا اور تیمم دونوں کو

1 حلیہ 2 اختیار شرح مختار آخر باب التیمم مطبع البابی مصر ۲۳/۱

Fatawa Razawiyya, Volume 4

[Arabic Box:] Tayammum is prevented except in the case of doubt regarding the purification of water, and it has not occurred. [End of his noble speech]. (T) [Urdu Box:] Combining is prevented except when there is doubt about the purification of water, and this doubt does not exist. (His noble discourse ended). (T)

[Arabic Box:] I say: rather, not even in it (1), because in reality, one of them is correct and the other is legally non-existent (ma’doom shara’an). Thus, performing both together is only in form (suwaratan). [Urdu Box:] I say: rather, not even in this state, because in reality, only one of them is correct and the other is legally non-existent, so combining is only in form. (T)

It is in Kanz al-Daqaiq and Tanwir al-Absar:

[Arabic Box:] They shall not combine both, meaning Tayammum and Ghusl (washing). (2) [The word 'Ghusl' in] Durr-e-Mukhtar is with a 'fatha' on the 'ghayn' so that it encompasses both purifications. (3) [Shami from H]. [Urdu Box:] They shall not combine the two, i.e., Tayammum and Ghusl (washing). In Durr-e-Mukhtar, 'Ghusl' with a fatha on its 'ain' [first letter] so it includes both purifications. Shami from Halabi. (T)

[Arabic Box:] I say: Every (2) imaginer cannot imagine combining Tayammum and Ghusl (with a damma on ghayn). [Urdu Box:] I say: rather, no one can even imagine that Tayammum and Ghusl (with damma) will be combined. (T)

Second proof: It is a clear and absolute instruction that even if a person in the state of ritual impurity (Junub) has enough water for Wudu, they should not perform Wudu but only Tayammum. There is a consensus (ijma') in the Hanafi school on this, while Shafi'i and Hanbali schools have a dispute. In Jawahir al-Fatawa of Imam Kirmani, chapter four, it says:

[Arabic Box:] Then I saw it in Shami on the authority of Al-Bahr; he said: "Because the obligation is fulfilled by one of them, not both. So we combined them due to doubt." (4) [End]. Then I saw the exact same thing in Al-Tabyin. 12 May he be forgiven. (M) [Urdu Box:] Then I saw it in Shami with reference to Al-Bahr, where he said: "Because the obligation is fulfilled by one, not both. Therefore, due to doubt, we combined

both." [End]. Then I saw the same thing in Al-Tabyin as well. 12 May he be forgiven. (T)

1. Bada'i al-Sanai', conditions of Tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/51
2. Durr-e-Mukhtar, chapter on Tayammum, Mujtabai Delhi, 1/45
3. Radd al-Muhtar, chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Egypt, 1/189
4. Radd al-Muhtar, chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Egypt, 1/189/1

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4

[अरबी बॉक्स:] तयम्मुम वर्जित है सिवाय उस स्थिति के जब पानी की शुद्धता में संदेह हो, और यह (संदेह) मौजूद नहीं है। [उनका महान प्रवचन समाप्त हुआ]। (त) [उर्दू बॉक्स:] जमा करना वर्जित है मगर जबकि पानी की शुद्धता में शक हो और यह शक मौजूद नहीं। (उनका कलाम शरीफ़ ख़त्म हुआ)। (त)

[अरबी बॉक्स:] मैं कहता हूँ: बल्कि, उसमें भी नहीं (1), क्योंकि हकीकत में उनमें से एक सही है और दूसरा शरीयत की दृष्टि से अस्तित्वहीन (मादूम शरअन) है, इसलिए जमा करना केवल औपचारिक (सूरत में) है। [उर्दू बॉक्स:] मैं कहता हूँ: बल्कि इस हालत में भी नहीं, इसलिए कि हकीकत में दोनों में से एक ही दुरुस्त है और दूसरा शरीयत के अनुसार नदारद है, तो जमा करना सिर्फ औपचारिक है। (त)

कंज अद-दकाइक और तनवीर अल-अब्सार में है:

[अरबी बॉक्स:] उन दोनों को जमा नहीं किया जाएगा, यानी तयम्मुम और गुस्ल (धोना)। (2) दुर्र-ए-मुख्तार में 'ग़ैन' पर फ़त्हा के साथ ताकि दोनों पाक साफ होने को शामिल कर सके। (3) [शामी अज़ह]। [उर्दू बॉक्स:] दोनों को जमा न करेगा यानी तयम्मुम और गुस्ल (धोने) को -- दुर्र-ए-मुख्तार में गुस्ल के पहले अक्षर पर फ़त्हा के साथ ताकि दोनों पाकियों को शामिल हो जाए। शामी अज़ हलबी। (त)

[अरबी बॉक्स:] मैं कहता हूँ: किसी भी कल्पना करने वाले के लिए यह कल्पना करना मुमकिन नहीं कि तयम्मुम और गुस्ल (दम्मा के साथ) को जमा किया जाए। [उर्दू बॉक्स:] मैं कहता हूँ: बल्कि कोई यह वहम नहीं कर सकता कि तयम्मुम और गुस्ल (दम्मा के साथ) जमा होगा। (त)

दूसरा प्रमाण: साफ़ और निरपेक्ष आदेश है कि जुनूब (अशुद्धि की स्थिति में व्यक्ति) के पास भले ही वुज़ू के लिए पर्याप्त पानी हो, वह वुज़ू न करे बल्कि केवल तयम्मुम करे। हनफी मज़हब का इस पर इज्मा (आम सहमति) है, जबकि शाफई और हनबली का इस पर विवाद है। इमाम किरमानी की जवाहर अल-फ़तावा के चौथे अध्याय में है:

[अरबी बॉक्स:] फिर मैंने इसे शामी में अल-बहर के हवाले से देखा; उन्होंने कहा: "चूंकि फ़र्ज़ उनमें से एक से अदा होता है, दोनों से नहीं। इसलिए हमने संदेह के कारण दोनों को मिला दिया।" (4) [समाप्त]। फिर मैंने वही चीज़ अल-तबीन में देखी। 12 मय वह क्षमा किया जाए। (म) [उर्दू बॉक्स:]

फिर मैंने इसे शामी में बहर के हवाले से देखा, फ़रमाया: "क्योंकि फ़र्ज़ एक ही से अदा होता है, दोनों से नहीं, इसलिए शक की वजह से हमने दोनों को जमा किया।" [समाप्त]। फिर बिल्कुल यही बात मैंने तबीन में भी देखी। 12 मय वह क्षमा किया जाए। (त)

1. बदाइ' अल-सनाइ', तयम्मुम की शर्तें, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/51
2. दुर्र-ए-मुख्तार, तयम्मुम का अध्याय, मुजतबाई दिल्ली, 1/45
3. रद अल-मुह्तार, तयम्मुम का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/189
4. रद अल-मुह्तार, तयम्मुम का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/189/1

पृष्ठ 194 / 761

فتاوٰی رضویہ، جلد چہارم

[عربی باکس:] التیمم ممتنع الا في حال وقوع الشك في طھورية الماء ولم یوجد اه کلامه الشریف - [اردو باکس:] جمع کرنا ممتنع ہے مگر جبکہ پانی کی طہوریت میں شک ہو اور یہ شک موجود نہیں۔ (ان کا کلام شریف ختم ہوا) (ت)

[عربی باکس:] اقول: عه بل ولافیها (1) لان الصحیح في الواقع احدهما والآخر معدوم شرعاً فلا جمع الاصورة - [اردو باکس:] اقول: بلکہ اس حالت میں بھی نہیں اس لئے کہ فی الواقع دونوں میں سے ایک ہی درست ہے اور دوسرا شرعاً معدوم ہے تو جمع کرنا صرف صورۃً ہے۔ (ت)

کنز الدقائق و تنویر الابصار میں ہے:

[عربی باکس:] لا یجمع بینهما ای تیمم وغسل 2 درمختار بفتح الغین لیعم الطهارتین 3 ش عن ح - [اردو باکس:] دونوں کو جمع نہ کرے گا یعنی تیمم اور غسل (دھونے) کو -- در مختار غسل عین کے فتحہ کے ساتھ تاکہ دونوں طہارتوں کو شامل ہو جائے۔ شامی از حلبی۔ (ت)

[عربی باکس:] اقول: کل (۲) لیس لمتوهم ان یتوهم الجمع بین التیمم والغسل بالضم - [اردو باکس:] اقول: بلکہ کوئی یہ وہم نہیں کر سکتا کہ تیمم اور غسل (بالضم) جمع ہوگا۔ (ت)

دلیل دوم: صاف مطلق ارشاد ہے کہ جنب کے پاس اگرچہ وضو کے لئے کافی پانی موجود ہو وضو نہ کرے صرف تیمم کرے اور یہ کہ مذہب حنفی کا اس پر اجماع ہے شافعی و حنبلی کو نزاع ہے۔ جواہر الفتاوٰی امام کرمانی باب رابع میں ہے:

[عربی باکس:] عه ثم رأیته في ش عن البحر قال لان الفرض یتأدی باحدهما لا بهما فجمعنا بینهما بالشك 4 اه ثم رأیته بعینه في التبیین ۱۲ منه غفرله (م) [اردو باکس:] پھر میں نے اسے شامی میں

بحر کے حوالہ سے دیکھا فرمایا: اس لئے کہ فرض ایک ہی سے ادا ہوتا ہے دونوں سے نہیں تو شک کی وجہ سے ہم نے دونوں کو جمع کیا اھ پھر بعینہ یہی میں نے تبیین میں بھی دیکھا ۱۲ منہ غفرلہ۔ (ت)

۱ بدائع الصنائع شرائط تیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۵۱ ۲ در مختار، باب التیمم، مجتبائی دہلی ۱/۴۵ ۳ رد المحتار، باب التیمم، مصطفی البابی مصر ۱/۱۸۹ ۴ رد المحتار، باب التیمم، مصطفی البابی مصر ۱/۱۸۹/۱

Fatawa Razawiyyah Volume 4

“A person in a state of major ritual impurity (janaba) in a desert who has water sufficient only for wudu (minor ablution) should perform tayammum (dry ablution) and not use the water.”[1] (Reference: Nawazil of Imam Ajal Faqih Abu al-Layth, also found in Khazanat al-Muftin)

“A traveler who becomes junub (ritually impure) and has water enough only for wudu, should perform tayammum.”[2] (Reference: In Khulasah)

“If a traveler becomes junub and does not find water except the amount needed for wudu, according to us [Hanafis], he should perform tayammum and not do wudu.”[3] (Reference: In Al-Kafi)

“A person in janaba who has water sufficient for wudu should perform tayammum and not do wudu. According to Imam Shafi'i, he should perform wudu and then perform tayammum.”[4] (Reference: In Al-Hilyah)

“Indeed, seeing water only invalidates [the tayammum] if it is sufficient for wudu in the case of a person with minor impurity, or sufficient for ghusl (major ritual bath) in the case of a person with major impurity; otherwise, it does not. This is a branch of the principle that if one finds insufficient water at the beginning, he should not use it for a part of the area to be purified but rather leave it.”

Footnotes: 1. Jawahir al-Fatawa 2. Khazanat al-Muftin 3. Khulasat al-Fatawa, Chapter 5 on Tayammum, Nawal Kishore Lucknow 1/33 4. Al-Kafi

Page 195 of 761

फ़तावा रज़विया खंड 4

"एक व्यक्ति जो किसी जंगल में बड़ी अशुद्धि (जनाबत) की स्थिति में है और उसके पास केवल वुज़ू (लघु स्नान) के लिए पर्याप्त पानी है। वह तयम्मुम (सूखा स्नान) करेगा और उस पानी का उपयोग नहीं करेगा।"[1] (संदर्भ: नवाज़िल इमाम अजल फ़क़ीह अबू अल-लैथ, फिर खज़ानत अल-मुफ़्तीन में है)

"एक यात्री जो जुनुब (अनुष्ठानिक रूप से अशुद्ध) हो गया और उसके पास केवल वुज़ू के लिए पर्याप्त पानी है, वह तयम्मुम करेगा।"[2] (संदर्भ: खुलासा में है)

"यदि यात्री जुनुब हो जाता है और उसे वुज़ू के लिए आवश्यक मात्रा के अलावा पानी नहीं मिलता है, तो हमारे पास [हनाफ़ियों के अनुसार] वह तयम्मुम करेगा और वुज़ू नहीं करेगा।"[3] (संदर्भ: काफ़ी में है)

"जनाबत की स्थिति में एक व्यक्ति जिसके पास वुज़ू के लिए पर्याप्त पानी है, वह तयम्मुम करे और वुज़ू न करे। इमाम शाफ़ई के अनुसार, वह वुज़ू करे और फिर तयम्मुम करे।"[4] (संदर्भ: हिलिया में है)

"वास्तव में, पानी देखना केवल तभी [तयम्मुम को] अमान्य करता है जब वह छोटी अशुद्धि वाले व्यक्ति के लिए वुज़ू के लिए पर्याप्त हो, या बड़ी अशुद्धि वाले व्यक्ति के लिए ग़ुस्ल (पूर्ण स्नान) के लिए पर्याप्त हो; अन्यथा नहीं। यह इस सिद्धांत की एक शाखा है कि यदि किसी को शुरुआत में अपर्याप्त पानी मिलता है, तो उसे पवित्रता के स्थान के एक हिस्से में इसका उपयोग नहीं करना चाहिए, बल्कि इसे छोड़ देना चाहिए।"

पादलेख: 1. जवाहर अल-फ़तावा 2. खज़ानत अल-मुफ़्तीन 3. खुलासत अल-फ़तावा, तयम्मुम पर पांचवां अध्याय, नवल किशोर लखनऊ 1/33 4. काफ़ी

पृष्ठ 195 / 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

جنب فی مفازۃ معہ من الماء مایکفی لوضوئہ فانہ یتیمم ولایستعمل الماء -1 کسی بیابان میں جنابت والا ہے جس کے پاس اتنا پانی ہے جو اس کے وضو کے لئے کفایت کرے تو وہ تیمم کرے گا اور پانی استعمال نہیں کرے گا۔ (ت) نوازل امام اجل فقیہ ابواللیث پھر خزانۃ المفتین میں ہے:

مسافرا جنب ومعہ ماء یکفی للوضوء فانہ یتیمم -2 کوئی مسافر جنب ہوا اور اس کے پاس اتنا پانی ہے جو وضو کے لئے کفایت کرے تو وہ تیمم کرے گا۔ (ت) خلاصہ میں ہے:

فان اجنب المسافر ولم یجد من الماء الاقدر ما یتوضأ فانہ یتیمم ولا یتوضأ عندنا -3 اگر مسافر جنب ہوا اور اسے اسی قدر پانی ملا کہ وضو کرے تو ہمارے نزدیک وہ تیمم کرے گا اور وضو نہیں کرے گا۔ (ت) کافی میں ہے:

جنب معہ ماء کاف للوضوء تیمم ولم یتوضأ وعند الشافعی توضأ ثم تیمم -4 جنب ہے جس کے پاس وضو کے لئے بقدر کفایت پانی ہے وہ تیمم کرے اور وضو نہ کرے اور امام شافعی کے نزدیک وضو کرے پھر تیمم کرے۔ (ت) حلیہ میں ہے:

انما تنقض رؤیۃ الماء اذا کان یکفی للوضوٗ ان کان محدثا او الاغتسال ان کان جنبا والا لا وھذا فرع انہ فی الابتداء اذا وجد مالا یکفیہ لا یستعملہ فی بعض محل الطھارۃ بل یترکہ پانی دیکھنا اسی وقت ناقض ہوتا ہے جبکہ بے وضو تھا تو اتنا پانی ہو جو وضو کے لئے کافی ہو اور جنب تھا تو اتنا جو غسل کے لئے کافی ہو ورنہ ناقض نہیں اور یہ اس کی فرع ہے کہ ابتدا میں جب اسے ناکافی پانی ملے تو اسے محل طہارت کے ایک حصے میں استعمال نہ کرے بلکہ چھوڑ دے۔

حواشی: 1. جواہر الفتاوی 2. خزانۃ المفتین 3. خلاصۃ الفتاوی، الفصل الخامس فی التیمم، نولکشور لکھنؤ ۱/ ۳۳ 4. کافی

صفحہ 195 از 761

Fatawa Rizvia, Volume 4

"...and he shall perform Tayammum and nothing else. This is the opinion of our companions, Malik, and others; rather, al-Baghawi has narrated it from most of the scholars." [1] (He will not perform Wudu but will leave it and only perform Tayammum. This is the saying of our companions and Imam Malik etc., rather Baghawi has narrated it from most of the scholars.) (T)

In Al-Ghunya it is mentioned: "One who is obligated to perform Ghusl, if he performs Tayammum and then finds water that is insufficient for his Ghusl, or one who is in a state of minor ritual impurity (Muhdith) finds water insufficient for his Wudu, his Tayammum is not invalidated. And even if he had that amount of water before Tayammum, it would have been permissible for him to perform Tayammum without using it, contrary to [the opinions of] Ash-Shafi'i and Ahmad, may Allah the Almighty have mercy on them." [2] (For one on whom Ghusl is obligatory, when he performs Tayammum and then finds such amount of water which is insufficient for Ghusl, or a person without Wudu finds such amount of water which is insufficient for Wudu, then Tayammum will not break. And if such amount of water was present before Tayammum, even then Tayammum would be permissible for him without using it, unlike Imam Shafi'i and Imam Ahmad, may Allah the Almighty have mercy on them both.) (T)

Similarly, it is in many books, even in Sharh al-Wiqayah itself: "If a person in a state of major ritual impurity (Junub) has enough water for Wudu but not for Ghusl, he performs Tayammum, and it is not obligatory for him to perform Wudu according to us, contrary to [the opinion of] Ash-Shafi'i, may Allah the Almighty be pleased with him." [3] (When a Junub has enough water for Wudu but not for Ghusl, he should perform Tayammum, and according to us, Wudu is not obligatory for him, contrary to Imam Shafi'i, may Allah the Almighty be pleased with him.) (T)

And from the most noble and greatest redactor of the school of law (Madhab), Imam Muhammad, may Allah the Almighty be pleased with him, it is stated in 'Kitab al-Asl': "[If someone] became Junub and has only enough water for Wudu, he performs Tayammum and prays." [4] End of quote. This was quoted in Al-Kifayah and Al-Ghunya in the chapter of Masah al-Khuffayn (wiping over leather socks) under the statement "Wiping is not permissible for one who is obligated to perform Ghusl." [5] (He became Junub and he has only that much water which is enough for Wudu, then he should perform Tayammum and offer prayer. End of quote. This was quoted in Al-

Kifayah and Al-Ghunya in the chapter of Masah al-Khuffayn under the saying "Wiping over socks is not permissible for one on whom Ghusl is obligatory".) (T)

Footnotes: 1. Hilyat al-Mustamli, Chapter on Tayammum, Suhail Academy Lahore, p. 84 2. Al-Ghunya, Chapter on Tayammum, Maktaba Rashidiya Delhi, 1/95 3. Sharh al-Wiqayah, Chapter on Tayammum, Maktaba Rashidiya Delhi, 1/95 4. Al-Kifayah with Fath al-Qadir, Chapter on Masah al-Khuffayn, Maktaba Nooriya Razavia Sukkur 1/135 5. Al-Kifayah with Fath al-Qadir, Chapter on Masah al-Khuffayn, Maktaba Nooriya Razavia Sukkur 1/135

फतावा रजविया, खंड 4

"...और वह केवल तयम्मुम करेगा, इसके अलावा कुछ नहीं। यह हमारे साथियों, मालिक और अन्य लोगों का मत है; बल्कि, अल-बग़वी ने इसे अधिकांश विद्वानों से उद्धृत किया है।" [1] (वह वज़ू नहीं करेगा बल्कि उसे छोड़ देगा और केवल तयम्मुम करेगा। यह हमारे साथियों और इमाम मालिक आदि का कथन है, बल्कि बग़वी ने इसे अधिकांश विद्वानों से वर्णित किया है।) (टी)

ग़ुन्या में है: "जिस पर गुस्ल अनिवार्य है, यदि वह तयम्मुम करता है और फिर उसे इतना पानी मिलता है जो उसके गुस्ल के लिए अपर्याप्त है, या जो लघु अशुद्धि (मुहदिथ) की स्थिति में है, उसे वज़ू के लिए अपर्याप्त पानी मिलता है, तो उसका तयम्मुम अमान्य नहीं होता है। और यदि उसके पास तयम्मुम से पहले उतना पानी होता, तब भी उसके लिए उसका उपयोग किए बिना तयम्मुम करना जायज़ होता, अल-शाफ़ई और अहमद के विपरीत, अल्लाह सर्वशक्तिमान उन दोनों पर दया करे।" [2] (जिस पर गुस्ल फ़र्ज़ है, जब वह तयम्मुम कर ले फिर उसे इतना पानी मिले जो गुस्ल के लिए नाकाफ़ी हो या बे-वज़ू को इतना पानी मिले जो वज़ू के लिए काफ़ी न हो तो तयम्मुम नहीं टूटेगा। और अगर तयम्मुम से पहले इतना पानी होता तो भी उसे इस्तेमाल किए बिना उसके लिए तयम्मुम जायज़ होता, इमाम शाफ़ई और इमाम अहमद रहिमहुमुल्लाहु तआला के विपरीत।) (टी)

इसी तरह कई किताबों में है, यहाँ तक कि खुद शरह अल-विक़ाया में भी है: "यदि बड़ी अशुद्धि (जुनुब) की स्थिति वाले व्यक्ति के पास वज़ू के लिए पर्याप्त पानी है लेकिन गुस्ल के लिए नहीं, तो वह तयम्मुम करता है, और हमारे अनुसार उसके लिए वज़ू करना अनिवार्य नहीं है, अल-शाफ़ई के विपरीत, अल्लाह उन पर प्रसन्न हो।" [3] (जब जुनुब के पास इतना पानी हो जो वज़ू के लिए काफ़ी हो गुस्ल के लिए नहीं, तो वह तयम्मुम करे और उस पर वज़ू हमारे नज़दीक वाजिब नहीं, इमाम शाफ़ई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के विपरीत।) (टी)

और सबसे महान और श्रेष्ठ मज़हब के संपादक, इमाम मुहम्मद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का 'किताब अल-अस्ल' में इरशाद है: "[यदि कोई] जुनुब हो गया और उसके पास केवल वज़ू के लिए पर्याप्त पानी है, तो वह तयम्मुम करता है और नमाज़ पढ़ता है।" [4] अह. इसका उल्लेख अल-किफ़ाया और अल-गुन्या में, मसह अल-ख़ुफ़्फ़ैन (मोज़ों पर मसह) के अध्याय में, इस कथन के तहत किया गया है, "मसह उस व्यक्ति के लिए अनुमेय नहीं है जिस पर गुस्ल अनिवार्य है।" [5] (जुनुब हुआ और उसके पास इतना ही पानी है जो वज़ू के लिए काफ़ी हो तो वह तयम्मुम करे और नमाज़ पढ़े। अह. इसे

किफ़ाया और ग़ुन्या के फ़स्ल मसह अल-ख़ुफ़्फ़ैन में "ला यजूज़ुल मसह लि-मन अलैहिल गुस्ल" के तहत नक़ल किया गया है।) (टी)

पाद-टिप्पणियाँ: 1. हिल्लियत अल-मुस्तमली, तयम्मुम का अध्याय, सुहैल अकादमी लाहौर, पृ. 84 2. अल-ग़ुन्या, तयम्मुम का अध्याय, मकतबा रशीदिया दिल्ली, 1/95 3. शरह अल-विक़ाया, तयम्मुम का अध्याय, मकतबा रशीदिया दिल्ली, 1/95 4. अल-किफ़ाया साथ फ़तह अल-क़दीर, मसह अल-ख़ुफ़्फ़ैन का अध्याय, मकतबा नूरिया रज़विया सुक्कुर 1/135 5. अल-किफ़ाया साथ फ़तह अल-क़दीर, मसह अल-ख़ुफ़्फ़ैन का अध्याय, मकतबा नूरिया रज़विया सुक्कुर 1/135

جلد چہارم فتاوٰی رضویہ ویتیمم لاغیر وھذا قول اصحابنا ومالك وغیرہ بل حکاہ البغوی عن اکثر العلماء - 1 نہیں کرے گا بلکہ اسے چھوڑ دے گا اور صرف تیمّم کرے گا۔ یہ ہمارے اصحاب اور امام مالک وغیرہ کا قول ہے بلکہ بغوی نے اسے اکثر علماء سے حکایت کیا ہے۔ (ت)

غنیہ میں ہے: من علیه الغسل اذا تیمم ثم وجد ماء لا یکفي لغسله او المحدث ماء غیر کاف لوضوئه لا ینتقض تیممه ولو کان معه ذلك قبل التیمم جاز له التیمم بدون استعمال خلافا للشافعي واحمد رحمهما الله تعالی - 2 جس کے اوپر غسل فرض ہے جب وہ تیمّم کرلے پھر اسے اتنا پانی ملے جو غسل کے لئے نا کافی ہو یا بے وضو کو اتنا پانی ملے جو وضو کے لئے کافی نہ ہو تو تیمّم نہ ٹوٹے گا اور اگر قبل تیمّم اتنا پانی ہوتا تو بھی اسے استعمال کیے بغیر اس کے لئے تیمّم جائز ہوتا، بخلاف امام شافعی و امام احمد رحمہما اللہ تعالٰی کے۔ (ت)

اسی طرح کتب کثیرہ حتّی کہ خود شرح وقایہ میں ہے: اذا کان للجنب ماء یکفي للوضوء لا للغسل یتیمم ولا یجب علیه التوضؤ عندنا خلافا للشافعي رضی اللہ تعالی عنه - 3 جب جنب کے پاس اتنا پانی ہو جو وضو کے لئے کافی ہو غسل کے لئے نہیں، تو وہ تیمّم کرے اور اس پر وضو ہمارے نزدیک واجب نہیں بخلاف امام شافعی رضی اللہ تعالٰی عنہ کے۔ (ت)

اور سب سے اجل و اعظم محرر المذہب امام محمد رضی اللہ تعالٰی عنہ کا کتاب الاصل میں ارشاد ہے: اجنب وعنده ماء یکفی للوضوء تیمم وصلی - 4 اھ اثرہ في الکفایة والغنیة فصل مسح الخفین تحت قوله لا یجوز المسح لمن علیه الغسل - 5 جنب ہوا اور اس کے پاس اتنا ہی پانی ہے جو وضو کے لئے کافی ہو تو وہ تیمّم کرے اور نماز پڑھے۔ اھ اسے کفایہ اور غنیہ فصل مسح الخفین میں زیر قول "لایجور المسح لمن علیہ الغسل" نقل کیا (ت)

1 حلیہ المستملی، باب التیمم، سہیل اکیڈمی لاہور، ص ۸۴ 2 غنیہ، باب التیمم، مکتبہ رشیدیہ دہلی، ۹۵/۱ 3 شرح الوقایہ، باب التیمم، مکتبہ رشیدیہ دہلی، ۹۵/۱ 4 الکفایۃ مع فتح القدیر باب المسح علی الخفین مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱ / ۱۳۵ 5 الکفایۃ مع فتح القدیر باب المسح علی الخفین مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱ / ۱۳۵

Fatawa Razawiya Volume 4

It is apparent that the state of major ritual impurity (janabat) is likely not separate from minor ritual impurity (hadath). If intercourse occurred, before it there was provocative physical intimacy; and if a nocturnal emission occurred, before it there was sleep. And absolutely, ejaculation does not occur without the prior discharge of pre-seminal fluid (madhi). Similarly, urinating after every ejaculation is a common and continuous habit, and it is required medically and even Sharia-wise so that any remaining semen separated with desire is expelled, otherwise if it comes out after a ritual bath (ghusl), one would have to bathe again. Thus it became clear that common states of major impurity carry both preceding and succeeding minor impurities with them. Then there is the clarification in all books that if a person in major impurity is unable to perform ghusl but is able to perform wudu, even then he should not perform wudu but only perform tayammum (dry ablution). This is explicit evidence that tayammum for major impurity removes all existing minor impurities at that time. So why perform wudu? Eminent jurists do not often consider rare cases. The occurrence of minor impurity alongside major impurity is so frequent and dominant that their separation is very rare. So in this situation, if wudu was also required for the minor impurity along with tayammum for major impurity, then such a general rule would have been rational: if a person in major impurity cannot perform ghusl but is able to perform wudu, then wudu is necessary along with tayammum. They did not disregard the rare case of separation, but rather, by setting aside the dominant case, they gave a general rule. In 'Shami' it is stated: 'Nay, in the matter of major impurity, it is not detached from a minor impurity that necessitates wudu.' (End of quote). (That is: major impurity is not separate from minor impurity necessitating wudu. (T))

وهذا ظاہرہ اللزوم اقول: ان (۴) حمل علی الغالب والا فبلی کمن اجنب ولم یجد الامایکفی | للوضوء فتیمم ثم احدث فتوضأ ثم وجد مایکفی للغسل فقد عاد جنبا من دون حدث۔ | This apparent meaning implies necessity. I say: If it is carried upon the predominant case, then it is correct; otherwise, why would major impurity not be separate from minor impurity? An example is a person who became 'junub' (in major impurity) and found only enough water for wudu, so he performed tayammum. Then a minor impurity occurred, so he performed wudu. Then he found enough water for ghusl. Now he is 'junub' again; his major impurity is separate from minor impurity. (T) |

Third evidence: They state clearly that if a person in major impurity has enough water for wudu, then wudu is incumbent upon him in the situation where a minor impurity

occurs after tayammum for major impurity. Many passages follow. And in 'Nawazil' of Imam Faqih Abu al-Layth, then in 'Khizanat-ul-Muftin', it is stated:

| اذا احدث بعد التيمم ومعه مايكفى | When a minor impurity occurs after tayammum and he has enough [water for wudu] |

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/178

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

यह ज़ाहिर है कि जनाबत (बड़ी नापाकी) अक्सर हदस (छोटी नापाकी) से अलग नहीं होती। अगर संभोग हुआ, तो उससे पहले उत्तेजक शारीरिक निकटता थी; और अगर स्वप्नदोष हुआ, तो उससे पहले नींद थी। और बिल्कुल, वीर्यपात (इन्ज़ाल) बिना पहले मज़ी (पतला तरल) निकले नहीं होता। इसी तरह, हर वीर्यपात के बाद पेशाब करना एक सामान्य निरंतर आदत है, और यह चिकित्सकीय और शरीयत के लिहाज़ से भी आवश्यक है ताकि इच्छा के साथ अलग हुए वीर्य का शेष भाग निकल जाए, वरना अगर नहाने (ग़ुस्ल) के बाद निकला तो दोबारा नहाना होगा। तो यह स्पष्ट हुआ कि सामान्य जनाबतें अपने साथ पहले और बाद के दोनों हदस रखती हैं। फिर तमाम किताबों की स्पष्ट व्याख्या है कि अगर जुनूब (بڑی नापाकी वाला व्यक्ति) ग़ुस्ल करने से लाचार हो और वज़ू पर सक्षम हो, तब भी वह वज़ू न करे बल्कि केवल तयम्मुम करे। यह स्पष्ट प्रमाण है कि जनाबत का तयम्मुम उस समय मौजूद तमाम हदसों को दूर करने वाला है। तो वज़ू क्यों किया जाए? बड़े फ़क़ीह (विधिवेत्ता) अक्सर दुर्लभ मामलों का लिहाज़ नहीं करते। जनाबत के साथ हदस का होना इतना अधिक और प्रबल है कि उनका अलग होना बहुत ही दुर्लभ है। तो इस स्थिति में, यदि जनाबत के साथ हदस के लिए वज़ू की भी आवश्यकता होती, तो इस तरह का सामान्य नियम समझ में आता कि जुनूब यदि ग़ुस्ल न कर सके और वज़ू पर सक्षम हो, तो तयम्मुम के साथ वज़ू अनिवार्य है। उन्होंने दुर्लभ विलगन का लिहाज़ नहीं किया, बल्कि प्रबल मामले को अनदेखा करके ऐसा सामान्य नियम दिया। 'शामी' में है: 'बल्कि जनाबत के मामले में, यह वज़ू को अनिवार्य करने वाले हदस से अलग नहीं होती।' (उद्धरण समाप्त)। (यानी: जनाबत वज़ू अनिवार्य करने वाले हदस से अलग नहीं होती। (त))

| وهذا ظاہرہ اللزوم اقول: ان (۴) حمل علی الغالب والا فبلی کمن اجنب ولم یجد الامایکفی للوضوء فتیمم ثم احدث فتوضأ ثم وجد مایکفی للغسل فقد عاد جنبا من دون حدث۔ | इसका ज़ाहिर यही बताता है कि जनाबत और हदस में आवश्यकता है। मैं कहता हूँ: यदि इसे प्रबल स्थिति पर लागू किया जाए तो ठीक है, वरना जनाबत हदस से अलग क्यों नहीं होती? इसका उदाहरण यह है कि कोई व्यक्ति जुनूब हुआ और उसे उतना ही पानी मिला जो वज़ू के लिए पर्याप्त हो, तो उसने तयम्मुम किया। फिर उसे हदस हुआ तो उसने वज़ू किया। फिर उसे इतना पानी मिला जो ग़ुस्ल के लिए काफी है। अब वह फिर जुनूब हो गया; उसकी जनाबत हदस से अलग है। (त) |

तीसरा प्रमाण: वे स्पष्ट करते हैं कि जुनूब के पास वज़ू के लिए पर्याप्त पानी हो, तो उस पर वज़ू उस स्थिति में है जब जनाबत के तयम्मुम के बाद हदस घटित हो। आगे बहुत सी इबारतें (पाठ) आती हैं। और इमाम फ़क़ीह अबू लैथ की 'नवाज़िल' और फिर 'ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन' में है:

| اذا احدث بعد التيمم ومعه مايكفى | जब तयम्मुम के बाद हदस हो और उसके पास वज़ू के लिए पर्याप्त पानी हो |

1. रद्द अल-मुह्तार, तयम्मुम का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, 1/178 पृष्ठ 197/761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

ظاہر ہے کہ جنابت غالباً حدث سے جدا نہیں ہوتی اگر جماع کیا تو اس سے پہلے مباشرت فاحشہ تھی اور احتلام ہوا تو اس سے پہلے سونا تھا اور مطلقاً انزال بے سبقت خروج مذی نہیں ہوتا یوں ہی بعد ہر انزال بول عادات مستمرہ عامہ سے ہے اور طبّاً بلکہ شرعاً بھی مطلوب کہ منی منفصل بشہوت کا جو بقیہ ہو خارج ہو جائے ورنہ بعد غسل نکلا تو دوبارہ نہانا ہوگا تو ظاہر ہوا کہ عام جنابتیں حدث سابق و حدث لاحق دونوں اپنے ساتھ رکھتی ہیں پھر تمام کتب کی تصریح کہ جنب غسل سے عاجز ہو اور وضو پر قادر جب بھی وضو نہ کرے صرف تیمم کرے دلیل صریح ہے کہ جنابت کا تیمم اس وقت جتنے بھی حدث موجود ہوں سب کا رافع ہے تو وضو کیا ضرور فقہائے کرام نادر صورت کا اکثر لحاظ نہیں فرماتے جنابت کے ساتھ حدث کا ہونا تو اس درجہ کثیر وغالب ہے کہ مفارقت ہی شاذ نادر ہے تو اس حالت میں اگر تیمم جنابت کے ساتھ حدث کے لئے وضو بھی درکار ہوتا تو یوں عام حکم معقول تھا کہ جنب اگر غسل نہ کر سکے اور وضو پر قادر ہو تو تیمم کے ساتھ وضو لازم ہے کہ صورت نادرہ افتراق کا لحاظ نہ فرمایا نہ کہ غالب کو ساقط النظر فرما کر یوں عام حکم دیں بل في ش الجنابة لاتنفك عن حدث يوجب الوضوء اھ (بلکہ شامی میں ہے : جنابت وضو واجب کرنے والے حدث سے جدا نہیں ہوتی۔ (ت))

| وهذا ظاهره اللزوم اقول: ان (۴) حمل على الغالب والا فبلى كمن اجنب ولم يجد الامايكفى للوضوء فتيمم ثم احدث فتوضأ ثم وجد مايكفى للغسل فقد عاد جنبا من دون حدث۔ | اس عبارت کا ظاہر یہی بتاتا ہے کہ جنابت اور حدث میں لزوم اقول: اسے اگر اکثر پر محمول کریں تو ٹھیک ہے ورنہ جنابت حدث سے جدا کیوں نہیں ہوتی؟ اس کی مثال یہ ہے کہ کوئی شخص جنب ہوا اور اسے اتنا ہی پانی ملا جو وضو کے لئے کفایت کر سکے تو اس نے تیمم کیا پھر اسے حدث ہوا تو وضو کیا

پھر اسے اتنا پانی ملا جو غسل کے لئے کافی ہے اب وہ پھر جنب ہو گیا اس کی جنابت حدث سے جُدا ہے۔ (ت) |

دلیل سوم: تصریح فرماتے ہیں کہ جنب کے پاس وضو کے لئے کافی پانی ہو تو اس پر وضو اس حالت میں ہے کہ جنابت کے لئے تیمم کے بعد حدث واقع ہو بہت عبارات آگے آتی ہیں اور نواز ل امام فقیہ ابواللیث پھر خزانتہ المفتین میں ہے :

| اذا احدث بعد التیمم ومعہ مایکفی | جب اس تیمم کے بعد حدث ہو اور اس کے پاس وضو |

1 رد المحتار باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱/۱۷۸ Page 197 of 761

Fatawa Razviya, Volume 4

- [Arabic]: ...for Wudu, then he shall perform Wudu with it. [1]
- [Urdu]: ...if there is enough water for Wudu, he shall perform Wudu with it. (T)

In Fath al-Qadir, Durar al-Hukkam, Sharh Nuqaya by Al-Birjandi, and Bahr al-Ra'iq, even in Sharh Wiqayah itself, in the section of wiping over leather socks (Masah al-Khuffayn), it is stated:

- [Arabic]: The wording is from him: He performed Tayammum for major ritual impurity (Janabat); if after that a minor ritual impurity (Hadath) occurs, he should perform Wudu. [2]
- [Urdu]: The words are from Sharh Wiqayah itself: He performed Tayammum for Janabat; if after that a Hadath occurs, he should perform Wudu. (T)

This restriction clearly indicates that the Wudu is not required for a minor impurity that occurred before the Tayammum for major impurity; this same Tayammum will also remove it. In fact, in the book Al-Mabsut, after the mentioned text, the author of the school states:

- [Arabic]: Then (1) if a minor impurity occurs and he has that water with him, he should perform Wudu. [3]
- [Urdu]: Then if a Hadath occurs and he has that water with him, he should perform Wudu. (T)

The ruling for Wudu was given for the minor impurity that occurs after Tayammum for major impurity.

[Table/Columns Section] [Left Column - Arabic]: If you say, what do you do with what is narrated in Al-Inayah, even if it is with the phrase 'it was said' (qila) regarding this original issue? For it says under the statement of Al-Hidayah 'Wiping is not permissible for one upon whom Ghusl is obligatory', it was said its form is: he performed Wudu and wore the leather socks, then major impurity (Janabat) occurred, then he found water sufficient for Wudu but not for Ghusl. So, he performs Wudu and washes his feet, and does not perform wiping (Masah), and performs Tayammum.

[Right Column - Urdu]: If it is asked: What should be done with what is narrated in Al-Inayah regarding the same issue in Al-Mabsut, even if it is with the word 'it was said'

(qila)? The text of Al-Hidayah is: 'Wiping is not permissible for one upon whom Ghusl is obligatory'. Under this, the author of Al-Inayah writes: 'It is said that its situation is: he performed Wudu, wore the leather socks, then Janabat occurred, then he found so much water which could suffice for Wudu [but not] for Ghusl...'

[Bottom Section] [Left Column - Arabic]: Note: This is in my copy of Al-Birjandi as a reference to An-Nihayah, but in Al-Bahr it is narrated from An-Nihayah: 'Ghusl cannot be attained while the leather socks are being worn.' Ah. And Allah the Almighty knows best. 12 (numbering), may he be forgiven. (M)

[Right Column - Urdu]: In my copy of Al-Birjandi, there is a reference to An-Nihayah regarding this, but in Bahr it is narrated from An-Nihayah: 'Ghusl cannot be performed while the leather socks are being worn. Ah.' And Allah the Great and Exalted knows best. 12 from him, may he be forgiven. (T)

Footnotes: 1. Khizanat al-Muftin 2. Sharh al-Wiqayah, Chapter on Tayammum, Maktaba Rashidiya Delhi, 1/108 3. Mabsut Imam Muhammad, Chapter on Tayammum, Idarat al-Qur'an Karachi, 1/71

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4

- [अरबी]: ...वज़ू के लिए, तो वह उससे वज़ू करेगा। [1]
- [उर्दू]: ...वज़ू के लिए बक़दरे किफायत पानी हो तो उससे वज़ू करेगा। (त)

फ़त्ह अल-क़दीर, दुरर अल-हुक्काम, शरह नुक़ाया (अल-बिरजंदी द्वारा), और बहर अल-राइक़ में, यहाँ तक कि स्वयं शरह विक़ाया में, मसह अल-ख़ुफ़ैन (चमड़े के मोजों पर मसह) के अध्याय में उल्लेख है:

- [अरबी]: शब्द उसी के हैं: जनाबत के लिए तयम्मुम किया, अगर उसके बाद हदस (अशुद्धि) हो जाए तो वज़ू करे। [2]
- [उर्दू]: शब्द शरह विक़ाया के ही हैं: जनाबत का तयम्मुम किया अगर उसके बाद हदस हो तो वज़ू करे। (त)

यह पाबंदी साफ़ बता रही है कि तयम्मुम जनाबत से पहले जो हदस हो उसके लिए वज़ू की ज़रूरत नहीं है, यही तयम्मुम उसे भी दूर कर देगा। बल्कि स्वयं किताब अल-मब्सूत में उल्लेखित इबारत के बाद मज़हब के मुहर्रिर का इरशाद है:

- [अरबी]: फिर (1) अगर हदस हो और उसके पास वह पानी मौजूद हो, तो वह वज़ू करे। [3]
- [उर्दू]: फिर अगर हदस हो और उसके पास वह पानी मौजूद है तो वज़ू करे। (त)

तयम्मुम जनाबत के बाद जो हदस हुआ, उसमें वज़ू का हुक्म फ़रमाया।

[तालिका/कॉलम अनुभाग] [बायां कॉलम - अरबी]: अगर आप कहें कि इनाया में जो नकल किया गया है, उसका क्या करें, चाहे वह 'क़ील' (कहा गया) शब्द के साथ ही क्यों न हो इस असल मसले में? क्योंकि हिदाया के इस कथन के तहत कहा गया है 'उसके लिए मसह जायज़ नहीं है जिस पर गुस्ल वाजिब हो', यह कहा गया है कि इसकी सूरत यह है: उसने वज़ू किया और चमड़े के मोजे पहने, फिर जनाबत हुई, फिर उसे इतना पानी मिला जो वज़ू के लिए काफी था लेकिन गुस्ल के लिए नहीं। तो वह वज़ू करेगा और अपने पैर धोएगा, और मसह नहीं करेगा, और तयम्मुम करेगा।

[दायां कॉलम - उर्दू]: अगर सवाल हो कि उसका क्या किया जाए जो इनाया के अंदर इसी मसअले मब्सूत में नक़ल है, हालांकि 'क़ील' के लफ़्ज़ से है। हिदाया की इबारत है: 'उसके लिए मसह जायज़

नहीं जिसके ऊपर गुस्ल हो'। इसके तहत साहिब-ए-इनाया लिखते हैं: 'कहा गया इसकी सूरत यह है कि वज़ू करके मोज़ा पहन लिया फिर जनाबत हुई फिर इतना पानी मिला जो वज़ू के लिए किफ़ायत कर सकता है गुस्ल के लिए...'

[निचला अनुभाग] [बायां कॉलम - अरबी]: नोट: यह मेरे नुस्ख़ा-ए-बिरजंदी में निहाया के हवाले से है, लेकिन अल-बहर में निहाया से यह नक़ल है: 'मोज़ा पहने हुए गुस्ल मुमकिन नहीं है।' अह। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। 12, अल्लाह उसे माफ़ करे। (म)

[दायां कॉलम - उर्दू]: मेरी नुस्ख़ा-ए-बिरजंदी में इस पर निहाया का हवाला है लेकिन बहर में निहाया से यह नक़ल है: 'मोज़ा पहने हुए गुस्ल नहीं हो सकता अह।' और ख़ुदा-ए-बुज़ुर्ग-ओ-बर्तर खूब जानने वाला है। 12 मिन्हु (लेखक की ओर से), अल्लाह उन्हें माफ़ करे। (त)

फ़ुटनोट्स: 1. ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन 2. शरह अल-विक़ाया, बाबुल तयम्मुम, मक़्तबा रशीदिया दिल्ली, 1/108 3. मब्सूत इमाम मुहम्मद, बाबुल तयम्मुम, इदारतुल क़ुरआन कराची, 1/71

فتاوی رضویہ، جلد چہارم

- [Arabic]: للوضوء فإنه يتوضأ به 1
- [Urdu]: کے لئے بقدر کفایت پانی ہو تو اس سے وضو کرے گا۔ (ت)

فتح القدیر ودر الحکام و شرح نقایہ عہ بر جندی و بحر الرائق حتی کہ خود شرح وقایہ مسح الخفین میں ہے:

- [Arabic]: واللفظ له تيمم للجنابة فان احدث بعد ذلك توضأ 2.
- [Urdu]: الفاظ شرح وقایہ ہی کے ہیں: جنابت کا تیمم کیا اگر اس کے بعد حدث ہو تو وضو کرے۔ (ت)

یہ تقیید صاف بتا رہی ہے کہ تیمم جنابت سے پہلے جو حدث ہو اس کے لئے وضو نہیں یہی تیمم اسے بھی رفع کر دے گا بلکہ خود کتاب مبسوط میں ارشاد محرر المذہب بعد بعد عبارت مذکورہ ہے:

- [Arabic]: فان (۱) احدث وعنده ذلك الماء توضأ 3.
- [Urdu]: پھر اگر حدث ہو اور اس کے پاس وہ پانی موجود ہے تو وضو کرے۔ (ت)

تیمم جنابت کے بعد جو حدث ہوا اس میں حکم وضو فرمایا۔

[Left Column - Arabic] [Table/Columns Section]: فان قلت ما تفعل بما نقل فی العناية ولو بلفظة قيل فی مسألة الاصل هذه اذ قال تحت قول الهداية لا يجوز المسح لمن عليه الغسل قيل

صورته توضأ و لبس الخف ثم اجنب ثم وجد ماء یکفی للوضوء لا للاغتسال فإنه یتوضأ و یغسل رجلیه ولا یمسح ویتیمم

[Right Column - Urdu]: اگر سوال ہو اسے کیا کیا جائے جو عنایہ کے اندر اسی مسئلہ مبسوط میں نقل ہے اگرچہ "قیل" کے لفظ سے ہے۔ ہدایہ کی عبارت ہے: "اس کے لئے مسح جائز نہیں جس کے اوپر غسل ہو" اس کے تحت صاحبِ عنایہ لکھتے ہیں: "کہا گیا اس کی صورت یہ ہے کہ وضو کر کے موزہ پہن لیا پھر جنابت ہوئی پھر اتنا پانی ملا جو وضو کے لئے کفایت کر سکتا ہے غسل کے لئے

[Left Column - Arabic] [Bottom Section]: عه هو فی نسختی البرجندی معز وللنهایة لکن فی البحر عن النهایة لا یتأتی الاغتسال مع وجوه الخف ملبوسا اه واللہ تعالی اعلم ۱۲ منه غفر له (م)

[Right Column - Urdu]: میری نسخہ بر جندی میں اس پر نہایہ کا حوالہ ہے لیکن بحر میں نہایہ سے یہ نقل ہے: "موزہ ملبوس ہوتے ہوئے غسل نہیں ہو سکتا اہ " اور خدائے بزرگ و برتر خوب جاننے والا ہے ۱۲ منہ غفر لہ (ت)

حواشی: 1. خزانة المفتین 2. شرح الوقایہ باب التیمم مکتبہ رشیدیہ دہلی ۱۰۸/۱ 3. مبسوط امام محمد، باب التیمم، ادارة القرآن کراچی، ۱/۷۱

Fatawa Razawiyyah, Volume 4

...for ritual impurity (janaba). End. I say: May Allah Almighty have mercy on him. He did not mention 'hadath' (minor ritual impurity) at all. If the argument is based on his absolute mention, then wudu (ablution) would be obligatory even for a person in state of 'janaba' who has no 'hadath' and finds water for wudu. This is definitely false by the consensus of the Hanafis. Even the literal meaning of the forthcoming statement of the Imam, the commentator of 'Wiqaya', is not like this. Rather, its definite meaning is that when he needs wudu afterwards, he should perform wudu and wash his feet, as stated by Allama al-Wazir in 'al-Idah' and Shaykhzada in 'Majma' al-Anhur' regarding this very scenario. Both say: (1) 'Whoever put on his leather socks (khuffayn) while in a state of wudu and then became 'junub' (ritually impure) during the period of wiping (mash), he must remove his socks and wash his feet when he performs wudu.' End. (2) When the basis of the matter is the need for wudu, the statement does not support what you imagined. We say that he only needs it if 'hadath' occurs after his tayammum (dry ablution) for 'janaba'. The 'wa' (and) in his saying 'wa yata-yammamu' (and he performs tayammum) is not for chronological order. So the meaning is that then he should be 'junub', then for janaba...

1. Al-Inaya with Fath al-Qadir, Book of Tayammum, Maktaba Nooria Razvia Sukkur, 1/44
2. Majma' al-Anhur, Book of Wiping, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/46 Page 199 of 761

फ़तावा रज़विया, खंड 4

...जनाबत (बड़ी नापाकी) के लिए। (समाप्त) मैं कहता हूँ: अल्लाह तआला उन पर रहमत फरमाए। उन्होंने हदस (छोटी नापाकी) का तो कोई ज़िक्र ही नहीं किया। अगर उनके बिना किसी शर्त के ज़िक्र करने से दलील ली जाए, तो वज़ू ऐसे जुनूब (बड़ी नापाकी की स्थिति वाला) पर भी वाजिब होगा जिसके साथ कोई हदस नहीं और उसे वज़ू का पानी मिल गया, और यह हनफियों की आम सहमति (इज्मा) के अनुसार निश्चित रूप से गलत है। यहाँ तक कि इमाम शारह वक़ाया के आने वाले बयान का ज़ाहिरी मतलब भी यह नहीं है, बल्कि 'इनाया' के उपरोक्त बयान का अर्थ यह है कि इसके बाद जब उसे वज़ू की ज़रूरत हो, तो वह वज़ू करेगा और अपने पैर धोएगा, जैसा कि अल्लामा वज़ीर का 'अल-ईदाह' में और शेख़ज़ादा का 'मजमा-उल-अनहुर' में इसी मसले के वर्णन में बयान है। दोनों महानुभाव फ़रमाते हैं: (1) "जिसने वज़ू की हालत में अपने मोज़े पहने, फिर मसह की अवधि के दौरान जनाबत की स्थिति पैदा हो गई, तो वज़ू के समय वह अपने मोज़े उतारेगा और पैरों को धोएगा।" (समाप्त) (2) जब मामले की बुनियाद वज़ू की ज़रूरत पर है, तो बताए गए वहम (संदेह) पर इस इबारत (लेख) का कोई प्रमाण नहीं है। इसलिए कि हम कहते हैं कि उसे इसकी ज़रूरत उस समय होगी जब जनाबत का तयम्मुम करने के बाद उसे हदस हुआ। उनकी इबारत 'व यतयम्ममु' (और वह तयम्मुम करे) में 'वाव' (और) क्रम के लिए नहीं है। तो मतलब यह है कि फिर वह जुनूब हो तो जनाबत का...

1. अल-इनाया मअ फत्ह अल-क़दीर, बाब अल-तयम्मुम, मकतबा नूरिया रज़विया सुक्कुर, 1/44
2. मजमा अल-अनहुर, बाब अल-मसह, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 1/46 पृष्ठ 199/761

نہیں تو یہ وضو کرے گا اور اپنے پیروں کو دھوئے گا، مسح نہیں کرے گا اور جنابت کا تیمم کرے گا۔ (ت) اقول: اللہ تعالٰی ان پر رحمت فرمائے۔ انہوں نے حدث کا تو کوئی ذکر ہی نہ کیا۔ اگر ان کے بلا قید ذکر کرنے سے استدلال ہے تو وضو ایسے جنب پر بھی واجب ہو گا جس کے ساتھ کوئی حدث نہیں اور اسے وضو کا پانی مل گیا اور یہ باجماعِ حنفیہ قطعاً باطل ہے یہاں تک کہ امام شارح وقایہ کی آنے والی عبارت کا ظاہر بھی یہ نہیں بلکہ عنایہ کی عبارت بالا کا مطلب یہ ہے کہ اس کے بعد جب اسے وضو کی ضرورت ہو تو وضو کرے گا اور اپنے پیروں کو دھوئے گا جیسا کہ ایضاح میں علامہ وزیر کی عبارت اور مجمع الانہر میں شیخی زادہ کی عبارت خود اسی صورت مسئلہ کے بیان میں ہے دونوں حضرات فرماتے ہیں: (1) "جس نے وضو پر اپنے موزے پہنے پھر مدتِ مسح میں جنابت لاحق ہوئی تو وقتِ وضو اپنے موزے نکالے اور پیروں کو دھوئے" اھ (2) (ت) جب بنائے امر وضو کی احتیاج پر ہے تو مذکورہ وہم پر عبارت کی کوئی دلالت ہی نہیں۔ اس لئے کہ ہم کہتے ہیں اسے اس کی ضرورت اس وقت ہوگی جب جنابت کا تیمم کرنے کے بعد اسے حدث ہوا۔ ان کی عبارت "و یتیمم" میں واو ترتیب کا نہیں۔ تو معنی یہ ہے کہ پھر وہ جنب ہو تو جنابت کا...

1. العنایۃ مع فتح القدیر، باب التیمم، مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر، ۱/۴۴

2. مجمع الانہر باب المسح داراحیاء التراث العربی بیروت ۱/۴۶ Page 199 of 761

Fatawa Razawiyya - Volume 4

Found water, etc. One performs Tayammum, then an impurity occurs, then finds water, etc. And look at the statement of the virtuous Moin Al-Harawi in the commentary of Al-Kanz regarding the same case: "He performed ablution (Wudu) and put on leather socks (Khuff), then he became in a state of major ritual impurity (Janaba). He performed Tayammum for the Janaba, then a minor impurity (Hadath) occurred. Then, he found enough water which is sufficient only for Wudu, not for Ghusl. Therefore, he shall perform Wudu, wash his feet (instead of wiping over the socks), and perform Tayammum for the Janaba." End of quote. (T)

This statement is exactly the same as the statement in 'Al-Inaya', and everyone has expressed what they estimated. May Allah have mercy on brother Chalabi because he quoted this very statement from 'Al-Inaya' but omitted the phrase "and perform Tayammum for the Janaba" from it. And Allah the Almighty knows best. (T)

Fourth Argument: Its reasoning is stated as follows: the Tayammum performed previously does not remove the subsequent impurity (Hadath). It becomes clear that the Tayammum for Janaba also removes any impurity that occurred before it. In 'Al-Kafi' by the great Imam Abu Al-Barakat Al-Nasafi, it is written: A person in a state of major ritual impurity (Junub) performed Ghusl but a small spot remained dry and the water ran out. They should perform Tayammum due to the remaining Janaba, because Janaba is not divisible in its removal or presence (it is either fully removed or fully present). If they performed Tayammum and then a minor impurity (Hadath) occurred, they must perform Tayammum for that impurity because the Tayammum for Janaba preceded the impurity. Thus, it does not suffice for the subsequent impurity, just as if one performed Ghusl for Janaba and then an impurity occurred, they must perform Wudu, and the Ghusl does not suffice for the subsequent impurity.

1. Commentary on Al-Kanz by Al-Harawi with Fath al-Mu'in, Chapter on Wiping over Leather Socks, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/101. Page 200 of 761

फतावा रज़विया - जिल्द चहारुम

पानी मिल जाए इत्यादि। वह तयम्मुम करे, फिर उसे ह़दथ (छोटी नापाकी) हो, फिर पानी मिल जाए इत्यादि। फ़ाज़िल मोईन अल-हरवी का 'शर्ह अल-कन्ज़' में इसी मामले के विवरण में बयान देखें: "वुज़ू किया और मोज़ा पहन लिया, फिर उसे जनाबत (बड़ी नापाकी) हुई तो उसने जनाबत के लिए तयम्मुम किया, फिर उसे ह़दथ हुआ, फिर उसे इतना पानी मिला जो केवल वुज़ू के लिए पर्याप्त है, ग़ुस्ल के लिए नहीं, तो वह वुज़ू करेगा और अपने पैरों को धोएगा और मसह नहीं करेगा, और जनाबत के लिए तयम्मुम करेगा।" (इंतिहा - त)

यह इबारत (कथन) हुबहू 'अनाया' की इबारत है और हर एक ने अपना अंदाज़ा बयान किया है। अल्लाह ताला अख़ी चलबी पर रहम करे क्योंकि उन्होंने 'अनाया' की यही इबारत नक़ल की है और इसमें से उनका यह कथन "और जनाबत के लिए तयम्मुम करे" हटा दिया है। वल्लाहु ताला आलम (और अल्लाह बेहतर जानता है)। (त)

चौथी दलील: इसकी दलील यह देते हैं कि जो तयम्मुम पहले हो चुका वह बाद वाले ह़दथ को दूर नहीं करता। ज़ाहिर हुआ कि जनाबत के लिए तयम्मुम से पहले जो ह़दथ होगा, तयम्मुम उसे भी दूर कर देगा। इमाम जलील अबू अल-बरकात नसफ़ी की 'अल-काफ़ी' में है: जुनुब (बड़ी नापाकी की स्थिति वाला व्यक्ति) ने ग़ुस्ल किया, कुछ जगह सूखी रह गई और पानी ख़त्म हो गया, तो जनाबत बाक़ी रहने के कारण वह तयम्मुम करे, क्योंकि जनाबत हटने या रहने के मामले में खंडों में नहीं होती (जाती है तो एक साथ, आती है तो एक साथ)। तो अगर उसने तयम्मुम किया फिर उसे ह़दथ हुआ तो वह ह़दथ के लिए तयम्मुम करे, क्योंकि उसका जनाबत का तयम्मुम ह़दथ से पहले हो चुका था। तो बाद वाले ह़दथ के लिए यह पर्याप्त नहीं होगा, ठीक वैसे ही जैसे अगर किसी ने जनाबत के लिए ग़ुस्ल किया और फिर उसे ह़दथ हुआ तो उसे वुज़ू करना होगा, और वह ग़ुस्ल बाद वाले ह़दथ के लिए पर्याप्त नहीं होगा।

1. शर्ह अल-कन्ज़ अल-हरवी मा फ़तह अल-मुईन, बाब मसह अल-ख़ुफ़ैन, एच. एम. सईद कंपनी, कराची, 1/101। पृष्ठ 761 का 200

وجد الماء الخ تیمم کرے پھر اسے حدث ہو پھر پانی پائے الخ وانظر عبارة الفاضل معین الهروي في شرح الكنز في نفس التصوير توضأ ولبس الخف ثم اجنب فتيمم للجنابة ثم احدث ثم وجد ماء يكفي للوضوء لا للاغتسال فانه يتوضأ ويغسل رجليه ولا يمسح ويتيمم للجنابة اه (شرح کنز میں فاضل معین ہروی کی عبارت خود اسی صورت مسئلہ کے بیان میں ملاحظہ ہو: "وضو کیا اور موزہ پہن لیا پھر اسے جنابت ہوئی تو جنابت کا تیمم کیا پھر اسے حدث ہوا پھر اسے اتنا پانی ملا جو صرف وضو کے لئے کافی ہے غسل کے لئے نہیں تو وہ وضو کرے گا اور اپنے پیروں کو دھوئے گا اور مسح نہیں کرے گا اور جنابت کے لئے تیمم کرے گا" اھ) (ت)

فالعبارة عين عبارة العناية وقد ابرز كل ما قدره ورحم الله اخي جلبي اذ نقل عبارة العناية هذه واسقط منها قوله ويتيمم للجنابة والله تعالی اعلم۔ (یہ عبارت بعینہ عنایہ کی عبارت ہے اور ہر ایک نے اپنا اندازہ بیان کیا ہے اللہ تعالی اخی چلبی پر رحم کرے کیونکہ انہوں نے عنایہ کی یہی عبارت نقل کی ہے اور اس سے اس کا یہ قول "ویتیمم للجنابة" ساقط کردیا ہے واللہ تعالی اعلم-) (ت)

دلیل چہارم: اس کی تعلیل فرماتے ہیں کہ تیمم جو پہلے ہو چکا حدث متأخر کو زائل نہ کرے ظاہر ہوا کہ جنابت کے لئے تیمم سے پہلے جو حدث ہوگا تیمم اسے بھی زائل کردے گا۔ کافی امام جلیل ابو البرکات نسفی میں ہے: جنب (1) اغتسل وبقی لمعة وفني ماؤه يتيمم لبقاء الجنابة لانها لا تتجزى زوالا وثبوتا فان تيمم ثم احدث تيمم للحدث لان تيممه للجنابة متقدم على الحدث فلم يجز عن الحدث المتأخر كما لو اغتسل عن الجنابة ثم احدث عليه ان يتوضأ ولم يجز الاغتسال عن (جنب نے غسل کیا کچھ جگہ چمکتی رہ گئی اور اس کا پانی ختم ہوگیا تو جنابت باقی رہنے کی وجہ سے وہ تیمم کرے اس لئے کہ زائل ہونے اور ثابت ہونے کسی معاملہ میں جنابت حصہ حصہ نہیں ہوتی (جاتی ہے تو

ایک ساتھ ، آتی ہے تو ایک ساتھ) تو اگر اس نے تیمم کیا پھر اسے حدث ہوا تو حدث کے لئے تیمم کرے اس لئے کہ اس کا تیمم جنابت حدث سے پہلے ہوچکا۔ تو بعد والے حدث)

1 شرح الکنز للھروی مع فتح المعین باب مسح الخفین ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۰۱ صفحہ 200 از 761

Volume Four Fatawa Razvia

Subsequent Minor Impurity - 1 ...will not be sufficient. For example, if someone performed the bath (ghusl) for major ritual impurity (janabat) and then a minor ritual impurity (hadath) occurred, then he must perform ablution (wudu), and the previous bath will not suffice for the subsequent minor impurity. (T)

Fifth Argument: In its explanation, it is also stated that after performing tayammum (dry ablution) for major ritual impurity, if a minor impurity occurs, then the person is no longer considered 'junub' (in a state of major impurity), because the major impurity was removed by tayammum. He is now merely 'muhdith' (in a state of minor impurity), and since water is available for ablution, then ablution is mandatory. It is clearly indicated that even at that time, if he were still 'junub', he would not perform ablution, as tayammum alone would have been sufficient for removing both major and minor impurities. Otherwise, what would be the meaning of saying "and he is no longer junub"? This is more evident than needing further explanation (T). It is mentioned in 'Bada'i' by Malik al-Ulama:

[Arabic Text on Left Side of Table]: If a person in major impurity (junub) finds only enough water to perform ablution (wudu), tayammum is sufficient for him according to us. This is because if washing (performing ghusl) does not result in the validity of prayer, then engaging in it is foolishness, especially since it involves wasting (1) water, which is forbidden. It is similar to someone who finds (2) enough food for five poor people but instead expiates by fasting; it is permissible and he is not ordered to feed the five because there is no benefit. The same applies here, rather it is even more so, because in that case, it does not lead to wasting wealth since a reward is obtained through charity. Despite that, he was not commanded to do it for the reason we mentioned. So here it is even more appropriate. (2) And if a person in major impurity performed tayammum and then a minor impurity occurred after that, and he has some water...

[Urdu Translation on Right Side of Table]: When a person in a state of major ritual impurity (junub) finds only enough water to perform ablution (wudu), then according to us, tayammum will be sufficient for him. This is because if the benefit of the validity of prayer cannot be obtained by washing (performing ghusl with that limited water), then being occupied with it is foolishness. Moreover, it involves the waste of water, which is certainly forbidden. So, his case is like someone who found only enough to feed five poor people, but he chose to pay the expiation (kaffarah)

through fasting. This is permissible, and he will not be commanded to feed the five because it would be useless. Similarly, this case is like that, rather it is even more so, because in the other case, it does not lead to the waste of wealth since the reward for giving charity would be received. Despite this, if he was not commanded to do it, then here, it would even more so not be commanded. And if a person in major impurity performed tayammum and then after that...

Footnotes: 1. Kafi 2. Bada'i al-Sana'i, Conditions for Tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/50

खंड चार फ़तावा रज़विया

बाद की लघु अशुद्धि - 1 ...पर्याप्त नहीं होगा। उदाहरण के लिए, यदि किसी ने बड़ी अशुद्धि (जनाबत) के लिए स्नान (ग़ुस्ल) किया और फिर छोटी अशुद्धि (हदथ) हो गई, तो उसे वज़ू करना होगा, और पिछला स्नान बाद की अशुद्धि के लिए पर्याप्त नहीं होगा। (त)

पाँचवाँ तर्क इसके स्पष्टीकरण में यह भी कहा गया है कि बड़ी अशुद्धि के लिए तयम्मुम करने के बाद यदि छोटी अशुद्धि हो जाए, तो अब वह व्यक्ति 'जुनुब' (बड़ी अशुद्धि की स्थिति में) नहीं है, क्योंकि बड़ी अशुद्धि तयम्मुम से समाप्त हो चुकी है। वह अब केवल 'मुहदिस' (छोटी अशुद्धि की स्थिति में) है, और चूंकि वज़ू के लिए पानी उपलब्ध है, तो वज़ू अनिवार्य है। यह स्पष्ट रूप से संकेत दिया गया है कि उस समय भी यदि वह 'जुनुब' होता, तो वह वज़ू नहीं करता, क्योंकि केवल तयम्मुम ही बड़ी और छोटी दोनों अशुद्धियों को दूर करने के लिए पर्याप्त होता। अन्यथा, "और वह अब जुनुब नहीं है" कहने का क्या अर्थ होता? यह इतना स्पष्ट है कि इसे और अधिक स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं है (त)। मलिक अल-उलमा की 'बदाए' में उल्लेख है:

[अरबी पाठ]: "यदि किसी जुनुब (बड़ी अशुद्धि वाले व्यक्ति) को केवल वज़ू के लिए पर्याप्त पानी मिलता है, तो हमारे अनुसार उसके लिए तयम्मुम पर्याप्त है। क्योंकि यदि स्नान करने (ग़ुस्ल) से नमाज़ की वैधता का लाभ नहीं मिलता है, तो उसमें व्यस्त रहना मूर्खता है, विशेष रूप से इसमें पानी की बर्बादी (1) शामिल है, जो कि हराम है। यह उस व्यक्ति के समान है जिसे (2) केवल पाँच गरीबों को खिलाने के लिए पर्याप्त भोजन मिला, लेकिन उसने उपवास के माध्यम से कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) अदा किया; यह जायज़ है और उसे पाँच को खिलाने का आदेश नहीं दिया जाएगा क्योंकि इसका कोई लाभ नहीं है। यही बात यहाँ भी लागू होती है, और यह और भी अधिक है, क्योंकि उस मामले में, धन की बर्बादी नहीं होती क्योंकि दान देने से पुण्य प्राप्त होता है। इसके बावजूद, उसे वह करने का आदेश नहीं दिया गया जिस कारण हमने बताया। तो यहाँ यह और भी अधिक उपयुक्त है। (2) और यदि किसी जुनुब ने तयम्मुम किया और उसके बाद छोटी अशुद्धि हो गई, और उसके पास कुछ पानी है..."

[उर्दू अनुवाद]: "जुनुब को जब इतना ही पानी मिले जिससे सिर्फ वज़ू कर सके तो हमारे नज़दीक तयम्मुम उसे काफ़ी होगा इस लिये कि धोने से जब जवाज़े नमाज़ का फ़ायदा नहीं हासिल हो सकता तो इसमें मश्गूली बेवकूफ़ी है। साथ ही इसमें पानी की बर्बादी भी है और यक़ीनन ये हराम है। तो

उसका हाल उसकी तरह हुआ जिसे इसी क़दर मिला कि उससे पाँच मिसकीनों को खिला सके इसलिये उसने रोज़ों से कफ़्फ़ारा अदा किया तो जाइज़ है और उसे पाँच को खिलाने का हुक्म नहीं दिया जाएगा इसलिये कि बे फ़ायदा है। इसी तरह ये भी है बल्कि इससे बढ़ कर है इसलिये कि वहाँ माल की बर्बादी तक मामला नहीं पहुँचता क्यूँकि सदक़ा करने का सवाब मिल जाएगा, इसके बावजूद उसका उसे हुक्म न दिया गया तो यहाँ बदरजा ऊला हुक्म न होगा। और अगर जुनुब ने तयम्मुम किया फिर उसके.."

पाद-टिप्पणियाँ: 1. काफ़ी 2. बदाए अल-सनाए, तयम्मुम की शर्तें, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/50

पृष्ठ 201 का 761

جلد چہارم فتاوی رضویہ

الحدث المتأخر - 1 سے کفایت نہ کرے گا۔ جیسے اگر جنابت کا غسل کیا پھر اسے حدث ہوا تو اسے وضو کرنا ہے اور غسل سابق ، حدث متأخر سے کفایت نہ کر سکے گا۔ (ت)

دلیل پنجم : اس کی توجیہ میں یہ بھی ارشاد فرماتے ہیں کہ جنابت کے لئے تیمم کر لینے کے بعد جو حدث ہوا تو اب یہ جنب نہیں کہ جنابت تو تیمم سے زائل ہو چکی نرا محدث ہے اور وضو کے لئے پانی موجود ہے تو وضو لازم ہے صاف اشعار فرمایا کہ اس وقت بھی اگر یہ جنب ہوتا وضو نہ کرتا صرف تیمم جنابت وحدث دونوں کے رفع کو کافی ہوتا ورنہ اس فرمانے کے کیا معنی کہ اور یہ جنب نہیں وھذا اظھر من ان یظھر (یہ اس سے زیادہ واضح ہے کہ اس کی وضاحت کی جائے۔ت) بدائع ملک العلماء میں ہے :

الجنب اذا وجد من الماء قدر ما یتوضأ به لا غیر اجزأه التیمم عندنا لان الغسل اذالم یفد الجواز کان الاشتغال به سفها مع ان فیه تضییع (1) الماء وانه حرام فصار کمن وجد (2) ما یطعم به خمسة مساکین فکفر بالصوم یجوز ولا یؤمر باطعام الخمسة لعدم الفائدة فکذا هذا بل اولی لان هناك لا یؤدي الی تضییع المال لحصول الثواب بالتصدق ومع ذلك لم یؤمر به لما قلنا فههنا اولی 2 ولو تیمم الجنب ثم احدث بعد ذلك ومعه من الماء

جنب کو جب اتنا ہی پانی ملے جس سے صرف وضو کر سکے تو ہمارے نزدیک تیمم اسے کافی ہوگا اس لئے کہ دھونے سے جب جواز نماز کا فائدہ نہیں حاصل ہو سکتا تو اس میں مشغولی بے وقوفی ہے۔ ساتھ ہی اس میں پانی کی بربادی بھی ہے اور یقیناً یہ حرام ہے۔ تو اس کا حال اس کی طرح ہوا جسے اسی قدر ملا کہ اس سے پانچ مسکینوں کو کھلا سکے اس لئے نے روزوں سے

کفارہ ادا کیا تو جائز ہے اور اسے پانچ کو کھلانے کا حکم نہیں دیا جائے گا اس لئے کہ بے فائدہ ہے۔ اسی طرح یہ بھی ہے بلکہ اس سے بڑھ کر ہے اس لئے کہ وہاں مال کی بربادی تک معاملہ نہیں پہنچتا کیونکہ صدقہ کرنے کا ثواب مل جائے گا، اس کے باوجود اس کا اسے حکم نہ دیا گیا تو یہاں بدرجہ اولیٰ حکم نہ ہوگا۔ اور اگر جنب نے تیمم کیا پھر اس کے

1 کافی 2 بدائع الصنائع شرائط تیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱ / ۵۰

Fatawa Ridawiyyah Volume 4

[Arabic Text]: The amount with which he can perform ablution (wudu), he should perform it, because this person is in a state of minor ritual impurity (hadath) and not major ritual impurity (janaba), and he has enough water for wudu. So he should perform wudu with it. - 1 [Urdu Explanation]: ...afterward hadath occurred to him and he has enough water with which to perform wudu, then he shall perform wudu, because he is without wudu (mubtal-e-wudu) but not in a state of major impurity (junub), and he has enough water for wudu, so he will perform wudu with it. (T)

Similarly, it is mentioned in Durr al-Mukhtar: [Arabic Text]: If he performed dry ablution (tayammum) for janaba and then experienced hadath, he becomes a person with hadath, not a person with janaba. Therefore, he should perform wudu. - 2 [Urdu Explanation]: And if he performed tayammum for janaba and then hadath occurred to him, he is in a state of hadath, not janaba, therefore he will perform wudu. (T)

The ruling of wudu upon experiencing hadath after tayammum was derived from the fact that he is now in a state of hadath, not janaba. That is, if he were in a state of janaba, he would not perform wudu due to hadath. Therefore, it is stated in Radd al-Muhtar:

[Arabic Text]: It has been clarified that when one finds water sufficient only for wudu, he shall perform wudu with it only if the hadath occurred after his tayammum for janaba. However, if he found it at the time of tayammum before the occurrence of hadath, it is not mandatory for him according to us to perform wudu for the hadath which is alongside janaba, because it would be futile since tayammum for it is indispensable. - 3 Ah [Urdu Explanation]: From this, it is clarified that when he finds enough water with which only his wudu can be performed, he will perform wudu with it provided that the hadath occurred after his tayammum for janaba. But if this water was found at the time of tayammum before hadath, then according to us, it is not mandatory for him to perform wudu for that hadath which is with janaba, because it is futile since tayammum for it is necessary. Ah (T)

[Arabic Text]: Note: The statement of Malik al-Ulama (may Allah sanctify his secret) about 'wasting water' was followed by Imam al-Nasafi in al-Kafi. He says: Our argument is that when he is not purified from janaba by its use, it is indeed a waste. - 4 Ah [Urdu Explanation]: Note: The statement of Malik al-Ulama (may Allah sanctify his secret), "fihī tadhyī' al-mā'" (it involves wasting water), has been followed by Imam

al-Nasafi. He says: "Our evidence is that when he is not purified from janaba by its use, then it is indeed a waste." Ah (T)

1. Bada'i al-Sana'i, Conditions of Tayammum, Maktaba HM Saeed Company Karachi, 1/50.
2. Durr al-Mukhtar, Chapter of Tayammum, Matba' Mujtabai Delhi, 1/45.
3. Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Maktaba Mustafa al-Babi Egypt, 1/187.
4. Al-Kafi by Imam al-Nasafi.

फ़तावा रज़विया जिल्द 4

[अरबी पाठ]: जितना पानी वज़ू के लिए ज़रूरी हो, उससे वज़ू किया जाए, क्योंकि यह व्यक्ति ह़दथ (मामूली नापाकी) की हालत में है, जनाबत (बड़ी नापाकी) की नहीं, और उसके पास वज़ू के लिए पर्याप्त पानी है। इसलिए उसे उससे वज़ू करना चाहिए। - 1 [उर्दू व्याख्या]: ...बाद में उसे ह़दथ हुआ और उसके पास इतना पानी है जिससे वज़ू कर ले तो वह वज़ू करेगा क्योंकि यह बे-वज़ू है जुनुबी नहीं है और उसके पास इतना पानी है जो वज़ू के लिए काफ़ी है तो उससे वज़ू करेगा। (त)

इसी प्रकार 'दुर्रे मुख़्तार' में है: [अरबी पाठ]: अगर किसी ने जनाबत के लिए तयम्मुम किया और फिर उसे ह़दथ हुआ, तो वह ह़दथ वाला है, जुनुबी नहीं। इसलिए वह वज़ू करेगा। - 2 [उर्दू व्याख्या]: और अगर जनाबत का तयम्मुम किया फिर उसे ह़दथ हुआ तो वह मुह़दिस है जुनुब नहीं इसलिए वज़ू करेगा। (त)

तयम्मुम के बाद ह़दथ होने पर वज़ू का हुक्म इस आधार पर दिया गया है कि वह अब ह़दथ वाला है, जनाबत वाला नहीं। यानी अगर वह जनाबत वाला होता, तो ह़दथ की वजह से वज़ू न करता। इसलिए 'रद्दुल मुहतार' में फ़रमाया गया है:

[अरबी पाठ]: इससे यह बात स्पष्ट हुई कि जब किसी को इतना पानी मिले जिससे केवल वज़ू हो सकता हो, तो वह उससे वज़ू तभी करेगा जब उसे अपने जनाबत के तयम्मुम के बाद ह़दथ हुआ हो। लेकिन अगर यह पानी तयम्मुम के समय ह़दथ होने से पहले मिला, तो हमारे नज़दीक उस ह़दथ के लिए जो जनाबत के साथ है, वज़ू करना लाज़िम नहीं है, क्योंकि यह बेकार है क्योंकि उसके लिए तयम्मुम ज़रूरी है। - 3 अह़ [उर्दू व्याख्या]: इससे यह अफ़ादा फ़रमाया कि जब उसे इतना पानी मिले जिससे सिर्फ़ उसका वज़ू हो सकता हो तो वह उससे वज़ू करेगा जबकि उसे अपने तयम्मुम जनाबत के बाद ह़दथ हुआ हो। लेकिन अगर यह पानी तयम्मुम ही के वक़्त क़ब्ल ह़दथ मिला तो हमारे नज़दीक उसे उस ह़दथ से जो जनाबत के साथ है वज़ू करना लाज़िम नहीं क्योंकि अबस है इसलिए कि तयम्मुम उसके लिए ज़रूरी है। अह़ (त)

[अरबी पाठ]: तम्बीह: मलिकुल उलमा (रह़मतुल्लाह अलैह) का इरशाद 'फ़िही तज़्ज़ीउल मा' (इसमें पानी बर्बाद करना है) पर इमाम नसफ़ी ने उनकी पैरवी की है। वह फ़रमाते हैं: 'हमारी दलील यह है कि इसके इस्तेमाल से जब वह जनाबत से पाक न हुआ, तो यह बर्बाद करना ही है।' - 4 अह़ [उर्दू व्याख्या]: तम्बीह: मलिकुल उलमा कुद्दस सिर्रह का इरशाद "फ़ीहि तज़्ज़ीअुल मा" (इसमें पानी बर्बाद

करना है) इस पर इमाम नसफ़ी ने उनकी पैरवी की है। वह फ़रमाते हैं: "हमारी दलील यह है कि इसके इस्तेमाल से जब वह जनाबत से पाक न हुआ तो यह बर्बाद करना ही है।" अह (त)

1. बदाए-उस-सनाए, तयम्मुम की शर्तें, मकतबा एचएम सईद कंपनी कराची, 1/50।
2. दुर्रे मुख़्तार, तयम्मुम का अध्याय, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/45।
3. रद्दुल मुहतार, तयम्मुम का अध्याय, मकतबा मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/187।
4. इमाम नसफ़ी की 'अल-काफ़ी'।

पृष्ठ 202 / 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

قدر ما یتوضأ به فانه یتوضأ به لان هذا محدث ولیس بجنب ومعه من الماء قدر ما یکفیه للوضوء فیتوضأ به -1 بعد اسے حدث ہوا اور اس کے پاس اتنا پانی ہے جس سے وضو کرلے تو وہ وضو کرے گا کیونکہ یہ بے وضو ہے جنب نہیں ہے اور اس کے پاس اتنا پانی ہے جو وضو کے لئے کافی ہے تو اس سے وضو کرے گا۔ (ت)

یونہی در مختار میں ہے: لو تیمم للجنابة ثم احدث صار محدثا لاجنبا فیتوضأ -2 اور اگر جنابت کا تیمم کیا پھر اسے حدث ہوا تو وہ محدث ہے جنب نہیں اس لئے وضو کرے گا۔ (ت) تیمم کے بعد حدث پر حکم وضو کو اس پر متفرع کیا کہ اب وہ محدث ہے جنب نہیں یعنی جنب ہوتا تو حدث کے باعث وضو نہ کرتا ولہذا ردالمحتار میں فرمایا:

افاد انه اذا وجد ماء یکفیه للوضوء فقط انما یتوضأ به اذا احدث بعد تیممه عن الجنابة اما لو وجده وقت التیمم قبل الحدث لا یلزمه عندنا الوضوء به عن الحدث الذي مع الجنابة لانه عبث اذ لابد له من التیمم -3 اھ اس سے یہ افادہ فرمایا کہ جب اسے اتنا پانی ملے جس سے صرف اس کا وضو ہو سکتا ہو تو وہ اس سے وضو کرے گا جبکہ اسے اپنے تیمم جنابت کے بعد حدث ہوا ہو۔ لیکن اگر یہ پانی تیمم ہی کے وقت قبل حدث ملا تو ہمارے نزدیک اسے اس حدث سے جو جنابت کے ساتھ ہے وضو کرنا لازم نہیں کیونکہ عبث ہے اس لئے کہ تیمم اس کے لئے ضروری ہے۔ اھ (ت)

تنبیه: قول ملك العلماء قدس سره فیه تضییع الماء تبعه فیه الامام النسفي في الکافي فقال لنا انه اذالم یطهر عن الجنابة باستعماله تکون تضییعا -4 اھ تنبیه: ملک العلماء قدس سرہ کا ارشاد "فیہ تضییع الماء" (اس میں پانی برباد کرنا ہے) اس پر امام نسفی نے ان کی پیروی کی ہے۔ وہ فرماتے ہیں:

"ہماری دلیل یہ ہے کہ اس کے استعمال سے جب وہ جنابت سے پاک نہ ہوا تو یہ برباد کرنا ہی ہے۔" اھ (ت)

1 بدائع الصنائع شرائط التیمم، مکتبہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی، ۱/۵۰ 2 دُر مختار، باب التیمم، مطبع مجتبائی دہلی، ۱/۴۵ 3 ردالمحتار باب التیمم، مکتبہ مصطفی البابی مصر، ۱/۱۸۷ 4 کافی للامام النسفی

Fatawa Rizvia, Volume 4

[Arabic Column] Imam Al-Zayla'i followed both of them in 'At-Tabyin' and said: If it is of no benefit, then engaging in it is futility and a waste of water in a place where it is scarce, and wasting (1) wealth is forbidden 1. End.

And the Researcher in 'Al-Fath' followed them and said: It is of no benefit because ritual impurity (hadath) is not divisible; rather, the impurity remains as long as even the smallest spot remains unwashed. Thus, it remains merely a waste of wealth, especially in a place where water is scarce, while the ritual impurity remains as it is 2. End. And 'Al-Hilyah' and 'Al-Bahr' followed him in his words, and 'Al-Hilyah' added: It has been authentically reported from the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) that he said: "And I forbid my Ummah from wasting wealth" 3. End. And the poor servant (the author) followed them in what has passed, and they are most worthy of being followed.

I say: However, (2) the weak servant has a strong view on this; for even if the ritual impurity is not removed due to its indivisibility, there is no doubt that it drops the obligation.

[Urdu Column] Imam Zayla'i has followed these two gentlemen in 'At-Tabyin'. So he said: "When this is useless, then engaging in it is futile, and it is a waste of water in such a place where water is scarce, and wasting wealth is forbidden."

And the Absolute Researcher in 'Fath al-Qadir', following these gentlemen, said: "It is useless because the ritual impurity (hadath) is not divisible; rather, as long as even a tiny spot remains unwashed, the impurity will persist. So, only the destruction of wealth will remain, especially in a place where water is scarce, even though the impurity remains exactly as it was." End (T). Now, 'Hilyah' and 'Bahr' also followed him in words. 'Hilyah' further stated: Although it is established from the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) via an authentic report that he said: "And I forbid my Ummah from wasting wealth." End. The poor servant has also followed these gentlemen in the past, and he is more deserving of their following.

I say: However, this weak servant has a strong view on this because, due to ritual impurity being indivisible, even if it does not end, there is no doubt that for the part [which was washed]...

1. Tabyin al-Haqa'iq, Chapter of Tayammum, Amiriya Press, Bulaq, Egypt, 1/41.

2. Fath al-Qadir, Chapter of Tayammum, Maktaba Nooriya Razawiya, Sukkur, 1/119.
3. Hilyah

फ़तावा रज़विया, खंड 4

[अरबी कॉलम] इमाम अल-ज़ैलई ने 'अत-तब्यीन' में उन दोनों का अनुसरण किया और कहा: यदि यह लाभहीन है, तो इसमें संलग्न होना व्यर्थ है और ऐसी जगह पानी की बर्बादी है जहाँ पानी दुर्लभ है, और धन की बर्बादी (1) हराम है 1। समाप्त।

और 'अल-फतह' में शोधकर्ता ने उनका अनुसरण किया और कहा: यह लाभहीन है क्योंकि अनुष्ठानिक अशुद्धता (हदस) विभाज्य नहीं है; बल्कि, अशुद्धता तब तक बनी रहती है जब तक कि एक छोटा सा हिस्सा भी अनधोया रह जाए। इस प्रकार, यह केवल धन की बर्बादी बनकर रह जाता है, विशेष रूप से ऐसी जगह जहाँ पानी की कमी है, जबकि अशुद्धता वैसी ही बनी रहती है जैसे वह थी 2। समाप्त। और 'अल-हिलिया' और 'अल-बहर' ने उनके शब्दों में उनका अनुसरण किया, और 'अल-हिलिया' ने अतिरिक्त कहा: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से प्रामाणिक रूप से वर्णित है कि उन्होंने कहा: "और मैं अपनी उम्मत को धन बर्बाद करने से मना करता हूँ" 3। समाप्त। और गरीब सेवक (लेखक) ने अतीत में उनका अनुसरण किया, और वे अनुसरण के सबसे योग्य हैं।

मैं कहता हूँ: हालाँकि, (2) इस कमजोर सेवक का इस पर एक मजबूत विचार है; क्योंकि भले ही इसकी अविभाज्यता के कारण अशुद्धता दूर न हो, इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह दायित्व (फ़र्ज़) को समाप्त कर देता है।

[उर्दू कॉलम] इमाम ज़ैलई ने 'अत-तब्यीन' में इन दोनों सज्जनों का अनुसरण किया है। तो उन्होंने कहा: "जब यह बेकार है, तो इसमें संलग्न होना व्यर्थ है और ऐसी जगह पानी बर्बाद करना है जहाँ पानी दुर्लभ है, और धन की बर्बादी हराम है।"

और शोधकर्ता (मुहक्किक़ अल-इतलाक़) ने 'फ़तह अल-क़दीर' में इन सज्जनों का अनुसरण करते हुए कहा: "यह बेकार है क्योंकि अनुष्ठानिक अशुद्धता (हदस) विभाज्य नहीं है; बल्कि, जब तक एक छोटा सा हिस्सा भी अछूता रहेगा, अशुद्धता बनी रहेगी। तो, केवल धन का विनाश ही शेष रहेगा, विशेष रूप से ऐसी जगह जहाँ पानी दुर्लभ है, जबकि अशुद्धता वैसी ही बनी रहेगी जैसे वह थी।" समाप्त (त)। अब, 'हिलिया' और 'बहर' ने भी शब्दों में उनका अनुसरण किया। 'हिलिया' ने आगे कहा: हालाँकि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से एक सही रिवायत के माध्यम से यह सिद्ध है कि उन्होंने कहा: "और मैं अपनी उम्मत को धन बर्बाद करने से मना करता हूँ।" समाप्त।

गरीब सेवक ने भी अतीत में इन सज्जनों का अनुसरण किया है, और वह उनके अनुसरण का अधिक पात्र है।

मैं कहता हूँ: हालाँकि, इस कमज़ोर सेवक का इस मामले में एक मज़बूत विचार है क्योंकि, अशुद्धता के अविभाज्य होने के कारण भले ही वह समाप्त न हो, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि जिस हिस्से [को धोया गया]...

1. तब्यीन अल-हक़ाइक़, तैयमम का अध्याय, अमीरिया प्रेस, बुलाक, मिस्र, 1/41।
2. फ़तह अल-क़दीर, तैयमम का अध्याय, मकतबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 1/119।
3. हिलिया

पृष्ठ 203 का 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

[Arabic Column] وتبعهما الامام الزيلعي في التبيين فقال اذا لم يفدكان الاشتغال عبثاً وتضييعاً للماء في موضع عزته وتضييع (١) المال حرام ١ اهـ.

وتبعهم المحقق في الفتح فقال لايفيد اذلايتجزأ بل الحدث قائم مابقي ادنى لمعة فيبقى مجرد اضاعة مال خصوصاً في موضع عزته مع بقاء الحدث كما هو ٢ اهـ وتبعه في الحلية والبحر على الفاظه وزادت الحلية وقد صح عن رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم انه قال وانهى امتى عن اضاعة المال ٣ اهـ والفقير تبعهم فيما مضى وأجدر بهم للاتباع.

اقول: لكن(٢) للعبد الضعيف نظر فيه قوى فانه وان لم يرفع الحدث لعدم تجزيه فلاشك انه يسقط الفرض

[Urdu Column] تبیین میں امام زیلعی نے ان دونوں حضرات کی پیروی کی ہے۔ تو فرمایا: "جب یہ بے فائدہ ہے تو اس میں مشغول عبث ہے اور ایسی جگہ پانی برباد کرنا ہے جہاں پانی کم یاب ہے اور مال برباد کرنا حرام ہے۔"

اور محقق علی الاطلاق نے فتح القدیر میں ان حضرات کی پیروی کرتے ہوئے فرمایا: "بے فائدہ ہے اس لئے کہ حدث کی تجزی نہیں ہوتی بلکہ جب تک ذرا سا بھی حصہ چھوٹا رہے گا حدث رہے گا تو صرف مال کی بربادی باقی رہ جائے گی خصوصاً ایسی جگہ جہاں پانی کم یاب ہے باوجودیکہ حدث جیسے تھا ویسے ہی باقی رہے گا۔" اہ (ت) اب حلیہ اور بحر نے الفاظ میں بھی ان کی پیروی کی۔ حلیہ نے مزید یہ فرمایا: حالانکہ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے بروایت صحیحہ ثابت ہے کہ فرمایا: "اور میں اپنی اُمت کو مال برباد کرنے سے منع فرماتا ہوں۔" اہ۔ فقیر نے بھی ماضی میں انہی حضرات کی پیروی کی اور وہ ان کی پیروی کا زیادہ مستحق ہے۔

اقول: لیکن بندہ ضعیف کو اس میں نظر قوی ہے کیونکہ اس سے حدث غیر متجزی ہونے کے باعث اگرچہ ختم نہیں ہوتا لیکن اس میں شک نہیں کہ جس حصے

1 تبیین الحقائق باب التیمم، مطبعہ امیریہ بولاق مصر ۱/ ۴۱ 2 فتح القدیر باب التیمم ،مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۱۱۹ 3 حلیہ

Volume 4 Fatawa Rizvia

...it will reach [the skin] and with it the obligation [of washing] will be dropped. This benefit is sufficient. Its significance increases even more when, after this, one finds enough water that, after using it, is sufficient for the remaining parts [of the body]. And if one leaves it and goes away, then finds it [later], it will not be sufficient.

Imam Radi al-Din al-Sarakhsi stated in Al-Muhit regarding a case where one has bathed and a small spot (lum'ah) remains unwashed (1), then finds water that is not sufficient for it: "In this case, since the bath has been performed and some spot remains dry (shining), and then enough water is found that is not sufficient for it [the spot], then if one wishes, one may wash a portion of that spot to reduce the state of ritual impurity (janabah)." Ended. After quoting this in Al-Hilyah in another similar issue, its text says: "Wash from the spot what is possible to reduce the ritual impurity (2)." Ended.

In Khizanat al-Muftin, quoting Imam al-Asbijabi's commentary on al-Tahawi: "Even if it is not enough, wash the amount that is available so that the ritual impurity is reduced, and then perform tayammum (3)." Ended.

Similar is found in Al-Khulasah, Sharh al-Wiqayah, and many other books. Rather, it is stated in Al-Kafi itself: "A person in a state of major ritual impurity (junub) has a small unwashed spot on his back and forgot [to wash] the members of wudu, and the water he has is sufficient for only one of them; he may use it for whichever one he wishes, because each is a state of impurity of janabah, so washing the members of wudu is more appropriate to establish..."

1. Al-Muhit by Radi al-Din al-Sarakhsi
2. Al-Hilyah
3. Khizanat al-Muftin

Page 204 of 761

जिल्द चौथी फ़तावा रज़विया

...वहाँ तक पहुँचेगा, इससे फ़र्ज़ (कर्तव्य) साक़ित (समाप्त) हो जाएगा। इतनी उपयोगिता पर्याप्त है। इसका महत्व तब और बढ़ जाता है जब इसके बाद इतना पानी मिले जो इसके इस्तेमाल के बाद बाकी अंगों के लिए पर्याप्त हो। और अगर इसे छोड़कर चला जाए, फिर यह मिले तो नाकाफी होगा।

इमाम रज़ी उद्दीन सरख़सी ने 'अल-मुहीत' में फ़रमाया है (1): "उस स्थिति में जब ग़ुस्ल (स्नान) कर लिया गया और कुछ जगह सूखी (चमकती) रह गई, फिर इतना पानी मिला जो उसके लिए पर्याप्त नहीं है, तो यदि वह चाहे तो जनाबत (अपवित्रता) कम करने के लिए उस जगह का कुछ हिस्सा धो ले।" इह। 'अल-हिलिया' के अंदर इसे एक अन्य समान मामले में उद्धृत करने के बाद इसका पाठ है: "सूखी जगह से जितना संभव हो धो ले ताकि जनाबत कम हो सके(2)।" इह।

'खज़ानतुल मुफ़्तीन' में इमाम अस्बिजाबी की 'शरह तहावी' से उद्धृत है: "यदि पर्याप्त न हो, तो जितनी मात्रा में पानी है, उससे धो ले ताकि जनाबत कम हो जाए और फिर तयम्मुम (मिट्टी से पवित्रता) करे (3)।" इह।

'अल-खुलासा', 'शरह अल-विक़ाया' और कई अन्य किताबों में भी ऐसा ही है। बल्कि खुद 'काफी' में लिखा है: "एक जुनूब (अशुद्ध व्यक्ति) की पीठ पर एक छोटा सा हिस्सा अनधुला रह गया और वह वज़ू के अंगों को धोना भूल गया, अब जो पानी है वह केवल किसी एक के लिए ही पर्याप्त हो सकता है, तो वह उन दोनों में से जिसमें चाहे उसे इस्तेमाल करे। क्योंकि हर एक जनाबत की नजासत (गंदगी) है, इसलिए वज़ू के अंगों का धोना पहले स्थापित करना..."

1. मुहीत रज़ी उद्दीन सरख़सी
2. हिलिया
3. खज़ानतुल मुफ़्तीन

पृष्ठ 204 का 761

جلد چہارم فتاوی رضویہ

عما یصیبہ وکفی بہ فائدۃ ویعظم وقعہ اذا وجد | تک پہنچے گا اس سے فرض ساقط کردے گا۔ اتنی افادیت کافی بعدہ ما یکفی للباقي بعد ھذا الاستعمال ولو ترکہ | ہے۔ اس کی وقعت اس وقت اور بڑھ جائے گی جب اس کے وراح ثم وجد ھذا لم یکف۔ | بعد اسے اتنا پانی ملے جو اسے استعمال کرنے کے بعد بقیہ اعضا وقد قال الامام رضی الدین السرخسی في المحیط | کے لئے کافی ہو۔ اور اگر اسے چھوڑ کر چلا جائے پھر یہ ملے تو فیما اذا (1) اغتسل وبقیت لمعۃ ثم وجد ماء | ناکافی ہوگا۔ امام رضی الدین سرخسی نے محیط میں فرمایا لا یکفي لھا یغسل شیئاً من اللمعۃ ان شاء تقلیلا | ہے: "اس صورت میں جبکہ غسل کرلیا اور کچھ جگہ چمکتی رہ للجنابۃ اھ قال في الحلیۃ بعد نقلہ في مسألۃ | گئی پھر اتنا پانی ملا جو اس کے لئے کافی نہیں تو اگر چاہے جنابت أخری نظیرہ مانصہ یغسل من اللمعۃ ما یتأتی | کم کرنے کے لئے اس جگہ کا کچھ حصہ دھولے"۔ اھ حلیہ کے تقلیلا للجنابۃ ۱۲ھ | اندر اسے نقل کرنے کے بعد ویسے ہی ایک دوسرے مسئلہ وفي خزانۃ المفتین عن شرح الطحاوی للامام | میں یہ لکھا: "چھوٹی ہوئی جگہ سے جو ہو سکے جنابت کم کرنے الاسبیجابی وان کان لا یکفي یغسل مقدار ما | کی خاطر دھولے" اھ خزانۃ المفتین میں امام اسبیجابی کی شرح یکفیہ حتی تقل الجنابۃ ویتیمم ۱۳ھ | طحاوی سے نقل ہے: "اگر کافی نہ ہو تو جس قدر کفایت کرے ومثلہ في الخلاصۃ وشرح الوقایۃ وکثیر من | دھولے تاکہ جنابت کم ہوسکے اور تیمم کرے"۔ اھ بلکہ الکتب بل قد قال في الکافي نفسہ جنب (۲) علی | خود "کافی" میں لکھا ہے: "جنب کی پشت پر چھوٹی ہوئی جگہ ظھرہ لمعۃ ونسی اعضاء وضوئہ وماؤہ یکفي | ہے اور اعضائے وضو دھونا بھول گیا اب جو پانی ہے کسی ایک احد ھما صرفہ الی ایھما شاء لان کل واحد نجاسۃ |

ہی کے لئے کفایت کرسکتا ہے تو دونوں میں سے جس میں الجنابة فاعضاء الوضوء اولی اقامة | چاہے اسے صرف کرے۔ اس لئے کہ ہر ایک نجاست جنابت

1 محیط رضی الدین السرخسی 2 حلیہ 3 خزانۃ المفتین

Fatawa Ridawiyya, Volume 4

[Arabic Side]: ...for the Sunnah 1 (End of Quote). [Urdu Side]: Similarly, it is mentioned in Khulasa, Sharh Wiqayah, and many other books. If it is this much, then the limbs of Wudu (ablution) will be better so that the Sunnah can be fulfilled. (End of quote).

[Arabic Side]: And its meaning is in Al-Hindiyyah from 'Attabi's Sharh al-Ziyadat: So, this use is only for reducing Janabah (ritual impurity), as the Imams Al-Isbijabi, Radi al-Din Al-Sarakhsi, Tahir Al-Bukhari, Sadr al-Shariah, Muhammad Al-Halabi, and others have explicitly stated. Otherwise, it would have been necessary to combine both obligations (washing and Tayammum). Thus, it is known that this is not wasting [water], nor does it necessitate prohibition or vileness. [Urdu Side]: The same meaning is quoted in Al-Hindiyyah from 'Attabi's Sharh al-Ziyadat. So, using it is for reducing Janabah (ritual impurity), as Imam Isbijabi, Imam Radi al-Din Sarakhsi, Imam Tahir Bukhari, Imam Sadr al-Shariah, Imam Muhammad Halabi, and others have explicitly stated. Otherwise, it would have been necessary to combine both acts (washing and Tayammum). From this, it is known that this is not wasting water, nor does it result in any prohibition or vileness. (T)

[Arabic Side]: I say (Aqul): Rather, it would not be far-fetched if it were considered commendable (Mustahabb) because it involves avoiding the disagreement of Imam Shafi'i (may Allah be pleased with him). Avoiding disagreement is unanimously commendable as long as it does not lead to something disliked (Makruh) in one's own school of thought. The absence of dislike is known from the texts we have cited. [Urdu Side]: I say (Aqul): Rather, it would not be far-fetched if it were considered commendable (Mustahabb) because it involves avoiding the disagreement of Imam Shafi'i (may Allah be pleased with him). Avoiding disagreement is unanimously commendable as long as it does not lead to something disliked (Makruh) in one's own school of thought. The absence of dislike is known from the texts we have cited. (T)

Sixth Proof: There are clarifications that in the noble verse "and you do not find water," the water referred to is that whose use makes one fit for prayer. Water such that even after using it, the capability for prayer is not created (I say: meaning that the amount of water he has the power to use, and any extra is not possible due to lack, harm, or shortage of time, is not sufficient for attaining purity, more is needed; otherwise, if this in itself is the required amount and there is no other obstacle, then there is no flaw in this water being the cause of capability), is neither an initial barrier

to Tayammum nor its nullifier at the end; its existence or absence is equal. It is stated in Bada'i by Imam Malik al-Ulama:

[Table Header]: Arabic: The meaning of "Al-Ma' Al-Mutlaq" (Absolute Water) in the verse. Urdu: In the verse, "Al-Ma' Al-Mutlaq" means restricted [water] and...

---

1 Fatawa Hindiyyah, Book of Tayammum, Nurani Kutub Khana, Peshawar, 1/29. Page 205 of 761

फ़तावा रज़विया, खंड 4

[अरबी पक्ष]: ...सुन्नत के लिए 1 (उद्धरण समाप्त)। [उर्दू पक्ष]: इसी तरह खुलासा, शरह विकाया और कई अन्य पुस्तकों में है। यदि इतना ही है, तो वुज़ू के अंग बेहतर होंगे ताकि सुन्नत पूरी हो सके। (उद्धरण समाप्त)।

[अरबी पक्ष]: और इसका अर्थ अल-हिंदिया में अत्ताबी की शरह अल-ज़ियादात से है: तो, यह उपयोग केवल जनाबत (अनुष्ठानिक अशुद्धि) को कम करने के लिए है, जैसा कि इमाम अल-इस्बीजाबी, रज़ी अल-दीन अल-सरखसी, ताहिर अल-बुखारी, सद्र अल-शरिया, मुहम्मद अल-हलाबी और अन्य ने स्पष्ट रूप से कहा है। अन्यथा, दोनों दायित्वों (धोना और तयम्मुम) को मिलाना आवश्यक होता। इस प्रकार, यह ज्ञात होता है कि यह बर्बादी नहीं है, और न ही यह निषेध या घृणा का कारण बनता है। [उर्दू पक्ष]: इसी के समान अर्थ अल-हिंदिया में अत्ताबी की शरह अल-ज़ियादात से उद्धृत है। तो, इसका उपयोग करना जनाबत (अनुष्ठानिक अशुद्धि) को कम करने के लिए है, जैसा कि इमाम इस्बीजाबी, इमाम रज़ी अल-दीन सरखसी, इमाम ताहिर बुखारी, इमाम सद्र अल-शरिया, इमाम मुहम्मद हलाबी और अन्य ने स्पष्ट रूप से कहा है। अन्यथा, दोनों कार्यों (धोना और तयम्मुम) को मिलाना आवश्यक होता। इससे पता चलता है कि यह पानी की बर्बादी नहीं है, और न ही इससे कोई निषेध या घृणा उत्पन्न होती है। (त)

[अरबी पक्ष]: मैं कहता हूँ (अक़ौल): बल्कि, यदि इसे मुस्तहब (प्रशंसनीय) माना जाए तो यह दूर की बात नहीं होगी क्योंकि इसमें इमाम शाफ़ई (रज़ियल्लाहु अन्हु) के मतभेद से बचना शामिल है। मतभेद से बचना सर्वसम्मति से मुस्तहब है जब तक कि यह अपने संप्रदाय में किसी मकरूह (नापसंद) कार्य की ओर न ले जाए। नापसंदगी की अनुपस्थिति उन ग्रंथों से ज्ञात होती है जिन्हें हमने उद्धृत किया है। [उर्दू पक्ष]: मैं कहता हूँ (अक़ौल): बल्कि, यदि इसे मुस्तहब (प्रशंसनीय) माना जाए तो यह दूर की बात नहीं होगी क्योंकि इसमें इमाम शाफ़ई (रज़ियल्लाहु अन्हु) के मतभेद से बचना शामिल है। मतभेद से बचना सर्वसम्मति से मुस्तहब है जब तक कि यह अपने संप्रदाय में किसी मकरूह (नापसंद) कार्य की ओर न ले जाए। नापसंदगी की अनुपस्थिति उन ग्रंथों से ज्ञात होती है जिन्हें हमने उद्धृत किया है। (त)

छठा प्रमाण: स्पष्टीकरण हैं कि महान आयत "और तुम्हें पानी न मिले" में उस पानी से तात्पर्य है जिसका उपयोग उसे नमाज़ के योग्य बना दे। इतना पानी कि उसके उपयोग के बाद भी नमाज़ की

क्षमता पैदा न हो (मैं कहता हूँ: अर्थात इस प्रकार कि जितना पानी इस्तेमाल करने की उसे शक्ति है, और कमी, हानि या समय की कमी के कारण अतिरिक्त संभव नहीं है, पवित्रता प्राप्त करने के लिए पर्याप्त नहीं है, अधिक की आवश्यकता है; अन्यथा, यदि यह स्वयं में आवश्यक मात्रा है और कोई अन्य बाधा नहीं है, तो इस पानी के क्षमता का कारण होने में कोई दोष नहीं है), न तो शुरू में तयम्मुम में बाधा है और न ही अंत में उसका नाक़िज़ (बाधक); इसका होना या न होना बराबर है। इमाम मलिक उल-उलेमा की 'बदई' में है:

[तालिका शीर्षक]: अरबी: आयत में "अल-मा अल-मुतलक़" (शुद्ध जल) का अर्थ। उर्दू: आयत में "अल-मा अल-मुतलक़" से तात्पर्य सीमित (जल) है और...

---

1 फ़तावा हिंदिया, किताबुत तयम्मुम, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 1/29. पेज 205 का 761

[عربی حصہ]: للسنة ١ اھ [اردو حصہ]: اسی کے مثل خلاصہ، شرح وقایہ اور بہت سی کتابوں میں ہے یہی ہے تو اعضائے وضو بہتر ہوں گے تاکہ سنت کی ادائیگی ہو جائے"۔ اھ

[عربی حصہ]: وبمعناه في الهند یة عن شرح الز یادات للعتابي فهذا الصرف لیس الاتقلیلا للجنابة کما صرح به الائمة الاسبیجابي ورضی الدین السرخسی وطاهر البخاري وصدر الشریعة ومحمد الحلبی وغیر هم والالزم الجمع بین الوظیفین فعلم انه لیس باضاعة ولا یوجب حرمة ولا شناعة [اردو حصہ]: اسی کے ہم معنیٰ ہندیہ میں عتابی کی شرح زیادات سے نقل ہے ۔ تو یہ صرف کرنا تقلیل جنابت کے لئے ہے جیسا کہ امام اسیجابی، امام رضی الدین سرخسی، امام طاہر بخاری، امام صدر الشریعہ، امام محمد حلبی وغیرہ نے اس کی صراحت فرمائی ورنہ دونوں عمل (دھونا اور تیمم) جمع کرنا لازم آتا اس سے معلوم ہوا کہ یہ پانی برباد کرنا نہیں اور اس سے کوئی حرمت و شناعت لازم نہیں آتی۔ (ت)

[عربی حصہ]: اقول: بل لا یبعد ان یعد مستحبًا لما فیه من الخروج عن خلاف الامام الشافعی رضی اللہ تعالیٰ عنه والخروج (١) عن الخلاف مستحب بلا خلاف مالم یلزم مکروه مذهبه وانتفاء الکراهة قد علم مما اثرنا من النصوص۔ [اردو حصہ]: اقول: بلکہ اسے اگر مستحب شمار کیا جائے تو بعید نہ ہوگا کیونکہ اس میں امام شافعی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے اختلاف سے بچنا ہے اور اختلاف سے بچنا جب تک کہ اپنے مذہب کا کوئی مکروہ نہ لازم آئے بالاتفاق مستحب ہے۔ اور کراہت نہ ہونا ان نصوص سے معلوم ہو گیا جو ہم نے نقل کئے۔ (ت)

دلیل ششم: تصریحات ہیں کہ آیہ کریمہ فلم تجدوا ماء میں وہ پانی مراد ہے جس کا استعمال اسے قابل نماز کر دے اتنا پانی کہ اسے استعمال کیے پر بھی قابلیت نماز نہ پیدا ہو (اقول: یعنی یوں کہ اتنا پانی جس کے استعمال پر اسے قدرت ہے اور زائد بوجہ فقدان یا ضرر یا تنگی وقت مقدر نہیں تحصیل طہارت کے لئے کافی نہ ہو اس سے زیادہ کی حاجت ہو ورنہ اگر یہ فی نفسہ مقدار مطلوب پر ہے اور کوئی اور وجہ مانع تو اس پانی کی مورث قابلیت ہونے میں خلل نہیں) نہ ابتداءً مانع تیمم ہے نہ انتہاءً اُس کا ناقض اُس کا وجود و عدم برابر ہے۔ بدائع امام ملک العلماء میں ہے :

المراد من الماء المطلق في الآية | آیت میں مائے مطلق سے مراد مقید ہے اور

---

1 فتاویٰ ہندیہ باب التیمم نورانی کتب خانہ پشاور ۲۹/۱ Page 205 of 761

Arabic: It is the restricted water, which is water restricted for the permissibility of prayer when washing with it. | Urdu: This is the water that, if used for washing, would provide the benefit of making prayer permissible. (T)

In Tabyin al-Haqa'iq by Imam Fakhr al-Din, it is stated: Arabic: The washing commanded is that which makes prayer permissible; and that which does not make it permissible, its presence and absence are equal. | Urdu: The washing that has been commanded is that by which prayer becomes valid; and that by which prayer does not become valid, its presence or absence is the same. (T)

In Binaya by Imam Badr Mahmud, it is stated: Arabic: When a person without wudu or in a state of major ritual impurity (janaba) finds only some of the water needed for his purification, then according to our school, the school of Malik, and most scholars, its use is not mandatory. This is because the verse was revealed to explain formal purification (taharah hukmiyah). Therefore, the word of Allah, 'If you do not find water,' means pure water that makes prayer permissible. With the presence of an insufficient amount, that which makes prayer permissible is not found. | Urdu: When someone without wudu or in a state of janaba finds only a portion of water insufficient for their purification, its use is not mandatory. This is our school's view, as well as Imam Malik's and most scholars'. This is because the noble verse was revealed for the explanation of formal purification. Thus, Allah Almighty's command 'If you do not find water' refers to such purifying water that makes prayer permissible, and due to the water being insufficient, the means to make prayer permissible is deemed not found. (T)

In Fath al-Muhaqqiq where it is mentioned briefly, and then in al-Hilyah more clearly and in detail: Arabic: The wording is from it (al-Hilyah): We say that 'water' in the text refers to what is sufficient for removing the impediment. Because He, Glory be to Him, commanded the washing of the entire body for one in janaba, and it is known that this is done with water. Then, he was moved to dry ablution (tayammum) in its absence with the word of the Mighty and Sublime, 'If you do not find [water]'. | Urdu: These are the words of al-Hilyah: We say that by 'water' in the text is meant what is sufficient to remove the impediment. This is because the Pure God has commanded the washing of the whole body for a person in janaba, and it is known that this will be with water. Then, at the time of the absence of water, the command of the Lord, the Mighty and Sublime, is 'If you do not find'.

'IF YOU DO NOT FIND'

1. Bada'i al-Sana'i, Chapter on Tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/51.
2. Tabyin al-Haqa'iq, Chapter on Tayammum, Amiriya Press, Bulaq, Egypt, 1/41.
3. Al-Binayah Sharh al-Hidayah, Chapter on Water with which Wudu is Permitted, Malik Sons, Faisalabad/Karachi, 1/323.

जिल्द चार फतावा-ए-रज़विया

अरबी: यह वह प्रतिबंधित पानी है, जो इसके साथ धोने पर नमाज़ की अनुमति के लिए प्रतिबंधित है। | उर्दू: यह वह पानी है कि अगर इससे धोया जाए तो नमाज़ की अनुमति का लाभ दे। (त)

इमाम फखर अल-दीन की 'तबीन अल-हकाइक' में है: अरबी: जिस धोने का आदेश दिया गया है वह वह है जो नमाज़ को जायज़ बनाता है; और जो इसे जायज़ नहीं बनाता, उसका होना या न होना बराबर है। | उर्दू: जिस धोने का हुक्म दे दिया गया है यह वह है जिससे नमाज़ जायज़ हो जाए और जिससे नमाज़ जायज़ न हो उसका होना ना होना बराबर है। (त)

इमाम बद्र महमूद की 'बिनाया' में है: अरबी: यदि वज़ू न करने वाला या जुनुब (अशुद्ध व्यक्ति) अपनी शुद्धि के लिए पर्याप्त पानी में से केवल कुछ हिस्सा पाता है, तो हमारे मज़हब, इमाम मालिक और अधिकांश विद्वानों के मज़हब के अनुसार इसका उपयोग अनिवार्य नहीं है। क्योंकि आयत औपचारिक शुद्धि (तहारत हुकमिया) के वर्णन के लिए आई है। इसलिए अल्लाह तआला का फ़रमान 'यदि तुम पानी न पाओ' से तात्पर्य ऐसे शुद्ध पानी से है जो नमाज़ को जायज़ कर दे, और अपर्याप्त पानी होने से वह नहीं पाया गया जो नमाज़ को हलाल (जायज़) कर दे। | उर्दू: बे-वज़ू या जुनुब को जब अपनी तहारत के लिए पर्याप्त पानी में से कुछ ही मिले तो उसका इस्तेमाल वाजिब नहीं। यह हमारा, इमाम मालिक और अक्सर उलमा का मज़हब है। इसलिए कि आयते करीमा तहारत-ए-हुकमिया के बयान के लिए आई है, तो इरशाद-ए-बारी तआला 'फ़लम तजिदू माअन' (फिर तुम पानी न पाओ) से मुराद ऐसा आब-ए-तहारत है जो नमाज़ मुबाह कर दे और नाकाफ़ी पानी होने से वह ना पाया गया जो नमाज़ हलाल कर दे। (त)

'फतह अल-मुहक्किक़' में जहाँ इसे संक्षेप में बताया गया है, और फिर 'हिल्या' में स्पष्ट रूप से और विस्तार से है: अरबी: शब्द हिल्या के हैं: हम कहते हैं कि पाठ में 'पानी' से तात्पर्य वह है जो बाधा को दूर करने के लिए पर्याप्त हो। क्योंकि अल्लाह पाक ने जुनुब के हक़ में पूरे शरीर को धोने का हुक्म दिया है, और यह ज्ञात है कि यह पानी से ही होगा। फिर पानी न होने पर अल्लाह अज़-ज़-वजल ने अपने इरशाद 'फ़लम तजिदू' के ज़रिए तयम्मुम की ओर मोड़ दिया। | उर्दू: अल्फ़ाज़ हिल्या के हैं: हम कहते हैं नक़्श में पानी से मुराद वह है जो अज़ाल-ए-मानअ (रुकावट दूर करने) के लिए काफ़ी हो इस लिए कि ख़ुदा-ए-पाक ने हक़-ए-जुनुब में पूरा बदन धोने का हुक्म फ़रमाया है और मालूम है

कि यह पानी ही से होगा। फिर पानी न होने के वक़्त इरशाद-ए-बारी अज़-ज़-वजल 'फ़लम तजिदू' (फिर तुम न पाओ)।

'फ़लम तजिदू' (फिर तुम न पाओ)

1. बदाई अल-सनाई, तयम्मुम का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/51।
2. तबीन अल-हकाइक, तयम्मुम का अध्याय, अमीरिया प्रेस, बुलाक़, मिस्र, 1/41।
3. अल-बिनाया शरह अल-हिदाया, वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है, मलिक संस फैसलाबाद/कराची, 1/323।

पेज 206 का 761

جلد چہارم فتاویٰ رضویہ

هو المقيد وهو الماء المقيد لاباحة الصلاة عند الغسل به۔ | یہ وہ پانی ہے کہ اگر اس سے دھویا جائے تو جوازِ نماز کا فائدہ دے۔ (ت)

تبیین الحقائق امام فخر الدین میں ہے : الغسل المأمور به هو المبيح للصلاة ومالا يبيحها فوجوده وعدمه سواء۔ | جس دھونے کا حکم دے دیا گیا ہے یہ وہ ہے جس سے نماز جائز ہو جائے اور جس سے نماز جائز نہ ہو اس کا ہونا نہ ہونا برابر ہے۔ (ت)

بنایہ امام بدر محمود میں ہے: المحدث او الجنب اذا وجد بعض ما يكفيه من الماء لطهارته فعدم وجوب الاستعمال مذهبنا و مذهب مالك و اكثر العلماء لان الآية سيقت لبيان الطهارة الحكمية فكان قوله تعالى فلم تجدوا ماء ای طهوراً محللا للصلاة وبوجود مالا يكفى لم يوجد ما يحلل۔ | بے وضو یا جنب کو جب اپنی طہارت کے لئے کفایت کرنے والے پانی میں سے کچھ ہی ملے تو اس کا استعمال واجب نہیں۔ یہ ہمارا، امام مالک اور اکثر علماء کا مذہب ہے۔ اس لئے کہ آیت کریمہ طہارت حکمیہ کے بیان کے لئے آئی ہے، تو ارشاد باری تعالیٰ "فلم تجدوا ماء" (پھر تم پانی نہ پاؤ) سے مراد ایسا آبِ طہارت ہے جو نماز مباح کر دے اور ناکافی پانی ہونے سے وہ نہ پایا گیا جو نماز حلال کر دے۔ (ت)

فتح محقق حیث اطلق میں مجملاً پھر حلیہ میں موضحاً مفصلاً ہے: واللفظ لها قلنا المراد بالماء في النص ما يكفى لازالة المانع لانه سبحانه امر بغسل جميع البدن في حق الجنب ومعلوم ان ذلك بالماء ثم نقل الى التيمم عند عدمه بقوله عز وجل فلم تجدوا | الفاظ حلیہ کے ہیں : ہم کہتے ہیں نص میں پانی سے مراد وہ ہے جو ازالہ مانع کے لئے کافی ہو اس لئے کہ خدائے پاک نے حق جنب میں پورا بدن

دھونے کا حکم فرمایا ہے اور معلوم ہے کہ یہ پانی ہی سے ہو گا۔ پھر پانی نہ ہونے کے وقت ارشاد باری عزوجل "فلم تجدوا"

فَلَمْ تَجِدُوْا

1 بدائع الصنائع باب التیمم مکتبہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۵۱/۱ 2 تبیین الحقائق باب التیمم، مکتبہ امیریہ بولاق مصر ۱/ ۴۱ 3 البنایہ شرح الہدایۃ باب الماء الذی یجوز بہ الوضوء ملک سنز فیصل آباد کراچی ، ۱/ ۳۲۳

Fatawa Razawiya Volume 4

(Arabic) ماء فبالضرورة يكون التقدير ان لم تجدوا ماءً تغسلون به جميع ابدانكم جنبًا فتيمموا وهذا كمايصدق عند عدم الماء اصلا يصدق عند وجود الماء غير كاف لذلك فيتعين التيمم فى هذا كالاول 1-

(Urdu) "Water" (then if you do not find water), the command shifts towards Tayammum. So, by necessity, the implied speech would be: "If you do not find such water with which you can wash your entire body in a state of Janaba (major ritual impurity), then perform Tayammum." This statement is as true when there is no water at all as it is when there is insufficient water. Thus, like the former case, Tayammum becomes mandatory in this case too. (T)

In Kifayah by Imam Jalaluddin and then in Bahr by the researcher Zain al-Abidin, it is stated:

(Arabic) واللفظ له الاية سيقت لبيان الطهارة الحكمية فكان التقدير فلم تجدوا ماء محللا للصلاة وباستعمال القليل لم يثبت شيئ من الحل فان الحل حكم والعلة غسل الاعضاء كلها وشيئ من الحكم لايثبت ببعض العلة كبعض النصاب فى حق الزكاة وبعض الرقبة فى حق الكفارة 2كذا ذكر فى كثير من الشروح-

(Urdu) The words are from Bahr: The verse was revealed to explain symbolic purification (Taharah Hukmiyah). So the implied meaning would be: "Then if you do not find water that makes the entire prayer permissible." By using a small amount of water, no permissibility is established because permissibility is the ruling (Hukm), and washing all parts of the body is the cause (Illah). A ruling is not established by a partial cause, just as in the case of Zakat for a partial Nisab (threshold amount), and in the case of expiation (Kaffarah) for a partial slave. This is mentioned in many commentaries. (T)

It is obvious that even if there are a hundred minor impurities (Hadath) along with Janaba, performing Wudu will never make one eligible for prayer. So when one only has power over that much water, its existence or non-existence is equal. What would one do if even that much water was not found? One would only perform Tayammum; even now, one should only perform Tayammum. Seventh Proof: In Sharh Wiqayah, a misleading phrase occurred which is against his own and all other Imams' clear statements, from which it may appear that if minor impurity occurs along with Janaba, one should perform Wudu and for Janaba, do Tayammum. All common

commentators and great observers have unanimously inclined towards its interpretation that "along with" means "after," i.e., the Junub (person in state of Janaba) performed Tayammum and then a minor impurity occurred.

1 Fath al-Qadir, Chapter of Tayammum, Maktaba Nooria Razwiya, Sukkur, 1/119. 2 Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/139.

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

(अरबी) ماء فبالضرورة يكون التقدير ان لم تجدوا ماءً تغسلون به جميع ابدانكم جنبًا فتيمموا وهذا كمايصدق عند عدم الماء اصلا يصدق عند وجود الماء غير كاف لذلك فيتعين التيمم فى هذا كالاول 1-

(उर्दू) "पानी" (फिर अगर तुम्हें पानी न मिले) से हुक्म तयम्मुम की तरफ मुंतकिल हो गया। तो ज़रूरी तौर पर तकदीर-ए-कलाम ये होगी: अगर तुम ऐसा पानी न पाओ जिससे अपनी पूरी देह को जनाबत की हालत में धो सको तो तयम्मुम करो। और यह बात जैसे बिल्कुल पानी न होने के समय सही है, वैसे ही नाकाफी पानी होने के समय भी सही है, तो पहले की तरह इसमें भी तयम्मुम मुतअय्यन (अनिवार्य) है। (त)

इमाम जलालुद्दीन की 'किफ़ाया' और फिर मुहक़्क़िक़ जैनुल आबिदीन की 'बहर' में है:

(अरबी) واللفظ له الاية سيقت لبيان الطهارة الحكمية فكان التقدير فلم تجدوا ماء محللا للصلاة وباستعمال القليل لم يثبت شيئ من الحل فان الحل حكم والعلة غسل الاعضاء كلها وشيئ من الحكم لايثبت ببعض العلة كبعض النصاب فى حق الزكاة وبعض الرقبة فى حق الكفارة 2كذا ذكر فى كثير من الشروح-

(उर्दू) शब्द 'बहर' के हैं: आयत प्रतीकात्मक पवित्रता (तहारत-ए-हुक्मिया) के बयान के लिए आई है, तो तकदीर-ए-कलाम ये होगी: फिर तमाम नमाज़ को हलाल करने वाला पानी न पाओ। और थोड़े पानी के इस्तेमाल से कुछ भी हलाल होना साबित नहीं हुआ, क्योंकि हलाल होना हुक्म है, और सभी अंगों को धोना इल्लत (कारण) है। और कोई हुक्म आंशिक कारण से साबित नहीं होता जैसे ज़कात के हक में आंशिक निसाब (न्यूनतम राशि), और कफ़्फ़ारा के हक में आंशिक गुलाम का हाल है। इसी तरह बहुत सी शरहों (व्याख्याओं) में वर्णित है। (त)

और ज़ाहिर है कि जनाबत के साथ चाहे सौ हदस (लघु अशुद्धता) हों, वुज़ू कर लेना उसे कभी नमाज़ के काबिल नहीं बना सकता। तो जब इतने ही पानी पर क़ुदरत (सामर्थ्य) है, उसका होना न होना बराबर है। अगर इतना पानी भी न मिलता तो क्या करता? सिर्फ तयम्मुम ही करता। अब भी सिर्फ तयम्मुम ही करे। सातवीं दलील: शरह विक़ाया में एक भ्रामक इबारत (वाक्य) आई जो उनकी अपनी

और तमाम इमामों की स्पष्ट व्याख्याओं के खिलाफ है, जिससे यह आभास होता है कि यदि जनाबत के साथ हदस भी हो तो वुज़ू करे और जनाबत के लिए तयम्मुम। आम टीकाकारों और बड़े विद्वानों ने एक स्वर में इसकी व्याख्या की है कि 'साथ' का अर्थ 'बाद' है, यानी जुनुब ने तयम्मुम कर लिया और उसके बाद हदस हुआ।

1 फ़तह-अल-क़दीर, बाब-अत-तयम्मुम, मकतबा नूरिया रज़विया, सक्खर, 1/119. 2 अल-बहर-उर-राइक़, बाब-अत-तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/139.

पृष्ठ 207/761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

ماء فبالضرورة یکون التقدیر ان لم تجدوا ماءً تغسلون به جمیع ابدانکم جنبًا فتیمموا وهذا کمایصدق عند عدم الماء اصلا یصدق عند وجود الماء غیر کاف لذلك فیتعین التیمم فی هذا کالاول 1-

"ماء" (پھر تم پانی نہ پاؤ) سے حکم تیمم کی طرف منتقل ہو گیا۔ تو ضروری طور پر تقدیر کلام یہ ہوگی: اگر تم ایسا پانی نہ پاؤ جس سے اپنا پورا بدن بحالتِ جنابت دھو سکو تو تیمم کرو۔ اور یہ بات جیسے بالکل پانی نہ ہونے کے وقت صادق ہے ویسے ہی ناکافی پانی ہونے کے وقت بھی صادق ہے تو اوّل کی طرح اس میں بھی تیمم متعین ہے۔ (ت)

کفایہ امام جلال الدین پھر بحر محقق زین العابدین میں ہے:

واللفظ له الایة سیقت لبیان الطهارة الحکمیة فکان التقدیر فلم تجدوا ماء محللا للصلاة وباستعمال القلیل لم یثبت شیئ من الحل فان الحل حکم والعلة غسل الاعضاء کلها وشیئ من الحکم لایثبت ببعض العلة کبعض النصاب فی حق الزکاة وبعض الرقبة فی حق الکفارة 2کذا ذکر فی کثیر من الشروح-

الفاظ بحر کے ہیں: آیت طہارتِ حکمیہ کے بیان کے لئے آئی ہے، تو تقدیر کلام یہ ہوگی: پھر تمام نماز کو حلال کرنے والا پانی نہ پاؤ۔ اور قلیل کے استعمال کرنے سے کچھ بھی حلّت ثابت نہ ہوئی، کیونکہ حلّت حکم ہے، اور سارے اعضا کو دھونا علّت ہے۔ اور کوئی حکم بعض علّت سے ثابت نہیں ہوتا جیسے حق زکاۃ میں بعض نصاب، اور حق کفارہ میں بعض بردہ کا حال ہے۔ اسی طرح بہت سی شروح میں مذکور ہے۔ (ت)

اور ظاہر ہے کہ جنابت کے ساتھ اگرچہ سو حدث ہوں وضو کرلینا ہرگز اسے نماز کے قابل نہیں کرسکتا تو جب اسی قدر پانی پر قدرت ہے اس کا ہونا نہ ہونا یکساں۔ اگر اتنا پانی بھی نہ پاتا کیا کرتا۔ صرف تیمم اب بھی صرف تیمم ہی کرے۔ دلیل ہفتم: شرح وقایہ میں جو خود اپنی اور تمام ائمہ کی تصریحات کے خلاف ایک موہم عبارت واقع ہوئی جس سے یہ متبادر کہ جنابت کے ساتھ حدث بھی ہو تو وضو کرے اور جنابت کے لئے تیمم عامہ محشین وکبرائے ناظرین یک زبان اس کی تاویل کی طرف جھکے کہ ساتھ سے مراد بعد ہے یعنی جنب نے تیمم کرلیا اس کے بعد حدث ہوا

1 فتح القدیر باب التیمم مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۱۱۹ 2 البحر الرائق، باب التیمم، ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۳۹

Fatawa Ridawiyya, Volume 4

And if water suitable for ablution is available, then perform ablution now, because the previous tayammum cannot be effective for a subsequent minor ritual impurity (hadath), just as if hadath occurred after bathing (ghusl), performing ablution would be mandatory. It's not that tayammum for major ritual impurity (janabat) is insufficient to remove the previous minor impurity; rather, performing ablution along with tayammum would be necessary, which is undoubtedly contrary to the school of thought (madhhab) and its invalidity is clear and manifest. In summary, whatever is posterior among purity and ritual impurity removes the prior. Thus, if there are a thousand minor impurities along with a major impurity, when one performs tayammum, all of them will be removed. Therefore, it is necessary to interpret the passage of Sharh al-Wiqayah as referring to a minor ritual impurity occurring after tayammum. The scholars' flocking towards an interpretation is a clear proof that the ruling is not what is literally understood from it, and therefore whoever did not find an interpretation raised an objection. In any case, no one accepted its literal sense.

(Arabic)

O Allah, except for Al-Fadil al-Qarabaghi in his marginalia on Sharh al-Wiqayah, as will be mentioned, God willing.

I say: It is strange that Allamah Wazir remained silent about it in Al-Idah, despite his extreme fondness for objecting to the two Imams, the commentator and the author of the text (may Allah have mercy on all of them), to the point that he crossed over into linguistic criticisms. He named his jurisprudential text "Al-Islah" and the principles text "Taghyir al-Tanqih." However, a statement cannot be attributed to one who is silent. As for Al-Hindiyyah establishing this passage of Sharh al-Wiqayah through a discourse—while the main goal of most fatawa

(Urdu)

Yes, except for the learned al-Qarabaghi, who mentioned in his marginalia on Sharh al-Wiqayah, as his discourse will follow, if Allah wills. (T)

I say: It is surprising that Allamah Wazir remained silent about it in al-Idah, while he has a great interest in objecting to the two Imams, the commentator and the author of the text. May God have mercy on all of them; he even exceeded to linguistic captures and named his jurisprudential text "al-Islah" and the principles text "Taghyir al-Tanqih." But (if he remained silent here), no opinion can be attributed to one who is silent. Al-Hindiyyah has established this discourse of Sharh al-Wiqayah through a presentation. In this way, the main purpose of most fatwas compiled in this

(Arabic)

compiled in this manner is collection and synthesis—for this reason (1), commentaries investigating through refinement and verification are preferred over such fatawa.

Page 208 of 761

(Urdu)

manner is collection and synthesis; that is why commentaries that discuss with refinement and research are preferred over such fatwas. (T)

फ़तावा रिज़विया, खंड 4

और यदि वज़ू के योग्य पानी मौजूद है, तो अब वज़ू करें क्योंकि पिछला तयम्मुम बाद की अशुद्धि (हदस) में काम नहीं आ सकता, जैसे स्नान करने के बाद अशुद्धि हो तो वज़ू करना अनिवार्य होता। यह नहीं कि जनाबत का तयम्मुम पिछली अशुद्धि को दूर करने के लिए पर्याप्त नहीं है, बल्कि तयम्मुम के साथ वज़ू भी करना पड़ेगा, जो निस्संदेह मज़हब के विरुद्ध है और इसका अमान्य होना बिल्कुल साफ़ और स्पष्ट है। सारांश यह है कि पवित्रता और अशुद्धि में जो बाद में आता है वह पहले वाले को मिटा देता है। इसलिए जनाबत के साथ यदि हज़ार अशुद्धियाँ भी हों, जब कोई तयम्मुम करेगा तो सब दूर हो जाएँगी। अतः आवश्यक है कि शरह विक़ाया के इबारत (कथन) को तयम्मुम के बाद होने वाली अशुद्धि पर लागू करें। विद्वानों का व्याख्या की ओर झुकना इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि हुक्म वह नहीं है जो उसके प्रत्यक्ष रूप से समझ आता है, और इसीलिए जिसे व्याख्या नहीं मिली उसने आपत्ति की। बहरहाल, इसके प्रत्यक्ष अर्थ को किसी ने स्वीकार नहीं किया।

(अरबी)

अल्लाह, सिवाय फ़ाज़िल अल-क़रह बाग़ी के शरह विक़ाया पर अपने हाशिये में, जैसा कि इंशा अल्लाह तआला आएगा।

मैं कहता हूँ: और आश्चर्य है अल्लामा वज़ीर से कि वे अल-ईज़ाह में इस पर चुप रहे, बावजूद इसके कि उन्हें दोनों इमामों (व्याख्याकार और मूल लेखक) पर आपत्ति करने का बहुत शौक है—अल्लाह उन सभी पर कृपा करे—यहाँ तक कि वे भाषाई आलोचनाओं तक पहुँच गए। उन्होंने अपने फ़िक़ही पाठ का नाम 'अल-इसलाह' और उसूल के पाठ का नाम 'तग़य्यीर अल-तनक़ीह' रखा। लेकिन चुप रहने वाले की ओर किसी मत को संबंद्ध नहीं किया जा सकता। जहाँ तक अल-हिन्दिया का शरह विक़ाया के इस कलाम को एक तक़रीर से सिद्ध करने का प्रश्न है—जबकि इस

(उर्दू)

हाँ, मगर फ़ाज़िल क़रह बाग़ी ने शरह विक़ाया पर अपने हाशिये में जैसा कि उनका कलाम इंशा अल्लाह तआला आएगा। (त)

मैं कहता हूँ: आश्चर्य है कि अल्लामा वज़ीर इस पर 'ईज़ाह' में चुप रहे, जबकि उन्हें दोनों इमामों (भाष्यकार और मूल पाठ के लेखक) पर आपत्ति करने में बहुत रुचि है। ईश्वर सब पर कृपा करे, यहाँ तक कि वे शाब्दिक कमियों तक पहुँच गए और अपने फ़िक़ही पाठ का नाम "अल-इसलाह" और उसूल के पाठ का नाम "तग़य्यीर अल-तनक़ीह" रखा। लेकिन (यहाँ वे चुप रहे तो) चुप रहने वाले की ओर किसी बात को संबंद्ध नहीं किया जा सकता। 'हिन्दिया' ने शरह विक़ाया के इस कलाम को एक तक़रीर (प्रवचन) से सिद्ध किया है। वैसे तो इस शैली पर संकलित

(अरबी)

शैली पर संकलित अधिकांश फ़तावा का मुख्य उद्देश्य संकलन और समन्वय (तल्फ़ीक़) होता है— इसीलिए शोध और सत्यापन (तनक़ीह व तहक़ीक़) से चर्चा करने वाली व्याख्याओं को ऐसे फ़तावा पर प्राथमिकता प्राप्त है।

पृष्ठ 208/761

(उर्दू)

अधिकांश फ़तावा का बड़ा उद्देश्य संकलन और समन्वय (तल्फ़ीक़) होता है, इसीलिए शोध और सत्यापन (तनक़ीह व तहक़ीक़) से चर्चा करने वाली शरह (व्याख्याओं) को ऐसे फ़तावा पर प्राथमिकता प्राप्त है। (त)

اور پانی قابلِ وضو حاضر ہے تو اب وضو کرے کہ گزشتہ تیمم بعد کے حدث میں کام نہیں دے سکتا جیسے نہالینے کے بعد حدث ہوتا تو وضو کرنا لازم تھانہ یہ کہ جنابت کا تیمم رفع حدثِ سابق کو کافی نہیں تیمم کے ساتھ وضو بھی کرنا پڑے کہ یہ بلا شبہ مذہب کے خلاف اور اس کا بطلان ظاہر و صاف۔ خلاصہ یہ کہ طہارت وحدث میں جو متاخر ہے سابق کو رفع کردیتا ہے تو جنابت کے ساتھ اگر ہزار حدث ہوں جب تیمم کرے گا سب رفع ہوجائیں گے لہذا واجب کہ عبارت شرح وقایہ کو حدث بعد تیمم پر حمل کریں۔ علماء کا تاویل پر ہجوم روشن دلیل ہے کہ حکم وہ نہیں جو اس کے ظاہر سے مفہوم ولہذا جس نے تاویل نہ پائی اعتراض کردیا بہرحال اس کا ظاہر کسی نے مسلم نہ رکھا۔

(عربی)

اللهم الا الفاضل القره باغی في حاشيته على شرح الوقاية كما سيأتي ان شاء الله تعالى۔

اقول: والعجب من علامة الوزير سكت عنه فی الايضاح مع شدة ولوعه بالاعتراض على الامامين الشارح والمتن رحمهم الله الجميع حتى تجاوز الى المؤاخذات اللفظية وسمى متنه الفقهى الاصلاح والاصولى تغيير التنقيح غير انه لا ينسب الى ساكت

(اردو)

ہاں مگر فاضل قرہ باغی نے شرح وقایہ پر اپنے حاشیہ میں جیسا کہ ان کا کلام ان شاء اللہ تعالیٰ آئے گا۔ (ت)

اقول: تعجب ہے کہ علامہ وزیر اس پر ایضاح میں خاموش رہے جبکہ امامین شارح و متن پر اعتراض سے ان کو بہت زیادہ دلچسپی ہے۔ خدا سب پر رحمت فرمائے یہاں تک کہ لفظی گرفتوں تک تجاوز کرگئے اور اپنے فقہی متن کا نام "اصلاح" اور اصولی متن کا نام "تغییر التنقیح" رکھا مگر (یہاں وہ ساکت رہے تو)

(عربی)

قول اما اثبات الھندیة کلام شرح الوقایة ھذا بالتقریر فمع قطع النظر عن ان غالب الفتاوی المنسوجة علی ھذا المنوال جل ھمتھا الجمع والتلفیق ولذا (۱) رجحت علیھا الشروح الباحثة بالتنقیح والتحقیق۔

(اردو)

ساکت کی طرف تو کوئی قول منسوب نہیں کیا جا سکتا۔ ہندیہ نے شرح وقایہ کا یہ کلام ایک تقریر سے ثابت کیا ہے۔ یوں تو اس انداز پر جمع شدہ زیادہ تر فتاوٰی کا بڑا مقصد جمع و تلفیق ہوتا ہے اسی لئے تنقیح و تحقیق سے بحث کرنے والی شروح کو ایسے فتاوٰی پر ترجیح حاصل ہے۔ (ت)

Fatawa Ridawiyya Volume Four

I say: In my view, the [primary] texts (mutoon) are...

Note: I say: Meaning, like the summaries (Mukhtasars) of Imam al-Tahawi, Imam al-Karkhi, Imam al-Quduri, Kanz al-Daqaiq, al-Wafi, al-Wiqayah, al-Nuqayah, al-Islah, al-Mukhtar, Majma' al-Bahrayn, Mawahib al-Rahman, al-Multaqa, and similar books authored for transmitting the [official] school's position (Naql-e-Madhhab), not like [books such as] al-Munyah, as its rank is no higher than that of Fatawa collections. And I have seen that Tanwir al-Absar includes narrations from al-Qunyah even when they contradict the explicit positions mentioned in Imam Muhammad's books, as I have detailed some instances in my book "Kafil al-Faqih al-Faheem fi Hukm Qirtas al-Darahim". See the ignorance of one of the deviants of our time, Gangohi, who in his treatise on the second congregation (Jama'at Thaniyah), categorized 'al-Ashbah' among the primary texts (mutoon). The foolish person did not know what is meant by 'matn' here, and in his ignorance, he assumed that "every white thing is fat and every black thing is a date." (Or as per the Urdu proverb: "All that glitters is not gold" [12 M-Alif]). This book, al-Ashbah, is filled with citations from Fatawa and scholarly discussions; therefore, its status is that of Fatawa or commentaries (shuruh). Let this be kept in mind. And scholars have counted 'al-Hidayah' among the primary texts (mutoon) despite it being formally a commentary. [12 from him, May Allah forgive him (T)]

फ़तावा रिज़विया खंड चार

मैं कहता हूँ: मेरे विचार में, फ़िक़्ह (इस्लामी न्यायशास्त्र) में मूल ग्रंथ (मुतून) वे हैं...

नोट: मैं कहता हूँ: यानी, जैसे इमाम अल-तहावी, इमाम अल-करख़ी, इमाम अल-क़ुदूरी के सारांश (मुख़्तसर), कंज़ अल-दक़ाइक़, अल-वाफ़ी, अल-विक़ाया, अल-नुक़ाया, अल-इस्लाह, अल-मुख़्तार, मजमा' अल-बहरैन, मवाहिब अल-रहमान, अल-मुल्तका और इसी तरह की अन्य किताबें जो मज़हब (विचारधारा) के आधिकारिक रुख को प्रसारित करने के लिए लिखी गई हैं। वे 'अल-मुन्याह' जैसी किताबों की तरह नहीं हैं, क्योंकि उसका स्थान फ़तावा संग्रहों से ऊंचा नहीं है। और मैंने देखा है कि 'तनवीर अल-अबसार' में 'अल-क़ुनियाह' से वे वर्णन शामिल हैं जो इमाम मुहम्मद की किताबों में स्पष्ट रूप से बताए गए मज़हब के खिलाफ हैं, जैसा कि मैंने अपनी पुस्तक 'कफ़ील अल-फ़क़ीह अल-फ़हीम फ़ी हुक्म क़िर्तास अल-दराहिम' में उनमें से कुछ का वर्णन किया है। इस युग के एक पथभ्रष्ट, गंगोही की अज्ञानता देखें कि उन्होंने दूसरी जमात (जमाअत सानिया) के बारे में अपने लेख में 'अल-अशबाह' को मूल ग्रंथों (मुतून) में गिना है। उस मूर्ख को यह नहीं पता था कि यहाँ 'मतन' (मूल पाठ) का क्या अर्थ है, और उसने अपनी अज्ञानता में यह समझ लिया कि "हर सफेद चीज़ चर्बी है और हर काली चीज़ खजूर है" (या उर्दू कहावत के अनुसार: "हर चमकती चीज़ सोना नहीं होती" [12 म-अलिफ़])। यह किताब 'अल-अशबाह' फ़तावा के उद्धरणों और शोधपूर्ण चर्चाओं से भरी हुई है, इसलिए इसका दर्जा फ़तावा या टीकाओं (शुरुह) का ही है। यह बात ध्यान में रहे। और विद्वानों ने 'अल-हिदाया' को मूल ग्रंथों में गिना है, इसके बावजूद कि वह औपचारिक रूप से एक टीका (शरह) है। [12 उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे (त)]

فتاوی رضویہ جلد چہارم

اقول : میرے نزدیک فقہ میں متون،

اقول : یعنی جیسے مختصر امام طحاوی، مختصر امام کرخی، مختصر امام قدوری، کنز الدقائق، وافی، وقایہ، نقایہ، اصلاح، مختار، مجمع البحرین، مواہب الرحمن، ملتقی۔ اور ایسی ہی دوسری کتابیں جو نقلِ مذہب کے لئے لکھی گئی ہیں۔ منیہ جیسی کتاب نہیں کہ اس کا درجہ فتاوی سے زیادہ نہیں اور میں نے دیکھا کہ تنویر الابصار میں قنیہ سے نقل شدہ روایات داخل ہیں جب کہ وہ امام محمد کی کتابوں میں منصوص مذہب سے متصادم ہیں۔ جیسا کہ ان میں سے بعض کا میں نے اپنی کتاب "کفل الفقیہ الفاھم فی حکم قرطاس الدراھم" میں بیان کیا ہے ایک گمراہ زمانہ گنگوہی کی بے خبری دیکھیے کہ جماعت ثانیہ سے متعلق اپنے رسالہ میں "اشباہ" کو متون سے قرار دیا، نادان کو یہ پتا نہیں کہ یہاں متن سے کون سا معنی مراد ہے اور اپنی بے خبری سے یہ سمجھ لیا کہ "ہر سفید چیز چربی اور ہر سیاہ چیز کھجور ہے"۔ (یا اردو مثل میں : ہر چمکتی چیز سونا ہے ۱۲ م الف) یہ کتاب الاشباہ فتاوی کی نقول و ابحاث سے بھری ہوئی ہے تو اس کا درجہ فتاوی ہی کا ہے یا شروح کا۔ یہ ذہن نشین رہے، اور علما نے ہدایہ کو متون سے شمار کیا ہے باوجود یہ کہ وہ صورۃً شرح ہے ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

Fatawa Razawiya | Volume Four

Commentaries (1) and Fatwas (2) in Jurisprudence — The status of commentaries and fatwas is the same.

(1) I say: Like the commentaries of the foundational books (Usul) written by the Imams (these foundational books are: Jami' al-Kabir, Jami' al-Saghir, Al-Mabsut, Al-Ziyadat, Al-Siyar al-Kabir, Al-Siyar al-Saghir) and the commentaries on the aforementioned abridgments (Mukhtasarat) which are based on critical research. This includes: Mabsut of Imam al-Sarakhsi, Bada'i' of Malik al-Ulama, Tabyin al-Haqa'iq, Fath al-Qadir, Al-'Inayah, Al-Binayah, Ghayat al-Bayan, Al-Dirayah, Al-Kifayah, Al-Nihayah, Al-Hilyah, Al-Ghunyah, Al-Bahr al-Ra'iq, Al-Nahr al-Fa'iq, Durar al-Hukkam, Al-Durr al-Mukhtar, Jami' al-Mudammarat, Al-Jawharat al-Nayyirah, Al-Idah, and similar other books. In my view, the marginalia (hawashi) of researching scholars are also included in these, such as Ghunyat al-Shurunbulali, marginalia of Khayr al-Din al-Ramli, Radd al-Muhtar, Minhat al-Khaliq, and similar marginalia. Books like Al-Mujtaba, Jami' al-Rumuz, and Sharh Abi al-Makarim are not of this rank. In fact, Al-Siraj al-Wahhaj and Sharh Miskin are also not among them. [12, from the author, may he be forgiven].

(2) I say: Like Al-Khaniyah, Al-Bazzaziyah, Al-Khulasah, Khizanat al-Muftin, Jawahir al-Fatawa, Al-Muhitat (there are several books named Muhit), Al-Dhakhirah, Waqi'at al-Natiqi, Waqi'at al-Sadr al-Shahid, Nawazil al-Faqih, Majmu' al-Nawazil, Al-Walwalajiyyah, Al-Zahiriyyah, Al-'Umdah, Al-Kubra, Al-Sughra, Tatimmat al-Fatawa, Al-Sayrafiyyah, Fusul al-'Imadi, Fusul al-Ustrushani, Jami' al-Saghir, Tatar Khaniyah, Al-Hindiyyah (continued on the next page).

व्याख्याएँ(1) और फतवे (2) फिक्ह (धर्मशास्त्र) में — व्याख्याओं और फतवों का हाल वही है।

(1) मैं कहता हूँ: जैसे कि इमामों द्वारा लिखी गई उसूल (मूल) पुस्तकों की व्याख्याएँ(ये उसूल पुस्तकें हैं: जामे कबीर, जामे सगीर, मबसूत, ज़ियादात, सियर कबीर, सियर सगीर) और ऊपर उल्लिखित संक्षिप्त ग्रंथों (मुख़्तसरात) की वे व्याख्याएँ जो शोध पर आधारित हों। जैसे इमाम सरख़सी की मबसूत, मलिकुल उलमा की बदाइ', तबयीनुल हक़ाइक़, फ़तहुल क़दीर, इनाया, बिनाया, ग़ायतुल बयान, दिराया, किफ़ाया, निहाया, हिलया, गुनिया, अल-बहरुल राइक़, अल-नहरुल फ़ाइक़, दुररुल हुक्काम, दुर्रे मुख़्तार, जामे अल-मुदमरात, अल-जौहरातुन नय्यिरा, अल-ईदाह और इसी तरह की अन्य पुस्तकें। मेरे नज़दीक, इनमें शोधकर्ताओं के हाशिये (टिप्पणियाँ) भी शामिल हैं जैसे गुनिया शरुनबुलाली, ख़ैर अल-दीन रम्ली के हाशिये, रद्दुल मुह्तार, मिन्हतुल ख़ालिक़, और इसी तरह के हाशिये। मुजतबा, जामे अल-रुमूज़, शरह अबी अल-मकारिम जैसी पुस्तकें इस श्रेणी की नहीं हैं। बल्कि सिराज वहाज और शरह मिस्कीन भी इनमें नहीं हैं। [12, लेखक द्वारा, अल्लाह उन्हें क्षमा करे]।

(2) मैं कहता हूँ: जैसे ख़ानिया, बज़ाज़िया, ख़ुलासा, ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन, जवाहरुल फ़तावा, मुहीतात (मुहीत नाम की कई पुस्तकें हैं), अल-ज़ख़ीरा, वाक़ियात नतिक़ी, वाक़ियात सदर अल-शहीद, नवाज़िलुल फ़क़ीह, मजमूअुल नवाज़िल, अल-वलवलजिया, अल-ज़हीरिया, अल-उमदा, अल-कुबरा, अल-सुग़रा, ततिम्मतुल फ़तावा, अल-सैरुफ़िया, फ़ुसूल अल-इमादी, फ़ुसूल अल-उस्तरुशानी, जामे सग़ीर, तातार ख़ानिया, हिन्दिया (बाकी अगले पृष्ठ पर)।

पृष्ठ 210 / 761

والشروح عہ۱ والفتاوی عہ۲ فی الفقہ۔ — شروح اور فتاوی کا حال وہی ہے

عہ۱ اقول: جیسے کتب اصول کی شرحیں جو ائمہ نے لکھیں (کتب اصول یہ ہیں: جامع کبیر، جامع صغیر، مبسوط، زیادات، سیر کبیر، سیر صغیر) اور (حاشیہ بالا میں) مذکورہ مختصرات کی شرحیں جو تحقیق پر مبنی ہوں۔ اور مبسوط امام سرخسی، بدائع ملک العلماء، تبیین الحقائق، فتح القدیر، عنایہ، بنایہ، غایۃ البیان، درایہ، کفایہ، نہایہ، حلیہ، غنیہ، البحر الرائق، النہر الفائق، دررالحکام، درمختار، جامع المضمرات، جوہرہ نیرہ، ایضاح۔ اور ایسی ہی دیگر کتابیں۔ میرے نزدیک ان ہی میں محققین کے حواشی بھی داخل ہیں جیسے غنیہ شرنبلالی، حواشی خیر الدین رملی، رد المحتار، منحۃ الخالق، اور ایسے ہی حواشی۔ مجتبیٰ، جامع الرموز، شرح ابی المکارم جیسی کتابیں نہیں۔ بلکہ سراج وہاج اور شرح مسکین بھی نہیں ۱۲منہ غفرلہ (ت)

عہ۲ اقول: جیسے خانیہ، بزازیہ، خلاصہ، خزانہ المفتین، جواہر الفتاوی، محیطات (محیط نام کی متعدد کتابیں ہیں) ذخیرہ، واقعات ناطفی، واقعات صدر شہید، نوازل فقیہ، مجموع النوازل، ولوالجیہ، ظہیریہ، عمدہ، کبری، صغری، تتمہ الفتاوی، صیرفیہ، فصول عمادی، فصول استروشن، جامع صغار، تاتار خانیہ، ہندیہ (باقی بر صفحہ آئندہ)

Fatawa Razawiyya, Volume 4

[Header] Like 1: Sahihs, 2: Sunans, 3: [Musnads] | Which in Hadith are Sahihs and Sunans

[Right Column - Urdu Explanation] (Remainder of the footnote from the previous page) And similar books. Among these Fatawa is *al-Munyah*, as I mentioned. Books like *al-Qunyah* (1), *al-Rahmaniyyah*, *Khazanat al-Riwayat*, *Majma' al-Barakat*, and their *Burhan* are not like it. However, the submissions (2) within them that are based on scrutiny, criticism, and refinement are, in my view, in the rank of commentaries (Shuruh), such as *Fatawa al-Khairiyyah* and Allama Shami's *al-Uqud al-Durriyah*. I hope that my Lord, by His grace and kindness, will also thread these Fatawa of mine into their chain, for "the earth also receives a share from the cup of the noble." As for the Fatawa (3) of al-Turi and the researcher Ibn Nujaym, it has been said that they are not to be relied upon. And Allah Almighty knows best. 12, from him, may he be forgiven (T).

The three categories correspond to three others consecutively. 12, from him, may he be forgiven (T). (Meaning: first the most authentic Sahihs, then Sunans, then Musnads; similarly in Fiqh: texts/Mutun, then commentaries/Shuruh, then Fatawa. - M.A.) Like the Sahihs (4) of the two Sheikhs (Bukhari and Muslim), *al-Muntaqa*, *Ibn al-Sakan*, and *al-Mukhtara*. In my view, *Muatta Imam Malik* is also among them, and closely following them is *Sahih Ibn Hibban*. They are not like books like *al-Mustadrak*. 12, from him, may he be forgiven (T). Like the Sunans (5) of Abu Dawood, al-Nasa'i, and al-Tirmidhi. In their rank is also *Musnad al-Ruyani*, and similar to them, rather even above them (6)... (Continued on the next page).

[Left Column - Arabic Source] And *Jami' al-Saghir*, *Tatar-khaniyyah*, *al-Hindiyyah*, and the like. And among them is *al-Munyah* as I mentioned, not like *al-Qunyah* (1) and *al-Rahmaniyyah*. And *Khazanat al-Riwayat*, *Majma' al-Barakat*, and its *Burhan*. As for the submissions (2), what was built in them upon scrutiny, criticism, and refinement, they are in my view in the rank of commentaries like *Fatawa al-Khairiyyah* and *al-Uqud al-Durriyah* by Allama Shami. And I hope that my Lord, by His grace and kindness, will thread these Fatawa of mine into their chain. For "the earth has a share from the cup of the noble." As for the Fatawa (3) of al-Turi and the researcher Ibn Nujaym, it has been said that they are not relied upon. And Allah Almighty knows best. 12, from him, may he be forgiven (M). Note 1: The three against the three in succession. 12, from him, may he be forgiven (M). Note 2: Like the Sahihs (4) of the two Sheikhs, *al-*

Muntaqa, *Ibn al-Sakan*, and *al-Mukhtara*. In my view, *Muatta Malik* is among them, followed by Ibn Hibban, not like *al-Mustadrak*. 12, from him, may he be forgiven. (M) Note 3: Like the Sunans (5) of Abu Dawood, al-Nasa'i, and al-Tirmidhi. And in their rank is *Musnad al-Ruyani* and similar to them, rather above them (6).

[Footer] Page 211 of 761

फ़तावा रज़विया, जिल्द ४

[शीर्षक] उदाहरण १. सहीह, २. सुनन, ३. [मसानिद] | जो हदीस में सहीह और सुनन हैं

[दायां कॉलम - उर्दू स्पष्टीकरण] (पिछले पृष्ठ के फुटनोट का शेष भाग) और इसी तरह की किताबें। इन फ़तावा में 'अल-मुनिया' भी है जैसा कि मैंने उल्लेख किया है। 'अल-कुनिया' (१), 'अल-रह्मानिया', 'ख़ज़ानत-उर-रिवायात', 'मज्मअ-उल-बरकात' और उनकी 'बुरहान' जैसी किताबें इसके समान नहीं हैं। लेकिन उनमें जो प्रस्तुतियाँ (२) सूक्ष्म जांच, आलोचना और शोध पर आधारित हैं, वे मेरे नज़दीक व्याख्याओं (शुरुह) के दर्जे में हैं, जैसे 'फ़तावा अल-ख़ैरिया' और अल्लामा शामी की 'अल-उक़ूद अद-दुर्रिया'। मुझे आशा है कि मेरा रब अपने अनुग्रह और दया से मेरे इन फ़तावा को भी उनकी लड़ी में पिरोएगा, क्योंकि "सज्जनों के प्याले से धरती को भी हिस्सा मिल जाता है।" जहाँ तक अल-तूरी और अनुसंधानकर्ता इब्न नुजैम के फ़तावा (३) का सवाल है, उनके बारे में कहा गया है कि वे भरोसेमंद नहीं हैं। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। १२, उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए (त)।

तीनों श्रेणियाँ लगातार तीन अन्य के अनुरूप हैं। १२, उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए (त)। (अर्थात: सबसे प्रमाणिक सहीह हैं, फिर सुनन, फिर मसानिद; इसी तरह फ़िक़्ह में: मूल पाठ/मुतून, फिर व्याख्याएं/शुरुह, फिर फ़तावा। - म.अ.) जैसे दोनों शेखों (बुखारी और मुस्लिम) की सहीह (४), 'अल-मुन्तक़ा', 'इब्न-उस-सकन' और 'अल-मुख़तारा'। मेरे विचार में, 'मुअत्ता इमाम मालिक' भी उन्हीं में से है, और उनके ठीक बाद 'सहीह इब्न हिब्बान' है। वे 'अल-मुस्तदरक' जैसी किताबों के समान नहीं हैं। १२, उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए (त)। जैसे अबू दाऊद, अल-नसाई और अल-तिर्मिज़ी की सुनन (५)। उनके दर्जे में 'मुसनद अल-रुयानी' भी है, और उनके समान, बल्कि उनके ऊपर (६)... (अगले पृष्ठ पर जारी)।

[बायां कॉलम - अरबी स्रोत का अनुवाद] और 'जामे अस्-सग़ीर', 'ततारख़ानिया', 'अल-हिन्दिया' और उनके समान। और उनमें से 'मुनिया' है जैसा कि मैंने उल्लेख किया, न कि 'कुनिया' (१) और 'अल-रह्मानिया' जैसी। और 'ख़ज़ानत-उर-रिवायात', 'मज्मअ-उल-बरकात' और उसकी 'बुरहान'। जहाँ तक प्रस्तुतियों (२) की बात है, उनमें से जो सूक्ष्म जांच, आलोचना और शोध पर आधारित हैं, वे मेरे नज़दीक व्याख्याओं के दर्जे में हैं जैसे 'फ़तावा ख़ैरिया' और अल्लामा शामी की 'अल-उक़ूद अद-दुर्रिया'। और मुझे आशा है कि मेरा रब अपने अनुग्रह और दया से मेरे इन फ़तावा को उनकी लड़ी में पिरोएगा। क्योंकि "सज्जनों के प्याले से धरती को भी हिस्सा मिलता है।" रही बात तूरी और

अनुसंधानकर्ता इब्न नुजैम के फ़तावा (३) की, तो कहा गया है कि उन पर भरोसा नहीं किया जाता। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। १२, उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए (म)। नोट १: तीनों के मुक़ाबले तीनों लगातार। १२, उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए (म)। नोट २: जैसे दोनों शेखों की सहीह (४), 'मुन्तक़ा', 'इब्न-उस-सकन' और 'मुख़तारा'। मेरे अनुसार 'मुअत्ता मालिक' उन्हीं में से है, जिसके बाद इब्न हिब्बान है, न कि 'मुस्तदरक' जैसी। १२, उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए। (म) नोट ३: जैसे अबू दाऊद, नसाई और तिर्मिज़ी की सुनन (५)। और उनके दर्जे में 'मुसनद रुयानी' और उनके समान, बल्कि उससे भी ऊपर (६)।

[पाद लेख] पृष्ठ २११ का ७६१

مثل ع۱ الصحاح ع۲ والسنن ع۳ | جو حدیث میں صحاح، سنن

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) اور ایسی ہی کتابیں۔ ان ہی فتاوٰی میں منیہ بھی ہے جیسا کہ میں نے ذکر کیا ۔ قنیہ، رحمانیہ، خزانہ الروایات، مجمع البرکات، اور ان کی برہان جیسی کتابیں نہیں۔ لیکن معروضات تو ان میں جو چھان بین اور تنقید و تنقیح پر مبنی ہوں وہ میرے نزدیک شروح کے درجہ میں ہیں جیسے فتاوی خیریہ اور علامہ شامی کی العقود الدریہ۔ اور مجھے امید ہے کہ میرا رب اپنے احسان و کرم سے میرے ان فتاوٰی کو بھی ان ہی کی سلک میں منسلک فرمائے گا کہ اہل کرم کے جام سے زمین کو بھی حصہ مل جاتا ہے۔ رہے فتاوٰی طوری اور فتاوٰی محقق ابن نجیم تو ان کے بارے میں کہا گیا ہے کہ قابل اعتماد نہیں۔ اور خدائے برتر ہی خوب جاننے والا ہے ۱۲ منہ غفر لہ (ت) تینوں، تینوں کے مقابل یکے بہ پے ہیں ۱۲ منہ غفر لہ (ت) (یعنی سب سے معتبر صحاح پھر سنن پھر مسانید، اسی طرح متون پھر شروح پھر فتاوٰی۔ م الف) جیسے صحاح شیخین و منتقٰی و ابن السکن و مختارہ۔ اور میرے نزدیک ان ہی میں مؤطا امام مالک بھی ہے اور انہی سے متصل صحیح ابن حبان بھی۔ مستدرک جیسی کتب نہیں ۱۲ منہ غفر لہ (ت) جیسے ابوداؤد، نسائی اور ترمذی کی سنن۔ ان ہی کے درجہ میں مسند رویانی بھی ہے اور ان ہی کے مثل بلکہ ان میں

(باقی بر صفحہ آئندہ)

وجامع الصغار والتتارخانية والهندية وامثالها ومنها المنية كما ذكرت لا كالقنية (١) والرحمانية وخزانة الروايات ومجمع البركات وبرهانه اما المعروضات (٢) فما بنى منها على التنقر والتنقيح والتنقيح فهى عندي في مرتبة الشروح كالفتاوى الخيرية والعقود الدرية للعلامة شامى واطمع ان يسلك ربي بمنه وكرمه فتاوى هذه في سلكها فللارض من كأس الكرام نصيب اما فتاوى (٣) الطوري والمحقق ابن نجيم

فقد قيل انه لا يعمد عليها والله تعالى اعلم ١٢ منه غفر له (م) عه١ الثلثة بالثلثة على الولاء ١٢ منه غفر له (م) عه٢ كصحاح (٤) الشيخين والمنتقى وابن السكن والمختارة وعندى منها موطأ مالك ويتلوها ابن حبان لا كالمستدرك ١٢ منه غفر له (م) عه٣ كسنن (٥) ابي داؤد والنسائي والترمذي وفي مرتبتها مسند الرويانى ومثلها بل فوق (٦)

Fatawa Razawiyya Volume 4

[Box 1 Content] Arabic: Wal-masanidu 'anhu fil-hadithi innama yush'iru bi'timadih *Urdu: And the case of the 'Masanid' (books of Hadith) from him indicates his reliance on it. However, apart from that, it is clear from the 'Taqrir-e-Hindiya' that... Arabic: 'ala ma yataqarraru min muradih* Urdu: ...his reliance is on the intent established through that discourse; relying solely on the apparent meaning is not dependable. Arabic: la bikhususil-'amali 'ala zahiri mafadih *Urdu: ...as per what is established from his intent. And Allah knows best the intentions of His servants. (T) Arabic: Wallahu a'lamu bi-niyati 'ibadih*

In 'Sharh Niqayah' by Allama Barjandi, after quoting the discourse of 'Sharh Wiqayah' and the subsequent discussion and response, which will be mentioned further on, God willing, the aforementioned ruling has been refuted,

[Box 2 Content] Arabic: Haythu qala ajnaba wa lam yujad naqizul-wudu'i hal Urdu: His words are: A person became 'junub' (ritually impure) and no 'naqiz-e-wudu' (thing that breaks ablution) was found. Arabic: yajibut-tayammumu wat-tawaddi'u jami'an idha ahdatha wa ma'ahu Urdu: Will both 'Tayammum' and 'Wudu' be obligatory if a minor ritual impurity occurred and he has... Arabic: ma'un yakfi lil-wudu'i faqat fihi taraddudun waz-zahiru annahu Urdu: ...only enough water for 'Wudu'? There is hesitation in this, but it is apparent that if he performs 'Tayammum' for 'Janabat' (major ritual impurity), there is no need for... Arabic: idha tayammama lil-janabati la hajata ila Urdu: ...for 'Wudu' alone.

[Footnote section] (Remainder of the previous page's footnote) Above some of them are Imam Tahawi's 'Sharh Ma'ani al-Athar', Imam Muhammad's 'Kitab al-Athar', 'Al-Hujaj' narrated from Muhammad by Isa bin Aban, and Imam Abu Yusuf's 'Kitab al-Kharaj'. May Allah be pleased with all of them. (T) Among them, the greatest is 'Musnad Imam Ahmad'. In the same category are both 'Musannafs' (Musannaf Abdur Razzaq and Musannaf Ibn Abi Shaybah) and Tabarani's 'Mu'jam Kabir', 'Saghir', and 'Awsat'. Books like 'Musnad al-Firdaws' are not of this level. It is not even a 'Musnad' in this sense; rather, it contains the extraction of Hadiths from 'Firdaws'. Whoever desires complete details on this topic should consult my treatise "Madarij Tabaqat al-Hadith". 12 Minhu Ghafar Allahu Lahu. (T)

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

[बॉक्स 1 की सामग्री] अरबी: वलमसानिदु अन्हु फ़िल-हदीसे इन्नमा युशइरु बिअतिमादिहि उर्दू: और मसानिद का हाल है। मगर उससे अलग 'तकरीर-ए-हिन्दिया' से यही पता चलता है कि... अरबी: अला मा यतकर्ररु मिन मुरादिहि उर्दू: ...उनका भरोसा उस मक़सद पर है जो उस तक़रीर से साबित होता है; केवल ज़ाहिरी मफ़ाद पर अमल भरोसेमंद नहीं है। अरबी: ला बिलखुसूसिल-अमलि अला ज़ाहिरी मफ़ादिहि उर्दू: ...जैसा कि उनके मक़सद से तय होता है। और अल्लाह ही अपने बंदों की नियतों को बेहतर जानता है। (त) अरबी: वल्लाहु आलम बि-नियाति इबादिहि

अल्लामा बरजंदी की 'शरह निक़ाया' में 'शरह विक़ाया' के कलाम की नकल और बहस व जवाब के बाद, जिसका ज़िक्र इंशा अल्लाह आगे आएगा, उल्लेखित हुक्म से इनकार कर दिया गया है,

[बॉक्स 2 की सामग्री] अरबी: हैसु काला अजनबा वलम युजद नाक़िज़ुल-वज़ूई हल उर्दू: उनके शब्द ये हैं: एक व्यक्ति जुनुब (नापाक) हो गया और वज़ू तोड़ने वाली कोई चीज़ नहीं पाई गई। अरबी: यजीबुत-तयममुमु वत-तव़द्दईऊ जमीअन इज़ा अहदसा व मअहु उर्दू: तो क्या उस पर तयम्मुम और वज़ू दोनों ही वाजिब होंगे जबकि उसे हदस (नापाकी) हुई हो और उसके पास... अरबी: माउन यकफ़ी लिल-वज़ूई फ़क़त फ़ीहि तरददुन वज़-ज़ाहिरु अन्नहु उर्दू: ...सिर्फ वज़ू के लिए काफ़ी पानी हो? इसमें झिझक है और ज़ाहिर यह है कि जब उसने जनाबत के लिए तयम्मुम कर लिया तो उसे ज़रूरत नहीं... अरबी: इज़ा तयममा लिल-जनाबति ला हाजता इला उर्दू: ...सिर्फ वज़ू के लिए।

[हाशिये का भाग] (पिछले पृष्ठ के हाशिए का शेष भाग) उनमें से कुछ से ऊपर इमाम तह़ावी की 'शरह मआनी अल-आसार', इमाम मुहम्मद की 'किताब अल-आसार', ईसा बिन अबान द्वारा इमाम मुहम्मद से रिवायत की गई 'अल-हुजज' और इमाम अबू यूसुफ की 'किताब अल-खराज' है। अल्लाह तआला उन सभी से राज़ी हो। (त) उनमें सबसे अज़ीम 'मुसनद इमाम अहमद' है और उसी श्रेणी में दोनों 'मुसन्निफ़' (मुसन्निफ़ अब्दुर रज़्ज़ाक़ और मुसन्निफ़ इब्न अबी शैबा) और तबरानी के'मुअजम कबीर', 'सगीर' और 'औसत' भी हैं। 'मुसनद अल-फिरदौस' जैसी किताबें इस स्तर की नहीं हैं। वह इस अर्थ में मुसनद है भी नहीं, बल्कि उसमें फिरदौस की हदीसों की तख़रीज है। जिसे इस विषय पर पूरी बहस का शौक़ हो, वह मेरा रिसाला "मदारिज तबक़ात अल-हदीस" मुलाहिज़ा करे। 12 मिन्हु गफ़र लहू (त)

पृष्ठ 761 का 212

فتاوی رضویہ جلد چہارم

والمانید عنه فی الحدیث انما یشعر باعتماده اور مسانید کا حال ہے۔ مگر اس سے قطع نظر تقریر ہندیہ سے علی ما یتقرر من مراده لا بخصوص العمل علی یہی پتا چلتا ہے کہ اس کا اعتماد اس مراد پر ہے جو اس تقریر سے ظاہر مفاده واللہ اعلم بنیات عباده ثابت ہوتی ہے خاص اس کے ظاہر مفاد پر عمل معتمد نہیں۔ اور خدا ہی اپنے بندوں کی نیتیں خوب جانتا ہے۔ (ت)

شرح نقایہ علامہ بر جندی میں بعد نقل کلام شرح وقایہ و بحث وجواب جس کا ذکر ان شاء اللہ تعالیٰ آگے آتا ہے حکم مذکور پر انکار کر دیا،

حیث قال اجنب ولم یوجد ناقض الوضوء ھل ان کے الفاظ یہ ہیں: جنابت ہوئی اور کوئی ناقض وضو نہ پایا گیا یجب التیمم والتوضئ جمیعاً اذا احدث ومعه تو کیا اس پر تیمم اور وضو دونوں ہی واجب ہوں گے جبکہ اسے ماء یکفی للوضو فقط فیه تردد والظاھر انه حدث ہوا ہو اور اس کے پاس اتنا ہی پانی ہے جو صرف وضو کے اذا تیمم للجنابة لاحاجة الی لئے کفایت کر سکے۔

(بقیه حاشیه صفحه گذشته) بعض سے بالا تر امام طحاوی کی شرح معانی الآثار، امام محمد کی کتاب بعضھا شرح معانی الآثار للطحاوی و کتاب الآثار الآثار، امام محمد سے روایت شده حج عیسی بن ابان اور امام ابو یوسف لمحمد والحجج لعیسی بن ابان عن محمد وکتاب کی کتاب الخراج ہے۔ اللہ تعالی سب سے راضی ہو۔ (ت) الخراج لابی یوسف رضی اللہ تعالیٰ عن الجمیع ۱۲ منه ان میں سب سے بزرگ تر مسند امام احمد ہے اور اسی درجہ میں غفر له (م) دونوں مصنف (مصنف عبدالرزاق و مصنف ابن ابی شیبہ) اور عه: اجلھا (۱) مسند الامام احمد و من ھذة الدرجة طبرانی کی منجم کبیر و صغیر و اوسط بھی ہیں۔ مسند الفردوس اور اس المصنفان ومعاجم الطبرانی لا کمسند الفردوس

جیسی کتابیں نہیں۔ وہ اس معنی میں مسند ہے بھی نہیں۔ بلکہ اس وامثالہ ولیس مسندا بھذا المعنی بل ھو تخریج میں احادیث فردوس کی تخریج ہے۔ اس سے متعلق پوری بحث کا احادیث الفردوس ومن احب تمامہ فلینظر رسالتی جسے شوق ہو وہ میرا رسالہ "مدارج طبقات الحدیث" مدارج طبقات الحدیث ۱۲ منہ غفر لہ (م) ملاحظہ کرے ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

(Right Column): There is hesitation in this matter. And what is apparent is that when one performs Tayammum (dry ablution) for major ritual impurity (Janaba), there is no need for Wudu (minor ablution). For a ruling requiring both, a clear narration (Riwayah Sarihah) is necessary. (T) (Left Column): التوضی ولابد للحکم بالاحتیاج الیهما من روایة صریحة 1۔ (Explanation: And it is necessary for the ruling of the need for both to have a clear narration. 1)

I say: The learned commentator was hesitant and considered the lack of need for Wudu as the apparent view, waiting for a clear narration to the contrary. However, this is a matter for certainty, and clear narrations exist in this regard as you have known and will know, God Almighty willing (as was known and by the will of the Almighty God, will also be known in the future. T). Similar to this is the statement of Syed Allama Ahmad Tahtawi in the margin of Al-Durr al-Mukhtar:

(Left Column - Arabic): فی صدر الشریعة اذاکان مع الجنابة حدث یوجب الوضوء یجب علیه الوضوء ای اذا وجد الحدث بعد التیمم للجنابة کما نص علیه القهستاني وظاهر هذا انه اذا وجد حین التیمم المذکور ماء یکفی للوضوء لایتوضأ به للاستغناء بهذا التیمم عنه وانما یستعمله اذا وجد الحدث بعد ذلک وهو صریح عبارة القهستاني 2 اهـ فنقل عنه مایأتی انفاً۔ (Right Column - Urdu translation): It is stated in Sharh Sadr al-Shari'ah: "When there is a minor impurity along with major ritual impurity (Janaba) that necessitates Wudu, then Wudu is mandatory." Meaning, when a minor impurity is found after the Tayammum for Janaba, as specified by al-Qahistani. Its apparent meaning is that if water sufficient for Wudu is found at the time of the aforementioned Tayammum, one will not perform Wudu with it, because of the sufficiency from that Wudu due to this Tayammum; he will only use that water when a minor impurity occurs after that. This is the explicit statement of Qahistani." And after that, the statement of Qahistani is quoted which is about to follow. (T)

اقول: (۲) یصل فهی الی سرجعله ظاهر نص القهستانی ثم صریح عبارته و هو (۳) صریحها لا شک ثم (۴) انما عاقه عن الجزم به قصر نسبته علی القهستانی و ما هوله بل I say: He first called it the apparent meaning of Qahistani's text, then called it an explicit statement. I did not understand the subtle reason behind this. Certainly, this is the explicit statement of Qahistani. What prevented him from being certain about it was that its attribution... [text ends here]

1. Sharh al-Niqaya by Birjandi, chapter on Tayammum, Nawal Kishore Press, 1/244

2. Tahtawi on al-Durr al-Mukhtar, chapter on Tayammum, published in Beirut, 1/132

(दायां कॉलम): इस बारे में संशय है। और ज़ाहिर यह है कि जब कोई जनाबत (बड़ी नापाकी) के लिए तयम्मुम कर ले, तो वज़ू (छोटी पाकी) की कोई ज़रूरत नहीं। दोनों की ज़रूरत का हुक्म देने के लिए कोई स्पष्ट रिवायत (कथन) होना ज़रूरी है। (त) (बायां कॉलम): التوضی ولابد للحکم بالاحتیاج الیهما من روایة صریحة 1۔ (स्पष्टीकरण: और दोनों की आवश्यकता के निर्णय के लिए स्पष्ट रिवायत होना आवश्यक है। 1)

अक़ूल (मैं कहता हूँ): विद्वान व्याख्याकार संशय में रहे और वज़ू की ज़रूरत न होने को ज़ाहिर रखा और इसके विपरीत किसी स्पष्ट रिवायत का इंतज़ार किया, जबकि यह निश्चितता का स्थान है और स्पष्ट रिवायतें इस पक्ष में मौजूद हैं जैसा कि आपने जाना और इंशाअल्लाह जानेंगे (जैसा कि ज्ञात हुआ और अल्लाह की इच्छा से भविष्य में भी ज्ञात होगा। त)। इसी के पास 'दुर्रे मुख्तार' के हाशिये में सैयद अल्लामा अहमद तहतावी का कथन है:

(बायां कॉलम - अरबी): فی صدر الشریعۃ اذاکان مع الجنابة حدث یوجب الوضوء یجب علیه الوضوء ای اذا وجد الحدث بعد التیمم للجنابة کما نص علیه القهستاني وظاهر هذا انه اذا وجد حین التیم المذکور ماء یکفی للوضوء لایتوضأ بہ للاستغناء بهذا التیمم عنہ وانما یستعملہ اذا وجد الحدث بعد ذلک وهو صریح عبارة القهستاني 2 اھ فنقل عنہ مایأتی انفاً۔
(दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद): 'शरह सद्रुश शरीअ' में है: "जब जनाबत के साथ कोई ऐसा हदस (नापाकी) हो जो वज़ू वाजिब करता है, तो उस पर वज़ू वाजिब है।" यानी जब जनाबत के तयम्मुम के बाद हदस पाया गया हो, जैसा कि कुहिस्तानी ने इस पर स्पष्ट किया है। इसका ज़ाहिर यह है कि जब उक्त तयम्मुम के समय वज़ू के लिए पर्याप्त पानी मिले, तो वह उससे वज़ू नहीं करेगा क्योंकि इस तयम्मुम की वजह से उस वज़ू से बेनियाज़ी (मुक्ति) है; वह पानी उसी समय इस्तेमाल करेगा जब उसके बाद कोई हदस (नापाकी) पेश आए। यही कुहिस्तानी का स्पष्ट कथन है।" और इसके बाद कुहिस्तानी का वह कथन उद्धृत किया जो अभी आने वाला है। (त)

اقول: (۲) یصل فهی الی سرجعله ظاهر نص القهستانی ثم صریح عبارتہ و هو (۳) صریحها لا شک ثم (۴) انما عاقہ عن الجزم بہ قصر نسبتہ علی القهستانی و ما هوله بل
अक़ूल: उन्होंने पहले इसे कुहिस्तानी के पाठ का 'ज़ाहिर' कहा फिर इसे 'स्पष्ट कथन' कहा, इसमें क्या रहस्य

है, मेरी समझ वहां तक नहीं पहुंच सकी। निश्चित रूप से यह कुहिस्तानी का स्पष्ट कथन है। इस पर दृढ़ होने से उन्हें इसी चीज़ ने रोका कि इसका संबंध... [पाठ यहाँ समाप्त होता है]

1. शरह अल-निकाया बरजंदी, तयम्मुम का अध्याय, नवल किशोर प्रेस, 1/244
2. तहतावी अला अद-दुर्र अल-मुख्तार, तयम्मुम का अध्याय, बेरूत प्रकाशन, 1/132

पृष्ठ 761 का 213

اس بارے میں تردُّد ہے۔ اور ظاہر یہ ہے کہ وہ جب جنابت کا تیمم کرلے تو وضو کی کوئی ضرورت نہیں۔ دونوں ہی کی ضرورت ہونے کا حکم کرنے کے لئے کوئی صریح روایت ہونا ضروری ہے۔ (ت) التوضی ولابد للحکم بالاحتیاج الیھما من روایۃ صریحۃ 1۔

اقول: فاضل شارح کو تردُّد ہوا اور وضو کی حاجت نہ ہونے کو ظاہر رکھا اور جانبِ خلاف کسی روایت صریحہ کا انتظار کیا حالانکہ یہ محلِ جزم ہے اور روایاتِ صریحہ اس طرف موجود کما عرفت و تعرف ان شاء اللہ تعالٰی (جیسا کہ معلوم ہوا اور بمشیتِ خدائے برتر آئندہ بھی معلوم ہوگا۔ ت) اسی کے قریب حاشیہ در مختار میں سید علامہ احمد طحطاوی کا قول ہے:

فی صدر الشریعۃ اذاکان مع الجنابۃ حدث یوجب الوضوء یجب علیہ الوضوء ای اذا وجد الحدث بعد التیمم للجنابۃ کما نص علیہ القھستانی وظاھر ھذا انہ اذا وجد حین التیمم المذکور ماء یکفی للوضوء لایتوضأ بہ للاستغناء بھذا التیمم عنہ وانما یستعملہ اذا وجد الحدث بعد ذلک وھو صریح عبارۃ القھستانی 2 اھ فنقل عنہ مایأتی انفاً۔ شرح صدر الشریعۃ میں ہے: "جب جنابت کے ساتھ کوئی ایسا حدث ہو جو وضو واجب کرتا ہے تو اس پر وضو واجب ہے"۔ یعنی جب تیممِ جنابت کے بعد حدث پایا گیا ہو جیسا کہ اس پر قہستانی نے نص کیا ہے۔ اس کا ظاہر یہ ہے کہ جب تیمم مذکور کے وقت وضو کے لئے کفایت کر جانے والا پانی ملے تو اس سے وضو نہیں کرے گا کیونکہ اس تیمم کی وجہ سے اُس وضو سے بے نیازی ہے وہ پانی اسی وقت استعمال کرے گا جب اس کے بعد حد ث پا یا جائے۔ یہی قہستانی کی صریح عبارت ہے۔" اور اس کے بعد قہستانی کی وہ عبارت نقل کی جو ابھی آرہی ہے۔ (ت)

اقول: (۲) یصل فھی الی سرجعلہ ظاھر نص القھستانی ثم صریح عبارتہ و ھو (۳) صریحھا لا شک ثم (۴) انما عاقہ عن الجزم بہ قصر نسبتہ علی القھستانی و ما ھولہ بل اقول: انہوں نے پہلے اسے نصِ قہستانی کا ظاہر کہا پھر اس کو صریح عبارت کہا، اس میں کیا رمز ہے میرے فہم کی رسائی وہاں تک نہ ہوئی، یقیناً یہ قہستانی کی صریح عبارت ہے۔ اس پر جزم سے ان کے لئے یہی چیز مانع ہوئی کہ اس کی نسبت

1 شرح النقایۃ للبر جندی فصل فی التیمم مطبع نولکشور ۱/ ۲۴۴ 2 طحطاوی علی الدر المختار باب التیمم مطبوعہ بیروت، ۱/ ۱۳۲

Volume 4 Fatawa Razawiya [This is] limited to Quhistani, whereas this is not the speech of Quhistani but of the great Imam Asbijabi. (T) ...for the great Imam Asbijabi.

These are seven arguments and, by the grace of Allah Almighty, they are bright and complete. Now take the clearer specific texts, and success is from Allah.

First Text: The researcher Allama Muhammad bin Faramurz states in 'Durar al-Hukkam': "If a man wakes up from sleep after a nocturnal emission and has water sufficient only for ablution (wudu) but not for a bath (ghusl), he shall perform dry ablution (tayammum). According to us, ablution is not obligatory for him, contrary to the Shafi'i [school]." If someone wakes up from sleep in a state of ritual impurity (janaba) and has only enough water for wudu but not for ghusl, then according to us, he will perform tayammum. Ablution is not mandatory for him - contrary to Imam Shafi'i. (T)

It is an explicit statement that he woke up from sleep in a state of major (janaba) and minor (hadath) impurity, and water sufficient for wudu was available; yet he should not perform wudu but only tayammum. And the ruling of ordering a person in major impurity (junub) to perform wudu for minor impurity (hadath) is not our school's position; it is the position of Imam Shafi'i (may Allah be pleased with him).

Second Text: In 'Sharh Mukhtasar Imam Ajal Tahawi' by Imam Ali Asbijabi and others, then in 'Jami' al-Rumuz', then in 'Tahtawi 'ala al-Durr', then in 'Radd al-Muhtar' it is stated: "When a person in major ritual impurity (junub) has water sufficient only for some of his limbs, or a person in minor impurity (muhdith) [has water only for some limbs] for wudu, he shall perform tayammum and [wudu] is not obligatory for him." When a person in major impurity has only enough water to suffice for some of his limbs... or for a person in minor impurity.

(Note: This is how it is in 'Jami' al-Rumuz', and from there it is quoted in 'Radd al-Muhtar'. However, in the Egyptian edition of 'Tahtawi', printed by Al-Miri, it is without the word "muhdith" (one in minor impurity). This seems repetitive because the limbs of wudu are actually some of the limbs a person in major impurity must wash. 12 [From the author] May he be forgiven (M). (T))

1 Durar al-Hukkam by Mulla Khusraw, Chapter on Tayammum, Al-Maktaba al-Kamila, Beirut, 1/49. Page 214 of 761

खंड 4 फतावा रज़विया [यह] कुहिस्तानी तक सीमित है, हालांकि यह कुहिस्तानी का कथन नहीं बल्कि महान इमाम अस्बीजाबी का है। (त) ...महान इमाम अस्बीजाबी के लिए।

ये सात तर्क हैं और अल्लाह तआला के अनुग्रह से स्पष्ट और पूर्ण हैं। अब अधिक स्पष्ट विशिष्ट ग्रंथों को लें, और सफलता अल्लाह से है।

पहला पाठ: शोधकर्ता अल्लामा मुहम्मद बिन फरामुरज़ 'दुरर अल-हुक्काम' में कहते हैं: "यदि कोई व्यक्ति रात के उत्सर्जन के बाद नींद से जागता है और उसके पास केवल वुज़ू (अंग-प्रक्षालन) के लिए पर्याप्त पानी है, लेकिन स्नान (गुस्ल) के लिए नहीं, तो वह तयम्मुम (सूखा स्नान) करेगा। हमारे अनुसार, उसके लिए वुज़ू अनिवार्य नहीं है, जो शाफ़ई [मत] के विपरीत है।" यदि कोई व्यक्ति नींद से नापाकी (जनाबत) की स्थिति में जागता है और उसके पास केवल वुज़ू के लिए पर्याप्त पानी है, गुस्ल के लिए नहीं, तो हमारे अनुसार वह तयम्मुम करेगा। उसके लिए वुज़ू अनिवार्य नहीं है - इमाम शाफ़ई के विपरीत। (त)

यह एक स्पष्ट विवरण है कि वह नींद से बड़ी (जनाबत) और छोटी (हदस) अशुद्धि की स्थिति में उठा, और वुज़ू के लिए पर्याप्त पानी उपलब्ध था; फिर भी उसे वुज़ू नहीं करना चाहिए बल्कि केवल तयम्मुम करना चाहिए। और बड़ी अशुद्धि (जुनुब) वाले व्यक्ति को छोटी अशुद्धि (हदस) के लिए वुज़ू करने का आदेश देना हमारा मत नहीं है; यह इमाम शाफ़ई (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) का मत है।

दूसरा पाठ: इमाम अली अस्बीजाबी और अन्य द्वारा लिखित 'शराह मुख़्तसर इमाम अजल तहावी' में, फिर 'जामे अल-रुमूज़' में, फिर 'तहतावी अला अद-दुर' में, फिर 'रद्द अल-मुह्तार' में लिखा है: "जब बड़ी अशुद्धि (जुनुब) वाले व्यक्ति के पास केवल उसके कुछ अंगों के लिए पर्याप्त पानी हो, या छोटी अशुद्धि (मुहद्दिस) वाले व्यक्ति के पास वुज़ू के लिए [कुछ अंगों हेतु पानी हो], तो वह तयम्मुम करेगा और उस पर [वुज़ू] अनिवार्य नहीं है।" जब बड़ी अशुद्धि वाले व्यक्ति के पास केवल इतना ही पानी हो जो उसके कुछ अंगों के लिए पर्याप्त हो... या छोटी अशुद्धि वाले व्यक्ति के लिए।

(ध्यान दें: 'जामे अल-रुमूज़' में यह इसी तरह है, और वहीं से इसे 'रद्द अल-मुह्तार' में उद्धृत किया गया है। हालांकि, अल-मीरी द्वारा मुद्रित 'तहतावी' के मिस्र के संस्करण में "मुहद्दिस" शब्द के बिना है। यह दोहराव जैसा लगता है क्योंकि वुज़ू के अंग वास्तव में बड़ी अशुद्धि वाले व्यक्ति के स्नान के अंगों का ही हिस्सा हैं। 12 [लेखक की ओर से] अल्लाह उन्हें क्षमा करे (म)। (त))

1 दुरर अल-हुक्काम, मुल्ला खुसरौ द्वारा, तयम्मुम का अध्याय, अल-मकतबा अल-कामिला, बेरूत, 1/49। पृष्ठ 214 of 761

جلد چہارم فتاوٰی رضویہ قہستانی تک محدود ہے حالانکہ یہ قہستانی کا کلام نہیں بلکہ امام جلیل اسبیجابی کا ہے۔ (ت) للامام الجلیل الاسبیجابی۔

یہ سات دلائل ہیں اور بحمد اللہ تعالٰی روشن و کامل ہیں، اب صریح تر نصوص جزئیہ لیجئے وباللہ التوفیق۔

نص اول: محقق علامہ محمد بن فراموز درر الحکام میں فرماتے ہیں: لو ان رجلا انتبہ من النوم محتلما وکان لہ ماء یکفی للوضوء لا للغسل تیمم ولم یجب علیہ الوضوء عندنا خلافا للشافعی ۱۔ اگر کوئی شخص احتلام کی حالت میں نیند سے بیدار ہو اور اس کے پاس اتنا پانی ہے جو صرف وضو کے لئے کافی ہے غسل کے لئے نہیں تو وہ تیمم کرے گا ہمارے نزدیک بخلاف امام شافعی کے۔ اس پر وضو واجب نہیں۔ (ت)

صریح تصریح ہے کہ سوتے سے محتلم اٹھا جنابت وحدث دونوں تھے اور وضو کے قابل پانی موجود ، وضو نہ کرے صرف تیمم کرے اور یہ کہ جنب کو حدث کے لئے وضو کا حکم دینا ہمارا مذہب نہیں امام شافعی رضی اللہ تعالٰی عنہ کا مذہب ہے۔

نص دوم: شرح مختصر امام اجل طحاوی للامام علی الاسبیجابی وغیرہ پھر جامع الرموز پھر طحطاوی علی الدر پھر رد المحتار میں ہے: الجنب اذاکان لہ ماء یکفی لبعض اعضائہ اوالمحدثعہ للوضوء تیمم ولم یجب علیہ جنب کے پاس جب اتنا ہی پانی ہو جو اس کے بعض اعضاء کے لئے کفایت کر سکے۔ یا محدث کو،

عہ ھکذا ھو في جامع الرموز وعنہ في ردالمحتار ووقع نسخۃ ط المصریۃ طبع المیری بدون لفظ المحدث وھو یشبہ التکرار فبإ اعضاء الوضوء الابغض اعضاء الجنب ۱۲ منہ غفر لہ (م) یہ لفظ اسی

طرح جامع الرموز میں ہے اور اس سے ردالمحتار میں بھی ایسے ہی نقل ہے اور طحطاوی کے مصری نسخہ طبع میری میں لفظ "محدث" کے بغیر ہے اور اس سے تکرار سی معلوم ہوتی ہے اس لئے کہ اعضائے وضو جنب کے بعض اعضاء ہی تو ہیں ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

۱ درر الحکام لمولی خسرو باب التیمم المکتبۃ الکاملہ بیروت ۱/ ۴۹ صفحہ 214 of 761

Fatawa Razawiyya Volume 4

| (Arabic): ...expend it on it, except if he performed dry ablution (tayammum) for major ritual impurity (janaba) and then a minor ritual impurity occurred which necessitates ablution (wudu). In that case, wudu becomes obligatory for him because he has become capable of using water that he has.[1] | (Urdu): ...for wudu. So he should perform tayammum, and it is not obligatory for him to spend that water on some limbs. However, once he has performed tayammum for janaba and then something happens that makes wudu mandatory, then wudu is now mandatory for him because he is now capable of having sufficient water for wudu. (T) |

It is clearly stated that a person in a state of major ritual impurity (junub) only needs to perform wudu for minor ritual impurity if that minor impurity occurs after they have performed tayammum for the major impurity. Any minor impurities that occurred before that do not necessitate wudu at all.

I say: This means that in both situations, wudu for minor impurity is not required for the mentioned junub person. Before performing tayammum, they were in a state of janaba, and wudu was not mandated. Now that they have performed tayammum and then a minor impurity occurred, the command for wudu applies. At this moment, they are no longer considered in the state of janaba because they have already performed tayammum for it, and that tayammum is not broken by the occurrence of minor impurity (hadath-e-asghar). The following excerpt from the commentary of Sharh al-Tahawi completes this: "And tayammum is not mandatory for him because, by performing tayammum, he has emerged from the state of janaba until he finds water sufficient for a full ritual bath (ghusl)."[2] (And tayammum is not mandatory for him because he has emerged from janaba by performing tayammum until he finds enough water for ghusl. - T)

Text Three (Note): It is stated in the Fatawa of Imam-e-Ajal Faqih al-Nafs Fakhr al-Millah wa al-Din Qadi Khan:

| (Arabic): A person in a state of major ritual impurity performed tayammum for Dhuhr and prayed. Then a minor impurity occurred, and the time for Asr arrived, and he had enough water for wudu. Indeed, he should perform wudu because [the state of] janaba... | (Urdu): A person in a state of major impurity performed tayammum for Dhuhr and prayed. Then a minor impurity occurred. When the time for Asr prayer came, and he had enough water for wudu, then he shall perform wudu. |

Note: The excerpt from Rad al-Muhtar, which was mentioned in the fifth proof, states that a person in a state of janaba who finds only enough water for wudu is only obligated to perform wudu if a minor impurity occurred after the tayammum for janaba. If the minor impurity occurred before that tayammum, performing wudu for it is futile. This is effectively the fourth text, showing that the texts of the Imams and great scholars are its sources. 12, Amna Ghufira-lahu. (M)

[1] Jami' al-Rumuz, Chapter of Tayammum, Karimiya Press, Kazan, Iran, 1/63. [2] Al-Sa'aya Sharh al-Wiqaaya, Chapter of Tayammum, Suhail Academy Lahore, 1/491.

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

| (अरबी): इसे इस पर खर्च करें, सिवाय इसके कि उसने जनाबत (बड़ी नापाकी) के लिए तयम्मुम किया हो और फिर उससे कोई ऐसी घटना हो जाए जिससे वुज़ू ज़रूरी हो जाए, तो उस समय उस पर वुज़ू वाजिब है क्योंकि वह उस पानी पर सक्षम हो गया है जो उसके पास था।[1] | (उर्दू): वुज़ू के लिए। तो वह तयम्मुम करे और उस पर इस पानी को कुछ अंगों के लिए खर्च करना वाजिब नहीं है, सिवाय इसके कि जब वह जनाबत का तयम्मुम कर ले, फिर उससे कोई ऐसा 'हदस' (अपवित्रता) हो जो वुज़ू वाजिब करता है, तो अब उस पर वुज़ू वाजिब है क्योंकि वह वुज़ू के लिए पर्याप्त पानी पर सक्षम है। (T) |

साफ़ इरशाद है कि जुनब (बड़ी नापाकी की स्थिति वाला व्यक्ति) को हदस (छोटी अपवित्रता) के लिए वुज़ू केवल उसी समय है जब जनाबत का तयम्मुम करने के बाद हदस हुआ हो। उससे पहले जितने भी हदस हुए थे, उनके लिए वुज़ू की बिल्कुल ज़रूरत नहीं है।

मैं कहता हूँ: यानी दोनों स्थितियों में उक्त जुनब पर हदस के लिए वुज़ू नहीं है। जब तक तयम्मुम नहीं किया था, वह जुनब था और हदस के लिए वुज़ू का हुक्म नहीं था। अब जबकि तयम्मुम कर लिया और फिर हदस हुआ, तो वुज़ू का हुक्म आया। इस समय वह जुनब नहीं है क्योंकि जनाबत के लिए तयम्मुम कर चुका है और वह तयम्मुम छोटी अपवित्रता (हदस-ए-असग़र) होने से नहीं टूट सकता। शरह तहावी की उपर्युक्त इबारत का अगला हिस्सा है: "और उस पर तयम्मुम वाजिब नहीं है क्योंकि तयम्मुम करने से वह जनाबत की स्थिति से बाहर निकल चुका है जब तक कि वह ग़ुस्ल (स्नान) के लिए पर्याप्त पानी न पा ले।"[2] (और उस पर तयम्मुम वाजिब नहीं है क्योंकि वह तयम्मुम करके जनाबत से निकल चुका है यहाँ तक कि ग़ुस्ल के लिए पर्याप्त पानी पा ले। - T)

तीसरा पाठ (नोट): इमाम अजल फकीह-उल-नफ़्स फ़ख़्रुल मिल्लत वद दीन क़ाज़ी ख़ान के फ़तावा में है:

| (अरबी): किसी जुनब ने ज़ुहर के लिए तयम्मुम किया और नमाज़ पढ़ी, फिर उसे हदस हुआ। फिर असर का समय आया और उसके पास वुज़ू के लिए पर्याप्त पानी है, तो वह वुज़ू करेगा क्योंकि जनाबत... | (उर्दू): किसी जुनब ने ज़ुहर के लिए तयम्मुम किया और नमाज़ पढ़ी फिर उसे हदस हुआ, तो नमाज़ असर का वक़्त आया और उसके पास इतना पानी है जो वुज़ू के लिए काफ़ी हो तो वह वुज़ू करेगा। |

नोट: रद-अल-मुह्तार की इबारत जो पांचवीं दलील में गुज़री, कि जिस जुनब को केवल वुज़ू के काबिल पानी मिले, उस पर वुज़ू सिर्फ उसी वक़्त है जब तयम्मुम-ए-जनाबत के बाद हदस हुआ हो। अगर उस तयम्मुम से पहले हदस था, तो उसके लिए वुज़ू व्यर्थ है। गोया यह चौथा पाठ है कि इमामों और बुज़ुर्गों के पाठ ही इसके स्रोत हैं। 12, आमिना गुफ़िरा-लहू। (M)

[1] जामि-उर-रुमज़, बाब-उत-तयम्मुम, मतबा करीमिया, कज़ान, ईरान, 1/63 [2] अल-स'आया शरह-अल-विक़ाया, बाब-उत-तयम्मुम, सुहैल एकेडमी, लाहौर, 1/491

فتاوی رضویہ جلد چہارم

| صرفه الیه الا اذا تیمم للجنابة ثم وقع منه حدث موجب للوضوء فانه یجب علیه الوضوء حینئذ لانه قدر علی ماء کان له ۱۔ | وضو کے لئے۔ تو وہ تیمم کرے اور اس پر اس پانی کو بعض اعضاء کے لئے صرف کرنا واجب نہیں مگر جب جنابت کا تیمم کرلے پھر اس سے کوئی ایسا حدث ہو جو وضو واجب کرتا ہے تو اب اس پر وضو واجب ہے اس لئے کہ وہ وضو کے لئے کافی پانی پر قادر ہے۔ (ت) |

صاف ارشاد ہے کہ جنب کو حدث کے لئے وضو صرف اسی وقت ہے کہ جنابت کا تیمم کر چکنے کے بعد حدث ہوا ہو اس سے پہلے جتنے بھی حدث تھے ان کے لئے وضو کی اصلاً حاجت نہیں۔

اقول: یعنی دونوں حالتوں میں جنب مند کور پر حدث کے لئے وضو نہیں۔ جب تک تیمم نہ کیا تھا جنب تھا اور حدث کے لئے وضو کا حکم نہ تھا اب کہ تیمم کر لیا پھر حدث ہوا اور اس پر حکم وضو آیا اس وقت وہ جنب نہیں کہ جنابت کے لئے تیمم کر چکا اور وہ وقوع حدث اصغر سے نہیں ٹوٹ سکتا عبارت مذکورہ شرح طحاوی کا تتمہ ہے و لم یجب علیہ التیمم لانه بالتیمم خرج عن الجنابة الی ان یجد ماء کافیاً للغسل ۲ (اور اس پر تیمم واجب نہیں کیونکہ وہ تیمم کر کے جنابت سے نکل چکا ہے یہاں تک کہ غسل کے لئے کافی پانی پائے۔ ت)

نص سوم عہ: فتاوی امام اجل فقیہ النفس فخر الملۃ والدین قاضی خاں میں ہے:

| جنب تیمم للظهر وصلی ثم احدث فحدثته العصر ومعه ماء یکفي للوضوء فانه یتوضأ لان الجنابة | کسی جنب نے ظہر کے لئے تیمم کیا اور نماز پڑھی پھر اسے حدث ہوا تو نماز عصر کا وقت آیا اور اس کے پاس اتنا پانی ہے جو وضو کے لئے کافی ہو تو وہ وضو کرے گا |

عہ: ردالمحتار کی عبارت کہ دلیل پنجم میں گزری کہ جس جنب کو صرف وضو کے قابل پانی ملے اس پر وضو فقط اس وقت ہے کہ تیمم جنابت کے بعد حدث ہوا اگر اس تیمم سے پہلے حدث تھا اس کے لئے وضو عبث ہے، گویا نص چہارم ہے کہ نصوص ائمہ واکابر ہی اس کے مآخذ ہیں ۱۲ امنہ غفر لہ۔ (م)

۱ جامع الرموز باب التیمم مطبعہ کریمیہ قزان ایران ۱/ ۶۳ ۲ السعایۃ شرح الوقایۃ باب التیمم، سہیل اکیڈمی لاہور ۱ / ۴۹۱

Volume Four Fatawa Razvia

Arabic Original	Urdu Translation
Qad zalat bit-tayammum fa-idha ahdatha ba'dat tayammum wa ma'ahu ma'un yakfi lil-wudu'i fa-innahu yatawadda'u bihi fa-in tawadda'a lil-'asri wa salla thumma marra bi-ma'in wa 'alima bihi wa lam yaghtasil hatta hadarat-hul maghribu wa qad ahdatha aw lam yahduth wa ma'ahu ma'un qadru ma yatawadda'u bihi fa-innahu *ay yata-yammamu wa la yatawadda'u bihi.	Because the state of major ritual impurity was removed by dry ablution (Tayammum). Then, if minor ritual impurity occurs after Tayammum and the person has enough water for ablution (Wudu), they should perform Wudu. So, if they performed Wudu for Asr and prayed, then passed by water and was aware of it but did not perform a full bath (Ghusl), until the time for Maghrib arrived, and they either experienced minor impurity or not, and they have enough water to perform Wudu, then they must perform Tayammum and not Wudu.

*ay: This humble servant (the author) has four copies of [Fatawa] Khaniya. One is printed by Matba' al-Ulum in 1274 Hijri, its first volume is missing. The second is printed in Calcutta in 1835 AD, which is 84 years old. The third is printed in Egypt in 1310 AH, located in the margins of Al-Hindia. The fourth is printed by Matba' Mustafa'i in 1310 AH, with Al-Sirajia in its margins. It is strange that in all of them, after the words "and with him is enough water for Wudu", the words of the ruling are missing, followed by the reasoning "because of what has passed". It is not surprising that both the Egyptian and Mustafa'i copies were transcribed from the Calcutta copy where the text was omitted. Although the context itself, as well as the teachings of Imam Muhammad in "Kitab al-Asl" which will be mentioned in the commentaries with God's help, make it clear that the missing words were "then he shall perform Tayammum and not Wudu". The scribe's eye likely moved from one "not perform Wudu" to another. By the grace of God, this was confirmed by ancient manuscripts. A few years ago, an old handwritten manuscript from Lucknow reached me, and it contained the exact text as I had surmised: "and with him is enough water for Wudu, then he shall perform Tayammum and not perform Wudu because of what has passed..." etc. After that, my dear son, possessor of knowledge and distinction, the scholar of Bihar, Maulvi Muhammad Zafaruddin—may God Almighty protect him for the protection of religion and the suppression of mischief-makers, and make him like his name, Zafaruddin (Victory of Religion)—sent a copy of this issue from a very old manuscript dated 900 AH from the famous Khuda Bakhsh Library in Bankipore,

Azimabad, written 435 years ago. It also contains the correct text: "and with him is enough water for Wudu, then he shall perform Tayammum and not perform Wudu because of what has passed..." etc. Another copy was sent from a manuscript dated 794 AH, written 208 years ago, in which it is stated: "and with him is enough water for Wudu, then he shall perform Tayammum because of what has passed..." etc. Its essence is the same as is not hidden. 12 [end of note] from him (the author), may He be forgiven. (M)

भाग चार फतावा रज़विया

अरबी मूल पाठ

क़द ज़ालत बित-तयम्मुम फ़-इज़ा अहदसा बादत तयम्मुम व मा'अहु मा'उन यकफ़ी लिल-वज़ू'ई फ़-इन्नहू यतवद्द'उ बिही फ़-इन तवद्द'अ लिल-'अस्री व सल्ला सुम्मा मर्रा बि-मा'इन व अलिमा बिही व लम यग़तसिल हत्ता हदरत-हुल मग्रिबू व क़द अहदसा औ लम यहदुस व मा'अहु मा'उन क़द्रु मा यतवद्द'उ बिही फ़-इन्नहू *अय यत-यम्ममु व ला यतवद्द'उ बिही।

उर्दू अनुवाद

क्योंकि जनाबत (बड़ी अशुद्धि) तो तयम्मुम से दूर हो गई। फिर जब तयम्मुम के बाद उसे हदस (छोटी अशुद्धि) हुआ और उसके पास इतना पानी भी है जो वज़ू के लिए काफी हो तो वह उससे वज़ू करेगा। तो अगर अस्र के लिए वज़ू किया और नमाज़ पढ़ी फिर पानी के पास से गुज़रा और उससे बाखबर भी हुआ मगर ग़ुस्ल (स्नान) न किया, यहाँ तक कि मग्रिब का वक़्त आ गया और उसे हदस भी हुआ या हदस न हुआ। इतना पानी भी उसके पास है जिससे वज़ू कर सके तो उसे तयम्मुम करना है वज़ू नहीं करना है।

*अय: फ़क़ीर (लेखक) के पास खानिया के चार नुस्ख़े (प्रतियां) हैं। एक मतबा अल-उलूम का मुद्रित १२७४ हिजरी, इसकी पहली जिल्द नहीं है। दूसरा मुद्रित कलकत्ता १८३५ ईस्वी जिसे चौरासी ८४ वर्ष हुए। तीसरा मुद्रित मिस्र १३१० हिजरी जो हामिश हिंदिया पर है। चौथा मतबा मुस्तफ़ाई १३१० हिजरी जिसके हामिश पर सिराजिया है। अचरज है कि इन सब में 'और उसके पास वज़ू के बराबर पानी हो' के बाद हुक्म के शब्द गायब हैं, उसके बाद 'क्योंकि जो गुज़र चुका' दलील है। ताज्जुब नहीं कि मिस्री और मुस्तफ़ाई दोनों नुस्ख़े उसी कलकत्ता नुस्ख़े से नक़ल हुए हों जिसमें इबारत छूट गई थी। हालांकि खुद इबारत के अर्थ और इमाम मुहम्मद की 'किताब अल-अस्ल' के इरशाद से, जो अल्लाह के फज़ल से अफ़ादात में आएगा, यह ज़ाहिर था कि शब्द 'तो वह तयम्मुम करे और वज़ू न करे' होंगे। कातिब (लेखक) की नज़र एक 'वज़ू न करे' से दूसरे की तरफ मुड़ गई। अल्लाह के करम से पुराने नुस्ख़ों से इसकी पुष्टि हो गई। कुछ साल हुए फ़क़ीर के पास लखनऊ से एक पुराना हस्तलिखित नुस्ख़ा आया था, उसमें बिलकुल वैसी ही इबारत थी जैसा फ़क़ीर का ख्याल था कि 'और उसके पास वज़ू के बराबर पानी हो तो वह तयम्मुम करे और वज़ू न करे क्योंकि जो गुज़र चुका...' इत्यादि। उसके बाद मेरे प्रिय पुत्र, ज्ञान और विवेक के धनी, बिहार के विद्वान मौलवी मोहम्मद ज़फ़रुद्दीन—अल्लाह तआला दीन की रक्षा और उपद्रवियों के दमन के लिए उनकी रक्षा करे, और उन्हें उनके नाम के अनुरूप ज़फ़रुद्दीन (दीन की विजय) बनाए—ने अज़ीमाबाद के प्रसिद्ध खुदा बख्श ओरिएंटल

लाइब्रेरी से एक बहुत पुराना हस्तलिखित नुस्ख़ा, जो ९०० हिजरी का लिखा हुआ है और जिसे लिखे ४३५ वर्ष हुए, यह मसला नक़ल करके भेजा। उसमें भी यही सही इबारत है: 'और उसके पास वज़ू के बराबर पानी हो तो वह तयम्मुम करे और वज़ू न करे क्योंकि जो गुज़र चुका...' इत्यादि। दूसरी नक़ल एक नुस्ख़े से भेजी गई जो ७९४ हिजरी का है और जिसे २०८ वर्ष हुए, उसमें इस तरह है: 'और उसके पास वज़ू के बराबर पानी हो तो वह तयम्मुम करे क्योंकि जो गुज़र चुका...' इत्यादि। इसका सार भी वही है जैसा कि स्पष्ट है। १२ उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (म)

पृष्ठ 761 का 216

عربی متن	اردو ترجمہ
قد زالت بالتیمم فاذا احدث بعد التیمم ومعه ماء یکفی للوضوء فانه یتوضأ به فان توضأ للعصر وصلی ثم مربماء وعلم به ولم یغتسل حتی حضرته المغرب وقد احدث اولم یحدث ومعه ماء قدر ما یتوضأ به فانه عه یتیمم ولا یتوضأ به	کیونکہ جنابت تو تیمم سے دور ہو گئی۔ پھر جب بعد تیمم اسے حدث ہوا اور اس کے پاس اتنا پانی بھی ہے جو وضو کے لئے کافی ہو تو وہ اس سے وضو کرے گا۔ تو اگر عصر کے لئے وضو کیا اور نماز پڑھی پھر پانی کے پاس سے گزرا اور اس سے باخبر بھی ہوا مگر غسل نہ کیا، یہاں تک کہ مغرب کا وقت آگیا اور اسے حدث بھی ہوا یا حدث نہ ہوا۔ اتنا پانی بھی اس کے پاس ہے جس سے وضو کر سکے تو اسے تیمم کرنا ہے وضو نہیں کرنا ہے

عه فقیر کے پاس خانیہ کے چار نسخے ہیں ایک مطبع العلوم کا مطبوعہ ۱۲۷۴ ھجریہ اس کی جلد اول نہیں۔ دوسرا مطبوعہ کلکتہ ۱۸۳۵ء جسے چوراسی ۸۴ برس ہوئے۔ تیسرا مطبوعہ مصر ۱۳۱۰ھ کہ ہامش ہندیہ پر ہے۔ چوتھا مطبع مصطفائی ۱۳۱۰ھ جس کے ہامش پر سراجیہ ہے۔ عجب کہ ان سب میں ومعہ ماء قدر مایتوضأبہ کے بعد الفاظ حکم ساقط ہیں اس کے بعد لانہ لما مر تعلیل ہے عجب نہیں کہ مصری و مصطفائی دونوں نسخے اسی نسخہ کلکتہ سے نقل ہوئے ہوں جس میں عبارت چھوٹ گئی اگرچہ خود فحوائے عبارت نیز ملاحظہ ارشاد امام محمد کتاب الاصل سے کہ بعونہ تعالی افادات میں آتا ہے الفاظ ساقط ظاہر تھے کہ فانہ یتیمم ولایتوضأ بہ ہوں گے کاتب کی نظر ایک لایتوضأبہ سے دوسرے کی طرف منتقل ہو گئی بجرہ تعالیٰ نسخ قدیمہ سے اس کی تصدیق ہو گئی۔ چند سال ہوئے فقیر کے پاس ایک پرانا قلمی نسخہ لکھنؤ سے آیا تھا اس میں بعینہ

عبارت یونہی تھی جس طرح فقیر نے خیال کی ومعہ من الماء قدر مایتوضأ بہ فانہ یتیمم ولایتوضأ بہ لانہ لما مر۔۔۔ الخ اس کے بعد ولد عزیز ذو العلم والتمیز فاضل بہار مولوی محمد ظفر الدین وفقہ اللہ تعالی لحمایۃ الدین و نکایۃ للمفسدین وجعلہ کاسمہ ظفر الدین نے اپنے زمانہ مدرسی مدرسہ شمس الہدی بانکی پور میں عظیم آباد کے مشہور کتب خانہ خدا بخش خان سے ایک بہت قدیم قلمی نسخہ مکتوبہ ۹۰۰ ھجریہ سے جسے لکھے ہوئے ۴۳۵ برس ہوئے یہ مسئلہ نقل کر کے بھیجا اس میں بھی یہی صحیح عبارت ہے ومعہ ماء قدر ما یتوضأ بہ فانہ یتیمم ولا یتوضأ بہ لما مر۔۔۔ الخ۔ دوسری نقل ایک نسخہ مکتوبہ ۷۹۴ھ سے بھیجی جسے ۲۰۸ برس ہوئے اُس میں یوں ہے ومعہ ماء قدر ما یتوضأ بہ فانہ یتیمم لانہ لما مر۔۔۔ الخ اس کا بھی حاصل وہی ہے کمالایخفی ۱۲ منہ غفرلہ (م)

Volume Four Fatawa Razawiyya

[Arabic Box 1]: Because when he passed by enough water for washing (ghusl) but then became in a state of major ritual impurity (junub), he is now a junub who has water that is insufficient for washing, so he performs dry ablution (tayammum)[1]. [Urdu Side]: Because when he passed by enough water for ghusl, he became junub again. Now he is such a junub who has insufficient water for ghusl, so he must perform tayammum. (T)

How clear a text this is, that a junub who does not find water for ghusl but has enough for wudu (minor ablution), if a minor impurity occurs after tayammum for junub, then he should perform wudu. And if it occurs before tayammum, he should only perform tayammum and not wudu.

[Arabic Box 2]: I say: My reliance on what was mentioned (may Allah have mercy on him) from the principles of rulings in explanations and benefits regarding the entry of this sub-issue into this principle contains strong words for the weak servant - may the Subtle Lord forgive him - as you will recognize in the 'Benefits', if the Giver of Gifts wills. [Urdu Side]: I say: My reliance is on those principles of rulings which Imam Faqeeh-un-Nafs (may Allah have mercy on him) mentioned under explanations. Otherwise, regarding the inclusion of this sub-issue within this principle, this weak servant—may the Subtle Master grant him forgiveness—has powerful words, as will be known under 'Benefits', if the Lord who bestows gifts wills. (T)

In summary, seven clear proofs and three glorious texts—"tilka 'asharatun kamilah" (those are ten complete)—by the grace of Allah, the Exalted and Majestic, the ruling has become manifest.

[Arabic Box 3]: And for Allah is all praise, abundant, pure, and blessed, as our Lord loves and is pleased with. And may Allah's peace and blessings be upon the purest chosen one, the most pleasing and chosen, and upon his family and companions until the Day of Judgment. Amen. [Urdu Side]: And for Allah is all praise, abundant, pure, and blessed, as our Lord loves and is pleased with. And may Allah's peace and blessings be upon the most beloved of personalities and upon his family and companions until the Day of Judgment. O Allah, accept it!

As for the words of Imam Sadr al-Shari'ah and the interpretations of the noble scholars therein, we shall first present their statements. Then, that which was

bestowed upon the heart of this pauper from the overflowing grace of the Almighty, as a gift for the eyes of seekers of justice.

[Arabic Box 4]: The high-aspiring Imam, Sadr al-Shari'ah—may Allah Exalted grant him a high station in... [Urdu Side]: The high-aspiring Imam, Sadr al-Shari'ah—may Allah Exalted grant him a high station in the Abode of Peace (Dar al-Salam) and...

---

[1] Fatawa Qazi Khan, Chapter of Tayammum, Nawal Kishore Press, Lucknow, 1/30.

जिल्द चौथी फ़तावा रज़विया

[अरबी बॉक्स 1]: क्योंकि जब वह ग़ुस्ल (स्नान) के लिए पर्याप्त पानी के पास से गुज़रा और फिर जुनुब (अशुद्ध) हो गया। अब वह ऐसा जुनुब है जिसके पास ग़ुस्ल के लिए अपर्याप्त पानी है, तो वह तयम्मुम करेगा।[1] [उर्दू पक्ष]: क्योंकि जब वह ग़ुस्ल के लिए काफी पानी पर से गुज़रा तो फिर जुनुब हो गया। अब यह ऐसा जुनुब है जिसके पास ग़ुस्ल के लिए नाकाफी पानी है तो उसे तयम्मुम करना है। (त)

कितना स्पष्ट प्रमाण है कि जुनुब जिसे ग़ुस्ल के लिए पानी न मिले और वज़ू के योग्य पानी मौजूद हो, उसे अगर तयम्मुम-ए-जनाबत के बाद ह़दथ (लघु अशुद्धि) हो जाए तो वह वज़ू करे, और यदि तयम्मुम से पहले हो तो सिर्फ तयम्मुम करे, वज़ू न करे।

[अरबी बॉक्स 2]: मैं कहता हूँ: मेरा आधार उन अहकाम (नियमों) के सिद्धांतों से है जो इमाम फकीह-उन-नफ्स (अल्लाह उन पर रहम करे) ने व्याख्याओं के तहत उल्लेख किए हैं। उप-नियम (जुज़ईया) के इस सिद्धांत में शामिल होने के बारे में, इस कमज़ोर बंदे के पास—अल्लाह उसे क्षमा प्रदान करे—मजबूत तर्क हैं, जैसा कि 'अफादात' (लाभ) के तहत ज्ञात होगा, यदि वरदान देने वाले रब ने चाहा। [उर्दू पक्ष]: मैं कहता हूँ: मेरा आधार उन अहकाम के सिद्धांतों से है जो इमाम फकीह-उन-नफ्स (अल्लाह उन पर रहम करे) ने व्याख्याओं के तहत उल्लेख किए हैं। अन्यथा, इस जुज़ईया के इस सिद्धांत में शामिल होने में इस कमज़ोर बंदे को—मौलाए लतीफ़ इसे माफ़ी से नवाज़े—मज़बूत कलाम है, जैसा कि अगर अताओं से नवाज़ने वाले रब ने चाहा तो अफ़ादात के तहत मालूम होगा। (त)

संक्षेप में, सात स्पष्ट प्रमाणों और तीन महान पाठों—"तिलका अशरतुन कामिलह" (वे पूरे दस हैं)—से अल्लाह के फ़ज़्ल से हुक्म स्पष्ट हो गया।

[अरबी बॉक्स 3]: और अल्लाह ही के लिए बहुत अधिक, पवित्र और बरकत वाली हम्द (प्रशंसा) है, जैसा हमारा रब चाहे और पसंद फरमाए। और अल्लाह तआला की ओर से दुरूद हो सबसे पसंदीदा ज़ात (मुस्तफ़ा) पर और उनकी आल और असहाब पर फैसले के दिन तक। आमीन। [उर्दू पक्ष]: और खुदा ही के लिए हम्द है कसीर, पाकीज़ा, बरकत वाली हम्द जैसी हमारा रब चाहे और पसंद फ़रमाए। और खुदाए बरतर की तरफ़ से दुरूद हो सबसे ज़्यादा पसंदीदा ज़ात-ए-ग्रामी पर और उनकी आल और असहाब पर फ़ैसले के दिन तक। इलाही क़बूल फ़रमा!

जहाँ तक इमाम सदरुश-शरिया के कलाम और उसमें विद्वानों की व्याख्याओं का सवाल है, हम पहले उनके कलाम पेश करेंगे। फिर वह जो इस फकीर के दिल पर अल्लाह की अता से अवतरित हुआ, न्यायप्रिय नज़रों के लिए एक तोहफा है।

[अरबी बॉक्स 4]: उच्च-साहसी इमाम, सदरुश-शरिया—अल्लाह तआला उनका मुकाम बुलन्द फरमाए... [उर्दू पक्ष]: इमाम बुलन्द हिम्मत सदरुश-शरिया। खुदाए बरतर दारुस सलाम में उन्हें मक़ाम-ए-बुलन्द अता फ़रमाए और...

---

[1] फ़तावा काज़ी खान, बाबुल तयम्मुम, मतबा नवल किशोर, लखनऊ, 1/30. पेज 217 ऑफ़ 761

لانه لمامر بماء یکفی للاغتسال عادجنبا فهذا جنب معه ماء لا یکفی للاغتسال فیتیمم[1]۔ کیونکہ جب وہ غسل کے لئے کافی پانی پر گزرا تو پھر جنب ہو گیا۔ اب یہ ایسا جنب ہے جس کے پاس غسل کے لئے ناکافی پانی ہے تو اسے تیمم کرنا ہے۔ (ت)

کیسا روشن نص ہے کہ جنب جسے غسل کو پانی نہ ملے اور وضو کے قابل موجود ہو اسے اگر تیمم جنابت کے بعد حدث ہو جب تو وضو کرے اور تیمم سے پہلے ہو تو صرف تیمم کرے وضو نہ کرے۔

اقول: واستنادی بماذکر رحمه الله تعالٰی من اصول الاحکام فی التعلیلات والافد دخول هذا الفرع فی هذا الاصل فیه کلام قوی للعبد الضعیف غفرله المولی اللطیف کماستعرفه فی الافادات * ان شاء واهب العطیات اقول: میرا استناد ان اصول احکام سے ہے جو امام فقیہ النفس رحمہ الله تعالٰی نے تعلیلات کے تحت ذکر کیے۔ ورنہ اس جزئیہ کے اس اصل کے اندر داخل ہونے میں بندہ ضعیف کو۔ مولائے لطیف اسے مغفرت سے نوازے۔ پر زور کلام ہے جیسا کہ اگر عطاؤں سے نوازنے والے رب نے چاہا تو افادات کے تحت معلوم ہو گا۔ (ت)

بالجملہ سات روشن دلائل اور تین نصوصِ جلائل تلک عشرة کاملة (وہ پورے دس ہیں۔ ت) سے بحمدہ عزوجل حکم آشکار ہو گیا۔

ولله الحمد حمدا کثیرا طیبا مبارکا فیه کما یحب ربنا و یرضی وصلی الله تعالٰی علی اصفی مصطفی و ارضی مرتضٰی جوآله وصحبه الی یوم القضاء* امین۔ اور خدا ہی کے لئے حمد ہے کثیر، پاکیزہ، برکت والی حمد جیسی ہمارا رب چاہے اور پسند فرمائے۔ اور خدائے برتر کی طرف سے درود ہو

سب سے زیادہ پسندیدہ ذاتِ گرامی پر اور ان کی آل و اصحاب پر فیصلہ کے دن تک۔ الٰہی قبول فرما!

رہا امام صدر الشریعہ کا کلام اور اُس میں تاویلات علمائے کرام ہم اولاً کلام پیشبینیاں پیش کریں۔ پھر وہ جو قلبِ فقیر پر جفیضِ قدیر سے فائض ہوا ہدیہ انظار انصاف کش۔

قال الامام صدر الشریعة الھمام اعلی اللہ تعالیٰ مقامہ فی امام بلند ہمت صدر الشریعہ۔ خدائے برتر دار السلام میں انہیں مقام بلند عطا فرمائے اور

---

[1] فتاویٰ قاضی خان باب التیمم مطبع نولکشور لکھنو ۱/۳۰ Page 217 of 761

Fatawa Razvia, Volume 4

May [Allah] always have mercy on us through his blessings and the blessings of other noble Imams in every state and place, as long as the night and day rotate.

In the first chapter on Tayammum of the commentary on Wiqayah, it is stated: "When a person in a state of major ritual impurity (janabat) has enough water that suffices for ablution (wudu) but not for a bath (ghusl), he should perform dry ablution (tayammum). According to us, unlike Imam Shafi'i, performing wudu is not obligatory for him. However, when there is an occurrence alongside the major impurity that necessitates wudu, then performing wudu is obligatory. Thus, performing tayammum for major impurity is agreed upon. And when a person in a state of minor ritual impurity (muhdith) has only enough water to suffice for washing some of his limbs, then in this case too, a disagreement is established." (T)

Observers have raised five types of objections to this: First: Al-Birjandi, in Sharh al-Niqayah, after quoting the words of Imam Sadr al-Sharia, wrote: This statement indicates that sometimes major impurity can exist while being in a state of wudu, although it is not hidden that major impurity occurs through the discharge of semen or the disappearance of the glans (hasfala). Both the emergence of something from the organ and the disappearance of the glans are factors that break wudu.

The answer is that when a person in major impurity performs tayammum, then becomes without wudu and performs wudu again, then passes by enough water for a bath but does not bathe, then moves away from the water, he becomes in a state of major impurity once more. Despite this, his wudu remains intact.

Note (I say): Meaning, he did not experience minor impurity again, in the same manner we explained before. 12 May he be forgiven. (T)

1. Sharh al-Wiqayah, Chapter on Tayammum, Maktaba Rashidiya Delhi, 1/95. Page 218 of 761

फतावा रज़विया, जिल्द 4

हम पर उनकी बरकत से और अन्य प्रतिष्ठित इमामों की बरकत से हर हाल और मकाम में जब तक रात और दिन का चक्र चलता रहे, अल्लाह हमेशा रहमत फरमाए।

शरह वक़ाया के पहले अध्याय 'तयम्मुम' में फ़रमाते हैं: "जब जनाबत (बड़ी नापाकी) वाले व्यक्ति के पास इतना पानी हो जो वुज़ू के लिए पर्याप्त हो लेकिन गुस्ल (स्नान) के लिए नहीं, तो वह तयम्मुम करे। हमारे अनुसार इमाम शाफ़ई के विपरीत, उस पर वुज़ू करना अनिवार्य नहीं है। लेकिन जब जनाबत के साथ कोई ऐसी घटना हो जो वुज़ू को अनिवार्य करती हो, तो उस पर वुज़ू अनिवार्य है। अतः जनाबत के लिए तयम्मुम सर्वसम्मति से है। और जब किसी छोटी नापाकी वाले व्यक्ति (मुहदिस) के पास केवल इतना पानी हो जो उसके कुछ अंगों को धोने के लिए पर्याप्त हो, तो इस स्थिति में भी मतभेद स्थापित है।" (त)

पर्यवेक्षकों ने इस पर पांच प्रकार की आपत्तियां उठाई हैं: पहला: अल-बरजंदी ने शरह निक़ाया में, इमाम सदरुश शरीया के कथन को उद्धृत करने के बाद लिखा है: यह कथन संकेत देता है कि कभी-कभी वुज़ू रहते हुए भी जनाबत हो जाती है, हालांकि यह गुप्त नहीं है कि जनाबत वीर्य के निकलने या हशफ़ा (लिंग मुण्ड) के लुप्त होने से होती है। और अंग से किसी चीज़ का बाहर आना और हशफ़ा का लुप्त होना, दोनों ही वुज़ू को तोड़ने वाले हैं।

उत्तर यह है कि जब जनाबत वाला व्यक्ति तयम्मुम कर ले और फिर बिना वुज़ू के हो जाए और फिर वुज़ू करे, और फिर स्नान के लिए पर्याप्त पानी के पास से गुज़रे लेकिन स्नान न करे, फिर पानी से दूर हो जाए, तो वह पुनः जनाबत की स्थिति में आ गया। इसके बावजूद उसका वुज़ू शेष रहता है।

टिप्पणी (मैं कहता हूँ): अर्थात, उसे फिर से छोटी नापाकी नहीं हुई, उसी तरह जैसे हमने पहले बताया था। 12 अल्लाह उसे क्षमा करे। (त)

1. शरह अल-वक़ाया, तयम्मुम का अध्याय, मकतबा रशीदिया दिल्ली, 1/95। पृष्ठ 218 का 761

فتاوی رضویہ، جلد چہارم

دار السلام ورحمنابه وبسائر الائمة الكرام في كل حال ومقام مدى الليالي والايام ہم پر ان کی برکت سے اور دیگر ائمہ کرام کی برکت سے ہر حال ومقام میں جب تک گردش شب و روز رہے ہمیشہ رحمت فرمائے۔

اول باب التيمم من شرحه للوقاية اذاكان للجنب ماء يكفى للوضوء لا للغسل يتيمم ولا يجب عليه التوضى عندنا خلافا للشافعى اما اذا كان مع الجنابة حدث يوجب الوضوء يجب عليه الوضوء فالتيمم للجنابة بالاتفاق واذاكان للمحدث ماء يكفى لغسل بعض اعضائه فالخلاف ثابت ايضا ١ هـ شرح وقایہ اول باب التیمم میں فرماتے ہیں: "جب جنابت والے کے پاس اتنا پانی ہو جو وضو کے لئے کفایت کرے غسل کے لئے نہیں تو وہ تیمم کرے ہمارے نزدیک بخلاف امام شافعی کے۔ اس پر وضو کرنا واجب نہیں۔ لیکن جب جنابت کے ساتھ کوئی ایسا حدث ہو جو وضو کو واجب کرتا ہے تو اس پر وضو واجب ہے۔ تو جنابت کے لئے تیمم بالاتفاق ہے۔ اور جب محدث کے پاس اتنا ہی پانی ہو جو صرف اس کے بعض اعضاء کے دھونے میں کفایت کر سکے تو اس صورت میں بھی اختلاف ثابت ہے"۔ (ت)

واعتراضوه بخمسة وجوه: ناظرین نے اس پر پانچ طرح اعتراض کیا ہے: الاول: قال البرجندى في شرح النقاية بعد نقل كلام الصدر الامام هو مشعر بانه قد تكون جنابة مع وجود الوضوء ولا يخفى ان الجنابة تحصل بخروج المني او بغيبة الحشفة وخروج الخارج من الذكر وغيبة الحشفة ناقضان للوضوء۔ اول: بر جندی نے شرح نقایہ میں، امام صدر الشریعۃ کا کلام نقل کرنے کے بعد لکھا: یہ کلام اس کا پتا دیتا ہے کہ کبھی وضو رہتے ہوئے بھی جنابت ہوتی ہے حالانکہ مخفی نہیں کہ جنابت منی کے

نکلنے یا حشفہ کے غائب ہونے سے ہوتی ہے۔ اور ذکر سے نکلنے والی چیز کا باہر آنا اور حشفہ کا غائب ہونا دونوں ہی ناقض وضو ہیں۔

والجواب ان الجنب اذا تیمم واحدث ثم توضأ ومر بماء کاف للاغتسال ولم یغتسل ثم بعد عن الماء فأنه صار جنبا ومع عہ ذلك وضوءہ باق۔ جواب یہ ہے کہ جنب جب تیمم کر لے اور بے وضو ہو کر پھر وضو کرے اور غسل کے لئے کافی پانی پر گزرے مگر غسل نہ کرے پھر پانی سے دور ہو جائے تو وہ جنابت والا ہو گیا۔ اس کے باوجود اس کا وضوء باق۔

عہ اقول: ای لم یعد حدثه علی وزان ما قدمنا ۱۲ منه غفرله (م) اقول: یعنی دوبارہ اسے حدث نہ ہوا، اسی انداز پر جو ہم نے پہلے بیان کیا ۱۲منہ غفر لہ (ت)

1 شرح الوقایہ باب التیمم مکتبہ رشیدیہ دہلی ۹۵/۱ Page 218 of 761

Fatawa Rizvia Volume 4

Main Text: (Arabic Part): And it is possible to illustrate that based on Imam Muhammad's opinion: that if a man with wudu has intercourse with a woman without ejaculating, he becomes in a state of major ritual impurity (janabat), yet his wudu is not broken according to him (Note 1). This is because excessive physical contact (mubasharat fahishah) is not one of the nullifiers of wudu according to him, and no other nullifier of wudu occurred (Note 2).

(Arabic Part): And according to the opinion of the 'Sheikhain' (may Allah be pleased with them) (Note 3): that if one induces ejaculation by hand and then grips the tip of the penis so that the semen does not come out, then he has become junub (ritually impure) (Note 4) and [it breaks] wudu...

(Urdu Translation Part): Wudu remains intact. This situation can also be presented based on Imam Muhammad's view: that a man with wudu has intercourse with a woman and ejaculation does not occur; he has become in a state of janabat, but his wudu is not broken because, in his view, excessive physical contact is not a nullifier of wudu, and no other nullifier of wudu was found.

And according to the view of the 'Sheikhain' (may Allah be pleased with them), this situation could be that semen is extracted by hand and then the tip of the penis is held so that the semen does not come out, then he has become junub and [it is] a nullifier of wudu...

Footnotes:

(Left side - Arabic, Right side - Urdu translation):

Note 1: I say: You have understood the meaning, so preserve it and do not slip. (12, from him, may he be forgiven - [M]) **Urdu translation:** I say: The reader has understood the intent, so care should be taken and one should avoid oversight. (12, from him, may he be forgiven - [T])

Note 2: I say: i.e., from that which is a 'minor ritual impurity' (hadath asghar), because the term 'nullifiers of wudu' applies only to it; thus, the intent is clarified here. (12, from him, may he be forgiven - [M]) **Urdu translation:** I say: i.e., from that thing which is a 'minor ritual impurity', because the term 'nullifiers of wudu' is applied to it, so here he has clarified his intent. (12, from him, may he be forgiven - [T])

Note 3: I say: This (1) is an oversight. It is rather the view of the 'Tarafain' (the two sides: Abu Hanifa and Imam Muhammad), and applying the term 'Sheikhain' (the two Sheikhs: Abu Hanifa and Abu Yusuf) to them is far-fetched. Although (2) in some places, 'Sheikhain' is used for the 'Sahibayn' (the two companions: Abu Yusuf and Imam Muhammad), as I explained in my book "Fasl al-Qada". (12, from him, may he be forgiven - [M]) **Urdu translation:** I say: This is an oversight. It is the view of the 'Tarafain', and applying 'Sheikhain' to them is far-fetched, although in some places 'Sheikhain' is applied to the 'Sahibayn', as I have described in my book "Fasl al-Qada". (12, from him, may he be forgiven - [T])

Note 4: I say: i.e. (3) when the semen comes out, because coming out is a condition by consensus. The dispute is only in the condition of desire at the time of exit, or if its sufficiency at the time of separation [from its source] is enough. The 'Tarafain' hold the second view, while Imam Abu Yusuf holds the first. Thus, the possibility of interpreting it otherwise is a thought that does not befit scholars. (12, from him, may he be forgiven - [M]) **Urdu translation:** I say: i.e., when the semen comes out, because coming out is a condition by consensus. The dispute is only in whether desire, meaning at the time of coming out, is a condition, or if desire at the time of the semen's separation from its place is sufficient. The 'Tarafain' are the proponents of the second view, and Imam Abu Yusuf is the proponent of the first. So, the possibility that its opposite was intended is a thought that is not worthy of scholars. (12, from him, may he be forgiven - [T])

फ़तावा रज़विया खंड 4

मुख्य पाठ: (अरबी भाग): और इमाम मुहम्मद के मत के अनुसार इसे इस प्रकार चित्रित किया जा सकता है: कि यदि एक वुज़ू वाला व्यक्ति किसी महिला के साथ संभोग करता है और वीर्यपात नहीं होता है, तो वह जनाबत (अशुद्धि) की स्थिति में हो गया, फिर भी उनके अनुसार उसका वुज़ू नहीं टूटा (टिप्पणी 1)। क्योंकि उनके अनुसार अत्यधिक शारीरिक संपर्क(मुबाशरत फ़ाहिशा) वुज़ू तोड़ने वाला नहीं है और वुज़ू तोड़ने वाला कोई अन्य कारण भी नहीं पाया गया (टिप्पणी 2)।

(अरबी भाग): और 'शेखैन' (इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम अबू यूसुफ़) (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के मत के अनुसार (टिप्पणी 3): यदि कोई हाथ से वीर्य निकालता है और फिर लिंग के सिरे को पकड़ लेता है ताकि वीर्य बाहर न आए, तो वह जुनूब (अशुद्ध) हो गया (टिप्पणी 4) और [यह है] वुज़ू तोड़ने वाला...

(उर्दू अनुवाद भाग): वुज़ू बरकरार रहता है। इस स्थिति को इमाम मुहम्मद के मत पर भी पेश किया जा सकता है: कि एक वुज़ू वाला व्यक्ति किसी महिला से संभोग करे और वीर्यपात न हो, तो वह जनाबत की स्थिति में हो गया लेकिन उसका वुज़ू नहीं टूटा क्योंकि उनके अनुसार अत्यधिक शारीरिक संपर्क वुज़ू तोड़ने वाला नहीं है और वुज़ू तोड़ने वाली कोई दूसरी चीज़ भी नहीं पाई गई।

और शेखैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के मत पर यह स्थिति हो सकती है कि हाथ से वीर्य निकाला जाए फिर लिंग का सिरा पकड़ लिया जाए ताकि वीर्य बाहर न आए, तो वह जुनूब हो गया और वुज़ू तोड़ने वाला...

पाद टिप्पणियाँ:

(बायाँ पक्ष - अरबी, दायाँ पक्ष - उर्दू अनुवाद):

टिप्पणी 1: मैं कहता हूँ: आपने अर्थ समझ लिया है, इसलिए इसे सुरक्षित रखें और विचलित न हों। (12, उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए - [म]) **उर्दू अनुवाद:** मैं कहता हूँ: पाठक को उद्देश्य ज्ञात हो गया है, इसलिए सावधानी बरतनी चाहिए और चूक से बचना चाहिए। (12, उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए - [त])

टिप्पणी 2: मैं कहता हूँ: यानी उस चीज़ से जो 'ह़दसे असग़र' (छोटी अशुद्धि) है, क्योंकि 'वुज़ू तोड़ने वाली चीज़ें' शब्द केवल उसी पर लागू होता है; अतः यहाँ उद्देश्य स्पष्ट हो गया। (12, उनकी ओर से,

उन्हें क्षमा किया जाए - [म]) **उर्दू अनुवाद:** मैं कहता हूँ: यानी उस चीज़ से जो ह़दसे असग़र है, क्योंकि वुज़ू तोड़ने वाली चीज़ों का शब्द उसी पर लागू होता है, इसलिए यहाँ उन्होंने अपना उद्देश्य स्पष्ट कर दिया। (12, उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए - [त])

टिप्पणी 3: मैं कहता हूँ: यह (1) एक चूक है। यह बल्कि 'तरफ़ैन' (इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मुहम्मद) का मत है, और उन पर 'श़ेखैन' शब्द का प्रयोग दूर की बात है। हालांकि (2) कुछ स्थानों पर, 'साह़िबैन' (इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद) के लिए 'श़ेखैन' का प्रयोग होता है, जैसा कि मैंने अपनी पुस्तक "फ़स्ल अल-क़ज़ा" में स्पष्ट किया है। (12, उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए - [म]) **उर्दू अनुवाद:** मैं कहता हूँ: यह एक चूक है। यह तरफ़ैन का मत है, और उन पर 'श़ेखैन' का प्रयोग दूर की बात है, हालांकि कुछ स्थानों में साह़िबैन के लिए 'श़ेखैन' का प्रयोग हुआ है जैसा कि मैंने अपनी पुस्तक "फ़स्ल अल-क़ज़ा" में वर्णन किया है। (12, उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए - [त])

टिप्पणी 4: मैं कहता हूँ: यानी (3) जब वीर्य बाहर आ जाए, क्योंकि बाहर आना सर्वसम्मति से शर्त है। विवाद केवल वीर्य निकलने के समय कामेच्छा की शर्त में है, या यदि वीर्य के अपने स्थान से अलग होने के समय कामेच्छा का होना पर्याप्त है। तरफ़ैन दूसरे मत के समर्थक हैं, जबकि इमाम अबू यूसुफ़ पहले के। अतः इसके विपरीत अर्थ लेने की संभावना ऐसा विचार है जो विद्वानों के योग्य नहीं है। (12, उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए - [म]) **उर्दू अनुवाद:** मैं कहता हूँ: यानी जब वीर्य बाहर आ जाए, क्योंकि बाहर आना सर्वसम्मति से शर्त है। विवाद केवल इसमें है कि क्या कामेच्छा, यानी बाहर आने के समय होना शर्त है, या बस अपने स्थान से वीर्य के अलग होने के समय कामेच्छा होना पर्याप्त है। तरफ़ैन दूसरे मत के समर्थक हैं, और इमाम अबू यूसुफ़ पहले के। तो यह संभावना कि इसके विपरीत का इरादा किया गया था, ऐसा विचार है जो विद्वानों के योग्य नहीं है। (12, उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए - [त])

पृष्ठ 219/761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

متن: (عربی حصہ): وَیُمکِنُ اَنْ یُّصَوَّرَ ذٰلِکَ عَلٰی قَوْلِ مُحَمَّدٍ بِاَنْ یُّجَامِعَ الرَّجُلُ الْمُتَوَضِّئُ اِمْرَاَۃً وَّ لَمْ یُنْزِلْ فَاِنَّہٗ قَدْ اَجْنَبَ وَ لَمْ یَنْتَقِضْ عہ۱ وُضُوئُہٗ فَاِنَّ الْمُبَاشَرَۃَ الْفَاحِشَۃَ غَیْرُ نَاقِضَۃٍ عِنْدَہٗ وَ لَمْ یُوجَدْ عہ۲ شَیْئٌ اٰخَرُ مِنْ نَّوَاقِضِ الْوُضُوءِ۔

وَعَلٰی قَوْلِ الشَّیْخَیْنِ عہ۳ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ بِاَنْ یَّسْتَمْنِیَ بِالْیَدِ ثُمَّ یَاْخُذَ رَاْسَ الذَّکَرِ حَتّٰی لَا یَخْرُجَ الْمَنِیُّ فَقَدْ عہ٤ اَجْنَبَ وَ...

(اردو ترجمہ): وضو باقی ہے۔ اس کی صورت امام محمد کے قول پر یہ بھی پیش کی جاسکتی ہے کہ باوضو مرد عورت سے مجامعت کرے اور انزال نہ ہو تو وہ جنابت زدہ ہو گیا اور اس کا وضو نہ ٹوٹا کیونکہ ان کے نزدیک مباشرت فاحشہ ناقض وضو نہیں اور نواقض وضو میں سے کوئی دوسری چیز بھی نہ پائی گئی۔

اور شیخین رضی اللہ تعالی عنہما کے قول پر یہ صورت ہوسکتی ہے کہ ہاتھ سے منی نکالے پھر ذکر کا سرا پکڑلے تاکہ منی باہر نہ آئے تو وہ جنب ہوگیا اور ناقض وضو...

حواشی:

عہ۱ اقول: قد علمت المعنی فاحتفظ ولا تزل ۱۲ منہ غفرلہ (م) **اقول:** ناظر کو مراد معلوم ہو گئی تو نگہداشت چاہئے اور لغزش سے پرہیز ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

عہ۲ اقول: ای مما ھو حدث اصغر اذ لایقال نواقض الوضوء الاعلیھا فھھنا افصح عن المراد ۱۲ منہ غفرلہ (م) **اقول:** یعنی اس چیز سے جو حدث اصغر ہو کیوں کہ نواقض وضو کا اطلاق اسی پر ہوتا ہے تو یہاں اپنی مراد واضح کردی ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

عہ۳ اقول: ھذا (۱) سھو وانما ھو قول الطرفین واطلاق الشیخین علیھما بعید وان (۲) جاء فی بعض المواضع علی الصاحبین کما بینتہ فی کتابی فصل القضاء ۱۲ منہ غفرلہ (م) **اقول:** یہ سہو ہے۔ وہ طرفین کا قول ہے اور ان پر اطلاق شیخین بعید ہے اگرچہ بعض مقامات میں صاحبین کے لئے شیخین کا اطلاق ہے جیسا کہ میں نے اپنی کتاب "فصل القضاء" میں بیان کیا ہے ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

عہ٤ اقول: ای (۳) اذا خرج المنی لان الخروج شرط بالاجماع انما النزاع فی اشتراط الشھوۃ عند الخروج او کفایتھا عند الانفصال بہ قالا وبالاول ابویوسف فاحتمال ارادۃ خلافہ ظن مالایلیق بالعلماء ۱۲ منہ غفرلہ (م) **اقول:** یعنی جب منی باہر آجائے اس لئے کہ باہر آنا بالاجمانع شرط ہے نزاع صرف اس میں ہے کہ شہوت یعنی باہر آنے کے وقت ہونا شرط ہے یا بس اپنے مقر سے منی کے انفصال کے وقت (شہوت) ہونا کافی ہے۔ دوم کے قائل طرفین ہیں اور اول کے قائل امام ابویوسف ہیں۔ تو یہ احتمال کہ اس کے خلاف مراد لے لیا ہوا ایسا ظن ہے جو علماء کے لائق نہیں ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

Fatawa-e-Razviya - Volume 4

[Left Column - Arabic Text] ...to the contradiction also in a good and correct manner. And it was narrated here in 'Al-Sa'aya' what can be taken from it as another explanation for the contradiction, not based on the first objection, which is: when there is no minor ritual impurity (hadath) with major ritual impurity (janaba), then how can Imam Shafi'i make wudu obligatory there? [Ends]. Thus it is taken from it that although minor impurity does not necessarily accompany major impurity, the speech of Sadr al-Imam in the first case is also regarding such janaba which is accompanied by hadath, with the evidence of Imam Shafi'i making wudu obligatory; thus the contradiction arose. Third: His statement 'so tayammum is for janaba' (فالتيمم للجنابة) with the letter 'Fa'—if it is for inference, then it has no outcome because tayammum being for janaba is not a branch of the obligation of wudu. And if it is for causation, then an objection is raised that in the previous case as well, tayammum was for janaba, so it would follow that wudu should also be obligatory there. Fourth: That tayammum being for janaba is, by consensus, common between both cases; it has no specialty with this case. [Ends]. Both of these were narrated by Al-Lucknowi. Fifth: Its contradiction to what is established in the school of thought (madhhab), as we have explained with proofs and texts.

[Right Column - Urdu Text] ...is coming under the fifth objection. That answer also dispels the contradiction in an excellent and correct manner. Here in 'Al-Sa'aya', that is quoted from which another explanation of contradiction can be derived which is not based on the first objection, namely: "when there is no minor ritual impurity along with major ritual impurity, then how will Imam Shafi'i make wudu obligatory there?" [Ends]. And from this, it is inferred that although minor impurity does not necessarily follow major impurity, the speech of Sadr al-Shari'ah in the first case is also about such a major impurity which is accompanied by minor impurity, by the proof that in it Imam Shafi'i makes wudu obligatory. Thus, there will be a contradiction. Third: In his statement "So tayammum is for janaba" (فالتيمم للجنابة), if the 'Fa' is for result/inference, then it has no gain because tayammum being for major impurity is not a sub-branch of the obligation of wudu. And if it is for reasoning/causation, then this objection will arise that in the previous case also tayammum was due to major ritual impurity, so it would be necessary that wudu also be obligatory there. Fourth: By consensus, tayammum being for major impurity is common to both cases; it is not specific to this case. [Ends]. Both these objections

were quoted by Maulana Farangi Mahli. Fifth: This is contrary to what is established and proven in the madhhab, as shown by ten proofs and texts.

[Footnotes] 1 Al-Sa'aya, Chapter of Tayammum, published by Suhail Academy, Lahore, 1/490 2 Al-Sa'aya, Chapter of Tayammum, published by Suhail Academy, Lahore, 1/490 3 Al-Sa'aya, Chapter of Tayammum, published by Suhail Academy, Lahore, 1/490

फतावा-ए-रज़विया - खंड 4

[बायां कॉलम - अरबी पाठ] ...विरोधाभास के लिए भी एक अच्छे और सही तरीके से। और यहाँ 'अल-सा'या' में वह उद्धृत किया गया है जिससे विरोधाभास का दूसरा स्पष्टीकरण लिया जा सकता है, जो पहली आपत्ति पर आधारित नहीं है, वह यह है: जब जनाबत (महा-अशुद्धि) के साथ हदस (लघु-अशुद्धि) न हो, तो इमाम शाफई वहाँ वज़ू कैसे अनिवार्य करेंगे? [समाप्त]। इस प्रकार इससे यह लिया जाता है कि यद्यपि लघु-अशुद्धि महा-अशुद्धि के साथ होना आवश्यक नहीं है, लेकिन पहली स्थिति में सदर अल-इमाम का भाषण भी ऐसी जनाबत के संबंध में है जिसके साथ हदस भी हो, इस प्रमाण के साथ कि इमाम शाफई वज़ू अनिवार्य करते हैं; इस प्रकार विरोधाभास उत्पन्न हुआ। तीसरा: उनका कथन 'तो तैयम्मुम जनाबत के लिए है' (فالتيمم للجنابة) अक्षर 'फ़ा' के साथ—यदि यह परिणाम के लिए है, तो इसका कोई लाभ नहीं है क्योंकि जनाबत के लिए तैयम्मुम होना वज़ू की अनिवार्यता की शाखा नहीं है। और यदि यह कारण के लिए है, तो आपत्ति उठाई जाती है कि पिछली स्थिति में भी तैयम्मुम जनाबत के लिए ही था, तो यह आवश्यक होगा कि वहाँ भी वज़ू अनिवार्य हो। चौथा: आम सहमति से, जनाबत के लिए तैयम्मुम होना दोनों स्थितियों में साझा है; इसका इस स्थिति के साथ कोई विशेष संबंध नहीं है। [समाप्त]। इन दोनों को अल-लखनवी ने उद्धृत किया है। पांचवां: इसका उस चीज़ से विरोध जो मज़हब में स्थापित है, जैसा कि हमने प्रमाणों और ग्रंथों के साथ समझाया है।

[दायां कॉलम - उर्दू पाठ] ...पांचवीं आपत्ति के तहत आ रहा है। वह उत्तर भी उत्तम और सही तरीके से विरोधाभास को दूर करता है। यहाँ 'अल-सा'या' में वह उद्धृत किया गया है जिससे विरोधाभास का दूसरा विवरण निकाला जा सकता है जो पहली आपत्ति पर आधारित नहीं है, वह यह: "जब जनाबत के साथ हदस न हो, तो इमाम शाफई वहाँ वज़ू कैसे अनिवार्य करेंगे?" [समाप्त]। और इससे यह निकाला जाता है कि यद्यपि लघु-अशुद्धि महा-अशुद्धि के लिए अनिवार्य नहीं है, लेकिन सदर अल-शरिया का पहली स्थिति में कथन भी ऐसी ही जनाबत के बारे में है जिसके साथ हदस भी हो, इस दलील से कि उसमें इमाम शाफई वज़ू अनिवार्य करते हैं। तो विरोधाभास होगा। तीसरा: उनके कथन "तो तैयम्मुम जनाबत के लिए है" (فالتيمم للجنابة) में 'फ़ा' यदि परिणाम के लिए है, तो इसका कोई लाभ नहीं क्योंकि जनाबत के लिए तैयम्मुम होना वज़ू के अनिवार्य होने पर आधारित नहीं है। और यदि यह कारण के लिए है, तो यह आपत्ति होगी कि पिछली स्थिति में भी तैयम्मुम जनाबत के कारण ही था, तो आवश्यक होगा कि वहां भी वज़ू अनिवार्य हो। चौथा: आम सहमति से, जनाबत के लिए तैयम्मुम होना दोनों स्थितियों में साझा है; यह केवल इसी स्थिति के लिए विशेष नहीं है। [समाप्त]। ये

दोनों आपत्तियां मौलाना फरंगी महली ने उद्धृत की हैं। पांचवां: यह उसके विपरीत है जो मज़हब में निर्धारित और स्थापित है, जैसा कि दस प्रमाणों और ग्रंथों से दिखाया गया है।

[पाद-टिप्पणियाँ] 1 अल-सा'या, तैयम्मुम का अध्याय, सुहैल अकादमी, लाहौर द्वारा प्रकाशित, 1/490 2 अल-सा'या, तैयम्मुम का अध्याय, सुहैल अकादमी, लाहौर द्वारा प्रकाशित, 1/490 3 अल-सा'या, तैयम्मुम का अध्याय, सुहैल अकादमी, लाहौर द्वारा प्रकाशित, 1/490

[بایاں کالم - عربی متن] للتناقض ایضا بوجه حسن صحیح۔ ونقل ههنا في السعاية ما يمكن ان يؤخذ منه تقرير آخر للتناقض غير مبتن على الاشكال الاول وهو انه اذا لم يكن معها حدث فكيف يوجب الشافعی هناك الوضوء اھ فیؤخذ منه ان الحدث الاصغر وان لم یلزم الاکبر ولکن کلام الصدر الامام فی الصورة الاولی ایضا فی جنابة معها حدث بدلیل ایجاب الشافعی الوضوء فجاء التناقض۔ والثالث: ان قوله فالتیمم للجنابة بالفاء ان کان تفریعا فلامحصل له لان کون التیمم للجنابة غیر مفرع علی وجوب الوضوء وان کان تعلیلا ورد علیه ان فی الصورة السابقة ایضا التیمم للجنابة فیلزم ان یجب الوضوء هناك ایضا 2 ۔ والرابع: ان کون التیمم للجنابة بالاتفاق مشترك بین الصورتین لااختصاص له بهذه الصورة 3 اھ نقلهما اللکنوی۔ والخامس: مخالفته لما تقرر فی المذهب کما بیناه بالدلائل والنصوص۔

[دایاں کالم - اردو متن] سے اشکال پنجم کے تحت آرہا ہے۔ وہ جواب بھی عمدہ و صحیح طرز پر تناقض دفع کردیتا ہے۔ یہاں سعایہ میں وہ نقل کیا جس سے تناقض کی ایک دوسری تقریر اخذ کی جاسکتی ہے جو اشکال اول پر مبنی نہ ہو "وہ یہ کہ جب جنابت کے ساتھ حدث نہ ہو تو وہاں امام شافعی وضو کیسے واجب کریں گے؟ اھ اور اس سے یہ اخذ ہوتا ہے کہ حدث اصغر اگرچہ حدث اکبر کو لازم نہیں لیکن صدرالشریعہ کا کلام پہلی صورت میں بھی ایسی ہی جنابت کے بارے میں ہے جس کے ساتھ حدث بھی ہو اس دلیل سے کہ اس میں امام شافعی وضو واجب کرتے ہیں۔ تو تناقض ہوگا۔ سوم: ان کی عبارت "فالتیمم للجنابة" (تو تیمم جنابت کے لئے ہے) میں "فا" اگر تفریح کے لئے ہے تو اس کا کوئی حاصل نہیں اس لئے کہ تیمم جنابت کے لئے ہونا وجوب وضو پر متفرع نہیں۔ اور اگر تعلیل کے لئے ہے تو یہ اعتراض ہوگا کہ سابقہ صورت میں بھی تیمم جنابت ہی کے سبب ہے تو لازم آئے کہ وہاں بھی وضو واجب ہو۔ چہارم: بالاتفاق جنابت کے لئے تیمم ہونا

دونوں صورتوں میں مشترک ہے اسی صورت سے خاص نہیں اھ یہ دونوں اعتراض مولانا فرنگی محلی نے نقل کیے۔ پنجم: یہ اس کے مخالف ہے جو مذہب میں مقرر و ثابت ہے جیسا کہ دس دلائل و نصوص سے

[حواشی] 1 السعاية باب التيمم مطبوعہ سہیل اکیڈمی لاہور ۱/ ۴۹۰ 2 السعاية باب التيمم مطبوعہ سہیل اکیڈمی لاہور ۱/ ۴۹۰ 3 السعاية باب التيمم مطبوعہ سہیل اکیڈمی لاہور ۱/ ۴۹۰

Fatawa Razawiyya Volume Four

[Arabic column]: The tenth point is that minor impurity (hadath) along with major ritual impurity (janaba) does not necessitate Wudhu at all when water sufficient for Ghusl is not available. To this, Burjandi pointed out in the statement immediately following the aforementioned one: "But the discussion is regarding whether Wudhu is obligatory in both cases (c) if minor impurity occurs; there is hesitation in this regard, and the apparent view is no. A clear narration is necessary to rule that it is required. End." As we have already quoted from him after the proofs and mentioned that if at that time he had considered the texts of the school (Madhhab), he would not have been content with hesitation and drawing inferences. This is the greatest of objections, and it is what forced the scholars to interpret his (Sadr al-Shariah's) words, may Allah have mercy on him. The crux of all their interpretations is to refer back...

[Urdu column]: We have stated this. In the school of thought, minor impurity along with major ritual impurity is not at all a cause for Wudhu when so much water is not available as would be sufficient for Ghusl. Burjandi has pointed towards this with his following statement connected to the one just mentioned: "But the discussion is about whether it is obligatory to perform Wudhu in both cases if minor impurity has occurred. There is hesitation about this, and the apparent view is negative. It is necessary to have an explicit narration to command the need for Wudhu." End. As we quoted this passage after the proofs and explained that if at that time he had seen the texts of the school, he would not have settled for hesitation and inference. This is the biggest objection; because of this, the respected scholars felt the need to interpret the words of Sadr al-Shariah, may Allah Almighty have mercy on him. And the outcome of all these scholars' interpretations is...

[Center/Bottom text]: (c): That is, in the latter two cases. By my life, he was correct in specializing the discussion to them and setting aside the first case because there is undoubtedly a requirement for Wudhu when minor impurity occurs in the first case, as its verification will come, with the help of Allah Almighty, in benefit (number) 11. 12 from him, may he be forgiven (m). May he be forgiven (t).

[Footnote]: 1. Sharh al-Niqaya by Burjandi, Chapter on Tayammum, Naval Kishore, Lucknow, 1/44. Page 222 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

[अरबी कॉलम]: दसवाँ बिंदु यह है कि जनाबत (बड़ी नापाकी) के साथ हदथ (छोटी नापाकी) वज़ू को कतई वाजिब नहीं करती जब गुस्ल के लिए पर्याप्त पानी उपलब्ध न हो। इसकी ओर बुर्जुंदी ने पहले उल्लिखित इबारत के तुरंत बाद वाले बयान में इशारा किया है: "लेकिन चर्चा इस बारे में है कि क्या दोनों सूरतों में वज़ू करना वाजिब है (c) जब हदथ पेश आए? इसमें झिझक (तरद्दुद) है और ज़ाहिर तौर पर नहीं है। वज़ू की ज़रूरत का हुक्म देने के लिए एक स्पष्ट रिवायत का होना ज़रूरी है। समाप्त।" जैसा कि हमने दलीलों के बाद उनसे पहले ही उद्धृत किया है और उल्लेख किया है कि यदि उस समय उनकी नज़र में मज़हब के नसूस (स्पष्ट पाठ) होते, तो वे केवल झिझक और अनुमान पर संतोष नहीं करते। यह सबसे बड़ा ऐतराज़ है, और इसी ने विद्वानों को सदरुश शरीआ़ (रहमतुल्लाहि अलैहि) के कलाम की व्याख्या करने पर मजबूर किया। और उन सभी की व्याख्याओं का सार यह है...

[उर्दू कॉलम]: हमने इसे बयान किया। मज़हब में यह है कि जनाबत के साथ हदथ बिल्कुल वज़ू वाजिब नहीं करता जब इतना पानी उपलब्ध न हो जो गुस्ल के लिए काफी हो। इसी की तरफ बुर्जुंदी ने अभी ज़िक्रशुदा इबारत से मुत्तसिल अपने दर्ज ज़ैल कलाम से इशारा किया है: "लेकिन कलाम इस में है कि क्या दोनों सूरतों में वज़ू करना वाजिब है जब हदथ हुआ हो। इस बारे में तरद्दुद है और ज़ाहिर नफी है। एहतियाज-ए-वज़ू का हुक्म करने के लिए कोई सरीह (स्पष्ट) रिवायत होना ज़रूरी है।" समाप्त। जैसा कि दलायल के बाद उनसे हमने यह इबारत नक़ल की और बताया कि अगर उस वक्त उनकी नज़र में मज़हब के नसूस होते तो वह तरद्दुद व इस्तज़हार पर कनाअत न करते। यही सबसे बड़ा ऐतराज़ है इसी की वजह से हज़रात उलमा को सदरुश शरीआ़ रहमतुल्लाहि तआ़ला के कलाम की तावील (व्याख्या) करने की ज़रूरत पेश आई। और इन सब हज़रात की तावीलात का मआल यह है...

[मध्य/निचला भाग]: (c): यानी बाद वाली दोनों सूरतों में। और उन दोनों से कलाम खास करके और पहली को अलग करके यक़ीनन उन्होंने सही किया इसलिए कि पहली सूरत में हदथ होने के वक्त वज़ू के वाजिब होने में कोई शक नहीं है जैसा कि इसकी तहक़ीक़ अल्लाह तआ़ला की मदद से इफ़ादा (नंबर) 11 में आ रही है। 12 मिन्हु गुफ़िरा लहू (म)। गुफ़िरा लहू (त)।

[पाद-टिप्पणी]: 1. शरह अल-निकाया ले-बुर्जुंदी, तयम्मुम का अध्याय, नवल किशोर, लखनऊ 1/44.

فتاویٰ رضویہ جلد چہارم

[عربی کالم]: العشرة ان الحدث مع الجنابة لایوجب الوضوء اصلا اذا لم یجد ماء یکفی للغسل الیه اشار البرجندی بقوله متصل العبارة المذکورة انفاً۔ لکن الکلام في انه هل یجب في الصورتین عہ التوضی اذا احدث فیه تردد والظاهر لا ولابد للحکم بالاحتیاج من روایة صریحة 1 اھ کما قدمنا عنه تلو الدلائل وذکرنا انه لوکان في نظره اذ ذاك نصوص المذهب لما قنع بالتردد والاستظهار۔ وهذا هو اعظم الایرادات وهو الذی احوج العلماء الی تأویل کلامه رحمه الله تعالی۔ ومحط کلامهم جمیعاً ارجاع

[اردو کالم]: ہم نے اسے بیان کیا۔ مذہب میں یہ ہے کہ جنابت کے ساتھ حدث بالکل موجب وضو نہیں جب اتنا پانی دستیاب نہ ہو جو غسل کے لئے کافی ہوا سی کی طرف بر جندی نے ابھی ذکر شدہ عبارت سے متصل اپنے درج ذیل کلام سے اشارہ کیا ہے: "لیکن کلام اس میں ہے کہ کیا دونوں صورتوں میں وضو کرنا واجب ہے جب حدث ہوا ہو۔ اس بارے میں تردد ہے اور ظاہر نفی ہے۔ احتیاج وضو کا حکم کرنے کے لئے کوئی صریح روایت ہونا ضروری ہے۔" اھ جیسا کہ دلائل کے بعد ان سے ہم نے یہ عبارت نقل کی اور بتایا کہ اگر اس وقت ان کی نظر میں مذہب کے نصوص ہوتے تو وہ تردد و استظہار پر قناعت نہ کرتے۔ یہی سب سے بڑا اعتراض ہے اسی کی وجہ سے حضرات علماء کو صدر الشریعہ رحمہ اللہ تعالیٰ کے کلام کی تاویل کرنے کی ضرورت پیش آئی۔ اور ان سب حضرات کی تاویلات کا مآل یہ ہے

[درمیانی/نیچے کا حصہ]: عہ: ای الاخر بین ولعمري لقد اصاب في تخصیص الکلام بهما وعزل الصورة الاولی لان فیها لاشك في وجوب الوضوء اذا احدث کما سیاتی تحقیقه فی الافادة بعونه تعالی ۱۲ منه غفرله (م)۔ یعنی بعد والی دونوں صورتوں میں۔ اور ان دونوں سے کلام خاص کرکے اور پہلی کو الگ کرکے یقینا انہوں نے صحیح کیا اس لئے کہ پہلی صورت میں حدث ہونے کے وقت

وجوب وضو میں شک نہیں جیسا کہ اس کی تحقیق بعونہ تعالٰی افادہ (نمبر) ۱۱ میں آرہی ہے ۱۲منہ غفر لہ (ت)

[حاشیہ]: 1 شرح النقایۃ للبرجندی فصل فی التیمم نولکشور لکھنو ۱/ ۴۴ صفحہ 222 از 761

Volume 4 Fatawa Rizvia

The ruling on the necessity of performing Wudu (ablution) due to a minor impurity occurring after performing Tayammum (dry ablution) for Janaba (major ritual impurity), though there are two approaches in this regard. The first approach: "Alternatively, if it is along with Janaba..."

That "the ruling on the obligation of Wudu applies to the minor impurity that occurs after Tayammum for major impurity." However, there are two schools of thought regarding this. First path: ("Alternatively, when it is with Janaba")

(Footnote Ref.) It is stated in 'Sa'aya' from 'Ghayat-ul-Hawashi': The word "Yajib" (is necessary) is the result (jaza) of "Amma" (if/when), and the word "Kana" is used here in its complete form. The implied meaning is: when a minor ritual impurity occurs along with Tayammum for Janaba, then by consensus (ittifaq), Wudu becomes obligatory. This means that after performing Tayammum for major impurity, if a minor impurity occurs while enough water for Wudu is available, then performing Wudu is necessary. This is despite the fact that, by consensus, he has performed Tayammum for a person in a state of Janaba. This is unlike the aforementioned case, in which Wudu is not necessary after Tayammum for Janaba. Therefore, the phrase "bil-ittifaq" (by consensus) is related to the word "yajib" (is necessary). In the phrase "fal-Tayammum", the letter 'fa' is for derivation (tafree'). That is, along with the necessity of Wudu, Tayammum for Janaba is established. As mentioned in the 'Jami' (compendium) from the commentary of Imam Tahawi and others, it is not obligatory for a person in major ritual impurity to use water on some parts of the body or for minor impurity. However, when he performs Tayammum for Janaba and then an event occurs that necessitates Wudu, then Wudu becomes obligatory for him. This is because he now has access to enough water to perform Wudu. Tayammum is no longer required because by performing the initial Tayammum, he has already exited the state of Janaba, until he finds water... (Continued on the next page).

Page 223 of 761

खंड 4 फ़तावा रज़विया

जनाबत (बड़ी नापाकी) के लिए तयम्मुम (मिट्टी से पाक होना) के बाद होने वाली हदस (छोटी नापाकी) के लिए वुज़ू की अनिवार्यता का नियम, हालाँकि इस संबंध में दो दृष्टिकोण हैं। पहला मार्ग: ("या फिर, जब यह जनाबत के साथ हो...")

कि "वुज़ू की अनिवार्यता का नियम उस छोटी नापाकी (हदस) पर लागू होता है जो जनाबत के तयम्मुम के बाद होती है।" हालाँकि, इस बारे में दो मत हैं। पहला तरीका: ("अम्मा इज़ा काना म'अल जनाबा")

(फ़ुटनोट संदर्भ) 'सआया' में 'गायत-उल-हवाशी' के हवाले से लिखा है: शब्द "यजिबु" (अनिवार्य है) "अम्मा" का प्रतिफल (जज़ा) है, और क्रिया "काना" यहाँ अपने पूर्ण रूप में उपयोग की गई है। निहित अर्थ यह है: जब जनाबत के लिए तयम्मुम के साथ कोई छोटी नापाकी (हदस) पाई जाती है, तो सर्वसम्मति (इत्तिफ़ाक) से वुज़ू अनिवार्य हो जाता है। इसका अर्थ है कि जनाबत के लिए तयम्मुम के साथ, वुज़ू के लिए पर्याप्त पानी उपलब्ध होने पर यदि कोई छोटी नापाकी होती है, तो वुज़ू करना अनिवार्य है। यह इस तथ्य के बावजूद है कि, सर्वसम्मति से, उसने एक जुनूब (जनाबत की स्थिति में व्यक्ति) के लिए तयम्मुम किया है। यह पूर्वोक्त मामले के विपरीत है, जिसमें जनाबत के तयम्मुम के बाद वुज़ू अनिवार्य नहीं है। इसलिए, "बिल-इत्तिफ़ाक" (सर्वसम्मति से) वाक्यांश "यजिबु" (अनिवार्य है) शब्द से संबंधित है। "फल-तयम्मुम" वाक्यांश में, अक्षर 'फ़ा' व्युत्पत्ति (तफ़रीह) के लिए है। यानी, वुज़ू की अनिवार्यता के साथ, जनाबत के लिए तयम्मुम सिद्ध होता है। जैसा कि 'जामी' में इमाम तहावी की व्याख्या आदि से उल्लेख किया गया है, एक जुनूब व्यक्ति के लिए शरीर के कुछ हिस्सों पर पानी का उपयोग करना या छोटी नापाकी के लिए पानी का उपयोग करना अनिवार्य नहीं है। लेकिन जब वह जनाबत के लिए तयम्मुम कर लेता है और फिर ऐसी घटना होती है जिसके लिए वुज़ू आवश्यक है, तो अब उस पर वुज़ू अनिवार्य होगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि अब उसके पास वुज़ू करने के लिए पर्याप्त पानी उपलब्ध है। तयम्मुम अब आवश्यक नहीं है क्योंकि प्रारंभिक तयम्मुम करके वह पहले ही जनाबत की स्थिति से बाहर निकल चुका है, जब तक कि उसे पानी न मिल जाए... (अगले पृष्ठ पर जारी)।

पृष्ठ 223/761

جلد چہارم فتاوی رضویہ

الحکم بوجوب الوضوء الی الحدث بعد التیمم للجنابۃ غیر ان لھم فیہ مسلکین: احدھما تقدیر ۸عہ المضاف ای کہ "وجوبِ وضو کا حکم اس حدث کی طرف عائد ہے جو تیممِ جنابت کے بعد ہو"۔ مگر اس بارے میں ان کے دو مسلک ہیں: طریقِ اوّل: ("اما اذا کان مع الجنابۃ")

عہ قال في السعاية في غاية الحواشي قوله يجب جزاء اما وكلمة كان تامة وتقدير الكلام اما اذا وجد مع تيمم الجنابة حدث يوجب الوضوء فيجب الوضوء اتفاقاً يعنى احدث بالتيمم للجنابة مع وجود الماء الكافي للوضوء فيجب الوضوء مع انه تيمم الجنب اتفاقاً بخلاف الصورة المسطورة فان فيها بعد تيمم الجنابة لايجب الوضوء فقوله بالاتفاق متعلق بقوله يجب وقوله فالتيمم الفاء للتفريع اى فثبت التيمم للجنابة مع وجوب الوضوء فانه لايجب للجنب صرف الماء الى بعض الاعضاء او للحدث الا اذا تيمم للجنابة ثم وقع منه حدث يوجب الوضوء لانه يجب عليه الوضوء لانه قدر على ماء كاف به ولم يجب التيمم لانه بالتيمم خرج عن الجنابة الى ان يجد

سعایہ میں لکھا ہے : غایۃ الحواشی میں ہے : لفظ "یجب" "اما" کی جزا ہے اور کان تامہ ہے۔ تقدیرِ کلام یہ ہوگی لیکن جب تیممِ جنابت کے ساتھ کوئی حدث پایا جائے تو بالاتفاق وضو واجب ہے۔ یعنی تیممِ جنابت کے ساتھ ، وضو کے لئے کافی پانی ہوتے ہوئے وہ محدث ہوا تو وضو واجب ہے باوجودیکہ وہ جنب کا تیمم ہے اتفاقاً ۔ بخلاف صورتِ مسطورہ کے ، کہ اس میں تیممِ جنابت کے بعد وضو واجب نہیں تو لفظ "بالاتفاق" لفظ "یجب" سے متعلق ہے۔ اور فالتیمم میں فا تفریع کے لئے ہے یعنی۔ تو وجوبِ وضو کے ساتھ ، جنابت کے لئے تیمم ثابت ہوا۔ کیونکہ جامع میں شرح طحاوی وغیرہ سے ذکر کیا ہے کہ جنب کے لئے بعض اعضاء میں پانی صرف کرنا یا حدث کے لئے صرف کرنا واجب نہیں مگر جب جنابت کا تیمم کرلے پھر اس سے کوئی ایسا حدث ہو جو وضو

واجب کرتا ہے تو اب اس پر وضو واجب ہوگا اس لئے کہ وہ اتنے پانی پر قادر ہے جو وضو کے لئے کافی ہے۔ اور تیمم واجب نہیں اس لئے کہ وہ تیمم کرکے جنابت سے نکل چکا ہے یہاں تک کہ

(باقی اگلے صفحہ پر)

Fatawa Razawiyya, Volume 4

[Main Text - Arabic with Urdu translation] If a minor impurity (hadath) occurs along with the tayammum for ritual impurity (janaba), ablution (wudu) becomes obligatory by consensus. Thus, this tayammum remains specifically for janaba, unlike if the minor impurity occurred [before]. In [the word] 'hadath', assuming a preceding possessive case (mudaf muqaddar) before 'janaba', meaning: when any minor impurity is found along with the tayammum for janaba, then by consensus wudu is obligatory, so this tayammum will remain specifically for janaba. Unlike...

[Left Column - Footnotes and Explanations] (Remaining from previous page's footnote) ...sufficient water for bathing was found. End. Thus, the famous objection was refuted that janaba necessitates minor impurity (hadath). Then how can Sadr al-Shari'a's statement "if there is a minor impurity with janaba" be correct? And whoever interpreted it as: "the tayammum for janaba is obligatory after wudu," he hasn't even smelled the scent of the intended meaning. End of citation from al-Sa'aya. 12 [Ref] May he be forgiven. (M)

Explanation (Urdu): ...that he finds sufficient water for ghusl. End. Thus, the famous objection was refuted that janaba necessitates hadath. Then how can Sadr al-Shari'a's statement "When there is hadath with janaba" be correct? And whoever gave this interpretation: "Tayammum for janaba is obligatory after wudu," he didn't even get the scent of the purpose. The text of Sa'aya ended here. 12 Minhu Ghufralahu. (T)

Note 1: Reference to what is stated in Ghaya al-Hawashi, that in the commentator's words "kana" is complete (tamma). 12 [Ref] May he be forgiven. (M) Explanation (Urdu): This refers to what is written in Ghaya al-Hawashi that in the commentator's text "kana" is complete (tamma). 12 Minhu Ghufralahu. (T)

Note 2: Reference to the statement that "by consensus" (bil-ittifaq) is related to "obligatory" (yajibu). 12 [Ref] May he be forgiven. (M) Allah. Explanation (Urdu): (So the interpretation of "idha kana" was given as "idha wujida" (when found). 12 M.A.) This refers to what is written there that "bil-ittifaq" is related to "yajibu". 12 Minhu Ghufralahu (T)

Note 3: Reference to what is stated that the 'fa' in his words 'fal-tayammumu' is for derivation (tafri'). 12 [Ref] May he be forgiven. (M) Explanation (Urdu): This refers to the fact that in "fal-tayammumu", the 'fa' is for derivation (tafri'), as written there. 12 Minhu Ghufralahu (T)

Note 4: I added "specifically" (khasatan) because it completes the intended meaning, and I changed the approach taken there, which was "the meaning is that the tayammum for janaba is established alongside the obligation of wudu," because in this way... 12 [Ref] Explanation (Urdu): I added "specifically" (khasatan) because only by it is the purpose fulfilled, and I changed the method adopted in it that "it is meant that along with the obligation of wudu, the tayammum for janaba is established". I changed it because in this way... (Continued on the next page)

---

1. Al-Sa'aya, Footnote of Sharh al-Wiqaya, Chapter of Tayammum, Sohail Academy, Lahore, 1/290.

फ़तावा रज़विया, खंड 4

[मुख्य पाठ - अरबी और उर्दू अनुवाद] यदि जनाबती तयम्मुम के साथ कोई ह़दथ (लघु अशुद्धि) हो जाए, तो सर्वसम्मति से वज़ू अनिवार्य हो जाता है। अतः यह तयम्मुम विशेष रूप से जनाबत के लिए ही रहेगा, इसके विपरीत यदि ह़दथ पहले पाया गया हो। ह़दथ में जनाबत से पहले मज़ाफ़ मुक़द्दर मानना, यानी जब जनाबती तयम्मुम के साथ कोई ह़दथ पाया जाए, तो सर्वसम्मति से वज़ू अनिवार्य है, तो यह तयम्मुम विशेष रूप से जनाबत के लिए रह जाएगा। इसके विपरीत...

[बायां कॉलम - फुटनोट और स्पष्टीकरण] (पिछले पृष्ठ के हाशिये का शेष) ...स्नान के लिए पर्याप्त पानी उसे मिले। समाप्त। तो वह प्रसिद्ध आपत्ति दूर हो गई कि जनाबत ह़दथ को आवश्यक बनाती है। फिर सद्रुश-शरिया का कथन "यदि जनाबत के साथ ह़दथ हो" कैसे सही होगा? और जिसने यह व्याख्या की: "वज़ू के बाद जनाबत के लिए तयम्मुम अनिवार्य है", उसने तो उद्देश्य की गंध भी नहीं पाई। सआया का कथन समाप्त हुआ। 12 मिन्हु गुफ़िरलहु (म)

स्पष्टीकरण (उर्दू): ...कि उसे ग़ुस्ल के लिए पर्याप्त पानी मिल जाए। इति। तो वह मशहूर एतराज़ दूर हो गया कि जनाबत ह़दथ को मुस्तलज़िम होती है। फिर सद्रुश-शरिया का कौल "इज़ा काना मा-अल-जनाबति ह़दथ" (जब जनाबत के साथ कोई ह़दथ हो) कैसे सही होगा। और जिसने यह तफ़सीर की: "फ़त-तयम्मुमु लिल-जनाबति वाजिबन बाद अल-वज़ू" (तो जनाबत के लिए तयम्मुम वज़ू के बाद वाजिब है) उसे तो मकसद की बू भी न मिली। इबारत-ए-सआया ख़त्म हुई। 12 मिन्हु गुफ़िरलहु (त)।

नोट 1: ग़ायतुल ह़वाशी में जो कहा गया है उसकी ओर संकेत है कि व्याख्याता के कथन में "काना" तामा (पूर्ण) है। 12 मिन्हु गुफ़िरलहु (म) स्पष्टीकरण (उर्दू): इसकी तरफ इशारा है जो ग़ायतुल ह़वाशी में लिखा है कि शारेह की इबारत में "काना" तामा है। 12 मिन्हु गुफ़िरलहु। (त)

नोट 2: इस बात का संदर्भ कि "सर्वसम्मति से" (बिल्-इत्तेफ़ाक) "अनिवार्य है" (यजीबु) से संबंधित है। 12 मिन्हु गुफ़िरलहु (म) अल्लाह। स्पष्टीकरण (उर्दू): (तो इज़ा काना की तफ़सीर "इज़ा वोजिदा" (जब पाया जाए) से की गई। 12 म.अ.) इसकी तरफ इशारा है जो इसमें लिखा है कि "बिल्-इत्तेफ़ाक" यजीबु से मुताल्लिक है। 12 मिन्हु गुफ़िरलहु (त)

नोट 3: उनके शब्दों 'फ़ल-तयम्मुमु' में 'फ़ा' के तफ़रीअ़ (शाखाकरण) के लिए होने का संदर्भ। 12 मिन्हु गुफ़िरलहु (म) स्पष्टीकरण (उर्दू): इसकी तरफ इशारा है कि फ़त-तयम्मुम में 'फ़' बराए तफ़रीअ़ है जैसा कि उसमें लिखा है। 12 मिन्हु गुफ़िरलहु (त)

नोट 4: मैंने "ख़ास़तन" (विशेष रूप से) जोड़ दिया क्योंकि यह उद्देश्य को पूरा करता है, और मैंने वहां अपनाए गए दृष्टिकोण को बदल दिया कि "इसका अर्थ यह है कि वज़ू की अनिवार्यता के साथ जनाबत का तयम्मुम सिद्ध है", क्योंकि इस प्रकार... 12 [संदर्भ] स्पष्टीकरण (उर्दू): मैंने "ख़ास़तन" बढ़ा दिया क्योंकि इसी से मकसद पूरा होता है और इसमें जो तरीका इख़्तियार किया कि "ये मुराद है कि वज़ूब-ए-वज़ू के साथ जनाबत का तयम्मुम साबित है" मैंने इसे बदल दिया, क्योंकि इस तौर पर... (शेष अगले पृष्ठ पर)

---

1. अल-सआया, हाशियह शरह़ अल-विक़ाया, बाब अल-तयम्मुम, सुहैल अकादमी, लाहौर, 1/290।

[متنِ اصل - عربی مع اردو ترجمہ] اذا وجد ع١ مع تیمم الجنابة حدث یجب الوضوء بالاتفاق ع٢ فیبقی ع٣ هذا التیمم للجنابة خاصةً ع٤ بخلاف ما اذا وجد الحدث حدث میں جنابت سے پہلے مضاف مقدر ماننا، یعنی جب تیممِ جنابت کے ساتھ کوئی حدث پا یا جائے تو بالاتفاق وضو واجب ہے تو یہ تیمم خاص جنابت کے لئے رہ جائے گا۔ بخلاف

[بایاں کالم - حواشی و تشریحات] (بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) الماء الکافي للغسل انتهی فاندفع السؤال المشهور ان الجنابة تستلزم الحدث فکیف یصح قوله اذا کان مع الجنابة حدث ومن فسر فالتیمم للجنابة واجب بعد الوضوء فما شم رائحة المقصود١ اهـ ١٢ منه غفر له (م)

غسل کے لئے کافی پانی اسے ملے۔ انتہیٰ۔ تو وہ مشہور اعتراض دفع ہو گیا کہ جنابت حدث کو مستلزم ہوتی ہے۔ پھر صدر الشریعہ کا قول "اذا کان مع الجنابة حدث" (جب جنابت کے ساتھ کوئی حدث ہو) کیسے صحیح ہوگا۔ اور جس نے یہ تفسیر کی: فالتیمم للجنابة واجب بعد الوضوء (تو جنابت کے لئے تیمم وضو کے بعد واجب ہے) تو اسے مقصد کی بُو بھی نہ ملی اهـ عبارت سعایہ ختم ہوئی۔ ١٢ منہ غفرلہ (ت)

ع١: اشار الی ما قاله في غایة الحواشی ان کان في قول الشارح تامة ١٢ منه غفر له (م) اس کی طرف اشارہ ہے جو غایۃ الحواشی میں لکھا کہ شارح کی عبارت میں "کان" تامہ ہے ١٢ منہ غفرلہ۔ (ت)

ع٢: اشار الی ما قاله ان بالاتفاق متعلق بیجب ١٢ منه غفر له (م) الله (تو اذا کان کی تفسیر "اذا وجد" (جب پا یا جائے) سے کی گئی۔ ١٢ م الف) اس کی طرف اشارہ ہے جو اس میں لکھا ہے کہ "بالاتفاق" یجب سے متعلق ہے ١٢ منہ غفرلہ (ت)

ع۳: اشار الی ما قاله ان الفاء في قوله فالتيمم للتفريع ۱۲ منه غفر له (م) اس کی طرف اشارہ ہے کہ فالتیمم میں ف برائے تفریع ہے جیسا کہ اس میں لکھا ہے ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

ع٤: زدت(۱) خاصةً اذبه يتم المقصود و غيرت ماسلكه ان المراد ثبت التيمم للجنابة مع وجوب الوضوء فأن (۲) المقصود اذن فيما حذفه الصدر ۱۲ میں نے "خاصةً" بڑھا دیا کیونکہ اسی سے مقصد پورا ہوتا ہے اور اس میں جو طریقہ اختیار کیا کہ "یہ مراد ہے کہ وجوبِ وضو کے ساتھ جنابت کا تیمم ثابت ہے" میں نے اسے بدل دیا، کیونکہ اس طور پر (باقی بر صفحہ آئندہ)

---

1 السعاية حاشیہ شرح و قایہ باب التیمم سہیل اکیڈیمی، لاہور ۲۹۰/۱

Fatawa Razawiyya - Volume 4

[Top Section] ...before Tayammum, as it [the state of ritual impurity] will be for both [Hadath and Janabah] together, as stated in the commentary of al-Tahawi and others. (Urdu Translation): In this situation, when minor ritual impurity (Hadath) is found before Tayammum, it will be for both Hadath and major ritual impurity (Janabah). As has been stated in the commentary of Tahawi etc.

This is the refinement of what Al-Sa'ayah quoted from Ghayat al-Hawashi and relied upon, even though I discussed it in Al-Zawa'id, and whoever studies its text... (Urdu Translation): This is its correction and refinement which was quoted in Al-Sa'ayah from Ghayat al-Hawashi and relied upon.

[Footnotes/Lower Section] (Remaining from previous page) His saying: "along with the necessity of Wudu" - in it lies the difference between the two cases. Thus, the sentence remains incomplete and disturbed by its deletion. And I deleted (1) his word "by consensus" because it is contrary to the intent and is rejected in itself, as you will know by the help of the Loving One [God]. 12 [initials] May he be forgiven (M) (Urdu Translation): The intent will be conveyed by the same word that Sadr al-Shariah deleted, i.e., "along with the necessity of Wudu". And through this, the difference between both cases could be established, so deleting it would make the sentence incomplete and defective. And I deleted the word "by consensus" from Ghayat al-Hawashi because it is against the intent and is itself unacceptable, as will be known with divine help. 12 [initials] May he be forgiven (T)

Note 1: I added it because through it the proximity is completed in the manner we described. May he be forgiven (M) (Urdu Translation): I increased it because it completes the explanation in the way I have stated. 12 [initials] May he be forgiven (T)

Note 2: He disputed about "kana" being complete (tammah), saying it has no bearing on the intent and it could be incomplete (naqisah). And about the "fa" being for branching (taf'ri). He said the more apparent view is that it is causal (ta'liliya), meaning because Tayammum is for Janabah and Hadath supervened (tari), so it is not sufficient for it. Ending a summary and refined quote. I say: (2) Mention of "specificity" (khusus) is needed as we did, otherwise Tayammum being for Janabah does not prevent it from being for Hadath unless the Hadath is supervening. So in the reasoning, what has no bearing was mentioned and what is the actual reasoning was omitted. However it may be, it is not... (Urdu Translation): In this, he disputed

about "kana" being complete (tammah), that it has no role in the objective, it can also be incomplete (naqisah). And disputed about "fa" being for branching (tafri) and said that most apparently it is causal (ta'liliyah), meaning because Tayammum is for Janabah and Hadath is supervening, so it is not enough for it. Ah, his text ended with summary and refinement. I say: They need the mention of "specificity" as we did, otherwise Tayammum's being for Janabah is not a hindrance to it being for Hadath too, unless Hadath (after Tayammum) supervenes. So in the reasoning, that thing is mentioned which has no role and that which is actual reasoning is skipped.
(Remaining on next page).

---

1 Al-Sa'ayah, Marginalia of Sharh Wiqayah, Chapter of Tayammum, Sohail Academy, Lahore, 1/29 Page 225 of 761

फ़तावा रज़विया - जिल्द चौथी

[शीर्ष अनुभाग] ...तयम्मुम से पहले, क्योंकि यह दोनों (हदस और जनाबत) के लिए एक साथ होगा, जैसा कि शरह अल-तहावी आदि में बताया गया है। (उर्दू अनुवाद): इस स्थिति में जब तयम्मुम से पहले हदस पाया जाए, तो यह हदस और जनाबत दोनों के लिए होगा। जैसा कि शरह तहावी आदि में इसका लाभ हुआ है।

यह उस चीज़ का शोधन है जिसे अल-सआया ने गायत अल-हवाशी से उद्धृत किया और उस पर भरोसा किया, हालांकि मैंने अल-ज़वाइद में इस पर चर्चा की है, और जो कोई भी इसके पाठ का अध्ययन करेगा... (उर्दू अनुवाद): यह उसका सुधार और शोधन है जो सआया में गायत अल-हवाशी से उद्धृत किया गया और उस पर भरोसा किया गया।

[निचला अनुभाग/फुटनोट्स] (पिछले पृष्ठ से शेष) उनका कहना: "वुज़ू की अनिवार्यता के साथ" - इसमें दोनों स्थितियों के बीच का अंतर है। अतः इसके विलोपन से वाक्य अधूरा और असंतुलित रह जाता है। और मैंने (1) उनके शब्द "इत्तेफाकन" (सहमति से) को हटा दिया क्योंकि यह उद्देश्य के विपरीत है और अपने आप में खारिज है, जैसा कि आप ईश्वर की सहायता से जानेंगे। 12 [हस्ताक्षर] उसे क्षमा किया जाए (म) (उर्दू अनुवाद/स्पष्टीकरण): उद्देश्य उसी शब्द से व्यक्त होगा जिसे सदर अल-शरिया ने हटा दिया था, यानी "वुज़ू की अनिवार्यता के साथ"। और इसी से दोनों स्थितियों के बीच अंतर हो सकेगा, इसलिए इसे हटाने से वाक्य अधूरा और दोषपूर्ण हो जाएगा। और मैंने गायत अल-हवाशी से "इत्तेफाकन" शब्द हटा दिया क्योंकि यह उद्देश्य के खिलाफ है और अपने आप में अस्वीकार्य है, जैसा कि दिव्य सहायता से पता चलेगा। 12 [हस्ताक्षर] उसे क्षमा किया जाए (त)

नोट 1: मैंने इसे जोड़ा क्योंकि इससे निकटता उस तरह से पूरी होती है जैसा हमने वर्णित किया है। उसे क्षमा किया जाए (म) (उर्दू अनुवाद): मैंने इसे बढ़ा दिया क्योंकि इससे उस तरह से विवरण पूरा होता है जैसा मैंने बयान किया है। 12 [हस्ताक्षर] उसे क्षमा किया जाए (त)

नोट 2: उन्होंने "काना" के पूर्ण (ताम्मा) होने पर विवाद किया, यह कहते हुए कि इसका उद्देश्य से कोई लेना-देना नहीं है और यह अपूर्ण (नाक़िसा) भी हो सकता है। और "फा" के शाखाकरण (तफ़री) के लिए होने पर भी। उन्होंने कहा कि अधिक स्पष्ट विचार यह है कि यह कारणवाचक (ता'लीलिया) है, जिसका अर्थ है क्योंकि तयम्मुम जनाबत के लिए है और हदस अचानक आ गया (तारी), इसलिए यह इसके लिए पर्याप्त नहीं है। एक संक्षिप्त और परिष्कृत उद्धरण समाप्त। मैं कहता हूँ: (2)

"विशिष्टता" (खुसूस) के उल्लेख की आवश्यकता है जैसा कि हमने किया, अन्यथा तयम्मुम का जनाबत के लिए होना इसे हदस के लिए होने से नहीं रोकता जब तक कि हदस अचानक न आए। इसलिए तर्क में, जिसका कोई संबंध नहीं था उसका उल्लेख किया गया और जो वास्तविक तर्क था उसे छोड़ दिया गया। यह जो भी हो, यह नहीं है... (उर्दू अनुवाद): इसमें उन्होंने "काना" के ताम्मा (पूर्ण क्रिया) होने पर विवाद किया, कि इसका उद्देश्य में कोई भूमिका नहीं है, यह नाक़िस (अपूर्ण क्रिया) भी हो सकता है। और "फा" के तफ़री (शाखाकरण) होने के बारे में विवाद किया और कहा कि सबसे स्पष्ट रूप से यह ता'लीलिया (कारणवाचक) है, यानी क्योंकि तयम्मुम जनाबत के लिए है और हदस आकस्मिक है, इसलिए यह इसके लिए पर्याप्त नहीं है। अह, उनका पाठ सारांश और शोधन के साथ समाप्त हुआ। मैं कहता हूँ: उन्हें "विशिष्टता" के उल्लेख की आवश्यकता है जैसा कि हमने किया, अन्यथा तयम्मुम का जनाबत के लिए होना हदस के लिए भी होने में बाधक नहीं है, सिवाय इसके कि हदस (तयम्मुम के बाद) आकस्मिक हो। तो तर्क में, वह चीज़ बताई गई जिसका कोई योगदान नहीं है और जो वास्तविक तर्क है उसे छोड़ दिया गया। (बाकी अगले पेज पर)।

---

1 अल-सआया, शरह वक़ाया का हाशिए, तयम्मुम का अध्याय, सोहेल अकादमी, लाहौर, 1/29 पेज 225 का 761

[اوپری حصہ] قبل التیمم فانہ ع۱ یکون لہ وللجنابۃ معاً کما أفید فی شرح الطحاوی وغیرہ۔ اس صورت کے جب حدث تیمم سے قبل پایا جائے کہ یہ حدث اور جنابت دونوں کے لئے ہوگا۔ جیسا کہ شرح طحاوی و غیرہ میں اس کا افادہ ہوا ہے۔

ھذا تھذیب مانقلتہ السعایۃ عن غایۃ الحواشی و اعتمدتہ وان ناقشتھ ع۲ فی زوائد و من طالع عبارتھا و یہ اس کی اصلاح و تنقیح ہے جو سعایہ میں غایۃ الحواشی سے نقل کیا اور اس پر اعتماد کیا

[نچلا حصہ / حواشی] (بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) قولہ مع وجوب الوضوء وفیہ الفرق بین الصورتین فتبقی الجملۃ بحذفہ ناقصۃ مختلۃ و حذفت (۱) قولہ اتفاقاً لانہ خلاف المقصود و فی نفسہ مردود* کما ستحلم بعون الودود ۱۲ منہ غفرلہ (م) مقصود اسی لفظ سے ادا ہوگا جو صدر الشریعہ نے حذف کیا یعنی "مع وجوب الوضوء" اور اسی سے دونوں صورتوں کے درمیان فرق ہوسکے گا تو اسے حذف کر دینے سے جملہ ناقص اور مختل ہوجائے گا اور غایۃ الحواشی کا لفظ "اتفاقاً" میں نے حذف کردیا اس لئے کہ خلاف مقصود ہے اور بجائے خود بھی نامقبول ہے جیسا کہ بعون الہی معلوم ہوگا ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

ع۱: زدتہ اذ بہ تمام التقریب علی الوجہ الذی وصفنا منہ غفر لہ (م) میں نے اسے بڑھا دیا کیونکہ اس سے تقریب تام ہوتی ہے اس طور پر جو ہم نے بیان کیا ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

ع۲: نازعہ في کون کان تامۃ بأنہ لادخل لہ في المقصود ویمکن کونھا ناقصۃ وفي کون الفاء للتفریع وقال الاظھر علی ھذا ان تکون تعلیلیۃ یعنی لان التیمم للجنابۃ وبالحدث طار (ای طارئ) فلایکفی لہ ۱ اھ ملخصا مہذبا اقول: (۲) یحتاج الی ذکر الخصوص کما فعلنا والافکون التیمم للجنابۃ لایمنع کونہ

للحدث الا ان يكون الحدث طارئاً فاذن ذكر في التعليل ما لادخل له وطوى ماهو التعليل وكيفماكان ليس اس سے کان کے تامہ ہونے میں نزاع کیا کہ اس کا مقصد میں کچھ دخل نہیں ناقصہ بھی ہو سکتا ہے۔ اور فاکے برائے تفریع ہونے میں نزاع کیا اور کہا اس طور پر ظاہر تر یہ ہے کہ تعلیلیہ ہو یعنی اس لئے کہ تیمم جنابت کا ہے اور حدث طاری ہے تو اس کے لئے کافی نہیں اھ انکی عبارت تلخیص اور اصلاح و تنقیح کے ساتھ ختم ہوئی اقول: انہیں "خصوص" کے ذکر کی ضرورت ہے جیسا کہ ہم نے کیا ورنہ تیمم کا جنابت کے لئے ہونا اس سے مانع نہیں کہ حدث کے لئے بھی ہو مگر یہ کہ حدث (بعد تیمم) طاری ہو۔ تو تعلیل میں وہ ذکر کیا جسے کوئی دخل نہیں اور اسے چھوڑ دیا (باقی بر صفحہ آئندہ)

---

1 السعاية حاشية شرح وقايه باب التيمم سہیل اکیڈمی لاہور ۱ / ۲۹ صفحہ 225 از 761

Compare them (the previous words) and our words; you will see how we have summarized what was lengthy, made it easier to understand, and refined and polished the phrasing. (T)

The second method: To take the word 'ma’a' (with) in the meaning of 'ba’da' (after). This is the well-known method. Al-Muhaqqiq Mawla Khusraw stated in *Durar al-Hukkam*, after the passage we previously cited in the texts: "However, when there is an occurrence alongside major impurity (janabah) that necessitates ablution (wudu), such that one becomes ritualistically impure after performing dry ablution (tayammum), then wudu becomes mandatory. Thus, by consensus, the tayammum was for the major impurity." End quote.

(Remaining footnote from the previous page) ...which is actually a justification. Be that as it may, this discussion pertains to an additional matter. For anyone who follows a correct approach, it cannot be said that their speech is flawed, as stated in *Umdat al-Ri'ayah*, even if in that additional matter he chose the term 'zahir' (apparent) instead of 'azhar' (more apparent). The fact that the discussion of the word 'kana' is entirely separate from the intended purpose does not require further explanation. Furthermore, its being 'tammah' (complete) is what is apparent and immediately understood. The annotator mentioned it as a statement of fact, as is their habit; he did not mention it because the answer depends upon it. There is no indication of this in the quoted passage. 12 [dated] from him, may Allah forgive him. (T)

---

[1] Durar Mawla Khusraw, Chapter of Tayammum, Maktaba Ahmad Kamil al-Ka'iniyya, Dar al-Sa'ada, Egypt, 1/29. Page 226 of 761

उनके(पिछले शब्दों) और हमारे शब्दों की तुलना करें; आप देखेंगे कि हमने उस लंबी बात को कैसे संक्षिप्त किया, उसे समझने के करीब लाए, और शब्दों को परिष्कृत और सुधारा है। (त)

दूसरा तरीका: शब्द 'मा' (साथ) को 'बादा' (बाद) के अर्थ में लेना। यह प्रसिद्ध तरीका है। अल-मुहक़्क़िक मौला खुसरव ने दुरार अल-हुक्काम में, उस इबारत के बाद जिसे हमने पहले ग्रंथों में प्रस्तुत किया था, फ़रमाया: "लेकिन जब जनाबत (बड़ी नापाकी) के साथ कोई ऐसी घटना हो जो वज़ू को अनिवार्य करती है, इस तरह कि वह तयम्मुम के बाद अपवित्र हो जाए, तो उस पर वज़ू अनिवार्य है। इस प्रकार, सर्वसम्मति से तयम्मुम जनाबत के लिए है।" समाप्त।

(पिछले पृष्ठ की शेष पाद-टिप्पणी) ...जो वास्तव में एक दलील है। खैर, जो भी हो, यह चर्चा एक अतिरिक्त मामले के बारे में ही है। और जो कोई सही रास्ते पर चला हो, उसके बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि उसकी बात दोषपूर्ण है, जैसा कि उमदतुल रियाह में कहा गया है, भले ही उस अतिरिक्त मामले में वहाँ 'अज़हर' (अधिक स्पष्ट) के स्थान पर 'ज़ाहिर' (स्पष्ट) शब्द चुना गया हो। और 'काना' शब्द की चर्चा का मूल उद्देश्य से पूरी तरह अलग होना किसी स्पष्टीकरण का मोहताज नहीं है। फिर, इसका 'ताम्मह' (पूर्ण) होना भी स्पष्ट और तुरंत समझ में आने वाला है। व्याख्याकार ने इसे वास्तविकता के बयान के रूप में उल्लेख किया है, जैसा कि उन महानुभावों की आदत है। उन्होंने इसे इसलिए उल्लेख नहीं किया कि उत्तर इस पर निर्भर है। उद्धृत इबारत में इस पर कोई संकेत भी नहीं है। 12 [दिनांक] उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (त)

---

[1] दुरार मौला खुसरव, तयम्मुम का अध्याय, मकतबा अहमद कामिल अल-काइनिया, दार अल-सआदा, मिस्र, 1/29। पृष्ठ 761 का 226

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم

وازن بینهما وبین الفاظنا عرف کیف لخصنا ما اطال بہ وقربناہ ونقحناہ وهذبناہ* اگرچہ کچھ زوائد میں اس سے مناقشہ بھی کیا ۔ عبارت سعایہ کا مطالعہ اور اس کا اور ہمارے الفاظ کا موازنہ کرنے والے کو معلوم ہوگا کہ اس میں جو طویل کلام تھا ہم نے اس کی کیسی تلخیص کردی اور فہم کے قریب بھی کر دیا ۔ الفاظ کی تنقیح و تہذیب بھی ہو گئی ۔ (ت)

والآخر: جعل مع بمعنی بعد وهو المسلك المشهور - طریق دوم: مع کو بعد کے معنی میں قرار دینا۔ یہ مشہور طریقہ ہے۔

قال:المحقق مولی خسرو فی الدرر بعد بعارته التی قدمنا فی النصوص اما اذا کان مع الجنابة حدث یوجب الوضوء بان احدث بعد التیمم فیجب علیه الوضوء فالتیمم للجنابة بالاتفاق اهـ. محقق مولیٰ خسرو نے درر الحکام میں اس عبارت کے بعد جو ہم نے نصوص میں پیش کی فرمایا: "لیکن جب جنابت کے ساتھ کوئی ایسا حدث ہو جو وضو واجب کرتا ہے اس طرح کہ تیمم کے بعد محدث ہوا تو اس پر وضو واجب ہے۔ تو تیمم بالاتفاق جنابت کے لئے ہے" اهـ

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) الا کلاما في امر زائد ومن (۱) سلك مسلکا صحیحاً لا یقال ان کلامه مخدوش کما قاله في عمدة الرعایة وان اختار في امر زائد ظاهرا مکان الاظهر وکون بحث کان بمعزل عن المقصود بالکلیة اظهر من ان یظهر ثم کونها تامة هو الظاهر المتبادر ذکره (۲) المحشی بیانا للواقع کعادتهم لا لتوقف الجواب علیه فلیس فیما نقل من عبارته دلالة علیه ۱۲ منه غفر له (م)

جو واقعۃً تعلیل ہے۔ خیر جو بھی ہو یہ ایک زائد معاملہ میں ہی کلام ہے۔ اور جو کسی صحیح روش پر چلا ہو اس کے لئے یہ نہیں کہا جاسکتا کہ اس کا کلام مخدوش ہے جیسا کہ عمدۃ الرعایہ میں کہا

اگر چہ اس امر زائد میں وہاں ظاہر تر کی جگہ ظاہر اختیار کیا ہے۔ اور کان کی بحث کا مقصود سے بالکل الگ ہونا بالکل محتاج بیان نہیں۔ پھر اس کا تامہ ہونا بھی ظاہر و متبادر ہے۔ محشی نے بیان واقع کے طور پر اسے ذکر کر دیا ہے جیسا کہ ان حضرات کی عادت ہے۔ اس لئے نہیں ذکر کیا ہے کہ جواب اسی پر موقوف ہے منقولہ عبارت میں اس پر کوئی دلالت بھی نہیں ۱۲ منہ غفرلہ ۔ (ت)

---

[1] درر مولیٰ خسرو باب التیمم مکتبہ احمد کامل الکائنیہ فی دار السعادۃ مصر ۱ / ۲۹ Page 226 of 761

The great scholar Shurunbulali said in 'Al-Ghunya', meaning: "So Tayammum remains for removing the state of major impurity (Janaba)1." And his student, the virtuous Akhi Chalabi, wrote in 'Dhakhirat al-Uqba': "His saying 'along with Janaba, a state of minor impurity occurs which necessitates...'

'...Wudu' (along with Janaba there is an event that makes Wudu obligatory). That is, when a person in a state of Janaba takes a bath and a spot remains on one of their limbs (Footnote 1: 'Lum'a' - a small dry spot), and the water runs out, so they perform Tayammum for Janaba. Then an event occurs that makes Wudu obligatory, and they do not (Footnote 2) perform Tayammum for that event. Then they find enough water...'

Footnote 1: It was objected to in 'Al-Su'aya' that this explanation would imply 'ma'a' (with) means 'ba'da' (after), and if interpreted this way, its conceptualization is easy and there is no need to mention the 'Hadith of Lum'a'. I say: Objecting to the conceptualization is like a dispute over an example; it does not harm the intended meaning. 12 - From him, may Allah forgive him. (M)

Footnote 2: I say: This is a redundant addition. If they had performed Tayammum for the event (Hadath), the ruling would still be the same. He only added it to accommodate the scenario mentioned by the commentator Imam at the end of the chapter, based on what was narrated from him. And it is also not necessary because the commentator also mentioned: 'If he performed Tayammum for Janaba, then an event occurred and he performed Tayammum for that event,' and said: 'Similarly in the mentioned cases.' Among the points referred to is: 'Even if it is enough for one of them specifically, wash it, and Tayammum remains for the other.' 12 - From him, may Allah forgive him. (M)

'...for Wudu but not enough for the dry spot (Lum'a), then their Tayammum remains and Wudu is obligatory for them3. End. (He found enough water for Wudu, but for that small dry spot...)'

1 Ghunyat Dhawi al-Ahkam, Chapter on Tayammum, Maktaba Ahmad Kamil al-Ka'iniya, Dar al-Sa'ada, Egypt, 1/29. 2 Al-Su'aya Sharh Wiqaya, Chapter on Tayammum, Suhail Academy, Lahore, 1/291. 3 Dhakhirat al-Uqba, Chapter on Tayammum, Matba Islamia, Lahore, 1/167.

अल्लामा शरुनबुलाली ने 'अल-ग़ुनिया' में फ़रमाया, यानी: "तो तयम्मुम जनाबत (बड़ी नापाकी) दूर करने के लिए बाक़ी है1।" और उनके शागिर्द फ़ाज़िल अखी चलपी ने 'ज़ख़ीरत अल-उक़बा' में लिखा: उनका कौल "जनाबत के साथ ऐसा हदस (नापाकी) जो वाजिब करता है..."

"...वज़ू" (जनाबत के साथ कोई ऐसा हदस है जो वज़ू वाजिब करता है)। यानी जब जनाबत वाला शख़्स ग़ुस्ल कर ले और उसके किसी अंग में कुछ जगह (सूखी) रह जाए (हाशिया 1: 'लुमअ' यानी छोटी सी जगह) और पानी ख़त्म हो जाए, तो वह जनाबत के लिए तयम्मुम कर ले। फिर उसे कोई ऐसा हदस हो जो वज़ू वाजिब करता है और उस हदस के लिए उसने तयम्मुम न किया हो, फिर उसे इतना पानी मिले जो..."

हाशिया 1: 'अल-सुआया' में इस पर यह ऐतराज़ किया गया है कि इस तक़रीर का हुक्म यह है कि 'मअ' (साथ) का मतलब 'बाद' (बाद में) हो, और जब इसे इस पर महमूल कर लिया जाए तो इसकी तस्वीर (कल्पना) आसान है। 'हदीसे लुमअ' (सूखी जगह वाली बात) दरमियान में लाने की ज़रूरत ही नहीं। मैं कहता हूँ: किसी मसले की सूरत निकालने पर ऐतराज़ वैसा ही है जैसे मिसाल में मुनाक़शा (बहस), कि यह मक़सूद के लिए नुक़सानदेह नहीं है। 12 - उनकी तरफ़ से, अल्लाह उन्हें माफ़ करे। (त)

हाशिया 2: मैं कहता हूँ: यह बेकार का इज़ाफ़ा (बढ़ोतरी) है। अगर वह हदस के लिए तयम्मुम कर ले तब भी हुक्म यही होगा। उन्होंने इसे उस सूरत की रियायत में बढ़ाया है जिसमें यह मन्क़ूला जुमला शारेह इमाम ने बाब के आख़िर में ज़िक्र फ़रमाया है, हालाँकि इज़ाफ़े की ज़रूरत नहीं क्योंकि शारेह ने यह ज़िक्र किया है, लेकिन (बाक़ी अगले सफ़हे पर)।

"...वज़ू के लिए काफ़ी हो लेकिन उस सूखी जगह (लुमअ) के लिए नहीं, तो उसका तयम्मुम बाक़ी है और उस पर वज़ू वाजिब है3। समाप्त। (उसे इतना पानी मिला जो वज़ू के लिए काफ़ी है, उस छोटी सी जगह के लिए नहीं...)"

1 ग़ुनियत ज़वी अल-अहकाम, बाब अल-तयम्मुम, मकतबा अहमद कामिल अल-काइनिया, दार अल-सआदा, मिस्र, 1/29 2 अल-सुआया शरह वक़ाया, बाब अल-तयम्मुम, सुहैल एकेडमी, लाहौर, 1/291 3 ज़ख़ीरत अल-उक़बा, बाब अल-तयम्मुम, मतबा इस्लामिया, लाहौर, 1/167

قال العلامة الشرنبلالی فی الغنیة یعنی فالتیمم باق لرفع الجنابة1 (علامہ شرنبلالی نے غنیہ میں فرمایا یعنی : "تو تیمم جنابت دور کرنے کے لئے باقی ہے") وقال تلمیذہ (الفاضل اخی چلپی فی ذخیرة العقبٰی (اور ان کے تلمیذ فاضل اخی چلپی نے ذخیرة العقبی میں لکھا): قوله "مع الجنابة حدث یوجب

قوله مع الجنابة حدث یوجب الوضوء) یعنی اذا اغتسل الجنب وبقی فی عضو من اعضائه عہ۱ لمعة وفنی الماء فتیمم للجنابة ثم احدث حدثاً یوجب الوضوء ولم عہ۲ یتیمم للحدث فوجد ما یکفی (الوضوء" (جنابت کے ساتھ کوئی ایسا حدث ہے جو وضو واجب کرتا ہے) یعنی جب غسل کرلے اور اس کے کسی عضو میں کچھ جگہ چھوٹ جائے اور پانی ختم ہوجائے تو جنابت کے لئے تیمم کرلے پھر اسے کوئی ایسا حدث ہو جو وضو واجب کرتا ہے اور اس حدث کے لئے اس نے تیمم نہ کیا پھر

عہ۱: اعترضه في السعایة بان تقریره یحکم یکون مع بمعنی بعد و اذا حمل علیه فتصویره سهل لا یحتاج الی حدیث اللمعة۔ اھ اقول: الاعتراض (۱) علی التصویر کالمناقشة فی المثال فانه لا یضر بالمقصود ۱۲ منہ غفرلہ (م) (سعایہ میں اس پر یہ اعتراض کیا ہے کہ اس تقریر کا حکم یہ ہے کہ مع بمعنی بعد ہو اور جب اس پر محمول کرلیا جائے تو اس کی تصویر آسان ہے۔ حدیثِ لمعہ (چھوٹی ہوئی جگہ کی بات) درمیان میں لانے کی ضرورت ہی نہیں اھ اقول : کسی مسئلہ کی صورت نکالنے پر اعتراض ایسا ہی ہے جیسے مثال میں مناقشہ کہ یہ مقصود کے لئے مضر نہیں ۱۲ منہ غفر لہ (ت))

عہ۲ اقول: هذه (۲) زیادة ضائعة فلو تیمم للحدث لکان الحکم کذا و انما زاده مراعاة للتصویر الذی ذکر فیه الشارح الامام اخر الباب ما نقل عنه وهو (۳) ایضا غیر محوج فان الشارح ذکر ایضا ماذا تیمم

للجنابة ثم احدث فتيمم للحدث وقال فكذا فی الوجوه المذکورة ومن وجوه المشار الیها قوله وان کفی لاحدهما بعینه غسله و یبقی التیمم فی حق الاخر ۱۲ منہ غفرلہ (م) (اقول: یہ بیکار کا اضافہ ہے۔ اگر وہ حدث کے لئے تیمم کرلے جب بھی حکم یہی ہوگا۔ اسے انہوں نے اس تصویر کی رعایت میں بڑھا یا جس میں یہ منقولہ جملہ شارح امام نے آخر باب میں ذکر فرمایا ہے حالانکہ اضافہ کی ضرورت نہیں کیونکہ شارح نے یہ ذکر کیا ہے لیکن (باقی بر صفحہ آئندہ))

للوضوء لا للمعة فتیممه باق وعلیه الوضوء 3 اھ (اسے اتنا پانی ملا جو وضو کے لئے کافی ہے، اس چھوٹی ہوئی جگہ کے لئے نہیں، تو اس کا تیمم باقی ہے اور اس پر وضو لازم ہے۔)

1 غنیة ذوی الاحکام باب التیمم مکتبہ احمد کامل الکائنیہ فی دارالسعادة مصر ۲۹/۱ 2 السعایة شرح وقایة باب التیمم سہیل اکیڈمی لاہور ۲۹۱/۱ 3 ذخیرة العقبی باب التیمم مطبع اسلامیہ لاہور ۱۶۷/۱

Fatawa Rizvia, Volume 4

(Right Column - Urdu section) ...not for [the minor impurity], so his tayammum [for major impurity] remains and he must perform wudhu (ablution). (T) Shams al-Quhistani said in Sharh al-Niqaya after the text we quoted from him in the scriptures: "And this is the scenario mentioned by the author: 'But when there is an occurrence (hadath) along with janabah (major ritual impurity) that necessitates wudhu, then wudhu is obligatory, and the tayammum is for the janabah by consensus'." This is because here 'ma'a' (with) is used in the sense of 'ba'da' (after), just as the scholars have explained regarding the word of Allah Almighty: 'Verily, with hardship comes ease' (Indeed, after difficulty there is ease). This resolves the well-known difficulty that arises in this context. The meticulous scholar al-Ala'i followed this in al-Durr [al-Mukhtar], and the commentators have maintained it. In al-Sa'ayah, this...

(Left Column - Arabic section) Al-Shams al-Quhistani said in Sharh al-Niqayah, after what we quoted from him in the texts: "And this is the form of what the author said. As for when there is a state of minor impurity (hadath) along with major ritual impurity (janabah) that necessitates wudhu, then wudhu is obligatory upon him, so the tayammum is for the janabah by consensus (1). For 'ma'a' here is in the meaning of 'ba'da' (after), as they said regarding the word of the Most High: 'Verily, with hardship comes ease'." And through this, the well-known difficulty in this place is resolved. The meticulous scholar al-Ala'i followed him in al-Durr, and its commentators affirmed it. This path was objected to in al-Sa'ayah, on the grounds that if one became junub (in major ritual impurity), then a minor impurity (hadath) occurred, and he found only enough water for wudhu...

(Bottom Part Footnotes) (Continued from the previous page's footnote) ...then he had a minor impurity (hadath), so let him perform tayammum for the hadath. And he said: the same applies to the mentioned cases. Among the pointed-out cases is his saying: even if it specifically suffices for one of them, let him wash it, and the tayammum remains in effect for the other. 12 - From him [the author], may he be forgiven. (M)

...performed tayammum for janabah. Then a minor impurity (hadath) occurred, so he performed tayammum for that hadath. And he further stated that it is similar in the mentioned cases. Among the cases he pointed towards, it is also included that if the water specifically suffices for only one of them, he should wash that one, and the

tayammum will remain valid for the other. 12 - From him [the author], may he be forgiven. (T)

1 Jami' al-Rumuz, Chapter of Tayammum, Karimiya Press, Quran, Iran, 1/64 Page 228 of 761

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 4

(दायां कॉलम - उर्दू अनुभाग) ...उसके लिए नहीं, तो उसका तयम्मुम बाकी है और उसे वज़ू करना है। (त) शम्स कुहिस्तानी ने शरह निक़ाया में इस इबारत के बाद कहा जिसे हमने नसूस से उनके हवाले से नक़ल किया है: "और यही उसकी सूरत है जो लेखक ने कहा: 'लेकिन जब जनाबत के साथ कोई ऐसा हदस (अशुद्धि) हो जो वज़ू वाजिब करता है, तो उस पर वज़ू लाज़िम है, तो तयम्मुम जनाबत के लिए है बिल-इत्तेफ़ाक़ (सर्वसम्मति से)'।" क्योंकि इसमें 'मअ' (साथ) 'बाद' (बाद में) के अर्थ में है, जैसा कि विद्वानों ने अल्लाह तआला के इरशाद में कहा है: 'इन्ना मअल उस्रि युसरा' (बेशक कठिनाई के साथ/बाद आसानी है)। इसी से वह प्रसिद्ध कठिनाई हल हो जाती है जो इस स्थान पर आती है। मुहक़्क़िक़ अलाई ने 'दुर्रे मुख़्तार' में इसका पालन किया और टीकाकारों ने भी इसे बरकरार रखा। 'सआया' में इस...

(बायां कॉलम - अरबी अनुभाग) अश-शम्स अल-कुहिस्तानी ने शरह अल-निक़ाया में कहा, उन नसूस के बाद जो हमने उनसे नक़ल किए: "और यह लेखक के कहे अनुसार स्वरूप है। रहा सवाल जब जनाबत के साथ ऐसा हदस हो जो वज़ू वाजिब करे, तो उस पर वज़ू वाजिब है, अतः तयम्मुम बिल-इत्तेफ़ाक़ जनाबत के लिए है (१)। क्योंकि यहाँ 'मअ' 'बाद' के अर्थ में है, जैसा कि उन्होंने अल्लाह तआला के इस वचन के बारे में कहा: 'इन्ना मअल उस्रि युसरा'।" और इसके द्वारा इस स्थान की प्रसिद्ध कठिनाई हल हो जाती है। मुहक़्क़िक़ अलाई ने 'दुर्र' में उनकी पैरवी की और इसके टीकाकारों ने इसे स्वीकार किया। 'सआया' में इस मार्ग पर आपत्ति की गई कि यदि कोई जुनुब (महा-अशुद्ध) हो जाए, फिर उसे हदस हो और उसे केवल वज़ू के लिए पर्याप्त पानी मिले...

(नीचे के फुटनोट) (पिछले पृष्ठ के फुटनोट का शेष) ...फिर उसे हदस हुआ, तो वह हदस के लिए तयम्मुम करे। और उन्होंने कहा: इसी तरह उल्लेखित स्थितियों में भी है। जिन स्थितियों की ओर इशारा किया गया है उनमें उनका यह कहना भी है: यदि पानी उनमें से किसी एक के लिए विशिष्ट रूप से पर्याप्त हो, तो वह उसे धो ले और दूसरे के संबंध में तयम्मुम बना रहेगा। १२ - उनसे (लेखक से), अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (म)

...जनाबत का तयम्मुम किया। फिर हदस हुआ तो हदस का तयम्मुम किया। और आगे फरमाया कि उल्लेखित स्थितियों में भी ऐसा ही है, जिन स्थितियों की ओर इशारा किया गया है उनमें यह भी है कि

यदि उनमें से किसी एक पर विशिष्ट रूप से पर्याप्त पानी हो तो वह उसे धोए और दूसरे के संबंध में तयम्मुम बना रहेगा। १२ - उनसे (लेखक से), अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (त)

१ जामिउर रूमूज़, बाबुत तयम्मुम, मतबआ करीमिया, क़ुरआन, ईरान, १/६४ पेज 228 of 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

(دائیں جانب کا کالم) کے لئے نہیں، تو اس کا تیمّم باقی ہے اور اسے وضو کرنا ہے اہ (ت) شمس قہستانی نے شرح نقایہ میں کہا اس عبارت کے بعد جو ہم نے نصوص میں ان سے نقل کی : اور یہی اس کی صورت ہے جو مصنف نے کہا: "لیکن جب جنابت کے ساتھ کوئی ایسا حدث ہو جو وضو واجب کرتا ہے اس پر وضو لازم ہے تو تیمّم جنابت کے لئے ہے بالاتفاق"۔ کیونکہ اس میں "مع" بعد کے معنی میں ہے جیسا کہ علماء نے ارشادِ باری تعالیٰ "إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا" (بیشک دشواری کے ساتھ آسانی ہے) میں کہا ہے ۔ اسی سے وہ مشہور اشکال حل ہو جاتا ہے جو اس مقام پر پیش آتا ہے اہ مدقق علائی نے درمختار میں اس کا اتباع کیا اور اسے محشین نے بھی برقرار رکھا۔ سعایہ میں اس

(بائیں جانب کا کالم) وقال الشمس القہستانی فی شرح النقایۃ بعد ما نقلنا عنہ فی النصوص وھذا صورۃ ما قال المصنف واما اذا کان مع الجنابۃ حدث یوجب الوضوء یجب علیہ الوضوء فالتیمم للجنابۃ بالاتفاق (۱) فان مع فیہ بمعنی بعد کما قالوا فی قولہ تعالیٰ اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ یُسْرًاؕ وبہ ینحل مانی ھٰذا المقام من الاشکال المشہور اھ وتبعہ المدقق العلائی فی الدر واقرہ محشو ہ واعترض ھذا المسلک فی السعایۃ بانہ لواجنب ثم احدث فوجد مایکفی للوضوء فقط

(حاشیہ) (بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) ثم احدث فلیتیمم للحدث و قال فکذا فی الوجوہ المذکورۃ و من وجوہ المشار الیھا قولہ وان کفی لاحدھما بعینہ غسلہ ویبقی التیمم فی حق الآخر ۱۲ منہ غفرلہ (م)

جنابت کا تیمّم کیا۔ پھر حدث ہوا تو حدث کا تیمّم کیا۔ اور آگے فرمایا مذکورہ صورتوں میں بھی ایسا ہے، جن صورتوں کی طرف اشارہ فرمایا ہے ان میں یہ بھی ہے کہ اگر ان میں سے بعینہ کسی

ایک پر کفایت کرنے والا ہو تو اسے دھوئے اور دوسرے کے حق میں تیمّم باقی رہے گا ۱۲منہ غفرلہ (ت)

۱ جامع الرموز باب التیمم مطبعہ کریمیہ قران ایران ۱/ ۶۴ Page 228 of 761

Fatawa Razawiyyah - Volume 4

Arabic Text & Translation/Explanation: "For he performs Tayammum and Wudu is not obligatory upon him; his Tayammum will be sufficient to remove both major (Janabat) and minor impurity (Hadath), even though it holds true for him that an impurity necessitating Wudu occurred after Janabat. Thus, according to the requirements of the commentator's text, it would become necessary for him to perform Wudu. He said: It is better to say that 'with' (ma'a) here means 'after' (ba'da), and the possessed (mudaf) is omitted, i.e., 'after the Tayammum for Janabat'. Or it is said that 'ma'a' retains its meaning but the mudaf is omitted, i.e., 'with the Tayammum for Janabat'." (Summarized)

An objection was raised regarding this method: that if one is in a state of major ritual impurity (Janabat) and then a minor ritual impurity (Hadath) occurs, and afterward he only finds enough water for Wudu, he should perform Tayammum, and Wudu is not obligatory upon him. His Tayammum will be sufficient to remove both major and minor impurities. Even though it is true that after Janabat, an event occurred requiring Wudu, the wording of the commentator would imply that Wudu is mandatory. It is said: It is preferable to say that 'ma'a' means 'after' and the annexed term is omitted, meaning 'after the Tayammum for Janabat'.

"Furthermore, I have a marginal note (hashiyah) on Sharh al-Wiqayah by the learned Muhammad al-Qara Baghi, which he completed in the year 930 AH, i.e., twenty-five years after the death of Akhi Chalpi. He said, 'I have called its completion date "Thumma Taswidi" (977)'. It was transcribed by Yusuf bin Hasan bin Abdullah in 977 AH. In it, Akhi Chalpi's words are quoted with the phrase 'Some commentators said'. Then he wrote: 'I say, it is not hidden that this interpretation is a far-fetched formality taken from this text. Moreover, the commentator will soon clarify this issue with his words: "And if it is sufficient for Wudu but not for the unwashed spot, then his Tayammum remains and he must perform Wudu."'" Now if...

---

1. Al-Sa'ayah, Chapter of Tayammum, Sohail Academy Press, Lahore, 491/1. Page 229 of 761

फ़तावा रज़विया - जिल्द 4

अरबी पाठ एवं अनुवाद/व्याख्या: "क्योंकि वह तयम्मुम करता है और उस पर वुज़ू अनिवार्य नहीं है; उसका तयम्मुम बड़ी अशुद्धि (जनाबत) और छोटी अशुद्धि (हदस) दोनों को दूर करने के लिए पर्याप्त होगा, भले ही उसके लिए यह सच हो कि जनाबत के बाद वुज़ू की आवश्यकता वाली अशुद्धि हुई थी। अतः, भाष्यकार के पाठ की आवश्यकताओं के अनुसार, उसके लिए वुज़ू करना आवश्यक हो जाएगा। उन्होंने कहा: यह कहना बेहतर है कि यहाँ 'मा' (साथ) का अर्थ 'बाद' है, और मुदाफ़ (अधिग्रहित) लुप्त है, यानी 'जनाबत के तयम्मुम के बाद'। या यह कहा जाता है कि 'मा' अपने अर्थ पर ही है लेकिन मुदाफ़ लुप्त है, यानी 'जनाबत के तयम्मुम के साथ'।" (संक्षिप्त)

इस तरीके पर आपत्ति की गई कि यदि उसे जनाबत (बड़ी अशुद्धि) हो फिर हदस (छोटी अशुद्धि) हो। उसके बाद उसे इतना ही पानी मिले जो सिर्फ वुज़ू के लिए पर्याप्त हो सके तो वह तयम्मुम करेगा और उस पर वुज़ू वाजिब नहीं। उसका तयम्मुम हदसे अकबर और असग़र दोनों को दूर करने के लिए काफी होगा। इसके बावजूद कि इसके बारे में यह सच है कि इसके साथ जनाबत के बाद ऐसा हदस पाया गया जो वुज़ू वाजिब करता है, तो भाष्यकार की इबारत के अनुसार आवश्यक होगा कि उस पर वुज़ू वाजिब हो। कहा: तो बेहतर यह कहना है कि 'मा' बाद के अर्थ में है और मुदाफ़ लुप्त है यानी "जनाबत के तयम्मुम के साथ"।

"इसके अलावा, मेरे पास फ़ाज़िल मुहम्मद क़रा बाग़ी का शरह अल-विकाया पर एक हाशियह (टिप्पणी) है जिसे उन्होंने 930 हिजरी में पूरा किया, यानी अख़ी चलपी की मृत्यु के पच्चीस साल बाद। उन्होंने कहा, 'मैंने इसकी समाप्ति तिथि के लिए "थुम्मा तसविदी" कहा है' और यह 977 हिजरी में यूसुफ़ बिन हसन बिन अब्दुल्लाह द्वारा लिखित है। इसमें अख़ी चलपी की बात 'कुछ टीकाकारों ने कहा' शब्दों के साथ उद्धृत की गई है, फिर लिखा है: 'मैं कहता हूँ यह स्पष्ट है कि यह व्याख्या निकालने में कठिनाई है और इस इबारत से इसे लेना दूर की बात है। इसके अतिरिक्त भाष्यकार शीघ्र ही इस मसले को इन शब्दों में स्पष्ट करेंगे: "और अगर वुज़ू के लिए काफी है, छूटी हुई जगह के लिए नहीं, तो उसका तयम्मुम बाकी है और उसे वुज़ू करना है"'।" अब अगर...

---

1. अल-साया, बाब अल-तयम्मुम, मतबअ सुहैल एकेडमी लाहौर 491/1 पृष्ठ 229 का 761

فانہ یتیمم ولایجب علیہ الوضوء یکون تیممہ کافیا لرفع الحدث الاکبر و الاصغر مع انہ یصدق علیہ انہ وجد بہ حدث یوجب الوضوء بعد الجنابۃ فیلزم بمقتضی عبارۃ الشارح ان یجب علیہ الوضوء قال فالاولی ان یقال مع بمعنی بعد والمضاف محذوف ای بعد تیم م الجنابۃ اویقال مع علی معناہ والمضاف محذوف ای مع تیمم الجنابۃ ۱ھ ملخصاً

طریق پر اعتراض کیا کہ اگر اسے جنابت ہو پھر حدث ہو۔ اس کے بعد اسے اتنا ہی پانی ملے جو صرف وضو کے لئے کفایت کر سکے تو وہ تیمم کرے گا اور اس پر وضو واجب نہیں۔ اس کا تیمم حدثِ اکبر و اصغر دونوں کو رفع کرنے کے لئے کافی ہوگا۔ باوجودیکہ اس کے متعلق یہ صادق ہے کہ اس کے ساتھ جنابت کے بعد ایسا حدث پایا گیا جو وضو واجب کرتا ہے تو بمقتضائے عبارت شارح لازم آئے گا کہ اس پر وضو واجب ہو۔ کہا: تو اولیٰ یہ کہنا ہے کہ مع بمعنی بعد ہے اور مضاف محذوف ہے یعنی "مع تیمم الجنابۃ" اھ (ت)

ھذا وعندی حاشیۃ علی شرح الوقایۃ للفاضل محمد القرہ باغی اتمھا سنۃ تسعمائۃ وثلثین ای بعد خمس وعشرین سنۃ من وفاۃ اخی چلپی وقال قلت لتاریخہ ثم تسویدی (۹) وھی کتابۃ یوسف بن حسن بن عبداللہ سنۃ تسعمائۃ وسبع وسبعین نقل فیھا کلام اخی چلپی بلفظۃ قال بعض المحشین ثم قال اقول لایخفی ان ھذا التصویر تکلف بعید الاخذ من ھذہ العبارۃ علا ان الشارح سیصرح ھذہ المسألۃ بقولہ وان کفی للوضوء لا للمعۃ فتییمہ باق وعلیہ الوضوء فبحمل ھذہ العبارۃ علی ماذکرہ

یہ سب ہوا، اور میرے پاس شرح وقایہ پر فاضل محمد قرہ باغی کا ایک حاشیہ ہے جسے انہوں نے ۹۳۰ھ میں مکمل کیا، یعنی اخی چلپی کی وفات کے پچیس سال بعد۔ اور اس کی تاریخ تکمیل کے

لئے ثم تسویدی کہا ہے اور یہ ۹۷۷ھ میں یوسف بن حسن بن عبداللہ کا کتابت کیا ہوا ہے اس میں اخی چلپی کا کلام "قال بعض المحشین" کے لفظ سے نقل کیا ہے پھر لکھا ہے: "میں کہتا ہوں مخفی نہیں کہ یہ صورت نکالنے میں تکلف ہے اور اس عبارت سے اسے اخذ کرنا بعید ہے علاوہ ازیں شارح عنقریب اس مسئلہ کی تصریح اس عبارت میں کریں گے: "اور اگر وضو کے لئے کافی ہے چھوٹی ہوئی جگہ کے لئے نہیں تو اس کا تیمم باقی ہے اور اسے وضو کرنا ہے " اب اگر

---

1 السعایہ باب التیمم مطبع سہیل اکیڈمی لاہور ۴۹۱/۱ صفحہ 229 از 761

Fatawa Razawiyya Volume 4

(Left Column - Arabic Text): The speaker says repetition becomes necessary, and perhaps he only resorted to this interpretation assuming that two states of impurity (hadath) do not occur simultaneously in a person initially. No doubt they do occur simultaneously, but one tayammum suffices for both when sufficient water for wudu is not available. If water is available, then wudu must be performed, followed by tayammum for janabah (major ritual impurity). This is the meaning mentioned in the book. It is surprising that he did not pay attention to this meaning, even though the commentator's statement shortly after this is clear about the coexistence of two ritual impurities initially, as he said: "If a person has two ritual impurities, such as janabah and an impurity requiring wudu, he should intend for both with tayammum." It cannot be said that since janabah makes it obligatory to wash some parts which constitutes wudu, there is no benefit in considering the impurity that necessitates wudu along with janabah. We say that even if all the premises of the objection are accepted, the answer is that multiple legal causes (shari'i causes) can converge upon a single legal effect (shari'i effect), as stated by the author of At-Talwih. He said: "If (2) someone swears that he will not perform wudu due to a nosebleed, then urinates, then his nose bleeds, and he performs wudu, he has violated his oath." And there are many similar examples in Sharia. Thus ends the statement of al-Fadil al-Qarah Baghi with some brevity.

(Right Column - Urdu Text): If this phrase is interpreted according to what the speaker mentioned, repetition would be necessary. He likely resorted to this interpretation thinking that two ritual impurities do not occur in a person simultaneously from the start, although undoubtedly they do. However, one tayammum is sufficient for both if water for wudu is unavailable. If water is available, wudu is required, then tayammum for janabah. This is what is stated in the book. It is surprising that the speaker did not pay attention to this meaning, even though shortly after, the commentator's phrase explicitly states that both impurities can occur initially. He said: "If he has two impurities, like janabah and an impurity requiring wudu, he should intend for both in tayammum." If it is argued that since janabah requires washing parts that make up wudu, there's no point in considering the wudu-requiring impurity alongside janabah, we say even if all premises are accepted, multiple legal causes can lead to one legal effect. As the author of At-Talwih clarifies: "If someone swears not to do wudu because of a nosebleed, then urinates,

then gets a nosebleed and does wudu, his oath is broken." There are many such precedents in Sharia. The words of Fadil Qarah Baghi end here with some brevity. (T)

---

1 Annotation on Sharh al-Wiqayah by al-Qarah Baghi. Page 230 of 761

(बायां कॉलम - अरबी पाठ): कहने वाले का कहना है कि दोहराव आवश्यक है, और शायद उसने यह व्याख्या इसलिए की क्योंकि उसका मानना था कि एक ही समय में एक व्यक्ति में दो प्रकार की अशुद्धियां (हदस) शुरू से मौजूद नहीं होतीं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि वे एक साथ हो सकती हैं, लेकिन जब वुज़ू के लिए पर्याप्त पानी उपलब्ध न हो, तो दोनों के लिए एक ही तयम्मुम काफी है। यदि पानी उपलब्ध हो, तो वुज़ू करना अनिवार्य है और फिर जनाबत (बड़ी अशुद्धि) के लिए तयम्मुम। किताब में यही अर्थ बताया गया है। यह आश्चर्य की बात है कि उसने इस अर्थ पर ध्यान नहीं दिया, जबकि इसके कुछ ही समय बाद टीकाकार (शारेह) का कथन इस बारे में स्पष्ट है कि शुरू में ही दो अशुद्धियां एक साथ हो सकती हैं। उन्होंने कहा: "यदि किसी व्यक्ति को दो अशुद्धियां हों, जैसे जनाबत और कोई ऐसी अशुद्धि जो वुज़ू को अनिवार्य बनाती हो, तो उसे तयम्मुम में दोनों की नीयत करनी चाहिए।" यह नहीं कहा जा सकता कि चूँकि जनाबत के कारण उन कुछ अंगों को धोना अनिवार्य हो गया जो वुज़ू की परिभाषा में आते हैं, इसलिए जनाबत के साथ वुज़ू को अनिवार्य करने वाली अशुद्धि पर विचार करने का कोई लाभ नहीं है। हम कहेंगे कि भले ही आपत्ति के सभी तर्क स्वीकार कर लिए जाएं, फिर भी उत्तर यह है कि एक ही शरई परिणाम (मअलूल) पर कई शरई कारण (इलल) एक साथ हो सकते हैं, जैसा कि तलवीह के लेखक ने स्पष्ट किया है। उन्होंने कहा: "यदि (2) कोई शपथ ले कि वह नकसीर के कारण वुज़ू नहीं करेगा, फिर वह पेशाब करे, उसके बाद उसे नकसीर आए और वह वुज़ू कर ले, तो उसकी शपथ टूट गई।" और शरीयत में इसके कई उदाहरण हैं। फ़ाज़िल करह बागी का कथन कुछ संक्षेप के साथ यहाँ समाप्त हुआ।

(दायां कॉलम - उर्दू पाठ): इस इबारत को उस पर महमूल (आधारित) किया जाए जो क़ायल (कहने वाले) ने ज़िक्र किया तो तकरार (दोहराव) लाज़िम आएगी। और उसने इस तावील (व्याख्या) का इर्तिकाब शायद इस ख़्याल से किया है कि किसी शख़्स में दोनों हदस इब्तिदाअन (शुरुआत में) जमा नहीं होते, हालाँकि बिला शुबहा दोनों जमा होते हैं। लेकिन दोनों की तरफ़ से एक ही तयम्मुम काफ़ी है जबकि वुज़ू के लिए आब (पानी) काफ़ी दस्तयाब (उपलब्ध) न हो, और दस्तयाब हो तो वुज़ू फिर जनाबत का तयम्मुम ज़रूरी है। किताब में यही बात मज़कूर (वर्णित) है। क़ायल पर ताज्जुब है कि इस मानी की तरफ़ इल्तिफ़ात (ध्यान) न किया हालाँकि इसके कुछ ही बाद शारेह (टीकाकार) की इबारत इस बारे में सरीह (स्पष्ट) है कि दोनों हदस इब्तिदाअन जमा होते हैं। उन्होंने फ़रमाया है: "अगर उसे दो हदस हों जैसे जनाबत और कोई ऐसा हदस जो वुज़ू वाजिब करता है तो उसे चाहिए कि दोनों से

तयम्मुम की नीयत करे।" अगर यह कहा जाए कि जनाबत से जब उन बाज़ अज्ज़ा (हिस्सों) का धोना वाजिब हुआ जो वुज़ू से इबारत है तो जनाबत के साथ वुज़ू वाजिब करने वाले हदस का एतबार करने में कोई फ़ायदा नहीं, तो हम कहेंगे अगर एतराज़ के तमाम मुक़द्दमात (तर्क) तस्लीम कर लिए जाएं तो भी जवाब यह है कि एक मअलूल-ए-शरई पर चंद इलल-ए-शरईया का इज्तेमा हो सकता है जैसा कि साहब-ए-तलवीह ने इसकी सराहत करते हुए लिखा है: अगर क़सम खाई कि नकसीर से वुज़ू न करेगा फिर उसने पेशाब किया इसके बाद नकसीर टूटी फिर उसने वुज़ू किया तो उसकी क़सम टूट गई। और शरीयत में इसकी बहुत सी नज़ीरें (उदाहरण) हैं।" फ़ाज़िल क़रह् बाग़ी का कलाम कुछ इख़्तिसार (संक्षेप) के साथ ख़त्म हुआ। (त)

---

1 शरह अल-विकाया पर क़रह् बाग़ी की टिप्पणी पृष्ठ 230 का 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

(بایاں کالم - عربی متن): القائل یلزم التکرار ولعله انما ارتکبه زعماً بأن الحدثین لایجتمعان في شخص ابتداءً ولاشك انهما یجتمعان لکن یکفی عنهما تیمم واحد اذا لم یوجد الماء الکافي للوضوء واما اذا وجد فلابد من الوضوء ثم التیمم للجنابة والمذکور فی الکتاب هو هذا المعنی۔ والعجب منه انه لم یلتفت الی هذا المعنی مع ان عبارة الشارح بعیداً هذا صریح باجتماع الحدثین ابتداءً حیث قال لوکان به حدثان کالجنابة وحدث یوجب الوضوء ینبغی ان ینوی عنهما لایقال ان الجنابة لما اوجب غسل بعض الاجزاء الذی هو عبارة عن الوضوء فلافائدة لاعتبار الحدث الذی یوجب الوضوء مع الجنابة لانا نقول بعد تسلیم جمیع المقدمات یجوز (1) اجتماع العلل الشرعیة علی معلول واحد شرعی کما صرح به صاحب التلویح فقال لو (2) حلف ان لا یتوضأ من الرعاف فبال ثم رعف فتوضأ حنث وله نظائر فی الشرع اه کلام القره باغی ببعض اختصار۔

(دایاں کالم - اردو متن): اس عبارت کو اس پر محمول کیا جائے جو قائل نے ذکر کیا تو تکرار لازم آئے گی۔ اور اس نے اس تاویل کا ارتکاب شاید اس خیال سے کیا ہے کہ کسی شخص میں دونوں حدث ابتداءً جمع نہیں ہوتے حالانکہ بلا شبہ دونوں جمع ہوتے ہیں، لیکن دونوں کی طرف سے ایک ہی تیمم کافی ہے جبکہ وضو کے لئے آب کافی دست یاب نہ ہو اور دست یاب ہو تو وضو پھر جنابت کا تیمم ضروری ہے۔ کتاب میں یہی بات مذکور ہے۔ قائل پر تعجب ہے کہ اس معنی کی طرف التفات نہ کیا حالانکہ اس کے کچھ ہی بعد شارح کی عبارت اس بارے میں صریح ہے کہ دونوں حدث ابتداءً جمع ہوتے ہیں۔ انہوں نے فرمایا ہے: "اگر اسے دو حدث ہوں جیسے جنابت اور کوئی ایسا حدث جو وضو واجب کرتا ہے تو اسے چاہئے کہ دونوں سے تیمم کی نیت کرے۔" اگر یہ کہا جائے کہ جنابت سے جب ان بعض اجزاء کا دھونا واجب ہوا جو وضو سے عبارت ہے تو

جنابت کے ساتھ وضو واجب کرنے والے حدث کا اعتبار کرنے میں کوئی فائدہ نہیں تو ہم کہیں گے اگر اعتراض کے تمام مقدمات تسلیم کرلیے جائیں تو بھی جواب یہ ہے کہ ایک معلول شرعی پر چند علل شرعیہ کا اجتماع ہو سکتا ہے جیسا کہ صاحب تلویح نے اس کی صراحت کرتے ہوئے لکھا ہے: اگر قسم کھائی کہ نکسیر سے وضو نہ کرے گا پھر اس نے پیشاب کیا اس کے بعد نکسیر ٹوٹی پھر اس نے وضو کیا تو اس کی قسم ٹوٹ گئی۔ اور شریعت میں اس کی بہت سی نظیریں ہیں۔" فاضل قرہ باغی کا کلام کچھ اختصار کے ساتھ ختم ہوا۔ (ت)

---

1 تعلیق علی شرح الوقایۃ للقرہ باغی صفحہ 230 از 761

Fatawa Rizwia, Volume 4

[Arabic Section Translation] This is all I have seen from them of talk and counter-talk, refutation and interpretation, denial and reliance. And know that the book 'Al-Si’aya' is not with me; rather, one of my friends from Lucknow sent me a copy of about a page of it related to this topic at my request, so that I could see what its commentator had written on it. Perhaps he had quoted from a book that is self-sufficient, as he had a collection of books larger than mine. But when I studied it, I did not find it substantial, nor did it result in any gain. He merely collected hearsay and spoke on superfluous matters without any real achievement, or with fallacies and falsehoods. He did not reach many of the pleasant discussions and superior insights. When he came to the point, he invalidated the correct and relied on the flawed, as you will see all this, God willing, the One from whom help is sought. And now is the time to proceed with the investigation of the goal by the grace of the Munificent Lord. I say: and from Allah is help sought, and from Him is grace and assistance. The discussion here is in eight places: (1) Refuting the objections, (2) establishing the meaning of the speech according to the path of interpretation and reliance, meaning its implementation, and (3) explanation of the meaning of his statement...

[Urdu Section Translation] This is all that talk and counter-talk, interpretative objection, denial, and reliance that has come under my view. It should be known that 'Al-Si’aya' is not with me. A friend of mine sent me a copy of about one page of it related to this topic, which I had requested with the thought of seeing what the commentator of 'Al-Si’aya' has written regarding this point. It was possible that he might have quoted something satisfactory from some book, because he had a larger collection of books than I do. Upon studying it, it was found that he did not find anything useful and could not bring any beneficial discourse; he just collected hearsay. And on some additional matters, he spoke in such a way that is devoid of utility or is false and incorrect. He did not reach many charming discussions and high thoughts regarding this point, and when he came to the objective, he made the correct sound flawed and the flawed reliable. As all this will be known, God willing. Now the time has come to start the desired research with the grace of the Munificent Lord. I say: (I say) and help is sought only from God, and from Him is grace and aid. Here the discourse is in eight places: (1) Answer to objections, (2) Statement of the meaning of the discourse according to the path of interpretation as well as the path

of reliance, i.e., while continuing upon the apparent meaning, (3) The discourse of the commentator.

[Footnote Translation] Note: The denial was by Allama Birjindi and the reliance by Fazil Qarah Baghi and the objections are five. (M) Denial was made by Allama Birjindi, reliance by Fazil Qarah Baghi, and objections are five. (T)

फ़तावा रज़विया, जिल्द चौथी

[अरबी अनुभाग का अनुवाद] यह वह सब है जो मैंने उनकी बातों और जवाबी बातों, खंडन और व्याख्या, इनकार और भरोसे में देखा है। और जान लो कि 'सआया' मेरे पास नहीं है; बल्कि लखनऊ के मेरे एक मित्र ने मेरे अनुरोध पर इस विषय से संबंधित उसका लगभग एक पन्ना मुझे भेजा, ताकि मैं देख सकूँ कि उसके टीकाकार ने वहाँ क्या लिखा है। शायद उन्होंने किसी ऐसी पुस्तक से उद्धृत किया हो जिसमें पर्याप्त जानकारी हो, क्योंकि उनके पास मुझसे अधिक पुस्तकों का संग्रह था। लेकिन जब मैंने उसका अध्ययन किया, तो मैंने नहीं देखा कि उससे कुछ ठोस हासिल हुआ, न ही उससे कोई लाभ हुआ। उसने केवल इधर-उधर की बातें जमा कीं, और बिना किसी वास्तविक उपलब्धि के, या भ्रांतियों और झूठ के साथ फ़ालतू बातों पर चर्चा की। वह कई सुखद चर्चाओं और श्रेष्ठ अंतर्दृष्टि तक नहीं पहुँच सका। जब वह मुख्य बात पर आया, तो उसने सही को दोषपूर्ण बताया और दोषपूर्ण पर भरोसा किया, जैसा कि आप यह सब देखेंगे, इंशा अल्लाह। और अब दयालु ईश्वर की कृपा से लक्ष्य की जाँच शुरू करने का समय आ गया है। मैं कहता हूँ: और अल्लाह ही से सहायता माँगी जाती है, और उसी की ओर से अनुग्रह और सहायता है। यहाँ चर्चा आठ स्थानों पर है: (१) आपत्तियों का खंडन, (२) व्याख्या और भरोसे के मार्ग के अनुसार कथन के अर्थ की स्थापना, अर्थात इसका क्रियान्वयन, और (३) उनके कथन के अर्थ का स्पष्टीकरण...

[उर्दू अनुभाग का अनुवाद] यह वह सब सुनी-सुनाई बातें, व्याख्यात्मक आपत्तियाँ, इनकार और भरोसा है जो मेरी दृष्टि में आया है। ज्ञात रहे कि 'सआया' मेरे पास नहीं है। मेरे एक मित्र ने इस विषय से संबंधित उसका लगभग एक पन्ने का प्रतिलिपि मुझे भेजी, जिसे मैंने इस विचार से मँगाया था कि मैं देख सकूँ कि 'सआया' के टीकाकार ने इस स्थान के बारे में क्या लिखा है। यह संभव था कि उन्होंने किसी पुस्तक से कोई संतोषजनक बात उद्धृत की हो, क्योंकि उनके पास मुझसे बड़ा पुस्तकों का संग्रह था। अध्ययन करने पर पाया गया कि उन्हें कोई उपयोगी बात नहीं मिली और वे कोई लाभदायक विमर्श नहीं ला सके, उन्होंने बस सुनी-सुनाई बातें जमा कर दीं। और कुछ अतिरिक्त विषयों पर, उन्होंने इस तरह बात की जो उपयोगिता से रहित है या असत्य और गलत है। वे इस स्थान के संबंध में कई आकर्षक चर्चाओं और ऊंचे विचारों तक नहीं पहुँच सके, और जब वे उद्देश्य पर पहुँचे, तो उन्होंने सही को दोषपूर्ण और दोषपूर्ण को विश्वसनीय बना दिया। जैसा कि यह सब ज्ञात हो जाएगा, इंशा अल्लाह। अब दयालु ईश्वर की कृपा से वांछित शोध शुरू करने का समय आ गया है। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) और सहायता केवल ईश्वर से ही माँगी जाती है, और उसी की ओर से कृपा

और सहायता है। यहाँ विमर्श आठ स्थानों पर है: (१) आपत्तियों का उत्तर, (२) व्याख्या के मार्ग के साथ-साथ भरोसे के मार्ग के अनुसार विमर्श के अर्थ का कथन, यानी स्पष्ट अर्थ पर जारी रहते हुए भी, (३) टीकाकार का विमर्श।

[पाद टिप्पणी अनुवाद] नोट: इनकार अल्लामा बिरजंदी ने किया और भरोसा फ़ाज़िल क़राह बाग़ी ने, और आपत्तियाँ पाँच हैं। (म) इनकार अल्लामा बिरजंदी ने किया, भरोसा फ़ाज़िल क़राह बाग़ी ने, और आपत्तियाँ पाँच हैं। (त)

पृष्ठ ७६१ में से २३१

فتاوی رضویه، جلد چہارم

فهذا كل مارأيت لهم من القال والقيل والنقض والتاويل والانكار والتعويل واعلم ان السعاية ليست عندى وانما ارسل الى بعض اصحابى من لكهنو نقل نحو ورقة منها متعلقة بهذا المقام على طلبي لكى ارى ماعنده فيه عسى ان نقل عن كتاب مافيه غناء فقد كان جمع من الكتب اكثر مما عندى فلما طالعته لم اره فازبطائل ولاجأز بنائل وانما جمع القال والقيل وتكلم على زوائد بفارغ عن التحصيل اوبغالط واياطيل ولم يهتد لكثير من الابحاث الراقة والانظار الفائقة واذا اتى على المقصود جرح الصحيح واعتمد الجريح كما ستعرف كل ذلك ان شاء الله المستعان والآن آن ان نفيض فى تحقيق المرام بتوفيق المنان اقول: وبالله الاستعانة ومنه الفيض والاعانة الكلام ههنا فى ثمانية مواضع دفع (١) النقوض وتقرير (٢) معنى الكلام على مسلك التأويل والتعويل اعنى اجراءه وبيان (٣) معنى قوله

یہ وہ سب قیل و قال، تاویل اعتراض، اور انکار و اعتماد ہے جو میری نظر سے گزرا۔ معلوم رہے کہ سعایہ میرے پاس نہیں میرے ایک دوست نے اس مقام سے متعلق اس کے تقریباً ایک ورق کی نقل میرے پاس بھیجی جو میں نے اس خیال سے طلب کی تھی کہ اس مقام سے متعلق محشی صاحب سعایہ نے جو کچھ تحریر کیا ہے وہ دیکھ سکوں۔ ہوسکتا ہے اس میں کسی کتاب سے کوئی اطمینان بخش بات نقل کی ہو۔ کیونکہ ان کے پاس میرے یہاں سے زیادہ کتابوں کا ذخیرہ تھا۔ مطالعہ کیا تو معلوم ہوا کہ انہیں کوئی کام کی بات نہ ملی اور کوئی مفید کلام نہ لاسکے بس قیل و قال جمع کر دیا۔ اور کچھ زائد باتوں پر ایسا کلام کیا ہے جو افادیت سے خالی یا باطل و غلط ہے۔ اور اس مقام سے متعلق بہت سی دلکش بحثوں اور بلند فکروں تک ان کی رسائی نہ ہوئی، اور مقصود پر آئے تو صحیح کو مجروح اور مجروح کو معتمد بنا دیا۔ جیسا کہ یہ سب ان شاء اللہ معلوم ہوگا اب وقت آیا کہ بہ توفیق رب منان تحقیق مطلوب کا آغاز کریں۔ اقول: (میں کہتا ہوں) اور خدا ہی سے

مدد طلبی ہے اور اسی کی جانب سے فیض ومدد ہے یہاں پر کلام آٹھ مقامات میں ہے: (۱) اعتراضات کا جواب (۲) معنی کلام کی تقریر مسلک تاویل پر بھی اور مسلک اعتماد پر بھی یعنی ظاہر پر جاری رکھتے ہوئے بھی (۳) کلام شارح

عہ الانکار لعلامۃ البرجندی والتعویل للفاضل القرہ باغي والنقوض خمسۃ۔ (م) انکار علامہ برجندی نے کیا، اعتماد فاضل قرہ باغی نے، اور اعتراضات پانچ ہیں۔ (ت)

Fatawa-e-Razawiyya Volume 4

[Arabic Text Column] "So Tayammum is for ritual impurity (Janabah)..." (4) Their statement "unanimously" is related to this. It is ordered by the statement "Wudu is obligatory for him." (5) The letter 'fa' in the statement "fal-tayammum" is for branching (tafri') or for reasoning (ta'lil). (6) A statement of the good, the ugly, the invalid, and the correct among the paths of interpretation. (7) And whether there are doubts occurring to the aim, and what is their disclosure and solution by the success of the All-Knowing? (8) And whether there is another interpretation for the discourse, better and clearer than what they mentioned? Here I give you, by the power of Allah Almighty, insights encompassing all that, and hopefully you will follow the best of paths, if Allah Almighty wills. And my success is not but by Allah, the best Master. Insight: It is sufficient, by His praise, the Almighty and Majestic, for the solution of the first difficulty, what I have previously presented of the representation of a ritually impure person (Junub) who performed Tayammum, then had a minor impurity and performed Wudu, then passed by water sufficient for his ritual bath (Ghusl). Al-Birjandi has also mentioned this. I say: So this is a Junub who has no impurity with him that necessitates Wudu because the Wudu (1) was performed on the organs of Wudu and purified them absolutely until another minor or major impurity occurs, such that if he finds water for Ghusl, he would not have to wash these organs again, because it will be mentioned in the eleventh insight that the current impurity...

[Urdu Translation Column] "So Tayammum is for ritual impurity (Janabah)" — (4) Their statement "unanimously" is related to this. (5) In "fal-tayammum," the 'fa' is for branching or for reasoning. (6) A statement of the good and ugly, and false and correct among the paths of interpretation. (7) Are there some objections here that arise against the objective? Then what is their solution and answer by the guidance of the All-Knowing God? (8) Is there any other interpretation of the discourse better than the ones mentioned and expressed? Now, by the help of Allah Almighty, I present some insights that encompass all these points and discussions and, if Allah wills, will guide the readers on the best path. And I have no success except from the Most High God, who is the best Master and Benefactor. (t) Insight 1: By the praise of God, the All-Mighty and Majestic, for the solution of the first difficulty, the same representation of the problem is sufficient which I presented earlier: that someone in a state of Janabah performed Tayammum, then a minor impurity occurred and he performed Wudu, then he passed by water that was sufficient for his bath. Allama al-Birjandi has also mentioned this. I say: So this is such a Junub with whom there is no

such impurity that makes Wudu obligatory. Because the act of Wudu was applied to the organs of Wudu, it purified them absolutely until another minor or major impurity occurs. Until...

Footnote: 1 Sharh al-Nuqayah for al-Birjandi, Chapter on Tayammum, Naval Kishore Press, Lucknow, 1/44. Page 232 of 761

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 4

[अरबी पाठ स्तंभ] "तो जनाबत (अशुद्धि) के लिए तयम्मुम..." (4) उनका कथन "सर्वसम्मति से" इसी से संबंधित है। यह उनके इस कथन द्वारा आदेशित है कि "उस पर वज़ू अनिवार्य है।" (5) उनके कथन "फ़ल-तयम्मुम" में 'फ़' शाखाकरण (तफ़री) के लिए है या कारण बताने (ता'लील) के लिए। (6) और व्याख्या के तरीकों में से अच्छे, बुरे, अमान्य और मान्य का विवरण। (7) और क्या यहाँ कुछ संदेह हैं जो लक्ष्य के विरुद्ध उत्पन्न होते हैं, और सर्वज्ञ के मार्गदर्शन से उनका प्रकटीकरण और समाधान क्या है? (8) और क्या चर्चा के लिए कोई अन्य व्याख्या है, जो उनके द्वारा बताई गई और स्पष्ट की गई व्याख्या से बेहतर है? यहाँ मैं आपको, अल्लाह सर्वशक्तिमान की शक्ति से, ऐसी जानकारियाँ देता हूँ जो उन सभी को समाहित करती हैं, और यदि अल्लाह ने चाहा, तो आप सर्वोत्तम मार्ग पर सुरक्षित रहेंगे। और मेरी सफलता केवल अल्लाह से है, जो सबसे अच्छा स्वामी है। जानकारी: अल्लाह, सर्वशक्तिमान और प्रतापी की स्तुति से, पहली कठिनाई के समाधान के लिए, समस्या का वही चित्रण पर्याप्त है जो मैंने पहले प्रस्तुत किया था: कि जनाबत की स्थिति में किसी व्यक्ति (जुनुब) ने तयम्मुम किया, फिर उसे एक छोटी अशुद्धि हुई और उसने वज़ू किया, फिर वह स्नान (ग़ुस्ल) के लिए पर्याप्त पानी के पास आया। अल-बिरजंदी ने भी इसका उल्लेख किया है। मैं कहता हूँ: तो यह एक जुनुब है जिसके साथ ऐसी कोई अशुद्धि नहीं है जो वज़ू को अनिवार्य करती हो क्योंकि वज़ू (1) वज़ू के अंगों पर हुआ और उन्हें तब तक पूरी तरह से शुद्ध कर दिया जब तक कि कोई अन्य छोटी या बड़ी अशुद्धि न हो जाए, यहाँ तक कि यदि उसे ग़ुस्ल के लिए पानी मिल जाए, तो उसे इन अंगों को फिर से नहीं धोना पड़ेगा, क्योंकि ग्यारहवीं जानकारी में आएगा कि वर्तमान अशुद्धि...

[उर्दू अनुवाद स्तंभ] "तो तयम्मुम जनाबत के लिए है" — (4) उनके कथन "सर्वसम्मति से" का अर्थ इसी से संबंधित है। (5) "फ़ल-तयम्मुम" में 'फ़' शाखाकरण के लिए है या कारण बताने के लिए। (6) व्याख्या के तरीकों में से अच्छे और बुरे, और अमान्य और मान्य का विवरण। (7) क्या यहाँ कुछ आपत्तियाँ भी हैं जो उद्देश्य के विरुद्ध उत्पन्न होती हैं? फिर सर्वज्ञ ईश्वर के मार्गदर्शन से उनका समाधान और उत्तर क्या है? (8) क्या चर्चा की गई और व्यक्त की गई व्याख्याओं से बेहतर कोई अन्य व्याख्या भी है? अब, अल्लाह सर्वशक्तिमान की सहायता से, मैं कुछ ऐसी जानकारियाँ प्रस्तुत करता हूँ जो इन सभी स्थानों और चर्चाओं को समाहित करती हैं और, यदि अल्लाह ने चाहा, तो पाठकों को सर्वोत्तम मार्ग पर ले जाएँगी। और मुझे सर्वोच्च ईश्वर के बिना कोई सफलता नहीं मिलती, जो सबसे

अच्छा स्वामी और उपकारी है। (त) जानकारी 1: ईश्वर, सर्वशक्तिमान और प्रतापी की स्तुति से, पहली कठिनाई के समाधान के लिए, समस्या का वही चित्रण पर्याप्त है जो मैंने पहले प्रस्तुत किया था: कि जनाबत की स्थिति में किसी व्यक्ति ने तयम्मुम किया, फिर उसे एक अशुद्धि हुई तो उसने वज़ू किया, फिर वह इतने पानी के पास से गुज़रा जो उसके स्नान के लिए पर्याप्त था। अल्लामा बिरजंदी ने भी इसका उल्लेख किया है। मैं कहता हूँ: तो यह एक ऐसा जुनुब है जिसके साथ कोई ऐसी अशुद्धि नहीं है जो वज़ू को अनिवार्य करती हो। क्योंकि वज़ू की क्रिया वज़ू के अंगों पर हुई, इसने उन्हें तब तक पूरी तरह से शुद्ध कर दिया जब तक कि कोई अन्य छोटी या बड़ी अशुद्धि न हो जाए। यहाँ तक कि...

पाद-टिप्पणी: 1 अल-बिरजंदी द्वारा शरह अल-नुकाया, तयम्मुम का अध्याय, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, 1/44। पृष्ठ 232 का 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

[متن عربی] فالتیمم للجنابة وان(۴) قوله بالاتفاق متعلق بهذا امر بقوله یجب علیه الوضوء وان (۵) الفاء فی قوله فالتیمم للتفریع امر للتعلیل وبیان(۶) الحسن والقبیح والباطل والصحیح من مسالك التأویل وانه(۷) هل ثم شبهات ترد علی المرام وما کشفها وحلها بتوفیق العلام وهل(۸) للکلام تأویل اخر خیر مما ذکرو اظهر وها انا اعطیك بحول الله تعالی افادات تحیط بکل ذلك وتسلم بك ان شاء الله تعالی احسن المسالك وما توفیقی الا بالله خیر مالک* الافادة: کفی بحمده عزوجل لحل الاشکال الاول ما قدمت من تصویر جنب تیمم فأحدث فتوضأ فمر علی ماء کاف لغسله۱ وقد ذکره البرجندی ایضا اقول: فهذا جنب لیس معه حدث یوجب الوضوء لان الوضوء(۱) طرأ علی اعضاء الوضوء فطهرها مطلقا الی ان یطرأ حدث اخر اصغرا واکبر حتی انه اذا وجد ماء للغسل لم یکن علیه غسل هذه الاعضاء لما سیأتی فی الافادة الحادیة عشرة ان الحدث الحالی

[اردو ترجمہ و تشریح] "فالتیمم للجنابة" (تو تیمم جنابت کے لئے ہے) کا معنی (۴) ان کا قول "بالاتفاق" اسی سے متعلق ہے (۵) فالتیمم میں "ف" برائے تفریع ہے یا برائے تعلیل (۶) تاویل کے طریقوں میں سے حسن و قبیح اور باطل و صحیح کا بیان (۷) کیا یہاں کچھ اعتراضات بھی ہیں جو مقصود پر وارد ہوتے ہیں۔ پھر خدائے علام کی توفیق سے ان کا حل اور جواب کیا ہے؟ (۸) کلام کی جن تاویلوں کا ذکر اور اظہار ہوا کیا ان سے بہتر کوئی دوسری تاویل بھی ہے؟ اب میں بعون اللہ تعالیٰ کچھ افادات پیش کرتا ہوں جو ان سارے مقامات و مباحث کا احاطہ کرتے ہوئے ان شاء اللہ تعالیٰ ناظرین کو بہترین راہ پر گامزن کریں گے۔ اور مجھے توفیق نہیں مگر خدائے برتر ہی سے جو بہتر مالک و منعم ہے۔ (ت) افادہ ۱: بحمد خدائے غالب وبرتر اشکال اوّل کے حل کے لئے وہی تصویر مسئلہ کافی ہے جو میں نے پہلے پیش کی کہ کسی جنابت والے نے تیمم کیا پھر اسے حدث

ہوا تو اس نے وضو کیا پھر وہ اتنے پانی کے پاس گزرا جو اس کے غسل کے لئے کافی ہے۔ اسے علامہ برجندی نے بھی ذکر کیا ہے۔ اقول: تو یہ ایسا جنب ہے جس کے ساتھ کوئی ایسا حدث نہیں جو وضو واجب کرتا ہو۔ اس لئے کہ عمل وضو اعضائے وضو پر طاری ہوا تو انہیں مطلقا پاک کر دیا جب تک کہ کوئی دوسرا حدث اصغر یا اکبر طاری ہو۔ یہاں تک کہ

۱ شرح النقایہ للبرجندی باب التیمم مطبع نولکشور لکھنؤ ۱/ ۴۴ Page 232 of 761

Fatawa Razawiyya, Volume 4

[Arabic text]: Regarding the body parts separately, when one finds water for bathing (ghusl), the state of major ritual impurity (janabat) does not return to them, except for the parts other than those already washed. [Urdu text]: When he finds water for bathing, it is not mandatory for him to wash those parts. The reason for this is explained in note 11.

[Arabic text]: Allama Al-Halabi stated in 'Al-Ghuniyah' regarding wiping over leather socks (masah al-khuffayn): If a person becomes in a state of major ritual impurity (janabat) and performs dry ablution (tayammum), then experiences minor ritual impurity (hadath) and performs ritual ablution (wudu). After that, he passes by water sufficient for bathing but does not bathe. The feet (ar-rajul - with a kasra under the 'ra'), since they were washed at that time, ritual impurity does not return to them upon seeing water, nor is it mandatory to wash them again for that same state of janabat. End of quote. [Urdu text]: Allama Halabi wrote in 'Ghuniyah' under the topic of wiping over socks: "If someone becomes in a state of janabat and performs tayammum, then experiences hadath and performs wudu. After that, he passes by enough water for bathing but does not bathe. Since his feet were washed at that time, ritual impurity will not return to them upon seeing water, and it will not be mandatory to wash them again because of that janabat." End of quote.

[Arabic text]: This was also cited and affirmed by Allama Shami in 'Manhat al-Khaliq'. The feet were specifically mentioned because the discussion pertains to removing the socks and washing the feet, and other parts of wudu are analogous to them. It is stated in 'Al-Bada'i' (1) that removing the socks nullifies the wiping because the previous minor impurity spreads to the feet. Then, if he was already in a state of minor impurity, he performs full wudu, and if he was not in a state of minor impurity, he only washes his feet and nothing else. According to one opinion of Imam Shafi'i, he should perform wudu anew, the reasoning being that minor impurity occurred in some parts, and since minor impurity is indivisible, it extends to the rest. Our proof is that the previous minor impurity is what resided on his feet, and the other limbs were already washed after that impurity; thus, only the two feet remained, so it is not obligatory upon him except to wash them both. End of summarized quote. 12, may he be forgiven. [Urdu text]: This text was also quoted and maintained by Allama Shami in 'Manhat al-Khaliq'. The feet were specifically mentioned because the discussion is about removing the socks and washing the feet (from this, the ruling for other parts of wudu can also be known, as other parts are like the feet). It is in

'Bada'i': "Removing the socks breaks the wiping because the previous impurity spread to the feet. Then, if he was in a state of hadath, he should do full wudu, and if he was not in hadath, he should only wash his feet and nothing else. And one saying of Imam Shafi'i is to perform wudu from the beginning. The reason for this is that hadath occurred in some of his limbs, and since hadath is indivisible, it will also pass to the remaining limbs. Our argument is that the previous hadath is the one that came on his feet; he has already washed the other limbs after that hadath, and only the two feet were left, so it is mandatory for him to wash only those two feet." 12, may he be forgiven.

Footnotes: 1. Muniyat al-Mustamli, Chapter on Wiping over Leather Socks, Suhail Academy Lahore, p. 108, 109. 2. Bada'i al-Sana'i, Nullifiers of Wiping, M.M. Saeed Company, Karachi 12/1.

फ़तवा रज़विया, जिल्द 4

[अरबी पाठ]: शरीर के अंगों के संबंध में, जब किसी को स्नान (गुस्ल) के लिए पानी मिले, तो जनाबत (अनुष्ठानिक अशुद्धता) उन अंगों पर वापस नहीं आती है, सिवाय उन अंगों के जो पहले नहीं धोए गए थे। [उर्दू पाठ]: जब उसे स्नान के लिए पानी मिले, तो उसके लिए उन अंगों को धोना अनिवार्य नहीं है। इसका कारण नोट 11 में समझाया गया है।

[अरबी पाठ]: अल्लामा हलबी ने 'अल-गुनिया' में चमड़े के मोजों पर मसह (मसह अल-खुफ़ैन) के संबंध में कहा है: यदि कोई व्यक्ति जनाबत की स्थिति में हो जाता है और तयम्मुम (शुष्क स्नान) करता है, फिर उसे हदस (लघु अशुद्धता) होती है और वह वज़ू करता है। उसके बाद, वह स्नान के लिए पर्याप्त पानी के पास से गुजरता है लेकिन स्नान नहीं करता है। चूंकि उस समय पैर धो लिए गए थे, इसलिए पानी देखने पर उनमें जनाबत वापस नहीं आएगी, और न ही उसी जनाबत के लिए उन्हें दोबारा धोना अनिवार्य होगा। उद्धरण समाप्त। [उर्दू पाठ]: अल्लामा हलबी ने 'गुनिया' में मसह खुफ़ैन के तहत लिखा है: "किसी को जनाबत لاحق हुई और उसने तयम्मुम किया, फिर उसे हदस हुआ और वज़ू किया। उसके बाद वह इतने पानी पर गुज़रा जो गुस्ल के लिए काफ़ी है मगर गुस्ल न किया तो पैर जब पहले उस वक्त धो लिया था, अब पानी देखने से उसमें जनाबत वापस नहीं आएगी और उस जनाबत की वजह से उसे दोबारा धोना लाज़िम न होगा।" उद्धरण समाप्त।

[अरबी पाठ]: इसे अल्लामा शामी ने 'मन्हात अल-ख़ालिक' में भी उद्धृत किया और इसकी पुष्टि की। पैरों का विशेष रूप से उल्लेख इसलिए किया गया क्योंकि चर्चा मोज़े उतारने और पैर धोने के बारे में है, और वज़ू के अन्य अंग भी इसी के समान हैं। 'अल-बदाइ' (1) में कहा गया है कि मोज़े उतारने से मसह टूट जाता है क्योंकि पिछला हदस पैरों तक फैल जाता है। फिर, यदि वह पहले से ही हदस की स्थिति में था, तो वह पूरा वज़ू करता है, और यदि वह हदस की स्थिति में नहीं था, तो वह केवल अपने पैर धोता है और कुछ नहीं। इमाम शाफ़ई के एक मत के अनुसार, उसे नए सिरे से वज़ू करना चाहिए, तर्क यह है कि हदस कुछ अंगों में हुआ, और चूंकि हदस अविभाज्य है, इसलिए यह शेष अंगों तक भी फैल जाता है। हमारा तर्क यह है कि पिछला हदस वही है जो उसके पैरों पर आया था, और अन्य अंगों को उस हदस के बाद पहले ही धोया जा चुका है; इस प्रकार, केवल दोनों पैर ही बचे थे, इसलिए उसके लिए केवल उन दोनों को धोना ही अनिवार्य है। संक्षिप्त उद्धरण समाप्त। 12, ईश्वर उन्हें क्षमा करे। [उर्दू पाठ]: यह कलाम अल्लामा शामी ने भी 'मन्हात अल-ख़ालिक' में नक़ल किया और बरक़रार रखा। ख़ास पैर ही को इसलिए ज़िक्र किया है कि कलाम मोज़ा निकालने और पैर धोने

के बारे में है (इसी से अन्य वज़ू के अंगों का हुक्म भी मालूम हो जाता है क्योंकि अन्य वज़ू के अंग भी पैर के समान हैं)। 'बदाइ' में है: "मोज़ों का निकालना मसह को तोड़ देता है क्योंकि पिछला हदस पैरों तक सरियत कर आया, फिर अगर वह मुहदिस था तो पूरा वज़ू करे और अगर मुहदिस न था तो सिर्फ़ पैरों को धोए कुछ और नहीं। और इमाम शाफ़ई का एक क़ौल यह है कि अज़ सरे नौ (नए सिरे से) वज़ू करे। इसकी वजह यह है कि हदस उसके बाज़ अंगों में हलूल कर आया और हदस की तज्ज़ी (विभाजन) नहीं होती तो बाक़ी अंगों की तरफ़ भी तजावुज़ कर जाएगा। हमारी दलील यह है कि हदस-ए-साबिक़ वही है जो उसके पैरों पर आया; अन्य अंगों को तो इस हदस के बाद धो चुका है, सिर्फ़ दोनों पैर रह गए थे, तो उसे इन दोनों को ही धोना वाजिब है।" 12, ईश्वर उन्हें क्षमा करे।

पादलेख: 1. मुनियत अल-मुस्तमली, मोज़ों पर मसह का अध्याय, सुहैल अकादमी लाहौर, पृ. 108, 109। 2. बदाइ अस-सनाइ, मसह को तोड़ने वाली चीज़ें, एम.एम. सईद कंपनी, कराची 12/1।

بالا عضاء متجزئی فاذا رأی ماء الغسل لم تعدعه الجنابة لافیما وراء تلك الاعضاء* جب اسے غسل کے لئے پانی ملے تو اس پر ان اعضاء کا دھونا لازم نہیں۔ اس کی وجہ افادہ ۱۱

عه قال العلامة الحلبي في الغنية من مسح الخفين اجنب وتيمم فحدث وتوضأ ومربعد ذلك على ما يكفي للاغتسال فلم يغتسل فالرجل (ای بکسر الراء) بعد غسلها اذذاك لاتعود جنابتها برؤية الماء ولا يلزم غسلها مرة اخرى لاجل تلك الجنابة اھ ۱ علامہ حلبی نے غنیہ میں مسح خفین کے تحت لکھا ہے : "کسی کو جنابت لاحق ہوئی اور تیمم کیا پھر اسے حدث ہوا اور وضو کیا۔ اس کے بعد وہ اتنے پانی پر گزرا جو غسل کے لئے کافی ہے مگر غسل نہ کیا تو پیر جب پہلے اس وقت دھولیا تھا اب پانی دیکھنے سے اس میں جنابت عود نہ کرے گی اور اس جنابت کی وجہ سے اسے دوبارہ دھونا لازم نہ ہوگا" اھ

ونقله في المنحة واقر وانما خص القدم بالذكر لان الكلام في نزع الخف وغسل الرجل وسائر اعضاء الوضوء كمثلها وفی البدائع (۱) ينقض المسح نزع الخفين لانه سری الحدث السابق الی القدمين ثم ان كان محدثاً يتوضأ بكماله وان لم يكن محدثاً يغسل قدميه لا غير وللشافعي في قول يستقبل الوضوء وجهه ان الحدث حل ببعض اعضائه والحدث لا يتجزء فيتعدى الی الباقی ولنا ان الحدث السابق هو الذی حل بقدميه وقد غسل بعده سائر الاعضاء وبقيت القدمان فقط فلا يجب عليه الا غسلهما اھ ملخصاً ۱۲ منه غفر له (م) یہ کلام علامہ شامی نے بھی منحۃ الخالق میں نقل کیا اور برقرار رکھا خاص قدم ہی کو اس لئے ذکر کیا ہے کہ کلام موزہ نکالنے اور پیر دھونے کے بارے میں ہے (اسی سے دیگر اعضائے وضو کا حکم بھی معلوم ہو جاتا ہے کیوں کہ دیگر اعضائے وضو بھی قدم ہی کے مثل ہیں بدائع میں ہے : "موزوں کا نکالنا مسح کو توڑ دیتا ہے اس لئے کہ سابقہ حدث قدموں تک

سرایت کر آیا پھر اگر وہ محدث تھا تو پورا وضو کرے اور اگر محدث نہ تھا تو صرف قدموں کو دھوئے کچھ اور نہیں۔ اور امام شافعی کا ایک قول یہ ہے کہ از سر نو وضو کرے۔ اس کی وجہ یہ ہے کہ حدث اس کے بعض اعضاء میں حلول کر آیا اور حدث کی تجزی نہیں ہوتی تو باقی اعضاء کی طرف بھی تجاوز کر جائے گا ہماری دلیل یہ ہے کہ حدث سابق وہی ہے جو اس کے قدموں پر آیا دیگر اعضاء کو تو اس حدث کے بعد دھو چکا ہے صرف دونوں قدم رہ گئے تھے تو اسے ان دونوں کو ہی دھونا واجب ہے ۱۲منہ غفر لہ۔ (ت)

حواشی: 1. منیة المستملی فصل فی المسح علی الخفین ، سہیل اکیڈمی لاہور ، ص ۱۰۸، ۱۰۹ 2. بدائع الصنائع نواقض المسح ایم ایم سعید کمپنی ، کراچی ۱۲/۱

Fatawa Razawiyyah Volume IV

[Left Column - Arabic Original] So this is a 'Junub' (ritually impure person) who has performed Wudu without any doubt. * And if any doubt affects you regarding this, then consider him as a 'Junub' who has found water. For it is Sunnah for him to perform Wudu first, and there is no doubt that as long as there is a spot on his body where water has not reached, he remains a 'Junub'. Thus, while he has Wudu, he is a 'Junub' and nothing is required of him except pouring water over the rest of his body. Once he has done so, he has become pure and, by consensus, does not repeat the Wudu. Therefore, the 'Janabat' (major ritual impurity) residing in parts beyond the Wudu organs, since it did not negate the Wudu at that time—rather, it is Wudu which removed it from those organs—then how could its return to parts other than the Wudu organs nullify the Wudu? For something whose existence does not prevent the commencement of purity will not nullify it upon its occurrence during its continuation. This point is more apparent than needing to be shown.

And by 'one who has performed Wudu', we mean the purity of the organs of Wudu and their freedom from both types of ritual impurities (major and minor), not the kind of Wudu for which prayer is permissible, for that is achieved only by the removal of the inherent impurity itself...

[Right Column - Urdu Translation] ...is coming into [understanding] that the impurity residing in the organs is divisible. So when he saw the bath water, ritual impurity will recur only in parts other than those organs. Not in those organs. So this is undoubtedly such a 'Junub' who has Wudu. (T) If any doubt creeps in, compare him to a 'Junub' who has water available. For him, the Sunnah is to perform Wudu first. There is no doubt that as long as any spot remains on his body where water has not passed, he will remain a 'Junub'. So at the time he has Wudu, he is also in a state of ritual impurity, and his only responsibility is to pour water on the rest of his body. Once he does this, he becomes completely pure. Now, by consensus, he does not have to perform Wudu again. So, when the major impurity residing in parts other than the Wudu organs did not conflict with the Wudu at that time—rather, it was the Wudu that removed the impurity from those organs—then how can the return of major impurity to other organs nullify this Wudu? Something whose existence is not initially a barrier to purity can never be a nullifier of purity by its occurrence during continuation. This meaning is so clear and obvious that it does not need expression and explanation. And by 'having Wudu', we mean that his Wudu organs are pure and free from major and minor impurities. We do not mean 'having Wudu' such that

prayer becomes permissible; that state will be achieved upon the removal of the impurity which is inherent...

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

[बायां स्तंभ - अरबी मूल] तो यह बिना किसी संदेह के वज़ू करने वाला एक 'जुनुब' (धार्मिक रूप से अशुद्ध व्यक्ति) है। * और यदि इसमें आपको कोई संदेह हो, तो उसे उस 'जुनुब' के समान समझें जिसके पास पानी उपलब्ध है। उसके लिए सुन्नत यह है कि वह पहले वज़ू करे, और इसमें कोई संदेह नहीं है कि जब तक उसके शरीर पर कोई ऐसी जगह रह जाए जहाँ पानी न पहुँचा हो, वह 'जुनुब' बना रहेगा। अत; वज़ू की स्थिति में भी वह 'जुनुब' है और उसके ज़िम्मे केवल शेष शरीर पर पानी बहाना है। जब उसने ऐसा कर लिया, तो वह शुद्ध हो गया और सर्वसम्मति से वज़ू को नहीं दोहराता। इसलिए, वज़ू के अंगों के अलावा अन्य अंगों में मौजूद 'जनाबत' (बड़ी अशुद्धि), चूँकि उस समय वज़ू के प्रतिकूल नहीं थी - बल्कि वज़ू ही था जिसने उन अंगों से अशुद्धि को दूर किया था - तो वज़ू के अंगों के अलावा अन्य अंगों में उसका लौटना वज़ू को कैसे तोड़ सकता है? क्योंकि जिस चीज़ का अस्तित्व प्रारंभ में शुद्धता को नहीं रोकता, वह निरंतरता के दौरान उसके पुनरावृत्ति होने पर शुद्धता को नहीं तोड़ेगी। यह बात प्रकट होने से भी अधिक स्पष्ट है।

और 'वज़ू करने वाला' से हमारा तात्पर्य वज़ू के अंगों की शुद्धता और दोनों प्रकार की अशुद्धियों (बड़ी और छोटी) से उनकी मुक्ति से है, न कि वह वज़ू जिसके लिए नमाज़ जायज़ हो, क्योंकि वह तो स्वयं निहित अशुद्धि के दूर होने से प्राप्त होगा...

[दायां स्तंभ - उर्दू अनुवाद] ...यह समझ में आ रहा है कि अंगों में बसने वाली अशुद्धि विभाज्य होती है। तो जब उसने गुस्ल का पानी देखा, तो जनाबत उन अंगों के अलावा अन्य अंगों में ही लौटेगी। उन अंगों में नहीं। तो यह निस्संदेह ऐसा 'जुनुब' है जो बा-वज़ू है। (त) अगर इसमें कोई संदेह पैदा हो तो उसकी तुलना उस 'जुनुब' से कीजिए जिसे पानी उपलब्ध है। उसके लिए सुन्नत यही है कि पहले वज़ू करे और इसमें कोई शक नहीं कि जब तक उसके शरीर पर कोई ऐसी जगह रह जाएगी जिस पर पानी न गुज़रा हो, तो वह 'जुनुब' बना रहेगा। तो जिस समय वह बा-वज़ू है उस समय भी जनाबत वाला है और उसके ज़िम्मे यही काम है कि बाकी सारे जिस्म पर पानी बहा ले। यह काम कर लिया तो वह बिलकुल पाक हो गया। अब इज्मा (सर्वसम्मति) के अनुसार उसे दोबारा वज़ू नहीं करना है। तो वज़ू के अंगों के अलावा अन्य अंगों में बसने वाली जनाबत जब उस वक्त वज़ू के मुनाफी (विपरीत) न हुई - बल्कि वज़ू ही ने तो उस जनाबत को उन अंगों से दूर किया - तो अन्य अंगों में उस जनाबत का लौटना इस वज़ू को तोड़ने वाला कैसे होगा? जिस चीज़ का वजूद शुरुआत में तहारत (शुद्धता) के लिए बाधक नहीं है, हरगिज़ उसका वजूद निरंतरता में तहारत को तोड़ने वाला नहीं है। यह अर्थ इतना

रोशन और वाज़ेह (स्पष्ट) है कि बयान करने की ज़रूरत नहीं है। और बा-वज़ू से हमारी मुराद यह है कि उसके वज़ू के अंग पाक हैं और हदसे-अकबर (बड़ी अशुद्धि) और हदसे-असग़र (छोटी अशुद्धि) से खाली हैं। वह बा-वज़ू मुराद नहीं जिसके लिए नमाज़ जायज़ हो, यह बात तो उस हदस (अशुद्धि) के दूर होने से हासिल होगी जो...

पृष्ठ २३४ / ७६१

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم

[بایاں کالم - عربی عبارت] فهذا جنب متوضئ بلا مراء * وان اعتراك شبهة فيه فاعتبره بجنب واجد للماء فان المسنون له ان يقدم الوضوء ولاشك انه مادام في بدنه لمعة لم يصبها الماء يبقى جنبا فهو حين هو متوضئ جنب وليس عليه الا افاضة الماء على سائر جسده فاذا فعل فقد طهر ولا يعيد الوضوء اجماعا فالجنابة الحائلة بما وراء اعضاء الوضوء اذالم تناف الوضوء حينئذ بل الوضوء هو الذي نفاها من تلك الاعضاء فكيف ينقض عودها في غير الاعضاء اذ مالا يمنع وجوده الطهارة بدءا لن ينقضها حدوثه بقاء وهذا اظهر من ان يظهر۔

ونعنی بالمتوضئ طهارة اعضاء وضوءه ونزاهتها عن الحدثين لا التوضئ الذی تجوز له الصلاة فان ذلك بزوال الحدث القائم بنفس

[دایاں کالم - اردو ترجمہ و تشریح] میں آرہی ہے کہ اعضاء میں حلول کرنے والے حدث کی تجزی ہوتی ہے تو جب اس نے غسل کا پانی دیکھا جنابت ان اعضاء کے ماسوا میں ہی عود کرے گی۔ ان اعضاء میں نہیں تو یہ بلاشبہ ایسا جنب ہے جو باوضو ہے۔ (ت) اگر اس میں کوئی شبہ درانداز ہو تو اس کا قیاس اس جنب پر کیجئے جسے پانی دستیاب ہے۔ اس کے لئے مسنون یہی ہے کہ پہلے وضو کرے اور اس میں کوئی شک نہیں کہ جب تک اس کے بدن پر کوئی ایسی جگہ رہ جائے گی جس پر پانی نہ گزرا ہو، تو وہ جنب باقی رہے گا۔ تو جس وقت وہ باوضو ہے اس وقت بھی جنابت والا ہے اور اس کے ذمہ یہی کام ہے کہ بقیہ سارے جسم پر پانی بہالے۔ یہ کام کر لیا تو وہ بالکل پاک ہوگیا۔ اب بالاجماع اس کو دوبارہ وضو نہیں کرنا ہے۔ تو اعضائے وضو کے ماسوا میں حلول کرنے والی جنابت جب اس وقت وضو کے منافی نہ ہوئی۔ بلکہ وضو ہی نے تو اس جنابت کو ان اعضاء سے دور کیا۔ تو دیگر اعضا میں اس جنابت کا عود کرنا اس وضو کا ناقض کیسے ہوگا؟

جس چیز کا وجود ابتداءً مانع طہارت نہیں ہرگز اس کا حدوث بقاءً ناقض طہارت نہیں۔ یہ معنی اتنا روشن و واضح ہے کہ اظہار و بیان سے بے نیاز ہے۔ اور باوضو سے ہماری مراد یہ ہے کہ اس کے اعضائے وضو پاک اور حدثِ اکبر و اصغر سے خالی ہیں۔ وہ باوضو مراد نہیں جس کے لئے نماز جائز ہو یہ بات تو اس حدث کے دور ہونے سے حاصل ہوگی جو...

Fatawa Razawiyya Volume 4

[Arabic Text]: ...the mukallaf (accountable person) regarding his limbs, but it is attached to his essence. It is the name for being contaminated with ritual impurity (hadath). It will not be removed until the whole body is purified, as we have mentioned in 'Al-Tars al-Mu'addal'. This is the meaning of their saying that 'hadath is indivisible'. As for Al-Birjandi's illustration on the view of Imam Muhammad, I say: it is based on the occurrence of an erection, followed by penetration and then withdrawal, all before pre-seminal fluid (madhi) is emitted; otherwise, the major impurity would not be separate from the minor. Although rare, it is possible, and possibility is sufficient for illustration. The objection of Al-Lucknowi (1) is rejected by what follows. As for his latter illustration according to the view of the two Sheikhs (i.e., Abu Hanifa and Abu Yusuf) and his statement therein that no nullifier of wudu was found—

I say: Wait! (2) because ejaculation is not devoid of pre-seminal emission, whether during masturbation or ejaculation itself. That is why Imam Shams al-A'imma al-Halwani found the purification of semen (mani) by rubbing it off (when dry) problematic, because (3) every male emits madhi then mani. He answered that madhi is overwhelmed by mani and consumed within it, thus it follows its ruling. The researcher in 'Al-Fath' said: This is apparent, for since the reality is that mani does not come without madhi, and the Shari'ah has purified it by rubbing when dry, it necessarily follows that this was considered due to necessity. End.

[Urdu Text]: It is not attached to the limbs of the mukallaf but to his essence. It is the name of his being contaminated and soiled with ritual impurity. This hadath (impurity) will not be removed until his entire body becomes pure, as we have already explained in "Al-Tars al-Mu'addal". This is the meaning of the scholars' statement that "hadath is not divisible". (T) Regarding the scenario Al-Birjandi presented on the view of Imam Muhammad, I say: it is based on there being an erection, then insertion and withdrawal, after which he becomes flaccid. All this happens before madhi (pre-seminal fluid) comes out, otherwise, major hadath would not be found separate from minor hadath. This scenario, though rare, is possible, and for illustrating a point, possibility is enough. (T) The rejection that Maulvi Abdul Hai Farangi Mahalli has made on this is itself wrong. Its rebuttal is coming. But on the view of the two Sheikhs (i.e., Abu Hanifa and Abu Yusuf), the illustration of the problem and the statement that no nullifier of wudu was found—I say: (so I say on this) why not? Semen does not come out without pre-seminal fluid, whether at the time of manual extraction or

spontaneous emission. That is why Imam Shams al-A'imma al-Halwani considered the purification of semen by rubbing to be difficult, because every male first has madhi then mani comes. The answer to the difficulty was given that madhi is overwhelmed by mani and consumed within it, so it is declared as following its ruling. The Absolute Researcher stated in 'Fath al-Qadir': "This is apparent because when the fact is that semen does not come without pre-seminal fluid, and the Shari'ah has declared it pure by rubbing in a dry state, it is necessary that...

---

1. Fath al-Qadir, Tathir al-Anjas, Maktaba Nooriya Razawiyya Sukkur, 1/178 Page 235 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द 4

[अरबी पाठ]: ...मुकल्लफ (उत्तरदायी व्यक्ति) के अंगों के बारे में नहीं, बल्कि यह उसकी ज़ात (अस्तित्व) से जुड़ा है। यह अनुष्ठानिक अशुद्धि (हद्दस) से दूषित होने का नाम है। यह तब तक दूर नहीं होगा जब तक कि पूरा शरीर शुद्ध न हो जाए, जैसा कि हमने 'अल-तर्स अल-मुअद्दल' में उल्लेख किया है। उनके इस कथन का यही अर्थ है कि 'हद्दस अविभाज्य है'। जहाँ तक इमाम मुहम्मद के मत पर अल-बिरजंदी के चित्रण का प्रश्न है, मैं कहता हूँ: यह लिंगोत्थान होने, उसके बाद प्रवेश करने और फिर बाहर निकलने पर आधारित है, यह सब पूर्व-वीर्य द्रव (मज़ी) निकलने से पहले होता है; अन्यथा, बड़ी अशुद्धि छोटी अशुद्धि से अलग नहीं पाई जाएगी। हालाँकि यह दुर्लभ है, लेकिन यह संभव है, और चित्रण के लिए संभावना पर्याप्त है। अल-लखनवी (1) की आपत्ति उसके बाद आने वाली बातों से खारिज हो जाती है। जहाँ तक दो शेखों (यानी अबू हनीफ़ा और अबू यूसुफ़) के मत के अनुसार उनके बाद के चित्रण और उसमें उनके इस कथन का प्रश्न है कि वूज़ू को भंग करने वाला कोई कारण नहीं पाया गया—

मैं कहता हूँ: ठहरो! (2) क्योंकि वीर्यपात पूर्व-वीर्य उत्सर्जन के बिना नहीं होता, चाहे वह हस्तमैथुन के दौरान हो या वीर्यपात के दौरान। यही कारण है कि इमाम शम्स अल-अइम्मा अल-हलवानी ने रगड़कर (सूखने पर) वीर्य (मनी) की शुद्धि को समस्याग्रस्त पाया, क्योंकि (3) हर पुरुष को पहले मज़ी आती है फिर मनी। उन्होंने उत्तर दिया कि मज़ी, मनी द्वारा अभिभूत हो जाती है और उसी के भीतर समा जाती है, इस प्रकार यह उसी के नियम का पालन करती है। 'अल-फतह' में शोधकर्ता ने कहा: यह स्पष्ट है, क्योंकि वास्तविकता यह है कि मनी बिना मज़ी के नहीं आती है, और शरीयत ने सूखने पर रगड़कर इसे शुद्ध कर दिया है, तो यह आवश्यक रूप से पालन करता है कि आवश्यकता के कारण इस पर विचार किया गया था। समाप्त।

[उर्दू पाठ]: यह मुकल्लफ के अंगों से नहीं बल्कि उसकी ज़ात से लगा हुआ है। वह तो नजासत-ए-हुकमिया से उसके तलब्बुस (दूषित होने) और आलूदगी का नाम है। यह हद्दस उस वक्त तक दूर न होगा जब तक उसका पूरा बदन पाक न हो जाए, जैसा कि हम "अल-तर्स अल-मुअद्दल" में इसे बयान कर चुके हैं। हज़रात-ए-उलेमा के कौल "हद्दस मुतजज्ज़ी (विभाज्य) नहीं होता" का यही मानी है। (त) बिरजंदी ने इमाम मुहम्मद के कौल पर जो सूरत-ए-मसला पेश की (फा-अकुल) उस पर मैं कहता हूँ यह इस पर मबनी (आधारित) है कि इन्तशार (लिंगोत्थान) हो फिर दाखिल करके निकाल ले इसके बाद सुस्त पड़े। यह सब मज़ी आने से कबल (पहले) हो वरना हद्दस-ए-अकबर हद्दस-ए-असगर से

जुदा न पाया जा सकेगा। यह सूरत अगरचे नादिर (दुर्लभ) है मगर मोह्तमिल (संभावित) है और सूरत-ए-मसला बताने के लिए एहतमाल काफी है। (त) इस पर मौलवी अब्दुल हई फरंगी महली ने जो रद्द किया है वह खुद गलत है। उसकी तरदीद (खंडन) आ रही है लेकिन शेखैन यानी तरफ़ैन (अबू हनीफ़ा और अबू यूसुफ़) के कौल पर तसवीर-ए-मसला और उसमें यह कहना कि नाकिज़-ए-वुज़ू (वुज़ू तोड़ने वाला) न पाया गया। फा-अकुल: (तो इस पर मैं कहता हूँ) क्यों नहीं! मनी निकलना बगैर मज़ी निकलने के नहीं होता, खाह निकालने के वक्त हो या खुद से निकलने के वक्त। इसी लिए इमाम शम्स अल-अइम्मा हलवानी ने रगड़ने से मनी की तहारत होने को मुश्किल समझा इसलिए कि हर नर को पहले मज़ी आती है फिर मनी आती है। और इशकाल का जवाब यह दिया कि मज़ी, मनी से मगलूब (अभिभूत) होकर उसमें मुस्तहलक (विलीन) होती है इसलिए उसी के ताबे करार दे दी जाती है। मोहक्किक अलल इत्तलाक़ ने फतह अल-कदीर में फरमाया: "यह ज़ाहिर है इसलिए कि जब वाकिया यह है कि बगैर मज़ी के मनी नहीं आती और शरअ ने खुश्क होने की हालत में रगड़ने से इसको पाक करार दिया तो लाज़िम है कि...

---

1. फतह अल-कदीर, ततहीर अल-अन्जास, मकतबा नूरिया रज़विया सक्कर, 1/178 पेज 235/761

المکلف لابعضائه وهو تلبسه بنجاسة حکمیة فانه لایزول مالم یطهر بدنه کله کما قدمنا في الطرس المعدل وهذا معنی قولهم ان الحدث لایتجزأ ۔ اما تصویر البرجندی علی قول محمد فاقول: یبتنی علی ان ینتشر فیولج فینزع فیفتر کل هذا قبل ان یمذی والالم یفارق الاکبر الاصغر وهو ان ندر محتمل، ویکفی للتصویر الاحتمال۔ ورد اللکنوی (۱) علیہ مردود بما یأتی اما تصویرہ الاخیر علی قول الشیخین ای الطرفین وقوله فیه لم یوجد ناقض الوضوء۔ فاقول: ببلی (۲) اذ الامناء لایخلو عن امذاء سواء کان عند الاستمناء او الامناء ولذا استشکل الامام شمس الائمة الحلوانی طهارة المنی بالفرک لان (۳) کل فحل یمذی ثم یمنی واجاب بانہ مغلوب بالمنی مستهلک فیه فیجعل تبعاً قال المحقق فی الفتح وهذا ظاهر فانہ اذا کان الواقع انہ لایمنی حتی یمذی وقد طهرہ الشرع بالفرک یابسا یلزم انہ اعتبر ذلک للضرورة ۱ اھـ

مکلف کے اعضاء سے نہیں بلکہ اس کی ذات سے لگا ہوا ہے۔ وہ تو نجاست حکمیہ سے اس کے تلبس و آلودگی کا نام ہے۔ یہ حدث اس وقت تک دُور نہ ہوگا جب تک اس کا پورا بدن پاک نہ ہوجائے، جیسا کہ ہم "الطرس المعدل" میں اسے بیان کرچکے ہیں۔ حضرات علماء کے قول "حدث متجزّی نہیں ہوتا" کا یہی معنی ہے۔ (ت) بر جندی نے امام محمد کے قول پر جو صورت مسئلہ پیش کی (فأقول) اس پر میں کہتا ہوں یہ اس پر مبنی ہے کہ انتشار ہو پھر داخل کرکے نکال لے اس کے بعد سست پڑے۔ یہ سب مذی آنے سے قبل ہو ورنہ حدثِ اکبر حدثِ اصغر سے جُدا نہ پایا جاسکے گا۔ یہ صورت اگرچہ نادر ہے مگر محتمل ہے اور صورتِ مسئلہ بتانے کے لئے احتمال کافی ہے۔ (ت) اس پر مولوی عبدالحئی فرنگی محلی نے جو رد کیا ہے وہ خود غلط ہے۔ اس کی تردید آرہی ہے لیکن شیخین یعنی۔ طرفین۔ کے قول پر تصویر مسئلہ اور اس میں یہ کہنا کہ ناقض وضو نہ پایا

گیا۔ فاقول: (تو اس پر میں کہتا ہوں) کیوں نہیں منی نکلنا بغیر مذی نکلنے کے نہیں ہوتا خواہ نکالنے کے وقت ہو یا خود سے نکلنے کے وقت۔ اسی لئے امام شمس الائمہ حلوانی نے رگڑنے سے منی کی طہارت ہونے کو مشکل سمجھا اس لئے کہ ہر نر کو پہلے مذی آتی ہے پھر منی آتی ہے۔ اور اشکال کا جواب یہ دیا کہ منی منی سے مغلوب اس میں مستہلک ہوتی ہے اس لئے اسی کے تابع قرار دے دی جاتی ہے محقق علی الاطلاق نے فتح القدیر میں فرمایا: "یہ ظاہر ہے اس لئے کہ جب واقعہ یہ ہے کہ بغیر مذی کے منی نہیں آتی اور شرع نے خشک ہونے کی حالت میں رگڑنے سے اس کو پاک قرار دیا تو لازم ہے کہ

---

1 فتح القدیر، تطہیر الانجاس، مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر، ۱/ ۱۷۸ Page 235 of 761

Fatawa Rizwia Volume 4

(Left Column - Arabic Text Translation) As for the rebuttal of Al-Lakhnawi, I say: It is a cry from afar, and the statement of one who has not reached the cluster of grapes* has become firm in his mind, as he pointed out in the issue of intercourse twice and spoke clearly about it before. In 'Umdat al-Ri'aya', it is stated that minor impurity (hadath asghar) is necessary for major impurity (hadath akbar), because everything that nullifies the ritual bath (ghusl) also nullifies the ablution (wudu)1. End. Firstly (1), this is far from understanding the goal and deviates from what is being discussed. The discussion is about the separation of major impurity from minor impurity, i.e., is there any state of major ritual impurity (janaba) without minor impurity? Everyone (2) knows that 'minor' is only said of what necessitates ablution only. It is taken with a condition of negation ('bi-shart la'), so it contradicts 'major' in truth. There is no consideration for its description as 'minor' except for this. If it were without any condition ('la bi-shart shay'), it would be correct to say that major ritual impurity (janaba) and the cessation of menstruation (hayd) and postnatal bleeding (nifas) are minor impurities, and no one would accept this except someone with major ignorance. So, when they contradict each other in truth, it is impossible for one to exist by the existence of the other itself. Rather, it must have its own cause of existence. This is the meaning of his statement: 'No nullifier of ablution was found,' as we pointed out in the margin.

(Right Column - Urdu Text) "It was taken into account due to necessity." End (T). Now regarding the rebuttal by Maulana Lakhnawi, I say: It is a cry from afar, and the words of one who could not reach the bunch of grapes became ingrained in his heart, as indicated twice in the issue of intercourse, and stated clearly before that. In Umdat al-Ri'aya, it is written that minor impurity is necessary for major impurity, because everything that nullifies ghusl also nullifies wudu. End. Firstly: This is far from understanding the objective and separate from the topic of discussion, because the debate is about the separation of major impurity from minor impurity. That is, is any state of janaba found without minor impurity? Everyone knows that minor is only said of that which makes only wudu obligatory. So, it is taken with a condition of negation ('bi-shart la') (meaning, it makes wudu obligatory but not ghusl 12 M-Alif). Thus, in truth, it will be distinct from 'major'. Why shouldn't it be so, when this is the only way to consider its characterization as 'minor'? If it were 'la bi-shart shay' (without any condition), it would be correct to say that janaba and the cessation of menstruation and postnatal bleeding are minor impurities, and only someone with

extreme ignorance could accept that. So, when both are distinct from each other in truth, it is impossible for the existence of minor impurity to be the same as the existence of major impurity. Rather, its existence requires something that specifically necessitates it. So, according to Birjandi's statement...

1 'Umdat al-Ri'aya with Sharh al-Wiqaya, Chapter of Tayammum, Maktaba Rashidiya Delhi 1/95. Page 236 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

(बायां कॉलम - अरबी टेक्स्ट का अनुवाद) जहाँ तक अल-लखनवी के खंडन की बात है, मैं कहता हूँ: यह दूर की पुकार है, और उस व्यक्ति का कथन जो अंगूर के गुच्छे तक नहीं पहुँच सका*, उसके दिमाग में बैठ गया है, जैसा कि उन्होंने संभोग के मुद्दे में दो बार इशारा किया और उससे पहले इसके बारे में स्पष्ट रूप से बात की। 'उमदतुल रिआया' में उल्लेख है कि छोटी अशुद्धि (हदसे असग़र), बड़ी अशुद्धि (हदसे अकबर) के लिए आवश्यक है, क्योंकि हर वह चीज़ जिससे ग़ुस्ल टूटता है, उससे वज़ू भी टूट जाता है1। समाप्त। पहला (१), यह उद्देश्य को समझने से दूर है और उस चर्चा से बाहर है जिसके बारे में बात की जा रही है। चर्चा बड़ी अशुद्धि को छोटी अशुद्धि से अलग करने के बारे में है, यानी, क्या छोटी अशुद्धि के बिना कोई जनाबत (बड़ी अशुद्धि) पाई जाती है? हर कोई (२) जानता है कि 'छोटी' केवल उसी को कहा जाता है जो केवल वज़ू को अनिवार्य करती है। इसे निषेध की शर्त ('बि-शर्त ला') के साथ लिया गया है, इसलिए यह सच में 'बड़ी' के विपरीत है। इसके'छोटी' के रूप में वर्णन के लिए इसके अलावा कोई विचार नहीं है। यदि यह बिना किसी शर्त के('ला बि-शर्त शय') होता, तो यह कहना सही होता कि जनाबत और मासिक धर्म (हैज़) और प्रसवोत्तर रक्तस्राव (निफ़ास) का समाप्त होना छोटी अशुद्धियाँ हैं, और इसे केवल महान अज्ञानता वाला व्यक्ति ही स्वीकार करेगा। इसलिए, जब वे सच में एक-दूसरे के विपरीत हैं, तो यह असंभव है कि एक का अस्तित्व दूसरे के अस्तित्व से ही हो जाए। बल्कि, इसके अस्तित्व के लिए अपना स्वयं का कारण होना चाहिए। यही उनके कथन का अर्थ है: 'वज़ू को तोड़ने वाला कोई कारण नहीं पाया गया,' जैसा कि हमने हाशिए (मार्जिन) में इशारा किया है।

(दायां कॉलम - उर्दू टेक्स्ट) "आवश्यकता के कारण इसे ध्यान में रखा गया।" समाप्त (त)। अब मौलाना लखनवी द्वारा किए गए खंडन के संबंध में, मैं कहता हूँ: यह दूर की पुकार है, और उस व्यक्ति की बात जो अंगूर के गुच्छे तक नहीं पहुँच सका, उनके दिल में बैठ गई, जैसा कि संभोग के मुद्दे में दो बार संकेत दिया गया और उससे पहले स्पष्ट रूप से कहा गया। 'उमदतुल रिआया' में लिखा है कि छोटी अशुद्धि, बड़ी अशुद्धि के लिए आवश्यक है, क्योंकि जो कुछ भी ग़ुस्ल को तोड़ता है वह वज़ू को भी तोड़ देता है। समाप्त। पहला: यह उद्देश्य को समझने से दूर है और उस चर्चा से अलग है जिस बारे में बात हो रही है, क्योंकि बहस बड़ी अशुद्धि को छोटी अशुद्धि से अलग करने के बारे में है। यानी, क्या छोटी अशुद्धि के बिना जनाबत की कोई स्थिति पाई जाती है? हर कोई जानता है कि छोटी केवल उसे कहा जाता है जो केवल वज़ू को अनिवार्य करता है। तो इसे निषेध की शर्त ('बि-

शर्त ला') के साथ लिया गया है (अर्थात, वज़ू को अनिवार्य करे लेकिन ग़ुस्ल को नहीं १२ म अलिफ़)। इस प्रकार, सच में, यह 'बड़ी' से अलग होगा। ऐसा क्यों न हो, जबकि इसके'छोटी' के रूप में विशेषता के विचार का यही एकमात्र तरीका है। यदि यह 'ला बि-शर्त शय' (बिना किसी शर्त के) होता, तो यह कहना सही होता कि जनाबत और मासिक धर्म और प्रसवोत्तर रक्तस्राव का समाप्त होना छोटी अशुद्धियाँ हैं, और इसे केवल अत्यधिक अज्ञानता वाला व्यक्ति ही स्वीकार कर सकता था। तो, जब दोनों सच में एक-दूसरे से अलग हैं, तो यह असंभव है कि छोटी अशुद्धि का अस्तित्व बड़ी अशुद्धि के अस्तित्व के समान ही हो जाए। बल्कि, इसके अस्तित्व के लिए कुछ ऐसा होना आवश्यक है जो विशेष रूप से इसे अनिवार्य करे। तो बिरजन्दी के कथन के अनुसार...

1 'उमदतुल रिआया' मय 'शरह अल-विकाया', तयम्मुम का अध्याय, मकतबा रशीदिया दिल्ली १/९५। पेज 236/761

(بایاں کالم - عربی عبارت) امّا رداللکنوی علیه فأقول : نداء من بعید وقول من لم یصل الی العنقود رسخ بباله کما اشار الیه في مسألة المباشرة مرتین وافصح عنه قبله وفي عمدة الرعایة ان الحدث الاصغر لازم للاکبر فان کل ماینتقض به الغسل ینتقض به الوضوء1 اهـ وهو اولا (۱) بُعد عن فهم المرام وخروج عما فیه الکلام فان البحث في انفکاک الاکبر عن الاصغر ای هل توجد جنابة بلاحدث اصغر وکل احد (۲) یعلم ان الاصغر لایقال الاعلی مایوجب الوضوء فقط فهو مأخوذ بشرط لافیباین الاکبر صدقاً ولاملحظ لوصفه بالاصغریة الاهذا ولوکان لابشرط شیئ لصح ان یقال ان الجنابة وانقطاع الحیض والنفاس حدث اصغر ولایقبله الاذوجهل اکبر فاذا تباینا صدقاً استحال ان یوجد بنفس وجوده بل لابدله من وجود مایوجبه عیناً فهذا معنی قوله لم یوجد ناقض الوضوء کما اشرنا الی ذلك علی الهامش۔

(دایاں کالم - اردو عبارت) ضرورت کی وجہ سے اس کا اعتبار کیا"۔ اھ (ت) اب رہی مولانا لکھنوی کی تردید۔ فاقول: دُور کی پکار ہے اور اس کی بات جو خوشہ تک نہ پہنچ سکی ان کے دل میں یہ راسخ ہوگیا جیسا کہ مسئلہ مباشرت میں دو بار اشارہ کیا اور اس سے پہلے واضح طور سے کہا اور عمدۃ الرعایۃ میں لکھا کہ حدث اصغر، حدث اکبر کے لئے لازم ہے کیونکہ ہر وہ چیز جس سے غسل ٹوٹتا ہے اس سے وضو بھی ٹوٹ جاتا ہے اھ اولا: یہ فہم مقصد سے دُوری اور جس بارے میں کلام ہے اس سے علیحدگی ہے کیونکہ بحث حدث اکبر کے حدث اصغر سے جدا ہونے میں ہے۔ یعنی کیا کوئی جنابت حدث اصغر کے بغیر پائی جاتی ہے؟ اور ہر ایک جانتا ہے کہ اصغر اسی کو کہا جاتا ہے جو صرف وضو واجب کرے۔ تو یہ شرط نفی کے ساتھ (بشرط لا) لیا گیا ہے (یعنی وضو واجب کرے غسل نہ واجب کرے ۱۲ م الف) تو صدق میں اکبر کے مباین ہوگا، کیوں نہ ہو جبکہ اصغریت سے اس کا اتصاف کے لحاظ کی صورت یہی ہے۔ اور یہ اگر لابشرط شیئ

ہوتا تو یہ کہنا صحیح ہوتا کہ جنابت اور انقطاع حیض و نفاس حدث اصغر ہیں اور اسے کوئی جہلِ اکبر والا ہی قبول کر سکتا ہے۔ تو جب دونوں صدق میں ایک دوسرے کے مباین ہیں تو محال ہے کہ اصغر کا وجود اکبر ہی کے وجود سے ہو جائے بلکہ اس کے لئے اس کا وجود ضروری ہے جو معین طور پر اسے لازم کرے تو برجندی کے قول

1 عمدة الرعاية مع شرح الوقاية باب التيمم المكتبة الرشيديہ دہلی ۱ / ۹۵ Page 236 of 761

Fatawa Razawiyya Volume 4

(Left Column - Arabic text) Secondly (1): The necessity is void based on what we just depicted of a person in a state of major ritual impurity (Junub) who performed minor ablution (Wudu), and indeed (2) the man conceded it as he specified the last two cases with objection and did not touch the first case. For if he knew that there is major impurity in it and no minor impurity, then why these objections and the claim of necessity? And if he did not know it, then why did he leave it out of the objection? For indeed the major impurity has returned in it as well, and it nullifies both the major bath (Ghusl) and minor ablution (Wudu).

Thirdly (2): It is not hidden what is in his statement "even if major impurity was not achieved," for the discourse is according to the statement of both parties.

Fourthly (3): What is the place for this conjunction (wasliyah)? For it was not Al-Burjandi's intention that minor impurity is not found without major impurity, but rather that major impurity may exist without minor impurity. So, the refutation against him would be by establishing minor impurity in a case of major impurity depicted by Al-Burjandi for separation, not in a case of absence of major impurity such that it is said "minor impurity was found even if major impurity was not achieved." (End of quote - T)

Caution (4). I say: Perhaps a speaker might say that nothing which necessitates Ghusl can ever necessitate Wudu, let alone the necessity of it, and that is because whoever...

(Right Column - Urdu text) This is the meaning of "no nullifier of Wudu was found," as we indicated in the footnote. (T)

Secondly: The minor (impurity) necessitating the major (impurity) is void in this case which we have just stated above. A person in major impurity performed Wudu, and Maulana Lucknowi also accepted this because he only objected to the last two cases and did not touch the first case. If they knew that in this case there is major impurity but no minor impurity, then why these objections and the claim of necessity? And if they did not know it, then why was the objection omitted on it? In this case too, major impurity has returned, which breaks both Ghusl and Wudu.

Thirdly: The flaw in their statement "even if major impurity was not attained" is not hidden. This is because the discourse is based on the statement of both parties.

Fourthly: What is the occasion for this conjunction (even if)? Al-Burjandi's purpose was not that minor impurity is not found without major impurity, but rather that sometimes major impurity occurs without minor impurity. Therefore, its refutation would be that in the case of major impurity which Al-Burjandi is presenting to prove separation, minor impurity should also be proven, not that minor impurity be proven in the case of absence of major impurity and it be said, "minor impurity was found even though major impurity was not attained." (T)

Caution: I say: Perhaps someone might say that no cause for Ghusl can ever make Wudu obligatory, and it is a far-fetched thing to say that every cause for Ghusl is also a cause for Wudu.

फतावा रजविया जिल्द 4

(बायां कॉलम - अरबी पाठ) दूसरा (1): अनिवार्यता (लुज़ूम) उस चीज़ से अमान्य है जो हमने अभी जुनुब (बड़ी नापाकी की स्थिति में व्यक्ति) के वज़ू करने के बारे में चित्रित की है, और वास्तव में (2) उस व्यक्ति ने इसे स्वीकार कर लिया क्योंकि उसने आपत्ति के साथ अंतिम दो स्थितियों को निर्दिष्ट किया और पहली स्थिति को नहीं छुआ। यदि वह जानता था कि इसमें जनाबत (बड़ी नापाकी) है और हदस (छोटी नापाकी) नहीं है, तो ये आपत्तियां और अनिवार्यता का दावा क्यों? और यदि वह इसे नहीं जानता था, तो उसने इसे आपत्ति से क्यों छोड़ दिया? क्योंकि वास्तव में इसमें भी हदस-ए-अकबर (बड़ी नापाकी) लौट आई है और वह गुसल (स्नान) और वज़ू दोनों को तोड़ देती है।

तीसरा (2): उनके इस कथन में जो है वह छिपा नहीं है कि "भले ही जनाबत प्राप्त न हुई हो", क्योंकि चर्चा दोनों पक्षों के कथन पर है।

चौथा (3): इस संयोजक (वसलिया - अगरचे) का क्या स्थान है? बुर्जंदी का उद्देश्य यह नहीं था कि हदस बिना जनाबत के नहीं पाया जाता, बल्कि यह था कि कभी-कभी जनाबत बिना हदस के होती है। इसलिए, उन पर खंडन जनाबत की उस स्थिति में हदस को सिद्ध करने से होता जिसे बुर्जंदी अलग करने के लिए चित्रित कर रहे हैं, न कि जनाबत की अनुपस्थिति की स्थिति में हदस की सिद्धि हो और यह कहा जाए कि "हदस पाया गया भले ही जनाबत प्राप्त न हुई हो।" (त)

चेतावनी (4)। मैं कहता हूँ: शायद कोई कहने वाला कहे कि गुसल का कोई भी कारण कभी भी वज़ू को अनिवार्य नहीं कर सकता, और यह कहना तो दूर की बात है कि गुसल का हर कारण वज़ू का भी कारण है। और वह इसलिए क्योंकि जो...

(दायां कॉलम - उर्दू पाठ) "वज़ू तोड़ने वाला नहीं पाया गया" का यही अर्थ है। जैसा कि हमने हाशिए (फुटनोट) में इसकी ओर संकेत किया है। (त)

दूसरा: असगर (छोटी नापाकी) का अकबर (बड़ी नापाकी) के लिए अनिवार्य होना उस स्थिति से अमान्य है जो अभी हमने ऊपर वर्णित की। जुनुब ने वज़ू किया और मौलाना लखनवी ने भी इसे स्वीकार किया है क्योंकि उन्होंने केवल अंतिम दो स्थितियों पर आपत्ति की और पहली स्थिति को नहीं छुआ। यदि वे जानते थे कि इस स्थिति में जनाबत है, हदस नहीं, तो ये आपत्तियाँ और अनिवार्यता का दावा क्यों? और यदि वे इसे नहीं जानते थे, तो इस पर आपत्ति क्यों छोड़ दी गई? इसमें भी तो हदस-ए-अकबर लौट आया है और वह गुसल और वज़ू दोनों तोड़ देता है।

तीसरा: उनके कथन "भले ही जनाबत प्राप्त न हुई हो" की खामी छिपी नहीं है। इसलिए क्योंकि चर्चा दोनों पक्षों के कथन पर है।

चौथा: इस वसलिया (अगरचे) का कौन सा अवसर है। बुर्जंदी का उद्देश्य यह नहीं था कि हदस बिना जनाबत के नहीं पाया जाता बल्कि यह था कि कभी-कभी जनाबत बिना हदस के होती है। तो इसका खंडन यों होता कि बुर्जंदी अलगाव (इनफिकाक) सिद्ध करने के लिए जो जनाबत की स्थिति पेश कर रहे हैं उसमें हदस भी सिद्ध किया जाता, न कि जनाबत के न होने की स्थिति में हदस की सिद्धि हो और कहा जाए "हदस पा लिया गया भले ही जनाबत प्राप्त न हुई हो"। (त)

चेतावनी: मैं कहता हूँ: शायद कोई यह कहे कि कोई भी गुसल का कारण कभी वज़ू अनिवार्य नहीं कर सकता और यह तो दूर की बात है कि हर गुसल का कारण वज़ू का भी कारण है।

पृष्ठ 761 का 237

فتاوی رضویہ جلد چہارم

(بایاں کالم - عربی متن) وثانیاً (۱): اللزوم باطل بما صورنا آنفاً من جنب توضأ وقد (۲) سلمه الرجل اذ خص الصورتین الاخیرتین بالاعتراض ولم یمس الصورة الاولی فان کان یعلم ان فیها جنابة ولا حدث فلم هذه الایرادات وادعاء اللزوم وان کان لا یعلمه فلم ترکها من الایراد فقد عاد فیها ایضاً الحدث الاکبر وهو ینقض الغسل والوضوء کلیهما۔ وثالثاً (۲): لا یخفی ما فی قوله وان لم تحصل الجنابة فان الکلام علی قول الطرفین۔ ورابعاً (۳): ای محل لهذه الوصلیة فما کان مقصود البرجندی ان الحدث لا یوجد بلا جنابة بل ان الجنابة قد توجد ولا حدث فکان الرد علیه باثبات الحدث فی صورة جنابة یصورها البرجندی للانفکاک لا فی صورة عدم الجنابة حتی یقال قد وجد الحدث وان لم تحصل جنابة۔ تنبیه (۴) ۔ اقول: لربما یقول قائل لیس لموجب غسل قط ان یوجب الوضوء فضلا عن اللزوم وذلك لان من

(دایاں کالم - اردو متن) لم یوجد ناقض الوضوء (ناقض وضو نہ پایا گیا) کا یہی معنی ہے۔ جیسا کہ اس کی طرف ہم نے حاشیہ میں اشارہ کیا۔ (ت) ثانیاً: اصغر کا لازم اکبر ہونا اس صورت سے باطل ہے جو ابھی ہم نے اوپر بیان کی۔ جنب نے وضو کیا اور مولانا لکھنوی نے بھی اس کو تسلیم کیا ہے اس لئے کہ انہوں نے صرف اخیر دو صورتوں پر اعتراض کیا اور پہلی صورت کو ہاتھ نہ لگایا۔ اگر جانتے تھے کہ اس صورت میں جنابت ہے حدث نہیں تو یہ اعتراضات اور لزوم کا دعوٰی کیوں؟ اور اگر اسے نہیں جانتے تھے تو اس پر اعتراض کیوں ترک کیا اس میں بھی تو حدث اکبر لوٹ آیا ہے اور وہ غسل و وضو دونوں توڑ دیتا ہے۔ ثالثاً: ان کے قول "اگر چہ جنابت نہ حاصل ہوئی" کی خامی پوشیدہ نہیں۔ اس لئے کہ کلام طرفین کے قول پر ہے۔ رابعاً: اس وصلیہ (اگرچہ) کا کون سا موقع ہے۔ برجندی کا مقصد یہ نہ تھا کہ حدث بلا جنابت نہیں پایا جاتا بلکہ یہ تھا کہ کبھی جنابت بلا حدث ہوتی ہے۔ تو اس کا رد یوں ہوتا کہ برجندی انفکاك ثابت کرنے کے لئے جو صورتِ

جنابت پیش کر رہے ہیں اس میں حدث بھی ثابت کیا جاتا، نہ کہ عدم جنابت کی صورت میں حدث کا اثبات ہو اور کہا جائے "حدث پالیا گیا اگرچہ جنابت نہ حاصل ہوئی"۔ (ت) تنبیہ۔ اقول: شاید کوئی یہ کہے کہ کوئی بھی موجبِ غسل کبھی وضو واجب نہیں کر سکتا اور یہ تو دور کی بات ہے کہ ہر موجبِ غسل موجبِ وضو بھی ہے۔

Fatawa Razviya | Volume 4

[Arabic Text Column] The pillars of Wudu (ablution) include Masah (wiping), and that which necessitates Ghusl (ritual bath) does not necessitate Masah. And what does not necessitate a part, does not necessitate the whole.

Its resolution, as I say: The meaning of mandatory Masah in Wudu is the reaching of wetness, even if it is within the process of flowing water, not something separate from it. Otherwise, it (the obligation of Masah) would not be fulfilled by washing the head, by rain reaching it, or by immersion. And this is categorically false. It is stated in Al-Fath, Al-Hilyah, Al-Bahr, and others: "The means and instrument are intended only to deliver it to the location. So if rainwater reaches the required amount of the obligation, it is sufficient." End.

In Al-Muhit and Al-Hindiyyah: "If one washes the head along with the face, it suffices instead of Masah, but it is disliked because it is contrary to what was commanded." End.

Now, there is no doubt that what necessitates Ghusl, by making the flowing of water mandatory, makes reaching the head with wetness mandatory, thus it has made all the parts of Wudu mandatory. In summary, the Masah of the head is taken without the condition of anything specific, so it is fulfilled by washing, and the minor ritual impurity is removed with the condition of nothingness.

[Urdu Explanation Column] The reason is that Masah is also among the pillars of wudu. That which makes ghusl (bath) obligatory does not make masah obligatory. And what does not make a part obligatory will also not make the whole obligatory.

Its resolution is what I am explaining (I say): The masah which is obligatory in wudu means to convey wetness, even if it is during the process of flowing water. It does not mean something which is distinct from flowing water, otherwise, this (obligatory masah) would not be fulfilled by washing the head, by rain reaching it, or by diving into water. And this is categorically false. In Fath al-Qadir, Hilyah, and Bahr, etc., it is stated: "The means and instrument are only intended to deliver it to the place. So, if rainwater reaches the required amount of the obligation, it is sufficient."

In Muhit and Hindiyyah, it is stated: "When one washes the head along with the face, there is no need for masah, but this is disliked (makruh) because it is contrary to what has been commanded." End.

Now, there is no doubt that the obligation of ghusl, by making the flowing of water mandatory, also makes conveying wetness to the head mandatory. Thus, it has made all the components of wudu mandatory. In short, masah of the head is taken without any specific condition; therefore, it will be fulfilled even by washing, and minor impurity (hadath-e-asghar) will be removed without any condition.

[Footnotes] 1. Al-Bahr al-Ra'iq, Fara'id al-Wudu, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/12 2. Fatawa Hindiyyah, Fara'id al-Wudu, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/6

फतावा रज़विया | खंड 4

[अरबी पाठ स्तंभ] वज़ू (आचमन) के स्तंभों में मसह (पोंछना) भी शामिल है, और जो ग़ुस्ल (स्नान) को अनिवार्य करता है वह मसह को अनिवार्य नहीं करता। और जो किसी भाग को अनिवार्य नहीं करता, वह पूरे को भी अनिवार्य नहीं करेगा।

इसका समाधान, जैसा कि मैं कहता हूँ: वज़ू में अनिवार्य मसह का अर्थ है नमी पहुँचाना, भले ही वह पानी बहाने के दौरान ही क्यों न हो, न कि उससे कुछ अलग। अन्यथा, यह (मसह का फ़र्ज़) सिर धोने, बारिश पहुँचने, या डुबकी लगाने से पूरा नहीं होता। और यह निश्चित रूप से ग़लत है। अल-फ़तह, अल-हिलियाह, अल-बहर और अन्य में लिखा है: "साधन और उपकरण केवल उसे स्थान तक पहुँचाने के लिए हैं। इसलिए यदि बारिश का पानी फ़र्ज़ की मात्रा तक पहुँच जाए, तो वह काफ़ी है।" समाप्त।

अल-मुहीत और अल-हिन्दिया में है: "जब कोई चेहरे के साथ सिर भी धो ले, तो मसह की ज़रूरत नहीं है, लेकिन यह मकरूह (नापसंद) है क्योंकि यह उस हुक्म के ख़िलाफ़ है जो दिया गया है।" समाप्त।

अब इसमें कोई संदेह नहीं है कि जो ग़ुस्ल को अनिवार्य करता है, वह पानी बहाना अनिवार्य करके सिर को नमी पहुँचाना अनिवार्य कर देता है, इस प्रकार उसने वज़ू के सभी हिस्सों को अनिवार्य कर दिया। संक्षेप में, सिर का मसह बिना किसी शर्त के लिया गया है, इसलिए वह धोने से भी पूरा हो जाएगा और हदस-ए-असग़र (छोटा अनुष्ठानिक अशुद्धता) बिना किसी शर्त के दूर हो जाता है।

[उर्दू स्पष्टीकरण स्तंभ] कारण यह है कि वज़ू के अरकान (स्तंभों) में मसह भी है। ग़ुस्ल का कारण मसह को वाजिब नहीं करता और जो भाग (जुज़) को वाजिब नहीं करता, वह पूरे (कुल) को भी वाजिब नहीं करेगा।

इसका समाधान वह है जो मैं बयान करता हूँ (मैं कहता हूँ): वज़ू में जो मसह वाजिब है उसका अर्थ है नमी पहुँचाना, चाहे वह पानी बहाने के ही अंतर्गत हो। इसका अर्थ वह नहीं जो पानी बहाने से अलग हो, वरना यह (फ़र्ज़ मसह) सिर धोने, बारिश पहुँचने और गोता लगाने से अदा नहीं होता। और यह निश्चित रूप से गलत है। फ़तह अल-क़दीर, हिलिया और बहर आदि में है: "ज़रिया और आला केवल स्थान तक पहुँचाने के लिए ही अभीष्ट हैं। तो अगर फ़र्ज़ की मात्रा के बराबर बारिश का पानी पहुँच जाए, तो काफी है।"

मुहीत और हिन्दिया में है: "जब चेहरे के साथ सिर भी धो ले, तो मसह की आवश्यकता नहीं है, लेकिन यह मकरूह है क्योंकि यह उस हुक्म के खिलाफ है जो दिया गया है।" समाप्त।

अब इसमें कोई शक नहीं कि ग़ुस्ल का कारण पानी बहाना वाजिब करके सिर को नमी पहुँचाना वाजिब कर देता है, तो उसने वज़ू के सभी हिस्सों को वाजिब कर दिया। संक्षेप में, सिर का मसह बिना किसी शर्त के लिया गया है, इसलिए वह धोने से भी अदा हो जाएगा और हदस-ए-असग़र बिना किसी शर्त के दूर हो जाएगा।

[पाद टिप्पणियाँ] 1. अल-बहर अल-राइक़, फ़राइज़ अल-वज़ू, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/12 2. फतावा हिन्दिया, फ़राइज़ अल-वज़ू, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 1/6

पृष्ठ 238 / 761

[عربی متن] ارکان الوضوء المسح ولایوجبه موجب الغسل ومالایوجب الجزء لایوجب الکل۔ وحله کما اقول: معنی(۱) المسح الواجب فی الوضوء اصابة بلة ولوفی ضمن اسالة لامایبانها والالمأ تأدی بغسل الرأس واصابة المطر والانغماس وهو باطل قطعاً قال فی الفتح والحلیة والبحر و غیرها الألة لم تقصد الالایصال الی المحل فاذا اصابہ من المطر قدر الفرض اجزاء ۱ اھ فی المحیط والهندیة اذا غسل الرأس مع الوجه اجزأه عن المسح ولکن(۲) یکره لانه خلاف ماامر به ۲ اھ ولاشك ان موجب الغسل یوجب اصابة الرأس ببلة بالاسالة فقد اوجب جمیع اجزاء الوضوء وبالجملة مسح الرأس مأخوذ لابشرط شیئ فیتأدی بالغسل والحدث الاصغر

[اردو ترجمہ و تشریح] سبب یہ ہے کہ ارکانِ وضو میں مسح بھی ہے۔ موجب غسل مسح واجب نہیں کرتا اور جو جزء واجب نہ کرے وہ کُل بھی واجب نہ کرے گا۔ اس کا حل وہ ہے جو میں بیان کرتا ہوں (اقول) وضو میں جو مسح واجب ہے اس کا معنی ہے تری پہنچانا اگرچہ پانی بہانے ہی کے ضمن میں ہو۔ اس کا معنی وہ نہیں جو پانی بہانے کے مبائن ہو ورنہ یہ (فرض مسح) سر کو دھونے، بارش پہنچنے، اور غوطہ کھانے سے ادا نہ ہوتا۔ اور یہ قطعاً باطل ہے۔ فتح القدیر، حلیہ اور بحر و غیرہا میں ہے: "ذریعہ و آلہ صرف محل تک پہنچانے کے لئے مقصود ہے۔ تو اگر مقدار فرض پر بارش کا پانی پہنچ جائے کافی ہے"۔ اھ محیط اور ہندیہ میں ہے: "جب چہرے کے ساتھ سر بھی دھو لے تو مسح کی ضرورت نہیں لیکن یہ مکروہ ہے اس لئے کہ جو حکم ہوا ہے اس کے برخلاف ہے"۔ اھ اب اس میں شک نہیں کہ موجبِ غسل پانی بہانا واجب کر کے سر کو تری پہنچانا واجب کر دیتا ہے تو اس نے تمام ہی اجزائے وضو واجب کر دیے۔ بالجملہ مسح سر بلا شرطِ شئ لیا گیا ہے تو وہ دھونے سے بھی ادا ہو جائے گا اور حدثِ اصغر بشرطِ لاشئ

[حواشی] ۱ البحر الرائق فرائض الوضوء ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۲ ۲ فتاوی ہندیہ فرائض الوضوء نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۶

صفحہ 238 از 761

Header: Fatawa Razawiyya, Volume 4

(Arabic text excerpt): ...taken on condition of nothingness, hence major ritual impurity is not necessitated. Thus should be the investigation, and Allah Almighty is the grantor of success.

(Benefit 2): There is no doubt that the apparent meaning of Sadr al-Shari'ah's discourse is that a person in a state of Janaba (major ritual impurity) who also has a minor ritual impurity (hadath), if he finds water sufficient only for ablution (Wudu), then Wudu is obligatory for him. This is the reliable path taken by Fadil Qara Baghi. Now, the first scenario in which we ruled that Wudu is not mandatory, contrary to Imam al-Muttalibi (ash-Shafi'i), may Allah be pleased with him, undoubtedly refers to a state of Janaba with which no other impurity is present, as we have illustrated.

Now the meaning of the discourse will be that for someone who has a single impurity, whether minor or major, and finds water insufficient for purification, then according to us, he shall not use it, unlike Imam ash-Shafi'i (may Allah Almighty have mercy on him). This view of his is in the statement: "If a person in Janaba has water sufficient for Wudu but not for Ghusl, Wudu is not mandatory for him according to us, contrary to ash-Shafi'i," and also: "When a person with minor impurity has water sufficient to wash some organs, the disagreement is also established."

(Meaning, when a person in Janaba has enough water for Wudu but not for Ghusl, he should perform dry ablution (Tayammum), and for us, unlike Imam Shafi'i, Wudu is not mandatory. And when a person with minor impurity has enough water for only some limbs, the disagreement stands).

However, when both types of impurities combine and the water suffices for only one, it is necessary to use it for that. If it suffices for Wudu, then Wudu is mandatory. This point is in Sadr al-Shari'ah's statement: "But when..."

Undoubtedly, contradiction is removed through this explanation in the clearest way.

Footer: Page 239 of 761

शीर्षलेख: फतावा रज़विया, खंड 4

(अरबी पाठ का अंश): ...शून्य की शर्त पर लिया गया है, इसलिए बड़ी अशुद्धि अनिवार्य नहीं है। इसी प्रकार अन्वेषण होना चाहिए और अल्लाह तआला ही सफलता का स्वामी है।

(लाभ 2): इसमें कोई संदेह नहीं है कि सद्र अल-शरिया के प्रवचन का स्पष्ट अर्थ यह है कि एक व्यक्ति जो जनाबत (बड़ी अशुद्धि) की स्थिति में है और उसे छोटी अशुद्धि भी है, यदि उसे केवल वज़ू के लिए पर्याप्त पानी मिलता है, तो वज़ू उसके लिए अनिवार्य है। यही फाज़िल क़रा बाग़ी द्वारा अपनाया गया विश्वसनीय मार्ग है। निःसंदेह, पहली स्थिति में उद्देश्य—जहां हमने शासन दिया कि वज़ू अनिवार्य नहीं है, इमाम अल-मुत्तलिबी (अश-शाफ़ई), अल्लाह उनसे प्रसन्न हों, के विपरीत—जनाबत की उस स्थिति को संदर्भित करता है जिसके साथ कोई अन्य अशुद्धि मौजूद नहीं है, जैसा कि हमने चित्रित किया है।

अब प्रवचन का अर्थ यह होगा कि जिसके पास एक ही अशुद्धि है, चाहे वह छोटी हो या बड़ी, और उसे शुद्धि के लिए अपर्याप्त पानी मिलता है, तो हमारे अनुसार, वह इसका उपयोग नहीं करेगा, इमाम अश-शाफ़ई (अल्लाह तआला उन पर दया करे) के विपरीत। उनका यह विचार इस कथन में है: "यदि जनाबत वाले व्यक्ति के पास वज़ू के लिए पर्याप्त पानी है लेकिन ग़ुस्ल के लिए नहीं, तो हमारे अनुसार वज़ू उसके लिए अनिवार्य नहीं है, अश-शाफ़ई के विपरीत," और यह भी: "जब छोटी अशुद्धि वाले व्यक्ति के पास कुछ अंगों को धोने के लिए पर्याप्त पानी होता है, तो असहमति भी स्थापित होती है।"

(अर्थात, जब जनाबत वाले व्यक्ति के पास वज़ू के लिए पर्याप्त पानी है लेकिन ग़ुस्ल के लिए नहीं, तो उसे तयम्मुम करना चाहिए, और हमारे लिए, इमाम शाफ़ई के विपरीत, वज़ू अनिवार्य नहीं है। और जब छोटी अशुद्धि वाले व्यक्ति के पास केवल कुछ अंगों के लिए पर्याप्त पानी होता है, तो असहमति बनी रहती है)।

हालाँकि, जब दोनों प्रकार की अशुद्धियाँ जुड़ जाती हैं और पानी केवल एक के लिए पर्याप्त होता है, तो इसके लिए इसका उपयोग करना आवश्यक होता है। यदि यह वज़ू के लिए पर्याप्त है, तो वज़ू अनिवार्य है। यह बिंदु सद्र अल-शरिया के इस कथन में है: "लेकिन जब..."

निःसंदेह, इस स्पष्टीकरण के माध्यम से विरोधाभास सबसे स्पष्ट तरीके से दूर हो जाता है।

पादलेख: पृष्ठ 239/761

ہیڈر: فتاویٰ رضویہ، جلد چہارم

مأخوذ بشرط لاشیئ فلایلزم الحدث الاکبر۔ لیا گیا ہے تو وہ لازم حدث اکبر نہیں۔ اسی طرح تحقیق ہونی چاہئے اور خدا ہی مالک توفیق ہے۔

(ت) افادہ ۲: اس میں شک نہیں کہ صدر الشریعہ کا ظاہر کلام یہی ہے کہ وہ جنب جس کے ساتھ کوئی حدث بھی ہے اس پر وضو کرنا واجب ہے جبکہ اسے اتنا ہی پانی ملے جو صرف وضو کے لئے کفایت کر سکے یہی وہ مسلک اعتماد ہے جو فاضل قرہ باغی نے اختیار کیا۔ الافادۃ: لاشک ان ظاھر الکلام وجوب الوضوء علی جنب معه حدث اذا وجد مایکفی للوضوء فقط وھذا ھو مسلك التعویل الذی سلکه القرۃ باغی۔

اب پہلی صورت جس میں ہمارے نزدیک امام شافعی مطلبی رضی اللہ تعالٰی عنہ کے برخلاف عدم وجوب وضو کا حکم کیا گیا ہے بلاشبہ اس سے مراد وہ صورت جنابت ہو گی جس کے ساتھ کوئی حدث نہ ہو جیسا کہ ہم نے اس کی شکل پیش کی ہے۔ ولاشك ان المراد حینئذ بالصورۃ الاولی التی حکم فیھا بعدم وجوب الوضوء عندنا خلافاً للأمام المطلبی رضی اللہ تعالٰی عنه جنابة لاحدث معھا کماصورناہ۔

اب معنی کلام یہ ہو جائے گا کہ جسے ایک ہی حدث ہے اصغر یا اکبر اس نے اتنا پانی پایا جو اس کی طہارت کے لئے ناکافی ہے تو ہمارے نزدیک وہ اس پانی کو استعمال نہ کرے گا، بخلاف امام شافعی رحمہ اللہ تعالٰی کے یہ بات ان کی اس عبارت میں ہے: "اذاکان للجنب ماء یکفی للوضوء لاللغسل ولایجب علیه التوضی عندنا خلافاً للشافعی" اور اس عبارت میں بھی: "واذا کان للمحدث ماء یکفی لغسل بعض اعضائه فالخلاف ثابت ایضاً" (یعنی جب جنب کے پاس اتنا پانی ہو جو وضو کا کام

دے سکے غسل کا نہیں تو وہ تیمم کرے اور اس پر ہمارے نزدیک بخلاف امام شافعی کے وضو کرنا واجب نہیں اور جب محدث کے پاس اتنا پانی ہو جس سے بعض ہی اعضاء کو دھو سکے اس صورت میں بھی خلاف ثابت ہے)۔

لیکن جب دونوں حدث جمع ہو جائیں اور پانی ایک ہی کے لئے کفایت کرتا ہو تو اس میں اسے صرف کرنا ضروری ہے۔ اگر وضو کے لئے کفایت کرتا ہو تو اس پر وضو واجب ہے یہ بات صدر الشریعہ کی اس عبارت میں ہے: "اما اذاکان مع الخ" ولاشك ان التناقض یندفع بهذا الوجه بأبین وجہ۔

فوٹر: صفحہ 239 از 761

Fatawa Razawiyya - Volume 4

[Left Column - Arabic Content Transliterated into English Meaning] And regarding what Al-Lakhnawi quoted as a rebuttal to him: How did Imam Shafi’i make ablution (Wudu) obligatory without an occurrence of minor ritual impurity (Hadath)? I say (1): He, may Allah Almighty be pleased with him, makes it obligatory to use water to the extent one is capable of, unconditionally, whether one is in a state of minor impurity (Muhdith) or major impurity (Junub), and whether minor impurity is present with it or not. Thus, if a person in major impurity is capable of performing ablution, it becomes obligatory even if they are not in a state of minor impurity. Benefit: As for the interpretation followed in 'Ghayat al-Hawashi' and adopted by Al-Lakhnawi: I say first (2): There is no doubt that this is the most far-fetched interpretation. If omissions without evidence were allowed, many falsehoods would become valid. Secondly (3): The minor impurity concurrent with dry ablution (Tayammum) invalidates it. Thus, nothing remains of it, neither for minor impurity nor for major ritual impurity. So how can it be said: "The Tayammum is for major ritual impurity"? The assumption of a hidden possessive noun (Mudhaf) did not help. Unless Tayammum is intended to mean the state of being one who has performed Tayammum (Mutayammim), and one is not a Mutayammim until the Tayammum is completed. "Concurrence" then refers to the connection of two consecutive time periods.

[Right Column - Urdu Commentary] Major ritual impurity (Janabah) is an event that necessitates ablution (when there is also a minor impurity present that makes ablution obligatory, then ablution is required). There is no doubt that through this explanation, the contradiction is very clearly removed. (T) On this, Maulana Lakhnawi cited a rebuttal that "How did Imam Shafi’i make ablution obligatory without minor impurity?" So I say (Faqul): Imam Shafi’i (may Allah Almighty be pleased with him) unconditionally makes it obligatory to use as much water as one is capable of using. Whether it is a person in minor impurity, or a person in major impurity with whom minor impurity is present, or one with whom it is not. So when a person in major impurity has the capability for ablution, it will be obligatory for them even if they are not in a state of minor impurity. (T) Benefit 3: The interpretation adopted in 'Ghayat al-Hawashi' which Maulana Lakhnawi followed is now being discussed. I say first: There is no doubt that this is the most far-fetched interpretation. If things like omissions without any evidence were allowed, many falsehoods would become correct. Secondly: The minor impurity concurrent with Tayammum will invalidate it; now it will remain neither of minor impurity nor of major impurity. Then how was it

said: "The Tayammum is for major impurity"? Thus, assuming a hidden possessive was of no use. Except that by Tayammum, it is meant to be a 'Mutayammim' (one who has performed Tayammum). And he will become a Mutayammim at the same time when Tayammum is completed. And by 'concurrence' is meant the consecutive sequence of two time periods.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 4

[बायाँ कॉलम - अरबी विषय-वस्तु] और मौलाना लखनवी ने उन पर जो रद्द (खंडन) नक़ल किया कि "इमाम शाफ़ई ने बिना ह़दथ (लघु अशुद्धि) के वज़ू कैसे वाजिब कर दिया?" मैं कहता हूँ (1): इमाम शाफ़ई रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु मुतलक़न (पूर्ण रूप से) केवल यह वाजिब करते हैं कि जिस क़द्र पानी इस्तेमाल करने की.क़ुद्दरत हो उतना इस्तेमाल करे। चाहे वह मुह़दथ (लघु अशुद्ध) हो या ऐसा जुनूब (दीर्घ अशुद्ध) जिसके साथ ह़दथ हो या ऐसा जिसके साथ ह़दथ न हो। तो जब जनाबत (दीर्घ अशुद्धि) वाले को वज़ू की.क़ुद्दरत हो उस पर वज़ू वाजिब होगा अगरचे वह मुह़दथ न हो। (त) इफ़ादा 3: वह तावील (व्याख्या) जो 'ग़ायत अल-हवाशी' में इख़्तियार की गई और मौलाना लखनवी ने जिसकी पैरवी की, अब उस पर कलाम किया जाता है। मैं कहता हूँ, अव़्वलन (2): इसमें शक नहीं कि यह सब से बईद (दूर की) तावील है। अगर बिना किसी दलील के ह़ज़फ़ (शब्द लोप) जैसी चीज़ रवा (उचित) हो तो बहुत सी अ़बातील (असत्य बातें) दुरुस्त हो जाएँगी। थानियन (3): वह ह़दथ जो तयम्मुम के मुक़ारिन (सहवर्ती) हो उसे बातिल कर देगा, अब यह न ह़दथ का रह जाएगा न जनाबत का। फिर यह कैसे कहा गया: "फ़त्तयम्मुमु लिल-जनाबति" (तो तयम्मुम जनाबत के लिए है), तो मुज़ाफ़ मुक़द्दर मानना काम न आया। मगर यह कि तयम्मुम से मुराद लिया जाए उसका मुतयम्मिम होना। और वह मुतयम्मिम उसी वक़्त होगा जब तयम्मुम पूरा हो जाए। और मईयत (सहवर्तिता) से मुराद हो एक के बाद दीगरे दो वक़्तों का मिला होना।

[दायाँ कॉलम - उर्दू टीका] जनाबत एक ऐसा ह़दथ है जो वज़ू को वाजिब करता है (जब जनाबत के साथ कोई ऐसा ह़दथ भी हो जो वज़ू वाजिब करता है तो उस पर वज़ू वाजिब है)। इसमें शक नहीं कि इस तौजीह (स्पष्टीकरण) से भी तनाक़ुज़ (विरोधाभास) बहुत रोशन व वाज़ेह तौर पर दूर हो जाता है। (त) इस पर मौलाना लखनवी ने जो रद्द नक़ल किया कि "इमाम शाफ़ई ने बिना ह़दथ के वज़ू कैसे वाजिब कर दिया"। तो इस पर मैं कहता हूँ (फ़क़ुल) इमाम शाफ़ई रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु मुतलक़न सिर्फ़ यह वाजिब करते हैं कि जिस क़द्र पानी इस्तेमाल करने की.क़ुद्दरत हो उतना इस्तेमाल करे। ख़्वाह मुह़दथ हो या ऐसा जुनूब जिसके साथ ह़दथ हो या ऐसा जिसके साथ ह़दथ न हो। तो जब जनाबत वाले को वज़ू की.क़ुद्दरत हो उस पर वज़ू वाजिब होगा अगरचे वह मुह़दथ न हो। (त) इफ़ादा 3: वह तावील जो ग़ायत अल-हवाशी में इख़्तियार की और मौलाना लखनवी ने जिसकी पैरवी की अब उस पर कलाम किया जाता है। फ़क़ुल। अव़्वलन: इसमें शक नहीं कि यह सब से बईद तावील है। अगर बग़ैर किसी दलील के ह़ज़फ़ जैसी चीज़ रवा हो तो बहुत सी अ़बातील दुरुस्त हो

जाएँगी। थानियन: वह ह़दथ जो तयम्मुम के मुक़ारिन हो उसे बातिल कर देगा अब यह न ह़दث का रह जाएगा न जनाबत का फिर यह कैसे कहा: "फ़त्तयम्मुमु लिल-जनाबति" (तो तयम्मुम जनाबत का है) तो मुज़ाफ़ मुक़द्दर मानना काम न आया। मगर यह कि तयम्मुम से मुराद लिया जाए उसका मुतयम्मिम होना। और वह तयम्मुम उसी वक़्त होगा जब तयम्मुम पूरा हो जाए। और मईयत से मुराद हो यके बाद दीगरे दो वक़्तों का।

فتاوی رضویہ جلد چہارم

[بایاں کالم - عربی متن] ومأنقله اللكنوی من الرد علیه ان كیف اوجب الشافعی الوضوء بلاحدث فاقول: هو (۱) رضی الله تعالٰی عنه یوجب استعمال القدر المقدور مطلقا سواء كان محدثاً او جنباً معه حدث اولا فأذاقدر الجنب علی الوضوء وجب وان لم یكن محدثاً۔ الافادة: اما تأویل سلكه فی غایة الحواشی وتبعه اللكنوی۔ فاقول اولا (۲): لاشك انه ابعد تأویل ولو ساغ مثل الحذف بلادلیل لاستقام كثیر من الاباطیل* وثانیاً: الحدث (۳) المقارن للتیمم یبطله فلا یبقی له ولااللجنابة فكیف قال فالتیمم للجنابة فلم ینفعه تقدیر المضاف۔ الّا ان یراد بالتیمم كونه متیمماً ولایكون متیمماً الّا اذا تم التیمم و یراد بالمعیة اتصال الزمانین المتعاقبین

[دایاں کالم - اردو حاشیہ] الجنابة حدث یوجب الوضوء یجب علیه الوضوء (جب جنابت کے ساتھ کوئی ایسا حدث بھی ہو جو وضو واجب کرتا ہے تو اس پر وضو واجب ہے) اس میں شک نہیں کہ اس توجیہ سے بھی تناقض بہت روشن وواضح طور پر دور ہو جاتا ہے۔ (ت) اس پر مولانا لکھنوی نے جو رد نقل کیا کہ "امام شافعی نے بغیر حدث کے وضو کیسے واجب کر دیا"۔ تو اس پر میں کہتا ہوں (فاقول) امام شافعی رضی اللہ تعالیٰ عنہ مطلقاً صرف یہ واجب کرتے ہیں کہ جس قدر پانی استعمال کرنے کی قدرت ہو اتنا استعمال کرے۔ خواہ محدث ہو یا ایسا جنب جس کے ساتھ حدث ہو یا ایسا جس کے ساتھ حدث نہ ہو۔ تو جب جنابت والے کو وضو کی قدرت ہو اس پر وضو واجب ہوگا اگرچہ وہ محدث نہ ہو۔ (ت) افادہ ۳: وہ تاویل جو غایۃ الحواشی میں اختیار کی اور مولانا لکھنوی نے جس کی پیروی کی اب اس پر کلام کیا جاتا ہے۔ فاقول۔ اوّلا: اس میں شک نہیں کہ یہ سب سے بعید تاویل ہے۔ اگر بغیر کسی دلیل کے حذف جیسی چیز روا ہو تو بہت سی اباطیل درست ہو جائیں گی۔ ثانیاً: وہ حدث جو تیمم کے مقارن ہو اسے باطل کر دے گا اب یہ نہ حدث کا رہ جائے گا نہ

جنابت کا پھر یہ کیسے کہا: "فالتیمم للجنابة" (تو تیمم جنابت کا ہے) تو مضاف مقدر ماننا کام نہ آیا۔ مگر یہ کہ تیمم سے مراد لیا جائے اس کا متیمم ہونا۔ اور وہ متیمم اسی وقت ہو گا جب تیمم پورا ہو جائے۔ اور معیت سے مراد ہو یکے بعد دیگرے دو وقتوں کا۔

Fatawa Razawiyya - Volume 4

[Right Column - Urdu Translation of the Arabic Text] ...to be joined with one another. Now the meaning will be: "But when a state of impurity (hadath) occurs immediately following the completion of dry ablution (tayammum)." From this, the occurrence of the impurity afterwards will be inferred. After all these elaborations, the final outcome will be the same as what the majority (of scholars) adopted: that "with" (ma'a) means "after" (ba'da). So, how can this compare to what they have chosen? It is surprising that the author of 'Sa'aya' refuted the path of the majority even though it was very close to the wording, yet he followed this path despite all these complexities, while these are all very far-fetched.

Thirdly: Even after all these complexities, an objection will arise: why the restriction of the impurity being immediately connected to the completion of the dry ablution? If the impurity occurs much later, the ruling is still certainly and surely the same.

Fourthly: A specific objection against Maulana Lakhnawi would be that he did not stop there, but added further complexity (literally: 'added a note to the lute and a mule to the chessboard'), or rather, he also considered it permissible that "with" (ma'a) retains its original meaning by assuming the omission of a word (hadhf-e-mudhaf). In this way, he completely demolished the necessity of "afterness" (ba'diyyah), which had provided some logical grounding. Unless a third complexity is added: that by "conjunction" (ma'iyyah) is meant immediate afterness, and by "afterness" (ba'diyyah) is meant delayed afterness. On the first premise, the meaning would be: "But when some impurity attaches to the dry ablution as soon as it is complete," and on the second premise, the meaning would be...

[Left Column - Arabic Text] ...without separation, i.e., when an occurrence (hadath) follows the completion of Tayammum. Thus, it is inferred that the hadath occurred after it. After all these elaborations, the matter reverts to what the majority followed: that 'ma'a' (with) means 'ba'da' (after). So where is this compared to what they chose? It is strange (1) that the author of Al-Sa'aya refuted the path followed by the majority despite its being close and evident, yet followed these elaborations despite their being far-fetched.

Thirdly (2): After all these efforts, an objection arises against him: why limit it to the hadath being connected to the completion of Tayammum? For if it occurs after it, even after a long time, the ruling is definitely such.

Fourthly (3): Particularly for Al-Lakhnawi, he did not stop there but added a note to the lute and a mule to chess. He allowed that 'ma'a' could retain its meaning by omitting a possessive (mudhaf). Thus, he completely destroyed the necessity of 'ba'diyyah' (after-ness) which offered some refuge. Unless a third elaboration is added: that 'ma'iyyah' (with-ness) refers to connected after-ness, and 'ba'diyyah' refers to separated after-ness. Thus, according to the first case, the meaning would be: 'but when an occurrence follows the Tayammum immediately upon its completion,' and according to the second case, it would mean...

फतावा रज़विया - खंड 4

[दायां कॉलम - अरबी पाठ का उर्दू अनुवाद] ...एक दूसरे से मिला हुआ होना। अब अर्थ यह होगा: "लेकिन जब हदथ (अशुद्धि) तैयमुम मुकम्मल होने के मुत्तसिलन (तुरंत) बाद हो।" इससे हदथ का मुतअखिर (बाद में) होना मुस्तफाद (निकलना) होगा। इतने सारे तकल्लुफ़ात (जटिल व्याख्याओं) के बाद मआल-ए-कार (परिणाम) वही होगा जो जुमहूर (बहुमत विद्वानों) ने अपनाया है कि "मअ" (साथ) का अर्थ "बाद" है। तो कहाँ यह और कहाँ वह जो उन्होंने इख्तियार किया? ताज्जुब है कि मुअल्लिफ-ए-सआया ने मसलक-ए-जुमहूर की तरदीद (खंडन) की जबकि वह इबारत (पाठ) से बहुत करीब था, और इस मार्ग का इतने सारे तकल्लुफ़ात के बावजूद अनुसरण किया जबकि ये सब बहुत बईद (दूर की कौड़ी) हैं।

तीसरा: इन सारे तकल्लुफ़ात के बाद भी इस पर यह ऐतराज़ (आपत्ति) वारिद होगा कि तकमील-ए-तैयमुम से हदथ के मुत्तसिल (जुड़े) होने की कैद (शर्त) क्यों? अगर हदथ इससे बहुत ज़्यादा बाद में हो तब भी तो हुक्म कतअन (निश्चित रूप से) और यकीनन यही है।

चौथा: मौलाना लखनवी पर खास तौर से यह ऐतराज़ भी होगा कि उन्होंने इसी पर इक्तिफा (संतोष) न किया बल्कि तंबूर में एक नग्मा और शतरंज में एक बग़ला और बढ़ाया, यानी हज़फ़-ए-मुज़ाफ़ (एक शब्द के विलोप) के साथ यह भी जायज़ रखा कि "मअ" अपने मूल अर्थ में ही रहे। इस तरह उन्होंने इस बअदियत (बाद में होने) की आवश्यकता को बिल्कुल ही ढा दिया जिसमें कुछ सहारा (तर्क) था। मगर यह कि इसके लिए एक तीसरा तकल्लुफ भी बढ़ा लिया जाए कि मइय्यत (साहचर्य) से मुराद बअदियत-ए-मुत्तसिला (तुरंत बाद), या बअदियत से मुराद बअदियत-ए-मुनफसिला (कुछ समय बाद) है। पहली स्थिति के अनुसार अर्थ यह होगा: "लेकिन जब तैयमुम को कोई हदथ इसके पूर्ण होते ही पेश आए", और दूसरी स्थिति के अनुसार यह अर्थ...

[बायां कॉलम - अरबी पाठ] ...बिना किसी अंतराल के, यानी जब तैयमुम पूरा होने के बाद ही कोई घटना (हदथ) घटती है। इस प्रकार, यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि हदथ इसके बाद हुआ। इन सभी जटिलताओं के बाद, मामला उसी ओर लौटता है जिसे बहुमत (जुमहूर) ने अपनाया है: कि 'मअ' (साथ) का अर्थ 'बाद' (बाद में) है। तो यह उनके द्वारा चुने गए मार्ग की तुलना में कहाँ ठहरता है? यह आश्चर्यजनक है (1) कि 'सआया' के लेखक ने बहुमत के मार्ग का खंडन किया, जबकि वह इबारत

(पाठ) के बहुत करीब था, और इन जटिल व्याख्याओं का अनुसरण किया जबकि वे बहुत दूर की कौड़ी हैं।

तीसरी बात (2): इन सभी प्रयासों के बाद, उन पर यह आपत्ति आती है कि: तैयमुम पूरा होने के साथ ही हदथ के जुड़ने की शर्त क्यों? क्योंकि यदि वह इसके काफी समय बाद भी हो, तब भी नियम निश्चित रूप से यही है।

चौथी बात (3): विशेष रूप से लखनवी के लिए, उन्होंने यहीं बस नहीं किया बल्कि अनावश्यक जटिलता बढ़ा दी। उन्होंने यह भी जायज़ ठहराया कि 'मुज़ाफ़' (संबध कारक) के विलोप के साथ 'मअ' अपने मूल अर्थ में ही रहे। इस प्रकार उन्होंने 'बअदियत' (बाद में होने) की आवश्यकता को पूरी तरह से ढहा दिया जिसमें कुछ सहारा था। जब तक कि इसमें एक तीसरी जटिल व्याख्या न जोड़ी जाए कि 'मइय्यत' (साहचर्य) से तात्पर्य 'बअदियत-ए-मुत्तसिला' (जुड़ी हुई उत्तरवर्तीता) है, और 'बअदियत' से तात्पर्य 'बअदियत-ए-मुनफ़सिला' (अलग हुई उत्तरवर्तीता) है। तो पहली स्थिति के अनुसार अर्थ होगा: 'लेकिन जब तैयमुम के पूरा होते ही उसे कोई हदथ पेश आए', और दूसरी स्थिति के अनुसार यह अर्थ...

पृष्ठ 761 का 241

[دایاں کالم] ایک دوسرے سے ملا ہوا ہونا۔ اب معنی یہ ہوگا: "لیکن جب حدث تیمم مکمل ہونے کے متصلاً بعد ہو" اس سے حدث کا متأخر ہونا مستفاد ہوگا اتنے سارے تکلفات کے بعد مآل کار وہی ہوگا جو جمہور نے اختیار کیا کہ "مع" بمعنی بعد ہے تو کہاں یہ اور کہاں وہ جو انہوں نے اختیار کیا تعجب ہے کہ مؤلف سعایہ نے مسلکِ جمہور کی تردید کی جبکہ وہ عبارت سے بہت قریب تھا اور اس مسلک کو اتنے سارے تکلفات کے باوجود اتباع کیا جبکہ یہ سب بہت بعید ہیں۔ ثالثاً: ان سارے تکلفات کے بعد بھی اس پر یہ اعتراض وارد ہوگا کہ تکمیل تیمم سے حدث کے متصل ہونے کی قید کیوں؟ اگر حدث اس سے بہت زیادہ بعد میں ہو جب بھی تو حکم قطعاً اور یقینی یہی ہے۔ رابعاً: مولانا لکھنوی پر خاص طور سے یہ اعتراض بھی ہو گا کہ انہوں نے اسی پر اکتفاء نہ کی بلکہ طنبور میں ایک نغمہ اور شطرنج میں ایک بغلہ اور بڑھایا یا کہ حذف مضاف کے ساتھ یہ بھی جائز رکھا کہ "مع" اپنے معنی ہی میں رہے۔ اس طرح انہوں نے اس بعدیت کے لزوم کو بالکل ہی ڈھا دیا جس میں کچھ جائے پناہ تھی۔ مگر یہ کہ اس کے لئے ایک تیسرا تکلف بھی بڑھا لیا جائے کہ معیت سے مراد بعدیت متصلہ، یا بعدیت سے مراد بعدیت منفصلہ۔ بر تقدیر اول معنی یہ ہوگا: لیکن جب تیمم کو کوئی حدث اس کے تام ہوتے ہی لاحق ہو اور بر تقدیر ثانی یہ معنی

[بایاں کالم - عربی متن] بلا فصل ای اما اذا ولی حدث تمام التیمم فیستفاد منه تأخر الحدث منه فبعد هذه التکلفات یؤول الامر الی ماسلك الجمهور ان مع بمعنی بعد فاین هذا مما اختاروه والعجب (۱) ان مؤلف السعایة رد علیهم ماسلکوه مع ماله من قرب عتید* وتبع هذا علی تلك التجسمات مع مالها من بعد بعید۔ وثالثاً (۲) : یرد علیه بعد تلك التمحلات انه لم قید باتصال الحدث بتمام التیمم فانه ان تأخر عنه ولو طویلا کان الحکم هکذا قطعا۔ ورابعاً: (۳) اللکنوي خاصة انه لم یقتصر علیه بل زاد في الطنبور نغمة

وفى الشطرنج بغلة فجوز على حذف المضاف ان يكون مع بمعناه فهدم لزوم البعدية التى فيها كان المنجار أسا. الا ان يضاف له تكلف ثالث ان المراد بالمعية البعدية المتصلة وبالبعدية البعدية المنفصلة فيكون المعنى على الاول اما اذا لحق التيمم حدث من فور تمامه وعلى الثانى اما اذا لحقه حدث

Fatawa Razawiya, Volume 4

...will be: but when any such event (Hadath) happens to him which is somewhat later in time than it - it is also clear to the observer that both constraints are wasted. (T)

Note 4: The summary of the unwarranted rebuttal that the learned scholar from Lucknow made against the group is that the state of being 'after major impurity' (Janabat) is also achieved when an impurity arises after the major impurity but before performing Tayammum (dry ablution). Thus, the problem remains as it was. The intention is that by assuming an implicit word (Muzaf Muqaddar), which he and 'Ghayat al-Hawashi' did, the majority of scholars made a mistake in omitting it, because being after major impurity is of no use until it is after Tayammum.

I say: Rather, it is he who made a mistake and also committed the act of assuming an extra implied word in the speech of the majority just to pave the way for their refutation. That is, temporal subsequence is such that 'before' and 'after' do not coexist. And major impurity remains as long as it is not removed by a bath (Ghusl) or dry ablution (Tayammum). So if any impurity occurred before that, it combined with the major impurity; thus it did not happen after it but rather with it. Yes, it was after the onset of it, while the majority did not say this; rather the objector himself added this extra bit to their words. Thus, it is proven that an impurity after major impurity will only be when it is after the termination of the major impurity. And here, the termination of major impurity is through Tayammum.

The same meaning is conveyed by the text itself, this is how the words of the scholars are understood. Praise be to Allah, it has become manifest that the best of interpretations is the word of the seeker.

Page 242 of 761

फ़तावा रज़विया, खंड 4

...होगा: लेकिन जब उसे कोई ऐसा हदस (अशुद्धि) पेश आए जो समय में उससे कुछ बाद हो - देखने वाले पर यह भी स्पष्ट है कि दोनों ही शर्तें व्यर्थ हैं। (त)

इफ़ादा 4: फाज़िल लखनवी ने जमात पर जो अनुचित आपत्तियाँ कीं उनका सारांश यह है कि जनाबत (अशुद्धि) के बाद हदस का होना उस स्थिति में भी प्राप्त होता है जब हदस जनाबत के बाद और तयम्मुम से पहले पैदा हो, तो समस्या यथावत बनी रहेगी। उद्देश्य यह है कि छिपे हुए शब्द (मुज़ाफ़ मुक़द्दर) को मानने का कार्य जो उन्होंने और 'ग़ायत अल-हवाशी' ने किया, बहुमत ने उसे छोड़ कर गलती की क्योंकि जनाबत के बाद हदस का होना तब तक लाभदायक नहीं जब तक वह तयम्मुम के बाद न हो।

मैं कहता हूँ: बल्कि उन्होंने ही गलती की और बहुमत के शब्दों में एक अतिरिक्त बात मानने की गलती की ताकि उनके खंडन का मार्ग प्रशस्त हो सके। वह यह कि कालानुक्रमिक बाद होना वह है जिसमें 'पहले' और 'बाद' एक साथ नहीं होते। और जनाबत तब तक बनी रहती है जब तक कि ग़ुस्ल या तयम्मुम से दूर न हो जाए। तो अगर उससे पहले कोई हदस पैदा हुआ तो वह जनाबत के साथ जमा हो गया, इस तरह वह उसके बाद नहीं बल्कि उसके साथ हुआ। हाँ, वह उसके शुरू होने के बाद हुआ, हालांकि बहुमत ने यह नहीं कहा बल्कि आपत्ति करने वाले ने स्वयं ही उनके शब्दों में यह अतिरिक्त बात जोड़ दी। तो यह सिद्ध हुआ कि जनाबत के बाद हदस उसी समय होगा जब जनाबत समाप्त होने के बाद हो। और यहाँ जनाबत का समाप्त होना तयम्मुम से है।

शब्द का अपना अर्थ भी यही है, इसी तरह विद्वानों की बातों को समझा जाता है। अल्लाह का शुक्र है कि यह स्पष्ट हो गया कि सबसे अच्छी व्याख्या विद्वानों के शब्द हैं।

761 का पृष्ठ 242

متأخر عنه بزمان وانت تعلم ان (ا) کلا القیدین ضائع۔ ہوگا: لیکن جب اسے کوئی ایسا حدث لاحق ہو جو وقت میں اس سے کچھ متاخر ہو - ناظر پر یہ بھی واضح ہے کہ دونوں ہی قید میں بیکار ہیں۔ (ت) الافادة ۴: مادندن به اللکنوی علی الجماعة وتلخیصه ان بعدیة الحدث عن الجنابة حاصلة اذا تأخر حدوثه عنها قبل التیمم فالاشکال کما کان یرید به انهم اخطؤا فی ترك ما ارتکبه هو وغانیة الحواشی من تقدیر المضاف فان البعدیة عن الجنابة لا تغنی مالم یکن بعد التیمم۔ افادہ ۴: فاضل لکھنوی نے جماعت پر جو بے جا رد کیا اس کا خلاصہ یہ ہے کہ حدث کا بعد جنابت ہونا اس صورت میں بھی حاصل ہے جب حدث جنابت کے بعد، تیمم سے پہلے پیدا ہو تو اشکال بدستور لوٹ آئے گا۔ مقصد یہ ہے کہ مضاف مقدر ماننے کا عمل جس کا انہوں نے اور غایۃ الحواشی نے ارتکاب کیا جمہور نے اسے چھوڑ کر غلطی کی اس لئے کہ حدث کا بعد جنابت ہونا کچھ کارآمد نہیں جب تک کہ بعد تیمم نہ ہو۔

فاقول: بل(۲) هو الذی اخطأ وارتکب في کلامهم ایضاً تقدیر مضاف تسویة للرد علیهم وذلك ان البعدیة زمانیة ولا یجتمع فیها القبل مع البعد والجنابة باقیة مالم ترتفع بغسل او تیمم فان حدث حدث قبله فقد اجتمع مع الجنابة فلم یکن بعدها بل معها نعم کان بعد حدوثها وما قالوه بل المعترض هو الذی اضاف هذا المضاف الی کلامهم فثبت ان الحدث لا یکون بعد الجنابة الا اذا حدث بعد زوالها وهو ههنا بالتیمم فتأخره عن التیمم مفاد نفس اللفظ هکذا تفهم کلمات العلماء والله الحمد فظهر ان احسن التاویلات کلام الماهد اقول: بلکہ انہوں نے ہی خطا کی اور کلام جمہور میں بھی ایک زائد بات ماننے کا ارتکاب کیا تاکہ ان کی تردید کی راہ ہموار ہوسکے وہ یہ کہ بعدیت زمانی ہے جس میں قبل، بعد کے ساتھ مجتمع نہیں ہوتا۔ اور جنابت باقی ہے جب تک غسل یا تیمم سے دُور نہ ہو۔ تو اگر اس سے پہلے کوئی حدث پیدا ہوا تو وہ جنابت کے ساتھ جمع ہو گیا اس طرح اس کے بعد نہ ہوا بلکہ ساتھ ہوا ہاں

اس کے حدوث کے بعد ہوا حالانکہ جمہور نے یہ نہ کہا بلکہ خود معترض ہی نے یہ مزید ان کے کلام میں زیادہ کردیا تو ثابت یہ ہوا کہ حدث بعد جنابت اُسی وقت ہوگا جب جنابت ختم ہونے کے بعد ہو۔ اور یہاں جنابت کا ختم ہونا تیمم سے ہے۔ مفاد نفس اللفظ ہکذا تفهم كلمات العلماء والله الحمد فظهر ان احسن التاويلات كلام الماهد

Fatawa Razawiya, Volume 4

The interpretation of the group (Jama'at), and that there is no validity in the claims of 'Ghayat al-Hawashi' and 'as-Sa'ayah' unless they refer back to it. Thus, the fact that the minor impurity (hadath) is subsequent to the dry ablution (tayammum) is inferred from the word itself. Similarly, the words of the scholars are understood. And all praise is for God. It has become clear that among correct interpretations, the best is the one adopted by the group. It is also clear that the claims of 'Ghayat al-Hawashi' and 'as-Sa'ayah' have no correctness except when that interpretation refers back to the group. (T)

Benefit 5: Once you know that there is no alternative but subsequence, then by the first case is meant when there was no minor impurity with it or it was before the tayammum. So the meaning of the statement is that a person in major ritual impurity (junub) who lacks the means for washing (ghusl) in both ways, if they find water for minor ablution (wudu), they do not perform wudu but perform tayammum instead, contrary to the Shafi'i view. However, if a minor impurity occurs after performing tayammum for it, then wudu becomes obligatory for them. This is correct speech, exactly what was mentioned from the commentary of at-Tahawi by Imam al-Isbijabi and others. Through this, the fifth doubt is resolved, and with it, the doubt of contradiction is also resolved in the most correct and best manner. (T)

Benefit 6: Regarding his statement 'so the dry ablution (at-tayammum) is for the major impurity (al-janaba)', there is no doubt that the 'lam' (the definite article 'al-') in it is for specific reference (al-'ahd), meaning the aforementioned tayammum performed by a junub person who has wudu water. This is because the case is assumed for him. Or it is a substitute for the genitive construction, meaning 'the tayammum of the aforementioned junub'. It is obvious that it being for universality (al-istighraq) or for essential nature (at-tabi'ah) is invalid. Likewise, taking the genitive as absolute for every junub, for if specification is intended, it would mean the tayammum of every junub person.

जमाअत (समूह) की व्याख्या, और यह कि 'ग़ायत अल-हवाशी' और 'अस-साया' के दावों में कोई सच्चाई नहीं है जब तक कि उन्हें इसी की ओर न लौटाया जाए। तो ह़दथ (लघु अशुद्धि) का तयम्मुम के बाद होना स्वयं इसी शब्द से प्राप्त होता है। इसी प्रकार विद्वानों के वचनों को समझा जाता है। और ईश्वर ही के लिए प्रशंसा है। तो स्पष्ट हुआ कि सही व्याख्याओं में सबसे श्रेष्ठ व्याख्या वह है जिसे जमाअत ने अपनाया है। यह भी स्पष्ट हुआ कि 'ग़ायत अल-हवाशी' और 'साया' के दावों में कोई सच्चाई नहीं है सिवाय उस समय के जब वह व्याख्या जमाअत की ओर लौटती हो। (त)

अफ़ादा 5: जब यह ज्ञात हो गया कि बाद में होने के सिवा कोई चारा नहीं है, तो पहली सूरत से अभिप्राय वह है जब जनाबत (प्रमुख अशुद्धि) के साथ कोई ह़दथ न हो या तयम्मुम से पहले हो। तो कथन का अर्थ यह हुआ कि वह जुनुब जिसे स्नान (ग़ुस्ल) के लिए पानी उपलब्ध नहीं है, यदि उसे वुज़ू के लिए पानी मिल जाए तो वह वुज़ू नहीं करेगा बल्कि तयम्मुम करेगा, इमाम शाफ़ई के विपरीत। लेकिन जब तयम्मुम करने के बाद कोई ह़दथ हो जाए तो अब उस पर वुज़ू अनिवार्य है। यह सही बात है, ठीक यही बात इमाम अस्बीजाबी की शरह़ तह़ावी आदि के हवाले से गुज़री। इसी से पाँचवीं शंका हल हो गई और इसके साथ विरोधाभास की शंका भी सबसे सही और उत्तम तरीके से हल हो गई। (त)

अफ़ादा 6: उनका कथन "फ़त्तयम्मुमु लिल-जनाबति" (जनाबत के लिए तयम्मुम) में 'लाम' निस्संदेह 'लाम-ए-अहद' (विशिष्ट संदर्भ वाला) है, अर्थात वह तयम्मुम जो ऐसे जुनुब से हुआ जिसके पास वुज़ू का पानी है। क्योंकि मसला इसी के बारे में माना गया है। या यह 'लाम' मुज़ाफ़ इलैह (षष्ठी विभक्ति) के बदले में है, यानी 'उक्त जुनुब का तयम्मुम'। यह ज़ाहिर है कि इसे 'इस्तिग़राक़' (सार्वभौमिकता) या 'तबीअत' (प्रकृति) के लिए मानना गलत है। इसी प्रकार मुज़ाफ़ इलैह को पूर्ण रूप से जुनुब लेना, क्योंकि यदि विशिष्टीकरण अभिप्रेत है, तो अर्थ होगा हर जुनुब का तयम्मुम।

تأویل الجماعة وانه لا صحة لمزعومات غاية الحواشي والسعاية الا اذا ارجعت اليهـ تو حدث کا تیمم سے متأخر ہونا خود اس لفظ ہی سے مستفاد ہے اسی طرح علماء کے کلمات سمجھے جاتے ہیں۔ اور خدا ہی کے لئے حمد ہے۔ تو واضح ہوا کہ درست تاویلات میں سب سے بہتر تاویل، جماعت کی اختیار کردہ تاویل ہے اور یہ بھی واضح ہوا کہ غایۃ الحواشی اور سعایہ کے مزعومات میں کوئی درستی و صحت نہیں مگر اسی وقت جبکہ وہ تاویل جماعت کی طرف راجع ہوں۔ (ت)

الافادة ٥ : اذا علمت ان لا محيد الا البعدية فالمراد بالصورة الاولى ما اذا لم يكن معها حدث او كان قبل التيمم فمعنى الكلام ان الجنب الفاقد الغسل في كلا الوجهين ان وجد وضوء لا يتوضأ بل يتيمم خلافاً للشافعي اما اذ كان حدث بعد ما تيمم لها فحينئذ يجب عليه الوضوء وهذا كلام صحيح عين ما مر عن شرح الطحاوي للامام الاسبيجابى وغيره و به انحلت الشبهة الخامسة ومعها شبهة التناقض ايضاً باصح وجه واحسنهـ افادہ ۵: جب یہ معلوم ہوا کہ چارہ کار بعدیت ہی ہے۔ صورت اولیٰ سے مراد وہ ہے جب جنابت کے ساتھ کوئی حدث نہ ہو یا تیمم سے پہلے ہو۔ تو معنی کلام یہ ہوا کہ جنب جسے ان دونوں صورتوں میں آب غسل دست یاب نہیں اگر اسے آب وضو مل جائے تو وضو نہیں کرے گا بلکہ تیمم کرے گا ، بخلاف امام شافعی کے لیکن جب کوئی حدث جنابت کا تیمم کر لینے کے بعد ہو تو اب اس پر وضو واجب ہے۔ یہ درست کلام ہے ٹھیک یہی بات امام اسپیجابی کی شرح طحاوی وغیرہ کے حوالہ سے گزری اسی سے پانچواں شبہ حل ہو گیا اور اس کے ساتھ شبہ تناقض بھی اصح واحسن طریقہ پر حل ہو گیا۔ (ت)

الافادة ٦ : قوله فالتيمم للجنابة لا شك ان اللام فيه للعهد اى التيمم المذكور الصادر من جنب معه وضوء لان فرض المسألة فيه او بدل عن المضاف اليه اى تيمم الجنب المذكور فمن البديهي بطلان كون

للاستغراق او الطبيعة وكذا اخذ المضاف اليه مطلق الجنب فانه ان اريد التخصيص اى تيمم كل جنب

افادہ ۶: ان کی عبارت "فالتيمم للجنابة" میں لام بلا شبہ لام عہد ہے یعنی تیمم مذکور جو ایسے جنب سے عمل میں آیا جس کے پاس آب وضو ہے۔ اس لئے کہ مسئلہ اسی کے بارے میں فرض کیا گیا ہے یا یہ لام مضاف الیہ کے عوض ہے یعنی جب مذکور تیمم جب واقعہ یہ ہے تو بدیہی بات ہے کہ اس کا لام استغراق یا لام طبیعت و ماہیت ہونا باطل ہے۔ اسی طرح

Fatawa Razawiyya Volume 4

(Arabic Text): It is only for Janabah and not for anything else, so its invalidity is clear even according to the path of interpretation. For if a person in the state of Janabah has a Hadath (minor impurity) and no water, his Tayammum will certainly be for both impurities. Do you not see the statement of Sharh al-Wiqayah itself: "If he has two impurities, one of which necessitates Ghusl like Janabah and the other necessitates Wudu, one Tayammum suffices for both of them." [1] [End of quote]. If specification was not intended, the premise stating that "every person in Janabah performs Tayammum for Janabah" would be devoid of benefit because it is known to everyone, and it cannot serve as an explanation or a derivation. From this, it becomes clear that in the Imam's statement "for Janabah," the "L" is for specification. Thus, the meaning is that the Tayammum of the aforementioned person in Janabah is specifically for Janabah. (T)

(Urdu Text): Taking the possessive (muḍāf ilayh) as an absolute person in Janabah is also invalid. This is because if specification were intended, meaning that the Tayammum of every person in Janabah is only for Janabah and not for anything else, then its invalidity is clear, even according to the reliable path. This is because a person in Janabah who also has a minor impurity and no water, his Tayammum will surely be for both impurities. See this text from Sharh al-Wiqayah: "When he has two impurities, one impurity makes Ghusl obligatory, like Janabah, and one impurity makes Wudu obligatory, then one Tayammum suffices for both of them." [End of quote]. And if specification is not intended, then the premise that "every person in Janabah will perform Tayammum for Janabah" will become useless because everyone knows this, and it can neither become an explanation nor a derivation. From this, it also became clear that the 'L' in "for Janabah" is the 'L' of specification, so the meaning will be that the Tayammum of the mentioned person in Janabah is specifically for Janabah. (T)

Benefit 7: The connection of the statement "by consensus" to the Tayammum being for Janabah is the apparent and understood meaning from the text, because it is only understood as referring back to the sentence to which it is appended.

Benefit 7: The connection of the word "by consensus" (bil-ittifaq) to the Tayammum being for Janabah is apparent and understood from the text, because it is understood that it refers to the sentence in whose appendix this word is placed.

I say (Aqul): However, this has no correctness at all because the premise of the issue is regarding a person in Janabah who has water sufficient for Wudu. The presence of any water at all, even if it is little and even if it is not sufficient for Wudu, is an absolute prohibition for Tayammum according to Imam al-Muttalibi (Imam al-Shafi'i), whether the one performing Tayammum...

I say (Aqul): But this is not correct at all because the issue is assumed for a person in Janabah who has enough water for Wudu, and the absolute presence of any water, even if it is little, even if it is not enough for Wudu...

---

[1] Sharh al-Wiqayah, Chapter on Tayammum, Al-Maktabah al-Rashidiyyah, Delhi, 1/99.

(अरबी पाठ): यह केवल जनाबत (बड़ी नापाकी) के लिए है न कि किसी और चीज के लिए, इसलिए इसकी असत्यता व्याख्या के मार्ग पर भी स्पष्ट है। क्योंकि यदि जनाबत की स्थिति में किसी व्यक्ति को हदस (छोटी नापाकी) हो और पानी न हो, तो उसका तयम्मुम निश्चित रूप से दोनों नापाकियों के लिए होगा। क्या आप शरह अल-विकाया का स्वयं का कथन नहीं देखते: "यदि उसमें दो हदस हों, जिनमें से एक जनाबत की तरह गुस्ल अनिवार्य करता है और दूसरा वज़ू अनिवार्य करता है, तो एक तयम्मुम उन दोनों के लिए पर्याप्त है।" १ अ.ह. और यदि विशेषीकरण का इरादा नहीं था, तो यह प्रस्ताव कि "हर जनाबत वाला व्यक्ति जनाबत के लिए तयम्मुम करता है" लाभहीन होगा क्योंकि यह सभी को ज्ञात है, और यह न तो स्पष्टीकरण बन सकता है और न ही परिणाम। इससे स्पष्ट होता है कि इमाम के कथन "जनाबत के लिए" में 'ल' विशेषीकरण के लिए है। इस प्रकार, अर्थ यह है कि उल्लिखित जनाबत वाले व्यक्ति का तयम्मुम विशेष रूप से जनाबत के लिए है। (त)

(उर्दू पाठ): मुज़ाफ़ इलैहि (सम्बन्धवाचक) के रूप में पूर्ण रूप से जनाबत वाले व्यक्ति को लेना भी अमान्य है। ऐसा इसलिए है क्योंकि यदि विशेषीकरण का उद्देश्य होता, यानी कि हर जनाबत वाले का तयम्मुम केवल जनाबत के लिए होता है और किसी और चीज़ के लिए नहीं, तो इसकी असत्यता स्पष्ट है, यहाँ तक कि विश्वसनीय मार्ग के अनुसार भी। क्योंकि एक जनाबत वाला व्यक्ति जिसे कोई छोटी नापाकी भी हो और पानी न हो, उसका तयम्मुम निश्चित रूप से दोनों ही नापाकियों के लिए होगा। शरह अल-विकाया का यह पाठ देखें: "जब उसे दो नापाकी हों, एक नापाकी गुस्ल अनिवार्य करती है, जैसे जनाबत, और एक नापाकी वज़ू अनिवार्य करती है, तो एक ही तयम्मुम दोनों के लिए पर्याप्त है।" अ.ह. और यदि विशेषीकरण का इरादा नहीं है, तो यह प्रस्ताव कि "हर जनाबत वाला जनाबत का तयम्मुम करेगा" बेकार हो जाएगा क्योंकि यह तो सभी को मालूम है, और यह न तो स्पष्टीकरण बन सकता है और न ही परिणाम। इससे यह भी स्पष्ट हो गया कि "जनाबत के लिए" में 'ल' विशेषीकरण का 'ल' है, इसलिए अर्थ यह होगा कि उल्लिखित जनाबत वाले का तयम्मुम विशेष रूप से जनाबत के लिए है। (त)

फायदा ७: "सहमति से" (बिल-इत्तेफाक) कथन का संबंध तयम्मुम के जनाबत के लिए होने से ही पाठ से स्पष्ट और समझ में आने वाला अर्थ है, क्योंकि इसे केवल उस वाक्य के संदर्भ में समझा जाता है जिसमें इसे जोड़ा गया है।

फायदा ७: शब्द "बिल-इत्तेफाक" (सहमति से) का संबंध तयम्मुम के जनाबत के लिए होने से ही पाठ से स्पष्ट और मबताबिर (प्रसिद्ध) है, क्योंकि यही समझ में आता है कि जिस वाक्य के अंत में यह शब्द रखा गया है, यह उसी की ओर इशारा करता है।

मैं कहता हूँ (अकुल): हालाँकि, इसमें कोई सत्यता नहीं है क्योंकि मसला उस जनाबत वाले व्यक्ति के बारे में माना गया है जिसके पास वज़ू के लिए पर्याप्त पानी है। किसी भी पानी की पूर्ण उपस्थिति, भले ही वह कम हो और भले ही वह वज़ू के लिए भी पर्याप्त न हो, इमाम मुत्तलिबी (इमाम शाफ़ई) के अनुसार तयम्मुम के लिए एक पूर्ण निषेध है, चाहे तयम्मुम करने वाला...

मैं कहता हूँ (अकुल): लेकिन यह बिल्कुल सही नहीं है क्योंकि मसला उस जनाबत वाले के बारे में माना गया है जिसके पास वज़ू के लिए पर्याप्त पानी मौजूद है, और पूर्ण रूप से किसी भी पानी का मौजूद होना भले ही वह कम ही हो, भले ही वह वज़ू के लिए भी पर्याप्त न हो...

---

१ शरह अल-विकाया, तयम्मुम का अध्याय, अल-मकतबा अल-रशीदिया, दिल्ली, १/९९।

पृष्ठ २४४ / ७६१

فتاوی رضویہ جلد چہارم

انما یکون للجنابة لا غیر فبطلانہ ظاہر حتی علی مسلك التعویل فان جنباً معه حدث ولاماء یکون تیممه للحدثین قطعاً الاتری الی قول شرح الوقایة نفسه اذکان به حدثان حدث یوجب الغسل کالجنابة وحدث یوجب الوضوء یکفی تیمم واحد عنهما ۱ اه وان لم یرد کانت المقدمة القائلة ان کل جنب یتیمم للجنابة خالیة عن الافادة لانه معلوم لکل احد ولا یصلح تعلیلا ولا تفریعاً وبه استبان ان الامام في قوله للجنابة لام التخصیص فکان المعنی ان تیمم الجنب المذکور للجنابة خاصة۔

مضاف الیہ مطلق جنب لینا بھی باطل ہے۔ اس لئے کہ اگر تخصیص مراد ہو یعنی ہر جنب کا تیمم صرف جنابت کے لئے ہوتا ہے اور کسی چیز کے لئے نہیں۔ تو اس کا بطلان ظاہر ہے یہاں تک کہ مسلک اعتماد پر بھی۔ کیونکہ وہ جنب جس کے ساتھ کوئی حدث بھی ہو اور پانی نہ ہو اس کا تیمم یقیناً دونوں ہی حدث کے لئے ہوگا خود شرح وقایہ کی یہ عبارت دیکھئے: "جب اسے دو حدث ہوں، ایک حدث غسل واجب کرتا ہے، جیسے جنابت اور ایک حدث وضو واجب کرتا ہے تو ایک ہی تیمم دونوں سے کافی ہے" اھ اور اگر تخصیص نہ مراد ہو تو یہ مقدمہ کہ "ہر جنب جنابت کا تیمم کرے گا" غیر مفید ہو جائے گا کیونکہ یہ تو سبھی کو معلوم ہے اور نہ تعلیل بن سکے گی نہ تفریع۔ اسی سے یہ بھی واضح ہو گیا کہ "للجنابة" میں لام ، لام تخصیص ہے تو معنی یہ ہوگا کہ جنب مذکور کا تیمم خاص جنابت کے لئے ہے۔(ت)

الافادة ۷: تعلق قولہ بالاتفاق بکون التیمم للجنابة ھو الظاھر المتبادر من العبارة لانه انما یفھم عائدا الی الجملة المذیلة به۔

افادہ ۷: لفظ "بالاتفاق" کا تعلق تیمم کے جنابت کے لئے ہونے سے ہی ظاہر اور عبارت سے متبادر ہے اس لئے کہ سمجھ میں یہی آتا ہے کہ جس جملے کے ذیل میں یہ لفظ رکھا گیا ہے اسی کی طرف راجع ہے۔

اقول: لکن لا صحة له اصلا لان فرض المسألة في جنب له ماء يكفى للوضوء ووجود ماء ما مطلقاً وان قل وان لم يكف للوضوء ايضا مانع للتيمم مطلقاً عند الامام المطلبى سواء كان المتيمم

اقول: لیکن یہ بالکل درست نہیں اس لئے کہ مسئلہ اس جنب کے بارے میں فرض کیا گیا ہے جس کے پاس وضو کے لئے آب کافی موجود ہے اور مطلقاً کسی بھی پانی کا موجود ہونا اگرچہ کم ہی ہو، اگرچہ وضو کے لئے بھی کافی نہ ہو

---

۱ شرح الوقایہ باب التیمم المکتبۃ الرشیدیہ دہلی ۹۹/۱

Fatawa Razawiyya Volume 4

(Arabic Text/Column): ...whether junub (ritually impure) or muhdith (in state of minor ritual impurity), because He (Allah) Almighty says: "and you find no water", which is interpreted as general and absolute. So how can he agree with us in any scenario where the tayammum of a junub who has some water is valid for Janabah? Rather, it is invalid according to him due to the absence of its condition, which is the total lack of water. And what is invalid cannot be for anything, except based on the method of ta'weel (interpretation) and making the 'fa' for consequence, and assuming tayammum after wudu when water runs out. There is no scope for it based on the method of ta'weel because it involves tayammum before the occurrence of hadath (impurity). So how can it be after wudu? Similarly, based on the method of ta'weel and taking 'li' for causation, for there is no meaning to your saying: 'Wudu is obligatory because if tayammum occurs after it, it will be for Janabah by consensus.' The method of ta'weel itself is among the falsehoods, so there is no correctness in its connection to what follows it. By this (1), the lack of understanding of the one who claimed that his statement 'by consensus' relates to the obligatoriness of wudu or to tayammum being for Janabah became clear. He (1) gave a choice between the correct and the incorrect. He (2) wavered in his speech about it, affirming in his 'Sa'ayah' its specific connection to 'yajibu' (is obligatory) and saying in 'Umdah' in explaining the fourth objection that in the previous scenario as well, tayammum is for Janabah by consensus (2). Thus, he made it related...

(Urdu Text/Column): According to Imam Shafi'i, [availability of water] absolutely prevents tayammum, whether the person performing it is in a state of major ritual impurity (junub) or minor ritual impurity (muhdith). The reason is that they interpret the saying of Allah Almighty, "and if you find no water," as absolute and comprehensive. Thus, how can they agree with us in any case that a person in a state of Janabah who has some water can perform tayammum for Janabah? In fact, according to them, the tayammum of such a person is invalid because the condition for tayammum, which is the absolute absence of water, is missing. And what is invalid cannot be valid for anything. However, if the path of reliance (maslak-e-i'timad) is taken and the letter 'fa' is considered for derivation/consequence, and it is assumed that tayammum follows wudu, then the aforementioned meaning could be correct because in this case, tayammum would occur when the water has run out. But on the path of interpretation (maslak-e-ta'weel), there is no room for the aforementioned meaning. This is because it would involve performing tayammum

before the occurrence of ritual impurity (hadath); so how could it be after wudu? Similarly, if the path of reliance is accepted and 'fa' is taken as for causation, even then the above meaning cannot be correct. This is because, under this assumption, the statement would be: "It is obligatory to perform wudu because if tayammum is performed after it, it will be for Janabah by consensus." This statement itself is meaningless. And the path...

(Note): 'Ah': He is the author of 'Umdah al-Ri'ayah' al-Lucknawi. (The author of 'Umdah al-Ri'ayah' the learned scholar of Lucknow).

(Footnotes): 1. Umdat al-Ri'ayah with Sharh al-Wiqayah, Chapter on Tayammum, Al-Maktabat al-Rashidiyya, Delhi, 1/95. 2. Umdat al-Ri'ayah with Sharh al-Wiqayah, Chapter on Tayammum, Al-Maktabat al-Rashidiyya, Delhi, 1/95.

फ़तावा रज़विया जिल्द 4

(अरबी पाठ): ...चाहे जुनूब हो या मुहदिथ, क्योंकि वह अल्लाह तआला के इस फरमान को: "और तुम पानी न पाओ", इस्तग्राक और इतलाक़ पर महमूल करते हैं। तो वे हमसे किसी भी ऐसी सूरत में कैसे सहमत हो सकते हैं कि उस जुनूब का तयम्मुम जिसके पास कुछ पानी मौजूद है, जनाबत के लिए होगा? बल्कि उनके नज़दीक यह बातिल है क्योंकि इसकी शर्त मफ़क़ूद (गायब) है जो कि मुतलक़न पानी का न होना है। और जो बातिल हो वह किसी चीज़ के लिए नहीं हो सकता, मगर तावील के रास्ते पर और 'फ़ा' को तफ़री (नतीजे) के लिए मानने पर, और वज़ू के बाद पानी खत्म होने की सूरत में तयम्मुम फर्ज़ करने पर। तावील के रास्ते पर इसकी गुंजाइश नहीं है क्योंकि इसमें ह़दथ (अशुद्धि) से पहले तयम्मुम होगा, तो वज़ू के बाद कैसे हो सकता है? इसी तरह तावील के रास्ते पर और 'लि' को ता'लील (कारण) के लिए लेने पर, क्योंकि तुम्हारे इस कथन का कोई अर्थ नहीं है कि: 'वज़ू वाजिब है क्योंकि अगर तयम्मुम इसके बाद हो तो वह बिल-इत्तिफ़ाक़ (सर्वसम्मति से) जनाबत के लिए होगा।' तावील का रास्ता खुद बाति़ल है, इसलिए उसके बाद वाली चीज़ से इसके लगाव की कोई सत्यता नहीं है। इससे (1) उस व्यक्ति की समझ की कमी स्पष्ट हो गई जिसने यह गुमान किया कि उसका कथन 'बिल-इत्तिफ़ाक़' वज़ू के वाजिब होने या तयम्मुम के जनाबत के लिए होने से संबंधित है (1)। उसने सही और बातिल के बीच चयन का विकल्प दिया। और उसने (2) इसमें अपने कलाम में परेशानी दिखाई, अपनी 'सआया' में 'यजिबु' (वाजिब है) के साथ इसके विशिष्ट लगाव को स्वीकार किया और 'उम्दा' में चौथे ऐतराज की व्याख्या में कहा कि पिछली सूरत में भी तयम्मुम बिल-इत्तिफ़ाक़ जनाबत के लिए है (2)। इस प्रकार उसने इसे संबंधित बना दिया...

(उर्दू पाठ): इमाम शाफ़ई के नज़दीक तयम्मुम से मुतलक़न रुकावट है, चाहे तयम्मुम करने वाला जुनूब (बड़ी अपवित्रता की स्थिति में) हो या मुहदिथ (छोटी अपवित्रता की स्थिति में)। इसकी वजह यह है कि वे अल्लाह तआला के इस कथन "और तुम पानी न पाओ" को इस्तग्राक और इतलाक़ (व्यापकता और निरपेक्षता) पर महमूल करते हैं। तो वे हमारे साथ किसी भी सूरत में इस बात पर कैसे सहमत हो सकते हैं कि उस जुनूब का तयम्मुम जिसके पास कुछ पानी मौजूद है, जनाबत के लिए होगा? बल्कि उनके नज़दीक ऐसे जुनूब का तयम्मुम ही बातिल है क्योंकि तयम्मुम की शर्त मुतलक़न पानी का न होना ही मफ़क़ूद है। और जो बातिल हो वह किसी चीज़ के लिए नहीं हो सकता। हाँ, अगर एतमाद का रास्ता अपनाया जाए और 'फ़ा' को तफ़रीअ (नतीजे) के लिए माना जाए, और यह मान लिया जाए कि तयम्मुम वज़ू के बाद है, तो उक्त अर्थ सही हो सकता है क्योंकि

इस स्थिति में तयम्मुम उस समय होगा जब पानी समाप्त हो चुका होगा। लेकिन तावील (व्याख्या) के रास्ते पर उक्त अर्थ की गुंजाइश नहीं है। ऐसा इसलिए क्योंकि इसमें ह़दथ (अशुद्धि) से पहले तयम्मुम होगा, तो वज़ू के बाद कैसे हो सकेगा? इसी तरह जब एतमाद का रास्ता मानकर 'फ़ा' को ता'लील (कारण बताने वाला) मान लें, तब भी उपरोक्त अर्थ सही नहीं हो सकता। क्योंकि इस स्थिति में बात यह होगी कि "वज़ू करना वाजिब है इसलिए कि तयम्मुम अगर इसके बाद होगा तो बिल-इत्तिफ़ाक़ जनाबत के लिए होगा।" यह बात ही अर्थहीन है। और रास्ता...

(नोट): 'अह': वह उम्दतुल रियाया लखनवी के लेखक हैं। (उम्दतुल रियाया के लेखक फ़ाज़िल लखनवी)।

(पाद-टिप्पणियाँ): 1. उम्दतुल रियाया मअ शरह अल-विक़ाया, बाब अत-तयम्मुम, अल-मकतबतुल रशीदिया दिल्ली 1/95। 2. उम्दतुल रियाया मअ शरह अल-विक़ाया, बाब अत-तयम्मुम, अल-मकतबतुल रशीदिया दिल्ली 1/95।

पृष्ठ 761 का 245

(عربی متن): جنبا او محدثا لانه یحمل قوله عز وجل فَلَمْ تَجِدُوْا مَاءً علی الاستغراق مع الاطلاق فکیف یوافقنا في شیئ من الصور علی کون تیمم جنب له بعض الماء للجنابة بل باطل عنده لفقد شرطه وهو عدم الماء مطلقا والباطل لایکون لشیئ اللهم الا علی مسلك التعویل وجعل الفاء للتفریع، وفرض التیمم بعد الوضوء ح عند نفاد الماء ولا مساغ له علی مسلك التأویل لان فیه التیمم قبل الحدث فکیف یکون بعد الوضوء وکذا علی مسلك التعویل واخذ لان للتعلیل اذ لا معنی لقولك یجب الوضوء لان التیمم ان وقع بعده یکون للجنابة بالاتفاق ومسلك التعویل نفسه من الاباطیل فلا صحة لتعلقه بمایلیه وبه (۱) استبان قلة فهم الذی عه زعم ان قوله بالاتفاق متعلق بوجوب الوضوء او بکون التیمم للجنابة ۱ اهـ فخیر بین الصحیح والباطل، وقد (۲) اضطرب کلامه فیه فأقر في سعایته تعیین تعلقه بیجب وقال في عمدة في تقریر الایراد الرابع ان في الصورة السابقة ایضا التیمم للجنابة اتفاقا ۲ اهـ فجعله متعلقا

(اردو متن): امام شافعی کے نزدیک تیمم سے مطلقاً مانع ہے خواہ تیمم کرنے والا جنب ہو یا محدث وجہ یہ ہے کہ وہ ارشاد باری عزوجل "فَلَمْ تَجِدُوْا مَاءً" (پھر تم کوئی پانی نہ پاؤ) کو استغراق مع اطلاق پر محمول کرتے ہیں تو وہ ہمارے ساتھ کسی بھی صورت میں اس پر کیسے اتفاق کر سکتے ہیں کہ وہ جنب جس کے پاس کچھ پانی موجود ہے اس کا تیمم جنابت کے لئے ہوگا بلکہ ان کے نزدیک ایسے جنب کا تیمم ہی باطل ہے کیونکہ تیمم کی شرط مطلقاً پانی نہ ہونا ہی مفقود ہے۔ اور جو باطل ہو وہ کسی چیز کے لئے نہیں ہو سکتا ہاں اگر مسلک اعتماد لیا جائے اور ف کو تفریع کے لئے قرار دیا جائے، اور فرض کیا جائے کہ تیمم بعد وضو ہے تو معنی مذکور صحیح ہو سکتا ہے اس لئے کہ اس صورت میں تیمم اس وقت ہو گا جب پانی ختم ہو چکا ہو اور مسلک تاویل پر معنی مذکور کی گنجائش نہیں۔ اس لئے کہ اس میں تیمم قبل حدث ہو گا تو بعد وضو کیسے ہو سکے

گا ؟ اسی طرح جب مسلک اعتماد مان کر فابرائے تعلیل قرار دیں تو بھی معنی بالا صحیح نہیں بن سکتا۔ کیوں کہ اس تقدیر پر کلام یہ ٹھہرے گا کہ "وضو کرنا واجب ہے اس لئے کہ تیمم اگر اس کے بعد ہو گا تو بالاتفاق جنابت کے لئے ہو گا" یہ کلام ہی بے معنی ہے اور مسلک

(حاشیہ): عہ: ھو صاحب عمدة الرعاية اللكنوى ١٢ | (صاحب عمدة الرعاية فاضل لكهنوى ١٢ ت)

(حواشی): ١ عمدة الرعاية مع شرح الوقاية، باب التيمم، المكتبة الرشيدية دہلی ١/٩٥ ٢ عمدة الرعاية مع شرح الوقاية، باب التيمم، المكتبة الرشيدية دہلی ١/٩٥

Fatawa Ridawiyya, Volume 4

...connected to it, then he mentioned this choice, then said immediately after it: "or it is said its meaning is that Tayammum is established or remains for Janabat (major ritual impurity) by consensus." So he returned to the manifest falsehood and did not know what it meant. Or, it's an extension of the 'choice', for this is included in it, unless he intends that he is given a choice between truth and falsehood, or there is no choice but rather it is specifically on falsehood.

The aforementioned speaker's words in this regard are full of inconsistency and confusion. The detail is: (1) In 'Sa'ayah', he fixed the situation that it relates to "Yajib" (obligation of Wudu). (2) In 'Umdat-ul-Ri'ayah', in the fourth objection, he wrote: "Even in the previous case, Tayammum is for Janabat by consensus." In this, he made this word relate to the very sentence it is connected to. (3) Then he mentioned the same thing about 'choice'. (4) Then immediately following that, he wrote: "Or it should be said that its meaning is that Tayammum remains established for Janabat by consensus." In this sentence, he again returned to manifest falsehood. The speaker doesn't know what it means to say "or" as a conjunction to 'choice'. This too is included in it. But the purpose could be to give a choice between truth and falsehood, or there is no choice at all, but rather falsehood itself is determined. Keep this in mind. (T)

I say: Even if the assumed form of the issue was that water is found after Tayammum, the statement would still not be sound. On the path of reliability, it's obvious, because in the final scenario, if both impurities (major and minor) occur, whether water is found and he does Tayammum, or water isn't found and he does Tayammum, in any case, the Tayammum will be for both impurities. According to any group, it will not be specifically for Janabat. Our school of thought in this regard is well known. Note the school of the Shafi'is. Imam Ibn Hajar al-Makki al-Shafi'i writes in his Fatawa al-Kubra: "One who has both Janabat and minor impurity, one Tayammum is sufficient for both." This is clear and manifest because Tayammum for minor impurity and major impurity in reality...

Tayammum for minor impurity and major impurity is sufficient. And this is clear and evident, because Tayammum for minor impurity...

1. Umdat-ul-Ri'ayah with Sharh-ul-Wiqayah, Chapter on Tayammum, Al-Maktabat-ul-Rashidiyya, Delhi, 1/95.

फ़तावा रज़विया, खंड 4

...उससे जुड़ा हुआ, फिर उसने इस विकल्प का उल्लेख किया, फिर उसके तुरंत बाद कहा: "या यह कहा जाए कि इसका अर्थ है कि तैयमुम जनाबत (बड़ी नापाकी) के लिए सर्वसम्मति से स्थापित या शेष है।" तो वह स्पष्ट असत्य की ओर लौट गया और उसे नहीं पता था कि इसका क्या अर्थ है। या, यह 'विकल्प' का विस्तार है, क्योंकि यह इसमें शामिल है, जब तक कि उसका इरादा यह न हो कि उसे सत्य और असत्य के बीच विकल्प दिया गया है, या कोई विकल्प नहीं है बल्कि विशेष रूप से असत्य पर है।

इस संबंध में उपर्युक्त वक्ता के शब्द विसंगति और भ्रम से भरे हुए हैं। विवरण यह है: (1) 'सयाह' में उन्होंने इस स्थिति को तय किया कि यह "याजिब" (वज़ू की अनिवार्यता) से संबंधित है। (2) 'उमदत-उल-रियाय्या' में चौथे आपत्ति में उन्होंने लिखा: "पिछली स्थिति में भी तैयमुम सर्वसम्मति से जनाबत के लिए है।" इसमें उन्होंने इस शब्द को उसी वाक्य से संबंधित माना जिससे यह जुड़ा हुआ है। (3) फिर उन्होंने 'विकल्प' वाली वही बात दोहराई। (4) फिर उसके तुरंत बाद लिखा: "या यह कहा जाए कि इसका अर्थ है कि तैयमुम जनाबत के लिए सर्वसम्मति से स्थापित या शेष है।" इस वाक्य में वह फिर से स्पष्ट असत्य की ओर लौट गया। वक्ता को नहीं पता कि 'विकल्प' के साथ "या" कहने का क्या अर्थ है? यह भी इसमें शामिल है। लेकिन उद्देश्य सत्य और असत्य के बीच विकल्प देना हो सकता है, या बिल्कुल भी विकल्प न हो बल्कि असत्य ही निर्धारित हो। इसे ध्यान में रखें। (त)

मैं कहता हूँ: यदि समस्या की कल्पित स्थिति यह होती कि तैयमुम के बाद पानी मिल जाए, तो भी बात सही नहीं होती। विश्वसनीयता के मार्ग पर तो यह स्पष्ट है, क्योंकि अंतिम परिदृश्य में, यदि दोनों अशुद्धियाँ (बड़ी और छोटी) एक साथ हों, चाहे पानी मिले और वह तैयमुम करे, या पानी न मिले और वह तैयमुम करे, किसी भी स्थिति में, तैयमुम दोनों अशुद्धियों के लिए होगा। किसी भी समूह के अनुसार, यह विशेष रूप से जनाबत के लिए नहीं होगा। इस संबंध में हमारा संप्रदाय (मज़हब) तो विदित ही है। शाफ़ई संप्रदाय का मत देखिए। इमाम इब्न हजर अल-मक्की अल-शाफ़ई अपने फतावा अल-कुबरा में लिखते हैं: "जिस पर जनाबत और छोटी अशुद्धि दोनों हों, उसके लिए दोनों के लिए एक ही तैयमुम काफी है।" यह स्पष्ट और प्रकट है क्योंकि छोटी अशुद्धि और बड़ी अशुद्धि के लिए तैयमुम वास्तव में...

छोटी अशुद्धि और बड़ी अशुद्धि के लिए तैयमुम पर्याप्त है। और यह स्पष्ट और प्रकट है, क्योंकि छोटी अशुद्धि के लिए तैयमुम...

1. उमदत-उल-रियाय्या साथ में शराह-उल-विक़ायाह, तैयमुम का अध्याय, अल-मकतबत-उल-रशीदिय्या, दिल्ली, 1/95.

पृष्ठ 761 का 246

بِمَا یَلِیْہِ ثُمَّ ذَکَرَ ھٰذَا التَّخْیِیْرَ ثُمَّ قَالَ مُتَّصِلًا بِہٖ اَوْ یُقَالُ مَعْنَاہُ فَالتَّیَمُّمُ ثَابِتٌ اَوْ بَاقٍ لِلْجَنَابَۃِ اتِّفَاقًا ۱ اھ فَعَادَ (۱) اِلَی الْبَاطِلِ الصَّرِیْحِ وَلَا یَدْرِیْ مَا مَعْنٰی (۲) اَوْ عَطْفًا عَلَی التَّخْیِیْرِ فَاِنَّ ھٰذَا دَاخِلٌ فِیْہِ اِلَّا اَنْ یُرِیْدَ اَنَّہ مُخَیَّرٌ بَیْنَ الْحَقِّ وَالْبَاطِلِ اَوْ لَا تَخْیِیْرَ بَلْ عَلَی الْبَاطِلِ عَیْنًا - ھٰذَا -

اعتقاد خود باطل ہے تو جس عبارت کے بعد یہ لفظ ہے اس سے اس کا تعلق کسی طرح درست نہیں۔ اسی سے اس کی کم فہمی بھی عیاں ہو گئی ، جس کا یہ خیال ہے کہ "لفظ بالاتفاق یا تو وجوب وضو سے متعلق ہے یا تیمّم کے جنابت کے لئے ہونے سے متعلق ہے" اھ یہ کہہ کر صحیح اور باطل کے درمیان تخییر کی راہ اختیار کی۔ اور اس بارے میں قائلِ مذکور کا کلام اضطراب و انتشار کا حامل ہے، جس کی تفصیل یہ ہے کہ (۱) سعایہ میں تو یہ صورت متعین رکھی کہ اس کا تعلق "یجب" (وجوبِ وضو) سے ہے (۲) اور عمدۃ الرعایہ میں اعتراضِ چہارم کی تقریر میں یہ لکھا کہ "سابقہ صورت میں بھی تیمّم جنابت کے لئے ہے اتفاقاً" اھ اس میں اس لفظ کو اسی عبارت سے متعلق قرار دیا جس سے یہ متصل ہے (۳) پھر یہی تخییر والی بات ذکر کی (۴) پھر اسی سے متصل یہ لکھ دیا کہ "یا یہ کہا جائے کہ اس کا معنیٰ یہ ہے کہ پس تیمم جنابت کے لئے ثابت یا باقی ہے اتفاقاً اھ اس عبارت میں پھر باطلِ صریح کی طرف عود کیا قائل کو یہ پتا نہیں کہ تخییر پر عطف کر کے "او" کہنے کا کیا معنیٰ ہوگا؟ یہ بھی تو اس میں داخل ہے۔ مگر یہ مقصد ہو سکتا ہے کہ حق اور باطل دونوں کے درمیان تخییر دی جائے یا تخییر بالکل نہ ہو بلکہ ٹھیک باطل ہی متعین ہو یہ ذہن نشین رہے۔ (ت)

واقول: بل لو کان فرض المسألۃ وجدان الماء بعد التیمم لم یستقم الکلام ایضا اما علی مسلک التحویل فظاھر لان الصورۃ الاخیرۃ فیہ اجتماع الحدثین فاذا وجد اوعدم الماء وتیمم کان عنھما بالوفاق لا عن

الجنابة خاصة عند احد من الفريقين اما مذهبنا فمعلوم واما مذهب السادة الشافعية فقال الامام ابن حجر المكي الشافعي في فتاواه الكبرى من عليه جنابة وحدث اصغر يكفيه لهما تيمم واحد وهذا واضح جلي لان

واقول: اگر مسئلہ کی صورتِ مفروضہ یہ ہوتی کہ تیمّم کے بعد پانی پا جائے تو بھی بات نہ بنتی۔ مسلکِ اعتماد پر تو ظاہر ہے۔ اس لئے کہ اس میں صورتِ اخیر یہ ہے کہ دونوں حدث جمع ہوں تو وہ پانی پائے اور تیمّم کرے یا نہ پائے اور تیمّم کرے بہر تقدیر تیمّم دونوں ہی حدث سے ہوگا۔ کسی بھی فریق کے نزدیک خاص جنابت سے نہ ہوگا۔ اس بارے میں ہمارا مذہب تو معلوم ہی ہے۔
حضراتِ شافعیہ کا مذہب ملاحظہ ہو۔ امام ابن حجر مکی شافعی اپنے فتاویٰ کبریٰ میں رقم طراز ہیں: "جس پر جنابت اور حدثِ اصغر دونوں ہوں اسے دونوں کے لئے ایک ہی

التيمم عن الحدث الاصغر وعن الاكبر حقيقتها

تیمّم کافی ہے۔ اور یہ روشن و واضح ہے اس لئے کہ تیمّمِ حدثِ اصغر

۱ عمدة الرعايہ مع شرح الوقايہ باب التيمم المكتبۃ الرشيديہ دہلی ۱/ ۹۵

Fatawa Razawiyya - Volume 4

[Right Column - Urdu Translation/Explication] And the reality of both [types of] Tayammum and Hadath Akbar (major impurity), the meaning of both, the form of both, and the purpose of both are the same. Therefore, it should not be thought that one cannot be included in the other. Another reason is that if two consecutive Tayammums are commanded, it would necessitate performing a useless and futile act. This is because once a person has performed Tayammum the first time to gain the permissibility of prayer, they have already obtained that permission. Making a second Tayammum obligatory is then futile and of no benefit. "Ah" [End] - this ruling applies to the beginning. If 'continuation' is intended—meaning that after the availability of water, Tayammum remains for Janabah (major ritual impurity) by consensus—then this is false. Because according to Imam Shafi'i, upon the availability of any absolute water, Tayammum becomes void from the outset, as its condition (absence of absolute water) is missing for them. Now, regarding the path of interpretation (based on the above-assumed scenario, the matter still will not hold, the detail of which is this: 12 M Alif): in it, the final scenario is that if the Hadath (minor impurity) occurs after Tayammum, then if 'continuation' is intended, as Ash-Shurunbulali stated unambiguously, its invalidity is apparent, as mentioned just now. However, he (may Allah have mercy on him) did not conclude it with "by consensus," so it remained sound, unlike the one who said—Note: The one who said "Tayammum remains by consensus" has fallen into a dark error. And if 'starting anew' is intended, then yes, it is agreed upon that at that time it is specifically for Janabah due to the absence of Hadath then. But the word "by consensus" is used futilely and is misleading towards error. As for the first, since it becomes void for him upon finding [water], what benefit is there in his clear agreement? And as for the latter, because (the mentioned scholar of Lucknow, 12 T).

[Left Column - Arabic Original] And the meaning of both, the form of both, and the purpose of both are one, so it is not imagined to be excluded from inclusion. Furthermore, it necessitates in the command of two consecutive tayammums what resembles futility, because if one performs tayammum first to permit prayer, they achieve permission through it. Thus, making the second one obligatory is futile with no benefit in it. "Ah" - this is in the beginning. If continuation is intended—meaning that after finding [water] it remains for Janabah by consensus—then it is false, as it becomes void for him entirely upon finding water absolutely, due to the loss of its condition. As for the path of interpretation and the last scenario therein, which is

Hadath after Tayammum: if continuation is intended as explicitly stated by Ash-Shurunbulali, then the invalidity is apparent as previously mentioned, except that he (may Allah Almighty have mercy on him) did not conclude it with "by consensus," so it was sound, unlike that which was said—Note: The one who said "Tayammum remains by consensus" has fallen into dark error. And if starting anew is intended, then yes, it is agreed upon as being specifically for Janabah then due to the absence of Hadath at that time. However, the word "by consensus" occurs futilely and suggests error. As for the first, because if it becomes void for him upon finding [water], what is the benefit of his clear agreement? And as for the last, because (the mentioned scholar of Lucknow, 12 T). Note: He is the mentioned Lakhnawi.

---

1 Al-Fatawa al-Kubra by Ibn Hajar al-Makki, Chapter on Tayammum, published by Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 1/70.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 4

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] और तयम्मुम और ह़दसे अकबर (बड़ी अशुद्धि) दोनों की हक़ीक़त, दोनों का अर्थ, दोनों का स्वरूप और दोनों का उद्देश्य एक ही है, तो यह विचार नहीं होना चाहिए कि एक दूसरे में शामिल नहीं हो सकता। और एक दूसरा कारण यह भी है कि यदि लगातार दो तयम्मुम करने का आदेश दिया जाए तो एक बेकार और निरर्थक कार्य करना अनिवार्य होगा, क्योंकि जब उसने पहली बार नमाज़ की अनुमति प्राप्त करने के लिए तयम्मुम कर लिया, तो उससे नमाज़ की अनुमति प्राप्त हो गई, फिर दूसरा तयम्मुम अनिवार्य करना निरर्थक है जिसमें कोई लाभ नहीं है। "अह" [समाप्त] - यह नियम शुरुआत का है। यदि 'बका' (निरंतरता) अभिप्रेत हो, अर्थात पानी की उपलब्धता के बाद तयम्मुम सर्वसम्मति से जनाबत (बड़ी अशुद्धि) के लिए शेष रहेगा, तो यह असत्य है। क्योंकि इमाम शाफ़ई के निकट किसी भी प्रकार के पानी की उपलब्धता के समय तयम्मुम पूरी तरह से शून्य हो जाता है क्योंकि उनके अनुसार इसकी शर्त (पानी का न मिलना) ही गायब है। अब रहा व्याख्या का तरीका (उपरोक्त कल्पित स्थिति के आधार पर भी बात नहीं बनेगी, जिसका विवरण यह है: १२ म अलिफ़): इसमें अंतिम स्थिति यह है कि यदि तयम्मुम के बाद ह़दस (छोटी अशुद्धि) हो, तो यदि 'बका' अभिप्रेत हो जैसा कि शुरनबलाली ने इसे स्पष्ट रूप से कहा है, तो उसकी शून्यता स्पष्ट है जैसा कि अभी उल्लेख किया गया है। लेकिन, उन्होंने (अल्लाह उन पर दया करे) इसे "सर्वसम्मति" के साथ समाप्त नहीं किया, इसलिए यह ठीक रहा, इसके विपरीत वह जिसने कहा— नोट: जिसने कहा कि "तयम्मुम सर्वसम्मति से शेष रहता है" वह अंधेरे भ्रम में पड़ गया। और यदि 'इब्तिदा' (शुरुआत) अभिप्रेत हो, तो हाँ, इस पर सहमति है कि उस समय यह विशेष रूप से जनाबत के लिए है क्योंकि उस समय ह़दस नहीं है। लेकिन "सर्वसम्मति से" शब्द का प्रयोग निरर्थक है और भ्रम पैदा करने वाला है। जहाँ तक पहले का सवाल है, क्योंकि जब उनके निकट पानी मिलने पर यह शून्य हो जाता है, तो उनकी स्पष्ट सहमति का क्या लाभ? और जहाँ तक बाद वाले का सवाल है, क्योंकि (उल्लिखित लखनऊ के विद्वान १२ त)।

[बायां कॉलम - अरबी मूल पाठ] तथा उन दोनों का अर्थ, स्वरूप और उद्देश्य एक ही है, अतः समावेशन से निषेध की कल्पना नहीं की जा सकती। इसके अतिरिक्त, दो क्रमिक तयम्मुमों के आदेश में वह अनिवार्य होता है जो निरर्थकता के समान है, क्योंकि यदि उसने नमाज़ की अनुमति के लिए पहले तयम्मुम किया, तो उसने उसके माध्यम से अनुमति प्राप्त कर ली। अतः दूसरे को अनिवार्य करना निरर्थक है जिसमें कोई लाभ नहीं है। "अह" - यह शुरुआत में है। यदि निरंतरता अभिप्रेत हो—

अर्थात पानी मिलने के बाद वह सर्वसम्मति से जनाबत के लिए शेष रहे—तो यह असत्य है, क्योंकि पानी के किसी भी प्रकार के मिलने पर उनके निकट यह पूरी तरह से शून्य हो जाता है, इसकी शर्त के न होने के कारण। और जहाँ तक व्याख्या के मार्ग और उसमें अंतिम स्थिति का प्रश्न है, जो कि तयम्मुम के बाद ह़दस का होना है: तो यदि निरंतरता अभिप्रेत हो जैसा कि शुरनबलाली ने स्पष्ट रूप से कहा है, तो जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, शून्यता स्पष्ट है, सिवाय इसके कि उन्होंने (अल्लाह उन पर दया करे) इसे "सर्वसम्मति" के साथ नहीं जोड़ा, इसलिए वह सही रहा, इसके विपरीत वह—नोट: जिसने कहा कि "तयम्मुम सर्वसम्मति से शेष रहता है" वह घोर अंधकारमय त्रुटि में पड़ गया। और यदि शुरुआत अभिप्रेत हो, तो हाँ, इस पर सहमति है कि उस समय ह़दस के अभाव के कारण वह विशेष रूप से जनाबत के लिए है। लेकिन "सर्वसम्मति से" शब्द निरर्थक रूप से आया है और गलती का भ्रम पैदा करता है। जहाँ तक पहले का प्रश्न है, क्योंकि जब वह पानी मिलने पर उनके निकट शून्य हो जाता है, तो उनकी स्पष्ट सहमति का क्या लाभ? और जहाँ तक अंतिम का प्रश्न है, क्योंकि (उल्लिखित लखनऊ के विद्वान १२ त)। नोट: वह उल्लिखित लखनवी हैं।

---

1 फ़तावा कुबरा लिल्-इब्न ह़जर मक्की, बाबुत तयम्मुम, मतबूआ दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या बैरूत, 1/70

[دایاں کالم] اور تیمم حدث اکبر دونوں کی حقیقت، دونوں کا معنی، دونوں کی صورت اور دونوں کا مقصود ایک ہی ہے تو یہ خیال نہیں ہونا چاہئے کہ ایک دوسرے میں مندرج نہیں ہو سکتا۔ اور ایک دوسری وجہ یہ بھی ہے کہ اگر پے در پے دو تیمم کا حکم دیا جائے تو ایک بیکار و عبث سا کام کرنا لازم آئے گا کیوں کہ جب اس نے پہلی بار اباحت نماز حاصل کرنے کے لئے تیمم کرلیا تو اس سے جواز نماز حاصل کرلیا پھر دوسرا تیمم واجب کرنا عبث ہے جس میں کوئی فائدہ نہیں "اہ" یہ حکم ابتدا کا ہوا۔ اگر بقا مراد ہو یعنی پانی کی دستیابی کے بعد تیمم بالاتفاق جنابت کے لئے باقی رہے گا تو یہ باطل ہے۔ کیونکہ امام شافعی کے نزدیک کسی بھی آب مطلق کی دستیابی کے وقت تیمم سرے سے باطل ہے کیونکہ ان کے طور پر اس کی شرط (عدم ماء مطلق) ہی مفقود ہے اب رہا مسلک تاویل (بصورت مفروضہ بالا اس مسلک کی بنیاد پر بھی بات نہ بنے گی جس کی تفصیل یہ ہے ۱۲م الف) اس میں صورتِ اخیرہ یہ ہے کہ حدثِ تیمم کے بعد ہو تو اگر بقا مراد ہو جیسا کہ شرنبلالی نے اسے غیر مبہم طور پر کہا تو اس کا بطلان ظاہر ہے جس کی (فاضل لکھنوی مذکور ۱۲ ت)

[بایاں کالم] ومعناهما وصورتهما ومقصودهما واحد فلا يتخيل منع الاندراج ولانه يلزم على الامر بتيممين متواليين ما يشبه العبث لانه اذا تيمم اولاً لاستباحة الصلاة استباحها به فايجاب الثانى عبث لا فائدة فيه اه هذا فى الابتداء - وان اريد البقاء اى ان بعد وجدانه يبقى للجنابة بالاتفاق فباطل اذيبطل عنده رأسا بوجدان ماء ما مطلقاً لفقدان شرطه و اما على مسلك التاويل والصورة الاخيرة فيه الحدث بعد التيمم فأن اريد بقاء كما افصح به الشرنبلالى فظاهر البطلان كما مر آنفا غير انه رحمه الله تعالٰى لم يذيله بالاتفاق فسلم بخلاف ذلك عه الذى قال فالتيمم باق اتفاقا فانه وقع فى خطأ مظلم و ان اريد ابتداءً

فنعم هو متفق علیه کونه اذ ذاك للجنابة خاصة لعدم الحدث حینئذ لکن لفظة بالاتفاق تقع عبثاً و موهمة غلط اما الاول فلانه اذ یبطل عنده بالوجدان فما فائدة وفاقه البائن و اما الاخیر فلان (فاضل لکهنوی مذکور ۱۲ ت) عه هو اللکنوی المذکور

---

1 فتاویٰ کبری لابن حجر مکی، باب التیمم، مطبوعہ دارالکتب العلمیہ بیروت، ۷۰/۱

Fatawa Razvia, Volume Four

(Right Column) The reason has just been stated. Yes, 'Allama Shurunbulali mentioned this case and did not say "by consensus" (bil-ittifaq) after it, so he remained safe [from error]. This is unlike the claimant who wrote that "Tayammum remains by consensus." He fell into a dark error. And if the beginning was intended, then it is agreed upon there that the Tayammum in that case will be specifically for major ritual impurity (janabat), because in that case, there is no minor ritual impurity (hadath). But on this premise, the word "by consensus" would be futile and would create a suspicion of an error. It would be futile because when this Tayammum is invalid according to Imam Shafi'i due to the availability of water, what benefit is there in their disagreement-mingled consensus? The false ambiguity arises because mentioning this word in the last case, especially in contrast to the disagreement mentioned in the first case, leads one to infer that there is no consensus in the first case, whereas the matter is not so. This is because in the first case as well, if there is no minor ritual impurity, the Tayammum will be for major ritual impurity only, by consensus. And if there is minor ritual impurity as well, it will be for both, without disagreement. The disagreement there is only regarding whether Tayammum remains according to us, or whether it becomes invalid according to them due to the availability of insufficient water. In short, it is necessary to refer the word "by consensus" to their statement "it is mandatory" (yajib) [i.e., the obligation of ablution], as was done in Ghayat al-Hawashi, and it was done well. (T)

I say: From this, several things become clear. Firstly, in Durar al-Hukkam, it would have been more appropriate to place the word "by consensus" before the word "so Tayammum" (fa-al-tayammum), because the author of Durar intends with this expression to clarify the words of Sadr al-Shariah and remove ambiguities from them.

Secondly: Despite clarifying the connection of the said word to "it is mandatory" (yajib), the author of Ghayat al-Hawashi also did not do well by combining this word with the subsequent sentence, as he said:

(Left Column) Its mention in the last case, especially in comparison with the disagreement mentioned in the first one, implies lack of agreement in the first, whereas it is not so. This is because in the first case, if there was no minor ritual impurity, it would be for Janabat alone by consensus, and if there were [minor impurity], it would be for both by consensus. The disagreement there is only

regarding the persistence of Tayammum according to us and its invalidation according to him upon finding insufficient water. In short, his statement "by consensus" must be referred to his statement "it is mandatory," as done in Ghayat al-Hawashi, and what a good deed it was.

I say: And from this, it appeared firstly that (1) it would have been more appropriate for Durar to prioritize his statement "by consensus" over his statement "so Tayammum," because he is in the process of clarifying the words of the Imam Sadr and removing ambiguities from it.

Secondly: (2) That the author of Ghayat al-Hawashi, despite clarifying its connection to "it is mandatory," did not do well in joining it with the following sentence also, as he said:

फ़तावा रज़विया, जिल्द चौथी

(दायाँ कॉलम) वजह अभी बयान हुई। हाँ, अल्लामा शुरुनबुलाली ने यह सूरत लिखकर उसके बाद "बिल-इत्तेफ़ाक़" (सर्वसम्मति से) नहीं कहा, इसलिए वे सुरक्षित रहे, इसके विपरीत उस कहने वाले के जिसने यह लिख दिया कि "तयम्मुम इत्तेफ़ाक़न बाक़ी है", वह तो घोर त्रुटि में पड़ गया। और अगर शुरुआत मुराद हो तो वहाँ यह मुत्तफ़क़ अलैह (सर्वसम्मत) है कि वह तयम्मुम उस सूरत में ख़ास जनाबत (बड़ी नापाकी) के लिए होगा क्योंकि उस सूरत में हदस (छोटी नापाकी) है ही नहीं। लेकिन इस आधार पर लफ्ज़ "बिल-इत्तेफ़ाक़" निरर्थक और एक ग़लती का वहम पैदा करने वाला ठहरेगा। निरर्थक इसलिए कि जब यह तयम्मुम इमाम शाफ़ई के नज़दीक पानी की उपलब्धता के कारण बातिल (अमान्य) है, तो उनके इस इख़्तिलाफ़-आमेज़ (असहमति मिश्रित) इत्तेफ़ाक़ से क्या फ़ायदा? ग़लत इबहाम (अस्पष्टता) इसलिए कि यह लफ्ज़ आख़िरी सूरत में, विशेष रूप से पहली सूरत में उल्लेखित इख़्तिलाफ़ के मुक़ाबले में उल्लेख करने से यह समझ में आता है कि पहली सूरत में इत्तेफ़ाक़ नहीं है, जबकि मामला ऐसा नहीं है। इसलिए कि पहली सूरत में भी अगर हदस न हो तो तयम्मुम सिर्फ़ जनाबत ही के लिए होगा बिल-इत्तेफ़ाक़। और अगर हदस भी हो तो दोनों ही के लिए होगा बिना किसी इख़्तिलाफ़ के। वहाँ इख़्तिलाफ़ सिर्फ़ इस बारे में है कि हमारे नज़दीक तयम्मुम बाक़ी रहेगा और उनके नज़दीक अपर्याप्त पानी मिलने से टूट जाएगा। संक्षेप में, लफ्ज़ "बिल-इत्तेफ़ाक़" को उनके कौल "यजीब" (वज़ू का वाजिब होना) की तरफ़ फेरना लाज़िम है जैसा कि ग़ायतुल हवाशी में किया गया और बहुत अच्छा किया। (त)

अक़ूल (मैं कहता हूँ): इससे चंद बातें और वाज़ेह (स्पष्ट) हो गईं। अव्वलन 'दुररुल हक्काम' में लफ्ज़ "बिल-इत्तेफ़ाक़" को लफ्ज़ "फ़-अत-तयम्मुम" से पहले रखना बेहतर था क्योंकि दुरर के लेखक अपनी इस इबारत से सद्रुश-शरिया के कलाम को वाज़ेह करना और उससे वहम दूर करना चाहते हैं।

सानियन: "यजीब" से उक्त लफ्ज़ के संबंध को स्पष्ट करने के बावजूद ग़ायतुल हवाशी के लेखक ने भी इस लफ्ज़ को बाद वाले जुमले से मिलाकर अच्छा नहीं किया।

(बायाँ कॉलम) इसका उल्लेख अंतिम स्थिति में करना, विशेष रूप से पहली स्थिति में वर्णित मतभेद की तुलना में, यह दर्शाता है कि पहली स्थिति में कोई सहमति नहीं है, जबकि ऐसा नहीं है। क्योंकि पहली स्थिति में, यदि कोई छोटी अशुद्धि (हदस) नहीं थी, तो यह सर्वसम्मति से केवल जनाबत के

लिए होता, और यदि होती, तो सर्वसम्मति से दोनों के लिए होता। मतभेद केवल हमारे पास तयम्मुम के बने रहने और अपर्याप्त पानी मिलने पर उनके पास इसके समाप्त होने के बारे में है। संक्षेप में, उनके कथन "बिल-इत्तेफ़ाक़" को उनके कथन "यजीब" (अनिवार्य है) की ओर संदर्भित किया जाना चाहिए, जैसा कि 'ग़ायत अल-हवाशी' में किया गया था, और क्या ही अच्छा कार्य किया गया।

अक़ूल: और इससे पहली बात यह स्पष्ट हुई कि (1) दुरर के लिए उनके कथन "बिल-इत्तेफ़ाक़" को उनके कथन "फ़-अत-तयम्मुम" से पहले रखना अधिक उपयुक्त था, क्योंकि वह इमाम सद्र के शब्दों को स्पष्ट करने और उनसे संदेह दूर करने की प्रक्रिया में हैं।

दूसरे: (2) कि 'ग़ायत अल-हवाशी' के लेखक ने "यजीब" के साथ इसके संबंध को स्पष्ट करने के बावजूद, इसे अगले वाक्य के साथ जोड़कर अच्छा नहीं किया, जैसा कि उन्होंने कहा:

فتاوی رضویہ، جلد چہارم

(دایاں کالم) وجہ ابھی بیان ہوئی ہاں علامہ شُرُنبلالی نے یہ صورت لکھ کر اس کے بعد "بالاتفاق" نہ کہا اس لئے وہ سلامت رہے، بخلاف اس قائل کے جس نے یہ لکھ دیا کہ "تیمم باقی ہے اتفاقاً " وہ تو تاریک خطا میں پڑ گیا۔ اور اگر ابتداء مراد ہو تو وہاں یہ متفق علیہ ہے کہ وہ تیمم اس صورت میں خاص جنابت کے لئے ہوگا کیونکہ اس صورت میں حدث ہے ہی نہیں لیکن اس تقدیر پر لفظ "بالاتفاق" عبث اور ایک غلطی کا وہم پیدا کرنے والا ٹھہرے گا عبث اس لئے کہ جب یہ تیمم امام شافعی کے نزدیک پانی کی دستیابی کی وجہ سے باطل ہے تو ان کے اس اختلاف آمیز اتفاق سے فائدہ کیا؟ ابہامِ غلط اس لئے کہ یہ لفظ صورت اخیرہ میں خصوصاً صورت اولی میں ذکر شدہ اختلاف کے مقابل ذکر کرنے سے یہ مستفاد ہوتا ہے کہ صورتِ اولی میں اتفاق نہیں حالانکہ معاملہ ایسا نہیں۔ اس لئے کہ پہلی صورت میں بھی اگر حدث نہ ہو تو تیمم صرف جنابت ہی کے لئے ہوگا بالاتفاق اور اگر حدث بھی ہو تو دونوں ہی کے لئے ہوگا بلا اختلاف وہاں اختلاف صرف اس بارے میں ہے کہ ہمارے نزدیک تیمم باقی رہے گا اور ان کے نزدیک غیر کافی پانی کی دست یابی سے ٹوٹ جائے گا۔ بالجملہ لفظ "بالاتفاق" کو ان کے قول "یجب" (وجوبِ وضو) کی جانب پھیرنا لازم ہے جیسا کہ غایۃ الحواشی میں کیا اور خوب کیا۔ (ت)

اقول: اس سے چند باتیں اور واضح ہو گئیں اوّلاً دررالحکام میں لفظ "بالاتفاق" کو لفظ "فالتیمم" سے پہلے رکھنا انسب تھا کیوں کہ صاحبِ درر اپنی اس عبارت سے صدر الشریعہ کے کلام کو واضح کرنا اور اس سے اوہام دُور کرنا چاہتے ہیں۔

ثانیاً: "یجب" سے لفظ مذکور کے تعلق کی صراحت کرنے کے باوجود صاحب غایۃ الحواشی نے بھی اس لفظ کو بعد والے جملہ سے ملا کر اچھا نہ کیا

(بایاں کالم) ذکرہا فی الصورۃ الاخیرۃ لاسیما بمقابلۃ الاختلاف المذکور فی الاولی یفید عدم الاتفاق فی الاولی و لیس کذلك لان فی الاولی ان لم یکن حدث کان للجنابۃ وحدها بالاتفاق و انکان کان لهما بالوفاق انما الاختلاف ثمه فی بقاء التیمم عندنا وانتقاضه عنده بوجدان ماء غیر کاف وبالجملۃ قوله بالاتفاق یجب صرفه الی قوله یجب کما فعل في غایۃ الحواشی نعما فعل۔

اقول: و به ظهر اولا انه (۱) کان الانسب للدرر تقدیم قوله بالاتفاق علی قوله فالتیمم لانه بصدد ایضاح کلامه الصدر الامام وان یزایح عنه الاوهام۔

وثانیا:(۲)ان صاحب غایۃ الحواشی مع تصریحه بتعلقه بیجب لم یحسن فی ضمه مع الجملۃ التالیۃ ایضا اذ قال

Fatawa Razawiyya, Volume 4

"Even though it is Tayammum for a person in the state of Janaba by consensus"[1]

They said in their text: "Even though it is Tayammum for a person in the state of Janaba by consensus" (So Wudu is obligatory despite the fact that this is the Tayammum for Janaba by consensus).

Thirdly: The invalidity (1) of the fourth objection cited in 'Al-Si'aya' along with the explanation that "Tayammum being for Janaba by consensus is common to both scenarios," because according to Imam Shafi'i, in both cases, it is not for anything at all. Now, if one retracts the word "by consensus" and limits themselves to saying that "it being for Janaba is common to both scenarios, and it is not specific to this scenario," then this point will be included in the previous objection raised against them. By the help of Allah Almighty, its answer will soon be presented. (T)

Note 8: We maintain that the 'Fa' (Arabic letter) is for derivation (tafree'), as followed by Allama Shurunbulali and 'Ghayat al-Hawashi'. The statement (2) in 'Al-Si'aya' that it is fruitless is itself fruitless. The reason is that this Tayammum being specifically for Janaba arose only because Wudu is obligatory for minor ritual impurity (hadath); for if it were not obligatory, Tayammum would have been for both together, as performing prayer while in a state of minor impurity is impossible. Therefore, it is necessary to consider the mentioned Tayammum as either removing or preventing it.

---

[1] Al-Si'aya, Book of Tayammum, Suhail Academy Lahore, 1/290 Page 249 of 761

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4

"यद्यपि यह सर्वसम्मति से जुनुब (महा-अशुद्धि) के लिए तयम्मुम है"[1]

उन्होंने अपने पाठ में यह कहा: "यद्यपि यह सर्वसम्मति से जुनुब के लिए तयम्मुम है" (तो वज़ू अनिवार्य है, बावजूद इसके कि यह सर्वसम्मति से जुनुब का तयम्मुम है)।

तीसरा: 'अस-सियाया' में उद्धृत चौथे आक्षेप की अमान्यता (1), इस व्याख्या के साथ कि "तयम्मुम का सर्वसम्मति से जनाबत (महा-अशुद्धि) के लिए होना दोनों स्थितियों में समान है", क्योंकि इमाम शाफ़ई के अनुसार, दोनों स्थितियों में यह किसी भी चीज़ के लिए नहीं है। अब, यदि "सर्वसम्मति से" शब्द को त्याग दिया जाए और केवल यह कहा जाए कि "इसका जनाबत के लिए होना दोनों स्थितियों में समान है, और यह इसी स्थिति के साथ विशिष्ट नहीं है", तो यह बात उसी आक्षेप में शामिल हो जाएगी जो इससे पहले उन पर किया गया था। अल्लाह तआला की सहायता से, इसका उत्तर शीघ्र ही सामने आएगा। (त)

फ़ायदा 8: हम यह चुनते हैं कि 'फ़ा' (अरबी अक्षर) वियुत्पत्ति (तफ़री'अ) के लिए है, जैसा कि अल्लामा शुरुनबुलाली और 'ग़ायत अल-हवाशी' ने अपनाया है। 'अस-सियाया' का (2) इसे निष्फल बताना स्वयं निष्फल है। कारण यह है कि इस तयम्मुम का विशेष रूप से जनाबत के लिए होना केवल इसलिए उत्पन्न हुआ क्योंकि हदथ (लघु-अशुद्धि) के लिए वज़ू अनिवार्य है; क्योंकि यदि यह अनिवार्यता न होती, तो तयम्मुम दोनों के लिए एक साथ होता, क्योंकि हदथ की स्थिति में नमाज़ का जायज़ होना असंभव है। इसलिए, यह मानना आवश्यक है कि उल्लेखित तयम्मुम उसे हटाने वाला या रोकने वाला है।

---

[1] अस-सियाया, बाबुत तयम्मुम, सुहैल एकेडमी लाहौर, 1/290 पेज 249 / 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

مع انه تیمم للجنب اتفاقاً [1] انہوں نے اپنی عبارت میں یہ کہا: "مع انه تیمم للجنب اتفاقاً " (تو وضو واجب ہے باوجودیکہ یہ جنب کا تیمم ہے اتفاقاً)

وثالثاً: بطلان(۱)الایراد الرابع المنقول في السعایة مع التقریر ان کون التیمم للجنابة بالاتفاق مشترك بین الصورتین فانه لیس لشیئ اصلاً عند الامام الشافعي في کلا الوجهین۔ فان استعفی عن لفظة بالاتفاق واقتصر علی ان کونه للجنابة مشترك بین الصورتین لاختصاص له بهذه الصورة اندرج في الایراد السابق علیه وسیأتیك الجواب عنه بعونه تعالی ۔

ثالثاً: چوتھا اعتراض جو سعایہ میں اس تقریر کے ساتھ منقول ہے کہ "تیمم کا بالاتفاق جنابت کے لئے ہونا دونوں ہی صورتوں میں مشترک ہے" (یہ اعتراض و تقریر) باطل ہے اس لئے کہ دونوں صورتوں میں یہ تیمم امام شافعی کے نزدیک کسی چیز کے لئے نہیں۔ اب اگر لفظ "بالاتفاق" سے دستبردار ہو کر صرف یہ کہیں کہ "تیمم کا جنابت کے لئے ہونا دونوں ہی صورتوں میں مشترک ہے اسی صورت کے ساتھ اسے کوئی اختصاص نہیں" تو یہ بات اسی اعتراض میں شامل ہو جائے گی جو اس سے پہلے ان پر کیا۔ اور بعونہ تعالیٰ اس کا جواب عنقریب سامنے آرہا ہے۔ (ت)

الافادة ۸: نختار ان الفاء للتفریع کما مشی علیه العلامة الشرنبلالی وغایة الحواشی وقول (۲) السعایة لا محصل له لا محصل له لان کون هذا التیمم للجنابة خاصة لم ینشأ الا من وجوب الوضوء للحدث اذ لولم یجب لکان التیمم لهما معا لاستحالة ان تجوز صلاة مع الحدث فلا بد ان یعتبر التیمم المذکور رافعاً له اودافعاً

افادہ ۸: ہم یہ اختیار کرتے ہیں کہ ف تفریع کے لئے ہے جیسا کہ اسی راہ پر علامہ شرنبلالی اور غایۃ الحواشی کے روش ہے۔ اور سعایہ کا اسے لاحاصل بتانا خود لاحاصل ہے۔ وجہ یہ ہے کہ اس تیمم کا خاص جنابت کے لئے ہونا اسی امر سے پیدا ہوا کہ حدث کے لئے وضو واجب ہے، اس لئے کہ اگر یہ وجوب نہ ہوتا تو تیمم حدث و جنابت دونوں ہی کے لئے ہوتا کیونکہ حدث کے ساتھ کسی نماز کا جواز محال ہے تو یہ ماننا ضروری ہے کہ تیمم مذکور کو اس کا رافع یا دافع تسلیم کیا جائے۔

---

[1] السعایہ باب التیمم سہیل اکیڈمی لاہور ۱/ ۲۹۰ صفحہ 249 از 761

"Wa in kanal akheeru laysa lahu fish-shar'i nazeerun fastilzamu muhalin muhalan ghayru muhal." That the aforementioned tayammum is either a remover (rafi') or a preventer (dafi'). If it is the latter, then there is no precedent for it in Sharia; therefore, one impossibility necessitating another impossibility is not impossible. (T)

Benefit 9: We choose the view that the particle "fa" (ف) is for causation (ta'lil). The notion from the work "Al-Si'ayah" that "the cause is shared" is rejected. According to the path of interpretation (ta'wil), when both states of ritual impurity (hadath) coexist in the first scenario, it is evident because tayammum occurred upon both and removed both together; so how can it be specific to major ritual impurity (janaba)? And under the path of interpretation when janaba is isolated without hadath in the first scenario, and on the path of reliance (ta'wil), the reason for something being specific to another thing is sometimes because its existence is restricted to it, and sometimes because it is unique among its participants in existence. It is intuitively clear that the latter is intended here because if an impurity (hadath) is present and tayammum occurs only for janaba, it would not suffice for the hadath and wudu would remain obligatory, unlike that case when an impurity is present and tayammum occurs only for janaba and it could not affect the hadath and wudu became obligatory, unlike that case where no impurity exists at all, then for what thing would wudu be obligatory? This aspect of specificity is not shared. Thus, it is clear that the "fa" allows for both possibilities (inference and causation). Therefore, the fact that Shurunbulali and Ghayat al-Hawashi mentioned only one was merely coincidental; there is no compelling reason for it. Rather, the possibility of causation (ta'lil) is more apparent and manifest. Because here the objective is not to state that tayammum is specifically for janaba alone. And Allah the Almighty knows best. (T)

"व इन कानल अखीरु लैसा लहू फ़िश शरई नज़ीरुन् फ़स्तिल्ज़ामु मुहालिन मुहालन् गैरु मुहाल।" कि ज़िक्र किया गया तयम्मुम उसे रफ़ा (दूर) करने वाला है या दफ़ा (रोकने) करने वाला है। अगर यह आख़िरी (दफ़ा करने वाला) हो तो शरीअत में इसकी कोई नज़ीर (मिसाल) नहीं है, तो एक मुहाल (असंभव) का दूसरे मुहाल के लिए लाज़िम होना कोई असंभव नहीं है। (त)

इफ़ादा 9: हम यह इख़्तियार करते हैं कि 'फ़ा' (ف) तलील (कारण बताने) के लिए है। 'सेआया' (السعایۃ) का यह ख़याल कि "इल्लत (कारण) मुश्तरक (साझा) है" मरदूद (अस्वीकृत) है। यह तावील (व्याख्या) के तरीक़े पर है जबकि पहली सूरत में दोनों हदस (अशुद्धियाँ) जमा हों, तो यह ज़ाहिर है क्योंकि तयम्मुम दोनों ही हदस पर तारी (लागू) होकर दोनों को रफ़ा किया, तो वह सिर्फ़ जनाबत के साथ ख़ास कैसे होगा? और तावील के तरीक़े पर जबकि पहली सूरत में जनाबत बिना किसी और हदस के तनहा हो। और एतमाद (भरोसे) के तरीक़े पर वजह यह है कि एक चीज़ का दूसरी चीज़ के साथ ख़ास होना कभी इसलिए होता है कि उसका वजूद उसी में मुनहसिर (सीमित) है और कभी इसलिए होता है कि वह अपने वजूद में शामिल दूसरी चीज़ों के दरमियान इसके साथ मुतफ़र्रिद (अकेला/विशिष्ट) है। और बदाहतन (सहज रूप से) मालूम है कि यहाँ यही मुराद है, क्योंकि जब कोई हदस पाया जाए और तयम्मुम सिर्फ़ जनाबत के लिए वाक़े हो, तो वह हदस का कुछ काम न कर सका और वज़ू वाजिब हुआ, बखिलाफ़ उस सूरत के जबकि कोई हदस पाया जाए और तयम्मुम सिर्फ़ जनाबत के लिए वाक़े हो, तो वह हदस का कुछ काम न कर सका और वज़ू वाजिब हुआ, बखिलाफ़ उस सूरत के जबकि कोई हदस मौजूद ही न हो, तो फिर किस चीज़ के लिए वज़ू वाजिब होगा? ख़ुसूसियत का यह पहलू मुश्तरक नहीं है। अतः इस बयान से ज़ाहिर हुआ कि 'फ़ा' में तफ़रीअ (शाखा निकालना) और तलील (कारण बताना) दोनों ही एहतमाल (संभावनाएं) जारी हैं। तो शुरुम्बलाली और ग़ायतुल हवाशी का सिर्फ़ एक ही का ज़िक्र करना महज़ इत्तेफ़ाक़न हुआ, इसका कोई ख़ास कारण नहीं है। बल्कि तलील का एहतमाल ही ज़्यादा ज़ाहिर और रौशन है। क्योंकि यहाँ यह बताना मक़सूद नहीं है कि तयम्मुम ख़ास जनाबत ही के लिए है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानने वाला है। (त)

وان کان الاخیر لیس لہ فی الشرع نظیر فاستلزام محال محالا غیر محال۔ کہ تیمم مذکور اسے رفع کرنے والا ہے یا دفع کرنے والا ہے اگر اخیر ہو تو شرع میں اس کی کوئی نظیر نہیں تو ایک محال کا دوسرے محال کو مستلزم ہونا کوئی محال نہیں۔ (ت)

الافادة 9: نختار انها للتعليل وزعم (1) السعاية اشتراك العلة مردود اما على مسلك التاويل مع اجتماع الحدثين فى الصورة الاولى فظاهر لان التيمم طرأ عليهما فرفعهما معا فكيف يختص بالجنابة واما عليه مع انفراد الجنابة فى الصورة الاولى وعلى مسلك التعويل فاختصاص (2) شيئ بشيئ تارة يكون لانحصار الوجود فيه واخرى لتفرده به من بين مشاركاته في الوجود ومعلوم بداهة ان هذا هو المراد هنا فانه اذا وجد حدث ولم يقع التيمم الاعن الجنابة لم يغن عن الحدث ووجب الوضوء بخلاف ماذا لم يكن حدث فلاى شيئ يجب وهذا الوجه من الاختصاص غير مشترك فظهر ان الفاء تحمل الوجهين فقصر (3) الشرنبلالي و غاية الحواشى على احدهما وقع وفاقاً لاداعي اليه بل التعليل هو (4) الاظهر الازهر فان كون التيمم لخصوص الجنابة غير مقصود هنا بالافادة والله تعالى اعلم۔

افادہ ۹ : ہم یہ اختیار کرتے ہیں کہ فا تعلیل کے لئے ہے اور سعایہ کا یہ خیال کہ "علت مشترک ہے" غلط ہے یہ مسلک تاویل پر جبکہ پہلی صورت میں دونوں حدث جمع ہوں ظاہر ہے اس لئے کہ تیمم نے دونوں حدوث پر طاری ہو کر دونوں ہی کو رفع کیا تو وہ جنابت کے ساتھ خاص کیسے ہوگا؟ اور مسلک تاویل پر جب کہ پہلی صورت میں جنابت بلاحدث ہو اور مسلک اعتماد پر وجہ یہ ہے کہ ایک چیز کا دوسری چیز کے ساتھ خاص ہونا کبھی اس لئے ہوتا ہے کہ اس کا وجود اسی میں منحصر ہے اور کبھی اس لئے ہوتا ہے کہ یہ اس کے مشارکات فی الوجود کے درمیان اس کے ساتھ متفرد ہے۔ اور بداہۃً معلوم ہے کہ یہاں پر یہی مراد ہے اس لئے کہ جب کوئی حدث پایا جائے

اور تیمم صرف جنابت کا واقع ہو تو حدث کا کچھ کام نہ کر سکا اور وضو واجب ہوا بخلاف اس صورت کے جبکہ کوئی حدث پا یا جائے اور تیمم صرف جنابت کا واقع ہو تو حدث کا کچھ کام نہ کر سکا اور وضو واجب ہوا بخلاف اس صورت کے جبکہ کوئی حدث موجود ہی نہ ہو پھر کس چیز کے لئے وضو واجب ہو گا ۔ یہ وجہ اختصاص مشترک نہیں ۔ اس بیان سے ظاہر ہوا کہ فا میں تفریع و تعلیل دونوں ہی احتمال جاری ہیں ۔ تو شرنبلالی اور غایۃ الحواشی کا صرف ایک ہی کو ذکر کرنا محض اتفاقاً واقع ہوا اس کا کوئی داعی نہیں ہے بلکہ احتمال تعلیل ہی زیادہ ظاہر و روشن ہے۔ اس لئے کہ یہاں یہ بتانا مقصود نہیں کہ تیمم خاص جنابت ہی کے لئے ہے۔ اور خدائے برتر ہی خوب جاننے والا ہے ۔ (ت)

Volume 4, Fatawa Razawiyya

Benefit 10: By the grace of the Glorious Lord, the correct answer to all five objections based on the method of interpretation (Ta'wil), and the answers to all except the fifth based on the method of reliance (Ta'wil), have become clear. It has also become apparent that the strongest objection is the last great one, which prompted scholars to reject or interpret. The first objection is not difficult; rather, it is quickly resolved. Similarly, the answer to the second is easy if it is not mixed with the difficult fifth question. As for the third and fourth brought by the slanderer (Sa'aya), they are extremely weak. The persistence of the fifth objection on the method of reliance is what calls for its dismissal, as it conflicts with overwhelming evidence and bright textual proofs. I have not seen anyone who chose and approved of this method except al-Qarah Baghi in the marginalia, and he did not bring anything useful at all. His statement: "It is a strained interpretation, far-fetched from the text." (T)

I say: Yes (1) because when Chalpi added from the Hadith of al-Lum'ah, he referred back to what is coming from the commentator; otherwise, there is nothing in this interpretation except taking 'ma'a' (with) in the meaning of 'ba'da' (after), and there is no remoteness in this as it occurs in the Noble Book (Quran): "For indeed, with hardship [will be] ease" (94:5). Qarah Baghi's statement: "Repetition becomes necessary."

जिल्द 4, फतावा रज़विया

इफ़ादा 10: रब्बे जलील के फ़ज़्ल से तावील के मज़हब पर पांचों ऐतराज़ात का जवाब और एतमाद के मज़हब पर पांचवें के अलावा बाक़ी सब का जवाब वाज़ेह हो गया। और यह भी ज़ाहिर हुआ कि सबसे मज़बूत ऐतराज़ पांचवां है, जो उलमा के इनकार या तावील का सबब बना। और पहला ऐतराज़ कोई मुश्किल नहीं बल्कि बहुत जल्द हल हो जाता है। इसी तरह दूसरे का जवाब भी आसान है अगर पांचवें मुश्किल सवाल के साथ उसे न मिलाया जाए। रहा तीसरा और चौथा जिन्हें सआया ने पेश किया, तो वे इंतिहाई कमज़ोर हैं। एतमाद के मज़हब पर पांचवें ऐतराज़ का बाक़ी रह जाना ही वह चीज़ है जो इसके ख़त्म होने का एलान कर रही है क्योंकि वह मज़बूत दलाइल और रौशन नसूस से टकराता है। मैंने क़रह बाग़ी हशिया-नवीस के इलावा किसी ऐसे को नहीं देखा जिसने इस मज़हब को इख़्तियार किया और पसंद किया हो। और क़रह बाग़ी क़तअन कोई काम की बात न ला सके। (अब उनके ख़्याल और इबारत का थोड़ा तज़्सिया मुलाहिज़ा हो - 12 म अलिफ़) क़रह बाग़ी का क़ौल: चल्पी का कलाम सरासर तकल्लुफ़ है, इबारत से ये मानी अख़ज़ करना बहुत बईद (मुश्किल) है। (त)

अक़ूल (मैं कहता हूँ): हाँ, इसलिए कि उन्होंने हज़रत शारेह के आइंदा कलाम की तरफ़ रुजूअ करने की ग़रज़ से 'लम्आ' की बात बढ़ा दी, वरना इस तावील में इसके इलावा कुछ नहीं कि 'मअ' को 'बाद' के मानी में लिया है, और इसमें कोई बुअ्द (दूरी) नहीं, यह तो क़ुरान-ए-अज़ीज़ में भी हुआ है (बेशक मुश्किल के साथ आसानी है)। क़रह बाग़ी का क़ौल: तकरार लाज़िम आती है।

पृष्ठ 251/761 मजलिस-ए-दावत-ए-इस्लामी

الافادة ۱۰: تبین الجواب الصواب بحمد الجلیل عن الاسئلة الخمسة کلها علی مسلک التاویل وعن غیر الخامس علی مسلک التعویل وظهر ان اقواها السؤال الاخیر الجلیل وهو الذی دعا العلماء الی الانکار اوالتاویل وان السؤال الاول لیس باشکال بل سریع الانحلال وکذا الثانی کشفه رخیص ان لم یمزج بالخامس العویص اما الثالث والرابع اللذان أتت بهما السعایة فانهما واهیان الی الغایة وبقاء الخامس علی مسلك التعویل هو الذی نادی علیه بالرحیل لمصادمته الدلائل القاهرة والنصوص الزاهرة ولم ار من یختاره ویرتضیه الا القره باغی فی الحاشیة ولم یات اصلا بشیئ یغنیه* فقوله تکلف بعید الاخذ من العبارة۔

افادہ ۱۰: بحمد رب جلیل مسلکِ تاویل پر پانچوں اعتراضات کا جواب اور مسلکِ اعتماد پر پنجم کے سوا باقی سب کا جواب واضح ہوگیا اور یہ بھی ظاہر ہوا کہ سب سے قوی اعتراض پانچواں ہے یہی علماء کے لئے انکار و تاویل کا باعث بنا۔ اور پہلا اعتراض کوئی مشکل نہیں بلکہ بہت جلد حل ہو جاتا ہے اسی طرح دوسرے کا جواب بھی آسان ہے اگر پانچویں مشکل سوال کے ساتھ اس کو نہ ملایا جائے۔ رہا تیسرا اور چوتھا جن کو سعایہ نے پیش کیا تو یہ انتہائی کمزور ہیں مسلکِ اعتماد پر پانچویں اعتراض کا باقی رہ جانا یہی وہ امر ہے جو اس کے لئے کوچ کا اعلان کر رہا ہے کیونکہ وہ قاہر دلائل اور روشن نصوص سے متصادم ہے۔ میں نے قرہ باغی محشی کے سوا کسی ایسے کو نہ دیکھا جس نے اس مسلک کو اختیار و پسند کیا ہو۔ اور قرہ باغی قطعاً کوئی کام کی بات نہ لاسکے۔ (اب ان کے خیال اور عبارت کا تھوڑا تجزیہ ملاحظہ ہو ۱۲ م الف) قول قرہ باغی: چلپی کا کلام سراسر تکلف ہے عبارت سے یہ معنی ماخوذ ہونا بہت بعید ہے۔ (ت)

اقول: نعم (۱) لما زاد چلبی من حدیث اللمعة ارجا عالہ الی ما یاتی عن الشارح والافلیس فیہ الا اخذ مع بمعنی بعد ولیس فیہ بعد فقد فقد فی الکتاب العزیز- قولہ: یلزم التکرار۔

اقول: ہاں اس لئے کہ انہوں نے حضرت شارح کے کلامِ آئندہ کی طرف راجع کرنے کی غرض سے لمعہ کی بات بڑھادی ورنہ اس تاویل میں اس کے سوا کچھ نہیں کہ مع کو بعد کے معنی میں لیا ہے، اور اس میں کوئی بُعد نہیں یہ تو قرآنِ عزیز میں بھی ہوا ہے (فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ یُسْرًا)۔ قول قرہ باغی: تکرار لازم آتی ہے۔

Fatawa Rizwia, Volume 4

I say: Firstly (1): So what if repetition occurs? When a principle is mentioned that encompasses many subsidiary branches, and then after some time, one of those branches is brought forth to clarify a ruling, will it be considered repetition? When it is not considered bad even though it was previously mentioned under the general principle, how can it be considered detestable when the specific issue has not been stated yet? (T)

Secondly: (2) If you were to track (3) how many times beneficial points have been repeated by the scholars and the commentator Imam himself, the search would leave you exhausted. The saying of Qara Baghi: "Perhaps Chalpi committed this elaborate effort thinking that two states of ritual impurity do not initially combine in a person." (T) I say: Where did you get this from? They...

Note: And here is the leader of the Imams, the scribe of the school of thought, Muhammad (may Allah Almighty be pleased with him); he has indeed repeated issues in his books. Imam Shams al-Aimma al-Sarakhsi (may Allah Almighty have mercy on him) said in Al-Mabsut: "Muhammad ibn al-Hasan al-Shaybani (may Allah Almighty have mercy on him) devoted himself to classifying the subsidiary rulings derived by Abu Hanifa (may Allah Almighty be pleased with him). He compiled 'Al-Mabsut' to encourage students and to make it easy for them by expanding on the wording and repeating issues in the books so that they might memorize them, whether they wished to or not." (M)

And these are the leaders of the Imams, the scribe of the madhab, Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him), that you have explained issues with repetition in your books. Imam Shams al-Aimma says in his 'Mabsut' that Muhammad bin al-Hasan al-Shaybani (may Allah Almighty have mercy on him) had dedicated himself to the branches of Imam-e-Azam Abu Hanifa (may Allah Almighty be pleased with him). Thus, keeping in mind the enthusiasm and ease of the students, he compiled the book 'Mabsut' in which he explained words with breadth and issues with repetition so that students could preserve what they wanted and leave what they did not want. (T)

1. Al-Mabsut of al-Sarakhsi, Preface of the Book, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 1/3. Page 252 of 761

फ़तावा रज़विया, जिल्द चहारुम (भाग 4)

मैं कहता हूँ: पहली बात (1): तो क्या हुआ अगर दोहराव होता है? जब कोई ऐसा सिद्धांत बताया जाए जिसमें बहुत सी उप-शाखाएं शामिल हों, और फिर कुछ समय बाद किसी हुक्म को स्पष्ट करने के लिए उनमें से कोई उप-शाखा पेश की जाए, तो क्या उसे दोहराव माना जाएगा? जब यह सिद्धांत के तहत पहले बताए जाने के बावजूद बुरा नहीं है, तो यह कैसे घृणित होगा जबकि मुद्दा अभी तक स्पष्ट नहीं किया गया? (त)

दूसरी बात: (2) यदि आप इसकी तलाश और छानबीन करें कि विद्वानों और स्वयं व्याख्याकार इमाम द्वारा लाभप्रद बातों का दोहराव कितनी बार हुआ है, तो आप खोजते-खोजते थक जाएंगे। क़रा बाग़ी का कथन: "शायद चलपी ने यह समझकर यह प्रयास किया कि एक ही व्यक्ति में दो प्रकार की अशुद्धियाँ (हदस) शुरू में एक साथ नहीं होतीं।" (त) मैं कहता हूँ: आपको यह कहाँ से पता चला? उन्होंने...

नोट: और ये इमामों के सरदार, मज़हब के संकलनकर्ता मुहम्मद (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) हैं; उन्होंने अपनी पुस्तकों में मसलों को दोहराया है। इमाम शम्स अल-अइम्मा अल-सरखसी (अल्लाह उन पर रहम करे) ने 'अल-मबसूत' में कहा है: मुहम्मद इब्न अल-हसन अल-शैबानी (अल्लाह उन पर रहम करे) ने स्वयं को इमाम अबू हनीफा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) द्वारा निकाले गए उप-नियमों के संकलन के लिए समर्पित कर दिया था। उन्होंने छात्रों के उत्साह और आसानी के लिए 'अल-मबसूत' का संकलन किया, जिसमें शब्दों का विस्तार किया और पुस्तकों में मसलों को दोहराया ताकि वे उन्हें याद कर सकें, चाहे वे चाहें या न चाहें। (म)

और ये इमामों के सरदार, मज़हब के संकलनकर्ता इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहम करे) हैं कि आपने अपनी किताबों में मसलों को दोहराव के साथ बयान किया है। इमाम शम्स अल-अइम्मा अपनी 'मबसूत' में फरमाते हैं कि मुहम्मद बिन अल-हसन अल-शैबानी (अल्लाह उन पर रहम करे) ने इमाम-ए-आज़म अबू हनीफा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के फ़ुरूआत (शाखाओं) के लिए खुद को समर्पित कर रखा था। अतः उन्होंने विद्यार्थियों के शौक और आसानी को ध्यान में रखते हुए किताब

'मबसूत' को संकलित किया, जिसमें शब्दों को विस्तार दिया और मसलों को दोहराव के साथ बयान किया ताकि विद्यार्थी जिन्हें चाहें सुरक्षित कर लें और जिन्हें न चाहें न करें। (त)

1. अल-मबसूत अल-सरखसी, खुत्बा अल-किताब, दार अल-मारिफ़ा, बेरूत 1/3. पृष्ठ 252 का 761

اقول: اولا (۱): فكان ما ذا اذا ذكر ضابطة تشمل فروعاً ثم بعد حين اورد فرعاً منها لتبين حكم يعد تكرار فاذا لم يقبح مع تقدم ذكره في الضابطة كيف يقبح ولم تذكر بعد۔ اقول: اولاً: تکرار لازم آتی ہے تو کیا ہوگا۔ جب کوئی ایسا ضابطہ بیان کیا جائے جو بہت سی جزئیات کو شامل ہو پھر کچھ آگے کسی حکم کو واضح کرنے کے لئے ان میں سے کوئی جزئیہ لایا جائے تو اسے تکرار شمار کیا جائے گا؟ جب یہ ضابطہ کے تحت پہلے مذکور ہونے کے باوجود بُرا نہیں تو یہ کیسے قبیح ہوگا جبکہ مسئلہ ابھی تک بیان نہ ہوا۔ (ت)

وثانياً: لو (۲) تتبعت ما وقع (۳) لهم وللشارح الامام من تكرره الافادات لاعياك طلبها۔ قوله: ولعله انما ارتكبه زعماً۔ الخ۔ اقول: من (۴) اين لكم هذا وانما ثانياً: اگر اس کی تلاش اور چھان بین ہو کہ حضرات علماء اور خود شارح امام سے افادات کی تکرار کس قدر ہوئی ہے تو تھک کر بیٹھ جانا پڑے گا قول قره باغی: شاید چلپی نے یہ سمجھ کر اس تکلف کا ارتکاب کیا ہے کہ دونوں حدث کسی شخص میں ابتداء جمع نہیں ہوتے۔ (ت) اقول: آپ کو یہ کہاں سے پتا چلا انہوں

عه: وهذا سيد الائمة محرر المذهب محمد رضى الله تعالى عنه قد كرر المسائل في كتبه قال الامام شمس الائمة السرخسى رحمه الله تعالى فى المبسوط فرغ نفسه لتصنيف ما فرعه ابوحنيفه رضى الله تعالى عنه محمد بن الحسن الشيباني رحمه الله تعالى فانه جمع المبسوط لترغيب المتعلمين والتيسير عليهم ببسط الالفاظ وتكرار المسائل في الكتب ليحفظوها شاؤا او ابوا ۱ اهـ ۱۲ منه غفرله۔ (م) اور یہ ہیں ائمہ کے سردار محرر المذہب امام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ کہ آپ نے مسائل کو اپنی کتب میں تکرار کے ساتھ بیان کیا ہے۔ امام شمس الائمہ اپنی مبسوط میں فرماتے ہیں کہ محمد بن الحسن الشیبانی رحمہ اللہ تعالیٰ نے فروعاتِ امام اعظم ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے لئے خود کو وقف

کر رکھا تھا پس انہوں نے متعلمین کے شوق اور آسانی کو ملحوظ رکھتے ہوئے کتاب مبسوط کو جمع فرمایا جس میں الفاظ کو وسعت اور مسائل کو تکرار کے ساتھ بیان کیا تاکہ متعلمین جنہیں چاہیں محفوظ کرلیں یا جنہیں نہ چاہیں نہ کریں ۱۲منہ غفرلہ (ت)

۱ مبسوط سرخسی، خطبة الکتاب، دار المعرفہ، بیروت ۱/۳ صفحہ 252 از 761

Fatawa Razawiyya, Volume 4

[Arabic]: He did this because the one in both states of ritual impurity does not perform wudu if the water is insufficient for ghusl. [Urdu]: He adopted that interpretation because in the case where water is insufficient for a bath (ghusl), the person in both states of impurity (minor and major) does not need to perform wudu (ablution).

[Arabic]: Quote: But if water is found, then it is necessary to perform wudu and then perform tayammum for janabah (major ritual impurity). [Urdu]: Quote by Qarah Baghi: But when sufficient water for wudu is found, it is necessary to perform wudu, then perform tayammum for janabah. (T)

[Arabic]: I say: This (1) is the Shafi'i school of thought, especially with the word "thumma" (then), for it implies the necessity of using up the water even if it is little before performing tayammum, and no Hanafi would ever say this. [Urdu]: I say: This is indeed the school of Imam Shafi'i, especially with the use of the word "thumma" (then). Because it makes it mandatory to use up the water, however little it may be, before performing tayammum. No Hanafi will ever subscribe to this view.

[Arabic]: Quote: And the wonder is that he did not pay attention. [Urdu]: Quote by Qarah Baghi: It is surprising that they did not pay any attention to this side. (T)

[Arabic]: I say: It is based (2) on what was imagined, while it is not imaginable. [Urdu]: I say: It is based on what Qarah Baghi himself imagined; in reality, it is not even imaginable.

[Arabic]: Quote: After accepting all the premises. [Urdu]: Quote of the aforementioned commentator: After accepting all the premises.

[Arabic]: I say: What are those folded prohibitions? For according to the Hanafis, the premises are self-evident. [Urdu]: I say: What are those prohibitions that you have folded up? According to the Hanafis, all the premises are from the self-evident truths (Badihiyaat).

[Arabic]: Quote: It is permissible for multiple Sharia causes (illaal) to converge on a single effect (ma'lool). [Urdu]: Quote: Multiple legal causes can gather upon a single effect.

[Arabic]: I say: Just as (4) the gathering of multiple causes on one effect is not impossible, similarly, the removal of multiple causes by a single remover (raafi') is

also not impossible, like (5) the woman whose menstruation ended, then she had a wet dream, then intercourse occurred, then ejaculation happened, so all gathered. [Urdu]: I say: Just as the convergence of several causes on one effect is not prohibited, similarly, the removal of several causes by a single remover is also not prohibited. For example, a woman whose menstruation stopped, then she had a wet dream, then intercourse happened, then she ejaculated; all these causes (requiring ghusl) have gathered.

फ़तावा रज़विया, खंड 4

[अरबी]: उनका कार्य इसलिए था क्योंकि दो प्रकार की अशुद्धि वाला व्यक्ति वुज़ू नहीं करता यदि पानी ग़ुस्ल (स्नान) के लिए पर्याप्त न हो। [उर्दू]: उन्होंने वह व्याख्या इसलिए अपनाई है कि ग़ुस्ल के लिए पानी अपर्याप्त होने की स्थिति में, दोनों अशुद्धियों वाले व्यक्ति को वुज़ू नहीं करना है।

[अरबी]: कथन: लेकिन यदि पानी मिल जाए, तो वुज़ू करना और फिर जनाबत (बड़ी अशुद्धि) के लिए तयम्मुम करना आवश्यक है। [उर्दू]: क़रह बागी का कथन: लेकिन जब वुज़ू के लिए पर्याप्त पानी मिल जाए, तो वुज़ू करना ज़रूरी है और फिर जनाबत के लिए तयम्मुम करना है। (त)

[अरबी]: मैं कहता हूँ: यह (1) शाफ़ई संप्रदाय है, विशेष रूप से "थुम्मा" (फिर) शब्द के साथ, क्योंकि इसमें यह अनिवार्य करना है कि पानी भले ही कम हो, तयम्मुम से पहले उसे समाप्त कर लेना है, और कोई भी हनफ़ी कभी ऐसा नहीं कहेगा। [उर्दू]: मैं कहता हूँ: यही इमाम शाफ़ई का संप्रदाय है, विशेष रूप से "थुम्मा" (फिर) शब्द के प्रयोग के साथ। क्योंकि इसमें यह अनिवार्य किया गया है कि पानी चाहे कितना भी कम हो, तयम्मुम से पहले उसका उपयोग कर लेना है। कोई भी हनफ़ी कभी इसका समर्थन नहीं करेगा।

[अरबी]: कथन: और आश्चर्य यह है कि उन्होंने ध्यान नहीं दिया। [उर्दू]: क़रह बागी का कथन: आश्चर्य है कि उन्होंने इस ओर ध्यान नहीं दिया। (त)

[अरबी]: मैं कहता हूँ: यह (2) जो कल्पना की गई उस पर आधारित है, जबकि यह कल्पनीय ही नहीं है। [उर्दू]: मैं कहता हूँ: क़रह बागी ने स्वयं जो कल्पना की, यह उसी पर आधारित है; हकीकत में यह कल्पनीय ही नहीं है।

[अरबी]: कथन: सभी पूर्वधारणाओं (मुक़द्दमात) को स्वीकार करने के बाद। [उर्दू]: उक्त टीकाकार का कथन: सभी पूर्वधारणाओं को स्वीकार करने के बाद।

[अरबी]: मैं कहता हूँ: वे निषेध क्या हैं जिन्हें आपने समेट दिया है? हनफ़ियों के अनुसार तो सभी पूर्वधारणाएँ स्वयंसिद्ध (बदीहियात) हैं। [उर्दू]: मैं कहता हूँ: वे कौन से निषेध हैं जिन्हें आपने छिपा दिया है? हनफ़ियों के नज़दीक तो सभी प्रस्तावनाएँ स्वतःस्पष्ट सत्यों में से हैं।

[अरबी]: कथन: एक कार्य/प्रभाव (मअ़लूल) पर कई शरीयत कारणों (इल्लत) का जमा होना जायज़ है। [उर्दू]: कथन: एक ही प्रभाव पर कई शरई कारणों का मिलन संभव है।

[अरबी]: मैं कहता हूँ: जिस प्रकार (4) एक प्रभाव पर कई कारणों का एकत्र होना असंभव नहीं है, वैसे ही एक निवारक (राफ़ेअ़) द्वारा कई कारणों का निवारण भी असंभव नहीं है। जैसे (5) वह महिला जिसका मासिक धर्म समाप्त हुआ, फिर उसे स्वप्नदोष हुआ, फिर संभोग हुआ, फिर स्खलन हुआ, तो ये सभी एकत्र हो गए। [उर्दू]: मैं कहता हूँ: जैसे एक प्रभाव पर कई कारणों का एकत्र होना वर्जित नहीं है, वैसे ही एक ही निवारक से कई कारणों का हटना भी वर्जित नहीं है। जैसे वह स्त्री जिसका मासिक धर्म रुक गया, फिर उसे स्वप्नदोष हुआ, फिर संभोग हुआ, फिर स्खलन हुआ, तो (स्नान के) सभी कारण एक साथ जमा हो गए।

पृष्ठ 253/761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

فعله لان ذا الحدثين لايتوضأ اذا لم يكف الماء لغسله۔ نے وہ تاویل اس لئے اختیار کی ہے کہ غسل کے لئے پانی ناکافی ہونے کی صورت میں دونوں حدث والے کو وضو نہیں کرنا ہے۔

قوله: اما اذا وجد فلابد من الوضوء ثم التيمم للجنابة۔ قول قرہ باغی: لیکن جب وضو کے لئے بقدر کفایت پانی مل جائے تو وضو کرنا ضروری ہے پھر جنابت کے لئے تیمم کرنا ہے۔ (ت)

اقول:هذا(۱) هو مذهب الشافعي لاسيما بلفظة ثم فان فيه ايجاب اعدام الماء وان قل قبل التيمم ولايقول به حنفي قط۔ اقول: یہی امام شافعی کا مذہب ہے خصوصاً لفظ ثم (پھر) کے ساتھ۔ کیونکہ اس میں یہ واجب کرنا ہے کہ پانی اگرچہ کم ہی ہو تیمم سے پہلے اسے ختم کرلینا ہے۔ کوئی حنفی کبھی اس کا قائل نہ ہوگا۔

قوله: والعجب منه انه لم يلتفت۔ قول قرہ باغی: تعجب ہے کہ انہوں نے اس طرف التفات نہ کیا۔ (ت)

اقول:مبنی (۲) علی مآتصور ولا متصور اقول: قرہ باغی نے خود جو تصور کیا اسی پر اس کی بنیاد ہے حقیقت میں وہ متصور ہی نہیں۔

قوله:بعد تسليم جميع المقدمات۔ قول محشی مذکور : تمام مقدمات تسلیم کر لینے کے بعد۔

اقول:ماتلك (۳) المنوع المطويات فان المقدمات عند الحنفية من البديهيات۔ اقول: وہ منع کیا ہیں جو آپ نے تہ کردئیے حنفیہ کے نزدیک تو سارے مقدمات بدیہیات سے ہیں۔

قوله يجوز اجتماع العلل الشرعية على معلول واحد۔ قولہ ایک معلول پر متعدد علل شرعیہ کا اجتماع ہو سکتا ہے۔

اقول: كما (۴) لا يمتنع اجتماع علل على معلول كذلك لا يمتنع ارتفاع علل برافع واحد كالتى (۵) انقطع حيضها ثم احتلمت ثم التقى الختانان ثم انزلت فقد اجتمعت اقول: جیسے ایک معلول پر چند علتوں کا اجتماع ممتنع نہیں ایسے ہی ایک رافع سے چند علتوں کا ارتفاع بھی ممتنع نہیں۔ جیسے وہ عورت جس کا حیض منقطع ہوا پھر اسے احتلام ہوا پھر التقائے ختانین ہوا

Fatawa Razawiyya Volume 4

(Arabic Text): There are four causes upon it, and all of them are removed by a single bath (ghusl) or dry ablution (tayammum). So if someone has two states of ritual impurity, minor and major, and cannot find water for ghusl, then he must perform tayammum. His tayammum, because it is for Janaba (major ritual impurity), purifies the whole body, and among the body are the parts for wudu (ablution) only; it purifies them and removes both impurities just as if he had performed ghusl. This tayammum is nothing but standing in place of ghusl. Just as both are removed by it (ghusl), they are likewise removed by its substitute. No tayammum is known in Sharia that occurs upon two impurities and removes one while leaving the other. Otherwise, either another tayammum would be mandatory for him, which is invalid even according to the Shafi'is as we mentioned before, or water (would be required), which is combining the substitute and the original, and that is invalid by the consensus of the Hanafis. So the truth has become clear, and praise be to Allah, Lord of the worlds.

If you say that the analogy to ghusl is an analogy with a difference (Qiyas ma' al-fariq), because the one with two impurities, when he performs ghusl, has performed what he was commanded for each of the two impurities, which is flowing water over those organs. Likewise, when he performs tayammum while lacking water. But if he finds water for wudu, then by performing tayammum, he is only fulfilling what pertains to the major impurity while he is capable of the original in the minor one.

Page 254 of 761

फ़तावा रज़विय्या जिल्द चहारुम

(अरबी पाठ का अनुवाद): उस पर चार कारण हैं, और वे सभी एक ही स्नान (गुस्ल) या तैयमुम (सूखी शुद्धि) से दूर हो जाते हैं। इसलिए यदि किसी के पास दो अशुद्धियाँ हों, छोटी और बड़ी, और उसे स्नान के लिए पानी न मिले, तो उसके लिए तैयमुम करना आवश्यक है। उसका तैयमुम, क्योंकि वह जनाबत (बड़ी अशुद्धि) के लिए है, पूरे शरीर को शुद्ध करता है, और शरीर के अंगों में केवल वुज़ू के अंग ही हैं; यह उन्हें शुद्ध करता है और दोनों अशुद्धियों को दूर करता है जैसे कि उसने स्नान किया हो। यह तैयमुम स्नान के स्थान पर खड़े होने के अलावा और कुछ नहीं है। जैसे स्नान से दोनों दूर हो जाते हैं, वैसे ही इसके विकल्प से भी वे दूर हो जाते हैं। शरीयत में ऐसा कोई तैयमुम नहीं जाना जाता जो दो अशुद्धियों पर आता हो और एक को हटा देता हो और दूसरे को छोड़ देता हो। अन्यथा, या तो उसके लिए दूसरा तैयमुम अनिवार्य होगा, जो कि शाफ़ईयों के अनुसार भी अमान्य है जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है, या पानी (आवश्यक होगा), जो विकल्प और मूल को मिलाना है, और यह हनफ़ियों की सर्वसम्मति से अमान्य है। अतः सत्य स्पष्ट हो गया है, और प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो संसारों का पालनहार है।

यदि आप कहें कि स्नान पर सादृश्य एक अंतर के साथ सादृश्य (क़ियास मा अल-फ़ारिक़) है, क्योंकि दो अशुद्धियों वाला व्यक्ति, जब वह स्नान करता है, तो उसने वह सब किया है जिसका उसे दोनों अशुद्धियों में से प्रत्येक के लिए आदेश दिया गया था, जो कि उन अंगों पर पानी बहाना है। इसी प्रकार, जब वह पानी की कमी के कारण तैयमुम करता है। लेकिन यदि उसे वुज़ू के लिए पानी मिल जाए, तो तैयमुम करने से वह केवल उस चीज़ को पूरा कर रहा होगा जो बड़ी अशुद्धि से संबंधित है जबकि वह छोटी अशुद्धि में मूल (पानी) पर सक्षम है।

पृष्ठ २५४ का ७६१

(قربت ہوئی) پھر انزال ہوا اس پر چار علتوں کا اجتماع ہوا اور ایک ہی غسل یا تیمم سے چاروں مرتفع ہو جائے گی۔ تو جب کسی کو دو حدث ہوں ایک اصغر ایک اکبر۔ اور اسے غسل کے لئے پانی نہ ملے تو ضروری ہے کہ تیمم کرے۔ اس کا تیمم چونکہ جنابت سے ہوگا اس لئے تمام بدن کو پاک کر دے گا۔ اعضائے وضو بھی بدن ہی کا حصہ ہیں تو انہیں بھی تیمم نے پاک کر دیا اور اکبر و اصغر دونوں حدث رفع کر دئے۔ جیسے غسل کی صورت میں ہوتا ہے اور یہ تیمم غسل ہی کے قائم مقام ہے تو جیسے غسل سے دونوں حدث مرتفع ہو جاتے ہیں ویسے ہی اس کے نائب سے بھی مرتفع ہو جائیں گے۔ شریعت میں ایسے کسی تیمم کا نشان نہیں ملتا جو دو حدثوں پر طاری ہو مگر ایک کو ختم کرے دوسرے کو چھوڑ دے۔ اگر ایسا ہوتا تو اس پر یا تو ایک دوسرا تیمم بھی لازم ہوتا اور یہ باطل ہے یہاں تک کہ شافعیہ کے نزدیک بھی، جیسا کہ ہم نے پہلے بیان کیا یا پانی (استعمال کرنا) بھی لازم ہوتا اور یہ بدل اور اصل دونوں کو جمع کرنا ہے جو باجماع حنفیہ باطل ہے تو حق روشن ہو گیا اور ساری خوبیاں سارے جہانوں کے مالک خدا کے لئے ہیں۔(ت)

اگر سوال ہو کہ غسل پر قیاس، قیاس مع الفارق ہے اس لئے کہ دونوں حدث والے نے جب غسل کیا تو وہ سب بجالایا جس کا دونوں حدثوں میں سے ہر ایک میں اسے حکم دیا گیا وہ ہے ان اعضا پر پانی بہانا (جو غسل سے پورا ہو گیا) یہی حال اس وقت ہے جب پانی نہ ہونے کی صورت میں تیمم کیا۔ لیکن جب آب وضو موجود ہو تو تیمم سے صرف اس کی بجا آوری کرنے والا ہوگا جس کا حدث اکبر سے متعلق اسے (حکم ہے کیونکہ وہ حدث اصغر میں اصل پر قادر ہے)۔

Fatawa Razawiyya, Volume 4

How then can one turn to the substitute (Tayammum)? In short, the condition for Tayammum is the inability to use water. He is unable in the case of major ritual impurity (Hadath Akbar) but not in the minor one (Hadath Asghar). Therefore, Tayammum would be sufficient for the former but not for the latter. In this way, the two states of impurity would differ in terms of persistence and removal (one would end while the other remains). (t)

I say: This would be the case if each of the two impurities had an independent status. But it is not so, because ritual impurity (Hadath) is merely a name for the legal consideration of certain known effects, such as the prohibition of prayer. Major impurity encompasses all the effects of minor impurity; thus, whatever is prohibited by minor impurity is even more certainly prohibited by major impurity, and not vice versa. The removal of something necessitates the disappearance of all its effects. Since you have admitted that major impurity is removed by this Tayammum, it is mandatory that all its effects also vanish, including the prohibition of prayer. Thus, it follows that prayer becomes permissible, and prayer is never permissible while any state of impurity remains. Therefore, it is proven that this Tayammum removed every impurity that had occurred upon him. (t)

If it is argued that the removal of a thing only requires the disappearance of its effects insofar as they are its effects, and it does not contradict the persistence of some effects due to another cause. For example, if someone performs wudu (ablution) while having a hindering impurity (najasah) on his thigh, there is no doubt that his wudu is valid and the prohibition that existed is removed...

फ़तावा रज़विया, खंड 4

फिर विकल्प (तयम्मुम) की ओर कैसे जाया जा सकता है? संक्षेप में, तयम्मुम की शर्त पानी के उपयोग में असमर्थता है। वह बड़ी अपवित्रता (हदथ-ए-अकबर) में तो असमर्थ है, लेकिन छोटी (हदथ-ए-असग़र) में नहीं। इसलिए, तयम्मुम केवल पूर्व के लिए पर्याप्त होगा, बाद वाले के लिए नहीं। इस प्रकार, दोनों अपवित्रताएँ बने रहने और हटने के मामले में अलग-अलग हो जाएँगी (एक समाप्त हो जाएगी, एक शेष रह जाएगी)। (त)

मैं कहता हूँ: यह तब होता जब दोनों अपवित्रताओं में से प्रत्येक की स्वतंत्र स्थिति होती। लेकिन ऐसा नहीं है, क्योंकि अपवित्रता (हदथ) ज्ञात प्रभावों, जैसे नमाज़ की मनाही, के कानूनी विचार का ही नाम है। बड़ी अपवित्रता छोटी अपवित्रता के सभी प्रभावों को अपने भीतर समेटे हुए है। छोटी अपवित्रता जिससे रोकती है, बड़ी अपवित्रता उससे कहीं अधिक (बदरजा-ए-औला) रोकती है, न कि इसके विपरीत। किसी चीज़ का समाप्त होना उसके सभी प्रभावों के लुप्त होने को अनिवार्य बनाता है। चूँकि आपने स्वीकार किया है कि इस तयम्मुम से बड़ी अपवित्रता हट गई, तो आवश्यक है कि उसके सभी प्रभाव भी समाप्त हो जाएँ, जिनमें नमाज़ की मनाही भी शामिल है। अतः नमाज़ का जायज़ होना अनिवार्य है, और नमाज़ किसी भी अपवित्रता के रहते कभी जायज़ नहीं होती। तो यह सिद्ध हुआ कि इस तयम्मुम ने उस पर आए हुए हर प्रकार की अपवित्रता को दूर कर दिया। (त)

यदि यह तर्क दिया जाए कि किसी चीज़ का हटना केवल उसके प्रभावों के हटने को इस हैसियत से अनिवार्य बनाता है कि वे उस चीज़ के प्रभाव हैं, और यह किसी अन्य कारण से कुछ प्रभावों के बने रहने के विरोधाभासी नहीं है। उदाहरण के लिए, यदि किसी ने वुज़ू किया जबकि उसकी जांघ पर कोई बाधा डालने वाली गंदगी (नजासत) थी, तो इसमें कोई संदेह नहीं कि उसका वुज़ू सही हो गया और जो मनाही थी वह दूर हो गई...

पृष्ठ 761 का 255

فکیف یصیر الی البدل وبالجملة شرط التیمم العجز عن الماء وقد عجز في الحدث الاکبر دون الاصغر فکان التیمم مجزئا عن ذلك لا عن هذا فافترق الحدثان بقاء و ارتفاعا۔ حکم ہوا۔ اس کی بجا آوری کرنے والا نہ ہوگا جس کا حدث اصغر سے متعلق اسے حکم ہوا۔ اس لئے کہ اس میں یہ اصل پر قادر ہے تو بدل کی طرف کیسے منتقل ہو سکتا ہے؟ مختصر یہ کہ تیمم کی شرط پانی سے عاجز ہونا ہے اور اس کا عجز حدث اکبر میں تو ہے حدث اصغر میں نہیں تو تیمم صرف اس سے کفایت کرنے والا ہوگا اس سے نہ ہوگا اس طرح دونوں حدث بقا اور ارتفاع میں جدا جدا ہو جائیں گے (ایک ختم ہوگا ایک باقی رہ جائے گا) (ت)

اقول: هذا لو کان کل منهما مستبداً بحیالہ ولیس کذلك فلیس الحدث الاعتبارا شرعیاً لآثار معلومة کمنع الصلاة وقد انطوی الاکبر علی جمیع آثار الاصغر فکلما منعه الاصغر منعه الاکبر بالاولی ولا عکس وارتفاع شیئ یوجب زوال جمیع اثارہ وقد سلمتم ارتفاع الاکبر بهذا التیمم فیجب ارتفاع کل اثارہ ومنها منع الصلاة فلزم اباحتها ولا تباح قط مع حدث فثبت ان هذا التیمم رفع کل حدث طرأ علیه۔ اقول: یہ اس وقت ہوتا جب دونوں حدثوں میں سے ہر ایک کو مستقل حیثیت حاصل ہوتی۔ اور ایسا نہیں اس لئے کہ حدث کچھ معلوم آثار جیسے منع نماز وغیرہ کے شرعی اعتبار ہی کا نام ہے اور حدث اکبر حدث اصغر کے تمام اثرات پر مشتمل ہے تو اصغر جس سے مانع ہوگا اس سے اکبر بدرجہ اولٰی مانع ہوگا۔ اس کے برعکس نہیں۔ اور کسی چیز کا ختم ہو جانا اسے لازم کرتا ہے کہ اس کے جتنے بھی اثرات ہوں سبھی زائل ہوجائیں آپ کو تسلیم ہے کہ اس تیمم سے حدث اکبر مرتفع ہو گیا تو ضروری ہے کہ اس کے سارے اثرات بھی اٹھ جائیں ان ہی میں منع نماز بھی ہے تو لازم ہوگا کہ

نماز مباح ہو۔ اور نماز کسی حدث کے ساتھ کبھی مباح نہیں ہوتی۔ تو ثابت ہوا کہ اس تیمم نے ہر وہ حدث دُور کردیا جو اس پر طاری ہوا۔ (ت)

فان قلت ارتفاع شیئ انما یوجب زوال اثارہ من حیث ھی اثارہ ولاینافیہ بقاء بعضھا لمؤثر آخر کمن توضأ وفی فخذہ نجاسۃ مانعۃ فلا شک ان قد صح وضوءہ و زال المنع الذی کان اگر یہ سوال ہو کہ کسی چیز کا مرتفع ہونا اس کے اثرات دُور ہونے کو واجب کرتا ہے تو اسی حیثیت سے کہ وہ اس چیز کے اثرات ہیں۔ اب ان میں کچھ اثرات کسی دوسرے موثر کی وجہ سے باقی رہ جائیں تو یہ اس کے منافی نہیں۔ مثلاً کسی نے وضو کیا

Fatawa Razawiya Volume 4 ...from before him, while the prohibition due to impurity remains as it is. Likewise here, there are two states of ritual impurity (Hadath); one is located in the limbs of ablution (Wudu), and the other encompasses the entire exterior of the body. Thus, there are two preventative states (Mani'iyyah) in them (limbs of Wudu), and one preventative state in the rest of the body. When he performs Tayammum while having water for Wudu, the major preventative state is removed from the limbs of Wudu because the validity of what removes it exists with its condition, which is the inability to find sufficient water for washing (Ghusl). The minor preventative state remains because what removes it is not valid for it, due to the lack of its condition, which is the ability to find sufficient water for Wudu. Through this, it becomes clear that it is not like the case described where a woman menstruated, had a wet dream, had intercourse, and became safe, and for her, one Ghusl or Tayammum is sufficient. Similarly, for someone who experiences ritual impurity multiple times, one Wudu is sufficient. This is because the remover (of impurity) is not lacking the condition with respect to any of them, so it removes them all together, unlike our current case. Through this, the difference becomes clear between this person and someone who only has the state of major ritual impurity (Janabah); for if he finds water for Wudu, he does not perform Wudu to remove the preventative state existing in the limbs of Wudu, as it is only the major one, which is indivisible, unlike the first scenario. Through this, it is evident that there is no combining of two substitutes (alternatives), but rather their distribution over two things, like one who uses water to wash filth and performs Tayammum for ritual impurity, or like one who feeds for one oath and fasts for another. Thus it is elucidated. Page 256 of 761

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4 ...उसके सामने से, जबकि अशुद्धि (नजासत) के कारण प्रतिबंध यथावत है। इसी तरह यहाँ, दो प्रकार की अशुद्धियाँ (हदस) हैं; एक वज़ू के अंगों में स्थित है, और दूसरी पूरे शरीर के बाहरी भाग में व्याप्त है। अत; उनमें (वज़ू के अंगों में) दो निवारक अवस्थाएँ(मानिइयत) हैं, और शेष शरीर में एक निवारक अवस्था है। जब वह वज़ू के लिए पानी होते हुए भी तयम्मुम करता है, तो वज़ू के अंगों से बड़ी निवारक अवस्था दूर हो जाती है क्योंकि उसे दूर करने वाली चीज़ की वैधता उसकी शर्त के साथ मौजूद है, जो कि स्नान (गुस्ल) के लिए पर्याप्त पानी न होने की स्थिति है। छोटी निवारक अवस्था बनी रहती है क्योंकि उसे दूर करने वाली चीज़ उसके लिए मान्य नहीं है, क्योंकि उसकी शर्त का अभाव है, जो कि वज़ू के लिए पर्याप्त पानी होने की क्षमता है। इसके माध्यम से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह उस स्थिति के समान नहीं है जैसा कि बताया गया है कि एक महिला को मासिक धर्म हुआ, स्वप्नदोष हुआ, संभोग किया और वह सुरक्षित हो गई, और उसके लिए एक ही गुस्ल या तयम्मुम पर्याप्त है। इसी प्रकार, जिसे बार-बार अशुद्धि (हदस) हुई हो, उसके लिए एक ही वज़ू पर्याप्त है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हटाने वाला कारक उनमें से किसी के भी संबंध में शर्त से वंचित नहीं है, इसलिए वह उन सभी को एक साथ हटा देता है, इसके विपरीत जो मामला हमारे विचाराधीन है। इसके माध्यम से, इस व्यक्ति और उस व्यक्ति के बीच का अंतर स्पष्ट हो जाता है जिसे केवल बड़ी अशुद्धि (जनाबत) है; क्योंकि यदि उसे वज़ू के लिए पानी मिल जाता है, तो वह वज़ू के अंगों में मौजूद निवारक अवस्था को दूर करने के लिए वज़ू नहीं करता है, क्योंकि वह केवल बड़ी अवस्था है, जो अविभाज्य है, पहली स्थिति के विपरीत। इसके माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि इसमें दो विकल्पों का मेल नहीं है, बल्कि दो चीज़ों पर उनका वितरण है, जैसे कि वह व्यक्ति जो अशुद्धि धोने के लिए पानी का उपयोग करता है और अशुद्धि के लिए तयम्मुम करता है, या जैसे कि वह जिसने एक शपथ के लिए भोजन कराया और दूसरी के लिए उपवास रखा। इस प्रकार यह स्पष्ट हो गया। पेज 256 का 761

فتاویٰ رضویہ جلد چہارم اور اس کی ران پر اتنی نجاست ہے جو جواز نماز سے مانع ہے۔ تو اس میں شک نہیں کہ اس کا وضو صحیح ہے اور اس کی جانب سے جو رکاوٹ تھی وہ دُور ہو گئی باوجودیکہ نجاست کی وجہ سے رکاوٹ اب بھی برقرار ہے اسی طرح یہاں وہ دو حدث ہیں ایک تو اعضائے وضو پر لگا ہوا ہے دوسرا پورے ظاہرِ بدن کو شامل ہے تو اعضائے وضو کے اندر دو ممانعتیں ہیں اور باقی سارے جسم میں ایک ممانعت (مانعیت) ہے جب آبِ وضوء موجود ہونے کی حالت میں اس نے تیمم کیا تو اعضائے وضو سے مانعیتِ کبریٰ دُور ہو گئی کیونکہ اسے دُور کرنیوالا امر اپنی شرط غسل کے لئے کفایت کرنیوالے پانی سے عجز کے پائے جانے کی وجہ سے صحیح ودرست ہے۔ اور مانعیتِ صغریٰ رہ گئی کیونکہ اس کی بہ نسبت جو دُور کرنے والا امر تھا وہ صحیح و درست نہیں اس لئے کہ اس کی شرط مفقود ہے کیوں کہ وضو کے لئے کافی پانی پر قدرت موجود ہے۔ اسی سے یہ بھی ظاہر ہوا کہ اس کا معاملہ اس عورت کی طرح نہیں جس کی حالت بیان ہوئی کہ اس میں انقطاعِ حیض، احتلام، جماع، انزال چار اسباب جمع ہوئے اور ایک ہی غسل یا تیمم کافی ہو گیا۔ اسی طرح وہ شخص جسے بار بار حدث ہوا ہوا اسے ایک ہی وضو کافی ہے اس لئے کہ ان میں کمی بہ نسبت جو دُور کرنے والا امر ہے وہ فقدانِ شرط کا شکار نہیں اس لئے اس نے سبھی کو دُور کر دیا، بخلاف اس صورت کے جو ہمارے زیر بحث ہے اسی سے اس شخص میں (جسے دونوں حدث ہیں) اور اس میں جسے صرف جنابت ہے واضح فرق ہو گیا کہ وہ اگر آبِ وضو پائے۔ Page 256 of 761

Fatawa-e-Razviya - Volume 4

[Top Left Arabic Text]: Indeed, it is not futile, nor a waste, nor is engaging in it foolishness. It is not as they said that the state of ritual impurity (hadath) remains as it was; rather, one of them has been removed.

[Top Right Urdu Text]: Therefore, he does not have to perform ablution (wudu) to remove the impediment attached to the limbs of wudu, because there is only the major impediment (man'iyat-e-kubra) there, and it is not divisible. Contrary to the first case, this also makes it clear that it is not about combining two substitutes, but rather dividing the two things over both. For example, a person who uses water to wash away filth (najis) and performs dry ablution (tayammum) for the state of impurity (hadath). Rather, like one who feeds people as one type of expiation (kaffara) and fasts for another type of expiation. From this, it is also revealed that this is neither futile nor a waste of water, nor is being occupied with it ignorance or foolishness. And what people said, that the state of impurity remained exactly as it was, is also not true; instead, one state of impurity has been removed. (T)

[Middle Arabic Text]: I say: How firm this discourse would be if it were not for the oversight regarding the report of the prohibition of independence. For you have made them two independent things upon meeting, while it is established in the Law (Shari'ah) that (1) two similar things, when they meet and their purpose does not differ, they overlap (merge). And you have admitted this in what you described.

[Middle Urdu Text]: I say: What a solid discourse it would be if it did not involve an oversight regarding the prohibition of independence. You treated both as two independent things at the time of meeting, whereas it is established and fixed in the Shari'ah that when two things of the same genus come together and their purpose is not different, they merge into each other. You have confessed to this.

[Bottom Left Arabic Footnote]: (a) He mentioned it as a matter of debate, meaning we do not concede that minor impurity (hadath-e-asghar), when combined with major impurity (hadath-e-akbar), retains an independent ruling regarding purification. Why should it not merge into it and be purified by its purification, so that the ruling belongs only to the major? This is because whoever rules the obligation of wudu for it is a claimant, so our denial is sufficient, and the burden of proof is on him. Otherwise, the matter of merging is certain, with no doubt about it. 12, from him, may he be forgiven. (M)

[Bottom Right Urdu Footnote]: It is mentioned as a matter of debate, meaning we do not accept that minor impurity holds any independent ruling regarding purification when it coincides with major impurity. Why should it not be that by entering into the major, it also attains purification through its purification, and the ruling applies only to the major? This style of speech is because the person who rules the necessity of wudu for it is the claimant, so for us, denial is sufficient, and the proof lies with him. Otherwise, the case of the minor entering and joining the major is certain, in which there is no doubt. 12, from him, may he be forgiven. (T)

फ़तावा-ए-रज़विया - खंड 4

[शीर्ष बायां अरबी पाठ]: वास्तव में, यह व्यर्थ नहीं है, न ही बर्बादी है, और न ही इसमें व्यस्त होना मूर्खता है। यह वैसा नहीं है जैसा उन्होंने कहा कि अशुद्धि (हदथ) वैसी ही बनी रहती है; बल्कि, उनमें से एक दूर हो गई है।

[शीर्ष दायां उर्दू पाठ]: इसलिए, वज़ू के अंगों से जुड़ी बाधा को दूर करने के लिए उसे वज़ू करने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि वहां केवल बड़ी बाधा (मानियत-ए-कुबरा) है और यह विभाज्य नहीं है। पहली स्थिति के विपरीत, इससे यह भी स्पष्ट हो गया कि यह दो विकल्पों को इकट्ठा करना नहीं है, बल्कि दो चीजों पर दोनों को विभाजित करना है। जैसे वह व्यक्ति जो पानी को नापाकी धोने में खर्च करे और अशुद्धि के लिए तयम्मुम करे। बल्कि जैसे वह जो एक प्रकार के कफ़्फ़ारे में खाना खिलाए और दूसरे के कफ़्फ़ारे में रोज़ा रखे। और इसी से यह भी प्रकट हो गया कि यह न तो व्यर्थ है और न ही पानी की बर्बादी, न ही इसमें व्यस्त होना कोई अज्ञानता या मूर्खता है। और लोगों ने जो कहा कि अशुद्धि वैसी ही रह गई जैसी थी, यह बात भी सही नहीं है बल्कि एक अशुद्धि दूर हो गई है। (त)

[मध्य अरबी पाठ]: मैं कहता हूँ: यह विमर्श कितना दृढ़ होता यदि इसमें स्वतंत्रता के निषेध की बात से चूक न होती। क्योंकि आपने मेल के समय उन दोनों को दो स्वतंत्र चीजें बना दिया, जबकि शरीयत में यह स्थापित है कि (1) जब एक ही श्रेणी की दो चीजें एक साथ आती हैं और उनका उद्देश्य अलग नहीं होता, तो वे एक-दूसरे में समा जाती हैं। और आपने इसका वर्णन करते हुए इसे स्वीकार भी किया है।

[मध्य उर्दू पाठ]: मैं कहता हूँ: कितना ठोस विमर्श होता यदि इसमें स्वतंत्रता के निषेध की बात से चूक न होती। आपने मेल के समय दोनों को दो स्वतंत्र चीजें बना दिया, जबकि शरीयत में यह तय और साबित है कि जब एक ही जाति की दो चीजें एक साथ हों और उनका उद्देश्य अलग न हो, तो वे एक-दूसरे में शामिल हो जाएंगी। आपने इसे स्वीकार किया है।

[नीचे बायां अरबी फुटनोट]: (अ) उन्होंने इसे वाद-विवाद के रूप में उल्लेख किया है, यानी हम यह नहीं मानते कि छोटी अशुद्धि (हदथ-ए-असगर), जब बड़ी अशुद्धि (हदथ-ए-अकبر) के साथ मिलती है, तो शुद्धि के मामले में कोई स्वतंत्र नियम रखती है। ऐसा क्यों न हो कि वह उसमें विलीन होकर उसकी शुद्धि से शुद्ध हो जाए, और नियम केवल बड़ी अशुद्धि के लिए हो? ऐसा इसलिए है क्योंकि जो व्यक्ति इसके लिए वज़ू की अनिवार्यता का नियम देता है, वह दावेदार है, इसलिए हमारे लिए इनकार

ही काफी है और सबूत देना उसके ज़िम्मे है। अन्यथा, समाहित होने का मामला निश्चित है, जिसमें कोई संदेह नहीं है। 12, उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए। (म)

[नीचे दायां उर्दू फुटनोट]: इसे बहस के तौर पर ज़िक्र किया गया है, यानी हम नहीं मानते कि छोटी अशुद्धि बड़ी अशुद्धि के साथ एक होने की स्थिति में पाकी (शुद्धि) से संबंधित कोई स्वतंत्र नियम रखती है। ऐसा क्यों न हो कि बड़ी में शामिल होकर उसकी पाकी से यह भी पाकी पा ले और नियम सिर्फ बड़ी के लिए प्राप्त हो। बात करने का यह तरीका इसलिए है कि जो व्यक्ति इसके लिए वज़ू की अनिवार्यता का नियम देता है वह दावेदार है, तो हमारे लिए मना करना काफी है और उसके ज़िम्मे सबूत है। वरना छोटी का बड़ी में शामिल होना और जुड़ना तो निश्चित है जिसमें कोई शक नहीं। 12, उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए। (त)

पृष्ठ 257 में से 761

[اوپر بائیں جانب عربی عبارت]: انه لیس عبثاً ولا اضاعة ولا الاشتغال به سفهاً ولیس کما قالوا من بقاء الحدث کما هو بل زال احدهما۔ (ترجمہ: یہ کام نہ عبث ہے نہ ضیاع اور نہ ہی اس میں مشغول ہونا حماقت ہے۔ اور یہ بات ویسی نہیں ہے جیسی انہوں نے کہی کہ حدث ویسے ہی باقی رہا جیسا تھا، بلکہ ان میں سے ایک زائل ہوگیا۔)

[اوپر دائیں جانب اردو عبارت]: تو اعضائے وضو سے لگی ہوئی مانعیت زائل کرنے کے لئے اسے وضو نہیں کرنا ہے اس لئے کہ وہاں تو صرف مانعیت کبرٰی ہے اور یہ متجزی نہیں، برخلاف پہلی صورت کے اسی سے یہ بھی عیاں ہوا کہ دونوں بدل جمع کرنا نہیں بلکہ دو چیزوں پر دونوں کو تقسیم کرنا ہے۔ جیسے وہ شخص جو پانی نجس کے دھونے میں صرف کرے اور حدث کے لئے تیمم کرے۔ بلکہ جیسے وہ جو ایک قسم کے کفارے میں کھانا کھلائے اور دوسری کے کفارے میں روزہ رکھے۔ اور اسی سے یہ بھی منکشف ہو گیا کہ یہ نہ عبث ہے نہ پانی کی بربادی، نہ اس میں مشغولی کوئی نادانی وبے وقوفی اور لوگوں نے جو کہا کہ حدث جیسے تھا ویسے ہی رہ گیا۔ یہ بات بھی نہیں بلکہ ایک حدث زائل ہوگیا۔ (ت)

[درمیانی عربی عبارت]: اقول: ما اَمْتَنَّه من کلام لولا ان فیه ذهولا عن حدیث منع الاستبداد عه فانک جعلتهما شیئین مستقلین عند الاجتماع مع ان المتقرر في الشرع ان (۱) المتجانسین اذا اجتمعا ولم یختلف مقصودهما تداخلا وقد اعترفت به في التي وصفت (ترجمہ: میں کہتا ہوں: کیا ہی مضبوط کلام ہوتا اگر اس میں منع استبداد کی حدیث سے غفلت نہ ہوتی۔ کیونکہ آپ نے اجتماع کے وقت ان دونوں کو دو مستقل چیزیں بنا دیا، حالانکہ شرع میں یہ طے ہے کہ (۱) دو ہم جنس جب جمع ہوں

اور ان کا مقصد مختلف نہ ہو تو وہ آپس میں مدغم ہو جاتے ہیں۔ اور آپ نے اپنے بیان میں اس کا اعتراف کیا ہے۔)

[درمیانی اردو عبارت]: اقول: کیا ہی متین کلام ہے اگر اس میں منع استبداد کی بات سے ذہول نہ ہوتا۔ آپ نے دونوں کو بوقت اجتماع دو مستقل چیز بنادیا جبکہ شریعت میں مقرر وثابت یہ ہے کہ دو ہم جنس جب یکجا ہوں اور ان کا مقصود مختلف نہ ہو تو ایک دوسرے میں داخل ہو جائیں گے۔ آپ نے اس کا اعتراف

[نیچے بائیں جانب عربی حاشیہ]: عہ ذکرہ علی سبیل الجدل ای لانسلم ان الحدث الاصغر عند اجتماعه بالاکبر یستبد في امر الطهارة بحکم لم لا یندمج فیه فیطهر بطهارته ولایکون الحکم الا للاکبر وذلك لان من یحکم بوجوب الوضوء له مدع فیکفینا المنع وعلیه الدلیل والا فامر الاندماج متیقن لاشبهة فیه ۱۲ منه غفرله (م) (ترجمہ: عہ اس کا ذکر بحث و تکرار کے طور پر کیا ہے یعنی ہم تسلیم نہیں کرتے کہ حدث اصغر جب حدث اکبر کے ساتھ جمع ہو جائے تو طہارت کے معاملے میں کوئی مستقل حکم رکھتا ہے۔ وہ اس میں ضم کیوں نہیں ہوتا کہ اس کی طہارت سے یہ بھی طاہر ہو جائے اور حکم صرف اکبر کا ہو؟ اس کی وجہ یہ ہے کہ جو شخص اس کے لیے وضو کے وجوب کا حکم دیتا ہے وہ مدعی ہے، پس ہمارے لیے انکار کافی ہے اور دلیل اس کے ذمے ہے۔ ورنہ ضم ہونے کا معاملہ یقینی ہے جس میں کوئی شبہ نہیں۔)

[نیچے دائیں جانب اردو حاشیہ]: اسے بطورِ جدل ذکر کیا ہے یعنی ہم نہیں مانتے کہ حدث اصغر حدثِ اکبر کے ساتھ یک جائی کی صورت میں طہارت سے متعلق کوئی مستقل حکم رکھتا ہے۔ ایسا کیوں نہ ہو کہ اکبر میں داخل ہو کر اس کی طہارت سے یہ بھی طہارت پائے اور حکم صرف اکبر کو حاصل ہو یہ طرز کلام اس لئے کہ جو شخص اس کے لئے وجوب وضو کا حکم کرتا ہے وہ

مدعی ہے تو ہمارے لئے منع کافی ہے اور اس کے ذمہ دلیل ہے ورنہ اصغر کے اکبر میں دخول وانضمام کا معاملہ تو یقینی ہے جس میں کوئی شبہ نہیں ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

Fatawa Razawiyya Volume Four

(Arabic Text): Regarding one who has multiple ritual impurities (hadath), there is overlapping (tadalul) with equality, because all are in the same rank. So how can it be when one of them is greater and stronger, and includes the other from every aspect? For the site is a part of the site, the purifier is a part of the purifier, and the purpose is a portion of the purpose. So how can the integration of the minor into the major not be necessary? And that the ruling in the matter of purification belongs to it (the major) and not the minor. For (1) the follower (subordinate) (1) is not singled out for a ruling, and (2) it falls away when the followed (principal) falls away, and (3) when a thing becomes void, what is within it also becomes void. And for the included (4) (al-mutadamman - with a fatha), its own conditions are not observed, but rather the conditions of what includes it. All of this is from the Shari'ah principles. Don't you see that prostatic fluid (madhy) is not purified from a garment except by rubbing, but it has no separate ruling with semen (many), so it is purified by it? With this, the answer regarding the accumulation of causes becomes clear. This is what the mind has allowed in "Tashhiz al-Adh'han" (Sharpening of Minds), and sufficient for us is the ruling.

(Urdu Text): This also applies to the woman whose condition has been described and to the person who has experienced multiple ritual impurities. There, despite equality, overlapping occurred. Equality because they are all at the same level. Then why would it not happen when one is greater and stronger and includes the other from every perspective? See that the site of purification for one is a part of the site of purification for the other. And the purifier is a part of the purifier, and the purpose is a part of the purpose. So how is it not necessary for the minor to enter the major, and in the matter of purification, the ruling belongs to that major one and not the minor? Because a follower has no separate ruling. And if the followed falls away, it also falls away. And when a thing is nullified, that which is in its inclusion is also nullified. And for the included (with a fatha), its conditions are not observed, rather those of what includes it are observed.

(Arabic Footnote): As in (6) "Free your slave on my behalf for a thousand," since the sale is implied in it, offer and acceptance were not required in it because they are not required in manumission, nor are the options of inspection (ru'yat) and defect (ayb) established in it, nor is it required for it to be within the capacity of delivery. (Shami from Ar-Rahmati, beginnings of Marriage, 12. From him, may he be forgiven).

(Urdu Footnote): Like "Free your slave on my behalf for a thousand rupees." Since the sale is implied in this, the condition of offer and acceptance was not met in this sale because these two are not conditions in manumission. And the option of inspection and the option of defect are also not established in it, nor is it a condition that the master is capable of delivering that slave into his possession. (Shami from Ar-Rahmati, beginnings of Marriage, 12. From him, may he be forgiven).

(अरबी पाठ): उस व्यक्ति के बारे में जिसने कई बार अशुद्धि (हदस) की हो, वहाँ समानता के साथ अंतर्प्रवेश (तदाखुल) होता है, क्योंकि सभी एक ही स्तर के होते हैं। तो फिर ऐसा क्यों न हो जब उनमें से एक बड़ा और शक्तिशाली हो और हर पहलू से दूसरे को समाहित करता हो? क्योंकि स्थान, स्थान का हिस्सा है, शोधक (मुतहहिर), शोधक का हिस्सा है, और उद्देश्य, उद्देश्य का एक हिस्सा है। तो छोटे का बड़े में समाहित होना आवश्यक क्यों नहीं होगा? और यह कि पवित्रता के मामले में निर्णय उसके(बड़े) के लिए हो न कि छोटे के लिए। क्योंकि (1) अनुयायी (ताबे') (1) को अलग निर्णय के लिए अलग नहीं किया जाता है, और (2) जब जिसका अनुसरण किया जाता है वह गिर जाता है तो वह भी गिर जाता है, और (3) जब कोई चीज़ अमान्य हो जाती है, तो उसके भीतर जो कुछ भी होता है वह अमान्य हो जाता है। और समाहित (4) (अल-मुतदम्मन - फत्हा के साथ) के लिए, उसकी अपनी शर्तों का पालन नहीं किया जाता है, बल्कि जो उसे समाहित करता है उसकी शर्तों का पालन किया जाता है। यह सब शरिया के नियमों से है। क्या आप नहीं देखते कि कपड़े से मज़ी (प्रोस्टेटिक तरल) तब तक शुद्ध नहीं होती जब तक कि उसे रगड़ा न जाए, लेकिन मनी (वीर्य) के साथ इसका कोई अलग निर्णय नहीं होता, इसलिए यह उसी के साथ शुद्ध हो जाती है। इसके साथ ही, कारणों के संचय के बारे में उत्तर स्पष्ट हो जाता है। यह वही है जो "तशहीज़ुल अज़हान" (दिमाग की धार तेज़ करना) में मन ने अनुमति दी है, और हमारे लिए निर्णय ही पर्याप्त है।

(उर्दू पाठ): यह उस महिला के बारे में भी है जिसकी स्थिति का वर्णन किया गया है और उस व्यक्ति के बारे में जिसे कई बार अशुद्धि हुई है। वहां समानता के बावजूद अंतर्प्रवेश हो गया। समानता इसलिए क्योंकि वे सब एक ही स्तर के हैं। फिर उस समय क्यों नहीं होगा जबकि एक बड़ा और अधिक शक्तिशाली है और हर दिशा से दूसरे को समाहित (मुतदम्मन) भी करता हो। देखिये कि एक का पवित्रता स्थल दूसरे के पवित्रता स्थल का हिस्सा है। और शोधक, शोधक का हिस्सा है और उद्देश्य, उद्देश्य का हिस्सा है। तो कैसे आवश्यक न होगा कि छोटा, बड़े में प्रवेश कर जाए और पवित्रता के मामले में आदेश उसी बड़े को प्राप्त हो, छोटे को नहीं। इसलिए कि अनुयायी का कोई अलग आदेश नहीं होता। और यदि जिसका अनुसरण किया जाता है वह समाप्त हो जाए तो वह भी समाप्त हो जाता है और वस्तु जब अमान्य होती है तो वह भी अमान्य हो जाती है जो उसके अंतर्गत हो। और समाहित (फत्हा के साथ) के लिए उसकी शर्तों का पालन नहीं किया जाता बल्कि उसे समाहित करने वाली चीज़ की शर्तों का।

(अरबी फुटनोट): जैसा कि (6) "मेरी ओर से अपने गुलाम को एक हज़ार के बदले आज़ाद कर दो" में, चूंकि इसमें बिक्री निहित है, इसलिए इसमें प्रस्ताव और स्वीकृति की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि वे गुलामी से मुक्ति (मानुमिशन) में आवश्यक नहीं हैं, न ही इसमें निरीक्षण (रूयत) और दोष (ऐब) के विकल्प स्थापित होते हैं, और न ही इसके लिए सुपुर्दगी की क्षमता में होना आवश्यक है। (शामी अर-रहमती से, निकाह की शुरुआत, 12। उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए)।

(उर्दू फुटनोट): जैसे "मेरी तरफ से अपना गुलाम एक हजार रुपये में आजाद कर दो।" इसमें चूंकि बिक्री निहित है, इसलिए इस बिक्री में प्रस्ताव और स्वीकृति की शर्त नहीं हुई क्योंकि स्वतंत्रता में इन दोनों की शर्त नहीं है। और इसमें देखने का विकल्प और दोष का विकल्प भी साबित नहीं होता है और न ही यह शर्त है कि मालिक उस गुलाम को उसके कब्जे में देने में सक्षम हो। (शामी अर-रहमती से, निकाह की शुरुआत, 12। उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए)।

पृष्ठ 258 का 761

(عربی عبارت): وفیمن احدث مرارا کان ھنالك التداخل مع المساواۃ فأن الکل فی رتبۃ واحدۃ فکیف واحدھما اکبر واقوی ومن کل وجہ یتضمن الاخری فالمحل جزء من المحل والمطھر بعض من المطھر والمقصود شقص من المقصود فکیف لایلزم اندماج الصغری فی الکبری وان یکون الحکم لھا فی امر الطھارۃ لالصغری فان (۱) التابع (۱) لایفرد بحکم ویسقط (۲) اذا سقط المتبوع والشیئ (۳) اذا بطل بطل مانی ضمنہ والمتضمن (۴)عہ بالفتح لاتراعی لہ شروطہ بل شروط متضمنۃ کل ذلك من القواعد الشرعیۃ الاتری ان المذی لا یطھر عن ثوب ولابد من بفرك ولا یظھر لہ حکم مع المنی فیطھر بہ ویظھر بہ الجواب عن توارد العلل ھذا ماسمح بہ الجنان " تشحیذ الاذھان " وحسبنا فی الحکم

(اردو عبارت): بھی کیا ہے اس عورت کے بارے میں جس کی حالت بیان ہوئی ہے اور اس شخص کے بارے میں جسے چند بار حدث ہوا ہو ۔ وہاں باوجود مساوات کے تداخل ہو گیا۔ مساوات اس لئے کہ وہ سب ایک ہی درجہ میں ہیں۔ پھر اس وقت کیوں نہ ہوگا جبکہ ایک اکبر واقوی اور ہر جہت سے دوسرے کو متضمن بھی ہو دیکھئے کہ ایک کا محل طہارت دوسرے کے محل طہارت کا جز ہے۔ اور مطہر ، مطہر کا بعض ہے اور مقصود، مقصود کا حصہ ہے۔ تو کیسے لازم نہ ہو گا کہ صغری ، کبری میں داخل ہو جائے اور امر طہارت میں حکم اسی کبری کو حاصل ہو صغری کو نہیں۔ اس لئے کہ تابع کا کوئی الگ حکم نہیں ہوتا۔ اور متبوع ساقط ہو تو وہ بھی ساقط ہو جاتا ہے اور شئی جب باطل ہوتی ہے تو وہ بھی باطل ہو جاتا ہے جو اس کے ضمن میں ہو۔ اور متضمن (بالفتح) کے لئے اس کی شرطوں کی رعایت نہیں ہوتی بلکہ اس کے متضمن کی

(عربی حاشیہ): عہ كما (۶) في اعتق عبدك عنى بالف لماكان البيع فيه ضمن يا لم يشترط فيه الايجاب والقبول لعدم اشتراطهما في العتق ولا يثبت فيه خيار الرؤية والعيب ولا يشترط كونه مقدور التسليم ش عن الرحمتی اوائل النكاح ۱۲ منه غفرله (م)

(اردو حاشیہ): جیسے اعتق عبدک عنی بالف (اپنا غلام میری طرف سے ہزار روپے میں آزاد کردو) اس میں چونکہ بیع ضمنی ہے اس لئے اس بیع میں ایجاب و قبول کی شرط نہ ہوئی کیونکہ آزادی میں ان دونوں کی شرط نہیں اور اس میں خیار رؤیت اور خیار عیب بھی ثابت نہیں ہوتا اور نہ یہ شرط ہے کہ مولیٰ وہ غلام اس کے قبضے میں دینے پر قادر ہو شامی عن الرحمتی ، اوائل النکاح ۱۲ منه غفرله (ت)

صفحہ 258 من 761

Fatawa Razawiyyah, Volume 4

Conditions are observed. These are all Shariah rules. See, pre-seminal fluid (Madhi) is not purified by rubbing, either from the clothes or the body. But if it is with semen (Mani), its ruling is not manifest; it becomes pure by rubbing. From this, the answer to the concurrence of causes is also clear. This is what was bestowed to the heart to polish the minds. As for the ruling, those indications and clarifications that we presented from the jurists (Fuqaha) are sufficient for us. And Allah is the Helper and Allah, the Great and Exalted, knows best. (T)

Benefit 11: Now the truth has become clearly manifest and has removed the veil from its face. It has become clear that the path is the path of interpretation (Ta'wil), and the interpretation is the interpretation of the community (Jama'ah). However, a few doubts occurred in the heart, and there was a fear that if a deficient person faced them, he would need an answer. So I intended to bring those doubts and clear their downfall and corruption to fulfill the need, and success is from Allah alone. (T)

First Doubt: Imam Sadr al-Shariah says: "A person in state of ritual impurity (Junub) performed a bath (Ghusl), but the water did not reach a spot on his back and ran out. Then an event occurred that necessitates ablution (Wudu), so he performed Tayammum for both. Then (1) he found enough water for both, his Tayammum became void for both. And (2) if it is insufficient for even one, it remains for both. And (3) if it is sufficient for one specifically, he should wash it and..."

---

1. Sharh al-Wiqayah, Chapter of Tayammum, Maktabah al-Rashidiyyah, Delhi, 1/104. Page 259 of 761

शर्तों का पालन किया जाता है। ये सभी शरीयत के नियम हैं। देखिए कि मज़ी (pre-seminal fluid) रगड़ने से न तो कपड़े से पाक होती है और न ही शरीर से। लेकिन यदि वह मनी (वीर्य) के साथ हो, तो उसका कोई हुक्म ज़ाहिर नहीं होता; रगड़ने से पाक हो जाती है। इसी से कारणों के मेल का जवाब भी स्पष्ट है। यह वह है जो मनों को निखारने के लिए हृदय में आया। जहाँ तक हुक्म का सवाल है, हमारे लिए वे संकेत और स्पष्टीकरण काफी हैं जो हमने फुक़्हा (धर्मशास्त्रियों) से पेश किए हैं। और अल्लाह ही सहायक है और अल्लाह, जो महान और श्रेष्ठ है, सबसे बेहतर जानता है। (त)

फ़ायदा 11: अब सच साफ़ तौर पर ज़ाहिर हो गया और उसने अपने चेहरे से पर्दा हटा दिया। यह स्पष्ट हो गया कि रास्ता वही तावील (व्याख्या) का रास्ता है, और तावील वही है जो जमाअत (समुदाय) की तावील है। लेकिन यहाँ दिल में कुछ संदेह पैदा हुए, तो डर लगा कि अगर किसी कमज़ोर व्यक्ति के सामने ये आएं तो उसे जवाब की ज़रूरत होगी। इसलिए मैंने चाहा कि उन संदेहों को लाकर और उनके पतन और भ्रष्टाचार को स्पष्ट करके उसकी ज़रूरत पूरी कर दूँ, और अल्लाह ही से तौफीक है। (त)

पहला संदेह: इमाम सद्र अल-शरिया फरमाते हैं: "एक जुनूब (अशुद्ध व्यक्ति) ने गुस्ल (स्नान) किया लेकिन पानी उसकी पीठ के एक हिस्से तक नहीं पहुँचा और खत्म हो गया। फिर कोई ऐसी घटना हुई जिससे वज़ू लाज़िम हो गया, तो उसने दोनों के लिए तयम्मुम किया। फिर (1) उसे इतना पानी मिल गया जो दोनों के लिए काफी हो, तो उसका तयम्मुम दोनों के हक में बातिल (अमान्य) हो गया। और (2) यदि किसी एक के लिए नाकाफी हो, तो दोनों के हक में बाकी रहेगा। और (3) यदि खास तौर पर एक के लिए काफी हो, तो उसे धोए और..."

---

1. शरह अल-विकाया, तयम्मुम का अध्याय, मकतबा अल-रशीदिया, दिल्ली, 1/104. पेज 259 of 761

شرطوں کی رعایت کی جاتی ہے۔ یہ سب شرعی قواعد ہیں۔ دیکھئے کہ مذی رگڑنے کے ذریعہ نہ کپڑے سے پاک ہوتی ہے نہ بدن سے اور وہی منی کے ساتھ ہو تو اس کا کوئی حکم ظاہر نہیں ہوتا رگڑنے سے پاک ہوجاتی ہے۔ اسی سے توارد علل کا جواب بھی ظاہر ہے یہ وہ ہے جو کچھ اذہان کو صیقل کرنے کے لئے خاطر کا فیضان ہوا ۔ اور حکم سے متعلق تو ہمارے لئے وہ دلالت و تصریحات کافی ہیں جو حضرات فقہاء سے ہم نے پیش کیں۔ اور خدا ہی مستعان ہے اور خدائے بزرگ و برتر ہی خوب جاننے والا ہے۔ (ت)

افادہ ۱۱: اب حق صاف ظاہر ہوگیا اور اپنے چہرے سے پردہ ہٹادیا اور واضح ہو گیا کہ مسلک وہی مسلک تاویل ہے اور تاویل وہی تاویل جماعت ہے۔ لیکن یہاں دل میں چند شبہات گزرے تو اندیشہ ہوا کہ ایسے ہی کسی قاصر کو درپیش ہوں تو اسے جواب کی ضرورت ہوگی تو میں نے چاہا کہ ان شبہات کو لا کر اور ان کے سقوط و فساد کو واضح کر کے اس کی حاجت روائی کر دوں اور اللہ ہی سے توفیق ہے (ت)

شبہ اولٰی: امام صدر الشریعۃ فرماتے ہیں: "جنب نے غسل کیا پانی اس کی پیٹھ کی ایک جگہ تک نہ پہنچا اور ختم ہو گیا۔ اور کوئی ایسا حدث ہوا جو وضو واجب کرتا ہے تو اس نے دونوں کے لئے تیمم کیا پھر (۱) اسے اتنا پانی مل گیا جو دونوں کے لئے کافی ہو تو اس کا تیمم دونوں میں سے ہر ایک کے حق میں باطل ہو گیا۔ اور (۲) اگر کسی ایک کے لئے ناکافی ہو تو دونوں کے حق میں باقی رہے گا۔ اور (۳) اگر معین طور پر ایک کے لئے کافی ہو تو اسے دھوئے اور..."

---

۱ شرح الوقایۃ باب التیمم المکتبۃ الرشیدیہ دہلی ۱/ ۱۰۴ Page 259 of 761

Fatawa Razviya | Volume 4

[Right Column (Urdu Explanation)] ...for the other, the tayammum will remain valid. And if (4) it is sufficient for each one separately, then he should wash the lum'a (small unwashed spot in ghusl), etc. So the third situation also includes it when the water is sufficient for wudu but not for the lum'a. And in this situation, the ruling is that his tayammum will become void regarding the minor impurity (hadath) and wudu will become obligatory. It appears that it will be correct on the same basis that was mentioned at the beginning of the chapter, that such a person with two impurities who has wudu water available, wudu is obligatory on him, assuming that the minor impurity occurred before tayammum. Then wudu was made obligatory for the minor impurity. In view of this, the aforementioned interpretation will be such a justification of someone's speech that the speaker himself would not be satisfied with. (T)

Rather, this doubt will spread to the refined ruling because Sadr al-Sharia is not alone in this. He is preceded by the great Imam Abu al-Barakat al-Nasafi, who writes in al-Kafi: "There is such a junub (person in major impurity) who has a lum'a on his body; he experienced minor impurity before tayammum, so he should perform one tayammum for both. Now, if he finds enough water that is sufficient for either of the two indefinitely, he should use it for the lum'a, and according to Imam Muhammad, he should repeat the tayammum for the minor impurity." So the origin of repeating the tayammum for minor impurity is nothing but that wudu is obligatory due to the minor impurity, even though the minor impurity occurred before the tayammum for janaba (major impurity). And Imam Abu Yusuf [regarding] the repetition...

[Left Column (Arabic Text)] It includes the case when [the water] is sufficient for wudu but not for the lum'a (unwashed spot). It has been ruled that his tayammum becomes void regarding the hadath (minor impurity) and wudu becomes mandatory. It appears that this is only consistent with what was presented at the beginning of the chapter regarding the obligation of wudu on one who has two impurities and finds [enough water for] wudu. For it was assumed therein that the hadath occurred before tayammum, then wudu was made obligatory for the hadath. Thus, the interpretation becomes an orientation of a saying to something the speaker does not agree with.

Rather, the doubt spreads to the refined ruling, for Sadr al-Sharia is not unique in this; this great and ancient Imam Abu al-Barakat al-Nasafi states in al-Kafi regarding a junub who has a lum'a on his body and experienced minor impurity before

performing tayammum: "He performs one tayammum for both. If he then finds water sufficient for one of them only, he uses it for the lum'a and repeats tayammum for the minor impurity according to Muhammad." So what is the reason for repeating tayammum for minor impurity except the obligation of wudu for it, despite it occurring before the tayammum for janaba? While Abu Yusuf, though he disagreed on repeating it, it is because he does not make wudu obligatory in itself but due to an external factor, which is that the matter of janaba is more severe, so the water...

---

1. al-Kafi Page 260 of 761

[दायां कॉलम (उर्दू व्याख्या)] ...दूसरे के हक़ में तयम्मुम बाक़ी रहेगा। और अगर (4) अकेले हर एक के लिए काफ़ी हो तो लुम'आ (गुस्ल में छूटी हुई छोटी जगह) धोए इत्यादि। तो तीसरी सूरत इसे भी शामिल है जब पानी वज़ू के लिए काफ़ी हो लुम'आ के लिए काफ़ी न हो। और इस सूरत में यह हुक्म किया है कि हक़-ए-हदथ (छोटी अशुद्धि के हक़) में उसका तयम्मुम बातिल हो जाएगा और वज़ू करना वाजिब होगा। ज़ाहिर यह है कि इसी बुनियाद पर रास्त आ सकेगा जिसे अव्वल बाब में बताया कि ऐसा दो हदथ वाला जिसके पास वज़ू का पानी मौजूद है उस पर वज़ू वाजिब है कि इसमें हदथ तयम्मुम से पहले होना फ़र्ज़ किया है फिर हदथ के लिए वज़ू वाजिब किया। इसके पेश-ए-नज़र तावील मज़कूर किसी के कलाम की ऐसी तौजीह होगी जिससे ख़ुद साहिब-ए-कलाम राज़ी न हो। (त)

बल्कि यह शक मुनक़्क़ह (परिष्कृत) हुक्म तक सरायत कर आएगा इसलिए कि सदरुश शरिया इसमें मुनफ़रिद (अकेले) नहीं। ये उनसे मुक़द्दम (पहले) इमाम जलील अबुल बरकात नसफ़ी हैं जो 'काफ़ी' में रक़मतराज़ (लिखते) हैं: "ऐसा जुनुब है जिसके बदन पर लुम'आ है उसे क़ब्ल तयम्मुम हदथ हुआ तो दोनों ही के लिए एक तयम्मुम करे। अब अगर उसे इतना पानी मिल जाए जो ग़ैर मुअ़य्यन तौर पर दोनों में से किसी एक के लिए काफ़ी हो तो उसे लुम'आ में सर्फ़ करे, और इमाम मुहम्मद के नज़दीक हदथ के लिए तयम्मुम का इआदा (पुनरावृत्ति) करे"। तो तयम्मुम हदथ के इआदा का मंशा (कारण) इसके सिवा नहीं कि हदथ के सबब वज़ू वाजिब है बावजूद ये कि हदथ तयम्मुम जनाबत से पहले है और इमाम अबू यूसुफ़ इआदा के..

[बायां कॉलम (अरबी पाठ)] इसमें वह स्थिति भी शामिल है जब [पानी] वज़ू के लिए पर्याप्त हो लेकिन लुम'आ (बिना धुले स्थान) के लिए नहीं। इसमें यह निर्णय दिया गया है कि छोटे अशुद्धि (हदथ) के संबंध में उसका तयम्मुम अमान्य हो जाता है और वज़ू अनिवार्य हो जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह केवल उसी के साथ सुसंगत है जो अध्याय के प्रारंभ में दो अशुद्धियों वाले व्यक्ति पर वज़ू की अनिवार्यता के संबंध में प्रस्तुत किया गया था जिसे वज़ू [के लिए पानी] मिल जाता है। क्योंकि उसमें यह माना गया था कि तयम्मुम से पहले हदथ हुआ था, फिर हदथ के लिए वज़ू अनिवार्य कर दिया गया था। अतः व्याख्या एक ऐसी बात की ओर झुकाव बन जाती है जिससे वक्ता स्वयं सहमत नहीं होता।

बल्कि, संदेह परिष्कृत निर्णय तक फैल जाता है, क्योंकि सदर अल-शरिया इसमें अकेले नहीं हैं; यह महान और प्राचीन इमाम अबू अल-बरकात अल-नसफी अल-काफी में एक जुनुब (बड़ी अशुद्धि वाले व्यक्ति) के बारे में कहते हैं जिसके शरीर पर एक लुम'आ है और तयम्मुम करने से पहले उसे हदथ हो गया: "वह दोनों के लिए एक तयम्मुम करता है। यदि उसे बाद में केवल उनमें से एक के लिए पर्याप्त पानी मिलता है, तो वह उसे लुम'आ के लिए उपयोग करता है और इमाम मुहम्मद के अनुसार हदथ के लिए तयम्मुम दोहराता है।" तो हदथ के लिए तयम्मुम दोहराने का कारण इसके लिए वज़ू की अनिवार्यता के अलावा और कुछ नहीं है, इसके बावजूद कि यह जनाबत (बड़ी अशुद्धि) के लिए तयम्मुम से पहले हुआ था। जबकि अबू यूसुफ, हालांकि उन्होंने दोहराने पर असहमति जताई, ऐसा इसलिए है क्योंकि वह अपने आप में वज़ू को अनिवार्य नहीं करते हैं बल्कि एक बाहरी कारक के कारण, जो यह है कि जनाबत का मामला अधिक गंभीर है, इसलिए पानी...

---

1. काफ़ी पेज 260 of 761

[Left Column] تشمل ما اذا كفى للوضوء دون اللمعة وقد حكم فيه ببطلان تيممه في حق الحدث وايجاب الوضوء والظاهر ان هذا انما يستقيم على ما قدم اول الباب من وجوب الوضوء على ذى حدثين وجد وضوء فانه فرض فيه الحدث قبل التيمم ثم اوجب الوضوء للحدث فاذن يكون التأويل توجيها للقول بما لا يرضى به قائله۔ بل يسرى الشك الى الحكم المنقح فان صدر الشريعة غير متفرد به هذا الامام الجليل الاقدم ابوالبركات النسفي قائلا في الكافي في جنب على بدنه لمعة احدث قبل ان يتيمم تيمم لهما واحدا فان وجد ما يكفى لاحدهما غير عين صرفه الى اللمعة ويعيد التيمم للحدث عند محمد اھ فما منشؤا عادة تيمم الحدث الا ايجاب الوضوء له مع كونه قبل تيمم الجنابة وابويوسف وان خالفه في الاعادة فلالانه لا يوجب الوضوء في نفسه بل لعارض وذلك ان امر الجنابة اغلظ فكان الماء

[Right Column] دوسرے کے حق میں تیمم باقی رہے گا اور اگر (۴) تنہا ہر ایک کے لئے کافی ہو تو لمعہ (غسل میں چھوٹی ہوئی جگہ) دھوئے الخ۔ تو تیسری صورت اسے بھی شامل ہے جب پانی وضو کے لئے کافی ہو لمعہ کے لئے کافی نہ ہو۔ اور اس صورت میں یہ حکم کیا ہے کہ حق حدث میں اس کا تیمم باطل ہوجائے گا اور وضو کرنا واجب ہوگا۔ ظاہر یہ ہے کہ اسی بنیاد پر راست آسکے گا جسے اول باب میں بتا یا کہ ایسا دو حدث والا جس کے پاس وضو کا پانی موجود ہے اس پر وضو واجب ہے کہ اس میں حدث تیمم سے پہلے ہونا فرض کیا ہے پھر حدث کے لئے وضو واجب کیا اس کے پیش نظر تاویل مذکور کسی کے کلام کی ایسی توجیہ ہوگی جس سے خود صاحب کلام راضی نہ ہو۔ (ت) بلکہ یہ شک منقح حکم تک سرایت کرآئے گا اس لئے کہ صدر الشریعہ اس میں منفرد نہیں۔ یہ ان سے مقدم امام جلیل ابوالبرکات نسفی ہیں جو کافی میں رقمطراز ہیں: "ایسا جنب ہے جس کے بدن پر لمعہ ہے اسے قبل تیمم حدث ہوا تو دونوں ہی کے لئے ایک

تیمم کرے۔ اب اگر اسے اتنا پانی مل جائے جو غیر معین طور پر دونوں میں سے کسی ایک کے لئے کافی ہو تو اسے لمعہ میں صرف کرے، اور امام محمد کے نزدیک حدث کے لئے تیمم کا اعادہ کرے "اھ تو تیمم حدث کے اعادہ کا منشا اس کے سوا نہیں کہ حدث کے سبب وضو واجب ہے باوجودیکہ حدث تیمم جنابت سے پہلے ہے اور امام ابویوسف اعادہ کے

---

1 کافی

Fatawa Rizwia, Volume IV

[Right Column - Urdu Text] And he is not in a state of major ritual impurity (junub)". And with reference to Durr al-Mukhtar, "he became ritualistically impure (muhdith) but not in a state of janaba, so he must perform wudu." Secondly: He was not required to perform wudu because the state of ritual impurity (hadath) would remain as it was due to the presence of janaba, and janaba is not removed by wudu. However, at this time, janaba has been removed through dry ablution (tayammum). Thirdly: His water was not making prayer permissible due to janaba, and at this time it makes it permissible. Fourthly: In that case, both substitutes would have to be combined within one purification. And at this time, the first purification has been completed through tayammum without water, and due to the return of hadath without janaba upon gaining power over water, this purification will be completed with water without soil. Fifthly: This issue is commonly known and circulating in the primary texts (mutun) and other books of the school of thought (madhhab) that gaining power over water, in the matter of nullifying tayammum, is just like the occurrence of hadath. And there is no doubt that if he had performed tayammum for both and then hadath occurred, wudu would be obligatory upon him. So the same ruling will apply at this time when he gains power over wudu. So, how did this ruling remain based on what was issued from Sadr al-Shari'ah at the start of the chapter? I say (Aqul): Why not, all of these...

[Left Column - Arabic Text] ...so he should perform ablution (wudu)[1]. Secondly: No wudu was required of him because the state of ritual impurity (hadath) persisted as it was due to the presence of major ritual impurity (janaba), and it is not removed by wudu. But now, it has been removed by tayammum. Thirdly: His water was not making prayer permissible due to janaba, and now it makes it permissible. Fourthly: It would have involved combining two substitutes in a single purification. But now, the first purification has been completed through tayammum without water, and with the return of hadath upon gaining power over water without janaba, this purification will be completed with water without soil. Fifthly: It is well-known and circulating in the primary texts (mutun) and other books of the school of thought (madhhab) that gaining power over water, in the context of nullifying tayammum, is like the occurrence of hadath. There is no doubt that if he performed tayammum for both and then a minor impurity (hadath) occurred, wudu would be mandatory for him. Thus, the same ruling will apply when he gains power over water for wudu. So,

how did this ruling remain based on what was issued by Sadr al-Shari'ah at the beginning of the chapter? I say (Aqul): Indeed, the basis of all that is...

[1] Ad-Durr al-Mukhtar with al-Shami, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Egypt 1/186.

फ़तावा रज़विया, खंड IV

[दायां कॉलम - उर्दू पाठ] और वह जुनुब (बड़ी नापाकी की स्थिति में) नहीं है।" और दुर्रुल मुख़्तार के हवाले से यह कि "वह मुहदिस (छोटी नापाकी वाला) हुआ, जनाबत वाला नहीं, इसलिए उसे वुज़ू करना है।" दूसरा: उस पर वुज़ू इसलिए नहीं था क्योंकि जनाबत की मौजूदगी की वजह से हदस (नापाकी) वैसे ही बनी रहती और जनाबत वुज़ू से दूर नहीं होती, लेकिन इस समय जनाबत तयम्मुम से दूर हो चुकी है। तीसरा: जनाबत की वजह से उसका पानी नमाज़ को मुबाह (जायज़) करने वाला नहीं था, और इस समय मुबाह करने वाला है। चौथा: उसमें एक पाकी (तहारत) के अंदर दोनों बदल जमा करना होता। और इस समय पहली पाकी पानी के बिना तयम्मुम के ज़रिए पूरी हो चुकी है, और जनाबत के बिना पानी पर सक्षम होने से हदस के वापस आने के कारण, यह पाकी मिट्टी के बिना पानी से पूरी होगी। पाँचवाँ: मतून (मुख्य ग्रंथों) और पंथ (मज़हब) की अन्य किताबों में यह मसला आम तौर पर मशहूर है कि तयम्मुम तोड़ने के मामले में पानी पर क़ुदरत (शक्ति) पैदा होना वैसा ही है जैसा हदस पैदा होना। और इसमें कोई शक नहीं कि अगर वह दोनों के लिए तयम्मुम कर लेता और फिर उसे हदस होता, तो उस पर वुज़ू वाजिब होता। तो यही हुक्म उस समय भी होगा जब उसे वुज़ू के पानी पर क़ुदरत मिल जाए। तो यह हुक्म उस पर कहाँ आधारित रहा जो अध्याय (बाब) की शुरुआत में सद्रुश-शरिया के हवाले से जारी हुआ था? मैं कहता हूँ (अक़ूल): क्यों नहीं इन सब...

[बायां कॉलम - अरबी पाठ] ...तो उसे वुज़ू करना चाहिए[1]। दूसरा: उस पर वुज़ू का कोई दायित्व नहीं था क्योंकि जनाबत (बड़ी नापाकी) की उपस्थिति के कारण हदस (नापाकी की स्थिति) वैसी ही बनी हुई थी, और वह वुज़ू से दूर नहीं होती। लेकिन अब, जनाबत तयम्मुम द्वारा दूर हो चुकी है। तीसरा: जनाबत के कारण इसका पानी नमाज़ को जायज़ बनाने वाला नहीं था, और अब यह जायज़ बनाने वाला है। चौथा: उसमें एक ही पाकी के भीतर दो विकल्पों (बदलों) को संयोजित करना पड़ता। लेकिन अब पहली पाकी पानी के बिना तयम्मुम के माध्यम से पूरी हो चुकी है, और जनाबत के बिना पानी पर शक्ति प्राप्त होने से हदस के वापस आने के कारण, यह पाकी मिट्टी के बिना पानी से पूरी होगी। पाँचवाँ: मतून (मुख्य ग्रंथों) और पंथ (मज़हब) की अन्य पुस्तकों में यह बात व्यापक रूप से प्रसिद्ध है कि तयम्मुम तोड़ने के मामले में पानी पर शक्ति प्राप्त करना वैसे ही है जैसे हदस का होना। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यदि उसने दोनों के लिए तयम्मुम किया होता और फिर उसे हदस होता, तो उस पर वुज़ू अनिवार्य होता। वही नियम तब भी लागू होगा जब उसे वुज़ू के पानी पर शक्ति मिल

जाए। तो यह नियम उस पर कहाँ आधारित रहा जो अध्याय की शुरुआत में सद्रुश-शरिया के हवाले से जारी हुआ था? मैं कहता हूँ (अकूल): वास्तव में, इन सब का आधार...

[1] अद-दुर्रुल मुख़्तार मा-अश-शामी, बाबुत तयम्मुम, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र 1/186।

فتاوی رضویہ، جلد چہارم

[دایاں کالم] اور جنب نہیں ہے"۔ اور در مختار کے حوالہ سے یہ " محدث ہوا جنابت والا نہیں تو اسے وضو کرنا ہے"۔ ثانیا: اس پر وضو اس لئے نہیں تھا کہ جنابت موجود ہونے کی وجہ سے حدث ویسے ہی باقی رہتا اور جنابت وضو سے دُور نہ ہوتی لیکن اس وقت تو جنابت تیمم سے دُور ہو چکی ہے۔ ثالثا: اُس کا پانی جنابت کی وجہ سے نماز مباح کرنے والا نہ تھا اور اِس وقت مباح کرنے والا ہے۔ رابعا: اُس میں ایک طہارت کے اندر دونوں بدل جمع کرنا ہوتا۔ اور اس وقت پہلی طہارت بغیر پانی کے تیمم کے ذریعہ پوری ہو چکی ہے اور پانی پر قادر ہونے سے حدث بلاجنابت لوٹ آنے کی وجہ سے یہ طہارت بغیر مٹی کے پانی سے پوری ہوگی۔ خامسا: متون اور دیگر کتب مذہب میں یہ مسئلہ متداول طور پر معروف ہے کہ تیمم توڑنے کے معاملہ میں پانی پر قدرت پیدا ہونا ایسے ہی ہے جیسے حدث پیدا ہونا۔ اور اس میں شک نہیں کہ اگر وہ دونوں ہی کے لئے تیمم کرلیتا پھر اسے حدث ہوتا تو اس پر وضو واجب ہوتا تو یہی حکم اس وقت بھی ہوگا جب آپ وضو پر اسے قدرت مل جائے۔ تو یہ حکم اس پر کہاں مبنی رہا جو شروع باب میں صدر الشریعہ کے حوالہ سے صادر ہوا۔ اقول: (میں کہتا ہوں) کیوں نہیں ان سب

[بایاں کالم] فیتوضأ [1]۔ وثانیا: لم یکن علیه وضوء لبقاء الحدث کما هو لوجود الجنابة ولاتزول بالوضوء اما الآن فقد زالت بالتیمم۔ وثالثا: لم یکن ماءه مبیحا للصلاة لاجل الجنابة والآن یبیح۔ ورابعا: کان فیه الجمع بین البدلین فی طهارة واحدة والآن قدمت الطهارة الاولی بالتیمم بلاماء وبعود الحدث بالقدرة علی الماء دون الجنابة تتم هذه بالماء بلاتراب۔ وخامسا: قد علم دوّار فی المتون وسائر کتب المذهب ان حدوث قدرة علی الماء کحدوث حدث فی نقض التیمم ولاشك ان لوتیمم لهما ثم احدث فعلیه الوضوء فکذا

اذا قدر على ماء الوضوء فأنى الابتناء على ما صدر عن الصدر فى صدر الباب. اقول: ببلى فان مبنى كل ذلك على

[1] الدرالمختار مع الشامى باب التيمم مصطفى البابى مصر ١/ ١٨٦

Fatawa Rizvia, Volume 4

The assumption that his Tayammum for minor impurity (hadath) is invalidated by seeing water is questionable. How can this be correct? If its persistence invalidated Tayammum, its presence initially should have prevented Tayammum. But preventing it initially is exactly what contradicts the texts and evidence mentioned at the beginning of the chapter. The necessary implication (that being an invalidator during persistence requires it to be a preventer at the start) is proven by Imam Malik al-Ulama in 'Bada'i al-Sana'i' where he wrote: 'The basic principle in this is that everything whose existence prevents the existence of Tayammum, its occurrence invalidates Tayammum; and what does not [prevent], does not [invalidate].' Similar statements are found in Al-Bahr al-Ra'iq, Tanwir al-Absar, Durr al-Mukhtar, and other famous books. That is, anything that does not prevent initially does not invalidate during persistence. Its contrapositive is: 'Everything that invalidates during persistence prevents initially.' Thus, the desired point is proven. From this, it is known that the fifth point is even more clearly false, and it is more eloquent to base it on that problematic ruling. (T)

Second Doubt: Scholars have stated regarding a person who had a small unwashed spot (lam'ah) left from ghusl and then had a minor impurity after performing Tayammum for that spot—as depicted in most books—or similarly, if the minor impurity occurred before performing Tayammum—as both cases are depicted in some books—and then he found water before performing Tayammum for the minor impurity: if the water is enough for the unwashed spot but not for the full wudu, he should wash that spot and then perform Tayammum for the minor impurity. Likewise, if the water is enough for either one but not both specifically, he should prioritize the unwashed spot because major ritual impurity (janabah) is more severe. If he goes against this and performs wudu, he must repeat the Tayammum for the unwashed spot by consensus.

1. Bada'i al-Sana'i, Chapter: Nullifiers of Tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/75 Page 263 of 761

फतावा रिज़विया, जिल्द 4

यह धारणा कि पानी देखने से 'हदथ' (लघु अशुद्धि) के मामले में उसका तयम्मुम टूट जाता है, विचारणीय है। यह कैसे सही हो सकता है? यदि इसका बना रहना तयम्मुम को तोड़ने वाला होता, तो इसकी शुरुआत में उपस्थिति भी तयम्मुम को रोकने वाली होनी चाहिए थी। और शुरुआत में इसे रोकना वही बात है जो अध्याय की शुरुआत में दिए गए पाठों और प्रमाणों के विपरीत है। इस अनिवार्यता (कि बने रहने पर तोड़ने वाला होने के लिए शुरुआत में रोकने वाला होना आवश्यक है) का प्रमाण यह है कि इमाम मलिक अल-उलेमा ने 'बदाए अल-सनाए' में लिखा है: "इस बारे में मूल सिद्धांत यह है कि हर वह चीज़ जिसका अस्तित्व तयम्मुम को रोकता है, उसका बाद में होना तयम्मुम को तोड़ देता है; और जो नहीं रोकता, वह नहीं तोड़ता।" इसी तरह की बात अल-बहर अल-रैक, तन्वीर अल-अबसार, दुर्र-ए-मुख्तार और अन्य प्रसिद्ध पुस्तकों में भी है। अर्थात, जो कुछ शुरुआत में नहीं रोकता, वह बने रहने पर तोड़ता नहीं है। इसका विपरीत यह होगा कि "हर वह चीज़ जो बने रहने पर तोड़ती है, वह शुरुआत में रोकती है।" अतः वांछित बात सिद्ध हो गई। इसी से ज्ञात हुआ कि पाँचवाँ बिंदु और भी स्पष्ट रूप से गलत है, और उस दोषपूर्ण निर्णय पर इसे आधारित करना अधिक स्पष्ट है। (त)

दूसरा संशय: विद्वानों ने उस व्यक्ति के बारे में उल्लेख किया है जिसके शरीर पर नहाने (गुस्ल) के दौरान एक जगह (लमआ) धुलने से रह गई और उस जगह के लिए तयम्मुम करने के बाद उसे लघु अशुद्धि (हदथ) हो गई—जैसा कि अधिकांश पुस्तकों में वर्णित है—या इसी तरह अगर तयम्मुम करने से पहले उसे अशुद्धि हुई—जैसा कि कुछ पुस्तकों में दोनों ही स्थितियाँ वर्णित हैं—और फिर उसे लघु अशुद्धि के लिए तयम्मुम करने से पहले पानी मिल गया: यदि वह पानी केवल उस अनधुली जगह के लिए पर्याप्त है और पूर्ण वज़ू के लिए नहीं, तो वह उस जगह को धो ले और फिर अशुद्धि के लिए तयम्मुम करे। इसी तरह, यदि पानी किसी एक के लिए तो पर्याप्त है लेकिन दोनों के लिए नहीं, तो वह उस जगह को धोएगा क्योंकि जनाबत (बड़ी अशुद्धि) अधिक गंभीर है। यदि वह इसके विपरीत वज़ू करता है, तो सर्वसम्मति के अनुसार उसे उस अनधुली जगह के लिए तयम्मुम दोहराना होगा।

1. बदाए अल-सनाए, अध्याय: तयम्मुम को तोड़ने वाली चीजें, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/75 पृष्ठ 761 में से 263

فرض انتقاض تیممه فی حق الحدث برؤیة الماء وفیه النظر کیف ولونقضه بقاء لمنعه ابتداء ومنعه ابتداء هو عین مافی صدر الباب خلاف ما علیه النصوص والدلائل اما الملازمة فقد قال(۱) الامام ملك العلماء فی البدائع الغراء الاصل فیه ان کل ما منع وجوده التیمم نقض وجوده التیمم و مالا فلا ۱ اه ومثله فی البحر والتنویر والدر و غیرها من الاسفار الغراء کل مالا یمنع ابتداء لا ینقض بقاء وینعکس بعکس النقیض الی قولنا کل ما (۱) ینقض بقاء یمنع ابتداء فثبت المطلوب و به علم ان الخامس ابین بطلانا وافصح بالبناء علی ذلك الحکم المحذور۔

کی بنیاد اسی مفروضہ پر ہے کہ پانی دیکھنے سے اس کا تیمم حق حدث میں ٹوٹ جاتا ہے اور یہی محل نظر ہے۔ یہ کیسے صحیح ہو سکتا ہے؟ اگر یہ بقاء ناقض تیمم ہوتا تو ابتداء مانع تیمم بھی ہونا اور ابتداء مانع تیمم ہونا یہی تو وہ بات ہے جو شروع باب میں نصوص و دلائل کے برخلاف وارد ہوتی ہے۔ ملازمہ (بقاء ناقض ہونے کو ابتداء مانع ہونا لازم ہے) کا ثبوت یہ ہے کہ امام ملک العلماء نے بدائع شریف میں رقم فرمایا ہے کہ "اس بارے میں اصل یہ ہے کہ ہر وہ چیز جس کا وجود تیمم سے مانع ہے اس کا وجود تیمم کا ناقض بھی ہے اور جو مانع نہیں وہ ناقض بھی نہیں" اھ اسی کے مثل البحر الرائق، تنویر الابصار، در مختار و غیرہا مشہور کتابوں میں بھی ہے۔ یعنی ہر وہ جو ابتداء مانع نہیں وہ بقاء ناقض نہیں اس کا عکس نقیض یہ ہوگا "ہر وہ جو بقاء ناقض ہے وہ ابتداء مانع ہے" تو مطلوب ثابت ہو گیا۔ اسی سے معلوم ہوا کہ خامس کا بطلان زیادہ روشن ہے اور اس حکم محذور پر مبنی ہونے میں یہ زیادہ واضح ہے۔ (ت)

الشبهة الثانیة: نصوا فیمن بقیت له لمعة واحدث بعد التیمم لها کما صور فی اکثر الکتب وکذا ان احدث قبله کما صور بالوجهین فی بعضها ثم وجد الماء قبل التیمم للحدث انه ان کفی للمعة دون الوضوء

غسلها وتيمم للحدث وكذا ان كفى لكل منهما لا على التعيين لان الجنابة اغلظ فان (٢) خالف وتوضأ اعاد التيمم للمعة باتفاق

شبہ ٢: وہ شخص جس کا کچھ حصہ نہانے میں دھونے سے رہ گیا اور جنابت کا تیمم کرنے کے بعد اسے حدث ہوا جیسا کہ اکثر کتابوں میں یہ صورت مسئلہ بیان کی ہے یوں ہی اگر تیمم کرنے سے پہلے اسے حدث ہوا جیسا کہ بعض کتابوں میں دونوں ہی صورت بیان کی ہے پھر اس شخص کو حدث کا تیمم کرنے سے پہلے پانی مل گیا اس کے بارے میں علماء نے صراحت فرمائی ہے کہ اگر وہ پانی وضو کے لئے نہیں بلکہ

١ بدائع الصنائع باب نواقض التيمم ايچ ايم سعيد كمپنى كراچى ١/ ٧٥ Page 263 of 761

Volume 4 Fatawa Razawiya

The narrations and texts will follow. What is described in these three scenarios is nothing but the synthesis of two types of purification and the combination of two substitutes, where purification was achieved simultaneously using both water and soil. The fact that water is used for Janabah (major impurity) and soil for Hadath (minor impurity) does not prevent this combination. If water is only sufficient for a small missed spot (lum'ah), one should wash it and perform tayammum for the minor impurity. Likewise, if water is sufficient for either of them without specification, that spot must still be washed because Janabah is more severe. If someone acted contrary to this and only used water for wudu, then for the missed spot, they must repeat tayammum according to the consensus of reports. These texts will be presented soon. In these three cases, it involves mixing both purifications and combining both substitutes—meaning one achieved purification at the same time through both water and soil. Water being for major impurity and soil for minor impurity is not an obstacle to combining them. If this were not the case, why would you prevent someone with two types of impurities who has water available for wudu from performing it? (What is the reason for the difference?) There too, both substitutes did not gather on a single thing; rather, the soil was for Janabah and water for Hadath. (T)

The Third Doubt: All scholars have clearly stated that in cases where water is sufficient only for a missed spot or for each individually, it is obligatory to use it for that spot. This would invalidate his tayammum for that spot, and he must perform tayammum for the minor impurity. It is also certain that in both cases, this water was not sufficient to make prayer permissible because the impurity remained and tayammum was still necessary. Therefore, it would follow that his tayammum for Janabah should not be broken, as per the explanations of expert imams mentioned in the sixth proof: the water referred to in the noble verse is that which, if used, makes prayer permissible, and this water does not fit that description. This is the presentation of the doubts. (T)

I say: In response, with the grace of God, the Bestower: Regarding the last two, if the minor impurity occurred in them after tayammum...

Answer to Doubts: In response to the doubts, by the grace of God, the Bestower, I say: The last two...

विवरण और मूल पाठ आगे आएँगे। इन तीन स्थितियों में जो कुछ है वह दो प्रकार की पवित्रताओं का संश्लेषण और दो विकल्पों का संयोजन मात्र है। जहाँ एक ही समय में पानी और मिट्टी दोनों के साथ पवित्रता प्राप्त की गई। पानी का जनाबत (बड़ी अशुद्धि) के लिए होना और मिट्टी का हदस (छोटी अशुद्धि) के लिए होना इस संयोजन को नहीं रोकता है। यदि पानी केवल एक छोटे छूटे हुए स्थान (लुमआ) के लिए पर्याप्त है, तो उसे धो लेना चाहिए और हदस के लिए तयम्मुम करना चाहिए। इसी प्रकार, यदि पानी बिना किसी निर्धारण के दोनों में से किसी के लिए भी पर्याप्त है, तो उस स्थान को फिर भी धोना चाहिए क्योंकि जनाबत अधिक गंभीर है। यदि किसी ने इसके विपरीत किया और वज़ू में केवल पानी का उपयोग किया, तो छूटे हुए स्थान के लिए उसे सर्वसम्मति के अनुसार फिर से तयम्मुम करना होगा। ये पाठ शीघ्र ही दिए जाएंगे। इन तीनों स्थितियों में, दोनों पवित्रताओं का मिश्रण और दोनों विकल्पों का संयोजन ही तो है—यानी कि एक ही समय में उसने पानी और मिट्टी दोनों से पवित्रता प्राप्त की। पानी का जनाबत के लिए और मिट्टी का हदस के लिए होना उनके संयोजन में बाधा नहीं है। यदि ऐसा नहीं होता, तो आपने दो प्रकार की अशुद्धियों वाले व्यक्ति को, जिसके पास वज़ू के लिए पानी उपलब्ध है, वज़ू करने से क्यों रोका? (अंतर का कारण क्या है?) वहाँ भी, दोनों विकल्प एक ही चीज़ पर एकत्र नहीं हुए थे; बल्कि मिट्टी जनाबत के लिए थी और पानी हदस के लिए था। (त)

तीसरी शंका: सभी विद्वानों ने स्पष्ट रूप से कहा है कि उन स्थितियों में जहाँ पानी केवल एक लुमआ के लिए पर्याप्त हो या प्रत्येक के लिए अलग-अलग, उस स्थान पर पानी का उपयोग करना अनिवार्य है। इससे उसका तयम्मुम टूट जाएगा और वह हदस के लिए तयम्मुम करेगा। यह भी निश्चित रूप से ज्ञात है कि दोनों स्थितियों में यह पानी नमाज़ को जायज़ बनाने के लिए पर्याप्त नहीं था क्योंकि अशुद्धि शेष थी और तयम्मुम की आवश्यकता थी। इसलिए, यह आवश्यक होना चाहिए कि जनाबत के लिए उसका तयम्मुम न टूटे, जैसा कि छठे प्रमाण में विशेषज्ञ इमामों के स्पष्टीकरणों में बताया गया है: पवित्र आयत में जिस पानी का उल्लेख है वह वही है जिसके उपयोग से नमाज़ जायज़ हो जाए, और यह पानी वैसा नहीं है। यह शंकाओं का विवरण है। (त)

मैं कहता हूँ: दाता (अल्लाह) की कृपा से उत्तर में: जहाँ तक अंतिम दो का संबंध है, यदि उनमें अशुद्धि तयम्मुम के बाद हुई...

शंकाओं का समाधान: शंकाओं के उत्तर में, दाता ईश्वर की कृपा से, मैं कहता हूँ: अंतिम दो...

पृष्ठ २६४ / ७६१

الروایات وستأتی النصوص فالذی فی ھذہ الصور الثلاث لیس الا تلفیق الطھارتین والجمع بین البدلین حیث تطھر في وقت واحد بالماء والتراب معا کون الماء للجنابة والتراب للحدث لا یمنع الجمع والافلم منعتم ذا حدثین وجد وضوء عن الوضوء فان ثمه ایضا لم یجتمعا علی شيء واحد بل کان التراب للجنابة والماء للحدث۔ صرف چھوٹی ہوئی جگہ کے لئے کافی ہے تو اسے دھولے اور حدث کے لئے تیمم کرے یوں ہی اگر دونوں میں سے ہر ایک کے لئے بلاتعین کافی ہو تو بھی اس جگہ کو دھوئے اس لئے کہ جنابت زیادہ سخت ہے۔ اگر اس نے اس کے برخلاف کیا اور پانی وضو میں صرف کیا تو چھوٹی ہوئی جگہ کے لئے اسے باتفاق روایت دوبارہ تیمم کرنا ہے نصوص عنقریب آرہے ہیں۔ ان تینوں صورتوں میں دونوں طہارتوں کو خلط کرنا اور دونوں بدل کو جمع کرنا ہی تو ہے۔ اس طرح کہ بیک وقت اس نے پانی اور مٹی دونوں سے طہارت حاصل کی اور پانی کا جنابت کے لئے، مٹی کا حدث کے لئے ہونا جمع سے مانع نہیں۔ اگر یہ بات نہیں تو دو حدث والے کو جسے آب وضو دستیاب ہے آپ نے وضو سے کیوں روکا (وجہ فرق کیا ہے) وہاں بھی تو دونوں بدل ایک شئی پر مجتمع نہ ہوئے بلکہ مٹی جنابت کے لئے ہے اور پانی حدث کے لئے ہے۔ (ت)

الشبھة الثالثة: نصوا قاطبة في صورتي کفایة الماء للمعة وحدھا او لکل منفردا بوجوب استعماله في اللمعة وانتقاض تیممه لھا وانه یتیمم للحدث ومعلوم قطعا ان ھذا الماء لم یکن محللا للصلاة في الصورتین لبقاء الحدث والاحتیاج له الی التیمم فکان یجب ان لا ینتقض تیممه لھا لما مر من نصوص الائمة الجھابذة في الدلیل السادس ان المراد في الکریمة ھو الماء الذی اذا استعمل اباح الصلاة وھذا لیس به ھذا تقریر الشبھات۔ شبہ ۳: جب پانی صرف لمعہ کے لئے کفایت کرے یا جب تنہا ہر ایک کے لئے کفایت کرے دونوں صورتوں میں سبھی علماء نے صراحت فرمائی ہے کہ پانی لمعہ میں

استعمال کرنا واجب ہے۔ اس کا تیمم جنابت ٹوٹ جائے گا اور حدث کے لئے وہ تیمم کرے گا۔ یہ بھی قطعاً معلوم ہے کہ دونوں صورتوں میں یہ پانی نماز مباح کرنیوالا نہ تھا کیونکہ حدث باقی ہے اور اس کے لئے تیمم کی ضرورت ہے۔ تو ضروری کہ اس کا تیمم جنابت نہ ٹوٹے اس لئے کہ دلیل سادس میں ائمہ ماہرین کی تصریحات گزر چکی ہیں کہ آیت کریمہ میں وہ پانی مراد ہے جو استعمال کیا جائے تو نماز مباح ہو جائے گی اور یہ وہ پانی نہیں۔ یہ شبہات کی تقریر ہے۔ (ت)

واقول: في الجواب بتوفيق الوهاب اما الاخريان ان كان الحدث فيهما بعد التيمم جواب شبہات: جواب شبہات میں بتوفیق خدائے وہاب میں کہتا ہوں۔ آخری دونوں

Volume Four Fatawa Razawiya For the case of ritual impurity (Janaba), the answer is clear because in this situation, it is definitely independent and separate. It is not capable of being included or merged into Janaba because Janaba has already been removed by Tayammum (dry ablution). Therefore, how can something present be included in something already gone? For this reason, there is a consensus among the Muslim community (Ummah) that if a minor impurity (Hadath) occurs after purifying from Janaba through ritual bath (Ghusl) or Tayammum, and water for ablution (Wudu) is available, then Wudu is obligatory. Since the minor impurity was not included in the major impurity (Janaba), it is not a case of combining two substitutes in a single purification, but rather two separate purifications. This is like a person who was in a state of Janaba, did not find water for Ghusl, and thus performed Tayammum. Then a minor impurity occurred, and they found water for Wudu and performed it. In such a case, a person with two impurities cannot raise an objection based on inclusion, as that would necessitate combining two substitutes in one purification. Similarly, 'permissibility' (Ibahat) refers to the permissibility from the aspect of removing the barrier that the water came into contact with, even if the prohibition remains from another aspect. This is like the example mentioned before of a person who performs Wudu while having a major impurity on their thigh. Again, a person with two impurities cannot object because they do not have two separate barriers; rather, their Wudu removes one while the other remains. Instead, there is only one barrier because the minor impurity is subsumed under the major one. If the water is insufficient for the major impurity, it will absolutely not make the prayer permissible, even if it were sufficient for the minor one. (T) However, in both these cases, if the minor impurity occurred before Tayammum, as mentioned in the first doubt, I say that the answer to all of them is in a single point, by the will of Allah the Almighty.

खंड चार फ़तावा रज़विया जनाबत (अनुष्ठानिक अशुद्धता) के मामलों के लिए उत्तर स्पष्ट है क्योंकि इस स्थिति में, यह निश्चित रूप से स्वतंत्र और अलग है। यह जनाबत में शामिल होने या विलीन होने के योग्य नहीं है क्योंकि तैयम्मुम (सूखा स्नान) द्वारा जनाबत को पहले ही हटा दिया गया है। इसलिए, जो मौजूद है वह उस चीज़ में कैसे शामिल हो सकता है जो पहले ही जा चुकी है? इसी कारण से, मुस्लिम समुदाय (उम्मत) के बीच आम सहमति है कि यदि ग़ुस्ल (अनुष्ठानिक स्नान) या तैयम्मुम के माध्यम से जनाबत से पवित्र होने के बाद लघु अशुद्धता (हदथ) होती है, और वज़ू के लिए पानी उपलब्ध है, तो वज़ू अनिवार्य है। चूँकि लघु अशुद्धता को प्रमुख अशुद्धता (जनाबत) में शामिल नहीं किया गया था, इसलिए यह एक ही शुद्धिकरण में दो विकल्पों को मिलाने का मामला नहीं है, बल्कि दो अलग-अलग शुद्धिकरण हैं। यह उस व्यक्ति की तरह है जो जनाबत की स्थिति में था, उसे ग़ुस्ल के लिए पानी नहीं मिला, और इस तरह उसने तैयम्मुम किया। फिर एक छोटी अशुद्धता हुई, और उन्हें वज़ू के लिए पानी मिला और उन्होंने इसे किया। ऐसे मामले में, दो अशुद्धियों वाला व्यक्ति समावेशन के आधार पर आपत्ति नहीं उठा सकता है, क्योंकि इसके लिए एक ही शुद्धिकरण में दो विकल्पों को मिलाने की आवश्यकता होगी। इसी तरह, 'अनुमेयता' (इबाहत) का अर्थ उस बाधा को दूर करने के दृष्टिकोण से अनुमेयता है जिसके संपर्क में पानी आया था, भले ही निषेध दूसरे दृष्टिकोण से बना रहे। यह उस व्यक्ति के पहले बताए गए उदाहरण की तरह है जो अपनी जांघ पर एक बड़ी अशुद्धता होने पर वज़ू करता है। फिर से, दो अशुद्धियों वाला व्यक्ति आपत्ति नहीं कर सकता क्योंकि उसके पास दो अलग-अलग बाधाएँ नहीं हैं; बल्कि, उसका वज़ू एक को हटा देता है जबकि दूसरा बना रहता है। इसके बजाय, केवल एक ही बाधा है क्योंकि लघु अशुद्धता प्रमुख अशुद्धता के अंतर्गत आती है। यदि पानी बड़ी अशुद्धता के लिए अपर्याप्त है, तो यह प्रार्थना को बिल्कुल भी जायज़ नहीं बनाएगा, भले ही वह छोटी अशुद्धता के लिए पर्याप्त रहा हो। (टी) हालाँकि, इन दोनों मामलों में, यदि तैयम्मुम से पहले लघु अशुद्धता हुई थी, जैसा कि पहले संदेह में उल्लेख किया गया है, तो मैं कहता हूँ कि उन सभी का उत्तर एक ही बिंदु में है, अल्लाह सर्वशक्तिमान की इच्छा से।

पृष्ठ 265 का 761

جلد چہارم فتاوئ رضویہ (عربی متن:) للجنابة فالجواب واضح لانه إذن مستبد قطعاً لا يصلح للاندراج لارتفاع الجنابة بالتيمم فكيف يندرج الموجود فی المرفوع ولذا اجمعت الامة انه اذا احدث بعد تطهير الجنابة بالغسل او بالتيمم و وجد وضوء يجب عليه الوضوء فاذا لم يندرج فيها لم يكن الجمع بين البدلين فی طهارة واحدة بل طهارتين كمن اجنب ولم يجد غسلا فتيمم فاحدث و وجد وضوء فتوضأ ولا يرد ذو الحدثين لاجل الاندراج فيكون جمعاً فی طهارة واحدة وكذلك المراد بالاباحة الاباحة من جهة ازالة مانعية لاقاها وان بقی المنع من جهة اخری كما سبق فی من توضأ وعلی فخذه نجس مانع ولا يرد ذو الحدثين فليس به مانعيتان و وضوؤه يزيل احدهما وان بقيت الاخری بل مانعية واحدة لاندراج الصغری فی الكبری فاذا لم يكف للكبری لم يكن محللا للصلاة اصلا ولو كان يكفی للصغری۔ واما ان كان الحدث فيهما قبل التيمم كما فی الشبهة الاولی فاقول: الجواب عنها جميعاً فی حرف واحد ان شاء الله العزيز

(اردو متن:) شبہات کو لیجئے اگر ان میں حدث تیمم جنابت کے بعد تھا تو جواب واضح ہے کہ اس صورت میں وہ یقیناً مستقل ہے جنابت میں شامل و مندرج ہونے کے قابل نہیں کیونکہ جنابت تو تیمم سے ختم ہو چکی ہے تو موجود معدوم میں کیسے شامل ہو گا۔ اسی لئے اس بات پر امت کا اجماع ہے کہ جب غسل یا تیمم سے تطہیر جنابت کے بعد حدث ہو اور آب وضو دست یاب ہو تو اس پر وضو واجب ہے۔ جب حدث جنابت میں شامل نہ ہوا تو دونوں بدل کو ایک طہارت میں جمع کرنا نہ ہوا بلکہ دو طہارتوں میں ہوا جیسے وہ شخص جسے جنابت لاحق ہوئی اور غسل کا پانی نہ پایا تو تیمم کیا پھر اسے حدث ہوا اور وضو کا پانی پایا تو وضو کیا۔ اس پر دونوں حدث والے سے اعتراض نہیں ہو سکتا کیونکہ اس کا ایک حدث دوسرے میں شامل ہے تو وہاں ایک ہی طہارت میں دونوں بدل جمع کرنا لازم آئے گا اسی طرح اباحت سے مراد وہ اباحت ہے جو اس مانعیت کے ازالہ کی جہت سے ہو جس پانی کا اتصال ہوا اگرچہ دوسری جہت سے ممانعت باقی ہو جیسا کہ اس کے

بارے میں گزرا جس نے وضو کیا اور اس کی ران پر کوئی مانع نجس موجود ہے۔ اس پر بھی دونوں حدث والے سے اعتراض نہیں ہو سکتا کیونکہ اس کا حال ایسا نہیں کہ اس میں دو مانعیت (ممانعت) ہوں اور وضو ایک کو دور کر دے اگرچہ دوسری باقی رہ جائے بلکہ اس میں ایک ہی مانعیت ہے کیونکہ صغریٰ کبریٰ میں شامل ہو گئی ہے تو پانی جب کبریٰ کے لئے ناکافی ہو قطعاً نماز کو مباح کرنے والا نہ ہو گا اگرچہ صغریٰ کے لئے کافی ہو۔ (ت) لیکن ان دونوں صورتوں میں اگر حدث تیمم سے پہلے ہو، جیسا کہ شبہہ اولیٰ میں ذکر ہے، تو میں کہتا ہوں اس کا جواب ایک حرف میں ہے ان شاء اللہ العزیز

صفحہ ۲۶۵ از ۷۶۱

Fatawa Razawiya, Volume 4

The One, the Glorious... If the All-Conquering, Self-Sufficient, and Great God wills. We have already alluded to this answer in the tenth benefit (ifada). It is that ritual impurity (hadath) has two meanings, as we explained in 'Al-Tars al-Mu'addal'. One is a legal impurity (najasat hukmiyah) that settles on the outer surfaces of the limbs that are subject to the ruling of purification through permeation. A surface is an extended thing, divisible in length and width, so with the division of the surfaces, the impurity residing in them is also divided. This is the reason why for the part that water reaches, the obligation is waived, and the impurity remains in the remaining part. The second meaning is that ritual impurity is an attribute of the legally responsible person (mukallaf), and it is that the mukallaf is clad in legal impurity. So as long as even an atom of that impurity remains, this ritual impurity will remain. This is the ritual impurity which is indivisible and non-partitionable. And since the first is divisible, it will have two types: comprehensive (shamil) and limited (muqtasir). In the state of major ritual impurity (janaba), comprehensiveness is as long as water hasn't touched it. Limitation is in the case where some part of the body has been washed, because from the washed part, legal impurity is removed and remains in the other part. And minor ritual impurity (hadath asghar) is not considered in anything other than the four limbs [of wudu]. So, if the major impurity is comprehensive, then inclusion is mandatory because it is common to those limbs as well. And if it is limited, then inclusion is not mandatory. For example, if the situation is that major impurity is in [parts] other than the four limbs and in those limbs...

अदवतीय, महिमामयी... यदि सर्वशक्तिमान, बेनयाज़ और महान ईश्वर चाहे। हमने इस उत्तर की ओर दसवीं व्याख्या (इफ़ादा) में भी संकेत किया है। वह यह है कि 'हदस' (धार्मिक अशुद्धि) के दो अर्थ हैं, जैसा कि हमने 'अल-तर्स अल-मुअद्दल' में स्पष्ट किया है। एक 'नजासत हुकमिया' (क़ानूनी अशुद्धि) है जो अंगों की उन बाहरी सतहों में व्याप्त हो जाती है जिन पर शुद्धिकरण का नियम लागू होता है। सतह एक विस्तृत चीज़ है, जो लंबाई और चौड़ाई में विभाजित है, इसलिए सतहों के विभाजन के साथ उनमें व्याप्त अशुद्धि भी विभाजित हो जाती है। यही कारण है कि जिस हिस्से तक पानी पहुँचता है, वहाँ से कर्तव्य (फ़र्ज़) समाप्त हो जाता है और शेष हिस्से में अशुद्धि बनी रहती है। दूसरा अर्थ यह है कि 'हदस' उत्तरदायी व्यक्ति (मुकल्लफ़) का एक गुण है, और वह यह है कि मुकल्लफ़ क़ानूनी अशुद्धि से ग्रस्त है। अतः जब तक उस अशुद्धि का एक कण भी शेष रहता है, यह 'हदस' बना रहेगा। यही वह 'हदस' है जो अविभाज्य और अखंडनीय है। और चूँकि पहला प्रकार विभाज्य है, इसके दो भाग होंगे: व्यापक (शामिल) और सीमित (मुक़्तसिर)। 'जनाबत' (बड़ी अशुद्धि) की स्थिति में व्यापकता तब तक रहती है जब तक पानी उसे न छुए। और सीमितता उस स्थिति में होती है जब शरीर का कोई हिस्सा धो लिया गया हो, क्योंकि धुले हुए हिस्से से क़ानूनी अशुद्धि दूर हो जाती है और दूसरे हिस्से में बनी रहती है। और 'हदस-ए-असग़र' (छोटी अशुद्धि) का विचार चार अंगों (वज़ू के अंगों) के अलावा अन्य अंगों में नहीं किया जाता। अतः यदि बड़ी अशुद्धि व्यापक है, तो समावेश आवश्यक है क्योंकि वह उन अंगों में भी सामान्य है। और यदि वह सीमित है, तो समावेश आवश्यक नहीं है। उदाहरण के लिए, यह स्थिति हो कि 'जनाबत' चार अंगों के अलावा अन्य अंगों में हो और उन अंगों में...

(دایاں کالم - عربی) الواحد الماجد* وقد لوحنا الیه فی الافادة العاشرة وذلك (۱) ان الحدث له معنیان کما قدمنا فی الطرس المعدل احدهما نجاسة حکمیة تحل بسطوح الاعضاء الظاهرة التی یلحقها حکم التطهیر حلول سر یان والسطح ممتد منقسم طولا وعرضا فبانقسامها تنقسم النجاسة الحالة بها وعن هذا یسقط الفرض عما اصابه الماء مع بقاء النجاسة فی الباقی والاخر وصف للمکلف وهو تلبسه بها فیبقی مادام ذرة منها وهذا هو الحدث الذی لایتجزی، واذ ( ) کان الاول متجزئا ینقسم الی قسمین شامل ومقتصر فالشمول فی الجنابة مالم یمس ماء والاقتصار اذا غسل بعض البدن فان النجاسة الحکمیة تزول من المغسول وتبقی فی غیره، والحدث الاصغر لایعتبر فی غیر الاعضاء الاربعة فان کانت الکبری شاملة وجب الاندراج لعمومها تلك الاعضاء ایضا وان کانت مقتصرة لم یلزم کأن تکون الجنابة فی غیر هن وفیهن الحدث ولایکون الابان یتوضأ الجنب او یمر الماء علی اعضاء وضوئه وتبقی لمعة فی غیرهن ثم یحدث فیعتریهن الحدث ح ولاوجه للاندراج لتباین المحل والی هذا اشرت بقولی فی المندرج المحل جزء من المحل والمطهر بعض من المطهر وهذا هو مرادهم ههنا کما دل علیه قول الامام صدر الشریعة و لم

(بایاں کالم - اردو) اگر خدائے غالب غنی بزرگ نے چاہا۔ اس جواب کی طرف ہم افادہ دہم میں اشارہ بھی کر چکے ہیں۔ وہ یہ ہے کہ حدث کے دو معنی ہیں، جیسا کہ ہم نے الطرس المعدل میں بیان کیا۔ ایک نجاست حکمیہ جو اعضا کی اُن ظاہری سطحوں میں حلول سریانی کئے ہوتی ہے جنہیں حکمِ تطہیر لاحق ہوتا ہے۔ اور سطح ایک پھیلی ہوئی، طول وعرض میں منقسم چیز ہے تو سطحوں کے منقسم ہونے سے ان میں حلول کرنے والی نجاست بھی منقسم ہو جاتی ہے۔ یہی وجہ ہے کہ جس حصہ کو پانی پہنچتا ہے اس سے فرض ساقط ہو جاتا ہے اور بقیہ حصہ میں نجاست

باقی رہتی ہے۔ دوسرا معنی یہ ہے کہ حدث مکلف کی ایک صفت ہے اور وہ یہ ہے کہ مکلف نجاست حکمیہ سے متلبس ہے تو جب تک اس نجاست کا ایک ذرہ بھی باقی ہے یہ حدث باقی رہے گا۔ یہی وہ حدث ہے جو غیر متجزی و غیر منقسم ہے۔ اور اوّل چونکہ متجزی ہے اس کی دو قسمیں ہونگی، شامل اور مقتصر۔ جنابت میں شمول اس وقت ہے جب پانی مس نہ ہوا ہو۔ اور اقتصار اس صورت میں ہے جب بدن کا کوئی حصہ دھل گیا ہو اس لئے کہ دھوئے ہوئے حصہ سے نجاست حکمیہ زائل ہو جاتی ہے اور دوسرے حصہ میں باقی رہتی ہے۔ اور حدثِ اصغر کا چاروں اعضا کے علاوہ میں اعتبار ہی نہیں تو اگر نجاست کبری شاملہ ہے تو اندراج لازم ہے کیونکہ وہ ان اعضا میں بھی عام ہے اور اگر مقتصرہ ہے تو اندراج لازم نہیں۔ مثلاً یہ صورت ہو کہ جنابت اعضائے اربعہ کے علاوہ میں ہو اور ان اعضا میں

(Arabic Text Column) ...water reaches the spot on his back.[1] He specifically mentioned the back to indicate that the major ritual impurity (Janaba) is in a place other than the minor ritual impurity (Hadath), so the inclusion (of minor into major) is not valid. Don't you see (1) that for someone who has general Janaba and Hadath, if he performs Ghusl (ritual bath), it suffices him for Wudu (ablution). And if he does not find water for his Ghusl and performs Tayammum (dry ablution), it is also sufficient for him. As for the one whose ritual impurity is limited to non-Wudu limbs and Hadath, like one who performed Ghusl but his back remained [unwashed], for example, then he incurred Hadath; in this case, when he washes his back, his Ghusl is complete and he exits Janaba, but washing his back does not suffice for Wudu; rather, it is mandatory for him to perform Wudu or Tayammum for Hadath if he does not find water for it. This is solely because the minor impurity is not included in that limited major impurity. If you say: This is regarding water, for it is (2) also a limited purifier based on what it is poured on, unlike Tayammum, for it encompasses the entire body like Ghusl. I say: Yes, it encompasses the body, but its effect (3) in...

(Urdu Text Column) ...is Hadath. And its form will be such that a Junub (person in major ritual impurity) performs Wudu or water passes over his Wudu limbs and a spot remains on other limbs, then he incurs Hadath, so Hadath occurs on the Wudu limbs. In such a situation, there is no reason for inclusion because the places (of the minor and major impurities) are separate. I have pointed this out under 'mundarij' (included) in these words of mine: "the place is a part of the place, and the purifier is a part of the purifier," and this is what the scholars mean here. As the words of Sadr al-Shariah indicate: "and water did not reach the spot (unwashed small area) on his back." He mentioned the back specifically so that it could be understood that the major impurity is in a place other than the minor impurity, so inclusion would not be possible. Look, when a person with both general Janaba and Hadath performs Ghusl, this same Ghusl suffices for Wudu as well. And if he performs Tayammum because of not finding water for Ghusl, this too is sufficient. But for him who has limited Janaba in non-Wudu parts and Hadath (in Wudu parts)—for example, one who performed Ghusl and his back remained [unwashed], then he incurred Hadath—when he washes his back, his Ghusl is completed and he is free from Janaba. But his washing his back cannot suffice for Wudu; rather, it is obligatory for him to perform Wudu, or if water is not found, perform Tayammum for Hadath. This is because spiritual impurity is not included in that limited major impurity. (T) If the question is that this is

in water, that it too is a limited purifier for whatever part it reaches. But this is not the case with Tayammum because it is comprehensive and general for the whole body like Ghusl. I say: Yes, it is general and comprehensive for the body, but...

(Footer) [1] Sharh al-Wiqayah, Chapter of Tayammum, Maktaba Rasheediyah Delhi, 1/102. Page 267 of 761

(अरबी पाठ कॉलम) ...पानी उसकी पीठ के एक सूखे हिस्से (लम्आ) तक पहुँचता है।[1] पीठ का विशेष रूप से उल्लेख यह बताने के लिए किया गया है कि बड़ी अशुद्धि (नजासत) छोटी अशुद्धि के स्थान के अतिरिक्त है, इसलिए समावेश (छोटी का बड़ी में) मान्य नहीं है। क्या आप नहीं देखते (1) कि जिस व्यक्ति को व्यापक जनबात (बड़ी अशुद्धि) और हदस (छोटी अशुद्धि) दोनों हों, यदि वह स्नान (ग़ुस्ल) कर ले, तो वह उसके लिए वूज़ू के बदले पर्याप्त है। और यदि उसे स्नान के लिए पानी न मिले और वह तयम्मुम कर ले, तो वह भी उसके लिए पर्याप्त है। जहाँ तक उस व्यक्ति का प्रश्न है जिसकी अशुद्धि वूज़ू के अंगों के अलावा अन्य अंगों तक सीमित है और हदस भी है, जैसे कोई जिसने स्नान किया और उदाहरण के लिए उसकी पीठ रह गई, फिर उसे हदस हो गया; तो ऐसी स्थिति में जब वह अपनी पीठ धो लेता है, तो उसका स्नान पूरा हो जाता है और वह जनबात से बाहर निकल जाता है, लेकिन अपनी पीठ धोना वूज़ू के लिए पर्याप्त नहीं है; बल्कि उस पर अनिवार्य है कि वह हदस के लिए वूज़ू करे या यदि उसे पानी न मिले तो तयम्मुम करे। यह केवल इसलिए है क्योंकि वह छोटी अशुद्धि उस सीमित बड़ी अशुद्धि में समाहित नहीं है। यदि आप कहें: यह पानी के बारे में है, क्योंकि यह (2) भी उन अंगों तक सीमित शोधक है जिन पर इसे डाला जाता है, तयम्मुम के विपरीत, क्योंकि वह स्नान की तरह पूरे शरीर को कवर करता है। मैं कहता हूँ: हाँ, यह शरीर को कवर करता है, लेकिन इसका कार्य (3) इसमें...

(उर्दू पाठ कॉलम) ...हदस हो। और इसका स्वरूप ऐसा होगा कि एक जुनुब (बड़ी अशुद्धि वाला व्यक्ति) वूज़ू करे या उसके वूज़ू के अंगों पर पानी बह जाए और अन्य अंगों में कोई हिस्सा सूखा रह जाए, फिर उसे हदस हो जाए, तो वूज़ू के अंगों पर हदस आ जाएगा। ऐसी स्थिति में समावेश का कोई कारण नहीं है क्योंकि (छोटी और बड़ी अशुद्धि के) स्थान अलग-अलग हैं। इसकी ओर 'मुंदरिज' (शामिल) के तहत मैंने अपने इन शब्दों में संकेत किया है कि "स्थान, स्थान का हिस्सा है, और शोधक, शोधक का हिस्सा है," और यहाँ विद्वानों का यही अर्थ है। जैसा कि सदरुश शरीअह के ये शब्द बता रहे हैं: "और पानी उसकी पीठ के सूखे हिस्से (लम्आ) तक नहीं पहुँचा।" विशेष रूप से पीठ का उल्लेख इसलिए किया गया ताकि यह स्पष्ट हो सके कि बड़ी अशुद्धि, छोटी अशुद्धि के स्थान पर नहीं है, इसलिए समावेश नहीं हो सकेगा। देखिए, व्यापक जनबात और हदस दोनों रखने वाला जब स्नान करता है, तो यही स्नान वूज़ू के लिए भी पर्याप्त हो जाता है। और यदि स्नान के लिए पानी न मिलने के कारण तयम्मुम करे, तो वह भी पर्याप्त होता है। लेकिन वह व्यक्ति जो वूज़ू के अंगों के

अलावा अन्य अंगों में सीमित जनबात रखता है और (वूज़ू के अंगों में) हदस रखता है—उदाहरण के लिए, जिसने स्नान किया और उसकी पीठ रह गई, फिर उसे हदस हुआ—तो जब वह अपनी पीठ धो लेता है, उसका स्नान पूरा हो गया और वह जनबात से मुक्त हो गया। लेकिन उसका अपनी पीठ धोना वूज़ू के लिए पर्याप्त नहीं हो सकता; बल्कि उस पर अनिवार्य है कि वह वूज़ू करे, या यदि पानी न मिले, तो हदस के लिए तयम्मुम करे। यह इसलिए है क्योंकि आध्यात्मिक अशुद्धि (छोटी हदस) उस सीमित बड़ी अशुद्धि में समाहित नहीं है। (त) अगर सवाल हो कि यह तो पानी के विषय में है कि वह भी जिस हिस्से तक पहुँचता है उसके लिए सीमित शोधक है। लेकिन तयम्मुम का यह मामला नहीं है क्योंकि वह स्नान की तरह पूरे शरीर के लिए व्यापक और सामान्य है। मैं कहता हूँ: हाँ, यह शरीर के लिए सामान्य और व्यापक है, लेकिन...

(फ़ुटनोट) [1] शरह अल-विकाया, बाब अत-तयम्मुम, मकतबा रशीदिया दिल्ली, 1/102। पेज 267 of 761

(Arabic Column) يصل الماء لمعة ظهره $1^$ خص الظهر بالذكر ليفيد ان الكبرى في غير محل الصغرى فلا يصح الاندراج الا ترى (۱) ان ذا الجنابة الشاملة والحدث اذا اغتسل كفاه عن الوضوء وان لم يجد ماء لغسله فتيمم كفاه ايضا اما صاحب المقتصرة فى غير اعضاء الوضوء والحدث كمن اغتسل وبقيت ظهره مثلا ثم احدث فهذا اذا غسل ظهره تم غسله وخرج عن الجنابة لكن لايكفيه غسله ظهره عن الوضوء بل يجب عليه ان يتوضأ او يتيمم للحدث ان لم يجد له الماء وما هو الالعدم اندراج الصغرى في تلك المقتصرة الكبرى۔ فان قلت هذا فى الماء فانه (۲) ايضا مطهر مقتصر على ما يصبه بخلاف التيمم فانه يعم جميع البدن كالغسل۔ اقول : نعم يعم البدن لكن عمله (۳) فى

(Urdu Column) حدث ہو۔ اور اس کی یہی شکل ہوگی کہ جنب وضو کرے یا اس کے اعضائے وضو پر پانی گزر جائے اور دیگر اعضا میں لمعہ رہ جائے پھر اسے حدث ہو تو اعضائے وضو پر حدث عارض ہو جائے گا۔ ایسی صورت میں اندراج کی کوئی وجہ نہیں کیونکہ (اصغر واکبر کے) محل الگ الگ ہیں۔ اس کی طرف مندرج کے تحت میں نے اپنے ان الفاظ سے اشارہ کیا کہ "محل، محل کا جز ہے۔ اور مطہر، مطہر کا بعض ہے اور یہاں پر علماء کی یہی مراد ہے۔ جیسا کہ صدر الشریعہ کے یہ الفاظ بتا رہے ہیں : " اور پانی اس کی پشت کے لمعہ (چھوٹی ہوئی جگہ) تک نہ پہنچا۔ خاص طور سے پشت کو اس لئے ذکر فرمایا کہ یہ افادہ ہو سکے کہ کبری، غیر محل صغری میں ہے اس لئے اندراج نہ ہو سکے گا۔ دیکھئے جنابت شاملہ اور حدث دونوں رکھنے والا جب غسل کرے تو یہی غسل وضو سے بھی کفایت کر جاتا ہے اور اگر غسل کے لئے پانی نہ ملنے کی وجہ سے تیمم کرے تو یہ بھی کافی ہوتا ہے۔ مگر وہ جو غیر اعضائے وضو میں جنابت مقتصرہ اور (اعضائے وضو میں) حدث رکھتا ہے۔ مثلاً وہ جس نے غسل کیا اور

اس کی پیٹھ باقی رہ گئی پھر اسے حدث ہوا تو یہ جب اپنی پیٹھ دھولے اس کا غسل مکمل ہو گیا اور وہ جنابت سے نکل گیا۔ لیکن اس کا اپنی پیٹھ دھولینا وضو سے کفایت نہیں کرسکتا بلکہ اس پر واجب ہے کہ وضو کرے یا اگر پانی نہ ملے تو حدث کے لئے تیمم کرے۔ یہ اسی لئے ہے کہ نجاست معنوی اس نجاست کبری مقتصرہ میں مندرج نہیں۔ (ت) اگر سوال ہو کہ یہ تو پانی میں ہے کہ وہ بھی جس حصہ تک پہنچتا ہے اس کے لئے مطہر مقتصر ہے۔ مگر تیمم کا یہ حال نہیں کیونکہ وہ غسل کی طرح پورے بدن کو ہمہ گیر اور عام ہے۔ اقول : ہاں بدن کو عام اور ہمہ گیر ہے لیکن

Header: Fatawa Razawiya, Volume 4

(Arabic Text/Column) Ritual impurity (Hadath) is its removal, not changing its attribute so as to make what is included (mundarij) not included, and vice versa. Rather, it removes it based on the state it is in, whether it is included or independent. So when one bathes and a dry spot remains on their back, then an impurity occurs and they perform Tayammum for both, it removes them until water is found. This is the fruit of its generality, because it does not include a legal impurity existing in the four organs within another impurity existing on the back. Thus, each of them remains waiting for sufficient water for itself independently. When wudu water is found, wudu becomes obligatory for them. Had they found water before this Tayammum, it would have prevented the Tayammum for the impurity, because everything that is a subsequent nullifier is a primary preventer. Water makes prayer permissible with respect to this independent one, without looking at the other. Water and dust did not combine on one purification, but were distributed over two independent purifications. Thus, all doubts are resolved, and praise be to Allah, Lord of the worlds. May Allah's blessings be upon our master and leader Muhammad, and his family and companions altogether. I say: From here it has become clear, praise be to Allah, that (1) whoever is in a state of major ritual impurity (janaba) and performs Tayammum, then minor ritual impurity occurs and they perform Wudu, then they pass by a river...

(Urdu Text/Column) In 'Hadath' (ritual impurity), its function is to remove it, not to change its attribute in a way that it makes what is included (mundarij) into non-included or vice-versa. Rather, it will only do this: it will remove the 'Hadath' in whatever state and attribute it exists. If it is 'included', then in the state of being included; if it is 'independent', then in the state of being independent. Now see, when he bathed and a dry spot (lum'a) remained on his back, then 'Hadath' occurred to him, and he performed Tayammum for both 'Hadath' (minor impurity) and 'Janabah' (major impurity). This Tayammum will remove both until water is available. This is the result of its general and comprehensive nature. It is not that one 'Hukmi' (legal) impurity which is in the four limbs is 'included' into another 'Hukmi' impurity which is on the back. Therefore, each of these two impurities will independently wait for sufficient water for itself. At the time he gets wudu water, wudu will become obligatory for him. And if he had found wudu water before this Tayammum, it would have prevented him from performing Tayammum for 'Hadath' because whatever is a 'naqidh' (nullifier) in persistence is a 'mani' (preventer) in the beginning. And water, in

consideration of this independent state in which there is no regard for the other, is what makes prayer permissible. And the gathering of water and soil did not happen on one 'taharah' (purification), but both are distributed and separate on two independent purifications. All doubts are resolved and all praise is for God, the Lord of the worlds. And may blessings from Allah be upon our master and lord Muhammad and all his family and companions. (T) I say: From here, by the grace of Allah Almighty, it also became clear that one who had 'Janabah', performed Tayammum, then 'Hadath' occurred and they performed Wudu, then by some river...

शीर्षक: फ़तवा रज़विया, खंड 4

(अरबी पाठ/कॉलम) हदथ (अशुद्धता) उसे हटाना है, न कि उसके गुण को बदलना ताकि शामिल को गैर-शामिल बनाया जा सके और इसके विपरीत। बल्कि, यह उसे उसी स्थिति में हटा देता है जिसमें वह है, चाहे वह शामिल हो या स्वतंत्र। इसलिए जब कोई स्नान करता है और उसकी पीठ पर एक सूखा स्थान रह जाता है, फिर अशुद्धता होती है और वह दोनों के लिए तयम्मुम करता है, तो यह पानी मिलने तक उन्हें हटा देता है। यह इसकी व्यापकता का फल है, क्योंकि यह पीठ पर मौजूद अशुद्धता में चार अंगों में मौजूद कानूनी अशुद्धता को शामिल नहीं करता है। इस प्रकार, उनमें से प्रत्येक स्वतंत्र रूप से अपने लिए पर्याप्त पानी की प्रतीक्षा करता है। जब वूज़ू का पानी मिल जाता है, तो उनके लिए वूज़ू अनिवार्य हो जाता है। यदि उन्हें इस तयम्मुम से पहले पानी मिल जाता, तो वह अशुद्धता के लिए तयम्मुम को रोक देता, क्योंकि हर वह चीज़ जो बाद में अमान्य करने वाली है, वह प्राथमिक निवारक है। पानी इस स्वतंत्र स्थिति के संबंध में प्रार्थना को जायज़ बनाता है, दूसरे को देखे बिना। एक ही पवित्रता पर पानी और मिट्टी का मिलन नहीं हुआ, बल्कि वे दो स्वतंत्र पवित्रताओं पर वितरित किए गए। इस प्रकार, सभी शंकाएं दूर हो गई हैं, और सारी प्रशंसा अल्लाह, ब्रह्मांड के रब के लिए है। अल्लाह की कृपा हमारे स्वामी और नेता मुहम्मद और उनके पूरे परिवार और साथियों पर हो। मैं कहता हूँ: यहाँ से यह स्पष्ट हो गया है, अल्लाह की प्रशंसा हो, कि (1) जो कोई बड़ी अशुद्धता (जनाबत) की स्थिति में है और तयम्मुम करता है, फिर छोटी अशुद्धता (हदथ) होती है और वह वूज़ू करता है, फिर वह किसी नदी के पास से गुजरता है...

(उर्दू पाठ/कॉलम) हदथ (अनुष्ठानिक अशुद्धता) में इसकी क्रिया उसे दूर करना है, न कि उसकी विशेषता बदल देना जैसे कि 'शामिल' (मुंदारिज) को 'गैर-शामिल' बना देना या इसके विपरीत। बल्कि, यह केवल इतना ही करेगा कि हदथ जिस स्थिति और विशेषता में है, उसी स्थिति में उसे हटा देगा। यदि यह शामिल है, तो शामिल होने की स्थिति में; यदि स्वतंत्र है, तो स्वतंत्रता की स्थिति में। अब देखें, जब उसने स्नान किया और उसकी पीठ पर एक सूखा स्थान (लुम'आ) रह गया, फिर उसे हदथ हुआ, और उसने हदथ और जनाबत दोनों के लिए तयम्मुम किया। यह तयम्मुम दोनों को पानी मिलने तक दूर कर देगा। यह इसकी व्यापकता और सर्वव्यापकता का परिणाम है। ऐसा नहीं है कि एक कानूनी (हुक्मी) अशुद्धता जो चार अंगों में है, उसे पीठ पर मौजूद दूसरी कानूनी अशुद्धता में शामिल कर दिया जाए। इसलिए, इन दोनों अशुद्धियों में से प्रत्येक स्वतंत्र रूप से अपने लिए पर्याप्त पानी की प्रतीक्षा करेगी। जिस समय उसे वूज़ू का पानी मिल जाए, उस पर वूज़ू अनिवार्य हो जाएगा।

और यदि इस तयम्मुम से पहले उसे वूज़ू का पानी मिलता तो वह हदथ का तयम्मुम करने से रोकता क्योंकि जो कुछ भी बने रहने में बाधक है, वह शुरुआत में भी बाधक है। और पानी, इस स्वतंत्र स्थिति के संबंध में जिसमें दूसरे की ओर नहीं देखा जाता, नमाज़ को जायज़ करने वाला है। और एक पवित्रता पर पानी और मिट्टी का मिलन नहीं हुआ बल्कि दोनों दो स्वतंत्र पवित्रताओं पर बिखरे हुए और अलग-अलग हैं। तमाम संदेह हल हो गए और सारी प्रशंसा अल्लाह, रब-उल-आलमीन के लिए है। और अल्लाह तआला की ओर से हमारे आका और मौला मुहम्मद और उनकी आल और असहाब सब पर दुरूद हो। (त) मैं कहता हूँ: यहीं से अल्लाह तआला के शुक्र से यह भी स्पष्ट हुआ कि जिसे जनाबत हुई थी उसने तयम्मुम किया फिर उसे हदथ हुआ तो उसने वूज़ू किया फिर किसी नदी के..

فتاوی رضویہ جلد چہارم

(الحدث هو الرفع لا تغييره عن صفته حتى يجعل المندرج غير مندرج وبالعكس بل انما يرفعه على ماهو عليه من الحال ان مندرجاً فمندرجاً او مستبداً فمستبدا فاذا اغتسل وبقيت لمعة في ظهره ثم احدث فتيمم لهما ازالهما مغيّين الى وجدان الماء وهذه ثمرة عمومه لان يدرج نجاسة حكمية قائمة بالاعضاء الاربعة في نجاسة اخرى قائمة بالظهر فتبقى كل منهما تنتظر الماء الكافى لها بحياله فاذا وجد وضوء وجب عليه الوضوء ولوجده قبل هذا التيمم لمنعه التيمم للحدث لان كل ناقض بقاء مانع ابتداء ويكون الماء محللا للصلاة بالنظر الى هذا المستقل المستبد ال غير المنظور فيه الى الاخر ولم يجتمع الماء والتراب على طهارة بل توزعاً على طهارتين مستقلتين فانحلت الشبهات جميعا والحمد لله رب العالمين وصلى الله تعالى على سيدنا ومولنا محمد وآله وصحبه اجمعين-اقول: ومن ههنا ظهر والله الحمد ان (1) من اجنب فتيمم فاحدث فتوضأ فمر بنهر)

حدث میں اس کا عمل یہی ہے کہ اسے دُور کر دے یہ نہیں کہ اس کی صفت بدل ڈالے اس طرح کہ مندرج کو غیر مندرج بنادے یا اس کے برعکس۔ بلکہ صرف اتنا کرے گا کہ حدث جس حالت وصفت پر ہے اسی حال پر اسے رفع کر دے گا۔ مندرج ہے تو بحالت اندراج، مستقل ہے تو بحالت استقلال۔ اب دیکھئے جب اس نے غسل کیا اور اس کی پشت میں لمعہ باقی رہ گیا پھر اسے حدث ہوا، اب اس نے حدث وجنابت دونوں کے لئے تیمم کیا تو یہ تیمم دونوں کو پانی کی دست یابی تک کے لئے دُور کردے گا۔ یہی اس کے عموم اور ہمہ گیری کا ثمرہ ہے۔ یہ نہیں کہ ایک نجاست حکمیہ جو اعضائے اربعہ میں ہے اسے دوسری نجاست حکمیہ میں جو پشت میں ہے مندرج کر دے۔ اس لئے دونوں نجاستوں میں سے ہر ایک اپنے اپنے لئے مستقل طور پر مائے کافی کے انتظار میں رہے گی جس وقت اسے وضو کا پانی مل جائے اس پر وضو واجب ہو جائے گا۔ اور

اگر اس تیمم سے پہلے اسے وضو کا پانی ملتا تو وہ حدث کا تیمم کرنے سے مانع ہوتا اس لئے کہ ہر وہ جو بقائی ناقض ہے ابتدائی مانع ہے۔ اور پانی اس مستقل متبد کے لحاظ سے جس میں دوسرے کی جانب نظر نہیں نماز کو مباح کرنے والا ہے۔ اور ایک طہارت پر پانی اور مٹی کا اجتماع نہ ہوا بلکہ دونوں دو مستقل طہارتوں پر متفرق اور جدا جدا ہیں۔ تمام شبہات حل ہوگئے اور ساری تعریف خدائے رب العالمین کے لئے ہے۔ اور اللہ تعالیٰ کی طرف سے ہمارے آقا و مولیٰ محمد اور ان کی آل و اصحاب سب پر درود ہو۔ (ت) اقول: یہیں سے بحمدہ تعالیٰ یہ بھی ظاہر ہوا کہ جسے جنابت ہوئی تو اس نے تیمم کیا پھر اسے حدث ہوا تو اس نے وضو کیا پھر کسی دریا کے

Fatawa Razawiyya - Volume 4

...and he had the ability (footnote) to perform Ghusl (ritual bath) but did not perform it, so he returned to the state of Janaba (ritual impurity) without being in a state of minor impurity (Hadath Asghar). This is because Janaba only returns to those parts of the body that water did not reach. Since water had already passed over the limbs of Wudu (ablution) during his previous Wudu, Janaba does not return to them without a new cause, as we explained in the first benefit and cited clear statements from Al-Ghunya and Al-Bada'i. So, if a minor impurity occurs, even before performing Tayammum (dry ablution) for the returning Janaba, and he finds water for Wudu, performing Wudu is absolutely mandatory for him. This is because this is an impurity that occurred upon a state of purity, thus nullifying it. His Tayammum at that moment would not suffice him because it is for Janaba restricted to parts other than the limbs of Wudu. Thus, the minor impurity is not included in it and remains independent on its own. Yes, the impurity would be removed by performing Tayammum for the returning Janaba if he were also unable to perform Wudu. Because even if Tayammum is for Janaba the size of a fingernail, it encompasses the entire body. So, when its condition—[being unable to wash] the limbs of Wudu as well—is met... In short, when the two impurities become independent, Tayammum for both, even if it is one in form, is two Tayammums in meaning. One looks at the condition for each. Where it is fulfilled, it is valid for that, and where it is not, it is not. Unlike the Tayammum of a Junub (person in Janaba) whose minor impurity is included [in the major one], for that is one Tayammum.

(Footnote) The Imam, the Jurist of the Soul, said: "He knew of it." I say: What is meant is "ability," for knowledge does not necessitate ability, while ability necessitates knowledge. 12 from him, may he be forgiven. (M/T)

Page 269 of 761

फ़तावा रज़विया - भाग 4

...और उसे ग़ुस्ल (धार्मिक स्नान) करने की क्षमता (पाद लेख) थी लेकिन उसने ग़ुस्ल नहीं किया, तो वह फिर से जनाबत (धार्मिक अशुद्धि) की स्थिति में लौट आया, बिना लघु अशुद्धि (हदस असग़र) के। ऐसा इसलिए है क्योंकि जनाबत केवल शरीर के उन हिस्सों में लौटती है जहाँ पानी नहीं पहुँचा था। चूँकि उसके पिछले वुज़ू के दौरान वुज़ू के अंगों पर पानी पहले ही पहुँच चुका था, इसलिए बिना किसी नए कारण के उन पर जनाबत नहीं लौटती, जैसा कि हमने पहले लाभ में बताया और अल-ग़ुनिया और अल-बदा'इ से स्पष्ट उद्धरण दिए। इसलिए, यदि कोई लघु अशुद्धि होती है, भले ही लौटने वाली जनाबत के लिए तयम्मुम (सूखी अशुद्धि) करने से पहले हो, और उसे वुज़ू के लिए पानी मिल जाए, तो उसके लिए वुज़ू करना पूरी तरह से अनिवार्य है। इसका कारण यह है कि यह एक ऐसी अशुद्धि है जो पवित्रता की स्थिति में उत्पन्न हुई, अतः उसे समाप्त कर देती है। उस समय उसका तयम्मुम उसके लिए पर्याप्त नहीं होगा क्योंकि वह वुज़ू के अंगों के अलावा अन्य हिस्सों तक सीमित जनाबत के लिए है। इस प्रकार, लघु अशुद्धि इसमें शामिल नहीं होती और स्वतंत्र बनी रहती है। हाँ, अशुद्धि लौटने वाली जनाबत के लिए तयम्मुम करने से दूर हो जाएगी यदि वह वुज़ू करने में भी असमर्थ हो। क्योंकि भले ही तयम्मुम नाखून के बराबर जनाबत के लिए हो, वह पूरे शरीर को समाहित करता है। तो जब इसकी शर्त - वुज़ू के अंगों में भी [पानी न पहुँच पाना] - पूरी हो जाती है... संक्षेप में, जब दोनों अशुद्धियाँ स्वतंत्र हो जाती हैं, तो दोनों के लिए तयम्मुम, भले ही वह रूप में एक हो, अर्थ में दो तयम्मुम हैं। प्रत्येक के लिए शर्त देखी जाती है। जहाँ यह पूरी होती है, वहाँ उसके लिए मान्य है, और जहाँ नहीं, वहाँ नहीं। एक जुनुब (जनाबत वाला व्यक्ति) के तयम्मुम के विपरीत जिसकी लघु अशुद्धि [बड़ी अशुद्धि में] शामिल होती है, क्योंकि वह एक ही तयम्मुम है।

(पाद लेख) इमाम, आत्मा के न्यायविद ने कहा: "उसे इसका ज्ञान था।" मैं कहता हूँ: इसका अर्थ "क्षमता" है, क्योंकि ज्ञान क्षमता की आवश्यकता नहीं रखता, जबकि क्षमता ज्ञान की आवश्यकता रखती है। 12 उनकी ओर سے, उन्हें क्षमा किया जाए। (एम/टी)

पृष्ठ 761 का 269

فتاوی رضویہ - جلد چہارم

و قدر عه على الاغتسال فلم يغتسل عاد جنبا غير محدث بالحدث الاصغر لان الجنابة انما تعود فيما لم يصبه الماء من اعضائه وبوضوئه السابق مر الماء على اعضاء الوضوء فلا تعود اليها جنابة الا بسبب جديد كما بينا في الافادة الاولى ونقلنا التنصيص به عن الغنية والبدائع فهذا (١) ان حدث ولو قبل التيمم للجنابة العائدة و وجد وضوء وجب عليه الوضوء قطعا لان هذا حدث طرأ على طهر فينقضه ولا يكفيه تيممه الآن لانه لجنابة مقتصرة في غير اعضاء الوضوء فلم يندرج الحدث فيه وبقي مستقلا بحياله نعم يرتفع (٢) بتيممه للجنابة العائدة ان لو كان عاجزا عن الوضوء ايضا لان التيمم وان كان لجنابة قدر ظفر يعم البدن فاذا وجد شرطه وهو العجز عن الماء في اعضاء الوضوء ايضا طهرها ايضا اما وهو قادر على الوضوء فلا لفقد الشرط. وبالجملہ (٣) اذا استقل الحدثان فالتيمم لهما وان كان واحدا بالصورة تيممان معنى ينظر في كل منهما الى شرطه فحيث تحقق يصح في حقه وحيث لا لابخلاف تيمم (٤) جنب ذي حدث مندرج فانه تيمم

پاس سے گزرا اور غسل پر قادر ہوا مگر اس نے غسل نہ کیا تو وہ پھر جنب ہو گیا لیکن محدث بہ حدث اصغر نہ ہوا۔ اس لئے کہ کہ جنابت ان ہی اعضاء میں عود کرے گی جنہیں پانی نہ پہنچا اور اعضائے وضو پر اس کے وضوئے سابق کی وجہ سے پانی گزر گیا تو ان پر جنابت بغیر کسی سبب جدید کے عود نہ کرے گی جیسا کہ ہم نے افادہ اولی میں بیان کیا۔ اور اس کی تصریح غنیہ اور بدائع سے نقل کی۔ پھر اس کو اگر حدث ہو۔ اگرچہ لوٹ آنے والی جنابت کا تیمم کرنے سے پہلے ہو۔ اور وہ آب وضو پائے تو اس پر وضو قطعاً واجب ہے۔ اس لئے کہ یہ ایسا حدث ہے جو طہارت پر طاری ہوا تو اسے توڑ دے گا۔ اور اس وقت اس کا تیمم کرنا اسے کفایت نہیں کر سکتا اس لئے کہ وہ اس جنابت کے لئے ہے جو غیر اعضائے وضو میں مقتصر ہے تو حدث اس میں

مندرج نہ ہوا اور الگ مستقل رہ گیا۔ ہاں اس کا حدث لوٹ آنے والی جنابت کا تیمم کرنے سے اٹھ جائے گا اگر وہ وضو سے بھی عاجز ہو۔ کیونکہ تیمم اگر چہ ناخن برابر جنابت کے لئے ہو لیکن تمام بدن کو عام ہوتا ہے۔ تو جب اس کی شرط اعضائے وضو میں بھی

عه قال الامام فقیه النفس علم به اقول: والمراد القدرة فان العلم لا یستلزم القدرة والقدرة تستلزم العلم ۱۲ منه غفر له-(م) امام فقیہ النفس نے فرمایا: دریافت کیا اسے علم ہوا اقول: مراد قدرت ہے اس لئے کہ علم ہونا قدرت کو مستلزم نہیں اور قادر ہونا علم کو مستلزم ہے ۱۲ منہ غفرلہ۔ (ت)

Fatawa Rizwia - Volume 4

[Right Column] ...if inability to use water is found, it will purify them as well. But it will not purify in the state of ability for Wudu because the condition is missing. The summary is that when both impurities (hadath) are independent, for them, even if the Tayammum is one in form, it is two in meaning. In each, its condition will be considered; where its condition is fulfilled, that Tayammum will be valid for it, and where the condition is not fulfilled, it will not be valid. However, the Tayammum of a person in a state of major ritual impurity (Junub) whose minor impurity is integrated is contrary to this because due to integration, it is one Tayammum in form and also in meaning. And here there is no integration. Look at the same text we just quoted from 'Al-Kafi' that by consensus, according to Imam Azam and Imam Muhammad (may Allah's mercy be upon them), Wudu is obligatory upon him in case sufficient water is available for Wudu, although the second Imam (Abu Yusuf) says that the ruling for Wudu will be dropped due to an incidental reason. And it is coming in the following treatise that the most correct view is that of Imam Muhammad, and this is exactly our desired specific ruling (juz'iyyah) because he is that Junub with a dry spot who was also afflicted by minor impurity before Tayammum for major impurity, so Wudu became obligatory upon him. Similarly, there is clarification in Sharh-ul-Wiqayah as well, as passed. The commentators and observers also maintained it, and no one felt any problem in it, just as all of them understood a problem in their statement at the beginning of the chapter. The reason for this is that the discussion there is about independent impurity, so there is no room for any doubt or suspicion regarding the obligation of Wudu. And here all those discussions come which we [term] 'benefit' and 'suspicion'...

[Left Column] ...one in form and meaning for the sake of inclusion/integration, and here there is no inclusion. Do you not see what we presented from Al-Kafi just now regarding the obligation of Wudu upon him if he finds enough water for his dry spot by agreement of the two Imams, even if the second Imam said to divert the ruling of Wudu from him due to an accident. And it will come in the next message that the most correct view is the saying of Muhammad, and this is the very essence of the required partiality, for he is a person in major impurity with a dry spot, and he has invalidated his wudu before Tayammum for it, so wudu became obligatory upon him. And likewise, it is the benefit of 'Al-Minya' on a copy of the text as we presented, and likewise, it was stipulated in 'Sharh al-Wiqaya' as preceded, and the commentators and observers approved it, and no one found it problematic as they all found his

saying at the beginning of the chapter problematic. 'And what is it except because what is here is in independent minor impurity, so no doubt or suspicion hovers around the obligation of wudu in it.' And here return all the researches that we mentioned in the tenth benefit in the manner of question, and we pushed them away by lack of independence, so they return now and there is no rejecter for any of them and no vanishing. 'And may Allah have mercy on the virtuous Al-Burjandi and the scholars all, as he pictured the existence of major impurity without minor impurity with three forms, the first of which is this. And when he came to demonstrate the non-obligation of wudu, he restricted the speech to the other two and made this one isolated from it, as we quoted his words at the end of the evidences, and its completion is in the fifth problem because in this one, the obligation is not doubted.'

[दाहिना कॉलम] ...यदि पानी के उपयोग में असमर्थता पाई जाती है, तो वह उन्हें भी पवित्र कर देगा। लेकिन वज़ू की क्षमता होने की स्थिति में वह पवित्र नहीं करेगा क्योंकि शर्त अनुपस्थित है। संक्षेप यह है कि जब दोनों हदस (अशुद्धियाँ) स्वतंत्र हों, तो उनके लिए भले ही तयम्मुम रूप में एक हो, अर्थ में दो तयम्मुम होते हैं। प्रत्येक में उसकी शर्त पर विचार किया जाएगा; जहाँ उसकी शर्त पूरी होगी, वहाँ वह तयम्मुम उसके लिए सही होगा, और जहाँ शर्त पूरी नहीं होगी, वहाँ सही नहीं होगा। लेकिन उस जुनबी (बड़ी अशुद्धि वाला व्यक्ति) का तयम्मुम जिसके हदस उसमें समाहित हों, इसके विपरीत है क्योंकि समाहित होने के कारण वह रूप में भी एक तयम्मुम है और अर्थ में भी। और यहाँ समाहित होना नहीं है। वही इबारत देख लीजिए जो अभी हमने 'काफ़ी' के हवाले से पेश की है कि सर्वसम्मति से इमाम आज़म और इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहम करे) के अनुसार, वज़ू के लिए पर्याप्त पानी उपलब्ध होने की स्थिति में उस पर वज़ू वाजिब है, हालाँकि दूसरे इमाम (अबू यूसुफ़) का कहना है कि किसी आकस्मिक कारण से वज़ू का हुक्म साक़ित (ख़त्म) हो जाएगा। और आने वाले रिसाले में यह बात आ रही है कि इमाम मुहम्मद का कथन ही सबसे सही है, और यही बिल्कुल हमारा वांछित जुज़इय्या (विशिष्ट नियम) है क्योंकि वह वह जुनबी है जिसके शरीर पर कोई हिस्सा सूखा रह गया हो और उसे जनाबत के तयम्मुम से पहले हदस (छोटी अशुद्धि) भी लग गई हो, तो उस पर वज़ू वाजिब हो गया। इसी तरह 'शरह-उल-विक़ाया' में भी इसकी स्पष्ट व्याख्या है जैसा कि गुज़रा। व्याख्याकारों और पाठकों ने भी इसे बरक़रार रखा और किसी को इसमें कोई कठिनाई महसूस नहीं हुई, जैसे कि अध्याय की शुरुआत में उनके कथन में सभी ने कठिनाई समझी थी। इसका कारण यही है कि वहाँ जो चर्चा है वह स्वतंत्र हदस के बारे में है, इसलिए वहाँ वज़ू की अनिवार्यता के संबंध में किसी संदेह या संशय की गुंजाइश नहीं है। और यहाँ वे सभी बहसें आती हैं जिन्हें हम 'इफ़ादा' (लाभ) और 'वहम' (भ्रम) कहते हैं...

[बायां कॉलम] ...समावेशन के लिए रूप और अर्थ में एक, और यहाँ कोई समावेशन नहीं है। क्या आप वह नहीं देखते जो हमने अभी 'काफ़ी' से इमामों की सहमति से वज़ू की अनिवार्यता के संबंध में पेश किया है यदि उसे अपने सूखे स्थान के लिए पर्याप्त पानी मिल जाता है, भले ही दूसरे इमाम ने किसी दुर्घटना के कारण वज़ू के आदेश को उससे हटाने के लिए कहा हो। और अगले संदेश में यह आएगा कि सबसे सही विचार मुहम्मद का कहना है, और यह आवश्यक आंशिक नियम का सार है, क्योंकि वह सूखे स्थान वाला जुनबी है, और उसने इसके लिए तयम्मुम से पहले अपना वज़ू भंग कर

दिया है, इसलिए उस पर वज़ू अनिवार्य हो गया। और इसी तरह, यह पाठ की एक प्रति पर 'अल-मिन्या' का लाभ है जैसा कि हमने प्रस्तुत किया है, और इसी तरह, यह 'शरह अल-विक़ाया' में निर्धारित किया गया था जैसा कि पहले बताया गया है, और टीकाकारों और पर्यवेक्षकों ने इसे मंजूरी दी, और किसी को यह समस्याग्रस्त नहीं लगा जैसा कि उन सभी को अध्याय की शुरुआत में उनका कहना समस्याग्रस्त लगा था। 'और यह क्या है सिवाय इसके कि यहाँ जो कुछ है वह स्वतंत्र सूक्ष्म अशुद्धि में है, इसलिए इसमें वज़ू की अनिवार्यता के इर्द-गिर्द कोई संदेह या संशय नहीं मंडराता।' और यहाँ वे सभी शोध वापस आते हैं जिनका हमने दसवें लाभ में प्रश्न के तरीके से उल्लेख किया था, और हमने उन्हें स्वतंत्रता की कमी से दूर धकेल दिया था, इसलिए वे अब वापस आते हैं और उनमें से किसी के लिए भी कोई अस्वीकार करने वाला नहीं है और न ही कोई मिटने वाला। 'और अल्लाह गुणी अल-बुर्ज़ंदी और सभी विद्वानों पर दया करे, क्योंकि उन्होंने बिना सूक्ष्म अशुद्धि के बड़ी अशुद्धि के अस्तित्व को तीन रूपों के साथ चित्रित किया, जिनमें से पहला यह है। और जब वह वज़ू की गैर-अनिवार्यता प्रदर्शित करने आए, तो उन्होंने भाषण को अन्य दो तक सीमित कर दिया और इसे उससे अलग कर दिया, जैसा कि हमने प्रमाणों के अंत में उनके शब्दों को उद्धृत किया था, और इसका समापन पांचवीं समस्या में है क्योंकि इसमें अनिवार्यता पर संदेह नहीं किया गया है।'

पृष्ठ ७६१ का २७०

فتاویٰ رضویہ جلد چہارم

[دایاں کالم] پانی سے عجز پایا جائے تو انہیں بھی پاک کردے گا۔ مگر وضو پر قدرت کی حالت میں پاک نہ کرے گا اس لئے کہ شرط مفقود ہے۔ خلاصہ یہ کہ جب دونوں حدث مستقل ہوں تو ان کے لئے تیمم اگرچہ صورۃً ایک ہو معنیً دو تیمم ہوتے ہیں ہر ایک میں اس کی شرط پر نظر کی جائے گی جہاں جس کی شرط متحقق ہو اس کے حق میں وہ تیمم صحیح ہوگا جہاں شرط نہ متحقق ہو صحیح نہیں ہوگا۔ مگر حدث مندرج والے جنب کا تیمم اس کے برخلاف ہے اس لئے کہ اندراج کی وجہ سے وہ صورۃً بھی ایک تیمم ہے اور معنیً بھی اور یہاں اندراج نہیں وہی عبارت دیکھ لیجئے جو ابھی ہم نے کافی کے حوالہ سے پیش کی ہے کہ بالاتفاق امام اعظم وامام محمد علیہما الرحمۃ اس پر وضو کے لئے کافی پانی کی دستیابی کی صورت میں وضو واجب ہے اگرچہ امام ثانی(ابویوسف) کا قول ہے کہ اس سے وضو کا حکم عارضہ کے سبب ساقط ہو جائے گا اور آنیوالے رسالہ میں یہ بات آرہی ہے کہ اصح قول امام محمد کا ہے ، اور یہ بعینہ ہمارا مطلوب جزئیہ ہے اس لئے کہ وہ لمعہ والا جنب ہے جسے تیمم جنابت سے پہلے حدث بھی لاحق ہو تو اس پر وضو واجب ہو گیا۔ اسی طرح شرح وقایہ میں بھی اس کی تصریح ہے جیسا کہ گزرا۔ اسے محشین اور ناظرین نے برقرار بھی رکھا اور کسی نے اس میں اشکال نہ محسوس کیا جیسے شروع باب میں ان کے قول میں سبھی حضرات نے اشکال سمجھا ۔ اس کی وجہ یہی ہے کہ وہاں جو کلام ہے وہ حدث مستقل کے بارے میں ہے تو اس میں ایجاب وضو کے گرد کسی شک و شبہ کا گزر نہیں ۔ اور یہاں وہ ساری بحثیں آجاتی ہیں جنہیں ہم افادہ و ہم

[بایاں کالم] واحد صورة ومعنى لاجل الاندراج وههنا لا انداراج الا ترى الى ماقدمنا عن الكافى الان من ايجاب الوضوء عليه اذا وجد ماء كافياً ببلہ باتفاق الامامين وان قال الامام الثاني بصرف حكم

الوضوء عنه لعارض وسيجيئى فى الرسالة التالية ان الاصح قول محمد وهذه عين الجزئية المطلوبة فانه جنب ذو لمعة وقد احدث قبل التيمم لها فوجب الوضوء عليه وكذلك هو مفاد المنية على نسخة المتن كما قدمنا وكذلك نص عليه فى شرح الوقاية كما تقدم وقد اقره المحشون و الناظرون ولم يستشكله احد كما استشكلوا جميعا قوله فى صدر الباب "وما هو الا لان ما هنا فى حدث مستقل فلا يحوم حول ايجاب الوضوء فيه شبهة ولا ارتياب، وههنا تعود جميع الابحاث التي اوردناها فى الافادة العاشرة على طريقة السؤال ودفعناها بعدم الاستقلال فترد الآن ولا مرد لشيئ منها ولا زوال "ورحم الله الفاضل البرجندى والعلماء جميعا اذ صور وجود الجنابة من دون حدث بثلاث صور اولها هذه ولما اتى على استظهار عدم وجوب الوضوء خص الكلام بالاخريين وجعل هذه بمعزل عنه كما نقلنا كلامه آخر الدلائل وتتمته فى الاشكال الخامس لان هذه لا يرتاب فيها وجوب

Fatawa Ridawiyyah Volume 4

(Right Column): ...brought them as questions and dismissed them with a response about the lack of independence. They will arise again, and none of them can be rejected or avoided. May Allah's mercy be upon the virtuous Al-Barjandi and all scholars—for the aforementioned scholar presented three scenarios in which major ritual impurity (Janabat) occurs without a minor ritual impurity (Hadath), the first of which is this. And when expressing his opinion on the non-obligatoriness of Wudu (ablution), he only discussed the latter two scenarios and kept it entirely separate from the discourse, as we quoted his words at the end of the arguments. Its completion is in the fifth problem because there is no doubt regarding the obligatoriness of Wudu in that context. Yes, if one performed Tayammum, then a minor impurity occurred and they did not perform Wudu, then passed by water (suitable for bathing) and left it behind, then even though water for Wudu is available to this person, Wudu is not incumbent upon them, whether a minor impurity occurred or not. This is because although their minor impurity was initially independent, it has now been subsumed because major impurity has returned to the limbs of Wudu. Similarly, any minor impurity occurring after the return of major impurity will be subsumed, provided that the minor impurity did not arise after the returning major impurity was removed, either entirely or partially, from the limbs of Wudu using water or soil (such a minor impurity would not be subsumed). This makes it clear that in the mentioned issue of the person in a state of major impurity (Junub), the phrase "whether a minor impurity occurred or not" found in the 'Khaniyah Sharif' was a slip of the pen by the most noble Imam, the jurist of the soul, may Allah Almighty have mercy on him.

(Left Column): Ablution: Yes (1) If one performed Tayammum, then a minor impurity occurred and they did not perform Wudu, then passed by water and went beyond it, then even if they find water for Wudu, no Wudu is incumbent upon them, whether a minor impurity occurred or not, because the minor impurity, after being independent, has become subsumed due to the return of major impurity to the limbs of Wudu. Similarly, (2) every minor impurity that occurs afterwards, as long as it does not occur after removing the returning major impurity from the limbs of Wudu, either partially or entirely, with water or soil. Thus it became clear (3) that what occurred in the issue of the person in major impurity mentioned in 'Khaniyah Sharif' from the statement "whether a minor impurity occurred or not" was a slip of the pen by the most noble Imam, the jurist of the soul, may Allah Almighty have mercy on

him with vast mercy, and may He have mercy on us through him in this world and the hereafter. Amen. And it is no surprise, for every horse stumbles and every sword misses its mark, and there is no infallibility except for the Word of Divinity, then Prophethood. This issue was mentioned by the compiler of the school, Muhammad (may Allah be pleased with him), in the 'Kitab al-Asl'; he did not mention "whether a minor impurity occurred or not." Likewise is its impact in 'Al-Khulasah,' as it says: (4) A man performed Tayammum for major impurity, prayed, then a minor impurity occurred, and he had enough water for Wudu for another prayer. If he performed Wudu with it and put on leather socks (Khuffayn), then passed by water and did not bathe until he ran out of water, then the time for prayer arrived and he had enough water for Wudu, then he should perform Tayammum and not Wudu. If he performed Tayammum, then the time for another prayer arrived and he was preceded by a minor impurity, then he should perform Wudu with it and remove his leather socks, even if he had not passed by water before.

फ़तावा रिज़विया जिल्द चारुम

(दायां कॉलम): ...उन्हें सवाल के तौर पर लाए और उन्हें स्वतंत्रता की कमी के जवाब के साथ खारिज कर दिया। वे अब फिर से उत्पन्न होंगे, और उनमें से किसी को भी नकारा या टाला नहीं जा सकता। अल्लाह की रहमत हो फाज़िल अल-बरजंदी और सभी विद्वानों पर—क्योंकि उक्त विद्वान ने बिना किसी लघु अशुद्धि (हदथ) के बड़ी अशुद्धि (जनाबत) पाए जाने की तीन स्थितियां प्रस्तुत कीं, जिनमें से पहली यही है। और जब वज़ू के अनिवार्य न होने के बारे में अपनी राय व्यक्त करने की बात आई, तो उन्होंने केवल बाद की दो स्थितियों के बारे में बात की और इसे चर्चा से पूरी तरह अलग रखा, जैसा कि हमने तर्कों के अंत में उनके शब्दों को उद्धृत किया है। इसकी पूर्णता पांचवीं समस्या में है क्योंकि उस संदर्भ में वज़ू की अनिवार्यता के संबंध में कोई संदेह नहीं है। हाँ, यदि किसी ने तयम्मुम किया, फिर लघु अशुद्धि हुई और उन्होंने वज़ू नहीं किया, फिर (नहाने योग्य) पानी के पास से गुजरे और उसे छोड़ कर आगे बढ़ गए, तो इस व्यक्ति के पास भले ही वज़ू के लिए पानी उपलब्ध हो, लेकिन उन पर वज़ू अनिवार्य नहीं है, चाहे लघु अशुद्धि हुई हो या न हुई हो। ऐसा इसलिए है क्योंकि हालांकि उनकी लघु अशुद्धि पहले स्वतंत्र थी, लेकिन अब वह समाहित हो गई है क्योंकि बड़ी अशुद्धि वज़ू के अंगों में वापस आ गई है। इसी तरह, बड़ी अशुद्धि की वापसी के बाद होने वाली कोई भी लघु अशुद्धि समाहित हो जाएगी, बशर्ते कि वह लघु अशुद्धि लौटने वाली बड़ी अशुद्धि को पानी या मिट्टी के माध्यम से वज़ू के अंगों से पूरी तरह या आंशिक रूप से हटाने के बाद उत्पन्न न हुई हो (ऐसी लघु अशुद्धि समाहित नहीं होगी)। इससे यह स्पष्ट हो गया कि 'खानिया शरीफ़' में बड़ी अशुद्धि (जुनुब) के उल्लेखित मुद्दे में "चाहे लघु अशुद्धि हुई हो या न हुई हो" वाक्यांश महान इमाम, रूह के फकीह (अल्लाह उन पर रहम करे) की कलम की एक चूक थी।

(बायां कॉलम): वज़ू: हाँ (१) यदि किसी ने तयम्मुम किया, फिर लघु अशुद्धि हुई और वज़ू नहीं किया, फिर पानी के पास से गुजरे और उससे आगे निकल गए, तो भले ही उन्हें वज़ू के लिए पानी मिल जाए, उन पर कोई वज़ू अनिवार्य नहीं है, चाहे लघु अशुद्धि हुई हो या न हुई हो, क्योंकि लघु अशुद्धि, स्वतंत्र होने के बाद, वज़ू के अंगों में बड़ी अशुद्धि के लौटने के कारण समाहित हो गई है। इसी तरह, (२) प्रत्येक लघु अशुद्धि जो बाद में होती है, जब तक कि वह लौटने वाली बड़ी अशुद्धि को वज़ू के अंगों से, आंशिक या पूर्ण रूप से, पानी या मिट्टी से हटाने के बाद न हो। इस प्रकार यह स्पष्ट हो गया (३) कि 'खानिया शरीफ़' में उल्लिखित बड़ी अशुद्धि के मुद्दे में "चाहे लघु अशुद्धि हुई हो या न हुई हो" कथन सबसे महान इमाम, रूह के फकीह (अल्लाह उन पर व्यापक दया करे, और दुनिया और

आखिरत में उनके माध्यम से हम पर दया करे। आमीन) की कलम की एक चूक थी। और इसमें कोई आश्चर्य नहीं है, क्योंकि हर घोड़ा लड़खड़ाता है और हर तलवार का वार चूकता है, और ईश्वर के वचन और फिर नुबुवत (पैगंबरी) के अलावा कोई अचूक नहीं है। इस मुद्दे का उल्लेख पंथ के संकलक मुहम्मद (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने 'किताब अल-अस्ल' में किया था; उन्होंने "चाहे लघु अशुद्धि हुई हो या न हुई हो" का उल्लेख नहीं किया। इसी प्रकार 'अल-खुलासा' में इसका प्रभाव है, जैसा कि कहा गया है: (४) एक व्यक्ति ने बड़ी अशुद्धि के लिए तयम्मुम किया, नमाज़ पढ़ी, फिर लघु अशुद्धि हुई, और उसके पास दूसरी नमाज़ के लिए वज़ू के बराबर पानी था। यदि उसने उससे वज़ू किया और चमड़े के मोज़े (खुफ़्फ़ैन) पहने, फिर पानी के पास से गुजरा और नहीं नहाया जब तक कि पानी खत्म नहीं हो गया, फिर नमाज़ का समय आया और उसके पास वज़ू के लिए पर्याप्त पानी था, तो उसे तयम्मुम करना चाहिए न कि वज़ू। यदि उसने तयम्मुम किया, फिर दूसरी नमाज़ का समय आया और उससे पहले लघु अशुद्धि हुई, तो उसे उससे वज़ू करना चाहिए और अपने चमड़े के मोज़े उतार देने चाहिए, भले ही वह पहले पानी के पास से न गुजरा हो।

पृष्ठ ७६१ का २७१

میں بطور سوال لائے اور انہیں عدم استقلال کے جواب سے دفع کیا وہ اب پھر وارد ہوں گی اور ان میں سے کوئی نہ رد ہو سکتی ہے نہ ٹل سکتی ہے۔ خدا کی رحمت ہو فاضل بر جندی۔ اور تمام علماء۔ پر کہ فاضل موصوف نے بغیر حدث کے جنابت پائے جانے کی تین صورتیں پیش کیں جن میں پہلی صورت یہی ہے۔ اور جب عدم وجوب وضو کے بارے میں اپنی رائے کے اظہار پر آئے تو صرف بعد والی دونوں صورتوں سے متعلق کلام کیا اور اسے معرض کلام سے بالکل الگ رکھا جیسا کہ دلائل کے آخر میں ہم نے ان کا کلام نقل کیا اور اس کا تکملہ اشکال پنجم میں ہے کیونکہ اس سے متعلق وجوب وضو میں کوئی شک نہیں۔ ہاں اگر تیمم کرلیا پھر اسے حدث ہوا اور وضو نہ کیا پھر (نہانے کے قابل) پانی کے پاس سے گزرا، اور اسے چھوڑ کر آگے چلا گیا۔ تو اس شخص کے پاس اگرچہ آب وضو موجود ہے مگر اس پر وضو نہیں خواہ اسے حدث ہو یا نہ ہو۔ اس لئے کہ اس کا حدث پہلے اگرچہ مستقل تھا مگر اب اعضائے وضو میں جنابت لوٹ آنے کی وجہ سے مندرج ہوگیا۔ اسی طرح عود جنابت کے بعد جو بھی حدث ہوگا (سب مندرج ہو جائے گا) بشرطیکہ عود کرنے والی جنابت کو پانی یا مٹی کے ذریعہ اعضائے وضو سے کل یا بعضا رفع کرنے کے بعد وہ حدث نہ پیدا ہوا ہو (کہ ایسا حدث مندرج نہ ہوگا) اس سے ظاہر ہوا کہ جنب کے مذکورہ مسئلہ میں خانیہ شریف میں واقع یہ عبارت "احدث اول لم یحدث" (اسے حدث ہو یا نہ ہو) امام اجل فقیہ النفس کی سبقت قلم سے صادر ہوئی۔ الوضوء نعم (۱) لوتیمم ثم احدث ولم یتوضأ ثم مر بماء وجاوزہ فہذا وان وجد وضوء لاوضوء علیہ سواء احدث او لم یحدث لان الحدث بعد ماکان مستقلا صار مندرجا لعود الجنابۃ الی اعضاء الوضوء وکذا (۲) کل حدث یحدث بعدہ ما لم یحدث بعد رفع الجنابۃ العائدۃ عن اعضاء الوضوء بعضا اوکلا بماء اوتراب، فظہر (۳) ان ماوقع فی مسألۃ الجنب

المذكورة فى الخانية الشريفة من قولہ احدث اولم يحدث سبق قلم من الامام الاجل فقيہ النفس رحمہ الله تعالى رحمة واسعة ورحمنا بہ فى الدنيا والآخرة آمين ولاغر وفلكل جواد كبوة ولكل صارم نبوة ولاعصمة الالكلام الالوهية ثم النبوة والمسألة قد ذكرها محرر المذهب محمد رضى الله تعالى عنہ فى كتاب الاصل لم يذكر فيہ احدث اولم يحدث وهكذا اثره فى الخلاصة اذ قال رجل (۴) تيمم للجنابة وصلى ثم احدث ومعہ من الماء قدر مايتوضأ به لصلاة يتوضأ بہ لصلاة اخرى فان توضأ بہ ولبس خفية ثم مر بالماء ولم يغتسل حتى صار عادم الماء ثم حضرت الصلاة ومعه من الماء قدر مايتوضأ بہ فانہ يتيمم ولا يتوضأ فان تيمم ثم حضرت الصلاة الاخرى وقد سبقه الحدث فانه يتوضؤ به وينزع خفيه وان لم يكن مر بماء قبل

Fatawa Razawiya, Volume 4

'That is wiping over both his leather socks in al-Asl'. 1 End of quote. This is what I have, and knowledge of the truth is with my Lord; indeed He is All-Knowing of everything.

May the Supreme God bless them with His vast mercy and, through their blessings, have mercy on us in this world and the hereafter. This is not a startling matter, as every fast-paced horse may stumble, and every swordsman may face adversity. Infallibility belongs only to the Divine Word and then the Prophetic word. This issue was explained by the scribe of the school of thought, Imam Muhammad (may Allah Almighty be pleased with him), in the book 'al-Asl' (Mabsut Sharif). In it, he did not mention 'whether an occurrence (hadath) happened first or not'. In 'Khulasa', his wording is quoted as follows: 'A person performed Tayammum for major ritual impurity (janabat) and offered prayer, then an occurrence (hadath) happened to him, and he has enough water for ablution (wudu), so he should perform wudu for the next prayer. If he performed wudu and put on leather socks, then passed by water but did not perform a full bath (ghusl) until water became unavailable to him again, and then the time for prayer arrived and he has water only for wudu, he will perform Tayammum and will not perform wudu. If he performed Tayammum and the time for another prayer arrived while he was already in a state of occurrence (hadath), he will perform wudu with that water and remove his socks. But if he had not passed by water before that, he would wipe over his socks.' All this is in 'al-Asl' (Mabsut). This is what I maintain. And the knowledge of truth is with my Lord; surely He is All-Knowing of everything. (T)

Benefit 12: My presentation, praise be to Allah, has opened another door for interpretation. So I say: 'with' (ma'a) retains its literal meaning, and we do not modify any of the words. We say that when Janabat encompasses [the person], no minor occurrence (hadath) appears with it; rather, it is integrated and consumed within it, like the status of prostatic fluid (madhi) in semen (mani) regarding the ruling of purification. Their coexistence only happens if they are independent. This occurs in 'limited Janabat' which does not cover the entire area of Hadath, and it only happens if one performs wudu after Janabat, either fully or partially, then an occurrence happens as previously mentioned. The assumption is that the water is sufficient for hadath but not for janabat, so it must be...

1 Khulasat al-Fatawa, Chapter on five types of those performing Tayammum, printed at Naval Kishore Lucknow, 1/38.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4

'वह असल 1 में उसके दोनों मोज़ों पर मसह है' समाप्त- यह वह है जो मेरे पास है और हक़ का इल्म मेरे रब के पास है, यक़ीनन वह हर चीज़ को जानने वाला है।

अल्लाह तआला उन्हें अपनी वसीअ रहमत से नवाज़े और उनकी बरकत से दुनिया और आख़िरत में हम पर भी रहम फ़रमाए। यह कोई ताज्जुब की बात नहीं है क्योंकि हर तेज़ रफ़्तार घोड़े को ठोकर भी लगती है और हर तलवार चलाने वाले को मुश्किलों का सामना भी करना पड़ता है। मासूमियत तो सिर्फ ईश्वरीय कलाम और फिर नबियों के कलाम के लिए है। यह मसला मज़हब के मुहर्रिर इमाम मुहम्मद (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने किताबुल असल (मबसूत शरीफ़) में बयान किया है। इसमें 'पहले हदस हुआ या नहीं हुआ' का ज़िक्र नहीं फ़रमाया। खुलासे में उनकी इबारत वैसी ही नक़्ल फ़रमाई है जैसी नीचे दी गई है: 'एक शख़्स ने जनाबत का तयम्मुम किया और नमाज़ अदा की, फिर उसे हदस हुआ और उसके पास इतना पानी है जिससे वह वुज़ू कर सकता है तो उससे दूसरी नमाज़ के लिए वुज़ू करेगा। अगर उसने वुज़ू कर लिया और मोज़े पहन लिए फिर पानी के पास से गुज़रा और ग़ुस्ल नहीं किया यहाँ तक कि पानी उसके लिए ख़त्म हो गया, फिर नमाज़ का वक़्त आया और अब उसके पास वुज़ू के बराबर पानी है तो वह तयम्मुम करेगा और वुज़ू नहीं करेगा। अगर उसने तयम्मुम कर लिया फिर दूसरी नमाज़ का वक़्त ऐसी हालत में आया कि उसे हदस लायक़ हो चुका है तो वह उस पानी से वुज़ू करेगा और अपने मोज़े उतारेगा। और अगर वह पानी के पास से नहीं गुज़रा था तो अपने मोज़ों पर मसह करे।' यह सब असल (मबसूत) में है। यह वह है जो मेरे नज़दीक है। और हक़ का इल्म मेरे रब के पास है, यक़ीनन वह हर चीज़ का इल्म रखता है। (त)

इफ़ादा १२: मेरी इस तक़रीर ने अल्लाह के फ़ज़ल से तावील का एक और दरवाज़ा खोला। फ़क़ूल: (तो मैं कहता हूँ) शरह वक़ाया की इबारत में 'मआ' अपने अस्ली मायने में है और हम किसी लफ़्ज़ में तसर्रुफ़ नहीं करते। हम कहते हैं कि जब जनाबत सब पर हावी हो तो उसके साथ कोई हदस (छोटी नापाकी) ज़ाहिर नहीं होगी बल्कि उसी में मिल जाएगी और छुप जाएगी जैसे पाकी के हुक्म में मनी के अंदर मज़ी के छुप जाने का हाल है। तो हदस और जनाबत दोनों एक साथ उसी वक़्त होंगे जब दोनों मुस्तक़िल (स्वतंत्र) हों। यह उस जनाबत-ए-मुख़्तसरह में होगा जो...

---

1 खुलासा-तुल-फ़तावा, अल-मुतम्यमीन के पाँच प्रकारों का अध्याय, नवल किशोर लखनऊ द्वारा प्रकाशित, १/३८।

ذلك مسح على خفيه الكل فى الاصل 1 اھـ هذا ماعندى والعلم بالحق عندربى انه بكل شيئ عليم -

خدائے برتر انہیں اپنی وسیع رحمت سے نوازے اور ان کی برکت سے دنیا وآخرت میں ہم پر بھی رحم فرمائے۔ یہ کوئی حیرت انگیز امر نہیں کیونکہ ہر اسپ خوش رفتار کو ٹھوکر بھی لگتی ہے اور ہر شمشیر بردار کو ناموافقت سے بھی دو چار ہونا پڑتا ہے۔ عصمت تو صرف کلام الوہیت پھر کلامِ نبوت کو ہے یہ مسئلہ محرر مذہب امام محمد رضی اللہ تعالٰی عنہ نے کتاب الاصل (مبسوط شریف) میں بیان کیا ہے۔ اس میں "احدث اول لم یحدث" ذکر نہ فرمایا۔ خلاصہ میں ان کی عبارت اسی طرح نقل فرمائی ہے جو درج ذیل ہے: "ایک شخص نے جنابت کا تیمم کیا اور نماز ادا کی پھر اسے حدث ہوا اور اس کے پاس اتنا پانی ہے جس سے وضو کر سکتا ہے تو اس سے دوسری نماز کے لئے وضو کرے گا۔ اگر اس سے وضو کر لیا اور موزے پہن لیے پھر پانی کے پاس سے گزرا اور غسل نہ کیا یہاں تک کہ پانی اس کے لئے معدوم ہو گیا پھر نماز کا وقت آیا اب اس کے پاس بقدر وضو پانی ہے تو وہ تیمم کرے گا اور وضو نہیں کرے گا۔ اگر اس نے تیمم کر لیا پھر دوسری نماز کا وقت اس حالت میں آیا کہ اسے حدث لاحق ہو چکا تو اس پانی سے وہ وضو کرے گا اور اپنے موزے اتارے گا۔ اور اگر اس سے پہلے وہ پانی سے نہ گزرا تھا تو اپنے موزوں پر مسح کرے۔ یہ سب اصل (مبسوط) میں ہے اہـ یہ وہ ہے جو میرے نزدیک ہے۔ اور حق کا علم میرے رب کے یہاں ہے، یقینا وہ ہر شئے کا علم رکھتا ہے۔(ت)

الافادة ١٢: تقر يرى هذا فتح ولله الحمد بابا آخر للتاويل فأقول: مع على معناها ولا نتصرف فى شيئ من الالفاظ ونقول الجنابة اذا شملت لم يظهر معها حدث بل اندمج فيها واستهلك كالمذى فى المني فى حكم الطهارة فمعيتهما لاتكون الا باستقلالهما وذلك في جنابة مقتصرة لا تشتمل محل الحدث طراً ولا

یکون الا بان یتوضأ بعد الجنابة کلا او بعضا ثم یحدث کما تقدم والفرض ان الماء یکفی للحدث لا للجنابة فیجب ان تکون

افادہ ۱۲: میری اس تقریر نے بحمدہ تعالیٰ تاویل کا ایک اور دروازہ کھولا فاقول: (تو میں کہتا ہوں) عبارت شرح وقایہ میں مع اپنے معنی پر ہے اور ہم کسی لفظ میں تصرف نہیں کرتے۔ ہم کہتے ہیں جنابت جب شامل ہو اس کے ساتھ کوئی حدث ظاہر نہ ہوگا بلکہ اسی میں مل جائے گا اور غائب ومستہلك ہو جائے گا جیسے حکمِ طہارت میں منی کے اندر مذی کے غیاب واستہلاك کا حال ہے۔ تو حدث وجنابت دونوں ایک ساتھ اسی وقت ہوں گے جب دونوں مستقل ہوں۔ یہ اس جنابتِ مختصرہ میں ہوگا جو

---

1 خلاصۃ الفتاویٰ خمسۃ من المتیممین مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ۳۸/۱

Fatawa Razviyya Volume 4

...major ritual impurity (Janaba) exists in an area larger than the organs of ablution (Wudu). In such a case, there is no doubt that if water for Wudu is found, performing Wudu becomes mandatory by consensus. This is because his dry ablution (Tayammum) would be specifically for Janaba and would not remove the minor ritual impurity (Hadath), as the latter has its own distinct legal status. All praise be to Allah, a praise that is abundant, pure, and blessed. May Allah's blessings be upon our master and leader Muhammad, his family, and his descendants. Amen.

[Urdu Commentary:] The case where it does not encompass the entire area of ritual impurity would be as follows: after entering a state of major impurity (Janaba), one performs a full or partial ablution, then a minor impurity (Hadath) occurs, as previously mentioned. It is assumed that the available water is sufficient only for the minor impurity and not for the major one. Thus, it is necessary that the major impurity remains on a portion larger than the organs of ablution. In this scenario, without doubt, when water for ablution is found, performing it becomes mandatory by consensus, because his dry ablution was specifically for the major impurity and does not remove the minor one, since minor impurity has its own separate ruling and sufficient water for it is now present. All praise is due to God, abundant, pure, and blessed. May peace and blessings from God the Most High be upon our master and leader Muhammad, his family, and all his followers. O Allah, accept this. (T)

[Arabic Text:] Thus it became evident that the meaning of the Imam's (Sadr al-Shariah) discourse is that a person in a state of ritual impurity (muhdith) is of three types: First: One who has only major impurity (Janaba), whether there is no minor impurity at all as previously illustrated, or there is one but it is hidden and absorbed within the major impurity; such as a person in Janaba who has not touched water, or has washed his whole body except for the organs of ablution, or washed other parts excluding the organs of ablution and some other portion, then a minor impurity occurred to the whole before achieving purification from major impurity. Second: One who has major impurity along with minor impurity; such as a person in Janaba who performed ablution or washed only some organs of ablution, or washed them along with some other parts of the rest of the body, either entirely or partially, then a minor impurity occurred before performing dry ablution for it, or he did so and the water was exhausted and he performed dry ablution for it, then a minor impurity occurred, then he came across enough water for it but did not take a ritual bath

(Ghusl). Third: One who has only minor impurity (Hadath), which is self-evident. These are their rulings. As for the first category...

फ़तावा रज़विया जिल्द 4

...जनाबत (बड़ी नापाकी) का स्थान वज़ू के अंगों से बड़ा हो। ऐसी स्थिति में इसमें कोई संदेह नहीं है कि यदि वज़ू के लिए पानी मिल जाए, तो सर्वसम्मति से वज़ू करना अनिवार्य है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उसका तयम्मुम (शुष्क वज़ू) विशेष रूप से जनाबत के लिए होगा और वह हदस (छोटी नापाकी) को दूर नहीं करेगा, क्योंकि हदस का अपना अलग कानूनी हुक्म है। सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो बहुत अधिक, पवित्र और बरकत वाली है। अल्लाह की कृपा हमारे स्वामी और आका मुहम्मद, उनके परिवार और उनके वंशजों पर हो। आमीन।

[उर्दू भाष्य:] पूरे हदस के स्थान को शामिल न करने की स्थिति यही होगी कि जनाबत के बाद पूर्णतः या आंशिक रूप से वज़ू करे फिर उसे हदस हो जाए जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, और यह माना गया है कि पानी केवल हदस के लिए पर्याप्त है जनाबत के लिए नहीं। तो आवश्यक है कि जनाबत वज़ू के अंगों से अधिक बड़े भाग में हो। जब यह स्थिति हो तो निस्संदेह वज़ू का पानी मिलने के समय उस पर सर्वसम्मति से वज़ू वाजिब होगा क्योंकि उसका तयम्मुम विशेष जनाबत के लिए होगा और हदस को दूर नहीं करेगा क्योंकि हदस अपना स्वतंत्र हुक्म रखता है और उसके लिए पर्याप्त मात्रा में पानी मौजूद है। और सारी प्रशंसा ईश्वर के लिए है, जो बहुत अधिक, पाकीज़ा और बरकत वाली है। और खुदा-ए-बरतर की ओर से हमारे आका व मौला मुहम्मद और उनकी आल और उनके सभी लोगों पर दरूद हो। इलाही! कुबूल फरमा। (त)

[अरबी पाठ:] इससे स्पष्ट हुआ कि इमाम (सद्रुश शरीया) के कलाम का अर्थ यह है कि 'मुहद्दिस' (नापाकी की स्थिति वाला व्यक्ति) के तीन प्रकार हैं: प्रथम: वह जिसे केवल जनाबत है, चाहे उसके साथ कोई हदस बिल्कुल न हो, जैसा कि उसकी स्थिति का वर्णन हुआ। या हदस हो तो वह जनाबत में ही छिपा और विलीन हो जैसे वह जुनुब (जनाबत वाला) जिसने पानी को स्पर्श न किया हो, या वज़ू के अंगों के अतिरिक्त शरीर धो लिया हो, या वज़ू के अंगों और किसी दूसरे हिस्से को छोड़कर बाकी सब धो लिया हो, फिर जनाबत से पाकी हासिल करने से पहले उसे हदस हुआ। द्वितीय: वह जिसे ऐसी जनाबत है जिसके साथ कोई हदस भी है। जैसे वह जुनुब जिसने वज़ू कर लिया या सिर्फ कुछ वज़ू के अंग धो लिए या शरीर के बाकी हिस्सों के साथ वज़ू के कुछ या सभी अंग धो लिए, फिर उसके लिए तयम्मुम करने से पहले उसे हदस हुआ, या उसने ऐसा किया और पानी खत्म हो गया, तो उसने उसके लिए तयम्मुम किया, फिर हदस हुआ, फिर उसे उसके लिए पर्याप्त पानी मिला लेकिन उसने

ग़ुस्ल (स्नान) नहीं किया। तृतीय: वह जिसे केवल हदस (छोटी नापाकी) है, जो स्पष्ट है। ये इनके हुक्म हैं। जहाँ तक पहले विभाग का प्रश्न है...

पृष्ठ 273/761

الجنابة في محل اكبر من اعضاء الوضوء وحينئذ لاشك انه اذا وجد وضوء يجب عليه الوضوء بالاتفاق لان تيممه يكون للجنابة خاصة ولا يرفع الحدث لكونه مستبدا بالحكم والحمد لله حمدا كثيرا طيبا مباركا فيه وصلی اللہ تعالٰی علی سیدنا ومولانا محمّد وآلہ وذویہ آمین۔

پورے محل حدث کو شامل نہ ہو اس کی صورت یہی ہوگی کہ جنابت کے بعد کلا یا بعضاً وضو کرے پھر اسے حدث ہو جیسا کہ پہلے ذکر ہوا، اور فرض یہ کیا گیا ہے کہ پانی حدث ہی کے لئے کفایت کر رہا ہے جنابت کے لئے نہیں۔ تو ضروری ہے کہ جنابت اعضائے وضو سے زیادہ بڑے حصے میں ہو جب یہ صورت ہو تو بلاشبہ آبِ وضو ملنے کے وقت اس پر بالاتفاق وضو واجب ہو گا اس لئے کہ اس کا تیمم خاص جنابت کے لئے ہوگا اور حدث رفع نہ کرے گا کیونکہ حدث تو اپنا مستقل حکم رکھتا ہے۔ اور اس کے لئے بقدر کفایت پانی موجود ہے اور ساری حمد خدا کے لئے ہے کثیر پاکیزہ بابرکت حمد۔ اور خدائے برتر کی طرف سے ہمارے آقا و مولٰی محمد اور ان کی آل اور ان کے سبھی لوگوں پر درود ہو ۔ الٰہی! قبول فرما۔ (ت)

فظهران معنى كلام الامام ان المحدث على ثلثة انواع الاول من به جنابة وحدها سواء لم يكن معها حدث اصلا كما مر تصويره اوكان وهو مغمور مستهلك فيها كجنب لم يمس ماء او غسل بدنہ ماعدا اعضاء الوضوء اوغسل غيرها و غير حصة اخرى ثم احدث فی الكل قبل ان يتطهر لها ، والثاني من بہ جنابة معها حدث كجنب توضأ او غسل بعض اعضاء وضوئه فقط او مع غيرها من سائر البدن كلا او بعضاً ثم احدث قبل التيمم لها او فعل ذلك وفنى الماء وتيمم لها ثم احدث ثم مر بماء يكفی لها فلم يغتسل ، والثالث من به حدث وحده وهو ظاہر وهذه احكامها اما القسم الاول

اس سے ظاہر ہوا کہ امام صدر الشریعہ کے کلام کا معنی یہ ہے کہ محدث کی تین ۳ قسمیں ہیں:

اول: وہ جسے صرف جنابت ہے خواہ اس کے ساتھ کوئی حدث بالکل نہ ہو۔ جیسا کہ اس کی صورت کا بیان گزرا۔ یا حدث ہو تو وہ جنابت ہی میں مخفی و مستہلک ہو جیسے وہ جنب جس نے پانی مس نہ کیا ۔ یا اعضائے وضو کے ماسوا بدن دھولیا۔ یا اعضائے وضو اور کسی دوسرے حصہ کو چھوڑ کر باقی سب دھو لیا۔ پھر ان سبھی صورتوں میں جنابت سے پاکی حاصل کرنے سے پہلے اسے حدث ہوا۔ دوم: وہ جسے ایسی جنابت ہے جس کے ساتھ کوئی حدث بھی ہے۔ جیسے وہ جنب جس نے وضو کرلیا یا صرف بعض اعضائے وضو دھولیے یا بعض اعضائے وضو باقی بدن میں سے کل یا بعض

Fatawa Razawiya, Volume 4

(When a person in a state of major ritual impurity - Junub) who is only in a state of Janaba, as evidenced by the contrast (has water sufficient for Wudu but not for Ghusl), i.e., not enough to remove Janaba completely as in the first case or others as in the last two cases, then (he should perform Tayammum; performing Wudu is not mandatory according to us) because there is no separate minor impurity (Hadath) requiring a specific ruling, and the premise is that Wudu does not remove Janaba, so its presence or absence is the same (contrary to the view of Imam Shafi'i, may Allah be pleased with him) for reasons already known. (And as for) the second category: (when along with Janaba there is a minor impurity requiring Wudu) which is a distinct ruling, (then performing Wudu is mandatory for him) definitively because his minor impurity is independent and he has enough water to remove it, and Tayammum does not suffice for it. (So) [Note 1] (the Tayammum he performs is only (for Janaba) specifically because it is not included [in Wudu], therefore Wudu becomes necessary (by consensus). And as for the third category: (when a person who only has minor impurity (hadath) has water sufficient to wash some of his limbs...

...washed with it, then before performing Tayammum for Janaba, a minor impurity occurred, or he used that much water and the water was finished, and he performed Tayammum for Janaba, then a minor impurity occurred, then he passed by enough water which was sufficient for Ghusl of Janaba but he did not perform Ghusl. Third: He who only has minor impurity, this is clear. And the rulings for these three categories are these. But for the first category (when the Junub has), meaning one who only has Janaba, the proof for this condition is that in comparison, such a Junub is mentioned who also has minor impurity (having enough water for Wudu but not for Ghusl), meaning not for complete Janaba as in the first case. Or not for non-complete Janaba as in the latter two cases. (So he will perform Tayammum and according to us, Wudu is not mandatory for him) because there is no such minor impurity with him which is independent...

Note: This is based on the interpretation that the particle 'fa' is for justification (Ta'lil). If we take 'fa' for derivation (Tafree'), then the phrase 'by consensus' (bil-ittifaq) would relate to the sentence it is connected to. Under this interpretation, if Tayammum follows Wudu, the meaning would be: (Wudu is mandatory for him), so when he performs Wudu, then the (Tayammum) which he will do afterwards (will remain specifically for Janaba by consensus), because the minor impurity was removed by

Wudu and after that, the water was also finished. However, the first interpretation is better, as is not hidden. 12 [From him], may he be forgiven.

फ़तावा रजविया, खंड 4

(जब एक जुनुब व्यक्ति के पास) जो केवल जनाबत की स्थिति में हो, जैसा कि तुलना से स्पष्ट है (इतना पानी हो जो वज़ू के लिए पर्याप्त हो लेकिन गुस्ल के लिए नहीं) यानी जनाबत को पूरी तरह से दूर करने के लिए पर्याप्त नहीं जैसा कि पहली स्थिति में या अन्य में जैसा कि अंतिम दो स्थितियों में है, तो (वह तयम्मुम करेगा; हमारे निकट वज़ू करना अनिवार्य नहीं है) क्योंकि उसके साथ कोई स्वतंत्र लघु अशुद्धि (हदस) नहीं है जिसका अलग हुक्म हो, और धारणा यह है कि वज़ू जनाबत को दूर नहीं करता, इसलिए उसका होना या न होना बराबर है (इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैहि के विपरीत) जैसा कि ज्ञात है। (और जहाँ तक) दूसरी श्रेणी का प्रश्न है: (जब जनाबत के साथ ऐसी लघु अशुद्धि भी हो जिसके लिए वज़ू आवश्यक हो) जो एक स्वतंत्र हुक्म है, (तो उस पर वज़ू करना निश्चित रूप से अनिवार्य है) क्योंकि उसकी लघु अशुद्धि स्वतंत्र है और उसके पास उसे दूर करने के लिए पर्याप्त पानी है, और तयम्मुम उसके लिए पर्याप्त नहीं है। (तो) [नोट 1] (वह जो तयम्मुम करेगा वह विशेष रूप से (जनाबत के लिए) होगा क्योंकि यह वज़ू में शामिल नहीं है, इसलिए (सर्वसम्मति से) वज़ू आवश्यक हो जाता है। और जहाँ तक तीसरी श्रेणी का प्रश्न है: (जब केवल लघु अशुद्धि वाले व्यक्ति के पास अपने कुछ अंगों को धोने के लिए पर्याप्त पानी हो...

...उसके साथ धो लिया, फिर जनाबत का तयम्मुम करने से पहले उसे हदस (लघु अशुद्धि) हो गई या उसने उतना पानी इस्तेमाल कर लिया और पानी खत्म हो गया और जनाबत का तयम्मुम किया, फिर उसे हदस हुआ, फिर वह इतने पानी के पास से गुजरा जो जनाबत के गुस्ल के लिए पर्याप्त था लेकिन उसने गुस्ल नहीं किया। तीसरा: वह जिसे केवल हदस हो, यह स्पष्ट है। और इन तीनों श्रेणियों के हुक्म ये हैं। लेकिन पहली श्रेणी (जब जुनुब के पास), यानी वह जिसे केवल जनाबत हो, इस शर्त की दलील यह है कि मुकाबले में ऐसा जुनुब वर्णित है जिसके साथ हदस भी है (इतना पानी हो जो वज़ू के लिए पर्याप्त हो लेकिन गुस्ल के लिए नहीं) यानी मुकम्मल जनाबत दूर करने के लिए नहीं जैसा कि पहली सूरत में है। या गैर-मुकम्मल जनाबत के लिए नहीं जैसा कि बाद वाली दोनों सूरतों में है। (तो वह तयम्मुम करेगा और हमारे नज़दीक उस पर वज़ू वाजिब नहीं) इसलिए कि उसके साथ कोई ऐसा हदस नहीं जो स्वतंत्र हो...

नोट: यह इस आधार पर है कि अक्षर 'फ़ा' (fa) 'तालील' (कारण बताने) के लिए है। और यदि 'फ़ा' को 'तफ़री' (शाखा निकलने) के लिए मानें, तो उनके शब्द 'बिल-इत्तेफ़ाक' (सर्वसम्मति से) का संबंध उसी वाक्य से होगा जिससे यह जुड़ा है। इस आधार पर कि यदि तयम्मुम वज़ू के बाद हो, तो अर्थ यह

होगा: (उस पर वज़ू वाजिब है), तो जब वह वज़ू कर ले (तो तयम्मुम) जिसे वह बाद में ही करेगा (सर्वसम्मति से जनाबत के लिए) बाकी रहेगा क्योंकि हदस वज़ू से दूर हो गया और उसके बाद पानी भी खत्म हो गया। लेकिन पहला अर्थ ही बेहतर है जैसा कि स्पष्ट है। 12 उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए।

पृष्ठ 274 / 761

فتاوی رضویہ، جلد چہارم

(اذا کان للجنب) المنفرد بالجنابة بدلیل المقابلة (ماء یکفی للوضوء لا للغسل) ای ازالة الجنابة الشاملة کما في الصورة الاولی او غیرها کما فی الاخیرتین فانہ (یتیمم لایجب علیہ التوضی عندنا) اذ لاحدث معہ یستقل بحکم والفرض انه لا یخرجه عن جنابته فکان وجوده و عدمه سواء (خلافا للشافعی) رضی اللہ تعالیٰ عنہ لما علمت و (اما) القسم الثانی (اذا کان مع الجنابة حدث یوجب الوضوء) مستبد بالحکم (فانه یجب علیہ الوضوء) قطعاً لان حدثہ مستقل و قد قدر علی ماء یکفی لازالته ولا یکفیه التیمم (فا)عه ن ۱ (التیمم الذی یفعله انما یکون (للجنابة) خاصة لعدم الاندراج فیلزم الوضوء (بالاتفاق و اما القسم الثالث (اذا کان للمحدث المنفرد بالحدث ماء یکفي لغسل بعض اعضائه

کے ساتھ دھولے پھر جنابت کا تیمم کرنے سے پہلے اسے حدث ہوا یا اتنا اس نے کیا اور پانی ختم ہو گیا اور جنابت کا تیمم کیا پھر اسے حدث ہوا پھر اتنے پانی کے پاس سے گزرا جو جنابت کے لئے کافی تھا مگر اس نے غسل نہ کیا۔ سوم : وہ جسے صرف حدث ہو یہ ظاہر ہے۔ اور تینوں قسموں کے احکام یہ ہیں۔ لیکن قسم اول (جب جنب کے پاس) وہ جسے صرف جنابت ہو اس قید کی دلیل یہ ہے کہ مقابلہ میں ایسا جنب مذکور ہے جس کے ساتھ حدث بھی ہے (اتنا پانی ہو جو وضو کے لئے کافی ہو غسل کے لئے نہیں) یعنی جنابت شاملہ دُور کرنے کے لئے نہیں جیسا کہ پہلی صورت میں ہے۔ یا غیر جنابت شاملہ کے لئے نہیں جیسا کہ بعد والی دونوں صورتوں میں ہے۔ (تو وہ تیمم کرے گا اور ہمارے نزدیک اس پر وضو واجب نہیں) اس لئے کہ اس کے ساتھ کوئی ایسا حدث نہیں جو مستقل

عه: هذا علی التعلیل وان جعلنا الفاء للتفریع امکن تعلق قوله بالاتفاق بما یلیه علی تقدیر تأخر التیمم عن الوضوء فیکون المعنی (یجب علیه الوضوء) فاذا توضأ فالتیمم الذی یفعله بعد هو بقی (للجنابة بالاتفاق)

لارتفاع الحدث بالوضوء ونفاذ الماء بعده ولكن الاول هو الاولی کما لا یخفی ۱۲ منه غفر له (م) یہ اس تقدیر پر ہے کہ ف برائے تعلیل ہے۔ اور اگر فاء برائے تفریح مانیں تو ان کے قول بالاتفاق کا تعلق اسی عبارت سے ہوگا جس سے یہ متصل ہے اس تقدیر پر کہ تیمم وضو کے بعد ہو تو معنی یہ ہوگا (اس پر وضو واجب ہے) تو جب وہ وضو کرلے (تو تیمم) جسے وہ بعد میں ہی کرے گا (بالاتفاق جنابت کے لئے) باقی رہے گا کیونکہ حدث وضو سے رفع ہو گیا اور اس کے بعد پانی بھی ختم ہو گیا۔ لیکن اول اولی ہے جیسا کہ مخفی نہیں ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

Fatawa Ridawiyya - Volume 4

[Right Column] ...holds the status of a ruling. And it is assumed that this water cannot remove him from the state of major ritual impurity (janabat), so its presence or absence is equal. (This is contrary to the view of Imam Shafi'i, may Allah be pleased with him). The reason for this is already known. (However,) the second category (when along with janabat there is a minor impurity that requires wudu), since the minor impurity has its own independent ruling, wudu is definitely obligatory because its state of impurity is independent, and he has access to enough water to remove that impurity. And dry ablution (tayammum) cannot suffice for it because the tayammum he is performing is only (for janabat), since minor impurity is not included in it. Therefore, wudu is necessary (by consensus). As for the third category (when a person in a state of minor ritual impurity) who only has minor impurity (has enough water to wash some of his body parts, there is also a disagreement) between us and Imam Shafi'i (may Allah be pleased with him) regarding whether it is obligatory to use that water or not. (According to them it is, according to us it is not. 12 Alif). This clarification, as is before the readers, is more deserving of being called an "explanation" than an "interpretation". Because it does not involve turning any word away from its original meaning at all. I dedicate this to the pure soul of Imam Sadr al-Shari'ah. May God the Most High make them a means for the correction of my state and the forgiveness of my sins. And for God alone is the praise, a praise abundant, pure, and blessed. And may blessings from God the Most High be upon our Master and Lord Muhammad, his family and all his people. O God, accept it. (T)

[Left Column - Arabic Text] Therefore, the disagreement between us and ash-Shafi'i (may Allah be pleased with him) is (also established) regarding the obligation of using that water or not. This, as you see, by the praise of Allah, is more worthy of the name "explanation" than "interpretation," for it involves no shifting of a word from its original meaning at all. I dedicate this as a gift to the pure soul of Imam Sadr al-Shari'ah. May Allah Almighty make him a means for the improvement of my circumstances and the forgiveness of my sins. Verily, He is the Kind, the Merciful. "Our Lord, accept from us, for You are the All-Hearing, the All-Knowing." Praise be to Allah, a praise that is abundant, good, and blessed. May Allah's blessings be upon our master and leader Muhammad, his family, and his companions. Amen.

Summary of Research: A clear warning from these few issues: In these issues, wherever we write the word 'janabat', it refers to 'hadath-e-akbar' (major impurity), meaning that which makes ghusl (bath) obligatory, whether it be from sexual

intercourse or the cessation of menstruation (menses) and post-partum bleeding. And the word 'hadath' specifically means 'hadath-e-asghar' (minor impurity), meaning that which only makes wudu (ablution) obligatory. I say: and with Allah is the guidance.

Issue (1): When minor impurity occurs while still in a state of major impurity (whether it existed before major impurity...

---

1 Derived from Sharh al-Wiqayah, Chapter on Tayammum, Maktabah Rashidiyyah Delhi, 1/95.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 4

[दायां कॉलम] ...हुक्म रखता हो। और फर्ज़ यह किया गया है कि वह पानी उसे जनाबत (अपवित्रता) से बाहर नहीं निकाल सकता, तो उसका होना न होना बराबर है। (इमाम शाफ़ई के विपरीत, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो)। इसका कारण ज्ञात हो चुका है। (लेकिन) दूसरी श्रेणी (जब जनाबत के साथ कोई ऐसी अपवित्रता हो जो वज़ू अनिवार्य करती है), चूँकि अपवित्रता का अपना स्वतंत्र हुक्म है, तो वज़ू निश्चित रूप से अनिवार्य है क्योंकि उसकी अपवित्रता स्वतंत्र है और उसके पास इतना पानी है जो उस अपवित्रता को दूर करने के लिए पर्याप्त है। और उसके लिए तयम्मुम पर्याप्त नहीं हो सकता क्योंकि (तयम्मुम) जो वह कर रहा है वह केवल (जनाबत के लिए) है, क्योंकि उसमें लघु अपवित्रता शामिल नहीं है। तो वज़ू अनिवार्य है (सर्वसम्मति से)। तीसरी श्रेणी की बात रही (जब एक व्यक्ति लघु अपवित्रता की स्थिति में हो) जिसके पास केवल लघु अपवित्रता है (इतना पानी है जो उसके शरीर के कुछ हिस्सों को धोने के लिए पर्याप्त हो, तो भी विवाद है) हमारे और इमाम शाफ़ई (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के बीच इस बारे में कि उस पानी का उपयोग करना अनिवार्य है या नहीं। (उनके अनुसार है, हमारे अनुसार नहीं। १२ अलिफ़)। यह स्पष्टीकरण, जैसा कि पाठकों के सामने है, "तावील" से अधिक "शराह" (व्याख्या) कहलाने का पात्र है। क्योंकि इसमें किसी शब्द को उसके अर्थ से बिल्कुल भी नहीं फेरा गया है। मैं इसे इमाम सद्र अल-शरिया की पवित्र आत्मा के लिए उपहार के रूप में पेश करता हूँ। अल्लाह तआला उन्हें मेरी स्थिति के सुधार और मेरे पापों की क्षमा का माध्यम बनाए। और केवल अल्लाह के लिए ही प्रशंसा है, बहुत अधिक पवित्र बरकत वाली प्रशंसा, और अल्लाह तआला की ओर से हमारे आका और मौला मुहम्मद, उनके परिवार और उनके सभी लोगों पर आशीर्वाद हो। हे अल्लाह, इसे स्वीकार फरमा। (त)

[बायां कॉलम - अरबी पाठ] इसलिए, हमारे और इमाम शाफ़ई (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के बीच विवाद (भी स्थापित) है कि उस पानी का उपयोग करना अनिवार्य है या नहीं। जैसा कि आप देख रहे हैं, अल्लाह की प्रशंसा से, यह "व्याख्या" के नाम का "तावील" (अर्थ परिवर्तन) से अधिक पात्र है, क्योंकि इसमें किसी शब्द को उसके अर्थ से बिल्कुल भी नहीं हटाया गया है। मैं इसे इमाम सद्र अल-शरिया की पवित्र आत्मा के लिए उपहार के रूप में अर्पित करता हूँ। अल्लाह सर्वशक्तिमान उन्हें मेरी परिस्थितियों के सुधार और मेरे पापों की क्षमा का साधन बनाए। वास्तव में, वह दयालु और कृपालु है। "ऐ हमारे रब! हमसे स्वीकार कर, बेशक तू ही सब कुछ सुनने वाला और जानने वाला है।" और

अल्लाह के लिए भरपूर, पवित्र और बरकत वाली प्रशंसा है। और अल्लाह तआला की कृपा हमारे आका और मौला मुहम्मद, उनकी संतान और उनके सभी लोगों पर हो। आमीन।

अनुसंधानों का सारांश: इन कुछ मसलों से स्पष्ट चेतावनी: इन मसलों में जहाँ हम 'जनाबत' शब्द लिखेंगे, उससे तात्पर्य 'हदस-ए-अकबर' (बड़ी अपवित्रता) है, यानी जिससे नहाना (गुस्ल) अनिवार्य हो जाता है, चाहे वह संभोग से हो या मासिक धर्म (हैज़) और प्रसव (निफ़ास) के रुकने से। और 'हदस' शब्द से विशेष रूप से 'हदस-ए-असग़र' (छोटी अपवित्रता) अभिप्रेत है, यानी जिससे केवल वज़ू अनिवार्य होता है। मैं कहता हूँ: और अल्लाह की मदद से ही सफलता है।

मसला (१): जनाबत की स्थिति में जब छोटी अपवित्रता पाई जाए (चाहे जनाबत से पहले की हो...

---

1 शरह अल-विकाया, अध्याय तयम्मुम, मकतबा रशीदिया दिल्ली, १/९५ से लिया गया।

[دایاں کالم] حکم رکھتا ہو۔ اور فرض یہ کیا گیا ہے کہ وہ پانی اسے جنابت سے نکال نہیں سکتا تو اس کا ہونا نہ ہونا برابر ہے۔ (بخلاف امام شافعی کے) رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ اس کی وجہ معلوم ہو چکی (لیکن) قسم دوم (جب جنابت کے ساتھ کوئی ایسا حدث ہو جو وضو واجب کرتا ہے) جبکہ حدث اپنا مستقل حکم رکھتا ہو (تو اس پر وضو واجب ہے) قطعاً کیونکہ اس کا حدث مستقل ہے اور اسے اتنے پانی پر قدرت بھی ہے جو اس حدث کو دُور کرنے کے لئے کافی ہے۔ اور اس کے لئے تیمم کفایت نہیں کر سکتا اس لئے (کہ تیمم) جو وہ کر رہا ہے صرف (جنابت کے لئے ہے) کیونکہ حدث اس میں مندرج نہیں۔ تو وضو لازم ہے (بالاتفاق)۔ رہی قسم سوم (جب محدث) جو صرف حدث والا ہے (کے پاس اتنا پانی ہو جو اس کے بعض اعضاء کے دھونے کے لئے کفایت کرے تو بھی اختلاف) ہمارے اور امام شافعی رضی اللہ تعالٰی عنہ کے درمیان (ثابت ہے) اس بارے میں کہ اس پانی کو صرف کرنا واجب ہے یا نہیں۔ (ان کے نزدیک ہے ہمارے نزدیک نہیں ۱۲ الف) یہ توضیح جیسا کہ ناظرین کے سامنے ہے تاویل سے زیادہ شرح کا نام دیئے جانے کی مستحق ہے۔ کیونکہ اس میں کسی لفظ کو اس کے معنی سے پھیرنا بالکل نہیں۔ میں اسے امام صدر الشریعۃ کی روح پاک کے لئے ہدیہ کرتا ہوں۔ انہیں خدائے برتر میرے احوال کی اصلاح اور میرے گناہوں کی مغفرت کا ذریعہ بنائے۔ اور خدا ہی کے لئے حمد ہے کثیر پاکیزہ بابرکت حمد اور خدائے برتر کی طرف سے ہمارے آقا و مولٰی محمد، ان کی آل اور ان کے سبھی لوگوں پر درود ہو۔ الٰہی قبول فرما۔ (ت)

[بایاں کالم - عربی عبارت] فالخلاف بيننا وبين الشافعي رضی اللہ تعالی عنه (ثابت ایضا) فی وجوب صرف ذلك الماء وعدمه وهذا كما ترى بحمد الله تعالى احق باسم الشرح من اسم التأويل اذليس فيه

صرف لفظ عن معناه واصلا، وانا اجعله هدية لروح الامام صدر الشريعة جعله الله تعالى لاصلاح احوالى ومغفرة ذنوبى ذريعة انه هو الرؤف الرحيم ربنا تقبل منا انك انت السميع العليم والحمدلله حمدا كثيرا طيبا مباركا فيه وصلى الله تعالى على سيدنا ومولنا محمد وآله وذويه آمين۔

خلاصہ تحقیقات: ان چند مسائل سے واضح تنبیہ ان مسائل میں ہم جہاں جنابت کا لفظ لکھیں گے اُس سے مراد حدثِ اکبر ہے یعنی جس سے نہانا واجب ہوتا ہے خواہ جنابت ہو یا انقطاع حیض و نفاس اور لفظ حدث سے خاص حدثِ اصغر مراد ہے یعنی جس سے صرف وضو واجب ہوتا ہے اقول: وباللہ التوفیق مسئلہ (۱): جنابت باقی ہونے کی حالت میں جب حدث پایا جائے (خواہ جنابت سے پہلے کا ہو

---

1 ماخوذ من شرح الوقایہ، باب التیمم، المکتبۃ الرشیدیہ دہلی، ۱/۹۵

For instance, getting up from sleep and finding a need for bathing; rather, this situation exists in every ejaculation, that before it there is the exit of Madhi (pre-ejaculatory fluid). Similarly, before the disappearance of the glans, there is obscene direct contact, or after it, like urinating after intercourse, or with it, like performing Tayammum for Janabat (major ritual impurity) and then a Hadath (minor ritual impurity) occurred and Wudu (ablution) was performed, then while sitting to urinate, with the exit of the first drop, knowledge of the presence of water suitable for Ghusl (ritual bath) was obtained. Or, a woman saw blood for the first time for ten days and two minutes; so at the time when the hours and minutes of ten days and nights ended, that was the time of the cessation of menstruation and the obligation of Ghusl on her, and simultaneously, the flow of blood still continues; now this is Istihadah (irregular vaginal bleeding) and Hadath-e-Asghar (minor ritual impurity). Although here, simultaneity is in the sense of true connection, that there is not a gap of even a moment, rather a single moment is the shared boundary (on which menstruation ends and from it Istihadah begins). In short, when Hadath and Janabat gather at one time, even if there is precedence, delay, or simultaneity in their occurrence, there are two types:

First: The entire or some parts of the Wudu organs, as much as the area of Hadath is, Janabat encompasses all that area, such that no part of the Hadath is outside the area of Janabat. Regardless of whether Janabat is only in that area or besides that as well. We have named this Hadath-e-Mundarij (included) or Mundamij (merged). There are twelve forms of this: if Hadath is in all Wudu organs, then Janabat is also in all, or Hadath is in some, then Janabat is in all, or (3) from the Wudu organs, it is in that some or along with some of the remaining parts in one portion. These became four patterns, and in each pattern, it is possible that Janabat is only here, or along with it, in some or all of the rest of the body, so they became twelve. For example:

(1) A Junub (in state of major impurity) who is also in Hadath did not perform Wudu but washed the rest of the body, such that Hadath and Janabat are only in all Wudu organs; or washed some of the rest of the body, such that Hadath is in all Wudu organs and Janabat is in them along with some of the rest of the body; or did not touch water at all, such that Hadath is in that all and Janabat is in the whole body.

(2) A person in Hadath washed some Wudu organs, such that Hadath remained in some, then Janabat occurred without further Hadath, the description of which passed

above. Now this Janabat is in all Wudu organs, and the same forms apply whether the rest of the body was washed completely, partially, or not at all.

(3) A Junub who is also in Hadath washed some Wudu organs, and the rest of the body completely, partially, or not at all.

(4) A person in Hadath, for example, washed two organs, then Janabat occurred without Hadath, and only one of those two was washed, such that Hadath is in the remaining two organs and Janabat is in those two and also in a third besides them, and the rest of the body was washed completely, partially, or not at all.

First Warning: The six forms of 'inclusion of Hadath' in which Janabat is in more than the place of Hadath in the Wudu organs, i.e., 4, 5, 6, 10, 11, 12, are possible in this state only if Janabat occurs after Hadath, because it is required here that in some places of the Wudu organs there be no Hadath but there be Janabat. If Hadath occurred later, then its removal from that part by washing...

जैसे सो कर उठा और नहाने की हाजत पाई, बल्कि यह सूरत हर इंजाल (वीर्यपात) में है कि उससे पहले खुरूज-ए-मज़ी (मज़ी का निकलना) है, इसी तरह ग़ैबूबत-ए-हशफ़ा (लिंग के आगे के भाग का छिपना) से पहले मुबाशरत-ए-फ़ाहिशा (अश्लील संसर्ग) या उसके बाद का जैसे जिमा (संभोग) के बाद पेशाब किया या उसके साथ का जैसे जनाबत (अपवित्रता) के लिए तयम्मुम किया फिर हदस (लघु अपवित्रता) हुआ वुज़ू किया फिर पेशाब को बैठा और उसका पहला क़तरा निकलने के साथ क़ाबिल-ए-ग़ुस्ल (नहाने योग्य) पानी मौजूद होने का इल्म हुआ। या औरत को पहली ही बार दस दिन दो मिनट ख़ून आया तो जिस वक़्त दस रात दिन के घंटे मिनट ख़त्म हुए वही वक़्त उसके इन्क़िता-ए-हैज़ (मासिक धर्म रुकने) और उस पर वजूब-ए-ग़ुस्ल (नहाने की अनिवार्यता) का था और साथ ही हनूज़ (अभी तक) जरयान-ए-ख़ून (ख़ून का बहना) बाक़ी है, अब यह इस्तिहाज़ा (अनियमित रक्तस्राव) और हदस-ए-अस्ार (लघु अपवित्रता) है। अगरचे यहाँ मइयत (एक साथ होना) ब-माना इत्तिसाल-ए-हक़ीक़ी है कि एक आन (पल) का भी फासला नहीं बल्कि एक ही आन फ़स्ल-ए-मुश्तरक (साझा विभाजन) है कि उस पर हैज़ ख़त्म और उसी से इस्तिहाज़ा शुरू। बहरहाल जब हदस और जनाबत एक वक़्त में जमा हों, अगरचे उनके हुदूस (होने) में तक़द्दुम (पहल) व ताख़ुर (देरी) या मइयत कुछ भी हो, इसकी दो क़िस्में हैं:

अव्वल: कुल या बाज़ आज़ा-ए-वुज़ू (वुज़ू के अंगों) जितनी जगह हदस है, जनाबत उस सब जगह को मुहीत (घेरे हुए) हो, हदस का कोई हिस्सा महल-ए-जनाबत से बाहर न हो। आम अज़ीं (चाहे) कि जनाबत भी सिर्फ़ इतनी ही जगह हो या उसके अलावा और भी। हमने इसका नाम हदस-ए-मुन्दरिज (समाहित) या मुन्दमिज (विलीन) रखा है। इसकी बारह सूरतें हैं कि अगर हदस कुल आज़ा-ए-वुज़ू में है तो जनाबत भी कुल में है, या हदस बाज़ में है तो जनाबत कुल में या (३) आज़ा-ए-वुज़ू से उस बाज़ के साथ बाज़ बाक़ी के भी एक हिस्सा में है। ये चार शक्लें हुईं और हर शक्ल पर मुमकिन कि जनाबत सिर्फ़ यहीं हो या इसके साथ बाक़ी बदन के बाज़ या कुल में भी तो बारह हो गईं। मसलन:

(१) जुनबी मुहदिस (बड़ी और छोटी दोनों अपवित्रता वाला) ने वुज़ू न किया, बाक़ी कुल बदन धो लिया कि हदस व जनाबत सिर्फ़ कुल आज़ा-ए-वुज़ू में हैं; या बाक़ी बाज़ बदन धोया कि हदस कुल आज़ा-ए-वुज़ू और जनाबत उनके साथ बाक़ी बदन के भी बाज़ में है; या अस्लन (बिल्कुल) पानी न छुआ कि हदस उस कुल और जनाबत सारे बदन में है।

(२) मुहदिस ने बाज़ आज़ा-ए-वुज़ू धो लिए कि हदस बाज़ में रहा फिर बिला हदस जनाबत हुई जिसकी तस्वीर ऊपर गुज़री, अब यह जनाबत कुल आज़ा-ए-वुज़ू में है और वही सूरतें कि बाक़ी बदन कुल या बाज़ धो लिया या कुछ नहीं।

(३) जुनबी मुहदिस ने बाज़ आज़ा-ए-वुज़ू धो लिए और बाक़ी बदन कुल या बाज़ या कुछ नहीं।

(४) मुहदिस ने मसलन दो उज़्व (अंग) धो लिए फिर जनाबत बे-हदस हुई और उन दो में का एक ही धोया कि हदस दो उज़्व बाक़ी में है और जनाबत उन दो और उनके सिवा तीसरे में भी और बाक़ी बदन कुल या बाज़ धोया या कुछ नहीं।

तम्बीह अव्वल: इन्दराज-ए-हदस की छह सूरतें जिनमें जनाबत आज़ा-ए-वुज़ू में महल-ए-हदस से ज़ायद (अधिक) में है यानी ४-५-६-१०-११-१२ इसी हालत में मुमकिन हैं कि जनाबत हदस के बाद हो कि यहाँ यह दरकार कि आज़ा-ए-वुज़ू में बाज़ जगह हदस न हो और जनाबत हो, अगर हदस मुताख़िर (बाद में) हुआ तो उस बाज़ से इसका इरतिफ़ा (ख़त्म होना) धोने...

पेज २७६ ऑफ ७६१

جیسے سو کر اٹھا اور نہانے کی حاجت پائی بلکہ یہ صورت ہر انزال میں ہے کہ اُس سے پہلے خروج مذی ہے یوں ہی غیبوبت حشفہ سے پہلے مباشرت فاحشہ یا اُس سے بعد کا جیسے جماع کے بعد پیشاب کیا یا اس کے ساتھ کا جیسے جنابت کے لئے تیمم کیا پھر حدث ہوا وضو کیا پھر پیشاب کو بیٹھا اور اس کا پہلا قطرہ نکلنے کے ساتھ قابلِ غسل پانی موجود ہونے کا علم ہوا یا عورت کو پہلی ہی بار دس دن دو منٹ خون آیا تو جس وقت دس رات دن کے گھنٹے منٹ ختم ہوئے وہی وقت اس کے انقطاعِ حیض اور اس پر وجوبِ غسل کا تھا اور ساتھ ہی ہنوز جریانِ خون باقی ہے اب یہ استحاضہ اور حدثِ اصغر ہے اگر چہ یہاں معیت بمعنی اتصالِ حقیقی ہے کہ ایک آن کا بھی فاصلہ نہیں بلکہ ایک ہی آن فصلِ مشترک ہے کہ اس پر حیض ختم اور اُسی سے استحاضہ شروع)

بالجملہ جب حدث و جنابت ایک وقت میں جمع ہوں اگر چہ اُن کے حدوث میں تقدم و تاخر معیت کچھ بھی ہو اس کی دو قسمیں ہیں:

اوّل: کل یا بعض اعضائے وضو جتنی جگہ حدث ہے جنابت اُس سب جگہ کو محیط ہو حدث کا کوئی حصہ محلِ جنابت سے باہر نہ ہو عام ازیں کہ جنابت بھی صرف اتنی ہی جگہ ہو یا اُس کے علاوہ اور بھی ہم نے اس کا نام حدث مندرج یا مندمج رکھا اس کی بارہ صورتیں ہیں کہ اگر حدث کل اعضائے وضو میں ہے تو جنابت بھی کل میں ہے یا حدث بعض میں ہے تو جنابت کل میں یا (۳) اعضائے وضو سے اُس بعض یا کے ساتھ بعض باقی کے بھی ایک حصہ میں ہے یہ چار شکلیں ہوئیں اور ہر شکل پر ممکن کہ جنابت صرف یہیں ہو یا اس کے ساتھ باقی بدن کے بعض یا کل میں بھی تو بارہ ہو گئیں مثلاً:

(۱) جنب محدث نے وضو نہ کیا باقی کُل بدن دھو لیا کہ حدث و جنابت صرف کُل اعضائے وضو میں ہیں یا باقی بعض بدن دھویا کہ حدث کُل اعضائے وضو اور جنابت اُن کے ساتھ باقی بدن کے بھی بعض میں ہے یا اصلاً پانی نہ چھوا کہ حدث اُس کُل اور جنابت سارے بدن میں ہے۔

(۲) محدث نے بعض اعضائے وضو دھو لئے کہ حدث بعض میں رہا پھر بلا حدث جنابت ہوئی جس کی تصویر اوپر گزری اب یہ جنابت کل اعضائے وضو میں ہے اور وہی صورتیں کہ باقی بدن کُل یا بعض دھو لیا یا کچھ نہیں۔

(۳) جنب محدث نے بعض اعضائے وضو دھو لئے اور باقی بدن کُل یا بعض یا کچھ نہیں۔

(۴) محدث نے مثلاً دو عضو دھو لئے پھر جنابت بے حدث ہوئی اور اُن دو میں کا ایک ہی دھویا کہ حدث دو عضو باقی میں ہے اور جنابت اُن دو اور اُن کے سوا تیسرے میں بھی اور باقی بدن کُل یا بعض دھویا یا کچھ نہیں۔

تنبیہ اول: اندراجِ حدث کی چھ صورتیں جن میں جنابت اعضائے وضو میں محلِ حدث سے زائد میں ہے یعنی ۴۔ ۵۔ ۶۔ ۱۰۔ ۱۱۔ ۱۲ اسی حالت میں ممکن ہیں کہ جنابت حدث کے بعد ہو کہ یہاں یہ درکار کہ اعضائے وضو میں بعض جگہ حدث نہ ہو اور جنابت ہو اگر حدث متاخر ہوا تو اس بعض سے اس کا ارتفاع دھونے

Fatawa Razawiyya Volume 4

...it will be from this alone, and washing will also remove the ritual impurity (Janabat). Yes, in the remaining six (6) cases, both the precedence and subsequence of Hadath (minor ritual impurity) and Janabat (major ritual impurity) are possible. Therefore, we have used the term 'Junub Muhdith' (one in a state of both major and minor impurity) for them, so that every possibility is covered. And Allah is the grantor of success.

Second: Whether Hadath in total or part occurred separately from the site of Janabat; call it independent or dispersed Hadath. There are ten (10) scenarios for this. Hadath in total or some parts of the organs of Wudu; Janabat in some parts of that area, or not in the organs of Wudu at all. These are also four (4) forms. However, the first two (2) remain ternary (thulathi) as before, and the latter two (2) where it's not in the organs of Wudu at all are binary (thunai), because there is no possibility of it not being in part or all of the rest of the body, since the discussion is about the combination of Janabat and Hadath. Thus, there remain only ten (10) scenarios, for example:

(1) A Junub (1) washed only some parts of Wudu (2) along with the rest of the total body or (3) some of the body, then Hadath occurred, which is in all parts of Wudu. (2) A Junub (4) performed only complete Wudu (5), also washed a part of the rest of the body, then Hadath occurred. (3) A Junub (6) washed only hands or (7) all parts other than the organs of Wudu or (8) some of them, then Hadath occurred, and he washed the feet, such that Janabat and Hadath both were removed from the feet, and Hadath remains in three (13) organs, and Janabat in only two (2) of them, as he had washed hands after Janabat. (4) A Junub (9) performed only Wudu or (10) also washed some of the rest of the body, then Hadath occurred and he washed some parts of Wudu.

Aqool (I say): Here the general rule is that after Janabat, whatever part of Wudu has been washed, the Hadath in it is independent, whether it's all parts of Wudu, in which case the entire Hadath will be independent as in 4, 5, 9, 10; or some parts, then only that portion will be independent which is in those parts, while the rest will remain subordinate to Janabat as before, as in the remaining 6. And Allah Almighty knows best.

Tanbih Aqool (Warning, I say): Independence of Hadath does not occur unless the Hadath is after Janabat, where it is required that Janabat is either not originally in the site of Hadath or is in some parts of it. If Hadath occurs first, then it is impossible, for

the subsequent Janabat will not be removed from all or part of the site of Hadath without washing, and washing will also remove the previous Hadath.

Thumma Aqool (Then I say): The detailed explanation of the situation is that there are thirty-four (34) rational possibilities here. If Hadath is in all organs of Wudu, then Janabat is in all or (2) some parts, or (3) nowhere in them. And (4) if Hadath is in some parts, then Janabat is in all organs of Wudu, or (5) in all or some parts of that same Hadath area, or (6) in all or some parts of other areas (7), or (8) in all of the first and some of the others (9), or (10) vice-versa, or (11) in some parts of both areas, or (12) in none. These became twelve (12) forms, of which the third and twelfth are binary due to the aforementioned reason, and the remaining ten (10) are ternary. Among these twelve (12) scenarios where Janabat is in all or part of other areas, whether alone or in some parts of the Hadath area...

फ़तावा रज़विया जिल्द 4

...उसी से होगा और धोना जनाबत को भी खत्म कर देगा। हाँ, बाकी छह (6) में हदस और जनाबत का आगे-पीछे होना दोनों मुमकिन है और इसलिए हमने उनमें 'जुनुब मोहदिस' कहा है ताकि हर सूरत मुमकिन रहे। वबिल्लाहि तौफीक।

द्वितीय: हदस कुल (पूर्ण) या बाज़ (कुछ) जो जनाबत की जगह से अलग हो; उसे हदस-ए-मुस्तकिल (स्वतंत्र) या मुतवदद (फैला हुआ) कहें। इसकी दस (10) सूरतें हैं कि हदस कुल या बाज़ वुज़ू के अंगों की जितनी जगह में हो, जनाबत उस जगह के बाज़ में हो या वुज़ू के अंगों में बिलकुल न हो। ये भी चार (4) शक्लें हुईं मगर पहली दो (2) दस्तूर के मुताबिक सुलासी (तीन वाली) हैं और पिछली दो (2) कि वुज़ू के अंगों में बिलकुल न हो, सुनाई (दो वाली) हैं क्योंकि बाकी बदन के बाज़ या कुल के सिवा बिलकुल न होने का कोई अंदेशा नहीं है क्योंकि बात जनाबत और हदस के जमा होने की है। इसलिए ये दस (10) ही सूरतें रहीं, मिसाल के तौर पर:

(1) एक जुनुब (1) ने सिर्फ वुज़ू के कुछ अंग (2) उनके साथ बाकी पूरे शरीर या (3) शरीर के कुछ हिस्से को धो लिया, फिर हदस हुआ जो वुज़ू के सभी अंगों में है। (2) एक जुनुब (4) ने सिर्फ पूरा वुज़ू किया (5), बाकी शरीर का भी एक हिस्सा धोया फिर हदस हुआ। (3) एक जुनुब (6) ने केवल हाथ या (7) वुज़ू के अंगों के अलावा पूरा धोया या (8) उनमें से कुछ भी धोया, फिर हदस हुआ और पैर धोए ताकि पैरों से जनाबत और हदस दोनों खत्म हो गए और हदस बाकी तीन (13?) अंगों में है और जनाबत उनमें से सिर्फ दो (2) में, क्योंकि जनाबत के बाद हाथ धो चुका है। (4) एक जुनुब (9) ने केवल वुज़ू या (10) बाकी शरीर का भी कुछ हिस्सा धोया फिर हदस हुआ और वुज़ू के कुछ अंग धोए।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): यहाँ नियम यह है कि जनाबत के बाद जो वुज़ू का अंग धुल चुका हो, उसमें हदस स्वतंत्र है, चाहे वुज़ू के सभी अंग हों कि उस समय पूरा हदस स्वतंत्र होगा जैसे 4, 5, 9, 10 में या कुछ अंग, उस समय यही टुकड़ा स्वतंत्र होगा जो उस हिस्से में है, बाकी पहले की तरह जनाबत के अधीन रहेगा जैसा बाकी 6 में। वल्लाहु तआला आलम।

तन्बीह अक़ूल (चेतावनी, मैं कहता हूँ): हदस की स्वतंत्रता तब तक नहीं होती जब तक कि हदस जनाबत के बाद न हो, यहाँ यह आवश्यक है कि जनाबत हदस की जगह में मूल रूप से न हो या हो

तो उसके कुछ हिस्से में हो। अगर हदस पहले हो तो यह असंभव है कि बाद में आने वाली जनाबत बिना धोए हदस की पूरी या कुछ जगह से न हटेगी और धोना पिछले हदस को भी खत्म कर देगा।

थुम्मा अक़ूल (फिर मैं कहता हूँ): मामले की विस्तृत व्याख्या यह है कि यहाँ चौंतीस (34) बौद्धिक संभावनाएं हैं। यदि हदस वुज़ू के सभी अंगों में है, तो जनाबत कुल या (2) बाज़ में हो या (3) उनमें कहीं नहीं। और (4) यदि हदस बाज़ में है, तो जनाबत वुज़ू के सभी अंगों में हो, या (5) उसी हदस वाले हिस्से के कुल या बाज़ में हो, या (6, 7) दूसरे हिस्सों के कुल या बाज़ में हो, या (8, 9) पहले के कुल और दूसरे के बाज़ में हो, या (10) इसके विपरीत हो, या (11) दोनों हिस्सों के कुछ-कुछ में हो, या (12) किसी में नहीं। ये बारह (12) रूप हुए जिनमें से तीसरा और बारहवाँ ऊपर बताए गए कारण से सुनाई (दो वाले) हैं और बाकी दस (10) सुलासी। इन बारह (12) सूरतों में कि जनाबत दूसरे के कुल या बाज़ में हो, चाहे अकेले या हदस वाले हिस्से के बाज़ में...

ہی سے ہوگا اور دھونا جنابت کو بھی زائل کردے گا۔ ہاں باقی چھ ۶ میں حدث و جنابت کا تقدم و تاخر دونوں ممکن و لہٰذا ہم نے ان میں جنب محدث کہا کہ ہر صورت کو محتمل رہے وباللہ التوفیق۔

دوم: حدث کل یا بعض محل جنابت سے جدا ہوا اسے حدث مستقل یا متبدد کہے۔ اس کی دس ۱۰ صورتیں ہیں کہ حدث کل یا بعض اعضائے وضو جتنی جگہ میں ہو جنابت اس جگہ کے بعض میں ہو یا اعضائے وضو میں اصلا نہ ہو یہ بھی چہار ۴ شکلیں ہوئیں مگر دو ۲ پہلی بدستور ثلاثی ہیں اور دو ۲ پچھلی کہ اعضائے وضو میں اصلا نہ ہو ثنائی کہ باقی بدن کے بعض یا کل کے سوا بالکل نہ ہونے کا احتمال نہیں کہ کلام اجتماع جنابت وحدث میں ہے لہٰذا یہ دس ۱۰ ہی صورتیں رہیں، مثلاً:

(۱) جنب ۱ نے صرف بعض اعضائے وضو ۲ ان کے ساتھ باقی کل یا ۳ بعض بدن دھولیا پھر حدث ہوا کہ یہ کل اعضائے وضو میں ہے۔ (۲) جنب ۴ نے صرف پورا وضو کیا ۵ باقی بدن کا بھی ایک حصہ دھویا پھر حدث ہوا۔ (۳) جنب ۶ نے فقط ہاتھ یا (۷) غیر اعضائے وضو کا کل یا (۸) بعض بھی دھویا پھر حدث ہوا اور پاؤں دھوئے کہ پاؤں سے جنابت و حدث دونوں زائل ہوگئے اور حدث باقی تین ۱۳ اعضاء میں ہے اور جنابت ان میں سے صرف دو ۲ میں کہ بعد جنابت ہاتھ دھو چکا ہے (۴) جنب ۹ نے فقط وضو یا ۱۰ باقی بدن کا بھی بعض دھویا پھر حدث ہوا اور بعض اعضائے وضو دھوئے۔

اقول: یہاں ۲ کلیہ یہ ہے کہ جنابت کے بعد جو عضو وضو دھل چکا اس میں حدث مستقل ہے خواہ جمیع اعضائے وضو ہوں کہ اس وقت پورا حدث مستقل ہوگا جیسے ۴۔۵۔۹۔۱۰ میں یا بعض اس

وقت یہی ٹکڑا مستقل ہوگا جو اس بعض میں ہے باقی بدستور تابع جنابت رہے گا جیسا باقی ۶ میں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

تنبیہ اقول: استقلال ۳ حدث نہیں ہوتا مگر جبکہ حدث جنابت کے بعد ہو کہ یہاں یہ درکار کہ جنابت محل حدث میں اصلا نہ ہو یا ہو تو اس کے بعض میں ہو اگر حدث پہلے ہو تو یہ ناممکن ہے کہ جنابت لاحقہ کل یا بعض محل حدث سے بے دھوئے نہ اٹھے گی اور دھونا حدث سابق کو بھی زائل کردے گا۔

ثم اقول: تفصیل مقام یہ ہے کہ یہاں چونتیس ۳۴ احتمال عقلی ہیں کہ حدث اگر کل اعضائے وضو میں ہے تو جنابت کل یا ۲ بعض میں ہو یا ۳ ان میں کہیں نہیں اور ۴ اگر حدث بعض میں ہے تو جنابت کل اعضائے وضو یا ۵ اسی حدث والے حیض کے کل یا بعض ۶ یا بعض ۷ دیگر کے کل یا بعض ۸ یا بعض ۹ اول کے کل اور دیگر کے بعض یا ۱۰ بالعکس یا ۱۱ دونوں بعضوں کے بعض یا ۱۲ کسی میں نہیں۔ یہ بارہ ۱۲ شکلیں ہوئیں جن میں سوم و دوازدہم بوجہ مذکور ثنائی ہیں اور باقی دس ۱۰ ثلاثی۔ ان میں بارہ ۱۲ صورتیں کہ جنابت بعض دیگر کے کل یا بعض میں ہو خواہ تنہا یا بعض حدثی کے بعض

...along with 7, 8, 10, 11, and each of them being triple-impossible because the outcome of all these situations is that the second part of the organs of Wudu (ablution), which was called 'some other', is completely free of 'hadath' (minor ritual impurity) and 'janabat' (major ritual impurity) is present in all or part of it, and in the first part, 'hadath' is in the whole and 'janabat' is fundamentally absent or present in part. Now, if 'janabat' occurred first and then 'hadath' followed, how can the second part be free of 'hadath' without being fully washed? And when washed, it will also remove 'janabat', so how can it remain in all or part of it? And if 'hadath' occurred first and then 'janabat' without 'hadath' (occurring again), until all or part of the first portion is washed, how did 'janabat' lift from it? And if it is washed, 'hadath' is also washed away from all or part of it; how can it remain in the whole? And if 'hadath' and 'janabat' occurred together, then both are transformations. Therefore, out of those 44, only 22 remain, 12 included in 10 are constant.

Problem 2 (1): 'Hadath' included (in janabat) does not have any separate ruling; it becomes consumed and submerged within 'janabat', just like 'madhi' in 'mani'. Out of its twelve (12) situations, situations 1 and 7, where 'janabat' and 'hadath' are coincident and not separate from each other, do not need explanation. If a person finds enough water for Wudu in the first situation or for completing Wudu in the seventh situation, they must use it. In that process, both 'janabat' and 'hadath' will be removed. If they don't find it or don't use it, both will remain. However, in the remaining ten situations, the effect of inclusion will be evident from these rulings.

Problem 3: In the third situation, where a full bath (Ghusl) is required and 'hadath' exists in all organs of Wudu requiring a complete Wudu, if one is unable to bathe because water is insufficient, or bathing is harmful, or bathing would cause the prayer time to pass, yet enough water is available for Wudu, it is not harmful, and there is time for it, one should not perform Wudu alone; Tayammum (dry ablution) is sufficient because this 'hadath' holds no independent ruling.

Problem 4: Similarly, in the sixth situation, where full Ghusl is required and 'hadath' is only in some organs of Wudu requiring only the completion of Wudu. It is possible that only a handful of water is needed for it; even if one is capable of getting that much water, one should still not use it and be content with only Tayammum.

Problem 5: Likewise, in situations 9 and 12, where 'hadath' would require completion of Wudu, but 'janabat' requires washing a part of the Wudu organs and the rest of

the body; if due to these reasons one is unable to do so, and water is available and one is capable of completing Wudu, even then one should only perform Tayammum. In short, all four situations of the triplicates (multiples of 3) have the same ruling.

Problem 6: In the remaining 6 situations (2, 4, 5, 8, 10, 11), the amount of washing required for 'janabat' is...

...७, ८, १०, ११ के साथ और हर एक त्रिपक्षीय असंभव है क्योंकि इन सभी स्थितियों का परिणाम यह हुआ कि वज़ू के अंगों का दूसरा हिस्सा, जिसे 'कुछ अन्य' कहा गया था, 'हदथ' (लघु अशुद्धि) से पूरी तरह मुक्त है और उसके पूरे या कुछ हिस्से में 'जनाबत' (प्रमुख अशुद्धि) है, और पहले हिस्से के पूरे हिस्से में 'हदथ' है और उसमें 'जनाबत' मूल रूप से नहीं है या कुछ हिस्से में है। अब अगर 'जनाबत' पहले हुई और उसके बाद 'हदथ' हुआ, तो दूसरा हिस्सा बिना पूरी तरह धोए 'हदथ' से कैसे मुक्त हो सकता है? और जब उसे धोया जाएगा, तो वह 'जनाबत' को भी दूर कर देगा, तो वह उसके पूरे या कुछ हिस्से में कैसे रह सकती है? और अगर 'हदथ' पहले हुई और उसके बाद बिना 'हदथ' के 'जनाबत' हुई, तो जब तक पहले हिस्से का पूरा या कुछ हिस्सा नहीं धोया गया, उससे 'जनाबत' कैसे उठी? और अगर धोया गया, तो 'हदथ' भी पूरे या कुछ हिस्से से धुल गई; वह पूरे में कैसे रह सकती है? और अगर 'हदथ' और 'जनाबत' साथ हों तो दोनों रूपांतरण हैं। इसलिए उन ४४ में से केवल २२ ही रहेंगी, १० स्वतंत्र में १२ सम्मिलित हैं।

मसअला २ (१): सम्मिलित 'हदथ' का कोई अलग नियम नहीं है; यह 'जनाबत' के भीतर विलीन और समाहित हो जाता है, जैसे 'मनी' में 'मज़ी'। इसकी बारह (१२) स्थितियों में से १ और ७, जिनमें 'जनाबत' और 'हदथ' आपस में मेल खाते हैं और एक दूसरे से बाहर नहीं हैं, ये तो स्पष्टीकरण की आवश्यकता से परे हैं। यदि किसी व्यक्ति को पहली स्थिति में वज़ू के लिए या सातवीं स्थिति में वज़ू पूरा करने के लिए पर्याप्त पानी मिले, तो वह निश्चित रूप से उसका उपयोग करेगा। उसी में 'जनाबत' और 'हदथ' दोनों समाप्त हो जाएंगे। यदि वह उपयोग नहीं करेगा, तो दोनों बने रहेंगे। हाँ, शेष दस स्थितियों में सम्मिलित होने का प्रभाव इन आदेशों से स्पष्ट होगा।

मसअला ३: तीसरी स्थिति में जहाँ पूर्ण स्नान (ग़ुस्ल) की आवश्यकता है और वज़ू के सभी अंगों में 'हदथ' है जो पूर्ण वज़ू चाहता है, यदि वह स्नान करने में सक्षम न हो क्योंकि पानी इतना नहीं है या नहाना हानिकारक है या नहाने से नमाज़ का समय निकल जाता है, और वज़ू के लिए पर्याप्त पानी उपलब्ध है और इससे कोई नुकसान भी नहीं है और समय में भी गुंजाइश है, तो वह अकेले वज़ू न करे, केवल तयम्मुम पर्याप्त है क्योंकि यह 'हदथ' कोई स्वतंत्र नियम नहीं रखता।

मसअला ४: इसी तरह छठी स्थिति में जहाँ पूर्ण ग़ुस्ल की आवश्यकता है और 'हदथ' केवल वज़ू के कुछ अंगों में है जहाँ केवल वज़ू पूरा करना आवश्यक है। संभव है कि उसके लिए केवल एक चुल्लू

पानी की आवश्यकता हो; यदि वह इतने पानी पर सक्षम हो तब भी उसका उपयोग न करे, केवल तयम्मुम पर संतुष्ट रहे।

मसअला ५: इसी तरह ९वीं और १२वीं स्थितियों में जहाँ 'हदथ' वज़ू को पूरा करना चाहता है लेकिन 'जनाबत' वज़ू के अंगों के एक हिस्से और उनके अलावा पूरे शरीर को धोने की मांग करती है; यदि इन कारणों से उस पर सामर्थ्य न हो और वज़ू पूरा करने के लिए पानी उपलब्ध हो और उस पर सक्षम हो, तब भी केवल तयम्मुम करे। संक्षेप में, 'त्रय' (३ के गुणक) की चारों ४ स्थितियां एक ही नियम रखती हैं।

मसअला ६: शेष ६ स्थितियों २, ४, ५, ८, १०, ११ में 'जनाबत' के लिए जितना धोना आवश्यक है...

पृष्ठ २७८/७६१

کے ساتھ کہ ۷ ، ۸ ، ۱۰ ، ۱۱ ہیں اور ہر ایک ثلاثی محال ہیں کہ ان سب صورتوں کا حاصل یہ ہوا کہ اعضائے وضو کا دوسرا حصہ جسے بعض دیگر کہا تھا حدث سے بالکل خالی ہے اور اُس کے کُل یا بعض میں جنابت ہے اور پہلے حصے کے کُل میں حدث ہے اور اس میں جنابت اصلاً نہیں یا بعض میں ہے اب اگر جنابت پہلے ہے اُس کے بعد حدث ہوا تو دوسرا حصہ بے پورادھوئے حدث سے کیونکر خالی ہو سکتا ہے اور جب دھو یا جائے گا جنابت کو بھی رفع کردے گا اُس کے کُل یا بعض میں کیسے رہ سکتی ہے اور حدث پہلے ہے اُس کے بعد جنابت بے حدث ہوئی تو پہلے حصے کا جب تک کُل یا بعض نہ دھویا گیا اس سے جنابت کیونکر اُٹھی اور اگر دھویا گیا تو کُل یا بعض سے حدث بھی ڈھل گیا اُس کے کُل میں کیسے رہ سکتا ہے اور اگر حدث و جنابت ساتھ ہوں تو دونوں استحا لے ہیں لہذا ان ۴۴ میں سے ۲۲ ہی رہیں ۱۲ مندرج ۱۰ مستقل۔

مسئلہ ۲ (۱): حدث مندرج کوئی حکم جداگانہ نہیں رکھتا جنابت کے اندر مستہلک و مستغرق ہو جاتا ہے جیسے منی میں مذی۔ اس کی بارہ۱۲ صورتوں سے ۱و ۷ جن میں جنابت و حدث باہم منطبق ہیں ایک دوسرے سے باہر نہیں یہ تو حاجت بیان سے مستغنی ہیں کہ پانی پہلی صورت میں وضو یا ساتویں میں تکمیلِ وضو کو کافی ملا تو ضرور استعمال کرے گا اُسی میں جنابت و حدث دونوں زائل ہو جائیں گے۔ نہ ملا نہ کرے گا دونوں رہیں گے ، ہاں باقی دس صورتوں میں اندراج کا اثر ان احکام سے ظاہر ہوگا۔

مسئلہ ۳: صورت سوم میں کہ پورا نہا نا درکار ہے اور کُل اعضائے وضو میں حدث ہے جو وضوئے کامل چاہتا اگر نہانے پر قادر نہ ہو کر پانی اتنا نہیں یا نہانا مضر ہے یا نہائے تو نماز کا

وقت جاتا ہے اور وضو کے لئے کافی پانی موجود ہے اور اس سے ضرر بھی نہیں اور وقت میں بھی اُس کے گنجائش ہے بالینمہ وضو نہ کرے صرف تیمم کافی ہے کہ یہ حدث کوئی حکم مستقل نہیں رکھتا۔

مسئلہ ۴: یوں ہی صورت ۶ میں کہ غسلِ کامل درکار ہے اور حدث صرف بعض اعضائے وضو میں کہ فقط تکمیل وضو چاہتا۔ ممکن ہے کہ اُس کے لئے ایک ہی چلو درکار ہوتا اگر اتنے پانی پر قادر ہو جب بھی استعمال نہ کرے صرف تیمم پر قانع ہو۔

مسئلہ ۵: یوں ہی صورت ۹ و ۱۲ میں کہ حدث اگر چاہتا تو تکمیل وضو لیکن جنابت اعضائے وضو کا ایک حصہ اور اُن کے علاوہ سارا بدن دھونا مانگتی ہے اگر اِنہیں وجوہ سے اس پر قدرت نہ ہو اور تکمیلِ وضو کو پانی حاضر اور اُس پر قادر جب بھی صرف تیمم کرے۔ غرض تضاعیف ۳ کی چاروں ۴ صورتیں ایک حکم رکھتی ہیں۔

مسئلہ ۶: باقی ۶ صورتوں ۲-۴-۵-۸-۱۰-۱۱ میں جنابت کے لئے جتنا دھونا درکار ہے

Fatawa Razawiyya, Volume 4

If there is no water or time for it, and the state of minor ritual impurity (hadath), which in the second case requires completion of ablution, has enough water and time available for the remaining parts, and this will only happen when the required purification for major impurity (janabat) is significantly more than what is required for minor impurity, then the ruling for these six cases is also the same: there is no need for ablution and completion; he should perform Tayammum (dry ablution).

It is not mandatory in it, nor in the two cases, to combine purification with water and soil. Rather, what preceded falls away, and he will be one who performs it with Tayammum only, as we previously mentioned from Imam al-Ayni in the first evidence.	**In these and cases 9-12, it is not mandatory to mix purification with water and soil; rather, what has already occurred will lapse, and he will be performing it with Tayammum only, as we presented from Imam al-Ayni in the first evidence. (T)**

Issue 7: In these six cases, regarding what is required for major impurity (janabat), except due to harm—which is apparently not expected in cases four and ten—where one part was previously done due to minor impurity (hadath), and the ability to wash the rest is now assumed because water was found for the required minor impurity and he is capable of washing it, then it did not occur except somewhere. Therefore, it is necessary to perform complete ablution in case four, and in case ten, perform whatever amount is required for major impurity. Here, although the ruling for ablution or completion of ablution is given, it is for major impurity, not minor. And suppose that in this time, harm occurs in those parts of ablution as much as what is required for major impurity is more than what is required for minor impurity, even then permission for Tayammum is not possible because this part is very small compared to the whole body. And in washing, when the area of harm is less than the area without harm, it is not permissible to wash the area without harm and perform Tayammum for the rest, "for that is the forbidden combination, and there is no possibility for the falling away of what preceded due to Tayammum not taking its place because its condition, inability (ajz), is missing" (because this very combination is forbidden, and the possibility of the previous part falling away is not there because Tayammum does not stand in its place due to the lack of its condition—inability. T). Rather, he should wipe (masah) over the area of harm and wash the rest. This ruling applies here; in any case, there is no ablution or completion for minor impurity here either.

Issue 8: In the remaining four cases (2, 5, 8, 11), which are from three consecutive intervals, it should be seen whether the amount of the body already washed plus what he is now capable of washing from the rest is more, or if what is now to be washed for major impurity besides that is more. In the first case, he should wipe (masah) over the area of harm and wash what remains, and in the second case, perform Tayammum. Wudu and completion due to minor impurity are not here either. The detail is that the parts of ablution, all or some, which were not washed during minor impurity—which is called "required minor impurity"—ability over that much is already admitted as mentioned before (as it passed. T), and whatever part of the body has already been washed after major impurity, its task is also finished; of this total...

फ़तावा रज़विया, खंड 4

यदि इसके लिए पानी या समय नहीं है और लघु अशुद्धि (हदस) जिसके लिए दूसरे मामले में वुज़ू को पूरा करने की आवश्यकता है, उसके लिए पर्याप्त पानी और समय उपलब्ध है, और यह तभी होगा जब बड़ी अशुद्धि (जनाबत) के लिए आवश्यक शुद्धिकरण लघु अशुद्धि के लिए आवश्यक शुद्धिकरण से काफी अधिक हो, तो इन छह मामलों में भी वही नियम है कि वुज़ू और उसे पूरा करने की आवश्यकता नहीं है, वह तयम्मुम (सूखा वुज़ू) करे।

और इसमें और दो स्थितियों में जल और मिट्टी से शुद्धिकरण का मेल अनिवार्य नहीं है। बल्कि, जो पहले हो चुका है वह गिर जाता है और वह केवल तयम्मुम के साथ अदायगी करने वाला होगा, जैसा कि हमने पहले साक्ष्य में इमाम ऐनी के हवाले से पेश किया।

इनमें और सूरत 9-12 में पवित्रता को पानी और मिट्टी से मिलाना ज़रूरी नहीं है, बल्कि जो पहले हो चुका है वह खत्म हो जाएगा और वह सिर्फ तयम्मुम से अदा करने वाला होगा, जैसा कि हमने पहली दलील में इमाम ऐनी के हवाले से पेश किया। (त)

मसाला 7: इन छह स्थितियों में, बड़ी अशुद्धि (जनाबत) के लिए आवश्यक चीज़ों में, सिवाय नुकसान के कारण होने के—जो ज़ाहिर तौर पर चौथी और दसवीं स्थिति में अपेक्षित नहीं है—जिसमें एक हिस्सा पहले लघु अशुद्धि के कारण हो चुका था और बाकी को धोने की क्षमता अब मान ली गई है क्योंकि लघु अशुद्धि के लिए पानी मिल गया है और वह उसे धोने में सक्षम है, तो यह कहीं और नहीं हुआ। इसलिए ज़रूरी है कि चौथी सूरत में पूरा वुज़ू और दसवीं सूरत में उतना ही किया जाए जितना जनाबत के लिए आवश्यक है। यहाँ यद्यपि वुज़ू या वुज़ू पूरा करने का आदेश हुआ है, लेकिन वह हदस के लिए नहीं बल्कि जनाबत के लिए है। और मान लीजिए कि इतने समय में वुज़ू के अंगों के उस हिस्से में इतना नुकसान हो गया जितना जनाबत के लिए अपेक्षित चीज़ हदस के लिए अपेक्षित चीज़ से अधिक है, तब भी तयम्मुम की अनुमति नहीं दी जा सकती क्योंकि यह हिस्सा पूरे शरीर के लिहाज़ से बहुत कम है। और ग़ुस्ल में जब नुकसान वाली जगह बिना नुकसान वाली जगह से कम हो, तो यह जायज़ नहीं है कि बिना नुकसान वाली जगह को धोया जाए और बाकी के लिए तयम्मुम किया जाए, "क्योंकि यही वह निषिद्ध संयोजन है, और पहले जो हो चुका है उसके गिरने की कोई संभावना नहीं है क्योंकि तयम्मुम उसकी जगह नहीं ले पा रहा है क्योंकि उसकी शर्त - असमर्थता (अज्ज़) - का अभाव है" (क्योंकि यही मेल वर्जित है और पहले वाले के गिरने की संभावना नहीं है क्योंकि तयम्मुम अपनी शर्त - असमर्थता - की कमी के कारण उसके स्थान पर नहीं है। त)। बल्कि नुकसान वाली

जगह पर मसह (पोंछना) करे और बाकी को धोए। यही नियम यहाँ भी है, किसी भी स्थिति में यहाँ भी हदस के लिए वुज़ू या उसे पूरा करना नहीं है।

मसाला 8: बाकी चार स्थितियों 2, 5, 8, 11 में, जो तीन निरंतर अंतरालों से हैं, यह देखा जाना चाहिए कि शरीर का जितना हिस्सा धोया जा चुका है और बाकी में से जितने को धोने की क्षमता है, यह कुल योग अधिक है या इसके अलावा अब जो जनाबत के लिए धोना है वह अधिक है। पहली स्थिति में नुकसान वाली जगह पर मसह करे और जो बाकी रह जाए उसे धोए, और दूसरी स्थिति में तयम्मुम करे। वज़ू और पूरक यहाँ भी नहीं हैं। इसका विवरण यह है कि वुज़ू के अंग, पूरे या कुछ, जितने हदस में नहीं धोए गए—जिन्हें 'मतलूब-ए-हदस' कहा जाता है—उतने पर क्षमता तो मानी जा चुकी है जैसा कि पहले बताया गया (जैसा कि बीत चुका। त), और जनाबत के बाद शरीर का जितना हिस्सा धोया जा चुका है उसका काम भी निपट गया, इस कुल का...

اگر اس کے لیے پانی یا وقت نہیں اور حدث کہ دوم میں وضو باقیوں میں تکمیل چاہتا اس کے لئے پانی اور وقت کافی موجود ہیں اور یہ اسی وقت ہو گا کہ مطلوب جنابت مطلوب حدث سے زیادہ معتد بہا رکھتا ہو جب تو ان چھ کا بھی وہی حکم ہے کہ وضو و تکمیل کی حاجت نہیں تیمم کرے۔

ولا یلزم فیھا ولا فی الصورتین و تلفیق الطھارت من ماء و تراب بل یسقط ما تقدم ویکون مؤدیا بالتیمم فقط کما قدمنا عن الامام العینی فی الدلیل الاول۔

ان میں اور صورت ۹- ۱۲ میں طہارت کو پانی اور مٹی سے خلط کرنا لازم نہیں آتا بلکہ پہلے جو ہو چکا ساقط ہو جائے گا اور وہ صرف تیمم سے ادا کرنے والا ہوگا، جیسا کہ دلیل اول میں امام عینی کے حوالے سے ہم نے پیش کیا۔ (ت)

مسئلہ ۷: ان چھ صورتوں میں مطلوب جنابت سے بجز بوجہ ضرر ہو نا ظاہراً صورت چہارم و دہم میں متوقع نہیں کہ اس میں سے ایک حصہ پہلے بوجہ حدث ہو چکا تھا اور باقی کو دھونے پر قدرت اب مفروض ہے کہ مطلوب حدث کے لئے پانی پایا اور اس کے دھونے پر قادر ہے تو بجز کہیں نہ ہوا لہذا ضرور ہے کہ صورت چہارم میں پورا وضو اور دہم میں جس قدر مطلوب جنابت سے بجالائے یہاں اگرچہ وضو یا تکمیل وضو کا حکم ہوا مگر نہ حدث بلکہ جنابت کے لئے۔ اور اگر فرض کیجئے کہ اتنی دیر میں اس حصہ اعضائے وضو میں ضرر پیدا ہو گیا جتنا مطلوب جنابت میں مطلوب حدث سے زائد ہے اور تیمم کی اجازت اب بھی نہیں ہو سکتی کہ یہ حصہ سارے بدن کے لحاظ سے بہت کم ہے اور غسل میں جب محل ضرر غیر محل ضرر سے کم ہو یہ جائز نہیں کہ غیر محل ضرر کو دھوئے اور باقی کے لئے تیمم کرے فانہ ہو التلفیق الممنوع ولا امکان لسقوط ما تقدم لعدم قیام التیمم مقامہ لفقد شرطہ العجز (کیونکہ یہی تلفیق ممنوع ہے اور سابق

کے ساقط ہونے کا امکان نہیں اس لیے کہ تیمم اپنی شرط عجز۔ کے فقدان کی وجہ سے اس کے قائم مقام نہیں۔ ت) بلکہ محل ضرر پر مسح کرے باقی دھوئے۔ یہی حکم یہاں سے بہر حال حدث کے لئے وضو یا تکمیل یہاں بھی نہیں۔

مسئلہ ۸: باقی چار صورتوں ۲۔ ۵۔ ۸۔ ۱۱ میں کہ تین کہ فصل متوالی سے ہیں نظر کی جائے کہ جتنا بدن دھو چکا اور باقی میں سے جتنے کے دھونے پر قدرت ہے یہ مجموعہ زائد ہے یا اس کے علاوہ اب جو جنابت کے لئے دھونا ہے وہ زیادہ ہے۔ بر تقدیر اول محل ضرر پر مسح کرے اور جو باقی رہ جائے اسے دھوئے اور بر تقدیر دوم تیمم۔ وضو و تکمیل بوجہ حدث یہاں بھی نہیں اسکی تفصیل یہ ہے کہ اعضائے وضو کل یا بعض جس قدر حدث میں نہ دھوئے گئے کہ ان کا نام مطلوب حدث ہے اتنے پر قدرت تو مانی ہوئی ہے کما تقدم (جیسا کہ گزرا۔ ت) اور جتنا بدن بعد جنابت دھل چکا اس کا کام بھی فارغ ہو گیا اس مجموعہ کا

Fatawa Razawiyya, Volume 4

...keep it named according to capacity. Apart from what is required for minor impurity (hadath), whatever is required for major impurity (janabat), i.e., what needs to be washed now, make that the second group. Look at the ratio of increase or decrease between them. In the second case, all parts of Wudu and some of the rest of the body were required for janabat; this became the other group. And all parts of Wudu were required for hadath, and some other remaining parts of the body had already been washed; this is the first group. All parts of Wudu are common to both groups. After excluding the common parts, look at the ratio between the two remaining parts of the body. If what has already been washed is more, then perform Wudu, not for hadath but for janabat, and wipe (masah) over the part of the remaining body that was not washed. If the unwashed part is more, then perform tayammum.

Issue 9: Similarly, in the eighth case, some parts of Wudu had already been washed for both janabat and hadath, and some that remained were common to both required for hadath and janabat. Therefore, the ratio will be considered between the two parts of the remaining body: washed and unwashed. If the washed part is more, complete the Wudu, not for hadath but for janabat, and wipe over the remaining required part for janabat. If the unwashed part is more, then perform tayammum.

Issue 10: In the fifth case, required for hadath are some parts of Wudu, and in required for janabat it is the whole. So those parts of Wudu that were not washed in hadath are excluded due to commonality. Whatever was already washed will be included in the capacity. So, the parts washed for hadath and the previously washed parts from the rest of the body become one group, and the unwashed part of the rest of the body becomes the second group. If the first group is more, perform Wudu, not for hadath but for janabat, and wipe over the remaining required part for janabat. If the second is more, perform tayammum. Yes, if in this time harm occurs in the part washed for hadath, it will be included in the second group. Now if the first group is more, wash the parts of Wudu that were not washed in hadath, for the purpose of janabat, not due to hadath, and wipe over those parts that were already washed and the unwashed part of the rest of the body. If the second group is more, then perform tayammum.

Issue 11: In the 11th case, what is required for hadath, which are some parts of Wudu along with addition, are included in what is required for janabat. So what is required

for hadath is excluded as it is common. And the parts washed for hadath remain included in the capacity. So, for those and the remaining unwashed body, perform wiping for janabat. And if the second group is more, then perform tayammum. However, if the part washed for hadath that was not washed for janabat develops new harm, it will also be included in the second group. If the first group is more, then wipe over that piece and the unwashed part of the rest of the body and wash the required part for hadath for the purpose of janabat, otherwise perform tayammum.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4

...नाम मक़दूर (सामर्थ्य) रखे और मतलूब-ए-हदस (अशुद्धि के लिए आवश्यक) के अलावा जितना मतलूब-ए-जनाबत (अपवित्रता के लिए आवश्यक) यानी उसमें धोना अब दरकार है उसे दूसरा फ़रीक़ (पक्ष) कीजिये उनमें कमी बेशी (कमी या अधिकता) की निस्बत (अनुपात) देख ली जाए। सूरत-ए-दोम (दूसरी स्थिति) में तमाम आज़ा-ए-वज़ू और बाज़ बाक़ी बदन मतलूब-ए-जनाबत थी यह फ़रीक़-ए-दीगर (दूसरा पक्ष) हुआ और तमाम आज़ा-ए-वज़ू मतलूब-ए-हदस था और बाज़ दीगर बाक़ी बदन धुल चुका यह फ़रीक़-ए-अव्वल (पहला पक्ष) है। तमाम आज़ा-ए-वज़ू दोनों फ़रीक़ों में मुश्तरक (साझा) हैं। मुश्तरक साक़ित (निरस्त) करके बाक़ी बदन के दोनों में निस्बत देख ली जाए जो धुल चुका वो ज़्यादा है तो वज़ू करे न हदस बल्कि जनाबत के लिए और बाक़ी बदन से जितना न धुला था उस पर मसह करे और अगर जितना न धुला था वो ज़्यादा है तो तयम्मुम।

मसअला 9: यूँही सूरत-ए-हशतुम (आठवीं स्थिति) में बाज़ आज़ा-ए-वज़ू तो जनाबत व हदस दोनों से धुल चुके थे और बाज़ कि बाक़ी थे मतलूब-ए-हदस व मतलूब-ए-जनाबत दोनों में मुश्तरक थे लिहाज़ा बाक़ी ही बदन के दोनों हिस्सा मग़सूल (धुला हुआ) व ग़ैर-मग़सूल (अनधुला) में निस्बत मलहूज़ (ध्यान में) होगी। मग़सूल ज़्यादा है तो तकमील-ए-वज़ू (वज़ू पूरा) करे न हदस बल्कि जनाबत के लिए और बाक़ी मतलूब-ए-जनाबत पर मसह और ग़ैर-मग़सूल ज़्यादा है तो तयम्मुम।

मसअला 10: सूरत-ए-पंजुम (पाँचवीं स्थिति) में मतलूब-ए-हदस बाज़ आज़ा-ए-वज़ू हैं और मतलूब-ए-जनाबत में कुल (पूरे)। तो वो आज़ा-ए-वज़ू कि हदस में न धुले थे बवजह-ए-इश्तिराक (साझेपन के कारण) साक़ित हुए और जितने धुल चुके थे मक़दूर में शामिल होंगे तो मग़सूल-ए-हदस और बाक़ी बदन से मग़सूल-ए-साबिक़ ये दोनों एक फ़रीक़ हुए और बाक़ी बदन का ग़ैर-मग़सूल दूसरा फ़रीक़। अगर फ़रीक़-ए-अव्वल ज़ायद (ज़्यादा) है वज़ू करे न हदस बल्कि जनाबत के लिए और बाक़ी मतलूब-ए-जनाबत पर मसह और अगर दोम (दूसरा) ज़ायद है तयम्मुम। हाँ अगर इतनी देर में मग़सूल-ए-हदस में ज़रर (नुकसान/चोट) पैदा हो गया तो ये फ़रीक़-ए-दोम में शामिल होगा अब अगर पहला फ़रीक़ ज़ायद हो तो आज़ा-ए-वज़ू से जिस क़दर हदस में न धुले थे अब धोए ब-ग़रज़-ए-जनाबत (जनाबत के उद्देश्य से) न बवजह-ए-हदस और जितने धुल चुके थे उन पर और बाक़ी बदन के ग़ैर-मग़सूल पर मसह। और दूसरा फ़रीक़ ज़्यादा हो तो तयम्मुम।

मसअला 11: सूरत-ए-11 में मतलूब-ए-हदस कि बाज़ आज़ा-ए-वज़ू हैं मय ज़ियादत-ए-दाख़िल-ए-मतलूब-ए-जनाबत हैं तो मतलूब-ए-हदस मुश्तरक हो कर साक़ित हुआ और मग़सूल-ए-हदस बदस्तूर शामिल-ए-मक़दूर तो वो और बाक़ी बदन न धुले उन्हें जनाबत के लिए और बाक़ी बदन के लिए ग़ैर-मग़सूल पर मसह और फ़रीक़-ए-दोम ज़्यादा है तो तयम्मुम मगर ये कि मग़सूल-ए-हदस का जितना टुकड़ा जनाबत में न धुला उसमें ज़रर ताज़ा पैदा हुआ तो वो भी फ़रीक़-ए-दोम में शामिल होगा। अगर फ़रीक़-ए-अव्वल ज़्यादा हो तो उस टुकड़े और बाक़ी बदन के ग़ैर-मग़सूल पर मसह करे और मतलूब-ए-हदस ब-ग़रज़-ए-जनाबत धोए वरना तयम्मुम।

पृष्ठ 280/761

جلد چہارم فتاوی رضویہ نام مقدور رکھے اور مطلوبِ حدث کے علاوہ جتنا مطلوبِ جنابت یعنی اُس میں دھونا اب درکار ہے اسے دوسرا فریق کیجئے ان میں کمی بیشی کی نسبت دیکھ لی جائے صورت دوم میں تمام اعضائے وضو اور بعض باقی بدن مطلوب جنابت تھی یہ فریق دیگر ہوا اور تمام اعضائے وضو مطلوبِ حدث تھا اور بعض دیگر باقی بدن دھل چکا یہ فریق اول تمام اعضائے وضو دونوں فریقوں میں مشترک ہیں مشترک ساقط کرکے باقی بدن کے دونوں میں نسبت دیکھ لی جائے جو دھل چکا وہ زیادہ ہے تو وضو کرے نہ حدث بلکہ جنابت کے لئے اور باقی بدن سے جتنا نہ دھلا تھا اس پر مسح کرے اور اگر جتنا نہ دھلا تھا وہ زیادہ ہے تو تیمم۔

مسئلہ ۹: یونہی صورت ہشتم میں بعض اعضائے وضو تو جنابت وحدث دونوں سے دھل چکے تھے اور بعض کہ باقی تھے مطلوبِ حدث ومطلوبِ جنابت دونوں میں مشترک تھے لہذا باقی ہی بدن کے دونوں حصہ مغسول وغیر مغسول میں نسبت ملحوظ ہوگی مغسول زیادہ ہے تو تکمیلِ وضو کرے نہ حدث بلکہ جنابت کے لئے اور باقی مطلوبِ جنابت پر مسح اور غیر مغسول زیادہ ہے تو تیمم۔

مسئلہ ۱۰: صورت پنجم میں مطلوبِ حدث بعض اعضائے وضو ہیں اور مطلوبِ جنابت میں کل تو وہ اعضائے وضو کہ حدث میں نہ دھلے تھے بوجہ اشتراک ساقط ہوئے اور جتنے دھل چکے تھے مقدور میں شامل ہونگے تو مغسولِ حدث اور باقی بدن سے مغسولِ سابق یہ دونوں ایک فریق ہوئے اور باقی بدن کا غیر مغسول دوسرا فریق اگر فریقِ اول زائد ہے وضو کرے نہ حدث بلکہ جنابت کے لیے اور باقی مطلوبِ جنابت پر مسح اور اگر دوم زائد ہے تیمم۔ ہاں اگر اتنی دیر میں مغسولِ حدث میں ضرر پیدا ہوگیا تو یہ فریق دوم میں شامل ہوگا اب اگر پہلا فریق زائد ہو تو اعضائے وضو سے جس قدر حدث میں نہ دھلے تھے اب دھوئ پہلے بغرضِ جنابت نہ بوجہ حدث اور جتنے دھل چکے تھے ان پر اور باقی بدن کے غیر مغسول پر مسح۔ اور دوسرا فریق زیادہ ہو تو تیمم۔

مسئلہ ۱۱: صورت ۱۱ میں مطلوبِ حدث کہ بعض اعضائے وضو ہیں مع زیادتِ داخلِ مطلوبِ جنابت ہیں تو مطلوبِ حدث مشترک ہو کر ساقط ہوا اور مغسولِ حدث بدستور شامل مقدور تو وہ اور باقی بدن نہ دھلے انہیں جنابت کے لئے اور باقی بدن کے لئے غیر مغسول پر مسح اور فریقِ دوم زیادہ ہے تو تیمم مگر یہ کہ مغسولِ حدث کا جتنا ٹکڑا جنابت میں نہ دھلا اس میں ضرر تازہ پیدا ہوا تو وہ بھی فریقِ دوم میں شامل ہوگا اگر فریقِ اول زیادہ ہو تو اس ٹکڑے اور باقی بدن کے غیر مغسول پر مسح کرے اور مطلوبِ حدث بغرضِ جنابت دھوئے ورنہ تیمم۔

Fatawa-e-Razawiyya Volume Four

Notice: These ratios are based on the assumption that there is harm in all parts except the manageable portion; otherwise, any part where there is no harm will be included in the manageable portion.

Notice: If a portion is not harmful in itself, but washing it necessitates water reaching a harmful area, then it is also considered unmanageable. As scholars have explicitly stated, and Allah the Almighty knows best. (T)

Problem 12: Just as the availability of water for this [minor] ritual impurity at the beginning does not prevent dry ablution (tayammum), similarly if there was no water at all and tayammum was performed, which removed both the major ritual impurity (janabat) and the minor ritual impurity (hadath), and then enough water is found to suffice only for the minor impurity, there is still no need to use it. This tayammum will not break even regarding the minor impurity, because there was no [separate] ruling for the minor impurity; the tayammum was for major impurity and water is not available for that. By the grace of Allah, the Exalted, all these rulings, issues, and magnificent details are characteristics of this Fatawa; you will not find them elsewhere.

[Arabic Text] We have mentioned these out of understanding, and we hope from our Lord for correctness. Praise be to Allah, the Mighty, the Giver. May Allah's peace be upon the Master who returns frequently [to Him], and his family, his companions, and his Ummah until the Day of Judgment.

We have mentioned these for understanding, and we hope from our Lord that we have achieved correctness and rightness. All praise is due to God, the Possessor of Honor, the Most Generous. May the blessings from God the Most High be upon the Master who frequently turns to Him, his family, his companions, and his Ummah until the Day of Judgment. (T)

Problem 13: Independent minor impurity is distinct. For its dry ablution, inability must be seen regarding that specific amount of water which suffices for it. Inability regarding the major impurity (janabat) will not make dry ablution permissible for it. For example, in the ninth case of independence, when one performed wudu, then minor impurity occurred, then performed wudu again but left out one phalange of a finger because water is now required for janabat which would suffice for the whole body besides the limbs of wudu, and for minor impurity only for that phalange. Now,

if one finds only enough water to wash that phalange, one should not think that since dry ablution is required for the whole body, washing one phalange is of no use. If one does this, dry ablution will not be sufficient, and prayer will not be valid. Rather, it is necessary to wash that phalange to be free from the independent minor impurity and then perform dry ablution for the major impurity.

Problem 14: If one found no usable water for either major impurity or independent minor impurity and performed dry ablution such that one was sufficient for both, then this dry ablution...

नोटिस: ये अनुपात इसी आधार पर हैं कि साध्य भाग के अलावा अन्य सभी हिस्सों में नुकसान हो, अन्यथा जिसमें नुकसान नहीं है वह भी साध्य में शामिल होगा।

नोटिस: जिस हिस्से में स्वयं में कोई नुकसान नहीं है, लेकिन उसे धोने से पानी वहां तक पहुँचना आवश्यक हो जाता है जहाँ नुकसान है, तो वह भी असाध्य माना जाएगा। जैसा कि विद्वानों ने स्पष्ट किया है और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। (टी)

मसला 12: जिस तरह शुरुआत में इस [लघु] अशुद्धि के लिए पर्याप्त पानी का होना तैयम्मुम (सूखा वज़ू) को नहीं रोकता, उसी तरह अगर बिल्कुल भी पानी नहीं था और तैयम्मुम कर लिया गया जिससे बड़ी अशुद्धि (जनाबत) और लघु अशुद्धि (हदस) दोनों दूर हो गईं, और अब इतना पानी मिला जो केवल लघु अशुद्धि के लिए पर्याप्त है, तो भी इसके उपयोग की आवश्यकता नहीं है। यह तैयम्मुम लघु अशुद्धि के मामले में भी नहीं टूटेगा क्योंकि लघु अशुद्धि का कोई अलग हुक्म नहीं था; तैयम्मुम जनाबत के लिए था और उसके लिए पानी उपलब्ध नहीं है। अल्लाह के फ़ज़ल से ये सभी अहकाम, मसले और शानदार विवरण इस फ़तावा की विशेषताएँ हैं; ये आपको कहीं और नहीं मिलेंगे।

[अरबी पाठ] हमने इन्हें समझ के लिए उल्लेख किया है, और हम अपने रब से सही होने की आशा करते हैं। प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सर्वशक्तिमान और प्रदाता है। अल्लाह की कृपा हो उस आका पर जो [अल्लाह की ओर] बहुत लौटने वाले हैं, और उनके परिवार, उनके साथियों और उनकी उम्मत पर हिसाब के दिन तक।

हमने ये समझ के लिए बयान किए और हमें अपने रब से उम्मीद है कि हमने सही और दुरुस्त बात पा ली है और तमाम तारीफ़ इज़्ज़त वाले बहुत अता फरमाने वाले खुदा के लिए है। और खुदा-ए-बरतर की तरफ से दरूद हो बहुत रुजू लाने वाले आका, उनकी आल, उनके असहाब और उनकी उम्मत पर रोज़-ए-हिसाब तक। (टी)

मसला 13: स्वतंत्र लघु अशुद्धि (हदस-ए-मुस्तक़िल) स्वतंत्र है। इसके तैयम्मुम के लिए विशेष रूप से उस पानी की अनुपलब्धता देखी जाएगी जो इसके लिए पर्याप्त हो। जनाबत से लाचारी इसके लिए तैयम्मुम को जायज़ नहीं बनाएगी। उदाहरण के तौर पर स्वतंत्रता की नौवीं सूरत में जब वज़ू किया, फिर अशुद्धि हुई, फिर पूरा वज़ू किया लेकिन उंगली का एक पोर छोड़ दिया कि अब जनाबत के लिए इतना पानी चाहिए जो वज़ू के अंगों के अलावा पूरे बदन के लिए काफी हो और लघु अशुद्धि के

लिए केवल उस पोर के लिए। अब अगर उसने केवल इतना पानी पाया कि उस पोर को धो सके, तो यह न सोचे कि जब पूरे बदन के लिए तैयम्मुम करना है तो एक पोर धोने से क्या फर्क पड़ेगा। अगर वह ऐसा करेगा तो तैयम्मुम काफी नहीं होगा, नमाज़ नहीं होगी, बल्कि ज़रूरी है कि उस पोर को धो ले ताकि स्वतंत्र लघु अशुद्धि से फारिग हो जाए और जनाबत के लिए तैयम्मुम करे।

मसला 14: अगर किसी ने जनाबत और स्वतंत्र लघु अशुद्धि के लिए कोई प्रयोग योग्य पानी नहीं पाया और तैयम्मुम किया कि दोनों के लिए एक ही काफी हो गया, तो यह तैयम्मुम...

पृष्ठ 281/761

تنبیہ: یہ نسبتیں اسی تقدیر پر ہیں کہ حصہ مقدور کے علاوہ باقی تمام حصے میں ضرر ہو ورنہ اس میں بھی جتنے میں ضرر نہیں شامل مقدور ہوگا۔

تنبیہ: جتنے حصہ میں فی نفسہ ضرر نہ ہو مگر اس کے دھونے سے پانی وہاں تک پہنچنا لازم ہو جس میں ضرر ہے تو وہ بھی غیر مقدور ہے کما نصوا علیہ واللہ سبحانہ و تعالٰی اعلم (جیسا کہ علمائے اس کی تصریح کی ہے اور خدائے پاک و برتر خوب جاننے والا ہے۔ ت)

مسئلہ ۱۲: جس طرح ابتدا میں اس حدث کے قابل پانی موجود ہونا تیمم کو مانع نہیں یوں ہی اگر پانی اصلاً نہ تھا اور تیمم کر لیا کہ جنابت و حدث دونوں کو رفع کر گیا اب پانی اتنا ملا کہ اس حدث کو کافی ہے جب بھی اس کے استعمال کی حاجت نہیں یہ تیمم حدث کے حق میں بھی نہ ٹوٹے گا کہ حدث کا کوئی حکم نہ تھا تیمم جنابت کا تھا اور اس کے قابل پانی نہیں بفضلہ عزوجل یہ تمام احکام و مسائل و تفصیلات جلائل اس فتاوٰی کے خصائص سے ہیں اس کے غیر میں نہ ملیں گے۔

ذکرناھا تفقھا و نرجو من ربنا اصابۃ الصواب والحمدللہ العزیز الوھاب وصلی اللہ تعالٰی علی السید الاواب و آلہ وصحبہ و امتہ الی یوم الحساب۔ ہم نے یہ تفقہاً بیان کیے اور ہمیں اپنے رب سے امید ہے کہ صواب و درستی کو ہم نے پالیا اور تمام تعریف عزت والے بہت عطا فرمانے والے خدا کے لئے ہے۔ اور خدائے برتر کی طرف سے درود ہو بہت رجوع لانے والے آقا، ان کی آل، ان کے اصحاب اور ان کی امت پر روزِ حساب تک۔ (ت)

مسئلہ ۱۳: حدث مستقل مستقل ہے اس کے لئے تیمم میں خاص اس پانی سے عجز دیکھا جائے گا جو اس کے لئے کافی ہو مطلوب جنابت سے عجز اس کے لئے تیمم جائز نہ کرے گا مثلاً استقلال

کی صورت نہم میں جب نے وضو کیا پھر حدث ہوا پھر سارا وضو کیا مگر ایک انگلی کی ایک پور چھوڑ دی کہ اب جنابت کے لئے اتنا پانی درکار ہے جو اعضائے وضو کے علاوہ جمیع بدن کو کافی ہو اور حدث کے لئے صرف اس پور کو۔ اب اس نے اگر صرف اتنا پانی پایا کہ اس پور کو دھو سکے تو یہ خیال نہ کرے کہ اس سارے بدن کے لئے تو تیمم کرنا ہے ایک پور دھونا کیا ضرر اور ایسا کرے گا تو تیمم کافی نہ ہوگا نماز نہ ہوگی بلکہ ضرور ہے کہ اس پور کو دھو لے کہ حدث مستقل سے فارغ ہو جائے جنابت کے لئے تیمم کرے۔

مسئلہ ۱۴: اگر جنابت و حدث مستقل کسی کے قابل پانی نہ پایا اور تیمم کیا کہ دونوں کے لئے ایک ہی کافی ہوا یہ تیمم

Volume Four Fatawa Rizvia

...will remain bound by its separate condition. If so much water is found that is sufficient for minor impurity (hadath) but not sufficient for major impurity (janabat), the dry ablution (tayammum) will break regarding the minor impurity and washing it will be mandatory. This is contrary to the case of problem 12, where tayammum was identical in both form and meaning; hence, for minor impurity, it would not be nullified by water unless it is sufficient for major impurity.

Problem 15: Even if purification from major impurity was attained through tayammum and no part was washed with water, any minor impurity that occurs afterward will be completely and absolutely independent. This is because major impurity has been removed; what does it mean to include something existing into something non-existent? For example, if bathing is harmful to a patient but wudu (ablution) is not, and they had both major and minor impurity for which the command was only tayammum, they performed tayammum. Now, if minor impurity occurs again and they think, "Since tayammum was sufficient for me for minor impurity as well, I should perform tayammum again," this cannot happen. For major impurity, they have already performed tayammum, and it will not break due to minor impurity unless major impurity occurs again. Now, if they perform tayammum for major impurity, it is futile; and if they perform it for minor impurity, they are capable of performing wudu, so how can they perform tayammum? Therefore, wudu is mandatory.

Problem 16: Yes, if a person in a state of major ritual impurity (junub) did not find water and performed tayammum, then minor impurity occurred, then they found water sufficient for major impurity but did not use it, so the tayammum broke and major impurity returned. Now, this will be a situation of the gathering of major and minor impurity. According to where both are located, the same forms of inclusion (indiraaj) and independence (istiqlal) will apply as found in them. For instance, if they had only performed tayammum for major impurity, then minor impurity occurred, then major impurity returned, it is now over the entire body, which includes the limbs of wudu. Therefore, the minor impurity that was independent is now included. Thus, the use of water sufficient only for wudu will not be mandatory for them. And if they had performed wudu after major impurity, then water became unavailable and they performed tayammum, then minor impurity occurred, then major impurity returned, now this minor impurity will remain independent because major impurity did not remain in the limbs of wudu, and it will return only as much as remained. And so on

(and judge accordingly - T). Similarly, if minor impurity occurs after this return of major impurity, it will follow these details and rulings. If after major impurity and the return of major impurity to the wudu limbs, nothing was washed at either time, the minor impurity will be fully included. If they had performed wudu before or now, and then minor impurity occurred, it will be completely independent. If some wudu limbs were washed, it will be independent to that extent and included in the rest.

And Allah, Glorified and Exalted, knows best, and His knowledge, may His glory be magnified, is most perfect and most firm. And may Allah Exalted send blessings upon our leader and master Muhammad, the noble and generous Prophet, the kind and compassionate Beloved, the most merciful of the merciful, and upon his family and companions, the leaders of nations, our guides who lead us toward the right path.

जिल्द चौथी (Volume 4) फ़तावा रज़विया

...अपनी अलग शर्त का पाबंद रहेगा। अगर इतना पानी मिल जाए जो ह़दथ (लघु अशुद्धि) के लिए पर्याप्त है और जनाबत (गुरु अशुद्धि) के लिए पर्याप्त नहीं है, तो ह़दथ के संबंध में तयम्मुम टूट जाएगा और उसे धोना अनिवार्य होगा। यह मसला 12 के विपरीत है जिसमें तयम्मुम रूप और अर्थ दोनों में समान था; इसलिए ह़दथ के लिए पानी पर्याप्त होने से वह तब तक नहीं जाएगा जब तक कि वह जनाबत के लिए पर्याप्त न हो।

मसला 15: जनाबत की पाकी चाहे तयम्मुम से हुई हो और पानी से कोई हिस्सा न धोया गया हो, उसके बाद जो ह़दथ होगा वह पूरी तरह से स्वतंत्र रहेगा। क्योंकि जनाबत दूर हो चुकी है; मौजूद चीज़ को गैर-मौजूद में शामिल करने का क्या अर्थ है? उदाहरण के लिए, किसी बीमार को नहाना हानिकारक है लेकिन वज़ू हानिकारक नहीं है, उसे जनाबत और ह़दथ दोनों हुए थे और उसके लिए केवल तयम्मुम का आदेश था, उसने तयम्मुम कर लिया। अब फिर ह़दथ हुआ और वह यह सोचे कि "मुझे ह़दथ के लिए भी तयम्मुम ही काफी था, अब भी तयम्मुम कर लूँ," तो यह नहीं हो सकता। जनाबत के लिए तो वह तयम्मुम कर चुका है, वह ह़दथ से नहीं टूटेगा जब तक दोबारा जनाबत न हो। अब अगर वह तयम्मुम जनाबत के लिए करता है तो वह व्यर्थ है, और अगर ह़दथ के लिए करता है तो वह वज़ू करने में समर्थ है, तो वह तयम्मुम कैसे कर सकता है? अंततः वज़ू अनिवार्य है।

मसला 16: हाँ, अगर जुनुब (जिस पर नहाना अनिवार्य हो) ने पानी न मिलने पर तयम्मुम किया, फिर ह़दथ हुआ, फिर जनाबत के योग्य पानी पाया और उपयोग नहीं किया तो तयम्मुम टूट गया और जनाबत वापस आ गई। अब यह जनाबत और ह़दथ के एकत्र होने की स्थिति होगी। दोनों कहाँ-कहाँ हैं, इस आधार पर समावेशन (इन्दिराज) और स्वतंत्रता (इस्तिक़्लाल) के वही रूप लागू होंगे जो उनमें पाए जाएँगे। उदाहरण के लिए, यदि केवल जनाबत के लिए तयम्मुम किया था, फिर ह़दथ हुआ, फिर जनाबत लौट आई, तो अब यह पूरे शरीर में है जिसमें वज़ू के अंग भी शामिल हैं। अतः ह़दथ जो स्वतंत्र था, अब शामिल हो गया। इसलिए केवल वज़ू के योग्य पानी का उपयोग उसके लिए अनिवार्य नहीं होगा। और यदि जनाबत के बाद वज़ू कर लिया था, फिर पानी नहीं रहा और तयम्मुम किया, फिर ह़दथ हुआ, फिर जनाबत लौटी, तो अब यह ह़दथ स्वतंत्र ही रहेगा क्योंकि वज़ू के अंगों में जनाबत नहीं रही और वह उतनी ही लौटेगी जितनी शेष रही थी। और इसी पर अन्य स्थितियों का अनुमान लगाया जाए (त)। इसी प्रकार यदि इस जनाबत की वापसी के बाद ह़दथ हुआ, तो वह इन्हीं विवरणों और नियमों पर रहेगा। यदि जनाबत और वज़ू के अंगों में जनाबत की वापसी के बाद दोनों

समय कुछ भी नहीं धोया था, तो ह़दथ पूरी तरह शामिल हो जाएगा। और यदि पहले या अब वज़ू कर लिया था, उसके बाद ह़दथ हुआ, तो वह पूरी तरह स्वतंत्र रहेगा। और अगर वज़ू के कुछ अंग धो लिए थे, तो उस सीमा तक स्वतंत्र और शेष में शामिल रहेगा।

अल्लाह सुब्हानहु व तआला सबसे बेहतर जानता है, और उसका ज्ञान बहुत पूर्ण और दृढ़ है। और अल्लाह तआला हमारे आका और मौला मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजे, जो करम वाले नबी, मेहरबान हबीब और रहम करने वाले हैं, और उनकी आल (वंश) और असहाब (साथियों) पर जो कौमों के सरदार और हमें सीधे रास्ते की ओर ले जाने वाले हमारे मार्गदर्शक हैं।

पृष्ठ 282/761

جدا جدا اپنی شرط کا پابند رہے گا اگر اتنا پانی پایا کہ حدث کو کافی ہے اور جنابت کو کافی نہیں حدث کے حق میں تیمم ٹوٹ جائے گا اسے دھونا لازم ہوگا۔ بخلاف صورت مسئلہ ۱۲ کہ اس میں تیمم صورۃً و معنیً ہر طرح ایک تھا تو حدث کے لئے کافی پانی سے نہ جائے گا جب تک جنابت کو کافی نہ ہو۔ مسئلہ ۱۵: جنابت کی تطہیر اگرچہ تیمم سے ہوئی ہو پانی سے کوئی حصہ نہ دھویا ہو اس کے بعد جو حدث ہوگا وہ تمام و کمال مطلقاً مستقل رہے گا کہ جنابت رفع ہو چکی معدوم میں موجود کا اندراج کیا معنی مثلاً کسی مریض کو نہانا مضر ہے وضو مضر نہیں اُسے جنابت ہوئی اور حدث بھی اسے فقط تیمم کا حکم تھا تیمم کر لیا اب پھر حدث ہوا اور وہ یہ خیال کرے کہ مجھے تو حدث کے لئے بھی تیمم ہی کافی ہوا تھا اب بھی تیمم کر لوں یہ نہیں ہو سکتا کہ جنابت کے لئے تو تیمم کر چکا وہ حدث سے نہ ٹوٹے گا جب تک دوبارہ جنابت نہ ہو اب اگر یہ تیمم جنابت کے لئے کرتا ہے لغو ہے اور اگر حدث کے لئے کرتا ہے تو وضو پر تو وہ قادر ہے اس کے لئے تیمم کیسے کر سکتا ہے لاجرم وضو لازم ہے۔ مسئلہ ۱۶: ہاں اگر جنب نے پانی نہ پا کر تیمم کیا پھر حدث ہوا پھر قابل جنابت پانی پایا اور استعمال نہ کیا کہ تیمم ٹوٹ گیا اور جنابت عود کر آئی اب یہ صورت اجتماع جنابت و حدث کی ہوگی اور دونوں کہاں کہاں ہیں اس کے لحاظ سے وہی صور اندراج و استقلال جاری ہوں گی جو ان میں سے پائی جائے مثلاً جنابت کے لئے صرف تیمم کیا تھا پھر حدث ہوا پھر جنابت پلٹی تو اب یہ سارے بدن میں ہے جس میں اعضائے وضو بھی داخل لہٰذا حدث کہ مستقل تھا اب مندرج ہو گیا اور فقط قابلِ وضو پانی کا استعمال اُسے ضرور نہ ہو گا اور اگر بعد جنابت وضو کر لیا تھا پھر پانی نہ رہا تیمم کیا پھر حدث ہوا پھر جنابت پلٹی تو اب یہ حدث مستقل ہی رہے گا کہ اعضائے وضو میں جنابت نہ رہی اور پلٹے گی اتنی ہی جتنی باقی رہی تھی

وقس علیہ (اور اسی پر قیاس کیا جائے۔ ت) یوں ہی اگر اس عودِ جنابت کے بعد حدث ہوا تو انہیں تفاصیل و احکام پر رہے گا اگر بعد جنابت و عودِ اعضائے وضو سے دونوں وقت کچھ نہ دھویا تھا حدث بتمامہ مندرج ہو جائے گا اور اگر پہلے یا اب وضو کر لیا تھا اس کے بعد حدث ہوا بالکلیہ مستقل رہے گا اور اگر بعض اعضائے وضو دھو لئے تھے تو اس قدر میں مستقل باقی میں مندرج۔ واللہ سبحنہ وتعالی اعلم * وعلمہ جل مجدہ اتم * واحکم * وصلی اللہ تعالیٰ علی سیدنا ومولنا محمد النبي الكريم الاكرام * الحبيب الرؤف الرأف الرحيم الارحم * وعلی آلہ وصحبہ سادۃ الامم * قادتنا اور خدائے پاک و برتر خوب جاننے والا ہے اور اس کا علم بہت تام اور محکم ہے اس کا مجد جلیل ہے۔ اور خدائے برتر درود نازل فرمائے ہمارے آقا و مولیٰ محمد نبی کریم اکرم، حبیب مہربان، مہربان تر، رحیم ارحم پر اور ان کی آل و اصحاب سرداران اقوام پر جو راہِ راست کی جانب ہماری قیادت کرنے والے

Fatawa Razawiya Volume Four To the straight path, and his descendants, his followers, and his community. And grant blessings and peace forever and ever. And all praise belongs to Allah, the Lord of all the worlds. [They] are, and upon his children, his group and his community; and may He also bestow blessings and peace [upon them] forever and ever, and all praise is for God, the Master of all the worlds. (T) www.dawateislami.net I.T. Majlis of Dawat-e-Islami Page 283 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी सीधे रास्ते की ओर, और उनकी संतान, उनके अनुयायियों और उनके समुदाय पर। और उन पर हमेशा-हमेशा के लिए बरकत और शांति भेजें। और सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का पालनहार है। ...हैं और उनके बच्चों, उनके समूह और उनके समुदाय पर; और उन पर हमेशा-हमेशा बरकत और सलाम भी भेजे। और समस्त प्रशंसा सारे संसार के मालिक खुदा के लिए है। (त) www.dawateislami.net आई.टी. मजलिस-ए-दावत-ए-इस्लामी पृष्ठ ७६१ में से २८३

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم الی الطریق الامم وابنہ وحزبہ وامتہ وبارک وسلم ابد الابدین والحمد للہ رب العلمین ہیں اور ان کے فرزند ،ان کے گروہ وان کی امت پر اور برکت و سلام سے بھی نوازے ہمیشہ ہمیشہ ،اور تمام تعریف سارے جہانوں کے مالک خدا کے لئے ہے۔ (ت)

www.dawateislami.net آئی ٹی مجلسِ دعوتِ اسلامی صفحہ 283 از 761

Volume Four Fatawa Razawiyya

Treatise Majla-ush-Shama'ati li Jami'i Hadathin wa Lum'atin 1336 AH (An illuminating flame concerning the one who has Hadath and Lum'ah) In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful

[Table Content] Arabic: All praise is due to Allah, Who polished the candle—the candle of Islam—with the most complete light; a praise free from ostentation and the desire for fame. When He manifested the lights of the Eid of Friday, and through His light, opened the sight and hearing of the believer. And He completed, through His manifestation, the uprooting and suppression of all misguidance. May Allah Almighty send blessings, increase, and peace upon him forever—blessings and peace and benedictions that encompass his kin and unite his assembly. Amen. Allah.

Urdu Translation: All praise is for God, Who lit the candle, causing the candle of Islam to shine with full radiance. Such praise as is pure from show and fame, because He revealed the lights of that Being Who made Friday an Eid and through Whose light He opened the believer's sight and hearing, and through Whose manifestation He completely uprooted and suppressed every misguidance. May there be blessings, peace, and benediction from God the Most High upon that Being—such blessings and peace and such benedictions that are general for all the people of the Holy Prophet (peace be upon him) and comprehensive for his entire community. O Allah, accept it. (T)

In the treatise 'al-Tulbatul Badi'ah,' the issue of 'Lum'ah' (a dry spot left during washing) was mentioned, and it contains many details that will not be found in books. These lines are in their explanation, and success is from Allah (and this is by the grace of Allah Almighty. T): A person in a state of major ritual impurity (Junub) washed part of the body, and some remained [dry] because the water was used up. Then a minor ritual impurity (Hadath) occurred, which necessitates wudu (ablution). Now, whatever water is found, it should be used for wudu and to remove the ritual impurity in...

जिल्द चौथी फ़तावा रज़विया

रिसाला (लघु ग्रंथ) मज्ला-उश-शमअति लि जामिइ हदसिन व लुमअति १३३६ हिजरी (हदस और लुमअ रखने वाले से संबंधित रौशन शमअ) अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत दयालु और कृपाशील है।

[तालिका सामग्री] अरबी: तमाम प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिसने शमअ को चमकाया—इस्लाम की शमअ को सबसे पूर्ण चमक के साथ—ऐसी प्रशंसा जो दिखावे और प्रसिद्धि की इच्छा से मुक्त हो। जब उसने जुमे की ईद के नूर ज़ाहिर किए, और अपने नूर से मोमिन की दृष्टि और श्रवण को खोला। और उसने अपने प्रकटीकरण के माध्यम से हर गुमराही को उखाड़ फेंका और दबा दिया। अल्लाह तआला उन पर हमेशा दरूद, बरकत और सलाम भेजे—ऐसा दरूद, सलाम और बरकत जो उनके परिजनों को घेरे और उनकी पूरी जमात को एकजुट करे। आमीन। अल्लाह।

उर्दू अनुवाद: तमाम हम्द (प्रशंसा) खुदा के लिए है जिसने शमअ रौशन की, इस्लाम की शमअ को भरपूर चमक के साथ जलवागर किया। ऐसी हम्द जो रिया (दिखावा) और सुमअ (प्रसिद्धि) से पाक हो, क्योंकि उसने उस ज़ात के नूर ज़ाहिर किए जिसने जुमे को ईद बनाया और जिसके नूर से मोमिन की आँखों और कानों की शक्ति खोली, और जिसके ज़ुहूर से हर गुमराही का मुकम्मल तौर पर खात्मा किया। उस ज़ात पर अल्लाह तआला की तरफ से दरूद, बरकत और सलाम हो, ऐसा दरूद-ओ-सलाम और ऐसी बरकतें जो हुज़ूर के सभी लोगों के लिए आम हों और उनकी पूरी जमाअत के लिए व्यापक हों। ऐ अल्लाह, कबूल फरमा। (त)

रिसाला 'अत-तुलबतुल बदीअह' में मसला-ए-लुमअ (वज़ू या ग़ुस्ल के दौरान शरीर का कोई हिस्सा सूखा रह जाना) का ज़िक्र आया और इसमें बहुत सी तफ़सीलात हैं जो किताबों में नहीं मिलेंगी। उनके बयान में ये पंक्तियाँ हैं, और कामयाबी अल्लाह की तरफ से है (और यह अल्लाह तआला की तौफीक से है। त): एक जुनुब (जिस पर ग़ुस्ल वाजिब हो) ने शरीर का कुछ हिस्सा धोया और कुछ रह गया क्योंकि पानी खत्म हो गया, फिर हदस (छोटा नापाकी का कारण) हुआ जिससे वज़ू लाज़िम हो जाता है। अब जो पानी मिले उसे वज़ू और रफ़-ए-हदस (नापाकी दूर करने) में...

पृष्ठ २८४/७६१

جلد چہارم فتاویٰ رضویہ

رسالہ مجلی الشمعۃ لجامع حدث ولمعۃ ۱۳۳۶ھ (حدث اور لمعہ رکھنے والے سے متعلق شمع افروز) بسم اللہ الرحمن الرحیم

[جدول] الحمد للہ الذی جلی الشمعۃ شمعۃ الاسلام بأوفی لمعۃ حمدا بریأ عن الریاء والسمعۃ اذا اظہر انوار من عید الجمعۃ وفتح بنورہ بصر المؤمن وسمعہ واتم بظہورہ قلع کل ضلال وقمعہ صلی اللہ تعالی علیہ وبارك وسلم ابد الصلاۃ وسلاما وبرکات تعم ذویہ وتجمع جمعہ* آمین۔ اللہ | تمام حمد خدا کے لئے جس نے شمع فروزاں کی، شمع اسلام کو بھر پور تابندگی کے ساتھ جلوہ گر کیا، ایسی حمد جو ریا و سمعہ سے پاک ہو اس لئے کہ اس نے اس ذات کے انوار ظاہر کیے جس نے جمعہ کو عید بنایا اور جس کے نور سے مومن کی بصارت و سماعت کھولی، اور اس کے ظہور سے ہر گمراہی کا قلع قمع تام کیا اس ذات پر خدائے برتر کی طرف سے درود اور برکت و سلام ہو، ایسی درود و سلام اور ایسی برکتیں جو حضور کے سبھی لوگوں کو عام اور ان کی پوری جماعت کو ہمہ گیر ہو الہی قبول فرما۔ (ت)

رسالہ الطلبۃ البدیعہ میں مسئلہ لمعہ کا ذکر آیا اور اس میں تفصیل کثیرہ ہیں کہ کتابوں میں نہ ملیں گی ان کے بیان میں یہ سطور ہیں وباللہ التوفیق (اور یہ اللہ تعالیٰ کی توفیق سے ہے۔ت) جنب نے بدن کا کچھ حصہ دھویا کچھ باقی رہا کہ پانی نہ رہا پھر حدث ہوا کہ موجب وضو ہے اب جو پانی ملے اُسے وضو و رفع حدث میں

Fatawa Rizvia, Volume 4

...used it or in washing the remaining parts of Janabah (ritual impurity). This issue is about 'Lum'ah' (a small dry spot). Lum'ah (with a damma on 'lam') here refers to that part of the body which remained untouched by water after Janabah.

I say: There are three classifications here:

First Classification: Regarding the location of the 'Lum'ah'. It has seven possibilities: (1) The 'Lum'ah' itself consists of the organs of wudu (ablution) that were not washed during Ghusl (ritual bath), then 'hadath' (minor ritual impurity) also occurred. This situation is when rinsing the mouth and nose has already been done; otherwise, janabah would not just be in those organs whose washing is obligatory in wudu. The sufficiency or insufficiency of water depends on this: 'sufficient' here means that which fulfills the obligation. Therefore, if a person in the state of ritual impurity finds enough water to wash the face, hands, and feet once each—not enough for washing three times, nor enough for rinsing the mouth and nose—then performing wudu is obligatory for him, Tayammum (dry ablution) is not permissible. And if after Tayammum he finds that much water, his Tayammum will be invalidated.

(2) The 'Lum'ah' consists of all the organs of wudu plus more, such that wudu was not performed and some parts of the rest of the body were also not washed, even if it was only to the extent of not rinsing the mouth and nose.

(3) The 'Lum'ah' consists only of some organs of wudu, meaning all of the body except them, including the mouth and nose, and some of those organs were washed while some remained.

(4) The 'Lum'ah' consists of some organs of wudu along with some parts of the rest of the body; for example, half of wudu was done and the remaining half of the body was washed, or for example, only the face was washed and rinsing the mouth was left.

(5) The 'Lum'ah' consists of some wudu organs along with all of the rest of the body, such that only some of the wudu organs were washed.

(6) The 'Lum'ah' consists of some parts of the rest of the body apart from the wudu organs, even if it is only to the extent that he took a full bath but did not rinse his mouth and nose.

(7) The 'Lum'ah' consists of all of the rest of the body, such that only wudu without rinsing the mouth and nose was performed.

Second Classification: Considering the order of ritual impurity (hadath), dry ablution (tayammum), and finding water (wajdan-e-aab). Scholars have paid attention to these possibilities, some in detail and some briefly: whether the 'hadath' occurred after the 'Tayammum' for 'Janabah' or before, and if it occurred after, was water found after that Tayammum or before. I say: here are four things: (i) Tayammum for Janabah (ii) Hadath (minor ritual impurity) (iii) Tayammum for Hadath (iv) Finding water

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4

...खर्च किया या बाकी जनाबत धोने में इस्तेमाल किया। यह मसला 'लुमह' (Lum'ah) का है। लुमह (लाम पर पेश के साथ) यहाँ शरीर के उस हिस्से को कहते हैं जो जनाबत के बाद पानी पहुँचने से रह गया।

मैं कहता हूँ: यहाँ तीन वर्गीकरण हैं:

पहला वर्गीकरण: लुमह के स्थान के लिहाज़ से। इसमें सात संभावनाएँ हैं: (1) वह लुमह खुद वज़ू के अंग हों जिन्हें गुस्ल में नहीं धोया गया था, फिर हदस (अशुद्धि) भी हो गई। यह सूरत वह है कि कुल्ली और नाक में पानी पहुँचाना हो चुका हो, वरना सिर्फ उन अंगों में जनाबत नहीं होगी जिनका वज़ू में धोना फ़र्ज़ है। पानी की पर्याप्तता और अपर्याप्तता का दारोमदार इसी पर है कि यहाँ 'पर्याप्त' से वही मुराद है जो फ़र्ज़ अदा कर दे। इसलिए, यदि कोई अशुद्ध व्यक्ति इतना पानी पाए कि चेहरा, हाथ और पैर एक-एक बार धो ले—तीन बार धोने के लिए काफी न हो और न ही कुल्ली और नाक में पानी डालने के लिए—तो उस पर वज़ू फ़र्ज़ है, तयम्मुम जायज़ नहीं। और यदि तयम्मुम के बाद उसे इतना पानी मिल जाए, तो उसका तयम्मुम टूट जाएगा।

(2) लुमह वज़ू के सभी अंगों के साथ और भी अधिक हिस्सा हो, जैसे वज़ू भी नहीं किया और बाकी शरीर का भी कुछ हिस्सा नहीं धोया, चाहे वह इतना ही क्यों न हो कि कुल्ली और नाक में पानी न डाला गया हो।

(3) लुमह सिर्फ वज़ू के कुछ अंग हों, यानी उनके अलावा सारा शरीर मुँह और नाक समेत धो लिया गया था, और उन (वज़ू के अंगों) में से कुछ धो लिए थे और कुछ बाकी रह गए।

(4) लुमह वज़ू के कुछ अंगों के साथ बाकी शरीर का कुछ हिस्सा हो, उदाहरण के लिए आधा वज़ू किया और बाकी आधा शरीर धोया, या उदाहरण के लिए सिर्फ चेहरा धोया और कुल्ली करना बाकी था।

(5) लुमह कुछ वज़ू के अंगों के साथ बाकी सारा शरीर हो, जैसे वज़ू के अंगों में से सिर्फ कुछ ही धोए।

(6) लुमह वज़ू के अंगों के अलावा बाकी शरीर का कुछ हिस्सा हो, चाहे वह इतना ही क्यों न हो कि पूरा नहा लिया और कुल्ली व नाक में पानी नहीं डाला।

(7) लुमह बाकी सारा शरीर हो, जैसे सिर्फ वज़ू किया बिना कुल्ली और नाक में पानी डाले।

दूसरा वर्गीकरण: हदस, तयम्मुम और पानी मिलने के क्रम के लिहाज़ से। उलेमा ने इन पहलुओं की ओर कुछ विस्तार से और कुछ संक्षेप में ध्यान दिया है कि जनाबत के तयम्मुम के बाद हदस हुआ या पहले, और अगर बाद में हुआ तो उसके लिए तयम्मुम के बाद पानी मिला या पहले। मैं कहता हूँ: यहाँ चार चीज़ें हैं: (i) जनाबत के लिए तयम्मुम (ii) हदस (अशुद्धि) (iii) हदस के लिए तयम्मुम (iv) पानी पाना (वजदान-ए-आब)

صرف کرے یا بقیہ جنابت کے دھونے میں یا کیا۔ یہ مسئلہ لُمعہ ہے لُمعہ بالضم یہاں وہ حصہ بدن ہے جو بعد جنابت سے لانِ آب سے رہ گیا۔ اقول: یہاں تین تقسیمیں ہیں: تقسیم اول: بلحاظ محل لُمعہ۔ اُس میں سات احتمال ہیں: (۱) وہ لُمعہ خود یہی اعضائے وضو ہوں انہیں کو غسل میں نہ دھویا تھا پھر حدث بھی ہوا، اور یہ صورت وہ ہے کہ کلی اور ناک میں پانی پہنچانا ہو چکا ہو ورنہ صرف ان اعضا میں جنابت نہ ہوگی جن کا وضو میں دھونا فرض ہے جس پر پانی کی کفایت و عدم کفایت کا مدار ہے کہ یہاں کافی سے وہی مراد ہے جو ادائے فرض کردے ولہٰذا احدث اگر اتنا پانی پائے کہ منہ ہاتھ پاؤں ایک ایک بار دھولے نہ تثلیث کو کافی ہو نہ مضمضہ و استنشاق کو تو اس پر وضو فرض ہے تیمم جائز نہیں اور بعد تیمم اتنا پانی پائے تو تیمم ٹوٹ جائے گا۔ (۲) لُمعہ تمام اعضائے وضو مع زیادت ہوں کہ وضو بھی نہ کیا اور باقی بدن کا بھی بعض حصہ نہ دھویا تھا اگرچہ اسی قدر کہ مضمضہ و استنشاق نہ کیا تھا۔ (۳) لُمعہ صرف بعض اعضائے وضو ہو یعنی ان کے سوا تمام بدن مع دہان و بینی اور ان میں سے بعض دھو لیے تھے بعض باقی۔ (۴) لُمعہ بعض اعضائے وضو مع بعض باقی بدن ہو مثلاً نصف وضو کیا اور باقی نصف بدن دھویا یا مثلاً صرف منہ دھویا اور مضمضہ باقی تھا۔ (۵) لُمعہ بعض وضو مع جمیع باقی بدن ہو کہ صرف اعضائے وضو سے کچھ دھوئے۔ (۶) لُمعہ اعضائے وضو سے جدا بعض باقی بدن ہو اگر چہ اسی قدر کہ پورا نہایا اور مضمضہ و استنشاق نہ کیا۔ (۷) لُمعہ جمیع باقی بدن ہو کہ صرف وضو بے مضمضہ و استنشاق کیا۔ تقسیم دوم: بنظر ترتیبِ حدث و تیمم و وجدانِ آب۔ علما نے کچھ مفصل کچھ مجمل ان شقوق کی طرف توجہ فرمائی کہ تیمم جنابت کے بعد حدث ہوا یا پہلے اور بعد ہوا تو اُس

کے لئے تیمم کے بعد پانی ملا یا پہلے اقول: یہاں چار چیزیں ہیں: (i) تیمم جنابت (ii) حدث (iii) تیمم حدث (iv) وجدان آب

Fatawa Rizvia, Volume 4 In their varying arrangements, there are twenty-four (24) logical possibilities, but there are a few points here that will significantly reduce many of them. First: Finding water after a mandatory situation is not the point, but rather the explanation of the ruling on what to do when water is found.

Therefore, when Imam al-Isbijabi mentioned in the commentary of al-Tahawi the case where water is found after performing tayammum for janabat (ritual impurity), he did not add more than saying that "if that water is sufficient for him, he should perform ghusl (bath), otherwise his tayammum remains valid." (T)

So out of the 24, those six (6) that start with finding water are reduced to only one: where the person in the state of janabat had neither performed tayammum nor had an event of minor ritual impurity (hadath) occur when water was found. Similarly, in the remaining 18, where finding water occurs in the middle, the scenario ends there, so that a four-step sequence (rubai) becomes a three-step (thulathi) or two-step (thunai) one. Second: According to the correct and relied-upon view, specifying the type of impurity (minor or major) in the intention of tayammum is superfluous. Thus, in the remaining 18, those six starting with tayammum for major impurity (janabat) and those six starting with tayammum for minor impurity (hadath) are identical. And if you insist on specification, then tayammum for minor impurity before the occurrence of that impurity is void, thus these six also get excluded.

Third: In any sequence where two tayammums occur consecutively, one must be discarded as performing tayammum after tayammum is redundant. Thus, out of those 18, only five remain, and adding that one makes it 6. First, finding water after being in a state of janabat before any tayammum or minor impurity occurred. Second, finding water after performing tayammum for janabat before any minor impurity occurred. These two are not worth considering here as there is no combination of minor and major impurity in them. Their ruling is obvious: in the first, if water is sufficient for ghusl, perform it, otherwise do tayammum; in the second, if water is sufficient, the tayammum is broken and he should bathe, otherwise not. The remaining four (4) are:

(1) Found water after minor impurity but hadn't performed tayammum yet; this is a two-step sequence (thunai) like the two discarded ones, meaning from these four things, it has two. (2) Minor impurity occurred, then performed tayammum, then found water. (3) Performed tayammum, then minor impurity occurred, then found water; these two are three-step sequences (thulathi). (4) Performed tayammum, then

minor impurity occurred, then performed tayammum again, then found water; this is a four-step sequence (rubai).

Then I say: The main purpose in the issue of 'lam'ah' is to explain what happens when both minor and major impurities are present and water is only enough for one...

---

1. Sharh al-Tahawi by al-Isbijabi Page 286 of 761

फ़तावा रज़विया, खंड 4 उनके व्यवस्था क्रम के अंतर में चौबीस (24) तार्किक संभावनाएँ हैं, लेकिन यहाँ कुछ बिंदु ऐसे हैं जो उनमें से कई को कम कर देंगे। पहला: पानी मिलना अनिवार्य स्थिति के बाद का दर्जा नहीं रखता, बल्कि इस बात का वर्णन है कि पानी मिल जाने पर क्या किया जाए।

इसलिए, जब इमाम अल-इस्बीजाबी ने शरह अल-तहावी में उस स्थिति का उल्लेख किया जब जनाबत (बड़ी अशुद्धि) के लिए तयम्मुम करने के बाद पानी मिल जाए, तो उन्होंने इससे अधिक कुछ नहीं कहा कि "यदि वह पानी उसके लिए पर्याप्त हो तो वह गुस्ल (स्नान) करे, अन्यथा उसका तयम्मुम बाकी है।" (त)

तो 24 में से वे छह (6) जिनकी शुरुआत में पानी मिलना है, केवल एक रह गई कि जुनुब (जिस पर गुस्ल वाजिब हो) ने अभी न तयम्मुम किया था और न ही कोई छोटी अशुद्धि (हदस) हुई थी कि पानी मिल गया। इसी तरह शेष 18 में जहाँ पानी मिलना बीच में आए, दृश्य वहीं समाप्त कर दिया जाए ताकि चार चरणों वाला अनुक्रम (रुबाई) तीन (थुलाथी) या दो (थुनाई) चरणों वाला रह जाए। दूसरा: सही और विश्वसनीय मत के अनुसार तयम्मुम की नीयत में अशुद्धि (बड़ी या छोटी) का निर्धारण व्यर्थ है। तो शेष 18 में वे छह जिनकी शुरुआत जनाबत के तयम्मुम से है और वे छह जिनके आरंभ में हदस का तयम्मुम है, एक ही हैं। और यदि आप निर्धारण ही करें, तो अशुद्धि होने से पहले उसके लिए तयम्मुम करना अमान्य है, इस प्रकार ये छह भी निकल जाएँगे।

तीसरा: जिस क्रम में दोनों तयम्मुम लगातार हों, उनमें से एक को हटाना अनिवार्य है क्योंकि तयम्मुम के बाद तयम्मुम व्यर्थ है। इस प्रकार उन 18 में से पाँच रह जाएँगी और उस एक के साथ मिलकर 6 हो जाएँगी। पहली यह कि जनाबत के बाद पानी मिल गया जबकि अभी तयम्मुम और हदस कुछ नहीं हुआ था। दूसरी यह कि जनाबत के तयम्मुम के बाद पानी मिल गया जबकि अभी हदस नहीं हुआ था। ये दो यहाँ विचारणीय नहीं हैं क्योंकि इनमें छोटी और बड़ी अशुद्धि का मिलन ही नहीं है। और उनका नियम स्पष्ट है: पहली स्थिति में यदि पानी गुस्ल के लिए पर्याप्त है तो गुस्ल करे, अन्यथा तयम्मुम करे। दूसरी स्थिति में यदि पानी पर्याप्त है तो तयम्मुम टूट गया, नहाए अन्यथा नहीं। शेष चार (4) ये हैं:

(1) हदस के बाद पानी मिला जबकि अभी तयम्मुम नहीं किया था; यह छोड़े गए दो की तरह दो चरणों वाला (थुनाई) है, यानी इन चार चीजों में से इसमें दो हैं। (2) हदस हुआ, फिर तयम्मुम किया, फिर पानी मिला। (3) तयम्मुम किया, फिर हदस हुआ, फिर पानी मिला; ये दोनों तीन चरणों वाले

(थुलाथी) हैं। (4) तयम्मुम किया, फिर हदस हुआ, फिर तयम्मुम किया, फिर पानी मिला; यह चार चरणों वाला (रुबाई) है।

फिर मैं कहता हूँ: 'लमअ' के मसले में मुख्य उद्देश्य यह बताना है कि जब हदस और जनाबत दोनों एक साथ हों और पानी केवल एक के लिए हो...

---

1. शरह अल-तहावी, अल-इस्बीजाबी द्वारा पेज 286 / 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم ان کے اختلافِ ترتیب میں عقلی احتمال چوبیس ۲۴ ہیں لیکن یہاں چند نکتے ہیں کہ ان میں سے بہت کو کم کردیں گے۔ اولاً: وجدانِ آب کے بعد فرض صورت کا مرتبہ نہیں بلکہ بیان حکم کا کہ پانی پایا تو کیا کرے،

ولھذا لما ذکر الامام الاسبیجابی فی شرح الطحاوی ما اذا وجد الماء بعد التیمم للجنابۃ لم یزد علی انہ ان کفاہ غسل والا فتیممہ باق[1]۔ اسی لئے جب امام اسبیجابی نے شرح طحاوی میں تیمم جنابت کے بعد پانی ملنے کی صورت بیان کی تو اس سے زیادہ نہ کہا کہ "وہ پانی اگر کافی ہو تو غسل کرے ورنہ اس کا تیمم باقی ہے۔ (ت)

تو چوبیس ۲۴ میں وہ چھ ۶ جن کی ابتدا میں وجدانِ آب ہے صرف ایک رہی کہ جنب نے ابھی نہ تیمم کیا تھا نہ حدث ہوا کہ پانی پایا یوں ہی باقی ۱۸ میں جہاں وجدانِ آب وسط میں آئے تصویر اس پر ختم کر دی جائے کہ رباعی کی جگہ ثلاثی یا ثنائی رہ جائے۔ ثانیاً: مذہب صحیح و معتمد پر نیت تیمم میں تعیینِ حدث و جنابت لغو ہے تو باقی ۱۸ میں وہ چھ ۶ جن کی ابتدا میں تیمم جنابت ہے اور وہ چھ ۶ جن کے آغاز میں تیمم حدث ہے متحد ہیں اور اگر تعیین ہی کیجئے تو تیمم حدث پیش از حدث باطل ہے یوں بھی یہ چھ ۶ نکل جائیں گے۔

ثالثاً: جس ترتیب میں دونوں تیمم متصل واقع ہوں ایک واجب الحذف ہے کہ تیمم بعد تیمم لغو ہے یوں ان ۱۸ سے پانچ رہ جائیں گی اور اس ایک سے مل کر ۶۔ ایک یہ کہ بعد جنابت پانی پالیا ابھی تیمم و حدث کچھ نہ ہوا تھا دوسری یہ کہ تیمم جنابت کے بعد پایا ابھی حدث نہ تھا یہ دو یہاں قابل لحاظ نہیں کہ ان میں حدث و جنابت کا اجتماع ہی نہیں۔ اور ان کا حکم خود ظاہر، پہلی میں اگر پانی غسل کو کافی ہے غسل کرے ورنہ تیمم دوسری میں اگر پانی کافی ہے تیمم ٹوٹ گیا نہائے ورنہ نہیں، باقی چار ۴ یہ ہیں:

(۱) حدث کے بعد پانی پایا ابھی تیمم نہ کیا تھا، یہ دوم متروک کی طرح ثنائی ہے یعنی ان چار ۴ چیزوں سے اس میں دو ہیں۔ (۲) حدث ہوا پھر تیمم کیا پھر پانی پایا۔ (۳) تیمم کیا پھر حدث ہوا پھر پانی پایا یہ دونوں ثلاثی ہیں۔ (۴) تیمم کیا پھر حدث ہوا پھر تیمم کیا پھر پانی پایا یہ رباعی ہے۔

ثم اقول: مسئلہ لمعہ میں معظم مقصود یہ بتانا ہے کہ حدث و جنابت دونوں جمع ہوں اور پانی ایک کے

Where should it be applied? The remaining forms are for completing the types. This question will apply where the 'hadath' (ritual impurity) is independent, because an included 'hadath' has no ruling of its own nor does it demand water for itself. We have clarified in the treatise 'At-Talabatul Badi'ah' that the ritual impurity of a 'junub' (person in a state of major ritual impurity) will not be independent unless it occurs after the complete or temporary removal of 'janabat' (state of major ritual impurity) from all or some parts of wudu (ablution) by water or soil. And when 'hadath' occurs, it will occur on all parts of wudu. So, the situation being discussed in this 'lum'ah' (dry spot) issue falls under the types mentioned in the said treatise, specifically the types of the first category where 'hadath' was in all parts of wudu. It had eight types: 'janabat' in all or some parts of wudu alone, or along with some or all of the rest of the body, or not in the parts of wudu at all but only in some or all of the rest of the body. Out of these, the third type—where 'janabat' is in all parts of wudu along with the entire rest of the body—is not applicable here, as the discussion is about a 'lum'ah' (a small dry spot). This is not a 'lum'ah' if the entire body is in a state of 'janabat'. The remaining seven are the same seven mentioned in the first division. These, combined with the four types from the second division, total twenty-eight. However, among them are four in which 'hadath' is not originally independent—namely, the first two types of the first division where 'janabat' is in all parts of wudu, combined with the first two types of the second division where 'hadath' of tayammum (dry ablution) is before 'janabat'. Therefore, these four are not considered in this issue.

I say: And their ruling is clear: it will be seen if the water is sufficient for the 'lum'ah'. If it is, then washing it is obligatory, and with it, the 'hadath' itself will be washed away. Therefore, in the first case where 'janabat' was only in all parts of wudu, wudu will be obligatory upon finding water sufficient for wudu, not just 'janabat'. If the water is not sufficient for the 'lum'ah', then its use is not fundamentally necessary even if it is sufficient for wudu. Yes, for reducing the 'lum'ah', one may use it, having the choice to either perform wudu, or wash the 'lum'ah' on the rest of the body, or wash some of it and some parts of wudu. If water remains after each of these, one can choose to wash the 'lum'ah' on the rest of the body and some parts of wudu or complete wudu and wash some 'lum'ah'. Indeed, in both cases, performing wudu is better as it is the fulfillment of the sunnah, as previously mentioned from Al-Kafi and Sharh az-Ziyadat by Al-Attabi in At-Talabatul Badi'ah. The remaining twenty-four types

—among them, the 'hadath' of eighteen is absolutely independent. That is, the seven types of the first division combined with the last two types of the second division, totaling fourteen, because 'hadath' after tayammum is always independent. Also, two types of the first division combined with the first two types of the second division make four, because here 'janabat' itself is not in the parts of wudu, so although 'hadath'...

Note: After 'janabat', if full wudu was performed, then the state of 'janabat' was completely removed from all wudu parts. If some parts were washed, it was removed from some. And if only tayammum was performed, then it was removed from all parts until water is found. [By the author, may Allah forgive him]. (M)

उसे किस तरफ खर्च किया जाए? बाकी सूरतें श्रेणियों को पूरा करने के लिए हैं। यह सवाल वहीं लागू होगा जहाँ 'हदथ' (अशुद्धि) स्वतंत्र हो, क्योंकि समाहित 'हदथ' का अपना कोई हुक्म नहीं होता और न ही वह अपने लिए पानी की मांग करता है। हमने रिसाला 'अल-तलबतुल बदीआ' में स्पष्ट कर दिया है कि जुनुब का 'हदथ' स्वतंत्र नहीं होगा जब तक कि वह वज़ू के सभी या कुछ अंगों से पानी या मिट्टी के माध्यम से जनाबत (बड़ी नापाकी) के पूर्ण या अस्थायी हटने के बाद उत्पन्न न हो। और जब 'हदथ' उत्पन्न होगा, तो वह वज़ू के सभी अंगों पर होगा। तो वह सूरत जिस पर इस 'लमआ' (सूखे स्थान) के मसले में चर्चा है, उक्त रिसाला की श्रेणियों में से पहली श्रेणी की श्रेणियों पर है, जिसमें 'हदथ' वज़ू के सभी अंगों में था। इसकी आठ किस्में थीं: वज़ू के सभी या कुछ अंगों में अकेले जनाबत, या शरीर के बाकी हिस्सों के कुछ या सभी के साथ, या वज़ू के अंगों में बिल्कुल न हो, केवल शरीर के बाकी हिस्सों के कुछ या सभी में हो। इनमें से तीसरी किस्म—जहाँ जनाबत पूरे वज़ू के अंगों के साथ-साथ पूरे शरीर में हो—यहाँ लागू नहीं है, क्योंकि चर्चा 'लमआ' (एक छोटे सूखे स्थान) के बारे में है। यह 'लमआ' नहीं हुआ यदि पूरे शरीर में जनाबत हो। बाकी सात वही सात हैं जिनका उल्लेख अभी पहले विभाजन में हुआ था। ये दूसरे विभाजन के उन चार प्रकारों के साथ मिलकर अड़तालीस (48) हुए। लेकिन उनमें चार वे हैं जिनमें 'हदथ' मूल रूप से स्वतंत्र नहीं है—अर्थात् पहले विभाजन की पहली दो किस्में जिनमें जनाबत वज़ू के सभी अंगों में है, दूसरे विभाजन की पहली दो किस्मों के साथ मिलकर जिनमें 'हदथ-ए-तयम्मुम' जनाबत से पहले है। इसलिए ये चार इस मसले में विचारणीय नहीं हैं।

मैं कहता हूँ: और उनका हुक्म स्पष्ट है: यह देखा जाएगा कि क्या पानी 'लमआ' के लिए पर्याप्त है। यदि है, तो उसे धोना अनिवार्य है, उसके साथ 'हदथ' खुद ही धुल जाएगा। इसलिए पहली सूरत में जहाँ जनाबत केवल वज़ू के सभी अंगों में थी, वज़ू के लिए पर्याप्त पानी मिलने पर वज़ू अनिवार्य होगा, न कि केवल जनाबत के लिए। और अगर पानी 'लमआ' के लिए पर्याप्त नहीं है, तो उसका उपयोग मूल रूप से आवश्यक नहीं है, भले ही वह वज़ू के लिए पर्याप्त हो। हाँ, 'लमआ' को कम करने के लिए वह इसका उपयोग कर सकता है, जिसमें उसे विकल्प होगा कि चाहे वह वज़ू करे, चाहे शरीर के बाकी हिस्से में जो 'लमआ' है उसे धो ले, चाहे उनमें से कुछ और वज़ू के कुछ अंगों को धो ले। और अगर पानी इनमें से प्रत्येक के बाद बचता है, तो वह चाहे तो शरीर के बाकी हिस्से का 'लमआ' धोए और वज़ू के कुछ अंग या पूरा वज़ू करे और कुछ 'लमआ' धोए। हाँ, दोनों सूरतों में वज़ू करना बेहतर है क्योंकि यह सुन्नत की अदायगी है जैसा कि पहले 'अल-काफी' और 'शराह अज़-ज़ियादात'

के हवाले से 'अल-तलबतुल बदीआ' में गुज़रा। बाकी रहीं चौबीस किस्में, उनमें से अठारह का 'हदथ' पूरी तरह स्वतंत्र है। यानी पहले विभाजन की सातों किस्में दूसरे विभाजन की आखिरी दो से मिलकर जो चौदह हुईं, क्योंकि तयम्मुम के बाद का 'हदथ' हमेशा स्वतंत्र होता है। साथ ही पहले विभाजन की दो किस्में दूसरे विभाजन की पहली दो किस्मों से मिलकर चार हुईं, क्योंकि यहाँ जनाबत खुद वज़ू के अंगों में नहीं है, इसलिए 'हदथ' हालांकि उसके..

टिप्पण: जनाबत के बाद अगर पूरा वज़ू कर लिया तो वज़ू के सभी अंगों से जनाबत का पूर्ण निवारण हो गया। और अगर कुछ धो लिए तो कुछ से। और अगर सिर्फ तयम्मुम किया तो पानी मिलने तक सभी अंगों से निवारण हुआ। [लेखक द्वारा, अल्लाह उन्हें क्षमा करे]। (म)

पृष्ठ 287 का 761

قابل تو اسے کس طرف صرف کرے باقی صورت تکمیل اقسام کے لئے ہیں یہ سوال وہیں عائد ہوگا جہاں حدث مستقل ہو کہ حدث مندرج اپنا کوئی حکم ہی نہیں رکھتا نہ وہ اپنے لئے پانی کا طالب، اور ہم رسالہ الطلبۃ البدیعہ میں واضح کر چکے کہ جنب کا حدث مستقل نہ ہوگا مگر جبکہ کل یا بعض اعضائے وضو سے پانی یا مٹی سے جنابت کے زوال کلی عہ یا موقت کے بعد حادث ہو اور حدث جب حادث ہوگا کل اعضائے وضو پر طاری ہوگا تو وہ صورت جس پر اس مسئلہ لمعہ میں کلام ہے اقسام مسطورہ رسالہ مذکورہ سے صورت اولی کے اقسام پر ہے جس میں حدث کل اعضائے وضو میں تھا اس کی آٹھ قسمیں تھیں جنابت کل یا بعض اعضائے وضو میں تنہا یا مع بعض یا کل باقی بدن ہو یا اعضائے وضو میں اصلا نہ ہو صرف بعض یا کل باقی بدن میں ہو ان میں سے قسم سوم کہ جنابت کل اعضائے وضو مع جمیع باقی بدن میں ہو یہاں نہیں کہ کلام لمعہ میں ہے یہ لمعہ نہ ہوا سارے بدن میں جنابت ہوئی باقی سات یہی سات ہیں جو ابھی تقسیم اول میں مذکور ہوئیں۔ یہ ان چار ۲۴ انواع تقسیم دوم سے مل کر اڑتالیس ۴۸ ہوئیں مگر ان میں چار ۴ وہ ہیں جن میں حدث اصلاً مستقل نہیں یعنی تقسیم اول کی دو ۲ قسم پیشین جن میں جنابت جمیع اعضائے وضو میں ہے تقسیم دوم کی دو ۲ نوع اول سے مل کر جن میں حدث تیمم جنابت سے پہلے ہے لہذا یہ چار ۴ اس مسئلہ میں ملحوظ نہیں۔

اقول: اور ان کا حکم ظاہر پانی لمعہ کے لئے کافی دیکھا جائے گا اگر ہے اس کا دھونا واجب اس کے ساتھ حدث خود ہی ڈھل جائے گا ولہذا پہلی صورت میں کہ جنابت صرف کل اعضائے وضو میں تھی وضو کے قابل پانی پانے سے وضو واجب ہوگا نہ جنابت بلکہ جنابت کے لئے، اور اگر پانی لمعہ کو کافی نہیں تو استعمال اصلاً ضروری نہیں اگرچہ وضو کے لئے کافی ہو ہاں تقلیل

لمعہ کے لئے اسے استعمال کرے گا جس میں اختیار رہے گا کہ خواہ وضو کرے خواہ باقی بدن میں جو لمعہ ہے اسے دھولے خواہ بعض وہ اور بعض اعضائے وضو دھو لے اور اگر پانی ان میں ہر ایک کے بعد بچے تو چاہے باقی بدن کا لمعہ دھوئے اور کچھ اعضائے وضو یا وضو پورا کرے اور کچھ لمعہ دھوئے ہاں دونوں صورتوں میں وضو اولی ہے کہ ادائے سنت ہے کما تقدم عن الکافی وشرح الزیادات للعتابی فی الطلبۃ البدیعۃ (جیسا کہ کافی اور عتابی کی شرح زیادات کے حوالے سے الطلبۃ البدیعۃ میں گزرات) باقی رہیں چوبیس ۲۴ اُن میں اٹھارہ ۱۸ کا حدث مطلقاً مستقل ہے یعنی تقسیم اول کی ساتوں قسمیں تقسیم دوم کی اخیرین سے مل کر کہ چودہ ۱۴ ہوئیں اس لئے کہ حدث بعد تیمم ہمیشہ مستقل ہوتا ہے نیز تقسیم اول کی دو قسم اخیر دوم کی اولین سے مل کر چار ہوئیں اس لئے کہ یہاں جنابت خود ہی اعضائے وضو میں نہیں تو حدث اگرچہ اُس کے

عہ: بعد جنابت اگر پورا وضو کر لیا کل اعضائے وضو سے جنابت کا زوال کلی ہو گیا اور بعض دھو لے تو بعض سے اور اگر صرف تیمم کیا تو کل اعضائے وقت وجدان آب تک زوال ہوا ۲ ۱ امنہ غفر لہ۔ (م)

Fatawa-e-Razvia, Volume 4 (The text discusses Tayammum and Wudu when water is found) ...it will be independent. The remaining six, i.e., from the 3rd, 4th, and 5th of the first division and the 1st and 2nd of the second division, in these, the full Hadath (impurity) is not independent. Instead, for only those parts of the Wudu organs that were already washed after Janabat (major ritual impurity), in those 18 cases, water for a full Wudu will be required for the Hadath. And in those six cases, only enough water to wash that specific part where it is independent. Remember this, as it will be useful later. Third Division: Regarding the quantity of water found, the scholars have mentioned five categories: (1) Sufficient only for Wudu. (2) Sufficient only for a Lum'a (a small unwashed area). (3) Sufficient for both together. (4) Sufficient for each separately, such that one may choose to perform Wudu or wash the Lum'a, but both cannot be done. (5) Not sufficient at all. In most books such as (1) Sharh Tahawi, (2) Khazanat al-Muftin, (3) Munyah, (4) Hulyah, (5) Sharh Wiqayah, and (6) Radd al-Muhtar, the terms Wudu and Lum'a are used. I say: Expression using "Hadath and Janabat" as in Khulasah is better. And truly, the "expression should be restricted to independent Hadath," otherwise, the general mention of Hadath brings to mind the entire Hadath. We have just proved that in six scenarios here, only one part of the Hadath is independent; for that, water sufficient for a full Wudu is not needed, but only for that specific portion.

Arabic Text	**Urdu Translation**
Al-Kafi (3) and Al-Hindiyah: Even if they used the terms 'Hadath' and 'Lum'a', they both stated: If he uses it for Wudu, it is permissible by consensus.	And in Al-Kafi and Al-Hindiyah, although they expressed it in terms of Hadath and Lum'a, they still said: "If it is used for Wudu, it is permissible by consensus." And at the end of Al-Kafi it says: "Then he found water sufficient for one of them, i.e., for the rest of his body or for the areas of Wudu."
It is stated in Al-Kafi at the end: "Then he found water sufficient for one of them, i.e., for the remainder of his body or for the locations of Wudu." [End of quote]	In Siraj al-Wahhaj and Minhat al-Khaliq, regarding the issue of Lum'a, it is said: "If he performs Wudu with that water, it is not permissible." [End of quote]
It is stated in Siraj al-Wahhaj and Minhat al-Khaliq regarding the issue of Lum'a: "If he performs	And Sadr al-Shari'ah, although he expressed it in two places with Hadath and Janabat...

Arabic Text	Urdu Translation
Wudu with that water, it is not permissible." [End of quote] Sadr al-Shari'ah (2), although he expressed it in two places with Hadath and Janabat...	

1. Fatawa Hindiyah, Chapter on what invalidates Tayammum, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/29.
2. Al-Kafi.
3. Minhat al-Khaliq with Al-Bahr, Chapter on Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi, 1/139. Page 288 of 761

फ़तावा रज़विया, जिल्द चौथी तयम्मुम से पहले हो वह स्वतंत्र होगा। शेष छह, यानी पहली तक़सीम की ३, ४, ५ और दूसरी तक़सीम की १, २ मिलकर, इनमें पूरा हदस (नापाकी) स्वतंत्र नहीं है बल्कि वज़ू के अंगों के केवल उतने ही हिस्से के लिए जो जनाबत (बड़ी नापाकी) के बाद धोए जा चुके थे, उन १८ सूरतों में हदस के लिए पूरे वज़ू का पानी चाहिए होगा। और उन छह में केवल उतना जो उस हिस्से को धो दे जिसमें यह स्वतंत्र है। यह याद रखें, आगे काम आएगा। तीसरी तक़सीम: पानी किस मात्रा में मिला, इसमें उलमा ने पांच प्रकार बताए हैं: (१) केवल वज़ू के लिए पर्याप्त। (२) केवल लम्आ (एक छोटे अनधुले हिस्से) के लिए पर्याप्त। (३) मजमूअ (दोनों) के लिए पर्याप्त। (४) प्रत्येक को अलग-अलग पर्याप्त, कि चाहे वज़ू कर ले या लम्आ धो ले, दोनों न हो सकें। (५) बिलकुल भी पर्याप्त नहीं। अधिकांश पुस्तकें जैसे (१) शरह तहावी, (२) खज़ानतुल मुफ़्तीन, (३) मुनिया, (४) हुलिया, (५) शरह विक़ाया और (६) रद अल-मुह्तार में वज़ू और लम्आ शब्द का प्रयोग किया गया है। मैं कहता हूँ: "हदस और जनाबत" के साथ अभिव्यक्ति जैसा कि खुलासा में है, वह बेहतर है। और वास्तविकता यह है कि "अभिव्यक्ति स्वतंत्र हदस तक सीमित" होनी चाहिए, अन्यथा हदस कहने से पूरा हदस मन में आता है। हमने अभी सिद्ध किया है कि यहाँ छह स्थितियों में हदस का केवल एक हिस्सा स्वतंत्र है; उसके लिए पूरे वज़ू के लायक पानी की आवश्यकता नहीं है, बल्कि केवल उस हिस्से के लिए।

अरबी इबारत	**उर्दू अनुवाद**
अल-काफ़ी (३) और अल-हिंदिया: भले ही उन्होंने हदस और लम्आ शब्दों का प्रयोग किया हो, फिर भी उन्होंने कहा: यदि वह इसे वज़ू के लिए इस्तेमाल करता है, तो आम सहमति से यह जायज़ है।	और काफ़ी व हिंदिया में हालांकि हदस व लम्आ से व्यक्त किया गया, फिर भी यह फ़रमाया "इसे अगर वज़ू में इस्तेमाल किया तो सर्वसम्मति से जायज़ है।" और काफ़ी के अंत में फ़रमाया "फिर इतना पानी पाया जो दोनों में से एक के लिए पर्याप्त है यानी शरीर के शेष भाग के लिए या वज़ू के स्थानों के लिए।"
अल-काफ़ी के अंत में कहा गया: "फिर उसने इतना पानी पाया जो उनमें से एक के लिए पर्याप्त है, यानी उसके शरीर के शेष भाग के लिए या वज़ू के स्थानों के लिए।" [समाप्त]	सिराज अल-वहाज और मिन्हात अल-ख़ालिक़ में लम्आ के मसले में फ़रमाया "अगर इस पानी से वज़ू किया तो जायज़ नहीं।" [समाप्त]

अरबी इबारत	उर्दू अनुवाद
सिराज अल-वहाज और मिन्हात अल-ख़ालिक़ में लम्आ के मसले में कहा गया: "यदि वह उस पानी से वज़ू करता है, तो यह जायज़ नहीं है।" [समाप्त] सदरुश शरीअह (२), हालांकि उन्होंने दो स्थानों पर हदस और जनाबत के साथ व्यक्त किया है...	और सदरुश शरीअह ने हालांकि दो जगह हदस व जनाबत से...

१ फ़तावा हिंदिया, तयम्मुम को तोड़ने वाली चीज़ों का अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, १/२९। २ काफ़ी। ३ मिन्हात अल-ख़ालिक़ म'अ अल-बहर, बाबुत तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी कराची, १/१३९। पृष्ठ २८८/७६१

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم تیمم سے پہلے ہو مستقل ہوگا۔ باقی چھ یعنی تقسیم اول کی ۳۔ ۴۔ ۵ تقسیم دوم کی ۱۔ ۲ سے مل کر ان میں پورا حدث مستقل نہیں بلکہ اتنے ہی حصہ اعضائے وضو کا جو بعد جنابت دھل چکے تھے ان ۱۸ میں حدث پورے وضو کا پانی چاہیے گا اور ان چھ میں صرف اتنا جو اس حصہ کو دھو دے جس میں یہ مستقل ہے۔ یہ یاد رکھیے کہ آگے کام دے گا۔ تقسیم سوم: پانی کہ پایا کس مقدار کا تھا اس میں علماء نے پانچ اصناف فرمائیں: (۱) صرف وضو کو کافی (۲) صرف لمعہ کو کافی (۳) مجموع کو کافی (۴) ہر ایک کو جدا جدا کافی کہ چاہے وضو کرلے یا لمعہ دھو لے دونوں نہ ہوسکیں۔ (۵) اصلا کافی نہیں اکثر کتب مثل (۱) شرح طحاوی و(۲) خزانۃ المفتین و(۳) منیہ و(۴) حلیہ و(۵) شرح وقایہ و(۶) ردالمحتار میں وضو و لمعہ سے تعبیر فرمائی۔ وانا اقول: تعبیر "حدث و جنابت" سے جس طرح خلاصہ میں فرمائی اس سے اولٰی ہے اور حق "تعبیر تقیید حدث بمستقل" ورنہ اطلاق حدث سے کل حدث متبادر، اور ہم ابھی ثابت کرچکے کہ یہاں چھ صورتوں میں حدث کا صرف ایک پارہ مستقل ہوتا ہے اس کے لئے وضو کو کافی پانی درکار نہیں بلکہ اتنے ٹکڑے کو۔

عربی عبارت	اردو ترجمہ
والکافی (۳) والہندیہ وان عبرا بالحدث واللمعۃ فقد قالا لو صرفہ الی الوضوء جاز اتفاقا ۱۔	اور کافی وہندیہ میں اگرچہ حدث ولمعہ سے تعبیر کی پھر بھی یہ فرمایا "اسے اگر وضو میں صرف کیا تو بالاتفاق جائز ہے۔" اور کافی کے اندر آخر میں فرمایا "پھر اتنا پانی پایا جو دونوں میں سے ایک کے لئے کافی ہے یعنی بقیہ بدن کے لئے یا مواضع وضو کے لئے "

عربی عبارت **اردو ترجمہ**

وقال في الكافي في الأخر ثم

وجد ماء يكفي لاحدهما اى اھ سراج وہاج اور منحة الخالق میں لمعہ کے مسئلہ میں فرمایا "اگر

لبقية بدنه اولمواضع وضوئه اس پانی سے وضو کیا تو جائز نہیں۔" اھ،

۲ اھـ

وقال في السراج الوهاج

ومنحة الخالق في مسألة

اللمعة لوتوضأ بذلك الماء لم اور صدر الشریعہ نے اگرچہ دو جگہ حدث وجنابت سے

يجز ۳ اھـ

وصدر (۲) الشريعة وان

عبر في موضعين بالحدث

والجنابة

۱ فتاویٰ ہندیہ مایتنقض التیمم نورانی کتب خانہ پشاور ۲۹/۱ ۲ کافی ۳ منحة الخالق مع البحر، باب

التیمم، ایچ ایم سعید کمپنی کراچی، ۱۳۹/۱ Page 288 of 761

Fatawa Razawiya, Volume 4

[Table/Box Section] (Arabic): However, his statement is the furthest from encompassing all divisions because he specified the discussion to a 'lam'a' (a dry spot) on the back. Thus, he specifically chose the sixth division among the seven divisions. In summary, what is apparent and immediately understood from the words of the scholars—may Allah have mercy on them and have mercy on us through them—is that the discussion is limited to the last two divisions in which the 'hadath' (impurity) is outside the members of wudu. And Allah Almighty knows best the intent of His servants. (T)

(Urdu Translation): He expressed it, except that because he made the speech specific to a spot on the back, his expression is the furthest in the matter of encompassing all types. Then he specifically chose the sixth type from the seven types. In short, from the words of the scholars, it is clear and understood that the discourse is limited to these last two types in which the impurity is outside the limbs of ablution. May God have mercy on these gentlemen and have mercy on us through their blessings, and the Supreme God knows well the intention of His servants. (T)

[Main Text Section] Then I say: In each type of the first division, these five categories cannot exist. In the first type, there will be only two: whether the water is sufficient for wudu or not, as wudu and 'lam'a' (spot) are united. So, the first [Note 1] three categories are one, and the fourth is impossible. Therefore, type [Note 2] one, which consisted of the last two kinds, became four from these two categories. In the second type, three [categories]: whether it is sufficient only for wudu, or for the total (since it's a 'lam'a'), or for neither. Here, the second and fourth are impossible, so this type with the two last kinds again became six from those three categories. In the third type, with the two last kinds, there is a full independent 'hadath', so it requires a complete wudu. Therefore, here too, there will be only three categories: whether it's sufficient only for the 'lam'a', or for the total (which is wudu), or for neither. Here, the first and fourth are impossible. And with the two first kinds, some 'hadath' is independent, so it will require water suitable for itself. And now there will be five categories because here the limbs of wudu are divided into two parts: one has 'janabah' (major ritual impurity) which was not washed after 'janabah', and in the other, there is independent 'hadath'. Now it is possible that the water is sufficient only for this 'hadath' when this part is small, or only for 'janabah' when that part is less, and in both cases, the water is not sufficient for the bigger one, or it is sufficient for the whole wudu which is a total, or for each part separately while it...

[Footnotes] Note 1: Or say that the first two are also impossible, only the third and fifth are [possible]. It is obvious that the meaning of being sufficient for the total is that both can be performed from it; this is achieved here. 12 Minhu Ghufralahu (M). Note 2: Let this difference in expression be noted that by 'qism' (division) is meant the divisions of the first classification, by 'naw' (kind) the second classification, and by 'sinf' (category) the third classification. 12 Minhu Ghufralahu (M).

फ़तावा रज़विया, खंड 4

[बॉक्स अनुभाग] (अरबी): तथापि, उनका कथन सभी श्रेणियों को समाहित करने से सबसे दूर है क्योंकि उन्होंने चर्चा को पीठ पर एक 'लम्हा' (सूखे स्थान) तक सीमित कर दिया। इस प्रकार, उन्होंने सात श्रेणियों में से विशेष रूप से छठी श्रेणी को चुना। संक्षेप में, विद्वानों के शब्दों से जो स्पष्ट और तुरंत समझ में आता है—अल्लाह उन पर दया करे और उनके माध्यम से हम पर दया करे—वह यह है कि चर्चा उन अंतिम दो श्रेणियों तक सीमित है जिनमें 'हदस' (अशुद्धि) वज़ू के अंगों से बाहर है। और अल्लाह तआला अपने बंदों के इरादे को सबसे अच्छी तरह जानता है। (त)

(उर्दू अनुवाद): उन्होंने इसे व्यक्त किया, सिवाय इसके कि चूंकि उन्होंने पीठ पर एक धब्बे (लम्हा) के लिए भाषण को विशिष्ट बनाया, इसलिए सभी प्रकारों को शामिल करने के मामले में उनकी अभिव्यक्ति सबसे दूर है। फिर उन्होंने सात प्रकारों में से छठे प्रकार को विशेष रूप से चुना। संक्षेप में, विद्वानों के शब्दों से, यह स्पष्ट और समझा जाता है कि प्रवचन इन अंतिम दो प्रकारों तक सीमित है जिनमें अशुद्धि वज़ू के अंगों के बाहर है। ईश्वर इन सज्जनों पर दया करे और उनके आशीर्वाद के माध्यम से हम पर दया करे, और सर्वोच्च ईश्वर अपने सेवकों के इरादे को अच्छी तरह जानता है। (त)

[मुख्य पाठ] फिर मैं कहता हूँ: पहली श्रेणी के प्रत्येक प्रकार में ये पाँचों श्रेणियाँ नहीं हो सकतीं। पहली श्रेणी में केवल दो होंगी कि पानी वज़ू के लिए पर्याप्त है या नहीं क्योंकि वज़ू और 'लम्हा' (धब्बा) एक ही हैं, तो पहली [टिप्पणी 1] तीन श्रेणियाँ एक हैं और चौथी असंभव है। इसलिए श्रेणी [टिप्पणी 2] एक, जो अंतिम दो प्रकारों से थी, इन दो श्रेणियों से चार हो गई। दूसरी श्रेणी में तीन [श्रेणियाँ]: कि केवल वज़ू के लिए पर्याप्त हो या कुल के लिए क्योंकि 'लम्हा' है, या किसी के लिए भी नहीं। यहाँ दूसरी और चौथी असंभव हैं, तो यह श्रेणी अंतिम दो प्रकारों के साथ फिर उन तीन श्रेणियों से छह हो गई। तीसरी श्रेणी में, अंतिम दो प्रकारों के साथ पूर्ण स्वतंत्र 'हदस' है, इसलिए पूर्ण वज़ू की आवश्यकता है। अतः यहाँ भी केवल तीन ही श्रेणियाँ होंगी: केवल 'लम्हा' के लिए पर्याप्त हो या कुल के लिए जो वज़ू है, या किसी के लिए भी नहीं। यहाँ पहली और चौथी असंभव हैं। और पहले दो प्रकारों के साथ, कुछ 'हदस' स्वतंत्र है, इसलिए इसे अपने लिए उपयुक्त पानी की आवश्यकता होगी। और अब पाँच श्रेणियाँ होंगी क्योंकि यहाँ वज़ू के अंगों को दो भागों में विभाजित किया गया है: एक में 'जनाबत' (बड़ी अशुद्धि) है जिसे 'जनाबत' के बाद नहीं धोया गया था, और दूसरे में स्वतंत्र 'हदस' है। अब यह संभव है कि पानी केवल इस 'हदस' के लिए पर्याप्त हो जब यह भाग छोटा हो, या केवल

'जनाबत' के लिए जब वह भाग कम हो, और दोनों मामलों में पानी बड़े के लिए पर्याप्त नहीं है, या पूरे वज़ू के लिए पर्याप्त हो जो एक कुल है, या प्रत्येक भाग के लिए अलग-अलग जबकि वह...

[पादलेख] टिप्पणी 1: या यह कहें कि पहली दो भी असंभव हैं, केवल तीसरी और पाँचवीं हैं। यह स्पष्ट है कि कुल के लिए पर्याप्त होने का अर्थ यह है कि उससे दोनों पूर्ण हो सकें; यह यहाँ प्राप्त है। 12 मिन्हु गुफ़रा लहू (म)। टिप्पणी 2: अभिव्यक्ति में इस अंतर पर ध्यान दिया जाए कि 'क़िस्म' (श्रेणी) से तात्पर्य पहले वर्गीकरण की श्रेणियाँ हैं, 'नव' (प्रकार) से दूसरा वर्गीकरण, और 'सिंफ़' (वर्ग) से तीसरा वर्गीकरण। 12 मिन्हु गुफ़रा लहू (म)।

पृष्ठ 289/761

فتاوی رضویہ، جلد چہارم

غیر ان عبارتہ ابعد العبارات عن احاطۃ الاقسام لتخصیصہ الکلام بلمعۃ فی الظھر فقد اختار القسم السادس من الاقسام السبعۃ عینا وبالمجملۃ الظاھر المتبادر من کلامھم رحمھم اللہ تعالی ورحمنا بھم قصر الکلام علی القسمین الاخیرین الذین فیھما الحدث خارج اعضاء الوضوء واللہ تعالی اعلم بمراد عبادہ۔

تعبیر فرمایا سوائے اس کے کہ لمعہ پشت سے کلام خاص کردینے کی وجہ سے ان کی عبارت احاطہ اقسام کے معاملہ میں سب سے زیادہ بعید ہے۔ پھر انہوں نے ساتوں اقسام میں سے قسم ششم خاص طور سے اختیار کی بالجملہ کلمات علماء سے ظاہر متبادر یہی ہے کہ کلام ان اخیر دو قسموں میں محدود ہے جن میں حدث اعضاء وضو کے باہر ہے۔ خدا ان حضرات پر رحمت فرمائے اور ان کی برکت سے ہم پر رحم فرمائے اور خدائے برتر کو اپنے بندوں کی مراد خوب معلوم ہے۔ (ت)

ثم اقول: تقسیم اول کی ہر قسم میں یہ پانچوں صنفیں نہ ہوسکیں گی۔ قسم اول میں صرف دو ہوں گی کہ پانی وضو کو کافی ہے یا نہیں کہ وضو و لمعہ متحد ہیں تو پہلی عہ ۱ تین ۳ صنفیں ایک ہیں اور چہارم ناممکن۔ لہذا قسم عہ ۲ اول کہ دو نوع آخر سے دو تھی ان دو صنفوں سے چار ہوئی۔ قسم دوم میں تین کہ صرف وضو کو کافی ہو یا مجموع کو کہ لمعہ ہے یا کسی کو نہیں یہاں دوم و چہارم محال تو یہ قسم دو نوع آخر پھر ان تین صنفوں سے چھ ہوئی۔ قسم سوم میں دو نوع آخر کے ساتھ پورا حدث مستقل ہے تو کامل وضو کا طالب لہذا یہاں بھی تین ہی صنفیں ہوں گی صرف لمعہ کو کافی ہو یا مجموع کو کہ وضو ہے یا کسی کو نہیں۔ یہاں اول و چہارم محال اور دو نوع اول کے

ساتھ بعض حدث مستقل ہے تو اپنے ہی قابل پانی چاہے گا اور اب پانچوں صنفیں ہوں گی کہ یہاں اعضائے وضو دو حصے ہو گئے ایک میں جنابت ہے جو بعد جنابت نہ دھویا تھا دوسرے میں حدث مستقل اب ہوسکتا ہے کہ پانی صرف اس حدث کو کافی ہو جبکہ یہ حصہ چھوٹا ہو یا صرف جنابت کو جبکہ وہ حصہ کم ہو اور دونوں صورتوں میں پانی بڑے کے قابل نہیں یا پورے وضو کو کافی ہو کہ مجموعہ ہے یا ہر حصے کو جدا جدا جبکہ وہ

عہ ۱: یا یوں کہیے کہ پہلی دو بھی ناممکن صرف سوم و پنجم ہیں۔ ظاہر ہے کہ مجموع کو کافی ہونے کے یہ معنی کہ اس سے دونوں ادا ہو سکیں یہ یہاں حاصل ہے ۱۲ منہ غفرلہ (م) عہ ۲: یہ اختلاف تعبیر ملحوظ رہے کہ قسم سے مراد تقسیم اول کے اقسام ہیں اور نوع سے تقسیم دوم کے اور صنف سے تقسیم سوم کے ۱۲ منہ غفرلہ (م)

Fatawa Razawiya - Volume Four

...both are equal or one is more or less, and the water is sufficient for the major ritual impurity (janabat) but not for the whole, or not sufficient for either. While both are equal or the water is even less than the requirement for minor ritual impurity (hadath), so these are ten (10), six (6), and sixteen (16) cases.

Fourth Category: With all four types, there are five cases each, where the requirement is the hadath of the whole wudu, as with the last two types, or a part of the wudu, as with the first two types. In any case, compared to the requirement of janabat—where some is wudu and some is the rest of the body—every ratio of less, more, or equal is possible. "More" would be, for example, if in janabat two finger-widths of space remained on the face and back; it is obvious that the three organs (of wudu) would require much more water than this. Apply this logic throughout, so this category has twenty (20) cases.

Fifth Category: With each type, there remain four cases, because the entire rest of the body alone is more than all the areas of wudu; therefore, the second sub-type is impossible here, and this category has sixteen (16) cases.

Sixth Category: In every case, it is obvious that all five sub-types occur, as every ratio of wudu organs to the rest of the body is conceivable, so this also has twenty (20) cases.

Seventh Category: Sub-type two is impossible, similar to category five, sixteen (16) cases. Therefore, in the issue of "lum'ah" (unwashed spot), there are a total of ninety-eight (98) scenarios. Very few are mentioned in the books of the masters. Although the apparent common practice is to limit it to the last two categories, in which case they would be very few; indeed, even in the most detailed book, *Sharh Wiqayah*, out of ninety-eight, only fifteen (15) are mentioned. Otherwise, a complete encompassing is not possible in any case because the categories themselves were not fully encompassed, let alone the individual scenarios. For detailed research on this issue, ten (10) books are currently before me: 1. *Sharh Mukhtasar al-Tahawi* by Imam al-Isbijabi, then 2. *Khizanat al-Muftin*, 3. *Khulasah*, 4. *Kafi*, then 5. *Hindiyyah*, 6. *Munyah*, 7. *Hilyah*, then 8. *Radd al-Muhtar*, 9. *Siraj Wahhaj*, 10. *Sadr al-Shari'ah*. From *Siraj*, *Minhat al-Khaliq* quoted some and referred the rest to it, and *al-Bahr al-Ra'iq* alluded to only one scenario implicitly under the author's statement "after a mile". *Munyah* took only type one and even in that only three sub-types. *Khulasah* limited itself to type three. *Kafi* and *Hindiyyah* gave five sub-types in type four, and only sub-type four in types

two and three. *Sharh Tahawi*, *Khizanat al-Muftin*, *Hilyah*, and *Radd al-Muhtar* gave five sub-types in the last two types. *Sharh Wiqayah* also added type two but explicitly limited the discourse to category six only. The texts are as follows:

Munyah: A person in a state of janabat took a bath, an unwashed spot (lum'ah) remained, and he has no water.

He performs tayammum for the spot. If he finds water after a minor ritual impurity (hadath) occurs, he washes the spot.

And he performs tayammum for the hadath if the water is sufficient for the spot.

Munyah: If a person in janabat performs ghusl and a spot remains unwashed, and he has no more water:

He should perform tayammum for the spot. If he finds water after breaking his wudu (hadath), he should wash that spot.

And he should perform tayammum for the ritual impurity (hadath) if the water is only enough to wash the spot.

फतावा रज़विया - जिल्द चार

...दोनों बराबर हों या कम-ज़्यादा और पानी बड़े (ग़ुस्ल) के लिए काफ़ी है लेकिन पूरे के लिए नहीं या किसी के लिए भी काफ़ी नहीं है, जबकि दोनों बराबर हों या पानी छोटे (वुज़ू) से भी कम हो, तो दस (१०), छह (६) और सोलह (१६) सूरतें हुईं।

चौथी श्रेणी: चारों प्रकारों के साथ पाँच-पाँच हैं कि अपेक्षित हदस (अशुद्धि) पूरे वुज़ू का हो जैसे आख़िरी दो प्रकारों के साथ, या कुछ वुज़ू जैसे पहले दो प्रकारों के साथ। हर हाल में इसे अपेक्षित जनाबत (महा-अशुद्धि) के मुक़ाबले—जिसमें कुछ वुज़ू है और कुछ बाकी शरीर है—कमी, ज़्यादती या बराबरी का हर अनुपात मुमकिन है। ज़्यादती इस तरह कि जनाबत में चेहरे और पीठ पर दो-दो उंगली जगह रह गई थी, तो ज़ाहिर है कि (वुज़ू के) तीन अंगों को इससे बहुत ज़्यादा पानी चाहिए होगा। इसी तरह क़यास करें, तो इस श्रेणी की बीस (२०) सूरतें हुईं।

पाँचवीं श्रेणी: हर प्रकार के साथ चार-चार रही हैं क्योंकि अकेले सारा बाकी शरीर वुज़ू के पूरे स्थानों से ज़्यादा है, तो यहाँ दूसरी उप-श्रेणी नामुमकिन है और इस श्रेणी की सोलह (१६) सूरतें हुईं।

छठी श्रेणी: इसमें हर हाल में पाँचों होना ज़ाहिर है क्योंकि वुज़ू के अंगों का बाकी शरीर के किसी हिस्से से हर अनुपात कल्पनीय है, तो यह भी बीस (२०) सूरतें हैं।

सातवीं श्रेणी: इसमें दूसरी उप-श्रेणी असंभव है और पाँचवीं की तरह सोलह (१६) सूरतें हैं। लिहाज़ा लुमआ (बिना धुला स्थान) के मसले में कुल अट्ठानवे (९८) सूरतें हुईं। बड़े उलेमा की किताबों में बहुत कम का ज़िक्र है। हालाँकि ज़ाहिर तौर पर आख़िरी दो श्रेणियों तक ही सीमित रखा जाए तो बहुत कम होंगी, यहाँ तक कि सबसे अधिक विस्तार वाली किताब 'शराह विक़ाया' में ९८ में से सिर्फ़ पंद्रह (१५) हैं। वरना पूर्ण घेरा (इहाता) किसी भी हाल में संभव नहीं क्योंकि श्रेणियों का ही पूर्ण घेरा नहीं किया गया, व्यक्तिगत सूरतों की तो बात ही छोड़िए। मसले के विस्तार के लिए इस समय दस (१०) किताबें सामने हैं: १. 'शराह मुख़्तसर अल-तहावी' लिल-इमाम अल-असबिजाबी, फिर २. 'ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन', ३. 'ख़ुलासा', ४. 'काफ़ी', फिर ५. 'हिन्दिया', ६. 'मुनिया', ७. 'हिलिया', फिर ८. 'रद्दुल मुहतार', ९. 'सिराज वह्जाज', १०. 'सद्रुश शरीअह'। 'सिराज' से 'मन्हतुल ख़ालिक़' ने कुछ नक़ल करके बाकी का उसी पर हवाला दे दिया और 'अल-बहरुल रायिक़' ने लेखक के कथन "एक मील बाद" के तहत इशारतन सिर्फ़ एक सूरत ज़िक्र की। 'मुनिया' ने सिर्फ़ पहला प्रकार लिया और उसमें भी सिर्फ़ तीन उप-श्रेणियाँ। 'ख़ुलासा' ने तीसरे प्रकार पर इक्तिफ़ा (बस) किया। 'काफ़ी' और 'हिन्दिया' ने चौथे

प्रकार में पाँचों उप-श्रेणियाँ और दूसरे व तीसरे में सिर्फ़ चौथी उप-श्रेणी दीं। 'शराह तहावी', 'ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन', 'हिलिया' और 'रद्दुल मुहतार' ने आख़िरी दो प्रकारों में पाँचों उप-श्रेणियाँ दीं। 'शराह विक़ाया' ने दूसरे प्रकार का भी इज़ाफ़ा (बढ़ोतरी) फ़रमाया लेकिन कलाम को साफ़ तौर पर सिर्फ़ छठी श्रेणी से ख़ास (विशिष्ट) कर दिया। इबारत (इबारतें) ये हैं:

मुनिया: जुनुब (महा-अशुद्ध व्यक्ति) ने ग़ुस्ल किया और एक जगह बिना धुली (लुमआ) रह गई और उसके पास पानी नहीं है तो	**मुनिया: किसी जुनुब ने ग़ुस्ल किया, लुमआ रह गया और उसके पास पानी नहीं है तो**
वह लुमआ के लिए तयम्मुम करे और अगर हदस (अशुद्धि) होने के बाद पानी पा जाए तो लुमआ धो ले और हदस के लिए तयम्मुम करे अगर पानी सिर्फ़ लुमआ के लिए काफ़ी हो।	लुमआ के लिए तयम्मुम करे और अगर हदस होने के बाद पानी पा जाए तो लुमआ धोए और हदस के लिए तयम्मुम करे जबकि पानी लुमआ के लिए काफ़ी होता हो।

पृष्ठ २९० / ७६१

دونوں برابر ہوں یا کم وبیش اور پانی بڑے کو کافی ہے نہ مجموع کو یا کسی کو کافی نہیں جبکہ دونوں برابر ہوں یا پانی چھوٹے سے بھی کم تو دس ۱یہ چھ ۶وہ سولہ ۱۶ ہوئیں۔

قسمِ چہارم: چاروں نوعوں کے ساتھ پانچ ہے کہ مطلوب حدث کل وضو ہو جیسے دو نوع آخر کے ساتھ یا بعض وضو جیسے دو نوع اول کے ساتھ بہر تقدیر اسے مطلوب جنابت سے کہ بعض وضو و بعض باقی بدن ہے کمی بیشی مساوات ہر نسبت ممکن۔ بیشی یوں کہ جنابت میں رُو و پشت سے دو دو انگل جگہ رہی تھی ظاہر ہے کہ اعضائے ثلاثہ کو اس سے بہت زائد پانی درکار ہو گا وقس علیہ تو یہ قسم بیس ۲۰ ہوئے۔

قسمِ پنجم: ہر نوع کے ساتھ چار رہی ہے کہ تنہا جمیع باقی بدن کل محل وضو سے زائد ہے تو یہاں صنف دوم ناممکن ہے اور یہ قسم سولہ ۱۶۔

قسمِ ششم: میں بہر حال پانچوں ہونا ظاہر کہ اعضائے وضو کو بعض باقی بدن سے ہر نسبت منصور، تو یہ بھی بیس ۲۰ ہے۔

قسمِ ہفتم: میں صنف دوم محال اور مثلِ پنجم سولہ ۱۶۔ لہذا مسئلہِ لمعہ میں سب صورتیں اٹھانوے ۹۸ ہوئیں، کتب اکابر میں بہت کم کا بیان ہے اگرچہ ظاہر متبادر اقتصار بدو قسم آخر پر رکھیں جب تو بہت کم رہیں گی حتی کہ سب سے زیادہ تفصیل والی کتاب شرح وقایہ میں ۹۸ میں سے صرف پندرہ ۱۵ ورنہ احاطہ بہر حال نہیں ہو سکتا کہ اصناف ہی کا احاطہ نہ فرمایا صورد در کنار تفصیل مسئلہ اس وقت دس ۱۰ کتابوں سے پیش نظر شرح مختصر الطحاوی للامام الاسبیجابی پھر ۲ خزانہ المفتین، ۳ خلاصہ، ۴ کافی پھر ۵ ہندیہ، ۶ منیہ، ۷ حلیہ پھر ۸ ردالمحتار، ۹ سراج و ہاج،

۱۰ صدر الشریعہ۔ سراج سے منحیۃ الخالق نے کچھ نقل کر کے باقی کا اس پر حوالہ کر دیا اور البحر الرائق نے زیر قول مصنف لبعدہ میلا ضمناً صرف ایک صورت کی طرف اشعار فرمایا۔ منیہ نے صرف نوع اول لی اور اس میں بھی تین ہی صنفیں۔ خلاصہ نے نوع سوم پر اقتصار فرمایا۔ کافی و ہندیہ نے نوع چہارم میں پانچوں اصناف اور دوم وسوم میں صرف صنف چہارم۔ شرح طحاوی و خزانیۃ المفتین و حلیہ وردالمحتار نے دو نوع اخیر میں پانچوں صنف۔ شرح وقایہ نے نوع دوم کا بھی اضافہ فرمایا مگر کلام کو تصریحاً صرف قسم ششم سے خاص فرمادیا۔ عبارت یہ ہیں:

منیہ: جنب اغتسل و بقی لمعة و لیس منیہ: کسی جنب نے غسل کیا، لمعہ رہ گیا اور اس کے پاس پانی نہیں تو معه ماء تیمم

للمعة و ان وجد ماء بعد ما احدث یغسل لمعہ کے لئے تیمم کرے اور اگر حدث ہونے کے بعد پانی پا اللمعة جائے تو

و یتیمم للحدث اذا کان الماء یکفي للمعة لمعہ دھوئے اور حدث کے لئے تیمم کرے جبکہ پانی لمعہ کے لئے کفایت کرتا ہو

If [the water] is sufficient for one and not the other, use it for that one. If it is sufficient for each individually, then wash the dry spot (Lum'a) and perform tayammum for the ritual impurity (Hadath). (Ref: Al-Kafi & Al-Hindiyyah): A person in a state of major impurity (Junub) performed ghusl but a spot remained dry, so he should perform tayammum. If, after performing tayammum, ritual impurity (Hadath) occurs, he should perform tayammum for that Hadath. Then, if after performing tayammum for Hadath, he finds enough water for both, he should use it for both. If it is sufficient for a specific one, he should use it for that, and the tayammum for the other remains valid. If it is sufficient for one of them in an unspecified manner, he should use it for the dry spot (Lum'a) and repeat his tayammum for Hadath according to Imam Muhammad; however, according to Imam Abu Yusuf, repetition is not required if he had not performed tayammum for Hadath before finding this water. Washing the Lum'a instead of tayammum...

Note (Ah): Meaning, he performed tayammum for the Lum'a, then Hadath occurred and he performed tayammum for it, and then he found water. 12 Minhu Ghafarahu (T)

Note (Ah): Meaning, he performed tayammum for the Lum'a, then Hadath occurred, and he found water before performing tayammum for it, which is sufficient for one of them in an unspecified way. So, if he washes the Lum'a first and then performs tayammum for Hadath, it is permissible by consensus. If he does the opposite, there is a difference of opinion. 12 Minhu Ghafarahu (T)

Note (Ah): Reverted to the previous discussion to complete the fifth case. 12 Minhu Ghafarahu (T)

---

1. Khulasat al-Fatawa al-Maudu' fi al-Falawat, printed by Nawal Kishore, Lucknow, 1/33.

अगर [पानी] एक के लिए पर्याप्त है और दूसरे के लिए नहीं, तो उसे उसी में खर्च करे। और यदि वह व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक के लिए पर्याप्त है, तो सूखे स्थान (लुमआ) को धोए और अशुद्धता (हदस) के लिए तयम्मुम करे। (संदर्भ: अल-काफ़ी और अल-हिन्दिया): किसी जुनूब (बड़ी अशुद्धता की अवस्था) वाले ने गुस्ल किया और एक स्थान सूखा रह गया (लुमआ), तो वह तयम्मुम करे। यदि तयम्मुम करने के बाद हदस (अशुद्धता) हो जाए, तो हदस के लिए तयम्मुम करे। फिर यदि हदस का तयम्मुम करने के बाद इतना पानी मिले जो दोनों के लिए पर्याप्त हो, तो दोनों में खर्च करे। और यदि किसी एक विशिष्ट के लिए पर्याप्त हो, तो उसी में खर्च करे और दूसरे का तयम्मुम बाकी रहेगा। और यदि वह किसी एक के लिए अनिश्चित रूप से पर्याप्त हो, तो उसे लुमआ (सूखे स्थान) में खर्च करे और इमाम मुहम्मद के अनुसार अपने हदस के तयम्मुम को दोहराए; और इमाम अबू यूसुफ़ के अनुसार दोहराना आवश्यक नहीं है यदि इस पानी के मिलने से पहले उसने हदस का तयम्मुम न किया हो। लुमआ को धोने से पहले तयम्मुम...

हाशियह (अह): यानी लुमआ की वजह से तयम्मुम किया फिर उसे हदस हुआ तो उसका तयम्मुम किया फिर उसे पानी मिला। १२ मिन्हु गुफ़रलाहु (त)

हाशियह (अह): यानी लुमआ की वजह से तयम्मुम किया फिर उसे हदस हुआ और हदस का तयम्मुम करने से पहले पानी मिला जो दोनों में से एक के लिए अनिश्चित तौर पर काफी है। तो अगर लुमआ धो लिया फिर हदस का तयम्मुम किया तो बिल-इत्तेफाक जायज़ है और अगर इसके उलट किया तो इसमें मतभेद है। १२ मिन्हु गुफ़रलाहु (त)

हाशियह (अह): पाँचवीं सूरत की तकमील के लिए पिछले कलाम की तरफ रुजू किया। १२ मिन्हु गुफ़रलाहु (त)

---

1. खुलासतुल फ़तावा अल-मौज़ू फ़िल फ़लवात, मतबूआ नवल किशोर, लखनऊ, १/३३।

पृष्ठ २९२/७६१

اگر ایک کے لئے کافی ہو دوسرے کے لئے نہیں تو اسی میں اسے صرف کرے اور اگر تنہا ہر ایک کے لئے کافی ہو تو لمعہ کو دھوئے اور حدث کے لئے تیمم کرے اھ، کافی و ہندیہ: کسی جنب نے غسل کیا اور لمعہ رہ گیا تو تیمم کرے، اگر تیمم کرلیا پھر حدث ہوا تو حدث کا تیمم کرے پھر اگر حدث کا تیمم کرلینے کے بعد اتنا پانی ملا جو دونوں کو کافی ہو تو دونوں میں صرف کرے۔ اور اگر کسی ایک معین کے لئے کافی ہو تو اسی میں صرف کرے اور دوسرے کا تیمم باقی ہے۔ اور اگر کسی ایک کے لئے غیر معین طور پر کافی ہو تو اسے لمعہ میں صرف کرے اور اپنے تیمم حدث کا اعادہ کرے امام محمد کے نزدیک اور امام ابو یوسف کے نزدیک اعادہ نہیں اگر یہ پانی ملنے سے پہلے حدث کا تیمم نہ کیا تھا تو لمعہ دھونے سے

عہ: یعنی لمعہ کی وجہ سے تیمم کیا پھر اسے حدث ہوا تو اس کا تیمم کیا پھر اسے پانی ملا ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

عہ: یعنی لمعہ کی وجہ سے تیمم کیا پھر اسے حدث ہوا اور حدث کا تیمم کرنے سے پہلے پانی ملا جو دونوں میں سے ایک کے لئے غیر معین طور پر کافی ہے۔ تو اگر لمعہ دھو لیا پھر حدث کا تیمم کیا تو بالاتفاق جائز ہے اور اگر بر عکس کیا تو اس میں اختلاف ہے ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

عہ: پانچویں صورت کی تکمیل کے لئے کلام سابق کی جانب رجوع کیا ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

---

1 خلاصۃ الفتاوی الموضوع فی الفلوات مطبوعہ نولکشور لکھنو ۱ / ۳۳

Fatawa Razawiyya Volume 4

[Text on page]: If a person has a dry spot (lum'ah) on their body and experiences a minor impurity (hadath) before performing tayammum, they should perform one tayammum for both. According to Imam Muhammad, this is not permissible (as mentioned in Al-Hindiyya), but according to Imam Abu Yusuf, it is permissible. If the water found is not sufficient for either of them, the tayammum for both remains. For a person in a state of major impurity (junub) who has a dry spot on their body and experiences minor impurity before tayammum, they should perform one tayammum for both. Then, if they find water that is sufficient for only one of them indefinitely, they should use it for the dry spot and, according to Imam Muhammad, repeat the tayammum for the minor impurity. If a person in a state of major impurity has enough water for wudu (minor ablution), they should perform tayammum and not wudu. Then, if they performed wudu and performed tayammum for major impurity, and then minor impurity occurred, they should perform tayammum for their minor impurity. Now if... [Hilyah and Radd al-Muhtar]: A person who finds water after performing tayammum for major impurity and then experiences minor impurity afterwards, this falls into two categories: first, if they find water before (note 3) performing tayammum for the minor impurity. The water will either be sufficient for both the dry spot and wudu, so they should wash the spot and perform wudu...

[Footnotes/Notes]: Note 1: I say: Meaning, according to the school of this Imam and those who agree with him, performing wudu would be futile and useless; or according to the majority, it is for reducing the state of major impurity; or it was done to avoid scholarly disagreement, as I have discussed. 12 [Author], may Allah forgive him (T). Note 2: I say: 'Priority' (the state of being before) does not necessarily imply the existence of what follows it. Allah Almighty says: "Say: If the ocean were ink for the words of my Lord, the ocean would surely be exhausted before the words of my Lord were exhausted." (The rest on the next page).

1. Fatawa Hindiyya, Chapter on what nullifies tayammum, Peshawar, 1/29.
2. Al-Kafi.

Page 293 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द 4

[पृष्ठ पर लेख]: यदि किसी व्यक्ति के शरीर पर कोई सूखी जगह (लम्अह) रह गई हो और तैयम्मुम करने से पहले उसे ह़दथ (लघु अशुद्धि) हो जाए, तो वह दोनों के लिए एक ही तैयम्मुम करे। इमाम मुहम्मद के अनुसार यह जायज़ नहीं है (जैसा कि हिन्दिया में है), जबकि इमाम अबू यूसुफ़ के अनुसार यह जायज़ है। यदि पाया गया पानी उनमें से किसी के लिए भी पर्याप्त न हो, तो दोनों का तैयम्मुम शेष रहता है। कोई जुनुब (महा अशुद्धि की स्थिति में व्यक्ति) जिसके शरीर पर लम्अह है और उसे तैयम्मुम से पहले ह़दथ हुआ, तो वह दोनों के लिए एक ही तैयम्मुम करे। फिर यदि उसे इतना पानी मिले जो अनिश्चित रूप से किसी एक के लिए पर्याप्त हो, तो वह उसे लम्अह के लिए इस्तेमाल करे और इमाम मुहम्मद के अनुसार ह़दथ के तैयम्मुम को दोहराए। किसी जुनुब के पास वज़ू के लिए पर्याप्त पानी हो, तो वह तैयम्मुम करे और वज़ू न करे। फिर यदि उसने वज़ू कर लिया और जनाबत (महा अशुद्धि) के लिए तैयम्मुम किया और फिर उसे ह़दथ हुआ, तो वह अपने ह़दथ के लिए तैयम्मुम करे। अब यदि... [हिलिया और रद्द अल-मुह़्तार]: जिस व्यक्ति को जनाबत के लिए तैयम्मुम करने के बाद पानी मिले और फिर उसे ह़दथ हो जाए, तो इसके दो पहलू हैं: पहला, यदि उसे (नोट 3) ह़दथ के लिए तैयम्मुम करने से पहले पानी मिल जाए। पानी या तो लम्अह और वज़ू दोनों के लिए काफी होगा, तो वह लम्अह को धोए और वज़ू करे...

[पाद-टिप्पणियाँ/नोट]: नोट 1: मैं कहता हूँ: यानी इस इमाम और उनके समर्थकों के मत के अनुसार वज़ू करना व्यर्थ और निष्फल होगा; या अधिकांश के अनुसार यह जनाबत को कम करने के लिए होगा; या मतभेदों से बचने के लिए वज़ू किया गया जैसा कि मैंने चर्चा की है। 12 [लेखक], अल्लाह उन्हें क्षमा करे (त)। नोट 2: मैं कहता हूँ: 'पूर्वता' (होने से पहले) अपने बाद आने वाली चीज़ के अस्तित्व की मांग नहीं करती। अल्लाह तआला का फरमान है: "तुम फरमा दो, अगर समुद्र मेरे रब की बातों के लिए स्याही बन जाए तो समुद्र ख़त्म हो जाए इससे पहले कि मेरे रब की बातें ख़त्म हों।" (बाकी अगले पृष्ठ पर)।

1. फ़तावा हिन्दिया, तैयम्मुम तोड़ने वाली चीज़ों का बयान, पेशावर, 1/29।
2. अल-काफी।

पृष्ठ 761 में से 293

[صفحہ کی عبارت]: پہلے (حدث کا جیسا کہ ہندیہ میں ہے) تیمم کرلیا تو امام محمد کے نزدیک جائز نہیں اور امام ابویوسف کے نزدیک جائز ہے۔ اور اگر ان میں سے کسی کے لئے کافی نہ ہو تو دونوں کا تیمم باقی ہے۔ کوئی جنب جس کے بدن پر لمعہ ہے اسے تیمم سے پہلے حدث ہوا تو دونوں کے لئے ایک ہی تیمم کرے پھر اگر اتنا پانی ملے جو غیر معین طور پر کسی ایک کے لئے کافی ہو تو اسے لمعہ میں صرف کرے اور امام محمد کے نزدیک حدث کے تیمم کا اعادہ کرے۔ کسی جنب کے پاس وضو کے لئے بقدر کفایت پانی ہے تو وہ تیمم کرے اور وضو نہ کرے پھر اگر اس نے وضو کرلیا اور جنابت کا تیمم کیا پھر اسے حدث ہوا تو اپنے حدث کا تیمم کرے اب اگر۔۔۔ [حلیہ وردالمحتار]: الواجد للماء بعد ما تیمم للجنابة ثم احدث بعد ذلک علی وجہین احدہما ان یجد الماء قبل عہ۳ ان یتیمم للحدث فالماء اما ان یکون کافیا للمعة والوضوء فیغسلها ویتوضأ۔۔۔

[حواشی/نوٹ]: عہ۱ اقول: یعنی اس امام اور ان کے موافق حضرات کے مذہب پر عبث وبے فائدہ طور پر وضو کرلیا یا اکثر حضرات کے نزدیک تقلیل جنابت کے لئے وضو کرلیا یا اختلاف سے نکلنے کے لئے وضو کیا جیسا کہ میں نے بحث کی ۱۲منہ غفرلہ (ت) عہ۲ اقول: قبلیت اپنے مدخول کے وجود کی مقتضی نہیں۔ ارشاد باری تعالیٰ ہے: "تم فرماؤ اگر سمندر میرے رب کی باتوں کے لئے روشنائی ہوجائے تو سمندر ختم ہوجائے اس سے قبل کہ میرے رب کی باتیں ختم ہوں" (باقی اگلے صفحہ پر)

۱۔ فتاوی ہندیہ ما ینقض التیمم پشاور ۱ / ۲۹ ۲۔ کافی

Fatawa Rizwia - Volume 4

(Top Left Column - Arabic Text): And if it is not sufficient for either of them, he performs tayammum for the minor impurity (hadath). And if it is sufficient for the unwashed spot (lum'ah) but not for wudu, he applies it to the unwashed spot and performs tayammum for the minor impurity. And if it is sufficient for wudu but not for the unwashed spot, he performs wudu and does not wash the spot nor perform tayammum for it. And if it is sufficient for one of them without specification, he washes the spot and performs tayammum for the minor impurity. The second aspect is that he finds water after performing tayammum for the minor impurity, etc. In it is the mention of five [scenarios] as previously mentioned. Sharh Tahawi and Khazanat al-Muftin: A traveler was in a state of major impurity (janabah), performed ghusl, then realized a spot remained unwashed; he must perform tayammum because he has not yet exited the state of major impurity.

(Top Right Column - Urdu Text): If as much water is found as is sufficient for only one of the two, he should use it for the major impurity (janabah), and according to Imam Muhammad, he should repeat the tayammum for the minor impurity (hadath). "End quote from Hilyah and Radd al-Muhtar". For the one who finds water after performing tayammum for major impurity and then experiences minor impurity, there are two scenarios: First, if water is found before performing tayammum for the minor impurity, then if the water is sufficient for both washing the missed spot (lum'ah) and performing wudu, he should wash the spot and perform wudu. If the water is insufficient for either, he should perform tayammum for the minor impurity. If it's sufficient for the spot but not for wudu, he should use the water only for the spot and perform tayammum for the minor impurity. If it's sufficient for wudu but not for the spot, he should perform wudu and not wash the spot, nor perform tayammum for it. And if it's sufficient for either one indefinitely, he should wash the spot and perform tayammum for the minor impurity. Second...

(Bottom Left Column - Arabic Text): (Remaining footnote from the previous page) He performed tayammum for major impurity, then experienced minor impurity, then found water without having performed tayammum for the minor impurity before it. Otherwise, performing tayammum after it for minor impurity is not applicable when the water is sufficient for both or specifically for wudu. Analogize this with the statement in Al-Khulasah: "Minor impurity occurred before washing the spot," and rather even the upcoming statement from Sharh al-Tahawi: "He found water after performing tayammum before the minor impurity." Because the occurrence of minor

impurity after it is not considered, even if it is inevitable, whether he lives or dies, based on the view that death is a minor impurity, as is the preferred view with us. 12 [From him, may Allah forgive him] (M)

(Bottom Right Column - Urdu Text): So the meaning is that he performed tayammum for major impurity, then experienced minor impurity, then found water without having performed tayammum for the minor impurity before it. Otherwise, performing tayammum for minor impurity after it is not in the case when water is sufficient for both or sufficient only for wudu. On this, the phrase from Khulasah "minor impurity occurred before washing the spot" should be analogized, rather even this upcoming phrase from Sharh Tahawi "he got water after he had performed tayammum before minor impurity". Because the existence of minor impurity after it is not considered, although there is no escape from it, whether he lives or dies, based on this saying death is minor impurity, as is also preferred near us. 12 [From him, may Allah forgive him] (T)

1 Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, printed by Mustafa al-Babi, Egypt, 1/187.

फ़तावा रिज़विया - जिल्द चौथी

(ऊपर बाईं ओर का कॉलम - अरबी पाठ): और यदि वह दोनों में से किसी के लिए पर्याप्त नहीं है, तो वह लघु अशुद्धि (हदथ) के लिए तयम्मुम करे। और यदि वह बिना धुले स्थान (लुमह) के लिए पर्याप्त है लेकिन वज़ू के लिए नहीं, तो वह उसे उस स्थान पर लगाए और लघु अशुद्धि के लिए तयम्मुम करे। और यदि वह वज़ू के लिए पर्याप्त है लेकिन लुमह के लिए नहीं, तो वह वज़ू करे और उस स्थान को न धोए और न ही उसके लिए तयम्मुम करे। और यदि वह बिना किसी विशिष्टता के किसी एक के लिए पर्याप्त है, तो वह लुमह को धोए और लघु अशुद्धि के लिए तयम्मुम करे। दूसरा पहलू यह है कि वह लघु अशुद्धि के लिए तयम्मुम करने के बाद पानी पाता है, इत्यादि। इसमें पाँच [स्थितियों] का उल्लेख है जैसा कि पहले बताया गया है। शरह तहावी और खज़ानतुल मुफ़्तीन: एक मुसाफ़िर जुनुब था, उसने ग़ुस्ल किया, फिर उसे पता चला कि एक जगह बिना धुली रह गई है; वह तयम्मुम करे क्योंकि वह अभी तक जनावत (बड़ी अशुद्धि) से बाहर नहीं निकला है।

(ऊपर दाईं ओर का कॉलम - उर्दू पाठ): इतना पानी मिला जो दोनों में से किसी एक के लिए काफ़ी है तो उसे जनावत (बड़ी नापाकी) में खर्च करे और इमाम मुहम्मद के नज़दीक तयम्मुम-ए-हदथ (छोटी नापाकी के तयम्मुम) का इआदा (दोहराना) करे। "इति (समाप्त), हिलिया और रद-दुल मुहतार"। वह व्यक्ति जिसे जनावत के तयम्मुम के बाद पानी मिले फिर उसके बाद उसे हदथ (छोटी नापाकी) हो, उसकी दो सूरतें हैं: एक यह कि हदथ का तयम्मुम करने से पहले पानी मिले, तो पानी अगर लुमह (बिना धुली जगह) और वज़ू दोनों के लिए काफ़ी हो तो लुमह को धोए और वज़ू करे। और अगर पानी किसी एक के लिए नाकाफ़ी हो तो हदथ का तयम्मुम करे। अगर लुमह के लिए काफ़ी हो, वज़ू के लिए नहीं, तो पानी सिर्फ़ लुमह के लिए सर्फ़(खर्च) करे, हदथ के लिए तयम्मुम करे। और अगर वज़ू के लिए काफ़ी हो, लुमह के लिए नहीं, तो वज़ू करे और लुमह को न धोए, न ही उसके लिए तयम्मुम करे। और अगर गैर-मुअय्यन (अनिश्चित) तौर पर किसी एक के लिए काफ़ी हो तो लुमह को धोए और हदथ का तयम्मुम करे। दूसरी...

(नीचे बाईं ओर का कॉलम - अरबी पाठ): (पिछले पृष्ठ के हाशिये का शेष भाग) उसने जनावत के लिए तयम्मुम किया, फिर उसे हदथ हुआ, फिर उसे पानी मिला बिना इसके कि उसने उससे पहले हदथ का तयम्मुम किया हो। अन्यथा, उसके बाद हदथ का तयम्मुम उस स्थिति में नहीं है जब पानी दोनों के लिए या विशेष रूप से वज़ू के लिए पर्याप्त हो। इसी पर खुलासः के इस कथन को क़यास किया जाए: "लुमह धोने से पहले हदथ हुआ", बल्कि शरह तहावी के इस आने वाले कथन को भी: "तयम्मुम करने

के बाद हदथ से पहले पानी मिला"। क्योंकि उसके बाद हदथ का अस्तित्व ध्यान में नहीं रखा जाता, चाहे वह अपरिहार्य हो, वह जिए या मरे, इस विचार के आधार पर कि मृत्यु एक हदथ है जैसा कि हमारे पास वरीय (राजेह) है। १२ [उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे] (म)

(नीचे दाईं ओर का कॉलम - उर्दू पाठ): तो मानी यह हुआ कि जनावत का तयम्मुम किया फिर उसे हदथ हुआ फिर पानी पाया बग़ैर इसके कि उससे पहले हदथ का तयम्मुम किया हो। वरना उसके बाद हदथ का तयम्मुम उस सूरत में नहीं जब दोनों ही के लिये पानी काफ़ी हो या सिर्फ़ वज़ू के लिये काफ़ी हो। इसी पर खुलासः की इबारत "लुमह धोने से पहले हदथ हुआ" का क़यास किया जाए बल्कि शरह तहावी की आने वाली इस इबारत का भी "उसे पानी मिला इसके बाद कि तयम्मुम कर चुका हदथ से पहले"। क्योंकि इसके बाद हदथ का वजूद मल्हूज़ (ध्यान में) नहीं अगरचे इससे मफ़र (बचाव) नहीं जिये या मरे इस क़ौल पर मौत हदथ है जैसा कि हमारे नज़दीक राजेह भी है। १२ [उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे] (त)

१ रद-दुल मुहतार, बाबुत तयम्मुम, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र द्वारा मुद्रित, १/१८७। पृष्ठ २९४/७६१

فتاوی رضویہ جلد چہارم

(اوپر بائیں کالم کی عربی عبارت): واما غیر کاف لاحدھما فیتیمم للحدث واما کاف باللمعة دون الوضوء فیصرفه الی اللمعة ویتیمم للحدث واما کافیا للوضوء دون اللمعة فیتوضأ ولا یغسل اللمعة ولا یتیمم لها واما کافیا لاحدھما غیر عین فیغسل اللمعة ویتیمم للحدث الوجه الثانی ان یجد الماء بعد ان یتیمم للحدث الخ فیه ذکر الخمسة علی نحو مامر۔ شرح طحاوی وخزانة المفتین المسافر اجنب فاغتسل ثم علم انه بقی لمعة فإنه یتیمم لانه لم یخرج عن الجنابة۔

(اوپر دائیں کالم کی اردو عبارت): اتنا پانی ملا جو دونوں میں سے کسی ایک کے لئے کافی ہے تو اسے جنابت میں صرف کرے اور امام محمد کے نزدیک تیمم حدوث کا اعادہ کرے "اھ حلیہ وردالمحتار" وہ جسے تیمم جنابت کے بعد پانی ملے پھر اس کے بعد اسے حدث ہو اس کی دو صورتیں ہیں ایک یہ کہ حدث کا تیمم کرنے سے پہلے پانی ملے تو پانی اگر لمعہ اور وضو دونوں کے لئے کافی ہو تو لمعہ کو دھوئے اور وضو کرے اور اگر پانی کسی ایک کے لئے ناکافی ہو تو حدث کا تیمم کرے۔ اگر لمعہ کے لئے کافی ہو وضو کے لئے نہیں تو پانی لمعہ کے لئے صرف کرے حدث کے لئے تیمم کرے، اور اگر وضو کے لئے کافی ہو لمعہ کے لئے نہیں تو وضو کرے اور لمعہ کو نہ دھوئے، نہ ہی اس کے لئے تیمم کرے اور اگر غیر معین طور پر کسی ایک کے لئے کافی ہو تو لمعہ کو دھوئے اور حدث کا تیمم کرے دوسری

(نیچے بائیں کالم کی عربی عبارت): (بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) تیمم للجنابة ثم احدث ثم وجد الماء من دون ان یتیمم قبله للحدث والا فالتیمم بعده للحدث لیس فیما اذا کفی لهما معا اوللوضوء خاصة وقس علیه قول الخلاصة احدث قبل غسل اللمعة بل وقول شرح الطحاوی الاتی وجد الماء بعد ماتیمم قبل

الحدث فأن وجود الحدث بعده غیر ملحوظ فیه وان کان لابد منه عاش اومات علی قول ان الموت حدث کما ھو الراجح عندنا ۱۲ منه غفرلہ (م)

(نیچے دائیں کالم کی اردو عبارت): تو معنی یہ ہوا کہ جنابت کا تیمم کیا پھر اسے حدث ہوا پھر پانی پایا بغیر اس کے کہ اس سے پہلے حدث کا تیمم کیا ہو۔ ورنہ اس کے بعد حدث کا تیمم اس صورت میں نہیں جب دونوں ہی کے لئے پانی کافی ہو یا صرف وضو کے لئے کافی ہو۔ اسی پر خلاصہ کی عبارت "لمعہ دھونے سے پہلے حدث ہوا" کا قیاس کیا جائے بلکہ شرح طحاوی کی آنے والی اس عبارت کا بھی "اسے پانی ملا اس کے بعد کہ تیمم کر چکا حدث سے پہلے"۔ کیونکہ اس کے بعد حدث کا وجود ملحوظ نہیں اگرچہ اس سے مفر نہیں جئے یا مرے اس قول پر موت حدث ہے جیسا کہ ہمارے نزدیک راجح بھی ہے ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

1 ردالمحتار باب التیمم مطبوعہ مصطفے البانی مصر ۱ / ۱۸۷ صفحہ 294 از 761

Volume Four Fatawa Razawiya

[Arabic Text Section] Due to the remaining of the unwashed spot (lum'a), if one experiences minor ritual impurity (hadath) before performing tayammum, one performs a single tayammum for both the spot and the hadath together, just as when one experiences hadath multiple times, only one wudu (ablution) is required. If hadath occurs after tayammum and then water is found (note 1), there are five scenarios: If the water is sufficient for both, one washes the spot and performs wudu for the hadath. If it is not sufficient for both (note 2), one washes as much as suffices to reduce the state of major ritual impurity (janaba) and performs tayammum. If it suffices for the spot (note 3), one washes the spot and performs tayammum for the hadath. If it suffices for wudu but not for the spot, one performs wudu and does not wash the spot; he is like a person in a state of janaba who performs tayammum. Then, if hadath occurs and he finds water sufficient for wudu, he performs wudu with it. If it suffices for each individually but not for both together, he washes the spot because janaba is a weightier impurity, then he performs tayammum for the hadath. If he starts with tayammum and then washes the spot, it is not permissible, and he must perform tayammum after washing. And in al-Nawadir, it is mentioned that he must (note 4).

[Urdu Text Section] The case is that water is found after performing tayammum for hadath. Etc. In this also, mention five scenarios like the previous one. Sharh al-Tahawi and Khazanat al-Muftin: If a traveler becomes junub (in major ritual impurity) and performs ghusl (bath), then discovers an unwashed spot (lum'a), he should perform tayammum because he has not exited the state of janaba due to the remaining spot. And if he experiences hadath before performing tayammum, he performs a single tayammum for both the spot and the hadath, just as multiple occurrences of hadath do not mandate more than one wudu. And if hadath occurs after tayammum and then water is found, there are five scenarios: (1) When water is sufficient for both, wash the spot and perform wudu for hadath. (2) And if it is insufficient for both, wash as much as is sufficient so that janaba is reduced, and perform tayammum. (3) If it is sufficient for the spot, wash the spot and perform tayammum for hadath. (4) If it is sufficient for wudu but not for the spot, perform wudu and do not wash the spot, and he is like that junub person who performs tayammum.

[Notes Section] (Note 1) Meaning before performing tayammum for hadath because the mention of finding it after that follows later. (Note 2) Meaning it is not enough for either of the two. (Note 3) Meaning it is not enough for wudu. (Note 4) I say: Meaning

he has a choice. It can also be said that choice (takhyir) does not contradict obligation (wujub), as in the case of expiation for an oath (kaffara al-yamin).

[अरबी पाठ अनुभाग] धब्बा (अनधोया हिस्सा) रह जाने के कारण, यदि तैयम्मुम करने से पहले लघु अशुद्धि (हदथ) हो जाती है, तो धब्बे और हदथ दोनों के लिए एक ही तैयम्मुम किया जाता है, ठीक उसी तरह जैसे बार-बार हदथ होने पर केवल एक वुज़ू (शुद्धि) की आवश्यकता होती है। यदि तैयम्मुम के बाद हदथ हो जाए और फिर पानी मिल जाए (नोट 1), तो पाँच स्थितियाँ होती हैं: यदि पानी दोनों के लिए पर्याप्त है, तो धब्बे को धोएं और हदथ के लिए वुज़ू करें। यदि यह दोनों के लिए अपर्याप्त है (नोट 2), तो जितना संभव हो उतना धोएं ताकि बड़ी अशुद्धि (जनाबत) कम हो जाए और तैयम्मुम करें। यदि यह धब्बे के लिए पर्याप्त है (नोट 3), तो धब्बे को धोएं और हदथ के लिए तैयम्मुम करें। यदि यह वुज़ू के लिए पर्याप्त है लेकिन धब्बे के लिए नहीं, तो वुज़ू करें और धब्बे को न धोएं वह उस व्यक्ति की तरह है जो जनाबत की स्थिति में तैयम्मुम करता है। फिर, यदि हदथ होता है और उसे वुज़ू के लिए पर्याप्त पानी मिलता है, तो वह उससे वुज़ू करता है। यदि यह प्रत्येक के लिए व्यक्तिगत रूप से पर्याप्त है लेकिन दोनों के लिए एक साथ नहीं, तो वह धब्बे को धोता है क्योंकि जनाबत एक भारी अशुद्धि है, फिर वह हदथ के लिए तैयम्मुम करता है। यदि वह तैयम्मुम से शुरू करता है और फिर धब्बे को धोता है, तो यह अनुमत नहीं है, और उसे धोने के बाद तैयम्मुम करना चाहिए। और अल-नवादिर में उल्लेख है कि उसे (नोट 4) करना होगा।

[उर्दू पाठ अनुभाग] मामला यह है कि हदथ के लिए तैयम्मुम करने के बाद पानी मिल जाता है। इत्यादि। इसमें भी पिछली तरह की पाँच स्थितियों का उल्लेख करें। शरह अल-तहावी और खज़ानत अल-मुफ़्तीन: यदि किसी यात्री को जनाबत (बड़ी अशुद्धि) हो जाती है और वह ग़ुस्ल (स्नान) करता है, फिर उसे एक अनधोया धब्बा (लुमआ) मिलता है, तो उसे तैयम्मुम करना चाहिए क्योंकि वह धब्बा शेष रहने के कारण जनाबत की स्थिति से बाहर नहीं निकला है। और यदि उसे तैयम्मुम करने से पहले हदथ हो जाता है, तो वह धब्बे और हदथ दोनों के लिए एक ही तैयम्मुम करता है, जैसे बार-बार हदथ होने पर एक से अधिक वुज़ू अनिवार्य नहीं होते। और यदि तैयम्मुम के बाद हदथ होता है और फिर पानी मिलता है, तो पाँच स्थितियाँ होती हैं: (1) जब पानी दोनों के लिए पर्याप्त हो, तो धब्बे को धोएं और हदथ के लिए वुज़ू करें। (2) और यदि यह दोनों के लिए अपर्याप्त हो, तो जितना पर्याप्त हो उतना धोएं ताकि जनाबत कम हो जाए, और तैयम्मुम करें। (3) यदि धब्बे के लिए पर्याप्त हो, तो धब्बे को धोएं और हदथ का तैयम्मुम करें। (4) यदि वुज़ू के लिए पर्याप्त हो लेकिन धब्बे के लिए नहीं, तो वुज़ू करें और धब्बे को न धोएं और वह उस जुनूब (अशुद्ध) व्यक्ति की तरह है जो तैयम्मुम करता है।

[नोट्स अनुभाग] (नोट 1) यानी हदथ के लिए तैयम्मुम करने से पहले, क्योंकि उसके बाद पानी मिलने का उल्लेख आगे आ रहा है। (नोट 2) यानी दोनों में से किसी के लिए भी पर्याप्त नहीं है। (नोट 3) यानी वुज़ू के लिए पर्याप्त नहीं है। (नोट 4) मैं कहता हूँ: यानी उसके पास विकल्प है। यह भी कहा जा सकता है कि विकल्प (तख़्ख़ीर) अनिवार्यता (वुजूब) के विपरीत नहीं है, जैसा कि शपथ के प्रायश्चित (कफ़्फ़ारा अल-यमीन) के मामले में होता है।

पृष्ठ 295/761

[عربی عبارت] لبقاء اللمعۃ ولواحدث قبل التیمم یتیمم تیماً واحداً للمعۃ والحدث جمیعاً کما اذا احدث مراراً لایجب علیہ اکثر من وضوء واحد ولو احدث بعد التیمم ثم وجد الماء عھ۱ فھو علی خمسۃ اوجھ اذا کفا ھما جمیعاً یغسل اللمعۃ ویتوضأ للحدث وان کان لایکفیھما عھ۲ یغسل مقدار مایکفیہ حتی تقل الجنابۃ ویتیمم ولوکفی للمعۃ عھ۳ یغسل اللمعۃ ویتیمم للحدث ولو کفی للوضوء دون اللمعۃ ویتیمم للحدث ولو کفی للوضوء دون اللمعۃ یتوضأ ولایغتسل اللمعۃ وھو کالجنب اذا تیمم ثم احدث ثم وجد الماء یکفیہ للوضوء یتوضأ بہ ولو کفی لکل علی الانفراد لا جمیعاً یغسل اللمعۃ لان الجنابۃ اغلظ ثم یتیمم للحدث ولو بدأ بالتیمم ثم غسل اللمعۃ لایجوز وعلیہ ان یتیمم بعد الغسل وفی النوادر ان علیہ عھ۴

[اردو ترجمہ و شرح] صورت یہ کہ حدث کا تیمم کرنے کے بعد پانی ملے۔ الخ اس میں بھی سابق کی طرح پانچ صورتیں ذکر کریں۔ شرح طحاوی وخزانۃ المفتین مسافر کو جنابت لاحق ہوئی تو اس نے غسل کیا پھر اسے معلوم ہوا کہ لمعہ رہ گیا تو وہ تیمم کرے اس لئے کہ لمعہ باقی رہ جانے کی وجہ سے وہ جنابت سے باہر نہ ہوا اور اگر قبل تیمم اسے حدث ہوا تو لمعہ اور حدث دونوں کے لئے ایک ہی تیمم کرے جیسے بار بار حدث ہو تو اس پر ایک وضو سے زیادہ واجب نہیں۔ اور اگر بعد تیمم اسے حدث ہوا پھر پانی ملا تو اس کی پانچ صورتیں ہیں: (۱) جب دونوں کو پانی کافی ہو تو لمعہ دھوئے اور حدث کے لئے وضو کرے (۲) اور اگر دونوں کے لئے غیر کافی ہو تو جس حصہ تک کفایت کرے دھوئے تاکہ جنابت کم ہو اور تیمم کرے (۳) اگر لمعہ کے لئے کافی ہو تو لمعہ دھوئے اور حدث کا تیمم کرے (۴) اگر وضو کے لئے کافی ہو لمعہ کے لئے نہیں تو وضو کرے اور لمعہ نہ دھوئے اور وہ اس جنب کی طرح ہے جو تیمم کرے

[حواشی] عھ۱ ای قبل یتیمم للحدث لان الوجدان بعدہ یاتی بعدہ منہ غفرلہ (م) - یعنی حدث کا تیمم کرنے سے پہلے اس لئے کہ اس کے بعد ملنے کا ذکر آگے آرہا ہے ۱۲ منہ غفرلہ (ت) عھ۲ ای شیئاً منھما ۱۲ منہ غفرلہ (م) - یعنی دونوں میں سے کسی کے لئے کافی نہ ہو ۱۲ منہ غفرلہ (ت) عھ۳ ای دون الوضوء ۱۲ منہ غفرلہ (م) - یعنی وضو کے لئے کافی نہ ہو ۱۲ منہ غفرلہ (ت) عھ۴ اقول: ای لہ ولک ان تقول ان (۱) التخییر لاینافی الوجوب کما فی کفارۃ الیمین ۱۲ منہ غفرلہ (م) - اقول: یعنی اسے اختیار ہے۔ یہ بھی کہا جاسکتا ہے کہ تخییر منافی وجوب نہیں جیسے کفارہ یمین میں ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

Fatawa Razawiyya, Volume 4

(Arabic): ...whichever of them he wishes to start with.

(Urdu): Then if he experiences ritual impurity (hadath), and then finds water that is sufficient for ablution (wudu), he should perform wudu with it (5). And if it is sufficient for each one individually, but not for both, then he should wash the dry patch (lum'ah), because ritual impurity due to major pollution (janabat) is more severe, then he should perform dry ablution (tayammum) for the minor impurity (hadath). If he performed tayammum first and then washed the lum'ah, it is not permissible. It is prescribed for him to perform tayammum after washing. In 'Nawadir', it is mentioned that he can start with whichever of the two he wishes. And if he found water after performing tayammum for the lum'ah but before the occurrence of hadath, there are two scenarios: if it is sufficient for him, he washes it, and if it is not sufficient for him, he washes the amount that is sufficient and his tayammum remains as it is. And if he found water after both hadath and tayammum for hadath occurred, then there are five scenarios as we mentioned: if it is sufficient for both, he uses it for both. If it is not sufficient for both, he washes the lum'ah as much as is sufficient and his tayammum remains as it is. If it is sufficient for the lum'ah but not for wudu, he washes the lum'ah and his tayammum remains as it is. If it is sufficient for wudu but not for the lum'ah, he performs wudu. If it is sufficient for either one individually, he washes the lum'ah and his tayammum remains as it is, and upon...

(Arabic Main Body Text): If he found water [1] after performing tayammum for the dry patch before the occurrence of minor ritual impurity, there are two scenarios: if it is sufficient for him, he washes it, and if it is not sufficient for him, he washes as much as is sufficient and his tayammum remains as it is. And if he found water [2] after minor ritual impurity occurred and he performed tayammum for it, there are five scenarios as we have mentioned: if it is sufficient for both, he uses it for both. If it is not sufficient for both, he washes the dry patch as much as is sufficient and his tayammum remains as it is. If it is sufficient for the dry patch but not for ablution, he washes the dry patch and his tayammum remains as it is. If it is sufficient for ablution but not for the dry patch, he performs ablution. If it is sufficient for either one individually, he washes the dry patch and his tayammum remains as it is, and upon...

Annotations: [1]: i.e., he performed tayammum for it, then found water and minor impurity had not occurred yet. 12 [From] him, may he be forgiven. (M) Meaning he

performed tayammum because of a dry spot, then he found water and minor ritual impurity (hadath) has not yet occurred. 12 [From] him, may he be forgiven. (T)

[2]: I say: i.e., he was in a state of major ritual impurity (junub), so he performed tayammum for the dry patch (lum'ah), then minor ritual impurity (hadath) occurred and he performed tayammum for it, then he found water. Because all the scenarios are based on the case where a lum'ah remains for which tayammum was performed, and because of his saying "and he performed tayammum for the hadath". Thus, it is known that the tayammum for the lum'ah is already concluded, otherwise he would have said "he performed tayammum for both of them". This has been made clear to you by the text of 'al-Hilyah'. 12 [From] him, may he be forgiven. (M) I say: Meaning he was in major ritual impurity, so he performed tayammum for the dry spot, then minor ritual impurity occurred, so he performed tayammum for that, then he found water. This is because all scenarios are being applied here when a dry spot remained and then tayammum was performed for it. And from their statement "and he performed tayammum for the hadath", this meaning is also determined. So it became known that the discussion is separate from the tayammum for the dry spot and is not under discussion, otherwise they would have said "tayammum lahuma" (he performed tayammum for both). This meaning has become clear from the text of 'al-Hilyah'. 12 [From] him, may he be forgiven. (T)

फ़तावा रज़विया, खंड 4

(अरबी): ...उनमें से जिससे चाहे शुरू करे।

(उर्दू): फिर उसे ह़दथ (लघु अशुद्धि) हो, फिर पानी मिले जो वुज़ू के लिए काफ़ी हो तो उससे वुज़ू करेगा (5)। और अगर तन्हा हर एक के लिए काफ़ी हो, दोनों के लिए नहीं, तो लुमअ़ (सूखा हिस्सा) धोये क्योंकि जनाबत (बड़ी नापाकी) ज़्यादा सख़्त है, फिर ह़दथ के लिए तयम्मुम करे। और अगर पहले तयम्मुम किया फिर लुमअ़ धोया तो जाइज़ नहीं। और इस पर यह है कि धोने के बाद तयम्मुम करे। और 'नवादिर' में है कि उसे अधिकार है कि दोनों में जिससे चाहे शुरुआत करे। और अगर लुमअ़ के लिए तयम्मुम करने के बाद ह़दथ से पहले पानी पाया तो उसकी दो सूरतें हैं: अगर उसे काफ़ी हो तो धोये और अगर काफ़ी न हो तो जहाँ तक किफ़ायत करे धो ले और उसका तयम्मुम बरक़रार है। और अगर ह़दथ होने और ह़दथ का तयम्मुम करने के बाद पाया तो उसकी पाँच सूरतें हैं उसी तरह जो हमने बयान कीं। अगर दोनों को किफ़ायत करे तो दोनों में सर्फ़ करे और...

(अरबी मुख्य भाग): यदि उसने सूखे हिस्से (लुमअ़) के लिए तयम्मुम करने के बाद और ह़दथ से पहले पानी पाया [1], तो इसके दो पहलू हैं: यदि वह उसे पर्याप्त हो तो वह उसे धो ले, और यदि वह उसे पर्याप्त न हो तो वह पर्याप्त मात्रा में धो ले और उसका तयम्मुम अपनी स्थिति पर रहे। और यदि उसने ह़दथ होने और ह़दथ के लिए तयम्मुम करने के बाद पानी पाया [2], तो इसके पाँच पहलू हैं जैसा कि हमने उल्लेख किया है: यदि पानी उन दोनों के लिए पर्याप्त है तो वह उन्हें उन दोनों पर खर्च करे, और यदि वह उन दोनों के लिए पर्याप्त नहीं है तो वह पर्याप्त मात्रा में लुमअ़ धो ले और उसका तयम्मुम अपनी स्थिति पर रहे, और यदि पानी लुमअ़ के लिए पर्याप्त है वुज़ू के लिए नहीं तो वह लुमअ़ धो ले और तयम्मुम अपनी स्थिति पर रहे, और यदि वह लुमअ़ के बजाय वुज़ू के लिए पर्याप्त है तो वह वुज़ू करे, और यदि वह अलग-अलग उनमें से किसी एक के लिए पर्याप्त है तो वह लुमअ़ धो ले और उसका तयम्मुम अपनी स्थिति पर रहे और...

हाशिये (टिप्पणियाँ): [1]: यानी उसके लिए तयम्मुम किया फिर पानी पाया और अभी ह़दथ नहीं हुआ था। १२ उनसे, अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (म) यानी लुमअ़ की वजह से तयम्मुम किया फिर उसे पानी मिला और अभी उसे ह़दथ नहीं हुआ है। १२ उनसे, अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (त)

[2]: मैं कहता हूँ: यानी वह जुनुब (बड़ी नापाकी की स्थिति) में था तो लुमअ़ के लिए तयम्मुम किया फिर ह़दथ हुआ तो उसके लिए तयम्मुम किया फिर पानी पाया क्योंकि तमाम सूरतें उस मामले में पेश

की गई हैं जब लुमअ़ बाकी रह गया हो और उसके लिए तयम्मुम किया गया हो, और उनके इस कथन के कारण कि "और ह़दथ के लिए तयम्मुम किया"। तो मालूम हुआ कि लुमअ़ के लिए तयम्मुम का मामला पूरा हो चुका है, वरना वह कहते "उन दोनों के लिए तयम्मुम किया"। और 'ह़िलया' के कलाम से यह आप पर स्पष्ट हो चुका है। १२ उनसे, अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (म) मैं कहता हूँ: यानी उसे जनाबत हुई तो लुमअ़ का तयम्मुम किया फिर ह़दथ हुआ तो ह़दथ का तयम्मुम किया फिर पानी मिला इसलिए कि तमाम सूरतें इसमें जारी की जा रही हैं जब लुमअ़ रह गया हो फिर उसका तयम्मुम कर लिया हो और उनके क़ौल 'व तयम्मुम लिल ह़दथ' (और ह़दथ का तयम्मुम किया) से भी यह अर्थ निश्चित होता है। तो मालूम हुआ कि लुमअ़ के तयम्मुम से बात अलग है और उससे चर्चा नहीं वरना यों कहते 'तयम्मुम लहुमा' (दोनों का तयम्मुम कर लिया) और 'ह़िलया' की इबारत से यह अर्थ स्पष्ट हो चुका है। १२ उनसे, अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (त)

ان یبدء بایھما شاء۔ پھر اسے حدث ہو پھر پانی ملے جو وضو کے لئے کافی ہو تو اس سے وضو کرے گا (۵) اور اگر تنہا ہر ایک کے لئے کافی ہو، دونوں کے لئے نہیں، تو لمعہ دھوئے اس لئے کہ جنابت زیادہ سخت ہے پھر حدث کے لئے تیمم کرے اور اگر پہلے تیمم کیا پھر لمعہ دھویا تو جائز نہیں۔ اور اس پر یہ ہے کہ دھونے کے بعد تیمم کرے اور نوادر میں ہے کہ اس پر یہ ہے کہ دونوں میں جس سے چاہے ابتدا کرے۔ اور اگر لمعہ کے لئے تیمم کرنے کے بعد حدث سے پہلے پانی پایا تو اس کی دو صورتیں ہیں اگر اسے کافی ہو دھوئے اور اگر کافی نہ ہو تو جہاں تک کفایت کرے دھو لے اور اس کا تیمم برقرار ہے اور اگر حدث ہونے اور حدث کا تیمم کرنے کے بعد پایا تو اس کی پانچ صورتیں ہیں اسی طرح جو ہم نے بیان کیں۔ اگر دونوں کو کفایت کرے تو دونوں میں صرف کرے اور ولو وجد الماء عہ۱ بعد ما تیمم للمعة قبل الحدث فھو علی وجھین ان کفاہ یغسلہ وان لم یکفہ یغسل قدر ما یکفیہ وتیممہ علی حالہ ولو وجد عہ۲ بعد ما احدث وتیمم للحدث فھو علی خمسة اوجہ علی ما ذکرنا ان کفاھما صرف الیھما وان لم یکفھما غسل اللمعة مقدار ما یکفیہ وتیممہ علی حالہ وان کفی للمعة لا للوضوء یغسل اللمعة والتیمم علی حالہ وان کفی للوضوء دون اللمعة یتوضوء وان کفی لاحدھما علی الانفراد یغسل اللمعة وتیممہ علی حالہ وعلی

عہ۱: ای تیمم لھا ثم وجد الماء ولم یحدث بعد ۱۲ منہ غفر لہ (م) یعنی لمعہ کی وجہ سے تیمم کیا پھر اسے پانی ملا اور ابھی اسے حدث نہیں ہوا ہے ۱۲ منہ غفرلہ (ت) عہ۲: اقول: ای اجنب فتیمم للمعة ثم احدث فتیمم لہ ثم وجد الماء لان الوجوہ کلھا مسوقة في ما اذا بقی لمعة فتیمم لھا ولقولہ وتیمم للحدث فعلم ان التیمم للمعة مفروغ عنہ والا لقال تیمم لھما وقد اتضح لك بکلام الحلیة ۱۲ منہ غفر لہ (م) اقول: یعنی اسے جنابت ہوئی تو لمعہ کا تیمم کیا پھر حدث ہوا تو حدث کا تیمم کیا پھر پانی ملا اس لئے کہ

تمام صورتیں اس میں جاری کی جا رہی ہیں جب لمعہ رہ گیا ہو پھر اس کا تیمم کرلیا ہو اور ان کے قول و تیمم للحدث (اور حدث کا تیمم کیا) سے بھی یہ معنی متعین ہوتا ہے۔ تو معلوم ہوا کہ لمعہ کے تیمم سے کلام الگ ہے اور اس سے بحث نہیں ورنہ یوں کہتے تیمم لہما (دونوں کا تیمم کرلیا) اور حلیہ کی عبارت سے یہ معنی واضح ہو چکا ہے ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

Analogy of Imam Muhammad's statement: He should perform Tayammum (dry ablution)[1] etc.

Explanation from Sharh al-Wiqaya: A person in a state of major ritual impurity (Junub) bathed, but water did not reach a spot (Lam'ah) on his back and the water finished. Then a state of minor impurity (Hadath) occurred necessitating Wudu (ablution), so he performed Tayammum for both. Later, he found enough water for both; his Tayammum becomes void for both. If it is not enough for either, it remains valid for both. If it is specifically sufficient for one, he should wash that and Tayammum remains for the other. If it is sufficient for each individually [but not both together], he should wash the spot. This applies when one Tayammum was done for both states of impurity. However, if he performed Tayammum for Janabat (major impurity) and then Hadath occurred and he performed Tayammum for Hadath, then found water, the ruling is the same as the mentioned scenarios. And if he performed Tayammum for Janabat, then Hadath occurred but he did not perform Tayammum for Hadath, then found water[2], etc. Five scenarios are mentioned there similarly as passed before.

Author's Clarifications: The humble servant, may the Almighty Lord forgive him, desires that by the grace of Allah Almighty, he clarifies all ninety-eight (98) scenarios with clear rulings. For them, keep this diagram in mind where seven categories are on the forehead and under each forehead...

---

[1] Sharh al-Tahawi by al-Isbijabi and Khizanat al-Muftin [2] Sharh al-Wiqaya, Chapter on Invalidating Tayammum, Maktabah Rashidiyah Delhi, 1/102

इमाम मोहम्मद के कथन का कयास (तर्क): वह तयम्मुम करे[1] आदि।

शरह-ए-विकाया की व्याख्या: एक जुनुबी (बड़ी अशुद्धि वाला व्यक्ति) ने स्नान किया और पानी उसकी पीठ के एक लम्अह (बिना धुले स्थान) तक नहीं पहुँचा और पानी समाप्त हो गया। फिर उसे कोई ऐसा हदस (अशुद्धि) हुआ जिससे वुज़ू अनिवार्य हो गया, तो उसने दोनों के लिए तयम्मुम किया। फिर उसे इतना पानी मिला जो दोनों के लिए पर्याप्त हो; तो दोनों के हक में उसका तयम्मुम बातिल (अमान्य) हो गया। और अगर किसी के लिए पर्याप्त न हो, तो दोनों के हक में बाकी रहा। और अगर विशेष रूप से एक के लिए पर्याप्त हो, तो उसे धो ले और दूसरे के हक में तयम्मुम बाकी रहेगा। और अगर प्रत्येक के लिए अकेले पर्याप्त हो, तो लम्अह धो ले। यह उस स्थिति में है जब दोनों हदसों के लिए एक ही तयम्मुम किया गया हो। लेकिन जब जनाबत का तयम्मुम कर लिया फिर हदस हुआ तो हदस का तयम्मुम किया, फिर पानी मिला तो उपरोक्त स्थितियों में वही हुक्म (आदेश) है। और अगर जनाबत का तयम्मुम कर लिया फिर हदस हुआ और हदस का तयम्मुम नहीं किया, फिर पानी मिला[2] आदि। इसमें भी पाँच स्थितियाँ उसी तरह वर्णित हैं जो गुज़र चुकी हैं।

लेखक का स्पष्टीकरण: फ़क़ीर (विनम्र दास), ईश्वर उसे क्षमा करे, अल्लाह तआला की तौफीक से चाहता है कि कुल अठानवे (98) स्थितियों को स्पष्ट आदेशों के साथ स्पष्ट करे। उनके लिए यह चित्र याद रखें कि सात श्रेणियाँ माथे पर हों और प्रत्येक माथे के नीचे...

---

[1] शरह अल-तहावी अल-इस्बीजाबी और खिज़ानत अल-मुफ़्तीन [2] शरह अल-विकाया, तयम्मुम तोड़ने का अध्याय, मकतबा रशीदिया दिल्ली, 1/102

قیاس قول محمد یتیمم[1] اھ

اگر دونوں کے لئے غیر کافی ہو تو جہاں تک کفایت کرے دھولے اور اس کا تیمم برقرار ہے اور اگر لمعہ کے لئے کافی ہو وضو کے لئے نہیں تو لمعہ دھوئے اور تیمم برقرار ہے اور اگر وضو کے لئے کافی ہو لمعہ کے لئے نہیں تو وضو کرے اور اگر تنہا کسی ایک کے لئے کافی ہو تو لمعہ دھوئے اور اس کا تیمم برقرار ہے اور امام محمد کے قول کے قیاس پر تیمم کرے۔" اھ شرح وقایہ جنب نے غسل کیا اور پانی اس کی پیٹھ کے لمعہ تک نہ پہنچا اور پانی ختم ہو گیا اور اسے وضو واجب کرنے والا کوئی حدث ہوا تو اس نے دونوں کا تیمم کیا پھر اسے اتنا پانی مل گیا جو دونوں کے لئے کافی ہو تو اس کا تیمم دونوں میں سے ہر ایک کے حق میں باطل ہو گیا اور اگر کسی کے لئے کافی نہ ہو تو دونوں کے حق میں باقی رہا اور اگر معین طور پر ایک کے لئے کافی ہو تو اسے دھوئے اور دوسرے کے حق میں تیمم باقی رہے گا اور اگر تنہا ہر ایک کے لئے کافی ہو تو لمعہ دھوئے یہ اس صورت میں ہے جب دونوں حدثوں کے لئے ایک ہی تیمم کیا ہو لیکن جب جنابت کا تیمم کر لیا پھر حدث ہوا تو حدث کا تیمم کیا پھر پانی ملا تو مذکورہ صورتوں میں حکم وہی ہے اور اگر جنابت کا تیمم کر لیا پھر حدث ہوا اور حدث کا تیمم نہ کیا پھر پانی ملا[2] الخ اس میں بھی پانچ صورتیں اسی طرح ذکر کی ہیں جو گزریں۔

توضیحات مصنف: فقیر غفر لہ المولی القدیر چاہتا ہے کہ بتوفیق الہی عزوجل جملہ اٹھانوے ۹۸ صور مع احکام مبین کرے ان کے لئے یہ تصویر رکھیں کہ اقسام سبعہ پیشانی پر ہوں اور ہر پیشانی کے تحت میں

[1] شرح الطحاوی للاسبیجابی وخزانۃ المفتین [2] شرح الوقایۃ مـ نقض التیمم المکتبۃ الرشیدیه دہلی ۱/۱۰۲

صفحہ 297 از 761

Fatawa Ridawiyya Volume Fourth The four types are written in these letter codes: T (ت): Tayammum for Janabah (ritual impurity requiring ghusl) H (ح): Hadath (minor ritual impurity requiring wudu) M (م): Tayammum for Hadath W (و): Availability of water (Wujdan-e-Aab)

So, 'H W' means that Tayammum for Janabah had not yet been performed when Hadath occurred, and now, without having performed Tayammum, water was found. And 'T H W' means that after performing Tayammum for Janabah, Hadath occurred, then water was found, and so on. Then divide each of these into as many categories as are possible within them. Here, 'Lum'ah' (a dry spot/part) and 'Wudu' both, and each and neither, refers to the sufficiency of water: whether it's enough for the Lum'ah, or for Wudu, or for both, or for each, or for none. And where a full independent Hadath is not present, 'Qadr-e-Mustaqil' (independent portion) is written instead of Wudu, meaning that much water was found which is sufficient only for those parts in which there is independent Hadath, i.e., the parts of Wudu that were washed after Janabah and then Hadath occurred. Thus all these scenarios have been detailed. Now it is the turn for the rulings. They are common in many places, one for five or more or less scenarios. Therefore, to avoid repetition, first write a list of these rulings with serial numbers, then in the table of scenarios, write the ruling's number under each scenario, so that through it, whichever scenario's ruling is desired, it can be looked up in the list. Success is from Allah.

List of Rulings: It is appropriate to write the ruling for each type separately so that it is even easier to refer back.

H W (1) Wash the Lum'ah and perform Tayammum for Hadath, whether before or after washing it, though after is better so that there is no disagreement with Imam Shafi'i (may Allah be pleased with him). Scenarios 11, 27, and 63. (2) Wash the 'Qadr-e-Mustaqil' and perform Tayammum for the Lum'ah. Pages 12, 28, and 48. (3) Perform Wudu and perform Tayammum for the Lum'ah. Pages 64 and 84. (4) Perform full Wudu, purification is achieved. Page 13. (5) Perform Wudu and wash the remaining area (*A*); it became pure. Pages 29 and 65. (6) Take a full bath (Ghusl). Pages 29 and 85. (7) First wash the Lum'ah, then perform Tayammum for Hadath. If Tayammum is done first, it will have to be repeated after washing the Lum'ah. Pages 12, 30, 47, 66, and 83. T

A: 'Remaining area' means the rest of the body besides the organs of Wudu where there was Janabah. [By the author, may he be forgiven] (M)

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी चारों प्रकारों को इन संकेताक्षरों में लिखा गया है: त (ت): तयम्मुम जनाबत (बड़ी नापाकी के लिए तयम्मुम) ह (ح): हदस (छोटी नापाकी) म (م): तयम्मुम हदस व (و): पानी की उपलब्धि (विजदान-ए-आब)

तो 'ह व' का अर्थ यह हुआ कि जनाबत का अभी तयम्मुम नहीं किया था कि हदस हो गया और अब भी तयम्मुम नहीं किया था कि पानी मिल गया। और 'त ह व' यह कि जनाबत के बाद तयम्मुम किया फिर हदस हुआ फिर पानी मिला, इसी प्रकार आगे समझें। फिर इनमें से प्रत्येक को उतनी श्रेणियों में विभाजित करें जितनी उनमें संभावित हैं। यहाँ 'लुमआ' (शरीर का सूखा हिस्सा) और 'वज़ू' दोनों, और प्रत्येक और किसी के पास भी पानी की पर्याप्तता से अर्थ यह है कि पानी लुमआ के लिए पर्याप्त है या वज़ू के लिए या दोनों के लिए या हर एक के लिए या किसी के लिए नहीं। और जहाँ पूरा स्वतंत्र हदस नहीं है, वहाँ वज़ू के स्थान पर 'क़द्र-ए-मुस्तक़िल' (स्वतंत्र मात्रा) लिखा है, यानी इतना पानी मिला जो केवल उन अंगों के लिए पर्याप्त है जिनमें स्वतंत्र हदस है, यानी वज़ू के अंगों का वह हिस्सा जो जनाबत के बाद धो लिया गया था फिर हदस हुआ। इस प्रकार ये सभी स्थितियाँ विस्तृत हो गईं। अब नियमों की बारी आई, वे कई स्थानों पर समान हैं, एक नियम पाँच-पाँच या कम-ज़्यादा स्थितियों के लिए है। इसलिए दोहराव से बचने के लिए पहले इन नियमों की सूची क्रम संख्या के साथ लिखें, फिर स्थितियों की तालिका में प्रत्येक स्थिति के नीचे नियम संख्या लिख दें ताकि उसके माध्यम से जिस भी स्थिति का नियम चाहिए हो, उसे सूची में देखा जा सके। सफलता अल्लाह की ओर से है।

नियमों की सूची: उचित है कि प्रत्येक प्रकार के नियम अलग-अलग लिखे जाएँ ताकि संदर्भ में और भी सुगमता हो।

ह व (१) लुमआ धोए और हदस के लिए तयम्मुम करे, चाहे उसे धोने से पहले या बाद में, और बाद में होना बेहतर है ताकि इमाम शाफ़ई (रज़ियल्लाहु अन्हु) के साथ कोई मतभेद न रहे। स्थिति ११, २७ और ६३। (२) क़द्र-ए-मुस्तक़िल को धोए और लुमआ का तयम्मुम करे। पृष्ठ १२, २८ और ४८। (३) वज़ू करे और लुमआ का तयम्मुम करे। पृष्ठ ६४ और ८४। (४) पूरा वज़ू करे, पवित्रता प्राप्त हो गई। पृष्ठ १३। (५) वज़ू करे और शेष स्थान (अ) धोए, वह पवित्र हो गया। पृष्ठ २९ और ६५। (६) पूरा स्नान (ग़ुस्ल) करे। पृष्ठ २९ और ८५। (७) पहले लुमआ धोए फिर हदस का तयम्मुम करे। यदि पहले तयम्मुम कर लेगा तो लुमआ धोने के बाद फिर से करना होगा। पृष्ठ १२, ३०, ४७, ६६ और ८३। त

अ: 'शेष स्थान' का अर्थ यह है कि वज़ू के अंगों के अलावा शरीर में जहाँ जनाबत थी। [लेखक द्वारा, उन्हें क्षमा किया जाए] (म)

पेज २९८ ऑफ़ ७६१

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم چاروں نوعیں ان رموز حروف میں لکھیں : ت: تیمّم جنابت ح: حدث م: تیمّم حدث و: وجدانِ آب

تو ح و کا مطلب یہ ہوا کہ جنابت کا ابھی تیمم نہ کیا تھا کہ حدث ہوا اور اب بھی تیمم نہ کیا تھا کہ پانی پایا اور ت ح و یہ کہ جنابت کے بعد تیمم کیا پھر حدث ہوا پھر پانی ملا وقس علیہ پھر ان میں ہر ایک کو اتنے اصناف پر منقسم کریں جتنی اُس میں محتمل ہیں یہاں لمعہ و وضو ہر دو وہر یک ونیچ سے پانی کی کفایت مقصود ہے کہ لمعہ کو کافی ہے یا وضو کو یا دونوں کو یا ہر ایک کو یا کسی کو نہیں اور جہاں پورا حدث مستقل نہیں وہاں بجائے وضو قدرِ مستقل لکھا ہے یعنی اتنا پانی ملا جو صرف اُن اعضا کو کافی ہے جن میں حدث مستقل ہے یعنی اعضائے وضو کا جتنا حصہ جنابت کے بعد دھو لیا تھا پھر حدث ہوا یوں یہ تمام صورتیں مفصل ہو گئیں اب احکام کی باری آئی وہ بہت جگہ مشترک ہیں ایک ایک پانچ پانچ یا کم وبیش صورتوں کے لئے ہے لہذا تکرار سے بچنے کو اول ان احکام کی فہرست نمبر شمار کے ساتھ لکھیں پھر جدول صور میں ہر صورت کے نیچے حکم لکھ کر جو حکم ہو اس کا نمبر تحریر کر دیں کہ اُس کے ذریعے سے جس صورت کا حکم چاہیں فہرست میں دیکھ لیں وباللہ التوفیق۔

فہرست احکام: مناسب ہو کہ ہر نوع کے حکم علیحدہ لکھیں کہ مراجعت میں اور بھی سہولت ہو

ح و (۱) لمعہ دھوئے اور حدث کے لئے تیمم کرے اُس کے دھونے سے پہلے خواہ بعد اور بعد ہونا بہتر ہے کہ امام شافعی رضی اللہ تعالٰی عنہ کا خلاف نہ رہے۔ صورت ۱۱ و ۲۷ و ۶۳۔ (۲) قدرِ مستقل کو دھوئے اور لمعہ کا تیمم کرے ص ۱۲ و ۲۸ و ۴۸۔ (۳) وضو کرے اور لمعہ کا تیمم ۔ ص ۶۴ و ۸۴۔ (۴) پورا وضو کرے طہارت ہو گئی۔ ص ۱۳۔ (۵) وضو کرے اور باقی جگہ عہ دھوئے طاہر ہو گیا۔ ص ۲۹ و ۶۵۔ (۶) پورا نہائے۔ ص ۲۹ و ۸۵۔ (۷) پہلے لمعہ دھوئے پھر

حدث کا تیمم کرے اگر پہلے تیمم کرلے گا لمعہ دھونے کے بعد پھر کرنا ہوگا۔ ص ۱۲ و ۳۰ و ۴۷ و ۶۶ و ۸۳۔ ت

عہ: باقی جگہ کے یہ معنی کہ اعضائے وضو کے علاوہ اور بدن میں جہاں جنابت تھی ۱۲ منہ غفر لہ (م)

Vol. 4, Fatawa Ridawiyya (8) Perform one Tayammum for both, and reduce the unwashed spot (lum'ah) as a recommendation, not an obligation. That is, wash as much of the area of ritual impurity (janabat) as the insufficient water allows. It is better to wash it so that the impurity is reduced and a small amount of water may suffice in the future. p. 151, 503, 867.

H, T, W (9) Tayammum is void regarding the unwashed spot but remains for the state of minor impurity (hadath). Wash the spot. p. 216, 684. (10) Tayammum is void for the state of minor impurity but remains for the unwashed spot. Wash the independent portion. p. 71, 524, 524. (11) Tayammum no longer remains for minor impurity but remains for the unwashed spot. Perform Wudu (ablution). p. 88, 69. (12) Tayammum for both is void. Perform full Wudu; purification is achieved. p. 18. (13) Tayammum for both is void. Perform Wudu and wash the remaining portion^Ah; it becomes pure. p. 47, 93. (14) Tayammum for both is void: Take a full bath. p. 89, 53. (15) Tayammum for both is void. First, wash the unwashed spot, then perform Tayammum for minor impurity. p. 519, 551, 71, 78. (16) Tayammum for both remains. Reduce the unwashed spot. p. 36, 20, 52, 25, 79, 90. T, H, W (17) Tayammum is gone. Perform Wudu; purification is achieved. p. 221. (18) Tayammum no longer remains. Perform Wudu and wash the remaining portion^Ah; it becomes pure. p. 55, 39, 56. (19) Tayammum is void. Wash the unwashed spot and perform Tayammum for minor impurity. p. 41, 37, 37. (20) Tayammum remains. Perform Wudu for minor impurity. p. 38, 56, 47, 92. (21) Tayammum no longer remains. Take a full bath. p. 75, 93. (22) Tayammum no longer remains. First wash the unwashed spot, then perform Tayammum for minor impurity. p. 40, 55, 76, 91. (23) Tayammum remains. Perform Tayammum for minor impurity and reduce the unwashed spot. p. 2, 7, 23, 41, 58, 77, 94. T, H, M, R, W (24) Both Tayammums are void. Perform Wudu; purification is achieved. p. 253. (25) Both Tayammums are gone. Perform Wudu and wash the remaining portion^Ah; it becomes pure. p. 44, 8, 80. (26) Tayammum for the unwashed spot is gone, but remains for minor impurity. Wash the spot. p. 42, 42, 87.

^Ah: "Remaining portion" means the parts of the body where ritual impurity was present, other than the organs of Wudu. 12 Minhu Ghafara Lahu (M).

जिल्द चहारम, फतावा रज़विया (8) दोनों के लिए एक तयम्मुम करे और लमहा (अनधुले हिस्से) की तक़लील (कमी) इस्तहबाबन (मुस्तहब के तौर पर) करे न कि वुजूबन, यानी नाकाफ़ी पानी से जनाबत की जितनी जगह धो सके धोना बेहतर है ताकि जनाबत कम हो जाए और आइंदा थोड़ा पानी भी किफायत करे। पृ. 151, 503, 867।

ह, त, व (9) लमहा के हक़ में तयम्मुम टूट गया, हदस (लघु अशुद्धि) के हक़ में बाक़ी है। लमहा धोए। पृ. 216, 684। (10) हदस के हक़ में तयम्मुम टूट गया, लमहा के हक़ में बाक़ी है। क़दरे मुस्तक़िल (स्वतंत्र भाग) को धोए। पृ. 71, 524, 524। (11) तयम्मुम हदस के लिए न रहा, लमहा के लिए है। वज़ू करे। पृ. 88, 69। (12) तयम्मुम दोनों के हक़ में टूट गया। पूरा वज़ू करे, पाकी हासिल हो गई। पृ. 18। (13) तयम्मुम दोनों के हक़ में टूट गया। वज़ू करे और बाक़ी ^अह जगह धोए, पाक हो गया। पृ. 47, 93। (14) तयम्मुम दोनों के हक़ में टूट गया: पूरा नहाए। पृ. 89, 53। (15) तयम्मुम दोनों के हक़ में टूट गया। पहले लमहा धोए, उसके बाद हदस का तयम्मुम करे। पृ. 519, 551, 71, 78। (16) तयम्मुम दोनों के हक़ में बाक़ी है। लमहा की तक़लील करे। पृ. 36, 20, 52, 25, 79, 90। त, ह, व (17) तयम्मुम गया। वज़ू करे, पाकी हासिल हो गई। पृ. 221। (18) तयम्मुम न रहा। वज़ू करे और बाक़ी ^अह जगह धोए, पाक हो गया। पृ. 55, 39, 56। (19) तयम्मुम टूट गया। लमहा धोए और हदस का तयम्मुम करे। पृ. 41, 37, 37। (20) तयम्मुम बाक़ी है। हदस के लिए वज़ू करे। पृ. 38, 56, 47, 92। (21) तयम्मुम न रहा। पूरा नहाए। पृ. 75, 93। (22) तयम्मुम न रहा। पहले लमहा धोए, फिर हदस का तयम्मुम करे। पृ. 40, 55, 76, 91। (23) तयम्मुम बाक़ी है। हदस के लिए तयम्मुम करे और लमहा की तक़लील। पृ. 2, 7, 23, 41, 58, 77, 94। त, ह, म, र, व (24) दोनों तयम्मुम टूट गए। वज़ू करे, पाकी हासिल हो गई। पृ. 253। (25) दोनों तयम्मुम गए। वज़ू करे और बाक़ी ^अह जगह धोए, पाक हो गया। पृ. 44, 8, 80। (26) लमहा का तयम्मुम गया, हदस का बाक़ी है। लमहा धोए। पृ. 42, 42, 87।

^अह: बाक़ी जगह का अर्थ यह है कि वज़ू के अंगों के अलावा शरीर में जहाँ जनाबत थी। 12 मिन्हु गफ़र लहू (म)।

पेज 299/761

جلد چہارم، فتاوی رضویہ (۸) دونوں کے لئے ایک تیمم کرے اور لمعہ کی تقلیل استحباباً نہ وجوباً یعنی ناکافی پانی جنابت کی جتنی جگہ کو دھو سکے بہتر یہ کہ دھو لے کہ جنابت کم ہو جائے اور آئندہ تھوڑا پانی بھی کفایت کرے۔ ص ۱۵۱ و ۵۰۳ و ۸۶۷۔

ح ت و (۹) لمعہ کے حق میں تیمم ٹوٹ گیا حدث کے حق میں باقی ہے لمعہ دھوئے۔ ص ۲۱۶ و ۶۸۴۔ (۱۰) حدث کے حق میں تیمم ٹوٹ گیا لمعہ کے حق میں باقی ہے قدر مستقل کو دھوئے۔ ص ۷۱ و ۵۲۴ و ۵۲۴۔ (۱۱) تیمم حدث کے لئے نہ رہا لمعہ کے لئے ہے وضو کرے۔ ص ۸۸ و ۶۹۔ (۱۲) تیمم دونوں کے حق میں ٹوٹ گیا پورا وضو کرے طہارت ہو گئی۔ ص ۱۸۔ (۱۳) تیمم دونوں کے حق میں ٹوٹ گیا وضو کرے اور باقی عہ۔ جگہ دھوئے طاہر ہو گیا۔ ص ۴۷ و ۹۳۔ (۱۴) تیمم دونوں کے حق میں ٹوٹ گیا: پورا نہائے۔ ص ۸۹ و ۵۳۔ (۱۵) تیمم دونوں کے حق میں ٹوٹ گیا پہلے لمعہ دھوئے اس کے بعد حدث کا تیمم کرے۔ ص ۵۱۹ و ۵۵۱ و ۷۱ و ۷۸۔ (۱۶) تیمم دونوں کے حق میں باقی ہے لمعہ کی تقلیل کرے۔ ص ۳۶ و ۲۰ و ۵۲ و ۲۵ و ۷۹ و ۹۰۔ ت ح و (۱۷) تیمم گیا وضو کرے طہارت ہو گئی؛ ص ۲۲۱۔ (۱۸) تیمم نہ رہا وضو کرے اور باقی عہ۔ جگہ دھوئے طاہر ہو گیا۔ ص ۵۵ و ۳۹ و ۵۶۔ (۱۹) تیمم ٹوٹ گیا لمعہ دھوئے اور حدث کا تیمم کرے۔ ص ۴۱ و ۳۷ و ۳۷۔ (۲۰) تیمم باقی ہے حدث کے لئے وضو کرے ص ۳۸ و ۵۶ و ۴۷ و ۹۲۔ (۲۱) تیمم نہ رہا پورا نہائے ص ۷۵ و ۹۳۔ (۲۲) تیمم نہ رہا پہلے لمعہ دھوئے پھر حدث کا تیمم کرے ص ۴۰ و ۵۵ و ۷۶ و ۹۱۔ (۲۳) تیمم باقی ہے حدث کے لئے تیمم کرے اور لمعہ کی تقلیل ص ۲ و ۷ و ۲۳ و ۴۱ و ۵۸ و ۷۷ و ۹۴۔ ت ح م ر و (۲۴) دونوں تیمم ٹوٹ گئے وضو کرے طہارت ہو گئی۔ ص ۲۵۳۔ (۲۵) دونوں تیمم گئے وضو کرے اور باقی عہ جگہ دھوئے طاہر ہو گیا۔ ص ۴۴ و ۸ و ۸۰۔ (۲۶) لمعہ کا تیمم گیا حدث کا باقی ہے لمعہ دھوئے۔ ص ۴۲ و ۴۲ و ۸۷۔

عہ باقی جگہ کے یہ معنی کہ اعضائے وضو کے سوا اور بدن میں جہاں جنابت تھی ۱۲ منہ غفرلہ (م)

Fatawa Razawiya, Volume 4

(27) The tayammum (dry ablution) for Hadath (minor ritual impurity) is gone, but the 'lama'a' (a small unwashed spot) remains; perform wudu (ritual ablution). Pages 239, 260, 96, and 97. (28) Both tayammums are gone, take a full bath (ghusl). Pages 61 and 79. (29) Both tayammums are gone, first wash the lama'a, then perform tayammum for Hadath. Pages 45, 59, 81, and 95. (30) Both tayammums remain, reduce the lama'a. Pages 4, 10, 26, 46, 62, 82, and 98. And Allah, the Glorified and Exalted, knows best.

(1) A person in a state of major ritual impurity (junub) bathed, only wudu was remaining, then Hadath occurred. (2) Wudu and some other part of the body remained.

[Flowcharts for various scenarios:] (3) Some part from ghusl and wudu remained. (4) Some part of wudu remained from any one limb, then Hadath occurred and... (5) Only some part of the limbs of wudu was left. (6) Some part from organs other than those of wudu remained. (7) Everything except wudu remained.

Page 300 of 761

फतावा रज़विया, खंड 4

(27) ह़दथ (लघु अशुद्धि) का तयम्मुम चला गया, लमआ (बिना धुला हुआ छोटा हिस्सा) बाकी है; वज़ू करें। पृष्ठ 239, 260, 96 और 97। (28) दोनों तयम्मुम चले गए, पूरा स्नान (ग़ुस्ल) करें। पृष्ठ 61 और 79। (29) दोनों तयम्मुम चले गए, पहले लमआ धोएं, उसके बाद ह़दथ का तयम्मुम करें। पृष्ठ 45, 59, 81 और 95। (30) दोनों तयम्मुम बाकी हैं, लमआ को कम करें। पृष्ठ 4, 10, 26, 46, 62, 82 और 98। और अल्लाह सुब्ह़ानहू व तआला बेहतर जानता है।

(1) जुनूब (बड़ी अशुद्धि की स्थिति) ने स्नान कर लिया, सिर्फ वज़ू बाकी था, फिर ह़दथ हुआ। (2) वज़ू और शरीर का कोई और हिस्सा बाकी था।

[विभिन्न स्थितियों के लिए प्रवाह चार्ट:] (3) ग़ुस्ल और वज़ू से कुछ हिस्सा बाकी था। (4) किसी एक अंग से वज़ू का हिस्सा बाकी था, फिर ह़दथ हुआ और... (5) केवल वज़ू के अंगों का कुछ हिस्सा रह गया था। (6) वज़ू के अंगों के अलावा अन्य अंगों से कुछ हिस्सा बाकी था। (7) वज़ू के अलावा सब बाकी था।

पृष्ठ 300 का 761

فتاویٰ رضویہ ، جلد چہارم

(۲۷) حدث کا تیمم گیا لمعہ کا باقی ہے وضو کرے۔ ص ۲۳۹ و ۲۶۰ و ۹۶ و ۹۷۔ (۲۸) دونوں تیمم گئے پورا نہائے۔ ص ۶۱ و ۷۹۔ (۲۹) دونوں تیمم گئے پہلے لمعہ دھوئے اس کے بعد حدث کا تیمم کرے۔ ص ۴۵ و ۵۹ و ۸۱ و ۹۵۔ (۳۰) دونوں تیمم باقی ہیں لمعہ کی تقلیل کرے۔ ص ۴ و ۱۰ و ۲۶ و ۴۶ و ۶۲ و ۸۲ و ۹۸ واللہ سبحنہ وتعالیٰ اعلم۔

(۱) جنب نہالیا صرف وضو باقی تھا پھر حدث ہوا (۲) وضو اور کچھ اور حصہ بدن باقی تھا

[مختلف صورتوں کے نقشے:] (۳) غسل سے وضو سے کچھ حصہ باقی تھا (۴) کسی ایک عضو سے وضو کا حصہ باقی تھا پھر حدث اور (۵) صرف اعضائے وضو کا کچھ حصہ رہ گیا تھا (۶) غیر اعضائے وضو سے کچھ باقی تھا (۷) سوائے وضو سب باقی تھا

صفحہ ۳۰۰ از ۷۶۱

Volume Four Fatawa Rizvia Author's General Rule: Then I say, the noble scholars, may Allah Almighty benefit us through their blessings in both worlds, have adopted this division and detail for the purpose of understanding and ease, which by the praise of Allah, has reached its ultimate perfection. Now, for the purpose of organization, connection, and reduction of confusion, we shall write a general rule derived from their noble words that encompasses all categories and rulings for a person in a state of major ritual impurity (janabat) who has not yet fully bathed, but has already purified some or all of the limbs of ablution (wudu) with water or performed dry ablution (tayammum), after which a minor ritual impurity (hadath) occurs.

Page 301 of 761

जिल्द चौथी (Volume 4) फ़तावा रज़विया लेखक का सामान्य नियम: फिर मैं कहता हूँ, विद्वान उलेमा, अल्लाह सर्वशक्तिमान हमें दोनों लोकों में उनके आशीर्वाद से लाभान्वित करे, उन्होंने समझने और सहजता के उद्देश्य से यह विभाजन और विवरण अपनाया है, जो अल्लाह की प्रशंसा से अपनी पूर्णता को पहुँच गया है। अब, व्यवस्था, जुड़ाव और भ्रम को कम करने के उद्देश्य से, हम उनके महान शब्दों से प्राप्त एक सामान्य नियम लिखेंगे जो उन सभी श्रेणियों और नियमों को समाहित करता है जो उस व्यक्ति के लिए हैं जो जनाबत (बड़ी नापाकी) की स्थिति में है और उसने अभी तक पूरी तरह से स्नान नहीं किया है, लेकिन पानी से वज़ू के कुछ या सभी अंगों को शुद्ध कर लिया है या तयम्मुम कर लिया है, जिसके बाद ह़दथ (छोटी नापाकी) हो गई है।

पेज 301 / 761

جلد چہارم فتاوی رضویہ مصنف کا ضابطہ کلیہ: ثم اقول علمائے کرام نفعنا اللہ تعالیٰ ببر کاتہم فی الدارین نے یہ تقسیم و تفصیل بغرض تفہیم و تسہیل اختیار فرمائی جو بحمدہ تعالی اپنے منتہائے کمال کو پہنچی اب ہم بغرض ضبط و ربط و قلت انتشار انہیں کے کلمات شریفہ کے استفادہ سے ضابطہ کلیہ لکھیں کہ جملہ اقسام واحکام کو حاوی ہو جنبس کہ بعد جنابت ہنوز پورا نہ نہایا مگر بعض یا کل اعضائے وضو کی تطہیر پانی سے یا تیمم کر چکا اس کے بعد حدث

صفحہ 301 از 761

Fatawa Razawiyya, Volume 4

It resulted that in the last two cases it is completely independent, and in the first case only to the extent that the washed part is among the organs of ablution (Wudu). In this case, if water is found and it is sufficient for only one out of the remaining impurity (Janabat) and the independent minor ritual impurity (Hadath), then he should use it for that. If he had previously performed tayammum for it, it is invalidated; and if he had not done it for the other, it is invalidated for the first and remains for the second. If the water is sufficient for both simultaneously, then the ruling for both is the same as it was for the first; perform it, and purification is achieved. If it is not sufficient for either, then the ruling for both is the same as it was for the second. If he had not performed tayammum for either, he should now perform one tayammum for both, and if he had already done it, it remains. In any case, one should minimize the water used for the 'lum'ah' (unwashed spot), as this is recommended. If it is sufficient for each separately, use it for the lum'ah; the tayammum he might have performed for either or both, whether once or separately, is no longer valid for anyone. After the water is gone, he should perform tayammum for the Hadath; if he does it before using the water, he will have to do it again after using it. This is the most correct view, the detail and research of which will follow in the upcoming caution. And with Allah is success (And by the success granted by Allah Almighty. - T). And if he used it for Hadath contrary to the ruling, the Hadath is removed, but tayammum for Janabat becomes necessary by consensus, even if he had done it before. This is a comprehensive and beneficial saying.

Arabic Prayer	**Translation**
By the permission of the Comprehensive, the Beneficial, may His Majesty be exalted and His grace be universal. And all praise is due to Allah, the Lord of the worlds. And may Allah Almighty send peace, blessings, and benedictions upon our master and leader Muhammad, and upon all his family and companions forever and ever. Amen.	By the permission of the Comprehensive, the Beneficial, His greatness is dominant and His giving and bounty are common. And all praise is for Allah who is the Lord of all the worlds. And may the Supreme God send blessings, peace, and bounty upon our leader and master Muhammad and his family and companions all, forever and ever, O God! Accept it. (T)

Caution: Among the 18 numbers in this table, i.e., 12, 19, 30, 35, 47, 51, 66, 71, 83, 87, these ten; and 20, 45, 55, 59, 67, 81, 91, 95, these eight; there is a difference of

narrations in them. In these eighteen, water is sufficient for each of 'lum'ah' and independent 'Hadath' separately, such that he may wash whichever one of them he wishes; it is not enough for both. Among these, the ruling is agreed upon that he should wash the lum'ah with it and not use it for Hadath, because Janabat is more severe. There was a disagreement as to whether in the first ten cases, when he performs tayammum for Hadath, is it necessary that he first washes the lum'ah and then performs tayammum for Hadath when the water is gone, or can he do it in any order? Both narrations exist. And in the last eight cases, where he had already performed tayammum for Hadath, whether it was invalidated by finding this water or not, there are two views. Then, according to those who believe it was not invalidated, he does not need to repeat the tayammum; and according to those who believe it was invalidated, they make it mandatory for him to first wash the lum'ah and then repeat the tayammum.

फतावा रज़विया, जिल्द चारम

यह हुआ कि अंतिम दो स्थितियों में यह पूरी तरह से स्वतंत्र है, और पहली स्थिति में केवल इतना कि धोया गया हिस्सा वज़ू के अंगों में है। इस स्थिति में, यदि पानी मिला और वह शेष जनाबत (अपवित्रता) और स्वतंत्र ह़दथ (लघु अपवित्रता) दोनों में से केवल एक के लिए पर्याप्त है, तो वह उसे उसी में उपयोग करे। यदि उसने उसके लिए पहले तैयममुम किया था, तो वह टूट गया; और यदि दूसरे के लिए नहीं किया था, तो पहले के हक़ में टूट गया और दूसरे के हक़ में बना रहा। और यदि पानी दोनों के लिए एक साथ पर्याप्त है, तो दोनों का वही हुक्म है जो पहले का था; उसे पूरा करे, पवित्रता प्राप्त हो गई। और यदि किसी के लिए भी पर्याप्त नहीं है, तो दोनों का वही हुक्म है जो दूसरे का था। यदि किसी के लिए तैयममुम नहीं किया था, तो अब दोनों के लिए एक तैयममुम करे, और यदि कर लिया था तो बना रहा। बहरहाल 'लुमआ' (सूखा रह गया हिस्सा) के लिए पानी कम इस्तेमाल करे क्योंकि यह मुस्तहब (पसंदीदा) है। और यदि प्रत्येक के लिए अलग-अलग पर्याप्त है, तो लुमआ में उपयोग करे; उनमें से जिस एक या दोनों के लिए उसने तैयममुम किया था, चाहे एक बार या अलग-अलग, वह किसी के हक़ में बाकी नहीं रहा। पानी न रहने के बाद ह़दथ के लिए तैयममुम करे; यदि पहले करेगा, तो पानी इस्तेमाल करने के बाद फिर से करना होगा। यही सबसे सही बात है, जिसका विवरण और शोध आने वाली इस चेतावनी में है। और अल्लाह ही सफलता देने वाला है (और अल्लाह तआला की तौफीक से। - त)। और यदि उसने नियम के विरुद्ध उसे ह़दथ में उपयोग कर लिया, तो ह़दथ तो दूर हो गया, लेकिन जनाबत के लिए तैयममुम सर्वसम्मति से अनिवार्य हो गया, भले ही उसने पहले कर लिया हो। यह एक व्यापक और लाभकारी बात है।

अरबी दुआ

जामे (सबको एकत्र करने वाले) और नाफ़े(लाभ देने वाले) की अनुमति से, जिसकी महिमा सर्वोच्च है और जिसकी कृपा व्यापक है। और समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो तमाम जहानों का रब है। और अल्लाह तआला हमारे आका और मौला मुहम्मद और उनकी आल (संतान) और असहाब (साथियों) सब पर हमेशा-हमेशा के लिए रहमत, सलामती और बरकत नाज़िल फरमाए। आमीन।

अनुवाद

जामे नाफ़े की अनुमति से, उसकी महानता प्रबल है और उसका दान और उदारता सामान्य है। और तमाम प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो तमाम जहानों का मालिक है। और अल्लाह सर्वोच्च हमारे आका और मौला मुहम्मद और उनकी आल और असहाब सब पर दुरूद, सलाम और बरकत नाज़िल

अरबी दुआ	अनुवाद
	फरमाए, हमेशा हमेशा, ऐ अल्लाह! स्वीकार फरमा। (त)

चेतावनी: इस तालिका के18 नंबरों में यानी 12, 19, 30, 35, 47, 51, 66, 71, 83, 87 ये दस; और 20, 45, 55, 59, 67, 81, 91, 95 ये आठ; इनमें रिवायतों (वर्णनों) का मतभेद है। इन अठारह में पानी 'लुमआ' और स्वतंत्र 'ह़दथ' प्रत्येक के लिए अलग-अलग पर्याप्त है, कि उनमें से जिसे चाहे धो ले; दोनों के लिए पर्याप्त नहीं है। इनमें इतना हुक्म तो सर्वसम्मति से है कि इससे लुमआ धोए, ह़दथ में उपयोग न करे क्योंकि जनाबत अधिक गंभीर है। इसमें मतभेद हुआ कि पहली दस स्थितियों में जो ह़दथ के लिए तैयममुम करेगा, क्या यह ज़रूरी है कि पहले लुमआ धोए और जब पानी न रहे तब ह़दथ के लिए तैयममुम करे, या पहले या पीछे किसी भी तरह कर सकता है? दोनों रिवायतें हैं। और पिछली आठ में, जहाँ ह़दथ का तैयममुम पहले कर चुका था, क्या इस पानी के मिलने से वह टूटा या नहीं, इस पर दो मत हैं। फिर जिनके अनुसार नहीं टूटा, उनके लिए तैयममुम को दोहराने की ज़रूरत नहीं है; और जिनके अनुसार टूट गया, वे इसे अनिवार्य करते हैं कि पहले लुमआ धोकर तैयममुम को दोहराए।

ہوا کہ دو صورتِ اخیرہ میں بتامہ مستقل ہے اور صورت اولٰی میں صرف اتنا کہ حصہ مغسولہ اعضائے وضو میں ہے اس صورت میں پانی کہ پایا اگر بقیہ جنابت وحدت مستقل دونوں میں سے صرف ایک کو کافی ہے اس میں صرف کرے اس کے لئے اگر پہلے تیمم کر چکا تھا ٹوٹ گیا اور دوسرے کے لئے نہ کیا تھا تو اول کے حق میں ٹوٹ گیا ثانی کے حق میں باقی رہا اور اگر پانی دونوں کو معاً کافی ہے تو دونوں کا وہ حکم ہے جو اول کا تھا بجالائے طہارت ہو گئی اور اگر کسی کو کافی نہیں تو دونوں کا وہ حکم ہے جو ثانی کا تھا اگر کسی کے لئے تیمم نہ کیا تھا اب دونوں کے لئے ایک تیمم کرے اور کر لیا تھا تو باقی رہا بہر حال لمعہ کی تقلیل کرے کہ مستحب ہے اور اگر ہر ایک کو جدا جدا کافی ہے تو لمعہ میں صرف کرے تیمم ان میں جس ایک کا یا دونوں کے لئے ایک یا جدا جدا جیسا بھی کر چکا تھا کسی کے حق میں باقی نہ رہا۔ پانی نہ رہنے کے بعد حدث کے لئے تیمم کرے پہلے کرے گا تو بعد صرف پھر کرنا ہو گا یہی اصح ہے جس کی تفصیل و تحقیق اس تنبیہ آئندہ میں آتی ہے و باللہ التوفیق (اور اللہ تعالٰی کی توفیق سے۔ت) اور اگر اس نے برخلاف حکم اسے حدث میں صرف کر لیا حدث تو زائل ہو گیا مگر جنابت کے لئے تیمم بالاجماع لازم ہوا اگرچہ پہلے کر بھی چکا ہو یہ ہے قول جامع و نافع *

عربی دعا	**ترجمہ**
باذن الجامع النافع عزجلاله وعم نواله والحمدلله رب العالمين وصلى الله تعالى وسلم وبارك على سيدنا	باذن جامع نافع، اس کی بزرگی غالب اور اس کی عطا و بخشش عام ہے۔ اور تمام تعریف اللہ کے لئے جو تمام جہانوں کا مالک ہے۔ اور خدائے برتر درود و سلام اور برکت نازل

عربی دعا	ترجمہ
ومولنا محمد وآله وصحبه اجمعین ابد الابدین آمین	فرمائے ہمارے آقا و مولی محمد اور ان کی آل و اصحاب سب پر، ہمیشہ ہمیشہ ، الٰہی! قبول فرما۔ (ت)

تنبیہ: اس جدول کے ۱۸ نمبروں میں یعنی ۱۲-۱۹-۳۰-۳۵-۴۷-۵۱-۶۶-۷۱-۸۳-۸۷ دس یہ اور ۹۵-۹۱-۸۱-۶۷-۵۹-۵۵-۴۵-۲۰ آٹھ یہ ان میں اختلاف روایات ہے ان اٹھارہ میں پانی لمعہ و حدث مستقل ہر ایک کے لئے جدا جدا کافی ہے کہ ان میں جس ایک کو چاہے دھولے دونوں کے قابل نہیں ان میں اتنا حکم تو بالا تفاق ہے کہ اس سے لمعہ دھوئے حدث میں صرف نہ کرے کہ جنابت سخت تر ہے۔ اس میں اختلاف ہوا کہ پہلی دس صورتوں میں جو حدث کے لئے تیمم کرے گا آیا یہ ضرور ہے کہ اول لمعہ دھوئے جب پانی نہ رہے اس وقت حدث کے لئے تیمم کرے یا پہلے پے چھے ہر طرح کر سکتا ہے دونوں روایتیں ہیں اور پچھلی آٹھ میں کہ حدث کا تیمم پہلے کر چکا تھا اس پانی کے ملنے سے ٹوٹا یا نہیں دونوں قول ہیں پھر جن کے نزدیک نہ ٹوٹا جب تو اس پر تیمم کا اعادہ ہی نہیں اور جن کے نزدیک ٹوٹ گیا وہ لازم کرتے ہیں کہ پہلے لمعہ دھو کر تیمم کا اعادہ کرے

Fatawa-e-Razvia Volume 4 Otherwise, the continued presence of the water whose discovery invalidated the first Tayammum will invalidate the second Tayammum. The basis of disagreement in all scenarios is one: whether this water, which is capable of removing ritual impurity independently even if the command is only to wash a part of a limb, establishes power over water for the removal of impurity upon its discovery or not. Those who thought it does, ruled that as long as this water is not used up, one should not perform Tayammum for impurity, and if one has already done it, it becomes void, because having power over water nullifies the previous Tayammum and prevents a future one. And those who considered that although the water found is capable of it, but according to Shariah command it is allocated for another need, therefore power over removing impurity with it is not established, they ruled that this water will neither break the next Tayammum for impurity nor will Tayammum be prohibited while it is available.

I say: One difference was in the original issue; the manner of reporting these narrations has also come differently. In some (Reference 1) it is like this: one narration is this, one is that, which shows their equality and it's not clear whether the narrations are Zahir (manifest) or Nadir (rare). In some (Reference 2) it's like this: the second narration is Nawadir, from which it's evident that the first is Zahir al-Riwayah (manifest narration).

In some (Reference 3) it's like this: the first narration is Ziyadat and the second is Asl. Both Asl and Ziyadat are from the books of Zahir al-Riwayah. I say: it is this, that both narrations are Zahir al-Riwayah, as the affirmative takes precedence over the negative; the narrator did not have the original narration in mind at that time and remembered it from Nawadir, hence called it a rare narration. And when, according to the clarification of reliable sources, it is present in Kitab al-Asl, it is definitely Zahir al-Riwayah, rather even more prioritized than the first because Asl is preferred over Ziyadat. Sharh Wiqayah, Hilyah, Bahr 12 (M).

Thirdly: Its attribution towards the noble proponents also came in different ways. Some (Reference 4) mentioned it with the word "weakness" (Dua'f) or said the first is the view of Muhammad and the second is the view of Abu Yusuf. Some (Reference 5) decisively attributed it to them.

Reference 1: Siraj Wahaj, Minhat al-Khaliq Sharh Wiqayah, Radd al-Muhtar, while in its source Hilyah the names Asl and Ziyadat are mentioned (M). (Despite its presence, the names Asl and Ziyadat are mentioned in its original Hilyah. - Translator)

Reference 2: Sharh Tahawi, Khazanat al-Muftiyeen 12 (M). Reference 3: Muheet Razvi, Siraj Minha, etc. 12 (M). Reference 5: Kafi, Hilyah Hindiyah, Radd al-Muhtar with Hilyah quoting it from Muheet etc. with the word "Qeel" (it is said) 12 (M). (Despite this, Hilyah has quoted it from Muheet etc. with the word "Qeel". - Translator)

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द चौथी (4) अन्यथा, जिस पानी के मिलने ने पहले तयम्मुम को तोड़ दिया, उसका मौजूद रहना दूसरे तयम्मुम को बातिल कर देगा। सभी स्थितियों में मतभेद का मूल कारण एक ही है कि क्या यह पानी, जो स्वतंत्र रूप से अशुद्धि (हदस) दूर करने में सक्षम है, भले ही इससे अंग के केवल एक हिस्से को धोने का आदेश हो, इसके मिलने से अशुद्धि दूर करने के लिए पानी पर नियंत्रण सिद्ध होता है या नहीं। जिन्होंने माना कि होता है, उन्होंने नियम दिया कि जब तक यह पानी खर्च न हो जाए, अशुद्धि के लिए तयम्मुम न करे, और यदि पहले कर चुका है तो वह टूट गया, क्योंकि पानी पर नियंत्रण पिछले तयम्मुम को तोड़ने वाला और अगले को रोकने वाला है। और जिन्होंने विचार किया कि यद्यपि पाया गया पानी इसके लिए सक्षम है, लेकिन शरीयत के आदेश के अनुसार वह दूसरी आवश्यकता के लिए आरक्षित है, इसलिए इससे अशुद्धि दूर करने पर नियंत्रण सिद्ध नहीं हुआ, उन्होंने नियम दिया कि यह पानी न तो अगले तयम्मुम को तोड़ेगा और न ही इसकी उपस्थिति में तयम्मुम मना होगा।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): एक मतभेद तो असल मसले में था, इन रिवायतों (वर्णनों) के उद्धरण का तरीका भी अलग-अलग आया है। कुछ (संदर्भ 1) में इस तरह है कि एक रिवायत यह है और एक वह, जिससे उनकी समानता ज़ाहिर होती है और यह स्पष्ट नहीं होता कि रिवायतें 'ज़ाहिर' हैं या 'नादिर' (दुर्लभ)। कुछ (संदर्भ 2) में इस तरह है कि दूसरी रिवायत 'नवादिर' है, जिससे स्पष्ट है कि पहली 'ज़ाहिरुल रिवायह' (प्रमाणित वर्णन) है।

कुछ (संदर्भ 3) में इस तरह है कि पहली रिवायत 'ज़ियादात' है और दूसरी 'अस्ल'। अस्ल और ज़ियादात दोनों 'ज़ाहिरुल रिवायह' की किताबों से हैं। मैं कहता हूँ: सही यही है कि दोनों रिवायतें 'ज़ाहिरुल रिवायह' हैं, क्योंकि सकारात्मक नकारात्मक पर हावी होता है; वर्णनकर्ता के ध्यान में उस समय मूल रिवायत नहीं थी और उन्हें 'नवादिर' से याद थी, इसलिए उन्होंने इसे 'नादिर' रिवायत कहा। और जब विश्वसनीय सूत्रों के स्पष्टीकरण के अनुसार वह 'किताबुल अस्ल' में मौजूद है, तो वह निश्चित रूप से 'ज़ाहिरुल रिवायह' है, बल्कि पहली से भी अधिक प्राथमिकता वाली है क्योंकि 'अस्ल' को 'ज़ियादात' पर प्राथमिकता दी जाती है। शरह विक़ाया, हिलिया, बहर 12 (म)।

तीसरा: प्रतिष्ठित विद्वानों की ओर इसका श्रेय भी विभिन्न तरीकों से आया है। कुछ ने (संदर्भ 4) 'ज़ोफ़' (कमजोरी) शब्द के साथ कहा या यह कहा गया कि पहला मत इमाम मुहम्मद का है और दूसरा इमाम अबू यूसुफ का है। कुछ ने (संदर्भ 5) दृढ़ता के साथ उन्हें उनका बताया।

संदर्भ 1: सिराज वहाज, मिन्हातुल ख़ालिक़ शरह विक़ाया, रद-उल-मुहतार, जबकि इसके मूल हिलिया में अस्ल और ज़ियादात का नाम दिया गया है (म)। (इसके बावजूद कि इसकी मूल हिलिया में अस्ल और ज़ियादात का नाम उल्लेख किया गया है। - अनुवादक) संदर्भ 2: शरह तहावी, ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन 12 (म)। संदर्भ 3: मुहीत रज़वी, सिराज मिन्हा आदि 12 (म)। संदर्भ 5: काफ़ी, हिलिया हिंदिया, रद-उल-मुहतार के साथ हिलिया ने इसे मुहीत आदि से 'क़ील' (कहा गया है) शब्द के साथ उद्धृत किया है 12 (म)। (इसके बावजूद, हिलिया ने इसे मुहीत आदि से 'क़ील' शब्द के साथ उद्धृत किया है। - अनुवादक)

पेज 303 का 761

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم ورنہ جس پانی کے پانے نے پہلا تیمم توڑ دیا اس کا موجود رہنا دوسرا تیمم باطل کرے گا۔ منشاء اختلاف تمام صورتوں میں ایک ہے کہ آیا یہ پانی جو ازالہ حدث مستقل کے بھی قابل ہے اگرچہ اس سے لمہ ہی دھونے کا حکم ہے اس کے ملنے سے حدث کے لئے پانی پر قدرت ثابت ہوئی یا نہیں جنہوں نے خیال فرمایا کہ ہوئی حکم دیا کہ جب تک یہ پانی خرچ نہ ہولے حدث کا تیمم نہ کرے اور اگر پہلے کر چکا ہے ٹوٹ گیا کہ پانی پر قدرت تیمم گزشتہ کی ناقض اور آئندہ کی مانع ہے اور جنہوں نے لحاظ فرمایا کہ اگرچہ پانی اس کے بھی قابل پایا مگر وہ بحکم شرع دوسری حاجت کی طرف مصروف ہے لہذا اس سے ازالہ حدث پر قدرت نہ ہوئی انہوں نے حکم دیا کہ یہ پانی نہ اگلے تیمم حدث کو توڑے گا نہ اس کے ہوتے حدث کے لئے تیمم ممنوع ہوگا۔

اقول: ایک اختلاف تو یہ اصل مسئلے میں تھاکان بیان روایتوں کی طرز نقل بھی مختلف آئی بعض عہ۱ میں یوں کہ ایک روایت یہ ہے ایک وہ جس سے اُن کی مساوات ظاہر اور یہ نہ کھلا کہ روایات ظاہر ہ ہیں یا نادرہ بعض میں عہ۲ یوں کہ دوم روایت نوادر ہے جس سے ظاہر کہ اول ظاہر الروایۃ ہے۔

بعض عہ۳ میں یوں کہ اول روایت زیادات ہے اور دوم روایت اصل۔ اصل وزیادات دونوں کتب ظاہر الروایۃ سے ہیں اقول اور ہے یہی کہ دونوں روایتیں ظاہر الروایۃ ہیں کہ مثبت نافی پر مقدم ہے نافی کو اُس وقت روایت اصل خیال میں نہ تھی اور نوادر سے یاد لہذا اسے روایت نادرہ فرمایا اور جب حسب تصریح ثقات وہ کتاب الاصل میں موجود تو ضرور ظاہر الروایۃ ہے بلکہ اول سے بھی اولٰی کہ اصل زیادات پر مرجح ہے۔ شرح وقایہ حلیہ بحر ۱۲ (م)

ثالثاً: قائلین کرام کی طرف اس کی نسبت بھی مختلف طور پر آئی بعض نے عہ۴ بلفظ ضعف فرمایا یا کہ کہا گیا کہ اول قول محمد دوم قول ابویوسف ہے بعض عہ۵ نے جزماً انہیں ان کا

عہ۱ سراج وہاج منحۃ الخالق شرح وقایہ ردالمحتار مع ان فی اصلہ الحلیۃ تسمیۃ الاصل والزیادات (م) (بوجود اس کے اس کی اصل حلیہ میں اصل اور زیادات کا نام ذکر کیا ہے۔ت) عہ۲ شرح طحاوی خزانۃ المفتین ۱۲ (م) عہ۳ محیط رضوی سراج منحہ وغیرہ ۱۲ (م) عہ۵ کافی حلیہ ہندیہ ردالمحتار مع نقل الحلیۃ ایاہ عن المحیط و غیرہ بلفظۃ قیل ۱۲ (م) (اس کے باوجود حلیہ نے اس کو محیط وغیرہ سے لفظ "قیل" سے نقل کیا ہے۔ت)

Fatawa Razawiyya Volume 4 Some have mentioned the first statement as a قول (dictum), or stated that it is an analogy of Imam Muhammad's statement, meaning it is not explicitly narrated from him, but an analogy of his statement suggests this rule. I say: The truth is that the first is the statement of Imam Muhammad and the second is the statement of Imam Abu Yusuf (may Allah be pleased with them both), as the transmission by reliable narrators establishes this. Fourthly: The choice remained varied; some asserted this (Note 2), some (Note 3) on that, and some (Note 4) mentioned both and left it. Fifthly: There was also a difference in declaring correctness; some (Note 5) called it the most correct (Asah), some (Note 6) called it the most apparent (Zahir al-Wajh). Sixthly: The explanation for the basis of this difference also came differently. Some (1) stated that although spending this water on the spot (Lum'a) is obligatory by consensus, according to Imam Muhammad, this obligation does not prevent the ability to remove the minor impurity (Hadath); if one does so, it will be valid by consensus. According to Imam Abu Yusuf, it is a preventive factor because when the Sharia does not permit him to remove the Hadath, how can there be legal ability? And some (2) explained it thus: Rather, the difference is in the obligation itself. According to Imam Muhammad, spending it on the spot is not obligatory but only better (Awla), therefore the ability to remove Hadath is established. According to Imam Abu Yusuf, it is obligatory, and opposing an obligation is religiously forbidden and prohibited, therefore removing the Hadath is beyond one's power. Now we mention the statements of the noble scholars from which these explanations are revealed.

[Table Content] Arabic Text: In Al-Siraj al-Wahhaj, then Minhat al-Khaliq: "If one experiences minor impurity (Hadath) after dry ablution (Tayammum), then finds enough water for only one of them individually, he should wash the spot (Lum'a) with it because major impurity (Janaba) is more severe, then perform Tayammum for the Hadath. If he starts with Tayammum and then washes it [the spot]..." Urdu Translation: In Al-Siraj al-Wahhaj then Minhat al-Khaliq it is: "When Hadath occurs after Tayammum, then one finds enough water which is sufficient for only one of them individually, then he should wash the spot (Lum'a) with it because Janaba is more severe, then perform Tayammum for the Hadath. And if he performed Tayammum first and then washed the spot, then in one narration it is that it is not permissible and he will repeat that Tayammum."

[Footnotes] Note 1: Sharh al-Tahawi, Khazanat al-Muftin 12 (M) Note 2: Hilya, also Bada'i and Muheet Radhwi by the implication of the text (Dalalat al-Nass) as you will

soon know. (M) (Upon this is the implication of the text as you will soon know. (T)) Note 3: Durr al-Mukhtar and commentators 12 (M) Note 4: Siraj al-Wahhaj, Minha 12 (M) Note 5: Hindiyya, and narrated from Sharh al-Ziyadat by al-'Attabi 12 (M) (And it is narrated from 'Attabi's commentary on Ziyadat. T) Note 6: Hilya, Radd al-Muhtar, and Al-Adami pointed to it in Sharh al-Wiqaya and Al-Bahr relied upon it following Al-Halabi 12 (M) (It is pointed out in Sharh al-Wiqaya and Al-Bahr following Al-Halabi has relied upon it 12. T) 1: Kafi 12 2: Ghunya 12

फ़तावा रज़विया जिल्द 4 कुछ (टिप्पणी 1) ने पहले कथन को बताया है या कहा है कि इमाम मुहम्मद के कथन का कयास (तर्क) है, अर्थात उनसे स्पष्ट रूप से वर्णित नहीं है बल्कि उनके कथन का कयास यही चाहता है कि हुक्म यह हो। मैं कहता हूँ: सत्य यही है कि पहला इमाम मुहम्मद का कथन है और दूसरा इमाम अबू यूसुफ़ का (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो), क्योंकि विश्वसनीय विवरण इसे सिद्ध करते हैं। चौथा: चयन भी भिन्न रहा; कुछ ने इस (टिप्पणी 2) पर ज़ोर दिया, कुछ ने (टिप्पणी 3) उस पर, कुछ ने (टिप्पणी 4) दोनों का उल्लेख किया और छोड़ दिया। पांचवां: सही करार देने (तसहीह) में भी मतभेद रहा; कुछ (टिप्पणी 5) ने इसे सबसे सही (असह) कहा, कुछ (टिप्पणी 6) ने इसे ज़ाहिर-अल-वजह कहा। छठा: इस मतभेद के आधार की व्याख्या भी भिन्न रही। कुछ (1) ने इस प्रकार कहा कि यद्यपि इस पानी को उस अनधुले हिस्से (लम'आ) पर खर्च करना सर्वसम्मति से अनिवार्य (वाजिब) है, लेकिन इमाम मुहम्मद के अनुसार यह अनिवार्यता अशुद्धि (हदस) दूर करने की क्षमता में बाधक नहीं है; यदि कोई ऐसा करता है, तो सर्वसम्मति से सही होगा। इमाम अबू यूसुफ़ के अनुसार, यह बाधक है क्योंकि जब शरीयत उसे अशुद्धि दूर करने की अनुमति नहीं देती, तो कानूनी क्षमता कब हुई? और कुछ (2) ने इस प्रकार व्याख्या की कि नहीं बल्कि अनिवार्यता (वुजूब) में ही मतभेद है। इमाम मुहम्मद के अनुसार उसे लम'आ की ओर खर्च करना वाजिब नहीं बल्कि केवल बेहतर (औला) है, इसलिए हदस दूर करने की क्षमता स्थापित है। इमाम अबू यूसुफ़ के अनुसार वाजिब है, और वाजिब का विरोध शरीयत में मना और वर्जित है, इसलिए हदस दूर करना सामर्थ्य के बाहर है। अब हम प्रतिष्ठित विद्वानों के कथनों का उल्लेख करते हैं जिनसे इन बयानों का खुलासा होता है।

[तालिका सामग्री] अरबी पाठ: अल-सिराज अल-वहाज फिर मिन्हात अल-खालिक में है: "यदि तयम्मुम के बाद हदस (अशुद्धि) हो जाए, फिर इतना पानी मिले जो प्रत्येक के लिए अलग-अलग पर्याप्त हो, तो उससे लम'आ धोया जाए क्योंकि जनाबत अधिक गंभीर है, फिर हदस के लिए तयम्मुम करे। और यदि तयम्मुम से शुरुआत की फिर उसे धोया..." उर्दू अनुवाद: सिराज वहाज फिर मिन्हात अल-खालिक में है: "जब तयम्मुम के बाद हदस हो जाए फिर इतना पानी पाए जो तन्हा हर एक के लिये काफी हो तो उससे लम'आ धोये इस लिये कि जनाबत ज़्यादा सख्त है फिर हदस का तयम्मुम करे। और अगर पहले तयम्मुम किया फिर लम'आ धोया तो एक रिवायत में है कि जायज़ नहीं और वह तयम्मुम का एआदा (दोहराना) करेगा।"

[पाद टिप्पणियाँ] टिप्पणी 1: शरह तहावी, खज़ानत-उल-मुफ़्तीन 12 (म) टिप्पणी 2: हिलिया, साथ ही बदाइ और मुहीत रज़विया दलालत-अल-नस्स के साथ जैसा कि आप जल्द ही जान लेंगे। (म) (इसी

पर दलालत-अल-नस्स है जैसा कि आप अनकरीब जान लोगे। (त)) टिप्पणी 3: दुर्र-ए-मुख्तार और व्याख्याकार 12 (म) टिप्पणी 4: सिराज वहाज, मिन्हा 12 (म) टिप्पणी 5: हिंदिया, और अत्ताबी की शरह अल-ज़ियादात से उद्धृत 12 (म) (और अत्ताबी की शरह ज़ियादात से नकल किया गया है। त) टिप्पणी 6: हिलिया, रद-अल-मुह्तार और आदमि ने शरह अल-विकाया में इसकी ओर संकेत किया है और बहर ने हलबी के अनुसरण में इसी पर भरोसा किया है 12 (म) (शरह व विकाया में इसी की तरफ इशारा किया है और बहर ने हलबी की इत्तेबा में इसी पर एतमाद किया है 12। त) 1: काफ़ी 12 2: ग़ुनिया 12

पृष्ठ 304 / 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم قول بتایا بعض عہ۱ نے اول کو فرمایا یا قیاس قول محمد ہے یعنی تصریحاً ان سے مروی نہیں ان کے قول کا قیاس چاہتا ہے کہ حکم یہ ہو۔ اقول: اور ہے یہی کہ اول قول محمد اور دوم قول ابو یوسف ہے رضی اللہ تعالیٰ عنہم اجمعین کہ نقل ثقات موجب اثبات رابعاً: اختیار بھی مختلف رہا بعض نے اس عہ۲ پر جزم فرمایا بعض نے عہ۳ اس پر بعض عہ۴ نے دونوں ذکر کر کے چھوڑ دیے۔ خامساً: تصحیح میں بھی اختلاف پڑا بعض عہ۵ نے اسے اصح کہا بعض عہ۶ نے اسے ظاہر الوجہ سادساً: اس منشأ اختلاف کی تقریر بھی مختلف آئی۔ بعض۱ نے یوں فرمایا کہ اگرچہ یہ پانی لمعہ میں صرف کرنا بالاتفاق واجب ہے مگر امام محمد کے نزدیک یہ وجوب اس سے ازالہ حدث پر قدرت کا مانع نہیں کہ کرے تو بالاجماع صحیح تو ہو گا اور امام ابو یوسف کے نزدیک مانع ہے کہ جب شرع اس سے ازالہ حدث کی اسے اجازت نہیں دیتی تو قدرتِ شرعیہ کب ہوئی اور بعض ۲ نے یوں تقریر کی کہ نہیں بلکہ وجوب ہی میں اختلاف ہے۔ امام محمد کے نزدیک اسے لمعہ کی طرف صرف کرنا واجب نہیں صرف اولیٰ ہے لہذا ازالہ حدث پر قدرت ثابت اور امام ابو یوسف کے نزدیک واجب ہے اور واجب کی مخالفت شرعاً ممنوع و محظور لہذا حدث میں صرف غیر مقدور۔ اب ہم عباراتِ کرام ذکر کریں جن سے ان بیانات کا انکشاف ہو۔

[جدول] عربی: فی السراج الوهاج ثم منحة الخالق اذا احدث بعد التيمم ثم وجد ماء يكفى لكل واحد منهما على الانفراد غسل به اللمعة لان الجنابة اغلظ ثم يتيمم للحدث ولو بدأ بالتيمم ثم غسلها اردو: سراج وہاج پھر منحة الخالق میں ہے: "جب تیمم کے بعد حدث ہو پھر اتنا پانی پائے جو تنہا ہر ایک کے لئے کافی ہو تو اس سے لمعہ دھوئے اس لئے کہ جنابت زیادہ سخت ہے پھر حدث کا تیمم کرے۔ اور اگر پہلے تیمم کیا پھر لمعہ دھویا تو ایک روایت میں ہے کہ جائز نہیں اور وہ تیمم کا اعادہ کرے گا ایک"

[حواشی] عہ۱ شرح طحاوی خزانہ المفتین ۱۲ (م) عہ۲ حلیہ نیز بدائع و محیط رضوی بہ دلالۃ النص کما ستعرف (م) (اسی پر دلالۃ النص ہے جیسا کہ عنقریب جان لو گے۔ (ت)) عہ۳ درمختار و محشیان ۱۲ (م) عہ۴ سراج وہاج منحہ ۱۲ (م) عہ۵ ہندیہ و نقل عن شرح الزیادات للعتابی ۱۲ (م) (اور عتابی کی شرح زیادات سے نقل کیا گیا ہے۔ ت) عہ۶ حلیہ ردالمحتار وادمی الیہ فی شرح الوقایۃ واعتمدۃ البحر تبعاً للحلبی ۱۲ (م) (شرح و وقایہ میں اسی کی طرف اشارہ کیا ہے اور بحر نے حلبی کی اتباع میں اسی پر اعتماد کیا ہے ۱۲۔ ت) ۱ کافی ۱۲ ۲ غنیہ ۱۲

Fatawa Rizwia Volume 4

In one narration, it is not permissible and he must repeat the tayammum. In another narration for him (the person), he may start with whichever of the two he wishes. It is said that the first narration represents the opinion of Imam Muhammad and the second represents the opinion of Imam Abu Yusuf (1). It has been previously mentioned from 'Sharh al-Tahawi' and 'Khizanat al-Muftin' that in the case where tayammum was not performed before finding water, if he starts with tayammum and then washes the unwashed spot (lum'ah), it is not permissible. In 'al-Nawadir', it is stated that he may start with whichever he wishes. Then they both said regarding the case where his tayammum had already preceded, he washes the spot and his tayammum remains valid. According to the analogy of Imam Muhammad's opinion, he performs tayammum (again) (2).

I say: There is no difference between the two cases because the underlying principle is unified as you have known. Thus, he first followed the opinion of Imam Muhammad and considered the second to be the narration of 'al-Nawadir'. Secondly, he followed the opinion of Imam Abu Yusuf and considered the first to be the analogy of Imam Muhammad's opinion. In 'al-Munya', it is stated: "He must first wash the spot and then perform tayammum" (3). Thus, he followed Imam Muhammad's opinion. In 'al-Durr al-Mukhtar': "(What invalidates tayammum is the ability to use enough water for purification that is in excess of his needs), such as thirst, kneading dough, washing filth, and..."

(The right column is a direct Urdu translation/explanation of the Arabic text on the left.)

Footnotes: 1. Minhat al-Khaliq with al-Bahr, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi, 1/139. 2. Sharh al-Tahawi by al-Isbijabi and Khizanat al-Muftin. 3. Munyat al-Musalli, Chapter of Tayammum, printed at Maktaba Qadria Jamia Nizamia Rizwia Lahore, p. 60.

Page 305 of 761

फतावा रज़विया जिल्द चौथा

एक रिवायत में है कि यह जायज़ नहीं है और उसे तयम्मुम दोहराना होगा। और उनकी एक रिवायत में यह है कि उसे अख्तियार है कि उन दोनों में से जिससे चाहे पहले शुरू करे। कहा गया कि पहली रिवायत इमाम मुहम्मद का कौल (मत) है और दूसरी इमाम अबू यूसुफ़ का कौल है (1)। 'शरह अल-तहावी' और 'ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन' से पहले गुज़र चुका है कि उस सूरत में जब पानी मिलने से पहले तयम्मुम न किया हो, अगर तयम्मुम से शुरू किया फिर लुमअ (अनधोया हिस्सा) धोया तो जायज़ नहीं है। और 'नवादिर' में है कि दोनों में से जिसे चाहे पहले करे। फिर उन दोनों ने उस सूरत में कहा जब उसका तयम्मुम पहले हो चुका हो कि लुमअ धो ले और उसका तयम्मुम बरक़रार रहेगा। और इमाम मुहम्मद के कौल के कयास (अनुमान) पर वह तयम्मुम करे (2)।

मैं कहता हूँ: दोनों सूरतों में कोई फर्क नहीं है क्योंकि जैसा कि आप जान चुके हैं, बुनियादी आधार एक ही है। तो पहले इमाम मुहम्मद के कौल पर चले और दूसरी को नवादिर की रिवायत करार दिया। और दोबारा इमाम अबू यूसुफ़ के कौल पर चले और पहली को इमाम मुहम्मद के कौल का कयास करार दिया। 'अल-मुनिया' में है: "उसे पहले लुमअ धोना चाहिए और फिर तयम्मुम करना चाहिए" (3)। तो यहाँ इमाम मुहम्मद के कौल पर चले हैं। 'अल-दुर्रुल मुख्तार' में है: "(तयम्मुम को तोड़ने वाली चीज़ वह पानी है जो पाकी हासिल करने के लिए काफी हो और उसकी ज़रूरत से ज़्यादा हो), जैसे प्यास, आटा गूँधना, नजासत (गंदगी) धोना, और..."

(दायां कॉलम बाईं ओर के अरबी पाठ का सीधा उर्दू अनुवाद/व्याख्या है।)

पादलेख: 1. मिन्हातुल खालिक मअ अल-बहर, बाबुत तयम्मुम, मतबा एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/139. 2. शरह अल-तहावी लिल-इसबीजाबी व ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन। 3. मुनियतुल मुसल्ली, बाबुत तयम्मुम, मतबुआ मकतबा कादरिया जामिया निज़ामिया रज़विया लाहौर, पृ. 60.

पृष्ठ 305/761

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم

في رواية لا يجوز ويعيد التيمم وفی رواية له ان يبدأ بايهما شاء قيل الاولی قول محمد والثانية قول ابی يوسف 1 اه، روایت میں ہے کہ اسے اختیار ہے دونوں میں سے جس کو چاہے پہلے کرے ، کہا گیا کہ روایت اولٰی امام محمد کا قول ہے اور روایت ثانیہ امام ابویوسف کا قول ہے" اه شرح طحاوی اور خزانہ المفتین سے گزرا، اس صورت میں جبکہ پانی ملنے سے پہلے تیمم نہ کیا ہو اگر پہلے تیمم کیا پھر لمعہ دھویا تو جائز نہیں اور نوادر میں ہے کہ دونوں میں سے جسے چاہے پہلے کرے پھر اس صورت میں جب اس کا تیمم پہلے ہوچکا ہو لکھا کہ "لمعہ دھوئے اور اس کا تیمم برقرار ہے۔ اور برق یاس قول محمد تیمم کرے" اه (ت) وتقدم عن شرح الطحاوی وخزانة المفتين فيما اذالم يكن تيمم قبل وجدان الماء لوبدأ بالتيمم ثم غسل اللمعة لا يجوز وفی النوادر يبدأ بأيهما شاء ثم قالا فيما اذا سبق تيممه يغسل اللمعة وتيممه علی حاله وعلی قياس قول محمد يتيمم 2 اهـ اقول: ولا(۱) فرق بين الصورتين لاتحاد المبنی كما علمت فقدمشی اولا علی قول محمد وجعل(۲) الثانی رواية النوادر ومشی ثانيا علی قول ابی يوسف وجعل الاول قياس قول محمد وفی المنية وعليه ان يبتدئ بغسل اللمعة ثم يتيمم 3 اه فقد مشی علی قول محمد، وفی الدر المختار (ناقضه قدرة ماء كاف لطهره فضل عن حاجته) كعطش وعجن وغسل نجس و اقول: دونوں صورتوں میں کوئی فرق نہیں کیونکہ مبنی میں اتحاد ہے جیسا کہ معلوم ہوا۔ تو پہلے امام محمد کے قول پر چلے اور روایت نوادر قرار دیا ۔ اور ثانیا امام ابویوسف کے قول پر چلے اور اول کو امام محمد کے قول کا قیاس قرار دیا۔ اور منیہ میں ہے : اس پر یہ ہے کہ پہلے لمعہ دھوئے پھر تیمم کرے۔" اور اس میں امام محمد کے قول پر چلے ہیں۔ درمختار میں ہے : "(ناقض تیمم اتنے پانی پر قدرت ہے جو اس کی طہارت کے لئے کافی اس کی حاجت سے زائد ہو) حاجت جیسے پیاس، آٹا گوندھنا، نجس اور

1 منحة الخالق مع البحر، باب التيمم، مطبع ايچ ايم سعيد كمپنى كراچى، ١٣٩/١ 2 شرح الطحاوى للاسيجا بى و خزانہ المفتين 3 منية المصلى باب التيمم مطبوعہ مكتبہ قادريہ جامعہ نظاميہ رضويہ لاہور ص ۶۰

Fatawa Razawiyyah, Volume Four

[Arabic Passage:] Washing a spot of Janabat [ritual impurity] because that which is occupied with a necessity is like that which is non-existent. (1) End quote. Thus, he followed the opinion of Imam Abu Yusuf. The commentators of 'Durr al-Mukhtar' maintained this. In 'al-Hilyah' it is asked: Is he required to wash the spot first, such that if he performed Tayammum for a minor impurity (Hadath) and then washed the spot, must he repeat the Tayammum for Hadath? In the narrations of 'al-Ziyadat', the answer is affirmative, and the author limited himself to this. The reasoning is that he becomes one lacking water, so Tayammum suffices for him. In the narration of 'al-Asl', the answer is negative; rather, whichever of the two he does first is permissible because the water has become due to be spent on the spot, so it became legally non-existent, just like water needed for thirst. Radi al-Din stated in 'al-Muhit', and others as well before 'al-Ziyadat', the opinion of Muhammad, and that which is in 'al-Asl' is the opinion of Abu Yusuf. End quote. And in it, it appears that the opinion of Abu Yusuf...

[Commentary:] Al-Allamah ash-Shami said: "That is, if he performed Ghusl and a spot remained, then he did Tayammum, then minor impurity occurred so he did Tayammum again, then he found water sufficient only for that spot, then he should wash it with that water, and his Tayammum for the minor impurity shall not be invalidated." (2) End quote. I say: (1) Glory be to Allah! When it [the water] was not sufficient for Wudu, the non-invalidation of his Tayammum was due to insufficiency, not due to being occupied with a necessity. The commentator intends to explain water that is occupied with a necessity. So the correct view is that his intent, as per the clarification of rulings, is the case when water is sufficient for each as an alternative. 12 [dated] From him, may he be forgiven (T).

Footnotes: 1. Durr al-Mukhtar, Book of Tayammum, Mujtabai Press, Delhi, 1/45. 2. Radd al-Muhtar, Book of Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/187.

Page 306 of 761

फ़तावा रज़विया, जिल्द चौथी

[अरबी पाठ:] लम्अ़ (छोटा सूखा स्थान) जनाबत धोना इसलिए कि जो हाजत (ज़रूरत) में मशग़ूल है वह मादूम (न होने के बराबर) की तरह है। (1) अह—इसमें इमाम अबू यूसुफ़ के कौल (विचार) पर चले। और दुर्रे मुख्तार के मुहश्शी हज़रात ने इसे बरक़रार रखा। 'हिलिया' में है: क्या उस पर यह लाज़िम है कि पहले लम्अ़ धोए यहाँ तक कि अगर हदस का तयम्मुम कर लिया फिर लम्अ़ धोया तो उसे तयम्मुम-ए-हदस का एआदा (दोहराना) करना है? रिवायत 'ज़ियादात' में इसका जवाब इस्बात (हाँ) में है और इसी पर मुसन्निफ़ (लेखक) ने इक्तिफ़ा (बस) की। इसकी वजह यह है कि वह फ़ुक़्दान-ए-आब (पानी की कमी) वाला हो जाता है तो उसका तयम्मुम किफ़ायत कर जाता है। और रिवायत 'अस्ल' में इसका जवाब नफ़ी (नहीं) में है बल्कि वह दोनों में से जो भी पहले कर ले जाइज़ है, इसलिए कि पानी लम्अ़ में सर्फ(खर्च) का मुस्तहिक़ हो गया तो वह हुक्मन मादूम हो गया जैसे वह पानी जो प्यास का मुस्तहिक़ हो गया। रज़ीउद्दीन ने 'मुहीत' और इसी तरह उनके अलावा ने भी फ़रमाया है: कहा गया है...

[व्याख्या:] अल्लामा शामी ने फ़रमाया: "यानी अगर गुस्ल किया और कोई लम्अ़ रह गया फिर तयम्मुम किया फिर उसे हदस हुआ तो तयम्मुम किया फिर इतना पानी मिला जो सिर्फ लम्अ़ के लिए काफ़ी है तो उसे उस पानी से धोएगा और उसका तयम्मुम-ए-हदस बातिल न होगा।" (2) अह—अकुल: सुब्हानअल्लाह! जब वुज़ू के लिए काफ़ी न हुआ तो उसके तयम्मुम का न टूटना अदम-ए-किफ़ायत (पर्याप्तता की कमी) की वजह से हुआ, हाजत में मशग़ूल की वजह से नहीं। और शारह (व्याख्याकार) उस पानी को बताना चाहते हैं जो हाजत में मशग़ूल हो। तो वजह-ए-सहीह यह है कि उनकी मुराद हस्ब-ए-तसरीह-ए-अहकाम (नियमों के स्पष्टीकरण के अनुसार) वह सूरत है जब पानी बतौरे बदलियत (विकल्प के रूप में) हर एक के लिए काफ़ी हो। 12 मिन्हु गफ़र-लहू (त)

फुटनोट: 1. दुर्रे मुख्तार, बाबुत तयम्मुम, मतबअ मुज्तबाई दिल्ली 1/45 2. रद्दुल मुह्तार, बाबुत तयम्मुम, मतबअ मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 1/187

पृष्ठ 306/761

فتاوی رضویہ، جلد چہارم

[عربی متن:] لمعة عہ جنابة لان المشغول بالحاجة كالمعدوم ١ اھـ فقد مشى على قول ابي يوسف ۔ واقره محشوه وفي الحلية هل عليه ان يبتدئ بغسل اللمعة حتى لوتيمم للحدث ثم غسل اللمعة اعاد التيمم للحدث ففي روايات الزيادات نعم وعليها اقتصر المصنف ووجهها انه يصير عادماً للماء فيجزئه التيمم وفى رواية الاصل لابل بابهما بدأجاز لان الماء صار مستحق الصرف الى اللمعة فصار معدوما حكما كالماء المستحق للعطش۔قال رضى الدين في المحيط وكذا غيره قبل مافى الزيادات قول محمد وما فى الاصل قول ابي يوسف اھـ وفيها يظهر ان قول ابي يوسف

[اردو ترجمہ و تشریح:] لمعہ جنابت دھونا اس لئے کہ جو حاجت میں مشغول ہے وہ معدوم کی طرح ہے ١ھ اس میں امام ابو یوسف کے قول پر چلے۔ اور در مختار کے محشی حضرات نے اسے برقرار رکھا۔ حلیہ میں ہے: کیا اس پر یہ لازم ہے کہ پہلے لمعہ دھوئے یہاں تک کہ اگر حدث کا تیمم کر لیا پھر لمعہ دھویا تو اسے تیممِ حدث کا اعادہ کرنا ہے؟ روایت زیادات میں اس کا جواب اثبات میں ہے اور اسی پر مصنف نے اکتفا کی اس کی وجہ یہ ہے کہ وہ فقدانِ آب والا ہو جاتا ہے تو اس کا تیمم کفایت کر جاتا ہے۔ اور روایت اصل میں اس کا جواب نفی میں ہے بلکہ وہ دونوں میں سے جو بھی پہلے کرلے جائز ہے اس لئے کہ پانی لمعہ میں صرف کا مستحق ہو گیا تو وہ حکماً معدوم ہو گیا جیسے وہ پانی جو پیاس کا مستحق ہو گیا۔ رضی الدین نے محیط اور ایسے ہی انکے علاوہ نے بھی فرمایا ہے: کہا گیا ہے

علامہ شامی نے فرمایا: "یعنی اگر غسل کیا اور کوئی لمعہ رہ گیا پھر تیمم کیا پھر اسے حدث ہوا تو تیمم کیا پھر اتنا پانی ملا جو صرف لمعہ کے لئے کافی ہے تو اسے اس پانی سے دھوئے گا اور اس کا تیممِ حدث باطل نہ ہوگا" ٢ھ اقول: سبحان اللہ جب وضو کے لئے کافی نہ ہوا تو اس کے تیمم

کا نہ ٹوٹنا عدمِ کفایت کی وجہ سے ہوا حاجت میں مشغول کی وجہ سے نہیں اور شارح اس پانی کو بتانا چاہتے ہیں جو حاجت میں مشغول ہو۔ تو وجہِ صحیح یہ ہے کہ ان کی مراد حسبِ تصریحِ احکام وہ صورت ہے جب پانی بطورِ بدلیت ہر ایک کے لئے کافی ہو ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

حواشی: ۱ در مختار باب التیمم مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۴۵ ۲ رد المحتار باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۸۷

Fatawa Razawiyya Volume Four

Face 1: And it was expressed in Radd al-Muhtar with the statement that the dry ablution (tayammum) for minor impurity (hadath) is not invalidated according to Abu Yusuf, while according to Muhammad, it is invalidated. It appears that the first opinion is more sound. End. Then he said concerning what was not performed as tayammum before finding water, in one narration, it is mandatory to wash the unwashed spot (lum'ah) before performing tayammum for the impurity, and in another narration, he has a choice. End. Summarized from al-Hilyah 2. End. In Sharh al-Wiqayah: If he washes the spot, does he repeat the tayammum? There are two narrations. If he performs tayammum first and then washes the spot, there are also two narrations regarding repeating the tayammum. If he directs [the water] to the impurity, his tayammum regarding the spot is invalidated by agreement of both narrations. End. Then he said regarding the case where he did not perform tayammum for the impurity before: if the water is sufficient for each one individually, he uses it for the spot and performs tayammum for the impurity. Then if he performs wudu with it, it is permissible and he repeats the tayammum for the impurity. If he began with tayammum for the impurity, does he repeat the tayammum? In the narration of al-Ziyadat, he repeats it, and in the narration of al-Asl, he does not repeat it, because power is established if it is not directed toward a more important aspect; so if there was an impurity on his body or clothes, he directs it to that impurity 3. End. As you see, this points toward the preference of the narration of al-Asl. In al-Hindiyyah: He directed it to the spot and repeated his tayammum for the impurity.

[Urdu column text]: That which is in al-Ziyadat is the saying of Imam Muhammad, and what is in al-Asl is the saying of Imam Abu Yusuf. End. In al-Hilyah, it is also stated that apparently, Imam Abu Yusuf's saying is more appropriate. End. In Radd al-Muhtar, it has been expressed in these words: 'The tayammum for hadath will not be broken according to Imam Abu Yusuf and will be broken according to Imam Muhammad, and the apparent is that the first is [of a higher] level.' End. Then regarding the situation where tayammum was not performed before finding water, it is written: 'In one narration, it is necessary to wash the spot before tayammum for hadath, and in another narration, he has a choice.' End. Summarized from al-Hilyah. End. In Sharh al-Wiqayah, it says: 'When the spot is washed, will he repeat the tayammum? There are two narrations. And if he performed tayammum first then washed the spot, then also there are two narrations regarding repeating the

tayammum. And if they are used only for the hadath, then according to the agreement of both narrations, his tayammum regarding the spot is broken.' End. Then regarding the case where tayammum for hadath was not performed first, it is written: 'If it is sufficient for each one alone, he will use it for the spot and will perform tayammum for hadath. Then if he performed wudu with it, it is permissible and he has to repeat the tayammum. And if he performed tayammum for hadath first, then will he repeat the tayammum? In the narration of al-Ziyadat, it is that he will repeat it, and in the narration of al-Asl, it is that he will not repeat it. Then...'

Footnotes: 1 Hilyah 2 Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Mustafa al-Babi Press Egypt 1/187 3 Sharh al-Wiqayah, Chapter of Tayammum, published by Maktabah Rasheediyyah Delhi 1/104, 105 Page 307 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

पहलू 1: और रद अल-मुह्तार में इस कथन के साथ व्यक्त किया गया है कि इमाम अबू यूसुफ़ के अनुसार ह़दथ (अशुद्धि) के लिए किया गया तयम्मुम नहीं टूटता, जबकि इमाम मुहम्मद के अनुसार यह टूट जाता है। यह स्पष्ट होता है कि पहला मत अधिक उपयुक्त है। समाप्त। फिर उन्होंने उस बारे में कहा जिसमें पानी मिलने से पहले तयम्मुम नहीं किया गया था, एक रिवायत में ह़दथ के लिए तयम्मुम से पहले अनधुले हिस्से (लुमआ) को धोना अनिवार्य है, और दूसरी रिवायत में उसे विकल्प है। समाप्त। अल-हिलिया 2 से संक्षिप्त। समाप्त। शरह अल-विकाया में है: यदि वह लुमआ (हिस्सा) धोता है, तो क्या वह तयम्मुम को दोहराएगा? दो रिवायतें हैं। और यदि उसने पहले तयम्मुम किया और फिर लुमआ धोया, तो तयम्मुम दोहराने के संबंध में भी दो रिवायतें हैं। और यदि वह [पानी] ह़दथ के लिए उपयोग करता है, तो दोनों रिवायतों की सहमति के अनुसार लुमआ के संबंध में उसका तयम्मुम टूट जाता है। समाप्त। फिर उस स्थिति के बारे में कहा गया जब ह़दथ के लिए पहले तयम्मुम नहीं किया गया था: यदि पानी प्रत्येक के लिए अलग से पर्याप्त है, तो वह इसे लुमआ के लिए उपयोग करेगा और ह़दथ के लिए तयम्मुम करेगा। फिर यदि उसने इससे वज़ू किया, तो यह जायज़ है और उसे ह़दथ के लिए तयम्मुम दोहराना होगा। और यदि उसने पहले ह़दथ के लिए तयम्मुम किया, तो क्या वह तयम्मुम दोहराएगा? ज़ियादात की रिवायत में है कि वह दोहराएगा, और असल की रिवायत में है कि नहीं दोहराएगा, क्योंकि शक्ति तब स्थापित होती है जब इसे किसी अधिक महत्वपूर्ण दिशा में न लगाया जाए; यहाँ तक कि यदि उसके शरीर या कपड़ों पर नजासत (गंदगी) हो, तो वह इसे नजासत की ओर निर्देशित करता है 3। समाप्त। जैसा कि आप देखते हैं, यह असल की रिवायत की प्राथमिकता की ओर संकेत करता है। अल-हिंदिया में है: उसने इसे लुमआ की ओर निर्देशित किया और ह़दथ के लिए अपना तयम्मुम दोहराया।

[उर्दू कॉलम का पाठ]: कि जो ज़ियादात में है वह इमाम मुहम्मद का कथन है और जो असल में है वह इमाम अबू यूसुफ़ का कथन है। समाप्त। हिलिया में यह भी है कि ज़ाहिर यह है कि इमाम अबू यूसुफ़ का कथन अधिक उपयुक्त है। समाप्त। रद अल-मुह्तार में इसकी अभिव्यक्ति इन शब्दों में की गई है: 'तयम्मुम ह़दथ इमाम अबू यूसुफ़ के नज़दीक न टूटेगा और इमाम मुहम्मद के नज़दीक टूट जाएगा और ज़ाहिर यह है कि अव्वल दर्जा है।' समाप्त। फिर इस सूरत के मुताल्लिक जबकि पानी मिलने से पहले तयम्मुम न किया हो, लिखा है: 'एक रिवायत में इस पर तयम्मुम ह़दथ से पहले लुमआ धोना लाज़िम है और एक रिवायत में उसे इख़्तियार है।' समाप्त। मुलख़्ख़सन मिनल हिलिया।

समाप्त। शरह विकाया में है: 'जब लुमआ धो लिया तो क्या तयम्मुम का इआदा करेगा? दो रिवायतें हैं और अगर पहले तयम्मुम कर लिया फिर लुमआ धोया तो भी इआदा-ए-तयम्मुम में दो रिवायतें हैं। और अगर ह़दथ में सर्फ़ करें तो ह़क़ लुमआ में उसका तयम्मुम बिल-इत्तिफ़ाक़ रिवायतें टूट गया।' समाप्त। फिर इस सूरत से मुताल्लिक जबकि ह़दث का तयम्मुम पहले न किया हो, लिखा है: 'अगर तन्हा हर एक के लिए काफ़ी हो तो उसे लुमआ में सर्फ़ करेगा और ह़दث का तयम्मुम करेगा फिर अगर इससे वज़ू कर लिया तो जायज़ है और तयम्मुम का इआदा करना है और अगर ह़दث का तयम्मुम पहले किया तो क्या तयम्मुम लौटाएगा? रिवायत ज़ियादात में है कि लौटाएगा और रिवायत असल में है कि नहीं लौटाएगा फिर...'

फुटनोट्स: 1 हिलिया 2 रद अल-मुह्तार, बाब अत-तयम्मुम, मतबा मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 1/187 3 शरह अल-विकाया, बाब अत-तयम्मुम, मतबुआ मकतबा रशीदिया दिल्ली 1/104, 105 पेज 307 of 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

اوجه ۱ اهـ وعبر عنه فی ردالمحتار بقوله لاینتقض تیمم الحدث عند ابي یوسف وعند محمد ینتقض ویظهر ان الاول اوجه اهـ ثم قال فیما لم یتیمم قبل الوجدان فی روایة یلزمه غسلها قبل التیمم للحدث وفی روایة یخیر اه ملخصاً من الحلیة ۲ اهـ وفی شرح الوقایة واذا غسل اللمعة هل یعید التیمم روایتان وان تیمم اولاً ثم غسل اللمعة ففی اعادة التیمم روایتان ایضاً وان صرف الی الحدث انتقض تیممه فی حق اللمعة باتفاق الروایتین اه ثم قال فیما اذا لم یتیمم للحدث قبل ان کفی کل واحد منفردا یصرفه الی اللمعة ویتیمم للحدث فان توضأ به جاز ویعید التیمم للحدث ولوبدأ بالتیمم للحدث هل یعید التیمم فی روایة الزیادات یعید وفي روایة الاصل لائم انها تثبت القدرة اذا لم یکن مصروفاً الی جهة اهم حتی اذا کان علی بدنه اوثوبه نجاسة یصرفه الی النجاسة ۳ اه وهو کما تری یشیر الی ترجیح روایة الاصل۔ وفی الهندیة صرفه الی اللمعة واعاد تیممه للحدث

[اردو ترجمہ و تشریح]: کہ جو زیادات میں ہے وہ امام محمد کا قول ہے اور جو اصل میں ہے وہ امام ابو یوسف کا قول ہے۔ اھ حلیہ میں یہ بھی ہے کہ ظاہر یہ ہے کہ امام ابو یوسف کا قول زیادہ مناسب ہے۔ اھ ردالمحتار میں اس کی تعبیر ان الفاظ میں کی ہے: "تیمم حدث امام ابو یوسف کے نزدیک نہ ٹوٹے گا اور امام محمد کے نزدیک ٹوٹ جائے گا اور ظاہر یہ ہے کہ اول درجہ ہے اھ پھر اس صورت کے متعلق جبکہ پانی ملنے سے پہلے تیمم نہ کیا ہو لکھا ہے: "ایک روایت میں اس پر تیمم حدث سے پہلے لمعہ دھونا لازم ہے اور ایک روایت میں اسے اختیار ہے " اھ ملخصاً من الحلیہ اھ شرح وقایہ میں ہے: "جب لمعہ دھولیا تو کیا تیمم کا اعادہ کرے گا؟ دو روایتیں ہیں اور اگر پہلے تیمم کرلیا پھر لمعہ دھویا تو بھی اعادہ تیمم میں دو روایتیں ہیں۔ اور اگر حدث میں صرف کریں تو حق لمعہ میں اس کا تیمم بالاتفاق روایتیں ٹوٹ گیا۔" اھ پھر اس صورت سے متعلق

جبکہ حدث کا تیمم پہلے نہ کیا ہو، لکھا ہے: "اگر تنہا ہر ایک کے لئے کافی ہو تو اسے لمعہ میں صرف کرے گا اور حدث کا تیمم کرے گا پھر اگر اس سے وضو کرلیا تو جائز ہے اور تیمم کا اعادہ کرنا ہے اور اگر حدث کا تیمم پہلے کیا تو کیا تیمم لوٹائے گا؟ روایت زیادات میں ہے کہ لوٹائے گا اور روایت اصل میں ہے کہ: نہیں لوٹائے گا پھر"

حواشی: 1 حلیہ 2 ردالمحتار باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۸۷ 3 شرح الوقایہ باب التیمم مطبوعہ مکتبہ رشیدیہ دہلی ۱/ ۱۰۴، ۱۰۵ صفحہ 307 of 761

Fatawa Ridawiyya Volume 4

(Text continued from previous page): Capability is established at that time when it is not engaged in a more important matter. To the point that if there is some impurity on his body or clothes, he should spend it toward the impurity. 1 AH. This speech points towards the preference of the original narration as is before you.

According to Imam Muhammad and according to Abu Yusuf, if he used it first for wudu, it is permissible, and he performs tayammum for his major ritual impurity (janabah) by consensus. If he had not performed tayammum for minor ritual impurity (hadath) before the existence of this water, and then performed tayammum before washing the unwashed spot (lum’ah), it is not permissible according to Muhammad, but according to Abu Yusuf it is permissible, and the former [opinion] is more correct; thus it is stated in Al-Kafi. 1 AH.

I say: His statement "the former is more correct" is not in my copy of Al-Kafi, and the wording is not quoted exactly as it is in Al-Kafi, as is evident through comparison. He (1) has drawn attention to it by his phrase "thus in Al-Kafi", just as he mentioned in the book's preface regarding his terminology for 'kaza' and 'hakaza'. Yes, some contemporaries (Fazil Lucknowi 12) have mentioned that in Al-Atabi's commentary on Al-Ziyadat (Sharh al-Ziyadat) it is stated "the more correct," but he did not mention the intermediary source in transmission. If this is true, then perhaps it was added in Al-Hindiyya from there or from someone else, or perhaps this word was missing from my copy of Al-Kafi. In any case, Al-Hindiyya is reliable in transmission, and Allah Almighty knows best.

And in Al-Kafi: If [the water] is sufficient for only one and not both, he should use it for the spot (lum’ah) because it is more important, and repeat his tayammum for minor ritual impurity (hadath).

Footnote: 1 Fatawa Hindiyya, Chapter on things that nullify Tayammum, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/29.

Page 308 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द 4

(पिछले पृष्ठ से जारी): सामर्थ्य उस समय सिद्ध होती है जब वह अधिक महत्वपूर्ण पक्ष में व्यस्त न हो। यहाँ तक कि यदि उसके शरीर या वस्त्र पर कोई अपवित्रता (नजासत) हो, तो वह उसे अपवित्रता की ओर खर्च करेगा। 1 हिजरी। यह कथन मूल वर्णन की प्राथमिकता की ओर संकेत कर रहा है जैसा कि आपके समक्ष है।

इमाम मुहम्मद और इमाम अबू यूसुफ़ के अनुसार, यदि उसने इसे पहले वज़ू के लिए उपयोग किया, तो यह जायज़ है, और वह सर्वसम्मति से अपनी बड़ी अपवित्रता (जनाबत) के लिए तयम्मुम करे। यदि उसने इस जल की उपलब्धता से पूर्व छोटी अपवित्रता (हदस) के लिए तयम्मुम नहीं किया था, और फिर लुमअ (धोने से रह गया स्थान) धोने से पहले तयम्मुम किया, तो इमाम मुहम्मद के अनुसार यह जायज़ नहीं है, जबकि अबू यूसुफ़ के अनुसार जायज़ है, और पहला मत अधिक सही है; अल-काफ़ी में ऐसा ही है। 1 हिजरी।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): उनका यह कथन कि "पहला मत अधिक सही है" अल-काफ़ी की मेरी प्रति में नहीं है, और शब्दावली वैसे उद्धृत नहीं की गई है जैसी अल-काफ़ी में है, जैसा कि तुलना करने पर स्पष्ट होता है। उन्होंने (1) "हकज़ा फ़िल काफ़ी" (काफ़ी में इसी तरह है) कहकर इस पर ध्यान आकर्षित किया है, जैसा कि उन्होंने पुस्तक की प्रस्तावना में 'कज़ा' और 'हकज़ा' शब्दावली के संबंध में अपनी विशेषता बताई है। हाँ, कुछ समकालीनों (फ़ाज़िल लखनवी 12) ने उल्लेख किया है कि अल-अताबी की 'शरह अल-ज़ियादात' में "वही अधिक सही है" वर्णित है, परंतु उन्होंने नकल का माध्यम नहीं बताया। यदि यह सत्य है, तो संभवतः अल-हिन्दिया में वहीं से या किसी अन्य पुस्तक से यह वृद्धि की गई है, अथवा संभव है कि यह शब्द अल-काफ़ी की मेरी प्रति में छूट गया हो। बहरहाल, अल-हिन्दिया नकल के मामले में विश्वसनीय है, और अल्लाह तआला ही बेहतर जानने वाला है।

और अल-काफ़ी में है: यदि जल केवल एक के लिए पर्याप्त हो, तो वह उसे लुमअ के लिए उपयोग करे क्योंकि वह अधिक महत्वपूर्ण है, और छोटी अपवित्रता (हदस) के लिए अपने तयम्मुम को दोहराए।

पाद टिप्पणी: 1 फ़तावा हिन्दिया, तयम्मुम को शून्य करने वाली वस्तुओं का अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/29।

पृष्ठ 308/761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

قدرت اس وقت ثابت ہوتی ہے جب زیادہ اہم جانب میں مصروف نہ ہو۔ یہاں تک کہ اگر اس کے بدن یا کپڑے پر کوئی نجاست ہو تو اسے نجاست کی جانب صرف کرے گا۔ ۱ ھـ یہ کلام روایتِ اصل کی ترجیح کی جانب اشارہ کر رہا ہے جیسا کہ سامنے ہے۔

ہندیہ میں ہے: اسے لمعہ میں صرف کرے اور تیممِ حدث کا اعادہ کرے امام محمد کے نزدیک اور امام ابو یوسف کے نزدیک اعادہ نہیں اور اگر اسے وضو میں صرف کر لیا جائے تو جائز ہے اور اسے جنابت کا تیمم کرنا ہے بالاتفاق اگر یہ پانی ملنے سے پہلے حدث کا تیمم نہیں کیا تھا اب لمعہ دھونے سے پہلے تیمم کیا تو امام محمد کے نزدیک جائز نہیں اور امام ابو یوسف کے نزدیک جائز ہے اور اول اصح ہے اسی طرح کافی میں ہے"۔۱ ھـ(ت)

اقول: والاول اصح (اور اول اصح ہے) کافی کے میرے نسخہ میں نہیں اور عبارت جیسے کافی میں ہے ویسے منقول نہیں جیسا کہ مقابلہ کرنے سے ظاہر ہوتا ہے اس پر اپنے الفاظ "ہکذا في الکافی" سے تنبیہ بھی کردی ہے جیسا کہ خطبہ کتاب میں لفظ کذا اور ہکذا سے متعلق اپنی اصطلاح بتائی ہے ہاں بعض معاصرین (فاضل لکھنوی ۱۲) نے ذکر کیا ہے کہ عتابی کی شرحِ زیادات میں ہے کہ "وہی اصح ہے" واسطہ نقل نہ بتایا۔ اگر یہ صحیح ہے تو شاید ہندیہ میں وہیں سے یا اور کسی کتاب سے یہ اضافہ کر دیا گیا ہے یا ہو سکتا ہے یہ لفظ میرے نسخہ کافی میں چھوٹ گیا ہو۔ بہرحال ہندیہ نقل میں ثقہ ہے، اور خدائے برتر ہی خوب جاننے والا ہے

وفی الکافی: کافی میں ہے کہ اگر پانی ایک ہی کام کے لئے کافی ہو تو اسے لمعہ کے لئے صرف کرے کیونکہ وہ زیادہ اہم ہے اور حدث کے لئے اپنے تیمم کا اعادہ کرے۔

1 فتاوی ہندیہ فصل فیما ینقض التیمم نورانی کتب خانہ پشاور ۲۹/۱

Fatawa Razvia, Volume 4

[Left Column: Arabic] According to [Imam] Muhammad, due to his ability to use the water, the obligation to use it for Janabah (major ritual impurity) does not contradict his ability to use it for Hadath (minor ritual impurity). Therefore, if he used it for Wudu (ablution), it is permissible and he performs Tayammum (dry ablution) for Janabah by consensus. According to Abu Yusuf, he does not repeat [Tayammum] because it is destined to be used for the 'Lum'ah' (unwashed spot), and what is destined for one purpose is like something non-existent [for other purposes]. So if he had not performed Tayammum for Hadath[1]... etc. as previously mentioned. I say: He placed the proof of Abu Yusuf last to indicate its preference. He explicitly stated in Imam Muhammad's reasoning the obligation to use it for the Lum'ah and that it does not contradict his ability for Wudu. In 'Al-Ghunya' [it says]: (He must begin by washing the Lum'ah) to become without water regarding the right of Hadath. According to Imam Muhammad, Tayammum for Hadath is not permissible before that because using that water for the Lum'ah instead of Hadath is not obligatory for him, but rather it is by way of priority (Awlawiyyah). So its presence prevents Tayammum for Hadath. According to Abu Yusuf, using it for the Lum'ah is obligatory, so it is like non-existent relative to Hadath. Therefore, Tayammum for Hadath is permissible before washing the Lum'ah, even if the Tayammum was after the Hadath occurred.

[Right Column: Urdu] It is in 'Al-Kafi': "If it is sufficient for one indefinitely, he should use it for the Lum'ah because it is more important. According to Imam Muhammad, repeating Tayammum for Hadath is necessary because he became capable of using water, and the obligation to use it for Janabah is not contrary to the ability to use it for Hadath. Therefore, if he used it for Wudu, it is permissible, and he must perform Tayammum for Janabah by consensus. According to Imam Abu Yusuf, there is no repetition (of Tayammum for Hadath) because that water had already become destined for use in the Lum'ah, and what is destined for one side is like something non-existent. So, if he had not performed Tayammum for Hadath... etc., this discourse has passed. (T)" I say: By placing Imam Abu Yusuf's proof last, its preference was indicated. In Imam Muhammad's reasoning, it was clarified that using it for the Lum'ah is obligatory and this is not contrary to the ability for Wudu. In 'Al-Ghunya' [it is stated]: (For this reason, he should wash the Lum'ah first) so that he may be someone without water in terms of the right of Hadath. According to Imam Muhammad, Tayammum for Hadath before this is not permissible because, according to him, it is not obligatory to use this water for the Lum'ah instead of

Hadath, but rather it is by way of priority. Thus, its existence is a barrier to Tayammum for Hadath. According to Imam Abu Yusuf, using it for the Lum'ah is obligatory, so relative to Hadath, it is like non-existent. Therefore, Tayammum for Hadath is permissible before washing the Lum'ah. And if the Hadath occurred...

Footnote 1: Kafi

फतावा रजविया, जिल्द 4

[बायां स्तंभ: अरबी] इमाम मुहम्मद के अनुसार, पानी पर उसकी क्षमता के कारण, और उसे जनाबत (बड़ी नापाकी) के लिए उपयोग करने की अनिवार्यता हदस (छोटी नापाकी) के लिए इसके उपयोग की क्षमता के विपरीत नहीं है। इसलिए, यदि उसने इसे वुज़ू के लिए उपयोग किया, तो यह अनुमेय होगा, और आम सहमति से वह जनाबत के लिए तयम्मुम (सूखा स्नान) करेगा। अबू यूसुफ के अनुसार, वह इसे नहीं दोहराता क्योंकि यह 'लुमह' (एक अनधुला स्थान) के लिए उपयोग किए जाने का पात्र है, और जो एक विशिष्ट उपयोग के लिए पात्र है, वह दूसरों के लिए अस्तित्वहीन के समान है। इस प्रकार, यदि उसने हदस के लिए तयम्मुम नहीं किया था[1]... आदि, जैसा कि पहले बताया जा चुका है। मैं कहता हूँ: उन्होंने अबू यूसुफ के तर्क को अंत में रखकर इसकी प्रधानता को दर्शाया। उन्होंने इमाम मुहम्मद के तर्क में स्पष्ट रूप से 'लुमह' के लिए इसके उपयोग की अनिवार्यता बताई और यह कि यह वुज़ू की क्षमता को नकारता नहीं है। 'अल-ग़ुनिया' में है: (उसे 'लुमह' धोना शुरू करना चाहिए) ताकि वह हदस के अधिकार के संबंध में पानी रहित हो जाए। इमाम मुहम्मद के अनुसार, उससे पहले हदस के लिए तयम्मुम जायज़ नहीं है, क्योंकि उनके विचार में, हदस के बजाय 'लुमह' के लिए उस पानी का उपयोग करना अनिवार्य नहीं है, बल्कि प्राथमिकता (औलवियत) के तौर पर है। इस प्रकार, इसकी उपस्थिति हदस के लिए तयम्मुम को रोकती है। अबू यूसुफ के अनुसार, 'लुमह' के लिए इसका उपयोग करना अनिवार्य है, इसलिए हदस के संबंध में यह ऐसा है जैसे कि इसका अस्तित्व ही न हो। इसलिए, 'लुमह' धोने से पहले हदस के लिए तयम्मुम जायज़ है, भले ही तयम्मुम हदस होने के बाद किया गया हो।

[दायां स्तंभ: उर्दू] 'अल-काफी' में है: "यदि यह अनिश्चित रूप से एक के लिए पर्याप्त है, तो उसे 'लुमह' के लिए उपयोग करना चाहिए क्योंकि वह महत्वपूर्ण है। इमाम मुहम्मद के अनुसार, हदस के तयम्मुम को दोहराना आवश्यक है क्योंकि वह पानी पर सक्षम हो गया, और जनाबत में उसे खर्च करने की अनिवार्यता हदस में खर्च करने की क्षमता के विपरीत नहीं है। इसी कारण यदि उसने इसे वुज़ू में खर्च कर लिया तो जायज़ है और उसे आम सहमति से जनाबत का तयम्मुम करना है। और इमाम अबू यूसुफ के अनुसार (हदस के तयम्मुम की) पुनरावृत्ति नहीं है क्योंकि वह पानी 'लुमह' में खर्च किए जाने का पात्र हो चुका था और जो किसी एक पक्ष के लिए पात्र हो वह अस्तित्वहीन की तरह है। तो यदि उसने हदस का तयम्मुम नहीं किया था... आदि, यह बात बीत चुकी है। (त)" मैं कहता हूँ: इमाम अबू यूसुफ के तर्क को अंत में रखकर इसकी प्रधानता का संकेत दिया। इमाम

मुहम्मद के तर्क में इस बात को स्पष्ट किया कि 'लुमह' में उसे खर्च करना अनिवार्य है और यह वुज़ू की क्षमता के विपरीत नहीं है। 'ग़ुनिया' में है (इस पर यह है कि पहले 'लुमह' धोए) ताकि हदस के अधिकार में पानी न रखने वाला हो जाए। इमाम मुहम्मद के अनुसार इससे पहले उसका हदस का तयम्मुम जायज़ नहीं, क्योंकि उनके अनुसार उस पानी को हदस छोड़ कर 'लुमह' में खर्च करना अनिवार्य नहीं बल्कि बेहतर है, तो उसका अस्तित्व हदस के तयम्मुम के लिए बाधक है। और इमाम अबू यूसुफ के अनुसार उसे 'लुमह' में खर्च करना अनिवार्य है तो वह हदस की तुलना में अस्तित्वहीन के समान है इसलिए 'लुमह' धोने से पहले हदस का तयम्मुम जायज़ है और यदि हदस होने के..

पादलेख 1: काफी

पृष्ठ 309 का 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

[بایاں کالم: عربی] عند محمد لقدرته على الماء ووجوب صرفه الى الجنابة لاينافي قدرته على صرفه الى الحدث ولهذا لوصرفه الى الوضوء جاز وتيمم لجنابة اتفاقاً وعند ابى يوسف لايعيد لانه مستحق الصرف الى اللمعة والمستحق بجهة كالمعدوم فان لم يكن تيمم للحدث^1 الخ وقد سبق- اقول: اخر دليل ابى يوسف فأفاد ترجيحه وصرح فى تعليل محمد بوجوب صرفه الى اللمعة وانه لاينافى قدرته على الوضوء وفى الغنية (عليه ان يبدأ بغسل اللمعة) ليصير عادماً للماء فى حق الحدث ولايجوز تيممه للحدث قبله عند محمد لان صرف ذلك الماء الى اللمعة دون الحدث ليس بواجب عنده بل على سبيل الاولوية فوجوده يمنع التيمم للحدث وعند ابى يوسف صرفه الى اللمعة واجب فهو كالمعدوم بالنسبة الى الحدث فيجوز التيمم له قبل غسل اللمعة ولو كان تيمم بعد ما احدث

[دایاں کالم: اردو] کافی میں ہے : "اگر غیر معین طور پر ایک کے لئے کافی ہو تو اسے لمعہ میں صرف کرے کیونکہ وہ اہم ہے اور امام محمد کے نزدیک تیمم حدث کا اعادہ ہے کیونکہ وہ پانی پر قادر ہو گیا تھا اور جنابت میں اسے صرف کرنے کا وجوب حدث میں صرف کرنے پر قدرت کے منافی نہیں۔ اسی لئے اگر اسے وضو میں صرف کر لیا تو جائز ہے اور اسے جنابت کا تیمم کرنا ہے بالاتفاق۔ اور امام ابو یوسف کے نزدیک (تیمم حدث کا) اعادہ نہیں اس لئے کہ وہ پانی لمعہ میں صرف کیے جانے کا مستحق ہو چکا تھا اور جو کسی جانب کا مستحق ہو معدوم کی طرح ہے۔ تو اگر اس نے حدث کا تیمم نہ کیا تھا الخ یہ کلام گزر چکا۔ (ت) اقول: امام ابو یوسف کی دلیل مؤخر کرکے اس کی ترجیح کا افادہ کیا اور امام محمد کی تعلیل میں اس بات کی تصریح فرمائی کہ لمعہ میں اسے صرف کرنا واجب ہے اور یہ وضو پر قدرت کے منافی نہیں۔ غنیہ میں ہے (اس پر یہ ہے کہ پہلے لمعہ دھوئے) تاکہ حق حدث میں پانی نہ رکھنے والا ہو جائے۔ امام محمد کے نزدیک اس

سے پہلے اس کا تیمم حدث جائز نہیں، کیونکہ ان کے نزدیک اس پانی کو حدث چھوڑ کر لمعہ میں صرف کرنا واجب نہیں بلکہ بطور اولیٰ کے ہے ، تو اس کا وجود تیمم حدث سے مانع ہے اور امام ابو یوسف کے نزدیک اسے لمعہ میں صرف کرنا واجب ہے تو وہ حدث کی بہ نسبت کالمعدوم ہے اس لئے لمعہ دھونے سے پہلے حدث کا تیمم جائز ہے اور اور اگر حدث ہونے کے

^1 کافی

(Arabic Text on the left): Because of the state of minor ritual impurity (hadath), if he then finds water sufficient for one of them, his tayammum is invalidated according to Muhammad, but not according to Abu Yusuf, based on what preceded. [End quote]. Then, here is another matter of this kind in which Imam Malik al-Ulama and Imam Radi al-Din al-Sarakhsi followed the obligation of delaying tayammum. The apparent implication of his analogy is following the opinion of Muhammad here. In 'al-Bada'i', after mentioning the ability to find sufficient water: "Under this principle, there are several issues in 'al-Ziyadat': A traveler who is in a state of minor impurity and has impurity on his clothes more than the amount of a dirham, and has water sufficient for one of them, should wash the clothes with it and perform tayammum for the impurity according to the majority of scholars. This is because using it for the impurity makes him one who prays with two types of purification, real and legal. Thus, it is better than praying with only one purification. It is obligatory to wash the clothes from impurity then perform tayammum. If he started with tayammum, it would not be valid because he had power over water; if he had performed wudu with it, his prayer would have been valid." [End quote].

(Urdu Translation on the right): After performing tayammum for hadath, if he then found enough water which is sufficient for either of the two, his tayammum will break according to Imam Muhammad, while it will not break according to Imam Abu Yusuf. This is based on what was explained earlier. [End quote]. Then, there is another issue of this type here, where the approach of Imam Malik al-Ulama and Imam Radi al-Din Sarakhsi is that it is obligatory to delay tayammum. So its apparent analogy is that they follow the opinion of Imam Muhammad here. In Bada'i, after mentioning the power over sufficient water, it says: "Under this principle, there are a few issues in 'Ziyadat': there is a traveler with hadath who has impurity on his clothes more than the amount of a dirham, and he has enough water for only one of the two, then he should wash the clothes with it and perform tayammum for the hadath. According to the general scholars, this is because spending it on the impurity will make him a performer of prayer with two purifications, real and legal. So this is better than performing prayer with one purification and it is obligatory that..."

(Middle Note - Arabic): I say: It seems he added it for clarification; otherwise there was no need for it, because if hadath occurred then he performed tayammum for it (major impurity), it would be for it as well, and the ruling would not differ. 12 [From him], may he be forgiven. (M)

(Middle Note - Urdu): I say: It seems they added it as an explanation, otherwise it was not needed because if hadath happened to him, then he performed tayammum for janabah (major impurity), it would suffice for hadath as well and the ruling would not be different. 12 From him, may he be forgiven. (T)

Footnotes: 1 Ghunyat al-Mustamli, Chapter on Tayammum, Suhail Academy Press Lahore, p. 86 2 Bada'i al-Sana'i, Chapter on what invalidates Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi, 1/57

(बाईं ओर अरबी पाठ): 'हदस' (लघु अशुद्धि) के कारण, फिर उसे इतना पानी मिला जो दोनों में से किसी एक के लिए पर्याप्त हो, तो इमाम मुहम्मद के अनुसार उसका तयम्मुम टूट जाएगा, लेकिन इमाम अबू यूसुफ के अनुसार नहीं, उस आधार पर जो पहले बताया गया है। [समाप्त]। फिर यहाँ इसी तरह का एक और मसला है जिसमें इमाम मलिक अल-उलमा और इमाम रज़ीउद्दीन सरख़सी ने तयम्मुम में देरी करने की अनिवार्यता का पालन किया है। उनके क़यास (तर्क) का प्रत्यक्ष प्रमाण यहाँ इमाम मुहम्मद के कथन का पालन करना है। 'अल-बदाए' में पर्याप्त पानी पर शक्ति होने का उल्लेख करने के बाद है: "इस मूल सिद्धांत के तहत 'ज़ियादात' में कई मसले हैं: एक यात्री जो 'हदस' की स्थिति में है और उसके कपड़ों पर एक दिरहम से अधिक की अपवित्रता (नजासत) है, और उसके पास इतना पानी है जो दोनों में से किसी एक के लिए पर्याप्त है, तो वह उससे कपड़ा धोए और 'हदस' के लिए तयम्मुम करे, आम विद्वानों के अनुसार। क्योंकि इसे अपवित्रता को दूर करने में खर्च करना उसे वास्तविक और कानूनी दो प्रकार की शुद्धता के साथ नमाज़ पढ़ने वाला बना देगा। तो यह एक शुद्धता के साथ नमाज़ पढ़ने से बेहतर है। और यह अनिवार्य है कि वह अपने कपड़ों से अपवित्रता को धोए फिर तयम्मुम करे। यदि उसने तयम्मुम से शुरू किया, तो वह मान्य नहीं होगा क्योंकि उसने उस पानी पर शक्ति पाई थी जिसे यदि वह वुज़ू के लिए उपयोग करता तो उसकी नमाज़ जायज़ होती। [समाप्त]।

(दाईं ओर उर्दू अनुवाद): हदस के बाद तयम्मुम कर लिया था फिर उसे इतना पानी मिला जो किसी एक के लिए काफी हो तो उसका तयम्मुम इमाम मुहम्मद के नज़दीक टूट जाएगा, इमाम अबू यूसुफ के नज़दीक नहीं टूटेगा। इसी बुनियाद पर जो पहले बयान हुई। [समाप्त]। फिर यहाँ इसी क़बील का एक और मसला है जिसमें इमाम मलिक अल-उलमा और इमाम रज़ीउद्दीन सरख़सी की रफ़्तार (मार्ग) इस पर है कि तयम्मुम मुअख्ख़र (देर से) करना वाजिब है तो इसका ज़ाहिर क़यास यह है कि यहाँ इमाम मुहम्मद के क़ौल पर चले हैं। बदाए में आब-ए-काफ़ी (पर्याप्त पानी) पर क़ुदरत का ज़िक्र करने के बाद है: "इस अस्ल (सिद्धांत) के तहत ज़ियादात में चंद मसाइल में कोई हदस वाला मुसाफ़िर है जिसके कपड़े पर क़दर-ए-दिरहम से ज़्यादा नजासत है और उसके पास इतना पानी है जो दोनों में से किसी एक के लिए काफ़ी है तो उससे कपड़ा धोए और हदस के लिए तयम्मुम करे। आमह उलमा के नज़दीक इस लिए कि नजासत में सर्फ़(खर्च) करना उसे हक़ीक़ी व हुक्मी दो

तहारतों से नमाज़ अदा करने वाला बना देगा तो यह एक तहारत से नमाज़ अदा करने से बेहतर है और वाजिब है कि..."

(मध्य टिप्पणी - अरबी): मैं कहता हूँ: मालूम होता है कि उन्होंने इसे स्पष्टीकरण के लिए जोड़ा है; अन्यथा इसकी कोई आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि यदि हदस हुआ और फिर उसने इसके लिए (बड़ी अशुद्धि के लिए) तयम्मुम किया, तो यह उसके लिए भी होगा, और नियम में कोई अंतर नहीं होगा। 12 उनकी ओर से, ईश्वर उन्हें क्षमा करे। (म)

(मध्य टिप्पणी - उर्दू): मैं कहता हूँ: मालूम होता है कि इसे उन्होंने बतौर तौज़ीह (स्पष्टीकरण के रूप में) बढ़ा दिया है वरना इसकी ज़रूरत नहीं थी क्योंकि अगर उसे हदस हुआ फिर उसने जनाबत का तयम्मुम किया तो वह हदस के लिए भी हो जाएगा और हुक्म मुख़्तलिफ़ न होगा। 12 उनकी ओर से, ईश्वर उन्हें क्षमा करे। (त)

पाद-टिप्पणियाँ: 1 ग़ुनयतुल मुस्तमली, बाबुत तयम्मुम, मतबा सुहैल एकेडमी लाहौर, पृष्ठ 86 2 बदाए अस-सनाए, तयम्मुम को तोड़ने वाली चीज़ों के बयान में फ़स्ल, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/57

جلد چہارم فتاویٰ رضویہ

(بائیں طرف عربی متن): لاجل عه الحدث ثم وجد ماء یکفی لاحدهما ینقض تیممه عند محمد لا عند ابی یوسف بناء علی ماتقدم ۱ اه ثم ههنا مسألة اخری من هذا القبیل مشی فیها الامام ملك العلماء والامام رضی الدین السرخسی علی وجوب تأخیر التیمم فظاهر قیاسه المشی علی قول محمد هنا ففی البدائع بعد ذکر القدرة علی الماء الکافی وعلی هذا الاصل مسائل فی الزیادات مسافر(۱) محدث علی ثوبه نجاسة اکثر من قدر الدرهم ومعه مایکفی لاحدهما غسل به الثوب وتیمم للحدث عند عامة العلماء لان الصرف الی النجاسة یجعله مصلیا بطهارتین حقیقیة وحکمیة فکان اولی من الصلاة بطهارة واحدة ویجب ان یغسل ثوبه من النجاسة ثم یتیمم ولو بدأ بالتیمم لایجزء به لانه قدر علی ماء لوتوضأ به تجوز صلاته ۲ اه وفی *

(دائیں طرف اردو ترجمہ): بعد حدث کے لئے تیمم کر لیا تھا پھر اسے اتنا پانی ملا جو کسی ایک کے لئے کافی ہو تو اس کا تیمم امام محمد کے نزدیک ٹوٹ جائے گا، امام ابو یوسف کے نزدیک نہ ٹوٹے گا۔ اسی بنیاد پر جو پہلے بیان ہوئی "اھ۔ پھر یہاں اسی قبیل کا ایک اور مسئلہ ہے جس میں امام ملک العلماء اور امام رضی الدین سرخسی کی روش اس پر ہے کہ تیمم مؤخر کرنا واجب ہے تو اس کا ظاہر قیاس یہ ہے کہ یہاں امام محمد کے قول پر چلے ہیں۔ بدائع میں آب کافی پر قدرت کا ذکر کرنے کے بعد ہے : " اس اصل کے تحت زیادات میں چند مسائل میں کوئی حدث والا مسافر ہے جس کے کپڑے پر قدر درہم سے زیادہ نجاست ہے اور اس کے پاس اتنا پانی ہے جو دونوں میں سے کسی ایک کے لئے کافی ہے تو اس سے کپڑا دھوئے اور حدث کے لئے تیمم کرے۔ عامہ علماء کے نزدیک اس لئے کہ نجاست میں صرف کرنا اسے حقیقی و حکمی دو طہارتوں سے نماز ادا کرنے والا بنا دے گا تو یہ ایک طہارت سے نماز ادا کرنے سے بہتر ہے اور واجب ہے کہ

(درمیان میں عربی قول): عه اقول: كأنه زاده (۲) ایضاحا والا فلا حاجة الیه لانه لو احدث ثم تیمم لها لكان له ایضاً ولا یختلف الحكم ۱۲ منه غفرله (م)

(درمیان میں اردو قول): اقول: معلوم ہوتا ہے کہ اسے انہوں نے بطور توضیح بڑھا دیا ہے ورنہ اس کی ضرورت نہیں اس لئے کہ اگر اسے حدث ہوا پھر اس نے جنابت کا تیمم کیا تو وہ حدث کے لئے بھی ہو جائے گا اور حکم مختلف نہ ہو گا ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

حواشی: 1 غنیة المستملی باب التیمم مطبع سہیل اکیڈمی لاہور ص ۸۶ 2 بدائع الصنائع فصل فی بیان ما ینقض التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۵۷

Fatawa Razviya - Volume 4

[Left Column - Arabic] Al-Muheet al-Razwi then al-Hindiyyah: If one performs Tayammum first and then washes the impurity, they must repeat the Tayammum because they performed Tayammum while being capable of what is required for Wudu [1] end quote. I saw what I had previously written: I say: This is according to the view of Imam Muhammad. As for the view of Imam Abu Yusuf, no [repetition is needed], because the water was occupied for a need, so it is like water non-existent due to thirst. This was decisively stated in 'Ad-Durr al-Mukhtar' end quote. Then, after some time, I saw that the researcher al-Halabi scrutinized it in 'al-Hilya' just as this poor servant did, praise be to Allah. After quoting what is in 'al-Badai' and 'al-Muheet', he said: This weak servant—may Allah Almighty forgive him—says: There is room for scrutiny here; rather, the apparent rule is the permissibility of Tayammum whether it preceded or followed washing the garment, because the water is due to be spent on the garment according to what the scholars have said. What is due to be spent in one direction is legally non-existent relative to others, as in the issue of 'al-Lum'ah' with 'Hadath' before Tayammum when the water is sufficient for only one of them, so he begins with Tayammum for Hadath before washing it, as is the original narration and as in the issue of fear...

[Right Column - Urdu Translation] One should wash the impurity from the cloth and then perform Tayammum. If Tayammum was performed first, it will not suffice because he is capable of using enough water that if he performs Wudu with it, his prayer will be valid. End quote. And in Al-Muheet al-Razwi then in Al-Hindiyyah it is stated: "If he performed Tayammum first and then washed the impurity, he should repeat the Tayammum because he performed Tayammum while he was capable of using water for Wudu." End quote. On this, I saw this text written by me in the past: I say: This ruling is based on the opinion of Imam Muhammad, but according to the opinion of Imam Abu Yusuf, there is no repetition because the water was occupied for a need, so it became like water kept for thirst. This has been decisively stated in Durr-e-Mukhtar. End quote. Then after some time, I saw that the researcher al-Halabi in 'al-Hilya' also discussed it in the same way as this humble servant did, and all praise is for Allah. After quoting the texts of 'al-Badai' and 'al-Muheet', he wrote: This weak servant says—may the Almighty forgive him—this is a point for scrutiny; rather, the apparent ruling is the permissibility of Tayammum, whether it is before washing the cloth or after it. Because according to the instructions of the scholars, that water is designated to be spent on the cloth, and what has become designated for one

purpose is legally non-existent in relation to other purposes, as in the case of 'Lum'ah' with 'Hadath' before it...

[Footnote] 1: Fatawa Hindiyyah, Section explaining what invalidates Tayammum, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/29

फ़तावा रज़विया - जिल्द 4

[बायाँ कॉलम - अरबी] अल-मुहीत अल-रज़वी फिर अल-हिन्दिया में है: यदि कोई पहले तयम्मुम करे और फिर अशुद्धि धोए, तो उसे तयम्मुम दोहराना होगा क्योंकि उसने तयम्मुम तब किया जब वह वज़ू के लिए सक्षम था। [1] अंत। मैंने देखा कि मैंने पहले इस पर यह लिखा था: मैं कहता हूँ: यह इमाम मुहम्मद के कथन पर आधारित है। इमाम अबू यूसुफ़ के अनुसार नहीं, क्योंकि पानी एक आवश्यकता (कपड़े धोने) में व्यस्त था, इसलिए वह प्यास के लिए रखे पानी की तरह अनुपलब्ध माना जाएगा। यही बात दुर-ए-मुख़्तार में दृढ़ता से कही गई है। फिर कुछ समय बाद मैंने देखा कि मुहक़्क़िक़ हलबी ने 'अल-हिलिया' में उसी तरह विचार किया जैसे इस निर्धन ने किया था, अल्लाह का शुक्र है। उन्होंने 'अल-बदई' और 'अल-मुहीत' के उद्धरणों के बाद कहा: यह कमज़ोर बंदा - अल्लाह उसे माफ़ करे - कहता है कि यहाँ विचार की गुंजाइश है; बल्कि स्पष्ट नियम तयम्मुम की अनुमति है, चाहे वह कपड़े धोने से पहले हो या बाद में, क्योंकि विद्वानों के अनुसार वह पानी कपड़े पर खर्च होने योग्य है। जो एक दिशा में खर्च होने के योग्य हो जाए, वह दूसरों के लिए कानूनी तौर पर नगण्य है, जैसा कि तयम्मुम से पहले 'हदस' के साथ 'लुमआह' के मामले में होता है जब पानी दोनों में से केवल एक के लिए पर्याप्त हो...

[दायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद] कपड़े से गंदगी धोए फिर तयम्मुम करे और अगर पहले तयम्मुम कर लिया तो यह पर्याप्त नहीं हो सकता क्योंकि वह इतने पानी पर सक्षम है कि अगर उससे वज़ू करे तो उसकी नमाज़ हो जाएगी। अंत। और मुहीत रज़वी फिर हिन्दिया में है: "अगर पहले तयम्मुम किया फिर गंदगी धोई तो तयम्मुम दोहराए क्योंकि उसने उस स्थिति में तयम्मुम किया जब वह इतने पानी पर सक्षम था जिससे वज़ू करे"। अंत। इस पर मैंने पिछले समय में अपनी लिखी हुई यह इबारत देखी: मैं कहता हूँ: यह हुक्म इमाम मुहम्मद के कथन पर है लेकिन इमाम अबू यूसुफ़ के कथन पर दोहराना नहीं है क्योंकि वह पानी ज़रूरत में लगा था तो उस पानी की तरह हुआ जो प्यास के लिए रखा हो। इसी पर दुर-ए-मुख़्तार में यक़ीन ज़ाहिर किया गया है। अंत। फिर कुछ समय बाद मैंने देखा कि इस पर मुहक़्क़िक़ हलबी ने 'हिलिया' में भी वैसे ही बात की है जैसे इस फ़क़ीर ने की और अल्लाह ही के लिए प्रशंसा है। उन्होंने बदई और मुहीत की इबारतें नक़्ल करने के बाद लिखा है: यह कमज़ोर बंदा कहता है - अल्लाह उसे माफ़ करे - यह विचार का विषय है बल्कि ज़ाहिर तौर पर तयम्मुम जायज़ है। कपड़ा धोने से पहले तयम्मुम हो या उसके बाद। क्योंकि विद्वानों के निर्देशानुसार वह पानी कपड़े में खर्च किए जाने का हक़दार है और जो किसी एक तरफ़ खर्च होने का हक़दार हो चुका हो वह दूसरी

तरफ़ के लिए कानूनी तौर पर नहीं के बराबर है जैसे हदस के साथ लुमआह के मसले में इससे पहले कि...

[पाद-टिप्पणी] 1: फ़तावा हिन्दिया, तयम्मुम तोड़ने वाली चीज़ों का बयान, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/29

[بایاں کالم - عربی] المحیط الرضوی ثم الھندیۃ لوتیمم اولا ثم غسل النجاسۃ یعید التیمم لانہ تیمم وھو قادر علی مایتوضأ بہ ۱ اھ ورأیتنی کتبت علیہ سابقاً مانصہ - اقول: ھذا علی قول محمد اما علی قول ابی یوسف فلا لکونہ مشغولاً بحاجۃ فکان کالمعدوم لعطش وبہ جزم فی الدر المختار اھ ثم رأیت بعدہ بزمان نظر فیہ المحقق الحلبی فی الحلیۃ کما نظر الفقیر وللہ الحمد فقال بعد نقل مافی البدائع والمحیط قال العبد الضعیف غفر اللہ تعالی لہ فیہ نظر بل الظاھر الحکم بجواز التیمم تقدم علی غسل الثوب او تأخر لانہ مستحق الصرف الی الثوب علی ماقالوا والمستحق الصرف الی جھۃ منعدم حکماً بالنسبۃ الی غیرھا کما فی مسألۃ اللمعۃ مع الحدث قبل التیمم لہ اذا کان الماء کافیاً لاحدھما فبدأ بالتیمم للحدث قبل غسلھا کما ھو روایۃ الاصل وکما فی مسألۃ خوف

[دایاں کالم - اردو ترجمہ] کپڑے سے نجاست دھوئے پھر تیمم کرے اور اگر پہلے تیمم کرلیا تو یہ کفایت نہیں کر سکتا اس لئے کہ وہ اتنے پانی پر قادر ہے کہ اگر اس سے وضو کرے تو اس کی نماز ہو جائے " اھ اور محیط رضوی پھر ہندیہ میں ہے: "اگر پہلے تیمم کیا پھر نجاست دھوئی تو تیمم کا اعادہ کرے اس لئے کہ اس نے اس حالت میں تیمم کیا جب کہ وہ اتنے پانی پر قادر تھا جس سے وضو کرے"۔ اھ اس پر میں نے زمانہ سابق میں اپنی لکھی ہوئی یہ عبارت دیکھی: اقول: یہ حکم امام محمد کے قول پر ہے لیکن امام ابویوسف کے قول پر اعادہ نہیں اس لئے کہ وہ پانی حاجت میں مشغول تھا تو اس پانی کی طرح ہوا جو پیاس کے لئے رکھا ہوا ہو۔ اسی پر درمختار میں جزم کیا ہے " اھ پھر اس کے کچھ عرصہ کے بعد میں نے دیکھا کہ اس پر محقق حلبی نے حلیہ میں بھی ویسے ہی کلام کیا ہے جیسے فقیر نے کلام کیا اور خدا ہی کے لئے حمد ہے انہوں نے بدائع اور محیط کی عبارتیں نقل کرنے کے بعد لکھا ہے: بندہ ضعیف کہتا ہے خدائے برتر اس کی

مغفرت فرمائے یہ محل نظر ہے بلکہ ظاہر جواز تیمم کا حکم ہے۔ کپڑا دھونے سے پہلے تیمم ہو یا اس کے بعد ہو۔ اس لئے کہ حسب ارشادِ علماء وہ پانی کپڑے میں صرف کئے جانے کا مستحق ہے اور جو کسی ایک جانب صرف کئے جانے کا مستحق ہو چکا ہو وہ دوسری جانب کی بہ نسبت حکماً معدوم ہے جیسے حدث کے ساتھ لمعہ کے مسئلہ میں اس سے پہلے کہ

[حاشیہ] ۱ فتاویٰ ہندیہ فصل بیان ماینتقض التیمم نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۲۹

Fatawa Rizvia - Volume 4

[Arabic Column]: Thirst and its like, yes, that proceeds according to the narration of 'Al-Ziyadat' [End of quote]. And Al-Bahr al-Ra'iq followed him with his own words and added after it: "Therefore it is said in Sharh al-Wiqayah: 'Ability is only established when it is not directed towards a more important side'." [End of quote]. However, it was claimed in 'Al-Siraj' that the obligation to delay tayammum in the case of impurity is a matter of consensus (mubma' 'alayh), unlike the case of the 'Lum'ah' (unwashed spot). Thus, the firm stance of 'Al-Bada'i' and 'Al-Muhit' on the obligation of delay therein would not be evidence for following the opinion of Imam Muhammad regarding the 'Lum'ah'.

[Urdu Column]: ... performed tayammum for ritual impurity (hadath). When the water is sufficient for only one of the two, the tayammum for ritual impurity was started before washing the small unwashed spot (lum'ah). As is the narration of 'Asl' (the original books) and as in the case of fear of thirst etc. Yes, that ruling can proceed according to the narration of 'Ziyadat' [End of quote]. And Al-Bahr al-Ra'iq followed him with those same words. After that, it is further written: "Therefore it is said in Sharh al-Wiqayah: 'And ability is only established when one is not occupied in a more important direction'." [End of quote]. However, in 'Siraj' it is thought that the obligation to delay tayammum in the case of impurity is agreed upon and consensual, unlike the case of the 'Lum'ah'. Considering this, the firm stance of 'Bada'i' and 'Muhit' on the obligation of delay in the case of impurity will not be a proof for following the opinion of Imam Muhammad in the case of lum'ah.

[Arabic Text Continued]: I say: But we have just made you hear the text of Imam Sadr al-Shari'ah that "Ability is only established when one is not directed towards impurity". And the text of 'Al-Durr al-Mukhtar' says: "The one occupied in the need to wash impurity is like one who lacks water," then where is the consensus? Since both of them have firmly stated it as if there is no disagreement in it, let alone consensus on the contrary, then when consensus is mentioned here...

[Urdu Text Continued]: (Author's Note) I say: But we have just presented the text of Imam Sadr al-Shari'ah that "Ability is only established when one is not occupied towards impurity". And this text of 'Durr al-Mukhtar' that "The one occupied in the need to wash impurity is like one who lacks water," then where is the consensus? When both of them have firmly stated it as if there is no disagreement in it, let alone consensus on the contrary.

--- Footnotes --- 1. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi, 1/139 2. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi, 1/139 3. Sharh al-Wiqayah, Chapter of Tayammum, Maktabah al-Rashidiyyah Delhi, 1/105 4. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Tayammum, Mujtabai Delhi, 1/45

फ़तावा रज़विया - जिल्द 4

[अरबी कॉलम]: प्यास और उसके जैसे मामले, हाँ, यह 'अल-ज़ियादात' की रिवायत के अनुसार चलता है [उद्धरण समाप्त]। और 'अल-बहर अल-राईक' में उनके शब्दों के साथ उनका अनुसरण किया गया और इसके बाद जोड़ा गया: "इसीलिए शरह अल-विक़ाया में कहा गया: 'सामर्थ्य तभी स्थापित होता है जब वह किसी अधिक महत्वपूर्ण दिशा में निर्देशित न हो'।" [उद्धरण समाप्त]। हालाँकि, 'अल-सिराज' में यह दावा किया गया था कि अशुद्धि के मामले में तयम्मुम में देरी करने की अनिवार्यता आम सहमति (इजमाई) है, जो 'लुमअ' (अधोया हिस्सा) के मामले के विपरीत है। इस प्रकार, अशुद्धि के मामले में देरी की अनिवार्यता पर 'अल-बदाई' और 'अल-मुहीत' का दृढ़ रुख लुमअ के संबंध में इमाम मुहम्मद के कथन का अनुसरण करने का प्रमाण नहीं होगा।

[उर्दू कॉलम]: ...हदस्त (अशुद्धि) के लिए तयम्मुम किया हो। जब पानी दोनों में से किसी एक के लिए काफी हो, तो 'लुमअ' धोने से पहले हदस्त से तयम्मुम शुरू किया हो। जैसा कि 'असल' की रिवायत है और जैसा कि प्यास के डर आदि के मामले में है। हाँ, वह हुक्म 'ज़ियादात' की रिवायत पर चल सकता है [उद्धरण समाप्त]। और 'अल-बहर अल-राईक' में उन्हीं के शब्दों के साथ उनका अनुसरण किया गया है। इसके बाद आगे लिखा है: "इसीलिए शरह अल-विक़ाया में कहा गया: 'और सामर्थ्य तभी स्थापित होता है जब कोई अधिक महत्वपूर्ण दिशा में व्यस्त न हो'।" [उद्धरण समाप्त]। हालांकि, 'सिराज' में यह विचार किया गया है कि अशुद्धि के मामले में तयम्मुम में देरी करने की अनिवार्यता सर्वसम्मत और आम सहमति वाली है, जो लुमअ के मामले के विपरीत है। इसे ध्यान में रखते हुए, अशुद्धि के मामले में देरी की अनिवार्यता पर 'बदाई' और 'मुहीत' का दृढ़ रुख लुमअ के मामले में इमाम मुहम्मद के कथन पर चलने का प्रमाण नहीं होगा।

[अरबी पाठ जारी]: मैं कहता हूँ: लेकिन हमने आपको अभी इमाम सद्र अल-शरिया का पाठ सुनाया है कि "सामर्थ्य तभी स्थापित होता है जब कोई अशुद्धि की ओर निर्देशित न हो"। और 'अल-दुर्र अल-मुख्तार' का पाठ कहता है: "जो किसी अशुद्धि को धोने की आवश्यकता में व्यस्त है, वह पानी न होने वाले के समान है," तो आम सहमति कहाँ है? जबकि उन दोनों ने इसे इतनी दृढ़ता से कहा है जैसे कि इसमें कोई मतभेद ही न हो, इसके विपरीत आम सहमति की बात तो दूर की है, फिर जब यहाँ आम सहमति का उल्लेख किया गया है...

[उर्दू पाठ जारी]: (लेखक का नोट) मैं कहता हूँ: लेकिन हम इमाम सद्र अल-शरिया का पाठ अभी प्रस्तुत कर चुके हैं कि "सामर्थ्य तभी स्थापित होता है जब अशुद्धि की ओर व्यस्त न हो"। और 'दुर्र अल-मुख्तार' का यह पाठ कि "जो किसी अशुद्धि को धोने की आवश्यकता में व्यस्त है, वह पानी न होने वाले के समान है," तो आम सहमति कहाँ है? जब उन दोनों ने इस पर इस तरह दृढ़ता दिखाई है जैसे इसमें कोई मतभेद ही नहीं, इसके विपरीत बात तो दूर है।

--- फुटनोट --- 1. अल-बहर अल-राईक, बाब अत-तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/139 2. अल-बहर अल-राईक, बाब अत-तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/139 3. शरह अल-विक़ाया, बाब अत-तयम्मुम, मकतबा अल-रशीदिया दिल्ली, 1/105 4. अल-दुर्र अल-मुख्तार, बाब अत-तयम्मुम, मुजतबाई दिल्ली, 1/45

पृष्ठ 312 का 761

العطش ونحوه نعم يتمشى ذلك على رواية الزيادات اه، وتبعه في البحر الرائق على الفاظہ وزاد بعده ولہذا قال في شرح الوقا یة وانما تثبت القدرة اذا لم يكن مصروفاً الى جهة اهم اه لكن زعم في السراج ان وجوب تاخير التيمم في مسالة النجاسة مجمع عليه بخلاف مسألة اللمعة فاذن لايكون جزم البدائع والمحيط فيها بوجوب التاخير دليل المشى على قول محمد في اللمعة۔ حدث کا تیمم کیا ہو۔ جب پانی دونوں میں سے کسی ایک کے لئے کافی ہو تو لمعہ دھونے سے پہلے تیمم حدث سے ابتدا کی ہو۔ جیسا کہ اصل کی روایت ہے اور جیسا کہ خوف تشنگی وغیرہ کے مسئلہ میں ہے ہاں وہ حکم روایتِ زیادات پر چل سکتا ہے اھ اور البحر الرائق میں ان ہی کے الفاظ کے ساتھ ان کا اتباع کیا ہے۔ اور اس کے بعد مزید یہ لکھا ہے: "اسی لئے شرح وقایہ میں فرمایا: "اور قدرت اسی وقت ثابت ہوتی ہے جب اس سے زیادہ اہم جانب میں مصروف نہ ہو" اھ لیکن سراج میں یہ خیال کیا ہے کہ مسئلہ نجاست میں تیمم مؤخر کرنے کا وجوب متفق علیہ اور اجماعی ہے، بخلاف مسئلہ لمعہ کے اس کے پیش نظر مسئلہ نجاست میں وجوبِ تاخیر پر بدائع و محیط کا جزم مسئلہ لمعہ میں امام محمد کے قول پر مشی کی دلیل نہ ہوگا۔

اقول: لكن (۱) قد اسمعناك نص الامام صدر الشريعة انفاً انما تثبت القدرة اذا لم يكن مصروفاً الى نجاسة ونص الدر المختار المشغول بحاجة غسل نجس كالمعدوم فاين الاجماع وقد جز ما به كأنه لاخلاف فيه فضلا عن الاجماع على خلافه ثم اذ قد ذكر الاجماع ههنا (ت) اقول: لیکن امام صدر الشریعہ کی عبارت ہم ابھی پیش کرچکے کہ "قدرت اسی وقت ثابت ہوتی ہے جب نجاست کی جانب مصروف نہ ہو"۔ اور دُر مختار کی یہ عبارت کہ "جو کسی نجس کو دھونے کی ضرورت میں

مشغول ہے معدوم کی طرح ہے" تو اجماع کہاں؟ جب کہ ان دونوں نے اس پر یوں جزم کیا ہے جیسے اس میں کوئی خلاف ہی نہیں اس کے خلاف پر

--- حواشی --- 1 البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۳۹ 2 البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۳۹ 3 شرح الوقا یة باب التیمم المکتبۃ الرشیدیہ دہلی ۱/۱۰۵ 4 الدر المختار باب التیمم مجتبائی دہلی ۱/ ۴۵

Fatawa Rizvia Volume 4

And he preceded the narration of the disagreement regarding the issue of 'Al-Lum'ah' (the spot left unwashed) and showed a distinction between them, with which Allama Shami adhered to repel the observation of Al-Hilyah and Al-Bahr. He said in 'Minhat al-Khaliq': It is mentioned in 'Al-Siraj' that if one starts with Tayammum and then washes away the impurity, one must repeat the Tayammum by consensus, unlike the first issue, i.e., the issue of 'Al-Lum'ah' according to the view of Abu Yusuf. This is because here, he performed Tayammum while being capable of using water; if he had performed wudu with it, it would have been valid. Whereas there, i.e., in the issue of 'Al-Lum'ah', if he had performed wudu with that water, it would not have been valid because he returned to the state of ritual impurity (Junub) upon seeing the water. End of quote. And by this, the observation is repelled, so ponder. End of quote (1). And he also cited it in 'Radd al-Muhtar', saying: "And it is a good and subtle distinction, so ponder over it." End of quote (2).

I say: And with Allah's guidance, there are two interpretations: First: Permission in the sense of validity, as indicated by the expression of Malik al-Ulama, where he attributed the permission to prayer, and in this, there is: Firstly (1): That the mere validity of performing wudu with it does not establish capability, nor does it negate inability.

---

1 Minhat al-Khaliq ala al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi, 139/1. 2 Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Mustafa Al-Babi Press Egypt, 187/1. Page 313 of 761

और उन्होंने 'अल-लुमा' (अनधुले स्थान) के मसले में मतभेद के वर्णन को पहले पेश किया और उनके बीच एक अंतर स्पष्ट किया, जिसके साथ अल्लामा शामी ने 'अल-हिल्या' और 'अल-बह्र' के अवलोकन को दूर करने के लिए सहारा लिया। उन्होंने 'मिन्हात अल-खालिक' में कहा: 'अस-सिराज' में उल्लेख है कि यदि कोई पहले तयम्मुम करे और फिर अशुद्धि को धोए, तो सर्वसम्मति से उसे तयम्मुम दोहराना होगा, पहले मसले के विपरीत, यानी अबू यूसुफ के विचार के अनुसार 'अल-लुमा' का मसला। ऐसा इसलिए है क्योंकि यहाँ उसने ऐसी स्थिति में तयम्मुम किया जब वह पानी का उपयोग करने में सक्षम था; यदि उसने उससे वुज़ू किया होता तो वह मान्य होता। जबकि वहाँ, यानी 'अल-लुमा' के मसले में, यदि उसने उस पानी से वुज़ू किया होता तो वह मान्य नहीं होता क्योंकि पानी देखने पर वह पुनः अपवित्र (जुनुब) हो गया था। (समाप्त)। और इसी से वह अवलोकन दूर हो जाता है, अतः विचार करें। (समाप्त 1)। और उन्होंने इसे 'रद्द अल-मुह्तार' में भी उद्धृत किया है, कहा है: "और यह एक अच्छा और सूक्ष्म अंतर है, अतः इस पर विचार करें।" (समाप्त 2)।

मैं कहता हूँ: और अल्लाह की तौफीक से, इसके दो अर्थ हैं: पहला: अनुमति वैधता के अर्थ में हो, जैसा कि मलिक अल-उलामा की इबारत से संकेत मिलता है, जहाँ उन्होंने अनुमति का श्रेय नमाज़ को दिया है, और इसमें यह है: पहला (1): कि मात्र उससे वुज़ू की वैधता न तो सामर्थ्य सिद्ध करती है और न ही अक्षमता को नकारती है।

---

1 मिन्हात अल-खालिक अला अल-बह्र अर-राईक, बाब अत-तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 139/1। 2 रद्द अल-मुह्तार, बाब अत-तयम्मुम, मुस्तफा अल-बाबी प्रेस मिस्र, 187/1। पेज 313/761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

وقدم نقل الخلاف في مسألة اللمعة ابدى بينهما فارقا به تشبت العلامة الشامي في دفع نظر الحلية والبحر - فقال في منحة الخالق ذكر في السراج لوبدأ بالتيمم ثم غسل النجاسة اعاد التيمم اجماعا بخلاف المسألة الاولى اى مسألة اللمعة على قول ابي يوسف لانه تيمم هنا وهو قادر على ماء لوتوضأ به جاز وهناك اى في مسألة اللمعة لوتوضأ بذلك الماء لم يجز لانه عاد جنبا برؤية الماء اهـ و به يندفع النظر فتدبر ١ اهـ و اورده ايضاً في ردالمختار فقال وهو فرق حسن دقيق فتدبره ٢ اهـ

اجماع تو درکنار - پھر جب سراج میں یہاں اجماع ذکر کیا اور اس سے پہلے مسئلہ لمعہ میں اختلاف نقل کیا تو ان دونوں کے درمیان ایک وجہ فرق بھی ظاہر کی جس سے علامہ شامی نے حلیہ و بحر کا کلام دفع کرنے میں تمسک کیا۔ منحۃ الخالق میں لکھتے ہیں: "سراج میں ذکر کیا ہے کہ اگر پہلے تیمم کر لیا پھر نجاست دھوئی تو اسے اجماعاً تیمم کا اعادہ کرنا ہے، بخلاف پہلے مسئلہ کے یعنی مسئلہ لمعہ کے، بر خلاف، امام ابو یوسف کے قول پر اس لئے کہ یہاں اس نے اس حالت میں تیمم کیا کہ وہ ایسے پانی پر قادر تھا جس سے اگر وضو کرتا تو جائز ہوتا اور وہاں یعنی مسئلہ لمعہ میں اگر اس پانی سے وضو کرتا تو جائز نہ ہوتا اس لئے کہ پانی دیکھنے کی وجہ سے وہ پھر جنب ہوگیا"۔ اھ اور اسی سے وہ کلام دفع ہوجاتا ہے۔ فتدبر (تو غور کرنا چاہئے) اھ۔۔۔ سراج کا کلام ردالمختار میں بھی ذکر کر کے فرمایا ہے: "وہو فرق حسن دقیق فتدبرہ (اور یہ ایک عمدہ دقیق فرق ہے جس میں تدبر کرنا چاہئے)" اھ

اقول: وبالله التوفيق له محملان - الاول: الجواز بمعنى الصحة كما تعطيه عبارة ملك العلماء حيث نسب الجواز الى الصلاة وفيه - اولاً (١): ان مجرد صحة الوضوء به لا يثبت القدرة ولا ينفي العجز

(ت) اقول: (میں کہتا ہوں) اور توفیق خدا ہی سے ہے اس کے دو محمل ہیں: اول: جواز بمعنی صحت ہو جیسا کہ ملک العلماء کی عبارت سے مستفاد ہوتا ہے اس طرح کہ انہوں نے جواز کی نسبت نماز کی طرف کی ہے۔ اب اس میں کلام ہے اولاً محض اتنا کہ اس سے وضو درست ہے نہ قدرت کا اثبات کرتا ہے نہ عجز کی نفی کرتا ہے۔

---

1 منحۃ الخالق علی البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۳۹ 2 ردالمختار باب التیمم مطبوعہ مصطفی البابی مصر ۱/۱۸۷

Fatawa Ridawiyyah Volume 4

(Left Column)

Do you not see that if a sick person or someone a mile away bears the hardship and performs ablution (wudhu) with it, it is valid and his prayer is permissible? In fact, being occupied with a more important need is also among the forms of inability, like storing it for thirst or for kneading dough, although if he performs wudhu with it, his prayer is definitely valid if he does so.

Secondly: Specifically based on (1) *As-Siraj*, then the distinction should be discarded because validity and permissibility of prayer are definitely attained in the issue of *Al-Lum'ah* (unwashed spot) as well. Do you not see what has preceded from *Al-Hindiyyah*, *Al-Kafi*, and *Sharh al-Wiqayah* that if he uses it for wudhu, it is permissible? The first two added 'unanimously' (bil-ittifaq). And becoming *junub* (ritually impure) again does not prevent him from performing wudhu for the minor impurity (*hadath*), because this *janabat* is restricted and the *hadath* is not merged in it.

Second: In the sense of permissibility (halal), i.e., if he performs wudhu with it in the issue of impurity, it is permissible, unlike the issue of *Al-Lum'ah* because he became *junub* again, so it was obligatory to spend it on *janabat*.

(Right Column)

See, if a sick person or someone a mile away bears the hardship and performs wudhu with water, the wudhu is valid and prayer with it is permissible. Rather, water being engaged in a more important need is also among the forms of inability, like water that has been collected for thirst or for kneading dough, despite the fact that if he performs wudhu with it, his prayer is definitely permissible.

Secondly: There is specifically this discourse on *Siraj* that if it is so, then the distinction should be wasted because validity and permissibility of prayer are definitely attained in the issue of *Lum'ah* as well. See what has passed with reference to *Hindiyyah*, *Kafi*, and *Sharh Wiqayah* that if he spends this water on wudhu, it is permissible. *Hindiyyah* and *Kafi* added 'unanimously' (bil-ittifaq). And his becoming *junub* again is not a hindrance to performing wudhu for *hadath* because this *janabat* is restricted and *hadath* is not included in it.

Second: Permissibility in the sense of being lawful (hilliya), meaning in the issue of impurity, if he performs wudhu with this water, it is lawful. Unlike the issue of *Lum'ah*. Because since he became *junub* again, it is obligatory for him to spend it on *janabat*.

(Left Column)

I say: And in it:

Firstly: We do not know the permissibility in impurity, because it involves choosing to perform prayer with actual impurity intentionally since he was able to remove both actual impurities with water...

Page 314 of 761

(Right Column)

I say: There is discourse in this too.

Firstly: We do not accept that there is lawfulness in the issue of impurity, because it involves intentionally choosing the performance of prayer with actual impurity, since he had the power to remove both impurities, the actual one with water...

फ़तावा रिज़विया जिल्द 4

(बायां कॉलम)

क्या आप नहीं देखते कि यदि कोई बीमार व्यक्ति या एक मील दूर रहने वाला व्यक्ति कठिनाई सहकर उससे वज़ू करता है, तो उसका वज़ू सही है और उससे नमाज़ जायज़ है? बल्कि अधिक महत्वपूर्ण ज़रूरत में पानी का व्यस्त होना भी अक्षमता के रूपों में से है, जैसे प्यास के लिए या आटा गूंथने के लिए उसका संचय करना, बावजूद इसके कि अगर वह उससे वज़ू करे तो उसकी नमाज़ निश्चित रूप से जायज़ है यदि वह ऐसा करता है।

दूसरा: विशेष रूप से (1) 'अस-सिराज' के आधार पर, तब अंतर को हटा देना चाहिए क्योंकि नमाज़ की शुद्धता और वैधता निश्चित रूप से 'अल-लुम्आ' (अनधुले स्थान) के मसले में भी हासिल है। क्या आप नहीं देखते कि 'अल-हिंदिया', 'अल-काफ़ी' और 'शरह अल-विक़ाया' से जो पहले गुज़रा है कि यदि वह इसे वज़ू के लिए उपयोग करता है, तो यह जायज़ है? पहले दो ने 'सर्वसम्मति से' (बिल-इत्तेफ़ाक़) शब्द जोड़ा है। और उसका फिर से जुनूब (नापाक) हो जाना उसे हदस (लघु अशुद्धि) के लिए वज़ू करने से नहीं रोकता क्योंकि यह जनाबत सीमित है और हदस इसमें समाहित नहीं है।

दूसरा: हलाल (वैधता) के अर्थ में, यानी अगर उसने नजासत (अशुद्धि) के मसले में इससे वज़ू कर लिया तो हलाल है, 'अल-लुम्आ' के मसले के विपरीत,

(दायां कॉलम)

देखिए, बीमार या एक मील की दूरी वाले ने अगर मशक्कत उठाई और पानी से वज़ू किया तो वज़ू सही है और उससे नमाज़ जायज़ है बल्कि ज़्यादा अहम ज़रूरत में पानी का मसरूफ़ होना भी मजबूरी (अज़्र) की सूरतों में से है जैसे वह पानी जो प्यास के लिए या आटा गूंथने के लिए जमा कर रखा हो बावजूद इसके कि अगर उससे वज़ू करे तो उसकी नमाज़ क़तई जायज़ है।

दूसरा: ख़ास सिराज पर यह कलाम है कि ऐसा है तो फ़र्क़ ज़ाया कर देना चाहिए क्योंकि सेहत और जवाज़े नमाज़ तो क़तई मसला 'लुम्आ' में भी हासिल है। वह देखिए जो हिंदिया, काफ़ी और शरह विक़ाया के हवाले से गुज़रा कि अगर इस पानी को वज़ू में ख़र्च कर लिया तो जायज़ है। हिंदिया व काफ़ी ने इत्तेफ़ाक़न (बिल-इत्तेफ़ाक़) का इज़ाफ़ा किया। और उसका फिर जुनूब हो जाना हदस का वज़ू करने से मानेअ (बाधक) नहीं इसलिए कि यह जनाबत मुक़्तसरा है और हदस इसमें मुंदरज (शामिल) नहीं।

दोम (दूसरा): जवाज़ बमअना हिल्लत हो यानी मसला नजासत में अगर इस पानी से वज़ू कर लिया तो हलाल है। बखिलाफ़ मसला लुम्आ

(बायां कॉलम)

क्योंकि वह फिर से जुनूब हो गया, इसलिए इसे जनाबत में ख़र्च करना वाजिब था।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): और इसमें:

अव्वलन (पहली बात): हम नजासत में हिल्लत (वैधता) को नहीं जानते, क्योंकि इसमें जानबूझकर हक़ीक़ी नजासत के साथ नमाज़ अदा करने का चुनाव करना शामिल है, क्योंकि वह दोनों हक़ीक़ी नजासतों को पानी से दूर करने में सक्षम था...

(दायां कॉलम)

के। इसलिए कि फिर जुनूब हो गया तो इसे जनाबत में ख़र्च करना वाजिब है।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): इसमें भी कलाम है।

अव्वलन: हम नहीं मानते कि मसला नजासत में हिल्लत है क्योंकि इसमें नजासते हक़ीक़िया के साथ नमाज़ की अदा की को क़स्दन इख़्तियार करना है इसलिए कि उसे क़ुदरत थी कि दोनों नजासतें दूर करे हक़ीक़िया को पानी...

فتاوی رضویہ جلد چہارم

الاتری ان المریض او البعید میلا لو تحمل الحرج وتوضأ به لصح وجازت صلاته به بل الشغل بحاجة اهم ایضاً من وجوه العجز کالدخر لعطش او عجن مع جواز صلاته به قطعاً ان فعل۔ دیکھئے بیمار یا ایک میل دوری والے نے اگر مشقت اٹھائی اور پانی سے وضو کیا تو وضو صحیح ہے اور اس سے نماز جائز ہے بلکہ زیادہ اہم ضرورت میں پانی کا مشغول ہونا بھی عجز کی صورتوں میں سے ہے جیسے وہ پانی جو پیاس کے لئے یا آٹا گوندھنے کے لئے جمع کر رکھا ہو با وجودیکہ اگر اس سے وضو کرے تو اس کی نماز قطعاً جائز ہے۔

وثانیاً: علی (۱) السراج خاصة اذن یطیح الفرق فالصحة وجواز الصلاة حاصل قطعاً فی مسألة اللمعة ایضاً الا تری الی مأتقدم عن الهندیة والکافی وشرح الوقایة لوصرفه الی الوضوء جاز زاد الاولان اتفاقاً وعوده جنباً لا یمنعه عن التوضی للحدث لان هذه الجنابة مقتصرة والحدث غیر مندمج فیها۔ ثانیاً: خاص سراج پر یہ کلام ہے کہ ایسا ہے تو فرق ضائع کر دینا چاہئے کیونکہ صحت اور جواز نماز تو قطعاً مسئلہ لمعہ میں بھی حاصل ہے۔ وہ دیکھئے جو ہندیہ، کافی اور شرح وقایہ کے حوالہ سے گزرا کہ اگر اس پانی کو وضو میں صرف کر لیا تو جائز ہے۔ ہندیہ و کافی نے اتفاقاً (بالاتفاق) کا اضافہ کیا۔ اور اس کا پھر جنب ہو جانا حدث کا وضو کرنے سے مانع نہیں اس لئے کہ یہ جنابت مقتصرہ ہے اور حدث اس میں مندرج نہیں۔

الثانی: بمعنی الحل ای لوتوضأ به فی مسألة النجاسة حل بخلاف مسألة اللمعة لانه عاد جنباً فوجب صرفه الی اجنابة۔ دوم: جواز بمعنی حلت ہو یعنی مسئلہ نجاست میں اگر اس پانی سے وضو کر لیا تو حلال ہے۔ بخلاف مسئلہ لمعہ کے۔ اس لئے کہ پھر جنب ہو گیا تو اسے جنابت میں صرف کرنا واجب ہے۔

اقول: وفيه اقول: اس میں بھی کلام ہے۔

اولا: لانعلم الحل فی النجاسة فان فيه اختيار الصلاة مع نجاسة حقيقية عمداً لانه كان قادراً على ان يزيل النجاستين الحقيقة اولاً: ہم نہیں مانتے کہ مسئلہ نجاست میں حلت ہے کیونکہ اس میں نجاست حقیقیہ کے ساتھ نماز کی اداء کی کو قصداً اختیار کرنا ہے اس لئے کہ اسے قدرت تھی کہ دونوں نجاستیں دُور کرے حقیقیہ کو پانی

Fatawa Razawiyya Volume 4

(Arabic text translation): ...with water, and the ritual [impurity] with dust, as Malik al-Ulama said. There was no substitute for water in actual impurity. So when he used the water for the ritual [impurity], for which he had a substitute available, he had firmly decided and intended to pray with a hindering impurity despite having the power to remove it. So how could this be lawful? As for its being sufficient, it is because he is incapable of [obtaining] water at the time of performing the prayer, and consideration is only given to the current state.

(Urdu text): ...and the ritual [impurity] with soil, as Malik al-Ulama has stated. In actual impurity, there is no substitute or deputy for water. So, when he used water for the ritual [impurity], for which a substitute was available to him, he made a firm intention and strong resolution that despite the power to remove the hindering impurity, he would pray with that impurity. So, how will this be lawful? As for its being sufficient, the reason is that at the time of performing the prayer, he is unable to use water, and in this regard, only the current state is considered. (T)

(Arabic text translation): If you say, rather the words of Malik al-Ulama indicate lawfulness: "Then it is better than performing the prayer with only one purification." 1 And the statement of [books] Khaniyah, Khulasah, Hilyah, and Bahr: "If he performed wudu and prayed in impure clothes, it is permissible, but he will be an evildoer (musi)." 2 So (1) evildoing is below prohibited dislike.

(Urdu text): If the question arises that this statement of Malik al-Ulama indicates lawfulness: "Then it is better (awla) than performing the prayer with only one purification." And the statement of [books] Khaniyah, Khulasah, Hilyah, and Bahr: "If he performed wudu and prayed in impure clothes, it is permissible and he will be an evildoer (one who does bad) (musi)" — because evildoing is a level below prohibited dislike (karahat-e-tehrim).

(Arabic text translation): I say: The reasoning of Malik al-Ulama is the greatest proof, as you know, that (2) the word "better" (al-awla) in it is similar to its use in the statements of [the books] al-Tajnis and al-Mazidan...

(Urdu text): I say: The reasoning of Malik al-Ulama is the greatest proof, as is known to the observer, but just as it contains the word "awla" (better), so it is in the statement of Tajnis and Mazid: "Indeed...

(Bottom marginal note): Rather, in Bada'i itself, from the Book of Istihsan: "Refraining from the permissible is better than committing the prohibited." 3 12 Amna Ghufira lahu (T).

(Footnotes): 1. Bada'i al-Sana'i, Section on what nullifies tayammum, published by H.M. Saeed Company Karachi, 1/75. 2. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter on Tayammum, published by H.M. Saeed Company Karachi, 1/139. 3. Bada'i al-Sana'i, Book of Istihsan, M.M. Saeed Company Karachi, 5/130.

फ़तावा रज़विया जिल्द 4

(अरबी भाग का अनुवाद): ...पानी से, और हुक्मिया (नियम आधारित अशुद्धि) को मिट्टी से, जैसा कि मलिक अल-उलमा ने कहा है। हकीकी (वास्तविक) नजासत (गंदगी) में पानी का कोई विकल्प नहीं है। तो जब उसने पानी को हुक्मिया में खर्च किया, जिसके लिए उसके पास एक विकल्प मौजूद था, तो उसने यह पक्का इरादा और दृढ़ संकल्प कर लिया कि रुकावट डालने वाली नजासत को दूर करने की शक्ति होने के बावजूद वह उस नजासत के साथ नमाज़ पढ़ेगा, तो यह हलाल (वैध) कैसे होगा? रहा पर्याप्त होना, तो इसकी वजह यह है कि नमाज़ अदा करने के वक्त वह पानी से असमर्थ है, और इसमें केवल वर्तमान स्थिति पर विचार किया जाता है।

(उर्दू भाग): ...और हुक्मिया को मिट्टी से जैसा कि मलिक अल-उलमा ने फ़रमाया है और नजासते हकीकिया में पानी का कोई बदल और नायब नहीं तो जब उसने पानी को हुक्मिया में सर्फ़ किया जिसमें पानी का एक बदल उसे दस्तयाब था तो उसने इस बात का पुख़्ता इरादा और अज़्म मोहकम कर लिया कि नजिस माने के इजाला पर कुदरत के बावजूद उस नजिस माने के साथ नमाज़ अदा करेगा तो यह हलाल कैसे होगा?। रहा किफायत कर जाना तो इसकी वजह यह है कि नमाज़ की अदायगी के वक़्त वह पानी से आजिज़ है और इस बारे में सिर्फ हालते मौजूदा पर नज़र की जाती है। (त)

(अरबी भाग का अनुवाद): अगर आप कहें, बल्कि मलिक अल-उलमा के शब्द हलाल होने की ओर इशारा करते हैं: "तो एक पाकी के साथ नमाज़ अदा करने से बेहतर (अवला) है।" 1 और खानिया, खुलासा, हिल्या और बहर की यह इबारत: "अगर वज़ू कर लिया और नजिस कपड़े में नमाज़ अदा की तो जायज़ है और मुसाईत वाला (बुरा करने वाला) होगा।" 2 तो (1) मुसाईत (बुरा करना) कराहते तहरीम से नीचे है।

(उर्दू भाग): अगर यह सवाल हो कि मलिक अल-उलमा की यह इबारत हिल्लत पर दलालत कर रही है: "तो एक तहारत से नमाज़ की अदायगी से औला है।" और खानिया, खुलासा, हिल्या और बहर की यह इबारत: "अगर वज़ू कर लिया और नजिस कपड़े में नमाज़ अदा की तो जायज़ है और मुसाईत वाला (बुरा करने वाला) होगा" — इस लिए कि मुसाईत का दर्जा कराहते तहरीम से नीचे है।

(अरबी भाग का अनुवाद): मैं कहता हूँ: मलिक अल-उलमा का तर्क सबसे स्पष्ट प्रमाण है, जैसा कि आप जानते हैं, कि (2) इसमें शब्द "औला" (बेहतर) वैसा ही है जैसा अल-तजनीस और अल-मज़ीदान के बयानों में है...

(उर्दू भाग): मैं कहता हूँ: मलिक अल-उलमा की तालील (तर्क) सबसे बड़ी दलील है जैसा कि नाज़िर को मालूम है मगर यह है कि जैसे इसमें लफ्ज़ "औला" है वैसे ही तजनीस और मज़ीद की इस इबारत में है: "बेशक...

(नीचे का हाशिया): बल्कि खुद बदाए-उल-सनाए में किताबुल इस्तेहसान में यह इबारत है: "मुबाह से बाज़ रहना ममनू के इरतेकाब से औला है।" 3 12 आमिना गफ़िरा लहू (त)।

(पाद टिप्पणियाँ): 1. बदाए-उस-सनाए, तयम्मुम तोड़ने वाली चीज़ों का बयान, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/75। 2. अल-बहर-उर-राइक, तयम्मुम का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/139। 3. बदाए-उस-सनाए, किताबुल एहसान, एम.एम. सईद कंपनी कराची, 130/5।

पेज 315/761

فتاوی رضویه جلد چہارم

بالماء والحكمية بالتراب كما قال ملك العلماء ولم يكن للماء خلف فى الحقيقة فأذا صرفه الى الحكمية التى كان يجدله خلفا فيها فقد ازمع واجمع على ان يصلى في نجس مانع مع القدرة على ازالته فكيف يحل هذا اما الاجزاء فلانه عاجز عن الماء عند ايقاع الصلاة وانما النظر فيه الى الحالة الراهنة۔

سے اور حکمیہ کو مٹی سے جیسا کہ ملک العلماء نے فرمایا ہے اور نجاست حقیقیہ میں پانی کا کوئی بدل اور نائب نہیں تو جب اس نے پانی کو حکمیہ میں صرف کیا جس میں پانی کا ایک بدل اسے دستیاب تھا تو اس نے اس بات کا پختہ ارادہ اور عزم محکم کر لیا کہ نجس مانع کے ازالہ پر قدرت کے باوجود اس نجس مانع کے ساتھ نماز ادا کرے گا تو یہ حلال کیسے ہو گا؟۔ رہا کفایت کر جانا تو اس کی وجہ یہ ہے کہ نماز کی ادائے گی کے وقت وہ پانی سے عاجز ہے اور اس بارے میں صرف حالت موجودہ پر نظر کی جاتی ہے۔ (ت)

فان قلت بل يدل على الحل قول ملك العلماء فكان اولى من الصلاة بطهارة واحدة 1 وقول الخانية والخلاصة والحلية والبحر لوتوضأ وصلى في الثوب النجس جاز ويكون مسيئا 2 اهـ فان (1) الاساءة دون كراهة التحريم۔

اگر یہ سوال ہو کہ ملک العلماء کی یہ عبارت حلت پر دلالت کر رہی ہے: "تو ایک طہارت سے نماز کی ادائے گی سے اولیٰ ہے۔" اور خانیہ، خلاصہ، حلیہ اور بحر کی یہ عبارت: "اگر وضو کر لیا اور نجس کپڑے میں نماز ادا کی تو جائز ہے اور اسائت والا (برا کرنے والا) ہو گا" اھـ اس لئے کہ اسائت کا درجہ کراہت تحریم سے نیچے ہے۔

اقول: تعليل ملك العلماء ادل دليل كما علمت على ان (٢) لفظة الاولى فيه مثلها في قولعه التجنيس والمزيدان

اقول: ملک العلماء کی تعلیل سب سے بڑی دلیل ہے جیسا کہ ناظر کو معلوم ہے مگر یہ ہے کہ جیسے اس میں لفظ "اولیٰ" ہے ویسے ہی تجنیس اور مزید کی اس عبارت میں ہے: "بیشک

عه بل في نفس البدائع من كتاب الاستحسان بلکہ خود بدائع کتاب الاستحسان میں یہ عبارت ہے: مباح سے باز رہنا ممنوع کے ارتکاب سے اولیٰ ہے اھ ١٢ امنہ غفر لہ (ت) الامتناع من المباح اولى من ارتكاب المحظور 3اھ ١٢ منه غفر له (م)

1 بدائع الصنايع فصل بيان مايتقض التيمم مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ١/ ٧٥ 2 البحر الرائق باب التيمم مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ١/ ١٣٩ 3 بدائع الصنايع كتاب الاحسان ايم ايم سعيد كمپنى، كراچى ١٣٠/٥

Fatawa Razvia, Volume Four

Observing the individual obligation (Fard al-Ayn) is "preferable." On this, Shami says: So when it is proven that it is a Fard, then acting contrary to it is forbidden (Haram). (Ending quote, from the beginning of the Book of Jihad). And applying the term "Musiy" (evildoer) to one who omits a mandatory act is not a rare thing. Inevitably, it is written in Al-Ghunya: "If a person removes the minor ritual impurity (Hadath) with that water and the garment remains impure, he would have omitted actual purification despite having the ability to do so without an excuse, thus he will be a sinner. However, his prayer will be valid because inability is established after the water is exhausted." Ending quote. This is exactly what I understood, and he expressed it in briefer and better words. May the mercy of Allah be upon him and upon all the scholars.

Secondly: If this is the case, the difference will be reversed. When it is permissible for him to spend the water on ablution (Wudu) and leave the preventing impurity (Najasa al-Mani'a) without any remover, because it is permissible for him to spend it on Wudu along with removing major impurity (Janabah) via Tayammum, then it would be permissible and lawful to an even greater degree. What role does the fact that Janabah is "severer" play in this? For all is being negated either by water or by soil. What is the evidence that it is mandatory to remove the severer impurity with water instead of soil?

---

1. Radd al-Muhtar, Kitab al-Jihad, Mustafa al-Babi, Egypt 3/221.
2. Ghunyat al-Mustamli, Chapter on Tayammum, Sohail Academy, Lahore, p. 86.

फ़तावा रज़विया, जिल्द चौथी

फ़र्ज़-ए-ऐन का पालन करना "बेहतर" (औला) है। इस पर शामी ने फ़रमाया: तो जब यह साबित हो गया कि वह फ़र्ज़ है, तो उसका विरोध हराम हुआ। (उद्धरण समाप्त, किताब अल-जिहाद के शुरू से)। और वाजिब छोड़ने वाले पर "मुसी" (बुरा करने वाला) शब्द का प्रयोग कोई दुर्लभ बात नहीं है। लाजिम रूप से 'ग़ुनिया' में लिखा है: "अगर इस पानी से हदस (अशुद्धि) को दूर किया गया और कपड़ा नापाक रह गया, तो उसने बिना किसी बहाने के क्षमता होने के बावजूद वास्तविक पवित्रता को छोड़ दिया, इसलिए वह गुनहगार होगा। लेकिन उसकी नमाज़ सही हो जाएगी क्योंकि पानी खत्म हो जाने के बाद लाचारी साबित हो गई।" उद्धरण समाप्त। यह बिल्कुल वही है जो मैंने समझा था और उन्होंने इसे अधिक संक्षिप्त और बेहतर शब्दों में बयान किया। उन पर और तमाम उलमा पर अल्लाह की रहमत हो।

दूसरा: अगर ऐसा है, तो फ़र्क उलट जाएगा। जब उसके लिए यह जायज़ है कि पानी वज़ू में खर्च कर दे और बिना किसी हटाने वाली चीज़ के रुकावट डालने वाली नजासत (गंदगी) को बाक़ी रखे, क्योंकि उसके लिए जनाबत को तयम्मुम से दूर करने के साथ पानी को वज़ू में खर्च कर लेना जायज़ है, तो यह बदरजा-ए-औला (और भी बेहतर तरीक़े से) जायज़ और हलाल होगा। और इसमें जनाबत के ज़्यादा "सख्त" होने का क्या दख़ल है? क्योंकि सब कुछ तो दूर हो रहा है, या तो पानी से या मिट्टी से। इस पर क्या दलील है कि जो ज़्यादा सख्त नजासत है उसे पानी ही से ज़ायल (दूर) करना वाजिब है मिट्टी से नहीं?

---

1. रद अल-मुह्तार, किताब अल-जिहाद, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 3/221।
2. ग़ुनियत अल-मुस्तमली, फ़स्ल फ़ी अल-तयम्मुम, सुहैल एकेडमी, लाहौर, पृष्ठ 86।

पेज 316 ऑफ़ 761

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم

مراعاة فرض العين اولى قال الشامي فحيث ثبت انه فرض كان خلافه حراماً ١ اھ، من صدر الجهاد واطلاق(١) المسيئ على من ترك واجبا غير نادر لاجرم ان قال في الغنية لوا زال بذلك الماء الحدث وبقى الثوب نجسا لكان قد ترك الطهارة الحقيقة مع قدرته عليها بغير عذر فيكون أثما لكن تصح صلاته لثبوت العجز بعد نفاد الماء 2 اه وهذا عين مافهمت وقد اداه بلفظ اوجز واحسن رحمه الله تعالى والعلماء جميعا۔

فرض عین کی رعایت "اولیٰ" ہے اس پر شامی نے فرمایا: تو جب یہ ثابت ہوا کہ وہ فرض ہے تو اس کا خلاف حرام ہوا، اھ از شروع کتاب الجہاد اور واجب ترک کرنے والے پر لفظ "مُسِیْئی" (بُرا کرنے والا) کا اطلاق کوئی نادر بات نہیں۔ لاجرم غنیہ میں لکھا ہے: "اگر اس پانی سے حدث دُور کیا اور کپڑا نجس رہ گیا تو وہ طہارت حقیقیہ پر قادر ہونے کے باوجود بلا عذر اس کا تارک ہوا تو گنہ گار ہوگا لیکن اس کی نماز صحیح ہو جائے گی کیوں کہ پانی ختم ہو جانے کے بعد عجز ثابت ہو گیا" اھ یہ بعینہ وہ ہے جو میں نے سمجھا اور انہوں نے اسے ز یادہ مختصر اور بہتر الفاظ میں ادا کیا ان پر اور تمام علما پر خدا کی رحمت ہو۔

وثانيا: اذن ينقلب الفرق فحيث جاز له صرف الماء الى الوضوء وابقاء النجاسة المانعة بلا مزيل لان يحل له صرفه الى الوضوء مع ازالة الجنابة بالتيمم لاولى واى مدخل فيه لكون الجنابة اغلظ فان الكل ينتفى اما بالماء او بالتراب واى دليل على انه تجب ازالة الاغلظ بالماء دون التراب

ثانیا: ایسا ہے تو فرق پلٹ جائے گا۔ جب اس کے لئے یہ جائز ہے کہ پانی وضو میں صرف کر دے اور بغیر کسی زائل کرنے والی چیز کے نجاست مانعہ کو باقی رکھے تو اس کے لئے جنابت کو

تیمم سے زائل کرنے کے ساتھ پانی کو وضو میں صرف کر لینا بدرجہ اولیٰ جائز و حلال ہو گا اور اس میں نجاست کے زیادہ سخت ہونے کا کیا دخل؟ سبھی تو دور ہو جا رہا ہے یا پانی سے یا مٹی سے اس پر کیا دلیل ہے کہ جو

---

1 ردالمحتار، کتاب الجہاد، مصطفٰی البابی مصر ۲۲۱/۳ 2 غنیة المستملی فصل فی التیمم سہیل اکیڈمی لاہور ص ۸۶

Volume Four Fatawa Rizvia

[Arabic Text Block 1]: In summary, it has become evident by the praise of Allah Almighty that there is no refutation to this view, and the most apparent position in the issue of impurity is what was established in 'Al-Hilya' and 'Al-Bahr', and what was decisively stated in 'Sharh al-Wiqaya' and 'Al-Durr al-Mukhtar'.

[Urdu Translation/Commentary for Block 1]: ...is more severe, is it obligatory to remove it with water and not soil? In summary, by the praise of Allah Almighty, it has become clear that there is nothing to refute this discourse, and the most apparent position in the issue of impurity is what was expressed in 'Hilya' and 'Bahr', and upon which a decisive conclusion was reached in 'Sharh al-Wiqaya' and 'Durr-e-Mukhtar'.

[Arabic Text Block 2]: I say: And by this, praise be to Allah, what was followed by the researcher Al-Halabi, the author of Al-Ghaniyya, in his explanation of the origin of the disagreement, has gained preference. The requirement of the evidence is that it is permissible to use water for ablution even when using it for 'al-Lamba' (a severe stain/need) is more appropriate. Accepting the obligation of using it for that would lead to objections in many cases where inability to use water due to a legal prohibition is established, as we have explained in the treatise 'Qawanin al-Ulama'. It is possible that the word 'obligation' (wujub) in the text of 'Al-Kafi' is like saying 'Your right is obligatory upon me' (i.e., firmly established). Thus, it is clear that the most apparent position in this is contrary to what was established in 'Al-Hilya' where it said 'The preferred view in it is the saying of Imam Muhammad' and added 'Asah' (most correct) at the end, which is an explicit correction. Whereas the author of 'Al-Hilya', may God have mercy on him, is not among the 'people of preference' (As-hab al-Tarjih).

[Urdu Translation/Commentary for Block 2]: (T) I say: By this, praise be to Allah, preference has also been gained by that which the researcher Halabi followed in the discourse on the origin of the disagreement. This is because the requirement of the evidence is the same saying that, along with the appropriateness of using water for 'Lum'a', its use in ablution is permissible. Accepting the obligation of its use for 'Lum'a' would lead to objections in those many issues where inability to use water is established due to some legal prohibition, as we have explained them in the treatise 'Qawanin al-Ulama'. It is possible that in the text of 'Kafi', the obligation is from the category of 'Your right is obligatory upon me' (meaning established with strength). From this, it also became clear that the most apparent position in this matter is

contrary to what was expressed in 'Hilya' and said, 'So the preferred view in it is the saying of Imam Muhammad,' and also wrote 'Asah' at its end; this is an explicit correction, whereas the author of 'Hilya', may God's mercy be upon him, is not among the 'people of preference'.

[Arabic Text Block 3]: If you say: the fact that water deserves to be spent on a more important need is not exclusive to what is obligatory. Do you not see that the water for kneading dough falls under this chapter, despite the fact that kneading dough is not obligatory?

[Urdu Translation/Commentary for Block 3]: (T) If the question is: the merit of water being spent for a more important need is not specific to obligation; see that water kept for kneading dough is from the same category, despite the fact that kneading dough is not obligatory.

जिल्द चौथी फ़तावा रिज़विया

[अरबी पाठ ब्लॉक 1]: संक्षेप में, अल्लाह तआला की प्रशंसा से यह स्पष्ट हो गया है कि इस विचार का कोई खंडन नहीं है, और अशुद्धता के मामले में सबसे स्पष्ट स्थिति वही है जो 'अल-हिलिया' और 'अल-बहर' में स्थापित की गई थी, और जिस पर 'शराह अल-विक़ाया' और 'अल-दुर अल-मुख्तार' में दृढ़ता से निर्णय लिया गया था।

[ब्लॉक 1 के लिए उर्दू अनुवाद/टीका]: ...अधिक सख्त है, क्या इसे मिट्टी से नहीं बल्कि पानी से ही दूर करना अनिवार्य है? संक्षेप में, अल्लाह की प्रशंसा से यह स्पष्ट हो गया है कि इस कलाम (भाषण) को कोई बात रद्द करने वाली नहीं है, और अशुद्धता के मसले में सबसे स्पष्ट (अज़हर) वही है जो 'हिलिया' और 'बहर' में ज़ाहिर किया गया और जिस पर 'शराह वक़ाया' और 'दुर-ए-मुख्तार' में फ़ैसला हुआ।

[अरबी पाठ ब्लॉक 2]: मैं कहता हूँ: और इससे, अल्लाह की प्रशंसा हो, उस बात को प्राथमिकता मिली है जिसका अनुसरण शोधकर्ता अल-हलबी, 'अल-ग़निय्या' के लेखक ने असहमति के मूल की अपनी व्याख्या में किया था। प्रमाण की आवश्यकता यह है कि वूज़ू के लिए पानी का उपयोग करना जायज़ है, भले ही 'अल-लम्बा' (एक गंभीर दाग/ज़रूरत) के लिए इसका उपयोग करना अधिक उचित हो। उस चीज़ के लिए इसके उपयोग की अनिवार्यता को स्वीकार करने से कई मामलों में आपत्तियाँ पैदा होंगी जहाँ कानूनी निषेध के कारण पानी का उपयोग करने में असमर्थता स्थापित है, जैसा कि हमने शोध प्रबंध 'कवानीन अल-उलेमा' में बताया है। यह संभव है कि 'अल-काफ़ी' के पाठ में 'अनिवार्यता' (वुजूब) शब्द का अर्थ 'आपका अधिकार मुझ पर अनिवार्य है' (यानी, दृढ़ता से स्थापित) कहने जैसा है। इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि इसमें सबसे स्पष्ट स्थिति 'अल-हिलिया' में स्थापित स्थिति के विपरीत है जहाँ कहा गया था 'इसमें पसंदीदा विचार इमाम मुहम्मद का कथन है' और अंत में 'असहा' (सबसे सही) जोड़ा गया, जो एक स्पष्ट सुधार है। जबकि 'अल-हिलिया' के लेखक, उन पर ईश्वर की दया हो, 'प्राथमिकता के लोगों' (असहाब अल-तरजीह) में से नहीं हैं।

[ब्लॉक 2 के लिए उर्दू अनुवाद/टीका]: (त) मैं कहता हूँ: इसी से अल्लाह की प्रशंसा के साथ इसे भी प्राथमिकता (तरजीह) हासिल हो गई जिस पर मुहाक़्क़िक़ हलबी असहमति के मूल की व्याख्या में चले। क्योंकि दलील (तर्क) का तक़ाज़ा यही कहना है कि 'लुमा' में पानी खर्च करने की प्राथमिकता के साथ वूज़ू में उसके खर्च की अनुमति है। 'लुमा' में खर्च की अनिवार्यता मान लेने पर उन बहुत से

मसलों से आपत्ति होगी जिनमें किसी शरीअत की मनाही की वजह से पानी से असमर्थता साबित है, जैसा कि हमने उन्हें रिसाला 'कवानीन अल-उलेमा' में बयान किया है। हो सकता है कि 'काफ़ी' की इबारत में अनिवार्यता (वुजूब) 'हक़्क़ुका वाजिबुन अलैया' (तुम्हारा हक़ मुझ पर लाज़िम है, यानी मज़बूती से साबित है) के प्रकार से हो। इससे यह भी स्पष्ट हुआ कि इस बारे में अज़हर इसके विपरीत है जो 'हिलिया' में ज़ाहिर किया और कहा 'तो इसमें राजेह इमाम मुहम्मद का क़ौल है' और इसके अंत में 'असहा' भी लिख दिया; यह स्पष्ट सुधार (तसहीह) है, जबकि 'हिलिया' के लेखक, उन पर अल्लाह की रहमत हो, 'असहाब-ए-तरजीह' में से नहीं हैं।

[अरबी पाठ ब्लॉक 3]: यदि आप कहें: यह तथ्य कि पानी अधिक महत्वपूर्ण आवश्यकता पर खर्च किए जाने का पात्र है, केवल अनिवार्यता तक ही सीमित नहीं है। क्या आप नहीं देखते कि आटा गूंथने के लिए रखा गया पानी इसी अध्याय के अंतर्गत आता है, इस तथ्य के बावजूद कि आटा गूंथना अनिवार्य नहीं है?

[ब्लॉक 3 के लिए उर्दू अनुवाद/टीका]: (त) अगर सवाल हो कि पानी का ज़्यादा अहम ज़रूरत में खर्च किए जाने का हक़दार होना सिर्फ़ वुजूब (अनिवार्यता) से ही ख़ास नहीं है; देखें, आटा गूँथने के लिए रखा हुआ पानी इसी बाब से है, इसके बावजूद कि आटा गूँथना वाजिब (अनिवार्य) नहीं है।

पृष्ठ 317 / 761

جلد چہارم فتاوی رضویہ

[عربی عبارت 1]: وبالجملة ظهر بحمدالله تعالیٰ ان النظر لامرد لہ وان الاظهر فی مسئلة النجاسة مااستظہرہ فی الحلیة والبحر وجزم بہ فی شرح الوقایة والدرالمختار۔

[عبارت 1 کا اردو ترجمہ/تفسیر]: زیادہ سخت ہے اسے مٹی سے نہیں پانی ہی سے زائل کرنا واجب ہے؟ بالجملہ بحمدہ تعالیٰ یہ واضح ہوگیا کہ اس کلام کو کوئی بات رد کرنے والی نہیں اور مسئلہ نجاست میں اظہر وہی ہے جو حلیہ اور بحر میں ظاہر کیا گیا اور جس پر شرح وقایہ اور درمختار میں جزم ہوا۔

[عربی عبارت 2]: اقول: وبہ ترجح ولله الحمد ماسلکہ المحقق الحلبی صاحب الغنیة فی تقر یر منشأ الخلاف(۱) فان القول بجواز الصرف الی الوضوء مع اولو یة الصرف الی اللبعة هو الذی یقتضیه الدلیل وعلی تسلیم وجوب الصرف الیها ترد مسائل کثیرة ثبت فیها العجز عن الماء لاجل المنع الشرعی کما بیناها فی رسالة قوانین العلماء وقد(۲) یکون الوجوب فی کلام الکافی من باب قولك حقك واجب علی فظهران الاظهر فی هذه خلاف مااستظہرہ فی الحلیة فالراجع فیه قول محمد وقد ذیل بالاصح وهو تصحیح صریح وصاحب(۳) الحلیة رحمه الله تعالی لیس من اصحاب الترجیح۔

[عبارت 2 کا اردو ترجمہ/تفسیر]: (ت) اقول: اسی سے بحمدہ تعالیٰ اسے بھی ترجیح حاصل ہوگئی جس پر محقق حلبی منشأ خلاف کی تقریر میں چلے، اس لئے کہ مقتضائے دلیل یہی قول ہے کہ لمعہ میں پانی صرف کرنے کے اولیٰ ہونے کے ساتھ وضو میں اس کے صرف کا جواز ہے اور لمعہ میں صرف کا وجوب مان لینے پر ان بہت سے مسائل سے اعتراض ہوگا جن میں کسی شرعی ممانعت کی وجہ سے پانی سے عجز ثابت ہے جیسا کہ انہیں ہم نے رسالہ "قوانین العلماء" میں بیان

کیا ہے۔ ہوسکتا ہے کہ کافی کی عبارت میں وجوب "حقك واجب علی" (تمہارا حق میرے اوپر واجب ہے یعنی بقوت ثابت ہے) کے باب سے ہو۔ اس سے یہ بھی واضح ہوا کہ اس بارے میں اظہر اس کے بر خلاف ہے جو حلیہ میں ظاہر کیا اور کہا "تو اس میں راجح امام محمد کا قول ہے" اور اس کے آخر میں "اصح" بھی لکھ دیا یہ صریح تصحیح ہے جبکہ صاحب حلیہ ان پر خدا کی رحمت ہو اصحاب ترجیح سے نہیں ہیں۔

[عربی عبارت 3]: فان قلت کونه مستحق الصرف الی حاجة اهم لایختص بالوجوب الاتری ان البعد لعجن منه مع ان العجن غیر واجب۔

[عبارت 3 کا اردو ترجمہ/تفسیر]: (ت) اگر سوال ہو پانی کا زیادہ اہم ضرورت میں صرف کئے جانے کا مستحق ہونا وجوب سے ہی خاص نہیں، دیکھئے آٹا گوندھنے کے لئے رکھا ہوا پانی اسی باب سے ہے باوجودیکہ آٹا گوندھنا واجب نہیں۔

I say: (I say) This is an easing and mercy from your Lord. He takes care of the needs of His servants in even the smallest matters (like the thin skin of a date pit or its shell). This is why dry ablution (Tayammum) became permissible in the case where the person selling water is selling it for one 'paisa' while its price there is half a 'paisa'. And if water is one mile away, Tayammum became permissible even if it is in the direction he is heading for his own need. However, the prohibition for the sake of Sharia rights will not be established without obligation, because what is not religiously obligatory, its omission is not religiously forbidden. Thus, the difference became clear, and all praise is to Allah, the Lord of the worlds. That is why I followed the opinion of Imam Muhammad in the table because it is accompanied by explicit correction, and because it is more evident in terms of evidence, and because it is the most cautious (Ahwat) in religion. Although the opinion of Imam Abu Yusuf also has strength because it is the opinion of Imam Abu Yusuf, and because it is in the "Asal" (original source), and its being more plausible (Aujah) was mentioned in Al-Hilyah, and its preference was alluded to in Sharh al-Wiqayah, and its evidence was placed last in Al-Kafi. However, the relied-upon point for all these gentlemen is just one word, which is 'the entitlement of spending' (Istihqaq al-Sarf), and its answer has already been known, and praise is for Allah alone. (T)

In short, the conclusion of the research is that if there is real impurity (Najasat Haqiqiya) on clothes or body that prevents prayer, and there is no wudu (ritual purity), and only enough water is available to either wash the impurity or perform wudu but not both, then it is obligatory to wash the impurity. If one does otherwise, they will be a sinner. One should perform Tayammum for the state of ritual impurity (hadath), whether before or after washing the impurity, and after is better so that...

मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) यह तुम्हारे रब की ओर से सुगमता और दया है। वह अपने बंदों की छोटी से छोटी ज़रूरतों (जैसे खजूर की गुठली की खाल और उसके छिलके) का ख्याल रखता है। यही कारण है कि इस स्थिति में तयम्मुम जायज़ हो गया जब पानी बेचने वाला एक पैसे में पानी बेच रहा है जबकि वहाँ उसकी कीमत आधा पैसा है। और यदि पानी एक मील दूर हो, तो तयम्मुम जायज़ हो गया भले ही वह उसी दिशा में हो जहाँ वह अपनी ज़रूरत के लिए जा रहा है। लेकिन शरीयत के अधिकार के कारण निषेध बिना कर्तव्य (वुजूब) के सिद्ध नहीं होगा, क्योंकि जो धार्मिक रूप से अनिवार्य नहीं है, उसे छोड़ना धार्मिक रूप से वर्जित नहीं है। अतः अंतर स्पष्ट हो गया, और सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे जहानों का मालिक है। इसीलिए मैं तालिका में इमाम मुहम्मद के कथन पर चला हूँ क्योंकि इस पर स्पष्ट सुधार (तसहीह) का चिन्ह दिया गया है और इसलिए कि प्रमाण के दृष्टिकोण से वही अधिक स्पष्ट (अज़हर) है और इसलिए कि धर्म में वही सबसे सुरक्षित (अहवत) है। हालाँकि इमाम अबू यूसुफ के कथन में भी शक्ति है क्योंकि वह इमाम अबू यूसुफ का कथन है, और इसलिए कि वह "असल" में है, और अल-हिलिया में उसके अधिक प्रशंसनीय (अौजह) होने का उल्लेख किया गया है, और शरह अल-विक़ाया में उसकी प्राथमिकता की ओर संकेत किया गया है, और अल-काफ़ी में उसके प्रमाण को अंत में रखा गया है। लेकिन इन सभी हज़रात का विश्वसनीय बिंदु केवल एक शब्द है, और वह है 'खर्च का अधिकार' (इस्तिहक़ाक़ अल-सर्फ़), और उसका उत्तर ज्ञात हो चुका है और प्रशंसा केवल अल्लाह के लिए है। (त)

संक्षेप में, शोध का निष्कर्ष यह है कि यदि कपड़ों या शरीर पर कोई वास्तविक अशुद्धि (नजासत हक़ीक़िया) है जो प्रार्थना में बाधक है, और वज़ू नहीं है, और पानी केवल इतना है कि या तो अशुद्धि धो ली जाए या वज़ू कर लिया जाए लेकिन दोनों नहीं हो सकते, तो अनिवार्य है कि अशुद्धि ही धोई जाए। यदि कोई इसके विपरीत करेगा तो वह पापी होगा। वह अशुद्धि (हदथ) के लिए तयम्मुम करे, चाहे अशुद्धि धोने से पहले या बाद में, और बाद में बेहतर है ताकि...

اقول: (میں کہتا ہوں) یہ تمہارے رب کی جانب سے آسانی اور رحمت ہے وہ نقیر و قطمیر (کھجور کی چھال اور گٹھلی کے چھلکے) میں اپنے بندوں کی حاجتوں کی رعایت فرماتا ہے یہی وجہ ہے کہ اس صورت میں تیمم جائز ہو گیا جب پانی والا ایک پیسے میں پانی بیچ رہا ہے اور وہاں اس کی قیمت آدھا پیسہ ہے۔ اور ایک میل پانی دور ہو تو تیمم جائز ہو گیا اگرچہ وہ اس کے راستے ہی کی سمت ہو۔ اور اس طرف وہ اپنی ضرورت کے لئے جا بھی رہا ہے لیکن حق شرع کی وجہ سے ممانعت تو یہ بغیر وجوب کے متحقق نہ ہوگی اس لئے کہ شرعا جو واجب نہیں اس کا ترک شرعا ممنوع نہیں اس سے فرق واضح ہو گیا، اور تمام حمد خدا کے لئے ہے جو سارے جہانوں کا مالک ہے اسی لئے میں نقشہ میں امام محمد کے قول پر چلا ہوں اس لئے کہ اس پر صریح تصحیح کا نشان دیا گیا ہے اور اس لئے کہ دلیل کے اعتبار سے وہی اظہر ہے اور اس لئے کہ دین میں وہی احوط ہے۔ اگرچہ امام ابویوسف کے قول میں بھی قوت ہے اس لئے کہ وہ امام ابویوسف کا قول ہے اور اس لئے کہ وہ "اصل" میں ہے اور حلیہ میں اس کے اوجہ ہونے کو ظاہر بتایا، اور شرح وقایہ میں اس کی ترجیح کی طرف اشارہ کیا اور کافی میں اس کی دلیل مؤخر رکھی۔ مگر ان سب حضرات کا معتمد ایک ہی حرف ہے اور وہ ہے استحقاق صرف اور اس کا جواب معلوم ہو چکا اور خدا ہی کے لئے حمد ہے۔(ت)

بالجملہ حاصل تحقیق یہ ہوا کہ اگر کپڑے یا بدن پر کوئی نجاست حقیقیہ مانع ہے اور وضو نہیں اور پانی اتنا ملا کہ چاہے نجاست دھو لے چاہے وضو کر لے دونوں نہیں ہو سکتے تو واجب ہے کہ اس سے نجاست ہی دھوئے اگر خلاف کرے گا گنہگار ہو گا حدث کے لئے تیمم کرے خواہ نجاست دھونے سے پہلے یا بعد اور بعد اولی ہے کہ

Fatawa Razawiyya, Volume 4

One should avoid going against the consensus of the scholars. For this reason, if someone has already performed tayammum, it is more appropriate and better to perform it again after washing the impurity. If a trace of major ritual impurity (janabat) remains and a minor ritual impurity (hadath) has also occurred, and that trace is on a part of the body other than the areas for ablution (wudu), or partly on some wudu areas and partly on other limbs, and the available water is only enough to wash one of them, then that water should be used to wash the trace of janabat. For the minor impurity, it is necessary to perform tayammum after the water is consumed, even if it had been performed earlier, as it would have become void. It is evident that there is no cost or harm in performing tayammum later or repeating it. Even if there were no explicit authentication of Imam Muhammad's statement, following this course to avoid deviating from the Imams' consensus would be appropriate and recommended, especially since the term 'as-sahh' (most correct) is explicitly mentioned here. This is clearer from the perspective of evidence and involves caution; in matters of prayer, caution leads to success and rectitude.

Arabic Prayer

May Allah, the Glorified and Exalted, rectify our state along with all our religious brothers, and make us all among the successful ones, and gather us in the company of the righteous under the banner of the Master of Messengers, peace and blessings of Allah be upon him, and upon them, and upon his family, and upon their families, and upon his group, and upon their groups, for all eternity. All praise is due to Allah, the Lord of the worlds. May Allah send His blessings upon the Chosen One (Al-Mustafa), his family, his companions, his children, and his group. And may He accept us for their sake, through their means, among them, and with them, Amen, O Most

Urdu Translation

May the Holy and Exalted God rectify our state along with all our religious brothers, make us all among the successful ones, and gather us in the company of the righteous under the banner of the Master of Messengers. May the blessings of the Exalted God be upon the Prophet and the Messengers, upon the family of the Prophet and the families of the Messengers, and upon the group of the Prophet and the groups of the Messengers, always and forever. All praise is for God, the Lord of all the worlds. May Allah the Almighty send mercy upon the Master Mustafa, his family, his companions, his children, and his group. And may He accept us for their sake, through their cause, among them, and with them, O Most

Arabic Prayer	Urdu Translation
Merciful of those who show mercy. Allah knows best, and His knowledge is most perfect and firm; His glory is sublime.	Merciful of those who show mercy. And the Exalted God alone is the best Knower, and His knowledge is complete and firm; His glory is magnificent. (T)

Praise be to Allah, the blessed book "Husn al-Ta'ammum li-Bayan Hadd al-Tayammum" was completed from the author's manuscript in more than eighteen parts in the best possible manner. It contains hundreds of magnificent discussions that are certainly far beyond the capacity of this humble servant. However, the grace of the All-Powerful enables this helpless pauper to accomplish work that, upon seeing it, eyes of justice, free from envy, would involuntarily exclaim:

फ़तावा रज़विया, जिल्द चौथी

विद्वानों के मतभेद से बचना है और इसीलिए अगर पहले (तयम्मुम) कर चुका है, तो नजासत (गंदगी) धोने के बाद दोबारा तयम्मुम कर लेना अधिक उपयुक्त और बेहतर है। और यदि जनाबत (अशुद्धता) का कोई हिस्सा बाकी है और हद्थ (वज़ू टूटना) भी हुआ है, और वह हिस्सा वज़ू के अंगों के बाहर है या वज़ू के कुछ अंगों के एक हिस्से में और कुछ दूसरे अंग में है, और पानी इतना ही मिला है कि दोनों में से जिसे चाहे धो ले, दोनों नहीं धोए जा सकते, तो उस पानी को उस हिस्से को धोने में खर्च करे और हद्थ के लिए ज़रूरी है कि जब पानी खर्च हो जाए, उसके बाद तयम्मुम करे, चाहे वह पहले भी कर चुका हो, क्योंकि वह टूट गया। ज़ाहिर है कि बाद में तयम्मुम करने या दोबारा कर लेने में न तो कोई खर्च है और न ही कोई हर्ज। तो यदि इमाम मोहम्मद के कथन की स्पष्ट पुष्टि न भी होती, तब भी इमामों के मतभेद से बचने के लिए इसी पर अमल करना उचित और पसंदीदा होता, जबकि यहाँ तो स्पष्ट रूप से शब्द 'अस़ह़' (अधिक सही) मौजूद है और यही दलील के अनुसार अधिक स्पष्ट है और इसी में सावधानी है और नमाज़ के मामले में सावधानी ही कल्याण और सुधार का कारण है।

अरबी प्रार्थना	**उर्दू अनुवाद**
अल्लाह सुब्हानहु व तआला हमारे और हमारे सभी धार्मिक भाइयों के हाल की सुधार फरमाए, और हम सबको सफल होने वालों में शामिल करे, और हमें नेक लोगों के साथ सैयदुल मुर्सलीन के झंडे तले जमा फरमाए। अल्लाह तआला की कृपा और आशीर्वाद हो हुज़ूर पर, अन्य रसूलों पर, हुज़ूर की आल पर, रसूलों की आल पर, हुज़ूर की जमाअत और रसूलों की जमाअत पर, हमेशा-हमेशा के लिए। और तमाम प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो तमाम जहानों का मालिक है। और अल्लाह तआला रहमत फरमाए मुस्तफा पर, उनकी आल, उनके सहाबा, उनके पुत्रों और उनके समूह पर। और हमें उनके सदके, उनके कारण, उनके बीच और उनके साथ स्वीकार फरमाए, ऐ सबसे	खुदाए पाक बरतर हमारा हाल हमारे तमाम दीनी भाइयों के साथ दुरुस्त फरमाए और हम सबको फलाह वालों में से बनाए और हमें सालेहीन के ज़मरे में सैयदुल मुर्सलीन के झंडे तले जमा फरमाए। खुदाए बरतर का दरूद हो हुज़ूर पर और रसूलों पर और हुज़ूर की आल और रसूलों की आल और हुज़ूर की जमाअत और रसूलों की जमाअत सब पर हमेशा हमेशा और तमाम हम्द खुदा के लिए है जो तमाम जहानों का मालिक है और अल्लाह तआला रहमत फरमाए सरकार-ए-मुस्तफा, उनकी आल, उनके असहाब, उनके फरज़न्द, उनके गिरोह पर और हम उनके तुफैल, उनके सबब, उनके अन्दर और उनके साथ कुबूल फरमाए

अरबी प्रार्थना	उर्दू अनुवाद
बढ़कर रहम करने वाले। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानने वाला है, उसका इल्म बहुत परिपूर्ण और मज़बूत है, उसकी महिमा महान है।	सब रहम करने वालों से बढ़ कर रहम फरमाने वाले और खुदाए बरतर ही खूब जानने वाला है और उसका इल्म बहुत ताम और मोहकम है उसका मज्द जलील है। (त)

अल्हम्दुलिल्लाह, किताब 'हुस्नत तअम्मम लिबयान हदत तयम्मुम' फकीर के मसोदे (ड्राफ्ट) से अठारह से अधिक भागों में बेहतरीन तरीके से पूरी हुई, जिसमें सैकड़ों ऐसी महान बहसें हैं जो निश्चित रूप से इस फकीर की शक्ति से बहुत परे हैं, लेकिन सर्वशक्तिमान की कृपा इस लाचार फकीर से वह काम ले लेती है जिसे देखकर इंसाफ वाली निगाहें, जो हसद (ईर्ष्या) से पाक हों, अनायास कह उठें:

خلافِ علماء سے بچنا ہے اور اسی لئے اگر پہلے کر چکا ہے نجاست دھونے کے بعد دوبارہ تیمم کر لینا انسب واحری ہے اور اگر جنابت کا لعمہ باقی ہے اور حدث بھی ہوا اور وہ لمحہ غیر مواضع وضو میں ہے یا کچھ مواضع وضو کے ایک حصے میں کچھ دوسرے عضو میں اور پانی اتنا ملا کہ دونوں میں جس ایک کو چاہے دھو لے دونوں نہیں ہو سکتے تو اُس پانی کو لمحہ دھونے میں صرف کرے اور حدث کے لئے لازم کہ جب پانی خرچ ہو لے اس کے بعد تیمم کرے اگر چہ پہلے بھی کر چکا ہو کہ وہ منتقض ہو گیا ظاہر ہے کہ تیمم بعد کو کرنے یا بعد کو دوبارہ کر لینے میں نہ کچھ خرچ ہے نہ کچھ حرج۔ تو اگر قول امام محمد کی صریح تصحیح نہ بھی ہوتی خلافِ ائمہ سے خروج کے لئے اسی پر عمل مناسب و مندوب ہوتا نہ کہ اس طرف صراحۃً لفظ اصح موجود اور یہی دلیل کی رُو سے ظاہر تر اور اسی میں احتیاط اور امر نماز میں احتیاط باعث فلاح و صلاح۔

عربی متن	**اردو ترجمہ**
اصلح الله سبحنہ وتعالیٰ بالنامع	خدائے پاک برتر ہمارا حال ہمارے تمام دینی بھائیوں کے ساتھ
سائر اخواننا في الدين وجعلنا جميعاً	درست فرمائے اور ہم سب کو فلاح والوں میں سے بنائے اور
من المفلحين وحشرنا في زمرة	ہمیں صالحین کے زمرے میں سید المرسلین کے جھنڈے تلے
الصلحين تحت لواء سيد المرسلين	جمع فرمائے۔ خدائے برتر کا درود ہو حضور پر اور رسولوں
صلى الله تعالیٰ عليہ وعليهم وعلیٰ	پر اور حضور کی آل اور رسولوں کی آل اور حضور کی
آله وألهم وحزبه وحزبهم اجمعين ابد	جماعت اور رسولوں کی جماعت سب پر ہمیشہ ہمیشہ اور تمام
الآبدين والحمد لله رب العلمين	حمد خدا کے لئے ہے جو تمام جہانوں کا مالک ہے اور اللہ

عربی متن	اردو ترجمہ
وصلی اللہ تعالی علی المصطفی والہ وصحبہ وابنہ وحزبہ وعلینا بھم ولھم وفیھم ومعھم آمین یا ارحم الرحمین واللہ تعالی اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم واحکم	تعالیٰ رحمت فرمائے سرکارِ مصطفیٰ ، ان کی آل، ان کے اصحاب، ان کے فرزند، ان کے گروہ پر اور ہم ان کے طفیل، ان کے سبب، ان کے اندر اور ان کے ساتھ قبول فرمائے سب رحم کرنے والوں سے بڑھ کر رحم فرمانے والے اور خدائے برتر ہی خوب جاننے والا ہے اور اس کا علم بہت تام اور محکم ہے اس کا مجد جلیل ہے۔ (ت)

الحمد للہ کتاب مستطاب حسن التعمّم لبیان حد التیمّم مسودہ فقیر سے اٹھارہ اجزاء سے زائد میں باحسن وجوہ تمام ہوئی جس میں صدہا وہ ابحاث جلیلہ ہیں کہ قطعاً طاقت فقیر سے بدرجہا ورا ہیں مگر فیضِ قدیر عاجز فقیر سے وہ کام لے لیتا ہے جسے دیکھ کر انصاف والی نگاہیں کہ حسد سے پاک ہوں ناخواستہ کہہ اٹھیں ع:

Fatawa Razawiyya Volume Four

What the first left for the last (How much the predecessors left for the successors. T)

By the praise of Allah, how many glorious and debated issues have been resolved with such excellence and elegance. Walhamdulillah (and all praise is for God. T). Besides the main subject, there are eight treatises in the book: (1) Samh-un-Nidra fi ma yurith-ul-ajz 'an-il-maa' 1335 AH. Note: At the time of printing, its name was missed on the margin. (2) Al-Zafar li-qawl Zafar 1335 AH. (3) Al-Matar-us-Sa'eed 'ala nabt jins-is-Sa'eed 1335 AH. (4) Al-Jad-us-Sadeed fi naf-il-isti'maal 'an-is-Sa'eed 1335 AH. These four are supplementary. (5) Bab-ul-Aqaid wal-Kalam 1335 AH. (6) Qawaneen-ul-Ulama fi mutayamimum 'ilma 'inda Zaid maa' 1335 AH. (7) At-Talabat-ul-Badee'ah fi qawl Sadr-ish-Shari'ah 1335 AH. (8) Majla-ush-Sham'ah li-jami' hadath wa lum'ah 1335 AH. These four are appended. The questions and the beginning of the answers were in 1325 AH, therefore these numbers are in the book's title. Then, by the praise of Allah, at the time of printing this section in the early days of the blessed month of Ramadan 1335 AH, these treatises and many other topics were added. The compilation of the collection, by the praise of Allah, was done in five and a half months, out of which two days less than three months were spent in severe illness and prolonged weakness, the remnants of which still persist. Therefore, the last treatise came in early 1336 AH, as indicated by its name. In any case, whatever it is, it is beyond my power and purely by the grace of my Generous Lord, and then my Kind and Merciful Prophet, Jalla wa 'ala and Sallallahu Ta'ala 'Alayhi wa Sallam.

[Box Section] (Left side - Arabic): Walhamdulillah hamd-ash-shakireen * wa Sallallahu Ta'ala 'ala khayri khalqihi Muhammadin wa aalihi wa sahbihi wa hizbihi ajma'een. (Right side - Urdu): And all praise is for God, the praise of the grateful ones, and may the blessings of Allah Almighty be upon the best of His creation, Muhammad, and his progeny, his companions, his...

Note: This treatise (in the new edition) is from page 411 to 440 of Volume 3.

Page 320 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

कम तरकुल अव्वलु लिल आख़िर (अगलें पिछलों के लिये कितना छोड़ गये। त)

कितने मसाइल जलीला मो'रका-तुल-आरा बहम्दहु तआला कैसी खूबी व खुश उस्लूबी से तय हुए वल्लाहिल हम्द (और ख़ुदा ही के लिये हम्द है। त) किताब में असल मज़मून के अलावा आठ रसाईल (लघु ग्रंथ) हैं: (१) सम्हुन नदरा फ़ीमा यूरीसुल अज्ज़ अनिल माअ १३३५ हि.। कि वक़्त-ए-तबा हाशिये पर इसका नाम लिखना रह गया। (२) अल-ज़फ़र लि क़ौलि ज़फ़र १३३५ हि.। (३) अल-मतर-उस-सईद अला नब्ति जिन्स-इस-सईद १३३५ हि.। (४) अल-जद-उस-सदीद फ़ी नफ्य-इल-इस्तिमल अन-इस-सईद १३३५ हि.। ये चार ज़िम्निया (सहायक) हैं। (५) बाब-उल-अक़ाएद वल-कलाम १३३५ हि.। (६) क़वानीन-उल-उलमा फ़ी मुतयम्मम इल्म इन्दा ज़ैद माअ १३३५ हि.। (७) अत-तलबत-उल-बदी'आ फ़ी क़ौलि सद्र-इश-शरी'आ १३३५ हि.। (८) मजला-उश-शम'आ लि-जामि' हदस व लुम'आ १३३५ हि.। ये चार मुलहक़ा (जुड़े हुए) हैं। सवाल व शुरू-ए-जवाब १३४० हि. में है लिहाज़ा नाम किताब में यही अदद हैं फिर बहम्दहु तआला इस मक़ाम के तबा के वक़्त के अवाइल माहे रमज़ान मुबारक १३४० हि. से ये रसाईल और उनके साथ और मजामीन कसीरा इज़ाफ़ा हुए मजमूअ की तस्नीफ़ बहम्दहु तआला साढ़े पांच महीने में है जिनमें दो दिन कम तीन महीने अलामत-ए-शदीद व नक़ाहत-ए-मदीदा के हैं जिसका बक़िया अब तक है लिहाज़ा रिसाला अखीरा अवाइल १३४६ हि. में आया जैसा कि इसके नाम ने ज़ाहिर किया बहरहाल जो कुछ है मेरी कुदरत से वरा और महज़ फ़ज़ल मेरे रब्बे करीम फिर मेरे नबी-ए-रऊफ़ रहीम का है जल्ल व अला व सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम।

[बॉक्स] वल्लाहिल हम्द हम्द-श-शाकिरीन * व सल्लल्लाहु तआला अला खैरि ख़लक़िही मुहम्मदिन व आलिही व सहबिही व हिज़बिही अजमईन * और ख़ुदा ही के लिये हम्द है शुक्र गुज़ारों की हम्द और अल्लाह तआला का दरूद हो उसकी मख़लूक़ में सब से बेहतर मुहम्मद और उनकी आल, उनके असहाब, उनके..

अह: ये रिसाला (तबा-ए-जदीद में) जिल्द सोम के सफ़्हा ४११ से ४४० तक है।

सफ़्हा ३२०/७६१

فتاوی رضویہ جلد چہارم

کم ترك الاول للاخر (اگلے پچھلوں کے لئے کتنا چھوڑ گئے۔ت)

کتنے مسائل جلیلہ معرکتہ الآراء بحمدہ تعالی کیسی خوبی و خوش اسلوبی سے طے ہوئے وللہ الحمد (اور خدا ہی کے لئے حمد ہے۔ت) کتاب میں اصل مضمون کے علاوہ آٹھ رسائل ہیں: (۱) سمح الندری فیما یورث العجز عن الماء ۱۳۳۵ھ کہ وقت طبع حاشیہ پر اس عہ کا نام لکھنا رہ گیا۔ (۲) الظفر لقول زفر ۱۳۳۵ھ (۳) المطر السعید علی نبت جنس الصعید ۱۳۳۵ھ (۴) الجد السدید فی نفی الاستعمال عن الصعید ۱۳۳۵ھ یہ چار ضمنیہ ہیں۔ (۵) باب العقائد والکلام ۱۳۳۵ھ (۶) قوانین العلماء في متیمم علم عند زید ماء ۱۳۳۵ھ (۷) الطلبة البدیعة فی قول صدر الشریعة ۱۳۳۵ھ (۸) مجلی الشمعة لجامع حدث ولمعة ۱۳۳۵ھ یہ چار ملحقہ ہیں سوال و شروع جواب ۱۳۲۵ھ میں ہے لہذا نام کتاب میں یہی عدد ہیں پھر بحمدہ تعالی اس مقام کے طبع کے وقت کے اوائل ماہ رمضان مبارک ۱۳۳۵ھ سے یہ رسائل اور ان کے ساتھ اور مضامین کثیرہ اضافہ ہوئے مجموع کی تصنیف بحمدہ تعالی ساڑھے پانچ مہینے میں ہے جن میں دو دن کم تین مہینے علالت شدید ہ و نقاہت مدیدہ کے ہیں جس کا بقیہ اب تک ہے لہذا رسالہ اخیرہ اوائل ۱۳۳۶ھ میں آیا جیسا کہ اس کے نام نے ظاہر کیا بہر حال جو کچھ ہے میری قدرت سے ورا اور محض فضل میرے رب کریم پھر میرے نبی رؤف رحیم کا ہے جل وعلا وصلی اللہ تعالی علیہ وسلم۔

[باکس] وللہ الحمد حمد الشاکرین * وصلی اللہ تعالی علی خیر خلقه محمد وآله وصحبه وحزبه اجمعین* اور خدا ہی کے لئے حمد ہے شکر گزاروں کی حمد اور اللہ تعالیٰ کا درود ہو اس کی مخلوق میں سب سے بہتر محمد اور ان کی آل، ان کے اصحاب، ان کے

عہ یہ رسالہ (طبع جدید میں) جلد سوم کے صفحہ ۴۱۱ سے ۴۴۰ تک ہے۔

[Arabic Column:] Amen, and all praise is due to Allah, Lord of the worlds. * Glory be to You, O Allah, and with Your praise, I bear witness that there is no god but You. I seek Your forgiveness and I turn to You in repentance.

[Urdu Column:] Accept it for the offspring and all of their group, O Lord! And all praise is for Allah, who is the Master of all worlds. Glory be to You, O Allah, along with Your praise. I testify that there is no deity except You. I seek forgiveness from You and turn towards You. (T)

[अरबी कॉलम:] आमीन, और सभी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो तमाम जहानों का रब है। * ऐ अल्लाह, तू पाक है और तेरी ही प्रशंसा है, मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं है। मैं तुझसे माफ़ी माँगता हूँ और तेरी तरफ तौबा करता हूँ।

[उर्दू कॉलम:] ऐ अल्लाह! बेटे और उनके समूह के सभी लोगों के लिए इसे स्वीकार फरमा। और तमाम प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो तमाम जहानों का मालिक है। ऐ अल्लाह, तू पाक है और साथ ही तेरी प्रशंसा भी। मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं है। मैं तुझसे माफ़ी चाहता हूँ और तेरी ओर लौटता हूँ। (त)

---

www.dawateislami.net

I.T. Majlis of Dawateislami

[عربی کالم:] اٰمین والحمدللہ رب العلمین * سبحنک اللھم وبحمدک اشھد ان لا الہ الا انت استغفرک واتوب الیک ط

[اردو کالم:] فرزند، ان کے گروہ سب پر الٰہی! قبول فرما۔ اور تمام تعریف اللہ کے لئے جو تمام جہانوں کا مالک ہے۔ پاکی ہے تجھے اے اللہ ساتھ ہی تیری حمد بھی۔ میں شہادت دیتا ہوں کہ تیرے سوا کوئی معبود نہیں۔ تجھ سے مغفرت چاہتا ہوں اور تیری طرف رجوع کرتا ہوں۔(ت)

Fatawa Razvia Volume Four

We praise Him and send blessings upon His Noble Messenger.

Under the Chapter of Wudu (Ablution)

Problem 115: From Meerut, Mohalla Khair Nagar Darwaza, sent by Maulvi Muhammad Hussain Sahib, merchant of Tilismi Press, 18 Shawwal 1338 AH.

Sheikh Bashir-ud-Din Sahib, a prominent citizen of Lalkurti, Meerut, has a condition where a very light fluid leaks from one of his eyes in such a way that every little while, some moisture is felt. Upon cleaning it with a handkerchief, the cloth feels damp over an area about the size of a grain of rice. Due to the sensation of moisture, it has to be cleaned repeatedly. Sometimes that moisture is felt frequently, and sometimes it needs cleaning after a long interval. During Fajr, a lot of time passes in such a way that it is not cleaned, yet no flowing condition arises; rather, the moisture is felt as an ordinary discharge. It has never happened that even if forgotten due to some work and not cleaned for a long time, it starts flowing.

Regarding this, a senior doctor's opinion is that the fluid which comes from the brain and is supposed to exit through the nose is this same thing. Since the passage to the nose is blocked, therefore the sensation of moisture is felt from the corner of the eye. Some are of the opinion that there is a fistulous (nasoori) condition somewhere in the head, and that area produces this water. In such a state, wudu should be performed fresh every time. Some are of the opinion that as long as there is no flowing condition, fresh wudu is not mandatory. He remains distressed due to this, and purely out of caution because in some places it is difficult to perform wudu, he has reduced his outings and social interactions.

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द चौथी

हम उनकी प्रशंसा करते हैं और उनके महान रसूल पर आशीर्वाद भेजते हैं।

वज़ू (आचमन) के अध्याय के अंतर्गत

मसला 115: मेरठ, मोहल्ला खैर नगर दरवाज़ा से, मौलवी मुहम्मद हुसैन साहब, व्यापारी तिलस्मी प्रेस द्वारा प्रेषित, 18 शव्वाल 1338 हिजरी।

लाल कुर्ती, मेरठ के रईस शेख बशीर-उद-दीन साहब की एक आँख से हल्का-हल्का पानी इस तरह निकलता है कि थोड़ी-थोड़ी देर में ज़रा-ज़रा सी नमी महसूस होती है और रूमाल से साफ़ करने पर कपड़ा लगभग एक चावल के दाने के बराबर नम महसूस होता है। नमी के अहसास की वजह से बार-बार साफ़ करना पड़ता है। कभी वह नमी जल्दी-जल्दी महसूस होती है और कभी देर-देर में साफ़ करने की ज़रूरत होती है। फ़ज्र में काफ़ी समय इसी तरह बीत जाता है कि साफ़ नहीं किया जाता, फिर भी बहने वाली स्थिति पैदा नहीं होती, बल्कि नमी मामूली कीचड़ के रूप में महसूस होती है। ऐसा कभी नहीं हुआ कि किसी काम की वजह से भूल गए हों और देर तक साफ़ न किया हो, तो भी बहने वाली हालत रहे।

इस बारे में एक बड़े डॉक्टर की राय यह है कि दिमाग़ से जो पानी आता है और नाक के रास्ते निकलना चाहिए, यह वही है। चूँकि नाक में जाने का रास्ता बंद हो गया है, इसलिए आँख के कोने से नमी महसूस होती है। कुछ लोगों का मानना है कि सिर में कहीं किसी जगह पर कुछ नासूरी स्थिति (fistulous condition) है, वह जगह यह पानी पैदा करती है। ऐसी स्थिति में वज़ू हर समय ताज़ा होना चाहिए। कुछ का यह विचार है कि जब तक बहने वाली स्थिति न हो, ताज़ा वज़ू अनिवार्य नहीं है। उन्हें इस वजह से परेशानी रहती है और केवल एहतियात के तौर पर, क्योंकि कुछ स्थानों पर वज़ू करना मुश्किल होता है, उन्होंने अपनी आवाजाही कम कर दी है।

पेज 322 ऑफ़ 761

فتاویٰ رضویہ جلد چہارم

نحمدہٗ و نصلی علیٰ رسولہ الکریم

ذیل باب الوضوء

مسئلہ ۱۱۵: از میرٹھ محلہ خیر نگر دروازہ مرسلہ مولوی محمد حسین صاحب تاجر طلسمی پریس ۱۸ شوال ۱۳۳۸ھ

شیخ بشیر الدین صاحب رئیس لال کورتی میرٹھ کی ایک آنکھ میں سے خفیف خفیف پانی اس طرح نکلتا ہے کہ تھوڑی تھوڑی دیر میں ذرا ذرا نمی محسوس ہوتی ہے اور رومال سے صاف کرنے پر تقریباً ایک چاول کے برابر کپڑا نم معلوم ہوتا ہے نمی کے احساس کی وجہ سے بار بار صاف کرنا ہوتا ہے۔ کبھی وہ نمی جلد جلد محسوس ہوتی ہے اور کبھی دیر دیر میں صاف کرنے کی ضرورت ہوتی ہے فجر میں بہت وقت اس طرح گزر جاتا ہے کہ صاف نہیں کیا جاتا ہے جب بھی سیلانی کیفیت پیدا نہیں ہوتی بلکہ نمی بصورت کیچڑ معمولی طور پر معلوم ہوتی ہے۔ کبھی یہ نہیں ہوا کہ اگر کسی کام کی وجہ سے بھول گئے ہوں دیر تک صاف نہ کیا ہو تو بھی سیلانی حالت رہتی ہے۔

اس کی بابت ایک بڑے ڈاکٹر کی رائے یہ ہے کہ دماغ سے جو پانی آتا ہے بینی کی راہ نکلنا ہے وہ یہی ہے چونکہ بینی میں جانے کا راستہ بند ہو گیا ہے اس واسطے آنکھ کے کوئے سے نمی کا احساس معلوم ہوتا ہے بعض کا خیال یہ ہے کہ سر میں کہیں کسی موقع پر کچھ ناسوری کیفیت ہے وہ جگہ یہ پانی پیدا کرتی ہے۔ ایسی حالت میں وضو ہر وقت تازہ ہونا چاہئے بعض کا یہ خیال ہے کہ جب تک سیلانی کیفیت نہ ہو تازہ وضو لازم نہیں۔ اُن کو اس وجہ سے تکدر رہتا ہے اور محض احتیاط کی وجہ سے کہ بعض مقامات میں وضو کرنا دشوار ہوتا ہے انہوں نے اپنی آمد و رفت کم

Volume Four Fatawa Razawiyya ...did it, is this condition a nullifier of wudu or not?

The Answer: If it is that moisture from the brain that comes through the nose, then it is obvious that it is pure; even if it is flowable, it does not nullify wudu. And if it is from a fistula (nasoor), even then, in the aforementioned situation, it is not flowable and no consideration is given to its being extracted. In any case, wudu will not be invalidated by this. And Allah the Almighty knows best.

जिल्द चहारुम (चौथा भाग) फ़तावा रज़विया ...कर दी, यह हालत नाक़िज़-ए-वुज़ू (वुज़ू तोड़ने वाली) है या नहीं?

अल-जवाब: अगर दिमाग़ की वह रुतूबत (नमी/तरल पदार्थ) है जो नाक से आती है, तो यह ज़ाहिर है कि वह पाक है। अगर वह बहने के काबिल भी हो, तो भी वुज़ू नहीं टूटता। और अगर यह नासूर (गहरे ज़ख़्म) से हो, तब भी बताई गई सूरत में उसे बहने वाली चीज़ों में शुमार नहीं किया जाएगा, और उसे हटाने या हटने का कोई एतबार नहीं। बहरहाल, इससे वुज़ू नहीं जाएगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

جلد چہارم فتاویٰ رضویہ کردی، یہ حالت ناقضِ وضو ہے یا نہیں؟

الجواب: اگر دماغ کی وہ رطوبت ہے کہ ناک سے آتی ہے جب تو ظاہر ہے کہ طاہر ہے قابلِ سیلان بھی ہو تو ناقضِ وضو نہیں اور اگر ناسور سے ہو جب بھی صورتِ مذکورہ سے لان کی نہیں اور چھڑانے سے چھڑانے کا کچھ اعتبار نہیں بہر حال اس سے وضو نہ جائے گا و اللہ تعالیٰ اعلم

Fatawa Ridawiyyah, Volume 4

Continuation of the Chapter on Bathing (Ghusl)

Problem 116: From Sironj, asked by Abdul Rashid Khan Sahib, 19 Muharram-ul-Haram 1331 AH. Zaid has been in a state of ritual impurity (janabat) for a year or six months. When he needed to perform ghusl, he didn't do it, and there was no reason preventing him from doing so. While in this state of impurity, he continued to chew betel leaves (paan), so lime (chuna) and catechu (katha) became encrusted on Zaid's teeth during the state of impurity. Now Zaid has performed ghusl and gargled, but the water did not reach his teeth or the roots of his teeth because the lime and catechu are stuck to them. In such a situation, is Zaid's ghusl valid or invalid? And if it is invalid, what measures should be taken? Explain and be rewarded.

Answer: If the place where the lime is encrusted was not washed away by rinsing or drinking water after the state of impurity began, and the lime is so firmly encrusted that removing it would cause harm or pain, then it is excused; gargling will be sufficient. However, if it can be removed without harm, it is obligatory (wajib) to remove it. Without removing it, the ghusl will not be valid. And Allah Almighty knows best.

Problem 117: From Maniawala, Post Office Qasimpur, District Bijnor, sent by Syed Kifayat Ali Sahib, 5 Rabi-ul-Awwal Sharif 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding these issues: (1) Should an intention (niyyah) be made for ghusl or not? And what is the intention for it? If someone is in a state of ritual impurity (janabat) or had a nocturnal emission (ihtilam) and performs ghusl without an intention, is the ghusl valid or not? (2) A person is performing ghusl in a closed room, and there is not much darkness in that room, and he is seeing his private parts and has not tied a cloth (is naked). Is the ghusl valid or not? Explain and be rewarded.

फ़तावा रज़विया, जिल्द चौथी

गुस्ल (स्नान) के अध्याय का सिलसिला

मसला 116: सिरोंज से, अब्दुल रशीद खान साहब द्वारा पूछा गया, 19 मुहर्रम-उल-हराम 1331 हिजरी। ज़ैद एक साल या छह महीने से जनाबत (अपवित्रता) की हालत में है। जब उसे गुस्ल की ज़रूरत हुई तो उसने गुस्ल नहीं किया, और उसे गुस्ल से रोकने वाला कोई कारण भी नहीं था। इसी नापाकी की हालत में वह पान खाता रहा, तो चूना और कत्था नापाकी की हालत में ज़ैद के दांतों पर जम गया। अब ज़ैद ने गुस्ल किया और गरारे किए, लेकिन पानी ज़ैद के दांतों और दांतों की जड़ों तक नहीं पहुँचा क्योंकि दांतों पर और दांतों की जड़ों में चूना और कत्था जमा हुआ है। ऐसी स्थिति में ज़ैद का गुस्ल जायज़ हुआ या नाजायज़? और अगर नाजायज़ हुआ तो क्या तदबीर करनी चाहिए? बयान करें और पुण्य पायें।

जवाब: अगर वह जगह जहाँ चूना जम गया है, जनाबत के बाद किसी तरह कुल्ली करने या पानी पीने से नहीं धुली थी और वह चूना ऐसा जम गया है कि उसे छुड़ाना नुकसान और तकलीफ का कारण है, तो माफ़ है; गरारा करना काफी होगा। और अगर बिना किसी नुकसान के छुड़ा सकता है, तो छुड़ाना वाजिब है। बिना छुड़ाए गुस्ल नहीं होगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 117: मानियावाला डाकखाना कासिमपुर, ज़िला बिजनौर से, सैयद किफ़ायत अली साहब द्वारा भेजा गया, 5 रबी-ुल-अव्वल शरीफ़ 1338 हिजरी। धार्मिक विद्वान इन मसलों के बारे में क्या फ़रमाते हैं: (1) गुस्ल की नीयत (संकल्प) करनी चाहिए या नहीं? और उसकी नीयत क्या है? या अगर जनाबत या एहतिलाम (स्वप्नदोष) के बाद किसी ने बिना नीयत के गुस्ल किया, तो गुस्ल हुआ या नहीं? (2) गुस्ल करने वाला बंद मकान में गुस्ल कर रहा है और उस मकान में ज़्यादा अंधेरा नहीं है और वह अपने गुप्त अंग देख रहा है और कपड़ा नहीं बाँधा है (नग्न है), तो गुस्ल हुआ या नहीं? बयान करें और पुण्य पायें।

पृष्ठ 324 ऑफ़ 761

جلد چہارم فتاوی رضویہ ذیل باب الغسل

مسئلہ ۱۱۶: از سرونج مسئولہ عبد الرشید خان صاحب ۱۹ محرم الحرام ۱۳۳۱ھ برس یا چھ ماہ عرصہ سے زید حالت جنابت میں ہے جب اسے ضرورتِ غسل کی ہوئی اس نے غسل نہ کیا اور کوئی وجہ اُسے غسل سے روکنے والی بھی نہیں ہے اور اسی حالت جنابت میں وہ پان کھاتا رہا تو چونا کتھا حالت ناپاکی میں زید کے دانتوں پر جم گیا اب زید نے غسل کیا اور غررغرہ کیا مگر پانی زید کے دانتوں پر اور دانتوں کی جڑوں میں نہ پہنچا کیونکہ دانتوں پر اور دانتوں کی جڑوں میں تو چونا کتھا جما ہوا ہے۔ ایسی حالت میں غسل زید کا جائز ہوا یا نا جائز، اور اگر ناجائز ہوا تو کیا تدبیر کرنی چاہئے؟ بینوا توجروا (بیان کرو اور اجر پاؤ۔)

الجواب: اگر وہ جگہ جہاں چونا جم گیا ہے جنابت کے بعد کسی طرح کلی کرنے یا پانی پینے سے نہ دُھل گئی تھی اور وہ چونا ایسا جم گیا ہے کہ اس کا چھڑانا باعثِ ضرر وایذا ہے تو معاف ہے غررغرہ کافی ہوگا اور اگر بے ضرر چھڑا سکتا ہے تو چھڑانا واجب ہے بغیر چھڑائے غسل نہ ہوگا واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۱۷: از مانیا والہ ڈاک خانہ قاسم پور ضلع بجنور مرسلہ سید کفایت علی صاحب ۵ ربیع الاول شریف ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسائل میں کہ: (۱) غسل کی نیت کرنی چاہئے یا نہیں، اور کیا نیت ہے اس کی یا غسل جنابت یا احتلام کا ہوا اگر اس نے نیت نہیں کی غسل ہوا یا نہیں؟ (۲) غسل کرنے والا بند مکان میں غسل کر رہا ہے اور زیادہ تر اس مکان میں تاریکی نہیں ہے اور فرج اپنے دیکھ رہا ہے اور کپڑا نہیں باندھا ہے غسل ہوا یا نہیں؟ بینوا توجروا (بیان کرو اور اجر پاؤ۔)

Fatawa Ridawiyyah Volume 4

Answer (1) Intention (Niyyah) in Ghusl is Sunnah; if not done, the Ghusl will still be valid. Its intention is: "I intend to remove impurity and make prayer permissible." (2) Ghusl can also be performed naked, and there is no harm in it if the place is secluded. And Allah Almighty knows best.

Problem 118: Maulvi Abdul Hafeez Sahib, student of Madrasa Manzar-e-Islam. 3rd Rabi' al-Akhir 1339 AH. What do the scholars of religion and muftis of the clear Shari'ah say on this issue: If a person has a nocturnal emission (wet dream) without lust or forceful ejaculation, or due to some illness like spermatorrhea etc., because in those too it occurs without lust or forceful ejaculation, in these two cases, will Ghusl be obligatory on the person who had the emission or not? Or does it carry the same ruling as that which is discharged with force and lust?

Answer: Semen that comes out while awake without force or lust makes Wudu (ablution) obligatory, not Ghusl. However, regarding a wet dream, how would one know whether it was without force or lust? As a precaution, he should perform Ghusl. And Allah Almighty knows best.

Problem 119: From South Africa, place Bhota Bhoti, British Basutoland, asked by Haji Ismail Miyan son of Haji Amir Miyan Kathiawari. His Eminence [Ala Hazrat] has stated that the animal slaughtered by an adulterer (Zani) is permissible. Upon this, Zaid says how can it be permissible, since Ghusl does not 'come off' (descend upon/purify) an adulterer for forty days. Is Zaid's statement true, and does an adulterer's Ghusl 'come off' or not?

Answer: Zaid has spoken sheer falsehood. The external purity of an adulterer's body will be achieved immediately upon the first bath. Yes, the purity of the heart will be through repentance; setting a limit of forty days for this is wrong. If one does not repent for forty years, the internal purity will not be achieved for forty years. And what relation does the non-descent of Ghusl have with the slaughter being impermissible! Purity is not a condition for slaughter, whereas even the slaughter by the hands of People of the Book (Kitabi) is valid; in fact, those whose Ghusl actually never 'comes off', i.e., non-believers who are People of the Book, the animal slaughtered by their hands is declared permissible in all books and even in the Great Quran itself: "The food of those who were given the Scripture is lawful for you."[1] - The slaughter by the hands of the People of the Book is lawful for you.

[1] Al-Quran 5/5

फतावा रज़विया जिल्द चौथी

उत्तर (1) ग़ुस्ल (स्नान) में नियत सुन्नत है, यदि न भी की जाए तो ग़ुस्ल हो जाएगा और उसकी नियत यह है कि 'मैं नापाकी दूर करने और नमाज़ जायज़ होने की नियत करता हूँ।' (2) नग्न होकर ग़ुस्ल करने से भी ग़ुस्ल हो जाता है और इसमें कोई हर्ज नहीं यदि स्थान पर्दे वाला हो, और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला ११८: मौलवी अब्दुल हफीज़ साहिब, छात्र मदरसा मंज़र-ए-इस्लाम, ३ रबी-उल-आख़िर १३३९ हिजरी। दीन के विद्वान और शरीअत के मुफ़्ती इस मसले में क्या कहते हैं कि यदि किसी व्यक्ति को बिना काम-वासना (शहवत) और उछाल (दफ़्क़) के स्वप्नदोष (एहतलाम) हो जाए या किसी बीमारी के कारण जैसे कि जिरियान (वीर्यपात) आदि, क्योंकि इसमें भी बिना काम-वासना और उछाल के होता है, तो इन दो स्थितियों में स्वप्नदोष होने वाले पर ग़ुस्ल अनिवार्य (वाजिब) होगा या नहीं? या इसका भी वही हुक्म है जो उछाल और काम-वासना के साथ निकलने वाले का है?

उत्तर: जागते हुए जो वीर्य बिना उछाल और काम-वासना के निकले, उससे वज़ू अनिवार्य होता है, ग़ुस्ल नहीं। लेकिन स्वप्नदोष के मामले में उसे क्या पता कि वह बिना उछाल और काम-वासना के है? सावधानी के तौर पर वह ग़ुस्ल करेगा। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला ११९: दक्षिण अफ़्रीका, स्थान भोटा भोटी, ब्रिटिश बासुटोलैंड, प्रेषक हाजी इस्माईल मियाँ बिन हाजी अमीर मियाँ काठियावाड़ी। हुज़ूर (आला हज़रत) ने फ़रमाया है कि ज़ानी (व्यभिचारी) के हाथ का ज़िबह (हलाल किया हुआ जानवर) जायज़ है। इस पर ज़ैद कहता है कि कैसे जायज़ हो, ज़ानी पर ग़ुस्ल चालीस दिन तक नहीं उतरता है। क्या ज़ैद का कहना सच है और ज़ानी का ग़ुस्ल उतरता है या नहीं?

उत्तर: ज़ैद ने सरासर ग़लत कहा। ज़ानी के शरीर के ऊपरी हिस्से की शुद्धता पहली बार नहाने से ही तुरंत हो जाएगी। हाँ, हृदय की शुद्धता तौबा (पश्चाताप) से होगी; इसमें चालीस दिन की सीमा बांधना ग़लत है। यदि कोई चालीस साल तक तौबा न करे, तो चालीस साल तक आंतरिक शुद्धता नहीं होगी। और ग़ुस्ल न उतरने का ज़िबह के नाजायज़ होने से क्या संबंध! शुद्धता ज़िबह की शर्त नहीं है, जबकि उनके हाथ का ज़िबह भी सही है बल्कि वे जिनका ग़ुस्ल वास्तव में कभी नहीं उतरता, यानी काफ़िर जो अहले किताब (ईसाई और यहूदी) हैं, उनके हाथ का ज़िबह सभी किताबों में, यहाँ तक कि स्वयं

महान क़ुरआन में हलाल बताया गया है: "उन लोगों का खाना जिन्हें किताब दी गई, तुम्हारे लिए हलाल है।"[1] - अहले किताब के हाथ का ज़िबह तुम्हारे लिए हलाल है।

[1] अल-क़ुरआन ५/५

الجواب (۱) غسل میں نیت سنّت ہے، اگرنہ کی غسل جب بھی ہو جائے گا اور اُس کی نیت یہ ہے کہ ناپاکی دُور ہو جانے اور نماز جائز ہونے کی نیت کرتا ہوں۔ (۲) برہنہ غسل کرنے سے بھی غسل ہو جاتا ہے اور اس میں کچھ حرج نہیں اگر مکان پردے کا ہے، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۱۸: مولوی عبدالحفیظ صاحب طالب علم مدرسہ منظر اسلام ۳۔ ربیع الآخر ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ اگر کسی شخص کو احتلام بغیر شہوت و دفق کے ہو یا کسی مرض کی وجہ سے جیسے جریان وغیرہ، کیونکہ اس میں بھی بلا شہوت و دفق کے ہوتا ہے ان دو صورتوں میں غسل محتلم پر واجب ہوگا یا نہیں؟ یا یہ بھی وہی حکم رکھتا ہے جو کہ ذی دفق و شہوت سے خارج ہوتا ہے۔

الجواب: جاگتے میں جو منی بغیر دفق و شہوت کے نکلے اس سے وضو واجب ہوتا ہے غسل نہیں مگر احتلام کی نسبت اس کو کیا خبر کہ بغیر دفق و شہوت ہے احتیاطاً غسل کرے گا واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۱۹: از جنوبی افریقہ مقام بھوٹا بھوٹی برٹش پاسو ٹولینڈ مسئولہ حاجی اسمعیل میاں بن حاجی امیر میاں کاٹھیاواری۔ حضور نے فرمایا ہے کہ زانی کے ہاتھ کا ذبیحہ جائز ہے۔ اس پر زید کہتا ہے کہ کیسے جائز ہو، زانی پر غسل چالیس روز تک نہیں اترتا ہے۔ کیا زید کا قول سچا ہے اور زانی کا غسل اترتا ہے یا نہیں؟

الجواب: زید نے محض غلط کہا زانی کے ظاہرِ بدن کی طہارت اول ہی بار نہانے سے فوراً ہو جائے گی ہاں قلب کی طہارت توبہ سے ہوگی اس میں چالیس دن کی حد باندھنی غلط ہے چالیس

برس توبہ نہ کرے تو چالیس برس طہارتِ باطن نہ ہوگی۔ اور غسل نہ اترنے کو ذبیحہ ناجائز ہونے سے کیا علاقہ ! طہارت شرطِ ذبح نہیں، جب کے ہاتھ کا ذبیحہ بھی درست ہے بلکہ وہ جن کا غسل فی الواقع کبھی نہیں اترتا یعنی کافرانِ کتابی ان کے ہاتھ کا ذبیحہ سب کتابوں بلکہ خود قرآنِ عظیم میں حلال فرمایا ہے: طَعَامُ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْکِتٰبَ حِلٌّ لَّکُمْ -1 کتابیوں کے ہاتھ کا ذبیحہ تمہارے لئے حلال ہے۔

1 القرآن ۵/۵

Fatawa Razawiya Volume 4

And the ritual bath (Ghusl) of disbelievers is never valid because one obligatory act (Fard) of Ghusl is for every single part of the mouth to be washed up to the throat; the second obligatory act is for water to reach the entire soft part (bone) in both nostrils. Although the first might be fulfilled when they drink water carelessly with a full mouth, the second requires sniffing water up, which they absolutely do not do. In fact, today millions of ignorant Muslims are also heedless of this, due to which their Ghusl is incorrect and prayers are invalid, let alone the disbelievers. Imam Ibn Amir al-Hajj al-Halabi states in 'Hilyah':

Arabic Text

In 'Al-Muhit', Imam Muhammad explicitly stated in 'As-Siyar al-Kabir' and said: It is appropriate for a disbeliever when they embrace Islam to perform the Ghusl of Janaba (ritual impurity), because the polytheists do not perform Ghusl for Janaba nor do they know the method of Ghusl. (End of quote). In 'Al-Zakhira' it is mentioned: Among the polytheists are those who do not know about performing Ghusl for Janaba, and among them are those who do know, like the Quraish, for they inherited that from Ishmael, peace be upon him. Except that they do not know its method; they do not rinse their mouths (Madmadah) and they do not sniff water into their noses (Istinshaq), and these two are obligatory. Do you not see that the obligatoriness of rinsing the mouth and sniffing water into the nose is hidden from many scholars, so how about the disbelievers? Thus, the state of the disbelievers is as he (Imam Muhammad) indicated in the book: either they do not perform Ghusl for Janaba, or they do

Urdu Translation/Explanation

It is in 'Al-Muhit': "Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him) explicitly stated in 'Siyar al-Kabir' that when a disbeliever accepts Islam, they should perform the Ghusl of Janaba because polytheists do not perform the Ghusl of Janaba, nor do they know the method of Ghusl" (End quote). And in 'Az-Zakhira' it is mentioned that some polytheists have no knowledge of the Ghusl of Janaba, and some, like the disbelievers of Quraish, do know because they have been doing so from generation to generation from Prophet Ishmael (peace be upon him). But they do not know its method; they neither rinse their mouths nor sniff water into their noses, even though these two things are obligatory. Do you not see that the obligatoriness of rinsing the mouth and sniffing water into the nose is hidden from many people of knowledge, so what would be the state of its being hidden from the disbelievers? Therefore, the state of the

Arabic Text

perform it but do not know its method. Whichever is the case, they are commanded to perform Ghusl after Islam due to the remaining state of Janaba. From this, it becomes clear that what some of our masters mentioned—that Ghusl after Islam is recommended (Mustahabb)—refers to those who were not in a state of major ritual impurity (Junub). (End of summary)[1].

[1] Hilyah

Urdu Translation/Explanation

disbelievers is the same as pointed out by him (Imam Muhammad, may Allah Almighty have mercy on him) in the book (Siyar al-Kabir), that either they do not perform the Ghusl of Janaba at all, or they perform it but do not know its method. Whatever the case may be, in any case, after accepting Islam, they will be commanded to perform Ghusl because Janaba remains.

फतावा रज़विया, खंड 4

और काफ़िरों का गुसल (स्नान) कभी मान्य नहीं होता क्योंकि गुसल का एक फ़र्ज़ (अनिवार्य कार्य) पूरे मुँह के हर छोटे से छोटे हिस्से को गले तक धोना है, दूसरा फ़र्ज़ नाक के दोनों नथुनों में पूरे नरम हिस्से तक पानी पहुँचाना है। हालाँकि पहला तब अदा हो सकता है जब वे लापरवाही से मुँह भर कर पानी पिएँ, लेकिन दूसरे के लिए पानी को सूंघकर ऊपर चढ़ाना ज़रूरी है, जो वे बिल्कुल नहीं करते। बल्कि आज लाखों अज्ञानी मुसलमान भी इससे बेखबर हैं, जिसके कारण उनका गुसल गलत और नमाज़ें बातिल (अमान्य) हैं, फिर काफ़िरों की तो बात ही क्या। इमाम इब्न अमीर अल-हाज अल-हलबी 'हिल्या' में फरमाते हैं:

अरबी पाठ

'अल-मुहीत' में इमाम मुहम्मद ने 'सियर कबीर' में स्पष्ट रूप से कहा है: जब कोई काफ़िर इस्लाम स्वीकार करे तो उसे जनाबत (अशुद्धि) का गुसल करना चाहिए, क्योंकि मुशरिक (बहुदेववादी) जनाबत का गुसल नहीं करते और न ही गुसल का तरीका जानते हैं। (समाप्त)। और 'अज़-ज़खीरा' में है: मुशरिकों में वे भी हैं जो जनाबत के गुसल के बारे में नहीं जानते, और उनमें वे भी हैं जो जानते हैं, जैसे कुरैश, क्योंकि उन्होंने इसे हज़रत इस्माइल (अलैहिस्सलाम) से विरासत में पाया है। सिवाय इसके कि वे इसका तरीका नहीं जानते; वे न तो कुल्ली करते हैं और न ही नाक में पानी चढ़ाते हैं, जबकि ये दोनों फ़र्ज़ हैं। क्या आप नहीं देखते कि कुल्ली करने और नाक में पानी चढ़ाने की अनिवार्यता (फ़र्ज़ियत) बहुत से विद्वानों पर भी छिपी हुई है, तो काफ़िरों पर इसके छिपे रहने का क्या हाल होगा? इसलिए काफ़िरों का वही हाल है जिसकी ओर उन्होंने (इमाम मुहम्मद) किताब (सियर कबीर) में संकेत दिया है: या

उर्दू अनुवाद/व्याख्या

मुहीत में है: "इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) ने सियर कबीर में स्पष्ट किया है कि जब कोई काफ़िर इस्लाम स्वीकार करे तो उसे जनाबत का गुसल करना चाहिए क्योंकि मुशरिक जनाबत का गुसल नहीं करते और न ही गुसल का तरीका जानते हैं" (समाप्त)। और ज़खीरा में है कि कुछ मुशरिक जनाबत के गुसल का ज्ञान नहीं रखते और कुछ, जैसे कुरैश के काफ़िर, जानते हैं क्योंकि वे पीढ़ी-दर-पीढ़ी हज़रत इस्माइल (अलैहिस्सलाम) से ऐसा करते आए हैं। लेकिन वे इसका तरीका नहीं जानते; वे न कुल्ली करते हैं और न ही नाक में पानी चढ़ाते हैं, जबकि ये दोनों बातें फ़र्ज़ हैं। क्या आप नहीं देखते कि कुल्ली करने और नाक में पानी चढ़ाने की फ़र्ज़ियत बहुत से ज्ञानियों पर छिपी हुई है, तो काफ़िरों पर इसके छिपे रहने का क्या हाल होगा? इसलिए काफ़िरों का वही हाल है जिसकी ओर उन्होंने

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद/व्याख्या
तो वे जनाबत का गुसल करते ही नहीं, या वे गुसल तो करते हैं लेकिन उसका तरीका नहीं जानते। जो भी स्थिति हो, इस्लाम लाने के बाद उन्हें गुसल करने का आदेश दिया जाएगा क्योंकि जनाबत (अशुद्धि) बनी हुई है। इससे यह स्पष्ट होता है कि हमारे कुछ उस्तादों ने जो उल्लेख किया है कि इस्लाम लाने के बाद गुसल करना मुस्तहब (पसंदीदा) है, वह उनके लिए है जो जुनूब (बड़ी अशुद्धि की स्थिति में) नहीं थे। (संक्षिप्त समाप्त)[1]।	(इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह) किताब (सियर कबीर) में संकेत दिया है कि या तो वे जनाबत का गुसल करते ही नहीं या गुसल तो करते हैं लेकिन उसका तरीका नहीं जानते। जो भी बात हो, बहरहाल इस्लाम लाने के बाद उन्हें गुसल करने का आदेश दिया जाएगा क्योंकि जनाबत बाकी है।

[1] हिल्या

اور کفار کا کبھی غسل نہ اترنا اس لئے کہ غسل کا ایک فرض تمام دہن کے پرزے پرزے کا حلق تک دھل جانا ہے، دوسرا فرض ناک کے دونوں نتھنوں میں پورے نرم بانسے تک پانی چڑھنا اول اگرچہ ان سے ادا ہو جاتا ہو جبکہ بے تمیزی سے منہ بھر کر پانی پیئیں مگر دوم کے لئے پانی سونگھ کر چڑھانا درکار ہے جسے وہ قطعاً نہیں کرتے بلکہ آج لاکھوں جاہل مسلمان اس سے غافل ہیں جس کے سبب ان کا غسل نادرست اور نمازیں باطل ہیں نہ کہ کفار۔ امام ابن امیر الحاج حلبی حلیہ میں فرماتے ہیں:

عربی متن	اردو ترجمہ
في المحيط نص محمد في السير الكبير فقال و ينبغي للكافر اذا اسلم ان يغتسل غسل الجنابة لان المشركين لايغتسلون من الجنابة ولايدرون كيفية الغسل اهـ وفي الذخيرة من المشركين من لايدرى الاغتسال من الجنابة ومنهم من يدرى كقرشى فانهم توارثوا ذلك من اسمعيل عليه الصلوٰة والسلام الا انهم لايدرون كيفيته لايتمضمضون ولا يستنشقون وهما فرضان الا ترى ان فرضية المضمضة والاستنشاق خفيت على كثير من العلماء فكيف على الكفار فحال الكفار على ماشار اليه فى	محیط میں ہے: "امام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ نے سیر کبیر میں تصریح فرمائی ہے کہ کافر جب اسلام قبول کرے تو اسے غسل جنابت کرنا چاہئے کیونکہ مشرکین جنابت کا غسل نہیں کرتے اور نہ ہی غسل کا طریقہ جانتے ہیں" (انتھی)۔ اور ذخیرہ میں ہے کہ بعض مشرک غسل جنابت کا علم نہیں رکھتے اور بعض جیسے کفار قریش جانتے ہیں کیونکہ وہ حضرت اسمعیل علیہ السلام سے نسلاً بعد نسل ایسا کرتے آئے ہیں لیکن وہ اس کا طریقہ نہیں جانتے ہیں وہ نہ کلی کرتے ہیں نہ ناک میں پانی چڑھاتے ہیں حالانکہ یہ دونوں باتیں فرض ہیں۔ کیا تم نہیں دیکھتے

عربی متن	اردو ترجمہ
الكتاب اما ان لايغتسلوا من الجنابة اويغتسلون ولكن لايدرون كيفيته واى ذلك كان يؤمرون بالاغتسال بعد الاسلام لبقاء الجنابة وبه تبين ان ماذكر بعض مشايخنا ان الغسل بعد الاسلام مستحب فذلك فيمن لم يكن اجنب اهـ مختصراً 1۔	کہ کلی کرنے اور ناک میں پانی چڑھانے کی فرضیت بہت سے اہل علم پر مخفی ہے تو کفار پر اس کے پوشیدہ رہنے کا کیا حال ہو گا لہذا کفار کا وہی حال ہے جس کی طرف انہوں نے (امام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ نے) کتاب (سیر کبیر) میں اشارہ فرمایا کہ یا تو وہ غسل جنابت کرتے ہی نہیں یا غسل تو کرتے ہیں لیکن اس کا طریقہ نہیں جانتے۔ جو بھی بات ہو بہر حال اسلام لانے کے بعد ان کو غسل کرنے کا حکم دیا جائے گا کیونکہ جنابت باقی ہے

1 حلیہ

Fatawa Razawiyya, Volume 4

(Box top) From this it became apparent that the statement of some Mashaykh that it is recommended (mustahabb) to perform ghusl after embracing Islam, refers to a person who is not in a state of janabat (major ritual impurity). For example, someone who embraced Islam before reaching puberty. (Briefly) (T)

Yes, it is a different matter that slaughtering (zabh) without necessity should not be done while in a state of janabat, because slaughtering is an act of divine worship which requires specific respect. Furthermore, it involves tasmiyah (reciting Bismillah) and takbir which is remembrance of Allah, so performing it after purification is better, although there is no prohibition even now. In Dur-e-Mukhtar, it is stated:

"It is not disliked for a person in janabat to look at the Quran, just as it is not disliked to recite supplications, meaning it is not strictly prohibited (Makruh Tahrimi). Otherwise, performing wudu for any general remembrance (dhikr) is recommended, and omitting it is contrary to what is better. And Allah knows best."

Similarly to reciting supplications, looking at the Holy Quran is also not disliked for a person in janabat, where 'disliked' means strictly prohibited (Makruh Tahrimi); otherwise, performing wudu for any kind of remembrance is recommended and omitting it is contrary to what is better. And Allah knows best. (T)

Question 130 (Second): If Zaid performs ghusl for janabat or a nocturnal emission in a bathroom, and after performing wudu, he removes his loincloth and bathes, is the ghusl valid or not? Does it matter if the bathroom is covered or open from the top? What is the ruling in both cases?

Answer: Ghusl is valid by pouring water over the entire body, which includes rinsing the mouth up to the throat and the inside of the nose up to the cartilage. After that, however it is done, the ghusl will be completed. Yes, it is better not to be naked in an open bathroom, and if there are nearby tall buildings from where there is a possibility that someone might see, then wearing a loincloth is emphasized. The stronger the possibility of being seen, the more this emphasis increases, to the point that if it is highly probable that someone will see, wearing a loincloth becomes obligatory (wajib), and bathing naked there is a sin. And Allah the Almighty knows best.

1 Dur-e-Mukhtar, Book of Purification, printed by Mujtabai Delhi, 1/33 Page 327 of 761

फतावा रज़विया, जिल्द 4

(ऊपरी बॉक्स) इससे स्पष्ट हुआ कि कुछ मशायख का यह कहना कि इस्लाम लाने के बाद ग़ुस्ल करना मुस्तहब (पसंदीदा) है, उस व्यक्ति के बारे में है जो जुनुबी (नापाक) न हो। उदाहरण के लिए, जो परिपक्वता (बुलूग़) से पहले इस्लाम लाया। (संक्षेप में) (त)

हाँ, यह अलग बात है कि बिना ज़रूरत के जनाबत (नापाकी) की हालत में ज़बह नहीं करना चाहिए क्योंकि ज़बह अल्लाह की इबादत है जिससे उसकी विशेष गरिमा अभीष्ट है। फिर इसमें तस्मिया (बिस्मिल्लाह कहना) और तकबीर अल्लाह का ज़िक्र है, तो पवित्रता के बाद यह बेहतर है, हालाँकि अब भी कोई मनाही नहीं है। दुर-ए-मुख्तार में है:

"जुनुबी व्यक्ति के लिए क़ुरआन देखना मकरूह नहीं है, जैसा कि दुआएं पढ़ना मकरूह नहीं है, यानी मकरूहे तहरीमी नहीं है। अन्यथा, सामान्य ज़िक्र के लिए वुज़ू करना मुस्तहब है और इसे छोड़ना 'खिलाफ़-ए-औला' (बेहतर के विरुद्ध) है। और अल्लाह बेहतर जानता है।"

दुआएं पढ़ने की तरह, जुनुबी व्यक्ति के लिए पवित्र क़ुरआन को देखना भी मकरूह नहीं है, और यहाँ मकरूह से तात्पर्य मकरूहे तहरीमी (सख्ती से मना) है; अन्यथा किसी भी प्रकार के ज़िक्र के लिए वुज़ू करना मुस्तहब है और इसे छोड़ना बेहतर के विरुद्ध है। और अल्लाह बेहतर जानता है। (त)

प्रश्न 130 (दूसरा): यदि ज़ैद ग़ुस्लखाने में जनाबत या एहतलाम (स्वप्नदोष) का ग़ुस्ल करता है और वुज़ू करने के बाद तहबंद (लुंगी) हटाकर ग़ुस्ल करे तो ग़ुस्ल होता है या नहीं? ग़ुस्लखाना ऊपर से बंद हो या खुला, दोनों स्थितियों में क्या हुक्म है?

उत्तर: पूरे शरीर पर पानी बहने से ग़ुस्ल हो जाता है, जिसमें गले तक मुँह और नाक की हड्डी के किनारों तक अंदर से नाक की सफाई भी शामिल है। इसके बाद जैसे भी हो, ग़ुस्ल हो जाएगा। हाँ, खुले ग़ुस्लखाने में नंगा न होना बेहतर है और यदि वहाँ पास में ऊँचे मकान हों जिससे यह संभावना हो कि किसी की नज़र पड़ेगी, तो वहाँ तहबंद रखने पर ज़ोर दिया गया है। नज़र पड़ने की संभावना जितनी प्रबल होगी, यह ताकीद (ज़ोर) उतनी ही बढ़ती जाएगी, यहाँ तक कि यदि नज़र पड़ने का प्रबल अनुमान हो तो तहबंद रखना वाजिब (अनिवार्य) होगा और वहाँ नंगा नहाना गुनाह है। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।

1 दुर-ए-मुख्तार, किताबुत तहारत, मुज्तबाई दिल्ली द्वारा मुद्रित, 1/33 पेज 327 का 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

اس سے ظاہر ہوا کہ بعض مشائخ کا یہ کہنا کہ اسلام لانے کے بعد غسل کرنا مستحب ہے۔ اس شخص کے بارے میں ہے جو جنبی نہ ہو اھ مثلاً بلوغ سے پہلے اسلام لے آیا (مختصراً) (ت)

ہاں یہ اور بات ہے کہ بحال جنابت بلا ضرورت ذبح نہ چاہئے کہ ذبح عبادت الٰہی ہے جس سے خاص اس کی تعظیم چاہی جاتی ہے پھر اس میں تسمیہ و تکبیر ذکر الٰہی ہے تو بعد طہارت اولی ہے اگرچہ ممانعت اب بھی نہیں۔ دُرِ مختار میں ہے: لایکرہ النظر الی القرآن لجنب کما لا تکرہ ادعیۃ ای تحریماً والا فالوضوء لمطلق الذکر مندوب وترکہ خلاف الاولی ۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

جنبی کے لئے دعائیں پڑھنے کی طرح قرآن پاک کو دیکھنا بھی مکروہ نہیں اور اس سے مکروہ تحریمی مراد ہے ورنہ مطلق ذکر کے لئے وضو کرنا مستحب ہے اور اس کا چھوڑنا خلافِ اولٰی ہے۔ اور اللہ تعالٰی بہتر جانتا ہے (ت)

سوال ۱۳۰ دوم: اگر زید غسل خانہ میں غسل جنابت یا احتلام کا کرتا ہے اور وضو کرکے تہبند نکال کر غسل کرے تو غسل اُترتا ہے یا نہیں، غسل خانہ اوپر سے بند ہو یا کھلا، دونوں صورتوں میں کیا حکم ہے؟ الجواب: سارے بدن پر پانی بہنے سے غسل اُترتا ہے جس میں حلق تک منہ اور ہڈی کے کناروں تک اندر سے ناک کا بانسہ بھی داخل ہے اس کے بعد جیسے بھی ہو غسل اُتر جائے گا، ہاں کھلے غسل خانے میں ننگا نہ ہونا بہتر ہے اور اگر وہاں قریب بلند مکان ہوں جس سے احتمال ہو کہ کسی کی نظر پڑے گی تو وہاں تہبند رکھنے کی تاکید ہے۔ وہ احتمالِ نظر جتنا قوی ہوگا اتنی ہی یہ تاکید بڑھتی جائے گی یہاں تک کہ اگر نظر پڑنے کا ظن غالب ہوگا تہبند رکھنا واجب ہوگا اور وہاں برہنہ نہانا گناہ واللہ تعالی اعلم

Fatawa-e-Razvia Volume Four

Supplement to the Chapter on Waters

Question 121: From Polul Molul post office Hairun, district Darbhanga, Belgram Charan, sent by Abdul Hakeem Sahib, 21 Jumada al-Ula 1336 AH. The scholars of these parts say that performing ablution (wudu) with leftover water from Hindus is correct. We have a doubt about this; please clear this doubt. The Answer: Hindus aside, even if a Muslim without ablution (wudu) drinks from, for example, a bowl or vessel by putting his mouth to it, then with that water...

Page 328 of 761

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द चौथी

जैल बाबुल मियाह (पानी के अध्याय का परिशिष्ट)

मसला १२१: पोलुल मोलुल डाकखाना हीरों, ज़िला दरभंगा, बेलग्राम चरण से अब्दुल हकीम साहब द्वारा प्रेषित, २१ जमादी-उल-उला १३३६ हिजरी। इन क्षेत्रों के मौलवी कहते हैं कि हिंदुओं के जूठे पानी से वज़ू दुरुस्त (सही) है। हमें इस पर संदेह है, कृपया इस संदेह को दूर करें। अल-जवाब (उत्तर): हिंदू तो हिंदू, यदि कोई बे-वज़ू (बिना वज़ू वाला) मुसलमान भी उदाहरण के तौर पर किसी कटोरे या पात्र से मुँह लगाकर पिएगा, तो उस पानी से...

पृष्ठ ३२८ का ७६१

فتاویٰ رضویہ جلد چہارم

ذیل باب المیاہ

مسئلہ ۱۲۱ : از پولول مولول ڈاک خانہ ہیروں ضلع در بھنگہ بیلگرام چرن مرسلہ عبدالکیم صاحب ۲۱ جمادی الاولی ۱۳۳۶ھ ان اطراف کے مولوی کہتے ہیں کہ ہندوؤں کے جھوٹے پانی سے وضو درست ہے۔ اس پر ہم کو شک ہے اس شک کو رفع کیجئے ۔ الجواب: ہندو تو ہندو بے وضو مسلمان بھی مثلاً جس کٹورے یا بادیے سے منہ لگا کر پیئے گا اس پانی سے

Fatawa Razawiyya Volume Four

Ablution (Wudu) will not be valid unless that water is small in quantity and is mixed with good water that is more than it. Even then, one should avoid the leftovers of a non-believer. It is mentioned in the Hadith that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Avoid that which is unpleasant to the ear (religiously)." Yes, if no water other than this is available and it is not proven to be impure (najis) or used (must'amal), then out of necessity, one will have to perform Wudu with it. Stating such issues in a general manner is not for the well-being of Muslims. And Allah knows best.

Issue 122: From Post Office Ramu Chakmakol, District Chittagong, Madrasa Aziziyah, sent by Sayyid Muhammad Mufeez-ur-Rahman Sahab, 9 Jumada al-Akhira 1336 AH. If a pond (hawz) is ten by ten (dah dar dah) or larger, but due to drying in summer, the water has become less than ten by ten, now if some impurity falls into the pond, provided that none of the three qualities change, will that water be pure (paak) or impure (na-paak)?

Answer: Even if the pond was a thousand by a thousand, as long as the water in it is currently less than ten by ten, a single particle of impurity will make it impure, even if no quality changes. And Allah knows best.

Issue 123: Village Beytee, Post Office and District Gaya, questioned by Janab Altaf Ashraf Sahab, 3 Muharram-ul-Haram 1337 AH. (1) What should be the depth, width, and length for 'dah dar dah'? (2) Does the ruling of 'dah dar dah' remain applicable or not? If it does, for what reason? And if it doesn't, for what reason? (3) To the west of this village, there is a ditch which people call a pond (pokhar). It is situated in front of the gate of a person's house adjacent to the settlement. Its map is as follows: there is a small drain to the east of the ditch...

---

1 Musnad Ahmad ibn Hanbal, on the authority of Abu al-Ghadhiya, Al-Maktabah al-Islamiyyah Beirut, 4/6. Page 329 of 761

फतावा रजविया जिल्द चौथी

वज़ू जायज़ नहीं रहेगा मगर यह कि वह पानी थोड़ा हो और उसे अच्छे पानी में जो उससे अधिक हो, मिला दिया जाए, फिर भी काफ़िर के जूठे से परहेज़ करना चाहिए। हदीस में है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: "ऐयाका व मा यसूउल उज़ुन" (जिस बात का सुनना (शरअन) नागवार हो उससे बचो)। हाँ, अगर इसके सिवा और पानी न मिले और उसका नापाक या मुस्तअमल होना साबित न हो तो मजबूरी में आपको उसी से वज़ू करना होगा। ऐसे मसलों को यूँ सामान्य तौर पर बयान करना मुसलमानों की ख़ैरख़्वाही नहीं है। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

मसला १२२: डाकखाना रामू चकमाकोल जिला चटगाँव मदरसा अज़ीज़िया मुर्सला सय्यद मोहम्मद मफ़ीज़ुर रहमान साहब ९ जुमादल आख़िरा १३३६ हिजरी। जो हौज़ 'दह दर दह' (दस गुणा दस) या उससे बड़ा हो मगर गर्मी के मौसम में सूखने के कारण पानी 'दह दर दह' से कम हो गया, अब अगर हौज़ में कोई नजासत (गंदगी) गिर जाए बशर्ते कि तीनों गुणों (रंग, स्वाद, गंध) में से कोई गुण न बदले, तो वह पानी पाक होगा या नापाक?

जवाब: हौज़ चाहे हज़ार दर हज़ार हो, जब तक उसमें पानी इस समय 'दह दर दह' से कम है, एक ज़र्रा नजासत उसे नापाक कर देगी चाहे कोई गुण न बदले। वल्लाहु तआला आलम।

मसला १२३: मौज़अ बेती, डाकखाना व ज़िला गया, मसऊला जनाब अल्ताफ़ अशरफ़ साहब ३ मुहर्रमुल हराम १३३७ हिजरी। (१) 'दह दर दह' की गहराई, चौड़ाई और लम्बाई कितनी होनी लाज़िम है? (२) 'दह दर दह' का हुक्म जारी रहता है या नहीं? और रहता है तो किस वजह से और नहीं रहता है तो किस वजह से? (३) इस मौज़अ (गाँव) के पश्चिम की ओर एक गढ़ी है जिसे लोग पोखर कहा करते हैं, बस्ती के पास एक व्यक्ति के दरवाज़े के सामने स्थित है जिसका नक्शा नीचे के अनुसार है: गढ़ी के पूर्व की ओर एक छोटा नाला है...

---

१ मुसनद अहमद बिन हनबल, अबी अल-ग़ादिया से, अल-मकतबतुल इस्लामिया बेरूत ६/४। पृष्ठ ३२९ का ७६१

فتاوی رضویہ جلد چھارم

وضو جائز نہ رہے گا مگر یہ کہ وہ پانی تھوڑا ہو اور اُسے اچھے پانی میں کہ اس سے زائد ہے ملاد یا جائے پھر بھی کافر کے جھوٹے سے احتراز چاہئے۔ حدیث میں ہے نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں : ایاك ومایسوء الاذن (جس بات کا سننا (شرعاً) ناگوار ہو اس سے بچو۔ ت) ہاں اگر اس کے سوا اور پانی نہ ملے اور اس کا نجس یا مستعمل ہونا ثابت نہ ہو تو بضرورت آپ ہی اُس سے وضو کرنا ہوگا ایسے مسائل یوں اطلاق کے طور بیان کرنا مسلمانوں کی خیر خواہی نہیں ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۲۲: از ڈاکخانہ رامو چکماکول ضلع چٹاگانگ مدرسہ عزیز یہ مرسلہ سید محمد مفیض الرحمن صاحب ۹۔ جمادی الاخرہ ۱۳۳۶ھ جو حوض دہ در دہ یا اس سے بڑا ہو مگر موسم گرما میں خشک ہونے کے باعث پانی دہ در دہ سے کم ہو گیا اب اگر حوض میں کوئی نجاست گر جائے بشرطیکہ اوصافِ ثلاثہ میں سے کوئی وصف متغیر نہ ہو وہ پانی پاک ہوگا یا ناپاک؟

الجواب: حوض اگر چہ ہزار در ہزار ہو جبکہ اس وقت اس میں پانی دہ در دہ سے کم ہے ایک ذرہ نجاست اسے ناپاک کر دے گا اگرچہ کوئی وصف نہ بدلے واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۲۳: موضع بیتےوڈاک خانہ وضلع گیا مسئولہ جناب الطاف اشرف صاحب ۳ محرم الحرام ۱۳۳۷ھ (۱) دہ در دہ کے عمق و عرض و طول کا کس قدر ہونا لازم ہے۔ (۲) دہ در دہ حکم جاری کار کھتا ہے یا نہیں اور رکھتا ہے تو کس وجہ کر اور نہیں رکھتا ہے تو کس وجہ کر۔ (۳) اس موضع کے جانب غرب ایک گڈھی ہے جس کو لوگ پوکھر کہا کرتے ہیں متصل بستی کے پیش

دروازہ ایک شخص کے واقع ہے جس کا نقشہ حسب ذیل ہے گڈھی کے جانب شرق ایک چھوٹا نالہ ہے

---

1 مسند احمد بن حنبل عن ابی الغادیۃ المکتبۃ الاسلامی بیروت ۶/۴ Page 329 of 761

...is from the well-known bridge. This stream always remains dry; when it is the rainy season, or whenever there is rainwater, all kinds of impure water from the entire settlement falls into the aforementioned pond (gadhi) through this stream. During the dry season, when this pond dries up, low-class people use it for urination and defecation, and there is constant urination and defecation all around its banks. When it contains water, washermen wash clothes in it, and low-class people perform ablutions after answering the call of nature, and their women wash all kinds of impure clothes, and people also throw dirty and impure items into it.

And occasionally, especially during the rainy season when it rains excessively, water flows out from a corner of that pond through a level channel into the fields. When the water level is up to the edges of the pond, it remains safe from overflow. Whenever the water in that pond decreases and it rains moderately, in that state, all the impure water from the entire settlement, via the aforementioned stream and streets, and filth from all four sides, falls and mixes in with the rainwater, and the water from this pond does not flow out from any side. Is the water of this pond usable or not? If it is, for what reason? And if not, for what reason?

(4) Can this pond be counted as 'Dah dar Dah' (ten by ten) or not? (5) In 'Dah dar Dah', are there conditions regarding color, smell, and taste or not? If so, why? And if not, why? (6) Is there also a disagreement regarding the depth, width, and length of 'Dah dar Dah'? If it is a matter of disagreement, on which narration is the majority's opinion based? (7) Will the issue of natural aversion (ikrah-e-tab'i) be applicable to the water of this pond or not? (8) Its water is sixty cubits on the south side, sixty cubits on the north side, fifty cubits on the east side, and 100 cubits on the west side, with varying depths in the middle of the pond, where the water is waist-deep in some places and less than waist-deep in others.

(See the map of the pond on the next page)

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

...मशहूर पुल से है। यह नाला हमेशा सूखा रहता है; जब बरसात का मौसम होता है, तो हमेशा या जब बारिश का पानी होता है, तो इस नाले से पूरी बस्ती का हर प्रकार का अशुद्ध पानी उक्त गढ़ी (तालाब) में गिरता है। सूखे के समय में, जब यह गढ़ी सूख जाती है, तो नीच लोग इसमें मलमूत्र त्याग करते हैं, और इस गढ़ी के चारों ओर किनारों पर हमेशा मलमूत्र होता रहता है। जब इसमें पानी होता है, तो धोबी कपड़े धोते हैं, और नीच लोग शौच के बाद शुद्धि करते हैं, और उनकी औरतें हर प्रकार के अशुद्ध कपड़े धोती हैं, और लोग इसमें गंदी और अशुद्ध चीज़ें भी फेंकते हैं।

और समय-समय पर, विशेष रूप से बरसात के मौसम में जब अत्यधिक बारिश होती है, तब एक कोने से उस गढ़ी की समतल नाली से खेतों में होकर पानी निकलता है। जब पानी गढ़ी के किनारों तक भरा रहता है, तो वह बाहर निकलने से सुरक्षित रहता है। जब भी उस गढ़ी में पानी कम होता है और कुछ बारिश होती है, तो उस स्थिति में पूरी बस्ती का अशुद्ध पानी उक्त नाले और गलियों के माध्यम से और चारों ओर की गंदगी बारिश के पानी के साथ मिलकर इसमें गिर जाती है, और इस गढ़ी का पानी किसी भी तरफ से बाहर नहीं निकलता। क्या इस गढ़ी का पानी उपयोग के योग्य है या नहीं? यदि है, तो किस कारण से? और यदि नहीं है, तो किस कारण से?

(४) क्या इस गढ़ी को 'दह दर दह' (दस गुणा दस) में गिना जा सकता है या नहीं? (५) क्या 'दह दर दह' में रंग, गंध और स्वाद की शर्तें हैं या नहीं? यदि हैं, तो किस कारण से? और यदि नहीं हैं, तो किस कारण से? (६) क्या 'दह दर दह' की गहराई, चौड़ाई और लंबाई में भी मतभेद है या नहीं? यदि मतभेद है, तो बहुमत की राय किस रिवायत (वर्णन) पर आधारित है? (७) क्या स्वाभाविक घृणा (इक़राह-ए-तबई) का मसला इस गढ़ी के पानी पर लागू होगा या नहीं? (८) जिसका पानी दक्षिण की ओर साठ हाथ, उत्तर की ओर साठ हाथ, पूर्व की ओर पचास हाथ और पश्चिम की ओर १०० हाथ है और गढ़ी के बीच में गहराई अलग-अलग है, जहाँ पानी कहीं कमर तक और कहीं कमर से कम है।

(गढ़ी का मानचित्र अगले पृष्ठ पर देखें)

I.T. मजलिस-ए-दावत-ए-इस्लामी पृष्ठ ३३०/७६१

معروف پل سے ہے۔ یہ نالہ ہمیشہ خشک رہتا ہے جب زمانہ برسات کا ہوتا ہے تو ہمیشہ یا جب آب باراں ہوتا ہے تو اس نالہ سے تمام بستی کا پانی ہر اقسام کا ناطاہر گڑھی مذکور میں گرا کرتا ہے اور زمانہ خشکی میں جب یہ گڑھی خشک ہوتی ہے تو لوگ کمینہ اس میں بول و براز کیا کرتے ہیں اور اس گڑھی کے کنارے میں ہر چہار جانب ہمیشہ بول و براز ہوا کرتا ہے اور جب اس میں پانی رہتا ہے تو دھوبی کپڑا بھی دھوتا ہے اور کمینا یان آب دست بھی کیا کرتے ہیں اور کمینا یان کی عورتیں کپڑے ناطاہر ہر اقسام کے دھوتی ہیں اور گندی و ناطاہر چیزیں بھی اُس میں لوگ پھینکا کرتے ہیں۔

اور زمانہ میں شاید باید کمتر خصوصاً زمانہ برسات میں جب پانی بے حساب زیادہ برستا ہے تب گوشہ سے اُس گڑھی کے ہمواره نالی سے کھیتوں میں ہو کر پانی نکلتا ہے جب گڑھی کے کناروں تک برابر پانی رہتا ہے تو پانی نکلنے سے محفوظ رہتا ہے اور جب کبھی اُس گڑھی میں پانی کم ہو جاتا ہے اور جب کچھ پانی انداز کار برستا ہے تو اُس حالت میں تمامی بستی کا پانی ناطاہر بذریعہ نالہ مذکور و بذریعہ گلیاں اور ہر چہار جانب کی غلاظت بذریعہ آب باراں کے گر کر مل جاتے ہیں اور کسی طرف سے اس گڑھی کا پانی نہیں نکلتا ہے اس گڑھی کا پانی قابل استعمال کے ہے یا نہیں اور ہے تو کس وجہ کر اور نہیں ہے تو کس وجہ کر۔

(۴) یہ گڑھی دہ در دہ میں شمار کیا جاسکتا ہے یا نہیں۔ (۵) دہ در دہ میں شرائط رنگ و بو و ذائقہ کا ہے یا نہیں۔ ہے تو کس وجہ کر اور نہیں ہے تو کس وجہ کر۔ (۶) دہ در دہ کے عمق و عرض و طول میں بھی اختلاف ہے یا نہیں۔ اگر مختلف فیہ ہے تو جمہور کی رائے کس روایت پر ہے۔ (۷) مسئلہ اکراہ طبعی اس گڑھی کے پانی پر محمول ہوگا یا نہیں۔ (۸) جس کا آب جانب جنوب ساٹھ ہاتھ

و جانب شمال ساٹھ ہاتھ و جانب شرق پچاس ہاتھ و جانب غرب ۱۰۰ اہاتھ و عمق اختلافیہ درمیان گڑھی تیراتا پانی بعض جگہ کمر تک بعض جگہ کمر سے کم۔

(نقشہ گڑھی اگلے صفحہ پر ملاحظہ ہو)

Fatawa Rizvia Volume 4

[Text inside the diagram map] North Settlement of inhabited houses Main street road Houses Houses of inhabited settlement Main street road Large area Old station Houses of inhabited settlement Old station ground, main road Settlement of Baqili Garden Old station South Western side Eastern side

The Answer: (1) To be ten by ten, the width and length should be such that their product is one hundred hands (cubits), and the depth should be such that if water is taken with cupped hands, the ground (bottom) should not be revealed. (2) Ten by ten is the current ruling, and the reason for it is the estimation of the Imams that they prescribed this measure for 'Ma-e-Kaseer' (abundant water), as we have explained in our Fatawa. (As we have described in our fatwas. -T)

Page 331 of 761

फ़तावा रज़विया खंड 4

[मानचित्र के अंदर का पाठ] उत्तर बस्ती मकान आबाद गली शाह राह मकान मकान बस्ती आबाद गली शाह राह बड़ी जगह पुराना स्टेशन मकान बस्ती आबाद मैदान पुराना स्टेशन शाह राह बस्ती बाक़ली बाग पुराना स्टेशन दक्षिण पश्चिमी दिशा पूर्वी दिशा

उत्तर: (१) दस गुना दस होने के लिए चौड़ाई और लंबाई इतनी होनी चाहिए जिसका गुणनफल सौ हाथ हो और गहराई इतनी कि अंजलि (दोनों हाथों को सटाकर बनाया गया पात्र) से पानी लें तो जमीन न खुले। (२) दस गुना दस प्रचलित आदेश है और इसका कारण इमामों का अनुमान है कि उन्होंने 'मा-ए-कसीर' (प्रचुर जल) के लिए यह माप निर्धारित किया है, जैसा कि हमने अपने फ़तावा में स्पष्ट किया है। (जैसे हमने अपने फ़तावा में बयान किया है। -त)

पृष्ठ 331 का 761

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم

[نقشہ کے اندر کی عبارت] شمال بستی مکانات آباد گلی شاہ راہ مکانات مکانات بستی آباد گلی شاہ راہ بڑی جگہ پرانا اسٹیشن مکانات بستی آباد میدان پرانا اسٹیشن شاہ راہ بستی باقلی باغ پرانا اسٹیشن جنوب مغربی سمت مشرقی سمت

الجواب: (۱) دہ در دہ ہونے کو عرض و طول اتنا چاہئے جن کا حاصل ضرب سو ہاتھ ہو اور عمق اتنا کہ لپ سے پانی لیں تو زمین نہ کھلے۔ (۲) دہ در دہ حکم جاری میں ہے اور اس کی وجہ اندازہ ائمہ کہ مائے کثیر کی یہ تقدیر فرمائی کما بیناہ فی فتاونا (جیسے ہم نے اپنے فتاوٰی میں بیان کیا ہے۔ت)

صفحہ 331 از 761

Fatawa Razawiyyah Volume 4

It is stated in Radd al-Muhtar:

[Box Content - Right Side (Translation)] Some commentators have narrated from Shaykh al-Islam Al-Allamah Sa'd al-Din al-Dayri that in his treatise "al-Qawl al-Raqi fi Hukm al-Fussaq," he proved correct the chosen position of the authors of primary texts regarding the consideration of "Dah dar Dah" (ten by ten cubits) and cited about a hundred authentic narrations in its support. It should not remain hidden that those among the later scholars, such as the author of al-Hidayah, Qadi Khan, and others from the people of preference (Ahl al-Tarjih), who gave a fatwa (for ten yards from each side), possess more knowledge of the Madhhab than we do; therefore, following them is necessary for us... etc. (T)

[Box Content - Left Side (Original Arabic)] ذكر بعض المحشين عن شيخ الاسلام العلامة سعد الدين الديري في رسالته القول الراقي انه حقق فيها ما اختاره اصحاب المتون من اعتبار العشر و اورد نحومائة نقل ناطقة بالصواب ولا يخفى ان الذين افتوا بالعشر كصاحب الهداية وقاضي خان و غيرهما من اهل الترجيح هم اعلم بالمذهب منا فعلينا اتباعهم --- الخ۔

(3) As long as rainwater is flowing, even if impure water or other impurities mix with it, it will not become impure until its color, taste, or smell changes due to the impurity. 'Inna al-ma'a tahurun la yunajjisuhu shay'un ma lam yataghayyar ahadu awsafihi'[2] (Indeed, water is pure; nothing makes it impure unless one of its qualities changes. - T). Thus, as long as rainwater reached the edges of the pit while flowing and none of its qualities were changed by the impurity, it is pure, even if water from impure drains, etc., is mixed in it, and even if impurities are lying on the edges of the pit. This was one situation. The second situation is regarding its entry into the pit; if at that time there is no visible impurity, and only the water of impure drains has flowed along with it, and none of its qualities changed by them, and until it spread to the extent of ten by ten cubits, it did not mix with any impurity inside the pit, then even if it meets impurities further ahead, this water inside will remain pure. It also purified the impure water that had flowed with it, for 'fa inna al-ma'a al-jari yatharu ba'duhu ba'dan'[3] (for some of the flowing water purifies other parts of it).

1. Radd al-Muhtar, Chapter of Waters, printed by Mustafa al-Babi, Egypt, 1/141
2. Radd al-Muhtar, Chapter of Waters, printed by Mustafa al-Babi, Egypt, 1/33
3. Radd al-Muhtar, Chapter of Waters, printed by Mustafa al-Babi, Egypt, 1/120

रद्द अल-मुह्तार में है:

[बॉक्स सामग्री - दायां हिस्सा (अनुवाद)] कुछ टीकाकारों ने शैख अल-इस्लाम अल-अल्लामा साद अल-दीन अल-दैरी से उद्धृत किया है कि उन्होंने अपनी पुस्तक "अल-क़ौल अल-राक़ी फी हुक्म अल-फुस्साक़" में 'दह दर दह' (दस गुणा दस) के विचार के संबंध में मूल ग्रंथों के लेखकों की चुनी हुई बात को सही साबित करते हुए (इसके समर्थन में) लगभग सौ सही उद्धरण दिए हैं। यह छिपा नहीं रहना चाहिए कि परवर्ती विद्वानों में से जिन्होंने, जैसे हिदाया के लेखक, काजी खान और अन्य जो तरजीह देने वालों (अहल अल-तरजीह) में से हैं, (हर तरफ से दस गज का) फतवा दिया है, वे हमसे अधिक मज़हब का ज्ञान रखते हैं; इसलिए हमारे लिए उनका अनुसरण करना आवश्यक है... आदि। (त)

[बॉक्स सामग्री - बायां हिस्सा (मूल अरबी)] ذكر بعض المحشين عن شيخ الاسلام العلامة سعد الدين الديري في رسالته القول الراقي انه حقق فيها ما اختاره اصحاب المتون من اعتبار العشر و اورد نحومائة نقل ناطقة بالصواب ولا يخفى ان الذين افتوا بالعشر كصاحب الهداية وقاضي خان و غيرهما من اهل الترجيح هم اعلم بالمذهب منا فعلينا اتباعهم --- الخ۔

(3) जब तक बारिश का पानी बह रहा है, भले ही उसमें अशुद्ध पानी या अन्य अशुद्धियां मिल जाएं वह तब तक अशुद्ध नहीं होगा जब तक कि उसका रंग, स्वाद या गंध अशुद्धि के कारण न बदल जाए। 'फ़ान्न अल-माअ तहूरुल ला युनज्जिसुहु शयउन मा लम यतग़य्यर अहादु औसाफ़िही'[2] (बेशक पानी शुद्ध है; कोई भी चीज़ उसे तब तक अशुद्ध नहीं करती जब तक कि उसके गुणों में से कोई एक अशुद्धि के कारण न बदल जाए। - त)। तो जब तक बारिश का पानी बहते हुए उस गड्ढे के किनारों तक आया और अशुद्धि के कारण उसका कोई गुण नहीं बदला, तो वह शुद्ध है, भले ही उसमें अशुद्ध नालियों का पानी आदि शामिल हो, भले ही गड्ढे के किनारे पर अशुद्धियां पड़ी हों। यह एक स्थिति थी। दूसरी स्थिति उस पानी के गड्ढे में प्रवेश करने की है; उस समय यदि उसमें कोई दृश्य अशुद्धि नहीं है, केवल अशुद्ध नालियों का पानी उसके साथ बहकर आया है और उनसे उसका कोई गुण नहीं बदला, और 'दह दर दह' के विस्तार में फैलने तक वह गड्ढे के अंदर किसी अशुद्धि से नहीं मिला, तो भले ही आगे बढ़कर अशुद्धियों से मिले, गड्ढे के अंदर यह पानी शुद्ध ही रहेगा। उसने उस अशुद्ध पानी को

भी शुद्ध कर दिया जो उसके साथ बहकर आया था, क्योंकि 'फ़ान्न अल-माअ अल-जारी युतहिरु बज़ुहु बज़न'[3] (क्योंकि बहते हुए पानी का एक हिस्सा दूसरे हिस्से को शुद्ध कर देता है)।

1. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-मियाह, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र द्वारा मुद्रित 1/141
2. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-मियाह, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र द्वारा मुद्रित 1/33
3. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-मियाह, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र द्वारा मुद्रित 1/120

فتاوی رضویہ جلد چہارم

ردالمحتار میں ہے:

[باکس کا متن - بائیں جانب (عربی)] ذکر بعض المحشین عن شیخ الاسلام العلامة سعد الدین الدیري في رسالته القول الراقي انه حقق فیها ما اختاره اصحاب المتون من اعتبار العشر و اورد نحومائة نقل ناطقة بالصواب ولا یخفی ان الذین افتوا بالعشر کصاحب الهدایة وقاضي خان و غیرهما من اهل الترجیح هم اعلم بالمذهب منا فعلینا اتباعهم --- الخ۔

[باکس کا متن - دائیں جانب (اردو)] بعض حاشیہ نگاروں نے شیخ الاسلام علامہ سعد الدین دیری سے نقل کیا، انہوں نے اپنے رسالہ "القول الراقی فی حکم الفساق" میں دہ در دہ کے اعتبار میں اصحاب متون کی مختار بات کو صحیح ثابت کرتے ہوئے (اس کی تائید میں) تقریباً ایک سو صحیح اقوال نقل کئے ہیں۔ مخفی نہ رہے کہ متاخرین مثلاً صاحب ہدایت اور قاضیخان نے جو (ہر طرف سے دس گز کا) فتویٰ تو وہ لوگ اہل ترجیح میں سے ہیں مذہب کا علم ہم سے زیادہ رکھتے ہیں لہٰذا ہم پر ان کی اتباع ضروری ہے الخ (ت)

(۳) مینہ کا پانی جب تک بہہ رہا ہے اگرچہ اس میں نجس پانی یا اور نجاستیں ملیں ناپاک نہ ہوگا جب تک اس کا رنگ یا مزہ یا بو نجاست کے سبب نہ بدلے فان الماء طهور لا ینجسه شیئ مالم یتغیر احد اوصافه[2] (بے شک پانی پاک ہے اسے کوئی چیز ناپاک نہیں کرتی جب تک اس کا کوئی وصف نجاست کی وجہ سے نہ بدلے۔ ت) تو بارش کا پانی جب تک بہتا ہوا اس گڑھے کے کناروں تک آیا اور اس کا کوئی وصف نجاست نے نہ بدلا تو پاک ہے اگرچہ اس میں ناپاک نالیوں کے پانی وغیرہ شامل ہوں اگرچہ گڑھے کے کنارے پر نجاستیں پڑی ہوں۔ ایک حالت تو یہ تھی، دوسری حالت اُس

پانی کے گڑھے میں داخل ہونے کی ہے اس وقت اگر اس میں کوئی نجاست مرئیہ نہیں صرف ناپاک نالیوں کے پانی اس کے ساتھ بہہ کر آئے ہیں اور اُن سے اس کا کوئی وصف نہ بدلا اور وہ دہ در دہ کی مساحت میں پھیلنے تک گڑھی کے اندر بھی کسی نجاست سے نہ ملا اگرچہ آگے بڑھ کر نجاستوں سے ملے تو اندر بھی یہ پانی پاک ہی رہے گا وہ ناپاک پانی جو اُس کے ساتھ بہہ کر آئے تھے ان کو بھی اس نے پاک کر دیا فان الماء الجاری یطھر بعضہ بعضاً[3] (جاری پانی کا بعض (اس کے) دوسرے بعض کو پاک (کر دیتا ہے)۔

1 ردالمحتار باب المیاہ مطبوعہ مصطفیٰ البابی مصر ۱/ ۱۴۱ 2 ردالمحتار باب المیاہ مطبوعہ مصطفیٰ البابی مصر ۱/ ۳۳ 3 ردالمحتار باب المیاہ مطبوعہ مصطفیٰ البابی مصر ۱/ ۱۲۰

صفحہ 332 کا 761

Volume Four Fatawa Rizvia ...renders it. (T) And now this water will never become impure, no matter how many impurities are inside the pit and no matter how many impurities are thrown or washed from above, as long as any of its characteristics (color, taste, smell) do not change specifically due to that impurity, whether it overflows from the pit or remains stationary. And if at the time of entering the pit, there was visible impurity in it, or one of its characteristics had changed due to impurity, or it mixed with some impurity inside the pit before spreading over an area of ten-by-ten (dah-dar-dah), then this water is impure. All water of this kind that continues to come in will be impure, even if the entire pit is filled. However, if there was already ten-by-ten pure water in the pit and this [incoming water] now mixes with it and becomes pure, it will remain pure as long as the impurity does not change its characteristics. Or, for instance, if pure rainwater comes and washes it away, making it overflow out of the pit, then it will become pure and will remain pure even after settling, even if impurities from a drain etc. later join it, as long as the impurity does not change any of its characteristics. And if, for example, rainwater flows from two sides into the pit; on one side, there were impurities before it reached the ten-by-ten area or visible impurity was present in that flowing water itself, so it became impure upon entering the pit, while the water from the other side did not carry any visible impurity and remained pure without meeting any impurity before becoming ten-by-ten; now these two waters have mixed, so the water from the impure side also becomes pure, "Because it is under the ruling of flowing water" (1). In this way, if pure and impure water mix to fill the pit, it is all pure; and if it doesn't fill, it is all pure as long as the impurity does not change its characteristics. (8) 4 This pit is much larger than ten-by-ten, as 400 hands [length-area measure] are required for that, while this is thousands of hands. (5) If the color, smell, or taste of ten-by-ten water changes due to the addition of impurity, it will certainly become impure. But if these three characteristics change due to the rotting of pure things or due to the passage of many days, there is no harm. And if it is not certain why this change occurred, the ruling is of permissibility. It is stated in Dur-re-Mukhtar:

[Arabic Quote and Urdu Translation Table] Arabic: ينجس بتغير احد اوصافه من لون اوطعم اوريح بنجس لا لوتغير بطول مكث ولو شك فالاصل الطهارة ويجوز بماء خالطه طاهر جامد كأشنان وزعفران Urdu: Water becomes impure if one of its qualities—color, taste, or smell—changes due to impurity. It does not become impure if the change is due to long

stagnation. If there is doubt, the original state is purity. It is permissible to perform ablution with water mixed with a pure solid substance like potash or saffron.

1. Radd al-Muhtar, Bab al-Miyah, published by Mustafa al-Babi, Egypt, 1/120.

जिल्द चार फ़तावा रज़विया ...कर देता है। (त) और अब यह पानी कभी नापाक नहीं होगा चाहे गढ़ी के अंदर कितनी ही नजासतें (अशुद्धियाँ) हों और ऊपर से कितनी ही नजासतें डाली या धोई जाएँ जब तक ख़ास नजासत की वजह से इसका कोई वस्फ़ (विशेषता) बदलना मालूम न हो, चाहे वह गढ़ी से बाहर उबल कर बहे या उसमें रुका रहे। और अगर गढ़ी में दाख़िल होते वक़्त उसमें नजासत-ए-मरीया (दृश्य अशुद्धि) थी या उसका कोई वस्फ़ नजासत से बदला हुआ था या दह-दर-दह (दस-बाई-दस) की मसाहत (क्षेत्रफल) में फैलने से पहले गढ़ी के अंदर किसी नजासत से मिला तो यह पानी नापाक है। इस क़िस्म का पानी जितना भी आता जाएगा सब नापाक होगा चाहे उससे सारी गढ़ी भर जाए, मगर यह कि गढ़ी में पहले से दह-दर-दह पाक पानी होकर अब यह भी उससे मिल कर पाक होता जाएगा जब तक नजासत वस्फ़ तब्दील न करे। या यह हो कि मिसाल के तौर पर बारिश का पाक पानी उस पर आकर उसे बहा दे, उबाल कर गढ़ी से बाहर निकाल दे तो पाक हो जाएगा और फिर ठहर कर भी पाक ही रहेगा चाहे नाले वग़ैरा से उसमें नजासतें आकर शामिल हों जब तक नजासत उसका कोई वस्फ़ न बदल दे। और अगर गढ़ी में मिसाल के तौर पर दो तरफ़ से बारिश का बहाव आया; एक जानिब दह-दर-दह की मसाहत से पहले ही नजासतें थीं या ख़ुद उस बहते पानी में नजासत-ए-मरीया मौजूद थी कि गढ़ी में दाख़िल होकर नापाक हो गया और दूसरी जानिब का पानी कोई नजासत-ए-मरीया बहा कर न लाया था और गढ़ी के अंदर भी दह-दर-दह होने से पहले किसी नजासत से न मिला कि पाक रहा; अब ये दोनों पानी मिल गए तो नापाक तरफ़ का पानी भी पाक हो गया क्योंकि "वह जारी पानी के हुक्म में है" (१)। इस तरह पाक व नापाक पानी मिल कर गढ़ी भरे तो सब पाक है और न भरे तो सब पाक है जब तक नजासत वस्फ़ तब्दील न करे। (४) ८ यह गढ़ी दह-दर-दह से बहुत ज़ायद है कि उसे ४०० हाथ दरकार हैं और यह हज़ारों हाथ है। (५) दह-दर-दह का रंग या बू या ज़ायका अगर नजासत मिलने के सबब बदल जाए तो ज़रूर नापाक हो जाएगा और पाक चीज़ों के सड़ने या बहुत दिन गुज़रने से तीनों वस्फ़ बदल जाएँ तो कुछ हरज नहीं और तहक़ीक़ न हो कि यह तग़य्युर (बदलाव) किस वजह से है तो हुक्म जवाज़ (अनुमति) है, दर-ए-मुख़्तार में है:

[अरबी उद्धरण और उर्दू अनुवाद तालिका] अरबी: ينجس بتغير احد اوصافه من لون اوطعم اوريح بنجس لا لوتغير بطول مكث ولو شك فالاصل الطهارة ويجوز بماء خالطه طاهر جامد كأشنان وزعفران उर्दू: नजासत मिलने से पानी के रंग, ज़ायके और बू में किसी एक वस्फ़ के बदलने से पानी नापाक हो जाता है। ज़्यादा ठहरने की वजह से तबद्दुल (बदलना) हो तो नापाक नहीं

होता क्योंकि तहारत (पवित्रता) असल है और उस पानी से वज़ू जायज़ है जिसमें कोई ठोस (चीज़ जैसे उशनान या ज़ाफ़रान मिली हो)।

1. रद्द-उल-मुह्तार, बाब-उल-मियाह, मतबुआ मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, १/१२०।

पृष्ठ 761 का 333

جلد چہارم فتاوی رضویہ کردیتا ہے۔ ت) اور اب یہ پانی کبھی ناپاک نہ ہوگا اگر چہ گڑھی کے اندر کتنی ہی نجاستیں ہوں اور اوپر سے کتنی ہی نجاستیں ڈالی یا دھوئی جائیں جب تک خاص نجاست کی وجہ سے اس کا کوئی وصف بدلنا معلوم نہ ہو خواہ گڑھی سے باہر ابل کر بہے یا اس میں رکا رہے۔ اور اگر گڑھی میں داخل ہوتے وقت اس میں نجاست مرئیہ تھی یا اس کا کوئی وصف نجاست سے بدلا ہوا تھا یا دہ در دہ کی مساحت میں پھلنے سے پہلے گڑھی کے اندر کسی نجاست سے ملا تو یہ پانی ناپاک ہے اس قسم کا پانی جتنا بھی آتا جائے گا سب ناپاک ہوگا اگر چہ اس سے ساری گڑھی بھر جائے مگر یہ کہ گڑھی میں پہلے سے دہ در دہ پاک پانی ہو کر اب یہ بھی اس سے مل کر پاک ہو تا جائے گا جب تک نجاست تبدیل وصف نہ کرے یا یہ ہو کہ مثلاً بارش کا پانی پاک اس پر آکر اسے بہادے اُبال کر گڑھی سے باہر نکال دے تو پاک ہو جائے گا اور پھر ٹھہر کر بھی پاک ہی رہے گا اگر چہ نالہ وغیرہ سے اس میں نجاستیں آ کر شامل ہوں جب تک نجاست اس کا کوئی وصف نہ بدل دے اور اگر گڑھی میں مثلاً دو طرف سے بارش کا بہاؤ آیا ایک جانب دہ در دہ کی مساحت سے پہلے ہی نجاستیں تھیں یا خود اس بہتے پانی میں نجاست مرئیہ موجود تھی کہ گڑھی میں داخل ہو کر ناپاک ہو گیا اور دوسری جانب کا پانی کوئی نجاست مرئیہ بہا کر نہ لایا تھا اور گڑھی کے اندر بھی دہ در دہ ہونے سے پہلے کسی نجاست سے نہ ملا کہ پاک رہا اب یہ دونوں پانی مل گئے تو ناپاک طرف کا پانی بھی پاک ہو گیا لانہ فی حکم الجاری ۱ (کیونکہ وہ جاری پانی کے حکم میں ہے۔ ت) اس طرح پاک و ناپاک پانی مل کر گڑھی بھرے تو سب پاک ہے اور نہ بھرے تو سب پاک ہے جب تک نجاست تبدیل وصف نہ کرے۔ (۴)۸ یہ گڑھی دہ در دہ سے بہت زائد ہے کہ اسے ۴۰۰ ہاتھ درکار ہے اور یہ ہزاروں ہاتھ ہے۔ (۵) دہ در دہ کا رنگ یا بو یا ذائقہ اگر نجاست ملنے کے سبب بدل جائے تو ضرور ناپاک ہو جائے گا اور پاک چیزوں کے سڑنے یا

بہت دن گزرنے سے تینوں وصف بدل جائیں تو کچھ حرج نہیں اور تحقیق نہ ہو کہ یہ تغیر کس وجہ سے ہے تو حکم جواز ہے، در مختار میں ہے :

ینجس بتغیر احد اوصافه من لون اوطعم اوریح | نجاست ملنے سے پانی کے رنگ، ذائقے اور بو میں کسی ایک وصف بنجس لا لوتغیر بطول مکث ولو شک فالاصل | کے بدلنے سے پانی ناپاک ہو جاتا ہے زیادہ ٹھہرنے کی وجہ سے الطهارة ویجوز بماء خالطه طاہر جامد کأشنان | تبدل ہو تو ناپاک نہیں ہوتا کیونکہ طہارت اصل ہے اور اس وزعفران | پانی سے وضو جائز ہے جس میں کوئی ٹھوس (چیز ہو)

1 ردالمحتار، باب المیاہ، مطبوعہ مصطفی البابی مصر، ۱/۱۲۰

Fatawa Razawiyya, Volume 4

[Box at the top] Arabic: And fruit and tree leaves even if all its characteristics change [1] - Urdu: Pure things like alkali (Ushnan), saffron, fruit, and tree leaves, if they get mixed, even if they change all the characteristics of the water. (T)

(6) There can be no difference in the breadth and length of a ten-by-ten (Dah dar Dah) area because its total product is one hundred cubits. However, there is a difference as to whether it is necessary for the length and breadth to be ten cubits each, or if just the product being one hundred cubits is sufficient. For example, 25 cubits long and 4 cubits wide, or 50 cubits long and 2 cubits wide. This is correct. And regarding the depth, the correct and reliable view is that the ground should not be exposed while taking water. In our fatwas, there is a specific treatise on this issue: "Hibbat al-Habir fi 'Umq Ma' Kathir" (1332 AH). Anyone seeking deep research and thorough investigation should refer to it.

(7) Natural dislike is not a Sharia issue. Yes, if there is a place of doubt, caution is appropriate. And it should not be that one considers something as impure based on their own superstitions, while its purity is established in Sharia, or mocks those who use it. The ruling is only what Allah and His Messenger have stated, and there is no ruling except for Allah and His Messenger (Jalla wa 'Ala and Sallallahu Ta'ala 'Alaihi wa Sallam). And Allah knows best.

Masla (Case) 124: From Bulandshahr, Balai Kot, Mohalla Qaziwara. Sent by Muhammad Abdus Salam Sahib, 30 Ramadan 1337 AH. A pond for ablution was built here in the Jame Mosque. The details of the expenses incurred in its construction are that some money was taken from the residents of the neighborhood. In addition to that, an amount of 70 rupees from cockfighting bets was also spent on this pond. Also, some money that was collected as a fine from a person in the community in a case was spent on this pond. Is it permissible to perform ablution with the water from this pond or not?

Al-Jawab (The Answer): Ablution from it is permissible. Firstly, the forbidden (haram) money itself was not put into the pond; instead, bricks or materials were purchased with it, or it was given as wages to laborers. In the case of wages, it is clear that the impure wealth had no direct connection to the pond. In the case of purchase, common purchases here happen such that one asks for a certain item for a certain price, the seller gives it, it comes into the buyer's possession, and the sale is complete. The price is paid afterward. Thus, the contract and the payment of haram

money did not coincide at the same time. Therefore, the impurity did not enter the purchased item, as per the fatwa-issued saying of Imam al-Karkhi, as we have detailed in our fatwas (as Imam al-Karkhi, may Allah have mercy on him...

[1] Durr-e-Mukhtar, Book of Waters, Published by Mujtabai Delhi, 1/35. Page 334 of 761

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4

[ऊपर का बॉक्स] अरबी: और फल और पेड़ के पत्ते भले ही उसके सभी गुण बदल जाएँ[1] - उर्दू: पाक चीज़ें जैसे उश्नान (एक प्रकार की क्षार), केसर, फल और पेड़ों के पत्ते मिल जाएँ, भले ही वे पानी के सभी गुणों को बदल दें। (त)

(6) दस-दर-दस (दस हाथ लम्बा और दस हाथ चौड़ा) के क्षेत्रफल में कोई मतभेद नहीं हो सकता क्योंकि इसका कुल फल ही सौ हाथ है। हाँ, इसमें मतभेद है कि लम्बाई और चौड़ाई दस-दस हाथ होना ज़रूरी है या सिर्फ़ गुणनफल सौ हाथ होना काफ़ी है। उदाहरण के लिए, 25 हाथ लम्बा और 4 हाथ चौड़ा, या 50 हाथ लम्बा और 2 हाथ चौड़ा। यही सही है। और गहराई के बारे में सही और विश्वसनीय बात यह है कि पानी लेते समय ज़मीन नज़र नहीं आनी चाहिए। हमारे फ़तवों में इस मसले पर एक विशेष शोध-पत्र (रिसाला) है: "हिब्बतुल हबीर फ़ी उम्क़ मा-ए-कसीर" (1332 हिजरी)। जिसे गहन शोध और विस्तृत छानबीन देखनी हो, वह उसकी ओर रुजू करे।

(7) स्वाभाविक नापसंदगी कोई शरीअत का मसला नहीं है। हाँ, अगर किसी जगह शक हो तो एहतियात (सावधानी) मुनासिब है। और ऐसा भी न हो कि जिसकी पाकी (पवित्रता) शरीअत से साबित हो, उसे अपनी वहम-परस्ती के कारण नापाक समझे या उसे इस्तेमाल करने वालों पर तंज करे। हुक्म वही है जो अल्लाह और उसके रसूल का है, और अल्लाह और उसके रसूल (जल्ल-व-अला और सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के सिवा कोई हाकिम नहीं। अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 124: बुलंदशहर, बाला-ए-कोट, मोहल्ला क़ाज़ीवाड़ा से प्रेषित, मुहम्मद अब्दुल सलाम साहब, 30 रमज़ान 1337 हिजरी। यहाँ जामे मस्जिद में वज़ू के लिए एक हौज़ (कुण्ड) बनाया गया है। इसके निर्माण में होने वाले ख़र्च का विवरण यह है कि कुछ रुपया तो मोहल्ले वालों से लिया गया और इसके अलावा 70 रुपये मुर्ग़ों की लड़ाई (मुर्ग़ बाज़ी) की शर्त के भी इसी हौज़ में ख़र्च हुए। और कुछ रुपया जो बिरादरी के एक व्यक्ति पर किसी मुक़दमे में जुर्माना (डंड) डाला गया था, वह भी इस हौज़ में लगा। क्या इस हौज़ के पानी से वज़ू करना जाइज़ है या नहीं?

अल-जवाब (उत्तर): इससे वज़ू जाइज़ है। अव्वल तो हराम रुपया सीधे हौज़ में नहीं लगाया गया बल्कि उसके बदले ईंट या मसाला ख़रीदा गया या राज-मज़दूरों की मज़दूरी में दिया गया होगा। मज़दूरी की सूरत में तो ज़ाहिर है कि उस नापाक माल का हौज़ से कोई संबंध नहीं रहा। और ख़रीददारी की

सूरत में यहाँ आम ख़रीददारियाँ इस तरह होती हैं कि "अमुक चीज़ इतने की दे दो", उसने दी और वह (ख़रीदार के) क़ब्ज़े में आ गई, इस तरह सौदा पूरा हो गया। इसके बाद क़ीमत दी जाती है। तो अक़्द (अनुबंध) और हराम पैसे की अदायगी एक साथ नहीं हुई, इसलिए ख़रीदी गई चीज़ में कोई ख़राबी (ख़बासत) नहीं आई। जैसा कि इमाम करख़ी का कौल (कथन) है जिस पर फ़तवा दिया जाता है, जैसा कि हमने अपने फ़तवों में विस्तार से बताया है (जैसा कि इमाम करख़ी रहमतुल्लाह अलैहि...

[1] दुर्र-ए-मुख्तार, बाबुल मियाह (पानी का अध्याय), मुजतबाई दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 1/35। पृष्ठ 334 / 761

[اوپر والا خانہ] عربی: وفاکھۃ ورق شجر وان غیر کل اوصافہ [1]۔ اردو: پاک چیز مثلاً اُشنان، زعفران، پھل اور درختوں کے پتّے مل جائیں اگرچہ وہ اس کے تمام اوصاف بدل دے۔(ت)

(۶) دہ در دہ کے عرض و طول میں کچھ اختلاف نہیں ہو سکتا کہ اس کا مفاد ہی سو ۱۰۰ ہاتھ ہے، ہاں اس میں اختلاف ہے کہ عرض و طول دس دس ہاتھ ہونا ضرور یا صرف حاصل ضرب سو ۱۰۰ ہاتھ ہونا کافی مثلاً ۲۵ ہاتھ طول ۴ ہاتھ عرض یا ۵۰ ہاتھ طول ۲ ہاتھ عرض اور یہی صحیح ہے اور عمق میں صحیح و معتمد یہی ہے کہ پانی لینے سے زمین نہ کھلے ہمارے فتاویٰ میں اس مسئلہ میں خاص ایک رسالہ ہے ھبۃ الحبیر فی عمق ماء کثیر ۱۳۳۲ھ جسے تحقیق بالغ و تنقیحِ بالِغ دیکھنی ہو اس کی طرف رجوع کرے۔

(۷) کراہت طبعی کوئی مسئلہ شرعی نہیں، ہاں کوئی محل شک ہو تو احتیاط مناسب ہے اور یہ بھی نہ ہو کہ شرعاً جس کی طہارت ثابت ہو اُسے اپنی اوہام پرستی سے ناپاک سمجھے یا اس کے استعمال کرنے والوں پر طعن کرے۔ حکم وہی ہے جو اللہ و رسول کا ہے اور حکم نہیں مگر اللہ و رسول کے لئے جل وعلا و صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۲۴: از بلند شہر بالائے کوٹ محلّہ قاضی واڑہ مرسلہ محمد عبدالسلام صاحب ۳۰۔ رمضان ۱۳۳۷ھ یہاں جامع مسجد میں ایک حوض وضو کے لئے تعمیر ہوا اس کے بنانے میں جو خرچ ہوا اس کی کیفیت یہ ہے کہ کچھ روپیہ تو اہل محلّہ سے لیا گیا اور اس کے علاوہ مبلغ ۷۰ روپیہ مرغ بازی کی شرط کے بھی اسی حوض میں خرچ ہوئے اور کچھ روپیہ جو برادری میں کسی آدمی پر

ایک مقدمہ میں ڈنڈ ڈالا گیا تھا وہ بھی اس حوض میں صرف ہوا۔ آیا اس حوض کے پانی سے وضو جائز ہے یا نہیں؟

الجواب: اس سے وضو جائز ہے اول تو حرام روپیہ حوض میں خود نہ لگایا گیا بلکہ اُس کے عوض اینٹ یا مسالا خریدا گیا یا راج مزدوروں کی اُجرت میں دیا ہوگا بصورتِ اجرت تو ظاہر ہے کہ اُس خبیث مال کو حوض سے تعلق نہ ہوا اور بصورت خریداری یہاں عام خریداریوں یوں ہوتی ہیں کہ اتنے کی فلاں چیز دے دو اُس نے دی اس کے قبضے میں آگئی بیع تمام ہوگئی اس کے بعد قیمت دی جاتی ہے تو عقد و نقد زرِ حرام میں جمع نہ ہوا تو خریدی شے میں خباثت نہ آئی کما ھو قول الامام الکرخی المفتی به علی ما فصلناه في فتاونا (جیسا کہ امام کرخی رحمہ اللہ تعالیٰ کا

[1] در مختار باب المیاہ مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/۳۵ صفحہ 334 از 761

Fatawa Razawiyya Volume 4 This is the Fatwa-compliant view, and we have explained it in detail in our Fatawas. (T) And if, for argument's sake, the contract and the payment coincided in a forbidden way in that purchase; for example, if one showed forbidden money and said, 'Give me such-and-such in exchange for this,' and the other gave it, and he paid the forbidden money as the price, then although the purchased item has now become foul, can it be specified which particular brick or mortar it is? In an unknown state, a ruling of prohibition cannot be issued. Imam Muhammad says: 'Be na'khuz ma lam yu'raf shay'an haraman bi-aynihi' (Fatawa Hindiyya from Al-Zakhira) 1 - (We will adopt this until a specific thing is known to be forbidden. This has been quoted in Fatawa Hindiyya from Zakhira. - T)

Yes, if most of the masonry consists of such foul materials, then it is appropriate not to perform ablution (wudu) with it, 'Li-anna lil-akthar hukma al-kull fi hadha 'inda qawm' (because according to some people, in such a situation, the majority takes the ruling of the whole. - T). Even though there is no defect in its water, nor is there any flaw in the validity and correctness of the ablution, even if the entire pond was constructed with forbidden wealth, 'Li-anna al-karahata li-mujawir' (because the dislike is due to what is adjacent to it. - T). And Allah Almighty knows best.

Problem 125: From Basni, near Nagaur, Marwar, sent by Amir Ahmad Sahib, 9th Shawwal 1337 AH. What do the scholars of the religion say about this issue: if a ten-by-ten (dah dar dah) pond of a mosque starts smelling bad and its color changes due to long stagnation and frequent use, is it correct to perform ablution with it or not? A certain Mawlwi sahib, declaring used water (ma' must'amal) as non-purifying, compares it to urine, and is also saying that according to our Imam (Abu Hanifa), used water is impure with a heavy impurity (najis bi-najisat-e-ghaliza), therefore it is impure. So, can the water of that ten-by-ten pond be declared 'used water'? Maulana Abdul Hayy Sahib Lakhnawi (late), citing Fatawa Alamgiri and Fatawa Qazi Khan, writes in his Fatawas that performing ablution with such water is correct: 'Yajuz al-tawaddi fil-hawd al-kabir al-muntin idha lam yu'lam najasatahu'. (It is permissible to perform ablution from a large, foul-smelling pond where one of its qualities has changed due to filth, but not if it changed due to stagnation. - T) The aforementioned Mawlwi sahib does not accept this.

1 Fatawa Hindiyya, Chapter 12 on Gifts etc., Noorani Kutub Khana, Peshawar, 5/322. 2 Tabyin al-Haqa'iq, Chapter on Wiping over Socks, Al-Matba'at al-Kubra al-Amiriyya, Egypt, 1/50. 3 Fatawa Hindiyya, Section 1 of the Chapter on Waters, Al-Matba'at al-Kubra al-Amiriyya, Egypt, 1/18.

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी यह फ़तवा-सम्मत दृष्टिकोण है, और हमने अपने फ़तवाओं में इसका विस्तार से वर्णन किया है। (त) और यदि, तर्क के लिए, अनुबंध और भुगतान उस खरीद में हराम तरीके से एकत्रित हुए हों; उदाहरण के लिए, किसी ने हराम धन दिखाकर कहा, 'इसके बदले में फलां चीज़ दे दो,' और उसने वह दे दी, और उसने हराम धन कीमत के रूप में दे दिया, तो यद्यपि अब वह खरीदी गई वस्तु नापाक (खबीस) हो गई है, लेकिन क्या यह निर्दिष्ट किया जा सकता है कि वह कौन सी ईंट या मसाला है? अज्ञात स्थिति में निषेध का हुक्म नहीं दिया जा सकता। इमाम मुहम्मद फ़रमाते हैं: 'बि नाखुज़ मा लम युअ्रफ़ शयअन हराममम बि-ऐनिही' (फ़तावा हिन्दिया अज़ अल-ज़खीरा) 1 - (हम इसी बात को अपनाएंगे जब तक कि किसी विशिष्ट वस्तु का हराम होना ज्ञात न हो। इसे फ़तावा हिन्दिया में ज़खीरा से उद्धृत किया गया है। - त)

हाँ, यदि अधिकांश चिनाई ऐसी ही नापाक चीज़ों से हुई हो, तो उससे वज़ू न करना ही उचित है, 'लि-अन्ना लिल-अक्सर हुक्म अल-कुल्ल फी हाज़ा इन्दा क़ौम' (क्योंकि कुछ लोगों के नज़दीक ऐसी स्थिति में बहुमत को पूरे का हुक्म माना जाता है। - त)। भले ही उसके पानी में कोई दोष न हो, और न ही वज़ू के सही और निर्बाध होने में कोई दोष हो, चाहे पूरे हौज़ का निर्माण हराम धन से हुआ हो, 'लि-अन्ना अल-कराहता लि-मुजाविर' (क्योंकि कराहत उसके पास होने के कारण है। - त)। और अल्लाह तआ़ला बेहतर जानता है।

मसला 125: बासनी, नागौर, मारवाड़ से, अमीर अहमद साहिब द्वारा प्रेषित, 9 शव्वाल 1337 हिजरी। धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं: यदि मस्जिद का दस-बाय-दस (दह दर दह) का हौज़ लंबे समय तक ठहरे रहने और अधिक उपयोग के कारण बदबू देने लगे और उसके रंग में बदलाव आ जाए, तो उससे वज़ू करना सही है या नहीं? एक मौलवी साहब प्रयुक्त जल (मा-ए-मुस्तअ़मल) को गैर-पावन घोषित करते हुए उसकी तुलना पेशाब से कर रहे हैं, और यह भी कह रहे हैं कि हमारे इमाम साहब के अनुसार प्रयुक्त जल भारी अशुद्धता (नजस-ए-ग़लीज़ा) के साथ अशुद्ध है, इसलिए वह नापाक है। तो क्या उस दस-बाय-दस हौज़ के पानी को 'प्रयुक्त जल' घोषित किया जा सकता है? मौलाना अब्दुल हई साहिब लखनवी (दिवंगत), फ़तावा आलमगीरी और फ़तावा क़ाज़ी ख़ान का हवाला देते हुए अपने फ़तवाओं में लिखते हैं कि ऐसे पानी से वज़ू करना सही है: 'यजुल तवद्दी फिल हौज़ अल-कबीर अल-मुनतिन इजा लम युअ़लम नजासतहु'। (बड़े बदबूदार हौज़ से वज़ू करना जायज़ है जब तक कि उसकी अशुद्धता का ज्ञान न हो। - त) उपर्युक्त मौलवी साहब इसे स्वीकार नहीं करते हैं।

1 फ़तावा हिन्दिया, अध्याय 12 उपहारों पर आदि, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 5/322। 2 तबयीन अल-हक़ाएक़, मोज़ों पर मसह का अध्याय, अल-मतबअ़त अल-कुबरा अल-अमीरिया, मिस्र, 1/50। 3 फ़तावा हिन्दिया, जल पर अध्याय का खंड 1, अल-मतबअ़त अल-कुबरा अल-अमीरिया, मिस्र, 1/18।

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم مفتی بہ قول ہے ہم نے اپنے فتاوٰی میں اسے مفصل بیان کیا ہے۔ ت) اور اگر بالفرض عقد و نقد اس شرا میں حرام پر جمع ہوئے ہوں مثلاً وہ زر حرام دکھا کر کہا اس کے بدلے فلاں چیز دے اُس نے دے دی اس نے زر حرام ثمن میں دے دیا تو اگرچہ اب وہ خریدی ہوئی شے خبیث ہوئی مگر کیا معین کر سکتا ہے کہ وہ اینٹ یا مسالا کون سا ہے مجہول حالت میں حکم ممانعت نہیں ہو سکتا۔ امام محمد فرماتے ہیں: بہ ناخذ مالم یعرف شیئاً حراماً بعینہ ھندیۃ عن الذخیرۃ 1 - (اسی بات کو اختیار کریں گے جب تک کسی معین چیز کا حرام ہونا معلوم نہ ہو اسے فتاوٰی ہندیہ میں ذخیرہ سے نقل کیا گیا ۔ ت)

ہاں اگر اکثر چنائی ایسی ہی خبیث اشیاء سے ہو تو اس سے وضو نہ کرنا مناسب ہے لان للاکثر حکم الکل فی ھذا عند قوم (کیونکہ بعض لوگوں کے نزدیک ایسی صورت میں اکثر کل کے حکم میں ہوتا ہے۔ت) اگرچہ اس کے پانی میں کوئی نقص نہیں، نہ اس سے وضو صحیح وبے خلل ہونے میں کوئی نقص اگر چہ کل حوض کی تعمیر زر حرام سے ہو لان الکراہۃ لمجاور (کیونکہ کراہت، اس سے ملنے والی چیز کے باعث ہے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۲۵: از باسنی متصل ناگور ماڑواڑ مرسلہ امیر احمد صاحب ۹۔ شوال ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مسجد کا دہ در دہ حوض طول مکث و کثیر الاستعمال کی وجہ سے بدبو کر جائے اور رنگ میں تغیر آجائے تو وضو کرنا درست ہے یا نہیں۔ ایک مولوی صاحب ماءِ مستعمل غیر مطہر قرار دے کر پیشاب کے برابر فرما رہے ہیں اور یہ بھی فرما رہے ہیں کہ ہمارے امام صاحب کے نزدیک ماءِ مستعمل نجس بہ نجاست غلیظہ ہے لہذا نجس ہے تو کیا وہ دہ در دہ حوض کا پانی مستعمل قرار دیا جاسکتا ہے مولانا عبدالحہ صاحب لکھنوی مرحوم فتاوٰی عالمگیری و فتاوٰی قاضی خان کا حوالہ دیتے ہوئے اپنے فتاوٰی میں تحریر فرماتے ہیں کہ ایسے

پانی سے وضو بنانا درست ہے یجوز التوضی فی الحوض الکبیر المنتن اذا لم یعلم نجاستہ ۔ (بڑے بد بودار حوض بتغیر احد اوصافہ بنجس لا لو تغیر بمکث اے۔ سے وضو کرنا جائز ہے جب تک نجاست کا علم نہ ہو ۔ ت) اسے مولوی صاحب موصوف تسلیم نہیں کرتے۔

1 فتاوٰی ہندیہ الباب الثانی عشر فی الہدایا۔ الخ نورانی کتب خانہ پشاور ۳۲۲/۵ 2 یتیمیین الحقائق باب مسح الخفین المطبعۃ الکبرٰی الامیریہ مصر ۵۰/۱ 3 فتاوٰی ہندیہ الفصل الاول من باب المیاہ المطبعۃ الکبرٰی الامیریہ مصر ۱۸/۱

Volume 4 Fatawa Razawiyya

The Answer: Becoming foul-smelling due to staying for a long time cannot make the water impure, even if it is a bowlful. In texts like Tanwir and others it is stated:

[Arabic] "Water becomes impure if one of its characteristics changes due to impurity, not if it changes due to staying long." [Footnote 1] [Urdu] If any characteristic changes due to contact with impurity, the water becomes impure; if it changes due to staying for a long time, it does not become impure. (T)

In Durr al-Mukhtar it is stated:

[Arabic] "If it is known that its stench is due to impurity, then it [ablution] is not permissible, but if there is doubt, then the default is purity." [Footnote 2] [Urdu] If there is certainty that the water has become foul-smelling because of impurity, then ablution is not permissible, and if there is doubt, then the default state of a thing is purity (hence it will be permissible). (T)

A pond measuring ten by ten (dah dar dah) does not become impure even with a small amount of impurity, let alone used water. According to the correct, relied-upon, and fatwa-issued position of the school, used water is not impure; it is pure but not purifying. This is the relied-upon position of our Imam al-A'zam (Imam Abu Hanifa), may Allah be pleased with him. In Tanwir al-Absar it is stated:

[Arabic] "And it is pure but not purifying." [Footnote 3] [Urdu] And it is pure but not a purifier. (T)

In Radd al-Muhtar it is stated:

[Arabic] "Muhammad narrated it from the Imam, and this narration is the well-known one from him, and the researchers have chosen it; they said the fatwa is based on it." [Footnote 4] [Urdu] Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) has narrated this from Imam al-A'zam (may Allah have mercy on him), and this is the famous narration from him, and researchers have adopted it and said that the fatwa is on this. (T)

If used water becomes equal to or more than unused water, then ablution from the mixture will be impermissible, and if the used water is less, then ablution is permissible. In Durr al-Mukhtar it is stated:

[Arabic] "The predominance of the mixing substance, if it is similar [to water], like used water..." [Urdu] If the substance mixing (in water) is similar to it, like used water...

---

1 Durr al-Mukhtar with al-Tanwir, Book of Waters, printed by Mujtabai Delhi, 1/35 2 Durr al-Mukhtar with al-Tanwir, Book of Waters, printed by Mujtabai Delhi, 1/35 3 Durr al-Mukhtar with al-Tanwir, Book of Waters, printed by Mujtabai Delhi, 1/73 4 Radd al-Muhtar, Book of Waters, Mustafa al-Babi Egypt, 1/13

उत्तर: लंबे समय तक रुके रहने के कारण पानी में दुर्गंध आना उसे अशुद्ध (नजिस) नहीं बना सकता, चाहे वह एक कटोरा ही क्यों न हो। तनवीर आदि मूल ग्रंथों में है:

[अरबी] "पानी अशुद्ध हो जाता है यदि अशुद्धता के कारण उसकी कोई विशेषता बदल जाए, न कि यदि वह लंबे समय तक रहने के कारण बदले।" [फुटनोट 1] [उर्दू] यदि अशुद्धता मिलने से कोई विशेषता बदल जाए तो पानी अशुद्ध हो जाता है, लंबे समय तक ठहरने से बदलने पर अशुद्ध नहीं होता। (त)

दुर्र अल-मुख्तार में है:

[अरबी] "यदि यह ज्ञात हो कि इसकी दुर्गंध अशुद्धता के कारण है, तो [वज़ू के लिए] इसकी अनुमति नहीं है, लेकिन यदि संदेह है, तो मूल बात पवित्रता है।" [फुटनोट 2] [उर्दू] यदि अशुद्धता के कारण पानी के बदबूदार होने का यकीन हो तो वज़ू जायज़ नहीं है और अगर शक हो तो असल चीज़ पाकी (पवित्रता) है (लिहाज़ा जायज़ होगा)। (त)

दस गुणा दस (दह दर दह) का हौज थोड़ी सी अशुद्धता से भी अपवित्र नहीं होता, तो प्रयुक्त जल (मा-ए-मुस्तअमल) से क्या होगा। सही, विश्वसनीय और फतवा-योग्य मत के अनुसार, प्रयुक्त जल अपवित्र नहीं है; यह पवित्र है लेकिन शुद्ध करने वाला नहीं है। हमारे इमाम-ए-आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु का यही विश्वसनीय मत है। तनवीर अल-अबसार में है:

[अरबी] "और वह पवित्र है, शुद्ध करने वाला नहीं।" [फुटनोट 3] [उर्दू] और वह पाक है, पाक करने वाला नहीं। (त)

रद अल-मुहतार में है:

[अरबी] "मुहम्मद ने इसे इमाम से रिवायत किया है, और यही रिवायत उनके यहाँ प्रसिद्ध है, और शोधकर्ताओं ने इसे चुना है; उन्होंने कहा कि फतवा इसी पर है।" [फुटनोट 4] [उर्दू] इसे इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) ने इमाम-ए-आज़म (रहमतुल्लाह अलैह) से रिवायत किया है और उनसे मशहूर रिवायत यही है और मुहक्किकीन (शोधकर्ताओं) ने इसे इख्तियार किया है और फरमाया इसी पर फतवा है। (त)

यदि प्रयुक्त जल, अप्रयुक्त जल के बराबर या उससे अधिक हो जाए, तो मिश्रण से वज़ू करना जायज़ नहीं होगा, और यदि प्रयुक्त जल कम हो, तो वज़ू जायज़ है। दुर्र अल-मुख्तार में है:

[अरबी] "मिश्रण की प्रबलता, यदि वह समान हो, जैसे प्रयुक्त जल..." [उर्दू] अगर (पानी में) मिलने वाली चीज़ इसी जैसी हो जैसे मुस्तअमल (प्रयुक्त)।

---

1 दुर्र अल-मुख्तार मा' अत-तनवीर, बाब अल-मियाह, मुजतबाई दिल्ली, 1/35 2 दुर्र अल-मुख्तार मा' अत-तनवीर, बाब अल-मियाह, मुजतबाई दिल्ली, 1/35 3 दुर्र अल-मुख्तार मा' अत-तनवीर, बाब अल-मियाह, मुजतबाई दिल्ली, 1/73 4 रद अल-मुहतार, बाब अल-मियाह, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/13

جلد چہارم فتاوی رضویہ

الجواب: طول مکث سے بدبولانا پانی کو نجس نہیں کرسکتا اگرچہ کٹورا بھر ہو ، تنویر وغیرہ متون میں ہے:

ینجس بتغیر احد اوصافہ بنجس لا لوتغیر بمکث 1 ۔ | نجاست ملنے سے کوئی وصف بدل جائے تو پانی ناپاک ہو جاتا ہے زیادہ دیر ٹھہرنے سے بدلے تو ناپاک نہیں ہوتا۔ (ت)

در مختار میں ہے:

فلو علم نتنہ بنجاسة لم یجز ولو شك فالاصل الطهارة 2 ۔ | اگر نجاست کی وجہ سے پانی کے بدبودار ہونے کا یقین ہو تو وضو جائز نہیں اور اگر شک ہو تو اصل چیز طہارت ہے (لہذا جائز ہوگا)۔ (ت)

دہ در دہ حوض قلیل نجاست سے بھی ناپاک نہیں ہوتا نہ کہ مائے مستعمل سے مائے مستعمل صحیح و معتمد و مفتی بہ مذہب میں ناپاک نہیں طاہر غیر مطہر ہے یہی ہمارے امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا مذہب معتمد ہے۔ تنویر الابصار میں ہے:

وھو طاھر لیس بطھور 3 ۔ | اور وہ پاک ہے پاک کرنے والا نہیں۔ (ت)

رد المحتار میں ہے:

رواہ محمد عن الامام وھذہ الروایة ھي المشھورة عنہ واختارھا المحققون قالوا علیھا الفتوی 4 ۔ | اسے امام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ نے امام اعظم رحمہ اللہ تعالیٰ سے روایت کیا ہے اور ان سے مشہور روایت یہی ہے اور محققین نے اسے اختیار کیا ہے اور فرمایا اسی پر فتوی ہے۔ (ت)

مائے مستعمل اگر غیر مستعمل سے زائد یا برابر ہو جائے تو مجموع سے وضو نا جائز ہوگا اور مستعمل کم ہے تو وضو جائز۔ در مختار میں ہے:

غلبة المخالط لو مماثلاً کمستعمل | اگر (پانی میں) ملنے والی چیز اسی جیسی ہو جیسے مستعمل

---

1 در مختار مع التنویر باب المیاہ مطبوعہ مجتبائی دہلی 1 / 35 2 در مختار مع التنویر باب المیاہ مطبوعہ مجتبائی دہلی 1 / 35 3 در مختار مع التنویر باب المیاہ مطبوعہ مجتبائی دہلی 1 / 73 4 رد المحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر 1 / 13

Fatawa Rizviya, Volume 4

[Boxed Text] Arabic: Regarding parts, if the absolute water is more than half, purification with the whole is permissible; otherwise, it is not. Urdu: Regarding the dominance of water, it will be considered according to its components. If the absolute water is more than half, then it is permissible to obtain purification from the entire amount of water; otherwise, it is not. (T)

In short, performing ablution (wudu) from the aforementioned pool is undoubtedly permissible, and the objector's statement is incorrect and unworthy of attention. Allah Almighty knows best.

Issue 126: From Porbandar, Kathiawar, Meethi Masjid, sent by Syed Ghulam Muhammad Sahib, 11th Shawwal 1337 AH. Imam of Scholars, Researcher, Leader of the Virtuous and Meticulous, Integrator of Sharia and Tariqa, Sage of the Ummah, our master, mentor, and served one, Maulana Haji Qari Shah Ahmad Raza Khan Sahib, may Allah let the Muslims benefit from his long life.

After humble greetings, I submit for your noble opinion and refined mind that there is a pool ten-by-ten in width and length. However, by adding stones to the top, the mouth of the pool has become less than ten-by-ten. In this situation, the pool is filled completely with water. Some people say that ablution is not valid in this pool because the water exceeds the ten-by-ten limit and the water does not move. Others say ablution is valid. Due to this, there is severe conflict among the people here. Therefore, your holiness, please write a summary of the issue so it can be acted upon. Clarify and be rewarded.

The Answer: Peace be upon you and the mercy of Allah and His blessings. If the water is below the stones, it is ten-by-ten and will not become impure even from filth unless its taste, color, or smell changes. If the water rises above that level and is surrounded by the stones, and the area between the stones is less than ten-by-ten, then it is no longer considered ten-by-ten. A single slight drop of impurity will make the entire surface impure. Yes, for ablution, putting hands in to take water will not make it 'used' (mustamal). However, putting feet without ablution into it will make it 'used' and it will no longer be suitable for ablution. Used water from ablution falling into it will not make it 'used' unless the used water exceeds or equals the unused water. To purify it, it is sufficient to remove the upper portion of the water until only the water below the stones remains. Where it is ten-by-ten, it is all pure. Allah Almighty knows best.

Issue 127: From Madrasa Manzar-e-Islam, Bareilly, asked by Maulvi Abdullah Bihari, 3rd Shawwal 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this issue that Zaid says if drops of ablution water fall on clothes or something...

---

1 Durr-e-Mukhtar, Chapter on Waters, Mujtabai Delhi, 1/34 Page 337 of 761

फ़तावा रज़विया, खंड 4

[कोष्टक पाठ] अरबी: अंशों के संबंध में, यदि शुद्ध जल आधे से अधिक है, तो संपूर्ण से शुद्धि अनुमत है; अन्यथा नहीं। उर्दू: पानी की प्रबलता का विचार उसके घटकों के आधार पर होगा। यदि शुद्ध जल आधे से अधिक है, तो पूरे पानी से पवित्रता प्राप्त करना जायज़ है, अन्यथा नहीं। (त)

संक्षेप में, उल्लेखित हौज (कुंड) से वज़ू करना निस्संदेह जायज़ है और आपत्ति करने वाले का कथन गलत और ध्यान देने योग्य नहीं है। अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसला १२६: पोरबंदर, काठियावाड़, मीठी मस्जिद से, सैयद गुलाम मोहम्मद साहब द्वारा भेजा गया, ११ शव्वाल १३३७ हिजरी। विद्वानों के इमाम, शोधकर्ता, गुणी और सूक्ष्मदर्शियों के नेता, शरीयत और तरीक़त के ज्ञाता, उम्मत के हकीम, हमारे मौलाना, मुर्शिद और मख़दूम मौलवी हाजी क़ारी शाह अहमद रज़ा खान साहब, अल्लाह मुसलमानों को उनके दीर्घायु से लाभान्वित करे।

विनम्र अभिवादन के बाद, आपकी महान राय और परिष्कृत बुद्धि के लिए निवेदन है कि लंबाई और चौड़ाई में दस-दर-दस का एक हौज है। लेकिन हौज के ऊपर पत्थर लगाने से हौज का मुँह दस-दर-दस से कम हो गया है। इस स्थिति में हौज को पानी से पूरा भर दिया जाता है। कुछ लोग कहते हैं कि इस हौज में वज़ू नहीं होता क्योंकि पानी दस-दर-दस की सीमा से बाहर निकल जाता है और पानी हिलता भी नहीं है। और कुछ लोग कहते हैं कि वज़ू हो जाता है। इस वजह से यहाँ के लोगों में भारी विवाद उत्पन्न हो गया है। अतः हज़रत, इस मसले का सारांश लिखकर बताएँ ताकि उस पर अमल किया जा सके। स्पष्ट करें और पुण्य पाएँ।

जवाब: आप पर शांति और अल्लाह की दया और उसकी बरकतें हों। अगर पानी पत्थरों से नीचे है, तो वह दस-दर-दस है और गंदगी से भी नापाक नहीं होगा जब तक कि उसका स्वाद, रंग या गंध न बदल जाए। और अगर पानी उस सीमा से ऊपर उठकर पत्थरों से घिर जाए और पत्थरों के बीच का क्षेत्रफल दस-दर-दस से कम है, तो अब वह दस-दर-दस नहीं रहा। गंदगी की एक हल्की बूंद भी पूरी सतह को नापाक कर देगी। हाँ, वज़ू के लिए हाथ डालकर पानी लेने से वह 'मुस्तमल' (उपयोग किया हुआ) नहीं होगा, लेकिन बिना वज़ू के पैर डालने से वह मुस्तमल हो जाएगा और वज़ू के लायक नहीं रहेगा। वज़ू का मुस्तमल पानी इसमें गिरने से वह तब तक मुस्तमल नहीं होगा जब तक कि मुस्तमल पानी गैर-मुस्तमल पानी से अधिक या उसके बराबर न हो जाए। इसे पाक (पवित्र) करने के लिए यह

काफी है कि ऊपर का पानी निकाल दिया जाए जब तक कि केवल पत्थरों के नीचे का पानी रह जाए। जहाँ वह दस-दर-दस है, वह सब पाक है। अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसला १२७: मदरसा मंज़र-ए-इस्लाम, बरेली से, मौलवी अब्दुल्ला बिहारी द्वारा पूछा गया, ३ शव्वाल १३३९ हिजरी। दीन के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि ज़ैद कहता है कि वज़ू के पानी की बूंदें कपड़े या किसी चीज़ पर गिरें तो...

---

1 दुर्र-ए-मुख्तार, पानी का अध्याय, मुजतबाई दिल्ली, 1/34 पृष्ठ 337/761

فتاوی رضویہ، جلد چہارم

[باکس میں متن] فبالاجزاء فان المطلق اکثر من النصف جاز التطھیر بالکل والا لا ۱۔ پانی تو غلبے کا اعتبار اجزاء کے اعتبار سے ہوگا اگر مطلق پانی نصف سے زیادہ ہے تو تمام پانی سے طہارت حاصل کرنا جائز ہے ورنہ نہیں۔ (ت)

با لجملہ حوض مذکور سے وضو بلاشبہ جائز ہے اور معترض کا قول غلط و نا قابل التفات واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۲۶: از پور بندر کاٹھیاوار میٹھی مسجد مرسلہ سید غلام محمد صاحب ۱۱۔ شوال ۱۳۳۷ھ امام العلماء المحققین مقدام الفضلاء المدققین جامع شریعت و طریقت حکیم امت مولانا و مرشدنا و مخدومنا مولوی حاجی قاری شاہ احمد رضا خان صاحب متع اللہ المسلمین بطول بقائھم۔

بعد تسلیم فدویت ترمیم معروض رائے شریف و ذہن لطیف ہو کہ ایک حوض دہ در دہ ہے عرض و طول میں لیکن حوض کو اوپر کو پتھر لگانے سے منہ حوض کا کم از دہ در دہ ہو گیا ہے اس صورت میں حوض پانی سے پورا بھر دیا جاتا ہے بعض لوگ کہتے ہیں کہ اس حوض میں وضو نہیں ہوتا اس لئے کہ دہ در دہ کی حد سے پانی تجاوز کر جاتا ہے اور پانی بھی ہلتا نہیں ہے، اور بعض لوگ کہتے ہیں کہ وضو ہو جاتا ہے اس لئے یہاں پر لوگوں میں سخت فساد واقع ہے۔ سو حضرت مسئلہ کا خلاصہ کر کے تحریر فرمائیں تاکہ اس پر عمل کیا جاوے۔ بینوا توجروا۔

الجواب: وعلیکم السلام ورحمۃ اللہ وبرکاتہ، اگر پانی پتھر سے نیچے ہے تو وہ دہ در دہ ہے نجاست سے بھی ناپاک نہ ہوگا جب تک اس سے مزہ یا رنگ یا بو نہ بدلے اور پانی اس حد سے اونچا ہو کر پتھر سے گھر جائے اور پتھر کے بیچ میں مساحت دہ در دہ سے کم ہے تو اب دہ در دہ نہ رہا

ایک خفیف قطرہ نجاست سے ساری سطح ناپاک ہو جائے گی ہاں وضو کے لئے ہاتھ ڈال کر پانی لینے سے مستعمل نہ ہو گا بے وضو پاؤں ڈال دینے سے مستعمل ہو جائے گا قابل وضو نہ رہے گا وضو کا مستعمل پانی اس میں گرنے سے مستعمل نہ ہو گا جب تک مستعمل غیر مستعمل سے زیادہ یا مساوی نہ ہو جائے اس کے پاک کر دینے کو یہ کافی ہے کہ اوپر کا حصہ پانی کا نکال دیں یہاں تک کہ صرف پتھر کے نیچے نیچے پانی رہ جائے جہاں سے دہ در دہ ہے وہ سب پاک ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۲۷: از مدرسہ منظر اسلام بریلی مسئولہ مولوی عبداللہ بہاری ۳۔ شوال ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید کہتا ہے وضو کے پانی کے قطرے کپڑے یا کسی چیز پر گریں گے

---

1 در مختار باب المیاہ مجتبائی دہلی ۱ / ۳۴ صفحہ 337 از 761

Fatawa Rizvia Volume 4

...then it will become impure, and if the congregational prayer is about to end and in that situation, he joins the prayer without wiping his hands and feet, then the drops falling from his beard etc., angels of mercy will be born from them. What is your guidance on this, please enlighten us and be rewarded.

The Answer: Clothes do not become impure from those drops, but it is not permissible to let them fall in the mosque. Enter the mosque after wiping the body enough so that drops do not fall, and I am not aware of angels of mercy being created from those drops. Allah Almighty knows best.

Issue 128: From the city of Gaya, Mohalla Nazr Ganj, asked by Shamsuddin Ahmad Allah Khan, 8th Shawwal 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this issue that wudu (ablution) has been kept permissible with hookah water, in what condition and at what time?

The Answer: When absolute water (plain water) is not available at all, then this water is also absolute water. In its presence, Tayammum (dry ablution) is not correct at all, and prayer with such Tayammum is void. Allah Almighty knows best.

Page 338 of 761 I.T. Majlis of Dawat-e-Islami

फ़तावा रज़विया जिल्द 4

...तो वह नापाक हो जाएगा और अगर जमात ख़त्म होने पर है इस सूरत में वह बिना हाथ-पाँव पोंछे जमात में शरीक हो गया तो जो कतरे उसकी दाढ़ी वग़ैरा से गिरेंगे उससे रहमत के फ़रिश्ते पैदा होंगे। हुज़ूर का इस बारे में क्या इरशाद है, बयान फरमाएं और सवाब पाएं।

अल-जवाब: उन कतरों से कपड़ा नापाक नहीं होता, मगर मस्जिद में उनका गिराना जायज़ नहीं। बदन इतना पोंछकर कि कतरे न गिरें मस्जिद में दाखिल हो, और उन कतरों से रहमत के फ़रिश्ते बनना मुझे मालूम नहीं, वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

मसला 128: शहर गया, मोहल्ला नज़्र गंज से, सायल शम्सुद्दीन अहमद अल्लाह खान, 8 शव्वाल 1339 हिजरी। क्या फरमाते हैं उलमा-ए-दीन इस मसले में कि हुक्के के पानी से वज़ू जायज़ रखा गया है, वह किस हालत और किस वक़्त पर?

अल-जवाब: जब आबे मुतलक़ (साफ़ पानी) बिल्कुल न मिले तो यह पानी भी आबे मुतलक़ है, इसके होते हुए तयम्मुम हरगिज़ सही नहीं और उस तयम्मुम से नमाज़ बातिल (अमान्य)। वल्लाहु तआला आलम।

पृष्ठ 338/761 आई.टी. मजलिस, दावत-ए-इस्लामी

تو وہ ناپاک ہو جائے گا اور اگر جماعت ختم ہونے پر ہے اس صورت میں وہ بلا ہاتھ پاؤں پونچھے شریک جماعت ہو گیا تو جو قطرے اس کی ریش وغیرہ سے گریں گے اُس سے رحمت کے فرشتے پیدا ہوں گے۔ حضور کا اس بارے میں کیا ارشاد ہے، بینوا توجروا۔

الجواب : ان قطروں سے کپڑا ناپاک نہیں ہوتا، مگر مسجد میں ان کا گرانا جائز نہیں بدن اتنا پونچھ کر کہ قطرے نہ گریں مسجد میں داخل ہو اور ان قطروں سے رحمت کے فرشتے بننا مجھے معلوم نہیں، واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۲۸: از شہر گیا محلہ نذر گنج مسئولہ شمس الدین احمد اللہ خان ۸۔ شوال ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ حقّہ کے پانی سے وضو جائز رکھا گیا ہے وہ کون حالت اور کس وقت پر؟

الجواب: جب آپِ مطلق اصلاً نہ ملے تو یہ پانی بھی آبِ مطلق ہے اس کے ہوتے ہوئے تیمم ہرگز صحیح نہیں اور اس تیمم سے نماز باطل۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

صفحہ 338 من جملہ 761 آئی ٹی مجلس دعوتِ اسلامی

Volume 4 Fatawa-e-Razvia

Chapter on the Well

Problem 129 to 134: From Old City, Mahalla Sahswani Tola, sent by Muhammad Idris Khan, 28 Jumada al-Ula 1336 AH.

(1) A scorpion was found in a well, and the skin of the lower half of its body had decomposed and remained in the water, but its belly had not burst. How should the well be purified now? (2) Also clarify what is meant by "water breaking/depleting" (pani ka tootna), i.e., how much water should be left in the well before stopping? (3) If, for some reason, there is an order to remove mud for the purpose of purifying the well, how much mud should be removed? (4) If a well begins to sink or crack during the process of fulfilling the conditions for purification, can this sinking or cracking hinder the purification process or not? For example, a well is under the rule of "water breaking" (exhaustion), and it has water equal to the height of two men. While drawing water, the level reaches at most up to the knees and at least enough that the bucket sinks well, rather even six or seven fingers of water remain above it. For these reasons it was abandoned (because the people got tired of drawing water, or the well started cracking or sinking, so they thought who would rebuild it, it is becoming useless). So, did the well become pure or not?

खंड 4 फ़तावा-ए-रज़विया

कुएँ के बारे में अध्याय

मसला 129 से 134: पुराने शहर, मोहल्ला सहस्वानी टोला से, प्रेषक मोहम्मद इदरीस खान, 28 जमादी-उल-उला 1336 हिजरी।

(1) एक कुएँ में एक बिच्छू निकला जिसके शरीर के निचले आधे हिस्से की खाल गलकर पानी में ही रह गई थी, लेकिन पेट नहीं फटा था। अब कुआँ किस तरह पाक (शुद्ध) होगा? (2) यह भी स्पष्ट करें कि "पानी टूटना" किसे कहते हैं, यानी कुएँ में कितना पानी रह जाए तो उसे छोड़ देना चाहिए? (3) अगर किसी कारण से कुएँ को पाक करने के लिए मिट्टी निकालने का हुक्म हो, तो कितनी मिट्टी निकालनी चाहिए? (4) अगर कुआँ पाक करने की शर्तों को पूरा करने के दौरान बैठने (धँसने) या फटने (दरार आने) लगे, तो क्या उसका बैठना या फटना पाकी (शुद्धता) में बाधक हो सकता है या नहीं? उदाहरण के लिए, एक कुआँ पानी टूटने के हुक्म में है और उस कुएँ में दो आदमियों के कद के बराबर पानी है। पानी निकालते-निकालते ज़्यादा से ज़्यादा घुटनों तक और कम से कम इतना कि बाल्टी अच्छी तरह डूब जाए, बल्कि उसके ऊपर भी छह-सात अंगुल पानी रहता है। इन कारणों से उसे छोड़ दिया गया (कि आदमी पानी निकालते-निकालते थक गए या कुआँ फटने लगा या बैठने लगा, तो सोचा कि इसे फिर कौन बनवाएगा, यह तो बेकार हुआ जा रहा है)। तो क्या कुआँ पाक हुआ या नहीं?

جلد چہارم فتاویٰ رضویہ

فصل فی البئر

مسئلہ ۱۲۹ تا ۱۳۴: از شہر کہنہ محلہ سہسوانی ٹولہ مرسلہ محمد ادریس خان ۲۸ جمادی الاولیٰ ۱۳۳۶ھ (۱) ایک چاہ میں ایک بچھوہا نکلا جس کے نصف دھڑ کے نیچے کی کھال گل کر پانی ہی میں رہ گئی تھی لیکن پیٹ نہیں پھٹا تھا تو اب کنواں کس طرح پاک ہو۔ (۲) یہ بھی تشریح فرمائیے کہ پانی کا ٹوٹنا کسے کہتے ہیں یعنی کتنا پانی کنوئیں میں جائے تو چھوڑ دینا چاہئے۔ (۳) اگر کسی وجہ سے کنوئیں کے پاک کرنے کی غرض سے مٹی نکالنے کا حکم ہو تو مٹی کس قدر نکالنا چاہئے۔ (۴) اگر کنواں پاکی کے شرائط پورے کرنے کے اندر بیٹھنے یا شق ہونے لگے تو اُس کا بیٹھنا یا شق ہونا پاکی کا مانع ہو سکتا ہے یا نہیں۔ مثلاً ایک کنواں پانی ٹوٹنے کا حکم رکھتا ہے اور اُس کنوئیں میں دو آدمی کے قد پانی ہے اور پانی نکالتے نکالتے زیادتی سے زیادہ گھٹنوں تک اور کم سے کم اتنا کہ بالٹی خوب ڈوب جاتی ہے بلکہ اس کے اُوپر بھی پانی چھ سات انگل رہتا ہے بدیں وجوہات اسے چھوڑ دیا گیا (کہ آدمی پانی نکالتے نکالتے تھک گئے یا کنواں شق ہونے لگا یا بیٹھنے لگا تو خیال کیا کہ اس کو پھر کون بنوائے گا یہ تو بیکار ہوا جاتا ہے) تو کنواں پاک ہوا یا نہیں؟

Fatawa Razawiya, Volume 4

(5) What is the ruling for those people who, without detailed investigation, have a well purified or declare it pure based on the hearsay of common folk, and the purification is such that the command was to drain the water until it's exhausted (break the water level) but it wasn't, or it was an impurity that required 60 buckets to be drawn for purification, but based on the word of commoners who didn't even see the impurity, only 20 buckets were drawn and the use of water was ordered saying the well is now pure?

(6) If someone performed ablution (wudu) or a ritual bath (ghusl) with impure water and offered prayers, and later learned about the impurity, until when should the prayers be repeated?

The Answer:

(1) All the water should be extracted until not even half a bucket can be submerged. And if the well doesn't empty, estimate the amount of water and extract that many buckets. And Allah Almighty knows best.

(2) The answer to this passed above, that when it starts filling less than half a bucket, the water level is considered broken (exhausted). And Allah knows best.

(3) For example, if a sparrow or rat dies in the well and gets buried in the mud such that it cannot be removed by drawing water, then drain the water completely. If the water cannot be drained by any means, leave the well for a period until there is a strong presumption that the animal has decomposed and become soil; this period is estimated to be six months. There is no need to remove the remaining mud to purify the well. And Allah Almighty knows best.

(4) Whatever water remains after attempting to drain it, for instance, suppose if 100 or 200 more buckets were drawn the bucket would fill less than half, but drawing that many buckets now is not feasible due to mentioned reasons, then leave it today. Tomorrow or in a few days when the water increases, draw those remaining 100 or 200 buckets; the well will become pure because continuity (of drawing buckets) is not a condition. And Allah Almighty knows best.

(5) Such people are sinners and deserve legal punishment (Ta'zir) under Sharia, which is the prerogative of the Islamic ruler. Now, if they do not repent, Muslims should boycott them because they have interfered unjustifiably in Sharia, made Muslims

drink impurity, and spoiled their prayers, bodies, and clothes. And Allah Almighty knows best.

(6) From the time one performed wudu with that impure water and offered prayers, and until one performed purification with pure water and offered prayers in clean clothes. For example, if one performed wudu with impure water, then later the water was purified, and on some day one bathed with that pure water such that water flowed three times from head to toe, and thereafter continued performing wudu with pure water, and on some day washed the head and changed clothes, then the prayers offered after that need not be repeated and...

फ़तावा रज़विया, जिल्द चहारम

(५) वे लोग जो बिना तशरीह (विस्तृत जाँच) के आम लोगों के कहने पर कुएं को पाक (शुद्ध) करा दें या कर दें, और शुद्धि भी ऐसी कि पानी ख़त्म करने का हुक्म था पर नहीं किया गया, या ऐसी गंदगी थी जिसे पाक करने के लिए ६० बाल्टी पानी निकालना ज़रूरी था, पर उन लोगों के कहने पर जिन्होंने गंदगी देखी तक नहीं, केवल २० बाल्टी निकलवा दी और पानी के इस्तेमाल का हुक्म दे दिया कि अब कुआं पाक हो गया। उनके लिए क्या हुक्म है?

(६) अगर नापाक पानी से वज़ू या गुसल करके नमाज़ पढ़ी और बाद में नापाकी का हाल मालूम हुआ, तो नमाज़ कब तक की वापस दोहरानी चाहिए?

अल-जवाब:

(१) कुल पानी निकाला जाए यहाँ तक कि आधी बाल्टी भी न डूबे। और अगर वह कुआं न ख़ाली हो सके तो उसके पानी का अंदाज़ा कर लें कि इतनी बाल्टियाँ हैं, उतनी निकाल लें। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह बेहतर जानता है)।

(२) इसका जवाब ऊपर गुज़रा कि जब आधी बाल्टी से कम भरने लगे तो पानी 'टूट' गया (ख़त्म मान लिया गया)। वल्लाहु आलम।

(३) चिड़िया या चूहा मान लीजिए कुएं में मर कर रह गया और मिट्टी में दब गया कि पानी निकालने से नहीं निकल सकता, तो पानी पूरा निकालें। और अगर पानी किसी तरह न निकाला जा सके तो वह कुआं इतनी मुद्दत छोड़ दें कि ग़ालिब गुमान (प्रबल संभावना) हो जाए कि वह जानवर अब गल कर मिट्टी हो गया होगा, और इसका अंदाज़ा छह ६ महीने किया गया है। बाकी मिट्टी निकालने की कोई हाजत कुआं पाक करने में नहीं है। वल्लाहु तआला आलम।

(४) जितना पानी निकालने से बाकी रह गया हो, मान लीजिए कि अगर १०० या २०० बाल्टी और निकाली जातीं तो आधी बाल्टी से कम भरती, मगर उस वक़्त इतनी बाल्टियाँ निकालना बवजह मज़कूर (उक्त कारणों से) मुनासिब नहीं तो आज छोड़ दें, कल या दो-चार दिन में जब पानी ज़्यादा हो जाए तो वह बाकी की १०० या २०० बाल्टियाँ निकाल दें, कुआं पाक हो गया क्योंकि 'मुसलसल' (लगातार) निकालना शर्त नहीं है। वल्लाहु तआला आलम।

(५) ऐसे लोग गुनहगार हैं और शरअ़न ताज़ीर (सज़ा) के मुस्तहक़ हैं जिसका अधिकार सुल्तान-ए-इस्लाम को होता है। अब इतना होना चाहिए कि अगर वे तौबा न करें तो मुसलमान उनसे मेल-जोल तर्क कर दें (बंद कर दें) क्योंकि उन्होंने शरीअत में बेजा दख़ल दिया और मुसलमानों को नजासत (गंदगी) पिलाई और उनकी नमाज़ें, बदन और कपड़े खराब किए। वल्लाहु तआला आलम।

(६) जब से उस नापाक पानी से वज़ू करके नमाज़ पढ़ी हो और उसके बाद पाक पानी से तहारत (पवित्रता) हासिल करके पाक कपड़ों से नमाज़ न पढ़ी हो। मिसाल के तौर पर, नापाक पानी से वज़ू किया और उसके बाद पानी पाक कर लिया गया और उस पाक पानी से किसी दिन इस तरह नहाया कि सिर से पैर तक तीन बार पानी बह गया, उसके बाद पाक पानी से वज़ू करता रहा और किसी दिन सिर धोया और कपड़े बदले, तो उसके बाद से जो नमाज़ें पढ़ीं वे नहीं लौटाई जाएंगी और...

पृष्ठ ३४१/७६१

فتاوی رضویہ، جلد چھارم

(۵) وہ لوگ جو بلا تشریح دریافت کیے ہوئے ہماوشما کے کہنے سے کنوئیں کو پاک کرادیں یا کردیں اور پاک بھی ایسا کہ حکم پانی ٹوٹنے کا تھا اور ٹوٹا نہ ہو ایسی نجاست جو کہ ساٹھ ۶۰ ڈول نکالنے سے پاک ہو سکتی ہے اور ہماوشما کے کہنے سے جنہوں نے کہ نجاست کو دیکھا بھی نہ ہو بیس ۲۰ ڈول نکلوادئے اور پانی کے استعمال کا حکم دے دیا کہ اب کنواں پاک ہو گیا۔ اُن کے واسطے کیا حکم ہے۔

(۶) اگر ناپاک پانی سے وضو یا غسل کر کے نماز پڑھی اور بعد کو ناپاکی کا حال معلوم ہوا تو نماز کب تک کی واپس دہرانا چاہئے۔

الجواب:

(۱) کل پانی نکالا جائے یہاں تک کہ آدھا ڈول نہ ڈوبے اور اگر وہ کنواں نہ ٹوٹتا ہو تو اس کے پانی کا اندازہ کر لیں کہ اتنے ڈول ہے اُس قدر نکال لیں، واللہ تعالیٰ اعلم۔

(۲) اس کا جواب اُوپر گزرا کہ جب آدھے ڈول سے کم بھرنے لگے تو پانی ٹوٹ گیا، واللہ اعلم۔

(۳) چڑیا چوہا مثلاً کنوئیں میں مر کر رہ گیا اور مٹی میں دب گیا کہ پانی نکالنے سے نہیں نکل سکتا تو پانی توڑ کر نکالیں اور اگر پانی کسی طرح نہ ٹوٹ سکے تو وہ کنواں اتنی مدت چھوڑ دیں کہ ظن غالب ہو جائے کہ وہ جانور اب گل کر مٹی ہو گیا ہوگا اور اس کا اندازہ چھ ۶ مہینے کیا گیا ہے باقی مٹی نکالنے کی کوئی حاجت کنواں پاک کرنے میں نہیں ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

(۴) جتنا پانی توڑنے سے باقی رہ گیا ہو مثلاً فرض کرو کہ اگر سو ۱۰۰ یا دوسو ۲۰۰ ڈول اور نکالے جاتے تو آدھی بالٹی سے کم بھرتی مگر اس وقت اتنے ڈول نکالنا بوجہ مذکور مصلحت نہیں

تو آج چھوڑ دیں کل یا دو چار روز میں جب پانی زیادہ ہو جائے وہ باقی کے سو ۱۰۰ دوسو ۲۰۰ ڈول نکال دیں کنواں پاک ہو گیا لان الولاء غیر شرط (کیوں کہ مسلسل نکالنا شرط نہیں۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

(۵) ایسے لوگ گنہگار ہیں اور شرعاً مستحق تعزیر جس کا اختیار سلطان اسلام کو ہوتا ہے اب اتنا ہونا چاہئے کہ اگر وہ توبہ نہ کریں تو مسلمان اُن سے میل جول ترک کر دیں کہ انہوں نے شریعت میں بے جا دخل دیا اور مسلمانوں کو نجاست پلائی اور اُن کی نمازیں اور بدن اور کپڑے خراب کیے، واللہ تعالٰی اعلم۔

(۶) جب سے اُس ناپاک پانی سے وضو کر کے نماز پڑھی ہو اور اس کے بعد پاک پانی سے طہارت کر کے پاک کپڑوں سے نماز نہ پڑھی ہو مثلاً ناپاک پانی سے وضو کیا اور اس کے بعد پانی پاک کر لیا گیا اور اُس پاک پانی سے کسی دن اس طرح نہایا کہ سر سے پاؤں تک تین بار پانی بہہ گیا اس کے بعد پاک پانی سے وضو کرتا رہا اور کسی دن سر دھویا اور کپڑے بدلے تو اس کے بعد سے جو نمازیں پڑھیں وہ نہ پھیری جائیں گی اور

If clothes were not changed or the head was not washed and one continued to perform ablution (wudhu) with that pure water, then all the prayers will have to be repeated, even if months have passed. This is because, although the face and hands became clean from subsequent ablutions, that impure water which touched the head during wiping (masah) will not become pure even after a thousand times of wiping, until it is washed. And Allah Almighty knows best.

Problem 135: From the city of Bareilly, Mohalla Khawaja Qutub, sent by Munshi Raza Ali Sahib, 2nd Ramadan-ul-Mubarak 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A cart rope, which had a piece of cloth wrapped around it and was tied under the ox's chest, fell into a well. The person who wrapped the cloth on the rope states that he wrapped a clean cloth. People suspect that perhaps splatters of ox dung or urine might have fallen on it. In such a case, did the well remain pure or become impure? If it became impure, how much water should be taken out?

The Answer: The well is pure; there is absolutely no need to take anything out. And Allah Almighty knows best.

Problem 136: From the city of Bareilly, Mohalla Khawaja Qutub, asked by Masood Ali, 2nd Ramadan-ul-Mubarak 1337 AH. What do the scholars of religion say in this matter: To yoke an ox to a cart, a breastband and a rope around the neck were tied. To protect the chest and neck from scratches, a dirty dupatta of a woman who does not pray (be-namazi) was wrapped around the rope, which had been in use for a long time. In this situation, there is a suspicion that the rope and cloth might not have escaped contamination from dung and urine, or from the blood and moisture that comes out after the skin is scraped due to the rubbing of the ox or buffalo. That [rope/cloth] fell into the well. In this condition, is the well pure or impure (najis)?

The Answer: Being the dirty dupatta of a non-praying woman does not necessarily make it impure, nor does long-term use, nor does the chest rope have a direct relation with dung and urine. As for the blood coming out after the skin is scraped, this requires proof; just saying "it must have come out" is not enough. It must be known, proven, and investigated that blood or other impure moisture actually came out and stained that cloth. After such investigation, the well will certainly be considered impure and the order will be to take out all the water. Otherwise, impurity cannot be established based on mere fancy or doubt. Similarly, if there is too much

doubt, take out twenty (20) buckets, not with the intention of purifying the well but to clear the doubt from one's own heart. And Allah Almighty knows best.

फतावा रज़विया जिल्द चौथी

अगर कपड़े नहीं बदले या सर नहीं धोया और उस पाक पानी से वज़ू करता रहा तो सब नमाज़ें दोहराई जाएँगी, चाहे महीने गुज़र गए हों, क्योंकि बाद के वज़ूओं से अगरचे मुँह और हाथ पाक हो गए लेकिन वह नापाक पानी जो मसह में सर को लगा था, वह हज़ार बार के मसह से भी पाक न होगा जब तक धोया न जाए। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

मसला 135: शहर बरेली, मोहल्ला ख्वाजा कुतुब से, प्रेषक मुंशी रज़ा अली साहिब, 2 रमज़ान-उल-मुबारक 1337 हिजरी। दीन के उलेमा का इस मसले में क्या कहना है कि ठेले की रस्सी जिसमें एक कपड़ा लिपटा हुआ था और जो बैल के सीने के नीचे बांधी जाती है, कुएं में गिर गई। जिस व्यक्ति ने रस्सी पर कपड़ा लपेटा था उसका कहना है कि कपड़ा पाक (साफ) लपेटा था। लोगों को संदेह है कि शायद बैल के गोबर या पेशाब की छीटें पड़ी हों। ऐसी स्थिति में कुआं पाक रहा या नापाक? अगर नापाक हुआ तो कितना पानी निकालना चाहिए?

अल-जवाब (उत्तर): कुआं पाक है, मूल रूप से कुछ भी निकालने की ज़रूरत नहीं है। वल्लाहु तआला आलम।

मसला 136: शहर बरेली, मोहल्ला ख्वाजा कुतुब से, सायल (पूछने वाले) मसूद अली, 2 रमज़ान-उल-मुबारक 1337 हिजरी। दीन के उलेमा इस मसले में क्या फरमाते हैं कि ठेले में बैल को जोतने के लिए बैल के सीने के बंद और गर्दन में एक रस्सी बंधी हुई थी, और उसके सीने और गर्दन की रगड़ से बचाने के लिए एक बे-नमाज़ी औरत का गंदा दुपट्टा रस्सी पर लिपटा हुआ था जो एक लंबे समय से इस्तेमाल हो रहा था। इस हालत में संदेह है कि रस्सी और कपड़ा गोबर और पेशाब की गंदगी से या उस खून और नमी से जो बैल या भैंस की रगड़ से खाल छिलने के बाद निकलता है, नहीं बचा होगा। वह कुएं में गिर गया। इस स्थिति में कुआं पाक है या नापाक (नजिस)?

अल-जवाब: बे-नमाज़ी औरत का गंदा दुपट्टा होने से उसकी नापाकी लाज़िम (अनिवार्य) नहीं आती, न ही लंबे समय तक इस्तेमाल से, न ही सीने की रस्सी का गोबर और पेशाब से कोई सीधा संबंध है। रही बात खाल छिलकर खून निकलने की, तो यह सबूत मांगता है; "निकला होगा" काफी नहीं है। यह मालूम होना, साबित होना और तहकीक (जाँच) होना लाज़िम है कि वास्तव में खून या कोई और नजिस नमी निकलकर उस कपड़े में लगी थी। इस तहकीक के बाद ही कुआं नापाक माना जाएगा और सारा पानी निकालने का हुक्म होगा, वरना वहम और शक पर नजासत साबित नहीं हो सकती।

इसी तरह अगर बहुत ज़्यादा शक हो तो बीस (20) डोल निकाल दें, जिसका उद्देश्य कुआं पाक करना नहीं बल्कि अपने दिल के शक को दूर करना है। वल्लाहु तआला आलम।

पृष्ठ 342 का 761

اگر کپڑے نہ بدلے یا سر نہ دھویا اور اس پاک پانی سے وضو کرتا رہا تو سب نمازیں پھیری جائیں گی اگرچہ مہینے ہو گئے ہوں کہ بعد کے وضوؤں سے اگرچہ منہ ہاتھ پاک ہو گئے مگر وہ ناپاک پانی جو مسح میں سر کو لگا تھا وہ ہزار بار کے مسح سے بھی پاک نہ ہوگا جب تک دھویا نہ جائے واللہ تعالیٰ اعلم۔ مسئلہ ۱۳۵: از شہر بریلی محلہ خواجہ قطب مرسلہ منشی رضا علی صاحب ۲۔ رمضان المبارک ۱۳۳۷ھ کیا ارشاد ہے علمائے دین کا اس مسئلہ میں کہ ٹھیلے کی رسی جس میں ایک کپڑا لپٹا ہوا تھا اور جو بیل کے سینے کے نیچے باندھی جاتی ہے کنویں میں ڈالی گئی جس نے کپڑا رسی پر لپیٹا تھا اس کا بیان ہے کہ کپڑا پاک لپیٹا تھا۔ لوگوں کا شبہ ہے کہ بیل کے گوبر یا پیشاب کی چھینٹیں شاید پڑی ہوں ایسی صورت میں کنواں پاک رہا یا ناپاک ہوا۔ اگر ناپاک ہوا تو کس قدر پانی نکالنا چاہئے۔ الجواب: کنواں پاک ہے اصلاً کچھ نکالنے کی حاجت نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ مسئلہ ۱۳۶: از شہر بریلی محلہ خواجہ قطب مسئولہ مسعود علی ۲۔ رمضان المبارک ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ٹھیلے میں بیل کے جوتنے کے لئے بیل کے سینہ بند اور گردن میں ایک رسی بندھی ہوئی تھی اور اس کے سینے اور گردن کی خراش بچانے کے واسطے ایک بے نمازی عورت کا میلا دوپٹہ رسی پر لپٹا ہوا جو کہ ایک عرصہ دراز تک استعمال میں آچکا ہے اس حالت میں ظن ہے کہ رسی اور کپڑا گوبر اور پیشاب کی آلودگی سے یا اس خون اور رطوبت سے جو بیل یا بھینس کی رگڑ سے کھال چھلنے کے بعد نکلتا ہے نہیں بچا ہوگا وہ کنویں میں گر گیا اس حالت میں کنواں پاک ہے یا نجس۔ الجواب: بے نمازی عورت کا میلا دوپٹہ ہونے سے اس کی ناپاکی لازم نہیں نہ عرصہ دراز تک استعمال سے نہ سینے کی رسی کو گوبر اور پیشاب سے علاقہ، رہا کھال چھل کر خون نکلنا یہ ثبوت طلب ہے نکلا ہو گا کافی نہیں یہ

معلوم و ثابت و تحقیق ہونا لازم کہ واقعی خون و غیرہ نجس رطوبت نکل کر اس کپڑے میں لگی تھی اس تحقیق کے بعد ضرور کنواں ناپاک مانا جائے گا اور کل پانی نکالنے کا حکم ہوگا ورنہ وہم و شک پر نجاست نہیں ہو سکتی ایسا ہی زیادہ شک ہو تو بیس ۲۰ ڈول نکال دیں جن سے مقصود نہ کنواں بلکہ اپنے دل کا شک سے پاک کرنا، واللہ تعالیٰ اعلم۔

Fatawa Razviya, Volume 4

Problem 137: From Old City, Bareilly, Mohalla Gher Jafar Khan Punjabi Tola, requested by Mr. Mahmood Ali Khan Sahib Razvi, 8 Shawwal 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: there is a well containing so much water that a pool of ten by ten (dah dar dah) can be filled from it via a water-bag (charas), yet its water level does not drop. A squirrel fell into this well, died, and rotted/burst open. In such a situation, how much water should be extracted for the well to become pure (paak)?

Answer: If the well itself is ten by ten (dah dar dah), i.e., its diameter is five yards, ten gerahs, and one finger-width, then it will not become impure. If it is smaller than that, then even a little impurity will make all its water impure, even if ten pools of ten by ten could be filled from it due to its depth or high water inflow. In this case, all the water it contains must be measured and removed for it to become pure, whether it is removed at once or over several days, and whether the water level drops completely or not at all. Extracting that many buckets will purify it in every case. The claim of some ignorant people nowadays that extracting 300 or 360 buckets from such a well is sufficient is incorrect. An easy way to measure is to tie a stone to a rope and lower it slowly; when it reaches the bottom without bending, pull it out and measure how many cubits (haath) of water there are. Then quickly draw 100 buckets and measure again to see how much the water level decreased, and calculate accordingly. For example, if there were twenty cubits of water and it decreased by one cubit after drawing 100 buckets, then extract 1900 more buckets. Or, let two reliable persons who observe the water estimate how many buckets it contains; whatever amount they say, be it a thousand or two thousand, extract that much. And Allah Almighty knows best.

Problem 138: From Ramah, तहसील Gujar Khan, Post Office Jatli, District Rawalpindi, sent by Qazi Taj Mahmood Sahib, 10 Shawwal 1338 AH. If a dog falls into a well and there is no evidence of its mouth entering the water, what is the ruling on the water?

Answer: The greater precaution is to extract all the water because according to many scholars, it is inherently impure (najis al-ayn). However, the correct and relied-upon view is that its ruling is like other predatory animals, whose saliva alone is impure. So, if the mouth did not touch the water, then extracting only twenty buckets for the satisfaction of the heart is sufficient. It is stated in Durr-ul-Mukhtar:

[Table Content] Arabic: If it is taken out alive and is not inherently impure, and has no ritual impurity (hadath) or filth (khubuth) on it, then nothing needs to be drawn out now. Urdu Translation: If it is taken out alive and it is neither inherently impure nor is any filth attached to it, then nothing will be extracted.

फतावा-ए-रजविया, खंड 4

समस्या १३७: पुराने शहर बरेली, मोहल्ला घेर जफर खान पंजाबी टोला से, महमूद अली खान साहब रजवी द्वारा प्रेषित, ८ शव्वाल १३३७ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: एक कुआं है जिसमें इतना पानी है कि उससे चरसा (पानी खींचने का थैला) के माध्यम से दस गुणा दस का एक हौज (कुंड) भर जाता है, लेकिन उसका पानी कम नहीं होता। उस कुएं में एक गिलहरी गिरकर मर गई और सड़कर फट गई। ऐसी स्थिति में कितना पानी निकाला जाए कि कुआं पाक (शुद्ध) हो जाए।

उत्तर: यदि कुआं दस गुणा दस का हो, यानी उसका व्यास पांच गज, दस गिरह और एक उंगली हो, तो वह नापाक (अशुद्ध) नहीं होगा। और यदि इससे कम है, तो थोड़ी सी गंदगी से भी उसका सारा पानी नापाक हो जाएगा, भले ही गहराई या पानी की अधिक आवक के कारण उससे दस गुणा दस के दस हौज भरे जा सकें। ऐसी स्थिति में उसमें जितना पानी हो, उसे मापकर निकाल दिया जाए तो वह पाक हो जाएगा, चाहे उसे एक बार में निकालें या कई दिनों में, और चाहे निकालने से उसका पानी खत्म हो जाए या बिल्कुल न घटे। हर स्थिति में उतनी बाल्टी पानी निकालने से वह पाक हो जाएगा। आज कल कुछ अज्ञानी लोग जो कहते हैं कि ऐसे कुएं से ३०० या ३६० बाल्टी निकालना पर्याप्त है, वह गलत है। मापने का आसान तरीका यह है कि रस्सी में पत्थर बांधकर धीरे-धीरे छोड़ें; जब वह तल तक पहुँच जाए तो उसे निकालकर मापें कि कितने हाथ पानी है। फिर जल्दी-जल्दी १०० बाल्टी खींचें और फिर मापें कि कितना पानी कम हुआ, उस आधार पर गणना करें। उदाहरण के लिए, यदि माप में बीस हाथ पानी आया और १०० बाल्टी निकालने पर एक हाथ कम हुआ, तो १९०० बाल्टी और निकालें। या दो विश्वसनीय व्यक्ति जो पानी पर नज़र रखते हों, वे अंदाज़ा लगाकर बता दें कि इसमें कितनी बाल्टी पानी है; वे जितना बताएं हजार या दो हजार, उतना निकाल दें। और अल्लाह ताला बेहतर जानता है।

समस्या १३८: रामह, तहसील गूजर खान, डाकखाना जातली, जिला रावलपिंडी से काजी ताज महमूद साहब द्वारा प्रेषित, १० शव्वाल १३३८ हिजरी। यदि कुएं में कुत्ता गिर जाए और उसके मुंह का पानी में जाने का प्रमाण न मिले, तो पानी का क्या हुक्म (आदेश) है।

उत्तर: अधिक सावधानी इसमें है कि सारा पानी निकाला जाए क्योंकि बहुत से उलेमा (विद्वानों) के अनुसार वह 'नजिस-उल-ऐन' (स्वयं अपवित्र) है। लेकिन सही और विश्वसनीय बात यह है कि उसका

हुक्म अन्य शिकारी जानवरों के समान है कि केवल उसका लार नापाक है। तो अगर मुंह पानी तक नहीं पहुँचा, तो दिल की तसल्ली के लिए सिर्फ बीस बाल्टियाँ ही काफी हैं, दुर्र-ए-मुख्तार में है:

[तालिका सामग्री] अरबी: यदि उसे जीवित निकाला जाए और वह न तो 'नजिस-उल-ऐन' हो और न ही उस पर कोई बाहरी अशुद्धि लगी हो, तो अभी कुछ भी नहीं निकाला जाएगा। उर्दू अनुवाद: यदि उसे जीवित निकाला गया और वह न तो 'नजिस-ए-ऐन' है और न ही उस पर कोई गंदगी लगी है, तो कुछ भी नहीं निकाला जाएगा।

पृष्ठ ३४३ का ७६१

فتاوی رضویہ جلد چہارم

مسئلہ ۱۳۷: از شہر کہنہ بریلی محلہ گھیر جعفر خان پنجابی ٹولہ مسئولہ جناب محمود علی خان صاحب رضوی ۸ شوال ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک کنواں ہے جس میں پانی اس قدر ہے کہ ایک حوض دہ در دہ اُس کے پانی سے بذریعہ چرسے کے بھر دیا جاتا ہے مگر پانی اُس کا نہیں ٹوٹتا اُس کنوئیں میں گلہری گر کر مر گئی اور سڑ کر پھٹ گئی ایسی حالت میں کس قدر پانی نکالا جاوے کہ کنواں پاک ہو جاوے۔

الجواب: اگر کنواں آپ دہ در دہ ہو یعنی اس کا قطر پانچ گز دس گرہ ایک انگل ہو جب تو ناپاک نہ ہو گا اور اس سے کم ہے تو ذراسی نجاست سے اُس کا کُل پانی ناپاک ہو جائے گا اگرچہ کثرتِ عمق یا زیاد تِ آمدِ آب کے سبب اُس سے دس حوض دہ در دہ بھر سکیں۔ اس صورت میں اُس میں جتنے ڈول پانی ہو وہ ناپ کر نکال دیا جائے پاک ہو جائے گا خواہ دفعۃً نکالیں یا کئی روز میں اور خواہ نکالنے سے اس کا پانی ٹوٹ جائے یا اصلًا نہ گھٹے ہر صورت میں اتنے ڈول نکالنے سے پاک ہو جائے گا اور وہ جو آج کل بعض بے علم لوگ ایسے کنوئیں سے ۳۰۰ یا ۳۶۰ ڈول نکالنا کافی بتاتے ہیں غلط ہے۔ ناپنے کا آسان طریقہ یہ ہے کہ رسی میں پتھر باندھ کر آہستہ آہستہ چھوڑیں، خم نہ پڑے جب تہہ کو پہنچ جائے نکال کر ناپیں کہ اتنے ہاتھ پانی ہے پھر جلد جلد سو ڈول کھینچ کر ایسے ہی ناپیں جتنا پانی گھٹا اُس سے حساب لگالیں مثلاً بیس ہاتھ پانی ناپ میں آیا اور سو ڈول نکالنے سے ایک ہاتھ گھٹا تو ۱۹۰۰ ڈول اور نکالیں یا دو معتبر شخص کہ پانی میں نگاہ رکھتے ہوں اندازہ کر کے بتا دیں کہ اس میں اتنے ڈول پانی ہے ہزار دو ہزار جتنے بتائیں اُس قدر نکال دیں واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۳۸: از رامہ تحصیل گوجر خان ڈاکخانہ جاتلی ضلع راولپنڈی مرسلہ قاضی تاج محمود صاحب ۱۰ شوال ۱۳۳۸ھ اگر سگ کنوئیں میں گر پڑے اور اس کے منہ کے پانی میں داخل ہونے کی ثبوت نہیں ملتی پانی کا کیا حکم ہے۔

الجواب: زیادہ احتیاط یہ ہے کہ کُل پانی نکالیں کہ بہت مشائخ کے نزدیک وہ نجس العین ہے مگر صحیح و معتمد یہ ہے کہ اُس کا حکم باقی سباع کے مثل ہے کہ صرف لعاب ناپاک ہے تو اگر منہ پانی نہ پہنچا صرف بیس ڈول تطییب قلب کے لئے کافی ہیں، دُر مختار میں ہے:

[جدول] لو اخرج حیاً ولیس بنجس العین ولا به حدث او خبث لم ینزح شیئی الان اگر زندہ نکالا گیا اور وہ نہ تو نجس عین ہے اور نہ ہی کوئی نجاست لگی ہوئی ہے تو کچھ بھی نہیں نکالا جائے گا

Fatawa Razawiyya Volume Four

If its mouth reaches the water, then its leftovers (su'r) will be considered. If it is impure, all water must be extracted; otherwise, not. This is the correct view. (T)

It is in Radd al-Muhtar: His (the author of Durr-e-Mukhtar's) statement "nothing shall be extracted" means that extraction is not mandatory. As stated in Al-Khaniyyah, if a sheep falls in and comes out alive, twenty buckets should be extracted for the peace of mind (satisfaction), not for purification. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 139: From District Faridpur, village Qatal Nagar, sent by Abdul Ghani Sahib, 22 Dhu al-Qi'dah 1338 AH. What do the scholars of religion and the muftis of the firm Shariah say about this issue: A water-carrier who does not pray and does not perform small 'istinja' (purification after urination) with water, performed a basic ritual bath (ghusl) by pouring a bucket of water over his head and then dived into a well, and he did not change his used clothes either. What is the ruling regarding this well now? Explain and be rewarded.

The Answer: If he had performed small 'istinja' with a clod of earth and it is not certain that there was any impurity on his body or clothes, then extract twenty (20) buckets, otherwise all the water. And Allah Almighty knows best.

---

1 Durr-e-Mukhtar, Section on Wells, printed by Mujtabai, Delhi, 1/39. 2 Radd al-Muhtar, Section on Wells, printed by Mustafa al-Babi, Egypt, 1/156.

मगर यह कि उसका मुँह पानी तक पहुँच जाए तो उस वक़्त उसके जूठे(सऊर) का एतबार किया जाएगा, अगर नापाक है तो तमाम पानी निकाला जाए वरना नहीं। यही सही है। (त)

रद्द अल-मुह्तार में है: इस (साहिबे दुर्रे मुख्तार) के क़ौल "लम युनज़ह शैई" (कुछ भी न निकाला जाए) से मुराद यह है कि निकालना वाजिब नहीं जैसा कि ख़ानिया में है कि अगर बकरी गिर जाए और ज़िंदा निकल आए तो इत्मीनाने क़ल्ब के लिए बीस डोल निकाले जाएँ, पाक करने के लिए नहीं। वल्लाह तआला आलम। (त)

मसला १३९: अज़ ज़िला फ़रीदपुर मौज़ा क़तल नगर मुर्सला अब्दुल ग़नी साहिब २२ ज़िल्कादा १३३८ हिजरी। क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरअ मतीन इस मसले के बारे में कि एक बहिश्ती बे-नमाज़ी जो छोटा इस्तिंजा पानी से नहीं करते मामूली तौर पर ग़ुस्ल करके यानी एक डोल पानी सर पर डाल कर कुएं में गोता लगाया था और इस्तेमाली कपड़ा भी नहीं बदला था अब उस कुएं का क्या हुक्म है बैनू तूजरू।

अल-जवाब: अगर छोटा इस्तिंजा ढेले से कर लिया हो और बदन या कपड़े पर कोई नजासत होना तहक़ीक़ न हो तो बीस (२०) डोल निकालें वरना कुल पानी। वल्लाह तआला आलम।

---

1. दुर्रे मुख्तार फ़स्ल फ़िल बीर मतबूआ मुज्तबाई देहली १/३९
2. रद्द अल-मुह्तार फ़स्ल फ़िल बीर मतबूआ मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र १/१५६

فتاوی رضویہ جلد چہارم

یدخل فمه الماء فیعتبر بسوره فان نجسا نزح الکل والا لا هو الصحیح - 1 مگر یہ کہ اس کا منہ پانی تک پہنچ جائے تو اس وقت اس کے جھوٹے کا اعتبار کیا جائے گا، اگر ناپاک ہے تو تمام پانی نکالا جائے ورنہ نہیں۔ یہی صحیح ہے۔ (ت)

رد المحتار میں ہے: قوله لم ینزح شیئ ای وجوبا لما فی الخانیة لوقعت شاة وخرجت حیة ینزح عشرون دلوا لتسکین القلب لالتطهیر 2- واللہ تعالی اعلم- اس (صاحبِ دُرِّمختار) کے قول "لم ینزح شیئ" (کچھ بھی نہ نکالا جائے) سے مراد یہ ہے کہ نکالنا واجب نہیں جیسا کہ خانیہ میں ہے کہ اگر بکری گر جائے اور زندہ نکل آئے تو اطمینانِ قلب کے لئے بیس ڈول نکالے جائیں، پاک کرنے کے لئے نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۱۳۹: از ضلع فرید پور موضع قتل نگر مرسلہ عبدالغنی صاحب ۲۲ ذیقعدہ ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ کے بارے میں کہ ایک بہشتی بے نمازی جو چھوٹا استنجا پانی سے نہیں کرتے معمولی طور پر غسل کرکے یعنی ایک ڈول پانی سر پر ڈال کر کنویں میں غوطہ لگایا تھا اور استعمالی کپڑا بھی نہیں بدلا تھا اب اس کنویں کا کیا حکم ہے بینوا توجروا۔

الجواب: اگر چھوٹا استنجا ڈھیلے سے کرلیا ہو اور بدن یا کپڑے پر کوئی نجاست ہونا تحقیق نہ ہو تو بیس ۲۰ ڈول نکالیں ورنہ کل پانی۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

---

1 دُرّ مختار فصل فی البئر مطبوعہ مجتبائی دہلی ۳۹/۱ 2 رد المحتار فصل فی البئر مطبوعہ مصطفی البابی مصر ۱۵۶/۱

Volume Four Fatawa Rizwia

Chapter on Wiping over the Leather Socks

Problem 140: From Ujjain, residence of Mir Khadim Ali Sahib Assistant, sent by Mulla Yaqub Ali Khan, 15 Jumadi al-Ula 1310 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: is it permissible to wipe over cotton socks or not? Please clarify and be rewarded.

The Answer: Wiping over cotton or woolen socks, like those prevalent in our cities, is not correct according to anyone, as they are not mujallad (leather-covered or made of leather).

Page 346 of 761

जिल्द चौथी फ़तावा रज़विया

चमड़े के मोजों पर मसह करने का अध्याय

मसला १४०: उज्जैन से, मीर खादिम अली साहब असिस्टेंट के निवास से, मुल्ला याकूब अली खान द्वारा प्रेषित, १५ जमादी-उल-उला १३१० हिजरी। धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं कि सूती मोज़े पर मसह करना जायज़ है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

अल-जवाब (उत्तर): सूती या ऊनी मोज़े, जैसे कि हमारे शहरों में प्रचलित हैं, उन पर मसह करना किसी के भी मत में सही नहीं है, क्योंकि वे मुजल्ल्द (चमड़े से मढ़े हुए) नहीं हैं।

पृष्ठ ७६१ में से ३४६

جلد چہارم فتاویٰ رضویہ

باب المسح علی الخفین

مسئلہ ۱۴۰: از اوجین مکان میر خادم علی صاحب اسٹنٹ مرسلہ ملا یعقوب علی خان ۱۵ جمادی الاولیٰ ۱۳۱۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ سُوتی موزہ پر مسح جائز ہے یا نہیں۔ بینوا توجروا۔

الجواب: سُوتی یا اُونی موزے جیسے ہمارے بلاد میں رائج ان پر مسح کسی کے نزدیک درست نہیں کہ نہ وہ مجلد ہیں

صفحہ ۳۴۶ از ۷۶۱

Fatawa Razawiyyah, Volume 4 That is, they are not covered with leather up to the ankles, nor are they 'Mun'al' (having a leather sole), nor 'Thakheen' (thick), meaning so thick and firm that if one walks a distance wearing only them, they do not tear, and they stay on the leg due to their thickness without being tied and do not slip down, and if water falls on them, they hold it and it does not immediately seep through to the feet. Socks that lack these three qualities - being leather-covered, leather-soled, or thick - are prohibited for wiping (Masah) by consensus. However, if they are covered with leather or given a leather sole, then by consensus, or if they are made thick in such a manner, then according to the Sahabayn (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad), wiping is permissible, and the fatwa is based on this.

Arabic Text

In Al-Munyah and Al-Ghunyah: (Wiping over socks is not permissible according to Abu Hanifa unless they are leather-covered) meaning the leather encompasses the entire area from the foot to the ankles (or leather-soled) meaning the part of the socks touching the ground is made of leather, like a shoe for a person. (And they [Sahabayn] said: it is permissible if they are thick and not transparent/permeable). For if the sock is such that water does not pass through it to the foot, it is like leather or a thick hide in terms of not absorbing water into itself except after staying or rubbing, unlike thin socks which absorb water and let it reach the foot immediately[1].

(And upon it) i.e., upon the saying of Abu Yusuf and Muhammad (is the Fatwa. And 'thick' is that which stays on the leg without being tied with anything). All of them [the jurists] have explained it this

Urdu Translation/Explanation

In Munyah and Ghunyah it is stated: (According to Imam Abu Hanifa, mercy be upon him, wiping on socks is not permissible unless they are of leather) meaning they cover the entire area that covers the foot up to the ankles (or are leather-soled) meaning only that part of the socks which touches the ground is leather, like the sole of a shoe. (And the Sahabayn said if [the socks] are so thick that they do not open, then wiping is permissible because if a sock is such that water does not pass through to the foot, then in terms of absorption it is like leather or leather-wrapped socks. If it absorbs water after some delay or rubbing, there is no harm, unlike thin socks which absorb water and immediately deliver it to the feet). (T)

(And upon it) i.e., the fatwa is according to the opinion of Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad, may Allah have mercy on them both. And 'Thakheen' (thick) is that which stays on the shin without being tied

Arabic Text	Urdu Translation/Explanation
way, and it is appropriate to restrict it to cases where it is not tight, for we observe that a tight sock stays on the leg without being tied, and [here the definition refers to thickness as the cause].	with anything. All jurists have explained it in this way, but it is appropriate to add the condition of it not being tight, because in our observation, a sock that is tight [will stay up regardless of thickness].

[1] Ghuniyat al-Mustamli, Section on Wiping over Socks, published by Suhail Academy Lahore, p. 120. Page 347 of 761

फतावा रज़विया, खंड 4 अर्थात् टखनों तक चमड़े से मढ़े हुए न हों, न ही 'मुनअल' यानी चमड़े का तला लगा हो, और न ही 'सख़ीन' यानी इतने मोटे और मज़बूत कि केवल उन्हें पहनकर रास्ता तय किया जाए तो वे फटे नहीं, और अपनी मोटाई के कारण बिना किसी पट्टी के पिंडली पर टिके रहें और नीचे न खिसकें, और यदि उन पर पानी पड़े तो वे उसे रोक लें और तुरंत पैरों तक न पहुँचने दें। वे मोज़े जिनमें ये तीनों विशेषताएँ—चमड़े से मढ़े हुए, चमड़े के तले वाले, या मोटे—न हों, उन पर 'मसह' (पोंछना) सर्वसम्मति से वर्जित है। हाँ, यदि उन्हें चमड़े से मढ़ दिया जाए या चमड़े का तला लगा दिया जाए, तो सर्वसम्मति से, या शायद यदि उन्हें इस प्रकार मोटा बनाया जाए, तो साहबैन (इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद) के अनुसार मसह जायज़ होगा और इसी पर फतवा है।

अरबी पाठ

अल-मुन्या और अल-गुन्या में है: (मोज़ों पर मसह करना इमाम अबू हनीफ़ा के अनुसार जायज़ नहीं है जब तक कि वे चमड़े से मढ़े न हों) अर्थात् चमड़ा टखनों तक के पूरे हिस्से को घेर ले (या मुनअल हों) अर्थात् मोज़ों का वह हिस्सा जो ज़मीन को छूता है, चमड़े का बना हो, जैसे व्यक्ति की जूती होती है। (और उन दोनों [साहबैन] ने कहा: यदि वे मोटे हों और पारदर्शी/पारगम्य न हों, तो जायज़ है)। क्योंकि यदि मोज़ा ऐसा हो कि पानी उससे होकर पैर तक न जाए, तो वह पानी को स्वयं में न सोखने के मामले में चमड़े और चमड़े से ढके मोज़े की तरह है, जब तक कि वह लंबे समय तक न रहे या रगड़ा न जाए, इसके विपरीत पतले मोज़े जो पानी सोख लेते हैं और तुरंत पैर तक पहुँचा देते हैं[1]।

(और उसी पर) अर्थात् अबू यूसुफ़ और मुहम्मद के कथन पर (फतवा है। और 'सख़ीन' वह है जो बिना कुछ बाँधे पिंडली पर टिका रहे)। सभी

उर्दू अनुवाद/व्याख्या

मुन्या और गुन्या में है: (इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि के अनुसार मोज़ों पर मसह जायज़ नहीं है मगर यह कि वे चमड़े के हों) यानी वे उस पूरे स्थान को घेर लें जो पैर को टखनों तक ढकता है (या मुनअल हों) यानी मोज़ों का जो हिस्सा ज़मीन से मिलता है केवल वह चमड़े का हो, जैसे पैर की जूती होती है (और साहबैन ने फ़रमाया अगर [मोज़े] इतने मोटे हों कि वे न खुलें, तो मसह जायज़ है क्योंकि अगर मोज़ा इस तरह का हो कि पानी पैर तक न पहुँचे, तो वह सोखने के मामले में चमड़े और चमड़ा मढ़े हुए मोज़े की तरह है। यदि कुछ देर रुकने या रगड़ने से पानी सोख ले तो कोई हर्ज नहीं, इसके विपरीत पतले मोज़े के, जो पानी सोख कर तुरंत पैरों तक पहुँचा देता है)। (त)

(और उसी पर) यानी इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद रहमहुल्लाहि अलैहि के कथन पर फ़तवा है, और सख़ीन वह है जो बिना किसी चीज़ से बाँधे

अरबी पाठ

[फकीहों] ने इसकी इसी प्रकार व्याख्या की है, और उचित है कि इसे तंग न होने की शर्त के साथ जोड़ा जाए, क्योंकि हम देखते हैं कि जो मोज़ा तंग होता है, वह बिना बाँधे ही पिंडली पर टिका रहता है [और यहाँ मोटाई की बात हो रही है]।

उर्दू अनुवाद/व्याख्या

पिंडली पर ठहर जाए। तमाम फ़कीहों ने इसकी इसी तरह व्याख्या की है लेकिन उचित है कि इसके साथ तंग न होने की शर्त लगाई जाए क्योंकि हमारे अवलोकन में है कि जो मोज़ा तंग हो [वह भी टिका रहता है]।

[1] गुनियातुल मुस्तमली, मोज़ों पर मसह का अध्याय, सुहैल अकादमी लाहौर द्वारा प्रकाशित, पृ. 120।

فتاوی رضویہ جلد چہارم یعنی ٹخنوں تک چڑا منڈھے ہوئے نہ منعل یعنی تلا چڑے کا لگا ہوا نہ سخین یعنی ایسے دبیز و محکم کہ تنہا انہیں کو پہن کر قطع مسافت کریں تو شق نہ ہو جائیں اور ساق پر اپنے دبیز ہونے کے سبب بے بندش کے رکے رہیں ڈھلک نہ آئیں اور ان پر پانی پڑے تو روک لیں فوراً پاؤں کی طرف چھن نہ جائے جو پاتاہے ان تینوں وصف مجلد منعل سخین سے خالی ہوں ان پر مسح بالاتفاق نا جائز ہے۔ ہاں اگر ان پر چڑا منڈھ لیں یا چڑے کا تلا لگا لیں تو بالاتفاق یا شاید کہیں اُس طرح کے دبیز بنائے جائیں تو صاحبین کے نزدیک مسح جائز ہو گا اور اسی پر فتویٰ ہے۔

عربی متن	اردو ترجمہ/تشریح
فی المنیة والغنیة (المسح علی الجوارب	منیہ اور غنیہ میں ہے (امام ابو حنیفہ رحمہ اللہ کے نزدیک
لا یجوز عند ابی حنیفہ الا ان یکونا	جرابوں پر مسح جائز نہیں مگر یہ کہ چڑے کی ہوں) یعنی
مجلدین) ای استوعب الجلد مایستقر	اس تمام جگہ کو گھیر لیں جو قدم کو ٹخنوں تک ڈھانپتی
القدم الی الکعب (او منعلین) ای جعل	ہے (یا منعل ہوں) یعنی جرابوں کا جو حصہ زمین سے ملتا
الجلد علی مایلی الارض منهما خاصۃ	ہے صرف وہ چڑے کا ہو، جیسے پاؤں کی جوتی ہوتی ہے
کالنعل للرجل (وقالا یجوز اذا کانا	(اور صاحبین نے فرمایا اگر (جرابیں) ایسی دبیز ہوں کہ نہ
ثخینین لایشفان) فان الجورب اذا کان	کھلتی ہوں تو مسح جائز ہے کیونکہ اگر جراب اس طرح
بحیث لایجاوز الماء منہ الی القدم فهو	کی ہو کہ پانی قدم تک تجاوز نہ کرے تو وہ جذب کرنے
بمنزلۃ الادیم والصرم فی عدم جذب	کے حق میں چڑے اور چڑا چڑھاے ہوئے موزے کی
الماء الی نفسہ الا بعد لبث او دلک	طرح ہے مگر کچھ دیر ٹھہرنے یا رگڑنے سے پانی جذب

عربی متن	اردو ترجمہ/تشریح
بخلاف الرقیق فانہ یجذب الماء وینفذہ الی الرجل فی الحال[1]۔	کرے تو کوئی حرج نہیں، بخلاف پتلی جراب کے، کہ وہ پانی کو جذب کر کے فوراً پاؤں تک پہنچاتی ہے۔ (ت)
(وعلیہ) ای علی قول ابی یوسف ومحمد (الفتوی والثخین ان یستمسک علی الساق من غیر ان یشد بشیئ) ھکذا فسروہ کلھم وینبغی ان یقید بما اذا لم یکن ضیقاً فانا نشاھد مایکون فیہ ضیق یستمسک علی الساق من غیر شد والحد	(وعلیہ) یعنی امام ابو یوسف اور امام محمد رحمہما اللہ کے قول پر فتویٰ ہے، اور سخین وہ ہے کہ کسی چیز سے باندھے بغیر پنڈلی پر ٹھہر جائے تمام فقہا نے اس کی یونہی وضاحت کی ہے لیکن مناسب ہے کہ اس کے ساتھ تنگ نہ ہونے کی قید لگائی جائے کیونکہ ہمارے مشاہدے میں ہے کہ جو جراب تنگ ہو

[1] غنیۃ المستملی، فصل فی المسح علی الخفین مطبوعہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۲۰ Page 347 of 761

Fatawa-e-Razawiya, Volume 4

(Arabic Text): ...the closer view is that it does not absorb water and it is more correct that one can walk in them. Najm al-Din al-Zahidi has mentioned from Shams al-A'immah al-Halwani that socks made of yarn and hair, if they are thin, it is unanimously not permissible to wipe (Masah) over them unless they are leather-encased (mujallad) or soled (muna'al). If they are thick, and not leather-encased or soled, then there is a difference of opinion. If they are [leather-encased or soled], then there is no difference of opinion. [Ghunyah al-Mustamli, Chapter on Wiping over Socks, p. 121] I say: Here, a misunderstanding occurred to the learned master Akhi Yusuf Chalabi in his marginalia on Sharh al-Wiqayah. So do not be concerned with it after hearing the text of the great Imam Shams al-A'immah. Likewise, there is text in al-Khulasah which is sufficient to remove it, as investigated in al-Ghunyah, and a portion of it is mentioned in Radd al-Muhtar, so refer to them if you wish. And Allah, Glorified and Exalted is He, knows best.

(Urdu Translation/Explanation): They stay on the calf even without being tied. Regarding leather socks (khuffain), saying that they should not absorb water and it should be possible to walk in them continuously is closer to the truth and is the best definition. (T) Najm al-Din Zahidi, citing Shams al-A'immah Halwani, mentioned that if socks made of wool or hair are thin, it is unanimously not permissible to perform 'Masah' (wiping) over them unless they are covered with leather or have a leather sole. And if they are thick but not leather-covered or soled, there is a difference of opinion regarding wiping over them, whereas there is no difference of opinion regarding leather-covered or soled ones. [End of summary]. (T) The learned Akhi Yusuf Chalabi had a misunderstanding at this point in the marginalia of Sharh al-Wiqayah. Therefore, after hearing the clear statement of the great Imam Shams al-A'immah, you should not adopt that [former] opinion. Similarly, there is a clear statement in 'Khulasah' which is sufficient to remove this doubt, as researched in 'Ghunyah'. Some discussion is also mentioned in 'Radd al-Muhtar'; refer there if you wish. And Allah, Glorified and Exalted, knows best. (T)

Issue 121: Old Dahanah station, District Residency Gwalior, asked by Munshi Noor Muhammad Merchant. What do the scholars of religion and muftis of the firm Shariah say regarding boots that cover the ankles, i.e., boots like those worn by soldiers? Do these boots have the same legal status as leather socks (khuffain) or not? Because on leather socks...

Footnotes: 1. Ghunyah al-Mustamli, Chapter on Wiping over Socks, published by Suhail Academy Lahore, p. 121. 2. Chalabi said: If they are not thick, then even if leather is wrapped underneath, wiping is not permissible. Dhakhirat al-Uqba, p. 52.

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द चौथी

(अरबी पाठ): ...पानी को जज़्ब न करने के अधिक निकट हो और जिसमें लगातार चलना संभव हो, वह अधिक सही है। नज्म अल-दीन अल-ज़ाहिदी ने शम्स अल-अइम्मा अल-हलवानी के हवाले से ज़िक्र किया है कि सूत और बालों से बनी जुराबें, यदि वे पतली हों, तो सर्वसम्मति से उन पर मसह (पोंछना) करना जायज़ नहीं है जब तक कि वे चमड़े से मढ़ी हुई (मुजल्ल्द) या तले वाली (मुनअल) न हों। यदि वे मोटी हों और चमड़े से मढ़ी हुई या तले वाली न हों, तो इसमें मतभेद है। और यदि वे [चमड़े से मढ़ी हुई या तले वाली] हों, तो इसमें कोई मतभेद नहीं है। [ग़ुन्यतुल मुस्तमली, मसह अल-ख़ुफ़ैन का अध्याय, पृष्ठ 121] मैं कहता हूँ: यहाँ फ़ाज़िल आकि यूसुफ़ चलपी से शरह अल-विकाया के हाशिया में एक भ्रम हुआ है। तो शम्स अल-अइम्मा के स्पष्ट कथन को सुनने के बाद आप उस पर ध्यान न दें। इसी प्रकार 'खुलासा' में भी स्पष्टीकरण है जो इसे दूर करने के लिए पर्याप्त है जैसा कि 'ग़ुन्या' में इसकी तहक़ीक़ की गई है और इसका एक हिस्सा 'रद अल-मुह्तार' में भी ज़िक्र है, यदि आप चाहें तो वहाँ रुजूअ (संदर्भ) करें। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है।

(उर्दू अनुवाद/व्याख्या): वह बिना बाँधे भी पिण्डली पर ठहर जाती है। मोज़ों के बारे में यह कहना कि वह पानी को जज़्ब न करे और उसके साथ लगातार चलना मुमकिन हो, हक़ के ज़ियादा क़रीब और बेहतरीन तारीफ़ है। (त) नज्म अल-दीन ज़ाहिदी ने शम्स अल-अइम्मा हलवानी से नक़्ल करते हुए ज़िक्र किया कि ऊन और बालों से बनी हुई जुराबें पतली हों तो बिल-इत्तिफ़ाक़ (सर्वसम्मति से) उन पर मसह जाइज़ नहीं जब तक वह मुजल्ल्द या मुनअल न हों और अगर वह (ग़लीज़/मोटी) हों तो उनमें से जो मुजल्ल्द और मुनअल न हों उन पर मसह करने में इख़्तिलाफ़ है जबकि मुजल्ल्द और मुनअल में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं, इंतहा मुल्तक़तन। (त) फ़ाज़िल अख़ी यूसुफ़ चलपी को हाशिया शरह वक़ाया के इस मक़ाम पर एक वहम हुआ, लिहाज़ा इमाम अल-शान शम्स अल-अइम्मा की तसरीह (स्पष्टीकरण) सुनने के बाद अब तुम्हें वह क़ौल इख़्तियार नहीं करना चाहिए, इसी तरह ख़ुलासा में भी तसरीह है जो इसके अज़ाला (निवारण) के लिए काफ़ी है जैसा कि ग़ुन्या में इसकी तहक़ीक़ की है और कुछ बहस रद-उल-मुह्तार में भी मज़कूर है अगर चाहो तो वहाँ रुजूअ करो। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला ख़ूब जानता है। (त)

मसअला 121: मक़ाम कुहना दहाना ज़िला रेज़ीडेंसी ग्वालियर, मसऊला मुंशी नूर मोहम्मद सौदागर। क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन व मुफ़्तियाने शरअ-ए-मतीन इस बारे में कि बूट जिनसे टख़ना ढक

जाता है यानी बूट जो पलटन वाले पहनते हैं वह बूट क्या चमड़े के मोज़े का हुक्म रखता है या नहीं? चूँकि चमड़े के मोज़े पर...

पाद-टिप्पणी: 1. ग़ुन्यतुल मुस्तमली, फ़स्ल फ़िल-मसह अल-ख़ुफ़ैन, मतबुआ सुहैल एकेडमी लाहौर, पृ. 121 2. चलपी ने फ़रमाया अगर वह सख़ीन (मोटी) न हों तो नीचे चमड़ा चढ़ा होने के बावजूद मसह जाइज़ नहीं। ज़ख़ीरतुल उक़्बा, पृ. 52।

بعدم جذب الماء اقرب و بمایمکن فیه متابعة المشی اصوب۔ وقد ذکر نجم الدین الزاهدی عن شمس الائمة الحلواني ان الجوارب من الغزل والشعر ماکان رقیقا منها لایجوز المسح علیه اتفاقا الاان یکون مجلدا اومنعلا و ماکان ثخینا منها فان لم یکن مجلدا اومنعلا فمختلف فیه وماکان فلا خلاف فیه ۱ اھ ملتقطا۔ قلت وھھنا وھم عرض للمولی الفاضل اخی یوسف چلپی فی حاشیة شرح الوقایة فلاعلیك منه بعد ماسمعت نص امام الشان شمس الائمة وکذلك نص فی الخلاصة بمایکفی لازاحته کما حققه فی الغنیة وذکر طرفا منه فی ردالمحتار فراجعها ان شئت واللہ سبحانه وتعالی اعلم۔

وہ باندھے بغیر بھی پنڈلی پر ٹھہر جاتی ہے۔ موزے کے بارے میں یہ کہنا کہ وہ پانی کو جذب نہ کرے اور اس کے ساتھ لگاتار چلنا ممکن ہو، حق کے زیادہ قریب اور بہترین تعریف ہے۔(ت) نجم الدین زاہدی نے شمس الائمہ حلوانی سے نقل کرتے ہوئے ذکر کیا کہ اون اور بالوں سے بنی ہوئی جرابیں پتلی ہوں تو بالاتفاق ان پر مسح جائز نہیں جب تک وہ مجلد یا منعل نہ ہوں اور اگر وہ (دبیز ہوں تو ان میں سے جو مجلد اور منعل نہ ہوں ان پر مسح کرنے میں اختلاف ہے جبکہ مجلد اور منعل میں کوئی اختلاف نہیں، انتہی ملتقطاً۔ (ت) فاضل اخی یوسف چلپی کو حاشیہ شرح وقایہ کے اس مقام پر ایک وہم ہــ۲ ہوا، لہذا امام الشان شمس الائمہ کی تصریح سننے کے بعد اب تمہیں وہ قول اختیار نہیں کرنا چاہئے ، اسی طرح خلاصہ میں بھی تصریح ہے جو اس کے ازالہ کے لئے کافی ہے جیسا کہ غنیہ میں اس کی تحقیق کی ہے اور کچھ بحث ردالمحتار میں بھی مذکور ہے اگر چاہو تو وہاں رجوع کرو۔اور اللہ سبحانہ، و تعالٰی خوب جانتا ہے۔ (ت)

مسئلہ ۱۲۱: مقام کہنہ دہانہ ضلع رزے ڈنسی گوالیار مسئولہ منشی نور محمد سوداگر کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس بارے میں کہ بوٹ جن سے ٹخنہ ڈھک جاتا ہے یعنی بوٹ

کہ پلٹن والے پہنتے ہیں وہ بوٹ کیا چمڑے کے موزے کا حکم رکھتا ہے یا نہیں۔ چونکہ چمڑے کے موزے پر

۱ غنیة المستملی فصل فی المسح علی الخفین مطبوعہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۲۱ ۲ چلپی نے فرمایا اگر وہ ثخین نہ ہو تو نیچے چمڑا چڑھا ہونے کے باوجود مسح جائز نہیں۔ ذخیرة العقبی ص

Volume 4 Fatawa Razawiyya

It is correct to perform Masah (wiping) [Al-Alamgiri]. So please tell me, is it correct to perform Masah on boots? That is, should Masah be performed or not, and is the prayer valid with it or what?

The Answer: It is correct. In Mi'raj al-Dirayah, then Bahr al-Ra'iq, and then in Radd al-Muhtar, it is stated:

[Arabic Text]: It is permissible [to perform Masah] on a split overshoe (jaruq) that is open over the top of the foot and has buttons to fasten it, which close it up, because it then becomes like a non-split one. If any part of the top of the foot is visible, then it is like tears in a leather sock. And Allah Almighty knows best.

[Urdu Translation]: Masah is permissible on such leather socks that are open from the top of the foot but are closed by fastening buttons; in that case, they are like closed ones. And if some part of the top of the foot is exposed, then it is like torn leather socks. And Allah Almighty knows best. (T)

[1] Radd al-Muhtar, Chapter on Wiping Over Leather Socks, printed by Mustafa al-Babi, Egypt, 1/192.

Page 349 of 761

जिल्द चौथी फ़तावा रज़विया

मसह करना दुरुस्त है (आलमगीरी), तो फ़रमाइए कि बूट पर मसह करना दुरुस्त है यानी मसह करना चाहिए या नहीं और नमाज़ इससे दुरुस्त है या क्या?

अल-जवाब: दुरुस्त है। मेराज अद-दिराया, फिर बहर अर-राईक़, फिर रद्द अल-मुह्तार में है:

[अरबी]: ऐसे फटे हुए (ऊपर से खुले) जारूक (चमड़े के मोज़े) पर मसह जायज़ है जो पैर के ऊपरी हिस्से से खुला हो और उसे बटन लगाकर बंद किया गया हो जो उसे ढक दे, क्योंकि यह फिर बिना खुले मोज़े की तरह है। और अगर पैर के ऊपरी हिस्से का कुछ हिस्सा दिखाई दे, तो वह चमड़े के मोज़े (खुफ़) के सुराख़ की तरह है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

[उर्दू अनुवाद]: ऐसे मोज़े पर मसह जायज़ है जो कदम के ऊपर से खुला हो और उसे बटन लगाकर बंद किया गया हो तो वह बंद की तरह है और अगर कदम की पीठ (ऊपरी हिस्सा) से कुछ हिस्सा नंगा हो तो वह फटे हुए मोज़े की तरह है। और अल्लाह तआला खूब जानता है। (त)

[1] रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-मसह अलल खुफ़्फ़ैन, मुद्रित मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/192।

पेज 349 का 761

مسح کرنا درست ہے (عالمگیری) تو فرمائیے کہ بوٹ پر مسح کرنا درست ہے یعنی مسح کرنا چاہیے یا نہیں اور نماز اس سے درست ہے یا کیا؟

الجواب: درست ہے معراج الدرایہ پھر بحر الرائق پھر ردالمحتار میں ہے:

یجوز علی الجاروق المشقوق علی ظھر القدم ولہ ازرار یشدھا علیہ تسدہ لانہ کغیر المشقوق وان ظھر من ظھر القدم شیئ فھو کخروق الخف واللہ تعالی اعلم۔

ایسے موزے پر مسح جائز ہے جو قدم کے اوپر سے کھلا ہو اور اسے بٹن لگا کر بند کیا گیا ہو تو وہ بند کی طرح ہے اور اگر قدم کی پیٹھ سے کچھ حصہ ننگا ہو تو وہ پھٹے ہوئے موزے کی طرح ہے۔ اور اللہ تعالیٰ خوب جانتا ہے۔ (ت)

[1] ردالمحتار باب المسح علی الخفین مطبوعہ مصطفی البابی مصر ۱/۱۹۲

Fatawa Razawiya Volume 4

Chapter on Menstruation Issue 142: Sent from hometown by Nawab Maulvi Sultan Ahmad Khan Sahib, 2nd Ramadan-ul-Mubarak 1310 AH. What is your opinion, may Allah Almighty have mercy on you, regarding this issue? It is written in the booklet "Taharat-e-Kubra": "If a woman is performing prayer and her menstruation begins during the prayer, she should stop the prayer. If it was an obligatory (Fard) prayer, its makeup (qaza) is not necessary after achieving purity; however, if it was a voluntary (Nafl) prayer, the makeup (qaza) becomes mandatory. Explain and be rewarded." (T)

The Answer: Although many mistakes have occurred in this booklet, this particular issue is written correctly. Similar rulings are found in "al-Bahr al-Ra'iq", "al-Durr al-Mukhtar", and other distinguished books.

Page 350 of 761 I.T. Majlis of Dawat-e-Islami

फ़तावा रज़विया जिल्द चार (खंड 4)

बाब अल-हैज़ (मासिक धर्म का अध्याय) मसअला १४२: वतन से भेजा गया, नवाब मौलवी सुल्तान अहमद खान साहिब द्वारा, २ रमज़ान-उल-मुबारक १३१० हिजरी। अल्लाह तआला आप पर अपनी रहमत फरमाए, इस मसअले में आपकी क्या राय है? रिसाला "तहारत-ए-कुबरा" में लिखा है: "कोई औरत नमाज़ पढ़ रही हो और नमाज़ के दौरान उसे हैज़ (मासिक धर्म) आ जाए तो वह नमाज़ तोड़ दे। फिर अगर वह फ़र्ज़ नमाज़ है तो पाकी हासिल करने के बाद उसकी क़ज़ा वाजिब नहीं होगी, और अगर नफ़्ल नमाज़ हो तो वाजिब होगी। बयान करें और पुण्य (अज्र) पाएँ।" (त)

उत्तर: हालाँकि इस रिसाले में बहुत से स्थानों पर गलतियाँ हुई हैं, लेकिन यह मसअला सही लिखा गया है। इसी तरह का मसअला अल-बहर-उर-रायिक़, दुर-ए-मुख़्तार और इनके अतिरिक्त अन्य श्रेष्ठ पुस्तकों में वर्णित है।

पेज ३५० ऑफ ७६१ आई. टी. मजलिस ऑफ़ दावत-ए-इस्लामी

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم

باب الحیض مسئلہ ۱۴۲: از وطن مرسلہ نواب مولوی سلطان احمد خاں صاحب ۲ رمضان المبارک ۱۳۱۰ھ ما قولکم رحمکم اللہ تعالٰی بذہ المسئلۃ در رسالہ طہارت کبری نوشتہ است نونے نماز میگزارد ہم در اثنائے صلاۃ حائضہ شد نماز قطع کند پس اگر نماز فرض بود بعد طہارت قضایش واجب نبود و اگر نفل بود قضا واجب آید۔ بینوا توجروا۔ | اللہ تعالٰی آپ کو اپنی رحمت سے نوازے، اس مسئلہ میں آپ کی کیا رائے ہے، رسالہ "طہارت کبری" میں لکھا ہے: "کوئی عورت نماز پڑھ رہی ہو اور نماز کے دوران اسے حیض آجائے تو وہ نماز توڑ دے پھر اگر وہ فرض نماز ہے تو حصولِ طہارت کے بعد اس کی قضا واجب نہ ہوگی اور اگر نفل نماز ہو تو واجب ہوگی۔ بیان کریں اجر پائیں۔ (ت)

الجواب: دریں رسالہ اگرچہ بس یار جاطا سر زدہ امایں مسئلہ درست نوشتہ است فمثلہ فی البحر والدر وغیرھما من الاسفار الغرّ و جس طرح | اس رسالے میں اگرچہ بہت جگہ غلطی واقع ہوئی ہے تاہم یہ مسئلہ صحیح لکھا گیا ہے اسی کی مثل البحر الرائق، در مختار اور ان کے علاوہ عمدہ کتب میں منقول ہے،

Fatawa Razawiyya, Volume 4

The reason that comes to mind at this time is that although prayer, even if it is voluntary (nafl), becomes mandatory upon commencement. If any invalidation appears before completion, it must be compensated (qaza). However, this rule applies to prayers started intentionally. Therefore, if someone performed the Zuhr prayer, forgot they had done so, and then intended to perform it again, but remembered before finishing and broke the prayer in that state, then qaza is not necessary because the commencement was based on a mistaken assumption. Similarly, when a woman starts menstruating, the prayer of that time was not obligatory for her. If she started it thinking it was obligatory, that thought proved wrong because, according to us, the consideration is at the end of the prayer time, as described by the jurists. Therefore, compensation (qaza) will not be necessary. This is unlike voluntary (nafl) prayers, which were not started considering them obligatory, nor does the onset of menstruation at the end of the time prevent the commencement of nafl prayers. Hence, the commencement of voluntary prayers was correct, and when they became invalid (due to menstruation), compensation became mandatory. Allah knows best, and the knowledge of that Great and Supreme Being is most complete and firm. (T)

4 Safar-ul-Muzaffar 1312 AH Problem 143: A woman had amenorrhea (suppression of menses) for several years due to some ailment; it was completely blocked although not due to age. Then, upon taking medicine, bleeding started with the help of the medicine. In such a situation, should prayers be abandoned or offered? Please explain and may you be rewarded.

The Answer: Prayers should be abandoned as long as the bleeding continues. Yes, if it exceeds ten full days, then she should perform a bath (ghusl) and start praying. And regarding the previous menstruation after which the blockage occurred, if it had lasted ten days, it is fine; otherwise, when these current days exceed ten, then for as many days as the previous one was less than ten, the prayers for those days should be compensated (qaza). For example, if it was six days, compensate for four days of prayer; if it was four, compensate for six, and so on. And Allah Almighty knows best.

फ़तावा रज़विया, खंड 4

इस समय जो कारण ध्यान में आ रहा है वह यह है कि नमाज़, चाहे वह नफ़्ल (स्वैच्छिक) ही क्यों न हो, शुरू करने से अनिवार्य हो जाती है। यदि पूरा होने से पहले कोई खराबी सामने आए, तो कज़ा (भरपाई) अनिवार्य होगी। लेकिन यह नियम उस नमाज़ के लिए है जिसे जानबूझकर शुरू किया गया हो। इसलिए, यदि किसी व्यक्ति ने ज़ुहर की नमाज़ पढ़ी, फिर भूल गया और दोबारा उसकी नीयत कर ली, लेकिन पूरा होने से पहले याद आ गया और उसी स्थिति में नमाज़ तोड़ दी, तो उस पर कज़ा अनिवार्य नहीं होगी क्योंकि यह शुरुआत एक गलत धारणा पर आधारित थी। इसी तरह, जब एक महिला को मासिक धर्म शुरू हुआ, तो उस समय की नमाज़ उस पर फ़र्ज़ नहीं थी। उसने उसे फ़र्ज़ समझकर शुरू कर दिया था, तो वह विचार गलत साबित हुआ क्योंकि हमारे अनुसार अंतिम समय का महत्व है, जैसा कि फुकहा (न्यायविदों) ने वर्णन किया है। इसलिए कज़ा अनिवार्य नहीं होगी। नफ़्ल के विपरीत, जिसे उसने न तो अनिवार्य समझकर शुरू किया था और न ही समय के अंत में मासिक धर्म का आना नफ़्ल पढ़ने से रोकता है। इसलिए नफ़्ल नमाज़ शुरू करना सही था, और जब वे अमान्य हो गईं (मासिक धर्म के कारण), तो कज़ा अनिवार्य हो गई। अल्लाह बेहतर जानता है, और उस महान और सर्वोच्च सत्ता का ज्ञान सबसे पूर्ण और दृढ़ है। (त)

4 सफ़र-उल-मुज़फ़्फ़र 1312 हिजरी समस्या 143: एक महिला को किसी बीमारी के कारण कई वर्षों से मासिक धर्म रुका हुआ था; यह पूरी तरह से अवरुद्ध था हालांकि उम्र के कारण ऐसा नहीं था। फिर दवा लेने पर, दवा की सहायता से रक्तस्राव शुरू हुआ। ऐसी स्थिति में नमाज़ छोड़ देनी चाहिए या पढ़नी चाहिए? कृपया स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: जब तक रक्तस्राव जारी रहे, नमाज़ छोड़ देनी चाहिए। हाँ, यदि यह पूरे दस दिनों से अधिक हो जाए, तो स्नान (ग़ुस्ल) करके नमाज़ शुरू करनी चाहिए। और पिछला मासिक धर्म जिसके बाद रुकावट आई थी, यदि वह दस दिन का था तो ठीक है; अन्यथा, जब ये दिन दस से अधिक हो जाएं तो पिछला मासिक धर्म दस से जितने दिन कम था, उतने दिनों की नमाज़ कज़ा की जाए। उदाहरण के लिए, यदि वह छह दिन का था, तो चार दिन की नमाज़ कज़ा करें, और यदि चार का था, तो छह की, और इसी तरह। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

पृष्ठ 351 का 761

کہ ایں وقت بخیال میرسد آنست کہ نماز اگرچہ نفل باشد بشر وع واجب گردد واگر قبل از اتمام فسادے رونماید قضا لازم آید اما ایں حکم حکم شروع قصدی ست پس اگر کسی مثلاً نمازِ ظہر گز رادہ فراموش کرد و باز عقدش بست پیش از فراغ بیا دش آمد، ہمچناں بشکست قضا بر ولازم نیست کہ ایں شروع بر بنائے ظن غلط بود، ہمچناں چوں زن راحیض رسید پیدا شد کہ نماز ایں وقت برو واجب نبود وظن وجا بے کہ بربنایش آغاز کردہ بود غلط برآمد زیرا کہ نزد ما اعتبار مر آخر وقت راست کما نصوا علیہ پس قضا لازم نیا ید، بخلاف نفل کہ شروع دروے نہ بظن وجوب بودو نہ عروض حیض در آخر وقت مانع تنفل در اول ست پس شروع دروے صحیح بود چون فاسد شد قضا واجب آمد۔ واللہ تعالٰی اعلم وعلمہ اتم واحکم۔ (ت) اس کا سبب جو اس وقت خیال میں آرہا ہے یہ ہے کہ نماز اگرچہ نفل ہو شروع کرنے سے واجب ہو جاتی ہے اگر تکمیل سے پہلے کوئی فساد ظاہر ہو تو قضا لازم ہو گی لیکن یہ حکم اس نماز کا ہے جسے قصداً شروع کیا ہو۔ لہٰذا اگر کوئی شخص نمازِ ظہر ادا کر کے بھول گیا ہو پھر اس کی نیت کر لی لیکن فارغ ہونے سے پہلے یاد آگیا اور اسی حالت میں نماز توڑ دی تو اس پر قضا لازم نہیں ہوگی کیونکہ یہ شروع کرنا غلط گمان کی بنیاد پر تھا۔ اسی طرح جب عورت کو حیض آیا تو اس وقت کی نماز اس پر فرض نہ تھی اس نے فرض خیال کرتے ہوئے شروع کر دی تھی تو یہ خیال غلط ثابت ہوا کیونکہ ہمارے نزدیک آخر وقت کا اعتبار ہے جیسے فقہائے کرام نے بیان فرمایا لہٰذا قضا لازم نہیں ہوگی۔ بخلاف نفل کے کہ وہ نہ تو واجب سمجھ کر شروع کئے اور نہ ہی آخر وقت میں حیض کا شروع نفل پڑھنے سے مانع ہے لہٰذا نوافل کا شروع کرنا صحیح تھا جب فاسد ہو گئے تو قضا واجب ہوگئی۔ اللہ تعالٰی خوب جانتا ہے اور اس بزرگ و برتر ذات کا علم سب سے زیادہ مکمل اور مستحکم ہے۔ (ت)

۴ صفر مظفر ۱۳۱۲ھ مسئلہ ۱۴۳: ایک مستماۃ کو بوجہ عارضہ چند سال سے حبسِ طمث تھا بالکل ادرار مسدود تھا اگرچہ مقتضائے عمر نہ تھا پھر جب دوا ہوئی با عانت دوا اجرائے دم ہوا ہے ایسی حالت میں نماز ترک کی جائے یا ادا کی جائے۔ بینوا توجروا الجواب: جب تک دم آئے نماز ترک کی جائے، ہاں اگر دس روز کامل سے آگے بڑھے تو غسل کر کے پڑھنا شروع کریں اور وہ پچھلا طمث جس کے بعد احتباس ہو گیا تھا اگر دس دن آیا تھا تو خیر ورنہ جب یہ دن دس سے بڑھے تو وہ جتنا دس سے کم تھا اتنے دنوں کی نماز قضا کی جائے مثلاً وہ چھ روز کا تھا تو چار دن کی نماز قضا کریں اور چار کا تو چھ کی و علی ھٰذا القیاس واللہ تعالیٰ اعلم۔

Fatawa-e-Razvia Volume 4 Problem 144: From Jalandhar, Mohalla Rasta, adjacent to the house of Deputy Ahmad Jan Sahib, sent by Muhammad Ahmad Khan Sahib, 2 Shawwal 1312 AH. Can a woman in a state of menstruation (menses) or postnatal bleeding perform meditation (muraqaba) as is the custom in the Naqshbandi order? And in this state, can she sit and receive spiritual attention (tawajjuh) from a Murshid (spiritual guide)? Please write the answer with references and the original text from books. The Answer: Yes, the Mother of the Believers, Siddiqa daughter of al-Siddiq (may Allah be pleased with them both), says: "The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) used to remember Allah at all times." Narrated by Imam Ahmad, Muslim, Abu Dawood, Tirmidhi, and Ibn Majah. The Noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) used to remember Allah Almighty at all times. This (Hadith) has been narrated by Imam Ahmad, Muslim, Abu Dawood, Tirmidhi, and Ibn Majah (may Allah have mercy on them). (T) The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "Indeed, the believer does not become impure." Narrated by the six (Imams of Hadith) from Abu Huraira (may Allah be pleased with him). A believer is not impure. This was narrated by the six Imams of Hadith (authors of the Sahih Sittah) from Hazrat Abu Huraira (may Allah be pleased with him). (T) In Durr-e-Mukhtar, it is stated: "There is no harm for a menstruating woman or one in a state of major ritual impurity (janaba) to recite supplications, touch them, or carry them." And Allah Almighty knows best. There is no harm for a menstruating woman or a person in a state of janaba to read supplications, touch them, or carry them. And Allah Almighty knows best. (T) Problem 145: From Aligarh, 5 Ramadan-ul-Mubarak 1315 AH. What do the scholars of religion say regarding these matters: First Question: A woman has menstruation for less than eight days. After the appearance of white discharge and before bathing, from her...

1. Sunan Abu Dawood, chapter on a man remembering Allah without purity, Mujtabai Press Pakistan, 1/4.
2. Jame Tirmidhi, chapter on what has been mentioned about shaking hands with one in major ritual impurity, Mujtabai Press Pakistan, 1/17.
3. Durr-e-Mukhtar, chapter on menstruation, Mujtabai Press Pakistan, 1/51. Page 352 of 761

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द चार मसला 144: जालंधर से, मोहल्ला रास्ता मुत्तसिल (सटा हुआ) मकान डिप्टी अहमद जान साहब, प्रेषक मुहम्मद अहमद खान साहब, 2 शव्वाल 1312 हिजरी। क्या औरत हालत-ए-हैज़ (मासिक धर्म) और निफ़ास (प्रसव के बाद का रक्तस्राव) में मुराक़बा जैसा कि तरीक़ा-ए-नक़्शबंदिया में दस्तूर है कर सकती है या नहीं? और इसी हालत में बैठकर मुर्शिद से तवज्जो (आध्यात्मिक ध्यान) ले सकती है या नहीं? किताब के हवाले और मूल इबारत के साथ उत्तर लिखें। अल-जवाब: हाँ, उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा बिन्त अल-सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाती हैं: "अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर समय अल्लाह को याद किया करते थे।" इसे इमाम अहमद, मुस्लिम, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और इब्न माजा ने रिवायत किया है। रसूल अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हर वक़्त अल्लाह तआला का ज़िक्र फ़रमाते थे। इस (हदीस) को इमाम अहमद, मुस्लिम, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और इब्न माजा रहमतुल्लाहि अलैहिम ने रिवायत किया है। (त) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: "बेशक मोमिन नापाक नहीं होता।" इसे छह अइम्मा (हदीस के संकलनकर्ताओं) ने अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया है। मोमिन नापाक नहीं होता। इसे छह अइम्मा-ए-हदीस (असहाब-ए-सिहाह सित्ता) ने हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया है। (त) दुर्र-ए-मुख़्तार में है: "हैज़ वाली औरत और जुनुबी (नापाक व्यक्ति) के लिए दुआएं पढ़ने, उन्हें छूने और उठाने में कोई हर्ज नहीं है।" वल्लाहु तआला आलम। हाइज़ा (हैज़ वाली) और जुनुबी के लिए दुआओं के पढ़ने, उन्हें हाथ लगाने और उठाने में कोई हर्ज नहीं। वल्लाहु तआला आलम। (त) मसला 145: अलीगढ़ से, 5 रमज़ान-उल-मुबारक 1315 हिजरी। क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इन मसाइल में: सवाल अव्वल: एक औरत को आठ दिन से कम हैज़ होता है, सफेदी आ जाने के बाद बे-नहाए उससे...

1. सुनन अबू दाऊद, बाब फ़िर-रजुल यज़कुरुल्लाह अला गैरे तुहुर, मतबा मुजतबाई पाकिस्तान, 1/4
2. जामे तिर्मिज़ी, बाब मा जा-अ फ़ी मुसाफ़हतुल जुनुब, मतबा मुजतबाई पाकिस्तान, 1/17
3. दुर्र-ए-मुख़्तार, बाबुल हैज़, मतबा मुजतबाई पाकिस्तान, 1/51 पेज 352 ऑफ 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم مسئلہ ۱۴۴: از جالندھر محلہ راستہ متصل مکان ڈپٹی احمد جان صاحب مرسلہ محمد احمد خان صاحب ۲-شوال ۱۳۱۲ ھ- عورت حالت حیض اور نفاس میں مراقبہ جیسا کہ طریقہ نقشبندیہ میں دستور ہے کرسکتی ہے یا نہیں اور اسی حالت میں بیٹھ کر مرشد سے توجہ لے سکتی ہے یا نہیں؟ بحوالہ کتاب مع عبارت ارقام فرمائیں۔ الجواب: ہاں ام المؤمنین صدیقہ بنت الصدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہما فرماتی ہیں: "کان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یذکر اللہ علی کل أحیانہ" رواہ الامام احمد ومسلم وابوداؤد والترمذی وابن ماجۃ۔ رسول اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ہر وقت اللہ تعالیٰ کا ذکر فرماتے تھے۔ اس (حدیث) کو امام احمد، مسلم، ابوداؤد، ترمذی اور ابن ماجہ رحمہم اللہ نے روایت کیا ہے۔(ت) رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: "ان المؤمن لا ینجس" رواہ الستۃ عن ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالی عنہ- مومن ناپاک نہیں ہوتا اسے چھ ائمہ حدیث (اصحاب صحاح ستہ) نے حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا ہے۔(ت) درمختار میں ہے: "لا بأس لحائض وجنب بقراءۃ ادعیۃ ومسھا وحملھا" واللہ تعالیٰ اعلم- حائضہ اور جنبی کے لئے دعاؤں کے پڑھنے، انہیں ہاتھ لگانے اور اٹھانے میں کوئی حرج نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔(ت) مسئلہ ۱۲۵: از علی گڑھ ۵- رمضان المبارک ۱۳۱۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسائل میں: سوال اوّل: ایک عورت کو آٹھ دن سے کم حیض ہوتا ہے سپیدی آجانے کے بعد بے نہائے اس سے ...

1 سنن ابوداؤد باب فی الرجل یذکر اللہ علی غیر طہور مطبع مجتبائی پاکستان ۴/۱ 2 جامع ترمذی، باب ماجاء فی مصافحۃ الجنب، طبع مجتبائی پاکستان ۱۷/۱ 3 درمختار، باب الحیض، مطبع مجتبائی پاکستان ۵۱/۱ Page 352 of 761

Volume Four Fatawa Razawiyya Question: Is intercourse permissible or not? Inform us and be rewarded.

The Answer: If menstruation ends in less than the full duration of ten complete days, there are two scenarios: either it ended even earlier than the woman's usual habit—meaning fewer days have passed than in the previous month and the bleeding stopped—then intercourse is not yet permissible even if she takes a ritual bath (ghusl). If it did not end before her usual habit, for example, if it lasted seven days last month and ended after seven or eight days this time, or if it is the woman's first-ever menstruation and it ended in less than ten days, then for intercourse to become permissible, one of two things must happen: either the woman takes a ritual bath, and if she has to perform tayammum (dry ablution) due to illness or lack of water, she must also perform tayammum and pray (performing tayammum alone is not sufficient); or, if she does not perform purification, enough time must pass for a prayer to become obligatory upon her. This means the time of one of the five daily prayers must pass during which she had at least enough time to bathe, cover herself from head to toe with a sheet, and say the opening takbir (Takbir-e-Tahrima). In this case, intercourse becomes permissible even without ritual purification; otherwise, it is not. However, if the woman is a 'Kitabiyya' (Jewish or Christian), intercourse is absolutely permissible without a bath, provided the cessation of menstruation did not occur before her usual habitual days.

[Table/Box Section] Arabic Text from Al-Durr al-Mukhtar: "In Al-Durr al-Mukhtar: It is permissible to have intercourse with her if her menstruation ceases after its maximum duration without an obligatory ghusl, but rather as a recommended one. If it ceases in less than that, if it is before her usual habit, intercourse is not permissible (even if she performs ghusl because returning to the habit is prevalent, Al-Bahr). If it is at her usual habit, and if she is a Kitabiyya, it is permissible immediately (because no ghusl is required of her due to the lack of demand). Otherwise, it is not permissible until she performs ghusl or tayammum with its condition (which is the lack of water and praying with it according to the correct view as known from An-Nahr and others. Thus it becomes clear that what is meant is the complete tayammum that makes prayer permissible, along with praying with it as well) or a time passes over her sufficient for ghusl, dressing, and saying the Takbir-e-Tahrima."

Urdu Explanation of the Arabic text: In Al-Durr al-Mukhtar, it is stated: If a woman's menstruation ends after the maximum number of days (ten), intercourse with her is permissible even before the obligatory, or rather recommended ghusl. If it ends in

less than the maximum duration, (we will see): if it ends before her usual habit, intercourse is not permissible even if she performs ghusl, because the return of the habit is more likely (Bahr al-Raiq). If it ends according to the usual habit, then in the case of her being a Kitabiyya, intercourse becomes permissible immediately because ghusl is not obligatory for her, as the factor requiring it (i.e., Islam) is not present. If she is not a Kitabiyya, intercourse is not permissible until she performs ghusl or, in case the conditions for tayammum are present, she performs tayammum. According to the correct view, the condition for tayammum is the absence of water and performing prayer with it, as...

जिल्द चहारुम फ़तावा रज़विया सवाल: सोहबत करना जायज़ है या नहीं? बयान फरमाएं ताकि सवाब मिले।

जवाब: जो हैज़ (माहवारी) अपनी पूरी मुद्दत यानी दस दिन कामिल (मुकम्मल) से कम में ख़त्म हो जाए, उसमें दो सूरतें हैं: या तो औरत की आदत से भी कम में ख़त्म हुआ—यानी पिछले महीने में जितने दिन आया था, उतने दिन भी अभी नहीं गुज़रे और ख़ून बंद हो गया—तब तो उससे सोहबत अभी जायज़ नहीं, चाहे वह नहा ले। और अगर आदत से कम नहीं, मिसाल के तौर पर पिछले महीने सात दिन आया था और इस बार भी सात या आठ दिन आकर ख़त्म हुआ, या यह उस औरत का पहला हैज़ है और दस दिन से कम में ख़त्म हुआ, तो उससे सोहबत जायज़ होने के लिए दो बातों में से एक बात होना ज़रूरी है: या तो औरत नहा ले, और अगर बीमारी या पानी न होने की वजह से तयम्मुम करना हो तो तयम्मुम करके नमाज़ भी पढ़ ले (सिर्फ़ तयम्मुम काफ़ी नहीं); या अगर पाकी हासिल न करे तो इतना समय गुज़र जाए कि उस पर कोई नमाज़ फ़र्ज़ हो जाए। यानी पाँच वक़्त की नमाज़ों में से किसी एक नमाज़ का इतना वक़्त गुज़र जाए जिसमें उसे कम से कम इतना वक़्त मिला हो कि वह नहाकर सिर से पैर तक चादर ओढ़कर 'तकबीर-ए-तहरीमा' कह सकती थी। इस सूरत में बिना पाकी (ग़ुस्ल) के भी सोहबत जायज़ हो जाएगी, वर्ना नहीं। मगर यह कि अगर औरत 'किताबिया' (यहूदी या ईसाई) हो, तो उससे बिना नहाए सोहबत मुतलक़न जायज़ है, बशर्ते कि हैज़ का रुकना उसकी आदत के दिनों से कम में न हुआ हो।

[बॉक्स अनुभाग] अरबी पाठ (अल-दुर्र अल-मुख्तार से): "अल-दुर्र अल-मुख्तार में है: यदि माहवारी अपनी अधिकतम अवधि के बाद समाप्त हो जाए, तो ग़ुस्ल (जो यहाँ वाजिब नहीं बल्कि मुस्तहब है) से पहले भी संभोग जायज़ है। यदि इससे कम में समाप्त हो, तो यदि यह उसकी आदत से पहले है, तो संभोग जायज़ नहीं है (भले ही वह ग़ुस्ल कर ले, क्योंकि आदत के लौटने की संभावना अधिक होती है, अल-बहर)। यदि यह उसकी आदत के समय है, और यदि वह किताबिया है, तो तुरंत जायज़ है (क्योंकि मांग के अभाव में उस पर ग़ुस्ल अनिवार्य नहीं है)। अन्यथा, यह तब तक जायज़ नहीं है जब तक कि वह ग़ुस्ल न कर ले या उसकी शर्तों के साथ तयम्मुम न कर ले (जो कि पानी का न होना और सही राय के अनुसार उसके साथ नमाज़ पढ़ना है, जैसा कि अन-नहर और अन्य से पता चलता है। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि तात्पर्य उस पूर्ण तयम्मुम से है जो नमाज़ को जायज़ बनाता है, साथ ही उसके साथ नमाज़ पढ़ना भी है) या उस पर ग़ुस्ल, कपड़े पहनने और तकबीर-ए-तहरीमा कहने के लिए पर्याप्त समय न बीत जाए।"

उर्दू व्याख्या (अरबी पाठ का): 'दुर्रे मुख्तार' में है: अगर औरत का हैज़ ज़्यादा दिनों (अधिकतम दस दिन) के बाद ख़त्म हो, तो उसके साथ ग़ुस्ल वाजिब बल्कि मुस्तहब ग़ुस्ल से भी पहले सोहबत करना जायज़ है। और अगर कम से कम मुद्दत में ख़त्म हो तो (देखेंगे): अगर आदत से कम में ख़त्म हो तो सोहबत जायज़ नहीं, चाहे वह ग़ुस्ल कर ले, क्योंकि आदत की तरफ़ लौटने का ग़लबा (ज़्यादा संभावना) है (बहर-उर-रैक)। अगर आदत के मुताबिक़ ख़त्म हुआ तो किताबिया होने की सूरत में उसी वक़्त सोहबत हलाल हो जाएगी क्योंकि उस पर ग़ुस्ल वाजिब नहीं है, क्योंकि उसे करने की वजह (यानी इस्लाम) मौजूद नहीं है। अगर वह किताबिया नहीं है, तो जब तक वह ग़ुस्ल न कर ले या तयम्मुम की शर्तें पाए जाने की सूरत में तयम्मुम न कर ले, उससे सोहबत जायज़ नहीं। सही क़ौल के मुताबिक़ (तयम्मुम के लिए) शर्त यह है कि पानी न होना और उसके साथ नमाज़ पढ़ना है जैसा कि...

جلد چہارم فتاویٰ رضویہ صحبت کرنا جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: جو حیض اپنی پوری مدت یعنی دس دن کامل سے کم میں ختم ہو جائے اس میں دو صورتیں ہیں یا تو عورت کی عادت سے بھی کم میں ختم ہوا یعنی اس سے پہلے مہینے میں جتنے دنوں آیا تھا اتنے دن بھی ابھی نہ گزرے اور خون بند ہو گیا تب تو اس سے صحبت ابھی جائز نہیں اگرچہ نہالے اور اگر عادت سے کم نہیں مثلاً پہلے مہینے سات دن آیا تھا اب بھی سات یا آٹھ روز آکر ختم ہوا یا یہ پہلا ہی حیض ہے جو اس عورت کو آیا اور دس دن سے کم میں ختم ہوا تو اُس سے صحبت جائز ہونے کے لئے دو باتوں سے ایک بات ضرور ہے یا تو عورت نہالے اور اگر بوجہ مرض یا پانی نہ ہونے کے تیمم کرنا ہو تو تیمم کر کے نماز بھی پڑھ لے خالی تیمم کافی نہیں یا طہارت نہ کرے تو اتنا ہو کہ اس پر کوئی نماز فرض ہو جائے یعنی نماز پنجگانہ سے کسی نماز کا وقت گزر جائے جس میں کم سے کم اس نے اتنا وقت پایا ہو جس میں نہا کر سر سے پاؤں تک ایک چادر اوڑھ کر تکبیر تحریمہ کہہ سکتی تھی اس صورت میں بے طہارت کے بھی اس سے صحبت جائز ہو جائے گی ورنہ نہیں مگر یہ کہ عورت کتابیہ یہودی یا نصرانیہ ہو تو اس سے مطلقاً بے نہائے صحبت جائز ہے جبکہ انقطاع حیض ایام عادت سے کم میں نہ ہوا ہو۔

[باکس کا حصہ] عربی عبارت از الدر المختار: فی الدر المختار یحل وطؤھا اذا انقطع حیضھا لا کثرہ بلا غسل وجوبا بل ندبا وان انقطع لاقلہ فان لدون عادتھا لم یحل (الوطؤ وان اغتسلت لان العود فی العادۃ غالب بحر) وان لعادتھا فان کتابیۃ حل فی الحال (لانہ لا اغتسال علیھا لعدم المطالب) والالایحل حتی تغتسل اوتتیمم بشرطہ (ھو فقد الماء بہ والصلوۃ بہ علی الصحیح کما یعلم من النھر وغیرہ وبھذا ظھر ان المراد التیمم الکامل المبیح للصلاۃ مع الصلاۃ بہ ایضا) او یمضی علیھا زمن یسع الغسل ولبس الثیاب والتحریمہ۔

اردو تشریح عبارتِ عربی: در مختار میں ہے: اگر عورت کا حیض زیادہ دنوں کے بعد ختم ہو تو اس کے ساتھ غسل واجب بلکہ مستحب غسل سے بھی پہلے وطی کرنا جائز ہے اور اگر کم از کم مدت میں ختم ہو تو (دیکھیں گے) اگر عادت سے کم میں ختم ہو تو جماع جائز نہیں اگرچہ غسل کرلے کیونکہ عادت کی طرف لوٹنا غالب ہے (بحر الرائق) اگر عادت کے مطابق ختم ہوا تو کتابیہ ہونے کی صورت میں اسی وقت وطی حلال ہوجائے گی کیونکہ اس پر غسل واجب نہیں اس لئے کہ اس سے (غسل کا) مطالبہ کرنے والی چیز (یعنی اسلام) نہیں۔ اگر وہ کتابیہ نہیں تو جب تک غسل یا شرائط تیمم پائے جانے کی صورت میں تیمم نہ کرے اس سے جماع جائز نہیں۔ صحیح قول کے مطابق (اس کے لئے تیمم کی) شرط یہ ہے کہ پانی نہ ہونا اور اس کے ساتھ نماز پڑھنا ہے جیسا کہ

Fatawa Razawiyya Volume IV

[Explanation of Arabic Text from Various Jurisprudential Sources]: It is known from Nahr (al-Faiq) etc. from which it appears that the real intent of Tayammum is [meaning that not only is it permissible to offer prayer, but also that one should offer prayer with it] or that much time should pass during which one has the capacity to perform Ghusl (ritual bath), wear clothes, and say Takbir-e-Tahrima, because they have established this as the reason for the prayer becoming obligatory upon the woman. So much so that if she becomes pure during the time of Eid, it is necessary for the time of Zuhr to pass upon her, as stated in as-Siraj (Finished). This is from Radd al-Muhtar with additions. And it is my opinion that I wrote regarding the statement of (Durr-e-Mukhtar) "and not the clothes," that those clothes are meant with which prayer becomes permissible, even if it is a single sheet that covers her from head to toe because the purpose is the obligation of prayer upon her, and this is achieved with this amount. That is why Allama Halabi stated regarding Ghusl that the estimation of obligation is meant from it, and this is apparent. And Allah Almighty knows best, and His knowledge, glorified be His majesty, is more complete and perfect. (T)

Question 2: Is it permissible to seek sexual gratification from one's wife during menstruation on her thighs, stomach, or any other place or not? Explain and be rewarded. Answer: Permissible on the stomach and impermissible on the thighs. The general rule is that during the state of menstruation and postnatal bleeding (nifas), sexual enjoyment (tamattu) from the woman's body from below the navel to the knees is not permissible without such a barrier that prevents the warmth of the woman's body from reaching his body. To the extent that even looking with lust at this part of the body is not allowed, and touching this part even without lust is not allowed. Beyond this (above and below), absolute enjoyment of every kind is permissible from the body, including ejaculation by rubbing the male organ [without penetration].

---

1 Durr-e-Mukhtar, Chapter on Menstruation, printed Mujtabai Delhi, 1/51 2 Radd al-Muhtar, Chapter on Menstruation, Mustafa al-Babi Egypt, 1/215 3 Jadd al-Mumtar 'ala ad-Durr al-Mukhtar, Chapter on Menstruation, al-Majma' al-Islami Mubarakpur India, p. 164 Page 354 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

प्रश्न 2: माहवारी (हैज़) के दिनों में अपनी पत्नी के साथ जांघ या पेट पर या किसी अन्य स्थान पर काम-सुख (फ़रागत) प्राप्त करना जायज़ है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य पाएँ। उत्तर: पेट पर जायज़ है और जांघ पर नाजायज़। नियम यह है कि हैज़ और निफ़ास (बच्चे के जन्म के बाद का रक्तस्राव) की स्थिति में नाभि के नीचे से घुटने तक औरत के शरीर से बिना किसी ऐसे अवरोध (पर्दे) के, जिसके कारण औरत के शरीर की गर्मी पुरुष के शरीर तक न पहुँचे, आनंद लेना जायज़ नहीं है। यहाँ तक कि शरीर के इस हिस्से को कामुकता (शहवत) के साथ देखना भी जायज़ नहीं है, और इस हिस्से को बिना कामुकता के छूना भी जायज़ नहीं है। इसके ऊपर और नीचे के शरीर से पूर्ण रूप से हर प्रकार का आनंद लेना जायज़ है, यहाँ तक कि लिंग को रगड़कर वीर्यपात करना भी।

---

1 दुर्र-ए-मुख्तार, बाब अल-हैज़, मुजतबाई दिल्ली, 1/51 2 रद-उल-मुहतार, बाब अल-हैज़, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/215 3 जद अल-मुम्तार अला अद-दुर्र अल-मुख्तार, बाब अल-हैज़, अल-मजमा अल-इस्लामी मुबारकपुर भारत, पृष्ठ 164 पेज 354 ऑफ़ 761

یعنی من آخر الوقت لتعلیلھم بوجوبھا في ذمتھا حتی لوطھرت في وقت العید لابد ان یمضی وقت الظھر کما في السراج 1 اہ مزیدا من ردالمحتار 2- ورأیتني کتبت علی قولہ ولیس الثیاب مانصہ ای المبیحۃ للصلاۃ ولورداء واحدا یسترھا من قرنھا الی قدمھا لان المقصود کون الصلاۃ دیناً علیھا وذلك یحصل بھذا القدر ولذا استظھر العلامۃ الحلبی فی الغسل ان المراد قدر الفرض وھو ظاھر 3 واللہ تعالٰی اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم واحکم۔

نہر (نہر الفائق) وغیرہ سے معلوم ہوتا ہے اس سے ظاہر ہوا کہ تیمم کا اصل مراد ہے جس سے نہ صرف یہ کہ نماز پڑھنا جائز ہوجائے بلکہ اس کے ساتھ نماز بھی پڑھ لے) یا اتنا وقت گزر جائے جس میں غسل کرکے کپڑے پہننے اور تکبیر تحریمہ کی گنجائش ہو کیونکہ انہوں نے اسی بات کو عورت کے ذمہ (نماز) واجب ہونے کی علت قرار دیا ہے حتی کہ اگر عید کے وقت پاک ہوجائے تو اس پر وقت ظہر گزرنا ضروری ہے جیسا کہ سراج میں ہے (انتھی) یہ ردالمحتار سے اضافہ کے ساتھ ہے۔ اور میرا خیال ہے کہ میں نے اس (دُر مختار) کے قول "ولیس الثیاب" پر لکھا ہے کہ اس سے وہ کپڑے مراد ہیں جن کے ساتھ نماز جائز ہوجاتی ہے اگرچہ ایک چادر ہو جو سر سے قدموں تک اسے ڈھانپ لے کیونکہ مقصد تو نماز کا اس کے ذمہ فرض ہونا ہے اور یہ اس مقدار سے حاصل ہو جاتا ہے اسی لئے علامہ حلبی نے غسل کے بارے میں بتایا کہ اس سے فرض کا اندازہ مراد ہے اور یہی ظاہر ہے واللہ تعالٰی اعلم و علمہ جل مجدہ اتم واحکم۔ (ت)

سوال دوم: ایام حیض میں اپنی عورت سے ران یا پیٹ پر یا کسی اور مقام پر فراغت حاصل کرنا جائز ہے یا نہیں ۔ بینوا توجروا۔ الجواب: پیٹ پر جائز اور ران پر ناجائز۔ کلیہ یہ ہے کہ حالت حیض و نفاس میں زیر ناف سے زانو تک عورت کے بدن سے بلا کسی ایسے حائل کے جس کے سبب

جسم عورت کی گرمی اس کے جسم کو نہ پہنچے تمتع جائز نہیں یہاں تک کہ اتنے ٹکڑے بدن پر شہوت سے نظر بھی جائز نہیں اور اتنے ٹکڑے کا چھونا بلا شہوت بھی جائز نہیں اور اس سے اوپر نیچے کے بدن سے مطلقاً ہر قسم کا تمتع جائز یہاں تک کہ سحق ذکر کر کے انزال کرنا۔

---

1 دُر مختار باب الحیض مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۵۱ 2 رد المحتار باب الحیض مصطفی البابی مصر ۱/ ۲۱۵ 3 جد الممتار علی الدر المختار باب الحیض المجمع الاسلامی مبارکپور ہندوستان ص

Fatawa Razawiya Volume Four In "Al-Durr al-Mukhtar," it is mentioned: "Approaching what is under the lower garment, meaning between the navel and the knee, is prohibited even without desire, and anything other than that is absolutely permissible." In "Radd al-Muhtar," it is quoted in "al-Haqa'iq" from "al-Tuhfah" and "al-Khaniyah": "According to Imam al-A'zam (Imam Abu Hanifa), a man should avoid what is under the lower garment of a menstruating woman. Imam Muhammad says: 'Avoid intercourse only.' Then scholars differed in the interpretation of Imam Abu Hanifa's statement. It was said that enjoyment from looking and other things between the navel and the knee is not permissible, but what is beyond that is permissible. Another opinion is that it is permissible with the lower garment on. It is clear that the first opinion explicitly prohibits looking at what is under the lower garment, and the second is close to it. After the narration (transmission), there is no room but to refer to it. And Allah Almighty knows best."

Question 714: From Shahr Kuhna, 10 Jumada al-Ula 1317 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: the maximum period of post-partum bleeding (nifas) is forty days, and there is no minimum limit. If the nifas fluid stops in eight days, and after performing prayers, fasting, and intercourse, the fluid returns, what is the ruling in this case? The Answer: Fluid is nothing; it is just moisture. Nifas involves blood. Within forty days, whenever blood returns, all days from the start of childbirth until the end of the bleeding will be counted as nifas. The empty days in between will also be counted as nifas. For example, if blood appeared for two minutes after childbirth and then stopped, the woman, assuming she was clean, performed ghusl and prayed...

1 Durr al-Mukhtar, Chapter on Menstruation, Mujtabai Press, Delhi, 1/51 2 Radd al-Muhtar, Chapter on Menstruation, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/212

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी "दुर्रे मुख्तार" में है: "इज़ार (तहबंद) के नीचे यानी नाभि और घुटने के बीच के हिस्से के करीब जाना जायज़ नहीं है, चाहे वह बिना कामेच्छा के ही क्यों न हो, और इसके अलावा सब कुछ पूरी तरह से जायज़ है।" और "रद-उल-मुह्तार" में "हक़ाएक" के हवाले से "तुहफ़ा" और "खानिया" से उद्धृत है कि: "इमाम-ए-आज़म रहमतुल्लाह अलैह के अनुसार, पुरुष को माहवारी वाली महिला के इज़ार के नीचे के हिस्से से बचना चाहिए।" इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं: "सिर्फ संभोग से परहेज़ करे।" फिर इमाम-ए-आज़म के कथन की व्याख्या में विद्वानों में मतभेद है। कहा गया है कि नाभि से घुटनों तक देखना और उससे सुख प्राप्त करना जायज़ नहीं है, इसके अलावा जायज़ है। और एक मत यह है कि इज़ार के साथ जायज़ है। यह स्पष्ट रहे कि पहला मत इज़ार के नीचे (शरीर) को देखने की मनाही में स्पष्ट है और दूसरा उसके करीब है। और उल्लेख के बाद इसकी ओर लौटने के अलावा कोई चारा नहीं है। और अल्लाह ताला बेहतर जानता है।

मसला 714: शहर कोहना से, 10 जमादी अल-उला 1317 हिजरी धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: प्रसवोत्तर रक्तस्राव (निफास) की अधिकतम अवधि चालीस दिन है और न्यूनतम की कोई सीमा नहीं है। यदि निफास का तरल पदार्थ आठ दिनों में रुक जाता है, और प्रार्थना, उपवास और संभोग के बाद तरल फिर से आ जाता है, तो इस मामले में क्या हुक्म है? जवाब: तरल कुछ नहीं है, वह तो नमी है। निफास में खून होता है। चालीस दिनों के भीतर जब भी खून दोबारा आए, तो प्रसव की शुरुआत से लेकर खून रुकने तक के सभी दिनों को निफास ही माना जाएगा। बीच के जो दिन खाली (बिना रक्तस्राव के) रह गए, वे भी निफास में ही गिने जाएंगे। उदाहरण के लिए, यदि प्रसव के बाद दो मिनट तक खून आया और फिर बंद हो गया, और महिला ने पवित्रता के गुमान में गुस्ल करके नमाज़...

1 दुर्रे मुख्तार, बाब अल-हैज़, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/51 2 रद-उल-मुह्तार, बाब अल-हैज़, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, 1/212

पेज 355 ऑफ 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم فی الدر المختار یمنع حل قربان ما تحت ازار یعنی مابین سرۃ ورکبۃ ولو بلا شھوۃ وحل ما عداہ مطلقا اھ دُرِّ مختار میں ہے : "ازار کے نیچے یعنی ناف اور گھٹنے کے درمیان کا قرب جائز نہیں اگرچہ بلا شہوت ہو اور اس کے علاوہ مطلقاً جائز ہے۔ اھ" وفی ردالمحتار نقل في الحقائق عن التحفة والخانية يجتنب الرجل من الحائض ماتحت الازار عند الامام وقال محمد الجماع فقط ثم اختلفوا في تفسير قول الامام قيل لا يباح الاستمتاع من النظر و غيره بمادون السرة الى الركبة ويباح ما ورائه وقيل يباح مع الازار اھ ولا يخفى ان الاول صريح في عدم حل النظر الى ماتحت الازار والثانی قریب منه وليس بعد النقل الا الرجوع اليه اھ واللہ تعالی اعلم۔ اور ردالمحتار میں ہے : "حقائق میں تحفہ اور خانیہ سے نقل کیا گیا کہ "امام اعظم رحمۃ اللہ تعالیٰ کے نزدیک مرد کو حائضہ عورت کی ازار کے نیچے سے اجتناب کرنا چاہئے۔" امام محمد رحمۃ اللہ تعالیٰ فرماتے ہیں: "فقط جماع سے پرہیز کرے۔" پھر امام اعظم ابوحنیفہ رحمۃ اللہ کے قول کی وضاحت میں فقہاء کرام کا اختلاف ہے۔ کہا گیا ہے کہ ناف سے گھٹنوں تک دیکھنے اور اس کے ساتھ نفع حاصل کرنا بھی جائز نہیں اس کے ماسوا جائز ہے۔ اور ایک قول یہ ہے کہ ازار کے ساتھ جائز ہے (انتی) مخفی نہ رہے کہ پہلا قول ازار کے نیچے (جسم) کی طرف دیکھنے کی حرمت میں واضح ہے اور دوسرا اس کے قریب ہے اور نقل کے بعد گنجائش نہیں اس کی طرف رجوع ہوتا ہے (انتی) (یعنی قیاس نہیں کیا جاتا) واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۷۱۴: از شہر کہنہ ۱۰ جمادی الاولیٰ ۱۳۱۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ نفاس کی اکثر مدت چالیس دن ہے کمتر کی حد نہیں اگر نفاس کا پانی ہشت روز میں بند ہو اور نماز اور روزہ اور وطی کے بعد پانی پھر آ جائے اس میں کیا حکم ہے؟ الجواب: پانی کوئی چیز نہیں وہ تو رطوبت ہے نفاس میں خون ہوتا ہے چالیس دن کے اندر جب خون عود کرے شروع ولادت سے

ختم خون تک سب دن نفاس ہی کے گنے جائیں گے جو دن بیچ میں خالی رہ گئے وہ بھی نفاس ہی میں شمار ہوں گے مثلاً ولادت کے بعد دو منٹ تک خون آ کر بند ہو گیا عورت بگمان طہارت غسل کر کے نماز

1 درمختار باب الحیض مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۵۱ 2 ردالمحتار باب الحیض مطبوعہ مصطفی البابی مصر ۱/ ۲۱۲

Fatawa-e-Razvia Volume 4

If a woman continues to fast, etc., and with only two minutes left until the completion of forty days, blood appears again, then this entire forty-day period will be considered post-childbirth bleeding (nifas). Her prayers were void. Any obligatory (farz) or mandatory (wajib) fasts or their missed (qada) prayers that she performed during this time must be repeated.

| It is stated in Radd al-Muhtar: "The principle according to Imam al-Azam (may Allah have mercy on him) is that when bleeding occurs within forty days, any intervening period of purity (tuhur) does not act as a separator, regardless of whether that period is long or short. So much so that if a woman sees blood for one hour, then remains pure for forty days minus two hours, and then sees blood for one hour, the entire forty days will be counted as nifas, and the fatwa is based on this. It is stated similarly in Al-Khulasah and An-Nahr. And Allah Almighty knows best, and His knowledge, may His glory be exalted, is most complete and most wise. (T)" | In Radd al-Muhtar: Verily, according to the principle of the Imam, if blood occurs within forty days, the intervening purity does not separate, whether it be long or short, even if she saw blood for an hour and was pure for forty hours less two hours, then blood for an hour, all forty days are nifas, and upon this is the fatwa, as in al-Khulasa, Nahr. And Allah Almighty knows best, and His knowledge, may His glory be exalted, is more complete and wise. |

Problem 138: 8 Dhu al-Qi'dah 1324 AH: What do the scholars of the religion say about this issue: is it permissible to eat bread cooked by a menstruating woman or not, and is it permissible to let her eat bread with oneself or not? And if she dies during this period, what is the ruling? How many days is menstruation? Explain, and you shall be rewarded.

The Answer: Food cooked by her hand is permissible, and letting her eat with oneself is also permissible. Avoiding these things is a practice of the Jews and Magians.

| The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) would bring his noble head near the Mother of the Believers, Hazrat Aisha al-Siddiqa (may Allah be pleased with her), for her to wash it. At that time, she would be in the house while the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) would be in retreat (i'tikaf) in the mosque. The Mother of the Believers would say, "I am menstruating." He would say, "Your menstruation is not in your hand." (T) | And the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him, used to bring his noble head near the Mother of

the Believers al-Siddiqa, may Allah be pleased with her, while she was in her house and he, peace and blessings of Allah be upon him, was in retreat in the mosque, for her to wash it. She would say, "But I am menstruating," and he would say, "Your menstruation is not in your hand." |

1 Radd al-Muhtar, Chapter on Menstruation, printed by Mustafa al-Babi Egypt, 1/219
2 Jami' at-Tirmidhi, Chapter on what has been narrated regarding a menstruating woman taking something from the mosque, Mujtabai Press Lahore, 1/19

यदि कोई महिला रोज़ा आदि रखती रही और चालीस (40) दिन पूरे होने में अभी दो मिनट बाकी थे कि फिर से खून आ गया, तो यह पूरा चालीस दिन का समय निफ़ास (प्रसवोत्तर रक्तस्राव) में माना जाएगा। उसकी नमाज़ें बेकार गईं। इस दौरान उसने जितनी भी फ़र्ज़ या वाजिब रोज़े या उनकी कज़ा नमाज़ें पढ़ी हों, उन्हें फिर से दोहराना होगा।

| रद अल-मुह्तार में है: "इमाम आज़म (रहमतुल्लाह अलैह) के यहाँ नियम यह है कि जब खून चालीस दिनों के भीतर हो, तो बीच का पवित्र काल (तहर) जुदा करने वाला नहीं माना जाएगा, चाहे वह समय अधिक हो या कम। यहाँ तक कि अगर एक महिला ने एक घड़ी खून देखा, फिर चालीस दिन में दो घड़ी कम पवित्र रही, फिर एक घड़ी खून देखा, तो पूरे चालीस दिन निफ़ास के गिने जाएंगे और इसी पर फ़तवा है। खुलासः में इसी तरह है और नहर में भी। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है और उसका ज्ञान, उसकी महिमा बुलंद हो, सबसे पूर्ण और सबसे अधिक हिकमत वाला है। (त)" | फ़ी रद अल-मुह्तार इन्ना मिन अशल अल-इमाम अन्नद-दमा इज़ा काना फ़िल-अरबईन फ़त-तुह्हुल मुतखल्लिलु ला यफ़सिलु ताला औ क़सुरु हत्ता लौ रअत साअतन दमन व अरबईन इल्ला साअतैनि तुह्हन सुम्मा साअतन व मा कानल-अरबऊन कुल्लुहा नफ़ासन व अलैहिल-फ़तवा कज़ा फ़िल-ख़ुलासह 1 नहर। वल्लाहु तआला आ'लम व इल्मुहु जल्ला मजदहु अतम्मु व अहकम। |

मसला 138: 8 ज़िल-क़ादा 1324 हिजरी: क्या फ़रमाते हैं दीन के उलेमा इस मसले में कि हैज़ (मासिक धर्म) वाली औरत की पकी हुई रोटी खाना जायज़ है या नहीं, और अपने साथ उसे रोटी खिलाना जायज़ है या नहीं? और इस दौरान अगर उसकी मृत्यु हो जाए तो उसका क्या हुक्म है? हैज़ के कितने दिन होते हैं? बयान फ़रमाएं, आपको सवाब मिलेगा।

जवाब: उसके हाथ का पका हुआ खाना भी जायज़ है, उसे अपने साथ खिलाना भी जायज़ है। इन बातों से परहेज़ करना यहूदियों और मजूसियों (अग्निपूजकों) का तरीका है।

| रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपना मुबारक सर धुलवाने के लिए उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु अन्हा) के करीब लाते थे। उस समय वह घर में होती थीं और नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मस्जिद में मोतकिफ़ (इतिकाफ़ में) होते थे। उम्मुल मोमिनीन अर्ज़ करतीं: "मैं हैज़ा हूँ।" आप फ़रमाते: "हैज़ तुम्हारे हाथ में तो नहीं है।" (त) | व क़द काना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम युदनी रा'सहुल करीमा लि-उम्मिल मोमिनीन

अस-सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा व हिया फ़ी बयतिहा व हुवा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मो'तकिफ़ुन फ़िल-मस्जिदि लितग्सिलहु फ़तक़ूलु अम्मा हाइज़ुन फ़यक़ूलु हैज़तुकु लयसत फ़ी यदिक 2। |

1 रद अल-मुह्तार, बाब अल-हैज़, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र द्वारा मुद्रित, 1/219 2 जामे तिर्मिज़ी, बाब मा जा फ़िल-हाइज़ तल्लावुलुश शै मिनाल मस्जिद, मुतबा मुज्तबाई लाहौर, 1/19

روزہ وغیرہ کرتی رہی چالیس ۴۰ دن پورے ہونے میں ابھی دو منٹ باقی تھے پھر خُون آگیا تو یہ سارا چلہ نفاس میں ٹھہرے گا نمازیں بیکار گئیں فرض یا واجب روزے یا ان کی قضا نمازیں جتنی پڑھی ہوں انہیں پھر پھیرے۔

| ردالمحتار میں ہے: "امام اعظم رحمۃ اللہ کے ہاں ضابطہ یہ ہے کہ جب خون چالیس دنوں میں ہو تو طہر متخلل فاصل نہیں ہوگا وقت زیادہ ہو یا کم۔ حتی کہ اگر عورت نے ایک ساعت خُون دیکھا پھر دو ساعتیں کم چالیس دن پاک رہی پھر ایک ساعت خون دیکھا تو پورے چالیس دن نفاس کے شمار ہوں گے اور اسی پر فتوی ہے۔ خلاصہ میں اسی طرح ہے نہر، واللہ تعالیٰ اعلم وعلمہ مجدہ اتم واحکم۔ (ت)" | في رد المحتار ان من اصل الامام ان الدم اذا كان في الاربعين فالطهر المتخلل لا يفصل طال او قصر حتى لورأت ساعة دما و اربعين الا ساعتين طهرا ثم ساعة وما كان الاربعون كلها نفاسا وعليه الفتوى كذا في الخلاصة ١ نهر. والله تعالى اعلم وعلمه جل مجده اتم واحكم۔ |

مسئلہ ۱۳۸ : ۸ ذی القعدہ ۱۳۲۴ھ : کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ حیض والی عورت کی روٹی پکی ہوئی کھانا جائز ہے یا نہ، اور اپنے ساتھ اس کو روٹی کھلانا جائز ہے یا نہ، اور اس عرصہ میں اگر مر جائے تو اس کا کیا حکم ہے، حیض کے کتنے دن ہیں، بینوا توجروا۔

الجواب: اس کے ہاتھ کا پکا ہوا کھانا بھی جائز، اسے اپنے ساتھ کھلانا بھی جائز۔ ان باتوں سے احتراز یہود و مجوس کا مسئلہ ہے۔

| سرکار دوعالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اپنا سر مبارک دُھلوانے کے لئے ام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے قریب کرتے تھے اس وقت آپ گھر میں ہوتیں اور نبی اکرم

صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم مسجد میں معتکف ہوتے اُم المومنین عرض کرتیں: میں حائضہ ہوں۔ آپ فرماتے: حیض تمہارے ہاتھ میں تو نہیں ہے۔ (ت) | وقد كان رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم يدنى راسه الكريم لام المؤمنين الصديقة رضي الله تعالى عنها وهي في بيتها وهو صلى الله تعالى عليه وسلم معتكف فى المسجد لتغسله فتقول اما حائض فيقول حيضتك ليست في يدك ۲۔ |

۱ ردالمحتار باب الحيض مطبوعہ مصطفی البابی مصر ۱/ ۲۱۹ ۲ جامع ترمذی، باب ماجاء فی الحائض تتناول الشیئ من المسجد، مطبع مجتبائی لاہور ۱/ ۱۹

Volume 4 Fatawa Rizwia

...if she dies, one bath (ghusl) is sufficient for her, as our scholars have specified and it is the view of the majority of Imams. (As our scholars have clarified and this is also the saying of the majority of Imams. T) Menstruation (haiz) is at least three full days and nights and at most ten full days and nights. And Allah Almighty knows best.

Problem 149: 9 Muharram al-Haram 1325 AH What do the scholars of religion say regarding this problem: a woman gave birth to a boy and was free from postnatal bleeding (nifas) in eight days. Now, what is the ruling for her regarding fasting and prayer? And are her bangles, whether silver or glass, or her bed or house pure or impure? Or will the forty-day limit be applied? Explain and you will be rewarded.

The Answer: What is famous among the common, ignorant women—that until forty days (chilla) pass, the mother is not pure—is purely wrong. After the bleeding stops, remaining impure unnecessarily and leaving prayer and fasting leads to being caught in a grave sin (kabira). It is obligatory upon men to restrain them from this. For the maximum limit of postnatal bleeding, forty days have been set, not that it cannot be less than forty days; there is no minimum limit for it. If after giving birth, blood came for only one minute and then stopped, the woman becomes pure at that moment; she should bathe, perform prayer, and keep fasts. If the blood does not return within forty days, her prayers and fasts will all be correct. Bangles, bed, house —all are pure. Only that thing will be impure which blood touches; considering these things impure without that is a practice of Hindus. And Allah Almighty knows best.

Problem 150: From Farrukhabad, Shamsuddin Ahmed, Saturday 18 Shawwal 1337 AH If a person has sexual intercourse with his wife during menstruation or postnatal bleeding, what is its expiation (kaffara)?

The Answer: If it is at the beginning of menstruation, then one dinar; if at the end, then half a dinar. A dinar is equal to ten dirhams, and ten dirhams are approximately two rupees thirteen annas and some cowries less. It is narrated in Sunan Darimi, Abu Dawood, Tirmidhi, and Ibn Majah from Hazrat Abdullah bin Abbas (may Allah be pleased with them) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

Arabic	Urdu Translation
اذا وقع الرجل باهله وهى حائض فليتصدق	جب آدمی اپنی عورت سے حالتِ حیض میں صحبت کرے

Note: In Mishkat al-Masabih, it is attributed to all four Sunan books, but what I saw for Nasa'i is what follows later. 12 (m) **T:** In Mishkat al-Masabih, it is attributed to the four Sunan books, and what I have seen for Nasa'i is what is coming after it. 12 (T)

...मर जाए तो उसके लिए एक ही ग़ुस्ल काफ़ी है जैसा कि हमारे उलेमा ने इसकी स्पष्टता की है और बहुमत इमामों का भी यही कथन है। (जैसा कि हमारे उलेमा ने इसकी स्पष्ट व्याख्या की है और बहुमत इमामों का भी यही कहना है। त) माहवारी (हैज़) कम से कम तीन रात-दिन पूरे और अधिकतम दस रात-दिन पूरे हैं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 149: 9 मुहर्रम अल-हराम 1325 हिजरी दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक औरत ने लड़का जना और आठ दिन में निफ़ास (बच्चे के जन्म के बाद का रक्तस्राव) से फ़ारिग हो गई। अब उसके लिए रोज़े और नमाज़ का क्या हुक्म है? और उसकी चूड़ियाँ आदि चाँदी या काँच की या वह चारपाई या मकान पाक रहा या नापाक? या चालीस दिन की मियाद लगाई जाएगी? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

अल-जवाब (उत्तर): यह जो आम अज्ञानी औरतों में मशहूर है कि जब तक चिल्ला (चालीस दिन) न हो जाए जच्चा (माँ) पाक नहीं होती, यह सरासर ग़लत है। खून बंद होने के बाद नाहक़ नापाक रहकर नमाज़ और रोज़े छोड़ना बहुत बड़े गुनाह (कबीरा) में फँसना है। मर्दों पर फ़र्ज़ है कि उन्हें इससे रोकें। निफ़ास की अधिकतम सीमा चालीस दिन रखी गई है, न कि यह कि चालीस दिन से कम का होता ही नहीं; इसके कम होने की कोई सीमा नहीं है। अगर बच्चा जनने के बाद सिर्फ एक मिनट खून आया और बंद हो गया, तो औरत उसी वक्त पाक हो गई; वह नहाए, नमाज़ पढ़े और रोज़े रखे। अगर चालीस दिन के अंदर उसे दोबारा खून नहीं आया, तो उसकी नमाज़ और रोज़े सब सही रहेंगे। चूड़ियाँ, चारपाई, मकान सब पाक हैं। सिर्फ वही चीज़ नापाक होगी जिसे खून लग जाएगा; उसके बिना इन चीज़ों को नापाक समझना हिंदुओं का मसला (रीति) है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 150: फ़रुख़ाबाद से शम्सुद्दीन अहमद, शनिवार 18 शव्वाल 1337 हिजरी कोई व्यक्ति अपनी बीवी से हैज़ या निफ़ास की हालत में संभोग करे तो उसका कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) क्या है?

अल-जवाब (उत्तर): अगर हैज़ की शुरुआत में है तो एक दीनार, और अंत में है तो आधा दीनार। एक दीनार दस दिरहम का होता है, और दस दिरहम दो रुपये तेरह आने और कुछ कौड़ियों से थोड़ा कम है। सुनन दारमी, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और इब्न माजा में हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

अरबी	उर्दू अनुवाद
اذا وقع الرجل باهله وهى حائض فليتصدق	जब आदमी अपनी औरत से हालत-ए-हैज़ में सोहबत (संभोग) करे

नोट: मिश्कात अल-मसाबीह में इसे चारों सुनन की ओर मनसूब किया गया है, लेकिन जो मैंने नसाई के लिए देखा है, वह इसके बाद आ रहा है। 12 (म) **(त):** मिश्कात अल-मसाबीह में इसे चारों सुनन की तरफ़ मनसूब किया गया है और वह जो मैंने नसाई के लिए देखी है वह है जो इसके बाद आ रही है। 12 (त)

مرجائے تو اس کے لئے ایک ہی غسل کافی ہے کما نص علیہ علماؤنا و بہ قال جمہور الائمۃ (جیسا کہ ہمارے علماء نے اس کی تصریح فرمائی ہے اور جمہور ائمہ کا بھی یہی قول ہے۔ ت) حیض کم از کم تین رات دن کامل ہے اور زیادہ سے زیادہ دس رات دن کامل۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ : ۱۴۹ ۹- محرم الحرام ۱۳۲۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک عورت لڑکا جننے اور نفاس سے آٹھ دن میں فارغ ہو گئی اب اُس کے واسطے روزے نماز کا کیا حکم ہے اور چڑی وغیرہ چاندی یا کانچ کی یا وہ چار پائی یا مکان پاک رہا یا ناپاک یا چالیس دن کی میعاد لگائی جائے گی۔ بینوا توجروا۔

الجواب: یہ جو عوام جاہلوں عورتوں میں مشہور ہے کہ جب تک چلہ نہ ہو جائے زچہ پاک نہیں ہوتی محض غلط ہے خون بند ہونے کے بعد ناحق ناپاک رہ کر نماز روزے چھوڑ کر سخت کبیرہ گناہ میں گرفتار ہوتی ہیں مردوں پر فرض ہے کہ انہیں اس سے باز رکھیں نفاس کی زیادہ حد کے لئے چالیس دن رکھے گئے ہیں نہ یہ کہ چالیس دن سے کم کا ہوتا ہی نہ ہو اس کے کم کے لئے کوئی حد نہیں اگر بچہ جننے کے بعد صرف ایک منٹ خون آیا اور بند ہو گیا عورت اُسی وقت پاک ہو گئی نہائے اور نماز پڑھے اور روزے رکھے۔ اگر چالیس دن کے اندر اِسے خون عود نہ کرے گا تو نماز روزے سب صحیح رہے گے۔ چوڑیاں، چارپائی، مکان سب پاک ہیں فقط وہی چیز ناپاک ہو گی جسے خون لگ جائے گا بغیر اس کے ان چیزوں کو ناپاک سمجھ لینا ہندوؤں کا مسئلہ ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۵۰ : از فرخ آباد شمس الدین احمد شنبہ ۱۸- شوال ۱۳۳۷ھ کوئی شخص اپنی بی بی سے حیض یا نفاس کی حالت میں صحبت کرے تو اس کا کفارہ کیا ہے؟ الجواب: اگر ابتدائے حیض میں ہے تو ایک دینار، اور ختم پر ہے تو نصف دینار، اور دینار دس درم کا ہوتا ہے اور دس درہم دو روپے تیرہ آنے کچھ کوڑیاں کم۔ سنن دارمی وابوداؤد وترمذی وابن ماجہ میں حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے ہے رسول اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

عربی متن	اردو ترجمہ
اذا وقع الرجل باھلہ وھی حائض فلیتصدق	جب آدمی اپنی عورت سے حالتِ حیض میں صحبت کرے

عہ: عزاہ فی المشکوۃ لاربعۃ وانما الذی رأیت للمنسائی مایاتی ۱۲ منہ (م) مشکوۃ المصابیح میں اسے چاروں سنن کی طرف منسوب کیا ہے اور وہ جو میں نے نسائی کے لئے دیکھی ہے وہ ہے جو اس کے بعد آرہی ہے ۱۲ منہ (ت)

Fatawa Ridawiyya, Volume 4

[Boxed Text:] With half a dinar[1] So he should give half a dinar in charity.

In Sunan an-Nasa'i and Ibn Majah, it is reported from them that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "He should give a dinar or half a dinar in charity"[2]; give one or half a dinar in charity. Ad-Darimi narrated it and attributed the hesitation to the narrator's doubt, where he said: "He should give a dinar or half a dinar in charity" - Al-Hakam (the narrator) had a doubt[3] (Imam ad-Darimi narrated it and declared the hesitation to be the narrator's doubt, saying he should give one dinar in charity or half a dinar, Al-Hakam (the narrator) had a doubt).

In Musnad Ahmad, ad-Darimi, and at-Tirmidhi, it is reported from them that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said:

[Boxed Text:] "If the blood is red, then one dinar; and if the blood is yellow, then half a dinar"[4]. When the blood is red, then one dinar, and when it is yellow, then half.

At-Tabarani in al-Mu'jam al-Kabir and al-Hakim, with an endorsement of its authenticity, narrated from them that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

[Boxed Text:] "Whoever has intercourse with his wife while she is menstruating, let him give a dinar in charity, and whoever has intercourse with her after the blood has ceased but before she has bathed, let him give half a dinar"[5]. Whoever had intercourse with his wife during menstruation should give one Ashrafi (gold coin) in charity, and if the blood has stopped but she has not yet bathed, then half.

In the Musnad, it is reported from them as: "Give a dinar in charity, and if you do not find a dinar, then half." [Annotation symbol] And it is also attributed in al-Jami' al-Kabir to Abu Dawood and an-Nasa'i; I have not seen this hadith in their works.

[Footnotes:] 1. Jamiat-Tirmidhi, Chapter on what has been narrated about the dislike of coming to a menstruating woman, printed by Aftab-e-Alam Press, Lahore, 1/19 2. Sunan Ibn Majah, Chapter on the expiation of one who comes to a menstruating woman, printed by H.M. Saeed Company, Karachi, 1/72 3. Sunan ad-Darimi, Chapter on one who says there is an expiation upon him, Medina Munawara, Hejaz, 1/203 4. Jami at-Tirmidhi, Chapter on what has been narrated about the expiation for that, printed by Aftab-e-Alam Press, Lahore, 1/20 5. Al-Mu'jam al-Kabir

by at-Tabarani, from Abdullah bin Abbas, Hadith No. 12134, Al-Maktabah al-Faisaliyah, Beirut, 11/202

फ़तावा रज़विया, जिल्द चौथी

[बॉक्स में लिखा पाठ:] आधा दीनार[1] तो चाहिए कि आधा दीनार सदक़ा दे।

सुनन नसाई व इब्ने माजा में उन्हीं से है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "यतसद्दक़ बिदीनारिन औ निस्फ़ दीनार"[2]; एक या आधा दीनार सदक़ा करे। इमाम दारमी ने इसे रिवायत किया और इस हिचकिचाहट को रावी का शक क़रार दिया, जहाँ उन्होंने कहा: "यतसद्दक़ बिदीनारिन व निस्फ़ दीनार शक्क अल-हकम"[3] (इमाम दारमी ने इसे रिवायत किया और इस दुविधा को रावी का संदेह बताया कि उसने कहा एक दीनार सदक़ा करे या आधा दीनार, हकम (रावी) को शक हुआ था)।

मुसनद अहमद, दारमी और तिर्मिज़ी में उन्हीं से है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

[बॉक्स में लिखा पाठ:] "इज़ा काना दमन अहमरा फ़दीनारुन व इज़ा काना दमन अस्फ़रा फ़निस्फ़ु दीनार"[4]। जब लाल ख़ून हो तो एक दीनार और जब पीला हो तो आधा।

तबरानी ने मोजम कबीर में और हाकिम ने इसे सहीह क़रार देते हुए उन्हीं से यूँ रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

[बॉक्स में लिखा पाठ:] "मन अता इम्रअतहू फ़ी हैज़िहा फ़ल-यतसद्दक़ बिदीनारिन व मन अताहा व क़द अदब-रद दमु अनहा वलम तग़तसिल फ़निस्फ़ु दीनार"[5]। जिसने अपनी औरत से हैज़ (मासिक धर्म) में सोहबत की, वह एक अशर्फी सदक़ा करे और अगर ख़ून बंद हो चुका हो और अभी नहाई न हो, तो आधा।

मुसनद में उन्हीं से यूँ है: "तसद्दक़ बिदीनारिन फ़-इनलम तजिद दीनारन फ़-निस्फ़"। [हस्तलेख संकेत] जामे कबीर में इसे अबू दाऊद और नसाई की तरफ़ भी मंसूब किया गया है; मैंने इन दोनों में यह हदीस नहीं देखी।

[टिप्पणियाँ:] 1. जामे तिर्मिज़ी, बाब माजा'अ फ़ी कराहियात अतयान अल-हाइज़, मत्तबूआ आफ़ताब आलम प्रेस लाहौर 1/19 2. सुनन इब्ने माजा, बाब कफ़्फ़ारा मन अता हाइज़न, मत्तबूआ एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/72 3. सुनन दारमी, बाब मन काला अलैह अल-कफ़्फ़ारा, मदीना मुनव्वरा हिजाज़ 1/203 4. जामे तिर्मिज़ी, बाब माजा'अ फ़ी अल-कफ़्फ़ारा फ़ी ज़ालिका, मत्तबूआ आफ़ताब

आलम प्रेस लाहौर 1/20 5. अल-मोजम अल-कबीर लित-तबरानी, अब्दुल्ला बिन अब्बास से, हदीस नंबर 12134, अल-मकतबा अल-फ़ैसलिया बेरूत 11/202

فتاوی رضویہ، جلد چہارم

[خانہ میں عبارت:] بِنصف دینار[1] تو چاہیے کہ نصف دینار صدقہ دے۔

سنن نسائی و ابن ماجہ میں انہیں سے ہے، نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: یتصدق بدینار او نصف دینار[2] ایک یا نصف دینار تصدق کرے ورواہ الدارمی فجعل التردید من شك الراوی حیث قال یتصدق بدینار ونصف دینار شك الحکم[3] (اسے امام دارمی نے روایت کیا اور تردید کو راوی کا شک قرار دیا کہ اس نے کہا ایک دینار صدقہ کرے یا نصف دینار، حکم (راوی کو) شک ہوا ت)

مسند احمد و دارمی و ترمذی میں انہیں سے ہے نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

[خانہ میں عبارت:] اذکان دماً احمر فدینار واذاکان دماً اصفر فنصف دینار[4]۔ جب سُرخ خون ہو تو ایک دینار اور زرد ہو تو آدھا۔

طبرانی نے معجم کبیر اور حاکم نے بافادہ تصحیح انہیں سے یوں روایت کی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

[خانہ میں عبارت:] من اتی امرأته في حیضها فلیتصدق بدینار و من اتاها وقد ادبر الدم عنها ولم تغتسل فنصف دینار[5]۔ جس نے اپنی عورت سے حیض میں صحبت کی وہ ایک اشرفی تصدق کرے اور اگر خون بند ہو چکا اور ابھی نہائی نہ تھی تو آدھی۔

مسند میں انہیں سے یوں ہے: تصدق بدینار فان لم تجد دینار فنصف عہ وعزاہ ایضاً فی الجامع الکبیر لابی داود والنسائی لم اره لهما۔ جامع کبیر میں ہے اس کو بھی ابو داؤد اور نسائی کی طرف منسوب کیا ہے میں نے یہ حدیث ان دونوں میں نہیں دیکھی۔

[حواشی:] ۱۔ جامع الترمذی باب ماجاء فی کراہیۃ اتیان الحائض، مطبوعہ آفتاب عالم پریس لاہور ۱/۱۹ ۲۔ سنن ابن ماجہ باب کفارۃ من اتی حائضاً مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۷۲ ۳۔ سنن الدارمی باب من قال علیہ الکفارۃ مدینہ منورہ حجاز ۱/۲۰۳ ۴۔ جامع الترمذی باب ماجاء فی الکفارۃ فی ذلک، مطبوعہ آفتاب عالم پریس لاہور ۱/۲۰ ۵۔ المعجم الکبیر للطبرانی عن عبداللہ بن عباس حدیث نمبر ۱۲۱۳۴ المکتبۃ الفیضلیۃ بیروت ۱۱/۲۰۲

Volume Fourth Fatawa-e-Razawiyya Dinar 1 - Give one gold coin (ashrafi) in charity, or half if not possible. It is stated in Durr al-Mukhtar:

| It is recommended to give one dinar or half a dinar as charity, and its recipients are the same as those of Zakat. Is it also obligatory for a woman to give charity? It is stated in Al-Diya (Al-Diya al-Manawi Sharh Muqaddimah al-Ghaznawi): The apparent matter is that it is not obligatory for her. (T) | It is recommended to give one dinar or half a dinar as charity, and its recipients are the same as those of Zakat. Is it also obligatory for a woman to give charity? It is stated in Al-Diya (Al-Diya al-Manawi Sharh Muqaddimah al-Ghaznawi): The apparent matter is that it is not obligatory for her. (T) |

In Fath al-Qadir it is stated:

| It is recommended to give one dinar or half a dinar as charity. Some say one dinar if it was at the beginning of menstruation, and half a dinar if intercourse occurred towards its end. It is as if the speaker believes there is no meaning in choosing between a small and large amount within the same category. End. I say: Giving a choice between what is virtuous and what is more virtuous is not surprising. Therefore, the meaning would be to give half a dinar as charity, which is the minimum recommended expiation for what occurred. If one gives a full dinar, it is excellent. Also, sometimes the choice depends on availability, meaning if possible then one dinar, and if not then half a dinar. This has been narrated in the Hadith as mentioned, but the most apparent view is what Mulla Ali Qari said in Al-Mirqat, that the speaker took the detail from the upcoming Hadith narrated by Ibn Abbas. (End) | It is recommended to give one dinar or half a dinar as charity. Some say one dinar if it was at the beginning of menstruation, and half a dinar if intercourse occurred towards its end. It is as if the speaker believes there is no meaning in choosing between a small and large amount within the same category. End. I say: Giving a choice between what is virtuous and what is more virtuous is not surprising. Therefore, the meaning would be to give half a dinar as charity, which is the minimum recommended expiation for what occurred. If one gives a full dinar, it is excellent. Also, sometimes the choice depends on availability, meaning if possible then one dinar, and if not then half a dinar. This has been narrated in the Hadith as mentioned, but the most apparent view is what Mulla Ali Qari said in Al-Mirqat, that the speaker took the detail from the upcoming Hadith narrated by Ibn Abbas. (End) |

1 Musnad Ahmad bin Hanbal from Ibn Abbas (Radi Allahu Anhu), published in Beirut, 1/363. 2 Durr al-Mukhtar, Chapter of Menstruation, published in Mujtabai Delhi, 1/52. 3 Fath al-Qadir, Chapter of Menstruation, published in Nuriya Rizvia Sukkur, 1/174. 4 Mirqat Sharh Mishkat, Second Section from Chapter of Menstruation, Maktaba Imdadia Multan, 2/100.

जिल्द चार फ़तावा-ए-रज़विया दीनार 1- एक अशरफी सदका कर और न हो सके तो आधी। दुर्रे मुख्तार में है:

| युन्दबु तसद्दुकुहु बिदीनारिन औ निस्फिही व मसरफ़ुहु कज़कातिन व हल अलल मरअति तसद्दुकुन काल फ़िज ज़ियाइज ज़ाहिरु ला - | एक दीनार या आधा दीनार सदका देना मुस्तहब (पसंदीदा) है और इसके हकदार वही हैं जो ज़कात के हैं। क्या औरत पर भी सदका देना वाजिब है? तो अल-ज़िया (अल-ज़िया अल-मनवी शरह मुक़द्दमा अल-ग़ज़नवी) में फ़रमाया: ज़ाहिर बात यह है कि उस पर (वाजिब) नहीं है। (त) |

फ़तह अल-क़दीर में है:

| युतसद्दकु बिदीनारिन औ बि-निस्फिही इस्तहबाबन व कीला बिदीनारिन इन काना अव्वलाल हैज़ी व बि-निस्फिही इन वतिअ फी आखिरिही काना काइलुहू रआ अन्नहू ला माना लित-तख़यीरि बैनल कलीली वल कसीरी फिन-नौइल वाहिदी आह अकुलु ला अज़्ज़ा फ़ित-तख़यीरि बैनल फाज़िली वल अफज़ली फ़यकूनुल माना युतसद्दकु बि-निस्फि दीनारिन व हाज़ा अदना मा युन्दबु इलैहि कफ़्फ़ारतन लिमा वका फ़इन अकमला दीनारन फ-अजवदु व अयज़न कद यकूनुत तरदीदु बि-इतिबारिल मुयस्सरि अयी बिदीनारिन इन तयस्सरा व इल्ला फ़-बि-निस्फिही व कद रुविया फिल हदीसी कमा मर्रा लाकिनल अज़हरु कमा कालल कारी फिल मिरकाति अन्ना काइलाहु अख़ज़त तफ़सीला मिनल हदीसिल आती अन इब्नि अब्बासिन 4 आह | एक दीनार या आधा दीनार सदका करना मुस्तहब है। और कहा गया कि अगर हैज़ (मासिक धर्म) का आरंभ था तो एक दीनार, और आखिरी दिनों में हमबिस्तरी की तो आधा दीनार दे। गोया उस कहने वाले की राय में एक ही प्रकार में कम और अधिक के बीच विकल्प का कोई अर्थ नहीं है। आह। अक़ुलु: बेहतर और और अधिक बेहतर के बीच विकल्प देना आश्चर्यजनक नहीं है। इसलिए अर्थ यह होगा कि आधा दीनार सदका करे और यह उसके अपराध का कम से कम मुस्तहब कफ़्फ़ारा है। अगर पूरा दीनार दे तो अत्यंत श्रेष्ठ है। साथ ही, कभी विकल्प उपलब्धता के आधार पर भी होता है, यानी अगर उपलब्ध हो तो एक दीनार और उपलब्ध न हो तो आधा दीनार दे। और यह बात हदीस में वर्णित है जैसा कि गुज़र चुका, लेकिन अधिक स्पष्ट बात वह है जो हज़रत मुल्ला अली क़ारी ने अल-मिरक़ात में कही कि कहने वाले ने विस्तार आने वाली हदीस से लिया है जो इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है। (समाप्त) |

1 मुसनद अहमद बिन हंबल, हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से, बेरूत प्रकाशन 1/363 2 दुर्रे मुख्तार, बाब अल-हैज़, मुजतबाई दिल्ली प्रकाशन 1/52 3 फ़तह अल-क़दीर, बाब अल-हैज़, नूरिया रिज़विया सुक्कुर प्रकाशन 1/174 4 मिरक़ात शरह मिश्क़ात, बाब अल-हैज़ की दूसरी फ़स्ल, मकतबा इमदादिया मुल्तान 2/100

पृष्ठ 359/761

جلد چہارم فتاویٰ رضویہ دینار 1۔ ایک اشرفی صدقہ کر اور نہ ہو سکے تو آدھی۔ در مختار میں ہے:

| یندب تصدقه بدینار اونصفه ومصرفه کزکاة وهل علی المرأة تصدق قال فی الضیاء الظاهر لا- |

ایک دینار یا نصف دینار صدقہ دینا مستحب ہے اس کا مصرف وہی ہے جو زکاۃ کا ہے۔ اور کیا عورت کو بھی صدقہ دینا واجب ہے؟ تو ضیاء (الضیاء المعنوی شرح مقدمة الغزنوی) میں فرمایا: ظاہر بات یہ ہے کہ اس پر (واجب) نہیں-(ت) |

فتح القدیر میں ہے:

| یتصدق بدینار او بنصفه استحباباً وقیل بدینار ان کان اول الحیض وبنصفه ان وطئ فی اخره کان قائله رأی انه لا معنی للتخییر بین القلیل والکثیر فی النوع الواحد اه اقول لاعزا فی التخییر بین الفاضل والافضل فیکون المعنی یتصدق بنصف دینار وهذا ادنی ما یندب الیه کفارة لما وقع فان اکمل دیناراً فاجود وایضاً قد یکون الترديد باعتبار المیسر ای بدینار ان تیسر والا فبنصفه وقدروی فی الحدیث کمامر لکن الاظهر کما قال القاری فی المرقاة ان قائله اخذ التفصیل من الحدیث الآتی عن ابن عباس 4 اه | ایک دینار یا نصف دینار صدقہ کرنا مستحب ہے اور کہا گیا کہ اگر حیض کا آغاز تھا تو ایک دینار، اور آخری دنوں میں وطی کی تو نصف دینار دے، گویا اس قائل کی رائے میں ایک ہی نوع میں قلیل و کثیر کے درمیان اختیار کا کوئی مطلب نہیں۔ اھ اقول: فاضل اور افضل کے درمیان اختیار دینا قابلِ تعجب نہیں لہذا مطلب یہ ہوگا کہ نصف دینار صدقہ کرے اور یہ اس کے جرم کا کم از کم مستحب کفارہ ہے اگر پورا دینار دے تو نہایت عمدہ ہے نیز کبھی اختیار میسر آنے والی چیز کے اعتبار سے بھی ہوتا ہے یعنی اگر میسر ہو تو ایک دینار اور میسر نہ ہو تو نصف دینار دے

اور یہ بات حدیث میں مروی ہے جیسا کہ گزر چکا لیکن زیادہ ظاہر بات وہ ہے جو حضرت ملا علی قاری... |

1 مسند احمد بن حنبل عن ابن عباس رضی اللہ عنہ مطبوعہ بیروت ۱/ ۳۶۳ 2 در مختار باب الحیض مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۵۲ 3 فتح القدیر باب الحیض مطبوعہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۱۷۴ 4 مرقاۃ شرح مشکوۃ الفصل الثانی من باب الحیض مکتبہ امدادیہ ملتان ۲/ ۱۰۰

Fatawa-e-Razvia, Volume 4

[Arabic Quote]: "The color of the blood; it is red in the body, then when it nears ending, it becomes yellow."

[Urdu Explanation]: [The author] (may Allah have mercy on him) explained that the person who said this derived detail from the narration of Hazrat Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both) which comes later (in Mirqat). (End of quote) That is, the detail regarding the color of the blood which has passed, because it is red at the beginning and becomes yellow near its end.

[Arabic Quote]: "I say: And with this, the weakness of what occurred in 'Al-Bahr [al-Ra'iq]' and was followed by 'Sh' [Shami] became apparent, among those who made the two expressions into two different opinions. For he said just before: 'If it is in the beginning of menstruation, then one dinar, or its end, then half.' And it was said: 'One dinar if it is black, and half if it is yellow.' (End quote). He said in 'Al-Bahr': 'Evidence for this is what Abu Dawud and al-Hakim narrated and he authenticated it, mentioning the third wording which we attributed to Ahmad and al-Tirmidhi, and I did not see it for Abu Dawud, and Allah knows best regarding this.' Al-Qari said: Al-Mundhiri said: 'Disturbance occurred in this Hadith in its text and chain, in its being raised (marfu'), stopped (mawquf), sent (mursal), or problematic (mu'dal).' Thus it was narrated by Sayyid Jamal-ud-Din from Al-Takhreej."

[Urdu Translation]: I say: From this, the weakness of what is in 'Al-Bahr al-Ra'iq' became clear, and Imam Shami also following it considered the two statements as two different opinions when he said it is said: if (intercourse occurred) at the beginning of menstruation, then one dinar and if at the end, then half a dinar. And one opinion is that if it is black, then one dinar and if yellow, then half a dinar. In 'Al-Bahr al-Ra'iq' he said the narration of Imam Abu Dawud and al-Hakim points to this which they declared authentic. And the third wording (red color) is mentioned which we quoted from Imam Ahmad and Tirmidhi but I did not see it in Abu Dawud, and Allah knows best. Adopt this (explanation). Hazrat Mulla Ali Qari (may Allah have mercy on him) said: Mundhiri said: in this Hadith there is [disturbance in] text, chain, marfu', mawquf,

Footnotes: 1. Radd al-Muhtar, Chapter on Menstruation, Mustafa al-Babi, Egypt 1/218. 2. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter on Menstruation, printed by H.M. Saeed Company, Karachi 1/197. 3. The meaning intended by the Imam of Ahl-e-Sunnat (may Allah have mercy on him) is that at the beginning of menstruation the color of the blood is black

and at the end it is yellow. Therefore, the start of menstruation and black color are the same thing, while the end of menstruation and yellow color are also the same thing. It is as if the author of Al-Bahr al-Ra'iq and Shami considered one single opinion as two opinions. 12 Hazarvi.

फ़तावा-ए-रज़विया, खंड 4

[अरबी उद्धरण]: "रक्त का रंग; वह शरीर में लाल होता है, फिर जब वह समाप्त होने के करीब होता है, तो पीला हो जाता है।"

[उर्दू व्याख्या]: [लेखक] (अल्लाह उन पर रहम करे) ने बताया कि ऐसा कहने वाले ने हज़रत इब्न अब्बास (अल्लाह उन दोनों से राज़ी हो) के उस वर्णन से विस्तार प्राप्त किया है जो आगे (मिर्क़ात में) आ रही है। (समाप्त) यानी खून के रंग के अनुसार जो विस्तार गुज़रा है, क्योंकि वह शुरुआत में लाल होता है और खत्म होने के करीब पीला हो जाता है।

[अरबी उद्धरण]: "मैं कहता हूँ: और इससे वह कमज़ोरी स्पष्ट हो गई जो 'अल-बहर [अल-राइक]' में हुई थी और 'श' [शामी] ने उनका अनुसरण किया, उन लोगों में से जिन्होंने इन दो कथनों को दो अलग राय बना दिया। क्योंकि उन्होंने ठीक पहले कहा: 'यदि यह मासिक धर्म की शुरुआत में है, तो एक दीनार, या उसके अंत में, तो आधा।' और कहा गया: 'एक दीनार यदि वह काला है, और आधा यदि वह पीला है।' (उद्धरण समाप्त)। उन्होंने 'अल-बहर' में कहा: 'इसका प्रमाण वह है जिसे अबू दाऊद और अल-हाकिम ने वर्णित किया और इसे सही ठहराया, उन्होंने उस तीसरे शब्द का उल्लेख किया जिसे हमने अहमद और अल-तिर्मिज़ी की ओर प्रेरित किया, और मैंने इसे अबू दाऊद के यहाँ नहीं देखा, और अल्लाह इस बारे में बेहतर जानता है।' अल-कारी ने कहा: अल-मुन्ज़िरी ने कहा: 'इस हदीस के पाठ और श्रृंखला में, इसके रफ़ा (marfu'), वक़्फ़ (mawquf), इरसाल (mursal), या एद्दाल (mu'dal) होने में गड़बड़ी हुई है।' इसी तरह सैयद जमालुद्दीन ने अत-तख़रीज से इसे उद्धृत किया है।"

[उर्दू अनुवाद]: मैं कहता हूँ: इसी से उस बात की कमज़ोरी ज़ाहिर हो गई जो 'अल-बहरुल राइक' में है और इमाम शामी ने भी उनकी पैरवी करते हुए दो कथनों को दो अलग राय करार दिया जब उन्होंने कहा कि कहा गया है: अगर मासिक धर्म के शुरू में (संभोग किया) तो एक दीनार और आख़िर में हो तो आधा दीनार होगा। और एक राय यह है कि अगर काला रंग हो तो एक दीनार और पीला रंग हो तो आधा दीनार होगा। 'अल-बहरुल राइक' में फ़रमाया इस बात पर इमाम अबू दाऊद और हाकिम की रिवायत दलालत (संकेत) करती है जिसे उन्होंने सही करार दिया है। और तीसरा लफ़्ज़ (सुर्ख़ रंग) ज़िक्र किया जिसे हमने इमाम अहमद और तिर्मिज़ी के हवाले से नक़ल किया है लेकिन मैंने इसे अबू दाऊद में नहीं देखा, वल्लाहु तआला आलम (अल्लाह बेहतर जानता है)। इस

(व्याख्या) को अपनाइये। हज़रत मुल्ला अली क़ारी (अल्लाह उन पर रहम करे) ने फ़रमाया: मुन्ज़िरी ने कहा है कि इस हदीस में मत्न (पाठ), सनद (शृंखला), रफ़ा, वक़्फ़,

पादलेख: 1. रद-उल-मुहतार, मासिक धर्म का अध्याय, मुस्तफा अल-बानी, मिस्र 1/218। 2. अल-बहरुल राइक, मासिक धर्म का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी, कराची द्वारा मुद्रित 1/197। 3. इमाम अहल-ए-सुन्नत (अल्लाह उन पर रहम करे) का मतलब यह है कि मासिक धर्म की शुरुआत में खून का रंग काला होता है और अंत में पीला, इसलिए मासिक धर्म की शुरुआत और काला रंग एक ही बात है जबकि मासिक धर्म का अंत और पीला रंग भी एक ही चीज़ है। मानो एक ही राय को साहिब-ए-बहरुल राइक और शामी ने दो राय करार दिया। 12 हज़ारवी।

ببلون الدم فانہ یکون فی بدنہ احمر فاذا قارب الانقطاع یصفر۔

رحمہ اللہ نے بیان فرمائی کہ اس کے قائل نے حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما کی روایت سے جو آگے (مرقات میں) آرہی ہے تفصیل حاصل کی ہے (انتہی) یعنی خون کے رنگ کے اعتبار سے جو تفصیل گزری ہے، کیونکہ وہ شروع میں سُرخ ہوتا ہے اور ختم ہونے کے قریب زرد ہو جاتا ہے۔

اقول : وبه ظهر ضعف ما وقع في البحر وتبعه ش من جعل العبارتين قولين اذ قال قبيل ان كان في الاول الحيض فدينار اواخره فنصفه وقيل دينار لواسود ونصفه لواصلفر اه قال في البحر ويدل له مارواه ابوداود والحاكم وصححه فذكر اللفظ الثالث الذی عزوناه لاحمد والترمذی ولم اره لابی داؤد واللہ تعالٰی اعلم ہذا وقال القاری قال المنذری قدوقع اضطراب في هذا الحديث متناواسنادا رفعا ووقفا وارسالا واعضالا كذا نقله السيد جمال الدين عن التخريج

اقول: اسی سے اس بات کی کمزوری ظاہر ہو گئی جو البحر الرائق میں ہے اور امام شامی نے بھی اس کی اتباع کرتے ہوئے دو عبارتوں کو دو قول قرار دیا جب انہوں نے کہا کہ کہا گیا ہے اگر حیض کے شروع میں (جماع کیا) تو ایک دینار اور آخر میں ہو تو نصف دینار ہوگا۔ اور ایک قول یہ ہے کہ اگر سیاہ رنگ ہو تو ایک دینار اور زرد رنگ ہو تو نصف دینار ہوگا۔ البحر الرائق میں فرمایا اس بات پر امام ابوداؤد اور حاکم کی روایت دلالت کرتی ہے جسے انہوں نے صحیح قرار دیا ہے۔ اور لفظِ ثالث (سُرخ رنگ) ذکر کیا جسے ہم نے امام احمد اور ترمذی کے حوالے سے نقل کیا

ہے لیکن میں نے اسے ابوداؤد میں نہیں دیکھا واللہ تعالیٰ اعلم۔ اس (تقریر) کو اپنائیے حضرت مُلا علی قاری رحمہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا: منذری نے کہا ہے کہ اس حدیث میں متن، سند، رفع، وقف،

حواشی: 1. ردالمحتار باب الحیض مصطفٰی البانی مصر ۱/۲۱۸ 2. البحر الرائق باب الحیض مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۹۷ 3. امام اہلسنت علیہ الرحمہ کا مطلب یہ ہے کہ حیض کی ابتدا میں خون کا رنگ سیاہ ہوتا ہے اور آخر میں زرد، لہٰذا آغاز حیض اور سیاہ رنگ ایک ہی بات ہے جبکہ اختتام حیض اور زرد رنگ بھی ایک ہی چیز ہے گویا ایک ہی قول کو صاحب البحر الرائق اور شامی نے دو قول قرار دیا ۱۲ ہزاروی

Volume 4 Fatawa-e-Razawiyyah

"The saying of Ibn Hajar that its chain is Hasan (good) is not commendable."[1] End. | There is inconsistency (idhtirab) in terms of 'Irsal' and 'I'dal'[3]. Sayyid Jamal-ud-Din narrated it similarly from 'Takhreej', therefore, Ibn Hajar al-Asqalani's declaring its chain as Hasan is not commendable. End.

I say: In our view, 'Irsal' and 'I'dal' are not harmful. Sometimes the narrator brings the full chain, and sometimes he omits it, so there is no inconsistency. The same applies to 'Raf' (attributing to the Prophet) and 'Waqf' (attributing to a companion). Furthermore, 'Wasl' (connecting the chain) and 'Raf' are additions of a trustworthy narrator, so they should be accepted, as established by the researcher in 'Al-Fath' in several places. Al-Qari said: Mirak said this is an explanation of the inconsistency of the chain. As for the inconsistency in the text: it is narrated (1) with one dinar or half a dinar based on doubt; and it is narrated (2) that he should give one dinar in charity, and if he does not find it, then half a dinar; and it is narrated (3) a distinction between whether he encounters her during the flow of blood or after the blood stops; and it is narrated (4) that he should give one-fifth of a dinar in charity; and it is narrated (5) half a dinar; and it is narrated (6) that if the blood is red, then one dinar, and if the blood is yellow, then half a dinar.[2] End. | **I say:** In our view, 'Irsal' and 'I'dal' make no difference. A narrator sometimes brings a complete chain and sometimes omits part of it, so there is no inconsistency. The same is the case with 'Raf' and 'Waqf'. Then 'Raf' and 'Wasl' are due to the narrator's trustworthiness, so they should be accepted, as the researcher has investigated in 'Fath-ul-Qadeer' in many places. Mulla Ali Qari (may Allah have mercy on him) says that Mirak said this is an explanation of the chain's inconsistency, but the text's inconsistency is that in one narration, one dinar and half a dinar are mentioned as a doubt. In the second narration, it says give one dinar in charity. According to the third narration, there's a difference between having intercourse during the onset and cessation of blood; while in the fourth narration, it's to give a fifth part of a dinar in charity. In the fifth narration, it's half a dinar. And in the sixth narration, if the blood is red, give one dinar, and if it's yellow, give half a dinar. End. **I say:** All these narrations...

I say: I have known all these narrations and their extractions except the narration of 'The Fifth' (one-fifth), which is recorded by Al-Darimi and Ibn Rahwayh, and the Seal of Hadith Scholars declared it good from Abdul Hamid bin Zayd bin Al-Khattab, who said it was for Umar bin Al-Khattab...

Majlis of Dawatelslami 1. Mirqat Sharh Mishkat, second section from the chapter of Menstruation, Maktaba Imdadia Multan, 101/2. 2. Mirqat Sharh Mishkat, second section from the chapter of Menstruation, Maktaba Imdadia Multan, 101/2. 3. If the narrator above the Tabi'i is omitted, it is 'Irsal', and the omission of two or more narrators from the chain of a Hadith is called 'I'dal'. 12-Hazarwi.

खंड 4 फ़तावा-ए-रज़विया

"इब्न हजर का यह कहना कि इसकी सनद हसन है, सराहनीय नहीं है।"[1] अंत। | 'इरसाल' और 'एज़ाल'[3] के संदर्भ में यह अव्यवस्थित (इज़तिराब) है। सैयद जमाल-उद-दीन ने 'तख़रीज' से इसी तरह उद्धृत किया है, इसलिए इब्न हजर अल-अस्क़लानी का इसकी सनद को हसन घोषित करना सराहनीय नहीं है। अंत।

मैं कहता हूँ: हमारे यहाँ इरसाल और एज़ाल से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। रावी कभी पूरी सनद लाता है और कभी उसे हटा देता है, इसलिए कोई इज़तिराब (अव्यवस्था) नहीं है। 'रफ़अ' और 'वक़्फ़' का भी यही हाल है। इसके अलावा, 'वस्ल' और 'रफ़अ' एक भरोसेमंद रावी की वृद्धि हैं, इसलिए इसे स्वीकार किया जाना चाहिए, जैसा कि अन्वेषक ने 'अल-फ़तह' में कई स्थानों पर प्रमाणित किया है। अल-क़ारी ने कहा: मीरक ने कहा कि यह सनद की अव्यवस्था का वर्णन है। जहाँ तक पाठ (मतन) की अव्यवस्था का प्रश्न है: यह वर्णित है (1) संदेह के आधार पर एक दीनार या आधा दीनार; और वर्णित है (2) कि वह एक दीनार दान करे, और यदि वह न पाए तो आधा दीनार; और वर्णित है (3) कि खून के आने या रुक जाने की स्थिति में संभोग करने में अंतर है; और वर्णित है (4) कि वह दीनार का पाँचवाँ हिस्सा दान करे; और वर्णित है (5) आधा दीनार; और वर्णित है (6) कि यदि खून लाल हो तो एक दीनार, और यदि पीला हो तो आधा दीनार।[2] अंत। | **मैं कहता हूँ:** हमारे नज़दीक इरसाल और एज़ाल से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। रावी कभी पूरी सनद लाता है और कभी कुछ हिस्सा हटा देता है, इसलिए कोई इज़तिराब नहीं है। रफ़अ और वक़्फ़ का भी यही हाल है। फिर रफ़अ और वस्ल रावी की विश्वसनीयता (अज़ाफ़ा-ए-सक़ाहत) के लिए हैं, इसलिए इसे स्वीकार किया जाए, जिसकी अन्वेषक ने 'फ़तहुल क़दीर' के कई स्थानों पर जाँच की है। मुल्ला अली क़ारी (रहमतुल्लाह अलैहि) फ़रमाते हैं कि मीरक ने कहा है कि यह सनद की अव्यवस्था का बयान है, लेकिन मतन (पाठ) की अव्यवस्था यह है कि एक रिवायत में एक दीनार और आधे दीनार का शक के तौर पर ज़िक्र किया गया। दूसरी रिवायत में है कि एक दीनार सदक़ा दे। तीसरी रिवायत के मुताबिक़ ख़ून आने और न आने के दोनों (वक़्तों) में जिमा (सम्भोग) करने का फ़र्क़ है; जबकि चौथी रिवायत में है दीनार का पाँचवाँ हिस्सा सदक़ा करे। पाँचवीं रिवायत में है वह आधा दीनार सदक़ा करे। और छठी रिवायत में है अगर ख़ून सुर्ख़ हो तो एक दीनार दे और ज़र्द हो तो आधा दीनार दे। अंत। **मैं कहता हूँ:** इन तमाम रिवायतों...

मैं कहता हूँ: मैंने इन सभी रिवायतों और उनके निष्कर्षों को जान लिया है, सिवाय 'पाँचवीं' रिवायत के, जिसे अल-दारिमी और इब्न राहवैया ने दर्ज किया है, और ख़ातिमुल हुफ़्फ़ाज़ (हादिस के अंतिम महान विद्वान) ने इसे अब्दुल हमीद बिन ज़ैद बिन अल-ख़त्ताब के हवाले से हसन (अच्छा) घोषित किया है, जिन्होंने कहा कि यह उमर बिन अल-ख़त्ताब के लिए था...

मजलिस-ए-दावत-ए-इस्लामी 1. मिरक़ात शरह मिश्कात, बाब अल-हैज़ का दूसरा भाग, मकतबा इमदादिया मुल्तान, 101/2। 2. मिरक़ात शरह मिश्कात, बाब अल-हैज़ का दूसरा भाग, मकतबा इमदादिया मुल्तान, 101/2। 3. ताबेई के ऊपर का रावी ग़ायब हो तो यह 'इरसाल' है, और हदीस की सनद से दो या अधिक रावियों का ग़ायब होना 'एज़ाल' कहलाता है। 12-हज़ारवी।

فقول ابن حجر وسنده حسن غیر مستحسن۱ اھ | ارسال اور اعضال۳ کے اعتبار سے اضطراب ہے سید جمال الدین نے تخریج سے اسی طرح نقل کیا ہے پس ابن حجر (عسقلانی) کا اس کی سند کو حسن قرار دینا غیر مستحسن ہے اھ

اقول: لا یضر عندنا الارسال ولاالاعضال وقد یاتی الرادی بالسند تاماً وقد یحذف فلا اضطراب وکذا الرفع والوقف ثم الوصل والرفع زیادة ثقۃ فتقبل کما حققه المحقق فی الفتح فی غیر ما موضع قال القاری قال میرك هذا بیان اضطراب الاسناد اما الاضطراب فی متنه فروی(۱) بدینار اونصف دینار علی الشك وروی (۲) یتصدق بدینار فان لم یجد فبنصف دینار وروی(۳) التفرقة بین ان یصیبها فی اقبال الدم اوفی انقطاع الدم وروی (۴) یتصدق بخمس دینار وروی(۵) بنصف دینار وروی (۶) اذاکان دماً احمر فدینار وان کان دماً اصفر فنصف دینار۲ اھ | **اقول:** ہمارے نزدیک ارسال واعضال سے کوئی فرق نہیں پڑتا راوی کبھی پوری سند لاتا ہے اور کبھی حذف کردیتا ہے لہذا کوئی اضطراب نہیں رفع اور وقف کا بھی یہی حال ہے پھر رفع اور وصل (راوی کے) اضافہ ثقاہت کے لئے ہیں لہذا اسے قبول کیا جائے جسے محقق نے فتح القدیر کے کئی مقامات پر اس کی تحقیق کی ہے۔ ملّا علی قاری رحمہ اللہ فرماتے ہیں میرک نے کہا ہے کہ یہ اضطراب سند کا بیان ہے لیکن متن کا اضطراب یہ ہے کہ ایک روایت میں ایک دینار اور نصف دینار کا بطور شک ذکر کیا گیا۔ دوسری روایت میں ہے کہ ایک دینار صدقہ دے۔ تیسری روایت کے مطابق خون آنے اور نہ آنے کے دونوں میں جماع کرنے کا فرق ہے جبکہ چوتھی روایت میں ہے دینار کا پانچواں حصہ صدقہ کرے۔ پانچویں روایت میں ہے وہ نصف دینار صدقہ کرے۔ اور چھٹی روایت میں ہے اگر خون سُرخ ہو تو ایک دینار دے اور زرد ہو تو نصف دینار دے اھ **اقول:** ان تمام روایات

اقول: قد علمت كل هذه الروايات وتخاريجها الارواية الخمس وهو للدارمی ابن راهويه وحسنه خاتم الحفاظ عن عبد الحميد بن زيد بن الخطاب قال كان لعمر بن الخطاب

Majlis of Dawatelslami 1 مرقات شرح مشکوٰۃ الفصل الثانی من باب الحیض مکتبہ امدادیہ ملتان ۱۰۱/۲ 2 مرقات شرح مشکوٰۃ الفصل الثانی من باب الحیض مکتبہ امدادیہ ملتان ۱۰۱/۲ 3 تابعی سے اوپر کا راوی ساقط ہو تو یہ ارسال ہے اور حدیث کی سند سے دو یا زائد راویوں کا سقوط اعضال کہلاتا ہے ۱۲ ہزاری۔

Fatawa Rizwia Volume 4

(Right Column) The extraction of this is known. However, the narration mentioning one-fifth of a dinar has been narrated by Imam Darimi and Ibn Rahwayh, and Khatim al-Huffaz (Allama Ibn Hajar Asqalani, may Allah have mercy on him) has declared it as Hasan (good). They narrate from Hazrat Abdul Hamid bin Zaid bin Khattab (may Allah be pleased with him) that Hazrat Umar bin Khattab (may Allah be pleased with him) had a slave girl who disliked intercourse. Whenever he intended to approach her, she would present the excuse of menstruation. Once, he had intercourse with her and (in reality) she was truthful. He appeared in the Prophetic court, and the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) ordered him to give one-fifth of a dinar in charity (end of quote). In Kanz al-Ummal and its selection, it says that he ordered him to give fifty dinars in charity. In my opinion, there was a mistake in reading it, and Allah knows best. In it, attributing to Harith, it is mentioned that he wrote in his Musnad and referred to Ibn Majah, but I did not find that narration in it. That (narration) is: Hazrat Umar (may Allah be pleased with him) went to one of his slave girls. She said, "I am menstruating." He had intercourse with her and found her to be menstruating. Then he came to the service of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and he said: O Abu Hafs! May Allah...

(Left Column) A woman disliked intercourse, so whenever he wanted to come to her, she would pretend to be menstruating. He had intercourse with her and she was truthful. He came to the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and he ordered him to give one-fifth of a dinar in charity. And it occurred in Kanz al-Ummal and its selection: "He ordered him to give fifty dinars in charity." I do not see it as anything other than a clerical error, and Allah knows best. He mentioned it there, attributing it to Harith in his Musnad and indicating Ibn Majah, but I did not see it from Umar (may Allah be pleased with him) that he came to a slave girl of his and she said, "I am menstruating," but he had intercourse with her and found her menstruating. So he came to the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and mentioned that to him. He said: "May Allah forgive you, O Abu Hafs, give half a dinar in charity." I say: It is unlikely that the incident happened multiple times, so we return to preference. If this is a stronger chain of narration, it is extracted...

(Footnotes) 1 Mirqat Sharh Mishkat, Second Section of the Chapter on Menstruation, Imdadia Library Multan, 2/101. 2 Kanz al-Ummal, Forbidden Intercourse, Hadith 25888, Maktabat al-Turath al-Islami Beirut, 16/565. 3 Kanz al-Ummal, Forbidden Intercourse, Hadith No. 25889, Maktabat al-Turath al-Islami Beirut, 16/566.

फ़तावा रज़विया जिल्द चहारुम

(दायां कॉलम) इसकी तख़रीज मालूम हो चुकी है। अलबत्ता दीनार के पांचवें हिस्से वाली रिवायत इमाम दारमी और इब्न राहवैय्या ने नक़ल की है और ख़ातिमुल हुफ़्फ़ाज़ (अल्लामा इब्न हजर असक़लानी रहमतुल्लाह अलैह) ने इसे हसन करार दिया है। वह हज़रत अब्दुल हमीद बिन ज़ैद बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत नक़ल करते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की एक लौंडी, जिमा (सहवास) को नापसंद करती थी। आप जब भी उसके पास जाने का इरादा फरमाते, वह हैज़ (मासिक धर्म) का बहाना पेश कर देती। एक मर्तबा आपने उससे जिमा किया तो (वाकई) वह सच्ची थी। आप बारगाहे नबवी में हाज़िर हुए तो नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने दीनार का पांचवां हिस्सा सदक़ा करने का हुक्म दिया (इह)। कंज़ुल उम्माल और उसके इंतख़ाब में है कि आपने उन्हें पचास दीनार सदक़ा करने का हुक्म दिया। मेरे ख्याल के मुताबिक उन्हें पढ़ने में गलती लगी है, वल्लाहु तआला आलम। इसमें हारिस की तरफ मंसूब करते हुए कि उन्होंने अपनी मसनद में लिखा और इब्न माजा की तरफ इशारा करते हुए ज़िक्र किया लेकिन मैंने उसमें वह रिवायत नहीं पाई। वह यह है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी एक लौंडी के पास तशरीफ़ ले गए, उसने कहा मैं हायज़ा हूं। आपने उससे जिमा किया तो उसे हायज़ा पाया। फिर नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुए तो आपने फरमाया: ऐ अबू हफ़्स! अल्लाह...

(बायां कॉलम) एक औरत जिमा को नापसंद करती थी, पस जब भी वह (शौहर) उसके पास आना चाहता, वह हैज़ ؏ बहाना करती। उसने उससे जिमा किया तो वह सच्ची निकली। वह नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पास आए तो आपने उन्हें दीनार का पांचवां हिस्सा सदक़ा करने का हुक्म दिया। और कंज़ुल उम्माल और उसके इंतख़ाब में वाक़े हुआ कि आपने उसे पचास दीनार सदक़ा करने का हुक्म दिया। मैं इसे किताबत की गलती (तहरीफ़) के अलावा कुछ नहीं समझता, वल्लाहु तआला आलम। और इसमें हारिस की मसनद का हवाला दिया गया और इब्न माजा की तरफ इशारा किया गया, लेकिन मैंने इसे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी नहीं पाया कि वह अपनी एक लौंडी के पास आए और उसने कहा मैं हायज़ा हूं, फिर भी उन्होंने जि؎ किया और उसे हायज़ा पाया। फिर वह नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाह में हाज़िर हुए और उसका ज़िक्र किया। तो आपने फरमाया: अल्लाह तुम्हें माफ़ करे ऐ अबू हफ़्स, आधा दीनार सदक़ा

करो। मैं कहता हूँ: वाकये का बार-बार होना बईद (मुश्किल) है, लिहाज़ा तरजीह की तरफ रुजू किया जाएगा। पस अगर यह सनद के एतबार से ज़्यादा मज़बूत है तो इसे अख़्ज़ किया जाएगा...

(पादलेख) 1 मिरक़ात शरह मिश्कात, बाबुल हैज़ का दूसरा हिस्सा, मकतबा इमदादिया मुल्तान, 101/2। 2 कंज़ुल उम्माल, महज़ूरातिल मुबाशराह, हदीस 25888, मकतबतुल तुरासुल इस्लामी बेरुत, 16/565। 3 कंज़ुल उम्माल, महज़ूरातिल मुबाशराह, हदीस नंबर 25889, मकतबतुल तुरासुल इस्लामी बेरुत, 16/566।

فتاویٰ رضویہ جلد چہارم

(دایاں کالم) کی تخریج معلوم ہو چکی البتہ دینار کے پانچویں حصے والی روایت امام دارمی اور ابن راہویہ نے نقل کی ہے اور خاتم الحفاظ (علامہ ابن حجر عسقلانی رحمہ اللہ) نے اسے حسن قرار دیا ہے وہ حضرت عبد الحمید بن زید بن خطاب رضی اللہ عنہ سے روایت نقل کرتے ہیں کہ حضرت عمر بن خطاب رضی اللہ عنہ کی ایک لونڈی، جماع کو نا پسند کرتی تھی آپ جب بھی اس کے پاس جانے کا ارادہ فرماتے وہ حیض کا بہانہ پیش کر دیتی۔ ایک مرتبہ آپ نے اس سے جماع کیا تو (واقعی) وہ سچی تھی، آپ بارگاہِ نبوی میں حاضر ہوئے تو نبی اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے دینار کا پانچواں حصہ صدقہ کرنے کا حکم دیا اھ کنز العمال اور اس کے انتخاب میں ہے کہ آپ نے ان کو پچاس دینار صدقہ کرنے کا حکم دیا۔ میرے خیال کے مطابق ان کو پڑھنے میں غلطی لگی ہے، واللہ تعالیٰ اعلم۔ اس میں حارث کی طرف منسوب کرتے ہوئے کہ انہوں نے اپنی مسند میں لکھا اور ابن ماجہ کی طرف اشارہ کرتے ہوئے ذکر کیا لیکن میں نے اس میں وہ روایت نہیں پائی وہ یہ ہے کہ حضرت عمر رضی اللہ عنہ اپنی ایک لونڈی کے پاس تشریف لے گئے اس نے کہا میں حائضہ ہوں آپ نے اس سے جماع کیا تو اسے حائضہ پایا پھر نبی اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی خدمت میں حاضر ہوئے تو آپ نے فرمایا: اے ابو حفص! اللہ

(بایاں کالم) امرأۃ تکرہ الجماع فکان اذا اراد ان یاتیھا اعتلت علیہ بالحیض فوقع علیھا فاذا ھی صادقۃ فاتی النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فامرہ ان یتصدق بخمس دینار اھ۔ و وقع فی کنز العمال ومنتخبہ فامرہ ان یتصدق بخمسین دینارا ولا اراہ الاتصحیفا واللہ تعالی اعلم وذکر فیہ عازیا للحارث فی مسندہ ورامز الابن ماجۃ ولم ارہ لم عن عمر رضی اللہ تعالی عنہ انہ اتی جاریۃ لہ فقالت انی حائض فوقع بھا فوجدھا حائضا فوقع بھا فوجدھا حائضا فاتی النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فذکر ذلك لہ فقال یغفر اللہ

لك يا ابا حفص تصدق بنصف دينار اقول: ويبعد تعدد الواقعة فيرجع الى الترجيح فان كان هذا اقوى سند اخرج

(حواشی) 1 مرقات شرح مشكوة الفصل الثانى من باب الحيض مكتبه امداديه ملتان ۱۰۱/۲ 2 كنز العمال محظورة المباشرة حديث ۲۵۸۸۸ مكتبة التراث الاسلامى بيروت ۵۶۵/۱۶ 3 كنز العمال محظورة المباشرة حديث نمبر ۲۵۸۸۹ مكتبة التراث الاسلامى بيروت ۵۶۶/۱۶

Fatawa Razawiyya Volume 4

(Arabic side): ...the fifth part of the confusion. Then I say: It is more correct that it is for diversification as clarified by the last three narrations. However, the surprising thing is that he made it for doubt, then included it in the confusion. And how can confusion spread to the text by the doubt of some narrators in some words? No one says this. Then there remained for him from the narrations two-fifths of a dinar. Abu Dawud narrated it 'mursal' from al-Hakam, omitting al-Miqsam and Ibn Abbas. In it, he ordered him to give two-fifths of a dinar in charity, using the dual form in his three copies. Thus, according to his method, they became seven. I say: This is not a detrimental confusion, for it is that which cannot be reconciled, as stated by the two researchers, al-Asqalani and Ibn al-Humam. Reconciling here is easy: the fifth and two-fifths are for the one who fell into it by mistake, as is the incident of al-Faruq (may Allah be pleased with him). And a half and two halves are for the one who did it intentionally, as indicated by the word 'man ata' (whoever comes), and the distribution is according to...

(Urdu side): [May Allah] Almighty forgive you, give half a dinar in charity. I say: The occurrence of multiple incidents is far-fetched (to understand), so recourse should be made towards preference. If the chain of this (narration of half a dinar) is strong, then the narration of the fifth (one-fifth part) will be excluded from the confusion. Then I say: the word "or" is for categorisation, as is clear from the last three narrations. But it is surprising that they regarded it for doubt and included it in the confusion. (But) how can confusion arise in the text due to doubt in some words of some narrators? No one is a proponent of this. After this, among the narrations, the one regarding two-fifths of a dinar remained. Imam Abu Dawud, while narrating 'mursalan' from Hakam, left out the mention of Miqsam and Hazrat Ibn Abbas (may Allah be pleased with them) 2. In this narration it is: "So you ordered to give two-fifths of a dinar in charity." In three copies 3 of him (Imam Abu Dawud), it is narrated with the dual form. So according to his method, seven narrations are completed. I say: This confusion is not harmful because harm occurs in such a case when reconciliation between narrations is not possible, as told by two researchers, Allama Asqalani and Ibn Humam (may Allah have mercy on them), but here reconciliation between the narrations is possible, therefore...

Footnotes: 1 Sunan Abi Dawud, Chapter on Approaching a Menstruating Woman, Mujtabai Press, Lahore, Pakistan, 1/35. 2 In Sunan Abi Dawud, this narration is narrated by Imam Abu Dawud from Imam Awza'i as 'mursal', not from Hakam. And

Allah Almighty knows best. 12 Hazari. 3 There are three copies of Sunan Abi Dawud: (1) Nuskha Lu'lu'i, (2) Nuskha Ibn Dasah, (3) Nuskha Ibn al-A'rabi. 12 Hazari.

(अरबी पक्ष): ...भ्रम का पांचवां हिस्सा। फिर मैं कहता हूँ: यह अधिक सही है कि यह विविधीकरण के लिए है जैसा कि अंतिम तीन कथाओं द्वारा स्पष्ट किया गया है। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि उन्होंने इसे संदेह के लिए बना दिया, फिर इसे भ्रम में शामिल कर दिया। और कुछ शब्दों में कुछ कथाकारों के संदेह से पाठ में भ्रम कैसे फैल सकता है? ऐसा कोई नहीं कहता। फिर उसके पास कथाओं में से एक दीनार का दो-पांचवां हिस्सा बचा रहा। अबू दाऊद ने इसे अल-हकम से 'मुरसल' रूप में वर्णित किया है, अल-मिक्सम और इब्न अब्बास को छोड़ते हुए। इसमें, उन्होंने उसे दान में दीनार का दो-पांचवां हिस्सा देने का आदेश दिया, जो उनकी तीन प्रतियों में द्विवचन रूप में है। इस प्रकार, उनकी पद्धति के अनुसार, वे सात हो गए। मैं कहता हूँ: यह कोई हानिकारक भ्रम नहीं है, क्योंकि यह वह है जिसे सुलझाया नहीं जा सकता, जैसा कि दो शोधकर्ताओं, अल-अस्क़लानी और इब्न अल-हुमाम ने बताया है। यहाँ सुलह आसान है: पांचवां और दो-पांचवां हिस्सा उसके लिए है जिसने गलती से ऐसा किया, जैसा कि अल-फारूक (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) की घटना है। और आधा और दो आधे हिस्से उसके लिए हैं जिसने जानबूझकर ऐसा किया, जैसा कि 'मन अता' (जो आता है) शब्द से संकेत मिलता है, और वितरण... के अनुसार है।

(उर्दू पक्ष): [अल्लाह] सर्वशक्तिमान आपको क्षमा करे, आधा दीनार दान में दें। मैं कहता हूँ: कई घटनाओं का घटित होना (समझ से) परे है, इसलिए प्राथमिकता की ओर रुख किया जाना चाहिए। यदि इस (आधे दीनार वाली कथा) की श्रृंखला मजबूत है, तो पांचवें (पांचवें हिस्से) वाली कथा भ्रम से बाहर हो जाएगी। फिर मैं कहता हूँ: "या" शब्द श्रेणियों के लिए है, जैसा कि अंतिम तीन कथाओं से स्पष्ट है। लेकिन यह आश्चर्यजनक है कि उन्होंने इसे संदेह के लिए मान लिया और इसे भ्रम में शामिल कर दिया। (लेकिन) कुछ कथाकारों के कुछ शब्दों में संदेह के कारण पाठ में भ्रम कैसे उत्पन्न हो सकता है? कोई भी इसका समर्थक नहीं है। इसके बाद, कथाओं में से दीनार के दो-पांचवें हिस्से वाली कथा बच गई। इमाम अबू दाऊद ने हकम से 'मुरसलन' कथा सुनाते हुए मिक्सम और हज़रत इब्न अब्बास (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) का उल्लेख छोड़ दिया 2। इस कथा में है: "तो आपने दो-पांचवें दीनार दान करने का आदेश दिया।" उनकी (इमाम अबू दाऊद) की तीन प्रतियों 3 में, इसे द्विवचन रूप के साथ वर्णित किया गया है। तो उनकी पद्धति के अनुसार, सात कथाएँ पूरी हो जाती हैं। मैं कहता हूँ: यह भ्रम हानिकारक नहीं है क्योंकि हानि ऐसी स्थिति में होती है जब कथाओं के बीच

सामंजस्य संभव न हो, जैसा कि दो शोधकर्ताओं, अल्लामा अस्क़लानी और इब्न हुमाम (अल्लाह उन पर दया करे) ने बताया है, लेकिन यहाँ कथाओं के बीच सामंजस्य संभव है, इसलिए...

पाद टिप्पणियाँ: 1 सुनन अबी दाऊद, मासिक धर्म वाली महिला के पास आने का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, लाहौर, पाकिस्तान, 1/35। 2 सुनन अबी दाऊद में, यह कथा इमाम अबू दाऊद द्वारा इमाम औज़ाई से 'मुरसल' के रूप में वर्णित है, हकम से नहीं। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। 12 हज़ारी। 3 सुनन अबी दाऊद की तीन प्रतियां हैं: (1) नुस्खा लुलुई, (2) नुस्खा इब्न दसाह, (3) नुस्खा इब्न अल-अराबी। 12 हज़ारी।

فتاوی رضویہ جلد چہارم

(عربی کالم): الخمس من الاضطراب ثم اقول: الاصوب ان اوللتنويع كما بينته الروايات الثلاث الاخيرة لكن العجب انه جعلها للشك ثم ادخله في الاضطراب وكيف يسرى الاضطراب الى المتن بشك بعض الرواة في بعض الالفاظ هذا لايقول به احد ثم قدبقى عليه من الروايات خمسا دينار فروى ابوداود مرسلا عن الحكم بترك المقسم وابن عباس وفيه فأمره ان يتصدق بخمسى دينار بصيغة التثنية في نسخه الثلاث فعلى طريقته تمت سبعا اقول: وليس هذا اضطرابا قادحا فانه مالا يمكن جمعه كما افاده المحققان العسقلانى وابن الهمام والجمع ههنا ميسور فالخمس والخمسان لمن وقع فيه خطأ كما هى واقعة الفاروق رضى الله تعالى عنه والنصف والنصفان على من تعمد كما يشير اليه لفظ من اتى والتوزيع باعتبار

(اردو کالم): تعالیٰ تمہاری مغفرت کرے نصف دینار صدقہ کرو۔ اقول: واقعہ کا متعدد ہونا (سمجھ سے) بعید ہے پس ترجیح کی طرف رجوع کیا جائے اگر اس (نصف دینار والی روایت) کی سند قوی ہو تو خمس (پانچویں حصے) والی روایت اضطراب سے نکل جائے گی ثم اقول: لفظ "او" تقسیم نوع کیلئے ہے جیسے آخری تین روایات سے واضح ہے لیکن تعجب کی بات ہے کہ انہوں نے اسے شک کے لئے قرار دے کر اضطراب میں داخل کیا (لیکن) بعض راویوں کے بعض الفاظ میں شک سے متن میں اضطراب کیسے ہوگا، اس بات کا کوئی بھی قائل نہیں۔ اس کے بعد روایات میں سے دینار کے دو خمس والی روایت باقی رہ گئی امام ابوداؤد نے حکم سے مرسلاً روایت کرتے ہوئے مقسم اور حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہما کا ذکر چھوڑ دیا ۲۔ اس روایت میں ہے "پس آپ نے دو خمس دینار صدقہ کرنے کا حکم فرمایا ان (امام ابوداؤد) کے تین نسخوں ۳ میں تثنیہ کے صیغے سے مروی ہے پس ان کے طریقے پر سات روایات پوری ہوگئیں۔ اقول: یہ اضطراب نقصان دہ نہیں کیونکہ نقصان اس صورت میں ہوتا ہے جب روایات کے درمیان موافقت

ممکن نہ ہو جیسے دو محققین علامہ عسقلانی اور ابن ہمام رحمہما اللہ نے بتایا لیکن یہاں روایات کے درمیان مطابقت ممکن ہے لہذا

حواشی: 1 سُنن ابی داؤد باب فی اتیان الحائض مطبوعہ مجتبائی لاہور پاکستان ۱/ ۳۵ 2 سُنن ابی داؤد میں یہ روایت امام ابوداؤد، امام اوزاعی سے مرسلاً روایت کرتے ہیں حکم سے نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم ۱۲ ہزاری 3 سنن ابی داؤد کے تین نسخے ہیں: (۱) نسخہ لؤلوی (۲) نسخہ ابن داسہ (۳) نسخہ ابن الاعرابی ۱۲ ہزاری

Fatawa Razawiyya Volume 4

[Arabic Column]: The end of the bleeding and its beginning is as in the third and fourth narrations. And in its beginning also, in terms of the one who finds (the means) and the one who lacks them, as in the fifth narration. This is a clear and evident harmonization, and praise be to Allah. The mitigation for the one who makes a mistake is apparent. Regarding one who comes at the end of the bleeding, Al-Allamah Farishta claimed that the yellow discharge (safra) is hesitant between redness and whiteness; so, in view of the latter, nothing is obligatory, and in view of the former, everything is obligatory, thus it is halved. [End]

I say: In this, there is what is not hidden, for yellow discharge is definitely menstruation, there is no hesitation in it. Furthermore, expressing it as an obligation is contrary to the school of thought (madhhab). Al-Qari deemed it purely a matter of worship (ta'abbud), with no room for reason in it. He said: The closest thing said about it is that the wisdom behind the difference in expiation (kaffara) between the onset and the offset (of menstruation) is that at the beginning, the period of abstinence from intercourse is short, so no excuse is accepted, unlike at the end, so it was lightened. [End]

I say: If this is the 'closest' (most plausible), then how can it being purely ritualistic (ta'abbudi) be more apparent? Undoubtedly, this is a clear rational deduction, and one does not resort to 'ta'abbud' as long as the door of reason is not closed. And Allah Almighty knows best.

[Urdu Column]: The ruling of one-fifth (1/5) and two-fifths (2/5) will be for the person who had intercourse by mistake, as is the incident of Hazrat Farooq-e-Azam (may Allah be pleased with him). Half and a full dinar will be for the person who did it intentionally, as indicated by the word 'man ata' (he who comes to the woman). And the division is also based on the beginning and end of the bleeding, as in the third and fourth narrations, and it is also based on those who find a dinar and those who do not at the beginning, as in the fifth narration. This harmonization is extremely bright and clear, and all praise and commendation are for Allah Almighty. The mitigation for the one who errs is obvious. Regarding a man who has intercourse during the last days of menstruation, Allamah Farishta's opinion is that the yellow color is between redness and whiteness; therefore, considering the latter (white color), nothing is obligatory, and considering the former (red color), a full dinar is obligatory, hence (in yellow color) it should be halved.

I say: The flaw in this statement is clear because yellow color is definitely menstruation, about which there is no doubt. Then, describing it as an obligation is contrary to the school of thought. Mulla Ali Qari (may Allah have mercy on him) clearly stated that this is purely a ritualistic command (ta'abbudi), and reason has no part in it. He said that among what has been said on this matter, the closest point is that the wisdom in the difference of expiation between the beginning and end of menstruation is that...

[Footnotes]: 1. Mirqat Sharh Mishkat, Second Chapter of the Section on Menstruation, Maktaba Imdadia Multan 101/2 2. Mirqat Sharh Mishkat, Second Chapter of the Section on Menstruation, Maktaba Imdadia Multan 101/2

फ़तावा रज़विया जिल्द 4

[अरबी कॉलम]: रक्त का अंत और उसका आरंभ वैसा ही है जैसा तीसरी और चौथी रिवायत में है। और उसके आरंभ में भी, साधन रखने वाले और साधन न रखने वाले के आधार पर, जैसा कि पांचवीं रिवायत में है। यह एक स्पष्ट और सुस्पष्ट समन्वय है, और अल्लाह की प्रशंसा है। गलती करने वाले के लिए रियायत स्पष्ट है। रक्त के अंत में आने वाले के बारे में अल्लामा फ़रिश्ता ने दावा किया कि पीला स्राव (सफ़रा) लाली और सफेदी के बीच का है; इसलिए, बाद वाले (सफेदी) के विचार से कुछ भी अनिवार्य नहीं है, और पहले (लाली) के विचार से सब कुछ अनिवार्य है, अतः इसे आधा कर दिया गया है। [समाप्त]

मैं कहता हूँ: इसमें वह है जो छिपा नहीं है, क्योंकि पीला स्राव निश्चित रूप से मासिक धर्म है, इसमें कोई संदेह नहीं है। इसके अलावा, इसे एक अनिवार्यता के रूप में व्यक्त करना संप्रदाय (मज़हब) के विपरीत है। अल-क़ारी ने इसे विशुद्ध रूप से एक इबादत का मामला (तअब्बुदी) माना है जिसमें बुद्धि का कोई स्थान नहीं है। उन्होंने कहा: इसके बारे में जो सबसे निकटतम बात कही गई है वह यह है कि आरंभ और अंत के संबंध में प्रायश्चित (कफ़ारा) में अंतर का रहस्य यह है कि आरंभ में यह संभोग की अवधि के करीब होता है, इसलिए कोई बहाना स्वीकार नहीं किया जाता है, जबकि अंत में ऐसा नहीं है, इसलिए इसमें ढील दी गई है। [समाप्त]

मैं कहता हूँ: यदि यह 'निकटतम' है, तो इसका विशुद्ध रूप से 'तअब्बुदी' होना अधिक स्पष्ट कैसे हो सकता है? इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह एक स्पष्ट तर्क है, और जब तक बुद्धि का द्वार बंद न हो जाए, तब तक विशुद्ध अनुष्ठान (तअब्बुद) का सहारा नहीं लिया जाता है। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।

[उर्दू कॉलम]: पांचवें (1/5) और दो-पांचवें (2/5) का नियम उस व्यक्ति के लिए होगा जिसने गलती से संभोग किया, जैसा कि हज़रत फ़ारूक़-ए-आज़म (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) की घटना है। आधा और पूरा दीनार उस व्यक्ति पर होगा जिसने जानबूझकर ऐसा किया, जैसा कि शब्द 'मन अता' (जो भी महिला के पास जाए) से संकेत मिलता है। और विभाजन रक्त के आरंभ और अंत के आधार पर भी है जैसा कि तीसरी और चौथी रिवायत में है, और आरंभ में दीनार मिलने और न मिलने के आधार पर भी है जैसा कि पांचवीं रिवायत में है। यह समन्वय अत्यंत उज्ज्वल और स्पष्ट है, और अल्लाह सर्वशक्तिमान के लिए ही प्रशंसा और गुणगान है। त्रुटि करने वाले के लिए कमी तो स्पष्ट है। और जो

व्यक्ति मासिक धर्म के अंतिम दिनों में संभोग करता है, उसके बारे में अल्लामा फ़रिश्ता का विचार है कि पीला रंग लाली और सफेदी के बीच है; इसलिए दूसरे (सफेद रंग) का विचार करते हुए कुछ भी अनिवार्य नहीं होता और पहले (लाल रंग) के विचार से पूरा दीनार अनिवार्य होता है, इसलिए (पीले रंग में) आधा कर दिया जाएगा।

मैं कहता हूँ: इस कथन की त्रुटि स्पष्ट है क्योंकि पीला रंग निश्चित रूप से मासिक धर्म है, जिसके बारे में कोई संदेह नहीं है। फिर इसे अनिवार्यता के रूप में व्यक्त करना संप्रदाय के विरुद्ध है। मुल्ला अली क़ारी (अल्लाह उन पर दया करे) ने स्पष्ट रूप से कहा कि यह विशुद्ध रूप से एक अनुष्ठानिक (तअब्बुदी) आदेश है, और इसमें बुद्धि का कोई हस्तक्षेप नहीं है। उन्होंने कहा कि इस संबंध में जो कुछ कहा गया है, उसमें सबसे निकटतम बात यह है कि मासिक धर्म के आरंभ और अंत में प्रायश्चित के अंतर में यह हिकमत (रहस्य) है कि...

[फुटनोट्स]: 1. मिर्कात शरह मिश्कात, बाबुल हैज़ का दूसरा अध्याय, मकतबा इमदादिया मुल्तान 101/2 2. मिर्कात शरह मिश्कात, बाबुल हैज़ का दूसरा अध्याय, मकतबा इमदादिया मुल्तान 101/2

آخر الدم واولہ کما فی الروایۃ الثالثۃ والرابعۃ | خمس (۱/۵) اور دو خمس (۲/۵) کا حکم اس شخص کیلئے ہوگا جس نے وفی اولہ ایضاً باعتبار الواجد والفاقد کما فی | غلطی سے جماع کیا ، جیسے حضرت فاروق اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ کا الروایۃ الخامسۃ وھذا جمع جلی واضح وللہ | واقعہ ہے ، نصف اور پورا دینار اس شخص پر ہوگا جس نے جان بوجھ کر الحمد والتخفیف عن المخطئ ظاہر وعن اتی فی | ایسا کیا جیسے لفظ "من اتی" (جو شخص عورت کے پاس جائے) آخر الدم فزعم العلامۃ فرشتۃ ان الصفرۃ | سے اشارہ ہوتا ہے اور تقسیم خون کے آغاز و اختتام کے اعتبار سے مترددۃ بین الحمرۃ والبیاض فبالنظر الی الثانی | بھی ہے جیسا کہ تیسری اور چوتھی روایت میں ہے اور شروع میں لا یجب شیئ وبالنظر الی الاول یجب الکل | دینار پانے والے اور نہ پانے والے کے اعتبار سے ہے جیسا کہ فینصف اھ | پانچویں روایت میں ہے یہ جمع نہایت روشن اور واضح ہے اور اللہ اقول: وفیہ مالا یخفی فان الصفرۃ حیض قطعاً | تعالٰی ہی کیلئے حمد و ستائش ہے مخطی سے تخفیف کا ہونا تو ظاہر اور جو مرد لا تردد فیہ ثم التعبیر بالوجوب خلاف المذھب | حیض کے آخری ایام میں جماع کرے تو اس کے بارے میں علامہ واستظھر القاری انہ تعبد محض لا مدخل | فرشتہ کا خیال ہے کہ زرد رنگ سرخی اور سفیدی کے درمیان میں للعقل فیہ قال والاقرب ما قیل فیہ ان الحکمۃ | ہے لہٰذا دوسرے (سفید رنگ) کا اعتبار کرتے ہوئے کچھ بھی واجب فی اختلاف الکفارۃ بالاقبال والادبار انہ فی اولہ | نہیں ہوتا اور پہلے (سرخ رنگ) کے اعتبار سے پورا دینار واجب قریب عھد بالجماع فلم یعذر فیہ بخلافہ فی | ہوتا ہے لہٰذا (زرد رنگ میں) نصف کر دیا جائے گا۔ آخرہ فخفف فیہ اھ | اقول: اس قول کی خرابی واضح ہے کیونکہ زرد رنگ قطعاً حیض ہے اقول: اذا کان ھذا اقرب فکیف یکون کونہ | جس میں کوئی شک نہیں پھر

وجوب سے تعبیر کرنا خلاف مذہب تعبدیا اظہر ولاشک انہ نزع ظاہر ولا یصار الی | ہے۔ ملا علی قاری رحمہ اللہ نے واضح طور پر فرمایا کہ یہ محض ایک تعبدی حکم ہے عقل کا اس میں کوئی دخل نہیں انہوں نے فرمایا التعبد مالم ینسد باب العقل واللہ تعالی | اس سلسلے میں جو کچھ کہا گیا ہے اس میں اقرب بات یہ ہے کہ حیض اعلم۔ | کے آغاز واختتام میں کفارہ کے اختلاف میں یہ حکمت ہے کہ

1 مرقات شرح مشکوۃ الفصل الثانی من باب الحیض مکتبہ امدادیہ ملتان ۱۰۱/۲ 2 مرقات شرح مشکوۃ الفصل الثانی من باب الحیض مکتبہ امدادیہ ملتان ۱۰۱/۲ Page 364 of 761

Fatawa Rizvia, Volume IV

In the beginning, that period is close to intercourse; therefore, one will not be considered excused in this regard. This is contrary to the end of menstruation; hence, there will be a reduction in the expiation (kaffara) at that time. End.

I say: When this matter is closer, how will its ritualistic (ta'abbudi) nature be more evident? There is no doubt that this is merely a superficial dispute, and it cannot become an act of worship until the door of reason is closed. (T) And Allah Almighty knows best.

In short, the collective conclusion of the Hadiths is that if such an incident occurred unintentionally at the end of menstruation (and this effectively includes the situation where the bleeding stopped in less than 10 days and the woman has not yet bathed, nor has any prayer become due on her), she should give one-fifth (khums) of a dinar as expiation. If it occurred during the peak of menstruation, then two-fifths. And for the one who did it intentionally: if it was at the end of menstruation, give half a dinar, and if in the beginning, then one dinar. However, if one lacks the capacity for one, then give half. All these rulings are recommendatory (istihbabi), not obligatory, except for seeking forgiveness (istighfar).

I say: A Shari'i dinar is ten dirhams. So, instead of one-fifth of a dinar, it's two dirhams; for two-fifths, four; for half, five; and for the whole, ten. A Shari'i dirham is 7/125 of this English rupee, so one dirham is four annas and 5 25/19 pai of here, and ten dirhams are two rupees and nearly thirteen annas (12.75 annas) and 3/5 pai. But it's not surprising if giving gold here is more appropriate, as the portions of a dinar were mentioned everywhere. A dinar is four and a half mashas, and its one-fifth is seven rattis and the fifth part of a ratti. And Allah Almighty knows best. All this was regarding menstruation, and postnatal bleeding (nifas) is analogous to it. In Mirqat, under the third narration, 'when it is red blood' (T), it states 'meaning menstruation, and postnatal bleeding is to be inferred by analogy' (End). And Allah Almighty knows best.

Issue 151: From the town of Miran Pur Katra, District Shahjahanpur, sent by Muhammad Siddiq Baig, 29 Rabi-ul-Awwal 1338 AH. What do the scholars of religion say on this issue: how long does a woman remain impure after childbirth? After how many days should she bathe and perform prayers?

The Answer: After the birth of a child, she will remain impure as long as blood flows, the maximum duration of which is forty full days, and there is no minimum limit. If the bleeding stopped after lasting for a quarter of a minute and did not return for forty days, then for that quarter minute...

---

1 Mirqat Sharh Mishkat, Second Section of the Chapter on Menstruation, Maktaba Imdadia Multan, 101/2

फ़तावा रज़विया, जिल्द चौथी

शुरू में वह समय सहवास (जिमा) के करीब होता है, इसलिए इस संबंध में उसे मजबूर (माज़ूर) नहीं माना जाएगा। इसके विपरीत मासिक धर्म (हैज़) की समाप्ति के समय कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) में कमी होगी।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): जब यह बात अधिक स्पष्ट है, तो इसकी मात्रा का इबादत (ताअ्बुदी) संबंधी होना कैसे प्रकट होगा? इसमें कोई संदेह नहीं कि यह केवल एक बाहरी विवाद है और वह उस समय तक इबादत नहीं बन सकता जब तक कि तर्क का द्वार बंद न कर दिया जाए। (त) और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

संक्षेप में, हदीसों का सामूहिक निष्कर्ष यह है कि यदि अनजाने में ऐसा हुआ, और वह मासिक धर्म के अंत में था (और इसमें वह स्थिति भी शामिल है जहाँ १० दिनों से कम में रक्त रुक गया और महिला ने अभी तक स्नान नहीं किया और न ही कोई नमाज़ उस पर वाजिब हुई), तो उसे एक-पाँचवाँ हिस्सा (ख़ुम्स) दीनार कफ़्फ़ारे के रूप में देना चाहिए। यदि वह मासिक धर्म के चरम (युवावस्था) में था, तो दो-पाँचवाँ हिस्सा। और जिसने जानबूझकर ऐसा किया: यदि वह मासिक धर्म के अंत में था, तो आधा दीनार दे, और यदि शुरू में था, तो एक दीनार। हाँ, यदि एक दीनार की सामर्थ्य न हो तो आधा ही दे। ये सभी आदेश मुस्तहब (पसंदीदा) हैं, वाजिब नहीं, सिवाय क्षमा प्रार्थना (इस्तग़फ़ार) के।

अक़ूल: शरई दीनार दस दरम का होता है। तो दीनार के पाँचवें हिस्से की जगह दो दरम, दो-पाँचवें हिस्से पर चार, आधे पर पाँच और पूरे पर दस हुए। एक शरई दरम इस अंग्रेज़ी रुपये का ७/१२५ हिस्सा है, तो यहाँ का एक दरम चार आने और ५ २५/१९ पाई हुआ, और दस दरम दो रुपये और पौने तेरह आने और ३/५ पाई हुए। लेकिन इसमें कोई आश्चर्य नहीं यदि यहाँ सोना देना ही अधिक उपयुक्त हो, क्योंकि हर जगह दीनार के ही हिस्से बताए गए हैं। दीनार साढ़े चार माशे का होता है और उसका पाँचवाँ हिस्सा सात रत्ती और रत्ती का पाँचवाँ हिस्सा है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। यह सब मासिक धर्म के बारे में था और प्रसवोपरांत रक्तस्राव (निफ़ास) भी इसी के समान है। मिरक़ात में तीसरी रिवायत 'इज़ा काना दमन अहमर' (जब वह लाल रक्त हो। त) के तहत उल्लेख है, यानी 'हैज़' और 'उसी पर निफ़ास का अनुमान (क़यास) किया जाए' (आह)। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला १५१: क़स्बा मीरान पुर कटरा, ज़िला शाहजहाँपुर, प्रेषक मुहम्मद सिद्दीक़ बेग, २९ रबी-उल-अव्वल १३३८ हिजरी। धर्मगुरु इस मसले पर क्या फ़रमाते हैं कि बच्चा पैदा होने के बाद महिला कब तक अशुद्ध (नापाक) रहती है? कितने दिनों के बाद स्नान करके नमाज़ पढ़े?

अल-जवाब: बच्चा पैदा होने के बाद जब तक रक्त आता रहे, वह नापाक रहेगी, जिसकी अधिकतम अवधि पूरे चालीस दिन है और न्यूनतम की कोई सीमा नहीं है। यदि रक्त केवल चौथाई (पाव) मिनट के लिए आकर रुक गया और चालीस दिनों तक फिर नहीं आया, तो उसी चौथाई मिनट...

---

१ मिरक़ात शरह मिश्कात, अल-फ़स्ल-उस-सानी मिन बाब-इल-हैज़, मकतबा इमदादिया मुल्तान, १०१/२

पेज ३६५/७६१

شروع میں وہ زمانہ جماع سے قریب ہوتا ہے، لہٰذا اس ضمن میں معذور نہیں سمجھا جائے گا۔ بخلاف اختتام حیض کے، لہٰذا اس وقت کفارہ میں تخفیف ہوگی اھ۔

اقول: جب یہ بات اقرب ہے تو اس (مقدار) کا تعبدی ہونا کیسے اظہر ہوگا اس میں شک نہیں کہ یہ محض ظاہری نزاع ہے اور وہ اس وقت تک عبادت نہیں بن سکتا جب تک عقل کا دروازہ بند نہ کیا جائے۔ (ت) واللہ تعالٰی اعلم

بالجملہ حاصل جمع احادیث یہ ٹھہرا کہ جس سے نادانستہ ایسا واقع ہوا اگر آخر حیض میں تھا (اور اسی میں حکماً وہ صورت داخل کہ خون دس ۱۰ دن سے کم میں منقطع ہوا اور عورت نے ابھی غسل نہ کیا نہ کوئی نماز اس پر دین ہوئی) وہ ایک خمس دینار کفارہ دے اور اگر شباب حیض میں تھا تو دو خمس اور جس نے دانستہ ایسا کیا اگر آخر حیض میں تھا نصف دینار دے اور اول میں تو ایک دینار، ہاں ایک کی طاقت نہ ہو تو نصف ہی دے۔ یہ سب حکم استحبابی ہے واجب نہیں مگر استغفار۔

اقول: دینار شرعی دس ۱۰ درم ہے تو خمس دینار کی جگہ دو ۲ درم، دو خمس پر چار، نصف پر پانچ، کل پر دس ۱۰ ہوئے، اور درم شرعی اس انگریزی روپے سے ۱۲۵/۷ ہے تو ایک درم یہاں کے چار آنے ۵ ۲۵/۱۹ پائی ہوا اور دس ۱۰ درم دو ۲ روپے پونے تیرہ آنے ۳/۵ پائی، مگر عجب نہیں کہ یہاں سونا دینا ہی انسب ہو کہ ہر جگہ دینار ہی کے حصے فرمائے گئے۔ دینار ساڑھے چار ماشے ہے اور اس کا خمس سات رتی اور رتی کا پانچواں حصہ واللہ تعالٰی اعلم۔ یہ سب دربارہ حیض تھا اور اس پر نفاس واضح القیاس مرقاۃ میں زیر روایت ثالث اذا کان دما احمر (جب حیض کا

خون سرخ ہو۔ ت) ہے ای الحیض وقیس بہ النفاس اھ (یعنی حیض کا خون سرخ ہوا اور اسی پر نفاس کو قیاس کیا جائے۔ ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۵۱: از قصبہ میراں پور کٹرہ ضلع شاہجہاں پور مرسلہ محمد صدیق بیگ ۲۹ ربیع الاول شریف ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ بچہ پیدا ہونے کے بعد کب تک عورت ناپاک رہتی ہے کتنے یوم کے بعد غسل کرکے نماز پڑھے؟

الجواب: بچہ پیدا ہونے کے بعد جب تک خون آئے ناپاک رہے گی جس کی زیادہ سے زیادہ مدت چالیس روز کامل ہے اور کم کی کوئی حد نہیں، اگر پاؤ منٹ آ کر بند ہو گیا اور چالیس ۴۰ روز تک پھر نہ آیا تو اسی پاؤ منٹ

---

1 مرقاۃ شرح مشکوۃ الفصل الثانی من باب الحیض مکتبہ امدادیہ ملتان ۱۰۱/۲

Vol. 4, Fatawa Razawiya. ...she became pure after that, she should take a bath and pray. And if it (the bleeding) lasted for full forty days or less than that, then at whatever time it stopped, she became pure at that time. Whether it's 20, 20, or 40 days. And if it lasted more than forty days, then the duration of nifas (postpartum bleeding) is equal to the number of days she had in her previous childbirth. After that, she is pure, and the rest is istihada (irregular bleeding); she should offer the prayers that were missed. And if it's the first childbirth, then forty days complete was nifas, and anything beyond that is istihada. In that case, she should take a bath, offer prayers, and keep fasts. If the blood stops exactly at forty days, she should bathe and pray. If it stops before that, and it matches the duration of her previous childbirth, she can bathe and pray now. However, it is better to wait until the last recommended (Mustahab) time for prayer. If it stops in less than the previous habit, it is obligatory to wait until the last Mustahab time before bathing and praying. Then, if bleeding recurs within forty days, she should stop again. If it stops again, she should repeat the process until forty days are completed. And Allah Almighty knows best.

Problem 152: From South Africa, Bhuta Bhuti, British Basutoland, asked by Haji Ismail Miyan bin Haji Amir Miyan Kathiawari. If Zaid, during his wife's menstrual days, causes ejaculation by rubbing his organ on her thigh or belly, is it permissible or not? Zaid has strong sexual desire and fears he might fall into adultery.

The Answer: It is permissible on the belly but not on the thighs, as during the state of menstruation and postpartum bleeding, one cannot derive pleasure from his wife's body between the navel and the knees, as mentioned in the texts (Mutoon) and others. And Allah Almighty knows best.

Question 153 Second: While performing a marriage contract, women are made to recite five Kalimas (creeds). If that woman is menstruating, is it permissible for her to recite those five Kalimas herself or not?

The Answer: In the state of menstruation, only the recitation of the Great Quran is prohibited. She can recite all five Kalimas because, although some contain Quranic words, they are for remembrance (dhikr) and praise, and the intention in reciting the Kalima is remembrance, not recitation (tilaawat). Thus, its permissibility is certain, as all jurists have explicitly stated. And Allah Almighty knows best.

Question 154 Third: Amr is in a state requiring a major ritual bath (ghusl) due to sexual intercourse or nocturnal emission. He meets Zaid, who greets him with Salam.

Should he respond or not? And if he recites any divine words or Salutations (Durood Sharif) in his heart, is it permissible or not?

जिल्द चतुर्थ, फतावा रज़विया। ...उसके बाद पाक हो गई, नहाकर नमाज़ पढ़े। और अगर चालीस दिन मुकम्मल तक आया है या उससे कम, तो जिस वक्त बंद हुआ उस वक्त पाक हुई। बीस, बीस, चालीस जितने दिन हों। और अगर चालीस दिन से ज़्यादा आया तो उससे पहले विलादत (बच्चे की पैदाइश) में जितने दिन आया था उतना निफ़ास है, उसके बाद पाक हो गई, बाकी इस्तिहाज़ा है, उसकी जो नमाज़ें कज़ा हुई हों उन्हें अदा करे। और अगर पहली विलादत है तो चालीस दिन मुकम्मल तक निफ़ास था, बाकी जो आगे बढ़ा वह इस्तिहाज़ा है, उसमें नहाकर नमाज़ें पढ़े और रोज़े रखे। खून अगर पूरे चालीस दिन पर बंद हो तो नहा ले और नमाज़ पढ़े। और उससे कम पर बंद हो तो उससे पहली विलादत पर जितने दिन आया था उतने दिन पूरे करके बंद हुआ तो अभी नहाकर नमाज़ पढ़ सकती है, मगर बेहतर यह कि नमाज़ के आख़िरी मुस्तहब वक्त तक इंतज़ार करे। और अगर आदत-ए-साबिक़ा (पुरानी आदत) से कम पर बंद हो गया तो वाजिब है कि आख़िरी मुस्तहब वक्त तक इंतज़ार करके नहाए और नमाज़ पढ़े। फिर अगर चालीस दिन के अंदर (खून) आ गया तो फिर छोड़ दे, फिर बंद हो जाए तो इसी तरह करे यहाँ तक कि चालीस दिन पूरे हों। वहुवा तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

मसला 152: जनूबी अफ्रीका, मक़ाम भूटा भूटी, ब्रिटिश बासुटोलैंड, मुस्तऊला (पूछने वाले) हाजी इस्माइल मियां बिन हाजी अमीर मियां काठियावाड़ी। ज़ैद अय्याम-ए-हैज़ (माहवारी के दिनों) में औरत की रान या शिकम (पेट) पर आले (अंग) को मस (स्पर्श) करके इंजाल (वीर्यपात) करे तो जाइज़ है या नहीं? और ज़ैद को शहवत का ज़ोर है और डर है कि कहीं ज़िना (व्यभिचार) में न फंस जाऊं।

अल-जवाब (उत्तर): पेट पर जाइज़ है, रान पर नाजाइज़ कि हालत-ए-हैज़ व निफ़ास में नाफ़ (नाभि) के नीचे से ज़ानू (घुटने) तक अपनी औरत के बदन से तमत्तो (फायदा उठाना/भोगना) नहीं कर सकता जैसा कि (कुतुब) मुतून वग़ैरा में है। वल्लाहु तआला आलम।

सवाल 153 दोम: निकाह पढ़ाते वक्त औरत को पांच कलमे पढ़ाते हैं, अब वह औरत हैज़ की हालत में है तो वह पांच कलमे अपनी ज़बान से पढ़े तो जाइज़ है या नहीं?

अल-जवाब: हालत-ए-हैज़ में सिर्फ़ क़ुरआन-ए-अज़ीम की तिलावत ममनू (वर्जित) है, कलमे पांचों पढ़ सकती है कि अगरचे उनमें बाज़ कलमात-ए-क़ुरआन हैं मगर ज़िक्र व सना हैं और कलमा पढ़ने में नियत ज़िक्र ही है न कि नियत-ए-तिलावत, तो जवाज़ यक़ीनी है। जैसा कि तमाम फ़ुक़हा (धर्मशास्त्रियों) ने इसकी तसरीह (स्पष्टीकरण) की है। वल्लाहु तआला आलम।

सवाल 154 सोम: अम्र पर ग़ुस्ल-ए-जनाबत या एहतिलाम (स्वप्नदोष) वाजिब है और ज़ैद सामने मिला और सलाम कहा तो उसको जवाब दे या नहीं? और अगर अपने दिल में कोई कलाम-ए-इलाही या दुरूद शरीफ़ पढ़े तो जाइज़ है या नहीं?

पेज 366 ऑफ 761

جلد چہارم فتاوی رضویہ کے بعد پاک ہوگئی نہا کر نماز پڑھے اور اگر چالیس روز کامل تک آیا ہے یا اُس سے کم، تو جس وقت بند ہوا اس وقت پاک ہوئی۔ بیس" بیس " چالیس " جتنے دن ہوں اور اگر چالیس دن سے زیادہ آیا تو اس سے پہلے ولادت میں جتنے دن آیا تھا اُتنا نفاس ہے اُس کے بعد پاک ہو گئی باقی استحاضہ ہے اُس کی نمازیں کہ قضا ہوئی ہوں ادا کرے۔ اور اگر پہلی ولادت ہے تو چالیس " دن کامل تک نفاس تھا باقی جو آگے بڑھا استحاضہ ہے اُس میں نہا کر نمازیں پڑھے روزے رکھے خون اگر پورے چالیس دن پر بند ہو تو نہا لے اور نماز پڑھے اور اس سے کم پر بند ہو تو اس سے پہلی ولادت پر جتنے دن آیا تھا اُتنے دن پورے کرکے بند ہوا تو ابھی نہا کر نماز پڑھ سکتی ہے مگر بہتر یہ کہ نماز کے اخیر وقت مستحب تک انتظار کرے اور اگر عادت سابقہ سے کم پر بند ہو گیا تو واجب ہے اخیر وقت مستحب تک انتظار کرکے نہائے اور نماز پڑھے پھر اگر چالیس دن کے اندر آگیا تو پھر چھوڑ دے پھر بند ہو جائے تو اسی طرح کرے یہاں تک کہ چالیس دن پورے ہوں وھو تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۵۲: از جنوبی افریقہ مقام بھوٹا بھوٹی برٹش باسوٹولینڈ مسئولہ حاجی اسمعیل میاں بن حاجی امیر میاں کاٹھیا واڑی۔ زید ایام حیض میں عورت کی ران یا شکم پر آلہ کو مس کرکے انزال کرے تو جائز ہے یا نہیں اور زید کو شہوت کا زور ہے اور ڈر یہ کہ کہیں زنا میں نہ پھنس جاؤں۔

الجواب: پیٹ پر جائز ہے ران پر ناجائز کہ حالتِ حیض و نفاس میں ناف کے نیچے سے زانو تک اپنی عورت کے بدن سے تمتع نہیں کر سکتا کما فی المتون و غیرھا (جیسا کہ (کتب) متون وغیرہ میں ہے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

سوال ۱۵۳ دوم: نکاح پڑھتے وقت عورت کو پانچ کلمے پڑھاتے ہیں اب وہ عورت حیض کی حالت میں ہے تو وہ پانچ کلمے اپنی زبان سے پڑھے تو جائز ہے یا نہیں؟

الجواب: حالت حیض میں صرف قرآنِ عظیم کی تلاوت ممنوع ہے کلمے پانچوں پڑھ سکتی ہے کہ اگرچہ ان میں بعض کلماتِ قرآن ہیں مگر ذکر و ثنا ہیں اور کلمہ پڑھنے میں نیت ذکر ہی ہے نہ نیت تلاوت، تو جواز یقینی ہے۔ کما صرحوابہ قاطبۃ (جیسا کہ تمام فقہاء نے اس کی تصریح کی ہے۔ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

سوال ۱۵۴ سوم: عمرو پر غسل جنابت یا احتلام کا ہے اور زید سامنے ملا اور سلام کہا تو اُس کو جواب دے یا نہیں؟ اور اگر اپنے دل میں کوئی کلامِ الہی یا درود شریف پڑھے تو جائز ہے یا نہیں؟

Fatawa Razawiyya Volume Four

The Answer: In the heart, in the sense of pure imagination without moving the tongue, one can even read the Holy Quran. However, reading the Holy Quran with the tongue is not permissible in a state of ritual impurity (janabat), even if done quietly. One may recite Durood Sharif, though it is better after rinsing the mouth, and one can respond to a greeting, and it is better that it be after tayammum, as the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) did. It is stated in Tanwir:

[Box 1 - Arabic]: Looking at it (i.e., the Quran) is not disliked for one in a state of janabat, menstruation, or postpartum bleeding, just like supplications. 1 [Box 2 - Urdu]: For a person in a state of janabat, a menstruating woman, or a woman with postpartum bleeding, it is not disliked to look at the Holy Quran, just as it is for supplications. (T)

It is in Radd al-Muhtar:

[Box 3 - Arabic]: It is specified in Al-Hidayah that performing wudu for the remembrance of Allah Almighty is recommended (mustahabb). 2 [Box 4 - Urdu]: It is clearly stated in Hidayah that performing wudu for the dhikr of Allah Almighty is recommended. (T)

In the same source:

[Box 5 - Arabic]: Omitting a recommended act does not necessitate dislike (karahah). 3 And Allah Almighty knows best. [Box 6 - Urdu]: Dislike is not established by omitting a recommended act. And Allah Almighty knows best. (T)

Issue 155: From Pachhim Gaon, Patna District, Bengal. Sent by Syed Abdullah (May he be forgiven), 10 Rabi' al-Awwal 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: if an Urdu book or newspaper includes some verses of the Quran, is it permissible to touch or read it without wudu?

The Answer: It is not permissible to touch the specific place where the verse is written in a book or newspaper without wudu. It is impermissible to touch the side where the verse is written, even on its back side. There is no harm in touching the rest of the paper. Reading without wudu is permissible. If a ritual bath (ghusl) is required, then it is forbidden. And Allah Almighty knows best.

1. Durr al-Mukhtar, Kitab al-Taharah, published by Mujtabai Delhi, 1/33

2. Radd al-Muhtar, Kitab al-Taharah, published by Mustafa al-Babi Egypt, 1/128
3. Radd al-Muhtar, Kitab al-Taharah, published by Mustafa al-Babi Egypt, 1/128

फतावा रजविया जिल्द चौथी

अल-जवाब: दिल में, यानी केवल कल्पना में, बिना ज़बान हिलाए तो कुरान मजीद भी पढ़ा जा सकता है। लेकिन ज़बान से कुरान मजीद पढ़ना जनाबत (अशुद्धता) की स्थिति में जायज़ नहीं है, चाहे वह धीरे ही क्यों न हो। दुरूद शरीफ पढ़ सकते हैं, लेकिन कुल्ला करने के बाद बेहतर है, और सलाम का जवाब दे सकते हैं, और बेहतर यह है कि तयम्मुम के बाद हो जैसा कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने किया। तनवीर में है:

[बॉक्स 1 - अरबी]: जुनुबी, माहवारी और निफ़ास वाली महिला के लिए इसे (अर्थात कुरान) देखना मकरूह नहीं है, जैसे दुआएं। 1 [बॉक्स 2 - उर्दू]: जुनुबी, माहवारी और निफ़ास वाली महिला के लिए दुआओं की तरह कुरान पाक की तरफ देखना भी मकरूह नहीं। (त)

रद्द अल-मुह्तार में है:

[बॉक्स 3 - अरबी]: अल-हिदाया में अल्लाह तआला के ज़िक्र के लिए वज़ू के मुस्तहब (पसंदीदा) होने का उल्लेख है। 2 [बॉक्स 4 - उर्दू]: हिदाया में अल्लाह तआला के ज़िक्र के लिए वज़ू के मुस्तहब होने पर स्पष्टीकरण दिया गया है। (त)

उसी में है:

[बॉक्स 5 - अरबी]: मुस्तहब काम को छोड़ना कराहत (नापसंदगी) का कारण नहीं बनता। 3 और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। [बॉक्स 6 - उर्दू]: मुस्तहब को छोड़ने से कराहत साबित नहीं होती। वल्लाह तआला आलम। (त)

मसला 155: पश्चिम गाँव, ज़िला पटना, मुल्क बंगाल से, प्रेषक: सैय्यद अब्दुल्लाह (अल्लाह उनकी मग़फ़िरत करे), 10 रबीउल अव्वल 1338 हिजरी। विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि अगर किसी उर्दू किताब या अखबार में कुरान की कुछ आयतें शामिल हों, तो क्या उसे बिना वज़ू छूना या पढ़ना जायज़ है या नहीं?

अल-जवाब: किताब या अखबार में जिस जगह आयत लिखी है, खास उस जगह को बिना वज़ू हाथ लगाना जायज़ नहीं। उसी तरफ हाथ लगाया जाए जिस तरफ आयत लिखी है, चाहे उसकी पीठ पर

हो, दोनों नाज़ायज़ हैं। बाकी पन्ने को छूने में कोई हर्ज नहीं। बिना वज़ू पढ़ना जायज़ है। अगर नहाने (ग़ुस्ल) की ज़रूरत हो तो हराम है। वल्लाह तआला आलम।

1. दुर्रे मुख्तार, किताबुत तहारत, मतबुआ मुज्तबाई दिल्ली 1/33
2. रद उल मुहतार, किताबुत तहारत, मतबुआ मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 1/128
3. रद उल मुहतार, किताबुत तहारत, मतबुआ मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 1/128

فتاوی رضویہ جلد چہارم

الجواب: دل میں بایں معنی کہ نرے تصور میں بے حرکت زبان تو یوں قرآن مجید بھی پڑھ سکتا ہے اور زبان سے قرآن مجید بحالت جنابت جائز نہیں اگرچہ آہستہ ہو، اور درود شریف پڑھ سکتا ہے مگر کلی کے بعد چاہئے اور جواب سلام دے سکتا ہے اور بہتر یہ کہ بعد تیم ہو کما فعلہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم (جیسا کہ نبی اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے کیا۔ت) تنویر میں ہے:

لا یکرہ النظر الیہ (اي القرآن) لجنب وحائض ونفساء کادعیۃ 1 - جنبی، حائضہ اور نفاس والی عورت کے لئے دعاؤں کی طرح قرآن پاک کی طرف دیکھنا بھی مکروہ نہیں۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے:

نص في الھدایۃ علی استحباب الوضوء لذکر اللہ تعالی 2 - ہدایہ میں اللہ تعالٰی کے ذکر کیلئے وضو کے مستحب ہونے پر تصریح کی ہے۔ (ت)

اسی میں ہے:

ترك المستحب لا یوجب الکراھۃ 3- واللہ تعالی اعلم۔ مستحب کو چھوڑنے سے کراہت ثابت نہیں ہوتی۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۱۵۵: از پچھم گاؤں ضلع پٹنہ ملک بنگال مرسلہ سید عبداللاغفرہ ۱۰ ربیع الاول شریف ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ اگر کسی اردو کتاب یا اخبار میں چند آیات قرآن بھی شامل ہوں تو اُس کو بلاوضو چھونا یا پڑھنا جائز ہے یا نہیں؟

الجواب: کتاب یا اخبار جس جگہ آیت لکھی ہے خاص اُس جگہ کو بلاوضو ہاتھ لگانا جائز نہیں اُسی طرف ہاتھ لگایا جائے جس طرف آیت لکھی ہے خواہ اس کی پشت پر دونوں نا جائز ہیں باقی ورق کے چھونے میں حرج نہیں پڑھنا بے وضو جائز ہے۔ نہانے کی حاجت ہو تو حرام ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔

1 در مختار، کتاب الطھارۃ، مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۳۳ 2 رد المحتار، کتاب الطھارۃ، مطبوعہ مصطفیٰ البابی مصر ۱/ ۱۲۸ 3 رد المحتار، کتاب الطھارۃ، مطبوعہ مصطفیٰ البابی مصر ۱/ ۱۲۸

Fatawa Ridawiyya - Volume 4

Chapter on the Excusee (Al-Ma'dhur)

Question 156: From Lucknow, Mahmood Nagar, Mustafa’i Press, sent by Maulvi Diya-ud-Din Sahib, 7th Jamadi al-Awwal 1313 AH.

What do you, the noble scholars, say regarding a person who cannot perform even one prayer except by placing cotton in the urethra due to urinary incontinence (Salas-ul-Baul) and its continuous flow at all times, such that the tip of his urethra remains wet and his lower garment (izar) becomes impure? Is he considered 'excused' (ma'dhur) according to Shari'ah? And will the rulings for the excused apply to him, such that he performs ablution (wudu) for every prayer time and can pray in that impure garment, and will he be unfit to lead people in prayer and other such rulings, or is he not considered excused? How should he pray during travels, especially when on a steam engine (train) which runs in many of our cities, as placing cotton in the urethra there poses some difficulty? Explain this in detail according to the Book (Quran), the Sunnah, and the sayings of the predecessors (Salaf) so that no further room for doubt remains, and you may deserve a great reward from Allah (Glorified and Exalted be He) on the Day of Judgment, if Allah (Exalted be He) wills. (T)

Page 368 of 761

फ़तावा रिज़विया - जिल्द 4

फ़स्ल फ़िल माज़ूर (विवश व्यक्ति का अध्याय)

मसला 156: लखनऊ, महमूद नगर, मत्तब-ए-मुस्तफ़ाई से मौलवी ज़ियाउद्दीन साहब द्वारा प्रेषित, 7 जमादी अल-अव्वल 1313 हिजरी।

हे मार्गदर्शक विद्वान! आप उस व्यक्ति के बारे में क्या कहते हैं जो मूत्र मार्ग (urethra) के छेद में रुई रखे बिना एक भी नमाज़ नहीं पढ़ सकता क्योंकि वह 'सलसुल बोल' (मूत्र असंयम) का मरीज़ है और उसका पेशाब हर समय इस तरह जारी रहता है कि उसके लिंग का सिरा गीला रहता है और उसका कपड़ा (इज़ार) नापाक हो जाता है? क्या वह शरई तौर पर 'माज़ूर' (विवश) है? और क्या उस पर माज़ूर के नियम लागू होंगे कि वह हर नमाज़ के समय के लिए वज़ू करे और वह उस नापाक कपड़े के साथ नमाज़ पढ़ सके? साथ ही क्या वह लोगों की इमामत कराने और इस तरह के अन्य कार्यों की योग्यता नहीं रखेगा, या वह माज़ूर नहीं है? वह यात्रा में नमाज़ कैसे पढ़े, विशेष रूप से जब वह भाप से चलने वाली गाड़ी (ट्रेन) पर हो जो हमारे कई शहरों में चलती है, क्योंकि वहाँ मूत्र मार्ग के छेद में रुई रखने में कोई न कोई कठिनाई पेश आती है? कुरान, सुन्नत और पूर्वजों (सलफ़) के कथनों से इस तरह विस्तार से बयान फ़रमाएँ कि आगे कोई गुंजाइश न रहे और कल (कयामत के दिन) अल्लाह सुब्हानहू व तआला की ओर से महान पुण्य के पात्र बनें, यदि अल्लाह तआला ने चाहा। (त)

पृष्ठ 368 / 761

فتاویٰ رضویہ - جلد چہارم

فصل فی المعذور

مسئلہ ۱۵۶: از لکھنؤ محلہ محمود نگر مطبع مصطفائی مرسلہ مولوی ضیاء الدین صاحب ۷ جمادی الاولی ۱۳۱۳ھ

ما تقولون ایھا السادۃ العلماء فی من لا یستطیع ان یصلی صلاۃ واحدۃ الا بوضع القطن فی الاحلیل لما بہ من سلس البول وجریانہ فی کل وقت بحیث یبتل رأس احلیلہ وینجس ازارہ ھل ھو معذور عند الشرع ویجری علیہ احکام المعذورین من الوضوء فی کل وقت واداء الصلوۃ بذلك الثوب وعدم صلوحہ لامامۃ الناس وغیرھما من الاحکام ام لا وکیف یصلی فی الاسفار سیما اذا کان علی الوابور البری ای المرکب الدخانی الذی یجری فی کثیر من بلادنا فان فی وضع القطن ھناك فی الاحلیل تعذرا ای تعذر بینوا ھذا وفصلوا بما لا مزید علیہ من الکتاب والسنۃ واقاویل السلف واستحقوا الثواب الجزیل من اللہ سبحنہ وتعالی فی غدان شاء اللہ تعالی۔

اے رہبری کرنے والے علماء کرام! آپ اس شخص کے بارے میں کیا کہتے ہیں جو آلہ تناسل کے سوراخ میں روئی رکھے بغیر ایک نماز بھی نہیں پڑھ سکتا کیونکہ وہ سلسل البول کا مریض ہے اور اس کا پیشاب ہر وقت اس طرح جاری رہتا ہے کہ عضو مخصوص کے سوراخ کا سر تر رہتا ہے اور اس کی ازار ناپاک رہتی ہے کیا وہ شرعی طور پر معذور ہے اور اس پر معذور کے احکام جاری ہوں گے کہ وہ ہر وقت کیلئے وضو کرے اور وہ اس ناپاک کپڑے کے ساتھ نماز پڑھ سکے نیز وہ لوگوں کی امامت کرانے اور اس طرح کے دیگر کی صلاحیت نہ رکھتا ہو، یا وہ معذور نہیں ہے۔ وہ سفر میں نماز کیسے پڑھے خصوصاً جب بھاپ سے چلنے والی گاڑی پر ہو جو ہمارے

اکثر شہروں میں چلتی ہیں کیونکہ وہاں سوراخِ ذکر میں روئی رکھنے میں کوئی نہ کوئی مشکل درپیش ہوتی ہے قرآن وسنت اور اقوال سلف سے اس طرح تفصیل سے بیان فرمائیں کہ مزید گنجائش نہ رہے اور کل (بروزِ قیامت) اللہ سبحانہ و تعالیٰ کی طرف سے عظیم ثواب کے مستحق ہوں، ان شاء اللہ تعالیٰ۔ (ت)

Volume Four Fatawa Razawiya

The Answer: All praise is for Allah alone. If by using a cotton plug, the leakage stops as described in the question, then he has exited the state of being 'excused' (Ma'zur) and is joined with the healthy individuals. He should perform ablution (wudu) for every minor ritual impurity (hadath), wash wherever the impurity has touched, and can lead anyone in prayer. His excuse for not using the cotton plug will not be accepted; rather, using it is mandatory for him, just like the prayer itself. It is stated in 'Durr-ul-Mukhtar': 'It is mandatory to remove or reduce the excuse to the best of one's ability, even if it is through praying with gestures; and by removing it, the person will no longer remain excused.' Similar rulings are found in 'Al-Bahr ar-Ra'iq' and other books. The matter is clear and mentioned in all books. As for the claim of difficulty or impossibility in a steam-powered train, there is no apparent reason for it. A person traveling who carries their travel provisions would not find it burdensome to add a little cotton. And if the concern is that the repeated jerks of the train will cause the cotton to fall out, he should make it long, direct it downwards, and tie the organ from the top. Allama Shami mentioned in 'Radd al-Muhtar' that for someone whose purification (istibra) is slow, they should twist a piece of cotton, the size of a grain of barley, and insert it into the urethra. It will absorb any remaining trace of moisture whose exit is feared. It should be fully inserted so that the moisture does not reach its outer end.

1. Durr-ul-Mukhtar, Branches from the Chapter on Menstruation, Mujtabai Press, Delhi, 1/53. Page 369 of 761

उत्तर: तमाम प्रशंसा केवल अल्लाह के लिए है जो एक है। यदि रुई रखने से बूंदों का टपकना बंद हो जाता है जैसा कि प्रश्न में बताया गया है, तो वह 'मज़ूर' (अक्षम) की श्रेणी से बाहर हो गया है और स्वस्थ व्यक्तियों में शामिल हो गया है। उसे हर अशुद्धि (हदस-ए-असगर) के बाद वुज़ू करना चाहिए, जहाँ भी गंदगी लगी हो उसे धोना चाहिए और वह किसी की भी इमामत (प्रार्थना का नेतृत्व) कर सकता है। उसके लिए रुई न रखने का बहाना स्वीकार नहीं किया जाएगा, बल्कि नमाज़ की तरह रुई रखना भी उस पर फ़र्ज़ है। 'दुर्रे मुख्तार' में है: 'अपनी शक्ति के अनुसार उज़्र (अक्षमता) को दूर करना या कम करना अनिवार्य है, चाहे वह इशारे के साथ नमाज़ पढ़ने के माध्यम से हो, और उसे दूर करने के बाद वह व्यक्ति मज़ूर नहीं रहेगा।' 'अल-बहरुल राइक' आदि में भी ऐसा ही है। यह मसला स्पष्ट है और तमाम किताबों में मौजूद है। जहाँ तक भाप से चलने वाली गाड़ी में कठिनाई या असंभव होने का दावा है, तो ज़ाहिर तौर पर इसकी कोई वजह नज़र नहीं आती। जो व्यक्ति यात्रा करते समय ज़ाद-ए-राह (रास्ते का भोजन) साथ ले जाता है, उसे रुई का थोड़ा और भार बढ़ने से कोई फ़र्क नहीं पड़ेगा। और यदि उसे लगता है कि ट्रेन के बार-बार हिलने से रुई निकल जाएगी, तो वह उसे लंबा करके नीचे की ओर करे और ऊपर की तरफ से अंग को बाँध दे। अल्लामा शामी ने 'रद्दुल मुहतार' में उल्लेख किया है कि जिस व्यक्ति को शुद्धि (इस्तिबरा) प्राप्त करने में देरी होती हो, उसे जौ के दाने के बराबर रुई के रेशों को बटकर मूत्रमार्ग (इहलील) में रख लेना चाहिए ताकि वह नमी के उस अवशेष को सोख ले जिसके निकलने का डर हो। इसे अंदर तक पहुँचा देना चाहिए ताकि नमी बाहरी सिरे तक न जाए।

1. दुर्रे मुख्तार, बाबुल हैज़ की शाखाएँ, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/53 पृष्ठ 369/761

الجواب: الحمد للہ وحدہ۔ تمام تعریفیں اللہ تعالیٰ کے لئے ہیں جو یکتا ہے۔ اگر روئی رکھنے سے اس کے قطرے ٹپکنے بند ہو جاتے ہیں جیسا کہ سوال میں بیان کیا تو وہ عذر کی حد سے نکل گیا اور صحیح افراد کے ساتھ شامل ہو گیا۔ ہر حدث (اصغر) کے بعد وضو کرے جہاں نجاست لگی ہو اسے دھو ڈالے اور ہر ایک کی امامت کرا سکتا ہے اس سے روئی نہ رکھنے کا عذر قبول نہ ہو گا بلکہ نماز کی طرح روئی رکھنا بھی اس پر فرض ہے۔ در مختار میں ہے: 'حسب طاقت عذر کو دور کرنا یا کم کرنا واجب ہے اگرچہ اشارے کے ساتھ نماز پڑھنے کے ذریعے وہ اور اس کو دور کرنے کے بعد وہ معذور نہیں رہے گا' البحر الرائق وغیرہ میں بھی اسی طرح ہے مسئلہ ظاہر ہے اور (تمام) کتب میں موجود ہے بھاپ سے چلنے والی گاڑی میں مشکل پیش آنے نہ کہ متعذر ہونے کی بظاہر کوئی وجہ نہیں کیونکہ جو آدمی سفر کرتے ہوئے زادِ راہ لے جاتا ہے وہ اگر اس میں روئی کا اضافہ کرلے تو کوئی بوجھ نہیں پڑتا۔ اور اگر اس کا خیال یہ ہے کہ گاڑی کی بار بار حرکت سے روئی نکل جائیگی تو وہ اسے لمبا کرکے نیچے کی طرف کرے اور اوپر کی طرف سے عضو کو باندھ دے۔ علامہ شامی نے ردالمحتار میں ذکر کیا جس شخص کو تاخیر سے طہارت حاصل ہوتی ہو وہ جو کے دانے برابر (روئی وغیرہ کا) پتا وغیرہ بٹ کر اسی (احلیل) میں رکھ لے تاکہ وہ نمی کے اس اثر کو جذب کرلے جس کے نکلنے کا خوف ہو۔ اسے اندر غائب کر دینا چاہیے تاکہ نمی اس کے بیرونی سرے تک نہ جائے۔

1 درمختار فروع من باب الحیض مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۵۳ Page 369 of 761

Fatawa-e-Razvia, Volume 4

To avoid the disagreement of the Shafi'i school, and it has been tried, it was found more beneficial than tying the place. But tying is better if he is fasting, so that his fast is not invalidated according to the saying of Imam Shafi'i (may Allah have mercy on him). Allah knows best.

Translation: If inserted into the opening of the private organ, it will absorb the remaining moisture that is feared to leak out, and it is preferable to push it inside so that the moisture does not reach its outer side. This also avoids acting against the school of Imam Shafi'i (may Allah have mercy on him). This has been tried multiple times and found more beneficial than tying, but when fasting, tying is better so that, according to Imam Shafi'i's (may Allah have mercy on him) view, the fast is not broken.

I say: For someone with urinary incontinence (Salsul Baul), merely tying does not close the opening. Inserting something (like cotton etc.) is obligatory as we have mentioned, and in fulfilling an obligation, consideration for disagreements (to avoid them) is not given. In my view, placing a rolled item is excellent. This means taking a leaf that is firm yet somewhat soft, like a tamarind leaf, and wrapping it well before inserting it into the opening such that its middle portion goes inside while the ends remain near the edges of the organ. This method is highly effective and more suitable for stopping the flow. If there is a fear of it falling out, tie the area from above as per the method described. And Allah knows best.

Problem 157: Question by Moulvi Maudoodul Hasan Sahaswani, 22nd Ramadan-ul-Mubarak 1317 AH. Zaid suffers from an ailment such that every two or three minutes, due to fear, a type of creature called 'Penchune'...

1 Rad al-Muhtar, Chapter of Al-Istinja, Published by Mustafa al-Babi Egypt, 1/253
Page 370 of 761

फ़तावा-ए-रज़विया, खंड 4

शाफ़ई के मतभेद से बाहर निकलने के लिए और इसका अनुभव किया गया है, तो इसे जगह बाँधने से अधिक लाभकारी पाया गया, लेकिन यदि वह रोज़ेदार हो तो बाँधना बेहतर है ताकि इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाही अलैहि के कथन के अनुसार उसका रोज़ा न टूटे, अल्लाह बेहतर जानता है।

अनुवाद: विशिष्ट अंग के छिद्र में डालें, वह नमी के शेष प्रभाव को सोख लेगा जिसके निकलने का डर है, और चाहिए कि उसे अंदर गायब कर दे ताकि नमी उसके बाहरी हिस्से की ओर न निकले। इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाही अलैहि के संप्रदाय के विरुद्ध कार्य करने से भी बच जाएगा। इसका कई बार अनुभव किया गया है और इसे बांधने से अधिक लाभकारी पाया गया है, लेकिन जब रोज़ेदार हो तो बांधना बेहतर है ताकि इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाही अलैहि के कथन के अनुसार (भी) उसका रोज़ा न टूटे।

मैं कहता हूँ: मूत्र असंयम वाले व्यक्ति के लिए केवल बांधना छिद्र को बंद नहीं करता है, इसमें (रुई आदि) डालना अनिवार्य है जैसा कि हमने उल्लेख किया है, और अनिवार्य के पालन में मतभेदों (से बचने) का ध्यान नहीं रखा जाता है। और मेरे निकट बत्ती जैसी चीज़ रखना बहुत अच्छा है, वह इस तरह कि एक पत्ता जो सख्त होने के साथ-साथ कुछ कोमल भी हो, जैसे इमली का पत्ता होता है, लिया जाए और उसे अच्छी तरह लपेटकर छिद्र में इस तरह प्रवेश किया जाए कि उसका मध्य भाग अंदर चला जाए और किनारे जननांग के सिरों के पास रहें। प्रवाह को रोकने के लिए यह तरीका बहुत लाभकारी और अधिक उपयुक्त है। यदि इसके बाहर निकलने का डर हो, तो उस स्थान को ऊपर से बाँध दें, जैसा कि हमने तरीका बताया है। और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसाला 157: प्रेषक मौलवी मौदूद अल-हसन सहस्वानी, 22 रमज़ान उल-मुबारक 1317 हिजरी। ज़ैद को इस प्रकार की बीमारी है कि हर दो-तीन मिनट बाद डर के कारण एक प्रकार के जीव जिन्हें 'पेंचुने' कहते हैं...

1 रद अल-मुहतार, अध्याय अल-इस्तिन्जा, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस, मिस्र 1/253 पृष्ठ 761 का 370

للخروج من خلاف الشافعی وقد جرب ذلك فوجد انفع من ربط المحل لکن الربط اولی اذا کان صائماً لئلا یفسد صومه علی قول الامام الشافعي رحمه الله تعالی اعلم اھ - (ترجمہ): عضو مخصوص کے سوراخ میں ڈالے وہ رطوبت کے باقیماندہ اثر کو جس کے نکلنے کا ڈر ہے جذب کرلے گا اور چاہے کہ اسے اندر غائب کر دے تاکہ رطوبت اس کی باہر والی جانب نہ نکلے۔ امام شافعی رحمۃ اللہ کے مسلک کے خلاف عمل کرنے سے بھی بچ جائے گا۔ اس کا متعدد بار تجربہ کیا گیا اور اسے باندھنے سے زیادہ نافع پایا لیکن جب روزہ دار ہو تو باندھنا زیادہ بہتر ہے تاکہ امام شافعی رحمۃ اللہ کے قول پر (بھی) اس کا روزہ نہ ٹوٹے اھ

اقول: (میں کہتا ہوں) سلسل البول والے کیلئے محض باندھنا سوراخ کو بند نہیں کرتا اس میں (روئی وغیرہ) داخل کرنا واجب ہے جیسا کہ ہم نے ذکر کیا اور واجب کی ادائیگی میں اختلاف (سے بچنے) کی رعایت نہیں کی جاتی اور میرے نزدیک بتی ہوئی چیز رکھنا نہایت اچھا ہے وہ یوں کہ ایک پتا جو سخت ہونے کے ساتھ کچھ نرم بھی ہو، جیسے ہندی کھجور کا پتا ہوتا ہے، لیا جائے اور خوب لپیٹ کر سوراخ میں اس طرح داخل کرے کہ اس کا درمیانی حصہ داخل ہو جائے اور کنارے آلہ تناسل کے کنارے کے پاس رہ جائیں۔ جریان کو بند کرنے کیلئے یہ طریقہ نہایت نافع اور زیادہ مناسب ہے اگر نکلنے کا ڈر ہو تو اوپر سے اس جگہ کو باندھ دے، جیسا کہ ہم نے طریقہ بیان کیا ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۱۵۷: مسئولہ مولوی مودود الحسن سہسوانی ۲۲ رمضان المبارک ۱۳۱۷ھ زید کو اس قسم کا عارضہ ہے کہ دو دو تین تین منٹ کے بعد ڈر سے ایک قسم کے جانور جن کو پینچنے کہتے

1 رد المحتار فصل الاستنجاى مطبوعہ مصطفی البابی مصر ۱/ ۲۵۳ صفحہ 370 از 761

Fatawa Ridawiyya - Volume 4

...they come out and their discharge begins after midday (Zawal), approximately from one o'clock until midnight. During this time, is one wudu sufficient for each prayer or not? Please explain, may you be rewarded.

The Answer: If there is a complete cessation in the latter part of the night, such that not even a single drop comes out until sunrise, then this person becomes "healthy" daily. Every day, he should follow the same procedure used on the first day for such illnesses. That is, when the illness starts after midday, he should wait until the end of the Dhuhr time, hoping it might stop. If it stops, then well and good; otherwise, he should perform wudu at the end of the time and offer the prayer. Then, if the illness stops during the Asr time, providing enough time to pray with a valid wudu of a healthy person, he should repeat the Dhuhr prayer as well. If he doesn't find such an opportunity during Asr, then his Dhuhr and Asr prayers become valid. For Maghrib and Isha, just a fresh wudu is sufficient, provided the discharge occurs at least once [in each prayer time]. Later, when the entire morning time passes without any discharge, the ruling of being "excused" (Ma'dhur) will be removed. When the condition returns at Dhuhr or whenever it may be, the calculation for the "first day" must be done again. If there is no complete cessation even during the morning time and discharge continues, even if only once, then the test of the first day is sufficient for him. If a full prayer time has ever passed such that he did not get enough time from the beginning to the end of the time to perform wudu and offer the obligatory prayer, then he is "excused" (Ma'dhur) as long as the condition occurs at least once in every prayer time. In this case, just five fresh wudus for the five times will be sufficient.

In Radd al-Muhtar, it is stated: If an excuse arises after the start of an obligatory prayer's time, wait until the end of that time. If it doesn't stop, perform wudu and pray. Then, if it stops during the second prayer time, repeat that (first) prayer. If it encompasses the entire second prayer time, do not repeat it because by then, the excuse is established from the time it first appeared. This is also mentioned in Barkawiyya, and similarly in Zayla'i and Zahiriyya, etc. The remaining issues are well-known according to the core texts and commentaries. And Allah, Glory be to Him and the Most High, knows best. (T)

In Radd al-Muhtar, it is said: If an excuse arises after the time for an obligatory prayer has begun, one should wait until the end of the time. If it does not stop, one should perform wudu and pray. Then, if it stops during the next prayer time, one should repeat that (first) prayer. If it covers the entire next prayer time, one should not repeat it because the excuse is established as starting from the time it first appeared. Similarly, in Barkawiyya, Zayla'i, and Zahiriyya, etc. The other issues are well-known according to original texts and commentaries. Allah, Glory be to Him and the Most High, knows best. (T)

1 Radd al-Muhtar, Chapter on Menstruation, published by Mustafa al-Babi, Egypt, 1/223.

फ़तावा रज़विया - जिल्द चौथी

...निकलते हैं और उनका निकलना ज़वाल के बाद लगभग एक बजे से लेकर आधी रात तक रहता है। इस दौरान हर नमाज़ के लिए एक वज़ू काफ़ी है या नहीं, बयान फ़रमाएं आप पुण्य के भागी होंगे।

जवाब: अगर रात के आखिरी हिस्से में बिल्कुल रुक जाए कि सूरज निकलने तक एक कतरा भी न निकले, तो यह व्यक्ति रोज़ाना "स्वस्थ" (सहीह) हो जाता है। हर दिन उसे वही तरीका अपनाना चाहिए जो इस प्रकार की बीमारियों में पहले दिन किया जाता है। यानी जब बीमारी ज़वाल के बाद शुरू हो, तो ज़ुहर के वक्त के अंत तक इंतज़ार करे कि शायद रुक जाए। अगर रुक जाए तो बेहतर, वरना आखिरी वक्त में वज़ू करके नमाज़ पढ़ ले। फिर अगर अस्र में बीमारी रुक जाए और एक स्वस्थ व्यक्ति के वज़ू के साथ नमाज़ पढ़ने का समय मिल जाए, तो ज़ुहर की नमाज़ को भी दोहराए। और अगर अस्र में ऐसा मौका न मिले, तो उसकी ज़ुहर और अस्र की नमाज़ें सही हो गईं। मग़रिब और इशा के लिए सिर्फ़ ताज़ा वज़ू काफ़ी है, बशर्ते कि हर वक़्त में कम से कम एक बार रिसाव (निकलना) होता रहे। फिर जब सुबह का सारा समय बिना रिसाव के गुज़र जाएगा, तो "मज़ूर" (विवश) होने का हुक्म खत्म हो जाएगा। और जब ज़ुहर के वक़्त या जिस भी वक़्त बीमारी दोबारा शुरू हो, तो फिर से पहले दिन वाला हिसाब करना पड़ेगा। और अगर सुबह के वक़्त में भी पूरी तरह से नहीं रुकता और रिसाव होता रहता है, चाहे एक ही बार हो, तो वही पहले दिन की परीक्षा उसके लिए काफ़ी है। अगर कभी एक पूरा नमाज़ का वक़्त ऐसा गुज़रा है कि शुरू से अंत तक वज़ू करके फ़र्ज़ पढ़ने की मोहलत नहीं मिली, तो वह "मज़ूर" है जब तक कि हर वक़्त में कम से कम एक बार बीमारी बनी रहे। ऐसी स्थिति में सिर्फ़ पाँच वक्त ताज़ा वज़ू करना काफ़ी होगा।

रद्द अल-मुहतार में है: अगर फ़र्ज़ नमाज़ का वक़्त शुरू होने के बाद कोई उज़्र (बीमारी) पेश आए, तो वक़्त के आख़िर तक इंतज़ार करे। अगर न रुके तो वज़ू करके नमाज़ पढ़ ले। फिर अगर दूसरे वक़्त में वह रुक जाए, तो उस (पहली) नमाज़ को दोहराए। और अगर वह दूसरे वक़्त को भी घेर ले, तो न दोहराए क्योंकि उस समय वह उज़्र उस समय से साबित हो गई जब वह पहली बार शुरू हुई थी। बरकोविया, ज़ैलई और ज़हीरिया में भी इसी तरह है, इत्यादि। बाकी मसले मूल ग्रंथों और उनकी व्याख्याओं के अनुसार प्रसिद्ध हैं। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है। (त)

रद्द अल-मुहतार में है: अगर फ़र्ज़ नमाज़ का वक़्त शुरू होने के बाद उज़्र पेश आया तो आख़िर वक़्त तक इंतज़ार करे। अगर मुनक़तेअ (बंद) न हो तो वज़ू करके नमाज़ पढ़ ले फिर अगर दूसरे वक़्त में ख़त्म हो जाए तो उस (पहली) नमाज़ को लौटाए और अगर दूसरे वक़्त को घेरे तो न लौटाए क्योंकि उस वक़्त उज़्र साबित हो गया जिसकी इब्तिदा पेश आने के वक़्त से होगी। बरकोविया, ज़ैलई और ज़हीरिया में भी इसी तरह है इत्यादि और बाक़ी मसाइल मुतून और शुरूह के एतबार से मारूफ़ हैं। वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आलम (त)

1 रद्द अल-मुहतार, मासिक धर्म का अध्याय (बाबुल हैज़), मुस्तफा अल-बाबी द्वारा प्रकाशित, मिस्र 1/223।

ہیں نکلتے ہیں اور ان کا خروج بعد زوال تقریباً ایک بجے سے لے کر نصف شب تک عارض رہتا ہے اس درمیان میں ہر ہر نماز کے واسطے ایک ایک وضو کافی ہے یا نہیں ، بینوا توجروا ۔

الجواب: اگر اخیر شب میں بالکل انقطاع ہو جاتا ہے کہ ایک کرم بھی طلوع شمس تک نہیں نکلتا جب تو یہ شخص روزانہ صحیح ہو جاتا ہے ہر روز اسے وہی تدبیر چاہیے جو اس قسم کے امراض میں پہلے دن کی جاتی ہے یعنی جبکہ شروع مرض بعد زوال ہوتا ہے ظہر میں آخر وقت تک انتظار کرے کہ شاید منقطع ہو جائے اگر منقطع ہو جائے فبھا ورنہ اخیر وقت وضو کر کے نماز پڑھ لے پھر اگر عصر میں مرض منقطع ہو جائے نماز باوضوئے صحیح پڑھ لینے کی مہلت ملے تو ظہر کی نماز کا بھی اعادہ کرے اور اگر عصر میں فرصت نہ پائے تو ظہر و عصر کی بھی صحیح ہوگئیں اور مغرب و عشا میں صرف وضوئے تازہ کافی ہے بشرطیکہ ایک ایک بار بھی خروج ہوتا رہے پھر جب صبح کا سارا وقت خروج سے خالی گزرے گا وہ حکم معذوری زائل ہوگا اور وقت ظہر یا جس وقت عارضہ عود کرے پھر وہی روز اول کا حساب کرنا پڑے گا اور اگر وقت صبح میں بھی انقطاع کلی نہیں ہوتا خروج ہوتا رہتا ہے اگرچہ ایک ہی بار تو وہی پہلے دن کا امتحان اسے کافی ہے اگر ایک وقت کامل کبھی ایسا گزر چکا ہے کہ شروع وقت سے آخر تک وضو کر کے فرض پڑھ لینے کی مہلت نہ ملی تو وہ معذور ہے جب تک ہر وقت میں کم سے کم ایک بار بھی عارضہ ہوتا رہے گا صرف پانچ وقت وضوئے تازہ کافی ہوگا۔

فی ردالمحتار لو عرض بعد دخول وقت فرض انتظر الی اخرہ فان لم ینقطع یتوضأ و یصلی ثم ان انقطع فی اثناء الوقت الثانی یعید تلك الصلوۃ وان استوعب الوقت الثانی لایعید لثبوت العذر حینئذ من وقت العروض اھ برکویہ و نحوہ فی الزیلعی والظہیریۃ الخ وباقی المسائل معروفۃ متونا وشروحا واللہ سبحنہ وتعالی اعلم۔

ردالمحتار میں ہے اگر فرض نماز کا وقت داخل ہونے کے بعد عذر پیش آیا تو آخر وقت تک انتظار کرے اگر منقطع نہ ہو تو وضو کر کے نماز پڑھ لے پھر اگر دوسرے وقت میں ختم ہوجائے تو اس (پہلی) نماز کو لوٹائے اور اگر دوسرے وقت کو گھیرے تو نہ لوٹائے کیونکہ اس وقت عذر ثابت ہوگیا جس کی ابتداء پیش آنے کے وقت سے ہوگی اھ برکویہ، زیلعی اور ظہیریہ میں بھی اسی طرح ہے الخ اور باقی مسائل متون اور شروح کے اعتبار سے معروف ہیں، واللہ سبحنہ وتعالی اعلم (ت)

1 ردالمحتار باب الحیض مطبوعہ مصطفی البابی مصر ۱/ ۲۲۳

Fatawa Razawiya Volume 4

Problem 158 & 159: From Najibabad, sent by Hafiz Muhammad Ayaz Sahib, 26 Jamadi al-Akhri 1329 AH.

What do the scholars of the religion and the jurists of the firm Shariah say regarding the following issues according to the commands of the Holy Quran and Hadith? May Allah Almighty grant a great reward. A person has suffered from hemorrhoids for a long time. Now, it remains only to the extent that there is always a stickiness and moisture in the swellings, due to which total purity is not achieved. Therefore, for this reason, that person always wears a loincloth (langot) inside the trousers. His practice is such that first thing in the morning, after performing purification with water, he ties a clean loincloth, then performs ablution (wudhu) and offers prayers. Meaning, if even for a short time a loincloth is not worn, the trousers would become impure. Afterwards, at the time of Zuhr, he went for defecation, removed the loincloth, and after finishing purification etc., tied another clean loincloth, performed wudhu and offered prayer. After that, at the time of Asr, the loincloth was changed in the same way. Now, at the time of Maghrib and Isha, there was no need for defecation nor a need to open the loincloth. He performed Maghrib and Isha prayers with the same loincloth tied at Asr time, whether with wudhu or tayammum.

So, in the above-mentioned situations, have the five prayers of this person been fully performed or not? And is it correct for the prayer to be sufficient under the mentioned circumstances?

A person whose description is given above, while his prayer is considered complete, in such a situation when no one else is worthy of leadership (imamate), i.e., everyone in the mosque is ignorant, can the mentioned person lead the prayer or not? And can he lead the Tarawih prayers in the month of Ramadan because he is a Hafiz? Please provide an adequate ruling for the sake of Allah, which would satisfy this helpless, disabled, and compelled person.

The Answer: 1. If that stickiness is only moisture that does not have the power to flow —even if by separating the cloth, it comes off—though by repeatedly touching different places, it becomes soiled more than the size of a dirham, then neither will the wudhu be broken nor will the cloth become impure. 2. And if that moisture flows and the ultimate result of the loincloth is that the trousers are protected from its contamination and its flow remains limited to the loincloth, then in this case, certainly every time it flows and exits, it is in itself a ritual impurity (hadath) and

nullifies wudhu. And if the loincloth becomes soaked more than the size of a dirham, it is inherently impure, and the cleanliness of the trousers is not sufficient for its purity. 3. Yes, if tying the loincloth itself prevents its flow, then it is certainly obligatory upon him to tie the loincloth. And as long as it prevents the flow, neither will the wudhu be broken nor will the cloth become impure.

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथा

मसला 158 और 159: नजीबाबाद से, प्रेषक हाफ़िज़ मोहम्मद अयाज़ साहब, 26 जमादी-अल-आखिरी 1329 हिजरी।

उलमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरह-ए-मतीन ज़ैल के मसाइल में क़ुरआन मजीद और हदीस शरीफ़ के हुक्म के मुताबिक़ क्या फ़रमाते हैं? अल्लाह तआला अजर-ए-अज़ीम अता फ़रमाए। एक शख्स को अर्से से बवासीर का मर्ज़ था, अब सिर्फ़ इस क़दर बाक़ी है कि मस्सों में हर वक़्त चिपचिपाहट सी रहती है और नमी बनी रहती है जिसके बाइस मुकम्मल पाकी हासिल नहीं होती। लिहाज़ा इस वजह से वह शख्स हर वक़्त पाजामे के अंदर लंगोट रखता है और उसका अमल इस तरह रहता है कि सुबह अव्वल वक़्त पाकी हासिल करके पाक लंगोट बांधा, उसके बाद वुज़ू किया और नमाज़ पढ़ी। यानी इतनी देर भी अगर लंगोट न बांधा जाए तो पाजामा नापाक हो जाए। इसके बाद ज़ुहर के वक़्त शौच के लिए गया और लंगोट खोल दिया, फ़ारिग़ होने के बाद दूसरा पाक लंगोट बांध लिया और वुज़ू करके नमाज़ पढ़ ली। इसके बाद अस्र के वक़्त भी इसी तरह लंगोट बदला गया। अब मग्रिब और इशा के वक़्त न शौच की ज़रूरत हुई न लंगोट खोलने की ज़रूरत पड़ी, उसी लंगोट से जो अस्र के वक़्त बांधा था मग्रिब और इशा की नमाज़ अदा की, चाहे वुज़ू से या तयम्मुम से।

तो अब इन मज़कूरा सूरतों में उस शख्स की पांचों नमाज़ें पूरी तरह अदा हो गईं या नहीं? और मज़कूरा हालात में नमाज़ पढ़ना और नमाज़ का काफ़ी होना दुरुस्त है या नहीं?

ऐसा शख्स जिसका बयान ऊपर गुज़रा, जबकि उसकी नमाज़ कामिल तसव्वुर हो, तो ऐसी हालत में जब कोई शख्स इमामत के लायक़ न हो यानी मस्जिद में सब लोग जाहिल हों तो क्या मज़कूरा शख्स इमामत कर सकता है या नहीं? और रमज़ान-उल-मुबारक में तरावीह की नमाज़ पढ़ा सकता है या नहीं इस वजह से कि वह हाफ़िज़ है? अल्लाह के लिए ऐसा हुक्म फ़रमाएं जिससे इस आजिज़, माज़ूर और मजबूर की तसल्ली हो जाए।

अल-जवाब: 1. अगर वह चिपचिपाहट सिर्फ़ नमी है जिसमें बहने की क़ुव्वत नहीं, कपड़ा अलग करने पर वह साथ लग आती है, हालांकि बार-बार मुख़्तलिफ़ जगहों पर लगने से वह दिरहम की मिक़दार से ज़्यादा आलूदा हो जाए, तो उससे न वुज़ू जाएगा और न कपड़ा नापाक होगा। 2. और अगर वह रुतूबत (नमी) बहती है और लंगोट की वजह से ज़्यादा से ज़्यादा यह है कि पाजामा उसकी गंदगी से महफ़ूज़ रहे और उसका बहना लंगोट तक महदूद रहे, तो इस सूरत में यक़ीनन जितनी बार वह

बहकर निकलेगी, वह अपने आप में 'हदस' (अशुद्धि) और वुज़ू को तोड़ने वाली है। और अगर लंगोट दिरहम की मिक़दार से ज़्यादा भर जाए तो वह ख़ुद नापाक है और पाजामे का पाक होना उसकी पाकी के लिए काफ़ी नहीं। 3. हां, अगर लंगोट बांधना उसके बहने को ही रोक देता है, तो उस पर लंगोट बांधना फ़र्ज़ है। और जब तक वह बहने से रोके रखेगा, न वुज़ू जाएगा और न कपड़ा नापाक होगा।

فتاوی رضویہ جلد چہارم

مسئلہ ۱۵۸ و ۱۵۹: از نجیب آباد مرسلہ حافظ محمد ایاز صاحب ۲۶ جمادی الاخری ۱۳۲۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین مفتیان شرع متین مسائل ذیل میں موجب حکم قرآن مجید و حدیث شریف ارشاد فرمائیے اللہ تعالیٰ اجر عظیم عطا فرمائے ایک شخص کو عرصہ سے مرض بواسیر تھا اب صرف اس قدر باقی ہے کہ مستوں میں ہر وقت چپک سا رہتا ہے اور طراوت رہتی ہے جس کے باعث سے طہارت کُلی حاصل نہیں ہے لہذا بوجہ اس کے وہ شخص ہر وقت پاجامے کے اندر لنگوٹ رکھتا ہے اور عملدرآمد اس کا اس صورت سے رہتا ہے کہ اول وقت صبح طہارت پانی سے کر کے لنگوٹ پاک باندھا اس کے بعد وضو کیا اور نماز پڑھی یعنی اتنی دیر بھی اگر لنگوٹ نہ باندھا جائے تو پاجامہ ناپاک ہو جائے بعد ازاں ظہر کے وقت پاخانہ گیا اور لنگوٹ کھول دیا بعد انفراغ طہارت وغیرہ کے لنگوٹ دوسرا پاک باندھ لیا اور وضو کر کے نماز پڑھ لی ازاں بعد عصر کے وقت بھی اسی طرح لنگوٹ بدلا گیا۔ اب مغرب وعشاء کے وقت پاخانہ وغیرہ کی ضرورت ہوئی نہ لنگوٹ کھولنے کی ضرورت پڑی اُسی لنگوٹ سے جو عصر کے وقت باندھا تھا نماز مغرب و عشاء خواہ وضو خواہ تیمم سے ادا کرے۔

تو اب ان صورتہائے مذکورہ بالا میں پانچوں نمازیں اس شخص کی پورے طور پر ادا ہو گئیں یا نہیں اور حالات مذکورہ پر نماز پڑھنا اور نماز کافی ہونا درست ہے یا نہیں؟ ایسا شخص جس کا بیان اوپر گزرا جبکہ اس کی نماز کامل متصور ہو تو ایسی حالت میں جب کوئی شخص امامت کے لائق نہ ہو یعنی مسجد میں سب لوگ جاہل ہوں تو یہ شخص مذکور امامت کر سکتا ہے یا نہیں؟ اور رمضان المبارک میں نماز تراویح پڑھا سکتا ہے یا نہیں اس وجہ سے کہ حافظ ہے۔ عند اللہ ارشاد کافی کہ جس سے اس عاجز معذور و مجبور کی تسلی ہو جائے ارقام فرما دیجئے۔

الجواب: اگر وہ چپک صرف نم ہوتی ہے جس میں قوت سیلان نہیں کپڑا الگ کر اسے چھڑا لاتا ہے اگرچہ بار بار مختلف جگہ مس ہونے سے قدر درہم سے زائد آلود ہو جاتا ہو تو اُس سے نہ وضو جائے گا نہ کپڑا ناپاک ہوگا۔ اور ۲ اگر وہ رطوبت سیلان کرتی ہے اور لنگوٹ کے سبب غایت یہ کہ پاجامہ اس کے تلوث سے محفوظ اور اس کا سیلان لنگوٹ تک محدود رہے تو اس صورت میں ضرور جتنی بار بہہ کر خروج کرے گی فی نفسہ حدث و ناقض وضو ہے اور لنگوٹ اگر قدر درہم سے زائد بھر جائے تو بذاتہ ناپاک ہے اور پاجامہ کا پاک ہونا اس کی پاکی کو کافی نہیں۔ ہاں ۳ اگر لنگوٹ باندھنا اس کے سیلان ہی کو منع کر دیتا ہے تو ضرور اُس پر فرض ہے کہ لنگوٹ باندھے اور جب تک سیلان سے مانع ہو گا نہ وضو جائے گا نہ کپڑا ناپاک ہوگا۔

In the first and third scenarios, he is allowed to lead the prayer (Imamat), and in the second scenario, if he does not reach the limit of being excused (Ma'zoor), his own prayer will not be valid without purification. It will be obligatory for him to perform ablution (Wudu) whenever there is discharge and to change or wash the clothes when they become impure.

Yes, if he hasn't experienced a full prayer time passing from start to finish without having enough time to perform Wudu and pray the obligatory prayer, then there are two possibilities: If after this state, this ailment persists throughout the five prayer times, even if it happens once in each time, he is considered excused (Ma'zoor). His own prayer will be valid, but he cannot lead the prayer except for someone afflicted with the same excuse. If this is not the case, but rather a full prayer time passed afterwards where the ailment was completely absent, the ruling of being excused is revoked. Then, if it starts again, to be considered excused once more, it would require a full prayer time to pass from beginning to end without having time for purification and the obligatory prayer. Therefore, during the times he does not change his loincloth, if those times pass with complete purification, then his own prayer as well as leading the prayer (whether obligatory or Taraweeh) is valid. However, when the ailment starts again in the morning, he will not be considered excused yet. He will have to perform Wudu every time the ailment occurs and wash or change the clothes when they become impure until the same experience of a full prayer time occurs. Yesterday's experience will not be sufficient for today. It is stated in Radd al-Muhtar:

[Box 1] Arabic: It is said in al-Fath: Its meaning is when it is such that if it were not tied, it would flow. For if the shirt rubs against the wound and becomes wet, it does not become impure as long as it is not like that, because it is not an act that breaks Wudu (Hadath). [End of quote] i.e., even if it is excessive, as in al-Munyah. Urdu: It is stated in Fath al-Qadeer: Its meaning is that when it is in such a state that it would flow without being tied, because if the shirt gets wet by rubbing against the wound, it will not be impure at that time as long as it is not in that state (i.e., it would be impure in the state of flowing) because it (the non-flowing) is not an act that breaks Wudu, even if it is a lot, as in al-Munyah. (T)

It is also in it: [Box 2] Arabic: In al-Bazzaziyyah: If a wounded person is able to stop the blood by tying it, it becomes necessary, and he will be like healthy people. And

Allah Almighty knows best. Urdu: It is in al-Bazzaziyyah: If an injured person is capable of stopping the blood by tying (the wound), then it is mandatory for him (to tie it), and that person will become like non-excused people. And Allah Almighty knows best. (T)

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Nullifiers of Wudu, printed by Mustafa al-Babi Egypt, 1/103.
2. Taqreerat al-Rafi'i on the margin of Ibn Abidin, before the chapter on Impurities, printed by Mustafa al-Babi Egypt, 1/225.

पहली और तीसरी स्थिति में उसे इमामत (प्रार्थना का नेतृत्व) की भी अनुमति है और दूसरी स्थिति में यदि वह मज़ूरी (मजबूरी) की सीमा तक न पहुँचा तो बिना पवित्रता के स्वयं उसकी अपनी नमाज़ भी नहीं होगी। उस पर यह अनिवार्य होगा कि जब बहाव हो तो वज़ू करे और जब कपड़ा अपवित्र हो जाए तो उसे बदले या धोए।

हाँ, यदि उसे अभी तक यह अनुभव नहीं हुआ कि एक पूर्ण समय (नमाज़ का वक्त) शुरू से अंत तक बीत गया और उसे वज़ू करके फ़र्ज़ (अनिवार्य नमाज़) पढ़ने की मोहलत नहीं मिली, तो अब दो स्थितियाँ हैं: यदि इस स्थिति के बाद नमाज़ के पाँचों वक्तों में यह बीमारी बराबर बनी रही, चाहे हर वक्त में एक बार ही क्यों न हो, तो वह माज़ूर (लाचार) है। उसकी अपनी नमाज़ हो जाएगी, लेकिन वह इमामत नहीं कर सकता, सिवाय ऐसे व्यक्ति की जो इसी उज़्र (बीमारी) में ग्रस्त हो। और यदि ऐसा नहीं है, बल्कि उसके बाद कोई पूर्ण समय ऐसा बीता कि वह बीमारी बिल्कुल नहीं हुई, तो माज़ूर होने का हुक्म समाप्त हो गया। फिर यदि शुरू हो तो दोबारा माज़ूर होने के लिए वही आवश्यक होगा कि एक पूर्ण समय शुरू से अंत तक गुज़र जाए जिसमें उसे पवित्रता प्राप्त करके फ़र्ज़ पढ़ने की मोहलत न मिले। इसलिए वे समय जिनमें वह लंगोट नहीं बदलता, यदि पूरी पवित्रता के साथ बीत जाते हैं, तो उनमें उसकी अपनी नमाज़ भी सही है और इमामत भी सही है, चाहे फ़र्ज़ हों या तरावीह। लेकिन सुबह को जो फिर बीमारी शुरू होगी, वह अभी माज़ूर नहीं माना जाएगा। हर बार बीमारी आने पर वज़ू करना और कपड़ा अपवित्र होने पर धोना या बदलना पड़ेगा जब तक कि वही अनुभव एक पूर्ण समय में न हो जाए। कल का अनुभव आज के लिए पर्याप्त नहीं होगा। रद-उल-मुह्तार में है:

[बॉक्स 1] अरबी: अल-फ़तह में कहा गया है: इसका अर्थ यह है कि जब स्थिति ऐसी हो कि यदि बाँधा न जाए तो वह बहने लगे। क्योंकि यदि कमीज़ ज़ख्म से टकराकर भीग जाए, तो वह तब तक अपवित्र नहीं होती जब तक कि वह वैसी न हो, क्योंकि यह हदस (वज़ू तोड़ने वाली चीज़) नहीं है। यानी भले ही वह अधिक हो जैसा कि अल-मुन्या में है। उर्दू अनुवाद: फ़तह अल-क़दीर में फ़रमाया: इसका अर्थ यह है कि जब इस स्थिति में हो कि बाँधने के बिना जारी (बहने वाला) हो जाता हो, क्योंकि यदि कमीज़ ज़ख्म से टकराकर तर (गीली) हो जाए तो उस समय नापाक (अपवित्र) नहीं होगी जब तक कि वह (ज़ख्म) इस स्थिति में न हो (अर्थात जारी होने की स्थिति में नापाक होगी) क्योंकि वह (न जारी होने वाला) हदस नहीं है चाहे वह अधिक ही क्यों न हो जैसा कि मुन्या में है। (त)

उसी में है: [बॉक्स 2] अरबी: अल-बज़ाज़िया में है: यदि घायल व्यक्ति बाँधने के माध्यम से खून रोकने में सक्षम हो, तो (बाँधना) अनिवार्य है और वह स्वस्थ लोगों की तरह होगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। उर्दू अनुवाद: बज़ाज़िया में है: यदि घायल (ज़ख्म को) बाँधने के माध्यम से खून रोकने पर सक्षम हो तो उस पर (बाँधना) लाज़िम है और वह व्यक्ति ग़ैर-माज़ूर (स्वस्थ) लोगों की तरह हो जाएगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

1. रद-उल-मुह्तार, मतलब नवाकिज़-उल-वज़ू, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र द्वारा मुद्रित, 1/103।
2. तक़रीरात अल-राफ़ई हशिया इब्न आबिदीन पर, अशुद्धियों के अध्याय से पहले, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र द्वारा मुद्रित, 1/225।

पृष्ठ 373 का 761

پہلی اور تیسری صورت میں اسے امامت کی بھی اجازت ہے اور دوسری صورت میں اگر معذوری کی حد کو نہ پہنچا تو بے طہارت کلمہ خود اس کی اپنی نماز بھی نہ ہو گی اس پر فرض ہو گا کہ جب سیلان ہو وضو کرے اور جب کپڑا ناپاک ہو بدلے یا دھوئے۔

ہاں اگر بھی اسے یہ تجربہ نہ ہو لیا کہ ایک وقت کامل شروع سے آخر تک گزر گیا کہ اسے وضو کر کے فرض پڑھنے کی مہلت نہ ملی تو اب دو صورتیں ہیں اگر اس حالت کے بعد نماز کے پانچوں وقتوں میں یہ عارضہ برابر ہوتا رہا اگرچہ ہر وقت میں ایک ایک بار، تو معذور ہے، اس کی اپنی نماز ہو جائے گی مگر امامت نہیں کر سکتا مگر ایسے شخص کی جو اسی عذر میں مبتلا ہو اور اگر ایسا نہیں بلکہ اس کے بعد کوئی وقت کامل ایسا گزرا کہ وہ عارضہ بالکل نہ ہوا تو حکم معذور جاتا رہا پھر اگر شروع ہو تو دوبارہ معذور ہونے کے لئے وہی درکار ہو گا کہ ایک وقت کامل شروع سے آخر تک گزر جائے جس میں اسے طہارت کر کے فرض کی مہلت نہ ملے لہذا وہ اوقات جن میں وہ لنگوٹ نہیں بدلتا اگر پوری طہارت کے ساتھ گزر جاتے ہیں تو ان میں تو اس کی اپنی نماز بھی صحیح ہے اور امامت بھی صحیح فرائض ہوں خواہ تراویح مگر صبح کو جو پھر عارضہ کا آغاز ہو گا ابھی معذور نہ ٹھہرے گا ہر بار عارضہ آنے پر وضو کرنا اور کپڑا ناپاک ہونے پر دھونا یا بدلنا پڑے گا جب تک وہی تجربہ ایک وقت کامل میں نہ ہو جائے کل کا تجربہ آج کیلئے کافی نہ ہو گا۔ ردالمختار میں ہے :

[Box 1] قال في الفتح معناه اذا كان بحيث لولا الربط سال لان القميص لو تردد على الجرح فابتل لا ينجس مالم يكن كذلك لانه ليس بحدث اهـ ای وان فحش كما في المنية۔ فتح القدیر میں فرمایا اس کا

مطلب یہ ہے کہ جب اس صورت میں ہو کہ باندھنے کے بغیر جاری ہو جاتا ہو کیونکہ اگر قمیص زخم سے ٹکرا کر تر ہو جائے تو اس وقت ناپاک نہ ہو گی جب تک وہ (زخم) اس صورت میں نہ ہو (یعنی جاری ہونے کی صورت میں ناپاک ہو گی) کیونکہ وہ (نہ جاری ہونے والا) حدث نہیں اگرچہ زیادہ ہو جیسا کہ منیہ میں ہے۔ (ت)

اُسی میں ہے : [Box 2] فی البزازیۃ اذا قدر ذو جرح علی منع دم بربط لزم وکان کالاصحاء۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ بزازیہ میں ہے اگر زخمی (زخم کو) باندھنے کے ذریعے خون روکنے پر قادر ہو تو اس پر (باندھنا) لازم ہے اور وہ شخص غیر معذور لوگوں کی طرح ہو جائے گا واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

1 ردالمحتار، مطلب نواقض الوضوء، مطبوعہ مصطفی البابی مصر، ۱ / ۱۰۳ 2 تقریرات الرافعی علی حاشیہ ابن عابدین، قبیل باب الانجاس، مطبوعہ مصطفی البابی مصر، ۲۲۵ / ۱

Fatawa Razawiyya Volume 4 Problem 160: From the town of Najibabad, District Bijnor, sent by Hafiz Muhammad Ayaz Sahib, 20 Safar 1332 AH.

Question: What do the scholars of religion say regarding the following matter? A person is excused (Ma'zur) because some sticky substance comes out from his anus. For such a person, the Prophet has given the ruling of an 'excused person' (Ma'zur) and stated that such a person should perform fresh wudhu (ablution) for every prayer time. And if the impure fluid is less than the size of a dirham and does not flow, then wudhu is not broken by it. In the first case, where fresh wudhu is required for every prayer time, if the wudhu is performed before the time starts—for example, for Friday prayer, if one performs wudhu at 12 o'clock and goes to the mosque, will the Friday prayer be valid with that wudhu or not? Or for Maghrib prayer, if wudhu is performed one hour before sunset, will the Maghrib prayer be valid with that wudhu or not? Or for example, at the time of Tahajjud prayer, if one washes the body etc., puts on a clean loincloth (langot) inside the trousers, performs wudhu and continues reciting Tahajjud, Quran Sharif, etc., until the time for Fajr prayer arrives; when the prayer time begins, he prays two rak'ats of Sunnah, then goes to the mosque to pray the obligatory prayer in congregation, and after that stays there until sunrise, and then after sunrise prays Ishraq and returns home. Now, are all these prayers valid with that Tahajjud wudhu, or should he perform wudhu again for the morning (Fajr) prayer after the Tahajjud prayer? And will the morning prayer wudhu be sufficient for the Ishraq prayer, or should he perform fresh wudhu again for Ishraq? And regarding the second situation, where the impurity is less than a dirham and does not flow but is repeatedly wiped off with a loincloth, what is the ruling for wudhu and prayer in the sight of Allah and His Messenger? Please explain with evidence, otherwise this humble person will remain in constant worry. May Allah Almighty grant you great reward and beautiful compensation.

Answer: Look at the issue again. In the case of not flowing, there was no specification of less or more than a dirham. If it's not capable of flowing but rather just sticks to the cloth and comes off, then he is neither 'excused' (Ma'zur) nor is his wudhu broken, nor does the cloth become impure even if it covers an area larger than a dirham. But if it is capable of flowing, then in that case he was told to be an 'excused person', and in that case too, there is no restriction of being less or more than a dirham. Yes, in this situation, for the cloth to become impure, the condition is that it must cover an area larger than a dirham. For an 'excused person', according to us, wudhu is broken at the expiration of the prayer time, not at its beginning. So, he

cannot pray the morning (Fajr) prayer with the Tahajjud wudhu because the time for Isha (within which Tahajjud falls) has expired. He cannot pray Ishraq with the morning (Fajr) prayer wudhu because the time for Fajr has expired. With the Ishraq wudhu, he can pray Zuhr and Friday (Jumu'ah) prayers because during this interval, the time of no obligatory (fard) prayer has expired. And Allah Almighty knows best.

Page 374 of 761 I.T. Majlis of Dawat-e-Islami

फतावा रज़विया जिल्द 4 मसला 160: कस्बा नजीबाबाद जिला बिजनौर से हाफ़िज़ मोहम्मद अयाज़ साहब द्वारा प्रेषित, 20 सफ़र 1332 हिजरी।

प्रश्न: दीन के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि एक व्यक्ति 'माज़ूर' (मजबूर/बीमार) है क्योंकि उसके गुदा मार्ग से कुछ चिपचिपा पदार्थ बाहर निकलता है। ऐसे व्यक्ति के लिए हुज़ूर ने माज़ूर का हुक्म फ़रमाया है और फ़रमाया है कि वह व्यक्ति हर नमाज़ के समय के लिए ताज़ा वुज़ू करे। और यदि नापाक तरल पदार्थ एक दिरहम से कम हो और वह बहता न हो, तो उससे वुज़ू नहीं टूटता। पहली सूरत में, जहाँ हर नमाज़ के समय के लिए ताज़ा वुज़ू की ज़रूरत है, अगर वह वुज़ू समय से पहले कर लिया जाए—उदाहरण के लिए, जुमे की नमाज़ के लिए दोपहर 12 बजे वुज़ू करके मस्जिद चला गया, तो क्या उस वुज़ू से जुमे की नमाज़ अदा होगी या नहीं? और या मग़रिब की नमाज़ के लिए सूर्यास्त से एक घंटा पहले वुज़ू कर लिया, तो क्या उस वुज़ू से मग़रिब की नमाज़ अदा होगी या नहीं? या उदाहरण के लिए, तहज्जुद की नमाज़ के समय शरीर आदि धोकर, पाजामे के अंदर साफ़ तहबंद (लंगोट) बाँध लिया और वुज़ू करके तहज्जुद, कुरआन शरीफ़ आदि सुबह की नमाज़ (फ़ज्र) तक पढ़ता रहा; जब नमाज़ का समय हुआ तो दो रकअत सुन्नत सुबह की पढ़कर मस्जिद में गया और जमात के साथ फ़र्ज़ अदा किया, और उसके बाद सूर्योदय तक वहीं बैठा रहा और सूर्योदय के बाद इश्राक की नमाज़ पढ़कर घर आया। तो अब क्या तहज्जुद वाले वुज़ू से ये सारी नमाज़ें हो गईं, या तहज्जुद की नमाज़ के बाद सुबह की नमाज़ के लिए दोबारा वुज़ू करना चाहिए? और क्या सुबह की नमाज़ का वुज़ू इश्राक के लिए काफ़ी होगा या इश्राक के लिए फिर से नया वुज़ू करे? और दूसरी सूरत में, जहाँ गंदगी दिरहम से कम हो और बहती न हो बल्कि लंगोट से बार-बार पोंछी जाए, उसके लिए अल्लाह और उसके रसूल के नज़दीक वुज़ू और नमाज़ का क्या हुक्म है? कृपया प्रमाणों के साथ मार्गदर्शन करें, अन्यथा यह विनम्र व्यक्ति इसी चिंता में रहेगा। अल्लाह तआला आपको महान प्रतिफल और सुंदर पुरस्कार प्रदान करे।

उत्तर: मसले को फिर से देखें। न बहने की सूरत में दिरहम से कम या अधिक की कोई विशिष्टता नहीं थी। अगर वह बहने के योग्य नहीं है, बल्कि कपड़े से लगकर झड़ आता है, तो न वह माज़ूर हुआ, न वुज़ू गया, न कपड़ा नापाक हुआ, चाहे वह दिरहम से अधिक क्षेत्र में फैल जाए। और अगर वह बहने के योग्य है, तो उस सूरत में माज़ूर बताया गया था, और उसमें भी दिरहम से कम या अधिक की कोई कैद (शर्त) नहीं है। हाँ, इस सूरत में कपड़े के नापाक होने के लिए दिरहम से अधिक क्षेत्र भरने की शर्त है। माज़ूर का वुज़ू हमारे नज़दीक समय निकलने (समाप्त होने) से टूटता है, प्रवेश करने से नहीं।

इसलिए वह तहज्जुद के वुज़ू से सुबह (फ़ज्र) की नमाज़ नहीं पढ़ सकता क्योंकि ईशा का समय समाप्त हो गया। सुबह के वुज़ू से इश्राक नहीं पढ़ सकता क्योंकि सुबह का समय समाप्त हो गया। इश्राक के वुज़ू से ज़ुहर और जुमा पढ़ सकता है क्योंकि इस दौरान किसी फ़र्ज़ नमाज़ का समय समाप्त नहीं हुआ। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

पृष्ठ 374/761 आई.टी. मजलिस दावत-ए-इस्लामी

فتاوی رضویہ جلد چہارم مسئلہ ۱۶۰: از قصبہ نجیب آباد ضلع بجنور مرسلہ حافظ محمد ایاز صاحب ۲۰ صفر ۱۳۳۲ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین مسئلہ ذیل میں کہ جو شخص معذور ہے کہ پاخانہ کی جگہ سے اس کے کچھ چپک باہر وقت آتا ہے تو اس کے واسطے حضور نے معذور کا حکم فرمایا ہے اور فرمایا ہے کہ وہ شخص ہر نماز کے واسطے تازہ وضو کرے اور جو پانی غلیظ درہم سے کم ہو اور وہ بہتا بھی نہ ہو تو اس سے وضو بھی نہیں ٹوٹتا، صورت اول میں جو ہر نماز کے واسطے تازہ وضو کی ضرورت ہے اس وضو کو اگر قبل از وقت کر لیا۔ مثلاً جمعہ کی نماز کے واسطے بارہ بجے وضو کر کے مسجد کو چلا گیا تو اس وضو سے نماز جمعہ ادا ہو گی یا نہیں اور یا نماز مغرب کے واسطے ایک گھنٹہ دن سے وضو کر لیا تو اس سے نماز مغرب ادا ہو گی یا نہیں یا مثلاً نماز تہجد کے وقت جسم وغیرہ دھو کر صاف تہبند یعنی لنگوٹ پاجامہ کے اندر باندھ لیا اور وضو کرے نماز تہجد و قرآن شریف وغیرہ وغیرہ صبح کی نماز تک پڑھتا رہا جب نماز کا وقت ہوا دو رکعت سنت صبح کی پڑھ کر مسجد میں جا کر فرض باجماعت ادا کیا اور ازاں بعد طلوع آفتاب تک وہاں بیٹھا رہا بعد طلوع نماز اشراق سے فارغ ہو کر مکان کو آیا۔ تو اب اس تہجد کے وضو سے یہ سب نمازیں اس کی ہو گئیں یا بعد نماز تہجد کے صبح کی نماز کے واسطے مکرر وضو کرنا چاہے اور اس کے بعد اشراق کے واسطے صبح کی نماز کا وضو کافی ہو گا یا اشراق کے واسطے پھر جدید وضو کرے۔ اور دوسری صورت کو جو غلاظت درہم سے کم ہو اور بہتی نہ ہو بلکہ لنگوٹ سے بار بار پونچھ جائے اس کے واسطے وضو و نماز کا کیا حکم ہے عند اللہ وعند الرسول مع دلائل ارشاد فرمائیے ورنہ اسی فکر میں یہ عاجز ہمیشہ رہے گا واللہ تعالیٰ اعلم آپ کو اجر عظیم و ثواب جمیل عطا فرمائے۔

الجواب: مسئلہ کو پھر دیکھئے نہ بہنے کی صورت میں درہم سے کم زائد کی کوئی تخصیص نہ تھی اگر بہنے کے قابل نہیں بلکہ کپڑا لگ کر جھڑا لاتا ہے تو نہ وہ معذور ہوا نہ وضو گیا نہ کپڑا ناپاک ہوا اگرچہ درہم سے زائد بھر جائے اور اگر بہنے کے قابل ہے تو اس صورت میں معذور بتایا تھا اور اس میں بھی درہم سے کم وزائد کی کوئی قید نہیں ہاں اس صورت میں کپڑا ناپاک ہونے کیلئے درہم سے زائد بھرنے کی شرط ہے معذور کا وضو ہمارے نزدیک خروج وقت سے جاتا ہے دخول سے نہیں تو تہجد کے وضو سے صبح نہیں پڑھ سکتا کہ وقت عشا خارج ہو گیا صبح کے وضو سے اشراق نہیں پڑھ سکتا کہ وقت صبح خارج ہو گیا اشراق کے وضو سے ظہر وجمعہ پڑھ سکتا ہے اس بیچ میں کسی فرض نماز کا وقت خارج نہ ہوا۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

Volume 4 Fatawa Razawiya Problem 161 and 163: From the city's Behari Pur neighborhood, requested by Nawab Maulvi Sultan Ahmad Khan Sahib, 28 Dhu al-Qi'dah 1330 AH. (1) Can a person with a valid medical excuse (Mazoor) pray the Ishraq prayer with the ablution (wudu) made for the morning prayer or not? (2) If a Mazoor starts a prayer so late that it finishes in the time of the next prayer, for example, Dhuhr in Asr or Asr in Maghrib, is the prayer valid, or should it be repeated as a make-up prayer (Qada)? In the second case, when the time is so late that the prayer will end in the next prayer time, should he finish the prayer and then offer Qada, or should he not pray it until the next prayer time starts, and then first pray the initial prayer and then the second?

The Response: (1) No, because the expiration of a prayer time invalidates the wudu of a Mazoor. However, one can pray obligatory (Fard) and voluntary (Nafl) prayers until the end of the time with the wudu made for Ishraq, as the beginning of a prayer time does not invalidate wudu. And Allah Almighty knows best. (2) By consensus (Ijma), the prayer becomes void because both the expiration of the current time and the entrance of the next time occurred, thus the wudu was lost during the prayer. Yes, if the time expires after the final sitting (Qa'dah Akhirah) but before the Salams, the prayer will be valid according to the Sahibayn (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad) but not according to the Imam (Abu Hanifa), as stated in 'Al-Masa'il al-Ithna Ashariyah' (as in the case of the twelve problems. -Compiler). If very little time is left and there is fear of time expiring during the prayer, one should restrict oneself to the mandatory acts (Wajibats). For example, omit the opening praise (Thana), seeking refuge (Ta'awwudh), blessings (Salawat), and supplications (Du'a). In bowing (Ruku) and prostration (Sujud), say 'Subhanak' only once. If there isn't even room for Wajibats, read just one verse instead of Surah Fatiha. In short, be content with the core obligations (Fara'id). If the expiration of time is doubtful, then based on doubt, the time will not be considered expired nor will the wudu be void, because 'Certainty is not overruled by doubt' (As certainty is not erased by doubt. -Compiler). Yes, if even after restricting to Fara'id, the expiration of time is certain, then if the prayer is valid according to any Imam, pray following their ruling, for 'Performing an act that is permissible according to some is better than abandoning it', as in Al-Durr [al-Mukhtar][1] (Undoubtedly, such performance which is permissible according to some is better than abandoning it, as it is in Durr al-Mukhtar. -Compiler). Then, pray Qada, if at that time there was no opportunity to refer to other schools of thought. And Allah Almighty knows best.

Problem 162: Requested by Munshi Hafiz-ud-Din Sahib, Teacher at Madrasa Islamia Khair al-Ma'ad, Rohtak District, 26 Muharram 1338 AH. What do the scholars of religion and jurists of the clear Shari'ah say about this matter: a person is severely suffering from hemorrhoids...

---

[1] In Durr al-Mukhtar, Kitab al-Salat, printed at Mujtabai Delhi, 1/61. Page 375 of 761

जिल्द चार (खंड 4) फ़तावा रज़विया मसअला 161 और 163: शहर के मोहल्ला बिहारीपुर से, मसूला नवाब मौलवी सुल्तान अहमद खां साहिब, 28 ज़ी अल-का'दा 1330 हिजरी। (1) क्या माज़ूर (बीमारी के कारण मजबूर व्यक्ति) सुबह के वज़ू से इशराक़ की नमाज़ पढ़ सकता है या नहीं? (2) माज़ूर ने इतने आख़िरी वक़्त में नमाज़ शुरू की कि वह दूसरे वक़्त में पूरी हुई, जैसे ज़ुहर की असर में या असर की मग़रिब में, तो क्या नमाज़ हो गई या उसे फिर क़ज़ा (मेक-अप नमाज़) पढ़नी होगी? दूसरी सूरत में जब ऐसा आख़िरी वक़्त हो गया कि नमाज़ दूसरे वक़्त में जाकर ख़त्म होगी, तो क्या वह नमाज़ पढ़कर फिर उसकी क़ज़ा पढ़े या न पढ़े जब तक दूसरा वक़्त न हो जाए कि पहले अव्वल नमाज़ पढ़े फिर दूसरी।

अल-जवाब (उत्तर): (1) नहीं, क्योंकि वक़्त का निकलना माज़ूर का वज़ू तोड़ देता है। हाँ, इशराक़ के वज़ू से आख़िर तक फ़र्ज़ और नफ़्ल नमाज़ें पढ़ सकता है क्योंकि वक़्त का दाख़िल होना वज़ू नहीं तोड़ता। वल्लाह तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)। (2) नमाज़ बिल-इज्माअ (सर्वसम्मति से) बातिल (अमान्य) हो गई क्योंकि वक़्त का निकलना और दूसरे वक़्त का आना दोनों पाए गए, तो नमाज़ के दौरान वज़ू जाता रहा। हाँ, अगर क़अदह-ए-अख़ीरा के बाद और सलाम से पहले वक़्त निकल जाए तो साहिबैन (इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद) के नज़दीक नमाज़ हो जाएगी और इमाम (इमाम अबू हनीफ़ा) के नज़दीक नहीं, जैसा कि 'अल-मसाइल अल-इशना अशरिया' में है। (जैसा कि बारह मसअलों वाली सूरत में है। -तर्जुमा)। अगर वक़्त बहुत कम रह गया हो और नमाज़ के दौरान वक़्त निकलने का अंदेशा हो, तो वाजिबात पर इक़्तेसार करे (केवल ज़रूरी चीज़ें पढ़े), मिसाल के तौर पर सना, तअव्वुज़, दुरूद और दुआ छोड़ दे। रुकू और सुजूद में सिर्फ़ एक बार 'सुब्हानक' कहे। और अगर वाजिबात की भी गुंजाइश नहीं है, तो फ़ातिहा के बजाय सिर्फ़ एक आयत पढ़े। संक्षेप में फ़राइज़ (अनिवार्य कार्यों) पर संतोष करे। और अगर वक़्त निकलने में शक हो, तो शक से न वक़्त ख़त्म माना जाएगा और न वज़ू साक़ित (ख़त्म) होगा, क्योंकि 'यक़ीन शक से ज़ाइल नहीं होता' (इसलिये कि यक़ीन शक से ख़त्म नहीं होता। -तर्जुमा)। हाँ, अगर सिर्फ़ फ़राइज़ पढ़ने पर भी वक़्त का निकलना यक़ीनी हो, तो अगर किसी इमाम के नज़दीक नमाज़ हो सकेगी तो उनकी पैरवी में पढ़ ले, क्योंकि 'ऐसी अदायगी जो कुछ के नज़दीक जायज़ हो, उसे छोड़ देने से बेहतर है' जैसा कि 'दुर्रे मुख़्तार' में है।[1] (बेशक ऐसी अदायगी जो कुछ के नज़दीक जायज़ हो, छोड़ने की तुलना में बेहतर है, जैसा कि दुर्रे मुख़्तार में है। -तर्जुमा)। फिर क़ज़ा पढ़े, अगर उस वक़्त अन्य मज़ाहिब की तरफ़ रुख़ करने की मोहलत न मिली। वल्लाह तआला आलम।

मसअला 162: मसूला मुंशी हफ़ीज़उद्दीन साहिब, शिक्षक मदरसा इस्लामिया ख़ैर अल-मआद, ज़िला रोहतक, 26 मुहर्रम 1338 हिजरी। उलेमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरअ-ए-मतीन इस मसअले में क्या फ़रमाते हैं कि एक व्यक्ति बवासीर की बीमारी से सख़्त परेशान है...

---

[1] दुर्रे मुख़्तार, किताब अल-सलात, मुतबूआ मुज्तबाई दिल्ली, 1/61। पृष्ठ 375/761

جلد چہارم فتاویٰ رضویہ مسئلہ ۱۶۱ و ۱۶۳: از شہر محلہ بہاری پور مسئولہ نواب مولوی سلطان احمد خاں صاحب ۲۸ ذی القعدہ ۱۳۳۰ھ (۱) معذور صبح کے وضو سے اشراق کی نماز پڑھ سکتا ہے یا نہیں۔ (۲) معذور نے ایسے آخر وقت میں نماز شروع کی کہ دوسرے وقت میں تمام ہوئی مثلاً ظہر کی عصر میں یا عصر کی مغرب میں تو نماز ہوگئی یا اس کو پھر قضا پڑھے درصورت ثانیہ جب ایسا وقت آخر ہو گیا کہ نماز دوسرے وقت میں جا کر ختم ہوگی تو نماز پڑھ کر پھر اس کی قضا پڑھے یا نہ پڑھے جب تک وقت دوسرا نہ ہو جائے کہ پہلے نماز اول پڑھے پھر دوسری۔

الجواب: (۱) نہیں کہ خروج وقت ناقض وضوء معذور ہے ہاں اشراق کے وضو سے آخر تک نمازیں فرض و نفل پڑھ سکتا ہے کہ دخول وقت ناقض وضو نہیں، واللہ تعالیٰ اعلم۔ (۲) نماز بالاجماع باطل ہو گئی کہ خروج وقت و دخول وقت دونوں پائے گئے تو خلال نماز میں وضو جاتا رہا۔ ہاں اگر بعد قعدہ اخیرہ کے قبل سلام وقت جاتا رہے تو صاحبین کے نزدیک نماز ہو جائے گی اور امام کے نزدیک نہیں کما فی المسائل الاثنا عشریۃ (جیسا کہ بارہ مسائل والی صورت میں ہے۔ ت) اگر وقت قلیل رہ گیا اور خلال نماز میں خروج وقت کا اندیشہ ہے واجبات پر اقتصار کرے مثلاً ثنا و تعوذ و درود و دعا ترک کرے رکوع و سجود میں صرف ایک بار سبحانک کہے اور اگر واجبات کی بھی گنجائش نہیں تو بجائے فاتحہ صرف ایک آیت پڑھے غرض فرائض پر قناعت کرے اور خروج وقت مشکوک ہو جائے تو شک سے نہ وقت خارج مانا جائے گا نہ وضو ساقط لان الیقین لا یزول بالشك (اس لئے کہ یقین شک سے زائل نہیں ہوتا۔ ت) ہاں اگر اقتصار علی الفرائض پر بھی خروج وقت بالیقین ہو جائیگا تو اگر کسی امام کے نزدیک نماز ہو سکے گی اُس کے اتباع سے پڑھ لے فان الاداء الجائز عند البعض اولی من الترك کما فی الدر ۱ (بلا شبہ ایسی ادائیگی جو

بعض کے نزدیک جائز ہو، چھوڑنے کی نسبت اولی ہے جیسا کہ دُر مختار میں ہے۔ت) پھر قضا پڑھے اس وقت مذاہبِ دیگر کی طرف مراجعت کی مہلت نہ ملی۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۶۲: مسئولہ منشی حفیظ الدین صاحب مدرس مدرسہ اسلامیہ خیر المعاد ضلع رہتک ۲۶ محرم ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص بعارضہ بواسیر سخت مبتلا ہے

---

۱ در مختار کتاب الصلوۃ مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/۶۱ Page 375 of 761

Fatawa Rizvia Volume Four And his condition is such that day and night, all the hemorrhoids remain outside the rectum, and moisture keeps flowing from them all the time and keeps staining the trousers or sarong. It is impossible for this person to avoid it; in no way can he save his clothes. If he wears a loincloth underneath, that too gets soaked in a short time and makes the sarong or trousers impure. Yes, after defecating, he performs purification (Taharat) thoroughly and regularly. However, due to the moisture from the hemorrhoids, his clothes cannot remain pure in any way. So, if such a person performs prayer in that state without purifying the clothes, is his prayer valid or not? Please provide guidance according to the Sharia; may Allah Almighty grant you the reward.

The Answer: If the moisture does not flow out from the hemorrhoids but there is just wetness on their upper surface such that it touches the cloth and makes it damp, then the cloth will not become impure. He can perform prayer without hesitation, and in this case, its emergence will not break the wudu (ablution) either. "Because that which is not a ritual impurity (hadath) is not impure (najis)." Yes, when it flows out, it also breaks the wudu, and if it spreads to an area larger than a dirham (approx. size of a palm), it will also make the cloth impure. Since it flows continuously, he is considered "Ma'zoor" (excused); he should perform fresh wudu for each of the five prayer times. As for the cloth, if he believes that by changing into clean clothes to perform the obligatory prayer, he will be able to complete it before the impurity spreads more than a dirham, then it is mandatory for him to change clothes every time. However, if he knows that he will not have enough time to complete the obligatory prayer and the cloth will become just as impure again, then he is excused; he may pray in the same clothes. "Allah does not burden a soul beyond that it can bear." 1 (Allah Almighty does not task any soul beyond its capacity.) And Allah Almighty knows best.

1 Al-Quran 2/286

Page 376 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी और उसकी यह हालत है कि दिन-रात तमाम मस्से मक़अद (गुदा) से बाहर निकले रहते हैं और उनमें से हर वक़्त रुतूबत (नमी) जारी रहती है और पाजामा या तहबंद को लगती रहती है। इससे बचाव उस शख़्स के लिए नामुमकिन है, किसी सूरत से वह अपना कपड़ा नहीं बचा सकता। अगर नीचे लंगोट रखता है, तो वह भी ज़्यादा देर में तर होकर तहबंद या पाजामे को नापाक कर देता है। हाँ, पाख़ाने से फ़ारिग होने के बाद तहारत (शुद्धि) तो वह बख़ूबी बाक़ायदा कर लेता है, लेकिन मस्सों की नमी से उसका कपड़ा किसी सूरत से पाक नहीं रह सकता। पस, ऐसा शख़्स बग़ैर पाक किए कपड़े के वैसी हालत में नमाज़ अदा करे, तो यह नमाज़ उसकी जायज़ है या नहीं? शरीअत के मुताबिक हिदायत फरमाएं, अल्लाह तआला इसका जज़ा (पुण्य) देने वाला है।

अल-जवाब: मस्सों से अगर रुतूबत बहकर न निकले बल्कि उनकी ऊपरी सतह पर सिर्फ़ तरी हो कि कपड़ा लगकर उसे सोख ले, तो उससे कपड़ा नापाक न होगा। वह बेझिझक नमाज़ पढ़े और इस सूरत में उसके निकलने से वज़ू भी नहीं टूटेगा। "क्योंकि जो चीज़ हदस (अशुद्धि) नहीं, वह नापाक भी नहीं।" हाँ, जब बहकर निकलती है, तो वज़ू को भी तोड़ने वाली है और अगर एक दिरहम से ज़्यादा जगह में लग जाए, तो कपड़े को भी नापाक कर देगी। चूँकि वह हर वक़्त निकलती है, तो उसे 'माज़ूर' (विवश) का हुक्म है, वह पाँचों वक़्त नया वज़ू करे। रहा कपड़ा, अगर वह समझता है कि पाक कपड़ा बदलकर फ़र्ज़ पढ़ेगा तो एक दिरहम से ज़्यादा भरने से पहले फ़र्ज़ अदा कर लेगा, तो उस पर लाज़िम है कि हर वक़्त पाक कपड़ा बदले। और अगर जानता है कि फ़र्ज़ पढ़ने की मोहलत न मिलेगी और कपड़ा फिर उतना ही नापाक हो जाएगा, तो उसे माफ़ी है, वह उसी कपड़े में नमाज़ पढ़े। "अल्लाह किसी जान पर उसकी ताक़त से ज़्यादा बोझ नहीं डालता।" 1 (अल्लाह तआला किसी नफ़्स को उसकी ताक़त से ज़्यादा तकलीफ़ नहीं देता।) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

1 अल-क़ुरआन 2/286

पृष्ठ 376 का 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم اور اس کی یہ حالت ہے کہ شب و روز تمام مسے مقعد سے باہر نکلے ہوئے رہتے ہیں اور ان میں سے ہر وقت رطوبت جاری رہتی ہے اور پاجامہ یا تہبند کو لگتی رہتی ہے اس سے بچاؤ اس شخص کو غیر ممکن ہے کسی صورت سے وہ اپنا کپڑا نہیں بچا سکتا۔ اگر نیچے لنگوٹ رکھتا ہے تو وہ بھی زیادہ دیر میں تر ہو کر پارچہ تہبند یا پاجامہ کو ناپاک کر دیتا ہے ہاں بعد فراغِ اجابت طہارت تو وہ بخوبی باقاعدہ کر لیتا ہے رطوبت مسوں سے کپڑا اس کا کسی صورت سے پاک نہیں رہ سکتا پس ایسا شخص بغیر پاک کیے کپڑے کے ویسی حالت میں نماز ادا کرے تو یہ نماز اس کی جائز ہے یا نہیں بموجب شرع شریف کے ہدایت فرماؤ کہ اللہ تعالیٰ اس کی جزا دینے والا ہے۔

الجواب: مسوں سے اگر رطوبت بہہ کر نہ نکلے بلکہ ان کی سطح بالا تر پر تری ہو کہ کپڑا لگ کر چھڑا لائے جب تو اُس سے کپڑا ناپاک نہ ہو گا بے تکلف نماز پڑھے اور اس تقدیر پر اس کے نکلنے سے وضو بھی نہ جائے گالأن مایلیس بحدث لیس بنجس (کیونکہ جو چیز حدث نہیں وہ ناپاک بھی نہیں۔ت) ہاں جبکہ بہہ کر نکلتی ہے تو وضو کی بھی ناقض ہے اور درم بھر سے زائد جگہ میں ہو تو کپڑا بھی نجس کرے گی جبکہ وہ ہر وقت نکلتی ہے تو اسے حکم معذور ہے پانچ وقت تازہ وضو کرے۔ رہا کپڑا اگر سمجھتا ہے کہ پاک کپڑا بدل کر فرض پڑھے گا تو اُس کے ایک درم سے زائد بھرنے سے پیشتر فرض ادا کرلے گا جب تو اُس پر لازم ہے کہ ہر وقت پاک کپڑا بدلے اور اگر جانتا ہے کہ فرض پڑھنے کی مہلت نہ ملے گی اور کپڑا پھر اتنا ہی ناپاک ہو جائے گا تو اُسے معافی ہے اُسی کپڑے سے پڑھے لَا یُکَلِّفُ اللّٰہُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَہَاؕ 1 (اللہ تعالیٰ کسی نفس کو اس کی طاقت سے زیادہ تکلیف نہیں دیتا۔ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

1 القرآن ۲/۲۸۶

صفحہ 376 کا 761

Volume Four Fatawa Ridawiyya

Bab al-Anjas (Description of Impurities)

Problem 164: From Marahra Mutahhara, Bagh Pakhta, sent by Mr. Syed Muhammad Ibrahim, 13 Rajab 1306 AH. What do the scholars of religion say about this issue: what is the ruling on using elephant ivory? If a kohl container (surmadani) is made of elephant ivory or if it is mounted on a walking stick, is it permissible to keep them or not? Explain and be rewarded.

Answer: It is permissible.

Baihaqi reported from Baqiyya from Amr bin Khalid | Baihaqi reported from Baqiyya from Amr bin Khalid from Qatada from Anas.

Page 378 of 761

चौथा खंड फ़तावा रज़विय्या

बाब अल-अंजस (अशुद्धियों का वर्णन)

मसला 164: मारहरा मुतहरा, बाग पुख्ता से जनाब सैयद मुहम्मद इब्राहिम द्वारा भेजा गया, 13 रजब 1306 हिजरी। इस मसले में दीन के उलमा क्या फ़रमाते हैं कि हाथी दांत का उपयोग करना कैसा है? अगर सुरमेदानी हाथी के दांत की हो या उसे लाठी पर लगाया गया हो, तो क्या उन्हें रखना जायज़ है या नहीं? बयान फ़रमाएं और सवाब पाएं।

उत्तर: जायज़ है।

अल-बैहक़ी ने बक़िय्या से, अम्र बिन ख़ालिद से रिवायत की | बैहक़ी ने बक़िय्या से, अम्र बिन ख़ालिद से, क़तादा से, अनस से रिवायत की।

761 में से पेज 378

جلد چہارم فتاویٰ رضویہ

باب الانجاس (نجاستوں کا بیان)

مسئلہ ۱۶۴: از مارہرہ مطہرہ باغ پختہ مرسلہ جناب سید محمد ابراہیم صاحب ۱۳ رجب ۱۳۰۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہاتھی دانت کا استعمال کرنا کیسا ہے اگر سرمہ دانی دندان فیل کی ہو یا چوب دستی پر نصب کیا جائے تو رکھنا ان کا جائز ہے یا نہیں ۔ بینوا توجروا ۔

الجواب: جائز ہے۔

اخرج البیھقی عن بقیہ عن عمرو بن خالد | بیہقی نے بقیہ سے عمرو بن خالد سے قتادہ سے انس

Fatawa Razawiyya Volume Four

On the authority of Qatadah, from Anas bin Malik (may Allah be pleased with him), that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) used to comb his hair with a comb made of ivory. [1] (It is narrated) from [Anas] bin Malik (may Allah be pleased with him) that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) used to use an ivory comb. (T)

It is mentioned in Maraqi al-Falah: "Indeed it (i.e., the elephant) is like other predatory animals in the most correct opinion, etc. And Allah (Glorified and Exalted) knows best." [2] According to the most correct opinion, the elephant is like other predatory animals. And Allah, Glorified and Exalted, knows best. (T)

Problem 165: What do the scholars of religion say regarding this matter: A mouse fell into a jar of syrup (rub) and died. It did not swell or burst. It was taken out. Is this syrup pure or impure? And what is the method for purification? Explain and be rewarded.

The Answer: If the syrup is solidified, then remove the mouse and a little of the syrup from around it; the rest is all pure. It has been listed in Al-Durr al-Mukhtar and other books that 'scooping out' (taqwir) is among the methods of purification. [3] In Durr al-Mukhtar, etc., scraping out (the affected part) has been counted among the ways of purification. Allama Shami stated: i.e., scooping out around the impurity in something like solidified ghee. By specifying 'solidified', 'liquid' is excluded—meaning that which flows and merges together. Such liquid becomes entirely impure unless it reaches a large quantity (katheer). (End of Fath, summarized). [4] Allama Shami said this means scraping out the solidified (for example) ghee from around the impurity. From the word "solidified", liquid is excluded, i.e., that which merges together; all of it becomes impure unless it reaches the limit of 'katheer' (a large amount). (End of Fath al-Qadir, summary). (T) And if it (the syrup) was thin (liquid), then it all became impure. There are two ways to purify it: one is that however much syrup there is...

Footnotes: 1. Al-Sunan al-Kubra by al-Bayhaqi, Chapter on Prohibition of Oils in Elephant Bones, Published by Dar Sader Beirut, 1/26. 2. Maraqi al-Falah with annotations of al-Tahtawi, Chapter on what purifies animal skin, Nur Muhammad Karkhana Tijarat Karachi, p. 89. 3. Durr al-Mukhtar, Chapter on Impurities, Published by Mujtabai Delhi, 1/52. 4. Radd al-Muhtar, Chapter on Impurities, Published by Mustafa al-Babi Egypt, 1/231.

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

क़तादाह से मरवी है, उन्होंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हाथी के दाँत की कंघी इस्तेमाल फरमाया करते थे। [1] अनस बिन मालिक (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हाथी के दाँत का कंघा करते थे। (त)

मराकी-उल-फ़लाह में है: "बेशक यह (यानी हाथी) ज़्यादा सही क़ौल के मुताबिक़ अन्य दरिंदों की तरह है... और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है।" [2] सही क़ौल के मुताबिक़ हाथी बाक़ी दरिंदों की तरह है, वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आलम। (त)

मसला १६५: क्या फ़रमाते हैं उलमा-ए-दीन इस मसले में कि एक चूहा शीरे (रब) के घड़े में गिर कर मर गया, न फूला न फटा, उसे निकाल दिया गया। क्या यह शीरा पाक है या नापाक? और इसे पाक करने का तरीक़ा क्या है? बयान फरमाएं सवाब पायें।

जवाब: अगर वह शीरा जमा हुआ है, तो चूहे और उसके आस-पास का थोड़ा सा शीरा निकाल दें, बाक़ी सब पाक है। 'अल-दुर्रे मुख्तार' वग़ैरह में खुरच कर निकालने (तक़वीर) को पाक करने वाली चीज़ों में गिना गया है। [3] दुर्रे मुख्तार वग़ैरह में खुरच कर निकालने को पाक करने वाली चीज़ों में शुमार किया गया है। अल्लामा शामी ने फ़रमाया: यानी जमे हुए घी जैसी चीज़ को नजासत (गंदगी) के अतराफ़ (चारों ओर) से खुरच कर निकालना। लफ़्ज़ 'जामिद' (जमा हुआ/ठोस) से 'माए' (तरल) निकल गया, यानी जो तरल प्रवाहित होकर एक-दूसरे से मिल जाता हो, वह मुकम्मल तौर पर नापाक हो जाता है जब तक कि वह 'कसीर' (बहुत ज़्यादा) की हद तक न पहुँच जाए। (फत्हुल क़दीर का खुलासा)। [4] अल्लामा शामी ने फ़रमाया इसका मतलब यह है कि नजासत के अतराफ़ में जमा हुआ (मिसाल के तौर पर) घी खुरचना, लफ़्ज़ 'जामिद' से माए निकल गया यानी जो एक दूसरे से मिला हुआ हो वह तमाम का तमाम नापाक है जब तक कसीर की हद को न पहुँचे। (त) (ख़ुलासा फत्हुल क़दीर)। और अगर शीरा पतला (तरल) था तो सब नापाक हो गया और उसे पाक करने के दो तरीक़े हैं: एक यह कि जिस क़द्र शीरा हो...

पाद-टिप्पणियाँ: १. अल-सुनन अल-कुबरा, अल-बैहकी, बाबुल मनअ मिनल अदहान फी अज़ामिल फील, मतबुआ दार सादिर बेरुत, २६/१ २. मराकी-उल-फ़लाह अल हाशियतत-तहतावी, फ़सलुन युतहर्र, जिल्दुल मैयता, नूर मोहम्मद कारख़ाना तिजारत कराची, सफ़ा ८९ ३. दुर्रे मुख्तार, बाबुल

अनजास, मतबुआ मुज्तबाई दिल्ली, ५२/१ ४. रद-उल-मुहतार, बाबुल अनजास, मतबुआ मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, २३१/१

पृष्ठ ३७९ / ७११

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم

عن قتادہ عن انس بن مالک رضی اللہ تعالٰی عنہ ان النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کان یمتشط بمشط من عاج (1) بن مالک رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت ہے کہ حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم عاج کا کنگھا کرتے تھے۔ (ت)

مراقی الفلاح میں ہے: انہ (یعنی الفیل) کسائر السباع فی الاصح (2) الخ واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم۔ اصح قول کے مطابق ہاتھی باقی درندوں کی طرح ہے واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۱۶۵: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ چوہا رب کے گھڑے میں گر کر مر گیا پھولا پھٹا نہ تھا نکال دیا۔ یہ رب پاک یاناپاک، اور طریقہ تطہیر کیا ہے۔ بینوا توجروا۔

الجواب: اگر وہ رب جمی ہوئی ہے جب تو چوہا ہے کی گرد کی تھوڑی رب نکال دیں باقی سب پاک ہے۔ فقد عدّ فی الدرالمختار وغیرہ التقویر من المطھرات (3)۔ در مختار وغیرہ میں کھرچ کر نکالنے کو پاک کرنے والی چیزوں میں شمار کیا گیا ہے۔ قال العلامۃ الشامی ای تقویر نحو سمن جامد من جوانب النجاسۃ وخرج بالجامد المائع وھو مأینضم بعضہ الی بعض فآنہ ینجس کلہ مالم یبلغ القدر الکثیر اھ فتح (4) اھ ملخصاً۔ علامہ شامی نے فرمایا اس کا مطلب یہ ہے کہ نجاست کے اطراف میں جما ہوا (مثلاً) گھی کھرچنا، لفظ "جامد" سے مائع نکل گیا یعنی جو ایک دوسرے سے ملا ہوا ہو وہ تمام کا تمام ناپاک ہے جب تک کثیر کی حد کو نہ پہنچے اھ فتح القدیر، انتہی (خلاصہ)۔ (ت) اور اگر پتلی تھی تو سب ناپاک ہو گئی اور اس کے پاک کرنے کے دو طریقے ہیں: ایک یہ کہ جس قدر رب ہو

1۔ السنن الکبری للبیہقی، باب المنع من الادہان فی عظام الفیلتہ، مطبوعہ دار صادر بیروت، ۲۶/۱ 2۔ مراقی الفلاح علی حاشیہ الطحطاوی فصل یطہر جلد المیتتہ نور محمد کارخانہ تجارت کراچی ص ۸۹ 3۔ در مختار باب الانجاس مطبوعہ مجتبائی دہلی ۵۲/۱ 4۔ ردالمختار باب الانجاس مطبوعہ مصطفی البابی مصر ۲۳۱/۱

Fatawa Razawiyya, Volume 4

Mix as much water into it and boil it until the water burns away; do this three times. However, this takes time and it is not unlikely that the 'Raab' (thick syrup/molasses) might spoil.

(Arabic) Allamah Khusrow said in *Al-Durar*: If honey becomes impure, its purification is to pour water equal to its amount into it and boil it until it returns to its [original] state. Do this three times. (End of summary).

(Urdu) Allamah Khusrow stated in *Al-Durar*: If honey becomes impure, the method to purify it is to add an equal amount of water and boil it until only the honey remains. This should be done three times. (Summary ends). And in *Radd al-Muhtar*, it is mentioned from the commentary of Sheikh Ismail, who quoted from *Jami al-Fatawa*, that this is according to Imam Abu Yusuf (may Allah have mercy on him). Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) disagrees with this, but there is more leeway in the former opinion and the fatwa is based upon it. (End).

(Arabic) In *Radd al-Muhtar*, from the commentary of Sheikh Ismail, quoting *Jami al-Fatawa*: This is according to Abu Yusuf, contrary to Muhammad, and it is more accommodating, and upon it is the Fatwa.

And the research is that boiling after adding water is not a mandatory condition. The real objective is that the water particles mix thoroughly with the particles of the substance and then the water is separated three times. If this is achieved just by adding water and stirring, it is sufficient.

(Arabic) As stated in *Majma' al-Riwayah* and *Sharh al-Quduri*, and verified by Allamah Al-Khair al-Ramli in his fatwas, and supported by Allamah Shami in *Radd al-Muhtar*, so refer to it.

(Urdu) As clarified in *Majma' al-Riwayah* and *Sharh al-Quduri*. Allamah Ramli conducted research on this in his fatwas, and Allamah Shami supported it in *Radd al-Muhtar*. So refer to it.

The second easy and excellent method is to keep adding similar thin syrup (raab) until it is full and starts boiling over, and after flowing out for a distance of a hand span or two, the entire pitcher will become pure. Alternatively, take pure syrup in another pitcher and place both at a height, keeping an empty vessel below. Pour streams from both pitchers simultaneously so that they merge in the air and reach the vessel as a single stream; the entire syrup will become pure. In this way, the syrup will not be wasted either. However, caution must be exercised so that no drop of impure syrup reaches the vessel before or after the pure syrup; otherwise, even that pure syrup... [will become impure].

---

1. *Durar al-Hukkam Sharh Ghurar al-Ahkam*, Chapter on Purification of Impurities, published by Dar al-Sa'adah Beirut, 1/25.
2. *Radd al-Muhtar*, section on purification of oils and honey, published by Mustafa al-Babi Egypt, 1/225. Page 380 of 761

फतावा रज़विया, खंड 4

इसमें उतना ही पानी मिलाकर उबालें यहाँ तक कि पानी जल जाए, ऐसा तीन बार करें लेकिन इसमें समय लगता है और कोई आश्चर्य नहीं कि राब (गाढ़ी चाशनी) खराब हो जाए।

(अरबी) अल्लामा खुसरो ने अल-दुरर में फरमाया: यदि शहद नापाक (अशुद्ध) हो जाए तो उसे शुद्ध करने का तरीका यह है कि उसमें उतना ही पानी डालकर उबाला जाए यहाँ तक कि वह अपनी पूर्व स्थिति में वापस आ जाए। ऐसा तीन बार किया जाए। (सारांश समाप्त)।

(अरबी) और रद-उल-मुहतार में शेख इस्माइल की व्याख्या से, जामे-उल-फतावा के हवाले से: यह अबू यूसुफ के अनुसार है, मुहम्मद के विपरीत, और यह अधिक व्यापक है और इसी पर फतवा है।

(उर्दू) अल्लामा खुसरो ने अल-दुरर में फरमाया: यदि शहद नापाक हो जाए तो उसे पाक करने का तरीका यह है कि उसमें उतना ही पानी डालकर उबाला जाए यहाँ तक कि केवल शहद रह जाए, तीन बार इसी तरह किया जाए। (सारांश समाप्त)। और रद-उल-मुहतार में शेख इस्माइल की शरह से है, उन्होंने जामे-उल-फतावा से उद्धृत किया कि यह हज़रत इमाम अबू यूसुफ (रह.) के निकट है, इमाम मुहम्मद (रह.) का इसमें मतभेद है, लेकिन इसमें अधिक विस्तार है और इसी पर फतवा है।

और शोध यह है कि पानी मिलाकर उबालना कोई अनिवार्य शर्त नहीं है। मुख्य उद्देश्य यह है कि पानी के अंश उस वस्तु के अंशों के साथ अच्छी तरह मिल जाएँ और पानी तीन बार अलग हो जाए। यदि यह बात केवल पानी मिलाकर हिलाने से प्राप्त हो जाए तो पर्याप्त है।

(अरबी) जैसा कि मजमा-उर-रिवाया और शरह कुद्दूरी में स्पष्ट किया गया है और अल्लामा अल-खैर अल-रमीली ने अपने फतवों में इसकी पुष्टि की है और अल्लामा शामी ने रद-उल-मुहतार में इसका समर्थन किया है, अतः इसे देखें।

(उर्दू) जैसा कि मजमा-उर-रिवाया और शरह कुद्दूरी में इसकी स्पष्टता की गई है, अल्लामा रमली ने अपने फतावा में इसकी तहकीक फ़रमाई और अल्लामा शामी ने रद-उल-मुहतार में इसकी ताईद की है, अतः इसकी ओर रुजू करें।

दूसरा आसान और उत्तम तरीका यह है कि उसमें वैसी ही पतली राब डालते रहें यहाँ तक कि वह भरकर उबलने लगे और उबलकर एक-दो हाथ बह जाए, सारा घड़ा पाक हो जाएगा। या दूसरे घड़े में पाक राब लें और दोनों को ऊँचाई पर रखें, नीचे खाली बर्तन रख लें, ऊपर से दोनों घड़ों की धारें मिलाकर छोड़ें कि हवा में दोनों मिलकर एक धार बनकर बर्तन में पहुँचें, सारी राब पाक हो जाएगी। इस तरह राब बर्बाद भी नहीं होगी, मगर इसमें सावधानी यह है कि नापाक राब की कोई बूंद बर्तन में पाक राब से पहले या बाद में न पहुँचे, वरना वह पाक भी... [नापाक हो जाएगी]।

---

1. दुररुल अहकाम शरह गुररुल अहकाम, अपवित्रता की शुद्धि का अध्याय, दारुस सआदह बेरूत द्वारा प्रकाशित 1/25।
2. रद-उल-मुहतार, तेल और शहद की शुद्धि के विषय पर, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र द्वारा प्रकाशित 1/225। पेज 380 / 761

اتنا ہی پانی اس میں ملا کر جوش دیں یہاں تک کہ پانی جل جائے، تین بار ایسا ہی کریں مگر اس میں وقت ہے اور عجب نہیں کہ راب خراب ہوجائے۔

قال العلامۃ خسرو فی الدرر لوتنجس العسل فتطہیرہ ان یصب فیہ ماء بقدرہ فیغلی حتی یعود الی مکانہ ھکذا ثلث مرات ۱ اھ ملخصا۔

علامہ خسرو نے الدرر میں فرمایا: اگر شہد ناپاک ہوجائے تو اسے پاک کرنے کا طریقہ یہ ہے کہ اس میں اتنا ہی پانی ڈال کر جوش دیا جائے یہاں تک کہ صرف شہد رہ جائے تین بار اسی طرح کیا جائے (انتہی) تلخیص۔

وفی ردالمحتار عن شرح الشیخ اسمعیل عن جامع الفتاوٰی ھذا عند ابی یوسف خلافاً لمحمد و ہو اوسع وعلیہ الفتوٰی ۲ اھ

اور ردالمحتار میں شرح شیخ اسمعیل سے ہے انہوں نے جامع الفتاوٰی سے نقل کیا کہ یہ حضرت امام ابو یوسف رحمہ اللہ کے نزدیک ہے امام محمد رحمہ اللہ کا اس میں اختلاف ہے، لیکن اس میں زیادہ وسعت ہے اور اسی پر فتوٰی ہے۔ اھ (ت)

اور تحقیق یہ ہے کہ پانی ملا کر جوش دینا کچھ شرط نہیں اصل مقصود یہ ہے کہ پانی کے اجزاء اس شے کے اجزاء سے خوب خلط ہوکر پانی تین بار جدا ہو جائے یہ بات اگر صرف پانی ملا کر حرکت دینے سے حاصل ہوجائے کافی ہے۔

کما صرح بہ فی مجمع الروایۃ وشرح القدوری وحققہ العلامۃ الخیر الرملی فی فتاواہ وایدہ العلامۃ الشامی فی ردالمحتار فراجعہ۔

جیسا کہ مجمع الروایۃ اور شرح قدوری میں اس کی تصریح کی گئی ہے، علامہ رملی نے اپنے فتاوٰی میں اس کی تحقیق فرمائی اور علامہ شامی نے ردالمحتار میں اس کی تائید کی ہے پس اس کی طرف رجوع کرو۔ (ت)

دوسرا طریقہ سہل و عمدہ یہ ہے کہ اُس میں ویسی ہی پتلی راب ڈالتے رہیں یہاں تک کہ بھر کر ابلنا شروع ہو اور اُبل کر ہاتھ دو ہاتھ بہہ جائے سارا گھڑا پاک ہوجائے گا یا دوسرے گھڑے میں پاک راب لیں اور دونوں کو بلندی پر رکھیں نیچے خالی دیگچہ رکھ لیں اوپر سے دونوں گھڑوں کی دھاریں ملا کر چھوڑیں کہ ہوا میں دونوں مل کر ایک دھار ہو کر دیگچہ میں پہنچیں ساری راب پاک ہوجائے گی، یوں راب ضائع بھی نہ ہو جائے گی مگر اس میں احتیاط یہ ہے کہ ناپاک راب کی کوئی بوند دیگچہ میں پاک راب سے نہ پہلے پہنچنے نہ بعد، ورنہ وہ پاک بھی

---

1 درر الحکام شرح غرر الاحکام باب تطہیر الانجاس مطبوعہ دارالسعادۃ بیروت ۱/۲۵ 2 ردالمحتار، مطلب فی تطہیر الدہن والعسل مطبوعہ مصطفٰی البابی مصر ۱/۲۲۵

Fatawa Ridawiyya, Volume 4

...it will become impure. Therefore, it is better to first start the flow of pure [liquid], then mix the flow of impure [liquid] into it, and stop the flow of impure liquid first, then stop the flow of pure liquid. In this process, if impure treacle remains in the pitcher and the pure one finishes, fill the small pot again from the pure pitcher and start it with the remaining part so that whatever has reached the pot is purified. These methods are not specific to treacle; any flowing thing can be purified by mixing it with its own kind in this way: milk with milk, oil with oil, vinegar with vinegar, juice with juice, and so on.

Arabic	Urdu
In Al-Quhistani: A liquid, like water, molasses, etc., is purified by letting it flow while mixed with its own kind, as narrated from [Imam] Muhammad, and as mentioned in Al-Timirtashi. Or it can be purified by mixing it with water, etc.	In Quhistani, it is stated: Liquid, such as water and syrup etc., becomes pure by mixing it with its own kind and letting it flow, as narrated from Imam Muhammad (may Allah have mercy on him). It is the same in Timirtashi, or it should be purified by mixing with water etc. (T)

The complete research on this issue is in Radd al-Muhtar. "Whoever wishes, let him refer to it." (Whoever wants to obtain research, he should refer to Radd al-Muhtar etc. T) And Allah Almighty knows best.

Issue 166: What do the scholars of religion say regarding this issue: if sweat occurs in a state of ritual impurity (janabat) and clothes become wet, will they become impure (najis) or not? Clarify and be rewarded.

Answer: No, the sweat of a person in janabat is pure, like their saliva.

Arabic	Urdu
In Al-Durr al-Mukhtar: The leftover water of a human is absolutely pure, even if they are in janabat or a disbeliever, and the ruling for sweat is like that of leftover water. (Summarized) And Allah Almighty knows best.	In Durr-e-Mukhtar, it is stated: "The leftover of a human is absolutely pure, whether they are in janabat or a disbeliever, and the ruling for sweat is like that of leftover water." (Ended) Summarized. And Allah Almighty knows best. (T)

1 Jami' al-Rumuz, Chapter: Purifying things, etc., published by Al-Maktaba al-Islamiyya, Gumbad Qamus, Iran, 1/95 2 Radd al-Muhtar, Chapter: Waters, published by Mujtabai, Delhi, 1/124 3 Durr-e-Mukhtar, Chapter: Waters, published by Mujtabai, Delhi, 1/40

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 4

...नापाक हो जाएगी। लिहाज़ा बेहतर यह है कि पहले पाक (शुद्ध) की धार छोड़ें, फिर उसमें नापाक की धार मिलाएँ और नापाक का हाथ पहले रोक लें, उसके बाद पाक का हाथ रोकें। इसमें अगर नापाक राब (शीरा) घड़े में बाकी रह जाए और पाक खत्म हो जाए, तो दोबारा पाक घड़े से देगची भर लें और बाक़ी के साथ जारी कर दें, ताकि देगची में जितना पहुँच चुका है वह पाक हो जाए। यह तरीके केवल राब के लिए ही नहीं हैं, बल्कि हर बहने वाली चीज़ को उसकी अपनी ही क़िस्म से मिलाकर इसी तरह पाक किया जा सकता है: दूध को दूध से, तेल को तेल से, सिरके को सिरके से, रस को रस से और इसी तरह अन्य चीज़ों को।

अरबी	उर्दू
अल-कुहिस्तानी में है: तरल पदार्थ जैसे पानी, शीरा आदि, अपनी ही श्रेणी की वस्तु के साथ बहाने से शुद्ध हो जाते हैं, जैसा कि इमाम मुहम्मद से वर्णित है और अल-तिमिरताशी में भी उल्लेख है। अथवा जल आदि के साथ मिलाकर उसे शुद्ध किया जा सकता है।	कुहिस्तानी में है: तरल पदार्थ, जैसे पानी और शीरा आदि, अपनी ही श्रेणी की चीज़ के साथ बहाने से पाक हो जाते हैं, जैसा कि इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैहि) से वर्णित है। तिमिरताशी में भी ऐसा ही है, या पानी के साथ मिलाकर पाक किया जाए इत्यादि। (त)

इस मसले की मुकम्मल तहकीक रद-उल-मुहतार में है। "जो चाहे उसकी ओर रुजू करे" (जिसे तहकीक हासिल करनी हो वह रद-उल-मुहतार की तरफ रुजू करे इत्यादि। त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला १६६: उलमा-ए-दीन इस बारे में क्या कहते हैं कि अगर जनाबत (अशुद्धि) की हालत में पसीना आए और कपड़े गीले हो जाएँ तो क्या वे नापाक हो जाएँगे या नहीं? बयान फरमाएं सवाब मिलेगा।

जवाब: नहीं, जनाबत की हालत में इंसान का पसीना उसके थूक की तरह पाक (शुद्ध) है।

अरबी	उर्दू
अद-दुर-रे-मुख़्तार में है: मनुष्य का बचा हुआ जल पूर्णतः शुद्ध है, चाहे वह जनाबत की अवस्था में हो या अविश्वासी, और पसीने का नियम जूठे जल के	दुर-रे-मुख़्तार में है: "इंसान का जूठा (पानी) मुतलक़न (पूरी तरह) पाक है, चाहे वह जनाबत की हालत में हो या काफ़िर हो, और पसीने का

अरबी	उर्दू
समान ही है। (संक्षिप्त) और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।	हुक्म भी जूठे पानी जैसा ही है।" (समाप्त) मुख़्तसर। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

1 जामे-उर-रुमोज़, फ़स्ल: वस्तुओं को शुद्ध करना इत्यादि, अल-मकतबा अल-इस्लामिया, गुम्बद क़ामूस, ईरान, 1/95 2 रद-उल-मुहतार, बाब: पानी, मुजतबाई, दिल्ली, 1/124 3 दुर-रे-मुख़्तार, बाब: पानी, मुजतबाई, दिल्ली, 1/40

فتاوی رضویہ جلد چہارم

ناپاک ہو جائیگی لہٰذا بہتر یوں ہے کہ پاک کی دھار پہلے چھوڑیں بعدہ اس میں ناپاک کی دھار ملائیں اور ناپاک کا ہاتھ پہلے روک لیں بعدہ پاک کا ہاتھ روکیں اس میں اگر ناپاک راب گھڑے میں باقی رہ جائے اور پاک ختم ہو جائے دوبارہ پاک گھڑے میں دیگچہ سے بھر لیں اور باقیماندہ کے ساتھ جاری کر دیں کہ دیگچہ میں جتنی پہنچ چکی ہے پاک ہوئی ہے اور یہ طریقے کچھ راب ہی سے خاص نہیں ہر بہتی چیز اپنی جنس سے ملا کر یونہی پاک کر سکتے ہیں دودھ سے دودھ، تیل سے تیل، سرکہ سے سرکہ، رس سے رس وعلی ہذا القیاس۔

عربی

في القهستاني المائع كالماء والدبس وغيرهما طهارته بأجرائه مع جنسه مختلطا به كما روي عن محمد كما في التمر تاشي واما بالخلط مع الماء الخ-

اردو

قہستانی میں ہے مائع، جیسے پانی اور شیرہ وغیرہ کو اس کی جنس سے ملا کر دھار چھوڑنے سے پاک ہو جاتا ہے جیسا کہ امام محمد رحمہ اللہ سے مروی ہے، تمر تاشی میں ایسے ہی ہے، اور یا پانی کے ساتھ ملا کر پاک کیا جائے الخ۔(ت)

اس مسئلہ کی تحقیق تام ردالمحتار میں ہے۔ من شاء فلیرجع الیہ (جو تحقیق حاصل کرنا چاہے وہ ردالمحتار کی طرف رجوع کرے الخ۔ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۶۶: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ حالتِ جنابت میں اگر پسینہ آئے اور کپڑے تر ہو جائیں تو نجس ہو جائیں گے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: نہیں جنب کا پسینہ مثل اس کے لعاب دہن کے پاک ہے۔

عربی **اردو**

في الدرالمختار سؤر الآدمي مطلقا ولو جنبا در مختار میں ہے: "آدمی کا جھوٹا مطلقاً پاک ہے چاہے

اوکافرا طاھر وحکم العرق کسؤر اھ جنبی ہو یا کافر ہو، اور پسینے کا حکم جھوٹے جیسا

ملخصا واللہ تعالیٰ اعلم۔ ہے (انتی) ملخصاً واللہ تعالیٰ اعلم۔(ت)

1 جامع الرموز فصل یطھر الشیئی الخ مطبوعہ المکتبۃ الاسلامیہ گنبد قاموس ایران ۱/۹۵ 2

ردالمحتار باب المیاہ مطبوعہ مجتبائی دہلی، ۱/۱۲۴ 3 در مختار باب المیاہ مطبوعہ مجتبائی دہلی

۱/۴۰

Fatawa Razawiya - Volume 4

Question 167: From Calcutta, Faujdari Balakhana 36, sent by Mr. Mirza Ghulam Qadir Baig, 30th Rabi-ul-Awwal 1308 AH. What do the scholars of religion say about this matter: sugar candy was wrapped in a red-colored paper, about which there is a strong suspicion that it was dyed with the color of the packet (which may contain spirit). Some of its redness has transferred into the sugar candy. Should that sugar candy be eaten or not? If not to be eaten, should it be thrown away or what should be done? Please explain and be rewarded.

The Answer: The humble servant (the author) has much to say regarding giving a fatwa on the impurity of the packet. The gist of it is that even if the presence of spirit in the packet (1) is proven through Sharia-compliant methods, there is no doubt (2) that Indians are commonly affected by its coloring, and 'Umoom-e-Balwa' (widespread affliction) in a matter of agreed-upon impurity is a cause for mitigation (takhfeef).

Even in the place of a definitive text (nass-e-qat'i), such as drops of urine the size of a needle's point	**even until the place of a definitive text like the tip of a needle, sprinkles of urine (are a cause of mitigation), as the Absolute Researcher has verified in 'Fath al-Qadeer'. (T)**

قدر رؤس الابر كما حققه المحقق
على الاطلاق في فتح القدير 1.

Let alone a matter of disagreement that has persisted from the time of the Companions to the era of the Mujtahidin. Even where the original position of the masters of the school, Imam Azam and Imam Abu Yusuf, is purity (taharat), and there is also a narration from the third Imam, Imam Muhammad, to that effect, which Imam Tahawi and other masters of preference and correction have preferred and validated. In such a situation, where the considerations that led later jurists to deviate from the original position and accept another narration of Imam Muhammad do not apply—rather, when the opposite consideration warrants leaving that and giving fatwa according to the original position—then, to leave the refined school of the master of the school (may Allah be pleased with him) without reason, and indeed contrary to reason, thereby putting Muslims into distress and hardship, and declaring the prayers of common believing men and women throughout the regions of India to be void (God forbid) and labeling them as sinners and persistent in major sins ('asim wa musirr 'ala al-kabeera), is to fall far from enlightened jurisprudence.

And with Allah is the guidance. Furthermore, regarding this paper, there is no certainty that it was dyed from the packet itself. Mere suspicion, even if strong, as long as it does not reach such a level of strength and dominance that the other possibility becomes completely weak and abandoned in its presence, can never oppose the original state of purity. I have verified this by the grace of Allah in my treatise 'Al-Ahla min al-Sukkar li-Talabati Sukkar wa Sukkar'.

---

1 Fath al-Qadeer, Chapter of Impurities (Bab al-Anjas), published by Nooriya Razawiya Sukkur, 1/183.

फ़तावा रज़विया - खंड 4

प्रश्न 167: कलकत्ता, फौजदारी बालाखाना 36 से, जनाब मिर्जा गुलाम कादिर बेग साहब द्वारा प्रेषित, 30 रबी-उल-अव्वल 1308 हिजरी। दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि मिश्री एक लाल रंग के कागज़ में लिपटी हुई थी, जिसके बारे में प्रबल आशंका है कि वह पुड़िया (जिसमें शायद स्पिरिट हो) के रंग से रंगा गया हो। उस लाल रंग का कुछ अंश मिश्री में आ गया है, तो क्या वह मिश्री खाई जाए या नहीं? और अगर न खाएं तो उसे फेंक दें या क्या करें? उत्तर दें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: पुड़िया की अशुद्धता (नजासत) पर फतवा देने के बारे में इस फकीर (लेखक) के पास बहुत कुछ कहने को है। इसका सारांश यह है कि पुड़िया में स्पिरिट का मिलना अगर (1) शरिया के अनुसार प्रमाणित भी हो जाए, तो इसमें (2) कोई संदेह नहीं है कि भारतीयों के लिए इसके रंग का प्रभाव 'उमूम-ए-बलवा' (व्यापक समस्या) है, और सर्वसम्मत अशुद्धता के मामले में 'उमूम-ए-बलवा' छूट (तख़्फ़ीफ़) का कारण बनता है।

यहाँ तक कि स्पष्ट निर्देश (नस-ए-क़तई) के मामले में भी, जैसे कि सुई की नोक के बराबर पेशाब की बूंदें

यहाँ तक कि नस-ए-क़तई की जगह में जैसा कि सुई के सिरे के बराबर पेशाब के छींटे (छूट का कारण हैं), जैसा कि मुहाक़्क़िक़ अली अल-इतलाक़ ने 'फ़तह अल-क़दीर' में शोध किया है। (त)

قدر رؤس الابر كما حققه
المحقق على الاطلاق في فتح
القدير 1.

न कि उस विवादित मामले में जो सहाबा के समय से लेकर मुजतहिदीन के युग तक निरंतर चला आ रहा है। न ही वहां जहां मज़हब के इमाम, हज़रत इमाम आज़म और इमाम अबू यूसुफ का मूल मत शुद्धता (तहारत) हो, और यही मत तीसरे इमाम, इमाम मुहम्मद से भी एक रिवायत में हो, जिसे इमाम तहावी और अन्य प्रमुख विद्वानों ने श्रेष्ठ और सही माना हो। ऐसी स्थिति में, जहाँ वे हित भी न हों जिन्होंने बाद के मुफ्तियों को मूल मत छोड़ने और इमाम मुहम्मद की दूसरी रिवायत अपनाने के लिए प्रेरित किया—बल्कि जब इसके विपरीत हित इसे छोड़ने और मूल मत पर फतवा देने का कारण बनें—तो ऐसी जगह बिना किसी कारण के, बल्कि कारण के विरुद्ध, इमाम-ए-मज़हब (रज़ियल्लाहु अन्हु) के परिष्कृत मत को छोड़कर मुसलमानों को कठिनाई और संकट में डालना, और भारत के सभी

क्षेत्रों के आम मोमिन पुरुषों और महिलाओं की नमाजों को (खुदा न करे) अमान्य घोषित करना और उन्हें पापी और बड़े गुनाहों पर अड़े रहने वाला (आसिम व मुसिर अलल कबीरा) करार देना, प्रबुद्ध न्यायशास्त्र से पूरी तरह दूर होना है। और सफलता अल्लाह की ओर से है। फिर उस कागज़ के बारे में तो यह भी निश्चित नहीं है कि वह पुड़िया से ही रंगा गया हो। और केवल संदेह, चाहे वह कितना ही प्रबल क्यों न हो, जब तक वह शक्ति और प्रभुत्व के उस स्तर तक न पहुँच जाए कि दूसरा विकल्प उसके सामने पूरी तरह कमजोर और परित्यक्त हो जाए, कभी भी मूल शुद्धता का विरोधी नहीं हो सकता। जैसा कि मैंने अल्लाह के अनुग्रह से अपनी पुस्तक 'अल-अहला मिन अल-सुक्कर लि-तलबाति सुक्कर व सुक्कर' में इसे सिद्ध किया है।

---

1 फ़तह अल-क़दीर, अशुद्धियों का अध्याय (बाब अल-अन्जास), नूरिया रज़विया सुक्कुर द्वारा प्रकाशित, 1/183।

पृष्ठ 382/761

مسئلہ ۱۶۷: از کلکتہ فوجداری بالاخانہ ۳۶ مرسلہ جناب مرزا غلام قادر بیگ صاحب ۳۰ ربیع الاول شریف ۱۳۰۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مصری ایک سرخ رنگ کے کاغذ میں جس کی نسبت قوی گمان ہے کہ پڑیا کے رنگ میں رنگا گیا ہو بند تھی اس کی سرخی فی الجملہ مصری میں آگئی تو وہ مصری کھائی جائے یا نہیں اور نہ کھائیں تو پھینک دیں یا کیا کریں بینوا توجروا۔

الجواب: پڑیا کی نجاست پر فتوی دئے جانے میں فقیر کو کلام کثیر ہے مخلص اس کا یہ کہ پڑیا میں اسپرٹ کا ملنا اگر (۱) بطریقہ شرعی ثابت بھی ہو تو اس (۲) میں شک نہیں کہ ہندیوں کو اس کی رنگت میں ابتلائے عام ہے اور عموم بلوے نجاست متفق علیہا میں باعث تخفیف۔

حتی فی موضع النص القطعی کما فی ترشش البول

حتی کہ نص قطعی کی جگہ میں جیسا کہ سوئی کے سرے برابر پیشاب کے چھینٹے (باعث تخفیف ہیں) جیسا کہ محقق علی الاطلاق نے فتح القدیر میں تحقیق فرمائی ہے۔(ت)

قدر رؤس الابر کما حققه المحقق علی الاطلاق في فتح القدیر 1۔

نہ کہ محل اختلاف میں جو زمانہ صحابہ سے عہد مجتہدین تک برابر اختلافی چلا آیا نہ کہ جہاں صاحب مذہب حضرت امام اعظم وامام ابو یوسف کا اصل مذہب طہارت ہو اور وہی امام ثالث امام محمد سے بھی ایک روایت اور اسی کو امام طحاوی وغیرہ ائمہ ترجیح وتصحیح نے مختار ومریح

رکھا ہو نہ کہ ایسی حالت میں جہاں اس مصلحت کو بھی دخل نہ ہو جو متأخرین اہل فتوی کو اصل مذہب سے عدول اور روایت اخری امام محمد کے قبول پر باعث ہوئی نہ کہ جب مصلحت الٹی اس کے ترک اور اصل مذہب پر افتا کی موجب ہو تو ایسی جگہ بلاوجہ بلکہ برخلاف وجہ مذہب مہذب صاحب مذہب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو ترک کرکے مسلمانوں کو ضیق وحرج میں ڈالنا اور عامہ مؤمنین ومؤمنات جمیع دیار واقطار ہندیہ کی نمازیں معاذ اللہ باطل اور انہیں آثم ومصر علی الکبیرہ (گناہ گار اور گناہ کبیرہ پر اصرار کرنے والا ۔ت) قرار دینا روشن فتہی سے یکسر دور پڑنا ہے وباللہ التوفیق۔ پھر اس کاغذ میں تو یقین بھی نہیں کہ پڑیا ہی سے رنگا گیا ہو اور صرف گمان اگرچہ قوی ہو جب تک اس درجہ قوت وشوکت کو نہ پہنچے کہ دوسرا احتمال اس کے حضور محض مضمحل ومہجور ہوجائے ہرگز اصل طہارت کا معارض نہیں ہو سکتا کما حققت ذلک بتوفیق اللہ تعالی فی رسالتی الاحلی من السکر لطلبۃ سکرروسر

---

1 فتح القدیر باب الانجاس مطبوعہ نوریہ رضویہ سکھر ۱ / ۱۸۳

Volume Four Fatawa Rizvia (As I have researched in my treatise 'Al-Ahla min-as-Sukkar li-Tulabat-is-Sukkar wa Samar' with the success granted by Allah the Almighty. -T) And if sugar candy (misri) becomes impure, it is not permissible to throw it away because that would be a waste of wealth, and wasting wealth is forbidden. In fact, if there are large, solid pieces from which the impurity can be scraped off and removed, then that should be done, as this method is also sufficient for purification. As specified in the issue of scraping ghee in 'Al-Durr al-Mukhtar' and other works by the great scholars. (As the jurists have stated in the matter of scraping ghee, as quoted from the books of great scholars in 'Al-Durr al-Mukhtar', etc. -T) And if there are small fragments from which scraping is not possible, or if the impurity has penetrated deep into the core such that scraping won't remove it, then melt the sugar candy into a syrup until it becomes very thin and liquid. Simultaneously, melt other pure sugar candy until it reaches the same state. Now, immediately while they are in a thin and flowing state, keep pouring this pure sugar candy into the vessel of the impure one until it fills up, starts to boil over, and some of it flows out; then all of it becomes pure. Or, merge the streams of both pure and impure sugar candy into a third empty vessel such that a drop of the impure sugar candy doesn't reach that vessel before the pure one, nor after, but both streams merge in mid-air and fall into the vessel as one; then all of it will become pure, as we have explained in our Fatawa. (As we have explained in our Fatawa. -T) And Allah the Glorified and Most High knows best.

Issue 168: Likewise. The sugar from Rosa, like the one made in Shahjahanpur, which is famously said to be purified with bone ash - is it permissible or forbidden to eat? State the answer and be rewarded.

Answer: It is lawful (halal) until it is proven that some impure or forbidden substance has been mixed into this specific sugar placed before us. The scribe of the school of thought, our master Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him), states: "Bah na'khudhu ma lam na'rif shay'an haraman bi-'aynih" - We shall adopt [permissibility] as long as we do not know something to be forbidden in its essence. (T) By the grace of Allah Almighty, this humble servant has written a comprehensive and sufficient treatise on the research of this sugar, titled with the chronogram 'Al-

Ahla min-as-Sukkar li-Tulabat-is-Sukkar wa Samar' in 1303 AH, in which not only this sugar but all such items and English medicines, syrups...

1. Fatawa 'Alamgiri, Chapter Two on Gifts and Hospitalities, Noorani Kutub Khana Peshawar, 5/342 Page 383 of 761

जिल्द चौथी फ़तावा रज़विया (जैसा कि मैंने अल्लाह तआला की तौफीक से अपने रिसाला 'अल-अहला मिन-अस-सुक्कर लि-तुलबत-इस-सुक्कर व समर' में इसकी तहक़ीक़ की है। -त) और जहाँ मिसरी नापाक हो जाए तो उसका फेंक देना जायज़ नहीं क्योंकि यह माल को बर्बाद करना है और माल को बर्बाद करना हराम है। बल्कि अगर उसके बड़े-बड़े टुकड़े ठोस हैं जिनसे गंदगी खुरच कर दूर की जा सकती है, तो ऐसा ही करें क्योंकि यह तरीका भी पाक करने के लिए काफी है। जैसा कि बड़े फुक़हा ने घी खुरचने के मसले में वज़ाहत की है, जैसा कि 'दुर्रे मुख्तार' और अक़ाबिर की अन्य किताबों में वर्णित है। (जैसा कि फुक़हा-ए-किराम ने घी खुरचने के मसले में बयान फरमाया जिस तरह 'दुर्रे मुख्तार' वगैरा में अक़ाबिर की किताबों से मनकूल है। -त) और अगर छोटे रेज़े हैं जिनसे खुरचना मुमकिन नहीं या गंदगी अंदर तक चली गई है कि खुरचने से नहीं जाएगी, तो मिसरी को पिघलाकर चाशनी (क़वाम) बना लें ताकि वह खूब पतला और तरल हो जाए और इसके साथ ही दूसरी पाक मिसरी की भी चाशनी बना लें ताकि वह भी उसी हालत में आ जाए। अब फ़ौरन पतली और तरल हालत में ही यह पाक मिसरी उस नापाक के बर्तन में डालते जाएँ यहाँ तक कि भरकर उबलने लगे और कुछ बह जाए, तो सब पाक हो गई। या दोनों मिसरियों पाक और नापाक की धार मिलाकर तीसरे खाली बर्तन में छोड़ें कि नापाक मिसरी की एक बूँद भी उस पाक से पहले उस बर्तन में न पहुँचे और न बाद में, बल्कि हवा में दोनों की धार एक होकर बर्तन में गिरे तो सब पाक हो जाएगी, जैसा कि हमने अपने फतावा में बयान किया है। (जैसा कि हमने इसे अपने फतावा में बयान किया है। -त) वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आलम (और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है)।

मसला १६८: ऐज़ां (वही)। रोसा की शक्कर जैसी शाहजहाँपुर में बनती है और उसके बारे में मशहूर है कि वह हड्डी की राख से साफ़ की जाती है, उसका खाना जायज़ है या नाजायज़? जवाब दें और सवाब पायें।

अल-जवाब: हलाल है जब तक तहक़ीक़ न हो कि इस खास शक्कर में जो हमारे सामने रखी है, कोई नापाक या हराम चीज़ मिली है। मज़हब के मुहर्रिर (लिखने वाले) हमारे सरदार इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि) फरमाते हैं: "ब नआख़ुज़ु मा लम् नअरिफ़ शैअन हरमन बि-ऐनिह" - हम इसे अपनाएंगे जब तक कि हमें किसी चीज़ का असल में हराम होना मालूम न हो। (त) फ़कीर (मुसन्निफ़) ने इस शक्कर की तहक़ीक़ में अल्लाह तआला के फज़ल से एक काफी और मुकम्मल रिसाला लिखा जिसका तारीखी नाम 'अल-अहला मिन-अस-सुक्कर लि-तुलबत-इस-सुक्कर व समर'

(१३०३ हिजरी) है, जिसमें न सिर्फ इस शक्कर बल्कि इस तरह की तमाम चीज़ों और अंग्रेज़ी दवाओं, शरबतों...

1. फतावा आलमगिरी, अध्याय २, उपहारों और मेज़बानी के बारे में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, ५/३४२ पेज ३८३ / ७६१

جلدچہارم فتاوٰی رضویہ (جیسا کہ میں نے اللہ تعالٰی کی توفیق سے اپنے رسالہ الاحلی من السکر لطلبۃ سکر وسمر میں اس کی تحقیق کی ہے۔ ت) اور جہاں مصری ناپاک ہو جائے تو اس کا پھینک دینا روا نہیں کہ اضاعت مال ہے اور اضاعت مال حرام بلکہ اگر اس کے بڑے بڑے ٹکڑے دلدار ہیں جن پر سے کھرچ کر نجاست کو دُور کر سکتے ہیں جب تو یوں ہی کریں کہ یہ طریقہ بھی تطہیر کیلئے کافی ہے۔ کما نصوا علیه في مسئلة تقویر السمن کما في الدر المختار وغیرہ من اسفار الکبار (جیسا کہ فقہاء کرام نے گھی کھرچنے کے مسئلہ میں بیان فرمایا جس طرح درمختار وغیرہ میں اکابر کی کتب سے منقول ہے۔ ت) اور اگر ریزے ہیں جن پر سے کھرچنا میسر نہیں یا نجاست جگر میں پیر گئی کہ کھرچنے سے نہ جائے گی تو مصری کو قوام کریں کہ خوب رقیق و سیال ہو جائے اور اس کے ساتھ ہی دوسری مصری پاک بھی قوام کریں کہ وہ بھی اسی حالت پر آئے اب فوراً بحالتِ رقت و سیلان ہی یہ پاک مصری اُس ناپاک کے برتن میں ڈالتے جائیں یہاں تک کہ بھر کر اُبلنے لگے اور قدرے بہہ جائے سب پاک ہو گئی یا دونوں مصریوں پاک و ناپاک کی دھار ملا کر تیسرے خالی برتن میں چھوڑیں کہ ناپاک مصری کی بوند نہ اس پاک سے پہلے اُس برتن میں پہنچے نہ بعد بلکہ ہوا میں دونوں کی دھار ایک ہو کر برتن میں گرے سب پاک ہو جائے گی کما بیناہ فی فتاونا (جیسا کہ ہم نے اسے اپنے فتاوٰی میں بیان کیا ہے۔ ت) واللہ سبحنہ وتعالی اعلم۔

مسئلہ ۱۶۸: ایضاً۔ روسر کی شکر جیسی شاہجہان پور میں بنتی ہے اور اُس کی نسبت مشہور ہے کہ ہڈی کی راکھ سے صاف کی جاتی ہے کھانا جائز یا ناجائز۔ بینوا توجروا۔

الجواب: حلال ہے جب تک تحقیق نہ ہو کہ اس خاص شکر میں جو ہمارے سامنے رکھی ہے کوئی نجس یا حرام چیز ملی ہے محرر مذہب سیدنا امام محمد رحمہ اللہ تعالٰی فرماتے ہیں: به نأخذ مالم نعرف شیئاً حرماً بعینه - ہم اسے اختیار کریں گے جب تک ہمیں کسی چیز کا بالذات حرام ہونا معلوم

نہ ہو۔ (ت) فقیر نے اس شکر کی تحقیق میں بحمد اللہ تعالیٰ ایک کافی و وافی رسالہ مسمی بنام تاریخی الاحلی من السکر لطلبۃ سکر وسمر ۱۳۰۳ھ لکھا جس میں نہ صرف اس شکر بلکہ اس قسم کی تمام چیزوں اور انگریزی دواؤں شربتوں

Fatawa Razawiyya, Volume 4

The ruling on it and others has been clarified. In this chapter, by the grace of Allah, such fine principles have been written that the ruling for every specific detail can be revealed with extreme clarity. Whoever wishes may refer back to them. And Allah, Glorified and Exalted, knows best.

Question 169: From Raipur, Post Office Hinduan, Raj Sawai Jaipur, sent by Syed Muhammad Nawazish Ali Sahib, 18 Sha'ban 1305 AH. After Islamic greetings, it is submitted that a lizard fell into a small pot of vinegar and remained in it for about four or five minutes. Afterwards, it was taken out alive and it ran away. In such a situation, should this vinegar be consumed or not? Is it prohibited (haram) or disliked (makruh)? And if it dies in the vinegar, what is the ruling, and how can that vinegar be purified? Please honor us with an answer. Only.

The Answer: Since it came out alive, the vinegar is pure.

In Al-Durr al-Mukhtar: "If it is removed alive and is not inherently impure (Najis al-Ayn), nor is there any excrement or filth on it, then nothing needs to be removed [from the liquid], unless its mouth reached the water; in that case, the ruling of its leftover (su'r) will be considered." (1)

Furthermore, if its mouth did not dip into the vinegar but it kept floating, then eating this vinegar is not even disliked. If it dipped, then for a wealthy person (ghani), it is slightly disliked (makruh tanzihi), but for a poor person (faqir), it is not even that.

In Al-Durr al-Mukhtar: "The leftover of animals living in houses is pure due to necessity, but it is slightly disliked (makruh tanzihi) if something else is available. Otherwise, it is not disliked at all, just as eating it is not disliked for a poor person." (2)

Yes, if it dies, the vinegar becomes impure. In the state where it remains alive, if a wealthy person wishes to remove the dislike and make the vinegar clean and pure for themselves, or if it dies and needs to be purified, there are two methods: First, take other clean, preserved vinegar in a small vessel and keep pouring it into the large pot until it fills to the brim, overflows, and starts flowing out.

1. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Wells, Mujtabai Press, Delhi, 1/39.
2. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Wells, Mujtabai Press, Delhi, 1/40. Page 384 of 761

फ़तावा रज़विया, खंड 4

इसका और अन्य का हुक्म स्पष्ट कर दिया गया है। इस अध्याय में, अल्लाह के अनुग्रह से, ऐसे उत्कृष्ट नियम लिखे गए हैं जिनसे प्रत्येक विशिष्ट विवरण का हुक्म अत्यंत स्पष्टता के साथ प्रकट हो सके। जो कोई चाहे, उनकी ओर पुनः देख सकता है। और अल्लाह, महिमामय और उच्च, सबसे अच्छा जानता है।

प्रश्न 169: रायपुर, डाकखाना हिंडौन, राज सवाई जयपुर से, सैयद मुहम्मद नवाज़िश अली साहब द्वारा प्रेषित, 18 शाबान 1305 हिजरी। इस्लामी अभिवादन के बाद, निवेदन है कि सिरके के एक छोटे बर्तन में छिपकली गिर गई और लगभग चार-पांच मिनट तक उसमें पड़ी रही। इसके बाद उसे जीवित निकाल लिया गया और वह भाग गई। ऐसी स्थिति में इस सिरके को खाना चाहिए या नहीं? क्या यह हराम (वर्जित) है या मकरूह (नापसंद)? और यदि वह सिरके में मर जाए तो क्या हुक्म है, और वह सिरका किस प्रकार शुद्ध हो सकता है? कृपया उत्तर से सम्मानित करें। केवल।

उत्तर: चूंकि वह जीवित निकल आई, इसलिए सिरका शुद्ध है।

अल-दुर्र अल-मुख्तार में: "यदि उसे जीवित निकाला गया है और वह स्वभाव से अशुद्ध (नजिस अल-ऐन) नहीं है, और न ही उस पर कोई विष्ठा या गंदगी लगी है, तो कुछ भी निकालने की आवश्यकता नहीं है, जब तक कि उसका मुँह पानी तक न पहुँच जाए; उस स्थिति में, उसके जूठे(सुअर) का विचार किया जाएगा।" (1)

इसके अलावा, यदि उसका मुँह सिरके में नहीं डूबा बल्कि वह तैरती ही रही, तो इस सिरके का सेवन मकरूह भी नहीं है। यदि वह डूब गई, तो धनी व्यक्ति (ग़नी) के लिए यह मकरूह तंज़ीही (हल्का नापसंद) है, लेकिन गरीब (फ़क़ीर) के लिए यह भी नहीं है।

अल-दुर्र अल-मुख्तार में: "घरों में रहने वाले जानवरों का जूठा आवश्यकता के कारण शुद्ध है, लेकिन यदि कुछ और उपलब्ध हो तो यह मकरूह तंज़ीही है। अन्यथा, यह बिल्कुल भी मकरूह नहीं है, जैसे फ़क़ीर के लिए इसका भोजन (मकरूह नहीं है)।" (2)

हाँ, यदि वह मर जाए तो सिरका अशुद्ध हो जाता है। जीवित रहने की स्थिति में, यदि कोई धनी व्यक्ति अपनी संतुष्टि के लिए मकरूह होने की स्थिति को दूर करना चाहे और सिरके को शुद्ध और स्वच्छ बनाना चाहे, या यदि वह मर जाए और उसे शुद्ध करना हो, तो इसके दो तरीके हैं: पहला, किसी अन्य

लोटे में साफ और सुरक्षित सिरका लेकर उस घड़े में तब तक डालते रहें जब तक कि वह मुँह तक भर जाए, उबल जाए और बाहर निकलना शुरू हो जाए।

1. अल-दुर्र अल-मुख्तार, कुओं का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/39।
2. अल-दुर्र अल-मुख्तार, कुओं का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/40। पेज 384 का 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

و غیر ہا کا حکم منقح کر دیا اس باب میں بفضلہ تعالٰی وہ نفیس ضوابط لکھے جس سے ہر جزئیہ کا حکم بہ نہایت انجلا منکشف ہو سکے من شاء فلیراجع الیہا (جو چاہے اس کی طرف رجوع کرے۔ ت) واللہ سبحنہ و تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۶۹: از رائے پور ڈاک خانہ ہندوان راج سوائی جے پور مرسلہ سید محمد نوازش علی صاحب ۱۸ شعبان ۱۳۰۵ھ بعد سلام سنۃ الاسلام کے عرض یہ ہے کہ ایک سبوچہ سرکہ میں چھپکلی گر پڑی اور قریب چار پانچ منٹ کے سرکہ میں پڑی رہی بعد ازاں اسے زندہ نکال لیا کہ بھاگ گئی ایسی صورت میں اس سرکہ کو کھانا چاہیے یا نہیں، اور حرام ہے یا مکروہ اور اگر سرکہ کے میں مر جائے تو کیا حکم ہے، اور وہ سرکہ کس طرح پاک ہو سکتا ہے۔ جواب سے سرفرازی بخشیئے فقط

الجواب: جبکہ وہ زندہ نکل آئی سرکہ پاک ہے۔

فی الدر المختار لو اخرج حیا و لیس بنجس العین | در مختار میں ہے اگر اسے زندہ نکالا گیا تو وہ نہ تو نجس عین ہے ولا بہ حدث او خبث لم ینزح شیئ ا لآن یدخل | اور نہ ہی اس پر پاخانہ یا نجاست لگی ہوئی ہے تو کچھ بھی نہ نکالا فمہ الماء فیعتبر بسؤرہ 1۔ | جائے مگر یہ کہ اس کا منہ پانی تک پہنچ جائے پس (اس وقت) اس کے جھوٹے کا اعتبار کیا جائیگا۔ (ت)

پھر اگر اس کا منہ سرکہ میں نہ ڈوبا بلکہ تیرتی ہی رہی تو اس سرکہ کا کھانا مکروہ تک نہیں اور ڈوب گیا تو غنی کیلئے کراہت تنزیہی ہے فقیر کیلئے اس قدر بھی نہیں۔

فی الدرالمختار سؤر سواکن البیوت طاھر | در مختار میں ہے گھروں میں رہنے والے جانوروں کا جھوٹا للضرورۃ مکروہ تنزیھاً ان وجد غیرہ والالم | ضرورت کے تحت پاک ہے اس کے سوا موجود ہو تو مکروہ یکرہ اصلا کآکلہ لفقیر اہ ملخصاً 2۔ | تنزیہی ہے ورنہ بالکل مکروہ نہیں جیسے فقیر کیلئے اس کا کھانا (مکروہ نہیں) اھ ملخصاً (ت)

ہاں اگر مر جائے تو سرکہ ناپاک ہو گیا پس زندہ رہنے کی حالت میں اگر غنی ازالہ کراہت اور سرکہ کا اپنے حق میں ستھرانظیف ہو جانا چاہے یا مر جانے کی صورت میں پاک کریں تو اس کے دو طریقے ہیں: ایک یہ کہ دوسرا سرکہ صاف محفوظ کسی لوٹے میں لے کر اس گھڑے میں ڈالتے جائیں یہاں تک کہ یہ منہ تک بھر کر ابل جائے اور باہر نکلنا شروع ہو

1 در مختار فصل فی البئر مطبوعہ مجتبائی دہلی ۳۹/۱ 2 در مختار فصل فی البئر مطبوعہ مجتبائی دہلی ۴۰/۱

Fatawa Razawiyyah Volume 4

When it flows some distance on the ground, stop it; the whole pitcher will become clean and pure. And the most appropriate is to pour so much that the vinegar overflows from the pitcher and flows to a length of about one and a half or two cubits.

Second: Keep a pitcher of pure, preserved vinegar and place both pitchers (jars) on some elevation, for example, a bed, and place a large, wide-mouthed cauldron below them in their alignment. Tilt both pitchers together in such a way that their streams meet in the air before reaching the cauldron and fall into the cauldron as a single stream. In this way, whatever amount of vinegar reaches the cauldron will be clean and pure without any dislike. However, keep in mind that no part of the disliked or impure vinegar should reach the cauldron without being mixed with the other vinegar. For example, while tilting, the second vinegar had not yet fallen when the first stream reached, or the second pitcher finished while vinegar from the first remained and was added later, or at some point the streams of both fell separately. These situations should not occur; rather, every part of this vinegar should reach the cauldron only after mixing with the stream of the other vinegar in the air. These two refined methods should be understood thoroughly and always kept in mind as they are useful not only for removing dislike but also for removing impurity. Milk, water, vinegar, oil, liquid ghee, and every such flowing thing that becomes impure—if it is milk, then with pure milk, and if it is water, then with pure water, and similarly for others—by mixing it with its own kind as mentioned and letting it flow or joining the streams into a vessel, everything will become pure. And the second method is even more superior and excellent as not a single part of the item is wasted. It is in Durr-e-Mukhtar:

Arabic	**Urdu Translation**
Al-Mukhtar: Taharat al-mutanajjis bi-mujarradi jarayanihi-1	The chosen view is that an impure thing is purified simply by making it flow. (T)

From Bahr al-Raiq:

Wa-in qalla al-kharij-2 Even if the amount flowing out is small. (T)

Allama Abdul Barr ibn al-Shuhnah said:

Liannahu sara jariyan haqiqatan wa-bi-khuruji ba'dihi	Because it has truly become flowing, and by the exit of some of it...

1. Durr-e-Mukhtar, Chapter on Waters, printed at Mujtabai Delhi, 1/36
2. Al-Bahr al-Raiq, Book of Purification, printed at H.M. Saeed Company Karachi, 1/87; Radd al-Muhtar, topic 'The pool is purified simply by flowing', printed at Mujtabai Delhi, 1/301

फतावा रज़विया जिल्द चौथा

जब ज़मीन पर कुछ दूर बह जाए, तो रोक दें, सारा घड़ा साफ और पाक हो जाएगा। और बेहतर यह है कि इतना डालें जिससे सिरका घड़े से उबल कर डेढ़-दो हाथ की लंबाई तक बह जाए।

दूसरा: यह कि पाक महफूज़ सिरके का एक घड़ा लें, दोनों घड़ों को किसी ऊँचाई पर, जैसे कि पलंग पर रखें और उनके सामने नीचे एक बड़ा चौड़े मुँह वाला देगचा रखें। दोनों घड़ों को एक साथ इस तरह झुकाएँ कि उनकी धाराएँ देगचे तक पहुँचने से पहले हवा में आपस में मिल जाएँ और देगचे में एक धारा होकर गिरें। इस तरह जितना भी सिरका देगचे में पहुँचेगा, वह सब बिना किसी कराहत के पाक और साफ हो जाएगा। मगर इसमें यह ख्याल रखें कि मकरूह या नापाक सिरके का कोई हिस्सा दूसरे सिरके से मिले बिना देगचे में न पहुँचे। मिसाल के तौर पर, झुकाते समय दूसरा सिरका अभी गिरा नहीं था कि पहली धारा पहुँच गई, या दूसरा घड़ा खत्म हो गया और पहले का सिरका बाकी था जिसे बाद में डाला गया, या किसी समय ऐसा हुआ कि दोनों की धाराएँ अलग-अलग होकर गिरीं। ये सूरतें पैदा न होने पाएँ बल्कि इस सिरके का हर हिस्सा देगचे में दूसरे सिरके की धारा से हवा में मिलकर ही पहुँचे। इन दोनों बेहतरीन तरीकों को अच्छी तरह समझकर हमेशा याद रखें क्योंकि ये न केवल कराहत दूर करने में बल्कि नजासत (अशुद्धि) दूर करने में भी काम आते हैं। दूध, पानी, सिरका, तेल, पिघला हुआ घी और ऐसी हर बहने वाली चीज़ जो नापाक हो जाए—अगर दूध हो तो पाक दूध के साथ, और पानी हो तो पाक पानी के साथ, और इसी तरह हर चीज़ को उसकी अपनी ही जिन्स (प्रकार) के साथ मिलाकर बताए गए तरीके के अनुसार बहा दें या धाराओं को मिलाकर बर्तन में ले लें, तो सब पाक हो जाएगा। और दूसरा तरीका पहले वाले से भी उत्तम और श्रेष्ठ है क्योंकि इसमें चीज़ का कोई भी हिस्सा बर्बाद नहीं होता। दुर्रे मुख्तार में है:

अरबी इबारत	**उर्दू अनुवाद**
अल-मुख्तार: तहारतुल मुतनज्जिस बि-मुजर्रदि जर्यानिही-1	मुख्तार (चुना हुआ मत) यह है कि नापाक चीज़ को केवल जारी (प्रवाहित) करके पाक किया जाए। (त)

बहरुल राइक में है:

व-इन कल्ला अल-खारिज-2 चाहे निकलने वाली मात्रा कम ही क्यों न हो। (त)

अल्लामा अब्दुल बर्र इब्न-उश-शुहना ने फरमाया:

लि-अन्नहू सारा जारियन हक़ीक़तन व-बि-खुरूजि बअज़िही	क्योंकि वह वास्तव में जारी (प्रवाही) हो गया और कुछ के निकलने से...

1. दुर्रे मुख्तार, बाबुल मियाह, मुज्तबाई दिल्ली, 1/36
2. अल-बहरुर राइक, किताबुत तहारत, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/87; रद्दुल मुह्तार, मतलब 'अल-हौज़ युतहरु बि-मुजर्रदिल जर्यान', मुज्तबाई दिल्ली, 1/301

جب زمین پر کچھ دُور بہہ جائے موقوف کریں سارا گھڑا صاف و نظیف ہو جائے گا۔ اور انسب یہ کہ اس قدر ڈالیں جس میں سر کہ گھڑے سے اُبل کر بقدر دو ڈیڑھ ہاتھ طول کے بہہ جائے۔

دوم: یہ کہ ایک گھڑا طیب محفوظ سر کہ کالے کر دونوں سبوچے کسی بلندی مثلاً پلنگ پر رکھیں اور اُن کی محاذات میں کوئی بڑا دیکچہ کشادہ منہ کا نیچے رکھا ہو دونوں گھڑوں کو ایک ساتھ اس طرح جھکائیں کہ اُن کی دھاریں دیکچے تک پہنچنے سے پہلے ہوا میں باہم مل جائیں اور دیکچے میں ایک دھار ہو کر گریں یوں جس قدر سر کہ دیکچے میں پہنچے گا سب پاک و نظیف بلا کراہت ہو جائیگا مگر اس میں یہ خیال رکھیں کہ مکر وہ یا نجس سر کہ کا کوئی جز بغیر دوسرے سر کہ سے ملے ہوئے دیکچے میں نہ پہنچے مثلاً جھکاتے وقت دوسرا سر کہ ابھی نہ گرا تھا کہ اس کی دھار اول گئی یا دوسرا گھڑا ختم ہو گیا اس میں کا سر کہ باقی تھا وہ بعد کو ڈال دیا گیا یا کسی وقت ایسا ہوا کہ دونوں کی دھار الگ الگ ہو کر گری یہ صورتیں نہ ہونے پائیں بلکہ اس سر کہ کا ہر جزو دیکچے میں دوسرے سر کہ کی دھار سے ہوا میں مل ہی کر پہنچے۔ یہ دونوں نفیس طریقے بغور سمجھ کر ہمیشہ محفوظ رکھے جائیں کہ وہ نہ صرف ازالہ کراہت بلکہ ازالہ نجاست میں بھی بکار آمد ہیں۔ دودھ، پانی، سر کہ، تیل، رقیق گھی اور ایسی ہی ہر بہتی چیز جو ناپاک ہو جائے دودھ ہو تو پاک دودھ اور پانی ہو تو پاک پانی، وعلی ھذا القیاس ہر شے اپنی ہی جنس کے ساتھ ملا کر بطور مذکور بہا دیں یا دھاریں ملا کر برتن میں لے لیں سب پاک ہو جائے گا اور دوسرا طریقہ پہلے سے بھی افضل و اعلیٰ ہے کہ اس میں اس شے کا کوئی جُز ضائع نہیں جاتا۔ در مختار میں ہے :

المختار طھارۃ المتنجس بمجرد جریانہ-1 مختار یہ ہے کہ ناپاک چیز کو محض جاری کر کے پاک کیا جائے۔ (ت)

بحر الرائق میں ہے :

وان قل الخارج-2 اگرچہ نکلنے والا کم ہو۔ (ت)

علامہ عبدالبر ابن الشحنہ نے فرمایا:

لانہ صار جاریاً حقیقۃً وبخروج بعضہ کیونکہ وہ حقیقتاً جاری ہو گیا اور بعض کے نکلنے سے

1. در مختار باب المیاہ مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/۳۶
2. البحر الرائق کتاب الطہارۃ مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۸۷، ردالمحتار مطلب یطھر الحوض بمجرد الجریان مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/۳۰۱

Volume Four Fatawa Ridawiyyah "Doubt occurred regarding the persistence of impurity, so it does not remain with the doubt." ^{1} If there is doubt about the persistence of impurity, then with the doubt, the impurity will not remain. (T)

In Bada'i: "And upon this is the pool of the bathhouse or the vessels when they become impure." ^{2} If the bathhouse pool and vessels become impure, then their ruling is also the same. (T)

In Sharh al-Tanwir: "The ruling of all liquids is like water according to the most correct opinion." ^{3} According to the most correct opinion, the ruling of all liquid things is like water. (T)

In Sharh al-Niqayah: "Liquids are like water and molasses etc.; their purification is by making them flow while mixed with their own kind, as narrated from Muhammad, as in al-Tamartashi..." ^{4} etc. The purification of a liquid (flowing substance) like water, syrup, etc., happens by making it flow mixed with its own kind, as narrated from Imam Muhammad (may Allah have mercy on him), just as it is in Tamartashi. (T)

In Radd al-Muhtar: "This is explicit that it becomes pure by being made to flow. Yes, according to what we presented earlier from 'al-Khulasa' regarding specifying the flow as being more than a cubit or two cubits; that restriction there is contrary to their general statement that the pool becomes pure by merely flowing." ^{5} This is clear regarding this matter that it becomes pure by making it flow. Yes, what we have quoted earlier from 'al-Khulasa' that flow is specific to being higher than one or two hands, that restriction is correct there, but it is contrary to their general application regarding the pool, because it becomes pure by merely flowing. (T)

1. Radd al-Muhtar, topic: The pool is purified by mere flow, printed at Mujtabai, Delhi, 1/130.
2. Bada'i al-Sana'i, section on explaining what achieves purification, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/87.
3. Durr al-Mukhtar, chapter on Waters, printed at Mujtabai, Delhi, 1/35.
4. Jami' al-Rumuz, section: A thing is purified etc., Maktaba Islamia Qamus Gunbad, Iran, 1/95.
5. Radd al-Muhtar, topic: On annexing things like bowls to the pool, printed at Mujtabai, Delhi, 1/131.

जिल्द चौथी फ़तावा रिज़विया "नजासत के बाकी रहने में संदेह हुआ, तो संदेह के साथ वह बाकी नहीं रहती।" ^{1} नजासत के बाकी रहने में शक है, तो शक के साथ नजासत बाकी नहीं रहेगी। (त)

बदाइ' में है: "और इसी पर आधारित हमाम का हौज या बर्तन हैं जब वे नापाक हो जाएं।" ^{2} हमाम का हौज और बर्तन नापाक हो जाएं तो उनका भी यही हुक्म है। (त)

शरह तनवीर में है: "सबसे सही मत के अनुसार सभी तरल पदार्थों का हुक्म पानी की तरह है।" ^{3} सबसे सही कथन के अनुसार तमाम तरल चीजों का हुक्म पानी की तरह है। (त)

शरह निक़ाया में है: "तरल पदार्थ पानी और शीरे आदि की तरह हैं; उनकी पाकी उनके ही प्रकार के साथ मिलाकर बहाने से होती है, जैसा कि इमाम मुहम्मद से वर्णित है, जैसा कि तमरताशी में है..." ^{4} आदि। तरल (बहने वाली चीज़) पानी और शीरे वगैरह की पाकी उसकी अपनी ही किस्म के साथ मिलाकर जारी (बहाने) करने से होती है, जैसा कि इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाहि अलैहि) से वर्णित है, जैसे तमरताशी में है। (त)

रद्दुल मुहतार में है: "यह स्पष्ट है कि वह बहाने से पाक हो जाता है। हाँ, जैसा कि हमने पहले 'अल-खुलासा' से पेश किया है कि बहाव का एक या दो हाथ से अधिक होना; वह शर्त वहाँ तो सही है, लेकिन हौज के बारे में उनके सामान्य कथन के विपरीत है क्योंकि वह केवल जारी होने से पाक हो जाता है।" ^{5} यह इस बारे में स्पष्ट है कि वह जारी करने से पाक हो जाता है। हाँ, जो कुछ हमने इससे पहले 'खुलासा' से उद्धृत किया है कि बहाव एक या दो हाथों से अधिक ऊँचा होने के साथ विशिष्ट है, वह शर्त वहाँ तो सही है लेकिन हौज के बारे में उनके सामान्य प्रयोग के विरुद्ध है क्योंकि वह मात्र जारी होने से पाक हो जाता है। (त)

1. रद्दुल मुहतार, विषय: हौज मात्र जारी होने से पाक हो जाता है, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/130
2. बदाइ' अस्सनाइ', अध्याय: पाकी प्राप्त करने के माध्यमों का वर्णन, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/87
3. दुर्रे मुख्तार, जल प्रकरण, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/35
4. जामेउर रुमूज, अध्याय: वस्तुओं का शुद्ध होना आदि, मकतबा इस्लामिया कामूस गुंबद, ईरान, 1/95
5. रद्दुल मुहतार, विषय: प्याले आदि को हौज के हुक्म में शामिल करने के बारे में, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/131

جلد چہارم فتاوی رضویہ واقع الشک فی بقاء النجاسة فلاتبقی مع الشک ^{1}۔ نجاست کے باقی رہنے میں شک ہے، تو شک کے ساتھ نجاست باقی نہیں رہے گی۔(ت)

بدائع میں ہے: وعلی ھذا حوض الحمام او الاوانی اذا تنجس ^{2}۔ حمام کا حوض اور برتن ناپاک ہو جائیں تو ان کا بھی یہی حکم ہے۔ (ت)

شرح تنویر میں ہے: حکم سائر المائعات کالماء فی الاصح ^{3}۔ اصح قول کے مطابق تمام مائع چیزوں کا حکم پانی کی طرح ہے۔(ت)

شرح نقایہ میں ہے: المائع کالماء والدبس وغیرہما طہارتہ اما باجرائہ مع جنسہ مختلطابہ کماروی عن محمد کمافی التمرتاشی ^{4} الخ۔ مائع (بہنے والی چیز) پانی اور شیرے وغیرہ کی طہارت اس کی جنس کے ساتھ ملا کر جاری کرنے سے ہوتی ہے، جیسا کہ امام محمد رحمہ اللہ سے مروی ہے جیسے تمرتاشی میں ہے۔(ت)

ردالمحتار میں ہے: ھذا صریح بانہ یطہر بالاجراء نعم علی ما قدمناہ عن الخلاصة من تخصیص الجریان بان یکون اکثر من ذراع او ذراعین تقیید بذلک ھنالک مخالف لاطلاقھم من طھارة الحوض بمجرد الجریان ^{5}۔ یہ اس بارے میں واضح ہے کہ وہ جاری کرنے سے پاک ہو جاتا ہے، ہاں جو کچھ ہم نے اس سے پہلے خلاصہ سے نقل کیا ہے کہ جریان ایک یا دو ہاتھوں سے زیادہ بلند ہونے کے ساتھ خاص ہے، یہ قید وہاں تو صحیح ہے لیکن حوض کے بارے میں ان کے اطلاق کے خلاف ہے کیونکہ وہ محض جاری ہونے سے پاک ہو جاتا ہے۔(ت)

1 ردالمحتار مطلب یطہر الحوض بمجرد الجریان مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۱۳۰ 2 بدائع الصنائع فصل فی بیان مایقع بہ التطہیر ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۸۷ 3 درمختار باب المیاہ مطبوعہ

مجتبائی دہلی ۱/ ۳۵ 4 جامع الرموز فصل یطہر الشیئ الخ مکتبہ اسلامیہ قاموس گنبد ایران ۱/ ۹۵

5 ردالمحتار مطلب فی الحاق نحو القصعۃ بالحوض مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۱۳۱

Volume Four | Fatawa Rizvia It is stated in Khazana:

[Arabic Box Column] If there are two vessels, the water in one being pure and the other impure, and they are poured from a height so that they mix in the air and then fall, all the water becomes pure.[1]

[Urdu Box Column] Two vessels, one containing pure water and the other impure, if their water is poured from a high place such that it mixes in the air before falling, then all the water will become pure. (T)

Investigation of these issues is in the complete marginalia of the learned scholar Al-Shami (may his secret be sanctified):

[Arabic Box Column] Whoever wishes may refer to it. I say: if impurity is removed in this manner, then the removal of dislike (karahah) is even more primary. For it exists in the leftovers of domestic animals due to the suspicion of impurity, as established by the Absolute Investigator in Fath al-Qadir. Thus, that which removes a known impurity is more entitled and worthy of removing a suspected one. And Allah Subhanu wa Ta'ala knows best, and His knowledge is most complete and firm.

[Urdu Box Column] Whoever wishes may refer to it. I say: when impurity is removed in this way, then the removal of dislike will be even more certain. It (dislike) occurs in the leftovers of animals living in houses due to the suspicion of impurity, as investigated by the Absolute Investigator in Fath al-Qadir. Therefore, that which removes a definite impurity has more right and is more suitable for removing a suspected impurity. Allah Subhanu wa Ta'ala knows best, and the knowledge of that Great and Exalted Being is most perfect and robust. (T)

Issue 170: From Indore, Sadar Bazaar Cantonment, Bansari Sahib, near the house of Babu Din Dayal, sent by Mian Abdul Qadir Sahib, 1st Rajab 1308 AH.

[Persian/Urdu Column] What do the powerful scholars and pious muftis say regarding this matter: a man says that slaughtered chickens are thrown into hot water to remove feathers without removing the entrails or splitting the belly; then they are taken out, feathers plucked, and cooked. Since the belly was not split and the internal filth remained inside, it became carrion (dead meat). Therefore, doubt has arisen regarding the permissibility (halal/haram) of this slaughtered animal. Please explain the ruling on this matter.

[Urdu Column] What do the noble scholars and God-fearing muftis say about this issue: a man says that they put slaughtered chickens in hot water for plucking feathers without splitting the belly. Then they take them out, pluck the feathers, and cook them. Since the belly was not split, the internal filth remains inside, hence it became dead meat (najas/carrion). Therefore, doubt has arisen about whether this slaughtered animal is halal or haram.

[1] Radd al-Muhtar, Chapter of Impurities, printed by Mujtabai Delhi, 1/21 Page 387 of 761

खंड चार | फतावा रिज़विया खज़ाना में है:

[अरबी बॉक्स कॉलम] यदि दो बर्तन हों, जिनमें से एक का पानी शुद्ध हो और दूसरे का अशुद्ध, और उन्हें ऊंचे स्थान से गिराया जाए जिससे वे हवा में मिल जाएं और फिर गिरें, तो पूरा पानी शुद्ध हो जाता है।[1]

[उर्दू बॉक्स कॉलम] दो बर्तन जिनमें से एक का पानी पाक (शुद्ध) हो और दूसरे का नापाक (अशुद्ध) हो, यदि ऊंचे स्थान से उनका पानी गिराया जाए फिर फ़ज़ा (हवा) में उनका पानी मिलकर गिरे तो तमाम पानी पाक हो जाएगा। (त)

इन मसलों (विषयों) की पूर्ण तहक़ीक़ अल्लामा फ़ाज़िल शामी (उनका रहस्य पवित्र हो) के हाशिये में है:

[अरबी बॉक्स कॉलम] जो चाहे उसकी ओर रुजू (संदर्भ) करे। मैंने कहा: यदि इस तरह से नजासत (अशुद्धता) दूर हो जाती है, तो कराहत (नापसंदगी) का दूर होना और भी बेहतर है। क्योंकि वह घरों में रहने वाले जानवरों के जूठे में नजासत के वहम (संदेह) के कारण होती है, जैसा कि मुहक़्क़िक़ अली अल-इतलाक़ ने फतह अल-क़दीर में तहक़ीक़ फ़रमाई है। अतः जो चीज़ निश्चित नजासत को दूर करती है, वह संदिग्ध नजासत को दूर करने के लिए अधिक योग्य और उपयुक्त है। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला सबसे बेहतर जानता है और उसका ज्ञान पूर्ण और सुदृढ़ है।

[उर्दू बॉक्स कॉलम] जो चाहे उसकी तरफ रुजू करे। मैंने कहा जब इस तरीक़े से नजासत ज़ाइल (नष्ट) हो जाती है तो कराहत का ज़वाल (समाप्त होना) बतरीक़-ए-औला (और भी बेहतर तरीक़े से) होगा। वह घरों में रहने वाले जानवरों के जूठे में नजासत के वहम से होती है जैसा कि मुहक़्क़िक़ अली अल-इतलाक़ ने फतह अल-क़दीर में तहक़ीक़ फ़रमाई है। पस जो चीज़ मालूम नजासत को ज़ाइल करती है वह मौहूम (संदिग्ध) नजासत को ज़ाइल करने का ज़्यादा हक़ रखती है और ज़्यादा मुनासिब है। अल्लाह सुब्हानहु व तआला खूब जानता है और उस ज़ात-ए-बुज़ुर्ग व बरतर का इल्म ज़्यादा कामिल और मज़बूत है। (त)

मसला १७०: इंदौर सदर बाज़ार छावनी बांसरी साहब, बाबूदीन दयाल के मकान के पास से, मुर्सला (प्रेषक) मियां अब्दुल कादिर साहब, १ रजब १३०८ हिजरी।

[फारसी/उर्दू कॉलम] शक्तिशाली विद्वान और परहेज़गार मुफ़्ती साहिबान इस मसले के बारे में क्या फ़रमाते हैं: एक व्यक्ति कहता है कि ज़िबह की हुई मुर्गियों के पेट चीरे बिना और उनकी अंतड़ियाँ निकाले बिना उन्हें गर्म पानी में डाल दिया जाता है, फिर बाहर निकालकर उनके पंख उखाड़कर पकाते हैं। चूंकि पेट चाक नहीं किया गया, इसलिए पेट की गंदगी अंदर ही रह गई, अतः वह मुर्दार (मरा हुआ जानवर) हो गया। इस कारण उस ज़िबह किए हुए जानवर के हलाल व हराम होने में संदेह पैदा हो गया है। इस मसले की क्या सूरत है, बयान फ़रमाएँ।

[उर्दू कॉलम] क्या फ़रमाते हैं उलमा-ए-किराम और मुत्तक़ी मुफ़्तियान-ए-किराम इस मसले में कि एक आदमी कहता है कि ज़िबह की हुई मुर्गियों के पर उखेड़ने और पेट चाक किए बगैर उनको गरम पानी में डालते हैं फिर बाहर निकाल कर पर उखाड़ कर पकाते हैं चूंकि पेट चाक न करने की वजह से पेट की आलाइश (गंदगी) अंदर ही रहती है लिहाज़ा वह मुर्दार हो गया। बिनाबरीं (अतः) इस मजहूब (ज़िबह किए हुए) जानवर के हलाल व हराम होने में शक पैदा हो गया।

[1] रद-उल-मुहतार, बाब-अल-अन्जास, मुजतबाई दिल्ली द्वारा मुद्रित १/ २१ पृष्ठ ३८७ / ७६१

جلد چہارم | فتاویٰ رضویہ خزانہ میں ہے:

[عربی باکس کالم] اناء ان ماء احدھما طاھر والآخر نجس فصبا من مکان عال فاختلطا فی الھواء ثم نزلا طھر کلہ[1]

[اردو باکس کالم] دو برتن جن میں سے ایک کا پانی پاک ہو اور دوسرے کا ناپاک ہو بلند جگہ سے ان کا پانی گرایا جائے پھر فضا میں ان کا پانی مل کر گرے تو تمام پانی پاک ہو جائے گا۔ (ت)

ان مسائل کی تحقیق کامل حاشیہ علامہ فاضل شامی قدس سرہ السامی میں ہے:

[عربی باکس کالم] من شاء فلیرجع الیھا قلت واذا کانت النجاسۃ تزول بھذا فزوال الکراھۃ من باب اولی فأنھا انما کانت فی سؤر السواکن لتوھم النجاسۃ کماحققہ المحقق علی الاطلاق فی فتح القدیر فمزیل المعلوم احق واحری بأزالۃ الموھوم واللہ سبحانہ وتعالی اعلم وعلمہ اتم واحکم۔

[اردو باکس کالم] جو چاہے اس کی طرف رجوع کرے قلت جب اس طریقے سے نجاست زائل ہو جاتی ہے تو کراہت کا زوال بطریق اولی ہوگا وہ گھروں میں رہنے والے جانوروں کے جھوٹے میں نجاست کے وہم سے ہوتی ہے جیسے محقق علی الاطلاق نے فتح القدیر میں تحقیق فرمائی ہے پس جو چیز معلوم نجاست کو زائل کرتی ہے وہ موہوم نجاست کو زائل کرنے کا زیادہ حق رکھتی ہے اور زیادہ مناسب ہے۔ اللہ سبحانہ وتعالیٰ خوب جانتا ہے اور اس ذات بزرگ و برتر کا علم زیادہ کامل اور مضبوط ہے۔ (ت)

مسئلہ ۱۷۰: از اندور صدر بازار چھاؤنی بانسری صاحب قریب مکان بابودین دیال مرسلہ میاں عبدالقادر صاحب یکم رجب ۱۳۰۸ھ

[فارسی/اردو کالم] چہ می فرمایند علمائے ذوی الاقتدار ومفتیان ورع شعار دریں مسئلہ کہ مردے میگوید کہ ماکیان مذبوحہ را بدون بر آوردن پروچاک شکمش در آب گرم انداختہ برون بر آوردہ پرہاے بر کندہ پزانند پس بعد م چاک شکم او کہ آلایش بطنی اندرونش بود مردار گردیدہ ازیں باعث تشلیک است ورحلت وحرمت آں جانور مذبوحہ صورت ایں مسئلہ چگونہ است بیان فرمایند

[اردو کالم] کیا فرماتے ہیں علمائے کرام اور متقی مفتیانِ کرام اس مسئلہ میں کہ ایک آدمی کہتا ہے کہ ذبح کی ہوئی مُرغیوں کے پَر اکھیڑنے اور پیٹ چاک کیے بغیر ان کو گرم پانی میں ڈالتے ہیں پھر باہر نکال کر پَر اکھاڑ کر پکاتے چونکہ پیٹ چاک نہ کرنے کی وجہ سے پیٹ کی آلائش اندر ہی رہتی ہے لہٰذا وہ مردار ہو گیا۔ بنابریں اس مذبوحہ جانور کے حلال وحرام ہونے میں شک پیدا ہو گیا۔

[1] ردالمحتار باب الانجاس مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۲۱ صفحہ ۳۸۷ / ۷۶۱

Fatawa Razawiya - Volume 4

Question: According to the texts of the scholars (may Allah have mercy on them all), what would be the ruling on this matter? Please explain with references from the books of the noble scholars. (T)

Answer: It is evident that the purpose of these people in putting chickens in this water is not to cook them, but rather to apply heat to the outer skin so that the roots of the feathers become loose and soft, making plucking easier. For this purpose, it is not necessary for the water to be so hot that it has reached a state of boiling and bubbling, nor is it necessary to stay in it for so long that it causes the water and its components to penetrate the inner parts of the meat. In fact, if they were to do so, it would harm their objective. Therefore, from such an action—where they are placed in lukewarm water or not kept for long in boiling water—the impurity does not penetrate the parts of the meat; it only reaches the outer surface. Consequently, in this situation, a ruling of 'carrion' (murdar) will never be applied. For its purity and permissibility (halal), it is sufficient that the meat be washed with water three times, squeezed, and then used. (T)

However, if chickens are kept in boiling water for such a duration that, due to the boiling and the length of stay, the internal impurity penetrates deep into the meat, then according to the fatwa-issued opinion, they will become 'carrion' (murdar). This is because it cannot be made pure and permissible by any means. (T)

Page 388 of 761

फतवा रज़विया - भाग 4

प्रश्न: विद्वानों (अल्लाह उन सब पर रहम करे) के ग्रंथों के अनुसार, इस मामले का स्वरूप क्या होगा? कृपया विद्वानों की पुस्तकों से संदर्भ देते हुए वर्णन करें। (त)

उत्तर: यह स्पष्ट है कि इन लोगों का मुर्गियों को इस पानी में डालने का उद्देश्य उन्हें पकाना नहीं है, बल्कि उनकी बाहरी त्वचा तक गर्मी पहुँचाना है ताकि परों की जड़ों वाली जगह ढीली और नरम हो जाए और परों को उखाड़ना आसान हो जाए। इस काम के लिए पानी का इतना गर्म होना ज़रूरी नहीं है जो उबलने की स्थिति तक पहुँच गया हो, और न ही ज़्यादा देर तक ठहरना ज़रूरी है जिससे पानी और उसके अंश मांस के भीतरी हिस्सों में समा जाएं। बल्कि अगर वे ऐसा करते हैं, तो उनके उद्देश्य को नुकसान होगा। अत; इतने काम से—कि उन्हें गुनगुने पानी में रखा जाए या उबलते पानी में ज़्यादा देर न रखा जाए—गंदगी (नजासत) मांस के हिस्सों में नहीं समाती, बल्कि केवल बाहरी सतह तक पहुँचती है। इसलिए इस स्थिति में उसे कभी भी 'मुर्दार' (मरा हुआ या हराम) घोषित नहीं किया जाएगा। इसके पाक (शुद्ध) और हलाल होने के लिए यही पर्याप्त प्रमाण है कि मांस को तीन बार पानी से धोया जाए, निचोड़ा जाए और फिर उपयोग में लाया जाए। (त)

हाँ, यदि मुर्गियों को उबलते हुए पानी में इतने समय तक रखा जाए कि उबाल और पानी में ठहरने के कारण अंदर की गंदगी मांस की गहराइयों में समा जाए, तो उस समय फतवे के अनुसार वे 'मुर्दार' हो जाएंगी, क्योंकि उसे किसी भी तरीके से पाक और हलाल नहीं किया जा सकता। (त)

पृष्ठ 388/761

فتاوی رضویہ - جلد چہارم

بسنند عبارت کتب علماء رحمۃ اللہ علیہم اجمعین۔ اس مسئلہ کی کیا صورت ہوگی۔ علمائے کرام رحمہم اللہ کی کتابوں سے حوالہ دیتے ہوئے بیان فرمائیں۔ (ت)

الجواب:

پیداست کہ مراد اینان از یکار یختن ماکیان دریں آب نمی باشد بلکہ ہمیں ایصال حرارتے بظاہر جلدش تا مواضع بیخاے پرست و نرم شود و بر کندن نیز آساں گردد اینقدر را تیز گرم آبی کہ بحد جوش و غلیان رسیدہ باشد ضرور نیست نہ درنگ بسیارے کہ باعث نفوذ آب وجزء آں در اجزائے باطنہ لحم باشد بلکہ اگرایں چنین کنند مقصود ایشاں را زیاں دارد پس ہمیں قدر کہ در آب فاترے نہادند یا در جوشش آب مہلت بسیا رے ندادند نجاست باجزائے گوشت سرایت نمی کند ہمیں بسطوح ظاہر ہ میر سد لہٰذا دریں صورت حکم مردار زنہار نتواں داد طہارت وحلت اور انہیں بسند ست کہ لحم راسہ بار بہ آب شویند و فشرند و بکار برند۔

ظاہر ہے کہ ان لوگوں کے اس عمل کا مقصد مرغیوں کو اس پانی میں پکانا نہیں ہے بلکہ یہی ان کی ظاہری جلد کو حرارت پہنچانا ہے تاکہ پر کی جڑوں والی جگہ ڈھیلی اور نرم پڑ جائے اور پروں کا اکھاڑنا آسان ہو جائے۔ اس کام کیلئے اتنے گرم پانی کا ہونا ضروری نہیں جو جوش کی حالت کو پہنچ چکا ہو نہ ہی زیادہ ٹھہرنا جو پانی اور اس کے اجزاء کا گوشت کے اندرونی اجزاء میں سرایت کرنے کا باعث بنے بلکہ اگر وہ ایسا کریں تو ان کے مقصد میں نقصان ہوگا۔ پس اتنے کام سے کہ نیم گرم پانی میں رکھیں یا ابلے ہوئے پانی میں زیادہ دیر نہ رکھیں نجاست ، گوشت کے اجزاء میں سرایت نہیں کرتی محض ظاہری سطح تک پہنچتی ہے لہٰذا اس صورت میں ہرگز مردار

ہونے کا حکم نہیں لگایا جائے گا اور اس کے پاک وحلال ہونے کیلئے یہی کافی سند ہے کہ گوشت کو تین بار پانی سے دھوئیں اور نچوڑیں اور کام میں لائیں۔ (ت)

آرے اگر ماکیان بحالت غلیان و فوران آب آں مقدار در آب مکث کرد کہ نجاست باطن بسبب جوش و درنگ در قعر و عمق لحم نفوذ نمود آنگاہ بر قول مفتی بہ حکم مردار پیدا کند کہ بے ہچ حیلہ اور اطاہر وحلال نتواں ساخت۔

البتہ اگر مرغیوں کو ابلتے ہوئے پانی میں اتنا وقت رکھیں کہ پانی کے جوش اور اس میں ٹھہرنے کی وجہ سے اندر کی نجاست گوشت کی گہرائیوں میں سرایت کر جائے تو اس وقت مفتی بہ قول کے مطابق وہ مردار ہو جائیں گی ، کیونکہ اسے کسی طریقے سے بھی پاک اور حلال نہیں کیا جاسکتا۔ (ت)

Volume 4 Fatawa-e-Razawiyya

The Absolute Researcher, Master Kamal-ul-Millat wad-Deen Muhammad bin al-Humam (may Allah sanctify his noble soul) states in Fath al-Qadir:

"The Absolute Researcher, perfect in religion and community, Master Imam Muhammad bin Humam—may Allah Almighty grant us blessings through his noble person—states in Fath al-Qadir: If you place a chicken into boiling water before slitting its belly and without washing it, in order to pluck its feathers or clean its crop, it will never become pure. However, according to the statement of Imam Abu Yusuf (may Allah have mercy on him), based on the principle previously established regarding meat, its purity is proven. (T)"

I say—and Allah (Glory be to Him) knows best—the reason for the aforementioned statement is that due to the boiling of the water, the impurity gets absorbed into the meat. On this basis, it is well-known in Egypt that 'samit' meat (a young goat whose hair is removed and then roasted) is considered impure and does not become pure. However, the aforementioned reason is not established until the water reaches the point of boiling and the meat remains in it for such a duration that the water penetrates and is absorbed into the interior of the meat. In 'samit', neither of these two conditions is present because the water does not reach the boiling point, nor is the meat left in it long enough for the heat to reach below the skin's surface and enter the pores beneath the hair. In fact, leaving it for that long would hinder the effective removal of hair. Therefore, the best view regarding 'samit' is that since the outer surface of the skin has become impure from that impure water, it should be washed three times... and Sharaf al-A'immah has said.

Page 389 of 761

जिल्द चहारुम (भाग 4) फ़तावा-ए-रज़विया

इमाम मुहक्किक़ अलल इत्लाक़ सैयदी कमाल उल-मिल्लत वद-दीन मुहम्मद बिन अल-हुमाम (अल्लाह उनकी पवित्र आत्मा को शान्ति दे) 'फ़तह अल-क़दीर' में फ़रमाते हैं:

"मुहक्किक़ अलल इत्लाक़, दीन और मिल्लत में कामिल (पूर्ण), सैयदी इमाम मुहम्मद बिन हुमाम, अल्लाह तआला उनकी महान हस्ती से हमें बरकत अता फ़रमाए, फ़तह अल-क़दीर में फ़रमाते हैं: अगर तुम मुर्गी के पेट को चीरने से पहले उसे धोए बिना उसके पंख उखाड़ने के लिए उबलते हुए पानी में डाल दो, तो वह कभी पवित्र नहीं होगी। हालांकि, इमाम अबू यूसुफ (रहमतुल्लाह अलैह) के अनुसार, मांस के संबंध में जो नियम पहले बताया जा चुका है, उसके आधार पर इसकी पवित्रता सिद्ध है। (त)"

मैंने कहा (और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है), इस उपर्युक्त कथन का कारण यह है कि पानी के उबलने के कारण अशुद्धि मांस के अंदर समा जाती है। इसी आधार पर मिस्र में यह प्रसिद्ध है कि 'समीत' (बकरी का बच्चा जिसके बाल साफ़ करके उसे भून लिया जाता है) का मांस अपवित्र माना जाता है और वह पवित्र नहीं होता। लेकिन यह कारण तब तक सिद्ध नहीं होता जब तक कि पानी उबलने की सीमा तक न पहुँच जाए और मांस उसमें इतनी देर तक न रहे कि पानी मांस के भीतरी हिस्से में प्रवेश कर जाए। और 'समीत' के मामले में ये दोनों बातें नहीं पाई जातीं, क्योंकि न तो पानी उबाल की सीमा तक पहुँचता है और न ही उसे इतनी देर तक उसमें छोड़ा जाता है कि ऊष्मा त्वचा की सतह के नीचे पहुँच जाए और बालों के नीचे के छिद्रों में प्रवेश कर जाए। बल्कि, उसे इतनी देर तक (पानी में) छोड़ना अच्छी तरह से बाल उखाड़ने में भी बाधा डालता है। इसलिए 'समीत' के बारे में सबसे बेहतर बात यह है कि चूंकि उस अपवित्र पानी से त्वचा की बाहरी सतह अपवित्र हो गई है, अतः इसे तीन बार (धोना चाहिए)... और शरफ़ अल-आइम्मा ने कहा है।

पृष्ठ 389/761

جلد چہارم فتاوی رضویہ امام محقق علی الاطلاق سیدی کمال الملۃ والدین محمد بن الھمام قدسنا اللہ تعالی بسرہ الکریم در فتح القدیر فرماید : محقق علی الاطلاق، دین وملت میں کامل، سیدی امام محمد بن ہمام ، اللہ تعالی ان کی ذات والا صفات سے ہمیں برکت عطا فرمائے ، فتح القدیر میں فرماتے ہیں : اگر تم مرغی کے پیٹ کو چاک کرنے سے پہلے اسے دھوئے بغیر پر اکھاڑنے کے لئے ابلتے ہوئے پانی میں ڈال دی تو وہ کبھی بھی پاک نہ ہوگی البتہ امام ابو یوسف رحمہ اللہ کے قول پر گوشت کے بارے میں جو قانون گزر چکا ہے اس کا پاک ہونا ثابت ہے۔ (ت) قلت وھو سبحنہ اعلم اس مذکور بالا قول کی علت یہ ہے کہ پانی کے جوش کے باعث وہ نجاست گوشت کے اندر جذب ہو جاتی ہے، اسی بنیاد پر مشہور ہے کہ مصر میں سمیط (بکری کا بچہ جس کے بال صاف کرکے اسے بھون لیا جائے) کا گوشت ناپاک شمار ہوتا ہے وہ پاک نہیں ہوتا، لیکن یہ علت اس وقت تک ثابت نہیں ہوتی جب تک پانی جوش کی حد کو نہ پہنچ جائے اور اس کے بعد اس میں گوشت اتنی دیر تک نہ ٹھہرا رہے جس سے پانی گوشت کے اندر داخل ہو کر جذب ہو جائے۔ اور سمیط میں یہ دونوں باتیں نہیں پائی جاتیں کیونکہ نہ تو پانی جوش کی حد کو پہنچتا ہے اور نہ ہی اسے اس میں اتنی دیر چھوڑا جاتا ہے کہ حرارت جلد کی سطح کے نیچے پہنچ جائے اور بالوں کے نیچے مساموں میں داخل ہو جائے بلکہ اس کو اس قدر (پانی میں) چھوڑنا اچھی طرح بال اکھاڑنے سے بھی مانع ہے پس سمیط کے بارے میں بہترین بات یہ ہے کہ چونکہ اس نجس پانی سے جلد کا ظاہر ناپاک ہو گیا لہذا تین بار

[عربی متن] لو القیت دجاجة حالة الغلیان في الماء قبل ان یشق بطنها لنتف اوکرش قبل الغسل لایطهر ابدا لکن علی قول ابی یوسف یجب ان یطهر علی قانون ماتقدم في اللحم- قلت وهو سبحنه اعلم هو معلل بتشربها النجاسة المتخللة فی اللحم بواسطة الغلیان وعلی هذا اشتهران اللحم السمیط بمصر نجس

لايطهر لكن العلة المذكورة لاتثبت حتى يصل الماء الى حد الغليان ويمكث فيه اللحم بعد ذلك زماناً يقع فى مثله التشرب والدخول فى باطن اللحم وكل من الامرين غير متحقق فى السميط الواقع حيث لايصل الماء الى حد الغليان ولا يترك فيه الامقدار ما تصل الحرارة الى سطح الجلد فتنحل مسام السطح عن الصوف بل ذلك الترك يمنع من جودة انقلاع الشعر فالاولى فى السميط ان يطهر بالغسل ثلثاً لتنجس سطح الجلد بذلك الماء فانهم لايتحرسون فيه عن المنجس- وقد قال شرف الائمة

Fatawa Razawiya Volume Four

Regarding the chicken, the tripe (stomach of ruminants), and 'Samit' (meat cooked with skin), it is the same. [End of quote]. Prior to this, the author (may his secret be sanctified), quoting from 'Al-Tajnis', stated: If wheat is cooked in wine, Imam Abu Yusuf (may Allah have mercy on him) says it should be cooked three times in water and dried each time. The same rule applies to meat. Imam Abu Hanifa (may Allah have mercy on him) says it will never become pure, and the fatwa is based on this. And it is said that according to Imam Muhammad (may Allah have mercy on him), none of these ever become pure.

From this it becomes clear that for anyone who wants to do this, the better and more cautious way for them is to first slit the chicken's belly and clean it of intestines, and wash away the spilled blood that congeals at the site of slaughter, etc. After that, they may place it in whatever water they wish so as to be certain the meat remains pure from becoming impure. Allama Ahmad Tahtawi stated in the marginalia of 'Durr-ul-Mukhtar': "It is better that before putting it in hot water, whatever is inside its belly should be removed and the congealed spilled blood from the place of slaughter should be washed away." [End of quote]. And Allah (Glorified and Exalted) knows best, and His knowledge (Exalted is His Majesty) is most complete and most perfect.

Problem 171: From Old City, 4 Dhu al-Qi'dah 1308 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: is prayer valid in clothes dyed with 'Pudiya' (a type of dye powder)? Explain and be rewarded.

1. Fath al-Qadir, end of the chapter on Impurities and their Purification, printed by Nooria Rizvia Sukkur, 1/186.
2. Fath al-Qadir, end of the chapter on Impurities and their Purification, printed by Nooria Rizvia Sukkur, 1/185.
3. Tahtawi Hashiya on Durr al-Mukhtar, end of the chapter on Impurities, Dar al-Ma'rifah, Beirut, Lebanon, 1/164.

मुर्गे, ओझड़ी और समीत (खाल समेत पकाया हुआ मांस) के बारे में भी यही हुक्म है। साहब-ए-फ़तह अल-क़दीर (अल्लाह उनके रहस्य को पवित्र करे) ने इससे पहले 'तजनीस' से नक़ल करते हुए फ़रमाया: यदि गेहूँ को शराब में पकाया गया हो, तो इमाम अबू यूसुफ़ (रहमतुल्लाह अलैह) फ़रमाते हैं कि उसे तीन बार पानी में पकाया जाए और हर बार सुखाया जाए। मांस के लिए भी यही हुक्म है। इमाम अबू हनीफ़ा (रहमतुल्लाह अलैह) फ़रमाते हैं कि वह कभी पवित्र नहीं होगा और इसी पर फ़तवा है। और यह भी कहा गया है कि इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) के नज़दीक ये सब कभी पवित्र नहीं होते।

यहाँ से यह स्पष्ट होता है कि जो व्यक्ति यह काम करना चाहे, उसके लिए बेहतर और अधिक सावधानी भरा तरीका यह है कि पहले मुर्गे का पेट चीर कर उसे आंतों से साफ़ करे और बहने वाले खून को धो ले जो गर्दन आदि पर जम जाता है। इसके बाद जिस पानी में चाहे रखे ताकि मांस के अपवित्र होने से सुरक्षित रहे। अल्लामा अहमद तहतावी ने 'दुर्र-ए-मुख़्तार' के हाशिए में फ़रमाया है: "बेहतर यह है कि गर्म पानी में रखने से पहले जो कुछ उसके पेट में है उसे निकाल लिया जाए और ज़बह के स्थान से जमा हुआ खून धो लिया जाए।" और अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) बेहतर जानता है, और उसका ज्ञान (जल्ल मजदहु) पूर्ण और सर्वोत्तम है।

मसला 171: पुराना शहर, 4 ज़ुल-क़ादा 1308 हिजरी दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि 'पुड़िया' (एक प्रकार का रंग) से रंगे हुए कपड़े में नमाज़ पढ़ना सही है या नहीं? बयान फ़रमाएँ और पुण्य प्राप्त करें।

1. फ़तह अल-क़दीर, अशुद्धियों और उनकी शुद्धि के अध्याय का अंत, नूरिया रज़विया सुक्कुर द्वारा मुद्रित, 1/186।
2. फ़तह अल-क़दीर, अशुद्धियों और उनकी शुद्धि के अध्याय का अंत, नूरिया रज़विया सुक्कुर द्वारा मुद्रित, 1/185।
3. तहतावी हाशिए दुर्र-ए-मुख़्तार, अशुद्धियों के अध्याय का अंत, दारुल मारिफ़ा, बेरूत, लेबनान, 1/164।

بهذا في الدجاجة والكرش والسميط مثلهما اهـ دھونے سے پاک ہو جائے گا کیونکہ وہ لوگ ناپاک کرنے والی چیز سے پرہیز نہیں کرتے۔ شرف الائمہ نے مرغی اور کرش (جگالی کرنے والے جانوروں کی اوجھڑی) کے بارے میں یہی بات فرمائی اور سمیط ان دونوں کی مثل ہے الخ۔

وقال قدس سره قبل ذلك ناقلا عن التجنيس طبخت الحنطة في الخمر قال ابويوسف تطبخ ثلثا بالماء وتجفف كل مرة وكذا اللحم وقال ابوحنيفة لا تطهر ابدا وبه يفتى اهـ قال والكل عند محمد لا تطهر ابدا ۔ صاحب فتح القدیر قدس سرہ نے اسے پہلے تجنیس سے نقل کرتے ہوئے فرمایا کہ گندم، شراب میں پکائی گئی اس کے بارے میں امام ابویوسف رحمہ اللہ تعالٰی فرماتے ہیں اسے تین بار پانی میں پکایا جائے اور ہر بار خشک کیا جائے۔ گوشت کا بھی یہی حکم ہے۔ امام ابو حنیفہ رحمہ اللہ فرماتے ہیں وہ کبھی پاک نہیں ہوگی اور اسی پر فتوٰی ہے اھ اور فرمایا یہ سب کچھ امام محمد رحمہ اللہ کے نزدیک پاک نہیں ہوتا۔ (ت)

و ازینجا بوضوح پیوست کہ ہر کہ این کار خواھد اولٰی و احوط در حقش آنست کہ اولاً ماکیان را شکم چاک و از امعا پاک کند و خون مسفوح کہ بمحل ذبح منجمد می شود بشوید پس ازاں بہر آبے کہ خواھد تپد تا از نجس شدن لحم ایمن ماند سید علامہ احمد طحطاوی در حاشیہ در مختار فرمودہ:
فالاولٰی قبل وضعها في الماء المسخن ان يخرج ما فی جوفها ويغسل محل الذبح مما عليه من دم مسفوح تجمد اهـ والله سبحنه و تعالٰی اعلم وعلمه جل مجده اتم واحكم۔ یہاں سے ظاہر ہوا کہ جو شخص یہ کام کرنا چاہے اس کیلئے بہتر اور زیادہ محتاط یہ ہے کہ پہلے مرغی کا پیٹ چاک کر کے اسے آنتوں سے پاک کرے اور بہنے والے خون کو جو گردن وغیرہ پر جم جاتا ہے دھو لے اس کے بعد جس پانی میں چاہے رکھے تاکہ گوشت کے ناپاک ہونے سے مطمئن ہو۔ علامہ احمد طحطاوی نے در

مختار کے حاشیہ میں فرمایا بہتر یہ ہے کہ گرم پانی میں رکھنے سے پہلے جو کچھ اس کے پیٹ میں ہے نکال لیا جائے اور ذبح کے مقام سے جما ہوا خون مسفوح دھو لیا جائے اھ (ت)

مسئلہ ۱۷۱ : از شہر کہنہ ۴۔ ذیقعدہ ۱۳۰۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ پڑیا کے رنگ ہوئے کپڑے سے نماز درست ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

1 فتح القدیر آخر باب الانجاس و تطہیرھا مطبوعہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/۱۸۶ 2 فتح القدیر آخر باب الانجاس و تطہیرھا مطبوعہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/۱۸۵ 3 طحطاوی حاشیہ در مختار آخر باب الانجاس دارالمعرفۃ بیروت لبنان ۱/۱۶۴

Fatawa Razviya Volume 4

The Answer:

There is no harm in light-brown colored leather/cloth. Avoiding colored leather/cloth for the sake of piety (wara') is better; however, to issue a fatwa nowadays saying prayer is invalid because of it causes severe hardship.

[Arabic Text Box]: "Hardship is repelled by textual evidence, and widespread common affliction (Umum al-Balwa) is among the causes of mitigation, especially in matters of purity and impurity." — (Urdu Translation): It is established from the text that hardship is removed, and common occurrence is a cause for relaxation, particularly in matters of cleanliness and impurity. (T)

Therefore, in this matter, there is no reason to deviate from the schools of Imam-e-Azam and Imam Abu Yusuf (may Allah be pleased with them both). According to the school of these Imams of ours, prayer with colored leather/cloth is undoubtedly permissible. This humble servant prefers to give a fatwa on this in these times.

[Arabic Text Box]: "We have discussed this issue more extensively in our fatwas, and we will investigate the matter further if Allah the Exalted grants success. And Allah the Exalted knows best." — (Urdu Translation): We have discussed this issue more than this in our fatwas, and if divine success assists us, we will conduct such research in this series after which there will be no further room for doubt. And Allah the Exalted knows best. (T)

Issue 171: Sent by Mirza Baqi Baig Sahab, Rampuri, 20 Dhu al-Qi'dah 1308 AH. What do the scholars of the religion say about this issue: is chicken vomit pure (paak) or impure (napaak)? And if an animal's droppings are impure, is its vomit also impure? Provide a clear answer, and you shall be rewarded.

The Answer:

The vomit of every animal follows the ruling of its droppings. If an animal's droppings are pure, such as a sparrow or pigeon, then its vomit is also pure. If its droppings are a minor impurity (Najast-e-Khafifa), like a hawk or crow, its vomit is also a minor impurity. And if its droppings are a major impurity (Najast-e-Ghaliza), like a duck or chicken, its vomit is also a major impurity. By 'vomit' is meant the food, water, etc., that comes out of the crop (pota); because for an animal whose droppings are impure, its crop is a source of impurities. Whatever comes out from the crop will be

inherently impure or will come out mixed with impurity. In any case, it will have the same level of impurity as the droppings: minor in minor, major in major. This is contrary to something that came out before reaching the crop. For example, a chicken drank water, it was still in its throat, it choked, and the water came out.

फ़तावा-ए-रज़विया खंड 4

अल-जवाब (उत्तर):

बादामी रंग की पुड़िया (चमड़े/कपड़े का टुकड़ा) में कोई हर्ज नहीं है और रंगीन पुड़िया से परहेज़गारी के लिए बचना बेहतर है; फिर भी इसके कारण नमाज़ न होने का फ़तवा देना आजकल भारी कठिनाई का कारण है।

[अरबी बॉक्स]: "कठिनाई को प्रमाणों से दूर किया गया है, और आम प्रचलन (उमूम-ए-बलवा) रियायत के कारणों में से है, विशेष रूप से स्वच्छता और अशुद्धि के मामलों में।" — (उर्दू अनुवाद): ग्रंथों से प्रमाणित है कि कठिनाई दूर की गई है और आम चलन नरमी के कारणों में से है, ख़ास तौर पर पवित्रता और अपवित्रता के मसलों में। (त)

इसलिए इस मसले में हज़रत इमाम-ए-आज़म और इमाम अबू यूसुफ़ (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) के मत से हटने का कोई कारण नहीं है। हमारे इन इमामों के मत के अनुसार, पुड़िया के रंग के साथ नमाज़ निस्संदेह जायज़ है। यह फ़कीर इस ज़माने में इसी पर फ़तवा देना पसंद करता है।

[अरबी बॉक्स]: "हमने अपने फ़तवों में इस मसले पर इससे कहीं ज़्यादा बात की है, और यदि अल्लाह ने चाहा तो हम इस मामले में ऐसी तहकीकात करेंगे जिसके बाद किसी शक की गुंजाइश नहीं रहेगी। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।" — (उर्दू अनुवाद): हमने अपने फ़तावा में इस मसले पर इससे भी ज़्यादा बहस की है और अल्लाह की तरफ़ से तौफ़ीक मिली तो हम इस सिलसिले में ऐसी तहक़ीक़ करेंगे जिसके बाद मजीद गुंजाइश नहीं रहेगी। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला १७१: प्रेषक: मिर्ज़ा बाक़ी बेग साहब, रामपुरी, 20 ज़िल्क़ादा 1308 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि मुर्गी की क़ै(उल्टी) पाक है या नापाक, और जिस चीज़ की बीट अपवित्र है क्या उसकी क़ै भी अपवित्र है? स्पष्ट उत्तर दें और पुण्य कमाएँ।

अल-जवाब (उत्तर):

हर जानवर की क़ै(उल्टी) का वही हुक्म है जो उसकी बीट का है। जिसकी बीट पाक है जैसे चिड़िया या कबूतर, उसकी क़ै भी पाक है। और जिसकी नजासत-ए-ख़फ़ीफ़ा (हल्की अशुद्धि) है जैसे बाज़ या कौआ, उसकी क़ै भी नजासत-ए-ख़फ़ीफ़ा है। और जिसकी नजासत-ए-ग़लीज़ा (भारी अशुद्धि) है जैसे

बत्तख या मुर्गी, उसकी क़ै भी नजासत-ए-ग़लीज़ा है। और क़ै से मुराद वह खाना-पानी आदि है जो पोटे (अन्ननली के थैले) से बाहर निकले, क्योंकि जिस जानवर की बीट नापाक है उसका पोटा अशुद्धियों का स्रोत है। पोटे से जो चीज़ बाहर आएगी वह स्वयं अपवित्र होगी या अपवित्रता से मिलकर आएगी। बहरहाल, वह बीट की तरह ही अशुद्धि रखेगी: हल्की में हल्की, भारी में भारी। इसके विपरीत वह चीज़ जो अभी पोटे तक नहीं पहुँची थी और निकल आई, जैसे मुर्गी ने पानी पिया, अभी गले ही में था कि फंदा लगा और निकल गया।

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم

الجواب: بادامی رنگ کی پڑیا میں تو کوئی مضائقہ نہیں اور رنگت کی پڑیا سے ورع کے لئے بچنا اولٰی ہے پھر بھی اس سے نماز نہ ہونے پر فتوٰی دینا آج کل سخت حرج کا باعث ہے۔

(Arabic box): والحرج مدفوع بالنص وعموم البلوی من موجبات التخفیف لاسیما في مسائل الطھارۃ والنجاسۃ۔ میں-(ت) نص سے ثابت ہے کہ حرج دُور کیا گیا اور عمومِ بلوٰی اسبابِ تخفیف سے ہے خصوصاً مسائلِ طہارت اور نجاست میں۔

لہذا اس مسئلہ میں مذہب حضرت امامِ اعظم وامام ابو یوسف رضی اللہ تعالٰی عنہما سے عدول کی کوئی وجہ نہیں ہمارے ان اماموں کے مذہب پر پڑیا کی رنگت سے نماز بلاشبہ جائز ہے۔ فقیر اس زمانے میں اسی پر فتوٰی دینا پسند کرتا ہے۔

(Arabic box): وقد ذکرنا علی ھذہ المسئلۃ کلاماً اکثر من ھذا في فتاونا وسنحقق الامر بمالا مزید علیہ ان ساعد التوفیق من اللہ سبحنہ و تعالی واللہ تعالٰی اعلم۔ رہے گی۔ واللہ تعالٰی اعلم۔(ت) ہم نے اپنے فتاوٰی میں اسی مسئلہ پر اس سے بھی زیادہ بحث کی ہے اور اللہ تعالٰی کی طرف سے توفیق معاون ہوئی تو ہم اس سلسلے میں ایسی تحقیق کریں گے جس کے بعد مزید گنجائش نہیں

مسئلہ ۱۷۱: مرسلہ مرزا باقی بیگ صاحب رام پوری ۲۰ ذیقعدہ ۱۳۰۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مرغی کی قے پاک ہے یا ناپاک، اور جس شے کی بیٹ پلید ہے کیا اس کی قے بھی پلید ہے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: ہر جانور کی قے اس کی بیٹ کا حکم رکھتی ہے جس کی بیٹ پاک ہے جیسے چڑیا یا کبوتر، اس کی قے بھی پاک ہے۔ اور جس کی نجاست خفیفہ جیسے باز یا کوا، اس کی قے بھی

نجاست خفیفہ۔ اور جس کی نجاست غلیظہ ہے جیسے بط یا مرغی، اس کی قے بھی نجاست غلیظہ۔ اور قے سے مراد وہ کھانا پانی وغیرہ ہے جو پوٹے سے باہر نکلے کہ جس جانور کی بیٹ ناپاک ہے اس کا پوٹا معدنِ نجاسات ہے پوٹے سے جو چیز باہر آئے گی خود نجس ہوگی یا نجس سے مل کر آئے گی بہرحال مثلِ بیٹ نجاست رکھے گی خفیفہ میں خفیفہ، غلیظہ میں غلیظہ بخلاف اس چیز کے جو ابھی پوٹے تک نہ پہنچی تھی کہ نکل آئی۔ مثلاً مرغی نے پانی پیا ابھی گلے ہی میں تھا کہ اچھو لگا اور نکل گیا

Fatawa Razawiyya Volume Four

And anyone with even a minimal understanding can know the reason for derivation in these two issues. Know that we have based our discourse on the manifest narration (Zahir al-Riwayah), which has been authenticated and preferred; it has a clear reasoning and strong evidence, and it is mandatory to rely upon. Although ‘Kamal’ has discussed some instances here, we have responded to him in the marginal notes. All praise be to Allah, a great deal of praise, and Allah Almighty knows best. (T)

Issue 173: Sent by Mirza Baqi Baig Sahib, Rampuri, 20 Dhu al-Qi'dah 1308 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: will an impure thing become pure by being washed once without excessive effort, or not? Please explain and be rewarded.

The Answer: If the impurity is visible (Mar'iyya), i.e., it can be seen even after drying, then a specific number of washings is not a condition for its purification; rather, the removal of the substance itself is required, whether it happens in one go or ten times. However, the remaining of a trace is evidence of the remaining of the substance, so the removal of traces like color and smell is necessary. But that trace whose removal is difficult will be forgiven; there is no need to remove it with soap or hot water, etc. It is stated in Durr al-Mukhtar:

"The place of visible impurity, after drying, is purified by the removal of its substance and trace, even if it is once or more than three according to the most correct opinion. The remaining of a trace like permanent color or smell does not harm; thus, one is not burdened with its removal through hot water or soap and the like. Summarized. (T)" According to the most correct opinion, the substance of visible impurity and its trace should be removed from that spot. Whether it is removed in one go or more than three times, it becomes pure after drying. And such a trace which has become permanent (i.e., does not go away), for example, color and smell, then one will not be burdened to remove it with hot water or soap etc. (Summarized) (T)

Note: This answer has already passed in the tenth issue of the chapter of Wudu. (T)

1. Durr al-Mukhtar, Chapter of Impurities, Printed by Mujtabai Delhi, 1/56 Page 393 of 761

फतावा रज़विया जिल्द चार

जिस व्यक्ति को ज़रा सी भी समझ हासिल है, वह दोनों मसलों में इस्तिनबात (निष्कर्ष) की वजह जान सकता है। जान लो कि हमारे कलाम की बुनियाद ज़ाहिर-ए-रिवायत है जिसकी तसहीह (पुष्टि) की गई, उसे तरजीह दी गई, वह निहायत वाज़ेह (स्पष्ट) है, उसकी दलील कवी (मजबूत) है और उस पर एतमाद (भरोसा) वाजिब है। अगरचे इस जगह बाज़ सूरतों में 'कमाल' ने कलाम किया है जिसका जवाब हमने इसके हाशिये पर दिया है। अल्लाह तआला के लिए बहुत ज़्यादा हम्द है और अल्लाह तआला खूब जानता है। (त)

मसला १७३: मिर्जा बाकी बेग साहब रामपुरी द्वारा प्रेषित २० ज़िलक़ादा १३०८ हिजरी। उलमा-ए-दीन इस मसले में क्या फरमाते हैं कि नापाक चीज़ एक बार धोने से पाक हो जाएगी बगैर मुबालगे (अतिशयोक्ति) के या नहीं? बयान फरमाएं और सवाब पायें।

जवाब: नजासत अगर मरईया (दिखने वाली) हो यानी सूखने के बाद भी नज़र आए तो उसकी ततहीर (पाकी) में तादाद असल में शर्त नहीं बल्कि 'ऐन' (वस्तु) का ज़वाल (खत्म होना) दरकार है, चाहे एक बार में हो जाए या दस बार में। मगर असर का बाकी रहना ऐन के बाकी रहने पर दलील है, तो रंग और बू जैसे असर का ज़वाल ज़रूरी है, लेकिन वह असर जिसका ज़वाल दुश्वार हो, माफ़ किया जाएगा। साबुन या गर्म पानी वगैरह से छुड़ाने की ज़रूरत नहीं। दुर-ए-मुख्तार में है:

"असह कौल (सबसे सही राय) के मुताबिक, दिखने वाली नजासत की जगह से ऐन-ए-नजासत और उसका असर दूर किया जाए, चाहे एक मर्तबा से या तीन से भी ज़्यादा मर्तबा से दूर हो तो सूखने के बाद पाक हो जाती है। और ऐसा असर जो उसके लिए लाज़िम हो चुका है (यानी दूर नहीं होता) मसलन रंग और बू, तो उसे गर्म पानी या साबुन वगैरह के साथ दूर करने की तकलीफ नहीं दी जाएगी। (मुलख़्ख़सन) (त)"

इसका जवाब बाबे वुज़ू के दसवें मसले में गुज़र चुका है। (त)

1. दुर-ए-मुख्तार बाबुल अनजास मतबुआ मुज्तबाई देहली १/५६ पृष्ठ ३९३ का ७६१

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم

وقد علم من لہ ادنی فہم وجہ الاستنباط فی المسألتین واعلم انا بنینا الکلام علی ظاھر الروایۃ المصحح المرجح الواضح الوجہ القوی الدلیل الواجب التحویل وان کان ھھنا فی بعض الصور کلام للکمال اجبنا عہ عنہ علی ھامشہ والحمدللہ حمدا کثیرا واللہ تعالی اعلم۔ جس شخص کو ادنی سمجھ بھی حاصل ہے وہ دونوں مسئلوں میں استنباط کی وجہ جان سکتا ہے جان لو کہ ہمارے کلام کی بنیاد ظاہر روایت ہے جس کی تصحیح کی گئی اسے ترجیح دی گئی وہ نہایت واضح ہے اس کی دلیل قوی ہے اور اس پر اعتماد واجب ہے۔ اگرچہ اس جگہ بعض صورتوں میں کمال نے کلام کیا ہے جس کا جواب ہم نے اس کے حاشیے پر دیا ہے۔ اللہ تعالی کے لئے بہت زیادہ حمد ہے اور اللہ تعالی خوب جانتا ہے۔ (ت)

مسئلہ ۱۷۳: مرسلہ مرزا باقی بیگ صاحب رام پوری ۲۰ ذیقعدہ ۱۳۰۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ نجس چیز ایک مرتبہ میں پاک ہوگی بغیر مبالغہ کے یا نہیں بینوا توجروا۔

الجواب: نجاست اگر مرئیہ ہو یعنی خشک ہونے کے بعد بھی نظر آئے تو اس کی تطہیر میں عدد اصلاً شرط نہیں بلکہ زوالِ عین درکار ہے خواہ ایک بار میں ہو جائے یا دس بار میں مگر بقائے اثر بقائے عین پر دلیل تو زوالِ اثر مثل رنگ و بو ضرور لیکن وہ اثر جس کا زوال دشوار ہو معاف کیا جائے گا، صابون یا گرم پانی وغیرہ سے چھڑانے کی حاجت نہیں۔ در مختار میں ہے:

یطھر محل نجاسۃ مرئیۃ بعد جفاف بزوال عینھا واثرھا ولوبمرۃ اوبمافوق ثلث في الاصح ولایضر بقاء اثرکلون وریح لازم فلا یکلف فی ازالتہ الی ماء حار او صابون و نحوہ اہ ملخصا۔ اصح قول کے مطابق نظر آنے والی نجاست کی جگہ سے عین نجاست اور اس کا اثر دُور کیا جائے، خواہ ایک

مرتبہ سے یا تین سے بھی زیادہ مرتبہ سے دور ہو تو خشک ہونے کے بعد پاک ہو جاتی ہے، اور ایسا اثر جو اس کے لئے لازم ہو چکا ہے (یعنی دور نہیں ہوتا) مثلاً رنگ اور بو، تو اسے گرم پانی یا صابون وغیرہ کے ساتھ دُور کرنے کی تکلیف نہیں دی جائے گی اھ ملخصاً (ت)

عه وقد تقدم فی المسألة العاشرة باب الوضوء (م) | اس کا جواب باب الوضوء کے دسویں مسئلہ میں گزر چکا ہے۔ (ت)

1. در مختار باب الانجاس مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/۵۶ Page 393 of 761

Fatawa Razawiyya Volume 4

Regarding an invisible impurity that is no longer visible after drying, there are two opinions among the scholars. According to one opinion, the predominance of opinion (ghalabah al-zann) is considered; that is, when it is most likely that the impurity has been removed, it becomes pure, whether this predominance of opinion is achieved in one wash or more. According to the second opinion, triple washing (tathleeth), i.e., washing three times, is a condition. Each time, it should be squeezed so much that no drops remain. If the item cannot be squeezed, it should be washed again after each drying. According to this opinion, if triple washing is not performed, purity will not be achieved. A group of scholars stated that this method is specifically for people prone to obsessive doubts (waswas). One who does not have such doubts should act upon the predominance of opinion. The intention of these scholars was to resolve the dispute by dividing the two opinions between the states of having and not having obsessive doubts.

I say: However, this application (of the rule) hardly fits the apparent general wording of the texts. Indeed, those afflicted with obsessive doubts among people are a very small minority compared to others. Applying a ruling that is specific to the overwhelming majority is neither far-fetched nor objectionable, unlike the reverse, as is not hidden.

I say: But this application does not seem appropriate for the general wording of the common texts because people with obsessive doubts are very few compared to others, and applying a ruling that is specific to the vast majority is neither (intellectually) far-fetched nor unfamiliar, unlike its opposite, as it is not hidden. (T)

Another group of Imams said that the second opinion is a limitation and estimation of the first opinion; that is, this predominance of opinion is usually achieved in three washes.

That is, consideration is given to the majority, and upon it rulings are built, and the small and rare is disregarded.

That is, the majority is taken into account, and the basis of rulings is also this; the few and rare are ignored. (T)

According to this estimation, both opinions will revert to the second opinion. This direction was favored in Hidayah, Kafi, Durar, Ghunyah, Tanwir, etc. And undoubtedly,

it is very logical. In short, both opinions are very strong, and both are called 'Zahir al-Riwayah', and there is correction and preference (tasheeh and tarjeeh) on both sides.

I say: But the second opinion is mentioned in the common texts, and probably there is more precaution in it, and more regulation in it. Today, if some people are prone to obsessive doubts, many are negligent and careless. Telling them such an unregulated thing would give absolute freedom to their carelessness. Therefore, acting on the second opinion is more appropriate and certain. As for the excellent reconciliation in Hidayah and Kafi, there is no other opinion besides the second. In any case, washing once when there is no predominance of opinion of the removal of impurity—and usually, washing once cursorily without exaggeration would be like that—then in this case, (purity) will not be achieved by consensus.

फ़तावा रज़विया जिल्द 4

और ग़ैर-मरई (अदृश्य) नजासत के सूखने के बाद दिखाई न देने पर उलेमा के दो क़ौल (कथन) हैं। एक क़ौल पर ग़लबा-ए-ज़न्न (प्रबल विचार) का एतबार है, यानी जब गुमान ग़ालिब (प्रबल विचार) हो जाए कि अब नजासत निकल गई तो वह पाक (शुद्ध) हो गया, चाहे यह ग़लबा-ए-ज़न्न एक ही बार में हासिल हो या ज़्यादा में। और दूसरे क़ौल पर तस्लीत यानी तीन बार धोना शर्त है। हर बार इतना निचोड़ें कि बूंद न टपके और अगर निचोड़ने वाली चीज़ न हो तो हर बार खुश्क (सूखने) होने के बाद दोबारा धोएं। इस क़ौल पर अगर इस तरह तस्लीत न करेगा तो तहारत (शुद्धि) न होगी। उलेमा की एक जमात ने फ़रमाया कि यह तरीक़ा ख़ास तौर पर उन लोगों के लिए है जो वसवसों (भ्रम) का शिकार हैं; जिसे वसवसा न हो वह उसी ग़लबा-ए-ज़न्न पर अमल करे। इन उलेमा का मक़सद यह है कि दोनों क़ौलों को वसवसा होने और न होने की दो स्थितियों पर बाँट कर विवाद को ख़त्म कर दिया जाए।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): लेकिन यह मिलान आम मतून (मूल पाठों) के ज़ाहिरी इतलाक़ (व्यापकता) के मुनासिब नहीं मालूम होता, क्योंकि वसवसे वाले लोग दूसरों की तुलना में बहुत कम हैं और हुक्म का इतलाक़ जो ग़ालिब अक्सरियत (भारी बहुमत) से मख़्सूस (विशिष्ट) है, वह (अक़्ल से) न तो दूर की बात है और न ही अपरिचित, इसके विपरीत (अर्थात अल्पमत पर हुक्म का इतलाक़) जैसा कि छिपा नहीं है।

अक़ूल: मगर यह ततबीक़ आम मतून के ज़ाहिर इतलाक़ के मुनासिब मालूम नहीं होती क्योंकि वसवसे वाले लोग दूसरों की निस्बत बहुत कम हैं और हुक्म का इतलाक़ जो ग़ालिब अक्सरियत से मख़्सूस है वह (अक़्ल से) न तो बईद (दूर) है और न ही ग़ैर मारूफ़, बख़िलाफ़ इसके अक्स के जैसा कि मख़्फ़ी (छिपा) नहीं। (त)

इमामों की दूसरी जमात ने फ़रमाया कि दूसरा क़ौल पहले क़ौल की तह्दीद (सीमा निर्धारण) और तक़दीर (अनुमान) है, यानी यह ग़लबा-ए-ज़न्न आमतौर पर तीन बार धोने में हासिल होता है।

यानी एतबार ग़ालिब (बहुमत) का होता है और अहकाम (नियमों) की बुनियाद भी यही है, क़लील (थोड़ा) और कमयाब से नज़रअंदाज़ किया जाता है।

यानी एतबार ग़ालिब का होता है और अहकाम की बुनियाद भी यही है, क़लील व कमयाब से सिर्फ़ नज़र किया जाता है। (त)

इस अनुमान पर दोनों क़ौल, दूसरे क़ौल की तरफ़ लौट आएंगे। हिदाया, काफ़ी, दुरर, ग़ुनिया, तनवीर वग़ैरह में इसी ओर रुझान ज़ाहिर किया गया है और बेशक यह बहुत ही तर्कसंगत है। संक्षेप में, दोनों क़ौल बहुत मज़बूत हैं और दोनों को 'ज़ाहिर-उर-रिवायत' कहा गया है और दोनों पक्षों में तसहीह (सुधार) और तरजीह (प्राथमिकता) मौजूद है।

अक़ूल: मगर दूसरा क़ौल आम मतून में ज़िक्र किया गया है और शायद उसी में एहतियात (सावधानी) ज़्यादा है और उसमें इन्ज़िबात (नियमन) अधिक है। आज के दौर में अगर कुछ लोग वसवसे वाले हैं, तो बहुत से लोग लापरवाह और बेपरवाह भी हैं। उन्हें ऐसी अनियंत्रित बात बताने से उनकी लापरवाही को और बढ़ावा मिलेगा। इसलिए दूसरे क़ौल पर अमल करना ही सबसे उपयुक्त और विश्वसनीय है। जहाँ तक हिदाया और काफ़ी के बेहतरीन तालमेल का सवाल है, तो दूसरे क़ौल के सिवा कोई दूसरा क़ौल है ही नहीं। बहरहाल, एक बार धोने से जबकि नजासत दूर होने का प्रबल विचार न हो - और आमतौर पर बिना किसी विशेष प्रयास के सरसरी तौर पर एक बार धोने में ऐसा ही होगा - तो ऐसी स्थिति में सर्वसम्मति से पवित्रता हासिल नहीं होगी।

पेज 394 का 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

اور غیر مرئیہ کو سکھانے کے بعد نہ دکھائی دے اس میں علماء کے دو قول ہیں ایک قول پر غلبہ ظن کا اعتبار ہے یعنی جب گمان غالب ہو جائے کہ اب نجاست نکل گئی پاک ہو گیا اگرچہ یہ غلبہ ظن ایک ہی بار میں حاصل ہو یا زائد میں۔ اور دوسرے قول پر تثلیث یعنی تین بار دھونا شرط ہے ہر بار اتنا نچوڑیں کہ بوند نہ ٹپکے اور نچوڑنے کی چیز نہ ہو تو ہر بار خشک ہونے کے بعد دوبارہ دھوئی۔ اس قول پر اگر یوں تثلیث نہ کرے گا طہارت نہ ہوگی۔ ایک جماعت علماء نے فرمایا یہ طریقہ خاص اہل وسواس کے لئے ہے جسے وسوسہ نہ ہو وہ اسی غلبہ ظن پر عمل کرے، ان علماء کا قصد یہ ہے کہ دونوں قولوں کو ہر دو حالت وسوسہ و عدم وسوسہ پر تقسیم کر کے نزاع اٹھادیں۔

اقول: الا ان ھذا التطبیق لایکاد یلائم ظاھر اطلاق عامۃ المتون فان الموسوسین فی الناس اقل قلیل بالنسبت الی غیرھم واطلاق الحکم المختص بالغالب الکثیر غیر بعید ولا مستنکر بخلاف عکسہ کما لا یخفی۔

اقول: مگر یہ تطبیق عام متون کے ظاہر اطلاق کے مناسب معلوم نہیں ہوتی کیونکہ وسوسے والے لوگ دوسروں کی نسبت بہت کم ہیں اور حکم کا اطلاق جو غالب اکثریت سے مختص ہے وہ (عقل سے) نہ تو بعید ہے اور نہ ہی غیر معروف، بخلاف اس کے عکس کے جیسا کہ مخفی نہیں۔ (ت)

دوسری جماعت ائمہ نے فرمایا قول ثانی قول اول کی تحدید و تقدیر ہے یعنی یہ غلبہ ظن غالباً تین بار میں حاصل ہوتا ہے۔

ای وانما العبرۃ للغالب وعلیہ تبنی الاحکام ویقطع النظر عن القلیل النادر۔

یعنی اعتبار غالب کا ہوتا ہے اور احکام کی بنیاد بھی یہی ہے، قلیل و کمیاب سے صرف نظر کیا جاتا ہے۔ (ت)

اس تقدیر پر دونوں قول قول ثانی کی طرف عود کر آئیں گے ہدایہ و کافی و درر وغنیہ و تنویر وغیرہما میں اسی طرف میل فرمایا اور بیشک وہ بہت قرین قیاس ہے بالجملہ دونوں قول نہایت با قوت ہیں اور دونوں کو ظاہر الروایۃ کہا گیا اور دونوں طرف تصحیح و ترجیح۔

اقول: مگر قول ثانی عامہ متون میں مذکور اور غالباً اُسی میں احتیاط زیادہ اور اُس میں انضباط ازید اور آج کل اگر بعض لوگ موسوس ہیں تو بہتیرے مداہن وبے پروا ہیں انہیں ایک ایسے غیر منضبط بات بتانے میں اُن کی بے پرواہی کی مطلق العنائی ہے لہذا قول ثانی ہی پر عمل انسب و الیق ہے اور ہدایہ و کافی کی توفیق حسن پر تو قول ثانی کے سوا دوسرا قول ہی نہیں۔ بہرحال ایک بار دھونے سے جبکہ زوال نجاست کا ظن غالب نہ ہو اور غالباً بلا مبالغہ سرسری طور پر ایک دفعہ دھونے میں ایسا ہی ہوگا تو اس صورت میں بالاتفاق حاصل نہ ہوگی۔

Fatawa Ridawiyya, Volume 4.

In Durr al-Mukhtar, it is stated: An invisible impurity is purified when the person washing it (if they are legally accountable) has a prevailing opinion (reasonable certainty) that it is clean; otherwise, water is used to purify that place without a specific count, and this is the given verdict (fatwa). For someone with obsessive doubts (waswasa), it is estimated by washing and squeezing three times for things that can be squeezed, squeezing firmly so it doesn't drip anymore. For things that cannot be squeezed, it is fixed at drying it three times. (Summarized)

In Radd al-Muhtar, it is stated: His saying "without a specific count is the fatwa" is also in Al-Munya. Its literal meaning is that if he has a prevailing opinion of its removal after one wash, it suffices him. Imam al-Karkhi explicitly stated this in his abridgment, and Imam al-Isbijabi chose it. In Ghayat al-Bayan, fixing it at three is the apparent narration. In As-Siraj, the consideration of prevailing opinion is the chosen view of the Iraqis, while fixing it at three is the chosen view of the Bukharis. The former is apparent if one is not obsessive, but if one is obsessive, then the second is. (End of Al-Bahr al-Ra'iq). In An-Nahr al-Fai'q, it is said this is a good reconciliation. The author of Al-Mukhtar followed this path, considering prevailing opinion for those without obsessive doubts, but for those with obsessive doubts, he followed the position of the author (of Durr al-Mukhtar). Al-Hilya also considered it commendable and said the majority of scholars follow this regarding Istinja' (cleansing after using the toilet). I say: This is based on confirming the disagreement.

Footnote: 1. Durr al-Mukhtar, Chapter of Impurities, printed at Mujtabai Delhi, 1/56. Page 395 of 761

फ़तावा रज़विया, जिल्द चौथी।

दुर्रे मुख्तार में है: अदृश्य अशुद्धि का स्थान तब शुद्ध हो जाता है जब धोने वाले को (यदि वह कानूनी रूप से जवाबदेह है) इसके साफ होने का प्रबल अनुमान हो जाए; अन्यथा, उस स्थान की शुद्धि के लिए बिना किसी गिनती के पानी का उपयोग किया जाए, इसी पर फ़तवा है। और वसवसे (जुनूनी संदेह) वाले व्यक्ति के लिए, जो चीजें निचोड़ी जा सकती हैं, उन्हें तीन बार धोने और मजबूती से निचोड़ने का अनुमान है ताकि अब और बूंदें न गिरें। और जो चीजें निचोड़ी नहीं जा सकतीं, उन्हें तीन बार सुखाना निर्धारित है। (संक्षिप्त) (त)

रद्दुल मुहतार में है: (साहब-ए-दुर्रे मुख्तार के) "बिना गिनती के" (गिनती शर्त नहीं है) कहने पर फ़तवा है; मुन्या में भी इसी तरह है। इससे स्पष्ट होता है कि यदि एक बार धोने से अशुद्धि दूर होने का प्रबल अनुमान हो जाए, तो यही काफी है। इमाम करखी ने अपने संक्षिप्त विवरण में यही स्पष्ट किया है और इमाम इस्बीजाबी ने भी इसे ही अपनाया है। ग़यातुल बयान में है कि तीन बार निर्धारित करना स्पष्ट वर्णन है। सिराज में है कि इराकियों के अनुसार प्रबल अनुमान पर विचार करना पसंदीदा है, जबकि बुखारा वालों के लिए तीन बार का अनुमान पसंदीदा है। और पहला तब स्पष्ट है जब व्यक्ति वसवसे वाला न हो, और यदि वसवसा करने वाला हो तो दूसरी बात स्पष्ट है। (बह्रुर राइक समाप्त)। नहरुल फ़ाइक में फरमाया गया कि यह एक अच्छा समन्वय है। साहब-ए-मुख्तार ने भी यही रास्ता अपनाया कि उन्होंने वसवसा न करने वालों के बारे में इसी पर विचार किया, लेकिन वसवसा करने वालों के बारे में उनका वही रुख है जिस पर मुसन्निफ़ (साहब-ए-दुर्रे मुख्तार) चले हैं। और हिल्या ने भी इसी को सराहनीय करार दिया है और फरमाया कि इस्तंजा (शौच के बाद सफाई) के बारे में विद्वानों के बड़े समूह का यही मत है। (त) मैं (अल्लामा शामी) कहता हूँ इसकी...

फुटनोट: 1 दुर्रे मुख्तार, अशुद्धियों का अध्याय, मुजतबाई दिल्ली में मुद्रित, 1/56। पृष्ठ 395/761

درِ مختار میں ہے: یطھر محل غیر مرئیة بغلبة ظن غاسل لو مکلفاً والا فمستعمل طھارة محلھا بلاعدد به یفتی وقدر لموسوس بغسل وعصر ثلثاً فیما ینعصر مبالغاً بحیث لایقطر وبتثلیث جفاف في غیر منعصر اھ ملخصاً- جس جگہ نجاست دکھائی نہ دیتی ہو اگر دھونے والے کو غالب گمان حاصل ہو جائے تو پاک ہوجاتی ہے ورنہ اس جگہ کی طہارت کے لئے گنتی کے بغیر پانی استعمال کیا جائے اسی پر فتوٰی ہے اور وسوسہ والے کے لئے جس چیز کو نچوڑنا ممکن ہے اسے تین بار دھونا اور یوں نچوڑنا کہ اب قطرے نہ گریں اور جس چیز کو نچوڑنا ممکن نہیں اس کو تین بار خشک کرنا مقرر ہے۔ اھ ملخصاً (ت)

رد المحتار میں ہے: قوله بلاعددبه یفتی ، کذا في المنیة وظاھره انه لو غلب علی ظنه زوالھا بمرة اجزأه وبه صرح الامام الکرخي في مختصره واختاره الامام الاسبیجابي وفي غایة البیان التقدیر بالثلث ظاھر الروایة وفي السراج اعتبار غلبة الظن مختار العراقیین والتقدیر بالثلث مختار البخاریین والظاھر الاول ان لم یکن موسوسا وان کان موسوسا فالثاني اھ بحرقال في النھر وھو توفیق حسن اھ وعلیه جری صاحب المختار فانه اعتبر غلبة الظن لافي الموسوس وھو مامشی علیه المصنّف واستحسنه في الحلیة وقال وقدمشی الجم الغفیر علیه في الاستنجاء- اقول: وھذا مبنی علی تحقق الخلاف اس (صاحب در مختار) کا قول "بلا عدد" (گنتی شرط نہیں) پر فتوٰی ہے، منیہ میں بھی اسی طرح ہے اس سے ظاہر ہوتا ہے کہ اگر ایک مرتبہ دھونے سے نجاست کے زائل ہونے کا غالب گمان ہوجائے تو یہی کافی ہے۔ امام کرخی نے اپنی مختصر میں اسی کی تصریح فرمائی اور امام اسپیجابی نے بھی اسے ہی اختیار کیا اور غایۃ البیان میں ہے کہ تین بار کا مقرر کرنا ظاہر روایت ہے۔ سراج میں ہے کہ عراقیوں کے نزدیک غلبہ ظن کا اعتبار مختار ہے جبکہ تین بار کا اندازہ بخارا والوں کا مختار ہے۔

اور پہلا ظاہر ہے اگر وسوسے والا نہ ہو، اگر وسوسہ کرنے والا ہو تو دوسری بات ظاہر ہے اھ (بحر الرائق انتہی) نہر الفائق میں فرمایا کہ یہ اچھی تطبیق ہے اھ صاحبِ مختار نے بھی یہی راستہ اختیار کیا کہ انہوں نے وسوسہ نہ کرنے والوں کے بارے میں اسی کا اعتبار کیا ہے مگر وسوسہ کرنے والے کے بارے میں ان کا وہی موقف جس پر مصنف (صاحب دُر مختار) چلے ہیں اور حلیہ نے بھی اسی کو مستحسن قرار دیا ہے اور فرمایا استنجاء کے بارے میں جم غفیر کا یہی مسلک ہے (ت) اقول: میں (علامہ شامی) کہتا ہوں اس کی

1 در مختار باب الانجاس مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/۵۶ Page 395 of 761

Fatawa Razawiyya, Volume Four

The basis (in both matters) is on the proof of difference, i.e., when the statement of 'preponderance of belief' (Ghalaba-e-Zann) is different from the statement of 'three [times]'. In Al-Hilya, it was stated that this is the truth, and they presented testimony for this from the words of Al-Hawi al-Qudsi and Al-Muhit. (T)

I say: (I [Allama Shami] say) this (difference) is contrary to what is in Al-Kafi, and its requirement is that both are the same statement. In Sharh al-Munya, the same path was taken; they said it is known from this that in the madhhab (school of thought), the 'preponderance of belief' is considered, and it is estimated at three times because usually, purity is attained after washing three times and doubts are removed. And it is about placing the apparent cause in place of the effect whose reality is difficult to discern, just as travel is placed in the position of hardship. This is also the requirement of the words of Al-Hidayah etc., and Al-Imdad was also summarized on this. This is also apparent from the texts because they specified three [times]. And Allah the Exalted knows best, and His knowledge, may His glory be exalted, is most complete and most wise. (T)

Issue 172: What do the scholars of religion say regarding this issue: if urine falls on a shoe and dust accumulates and becomes hardened on it, will rubbing it make it pure or not? Explain and be rewarded.

The Answer: If urine fell on the shoe and dust hardened on it, it will become pure by such rubbing that removes its effect; otherwise, it will not be pure without washing.

1. Rad al-Muhtar, Chapter of Impurities, published by Mustafa al-Babi, Egypt, 1/242.

फतवा-ए-रज़विया, जिल्द 4

आधार (दोनों बातों में) मतभेद के प्रमाण पर है, यानी जब 'प्रबल संभावना' (ग़लबा-ए-ज़न) का कथन 'तीन [बार]' के कथन से भिन्न हो। अल-हिल्या में कहा गया है कि यही सत्य है और उन्होंने इस पर अल-हावी अल-कुदसी और अल-मुहीत के शब्दों से गवाही पेश की है। (त)

मैं कहता हूँ: (मैं [अल्लामा शामी] कहता हूँ) यह (मतभेद) अल-काफी में जो है उसके विरुद्ध है, और इसका निहितार्थ यह है कि दोनों एक ही कथन हैं। शरह अल-मुन्या में यही मार्ग अपनाया गया है; उन्होंने कहा कि इससे ज्ञात हुआ कि मज़हब (विचारधारा) में 'प्रबल संभावना' का विचार किया जाता है, और उसका अनुमान तीन बार है क्योंकि आमतौर पर तीन बार धोने से पवित्रता प्राप्त हो जाती है और संदेह समाप्त हो जाते हैं। और यह प्रकट कारण को उस कार्य-कारण (मुसब्बब) के स्थान पर रखने के बारे में है जिसकी वास्तविकता जानना कठिन है, ठीक वैसे ही जैसे यात्रा को कठिनाई के स्थान पर रखा जाता है। अल-हिदाया आदि के शब्दों का निहितार्थ भी यही है, और अल-इमदाद को भी इसी पर संक्षिप्त किया गया है। मूल ग्रंथों (मतून) से भी यही स्पष्ट है क्योंकि उन्होंने तीन [बार] को स्पष्ट रूप से बताया है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है, और उसका ज्ञान, उसकी महिमा बुलंद हो, सबसे पूर्ण और सबसे अधिक प्रबुद्ध है। (त)

मसला 172: धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं: यदि जूते पर पेशाब गिर गया और उस पर धूल जम कर कठोर हो गई, तो क्या रगड़ने से वह शुद्ध हो जाएगा या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: यदि जूते पर पेशाब गिर गया और उस पर धूल जम गई, तो ऐसे रगड़ने से जिससे उसका प्रभाव समाप्त हो जाए, वह शुद्ध हो जाएगा; अन्यथा बिना धोए शुद्ध नहीं होगा।

1. रद-अल-मुह्तार, अशुद्धियों का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र द्वारा प्रकाशित, 1/242।

بنیاد (دونوں باتوں میں) ثبوتِ اختلاف پر ہے یعنی جب غلبہ ظن کا قول تین کے قول کا غیر ہو حلیہ میں فرمایا یہی حق ہے اور انہوں نے اس پر حاوی قدسی اور محیط کے کلام سے شہادت پیش کی ہے۔(ت)

اقول: (میں (علامہ شامی) کہتا ہوں) یہ (اختلاف) اس کے خلاف ہے جو کافی میں ہے اور اس کا مقتضی یہ ہے کہ دونوں ایک ہی قول ہیں۔ شرح منیہ میں یہی راستہ اختیار کیا گیا ہے انہوں نے فرمایا اس سے معلوم ہوا کہ مذہب میں غلبہ ظن کا اعتبار ہے اور وہ تین بار کا اندازہ ہے کیوں کہ غالب یہی ہے تین بار دھونے سے طہارت حاصل ہو جاتی ہے اور وسوسہ ختم ہو جاتا ہے اور یہ کہ سببِ ظاہر کو اس مسبَّب کے قائم مقام رکھنا ہے جس کی حقیقت پر اطلاع مشکل ہے جیسے سفر مشقت کے قائم مقام ہے اہ ہدایہ وغیرہ کے کلام کا مقتضی بھی یہی ہے اور الامداد بھی اسی پر اختصار کیا گیا ہے۔ ظاہرِ متون بھی یہی ہیں کیونکہ انہوں نے تین کی تصریح کی ہے اہ واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم واحکم (ت)

مسئلہ ۱۷۲: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ جوتے پر پیشاب پڑ گیا اور اس پر خاک جم کر تندار ہو گیا تو رگڑنے سے پاک ہو جائے گا یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: جوتے پر اگر پیشاب پڑ گیا اور اس پر خاک جم گئی تو ایسے ملنے سے جس سے اس کا اثر زائل ہو جائے پاک ہو جائے گا ورنہ بغیر دھونے کے پاک نہ ہو گا۔

1 ردالمحتار باب الانجاس مطبوعہ مصطفی البابی مصر ۱ / ۲۴۲

In Al-Durr al-Mukhtar: Leather socks and their like, such as shoes, etc., are purified if they become soiled with a substance-based impurity—which is defined as any impurity visible after drying, even if it originates from a non-solid source like wine or urine upon which dust has fallen. This is the issued fatwa. The impurity is removed by rubbing until its trace is gone. If the impurity has no solid substance, it must be washed. End. 1 And Allah Almighty knows best.

[Urdu Translation of the above:] It is stated in Al-Durr al-Mukhtar that leather socks and similar items like shoes (etc.), if they become impure with a substance-based impurity—which is any impurity that remains visible after drying, even if it is from a source other than solid impurity, such as wine or urine upon which dust has fallen—they will become pure by such rubbing that removes the trace. This is the fatwa. And for impurity that has no solid body, it must be washed. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 175: From Calcutta, Dharmatala No. 6, sent by Mr. Mirza Ghulam Qadir Baig, 8th Ramadan al-Mubarak 1310 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A cotton mattress, which is strongly suspected to be impure, is spread underneath, and a pure quilt is used as a covering. Rain leaked from the roof, making both the quilt and the mattress thoroughly wet. The quilt was also pressed under the feet, meaning it was in direct contact with the mattress. What is the ruling regarding the quilt in this situation? Explain, and may you be rewarded.

The Answer: A thing does not become impure based on mere doubt, because the default state is purity. "Certainty is not overruled by doubt." (T) Yes, a strong suspicion based on sound evidence is equated with certainty in jurisprudence, not if based on general whims. Therefore, if it was known that there was impurity in the mattress, and it was also known that the quilt was in contact with that specific spot of impurity, and the moisture at that specific spot in the mattress was so much that it transferred to the quilt, or there was enough moisture in the quilt at the point of contact to wet the impure spot on the mattress—in short, if the moisture on the impure spot, whether originally there or transferred from an adjacent object, was sufficient for the impurity to pass from one cloth to another (and this "passing" means some components of the impure moisture connect and enter it, not just what is called seepage or dampness, which in jurisprudential law is not the separation of components but merely the transfer of a quality, and that does not necessitate

impurity). And the capacity for this transfer occurs when the amount of moisture is such that if squeezed, a drop would fall; for such moisture...

---

1 Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Impurities, printed at Mujtabai, Delhi, 1/53

अद-दुर्रुल मुख्तार में है: चमड़े के मोज़े और उसके समान जैसे जूता आदि अगर किसी ठोस गंदगी (नजासत) से नापाक हो जाएं—और यह वह हर नजासत है जो सूखने के बाद दिखाई दे, चाहे वह ठोस नजासत के अलावा हो जैसे शराब या पेशाब जिस पर मिट्टी पड़ गई हो—तो ये ऐसे रगड़ने से पाक हो जाएंगे जिससे उसका असर खत्म हो जाए। इसी पर फतवा है। और जिस नजासत का कोई ठोस स्वरूप न हो, उसे धोया जाएगा। अंत। 1 और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

[उपरोक्त का उर्दू अनुवाद:] दुर्रे मुख्तार में है कि मोज़े और उसकी तरह की चीज़ें जैसे जूता (आदि) अगर जिस्म (ठोस स्वरूप) वाली नजासत से नापाक हो जाएं और यह हर वह नजासत है जो खुश्क होने के बाद दिखाई देती हो, चाहे वह नजासत के जिस्म के अलावा से हो जैसे शराब और पेशाब जिस पर मिट्टी पड़ गई हो, तो ये ऐसे रगड़ने से पाक हो जाएंगे जिससे उसका असर ज़ाइल (खत्म) हो जाए। इसी पर फतवा है और जिस नजासत का जिस्म न हो उसे धोया जाएगा। और अल्लाह तआला खूब जानता है। (त)

मसला 175: कोलकाता, धर्मतला नंबर 6 से, प्रेषक जनाब मिर्ज़ा गुलाम कादिर बेग साहब, 8 रमज़ानुल मुबारक 1310 हिजरी। इस मसले में दीन के उलेमा क्या कहते हैं कि रुई का एक गद्दा जिस पर नजासत होने का गहरा संदेह है, नीचे बिछा हुआ है और उस पर एक पाक रज़ाई ओढ़ी गई है। बारिश के कारण छत टपकने से रज़ाई और गद्दा दोनों पूरी तरह भीग गए। रज़ाई पैरों के नीचे भी दबी हुई थी, यानी गद्दे के सीधे संपर्क में थी। इस स्थिति में रज़ाई के बारे में क्या हुक्म है? बयान करें, सवाब पाएं।

अल-जवाब: संदेह मात्र से कोई चीज़ नापाक नहीं होती क्योंकि असल पवित्रता (तहारत) है और "यकीन संदेह से दूर नहीं होता।" (त) हाँ, प्रबल धारणा (ज़न्ने गालिब) अगर सही दलील पर आधारित हो, तो फ़िक़्ह (इस्लामी न्यायशास्त्र) में उसे यकीन के बराबर माना जाता है, न कि आम वहमों के आधार पर। अतः, यदि यह ज्ञात था कि गद्दे में कहीं नजासत मौजूद थी, और यह भी ज्ञात हो कि रज़ाई गद्दे के उसी विशिष्ट नजासत वाले स्थान के संपर्क में थी, और गद्दे के उस विशेष स्थान पर नमी इतनी अधिक थी कि वह छूटकर रज़ाई को लग जाए, या रज़ाई के संपर्क वाले स्थान पर इतनी नमी थी कि वह छूटकर गद्दे के नजासत वाले स्थान को गीला कर दे—संक्षेप में यह कि नजासत वाले स्थान पर नमी, चाहे वह वहीं की हो या किसी पास की चीज़ से पहुँची हो, इतनी हो जिसके कारण नजासत

एक कपड़े से दूसरे कपड़े तक पहुँच सके(और इस पहुँचने का अर्थ यह है कि अपवित्र नमी के कुछ अंश उससे जुड़कर उसमें आ जाएँ न कि केवल वह जिसे सीलन या ठंडक कहते हैं, क्योंकि फ़िक़्ह के हुक्म में यह अंशों का अलग होना नहीं बल्कि केवल गुण का स्थानांतरण है, और वह नजासत का कारण नहीं बनता)। और इस पहुँचने की क्षमता का अनुमान यह है कि नमी इतनी हो कि निचोड़ने पर बूंद टपक जाए; क्योंकि ऐसी ही नमी...

---

1 दुर्रुल मुख्तार, बाबुल अनजास, मुजतबाई दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 1/53

فی الدرالمختار ویطھر خف ونحوہ کنعل تنجس بذی جرم ھو کل مائیری بعد الجفاف ولو من غیرھا کخمر وبول اصابہ تراب بہ یفتی بذلك یزول بہ اثرھا والاجرم لھا فیغسل انتھی 1 واللہ تعالیٰ اعلم۔

در مختار میں ہے موزہ اور اس کی مثل جیسے جوتا (وغیرہ) اگر جسم والی نجاست سے ناپاک ہو جائیں اور یہ ہر وہ نجاست ہے جو خشک ہونے کے بعد دکھائی دیتی ہو اگرچہ (یہ جسم نجاست کے) غیر سے ہو جیسے شراب اور پیشاب جس پر مٹی پڑ گئی، تو یہ ایسے رگڑنے سے پاک ہوجائیں گے جس سے اثر زائل ہو جائے اسی پر فتوی ہے اور جس نجاست کا جسم نہ ہو اسے دھویا جائے گا۔ اور اللہ تعالیٰ خوب جانتا ہے۔ (ت)

مسئلہ ۱۷۵: از کلکتہ دھرم تلا نمبر ۶ مرسلہ جناب میرزا غلام قادر بیگ صاحب ۸ رمضان المبارک ۱۳۱۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ گدا روئی کا جس میں نجس ہونے کا شبہ قوی ہے نیچے بچھا ہے اور اس پر پاک رضائی اوڑھی ہے، بارش سے چھت ٹپکی رضائی اور گدا خوب تر ہو گیار ضائی پیروں کے تلے بھی دبی تھی یعنی گدے سے ملحق تھی اس صورت میں رضائی کی نسبت کیا حکم ہے بینوا توجروا۔

الجواب: شبہ سے کوئی چیز ناپاک نہیں ہوتی کہ اصل طہارت ہے والیقین لا یزول بالشك (یقین شک سے دُور نہیں ہوتا۔ت) ہاں ظن غالب کہ بر بنائے دلیل صحیح ہو فقہیات میں ملحق بیقین ہے نہ بربنائے تو ہمات عامہ پس اگر گدے میں کسی نجاست کا ہونا معلوم تھا اور یہ بھی معلوم ہو کہ رضائی گدے کے خاص موضع نجاست سے ملصق تھی اور گدے میں خاص اس جگہ تری بھی اتنی تھی کہ چھوٹ کر رضائی کو لگے یا رضائی کے موضع اتصال میں اس قدر رطوبت تھی کہ

چھوٹ کر گدے کے محل نجاست کو تر کردے غرض یہ کہ موضع نجاست پر رطوبت خواہ وہیں کہ خواہ دوسری چیز مجاور کی پہنچی ہوئی اس قدر ہو جس کے باعث نجاست ایک کپڑے سے دوسرے تک تجاوز کر سکے (اور اس تجاوز کے یہ معنی کہ کچھ اجزائے رطوبت نجسہ اس سے متصل ہو کر اس میں آ جائیں نہ صرف وہ جسے سیل یا ٹھنڈک کہتے ہیں کہ حکم فقہ میں یہ انفصال اجزا نہیں صرف انتقال کیفیت ہے اور وہ موجب نجاست نہیں اور اس قابلیت تجاوز کی تقدیر رطوبت کا اس قدر ہونا ہے جسے نچوڑے سے بوند ٹپکے کہ ایسے ہی رطوبت کے

---

1 دُر مختار باب الانجاس مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۵۳

Fatawa Razawiya, Volume 4 (parts transfer to another thing) When all three conditions are established, the decree for the transfer of impurity will certainly be given for that portion of the quilt. Then, if that portion exceeds the quantity considered valid in Shari'ah, for example, more than one dirham, the quilt will be considered impure and praying while covering oneself with it will be impermissible, otherwise it will remain under the decree of pardon. Although in the measure of one dirham there will be prohibited dislike (karahat tahrimi) and in less than that only minor dislike (tanzihi). If any of these three conditions is lacking, then the quilt remains in its original state of purity and is completely pure. For example, the impurity of the mattress was doubtful, or not all of it was impure, and it is not known that the specific portion of the quilt met with the impurity, or the moisture of the place of impurity, whether its own or acquired from the quilt, was not capable of transfer. All these cases are of absolute and complete purity.

[Table Section] (Arabic Column): This is the research upon which we have relied because its reasoning is apparent and it is more cautious, even though the discussion on this issue is long. Some of it was mentioned in Radd al-Muhtar at the end of the chapter on impurities and at the end of the book. In it, from al-Burhan, it is clear that it cannot be certain to be mere moisture unless the wet impurity is such that it does not drip when squeezed. For it is possible that a large amount of impurity touches a dry cloth and nothing comes out of it by squeezing, as is observed at the start of its washing. In it, from Imam al-Zayla'i: Because if it does not drip upon squeezing, nothing is separated from it; it only wets what is adjacent to it by moisture, and thus it does not become impure, etc. In it, from al-Khaniya: If one washes his foot and walks on impure ground without socks (shoes), and the ground becomes wet from the moisture of his foot and the surface of the ground turns black...

(Urdu Column): This is the research upon which we have relied because its reason is apparent and it contains more caution, although the extent of discourse on this issue is extremely long, some of which is mentioned in Radd al-Muhtar in the Chapter of Impurities and at the end of the book Radd al-Muhtar. Citing from al-Burhan, it is stated that there is no hiddenness in this matter that its being mere moisture cannot be certain unless drops do not come out by squeezing the wet impurity. Because it is possible that much impurity sticks to a dry cloth and nothing comes out from it by squeezing, as is observed when starting to wash it. [Etc.] In the same (Radd al-Muhtar) it is narrated from Imam al-Zayla'i that when drops do not come out by

squeezing, then nothing will be separated from it and the thing meeting it will become wet merely by proximity (contact), and it does not become impure from that.

[Footnotes] 1. Radd al-Muhtar, Chapter of Impurities, Mustafa al-Babi, Egypt 1/255 2. Radd al-Muhtar, Miscellaneous Issues, Mustafa al-Babi, Egypt 5/517 Page 398 of 761

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4 (हिस्से दूसरी चीज़ की ओर मुंतकिल होते हैं) जब तीनों शर्तें साबित हों तो रज़ाई के उतने हिस्से पर नजासत के फैलने का हुक्म दिया जाएगा। फिर अगर वह हिस्सा शरीयत में मुअतबर मिकदार से ज़्यादा हो, मिसाल के तौर पर एक दिरहम से ज़्यादा, तो रज़ाई नापाक ठहरेगी और उसे ओढ़कर नमाज़ पढ़ना नाजायज़ होगा, वरना माफ़ी के हुक्म में रहेगी। हालाँकि एक दिरहम की मात्रा में कराहत-ए-तहरीमी और उससे कम में सिर्फ़ तनज़ीही होगी। और अगर इन तीनों शर्तों में से कोई भी कमी हुई तो रज़ाई सिरे से अपनी पाकी पर बाकी और पूरी तरह पाक है। मिसाल के तौर पर गद्दे की नजासत संदेहास्पद थी या वह सारा नापाक नहीं था, और रज़ाई के खास हिस्से का नजासत से मिलना मालूम नहीं, या नजासत वाली जगह की नमी, चाहे अपनी हो या रज़ाई से हासिल की गई हो, फैलने के काबिल नहीं थी। ये सब सूरतें कामिल और मुतलक पाकी की हैं।

[तालिका खंड] (अरबी स्तंभ): यही वह तहकीक है जिस पर हमने भरोसा किया है क्योंकि इसकी वजह ज़ाहिर है, और यह अधिक एहतियात वाला है, हालाँकि इस मसले पर बहस बहुत लंबी है। इसका कुछ हिस्सा 'रद्द अल-मुह्तार' में नजासतों के अध्याय के अंत में और किताब के अंत में ज़िक्र किया गया है। इसमें 'अल-बुरहान' के हवाले से है कि यह छिपा नहीं है कि यह महज़ नमी है इसका यकीन तब तक नहीं किया जा सकता जब तक कि गीली नजासत ऐसी न हो कि निचोड़ने से उससे कतरे न टपकें। क्योंकि यह मुमकिन है कि सूखे कपड़े पर बहुत सी नजासत लग जाए और निचोड़ने से उससे कुछ न निकले, जैसा कि उसे धोने की शुरुआत में देखा जाता है। और इसमें इमाम ज़ैलई से मरवी है: क्योंकि जब निचोड़ने से कतरे न गिरें तो उससे कुछ भी जुदा नहीं होता, बल्कि वह महज़ नमी से अपने साथ वाली चीज़ को गीला कर देता है, और इससे वह नापाक नहीं होती, इत्यादि। और इसमें 'अल-खानिया' से है: जब कोई अपना पैर धोए और बिना मोज़े के नापाक ज़मीन पर चले और ज़मीन उसके पैर की तरी से गीली हो जाए और ज़मीन की सतह काली पड़ जाए...

(उर्दू स्तंभ): यही वह तहकीक है जिस पर हमने भरोसा किया है क्योंकि इसका कारण ज़ाहिर है और इसमें ज़्यादा एहतियात है, हालाँकि इस मसले में बहस का दामन बहुत लंबा है जिसमें से कुछ 'रद्द अल-मुह्तार' में बाब अल-अनजास और किताब 'रद्द अल-मुह्तार' के आखिर में ज़िक्र किया गया है। और इसमें 'अल-बुरहान' से नक़्ल करते हुए कहा गया कि इस बात में कोई पोशीदगी नहीं कि इसके महज़ नमी होने का यकीन तब तक नहीं किया जा सकता जब तक कि गीली नजासत को निचोड़ने से कतरे न निकलें। क्योंकि मुमकिन है कि सूखे कपड़े को बहुत सारी नजासत लग जाए और निचोड़ने से उससे कुछ न निकले जैसा कि उसे धोने का आग़ाज़ करते वक्त मुशाहिदा होता है। इत्यादि। इसी

(रद्द अल-मुह्तार) में इमाम ज़ैलई से नक़्ल किया गया कि जब निचोड़ने से कतरे न निकलें तो उससे कुछ भी अलग न होगा और उससे मिलने वाली चीज़ महज़ मुजावरत (मिलने) से तर होगी और उससे वह नापाक नहीं होती।

[पादलेख] 1. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-अनजास, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/255 2. रद्द अल-मुह्तार, मसाइल शत्ता, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 5/517 पृष्ठ 761 का 398

جلد چھارم فتاوی رضویہ اجزا دوسری شے کی طرف متجاوز ہوتے ہیں) جب تینوں شرطیں ثابت ہوں تو البتہ رضائی کے اتنے موضع پر تجاوز نجاست کا حکم دیا جائے گا پھر اگر وہ موضع بقدر معتبر فی الشرع مثلاً ایک درہم سے زائد ہو تو رضائی ناپاک ٹھہرے گی اور اسے اوڑھ کر نماز ناجائز ہو گی ورنہ حکم عفو میں رہے گی اگر چہ ایک درم کی قدر میں کراہت تحریمی اور کم میں صرف تنزیہی ہو گی اور اگر ان تینوں شرط میں کسی کی بھی کمی ہوئی تو رضائی سرے سے اپنی طہارت پر باقی اور سراپا پاک ہے۔ مثلاً گدے کی نجاست مشکوک تھی یا وہ سب ناپاک نہ تھا اور رضائی کا خاص موضع نجاست سے ملنا معلوم نہیں یا محل نجاست کی رطوبت خود اپنی خواہ رضائی سے حاصل کی ہوئی قابل تجاوز نہ تھی یہ سب صورتیں طہارت مطلقہ تامہ کے ہیں۔

ہذا ہو التحقیق الذی عولنا علیه لظهور وجهہ ولکنہ احوط وان کان الکلام في المسئلة طویل الذیل ذکر بعضہ في ردالمحتار آخر الانجاس وآخر الکتاب وفیہ عن البرهان ولا یخفی منہ انہ لا یتیقن بانہ مجرد نداوة الا اذا کان النجس الرطب هو الذی لا یتقاطر بعصره اذ یمکن ان یصیب الثوب الجاف قدر کثیر من النجاسة ولا ینبع منہ شیئ بعصره کما هو مشاهد عند البدایة بغسلہ اهـ وفیہ عن الامام الزیلعي لانہ اذالم یتقاطر منہ بالعصر لا ینفصل منہ شیئ وانما یبتل ما یجاوره بالنداوة وبذلك لا یتنجس الخ وفیہ عن الخانیة اذا غسل رجلہ فمشی علی ارض نجسة بغیر مکعب فابتل الارض من بلل رجلہ واسود وجه الارض

یہی وہ تحقیق ہے جس پر ہم نے اعتماد کیا کیونکہ اس کا سبب ظاہر ہے اور اس میں زیادہ احتیاط ہے اگرچہ اس مسئلہ میں کلام کا دامن نہایت طویل ہے جس میں سے کچھ ردالمحتار میں باب الانجاس اور کتاب ردالمحتار کے آخر میں مذکور ہے۔ اور اس میں البرہان سے نقل کرتے ہوئے کہا کہ اس بات میں کوئی خفا نہیں کہ اس کے محض رطوبت ہونے کا یقین نہیں کیا جا سکتا مگر جب

کہ تر نجاست کے نچوڑنے سے قطرے نہ نکلیں کیوں کہ ممکن ہے کہ خشک کپڑے کو بہت سی نجاست لگے اور نچوڑنے سے اس سے کچھ نہ نکلے جیسا کہ اسے دھونے کا آغاز کرتے وقت مشاہدہ ہوتا ہے۔ الخ اسی (ردالمحتار) میں امام زیلعی سے نقل کیا کہ جب نچوڑنے سے قطرے نہ نکلیں تو اس سے کچھ بھی جدا نہ ہو گا اور اس سے ملنے والی چیز محض مجاورت (ملنے) سے تر ہو گی اور اس سے وہ ناپاک نہیں ہوتی۔

1 ردالمحتار باب الانجاس مصطفی البابی مصر ۱/ ۲۵۵ 2 ردالمحتار مسائل شتی مصطفی البابی مصر ۵۱۷/۵

Fatawa Razawiyya Volume 4

[Right Column - Arabic]: But if no trace of the ground's dampness appeared on his foot and he prayed, his prayer is valid. Even if there was significant water dampness on his foot such that the surface of the ground became wet and turned into mud, and then that mud got on his foot, his prayer is not valid etc. And Allah subhanahu wa ta'ala knows best, and His knowledge, glorified be His majesty, is most complete and perfect.

[Left Column - Urdu]: And in the same (Radd al-Muhtar), it is quoted from Khaniyah that if a person walks on impure ground without shoes after washing his feet, and the ground becomes wet from the moisture of his feet and leaves a mark, but the moisture of the ground did not appear on his feet; if he then prayed, his prayer is valid. And if the moisture on the feet was so much that the ground's surface became wet and mud stuck to the feet, then his prayer is not valid, etc. And Allah subhanahu wa ta'ala knows best, and His knowledge, glorified be His majesty, is most complete and perfect. (T)

Issue 176: From Kolkata, Dharmatala No. 6, sent by Mr. Mirza Ghulam Qadir Beg, 9 Dhu al-Qi'dah 1311 AH. What do the scholars of religion say regarding this issue: if rat droppings are found in cooked khichdi or rice, what is the ruling? Clarify and be rewarded.

The Answer: If rat droppings are found in food items like rice, khichdi, bread, etc., they should be thrown away and those items can be eaten, provided that their color, smell, or taste has not changed. And if it is found in 'chooha' [likely a typo for ghee/clarified butter] and it is solidified like lime, then discard the part near it and eat the rest. If it is liquid/flowing, then avoid all of it. And Allah Almighty knows best.

---

1. Radd al-Muhtar, Miscellaneous Issues, Mustafa al-Babi, Egypt, 518/5. Page 399 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द 4

[दायां कॉलम - अरबी]: लेकिन अगर ज़मीन की नमी का कोई निशान उसके पैर पर ज़ाहिर न हुआ और उसने नमाज़ पढ़ी, तो उसकी नमाज़ जायज़ है। और अगर उसके पैर पर पानी की नमी बहुत ज़्यादा थी यहाँ तक कि ज़मीन की ऊपरी सतह तर हो गई और कीचड़ बन गई, फिर वह कीचड़ उसके पैर पर लग गई, तो उसकी नमाज़ जायज़ नहीं है इत्यादि। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है, और उसका इल्म, उसकी महिमा महान है, सबसे पूर्ण और सुदृढ़ है।

[बायां कॉलम - उर्दू]: और इसी (रद्द अल-मुह्तार) में खानिया से उद्धृत है कि यदि कोई व्यक्ति पैर धोकर बिना जूतों के अपवित्र भूमि पर चले और उसके पैरों की नमी से ज़मीन गीली हो जाए और निशान पड़ जाए, लेकिन ज़मीन की नमी उसके पैरों पर ज़ाहिर न हो; अब यदि उसने नमाज़ पढ़ी तो उसकी नमाज़ जायज़ है। और यदि पैरों में पानी की नमी इतनी अधिक थी कि ज़मीन की ऊपरी सतह तर हो गई और कीचड़ पैरों में लग गया, तो उसकी नमाज़ जायज़ नहीं है इत्यादि। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है और उसका इल्म, जलालत वाला, सबसे पूर्ण और सुदृढ़ है। (त)

मसला 176: कोलकाता, धर्मतला नंबर 6 से, प्रेषक जनाब मिर्ज़ा गुलाम कादिर बेग साहब, 9 ज़ी-अल-क़ादा 1311 हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि यदि पकी हुई खिचड़ी या चावल में चूहे की लेंडी (मीनगनी) निकले तो क्या हुक्म है? बयान करें सवाब पायें।

अल-जवाब (उत्तर): चूहे की लेंडी (मीनगनी) यदि चावल, खिचड़ी, रोटी वगैरह खाने की चीज़ों में निकले तो उसे फेंक कर वो चीज़ें खा ली जाएँ बशर्ते कि उसका रंग या बू (गंध) या मज़ा उनमें न आया हो। और अगर वह 'चूहे' [संभवतः घी के लिए एक त्रुटि] में निकले और वह चूने की तरह जमा हुआ है, तो उसके पास का हिस्सा फेंक कर बाकी खा लें और यदि वह बहता हुआ (तरल) है तो उस सब से परहेज़ करें। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

---

1. रद्द अल-मुह्तार, मसाइल शत्ता, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 518/5 पृष्ठ 399/761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

[دایاں کالم - عربی]: لکن لم یظھر اثر طبل الارض فی رجلہ فصلی جازت صلاتہ وان کان بلل الماء فی رجلہ کثیرا حتی ابتل وجہ الارض وصار طینا ثم اصاب الطین رجلہ لا تجوز صلاتہ [1] 8 الخ واللہ سبحانہ وتعالی اعلم وعلمہ اجل مجدہ اتم واحکم۔

[بایاں کالم - اردو]: اور اسی (ردالمحتار) میں خانیہ سے نقل کیا ہے کہ اگر کوئی شخص پاؤں دھو کر جوتے کے بغیر ناپاک زمین پر چلا اور اس کے پاؤں کی رطوبت سے زمین تر ہو گئی اور زمین پر نشان لگ گیا لیکن زمین کی رطوبت اس کے پاؤں میں ظاہر نہیں ہوئی اب اس نے نماز پڑھی تو اس کی نماز جائز ہے اور اگر پاؤں میں پانی کی رطوبت زیادہ تھی حتی کہ زمین کا ظاہر تر ہو گیا اور کیچڑ پاؤں میں لگ گیا تو اس کی نماز جائز نہیں الخ واللہ سبحانہ و تعالی اعلم و علمہ جل مجدہ اتم و احکم۔ (ت)

مسئلہ ۱۷۶: از کلکتہ دھرم تلا نمبر ۶ مرسلہ جناب مرزا غلام قادر بیگ صاحب ۹ ذیقعد ۱۳۱۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ اگر پکی ہوئی کھچڑی یا چاول میں چوہے کی مینگنی نکلے تو کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: چوہے کی مینگنی اگر چاول کھچڑی روٹی وغیرہ کھانے کی چیزوں میں نکلے تو اسے پھینک کر وہ اشیا کھالی جائیں بشرطیکہ اس کا رنگ یا بُو یا مزہ ان میں نہ آگیا ہو اور اگر چوہے میں نکلے اور وہ چونا جما ہوا ہے تو اس کے قریب کا پھینک کر باقی کھالیں اور بہتا ہوا ہے تو اس سب سے احتراز کریں واللہ تعالٰی اعلم۔

---

1. رد المحتار مسائل شتی مصطفی البابی مصر ۵/۵۱۸ صفحہ 399 از 761

Volume Four | Fatawa Razvia

Treatise Salb al-Thulb 'an al-Qa'ileen bi Taharat al-Kalb 1312 AH (Removing the Defect from Those who Proclaim the Purity of the Dog) Discourse on removing the fault from those who advocate for the inherent purity of the dog.

Issue 177: From Benares, Pitarkunda locality, sent by Maulvi Abdul Hamid Sahib, 8 Rajab 1312 AH: What do the scholars of religion and jurists of the firm Shariah—may Allah Almighty preserve them until the Day of Judgment—say regarding this: Zaid, basing his argument on the word of Allah Almighty: "They ask you what has been made lawful for them" (Al-Quran 5:4) [the verse] (and they ask you what is lawful for them. - Trans.), and adhering to the hadiths commanding the eating of game killed by a trained, released dog that has not eaten from it (and making those hadiths an evidence in which there is a command to eat such game that a trained and released dog has hunted but did not eat anything from it. - Trans.), of which one is this hadith of Adi bin Hatim:

[Arabic Text]: He said: I said, "O Messenger of Allah, we release trained dogs." | [Urdu Translation]: He says: I submitted, "O Messenger of Allah! We release trained [Arabic Text]: He said: "Eat what they catch for you." I said... | [Urdu Translation]: ...dogs (on the hunt)."

1. Al-Quran 5/4

जिल्द चौथा | फतावा रज़विया

रिसाला (ग्रंथ) सलबुल थुलब अनिल क़ाइलीना बि-तहारतिल कलब १३१२ हिजरी (कुत्ते की पवित्रता के कायल लोगों के ऐब दूर करने का बयान) कुत्ते की ज़ाती पवित्रता के कायल लोगों के दोष दूर करने का विवरण।

मसअला १७७: बनारस, मोहल्ला पितरकुंडा से, प्रेषक मौलवी अब्दुल हमीद साहब, ८ रजब १३१२ हिजरी: दीन के उलेमा और मज़बूत शरीयत के मुफ़्ती हज़रात - अल्लाह तआला उन्हें कयामत के दिन तक सलामत रखे - इस बारे में क्या फरमाते हैं कि: ज़ैद अल्लाह तआला के इस कलाम को सनद (प्रमाण) बनाते हुए: "यसअलूनका माज़ा उहिल्ला लहुम" (अल-कुरान ५/४) आयत (और वे आप से पूछते हैं कि उनके लिए क्या हलाल है। - अनु.) और उन हदीसों को दलील बनाते हुए जिनमें उस शिकार को खाने का हुक्म है जिसे सिखाए हुए और छोड़े हुए कुत्ते ने मारा हो और उसमें से खुद न खाया हो (और उन हदीसों को दलील बनाते हुए जिनमें ऐसे शिकार के खाने का हुक्म है जिसे सिखाए हुए और छोड़े हुए कुत्ते ने शिकार किया लेकिन उसमें से कुछ नहीं खाया। - अनु.) कि उनमें से एक अदी बिन हातिम की यह हदीस है:

अरबी पाठ: उन्होंने कहा: मैंने अर्ज़ किया, "या रसूलल्लाह, हम शिकारी कुत्तों को छोड़ते हैं।" | [उर्दू अनुवाद]: फ़रमाते हैं मैंने अर्ज़ किया "या रसूलल्लाह! हम सिखाए

1. अल-कुरान ५/४

جلد چہارم | فتاوی رضویہ

رسالہ سلب الثلب عن القائلین بطھارۃ الکلب ۱۳۱۲ھ کتے کی طہارت عین کے قائلین سے عیب دور کرنے کا بیان

مسئلہ ۱۷۷: از بنارس محلہ پتر کنڈہ مرسلہ مولوی عبدالحمید صاحب ۸ رجب ۱۳۱۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین ابقاھم اللہ تعالیٰ الی یوم الدین اس میں کہ زید تو مستنداً بقولہ تعالیٰ یَسْئَلُوْنَکَ مَاذَآ اُحِلَّ لَہُمْ ط اَلْاٰیَۃِ ۱ (اور وہ آپ سے پوچھتے ہیں ان کے لئے کیا حلال ہے۔ت) و متمسکاً باحادیث الامر باکل صید قتلہ الکلب المعلم المرسل و لم یاکل منہ (اور ان احادیث کو دلیل بناتے ہوئے جن میں ایسے شکار کے کھانے کا حکم ہے جسے سکھائے ہوئے اور چھوڑے ہوئے کتے نے شکار کیا لیکن اس سے کچھ نہیں کھایا۔ ت) کہ از انجملہ ایک یہ حدیث عدی بن حاتم ہے:

قَالَ قُلْتُ یَا رَسُولَ اللهِ إِنَّا نُرْسِلُ الْكِلَابَ الْمُعَلَّمَةَ | فرماتے ہیں میں نے عرض کیا "یارسول اللہ ! ہم سکھائے قَالَ كُلْ مَا أَمْسَكْنَ عَلَيْكَ قُلْتُ | ہوئے کتوں کو (شکار پر) چھوڑتے ہیں

۱ القرآن ۵/۴

Volume Four Fatawa-e-Razvia

"And if they kill?" He said, "And if they kill." [Hadith 1] (What is the ruling on this?) You (the Prophet ﷺ) said: "Eat whatever they catch for you." I asked, "Even if they kill it?" He said, "Even if they kill it." [Hadith (T)]

And the traditions (Ahadith) regarding the permission to keep a dog for livestock, hunting, crops, and sheep (Traditions regarding permission to keep dogs for protection of animals, hunting, fields, and sheep. -T). Among them is this Hadith from Abdullah bin Mugaffal:

"He said: I was among those lifting the tree branches away from the blessed face of the Messenger of Allah ﷺ while he was delivering a sermon. He said: If it were not for the fact that dogs are a community among nations, I would have ordered their killing. So kill every pure black one. No household keeps a dog except that their deeds decrease each day by a qirat, except for a hunting dog, or a dog for crops, or a dog for sheep." [Hadith 2]

He says, I am among those who were lifting branches from the blessed face of the Holy Prophet ﷺ while he was delivering the sermon. You said: If dogs were not a creature, I would have ordered to kill them, so kill every black dog; and those who keep dogs in their houses, one qirat is reduced daily from their good deeds, except for a hunting dog, a dog for protecting fields, and a dog for protecting sheep (these are exceptions). - (T)

And the traditions of permission regarding the price of a hunting dog (Ahadith regarding your permission to obtain the price for a hunting dog. - T). Among them is a Hadith which our Imam-e-Azam Abu Hanifa (may Allah have mercy on him) narrates in his Musnad from Haytham, from Ikrimah, from Ibn Abbas:

"The Messenger of Allah ﷺ permitted the price of a hunting dog." [Hadith 3]

He says the Holy Prophet ﷺ allowed taking the price of a hunting dog. - (T)

And the Hadith of Ibn Umar (may Allah be pleased with them both):

"Dogs used to come and go during the era of the Messenger of Allah." In the blessed era of the Holy Prophet ﷺ...

---

1 Jami' at-Tirmidhi, Chapter on what is eaten from a dog's catch, printed by Aftab-e-Alam Press, Lahore, 1/77. 2 Jami' at-Tirmidhi, Chapter on whoever keeps a dog

without its decreasing his reward, printed by Aftab-e-Alam Press, Lahore, 1/180. 3 Musnad Imam-e-Azam Abu Hanifa, Book of Sales, Nur Muhammad Karkhana Tijarat Kutub, Karachi, p. 169.

भाग चार फ़तावा रज़विया

"और अगर वे मार डालें?" उन्होंने कहा, "और अगर वे मार डालें।" [हदीस 1] (इसका क्या हुक्म है?) आपने फ़रमाया: "जो कुछ वे तुम्हारे लिए रोक रखें उसे खाओ।" मैंने अर्ज़ किया, "चाहे वे उसे हलाक (मार) कर दें?" फ़रमाया: "चाहे वे उसे हलाक कर दें।" हदीस (त)

और मवेशियों, शिकार, खेती और भेड़ों की हिफाज़त के लिए कुत्ता रखने की अनुमति के बारे में हदीसें (जानवरों की हिफाज़त, शिकार, खेती और भेड़ों की हिफाज़त के लिए कुत्ता रखने की इजाज़त के बारे में हदीसें। - त)। उनमें से एक हदीस अब्दुल्ला बिन मुग़फ़्फ़ल की है:

"उन्होंने कहा: मैं उन लोगों में से था जो अल्लाह के रसूल ﷺ के मुबारक चेहरे से पेड़ की टहनियाँ हटा रहे थे जब आप खुतबा (भाषण) दे रहे थे। आपने फ़रमाया: अगर कुत्ते उम्मतों (समुदायों) में से एक उम्मत न होते, तो मैं उन्हें मारने का हुक्म देता। तो हर काले कुत्ते को मार डालो। जिस घर के लोग कुत्ता पालते हैं, उनके नेक कामों में से हर दिन एक क़ीरात कम हो जाता है, सिवाय शिकारी कुत्ते, या खेती की हिफाज़त करने वाले कुत्ते, या भेड़ों की हिफाज़त करने वाले कुत्ते के।" [हदीस 2]

आप फ़रमाते हैं कि मैं उन लोगों में से हूँ जो नबी अकरम ﷺ के चेहरा-ए-अनवर के आगे से टहनियाँ उठा रहे थे जब आप खुतबा इरशाद फ़रमा रहे थे। आपने फ़रमाया: अगर कुत्ते एक मख्लूक (जीव) न होते तो मैं उन्हें क़त्ल करने का हुक्म देता, इसलिए हर सियाह (काले) कुत्ते को मार दो; और जो लोग घरों में कुत्ता रखते हैं, उनके अमल (नेकियों) में से रोज़ाना एक क़ीरात कम होता है, सिवाय शिकार का कुत्ता, खेती की हिफाज़त और बकरियों की हिफाज़त के लिए कुत्ता (इससे मुस्तस्ना (अपवाद) है)। - (त)

और शिकारी कुत्ते की कीमत के बारे में इजाज़त की हदीसें (शिकारी कुत्ते की कीमत हासिल करने के बारे में आपकी इजाज़त से मुताल्लिक हदीसें। - त)। उनमें से एक वह हदीस है जिसे हमारे इमाम-ए-आज़म अबू हनीफा (रहमतुल्लाह अलैहि) अपनी मसनद में हेशम से, वह इक्रमा से, वह इब्ने अब्बास से रिवायत करते हैं:

"अल्लाह के रसूल ﷺ ने शिकारी कुत्ते की कीमत की इजाज़त दी।" [हदीस 3]

फ़रमाते हैं कि रसूल अकरम ﷺ ने शिकारी कुत्ते की कीमत लेने की इजाज़त फ़रमाई है। - (त)

और इब्ने उमर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) की हदीस:

"अल्लाह के रसूल के अहद (समय) में कुत्ते आते और जाते थे।" रसूल करीम ﷺ के अहद-ए-मुबारक में...

---

1 जामेअ तिर्मिज़ी, बाब: जो शिकारी कुत्ते के शिकार से खाया जाए, मतबुआ आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर 1/77 2 जामेअ तिर्मिज़ी, बाब: जो कोई कुत्ता पाले जिससे उसके सवाब में कमी न हो, मतबुआ आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर 1/180 3 मसनद इमाम आज़म अबू हनीफा, किताबुल बुयूअ, नूर मुहम्मद कारखाना तिजारत कुतुब कराची, पृ. 169

وان قتلن قال وان قتلن 1 الحدیث۔ (اس کا کیا حکم ہے؟) آپ نے فرمایا: "جو کچھ وہ تمہارے لئے روک رکھیں اسے کھاؤ"۔ میں نے عرض کیا "اگرچہ وہ اسے ہلاک کر دیں؟" فرمایا: "اگرچہ وہ اسے ہلاک کر دیں" الحدیث (ت)

اور احادیث الاذن فی اقتناء کلب ماشیۃ وصید وزرع وغنم (جانوروں کی حفاظت، شکار، کھیتی اور بکریوں کی حفاظت کیلئے کتا رکھنے کی اجازت کے بارے میں احادیث۔ت) کہ ازانجملہ ایک یہ حدیث عبداللہ بن مغفل ہے:

قال انی لمن یرفع اغصان الشجرۃ عن وجہ رسول اللہ وھو یخطب فقال لولا ان الکلاب امۃ من الامام لامرت بقتلھا فاقتلوا کل اسود بھیم وما من اھل بیت یرتبطون کلبا الا نقص من عملھم کل یوم قیراط الاکلب صید او کلب حرث او کلب غنم 2۔ آپ فرماتے ہیں میں ان لوگوں میں سے ہوں جو نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کے چہرہ انور کے آگے سے ٹہنیاں اٹھا رہے تھے جب آپ خطبہ ارشاد فرما رہے تھے، آپ نے فرمایا: اگر کتے ایک مخلوق نہ ہوتے تو میں ان کو قتل کرنے کا حکم دیتا پس ہر سیاہ کتے کو ماردو، اور جو لوگ گھروں میں کتا رکھتے ہیں ان کے عمل سے روزانہ ایک قیراط کم ہوتا ہے مگر شکار کا کتا، کھیتی کی حفاظت اور بکریوں کی حفاظت کے لئے کتا (اس سے مستثنٰی ہے۔(ت)

واحادیث الترخیص فی ثمن کلب الصعید (شکاری کتے کہ حصول قیمت کے بارے میں آپ کی اجازت سے متعلق احادیث۔ت) کہ ازانجملہ ایک وہ حدیث ہے جس کو ہمارے امام اعظم ابوحنیفہ رحمتہ اللہ علیہ اپنی مسند میں ہیثم سے وہ عکرمہ سے وہ ابن عباس سے روایت کرتے ہیں:

قال رخص رسول اللہ فی ثمن کلب الصید 3۔ فرماتے ہیں رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے شکاری کتے کی قیمت لینے کی اجازت فرمائی ہے۔ (ت)

وحدیث ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما:

کانت الکلاب تقبل وتدبر فی عھد رسول اللہ رسول کریم صلی اللہ علیہ وسلم کے عہد مبارک میں

---

1 جامع الترمذی باب مایوکل من صید الکلب مطبوعہ آفتاب عالم پریس لاہور ۱/۷۷ 2 جامع الترمذی باب من امسک کلباً مالم ینقص من اجرہ مطبوعہ آفتاب عالم پریس لاہور ۱/۱۸۰ 3 مسند امام اعظم ابو حنیفہ کتاب البیوع نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ص ۱۶۹

2016

Volume IV Fatawa Razawiyya

Arabic: ...so they would not sprinkle anything of that.	**Dogs used to come and go (here and there), but the noble companions (may Allah be pleased with them) did not wash anything because of that (i.e., from the dogs touching them). (T)**

And the Hadith of Ibn Abbas (may Allah be pleased with both of them):

Arabic: Peace and blessings be upon him said: Whichever hide is tanned, it becomes pure.	**The Holy Prophet (peace and blessings be upon him) said: Any skin that is tanned becomes pure. (T)**

And reasoning with the sayings of our Hanafi scholars (And while reasoning with the sayings of our Hanafi scholars. T) that among them is one which is found in general books of jurisprudence:

Arabic: Every hide, when tanned, becomes pure except the skin of swine and humans.	**Every leather/skin becomes pure by tanning except for the skin of pigs and humans. (T)**

And the second is what is in 'Hidaya':

Arabic: And the dog is not impure in its essence (Najis al-Ain).	**And the dog is not impure in its essence. (T)**

And the third is what is in 'Tanweer al-Absar' and its commentary 'Durr al-Mukhtar':

Arabic: Know that the dog is not impure in its essence according to the Great Imam (Imam Abu Hanifa), and the Fatwa is upon this, even if some jurists preferred the impurity as detailed by Ibn al-Shihna.	**Know! According to Imam-e-Azam, a dog is not 'Najis al-Ain' (impure in essence). And the fatwa is on this, even though some jurists have preferred its impurity as Ibn al-Shihna has explained in detail. (T)**

And the fourth is what is in 'Radd al-Muhtar':

Arabic: And it (i.e., the dog not being impure in essence) is the correct view and closer to the truth, [from] Bada'i and...	**And that (i.e., the dog not being impure in essence) is correct and closer to truth, [from] Bada'i. From the texts.**

1. Sahih al-Bukhari, chapter: 'When a dog drinks from a vessel', Qadeemi Kutub Khana Karachi 1/29.
2. Jami' at-Tirmidhi, chapter: 'Regarding skins of dead animals', Aftab Alam Press Lahore, 1/206.
3. Munyat al-Musalli, section on impurity, Maktaba Qadriah Jamia Nizamia Lahore, p. 108.
4. Hidaya Shareef, before the section on wells, Al-Maktabah al-Arabiyya, Karachi, 1/24.
5. Durr al-Mukhtar, chapter on waters, Mujtabai Delhi print, 1/38.

अरबी: ...इसलिए वे इसमें से कुछ भी नहीं छिड़कते थे।

कुत्ते (इधर-उधर) आते-जाते थे लेकिन सहाबा किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) उससे (यानी कुत्तों के उनके साथ छूने से) कुछ भी नहीं धोते थे। (त)

और इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) की हदीस:

अरबी: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: जो भी खाल रंग ली (कमा ली) जाए, वह पाक हो जाती है।

नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: जिस चमड़े को रंग लिया जाए वह पाक हो जाता है। (त)

और हमारे हनफ़ी उलेमा के अक़्वाल (कथनों) से इस्तिदलाल (तर्क) करते हुए (और हमारे हनफ़ी उलेमा के अक़्वाल से इस्तिदलाल करते हुए। त) कि उनमें से एक यह है जो आम फ़िक़्ह की किताबों में है:

अरबी: हर खाल जब रंग ली जाए तो पाक हो जाती है, सिवाय सुअर और इंसान की खाल के।

सुअर और आदमी के चमड़े के अलावा हर चमड़ा दबागत (कमाने) से पाक हो जाता है। (त)

और दूसरा यह जो हिदाया में है:

अरबी: और कुत्ता नजिस-उल-ऐन (स्वयं में अपवित्र) है।

नहीं और कुत्ता नजिस-उल-ऐन नहीं है। (त)

और तीसरा जो तनवीरुल अबसार और उसकी शरह (व्याख्या) दुर्रे मुख़्तार में है:

अरबी: जान लें कि इमाम-ए-आज़म के नज़दीक कुत्ता नजिस-उल-ऐन नहीं है और इसी पर फ़तवा है, हालांकि कुछ फ़ुक़्हा (धर्मशास्त्री) ने इसकी नजासत (अपवित्रता) को तरजीह (प्राथमिकता) दी है जैसा कि इब्नुल शिहना ने विस्तार से बताया है।

जान लो! इमाम-ए-आज़म के नज़दीक कुत्ता नजिस-उल-ऐन नहीं। और इसी पर फ़तवा है, अगरचे कुछ फ़ुक़्हा ने इसके नजिस होने को तरजीह दी है जैसा कि इब्नुल शिहना ने इसे तफ़्सील से बयान किया है। (त)

और चौथा यह जो रद-उल-मुहतार में है:

अरबी: और यह (यानी कुत्ते का नजिस-उल-ऐन न होना) सही है और सच्चाई के अधिक करीब है, बदाई और...	**और वह (यानी कुत्ते का नजिस-उल-ऐन न होना ही) सही और सच्चाई के ज़्यादा करीब है, बदाई। मतून से।**

---

1. सही अल-बुखारी, बाब: 'जब कुत्ता बर्तन में पिए', कदीमी कुतुब खाना कराची 1/29।
2. जामि अत-तिर्मिज़ी, बाब: 'मृत जानवरों की खाल के बारे में', आफ़ताब आलम प्रेस लाहौर, 1/206।
3. मुन्यत-उल-मुसल्ली, नजासत का अध्याय, मकतबा कादरिया जामिया निज़ामिया लाहौर, पृ. 108।
4. हिदाया शरीफ़, कुएं के अध्याय से पहले, अल-मकतबा अल-अरबिया, कराची, 1/24।
5. दुर्रे मुख़्तार, पानी का अध्याय, मुजतबाई दिल्ली प्रिंट, 1/38।

جلد چہارم فتاوی رضویہ

فلم یکونوا یرشون شیأً من ذلك - 1 **کتے (ادھر ادھر) آتے جاتے تھے لیکن صحابہ کرام رضی اللہ عنہم اس سے (یعنی کتوں کے ان کے ساتھ چھونے سے) کچھ بھی نہیں دھوتے تھے۔ (ت)**

و حدیث ابن عباس رضی اللہ عنہما:

قال علیہ الصلاۃ والسلام ایما اھاب دبغ فقد طھر - 2 **نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: جس چمڑے کو رنگ لیا جائے وہ پاک ہو جاتا ہے۔ (ت)**

و مستدلاً باقوال علمائنا الحنفیۃ (اور ہمارے علماء حنفیہ کے اقوال سے استدلال کرتے ہوئے۔ ت) کہ از انجملہ ایک یہ ہے کہ جو عامہ کتب فقہ میں ہے:

کل اھاب اذا دبغ فقد طھر الا جلد الخنزیر والآدمی - 3 **خنزیر اور آدمی کے چمڑے کے علاوہ ہر چمڑا دباغت سے پاک ہو جاتا ہے۔ (ت)**

اور دوسرا یہ جو ہدایہ میں ہے:

ولیس الکلب بنجس العین - 4 اور کتا نجس عین نہیں۔ (ت)

اور تیسرا جو تنویر الابصار اور اُس کی شرح در مختار میں ہے:

اعلم انه لیس الکلب بنجس العین عند الامام وعلیه الفتوی وان رجح بعضهم النجاسة کما بسطه ابن الشحنة - 5

جان لو! امام اعظم کے نزدیک کتا نجس عین نہیں۔ اور اسی پر فتوٰی ہے، اگرچہ بعض فقہاء نے اس کے نجس ہونے کو ترجیح دی ہے جیسا کہ ابن الشحنہ نے اسے تفصیل سے بیان کیا ہے۔ (ت)

اور چوتھا یہ جو ردالمحتار میں ہے:

وھو (ای عدم کون الکلب نجس العین) الصحیح والاقرب الی الصواب بدائع و

اور وہ (یعنی کتے کا نجس العین نہ ہونا ہی) صحیح اور درستگی کے زیادہ قریب ہے، بدائع۔ متون سے

---

1. صحیح البخاری باب اذا شرب الکلب فی الاناء قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۲۹
2. جامع الترمذی، باب جاء فی جلود المیتۃ، آفتاب عالم پریس لاہور، ۲۰۶/ ۱
3. منیۃ المصلی فصل فی النجاسۃ مکتبہ قادریہ جامعہ نظامیہ لاہور ص ۱۰۸
4. ہدایہ شریف، قبیل فصل فی البئر، المکتبۃ العربیہ، کراچی، ۲۴/ ۱
5. در مختار، باب المیاہ، مطبوعہ مجتبائی دہلی، ۳۸/ ۱

Fatawa Razawiyya Volume 4

1. "This is apparent from the primary texts (Mutun) in al-Bahr and necessitated by the generality of proofs in al-Fath." This is evident from 'al-Bahr al-Ra'iq'. The requirement of general proofs is the same, as per 'Fath al-Qadir'. (T)

And the fifth is what is in 'Alamgiri': 2. "And the correct view is that a dog is not inherently impure (Najis al-Ayn)." The correct view is that a dog is not inherently impure. (T)

And the sixth is what is in 'Inayah': 3. "The more correct view is that a dog is not inherently impure." The more correct thing is that a dog is not inherently impure. (T)

And the seventh is what is in 'Ghaya al-Bayan': 4. "There is a difference of opinion among the scholars regarding its inherent impurity, and the more correct view is that it is not inherently impure." There is disagreement among the scholars about it being inherently impure; the more correct view is that it is not inherently impure. (T)

And the eighth is what is in 'Maraqi al-Falah': 5. "A dog's skin becomes pure (through tanning) because it is not inherently impure according to the correct opinion." A dog's hide becomes pure because, according to the correct view, it is not inherently impure. (T)

And the ninth is what is in 'Nahr al-Fa'iq': 6. "A dog's skin also becomes pure based on the fatwa that its essence is pure, even if some have preferred the opinion of its impurity." A dog's hide also becomes pure and it is based on the fatwa-issued opinion that it is inherently pure, although some jurists have preferred the view of its impurity. (T)

And the tenth is what is in 'Shami': 7. "The meaning of the saying that its essence is pure is the purity of its physical being." The meaning of the statement about its essence being pure is that as long as...

---

1 Radd al-Muhtar, Bab al-Miyah, published by Mujtabai Delhi, 139/1 2 Fatawa Alamgiri, Section 1 of Chapter 3, published by Noorani Kutub Khana Peshawar, 19/1 3 Al-Inayah with Fath al-Qadir, before the section on the well, published by Nooria Razawiyya Sukkur, 82/1 4 Al-Si'ayah fi Kashf ma fi Sharh al-Wiqayah min Ahkam al-Dibaghah, Sohail Academy Lahore, 208/1 5 Maraqi al-Falah with al-Tahtawi, section on purifying the hide of dead animals, Noor Muhammad Karkhana Tijarat Kutub

Karachi, p. 90 6 Al-Si'ayah fi Kashf ma fi Sharh al-Wiqayah min Ahkam al-Dibaghah, Sohail Academy Lahore, 209/1

फ़तावा रज़विया जिल्द 4

1. "यह अल-बह्र में मूल ग्रंथों (मुतून) से स्पष्ट है और अल-फ़तह में प्रमाणों की व्यापकता की आवश्यकता है।" यह अल-बहर अल-राइक से स्पष्ट है। सामान्य प्रमाणों की मांग भी यही है, फ़तह अल-क़दीर। (त)

और पांचवां वह है जो 'आलमगीरी' में है: 2. "और सही बात यह है कि कुत्ता नजिस-ए-ऐन (स्वयं अशुद्ध) नहीं है।" सही बात यह है कि कुत्ता नजिस-ए-ऐन नहीं है। (त)

और छठा वह है जो 'इनाया' में है: 3. "ज़्यादा सही बात यह है कि कुत्ता नजिस-ए-ऐन नहीं है।" ज़्यादा सही बात यह है कि कुत्ता नजिस-ए-ऐन नहीं है। (त)

और सातवां वह है जो 'ग़या-उल-बयान' में है: 4. "इसके नजिस-ए-ऐन होने के बारे में विद्वानों में मतभेद है और ज़्यादा सही यह है कि यह नजिस-ए-ऐन नहीं है।" इसके नजिस-ए-ऐन होने के बारे में विद्वानों में मतभेद है; ज़्यादा सही यह है कि यह नजिस-ए-ऐन नहीं है। (त)

और आठवां वह है जो 'मराक़ी-उल-फ़लाह' में है: 5. "कुत्ते की खाल पाक (शुद्ध) हो जाती है क्योंकि सही राय के अनुसार वह नजिस-ए-ऐन नहीं है।" कुत्ते का चमड़ा पाक हो जाता है क्योंकि सही कथन के अनुसार वह नजिस-ए-ऐन नहीं है। (त)

और नौवां वह है जो 'नह्र-उल-फ़ाइक' में है: 6. "कुत्ते की खाल भी पाक हो जाती है, उस फ़तवे के आधार पर कि वह ज़ाती तौर पर पाक है, हालाँकि कुछ फ़क़ीहों (विधिवेत्ताओं) ने इसके अशुद्ध होने को तरजीह दी है।" कुत्ते का चमड़ा भी पाक हो जाता है और इसकी बुनियाद वह मुफ़्ती-बिह (जिस पर फ़तवा दिया गया हो) क़ौल है कि यह ज़ाती तौर पर पाक है, अगरचे कुछ फ़क़ीहों ने इसके नापाक होने को तरजीह दी है। (त)

और दसवां वह है जो 'शामी' में है: 7. "इसके ताहिर-ए-ऐन (स्वयं शुद्ध) होने के कथन का अर्थ इसकी ज़ाती पाकीज़गी है।" इसके ताहिर-ए-ऐन होने के क़ौल का मतलब यह है कि यह जब तक...

---

1 रद अल-मुह्तार, बाब अल-मियाह, प्रकाशित मुज्तबाई दिल्ली, 139/1 2 फ़तावा आलमगीरी, अध्याय 3 का खंड 1, प्रकाशित नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 19/1 3 अल-इनाया मअ फ़तह अल-क़दीर, कुएं के खंड से पहले, प्रकाशित नूरिया रज़विया सुक्कुर, 82/1 4 अल-सिआया फ़ी कश्फ़ मा

फ़ी शरह अल-विक़ाया मिन अहकाम अद-दिबागा, सोहेल अकादमी लाहौर, 208/1 5 मराक़ी अल-फ़लाह मअ अल-तह्तावी, खंड पाक करना मुर्दा खाल को, नूर मुहम्मद कारखाना तिजारत कुतुब कराची, पृष्ठ 90 6 अल-सिआया फ़ी कश्फ़ मा फ़ी शरह अल-विक़ाया मिन अहकाम अद-दिबागा, सोहेल अकादमी लाहौर, 209/1

पृष्ठ 403 का 761

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم

۱۔ وھو ظاھر المتون بحر و مقتضی عموم الادلۃ فتح ۔ سے ہی ظاہر ہوتا ہے البحرالرائق۔ عام دلائل کا مقتضٰی یہی ہے، فتح القدیر (ت)

اور پانچواں یہ جو عالمگیری میں ہے: ۲۔ والصحیح ان الکلب لیس بنجس العین ۔ صحیح یہ ہے کہ کتا نجس عین نہیں۔ (ت)

اور چھٹا یہ جو عنایہ میں ہے: ۳۔ الاصح ان الکلب لیس بنجس العین ۔ اصح بات یہ ہے کہ کتا نجس عین نہیں۔ (ت)

اور ساتواں یہ جو غایۃ البیان میں ہے: ۴۔ في نجاسة عينه اختلاف المشايخ و الاصح انه ليس بنجس العين ۔ اس کے نجس عین ہونے میں مشائخ کا اختلاف ہے زیادہ صحیح یہ ہے کہ یہ نجس عین نہیں۔ (ت)

اور آٹھواں یہ جو مراقی الفلاح میں ہے: ۵۔ یطھر جلد الکلب لانه لیس بنجس العین علی الصحیح ۔ کتے کا چمڑا پاک ہو جاتا ہے کیونکہ صحیح قول کے مطابق وہ نجس عین نہیں۔ (ت)

اور نواں یہ جو نہر الفائق میں ہے: ۶۔ یطھر جلد الکلب ایضا بناء علی ماعلیه الفتوی من طھارۃ عینه وان رجح بعضھم النجاسة ۔ کتے کا چمڑا بھی پاک ہو جاتا ہے اور اس کی بنیاد وہ مفتی بہ قول ہے کہ یہ ذاتی طور پر پاک ہے اگرچہ بعض فقہاء نے اس کے ناپاک ہونے کو ترجیح دی ہے۔ (ت)

اور دسواں یہ جو شامی میں ہے: ۷۔ فمعنی القول بطھارۃ عینه طھارۃ ذاته ۔ اس کے طاہر عین ہونے کے قول کا مطلب یہ ہے کہ یہ جب تک

1 ردالمحتار، باب المیاہ، مطبوعہ مجتبائی دہلی، ۱۳۹/۱ 2 فتاویٰ عالمگیری الفصل الاول من الباب الثالث مطبوعہ نورانی کتب خانہ پشاور ۱۹/۱ 3 العنایۃ مع فتح القدیر قبیل فصل فی البئر مطبوعہ نوریہ رضویہ سکھر ۸۲/۱ 4 السعایۃ فی کشف مانی شرح الوقایۃ من احکام الدباغۃ سہیل اکیڈمی لاہور ۲۰۸/۱ 5 مراقی الفلاح مع الطحطاوی فصل یطھر جلد المیتہ نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ص ۹۰ 6 السعایۃ فی کشف مانی شرح الوقایۃ من احکام الدباغۃ سہیل اکیڈمی لاہور ۲۰۹/۱

- While it is alive, it is intrinsically pure. Its skin becomes pure through tanning or (ritual) slaughter, and those parts of it in which life does not circulate, like other beasts of prey, are also pure. (T)[1] | As long as it is alive, it is pure, and the purity of its skin is through tanning and slaughter, and the purity of its parts in which life does not reside is like other beasts of prey.

And the eleventh is what is in 'Al-Sa'aya':

- I say: Until now, no clear evidence has become apparent to me regarding its being intrinsically impure (Najis al-Ayn), and the arguments of those who assert its impurity are all flawed. (T)[2] | I said: Until now, no clear evidence has appeared to me for its being Najis al-Ayn, and the proofs of those who establish it are all flawed.

And the twelfth is what Maulvi Abdul Hai Lakhnawi said in 'Ta'liq al-Mumajjad' after mentioning those hadiths that point towards absolute purity of hides through tanning:

- Based on these hadiths and similar ones, the majority of jurists have adopted the path of absolute purity through tanning. However, they have excluded human skin due to its honor, and pig skin because of it being inherently impure. And those who consider the dog as inherently impure have also excluded it; this is the opinion of a group of Hanafis and other jurists, but no strong evidence has been found for it yet. (T)[3] | And based on these hadiths and their likes, the majority went towards absolute purity through tanning, except that they excluded from that human skin for its nobility and pig skin for the impurity of its essence. Also, those who hold the view of it being Najis al-Ayn excluded dog skin, which is the saying of a group of Hanafis and others, and no strong evidence has yet been indicated.

And the thirteenth is what is in 'Fath al-Qadir':

- The scholars have differed regarding the correct authentication, and "whichever hide..." | The masters differed in the authentication and that which it necessitates

[1] Radd al-Muhtar, before the section on Wells, printed at Mujtabai Delhi, 1/139 [2] Al-Sa'aya fi Kashf ma fi Sharh al-Wiqaya min Ahkam al-Dabbana, Suhail Academy Lahore, 1/409 [3] Ta'liq al-Mumajjad by Abdul Hai Lakhnawi

- जब तक वह जीवित है, वह व्यक्तिगत रूप से शुद्ध है। उसकी खाल कमाना (दबागत) या (शरई) ज़बह के साथ शुद्ध हो जाती है, साथ ही उसके वे हिस्से जिनमें जीवन व्याप्त नहीं होता, वे भी अन्य हिंसक जानवरों की तरह शुद्ध हैं। (त)[1] | जब तक वह जीवित है उसकी खाल का कमाना और ज़बह के माध्यम से शुद्ध होना, और उसके उन अंगों की शुद्धता जिनमें जीवन नहीं होता, अन्य हिंसक जानवरों की तरह है।

और ग्यारहवाँ वह है जो 'अस-सा'या' में है:

- मैं कहता हूँ कि अब तक मुझे इसके'नजिस अल-ऐन' (मूलतः अशुद्ध) होने पर कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं मिला है, अशुद्धता साबित करने वालों के सभी प्रमाण कमजोर हैं। (त)[2] | मैंने कहा: अब तक मेरे लिए इसके नजिस अल-ऐन होने का कोई प्रमाण स्पष्ट नहीं हुआ है और इसे सिद्ध करने वालों के सभी प्रमाण दोषपूर्ण हैं।

और बारहवाँ वह है जो मौलवी अब्दुल हई लखनवी ने 'तअलीक़ अल-मुमज्जाद' में उन हदीसों के उल्लेख के बाद कहा है जो कमाना (दबागत) से खालों की पूर्ण शुद्धता को दर्शाती हैं:

- इन हदीसों और इनके समान हदीसों के आधार पर, अधिकांश न्यायविदों ने कमाना (दबागत) के माध्यम से पूर्ण शुद्धता का मार्ग अपनाया है। हालाँकि, उन्होंने इसके सम्मान के कारण मानव त्वचा को और सुअर की खाल को इसके मूलतः अशुद्ध होने के कारण बहिष्कृत कर दिया है। और जो लोग कुत्ते को मूलतः अशुद्ध मानते हैं, उन्होंने उसे भी बहिष्कृत किया है; यह हनफ़ियों के एक समूह और अन्य न्यायविदों का मत है, लेकिन अभी तक इस पर कोई मजबूत प्रमाण नहीं मिला है। (त)[3] | और इन हदीसों और इनके समान हदीसों के साथ, बहुसंख्यक कमाना के माध्यम से पूर्ण शुद्धता की ओर गए हैं, सिवाय इसके कि उन्होंने मानव त्वचा को उसके सम्मान के कारण और सुअर की खाल को उसके नजिस अल-ऐन होने के कारण इससे बाहर रखा है। और कुत्ते की खाल को भी उन्होंने बाहर रखा है जो इसे नजिस अल-ऐन मानते हैं, और यह हनफ़ियों के एक समूह और अन्यों का कथन है, और अभी तक किसी मजबूत प्रमाण ने इसका संकेत नहीं दिया है।

और तेरहवाँ वह है जो 'फ़तह अल-क़दीर' में है:

- शुद्धिकरण (तसहीह) में विद्वानों का मतभेद है और 'अय्युमा इहाब' (जो भी खाल)... | आचार्यों ने शुद्धिकरण (तसहीह) में मतभेद किया और जो यह मांग करता है...

---

[1] रद अल-मुह्तार, कुएँ के अध्याय से पहले, मुजतबाई दिल्ली द्वारा मुद्रित, 1/139 [2] अस-सा'या फ़ी कश्फ़ मा फ़ी शरह अल-विकाया मिन अहकाम अद-दबाना, सुहैल अकादमी लाहौर, 1/409 [3] तअलीक़ अल-मुमज्जाद, अब्दुल हई लखनवी द्वारा

पृष्ठ 404/761

مادام حیا وطہارۃ جلدہ بالدباغ والذکاۃ وطہارۃ مالا تحلہ الحیوۃ من اجزائہ کغیرہ من السباع -1 | زندہ ہے ذاتی طور پر پاک ہے۔ اس کا چمڑا دباغت یا ذبح (شرعی) کے ساتھ پاک ہو جاتا ہے نیز اس کے جن اجزاء میں زندگی سرایت نہیں کرتی دوسرے درندوں کی طرح وہ بھی پاک ہیں۔ (ت)

اور گیارہواں یہ جو سعایہ میں ہے:

قلت لم یتضح لی الی الآن دلیل علی کونہ نجس العین ودلائل المثبتین کلھا مخدوشۃ -2 | میں کہتا ہوں اب تک مجھے اس کے نجس عین ہونے پر کوئی واضح دلیل نہیں ملی، نجس ثابت کرنے والوں کے تمام دلائل کمزور ہیں۔ (ت)

اور بارھواں وہ جو مولوی عبد الحی لکھنوی نے تعلیق ممجد میں بعد ذکر ان حدیثوں کے جو کہ طہارت اہب پر دباغت سے مطلقاً دلالت کرتی ہیں کہا ہے:

وبھذہ الاحادیث ونظائرھا ذھب الجمھور الی الطھارۃ بالدباغۃ مطلقا الا انھم استثنوا من ذلك جلد الانسان لکرامتہ وجلد الخنزیر لنجاسۃ عینہ واستثنی ایضاً جلد الکلب من ذھب الی کونہ نجس العین وھو قول جمع من الحنفیۃ وغیرھم ولم یدل علی دلیل قوی بعد -3 | ان احادیث اور ان کی مثل پر بنیاد رکھتے ہوئے جمہور فقہاء نے دباغت کے ذریعے مطلقاً طہارت کی راہ اختیار کی ہے مگر انہوں نے اس سے انسان کے چمڑے کو اس کی عزت کی بنیاد پر اور خنزیر کے چمڑے کو اس کے نجس عین ہونے کی وجہ سے مستثنیٰ قرار دیا ہے اور جو لوگ کتے کو نجس عین سمجھتے ہیں انہوں نے اس کو بھی مستثنیٰ کیا ہے احناف کی ایک جماعت اور ان کے علاوہ فقہاء کرام کا یہی قول ہے لیکن ابھی تک اس پر کوئی مضبوط دلیل نہیں پائی گئی۔ (ت)

اور تیرھواں یہ جو فتح القدیر میں ہے:

اختلف المشایخ فی التصحیح والذی یقتضیہ | تصحیح میں علماء کا اختلاف ہے اور "ایما اھاب"

---

1 رد المحتار قبیل فصل فی البئر مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/۱۳۹ 2 السعایۃ فی کشف مانی شرح الوقایۃ من احکام الدبانۃ سہیل اکیڈمی لاہور ۱/۴۰۹ 3 تعلیق ممجد لعبد الحی لکھنوی

| The generality of "every skin" necessitates the purity of the essence, and there is no evidence against it that would necessitate impurity. Therefore, it is necessary that its non-impurity be established as truth. (T) | "Amum ayyuma ihabin taharatu aynihi walam yu'aridhu ma yujibu najasatahu fa-wajaba haqiqatan adamu najasatahi" 1 |

He says that a dog is pure in essence and says that the reason for evidence in the verse is that this verse indicates the permissibility of benefiting from a dog for hunting without necessity; rather, it indicates the permissibility of taking all kinds of benefits from it except eating it. Qurtubi has said:

| Some authors of "Ahkam-ul-Qur'an" have mentioned that the verse indicates that permissibility includes all those hunting animals that we train, and this includes dogs and all birds of prey as well. This necessitates the permissibility of all methods of benefiting (permissibility). Thus, it indicates the selling of dogs and (other) hunting animals and obtaining every kind of benefit from them, except what the evidence has specifically excluded, and that is eating the hunting animals, i.e., the dogs and beasts of prey that hunt (and this is not permissible). (T) | "Wa qad dhakara ba'du man sannafa fi ahkam al-Qur'an anna al-ayata tadullu 'ala anna al-ibahata tanawalat ma 'allamna al-jawariha wa huwa yanzimu al-kalba wa sa'ira jawarih al-tayri wa dhalika yujibu ibahata sa'iri wujuhi al-intifa'i fa-dalla 'ala jawazi bay'i al-kalbi wa al-jawarihi wa al-intifa'i biha bi-sa'iri wujuhi al-manafi'i illa ma khassahu al-dalilu wa huwa al-aklu min al-jawarihi ayi al-kawasibi min al-kilabi wa siba'i al-tayri" 2 |

And the permissibility of benefiting from something without necessity is a sign of its non-impurity. So, it also indicated its non-impurity as is apparent (as it is clear. T).

And in the Hadith of Ibn Umar, it is mentioned that during the summer season, dogs would often come and go in the mosque, wet with muddy water, and the mud and water would drop and drip in the mosque. Since, despite this, washing (sprinkling

water) was not proven, the non-impurity of their bodies and essences was established.

[Seal: I.T. Majlis of Dawat-e-Islami]

---

1. Fath al-Qadeer, Chapter: Water with which Wudu is Permissible etc., published by Nooria Rizvia Sukkur, 1/83.
2. Al-Jami' li Ahkam al-Qur'an, under the verse "wa ma 'allamtum minal jawarih" etc., Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 26/6.

| "हर चमड़ा" की व्यापकता इसके मूल स्वरूप की पवित्रता की मांग करती है, और इसके विरुद्ध कोई ऐसा प्रमाण नहीं है जो इसकी अशुद्धता को अनिवार्य करे। अतः यह आवश्यक हो गया कि इसकी अशुद्धता का न होना ही सत्य सिद्ध हो। (त) | "अमूम अय्युमा इहाबिन तहारतु ऐनिही वलम युआरिज़हु मा यूजिबु नजासतहु फ़-वजबा हक़ीक़तन अदमु नजासतही" 1 |

वह कहते हैं कि कुत्ता मूलतः पवित्र है और कहते हैं कि आयत में दलील का कारण यह है कि यह आयत बिना किसी विवशता के शिकार के उद्देश्य से कुत्ते से लाभ उठाने की अनुमति देती है, बल्कि खाने के अतिरिक्त उससे हर प्रकार का लाभ उठाने की अनुमति पर दलील देती है। क़ुर्तुबी ने कहा है:

| 'अहकामुल क़ुरान' के कुछ लेखकों ने उल्लेख किया है कि आयत इस बात पर दलील देती है कि अनुमति उन सभी शिकारी जानवरों को शामिल है जिन्हें हम सिखाएँ और इसमें कुत्ता और तमाम शिकारी परिंदे भी शामिल हैं और यह लाभ उठाने के तमाम तरीकों की अनुमति को अनिवार्य करता है। अतः यह कुत्ते और (अन्य) शिकारी जानवरों को बेचने और उनसे हर तरह का नफ़ा हासिल करने पर दलील देता है, सिवाय उसके जिसे दलील ने विशेष रूप से अलग कर दिया हो, और वह शिकारी जानवरों यानी कमाई करने वाले कुत्तों और दरिंदों को खाना है (और यह जायज़ नहीं है)। (त) | "व क़द ज़करा बअज़ु मन सन्नफ़ा फ़ी अहकाम अल-क़ुरान अन्ना अल-आयता तदुल्लु अला अन्ना अल-इबाहता तनावलत मा अल्लमना अल-जवारिहा व हुवा यन्ज़िमु अल-कल्बा व साइरा जवारिह अल-तय़री व ज़ालिका यूजिबु इबाहता साइरी वुजूही अल-इन्तिफ़ाई फ़-दल्ला अला जवाज़ी बय़इ अल-कल्बी व अल-जवारिही व अल-इन्तिफ़ाई बिहा बि-साइरी वुजूही अल-मनाफ़िई इल्ला मा ख़स्सहू अल-दलीलु व हुवा अल-अकलु मिन अल-जवारिही अयि अल-कवासिबि मिन अल-किलाबी व सिबाइ अल-तय़र" 2 |

और किसी चीज़ से बिना ज़रूरत लाभ उठाना जायज़ होना उस चीज़ के अपवित्र न होने का लक्षण है, तो इसने इसकी पवित्रता पर भी दलील दी जैसा कि स्पष्ट है (जैसा कि वह ज़ाहिर है। त)।

और इब्ने उमर की हदीस में यह है कि गर्मी के मौसम में अक्सर कुत्ते कीचड़ वाले पानी में भीगे हुए मस्जिद में आते-जाते होंगे और कीचड़ वाला पानी मस्जिद में गिरता-टपकता होगा, तो जब इसके बावजूद पानी छिड़कना (रश) भी साबित न हुआ तो उनके शरीर और उनके अस्तित्व की पवित्रता (अशुद्ध न होना) साबित हुई।

[मुहर: I.T. मजलिस-ए-दावत-ए-इस्लामी]

---

1. फ़तह अल-क़दीर, बाब: अल-मा अल-लज़ी यज़ूज़ु बिहिल वुज़ू इत्यादि, प्रकाशक: नूरिया रज़विया सक्खर, 1/83.
2. अल-जामि लि-अहकाम अल-क़ुरान, आयत 'व मा अल्लमतुम मिन अल-जवारिह' इत्यादि के अंतर्गत, दार इह्या अल-तुरास अल-अरबी बैरुत, 6/26.

पेज 405/761

| عموم ایما اھاب طھارۃ عینہ ولم یعارضہ مایوجب نجاستھا فوجب حقیقۃ عدم نجاستھا 1 | (جو بھی چمڑا) کا عموم طہارت عین کا مقتضی ہے اور اس کے مقابلے میں نجاست کو واجب کرنے والی کوئی دلیل موجود نہیں لہٰذا ضروری ہوا کہ اس کا نجس نہ ہونا حق ہوا۔ (ت) |

کہتا ہے کہ کتا طاہر العین ہے اور کہتا ہے کہ آیت میں تو وجہ دلالت کی یہ ہے کہ یہ آیت بلا ضرورت کتے سے از روئے اصطیاد کے جواز انتفاع پر بلکہ بجز کھانے کے اور اس سے سب طرح کے فائدے اٹھانے کے جواز پر دلالت کرتی ہے، قرطبی نے کہا ہے:

| وقد ذكر بعض من صنف فی احكام القرآن ان الاية تدل على ان الاباحة تناولت ماعلمنا الجوارح وهو ينظم الكلب وسائر جوارح الطير وذلک يوجب اباحة سائر وجوه الانتفاع فدل على جواز بيع الكلب والجوارح والانتفاع بها بسائر وجوه المنافع الاماخصہ الدليل وهو الاكل من الجوارح ای الكواسب من الكلاب وسباع الطير 2- |

احكام قرآن کے بعض مصنفین نے ذکر کیا ہے کہ آیت اس بات پر دلالت کرتی ہے کہ اباحت ان تمام شکاری جانوروں کو شامل ہے جن کو ہم سکھائیں اور اس میں کتا اور تمام شکاری پرندے بھی شامل ہیں اور یہ (جواز) انتفاع کے تمام طریقوں کی اباحت کو واجب کرتا ہے پس یہ کتے اور (دیگر) شکاری جانوروں کو بیچنے اور ان سے ہر طرح کا نفع حاصل کرنے پر دلالت کرتا ہے مگر جس کو دلیل نے خاص کرلیا ہو، اور وہ شکاری جانوروں

یعنی کسب کرنے والے کتوں اور درندوں کو کھانا ہے (اور یہ جائز نہیں۔ (ت) |

اور کسی چیز سے بلا ضرورت انتفاع کا جائز ہونا اس چیز کے عدم نجاست کی علامت ہے تو اس نے اس کے عدم نجاست پر بھی دلالت کی کماھو ظاہر (جیسا کہ وہ ظاہر ہے۔ ت)

اور حدیث ابن عمر میں یہ کہ موسم گرمی میں اکثر اوقات کتے کیچڑ میں بھرے ہوئے پانی میں بھیگے ہوئے مسجد میں آتے جاتے ہوں گے اور کیچڑ پانی مسجد میں گرتا ٹپکتا ہوگا تو جبکہ باوجود اس کے رش بھی نہ ثابت ہوا تو ان کے اجسام اور اعیان کے عدم نجاست ثابت ہوئی۔

[مہر: I.T. Majlis of Dawat-e-Islami]

---

1 فتح القدیر باب الماء الذی یجوز بہ الوضوء الخ مطبوعہ نوریہ رضویہ سکھر 1/ 83 2 الجامع لاحکام القرآن زیر آیہ وما علمتم من الجوارح الخ داراحیاء التراث العربی بیروت 26/6

Fatawa Razviyya, Volume 4

Regarding the evidence from the Hadiths concerning permission for keeping dogs (Ahadith regarding permission to keep dogs - T), Mawlawi Abdul Hayy stated in 'Al-Si'ayah':

نعم لها دلالة على طهارة جسمه وعدم تنجس عينه البتة فان الاذن فى اقتنائه دال على انه ليس بنجس العين ^{1}	**Yes, it is certainly a proof of its body being pure and not being inherently impure, because the permission to keep it indicates that it is not inherently impure. (T)**

And the reason for evidence in the other Hadiths is clear, both generally and by way of inference from the Hadiths ordering the killing of dogs (inferring from Hadiths regarding the command to kill dogs - T), the Hadiths about angels not entering a house that contains a dog (Hadiths about angels not entering houses with dogs - T), the Hadiths commanding the washing of a vessel seven, eight, or three times after a dog licks it and pouring out what remains of its drink (Hadiths about washing a vessel seven, eight, or three times if a dog licks it and discarding the leftover - T), and the Hadith of Abu Hurayrah (may Allah be pleased with him):

ان النبى دعى الى دار قوم فاجاب ودعى الى دار آخرين فلم يجب فقيل له فى ذلك فقال ان فى دار فلان كلباً فقيل له وان فى دار فلان هرة فقال الهرة ليست بنجسة انما هى الطوافين عليكم والطوافات ^{2}	**The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) was invited by a group, and he accepted. He was invited to someone else's house but did not accept. He was asked about this. He said that there is a dog in so-and-so's house. It was submitted that there is a cat in so-and-so's house. He replied: The cat is not impure; it is like those (male servants) and (female servants) who come and go around you. (T)**

And adhering to the statements of some of our Hanafi scholars, one of which is what is in 'Al-Mabsut':

الصحيح من المذهب عندنا ان الكلب نجس ^{3}	**According to us, the correct position of the school is that a dog is impure. (T)**

---

^{1} Al-Si'ayah fi Kashf ma fi Sharh al-Wiqayah, Ahkam al-Asar, Suhail Academy Lahore, 1/446 ^{2} Al-Talkhis al-Habir fi Takhrij Ahadith al-Rafi'i al-Kabir, Chapter on Impurities, Al-Maktabah al-Athariyyah Sangla Hill, 1/25 ^{3} Al-Mabsut by al-

Sarakhsi, chapter on the leftovers of animals whose meat is not eaten, published by Dar al-Ma'rifah, Beirut, 1/48

Page 406 of 761

फतावा रज़विया, खंड 4

कुत्ते पालने की अनुमति से संबंधित हदीसों (कुत्ता रखने की इजाज़त से मुताल्लिक़ अहादीस - त) की दलालात (प्रमाणिकता) के बारे में मौलवी अब्दुल हई ने 'सआया' में कहा है:

نعم لها دلالة على طهارة جسمه وعدم تنجس عينه البتة فان الاذن فى اقتنائه دال على انه ليس بنجس العين ^{1}

हाँ, इसके जिस्म (शरीर) के पाक होने और नजिस ऐन (स्वयं अपवित्र) न होने पर यकीनन दलील (प्रमाण) है क्योंकि इसे रखने की इजाज़त इस बात पर दलालत करती है कि वह नजिस ऐन नहीं। (त)

और बाकी हदीसों में दलालत की वजह ज़ाहिर है, चाहे वह स्पष्ट रूप से हो या उन हदीसों से अनुमान लगाकर जिनमें कुत्तों को मारने का आदेश है (कुत्तों को हलाक करने के हुक्म से मुताल्लिक अहादीस से इस्तदलाल करते हुए - त), उन हदीसों से कि जिस घर में कुत्ता हो वहाँ फरिश्ते प्रवेश नहीं करते (जिस घर में कुत्ता हो उसमें फरिश्तों के दाखिल न होने के बारे में अहादीस - त), उन हदीसों से जिनमें कुत्ते के चाटने पर बर्तन को सात, आठ या तीन बार धोने और उसके पीने से बचे हुए पानी को बहा देने का आदेश है (कुत्ते के चाटने से बर्तन को सात या आठ या तीन बार धोने और उसके पीने से जो बच जाए उसे बहा देने के बारे में अहादीस - त), और हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) की हदीस:

ان النبى دعى الى دار قوم فاجاب ودعى الى دار آخرين فلم يجب فقيل له فى ذلك فقال ان فى دار فلان كلباً فقيل له وان فى دار فلان هرة فقال الهرة ليست بنجسة انما هى الطوافين عليكم والطوافات ^{2}

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को एक कौम ने दावत दी, आपने कुबूल कर ली। और आपको दूसरों के घर में बुलाया गया तो आपने कुबूल न किया, इस बारे में आपसे अर्ज़ किया गया। आपने फरमाया कि फलां के घर में कुत्ता है। अर्ज़ किया गया और फलां के घर में बिल्ली है। आपने इरशाद फरमाया: बिल्ली नापाक नहीं है और वह तुम्हारे पास आने-जाने वाले (गुलामों) और आने-जाने वाली (लौंडियों) की तरह है। (त)

और हमारे कुछ हनफी विद्वानों के कथनों का सहारा लेते हुए, जिनमें से एक वह है जो 'मबसूत' में है:

الصحيح من المذهب عندنا ان الكلب نجس ^{3}	**हमारे नज़दीक सही मज़हब यह है कि कुत्ता नापाक है। (त)**

---

^{1} अल-सआया फी कश्फ मा फी शरह अल-विकाया, अहकाम अल-आसार, सुहैल एकेडमी लाहौर, 1/446 ^{2} अल-तलखीस अल-हबीर फी तखरीज अहादीस अल-राफई अल-कबीर, बाब बयान अल-नजासात, अल-मकतब अल-असरिया सांगला हिल, 1/25 ^{3} अल-मबसूत लिस-सरखसी, सूअर माला युकल लहमहु, मतबुआ दारुल मारिफत बेरूत, 1/48

فتاوی رضویہ جلد چھارم

اور احادیث اذن فی اقتناء الکلب (کتا رکھنے کی اجازت سے متعلق احادیث۔ت) کی دلالت کی نسبت مولوی عبدالحی نے سعایہ میں کہا ہے:

نعم لھا دلالۃ علی طھارۃ جسمہ وعدم تنجس عینہ البتۃ فان الاذن فی اقتنائہ دال علی انہ لیس بنجس العین ^{1}

ہاں اس کے جسم کے پاک ہونے اور نجس عین نہ ہونے پر یقیناً دلیل ہے کیوں کہ اسے رکھنے کی اجازت اس بات پر دلالت کرتی ہے کہ وہ نجس عین نہیں۔(ت)

اور باقی حدیثوں میں وجہ دلالت کی ظاہر ہے اور عمراً واستدلالاً باحادیث الامر بقتل الکلاب (کتوں کو ہلاک کرنے کے حکم سے متعلق احادیث سے استدلال کرتے ہوئے۔ت) واحادیث عدم دخول الملئکۃ بیتا فیہ کلب (جس گھر میں کتا ہو اس میں فرشتوں کے داخل نہ ہونے کے بارے میں احادیث۔ت) واحادیث الامر بغسل الاناء من دلوغ الکلب سبعاً او ثمانیاً او ثلثاً واھراق ما فضل من شربہ (کتے کے چاٹنے سے برتن کو سات یا آٹھ یا تین بار دھونے اور اس کے پینے سے جو بچ جائے اسے بہادینے کے بارے میں احادیث۔ت) وحدیث ابی ھریرۃ رضی اللہ عنہ:

ان النبی دعی الی دار قوم فاجاب ودعی الی دار آخرین فلم یجب فقیل لہ فی ذلك فقال ان فی دار فلان کلباً فقیل لہ وان فی دار فلان ھرۃ فقال الھرۃ لیست بنجسۃ انما ھی الطوافین علیکم والطوافات ^{2}

نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کو ایک قوم نے دعوت دی، آپ نے قبول کرلی۔ اور آپ کو دوسروں کے گھر میں بلایا گیا تو آپ نے قبول نہ کیا، اس بارے میں آپ سے عرض کیا گیا۔ آپ نے فرمایا کہ فلاں کے گھر میں کتا ہے۔ عرض کیا گیا اور فلاں کے گھر میں بلی ہے۔ آپ نے ارشاد فرمایا: بلی ناپاک نہیں اور وہ تمہارے پاس آنے جانے والے (غلاموں) اور آنے جانے والی (لونڈیوں) کی طرح ہے۔ (ت)

وتمسکا باقوال بعض علمائنا الحنفیۃ کو ازانجلہ ایک یہ ہے جو مبسوط میں ہے:

الصحیح من المذھب عندنا ان الکلب نجس ^{3}

ہمارے نزدیک صحیح مذہب یہ ہے کہ کتا ناپاک ہے۔ (ت)

---

^{1} السعایۃ فی کشف مانی شرح الوقایۃ احکام الاسار سہیل اکیڈمی لاہور ۱ / ۴۴۶ ^{2} التلخیص الحبیر فی تخریج احادیث الرافعی الکبیر، اب بیان النجاسات، المکتبۃ الاثریہ سانگلہ ہل، ۱ / ۲۵ ^{3} المبسوط للسرخسی سؤر مالا یوکل لحمہ مطبوعہ دارالمعرفت بیروت ۱ / ۴۸

Fatawa Razvia, Volume 4

And the second answer is in Abu al-Makarim's commentary on Naqaya:

Arabic	Urdu
In Fatawa Qazi Khan, there is that which indicates that the dog is inherently impure (najis al-ayn), and in another place, there is that which indicates it is not so; and I heard that the correct narration according to us is the first one. (1)	In Fatawa Qazi Khan, there is such matter which indicates the dog being inherently impure, and (in the same) in another place there is that matter which indicates it not being so, and I heard that according to us the correct narration is the first one (i.e., inherently impure). (T)

And the third is what is in Sharh al-Wiqaya and some other books of jurisprudence:

Arabic	Urdu
If a dog blocks the width of a river and water flows over it, if the water touching the dog is less than what does not touch it, performing ablution (wudu) downstream is permissible, otherwise not. (2)	If a dog blocks the width of a stream and water flows over it, then if the water touching the dog is less than that which is not touching its body, it is permissible to perform wudu from the downstream side (of the stream), otherwise not. (T)

It is said that the dog is inherently impure. To the arguments of Zaid and Amr from the hadiths regarding the command to kill dogs, the hadiths regarding the non-entry of angels, and the hadiths regarding the command to wash utensils, he responds that there is weakness in the indication of all these hadiths towards the impurity of a dog. Regarding the indication of the hadiths to kill dogs, it's because this command was not due to their impurity, but rather due to angels not entering a house where there is a dog, as understood from the mentioned hadiths themselves. Even if we accept it, its abrogation has been recorded. And regarding the indication of the hadiths about the non-entry of angels, it is because the cause for the angels' abstention cannot be determined to be only the impurity of the dog; rather, it is possible it's some other matter.

Arabic	Urdu
Allama Al-Damiri said in Hayat al-Hayawan: The scholars said the reason for their (angels') abstention from entering a house	Allama Damiri said in Hayat al-Hayawan that scholars say the reason for angels not coming into a house where there is

Arabic	Urdu
in which there is a dog is their frequent eating of impurities, and some dogs are called devils, and angels...	a dog is the dogs' excessive eating of filth, and some dogs are called devils, and angels [avoid] devils.

1. Sharh al-Naqaya by Abu al-Makarim.
2. Sharh al-Wiqaya, chapter on what is permissible for wudu, Al-Maktabah al-Rashidiyyah, Delhi, 1/84.

और दूसरा जवाब अबू अल-मकारिम की शरह नक़ाया में है:

अरबी	उर्दू
फ़तावा क़ाज़ी ख़ान में ऐसी बात है जो कुत्ते के नजिस ऐन (स्वभावतः अशुद्ध) होने पर दलालत करती है और (उसी में) दूसरी जगह वह बात है जिसमें ऐसा न होने पर दलालत है और मैंने सुना कि हमारे नज़दीक सही रिवायत पहली है। (1)	फ़तावा क़ाज़ी ख़ान में ऐसी बात है जो कुत्ते के नजिस ऐन होने पर दलालत करती है और (उसी में) दूसरी जगह वह बात है जिसमें ऐसा न होने पर दलालत है और मैंने सुना कि हमारे नज़दीक सही रिवायत पहली है (यानी नजिस ऐन)। (त)

और तीसरा वह जो शरह विक़ाया वगैरह बाज़ कुतुबे फ़िक़्ह (न्यायशास्त्र की किताबों) में है:

अरबी	उर्दू
अगर कुत्ता नहर की चौड़ाई बंद कर दे और पानी उसके ऊपर से गुज़रे, तो अगर कुत्ते को छूने वाला पानी उस पानी से कम है जो उसके(शरीर) को नहीं छू रहा, तो (नहर के) निचले हिस्से से वज़ू करना जायज़ है, वर्ना नहीं। (2)	अगर कुत्ता नहर की चौड़ाई बंद कर दे और पानी उसके ऊपर से जारी हो तो अगर कुत्ते से मिला हुआ पानी उससे कम है जो इस (के जिस्म) से मिला हुआ नहीं है तो (नहर की) निचली जानिब से वज़ू करना जायज़ है वर्ना नहीं। (त)

कहा जाता है कि कुत्ता नजिसुल ऐन है। ज़ैद व अम्र के इन दलाइल (दलीलों) में से अहदीस अम्र बक़त्ल कलाब (कुत्तों को मारने के हुक्म की हदीसें), अहदीस अदम दुख़ूल मलायका (फ़रिश्तों के प्रवेश न करने की हदीसें) और अहदीस अम्र बगुस्ल इना (बर्तन धोने के हुक्म की हदीसें) का जवाब यह है कि इन सब हदीसों के नजासते कलब (कुत्ते की अशुद्धि) पर दलालत करने में कमज़ोरी है। कुत्तों को मारने के हुक्म वाली हदीसों के बारे में यह है कि यह आदेश उनकी अशुद्धि के कारण नहीं था, बल्कि फ़रिश्तों के उस घर में प्रवेश न करने के कारण था जिसमें कुत्ता हो, जैसा कि स्वयं इन हदीसों से समझ आता है। और यदि हम इसे स्वीकार भी कर लें, तो इसका निरसन (नस्ख़) आ चुका है। और फ़रिश्तों के प्रवेश न करने वाली हदीसों के बारे में यह है कि फ़रिश्तों के न आने का कारण केवल कुत्ते की अशुद्धि ही नहीं हो सकती, बल्कि संभव है कि कोई और बात हो।

अरबी

अल्लामा दमीरी ने हयातुल हैवान में फ़रमाया: उलमा कहते हैं कि उस घर में जिसमें कुत्ता हो, फ़रिश्तों के न आने का कारण उनका बार-बार अशुद्ध चीज़ें खाना है, और कुछ कुत्तों को शैतान कहा जाता है, और फ़रिश्ते...

उर्दू

अल्लामा दमीरी ने हयातुल हैवान में फ़रमाया कि उलमा फ़रमाते हैं जिस घर में कुत्ता हो उसमें फ़रिश्तों के न आने का कारण कुत्तों का बहुत ज़्यादा गंदगी खाना है, और कुछ कुत्तों को तो शैतान कहा जाता है और फ़रिश्ते शैतान...

---

1. शरह अल-नक़ाया अबू अल-मकारिम द्वारा।
2. शरह अल-विक़ाया, वज़ू के लिए जायज़ होने का बयान, अल-मक्तबा अल-रशीदिया, दिल्ली, 1/84।

पृष्ठ 761 का 407

اور دوسرا یہ جواب ابو المکارم کی شرح نقایہ میں ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ
فی فتاوی قاضی خان مایدل علی ان الکلب نجس العین وفی موضع آخر مایدل علی انه لیس کذلک وسمعت ان الروایة الصحیحة عندنا هو الاول 1	فتاوی قاضی خان میں ایسی بات ہے جو کتے کے نجس عین ہونے پر دلالت کرتی ہے اور (اسی میں) دوسری جگہ وہ بات ہے جس میں ایسا نہ ہونے پر دلالت ہے اور میں نے سنا کہ ہمارے نزدیک صحیح روایت پہلی ہے (یعنی نجس عین)۔(ت)

اور تیسرا یہ جو شرح وقایہ وغیرہ بعض کتب فقہ میں ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ
اذا سد کلب عرض النهر ویجری الماء فوقه انکان مائلاقی الکلب اقل ممالا یلاقیه یجوز الوضوء فی الاسفل والا لا 2۔	اگر کتا نہر کی چوڑائی بند کردے اور پانی اس کے اوپر سے جاری ہو تو اگر کتے سے ملا ہوا پانی اس سے کم ہے جو اس (کے جسم) سے ملا ہوا نہیں ہے تو (نہر کی) نچلی جانب سے وضو کرنا جائز ہے ورنہ نہیں۔(ت)

کہتا ہے کہ کتا نجس العین ہے اور زید عمرو کے ان دلائل میں سے احادیث امر بقتل کلاب اور احادیث عدم دخول ملائکہ اور احادیث امر بغسل اناء کا تو جواب یہ دیتا ہے کہ ان سب حدیثوں کے نجاست کلب پر دلالت کرنے میں ضعف ہے۔ احادیث امر بقتل کلاب کے دلالت کرنے میں تو اس وجہ سے کہ یہ امر ان کی نجاست کے سبب نہ تھا بلکہ ملائکہ کے اس گھر میں جس میں کتا ہو نہ

داخل ہونے کی وجہ سے تھا جیسا کہ امر مذکور ہی کی احادیث سے مفہوم ہوتا ہے اور اگر ہم تسلیم بھی کرلیں تو اس کا نسخ وارد ہوچکا ہے اور احادیث عدم دخول ملائکہ کے دلالت کرنے میں اس وجہ سے کہ امتناع ملائکہ کا باعث کلب کی نجاست ہی نہیں متعین ہو سکتی بلکہ ممکن ہے کہ کوئی اور امر ہو۔

عربی متن	اردو ترجمہ
قال العلامة الدميرى فى حيوة الحيوان قال العلماء سبب امتناعهم من البيت الذى فيه الكلب كثرة اكله النجاسات وبعض الكلاب يسمى شيطانا والملائكة	علامہ دمیری نے حیوۃ الحیوان میں فرمایا کہ علماء فرماتے ہیں جس گھر میں کتا ہو اس میں فرشتوں کے نہ آنے کا باعث کتوں کا بکثرت نجاست کھانا ہے، اور بعض کتوں کو تو شیطان کہا جاتا ہے اور فرشتے شیطان

---

1 شرح النقاية لابى المكارم 2 شرح الوقاية بيان مايجوز به الوضوء المكتبة الرشيديه دہلی 1/84

Fatawa Razawiyya - Volume Four

...against the devils and because of the foul smell of the dog, and angels dislike foul smells. This is why keeping a dog is prohibited, so the one who keeps it is punished by the deprivation of angels entering his house. (T)

An example of this is the hadith that Imam Malik, Bukhari, and Muslim narrated from Hazrat Aisha (may Allah be pleased with her) that angels do not enter a house where there are pictures. Also, the hadith narrated by Imam Malik, Ahmad, Tirmidhi, and Ibn Hibban from Abu Sa'id that angels do not enter a house where there are statues or images. Furthermore, the hadith narrated by Baghawi, Tabarani, and Abu Nu'aym in 'Ma'rifa', and Ibn Qani' from Sawt bin Ghazi that angels are not with a caravan that has a bell. And the hadith narrated by Tabarani from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them) that angels do not attend to a person in a state of ritual impurity (junub) or someone smeared with *khaluq*[2] until they wash.

And the hadith narrated by Ahmad and Abu Dawud from Ammar that angels do not attend the funeral of an infidel with goodness, nor those smeared with saffron, nor those in a state of ritual impurity. Just as it is impossible to argue from these hadiths for the impurity of pictures, infidel funerals, or those smeared with saffron etc., similarly, it is impermissible to rely on hadiths about angels not entering to prove the impurity of a dog itself. The weakness of the hadiths regarding the command to wash the vessel is evident. Yes, these hadiths do indicate the impurity of dog saliva, but not the impurity of its essence. As for the response to the hadith of Abu Huraira, Maulana Allahdad Jaunpuri in Hashiya Hidaya and Damiri in Hayat al-Hayawan have narrated it, and Damiri said that Imam Ahmad, Daraqutni, Hakim, and Bayhaqi narrated the hadith from Abu Huraira (may Allah be pleased with him). However, when I referred to Sunan Daraqutni and Mustadrak al-Hakim, I did not find this hadith with these words, but rather the words:

Arabic

كَانَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْتِي دَارَ قَوْمٍ مِّنَ الْاَنْصَارِ وَدُوْنَهُمْ دَارٌ فَيَشُقُّ ذٰلِكَ عَلَيْهِمْ فَقَالُوْا يَا رَسُوْلَ اللهِ تَأْتِي دَارَ فُلَانٍ وَّلَا تَأْتِي دَارَنَا فَقَالَ

Urdu

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) used to visit the houses of some Ansar, and there was a house below them. This was distressing for them, so they said: O Messenger of Allah! You visit so-and-so's house but not ours, so he said...

[1] Hayat al-Hayawan al-Kubra, under the word 'al-Kalb', Mustafa al-Babi al-Halabi, Egypt, 2/290. [2] *Khaluq*: One who applies a specific type of perfume.

...शैतानों के विरुद्ध और कुत्ते की दुर्गंध के कारण, और फ़रिश्ते दुर्गंध को नापसंद करते हैं। यही कारण है कि कुत्ता रखने से मना किया गया है, अतः इसे रखने वाले को इस प्रकार दंडित किया गया कि उसके घर में फ़रिश्तों का प्रवेश नहीं होता। (त)

और इसका उदाहरण वह हदीस है जिसे इमाम मालिक, बुखारी और मुस्लिम ने हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से मरफ़ूअन् उल्लेख किया है कि जिस घर में तस्वीरें होती हैं उसमें फ़रिश्ते प्रवेश नहीं करते। और वह हदीस भी जिसे इमाम मालिक, अहमद, तिर्मिज़ी और इब्न हिब्बान ने अबू सईद (रज़ियल्लाहु अन्हु) से मरफ़ूअन् उल्लेख किया है कि जिस घर में मूर्तियाँ या चित्र होते हैं उसमें फ़रिश्ते नहीं आते। और वह हदीस जिसे बग़वी, तबरानी और अबू नुऐम ने 'मारिफ़ा' में और इब्न क़ानिअ ने सौत बिन ग़ज़ी से मरफ़ूअन् उल्लेख किया है कि फ़रिश्ते उस क़ाफ़िले के साथ नहीं होते जिसमें घंटी होती है। और वह हदीस जिसे तबरानी ने हज़रत इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से मरफ़ूअन् उल्लेख किया है कि फ़रिश्ते जुनूब (नापाकी की हालत) और 'ख़लूक़'[2] से सने हुए व्यक्ति के पास उनके ग़ुस्ल (स्नान) करने तक उपस्थित नहीं होते।

और वह हदीस जिसे अहमद और अबू दाऊद ने अम्मार से मरफ़ूअन् उल्लेख किया है कि फ़रिश्ते काफ़िर के जनाज़े पर खैर के साथ, और केसर से सने हुए व्यक्ति और जुनूब पर उपस्थित नहीं होते। तो जैसा कि इन हदीसों से तस्वीर, काफ़िर के जनाज़े और केसर से सने हुए व्यक्ति आदि की अशुद्धता (नजासत) पर तर्क करना असंभव है, वैसे ही फ़रिश्तों के प्रवेश न करने वाली हदीसों से कुत्ते की अशुद्धता पर दलील देना नाजायज़ है। और बर्तन धोने के आदेश वाली हदीसों में कमज़ोरी का होना स्पष्ट है। हाँ, ये हदीसें कुत्ते की लार की अशुद्धता पर तो दलालत करती हैं, न कि उसके मूल शरीर की अशुद्धता पर। और अबू हुरैरा की हदीस का जवाब पहले तो यह है कि मौलाना अल्लाहदाद जौनपुरी ने 'हाशिया हिदाया' में और दमीरी ने 'हयातुल हयवान' में उल्लेख किया है और दमीरी ने कहा है कि इस हदीस को इमाम अहमद, दारक़ुत्नी, हाकिम और बैहक़ी ने अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है, लेकिन जब मैंने सुनन दारक़ुत्नी और मुस्तदरक हाकिम की ओर रुजू किया तो मैंने उन दोनों में इस हदीस को इन शब्दों में नहीं पाया, बल्कि शब्द ये थे:

अरबी	उर्दू
كَانَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْتِي دَارَ قَوْمٍ مِّنَ الْاَنْصَارِ وَدُوْنَهُمْ دَارٌ فَيَشُقُّ ذٰلِكَ عَلَيْهِمْ فَقَالُوْا يَا رَسُوْلَ اللهِ تَأْتِي دَارَ فُلَانٍ وَّلَا تَأْتِي دَارَنَا فَقَالَ	रसूल-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चंद अंसार के घरों में तशरीफ़ लाते थे, उनमें से नीचे की ओर एक घर था, उन पर यह बात भारी गुज़री तो उन्होंने अर्ज़ किया: ऐ अल्लाह के रसूल! आप फ़लाँ के घर...

[1] हयातुल हयवान अल-कुबरा, शब्द 'अल-क़ल्ब' के अंतर्गत, मुस्तफ़ा अल-बाबी अल-हलबी, मिस्र, 2/290। [2] ख़लूक़[2] (एक विशेष प्रकार की सुगंध) लगाने वाला।

ضد الشیاطین ولقبح رائحۃ الکلب والملئکۃ تکرہ والرائحۃ الخبیثۃ ولانہا منہی عن اتخاذھا فعوقب متخذھا بحرمانہ دخول الملئکۃ بیتہ 1- کی ضد میں، نیز کتا بدبودار ہوتا ہے اور فرشتے بدبو کو پسند نہیں کرتے۔ یہی وجہ ہے کہ کتا رکھنے سے منع کیا گیا پس اسے رکھنے والے کو یوں سزا دی گئی کہ اس کے گھر میں فرشتوں کا داخلہ نہیں ہوتا۔ (ت)

اور نظیر اس کی وہ حدیث ہے جس کو امام مالک اور بخاری اور مسلم نے حضرت عائشہ سے مرفوعاً اخراج کیا ہے کہ جس گھر میں تصویریں ہوتی ہیں اس میں فرشتے نہیں داخل ہوتے اور نیز وہ حدیث ہے جس کو امام مالک اور احمد اور ترمذی اور ابن حبان نے ابوسعید سے مرفوعاً اخراج کیا ہے کہ جس گھر میں تماثیل یا صورت ہوتی ہیں اس میں فرشتے نہیں آتے اور نیز وہ حدیث جس کو بغوی اور طبرانی اور ابونعیم نے معرفہ میں اور ابن قانع نے سوط بن غزی سے مرفوعاً اخراج کیا ہے کہ ملائکہ اس قافلے کے ساتھ نہیں ہوتے جس میں گھنٹا ہوتا ہے اور نیز وہ حدیث ہے جس کو طبرانی نے حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہما سے مرفوعاً اخراج کیا ہے کہ ملائکہ جنب اور متضمخ بخلوق 2 پر اُن کے غسل کرنے تک حاضر نہیں ہوتے۔

اور نیز وہ حدیث ہے جس کو احمد اور ابوداؤد نے عمار سے مرفوعاً اخراج کیا ہے کہ ملائکہ جنازہ کافر پر خیر سے اور متضمخ بزعفران اور جنب پر نہیں حاضر ہوتے تو جیسا کہ ان حدیثوں سے نجاست تصویر اور جنازہ کافر اور متضمخ بزعفران وغیرہ ذلک پر استدلال کرنا غیر ممکن ہے ایسا ہی احادیث عدم دخول ملائکہ سے نجاستِ کلب پر تمسک کرنا ناجائز اور احادیث امر بغسلِ اناء کے دلالت کرنے میں تو ضعف کا ہونا ظاہر ہے، ہاں نجاستِ لعابِ کلب پر یہ حدیثیں البتہ دال ہیں نہ اُس کے عین کی نجاست پر۔ اور حدیث ابی ہریرہ کا جواب اولاً تو یہ دیتا ہے کہ مولنا الہداد

جونپوری نے حاشیہ ہدایہ میں اور دمیری نے حیوٰۃ الحیوان میں نقل کیا ہے اور کہا ہے یعنی دمیری نے کہ اس حدیث کو امام احمد اور دار قطنی اور حاکم اور بیہقی نے حدیث ابی ہریرہ رضی اللہ تعالی عنہ سے روایت کیا ہے لیکن میں نے جو سنن دار قطنی اور مستدرک حاکم کی طرف مراجعت کی تو میں نے ان دونوں میں اس حدیث کو اس لفظ سے نہیں پایا بلکہ لفظ

عربی	اردو
كَانَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْتِي دَارَ قَوْمٍ مِّنَ الْاَنْصَارِ وَدُوْنَهُمْ دَارٌ فَيَشُقُّ ذٰلِكَ عَلَيْهِمْ فَقَالُوْا يَا رَسُوْلَ اللهِ تَأْتِي دَارَ فُلَانٍ وَّلَا تَأْتِي دَارَنَا فَقَالَ	رسول اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم چند انصار کے گھروں میں تشریف لاتے تھے ان میں سے نیچے کی جانب ایک گھر تھا ان پر یہ بات گراں گزری تو انہوں نے عرض کیا: یا رسول اللہ! آپ فلاں

1 حیوٰۃ الحیوان الکبریٰ، زیر لفظ الکلب، مصطفیٰ البابی حلبی مصر، ۲/۲۹۰ 2 خلوق 2 (ایک خاص قسم کی خوشبو) لگانے والا۔

Fatawa-e-Razvia Volume 4

(Arabic Text): The Messenger of Allah (peace be upon him) [was asked]: Because [he visits] your house [and not ours]. They said, "The Messenger of Allah (peace be upon him) visits their house but does not visit ours." The Messenger of Allah (peace be upon him) said, "That is because there is a dog in your house." They said, "But there is a cat in their (so-and-so's) house." The Messenger of Allah (peace be upon him) replied, "A cat is a beast of prey."[1] (T)

If found with [someone], firstly, its being Mawquf (stopped at a companion) is more correct, and secondly, its chain of narration (Isnad) is not strong.

Al-Hafiz Ibn Hajar (Asqalani), in At-Talkhis, after mentioning the Hadith, stated that Ibn Abi Hatim said in Al-Ilal: I asked Abu Zur'ah about it, and he said Abu Nu'aym did not narrate it as Marfu' (elevated to the Prophet), and this is more correct. And Isa (the narrator) is not strong. Al-Uqayli said no one follows him in this Hadith except someone like him or below him (in status). Ibn Hibban said: Isa has gone beyond the bounds of being used as evidence (i.e., his words cannot be taken as proof). When Al-Hakim mentioned this Hadith, he said: This Hadith is Sahih (authentic); Isa is unique in narrating it from Abu Zur'ah, and he is truthful and has never been criticized—thus he said. However, Abu Hatim, Abu Dawud, and others have weakened it. Ibn al-Jawzi said: It is not authentic.[2] Thus ended the summary. (T)

And thirdly, assuming its elevation (to the Prophet) and the soundness of its chain of narration, using this wording regarding the impurity of dogs... (Arabic text regarding the narrator): He is one of the narrators of this Hadith 12 (M) | He is one of the narrators of this Hadith. (T)

1. Musnad Imam Ahmad bin Hanbal from Abu Hurairah, published by Dar al-Fikr Beirut, 2/327
2. At-Talkhis al-Habir fi Takhrij Ahadith al-Rafi'i al-Kabir, Chapter on Explanation of Impurities, Al-Maktaba al-Athariyya Sangla Hill, 25/1

Page 409 of 761

फ़तावा रिज़विया खंड 4

(अरबी पाठ): अल्लाह के रसूल (उन पर शांति हो) [से पूछा गया]: क्योंकि [वह जाते हैं] तुम्हारे घर [और हमारे यहाँ नहीं]। उन्होंने कहा, "अल्लाह के रसूल (उन पर शांति हो) उनके घर जाते हैं लेकिन हमारे घर नहीं आते।" अल्लाह के रसूल (उन पर शांति हो) ने फरमाया, "ऐसा इसलिए है क्योंकि तुम्हारे घर में कुत्ता है।" उन्होंने कहा, "लेकिन उनके(फलां के) घर में बिल्ली है।" अल्लाह के रसूल (उन पर शांति हो) ने उत्तर दिया, "बिल्ली एक शिकारी जानवर है।"[1] (T)

यदि [किसी] के साथ पाया जाए, तो पहली बात यह है कि इसका मौकूफ़ (साथी पर रुकना) होना अधिक सही है, और दूसरी बात यह है कि इसकी सनद (वर्णन की श्रृंखला) मज़बूत नहीं है।

अल-हाफ़िज़ इब्न हजर (अस्क़लानी) ने अत-तलख़ीस में हदीस का उल्लेख करने के बाद कहा कि इब्न अबी हातिम ने अल-इलाहल में कहा: मैंने अबू ज़ुरआ से इसके बारे में पूछा, और उन्होंने कहा कि अबू नुयैम ने इसे मरफूअ (पैगंबर तक पहुँचा हुआ) के रूप में वर्णित नहीं किया, और यही अधिक सही है। और ईसा (वर्णनकर्ता) मज़बूत नहीं है। अल-उकैली ने कहा कि इस हदीस में उनका अनुसरण केवल उनके जैसा या उनसे नीचे का (स्तर में) ही करेगा। इब्न हिब्बान ने कहा: ईसा प्रमाण के रूप में उपयोग किए जाने की सीमा से बाहर चले गए हैं (यानी, उनकी बात को प्रमाण के रूप में नहीं लिया जा सकता)। जब अल-हाकिम ने इस हदीस का उल्लेख किया, तो उन्होंने कहा: यह हदीस सही (प्रामाणिक) है; ईसा इसे अबू ज़ुरआ से वर्णित करने में अद्वितीय हैं, और वह सच्चे हैं और उनकी कभी आलोचना नहीं की गई—ऐसा उन्होंने कहा। हालाँकि, अबू हातिम, अबू दाऊद और अन्य ने इसे कमज़ोर बताया है। इब्न अल-जौज़ी ने कहा: यह सही नहीं है।[2] सारांश यहीं समाप्त हुआ। (T)

और तीसरा, इसकी रफ़अ (पैगंबर तक पहुँच) और इसकी सनद की प्रमाणिकता को मान लेने पर भी, कुत्ते की अपवित्रता के बारे में इस शब्द का उपयोग... (वर्णनकर्ता के संबंध में अरबी पाठ): यह इस हदीस के वर्णनकर्ताओं में से एक हैं 12 (M) | यह इस हदीस के वर्णनकर्ताओं में से एक हैं। (T)

1. मसनद इमाम अहमद बिन हंबल, अबू हुरैरा से, दार अल-फ़िक्र बेरूत द्वारा प्रकाशित, 2/327
2. अत-तलख़ीस अल-हबीर फ़ी तख़रीज अहादीस अल-राफ़ी अल-कबीर, अशुद्धियों के विवरण का अध्याय, अल-मकतबा अल-असरिया सांगला हिल, 25/1

पेज 409 का 761

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم لان فی دارکم کلبا قالوا فان فی دارہم سنورا فقال النبی السنور سبع۔ 1 | کے گھر تشریف لاتے ہیں اور ہمارے گھر تشریف نہیں لاتے ۔ رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا اس لئے کہ تمہارے گھر کتا ہے ۔ انہوں نے عرض کیا تو ان (فلاں کے) گھر بلی ہے۔ رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: بلی ایک درندہ ہے۔ (ت)

کے ساتھ پایا تو اول تو اصح اس کا وقف ہے اور دوسرے اسناد اس کی قوی نہیں۔

قال الحافظ ابن حجر في التلخيص بعد ذكر الحديث قال ابن ابي حاتم في العلل سألت ابازرعة عنه فقال لم يرفعه ابونعيم وهو اصح وعيسى ليس بالقوى قال العقيلي لا يتابعه على هذا الحديث الامن هو مثله اودونه وقال ابن حبان خرج عيسى عن حدالاحتجاج ولما ذكره الحاكم قال هذا الحديث صحيح تفرد به عيسى عن ابي زرعة وهو صدوق لم يجرح قط هكذا قال وقد ضعفه ابو حاتم وابوداود وغيرهما وقال ابن الجوزي لا يصح انتهى ملخصاً۔ | حافظ ابن حجر (عسقلانی) نے تلخیص میں یہ حدیث ذکر کرنے کے بعد فرمایا ابن ابی حاتم نے علل میں فرمایا کہ میں نے اس حدیث کے بارے میں ابوزرعہ سے پوچھا تو انہوں نے فرمایا کہ ابو نعیم نے اسے مرفوع ذکر نہیں کیا اور یہی زیادہ صحیح ہے۔ اور عیسی (راوی) قوی نہیں۔ عقیلی نے فرمایا اس حدیث میں ان کی متابعت وہی کرے گا جو اس کی مثل یا اس سے کم (درجہ میں) ہو۔ ابن حبان نے کہا: عیسی حجت کی حد سے نکل گیا (یعنی اس کی بات کو دلیل نہیں بنا سکتے) اور حاکم نے اس حدیث کا ذکر کرتے ہوئے کہا یہ حدیث صحیح ہے اس کو ابوزرعہ سے روایت کرنے میں عیسیٰ منفرد ہیں اور وہ سچے ہیں ان پر کبھی جرح نہیں ہوئی ، انہوں نے اسی طرح کہا، (لیکن) ابوحاتم اور ابوداؤد کے علاوہ دوسروں نے اسے ضعیف قرار دیا، اور ابن جوزی نے کہا یہ صحیح نہیں انتی ملخصاً (ت) 2

اور تیسرے بر تقدیر اس کے رفع اور اس کے اسناد کی صحت کے اس کو اس لفظ سے نجاست کلب

عنہ: ھذا احد رواۃ ھذا الحدیث ۱۲ (م) | اس حدیث کے راویوں میں سے ایک یہ ہیں۔ (ت)

1 مسند امام احمد بن حنبل عن ابی ہریرۃ ، مطبوعہ دارالفکر بیروت، ۲ /۳۲۷ 2 التلخیص الحبیر في تخریج احادیث الرافعي الکبیر باب بیان النجاسات المکتبۃ الاثریہ سانگلہ ہل ۲۵/۱

Fatawa Razawiyyah, Volume 4

...does not signify at all. However, it does signify that a cat is not like a dog in being a devil, as some commentators have written. Secondly, even if that word were present and its status and chain of transmission were proven correct, it would only imply relative impurity (najasa idafiyyah), i.e., that a dog is impure compared to a cat, not inherently impure, as is not hidden from anyone with a sound nature and straight mind. (As it is not hidden from a person whose nature is sound and mind is correct. - Translator) And that is accepted; undoubtedly, compared to a cat, a dog is impure because its flesh, blood, saliva, leftover water (sur), and sweat are impure according to us, unlike a cat. The discussion is about its inherent impurity (najasa al-ayn), and the hadith does not signify that. So reflect. Among the sayings of the jurists, regarding those two sayings mentioned in 'Al-Mabsut' and 'Sharh al-Niqayah', the answer is: firstly, in those two sayings, the word 'Sahih' (correct) is used regarding the impurity of the dog, while in the sayings supporting my arguments regarding its inherent purity, the terms 'Aqrab ila al-Sawab' (closer to correctness) and 'Asah' (more correct) are used. And it has been clearly stated that the term 'Asah' is more emphatic than 'Sahih', so the more emphatic one should be followed, as clarified in 'Radd al-Muhtar'. 1 (The honorable jurists have clarified that the word "Asah" is more emphatic than "Sahih", so the one with more emphasis should be followed as clarified in Radd al-Muhtar. - Translator)

Secondly: Even if we accept the equality of the term of authentication (tas-hih), the fatwa is on it being inherently pure. Therefore, what the fatwa is based upon should be taken, not the other. (Therefore, that which has a fatwa on it should be chosen, not the other. - Translator)

Thirdly: Even if we accept a difference in fatwa, according to the rule: "When authentication and fatwa differ, acting upon what is in the primary texts (Mutun) is preferable," 2 (When there is a difference between authentication and fatwa, acting on what is in the primary texts is preferable. - Translator) action should be taken according to what is in the primary texts alone.

Arabic Text	**Urdu Explanation**
And by 'Mutun' (primary texts), not all texts are meant, but rather the concise works	By 'Mutun' (primary texts), not all texts are meant, but rather those concise books

Arabic Text	Urdu Explanation
composed by the master Imams and great jurists known	which the expert Imams and great jurists, who are famous for their
for their knowledge, piety, jurisprudence, and reliability in narration, such as Abu Ja'far	knowledge, piety, jurisprudence and reliability in narration, have authored, like Abu Ja'far
al-Tahawi, al-Karkhi, al-Hakim, and al-Shahid.	Tahawi, Karkhi, Hakim, Shahid, Quduri and those people who belong to this class.

1. Al-Durr al-Mukhtar with Marginalia of Radd al-Muhtar, topic: when authentication conflicts, printed by Mujtabai Delhi, 1/50.
2. Radd al-Muhtar, topic: when authentication conflicts, printed by Mujtabai Delhi, 1/49.

फ़तावा रज़विया, खंड 4

...पर हरगिज़ दलालत (संकेत) नहीं करता। हाँ, बिल्ली के कुत्ते की तरह शैतान न होने पर अलबत्ता यह दलालत करता है जैसा कि कुछ टिप्पणीकारों ने लिखा है। दूसरे, अगर उस शब्द के मौजूद होने और उसके हटाए जाने और उसके सनद (प्रमाण) के सही होने को मान भी लिया जाए, तब भी इससे केवल सापेक्ष अशुद्धि (नजासत-ए-इज़ाफ़िया) सिद्ध होगी, यानी कुत्ते का बिल्ली की तुलना में अशुद्ध होना, न कि वास्तविक अशुद्धि, जैसा कि उस व्यक्ति से छिपा नहीं है जिसका स्वभाव स्वस्थ और मस्तिष्क सही है। (जैसा कि उस व्यक्ति पर छिपा नहीं है जिसकी प्रकृति स्वस्थ और मस्तिष्क ठीक है। - अनुवादक) और यह बात स्वीकार्य है; निस्संदेह बिल्ली की तुलना में कुत्ता अशुद्ध है क्योंकि हमारे निकट उसका मांस, रक्त, लार, जूठा पानी और पसीना अशुद्ध है, बिल्ली के विपरीत। और चर्चा उसकी तात्विक अशुद्धि (नजासत-ए-ऐन) के बारे में है, तो हदीस उस पर संकेत नहीं करती। इस पर विचार करें। और फ़क़ीहों (धर्मशास्त्रियों) के कथनों में से, 'अल-मबसूत' और 'शरह अल-निकाया' में मौजूद उन दो कथनों का उत्तर यह है कि: पहला, उन दोनों कथनों में कुत्ते की अशुद्धि के संबंध में 'सही' शब्द का प्रयोग किया गया है, जबकि मेरे तर्कों वाले कथनों में उसकी शुद्धता के संबंध में 'अक़रब इल-ल-सवाब' (सच्चाई के अधिक निकट) और 'अस़ह' (अधिक सही) शब्द कहे गए हैं। और यह स्पष्ट किया गया है कि 'अस़ह' शब्द 'सही' से अधिक पुष्ट (emphasized) है, इसलिए जो अधिक पुष्ट हो उसका अनुसरण किया जाना चाहिए जैसा कि 'रद अल-मुहतार' में स्पष्ट किया गया है। 1 (फ़क़ीहा-ए-किराम ने स्पष्ट किया है कि शब्द "अस़ह" शब्द "सही" से अधिक पुष्ट है, इसलिए जिसमें अधिक पुष्टता है उसका अनुसरण किया जाए जैसा कि रद अल-मुहतार में स्पष्ट किया गया है। - अनुवादक)

दूसरा: अगर हम प्रमाणीकरण (तस़्हीह) शब्द की समानता को भी मान लें, तो फ़तवा तो उसकी शुद्धता (ताहिर अल-ऐन होने) पर है। तो जिस पर फ़तवा है उसे ही लिया जाना चाहिए, किसी अन्य को नहीं। (अतः उसे चुना जाए जिस पर फ़तवा है, न कि उसके अन्य को। - अनुवादक)

तीसरा: अगर हम फ़तवे के अंतर को भी स्वीकार कर लें, तो भी इस नियम के अनुसार: 'जब प्रमाणीकरण और फ़तवे में अंतर हो, तो मूल ग्रंथों (मुतून) में जो है उस पर कार्य करना बेहतर है', 2 (जब तस़्हीह और फ़तवे में अंतर हो तो जो कुछ मुतून में है उस पर कार्य करना बेहतर है। - अनुवादक) मूल ग्रंथों में जो है उसी पर कार्य किया जाएगा।

अरबी पाठ	उर्दू व्याख्या
और मुतून से तात्पर्य सभी ग्रंथ नहीं हैं, बल्कि वे संक्षिप्त पुस्तकें हैं	मुतून से तात्पर्य सभी ग्रंथ नहीं हैं, बल्कि वे संक्षिप्त पुस्तकें हैं जिन्हें
जिन्हें उन महान इमामों और बड़े फ़क़ीहों ने संकलित किया है जो	उन माहिर इमामों और बड़े फ़क़ीहों, जो ज्ञान, ज़ुहद, फ़िक़्ह और
ज्ञान, ज़ुहद, फ़िक़्ह और रिवायत में अपनी विश्वसनीयता के साथ	रिवायत में अपनी सिक़ाहत के साथ प्रसिद्ध हैं, ने संकलित किया है, जैसे
प्रसिद्ध हैं, जैसे अबू जाफ़र तहावी, करखी, हाकिम और शहीद।	अबू जाफ़र तहावी, करखी, हाकिम, शहीद, क़ुदूरी और वे लोग जो इस श्रेणी के हैं।

1. अल-दुर अल-मुख़्तार, रद अल-मुहतार के हाशिया (marginalia) पर, विषय: जब तस्हीह में विरोध हो, मुज्तबाई दिल्ली द्वारा मुद्रित, 1/50.
2. रद अल-मुहतार, विषय: जब तस्हीह में विरोध हो, मुज्तबाई दिल्ली द्वारा मुद्रित, 1/49.

فتاوی رضویہ جلد چہارم

پر ہر گز دلالت نہیں۔ ہاں بلی کے مثل کتے کے شیطان نہ ہونے پر البتہ اس کو دلالت ہے جیسا کہ بعض شارحین نے لکھا ہے اور ثانیاً یہ کہ بر تقدیر اس کے اُس لفظ کے ساتھ موجود ہونے اور اس کے رفع اور اس کے اسناد کی صحت کے نہیں ثابت ہوگی اس سے مگر نجاست اضافیہ یعنی کتے کا بہ نسبت بلی کے نجس ہونا نہ حقیقہ کما لا یخفی علی من لہ طبع سلیم و ذہن مستقیم (جیسا کہ اس شخص پر مخفی نہیں جس کی فطرت سلیم اور ذہن ٹھیک ہے۔ت) اور وہ مسلم ہے بیشک بہ نسبت بلی کے کتا نجس ہے کیونکہ اس کا گوشت اور خون اور لعاب اور سور اور عرق ہمارے نزدیک نجس ہے بخلاف بلی کے، اور بحث اس کی نجاستِ عین سے ہے تو حدیث کو اُس پر دلالت نہیں فتدبر، اور اقوال فقہا میں سے اُن دونوں قولوں کا تو جو مبسوط اور شرح نقایہ میں ہے جواب یہ دیتا ہے کہ اول تو ان دونوں قولوں میں کلب کی نجاست کی نسبت لفظ صحیح بولا ہے اور اُن اقوال میں جو میرے دلائل سے ہیں اس کے طاہر العین ہونے کی نسبت لفظ اقرب الی الصواب اور لفظ اصح کہا ہے وقد صرحوا بأن لفظ الاصح اکد من الصحیح فیتبع الأکد کما صرح بہ فی ردالمحتار 1 (فقہاء کرام نے تصریح کی ہے کہ لفظ "اصح" لفظ "صحیح" سے زیادہ مؤکد ہے پس جس میں زیادہ تاکید ہے اس کی اتباع کی جائے جیسا کہ ردالمحتار میں اس کی تصریح کی گئی ہے۔ ت)

اور دوم: اگر ہم مساوات لفظ تصحیح کو بھی مان لیں تو فتوی تو اس کے طاہر العین ہونے پر ہے فیوخذ بما علیہ الفتوی دون غیرہ (پس اسے اختیار کیا جائے جس پر فتوی ہے نہ کہ اس کے غیر کو۔ ت)

اور سوم: اگر ہم اختلافِ فتوی کو بھی تسلیم کریں تو تب بھی بموجب قاعدہ اذا اختلف التصحیح والفتوی فالعمل بمافی المتون اولی 2 (جب تصحیح اور فتوی میں اختلاف ہو تو جو کچھ متون میں ہے اس پر عمل کرنا اولی ہے۔ ت) کے عمل مافی المتون ہی پر کیا جائے گا۔

والمراد بالمتون لیس جمیع المتون بل المختصرات	**متون سے مراد تمام متون نہیں بلکہ وہ مختصر کتب ہیں جن کو**
التی الفها حذاق الائمة وکبار الفقهاء المعروفین	ماہر ائمہ اور فقہاء کبیر جو علم، زہد، فقہ اور روایت میں ثقاہت
بالعلم والزهد والفقه والثقة فی الروایة کابی جعفر	کے ساتھ مشہور ہیں، نے تالیف کیا جیسے ابو جعفر طحاوی،
الطحاوی والکرخی والحاکم والشهید	کرخی، حاکم، شہید، قدوری اور وہ لوگ جو اس طبقے

1 الدر المختار علی حاشیہ ردالمحتار، مطلب اذا تعارض التصحیح، مطبوعہ مجتبائی دہلی، ۱/۵۰ 2 ردالمحتار مطلب اذا تعارض التصحیح مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/۴۹

(Arabic Text): Al-Quduri and those in this class... the later scholars relied heavily on Al-Wiqayah by Burhan al-Shari'ah, Kanz al-Daqaiq by Abu al-Barakat, Al-Mukhtar by Abu al-Fadl, Majma' al-Bahrain by Muzaffar al-Din, and Mukhtasar al-Quduri by Ahmad ibn Muhammad. This is because they knew the majesty of their authors and their commitment to mentioning reliable issues. Among them, the most famous for mention and the most relied upon for opinions are Al-Wiqayah, Kanz, and Mukhtasar al-Quduri, and they are what is meant by "The Three Texts" (al-Mutun al-Thalatha).

(Urdu Translation): Included among them are Burhan al-Shari'ah's Al-Wiqayah, Abu al-Barakat's Kanz al-Daqaiq, Abu al-Fadl's Al-Mukhtar, Muzaffar al-Din's Majma' al-Bahrain, and Ahmad ibn Muhammad's Mukhtasar al-Quduri, upon which there is great reliance by later scholars. This is because they were aware of the academic greatness of the authors of these books as well as their commitment to mentioning reliable issues. Among these, Al-Wiqayah, Kanz al-Daqaiq, and Mukhtasar al-Quduri are more famous in terms of mention and more relied upon in terms of opinions. These are the same "Three Texts" meant by the jurists. (T)

So in all of them, especially in these three texts, there is nothing except that they are inherently pure, praise be to Allah. And what is stated in the commentary of Al-Wiqayah etc., that 'dog' in this saying refers to a dead dog. Hasan Chalapi said in Dhakhirat al-Uqba:

[Arabic Box]: His saying: And if a dog blocks [the flow], meaning a dead one. 1 [Urdu Box]: His saying: And when a dog blocks (the river's width), i.e., a dead (dog). (T)

And similarly, it is in Sa'aya and Ra'aya, and in the Urdu translation of Sharh al-Wiqayah it states: if a dead dog has fallen into a flowing river, then whose opinion is correct between the two? And assuming Zaid's opinion is correct, are his reasoning and answer also correct or not? And also regarding the validity of the inherent purity of the dog, which is in Radd al-Muhtar quoted from Al-Bada'i:

[Arabic Box]: Our teachers said: Whoever prays while having a puppy in his sleeve, his prayer is valid. Faqih Abu Ja'far al-Hindwani conditioned it upon its mouth being tied. 2 [Urdu Box]: Our sheikhs said: Whoever prayed in a state that there was a puppy in his sleeve, his prayer is permissible. Faqih Abu Ja'far Hindwani has placed the condition that its mouth should be tied. (T)

And also what is quoted in it from Al-Muhit:

1 Dhakhirat al-Uqba fi Sharh Sadr al-Shari'ah, Kitab al-Taharah, printed in Naval Kishore, Lucknow, 1/34. 2 Radd al-Muhtar, Bab al-Miyah, printed in Mujtabai, Delhi, 1/139.

(अरबी पाठ): अल-कुदूरी और इस वर्ग के लोग... बाद के विद्वानों ने बुरहान अल-शरीया द्वारा अल-विकायाह, अबू अल-बरकात द्वारा कंज़ अल-दक़ाएक़, अबू अल-फ़ज़ल द्वारा अल-मुख़्तार, मुज़फ़्फ़र अल-दीन द्वारा मजमा अल-बहरीन और अहमद बिन मुहम्मद द्वारा मुख़्तसर अल-कुदूरी पर बहुत भरोसा किया। ऐसा इसलिए था क्योंकि वे उनके लेखकों की महिमा और विश्वसनीय मुद्दों का उल्लेख करने के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को जानते थे। उल्लेख के मामले में सबसे प्रसिद्ध और राय के मामले में सबसे अधिक विश्वसनीय अल-विकायाह, कंज़ और मुख़्तसर अल-कुदूरी हैं, और "तीन ग्रंथ" (अल-मुतून अल-थलाथा) से यही तात्पर्य है।

(उर्दू अनुवाद): इनमें बुरहान अल-शरीया की अल-विकायाह, अबू अल-बरकात की कंज़ अल-दक़ाएक़, अबू अल-फ़ज़ल की अल-मुख़्तार, मुज़फ़्फ़र अल-दीन की मजमा अल-बहरीन और अहमद बिन मुहम्मद की मुख़्तसर अल-कुदूरी शामिल हैं, जिन पर बाद के विद्वानों का बहुत अधिक भरोसा है। यह इसलिए है क्योंकि वे इन पुस्तकों के लेखकों की अकादमिक महानता और विश्वसनीय मुद्दों का उल्लेख करने की उनकी प्रतिबद्धता को जानते थे। इनमें उल्लेख के मामले में अधिक प्रसिद्ध और राय के मामले में अधिक विश्वसनीय अल-विकायाह, कंज़ अल-दक़ाएक़ और मुख़्तसर अल-कुदूरी हैं। न्यायविदों द्वारा "तीन ग्रंथ" से यही तात्पर्य है। (T)

तो इन सभी में, विशेष रूप से इन तीन ग्रंथों में, इसके अलावा और कुछ नहीं है कि वे स्वाभाविक रूप से शुद्ध हैं, अल्लाह का शुक्र है। और विकायाह आदि की व्याख्या में जो कुछ भी है, वह यह है कि इस कथन में "कुत्ता" से तात्पर्य एक मृत कुत्ते से है। हसन चलपी ने 'ज़ख़ीरत अल-उक़्बा' में कहा है:

[अरबी बॉक्स]: उनका कहना है: और यदि कुत्ता (प्रवाह को) रोकता है, अर्थात मृत। 1 [उर्दू बॉक्स]: उनका कहना है: और जब कुत्ता (नदी की चौड़ाई) को अवरुद्ध करता है, अर्थात मृत (कुत्ता)। (T)

और इसी तरह साया और राया में भी है, और शरह अल-विकायाह के उर्दू अनुवाद में है: यदि कोई मृत कुत्ता बहती नदी में गिरा हो, तो दोनों में से किसकी राय सही है? और ज़ैद की राय को सही मानते हुए, क्या उनके तर्क और उत्तर भी सही हैं या नहीं? और कुत्ते की स्वाभाविक पवित्रता की वैधता के बारे में भी, जो अल-बदाए से उद्धृत रद अल-मुह्तार में है:

[अरबी बॉक्स]: हमारे शिक्षकों ने कहा: जो कोई अपनी आस्तीन में पिल्ला लेकर नमाज़ पढ़ता है, उसकी नमाज़ जायज़ है। फकीह अबू जाफ़र अल-हिंदवानी ने इसके मुंह के बंधे होने की शर्त लगाई। 2 [उर्दू बॉक्स]: हमारे शेखों ने कहा: जिसने इस स्थिति में नमाज़ पढ़ी कि उसकी आस्तीन में कुत्ते का बच्चा था, उसकी नमाज़ जायज़ है। फकीह अबू जाफ़र हिंदवानी ने यह शर्त रखी है कि उसका मुँह बंधा होना चाहिए। (T)

और साथ ही इसमें अल-मुहीत से जो उद्धृत है:

1 ज़ख़ीरत अल-उक़्बा फ़ी शरह सदर अल-शरीया, किताब अल-तहारत, नवल किशोर, लखनऊ में मुद्रित, 1/34। 2 रद अल-मुह्तार, बाब अल-मियाह, मुजतबाई, दिल्ली में मुद्रित, 1/139।

पृष्ठ 411 / 761

والقدوری ومن فی ھذہ الطبقۃ وقد کثر اعتماد المتأخرین علی الوقایۃ لبرھان الشریعۃ وکنز الدقائق لابی البرکات والمختار لابی الفضل ومجمع البحرین لمظفر الدین ومختصر القدوری لاحمد بن محمد وذلك لما علموا من جلالۃ مؤلفیھا والتزامھم ایراد مسائل معتمد علیھا واشھرھا ذکرا واقولھا اعتمادا الوقایۃ والکنز ومختصر القدوری وھی المراد بقولھم المتون الثلاثۃ۔

میں شامل ہیں متاخرین کا برہان الشریعۃ کے وقایہ، ابوالبرکات کی کنز الدقائق اور ابوالفضل کی المختار مظفر الدین کی مجمع البحرین اور احمد بن محمد کی مختصر القدوری پر بہت زیادہ اعتماد ہے، اور یہ اس لئے کہ انہیں ان کتب کے مؤلفین کی جلالت علمی نیز قابل اعتماد مسائل ذکر کرنے کے التزام کا علم تھا۔ ان میں سے ذکر کے اعتبار سے زیادہ مشہور اور قول کے اعتبار سے زیادہ معتمد علیہ وقایہ، کنز الدقائق اور مختصر القدوری ہے اور فقہاء کرام کے قول متون سے یہی "تین متون" مراد ہیں۔ (ت)

توان سب میں علی الخصوص ان متون ثلثہ میں بجز اس کے طاہر العین ہونے کے اور کچھ نہیں ہے وللہ الحمد، اور اس کا جو کہ شرح وقایہ وغیرہ میں ہے کہ اس قول میں کلب سے مراد کلب میت ہے۔ حسن چلپی نے ذخیرۃ العقبی میں کہا ہے:

قولہ واذا سد کلب ای میت [1] | قولہ اور جب کتا (نہر کی چوڑائی) بند کرے، یعنی مردہ (کتا)۔ (ت)

اور ایسا ہی سعایہ اور رعایہ میں بھی ہے اور شرح وقایہ کے اردو ترجمہ میں ہے کہ اگر مرا ہوا کتا رواں ندی میں پڑا ہو تو دونوں میں صحیح قول کس کا ہے اور برتقدیر زید کے قول کے صحیح

ہونے کے اُس کے استدلال اور جواب بھی صحیح ہیں یا نہیں اور نیز اس میں کہ برتقدیر کلب کی طہارت عین کی صحت کے یہ جو ردالمحتار میں نقلاً عن البدائع ہے

قال مشایخنا من صلی وفی کمہ جر وتجوز صلاتہ وقیدہ الفقیہ ابوجعفر الہندوانی بکونہ مشدود الفم [2] | ہمارے مشائخ نے فرمایا جس نے اس حال میں نماز پڑھی کہ اس کی آستین میں کتے کا بچہ تھا تو اس کی نماز جائز ہے فقیہ ابو جعفر ہندوانی نے قید لگائی ہے کہ اس کا منہ باندھا ہوا ہو۔ (ت)

اور نیز یہ جو اس میں نقلاً عن المحیط ہے:

[1] ذخیرۃ العقبی فی شرح صدر الشریعۃ کتاب الطہارۃ مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ۱/ ۳۴ [2] رد المحتار باب المیاہ مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۱۳۹

(Arabic) If one prays while carrying a puppy or something whose leftover water makes ablution invalid, it was said that it is not permissible. The more correct view is that if its mouth is open, it is not permissible because its saliva will flow into his sleeve and defile it if it is more than the amount of a dirham. If its mouth is tied so that its saliva does not reach the clothes, then it is permissible because the exterior of every animal is pure and it does not become impure except by death, and the impurity of its interior is in its source, so its ruling does not manifest, just like the impurity inside the person praying. (T) | (Urdu) Someone prayed and he had a puppy with him or something whose leftover water does not make ablution permissible, so it was said that (the prayer) is not permissible. Surely, the more correct statement is that if its mouth is open, then it is not permissible because its saliva will flow onto the sleeve and make it impure if it is more than a dirham, and if its mouth is tied in such a way that its saliva does not reach the prayer's clothes, then the prayer is permissible because the exterior of every animal is pure and it does not become impure without dying; internal impurity is in its original place, therefore, like the impurity in the belly of the one praying, its ruling will also not be apparent. (T)[1]

And also what is quoted in it from Al-Hilyah:

(Arabic) And what is more similar is the absolute permissibility when there is safety from the flow of the amount that prevents (purity) before finishing the prayer. | (Urdu) The more appropriate statement is that it is absolutely permissible as long as one is safe from the flow of such an amount (of saliva) before finishing the prayer which hinders purity. (T)[2]

Because of this, based on the purity of the dog's essence, following the evidence that what is built on the correct is correct (that which is based on correctness is correct. T), will it be correct or not? Explain and you will be rewarded.

The Answer In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful.

(Arabic) All praise is due to Allah, who gave everything its creation and then guided it. So the origin of everything was pure since it originated from the Most Holy and Pure. And may Allah Almighty's peace and blessings be upon the good and pure master who distinguished... | (Urdu) All praise is for Allah Almighty who gave everything its suitable form and then gave it intuition, so the origin of everything is pure because it manifested from the pure and holy Being. On the good and pure master...

[1] Radd al-Muhtar, Chapter of Waters, Mujtabai Press, Delhi, 1/9 [2] Radd al-Muhtar, Chapter of Waters, Mujtabai Press, Delhi 1/9

(अरबी) यदि कोई प्रार्थना करता है और उसके पास कुत्ते का पिल्ला या ऐसी कोई चीज़ हो जिसका बचा हुआ पानी वज़ू को अमान्य कर देता है, तो कहा गया कि यह स्वीकार्य नहीं है। अधिक सही विचार यह है कि यदि उसका मुँह खुला हो, तो यह स्वीकार्य नहीं है क्योंकि उसका लार आस्तीन में बह जाएगा और यदि यह एक दिरहम से अधिक है तो इसे अशुद्ध कर देगा। यदि उसका मुँह इस तरह बांधा गया हो कि उसका लार नमाज़ी के कपड़ों तक न पहुँचे, तो प्रार्थना स्वीकार्य है क्योंकि प्रत्येक जानवर का बाहरी हिस्सा शुद्ध होता है और वह मृत्यु के बिना अशुद्ध नहीं होता है, और उसके आंतरिक भाग की अशुद्धता उसके स्रोत में होती है, इसलिए उसका नियम प्रकट नहीं होता है, जैसे प्रार्थना करने वाले व्यक्ति के अंदर की अशुद्धता। (त) | (उर्दू) किसी ने नमाज़ पढ़ी और उसके पास कुत्ते का बच्चा या वह चीज़ थी जिसके जूठे से वज़ू जायज़ नहीं, तो कहा गया कि (नमाज़) जायज़ नहीं, यकीनन ज़्यादा सही बात यह है कि अगर उसका मुँह खुला हुआ हो तो जायज़ नहीं क्योंकि उसका लुआब आस्तीन में बह कर उसे नापाक कर देगा जबकि वह एक दिरहम से ज़्यादा हो, और अगर उसका मुँह इस तरह बांधा हुआ हो कि उसका लुआब नमाज़ी के कपड़े तक न पहुँचे तो नमाज़ जायज़ है क्योंकि हर हैवान का ज़ाहिर पाक है और वह मरने के बग़ैर नापाक नहीं होता, अंदरूनी नजासत अपने असल मकाम पर है लिहाज़ा नमाज़ी के पेट की नजासत की तरह उसका हुक्म भी ज़ाहिर न होगा। (त)[1]

और यह भी जो इसमें अल-हिल्या से उद्धृत है:

(अरबी) और जो अधिक समान है वह नमाज़ समाप्त होने से पहले उस मात्रा के बहने से सुरक्षा होने पर पूर्ण अनुमति है जो (शुद्धि को) रोकता है। | (उर्दू) ज़्यादा मुनासिब बात यह है कि मुतलक़न जायज़ है जबकि नमाज़ से फ़ारिग़ होने से पहले इस कदर (लुआब) जारी होने से बेख़ौफ़ हो जो माने-तहारत है। (त)[2]

इस कारण कि यह कुत्ते की ज़ात की पाकी पर आधारित है, इस दलील के आधार पर कि जो सही पर आधारित है वह सही है (जिसकी बुनियाद सही पर हो वह सही होता है। त), क्या यह सही होगा या नहीं? बयान करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयालु और कृपाण है।

(अरबी) सभी प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जिसने हर चीज़ को उसका सृजन दिया और फिर उसे निर्देशित किया। तो हर चीज़ का मूल शुद्ध था क्योंकि यह परम पवित्र और शुद्ध से उत्पन्न हुआ था। और अल्लाह तआला की शांति और आशीर्वाद अच्छे और शुद्ध स्वामी पर हो जिन्होंने भेद किया... | (उर्दू) तमाम तारीफें अल्लाह तआला के लिए हैं जिसने हर चीज़ को उसके लायक सूरत दी फिर उसे बद़ाहत दी, पस हर चीज़ की असल पाक है क्योंकि वह पाकीज़ा ताहिर ज़ात की तरफ़ से ज़ाहिर हुई। तय्यब व ताहिर सरदार पर...

---

[1] रद-अल-मुह्तार, बाब-अल-मियाँ, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/9 [2] रद-अल-मुह्तार, बाब-अल-मियाँ, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली 1/9

(عربی) صلی ومعہ جرو کلب اومالایجوز الوضوء بسورہ قیل لم یجز والاصح انکان فمہ مفتوحاً لم یجز لان لعابہ یسیل فی کمہ فینجس لواکثر من قدر الدرھم ولوکان مشدودا بحیث لایصل لعابہ الی ثوبہ جازلان ظاھر کل حیوان طاھر ولایتنجس الابالموت ونجاسۃ باطنہ فی معدنھا فلا یظھر حکمھا کنجاسۃ باطن المصلی | (اردو) کسی نے نماز پڑھی اور اس کے پاس کتے کا بچہ یا وہ چیز تھی جس کے جھوٹے سے وضو جائز نہیں ، تو کہا گیا (نماز) جائز نہیں، یقینا زیادہ صحیح بات یہ ہے کہ اگر اس کا منہ کھلا ہوا ہو تو جائز نہیں کیونکہ اس کا لعاب آستین میں بہہ کر اسے ناپاک کردے گا جبکہ وہ ایک درہم سے زیادہ ہو، اور اگر اس کا منہ اس طرح باندھا ہوا ہو کہ اس کا لعاب نمازی کے کپڑے تک نہ پہنچے تو نماز جائز ہے کیونکہ ہر حیوان کا ظاہر پاک ہے اور وہ مرنے کے بغیر ناپاک نہیں ہوتا، اندرونی نجاست اپنے اصل مقام پر ہے لہذا نمازی کے پیٹ کی نجاست کی طرح اس کا حکم بھی ظاہر نہ ہوگا۔ (ت)[1]

اور نیز یہ جو اس میں نقلاً عن الحلیۃ ہے:

(عربی) والاشبہ اطلاق الجواز عند امن سیلان القدر المانع قبل الفراغ من الصلاۃ۔ | (اردو) زیادہ مناسب بات یہ ہے کہ مطلقاً جائز ہے جبکہ نماز سے فارغ ہونے سے پہلے اس قدر (لعاب) جاری ہونے سے بے خوف ہو جو مانع طہارت ہے۔ (ت)[2]

بوجہ اس کے اس پر یعنی کلب کی طہارت عین پر مبنی ہونے کے بدلیل المبنی علی الصحیح صحیح (جس کی بنیاد صحیح پر ہو وہ صحیح ہوتا ہے۔ت) کے صحیح ہوگا یا نہیں بینوا توجروا۔

الجواب بسم اللہ الرحمن الرحیم

(عربی) الحمد للہ الذی اعطی کل شیئ خلقہ ثم ہدی فکان اصل کل شیئ طاہرا اذمن القدوس الطاہر بدا وصلی اللہ تعالی علی السید الطیب الطاہر الذی میز | (اردو) تمام تعریفیں اللہ تعالیٰ کیلئے ہیں جس نے ہر چیز کو اس کے لائق صورت دی پھر اسے بداہت دی، پس ہر چیز کی اصل پاک ہے کیونکہ وہ پاکیزہ طاہر ذات کی طرف سے ظاہر ہوئی طیب و طاہر سردار پر

---

[1] ردالمحتار باب المیاہ مطبوعہ مجتبائی دہلی، ۹/۱ [2] ردالمحتار باب المیاہ مطبوعہ مجتبائی دہلی ۹/۱

Fatawa Ridawiyya, Volume 4

[Box 1] (Arabic): Al-khabeeth minal tayyib binur il-huda wa 'ala alihi al-at'aib wa sahbihi al-tahir wa baraka wa sallama da'iman abadan. (Urdu): The one who separated the impure from the pure with the light of guidance. May Allah's mercy, blessings, and peace descend forever and ever upon your pure descendants and holy companions. Ahmad Raza Muhammadi, Sunni, Hanafi, Qadri, Barelvi—the humble servant (lit. dog) at the Prophetic door, may Allah forgive him and fulfill his hopes (Ameen)—stated: Zaid's statement is more correct, more weightier, more deserving of acceptance, and more in line with both traditional and rational evidence. (T)

And most of its arguments and answers are correct, sound, and acceptable. In reality, in the school of our Great Imam (may Allah be pleased with him), this animal is like other predators: its saliva is impure but its essence is pure. This is the correct, clear, reliable school of thought, supported by proofs from the Quran and Hadith, and chosen and adopted for fatwa by the majority of ancient and modern scholars. Since Zaid's discourse contains sufficient detail and the issue itself is frequently discussed and well-known, therefore, to fulfill the right of answering and revealing the truth, I intend to add some further beneficial points to all the preceding discussions of Hadith, jurisprudence, weighing of opinions, and critique.

[Box 2] (Arabic): As for the Hadith, we will mention what our companions mentioned, then we will present the investigation of the narration, then we will indicate the refinement of rational analysis. (Urdu): Regarding the Hadith, we will mention exactly what our companions mentioned, then we will bring the investigation of the report, and after that, we will explain the correctness of the analytical reasoning. (T)

It is narrated in numerous reports that compensation (damages) is mandatory for the killer of a owned dog, and a hunting dog can be set as a woman's dower (mahr).

[Box 3] (Arabic): Allama Ali al-Qari, may the Creator's mercy be upon him, said in al-Mirqat, Book of Sales, Chapter of Earnings, under the Hadith of Abu Mas'ud al-Ansari (may Allah be pleased with him), that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) prohibited the price of a dog. Its text is: "It is interpreted by us as being in his time (peace and blessings of Allah be upon him) when he ordered its killing, and benefit from it was forbidden then. Then permission was given for benefiting from it until it is narrated that he gave a judgment regarding a hunting dog killed by a man..." (Urdu): Allama Mulla Ali Qari (may Allah's mercy be upon him) stated in Mirqat's Book of Sales, Chapter on Earnings, under the Hadith of Hazrat Abu

Mas'ud Ansari (may Allah be pleased with him) that "the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) forbade receiving the price of a dog": "What they mentioned is, in our view, interpreted as being in the time of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) when he had ordered it to be killed, and in those days gaining benefit from it was forbidden. Later, permission was given to derive benefit from it."

फ़तावा रज़विया, खंड 4

[बॉक्स 1] जिसने मार्गदर्शन के नूर के साथ नापाक को पाक से अलग कर दिया। आपकी पवित्र संतानों और पाक सहाबा पर अल्लाह की रहमत, बरकत और शांति हमेशा-हमेशा नाज़िल हो। नबवी द्वार के खादिम अहमद रज़ा मुहम्मदी, सुन्नी, हनफ़ी, क़ादरी, बरेलवी—अल्लाह उनकी मग़फ़िरत करे और उनकी उम्मीदों को पूरा करे (आमीन)—ने कहा कि ज़ैद का बयान अधिक सही, अधिक वज़नदार, स्वीकार्यता के अधिक योग्य और तार्किक तथा पारंपरिक दोनों साक्ष्यों के अधिक अनुकूल है। (त)

और इसके अधिकांश तर्क और उत्तर सही, पुख़्ता और स्वीकार्य हैं। वास्तव में, हमारे इमाम-ए-आज़म (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के मज़हब में यह जानवर अन्य हिंसक जानवरों की तरह है: इसकी लार नापाक है लेकिन शरीर पाक है। यही सही, स्पष्ट, विश्वसनीय और कुरान व हदीस के प्रमाणों से समर्थित मज़हब है, जिसे प्राचीन और आधुनिक अधिकांश विद्वानों ने फ़तवे के लिए चुना और अपनाया है। चूंकि ज़ैद के कथन में पर्याप्त विवरण दिया गया है और यह मसला स्वयं काफी प्रचलित और प्रसिद्ध है, इसलिए जवाब देने और सत्य को प्रकट करने के अधिकार को पूरा करने के लिए, मैं हदीस, न्यायशास्त्र, तरजीह और आलोचना की सभी पिछली चर्चाओं में कुछ अतिरिक्त लाभप्रद बातें जोड़ना चाहता हूँ।

[बॉक्स 2] रही बात हदीस की, तो हम वही ज़िक्र करेंगे जो हमारे साथियों ने ज़िक्र किया, फिर रिवायत की तहक़ीक़ात पेश करेंगे, उसके बाद दरायत (तर्कशक्ति) की शुद्धि बयान करेंगे। (त)

अनेक रिवायतों में वर्णित है कि पालतू कुत्ते के हत्यारे पर हर्जाना देना अनिवार्य है और शिकारी कुत्ते को महिला का मेहर (विवाह उपहार) निर्धारित किया जा सकता है।

[बॉक्स 3] अल्लामा मुल्ला अली क़ारी (अल्लाह उन पर रहमत करे) ने 'मिरक़ात' की 'किताब-उल-बुयू' (विक्रय की पुस्तक), 'बाबू-अल-कसब' (कमाई का अध्याय) में हज़रत अबू मसूद अंसारी (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) की हदीस के तहत, जिसमें "रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कुत्ते की कीमत लेने से मना फ़रमाया" है, कहा: "उन्होंने जो ज़िक्र किया वह हमारे नज़दीक उस समय पर आधारित है जो नबी-ए-करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के ज़माने में था, जब आपने उसे मारने का हुक्म दिया था और उन दिनों उससे लाभ उठाना हराम था। फिर उससे लाभ उठाने

की अनुमति दे दी गई, यहाँ तक कि रिवायत है कि आपने एक आदमी द्वारा मारे गए शिकारी कुत्ते के मामले में फैसला सुनाया..."

पृष्ठ 413/761

فتاوٰی رضویہ، جلد چہارم

[باکس 1] (عربی): الخبیث من الطیب بنور الھدی وعلی آلہ الاطائب وصحبہ الطاھر وبارك وسلم دائما ابدا قال احد کلاب الباب النبوی احمد رضا المحمدی السنی الحنفی القادری البریلوی غفر اللہ لہ وحقق املہ امین قول زید اصح وارجح واحق بالقبول واوفق بالمنقول والمعقول ہے۔ (اردو): جس نے نورِ ہدایت کے ساتھ ناپاک کو پاک سے جدا کر دیا آپ کی پاکیزہ آل اور پاک صحابہ کرام پر اللہ تعالٰی کی رحمت، برکت اور سلامتی ہمیشہ ہمیشہ نازل ہو۔ سگِ بابِ نبوی احمد رضا محمدی، سنتی، حنفی قادری، بریلوی، اللہ تعالٰی اس کی بخشش کرے اور اس کی امید کو ثابت و سچ کر دے (آمین) نے کہا کہ زید کا قول زیادہ صحیح، راجح اور قبولیت کا زیادہ حق رکھتا ہے نیز معقول و منقول کے زیادہ موافق ہے۔ (ت)

اور اس کے اکثر دلائل وجوابات صحیح و صحیح و قابل قبول فی الواقع ہمارے امام اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ کے مذہب میں یہ جانور سائر سباع کے مانند ہے کہ لعاب نجس اور عین طاہر، یہی مذہب ہے صحیح واضح و معتمد و مؤید بدلائل قرآن وحدیث و مختار وماخوذ للفتوٰی عند جمہور مشائخ القدیم والحدیث ہے۔ کلام زید میں بقدر کفایت اس کی تفصیل مذکور اور مسئلہ خود کثیر الدور و معروف و مشہور لہذا اداءً لحق الجواب وکشف الصواب جمیع ابحاث متقدمہ حدیث و فقہ و ترجیح و تنزیف میں اضافہ چند فائدہ زائدہ منظور۔

[باکس 2] (عربی): اما الحدیث فنذکر ماذکر اصحابنا ثم نورد تحقیق الروایۃ ثم نشیر الی تنقیح الدرایۃ۔ (اردو): رہی حدیث تو ہم وہی ذکر کرینگے جو ہمارے اصحاب نے ذکر کیا پھر روایت کی تحقیق لائیں گے اس کے بعد درایت کی درستگی بیان کرینگے۔ (ت)

آثار عدیدہ میں مروی کہ کلب مملوک کے قاتل پر ضمان لازم اور سگ شکاری کو عورت کا مہر مقرر کر سکتے ہیں۔

[باکس 3] (عربی): قال العلامة علی القاری علیہ رحمۃ الباری فی المرقاۃ کتاب البیوع باب الکسب تحت حدیث ابی مسعود الانصاری رضی اللہ تعالیٰ عنہ ان رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نھی عن ثمن الکلب مآنصہ ھو محمول عندنا علی ماکان فی زمنہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم حین امر بقتلہ وکان الانتفاع بہ لے یومئذ محرما ثم رخص فی الانتفاع بہ حتی روی انہ قضی فی کلب صید قتلہ رجل۔ (اردو): علامہ ملا علی قاری ان پر اللہ تعالیٰ کی رحمت ہو، نے مرقاۃ کے کتاب البیوع، باب الکسب میں حضرت ابو مسعود انصاری رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی حدیث کہ "رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے کتے کی قیمت وصول کرنے سے منع فرمایا" کے تحت فرمایا "جو کچھ انہوں نے ذکر کیا وہ ہمارے نزدیک اس پر محمول ہے جو نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کے زمانے میں تھا جب آپ نے اسے مار دینے کا حکم دیا اور ان دنوں اس سے نفع حاصل کرنا حرام تھا پھر اس سے انتفاع کی اجازت دے دی یہاں تک کہ روایت ہے کہ آپ نے ایک شکاری کتے کے بارے میں فیصلہ دیا جسے ایک شخص نے مار دیا تھا۔

[Arabic/Urdu Text:] It is narrated that a person killed a hunting dog, so he (the Prophet) ruled against him for forty dirhams. Regarding a dog kept for livestock (mashiya), he ruled to give a ram. This was mentioned by Ibn al-Malak. (t)

I say (Aqool): Apparently, this is attributed to the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). It has been explicitly stated in Al-Asrar, An-Nihayah, Dhakhirat al-Uqba, and other commentaries and major books. They stated that Abdullah bin Amr bin al-Aas (may Allah be pleased with them) narrated from the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) that he ruled for forty dirhams regarding a dog. However, in my opinion, it is well-known to be mawquf (attributed to a companion, not the Prophet directly). Perhaps in both places, the word 'qudiya' (it was ruled) is used in the passive voice. The great Imam Abu Ja'far al-Tahawi (may Allah have mercy on him) stated in 'Sharh Ma'ani al-Athar' that this verse was revealed after the prohibition of dogs. This verse restored trained hunting dogs to their state of permissibility; meaning what they catch (prey) will be halal, taking their price will be permissible, and among them...

Note (ah): After writing this section, I saw that the Muhaqqiq 'ala al-Itlaq (Ibn al-Humam) mentioned this hadith in 'Fath al-Qadir' from 'Al-Asrar', then said: This hadith is only known as mawquf, etc. Praise be to Allah. (t)

---

1. Mirqat Sharh Mishkat, Chapter of Earning and Seeking Halal, published by Maktaba Imdadia Multan, 6/38.
2. Dhakhirat al-Uqba on Sharh al-Wiqayah, Various Issues of Sale, Munshi Nawal Kishore Press, Kanpur, 2/200.

यहाँ तक रिवायत है कि एक शख्स ने शिकारी कुत्ता हलाक कर दिया तो आपने (उसके खिलाफ) चालीस दिरहम के साथ फैसला फ़रमाया और जानवरों की हिफ़ाज़त के लिए रखे गए कुत्ते के सिलसिले में एक मेंढा देने का फैसला फ़रमाया, इसे इब्न अल-मलिक ने ज़िक्र किया। (त)

अक़ूल (मैं कहता हूँ): बज़ाहिर यह रसूल अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तरफ मंसूब है और असरार, निहाया, ज़ख़ीर-तुल-उक़्बा वग़ैरा शरूहात और बड़ी बड़ी किताबों में इसकी तसरीह (स्पष्टीकरण) करते हुए कहा कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने रसूल अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से रिवायत किया कि आपने कुत्ते के सिलसिले में चालीस दिरहम का फैसला फ़रमाया लेकिन मेरे ख़्याल में इसका मौक़ूफ़ होना मारूफ़ (प्रसिद्ध) है शायद दोनों जगहों में "क़ुज़िया" (फ़ैसला किया गया) मबनी लिल-मफ़ऊल (कर्मवाच्य) है। इमाम अजल अबू जाफ़र तह़ावी रह़मतुल्लाह अलैह ने शरह़ मआनी अल-आसार में फ़रमाया कि इस आयत का नुज़ूल कुत्तों को हराम क़रार देने के बाद हुआ और इस आयत ने सिखाए हुए शिकारी कुत्तों को दोबारा ह़िल्लत (वैधता) की तरफ लौटा दिया यानी उनका रोका हुआ (शिकार) ह़लाल होगा, उनकी क़ीमत लेना जाइज़ होगी और उनमें से...

नोट: इस जगह की किताबत के बाद मैंने देखा कि मुह़क़्क़िक़ अली अल-इतलाक ने इस ह़दीस को फ़तह़ुल क़दीर में असरार से ज़िक्र किया है फिर फ़रमाया यह ह़दीस नहीं पहचानी जाती मगर मौक़ूफ़न (यानी यह सहाबी का कथन है) इलख़ वल्लाह अल-ह़म्द। (त)

---

1. मिरक़ात शरह़ मिश्कात, बाब अल-कस्ब व तलब अल-ह़लाल, मकतबा इमदादिया मुल्तान, 6/38।
2. ज़ख़ीर-तुल-उक़्बा अला शरह़ अल-विसाया, मसाइल शत्ता मिन अल-बै, मुतबा मुंशी नवल किशोर कानपुर, 2/200।

पृष्ठ 414/761

باربعین درهما وقضی فی کلب ماشیة بکبش ذکره ابن الملك۱ اھ۔ یہاں تک مروی ہے کہ ایک شخص نے شکاری کتا ہلاک کردیا تو آپ نے (اس کے خلاف) چالیس درہم کے ساتھ فیصلہ فرمایا اور جانوروں کی حفاظت کیلئے رکھے گئے کتے کے سلسلے میں ایک مینڈھا دینے کا فیصلہ فرمایا اسے ابن الملك نے ذکر کیا اھ (ت)

اقول: ظاہرہ عزو ذلک الی رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم وقدصرح بہ فی الاسرار والنہایة وذخیرة العقبی ۲ وغیرھا من الشروح والاسفار فقالوا ان عبداللہ بن عمرو بن العاص رضی اللہ عنھما روی عن رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم انہ قضی فی کلب باربعین درھما ولکن ظنی ان المعروف عہ وقفہ فلعل قضی فی الموضعین علی البناء للمفعول، قال الامام الاجل ابوجعفر فی شرح معانی الآثار نزول ہذہ الآیة بعد تحریم الکلاب وان ہذہ الآیة اعادت الجوارح المکلبین الی صیرتھا حلالا واذا صارت کذلك کانت فی سائر الاشیاء التی ھي حلال في حل امساکھا واباحة اثمانھا۔

اقول: بظاہر یہ رسول اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی طرف منسوب ہے اور اسرار، نہایہ، ذخیرة العقبیٰ وغیرہ شروح اور بڑی بڑی کتب میں اس کی تصریح کرتے ہوئے کہا کہ حضرت عبداللہ بن عمرو بن عاص رضی اللہ عنہما نے رسول اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے روایت کیا کہ آپ نے کتے کے سلسلے میں چالیس درہم کا فیصلہ فرمایا لیکن میرے خیال میں اس کا موقوف ہونا معروف ہے شاید دونوں جگہوں میں "قُضِیَ" مبنی للمفعول ہے۔ امام اجل ابوجعفر طحاوی رحمہ اللہ نے شرح معانی الآثار میں فرمایا کہ اس آیت کا نزول کتوں کو حرام قرار دینے کے بعد ہوا اور اس آیت نے سکھائے ہوئے شکاری کتوں کو دوبارہ حلت کی طرف لوٹا دیا یعنی ان کا روکا ہوا (شکار) حلال ہوگا، ان کی قیمت لینا جائز ہوگی اور ان میں سے---

عه: بعد کتابتی لهذا المحل رأیت المحقق حیث اطلق ذکر الحدیث في الفتح عن الاسرار ثم قال هذا لا یعرف الاموقوفا الخ واللہ الحمد ۱۲ منہ اس جگہ کی کتابت کے بعد میں نے دیکھا کہ محقق علی الاطلاق نے اس حدیث کو فتح القدیر میں اسرار سے ذکر کیا ہے پھر فرمایا یہ حدیث نہیں پہچانی جاتی مگر موقوفاً الخ واللہ الحمد ۱۲ منہ (ت)

۱۔ مرقاۃ شرح مشکوۃ باب الکسب و طلب الحلال مطبوعہ مکتبہ امدادیہ ملتان ۶/۳۸ ۲۔ ذخیرۃ العقبیٰ علی شرح الوقایۃ مسائل شتی من البیع، مطبع منشی نولکشور کانپور ۲/۲۰۰

Fatawa Razawiyya Volume 4

Whatever was destroyed, the compensation (Daman) for it is upon the one who destroyed it, just as it is for other animals (this does not mean that eating it itself has become lawful). In this regard, narrations have also been reported from those after the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) (Companions and Successors). We (Imam Tahawi) were told by Yunus, who said that Ibn Wahb narrated to us, saying: I heard Ibn Jurayj narrating from Amr ibn Shu'ayb, from his father, from his grandfather (Abdullah ibn Amr), that he judged regarding a hunting dog killed by a man that forty dirhams be paid, and he judged regarding a sheep-dog that a ram be paid. Then (Imam Tahawi) cited from Ibn Shihab al-Zuhri that he said: If a trained dog is killed, its value should be estimated and the one who killed it should pay the penalty. Then from Muhammad ibn Yahya ibn Habban al-Ansari, he said: It used to be said that for a trained dog, if killed, forty dirhams should be fixed.

And in 'Umdat al-Qari by Allama Badr al-Din Mahmud al-Ayni, it is narrated from Uthman (may Allah be pleased with him) that he permitted giving a hunting dog as a dower (Mahr), and he imposed a compensation of twenty camels on its killer. Abu Umar mentioned this in Al-Tamhid.

From these hadiths, it is proven that a dog is a valuable property (Maal-e-Mutaqawwam), and it is clear that something inherently impure (Najis al-Ayn) cannot be valuable property. Therefore, it is necessary that it be inherently pure (Tahir al-Ayn).

For this reason, the liability for compensation in Durr al-Mukhtar is based on the opinion...

---

1 Sharh Ma'ani al-Athar, Chapter on the Price of a Dog, H.M. Saeed Company Karachi, 2/251 2 Umdat al-Qari Sharh al-Bukhari, Chapter on the Price of a Dog, Idara al-Tiba'at al-Muniriyya Beirut, 12/59 Page 415 of 761

फतावा रज़विया जिल्द 4

जो कुछ नष्ट किया गया, उसे नष्ट करने वाले पर उसका मुआवज़ा (ज़मान) होगा, जैसा कि अन्य जानवरों के मामले में होता है (इसका यह अर्थ नहीं है कि उसका मांस खाना हलाल हो गया है)। इस संबंध में नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बाद के लोगों (सहाबा और ताबिईन) से भी रिवायतें वर्णित हैं। हम (इमाम तहावी) को यूनुस ने बताया, उन्होंने कहा कि हमें इब्न वहब ने बताया, उन्होंने कहा: मैंने इब्न जुराइज से सुना, वह अम्र इब्न शुएब से, वह अपने पिता से और वह उनके दादा (अब्दुल्ला इब्न अम्र) से रिवायत करते हैं कि उन्होंने एक आदमी द्वारा मारे गए शिकारी कुत्ते के लिए चालीस दिरहम का फैसला दिया, और मवेशियों की रखवाली करने वाले कुत्ते के लिए एक मेढ़े का फैसला दिया। फिर (इमाम तहावी ने) इब्न शिहाब ज़ुहरी का कथन उद्धृत किया कि उन्होंने कहा: यदि सिखाया हुआ (मुअल्लम) कुत्ता मारा जाए, तो उसकी कीमत आंकी जाए और मारने वाला उसका दंड भरे। फिर मुहम्मद इब्न यहया इब्न हब्बान अल-अंसारी से रिवायत है, उन्होंने कहा: यह कहा जाता था कि यदि कोई शिकारी कुत्ता मारा जाए तो उसके बदले चालीस दिरहम तय किए जाएं।

और अल्लामा बदरुद्दीन महमूद अल-ऐनी की 'उम्दतुल क़ारी' में है कि हज़रत उस्मान गनी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि उन्होंने मेहर (दहेज) में शिकारी कुत्ता देना जायज़ करार दिया और उसे मारने वाले पर बीस (20) ऊँटों का मुआवज़ा रखा। अबू उमर ने इसका उल्लेख 'अत-तमहीद' में किया है।

इन हदीसों से यह सिद्ध होता है कि कुत्ता एक मूल्यवान संपत्ति (माल-ए-मुतक़व्वम) है, और यह स्पष्ट है कि जो वस्तु मूलतः अपवित्र (नजिस अल-ऐन) हो वह मूल्यवान संपत्ति नहीं हो सकती। अतः यह आवश्यक है कि वह मूलतः पवित्र (ताहिर अल-ऐन) हो।

इसीलिए 'दुर्रे मुख्तार' में मुआवज़ा (ज़मान) निर्धारित करने के लिए इस कथन पर आधारित किया गया है कि... [अगले पृष्ठ पर जारी]

---

1 शरह मानी अल-आसार, कुत्ते की कीमत का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 2/251 2 उम्दतुल क़ारी शरह अल-बुखारी, कुत्ते की कीमत का अध्याय, इदारा अल-तिबात अल-मुनीरिया बेरूत, 12/59 पृष्ठ 415 / 761

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم

وضمان متلفیھا ما اتلفوا منھا کغیرھا او قدوری | جو کچھ ضائع کیا گیا، ضائع کرنے والے پر اس کی ضمان ہوگی جیسا کہ فی ذلک عمن بعد النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم | دوسرے جانوروں میں ہوتا ہے (یہ مطلب نہیں کہ خود اس کا کھانا حدثنا یونس ثنا ابن وھب قال سمعت ابن | حلال ہو گیا) اس سلسلے میں نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم سے بعد جریج یحدث عن عمرو بن شعیب عن ابیہ عن | والوں (صحابہ کرام و تابعین) سے بھی روایات مروی ہیں۔ ہم جدہ عبداللہ بن عمرو انہ قضی فی کلب صید | (امام طحاوی) سے یونس نے بیان کیا وہ فرماتے ہیں ہم سے ابن قتلہ رجل باربعین درھماً وقضی فی کلب ماشیۃ | وہب نے بیان کرتے ہوئے کہا کہ میں نے ابن جریج سے سنا وہ بکبش اھ ثم اسند عن ابن شھاب الزھری انہ | عمرو بن شعیب سے وہ اپنے باپ سے اور وہ ان کے دادا (عبداللہ قال اذا قتل الکلب المعلم فانہ یقوم قیمتہ | بن عمرو) سے روایت کرتے ہیں کہ ایک شکاری کتے کو کسی نے فیغرمہ الذی قتلہ ثم عن محمد بن یحیٰی بن | ہلاک کر دیا تو انہوں نے اس کے بدلے میں چالیس درہموں کا فیصلہ حبان الانصاری قال کان یقال یجعل فی الکلب | فرمایا اور جانوروں کی حفاظت کرنے والے کتے کے بارے میں الضاری اذا قتل اربعون درھماً 1 اھ | ایک مینڈھے کا فیصلہ کیا اھ، پھر (امام طحاوی نے) ابن شہاب زہری کا قول نقل کیا انہوں نے فرمایا: جب معلم کتا ہلاک کیا جائے وفی عمدۃ القاری للعلامۃ البدر محمود العینی | تو اس کی قیمت معین کر کے قاتل تاوان ادا کرے پھر محمد بن یحیٰی عن عثمن رضی اللہ تعالٰی عنہ انہ اجاز الکلب | بن حبان کا قول نقل کیا فرماتے ہیں کہا جاتا تھا کہ جب کوئی شخص الضاری فی المھر وجعل علی قاتلہ عشرین من | شکاری کتے کو ہلاک کرے تو اس کے بدلے میں چالیس درہم مقرر کئے جائیں اھ علامہ بدر الدین عینی محمود کی عمدۃ القاری میں ہے الابل 2 ذکرہ ابو عمر فی التمھید۔ | حضرت

عثمان غنی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہے کہ انہوں نے مہر میں شکاری کتا دینا جائز قرار دیا ہے اور اس کے قاتل پر بیس ۲۰ اونٹ تاوان رکھا ہے، اسے ابو عمر نے تمہید میں ذکر کیا ہے۔ (ت)

ان احادیث سے کلب کا مال متقوم ہونا ثابت اور پھر ظاہر کہ نجس العین مال متقوم نہیں تو واجب کہ طاہر العین ہو ولذا جعل التضمین فی الدر مبنیا علی القول | اسی لئے دُرّ مختار میں اس کی ضمان مقرر کرنے کیلئے

---

1 شرح معانی الآثار باب ثمن الکلب ایچ ایم سعید کمپنی کراچی، ۲/۲۵۱ 2 عمدۃ القاری شرح البخاری باب ثمن الکلب ادارۃ الطباعۃ المنیریہ بیروت ۱۲/۵۹ Page 415 of 761

Fatawa Rizwia, Volume 4

...based on the statement of purity where he said: A dog is not inherently impure according to the Imam (Abu Hanifa), and the fatwa is based on this. Therefore, it can be sold, leased, and its value is guaranteed (if destroyed). Etc. Allama Shami said: Some of these rulings are mentioned in books this way, and some the opposite. Harmony can be found through legal deduction (takhrij) from both views, as detailed in Al-Bahr al-Raiq. Etc.

I say: Wait for what we mention regarding the permissibility of sale, search and you will know. (T)

As for Fiqh: We say there are numerous well-known quotes in the school's books—textbooks, commentaries, and fatwa collections. (T)

In Al-Mukhtasar al-Quduri, Hidaya, Wiqaya, Niqaya, Al-Mukhtar, Kanz, Al-Wafi, Islah, Nur al-Idah, Multaqa, Tanwir, and other common texts, it is explicitly stated that:

[Table/Box Text] Arabic: Every hide that is tanned becomes pure, except for the skin of pigs and humans. Urdu: Every hide that is tanned becomes pure, except for the skin of pigs and humans. (T)

Only these two exceptions are made from this general rule; no exception for dogs is found at all. Therefore, Allama Zayn al-Ulama in Al-Bahr al-Raiq (3), and then Allama Hasan Shurunbulali in Gunya (13) Dhawi al-Ahkam, following the researcher in Al-Fath, stated absolutely:

[Table/Box Text] Arabic: What the generality of texts like Al-Quduri, Al-Mukhtar, and Kanz al-Daqaiq necessitates is that its (the dog's) essence is pure and there is no contradiction. Urdu: The generality of texts such as Al-Mukhtasar al-Quduri, Al-Mukhtar, and Kanz al-Daqaiq necessitates that its (the dog's) essence is pure.

1. Durr al-Mukhtar, Bab al-Miyah, printed at Mujtabai Delhi, 38/1.
2. Radd al-Muhtar, Bab al-Miyah, printed at Mujtabai Delhi, 139/1.
3. Al-Mukhtasar lil Quduri, Kitab al-Taharah, printed at Mujidi Kanpur, p. 7.

फ़तावा रिज़विया, खंड 4

...शुद्धता के कथन को आधार बनाया गया है। जब उन्होंने कहा कि इमाम आज़म (रहमतुल्लाह अलैह) के अनुसार कुत्ता स्वयं अपवित्र (नजिस-ए-ऐन) नहीं है। और इसी पर फतवा है, इसलिए इसे बेचा जा सकता है, किराए पर दिया जा सकता है और इसकी गारंटी (वाजिब) होगी। अल्लामा शामी ने फरमाया: इन शाखाओं में से कुछ के नियम पुस्तकों में इस तरह वर्णित हैं और कुछ इसके विपरीत, और दोनों के बीच सामंजस्य दोनों पर कटौती (तखरीज) के रूप में हो सकता है जैसा कि 'अल-बहर अल-रायिक' में इसे विस्तार से बताया गया है। इत्यादि।

मैं कहता हूँ: बिक्री की अनुमति के बारे में जो कुछ हम उल्लेख करेंगे उसकी प्रतीक्षा करें, खोजें तो जान जाएंगे। (त)

जहाँ तक फ़िक़्ह का सवाल है: हम कहते हैं कि मज़हब की किताबों में, चाहे वे मूल पाठ (मुतून), व्याख्याएँ(शुरुह) हों या फतवे, उनमें इस मामले का कसरत से ज़िक्र है। (त)

मुख्तसर क़ुदूरी, हिदाया, विकाया, निक़ाया, मुख्तार, कन्ज़, अल-वाफ़ी, इस्लाह, नूरुल ईज़ाह, मुल्तक़ा और तनवीर आदि सामान्य मूल पाठों में स्पष्ट रूप से उल्लेख है कि:

[तालिका/बॉक्स पाठ] अरबी: हर वह खाल जिसे कमाया (टैन किया) जाए, वह पाक हो जाती है, सिवाय सूअर और इंसान की खाल के। उर्दू: सूअर और इंसान की खाल के अलावा, जिस भी खाल को कमाया जाए वह शुद्ध हो जाती है। (त)

इस नियम से केवल ये दो अपवाद किए गए हैं, कुत्ते के अपवाद का कोई मूल पता नहीं चलता। इसलिए अल्लामा ज़ैन उल उलेमा ने 'अल-बहर अल-रायिक' (3) में, फिर अल्लामा हसन शरुनबुलाली ने 'गुन्या' (13) ज़वी अल-अहकाम में 'अल-फतह' के शोधकर्ता का अनुसरण करते हुए पूर्णतः कहा है:

[तालिका/बॉक्स पाठ] अरबी: क़ुदूरी, मुख्तार और कन्ज़ अल-दक़ाइक जैसे मूल पाठों की व्यापकता का तकाज़ा यही है कि उसका (कुत्ते का) वजूद पाक है और इसका कोई विरोध नहीं है। उर्दू: मुतून मसलन मुख्तसर क़ुदूरी, मुख्तार और कन्ज़ अल-दक़ाइक की व्यापकता का तकाज़ा यही है कि उसका (कुत्ते का) वजूद पाक है।

1. दुर्रे मुख्तार, बाब अल-मियाह, मुजतबाई दिल्ली, 38/1।

2. रद उल मुहतार, बाब अल-मियाह, मुजतबाई दिल्ली, 139/1।

3. अल-मुख्तसर लिल क़ुदूरी, किताबुल तहारत, मजीदी कानपुर, पृष्ठ 7।

पृष्ठ 416 का 761

بالطھارۃ حیث قال لیس الکلب بنجس العین عند الامام وعلیہ الفتوی فیباع ویؤجر ویضمن الخ طہارت کے قول کو بنیاد بنایا گیا ہے۔ جب انہوں نے فرمایا کہ امام اعظم رحمۃ اللہ کے نزدیک کتا نجس عین نہیں ہے۔ اور اسی پر فتوی ہے لہذا اسے بیچا جاسکتا ہے اجرت پر دیا جا سکتا ہے اور اس کی ضمان بھی (واجب) ہوگی۔ الخ علامہ شامی نے فرمایا: ان فروع میں سے بعض کے احکام کتب میں اس طرح ذکر کیے گئے ہیں اور بعض کے بالعکس، اور ان کے درمیان مطابقت دونوں پر تخریج کی صورت میں ہوسکتی ہے جیسا کہ البحر الرائق میں اس کو تفصیل سے بیان کیا ہے۔ الخ

قال الشامي هذه الفروع بعضها ذكرت احكامها في الكتب هكذا وبعضها بالعكس والتوفيق بالتخريج على القولين كما بسطه في البحر الخ۔ اقول: وانتظر ماتذكره في جواز البيع وفتش تعرف۔ اقول: جو کچھ ہم بیع کے جواز میں ذکر کریں گے اس کا انتظار کرو اور جستجو کرو گے جان لوگے (ت)

واما الفقه: فنقول نقول كثيرة بثيرة شائع في كتب المذهب متونا وشروحا وفتاوى۔ رہا فقہ کے بارے، تو ہم کہتے ہیں کتب مذہب میں چاہے وہ متون شروح ہوں یا فتاوی، ان میں اس مسئلہ کا بکثرت ذکر ہے۔ (ت)

مختصر قدوری و ہدایہ و وقایہ و نقایہ و مختار و کنز و وافی و اصلاح و نور الایضاح و ملتقی و تنویر وغیر ہا عامہ متون میں تصریح صریح ہے کہ :

كل اهاب دبغ فقد طهر الا جلد الخنزير والآدمی | خنزیر اور آدمی کے چمڑے کے علاوہ جس چمڑے کو بھی دباغت دی جائے وہ پاک ہو جاتا ہے (ت)

اس کلیہ سے صرف یہی دو استثنا فرماتے ہیں استثنائے کلب کا اصلاً پتا نہیں دیتے ولہذا علامہ زین العلماء نے البحر الرائق ۳ پھر علامہ حسن شرنبلالی نے غنیہ ۱۳ ذوی الاحکام میں تبعاً للمحقق علی الاطلاق فی الفتح فرمایا:

الذی یقتضیه عموم مافی المتون کالقدوری والمختار والکنز طهارة عینه ولم یعارضه | متون مثلاً مختصر القدوری، المختار اور کنز الدقائق کا عموم اسی بات کا مقتضی ہے کہ اس (کتے) کا عین پاک

1 در مختار باب المیاہ مطبوعہ مجتبائی دہلی ۳۸/۱ 2 رد المحتار باب المیاہ مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱۳۹/۱ 3 المختصر للقدوری کتاب الطهارة مطبوعہ مجیدی کانپور ص ۷

Fatawa Rizwiya Volume 4

| (Arabic) What necessitates its impurity, so it is more deserving to correct its non-impurity etc. | (Urdu) There is nothing contradicting that would make its impurity obligatory; therefore, the greater right for its purity is proven. (T) |

Allama Sayyid Abu Saud Azhari stated in Fath-ul-Allah al-Mu'een:

| (Arabic) His saying "and every hide" implies this universal principle that dog skin is purified by tanning based on the fatwa that it is not inherently impure. | (Urdu) His statement "and every hide" (and every leather) is a universal rule according to which dog skin also becomes pure through tanning. Its basis is the fatwa-issued opinion that it is not inherently impure. (T) |

In the same, after mentioning the ruling of "it is said," he stated:

| (Arabic) Likewise, the dog also, according to what the fatwa is based on regarding its inherent purity, even if some of them preferred its impurity. | (Urdu) The ruling for the dog is the same, and the reason is that the fatwa is on its intrinsic purity, even though some of them (venerable jurists) preferred impurity. (T) |

Imam Abu al-Barakat Abdullah bin Mahmud Nasafi in Kafi Sharh al-Wafi states:

| (Arabic) The dog is not inherently impure because it is utilized for guarding and hunting, so it is like a cheetah; thus, it is purified by tanning. | (Urdu) The dog is not inherently impure because profit is gained from it for protection and hunting, therefore it is like a cheetah; thus, it will become pure through tanning. (T) |

Similarly, it is in Mustakhlas al-Haqa'iq. Imam Zayla'i in Tabyin al-Haqa'iq, then Allama Shurunbulali in Ghunyah state:

| (Arabic) Regarding the dog, there are two narrations based on whether it is inherently impure or not, and the correct view is that it does not spoil as long as it does not enter... | (Urdu) Based on whether the dog is inherently impure or not, there are two narrations regarding this. The correct one is that it does not spoil (water, etc.)... |

1. Fath al-Qadir, Chapter: Water with which Wudu is permissible etc., Published by Nooria Razvia, Sukkur, 1/83
2. Fath-ul-Allah al-Mu'een, Book of Purity, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/11
3. Fath-ul-Allah al-Mu'een, Book of Purity, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/11

4. Kafi Sharh al-Wafi

| (अरबी) जो इसकी अशुद्धता का कारण बने, इसलिए इसकी शुद्धता की पुष्टि करना अधिक योग्य है आदि। | (उर्दू) और ऐसी कोई चीज़ विरोधाभासी नहीं है जो इसकी नजासत (अशुद्धता) को अनिवार्य करती हो, इसलिए इसकी पवित्रता का अधिक अधिकार सिद्ध हुआ। (त) |

अल्लामा सैय्यद अबू सऊद अज़हरी ने फ़तह-उल्लाह अल-मुईन में फ़रमाया:

| (अरबी) उनका कहना "और हर खाल" इस नियम का तकाज़ा है कि कुत्ते की खाल भी पकाए जाने (टैनिंग) से शुद्ध हो जाती है, इस आधार पर कि वह नजासत-ए-ऐन (स्वयं अशुद्ध) नहीं है। | (उर्दू) उनका कथन "वकुल इहाब" (और हर चमड़ा) एक ऐसा व्यापक नियम है जिसके अनुसार कुत्ते का चमड़ा भी पकाए जाने के माध्यम से पवित्र हो जाता है। इसका आधार वह मत है जिस पर फ़तवा दिया गया है कि यह स्वयं अशुद्ध नहीं है। (त) |

इसी में "कहा गया" के हुक्म का वर्णन करते हुए फ़रमाया:

| (अरबी) इसी प्रकार कुत्ता भी, जिस पर फ़तवा है उसकी अपनी पवित्रता के बारे में, चाहे उनमें से कुछ ने अशुद्धता को प्राथमिकता दी हो। | (उर्दू) कुत्ते का भी यही हुक्म है और इसकी वजह यह है कि इसकी व्यक्तिगत पवित्रता पर फ़तवा है, यद्यपि उनमें से कुछ (फुक़हा-ए-किराम) ने अशुद्धता को प्राथमिकता दी है। (त) |

इमाम अबुल बरकात अब्दुल्ला महमूद नसाफ़ी काफ़ी शरह वाफ़ी में फ़रमाते हैं:

| (अरबी) कुत्ता नजासत-ए-ऐन नहीं है क्योंकि उसका उपयोग रखवाली और शिकार के लिए किया जाता है, इसलिए वह चीते की तरह है, अतः वह पकाए जाने (टैनिंग) से शुद्ध हो जाता है। | (उर्दू) कुत्ता स्वयं अशुद्ध नहीं है क्योंकि सुरक्षा और शिकार के लिए उससे लाभ प्राप्त किया जाता है, इसलिए वह चीते की तरह है, अतः पकाए जाने से पवित्र हो जाएगा। (त) |

इसी तरह मुस्तख़लस अल-हक़ाइक में है। इमाम ज़ैलई तबईन अल-हक़ाइक फिर अल्लामा शुरुनबुलाली ग़ुनिया में फ़रमाते हैं:

| (अरबी) कुत्ते के बारे में दो रिवायतें हैं इस आधार पर कि वह नजासत-ए-ऐन है या नहीं, और सही यह है कि वह तब तक खराब नहीं करता जब तक प्रवेश न करे... | (उर्दू) इस आधार पर कि कुत्ता

स्वयं अशुद्ध है या नहीं, इसके बारे में दो रिवायतें हैं। सही यह है कि वह (पानी आदि) खराब नहीं करता... |

1. फ़तह अल-क़दीर, अध्याय: पानी जिससे वुज़ू जायज़ है आदि, प्रकाशित नूरिया रिज़विया, सुक्कुर, 1/83
2. फ़तह-उल्लाह अल-मुईन, किताब अल-तहारत, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/11
3. फ़तह-उल्लाह अल-मुईन, किताब अल-तहारत, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/11
4. काफ़ी शरह अल-वाफ़ी

पृष्ठ 761 का 417

فتاوی رضویہ جلد چہارم

| ما یوجب نجاستھا فوجب احقیۃ تصحیح عدم نجاستھا الخ۔ | ہے اور ایسی کوئی چیز معارض نہیں جو اس کی نجاست کو واجب کرتی ہو لہذا اس کی طہارت کا زیادہ حق ہونا ثابت ہوا۔ (ت) |

علامہ سید ابو سعود از ہری نے فتح اللہ المعین میں فرمایا:

| قولہ وکل اھاب مقتضی ھذہ الکلیۃ طھارۃ جلد الکلب بالدباغ بناء علی ماھو المفتی بہ من انہ لیس بنجس العین۔ | اس کا قول "وکل اھاب" (اور ہر چمڑا) ایک ایسا کلیہ ہے جس کے مطابق کتے کا چمڑا بھی دباغت کے ذریعے پاک ہو جاتا ہے اس کی بنیاد وہ مفتی بہ قول ہے کہ یہ نجس عین نہیں ہے۔ (ت) |

اسی میں حکم قیل بیان کر کے فرمایا:

| وکذا الکلب ایضا علی ماعلیہ الفتوی من طھارۃ عینہ وان رجح بعضھم النجاسۃ۔ | کتے کا بھی یہی حکم ہے اور اس کی وجہ یہ ہے کہ اس کی طہارتِ ذاتی پر فتوٰی ہے اگر چہ ان (فقہاء کرام) میں سے بعض نے نجاست کو ترجیح دی ہے۔ (ت) |

امام ابو البرکات عبد اللہ محمود نسفی کافی شرح وافی میں فرماتے ہیں:

| الکلب لیس بنجس العین لانہ ینتفع بہ حراسۃ واصطیادا فکان کالفھد فیطھر بالدباغ۔ | کتا نجس عین نہیں ہے کیونکہ حفاظت اور شکار کے لئے اس سے نفع حاصل کیا جاتا ہے لہذا وہ چیتے کی طرح ہے پس دباغت سے پاک ہو جائے گا۔ (ت) |

اسی طرح مستخلص الحقائق میں ہے۔ امام زیعی تبیین الحقائق پھر علامہ شامی غنیہ میں فرماتے ہیں:

| في الكلب روايتان بناء على انه نجس العين اولا والصحيح انه لا يفسد مالم يدخل | اس بنیاد پر کہ کتا نجس عین ہے یا نہیں اس کے بارے میں دو روایتیں ہیں صحیح یہ ہے کہ (پانی وغیرہ) خراب |

1 فتح القدير باب ماء الذى يجوز بہ الوضوء الخ مطبوعہ نوريہ رضويہ سكهر ١/ ٨٣ 2 فتح الله المعين كتاب الطہارة ايچ ايم سعيد كمپنى كراچى ١/ ١١ 3 فتح الله المعين كتاب الطہارة ايچ ايم سعيد كمپنى كراچى ١/ ١١ 4 كافى شرح وافى

Fatawa Ridawiyya, Volume 4

- ...for it is not essentially impure.[1] | It does not [defile] as long as it does not put its mouth [in the water], because it is not essentially impure. (T)

In *Multaqa al-Abhur* and its commentary *Majma' al-Anhur* (18) it states: (Every skin that is tanned becomes pure, except for human skin due to its honor and pig skin due to its essential impurity), and there is disagreement regarding dog skin, and the correct view is that it becomes pure.[2] | (Every skin that is tanned becomes pure, except for human skin due to its honor and pig skin due to its essential impurity, which does not become pure). There is disagreement about dog skin, and the correct view is that it becomes pure. (T)

In *Nuqayah* and its commentary *Jami' al-Rumuz* it states: (Every skin that is tanned becomes pure except for pig and human skins). Limiting it to these two is a hint that dog skin becomes pure through it [tanning], contrary to the view of the two companions [Sahibayn]. Regarding it being essentially impure, there is disagreement as mentioned in *Zahidi*, and the first view is the correct one as in *al-Tuhfah*.[3] | (The skin that is tanned becomes pure except for pig and human skins). Restricting it (to these two) hints at the fact that through tanning, dog skin becomes pure; in this, there is a disagreement of the two companions as mentioned in *Zahidi*. The first view is correct as in *al-Tuhfah*. (T)

In *Nur al-Idah* and its commentary *Maraqi al-Falah* it states: [All water] is removed (due to a pig falling in, even if it comes out alive and its mouth did not touch the water) because of its essential impurity, (and) it is removed (due to the death of a dog). The condition of its death in it is made because it is not essentially impure according to the correct view.[4] | All water should be removed due to a pig falling in, even if it comes out alive and its mouth did not reach the water, because it is essentially impure. And all water should be removed due to the death of a dog; the condition of death in it is attached because, according to the correct view, it is not essentially impure. (T)

Allama Ahmad Misri says in its marginal notes (20):

---

1. *Ghunyat Dhawi al-Ahkam* on the margins of *al-Durar al-Hukkam*, Ahmad Kamil Press, Dar al-Sa'adah, 1/176.

2. *Majma' al-Anhur Sharh Multaqa al-Abhur*, Section on Water Research, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/32.
3. *Jami' al-Rumuz*, Book of Purity, al-Maktabah al-Islamiyyah, Gunbad Qamus, Iran, 1/54.
4. *Maraqi al-Falah 'ala Hashiyat al-Tahawi*, Section on Matters of Wells, Nur Muhammad Karkhana, Karachi, p. 21.

फ़तावा रज़विया, जिल्द चारुम

- ...क्योंकि वह नजिस ऐन (स्वयं अशुद्ध) नहीं है।[1] | जब तक वह मुँह न डाले तब तक अशुद्ध नहीं करता क्योंकि वह नजिस ऐन नहीं है। (त)

मुल्तक़ा अल-अब्हुर और उसकी व्याख्या मजमा' अल-अन्स्तुर (18) में है: (हर चमड़ा जिसे रँगा (टैनिंग) जाए, वह पाक (शुद्ध) हो जाता है, सिवाय आदमी के चमड़े के उसकी गरिमा के कारण और सुअर के चमड़े के उसके नजिस ऐन होने के कारण) और कुत्ते के चमड़े के बारे में मतभेद है और सही बात यह है कि वह पाक हो जाता है।[2] | (हर चमड़ा जिसे दबागत (टैनिंग) दी जाए पाक हो जाता है मगर आदमी का चमड़ा उसकी इज़्ज़त और सुअर का चमड़ा उसके नजिस ऐन होने की वजह से पाक नहीं होता) कुत्ते के चमड़े में मतभेद है और सही यह है कि वह पाक हो जाता है। (त)

नुक़ाया और उसकी व्याख्या जामे अल-रुमुज़ में है: (जिस चमड़े को रँगा जाए वह पाक हो जाता है सिवाय सुअर और आदमी के चमड़े के)। (इन दोनों पर) सीमित रहने में इस बात की ओर इशारा है कि रँगाई से कुत्ते का चमड़ा पाक हो जाता है, इसमें साहिबैन का मतभेद है जैसा कि ज़ाहिदी में है। पहला कथन सही है जैसा कि तोहफ़ा में है।[3] | (जिस चमड़े को दबागत दी जाए पाक हो जाता है सिवाय सुअर और आदमी के चमड़े के) (इन दोनों पर) इक्तिफ़ा करने में इस बात की तरफ इशारा है कि दबागत से कुत्ते का चमड़ा पाक हो जाता है इसमें साहिबैन का इख़्तिलाफ़ है जैसा कि ज़ाहिदी में है। पहला क़ौल सही है जैसा कि तोहफ़ा में है। (त)

नूर अल-ईज़ाह और उसकी व्याख्या मराक़ी अल-फ़लाह में है: (सुअर के गिरने से, चाहे वह जीवित निकल जाए और उसका मुँह पानी को न छुए, पानी) निकाला जाएगा क्योंकि वह नजिस ऐन है, (और) कुत्ते के मरने से (पानी) निकाला जाएगा। उसके साथ मौत की शर्त इसलिए लगाई गई है क्योंकि सही कथन के अनुसार वह नजिस ऐन नहीं है।[4] | सुअर के गिरने से सारा पानी निकाला जाए अगरचे ज़िंदा निकले और उसका मुँह पानी तक न पहुँचा हो क्योंकि वह नजिस ऐन है, और कुत्ते के मरने से तमाम पानी निकाला जाए, इसके साथ मौत की क़ैद इसलिए लगाई है कि सही क़ौल के मुताबिक़ यह नजिस ऐन नहीं है। (त)

अल्लामा अहमद मिस्री इसके हाशिये (20) में फ़रमाते हैं:

1. ग़ुनयत ज़वी अल-अहकाम हाशिये पर अल-दुरर अल-हुक्काम, अहमद कामिल प्रेस, दार अल-सआदह, 1/176।
2. मजमा' अल-अन्हुर शरह मुल्तक़ा अल-अब्हुर, पानी के शोध पर अनुभाग, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 1/32।
3. जामे अल-रुमुज़, पवित्रता की पुस्तक, अल-मकतबा अल-इस्लामिया, गुंबद क़ामूस, ईरान, 1/54।
4. मराक़ी अल-फ़लाह अला हाशियत अल-तहावी, कुओं के मामलों पर अनुभाग, नूर मुहम्मद कारख़ाना, कराची, पृ. 21।

فتاوٰی رضویہ، جلد چہارم

فاہ لانہ لیس بنجس العین 1 - | نہیں کرتا جب تک منہ نہ ڈالے کیونکہ وہ نجس عین نہیں ہے۔(ت)

ملتقی الابحر اور اس کی شرح مجمع الانہر (۱۸) میں ہے: (کل اھاب دبغ فقط طھرا لاجلد الادمی لکرامتہ والخنزیر لنجاسۃ عینہ) واختلف في جلد الکلب والصحیح انہ یطھر 2 - | (ہر چمڑا جسے دباغت دی جائے پاک ہو جاتا ہے مگر آدمی کا چمڑا اس کی عزت اور خنزیر کا چمڑا اس کے نجس عین ہونے کی وجہ سے پاک نہیں ہوتا) کتے کے چمڑے میں اختلاف ہے اور صحیح یہ ہے کہ وہ پاک ہو جاتا ہے۔(ت)

نقایہ اور اس کی شرح جامع الرموز میں ہے : (کل اھاب دبغ طھر الاجلد الخنزیر والادمی) فی الاکتفاء رمز الی ان الکلب یطھر بہ خلافا للصاحبین ففی کونہ نجس العین خلاف کما فی الزاھدی والاول الصحیح کما في التحفۃ 3 - | (جس چمڑے کو دباغت دی جائے پاک ہو جاتا ہے سوائے خنزیر اور آدمی کے چمڑے کے) (ان دونوں پر) اکتفاء کرنے میں اس بات کی طرف اشارہ ہے کہ دباغت سے کتے کا چمڑا پاک ہو جاتا ہے اس میں صاحبین کا اختلاف ہے جیسا کہ زاہدی میں ہے۔ پہلا قول صحیح ہے جیسا کہ تحفہ میں ہے۔(ت)

نور الایضاح اور اس کی شرح مراقی الفلاح میں ہے : تنزح (بوقوع خنزیر ولوخرج حیا ولم یصب فمہ الماء) لنجاسۃ عینہ (و) تنزح (بموت کلب) قید بموتہ فیھا لانہ غیر نجس العین علی الصحیح 4 - | خنزیر کے گرنے سے سارا پانی نکالا جائے اگر چہ زندہ نکلے اور اس کا منہ پانی تک نہ پہنچا ہو کیونکہ وہ نجس عین ہے، اور کتے کے مرنے سے تمام پانی نکالا جائے، اس کے ساتھ موت کی قید اس لئے لگائی ہے کہ صحیح قول کے مطابق یہ نجس عین نہیں ہے۔(ت)

علامہ احمد مصری اس کے حاشیہ (۲۰) میں فرماتے ہیں :

---

1 غنیۃ ذوی الاحکام بر حاشیہ الدرر الحکام مطبعہ احمد کامل امکائنہ فی دار السعادۃ ۱۷۶/۱ 2 مجمع الانہر شرح ملتقی الابحر فصل فی ابحاث الماء دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۲/۱ 3 جامع الرموز کتاب الطہارۃ المکتبۃ الاسلامیہ گنبد قاموس ایران ۵۴/۱ 4 مراقی الفلاح علی حاشیہ الطحاوی فصل فی مسائل الابار نور محمد کارخانہ کراچی ص ۲۱

Fatawa Razawiyya, Volume 4

| This is the statement of the Imam [Abu Hanifa], may Allah Almighty be pleased with him. According to both [Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad], it is inherently impure (najis al-ayn) like swine. The fatwa follows the statement of the Imam, even if their statement was preferred, as mentioned in al-Durr from Ibn al-Shuhna. -[1] | This is the statement of Imam al-A'zam, may Allah have mercy on him, while according to the two companions, it is inherently impure like swine. The fatwa follows the statement of Imam al-A'zam, even though the statement of the two companions has been given preference, as quoted from Ibn al-Shuhna in al-Durr al-Mukhtar. (T) |

Allama al-Muhaqqiq Muhammad Muhammad Muhammad ibn Amir al-Hajj states in 'Hilya': | The fact that a dog is not inherently impure is the preferred view. | Preference is given to a dog not being inherently impure. (T) |

In the same (book): | It has been repeatedly mentioned that this is the preferred view.[2] | It has been repeatedly mentioned that preference lies with this view. (T) |

This is also the choice of Imam Sadr al-Shahid: | As mentioned in al-Tahtawi on al-Durr and in al-Hilya from al-Dhakhira from the commentary of al-Tahawi: the dog is not inherently impure, and this is the choice of al-Sadr al-Shahid.[3] | As mentioned in the commentary of Tahtawi on al-Durr al-Mukhtar and in Hilya, with reference to Dhakhira from the commentary of Tahawi, that a dog is not inherently impure. Sadr al-Shahid's chosen view is also the same. (T) |

In the same (book), from Tuhfat al-Fuqaha by Imam Alauddin al-Samarqandi, al-Muhit by Imam Radiuddin, and al-Bada'i by Imam al-Ulama Abu Bakr Masud al-Kashani, may Allah Almighty have mercy on them: | The correct view is that it is not inherently impure.[4] | The correct point is that it is not inherently impure. (T) |

In the same (book): | In another place in al-Bada'i: "And this is the closer of the two views to what is correct." End. Many of the masters have followed this path.[5] | In another place in Bada'i, it is stated: "This view is closer to correctness." End. Most masters have adopted this path. (T) |

1. Hashiya al-Tahtawi 'ala al-Maraqi, Section on Well issues, Noor Muhammad Factory Karachi, p. 21.
2. Hilya of Ibn Amir al-Hajj.
3. Hashiya al-Tahtawi 'ala al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Waters, published by Dar al-Ma'rifa Beirut, 1/114.

4. Bada'i al-Sana'i, Section on True Purity, published by H.M. Saeed Company Karachi, 1/63.
5. Bada'i al-Sana'i, Section on Explaining the Quantity etc., published by H.M. Saeed Company Karachi, 1/71.

फ़तावा रज़विया, खंड 4

| यह इमाम [अबू हनीफ़ा] रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का कथन है। जबकि साहिबैन [इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद] के निकट यह सूअर की तरह नजिस-ए-ऐन (स्वयं अशुद्ध) है। फ़तवा इमाम आज़म रहमतुल्लाहि अलैहि के कथन पर है, हालांकि साहिबैन के कथन को प्राथमिकता दी गई है जैसा कि दुर-ए-मुख़्तार में इब्न अल-शुहना से उद्धृत है। -[1] | इमाम आज़म रहमतुल्लाहि अलैहि का यही कथन है जबकि साहिबैन के नज़दीक यह खंज़ीर (सूअर) की तरह नजिस-ए-ऐन है, फ़तवा इमाम आज़म रहमतुल्लाहि अलैहि के कौल पर है अगरचे साहिबैन के कौल को तरजीह (प्राथमिकता) दी गई है जैसा कि दुर-ए-मुख़्तार में इब्न अल-शुहना से मनकूल है। (त) |

अल्लामा मुहक़्क़िक़ मुहम्मद मुहम्मद मुहम्मद इब्न अमीर अल-हज 'हिलिया' में फ़रमाते हैं: | कुत्ते के नजिस-ए-ऐन न होने को प्राथमिकता प्राप्त है। | कुत्ते के नजिस-ए-ऐन न होने को तरजीह हासिल है। (त) |

उसी में है: | बार-बार गुज़र चुका है कि इसी कथन को प्राथमिकता है।[2] | बारहा गुज़र चुका है कि इसी कौल को तरजीह है। (त) |

यही कथन इमाम सद्र शहीद का मुख़्तार (पसंदीदा) है, | जैसा कि दुर-ए-मुख़्तार की शरह तहतावी में और हिलिया में ज़ख़ीरा के हवाले से शरह तहतावी से उद्धृत है कि कुत्ता नजिस-ए-ऐन नहीं है, सद्र अल-शहीद का मुख़्तार कथन भी यही है।[3] | जैसा कि दुर-ए-मुख़्तार की शरह तहतावी में और हिलिया में ज़ख़ीरा के हवाले से शरह तहतावी से मनकूल है कि कुत्ता नजिस-ए-ऐन नहीं है सद्र-उश-शहीद का मुख़्तार कौल भी यही है। (त) |

उसी में 'तुहफ़तुल फ़ुक़हा' इमाम अलाउद्दीन समरकंदी, 'मुहीत' इमाम रज़ीउद्दीन और 'बदाइ' इमामुल उलमा अबू बक्र मसूद काशानी रहमतुल्लाहि अलैहिम से है: | सही बात यह है कि यह नजिस-ए-ऐन नहीं है।[4] | सही बात यह है कि यह नजिस-ए-ऐन नहीं है। (त) |

उसी में है: | बदाइ' में दूसरे स्थान पर है: "और यह दोनों कथनों में से सत्यता के अधिक निकट है।" समाप्त। अधिकांश मशाइख़ ने इसी मार्ग को अपनाया है।[5] | बदाइ' में दूसरे मुक़ाम पर है कि यह कौल सेहत के ज़ियादा क़रीब है अह् (समाप्त) अक्सर मशाइख़ ने यही राह इख़्तियार की है। (त) |

1. हाशिया अत-तहतावी अलल मराक़ी, कुओं के मुद्दों का खंड, नूर मुहम्मद कारख़ाना कराची, पृष्ठ 21।
2. हिलिया इब्न अमीर अल-हज।
3. हाशिया अत-तहतावी अलद दुर्रुल मुख़्तार, जल अध्याय, दारुल मारिफ़ा बेरुत द्वारा प्रकाशित, 1/114।
4. बदाइ' अस-सनाइ', वास्तविक पवित्रता का खंड, एच.एम. सईद कंपनी कराची द्वारा प्रकाशित, 1/63।
5. बदाइ' अस-सनाइ', मात्रा के वर्णन का खंड आदि, एच.एम. सईद कंपनी कराची द्वारा प्रकाशित, 1/71।

| ھو قول الامام رضی اللہ تعالی عنہ وعندھما نجس العین کالخنزیر والفتوی علی قول الامام وان رجح قولھما کما في الدر عن ابن الشحنۃ -[1] | امام اعظم رحمۃ اللہ کا یہی قول ہے جبکہ صاحبین کے نزدیک یہ خنزیر کی طرح نجس عین ہے، فتوی امام اعظم رحمۃ اللہ کے قول پر ہے اگر چہ صاحبین کے قول کو ترجیح دی گئی ہے جیسا کہ در مختار میں ابن الشحنہ سے منقول ہے۔ (ت) |

علامہ محقق محمد محمد محمد ابن امیر الحاج حلیہ[21] میں فرماتے ہیں: | کون الکلب لیس بنجس العین ھو المرجح۔ | کتّے کے نجس عین نہ ہونے کو ترجیح حاصل ہے۔ (ت) |

اسی میں ہے: | قد سلف مرارا انہ القول الراجح[2] ۔ | بارہا گزر چکا ہے کہ اسی قول کو ترجیح ہے۔ (ت) |

یہی قول امام صدر[22] شہید کا مختار ہے، | کما في الطحطاوی علی الدر وفي الحلیۃ عن الذخیرۃ عن شرح الطحاوی ان الکلب لیس بنجس العین وھو اختیار الصدر الشھید -[3] | جیسا کہ در مختار کی شرح طحطاوی میں اور حلیہ میں ذخیرہ کے حوالے سے شرح طحطاوی سے منقول ہے کہ کتا نجس عین نہیں ہے صدر الشہید کا مختار قول بھی یہی ہے۔ (ت) |

اسی میں تحفہ[23] الفقہاء امام علاء الدین سمرقندی و محیط[24] امام رضی الدین وبدائع امام[25] العلماء ابوبکر مسعود کاشانی رحمہم اللہ تعالٰی سے ہے: | الصحیح انہ لیس بنجس العین -[4] | صحیح بات یہ ہے کہ یہ نجس عین نہیں ہے۔ (ت) |

اسی میں ہے: | وفی موضع آخر من البدائع وھذا اقرب القولین الی الصواب انتھی ومشی علیہ غیر واحد من المشایخ ۔[5] | بدائع میں دوسرے مقام پر ہے کہ یہ قول صحت کے زیادہ قریب ہے اھ اکثر مشائخ نے یہی راہ اختیار کی ہے۔ (ت) |

1 حاشیۃ الطحطاوی علی المراقی فصل فی مسائل الآبار نور محمد کارخانہ کراچی ص ۲۱ 2 حلیہ ابن امیر الحاج 3 حاشیۃ الطحطاوی علی الدر المختار باب المیاہ مطبوعہ دار المعرفۃ بیروت ۱۱۴/۱ 4 بدائع الصنائع فصل فی طہارۃ الحقیقیۃ مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۶۳/۱ 5 بدائع الصنائع فصل اما بیان المقدار الذی الخ مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۷۱/۱

Fatawa Razawiya Volume 4

Allama Ibrahim Halabi states in "Ghunyah Sharh Munyah":

(Arabic Text)	(Urdu Translation)
الذي تقتضيه الدراية عدم نجاسة عينه لما قال صاحب الهداية ولعدم الدليل على نجاسة العين والاصل عدمها والدليل الدال على نجاسة سؤره لا يقتضي نجاسة عينه 1۔	Reasoning dictates that its physical being (the dog) is not impure, as stated by the author of al-Hidayah. Also, there is no proof of the impurity of its essence; the default state is the absence [of impurity]. The evidence pointing to the impurity of its leftover (saliva) does not necessitate the impurity of its essence. (T)

It is mentioned in "Sagheeri":

(Arabic Text)	(Urdu Translation)
جرو الكلب اذا جلس عليه بنفسه فعلى الرواية الصحيحة ينبغي ان تجوز صلاته لانه غير حاصل للنجاسة 2 اه ملخصا۔	If a puppy sits on a person (praying) by itself, then according to the correct narration, his prayer should be valid because it is not carrying impurity. (T)

Allama Shurunbulali states in "Taysir al-Maqasid Sharh Nazm al-Faraid":

(Arabic Text)	(Urdu Translation)
الكلب ليس نجس العين في الاصح 3۔	According to the most correct opinion, the dog is not inherently impure. (T)

It is stated in "Hashiyah al-Tahtawiyah 'ala al-Durr":

(Arabic Text)	(Urdu Translation)
على القول بان الكلب ليس بنجس العين لا ينجسه اذا لم يصل فمه الماء وهو الاصح 4۔	Based on the saying that a dog is not inherently impure, it does not contaminate water (etc.) as long as its mouth does not touch the water. And this is more correct. (T)

In the same source, from "Kitab al-Tajnis wal-Mazid" by Imam Burhanuddin al-Farghani: "It is the most correct opinion." (This is more correct. T) In "Bazzaziyah", it is stated similarly: "It is the correct opinion." (That is correct. T). Also mentioned in "al-Wajiz" citing "al-Jami' al-Saghir".

Footnotes: 1. Ghunyat al-Mustamli, Chapter on Wells, Published by Suhail Academy Lahore, p. 159. 2. Sagheeri Sharh Munyat al-Musalli, Chapter on Leftovers, Published by Mujtabai Delhi, p. 7, 10. 3. Taysir al-Maqasid Sharh Nazm al-Faraid. 4. Hashiyah al-

Tahtawi 'ala al-Durr, Chapter on Water, Published by Dar al-Ma'rifah Beirut, 1/711. 5. Hashiyah al-Tahtawi 'ala al-Durr, Chapter on Water, Published by Dar al-Ma'rifah Beirut, 1/112. 6. Fatawa Bazzaziyah 'ala Hashiyah Fatawa Hindiyyah, Sixth Volume on Removing Impurities, Noorani Kutub Khana Peshawar, 2/41.

फ़तावा रज़विया जिल्द 4

अल्लामा इब्राहिम हलबी "ग़ुन्या शरह मुन्या" में फरमाते हैं:

(अरबी पाठ)	(उर्दू अनुवाद)
الذي تقتضيه الدراية عدم نجاسة عينه لما قال صاحب الهداية ولعدم الدليل على نجاسة العين والاصل عدمها والدليل الدال على نجاسة سؤره لا يقتضي نجاسة عينه 1۔	विवेक की मांग यह है कि इसका अस्तित्व (कुत्ते का शरीर) नापाक नहीं है जैसा कि साहिबे हिदाया ने फरमाया। इसके अलावा, इसकी ज़ात (अस्तित्व) की अशुद्धता पर कोई प्रमाण नहीं है; मूल स्थिति अशुद्धता का अभाव है। वह प्रमाण जो इसके जूठे(लार) के नापाक होने पर संकेत करता है, वह इसके वजूद के नापाक होने की मांग नहीं करता। (त)

"सगीरी" में कहा गया है:

(अरबी पाठ)	(उर्दू अनुवाद)
جرو الكلب اذا جلس عليه بنفسه فعلى الرواية الصحيحة ينبغي ان تجوز صلاته لانه غير حاصل للنجاسة 2 اه ملخصا۔	अगर इस (नमाजी) पर कुत्ते का बच्चा खुद-ब-खुद बैठ जाए, तो सही रिवायत के अनुसार उचित है कि उसकी नमाज़ जायज़ हो क्योंकि वह नजासत (गंदगी) उठाए हुए नहीं है। (त)

अल्लामा शरुनबुलाली "तयसीर अल-मक़ासिद शरह नज़्म अल-फ़राइद" में फरमाते हैं:

(अरबी पाठ)	(उर्दू अनुवाद)
الكلب ليس نجس العين في الاصح 3۔	सबसे सही कथन के अनुसार कुत्ता नजिसुल ऐन (जन्मजात अशुद्ध) नहीं है। (त)

"हाशिया तहतावी अला अद-दुर" में है:

(अरबी पाठ)	(उर्दू अनुवाद)
على القول بان الكلب ليس بنجس العين لا ينجسه اذا لم يصل فمه الماء وهو الاصح 4۔	इस कथन के आधार पर कि कुत्ता नजिसुल ऐन नहीं है, वह पानी (आदि) को तब तक नापाक नहीं करेगा जब तक कि उसका मुँह पानी तक न पहुँचे, यही अधिक सही है। (त)

उसी में इमाम बुरहानुद्दीन अल-फरग़ानी की "किताब अल-तजनीस वल-मजीद" से है: "यही अधिक सही है।" (यही अधिक सही है। त) "बज़्ज़ाज़िया" में उसी से इस प्रकार है: "वही सही है।" (वही सही है। त)। साथ ही "अल-वजीज़" में "जामे' सगीर" के हवाले से।

पाद-टिप्पणियाँ (फुटनोट्स): 1. ग़ुन्यत अल-मुस्तमली, कुओं का अध्याय, सुहैल अकादमी लाहौर, पृष्ठ 159। 2. सगीरी शरह मुन्यत अल-मुसल्ली, जूठे बर्तनों का अध्याय, मुजतबाई दिल्ली, पृष्ठ 7, 10। 3. तयसीर अल-मक़ासिद शरह नज़्म अल-फ़राइद। 4. हाशिया अल-तहतावी अला अद-दुर, पानी का अध्याय, दार अल-मआरिफ़ा बेरूत, 1/711। 5. हाशिया अल-तहतावी अला अद-दुर, पानी का अध्याय, दार अल-मआरिफ़ा बेरूत, 1/112। 6. फ़तावा बज़्ज़ाज़िया अला हाशिया फ़तावा हिन्दिया, अशुद्धियों को दूर करने पर छठा भाग, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 2/41।

فتاوی رضویہ جلد چہارم

علامہ ابراہیم حلبی غنیہ ۲۶ شرح منیہ میں فرماتے ہیں:

(عربی متن) **(اردو ترجمہ)**

الذي تقتضيه الدراية عدم نجاسة عينه لما قال صاحب الهداية ولعدم الدليل على نجاسة العين والاصل عدمها والدليل الدال على نجاسة سؤره لا يقتضي نجاسة عينه ۱ ۔

درایت کا تقاضہ یہ ہے کہ اس کا عین ناپاک نہیں جیسا کہ صاحب ہدایہ نے فرمایا نیز اس کے نجس ہونے پر کوئی دلیل نہیں اور اصل چیز عدم ہے اور وہ دلیل جو اس کے جھوٹے کے ناپاک ہونے پر دلالت کرتی ہے وہ اس کے نجس ہونے کی مقتضی نہیں ہے۔ (ت)

صغیری ۲۷ میں فرمایا:

(عربی متن) **(اردو ترجمہ)**

جرو الكلب اذا جلس عليه بنفسه فعلى الرواية الصحيحة ينبغي ان تجوز صلاته لانه غير حاصل للنجاسة ۲ اه ملخصا۔

اگر اس (نمازی) پر کتے کا بچہ خود بخود بیٹھ جائے تو صحیح روایت کے مطابق مناسب ہے کہ اس کی نماز جائز ہو کیونکہ وہ نجاست اٹھائے ہوئے نہیں ہے اہ ملخصا (ت)

علامہ شرنبلالی تیسیر ۲۸ المقاصد شرح نظم الفرائد میں فرماتے ہیں:

(عربی متن) **(اردو ترجمہ)**

الكلب ليس نجس العين في الاصح ۳۔ اصح قول کے مطابق کتا نجس عین نہیں ہے۔ (ت)

حاشیہ طحطاویہ علی الدر میں ہے:

(عربی متن) **(اردو ترجمہ)**

علی القول بان الکلب لیس بنجس اس قول کی بنیاد پر کہ کتا نجس عین نہیں ہے وہ پانی (وغیرہ) العین لا ینجسه اذا لم یصل فمه الماء کو ناپاک نہیں کرے گا جب تک اس کا منہ پانی تک نہ پہنچے، وھو الاصح ۴۔ یہی زیادہ صحیح ہے۔ (ت)

اُسی میں کتاب التجنیس ۳۰ والمزید للامام برہان الدین الفرغانی سے ہے: انہ الاصح ۵ (یہی زیادہ صحیح ہے۔ ت) بزازیہ ۳۱ میں اسی سے یوں ہے: ھو الصحیح ۶ (وہی صحیح ہے۔ ت) نیز وجیز میں جامع صغیر ۳۲

حواشی: 1. غنیۃ المستملی فصل فی البئر مطبوعہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۵۹ 2. صغیری شرح منیہ المصلی فصل فی الآسار مطبوعہ مجتبائی دہلی ص ۷، ۱۰ 3. تیسر المقاصد شرح نظم الفرائد 4. حاشیۃ الطحطاوی علی الدر باب المیاہ مطبوعہ دار المعرفۃ بیروت ۱/ ۷۱۱ 5. حاشیۃ الطحطاوی علی الدر باب المیاہ مطبوعہ دار المعرفۃ بیروت ۱/ ۱۱۲ 6. فتاوی بزازیہ علی حاشیۃ فتاوی ہندیہ السادس فی ازالۃ الحقیقیۃ، نورانی کتب خانہ پشاور ۲/ ۴۱

Fatawa Razawiyya Volume 4

From it:

[Arabic]: Its skin is purified by tanning according to us.[1] [Urdu]: According to us, its (dog's) skin becomes pure through tanning. (T)

In the same source, from Nisab 33:

[Arabic]: If the puppy's mouth is tied, it (prayer) is permissible, i.e., the prayer of the carrier.[2] [Urdu]: If a puppy's mouth is tied, the prayer is permissible, i.e., the prayer of the person carrying it is valid. (T)

In Allama Anqarwi's collection 34, it is stated: "Its tooth is not impure."[3] (T)

In the same source, citing Qunyah 35 from Imam Ajall Abu Nasr Dabusi 36:

[Arabic]: The mud of the street and places where dogs tread are pure unless visible impurity is seen. He said: This is correct in terms of narration and is close to what is explicitly stated by our companions.[4] [Urdu]: The mud of the path and the walkway of dogs in it is pure, except when one sees the actual impurity in it. He said: From the perspective of narration, this is the correct view, and it is close to the explicit statements of our companions. (T)

Similarly, in Tariqah Muhammadiyah 37 from Majma-ul-Fatawa 38. In Khulasah 39:

[Arabic]: If someone prayed while around their neck was a necklace containing something from dogs or wolves, their prayer is permissible.[5] [Urdu]: If a person prayed and around their neck was a necklace which had something from a dog or a wolf (e.g., hair etc.), then their prayer is valid. (T)

Similarly, the correction, preference, certainty, and reliance on this refined school of thought by the commentators of Hidaya such as...

I.T. Majlis of Dawatelslami

Footnotes: 1. Fatawa Bazzaziyah on the margin of Fatawa Hindiyyah, Section Six on removing real impurity, Noorani Kutub Khana Peshawar, 4/21 2. Fatawa Bazzaziyah on the margin of Fatawa Hindiyyah, Section Seven on impurities, Noorani Kutub Khana Peshawar, 4/21 3. Fatawa Anqarwiyyah, Book of Purification, Dar al-Isha'at al-Arabiyyah, Kandahar Afghanistan, 4/1 4. Fatawa Anqarwiyyah, Book of Purification, Dar al-Isha'at al-Arabiyyah, Kandahar Afghanistan, 4/1 5. Khulasat al-Fatawa, Chapter Seven, Printed by Naval Kishore Lucknow, 1/24

फतावा रज़विया जिल्द 4

इसमें से है:

[अरबी]: हमारे नज़दीक इसकी खाल दबात (चमड़ा पकाने की प्रक्रिया) से पाक हो जाती है।[1] [उर्दू]: हमारे नज़दीक इसकी (कुत्ते की) खाल दबात से पाक हो जाती है। (त)

इसी में निसा़ब 33 से है:

[अरबी]: अगर कुत्ते के बच्चे का मुँह बंधा हुआ हो तो (नमाज़) जाइज़ है, यानी उसे उठाने वाले की नमाज़।[2] [उर्दू]: अगर कुत्ते के बच्चे का मुँह बंधा हुआ हो तो (नमाज़) जाइज़ है, यानी उसे उठाने वाले की नमाज़ जाइज़ है। (त)

मजमूआ अल्लामा 34 अ़नक़रवी में है: "उसका दांत नापाक नहीं है।"[3] (त)

इसी में ब-हवाला.क़ुनिया 35 इमाम अजल अबू नस्र दबूसी 36 से है:

[अरबी]: रास्ते की कीचड़ और उसमें कुत्तों की गुज़रगाह पाक है मगर जब उसमें ऐन नजा़सत (गंदगी) देखे। फ़रमाया रिवायत के एतबार से यही सही है और हमारे असहाब की तसरीह (स्पष्टीकरण) के क़रीब है।[4] [उर्दू]: रास्ते का कीचड़ और उसमें कुत्तों की गुज़रगाह पाक है मगर जब उसमें ऐन नजा़सत देखे। फ़रमाया रिवायत के एतबार से यही सही है और हमारे असहाब की तसरीह के क़रीब है। (त)

इसी तरह तरीक़ा-ए-मुहम्मदिया 37 में मज्मउल फ़तावा 38 से है। खुलासा 39 में है:

[अरबी]: अगर किसी आदमी ने नमाज़ पढ़ी और उसकी गर्दन में एक हार था जिसमें कुत्ते या भेड़िये से कोई चीज़ थी, तो उसकी नमाज़ जाइज़ है।[5] [उर्दू]: अगर किसी आदमी ने नमाज़ पढ़ी और उसकी गर्दन में एक हार था जिसमें कुत्ते या भेड़िये से कोई चीज़ थी (मसलन बाल वगैरह) तो उसकी नमाज़ जाइज़ है। (त)

इसी तरह इस मज़हब-ए-मुहज़्ज़ब की तस़हीह व तरजीह और इस पर जज़्म व एतेमाद बिना व तफ़रीह शुर्रा़-ए-हिदाया मिस़्ल...

दावत-ए-इस्लामी की आई.टी. मज्लिस

फ़ुटनोट्स: 1. फतावा बज़ाज़िया अला हाश्या फतावा हिन्दिया, अस-साहिस फ़ी इज़ालातुल हक़ीक़िया, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 4/21 2. फतावा बज़ाज़िया अला हाश्या फतावा हिन्दिया, अस-साबिअ् फ़ी अन-नजिस, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 4/21 3. फतावा अनक़रविया, किताबुत्तहारह, दारुल इशाअ़तुल अरबिया, कंधार अफ़गानिस्तान, 4/1 4. फतावा अनक़रविया, किताबुत्तहारह, दारुल इशाअ़तुल अरबिया, कंधार अफ़गानिस्तान, 4/1 5. खुलासातुल फतावा, अल-फसलुस साबिअ़, मतबुआ नवल किशोर लखनऊ, 1/24

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم

سے ہے:

[عربی]: جلده یطهر بالدباغ عندنا[1]۔ [اردو]: ہمارے نزدیک اس کا (کتے کا) چمڑا دباغت سے پاک ہو جاتا ہے۔ (ت)

اُسی میں نصاب ۳۳ سے ہے:

[عربی]: ان کان الجرو مشدود الفم تجوز اه یعنی صلاة حاملہ[2]۔ [اردو]: اگر کتے کے بچے کا منہ بندھا ہوا ہو تو (نماز) جائز ہے اھ یعنی اُسے اٹھانے والے کی نماز جائز ہے۔ (ت)

مجموعہ علامہ ۳۴ انقروی میں ہے: سنہ لیس بنجس[3] (اس کا دانت ناپاک نہیں ہے۔ ت)

اسی میں بحوالہ قنیہ ۳۵ امام اجل ابونصر دبوسی ۳۶ سے ہے:

[عربی]: طین الشارع ومواطئ الکلاب فیہ طاهر الا اذا رأی عین النجاسة قال و هو الصحیح من حیث الروایة وقریب المنصوص عن اصحابنا[4]۔ [اردو]: راستے کا کیچڑ اور اس میں کتوں کی گزرگاہ پاک ہے مگر جب اس میں عین نجاست دیکھے۔ فرمایا روایت کے اعتبار سے یہی صحیح ہے اور ہمارے اصحاب کی تصریح کے قریب ہے۔ (ت)

اسی طرح طریقہ محمدیہ ۳۷ میں مجمع الفتاوی ۳۸ سے ہے۔ خلاصہ ۳۹ میں ہے:

[عربی]: لو صلی و فی عنقه قلادة فیها من کلاب او ذئب تجوز صلاتہ[5]۔ [اردو]: اگر کسی آدمی نے نماز پڑھی اور اس کی گردن میں ایک ہار تھا جس میں کتے یا بھیڑیے سے کوئی چیز تھی (مثلاً بال وغیرہ) تو اس کی نماز جائز ہے (ت)

اسی طرح اس مذہب مہذب کی تصحیح و ترجیح اور اس پر جزم و اعتماد بنا و تفریح شراحِ ہدایہ مثل

I.T. Majlis of Dawatelslami

حواشی: 1. فتاوىٰ بزازیہ علی حاشیہ فتاوىٰ ہندیہ، السادس فی ازالۃ الحقیقیۃ، نورانی کتب خانہ پشاور ۲۱/۴ 2. فتاوىٰ بزازیہ علی حاشیہ فتاوىٰ ہندیہ، السابع فی النجس، نورانی کتب خانہ پشاور ۲۱/۴ 3. فتاوىٰ انقرویہ، کتاب الطہارۃ، دار الاشاعۃ العربیۃ، قندھار افغانستان ۱/۴ 4. فتاوىٰ انقرویہ کتاب الطہارۃ، دار الاشاعۃ العربیۃ، قندھار افغانستان ۱/۴ 5. خلاصۃ الفتاوی، الفصل السابع، مطبوعہ نولکشور لکھنؤ، ۲۴/۱

Fatawa Razawiyya Volume Four

Proven from Allama 40 Qawam al-Din Kaki and Allama 41 Saghnaqi, author of Nihaya, etc., and 'Uqd al-Fawa'id Sharh Nazm al-Fara'id 42 by Allama ibn al-Shahna, and Imam Isbijabi commentator of Mukhtasar Tahawi 43, and Dhakhira 44, and Tawshih Sharh al-Hidaya 45 by Allama al-Siraj al-Hindi, and Tajrid 46, and Umdat al-Mufti 47, etc. In Bahr al-Ra'iq, it is stated:

[Arabic] Corrected in al-Hidayah the purity of its physical body, and its commentators like al-Itqani, al-Kaki, and al-Saghnaqi followed it 1. [Urdu Translation] In Hidayah, the purity of its physical being has been validated, and its commentators like al-Itqani, al-Kaki, and al-Saghnaqi followed it. (T)

In the same source:

[Arabic] It has been explicitly stated in 'Uqd al-Fawa'id Sharh Manzuma Ibn Wahban that the fatwa is on its physical purity 2. [Urdu Translation] In the poetic commentary of Ibn Wahban, 'Uqd al-Fawa'id, it has been specified that the fatwa is on its physical purity. (T)

In the same source:

[Arabic] Qadhi al-Isbijabi said: As for the dog, it potentially accepts slaughter (Dhakah) and tanning in the manifest narration (Zahir al-Riwayah), contrary to what was narrated by al-Hasan 3. [Urdu Translation] Qadhi Isbijabi said that according to the manifest narration, the dog is capable of being slaughtered and tanned; this is contrary to the narration of Hasan. (T)

In the same source:

[Arabic] Mentioned in al-Siraj al-Wahhaj, attributed to al-Dhakhira: The teeth of a dog are pure, and the teeth of a human are impure, because a dog can be slaughtered, unlike a pig or a human. End quote. It is not hidden that all of this is based on the opinion of its physical purity because they reasoned it by saying it becomes pure through slaughter 4. [Urdu Translation] In al-Siraj al-Wahhaj, with reference to al-Dhakhira, it was mentioned that a dog's teeth are pure while a human's teeth are impure because a dog can be slaughtered, unlike a pig or a human. It is not hidden that all these points are based on the opinion of its physical purity, because they explained the reason as it becoming pure through slaughter. (T)

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Book of Purity, HM Saeed Company Karachi 1/101

2. Al-Bahr al-Ra'iq, Book of Purity, HM Saeed Company Karachi 1/101
3. Al-Bahr al-Ra'iq, Book of Purity, HM Saeed Company Karachi 1/102
4. Al-Bahr al-Ra'iq, Book of Purity, HM Saeed Company Karachi 1/103

फ़तावा रज़विया, खंड चार

अल्लामा 40 क़वाम अल-दीन काकी और अल्लामा 41 स़नाक़ी (निहाया के लेखक) आदि, और 'उक़्द अल-फ़वाइद शरह नज़्म अल-फ़राइद' 42 अल्लामा इब्न अल-शहनह द्वारा, और इमाम असबीजाबी (मुख्तसर तहावी 43 के टीकाकार), और ज़ख़ीरा 44, और 'तौशीह शरह अल-हिदाया' 45 अल्लामा अल-सिराज अल-हिंदी द्वारा, और तज्रीद 46, और उम्दत अल-मुफ़्ती 47 आदि से सिद्ध है। बहर अल-राइक़ में उल्लेख है:

[अरबी] हिदाया में इसकी शारीरिक शुद्धता को प्रमाणित किया गया है और इसके टीकाकारों जैसे इत्क़ानी, काकी और स़नाक़ी ने इसका अनुसरण किया है 1। [उर्दू अनुवाद] हिदाया में इसकी शारीरिक शुद्धता को सही माना गया है, और इसके टीकाकारों जैसे इत्क़ानी, काकी और स़नाक़ी ने भी इसी का अनुसरण किया है। (त)

उसी में है:

[अरबी] इब्न वहबान की पद्यात्मक रचना की टीका 'उक़्द अल-फ़वाइद' में यह स्पष्ट किया गया है कि फ़तवा इसकी शारीरिक शुद्धता पर आधारित है 2। [उर्दू अनुवाद] इब्न वहबान की पद्यात्मक टीका 'उक़्द अल-फ़वाइद' में यह स्पष्ट किया गया है कि फ़तवा इसकी शारीरिक शुद्धता पर आधारित है। (त)

उसी में है:

[अरबी] क़ाज़ी असबीजाबी ने कहा: जहाँ तक कुत्ते का सवाल है, ज़ाहिर रिवायत में वह वध (ज़बह) और चर्मशोधन की संभावना रखता है, जो कि हसन द्वारा वर्णित रिवायत के विपरीत है 3। [उर्दू अनुवाद] क़ाज़ी असबीजाबी ने कहा कि ज़ाहिर रिवायत के अनुसार कुत्ता वध (ज़बह) और चर्मशोधन (कमाना) के योग्य है; यह हसन की रिवायत के विपरीत है। (त)

उसी में है:

[अरबी] अल-सिराज अल-वहाज में अल-ज़ख़ीरा के हवाले से उल्लेख किया गया है: कुत्ते के दांत शुद्ध हैं और मनुष्य के दांत अशुद्ध हैं क्योंकि कुत्ते पर वध लागू होता है, सुअर और मनुष्य के विपरीत। यह बात छिपी नहीं है कि यह सब इसकी शारीरिक शुद्धता के कथन पर आधारित है क्योंकि इसका कारण यह बताया गया है कि वह वध से शुद्ध हो जाता है 4। [उर्दू अनुवाद] अल-सिराज अल-वहाज

में, अल-ज़ख़ीरा के संदर्भ से उल्लेख किया गया है कि कुत्ते के दांत शुद्ध हैं जबकि मनुष्य के दांत अशुद्ध हैं क्योंकि कुत्ते का वध किया जा सकता है, जबकि सुअर या मनुष्य का नहीं। यह बात स्पष्ट है कि ये सभी विवरण इसकी शारीरिक शुद्धता के मत पर आधारित हैं, क्योंकि उन्होंने इसका कारण यह बताया है कि वह वध के साथ शुद्ध हो जाता है। (त)

1. बहर अल-राइक़, किताब अल-तहारत, एचएम सईद कंपनी कराची 1/101
2. बहर अल-राइक़, किताब अल-तहारत, एचएम सईद कंपनी कराची 1/101
3. बहर अल-राइक़, किताब अल-तहारत, एचएम सईद कंपनी कराची 1/102
4. बहर अल-राइक़, किताब अल-तहारत, एचएम सईद कंपनी कराची 1/103

पृष्ठ 761 का 422

فتاوی رضویہ جلد چہارم

علامہ ۴۰ قوام الدین کاکی وعلامہ ۴۱ سغناقی صاحبِ نہایہ وغیر ہما وعقد الفوائد شرح نظم الفرائد ۴۲ للعلامۃ ابن الشحنۃ و امام اسبیجابی شارح مختصر طحاوی ۴۳ و ذخیرہ ۴۴ وتوشیح شرح الہدایہ ۴۵ للعلامۃ السراج الہندی و تجرید ۴۶ و عمدۃ المفتی ۴۷ وغیرہما سے ثابت۔ بحر الرائق میں ہے :

صحح في الهداية طهارة عينه وتبعه شارحوها كالاتقاني والكاكى والسغناقٰى ۱۔ | ہدایہ میں اس کی ذاتی طہارت کو صحیح قرار دیا گیا ہے اور اس کے شارحین جیسے اتقانی، کاکی اور سغناقی نے بھی اسی کی پیروی کی ہے۔ (ت)

اُسی میں ہے:

وقد صرح في عقد الفوائد شرح منظومة ابن وهبان بأن الفتوى على طهارة عينه ۲۔ | ابن وہبان کی منظوم شرح عقد الفوائد میں تصریح کی گئی ہے کہ فتویٰ اس کی ذاتی طہارت پر ہے۔ (ت)

اُسی میں ہے:

قال القاضي الاسبيجابي واما الكلب يحتمل الذكاة والدباغة في ظاهر الرواية خلافا لماروي والحسن ۳۔ | قاضی اسبیجابی نے کہا ظاہر روایت کے مطابق کتا ذبح اور دباغت کا احتمال رکھتا ہے یہ حسن کی روایت کے خلاف ہے (ت)

اُسی میں ہے:

ذكر في السراج الوهاج معزيا الى الذخيرة اسنان الكلب طاهرة واسنان الآدمى نجسة لان الكلب يقع عليه الذكاة بخلاف الخنزير والأدمى اه ولا يخفى ان هذا كله على القول بطهارة عينه لانه علله بكونه يطهر

بالذکاۃ ۴۔ | السراج الوہاج میں، ذخیرہ کے حوالے سے ذکر کیا گیا کہ کتے کے دانت پاک ہیں اور آدمی کے دانت ناپاک ہیں کیونکہ کتے کو ذبح کیا جاسکتا ہے نہ کہ خنزیر اور آدمی کو اھ مخفی نہیں کہ یہ تمام باتیں اس کی ذاتی طہارت کے قول کی بنیاد پر ہیں کیوں کہ انہوں نے اس کی علت یہ بیان کی ہے کہ وہ ذبح کے ساتھ پاک ہو جاتا ہے۔ (ت)

۱ البحر الرائق ، کتاب الطھارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۰۱ ۲ البحر الرائق کتاب الطہارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۰۱ ۳ البحر الرائق کتاب الطہارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۰۲ ۴ البحر الرائق کتاب الطہارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۰۳

Fatawa Razawiyya Volume 4 In it, it is stated:

[Arabic Text]: Al-Siraj al-Hindi mentioned in the commentary of al-Hidayah, referring to al-Tajrid, that if a person destroys a dog, he is liable for it, and it is permissible to sell it and own it. In 'Umdat al-Mufti, it says hiring a dog is permissible. Urdu Explanation: Al-Siraj al-Hindi mentioned in the commentary of al-Hidayah, attributing it to al-Tajrid, that if a person kills someone's dog, he will be liable, and its sale and making it property is permissible. In 'Umdat al-Mufti, it is stated that taking a dog on rent is permissible. (T)

In its marginalia, Manhat al-Khaliq, quoting from Nahr al-Faiq:

[Arabic Text]: I say, the view that its physical essence is pure is more correct. Summarized. Urdu Explanation: The view that its physical essence is pure is indeed more correct. Summarized. Also in Mirqat, regarding the Hadith 'When the skin is tanned, it becomes pure' (When the skin is tanned, it becomes pure. T).

Allama Ibn (50) Malik narrated:

[Arabic Text]: This, in its generality, is an argument against al-Shafi'i regarding his statement that dog skin does not become pure by tanning. The human was exempted from its generality out of honor for him, and the pig due to the impurity of its physical essence.

These are fifty; although Hidayah, Durr al-Mukhtar, Itqani, Maraqi, and Nahr were also mentioned incidentally, they were already counted in the discourse of Zaid, so they were not counted here.

[Arabic Text]: We did not count Siraj al-Wahhaj because, although it narrated from al-Dhakhirah what preceded, it mentioned that the dog's skin is impure and its hair is pure, which is the chosen view. This is a third view mentioned by al-Walwaliji and others, and relied upon by the Jurist (Al-Faqih). Urdu Explanation: We do not count Siraj al-Wahhaj because although it narrated from al-Dhakhirah as mentioned before, it stated that the dog's skin is impure and its hair is pure. This is the chosen view. This is a third view mentioned by Walwaliji and others, and relied upon by the Jurist.

---

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, published by H.M. Saeed Company Karachi, 1/103
2. Manhat al-Khaliq 'ala al-Bahr, Kitab al-Taharah, published by H.M. Saeed Company Karachi, 1/102

3. Mirqat Sharh Mishkat, section one of the chapter on purification from impurities, Maktabah Imdadiyya Multan 2/70
4. Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, published by H.M. Saeed Company Karachi, 1/102

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी इसमें है:

[अरबी पाठ]: अल-सिराज अल-हिंदी ने हिदाया की शरह में तजरीद के हवाले से उल्लेख किया है कि यदि कोई व्यक्ति कुत्ते को नष्ट कर देता है, तो वह उसका उत्तरदायी होगा, और उसे बेचना और उसका स्वामी बनाना जायज़ है। 'उमदतुल मुफ़्ती' में है कि कुत्ते को किराए पर लेना जायज़ है। उर्दू स्पष्टीकरण: अल-सिराज अल-हिंदी ने हिदाया की शरह में तजरीद की तरफ मंसूब करते हुए उल्लेख किया है कि अगर कोई व्यक्ति किसी के कुत्ते को मार दे तो वह ज़ामिन (उत्तरदायी) होगा और उसका बेचना और उसका मालिक बनाना जायज़ है। उमदतुल मुफ़्ती में है कि कुत्ता उजरत (किराए) पर लेना जायज़ है। (त)

इसके हाशिये 'मन्हतुल ख़ालिक' में 'नहरुल फ़ाइक़' से है:

[अरबी पाठ]: मैं कहता हूँ, उसके ऐन (सार) के पाक होने का कथन ही अधिक सही है। सारांश। उर्दू स्पष्टीकरण: उसके ताहिर-ए-ऐन (पवित्र सार) होने का कौल ही ज़्यादा सही है। ख़ुलासा। मिरक़ात में भी हदीस 'इज़ा दुबिग़ल इहाब फ़क़द तहुर' (जब चमड़े को दफ़ा किया जाए (रंगा जाए) तो वह पाक हो जाता है। त)

अल्लामा इब्न (50) मालिक से नकल फ़रमाया:

[अरबी पाठ]: यह अपनी व्यापकता में इमाम शाफ़ई के खिलाफ एक दलील है उनके इस कथन में कि कुत्ते की खाल दफ़ा (टैनिंग) से पाक नहीं होती। उसकी व्यापकता से मनुष्य को उसके सम्मान के कारण और सुअर को उसके ऐन (सार) के नापाक होने के कारण अलग रखा गया है।

ये पचास हैं, इनमें अगरचे ज़िम्नन (प्रासंगिक रूप से) हिदाया, दुर्रे मुख्तार, इत्क़ानी, मराक़ी और नहर का भी ज़िक्र आया मगर ये कलाम-ए-ज़ैद में शुमार हो चुकी थीं लिहाज़ा इन्हें शुमार नहीं किया।

[अरबी पाठ]: हमने सिराजुल वहाज को शुमार नहीं किया क्योंकि अगरचे उसने ज़ख़ीरा से वह नकल किया जो पहले गुज़र चुका है, लेकिन उसने उल्लेख किया कि कुत्ते की खाल नापाक है और उसके बाल पाक हैं, और यही पसंदीदा मत है। यह तीसरा कौल है जिसका ज़िक्र वलवालजी और अन्यों ने किया है और फ़क़ीह ने इस पर भरोसा किया है। उर्दू स्पष्टीकरण: हम सिराज वहाज को शुमार नहीं करते क्योंकि अगरचे उसने ज़ख़ीरा से नकल किया जैसा कि गुज़र गया लेकिन उसने ज़िक्र किया कि

कुत्ते का चमड़ा नापाक और उसके बाल पाक हैं। यही मुख़्तार (चुना हुआ) है। यह तीसरा कौल है जिसे वलवालजी वगैरह ने ज़िक्र किया और फ़क़ीह ने इस पर एतिमाद किया।

---

1. अल-बहुर्राइक़, किताबुत तहारत, मतबुआ एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/103
2. मन्हतुल ख़ालिक अलल बहुर, किताबुत तहारत, मतबुआ एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/102
3. मिरक़ात शरह मिश्क़ात, फ़स्ल अव्वल बाब ततहीरुल नजासात, मक्तबा इमदादिया मुल्तान 2/70
4. अल-बहुर्राइक़, किताबुत तहारत, मतबुआ एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/102

पृष्ठ 423/761

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم اسی میں ہے:

ذکر السراج الھندی فی شرح الھدایۃ معزیا الی التجرید ان الکلب لو اتلفہ انسان ضمنہ ویجوز بیعہ وتملیکہ وفی عمدۃ المفتی لو استأجر الکلب یجوز - السراج الہندی نے ہدایہ کی شرح میں تجرید کی طرف منسوب کرتے ہوئے ذکر کیا کہ اگر کوئی شخص کسی کتے کو مار دے تو ضامن ہوگا اور اس کا بیچنا اور اس کا مالک بنانا جائز ہے۔ عمدۃ المفتی میں ہے کتا اجرت پر لینا جائز ہے۔ (ت)

اس کے حاشیہ منحۃ الخالق میں نہر الفائق سے ہے:

اقول بطہارۃ عینہ ھو الاصح اھ ملخصا۔ اس کے طاہر عین ہونے کا قول ہی زیادہ صحیح ہے اھ تلخیص، مرقاۃ میں نیز حدیث اذا دبغ الاھاب فقد طھر (جب چمڑے کو دباغت دی جائے تو وہ پاک ہو جاتا۔ ت)

علامہ ابن (۵۰) ملک سے نقل فرمایا:

ھذا بعمومہ حجۃ علی الشافعی فی قولہ جلد الکلب لا یطھر بالدباغ واستثنی من عمومہ الآدمی تکریما لہ والخنزیر لنجاسۃ عینہ - یہ (حدیث) اپنے عموم کے ساتھ امام شافعی رحمہ اللہ کے اس قول میں کہ کتے کا چمڑا دباغت سے پاک نہیں ہوتا ان کے خلاف حجت ہے اس کے عموم کی وجہ سے آدمی کو اس کی عزت واحترام کے پیش نظر اور خنزیر کو اس کے نجس عین ہونے کی وجہ سے مستثنی کیا گیا ہے۔ (ت)

یہ پچاس ہیں ان میں اگرچہ ضمناً ہدایہ ودرمختار واتقانی ومراقی ونہر کا بھی ذکر آیا مگر یہ کلام زید میں معدود ہو چکی تھیں لہذا انہیں شمار نہ کیا۔

وانما لم نعد السراج الوهاج لانہ وان نقل عن الذخیرۃ ماملر لکنہ ذکر ان جلد الکلب نجس وشعرہ طاہر ھو المختار اھ وھذا قول ثالث ذکرہ الوالوالجی وغیرہ واعتمدہ الفقیہ ہم سراج وہاج کو شمار نہیں کرتے کیونکہ اگرچہ اس نے ذخیرہ سے نقل کیا جیسا کہ گزر گیا لیکن اس نے ذکر کیا کہ کتے کا چمڑا ناپاک اور اس کے بال پاک ہیں۔ یہی مختار ہے اھ یہ تیسرا قول ہے جسے ولوالجٰی وغیرہ نے ذکر کیا اور

1۔ البحر الرائق کتاب الطہارۃ مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۰۳ 2۔ منحۃ الخالق علی البحر، کتاب الطہارۃ، مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی، ۱/ ۱۰۲ 3۔ مرقاۃ شرح مشکوۃ فصل اول من باب تطہیر النجاسات مکتبہ امدادیہ ملتان ۲/ ۷۰ 4۔ البحر الرائق کتاب الطہارۃ مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی، ۱/ ۱۰۲

Fatawa Rizwia, Volume 4

Jurist Abu al-Layth relied on this in his Fatawa and narrated in 'al-Uyun' from Imam Abu Yusuf (may Allah have mercy on him) that if a dog enters water and shakes itself, and splashes fall on a garment, it will make the garment impure. However, if rain falls on it, the garment will not be ruined, because in the first case, the water reached its skin, and its skin is impure, while in the second case, the water reached its hair, and its hair is pure.

This does not prove that those who claim it is 'Najis al-Ayn' (intrinsically impure) agree on the purity of the hair, as the author of 'Bahr al-Ra’iq' surmised when he stated after mentioning its purity: "It should not remain hidden that this is based on the opinion of its being Najis al-Ayn, and it is inferred from this that hair is pure according to the opinion of its being Najis al-Ayn as mentioned in Siraj al-Wahhaj etc." Then, after a long discussion, he said: From what we have established, it is known that this does not fall under the saying of those who say that the pig is Najis al-Ayn, etc. Al-Shurunbulali followed him, then Ad-Durr, then Abu Al-Saud. This is the arrangement of Ad-Durr: "There is no disagreement in the impurity of its meat and the purity of its hair." Al-Sayyid Al-Allamah stated in Radd al-Muhtar: It is understood from the expression of As-Siraj that those who say it is Najis al-Ayn differed regarding the purity of its hair. The chosen view is purity, and on this is built the mention of agreement, but this is problematic because...

---

1. Durar Sharh Ghurar, before Chapter on Wells, Ahmad Kamil Press, Dar al-Sa'adah, 1/24.
2. Al-Bahr al-Ra’iq, Book of Purification, H.M. Saeed Company Karachi, 1/102.
3. Al-Bahr al-Ra’iq, Book of Purification, H.M. Saeed Company Karachi, 1/103.
4. Durr al-Mukhtar, Chapter on Waters, Mujtabai Press Delhi, 1/38.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 4 (चौथा भाग)

फ़क़ीह अबुल लैथ ने अपने फ़तवों में इस पर भरोसा किया और 'अल-उयून' में इमाम अबू यूसुफ़ (रहमतुल्लाह अलैहि) से नक़ल किया कि जब कुत्ता पानी में जाकर खुद को झटकता है और उससे कपड़ों पर छींटें पड़ जाएं तो वह कपड़ों को नापाक कर देगा। और अगर उस पर बारिश पड़े (और कपड़े पर लगे), तो कपड़ा खराब नहीं होगा, क्योंकि पहली सूरत में पानी उसके चमड़े तक पहुँचा और उसका चमड़ा नापाक है, जबकि दूसरी सूरत में पानी उसके बालों तक पहुँचा और उसके बाल पाक हैं।

इससे यह साबित नहीं होता कि कुत्ते को 'नजिस-उल-ऐन' (पूर्णतः अशुद्ध) कहने वाले बालों की पाकी (शुद्धता) पर सहमत हैं, जैसा कि 'बहर-उर-रैक' के लेखक ने अनुमान लगाया जब उन्होंने उसकी पाकी का ज़िक्र करने के बाद कहा: यह बात छिपी न रहे कि यह 'नजिस-उल-ऐन' होने के विचार पर आधारित है, और इससे यह अर्थ निकलता है कि 'नजिस-उल-ऐन' होने के बावजूद बाल पाक हैं जैसा कि 'सिराज अल-वहाज' आदि में ज़िक्र किया गया। फिर एक लंबी बहस के बाद उन्होंने कहा: जो हमने साबित किया है उससे पता चलता है कि यह उन लोगों के कथन में शामिल नहीं है जो सुअर को 'नजिस-उल-ऐन' कहते हैं, आदि। अल-शुरुनबुलाली ने उनका अनुसरण किया, फिर अद-दुर्र ने, फिर अबू अल-सऊद ने। अद-दुर्र की व्यवस्था इस प्रकार है: "इसके मांस की नापाकी और इसके बालों की पाकी में कोई मतभेद नहीं है।" अल्लामा सैयद ने 'रद्द अल-मुह्तार' में कहा है: सिराज की इबारत (लिखावट) से यह समझा जाता है कि 'नजिस-उल-ऐन' कहने वालों में इसके बालों की पाकी को लेकर मतभेद था। चुना हुआ मत पाकी का है और इसी पर सहमति का उल्लेख आधारित है, लेकिन यह मुश्किल है क्योंकि...

---

1. दुरर शरह ग़ुरर, फ़स्ल बइर, अहमद कामिल प्रेस, दारुस सहादत, 1/24
2. अल-बहर उर-रैक, किताबुत तहारत, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/102
3. अल-बहर उर-रैक, किताबुत तहारत, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/103
4. दुर्रे मुख्तार, बाबतुल मियाह, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/38

पृष्ठ 761 का 424

فقیہ ابواللیث نے اپنے فتاویٰ میں اس پر اعتماد کیا اور عیون میں امام ابویوسف رحمہ اللہ سے نقل کیا کہ کتا جب پانی میں داخل ہو کر اپنے آپ کو جھاڑے اور اس سے کپڑے پر چھینٹے پڑ جائیں تو کپڑے کو ناپاک کر دے گا اور اگر اسے بارش پہنچے تو کپڑا خراب نہیں ہوگا، کیونکہ پہلی صورت میں پانی اس کے چمڑے کو پہنچا اور اس کا چمڑا ناپاک ہے جبکہ دوسری صورت میں پانی اس کے بالوں کو پہنچا اور اس کے بال پاک ہیں۔

اس سے یہ ثابت نہیں ہوتا کہ اس کے نجس عین ہونے کا قول کرنے والے بالوں کی طہارت پر متفق ہیں جیسا کہ صاحبِ بحرالرائق نے گمان کیا جب اس کی طہارت کا ذکر کرنے کے بعد فرمایا مخفی نہ رہے کہ یہ بات، اس کے نجس عین ہونے کے قول پر مبنی ہے اور اس سے مستفاد ہے کہ نجاستِ ذاتی کا قول کرنے کی صورت میں بھی بال پاک ہیں، جیسا کہ سراج وہاج میں ذکر کیا گیا الخ۔ پھر طویل کلام کے بعد فرمایا اس چیز سے جس کو ہم نے ثابت کیا، معلوم ہوا کہ جو شخص کتے کے نجس عین ہونے کا قائل ہے اس کے قول میں بال داخل نہیں۔ بخلاف ان کے اس قول کے کہ خنزیر نجس عین ہے (یعنی اس کے بال بھی ناپاک ہیں الخ شرنبلالی پھر دُر مختار اور ابوالسعود نے اس کی اتباع کی

ابواللیث فی فتاواہ وحکاہ فی العیون عن ابی یوسف رحمہ اللہ تعالیٰ ان الکلب اذا دخل الماء فانتفض فاصاب ثوباً افسدہ ولو اصابہ مطر لالان فی الاول اصاب الماء جلدہ وجلدہ نجس و فی الثانی شعرہ وشعرہ طاہر ۱۸؎ لیس فیہ ان القائلین بنجاسۃ العین متفقون علی طھارۃ الشعر کما ظنہ البحر حیث قال بعد ذکر طھرہ لایخفی ان ھذا علی القول بنجاسۃ عینہ ویستفاد منہ ان الشعر طاھر علی القول بنجاسۃ

عینہ لما ذکر فی السراج الوھاج ^2 الخ۔ ثم قال بعد کلام طویل علم مما قررناہ انہ لا یدخل فی قول من قال بنجاسة عین الخنزیر ^3 الخ وتبعه الشرنبلالی ثم الدر ثم ابو السعود وھذا نظم الدر لاخلاف فی نجاسة لحمہ وطھارة شعرہ ^4 اھ قال السید العلامة فی ردالمحتار یفہم من عبارة السراج ان القائلین بنجاسة عینہ اختلفوا فی طھارة شعرہ والمختار الطھارة وعلیہ یبتنی ذکر الاتفاق لکن ھذا مشکل لان

---

1 درر شرح غرر قبیل فصل بئر مطبعۃ احمد کامل الکائنہ فی دار سعادۃ ۲۴/۱ 2 البحر الرائق کتاب الطہارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱ / ۱۰۲ 3 البحر الرائق کتاب الطہارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱ / ۱۰۳ 4 در مختار باب المیاہ مطبوعہ مجتبائی دہلی ۳۸/۱

Its essential impurity (najasa ayniyya) necessitates the impurity of all its parts. Perhaps what is in as-Siraj is applicable to when it is dead, but it is contradicted by what passed from al-Walwalijiyya. Yes, it was said in al-Minh: "And in the manifest report (zahir al-riwayah), it is stated absolutely and not detailed, i.e., if it shakes itself off from water and it hits a person's garment, it spoils it, whether the moisture reaches its skin or not. This necessitates the impurity of its hair, so reflect." [Arabic Text Translation]

The text of Durr al-Mukhtar is: "There is no disagreement regarding its flesh being impure and its hair being pure." End. Sayyid al-Allama (Ibn Abidin) stated in Radd al-Muhtar: "It is known from the text of as-Siraj that those who believe in its essential impurity have a difference of opinion regarding the purity of its hair, and the chosen view (al-mukhtar) is purity, and consensus is mentioned on this basis. However, this is difficult because its being essentially impure requires the impurity of all its parts. Perhaps what is in as-Siraj refers to when it is dead, but what was mentioned from al-Walwalijiyya contradicts this. Yes, it is stated in al-Minh: 'And in the manifest report, it is mentioned absolutely without detail, meaning if it comes out of the water and shakes itself, and the water touches a person's clothes, it will make them impure, regardless of whether the moisture reached its skin or not; and this necessitates the impurity of its hair, so reflect.'" (T) [Urdu Text Translation]

I say: There is a discussion on this from several aspects: First: The pronoun "huwa" (it) in the phrase "huwa al-mukhtar" (it is the chosen view) in the expression of as-Siraj, just as it is possible for it to refer back to each of the "impurity of the skin" and "purity of the hair" individually, likewise it can refer to the whole, meaning the collection of both together as a set. Thus, the meaning would be that the statement of the one who says "its skin is impure and its hair is pure" is the chosen one, not the statement of one who says both are pure. And in this case, the validation (tas'hih) will be directed towards this third statement, and a disagreement among those who believe in its impurity will not be understood.

---

1 Radd al-Muhtar, Book of Waters, Majtabai Press, Delhi, 1/39 Page 425 of 761

इसकी ज़ाती नजासत (नजसुल ऐन होना) इसके तमाम हिस्सों की नजासत का तक़ाज़ा करती है। शायद सिराज में जो है वह इसके मुर्दा होने की सूरत पर लागू हो, लेकिन जो अल-वलवालीजिया से गुज़रा है वह इसके विपरीत है। हाँ, अल-मिन्हा में कहा गया है: "और ज़ाहिर रिवायत में मुतलक़ (बिना शर्त) है और विस्तार से वर्णन नहीं किया गया, यानी अगर वह पानी से निकलकर अपने आप को झाड़े और पानी इंसान के कपड़े पर लग जाए तो उसे नापाक कर देगा, चाहे नमी उसकी खाल तक पहुँचे या न पहुँचे, और यह बात इसके बालों की नजासत का तक़ाज़ा करती है, लिहाज़ा गौर करो।" [अरबी पाठ का अनुवाद]

दुर्रे मुख़्तार की इबारत यह है कि "इसके गोश्त के नापाक और बालों के पाक होने में कोई इख्तिलाफ़ नहीं।" अल्लामा (इब्ने आबिदीन) ने रद्दुल मुख़्तार में फ़रमाया कि सिराज की इबारत से मालूम होता है कि इसकी ज़ाती नजासत के कायलीन (मानने वालों) का इसके बालों की तहारत (पवित्रता) में इख्तिलाफ़ है और मुख़्तार (पसंदीदा) कौल तहारत है और इसी पर इत्तेफ़ाक़ का ज़िक्र है। लेकिन यह मुश्किल है क्योंकि इसका नजसुल ऐन होना तमाम अजज़ा (हिस्सों) की नजासत का तक़ाज़ा करता है और शायद सिराज में जो है वह इसके मुर्दा होने की सूरत पर महमूल (लागू) हो, लेकिन जो अल-वलवालीजिया से गुज़रा है वह इसके मुनाफ़ी (विपरीत) है। हाँ, अल-मिन्हा में फ़रमाया: "और ज़ाहिर रिवायत में मुतलक़ है, तफ़सील से बयान नहीं किया गया यानी अगर वह पानी से निकलकर अपने आप को झाड़े और पानी इंसान के कपड़े पर लग जाए तो उसे नापाक कर देगा, चाहे नमी उसकी खाल तक पहुँचे या न पहुँचे, और यह बात इसके बालों की नजासत का तक़ाज़ा करती है। लिहाज़ा गौर करो।" (त) [उर्दू पाठ का अनुवाद]

मैं कहता हूँ: इसमें कई पहलुओं से बहस है: पहला: सिराज की इबारत में "हुवल मुख़्तार" (वही पसन्दीदा है) की "हुवा" ज़मीर जैसे "जिल्द की नजासत" और "बालों की तहारत" में से हर एक की तरफ रुजू (संकेत) करने की संभावना रखती है, वैसे ही वह कुल यानी मजमूए (समूह) की तरफ इस हैसियत से कि वह दोनों का मजमूआ है, लौटने की संभावना भी रखती है। तो मा'नी यह होगा कि कहने वाले का यह कौल कि "इसका चमड़ा नापाक और बाल पाक हैं" यही मुख़्तार है, न कि वह कौल जो दोनों की तहारत का कायल है। और उस वक्त तसहीह (पुष्टि) इस तीसरे कौल की तरफ होगी और नजासत के कायलीन के बीच कोई मतभेद नहीं समझा जाएगा।

1 रद्दुल मुख़्तार, बाबुल मियाह, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, 1/39 Page 425 of 761

نجاسة عینه تقتضی نجاسة جمیع اجزائه ولعل ما فی السراج محمول علی ما اذا کان میتا لکن ینافیه ما مر عن الولوالجیة نعم قال فی المنح وفی ظاهر الروایة اطلق ولم یفعل ای انه لوانتفض من الماء فاصاب ثوب انسان افسده سواء کان البلل وصل الی جلده اولا وهذا یقتضی نجاسة شعره فتأمل اھ

در مختار کی عبارت یہ ہے کہ "اس کے گوشت کے ناپاک اور بالوں کے پاک ہونے میں کوئی اختلاف نہیں" اھ سید علامہ (ابن عابدین) نے ردالمحتار میں فرمایا سراج کی عبارت سے معلوم ہوا ہے کہ اس کی ذاتی نجاست کے قائلین کا اس کے بالوں کی طہارت میں اختلاف ہے اور مختار، طہارت ہے اور اسی پر ذکر اتفاق کی بنیاد ہے۔ لیکن یہ مشکل ہے کیونکہ اس کا نجس عین ہونا تمام اجزاء کی نجاست کا تقاضا کرتا ہے اور شاید جو کچھ سراج میں ہے وہ اس کے مردہ ہونے کی صورت پر محمول ہو لیکن جو کچھ والوالجیہ سے گزرا ہے وہ اس کے منافی ہے ہاں المنح میں فرمایا "اور ظاہر روایت میں مطلقاً ہے تفصیل سے بیان نہیں کیا یعنی اگر وہ پانی سے نکل کر اپنے آپ کو جھاڑے اور پانی انسان کے کپڑے کو لگ جائے تو اسے ناپاک کر دے گا برابر ہے رطوبت اس کے چمڑے تک پہنچے یا نہ، اور یہ بات اس کے بالوں کی نجاست کا تقاضا کرتی ہے پس غور کرواھ (ت)

اقول: فیه بحث من وجوه- الاول: ضمیر هو المختار فی عبارة السراج کما یحتمل رجوعه الی کل من نجاسة الجلد وطهارة الشعر کذلك الی الکل اعنی المجموع من حیث هو مجموع فیکون المعنی ان قول القائل بان جلده نجس وشعره طاهر هو المختار دون قول من یقول بطهارة الجمیع وح یکون التصحیح ناظرا الی هذا القول الثالث ولا یفهم خلافا بین قائلی النجاسة

اقول: اس میں کئی وجوہ سے بحث ہے: اول: سراج کی عبارت میں "ہو المختار" کی "ھو" ضمیر جیسے "نجاسة الجلد" اور "طهارة الشعر" میں سے ہر ایک کی طرف رجوع کا احتمال رکھتی ہے اسی طرح وہ کل یعنی مجموعے کی طرف اس حیثیت سے کہ وہ دونوں کا مجموعہ ہے لوٹنے کا احتمال بھی رکھتی ہے۔ پس معنی یہ ہوگا کہ قائل کا قول "اس کا چمڑا ناپاک اور بال پاک ہیں" یہی مختار ہے نہ اس کا قول جو دونوں کی طہارت کا قائل ہے اور اس وقت تصحیح اس تیسرے قول کی طرف

---

1 ردالمحتار باب المیاہ مطبوعہ مجتبائی دہلی ۳۹/۱ Page 425 of 761

Fatawa Rizvia Volume Four Regarding the purity of hair. ...will be directed towards, and there will be no perceived disagreement regarding the purity of hair among those who believe in the dog's essential impurity (najasat al-ayn). Second: The apparent meaning of the text in Al-Bahr ar-Ra'iq and Ad-Durr al-Mukhtar, "la yadkhulu" (it does not enter) and "la khilafa" (there is no disagreement), are indefinite nouns or in that ruling which, falling under negation, completely negate any disagreement. It denies that this is based on one narration over another, and there is no need for it as we established from the text of As-Siraj, just as you can see. Third: It is not a surprising thing to interpret "dog" as an animal not slaughtered according to Sharia and "skin" as untanned skin, because sometimes such conditions are omitted at their place, relying on their common knowledge. That is why when Al-Munyah stated that in Al-Baqali it is mentioned: if a piece of dog skin is stuck to a wound on the head, the prayer performed with it should be repeated. Al-Allamah, the commentator Ibrahim al-Halabi, explained it thus: the dog's skin, meaning it was not tanned nor was that (dog) slaughtered, one should repeat the prayer offered with that skin when it alone (the piece of skin) is more than the amount of a dirham or another impurity is mixed with it, and this is apparent. At this time, in the speech of As-Siraj, there is no hint towards the opinion of essential impurity as it was understood. 1. Munyat al-Musalli, Chapter of Al-Athar, Maktaba Qadriah, Jamia Nizamia Razvia Lahore, p. 158. 2. Ghunyat al-Mustamli, Chapter of Al-Athar, printed by Suhail Academy Lahore, p. 191. Page 426 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द चार बालों की शुद्धता के बारे में। ...की ओर मुड़ेगी, और कुत्ते की मूल अशुद्धि (नजासत ऐन) के मानने वालों के बीच बालों की शुद्धता के बारे में कोई मतभेद नहीं समझा जाएगा। द्वितीय: अल-बहर अर-रैक और अद-दुर्र अल-मुख्तार का स्पष्ट कथन "ला यदखुलु" और "ला खिलाफ़ा" अनिश्चित संज्ञाएं हैं या उस नियम में हैं जो निषेध के अंतर्गत आकर असहमति को पूरी तरह से नकारते हैं। यह इस बात से इनकार करता है कि यह एक रिवायत पर आधारित हो और दूसरी पर नहीं, और इसकी आवश्यकता भी नहीं है जैसा कि हमने सिराज के शब्दों से प्रमाणित किया है, जैसा कि आप देख रहे हैं। तृतीय: 'कुत्ता' का अर्थ बिना ज़बह किया हुआ जानवर और 'चमड़ा' का अर्थ बिना कमाया हुआ (अनटैन्ड) चमड़ा लेना कोई आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि कभी-कभी ऐसी शर्तों को उनके स्थान पर पूर्व ज्ञान के भरोसे छोड़ दिया जाता है। इसीलिए जब अल-मुनिया ने कहा कि अल-बक़ाली में है: यदि कुत्ते के चमड़े का टुकड़ा सिर के ज़ख्म से चिपक जाए, तो उस स्थिति में पढ़ी गई नमाज़ दोहराई जाए। अल्लामा व्याख्याकार इब्राहिम अल-हलबी ने इसे इस प्रकार स्पष्ट किया: कुत्ते का चमड़ा, अर्थात् जिसे न कमाया गया हो और न ही उस (कुत्ते) को ज़बह किया गया हो, उस चमड़े के साथ जो नमाज़ पढ़ी गई है उसे दोहराया जाए जब वह अकेला (चमड़े का टुकड़ा) एक दिरहम की मात्रा से अधिक हो या उसके साथ कोई अन्य अशुद्धि मिली हो, और यह स्पष्ट है। इस समय सिराज के शब्दों में मूल अशुद्धि (नजासत ऐन) के मत की ओर कोई संकेत नहीं है जैसा कि समझा गया। 1. मुन्यातुल मुसल्ली, अध्याय अल-आसार, मकतबा कादरिया, जामिया निज़ामिया रज़विया लाहौर, पृ. 158। 2. गुन्यातुल मुस्तमली, अध्याय अल-आसार, मुद्रित सुहैल अकादमी लाहौर, पृ. 191। पृष्ठ 761 का 426

فتاوی رضویہ جلد چہارم فی طھارۃ الشعر۔ متوجہ ہوگی اور نجاست (کتے کے نجس عین ہونے) کے قائلین کے درمیان بالوں کی طہارت میں اختلاف نہیں سمجھا جائے گا۔ الثانی: ظاھر کلامی البحر والدر لا یدخل ولا خلاف لکونھما نکرۃ او في معناھا داخلین تحت النفی ناطق بنفی الخلاف اصلا وآب عن البناء علی روایۃ دون اخری ولا حاجۃ الیہ علی ما قررنا عبارۃ السراج کما تری۔ دوم: البحر الرائق اور در مختار کا ظاہر کلام "لا یدخل" اور "لا خلاف" نکرہ یا اس کے حکم میں ہیں جو نفی کے تحت داخل ہو کر اختلاف کی بالکل نفی کرتا ہے اور اس بات سے انکار کرتا ہے کہ یہ ایک روایت پر مبنی ہو دوسرے پر نہ ہو اور اس کی حاجت بھی نہیں جیسا کہ ہم نے سراج کی عبارت سے ثابت کیا جس طرح تم دیکھ رہے ہو۔ الثالث: لا غرو في حمل الکلب علی المیت الغیر المذکی والجلد علی غیر المدبوغ فلر بما تترک امثال القیود اعتمادا علی معرفتھا ولذا لما قال فی المنیۃ وفی البقال قطعۃ جلد کلب التزق بجراحۃ في الرأس یعید ما صلی بہ اھ سوم: کتے سے مراد غیر مذبوح اور چمڑے سے بغیر دباغت چمڑا مراد لینا تعجب خیز بات نہیں کیونکہ بعض اوقات امثال قیود کو ان کے مقام میں حصول معرفت پر اعتماد کرتے ہوئے چھوڑ دیا جاتا ہے اسی لئے جب منیہ نے کہا کہ بقالی میں ہے کتے کے چمڑے کا ٹکڑا سر میں زخم کے ساتھ چمٹ گیا تو پڑھی گئی نماز لوٹائے اھ فسرہ العلامۃ الشارح ابراھیم الحلبی ھکذا جلد کلب ای غیر مدبوغ ولامذکی یعید ما صلی بہ ای بذلك الجلد اذا کان اکثر من قدر الدرھم وحدہ او بانضمام نجاسۃ اخری وھذا ظاھر اھ وح لا ملمح لکلام السراج الی قول نجاسۃ العین کما افاد علامہ شارح ابراہیم حلبی نے اس کی وضاحت یوں کی کہ اسی طرح کہ کتے کا چمڑا یعنی جسے دباغت نہ دی گئی ہو اور نہ اس (کتے) کو ذبح کیا گیا اس چمڑے کے ساتھ جو نماز پڑھی ہے اسے لوٹائے جبکہ وہ تنہا (چمڑا) ایک درہم سے زائد ہو یا اس کے ساتھ دوسری نجاست ملی ہوئی ہو اور یہ ظاہر ہے اھ اس وقت سراج کے کلام میں نجاست

عین 1 منیہ المصلی فصل الآثار مکتبہ قادریہ جامعہ نظامیہ رضویہ لاہور ص ۱۵۸ 2 غنیۃ المستملی فصل فی الآثار مطبوعہ سہیل اکیڈمی لاہور ، ص ۱۹۱ Page 426 of 761

Fatawa Rizwia Volume 4

...there will be no indication towards his (the author of Al-Bahr) statement as he mentioned, nor will the charge be valid that this is contrary to Al-Walwalaji's discourse, as it is not hidden. For even if it were contrary, it aligns with what has been prioritized and declared most correct (asah). And Siraj is not concerned here with explaining Al-Walwalaji's words such that agreement between them would be mandatory.

Fourth: It is granted that 'ain najasat' (essential impurity) necessitates the impurity of all parts, but one might say that the exception of hair is nothing new. Do you not see that our three companions (the Hanafi Imams), may Allah Almighty be pleased with them, agree on the pig being essentially impure? Yet, despite this, Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) holds the opinion that its hair is pure. In Al-Khulasa, in the seventh section of the Book of Purity, it is stated: If pig hair falls into a well, there is a difference of opinion; according to Imam Muhammad (may Allah have mercy on him), the water does not become impure because the permissibility of its use indicates its purity. According to Imam Abu Yusuf (may Allah have mercy on him), it becomes impure because it is essentially impure, and sewing with it is permissible due to necessity. In Al-Ghurar by Mawla Khusraw, it is stated that the hair of a carcass is pure. Similarly, according to Imam Muhammad (may Allah have mercy on him), pig hair is also pure. In Al-Durar, it says "due to the necessity of use," therefore...

---

1 Khulasa-tul-Fatawa, Section Seven, Book of Purity, printed by Naval Kishore, Lucknow, 1/44. 2 Durar Sharh Ghurar, before the section on wells, Ahmed Kamil printing press, Dar al-Sa'adah, 1/24. Page 427 of 761

...उनके(साहिब-ए-बहर) कथन की ओर कोई संकेत नहीं होगा जैसा कि उन्होंने बताया, और न ही उन पर यह आरोप होगा कि यह वालवालजी के कलाम के विरुद्ध है, जैसा कि स्पष्ट है। क्योंकि यदि यह उसके विरुद्ध भी हो, तब भी यह उसके अनुकूल है जिसे प्राथमिकता देकर सबसे सही (असह) घोषित किया गया है। और सिराज यहाँ वालवालजी के कलाम की व्याख्या करने के पीछे नहीं है कि उन दोनों के बीच सहमति अनिवार्य हो।

चौथा: यह स्वीकार्य है कि 'ऐन नजासत' (मूल अशुद्धता) सभी अंगों की अशुद्धता की मांग करती है, लेकिन कोई कह सकता है कि बालों का अपवाद कोई नई बात नहीं है। क्या आप नहीं देखते कि हमारे तीनों साथी (हनफी इमाम), अल्लाह उन पर प्रसन्न हो, सुअर के मूलतः अशुद्ध होने पर सहमत हैं? फिर भी, इसके बावजूद इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाहि अलैहि) उसके बालों की पवित्रता के कायल हैं। 'अल-खुलासा' में पवित्रता की किताब के सातवें खंड में है कि यदि सुअर के बाल कुएं में गिर जाएं तो इसमें मतभेद है; इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाहि अलैहि) के अनुसार पानी अशुद्ध नहीं होगा क्योंकि इसके उपयोग की अनुमति इसकी पवित्रता को दर्शाती है। इमाम अबू यूसुफ (रहमतुल्लाहि अलैहि) के अनुसार यह अशुद्ध हो जाएगा क्योंकि वह 'नजस-ए-ऐन' है, और इसके साथ सिलाई करना आवश्यकता के कारण जायज़ है। मौला खुसरो की 'ग़ुरर' में है कि मृत जानवर के बाल पवित्र हैं। इसी तरह इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाहि अलैहि) के अनुसार सुअर के बाल भी पवित्र हैं। 'अद-दुरर' में "उपयोग की आवश्यकता के लिए" कहा गया है, अतः इसके..

---

1 खुलासा-तुल-फ़तावा, खंड सात, पवित्रता की पुस्तक, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, 1/44। 2 दुरर शरह ग़ुरर, कुएं के खंड से पहले, अहमद कामिल प्रेस, दार अल-सआदा, 1/24। पेज 427/761

کے قول کی طرف اشارہ نہیں ہو گا جیسا کہ انہوں (صاحب بحر) نے بتایا اور نہ ہی ان پر یہ الزام ہو گا کہ یہ ولوالجی کے کلام کے منافی ہے جیسا کہ مخفی نہیں کیونکہ وہ اگر اس کے منافی ہو تب بھی یہ اس کے موافق ہے جسے ترجیح دے کر اصح قرار دیا گیا ہے اور سراج یہاں ولوالجی کے کلام کے درپے نہیں کہ ان دونوں کے درمیان موافقت واجب ہو۔

چہارم: عین نجاست کا تمام اجزاء کی نجاست کا مقتضی ہونا مسلم ہے لیکن قائل کہہ سکتا ہے کہ بالوں کا استثناء کوئی نئی بات نہیں، کیا تم نہیں دیکھتے کہ ہمارے تینوں اصحاب (احناف) رضی اللہ عنہم خنزیر کے نجس عین ہونے پر متفق ہیں لیکن اس کے باوجود امام محمد رحمہ اللہ اس کے بالوں کی طہارت کے قائل ہیں ، خلاصہ میں طہارت کی ساتویں فصل میں ہے کہ خنزیر کے بال کنویں میں گر جائیں تو اس میں اختلاف ہے امام محمد رحمہ اللہ کے نزدیک پانی ناپاک نہیں ہو گا کیونکہ انتفاع کا جائز ہونا اس کی طہارت پر دلالت کرتا ہے امام ابو یوسف رحمہ اللہ کے نزدیک ناپاک ہو جائے گا کیونکہ وہ نجس عین ہے اور اس کے ساتھ سلائی کرنا ضرورت کے تحت جائز ہے اھ مولی خسرو کی غرر میں ہے کہ مردار کے بال پاک ہیں۔ اسی طرح امام محمد رحمہ اللہ کے نزدیک خنزیر کے بال بھی پاک ہیں الدرر میں "ضرورت استعمال کے لئے " فرمایا پس اس کے

---

1 خلاصۃ الفتاوی فصل سابع من کتاب الطہارۃ مطبوعہ نولکشور لکھنو ۱/۴۴ 2 درر شرح غرر، قبیل فصل بئر، مطبعہ احمد کامل الکائنہ فی دار سعادہ ۱/۲۴ صفحہ 427 از 761

Fatawa Razviya Volume Four

...water will not become impure by falling into it. According to Imam Abu Yusuf (may Allah have mercy on him), it is impure; therefore, the water will also become impure. [End] (T)

I say: The gist of this reasoning is that necessity has established the permissibility of its use. Then, once permissibility is established, purity is also established, because whenever a thing is established, it is established with all its necessary implications. Imam Abu Yusuf's (may Allah have mercy on him) response is that what is established due to necessity is estimated according to the extent of that necessity. You know that its proof is clear; therefore, it is no wonder that it was declared correct in *Al-Bada'i*, preferred in *Al-Ikhtiyar*, and designated as the official view (*madhhab*) in *Ad-Durr*.

With what we have established, the text of *Ad-Durr* is clarified by answering the objection raised against it by the great scholar Sayyid Abu al-Su'ud al-Azhari in the commentary of *Al-Kanz*, where he claimed that Imam Muhammad permitted benefiting from it absolutely, even without necessity, and considered it as the implication of the statement in *An-Nahr*: "Muhammad declared it pure." Based on this, he rejected the statement of those who say that in our times it is no longer needed, so its use should not be permissible for anyone due to the absence of necessity. He raised an objection saying "there is room for consideration" (*fihi nazar*) because Imam Muhammad (may Allah have mercy on him)...

I say: The outcome of the reasoning is that necessity has made its use permissible. Then, when permissibility is established, purity is also established, because when a thing is established, it is established with its implications. And the answer of Abu Yusuf, may Allah Almighty have mercy on him, is that what is established by necessity is estimated according to its extent. You know that it is clear in proof, so it is no wonder that it was authenticated in *Al-Bada'i*, preferred in *Al-Ikhtiyar*, and placed in *Ad-Durr* as the official madhhab. And with what we have established, the speech of *Ad-Durr* is clarified by answering what the scholar Abu al-Su'ud al-Azhari presented in the commentary of *Al-Kanz*, where he claimed that Muhammad permitted benefiting from it absolutely, even without necessity, and made it the implication of the statement of *An-Nahr* "Muhammad purified it". Upon it was built the rejection of the statement of one who said that in our time it is no longer needed, so its use should not be permissible for everyone due to the lack of necessity, saying "there is room for

consideration" (*fihi nazar*) because Muhammad did not limit the permissibility of its use to necessity. He refuted *Ad-Durr*'s reasoning by necessity by saying: If it were so, he would have said that small water becomes impure by its falling into it due to the lack of necessity. This is not the case, and because the explicit text of his statement in *An-Nahr* and the effect of disagreement appears in a case where one prays while having pig's hair exceeding a dirham, or it falls into small water, which contradicts it. And by what we have established...

...गिरने से पानी नापाक नहीं होगा। इमाम अबू यूसुफ़ (रहमतुल्लाह अलैह) के नज़दीक वह नजिस (अशुद्ध) है, इसलिए पानी भी नापाक हो जाएगा। (त)

मैं कहता हूँ: इस दलील का सार यह है कि ज़रूरत (ज़रूरत) ने इसके इस्तेमाल की अनुमति (इबाहत) साबित कर दी। फिर जब अनुमति साबित हो गई, तो पवित्रता (तहारत) भी साबित हो गई, क्योंकि जो चीज़ साबित होती है, वह अपने सभी आवश्यक परिणामों (लवाज़िम) के साथ साबित होती है। इमाम अबू यूसुफ़ (रहमतुल्लाह अलैह) का जवाब यह है कि जो चीज़ ज़रूरत के तहत साबित होती है, उसका अंदाज़ा ज़रूरत के हिसाब से ही लगाया जाता है। और आप जानते हैं कि इसकी दलील वाज़ेह (स्पष्ट) है; इसलिए 'बदा'ई' में इसे सही करार दिया गया, 'अल-इख़्तियार' में इसे तरजीह (प्राथमिकता) दी गई और 'दुर्रे मुख़्तार' में इसी को मज़हब (आधिकारिक मत) करार दिया गया।

और जिस तरह हमने 'अद-दुर्र' की इबारत बयान की, उससे उस एतराज़ (आपत्ति) का जवाब वाज़ेह हो गया जो उन पर सैय्यद अल्लामा अबू अल-सऊद अल-अज़हरी ने 'हाशिया कंज' में नक़ल किया, जब यह ख्याल किया कि इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) ने इससे मुतलक (पूर्ण) लाभ उठाना जायज़ करार दिया है, चाहे ज़रूरत के बिना हो। और 'नहर अल-फ़ायक' के कौल (इमाम मुहम्मद ने इसे पाक करार दिया) को अबू अल-सऊद अल-अज़हरी ने इसी का नतीजा माना और इसी पर उनके कौल के रद्द की बुनियाद है जो कहते हैं कि हमारे ज़माने में इसकी ज़रूरत नहीं रही, लिहाज़ा चाहिए कि सबके नज़दीक इसका इस्तेमाल जायज़ न हो क्योंकि ज़रूरत ही नहीं रहती। अबू अल-सऊद ने 'फ़ीहि नज़र' (इसमें विचार की आवश्यकता है) कहकर इस पर एतराज़ किया क्योंकि इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह)...

मैं कहता हूँ: तर्क का निष्कर्ष यह है कि आवश्यकता ने इसके उपयोग की अनुमति को अनिवार्य कर दिया है। फिर, जब अनुमति स्थापित हो जाती है, तो शुद्धता भी स्थापित हो जाती है, क्योंकि जब कोई वस्तु स्थापित होती है, तो वह अपने निहितार्थों के साथ स्थापित होती है। और अबू यूसुफ (अल्लाह उन पर दया करे) का उत्तर यह है कि जो आवश्यकता से स्थापित होता है, उसका अनुमान उसकी सीमा के अनुसार लगाया जाता है। आप जानते हैं कि यह प्रमाण में स्पष्ट है, इसलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि इसे 'अल-बदा'ई' में सही ठहराया गया, 'अल-इख़्तियार' में प्राथमिकता दी गई और 'अद-दुर्र में इसे आधिकारिक मत (मज़हब) के रूप में रखा गया। और हमने जो स्थापित किया है, उससे 'अद-

दुर्र का कथन स्पष्ट हो जाता है, उस आपत्ति का उत्तर देकर जो विद्वान अबू अल-सऊद अल-अज़हरी ने 'अल-कंज' के हाशिये में पेश की थी, जहाँ उन्होंने दावा किया था कि मुहम्मद ने आवश्यकता के बिना भी इसके उपयोग की पूर्ण अनुमति दी थी, और इसे 'अन-नहर' के इस कथन का निहितार्थ बना दिया कि 'मुहम्मद ने इसे शुद्ध किया'। इसी पर उन लोगों के कथन का खंडन आधारित था जो कहते हैं कि हमारे समय में इसकी आवश्यकता नहीं रही, इसलिए आवश्यकता के अभाव के कारण इसका उपयोग सभी के लिए अनुमेय नहीं होना चाहिए, यह कहते हुए कि इसमें 'जांच की गुंजाइश' (फ़ीहि नज़र) है क्योंकि मुहम्मद ने इसके उपयोग की अनुमति को आवश्यकता तक सीमित नहीं किया। और उन्होंने 'अद-दुर्र के आवश्यकता वाले तर्क का यह कहकर खंडन किया कि: यदि ऐसा होता, तो वे कहते कि अल्प जल इसमें इसके गिरने से अशुद्ध हो जाता है क्योंकि आवश्यकता नहीं है। ऐसा नहीं है, क्योंकि 'अन-नहर' में उनके कथन का स्पष्ट पाठ और मतभेद का प्रभाव उस स्थिति में प्रकट होता है जहाँ कोई व्यक्ति एक दिरहम से अधिक सूअर के बाल लेकर नमाज़ पढ़ता है, या यह अल्प जल में गिर जाता है, जो इसका खंडन करता है। और जो हमने स्थापित किया है...

فتاوی رضویہ جلد چہارم

گرنے سے پانی ناپاک نہیں ہوگا۔ امام ابویوسف رحمہ اللہ کے نزدیک وہ نجس ہے پس پانی بھی ناپاک ہو جائیگا۔ اھ (ت)

اقول: اس علت کا حاصل یہ ہے کہ ضرورت نے اس کے استعمال کی اباحت ثابت کردی پھر جب اباحت ثابت ہوگئی تو طہارت بھی ثابت ہوگئی تو طہارت بھی ثابت ہوگئی کیوں کہ جو چیز بھی ثابت ہوتی ہے وہ اپنے تمام لوازم کے ساتھ ثابت ہوتی ہے۔ امام ابویوسف رحمہ اللہ کا جواب یہ ہے کہ جو چیز ضرورت کے تحت ثابت ہوتی ہے اس کا اندازہ ضرورت کے حساب سے لگایا جاتا ہے اور تم جانتے ہو کہ اس کی دلیل واضح ہے لہٰذا بدائع میں اسے صحیح قرار دیا، الاختیار میں اسے ترجیح دی اور در مختار میں اسی کو مذہب قرار دیا اور جس طرح ہم نے در مختار کا کلام بیان کیا اس سے اس اعتراض کا جواب واضح ہو گیا جو ان پر سید علامہ ابوالسعود الازہری نے حاشیہ کنز میں نقل کیا جب یہ خیال کیا کہ امام محمد رحمہ اللہ نے اس سے مطلق انتفاع جائز قرار دیا ہے اگرچہ بغیر ضرورت ہو اور نہر الفائق کے قول (امام محمد نے اسے پاک قرار دیا) کو ابوالسعود الازہری نے اسی کا مقتضی قرار دیا اور اسی پر ان کے قول کے رَد کی بنا ہے جو کہتے ہیں کہ ہمارے زمانے میں اس کی ضرورت نہیں لہٰذا چاہئے کہ سب کے نزدیک اس کا استعمال جائز نہ ہو کیونکہ ضرورت ہی نہیں رہتی ابوالسعود نے "فیہ نظر" کہہ کر اس پر اعتراض کیا کیونکہ امام محمد رحمہ اللہ

اقول: حاصل التعلیل ان الضرورۃ اوجبت اباحۃ استعمالہ ثم اذا ثبت الاباحۃ ثبت الطھارۃ لان الشیئ اذا ثبت ثبت بلوازمہ وجواب ابی یوسف رحمہ اللہ تعالی ان ما ثبت بضرورۃ تقدر بقدرھا وانت تعلم انہ

بين البرهان فلا جرم ان صححه فى البدائع ورجحه فى الاختيار وجعله فى الدر هو المذهب وبما قررنا كلام الدر بان الجواب عما اورد عليه السيد العلامة ابوالسعود الازهرى فى حاشية الكنز حيث زعم ان محمدا اباح الانتفاع به مطلقا ولو من دون ضرورة وجعله مقتضى قول النهر طهره محمد وعليه ابتنى رد قول من قال انه فى زماننا استغنى عنه فينبغى ان لا يجوز استعماله عند الكل لانعدام الضرورة قائلا فيه نظر لان محمدا لم يقصر جواز استعماله على الضرورة ورد على الدر تعليله بالضرورة بان لوكان كذلك لقال ان الماء القليل ينجس بوقوعه فيه لعدم الضرورة وليس كذلك ولان صريح قوله فى النهر واثر الخلاف يظهر فيما لو صلى ومعه من شعر الخنزير ما يزيد على الدرهم او وقع فى الماء القليل ياباه وبما قررناه

Fatawa Rizwia Volume Four

The inconsistency in Ad-Durr becomes apparent where it stated the reason for its purity according to Imam Muhammad as the necessity of use, then derived from it that water does not become impure by its falling into it. [Footnote 1] He did not base the permissibility of its use solely on necessity. Abu al-Saud also rejected what Ad-Durar stated regarding necessity being the cause, saying that if that were the case, they would have said that a small amount of water becomes impure upon its falling because necessity is absent, whereas that is not so. Furthermore, his explicit statement in An-Nahr confirms that the effect of the disagreement will only manifest when someone prays while having more than one dirham's weight of pig hair or when it falls into a small amount of water; this denies such a reasoning. What we have established reveals the inconsistency found in Ad-Durr where they considered the necessity of use as the reason for its purity according to Imam Muhammad (may Allah have mercy on him), then further stated that water does not become impure by its falling into it. (T)

I say: Perhaps when you contemplate what we have presented to you, you will realize that all of this is misplaced. Far be it from Muhammad to permit utilizing it without necessity, given Allah Almighty's statement: "For indeed, it is an impurity." Rather, the matter between us is that he permitted it due to necessity, and a consequence of permissibility is the waiving of impurity. Once impurity is waived, prayer becomes valid and water is not corrupted. Thus, Imam Muhammad considered the time of necessity and did not consider the specific location. Abu Yusuf considered both aspects together, which is the correct view. Therefore, it is stated in Al-Burhan Sharh Mawahib al-Rahman that Muhammad permitted utilizing its hair because necessity was established for him in that, while the other two [Imams] forbade it because necessity was not realized, as alternatives were available. [Footnote 2]

I say: Perhaps when you reflect upon what we have placed before you, you will know that all this is not in its proper place. It is impossible that Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) would declare its use permissible without necessity, while Allah Almighty says: "Indeed, it is impure." The fact is as we explained: that you [Imam Muhammad] permitted it under necessity, and permissibility necessitates the removal of impurity. Once impurity is removed, prayer will be valid and water will not be spoiled. Thus, Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) considered the time of necessity, not the specific place. And Imam Abu Yusuf (may Allah have mercy

on him) considered the combination of both matters, which is correct. Surely, Burhan Sharh...

1. Fath al-Mu'in, Kitab al-Taharah, H.M. Saeed Company Karachi, 1/73
2. Hashiyat al-Tahtawi 'ala Maraqi al-Falah, Section: Purification of Dead Skins, Karkhana Tijarat Karachi, p. 90 Page 429 of 761

अद-दुर्र में जो अंतर्विरोध है वह स्पष्ट होता है जहाँ उसने इमाम मुहम्मद के अनुसार इसकी शुद्धता का कारण 'इस्तेमाल की ज़रूरत' बताया, फिर उससे यह निष्कर्ष निकाला कि इसमें गिरने से पानी नापाक नहीं होता। [पाद-टिप्पणी 1] उन्होंने इसके इस्तेमाल की अनुमति को केवल ज़रूरत पर निर्भर नहीं किया। अबू अल-सऊद ने भी उस बात का खंडन किया जिसे अद-दुरर ने ज़रूरत को कारण बताया था, यह कहते हुए कि यदि ऐसा होता तो वे कहते कि थोड़े से पानी में इसके गिरने से वह नापाक हो जाता है क्योंकि ज़रूरत अनुपस्थित है, जबकि ऐसा नहीं है। इसके अलावा, अन-नह्र में उनका स्पष्ट कथन कि असहमति का प्रभाव तभी प्रकट होगा जब वह नमाज़ पढ़े और उसके पास एक दिरहम से अधिक सूअर के बाल हों या वे थोड़े पानी में गिरें, इस तरह के तर्क का खंडन करता है। जो कुछ हमने सिद्ध किया है वह अद-दुर्र में पाए जाने वाले अंतर्विरोध को उजागर करता है जब उन्होंने इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) के अनुसार इस्तेमाल की ज़रूरत को इसकी शुद्धता का आधार माना और फिर उस पर यह विस्तार किया कि इसके गिरने से पानी नापाक नहीं होता। (त)

मैं कहता हूँ: शायद जब आप उस पर गौर करेंगे जो हमने आपके सामने पेश किया है, तो आप जान लेंगे कि यह सब कुछ अपने स्थान पर नहीं है। इमाम मुहम्मद से यह दूर की बात है कि वे अल्लाह तआला के इस कथन के बावजूद कि "निश्चित रूप से वह अशुद्ध है", बिना किसी ज़रूरत के इसके उपयोग की अनुमति दें। असल मामला हमारे बीच यह है कि उन्होंने ज़रूरत के कारण इसे जायज़ ठहराया। और अनुमति की ज़रूरत से नजासत (अशुद्धता) का गिर जाना आवश्यक है। जब नजासत गिर गई, तो नमाज़ जायज़ हो गई और पानी खराब नहीं हुआ। अतः इमाम मुहम्मद ने ज़रूरत के समय का विचार किया न कि विशेष स्थान का। और इमाम अबू यूसुफ ने दोनों बातों के समूह का विचार किया और यही सही है। निश्चित रूप से अल-बुरहान शरह मवाहिब अल-रहमान में उल्लेख है कि मुहम्मद ने इसके बालों के उपयोग की छूट दी क्योंकि उनके पास उस समय ज़रूरत साबित थी, और अन्य दो ने मना किया क्योंकि विकल्प मौजूद होने के कारण ज़रूरत पूरी नहीं हो रही थी। [पाद-टिप्पणी 2]

मैं कहता हूँ: शायद जब तू उस पर गौर करे जो हमने तुम्हारे सामने पेश किया है तो जान ले कि यह सब कुछ अपने स्थान पर नहीं है; हरगिज़ ऐसा नहीं हो सकता कि इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) बिना ज़रूरत इससे लाभ उठाना जायज़ करार दें जबकि अल्लाह तआला का इरशाद है "तो बेशक वह नापाक है"। बात वही है जो हमने बयान की कि आपने ज़रूरत के तहत जायज़ करार

दिया और अनुमति से नजासत का हट जाना लाज़िम है। जब नजासत हट गई तो नमाज़ जायज़ होगी और पानी खराब न हुआ। अतः इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) ने ज़रूरत के वक्त का एतबार किया है न कि किसी विशेष जगह का, और इमाम अबू यूसुफ (रहमतुल्लाह अलैह) ने दोनों बातों के मेल का एतबार किया है, और यही सही है। यकीनन बुरहान शरह...

1. फतह अल-मुईन, किताब अत-तहारत, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/73
2. हाशियत अत-तहतवी अला मराक़ी अल-फलाह, अनुभाग: मृत खालों की पाकी, कारखाना तिजारत कराची, पृष्ठ 90 पृष्ठ 761 का 429

فتاوی رضویہ جلد چہارم

یظھر ما فی الدر من المنافاۃ حیث علل طھارتہ عند محمد بضرورۃ الاستعمال ثم فرع علیہ ان الماء لا ینجس بوقوعہ فیہ ۱ اھ۔ نے اس کے استعمال کا جواز ضرورت پر منحصر نہیں کیا اور الدرر نے جو ضرورت کو اس کی تعلیل قرار دیا ہے ابو السعود نے اس کو بھی رد کر دیا کہ اگر ایسا ہوتا تو وہ کہتے اس کے گرنے سے تھوڑا پانی ناپاک ہو جاتا ہے کیونکہ ضرورت معدوم ہے حالانکہ ایسا نہیں نیز نہر میں ان کا صریح قول کہ اختلاف کا اثر اس صورت میں ہی ظاہر ہو گا جب وہ نماز پڑھے اور اس کے پاس ایک درہم سے زیادہ خنزیر کے بال ہوں یا وہ تھوڑے پانی میں گریں اس طرح کی تعلیل کا انکار کرتا ہے اور جو کچھ ہم نے ثابت کیا وہ الدرر میں پائی جانے والی منافات کو ظاہر کرتا ہے جب انہوں نے امام محمد رحمہ اللہ کے نزدیک ضرورت استعمال کو اس کی طہارت قرار دیا پھر اس پر تفریعا کہا کہ اس کے گرنے سے پانی ناپاک نہیں ہوتا اھ۔ (ت)

اقول : ولعلك اذا تأملت فیما القینا علیك علمت ان ھذا کلہ فی غیر محلہ وحاشا محمدا ان یبیح الانتفاع بہ بلا ضرورۃ مع قول اللہ تعالی فانہ رجس وانما الامر مابیننا انہ اباح للضرورۃ ومن ضرورۃ الاباحۃ سقوط النجاسۃ واذا سقطت جازت الصلاۃ ولم یفسد الماء فبمحمد اعتبر زمان الضرورۃ ولم یعتبر خصوص محلھا وابویوسف اعتبر الامرین جمیعا وھو الصحیح لاجرم نص فی البرھان شرح مواھب الرحمن ان رخص محمد الانتفاع بشعرہ لثبوت الضرورۃ عندہ فی ذلك ومنعاہ لعدم تحققھا لقیام غیرہ مقامہ ۲ اھ۔ اقول : شاید جب تو اس پر غور کرے جو ہم نے تمہارے سامنے پیش کیا تو جان لے کہ یہ سب کچھ اپنے محل پر نہیں ہے ہرگز ایسا نہیں ہو سکتا کہ امام محمد رحمہ اللہ بلا ضرورت اس سے انتفاع جائز قرار دیں حالانکہ اللہ تعالی کا ارشاد ہے "پس بیشک یہ ناپاک ہے" بات وہی ہے جو ہم نے بیان کی کہ آپ نے ضرورت کے تحت جائز قرار دیا اور اباحت سے نجاست کا ساقط ہو جانا

لازم ہے جب نجاست ساقط ہو گئی تو نماز جائز ہو گی اور پانی خراب نہ ہوا، پس امام محمد رحمہ اللہ نے وقت ضرورت کا اعتبار کیا ہے محل مخصوص کا نہیں کیا، اور امام ابو یوسف رحمہ اللہ نے دونوں باتوں کے مجموعہ کا اعتبار کیا ہے، اور یہی صحیح ہے۔ یقینا برہان شرح

1 فتح المعین، کتاب الطھارۃ، ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ، ۱ / ۷۳ 2 حاشیتہ الطحطاوی علی مراقی الفلاح فصل یطہر جلد المیتۃ، کارخانہ تجارت کراچی ص ۹۰ Page 429 of 761

(Arabic Text Column): It was quoted by Al-Tahtawi in the margins of Al-Maraqi, and it is stated in Al-Ghunya: Regarding pig hair, when benefit from it was permitted for sewing due to necessity, Muhammad said that if it falls into water, it does not make it impure. End. Allama Abdul Ali al-Birjandi stated in Sharh al-Niqayah: The absolute mention of hair indicates that pig hair is also pure; it does not spoil water and carrying it does not harm the prayer. This is the view of Muhammad, and that is due to the necessity of people's need to use it for sewing. According to Abu Yusuf, it is impure because the pig is inherently impure (najis al-ayn), as mentioned in Al-Hasr. As for the bone of a pig, it is impure by consensus because there is no necessity for its use as there is for hair. End. So see how they all stated that Muhammad's purification (of hair) is built upon necessity. Thus, the invalidity of all that this Sayyid Allama (Abu al-Saud) mentioned became apparent, and it was clarified that there is no argument for him in the statement of Al-Nahr, nor any contradiction between the two statements of Al-Durar, and that upon the cessation of necessity, [prohibition] is required by consensus.

(Urdu Translation Column): Mawahib al-Rahman clarifies that Imam Muhammad's (may Allah have mercy on him) permission for utilizing its hair is based on the necessity established in this regard according to him. The Shaykhayn (Imams Abu Hanifa and Abu Yusuf) prohibited it because, according to them, necessity was not established since other alternatives exist. End. (T) This was quoted by Imam Tahtawi in the margins of Maraqi al-Falah and stated in Al-Ghunya: "When gaining benefit from pig hair for sewing was deemed permissible due to necessity, Imam Muhammad (RA) said that if they fall into water, they do not make it impure." End. Allama Abd al-Ali al-Birjandi stated in Sharh al-Niqayah: "The absolute mention of hair indicates that pig hair is also pure; it does not spoil water, nor does carrying it harm the prayer. This is the view of Muhammad, and this is because people face the necessity of using it for sewing. According to Imam Abu Yusuf (RA), it is impure because the pig is inherently impure (najis al-ayn), as mentioned in Al-Hasr. However, the bone of a pig is impure by consensus because, unlike hair, there is no necessity for its use." End. (T) So see how all (jurists) stated that Imam Muhammad's (RA) deeming it pure is built upon necessity. Thus, the invalidity of all that this Sayyid Allama (Abu al-Saud, may Allah have mercy on him) mentioned became apparent. And it became clear that there is no argument for them in the statement of Al-Nahr, nor any...

(Footnotes): 1. Ghunyat al-Mustamli Sharh Munyat al-Musalli, Chapter on Impurities, Sohail Academy Lahore, p. 146 2. Sharh al-Niqayah lil-Birjandi, Book of Purification, Naval Kishore Lucknow, 1/31

(अरबी पाठ स्तंभ): मराक़ी के हाशिये में तहतावी द्वारा इसे उद्धृत किया गया है, और अल-ग़ुन्या में कहा गया है: सूअर के बालों के बारे में, जब सिलाई के लिए आवश्यकता के कारण इसके उपयोग की अनुमति दी गई, तो मुहम्मद ने कहा कि यदि यह पानी में गिर जाए, तो यह उसे अशुद्ध नहीं करता है। अल्लामा अब्दुल अली अल-बिरजंदी ने शरह अल-निकाया में कहा: बालों का सामान्य उल्लेख यह दर्शाता है कि सूअर के बाल भी शुद्ध हैं; यह पानी को खराब नहीं करता है और न ही इसे ले जाने से नमाज़ में कोई हर्ज है। यह इमाम मुहम्मद का विचार है, और यह सिलाई के लिए इसके उपयोग की लोगों की आवश्यकता के कारण है। अबू यूसुफ़ के अनुसार, यह अशुद्ध है क्योंकि सूअर स्वयं अपवित्र है, जैसा कि अल-हसर में वर्णित है। जहाँ तक सूअर की हड्डी का प्रश्न है, वह सर्वसम्मति से अशुद्ध है क्योंकि बालों की तरह इसके उपयोग की कोई आवश्यकता नहीं है। तो देखें कि उन सभी ने कैसे स्पष्ट किया कि मुहम्मद द्वारा इसे शुद्ध मानना आवश्यकता पर आधारित है। इस प्रकार, इस सैय्यद अल्लामा (अबू अल-सऊद) ने जो कुछ भी उल्लेख किया है उसकी निरर्थकता स्पष्ट हो गई, और यह स्पष्ट हो गया कि अल-नहर के कथन में उनके लिए कोई तर्क नहीं है, और न ही अल-दुरर के दो बयानों के बीच कोई विरोधाभास है, और आवश्यकता समाप्त होने पर [प्रतिबंध] सर्वसम्मति से आवश्यक है।

(उर्दू अनुवाद स्तंभ): मवाहिब अल-रहमान में इस बात की स्पष्ट व्याख्या की गई है कि इमाम मुहम्मद (रह.) का इसके बालों से लाभ उठाने की अनुमति देना उस आवश्यकता पर आधारित है जो उनके अनुसार इस मामले में स्थापित हुई है। और शैख़ैन (इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम अबू यूसुफ़) ने इसे मना किया क्योंकि उनके अनुसार आवश्यकता सिद्ध नहीं थी क्योंकि अन्य विकल्प मौजूद हैं। अंत। (त) इसे इमाम तहतावी ने मराक़ी अल-फ़लाह के हाशिये में उद्धृत किया है और 'अल-ग़ुन्या' में कहा गया है कि जब आवश्यकता के अधीन सूअर के बालों से सिलाई के लिए लाभ प्राप्त करना जायज़ माना गया, तो इमाम मुहम्मद (रह.) ने फ़रमाया कि यदि वे पानी में गिर जाएँ तो उसे अशुद्ध नहीं करेंगे। अंत। अल्लामा अब्दुल अली बिरजंदी ने शरह अल-निकाया में फ़रमाया: 'बालों का सामान्य उल्लेख इस बात को दर्शाता है कि सूअर के बाल भी पाक (पवित्र) हैं; न तो वे पानी को खराब करते हैं और न ही नमाज़ में उन्हें साथ रखना हानिकारक है। इमाम मुहम्मद (रह.) का यही मत है और यह इसलिए है क्योंकि लोगों को सिलाई के लिए इसके उपयोग की आवश्यकता पड़ती है। इमाम अबू यूसुफ़ (रह.) के अनुसार यह अशुद्ध है क्योंकि सूअर स्वयं अपवित्र (नजिस अल-ऐन) है, जैसा कि

अल-हसर में है। लेकिन सूअर की हड्डी सर्वसम्मति से अशुद्ध है क्योंकि बालों की तरह हड्डी के उपयोग की आवश्यकता नहीं पड़ती।' अंत। (त) तो देखें कि कैसे तमाम (फ़ुक़हा) ने बयान फ़रमाया कि इमाम मुहम्मद (रह.) का इसे पाक क़रार देना ज़रूरत पर आधारित है। अतः इस सैय्यद अल्लामा (अबू अल-सऊद) रहमतुल्लाह अलैहि ने जो कुछ ज़िक्र किया उसका निराधार होना ज़ाहिर हो गया। और स्पष्ट हो गया कि अल-नहर के क़ौल में उनके लिए कोई दलील नहीं है और न ही...

(पादलेख): 1. ग़ुन्यत अल-मुस्तमली शरह मुन्यत अल-मुसल्ली, अशुद्धियों का अध्याय, सुहैल अकादमी लाहौर, पृष्ठ 146 2. शरह अल-निकाया लिल-बिरजंदी, शुद्धिकरण की पुस्तक, नवल किशोर लखनऊ, 1/31

(عربی متن): نقله ط في حاشية المراقى وقال في الغنية شعر الخنزير لما ابيح الانتفاع به للخرز ضرورة قال محمد انه لو وقع في الماء لا ينجسه اهـ . وقال العلامة عبدالعلى البرجندي في شرح النقاية اطلاق الشعر يدل على ان شعر الخنزير ايضاً طاهر لا يفسد الماء ولا يضر حمله في الصلاة وهو قول محمد وذلك لضرورة حاجة الناس الى استعماله في الخرز وعند ابي يوسف نجس لان الخنزير نجس العين كذا في الحصر واما عظم الخنزير فنجس اتفاقاً لانه لا ضرورة في استعماله كما في الشعر اهـ . فانظر كيف نصوا جميعاً ان تطهير محمد مبتن على الضرورة فظهر سقوط كل ما ذكر هذا السيد العلامة رحمه الله تعالى واستبان ان لا حجة له في قول النهر ولا منافاة بين قولي الدرر وان عند زوال الضرورة يجب وفاق

(اردو متن): مواہب الرحمن میں اس بات کی تصریح کی ہے کہ امام محمد رحمہ اللہ کا اس کے بالوں سے انتفاع کی اجازت دینا اس ضرورت کی بنیاد پر ہے جو اس سلسلے میں ان کے ہاں ثابت ہوئی اور شیخین نے منع کیا کیونکہ ان کے نزدیک ضرورت ثابت نہیں کیونکہ دوسری چیز اس کے قائم مقام ہے اہـ (ت) اسے امام طحطاوی نے مراقی الفلاح کے حاشیہ میں نقل کیا اور غنیہ میں فرمایا کہ جب ضرورت کے تحت خنزیر کے بالوں سے سلائی کیلئے نفع حاصل کرنا جائز قرار دیا گیا تو امام محمد رحمہ اللہ نے فرمایا اگر وہ پانی میں گر جائیں تو اسے ناپاک نہیں کرے گے اہـ علامہ عبد العلیٰ بر جندی نے شرح نقایہ میں فرمایا: "مطلق بالوں کا ذکر اس بات پر دلالت کرتا ہے کہ خنزیر کا بال بھی پاک ہے نہ وہ پانی کو خراب کرتا ہے اور نہ ہی نماز میں اس کا اٹھانا نقصان دہ ہے۔ امام محمد رحمہ اللہ کا یہی قول ہے اور یہ اس لئے کہ لوگوں کو سلائی کیلئے اس کے استعمال کی ضرورت پیش آتی ہے۔ امام ابو یوسف رحمہ اللہ کے نزدیک ناپاک ہے کیونکہ خنزیر

نجس عین ہے، جیسا کہ حصر میں ہے لیکن خنزیر کی ہڈی بالاتفاق ناپاک ہے کیونکہ بالوں کی طرح ہڈی کے استعمال کی ضرورت پیش نہیں آتی اہـ (ت) پس دیکھو کس طرح تمام (فقہاء) نے بیان فرمایا کہ امام محمد رحمہ اللہ کا اسے پاک قرار دینا ضرورت کی بنیاد پر ہے پس جو کچھ اس سید علامہ (ابوالسعود) رحمہ اللہ نے ذکر کیا اس کا ساقط ہونا ظاہر ہوا۔ اور واضح ہوا کہ نہر کے قول میں ان کے لئے کوئی حجت نہیں اور نہ ہی...

(حواشی): 1 غنیہ المستملی شرح منیۃ المصلی فصل فی الانجاس سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۴۶ 2 شرح النقایۃ للبرجندی کتاب الطھارۃ نولکشور لکھنؤ ۱/ ۳۱

صفحہ 430 از 761

Fatawa Razawiya, Volume Four

(Arabic Text - Left Column): Everything is based on prohibition and impurity, as stated by Allama al-Maqdisi, followed by Allama Nuh Effendi and those after him. This is what we believe in the religion of Allah, Glorified and Exalted. From this, the answer to this research is manifest: there is no necessity for the hair of a dog. Therefore, those who maintain its impurity must act upon its implications. Later, I saw al-Birjandi explicitly stating this when he said: "We have mentioned that the dog is inherently impure according to some, so it is appropriate that its hair is also impure according to them, as there is no necessity in using it." End quote.

Fifth: What he attributed to 'Al-Minah' is also mentioned in 'Al-Khaniyyah'. He relied on it and indicated the weakness of the detailed distinction by saying (verbatim): "When a dog comes out of water and shakes itself, and it splashes onto a person's garment, it spoils (invalidates the purity of) it. It is said: If that (water) was from rainwater, it does not spoil it unless the rain reached its skin. In the apparent narration, it is absolute and does not provide such details." End quote. It has been explicitly mentioned in 'Khizanat al-Muftin' with the symbol 'Q' referring to Qazi Khan, that if the hair of a pig or a dog falls into water, it spoils it because it is inherently impure. However, one might say...

(Urdu Text - Right Column): There is a conflict between the two statements in 'Al-Durar'. Also, in the event that necessity is removed, there is a consensus among all on its prohibition and impurity, as gained from Allama al-Maqdisi's discourse. Allama Nuh Effendi and those after him followed him, and we also hold this belief in the divine religion. Along with this, the answer to this research also became apparent that there is no need for dog hair. So, the proponent of impurity will have to act on its decision. Then I saw the clarification in Birjandi when they said that we have mentioned the dog being inherently impure according to some, so it is appropriate that according to them its hair is also impure because there is no need for its use. End. (T)

Fifth: What he has attributed to 'Minh' is also mentioned in 'Khaniyah'. He relied on it and pointing towards the weakness of the detail, said: "When a dog comes out of water and shakes itself and it touches someone's cloth, it will make it impure. It was said that if it is from rain water then it will not make it impure unless the rain reaches its skin. And in the apparent narration, there is general application, not a detailed

one. End. And in 'Khazanat-ul-Muftiyyin', with the mark 'Q' pointing towards Qazi Khan, from him...

Footnotes: 1. Sharh al-Nuqayah by Al-Birjandi, Book of Purity, Naval Kishore (Lucknow) 1/38 2. Fatawa Qazi Khan, Chapter on Impurities, printed by Naval Kishore Lucknow 1/11 3. Fatawa Qazi Khan, Chapter on what falls into a well, printed by Naval Kishore Lucknow 1/6 Page 431 of 761

फ़तावा रज़विया, जिल्द चौथी

(अरबी पाठ - बायाँ कॉलम): सब कुछ निषेध और अशुद्धि (नजासत) पर आधारित है जैसा कि अल्लामा मक़दिसी ने कहा है, और अल्लामा नूह अफ़ंदी और उनके बाद वालों ने उनका अनुसरण किया है। अल्लाह, महिमामय और उच्च, के धर्म में हमारा यही विश्वास है। इसी से इस शोध का उत्तर स्पष्ट हो जाता है कि कुत्ते के बालों की कोई आवश्यकता नहीं है। इसलिए, जो इसके अशुद्ध होने का पक्षधर है, उसे इसके परिणामों पर अमल करना होगा। बाद में मैंने अल-बिरजंदी में स्पष्ट रूप से देखा जब उन्होंने कहा: "हमने उल्लेख किया है कि कुछ लोगों के अनुसार कुत्ता स्वयं अशुद्ध (नजिस अल-ऐन) है, इसलिए यह उचित है कि उनके अनुसार इसके बाल भी अशुद्ध हों क्योंकि इसके उपयोग की कोई आवश्यकता नहीं है।" समाप्त।

पांचवां: उन्होंने 'अल-मिनाह' के लिए जो श्रेय दिया है, उसका उल्लेख 'अल-खानिया' में भी है। उन्होंने इस पर भरोसा किया और विवरण की कमजोरी की ओर इशारा करते हुए कहा (शब्दशः): "जब एक कुत्ता पानी से बाहर निकलता है और खुद को झटकता है, और वह किसी व्यक्ति के कपड़े पर गिरता है, तो वह उसे खराब (अशुद्ध) कर देता है। कहा जाता है: यदि वह (पानी) बारिश का पानी था, तो वह उसे तब तक खराब नहीं करेगा जब तक कि बारिश उसकी खाल तक न पहुँच जाए। ज़ाहिर रिवायत में, यह सामान्य है और ऐसा कोई विवरण नहीं दिया गया है।" समाप्त। 'ख़िज़ानत अल-मुफ़्तीन' में संकेत 'क़' के साथ क़ाज़ी खान का हवाला देते हुए स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि यदि सुअर या कुत्ते के बाल पानी में गिर जाते हैं, तो वे उसे खराब कर देते हैं क्योंकि वे स्वयं अशुद्ध हैं। हालाँकि, कोई कह सकता है...

(उर्दू पाठ - दायाँ कॉलम): 'अल-दुर्र' के दो बयानों के बीच विरोध है। इसके अलावा, आवश्यकता समाप्त होने की स्थिति में, इसकी निषेधता और अशुद्धि पर सभी की सहमति है, जैसा कि अल्लामा मक़दिसी के प्रवचन से लाभ प्राप्त हुआ है। अल्लामा नूह अफ़ंदी और उनके बाद वालों ने उनका अनुसरण किया, और हम भी ईश्वरीय धर्म में यही विश्वास रखते हैं। इसके साथ ही, इस शोध का उत्तर भी स्पष्ट हो गया कि कुत्ते के बालों की कोई आवश्यकता नहीं है। अत; अशुद्धि के समर्थक को इसके निर्णय पर अमल करना होगा। फिर मैंने बिरजंदी में स्पष्टीकरण देखा जब उन्होंने कहा कि हमने कुछ लोगों के अनुसार कुत्ते के नजिस-अल-ऐन (मूल रूप से अशुद्ध) होने का उल्लेख किया है, इसलिए यह उचित है कि उनके अनुसार उसके बाल भी अपवित्र हों क्योंकि उनके उपयोग की कोई आवश्यकता नहीं है। (त)

पांचवां: उन्होंने 'मिन्ह' की ओर जो कुछ भी श्रेय दिया है वह 'खानिया' में भी वर्णित है। उन्होंने उस पर भरोसा किया और विस्तार की कमजोरी की ओर इशारा करते हुए कहा, "जब कुत्ता पानी से निकलकर अपने आप को झटकता है और वह किसी इंसान के कपड़े पर लग जाए तो वह उसे नापाक कर देगा। कहा गया कि अगर यह बारिश के पानी से हो तो उसे नापाक नहीं करेगा जब तक कि बारिश उसकी खाल तक न पहुँच जाए और ज़ाहिर रिवायत में सामान्य उल्लेख है, विवरण नहीं। समाप्त। और 'ख़ज़ानत-उल-मुफ़्तीन' में 'क़' के साथ क़ाज़ी खान की तरफ इशारा करते हुए उनसे..."

फुटनोट्स: 1. शरह अल-नुकाया लिल-बिरजंदी, किताब-अत-तहारत, नवल किशोर (लखनऊ) 1/38 2. फतावा काजी खान, नजासत का अध्याय, नवल किशोर लखनऊ द्वारा मुद्रित 1/11 3. फतावा काजी खान, कुएं में गिरने वाली चीजों का अध्याय, नवल किशोर लखनऊ द्वारा मुद्रित 1/6 पृष्ठ 431 का 761

(بایاں کالم - عربی متن): الكل على التحريم والمتنجيس كما افاده العلامة المقدسي وتبعه العلامة نوح افندی ومن بعده وهو الذي نعتقد في دين الله سبحانہ و تعالیٰ و بہ ظهر الجواب عن هذا البحث بأن لا ضرورة في شعر الكلب فعلى قائل النجاسة العمل بقضيتها ثم رأيت البرجندی صرح بہ حيث قال انا قد ذكرنا ان الكلب نجس العين عند بعضهم فينبغي ان يكون شعره نجسا عندهم اذ لا ضرورة في استعماله اه الخامس: ما عزاه للمنح مذكور ايضا في الخانية واعتمده واشار الى ضعف التفصيل حيث قال مانصه الكلب اذا خرج من الماء وانتفض فاصاب ثوب انسان افسده قيل ان كان ذلك من ماء المطر لا يفسده الا اذا اصاب المطر جلده وفی ظاہر الروایۃ اطلق ولم يفصل اه وقد صرح فی خزانة المفتين برمز ق لقاضی خان ان شعر الخنزير او الكلب اذا وقع فی الماء يفسده لانه نجس العين لكن لقائل ان يقول

(دایاں کالم - اردو متن): الدرر کے دو قولوں کے درمیان منافات ہے نیز ضرورت کے زائل ہونے کی صورت میں اس کی حرمت اور نجاست پر سب کا اتفاق ہے جیسا کہ علامہ مقدسی (کے کلام) سے اس بات کا فائدہ حاصل ہوا اور علامہ نوح آفندی اور ان کے بعد والوں نے ان کی اتباع کی اور دین خداوندی میں ہم بھی اسی بات کا اعتقاد رکھتے ہیں اور اسی کے ساتھ اس بحث کا جواب بھی ظاہر ہوا کہ کتے کے بالوں کی ضرورت نہیں پڑتی پس نجاست کے قائل کو اس کے فیصلہ پر عمل کرنا ہوگا، پھر میں نے بر جندی میں اس کی تصریح دیکھی جب انہوں نے فرمایا کہ ہم نے بعض کے نزدیک کتے کے نجس عین ہونے کا ذکر کیا ہے پس مناسب یہ ہے کہ ان کے نزدیک اس کے بال بھی ناپاک ہوں کیونکہ اس کے استعمال کی ضرورت نہیں اھ (ت) پنجم : جو کچھ انہوں نے منح کی طرف منسوب کیا ہے وہ خانیہ میں بھی مذکور ہے انہوں نے اس پر اعتماد کیا اور تفصیل کے ضعف کی طرف اشارہ کرتے ہوئے فرمایا "کتا جب پانی سے نکل کر اپنے آپ کو جھاڑے اور

وہ کسی انسان کے کپڑے کو لگ جائے تو اسے ناپاک کر دے گا کہا گیا کہ اگر یہ بارش کے پانی سے ہو تو اسے ناپاک نہیں کریگا مگر جب بارش اس کے چمڑے تک پہنچ جائے اور ظاہر روایت میں اطلاق ہے تفصیل نہیں ہے اھ اور خزانتہ المفتین میں "ق" کے ساتھ قاضی خان کی طرف اشارہ کرتے ہوئے ان سے

حواشی: 1 شرح النقایہ للبر جندی کتاب الطہارت نولکشور (لکھنؤ) ۳۸/۱ 2 فتاوی قاضی خان فصل فی النجاستہ مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ۱۱/۱ 3 فتاوی قاضی خان فصل فی مایقع فی البئر مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ۶/۱ Page 431 of 761

Fatawa Razawiya - Volume 4

It is narrated that if the hair of a pig or a dog falls into water, they spoil it because they are inherently impure (Najis al-Ain). However, a claimant could say that since you have based the account of agreement on the preferred narration of 'As-Siraj', there is no reason to reject it with another narration. Yes, if they had mentioned what we have mentioned from 'Al-Khaniyah' and explained that the preference (Tarjeeh) has varied, and that according to the manifest narration (Zahir al-Riwayah) it is declared impure, therefore it is obligatory to adopt it, and the ruling of agreement based on the choice of 'As-Siraj' would be dropped, then that would have some weight. After all is said and done, the account of agreement becomes questionable. Undoubtedly, in the text of 'Al-Ghurar', clarifying the threefold classification, it is said: "And the dog is inherently impure; it is said no; and it is said its skin is impure but its hair is pure." (T)

As for the preference (Tarjeeh), I say for several reasons: First: This is the view of the Imam, as the questioner previously cited from 'Ad-Durr al-Mukhtar', and we have previously mentioned it (citing) from 'Al-Quhistani' and 'At-Tahtawi'. (T)

In 'Nazm al-Fara'id' it is stated: And according to both of them (the Sahiban), the essence of dogs is impurity, but the pure Imam (Abu Hanifa, may Allah have mercy on him) said it is pure. (T)

---

1. Durar Sharh Ghurar, before the chapter on 'Wells less than ten etc.', Ahmed Al-Kamil Press, located in Dar-us-Sa'adah, 1/24.
2. Nazm al-Fara'id

फतावा रज़विया - जिल्द 4

नक़ल किया गया है कि यदि सूअर या कुत्ते के बाल पानी में गिर जाएं तो वे उसे खराब कर देते हैं क्योंकि वे 'नजिसुल ऐन' (स्वयं में अपवित्र) हैं। लेकिन कोई कह सकता है कि जब आपने 'सिराज' की चुनी हुई रिवायत पर इत्तेफाक (सहमति) की कहानी की बुनियाद रखी है, तो दूसरी रिवायत के साथ इसे रद्द करने का कोई कारण नहीं है। हाँ, अगर वे उस बात का ज़िक्र करते जो हमने 'ख़ानिया' से (नक़ल करते हुए) ज़िक्र की है और बयान करते कि तरजीह (प्राथमिकता) अलग-अलग है और 'ज़ाहिर रिवायत' के मुताबिक इसे नापाक करार दिया गया है, इसलिए इसे अपनाना वाजिब है, और 'सिराज' के चुनाव के आधार पर जिस इत्तेफाक का हुक्म दिया गया है वह खत्म हो जाता, तो यह बात वजनदार होती। लंबी बातचीत के बाद, इत्तेफाक की बात पर सवाल उठते हैं। निस्संदेह 'ग़ुरर' के पाठ में तीन बातों की स्पष्टता करते हुए कहा गया: "और कुत्ता स्वयं में नापाक है; कहा गया कि नहीं है; और कहा गया कि उसका चमड़ा नापाक है लेकिन बाल पाक हैं।" (T)

तरजीह के बारे में मैं कई तरह से बात करूँगा: अव्वल: यही इमाम का कौल (कथन) है जैसा कि पूछने वाले ने इससे पहले 'दुर्रे मुख्तार' से नक़ल किया है, और हमने इससे पहले 'कुहिस्तानी' और 'तहतवावी' से (नक़ल करते हुए) इसे बयान किया है। (T)

'नज़्मुल फ़राइद' में है: और उन दोनों (साहिबैन) के नज़दीक कुत्ते का वजूद नापाक है, और पाक इमाम (अबू हनीफा रहमतुल्लाह अलैह) ने फरमाया कि वह पाक है। (T)

---

1. दुरर शरह ग़ुरर, फ़स्ल 'बइरून अ'शर' आदि से पहले, मताबत अहमद अल-कामिल, दारुस सआदा, 1/24
2. नज़्मुल फ़राइद

पृष्ठ 432 का 761

نقل کیا کہ خنزیر یا کتے کے بال پانی میں گر جائیں تو اسے خراب کردیتے ہیں کیونکہ وہ نجس عین ہے۔ لیکن کوئی قائل کہہ سکتا ہے کہ جب تم نے سراج کی مختار روایت پر حکایت اتفاق کی بنیاد رکھی ہے تو دوسری روایت کے ساتھ اسے رد کرنے کی کوئی وجہ نہیں ہے ہاں اگر وہ اس بات کا ذکر کرتے جو ہم نے خانیہ سے (نقل کرتے ہوئے) ذکر کی ہے اور بیان کرتے کہ ترجیح مختلف ہے اور ظاہر روایت کے مطابق اسے ناپاک قرار دیا ہے لہذا اسے اختیار کرنا واجب ہے اور سراج کے اختیار کے مطابق جس اتفاق کا حکم دیا گیا ہے وہ ساقط ہے تو اس بات کا کوئی وقار ہوتا، مختصر اور طویل گفتگو کے بعد اتفاق کی بات محلِ نظر ہوگئی۔ بلا شک و شبہ غرر کے متن میں تثلیث کی تصریح کرتے ہوئے کہا "اور کتا نجس عین ہے، کہا گیا کہ نہیں ہے۔ اور کہا گیا ہے کہ اس کا چمڑا ناپاک ہے بال پاک ہیں۔ (ت)

واما الترجیح فاقول بوجوہ: اولاً: یہی قولِ امام ہے جیسا کہ سائل نے اس سے پہلے در مختار سے نقل کیا ہے، اور ہم نے قہستانی اور طحطاوی سے (نقل کرتے ہوئے) اس سے پہلے بیان کیا ہے (ت)

نظم الفرائد میں ہے: اور ان دونوں (صاحبین) کے نزدیک کتے کا عین ناپاک ہے، اور امامِ پاک (ابو حنیفہ رحمۃ اللہ) نے فرمایا پاک ہے۔ (ت)

---

1. درر شرح غرر قبیل فصل بئر دون عشر الخ مطبعہ احمد الکامل الکائنہ فی دار سعادہ ۱/ ۲۴

2. نظم الفرائد

Fatawa Razawiyya Volume Four

In Hilya it is stated: He proceeded upon this in Al-Hawi al-Qudsi 1. In Hawi al-Qudsi, this very path has been adopted. (t) In the same source it is mentioned: In Al-Nihayah and others, citing Al-Muhit: When a dog falls into water and is pulled out alive, if its mouth touched the water, all the water must be drained. If its mouth did not touch the water, then according to the two companions (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad), all the water must be drained. However, according to Imam Abu Hanifa, there is no issue. It was said that this indicates that the dog itself is not inherently impure (najis al-'ayn). 2 In Al-Nihayah and others, it is cited from Al-Muhit that if a dog falls into water and is taken out alive, if its mouth reached the water, all the water should be removed. And if the mouth did not reach the water, then according to the two companions, all the water should be removed, and according to Imam Abu Hanifa (may Allah have mercy on him), there is no problem, and he said that this indicates that the dog is not inherently impure. (t) Similarly, it is in Tajrid al-Quduri 3 as he also cited it from him in Al-Hilya (as he also cited it from them in Hilya. t). In Al-Bahr al-Ra'iq it is stated: He said in Al-Qunyah, attributing it to Majd al-A'immah: There is disagreement regarding the impurity of the dog. What is correct in my view from the reports in Al-Nawadir and Al-Amali is that it is inherently impure according to the two companions, but according to Abu Hanifa, it is not inherently impure. 4 In Qunyah, citing Majd al-A'immah, it was stated that there is a difference of opinion regarding the dog being impure. Among the narrations of Nawadir and Amali, what is correct according to me is that according to the two companions it is inherently impure, and according to Imam Abu Hanifa (may Allah have mercy on him) it is not inherently impure. (t) And some narrations from Imam Muhammad also came in agreement with this: In Al-Hilya, from Al-Khaniyyah, from Al-Natif: Indeed, when he prayed... In Hilya, citing Khaniyyah from Natif, it is narrated that when someone prayed...

Footnotes: 1 Hilya Sharh Munyat al-Musalli 2 Hilya Sharh Munyat al-Musalli 3 Tajrid al-Quduri 4 Al-Bahr al-Ra'iq, Book of Purification, H.M. Saeed Company Karachi, 1/102

हलिया में है: उन्होंने अल-हावी अल-कुदसी में इसी का अनुसरण किया। 1 हावी कुदसी में यही मार्ग अपनाया गया है। (त) उसी में है: निहाया और अन्य ग्रंथों में अल-मुहीत के हवाले से है: जब कुत्ता पानी में गिर जाए और जीवित बाहर निकाल लिया जाए, यदि उसका मुँह पानी तक पहुँचा है तो पूरा पानी निकाल दिया जाए, और यदि मुँह पानी तक नहीं पहुँचा तो साहिबैन (इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद) के कथन पर पूरा पानी निकाला जाए, और इमाम अबू हनीफा के अनुसार कोई हर्ज नहीं है। और कहा कि यह इस ओर इशारा है कि कुत्ता खुद अपवित्र (नजिस अल-ऐन) नहीं है। 2 निहाया वगैरह में मुहीत से नक़ल किया कि कुत्ता जब पानी में गिर जाए और ज़िंदा निकाल लिया जाए अगर उसका मुँह पानी तक पहुँचा है तो तमाम पानी निकाला जाए, और अगर मुँह पानी तक नहीं पहुँचा तो साहिबैन के कौल पर तमाम पानी निकाला जाए और इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैह के नज़दीक कोई हर्ज नहीं और फ़रमाया कि यह इस तरफ़ इशारा है कि कुत्ता नजिस-ए-ऐन नहीं। (त) इसी तरह तजरीद अल-कुदूरी में 3 है जैसा कि उन्होंने हलिया में भी उनसे उद्धृत किया है (जैसे कि उन्होंने इसे हलिया में भी उनसे नक़ल किया। त)। बहर अल-राईक में है: कनिया में मजद अल-आइम्मा के हवाले से कहा: कुत्ते की अपवित्रता के बारे में मतभेद है। नवादिरा और अमाली के वृत्तांतों में से जो मेरे नज़दीक सही है वह यह है कि साहिबैन के नज़दीक वह नजिस अल-ऐन है और इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक वह नजिस अल-ऐन नहीं है। 4 कनिया में मजद अल-आइम्मा के हवाले से बताया कि कुत्ते के नजिस होने में इख़्तिलाफ़ है और नवादिरा व अमाली की रिवायतों में से जो कुछ मेरे नज़दीक सही है वह यह है कि साहिबैन के नज़दीक नजिस-ए-ऐन है और इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैह के नज़दीक नजिस-ए-ऐन नहीं है। (त) और कुछ रिवायतें इमाम मुहम्मद से भी इसके मुवाफ़िक आईं: हलिया में खानिया के हवाले से नातिफ़ी से उद्धृत है कि जब किसी ने नमाज़ पढ़ी... हलिया में ब-हवाला खानिया नातिफ़ी से नक़ल किया है कि जब किसी ने...

पाद-टिप्पणियाँ: 1 हलिया शरह मुन्यात अल-मुसल्ली 2 हलिया शरह मुन्यात अल-मुसल्ली 3 तजरीद अल-कुदूरी 4 अल-बहर अल-राईक, किताबुत तहारत, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/102

حلیہ میں ہے: مشی علیہ فی الحاوی القدسی 1۔ حاوی قدسی میں یہی راہ اختیار کی ہے۔(ت) اسی میں ہے: فی النھایۃ وغیرھا عن المحیط الکلب اذاوقع فی الماء فاخرج حیا ان اصاب فمہ یجب نزح جمیع الماء وان لم یصب فمہ الماء فعلی قولھما یجب نزح جمیع الماء وعلی قول ابی حنیفۃ لاباس وقال ھذا اشارۃ الی ان عین الکلب لیس بنجس 2۔ نہایہ وغیرہ میں محیط سے نقل کیا کہ کتا جب پانی میں گر جائے اور زندہ نکال لیا جائے اگر اس کا منہ پانی تک پہنچا ہے تو تمام پانی نکالا جائے، اور اگر منہ پانی تک نہیں پہنچا تو صاحبین کے قول پر تمام پانی نکالا جائے اور امام ابوحنیفہ رحمۃ اللہ کے نزدیک کوئی حرج نہیں اور فرمایا کہ یہ اس طرف اشارہ ہے کہ کتا نجس عین نہیں۔ (ت) اسی طرح تجرید القدوری میں 3 ہے کما نقلہ عنہ ایضا فی الحلیۃ (جیسے کہ انہوں نے اسے حلیہ میں بھی ان سے نقل کیا۔ت) بحر الرائق میں ہے: قال فی القنیۃ رامز المجد الائمۃ وقد اختلف فی نجاسۃ الکلب والذی صح عندی من الروایات فی النوادر والامالی انہ نجس العین عندھما وعند ابی حنیفۃ لیس بنجس العین 4۔ قنیہ میں مجد الائمہ کے حوالے سے بتایا کہ کتے کے نجس ہونے میں اختلاف ہے اور نوادر و امالی کی روایات میں سے جو کچھ میرے نزدیک صحیح ہے وہ یہ ہے کہ صاحبین کے نزدیک نجس عین ہے اور امام ابوحنیفہ رحمۃ اللہ کے نزدیک نجس عین نہیں ہے۔ (ت) اور کچھ روایتیں امام محمد سے بھی اس کے موافق آئیں: فی الحلیۃ عن الخانیۃ عن الناطفی انہ اذا صلی حلیہ میں بحوالہ خانیہ ناطفی سے نقل کیا ہے کہ جب کسی نے

حاشیہ: 1 حلیہ شرح منیۃ المصلی 2 حلیہ شرح منیۃ المصلی 3 تجرید القدوری 4 البحر الرائق کتاب الطہارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۰۲

Fatawa Razvia Volume 4

- If a prayer is offered on the skin of a slaughtered dog or wolf, the prayer is valid.[1]
- If one performs prayer on the skin of a slaughtered dog or wolf, their prayer is valid. (T)

In al-Bahr al-Ra'iq, from 'Aqd al-Fawa'id: - It is not hidden that this narration signifies its inherent purity according to [Imam] Muhammad,[2] etc. - It is not hidden that this narration provides the benefit of its inherent purity according to Imam Muhammad (may Allah have mercy on him). (T)

It is stated in Munyah: - It is narrated from Muhammad that a woman prayed while wearing a necklace on her neck containing the teeth of a lion, fox, or dog; her prayer was valid.[3] Finished. - It is narrated from Hazrat Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) that a woman prayed wearing a necklace in which there were teeth of a lion, fox, or dog (attached); her prayer is valid. Finished. This...

- Its commentator, Allama Ibrahim, said: The fact that the narration is from Muhammad does not contradict it being unanimous, for in the Fatawa it is mentioned absolutely, and the evidence points to it.[4] Finished.
- ...commentator Ibrahim said: The fact that this narration is narrated from Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) is not contrary to it being unanimous. It has been mentioned absolutely in the Fatawa, and the evidence also points towards it. (T)
- I say: Yes, it is mentioned absolutely in al-Khaniyah, al-Khulasah, al-Walwalijiyah, and others. We have already recited to you the text of al-Khulasah, which is exactly the wording of al-Khaniyah and al-Walwaliji, who attributed it to him in al-Hilyah. However, absolute mention does not indicate consensus, for sometimes an author mentions absolutely what they prefer, even if there are numerous disagreements. I remember writing on its margin...
- I say: Yes, Khaniyah, Khulasah, Walwalijiyah, etc., have mentioned it absolutely. We had recited to you the text of Khulasah; the words of Khaniyah are also exactly these, and in Hilyah, it has been attributed to Walwaliji. But absolute mention does not indicate consensus; sometimes what is preferred is stated absolutely even if there are multiple disagreements there. My thought is that I wrote on its...

1 Hilyat al-Mahalli Sharh Munyat al-Musalli 2 al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, published by H.M. Saeed Company, Karachi, 1/102 3 Munyat al-Musalli, Chapter on Impurities, published by Maktaba Qadriyah, Jamia Nizamiyah, Lahore, p. 110 4 Ghunyat al-Mustamli, Chapter on Impurities, published by Sohail Academy, Lahore, p. 155

फ़तवा रज़विया जिल्द चौथी

- यदि किसी ने ज़िबह किए हुए कुत्ते या भेड़िये की खाल पर नमाज़ पढ़ी, तो उसकी नमाज़ जायज़ है।[1]
- मज़बूह (ज़िबह किए हुए) कुत्ते या भेड़िये की खाल पर नमाज़ पढ़ी तो उसकी नमाज़ जायज़ है। (त)

बह्र अल-राइक में अक़्द अल-फ़वाइद से है: - यह छिपा नहीं है कि यह रिवायत मुहम्मद[2] के नज़दीक इसकी ज़ाती पाकीज़गी (ताहारत) का फ़ायदा देती है, इत्यादि। - मख़्फ़ी (छिपा) नहीं कि यह रिवायत इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहि के नज़दीक इसकी ज़ाती ताहारत का फ़ायदा देती है। (त)

मुन्या में है: - मुहम्मद से रिवायत है कि एक औरत ने नमाज़ पढ़ी और उसके गले में एक ऐसा हार था जिसमें शेर, लोमड़ी या कुत्ते के दांत थे; उसकी नमाज़ जायज़ थी।[3] समाप्त। - हज़रत इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहि से मरवी (रिवायत) है कि एक औरत ने गले में ऐसा हार डाल कर नमाज़ पढ़ी जिसमें शेर, लोमड़ी या कुत्ते के दांत (जड़े हुए) थे तो उसकी नमाज़ जायज़ है। समाप्त। इस...

- इसके शारह (व्याख्याकार) अल्लामा इब्राहिम ने कहा: रिवायत का मुहम्मद से होना इसके इत्तेफ़ाक़ी (सर्वसम्मत) होने के मुनाफ़ी (खिलाफ) नहीं है, क्योंकि फ़तावा में इसे मुतलक़न (बिना शर्त) ज़िक्र किया गया है और दलील भी इसी पर दलालत करती है।[4] समाप्त।
- ...के शारह इब्राहिम ने फ़रमाया: इस रिवायत का इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहि से मरवी होना इसके इत्तेफ़ाक़ी होने के मुनाफ़ी नहीं। फ़तावा में इसे मुतलक़न ज़िक्र किया गया है और दलील भी इस पर दलालत करती है। (त)
- मैं कहता हूँ: हाँ, खानिया, ख़ुलासा, वल्वालिजिया और अन्य में इसे मुतलक़ (बिना शर्त) ज़िक्र किया गया है। और हम तुम्हें ख़ुलासा की इबारत (पाठ) सुना चुके हैं, और खानिया और वल्वालिजी के शब्द भी बिल्कुल यही हैं, जिन्होंने हिल्या में इसे उनसे मंसूब किया है। लेकिन मुतलक़ ज़िक्र करना इत्तेफ़ाक़ (सहमति) पर दलालत नहीं करता, क्योंकि कभी-कभी मुसन्निफ़ (लेखक) अपनी पसंद (मुख़्तार) को मुतलक़ के तौर पर ज़िक्र कर देता है, भले ही वहाँ अनेक मतभेद हों। और मैंने ख़ुद को इसके हाशिये पर लिखते हुए देखा...

- अक़ूल (मैं कहता हूँ): हाँ, खानिया, ख़ुलासा और वल्वालिजिया वगैरह ने इसको मुतलक़ ज़िक्र किया है। हमने तुम्हें ख़ुलासा की इबारत सुनाई थी; खानिया के अल्फ़ाज़ (शब्द) भी ब-ऐनही (बिल्कुल) यही हैं और हिल्या में इसे वल्वालिजी की तरफ़ मंसूब किया गया है। लेकिन इतलाक़ (बिना शर्त कहना), इत्तेफ़ाक़ पर दलालत नहीं करता; बसा-औक़ात अपने मुख़्तार को मुतलक़ क़रार दिया जाता है, अगरचे वहाँ मुतअ़द्दिद (अनेक) इख़्तिलाफ़ात होते हैं। मेरा ख़याल है कि मैंने इसके..

1 हिल्यतुल महल्ली शरह मुन्यतुल मुसल्ली 2 अल-बह्र अल-राइक, किताब अत-ताहारत, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/102 3 मुन्यतुल मुसल्ली, फ़स्ल फ़िन-नजासा, मकतबा कादरिया, जामिया निज़ामिया, लाहौर, पृ. 110 4 ग़ुन्यतुल मुस्तमली, फ़स्ल फ़िन-नजासा, सुहैल एकेडमी, लाहौर, पृ. 155

पृष्ठ 434 / 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

علی جلد کلب او ذئب قد ذبح جازت صلاتہ[1] مذبوح کتے یا بھیڑیے کی کھال پر نماز پڑھی تو اس کی نماز جائز ہے۔(ت)

بحر الرائق میں عقدالفوائد سے ہے: لا یخفی ان ھذہ الروایۃ تفید طھارۃ عینہ عند محمد[2] الخ۔ مخفی نہیں کہ یہ روایت امام محمد رحمۃ اللہ کے نزدیک اس کی ذاتی طہارت کا فائدہ دیتی ہے۔(ت)

منیہ میں ہے: روی عن محمد امرأۃ صلت وفی عنقھا قلاوۃ علیھا سن اسد او ثعلب او کلب جازت صلاتھا[3] اھ حضرت امام محمد رحمۃ اللہ سے مروی ہے ایک عورت نے گلے میں ایسا ہار ڈال کر نماز پڑھی جس میں شیر، لومڑی یا کتے کے دانت (جڑے ہوئے) تھے تو اس کی نماز جائز ہے اھ اس

قال شارحھا العلامۃ ابراھیم کون الروایۃ عن محمد لا ینافی کونھا اتفاقیۃ ففی الفتاوی ذکرھا مطلقا والدلیل یدل علیہ[4] اھ کے شارح ابراہیم نے فرمایا اس روایت کا امام محمد رحمۃ اللہ سے مروی ہونا اس کے اتفاقی ہونے کے منافی نہیں فتاوی میں اسے مطلقاً ذکر کیا گیا ہے اور دلیل بھی اس پر دلالت کرتی ہے۔(ت)

اقول: نعم اطلقھا في الخانیۃ والخلاصۃ والولوالجیۃ وغیرھا وقد اسمعناك نص الخلاصۃ وھو بعینہ لفظ الخانیۃ والولوالجي عزاھا لہ في الحلیۃ لکن الاطلاق لایدل علی الاتفاق فربما یطلق المطلق ما یختارہ وان کانت ھناك خلافات عدیدۃ ورأیتني کتبت علی ھامشہ اقول: ہاں خانیہ، خلاصہ اور ولوالجی وغیرہ نے اس کو مطلق ذکر کیا ہے ہم نے تمہیں خلاصہ کی عبارت سنائی تھی خانیہ کے الفاظ بھی بعینہ یہی ہیں اور حلیہ میں اسے ولوالجی کی طرف منسوب کیا گیا ہے لیکن اطلاق، اتفاق پر دلالت

نہیں کرتا بسا اوقات اپنے مختار کو مطلق قرار دیا جاتا ہے اگرچہ وہاں متعدد اختلافات ہوتے ہیں میرا خیال ہے کہ میں نے اس کے

[1] حلیۃ المحلی شرح منیۃ المصلی [2] البحر الرائق کتاب الطہارۃ مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۰۲/۱ [3] منیۃ المصلی فصل فی النجاسۃ مطبوعہ مکتبہ قادریہ جامعہ نظامیہ لاہور ص ۱۱۰ [4] غنیۃ المستملی فصل فی النجاسۃ مطبوعہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۵۵

Fatawa Rizvia - Volume 4

Right Column Header: It is written in the margin, the text of which is: I say: (I say) how can this be unanimous, whereas it is reported from the second and famous from the third that the dog is inherently impure (najis al-ayn). A group has authenticated this, although the more correct, reliable, and the one on which the fatwa is based, is purity. Yes, this is correct in relation to other mentioned beasts of prey and their likes besides the dog. (T)

Left Column Header: Ma nassuhu (The text is): I say: How can it be unanimous when what is narrated from the second and famous from the third is the inherent impurity of the dog? A group has authenticated it, though the most correct, the relied-upon, and that upon which the fatwa is given is purity. 1 Yes, it is correct in relation to beasts of prey other than dogs and their like.

Middle Section: Rather, some subsidiary rulings (furu') from Imam Abu Yusuf (may Allah Almighty have mercy on him) also lead to this.

Right Column Body: We have narrated through al-Anqarawi, al-Zahidi, and al-Dabbusi regarding the path of dogs in mud, that its being pure is the correct narration, and it is close to the explicit narrations from our companions. These books of the school are full of explicit statements on the permissibility of selling dogs and the lawfulness of their price. However, they differ regarding the biting dog. Permissibility is narrated from Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) and impermissibility from Imam Abu Yusuf (may Allah have mercy on him). The general wording of the 'Asl' (Mabsut) supports the first view, and al-Quduri and others followed this path, while Shams al-A'imma authenticated the second. He said that the sale of a biting dog that does not accept training is not permissible, and he said this is the correct view of the school, as cited in 'Al-Fath'. Surely the Hafiz of Hadith and the school, Imam al-Tahawi, in 'Sharh Ma'ani al-Athar' after establishing the lawfulness of their price...

Left Column Body: We have read to you from al-Anqarawi from al-Zahidi from al-Dabbusi regarding the places dogs frequent in mud, that their purity is the correct narration and is close to the explicit texts from our companions. These books of the school are overflowing with explicit statements on the permissibility of selling dogs and the lawfulness of their price. They only mentioned disagreement regarding the sale of biting dogs. From Muhammad is its permissibility, and from Abu Yusuf is its prohibition. The absolute statement of the 'Asl' supports the first, and al-Quduri and

others followed it. Shams al-A'imma authenticated the second, saying: 'The sale of a biting dog that does not accept training is not permissible,' and he said, 'This is the correct view of the school,' 2 as cited in al-Fath. No doubt, the Hafiz of Hadith and the School, Imam al-Tahawi, said in 'Sharh Ma'ani al-Athar' after investigating the lawfulness of the prices...

Footnotes: 1. Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/101. 2. Fath al-Qadir, Miscellaneous Issues from the Chapter of Sale, printed by Nooria Razvia, Sukkur, 6/345.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 4

दायां कॉलम शीर्षक: हाशिये पर लिखा है जिसकी इबारत यह है: अक़ूल: (मैं कहता हूँ) यह इत्तेफ़ाक़ी (सर्वसम्मत) कैसे होगा जबकि दूसरे से मन्क़ूल और तीसरे से मशहूर है कि कुत्ता 'नजसुल ऐन' (स्वयं अशुद्ध) है। एक जमात ने इसकी तसहीह (पुष्टि) की है, हालाँकि ज़ियादा सहीह, मोअतमद अलैहि और मुफ़्ती बेह (जिस पर फ़तवा दिया जाता है), पाकी (तहारत) ही है। हाँ, यह कुत्ते के अलावा अन्य ज़िक्र किए गए दरिंदों और उनकी मिसालों के लिए सही है। (त)

बायां कॉलम शीर्षक: मानस्सुहू (मूल इबारत): अक़ूल: यह इत्तेफ़ाक़ी कैसे हो सकता है जबकि जो दूसरे से मन्क़ूल और तीसरे से मशहूर है वह कुत्ते की नजासत-ए-ऐन है? एक जमात ने इसकी तसहीह की है, हालाँकि सबसे सहीह, विश्वसनीय और जिस पर फ़तवा दिया गया है, वह तहारत (शुद्धता) ही है। 1 हाँ, यह कुत्ते के अलावा अन्य दरिंदों और उनके जैसों के लिए सही है।

मध्य भाग: बल्कि इमाम अबू यूसुफ़ (रहमतुल्लाह अलैहि) से भी कुछ फ़ुरूअ (उप-नियम) इसी तरफ़ जाते हैं।

दायां कॉलम मुख्य पाठ: हमने अनक़रवी, ज़ाहिदी और दबूसी के माध्यम से नकल करते हुए कीचड़ में कुत्तों के रास्ते के बारे में तुम्हें बताया है कि उसका पाक होना ही सही रिवायत है और हमारे असहाब (साथियों) की मंसूस (स्पष्ट) रिवायतों के करीब है। मज़हब की ये किताबें कुत्ते की ख़रीद-ओ-फ़रोख़्त के जवाज़ (अनुमतता) और उसकी कीमत हलाल होने की तसरीह (स्पष्ट व्याख्या) से भरी पड़ी हैं। अलबत्ता काटने वाले कुत्ते के बारे में उनमें इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है। इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैहि) से इसका जवाज़ और इमाम अबू यूसुफ़ (रहमतुल्लाह अलैहि) से अदम-ए-जवाज़ (मनाही) मन्क़ूल है। 'असल' (मबसूत) का इतलाक़ पहली बात की ताईद (समर्थन) करता है, क़ुदूरी वगैरह ने यही रास्ता अख्तियार किया है, जबकि शम्सुल अइम्मा ने दूसरी बात को सहीह करार दिया है। उन्होंने फ़र्माया कि काटने वाला कुत्ता जो तालीम (प्रशिक्षण) कुबूल नहीं करता, उसकी ख़रीद-ओ-फ़रोख़्त जाइज़ नहीं और फ़र्माया कि सहीह मज़हब यही है जैसा कि 'फ़तहुल क़दीर' में इसे नक़ल किया गया है। यक़ीनन हदीस और मज़हब के..

बायां कॉलम मुख्य पाठ: हमने अनक़रवी से ज़ाहिदी से दबूसी से कुत्तों के कीचड़ वाले रास्तों के बारे में तुम्हें पढ़ कर सुनाया है कि उनकी शुद्धता ही सही रिवायत है और हमारे साथियों के स्पष्ट कथनों के करीब है। मज़हब की ये किताबें कुत्ते को बेचने की अनुमतता और उसकी कीमत के हलाल होने

के स्पष्ट उल्लेखों से भरी हुई हैं। उन्होंने केवल काटने वाले कुत्तों की बिक्री में मतभेद का उल्लेख किया है। इमाम मुहम्मद से इसकी अनुमतता और इमाम अबू यूसुफ़ से इसकी मनाही है। 'असल' का सामान्य उल्लेख पहले का समर्थन करता है और क़ुदूरी आदि इसी पर चले हैं। शम्सुल अइम्मा ने दूसरे को सही बताया और कहा: 'काटने वाले कुत्ते की बिक्री जाइज़ नहीं है जो प्रशिक्षण स्वीकार नहीं करता', और कहा 'यही मज़हब का सही पक्ष है' 2 जैसा कि फ़तह में नक़ल किया गया है। निःसंदेह हदीस और मज़हब के हाफ़िज़ इमाम तहावी ने 'शरह म'आनी अल-आसार' में कीमतों की वैधता की पुष्टि करने के बाद कहा...

पादलेख (Footnotes): 1. अल-बहरुर राइक, किताबुत्तहारत, एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/101. 2. फ़तहुल क़दीर, मसायल-ए-मन्शूरा, बाबुल बय, नूरिया रज़विया सुक्कुर 6/345.

पेज 435/761

دائیں کالم کا عنوان: حاشیہ پر لکھا ہے جس کی عبارت یہ ہے۔ اقول: (میں کہتا ہوں) یہ کیسے اتفاقی ہوگا حالانکہ ثانی سے منقول اور ثالث سے مشہور ہے کہ کتا نجس عین ہے۔ ایک جماعت نے اس کی تصحیح کی اگرچہ زیادہ صحیح، معتمد علیہ اور مفتی بہ، طہارت ہی ہے اھ ہاں یہ کتے کے علاوہ دیگر مذکورہ بالا درندوں اور ان کی امثال کی طرف نسبت کرتے ہوئے صحیح ہے۔ (ت)

بائیں کالم کا عنوان: مانصہ۔ اقول: کیف تکون اتفاقیة مع ان المنقول من الثاني المشهور عن الثالث نجاسة عین الکلب وقد صححه جماعة وان کان الاصح المعتمد المفتی به هي الطهارة 1 اه نعم هو صحیح بالنسبة الی ماعدا الکلب من السباع المذکورة وامثالها۔

درمیانی حصہ: بلکہ امام ابویوسف رحمۃ اللہ تعالٰی سے بھی بعض فروع اسی طرف جاتی ہیں۔

دائیں کالم کا متن: ہم نے بواسطہ انقروی اور زاہدی، دبوسی سے نقل کرتے ہوئے کیچڑ میں کتوں کی گزرگاہ کے بارے میں تمہیں بتایا ہے کہ اس کا پاک ہونا ہی صحیح روایت ہے اور ہمارے اصحاب سے منصوص روایات کے قریب ہے اور یہ کتب مذاہب کتے کی خرید و فروخت کے جواز اور اس کی قیمت حلال ہونے سے متعلق تصریح سے بھری پڑی ہیں البتہ کاٹنے والے کتے کے بارے میں ان کا اختلاف ہے۔ پس امام محمد رحمۃ اللہ سے اس کا جواز اور امام ابویوسف رحمۃ اللہ سے عدم جواز منقول ہے۔ اصل (مبسوط) کا اطلاق پہلی بات کی تائید کرتا ہے، قدوری وغیرہ نے یہی راہ اختیار کی ہے جبکہ شمس الائمہ نے دوسری بات کو صحیح قرار دیا ہے انہوں نے

فرمایا کاٹنے والا کتا جو تعلیم کو قبول نہیں کرتا اس کی خرید و فروخت جائز نہیں اور فرمایا کہ صحیح مذہب یہی ہے جیسا کہ فتح القدیر میں اسے نقل کیا ہے۔ یقینا حدیث ومذہب کے

بائیں کالم کا متن: وقد قرأنا عليك عن الانقروى عن الزاهدى عن الدبوسى فى مواطئ الكلاب فى الطين ان طهارتها هي الرواية الصحيحة وقريب المنصوص عن اصحابنا وهذه كتب المذهب طافحة بتصريح جواز بيع الكلب وحل ثمنه وانما ذكروا الخلف في بيع العقود فعن محمد جوازه وعن ابى يوسف منعه واطلاق الاصل يؤيد الاول وعليه مشى القدورى وغيره وصحح شمس الائمة الثانى فقال انما لا يجوز بيع الكلب العقور الذى لايقبل التعليم وقال هذا هو الصحيح من المذهب 2 كما نقله في الفتح-لاجر مان قال حافظ الحديث والمذهب الامام الطحاوى في شرح معانى الآثار بعد ما حق حل اثمان

حواشی: 1 البحر الرائق کتاب الطہارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۰۱ 2 فتح القدیر مسائل منشورہ من باب البیع مطبوعہ نوریہ رضویہ سکھر ۳۴۵/۶

Fatawa Razawiya - Volume 4

[Arabic Column Text] Regarding the dog, this is the opinion of Abu Hanifa, Abu Yusuf, and Muhammad (may Allah Almighty have mercy on them all) [1]. In 'Al-Bahr', it is stated: "As for its sale and transfer of ownership, it is permissible." This is how they narrated and stated it unconditionally. However, it is appropriate that this be based on the opinion of its physical purity (taharat al-ayn); but based on the opinion of its impurity (najasat), it would be like a pig, and thus its sale would be void for Muslims like a pig [2]... etc. From this, their unanimous agreement on the case of purity emerges through those narrations. I say: But it was stated in 'Al-Fath' that the permissibility of sale is not dependent on the purity of the essence; rather, its permissibility relies on the permissibility of utilization (intifa'). Do you not see that when utilization from dung and droppings was permitted, their sale was also permitted? It is stated in 'Al-Hidayah', responding to Imam Shafi'i's argument for the prohibition of selling dogs—that it is inherently impure (najis al-ayn): "We do not concede the impurity of the essence; and even if it were conceded, then consumption is prohibited, not the sale [3]." If you were to repeat by saying that the lawfulness of utilization also depends on the purity of the essence, as the pig, being inherently impure, cannot be utilized in any way, and this is how they reasoned it...

[Urdu Column Text] Hafiz Imam Tahawi, after investigating the lawfulness of the price of a dog in 'Sharh Ma'ani al-Athar', stated that this is the opinion of Imam Abu Hanifa, Imam Abu Yusuf, and Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on them all). In 'Al-Bahr al-Ra'iq', it was stated that the sale and transfer of ownership of this (dog) are permissible. Similarly, the jurists have narrated and stated it unconditionally, but it is appropriate that this statement be based on the opinion of its physical purity; however, on the opinion of impurity, it would be like a pig, hence its purchase and sale for Muslims would be void like a pig... etc. Thus, in view of these narrations, their agreement on the decision of purity would be questioned. (T) Rather, the permissibility of sale is based on the permissibility of benefit. Do you not see that when it is permissible to gain benefit from dung and droppings, their purchase and sale is also permissible? Responding to Imam Shafi'i's (may Allah's mercy be upon him) argument for the prohibition of selling dogs—that it is inherently impure (najis al-ayn)—it was stated in 'Hidayah': "We do not accept the inherent impurity, and even if it were accepted, then eating it is forbidden, but its sale and purchase are not." If you object by saying that the permissibility of benefit is also based on physical purity because when...

[Footnotes] 1. Sharh Ma'ani al-Athar, Chapter on the Price of Dogs, published by H.M. Saeed Company, Karachi, 2/250. 2. Al-Bahr al-Ra'iq, Book of Purity, published by H.M. Saeed Company, Karachi, 1/103. 3. Al-Hidayah, Miscellaneous Matters from the Book of Sales, published by Yusufi Press, Lucknow, 2/103.

फ़तावा रज़विया - जिल्द चार

[अरबी स्तंभ पाठ] कुत्ते के बारे में, यह अबू हनीफ़ा, अबू यूसुफ़ और मुहम्मद (अल्लाह उन सभी पर अपनी कृपा बनाए रखे) का कथन है [१]। 'अल-बहर' में कहा गया है: "जहाँ तक इसकी बिक्री और स्वामित्व के हस्तांतरण का प्रश्न है, तो यह जायज़ है।" इसी तरह उन्होंने इसे उद्धृत किया है और बिना शर्त कहा है। हालाँकि, यह उचित है कि यह इसकी शारीरिक पवित्रता (तहारत अल-ऐन) के मत पर आधारित हो; लेकिन अपवित्रता (नजासत) के मत पर यह सूअर की तरह होगा, और इस प्रकार मुसलमानों के लिए इसकी बिक्री सूअर की तरह शून्य (बातिल) होगी [२]... आदि। इससे, उन रिवायतों के माध्यम से पवित्रता के मामले पर उनकी सर्वसम्मत सहमति सामने आती है। मैं कहता हूँ: लेकिन 'अल-फ़तह' में यह बताया गया है कि बिक्री की अनुमति वस्तु की पवित्रता पर निर्भर नहीं है; बल्कि इसकी अनुमति उपयोग (इन्तेफ़ाअ) की अनुमति पर निर्भर करती है। क्या आप नहीं देखते कि जब गोबर और पशु-विष्ठा से लाभ उठाना जायज़ था, तो उनकी बिक्री भी जायज़ थी? 'अल-हिदाया' में कुत्ते की बिक्री की मनाही के इमाम शाफ़ई के तर्क का उत्तर देते हुए—कि यह जन्मजात अपवित्र (नजिस अल-ऐन) है—कहा गया है: "हम वस्तु की अपवित्रता को स्वीकार नहीं करते हैं; और यदि इसे स्वीकार कर भी लिया जाए, तो उपभोग वर्जित है, बिक्री नहीं [३]।" यदि आप यह दोहराते हुए आपत्ति करें कि उपयोग की वैधता भी वस्तु की पवित्रता पर निर्भर करती है, क्योंकि सूअर, जो स्वाभाविक रूप से अपवित्र है, का किसी भी तरह से उपयोग नहीं किया जा सकता है, और इस प्रकार उन्होंने इसका तर्क दिया है...

[उर्दू स्तंभ पाठ] हाफिज़ इमाम तहवी ने 'शरह मानी अल-आसार' में कुत्ते की कीमत की वैधता के बारे में जांच के बाद कहा कि यह इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन सभी पर रहम फरमाए) का मत है। 'अल-बहर अल-रईक' में कहा गया था कि इसकी (कुत्ते की) बिक्री और स्वामित्व का हस्तांतरण जायज़ है। इसी तरह, न्यायविदों ने इसे उद्धृत किया है और बिना शर्त कहा है, लेकिन यह उचित है कि यह कथन इसकी शारीरिक पवित्रता पर आधारित हो; हालाँकि, अपवित्रता के मत पर, यह सूअर की तरह होगा, इसलिए मुसलमानों के लिए इसकी खरीद और बिक्री सूअर की तरह बातिल होगी... आदि। इस प्रकार, इन रिवायतों को देखते हुए, पवित्रता के निर्णय पर उनकी सहमति संदिग्ध होगी। (त) बल्कि बिक्री की वैधता लाभ की अनुमति पर आधारित है। क्या आप नहीं देखते कि जब गोबर और पशु-विष्ठा से लाभ उठाना जायज़ है, तो उनकी खरीद और बिक्री भी जायज़ है? कुत्ते की बिक्री की मनाही के लिए इमाम शाफ़ई (रहमतुल्लाह अलैह) के

तर्क का उत्तर देते हुए कि वह नजिस-ए-ऐन है—'हिदाया' में कहा गया: "हम वस्तु की अपवित्रता को स्वीकार नहीं करते, और यदि इसे स्वीकार कर भी लिया जाए, तो इसका खाना हराम है, लेकिन इसकी खरीद-बिक्री नहीं।" यदि आप यह आपत्ति करें कि लाभ की अनुमति भी तो शारीरिक पवित्रता पर आधारित है क्योंकि जब...

[पाद-टिप्पणियाँ] १. शरह मानी अल-आसार, बाब समन अल-कल्ब, मुद्रित एच.एम. सईद कंपनी, कराची, २/२५०। २. अल-बहर अल-रईक, किताब अत-तहारत, मुद्रित एच.एम. सईद कंपनी, कराची, १/१०३। ३. अल-हिदाया, मसाइल मंसूराह किताब अल-ब्यूअ से, मुद्रित यूसुफी प्रेस, लखनऊ, २/१०३।

पृष्ठ ७६१ का ४३६

فتاویٰ رضویہ جلد چہارم

[عربی کالم] الكلب هذا قول ابي حنيفة وابی یوسف ومحمد رحمة الله تعالی علیهم اجمعین ۱ اهـ وقال في البحر اما بيعه وتمليكه فهو جائز هكذا نقلوا واطلقوا لكن ينبغی ان يكون هذا على القول بطهارة عينه اما على القول بالنجاسة فهو كالخنزير فبيعه باطل في حق المسلمين كالخنزير ۲ الخ فينقرح من ذلك وفاقهم جميعا على قضية الطهارة من جراء تلك الروايات۔ اقول: لكن افاد في الفتح منع توقف جواز البيع على طهارة العين وانما يعتمد جوازه جواز الانتفاع الا ترى ان السرقين والبعر لما جاز الانتفاع بهما جاز بيعهما وقد قال في الهداية مجيبا عن استدلال الشافعی على حرمة بيع الكلب بأنه نجس العين ولانسلم نجاسة العين ولو سلم فيحرم التناول دون البيع ۳ اهـ فان عدت قائلا ان حل الانتفاع ايضا يعتمد طهارة العين فان الخنزير لما كان نجس العين لم يجز الانتفاع به بوجوه من الوجوه بذلك عللوه فی

[اردو کالم] حافظ امام طحاوی نے شرح معانی الآثار میں کتے کی قیمت کے حلال ہونے کے بارے میں تحقیق فرمانے کے بعد فرمایا امام ابوحنیفہ، امام ابویوسف اور امام محمد رحمہم اللہ تعالیٰ تمام کا یہی قول ہے اھـ بحر الرائق میں فرمایا کہ اس (کتے) کی بیع اور تملیک جائز ہے۔ اسی طرح فقہائے کرام نے نقل کیا اور مطلقاً بیان کیا لیکن مناسب ہے کہ یہ بات اس کی عینی طہارت کے قول پر ہو لیکن نجاست کے قول پر وہ خنزیر جیسا ہوگا، لہذا مسلمانوں کے حق میں خنزیر کی طرح اس کی خرید و فروخت بھی باطل ہے الخ پس ان روایات کے پیشِ نظر ان سب کا طہارت کے فیصلے پر اتفاق مطعون ہوگا۔ (ت) بلکہ بیع کا جواز، جوازِ انتفاع پر مبنی ہے کیا تم نہیں دیکھتے کہ گوبر اور مینگنی سے جب نفع حاصل کرنا جائز ہے تو ان کی خرید و فروخت بھی جائز ہے۔ کتے کی بیع حرام ہونے پر امام شافعی رحمۃ اللہ کے استدلال کہ وہ نجس عین ہونے کی وجہ سے حرام ہے، کا جواب دیتے ہوئے ہدایہ میں فرمایا ہم نجاست عین تسلیم نہیں کرتے اور اگر تسلیم کر بھی لیا

جائے تو اس کا کھانا حرام ہے، خرید وفروخت حرام نہیں اھـ اگر تم یہ کہتے ہوئے اعتراض کرو کہ انتفاع کا جائز ہونا بھی تو طہارت عین پر مبنی ہے کیونکہ جب

[حواشی] ۱ شرح معانی الآثار باب ثمن الکلب مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲/۲۵۰ ۲ البحر الرائق کتاب الطہارۃ مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۰۳ ۳ الھدایۃ مسائل منثورہ من کتاب البیوع مطبوعہ مطبع یوسفی لکھنو ۲/ ۱۰۳

Fatawa Rizvia, Volume 4

[Main Text Table]

Arabic: Generally in books, yes, it is permissible to benefit from an impure substance (najis al-ayn) through consumption/depletion. This is what is established regarding dung (surqin), as stated in 'Al-Nihayah' and quoted in 'Al-Bahr'. I say: Yes, this can serve as evidence for the claimant's main point, i.e., purity. However, making it a reason to restrict the permissibility of sale to the opinion of purity is not correct at all. How can that be, while benefiting from a dog through hunting is definitively agreed upon as stated by the Holy Quran? Therefore, the basis for the permissibility of sale is established according to everyone, even if the two companions (Abu Yusuf and Muhammad) deny the basis of the basis, i.e., purity, just as Imam Shafi'i (may Allah have mercy on him) denied the branch of the basis, i.e., the permissibility of sale. So understand this. (T)

Urdu: I say: However, from 'Fath al-Qadir', the benefit is gained that the permissibility of sale is not dependent on the purity of the substance. (B) A pig is inherently impure, so benefiting from it is not permissible in any way. This same cause is mentioned in general books; yes, it is permissible to gain benefit from an inherently impure thing after destroying it. This same point is established regarding cow dung, as 'Al-Nihayah' gave benefit to this point and 'Al-Bahr al-Ra'iq' quoted it. I say, yes, this can be evidence for the original claimant, i.e., purity, but making it a reason to restrict the permissibility of sale to the opinion of purity is never correct. And how can this be, while gaining benefit from a dog through the method of hunting is permissible, and this is a definitively agreed-upon issue because the Holy Quran has stated it. Therefore, the basis of the permissibility of sale is established according to everyone, even if the two companions deny the basis of this basis, i.e., purity, just as Imam Shafi'i (may Allah have mercy on him) denied the branch of this basis, i.e., the permissibility of sale. So understand it. (T)

And it is known and established that 'the speech of the Imam is the Imam of speech'. Scholars say that giving fatwa based on the Imam's opinion is mandatory, even if the two companions differ, let alone when reports from the two companions also agree with him.

Arabic: O Allah! Except for necessity or weakness of evidence, and it is certainly known that both are absent here. **Urdu:** O Allah! Except due to necessity or weakness of evidence, and certainly here the absence of both is known. (T)

In 'Al-Bahr al-Ra'iq', 'Fatawa Khairiyyah', and 'Hashiyah of Tahtawi' on 'Al-Durr al-Mukhtar' and 'Radd al-Muhtar' it is written:

Arabic: And the wording is from 'Allamah al-Ramli: It is also established with us that fatwa is not given and action is not taken except according to the opinion of the Great Imam (Abu Hanifa). One should not deviate from it to the opinion of the two companions, or one of them, or others, except for necessity such as weakness of evidence or practice being contrary to it, like the issue of Muzara'ah (sharecropping).

Urdu: And the words are of 'Allamah al-Ramli: It is also established with us that fatwa will be given and action will be taken only on the word of Imam-e-Azam (may Allah have mercy on him). From it, one will not turn towards the word of the two companions, or one of them, or someone else, without necessity. Necessity like a weak evidence or going against it.

---

[1] Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, H.M. Saeed Company Karachi, 1/101

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4

[मुख्य पाठ तालिका]

अरबी: सामान्यतः पुस्तकों में, हाँ, उपभोग/समाप्ति के माध्यम से अपवित्र पदार्थ (नजिस ऐन) से लाभ उठाना जायज़ है। यही गोबर (सुरक़ीन) के बारे में स्थापित है, जैसा कि 'अल-निहाया' में बताया गया है और 'अल-बहर' में उद्धृत किया गया है। मैं कहता हूँ: हाँ, यह दावेदार के मुख्य बिंदु यानी पवित्रता के लिए सबूत के रूप में काम कर सकता है। हालांकि, इसे पवित्रता के मत पर बिक्री की अनुमति को प्रतिबंधित करने का कारण बनाना बिल्कुल सही नहीं है। यह कैसे हो सकता है, जबकि कुत्ते से शिकार के माध्यम से लाभ उठाना निश्चित रूप से सर्वसम्मत है जैसा कि पवित्र कुरान में वर्णित है? इसलिए, बिक्री की अनुमति का आधार सभी के अनुसार स्थापित है, भले ही दो साथी (अबू यूसुफ और मुहम्मद) आधार के आधार यानी पवित्रता का खंडन करते हों, ठीक वैसे ही जैसे इमाम शफी (उन पर अल्लाह की रहमत हो) ने आधार की शाखा यानी बिक्री की अनुमति का खंडन किया है। तो इसे समझें। (त)

उर्दू: मैं कहता हूँ: लेकिन 'फ़तह अल-क़दीर' से यह लाभ प्राप्त होता है कि बिक्री की अनुमति, पदार्थ की पवित्रता पर निर्भर नहीं है। (ब) सुअर पूरी तरह से अपवित्र है, इसलिए इससे किसी भी तरह लाभ उठाना जायज़ नहीं है। सामान्य पुस्तकों में इसका यही कारण बताया गया है; हाँ, किसी अपवित्र वस्तु को नष्ट करने के बाद उससे लाभ प्राप्त करना जायज़ है। यही बात गोबर के मामले में भी सिद्ध है, जैसा कि 'निहाया' ने इस बात पर प्रकाश डाला और 'अल-बहर अल-रायिक' ने इसे उद्धृत किया। मैं कहता हूँ, हाँ, यह मूल दावेदार यानी पवित्रता के लिए सबूत हो सकता है, लेकिन इसे पवित्रता के मत पर बिक्री की अनुमति को प्रतिबंधित करने का कारण मानना कभी भी सही नहीं है। और यह कैसे हो सकता है, जबकि शिकार के तरीके से कुत्ते से लाभ प्राप्त करना जायज़ है, और यह एक निश्चित रूप से सर्वसम्मत मुद्दा है क्योंकि पवित्र कुरान ने इसे स्पष्ट किया है। इसलिए बिक्री की अनुमति का आधार सभी के पास स्थापित है, भले ही दो साथी इस आधार के आधार यानी पवित्रता का खंडन करें, ठीक वैसे ही जैसे इमाम शफी (उन पर अल्लाह की रहमत हो) ने इस आधार की शाखा यानी बिक्री की अनुमति का खंडन किया है। तो इसे समझें। (त)

और यह ज्ञात और स्थापित है कि 'इमाम का वचन वचनों का इमाम है'। विद्वान कहते हैं कि इमाम की राय पर फतवा देना अनिवार्य है, भले ही दो साथी असहमत हों, और तब तो और भी जब दो साथियों की रिपोर्ट भी उनके अनुकूल हों।

अरबी: हे अल्लाह! सिवाय आवश्यकता या प्रमाण की कमजोरी के और यहाँ निश्चित रूप से ज्ञात है कि दोनों अनुपस्थित हैं। **उर्दू:** ऐ अल्लाह! मगर ज़रूरत या दलील की कमज़ोरी की वजह से, और यकीनन यहाँ इन दोनों का न होना मालूम है। (त)

'अल-बहर अल-रायिक', 'फ़तावा खैरिया' और 'अल-दुर अल-मुख्तार' तथा 'रद्द अल-मुह्तार' पर 'तहावी के हाशिया' में लिखा है:

अरबी: और शब्द अल्लामा रमली के हैं: हमारे यहाँ भी यह स्थापित है कि केवल इमाम-ए-आजम (अबू हनीफा) की राय के अनुसार फतवा नहीं दिया जाता और अमल नहीं किया जाता। इससे दो साथियों, या उनमें से एक, या दूसरों की राय की ओर बिना आवश्यकता के विचलित नहीं हुआ जाएगा, सिवाय आवश्यकता के जैसे सबूत की कमजोरी या इसके विपरीत व्यवहार, जैसे मुज़ारा'ह (बटाईदारी) का मुद्दा।

उर्दू: और अल्फ़ाज़ अल्लामा रमली के हैं: हमारे नज़दीक भी साबित है कि सिर्फ इमाम-ए-आज़म (रहमतुल्लाह अलैहि) के क़ौल पर फ़तवा दिया जाएगा और अमल किया जाएगा। इससे साहिबैन या उनमें से एक या किसी दूसरे के क़ौल की तरफ बग़ैर ज़रूरत तवज्जो नहीं देंगे। ज़रूरत जैसे कमज़ोर दलील या उसके खिलाफ अमल।

---

[1] अल-बहर अल-रायिक, किताब अल-तहारत, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/101

पृष्ठ 437 / 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

[اصلی متن کا جدول]

عربی متن: عامة الكتب نعم يجوز الانتفاع بنجس العين على سبيل الاستهلاك وهذا هو الثابت فی السرقين كما افاده فی النهاية ونقله فی البحر۔ قلت نعم هذا يصلح دليلا لاصل المدعى اعنى الطهارة اماجعله وجهاً لتخصيص جواز البيع بقول الطهارة فكلا كيف وحل الانتفاع بالكلب بطريق الاصطياد مجمع عليه قطعا لما نطق به النص الكريم فمبنى جواز البيع ثابت عند الكل وان انكر الصاحبان مبنى المبنى اعنى الطهارة كما انكر الشافعى فرع المبنى اعنى جواز البيع فافهم۔

اردو متن: اقول: لیکن فتح القدیر سے اس بات کا فائدہ حاصل ہوتا ہے کہ جو از بیع ، طہارت عین پر موقوف نہیں ب خنزیر نجس عین ہے تو کسی طرح اس سے انتفاع جائز نہیں۔ عام کتب میں اس کی یہی علت بیان کی ہے ہاں نجس عین کو ہلاک کر کے اس سے نفع حاصل کرنا جائز ہے۔ یہی بات گوبر میں بھی ثابت ہے، جیسا کہ نہایہ میں اس بات کا فائدہ دیا اور اسے البحر الرائق نے نقل کیا۔ میں کہتا ہوں ہاں یہ اصل مدعی یعنی طہارت کی دلیل بن سکتی ہے لیکن اسے طہارت کے قول پر جواز بیع کی تخصیص کیلئے سبب قرار دینا ہر گز صحیح نہیں اور یہ کیسے ہو سکتا ہے حالانکہ کتے سے شکار کے طریقے پر نفع حاصل کرنا جائز ہے اور یہ قطعی طور پر متفق علیہ مسئلہ ہے کیونکہ اس کو قرآن کریم نے بیان کیا ہے پس جواز بیع کی بنیاد سب کے نزدیک ثابت ہے اگرچہ صاحبین اس بنیاد کی بنیاد یعنی طہارت کا انکار کرتے ہیں جیسا کہ امام شافعی رحمہ اللہ نے اس بنیاد کی فرع یعنی جواز بیع کا انکار کیا ہے۔ پس اسے سمجھو۔ (ت)

اور معلوم و مقرر ہے کہ کلام الامام امام الکلام علما فرماتے ہیں قول امام پر افتا لازم ہے اگرچہ صاحبین خلاف پر ہوں نہ کہ جب صاحبین سے بھی روایات اُن کے موافق آئی ہوں۔

عربی متن: اللھم الالضرورۃ اوضعف دلیل وقد علم انتفاؤھما ھھنا۔ **اردو متن:** اے اللہ! مگر ضرورت یا ضعف دلیل کی وجہ سے، اور یقیناً یہاں ان دونوں کا نہ ہونا معلوم ہے (ت)

بحرالرائق وفتاوی خیریہ وحاشیہ طحطاویہ علی الدرالمختار وردا لمحتار میں ہے:

عربی متن: واللفظ للعلامۃ الرملی المقرر ایضا عندنا انہ لا یفتی ولا یعمل الابقول الامام الاعظم ولا یعدل عنہ الی قولھما اوقول احدھما اوغیرھما الا لضرورۃ من ضعف دلیل اوتعامل بخلافہ کمسألۃ المزارعۃ

اردو متن: اور الفاظ علامہ رملی کے ہیں ہمارے نزدیک بھی ثابت ہے کہ صرف امام اعظم رحمہ اللہ کے قول پر فتویٰ دیا جائے گا اور عمل کیا جائیگا اس سے صاحبین یا ان میں سے ایک یا کسی دوسرے کے قول کی طرف بغیر ضرورت متوجہ نہیں ہوں گے ضرورت جیسے کمزور دلیل یا اس کے خلاف

---

1 البحر الرائق کتاب الطہارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۰۱

Fatawa Razawiyya Volume 4

Even if the scholars declare that the fatwa is based on the opinion of the two companions (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad), because he (Imam Azam Abu Hanifa, mercy be upon him) is the master of the school and the foremost Imam.

"When Hazam says something, believe her, for the truth is what Hazam has spoken."[1]

[Explanation]: The presence of practice, as in the case of agriculture, even if the scholars specify that the fatwa is based on the opinion of the Sahiban (two companions) because you (Imam Azam) are the master of the school and the foremost Imam. When Hazam says something, verify it because the word is truly what Hazam said.

Imam Burhanuddin Farghani, the author of Al-Hidaya, states in At-Tajnis: "In my view, it is obligatory that the fatwa be given according to the opinion of Abu Hanifa in every circumstance."[2] (T)

Similarly, it is established from other books and "we have mentioned it in the Book of Marriage of our Fatawa" (T). Therefore, it became obligatory to issue fatwas only on inherent purity and to keep it practiced and accepted. Secondly: This is the majority opinion.

As is apparent to anyone who studies our narrations on purification, despite having omitted much of the abundant material, and refers to the narrations regarding impurity, he will find that they do not reach half or even a third of those (narrations on purification). And if the condition of 'absence of agitation' is also included, very little will remain in his hand, as you will soon become aware, God willing. It is stated in al-Hilya that 'Al-Kathir' (a large quantity) is such that it is not inherently impure.[3]

1. Fatawa Khayriyya, section: "Fatwa is not issued except according to the opinion of Abu Hanifa even if the scholars authenticated it," printed by Dar al-Ma'rifah, Beirut, 33/2.
2. Al-Tajnis wal-Mazid.
3. At-Ta'liq al-Majli, marginalia of Munyat al-Musalli, chapter on the well, Maktaba Qadriyya Lahore, p. 115.

फतावा रज़विया जिल्द 4

भले ही विद्वान स्पष्ट करें कि फतवा दो साथियों (साहिबैन) के मत पर है क्योंकि वे (इमाम आज़म रहमतुल्लाह अलैह) संप्रदाय के प्रमुख और अग्रणी इमाम हैं।

"जब हज़ाम कुछ कहे तो उसकी पुष्टि करो क्योंकि बात वही है जो हज़ाम ने कही है।"[1]

[व्याख्या]: प्रथा का पाया जाना जैसा कि कृषि के मसले में है, हालांकि मशायख़ (विद्वान) स्पष्ट करते हैं कि फतवा साहिबैन के कथन पर है क्योंकि आप (इमाम आज़म) मज़हब के स्वामी और अग्रणी इमाम हैं। जब हज़ाम कोई बात कहे तो उसकी तस्दीक (पुष्टि) करो क्योंकि बात तो वही है जो हज़ाम ने कही।

हिदाया के लेखक इमाम बुरहानुद्दीन फ़रग़ानी तजनीस में फरमाते हैं: "मेरे नज़दीक वाजिब है कि हर हाल में इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह के कौल (कथन) पर फतवा दिया जाए।"[2] (त)

इसी तरह अन्य पुस्तकों से भी साबित है और "हमने इसे अपनी फतावा की निकाह की किताब में ज़िक्र किया है" (त)। तो वाजिब हुआ कि तहारत (पवित्रता) पर ही फतवे दें और इसी को मामूल (प्रथा) और मक़बूल (स्वीकार्य) रखें। दूसरा: यही कौल अक्सर (बहुमत की राय) है।

जैसा कि उस शख्स के लिए ज़ाहिर है जो ततहीर (शुद्धि) के बारे में हमारे नकुल (उद्धरणों) का मुताला (अध्ययन) करे, बावजूद इसके कि हमने बहुत कुछ छोड़ दिया है, और इसके नजिस (अशुद्ध) होने के बारे में नकुल की तरफ रुजू (संदर्भ) करे, तो वह उन्हें उन (ततहीर के उद्धरणों) का आधा बल्कि तिहाई भी नहीं पाएगा। और अगर उसके साथ 'अदम-ए-इज़तिराब' (बिना किसी परेशानी) की शर्त रखी जाए, तो उसके हाथ में बहुत कम रह जाएगा, जैसा कि तुम अनक़रीब (जल्द ही) इस पर मुत्तला (अवगत) होगे, इंशा अल्लाह। अल-हिलया में कहा गया है कि 'अल-कसीर' (बड़ी मात्रा) ऐसी है कि वह नजिस-उल-ऐन (स्वभावतः अशुद्ध) नहीं है।[3]

1. फतावा खैरिया, मतलब: "इमाम अबू हनीफा के कौल के बिना फतवा नहीं दिया जाता, भले ही मशायख़ ने इसे सही माना हो", दार अल-मारिफा बेरूत द्वारा मुद्रित, 33/2।
2. अत-तजनीस वल-मजीद।
3. अत-ता'लीक अल-मजली, मुन्यात अल-मुसल्ली का हाशिया, कुएं पर अनुभाग, मकतबा कादरिया लाहौर, पृ. 115।

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم

وان صرح المشائخ بان الفتوی علی قولہما لانہ صاحب المذھب والامام المقدم اذا قالت حذام فصدقوھا فان القول ما قالت حذام 1

تعامل کا پایا جانا جیسا کہ مسئلہ زراعت میں ہے اگرچہ مشائخ تصریح کریں کہ فتوٰی صاحبین کے قول پر ہے کیونکہ آپ (امام اعظم رحمۃ اللہ) صاحب مذہب اور امام متقدم ہیں۔ جب حذام کوئی بات کہے تو اس کی تصدیق کرو کیونکہ بات تو وہی ہے جو حذام نے کہی۔

امام برہان الدین فرغانی صاحبِ ہدایہ تجنیس میں فرماتے ہیں: الواجب عندی ان یفتی بقول ابی حنیفۃ علی کل حال 2۔ میرے نزدیک واجب ہے کہ ہر حال میں امام ابو حنیفہ رحمۃ اللہ کے قول پر فتوٰی دیا جائے۔ (ت)

اسی طرح اور کتب سے ثابت و قد ذکرناہ فی کتاب النکاح من فتاؤنا (ہم نے اسے اپنے فتاوٰی کی کتاب النکاح میں ذکر کیا ہے۔ ت) تو واجب ہوا کہ طہارت عین ہی پر فتوے دیں اور اسی کو معمول و مقبول رکھیں۔ ثانیاً: یہی قول اکثر ہے۔

کما یظھر لمن یطالع نقولنا فی التطھیر مع ما ترکنا من الکثیر البشیر ویراجع نقول التنجس یجدھا لا تبلغ نصف ذلک ولا ثلثہ وان شرط مع ذلک عدم الاضطراب فلا یبقی فی یدہ الا اقل قلیل کما ستقف علیہ ان شاء اللہ تعالٰی وقد قال فی الحلیۃ الکثیر علی انہ لیس بنجس العین 3۔ جیسا کہ اس شخص کے لئے ظاہر ہے جو تطہیر کے بارے میں ہمارے نقول کا مطالعہ کرے باوجود کہ ہم نے بہت کچھ چھوڑ دیا ہے اور اس کے نجس ہونے کے بارے میں نقول کی طرف رجوع کرے تو انہیں ان (نقولِ

تطہیر) کا نصف بلکہ تہائی بھی نہیں پائے گا۔ اور اس کے ساتھ عدمِ اضطراب کی شرط رکھی جائے تو اس کے ہاتھ میں بہت کم رہ جائیں گی جیسا کہ تو عنقریب اس پر مطلع ہوگا ان شاء اللہ۔

1 فتاویٰ خیریہ مطلب لایفتی بغیر قول ابی حنیفہ وان صحہ المشائخ مطبوعہ دارالمعرفہ بیروت ۳۳/۲ 2 التجنیس والمزید 3 التعلیق المجلی حاشیہ منیہ المصلی فصل فی البئر مکتبہ قادریہ لاہور ص ۱۱۵

Fatawa Rizvia, Volume 4

[Allah] Almighty. And in Al-Hulyah, it is stated that most narrations suggest that it is not inherently impure (Najis al-Ayn). (T)

And it is established and well-known that the practiced view is that of the majority and the consensus.

[Arabic Box 1]: In Radd al-Muhtar, it is clarified that practice should be according to what the majority follows. In Al-Uqud al-Durriyah, citing the commentary of Al-Ashbah by Al-Biri, it states: "It is not permissible for anyone to adopt [another view] because it is established among the scholars that whenever there is a disagreement on a matter, consideration is given to what the majority has said." [Urdu Box 1]: In Radd al-Muhtar, it is stated that the jurists have clarified that practice will be based on the opinions of the majority. Citing Al-Biri's commentary on Al-Ashbah, it is mentioned in Al-Uqud al-Durriyah that it is not permissible for anyone to adopt [a dissenting view] because it is established among the scholars that when there is a difference of opinion in any matter, the majority's opinion will be considered authoritative. (T)

Thirdly: This is also in accordance with the rulings of the Quran and Hadith.

[Arabic Box 2]: As you have known and will know, it is stated in Al-Ghunyah shortly before the obligations of prayer: "It is not appropriate to deviate from sound reasoning (Dirayah) when a narration agrees with it." And similar to this is in Radd al-Muhtar. [Urdu Box 2]: As you have known and will come to know. And in Al-Ghunyah, shortly before the obligations of prayer, it is stated that when a narration coincides with sound reasoning, it is not appropriate to turn away from it. Something similar is also found in Radd al-Muhtar. (T)

Fourthly: This is stronger from the perspective of evidence; rather, there is no apparent evidence at all for the opinion of impurity.

[Arabic Box 3]: You have heard the statement from Al-Ghunyah regarding the lack of evidence for inherent impurity. Indeed, Shafi'i imams have admitted this. It is stated in Al-Bahr that Imam Nawawi (may Allah have mercy on him) was just in Sharh al-Muhadhdhab when he said: "Our companions used Hadiths as evidence that have no indication [of the point], so I left them because I committed in the preface of the book to avoid such evidences." [Urdu Box 3]: You have heard the statement from Al-Ghunyah that there is no evidence for inherent impurity. Shafi'i imams have also

acknowledged this. In Bahr al-Ra'iq, it is stated that Imam Nawawi (may Allah have mercy on him) acted justly in Sharh al-Muhadhdhab by saying that our companions made such Hadiths as evidence in which there is no indication, so I have left them because in the preface of the book...

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter on the Well, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/66.
2. Al-Uqud al-Durriyah, Qala'id regarding the Etiquettes of the Mufti (Haji Abdul Ghaffar & Sapran, Arg Bazaar, Kandahar, Afghanistan), 1/3.
3. Ghunyat al-Mustamli, shortly before the obligations of prayer, published by Sohail Academy, Lahore, p. 295.
4. Ghunyat al-Mustamli, Chapter on the Well, published by Sohail Academy, Lahore, p. 159.

फतावा रज़विया, खंड 4

[अल्लाह] तआला। और हुल्या में फरमाया कि अधिकांश रिवायतें इसके नजिस ऐन (मूल रूप से नापाक) न होने पर हैं। (त)

और यह साबित और मशहूर है कि मामूल बेह (जिस पर अमल किया जाए) वही कौल (विचार) है जो अक्सर (बहुमत) और जम्हूर का है।

[अरबी बॉक्स 1]: रद अल-मुह्तार में यह स्पष्ट किया गया है कि अमल उसी पर होना चाहिए जिस पर अधिकांश का मत है। अल-उक़ूद अद-दुरिया में, अल-बीरी द्वारा लिखित अल-अशबाह की व्याख्या के हवाले से कहा गया है: "किसी के लिए भी [अन्य विचार] अपनाना जायज़ नहीं है क्योंकि विद्वानों के बीच यह स्थापित है कि जब भी किसी मामले में मतभेद होता है, तो बहुमत द्वारा कही गई बात को ही महत्व दिया जाता है।" [उर्दू बॉक्स 1]: रद अल-मुह्तार में है कि फ़ुक़्हा (धर्मशास्त्रियों) ने स्पष्ट किया है कि अमल अक्सर के अक़ाल (कथनों) पर होगा। बीरी की शरह अशबाह के हवाले से अल-उक़ूद अद-दुरिया में है कि इसे अपनाना किसी के लिए जायज़ नहीं क्योंकि मशाईख के नज़दीक यह बात साबित है कि जब किसी मसले में मतभेद हो तो अक्सर के कौल का एतबार होगा। (त)

तीसरा: यही कुरान और हदीस के अहकाम के मुवाफिक (अनुकूल) है।

[अरबी बॉक्स 2]: जैसा कि आप जानते हैं और जान जाएंगे, अल-गुन्या में नमाज़ के कर्तव्यों से ठीक पहले कहा गया है: "जब कोई वर्णन तर्कसंगत समझ (दरायत) के अनुरूप हो, तो उससे हटना उचित नहीं है।" और इसी तरह रद अल-मुह्तार में भी है। [उर्दू बॉक्स 2]: जैसा कि तुमने जाना और तुम्हें मालूम हो जाएगा। और गुन्या में नमाज़ के वाजिबों से कुछ पहले फ़रमाया कि जब रिवायत, दरायत (तर्क/समझ) के मुवाफिक हो जाए तो उससे मुँह मोड़ना मुनासिब नहीं। रद अल-मुह्तार में भी इसी की तरह है। (त)

चौथा: यही दलील के लिहाज़ से ज़्यादा मज़बूत है बल्कि नजासत (नापाकी) के कौल पर असल में कोई दलील ज़ाहिर नहीं।

[अरबी बॉक्स 3]: आपने नजासत-ए-ऐन के लिए सबूत की कमी के संबंध में अल-गुन्या का कथन सुना है। वास्तव में, शाफई इमामों ने इसे स्वीकार किया है। अल-बह्र में कहा गया है कि इमाम नववी (अल्लाह उन पर रहम करे) ने शरह अल-मुहज्ज़ब में यह कहकर न्याय किया: "हमारे साथियों ने ऐसी

हदीसों को सबूत के रूप में इस्तेमाल किया जिनमें [विषय का] कोई संकेत नहीं था, इसलिए मैंने उन्हें छोड़ दिया क्योंकि मैंने पुस्तक की प्रस्तावना में ऐसे साक्ष्यों से बचने की प्रतिबद्धता जताई थी।" [उर्दू बॉक्स 3]: तुमने गुन्या का कौल सुना है कि नजासत-ए-ऐन पर कोई दलील नहीं। शाफई इमामों ने भी इसका एतराफ़ (स्वीकार) किया है। बह्र अल-राइक में फ़रमाया इमाम नववी (रहमतुल्लाह अलैह) ने शरह मुहज्ज़ब में यह कहकर इंसाफ से काम लिया कि हमारे असहाब ने ऐसी अहादीस को दलील बनाया जिनमें कोई दालत (संकेत) नहीं, इसलिए मैंने उन्हें छोड़ दिया क्योंकि मैंने किताब के खुतबे (प्रस्तावना) में...

---

1. रद अल-मुह्तार, कुएँ का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, 1/66।
2. अल-उक़ूद अद-दुरिया, मुफ्ती के शिष्टाचार से संबंधित (हाजी अब्दुल गफ्फार और सपरान, अर्क बाज़ार, कंधार, अफगानिस्तान), 1/3।
3. गुन्यात अल-मुस्तमली, नमाज़ के वाजिबों से पहले, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृष्ठ 295।
4. गुन्यात अल-मुस्तमली, कुएँ का अध्याय, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृष्ठ 159।

पृष्ठ 439/761

فتاوٰی رضویہ، جلد چہارم

تعالٰی۔ اور حلیہ میں فرمایا کہ زیادہ روایات اس کے نجس عین نہ ہونے پر ہیں۔ (ت)

اور ثابت و مشہور ہے کہ معمول بہ وہی قول اکثر و جمہور ہے۔

[عربی عبارت 1]: في ردالمحتار قد صرحوا بان العمل بما عليه الاكثر اھ وفی العقود الدرية عن شرح الاشباه للبيري لايجوز لاحد الاخذ به لان المقرر عند المشايخ انه متى اختلف في مسألة فالعبرة بما قاله الاكثر۔ [اردو ترجمہ 1]: رد المحتار میں ہے فقہاء کرام نے تصریح کی ہے کہ عمل اکثر کے اقوال پر ہوگا۔ اھ بیری کی شرح اشباہ کے حوالے سے العقود الدریہ میں ہے کہ اسے اختیار کرنا کسی کیلئے جائز نہیں کیونکہ مشائخ کے نزدیک یہ بات ثابت ہے کہ جب کسی مسئلہ میں اختلاف ہو تو اکثر کے قول کا اعتبار ہوگا۔ (ت)

ثالثاً : یہی موافق احکام قرآن و حدیث ہے۔

[عربی عبارت 2]: كما علمت وتعلم وقد قال في الغنية قبيل واجبات الصلاة لا ينبغي ان يعدل عن الدارية اذا وافقتها رواية اھ و مثله في ردالمحتار۔ [اردو ترجمہ 2]: جیسا کہ تو نے جانا اور تجھے معلوم ہو جائیگا۔ اور غنیہ میں واجباتِ نماز سے کچھ پہلے فرمایا کہ جب روایت، درایت کے موافق ہو جائے تو اس سے روگردانی کرنا مناسب نہیں اھ ردالمحتار میں بھی اسی کی مثل ہے (ت)

رابعاً : یہی من حیث الدلیل اقوی ہے بلکہ قول تنجیس پر دلیل اصلاً ظاہر نہیں۔

[عربی عبارت 3]: وقد سمعت قول الغنية لعدم الدليل على نجاسة العين اھ وقد اعترف بذلك الائمة الشافعية قال في البحر ولقد انصف النووی حيث قال في شرح المهذب واحتج اصحابنا باحاديث لا دلالة فيها فتركتها لانی التزمت في خطبة الكتاب الاعراض عن الدلائل۔ [اردو ترجمہ 3]: تو نے غنیہ کا

قول سنا ہے کہ نجاستِ عین پر کوئی دلیل نہیں۔ اھ شافعی ائمہ نے بھی اس کا اعتراف کیا ہے۔

بحرالرائق میں فرمایا امام نووی رحمۃ اللہ نے شرح مہذب میں یہ کہہ کر انصاف سے کام لیا کہ ہمارے اصحاب نے ایسی احادیث کو دلیل بنایا جن میں کوئی دلالت نہیں پس میں نے ان کو چھوڑ دیا کیونکہ میں نے خطبہ کتاب

---

1 ردالمحتار، فصل فی البئر، مطبوعہ مصطفیٰ البابی مصر، ۱/۶۶ 2 العقود الدریہ قلائد تتعلق باداب المفتی (حاجی عبدالغفار و سپراں ارگ بازار قندھار افغانستان ۱/۳ 3 غنیۃ المستملی قبیل واجبات الصلوٰۃ مطبوعہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۲۹۵ 4 غنیۃ المستملی فصل فی البئر مطبوعہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۵۹

Fatawa Razawiya, Volume 4

(Right Column - Urdu Translation/Explanation) I have taken it upon myself to avoid weak arguments. (End of quote) [1] Imam Arif al-Sha'rani al-Shafi'i (may Allah have mercy on him) stated in 'Al-Mizan al-Shari'ah al-Kubra' that he heard his master Ali al-Khawwas (may Allah have mercy on him) saying: "We have no evidence for the inherent impurity (najasat al-ayn) of a dog except that the Lawgiver [Prophet Muhammad ﷺ] prohibited its sale and the consumption of its price." (End of quote) (T) [2] I say [the author]: This evidence is also not conclusive because the Lawgiver (peace and blessings of Allah be upon him) prohibited the sale of some things and taking their price, although their physical essence is pure by consensus. Imam Ahmad and the companions of the six authentic books (Sihah al-Sittah) narrated via Jabir (may Allah be pleased with him) that Allah the Almighty and His Messenger (peace and blessings of Allah be upon him) forbade the sale of wine, carrion, swine, and idols. [3] Ahmad, Muslim, the four [Sunan] authors, Tahawi, and Hakim (may Allah have mercy on them) also narrate from the same Jabir (may Allah be pleased with him) that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) forbade the price of a dog and a cat. [4] Furthermore, our scholars have clarified that this was at a time when there was a command to kill dogs and it was not permissible for anyone to keep any of them. Then it was abrogated by its abrogation [5] as established by the Imam...

(Left Column - Original Arabic Text) ...weak [arguments]. [1] (End of quote) And Imam al-Arif al-Sha'rani al-Shafi'i said in 'Mizan al-Shari'ah al-Kubra': I heard my master Ali al-Khawwas (may Allah have mercy on him) say: "We have no evidence for the inherent impurity of a dog except that the Lawgiver forbade its sale and the consumption of its price." [2] (End of quote) I say: That is, it is also not complete, for the Lawgiver (peace and blessings of Allah be upon him) has forbidden the sale of things and their prices even though their essence is pure by consensus. The Imams Ahmad and the six [books] narrated from Jabir (may Allah be pleased with him) that Allah and His Messenger forbade the sale of wine, carrion, swine, and idols. [3] And Ahmad, Muslim, the four, Tahawi, and al-Hakim narrated from him (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) forbade the price of a dog and a cat. [4] Moreover, our scholars have clarified that this was at the time when the order was to kill dogs and it was not permissible for anyone to keep any of them. So it was abrogated by its abrogation [5] as established by the Imam...

(Footnotes) 1. Al-Bahr al-Ra'iq, Book of Purity, published by H.M. Saeed Company, Karachi, 1/106. 2. Al-Mizan al-Kubra, Chapter on Impurity, published by Mustafa al-Babi, Egypt, 1/114. 3. Sahih al-Bukhari, Chapter on the Sale of Carrion and Idols, published by Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/298. 4. Sharh Ma'ani al-Athar, Chapter on the Price of a Dog, published by H.M. Saeed Company, Karachi, 2/251. 5. Sharh Ma'ani al-Athar, Chapter on the Price of a Dog, published by H.M. Saeed Company, Karachi, 2/248.

फ़तावा रज़विया, जिल्द चौथी

(दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या) मैंने इस बात का संकल्प लिया है कि मैं कमज़ोर दलीलों से बचूँगा। (समाप्त) [१] इमाम आरिफ अल-शरानी अल-शाफ़ई (अल्लाह उन पर रहम करे) ने 'अल-मीज़ान अल-शरिया अल-कुबरा' में फ़रमाया कि मैंने सैयदी अली अल-ख्वास (अल्लाह उन पर रहम करे) से सुना, आप फ़रमाते थे कि हमारे पास कुत्ते के मूलतः अशुद्ध (नजासत-ए-ऐन) होने पर इसके सिवा कोई दलील नहीं है कि शरीअत देने वाले (पैगंबर मुहम्मद ﷺ) ने इसकी खरीद-ओ-फ़रोख़्त और इसकी कीमत खाने से मना फ़रमाया है। (समाप्त) (त) [२] मैं [लेखक] कहता हूँ: यह दलील भी पूरी नहीं है क्योंकि शरीअत देने वाले (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) ने कुछ चीज़ों की खरीद-ओ-फ़रोख़्त और उनकी कीमत लेने से मना फ़रमाया है, जबकि उनकी असलियत सर्वसम्मति से पवित्र है। इमाम अहमद और सिहाह सिताह के संकलकों ने हज़रत जाबिर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के माध्यम से रिवायत की है कि अल्लाह ताला और उसके रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) ने शराब, मुर्दार, सूअर और बुतों की खरीद-ओ-फ़रोख़्त से मना फ़रमाया। [३] अहमद, मुस्लिम, चार सुनन के संकलक, तहावी और हाकिम (अल्लाह उन पर रहम करे) उन्हीं हज़रत जाबिर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से रिवायत करते हैं कि नबी करीम (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) ने कुत्ते और बिल्ली की कीमत लेने से मना फ़रमाया। [४] इसके अलावा हमारे उलेमा फ़रमाते हैं कि यह उस समय था जब कुत्तों को मारने का हुक्म था और किसी के लिए उन्हें रखना जायज़ नहीं था। फिर यह इसके निरसन (नस्ख) द्वारा निरस्त हो गया [५] जैसा कि इमाम ने इसकी तहकीक की है...

(बायां कॉलम - मूल अरबी पाठ) ...कमज़ोर [दलीलें]। [१] (समाप्त) और इमाम अल-आरिफ अल-शरानी अल-शाफ़ई ने 'मीज़ान अल-शरिया अल-कुबरा' में कहा: मैंने अपने आका अली अल-ख्वास (अल्लाह उन पर रहम करे) को कहते सुना: हमारे पास कुत्ते के मूलतः अशुद्ध होने का इसके सिवा कोई प्रमाण नहीं है कि शरीअत देने वाले ने इसकी बिक्री और इसकी कीमत खाने से मना किया। [२] (समाप्त) मैं कहता हूँ: अर्थात यह भी पूरा नहीं है, क्योंकि शरीअत देने वाले (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) ने उन चीज़ों और उनकी कीमतों की बिक्री को मना किया है जिनकी वास्तविकता सर्वसम्मति से पवित्र है। इमाम अहमद और छह [किताबों] ने जाबिर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से रिवायत की है कि अल्लाह और उसके रसूल ने शराब, मुर्दार, सूअर और मूर्तियों की बिक्री को हराम किया। [३] और अहमद, मुस्लिम, चारों सुनन लेखकों, तहावी और हाकिम ने उनसे

रिवायत किया कि अल्लाह के रसूल ने कुत्ते और बिल्ली की कीमत से मना किया। [४] इसके अलावा, हमारे उलेमा ने स्पष्ट किया है कि यह उस समय था जब कुत्तों को मारने का आदेश था और किसी के लिए उन्हें रखना जायज़ नहीं था। तो यह इसके निरसन द्वारा निरस्त कर दिया गया [५] जैसा कि इमाम ने स्पष्ट किया है...

(पाद टिप्पणियाँ) १. अल-बहर अल-राइक, किताब अल-तहारत, एच.एम. सईद कंपनी, कराची द्वारा प्रकाशित, १/१०६। २. अल-मीज़ान अल-कुबरा, नजासत का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र द्वारा प्रकाशित, १/११४। ३. सहीह अल-बुखारी, मुर्दार और बुतों की खरीद का अध्याय, कदीमी कुतुब खाना, कराچی द्वारा प्रकाशित, १/२९८। ४. शरह मानी अल-आसार, कुत्ते की कीमत का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी, कराची द्वारा प्रकाशित, २/२५१। ५. शरह मानी अल-आसार, कुत्ते की कीमत का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी, कराची द्वारा प्रकाशित, २/२४८।

पृष्ठ ४४० का ७११

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم

(دایاں کالم) میں اس بات کا التزام کیا ہے کہ کمزور دلائل سے اعراض کروں گا۔ اھ امام عارف شعرانی شافعی رحمۃ اللہ نے میزان الشریعہ الکبری میں فرمایا کہ میں نے سیدی علی الخواص رحمۃ اللہ سے سنا آپ فرماتے تھے ہمارے پاس کتے کے نجس عین ہونے پر اس کے سوا کوئی دلیل نہیں کو شارع علیہ السلام نے اس کی خرید وفروخت اور اس کی قیمت کھانے سے منع فرمایا اھ (ت) اقول: یہ دلیل بھی تام نہیں کیونکہ شارع صلی اللہ علیہ وسلم نے بعض چیزوں کی خرید و فروخت اور ان کی قیمت لینے سے منع فرمایا حالانکہ ان کا عین بالاتفاق پاک ہے۔ امام احمد اور اصحاب صحاح ستہ نے بواسطہ حضرت جابر رضی اللہ عنہ نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم سے روایت نقل کی ہے کہ اللہ تعالٰی اور اس کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم نے شراب، مردار، خنزیر اور بتوں کی خرید و فروخت سے منع فرمایا۔ احمد، مسلم، اصحاب اربعہ، طحاوی اور حاکم رحمہم اللہ انہی حضرت جابر رضی اللہ عنہ سے روایت کرتے ہیں کہ نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم نے کتے اور بلی کی قیمت لینے سے منع فرمایا۔ علاوہ ازیں ہمارے علماء فرماتے ہیں کہ یہ اس وقت تھا جب کتے کو قتل کرنے کا حکم تھا اور کسی کیلئے اس میں سے

(بایاں کالم) الواھیۃ ۱ اھ وقال الامام العارف الشعرانی الشافعی فی میزان الشریعۃ الکبری سمعت سیدی علیا الخواص رحمہ اللہ تعالٰی یقول لیس لنادلیل علی نجاسۃ عین الکلب الامانہٰی عنہ الشارع من بیعہ واکل ثمنہ ۲ اھ اقول: ای ولایتم ایضاً فأن الشارع صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم قدنھی عن بیع اشیاء واثمانھا وھی طاھرۃ العین وفاقا اخرج الائمۃ احمد والستۃ عن جابر رضی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ان اللہ ورسولہ حرم بیع الخمر والمیتۃ والخنزیر والاصنام ۳ ولاحمد ومسلم والاربعۃ والطحاوی والحاکم عنہ رضی اللہ تعالٰی عنہ ان رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نھی عن ثمن الکلب والسنور ۴ علی ان

علماء نا قد بينوا ان ذلک کان حين کان الامر بقتل الکلاب ولم يکن يحل لاحد امساك شيئ منها فنسخ بنسخه ۵ کما حققه الامام

(حواشی) 1 البحر الرائق، کتاب الطہارت، مطبوعہ ايچ ايم سعيد کمپنی کراچی ۱/ ۱۰۶ 2 الميزان الکبری باب النجاسة، مطبوعہ مصطفیٰ البابی مصر، ۱/ ۱۱۴ 3 صحيح البخاری باب بيع الميتة والاصنام مطبوعہ قديمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۲۹۸ 4 شرح معانی الآثار باب ثمن الکلب مطبوعہ ايچ ايم سعيد کمپنی کراچی ۲۵۱/۲ 5 شرح معانی الآثار باب ثمن الکلب مطبوعہ ايچ ايم سعيد کمپنی کراچی ۲۴۸/۲

Fatawa Rizvia Volume 4

Abu Ja'far al-Tahawi in Sharh Ma'ani al-Athar.

It was not permissible to withhold anything, so with the abrogation of this (killing), this was also abrogated, as Imam Abu Ja'far al-Tahawi has researched in Sharh Ma'ani al-Athar. (T)

Fifthly: If there is a conflict in the evidence, the reference is to the original principle.

As they have stated in the principles and adhered to it in issues of reciting 'Ameen' silently and omitting the raising of hands [Rafa' Yadain] and others.

As they explained it in the principles and adopted it in issues such as saying 'Ameen' silently and omitting the raising of hands. (T)

And the original state in all things is purity.

Even the pig, for it is from semen, and semen is from blood, and blood is from food, and food is from elements, and elements are pure. So much so that if the Sharia had not declared its essence impure, it would remain on its original state. In 'Al-Mizan' it says: The original state in things is purity, and impurity is accidental, for it proceeds from the creation of Allah Almighty, the Holy and Pure, etc. In 'Al-Tariqa' and 'Al-Hadiqa': (Text) In things, the original state is purity. (Commentary) Because Allah Almighty did not create anything impure in its original creation. (Text) Impurity is accidental. (Commentary) Thus, the origin of urine is pure water; similarly, blood, semen, and wine are pure juices, then impurity occurred. [Summarized]. Therefore, it is said in 'Al-Ghunya' at this point: and the original state is the absence of it, i.e., the absence of impurity, as mentioned before.

Even the pig, because it originates from semen, semen from blood, blood from food, and food from elements, and the elements are pure. Thus, if the Sharia had not declared its essence impure, it would have remained in its original pure state. It is stated in Al-Mizan that the original state of things is purity and impurity is accidental, meaning it occurs by the command of Allah Almighty, the Pure and Holy, etc. In Al-Tariqa al-Muhammadiyya and Al-Hadiqa al-Nadiyya, it says: (Text) The original state in things is purity. (Commentary) Because Allah Almighty did not create anything impure in its original creation. (Text) Impurity is accidental. (Commentary) Therefore, the origin of urine is pure water; similarly, blood, semen, and wine are pure juices,

then impurity was added. [Summarized]. That is why it is said in Ghunya at this point: the original state is the absence of impurity, as mentioned previously. (T)

1. Al-Mizan al-Kubra, Chapter of Impurity, printed by Mustafa al-Babi, Egypt, 1/112.
2. Al-Hadiqa al-Nadiyya, Fourth Type, completion of four types in explaining the disagreement of jurists on the matter of purity and impurity etc., printed by Nooriya Rizviya, Faisalabad, 2/137.
3. Ghunyat al-Mustamli, Chapter on the Well, printed by Suhail Academy, Lahore, p. 159.

फ़तावा रिज़विया जिल्द चौथी

अबू जाफ़र अत-तहावी और शरह मानी अल-आसार में।

कुछ रोक रखना जायज़ न था, अतः इसके(वध के) मन्सूख़ (निरस्त) होने से यह भी मन्सूख़ हो गया जैसा कि इमाम अबू जाफ़र तहावी ने शरह मानी अल-आसार में इसकी तहक़ीक़ फ़रमाई है। (त)

पांचवां: अगर दलीलों में विरोधाभास हो, तो मरजा (संदर्भ) असल (मूल) है।

जैसा कि उन्होंने उसूल (सिद्धांतों) में उल्लेख किया है और आहिस्ता आमीन कहने और रफ़े यदैन छोड़ने जैसे मसलों में इसे अपनाया है।

जैसा कि उन्होंने इसे उसूल में बयान किया और आहिस्ता आमीन कहने और तर्कए-रफ़े यदैन जैसे मसलों में इसे इख़्तियार किया। (त)

और असल तमाम चीज़ों में तहारत (पवित्रता) है।

यहाँ तक कि सूअर भी, क्योंकि वह मनी (वीर्य) से है, और मनी खून से है, और खून भोजन से है, और भोजन तत्वों से है, और तत्व पाक हैं। यहाँ तक कि अगर शरीअत इसे नजिस-ए-ऐन (स्वयं अपवित्र) करार न देती, तो वह अपनी असल पर बाक़ी रहता। मीज़ान में है: चीज़ों में असल तहारत है और नजासत (अपवित्रता) आरज़ी (आकस्मिक) है, क्योंकि यह अल्लाह तआला पाक व ताहिर के हुक्म से सादिर होती है इत्यादि। तरीक़ा और हदीक़ा में है: (मतन) चीज़ों में असल तहारत है (शरह) क्योंकि अल्लाह तआला ने असल तख़लीक़ (सृजन) में किसी चीज़ को नजिस पैदा नहीं किया (मतन) नजासत आरज़ी है (शरह) अतः पेशाब की असल पाक पानी है, इसी तरह खून, मनी और शराब पाक रस है फिर नजासत लाहिक़ हुई। [संक्षेप में]। इसीलिए गुनिया में इस मुक़ाम पर फ़रमाया और असल अदम-ए-नजासत है, यानी नजासत का न होना, जैसा कि गुज़र गया।

यहाँ तक कि सूअर भी, क्योंकि वह मनी से है, मनी खून से, खून ग़िज़ा (भोजन) से और ग़िज़ा तत्वों से और तत्व पाक हैं। यहाँ तक कि अगर शरीअत उसे नजिस-ए-ऐन करार न देती तो वह अपनी असल पर बाक़ी रहता। मीज़ान में है: चीज़ों में असल तहारत है और नजासत लाहिक़ होती है यानी अल्लाह तआला पाक व ताहिर के हुक्म से सादिर होती है इत्यादि। तरीक़ा-ए-मुहम्मदिया और हदीक़ा-ए-नदिया में है: (मतन) चीज़ों में असल तहारत है (शरह) क्योंकि अल्लाह तआला ने असल तख़लीक़ में किसी चीज़ को नजिस पैदा नहीं किया (मतन) नजासत आरज़ी है (शरह) अतः पेशाब की असल पाक

पानी है, इसी तरह खून, मनी और शराब पाक रस है फिर नजासत लाहिक़ हुई। [संक्षेप में]। इसीलिए गुनिया में इस मुक़ाम पर फ़रमाया और असल अदम-ए-नजासत है जैसा कि गुज़र गया। (त)

1. अल-मीज़ान अल-कुबरा, नजासत का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र द्वारा मुद्रित 1/112
2. अल-हदीक़ा अल-नदिया, चौथा प्रकार, फ़कीहों के बीच तहारत और नजासत के मामले में मतभेद के बयान में, नूरिया रिज़विया फ़ैसलाबाद द्वारा मुद्रित 2/137
3. गुनियात अल-मुस्तमली, कुएं का अध्याय, सुहैल अकादमी लाहौर द्वारा मुद्रित पृष्ठ 159

पृष्ठ 441/761

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم

ابو جعفر الطحاوی و فی شرح معانی الآثار۔

کچھ روک رکھنا جائز نہ تھا پس اس (قتل) کے منسوخ ہونے سے یہ بھی منسوخ ہوگیا جیسا کہ امام ابو جعفر طحاوی نے شرح معانی الآثار میں اس کی تحقیق فرمائی ہے۔ (ت)

خامساً: اگر دلائل میں تعارض بھی ہو تو مرجع اصل ہے،

کما نصوا علیہ فی الاصول وتشبتوا بہ فی مسائل الاسرار بالتامین وترک رفع الیدین وغیرہما۔

جیسا کہ انہوں نے اسے اصول میں بیان کیا اور آہستہ آمین کہنے اور ترک رفع یدین جیسے مسائل میں اس کو اختیار کیا۔ (ت)

اور اصل تمام اشیاء میں طہارت ہے۔

حتی الخنزیر فانہ من المنی والمنی من الدم والدم من الغذاء والغذاء من العناصر والعناصر طاھرۃ حتی لولم یرد الشرع بتنجیس عینہ بقی علی اصلہ فی المیزان الاصل فی الاشیاء الطھارۃ وانما النجاسۃ عارضۃ فانھا صادرۃ عن تکوین اللہ تعالی القدوس الطاھر الیٰ الخ۔ وفی الطریقۃ والحدیقۃ ص ان الطھارۃ فی الاشیاء اصل ش لان اللہ تعالی لم یخلق شیأ نجسا من اصل خلقتہ ص وش انما ص النجاسۃ عارضۃ ش فاصل البول ماء طاھر وکذلک الدم والمنی والخمر عصیر طاھر ثم عرضت النجاسۃ اھ ملخصاً۔ ولذا قال فی الغنیۃ لھنا والاصل عدمھا ای عدم النجاسۃ کما مر۔

حتیٰ کہ خنزیر بھی، کیونکہ وہ منی سے ہے، منی خون سے، خون غذا سے اور غذا عناصر سے اور عناصر پاک ہیں حتیٰ کہ اگر شریعت اسے نجس عین قرار نہ دیتی تو وہ اپنی اصل پر باقی رہتا۔

میزان میں ہے اشیاء میں اصل طہارت ہے اور نجاست لاحق ہوتی ہے یعنی اللہ تعالیٰ پاک وطاہر کے حکم سے صادر ہوتی ہے الخ۔ الطریقۃ المحمدیہ اور الحدیقۃ الندیۃ میں ہے (متن) اشیاء میں اصل طہارت ہے (شرح) کیونکہ اللہ تعالیٰ نے اصل تخلیق میں کسی چیز کو نجس پیدا نہیں کیا (متن) نجاست عارضی ہے (شرح) پس پیشاب کا اصل پاک پانی ہے، اسی طرح خون، منی اور شراب پاک رس ہے پھر نجاست لاحق ہوئی اھ ملخصاً۔ اسی لئے غنیہ میں اس مقام پر فرمایا اور اصل عدم نجاست ہے جیسا کہ گزر گیا۔ (ت)

1 المیزان الکبری باب النجاسۃ مطبوعہ مصطفی البابی مصر ۱/۱۱۲ 2 الحدیقۃ الندیۃ النوع الرابع تمام انواع الاربعۃ فی بیان اختلاف الفقہا فی امر الطہارۃ والنجاسۃ الخ مطبوعہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۲/۱۳۷ 3 غنیۃ المستملی فصل فی البئر مطبوعہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۵۹

Fatawa Razawiyyah Volume 4

Sixthly: There is ease in this:

Especially for those who are compelled to keep it for hunting, agriculture, or protecting livestock, and ease is beloved in the eyes of the Lawgiver. (The Divine commandment is): "Allah desires for you ease and He does not desire for you hardship." [1] And the Noble Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) said: "Indeed, the religion is easy" (Hadith). Imam Bukhari and Nasai narrated it from Hazrat Abu Huraira (may Allah be pleased with him). And the Master of both worlds (may Allah's peace and blessings be upon him) said: "Make things easy and do not make them difficult." This Hadith is narrated by Imam Ahmad, Bukhari, Muslim, and Nasai from Hazrat Anas bin Malik (may Allah be pleased with him). (T)

Seventhly: Many of those who argue for its impurity have conflicting statements themselves; sometimes they rule it as inherently impure, sometimes they indicate inherent purity, rather they clearly state, as mentioned in Mabsut Shams al-A'imma al-Sarkhasi under the section of 'Masa'il al-Asar':

"The correct view in our school (Hanafi) is that the dog itself is not inherently impure." (According to us, the correct school of thought is that the dog's body is not inherently impure. (T))

In the same chapter of Hadith, it says:

"The skin of a dog becomes pure through tanning, unlike the view of Hasan and Shafi'i, because according to them, its body is inherently impure. But we say that benefiting from it is permissible in a state of choice; so if its body were inherently impure, then benefiting from it would not have been permissible." (According to us, the skin of a dog becomes pure after tanning. Imam Hasan and Imam Shafi'i (may Allah have mercy on them) differ on this because, according to them, its body is inherently impure. However, we argue that it is permissible to benefit from it by choice; thus, if its body were inherently impure, benefiting from it would not be allowed. (T))

---

1 Al-Quran 2/185 2 Sahih al-Bukhari, Book: The Religion is Easy, Published by Qadimi Kutub Khana Karachi, 10/1 3 Sahih al-Bukhari, Book: What the ruler should command when sending two leaders to a place, etc., Published by Qadimi Kutub Khana Karachi, 1063/2 4 Al-Mabsut by al-Sarkhasi, Section: Leftover of what whose meat is not eaten,

Published by Dar al-Ma'rifah Beirut, 1/48 5 Al-Mabsut by al-Sarkhasi, Volume: Dead animals and their rulings, Published by Dar al-Ma'rifah Beirut, 1/202

फ़तावा रज़विया जिल्द 4

छठा: इसी में सुगमता है:

विशेष रूप से उस व्यक्ति के लिए जो शिकार, खेती या पशुओं की सुरक्षा के लिए इसे रखने के लिए मजबूर है, और शरीयत की दृष्टि में आसानी प्रिय है। (अल्लाह का फरमान है): "अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है और तुम्हारे लिए तंगी नहीं चाहता।" [1] और नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "बेशक दीन आसान है" (हदीस)। इसे इमाम बुखारी और नसाई ने हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। और सरवरे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "आसानी पैदा करो और तंगी पैदा न करो"। इस हदीस को इमाम अहमद, बुखारी, मुस्लिम और नसाई ने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। (त)

सातवां: नापाकी (नजासत) का दावा करने वालों के अपने कथनों में विरोधाभास है; कहीं वे इसे मूल रूप से अपवित्र कहते हैं, कहीं मूल रूप से पवित्र होने का संकेत देते हैं, बल्कि स्पष्ट रूप से स्पष्ट करते हैं, जैसा कि 'मब्सूत शम्सुल अइम्मा सरख्सी' के'मसाईलुल आसार' में है:

"हमारे मज़हब (हनफी) के अनुसार सही बात यह है कि कुत्ते का शरीर स्वयं नापाक (नजस-ए-ऐन) नहीं है।" (हमारे नज़दीक सही मज़हब यह है कि कुत्ते का वजूद नापाक नहीं है। (त))

उसी के'बाबुल हदीस' में है:

"कुत्ते की खाल रंगने (दबाग़त) से पाक हो जाती है, इमाम हसन और शाफई के विपरीत, क्योंकि उनके अनुसार उसका वजूद नापाक है। लेकिन हम कहते हैं कि विकल्प की स्थिति में इससे लाभ उठाना जायज़ है; अगर उसका वजूद नापाक होता, तो उससे लाभ उठाना जायज़ न होता।" (हमारे नज़दीक कुत्ते का चमड़ा रंगने से पाक हो जाता है। इमाम हसन और इमाम शाफई (रहमहुमुल्लाह) का इसमें मतभेद है क्योंकि उनके नज़दीक उसका वजूद नापाक है। लेकिन हम कहते हैं कि ऐच्छिक स्थिति में इससे लाभ उठाना जायज़ है; अतः अगर उसका वजूद नापाक होता तो इससे लाभ उठाना जायज़ न होता। (त))

---

1 अल-कुरान 185/2 2 सहीह अल-बुखारी, बाब: दीन आसान है, मुद्रित: कदीमी कुतुब खाना कराची, 10/1 3 सहीह अल-बुखारी, बाब: हाकिम का हुक्म जब वह दो अमीर किसी जगह भेजे, मुद्रित: कदीमी कुतुब खाना कराची, 1063/2 4 अल-मब्सूत लिल-सरख्सी, सूर माला युकालू लहमहु,

मुद्रित: दारुल मारिफ़ा बेरुत, 48/1 5 अल-मब्सूत लिल-सरख्सी, जिल्दुल मैय्या व अहकामुहू, मुद्रित: दारुल मारिफ़ा बेरुत, 202/1

पृष्ठ 442 का 761

فتاویٰ رضویہ جلد چہارم

سادسًا: اسی میں تیسیر ہے :

لاسیما علی من ابتلی باقتنائہ لصید او زرع او ماشیۃ (خصوصاً جو شخص شکار، کھیتی باڑی یا جانوروں کی حفاظت کے لئے اس کے رکھنے پر مجبور ہو اور شارع کی نظر میں آسانی محبوب ہے (ارشادِ خداوندی ہے) اللہ تعالی تمہارے لئے آسانی چاہتا ہے اور تمہارے لئے تنگی نہیں چاہتا۔ اور نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا : "بے شک دین آسان ہے" (الحدیث) اسے امام بخاری اور نسائی نے حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا ۔ اور سرکار دو عالم صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا : "آسانی پیدا کرو اور تنگی پیدا نہ کرو"۔ اس حدیث کو امام احمد، بخاری و مسلم اور نسائی نے حضرت انس بن مالک رضی اللہ عنہ سے روایت کیا ہے۔ (ت)) والتیسیر محبوب فی نظر الشارع یُرِیْدُ اللّٰہُ بِکُمُ الْیُسْرَ وَ لَا یُرِیْدُ بِکُمُ الْعُسْرَ 1 وقال صلی اللہ علیہ وسلم ان الدین یسر الحدیث 2 رواہ البخاری والنسائی عن ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالیٰ عنہ وقال صلی اللہ علیہ وسلم یسروا ولا تعسروا 3 رواہ احمد والشیخان والنسائی عن انس بن مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔

سابعًا: بہت قائلانِ تنجیس کے اقوال خود مضطرب ہیں کہیں نجاستِ عین پر حکم فرماتے کہیں طہارتِ عین کا پتا دیتے بلکہ صاف تصریح کرتے ہیں جس مبسوط شمس الائمہ سرخسی کے مسائل الآسار میں ہے :

الصحیح من المذھب عندنا ان عین الکلب لیس بنجس 4 (ہمارے نزدیک صحیح مذہب یہ ہے کہ کتے کا عین نجس نہیں ہے۔ (ت))

اُسی کے باب الحدیث میں ہے :

جلد الکلب یطھر بالدباغ خلافًا للحسن والشافعی لان عینه نجس عندھما ولکنا نقول الانتفاع به مباح حالة الاختیار فلو کان عینه نجسًا لما ابیح الانتفاع به 5 (ہمارے نزدیک کتے کا چمڑا دباغت سے پاک ہو جاتا ہے امام حسن اور امام شافعی رحمہم اللہ کا اس میں اختلاف ہے کیونکہ ان کے نزدیک اس کا عین ناپاک ہے لیکن ہم کہتے ہیں حالتِ اختیار میں اس سے نفع حاصل کرنا جائز ہے پس اگر اس کا عین ناپاک ہوتا تو اس سے نفع حاصل کرنا جائز نہ ہوتا۔ (ت))

---

1 القرآن ۱۵۸/۲ 2 صحیح البخاری باب الدین یسر مطبوعہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱۰/۱ 3 صحیح البخاری باب امر الوالی اذا وجه امیرین الی موضع الخ مطبوعہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱۰۶۳/۲ 4 المبسوط للسرخسی، سور مالا یوکل لحمہ مطبوعہ دار المعرفۃ بیروت ۴۸/۱ 5 المبسوط للسرخسی جلد المیتۃ واحکامہ مطبوعہ دار المعرفۃ بیروت ۲۰۲/۱

Fatawa Razawiyya Volume Four In the same 'Kitab al-Sayd' (Book of Hunting) it is stated:

“By this it becomes clear that it is not essentially impure.” [1] | From this it is clear that it is not essentially impure. (T)

In the same 'Fatawa Walwalijiyya' where the issue of a cloth becoming impure due to a dog shaking itself was mentioned.

“It is stated in al-Bahr that it is not hidden that this is based on the opinion of its essential impurity.” [2] | In 'Bahr al-Ra'iq' it was stated that it should not remain hidden that this point (the cloth becoming impure by the dog's shaking) is based on the premise of being a proponent of its essential impurity. (T)

In the same, similar to 'Tajnīs', the issue of the permissibility of prayer with a necklace made of dog's teeth was mentioned.

“It is stated in al-Bahr that it is not hidden that all of this is based on the opinion of its essential purity.” [3] | In 'Bahr al-Ra'iq' it was stated that it should not remain hidden that all this is based on the premise of its essence being pure. (T)

In 'Idah', where the text of 'Mabsut Shaykh al-Islam' regarding a narration stating “it does not become pure and this is the apparent view of the school” (in one narration it is said it does not become pure and this is the manifest school's position. T) was quoted, he then himself objected to his own text 'Islah's statement “except for the skin of the pig and the human” (except for the skin of pig and human. T) saying “the mentioned restriction is against the apparent view” (the mentioned restriction is against the manifest view. T). In the same book 'Kitab al-Buyu' (Book of Sales) it is stated:

“The sale of a dog is valid, contrary to al-Shafi'i, because it is essentially impure according to him, not according to us, because benefit is derived from it.” [4] | The buying and selling of a dog is valid; there is a disagreement with Imam Shafi'i in this because according to them it is essentially impure, but not according to us because benefit is obtained from it. (T)

In those 'Durar wa Ghurar' where he had said that “The dog is essentially impure” [5] etc. (The dog is essentially impure etc. T), in their own [chapter on] sales it is:

“The sale of every animal with fangs like the dog is valid because it is property (mal).” | Like the dog, the buying and selling of every fanged animal [is valid].

1. Al-Mabsut by al-Sarakhsi, Price of a Hunting Dog, printed Dar al-Ma'rifah Beirut, 11/235
2. Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, printed H.M. Saeed Company Karachi, 1/102
3. Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, printed H.M. Saeed Company Karachi, 1/103
4. Al-Idah wa al-Islah
5. Durar al-Hukkam fi Sharh Ghurar al-Ahkam, Fard al-Ghusl, printed Kamil al-Ka'inah in Dar as-Sa'adah, 1/24

फतावा रज़विया जिल्द चौथी उसी की 'किताब अस-सैद' (शिकार की किताब) में है:

“इससे स्पष्ट होता है कि यह मूलतः अशुद्ध (नजिस ऐन) नहीं है।” [1] | इससे स्पष्ट हुआ कि यह नजिस ऐन नहीं है। (त)

जिस 'फतावा वलवालिजिया' में कुत्ते के झाड़ने से कपड़े के नापाक होने का मसला बयान किया गया।

“बहर में फरमाया गया कि यह बात छिपी न रहे कि यह बात (कुत्ते के झाड़ने से कपड़े का नापाक होना) उसके नजिस ऐन होने के कायल (मानने वाले) होने की बुनियाद पर है।” [2] | बहर अर-रइक़ में फरमाया गया कि यह बात छिपी न रहे कि यह बात इसके नजिस ऐन होने के मानने की बुनियाद पर है। (त)

उसी में 'तजनीस' की तरह कुत्ते के दाँतों के हार के साथ नमाज़ के जायज़ होने का मसला बयान फरमाया।

“बहर में फरमाया गया कि यह बात छिपी न रहे कि यह सब कुछ उसके ऐन (अस्तित्व) के पाक होने की बुनियाद पर है।” [3] | बहर अर-रइक़ में फरमाया गया कि यह बात छिपी न रहे कि यह सब कुछ इसके ऐन पाक होने की बुनियाद पर है। (त)

जिस 'ईज़ाह' में 'मबसूत शेखुल इस्लाम' की इबारत “एक रिवायत में है कि पाक नहीं होता और यही ज़ाहिर मज़हब है। त” नक़ल करके खुद अपने 'मतन इस्लाह' के कौल “मगर सुअर और आदमी की खाल। त” पर ऐतराज़ फरमाया “मज़कूर (उल्लेखित) पाबंदी ज़ाहिर के खिलाफ है। त”। उसी की 'किताब अल-बुयूअ' (बिक्री की किताब) में फरमाया:

“कुत्ते की खरीद-ओ-फरोख्त सही है, इमाम शाफ़ई के विपरीत, क्योंकि उनके नज़दीक यह नजिस ऐन है, हमारे नज़दीक नहीं क्योंकि इससे लाभ प्राप्त किया जाता है।” [4] | कुत्ते की खरीद-ओ-फरोख्त सही है, इसमें इमाम शाफ़ई का मतभेद है क्योंकि उनके नज़दीक यह नजिस ऐन है, हमारे नज़दीक नहीं क्योंकि इससे नफा हासिल किया जाता है। (त)

जिन 'दुरर-ओ-ग़ुरर' में उन्होंने फरमाया था कि “कुत्ता नजिस ऐन है” [5] वग़ैरह (कुत्ता नजिस ऐन है वग़ैरह। त), उन्हीं की 'बुयूअ' (बिक्री के अध्याय) में है:

“कुत्ते की तरह हर दाँत वाले जानवर की खरीद-ओ-फरोख्त सही है क्योंकि वह माल है।” | कुत्ते की तरह हर दाँत वाले जानवर की खरीद-ओ-फरोख्त [सही है]।

1. अल-मबसूत लिस-सरख़सी, शिकार के कुत्ते की कीमत, मुद्रित दार अल-मारिफ़ा बेरूत, 11/235
2. अल-बहर अर-रइक़, किताब अत-तहारत, मुद्रित एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/102
3. अल-बहर अर-रइक़, किताब अत-तहारत, मुद्रित एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/103
4. अल-ईज़ाह वल-इस्लाह
5. दुरर अल-हुक्काम फ़ी शरह ग़ुरर अल-अहकाम, फ़र्ज़ अल-ग़ुस्ल, मुद्रित कामिल अल-काइना फ़ी दार अस-साआदा, 1/24

पृष्ठ 443 / 761

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم اُسی کی کتاب الصید میں ہے: بھذا یتبین انہ لیس بنجس العین^1 | اس سے واضح ہوا کہ یہ نجس عین نہیں۔ (ت)

جس فتاوی ولو الجیہ میں مسئلہ تنجس ثوب بانتقاض کلب بیان کیا۔

قال فی البحر ولا یخفی ان ھذا علی القول بنجاسۃ عینہ^2- | بحر الرائق میں فرمایا مخفی نہ رہے کہ یہ بات (کتے کے جھاڑنے سے کپڑے کا ناپاک ہونا) اس کے نجس عین ہونے کا قائل ہونے کی بنیاد پر ہے۔ (ت)

اُسی میں مثلِ تجنیس مسئلہ جواز صلاۃ مع قلادہ اسنان کلب بیان فرمایا۔

قال فی البحر ولا یخفی ان ھذا کلہ علی القول بطھارۃ عینہ^3- | بحر الرائق میں فرمایا مخفی نہ رہے یہ سب کچھ اس کا عین پاک ہونے کی بنیاد پر ہے۔ (ت)

جس ایضاح میں عبارت مبسوط شیخ الاسلام فی روایۃ لا یطھر وھو الظاھر من المذھب (ایک روایت میں ہے پاک نہیں ہوتا اور یہی ظاہر مذہب ہے۔ ت) نقل کر کے خود اپنے متن اصلاح کے قول الا جلد الخنزیر والأدمی (مگر خنزیر اور آدمی کی کھال۔ ت) پر اعتراض فرمایا الحصر المذکور علی خلاف الظاھر (حصر مذکور، ظاہر کے خلاف ہے۔ ت) اُسی کی کتاب البیوع میں فرمایا:

صح بیع الکلب خلافا للشافعی لانہ نجس العین عندہ لا عندنا لانہ ینتفع بہ^4- | کتے کی خرید و فروخت صحیح ہے اس میں امام شافعی کا اختلاف ہے کیونکہ ان کے نزدیک یہ نجس عین ہے ہمارے نزدیک نہیں کیونکہ اس سے نفع حاصل کیا جاتا ہے۔ (ت)

جن درر وغرر میں وہ فرمایا تھا کہ الکلب نجس العین^5 الخ (کتا نجس عین ہے الخ۔ ت) اُنھی کی بیوع میں ہے :

صح بیع کل ذی ناب کالکلب لانه مال | کتے کی طرح ہر دانت والے جانور کی خرید وفروخت

1- المبسوط للسرخسی، ثمن کلب الصید مطبوعہ دارالمعرفہ بیروت ۱۱/ ۲۳۵ 2- البحر الرائق، کتاب الطھارۃ، مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۰۲ 3- البحر الرائق، کتاب الطھارۃ، مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۰۳ 4- الایضاح واصلاح 5- درر الحکام فی شرح غرر الاحکام فرض الغسل مطبوعہ کامل الکائنہ فی دار السعادۃ ۱/ ۲۴

Fatawa Razawiyya, Volume 4

[Table Header] Arabic Side: It is considered valued property except for the pig, because it is essentially impure (1) ah. Urdu Side: Summarized: It is permissible because it is valued property except for the pig, for it is essentially impure. ah Summarized (T).

Just as it is stated in Khizanat al-Muftin: "its essence is impure" (its body is impure. - T), it is also stated there: "its tooth is not impure" (2) (its tooth is not impure. - T). In Khania, where it mentions the previous issues of hair and shedding, it says:

[Table Row] Arabic Side: If a dog walks on snow, the snow becomes impure, and likewise mud and slush. ah Summarized (3). Urdu Side: If a dog walks on snow, the snow will become impure; similarly, soil and mud. ah Summarized (T).

To the extent that it appeared in Hilya, Ghunia, and Al-Bahr al-Ra'iq:

[Table Row] Arabic Side: The wording is from Al-Bahr: Qadi Khan in his Fatawa chose the opinion of its essence being impure and derived several sub-rulings from it (4) ah. Urdu Side: These are the words of Bahr al-Ra'iq that Qadi Khan in his Fatawa opted for it being essentially impure and made it the basis for several issues. ah (T).

In the same Khania, it is said: "its tooth is not impure" (its tooth is not impure. - T) and it said:

[Table Row] Arabic Side: If one prays while wearing a necklace around their neck that contains a dog's or wolf's tooth, their prayer is valid (5). Urdu Side: If a person prays and has a necklace around their neck containing the tooth of a dog or a wolf, then their prayer is permissible. (T).

And it said:

[Table Row] Arabic Side: If there is a fox or a dog puppy in one's sleeve, their prayer is not valid because its leftover water is impure and it is not permissible to perform ablution with it (6). Urdu Side: If there is a fox or a puppy of a dog in their sleeve, their prayer is not valid because its leftover water is impure, so it is not permissible to perform ablution with it. (T).

Footnotes: 1. Durr al-Hukkam fi Sharh Ghurar al-Ahkam, Book of Sales, Miscellaneous issues, published at Kamil al-Kaina in Dar al-Sa'adah, 2/198. 2. Khizanat al-Muftin. 3. Fatawa Qadi Khan, Section on Impurity, published by Naval Kishore Lucknow, 1/11. 4.

Al-Bahr al-Ra'iq, Book of Purification, published by H.M. Saeed Company Karachi, 1/101. 5. Fatawa Qadi Khan, Section on Impurity, published by Naval Kishore Lucknow, 1/10. 6. Fatawa Qadi Khan, Section on Impurity, published by Naval Kishore Lucknow, 1/11.

फ़तावा रज़विया, जिल्द चौथी

[सारणी का शीर्षक] अरबी पक्ष: सुअर के अलावा सब कीमती है क्योंकि वह ख़ुद नापाक है (1) अ. उर्दू पक्ष: संक्षिप्त: यह जायज़ है क्योंकि वह सुअर के अलावा मूल्यवान संपत्ति है, क्योंकि वह मूल रूप से अशुद्ध है। अ संक्षिप्त (अनु.).

जैसा कि ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन में है: "इसका वजूद नापाक है" (इसका बदन नापाक है - अनु.), उसी में है: "उसका दाँत नापाक नहीं है" (2) (इसका दाँत नापाक नहीं है - अनु.)। ख़ानिया में जहाँ बालों और उनके झड़ने के मसाइल बयान किये हैं, वहाँ फ़रमाया:

[सारणी की पंक्ति] अरबी पक्ष: यदि कुत्ता बर्फ पर चले तो बर्फ नापाक हो जाएगी, और इसी तरह मिट्टी और कीचड़ भी। अ संक्षिप्त (3). उर्दू पक्ष: कुत्ता बर्फ पर चले तो बर्फ नापाक हो जाएगी, इसी तरह मिट्टी और गारा भी। अ संक्षिप्त (अनु.).

यहाँ तक कि हुलिया, ग़ुनिया और बहर-उर-राइक़ में वाक़े हुआ:

[सारणी की पंक्ति] अरबी पक्ष: और शब्द 'बहर' के हैं: क़ाज़ी ख़ान ने अपने फ़तावा में इसके वजूद के नापाक होने को इख़्तियार किया और उस पर कई उप-मसाइल की बुनियाद रखी (4) अ. उर्दू पक्ष: अलफ़ाज़ बहर-उर-राइक़ के हैं कि क़ाज़ी ख़ान ने अपने फ़तावा में इसके मूल रूप से अशुद्ध होने को इख़्तियार किया और इसे कई मसाइल की बुनियाद बनाया। अ (अनु.).

उसी ख़ानिया में फ़ ़माया: "उसका दाँत नापाक नहीं है" (इसका दाँत नापाक नहीं है - अनु.) और फ़तमाया:

[सारणी की पंक्ति] अरबी पक्ष: यदि कोई नमाज़ पढ़े और उसकी गर्दन में ऐसा हार हो जिसमें कुत्ते या भेड़िये का दाँत हो, तो उसकी नमाज़ जायज़ है (5). उर्दू पक्ष: अगर कोई शख़्स नमाज़ पढ़े और उसके गले में ऐसा हार हो जिसमें कुत्ते या भेड़िये के दांत हों, तो उसकी नमाज़ जायज़ है। (अनु.).

और फ़ ़माया:

[सारणी की पंक्ति] अरबी पक्ष: अगर उसकी आस्तीन में लोमड़ी या कुत्ते का बच्चा हो तो उसकी नमाज़ जायज़ नहीं क्योंकि उसका झूठा (बचा हुआ पानी) नापाक है जिससे वज़ू करना जायज़ नहीं (6). उर्दू पक्ष: अगर उसकी आस्तीन में लोमड़ी या कुत्ते का बच्चा हो तो उसकी नमाज़ जायज़ नहीं क्योंकि उसका झूठा नापाक है तो उससे वज़ू करना जायज़ नहीं। (अनु.).

पाद-टिप्पणियाँ (फ़ुटनोट्स): 1. दुर्र उल-हुक्काम फ़ी शरह ग़ुरर उल-अहकाम, किताब अल-बुयू, विविध मसले, प्रकाशित कामिल अल-काइना, दार-उस-सआदा, 2/198. 2. ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन। 3. फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, अशुद्धता का अध्याय, प्रकाशित नवल किशोर लखनऊ, 1/11. 4. अल-बहर उर-राइक़, पवित्रता की पुस्तक, प्रकाशित एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/101. 5. फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, अशुद्धता का अध्याय, प्रकाशित नवल किशोर लखनऊ, 1/10. 6. फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, अशुद्धता का अध्याय, प्रकाशित नवल किशोर लखनऊ, 1/11.

فتاوی رضویہ ، جلد چھارم

[ٹیبل کا عنوان] عربی حصہ: متقوم الا الخنزیر لانہ نجس العین ۱ ہ اردو حصہ: ملخصا جائز ہے کیونکہ وہ مال متقوم ہے سوائے خنزیر کے، کیونکہ وہ نجس عین ہے اھ ملخصاً (ت)

جس خزانہ المفتین میں ہے عینہ نجس (اس کا عین ناپاک ہے۔ت) اُسی میں ہے: سنہ لیس بنجس ۲ (اس کا دانت ناپاک نہیں ہے۔ت) جس خانیہ میں مسائل متقدمہ شعر وانتفاض فرمائے اور فرمایا:

[ٹیبل کی قطار] عربی حصہ: اذا مشی کلب علی ثلج یصیر الثلج نجسا وکذا الطین والردغۃ اہ ملخصاً ۳_ اردو حصہ: کتّابرف پر چلے تو برف ناپاک ہوجائے گی، اسی طرح مٹّی اور گارا بھی اھ ملخصاً(ت)

یہاں تک کہ حلیہ وغنیہ و بحر الرائق میں واقع ہوا،

[ٹیبل کی قطار] عربی حصہ: واللفظ للبحر اختار قاضی خان في الفتاوی نجاسۃ عینہ وفرع علیھا فروعاً ۴ اہ اردو حصہ: الفاظ بحر الرائق کے ہیں کہ قاضی خان نے اپنے فتاویٰ میں اس کے نجس عین ہونے کو اختیار کیا اور اس کو کئی مسائل کی بنیاد بنایا اھ (ت)

اُسی خانیہ میں فرمایا: سنہ غیر نجس (اس کا دانت ناپاک نہیں ہے۔ت) اور فرمایا:

[ٹیبل کی قطار] عربی حصہ: لوصلی وفی عنقہ قلادۃ فیھا سن کلب اوذئب یجوز صلاتہ ۵_ اردو حصہ: اگر کوئی شخص نماز پڑھے اور اس کے گلے میں ایسا ہار ہو جس میں کتّے یا بھیڑیے کے دانت ہوں، تو اس کی نماز جائز ہے (ت)

اور فرمایا:

[ٹیبل کی قطار] عربی حصہ: ان كان في كمه ثعلب اوجر و كلب لاتجوز صلاته لان سؤره نجس لا يجوز به التوضأ ۶۔ اردو حصہ: اگر اس کی آستین میں لومڑی یا کتّے کا بچہ ہو تو اس کی نماز جائز نہیں کیونکہ اس کا جھوٹا ناپاک ہے تو اس سے وضو کرنا جائز نہیں۔(ت)

حواشی: 1. در الحکام فی شرح غرر الاحکام کتاب البیوع مسائل شتی مطبوعہ کامل الکائنہ فی دار السعادۃ ۱۹۸/۲ 2. خزانۃ المفتین 3. فتاوٰی قاضی خان فصل فی النجاسۃ مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ۱۱/۱ 4. البحر الرائق کتاب الطہارۃ مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۰۱/۱ 5. فتاوٰی قاضی خان فصل فی النجاسۃ مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ۱۰/۱ 6. فتاوٰی قاضی خان فصل فی النجاسۃ مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ۱۱/۱

Rather, it was clearly stated that the meaning of its essential impurity (Najast-e-Ayn) is that its physical matter is impure; therefore, its body is generally considered impure.

Where it is said: "All the water is to be drawn out if a dog or a pig falls into it, whether it dies or does not die, and whether the mouth of the falling animal touches the water or not. As for the pig, it is because its essence is impure (Najis-ul-Ayn), and the dog is the same. Therefore, if a dog gets wet and shakes itself, and this (water) reaches the clothing in an amount greater than a Dirham, it makes it impure because its habitat is impurities, and all beasts of prey are like the dog." (Summary ends)

And from this same chapter is the consensus of the general books of the school of thought that the rule "Every skin that is tanned becomes pure" (Every hide that is given tanning becomes pure) does not exclude any animal except the pig. It has not come to the sight of this humble servant (the author) that in any book "and the dog" was also stated here, although they may report otherwise regarding the purity of the dog's skin elsewhere. And success is from Allah.

As for the rebuttal, I say first: (Regarding its falsity! I say first) Arguing for prohibition based on the command to kill is one way, but arguing for essential impurity from it is purely false and baseless. In the hadiths, there is a command to kill snakes, scorpions, kites, crows, mice, lizards, wolves, and many other things, even in the state of Ihram and even in the Haram. Then will all these things be essentially impure?

No one has said this. Imams Malik, Ahmad, Bukhari, Muslim, Abu Dawood, An-Nasa'i, and Ibn Majah narrated from Ibn Umar; Al-Bukhari, Muslim, An-Nasa'i, At-Tirmidhi, and Ibn Majah from the Mother of the Believers, As-Siddiqah; and Abu Dawood with a chain...

---

1. Fatawa Qazi Khan, Chapter on what falls into the well, printed by Nawal Kishore, Lucknow 1/5.

बल्कि साफ़ तौर पर स्पष्ट कर दिया गया कि उसकी 'नजासते ऐन' (मौलिक अशुद्धता) का अर्थ यह है कि उसका भौतिक पदार्थ अशुद्ध है, अतः उसका शरीर प्रायः अशुद्ध होता है।

जहाँ फ़रमाया कि: "जब उसमें कुत्ता या सुअर गिर जाए तो सारा पानी निकाल दिया जाए, चाहे वह मरे या न मरे, और गिरने वाले का मुँह पानी तक पहुँचे या न पहुँचे। सुअर इसलिए कि वह 'नजिसुल ऐन' (स्वयं अशुद्ध) है और कुत्ता भी इसी तरह है, इसलिए अगर कुत्ता गीला हो जाए और अपने आप को झाड़े और यह (पानी) एक दिरहम से अधिक कपड़े पर लग जाए तो उसे अशुद्ध कर देगा क्योंकि उसका ठिकाना अशुद्धियाँ हैं और तमाम दरिंदे कुत्ते की तरह हैं।" (सारांश समाप्त)

और इसी अध्याय से संबंधित यह बात है कि पंथ की आम किताबों का इस पर आम सहमति है कि नियम 'क्लु इहाबिन दुबिगा तहार' (हर वह चमड़ा जिसे पकाया/टैनिंग किया जाए वह शुद्ध हो जाता है) में सुअर के अलावा किसी अन्य जानवर को अपवाद नहीं बनाया गया है। फकीर (लेखक) की नज़र से यह नहीं गुज़रा कि किसी किताब में यहाँ 'वल्कल्ब' (और कुत्ता) भी कहा गया हो, हालाँकि दूसरी जगह कुत्ते के चमड़े की शुद्धता के बारे में विपरीत उल्लेख हो सकता है। और सफलता अल्लाह की ओर से है।

जहाँ तक निराकरण की बात है, तो मैं कहता हूँ पहले: (रहा इसका खोटापन! तो मैं कहता हूँ, प्रथम) मारने के आदेश से हराम (निषिद्ध) होने का तर्क देना तो एक तरीका है, लेकिन इससे 'नजासते ऐन' (मौलिक अशुद्धता) सिद्ध करना बिल्कुल व्यर्थ और निराधार है। हदीसों में साँप, बिच्छू चील, कौवे, चूहे, छिपकली, भेड़िया आदि अनेक चीजों को मारने का हुक्म है, यहाँ तक कि एहराम की हालत में और हरम में भी। तो क्या ये सब चीजें मौलिक रूप से अशुद्ध (नजिसुल ऐन) होंगी?

ऐसा किसी ने नहीं कहा। इमाम मालिक, अहमद, बुखारी, मुस्लिम, अबू दाऊद, नसाई और इब्न माजा (रहमतुल्लाहि अलैहिम) ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से; बुखारी, मुस्लिम, नसाई, तिर्मिज़ी और इब्न माजा ने उम्मुल मोमिनीन सिद्दीका (रज़ियल्लाहु अन्हा) से, और अबू दाऊद ने सनद के साथ रिवायत किया...

---

1. फ़तावा काज़ी खान, कुएं में गिरने वाली चीजों के अध्याय में, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ 1/5।

بلکہ صاف واضح فرما دیا کہ اُس کی نجاست عین کے یہ معنی ہیں کہ اس کا مادی نجاسات ہیں لہٰذا اس کا بدن غالباً ناپاک ہوتا ہے۔

حیث قال ینزح کل الماء اذا وقع فیھا کلب او خنزیر مات اولم یمت اصاب الماء فم الواقع اولم یصب اما الخنزیر فلان عینه نجس والکلب کذلك ولھذا لو ابتل الکلب وانتقض فأصاب ثوباً اکثر من قدر الدرھم افسده لان مأواہ النجاسات وسائر السباع بمنزلة الکلب اھ ملخصاً۔ جہاں فرمایا کہ جب اس میں کتا یا خنزیر گر جائیں تو تمام پانی نکالا جائے چاہے وہ مریں یا نہ، اور گرنے والے کا منہ پانی کو پہنچے یا نہ۔ خنزیر اسی لئے کہ وہ نجس عین ہے اور کتا بھی اسی طرح ہے، اس لئے اگر کتا تر ہو جائے اور اپنے آپ کو جھاڑے اور یہ (پانی) درہم سے زیادہ کپڑے کو پہنچے تو اسے ناپاک کر دے گا کیونکہ اس کا ٹھکانہ نجاستیں ہیں اور تمام درندے کتے کی طرح ہیں اھ تلخیص (ت)۔

اور اسی باب سے ہے عامہ کتب مذہب کا اتفاق کہ کلیہ کل اھاب دبغ طاھر (ہر وہ چمڑا جسے دباغت دی جائے پاک ہو جاتا ہے۔ ت) سے سوا خنزیر کے کسی جانور کا استثناء نہیں فرماتے، فقیر کی نظر سے نہ گزرا کہ کسی کتاب میں یہاں والکلب بھی فرمایا ہو اگرچہ دوسری جگہ طہارت جلد کلب میں خلاف نقل کریں وباللہ التوفیق۔

واما التزییف فاقول اولاً : (رہا اس کا کھوٹا پن ! تو میں کہتا ہوں، اولاً ت) امر بالقتل سے تحریم پر استدلال تو ایک طریق ہے مگر نجاست عین پر اس سے احتجاج محض باطل و سحیق احادیث میں سانپ بچھو چیل کوّے چوہے چھپکلی گرگ وغیرہا اشیائے کثیرہ کے قتل کا حکم ہے یہاں تک کہ احرام میں حتی کہ حرم میں پھر کیا یہ سب اشیا نجس العین ہوں گی۔

هذا لم يقل به احد اخرج الائمة مالك واحمد والبخارى ومسلم وابوداؤد والنسائى وابن ماجة عن ابن عمرو البخارى ومسلم والنسائى والترمذى وابن ماجة عن ام المؤمنين الصديقة وابوداؤد بسند اس کا کوئی بھی قائل نہیں امام مالک، احمد، بخاری، مسلم، ابوداؤد، نسائی اور ابن ماجہ (رہمم اللہ تعالیٰ) نے حضرت عبداللہ ابن عمر رضی اللہ عنہما سے بخاری، مسلم، نسائی، ترمذی اور ابن ماجہ نے ام المؤمنین صدیقہ رضی اللہ عنہ سے، ابوداؤد

---

1 فتاوی قاضی خان فصل فی ما یقع فی البئر مطبوعہ نولکشور لکھنو ۱/ ۵

Fatawa Razawiyya, Volume 4

[Arabic Column Text] Hasan narrated from Abu Hurairah, and Ahmad with a good chain from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them all) from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): "There are five animals for which there is no sin on a person in Ihram if he kills them: the crow, the kite, the scorpion, the mouse, and the biting dog." (1). In the narration of Ibn Abbas: "Five are all mischievous; the person in Ihram kills them and they are killed in the Sanctuary (Haram)." He mentioned the snake instead of the kite. (2). In one of the narrations from Al-Siddiqah (Aisha), the snake is mentioned instead of the scorpion. (3). Ahmad, the two Sheikhs (Bukhari and Muslim), Abu Dawood, Tirmidhi, and Ibn Majah (may Allah have mercy on them) narrated from Ibn Umar from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): "Kill snakes. Kill the one with two white stripes on its back and the short-tailed one." (4 - Hadith). Abu Dawood and Nasai from Ibn Mas'ud, and Tabarani in Al-Kabir from Jarir bin Abdullah al-Bajali and from Uthman bin Abi al-As with a Sahih (authentic) chain from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): "Kill all snakes; whoever fears their revenge is not from us." (5). Abu Dawood, Tirmidhi, Nasai, Ibn Hibban, and Al-Hakim from Abu Hurairah and Tabarani in Al-Kabir...

[Urdu Column Text] Narrated with a good chain from Hazrat Abu Hurairah (may Allah be pleased with him) and Ahmad through a good chain from Hazrat Ibn Abbas (may Allah be pleased with them). All of them narrated from the Master of both worlds (peace and blessings of Allah be upon him) that there is no harm for a person in Ihram to kill five animals: the crow, the kite, the scorpion, the mouse, and the biting dog. In the narration of Hazrat Ibn Abbas, it is stated that all five animals are mischievous (fasiq); the person in Ihram should kill them, and they should also be killed in the Sanctuary (Haram). He included the snake instead of the kite. In one narration of the Mother of the Believers, Al-Siddiqah (may Allah be pleased with her), the snake is mentioned instead of the scorpion. Imam Ahmad, the two Sheikhs (Bukhari and Muslim), Abu Dawood, Tirmidhi, and Ibn Majah (may Allah have mercy on them) narrated via Hazrat Abdullah bin Umar from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) that he said: "Kill snakes. Kill the snakes with marks like the leaves of a willow tree and short-tailed snakes." (Hadith). Abu Dawood and Nasai narrated from Hazrat Abdullah bin Mas'ud (may Allah be pleased with him), and Tabarani in Kabir narrated from Hazrat Jarir bin Abdullah al-Bajali and Hazrat

Uthman bin Abi al-As (may Allah be pleased with him) with an authentic chain from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) that he said: All...

He said: All...

[Footnotes] 1. Sahih al-Bukhari, Chapter: What an Ihram-holder may kill from animals, published by Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/246. 2. Musnad Ahmad bin Hanbal, from Ibn Abbas (may Allah be pleased with him), published by Dar al-Fikr, Beirut, 1/275. 3. Sunan Ibn Majah (selected), Al-Muharram, published by H.M. Saeed Company, Karachi, p. 230. 4. Sunan Abi Dawood, Chapter: Killing of Snakes, published by Aftab Alam Press, Lahore, 2/356. 5. Sunan Abi Dawood, Chapter: Killing of Snakes, published by Mujtabai Pakistan, Lahore, 2/356.

फतावा रज़विया, खंड 4

[अरबी कॉलम पाठ] हसन ने अबू हुरैरा से और अहमद ने एक अच्छी सनद (शृंखला) के साथ इब्न अब्बास (रज़ी अल्लाहु अन्हुम) से रिवायत की है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "पांच जानवर ऐसे हैं जिन्हें एहराम की स्थिति में मारने में कोई हर्ज नहीं है: कौआ, चील, बिच्छू चूहा और काटने वाला कुत्ता।" (1)। इब्न अब्बास की रिवायत में है: "पांच जानवर पूरी तरह से अनिष्टकारी (फासिक़) हैं; एहराम वाला उन्हें मार दे और उन्हें हरम (पवित्र स्थल) में भी मार दिया जाए।" उन्होंने चील की जगह सांप का उल्लेख किया। (2)। सिद्दीका (आयशा रज़ी अल्लाहु अन्हा) की एक रिवायत में बिच्छू की जगह सांप का जिक्र है। (3)। अहमद, शेखैन (बुखारी और मुस्लिम), अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और इब्न माजाह (रहिमहुमल्लाह) ने इब्न उमर के माध्यम से नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत की है: "सांपों को मार डालो। दो सफेद धारियों वाले और छोटी पूंछ वाले सांप को मार डालो।" (4 - हदीस)। अबू दाऊद और नसई ने इब्न मसूद से, और तबरानी ने 'अल-कबीर' में जरीर बिन अब्दुल्ला अल-बजली और उस्मान बिन अबी अल-आस से सही सनद के साथ नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत की है: "सभी सांपों को मार डालो; जो उनके प्रतिशोध से डरता है, वह हममें से नहीं है।" (5)। अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, नसई, इब्न हिब्बान और हाकिम ने अबू हुरैरा से और तबरानी ने 'अल-कबीर' में रिवायत किया...

[उर्दू कॉलम पाठ] हज़रत अबू हुरैरा (रज़ी अल्लाहु अन्हु) से हसन सनद के साथ और अहमद ने इब्न अब्बास (रज़ी अल्लाहु अन्हुमा) से हसन सनद के साथ रिवायत की। इन सबने सरकार-ए-दो आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत की कि मुहरिम (एहराम पहनने वाले) पर पांच जानवरों को मारने में कोई हर्ज नहीं है: कौआ, चील, बिच्छू चूहा और काटने वाला कुत्ता। हज़रत इब्न अब्बास की रिवायत में है कि पांचों जानवर पूरी तरह फासिक़ (अनिष्टकारी) हैं; मुहरिम उन्हें मार दे और उन्हें हरम में भी मारा जाए। उन्होंने चील की जगह सांप को गिना है। उम्मुल मोमिनीन सिद्दीका (रज़ी अल्लाहु अन्हा) की एक रिवायत में बिच्छू की जगह सांप का ज़िक्र है। इमाम अहमद, शेखैन (बुखारी और मुस्लिम), अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और इब्न माजाह (रहिमहुमल्लाह) ने हज़रत अब्दुल्ला इब्न उमर के माध्यम से नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत की है कि आपने फरमाया: "सांपों को मारो। विलो पेड़ के पत्तों जैसे निशानों वाले सांपों और कटी पूंछ वाले सांपों को मार डालो।" (हदीस)। अबू दाऊद और नसई ने हज़रत अब्दुल्ला इब्न मसूद (रज़ी अल्लाहु अन्हु) से, और तबरानी ने 'कबीर' में हज़रत जरीर बिन अब्दुल्ला बिजली और हज़रत उस्मान बिन अबी अल-आस (रज़ी

अल्लाहु अन्हु) से सही सनद के साथ नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत की है कि आपने फरमाया: तमाम...

फरमाया तमाम...

[पाद टिप्पणियाँ] 1. सहीह अल-बुखारी, अध्याय: मुहरिम किन जानवरों को मार सकता है, प्रकाशित: कदीमी कुतुब खाना, कराची, 1/246। 2. मुसनद अहमद बिन हंबल, इब्न अब्बास से, प्रकाशित: दार अल-फिक्र, बेरुत, 1/275। 3. सुनन इब्न माजाह (संक्षिप्त), अल-मुहर्रम, प्रकाशित: एच.एम. सईद कंपनी, कराची, पृ. 230। 4. सुनन अबू दाऊद, अध्याय: सांपों को मारना, प्रकाशित: आफताब आलम प्रेस, लाहौर, 2/356। 5. सुनन अबू दाऊद, अध्याय: सांपों को मारना, प्रकाशित: मुजतबाई पाकिस्तान, लाहौर, 2/356।

فتاویٰ رضویہ جلد چہارم

[عربی کالم] حسن عن ابی هريرة واحد باسناد حسن عن ابن عباس رضی الله تعالٰی عنهم كلهم عن النبی صلی الله تعالٰی علیہ وسلم خمس من الدواب ليس على المحرم فی قتلهن جناح الغراب والحدأة والعقرب والفأرة والكلب العقور 1۔ وفی حدیث ابن عباس خمس كلهن فاسقة يقتلهن المحرم ويقتلن في الحرم وعد الحية بدل الحدأة 2 وفی احدی روایات الصدیقة الحية مكان العقرب 3۔ احمد والشیخان وابوداود والترمذی وابن ماجة عن ابن عمر عن النبی صلی الله تعالٰی علیہ وسلم اقتلوا الحيات اقتلوا ذاالطفيتين والابتر 4 الحدیث۔ ابوداود والنسائی عن ابن مسعود والطبرانی فی الكبير عن جرير بن عبدالله البجلی وعن عثمان بن ابی العاص بسند صحيح عن النبی صلی الله تعالٰی علیہ وسلم اقتلوا الحيات كلهن فمن خاف ثأرهن فليس منا 5۔ ابوداود والترمذی والنسائی وابن حبان والحاكم عن ابی هريرة والطبرانی فی الكبير

[اردو کالم] نے سند حسن کے ساتھ حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے اور احمد نے سند حسن کے ساتھ حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہما سے روایت کیا ان سب نے سرکار دو عالم صلی اللہ علیہ وسلم سے روایت کیا کہ مُحرِم پر پانچ جانوروں کو قتل کرنے میں کوئی حرج نہیں، کوا، چیل، بچھو، چوہا اور کاٹ کھانے والا کتا۔ حضرت ابن عباس کی روایت میں ہے پانچ جانور تمام کے تمام فاسق ہیں مُحرِم ان کو قتل کرے، اور انہیں حرم میں بھی قتل کیا جائے، انہوں نے چیل کی جگہ سانپ کو شمار کیا ہے۔ ام المومنین صدیقہ رضی اللہ عنہا کی ایک روایت میں بچھو کی جگہ سانپ کا ذکر ہے۔ امام احمد، شیخین (بخاری و مسلم)، ابوداؤد، ترمذی اور ابن ماجہ رحمہم اللہ تعالیٰ، حضرت عبداللہ ابن عمر کے واسطے سے نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم سے روایت کرتے ہیں آپ نے فرمایا: سانپوں کو قتل کرو گرگل کے پیتوں جیسے نشانات والے سانپ اور دُم کٹے

سانپ کو قتل کرو (الحدیث)۔ ابوداؤد اور نسائی نے حضرت عبداللہ ابن مسعود رضی اللہ عنہ سے اور طبرانی نے کبیر میں حضرت جریر بن عبداللہ بجلی اور حضرت عثمان ابن ابی العاص رضی اللہ عنہ سے صحیح سند کے ساتھ نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم سے روایت کیا آپ نے فرمایا تمام

فرمایا تمام

1 صحیح البخاری باب ما یقتل المحرم من الدواب مطبوعہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲۴۶/۱ 2 مسند احمد بن حنبل عن ابن عباس رضی اللہ عنہ مطبوعہ دار الفکر بیروت ۲۷۵/۱ 3 سنن ابن ماجہ ملتقطاً المحرم مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۲۳۰ 4 سنن ابی داؤد باب قتل الحیات مطبوعہ آفتاب عالم پریس لاہور ۳۵۶/۲ 5 سنن ابی داؤد باب قتل الحیات مطبوعہ مجتبائی پاکستان لاہور ۳۵۶/۲

Fatawa Ridawiyya - Volume 4

From Ibn Abbas, from the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him): "Kill the two black things during prayer: the snake and the scorpion." Kill snakes; whoever fears an attack from them is not of us. Abu Dawood, Tirmidhi, Nasai, Ibn Hibban, and Hakim narrated from Hazrat Abu Hurairah (may Allah be pleased with him), and Tabarani in al-Kabir narrated from Hazrat Abdullah ibn Abbas (may Allah be pleased with both) that they narrated from the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) that he said: "Kill the two black creatures, snake and scorpion, while in prayer." Also, he narrated from him, from the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him): "Kill the lizard even if it is inside the Kaaba." Ahmad narrated from Ibn Mas'ud with a sahih (authentic) chain from the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him): "Whoever kills a snake, it is as if he killed a polytheist man whose blood has become lawful." Ahmad and Ibn Hibban narrated with a sahih chain from him, from the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him): "Whoever kills a snake will have seven rewards, and whoever kills a lizard will have one reward." (T)

Secondly: The Messenger of Allah (may Allah's peace and blessings be upon him) says: "Three [types of] people the angels do not approach: one in a state of major ritual impurity (Junub), one who is intoxicated (Sukran), and one who perfuses himself with Khaluq (a type of perfume)." Narrated by al-Bazzar with a sahih chain from Ibn Abbas (may Allah be pleased with both). Angels (of mercy) do not go near three types of people: a person in a state of ritual impurity, an intoxicated person, and one who uses 'Khaluq' (a specific type of perfume). Al-Bazzar narrated this with an authentic chain from Hazrat Abdullah ibn Abbas (may Allah be pleased with both). (T) In this Hadith, it is also stated about the intoxicated person that angels do not come near him; is the intoxicated person inherently impure (najis al-ayn)?

Footnotes: 1. Sunan Abi Dawud, Chapter on actions during prayer, printed by Aftab-e-Alam Press, Lahore, 1/133. 2. Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith 11495, printed by Al-Maktaba al-Faysaliyya, Beirut, 11/202. 3. Musnad al-Imam Ahmad bin Hanbal, from Ibn Mas'ud (RA), printed by Dar al-Fikr, Beirut, 1/395. 4. Musnad al-Imam Ahmad bin Hanbal, from Ibn Mas'ud (RA), printed by Dar al-Fikr, Beirut, 1/420. 5. Majma' al-Zawa'id, Chapter on what was said about wine and those who drink it, printed by Dar al-Kitab, Beirut, 5/72.

फ़तावा रिज़विया - खंड 4

इब्न अब्बास से, नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत है: "नमाज़ के दौरान दो काली चीज़ों को मार दो: सांप और बिच्छू।" सांपों को मारो; जिसे भी उन पर हमला होने का डर हो, वह हममें से नहीं है। अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, नसाई, इब्न हिब्बान और हाकिम ने हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से और तबरानी ने अल-कबीर में हज़रत अब्दुल्ला इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत की है कि उन्होंने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत की है कि आपने फ़रमाया: "नमाज़ में दो काले जानवरों, सांप और बिच्छू को मार डालो।" साथ ही, उनसे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत है: "छिपकली को मार डालो, भले ही वह काबा के अंदर हो।" इमाम अहमद ने इब्न मसूद से सहीह सनद के साथ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत की है: "जिसने सांप को मारा, मानो उसने एक ऐसे मुशरिक आदमी को मार दिया जिसका खून (बहाना) हलाल हो चुका था।" अहमद और इब्न हिब्बान ने सहीह सनद के साथ उनसे, नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत की है: "जिसने सांप को मारा उसे सात नेकियां मिलेंगी और जिसने छिपकली को मारा उसके लिए एक नेकी है।" (त)

दूसरे: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "तीन [प्रकार के] लोग ऐसे हैं जिनके पास फ़रिश्ते नहीं आते: जुनुब (महा-अशुद्धि की स्थिति में व्यक्ति), नशे में धुत व्यक्ति और वह जो 'खलुक' (एक विशेष प्रकार का इत्र) का उपयोग करता है।" अल-बज़ार ने इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से सहीह सनद के साथ रिवायत की। तीन आदमियों के पास (रहमत के) फ़रिश्ते नहीं जाते: जुनुबी, नशे वाला और खलुक (एक प्रकार की खुशबू) लगाने वाला। बज़ार ने इसे सहीह सनद के साथ हज़रत अब्दुल्ला इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत किया। (त) इस हदीस में नशे में धुत व्यक्ति के बारे में भी फ़रमाया गया कि फ़रिश्ते उसके पास नहीं आते; क्या नशे में धुत व्यक्ति मूलतः अशुद्ध (नजिस अल-ऐन) है?

पादलेख: 1. सुनन अबी दाऊद, नमाज़ में कार्यों का अध्याय, आफताब-ए-आलम प्रेस, लाहौर, 1/133 द्वारा मुद्रित। 2. अल-मुअजम अल-कबीर, हदीस 11495, अल-मकतबा अल-फ़ैसलिया, बेरूत, 11/202 द्वारा मुद्रित। 3. मुसनद अल-इमाम अहमद बिन हंबल, इब्न मसूद (रज़ियल्लाहु अन्हु) से, दार अल-फ़िक्र, बेरूत, 1/395 द्वारा मुद्रित। 4. मुसनद अल-इमाम अहमद बिन हंबल, इब्न मसूद (रज़ियल्लाहु अन्हु) से, दार अल-फ़िक्र, बेरूत, 1/420 द्वारा मुद्रित। 5. मजमा' अल-ज़वाइद, शराब

और इसे पीने वालों के बारे में जो कुछ कहा गया है उसका अध्याय, दार अल-किताब, बेरूत, 5/72 द्वारा मुद्रित।

पृष्ठ 761 का 447

عن ابن عباس عن النبي صلی اللہ تعالی علیہ وسلم اقتلو السودین فی الصلوۃ الحیۃ والعقرب سانپوں کو مارو، جو شخص ان کی طرف سے حملے کا خوف رکھے وہ ہم میں سے نہیں۔ ابو داؤد، ترمذی، نسائی، ابن حبان اور حاکم نے حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے اور طبرانی نے کبیر میں حضرت عبداللہ ابن عباس رضی اللہ عنہما سے روایت کیا وہ نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم سے روایت کرتے ہیں کہ (آپ نے فرمایا) نماز میں دو سیاہ جانوروں سانپ اور بچھو کو ہلاک کرو۔ وایضاً ھذا عنہ عن النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم اقتلوا الوزغ ولو فی جوف الکعبۃ - نیز انہوں نے ہی نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم سے روایت کیا گرگٹ کو قتل کرو اگرچہ کعبہ شریف کے اندر ہو۔ احمد نے حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ عنہ سے صحیح سند کے ساتھ روایت کیا وہ نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم سے روایت کرتے ہیں آپ نے فرمایا: "جو شخص سانپ کو مارے گویا اس نے ایسے مشرک مرد کو قتل کیا جس کا خون (بہانا) حلال ہو چکا تھا۔" احمد اور ابن حبان نے صحیح سند کے ساتھ انہی کی روایت سے نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم سے روایت کیا آپ نے فرمایا: "جس نے سانپ کو قتل کیا اس نے سات نیکیاں پائیں جس نے گرگٹ کو ہلاک کیا اس کیلئے ایک نیکی ہے۔" (ت)

ثانیا : رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں: ثلثۃ لا تقربھم الملئکۃ الجنب والسکران والمتضخ بالخلوق رواہ البزار باسناد صحیح عن ابن عباس رضی اللہ تعالی عنہما - تین آدمیوں کے قریب (رحمت کے) فرشتے نہیں جاتے جنبی، نشے والا اور خلوق (ایک قسم کی خوشبو) لگانے والا۔ بزار نے اسے صحیح سند کے ساتھ حضرت عبداللہ ابن عباس رضی اللہ عنہما سے روایت کیا۔ (ت)

اس حدیث میں مست نشہ کو بھی فرمایا کہ ملائکہ اس کے پاس نہیں آتے، کیا مدہوش نجس العین ہے۔

حواشی: 1. سنن ابی داؤد باب العمل فی الصلوۃ مطبوعہ آفتاب عالم پریس لاہور 1/133 2. المعجم الکبیر حدیث 11495 مطبوعہ المکتبۃ الفیصلیۃ بیروت 11/202 3. مسند الامام احمد بن حنبل عن ابن مسعود رضی اللہ عنہ مطبوعہ دار الفکر بیروت 1/395 4. مسند الامام احمد بن حنبل عن ابن مسعود رضی اللہ عنہ مطبوعہ دار الفکر بیروت 1/420 5. مجمع الزوائد باب ماجاء فی الخمر و من یشربہا مطبوعہ دار الکتاب بیروت 5/72

Fatawa Ridawiyya, Volume Four

Thirdly: The fact that washing a vessel after a dog's licking, or even the emphasis on washing it seven or eight times including once with soil, has absolutely no connection to the dog's physical essence being intrinsically impure, is among the clearest of self-evident matters.

Al-Shawkani acted strangely in 'Nayl al-Awtar', making this a proof by claiming that if its saliva is impure—and it is the sweat of its mouth—then its mouth is impure, which necessitates the impurity of the rest of its body. This is because its saliva is a part of its mouth, and the mouth is the noblest part of it; therefore, the rest of the body is even more deserving of being impure. [End of Shawkani's quote]. (T)

I say: This, as you can see, is equivalent to a joke and is shaky due to its weakness, because saying that saliva is a part of the mouth is something not even a sensible child would say, let alone a learned person. Furthermore, it (saliva) is generated from within, not from the skin. Thus, it only indicates the impurity of the flesh, not the physical essence itself. Moreover, if his argument were correct, it would imply the intrinsic impurity of everything whose leftover is considered impure, which is false. (T)

Fourthly: The Hadith "It is not impure; it is one of those [creatures] that circle around you" (meaning it is not impure because it is one of those that frequently move around and come and go among you. - T) is a Hasan Sahih Hadith.

It was recorded by the Imams of Hadith: Malik, Ahmad, the Four Imams (Bukhari, Muslim, Tirmidhi, and Ibn Majah), Ibn Hibban, al-Hakim, Ibn Khuzaymah, and Ibn Mundah in their Sahih collections from Abu Qatadah, as well as by Abu Dawud and al-Daraqutni.

---

1. Nayl al-Awtar, Chapter on the Remnants of Animals, printed by Mustafa al-Babi, Egypt, 4/1.
2. Sunan Abi Dawud, Chapter on the Leftover of a Cat, printed by Aftab-e-Alam Press, Lahore, 10/1.

फ़तावा रज़विया, जिल्द चार

तीसरा: कुत्ते के चाटने से बर्तन को धोना, बल्कि सात या आठ बार मिट्टी के साथ धोने की ताकीद का कुत्ते के मूल रूप से नापाक होने से कोई संबंध नहीं है, यह सबसे स्पष्ट स्वयंसिद्ध बातों में से है।

शौकानी ने 'नैल अल-अवतार' में एक अजीब बात कही है और इसे प्रमाण माना है, उनका दावा है कि जब उसका लार नापाक है—और वह उसके मुँह का पसीना है—तो उसका मुँह भी नापाक होगा, और इससे पूरे शरीर की नापाकी लाज़िम आती है। ऐसा इसलिए क्योंकि उसका लार उसके मुँह का एक हिस्सा है और मुँह उसके शरीर का सबसे श्रेष्ठ हिस्सा है, अतः शेष शरीर तो और भी अधिक नापाक होगा। (त)

मैं कहता हूँ: जैसा कि आप देख रहे हैं, यह बात एक मज़ाक के समान है और अपनी कमज़ोरी के कारण डगमगा रही है, क्योंकि लार का मुँह का हिस्सा होना ऐसी बात है जिसे कोई समझदार बच्चा भी नहीं कहेगा, विद्वान की तो बात ही छोड़िए। इसके अलावा, लार शरीर के अंदर से पैदा होता है, त्वचा से नहीं। अतः यह केवल मांस की नापाकी को दर्शाता है, स्वयं पशु की वास्तविकता को नहीं। फिर, यदि उनकी बात सही मान ली जाए, तो यह उस हर चीज़ की वास्तविकता के नापाक होने का प्रमाण होगा जिसका जूठा नापाक है, जबकि यह विचार ग़लत है। (त)

चौथा: हदीस "यह नापाक नहीं है; यह तुम्हारे आसपास चक्कर लगाने वाले प्राणियों में से है" (यह नापाक नहीं है क्योंकि तुम्हारे पास चक्कर लगाने वालों और आने-जाने वालों में से है। - त) एक हसन सहीह हदीस है।

इसे इमाम मालिक, अहमद, चारों इमाम (बुखारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी और इब्न माजाह), इब्न हिब्बान, हाकिम, इब्न खुज़ैमा और इब्न मंदा ने अपनी 'सहीह' किताबों में हज़रत अबू क़तादा से रिवायत किया है, और अबू दाऊद और दारकुतनी ने भी।

---

1. नैल अल-अवतार, बाब: आसार अल-बहाइम, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, 4/1.
2. सुनन अबी दाऊद, बाब: सूर अल-हिर्रह (बिल्ली का जूठा), आफ़ताब-ए-आलम प्रेस, लाहौर, 10/1.

पृष्ठ 761 में से 448

ثالثاً : ولوغِ کَلْب سے غسلِ اِناء بلکہ مبالغہ تسبیح و تثمین و تتریب کو بھی تنجیسِ عین سے اصلاً علاقہ نہ ہونا اجلے بدیہیات سے ہے۔

وقد اغرب الشوكاني في نيل الاوطار فجعله حجة زاعماً انه اذا كان لعابه نجسا وهو عرق فمه ففمه نجس ويستلزم نجاسة سائر بدنه وذلك لان لعابه جزء من فمه وفمه اشرف ما فيه فبقية بدنه اولى[1] اھ

(ت) شوکانی نے نیل الاوطار میں عجیب بات کرتے ہوئے اسے حجت قرار دیا ہے ان کا خیال ہے کہ جب اس کا لعاب ناپاک ہے اور وہ منہ کا پسینہ ہے تو اس کا منہ بھی ناپاک ہو گا اور یہ تمام بدن کی نجاست کو مستلزم ہے یہ اس لئے کہ اس کا لعاب اس کے منہ کا ایک جزء ہے اور منہ اس کے جسم کا اشرف حصہ ہے، پس باقی بدن تو بدرجہ اولٰی ناپاک ہوگا۔ اھ (ت)

اقول: هذا كما ترى يساوى هزلا ويتساوك هزلا فان كون اللعاب جزء الفم مما لا يتفوه به صبي عاقل فضلا عن فاضل ثم هو انما يتولد من داخل لا من الجلد فانما يدل على نجاسة اللحم دون العين ثم لو تم لدل على نجاسة عين كل ماسؤره نجس وهو باطل۔ (ت) اقول: یہ بات جیسا کہ تم دیکھ رہے ہو مذاق کے برابر ہے اور کمزوری کے باعث متزلزل ہے کیونکہ لعاب کا منہ کا جزء ہونا کسی عقلمند بچے کا قول بھی نہیں ہو سکتا چہ جائیکہ ایک فاضل یہ کہے، پھر یہ (لعاب) اندر سے پیدا ہوتا ہے جلد سے نہیں، اور یہ گوشت کی نجاست پر دلالت کرتا ہے عین کے نجس ہونے پر نہیں، پھر اگر ان کی بات صحیح بھی ہو تو یہ اس چیز کے عین نجس ہونے پر دلالت کرے گی جس کا جھوٹا ناپاک ہے حالانکہ یہ باطل ہے۔ (ت)

رابعاً : حدیث انها لیست بنجس انها من الطوافین والطوافات[2] (یہ ناپاک نہیں کیونکہ تمہارے پاس چکر لگانے والوں اور آنے جانے والیوں میں سے ہے۔ ت) حدیث حسن صحیح ہے

اخرجه الائمه مالک و احمد و الاربعة وابن حبان والحاکم وابن خزیمة وابن منیدة فی صحاحهم عن ابی قتادة وابوداود والدارقطنی ائمہ حدیث امام مالک، احمد، ائمہ اربعہ (بخاری، مسلم، ترمذی اور ابن ماجہ) ابن حبان، حاکم، ابن خزیمہ اور ابن مندہ نے اپنی صحاح میں حضرت ابو قتادہ سے (روایت کیا ہے) اور ابو داؤد اور الدارقطنی نے (بھی)۔

---

1 نیل الاوطار باب آسار البہائم مطبوعہ مصطفیٰ البابی مصر اے/ ۴ 2 سنن ابی داؤد باب سور الہرة مطبوعہ آفتاب عالم پریس لاہور ا/ ۱۰

Fatawa Rizvia Volume 4

From Mother of the Believers Siddiqa (may Allah be pleased with her) from the Prophet (may peace and blessings of Allah be upon him).

From him (may Allah be pleased with him), and also Abu Dawood and Darqutni narrated from Hazrat Mother of the Believers Aisha Siddiqa (may Allah be pleased with both of them), she narrated from the Noble Prophet (may peace and blessings of Allah be upon him). (T) But this is not an addendum to the Hadith of Abu Hurairah, nor does it mention 'mishqab' but rather 'bil-kalb' (with the dog). Its addendum or all the condensed versions of the Hadith found in Ahmed, Ishaq bin Rahwayh, Abu Bakr bin Abi Shaybah, Darqutni, Hakim, and Uqayli are all to the effect that:

"The cat (al-hirr or al-sannur) is a predator." The first four narrated it through Wakee' from Sa'id bin al-Musayyib from Abu Zur'ah from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him), who said that the Messenger of Allah (may peace and blessings of Allah be upon him) said: "The cat is a predator." Darqutni narrated it from the path of Muhammad bin Rabi'ah from Sa'id from Abu Zur'ah, and it is a long narrative with a story. Hakim cited it from the Hadith of Isa bin al-Musayyib, who said: Abu Zur'ah related to us from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (may peace and blessings of Allah be upon him) said: "The cat (as-sannur) is a predator." Uqayli, in the biography (introduction) of Isa bin al-Musayyib in 'Kitab al-Du'afa', narrated: Muhammad bin Zakaria al-Balkhi related to us from Muhammad bin Aban and Muhammad bin al-Sabah, both of whom said: Wakee' related to us from Isa bin al-Musayyib via Abu Zur'ah from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah [said]...

(Arabic side: The cat or the cat is a predator. The first four narrated it through Wakee' from Sa'id bin al-Musayyib from Abu Zur'ah from Abu Hurairah, who said: The Messenger of Allah (peace be upon him) said: The cat is a predator. 1 - Daruqutni narrated it from the path of Muhammad bin Rabi'ah from Sa'id from Abu Zur'ah, and it is a long version with the story. Al-Hakim narrated it from the hadith of Isa bin al-Musayyib: Abu Zur'ah told us from Abu Hurairah, who said: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: The cat is a predator. 2 - Al-Uqayli said in the biography of Isa bin al-Musayyib in the 'Book of the Weak': Muhammad bin Zakaria al-Balkhi told us, Muhammad bin Aban and Muhammad bin al-Sabah told us, they both said: Wakee' told us, Isa bin al-Musayyib told us from Abu Zur'ah from Abu Hurairah, who said: The Messenger of Allah (peace be upon him) said...)

1. Musannaf Ibn Abi Shaybah, Chapter: Who says it is not sufficient and the vessel should be washed from it, published by Idara-tul-Quran wal-Uloom-ul-Islamia Karachi, 1/32.
2. Musnad Imam Ahmad bin Hanbal from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him), published by Al-Maktab al-Islami Beirut, 2/472.

फ़तवा रिज़विया खंड 4

मोमिनों की माँ सिद्दीक़ा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से, नबी (अल्लाह की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से।

उनसे (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो), और अबू दाऊद और दारकुतनी ने हज़रत उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा (अल्लाह उन दोनों पर प्रसन्न हो) से रिवायत की है, उन्होंने नबी अकरम (अल्लाह की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से रिवायत की। (टी) लेकिन यह अबू हुरैरा की हदीस का परिशिष्ट नहीं है, न ही इसमें 'मिश्काब' है बल्कि 'बिल-कल्ब' (कुत्ते के साथ) है। अहमद, इसहाक़ बिन राहवैह, अबू बक्र बिन अबी शायबा, दारकुतनी, हाकिम और उकैली के यहाँ हदीस के सभी संक्षिप्त संस्करणों में इतना ही है कि:

"बिल्ली (अल-हिर्र या अल-सन्नूर) एक दरिंदा है।" पहले चार ने इसे वकी' के माध्यम से सईद बिन अल-मुसय्यब से, उन्होंने अबू ज़ुर'आ से, उन्होंने अबू हुरैरा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से रिवायत किया कि अल्लाह के रसूल (अल्लाह की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने फ़रमाया: "बिल्ली एक दरिंदा है।" दारकुतनी ने मुहम्मद बिन रबीआ के माध्यम से सईद से, उन्होंने अबू ज़ुर'आ से एक लंबी कहानी के साथ रिवायत किया। हाकिम ने ईसा बिन अल-मुसय्यब की हदीस से उद्धृत किया, उन्होंने कहा: हमसे अबू ज़ुर'आ ने बयान किया, उन्होंने हज़रत अबू हुरैरा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से रिवायत किया कि रसूलुल्लाह (अल्लाह की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने फ़रमाया: "बिल्ली (अस-सन्नूर) एक दरिंदा है।" उकैली ने 'किताब अल-दुआफ़ा' में ईसा बिन अल-मुसय्यब की जीवनी (परिचय) में बताया: हमसे मुहम्मद बिन ज़करिया अल-बल्खी ने मुहम्मद बिन अबान और मुहम्मद बिन अल-सबा से बयान किया, उन दोनों ने कहा: हमसे वकी' ने ईसा बिन अल-मुसय्यब के माध्यम से अबू ज़ुर'आ से और उन्होंने हज़रत अबू हुरैरा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से रिवायत करते हुए बयान किया कि अल्लाह के रसूल ने [फ़रमाया]...

(अरबी पक्ष: बिल्ली या बिल्ली एक दरिंदा है। पहले चार ने इसे वकी' के माध्यम से सईद बिन अल-मुसय्यब से अबू ज़ुर'आ से अबू हुरैरा से रिवायत किया, जिन्होंने कहा: अल्लाह के रसूल (शांति उन पर हो) ने कहा: बिल्ली एक दरिंदा है। 1 - दारुकुत्नी ने इसे मुहम्मद बिन रबीआ के माध्यम से सईद से अबू ज़ुर'आ से रिवायत किया, और कहानी के साथ यह लंबा है। अल-हाकिम ने ईसा बिन अल-मुसय्यब की हदीस से रिवायत किया: हमें अबू ज़ुर'आ ने अबू हुरैरा से बताया, जिन्होंने कहा: अल्लाह

के रसूल (शांति और आशीर्वाद उन पर हो) ने कहा: बिल्ली एक दरिंदा है। 2 - अल-उकैली ने 'किताब अल-दुआफ़ा' में ईसा बिन अल-मुसय्यब की जीवनी में कहा: मुहम्मद बिन ज़करिया अल-बल्खी ने हमें बताया, मुहम्मद बिन अबान और मुहम्मद बिन अल-सबा ने हमें बताया, उन्होंने कहा: वकी' ने हमें बताया, ईसा बिन अल-मुसय्यब ने हमें अबू ज़ुर'आ से अबू हुरैरा से बताया, जिन्होंने कहा: अल्लाह के रसूल (शांति उन पर हो) ने कहा...)

---

1. मुसन्निफ़ इब्न अबी शायबा, अध्याय: जो कहता है कि यह काफ़ी नहीं है और बर्तन को उससे धोया जाना चाहिए, इदारा-तुल-क़ुरआन वल-उलूम-उल-इस्लामिया कराची द्वारा प्रकाशित, 1/32।
2. मुसनद इमाम अहमद बिन हंबल अबू हुरैरा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से, अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत द्वारा प्रकाशित, 2/472।

جلد چہارم فتاوی رضویہ

عن ام المؤمنین الصدیقة رضی اللہ تعالٰی عنہا عن النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم

رضی اللہ عنہ سے، نیز ابوداؤد اور دارقطنی نے حضرت ام المؤمنین عائشہ صدیقہ رضی اللہ عنہما سے انہوں نے نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم سے روایت کیا (ت) مگر یہ حدیث ابی ہریرہ کا تتمہ نہیں نہ اس میں مثقاب بلکہ بالکلب ہے اس کا تتمہ یا طرق مختصرہ کی تمام حدیث احمد و اسحاق بن راہویہ و ابوبکر بن ابی شیبہ دارقطنی و حاکم و عقیلی سب کے یہاں اسی قدر ہے کہ:

الھر یا السنور فرمایا بلی درندہ ہے پہلے چار نے اسے وکیع سے انہوں نے حضرت سعید بن مسیب سے انہوں نے ابوزرعہ سے اور انہوں نے حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت کیا کہ نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا بلی درندہ ہے۔ دارقطنی نے محمد بن ربیعہ سے انہوں نے حضرت سعید سے انہوں نے حضرت ابوزرعہ سے روایت کیا، اس کا قصہ طویل ہے، حاکم نے عیسٰی بن مسیب کی روایت سے نقل کیا وہ فرماتے ہیں ہم سے ابوزرعہ نے بیان کیا انہوں نے حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت کیا کہ رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: "بلی درندہ ہے"۔ عقیلی نے کتاب الضعفاء میں عیسٰی بن مسیب کا ترجمہ (تعارف) نقل کرتے ہوئے کہا ہم سے محمد بن زکریا بلخی نے بیان کیا ان سے محمد بن ابان اور محمد بن صباح نے بیان کیا وہ دونوں فرماتے ہیں ہم سے وکیع نے، وہ فرماتے ہیں ہم سے عیسٰی بن مسیب نے بواسطہ ابوزرعہ حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت کرتے ہوئے بیان کیا کہ رسول اللہ

(الھر یا السنور سبع فرواہ الاربعة الاول من طریق وکیع عن سعید بن المسیب عن ابی زرعة عن ابی ھریرة قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم الھر سبع 1 - ورواہ الدارقطنی من جھة محمد بن ربیعة

عن سعيد عن ابى زرعة وهو مطولا بالقصة والحاكم من حديث عيسى بن المسيب ثنا ابوزرعة عن ابى هريرة قال قال رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم السنور سبع 2 - وقال العقيلي في ترجمة عيسى بن المسيب من كتاب الضعفاء حدثنا محمد بن زكريا البلخي نامحمد بن ابان ومحمد بن الصباح قالا ثنا وكيع نا عيسى بن المسيب عن ابى زرعة عن ابى هريرة قال قال رسول الله صلى الله تعالى)

---

1 مصنف ابن ابى شيبہ من قال لايجزئ ويغسل منه الاناء ، مطبوعہ ادارة القرآن والعلوم الاسلاميہ كراچى ٣٢/١ 2 مسند امام احمد بن حنبل عن ابى هريرة رضى الله عنه مطبوعہ المكتب الاسلامى بيروت ٤٧٢/٢

Fatawa Rizwia - Volume 4

[The Prophet] (peace and blessings be upon him) mentioned the cat and said: "It is a beast of prey." [End of quote]. Perhaps Allama al-Damiri became confused, and his mind turned towards this in the completion of this Hadith. This is in the word "hirrah" (cat), but he mentioned it correctly in the word "sunnur" (cat), saying: Al-Hakim narrated from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him) that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) used to visit the houses of the Ansar people, then he narrated the Hadith until he reached the point where he said, "The cat is a beast of prey." [End of quote].

If you say that sometimes our objective is achieved through this word as well, because it is correct to go where there is a cat, but not where there is a dog. The reason given in the Hadith is that it [the cat] is a beast of prey. This is evidence that the dog is filthier than other beasts of prey. And for us, the impurity of the leftovers of all beasts of prey is established. So if for dogs too, it was only this much and the saliva did not transfer to the skin, then there would be no meaning to this reasoning. (I say) Yes, it indicates something additional in dogs over other beasts of prey, which is that angels do not enter a house where there is a dog, but as for the specific difference regarding the inherent impurity (Najasa al-'Ayn), there is absolutely no difference, which...

Footnotes: 1. Kitab al-Du'afa al-Kabir, biography of Isa bin al-Musayyib, published by Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 3/387. 2. Hayat al-Hayawan, under the word "Al-Sunnur", published by Mustafa al-Babi al-Halabi, Egypt, 1/567.

Page 450 of 761

फतवा रज़विया - खंड 4

[पैगंबर] (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) ने बिल्ली का ज़िक्र किया और फ़रमाया: "यह एक दरिंदा है"। [उद्धरण समाप्त]। शायद अल्लामा दमीरी को भ्रम हो गया और उनका ध्यान इस हदीस के समापन पर इस बात की ओर चला गया। यह शब्द "हिर्रा" (बिल्ली) में है, लेकिन उन्होंने इसे "सुन्नूर" (बिल्ली) शब्द में सही ढंग से उल्लेख किया है, वह कहते हैं: अल-हाकिम ने हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अंसार के लोगों के घरों में तशरीफ़ लाते थे, फिर उन्होंने हदीस बयान की यहाँ तक कि फ़रमाया, "बिल्ली दरिंदा है"। [उद्धरण समाप्त]।

यदि आप कहें कि कभी-कभी हमारा उद्देश्य इस शब्द से भी प्राप्त हो जाता है क्योंकि जहाँ बिल्ली हो वहाँ जाना सही है, जबकि जहाँ कुत्ता हो वहाँ नहीं। हदीस शरीफ़ में इसका कारण यह बताया गया है कि यह एक दरिंदा है। यह इस बात का प्रमाण है कि कुत्ता अन्य दरिंदों से भी अधिक नापाक है। और हमारे पास सभी दरिंदों के जूठे की नापाकी साबित हो चुकी है। अतः यदि कुत्तों के बारे में भी केवल इतनी ही बात होती और लार खाल (चमड़े) तक नहीं पहुँचती, तो इस तर्क का कोई अर्थ नहीं होता। (मैं कहता हूँ) हाँ, यह कुत्तों में अन्य दरिंदों की तुलना में किसी अतिरिक्त चीज़ का संकेत देता है, और वह यह है कि जिस घर में कुत्ता हो उसमें फ़रिश्ते प्रवेश नहीं करते, लेकिन जहाँ तक 'नजासते ऐन' (अंतर्निहित अशुद्धि) के साथ विशिष्ट अंतर का संबंध है, वहां कोई अंतर नहीं है, जो...

फुटनोट: 1. किताब अद-दुआफ़ा अल-कबीर, ईसा बिन अल-मुसय्यिब की जीवनी, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत, 3/387 द्वारा प्रकाशित। 2. हयात अल-हैवान, शब्द "अल-सुन्नूर" के तहत, मुस्तफ़ा अल-बाबी अल-हलबी, मिस्र, 1/567 द्वारा प्रकाशित।

पृष्ठ 450 का 761

فتاوی رضویہ - جلد چہارم

(عربی کالم کا ترجمہ): صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا، پھر انہوں نے بلی کا ذکر کرتے ہوئے فرمایا: "یہ درندہ ہے"۔ اھ شاید علامہ دمیری کو شبہ ہو گیا اور ان کا ذہن اس حدیث کے تمہ پر اس بات کی طرف منتقل ہو گیا۔ یہ تو لفظ "ھرة" میں ہے لیکن انہوں نے لفظ "سنور" کو صحیح قرار دیتے ہوئے ذکر کیا، فرماتے ہیں حاکم نے حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت کیا کہ نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم قوم انصار کے گھر تشریف لاتے تھے پھر وہ حدیث بیان کرتے ہوئے یہاں تک پہنچے، آپ نے فرمایا بلی درندہ ہے۔ اھ

اگر تم کہو کہ کبھی ہمیں اس لفظ سے بھی مقصود حاصل ہو جاتا ہے کیونکہ جن کے ہاں بلی ہو وہاں جانا صحیح ہے جہاں کتا ہو وہاں نہیں۔ حدیث شریف میں اس کی علت یہ بیان کی گئی ہے کہ یہ ایک درندہ ہے۔ یہ اس بات کی دلیل ہے کہ کتا درندوں سے بھی زیادہ خبیث ہے۔ اور ہمارے نزدیک تمام درندوں کے پس خوردہ کی نجاست ثابت ہو چکی ہے۔ پس اگر کتے کے بارے میں بھی صرف اتنی ہی بات ہو اور وہ لعاب سے چمڑے کی طرف متعدی نہ ہو تو اس تعلیل کا کوئی مطلب نہ ہوگا (قلت) ہاں کتے میں باقی درندوں سے زائد چیز پر دلالت موجود ہے وہ یہ کہ کتے کے بارے میں جس گھر میں یہ ہو اس میں فرشتے داخل نہیں ہوتے لیکن نجاست عین کے ساتھ خصوصی فرق ہرگز نہیں، جو

حواشی: 1 کتاب الضعفاء الکبیر فی ترجمة عیسی بن المسیب مطبوعہ دار الکتب العلمیة بیروت ۳/ ۳۸۷ 2 حیاة الحیوان تحت لفظ السنور مطبوعہ مصطفی البابي الحلبي مصر ۱/ ۵۶۷

Fatawa Rizwiya - Volume 4

[Arabic Text Block] So, whoever makes a claim, the burden of proof is upon them. Perhaps my reasoning here is better than Al-Tibi's reasoning that 'the dog is a devil,' as he cited it in *Majma' Bihar al-Anwar* and endorsed it. For that was only mentioned, as far as we know, regarding the black dog, as in the hadith about the interruption of prayer [recorded by] Ahmad and the *Sitta* (Six canonical books) except Al-Bukhari, on the authority of Abdullah bin al-Samit, from Abu Dharr (may Allah be pleased with him). In it, it is stated: 'A woman, a donkey, and a black dog interrupt a person's prayer.' I asked, 'O Abu Dharr, what is the matter with a black dog compared to a red dog or a yellow dog?' He replied, 'O my nephew, I asked the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) just as you have asked me, and he said: "The black dog is a devil."' And Ahmad records from the Mother of the Believers (may Allah be pleased with her), from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): 'The jet-black dog is a devil.' The question and answer indicate that the condition [of color] is taken into account and that non-black dogs are exempt from that [ruling]. If you say, 'How do you know? Perhaps the dog that was in their house was black?' I say to you...

[Urdu Text Block] Whoever makes a claim, the burden of proof is on him. And perhaps this reasoning of mine is better than Al-Tibi's reasoning that 'a dog is a devil,' as he quoted it in *Majma' Bihar al-Anwar* and maintained it. According to our knowledge, this has been said about black dogs, as mentioned in the hadith regarding the interruption of prayer, which Imam Ahmad and the other imams of the *Sihah-e-Sitta* except Bukhari have narrated through Hazrat Abdullah bin Samit from Hazrat Abu Dharr (may Allah be pleased with him). It states: 'A man's prayer is interrupted by the passing of a woman, a donkey, and a black dog.' I asked, 'O Abu Dharr, what is special about a black dog that red and yellow dogs do not have?' He said, 'O nephew! I asked the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) the same question as you have asked me, and he said: "A black dog is a devil."' Imam Ahmad narrates from the Mother of the Believers (may Allah be pleased with her) who narrates from the Master of the Two Worlds (peace and blessings of Allah be upon him) that he said: 'An extremely black dog is a devil.' The question and answer indicate that the condition (of color) is observed and non-black dogs are exempt from this (ruling). (T) If you say, 'How do you know? Perhaps the dog that was in their house was black?' I say to you...

1. Mirqat al-Mafatih, Chapter on Sutra, Section 1, Maktaba Imdadia Multan 2/245.
2. Sahih Muslim, Chapter on the Sutra of the One Praying, Qadimi Kutub Khana Karachi 1/197.
3. Musnad Ahmad bin Hanbal, on the authority of Aisha (may Allah be pleased with her), Dar al-Fikr Beirut 6/156.

फ़तावा रज़विया - खंड 4

[अरबी पाठ] अतः, जो कोई दावा करे, प्रमाण देने का उत्तरदायित्व उसी पर है। शायद मेरा यह तर्क अल-तिबी के इस तर्क से बेहतर है कि 'कुत्ता शैतान है', जैसा कि उन्होंने 'मजमा' बिहार अल-अनवार' में उद्धृत किया और इसे स्वीकार किया। क्योंकि हमारी जानकारी के अनुसार, यह बात केवल काले कुत्ते के बारे में आई है, जैसा कि नमाज़ टूटने से संबंधित हदीस में है जिसे इमाम अहमद और बुखारी के अलावा सिहाह-ए-सित्ता के अन्य इमामों ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन सामित के माध्यम से हज़रत अबू ज़र (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। इसमें है: 'स्त्री, गधा और काला कुत्ता व्यक्ति की नमाज़ तोड़ देते हैं।' मैंने पूछा, 'हे अबू ज़र, काले कुत्ते में ऐसी क्या बात है जो लाल और पीले कुत्ते में नहीं?' उन्होंने कहा, 'हे भतीजे! मैंने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से वैसा ही प्रश्न किया था जैसा तुमने मुझसे किया है, तो आपने फ़रमाया: "काला कुत्ता शैतान है।"' इमाम अहमद ने उम्मुल मोमिनीन (रज़ियल्लाहु अन्हा) से रिवायत की है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: 'गहरा काला कुत्ता शैतान है।' प्रश्न और उत्तर इंगित करते हैं कि (रंग की) शर्त का ध्यान रखा गया है और गैर-काले कुत्ते उस (नियम) से मुक्त हैं। यदि तुम कहो, 'तुम्हें क्या पता? शायद वह कुत्ता जो उनके घर में था काला था?' मैं तुमसे कहता हूँ...

[उर्दू पाठ] जो कोई दावा करे, प्रमाण देने का दायित्व उसी पर है। और शायद मेरी यह दलील, तिबी की दलील कि 'कुत्ता शैतान है' से बेहतर है, जैसा कि उन्होंने 'मजमा' बिहार अल-अनवार' में उद्धृत कर इसे बरकरार रखा। हमारे ज्ञान के अनुसार, यह बात काले कुत्ते के बारे में आई है, जैसा कि नमाज़ टूटने से संबंधित हदीस में है जिसे इमाम अहमद और बुखारी के अलावा सिहाह-ए-सित्ता के अन्य इमामों ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन सामित के माध्यम से हज़रत अबू ज़र (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। इसमें है कि 'आदमी की नमाज़ औरत, गधे और काले कुत्ते के गुजरने से टूट जाती है।' मैंने निवेदन किया, 'हे अबू ज़र, काले कुत्ते की ऐसी क्या विशेषता है जो लाल और पीले को प्राप्त नहीं?' उन्होंने फ़रमाया, 'हे भतीजे! मैंने इसके बारे में रसूल-ए-अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से तुम्हारी तरह सवाल किया तो आपने फ़रमाया: "काला कुत्ता शैतान है।"' इमाम अहमद, हज़रत उम्मुल मोमिनीन (रज़ियल्लाहु अन्हा) से, वह सरकार-ए-दो आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत करती हैं, आपने फ़रमाया: 'अत्यधिक काला कुत्ता शैतान है।' प्रश्न और उत्तर इस बात पर प्रमाण हैं कि (रंग की) पाबंदी लागू है और गैर-काला कुत्ता इस (हुक्म) से सुरक्षित है। (त) अगर तुम कहो कि 'तुम्हें क्या मालूम शायद वह कुत्ता जो उनके घरों में था काले रंग का हो?' मैं कहता हूँ तुम्हें...

1. मिरक़ातुल मफ़ातीह, बाब अस-सुतरा, फ़स्ल अव्वल, मकतबा इमदादिया मुल्तान 2/245.
2. सहीह मुस्लिम, बाब सुतरा अल-मुसल्ली, क़दीमी कुतुब खाना कराची 1/197.
3. मुसनद अहमद बिन हंबल, हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से, दार अल-फ़िक्र बेरूत 6/156.

فكلا ومن ادعى فعليه الدليل ولعل تعليلى هذا احسن من تعليل الطيبى بأن الكلب شيطان كما نقله في مجمع بحار الانوار واقره۔ فان ذلك انما ورد فيما نعلمه في الكلب الاسود كما في حديث قطع الصلاة عند احمد والستة الا البخاري عن عبدالله بن الصامت عن ابى ذر رضى الله تعالى عنه وفيه فأنه يقطع صلاته المرأة والحمار والكلب الاسود قلت يا ابا ذر ما بال الكلب الاسود من الكلب الاحمر من الكلب الاصفر قال يا ابن اخى سألت رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم كما سألتني فقال الكلب الاسود شيطان۔ ولأحمد عن ام المؤمنين رضى الله تعالى عنها عن النبي صلى الله تعالى عليه وسلم الكلب الاسود البهيم الشيطان وقد دل السؤال والجواب ان القيد ملحوظ وان غير الاسود عن ذاك محفوظ۔ فأن قلت ما يدريك لعل الكلب الذى كان في بيتهم كان اسود۔

دعویٰ کرے اس کے ذمہ دلیل ہے اور شاید میری یہ تعلیل، طیبی کی تعلیل کہ کتا شیطان ہے سے زیادہ اچھی ہے جیسا کہ انہوں نے مجمع بحار الانوار میں نقل کرکے اسے برقرار رکھا۔ ہمارے علم کے مطابق یہ بات سیاہ کتے کے بارے میں آئی ہے جیسا کہ نماز توڑنے سے متعلق حدیث میں ہے جسے امام احمد نے اور بخاری کے سوا صحاح ستہ کے دیگر ائمہ نے بواسطہ حضرت عبداللہ بن صامت، حضرت ابوذر رضی اللہ عنہ سے روایت کیا ہے اس میں ہے کہ "آدمی کی نماز عورت، گدھے اور سیاہ کتے کے گزرنے سے ٹوٹ جاتی ہے۔" میں نے عرض کیا اے ابوذر سیاہ کتے کی کیا خصوصیت ہے جو سرخ اور زرد کو حاصل نہیں۔ انہوں نے فرمایا: اے بھتیجے! میں نے اس کے بارے میں رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم سے تمہاری طرح سوال کیا تو آپ نے ارشاد فرمایا: "سیاہ کتا شیطان ہے۔" امام احمد، حضرت ام المومنین رضی اللہ عنہا سے وہ سرکارِ دو عالم صلی اللہ علیہ وسلم سے روایت کرتی ہیں آپ نے فرمایا: "نہایت سیاہ کتا شیطان ہے۔" سوال وجواب اس

بات پر دلالت کرتے ہیں کہ (رنگ کی) قید ملحوظ ہے اور غیر سیاہ کتا اس (حکم) سے محفوظ ہے۔ (ت) اگر تم کہو کہ تمہیں کیا معلوم شاید وہ کتا جو ان کے گھروں میں تھا سیاہ رنگ کا ہو؟ میں کہتا ہوں تمہیں---

---

1 مرقاۃ المفاتیح باب السترۃ فصل اول مکتبہ امدادیہ ملتان ۲/۲۴۵ 2 صحیح مسلم باب سترۃ المصلی قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۱۹۷ 3 مسند احمد بن حنبل عن عائشہ رضی اللہ عنہا دار الفکر بیروت ۷/۱۵۶

Fatawa Razviya, Volume 4

[Arabic Section]: I say: What makes you know? Perhaps it was red or yellow. In short, the Hadith restricted itself to the description of being a dog for the purpose of reasoning. If the reason (illa) was a specific color, he would have stated it explicitly or used the definite article 'al' (lam al-ahd). Furthermore, there is another interpretation in the Hadith provided by al-Tibi, who said it is a rhetorical question (istifham inkar). Accordingly, the meaning would be establishing ferocity for the dog and denying it for the cat, thus the argument is undermined from its basis. [Urdu Section]: Who knows, perhaps it was red or yellow in color. In any case, in the noble Hadith, only its being a dog will serve as the proof. If a specific color was the reason (illa), he would have specified it or used the 'lam al-ahd'. Adopt this. Then, there is another interpretation in the Hadith which was gained from Tibi; he said this is a rhetorical question. Therefore, on this basis, the meaning would be to establish ferocity for the dog and to negate it for the cat, so the argument will be terminated altogether. I say: But in some versions of the Hadith, the words are "Verily, the cat is a beast of prey," as in the Mizan. So understand. (T)

I say: However, the Hadith in some of its narrations uses the words "Verily, the cat is a beast of prey" as in al-Mizan, so understand. (Note)

Fifthly: Arguing from the text of Sharh al-Wiqayah is strange, although in its section on sales, there is explicit mention to this extent:

[Arabic]: The sale of the dog, the leopard, and beasts of prey is valid, whether trained or not. This is according to us. And according to Abu Yusuf (may Allah Almighty have mercy on him), the sale of a biting dog is not permissible. And according to al-Shafi'i (may Allah Almighty have mercy on him), the sale of a dog is not permissible at all, based on the fact that it is essentially impure (najis al-ayn) according to him (2). [Urdu]: (Text) The sale of dogs, wolves, and beasts of prey is permissible, whether they are trained or not. (Commentary) This is according to us, and according to Imam Abu Yusuf (may Allah have mercy on him), the sale of a biting dog is not permissible, while according to Imam Shafi'i (may Allah have mercy on him), the sale of a dog is not permissible at all, because according to him it is essentially impure (najis al-ayn). (T)

In short, the most correct, preferred, adopted, practiced, and fatwa-sanctioned view is that of essential purity. Thus, all matters based on essential impurity are contrary

to the reliable view and against the chosen and established position. Necessarily, it was stated in al-Fath:

[Arabic]: What is mentioned in the fatwas regarding becoming impure by placing...
[Urdu]: What is mentioned in the fatwas that in ice or mud where...

[Note - Arabic]: عه: points out that 'anna' is not definitive (nass) regarding the non-deletion of the hamza. (M) [Note - Urdu]: This points to the fact that the word "anna" is not a definitive text (nass) regarding the non-deletion of the hamza. (T)

1. Majma' Bihar al-Anwar
2. Sharh al-Wiqayah, various issues, printed by H.M. Saeed Company Karachi, 3/84.

फतावा रज़विया, खंड 4

[अरबी भाग]: मैं कहता हूँ: आपको क्या पता? शायद वह लाल या पीला रहा हो। संक्षेप में, हदीस शरीफ़ में दलील के तौर पर केवल उसका कुत्ता होना ही आधार बना। यदि कोई विशेष रंग 'इल्लत' (कारण) होता, तो वे स्पष्ट करते या 'लाम अहद' लाते। फिर हदीस में एक और व्याख्या भी है जिसका लाभ 'ताीबी' से प्राप्त हुआ; उन्होंने फरमाया कि यह 'इस्तेफहाम-ए-इन्कारी' (निषेधात्मक प्रश्न) है। इस आधार पर अर्थ यह होगा कि कुत्ते के लिए हिंसक होने को साबित करना और बिल्ली से उसका खंडन करना है, अतः दलील अपने मूल से ही खंडित हो जाएगी। [उर्दू भाग]: क्या मालूम, शायद वह सुर्ख़ (लाल) या ज़र्द (पीला) रंग का हो। बहरहाल हदीस शरीफ़ में सिर्फ उसका कुत्ता होना ही दलील बनेगा। अगर कोई खुसूसी (विशेष) रंग इल्लत होता तो उसकी तसरीह फरमाते या लाम-ए-अहद लाते। इसे अपनाइये। फिर हदीस में एक और तावील (व्याख्या) भी है जिसका फायदा ताीबी से हासिल हुआ; उन्होंने फरमाया यह इस्तेफहाम-ए-इन्कारी है। पस इस बुनियाद पर मानी यह होगा कि कुत्ते के लिए दरिंदगी साबित करना और बिल्ली से उसकी नफी (खंडन) करना है, लिहाज़ा इस्तदलाल (दलील देना) सिरे से ही खत्म हो जाएगा। मैं कहता हूँ: लेकिन हदीस के बाज़ तरीकों (रूपों) में ये अल्फ़ाज़ हैं "बेशक बिल्ली एक दरिंदा (हिंसक) है", जैसा कि 'मीज़ान' में है। पस समझ लो। (त)

मैं कहता हूँ: लेकिन हदीस के कुछ रूपों में शब्द हैं "बेशक बिल्ली हिंसक है" जैसा कि 'मीज़ान' में है, तो समझ लो। (नोट)

पांचवाँ: शरह़-विकाया के पाठ से दलील देना अजीब है, जबकि उसी के व्यापार (बिक्री) अनुभाग में यहाँ तक स्पष्ट किया गया है:

[अरबी]: कुत्ते, तेंदुए और हिंसक जानवरों की बिक्री वैध है, चाहे उन्हें सिखाया गया हो या नहीं। यह हमारे यहाँ है। और इमाम अबू यूसुफ (अल्लाह उन पर दया करे) के नज़दीक काटने वाले कुत्ते की बिक्री जायज़ नहीं है। और इमाम शाफ़ई (अल्लाह उन पर दया करे) के नज़दीक कुत्ते की बिक्री बिलकुल जायज़ नहीं है, क्योंकि उनके अनुसार वह 'नजिसुल ऐन' (मूलतः अशुद्ध) है (2)। [उर्दू]: (मूल पाठ) कुत्ते, भेड़िये और दरिंदों की बिक्री जायज़ है, उन्हें सिखाया जाए या न। (व्याख्या) यह हमारे नज़दीक है, और इमाम अबू यूसुफ रह़मतुल्लाह के नज़दीक काटने वाले कुत्ते की बिक्री जायज़ नहीं है, जबकि इमाम शाफ़ई रह़मतुल्लाह के नज़दीक कुत्ते की बिक्री बिलकुल जायज़ नहीं है, क्योंकि वह उनके नज़दीक नजिसुल ऐन है। (त)

संक्षेप में, सबसे सही, श्रेष्ठ, और अपनाया गया तथा जिस पर फतवा दिया गया है, वही 'ताहारत-ए-ऐन' (मूलतः पवित्रता) का मत है। इसलिए जो भी बातें मूल अशुद्धता के आधार पर मानी जाती हैं, वे सब विश्वसनीय मत के खिलाफ और चुने हुए व मज़बूत मत के विपरीत हैं। निश्चय ही 'फत्ह' में फरमाया:

[अरबी]: फतावा में जो वर्णित है नजासत (अशुद्धता) के बारे में रखने से... [उर्दू]: फतावा में जो मज़कूर (वर्णित) है कि बर्फ या कीचड़ में जहाँ...

[अरबी नोट]: यह इशारा करता है कि 'अन्ना' हमज़ा के न हटने के बारे में निश्चित साक्ष्य नहीं है। (म) [उर्दू नोट]: इस बात की तरफ इशारा है कि लफ़्ज़ "अन्ना" (ان) हमज़ा के हज्फ (हटाने) न होने में नस्स (निश्चित प्रमाण) नहीं है। (त)

1. मजमा-ए-बिहारुल अनवार
2. शरहुल विकाया, विभिन्न मसले, मुद्रित: एच.एम. सईद कंपनी कराची, 3/84.

पृष्ठ 452 / 761

قلت مایدریك لعله کان احمر اواصفر وبالجملة فالحدیث اقتصر في معرض التعلیل علی وصف الکلبیة فلوکان العلة خصوص اللون لصرح به اواتی بلام العهد هذا ثم ان في الحدیث تاویلا آخر افاده ایضا الطیبی فقال هو استفهام انکار ۱ اه فعلی هذا یکون المعنی اثبات السبعیة للکلب ونفیها عن الهر فینثلم الاستدلال من اصله۔ کیا معلوم ، شاید وہ سرخ یا زرد رنگ کا ہو۔ بہرحال حدیث شریف میں صرف اس کا کتا ہونا ہی دلیل بنے گا۔ اگر کوئی خصوصی رنگ علت ہوتا تو اس کی تصریح فرماتے یا لام عہد لاتے ، اسے اپنائیے، پھر حدیث میں ایک اور تاویل بھی ہے جس کا فائدہ بھی طبی سے حاصل ہوا، انہوں نے فرمایا یہ استفہام انکاری ہے اھ پس اس بنیاد پر معنی یہ ہوگا کہ کتے کیلئے درندگی ثابت کرنا اور بلی سے اس کی نفی کرنا ہے، لہذا استدلال سرے سے ہی ختم ہو جائے گا۔ اقول: لیکن حدیث کے بعض طرق یہ الفاظ ہیں "ان السنور سبع" جیسا کہ میزان میں ہے۔ پس سمجھ لو۔ (ت)

اقول: لکن الحدیث في بعض طرقه بلفظ ان السنور سبع کما فی المیزان فافهم عہ۔

خامسا: عبارت شرح وقایہ سے استدلال عجیب ہے حالانکہ اسی کی بیوع میں یہاں تک تصریح ہے :

صح بیع الکلب والفهد والسباع علمت اولا ش هذا عندنا وعند ابی یوسف رحمه الله تعالی لایجوز بیع الکلب العقور وعند الشافعی رحمه الله تعالی لایجوز بیع الکلب اصلا بناء علی انه نجس العین عنده 2 ۔ (متن) کتے، بھیڑیے اور درندوں کی بیع جائز ہے، انہیں سکھایا جائے یا نہ۔ (شرح) یہ ہمارے نزدیک ہے اور امام ابویوسف رحمۃ اللہ کے نزدیک کاٹنے والے کتے کی بیع جائز نہیں جبکہ امام

شافعی رحمۃ اللہ کے نزدیک کتے کی بیع بالکل جائز نہیں، کیوں کہ وہ ان کے نزدیک نجس عین ہے۔ (ت)

بالجملہ قول اصح وارجح بلکہ ماخوذ و معمول و مفتی بہ وہی طہارت عین ہے تو جتنے امور بربنائے نجاست عین مانے جاتے ہیں سب خلاف معتمد و مخالف قول مختار و مشید ہیں لاجرم فتح میں فرمایا :

ماذکر في الفتاوی من التنجس من وضع | فتاوٰی میں جو مذکور ہے کہ برف یا کیچڑ میں جہاں

عه: یشیر الی ان ان لیس بنص فی عدم حذف الهمزة (م) | اس بات کی طرف اشارہ ہے کہ لفظ "ان" ہمزہ کے حذف نہ ہونے میں نص نہیں۔ (ت)

1 مجمع بحار الانوار 2 شرح الوقایہ مسائل شتی، مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۸۴/۳

Fatawa Razawiyya - Volume 4

[Arabic Text]: "If his foot is in the place of a dog's foot in snow or mud and the like, this is based on the narration of the essential impurity of the dog, but it is not the preferred opinion." 1 [Urdu Translation]: If a dog has placed its foot and someone steps there, it becomes impure; this and other similar matters are based on the dog being essentially impure (Najis al-Ayn), but this is not the preferred (mukhtar) view. (T)

It is stated in al-Hilya: [Arabic Text]: "Many are of the opinion that it is not essentially impure, and based on this, the correct view according to many is that it (the well) is not drained if it is taken out and the water did not touch its mouth, as is attributed to Abu Hanifa, may Allah the Exalted be pleased with him." 2 [Urdu Translation]: According to many jurists, it is not essentially impure; therefore, based on this, the correct view according to many is that when a dog is taken out (of water) and its mouth has not reached the water, then water will not be drawn (from the well). This view is attributed to Imam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him). (T)

Upon investigation, its hair (1) is pure, skin (2) is also pure; slaughter (3) and tanning (4) are causes for purifying the skin according to the agreed-upon saying among us. Meat is also [pure] according to the weaker of two corrections (according to the view which is agreed-upon according to us and according to the weaker of the two corrections, meat is also pure. T). Whether alive or dead (5), slaughtered or not, in every state, teeth (6) are pure, nails (7) are pure. If it falls into a well and comes out alive, and no impurity was known on its body nor did saliva reach the water, the water is pure. To satisfy the heart, only twenty (20) buckets should be removed. If it walked on mud (8) etc. and a barefoot person walks there, the feet will not become impure. If one lies on a mat soaked in water (9) or shakes their body and droplets from it wet clothes etc., they will not become impure as long as there was no impurity on the body. In all these branches (furu'), there is fundamentally no dispute.

[Arabic Text]: "It occurred in al-Durr [al-Mukhtar] that it is not essentially impure and upon this is the Fatwa. So it is sold, leased, and guaranteed [if destroyed], and the garment is not corrupted by its biting as long as its saliva is not seen, nor the prayer of one carrying it even if large, and Al-Halwani made the condition of tying its mouth." 3 [Ends summarized]. [Urdu Translation]: It is in Durr-e-Mukhtar that it is not essentially impure and the fatwa is upon this. Thus, it can be sold, given for hire, and its compensation will be necessary (in case of destruction). Clothes will not become

impure from its bite as long as saliva is not seen. The prayer of one carrying it will not be invalidated even if it is large. According to Halwani, it is a condition that its mouth be tied. Ends summary (T)

Footnotes: 1. Fath al-Qadir, end of Chapter of Impurities, printed by Nooriya Razawiyya, Sukkur, 1/186. 2. Al-Ta'liq al-Mujalla, marginalia of Munya al-Musalli, section on the Well, Maktaba Qadriya, Lahore, p. 115. 3. Durr al-Mukhtar, Chapter of Waters, printed by Mujtabai, Delhi, India, 1/38.

फ़तावा रज़विया - जिल्द चौथी

[अरबी पाठ]: "बर्फ या कीचड़ आदि में जहाँ कुत्ते ने पैर रखा हो, वहाँ पैर रखना कुत्ते की 'नजिस-ए-ऐन' (स्वयं अपवित्र) होने वाली रिवायत पर आधारित है, लेकिन यह पसन्दीदा राय नहीं है।" 1 [उर्दू अनुवाद]: कुत्ते ने पाँव रखा, वहाँ पाँव रखा जाए तो नापाक हो जाता है; और इस प्रकार की दूसरी बातें कुत्ते के'नजिस-ए-ऐन' होने पर आधारित हैं, और यह बात मुख़्तार (पसन्दीदा) नहीं है। (त)

'हुलिया' में फ़रमाया: [अरबी पाठ]: "बहुत से लोगों का मत है कि यह नजिस-ए-ऐन नहीं है, और इस आधार पर बहुतों के निकट सही यह है कि अगर उसे (पानी से) निकाल लिया जाए और पानी उसके मुँह को न छुए, तो पानी नहीं निकाला जाएगा, जैसा कि इमाम अबू हनीफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) की ओर मनसूब है।" 2 [उर्दू अनुवाद]: बहुत से फ़ुक़हा (विधिवेत्ताओं) के नज़दीक यह नजिस-ए-ऐन नहीं है, लिहाज़ा इस बुनियाद पर ज़्यादा लोगों के नज़दीक सही यह है कि जब कुत्ता (पानी से) निकाला जाए और उसका मुँह पानी तक न पहुँचा हो, तो (कुएँ से) पानी नहीं निकाला जाएगा। यह बात इमाम अबू हनीफ़ा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) की तरफ़ मनसूब है। (त)

अतः शोध के उपरांत, उसके बाल (1) भी पाक हैं, खाल (2) भी पाक है; ज़बह (3) और दबाग़त (4) (चमड़ा कमाना) हमारे यहाँ सर्वसम्मत राय के अनुसार खाल को पाक करने का कारण हैं। मांस भी दो सहीहों में से कमज़ोर के अनुसार पाक है (उस राय के अनुसार जो हमारे यहाँ सर्वसम्मत है और दो तसहीहों में से कमज़ोर तसहीह के मुताबिक़ गोश्त भी पाक है। त)। जीवित हो या मृत (5), ज़बह किया हुआ हो या न हो, हर हाल में दाँत (6) पाक हैं, नाखून (7) पाक हैं। अगर वह कुएँ में गिरा और ज़िन्दा बाहर आ गया और शरीर पर कोई नजासत (अपवित्रता) मालूम न थी और न ही लार पानी तक पहुँची, तो पानी पाक है। दिल की तसल्ली के लिए सिर्फ़ बीस (20) डोल निकाले जाएँ। कीचड़ (8) आदि पर चला हो और वहीं आदमी नंगे पाँव चले तो पाँव नापाक नहीं होंगे। पानी (9) में भीगी हुई चटाई पर लेटे या बदन झाड़े और उसकी छींटों से कपड़ा आदि तर हो जाए तो नापाक न होगा जब तक बदन पर नजासत न हो। इन तमाम फ़ुरू (उप-नियमों) में तो मूल रूप से कोई विवाद नहीं है।

[अरबी पाठ]: "दुर्र-ए-मुख़्तार में आया है कि यह नजिस-ए-ऐन नहीं है और इसी पर फ़तवा है। चुनाँचे इसे बेचा जा सकता है, किराए पर दिया जा सकता है, और इसके हर्जाने की गारंटी दी जाएगी। इसके काटने से कपड़ा तब तक ख़राब नहीं होगा जब तक कि इसकी लार न देखी जाए, और इसे उठाने वाले की नमाज़ भी नहीं टूटेगी चाहे वह बड़ा ही क्यों न हो, और अल-हलवानी ने इसके मुँह को बाँधने

की शर्त रखी है।" 3 [सारांश समाप्त]। [उर्दू अनुवाद]: 'दुर्र-ए-मुख़्तार' में है कि यह नजिस-ए-ऐन नहीं है और इसी पर फ़तवा है, पस इसे बेचा जा सकता है, उजरत (किराये) पर दिया जा सकता है और (मारे जाने की सूरत में) इसका तावान लाज़िम होगा। इसके काटने से कपड़ा नापाक नहीं होगा जब तक लार दिखाई न दे। इसे उठाकर नमाज़ पढ़ने वाले की नमाज़ नहीं टूटेगी चाहे वह बड़ा हो। हलवानी के नज़दीक इसका मुँह बन्द होना शर्त है। सारांश समाप्त (त)

पाद टिप्पणियाँ (Footnotes): 1. फ़तह अल-क़दीर, नजासत के अध्याय का अंत, नूरिया रज़विया द्वारा प्रकाशित, सुक्कुर, 1/186. 2. अल-ता'लीक़ अल-मुजल्ला, मुनिया अल-मुसल्ली का हाशिए, कुएँ का अध्याय, मकतबा क़ादरिया, लाहौर, पृष्ठ 115. 3. दुर्र-ए-मुख़्तार, जल का अध्याय, मुजतबाई द्वारा प्रकाशित, दिल्ली, भारत, 1/38.

فتاوی رضویہ جلد چہارم

رجله موضع رجل كلب في الثلج او الطين ونظائر هذه مبنى على رواية نجاسة عين الكلب وليست بالمختارة ۱۔ کتے نے پاؤں رکھا وہاں پاؤں رکھا جائے تو ناپاک ہو جاتا ہے، اور اس قسم کی دوسری باتیں کتے کے نجس عین ہونے پر مبنی ہیں اور یہ بات مختار نہیں (ت)

حلیہ میں فرمایا: الكثير على انه ليس نجس العين وعلى هذا فيكون الصحيح عند الكثير انه لاينزح اذا اخرج ولم يصب الماء فمه كما هو معزو الى ابى حنيفة رضى الله تعالى عنه ۲۔ بہت سے فقہاء کے نزدیک یہ نجس عین نہیں لہٰذا اس بنیاد پر زیادہ لوگوں کے نزدیک صحیح یہ ہے کہ جب کتا (پانی سے) نکالا جائے اور اس کا منہ پانی تک نہ پہنچا ہو تو (کنویں سے) پانی نہیں نکالا جائے گا، یہ بات امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی طرف منسوب ہے۔ (ت)

پس عند التحقیق اُس کے بال ۱ بھی پاک، کھال ۲ بھی پاک، ذبح ۳ و دباغت ۴ باعثِ تطہیر جلد علی القول المتفق علیہ عندنا واللحم ایضا علی اضعف التصحیحین (اس قول کے مطابق جو ہمارے نزدیک متفق علیہ ہے اور دو تصحیحوں سے کمزور تر تصحیح کے مطابق گوشت بھی پاک ہے۔ ت) زندہ و مردہ ۵ ، مذبوح و غیر مذبوح ہر حالت میں دانت ۶ پاک، ناخن ۷ پاک، اگر کنویں میں گرا اور زندہ نکل آیا اور بدن پر کوئی نجاست معلوم نہ تھی نہ لعاب پانی کو پہنچا تو پانی پاک، تطییبا للقلب صرف بیس ۲۰ ڈول نکالے جائیں۔ کیچڑ ۸ وغیرہ پر چلا ہے اور وہیں آدمی برہنہ پا چلے تو پاؤں نجس نہ ہوں گے۔ پانی ۹ میں بھیگا ہوا چٹائی پر لیٹے یا بدن جھاڑے اور اس کی چھینٹوں سے کپڑا وغیرہ تر ہو جائے ناپاک نہ ہوگا جب تک بدن پر نجاست نہ ہو۔ ان تمام فروع میں تو اصلاً کلام نہیں،

ووقع فی الدر لیس نجس العین وعلیه الفتوی فیباع ویؤجر ویضمن ولایفسد الثوب بعضه مالم یر ریقه ولاصلاۃ حامله ولوکبیرا وشرط الحلوانی شد فمه ۳ اه ملخصاً۔ درمختار میں ہے کہ نجس عین نہیں ہے اور اسی پر فتوی ہے پس اسے بیچا جا سکتا ہے، اجرت پر دیا جا سکتا ہے اور (ہلاکت کی صورت میں) اس کا تاوان لازم ہوگا اور اس کے کاٹنے سے کپڑا ناپاک نہیں ہوگا جب تک لعاب دکھائی نہ دے اسے اٹھا کر نماز پڑھنے والے کی نماز نہیں ٹوٹے گی اگرچہ بڑا ہو۔ حلوانی کے نزدیک اس کا منہ بند ہونا شرط ہے اھ تلخیص (ت)

۱ فتح القدیر، آخر باب الانجاس مطبوعہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/۱۸۶ ۲ التعلیق المجلی حاشیۃ منیۃ المصلی فصل فی البئر مکتبہ قادریہ لاہور ص ۱۱۵ ۳ درمختار باب المیاہ مطبوعہ مجتبائی دہلی بھارت ۱/۳۸

Fatawa Rizvia Volume 4

I say: As far as buying and selling is concerned, the discussion has passed, and the same ruling applies to leasing because its basis is also the lawfulness of utilization. However, the cloth does not become spoiled as long as it is not wetted with saliva; Allamah Shami, the annotator, has maintained this derivation. This weak servant (the author) does not accept this because he is also convinced of its absolute impurity, and impurity does not transfer without moisture. There is no disagreement in the school of thought regarding the impurity of saliva. Therefore, not becoming impure with a dry tooth and becoming impure with a wet lip are both agreed upon. The author of 'Al-Bahr' stated in 'Al-Bahr al-Ra'iq': "It should not be hidden that this issue is based on two opinions, etc." Then I saw that Allamah Tahtawi noted this, also acknowledging from 'Al-Bahr'. Allah (Glorified and Exalted is He) knows best. (T)

As for the secondary branch of whether the prayer of one carrying it is valid or not: If the dog itself comes and sits on the prayer rug, then it is clear that in this case, the validity of prayer is based specifically on that correct school of thought, i.e., essential purity. According to the view of impurity, the prayer will not be valid because although the dog came itself, it is essentially impure, so the worshiper became a carrier of impurity. According to the view of purity, it will be valid because it is now impure, so the saliva and the saliva of the dog are carried, not the worshiper carrying it, and indirect carrying is not considered here, just like a sensible child whose body and clothes are definitely impure comes and sits on the prayer rug; the prayer is valid even if he remains sitting until the end of the prayer, because in this case, the worshiper himself is not carrying impurity. And since the fatwa-issued school of thought is essential purity, the permissibility of prayer in this case is also definitely the fatwa-issued view.

For that which is not built except on what is correct, cannot be... | Whatever is based on something correct is also correct, and this...

---

1 Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, published by H.M. Saeed Company Karachi, 1/103.

फ़तावा रिज़विया जिल्द चौथी

मैं कहता हूँ: जहाँ तक खरीद-ओ-फरोख्त (खरीद और बिक्री) का ताल्लुक है, उस पर चर्चा हो चुकी है और इजारा (पट्टे) के बारे में भी वही हुक्म है क्योंकि इसकी बुनियाद भी उपयोग की हलालता (वैधता) पर है। लेकिन कपड़े का खराब न होना जब तक कि वह लार से गीला न हो, इस पर इसके हाशिए (नोट्स) लिखने वाले अल्लामा शामी ने इस विस्तार को कायम रखा है। यह बंदा-ए-ज़ईफ़ (लेखक स्वयं) इसे नहीं मानता क्योंकि वह इसकी पूर्ण अशुद्धता का भी कायल है, और गंदगी नमी के बिना आगे नहीं बढ़ती। और लार के नापाक होने में मज़हब (विचारधारा) में कोई मतभेद नहीं है, इसलिए सूखे दाँत के साथ नापाक न होना और गीले होंठ के साथ नापाक हो जाना, दोनों बातों पर सहमति है। 'अल-बहर' के लेखक ने 'बहर अल-रैक' में फरमाया: "यह गुप्त न रहे कि यह मसला दो कथनों पर आधारित है, इत्यादि।" फिर मैंने देखा कि अल्लामा तहतावी ने इस पर चेतावनी दी है, 'अल-बहर' से इसे स्वीकार करते हुए। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है। (त)

बाकी रही वह उप-शाखा कि इसे ले जाने वाले की नमाज़ होगी या नहीं? अगर कुत्ता खुद आकर नमाज़ पढ़ने की जगह (मुसल्ला) पर बैठ जाए, तो ज़ाहिर है कि इस सूरत में नमाज़ की शुद्धता विशेष रूप से उसी सही मज़हब यानी ज़ाती पाकी (ताहारत-ए-ऐन) पर आधारित है। नापाकी (नजासत) के कथन पर नमाज़ नहीं होगी, क्योंकि हालाँकि कुत्ता खुद आकर बैठा लेकिन वह स्वयं नापाकी (ऐन-ए-नजासत) है, तो नमाज़ी नापाकी उठाने वाला हो गया। और पाकी के कथन पर नमाज़ हो जाएगी कि अब वह नापाक है, तो लार और कुत्ते की लार का बोझ है न कि नमाज़ी का बोझ, और यहाँ परोक्ष रूप से बोझ उठाना मान्य नहीं है, जैसे एक समझदार बच्चा जिसके शरीर और कपड़े यकीनन नापाक हों, वह खुद आकर नमाज़ पढ़ने की जगह पर बैठ जाए, तो नमाज़ जायज़ है, चाहे वह नमाज़ खत्म होने तक बैठा रहे, क्योंकि इस सूरत में नमाज़ी खुद नापाकी उठाने वाला नहीं है। और जब मुफ्ती-बेह (जिस पर फतवा दिया गया है) मज़हब ज़ाती पाकी है, तो इस सूरत में नमाज़ का जायज़ होना भी निश्चित रूप से मुफ्ती-बेह है।

क्योंकि जो चीज़ सही के अलावा किसी और चीज़ पर आधारित नहीं होती, वह... | जिस चीज़ की बुनियाद सही हो वह भी सही होती है और यह...

---

1 अल-बहर अल-रैक, किताब अल-तहारत, मुद्रित एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/103। पृष्ठ 454 का 761

اقول: اما البیع فقد تقدم الکلام علیه وھو الکلام فی الاجارۃ فانھا ایضاً انما تعتمد حل الانتفاع وماعدم فساد الثوب مالم یبتل بلعابه فقد اقره علی ھذا التفریع محشیه العلامۃ الشامی والعبد الضعیف لا یحصله فإنه ماش علی قول التجنیس ایضاً قطعاً لان الرجس لا یعدی النجاسۃ الا بالبلل ونجاسۃ ریقه لا خلف فیھا فی المذھب فعدم النجاسۃ بسن یابس والتنجس بشفۃ رطبۃ کلاھما متفق علیه لا جرم ان قال البحر فی البحر لا یخفی ان ھذه المسألۃ علی القولین ۱۸ الخ ثم رأیت العلامۃ الطحطاوی نبه علیه معترفا ایضاً من البحر واللہ سبحنه وتعالی اعلم۔ | اقول: جہاں تک خرید وفروخت کا تعلق ہے تو اس پر کلام گزر چکا ہے اور اجارہ کے بارے میں بھی وہی حکم ہے کیونکہ اس کی بنیاد بھی تو انتفاع کا حلال ہونا ہے، لیکن کپڑے کا خراب نہ ہونا جب تک لعاب سے تر نہ ہو، اس پر اس کے محشی علامہ شامی نے اس تفریع کو برقرار رکھا ہے۔ یہ بندہ ضعیف اسے نہیں مانتا کیونکہ وہ اس کے قطعی نجس ہونے کا بھی قائل ہے اور نجاست، رطوبت کے بغیر آگے متجاوز نہیں ہوتی اور تھوک کے نجس ہونے میں مذہب میں کوئی اختلاف نہیں پس خشک دانت کے ساتھ ناپاک نہ ہونا اور تر ہونٹ کے ساتھ ناپاک ہوجانا دونوں باتوں پر اتفاق ہے صاحبِ بحر نے بحر الرائق میں فرمایا مخفی نہ رہے کہ یہ مسئلہ دو قولوں کی بنیاد پر ہے الخ پھر میں نے دیکھا کہ علامہ طحطاوی نے بحر سے اس کا اعتراف کرتے ہوئے اس پر تنبیہ کی ہے واللہ سبحنہ وتعالی (ت)

باقی رہی وہ فرع کہ اس کے حامل کی نماز ہوگی یا نہیں؟ اگر کتا خود آکر مصلی پر بیٹھ جائے جب تو ظاہر ہے کہ اس صورت میں صحت نماز خاص اسی مذہب صحیح یعنی طہارت عین ہی پر مبتنی ہے قول نجاست پر نماز نہ ہوگی کہ اگرچہ کتا خود آکر بیٹھا مگر وہ عین نجاست ہے تو مصلی حامل نجاست ہوا اور قول طہارت پر ہو جائے گی کہ اب نجس ہے تو لعاب اور لعاب محمولِ کلب

ہے نہ محمولِ مصلی اور حمل بالواسطہ یہاں معتبر نہیں جیسے ہوشیار بچہ جس کے جسم و ثوب یقیناً ناپاک ہوں خود آکر مصلی پر بیٹھ جائے نماز جائز ہے اگرچہ ختم نماز تک بیٹھا رہے کہ اس صورت میں مصلی خود حاملِ نجاست نہیں اور جبکہ مذہب مفتی بہ طہارتِ عین ہے تو اس صورت میں جوازِ نماز بھی قطعاً مفتی بہ۔

فان مالایبتنی الا علی الصحیح لایکون | جس چیز کی بنیاد صحیح ہو وہ بھی صحیح ہوتی ہے اور یہ

---

1 البحر الرائق کتاب الطہارت مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۰۳ Page 454 of 761

Fatawa Ridawiyyah Volume 4

This is correct, and as you see, it is from the clearest of self-evident matters. (T)

In Ghunya, it is stated:

(If one prays while there is a cat with them, their prayer is valid) absolutely if it sat by itself and there was no prohibitive impurity on its exterior. If the person carried it, and there was prohibitive impurity on it at that time, then the prayer is not valid, just as if one carried a child who cannot support themselves, and there is prohibitive impurity on their clothes or body. Because in that case, the person is the one carrying the impurity. This is contrary to one who can support themselves, for then the worshipper is not considered to be carrying the impurity that is on them. (Contrary to a dog) if the worshipper carries it, the prayer is not valid because they are carrying the impurity, which is its saliva. However, if it sits by itself, then according to the report that it is intrinsically impure, it is the same because they are carrying it and it is impurity. But according to the correct report, it is appropriate for the prayer to be valid because they are not carrying the impurity, as has already been mentioned regarding cats and such. End Summary. (T)

And if the worshipper themselves took it and prayed, or picked it up during prayer, then in this case, based on the statement of intrinsic purity, there are two opinions.

---

1. Ghunyat al-Mustamli, Munyat al-Musalli, Chapter on Leftovers, published by Suhail Academy Lahore, p. 191.

यह सही है और जैसा कि आप देखते हैं, यह सबसे स्पष्ट और स्वतःसिद्ध बातों में से है। (त)

'ग़ुनिया' में है:

(यदि किसी ने नमाज़ पढ़ी और उसके पास बिल्ली थी तो उसकी नमाज़) बिल्कुल जायज़ है यदि वह खुद-ब-खुद बैठी हो, और यदि उसने उसे उठाया हो तो इस स्थिति में उसके बाहरी हिस्से पर इतनी नजासत (अशुद्धता) न हो जो बाधा बने (तो नमाज़ जायज़ होगी)। लेकिन जब उस पर बाधा की सीमा तक नजासत हो, उस समय नमाज़ जायज़ नहीं है जैसे कि यदि उसने कोई बच्चा उठाया हो जो खुद-ब-खुद खड़ा नहीं हो सकता और उसके कपड़ों या शरीर पर इतनी नजासत है जो नमाज़ के लिए बाधक है, क्योंकि उस समय वह खुद नजासत उठाने वाला होगा। इसके विपरीत जो खुद-ब-खुद खड़ा हो सकता है, उस स्थिति में नमाज़ी स्वयं और उस पर मौजूद नजासत को उठाने वाला नहीं माना जाएगा। (कुत्ते के विपरीत) जब उसे उठाया गया हो तो नमाज़ जायज़ नहीं होगी क्योंकि वह उसकी नजासत यानी लार को उठाए हुए है। लेकिन जब वह खुद-ब-खुद बैठ जाए, तो उस रिवायत के आधार पर कि वह 'नजिसुल ऐन' (अत्यंत अपवित्र) है, वैसा ही है क्योंकि वह उसे उठाए हुए है और वह नजासत है। लेकिन सही रिवायत के अनुसार उचित है कि उसकी नमाज़ सही हो क्योंकि वह नजासत को उठाए हुए नहीं है, जैसा कि बिल्ली आदि के बारे में पहले गुज़र चुका है। संक्षेप। (त)

और यदि नमाज़ी ने खुद उसे लेकर नमाज़ पढ़ी या नमाज़ में उठा लिया तो 'तहारत-ए-ऐन' (वस्तुतः पवित्र होने) के आधार पर इस स्थिति में दो मत हैं।

---

1. ग़ुनियतुल मुस्तमली मुनियतुल मुसल्ली, अवशेषों पर अध्याय, सुहैल अकादमी लाहौर द्वारा प्रकाशित, पृष्ठ 191.

الاصح ھذا و ھذا کما تری من اجلی البدیہات۔ جیسا کہ تم دیکھتے ہو نہایت واضح باتوں میں سے ہے۔ (ت)

غنیہ میں ہے:

(ان صلی ومعه سنور تجوز) صلاته مطلقاً ان جلس بنفسه واذا لم یکن علی ظاهره نجاسة مانعة ان حمله اما ان کان علیه نجاسة مانعة اذ ذاك فلا تجوز صلاته کما لو حمل صبیاً لا یستمسك بنفسه وفی ثیابه او بدنه نجاسة مانعة لانه حینئذ هو الحاصل للنجاسة بخلاف المستمسك فان المصلی لیس حاملاً للنجاسة التي علیه (بخلاف الکلب) اذا حمله المصلی حیث لا تجوز صلاته لانه حامل للنجاسة التي هي لعابه اما اذا جلس علیه بنفسه فعلی روایة انه نجس العین کذلك لانه حامله وهو نجاسة واما علی الروایة الصحیحة فینبغی ان تجوز صلاته لانه غیر حامل للنجاسة کما في الهرة ونحوها علی ما سبق اه ملخصاً۔

اگر کسی نے نماز پڑھی اور اس کے پاس بلی تھی اس کی نماز مطلقاً جائز ہے اگر وہ خود بخود بیٹھی ہو ، اور اگر اس نے اسے اٹھایا ہو تو اس صورت میں اس کے ظاہر پر اتنی نجاست نہ ہو جو مانع ہو (نماز جائز ہوگی) لیکن جب اس پر مانع کی حد تک نجاست ہو اس وقت نماز جائز نہیں جیسا کہ اگر اس نے بچہ اٹھایا ہو جو خود بخود ٹھہر نہیں سکتا اور اس کے کپڑوں یا بدن پر اتنی نجاست ہے جو نماز سے مانع ہے کیونکہ اس وقت وہ خود نجاست اٹھانے والا ہوگا۔ بخلاف اس کے جو خود بخود ٹھہر سکتا ہے اس صورت میں نماز ہی اپنے اور پائی جانے والی نجاست کو اٹھانے والا شمار نہیں ہوگا، (بخلاف کتے کے) جب اسے اٹھایا ہو تو نماز جائز نہ ہوگی کیونکہ وہ اس کی نجاست یعنی لعاب کو اٹھائے ہوئے ہے۔ لیکن جب وہ خود بخود بیٹھ جائے تو اس روایت کی بنیاد پر کہ وہ نجس عین ہے اسی طرح ہے کہ کیونکہ وہ اسے اٹھائے ہوئے ہے اور وہ نجاست ہے لیکن

صحیح روایت کے مطابق مناسب ہے کہ اس کی نماز صحیح ہو کیونکہ وہ نجاست کو اٹھائے ہوئے نہیں، جیسا کہ بلی وغیرہ کے بارے میں گزر چکا ہے۔ (ت)

اور اگر خود مصلی ہی نے اسے لے کر نماز پڑھی یا نماز میں اٹھا لیا تو قول طہارت عین ہی پر اس صورت میں دو قول ہیں۔

---

1 غنیۃ المستملی منیۃ المصلی فصل فی الآسار مطبوعہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۹۱

I say: The secret in this is that there are two ways of basing something on another. One is that it is based on nothing else, and the second is that it is one of the things it is based on. According to the first meaning, anything based on what is sound will be definitively sound. According to the second meaning, it is not necessary for it to be sound because it is possible that the other part on which it is based is unsound; therefore, the soundness of the base is not necessary due to it (the soundness of the branch). Based on this, we say that the soundness of the branch necessitates the soundness of the root, but not vice-versa, because the root is a more general necessity, so its presence does not necessarily dictate the presence of the specific thing it entails. (T)

Regarding this statement, although the physical body of a dog is not impure, its saliva is impure by consensus. The general principle is that no impurity is ruled as impure while in its source; otherwise, prayer would be impossible because the body of the worshipper is never empty of blood etc. Now, the view of the scholars differed on two schools of thought:

The first school: Those whose view is that as long as the saliva does not come out of the mouth, it is in its source. They ruled it as valid (for prayer) either unconditionally, as Imam Malik al-Ulama chose in al-Bada'i and narrated from his noble teachers, and it is mentioned in al-Hulyah, Bahr al-Ra'iq, and Durr al-Mukhtar in the Book of Purity, and Halabi and Shami in the margins of Durr, and Tahtawi in the margin of Maraqi al-Falah confirmed it firmly; or with the condition that the mouth is closed, otherwise the prayer will not be valid, which is the statement of Imam Faqih Abu Ja'far Hindwani. Muhit Radawi, Nisab, Abu al-Su'ud etc., and Bahr and Durr in the conditions of prayer relied on this, and Allama Tahtawi inclined towards this in the margin of Durr. And the research in the legal perspective is that closure is not a condition; it is based on the flow of saliva before the completion of prayer in an amount that prevents validity. If it does not flow, the prayer is valid even if the mouth remains open, otherwise it is not, even if it were closed.

I say: Rather, the truth is that the purpose of the condition of closure is the same, as inferred from what was mentioned from al-Muhit etc. regarding the reasoning for the restriction (as the reason for the restriction will provide the benefit that we see from al-Muhit etc.).

मैं कहता हूँ: इसमें राज़ यह है कि किसी चीज़ पर बुनियाद रखने की दो सूरतें हैं: एक यह कि उसके अलावा किसी दूसरी चीज़ पर बुनियाद न हो, और दूसरी यह कि जिन बातों पर बुनियाद रखी गई है, यह उनमें से एक है। पहले अर्थ के अनुसार, जो चीज़ सही पर आधारित होगी वह निश्चित रूप से सही होगी, और दूसरे अर्थ के अनुसार उसका सही होना आवश्यक नहीं है क्योंकि यह संभव है कि दूसरा भाग जिस पर उसकी बुनियाद है वह गलत हो, इसलिए इसके कारण (शाखा की शुद्धता से) बुनियाद का सही होना आवश्यक नहीं होगा। इसी आधार पर हम कहते हैं कि शाखा की शुद्धता मूल के सही होने की आवश्यकता को अनिवार्य बनाती है, लेकिन इसका उल्टा नहीं, क्योंकि मूल एक व्यापक आवश्यकता है, इसलिए इसकी उपस्थिति से उस विशिष्ट वस्तु की उपस्थिति आवश्यक नहीं होती जिससे वह जुड़ी है। (त)

इस कथन पर, यद्यपि कुत्ते का शरीर स्वयं अशुद्ध नहीं है, लेकिन उसकी लार सर्वसम्मति से अशुद्ध है। सामान्य सिद्धांत यह है कि कोई भी अशुद्धि अपने स्रोत में अशुद्धता का आदेश नहीं पाती; अन्यथा नमाज़ असंभव हो जाएगी क्योंकि नमाज़ी का शरीर स्वयं रक्त आदि से कभी खाली नहीं होता। अब विद्वानों का दृष्टिकोण दो पंथों पर भिन्न है:

पहला पंथ: जिनकी दृष्टि में लार जब तक मुँह से बाहर न निकले, वह अपने स्रोत में है। उन्होंने इसकी शुद्धता का निर्णय दिया या तो पूर्ण रूप से जैसा कि इमाम मलिक अल-उलेमा ने 'बदाए' में चुना और अपने सम्मानित शिक्षकों से उद्धृत किया, और इसी को 'हुलिया', 'बहर अर-राइक' और 'दुर-ए-मुख्तार' के पवित्रता अध्याय में, और ह़लबी व शामी ने 'दुर' के हाशिये में और त़ह़तावी ने 'मराक़ी अल-फलाह' के हाशिये में दृढ़ता से कहा है; या इस शर्त के साथ कि मुँह बंद हो अन्यथा नमाज़ नहीं होगी, यह इमाम फ़क़ीह अबू जाफ़र हिंदवानी का कथन है। 'मुहीत रज़वी', 'निशाब', 'अबू अल-सुऊद' आदि और 'बहर' व 'दुर' की नमाज़ की शर्तों में इसी पर भरोसा किया गया और अल्लामा त़ह़तावी ने 'दुर' के हाशिये में इसी ओर झुकाव दिखाया। और फिक़्ही शोध में सत्य यह है कि मुँह बंद होना शर्त नहीं है; यह नमाज़ पूरी होने से पहले लार के बहने की उस मात्रा पर आधारित है जो नमाज़ को बाधित करती है। यदि वह नहीं बहती है, तो नमाज़ हो जाएगी चाहे मुँह खुला रहे, अन्यथा नहीं होगी, चाहे वह बंद ही क्यों न हो।

मैं कहता हूँ: बल्कि सच तो यह है कि मुँह बंद होने की शर्त का उद्देश्य भी यही है, जैसा कि 'मुहीत' आदि से उद्धृत प्रतिबंध के कारण से स्पष्ट होता है (जैसा कि प्रतिबंध का वह कारण वही लाभ देगा जिसे हम 'मुहीत' आदि से प्राप्त करते हैं)।

पृष्ठ 456 का 761

اقول: والسر فیہ ان الابتناء علی شئی لہ وجہان احدہما ان لا یبتنی الا علیہ والاخر ان یکون ہو احد ما یبتنی علیہ والمبنی علی الصحیح بالمعنی الاول صحیح قطعاً وبالمعنی الآخر لا یجب ان یکون صحیحاً فجواز ان یکون البعض الآخر مما یبتنی علیہ غیر صحیح فلا یکون المبتنی صحیحاً بسببہ وعن ہذا نقول ان صحۃ الفرع تستلزم صحۃ الاصل ولاعکس لان الاصل لازم اعم فثبوتہ غیر قاض بثبوت ملزومہ ۔

اقول: اس میں راز یہ ہے کہ کسی چیز پر بنیاد رکھنے کی دو صورتیں ہیں ایک یہ کہ اس کے علاوہ دوسری چیز پر بنیاد نہ ہو، اور دوسرا یہ کہ جن باتوں پر بنیاد رکھی گئی ہے، یہ ان میں سے ایک ہے پہلے معنی کے اعتبار سے جو چیز صحیح پر مبنی ہوگی وہ قطعی طور پر صحیح ہوگی، اور دوسرے معنی کے اعتبار سے اس کا صحیح ہونا واجب نہیں کیونکہ جائز ہے کہ دوسرا بعض جس پر اس کی بنیاد ہے وہ غیر صحیح ہو لہذا اس کے سبب (فرع کی صحت) سے بنیاد کا صحیح ہونا لازم نہ ہو گا اسی بنیاد پر ہم کہتے ہیں کہ فرع کی صحت اصل کے صحیح ہونے کو مستلزم ہے لیکن اس کا عکس نہیں کیونکہ اصل لازم اعم ہے پس اس کے ثبوت سے ملزوم کا ثبوت ضروری نہیں۔ (ت)

اس قول پر اگرچہ عینِ کلب نجس نہیں مگر لعاب تو بالاتفاق نجس ہے اور اصلِ کلی یہ ہے کہ کوئی نجاست اپنے معدن میں حکمِ نجاست نہیں پاتی ورنہ نماز محال ہو کہ خود بدن مصلی خون وغیرہ سے کبھی خالی نہیں اب نظر علماء دو مسلک پر مختلف ہوئی:

مسلکِ اول: جن کی نظر میں لعاب جب تک منہ سے باہر نہ نکلے اپنے معدن میں ہے انہوں نے حکمِ صحت دیا یا تو مطلقاً جیسا کہ امام ملک العلماء نے بدائع میں اختیار فرمایا اور اپنے مشائخ کرام سے نقل کیا اور اسی پر حلیہ میں اور بحر الرائق و در مختار کے کتاب الطہارت میں اور حلبی و شامی نے حواشی در اور طحطاوی نے حاشیہ مراقی الفلاح میں جزم فرمایا، یا اس شرط کے ساتھ کہ اُس کا منہ بندھا ہو ورنہ نماز نہ ہو گی یہ امام فقیہ ابو جعفر ہندوانی کا ارشاد ہے۔ محیط رضوی و نصاب و ابو السعود و غیر ہا اور بحر و در کی شروط الصلاۃ میں اسی پر اعتماد اور اسی طرف علامہ طحطاوی نے حاشیہ در میں میل کیا اور نظر فقہی میں تحقیق وہی ہے کہ بندش شرط نہیں قبل از فراغِ نماز لعاب بقدرِ مانع جواز کے سیلان پر بنا ہے نہ بہے تو نماز ہو جائے گی اگرچہ منہ کھلا رہے، ورنہ نہیں، اگرچہ بندھا ہو۔

اقول: بلکہ حق یہ کہ شرط بندش کا مقصود بھی یہی ہے کما یفیدہ مأ ذکر عن المحیط وغیرہ من تعلیل التقیید (جیسا کہ وہ بات یعنی تقیید کی علت اس کا فائدہ دے گی جسے ہم محیط وغیرہ سے)

...will be mentioned. (T) It is presumed that dog's saliva tends to flow when the mouth is open and stops when closed; hence it was described with 'Shadd' (tightening) and 'Fath' (opening). And its like is frequently occurring among jurists, as is not hidden from one who investigates. (T) In short, the difference is in wording, not in meaning. And with this, the presumed contradiction in the words of Al-Bahr, Al-Durr, and Al-Tahtawi is repelled, and with Allah is the success. (T) In any case, all these Imams and scholars did not consider the saliva impure unless it flows out of the mouth. On this school of thought, undoubtedly this subsidiary issue is also based only on the purity of the dog, and when that is the Fatwa-given opinion, then this too is certainly the Fatwa-given opinion in that manner.

[Arabic Text - Left Column] In Al-Bahr, from Al-Badai', it is reported that it (i.e., the purity of the dog itself) is the closer of the two opinions to correctness. For this reason, our scholars said regarding one who prayed with a puppy in his sleeve that his prayer is permissible. Faqih Abu Ja'far al-Hinduwani conditioned the permissibility on its mouth being tied. (1) Ah. And in Al-Bahr also: if one prayed while carrying a small puppy, his prayer is not valid according to the opinion of its absolute impurity, and it is valid according to the opinion of its purity, whether absolutely or by its mouth being tied, as we previously cited from Al-Badai'. (2) Ah. In the marginalia of Al-Maraqi, it says that it is not 'Najis al-Ayn' (intrinsically impure), and the Fatwa is upon this. The effect of the disagreement appears in the case if one prayed with a small puppy in his sleeve; it would be permissible according to the first opinion, not the second, and Al-Hinduwani's condition is that it be tied.

[Urdu Text - Right Column] It is quoted in Bahr al-Raiq from Badai' that this (the dog being physically pure) is the opinion closer to correctness out of two opinions. Therefore, our masters said that if a person has a puppy in his sleeve, his prayer is permissible, and according to Faqih Abu Ja'far al-Hinduwani, it is a condition for permissibility that its mouth be tied. Ah. It is also in Bahr al-Raiq that when a person prayed while carrying a small puppy, according to the opinion that it is impure, the prayer will not be correct at all, and based on the opinion of purity, it will either be absolutely correct or in the case that its mouth is tied, as we previously quoted from Badai'. Ah. In the marginal notes of Maraqi al-Falah, it is stated that it is not intrinsically impure and the Fatwa is on this. And the effect of the disagreement [appears] in...

1. Al-Bahr al-Raiq, Book of Purification, printed by H.M. Saeed Company Karachi 101/1
2. Al-Bahr al-Raiq, Book of Purification, printed by H.M. Saeed Company Karachi 102/1

...उल्लेख करेंगे। (त) संभवतः कुत्तों का लार मुँह खुला रहने की स्थिति में गिरता है और बंद होने पर रुक जाता है, इसलिए इसे 'शद्द' (कसने) और 'फ़तह' (खोलने) के साथ वर्णित किया गया है। और इसी तरह का उल्लेख न्यायविदों (फुक़हा) के यहाँ अक्सर मिलता है, जैसा कि खोज करने वाले पर छिपा नहीं है। (त) संक्षेप में, अंतर शब्दों में है, अर्थ में नहीं। और इसी के साथ अल-बहर, अद-दुर और अत-तहतावी के शब्दों में अनुमानित विरोधाभास दूर हो जाता है, और अल्लाह ही सफलता देने वाला है। (त) बहरहाल, इन सभी इमामों और विद्वानों ने लार को तब तक अपवित्र (नजिस) नहीं माना जब तक कि वह मुँह से बाहर न बहे। इस विचारधारा (मसलक) पर निःसंदेह यह उप-मुद्दा (फ़रअ) भी केवल कुत्ते की पवित्रता पर आधारित है, और जब वह फ़तवा देने योग्य राय है, तो यह भी उसी तरह निश्चित रूप से फ़तवा देने योग्य है।

[बायां कॉलम - अरबी अनुवाद] बहर-उर-रैक़ में बदाइअ से उद्धृत है कि यह (कुत्ते का मूलतः पवित्र होना) दो मतों में से सच्चाई के अधिक निकट है। इसीलिए हमारे आचार्यों ने कहा कि जिस व्यक्ति की आस्तीन में कुत्ते का बच्चा हो, उसकी नमाज़ जायज़ है, और फ़क़ीह अबू जाफ़र हिन्दुवानी ने जायज़ होने के लिए उसका मुँह बँधा होना शर्त रखा है। (1) बहर-उर-रैक़ में ही है: जब किसी व्यक्ति ने इस स्थिति में नमाज़ पढ़ी कि उसने कुत्ते का छोटा बच्चा उठा रखा था, तो इस मत पर कि वह पूर्णतः अपवित्र है, नमाज़ सही नहीं होगी, और पवित्रता के मत पर या तो पूर्णतः सही होगी या इस स्थिति में कि उसका मुँह बँधा हुआ हो, जैसा कि हमने पहले बदाइअ से उद्धृत किया। (2) अल-मराक़ी के फुटनोट में है कि वह 'नजिस-उल-ऐन' (स्वयं अपवित्र) नहीं है और इसी पर फ़तवा है। मतभेद का प्रभाव वहां प्रकट होता है जहाँ कोई व्यक्ति आस्तीन में छोटे कुत्ते के बच्चे के साथ नमाज़ पढ़े; पहले मत पर जायज़ है, दूसरे पर नहीं, और हिन्दुवानी की शर्त है कि मुँह बँधा हो।

[दायां कॉलम - उर्दू मूल] बहर-उर-रैक़ में बदाइअ से उद्धृत है कि यह (कुत्ते का ताहिर ऐन होना) दो मतों में से सच्चाई के अधिक निकट मत है। इसीलिए हमारे मशाइख़ ने फ़रमाया कि जिस व्यक्ति की आस्तीन में कुत्ते का बच्चा हो उसकी नमाज़ जायज़ है और फ़क़ीह अबू जाफ़र हिन्दुवानी के नज़दीक जवाज़ के लिए उसके मुँह का बंद होना शर्त है। अह। बहर-उर-रैक़ में ही है कि जब किसी व्यक्ति ने इस हालत में नमाज़ पढ़ी कि उसने कुत्ते का छोटा सा बच्चा उठा रखा था तो इस क़ौल पर कि वह नजिस है नमाज़ मुतलक़न सही नहीं होगी और तहारत के क़ौल की बुनियाद पर या तो मुतलक़न सही होगी या इस सूरत में कि उसका मुँह बँधा हुआ हो, जैसा कि हमने इससे पहले बदाइअ से नक़ल

किया। अह। मराक़ी-उल-फ़लाह के हाशिया में है कि वह नजिस-ऐन नहीं और इसी पर फ़तवा है। और इख़्तिलाफ़ का असर इस...

---

1. अल-बहर अल-रैक़, किताबुत तहारत, मुद्रित एच.एम. सईद कंपनी कराची 101/1
2. अल-बहर अल-रैक़, किताबुत तहारत, मुद्रित एच.एम. सईद कंपनी कराची 102/1

فتاوی رضویہ جلد چہارم

ذکر کریں گے۔ت) غالبا لعاب کلاب کامنہ کھلا ہونے کی حالت میں میلان کرتا اور بندش سے رکنا مظنون ہے لہذا شد و فتح سے تعبیر کی گئی و مثلہ کثیر الوقوع من الفقہاء کما لا یخفی علی من تتبع (اور اس کی مثل فقہاء سے کثیر الوقوع ہے جیسا کہ تلاش کرنے والے پر مخفی نہیں۔ت) غرض اختلاف لفظ میں ہے نہ معنیٰ میں وبہذا یندفع التھافت المظنون فی کلمات البحر والدر والتحطاوی وباللہ التوفیق (بحر الرائق، در مختار اور طحطاوی کے کلمات میں جس تکرار کا گمان تھا اس سے وہ دُور ہو گیا۔ اور اللہ تعالیٰ ہی توفیق عطا کرنے والا ہے۔ت) بہر حال ان سب ائمہ و علماء نے نجاست لعاب کا اعتبار نہ فرمایا جب تک منہ سے باہر سیلان نہ کرے اس مسلک پر بلا شبہ یہ فرع بھی صرف اسی طہارت میں کلب پر مبتنی اور جب وہ مفتی بہ تو یہ بھی اسی طریقہ پر یقیناً مفتی بہ۔

[بایاں کالم] في البحر عن البدائع انه (ای طھارۃ عین الکلب) اقرب القولین الی الصواب ولذلك قال مشایخنا فیمن صلی وفي کمه جرو انه تجوز صلاته وقید الفقیه ابوجعفر الھندواني الجواز بکونه مشدود الفم ۱۸ اھ۔ وفی البحر ایضاً اذاصلی وھو حامل جروا صغیرا لا تصح صلاته علی القول بنجاسة مطلقا وتصح علی القول بطھارته اما مطلقا او بکونه مشدود الفم کما قدمناه عن البدائع ۲۸ اھ۔ وفي حاشیة المراقي انه لیس بنجس العین وعلیه الفتوی واثر الخلاف یظھر فیما لوصلی وفی کمه جرو صغیر جازت علی الاول لا الثاني وشرط الھندواني کونه مشدود

[دایاں کالم] بحر الرائق میں بدائع سے منقول ہے کہ یہ (کتے کا طاہر عین ہونا) دو قولوں میں سے صحت کے زیادہ قریب قول ہے۔ اس لئے ہمارے مشائخ نے فرمایا کہ جس آدمی کی آستین میں کتے کا بچہ ہو اس کی نماز جائز ہے اور فقیہ ابو جعفر ہندوانی کے نزدیک جواز کے لئے اس کے منہ

کا بند ہونا شرط ہے اھ بحر الرائق میں ہی ہے کہ جب کسی آدمی نے اس حالت میں نماز پڑھی کہ اس نے کتے کا چھوٹا سا بچہ اٹھا رکھا تھا تو اس قول پر کہ وہ نجس ہے نماز مطلقاً صحیح نہیں ہوگی اور طہارت کے قول کی بنیاد پر یا تو مطلقاً صحیح ہوگی یا اس صورت میں کہ اس کا منہ بندھا ہوا ہو، جیسا کہ ہم نے اس سے پہلے بدائع سے نقل کیا اھ مراقی الفلاح کے حاشیہ میں ہے کہ وہ نجس عین نہیں اور اسی پر فتویٰ ہے۔ اور اختلاف کا اثر اس

---

1 البحر الرائق کتاب الطہارۃ مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۰۱/۱ 2 البحر الرائق کتاب الطہارۃ مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۰۲/۱

Fatawa Razviya, Volume 4

[Right Column] ...it will become apparent when one performs prayer while having a small puppy in their sleeve; according to the first opinion, the prayer will be valid, according to the second, it will not. And Hindwani has stipulated the condition of the mouth being tied shut - Summary.

In Bazzaziya, it is quoted from Al-Nisab that if the puppy's mouth is tied, the prayer is permissible. In the conditions of prayer in Durr al-Mukhtar, Bahr al-Ra'iq, and Fath-ullah al-Mu'in, the wording of Durr al-Mukhtar is: anything that moves with one's movement or is considered carried by them, like a child upon whom there is impurity, if the child cannot support themselves, it is forbidden [to carry them during prayer], otherwise it is not; similarly a person in a state of major ritual impurity (junub) or a dog, if its mouth is tied. This is according to the more correct opinion. In its commentary, Allama (Tahtawi) said, "Instead of saying 'if its mouth is tied shut', if it were said 'and if nothing comes out of the dog's mouth that prevents prayer', it would have been better, because if it is known that nothing is flowing or if the flow is such that it does not prevent prayer, then the prayer will not be void even if the mouth is not tied shut." (Halabi) And he said, contemplate this. Allama Shami quoted that which was gained as a benefit from Halabi.

[Left Column] ...the mouth [1] - summary. In Al-Bazzaziya, from Al-Nisab: If the puppy's mouth is tied, it is permissible [2]. In 'Conditions of Prayer' in Al-Durr, Al-Bahr, and Fath-ullah al-Mu'in, the wording is from Al-Durr: That which moves with [one's] movement or is considered as being carried by him, like a child with impurity on them, if they cannot support themselves, it's prohibited, otherwise not; like a junub person or a dog if its mouth is tied, according to the more correct opinion [3]. In the marginal notes of Allama [Tahtawi], on his statement 'if its mouth is tied', [he says]: If it were said 'and a dog from which nothing flows that prevents prayer', it would have been more appropriate because if the absence of flow is known, or if it flows less than the amount that prevents [prayer], the prayer is not void even if its mouth is not tied. [Halabi]. There is room for reflection here [4]. Allama Shami quoted what Al-Halabi provided, approved it, and supported it. In Al-Hilya, from Muhit of Radiy-ud-Din: A man prayed while he had a puppy with him whose leftovers are not permissible for wudu. It was said: it is not permissible. The more correct opinion is: [if] it flows in his sleeve and it becomes wet with its saliva, then his sleeve becomes impure, preventing the validity of prayer if it is more than the size of a dirham. But if its mouth is tied such that its saliva does not reach [the sleeve]...

[Footnotes] 1. Hashiya al-Tahtawi on Maraqi al-Falah, Section: cleaning animal hides, Nur Muhammad Book Trading Factory Karachi, p. 88. 2. Fatawa Bazzaziya with Fatawa Hindiyya, Vol 7, Section on Impurities, Noorani Book House Peshawar, 4/21. 3. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Conditions of Prayer, printed at Mujtabai Delhi, 1/65. 4. Hashiya al-Tahtawi on Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Conditions of Prayer, printed at Dar al-Ma'rifa Beirut, 1/190.

फतावा रजविया, जिल्द 4

[दायां कॉलम] ...यह तब स्पष्ट होगा जब कोई व्यक्ति इस स्थिति में नमाज़ पढ़े कि उसकी आस्तीन में कुत्ते का छोटा बच्चा हो; पहले मत के अनुसार नमाज़ जायज़ होगी और दूसरे के अनुसार नहीं। और हिंदुवानी ने मुँह बँधा होना शर्त रखी है - सारांश।

बज़ाज़िया में 'निशाब' से उद्धृत किया गया है कि यदि कुत्ते के बच्चे का मुँह बँधा हो तो नमाज़ जायज़ है। नमाज़ की शर्तों में दुर्रे मुख़्तार, बहुर रायिक और फ़तहुल्लाह अल-मुईन में है, दुर्रे मुख़्तार के शब्द हैं: जो किसी की हरकत से हरकत करे या उसे उठाने वाला माना जाए, जैसे कि कोई बच्चा जिस पर नजासत (अशुद्धता) हो, यदि वह बच्चा स्वयं को न संभाल सके तो [नमाज़ में उसे ले जाना] मना है, अन्यथा नहीं; इसी प्रकार जुनुब (महा-अशुद्ध) व्यक्ति या कुत्ता, यदि उसका मुँह बँधा हो। यह अधिक सही मत के अनुसार है। इसके हाशिये (व्याख्या) में अल्लामा (तहतावी) ने फ़रमाया, "यह कहने के बजाय कि 'यदि उसका मुँह बँधा हो', वह फ़रमाते, 'और कुत्ते के मुँह से यदि वह चीज़ न निकले जो नमाज़ को रोकती है', तो यह बात ज़्यादा बेहतर होती, क्योंकि यदि यह ज्ञात हो कि कुछ भी नहीं बह रहा है या वह इतना कम बहता है जो नमाज़ के लिए बाधक नहीं है, तो नमाज़ बातिल (अमान्य) नहीं होगी चाहे मुँह बँधा न भी हो।" (हलबी) और उन्होंने कहा कि इस पर विचार करें। अल्लामा शामी ने वही बात उद्धृत की जिसका लाभ हलबी से प्राप्त हुआ था।

[बायां कॉलम] ...मुँह [1] - सारांश। अल-बज़ाज़िया में 'निशाब' से: यदि पिल्ला का मुँह बँधा हो तो जायज़ है [2]। दुर्र, बह्र और फ़तहुल्लाह अल-मुईन में 'नमाज़ की शर्तों' में, दुर्र के शब्द हैं: वह जो [किसी की] हरकत के साथ हरकत करे या जिसे ले जाना समझा जाए, जैसे कि नजासत वाला बच्चा, यदि वह खुद को न थाम सके तो मना है, अन्यथा नहीं; जैसे जुनुब व्यक्ति या कुत्ता यदि उसका मुँह बँधा हो, अधिक सही मत के अनुसार [3]। अल्लामा [तहतावी] के हाशिये में, उनके कथन 'यदि उसका मुँह बँधा हो' पर, [वे कहते हैं]: यदि यह कहा जाता कि 'और एक कुत्ता जिससे ऐसा कुछ न बहे जो नमाज़ को रोकता है', तो यह अधिक उपयुक्त होता क्योंकि यदि बहाव की अनुपस्थिति ज्ञात है, या यदि यह उस मात्रा से कम बहता है जो [नमाज़] को रोकता है, तो नमाज़ बातिल नहीं होती चाहे उसका मुँह बँधा न हो। [हलबी]। यहाँ चिंतन का स्थान है [4]। अल्लामा शामी ने वह उद्धृत किया जो अल-हलबी ने प्रदान किया, उसे स्वीकार किया और उसका समर्थन किया। अल-हिल्या में, रज़ी-उद-दीन के मुहीत से: एक आदमी ने नमाज़ पढ़ी जबकि उसके साथ कुत्ते का एक बच्चा था जिसका बचा हुआ (झूठा) पानी वुज़ू के लिए जायज़ नहीं है। कहा गया: यह जायज़ नहीं है। अधिक सही मत है:

[यदि] लार उसकी आस्तीन में बहती है और वह उसकी लार से गीली हो जाती है, तो उसकी आस्तीन नापाक हो जाती है, जो नमाज़ की वैधता को रोकती है यदि वह एक दिरहम के आकार से अधिक हो। लेकिन यदि उसका मुँह इस तरह बँधा हो कि उसकी लार न पहुँचे...

[पाद लेख] 1. हाशिया अत-तहतावी अली मराक़ी अल-फलाह, अनुभाग: चमड़े को शुद्ध करना, नूर मुहम्मद बुक ट्रेडिंग फैक्ट्री कराची, पृष्ठ 88। 2. फतावा बज़ाज़िया साथ में फतावा हिंदिया, जिल्द 7, नजासत पर अनुभाग, नूरानी बुक हाउस पेशावर, 4/21। 3. अल-दुर्र अल-मुख़्तार, नमाज़ की शर्तों पर अध्याय, मुजतबाई दिल्ली में मुद्रित, 1/65। 4. हाशिया अत-तहतावी अली अल-दुर्र अल-मुख़्तार, नमाज़ की शर्तों पर अध्याय, दार अल-मआरिफ़ा बेरूत में मुद्रित, 1/190।

فتاوی رضویہ جلد چہارم

صورت میں ظاہر ہو گا جب وہ اس حال میں نماز پڑھے کہ اس کی آستین میں کتے کا چھوٹا بچہ ہو، پہلے قول کے مطابق نماز جائز ہوگی دوسرے کے مطابق نہیں۔ اور ہندوانی نے منہ بندھا ہونا شرط رکھی ہے اھ تلخیص۔ بزازیہ میں نصاب سے نقل کیا ہے کہ اگر کتے کے بچے کا منہ باندھا ہوا ہو تو نماز جائز ہے اھ نماز کی شرائط میں درمختار، بحرالرائق اور فتح اللہ المعین میں ہے الفاظ در مختار کے ہیں کہ جو اس کی حرکت سے حرکت کرے یا اسے اٹھانے والا شمار ہو جیسے بچہ کہ اس پر نجاست ہو اگر وہ خود بخود نہ ٹھہر سکے تو منع کیا جائے گا ورنہ نہیں جیسے جنبی اور کتا، اگر اس کا منہ باندھا ہو۔ یہ اصح قول کے مطابق ہے اھ اور اس کے حاشیہ میں علامہ (طحطاوی) نے فرمایا "یہ کہنے کی بجائے کہ اگر اس کا منہ باندھا ہوا ہو، وہ فرماتے، اور کتے کے منہ سے اگر وہ چیز نہ نکلے جو نماز کو روکتی ہے" تو یہ بات زیادہ بہتر ہوتی کیونکہ جاری نہ ہونا معلوم ہو یا اس سے اتنا جاری ہو جو مانع نہیں ہے تو نماز باطل نہ ہوگی اگر چہ منہ باندھا ہوا نہ ہو۔ (حلبی) اور کہا اس میں غور کرواہ۔ علامہ شامی نے وہ بات نقل کی جس کا فائدہ حلبی سے حاصل ہوا

الفم 1 اہ ملخصاً، وفی البزازیۃ عن النصاب ان کان الجرو مشدود الفم یجوز 2 اہ وفی شروط الصلاۃ للدر والبحر وفتح اللہ المعین واللفظ للدر ما یتحرک بحرکۃ او یعد حامل لہ کصبی علیہ نجس ان لم یستمسك بنفسہ منع والا لا کجنب وکلب ان شد فمہ فی الاصح 3 اھ وفی حاشیتہ للعلامۃ ط قولہ ان شد فمہ لو قال وکلب ان لم یسل منہ ما یمنع الصلاۃ لکان اولی لانہ لو علم عدم السیلان اوسال منہ دون المانع لا یبطل الصلاۃ وان لم یشد فمہ حلبی وفیہ تأمل 4 اہ ونقل العلامۃ الشامی ما افادہ الحلبی فاقرہ وایدہ وفی الحلیۃ فی محیط رضی الدین رجل صلی ومعہ جرو کلب ومالا یجوز ان یتوضأ بسؤرہ قیل

لم يجز والاصح يسيل فى كمہ فيصير مبتلا بلعابہ فيتنجس كمہ فيمنع جواز الصلاة ان كان اكثر من قدر الدرهم فان فمہ مشدودا بحيث لا يصل لعابہ

1 حاشية الطحطاوى على مراقى الفلاح فصل يطهر جلد الميتة نور محمد كارخانه تجارت كتب كراچى ص ٨٨ 2 فتاوى بزازية مع الفتاوى الهندية السابع في النجس نورانى كتب خانه پشاور ٢١/۴ 3 الدر المختار باب شروط الصلاة مطبوعہ مجتبائى دہلى ١/ ۶۵ 4 حاشية الطحطاوى على الدر المختار باب شروط الصلوة مطبوعہ دار المعرفہ بيروت ١/ ١٩٠

Fatawa Rizwia - Volume 4

[Arabic Text Block] ...to his clothes, it is permissible because the exterior of every animal is pure and it does not become impure except by death. The impurity of its interior is in its source, so its ruling does not manifest like the impurity inside a person praying. End. The most similar view is that this detail applies to a dog whose nature is excessive drooling, such that what flows from it before the carrier finishes [the prayer] reaches a quantity that prevents the validity of the prayer. And if its mouth is tied, it prevents that. For a dog not like that, the most similar view is the absolute permissibility, as is apparent from what is in al-Bada'i' from our masters. End.

[Urdu Text Block] Then he maintained it and supported it. In Al-Hilyah, it is narrated from the Muhit of Radi al-Din that a person prayed while having a puppy or something whose leftover is not permissible for ablution. It was said that the prayer is not valid, but the more correct view is that if its mouth is open, it is not valid because its saliva will keep flowing onto the sleeve and it will become impure by becoming wet with saliva. Therefore, if it exceeds the size of a dirham, it will prevent the validity of the prayer. And if its mouth is tied in such a way that its saliva does not reach the clothes, then the prayer is permissible because the exterior of every animal is pure and it does not become impure without death, while the internal impurity is in its center. Thus, its ruling will not be apparent, just like the internal impurity of a praying person. End. The more appropriate view is that this detail is regarding that dog whose saliva is often flowing, because when its saliva is such that what flows reaches the limit that prevents the prayer from being correct before the carrier is finished, even if its mouth is tied, it will prevent the prayer. And for what is not like that, absolute permissibility (the statement of) is more appropriate, as is clear from the statement of our masters in al-Bada'i'. (T)

[Bottom Section] Second Viewpoint: Those whose sight went towards the fact that saliva is not produced on the surface of the mouth but is generated from within the flesh and comes into the mouth. So, whether it comes out of the mouth or not has no relevance because it has already moved from its original place. Thus, even if it comes to the outer part of the mouth, the ruling of impurity is found, just like blood that comes from inside and reaches the surface of the mouth and tongue. Therefore, in the mentioned case, the presence of saliva inside the mouth of a dog or other predatory animals is a cause for carrying impurity. They ruled the absolute invalidity

of prayer. In Khaniyah, Khulasah, Bazzaziyah, Hindiyah, Dhakhiroh, Musaffa, and Munyah, etc., this...

[Footnotes] 1. At-Ta'liq al-Mujalla with Munyat al-Musalli, Masail Izalat an-Najasat al-Haqiqiyyah, published by Maktabah Qadriyah Jamia Nizamia Lahore, p. 158. 2. At-Ta'liq al-Mujalla with Munyat al-Musalli, Masail Izalat an-Najasat al-Haqiqiyyah, published by Maktabah Qadriyah Jamia Nizamia Lahore, p. 158.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 4

[अरबी पाठ ब्लॉक] ...यदि उसके कपड़ों पर लग जाए, तो यह जायज़ है क्योंकि हर जानवर का बाहरी हिस्सा पवित्र है और वह मौत के बिना अपवित्र नहीं होता। उसके अंदर की गंदगी उसके स्रोत में होती है, इसलिए उसका हुक्म ज़ाहिर नहीं होता, जैसे नमाज़ी के अंदर की गंदगी। समाप्त। सबसे अधिक समानता वाला विचार यह है कि यह विवरण उस कुत्ते के बारे में है जिसकी प्रकृति अधिक लार टपकाने की है, जिससे उसके बहने वाले लार की मात्रा नमाज़ ख़त्म होने से पहले इतनी हो जाए जो नमाज़ की वैधता को रोक दे। और यदि उसका मुँह बांध दिया जाए, तो वह उसे रोकता है। और जो ऐसा नहीं है, उसमें पूर्ण अनुमति (जवाज़) का विचार सबसे उपयुक्त है, जैसा कि अल-बदाइ' में हमारे उस्तादों से ज़ाहिर है।

[उर्दू पाठ ब्लॉक] फिर उन्होंने इसे बरकरार रखा और इसका समर्थन किया। 'हिलया' में रज़ी-उद-दीन की 'मुहीत' से उद्धृत है कि एक व्यक्ति ने नमाज़ पढ़ी और उसके साथ कुत्ते का बच्चा या ऐसी चीज़ थी जिसके जूठे से वज़ू करना जायज़ नहीं है। कहा गया कि नमाज़ जायज़ नहीं है, लेकिन ज़्यादा सही बात यह है कि अगर उसका मुँह खुला हो तो जायज़ नहीं है क्योंकि उसकी लार आस्तीन पर बहती रहेगी और वह लार से तर होकर नापाक हो जाएगी। इसलिए एक दिरहम से ज़्यादा होने की स्थिति में नमाज़ की वैधता में रुकावट बनेगी। और अगर उसका मुँह इस तरह बंद हो कि उसकी लार कपड़ों तक न पहुँचे, तो नमाज़ जायज़ है क्योंकि हर जानवर का बाहरी हिस्सा पाक है और वह मौत के बिना नापाक नहीं होता, जबकि अंदर की गंदगी अपने केंद्र में होती है। अत; नमाज़ी के अंदर की गंदगी की तरह उसका हुक्म भी ज़ाहिर नहीं होगा। अंत। ज़्यादा मुनासिब बात यह है कि यह विवरण उस कुत्ते के बारे में है जिसकी लार अक्सर बहती रहती है, क्योंकि जब उसकी लार ऐसी स्थिति में हो कि जो कुछ बहा वह उठाने वाले के नमाज़ से फ़ारिग होने से पहले उस हद तक पहुँच जाए जो नमाज़ के सही होने में रुकावट हो, तो चाहे उसका मुँह बंद कर दिया जाए, वह नमाज़ के लिए रुकावट होगा। और जो ऐसा न हो, उसमें मुतलक़ा (पूर्ण) जवाज़ का कहना ज़्यादा मुनासिब है, जैसा कि हमारे उस्तादों के उस कौल से ज़ाहिर है जो बदाइ' में है। (त)

[निचला हिस्सा] दूसरा नज़रिया: वे लोग जिनकी नज़र इस ओर गई कि लार मुँह की सतह पर पैदा नहीं होती बल्कि मांस के अंदर से पैदा होकर मुँह में आती है, तो मुँह से बाहर निकलने या न निकलने का कोई दखल न रहा क्योंकि वह अपने मूल स्थान से हट चुकी है। तो भले ही वह मुँह के बाहर आए,

नजासत (गंदगी) का हुक्म पाया जाएगा जैसे ख़ून जो अंदर से निकलकर मुँह और ज़बान की सतह पर आ जाए। अतः उक्त स्थिति में कुत्ते और अन्य हिंसक पशुओं के मुँह के अंदर ही लार का होना नजासत उठाने का कारण है। उन्होंने मुतलक़ा नमाज़ के फ़ासिद (अमान्य) होने का हुक्म दिया। खानिया, खुलासा, बज़ाज़िया, हिंदिया, ज़खीरा, मुसफ़्फ़ा, और मुनिया आदि में इसी...

[पाद लेख] 1. अत-ता'लीक़ अल-मुजल्ला साथ मुनियत अल-मुसल्ली, मसाइल इज़ाला अन-नजासत अल-हक़ीक़िया, मक़्तबा क़ादरिया जामिया निज़ामिया लाहौर, पृ. 158. 2. अत-ता'लीक़ अल-मुजल्ला साथ मु◌ियत अल-मुसल्ली, मसाइल इज़ाला अन-नजासत अल-हक़ीक़िया, मक़्तबा क़ादरिया जामिया निज़ामिया लाहौर, पृ. 158.

पृष्ठ 761 का 459

[عربی متن] إلی ثوبه جاز لان ظاهر کل حیوان طاهر ولا یتنجس الا بالموت ونجاسة باطنه فی معدنها فلا یظهر حکمها کنجاسة باطن المصلی انتهی والاشبه ان هذا التفصیل فی کلب من شانه غلبة سیلان لعابه بحیث یبلغ مایسیل منه قبل فراغ حامله ما یمنع صحة الصلاة وان سد فوه یمنع ذلك منه و ما لیس کذلك فالاشبه فیه اطلاق الجواز کما هو ظاهر ما في البدائع عن مشایخنا اهـ

[اردو ترجمہ و تشریح] پھر اسے برقرار رکھا اور اس کی تائید کی۔ اور حلیہ میں رضی الدین کی محیط سے منقول ہے کہ ایک شخص نے نماز پڑھی اور اس کے ساتھ کتے کا بچہ یا وہ چیز تھی جس کے جھوٹے سے وضو کرنا جائز نہیں ، کہا گیا ہے کہ نماز جائز نہیں لیکن زیادہ صحیح بات یہ ہے کہ اگر اس کا منہ کھلا ہوا ہو تو جائز نہیں کیونکہ اس کا لعاب آستین میں بہتا رہے گا اور وہ لعاب سے تر ہو کر ناپاک ہو جائے گی لہذا ایک درہم سے زیادہ ہونے کی صورت میں نماز کے جواز کو روکے گی اور اگر اس کا منہ اس طرح بند ہو کہ اس کا لعاب کپڑے تک نہ پہنچے تو نماز جائز ہے کیونکہ ہر حیوان کا ظاہر پاک ہے اور وہ موت کے بغیر ناپاک نہیں ہوتا جبکہ اندر کی نجاست اپنے مرکز میں ہے۔ پس نمازی کے اندر کی نجاست کی مثل اس کا حکم بھی ظاہر نہ ہوگا انتی۔ زیادہ مناسب بات یہ ہے کہ یہ تفصیل اس کتے کے بارے میں ہے جس کا لعاب اکثر جاری رہتا ہے کیونکہ اس کا لعاب جب اس صورت میں ہو کہ جو کچھ جاری ہوا وہ اٹھانے والے کے فارغ ہونے سے پہلے اس حد تک پہنچ جائے جو نماز کے صحیح ہونے سے مانع ہے اگرچہ اس کا منہ بند کیا جائے تو یہ نماز سے مانع ہو گا اور جو ایسا نہ ہو اس میں مطلقاً جواز (کا قول) زیادہ مناسب ہے جیسا کہ ہمارے مشائخ کے اس قول سے ظاہر ہے جو بدائع میں ہے۔ (ت)

[نیچے والا حصہ] مسلک دوم: جن کی نظر اس طرف گئی کہ لعاب سطح دہن میں پیدا نہیں ہوتا بلکہ باطن گوشت سے متولد ہو کر دہن میں آتا ہے تو منہ سے باہر نکلنے نہ نکلنے کو کچھ دخل نہ رہا کہ اپنے اصل موضع سے منتقل ہو چکا تو اگرچہ بیرون دہن آئے حکم نجاست پایا جیسے خون کہ اندر سے نکل کر دہن و زبان کی سطح پر آ جائے پس صورت مذکور میں دہنِ کلب وغیرہ سباع بہائم کے اندر ہی لعاب کا ہونا حملِ نجاست کا موجب ہے ، انہوں نے مطلقاً فسادِ نماز کا حکم دیا خانیہ و خلاصہ و بزازیہ و ہندیہ و ذخیرہ و مصفیٰ و منیہ وغیرہ میں اسی

[حواشی] 1 التعلیق المجلی مع منیۃ المصلی مسائل ازالۃ النجاسۃ الحقیقیۃ، مطبوعہ مکتبہ قادریہ جامعہ نظامیہ لاہور ص ۱۵۸ 2 التعلیق المجلی مع منیۃ المصلی، مسائل ازالۃ النجاسۃ الحقیقیۃ، مطبوعہ مکتبہ قادریہ جامعہ نظامیہ لاہور ص ۱۵۸

[Arabic Column Text] In the first four (books), the wording is nearly similar and the meaning is one. The context for Al-Wajiz is: if one prayed while having a living animal with them whose leftover water is permissible for ablution, such as a mouse, it is permissible though they acted wrongly. If its leftover water is impure, like a puppy or a dog, it is not permissible. In An-Nisab, it is stated that if the puppy's mouth is tied, it is permissible. (End). In Al-Hilyah, from Ad-Dhakhirah, from Al-Muntaqa, from Muhammad: If one prayed having a snake, cat, or mouse with them, it is sufficient but they acted wrongly. If it was a fox, a puppy, or a dog, their prayer is not valid. He mentioned a principle for this type of problem, saying: Whatever's leftover water is permissible for ablution, prayer with it is also permissible. And whatever's leftover water is not permissible for ablution, prayer with it is not permissible. (End). He said in Al-Hilyah after quoting this: But this is not without need for reflection, and we will clarify it, etc. The promised clarification is what we have already presented from it, that the most appropriate detail is regarding tying or leaving open for a dog of such nature, and the absolute permissibility for others. He said after his investigation: At that point, it appears that there is a matter to be reconsidered regarding the universality of the mentioned principle, so take note of it. (End). In Al-Munyah: if one prayed with a cat or a snake, it is permissible.

[Urdu Column Text] In the first four (books), the words are almost the same and the meaning as well. And the words of Wajiz (Bazzaziyya) are thus: If a person prayed and they had with them such a living animal whose leftover water is permissible for ablution, for example, a mouse, then the prayer will be valid but they will be a sinner. And if its leftover water is impure, like a puppy, then the prayer will not be valid. And in Nisab it is: if the puppy's mouth is tied, it will be permissible. (End). In Hilyah, with reference to Dhakhirah, the saying of Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) is quoted from Muntaqa that if a person prayed and they had a snake, a cat, or a mouse with them, the prayer is valid. But they committed a sin. And if it was a fox or a puppy, the prayer would not be valid. Regarding such matters, while mentioning a principle, he said: "When ablution is permissible with its leftover water, then prayer with it is also permissible, and for that whose leftover water is not permissible for ablution, prayer with it will not be permissible." (End). After quoting this, it is said in Hilyah: But this is not without need for reflection and we will soon clarify it, etc. The thing that was promised is the same that we...

1. Fatawa Bazzaziyya with Al-Fatawa al-Hindiyya, Vol. 7, Chapter on Impurities, Nurani Kutub Khana, Peshawar, 4/41.
2. Hilyat al-Mahalli.
3. Hilyat al-Mahalli.

[अरबी कॉलम का पाठ] पहली चार (पुस्तकों) में शब्दावली लगभग समान है और अर्थ भी एक ही है। अल-वजीज़ का संदर्भ इस प्रकार है: यदि किसी ने नमाज़ पढ़ी और उसके पास ऐसा जीवित जानवर था जिसका जूठा पानी वज़ू के लिए जायज़ है, जैसे कि चूहा, तो यह जायज़ है हालांकि उसने गलत किया। यदि उसका जूठा पानी नापाक हो, जैसे कुत्ते का बच्चा या कुत्ता, तो यह जायज़ नहीं है। अन-निसाब में कहा गया है कि यदि कुत्ते के बच्चे का मुँह बंधा हुआ हो, तो यह जायज़ है। (समाप्त)। अल-हल्या में, अज़-ज़खीरा से, अल-मुन्तक़ा से, मुहम्मद से: यदि किसी ने नमाज़ पढ़ी और उसके पास सांप, बिल्ली या चूहा था, तो यह पर्याप्त है लेकिन उसने गलत किया। यदि यह लोमड़ी, कुत्ते का बच्चा या कुत्ता था, तो उनकी नमाज़ जायज़ नहीं है। उन्होंने इस प्रकार की समस्याओं के लिए एक सिद्धांत का उल्लेख करते हुए कहा: जिस किसी का जूठा पानी वज़ू के लिए जायज़ है, उसके साथ नमाज़ भी जायज़ है। और जिस किसी का जूठा पानी वज़ू के लिए जायज़ नहीं है, उसके साथ नमाज़ जायज़ नहीं है। (समाप्त)। उन्होंने अल-हल्या में इसे उद्धृत करने के बाद कहा: लेकिन यह चिंतन की आवश्यकता के बिना नहीं है, और हम इसे स्पष्ट करेंगे आदि। वादा किया गया स्पष्टीकरण वही है जो हम पहले ही इससे प्रस्तुत कर चुके हैं, कि सबसे उपयुक्त विवरण इस प्रकार के कुत्ते के लिए बाँधने या खुला छोड़ने के संबंध में है, और दूसरों के लिए पूर्ण अनुमति है। उन्होंने अपनी जांच के बाद कहा: उस बिंदु पर, ऐसा प्रतीत होता है कि उल्लिखित सिद्धांत की सार्वभौमिकता के संबंध में पुनर्विचार करने का विषय है, इसलिए इसे ध्यान में रखें। (समाप्त)। अल-मुन्या में है: यदि किसी ने बिल्ली या सांप के साथ नमाज़ पढ़ी, तो यह जायज़ है।

[उर्दू कॉलम का अनुवाद] पहली चार (किताबों) में शब्द लगभग एक जैसे हैं और अर्थ भी। और वजीज़ (बज़ाज़िया) के शब्द इस प्रकार हैं: यदि किसी व्यक्ति ने नमाज़ पढ़ी और उसके पास ऐसा जीवित जानवर था जिसके जूठे पानी से वज़ू जायज़ है, उदाहरण के लिए चूहा, तो नमाज़ जायज़ होगी लेकिन वह गुनहगार होगा। और यदि उसका जूठा नापाक हो जैसे कुत्ते का बच्चा, तो नमाज़ जायज़ नहीं होगी। और निसाब में है: यदि कुत्ते के बच्चे का मुँह बंधा हुआ हो तो जायज़ होगी। (समाप्त)। हल्या में ज़खीरा के हवाले से मुन्तक़ा से इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाहि अलैहि) का यह कथन उद्धृत किया गया है कि यदि किसी ने नमाज़ पढ़ी और उसके पास सांप, बिल्ली या चूहा था, तो नमाज़ जायज़ है, लेकिन उसने गुनाह किया। और यदि लोमड़ी या कुत्ते का बच्चा हो, तो नमाज़ जायज़ नहीं होगी। इस तरह के मुद्दों के बारे में एक नियम का उल्लेख करते हुए फ़रमाया: "जब इसके जूठे से

वज़ू जायज़ हो, तो इसके साथ नमाज़ भी जायज़ होगी, और जिसके जूठे से वज़ू जायज़ न हो, उसके साथ नमाज़ जायज़ नहीं होगी।" (समाप्त)। इसे उद्धृत करने के बाद हल्या में फ़रमाया गया: लेकिन यह गौर-ओ-फ़िक्र (विचार) से ख़ाली नहीं है और हम जल्द ही इसकी व्याख्या करेंगे आदि। जिस बात का वादा किया गया है, वह वही है जो हम...

---

1. फ़तावा बज़ाज़िया साथ में अल-फ़तावा अल-हिंदिया, सातवाँ भाग, नजासत का अध्याय, नूरानी कुतुब ख़ाना, पेशावर, 4/41।
2. हल्यातुल महली।
3. हल्यातुल महली।

पृष्ठ 460/761

[عربی کالم] ففی الاربع الاول اللفظ متقارب والمعنی واحد والسیاق للوجیز صلی ومعه حیوان حی یجوز التوضئ بسؤره کالفأرة یجوز واساء وان کان سؤره نجسا کجروکلب لا یجوز وفی النصاب ان کان الجرو مشدود الفم یجوز اهـ وفي الحلیة عن الذخیرة عن المنتقی عن محمد صلی ومعه حیة اوسنورا وفأرة اجزأه وقد اساء وان کان ثعلب او جر وکلب لم تجز صلاته وذکر فی جنس هذه المسائل اصلاً فقال کل ما یجوز التوضئ بسؤره تجوز الصلاة معه وما لا یجوز الوضوء بسؤره لا تجوز الصلاة معه انتهی۔ قال فی الحلیة بعد نقله ولکن لا یعری عن تأمل وسنوضحه الخ والموعود به هو ما قدمنا عنها من ان الاشبه التفصیل بالشد والفتح فی کلب شانه کذا واطلاق الجواز فی غیره قال بعد تحقیقه وحینئذ فیظهر ان فی کلیة الاصل المذکور نظراً فتنبه له اهـ وفی المنیة ان صلی ومعه سنوراً وحیة یجوز

[اردو کالم] پہلی چار (کتب) میں الفاظ تقریباً ایک جیسے ہیں اور معنے بھی، اور وجیز (بزازیہ) کے الفاظ یوں ہی کسی آدمی نے نماز پڑھی اور اس کے پاس ایسا زندہ حیوان تھا جس کے جھوٹے سے وضو جائز ہے مثلاً چوہا، تو نماز جائز ہو گی لیکن گناہ گار ہوگا اور اگر اس کا جھوٹا ناپاک ہو جیسے کتے کا بچہ، تو نماز جائز نہیں ہوگی۔ اور نصاب میں ہے اگر کتے کے بچے کا منہ بندھا ہوا ہو تو جائز ہو گی۔ انتہی۔ حلیہ میں بحوالہ ذخیرہ، منتقی سے امام محمد رحمہ اللہ کا قول نقل کیا کہ کسی شخص نے نماز پڑھی اور اس کے پاس سانپ یا بلی یا چوہا تھا تو نماز جائز ہے۔ لیکن اس نے گناہ کیا۔ اور اگر لومڑی یا کتے کا بچہ ہو تو نماز جائز نہ ہو گی اور اس قسم کے مسائل کے بارے میں قاعدہ ذکر کرتے ہوئے فرمایا: "جب اس کے جھوٹے سے وضو جائز ہو تو اس کے ساتھ نماز بھی جائز ہو گی اور جس کے جھوٹے سے وضو جائز نہ ہو اس کے ساتھ نماز جائز نہ ہو گی

انتہی۔ اسے نقل کرنے کے بعد حلیہ میں فرمایا لیکن یہ غور و فکر سے خالی نہیں اور ہم عنقریب اس کی وضاحت کرینگے الخ، جس بات کا وعدہ کیا گیا ہے یہ وہی ہے جو ہم

---

۱ فتاوی بزازیہ مع الفتاوی الہندیہ السابع فی النجس نورانی کتب خانہ پشاور ۴/۴۱ ۲ حلیۃ المحلی ۳ حلیۃ المحلی

Fatawa Razawiyya, Volume 4

- Contrary to the puppy, etc.
- It is mentioned in 'Al-Ghunya': It should not be said that the impurity in its original place is disregarded and is not given the ruling of impurity. We say: We concede this, but the saliva has moved from its original place of formation and connected to the mouth, which is ruled as 'outward' considering what emerges from the 'inward'. Thus, it is considered impure. Its tongue and the rest of its mouth become impure through it, thus acting as a preventative [from prayer]. (Summarized).
- (Urdu Commentary): ...had narrated from him before this, meaning the detail regarding tying or leaving the mouth open is about a dog of such a nature, and absolute permissibility applies to others. After research, he said: At this time it appears there is room for further consideration in the aforementioned rule, so be aware of it. (End). It is in 'Munya': If someone prayed and a cat or snake was with them, it would be permissible, unlike a puppy. (End). It is in 'Ghunya': Let it not be said that the impurity in its original place is disregarded and not given the ruling of impurity, because we say: we have conceded that, but saliva moves from its place of origin and joins the mouth, which is given the ruling of 'external' by looking at it as something coming out from the internal. Therefore, its impurity will be considered, and because of it, its tongue and entire mouth have become impure, so it will be a barrier [to prayer]. (Summarized translation).

This legal branch (far'a) is not based solely on the purity of the essence itself, but also requires the purity of saliva for the validity of prayer. This is absent in dogs and other predatory beasts. Therefore, the validity of prayer is also absent, even if the essence itself were pure. In such a case, 'Al-Mabni 'ala Sahih' is not correct. This was a disagreement among scholars; looking at the preference, it leans towards the first path (maslak). In 'Muheet Razawi', 'Bahr al-Ra'iq', 'Durr al-Mukhtar', etc., its correction is explicitly mentioned with the word 'Asah' (most correct), and in 'Hulyah' with the word 'Ashbah' (most similar).

- As passed before, the learned jurist Khayr al-Din al-Ramli explicitly stated in his 'Fatawa al-Khayriyya li-Naf' al-Bariyya', from the Chapter of Divorce, as follows: "And you know well that after the explicit text of its being 'Asah' (the most

correct), one does not deviate from it to anything else." (End). And in the same [book], from the Chapter of Reconciliation (Sulh), where...

- (Urdu translation): As mentioned, the jurist Allama Khayr al-Din Ramli explicitly stated this in his 'Fatawa al-Khayriya' in the Book of Divorce. You know that after the specification of something being the most correct ('asah'), a shift to something else is not made. (End). And in his Book of Reconciliation, it is stated that when 'asah' is proven...
- Munyat al-Musalli, Chapter of Leftover Water (Al-As'ar), published by Maktaba Qadriah, Jamia Nizamia, Lahore, p. 158.
- Ghunyat al-Mustamli, Chapter of Leftover Water (Al-As'ar), published by Suhail Academy, Lahore, p. 191.
- Fatawa Khayriyya, Book of Divorce, published by Dar al-Ma'rifa, Beirut, 1/39.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4

- कुत्ते के पिल्ले के विपरीत, इत्यादि।
- 'अल-गुनिया' में है: यह नहीं कहा जाना चाहिए कि अपनी मूल जगह पर मौजूद अशुद्धता (नजासत) का कोई महत्त्व नहीं है और उसे अशुद्धता का हुक्म नहीं दिया जाएगा। हम कहते हैं: हमने यह स्वीकार किया, लेकिन लार (لعاب) अपने बनने के मूल स्थान से हटकर मुँह तक पहुँच गई है, जिसे आंतरिक भाग से बाहर आने वाली चीज़ों को देखते हुए 'बाहरी' (ज़ाहिर) होने का हुक्म दिया जाता है। इसलिए इसे अशुद्ध माना गया। उसकी जीभ और पूरा मुँह उससे अशुद्ध हो गया, अतः वह नमाज़ के लिए बाधक होगा। (संक्षिप्त)।
- (उर्दू टिप्पणी): ...ने इससे पहले उनसे नकल की है, यानी मुँह बाँधने और खुला छोड़ने का विवरण उस कुत्ते के बारे में है जो इस तरह का हो, और पूर्ण अनुमति दूसरों के लिए है। शोध के बाद उन्होंने कहा: इस समय यह प्रतीत होता है कि उक्त नियम में विचार करने की गुंजाइश है, इसलिए इसके बारे में जागरूक रहें। (समाप्त)। 'मुन्या' में है: यदि किसी ने नमाज़ पढ़ी और उसके पास बिल्ली या सांप हो, तो यह जायज़ होगा, कुत्ते के पिल्ले के विपरीत। (समाप्त)। 'ग़ुनिया' में है: यह न कहा जाए कि जो नजासत अपने स्थान पर है वह अविश्वसनीय है और उसे नजासत का हुक्म नहीं दिया जाएगा, क्योंकि हम कहते हैं: हमने उसे मान लिया लेकिन लार अपने उस स्थान से जहाँ वह पैदा हुई, स्थानांतरित होकर मुँह से मिल जाती है जिसे बातिन (अंदर) से बाहर आने वाली चीज़ की तरफ देखते हुए ज़ाहिर (बाहर) का हुक्म दिया जाता है। इसलिए उसकी नजासत का विचार होगा और उससे उसकी ज़बान और पूरा मुँह नापाक हो गया, अतः वह (नमाज़ के लिए) बाधक होगा। (सारांश)।

इस मज़हब (मसलक) पर यह उप-नियम (फरअ) न केवल स्वयं शुद्ध होने पर आधारित है, बल्कि इसके साथ नमाज़ की वैधता के लिए लार की शुद्धता भी आवश्यक है, जो कुत्ते और अन्य हिंसक जानवरों में नहीं पाई जाती। इसलिए नमाज़ की वैधता भी समाप्त हो जाती है, भले ही वह स्वयं शुद्ध (ताहिरुल ऐन) ही क्यों न हो। ऐसी स्थिति में 'अल-मबनी अलल सहीह' सही नहीं है। यह तो विद्वानों के बीच मतभेद था; यदि प्राथमिकता (तरजीह) देखें, तो वह पहले मज़हब की ओर ही है। 'मुहीत रज़वी',

'बहरुल रायक', 'दुर्रे मुख्तार' आदि में स्पष्ट रूप से 'असह' (सबसे सही) शब्द के साथ इसकी पुष्टि की गई है, और 'हुल्या' में 'अशबह' शब्द के साथ इसका उल्लेख है।

- जैसा कि पहले बीत चुका है, विद्वान न्यायविद खैर अल-दीन अल-रम्ली ने अपने 'फ़तावा अल-खैरिया' में तलाक के अध्याय में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है: "और आप अच्छी तरह जानते हैं कि किसी चीज़ के'असह' (सबसे सही) होने के स्पष्ट उल्लेख के बाद, उससे हटकर किसी और चीज़ की ओर नहीं जाया जाता।" (समाप्त)। और इसी पुस्तक में सुलह (समझौते) के अध्याय में है कि जब 'असह' प्रमाणित हो जाए...
- (उर्दू अनुवाद): जैसा कि गुज़रा, अल्लामा फ़कीह खैर अल-दीन रम्ली ने अपने 'फ़तावा अल-खैरिया' की किताबुल तलाक में इसे स्पष्ट रूप से बयान किया और तुम जानते हो कि इसके 'असह' होने पर स्पष्ट उल्लेख (तंसीस) के बाद किसी और तरफ नहीं मुड़ा जाता। (समाप्त)। और उनकी किताबुल सुलह में है कि जब 'असह' साबित हो जाए...

- मुन्यातुल मुसल्ली, फ़स्लुल असाआर, प्रकाशित मकतबा कादरिया, जामिया निज़ामिया, लाहौर, पृष्ठ 158।

- गुन्यातुल मुस्तमली, फ़स्लुल असाआर, प्रकाशित सुहैल अकादमी, लाहौर, पृष्ठ 191।
- फ़तावा खैरिया, किताबुल तलाक, प्रकाशित दारुल मारिफ़ा, बेरूत, 1/39।

पृष्ठ 461 / 761

بخلاف جرو الکلب اھ وفی الغنیۃ لا یقال النجاسۃ التی فی محلھا غیر معتبرۃ ولا یعطی لھا حکم النجاسۃ لأنا نقول سلمنا ولکن اللعاب قد انتقل عن محلہ الذی تولد فیہ واتصل بالفم الذی لہ حکم الظاہر بالنظر الی ما یخرج من الباطن فاعتبر نجاسۃ وقد تنجس بھا لسانہ وسائر فمہ فکان مانعا اھ ملخصاً۔

نے اس سے پہلے ان سے نقل کی ہے یعنی منہ باندھنے اور کھلا چھوڑنے کی تفصیل اس کتے کے بارے میں ہے جو اس شان کا ہو اور مطلق جواز اس کے غیر میں ہے انہوں نے تحقیق کے بعد فرمایا اس وقت ظاہر ہوتا ہے کہ مذکورہ قاعدے میں نظر ہے پس اس سے آگاہی حاصل کرو (انتی) منیہ میں ہے کہ اگر کسی نے نماز پڑھی اور اس کے پاس بلی یا سانپ ہو تو جائز ہو گی، بخلاف کتے کے بچے کے انتی۔ غنیہ میں ہے یہ نہ کہا جائے کہ جو نجاست اپنے محل میں ہے غیر معتبر ہے اور اس کو نجاست کا حکم نہیں دیا جائے گا کیونکہ ہم کہتے ہیں ہم نے مان لیا لیکن لعاب اپنے اس مقام سے جہاں وہ پیدا ہوا منتقل ہو کر منہ سے مل جاتا ہے جسے باطن سے باہر آنے والی چیز کی طرف نظر کرتے ہوئے ظاہر کا حکم دیا جاتا ہے لہٰذا اس کی نجاست کا اعتبار ہوگا اور اس سے اس کی زبان اور تمام منہ ناپاک ہو گیا پس وہ مانع ہوگا انتی تلخیص۔ (ت)

اس مسلک پر یہ فرع صرف طہارتِ عین پر مبنی نہیں بلکہ اس کے ساتھ صحت صلاۃ کے لئے طہارتِ لعاب بھی درکار اور وہ کلب وغیرہ سباع بہائم میں مفقود، لہٰذا صحت نماز بھی مفقود اگرچہ طاہر العین ہی ہو ایسی جگہ المبنی علی صحیح صحیح نہیں یہ تو اختلاف علماء تھا ترجیح دیکھئے تو وہ مسلک اول ہی کی طرف ہے محیط رضوی و بحر الرائق و دُر مختار و غیرہا میں صراحۃً اس کی تصحیح بلفظ اصح اور حلیہ میں بلفظ اشبہ مذکور۔

كما مر وقد صرح العلامة الفقیہ خیر الدین الرملی فی فتاواہ الخیریۃ لنفع البریۃ من کتاب الطلاق بما نصہ وانت علی علم بأنہ بعد التنصیص علی اصحیتہ لا یعدل عنہ الی غیرہ اھ وفیھا من کتاب الصلح حیث

جیسا کہ گزرا علامہ فقیہ خیر الدین رملی نے اپنے فتاوی الخیریہ لنفع البریہ کی کتاب الطلاق میں اسے صراحۃً بیان کیا اور تم جانتے ہو کہ اس کے اصح ہونے پر تنصیص کے بعد غیر کی طرف عدول نہیں کیا جاتا انتی اور اس کی کتاب الصلح میں ہے کہ جب اصح ثابت

1 منیہ المصلی، فصل الاسآر مطبوعہ مکتبہ قادریہ جامعہ نظامیہ لاہور ص ۱۵۸ 2 غنیۃ المستملی فصل الاسآر مطبوعہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۹۱ 3 فتاوی خیریہ کتاب الطلاق مطبوعہ دار المعرفۃ بیروت ۳۹/۱

Fatawa Razawiyyah, Volume 4

"Once the most correct [view] is established, it is not deviated from."[1] Therefore, it is not deviated from. (Translator) Furthermore, most of the books in which the first position was adopted are commentaries (shuruh), and those who mostly follow the second position in fatwas and commentaries on fatwas are explicit. As they have stated in countless places (as they have clarified this point in many locations. T), it is proven that basing this subsidiary branch (far') on the most preferred school of thought, like previous branches, is only based on the purity of the essence itself. In such a case, without a doubt, 'what is built on the correct is correct' (what is based on something correct is itself correct. T).

[Arabic Section]: As for the precision of 'Ghuniyah', I say: And by the grace of Allah, we concede that saliva is not generated in the mouth. However, there is no doubt that its source (ma'dan) is the mouth, to the extent that it is not called saliva unless it appears in the mouth. In this regard, it differs from blood. It is not necessary for something to be the source of something that it must be generated in it. Do you not see that blood vessels are the source of blood? There is no doubt about it, yet it is not generated in them; rather, it is generated in the liver, then it spreads to them and flows within them. We showed you the issue of a kid (young goat) that, when born wet from its mother, falls into water; it does not spoil it. You explained the cause by saying, 'And this is because the moisture on it is not impure because it is in its proper place.'[2] اھ۔ So, if the moisture of the mother's womb on the skin of the kid is in its proper place, then what do you think about saliva in the mouth? Indeed, in my investigation, both the denial of being in the place for this [saliva] and the affirmation of it for the kid's moisture are somewhat of an oversight.

[Urdu Section]: Regarding the precision of Ghuniyah, I say by the grace of Allah Almighty, we have accepted that saliva is not produced in the mouth. But there is no doubt that its source is the mouth itself, even so that until it appears in the mouth, it is not called saliva, and from this, the rule for blood became separate. It is not necessary for anything being a source for something that it must also be produced in it. Do you not see that the source of blood is the veins? There is no doubt in it, but despite this, it is not produced there; rather, it is produced in the liver, then it moves towards them and flows in the veins. We showed you that a wet kid of a goat that fell into water after being born from its mother, the water did not become impure. You described its cause as follows: the moisture on it is not impure because it is in its

place. اھـ. So when the moisture of the mother's womb on the skin of the kid is in its place, then those found in the mouth...

[1] Fatawa Khairiyah, Kitab al-Sulh, published by Dar al-Ma'rifah, Beirut, 2/102. [2] Ghuniyat al-Mustamli, Chapter on Impurities, published by Sohail Academy, Lahore, p. 150.

फ़तावा रज़वियह, खंड 4

"जब सबसे सही (विचार) स्थापित हो जाता है, तो उससे विचलित नहीं हुआ जाता।"[1] अतः, उससे विचलन नहीं किया जाता। (अनुवादक) इसके अलावा, अधिकांश पुस्तकें जिनमें पहला पक्ष अपनाया गया है, वे शरह (व्याख्याएं) हैं, और दूसरे पक्ष पर चलने वाले अधिकांश फ़तवा और फ़तवों की शरह में स्पष्ट हैं। जैसा कि उन्होंने अनगिनत स्थानों पर स्पष्ट किया है (जैसा कि उन्होंने कई स्थानों पर इस बात की व्याख्या की है। ट), तो यह सिद्ध हुआ कि सबसे अधिक प्राथमिकता वाले संप्रदाय पर इस उप-शाखा (फ़रअ) को भी पिछले उप-शाखाओं की तरह केवल स्वयं की पवित्रता पर आधारित करना है। और ऐसे स्थान पर निःसंदेह 'जो सही पर आधारित है वह सही है' (जो चीज़ सही पर आधारित होती है वह सही होती है। ट)।

[अरबी अनुभाग]: ग़ुनिया की सटीकता के संबंध में, मैं कहता हूँ: और अल्लाह की तौफ़ीक़ से, हमने मान लिया कि मुँह में लार पैदा नहीं होती। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि इसका स्रोत (मादन) मुँह ही है, यहाँ तक कि जब तक वह मुँह में दिखाई न दे उसे लार नहीं कहा जाता। और इस तरह वह रक्त से अलग है। और किसी चीज़ के किसी के लिए स्रोत होने से यह आवश्यक नहीं होता कि वह उसमें पैदा भी हो। क्या तुम नहीं देखते कि रक्त का स्रोत नसें हैं? इसमें कोई संदेह नहीं है, लेकिन इसके बावजूद वह वहाँ पैदा नहीं होता, बल्कि वह यकृत (जिगर) में पैदा होता है, फिर उनकी ओर चलता है और नसों में प्रवाहित होता है। हमने तुम्हें दिखाया कि बकरी का बच्चा जब अपनी माँ से गीला पैदा होकर पानी में गिर जाता है, तो वह उसे खराब नहीं करता। तुमने इसका कारण यह बताया, 'और यह इसलिए है क्योंकि उस पर जो नमी है वह अशुद्ध नहीं है क्योंकि वह अपने स्थान पर है।'[2] अ.ह.। तो, यदि बच्चे की त्वचा पर उसकी माँ के गर्भाशय की नमी अपने स्थान पर है, तो मुँह में लार के बारे में तुम्हारा क्या विचार है? वास्तव में, मेरी जाँच के अनुसार, इसके लिए स्थान में होने से इनकार करना और बच्चे की नमी के लिए इसे स्वीकार करना, दोनों ही कुछ हद तक भूल (सहव) हैं।

[उर्दू अनुभाग]: गुनिया की सटीकता के बारे में, मैं अल्लाह सर्वशक्तिमान की तौफ़ीक़ से कहता हूँ, हमने मान लिया है कि मुँह में लार पैदा नहीं होती है। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि इसका स्रोत मुँह ही है, यहाँ तक कि जब तक वह मुँह में दिखाई न दे, उसे लार नहीं कहा जाता है, और इससे रक्त के लिए नियम अलग हो गया। किसी भी चीज़ का किसी चीज़ का स्रोत होने के लिए यह आवश्यक नहीं है कि वह उसमें उत्पन्न भी हो। क्या आप नहीं देखते कि रक्त का स्रोत नसें हैं? इसमें कोई संदेह नहीं है, लेकिन इसके बावजूद वह वहाँ उत्पन्न नहीं होता है; बल्कि वह यकृत में उत्पन्न

होता है, फिर उनकी ओर बढ़ता है और नसों में प्रवाहित होता है। हमने आपको दिखाया कि बकरी का एक गीला बच्चा जो अपनी माँ से पैदा होने के बाद पानी में गिर गया, पानी अशुद्ध नहीं हुआ। आपने इसका कारण इस प्रकार बताया: उस पर जो नमी है वह अशुद्ध नहीं है क्योंकि वह अपने स्थान पर है। अ.ह.। तो जब बच्चे की त्वचा पर उसकी माँ के गर्भाशय की नमी अपने स्थान पर है, तो मुँह में पाए जाने वाले...

[1] फ़तावा खैरियाह, किताब अल-सुल्ह, दार अल-मारिफ़ा, बेरूत, 2/102। [2] ग़ुनियत अल-मुस्तमली, अशुद्धियों पर अध्याय, सुहैल अकादमी, लाहौर, पृष्ठ 150।

ثبت الاصح لا یعدل عنه[1]۔ ہو جائے تو اس سے عدول نہیں کیا جاتا۔ (ت) معہذا اکثر وہ کتابیں جن میں مسلک اول اختیار فرمایا شروح ہیں اور مسلک دوم پر اکثر مشی کرنے والے فتاوی اور شروح فتاوی پر مریح ہیں۔ کما نصوا علیہ فی مواضع لا تحصی کثرۃ (جیسا کہ انہوں نے بیشمار مقامات پر اس بات کی تصریح فرمائی ہے۔ ت) تو ثابت ہوا کہ مذہب ارجح پر اس فرع کو بھی مثل فروع سابقہ صرف طہارت عین ہی پر ابتناء ہے اور ایسی جگہ بلا شبہ المبنی علی صحیح صحیح (جو چیز صحیح پر مبنی ہوتی ہے وہ صحیح ہوتی ہے۔ ت)

اما تدقیق الغنیة فاقول: وبالله التوفیق سلمنا ان الریق لایتولد فی الفم لکن لاشك ان معدنه هو الفم حتی انه لایسمی ریقا مالم یطلع في الفم و به فارق الدم ولا یجب لکون شیئ معدن شیئ تولده فیه الا تری ان العروق معادن الدم لاشك مع انه لایتولد فیها بل فی الکبد ثم یسری الیها ویجری فیها وقدرأیناکم فی مسئلة ان السخلة اذا وقعت من امها رطبة فی الماء لا تفسده عللتموها بقولکم وهذا لان الرطوبة التي علیها لیست بنجسة لکونها فی محلها[2] اه اما فاذا کانت رطوبة رحم امها علی جلدها فی محلها فما ظنکم بالریق فی الفم بل التحقیق عندی ان نفی الکون فی المحل عن هذا واثباته لرطوبة السخلة کلاهما سهوا ما

میں غنیہ کی تدقیق کے بارے میں ، اللہ تعالٰی کی توفیق سے کہتا ہوں ، ہم نے مان لیا کہ لعاب منہ میں پیدا نہیں ہوتا۔ لیکن اس میں شک نہیں کہ اس کا معدن منہ ہی حتی کہ جب تک وہ منہ میں ظاہر نہ ہو اس کو لعاب نہیں کہا جاتا اور اس سے خون (کا حکم) الگ ہوگیا، اور کسی چیز کے کسی کیلئے معدن ہونے سے لازم نہیں آتا کہ وہ اس میں پیدا بھی ہو کیا تم نہیں دیکھتے کہ خون کا معدن رگیں ہیں اس میں کوئی شک نہیں لیکن اس کے باوجود وہاں پیدا نہیں ہوتا بلکہ وہ جگر میں پیدا

ہوتا ہے پھر ان کی طرف چلتا اور رگوں میں جاری ہوتا ہے۔ ہم نے تمہیں دکھایا کہ بکری کا تر بچہ جو اپنی ماں سے پیدا ہو کر پانی میں گرا پانی خراب نہیں ہوا تم نے اس کی علت یوں بیان کی کہ اس پر جو رطوبت ہے وہ ناپاک نہیں کیونکہ وہ اپنے محل میں ہے اھ پس جب بچے کی جلد پر اس کی ماں کے رحم کی رطوبت اپنے محل میں ہے تو منہ میں پائے جانے والے

[1] فتاوی خیریۃ کتاب الصلح مطبوعہ دار المعرفۃ بیروت ۱۰۲/۲ [2] غنیۃ المستملی فصل فی الانجاس مطبوعہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۵۰

Volume 4 Fatawa Rizvia What is your opinion about saliva? Rather, in my view, the research is that both points—its not being in its place and the establishment of the moisture of a goat's kid in its place—are errors. The first point is based on what you have heard. And the second point is because that place is its source, wherein the ruling of impurity will not apply to the (found) impurity, nor to that which reaches it. And the source of those moistures is the womb, not the skin of the kid, as is not hidden. And the subsidiary ruling proceeds upon the statement of Imam-e-Azam (may Allah have mercy on him) that the womb's moisture is pure. We have researched this issue in our annotation on Radd al-Muhtar, that the word 'farj' (vagina) in their statement "The moisture of the vagina is pure according to Imam-e-Azam (may Allah have mercy on him), not according to the two companions," includes the external vagina, internal vagina, and the womb altogether in its general sense. And the contradiction seen in the subsidiary branches is based on the derivation from these two statements. (T) Thus, it is established that in both these issues, the primary and the subsidiary, Zaid's discourse arises from exact correctness and proceeds upon the correct, predominant, explicit, and most preferred view. Such should be the research, and Allah Almighty is the Grantor of success. (Research should be like this and Allah Almighty is the one who grants success. - T) Significant Warning: Every rational person of knowledge knows that there is a vast difference between 'permissibility' (jawaz) meaning 'validity' (sihhat) and meaning 'permissibility' (ibahat), especially 'permissibility' in the specific sense that does not include 'tanzihi' (mild) dislike—meaning the equality of the two sides. (Especially permissibility in the most specific sense which does not include tanzihi dislike, i.e., both sides being equal. - T). The first (validity) by no means necessitates the second (specific permissibility). Many actions that are mildly disliked (tanzihi), rather severely disliked (tahrimi), or even forbidden (haram) are not contrary to the validity of prayer. Thus, prayer becomes 'permissible' along with those actions—meaning it is valid and fulfills the obligation; it will not be a 'permissible' or 'allowed' (mubah) action in the aforementioned sense, but rather haram, sinful, or disliked. The noble scholars of the first school, who state that prayer is permissible while carrying a dog or other predatory animals except for swine, are speaking of permissibility in terms of validity (sihhat). That is, the presence of these animals is not a deficiency in any condition of prayer like purity, etc., nor is it a negator of any pillar or obligatory part of prayer; so the prayer will not be nullified, and the obligation will be discharged. God forbid, they do not say that such an action without a Shari'a necessity is not disliked or unwanted; far from it, whether it's a dog or anything else.

भाग 4 फ़तावा रज़विया लार के बारे में आपका क्या विचार है? बल्कि मेरे निकट शोध यह है कि उसका अपने स्थान पर न होना और बकरी के बच्चे की नमी का अपने स्थान पर सिद्ध होना, दोनों बातें त्रुटिपूर्ण हैं। पहली बात उस आधार पर है जो आपने सुन ली। और दूसरी बात इसलिए कि वह स्थान उसका स्रोत (मअदन) है, जिसमें (पाई जाने वाली) अशुद्धि (नजासत) पर अशुद्धि का हुक्म नहीं लगेगा, और न ही उस पर जो वहाँ पहुँचे। और उन नमियों का स्रोत गर्भाशय (रहम) है, न कि मेमने की खाल, जैसा कि छिपा नहीं है। और उप-नियम इमाम-ए-आज़म रहमतुल्लाह अलैहि के उस कथन पर आधारित है कि गर्भाशय की नमी शुद्ध है। हमने 'रद-अल-मुह्तार' की अपनी टिप्पणी में इस मसले की तहकीक की है कि उनके कथन में "योनि की नमी इमाम-ए-आज़म रहमतुल्लाह अलैहि के निकट शुद्ध है, साहिबैन के निकट नहीं", 'योनि' (फ़रज) अपने सामान्य अर्थ में बाहरी योनि, आंतरिक योनि और गर्भाशय सभी को सम्मिलित करती है। और उप-नियमों में जो विरोधाभास दिखाई देता है, वह इन दो कथनों पर आधारित निष्कर्षण (तफ़रीअ) के कारण है। (त) अतः यह सिद्ध हुआ कि इन दोनों मसलों, मूल और शाखा, में ज़ैद की बात बिल्कुल सही है और सही, प्रबल, स्पष्ट और सर्वाधिक अधिमान्य कथन के अनुरूप है। शोध इसी प्रकार होनी चाहिए और अल्लाह तआला ही तौफ़ीक़ देने वाला है। (शोध इसी तरह होनी चाहिए और अल्लाह तआला ही तौफ़ीक़ देने वाला है। - त) सार्थक चेतावनी: प्रत्येक बुद्धिमान विद्वान जानता है कि 'जवाज़' का अर्थ 'वैधता' (सिह्हत) होना और 'जवाज़' का अर्थ 'अनुमेयता' (इबाहत) होना—विशेष रूप से उस विशिष्ट अर्थ में अनुमेयता जिसमें 'कराहत-ए-तन्ज़ीही' (हल्की नापसंदगी) शामिल न हो, अर्थात दोनों पक्षों का बराबर होना—इन दोनों में ज़मीन-आसमान का अंतर है। पहला (वैधता) किसी भी तरह दूसरे (विशिष्ट अनुमेयता) को अनिवार्य नहीं करता। बहुत से कार्य जो 'कराहत-ए-तन्ज़ीही', बल्कि 'तहरीमी' (गंभीर नापसंदगी), यहाँ तक कि हराम हैं, वे नमाज़ की शुद्धता (वैधता) के विपरीत नहीं होते। अतः नमाज़ उन कार्यों के साथ 'जायज़' हो गई—अर्थात वह सही है और फ़र्ज़ अदा हो जाता है; वह उपर्युक्त अर्थ में 'जायज़' और 'मुबाह' (अनुमेय) कार्य नहीं होगा, बल्कि हराम, पाप या नापसंद होगा। प्रतिष्ठित विद्वान जो सूअर को छोड़कर कुत्ते या अन्य हिंसक जानवरों को उठाने के साथ नमाज़ को जायज़ बताते हैं, वे 'जवाज़' से तात्पर्य 'वैधता' (सिह्हत) ले रहे हैं। अर्थात, इन जानवरों का साथ होना नमाज़ की किसी शर्त, जैसे पवित्रता आदि में कमी नहीं है, और न ही नमाज़ के किसी स्तंभ (रुकन) या फ़र्ज़ के विपरीत है; अतः नमाज़ अमान्य नहीं होगी और फ़र्ज़ उतर जाएगा। खुदा न करे, वे यह नहीं कहते कि बिना शरीअत की आवश्यकता के ऐसा कार्य नापसंद या घृणित नहीं है; कदापि नहीं, चाहे वह कुत्ता हो या कोई और।

جلد چہارم فتاوی رضویہ لعاب کے بارے میں تمہارا کیا خیال ہے؟ بلکہ میرے نزدیک تحقیق یہ ہے کہ اس کا اپنے محل میں نہ ہونا اور بکری کے بچے کی رطوبت کا اپنے محل میں ثابت ہونا دونوں باتیں سہو ہیں۔ پہلی بات اس بنیاد پر جو تم نے سن لیا۔ اور دوسری بات اس لئے کہ وہ محل اس کا معدن ہے جس میں (پائی جانے والی) نجاست پر نجاست کا حکم نہیں لگے گا، نہ وہ جو اس کو پہنچے۔ اور ان رطوبات کا معدن رحم ہے، نہ بچے کی جلد۔ جیسا کہ مخفی نہیں اور فرع، امام اعظم رحمۃ اللہ کے قول کہ رحم کی رطوبت پاک ہے، پر جاری ہوتی ہے ہم نے ردالمحتار کی تعلیق میں اس مسئلہ کی تحقیق کی ہے کہ فرج انکے قول "فرج کی رطوبت، امام اعظم رحمۃ اللہ کے نزدیک پاک ہے صاحبین کے نزدیک نہیں" میں عام معنی کے اعتبار سے فرج خارج، فرج داخل اور رحم سب کو شامل ہے۔ اور وہ جو فروع میں تعارض دکھائی دیتا ہے تو یہ دو قولوں پر تفریع کی بنیاد پر ہے۔ (ت) پس ثابت ہوا کہ ان دونوں مسئلہ اصل و فرع میں کلام زید عین اصابت سے ناشی اور قول صحیح و رجیح و صریح و ارجح پر ماشی ہے ھکذا ینبغی التحقیق واللہ تعالٰی ولی التوفیق (تحقیق اسی طرح چاہے اور اللہ تعالٰی ہی توفیق دینے والا ہے۔ت) تنبیہ نبیہ: ہر عاقل ذی علم جانتا ہے کہ جواز بمعنی صحت و بمعنی اباحت خصوصاً اباحت بالمعنی الاخص الغیر الشامل لکراھۃ التنزیہ اعنی تساوی الطرفین (خصوصاً اباحت اخص معنی کے اعتبار سے جو کراہت تنزیہی کو شامل نہیں یعنی دونوں طرفوں کے برابر ہونے میں۔ت) میں زمین آسمان کا فرق ہے اول ہرگز مستلزم ثانی نہیں بہت افعال کہ مکروہ تنزیہی بلکہ تحریمی بلکہ حرام ہیں منافی صحت نماز نہیں ہوتے تو نماز اُن افعال کے ساتھ جائز ہو گئی یعنی صحیح و مسقط فرض مکروہ فعل جائز و مباح بالمعنی المذکور نہ ہو گا بلکہ حرام یا گناہ یا ناپسند علمائے کرام اہل مسلک اول کہ حملِ کلب وغیرہ سباع سوائے خنزیر کے ساتھ نماز جائز بتاتے ہیں جواز بمعنی صحت میں کلام فرمارہے ہیں

یعنی ان جانوروں کا پاس ہونا نہ طہارت و غیرہ کسی شرط نماز کا ناکافی نہ کسی رُکن و فرض نماز کا منافی تو نماز فاسد نہ ہوگی فرض اُتر جائے گا معاذ اللہ یہ نہیں فرماتے کہ بے ضرورت شرعیہ ایسا فعل مکروہ و ناپسند نہیں حاشا کلب تو کلب

Fatawa Rizwia Volume 4

Regarding those animals whose bodies and even saliva are pure, it is clearly stated that holding them during prayer is bad. Whoever does so acts wrongly. You have heard the statements from Khania, Khulasa, Bazzaziya, Hindiyya, Zakhira, and Muntaqa, quoting the master of the school, Imam Muhammad (may Allah have mercy on him): "It is permissible but he has acted wrongly; it suffices him but he has sinned (T)." The prayer is valid, but he acted wrongly. When this is the instruction regarding animals with pure bodies and pure mouths, how much more would they dislike holding animals with impure mouths? In fact, what to speak of animals, they say even carrying children without necessity is disliked (Makruh). It is in Durr-al-Mukhtar: "Carrying a child is disliked. 1 (T)" Even wearing a sword without necessity is considered disliked if its movement distracts the heart. In Nur al-Idah and Maraqi al-Falah, it is stated:

It is not disliked for the worshipper to carry a sword or the like if its movement does not occupy him. If it occupies him, it is disliked except in a state of combat. 2	**It is not disliked for the worshipper to carry a sword or the like when its movement does not occupy him. If it occupies him, it is disliked except in a state of combat. (T)**

So, to imagine that they (the scholars) like this act or do not consider it disliked is mere ill-will and foul-mouthing. By the grace of Allah Almighty, it has become clear from this discourse that for non-conformists (Ghair-Muqallids) to count this issue among the criticisms of the great Hanafi Imams (may Allah Almighty deal with them with general kindness and encompass them with generosity and rewards; may Allah Almighty grant them special along with general grace and mercy and bestow upon them general generosity and rewards. T) is pure foolishness and lack of wisdom. According to the two masters (Sahibain - Imams Abu Yusuf and Muhammad) and their followers (may Allah Almighty have mercy on them all), a dog is inherently impure (najis al-ayn). Even among those who consider it pure, a large group of the second school considers the prayer invalid in this situation. As for those of the first school who claim purity, they also explicitly state its wrongness and dislike. Their meaning is only that if someone did so out of necessity, need, ignorance, or lack of knowledge, the prayer would not be void. Where is the ground for criticism in this, God forbid? Yes, if they had said that one should do so or if someone does it, it's not undesirable, then it would be something else. But far from it, they are pure and free from this accusation, and all praise is to Allah. Praise be to Allah, this answer was

completed on Monday, 24th Rajab al-Murajjab, 1212 AH, and chronologically titled 'Salb al-Thulb an al-Qa'ilina bi-Taharat al-Kalb' 1333 AH (Removing the Blemish from those who claim the purity of the dog). Note: Due to the stubbornness of some innovators and writing other necessary fatwas, this answer was not written for twelve days. 12 (M)

---

1. Durr-al-Mukhtar, Chapter on what invalidates prayer and what is disliked, printed by Mujtabai Delhi, 1/93.
2. Maraqi al-Falah with Hashiyat al-Tahtawi, section on what is disliked for the worshipper, printed by Noor Muhammad Karkhana-e-Tijarat Karachi, p. 202. Page 464 of 761

फतावा रज़विया, जिल्द 4

उन जानवरों के बारे में जिनका न केवल शरीर बल्कि लार भी पाक (पवित्र) है, साफ़ तौर पर कहा गया है कि नमाज़ में उन्हें उठाना बुरा है। जो ऐसा करेगा वह बुरा करेगा। आप खानिया, खुलासा, बज़ाज़िया, हिंदिया, ज़ख़ीरा और मुंतक़ा के उद्धरणों में मज़हब के इमाम सय्यदना इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैहि) का इरशाद सुन चुके हैं कि: "यजुज़ु व असाअ अजअहु व कद असाअ" (जायज़ है लेकिन बुरा किया, उसे पर्याप्त है लेकिन वह गुनहगार हुआ - त)। नमाज़ तो हो गई लेकिन उसने बुरा किया। तो जब पाक बदन और पाक मुँह वाले जानवरों के बारे में यह इरशाद है, तो नापाक मुँह वाले जानवरों को लेना किस कदर सख़्त नापसंद रखेंगे? बल्कि जानवर का क्या ज़िक्र, बिना ज़रूरत बच्चों को उठाना भी मकरूह (नापसंद) बताते हैं। दुर्रे मुख़्तार में है: "यकराहु हम्लुत तिफ़्ल 1" (बच्चे को उठाना मकरूह है - त)। यहाँ तक कि बिना ज़रूरत तलवार बाँधना भी मकरूह रखते हैं जब उसकी हरकत से दिल बँटे। नूरुल ईज़ाह और मराक़ुल फ़लाह में है:

ला यकराहु तकल्लुदुल मुसल्ली बि सैफिन व नहविही इज़ा लम यश्तग़िल बिहरकतिन व इन शग़लाहु करहु फी गैरि हालति क़िताल 2	**नमाज़ी का तलवार वग़ैरह बाँधना मकरूह नहीं जब उसकी हरकत से वह मशग़ूल न हो, अगर वह मशग़ूल रखे तो हालत-ए-जंग के अलावा मकरूह है। (त)**

तो उनके बारे में यह गुमान करना कि वे इस अमल को पसंद रखते हैं या नापसंद नहीं जानते, महज़ बदगुमानी और बदज़बानी है। अल्हम्दुलिल्लाह, इस तक़रीर से रोशन हो गया कि ग़ैर-मुक़ल्लिद साहबों का इस मसले को अइम्मा-ए-इज़ाम हनफ़िया किराम (अल्लाह तआला उन पर आम मेहरबानी और इनाम व इकराम फ़रमाए - त) पर तान व तशनीह (आलोचना) में शुमार करना महज़ हिमाक़त और बेअक़्ली है। साहिबैन और उनके मुवाफ़िक़ीन (अल्लाह तआला उन सब पर रहम फ़रमाए) के नज़दीक तो कुत्ता नजिस-उल-ऐन (स्वयं अपवित्र) है, और पाक मानने वालों में से भी एक बड़ी जमात दूसरे मसलक की इस सूरत में नमाज़ को बातिल (अमान्य) बताती है। रहे पाकिज़ा मानने वाले पहले मसलक के लोग, वे भी इसकी बुराई और मकरूह होने को साफ़ तौर पर बयान करते हैं। उनका मतलब सिर्फ़ इतना है कि अगर किसी ने किसी ज़रूरत या अज्ञानता और नादानी में ऐसा कर लिया तो नमाज़ बातिल न होगी। इसमें माज़अल्लाह तान (आलोचना) की क्या बात है? हाँ, अगर वे कहते कि ऐसा करना चाहिए या करे तो कुछ नापसंद नहीं, तो एक बात थी, लेकिन वे इस तोहमत से पाक व मुनज़्ज़ह (दूर) हैं, वलिल्लाहिल हम्द। अल्हम्दुलिल्लाह कि यह जवाब 24 रजबुल मुरज्जब

1212 हिजरी को मुकम्मल हुआ और तारीख़ के लिहाज़ से इसका नाम 'सल्बुल सुल्ब अनिल क़ाइलीना बिताहारतिल कलब' 1333 हिजरी (कुत्ते की पाकी के क़ायलीनों से ऐब दूर करना) है। नोट: कुछ बिदअतियों की ज़िद और अन्य ज़रूरी फ़तवे लिखने के कारण यह जवाब बारह दिन तक न लिखा गया। 12 (म)

---

1. दुर्रे मुख़्तार, बाब मा युफ़्सिदुस्सलाह व मा यकराहु, मतबुआ मुजतबाई दिल्ली, 1/93।
2. मराक़ुल फ़लाह मअ हाशिया अत-तहतावी, फ़स्ल फ़ीमा यकराहु लिल-मुसल्ली, मतबुआ नूर मुहम्मद कारख़ाना-ए-तिजारत कराची, पृ. 202। पेज 464 ऑफ़ 761

ان جانوروں کی نسبت جن کا نہ صرف بدن بلکہ لعاب بھی پاک ہے صاف تصریح فرماتے ہیں کہ نماز میں انہیں اٹھائے ہونا بُرا ہے جو ایسا کرے گا بُرا کرے گا خانیہ و خلاصہ و بزازیہ و ہندیہ و ذخیرہ و منتقی کی عبارتیں محرر مذہب سیدنا امام محمد رحمۃ اللہ علیہ کا ارشاد سُن چکے کہ یجوز واساء اجزأہ وقد اساء (جائز ہے لیکن بُرا کیا، اسے کفایت کرتا ہے لیکن وہ گنہگار ہوا ت) نماز تو ہوگئی مگر اُس نے بُرا کیا تو جب پاک بدن پاک دہن جانوروں کی نسبت یہ ارشاد ہے ناپاک دہن جانوروں کو لینا کس قدر سخت ناپسند رکھیں گے بلکہ جانور کا کیا ذکر بے ضرورت لڑکوں بچوں کا اٹھانا بھی مکروہ بتاتے ہیں۔ درمختار میں ہے: یکرہ حمل الطفل1 (بچے کو اٹھانا مکروہ ہے۔ ت) یہاں تک کہ بے ضرورت تلوار باندھنا بھی مکروہ رکھتے ہیں جبکہ اس کی حرکت سے دل بٹے۔ نور الایضاح و مراقی الفلاح میں ہے:

لایکرہ تقلد المصلی بسیف ونحوہ اذالم یشتغل بحرکۃ وان شغلہ کرہ في غیر حالۃ قتال 2

نمازی کا تلوار وغیرہ باندھنا مکروہ نہیں جب اس کی حرکت سے مشغول نہ ہو اگر وہ مشغول رکھے تو حالت جنگ کے سوا مکروہ ہے۔ (ت)

تو ان کی نسبت یہ گمان کرنا کہ وہ اس فعل کو پسند رکھتے یا ناپسند نہیں جانتے ہیں محض بد گمانی و بد زبانی ہے۔ بحمد اللہ تعالی اس تقریر سے روشن ہو گیا کہ غیر مقلد صاحبوں کا اس مسئلہ کو مطاعن ائمہ عظام حنفیہ کرام خصمہم اللہ تعالٰی باللطف العام و عمم بالجوّد والانعام واللہ تعالٰی انہیں عمومی لطف و کرم کے ساتھ خاص فرمائے اور انہیں عام جود و انعام عطا فرمائے۔ ت) میں شمار کرنا محض سفاہت و بے عقلی ہے حضرات صاحبین اور اُن کے موافقین رحمہ اللہ تعالٰی علیہم اجمعین کے نزدیک تو کتا نجس العین ہے اور طاہر ماننے والوں سے بھی ایک جماعت عظیمہ اہل

مسلک ثانی مطلقاً اس صورت میں نماز فاسد بتاتے ہیں، رہے قائلینِ طہارت سے اہل مسلک اول وہ بھی اسائت و کراہت کی تصریح فرماتے ہیں اُن کا مطلب صرف اس قدر کہ اگر کسی شخص نے کسی ضرورت و حاجت خواہ اپنی نادانی و جہالت سے ایسا کیا تو نماز باطل نہ ہوگی اس میں معاذ اللہ کیا جائے طعن ہے ہاں اگر فرماتے کہ ایسا کرنا چاہے یا کرے تو کچھ ناپسندیدہ نہیں تو ایک بات تھی مگر حاشاوہ اس تہمت سے پاک و منزہ ہیں واللہ الحمد۔ الحمدللہ کہ یہ جواب ۲۴ رجب مرجب ۱۲۱۲ھ بجریہ قدسیہ روز جان سے افروز دوشنبہ کو تمام اور بلحاظ تاریخ سلب الثلب عن القائلین بطھارۃ الکلب ۱۳۳۳ھ (کتنے کی طہارت عین کے قائلین سے عیب دور کرنے کا عہ: بسبب مکابرہ بعض اہل بدعت و تحریر بعض دیگر فتاوائے ضروریہ بارہ روز تک یہ جواب نہ لکھا گیا ۱۲ (م)

---

1 در مختار باب ما یفسد الصلوۃ و مایکرہ مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/۹۳ 2 مراقی الفلاح مع حاشیۃ الطحطاوی فصل فیما یکرہ للمصلی مطبوعہ نور محمد کارخانہ تجارت کراچی ص ۲۰۲ Page of 761 464

Fatawa Razawiya Volume 4

[Arabic side of the box]: (And our final call is that all praise belongs to Allah, Lord of the worlds, and the best of blessings and peace be upon the master of the messengers, our master and leader Muhammad, and upon his family and all his companions.) [Urdu side of the box]: And our final call is that all praise belongs to Allah Almighty, Who is the sustainer of all worlds, and blessings and peace be upon the leader of all messengers, our leader and master Prophet Muhammad Mustafa, peace and blessings of Allah be upon him, and upon his entire family and companions. (T)

And Allah Almighty knows best, and His knowledge is most complete and wise.

Issue 178: From Calcutta, Dharmatala No. 6, sent by Mr. Mirza Ghulam Qadir Beg, 22nd Sha'ban 1311 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: I have developed a type of boil or ringworm in my armpit. It itches, and when I scratch it, some blood-like fluid comes out. Cleaning that area by flowing water over it is not possible without getting the entire lower body wet. Therefore, I dampen a cloth with water and wipe that area three times according to my understanding of cleanliness, using a fresh cloth each time because cleaning the first one is difficult. This same method was suggested by Maulvi Saadat Husain, a teacher at Madrasa-e-Aliya. If you could provide your opinion, it would, God willing, provide complete peace of mind. Please explain and may you be rewarded.

The Answer: Although this issue has been a matter of difference among our noble Imams (may Allah Almighty be pleased with them) and a subject of debate among the jurists (may Allah Almighty have mercy on them), this humble person (may Allah Almighty forgive him) gives fatwa on this: that for removing impurity from the body, washing—meaning flowing water etc.—is not a condition. Rather, if a clean cloth is soaked in water and wiped such that if the impurity is visible, its trace is gone (except for what is difficult to remove), and if it is invisible, it becomes highly probable that it no longer remains, and each time a fresh cloth is used or the same one is cleaned, then the body becomes pure, even if a single drop of water does not flow. This is the school of our Imam of the school, Sayyiduna Imam-e-Azam (may Allah be pleased with him), and here Imam Muhammad also agrees with him. Many senior leading jurists have adopted this, and many secondary rulings in general reliable books of the school are based on this. Therefore, it can be acted upon without hesitation. For

example, if some impurity gets on a finger and one was unaware, and for some reason licked the finger three times until its trace...

[बॉक्स का अरबी भाग]: (और हमारी अंतिम पुकार यह है कि समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो संसारों का पालनहार है, और सबसे उत्तम आशीर्वाद और शांति प्रेषितों के सरदार, हमारे स्वामी और नेता मुहम्मद पर, और उनके परिवार और उनके सभी साथियों पर हो।) [बॉक्स का उर्दू भाग]: और हमारी अंतिम पुकार यह है कि समस्त प्रशंसा अल्लाह तआला के लिए है जो तमाम जहानों को पालने वाला है और सलातो सलाम तमाम रसूलों के सरदार, हमारे सरदार और मौला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपकी तमाम आल व असहाब पर हो। (त)

वल्लाहु तआला आलम व इल्मुहु अतम व अहकम।

मसला १७८: कलकत्ता, धर्मतला नंबर ६ से, जनाब मिर्ज़ा गुलाम कादिर बेग साहब द्वारा प्रेषित, २२ शाबान १३११ हिजरी। धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं कि मेरी बगल में किसी प्रकार का दाद या फोड़ा हो गया है। उसमें खुजली होती है, और जब मैं खुजलाता हूँ तो कुछ खून जैसा निकल आता है। उस जगह को पानी बहाकर साफ़ करना पूरे निचले शरीर को भिगोए बिना संभव नहीं है। इसलिए मैं उस स्थान को अपनी समझ के अनुसार पानी में भीगे कपड़े से तीन बार पोंछकर साफ़ कर लेता हूँ और हर बार दूसरा कपड़ा लेता हूँ क्योंकि पहले वाले को साफ़ करना थोड़ा कठिन होता है। यही तरीका मौलवी सआदत हुसैन साहब, शिक्षक मदरसा-ए-आलिया ने बताया था। यदि आप अपनी राय से अवगत कराएंगे तो इंशा अल्लाह तआला पूर्ण इत्मीनान हो जाएगा। कृपया समझाएं और पुण्य प्राप्त करें।

अल-जवाब: यद्यपि यह मसला हमारे महान इमामों (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम) के बीच मतभेद का रहा है और फतवा देने वाले विद्वानों (रहमतुल्लाहि तआला अलैहिम) के बीच चर्चा का विषय रहा है, लेकिन यह तुच्छ व्यक्ति (अल्लाह उसे क्षमा करे) इसी पर फतवा देता है कि शरीर से अशुद्धि (नजासत) दूर करने के लिए धोना यानी पानी आदि बहाना शर्त नहीं है, बल्कि अगर पाक कपड़े को पानी में भिगोकर इस हद तक पोंछें कि यदि अशुद्धि दिखाई देने वाली (मरीया) हो तो उसका निशान न रहे (मगर उतना जिसका निवारण कठिन हो) और यदि दिखाई न देने वाली (ग़ैर-मरीया) हो तो प्रबल संभावना (ज़न्ने ग़ालिब) हो जाए कि अब वह नहीं बची है, और हर बार नया कपड़ा लें या उसी को पाक कर लें, तो शरीर पाक हो जाएगा, चाहे पानी की एक बूंद भी न बहे। यह हमारे मज़हब के इमाम, सैय्यदुना इमाम-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) का मज़हब है और यहाँ इमाम मुहम्मद

भी उनके सहमत हैं। और कई बड़े इमामों ने इस फतवे को अपनाया है और मज़हब की आम विश्वसनीय पुस्तकों में बहुत सी उप-शाखाएँ(फ़रु) इसी पर आधारित हैं। तो इस पर बिना किसी संकोच के अमल किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, यदि उंगली पर कुछ नजासत लग गई थी और उसे पता नहीं था, किसी कारणवश उसने उंगली को तीन बार चाट लिया यहाँ तक कि उसका प्रभाव...

पृष्ठ ४६५ / ७६१

فتاوی رضویہ جلد چہارم

(وآخر دعونا ان الحمدللہ رب العلمین وافضل الصلوۃ والسلام علی سید المرسلین سیدنا و مولانا محمد و آلہ وصحبہ اجمعین۔) اور ہماری آخر پکار یہ ہے کہ تمام تعریفیں اللہ تعالٰی کے لئے ہیں جو تمام جہانوں کو پالنے والا ہے اور صلاۃ وسلام تمام رسولوں کے سردار، ہمارے سردار اور مولٰی حضرت محمد مصطفٰی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم اور آپ کے تمام آل و اصحاب پر ہو۔ (ت)

واللہ تعالٰی اعلم وعلمہ اتم واحکم۔

مسئلہ ۱۷۸: از کلکتہ دھرم تلا نمبر ۶ مرسلہ جناب مرزا غلام قادر بیگ صاحب ۲۲ شعبان ۱۳۱۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ میری بغل میں دادیا پھنسی کسی قسم کی ہوگئی ہے اُس میں پھل ہوتی ہے جس وقت کھجلاتا ہوں تو کچھ لہو سا نکل آتا ہے اُس جگہ کا پاک کرنا سیلان آب تو بغیر سارے بدن زیرین کے ہو نہیں سکتا لہذا اس موضع کو تین مرتبہ کپڑا پانی میں تر کرکے اپنے فہم کے موافق پاک کرلیتا ہوں اور کپڑا ہر مرتبہ میں دوسرا لیتا ہوں کہ اول کو پاک کرنا ذرا دشوار ہوتا ہے اور یہی صورت جناب مولوی سعادت حسین صاحب مدرس مدرسہ عالیہ نے بتائی اگر آپ اپنی رائے سے مطلع فرمائیں گے تو ان شاء اللہ تعالٰی اطمینان کُل ہوجائے گا، بینوا توجروا۔

الجواب: یہ مسئلہ اگرچہ ہمارے ائمہ کرام رضی اللہ تعالٰی عنہم میں مختلف فیہ اور مشایخ فتوٰی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہم میں معرکۃ الآراء رہا ہے مگر فقیر غفر اللہ تعالٰی اسی پر فتوٰی دیتا ہے کہ بدن سے نجاست دُور کرنے میں دھونا یعنی پانی وغیرہ بہانا شرط نہیں ہے بلکہ اگر پاک کپڑا پانی میں بھگو کر اس قدر پونچھیں کہ نجاست مرئیہ ہے تو اس کا اثر نہ رہے مگر اتنا جس کا ازالہ شاق

ہو اور غیر مرئیہ ہے تو ظن غالب ہوجائے کہ اب باقی نہ رہی اور ہر بار کپڑا تازہ لیں یا اُسی کو پاک کرلیا کریں تو بدن پاک ہوجائے گا اگرچہ ایک قطرہ پانی کا نہ بہے یہ مذہب ہمارے امام مذہب سیدنا امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا ہے اور یہاں امام محمد بھی اُن کے موافق ہیں اور بہت اکابر ائمہ فتویٰ نے اسے اختیار فرمایا اور عامہ کتب معتبرہ مذہب میں بہت فروع اسی پر مبنی ہیں تو اس پر بے دغدغہ عمل کیا جاسکتا ہے مثلاً انگلی پر کچھ نجاست لگ گئی تھی اسے خبر نہ تھی کسی وجہ سے انگلی تین بار چاٹ لی یہاں تک کہ اُس کا اثر

Fatawa Razawiyya Volume IV

...was removed, and the finger became pure. There was impurity on a woman's nipple; the child drank milk until the trace of impurity was removed, and the nipple became pure.

In Al-Durr al-Mukhtar, Al-Bahr, and others: An impure finger and nipple become pure by licking three times. [Arabic text] In Al-Durr al-Mukhtar, Al-Bahr al-Ra'iq, etc., it is stated that an impure finger and nipple become pure by licking them three times. (T)

He drank alcohol, after which he licked his lips three times and repeatedly swallowed the saliva produced in his mouth until no trace of wine remained; the mouth became pure. Similarly, if a cat eats a mouse and cleans its mouth with its tongue, and some time passes so that the mouth becomes clean due to saliva, and thereafter it drinks water, the water will not become impure.

In Al-Tanwir: The leftover of a wine drinker immediately after drinking wine, and of a cat immediately after eating a mouse, is impure. In Radd al-Muhtar, quoted from Al-Hilyah: This is contrary to when one waits for a while, swallows his saliva three times after licking his lips with his tongue and saliva, then drinks (water etc.), it will not become impure. It is necessary to understand from this that when the effect of the taste or smell of wine no longer remains in his saliva. And in the same (Radd al-Muhtar), regarding the cat's issue from the same (Hilyah): if it waits for a while and licks its mouth, it is disliked (Makruh) according to Munyah; it will not be impure according to the two Shaykhs (Imam Abu Hanifa and Imam Abu Yusuf), while Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) says it becomes impure because, according to him, impurity is not removed without water. (T) [Arabic text provided in the source]

In At-Tanwir: The leftover of a wine drinker immediately after drinking wine, and of a cat immediately after eating a mouse, is impure. In Radd al-Muhtar, it is narrated from Al-Hilyah that, contrary to this, if a person waits for a while and swallows his saliva three times after licking his lips with his tongue and saliva, then drinks (water, etc.), it will not be impure. From this, it is necessary to mean that no trace of the taste or smell of wine remains in his saliva. And in the same [Radd al-Muhtar], from the same [Al-Hilyah], regarding the cat's case: if it waits for a while and licks its mouth, it is disliked according to Al-Munyah; it does not become impure according to the two Shaykhs, but Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) says it becomes impure because, according to him, impurity is not removed without water. (T)

1. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Impurities, Mujtabai Press, Delhi, 1/53
2. Al-Durr al-Mukhtar, Section on Wells, Mujtabai Press, Delhi, 1/40
3. Radd al-Muhtar, Section on Wells, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/163
4. Radd al-Muhtar, Section on Wells, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/163

...अशुद्धि दूर हो गई और उंगली शुद्ध हो गई। एक महिला के स्तन के अग्रभाग पर अशुद्धि थी; बच्चे ने तब तक दूध पिया जब तक कि अशुद्धि का प्रभाव समाप्त नहीं हो गया, और स्तन शुद्ध हो गया।

अल-दुर्र अल-मुख्तार, अल-बहर आदि में है: अशुद्ध उंगली और स्तन तीन बार चाटने से शुद्ध हो जाते हैं। [अरबी पाठ] अल-दुर्र अल-मुख्तार और अल-बहर अल-राइक आदि में है कि अशुद्ध उंगली और स्तन तीन बार चाटने से शुद्ध हो जाते हैं। (त)

शराब पी, उसके बाद होंठ तीन बार चाट लिए और मुँह में बनने वाले लार को बार-बार निगल लिया यहाँ तक कि शराब का कोई निशान नहीं रहा; मुँह शुद्ध हो गया। इसी तरह, यदि कोई बिल्ली चूहा खाकर अपनी जीभ से अपना मुँह साफ कर लेती है और कुछ समय बीत जाता है जिससे लार के कारण मुँह साफ हो जाता है, और उसके बाद वह पानी पीती है, तो पानी अशुद्ध नहीं होगा।

अल-तन्वीर में है: शराब पीने के तुरंत बाद शराबी का जूठा और चूहा खाने के तुरंत बाद बिल्ली का जूठा अशुद्ध है। रद अल-मुह्तार में हिल्या से उद्धृत है: यह इसके विपरीत है जब कोई व्यक्ति कुछ समय रुकता है, अपनी जीभ और लार से अपने होंठों को चाटने के बाद तीन बार अपना लार निगल लेता है, फिर (पानी आदि) पीता है, तो वह अशुद्ध नहीं होगा। इससे यह अर्थ लेना आवश्यक है कि जब उसके लार में शराब के स्वाद या गंध का कोई प्रभाव न बचा हो। और इसी (रद अल-मुह्तार) में उसी (हिल्या) से बिल्ली के मामले में है कि यदि वह कुछ समय रुकती है और अपना मुँह चाट लेती है, तो मुनयाह के अनुसार यह मकरूह (नापसंद) है; शेखैन (इमाम अबू हनीफा और इमाम अबू यूसुफ) के अनुसार यह अशुद्ध नहीं होगा, जबकि इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहम करे) कहते हैं कि यह अशुद्ध हो जाएगा क्योंकि उनके अनुसार पानी के बिना अशुद्धि दूर नहीं होती। (त) [मूल स्रोत में अरबी पाठ]

अल-तन्वीर में है कि शराब पीने के तुरंत बाद शराबी का जूठा और चूहा खाने के तुरंत बाद बिल्ली का जूठा नापाक है। रद अल-मुह्तार में हिल्या से उद्धृत है कि इसके विपरीत, यदि कोई व्यक्ति एक घड़ी रुक जाए और अपनी जीभ और लार से होंठों को चाटने के बाद तीन बार अपना लार निगल ले, फिर (पानी आदि) पिए तो वह नापाक नहीं होगा। इससे यह मुराद लेना ज़रूरी है कि जब उसके लार में शराब के स्वाद या गंध का असर न रहा हो। और इसी [रद अल-मुह्तार] में उसी [हिल्या] से बिल्ली के मसले में है कि अगर वह एक घड़ी रुके और अपना मुँह चाट ले तो मकरूह है (मुनया); शेखैन के

नज़दीक नापाक नहीं होगा और इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि नापाक हो जाएगा क्योंकि उनके नज़दीक पानी के बग़ैर नजासत ज़ाइल नहीं होती। (त)

---

1. दुर्र मुख्तार, बाब अल-अंजास, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/53
2. दुर्र मुख्तार, फ़स्ल फ़िल बीर, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/40
3. रद अल-मुह्तार, फ़स्ल फ़िल बीर, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, 1/163
4. रद अल-मुह्तार, फ़स्ल फ़िल बीर, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, 1/163

पृष्ठ 466/761

جاتا رہا انگلی پاک ہو گئی۔ عورت کے سر پستان پر ناپاکی تھی بچے نے دودھ پیا یہاں تک کہ اثر نجاست زائل ہوا پستان پاک ہو گئی۔

فی الدرالمختار والبحر وغیرہما تطھر اصبع وثدی تنجس بلحس ثلثا ۱؎ درمختار اور بحرالرائق وغیرہ میں ہے ناپاک انگلی اور پستان تین مرتبہ چاٹنے سے پاک ہوجاتی ہے (ت)

شراب پی ۲؎ اس کے بعد لب تین بار چاٹ لئے اور لعاب دہن میں پیدا ہو کر بار بار نگل لیا یہاں تک کہ اثر خمر نہ رہا منہ پاک ہو گیا۔ یونہی ۳؎ بلی نے چوہا کھا کر زبان سے اپنا منہ صاف کر لیا اور دیر گزری کہ دہن بوجہ لعاب صاف ہوگیا اس کے بعد پانی پیا، پانی ناپاک نہ ہوگا۔

فی التنویر سور شارب خمر فور شربھا وھرۃ فور اکل فارۃ نجس ۴؎ فی ردالمحتار عن الحلیۃ بخلاف ما اذا مکث ساعۃ ابتلع ریقہ ثلث مرات بعد لحس شفیتہ بلسانہ و ریقہ ثم شرب فانہ لا یتنجس لا بد ان یکون المراد اذا لم یکن فی بزاقہ اثر الخمر من طعم اوریح ۵؎ اھ وفیہ عنھا فی مسألۃ الھرۃ فأن مکث ساعۃ ولحست فیھما فمکروہ منیۃ ولاینجس عندہما وقال محمد ینجس لان النجاسۃ لا تزول عندہ الا بالماء ۶؎ الخ۔

تنویر میں ہے شرابی کے شراب پینے کے فوراً بعد کا جھوٹا اور بلی کے چوہا کھانے کے فوراً بعد کا جھوٹا ناپاک ہے۔ ردالمختار میں حلیہ سے منقول ہے کہ بخلاف اس کے جب ایک ساعت ٹھہر جائے اور زبان اور لعاب کے ساتھ ہونٹوں کو چاٹنے کے بعد اپنا لعاب تین بار نگل لے پھر (پانی وغیرہ) پیئے تو وہ ناپاک نہیں ہوگا۔ اس سے یہ بات مراد لینا ضروری ہے کہ جب اس کے لعاب میں شراب کے ذائقے یا بو کا اثر نہ ہوا ہو۔ اور اسی (ردالمختار) میں اس (حلیہ) سے بلی کے

مسئلے میں ہے کہ اگر وہ ایک ساعت ٹھہرے اور اپنا منہ چاٹ لے تو مکروہ ہے (منیہ) شیخین کے نزدیک ناپاک نہیں ہوگا اور امام محمد رحمہ اللہ فرماتے ہیں ناپاک ہو جائے کیونکہ ان کے نزدیک پانی کے بغیر نجاست زائل نہیں ہوتی۔ (ت)

---

1 در مختار باب الانجاس مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۵۳ 2 در مختار فصل فی البئر مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۴۰ 3 رد المحتار فصل فی البئر مطبوعہ مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۶۳ 4 رد المحتار فصل فی البئر مطبوعہ مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۶۳

Fatawa Razawiyyah Volume Four

...happened. And after so much time that the coming and going of saliva removed its effect, or if he prayed, the prayer is valid.

[Arabic Column] In Al-Munya and Al-Hilya: And similarly by licking, if wine touches his hand and he licks it with his saliva three times, it becomes pure just as his mouth becomes pure with his saliva (1). In Al-Fatawa al-Khaniya: If he vomits a mouthful, it is appropriate for him to wash his mouth. If he performs ablution but does not wash his mouth until he prays, his prayer is valid because it becomes pure by saliva according to the saying of Abu Hanifa and Abu Yusuf, may Allah Almighty be pleased with them both. And similarly, if he drinks wine and then prays after a time. And similarly, if impurity touches some of his limbs, he purifies it with his tongue until its effect disappears. And similarly, the knife, if it becomes impure, he licks it with his tongue or wipes it with his saliva. And similarly, the child, if he vomits on the mother's breast then sucks the breast repeatedly, it becomes pure. End. And similarly in others. What the sectarian rules dictate from the liberation of speech in this place is that if a real impurity touches some of his limbs, if it is visible and he or someone else licked it until its essence and effect disappeared - if its removal is not difficult - it becomes pure. And if it was invisible, it becomes pure by licking three times as mentioned by the author in this issue, or until the suspicion of its removal prevails, and the author will clearly state that the fatwa is based on it (2).

[Urdu Column] In Munya and Hilya, the text states, "And similarly, it becomes pure by licking. When wine gets on someone's hand and they lick it three times with their saliva, it will become pure just as their mouth becomes pure with saliva." On this, the commentator said in Fatawa Khaniya, "When someone vomits a mouthful, they should wash their mouth. If they perform wudu (ablution) but did not rinse their mouth until they prayed, their prayer will be valid because, according to Imam Azam and Imam Abu Yusuf (may Allah be pleased with them both), it becomes pure through saliva. Similarly, when one drinks wine and then prays after some time. Likewise, when impurity gets on some part of the body and one cleans it with their tongue until its effect is gone. Similarly, when a knife becomes impure and then one licks it with the tongue or cleans it with saliva. Likewise, when a child vomits on the mother's breast and then sucks the breast several times, it will become pure." End quote. It is similar in other books as well. The religious rules required for the recording of the discourse in this place are that when a real impurity (Najasa Haqiqiyya) touches a limb, if it is visible and he or someone else licked it until the

original impurity and its effect are removed - if removing it is not a hardship - it will become pure. And...

---

1. Munyat al-Musalli, Chapter on Leftovers, published by Maktaba Qadriya Jamia Nizamia Razvia Lahore, p. 17.
2. Hilya.

...हो गई। और इतनी देर के बाद कि लार के आने-जाने ने उसका असर मिटा दिया या नमाज़ पढ़ ली, तो नमाज़ हो गई।

[अरबी कॉलम] अल-मुन्या और अल-हिल्या में है: और इसी तरह चाटने से, यदि उसके हाथ पर शराब लग जाए और वह उसे अपनी लार से तीन बार चाट ले, तो वह पवित्र हो जाता है जैसे उसका मुँह उसकी लार से पवित्र हो जाता है (1)। अल-फ़तावा अल-खनिया में है: यदि उसे मुँह भर कर उल्टी हो जाए, तो उसके लिए अपना मुँह धोना उचित है। यदि वह वज़ू करता है लेकिन नमाज़ पढ़ने तक अपना मुँह नहीं धोता है, तो उसकी नमाज़ जायज़ है क्योंकि अबू हनीफ़ा और अबू यूसुफ़, अल्लाह तआला उन दोनों से राज़ी हो, के कथन के अनुसार यह लार से पवित्र हो जाता है। और इसी तरह, यदि वह शराब पीता है और फिर कुछ समय बाद नमाज़ पढ़ता है। और इसी तरह, यदि उसके कुछ अंगों पर अशुद्धि लग जाती है, तो वह उसे अपनी जीभ से तब तक साफ़ करता है जब तक कि उसका असर खत्म न हो जाए। और इसी तरह, चाकू यदि वह अशुद्ध हो जाए, तो वह उसे अपनी जीभ से चाटता है या अपनी लार से पोंछता है। और इसी तरह, बच्चा, यदि वह माँ के स्तन पर उल्टी करता है फिर बार-बार स्तन चूसता है, तो वह पवित्र हो जाता है। समाप्त। और इसी तरह दूसरों में भी। इस स्थान पर कलाम की तहरीर से जो मज़हबी कायदे मांग करते हैं वह यह हैं कि यदि उसके कुछ अंगों पर वास्तविक नजासत लग जाती है, यदि वह दिखाई देने वाली है और उसने या किसी और ने उसे तब तक चाटा जब तक कि उसकी असल और असर खत्म न हो गया - यदि उसे हटाना मुश्किल नहीं है - तो वह पवित्र हो जाता है। और यदि वह दिखाई न देने वाली थी, तो वह तीन बार चाटने से पवित्र हो जाती है जैसा कि लेखक ने इस मसले में उल्लेख किया है, या जब तक कि इसके हट जाने का गुमान प्रबल न हो जाए, और लेखक स्पष्ट करेंगे कि फ़तवा इसी पर है (2)।

[उर्दू कॉलम] मुनिया और हिल्या में है, मूल पाठ ने फरमाया "और इसी तरह चाटने के साथ (पाक हो जाता है) जब किसी आदमी के हाथ को शराब लग गई पस उसने अपने लुआब (लार) के साथ तीन बार चाटा तो पाक हो जाएगा जैसे उसका मुँह थूक के साथ पाक हो जाता है" इस पर शारह (टीकाकार) ने फरमाया फ़तावा ख़ानिया में है जब किसी ने मुँह भर के क़ै(उल्टी) की तो चाहिए कि अपना मुँह धो ले अगर उसने वज़ू किया लेकिन कुल्ली नहीं की यहाँ तक कि नमाज़ पढ़ ली तो उसकी नमाज़ जाइज़ हो जाएगी क्योंकि वह इमाम आज़म और इमाम अबू यूसुफ़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा के नज़दीक थूक से पाक हो जाता है। इसी तरह जब शराब पी फिर कुछ देर बाद नमाज़ पढ़ी यूँ ही जब

उसके बाज़ आज़ा (कुछ अंगों) पर नजासत लगी और उसने उसको अपनी ज़ुबान से पाक कर दिया यहाँ तक कि उसका असर चला गया इसी तरह जब छूरी नापाक हो गई फिर उसने उसे ज़ुबान से चाटा या थूक से साफ़ किया यूँ ही जब बच्चे ने माँ के पिस्तान पर क़ै की फिर कई बार पिस्तान को चूसा तो वह पाक हो जाएगा। इन्तहा। दूसरी कुतुब (किताबों) में भी इसी तरह है। कवाइद-ए-मज़हबिया इस मकाम पर जिस कलाम के तहरीर के मुतक़ाज़ी हैं वह ये हैं कि जब किसी उज़्व (अंग) पर नजासत-ए-हक़ीक़िया लग जाए तो अगर वो दिखाई देने वाली है और उसने या किसी दूसरे ने उसको चाट लिया यहाँ तक कि असल नजासत और उसका असर ज़ाइल (खत्म) हो गया। अगर उसको दूर करने में मशक़्क़त न हो तो पाक हो जाएगा, और...

---

1. मुनियतुल मुसल्ली, फ़स्ल फ़िल असआर, मतबुआ मकतबा क़ादरिया जामिया निज़ामिया रज़विया लाहौर, पेज 17
2. हिल्या

पृष्ठ 467/761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

تھے ہوگئی اور اتنی دیر کے بعد کہ آمد و رفت لعاب نے اس کا اثر کھودیا یا نماز پڑھ لی نماز ہوگئی۔

[Arabic Column] في المنية والحلية م وكذا باللحس اذا اصاب الخمر يده فلحسه بريقه ثلاث مراة يطهر كما يطهر فمه بريقه 1 ش في الفتاوى الخانية اذا قاء ملأ الفم ينبغى ان يغسل فاه فان توضأ ولم يغسل فاه حتى صلى جازت صلاته لانه يطهر بالبزاق في قول ابي حنيفة وابى يوسف رضى الله تعالى عنهما وكذا اذا شرب الخمر ثم صلى بعد زمان وكذا اذا اصاب بعض اعضائه نجاسة فطهرها بلسانه حتى ذهب اثرها وكذا السكين اذا تنجس فلحسه بلسانه اومسحه بريقه وكذا الصبى اذا قاء على ثدى الامام ثم مص الثدى مرارا يطهر انتهى وكذا في غيرها والذى تقتضيه القواعد المذهبية من تحرير الكلام في هذا المقام انه اذا اصاب بعض اعضائه نجاسة حقيقية فان كانت مرئية ولحسها هو او غيره حتى ذهب عينها واثرها ان كان لا يشق زواله يطهر وان كانت غير مرئية فتطهر باللحس ثلاث مرات كما ذكره المصنف في هذه المسألة او حتى يغلب على الظن زوالها وسيصرح المصنف ان الفتوى عليه -2

[Urdu Column] منیہ اور حلیہ میں ہے متن نے فرمایا "اور اسی طرح چاٹنے کے ساتھ (پاک ہو جاتا ہے) جب کسی آدمی کے ہاتھ کو شراب لگ گئی پس اس نے اپنے لعاب کے ساتھ تین بار چاٹا تو پاک ہو جائیگا جیسے اس کا منہ تھوک کے ساتھ پاک ہو جاتا ہے اس پر شارح نے فرمایا فتاوی خانیہ میں ہے جب کسی نے منہ بھر قے کی تو چاہے کہ اپنا منہ دھو لے اگر اس نے وضو کیا لیکن کلی نہیں کی یہاں تک کہ نماز پڑھ لی تو اس کی نماز جائز ہو جائیگی کیونکہ وہ امام اعظم اور امام ابو یوسف رضی اللہ عنہما کے نزدیک تھوک سے پاک ہو جاتا ہے۔ اس طرح جب شراب

پی پھر کچھ دیر بعد نماز پڑھی یوں ہی جب اس کے بعض اعضا پر نجاست لگی اور اس نے اس کو اپنی زبان سے پاک کر دیا یہاں تک کہ اس کا اثر چلا گیا اسی طرح جب چھری ناپاک ہو گئی پھر اس نے اسے زبان سے چاٹا یا تھوک سے صاف کیا یوں ہی جب بچے نے ماں کے پستان پر قے کی پھر کئی بار پستان کو چوسا تو وہ پاک ہو جائے گا انتہی۔ دوسری کتب میں بھی اسی طرح ہے۔ قواعد مذہبیہ اس مقام پر جس کلام کے تحریر کے متقاضی ہیں وہ یہ ہیں کہ جب کسی عضو پر نجاست حقیقی لگ جائے تو اگر وہ دکھائی دینے والی ہے اور اس نے یا کسی دوسرے نے اس کو چاٹ لیا یہاں تک کہ اصل نجاست اور اس کا اثر زائل ہو گیا۔ اگر اس کو دور کرنے میں مشقت نہ ہو تو پاک ہو جائے گا، اور

---

1 منیة المصلی فصل في الاسآر مطبوعہ مکتبہ قادریہ جامعہ نظامیہ رضویہ لاہور ص ۱۷ 2 حلیہ

Fatawa Rizvia Volume 4

If that impurity is not visible, it becomes pure by licking three times, as the author mentioned in this issue, or when there is a strong presumption of its removal. Soon the author will specify that the fatwa is based on this. (T)

...applied cupping (hijama) and wiped the site of the blood with three pieces of clean wet cloth, it became pure. This is a specific detail of the question under discussion, which is explicitly mentioned in Muhit Rizvi, Fatawa Zakhira, Tatimma al-Fatawa Zahiriya, Al-Hilya, etc.

In Al-Hilya, after what has just passed, it says: "Know that the jurists have explicitly stated, as it is in Al-Khulasa and as indicated by what we just quoted from Al-Khaniya, that the ruling of purity in these sub-branches is derived from the fact that bodily purification from real impurity (najasat haqiqi) can be achieved with pure liquids other than water. You have already known that this is the opinion of Imam Abu Hanifa and Imam Abu Yusuf (may Allah have mercy on them), although there is some difference of opinion from Imam Abu Yusuf in this regard. In Muhit by Sheikh Radi al-Din, it is stated: 'If one wipes the site of cupping (hijama) with three thin wet pieces of cloth, it suffices for washing because it performs the action of washing.' Imam Abu Yusuf says: 'It will not suffice without washing.' (End) Regarding the first opinion, it is mentioned in Al-Zakhira and the supplement to Fatawa Sughra, to the extent that Al-Hakim said it was narrated from Abu Hafs from Muhammad ibn al-Hasan (may Allah have mercy on him). Qadi Khan adopted the second opinion after narrating it from Faqih Abu Ja'far, where he said: 'If there is impurity on his body and he wipes it with a wet piece of cloth three times, it is narrated from Faqih Abu Ja'far that he said it becomes pure, provided that water drops fall on his body.' Then he said after that: 'If he wipes the site of cupping with three wet pieces of cloth, it has already passed before this that it...'"

Page 468 of 761

फ़तावा रिज़विया जिल्द 4

अगर वह नजासत (अशुद्धि) दिखाई नहीं देती है, तो वह तीन बार चाटने से शुद्ध हो जाती है जैसा कि लेखक ने इस मसले में उल्लेख किया है, या उस समय जब इसके दूर होने का प्रबल अनुमान हो जाए। शीघ्र ही लेखक स्पष्ट करेंगे कि फतवा इसी पर है। (त)

...पछने (पछना लगाना) लगाए और खून की जगह को भीगे हुए पवित्र कपड़े के तीन टुकड़ों से पोंछ दिया तो वह शुद्ध हो गया। यह विचाराधीन प्रश्न का एक विशेष पहलू है जिसका स्पष्ट उल्लेख मुहीत रिज़वी, फ़तावा ज़खीरा, ततिम्मा अल-फ़तावा ज़हीरिया, अल-हिलिया आदि में है।

अल-हिलिया में, अभी जो उल्लेख हुआ है उसके बाद कहा गया है: "जान लें कि न्यायविदों (फ़क़ीहों) ने स्पष्ट किया है, जैसा कि अल-ख़ुलासा में है और जैसा कि खनिया से अभी उद्धृत की गई बात संकेत करती है, कि इन शाखाओं (फुरूह) में शुद्धता का हुक्म इस बात पर आधारित है कि वास्तविक नजासत से शरीर की शुद्धता पानी के अलावा अन्य पवित्र तरल पदार्थों से भी हो सकती है। आप जान चुके हैं कि यह इमाम अबू हनीफा और इमाम अबू यूसुफ (रह.) का मत है, हालांकि इस बारे में इमाम अबू यूसुफ (रह.) के मत में कुछ मतभेद भी है। शेख रज़ीउद्दीन की मुहीत में है: 'यदि कोई हिजामा (कपिंग) की जगह को कपड़े के तीन महीन गीले टुकड़ों से पोंछता है, तो यह धोने के बराबर है क्योंकि उसने धोने का कार्य किया है।' इमाम अबू यूसुफ फरमाते हैं: 'धोने के बिना पर्याप्त नहीं होगा।' (इंतहा) पहले मत के बारे में ज़ख़ीरा और फ़तावा सुग़रा के पूरक में है, यहाँ तक कि हाकिम ने कहा कि यह अबू हफ़्स से और वह मुहम्मद बिन हसन (रह.) से वर्णित है। काजी खान ने दूसरे मत को फकीह अबू जाफ़र से उद्धृत करने के बाद अपनाया है, जहाँ उन्होंने कहा: 'यदि उसके शरीर पर नजासत हो और वह उसे गीले कपड़े के टुकड़े से तीन बार पोंछ दे, तो फकीह अबू जाफ़र से वर्णित है कि वह शुद्ध हो जाएगा, बशर्ते कि उसके शरीर पर पानी की बूंदें गिरें।' इसके बाद उन्होंने कहा: 'यदि हिजामा की जगह पर तीन गीले कपड़े फेरे जाएं तो यह पहले ही गुजर चुका है कि यह...'"

पेज 468 का 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

اگر وہ نجاست دکھائی نہیں دیتی تو تین بار چاٹنے سے پاک ہو جاتی ہے جیسا کہ مصنف نے اس مسئلہ میں ذکر کیا ہے یا کہ اس وقت جبکہ اس کے زوال کا غالب گمان ہو جائے۔ عنقریب مصنف اس کی تصریح کریں گے کہ فتوی اسی پر ہے۔ (ت)

بچھنے لگائے اور موضع خون کو بھیگے ہوئے پاکیزہ کپڑے کے تین ٹکڑوں سے پونچھ دیا پاک ہو گیا یہ صورت مسئولہ کا خاص جزئیہ ہے کہ محیط رضوی و فتاوی ذخیرہ و تتمہ الفتاوی ظہیریہ وحلیہ وغیرہا میں اس کی تصریح ہے۔

في الحلية بعد ما تقدم أنفا اعلم بانهم صرحوا كما في الخلاصة وكما يشير اليه مانقلنا أنفا من الخانية بان الحكم بالطهارة في هذه الفروع تفريع على ان الطهارة للبدن من النجاسة الحقيقية يكون بغير الماء من المائعات الطاهرات وقد عرفت انه قول ابى حنيفة وابى يوسف على اختلاف عن ابى يوسف في ذلك غيران في محيط الشيخ رضي الدين ولو مسح موضع المحجمة بثلاث خرقات رطبات لطائف اجزأه من الغسل لانه عمل عمل الغسل وقال ابويوسف لا يجزئه حتى يغسله انتهى وعن الاول في الذخيرة وتتمة الفتاوى الصغرى الى ان الحاكم قال انه روى عن ابى حفص عن محمد بن الحسن رحمه الله تعالى ومشى على الثاني قاضى خان بعد ان حكاه عن الفقيه ابى جعفر حيث قال اذا كان على بدنه نجاسة فمسحها بخرقة مبلولة ثلاث مرات حكى عن الفقيه ابى جعفر انه قال يطهر اذا كان الماء متقاطرا على بدنه ثم قال بعد ذلك ولو مسح موضع الحجامة بثلاث خرق مبلولة قد مر قبل هذا

حلیہ میں اس کے بعد جو ابھی گزرا ہے "جان لو کہ فقہائے کرام نے تصریح کی ہے جیسا کہ خلاصہ میں ہے اور جیسا کہ اس کی طرف وہ بات اشارہ کرتی ہے جسے ہم نے ابھی خانیہ سے

نقل کیا ہے کہ ان فروع میں طہارت کا حکم، اس بات پر تفریع ہے کہ نجاست حقیقیہ سے بدن کی طہارت پانی کے علاوہ دیگر پاک بہنے والی چیزوں سے ہو جاتی ہے اور تم معلوم کر چکے ہو کہ یہ امام ابوحنیفہ اور امام ابو یوسف رحمہ اللہ کا قول ہے لیکن امام ابو یوسف رحمہ اللہ کا کچھ اختلاف بھی ہے۔ شیخ رضی الدین کی محیط میں ہے اگر حجامت کی جگہ کو کپڑے کے تین باریک تر ٹکڑوں سے صاف کیا تو دھونے کے قائم مقام ہے کیونکہ اس نے غسل کا عمل کیا امام ابو یوسف فرماتے ہیں دھونے کے بغیر کفایت نہ ہو گی (انتی) اور پہلے کے بارے میں ذخیرہ اور فتاویٰ صغریٰ کے تتمہ میں ہے، یہاں تک کہ حاکم نے کہا یہ ابو حفص سے اور وہ محمد بن حسن سے روایت کرتے ہیں اور دوسرے کو قاضی خان نے فقیہ ابو جعفر سے حکایت کرنے کے بعد اختیار کیا جب کہا "اگر اس کے بدن پر نجاست ہو وہ اسے کپڑے کے تر ٹکڑے کے ساتھ تین بار صاف کرے تو فقیہ ابو جعفر سے منقول ہے کہ پاک ہو جائیگا بشر طیکہ اس کے بدن پر پانی کے قطرے گریں اس کے بعد فرمایا اگر تین تر ٹکڑوں کو حجامت کی جگہ پھیرا تو پہلے گزر چکا کہ یہ

Fatawa Rizvia Volume 4 It is permissible if it is dripping. It has been narrated from al-Walwaliji that he said: If impurity touches any of his limbs, and he then wets his hand three times and rubs it over that spot, if the moisture from his hand is dripping, it is permissible; otherwise it is not, because this would constitute washing (End quote). The analogy of this is that, according to Imam Abu Yusuf (may Allah have mercy on him), removing the previously mentioned impurities with saliva is only permissible when the saliva drips like droplets, because such removal is considered washing. Allah the Almighty knows best [1]. (End of quote). May the mercy of the Generous King be upon him; how excellent a benefit he provided! It is stated in Radd al-Muhtar that among the things purified by wiping, the site of cupping remains. It is mentioned in al-Zahiriyyah that when it is wiped with three wet and soft cloths, it suffices in place of washing. This was also affirmed in al-Fath al-Qadir. Analogously, the area around the venesection site is also included when it becomes soiled and there is fear that running water might enter the hole. It is said in al-Bahr that this requires restricting the issue of cupping sites to cases where there is fear of harm from running water, while the transmitted reports are general (End quote). I say, it has been narrated in al-Qunyah from Najm al-A'immah that wiping once is sufficient when the bleeding stops. However, in al-Khaniyyah it states that if the cupping site is wiped with three wet cloths, it is permissible if the water is dripping (End quote). It appears that this is based on the opinion of Abu Yusuf regarding the obligation of washing, as narrated from him in...

1 Hilyah Page 469 of 761

फतावा रज़विया जिल्द चौथी यह जायज़ है जब बूँदें टपकें। अल-वलवालिजी से उद्धृत किया गया है, उन्होंने फ़रमाया: अगर किसी अंग पर नजासत (अशुद्धि) लग जाए, फिर वह अपने हाथ को तीन बार गीला करके उस जगह पर रगड़े, तो यदि उसके हाथ की नमी टपक रही है तो जायज़ है; अन्यथा नहीं, क्योंकि यह धोना माना जाएगा (समाप्त)। इसका तर्क यह है कि पिछली शाखाओं में जिस नजासत का वर्णन किया गया है, इमाम अबू युसुफ़ (रहमतुल्लाह अलैह) के अनुसार उसे लार से हटाना उस समय जायज़ है जब लार बूँदों की तरह टपके, क्योंकि इस हटाने को 'धोना' माना गया है। अल्लाह तआला भली-भाँति जानता है [1]। (समाप्त)। उन पर दयालु बादशाह की कृपा हो; उन्होंने कितना उत्कृष्ट लाभ पहुँचाया! 'रद अल-मुह्तार' में वर्णित है कि पोंछने से शुद्ध होने वाली चीज़ों में हिजामत (पछना लगाने) का स्थान शेष रह गया। 'ज़हीरिया' में है कि जब तीन गीले और नरम कपड़ों के टुकड़ों से पोंछा जाए, तो यह धोने के स्थान पर पर्याप्त होगा। 'फ़तह अल-क़दीर' में भी इसे बरकरार रखा गया है। नस से रक्त निकालने (फ़स्द) के स्थान के आसपास के क्षेत्र को भी इसी पर आधारित माना गया है जब वह दूषित हो जाए और पानी बहाने से छिद्र में पानी जाने का भय हो। 'बहर' में कहा गया है कि इसका अर्थ यह है कि हिजामत के स्थानों के विषय को इस बात से सीमित किया जाना चाहिए कि जब पानी बहाने से क्षति का भय हो, जबकि जो कुछ वर्णित है वह सामान्य है (समाप्त)। मैं कहता हूँ, 'क़ुनिया' में 'नज्म अल-आइम्मा' से वर्णित है कि एक बार पोंछना उस समय पर्याप्त होगा जब रक्त निकलना बंद हो जाए। किंतु 'ख़ानिया' में है कि यदि हिजामत के स्थान को तीन गीले कपड़ों से पोंछन जायज़ है यदि पानी टपक रहा हो (समाप्त)। स्पष्ट है कि यह मामला इमाम अबू युसुफ़ के धोने की अनिवार्यता के कथन पर आधारित है, जैसा कि उनसे... में वर्णित है।

1 हिलया पेज 469 ऑफ 761

فتاویٰ رضویہ جلد چہارم جائز ہے جبکہ قطرے گریں اور ولوالجی سے نقل کیا انہوں نے فرمایا اگر کسی عضو پر نجاست لگ جائے پھر وہ اپنے ہاتھ کو تین بار تر کر کے اس جگہ پر ملے تو اگر اس کے ہاتھ کی رطوبت متقاطر ہے تو جائز ہے ورنہ نہیں کیونکہ یہ دھونا ہو جائے گا (انتہی) اس کا قیاس یہ ہے کہ گزشتہ فروع میں جس نجاست کا ذکر کیا گیا ہے امام ابویوسف رحمۃ اللہ علیہ کے نزدیک اس کو لعاب سے دور کرنا اس وقت جائز ہے جب لعاب قطروں کی طرح گرے کیونکہ اس ازالے کو دھونا قرار دیا گیا ہے۔ اللہ تعالیٰ خوب جانتا ہے (انتہی) [1] ان پر سخی بادشاہ کی رحمت ہو۔ انہوں نے کیا ہی اچھا فائدہ پہنچایا۔ ردالمحتار میں ہے کہ جو چیزیں پونچھنے سے صاف ہو جاتی ہیں ان میں سے حجامت کی جگہ باقی رہ گئی۔ ظہیریہ میں ہے جب تین تر اور نرم ٹکڑوں سے پونچھا تو دھونے کے قائم مقام ہوگا۔ فتح القدیر میں بھی اس کو برقرار رکھا ہے پچھنے کی جگہ کے اردگرد کو بھی اس پر قیاس کیا ہے جب وہ وہ آلودہ ہو جائے اور پانی بہانے سے سوراخ میں جانے کا ڈر ہو۔ بحر میں فرمایا اس کا تقاضا یہ ہے کہ حجامت کی جگہوں کے مسئلے کو اس بات سے مقید کیا جائے کہ جب پانی بہانے سے ضرر کا خوف ہے، اور جو کچھ منقول ہے وہ مطلق ہے (انتہی) اقول (میں کہتا ہوں) کہ قنیہ میں نجم الائمہ سے منقول ہے کہ ایک مرتبہ پونچھنے پر اکتفا اس وقت ہوگا جب اس سے خون نکلنا بند ہو جائے۔ لیکن خانیہ میں ہے کہ حجامت کی جگہ کو تین تر ٹکڑوں کے ساتھ پونچھا تو جائز ہے اگر پانی متقاطر (ٹپکنے والا) ہو (انتہی)۔ اور ظاہر یہ ہے کہ یہ مسئلہ امام ابو یوسف کے اس قول پر مبنی ہے جس میں غسل (دھونا) لازم ہے جیسا کہ ان سے نقل کیا گیا ہے...

1 حلیہ صفحہ 469 از 761

Fatawa Ridawiyya Volume IV

Al-Hilya from Al-Muheet 1 etc. | Conditioned upon water droplets falling (ends). And it is apparent that this is based on the opinion of Imam Abu Yusuf (may Allah have mercy on him) that washing is necessary, as was narrated from him in Al-Hilya with reference to Al-Muheet. (T)

It is clear from these passages that in the purification of real (physical) impurity, water is not a condition according to the school of the two Sheikhs (Imam Abu Hanifa and Imam Abu Yusuf, may Allah be pleased with them). However, Imam Muhammad, just like ritual impurity, considers pure water absolutely necessary here as well. Therefore, he disagrees on the five previous issues concerning saliva. According to the two sides (Imam Abu Hanifa and Imam Abu Yusuf, may Allah be pleased with them), even the dripping of liquid is not a condition for purifying the body; only the removal of the impurity is required, by whatever means.

The mentioned issues are based on this, and this path has been followed in Al-Dhakhira, Al-Tatimma, Al-Zahiriya, Al-Muheet Al-Ridawi, and others. | And the mentioned issues are based on this, and the same path has been adopted in Al-Dhakhira, Al-Tatimma, Al-Zahiriya, Al-Muheet Al-Ridawi, etc. (T)

However, Imam Abu Yusuf, just like ritual impurity, considers the flowing (of liquid) to be mandatory here as well.

"This is what was followed in Al-Khaniya and Al-Walwajia, and it was chosen by the jurist Abu Ja'far. The discourse of Al-Fath tends towards this as well. However, an objection arises regarding his agreement with Imam Al-A'zam (may Allah have mercy on him) on issues of saliva, unless it is interpreted as the saliva being abundant such that its passage can be called 'flowing', as previously mentioned from Al-Hilya." | Al-Khaniya and Al-Walwajia followed this path. Jurist Abu Ja'far preferred it. The discourse of Fath al-Qadir also tends this way, but an objection arises concerning his agreement with Imam al-A'zam (may Allah have mercy on him) on issues of spit/ saliva. Unless it is understood as a large amount of saliva, whose passage could be described as 'flowing', as was mentioned in Al-Hilya. (T)

"I say: The expression of licking and general statements may not support this, or it could be said that passing saliva with the tongue is like pouring, as presented as an excuse for him in Al-Ghuniyah." | I say: In the case of licking or absolute spitting, this expression does not agree with it, or it could be said that passing saliva over with the

tongue is like flowing, as was expressed in Ghuniyah while presenting an excuse on their behalf. (T)

"I say: There is an obvious oversight here. It is apparent that his agreement here is due to necessity, as was initially followed in Al-Ghuniyah. And Allah Almighty knows best." | I say: This is also clearly objectionable. The apparent reason is that his agreement here (with Imam Abu Hanifa) is due to necessity, as they adopted this path at the beginning of Ghuniyah. And Allah Almighty knows best. (T)

Thus, the conclusion of the Imam of the school (may Allah be pleased with him) was established that the removal of real impurity from the body, whether by water or saliva, or any...

---

1 Radd al-Muhtar, Chapter on Impurities, published by Mustafa al-Babi, Egypt, 1/22.

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

अल-हिल्या अल-मुहीत 1 इत्यादि से। | इस शर्त पर कि पानी की बूंदें गिरें (समाप्त)। और ज़ाहिर यह है कि यह इमाम अबू यूसुफ़ (रहमतुल्लाह अलैहि) के इस कथन पर आधारित है कि धोना ज़रूरी है जैसा कि आपसे 'हिल्या' में 'मुहीत' के हवाले से नक़्ल किया गया है। (त)

इन इबारतों (अनुच्छेदों) से स्पष्ट हुआ कि हक़ीक़ी (शारीरिक) नजासत की पाकी में 'शैख़ैन' (इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम अबू यूसुफ़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा) के नज़दीक पानी शर्त नहीं है, लेकिन इमाम मुहम्मद हुक्मी नजासत की तरह यहाँ भी मुतलक़ पानी को ज़रूरी मानते हैं, इसलिए लार (थूक) के पिछले पाँचों मुद्दों में वे असहमत हैं। और तरफ़ैन (इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम अबू यूसुफ़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा) के नज़दीक शरीर की पाकी में बूंदों का टपकना भी शर्त नहीं है, केवल नजासत का ख़त्म होना ज़रूरी है चाहे वह किसी भी तरह हो।

और उल्लेखित मसले इसी पर आधारित हैं और ज़ख़ीरा, तत्तिम्मा, ज़हीरिया और मुहीत रज़वी वगैरह में यही रास्ता अपनाया गया है। | और उल्लेखित मसले इसी पर आधारित हैं और ज़ख़ीरा, तत्तिम्मा, ज़हीरिया और मुहीत रज़वी आदि में यही रास्ता अपनाया गया है। (त)

लेकिन इमाम अबू यूसुफ़ हुक्मी नजासत की तरह यहाँ भी बहाना (तरल का प्रवाह) अनिवार्य मानते हैं।

"यही वह रास्ता है जिस पर ख़ानिया और वलवाजिया में अमल किया गया और फ़क़ीह अबू जाफ़र ने इसे चुना। 'फ़तह' का कलाम (विवरण) भी इसी ओर झुकता है। लेकिन थूक के मसलों में इमाम-ए-आज़म (रहमतुल्लाह अलैहि) से उनकी सहमति पर आपत्ति आती है, सिवाय इसके कि इसे लार की अधिकता पर आधारित माना जाए, जिसके गुज़रने को 'बहाना' (प्रवाह) कहा जा सके, जैसा कि हिल्या से पहले गुज़रा है।" | ख़ानिया और वलवाजिया ने यही रास्ता अपनाया। फ़क़ीह अबू जाफ़र ने इसे पसंद किया। 'फ़तह अल-क़दीर' का कलाम भी इसी ओर झुकाव रखता है लेकिन थूक के मसलों में इमाम-ए-आज़म (रहमतुल्लाह अलैहि) से उनकी सहमति पर आपत्ति होती है। मगर यह कि इसे थूक की अधिकता पर माना जाए, जिसके गुज़रने को जारी होना कहा जा सके जैसा कि 'हिल्या' से गुज़रा। (त)

"मैं कहता हूँ: चाटने या आम थूक के मामले में यह अभिव्यक्ति इसका समर्थन नहीं करती, या यह कहा जाए कि लार को ज़बान के साथ गुज़ारना उंडेलने के समान है जैसा कि 'ग़ुनिया' में उनके लिए

माज़रत (बहाना) पेश करते हुए ज़ाहिर किया गया है।" | मैं कहता हूँ: चाटने या सामान्य थूक की स्थिति में यह शब्द उसके अनुरूप नहीं है, या यह कहा जाए कि लार को जीभ से गुज़ारना बहाने के समान है जैसा कि 'ग़ुनिया' में उनकी ओर से उज़्र (बचाव) पेश करते हुए स्पष्ट किया गया है। (त)

"मैं कहता हूँ: इसमें स्पष्ट रूप से विचार करने की ज़रूरत है। ज़ाहिर यह है कि यहाँ उनकी सहमति ज़रूरत (मजबूरी) के कारण है जैसा कि 'ग़ुनिया' के शुरू में इसी रास्ते को अपनाया गया है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।" | मैं कहता हूँ: यह भी साफ़ तौर पर आपत्तिजनक है। ज़ाहिर यह है कि यहाँ उनका (इमाम साहब की) सहमति जताना ज़रूरत के तहत है जैसा कि 'ग़ुनिया' के आरंभ में उन्होंने यह रास्ता अपनाया है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

तो इमाम-ए-मज़हब (रज़ियल्लाहु अन्हु) का निचोड़ यह तय हुआ कि शरीर से हक़ीक़ी नजासत को दूर करना, चाहे पानी से हो या लार से, या किसी भी...

---

1 रद अल-मुह्तार, बाब अल-अंजास, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, 1/22। पृष्ठ 470 / 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

الحلیة عن المحیط ۱ الخ۔ | بشرطیکہ پانی کے قطرے گریں (انتھی) اور ظاہر یہ ہے کہ یہ امام ابویوسف رحمہ اللہ کے اس قول پر مبنی ہے کہ دھونا ضروری ہے جیسا کہ آپ سے حلیہ میں محیط کے حوالے سے نقل کیا۔ (ت)

ان عبارات سے واضح ہوا کہ تطہیر نجاست حقیقیہ میں شیخین مذہب رضی اللہ تعالٰی عنہما کے نزدیک پانی شرط نہیں مگر امام محمد مثل نجاست حکمیہ یہاں بھی مائے مطلق ضرور جانتے ہیں والہذا لعاب دہن کے پانچوں مسائل گزشتہ میں خلاف فرماتے ہیں اور طرفین رضی اللہ تعالٰی عنہما کے نزدیک تطہیر بدن میں تقاطر بھی شرط نہیں صرف زوال نجاست درکار ہے جس طرح ہو۔

وعلیہ تبتنی المسائل المذکورۃ وعلیہ مشی الذخیرۃ والتتمۃ والظہیریۃ والمحیط الرضوی وغیرھا۔ | اور مسائل مذکورہ اسی پر مبنی ہیں اور ذخیرہ، تتمہ، ظہیریہ اور محیط رضوی وغیرہ میں یہی راہ اختیار کی ہے۔ (ت)

مگر امام ابویوسف مثل نجاست حکمیہ یہاں بھی اسالہ لازم مانتے ہیں۔

وھو الذی مشی علیہ فی الخانیۃ والولواجیۃ واختارہ الفقیہ ابو جعفر والیہ یمیل کلام الفتح ویرد علیہ وفاقہ الامام فی مسائل البزاق الا ان یحمل علی کون البزاق کثیرا یسمی مرورہ سیلانا کما تقدم عن الحلیۃ۔ | خانیہ اور ولواجیہ نے یہی راستہ اختیار کیا۔ فقیہ ابوجعفر نے اسے پسند کیا۔ فتح القدیر کا کلام بھی اسی طرف مائل ہے لیکن تھوک کے مسائل میں ان کا امام اعظم رحمہ اللہ سے موافق ہونے پر اعتراض وارد ہوتا ہے مگر یہ کہ اسے تھوک کے زیادہ ہونے پر محمول کیا جائے جس کے گزرنے کو جاری ہونا کہا جاسکے جیسا کہ حلیہ سے گزرا۔(ت)

اقول: وقد لا یساعدہ التعبیر باللحس والاطلاقات او یقال ان امرار الریق باللسان بمنزلۃ الصب کما ابداہ عذرا عنہ فی الغنیۃ۔ | اقول: چاٹنے یا مطلق تھوک کی صورت میں یہ تعبیر اس کی موافقت نہیں کرتی یا کہا جائے کہ لعاب کو زبان کے ساتھ گزارنا بہانے کی طرح ہے جیسا کہ غنیہ میں ان سے عذر پیش کرتے ہوئے ظاہر کیا ہے۔ (ت)

اقول: وفیہ نظر ظاہر فالظاہر ان وفاقہ ھھنا لاجل الضرورۃ کما مشی علیہ فی الغنیۃ اولاً واللہ تعالٰی اعلم۔ | اقول: یہ بھی واضح طور پر قابل اعتراض ہے ظاہر یہ ہے کہ ان کا یہاں (امام صاحب کی) موافقت کرنا ضرورت کے تحت ہے جیسا کہ غنیہ کے شروع میں انہوں نے یہ راہ اختیار کی ہے واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

تو حاصل امام مذہب رضی اللہ تعالٰی عنہ یہ قرار پایا کہ بدن سے ازالہ نجاست حقیقیہ پانی لعاب دہن خواہ کسی

---

۱ ردالمحتار باب الانجاس مطبوعہ مصطفی البابی مصر ۱ / ۲۲ Page 470 of 761

Fatawa Razawiyya Volume 4

If the removal is done with a pure cleanser, whether by washing or wiping, such that most of it does not remain, it is absolutely sufficient and leads to purity. Then, if this removal is by means of water, as in the case of the question where the body was wiped with a cloth soaked in water, Imam Muhammad will also accept it as purity. And if the moisture of the water in the cloth was such that drops dripped on the body each time, then all the leading scholars of the school of thought would agree on the attainment of purification.

[Arabic Box - Left]: This is the profound research by the grace of Allah Almighty, and through it, it has become clear that the restriction in 'Fath al-Qadir' regarding the issue of bloodletting (phlebotomy) to the fear of harm is an inclination from him towards the second school of thought and guidance towards what is more cautious; otherwise, according to the school of the founder of the madhhab (Imam Abu Hanifa), there is no need for it. That is why it is said in 'al-Bahr' that what is transmitted is absolute. Through this, it becomes clear that Allama Shami's limiting of purification by wiping to the site of cupping is a rigidity based on the depiction that occurred in the case; otherwise, it does not conform to any of the schools of thought, especially the school of the founder of the madhhab as you have known. We have recited to you enough texts to satisfy you, and all praise is due to Allah, and Allah Almighty knows best.

[Urdu Translation - Right]: By the grace of Allah Almighty, this is the writing that reaches (the objective). From this, it became clear that in the matter of cupping, the restriction of 'fear of harm' placed by 'Fath al-Qadir' is their inclination towards another school of thought or guidance towards a more cautious approach; otherwise, it is not supported in the school of the founder of the madhhab. That is why it was stated in 'Bahr al-Ra'iq' that what is transmitted is absolute. It also became clear that Allama Shami's specific mention of purifying with wiping only for the site of cupping pertains only to the situation that occurred in that case; otherwise, it does not align with any school, particularly the school of the founder of the madhhab, as you have learned. We have presented to you self-sufficient texts. All praise belongs to Allah, and Allah Almighty knows best. (T)

Problem 179: 1st Sha'ban 1312 AH Respected Master! The day before yesterday, crow droppings fell into water. This humble servant performed istinja with that water and also cleaned the parts of the body that were impure. Later, when I went to get water

for wudu, I saw droppings in the pot. I had poured water on my stomach and ribs and wiped with a towel, but the body was not completely dry; some moisture remained on the ribs and stomach. In that state, I wore a cotton-padded waistcoat (sadri) and fastened the buttons. Now I don't know if the waistcoat got wet from my fingertips or not. After a few minutes, when I looked, no water was visible anywhere on the waistcoat. What is the ruling in this situation?

Answer: The waistcoat is pure. Only such moisture that cannot wet the cloth does not make it impure; mere dampness has no consideration.

शुद्ध शोधक से धोकर या पोंछकर यदि अधिकांश भाग न रहे, तो यह बिल्कुल पर्याप्त है और पवित्रता का कारण है। फिर, यदि यह निष्कासन पानी के माध्यम से हो, जैसा कि प्रश्न के मामले में है कि शरीर को पानी से भीगे हुए कपड़े से पोंछा गया था, तो इमाम मुहम्मद भी इसे पवित्रता मानेंगे। और यदि कपड़े में पानी की नमी इतनी थी कि हर बार शरीर पर बूंदें टपकीं, तो मज़हब के सभी इमाम शुद्धिकरण की प्राप्ति पर सहमत होंगे।

[अरबी बॉक्स - बायां]: अल्लाह तआला की तौफीक से यह एक परिपक्व शोध है और इससे स्पष्ट हो गया है कि 'फ़त्ह अल-क़दीर' का फस्द (रक्तमोक्षण) के मसले में 'नुकसान के डर' की शर्त लगाना उनका दूसरे मज़हब की ओर झुकाव है या अधिक सावधानी की ओर मार्गदर्शन करना है; अन्यथा मज़हब के प्रवर्तक के मज़हब के अनुसार इसकी आवश्यकता नहीं है। इसीलिए 'बहर अल-रैक' में कहा गया कि जो उद्धृत है वह निरपेक्ष है और इसी से स्पष्ट हुआ कि अल्लामा शामी का पोंछने के साथ पाक करने को 'हजामत' (सिंगी लगवाना) के स्थान तक सीमित करना केवल उसी स्थिति से संबंधित है जो इस मसले में घटित हुई, अन्यथा वह किसी मज़हब, विशेषकर मज़हब के प्रवर्तक के मज़हब के अनुकूल नहीं है जैसा कि आपने जान लिया। हमने आपको पर्याप्त पाठ सुना दिए हैं, और सभी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

[उर्दू अनुवाद - दायां]: अल्लाह तआला की तौफीक से यही लेखन (मकसद तक) पहुँचने वाला है, इससे स्पष्ट हुआ कि पोंछने या सिंगी लगवाने के मसले में 'फ़त्ह अल-क़दीर' का 'नुकसान के डर' की कैद लगाना उनका दूसरे मज़हब की तरफ झुकाव है या अधिक एहतियात (सावधानी) की तरफ रहनुमाई करना है, वरना साहब-ए-मज़हब के मज़हब पर इसकी हिमायत नहीं है। इसीलिए 'बहर अल-रैक' में फ़रमाया कि मनक़ूल (उद्धृत) मुतलक़ है और इसी से वाज़ेह (स्पष्ट) हुआ कि अल्लामा शामी का मसह के साथ पाक करने को हजामत की जगह से खास (सीमित) करना सिर्फ उसी सूरत से मुताल्लिक़ है जो इस मसले में वाक़े हुई, वरना वह किसी मज़हब बिलखुसूस साहब-ए-मज़हब के मज़हब के मुवाफ़िक़ (अनुकूल) नहीं जैसा कि तुमने जान लिया और हमने तुम्हें बेपरवाह कर देने वाली नसें (संदर्भ) सुना दीं। वल्लाहुल हम्द वल्लाहु तआला आलम (त)।

मसला १७९: १ शाबान १३१२ हिजरी हुज़ूर-ए-अक़दस! परसों कौवे की बीट पानी में गिरी थी, इस तुच्छ व्यक्ति ने उसी पानी से इस्तिनजा किया और शरीर जहाँ से नापाक था उसे भी पाक किया। बाद में

जब वज़ू के लिए पानी लेने गया तो मटके में बीट पड़ी देखी। पेट और पसलियों पर भी पानी बहाया था और तौलिये से पोंछा था लेकिन शरीर पूरी तरह सूखा नहीं था, कुछ नमी पसलियों और पेट पर लगी थी। उसी हालत में रुई वाली सदरी (वास्कट) पहन ली और बटन भी लगा लिए। अब यह नहीं मालूम कि पोरों से सदरी भीगी या नहीं। कुछ मिनट बाद देखा तो सदरी पर कहीं पानी लगा हुआ नज़र नहीं आया। इस स्थिति में क्या हुक्म है?

जवाब: सदरी पाक है। सिर्फ ऐसी नम (नमी) जो कपड़े को तर (गीला) न कर सके, नापाक नहीं करती; फकत सीलन आ जाने का कुछ एतबार नहीं है।

पृष्ठ ७६१ में से ४७१

مانع طاہر سے ہو دھو کر خواہ پونچھ کر کہ اکثر نہ رہے مطلقاً کافی وموجبِ طہارت ہے پھر اگر یہ ازالہ بذریعہ آب ہو جیسے صورتِ سوال میں کہ پانی سے بھیگے کپڑے سے بدن پونچھا گیا تو امام محمد بھی طہارت مانیں گے اور اگر پانی کی تری کپڑے میں اس قدر تھی کہ ہر بار قطرے بدن پر سے ٹپکے تو جمیع ائمہ مذہب حصولِ تطہیر پر اتفاق فرمائیں گے۔

[Arabic Box - Left]: هذا هو التحرير البالغ بتوفيق الله تعالى و به تبين ان تقييد الفتح مسألة الفصد بخوف الضرر ميل منه الى مذهب الثانى وارشاد الى الاحوط والا فعلى مذهب صاحب المذهب لا حاجة اليه ولذا قال في البحر ان المنقول مطلق و به تبين تخصيص العلامة الشامي تطهير المسح بموضع الحجامة جمود على تصوير وقع في مسألة والا فهو لا يوافق شيأ من المذاهب لاسيما مذهب صاحب المذهب كما علمت وقد اسمعناك من النصوص ما فيه غنية والله الحمد والله تعالى اعلم۔

[Urdu Translation - Right]: اللہ تعالٰی کی توفیق سے یہی تحریر (مقصد تک) پہنچنے والی ہے اس سے ظاہر ہوا کہ پچھنے لگوانے کے مسئلے میں فتح القدیر کا خوفِ ضرر کی قید لگانا ان کا دوسرے مذہب کی طرف میلان ہے یا زیادہ محتاط کی طرف رہنمائی کرنا ہے ورنہ صاحبِ مذہب کے مذہب پر اس کی حمایت نہیں اسی لئے بحر الرائق میں فرمایا کہ منقول مطلق ہے اور اسی سے واضح ہوا کہ علامہ شامی کا مسح کے ساتھ پاک کرنے کو حجامت کی جگہ سے خاص کرنا صرف اسی صورت سے متعلق ہے جو اس مسئلے میں واقع ہوئی ورنہ وہ کسی مذہب بالخصوص صاحب مذہب کے مذہب کے موافق نہیں جیسا کہ تم نے جان لیا اور ہم نے تمہیں بے پروا کردینے والی نصوص سنادیں، واللہ الحمد واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۱۷۹: غرہ شعبان ۱۳۱۲ھ حضورِ اقدس! پرسوں کوے کی بیٹ پانی میں پڑی تھی کمترین نے اُسی پانی سے استنجا کیا اور جسم جس جگہ سے ناپاک تھا وہ بھی پاک کیا بعد کو وضو کیلئے جو پانی لینے کو جانا ہوا تو مٹکے میں بیٹ پڑی دیکھی پیٹ اور پسلیوں پر بھی پانی بہایا تھا اور تولیہ سے پونچھا تھا مگر بالکل جسم خشک نہ ہوا تھا کسی قدر نمی پسلیوں اور پیٹ پر لگی تھی اُسی حالت میں صدری رُوئی کی پہن لی اور بٹن بھی لگالیے اب یہ نہیں معلوم کہ پوروں سے صدری بھیگی یا نہیں بعد چند منٹ کے دیکھا تو صدری پر کہیں پانی لگا ہوا نظر نہ آیا اس صورت میں کیا حکم ہے؟

الجواب: صدری پاک ہے صرف ایسی نم جو کپڑے کو تر نہ کرسکے ناپاک نہیں کرتی فقط سیل آجانے کا کچھ اعتبار نہیں

Fatawa Razawiya Volume 4

...rather, the very water with which the purification (istinja) was done and the body washed was pure, because the dropping was seen afterwards; it is possible that it fell after the water was taken. And Allah Almighty knows best.

Problem 180: From Gilgit, sent by Sardar Amir Khan, servant of Captain Stott, 21 Dhu al-Hijjah 1312 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Is the bone of a dead animal pure or impure? Because the horn of every animal is pure. If the ivory (elephant bone) is used in a miswak (tooth-stick), how is it? Give a decree and be rewarded.

The Answer: The bone of every animal is pure, whether it is halal or haram, slaughtered or dead, provided that there is no moisture of the dead body on it, except for the pig, as every part of it is impure. There is no harm if the ivory of an elephant is used in a miswak, though abandoning it is better.

[Table Content] Left: Due to the disagreement of [Imam] Muhammad, for he is of the opinion that its essence is impure like a pig, as stated in al-Fath al-Qadir, Radd al-Muhtar, etc. Observing the disagreement is recommended by consensus. (T) Right: Because there is a disagreement of Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) on this point. He considers it to be essentially impure (najis al-ayn) just like a pig, as mentioned in Fath al-Qadir and Radd al-Muhtar, etc., and respecting the difference of opinion is recommended by consensus. (T)

[Table Content] Left: The hair of a carcass other than a pig and its bones are pure [2] - end of summary. And Allah Almighty knows best. (T) Right: Apart from the pig, the hair and bones of a dead animal are pure. End of summary. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 181: 9 Rabi' al-Awwal 1314 AH. Venerable Maulana Sahib (may his blessings continue), Peace be upon you and the mercy of Allah and His blessings. Offering humble respects, I request: the roof was plastered with cow dung, and during the first rain, that roof leaked. Is that leaked water ruled as impure or not? Give a decree and be rewarded. With much respect, the humble Ahmad Hussain known as Manjhla, may he be forgiven.

The Answer: Dear brother! And peace be upon you and the mercy of Allah and His blessings. If the cow dung is completely washed away and after that, the water leaked, then there is no...

1. Radd al-Muhtar, Discussion on Rulings of Tanning, printed at Mujtabai, Delhi, 1/173.
2. Durr al-Mukhtar, Book of Purification, printed at Mujtabai, Delhi, 1/89.

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

...बल्कि मूल रूप से वह पानी जिससे इस्तिंजा (शुद्धिकरण) किया गया और शरीर धोया गया, वह पाक (शुद्ध) था क्योंकि उसके बाद लीद देखी गई; संभव है कि पानी लेने के बाद गिरी हो। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसाला १८०: गिलगित से, सरदार अमीर खान, कप्तान स्टॉट के कर्मचारी द्वारा प्रेषित, २१ ज़ुल-हिज्जा १३१२ हिजरी। धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं कि मृत जानवर की हड्डी पाक है या नापाक? क्योंकि हर जानवर का सींग पाक है। यदि मिसवाक में हाथी दांत की हड्डी हो तो इसका क्या हुक्म है? फतवा दें और पुण्य कमाएं।

जवाब: हर जानवर की हड्डी पाक है, चाहे वह हलाल हो या हराम, ज़बह किया हुआ हो या मृत, बशर्ते कि उस पर मृत शरीर की कोई नमी न हो, सिवाय सुअर के क्योंकि उसका हर अंग नापाक है। यदि मिसवाक में हाथी दांत की हड्डी हो तो कोई हर्ज नहीं है, हालांकि इसे छोड़ना बेहतर है।

[तालिका सामग्री] बाएँ क्योंकि यहाँ इमाम मुहम्मद का मतभेद है, क्योंकि वे सुअर की तरह इसे भी मूल रूप से नापाक (नजिस-उल-ऐन) मानते हैं, जैसा कि फ़तहुल क़दीर और रदुल मुख्तार आदि में है और मतभेद का सम्मान करना सर्वसम्मति से मुस्तहब (पसंदीदा) है। (त) दाएँ क्योंकि यहाँ इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहम करे) का मतभेद है। वे सुअर की तरह इसके भी नजिस-उल-ऐन होने के कायल हैं जैसे फ़तहुल क़दीर और रदुल मुख्तार वगैरह में है और मतभेद की रियायत करना बिल-इजमा (सर्वसम्मति से) मुस्तहब है। (त)

[तालिका सामग्री] बाएँ सुअर के अलावा मृत जानवर के बाल और हड्डियां पाक हैं [2] - सारांश समाप्त। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त) दाएँ सुअर के अलावा मुर्दार के बाल और हड्डियाँ पाक हैं इतिही तलख़ीस (सारांश समाप्त)। और अल्लाह तआला खूब जानता है। (त)

मसाला १८१: ९ रबी-उल-अव्वल १३१४ हिजरी। माननीय मौलाना साहब (उनकी बरकतें बनी रहें), आप पर शांति और अल्लाह की दया और उसकी बरकतें हों। अदब के साथ निवेदन है कि छत पर गोबर का लेप किया गया था और पहली बारिश में वह छत टपकी। क्या उस टपकते हुए पानी पर नापाकी का हुक्म है या नहीं? फतवा दें और पुण्य कमाएं। अत्यंत सम्मान के साथ, तुच्छ अहमद हुसैन उर्फ़ मंझला, अल्लाह उन्हें क्षमा करे।

जवाब: आदरणीय भाई! और आप पर भी शांति और अल्लाह की दया और उसकी बरकतें हों। अगर गोबर बिल्कुल धुल गया और उसके बाद का पानी टपका तो कुछ...

---

1. रदुल मुख्तार, चमड़ा पकाने के नियमों पर चर्चा, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, १/१७३।
2. दुर्रे मुख्तार, पवित्रता की पुस्तक, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, १/८९।

पृष्ठ ४७२ का ७६१

بلکہ سرے سے وہ پانی ہی جس سے استنجا کیا بدن دھویا پاک تھا کہ اس کے بعد بیٹ پڑی دیکھی ممکن ہے کہ پانی لینے کے بعد پڑی ہو۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۸۰: از گلگت مرسلہ سردار امیر خان ملازم کپتان اسٹوٹ ۲۱ ذی الحجہ ۱۳۱۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہڈی مردار جانور کی پاک ہے یا ناپاک ہے کیونکہ سینگ تو ہر جانور کا پاک ہے اگر مسواک میں ہڈی ہاتھی دانت کی ہو تو کیسی ہے بینوا توجروا۔

الجواب: ہڈی ہر جانور کی پاک ہے حلال ہو یا حرام، مذبوح ہو یا مردار جبکہ اس پر بدن میت کی کوئی رطوبت نہ ہو سوا سور کے کہ اس کی ہر چیز ناپاک ہے مسواک میں ہاتھی دانت کی ہڈی ہو تو کچھ حرج نہیں، ہاں اس کا ترک بہتر ہے۔

[جدول] لمحل خلاف محمد فانه قائل بنجاسة عینه کالجنسیر کما فی الفتح القدیر وردالمحتار وغیرہما ورعایة الخلاف مستحبة بالاجماع۔ کیونکہ اس جگہ امام محمد رحمۃ اللہ کا اختلاف ہے۔ آپ خنزیر کی طرح اس کے بھی نجس عین ہونے کے قائل ہیں جیسے فتح القدیر اور ردالمحتار وغیرہ میں ہے اور اختلاف کی رعایت کرنا بالاجماع مستحب ہے۔ (ت)

[جدول] شعر المیتة غیر الخنزیر وعظمها طاهر [2] اه ملخصا - واللہ تعالٰی اعلم۔ خنزیر کے علاوہ مردار کے بال اور ہڈیاں پاک ہیں انتھی تلخیص۔ اور اللہ تعالٰی خوب جانتا ہے۔ (ت)

مسئلہ ۱۸۱: ۹ ربیع الاول ۱۳۱۴ھ جناب مولانا صاحب دام برکاتہ، السلام علیکم و رحمۃ اللہ وبرکاتہ، آداب غلامانہ بجالا کر ملتمس ہوں چھت پر گوہری کی گئی اور پہلی مرتبہ کی بارش میں

وہ چھت ٹپکی اس ٹپکے ہوئے پانی پر ناپاکی کا حکم ہے یا نہیں بینوا توجروا۔ زیادہ حدادب،

کمترین احمد حسین عرف منجھلا عفی عنہ۔

الجواب: گرامی برادر ! وعلیکم السلام و رحمۃ اللہ وبرکاتہ، ۔ اگر گوبر بالکل دھل گیا اس کے بعد کا پانی ٹپکا تو کچھ

---

1. ردالمحتار مطلب فی احکام الدباغتہ مطبوعہ مجتبائی دہلی ۷۱/ ۱۷۳

2. درمختار کتاب الطہارتہ مطبوعہ مجتبائی دہلی ۸۹/۱

Fatawa Razawiyya Volume 4 There is no harm, but perhaps the hope for this is less in the very first rain. And if dung remained and its color or odor was present in the dripping water, then it is certainly impure. And if there was no color or odor, then if this water dripped while it was still raining and the rainwater was flowing, it is not impure. However, if the rain had already ceased and it dripped after that, then it is impure. And peace be upon you. This ruling is found in Al-Fatawa al-Hindiyya and others. And Allah Almighty knows best. (This ruling is in Fatawa Hindiyya etc. And Allah Almighty knows perfectly. - T)

Page 473 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द चार कोई हर्ज नहीं, लेकिन शायद पहली ही बारिश में इसकी उम्मीद कम है। और अगर गोबर बचा हुआ था और टपकते हुए पानी में उसका रंग या गंध (बू) थी, तो वह निस्संदेह नापाक (अशुद्ध) है। और अगर रंग और गंध कुछ भी न थी, तो यदि यह पानी उस स्थिति में टपका कि बारिश अभी भी हो रही थी और बारिश का पानी बह रहा था, तो वह नापाक नहीं है। और यदि बारिश रुक चुकी थी और उसके बाद टपका, तो वह नापाक है। वसलाम, और यह मसला फ़तावा हिन्दिया आदि में है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। (यह मसला फ़तावा हिन्दिया आदि में है। और अल्लाह तआला खूब जानता है। - त)

पृष्ठ 761 में से 473

فتاوی رضویہ جلد چہارم مضائقہ نہیں مگر غالباً اول ہی بارش میں اس کی امید کم ہے۔ اور اگر گوبر باقی تھا اور ٹپکتے ہوئے پانی میں اس کا رنگ یا بو تھی تو بے شک ناپاک ہے اور اگر رنگ وبو کچھ نہ تھا تو اگر یہ پانی اُس حالت میں ٹپکا کہ بارش ہنوز ہورہی ہے اور مینہ کا پانی رواں تھا تو ناپاک نہیں اور مینہ برس چکا تھا اُس کے بعد ٹپکا تو ناپاک ہے والسلام والمسئلۃ فی الہندیۃ وغیرہا واللہ تعالٰی اعلم (یہ مسئلہ فتاوی ہندیہ وغیرہ میں ہے۔ اور اللہ تعالٰی خوب جانتا ہے۔ ت)

صفحہ 473 از 761

Fatawa Ridawiyya Volume Four

Treatise Al-Ahla min as-Sukkar li-Talaba Sukkar-Rosar 1303H (This treatise is sweeter than sugar for the seeker of [the Shari'a ruling on] sugar and 'rosar' [sugar beet/red sugar].) In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful.

Istifta (Inquiry for a Ruling) From Nawabganj, Barabanki, sent by Sheikh-ul-Jalil Punjabi, in the month of Dhu al-Qi'dah 1303H. What do the scholars of religion say regarding this matter: that sugar-beet sugar is refined using bones, and those who refine it take no care whether those bones are pure or impure, from a slaughtered animal or a carcass? Furthermore, it has been heard that alcohol is added to it. Similarly, what is the legal status in Sharia of foreign ice and foreign products which are rumored to contain traces of alcohol? Please clarify and may you be rewarded.

The Answer: Fatwa In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. Glory be to the Lord and thanks to Him who praised the Most High and the Greatest* To the one who praised the Exalted Being, the Lord Almighty...

Page 474 of 761

फ़तावा रिज़विया जिल्द चौथी

रिसाला (लघु शोध प्रबंध) अल-अहला मिन अस-सुक्कर लि-तलबत सुक्कर-रोसर १३०३ हि. (यह रिसाला शक्कर और रोसर (चुकंदर की शक्कर) के(शर्ई हुक्म के) तलबगार के लिए शक्कर से ज़्यादा मीठा है।) बिस्मिल्लाह हिर-रहमान निर-रहीम

इस्तिफ़्ता (फतवा पूछना) नवाबगंज, बाराबंकी से शेख-उल-जलील पंजाबी द्वारा प्रेषित, ज़ी-क़ादा १३०३ हि. धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं कि रोसर की शक्कर हड्डियों के ज़रिए साफ़ की जाती है, और साफ़ करने वालों को इस बात की कोई परवाह नहीं होती कि वे हड्डियाँ पाक (शुद्ध) हैं या नापाक, हलाल जानवर की हैं या मुर्दार की? और यह भी सुना गया है कि इसमें शराब भी मिलाई जाती है। इसी तरह विलायती (विदेशी) बर्फ और विलायती चीज़ें जिनमें शराब के अंश की अफवाह सुनी जाती है, उनका शरीयत की नज़र में क्या हुक्म है? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

जवाब: फ़तवा बिस्मिल्लाह हिर-रहमान निर-रहीम सबहा अल-मौला व शुक्र लिमन हमदल अली अल-अकबर* जिसने बुलंद और आला ज़ात की तारीफ़ की, मौला तआला ने उसे...

पृष्ठ ४७४ (७६१ में से)

فتاویٰ رضویہ جلد چہارم

رسالہ الاحلیٰ من السکر لطلبۃ سکرروسر ۱۳۰۳ھ (یہ رسالہ شکر و رسر کے طالب (حکم شرعی) کیلئے شکر سے زیادہ میٹھا ہے) بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

استفتاء از نواب گنج بارہ بنکی مرسلہ شیخ الجلیل پنجابی ماہ ذیقعدہ ۱۳۰۳ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ روسر کی شکر کہ ہڈیوں سے صاف کی جاتی ہے اور صاف کرنے والوں کو کچھ احتیاط اس کی نہیں کہ وہ ہڈیاں پاک ہوں یا ناپاک، حلال جانور کی ہوں یا مردار کی، اور سنا گیا کہ اس میں شراب بھی پڑتی ہے اسی طرح کل کی برف اور کل کی وہ چیزیں جن میں شراب کا لگاؤ سنا جاتا ہے شرعاً کیا حکم رکھتی ہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: فتویٰ بسم اللہ الرحمٰن الرحیم سبح المولیٰ و شکر لمن حمد العلی الاکبر* جس نے بلند و بالا ذات کی تعریف کی، مولا تعالیٰ نے اسے

Fatawa Rizvia - Volume 4

Top Left (Arabic Box): Thanks be to You, our Lord, the most delicious and sweetest of all that is pleasurable and permissible. And blessings and peace be upon the master of mankind, the greatest leader of the bees of Islam, the source of sweet saliva and sweet speech, the spring of honey that removes illness, and upon his family and his great and noble companions, as long as a sick patient is healed by honey and a healthy Muslim loves sweetness. Amen.

Top Right (Urdu Translation of the Box): We heard and reward was granted. O our Lord! Thanks be to You for everything that is extremely delicious and sweet from which pleasure and sweetness are obtained. And blessings and peace be upon the master of creation who holds a status better than honeybees for the date palm of Islam, whose saliva is sweet and speech is pleasant. He is the source of honey which removes diseases, and upon his glorious and high-ranking family and companions, as long as the sick find cure from honey and the faultless Muslim likes sweet things. Amen. (T)

Main Body: Afterwards, questions regarding this issue were repeated, and I found the opinions of the times to be anxious. People's need in this direction is urgent, and the removal of whims is extremely necessary, and the uncovering of misgivings is of great importance. Therefore, it is appropriate that, by the power of the Giver, the investigation and refinement of this new branch, and the explanation and clarification of the Sharia ruling, be carried out in such a successful manner and preferred style that not only the ruling on this new issue, but also all countless details of this kind, become clear and manifest. The poorest of the poor, Abd al-Mustafa Ahmad Raza Muhammadi Sunni Hanafi Qadiri Barkati Barelvi (may the Almighty Lord, by His hidden and faithful grace, grant him full and unseen kindness, forgive him and all the believers, and treat him and all of them well. Amen. (T)). I write this short fatwa on this matter, and [named it] 'Al-Ahla min as-sukkar li-tulbat sukkar wa surr' (The Sweetest from Sugar for the Seekers of Sugar and Secret). Note: One of the subtleties of this name is its suitability for the content, because as the treatise has judged this sugar with two rulings - permissibility in one form and prohibition in another - so this name also has two aspects towards both rulings. In terms of permissibility, it is sweeter than sugar for the common people because it has removed doubts and objections and made sugar desirable for them. In terms of prohibition, even if it has forbidden the common people from sugar, it has not deprived them of sweetness, because the investigation of the Sharia ruling is the pleasure of the heart, while

consuming desirable foods is the pleasure of the self. The former is more important and higher. Therefore, this treatise is sweeter for them than the sugar that was forbidden to them. (From the author) (M)

ऊपर बाएँ(अरबी बॉक्स): हे हमारे रब, तेरा शुक्र है, जो हर उस चीज़ से ज़्यादा स्वादिष्ट और मीठा है जो आनंददायक और वैध है। और मानव जाति के स्वामी पर कृपा और शांति हो, जो इस्लाम की मधुमक्खियों के महानतम नेता हैं, मीठी लार और मीठी वाणी का स्रोत हैं, शहद का वह झरना हैं जो बीमारी को दूर करता है, और उनके महान और कुलीन परिवार और साथियों पर, जब तक शहद से बीमार को आराम मिले और एक स्वस्थ मुसलमान मीठी चीज़ों को पसंद करे। आमीन।

ऊपर दाएँ(बॉक्स का उर्दू अनुवाद): सुना और बदला दिया गया। ऐ हमारे रब! हर उस चीज़ पर तेरा शुक्र जो निहायत लज़ीज़ और मीठी है जिससे लज़्ज़त और मिठास हासिल की जाती है। और दुरूद और सलाम मख्लूक के सरदार पर जो इस्लाम के खजूर के पेड़ के लिए शहद की मक्खी से बेहतर मकाम रखते हैं, जिनका लुआब (लार) मीठा और कलाम शीरीं है। वह शहद का स्रोत हैं जो बीमारियों को दूर कर देता है, और आपके अज़ीमुश्शान आल और असहाब पर, जब तक शहद से बीमार को शिफा मिले और बे-ऐब मुसलमान मीठी चीज़ को पसंद करे। आमीन। (त)

मुख्य लेख: इसके बाद, इस मसले पर बार-बार सवाल आए और ज़माने की राय को परेशान पाया। इस तरफ़ लोगों की ज़रूरत बहुत ज़्यादा है और वहमों को दूर करना निहायत ज़रूरी और शुकूक का पर्दाफ़ाश करना अहम कामों में से है। इसलिए मुनासिब है कि अल्लाह की मदद से इस नई शाखा की तहक़ीक़ और शरा के हुक्म की वज़ाहत इस कामियाब तरीक़े और पसंदीदा अंदाज़ में की जाए कि न सिर्फ इस नए मसले का बल्कि इस किस्म के तमाम अनगिनत विवरणों का हुक्म साफ़ और ज़ाहिर हो जाए। फ़क़ीरों में सबसे ज़्यादा मोहताज अब्द-अल-मुस्तफ़ा अहमद रज़ा मुहम्मदी सुन्नी हनफ़ी क़ादिरी बरकाती बरेलवी (शक्तिशाली रब्ब अपने पोशीदा और वफ़ादार करम से उसे अपनी कामिल और ग़ैबी मेहरबानी अता फरमाए, उसे और तमाम मोमिनों को बख़्श दे और उसके और उन सब के साथ अच्छा सुलूक करे। आमीन। (त))। इस बारे में यह मुख़्तसर फ़तवा लिखता हूँ और [इसे नाम दिया है] 'अल-अहला मिन अस-सुक्कर लि-तुलबत सुक्कर व सुर्र (शक्कर और राज़ के तलबगारों के लिए शक्कर से भी ज़्यादा मीठा)। नोट: इस नाम की एक बारीकी यह है कि यह विषय के अनुकूल है, क्योंकि जिस तरह रिसाले ने इस शक्कर के बारे में दो हुक्म दिए हैं - एक लिहाज़ से हलाल और दूसरे लिहाज़ से हराम - उसी तरह इस नाम के भी दोनों हुक्मों की तरफ दो पहलू हैं। हलाल होने के लिहाज़ से यह आम लोगों के लिए शक्कर से ज़्यादा मीठा है क्योंकि इसने

शुबहात और एतराज़ात को ख़त्म करके आम लोगों के लिए शक्कर को पसंदीदा बना दिया है। और हराम होने के लिहाज़ से, हालाँकि इसने आम लोगों को शक्कर से मना कर दिया है, फिर भी उन्हें मिठास से महरूम नहीं किया, क्योंकि शरीअत के हुक्म की तहक़ीक़ दिल की लज़्ज़त है, जबकि पसंदीदा चीज़ों को खाना नफ़्स की लज़्ज़त है। पहली चीज़ यानी दिली लज़्ज़त ज़्यादा अहम और ऊँची है। इसलिए यह रिसाला उनके लिए उस शक्कर से ज़्यादा मीठा है जो उन पर हराम की गई थी। (लेखक से) (म)

पृष्ठ 761 में से 475

اوپر بائیں (عربی باکس): شکرك ربنا الذ واحلٰی من کل ما یلذ ویستحلٰی والصلاۃ والسلام علی سید الانام اعظم یعسوب لنحل الاسلام عذب الریق حلو الکلام منبع شھد یزیل السقام وآلہ وصحبہ العظام الفخام ما اشتفی بالعسل مریض سقیم واحب الحلو مسلم سلیم آمین*

اوپر دائیں (باکس کا اردو ترجمہ): سنا اور جزا عطا فرمائی۔ اے ہمارے رب ! ہر اس چیز پر تیرا شکر نہایت لذیذ و شیریں ہے جس سے لذت اور مٹھاس حاصل کی جاتی ہے اور درود وسلام مخلوق کے سردار پر جو اسلام کے درخت خرما کیلئے شہد کی مکھی سے بہتر حیثیت رکھتے ہیں جن کا لعاب میٹھا اور کلام شیریں ہے شہد کا منبع ہیں، جو بیماریوں کو دُور کر دیتا ہے، اور آپ کے باعظمت اور عظیم المرتبت آل و اصحاب پر جب تک شہد سے بیمار کو شفاء اور بے عیب مسلمان میٹھی چیز کو پسند کرے۔ آمین۔ (ت)

متن: اما بعد اس مسئلہ سے سوال مکرر آیا اور آرائے عصر کو مضطرب پایا اور حاجت ناس اس طرف ماس اور دفع ہوا جس نہایت ضرور اور کشف وساوس اہم امور لہذا مناسب کہ بحول الوہاب اس تازہ فرع کی تحقیق و تنقیح اور حکم شرع کی توضیح و تصریح اس نہج نجیح و طرز رجیح کے ساتھ عمل میں آئے کہ نہ صرف اسی مسئلہ تازہ بلکہ اس قسم کی تمام جزئیات بے اندازہ کا حکم واضح و آشکار ہو جائے افقر الفقراء عبد المصطفٰی احمد رضا محمدی سنی حنفی قادری برکاتی بریلوی عاملہ المولٰی القوی بلطفہ الخفی الوفی و غفر لہ و للمؤمنین واحسن الیہ والیھم اجمعین (نہایت طاقت والا مولا اسے اپنی کامل اور غیبی مہربانی سے نوازے، اسے اور تمام مومنوں کو بخشش دے اس سے اور تمام مسلمانوں سے اچھا سلوک کرے۔ ت) اس بارہ میں یہ مختصر فتوی لکھتا اور الاحلٰی "من السکر لطلبۃ سکروسر" (شکر و سر کے طالب کیلئے یہ رسالہ عہ: من لطائف

هذا الاسم مطابقته للمسمّٰی جس طرح رسالہ نے اس شکر کے بارے ایک لحاظ سے حلال اور ایک لحاظ سے حرام دو حکم بیان کئے ہیں اسی طرح نام میں بھی دونوں کا لحاظ ہے۔ حلت کے لحاظ سے عوام کیلئے یہ شکر سے زیادہ میٹھا ہے کیونکہ اس نے شبہات اور اعتراضات کو ختم کر کے عوام کیلئے شکر کو مرغوب بنا دیا ہے، اور حرمت کے لحاظ سے اس نے عوام کو اگر چہ شکر سے منع کر دیا ہے تاہم ان کو لذتِ ایمانی سے محروم نہیں کیا کیونکہ ان کو شرعی مسئلہ کی تحقیق دے کر قلبی لذت دی ہے جبکہ مرغوب غذا سے صرف لذتِ نفس حاصل ہوتی ہے۔ پہلی چیز یعنی قلبی لذت اہم اور اعلیٰ ہے اس لئے شکر کو حرام کرنے والا یہ رسالہ عوام کے لئے شکر سے زیادہ میٹھا ہے ۱۲ منہ۔ (م) منہ (ت)

Fatawa Rizwia Volume 4

It is sweeter than sugar (T). It has a historical name. And with Allah is success and attainment to the peaks of research (Achieving success and reaching the heights of research is only from Allah Almighty. T). Before the answer, some introductory points are provided for clarity. And I ask for guidance from the Munificent King (I ask for guidance from the Generous King. T).

First Introduction: Bones of every animal, even those not eaten or not slaughtered, are absolutely pure as long as there is no impure grease (fat 12) on them, except for the pig, which is essentially impure (Najis al-Ayn) and every part of its body is so impure that it has no potential for purity at all. The condition of impurity in grease is for the purpose that, for example, animals that do not have flowing blood, their bones are pure in any case even if they are mixed with grease, because their grease is itself pure due to the absence of blood mixture, so how can the bones become impure by its mixture.

In Tanwir al-Absar, al-Durr al-Mukhtar, and Radd al-Muhtar: "The hair of a carcass other than a pig, its bone, its tendon, its hoof, and its horn which are free from grease 1 (a condition for all as in al-Quhistani, so plucked hair and what follows are excluded if there is grease in them 2) and the blood of fish is pure 3." End of summary.

It is stated in Tanwir al-Absar, Durr-e-Mukhtar, and Radd-ul-Muhtar: "Hair, bone, tendons, hoof, and horn of every dead animal except the pig, which are devoid of fat (this condition applies to all as mentioned in Quhistani. Therefore, plucked hair and whatever comes after it, if they contain fat, they are excluded from this ruling) and the blood of fish is pure, end of summary (T)."

However, only the bones of lawful and permissible animals (those whose meat is eaten) that have been slaughtered according to Sharia (Mudhaka) are permissible to use. Haram animals, and similarly those that die without Sharia slaughter (Dhakah*) or are killed, all their parts are haram, even if they are pure, because purity does not necessitate permissibility (Hillat), just like snails or things harmful in certain quantities, and human milk after the age of nursing, and the meat of sea animals other than fish etc., all of which are pure, yet despite being pure, they are haram.

*Dhakah: Meaning on the condition that it requires slaughter, not fish and locusts, as their exception is well-known and established. 12 Minhu (M).

1 Durr-e-Mukhtar, Book of Waters, Published by Mujtabai, Delhi, 1/38. 2 Radd-ul-Muhtar, Book of Waters, Published by Mujtabai, Delhi, 1/138. 3 Durr-e-Mukhtar, Book of Waters, Published by Mujtabai, Delhi, 1/38. Page 476 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द 4

यह चीनी से भी मीठा है। (त) इसका ऐतिहासिक नाम है। और अल्लाह के साथ ही सफलता और शोध की ऊंचाइयों तक पहुंचना है (अल्लाह तआला की ओर से ही सफलता प्राप्त करना और शोध की ऊंचाइयों तक पहुंचना संभव है। त)। उत्तर से पहले, सही मार्ग के लिए कुछ प्रस्तावनाएं और उदार राजा से मार्गदर्शन की प्रार्थना है (फ़ैयाज़ बादशाह से मार्गदर्शन की प्रार्थना करता हूँ। त)।

प्रथम प्रस्तावना: हर जानवर की हड्डियाँ, यहाँ तक कि जो खाया न जाता हो और जिसे ज़िब्ह न किया गया हो, वे भी पूरी तरह से पाक (पवित्र) हैं जब तक कि उन पर नापाक चिकनाई (वसा 12) न हो, सिवाय सूअर के, क्योंकि वह स्वभाव से ही अपवित्र (नजिस-उल-ऐन) है और उसके शरीर का हर हिस्सा इतना अपवित्र है कि उसमें पवित्र होने की कोई गुंजाइश नहीं है। और चिकनाई में नापाकी की शर्त इस उद्देश्य से है कि उदाहरण के लिए, जिन जानवरों में बहता हुआ खून नहीं होता, उनकी हड्डियाँ हर हाल में पाक हैं चाहे उनमें चिकनाई मिली हो, क्योंकि खून न मिलने के कारण उनकी चिकनाई खुद पाक है, तो उसके मिलने से हड्डियाँ कैसे नापाक हो सकती हैं।

तनवीरुल अबसार, दुर्रे मुख्तार और रद्दुल मुहतार में है: "सूअर के अलावा हर मृत जानवर के बाल, हड्डी, नसें, खुर और सींग जो चर्बी (वसा) से मुक्त हों 1 (यह शर्त सभी के लिए है जैसा कि कुहिस्तानी में है। अतः उखाड़े हुए बाल और उसके बाद जो कुछ भी है, यदि उनमें चर्बी हो तो वे इस हुक्म से बाहर हैं 2) और मछली का खून पाक है 3।" समाप्त सारांश।

तनवीरुल अबसार, दुर्रे मुख्तार और रद्दुल मुहतार में है: "सूअर के अलावा हर मृत जानवर के बाल, हड्डी, पट्टे (नसें), खुर और सींग जो चर्बी से खाली हों (यह शर्त सब के साथ है जैसा कि कुहिस्तानी में है। पस उखाड़े हुए बाल और जो कुछ इसके बाद है अगर इसमें चर्बी हो तो वे इस हुक्म से बाहर हैं) और मछली का खून पाक है, समाप्त सारांश (त)"

लेकिन केवल हलाल और खाने के योग्य जानवर (जिनका मांस खाया जाता है) जो शरीयत के अनुसार ज़िब्ह (मुज़क्का) किए गए हों, उन्हीं की हड्डियाँ हलाल हैं। हराम जानवर और वैसे ही जो बिना शरई ज़िब्ह (धकाह*) के मर जाएँ या मार दिए जाएँ, उनके सभी अंग हराम हैं चाहे वे पाक हों, क्योंकि पाकी से हलाल होना लाज़िम नहीं आता, जैसे घोंघा या नुकसान पहुँचाने वाली मात्रा में कोई चीज़, और दूध पिलाने की उम्र के बाद इंसान का दूध, और मछली के अलावा अन्य समुद्री जानवरों का मांस आदि, कि ये सब पाक हैं और पाकी के बावजूद हराम हैं।

*धकाह: यानी इस शर्त पर कि उसे ज़िब्ह की ज़रूरत हो, मछली और टिड्डी नहीं, क्योंकि उनका अपवाद सर्वविदित है। 12 मिन्हु (म)।

1 दुर्रे मुख्तार, बाबुल मियाह, मुज्तबाई दिल्ली, 1/38। 2 रद्दुल मुहतार, बाबुल मियाह, मुज्तबाई दिल्ली, 1/138। 3 दुर्रे मुख्तार, बाबुल मियाह, मुज्तबाई दिल्ली, 1/38। पेज 476 का 761

شکر سے زیادہ میٹھا ہے۔ت) اس کا تاریخی نام رکھتا ہے وباللہ التوفیق والوصول الی ذری التحقیق (اللہ تعالٰی ہی کی طرف سے توفیق کا حصول اور تحقیق کی بلندیوں تک پہنچانا ہے۔ت) پیش از جواب چند مقدمے موضع صواب واسأل جار لشاد من الملک الجواد (فیاض بادشاہ سے رہنمائی کا سوال کرتا ہوں۔ت)

مقدمہ اولٰی: ہڈیاں ہر جانور یہاں تک کہ غیر ماکول و نامذبوح کی بھی مطلقاً پاک ہیں جب تک ان پر ناپاک دسومت (چکنائی ۱۲) نہ ہو سوا خنزیر کے کہ نجس العین ہے اور اس کا ہر جزو بدن ایسا ناپاک کہ اصلاً صلاحیتِ طہارت نہیں رکھتا، اور دسومت میں قید ناپاکی اس غرض سے ہے کہ مثلاً جو جانور خون سائل نہیں رکھتے ان کی ہڈیاں بہرحال پاک ہیں اگر چہ دسومت آمیز ہوں کہ ان کی دسومت بوجہ عدم اختلاطِ دم خود پاک ہے تو اس کی آمیزش سے استخواں کیونکر ناپاک ہوسکتے ہیں۔

فی تنویر الابصار والدر المختار ورد المحتار شعر المیتة غیر الخنزیر وعظمها وعصبها وحافرها وقرنها الخالیة عن الدسومة ۸1 (قید للجمیع کما فی القهستانی فخرج الشعر المنتوف وما بعده اذا کان فیه دسومة ۸2) ودم سمك طاهر ۸3 انتهت ملخصہ۔

تنویر الابصار، در مختار اور رد المحتار میں ہے "خنزیر کے علاوہ ہر مردار کے بال، ہڈی، پٹھے، کھر اور سینگ جو چربی سے خالی ہوں (یہ قید سب کے ساتھ ہے جیسا کہ قہستانی میں ہے۔ پس اکھاڑے ہوئے بال اور جو کچھ اس کے بعد ہے اگر اس میں چربی ہو تو وہ اس حکم سے خارج ہیں) اور مچھلی کا خون پاک ہے، انتہٰی تلخیص (ت)

مگر حلال و جائز الاکل صرف جانور ماکول اللحم مذکی یعنی مذبوحِ شرعی کی ہڈیاں ہیں حرام جانور اور ایسے ہی جو بے ذکاۃ شرعی عہ مرجائے یا کاٹا جائے بجمیع اجزائہ حرام ہے اگر چہ طاہر ہو کہ طہارت مستلزم حلت نہیں جیسے سنکھے یا بقدر مضرت اور انسان کا دودھ بعد عمر رضاعت اور مچھلی کے سوا جانوران دریائی کا گوشت وغیر ذلک کہ سب پاک ہیں اور باوجود پاکی حرام۔

عہ: یعنی بشرطیکہ محتاجِ ذکاۃ ہو نہ سمک وجراد کہ ان کا استثنا معلوم ومعروف ۱۲منہ (م)

1 در مختار باب المیاہ مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۳۸ 2 رد المحتار باب المیاہ مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۱۳۸ 3 در مختار باب المیاہ مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۳۸ صفحہ 476 از 761

Fatawa Razawiyya Volume 4 [Arabic excerpt from Hashiya al-Shami]: In the Marginalia of Ash-Shami, it is stated: If the skin is from a dead animal whose meat is edible, eating it is not permissible. This is the correct view because Allah Almighty says: "Prohibited to you are dead animals" [Quran 5:3], and this (skin) is a part of it. And the Prophet (peace and blessings be upon him) said: "From a dead animal, only eating it is prohibited." However, if the skin is from an animal whose meat is not edible, then eating it is prohibited by consensus. This is reported in al-Bahr from al-Siraj - summarized. And in al-Ghunya, a commentary on al-Minya, citing al-Qunyah: Sea animals are pure even if they are not edible, even the sea pig, even if it is a carcass. In the same work, under the phrase "musk is pure and halal," the author added the word "halal" because purity does not necessarily imply lawfulness (halal), just as is the case with soil - Minah.

[Urdu Translation of the above]: It is written in Hashiya Shami: When there is skin of such a dead animal whose meat is eaten, then eating it is not permissible, and this is the correct view because Allah Almighty has commanded: "Dead meat has been made forbidden for you," and this is a part of it. And the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) said: "Only eating it is forbidden from a dead animal." And if the skin belongs to an animal whose meat is not eaten, then eating it is forbidden by consensus. Al-Bahr al-Raiq has narrated this from Siraj (ended) - summary. And in the same work, under the heading "Musk is pure and halal," the word "halal" was added because being pure does not necessarily make it halal, as is the case with soil (Minah). And in Ghunya Sharh Minya, it is cited from Qunyah that aquatic animals are pure even if they are not eaten. Even the sea pig, even if it is a carcass. (Translated)

Second Introduction: In the pure Sharia, purity and lawfulness are the original state (Asl), and their proof is self-attained in that they do not require external evidence for their establishment. Conversely, prohibition and impurity are accidental states; their proof requires specific evidence, and it is impossible to establish them based solely on doubts and conjectures.

Note 1: I say: Narrated by Ahmad, Bukhari, Muslim, Abu Dawood, Nasai, and Tirmidhi with similar wordings, all from Ibn Abbas; and Ibn Majah from the Mother of the Believers, Maimunah (may Allah be pleased with them). (Author) Note 2: Meaning except for some things in which prohibition is the original state, such as blood, sexual relations, and harmful substances. (Translated)

[Urdu Translation of Note 1]: I say: Ahmad, Bukhari, Muslim, Abu Dawood, Nasai, and Tirmidhi all narrated this with similar words from Ibn Abbas, and Ibn Majah narrated it from the Mother of the Believers, Maimunah (may Allah be pleased with them). (Translated)

1. Radd al-Muhtar, chapter on rulings of tanning, printed in Mujtabai Delhi, 1/136
2. Radd al-Muhtar, chapter on rulings of tanning, printed in Mujtabai Delhi, 1/139
3. Ghunya al-Mustamli, before the chapter on covering the private parts, Sohail Academy Lahore, p. 208

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी [हाशिया अल-शामी से अरबी उद्धरण]: हाशिया अल-शामी में लिखा है: यदि खाल किसी ऐसे मृत जानवर की है जिसका मांस खाना जायज़ है, तो उसे खाना जायज़ नहीं है। यही सही मत है क्योंकि अल्लाह तआला का फरमान है: "तुम पर मृत जानवर हराम कर दिए गए हैं" [क़ुरआन 5:3], और यह (खाल) भी उसी का एक हिस्सा है। और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "मृत जानवर से केवल उसका खाना ही हराम है।" हालांकि, यदि खाल किसी ऐसे जानवर की है जिसका मांस नहीं खाया जाता, तो सर्वसम्मति (इजमा) से इसे खाना हराम है। यह अल-बहर में सिराज के हवाले से उद्धृत है - संक्षेप। और अल-ग़ुनिया (मुन्या की व्याख्या) में क़ुन्या के हवाले से कहा गया है: समुद्री जानवर पवित्र हैं भले ही उन्हें न खाया जाता हो, यहाँ तक कि समुद्री सुअर भी, चाहे वह मृत ही क्यों न हो। उसी ग्रंथ में, "कस्तूरी पवित्र और हलाल है" के तहत, लेखक ने "हलाल" शब्द जोड़ा क्योंकि पवित्रता का अर्थ यह नहीं है कि वह हलाल (खाने योग्य) भी है, जैसा कि मिट्टी के मामले में है - मिनह।

[उपरोक्त का उर्दू अनुवाद]: हाशिया शामी में है: जब ऐसे मृत जानवर का चमड़ा हो जिसका मांस खाया जाता है, तो उसका खाना जायज़ नहीं है और यही सही है क्योंकि अल्लाह तआला का इरशाद है: "तुम पर मुर्दार हराम किया गया है," और यह उसका हिस्सा है। और नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "मुर्दार से सिर्फ उसका खाना हराम होता है"। और अगर ऐसे जानवर का चमड़ा हो जिसका मांस नहीं खाया जाता तो बिल-इजमा (सर्वसम्मति से) उसका खाना जायज़ नहीं। अल-बहरुल राइक ने सिराज से नक़ल किया (समाप्त) - सारांश। और इसी में है "मुश्क (कस्तूरी) पाक हलाल है" के तहत हलाल का लफ्ज़ ज़्यादा किया गया क्योंकि तहारत (पवित्रता) से हलाल होना लाज़िम (ज़रूरी) नहीं आता जैसा कि मिट्टी में है (मिनह)। और ग़ुनिया शरह मुन्या में क़ुन्या से नक़ल किया गया है कि दरियाई जानवर पाक हैं चाहे उन्हें खाया न जाता हो। यहाँ तक कि दरियाई सुअर भी, चाहे मुर्दार हो। (अनुवादित)

दूसरा परिचय: शरीअते मुतहरा में पाकी (तहारत) और हलाल होना मूल (असल) स्थिति है, और उनका प्रमाण स्वयं ही प्राप्त है कि उन्हें स्थापित करने के लिए किसी बाहरी दलील की आवश्यकता नहीं है। इसके विपरीत, हराम होना और नापाकी (नजासत) आकस्मिक स्थितियाँ हैं; उनके प्रमाण के लिए विशिष्ट साक्ष्य की आवश्यकता होती है, और मात्र शंकाओं और अनुमानों के आधार पर उन्हें स्थापित करना असंभव है।

नोट 1: मैं कहता हूँ: इसे अहमद, बुखारी, मुस्लिम, अबू दाऊद, नसाई और तिर्मिज़ी ने समान शब्दों के साथ इब्न अब्बास से रिवायत किया है; और इब्न माजह ने उम्मुल मोमिनीन मैमूना (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से रिवायत किया है। (लेखक) नोट 2: यानी उन कुछ चीज़ों के अलावा जिनमें हराम होना ही मूल है, जैसे खून, संभोग और हानिकारक चीज़ें। (अनुवादित)

[नोट 1 का उर्दू अनुवाद]: मैं कहता हूँ: इसे अहमद, बुखारी, मुस्लिम, अबू दाऊद, नसाई और तिर्मिज़ी सब ने समान शब्दों के साथ इब्न अब्बास से रिवायत किया है, और इब्न माजह ने उम्मुल मोमिनीन मैमूना (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से रिवायत किया है। (अनुवादित)

1. रदुल मुहतार, चर्मशोधन के नियमों पर लेख, मुज्तबाई दिल्ली, 1/136
2. रदुल मुहतार, चर्मशोधन के नियमों पर लेख, मुज्तबाई दिल्ली, 1/139
3. ग़ुनियतुल मुस्तमली, सतर-ए-औरत (निजी अंगों को ढकने) के अध्याय से ठीक पहले, सोहेल अकादमी लाहौर, पृष्ठ 208

पृष्ठ 761 का 477

فتاوی رضویه جلد چهارم في الحاشية الشامية اذا كان جلد حيوان ميت مأكول اللحم لا يجوز اكله وهو الصحيح لقوله تعالى حرمت عليكم الميتة وهذا جزء منها وقال عه ١ عليه الصلاة والسلام انما يحرم من الميتة اكلها اما اذا كان جلد مالا يوكل فانه لا يجوز اكله اجماعاً بحر عن السراج اھ ملخصاً۔ وفی الغنية شرح المنية عن القنية حيوان البحر طاهر وان لم يؤكل حتى خنز البحر ولو كان ميتتة ٢ اھ وفيها تحت قوله والمسك طاهر حلال زاد قوله حلال لانه لا يلزم من الطهارة الحل كما في التراب منح ٣ اھ

حاشیہ شامیہ میں ہے جب ایسے مردار حیوان کا چمڑا ہو جس کا گوشت کھایا جاتا ہے تو اس کا کھانا جائز نہیں اور یہی صحیح ہے کیونکہ اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے تم پر مردار حرام کیا گیا ہے اور یہ اس کا جز ہے۔ اور نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: "مردار سے صرف اس کا کھانا حرام ہوتا ہے"۔ اور اگر ایسے جانور کا چمڑا ہو جس کا گوشت نہیں کھایا جاتا تو بالاجماع اس کا کھانا جائز نہیں۔ البحر الرائق نے سراج سے نقل کیا (انتہیٰ) تلخیص۔ اور اسی میں ہے "مشک (کستوری) پاک حلال ہے" کے تحت ہے حلال کا لفظ زیادہ کیا کیونکہ طہارت سے حلال ہونا لازم نہیں آتا ہے جیسا کہ مٹی میں ہے (منح) اھ اور غنیہ شرح منیہ میں قنیہ سے نقل کیا ہے کہ دریائی جانور پاک ہیں اگرچہ انہیں کھایا نہ جاتا ہو۔ یہاں تک کہ دریائی خنزیر بھی، اگرچہ مردار ہو۔ اھ (ت)

مقدمہ ثانیہ: شریعتِ مطہرہ میں طہارت وحلّت عہ ٢ اصل ہیں اور ان کا ثبوت خود حاصل کہ اپنے اثبات میں کسی دلیل کا محتاج نہیں اور حرمت ونجاست عارضی کہ ان کے ثبوت کو دلیلِ خاص درکار اور محض شکوک وظنون سے اُن کا اثبات نا ممکن کہ

عہ ۱: اقول: اخرج احمد والبخاری و مسلم وابوداؤد والنسائی والترمذی بالفاظ متقاربۃ کلھم عن ابن عباس وابن ماجۃ عن ام المؤمنین میمونۃ رضی اللہ تعالٰی عنھم ۱۲ منہ (م) عہ ۲: یعنی سوا بعض اشیاء کے جن میں حرمت اصل ہے جیسے دماء وفروج ومضار ۱۲ منہ (ت)

اقول: اس کو احمد، بخاری، مسلم، ابوداؤد، نسائی، ترمذی سب نے متقارب الفاظ سے ابن عباس سے اور ابن ماجہ نے ام المومنین میمونہ رضی اللہ تعالٰی عنہم سے روایت کیا ۱۲ منہ (ت)

۱ ردالمحتار مطلب فی احکام الدباغۃ مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۱۳۶ ۲ ردالمحتار مطلب فی احکام الدباغۃ مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۱۳۹ ۳ غنیۃ المستملی قبیل ستر العورۃ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۲۰۸

Fatawa-e-Razviya Volume 4 The certainty that existed regarding purity and permissibility due to their original state can only be perceived to be removed by a similar certainty. A later doubt does not revoke the ruling of a previous certainty. This is a magnificent principle of the noble Sharia, upon which thousands of rulings branch out, to the extent that it is said that more than three-quarters of Fiqh (jurisprudence) is based on it. In reality, anyone who understands this rule remains safe from hundreds of terrifying whispers, the mischief of false delusions, and the meddling of useless conjectures. In an authentic Hadith, the most noble Master of the Worlds (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Arabic Box Text]: "Beware of suspicion, for suspicion is the worst of false tales." Narrated by the Imams Malik, Al-Bukhari, Muslim, Abu Dawood, and At-Tirmidhi from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him).

[Urdu Box Text]: Avoid bad suspicion because bad suspicion is the biggest lie. This has been narrated by the Imams of Hadith: Imam Malik, Bukhari, Muslim, Abu Dawood, and Tirmidhi from Hazrat Abu Hurairah (may Allah be pleased with him). (T)

And this exquisite principle is useful not only in these types of issues but in thousands of places. Whenever someone forbids or denies something and calls it haram (forbidden), makruh (disliked), or impermissible, listen and know that the burden of proof is on them. Unless they prove it with clear legal evidence, their claim is rejected against them. The one who calls it permissible and allowed is completely free of responsibility because they are adhering to the original state. Scholars state that this rule is established by the texts of the prophetic Hadiths—on whose narrator be the best of blessings and greetings—and the clear explanations of Hanafi, Shafi'i, and other general scholars and Imams, such that no scholar is seen to disagree with it.

[Arabic Column Text]: In 'Al-Tariqah al-Muhammadiyyah' and its commentary 'Al-Hadiqah al-Nadiyyah' by Allama Abdul Ghani al-Nabulsi (may his secret be sanctified), it is written: The original state of things is purity, because Allah the Almighty says: 'It is He Who created for you all that is on earth.' And certainty is not removed by doubt or conjecture, but rather certainty is removed only by its equivalent certainty. This is an established principle in the Sharia, explicitly stated in the Hadiths and clearly mentioned in the books of Hanafi, Shafi'i, and other jurists. I have not found any disagreement among scholars regarding this. Therefore, when there is doubt or conjecture regarding the purity of water or food...

[Urdu Column Text]: It is written in Allama Abdul Ghani Nabulsi's (may his secret be sanctified) 'Hadiqah Nadiyyah', a commentary on 'Tariqah Muhammadiyah': The original state of things is purity, because the saying of Allah the Almighty is: "Allah created for you everything that is on earth," and certainty is not removed with doubt and conjecture; rather, certainty is removed only by equivalent certainty. This rule is established in Sharia, explicitly stated in Hadiths, and clearly mentioned in the books of Hanafi, Shafi'i, and other jurists. I have found no disagreement among scholars in this. Therefore, when regarding the purity of water, food, or any other thing...

---

1. Sahih Bukhari, chapter on what is forbidden regarding mutual envy and turning away from each other, published by Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/896. Page 478 of 761

फ़तावा-ए-रज़विया खंड 4 पवित्रता और हलाल होने पर जो निश्चितता (यकीन) उनके मूल रूप के कारण थी, उसे केवल वैसी ही निश्चितता से दूर किया जा सकता है। बाद में आने वाला कोई संदेह (गुमान) पहले की निश्चितता के आदेश को निरस्त नहीं करता। यह शरीयत-ए-मुतहरा का एक महान नियम है, जिस पर हजारों आदेश आधारित हैं, यहाँ तक कि कहा जाता है कि तीन-चौथाई से अधिक फ़िक़्ह (इस्लामी न्यायशास्त्र) इसी पर आधारित है। वास्तव में, जिसने इस नियम को समझ लिया, वह सैकड़ों भयानक वसवसों, झूठे भ्रमों के फसाद और व्यर्थ के संदेहों के दखल से सुरक्षित रहा। हदीस-ए-सहीह में हुज़ूर अकदस सैय्यद-ए-आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

[अरबी बॉक्स पाठ]: "बदगुमानी से बचो क्योंकि बदगुमानी सबसे बड़ा झूठ है।" इसे अइम्मा-ए-हदीस इमाम मालिक, बुखारी, मुस्लिम, अबू दाऊद और तिर्मिज़ी ने हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है।

[उर्दू बॉक्स पाठ]: बदगुमानी से बचो क्योंकि बदगुमानी सबसे बड़ा झूठ है। इसे अइम्मा-ए-हदीस इमाम मालिक, बुखारी, मुस्लिम, अबू दाऊद और तिर्मिज़ी ने हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। (त)

और यह उत्कृष्ट नियम न केवल इस प्रकार के मसलों में बल्कि हजारों जगहों पर काम आता है। जब कोई किसी चीज़ को किसी चीज़ पर मना या इंकार करे और उसे हराम, मकरूह या नाजायज़ कहे, तो सुन लो और जान लो कि सबूत का बोझ उसी पर है। जब तक वह स्पष्ट शरीई दलील से इसे साबित न कर दे, उसका दावा उसी पर खारिज है। और जो इसे जायज़ और मुबाह कहने वाला है, वह पूरी तरह से दोषमुक्त है क्योंकि वह मूल स्थिति (अस्ल) से जुड़ा हुआ है। उलेमा फ़रमाते हैं कि यह नियम नबवी हदीसों के पाठों (नुसूस), और हनफ़ी, शाफ़ई और अन्य आम उलेमा और अइम्मा की स्पष्ट व्याख्याओं से साबित है, यहाँ तक कि किसी भी आलिम का इसमें मतभेद नज़र नहीं आता।

[अरबी कॉलम पाठ]: अल्लामा अब्दुल ग़नी नाबलुसी (क़ुद्दिस सिर्रहु) की 'तरीक़ा मोहम्मदिया' और उसकी शरह (व्याख्या) 'हदीक़ा नदिय्या' में लिखा है: चीजों का मूल स्वभाव पवित्रता है, क्योंकि अल्लाह तआला का इरशाद है: "वही है जिसने तुम्हारे लिए वह सब कुछ पैदा किया जो ज़मीन में है।" और निश्चितता (यकीन), शक और गुमान के साथ खत्म नहीं होती बल्कि अपने जैसी निश्चितता के साथ ही खत्म होती है। यह नियम शरीयत में तयशुदा है, हदीसों में इसकी स्पष्टता है और हनफ़ी, शाफ़ई

और अन्य फ़ुक़हा (न्यायविदों) की किताबों में साफ़ तौर पर दर्ज है। मैंने इसमें विद्वानों का कोई मतभेद नहीं पाया। इसलिए जब पानी या भोजन की पवित्रता में संदेह या गुमान हो...

[उर्दू कॉलम पाठ]: अल्लामा अब्दुल ग़नी नाबलुसी (क़ुद्दिस सिर्रहु) की 'हदीक़ा नदिय्या' जो 'तरीक़ा मोहम्मदिया' की शरह है, में लिखा है: चीजों का मूल स्वभाव पवित्रता है, क्योंकि अल्लाह तआला का इरशाद है: "अल्लाह ने ज़मीन में जो कुछ है तुम्हारे लिए पैदा फ़रमाया," और निश्चितता, शक और गुमान के साथ ज़ायल (खत्म) नहीं होती बल्कि अपने जैसे यकीन के साथ यकीन ज़ायल होता है। यह नियम शरीयत में मुकर्रर (तय) है, हदीसों में इसकी तसरीह (स्पष्टता) है और हनफ़ी, शाफ़ई और अन्य फ़ुक़हा की किताबों में साफ़ तौर पर मजकूर (वर्णित) है। मैंने इसमें उलेमा का इख्तिलाफ़ (मतभेद) बिल्कुल नहीं पाया, लिहाज़ा जब पानी, खाने या इसके अलावा किसी दूसरी चीज़ की पवित्रता में...

---

1. बुखारी शरीफ़, अध्याय: ईर्ष्या और एक-दूसरे से मुँह मोड़ने की मनाही, पुरानी कुतुब खाना कराची द्वारा प्रकाशित, 896/2। पृष्ठ 478/761

فتاوی رضویہ جلد چہارم طہارت وحلت پر بوجہ اصالت جو یقین تھا اس کا زوال بھی اس کے مثل یقین ہی سے متصور نہ اظن لاحق یقین سابق کے حکم کو رفع نہیں کرتا یہ شرع شریف کا ضابطہ عظیمہ ہے جس پر ہزارہا احکام متفرع، یہاں تک کہ کہتے ہیں تین چوتھائی فقہ سے زائد اس پر مبنی اور فی الواقع جس نے اس قاعدہ کو سمجھ لیا وہ صدہا وساوس ہائلہ و فتنہ پردازی اوہام باطلہ و دست اندازی ظنون عاطلہ سے امان میں رہا۔ حدیث صحیح میں حضور اقدس سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

[عربی باکس]: ایاکم والظن فان الظن اکذب الحدیث [1] رواہ الائمۃ مالک والبخاری ومسلم وابوداؤد والترمذی عن ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ۔

[اردو باکس]: بدگمانی سے بچو کیونکہ بدگمانی سب سے بڑا جھوٹ ہے۔ اسے ائمہ حدیث امام مالک، بخاری، مسلم، ابوداؤد اور ترمذی نے حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت کیا ہے۔ (ت)

اور یہ نفیس ضابطہ نہ صرف اسی قسم کے مسائل میں بلکہ ہزارہا جگہ کام دیتا ہے جب کسی شے کو کسی شے پر منع وانکار کرتے اور اُسے حرام یا مکروہ یا ناجائز کہتے سنو جان لو کہ بار ثبوت اُس کے ذمّہ ہے جب تک دلیل واضح شرعی سے ثابت کرے اُس کا دعوٰی اُسی پر مردود اور جائز و مباح کہنے والا بالکل سبکدوش کہ اس کے لئے تمسک باصل موجود، علماء فرماتے ہیں یہ قاعدہ نصوص علیہ احادیث نبویہ علی صاحبھا افضل الصلاۃ والتحیۃ و تصریحات جلیہ حنفیہ وشافعیہ و غیر ہم عامہ علماء و ائمہ سے ثابت یہاں تک کہ کسی عالم کو اس میں خلاف نظر نہیں آتا۔

[عربی کالم]: فی الطریقة المحمدیة وشرحها الحدیقة الندیة للعلامة عبدالغنی النابلسی قدس سره القدسی الاصل فی الاشیاء الطهارة لقوله سبحانه وتعالی هو الذی خلق لکم مافی الارض جمیعاً والیقین لا یزول بالشك والظن بل یزول بیقین مثله وهذا اصل مقرر فی الشرع منصوص علیه فی الاحادیث مصرح به فی کتب الفقهاء من الحنفیة والشافعیة وغیرهم ولم ارفیه مخالفاً من احد من العلماء اصلاً فاذا شك اوظن فی طهارة ماء اوطعام

[اردو کالم]: علامہ عبدالغنی نابلسی قدس سرہ القدسی کی حدیقہ ندیہ شرح طریقہ محمدیہ میں لکھا ہے اشیا کی اصل طہارت ہے، کیونکہ اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے: "اللہ نے زمین میں جو کچھ ہے تمہارے لئے پیدا فرمایا، اور یقین، شک اور گمان کے ساتھ زائل نہیں ہوتا بلکہ اپنے جیسے یقین کے ساتھ یقین زائل ہوتا ہے۔ یہ قاعدہ شریعت میں مقرر ہے احادیث میں اس کی تصریح ہے اور حنفی، شافعی اور دیگر فقہا کی کتب میں واضح طور پر مذکور ہے میں نے اس میں علما کا اختلاف بالکل نہیں پایا لہٰذا جب پانی، کھانے یا اس کے علاوہ کسی دوسری چیز کی طہارت میں

---

[1] بخاری شریف باب مایُنهیٰ عن التحاسد والتدابر مطبوعہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۸۹۶/۲ صفحہ 478 از 761

Fatawa-e-Razawiyya Volume 4

(Arabic Text): And other than those things which are not inherently impure, if doubt arises, that thing is pure regarding wudu (ablution), permissible for consumption, and for all other uses. Similarly, when the probability (dominant thought) of its impurity exists [without certainty], it is still considered pure, etc. (Excerpted). (Urdu Text): Regarding what is not inherently impure, if doubt arises, this thing is pure for wudu, its consumption is also permissible, and its use in other manners is allowed. Likewise, when there's a strong assumption of its impurity (without certainty), it remains pure, etc. (Extracted) - (T).

(Arabic Text): And in 'Al-Ashbah wal-Naza'ir': If there is doubt regarding the existence of impurity, the original state of purity remains, etc. (Urdu Text): And in 'Al-Ashbah wal-Naza'ir' it is stated: If there is doubt about the existence of impurity, then the original purity remains, etc.

(Arabic Text): In 'Al-Hadiqa': There is no prohibition except with knowledge (certainty), not with doubt or speculation, because the original state of things is permissibility, etc. (Urdu Text): And in 'Al-Hadiqa' it is mentioned that prohibition is with knowledge (certainty), not with doubt or speculation, because the original state of things is permissibility, etc.

(Arabic Text): In 'Ghamz al-'Uyun' by the scholar Sayyid al-Hamawi, under the rule: 'Certainty is not removed by doubt,' it was said: This rule enters into all chapters of jurisprudence (fiqh), and the issues derived from it reach three-quarters or more of jurisprudence. (Urdu Text): In 'Ghamz al-'Uyun' by Allama Sayyid Hamawi, under the rule 'Certainty is not removed by doubt,' it is stated: It has been said that this rule is applicable to all chapters of jurisprudence and the issues derived under it reach three-quarters or even more of jurisprudence. (T)

Third Introduction: Caution does not lie in calling something prohibited (haram) or disliked (makruh) without thorough investigation and complete proof, thereby making a false accusation against the Pure Sharia. Rather, caution lies in accepting permissibility (ibahat), for that is the original certain state. Without further need, my master Abdul Ghani bin Sayyid Ismail (may their secrets be sanctified) says:

(Arabic): Caution is not in fabricating a lie against Allah Almighty by affirming [prohibitions without proof]. | (Urdu): Caution does not consist in [assuming] prohibition or dislike for those things for which...

Footnotes: 1. Al-Hadiqa al-Nadiyya, Bayan Ikhtilaf al-Fuqaha fi Amr al-Tahara wal-Najasa, published by Nooria, Faisalabad, 2/110-11. 2. Al-Ashbah wal-Naza'ir, Third Rule of the First Art, published by Idara al-Quran wal-Uloom al-Islamiya, Karachi, 1/87. 3. Al-Hadiqa al-Nadiyya, Bayan Ikhtilaf al-Fuqaha fi Amr al-Tahara wal-Najasa, published by Nooria, Faisalabad, 2/110-11. 4. Ghamz al-'Uyun with Al-Ashbah wal-Naza'ir, Third Rule of the First Art, published by Idara al-Quran wal-Uloom al-Islamiya, Karachi, 1/85.

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 4

(अरबी पाठ): और उन चीज़ों के अलावा जो स्वाभाविक रूप से अपवित्र (नजस) नहीं हैं, यदि संदेह उत्पन्न होता है, तो वह चीज़ वज़ू के लिए पवित्र है, खाना हलाल है और अन्य सभी उपयोगों के लिए जायज़ है। इसी तरह, जब उसकी अपवित्रता की प्रबल संभावना हो [बिना यकीन के], तो भी वह पवित्र है, आदि। (उर्दू अनुवाद): जो चीज़ नजासत-ए-ऐन (मूल रूप से अपवित्र) नहीं है, यदि संदेह उत्पन्न हो तो यह चीज़ वज़ू के हक में पाक है और उसका खाना भी जायज़ है, साथ ही अन्य कार्यों में उपयोग भी जायज़ है। इसी तरह, जब उसकी नापाकी का ग़ालिब गुमान (प्रबल अनुमान) हो (यकीन न हो), तो भी वह पाक है, आदि। (संक्षिप्त) - (त)।

(अरबी पाठ): और 'अल-अशबाह वन-नज़ायर' में है: यदि नापाकी की उपस्थिति में संदेह हो, तो मूल पवित्रता बनी रहती है, आदि। (उर्दू पाठ): और 'अल-अशबाह वन-नज़ायर' में है कि यदि नापाकी के होने में संदेह हो, तो मूल पवित्रता बाकी रहती है, आदि।

(अरबी पाठ): 'अल-हदीक़ा' में है: हराम होना केवल ज्ञान (यकीन) के साथ है, संदेह और अटकल के साथ नहीं, क्योंकि वस्तुओं की मूल स्थिति हलाल होना है, आदि। (उर्दू पाठ): और 'हदीक़ा' में है कि हुरमत (निषेध), इल्म (यकीन) के साथ है, शक और गुमान के साथ नहीं, क्योंकि चीज़ों की असल हिल्लत (वैधता) है, आदि।

(अरबी पाठ): अल्लामा सैय्यद हमवी की 'ग़मज़ुल-उयून' में, इस नियम के तहत: 'यकीन संदेह से समाप्त नहीं होता,' कहा गया है: यह नियम फ़िक़्ह के सभी अध्यायों में शामिल है और इसके आधार पर निकाले गए मसले फ़िक़्ह के तीन-चौथाई या उससे अधिक तक पहुँचते हैं। (उर्दू पाठ): अल्लामा सैय्यद हमवी की 'ग़मज़ुल-उयून' में एक नियम 'यकीन, शक से ज़ायल नहीं होता' के तहत कहा गया है कि यह नियम फ़िक़्ह के तमाम अध्यायों में शामिल है और इसके तहत निकाले जाने वाले मसले फ़िक़्ह के तीन-चौथाई बल्कि उससे ज़्यादा तक पहुँचते हैं। (त)

तीसरा प्रस्तावना: सावधानी इसमें नहीं है कि बिना गहन शोध और पूर्ण प्रमाण के किसी चीज़ को हराम या मकरूह कहकर शरीयत-ए-मुतहहरा पर इफ़्तरा (झूठ) बाँधा जाए, बल्कि सावधानी इबाहत (अनुमेयता) को मानने में है, क्योंकि वही मूल यकीनी बात है। बिना किसी स्पष्ट आवश्यकता के, मेरे आका अब्दुल ग़नी बिन सैय्यद इस्माइल (अल्लाह उनके रहस्यों को पवित्र करे) फ़रमाते हैं:

(अरबी): अल्लाह तआला पर झूठ गढ़ने (बिना प्रमाण के निषेध लागू करने) में सावधानी नहीं है। | (उर्दू): सावधानी इस बात में नहीं है कि हुरमत या कराहत जिनके लिए...

पाद-लेख (Footnotes): 1. अल-हदीक़ा अन-नदिया, बयान इख़्तिलाफ़ अल-फ़ुक़हा फ़ी अम्र अत-तहारा वल-नजासा, नूरया पब्लिशिंग, फ़ैसलाबाद, 2/110-11. 2. अल-अशबाह वन-नज़ायर, प्रथम कला का तीसरा नियम, इदारा अल-कुरआन वल-उलूम अल-इस्लामिया, कराची, 1/87. 3. अल-हदीक़ा अन-नदिया, बयान इख़्तिलाफ़ अल-फ़ुक़हा फ़ी अम्र अत-तहारा वल-नजासा, नूरया पब्लिशिंग, फ़ैसलाबाद, 2/110-11. 4. ग़मज़ुल-उयून मअ अल-अशबाह वन-नज़ायर, प्रथम कला का तीसरा नियम, इदारा अल-कुरआन वल-उलूम अल-इस्लामिया, कराची, 1/85.

وغیرذلك ممالیس بنجس العین فذلك الشیء طاھر فی حق الوضوء وحل الاکل وسائر التصرفات وکذا اذا غلب الظن علی نجاستہ الخ اہ ملتقطاً - جو نجس عین نہیں ہے شک پیدا ہو تو یہ چیز وضو کے حق میں پاک ہے اور اس کا کھانا بھی جائز، نیز دیگر تصرفات میں استعمال جائز، اسی طرح جب اس کی نجاست کا غالب گمان ہو (یقین نہ ہو تو بھی پاک ہے الخ اھ ملتقطاً- (ت)

وفی الاشباہ والنظائر شك في وجود النجس فالأصل بقاء الطھارۃ الخ - اور الاشباہ والنظائر میں ہے وجود نجاست میں شک ہو تو اصل طہارت باقی رہتی ہے الخ

وفي الحدیقۃ لاحرمۃ الامع العلم لامع الشك والظن لان الاصل في الاشیاء الحل الخ - اور حدیقہ میں ہے حرمت، علم (یقین) کے ساتھ ہے شک اور گمان کے ساتھ نہیں کیونکہ اشیاء کی اصل حلّت ہے الخ

وفي غمز العیون للعلامۃ السید الحموی تحت قاعدۃ الیقین لا یزول بالشك قیل ھذہ القاعدۃ تدخل في جمیع ابواب الفقہ والمسائل المخرجۃ علیھا تبلغ ثلثۃ ارباع الفقہ واکثر - علامہ سید حموی کی غمز العیون میں ایک قاعدے "یقین، شک سے زائل نہیں ہوتا" کے تحت ہے کہا گیا ہے کہ یہ قاعدہ فقہ کے تمام ابواب میں داخل ہے اور اس کے تحت نکالے جانے والے مسائل، فقہ کی تین چوتھائی بلکہ اس سے زیادہ تک پہنچتے ہیں۔ (ت)

مقدمہ ثالثہ: احتیاط اس میں نہیں کہ بے تحقیق بالغ و ثبوت کامل کسی شے کو حرام و مکروہ کہہ کر شریعت مطہرہ پر افترا کیجئے بلکہ احتیاط اباحت ماننے میں ہے کہ وہی اصل متیقن اور بے حاجت مُبِین سیدی عبدالغنی بن سیدی اسمعیل قدس سرہما الجلیل فرماتے ہیں:

لیس الاحتیاط فی الافتراء علی اللہ تعالی باثبات | احتیاط اس بات میں نہیں کہ حرمت یا کراہت جن کے لئے

1 الحدیقۃ الندیۃ بیان اختلاف الفقہاء فی امر الطہارۃ والنجاسۃ مطبوعہ نوریہ فیصیل آباد ۲ / ۱۱۰-۱۱ 2 الاشباہ والنظائر القاعدۃ الثالثۃ من الفن الاول مطبوعہ ادارۃ القرآن والعلوم الاسلامیہ کراچی ۱ / ۸۷ 3 الحدیقۃ الندیۃ بیان اختلاف الفقہاء فی امر الطہارۃ والنجاسۃ مطبوعہ نوریہ فیصیل آباد ۲ / ۱۱۰-۱۱ 4 غمز العیون مع الاشباہ والنظائر القاعدۃ الثالثۃ من الفن الاول مطبوعہ ادارۃ القرآن والعلوم الاسلامیہ کراچی ۱ / ۸۵

Volume 4 | Fatawa Rizvia

[Top Box - Left Arabic]: Prohibition (Hurmat) or dislike (Karaha) both require evidence; rather, there is caution in the view of permissibility (ibahat), which is the original state. The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), despite being the Lawgiver, hesitated in declaring wine—the mother of all evils—prohibited until a definitive textual proof (nass qat'i) was revealed to him. (1) Ibn Abidin preferred this view in the chapter on beverages, establishing it.

[Top Box - Right Urdu Translation]: Evidence is necessary, so that by establishing [prohibition without it] a lie is not forged against Allah. Rather, there is caution in the statement of permissibility because permissibility is the root. Despite being the Lawgiver, the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) hesitated in declaring wine, the root of all evils, prohibited until a definitive text was revealed to him. Ibn Abidin preferred this view by keeping it established in the chapter on drinks. (T)

[Middle Section] Fourth Introduction: Market rumors are not reliable and cannot be the basis or orbit for Sharia rulings. Many baseless news items become so famous that they have no root, or if they do, there is a thousand-fold "' difference. Often it is seen that a piece of news gains fame in the city, but when investigating the sources, the only answer is "I heard it". No one reports something they saw themselves, nor is the source of the chain known—who the original speaker was, from whom it was heard, and eventually reached this level of publicity. Or if it is proven, it turns out that the one who said it was a person of ill repute at the end of the chain. It is also observed that as the chain of transmission grows, new additions emerge in the news. Hear a story from Zaid, who says Amr told him; ask Amr, and he will tell a different version. Inquire from Bakr, and another difference emerges. And so on, etc.

[Bottom Box - Left Arabic]: And this is only because of what the Truthful and Verified One (peace and blessings of Allah be upon him) informed regarding the prevalence of lies after the best of centuries, especially in this very distant and later time. The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "No time will come upon you but the one after it will be worse than it, until you meet your Lord." (2) Reported by Ahmad, Muhammad bin Ismail [Bukhari], Tirmidhi, and Nasai.

[Bottom Box - Right Urdu Translation]: And this point is based on the information from the Prophet (peace be upon him) which he gave regarding the spread of lies after the eras of goodness. Especially in this very distant and previous era, the Holy

Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "The future time that will come upon you will be worse and worse until you meet your Lord." This was reported by Imam Ahmad,

[Footnotes] 1. Radd al-Muhtar, Kitab al-Ashriba, published by Mustafa al-Babi, Egypt 5/326 2. Bukhari Sharif, chapter 'La ya'ti zaman...', Qadimi Kutub Khana, Karachi 2/104

[ऊपरी बॉक्स - बायाँ अरबी]: निषेध (हुरमत) या नापसंदगी (कराहियत) दोनों के लिए प्रमाण की आवश्यकता है; बल्कि अनुमति (इबाहत) की बात में सावधानी है, जो कि मूल स्थिति है। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने शरीयत देने वाला होने के बावजूद, सभी बुराइयों की जड़ शराब को हराम घोषित करने में तब तक संकोच किया जब तक कि आप पर स्पष्ट प्रमाण (नस कतई) अवतरित नहीं हुआ। (1) इब्न आबिदीन ने पेय पदार्थों के अध्याय में इसे स्थापित करते हुए प्राथमिकता दी है।

[ऊपरी बॉक्स - दायाँ उर्दू अनुवाद]: प्रमाण की आवश्यकता है, ताकि [प्रमाण के बिना निषेध] स्थापित करने के माध्यम से अल्लाह पर झूठा आरोप न लगाया जाए। बल्कि अनुमति के कथन में सावधानी है क्योंकि अनुमति ही मूल है। शरीयत निर्माता होने के बावजूद, नबी-ए-अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने सभी बुराइयों की जड़ शराब को हराम घोषित करने में उस समय तक प्रतीक्षा की जब तक आप पर स्पष्ट प्रमाण अवतरित नहीं हुआ। इब्न आबिदीन ने पेय पदार्थों के अध्याय में इसे स्थापित रखते हुए प्राथमिकता दी है। (त)

[मध्य भाग] चौथा मुक़द्दमा (भूमिका): बाज़ार की अफ़वाहें विश्वसनीय नहीं हैं और शरीयत के नियमों का आधार नहीं हो सकतीं। बहुत सी बेबुनियाद खबरें ऐसी मशहूर हो जाती हैं जिनकी कोई असलियत नहीं होती, या होती भी है तो उनमें हज़ारों गुना ''' अंतर होता है। अक्सर देखा गया है कि एक खबर शहर में मशहूर हो गई और जब कहने वालों से जाँच की गई तो यही जवाब मिला कि "सुना है"। कोई अपना देखा हुआ बयान नहीं करता और न ही उसकी सनद (श्रृंखला) का पता चलता है कि असली कहने वाला कौन था जिससे सुनते-सुनते इस प्रचार की नौबत आई। या यदि यह साबित भी हुआ, तो यह कि फलां का कथन था जो फासिक (अधर्मी) था जहाँ श्रृंखला समाप्त होती थी। फिर यह ज्ञात और प्रत्यक्ष है कि जैसे-जैसे श्रृंखला बढ़ती जाती है, खबर में नई-नई बातें जुड़ती जाती हैं। ज़ैद से एक वाकया सुनिए कि मुझसे अम्र ने कहा था; अम्र से पूछिए तो वह कुछ और ही बयान करेगा। बक्र से पूछताछ की तो और अंतर निकला। इसी प्रकार। अंत तक।

[निचला बॉक्स - बायाँ अरबी]: और यह केवल इसलिए है क्योंकि सच्चे और प्रमाणित नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उत्तम युगों के बाद झूठ के प्रसार के बारे में सूचित किया था, विशेष रूप से इस अत्यंत दूर और बाद के समय में। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "तुम पर ऐसा कोई

समय नहीं आएगा जिसके बाद का समय उससे बुरा न हो, यहाँ तक कि तुम अपने रब से मिलो।" (2) इसे अहमद, मुहम्मद बिन इस्माइल [बुखारी], तिर्मिज़ी और नसाई ने उद्धृत किया है।

[निचला बॉक्स - दायाँ उर्दू अनुवाद]: और यह बात हुज़ूर (अलैहिस्सलाम) की उस ख़बर पर आधारित है जो आपने भलाई के युगों के बाद झूठ के आम होने के संबंध में दी है। विशेष रूप से इस अत्यंत दूर और पिछले ज़माने में नबी-ए-अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया: "तुम पर जो आने वाला समय आएगा वह बदतर से बदतर होगा यहाँ तक कि तुम अपने रब से मिलो।" इसे इमाम अहमद,

[फ़ुटनोट्स] 1. रद-उल-मुहतार, किताब-उल-अश्रिबा, मुस्तफ़ा अल-बाबी द्वारा प्रकाशित, मिस्र 5/326 2. बुखारी शरीफ़, अध्याय 'ला याती ज़मान...', क़दीमी कुतुब खाना, कराची 2/104

الحرمة اوالکراھة اللذین لابدھما من دلیل بل فی القول بالاباحة التی ھی الاصل وقد توقف النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم مع انہ ھو المشرع فی تحریم الخمر ام الخبائث حتی نزل علیہ النص القطعی 1 وآثرہ ابن عابدین فی الاشر بۃ مقررا۔

دلیل کی ضرورت ہے، کو ثابت کرنے کے ذریعے اللہ تعالیٰ پر افترا باندھا جائے بلکہ اباحت کے قول میں احتیاط ہے کیونکہ اباحت اصل ہے نبی اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے شارع ہونے کے باوجود، تمام خباثتوں کی جڑ شراب کو حرام قرار دینے میں اس وقت تک توقف کیا جب تک آپ پر نص قطعی نازل نہیں ہوئی اھ ابن عابدین نے مشروبات کے باب میں اسے ثابت رکھتے ہوئے ترجیح دی ہے۔ (ت)

مقدمہ رابعہ: بازاری افواہ قابل اعتبار اور احکام شرع کی مناط ومدار نہیں ہو سکتی بہت خبریں بے سروپا ایسی مشتہر ہو جاتی ہیں جن کی کچھ اصل نہیں یا ہے تو ہزار "" تفاوت اکثر دیکھا ہے ایک خبر نے شہر میں شہرت پائی اور قائلوں سے تحقیق کیا تو یہی جواب ملا کہ سُنا ہے نہ کوئی اپنا دیکھا بیان کرے نہ اُس کی سند کا پتا چلے کہ اصل قائل کون تھا جس سے سُن کر شدہ شدہ اس اشتہار کی نوبت آئی یا ثابت ہوا تو یہ کہ فلاں کا فرمایا فاسق منتہائے اسناد تھا پھر معلوم و مشاہد کہ جس قدر سلسلہ بڑھتا جاتا ہے خبر میں نئے نئے شگوفے نکلتے آتے ہیں زید سے ایک واقعہ سُنیے کہ مجھ سے عمرو نے کہا تھا عمرو سے پوچھیے تو وہ کچھ اور بیان کرے گا۔ بکر سے دریافت ہوا تو اور تفاوت نکلا۔ علی ھذا القیاس۔ الخ

وما هذا الالما اخبر الصادق المصدوق صلی اللہ تعالی علیہ وسلم من فشو الکذب بعد قرون الخیر لاسیما هذا الزمان الابعد الاخر وقد قال صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم لایأتی علیکم زمان الا الذی بعده شرمنہ حتی تلقوا ربکم 2 اخرجہ احمد و محمد بن اسمعیل والترمذی والنسائی

اور یہ بات حضور علیہ السلام کی اس خبر کی بنیاد پر ہے جو آپ نے بھلائی کے زمانوں کے بعد جھوٹ کے عام ہونے سے متعلق دی ہے بالخصوص اس نہایت ہی بعید اور پچھلے زمانہ میں نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا "تم پر جو آئندہ زمانہ آئے گا بد سے بدتر ہوگا یہاں تک کہ تم اپنے رب سے ملاقات کرو"۔ اسے امام احمد،

1 ردالمحتار کتاب الاشربۃ مطبوعہ مصطفی البابی مصر ۵/ ۳۲۶ 2 بخاری شریف باب لا یاتی زمان الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۱۰۴

Fatawa Razawiyya Volume IV

[Arabic]: Narrated by Anas (may Allah be pleased with him). Al-Tabarani recorded with a sound chain of narration from Ibn Mas'ud that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Yesterday was better than today, and today is better than tomorrow, and so it will be until the Hour is established."[1]

[Urdu]: Muhammad bin Ismail (Bukhari), Tirmidhi, and Nasai have narrated from the authority of Hazrat Anas (may Allah be pleased with him). And Al-Tabarani has narrated with a sound chain from Hazrat Abdullah bin Mas'ud (may Allah be pleased with him) that he narrated from the Master of both worlds (peace and blessings of Allah be upon him), who said: "The day that passed yesterday was better than today, and today is better than tomorrow, and it will remain like this until the Day of Resurrection." (T)

It is mentioned in a Mauquf Hadith that Satan takes the form of a man and spreads a lie among people. The listener relates it to others, saying, "A person whose face I recognize but whose name I do not know mentioned this to me."

[Arabic]: Muslim recorded in the introduction of his Sahih from 'Amir bin 'Abdah who said: Abdullah said: Verily, the devils take the form of a man and come to a people, telling them a lying story. Then they disperse, and one of them says, 'I heard a man whose face I recognize but whose name I do not know telling it.'[2]

[Urdu]: Imam Muslim has narrated in the introduction to his Sahih from جناب (Mr.) 'Amir bin 'Abdah (may Allah be pleased with him) that Hazrat Abdullah (may Allah be pleased with him) said: "Satan comes to a people in the form of a man and tells them a lie, then they disperse. One of those men says, 'I heard a man narrating it; I recognize him by his face, but I do not know his name.'" (T)

Scholars state that a rumor, even if the whole city relates it, is not worth listening to, let alone establishing any ruling based on it.

[Arabic]: Al-Fadil al-Mustafa al-Rahmati said in the section on fasting in the Hashiya of Durr al-Mukhtar: "Not mere widespread reporting without knowing who started it, as some baseless news becomes common on people's tongues but the one who spread it is unknown, just as it was narrated from him that at the end of time, Satan will sit among a group and speak..."

[Urdu]: In the marginalia of Durr al-Mukhtar (Radd al-Muhtar), regarding the meaning of 'Istifadha' (popular narration), the statement of Fadil Mustafa Rahmati is quoted: "Mere spreading of news where the publisher is unknown is not Istifadha. For example, some baseless news becomes common on people's tongues, but the publisher is not known, just as it is mentioned in the noble Hadith..."

[Arabic]: Regarding him: We have already provided its documentation. (M) [Urdu]: (Its documentation has already passed from our side.) (T)

---

1 Majma' al-Zawa'id, Chapter on what has passed of time, etc., printed by Dar al-Kitab Beirut, 7/286 2 Introduction to Sahih Muslim, printed by Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/10

फ़तावा रज़विया खंड IV

[अरबी]: हज़रत अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है। और तबरानी ने एक सही सनद के साथ इब्न मसूद से रिवायत की है कि पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "बीता हुआ कल आज से बेहतर था और आज आने वाले कल से बेहतर है, और कयामत तक ऐसा ही रहेगा।"[1]

[उर्दू]: मुहम्मद बिन इस्माइल (बुखारी), तिर्मिज़ी और नसाई ने हज़रत अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) की रिवायत से इसे नकल किया है। और तबरानी ने सही सनद के साथ हज़रत अब्दुल्ला इब्न मसूद (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की है कि उन्होंने सरकार-ए-दो आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत की, आपने फ़रमाया: "जो कल बीत गया वह आज से बेहतर था और आज आने वाले कल से बेहतर है, कयामत तक इसी तरह होगा।" (त)

एक मौकूफ़ हदीस में है कि शैतान आदमी की शक्ल बन कर लोगों में झूठी बात मशहूर कर देता है, सुनने वाला औरों से बयान करता है और कहता है कि मुझसे एक शख्स ने ज़िक्र किया जिसकी सूरत पहचानता हूँ नाम नहीं जानता।

[अरबी]: मुस्लिम ने अपनी सहीह की प्रस्तावना में आमिर बिन अब्दुह से रिवायत की है जिन्होंने कहा: अब्दुल्ला ने कहा: निश्चित रूप से, शैतान एक आदमी के रूप में आते हैं और लोगों के पास आकर उनसे झूठ बोलते हैं। फिर वे बिखर जाते हैं और उनमें से एक आदमी कहता है, 'मैंने एक आदमी को बयान करते हुए सुना जिसका चेहरा मैं पहचानता हूँ लेकिन नाम नहीं जानता।'[2]

[उर्दू]: इमाम मुस्लिम ने अपनी सहीह के मुकद्दमा (प्रस्तावना) में जनाब आमिर बिन अब्दुह (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की है कि हज़रत अब्दुल्ला (रज़ियल्लाहु अन्हु) फ़रमाते हैं: "शैतान आदमी की शक्ल में एक कौम के पास आता है और उनसे झूठी बात बयान करता है फिर वे मुंतशिर (बिखर) हो जाते हैं, तो उनमें से एक आदमी कहता है 'मैंने एक आदमी को बयान करते हुए सुना, मैं उसको चेहरे से पहचानता हूँ लेकिन उसका नाम नहीं जानता'।" (त)

विद्वान फ़रमाते हैं कि अफ़वाही ख़बर अगरचे तमाम शहर बयान करे, सुनने के काबिल नहीं, न कि उससे कोई हुक्म साबित किया जाए।

[अरबी]: फाज़िल मुस्तफा रहमती ने रोज़े के बारे में दुर्रे मुख्तार के हाशिये में कहा है: "केवल खबर का फैलना जबकि फैलाने वाले का पता न हो (इस्तिफ़ाज़ा नहीं है), जैसा कि कुछ बेबुनियाद ख़बरें

लोगों की ज़ुबान पर आम हो जाती हैं लेकिन फैलाने वाले का पता नहीं होता, जैसा कि उनसे रिवायत है कि आखिरी ज़माने में शैतान जमात के बीच बैठेगा और बात करेगा..."

[उर्दू]: दुर्रे मुख्तार के हाशिये (रद्दुल मुहतार) में (इस्तिफ़ाज़ा के अर्थ के बारे में) फाज़िल मुस्तफा रहमती का कौल मनकुल (उद्धृत) है कि महज़ ख़बर फैलना जबकि शाया (प्रकाशित) करने वाले का इल्म न हो (इस्तिफ़ाज़ा नहीं है), जैसे बाज़ बेबुनियाद ख़बरें लोगों की ज़ुबान पर आम हो जाती हैं लेकिन शाया करने वाले का इल्म नहीं होता जैसा कि हदीस शरीफ़ में है...

[अरबी]: उनके बारे में: हमने अभी इसकी तखरीज़ (हवाला) पेश की है। (म) [उर्दू]: (हमारी तरफ़ से अभी इसकी तख़रीज गुज़र चुकी है।) (त)

---

1 मजमा-उज़-ज़वाइद, बीता हुआ समय का अध्याय, दार अल-किताब बेरूत द्वारा मुद्रित, 7/286 2 सहीह मुस्लिम की प्रस्तावना, कदीमी कुतुब खाना कराची द्वारा मुद्रित, 1/10

فتاوی رضویہ جلد چہارم

عن انس رضی اللہ تعالی عنہ واخرج الطبرانی بسند صحیح عن ابن مسعود عن النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم : امس خیر من الیوم خیر من غد وکذلك حتی تقوم الساعة[1]۔

محمد بن اسمعیل (بخاری)، ترمذی اور نسائی نے حضرت انس رضی اللہ عنہ کی روایت سے نقل کیا ہے۔ اور طبرانی نے بسند صحیح حضرت عبداللہ ابن مسعود رضی اللہ عنہ سے انہوں نے سرکار دو عالم صلی اللہ علیہ وسلم سے روایت کی ، آپ نے فرمایا: "کل گزرا ہوا آج سے بہتر تھا اور آج کا دن آنے والے کل سے بہتر ہے، تاقیامت اسی طرح ہوگا"۔(ت)

حدیث موقوف میں ہے شیطان آدمی کی شکل بن کر لوگوں میں جھوٹی بات مشہور کردیتا ہے سننے والا اوروں سے بیان کرتا اور کہتا ہے مجھ سے ایک شخص نے ذکر کیا جس کی صورت پہچانتا ہوں نام نہیں جانتا۔

مسلم في مقدمة الصحیح عن عامر بن عبدة قال قال عبد اللہ ان الشیطین لیتمثل في صورة الرجل فیأتی القوم فیحدثھم بالحدیث من الکذب فیتفرقون فیقول الرجل منھم سمعت رجلا اعرف وجھه ولا ادری ما اسمه یحدث [2]۔

امام مسلم نے اپنی صحیح کے مقدمہ میں جناب عامر بن عبدہ رضی اللہ عنہ سے روایت کیا کہ حضرت عبداللہ رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں : شیطان آدمی کی شکل میں ایک قوم کے پاس آتا ہے اور ان سے جھوٹی بات بیان کرتا ہے پھر وہ منتشر ہو جاتے ہیں تو ان میں سے ایک آدمی کہتا ہے میں نے ایک آدمی کو بیان کرتے ہوئے سنا میں اس کو چہرے سے پہچانتا ہوں لیکن اس کا نام نہیں جانتا۔(ت)

علماء فرماتے ہیں افواہی خبر اگر چہ تمام شہر بیان کرے سننے کے قابل نہیں نہ کہ اس سے کوئی حکم ثابت کیا جائے۔

الفاضل المصطفی الرحمتی في صوم حاشية الدر المختار لا مجرد الشيوع من غير علم بمن اشاعه كما قد تشيع اخبار يتحدث بها سائر اهل البلدة ولا يعلم من اشاعها كما ورد عنه ان فی اخر الزمان يجلس الشيطن بين الجماعة فيتكلم

دُرّمختار کے حاشیہ (ردالمحتار) میں (استفاضہ کے معنی کے بارے میں) فاضل مصطفیٰ رحمتی کا قول منقول ہے کہ محض خبر پھیلنا کہ شائع کرنے والے کا علم نہ ہو (استفاضہ نہیں ہے) جیسے بعض بے بنیاد خبریں لوگوں کی زبان پر عام ہو جاتی ہیں لیکن شائع کرنے والے کا علم نہیں ہوتا جیسا کہ حدیث شریف

عنه : قدمنا تخريجه آنفا منه (م) | (ہماری طرف سے ابھی اس کی تخریج گزر چکی ہے۔(ت)

---

1 مجمع الزوائد باب فیما مضی من الزمان الخ مطبوعہ دار الکتاب بیروت ۷ / ۲۸۶ 2 مقدمہ صحیح مسلم مطبوعہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۱۰

Volume Four Fatawa Ridawiyya

[Arabic Text]: ...with a word, so they talk about it and say, 'We do not know who said it.' Thus, such as this should not be heard, let alone a ruling be established by it. (1) End of summary.

[Urdu Text]: It is narrated that in the end times, Satan will sit among a group and say some things, then they will narrate it and say, 'We do not know the one who said it.' So, it is not appropriate even to listen to this kind of talk, let alone establishing any ruling from it. (End of summary, T)

Sidi Muhammad Amin al-Din al-Shami (may Allah Almighty have mercy on him) narrates this and says:

[Arabic Text]: I say: this is good speech, and the statement of 'al-Dhakhira' points to it: 'when it spreads and is verified,' for verification is not found merely by being common. (2) End of quote.

[Urdu Text]: I say: this is good speech, and the statement of 'al-Dhakhira' that "when certainty is gained from it and it is established because its verification does not occur merely by being common" points towards this. (T)

Fifth Introduction: Permissibility (Halal), prohibition (Haram), purity (Taharat), and impurity (Najasat) are religious rulings. In these, the mere report of a disbeliever (Kafir) is unreliable.

[Quranic Verse]: Allah Almighty said: "And never will Allah grant to the disbelievers a way (to triumph) over the believers." (3) (Quran 4:141) [Urdu Translation]: Allah the Almighty said: Allah the Almighty will never give disbelievers a way over the Muslims. (T)

In fact, the report of a sinful Muslim (Fasiq) or even one whose condition is unknown (Mastur al-Hal) is not mandatory to accept, let alone a disbeliever.

[Quranic Verse]: Allah said: "O you who have believed, if there comes to you a disobedient person (Fasiq) with information, investigate it..." [Urdu Translation]: Allah the Almighty said: O believers! If a sinner brings you any news, then investigate it... until the end of the verse. (T)

Note: i.e., when it is not within a transaction. For example, a disbeliever brought meat and said he bought it from a Muslim, his word is acceptable and the meat is Halal.

And if he said it is the slaughtered meat of a Magian, his word is taken and the meat is Haram. "How many things are established implicitly and are not established intentionally." (Minh 21) (Many things are established implicitly and are not established intentionally. T)

1. Radd al-Muhtar, Kitab al-Sawm, published by Mustafa al-Babi, Egypt, 2/102.
2. Al-Quran 4/141.
3. Al-Quran 6/49. (Referencing Surah 49, Verse 6 in the text).

जिल्द चौथा फ़तावा रज़विया

[अरबी पाठ]: ...एक शब्द के साथ, वे इसके बारे में बात करते हैं और कहते हैं, 'हमें नहीं पता कि यह किसने कहा है।' तो इस तरह की बात सुनने के लायक नहीं है, इससे कोई हुक्म (आदेश) साबित होना तो दूर की बात है। (1) सारांश समाप्त।

[उर्दू पाठ]: उल्लेख है कि आख़िरी ज़माने में शैतान एक जमात के बीच बैठकर कुछ बातें करेगा, फिर वे उसे बयान करेंगे और कहेंगे, 'हम इसके कहने वाले को नहीं जानते।' अतः इस किस्म की बात को सुनना भी मुनासिब नहीं, फिर उससे कोई हुक्म साबित किया जाना तो दूर की बात है। (सारांश, त)

सीदी मुहम्मद अमीन उद्दीन शामी (अल्लाह उन पर रहम करे) इसे नक़्ल करते हुए फ़रमाते हैं:

[अरबी पाठ]: मैं कहता हूँ: यह अच्छी बात है, और 'अल-ज़ख़ीरा' का यह कथन इसकी ओर इशारा करता है: 'जब वह फैल जाए और सत्यापित हो जाए,' क्योंकि सत्यापन केवल आम होने से नहीं मिल जाता। (2) उद्धरण समाप्त।

[उर्दू पाठ]: मैं कहता हूँ कि यह अच्छी बातचीत है और 'ज़ख़ीरा' का यह कहना कि "जब इससे यक़ीन का फ़ायदा हासिल हो और वह साबित हो जाए क्योंकि महज़ मशहूर होने से उसका सत्यापन नहीं होता" इसी की तरफ इशारा करता है। (त)

पाँचवीं प्रस्तावना: हलाल, हराम, पाकी और नापाकी दीनी अहकाम (धार्मिक नियम) हैं। इनमें किसी काफ़िर की ख़बर महज़ अविश्वसनीय है।

[क़ुरानी आयत]: अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और अल्लाह काफ़िरों को मोमिनों पर ग़ालिब आने का हरगिज़ कोई रास्ता नहीं देगा।" (3) (क़ुरान 4:141) [उर्दू अनुवाद]: अल्लाह तआला ने फ़रमाया: अल्लाह तआला हरगिज़ मुसलमानों पर काफ़िरों को रास्ता न देगा। (त)

बल्कि एक फ़ासिक़ (पापी) मुसलमान यहाँ तक कि जिसकी हालत छुपी हुई हो, उसकी ख़बर भी क़बूल करना वाजिब नहीं है, फिर काफ़िर की तो बात ही क्या।

[क़ुरानी आयत]: अल्लाह ने फ़रमाया: "ऐ ईमान वालो! अगर तुम्हारे पास कोई फ़ासिक़ कोई ख़बर लेकर आए, तो उसकी तहक़ीक़ कर लिया करो..." [उर्दू अनुवाद]: अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ऐ

ईमान वालो! अगर तुम्हारे पास कोई फ़ासिक़ ख़बर लाए तो उसकी तहक़ीक़ कर लो... आयत के अंत तक। (त)

नोट: यानी जब मामलात के तहत न हो, मिसाल के तौर पर कोई काफ़िर मांस लाया और कहा कि एक मुसलमान से खरीदा है, तो उसकी बात मान ली जाएगी और मांस हलाल होगा। और अगर कहा कि यह मजूसी का ज़बीहा है, तो उसकी बात ली जाएगी और मांस हराम होगा। "कितनी ही चीज़ें अप्रत्यक्ष रूप से साबित होती हैं और इरादतन (प्रत्यक्ष रूप से) साबित नहीं होतीं।" (मिनहु 21) (बहुत सी चीज़ें अप्रत्यक्ष रूप से साबित होती हैं और इरादतन साबित नहीं होतीं। त)

1. रद-उल-मुहतार, किताब-उस-सौम, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 2/102।
2. अल-क़ुरान 4/141।
3. अल-क़ुरान 6/49।

पृष्ठ 482/761

جلد چہارم فتاوٰی رضویہ

بالكلمة فيتحدثون بها ويقولون لاندري من قالها فمثل هذا لاينبغی ان يسمع فضلا من ان يثبت به حكم 1 اه ملخصاً۔

میں وارد ہے کہ آخری زمانے میں شیطان ایک جماعت کے درمیان بیٹھ کر کچھ باتیں کرے گا تو وہ اسے بیان کرینگے اور کہیں گے ہم اس کے قائل کو نہیں جانتے پس اس قسم کی بات کو سننا بھی مناسب نہیں چہ جائیکہ اس سے کوئی حکم ثابت کیا جائے اہ ملخصاً (ت)

سیدی محمد امین الدین شامی رحمہ اللہ تعالٰی اسے نقل کر کے فرماتے ہیں:

قلت وهوكلام حسن ويشير اليه قول الذخيرة اذا استفاض وتحقق فان التحقق لايوجد بمجرد الشيوع 2 اھ

میں کہتا ہوں یہ اچھا کلام ہے اور ذخیرہ کا قول کہ "جب اس سے یقین کا فائدہ حاصل ہو اور وہ ثابت ہو جائے کیونکہ مجرد شائع ہونے سے اس کا تحقق نہیں ہوتا " اسی کی طرف اشارہ کرتا ہے۔ (ت)

مقدمہ خامسہ: حلت حرمت طہارت نجاست احکام دینیہ ہیں ان میں کافر کی خبر محض عہ نامعتبر۔

قال اللہ تعالٰی لَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِيْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا 3 اللہ تعالٰی نے فرمایا: اللہ تعالٰی ہرگز مسلمانوں پر کافروں کو راہ نہ دے گا۔ (ت)

بلکہ مسلمان فاسق بلکہ مستور الحال کی خبر بھی واجب القبول نہیں چہ جائے کافر۔

قال اللہ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَإٍ فَتَبَيَّنُوا اللہ تعالٰی نے فرمایا: اے ایمان والو! اگر تمہارے پاس کوئی فاسق خبر لائے تو اس کی تحقیق کرلو الآیہ (ت)

عہ: یعنی جب ضمن معاملات میں نہ ہو مثلاً کافر گوشت لایا اور کہا مسلمان سے خریدا ہے بات اُس کی مقبول اور گوشت حلال اور جو کہا مجوسی کا ذبیحہ ہے قول اُس کا ماخوذ اور لحم حرام وکم من شئی یثبت ضمناً ولا یثبت قصداً ۲۱ منہ (بہت سی چیزیں ضمناً ثابت ہوتی ہیں اور قصداً ثابت نہیں ہوتیں۔ ت)

1 ردالمحتار کتاب الصوم مطبوعہ مصطفی البابی مصر ۲/۱۰۲ 2 القرآن ۴/۱۴۱ 3 القرآن ۶/۴۹

Fatawa Razawiyya Volume 4 In Durr-e-Mukhtar it is stated:

- The condition of integrity (Adalah) is required in matters of religious practices (Diyanat), such as a report regarding the impurity of water. If a just Muslim, who refrains from what he believes is forbidden, reports it, one should perform Tayammum and not perform Wudu. For the report of an open sinner (Fasiq) or someone whose state is unknown (Mastoor-ul-Hal), one should deliberate. (End of summarized text) [1]
- In Al-Alamgiriyah, citing Al-Kafi, it is mentioned: According to manifest narrations, the statement of a Mastoor-ul-Hal is not accepted in matters of religious practices, and this is the correct view. [2]
- In Radd al-Muhtar, citing Al-Hidayah, it is mentioned: A Fasiq is suspect, and a non-believer does not commit himself to the law, so he has no right to impose it upon a Muslim. [3]

Yes, regarding the Fasiq and Mastoor, the extent is that upon hearing their report, deliberation (Tahari) becomes mandatory. If one's heart is convinced of their truthfulness, it should be considered, as long as no stronger opposing evidence exists. In the case of a non-believer, even this is not required. For instance, if water is kept and a non-believer says it is impure, it is permissible for a Muslim to perform Wudu with it. Or if meat is bought and a non-believer says it contains pork, it is lawful for a Muslim to eat it, even if his truthfulness seems likely, or even if his statement somewhat appeals to the heart. After all, who is a greater liar than one who denies God? Therefore, the words of such a person are mere absurdities. Of course, caution is better, provided it causes no hardship.

- In the Fatawa of Imam Qazi Khan: If the person reporting the impurity of water is a Dhimmi (a non-believer under protection), his report is not accepted. However, if it occurs to one's heart that he is truthful in this regard, he said...

Note: Partly because it is impossible for the heart of a believer to accept the mere report of a non-believer without considering other supporting matters and indications. [Note m]

---

1. Durr-e-Mukhtar, Kitab al-Hazr wa al-Ibahah, Mujtabai Press, Delhi, 2/23.
2. Fatawa Hindiyya, Kitab al-Karahiya, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 5/309.

3. Radd al-Muhtar, Kitab al-Hazr wa al-Ibahah, Mustafa al-Babi, Egypt, 5/243. Page 483 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी दुर्रे मुख़्तार में है:

- दीयानात (धार्मिक कार्यों से संबंधित समाचार) में विश्वसनीयता (अदालत) की शर्त है, जैसे पानी की अशुद्धि की सूचना। यदि कोई न्यायप्रिय मुस्लिम, जो उन चीज़ों से बचता है जिन्हें वह वर्जित मानता है, इसकी सूचना दे, तो तयम्मुम करें और वज़ू न करें। और एक खुले पापी (फ़ासिक़) या जिसके हाल की जानकारी न हो (मस्तूरुल-हाल), उसकी सूचना पर विचार-विमर्श करें। (संक्षेप अंत) [1]
- आलमगीरिया में 'काफ़ी' के हवाले से उद्धृत है कि स्पष्ट विवरणों के अनुसार, दीयानात के मामलों में मस्तूरुल-हाल का बयान स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए, और यही सही दृष्टिकोण है। [2]
- रद्द अल-मुह्तार में 'हिदाया' से उद्धृत है कि फ़ासिक़ संदिग्ध है, और एक काफ़िर स्वयं शरीयत का पालन नहीं करता, इसलिए उसे मुसलमान पर इसे लागू करने का कोई अधिकार नहीं है। [3]

हाँ, फ़ासिक़ और मस्तूर के बारे में इतना है कि उनकी बात सुनकर विचार (तहरी) करना आवश्यक है। यदि दिल उनकी सच्चाई पर जम जाए, तो उसका ध्यान रखें जब तक कि कोई प्रबल प्रमाण इसके विपरीत न हो। लेकिन काफ़िर के मामले में इसकी भी आवश्यकता नहीं है। उदाहरण के लिए, पानी रखा हो और काफ़िर कहे कि यह अशुद्ध है, तो मुसलमान के लिए उससे वज़ू करना जायज़ है। या मांस खरीदा हो और काफ़िर कहे कि इसमें सूअर का मांस मिला है, तो मुसलमान के लिए उसे खाना हलाल है, भले ही उसकी सच्चाई की संभावना अधिक लगे, या भले ही उसका कहना दिल को कुछ जंच जाए। आख़िरकार, ईश्वर को झुठलाने वाले से बड़ा झूठा कौन होगा? फिर ऐसे व्यक्ति की बात केवल बेहूदगी है। अलबत्ता सावधानी बेहतर है, वह भी वहाँ जहाँ कोई कठिनाई न हो।

- इमाम क़ाज़ी ख़ान के फ़तवों में है: यदि पानी की अशुद्धि की सूचना देने वाला ज़िम्मी (एक संरक्षित गैर-मुस्लिम) हो, तो उसकी बात स्वीकार नहीं की जाएगी। अगर किसी के दिल में यह बात बैठ जाए कि वह इस मामले में सच कह रहा है, तो उन्होंने कहा...

नोट: कुछ इसलिए कि बिना अन्य सहायक कारकों और संकेतों पर विचार किए, एक काफ़िर की केवल सूचना का एक मोमिन के दिल में बैठना असंभव है। [नोट m]

1. दुर्रे मुख़्तार, किताब अल-हज़्र वल-इबाहत, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 2/23.
2. फ़तावा हिंदिया, किताब अल-कराहिया, नूरानी कुतुब ख़ाना, पेशावर, 5/309.
3. रद्द अल-मुह्तार, किताब अल-हज़्र वल-इबाहत, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 5/243. पृष्ठ 483 / 761

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم دُرِّمختار میں ہے:

شرط العدالة فی الدیانات کالخبر عن نجاسة الماء فتیمم ولا یتوضأ ان اخبر بها مسلم عدل منزجر عما یعتقد حرمته ویتحری فی خبر الفاسق والمستور اه ملخصا۱۔ | دیانات (عبادات سے متعلق خبر) میں عدالت شرط ہے جیسے پانی کے ناپاک ہونے کے بارے میں اگر کوئی مسلمان عادل جو حرام امور سے باز رہنے والا ہو، خبر دے تو تیمم کرے، وضو نہ کرے۔ اور فاسق و مستور الحال کی خبر کے بارے میں غور وفکر کرے انتہٰی تلخیص۔ وفی العالمگیریة عن الکافی لا یقبل قول المستور فی الدیانات فی ظاهر الروایات وهو الصحیح۲ اھ | اور عالمگیریہ میں کافی سے نقل کیا کہ ظاہر روایات کے مطابق دیانات میں مستور الحال کا قول قبول نہ کیا جائے یہی صحیح ہے اھ۔ وفی ردالمحتار عن الهدایة الفاسق متهم والکافر لا یلتزم الحکم فلیس له ان یلزم المسلم۳ اھ | اور ردالمحتار میں ہدایہ سے نقل کیا ہے کہ فاسق تہمت زدہ ہے اور کافر حکم کا خود التزام نہیں کرتا پس اسے مسلمان پر لازم کرنے کا حق نہیں۔ اہ (ت)

ہاں فاسق و مستور میں اتنا ہے کہ ان کی خبر سُن کر تحری واجب اگر دل پر ان کا صدق جمے تو لحاظ کرے جب تک دلیل اقوی معارض نہ ہو اور کافر میں اس کی بھی حاجت نہیں مثلاً پانی رکھا ہو کافر کہے ناپاک ہے تو مسلمان کو روا کہ اس سے وضو کرے یا گوشت خریدا ہو کافر کہے اس میں لحم خنزیر ملا ہے مسلمان کو اس کا کھانا حلال اگر چہ اس کا صدق ہی غالب ہو اگر چہ اس کی یہ بات دل پر کچھ عہ جمتی ہوئی ہو کہ جو خدا کو جھٹلاتا ہے اس سے بڑھ کر جھوٹا کون پھر ایسے کی بات محض واہیات البتہ احتیاط کرے تو بہتر وہ بھی وہاں جب کچھ حرج نہ ہو۔

فی فتاوی الامام قاضی خان ان کان المخبر بنجاسة الماء رجلا من اهل الذمة لا یقبل قوله فان وقع فی قلبه انه صادق فی هذا الوجه قال | فتاوائے امام قاضی خان میں ہے اگر پانی کے ناپاک ہونے کی

خبر دینے والا ذمی (کافر) ہو تو اس کی بات قبول نہ کی جائے اگر اس کے دل میں واقع ہو کہ وہ اس

عہ: کچھ اس لئے کہ مجرد خبر کافر کا بے ملاحظہ امور دیگر جو اس کے مؤیدات و قرائن ہوں قلب مومن پر ٹھیك بیٹھنا محال ہے ۱۲ منہ (م)

---

۱ دُرِّمختار کتاب الحظر والاباحۃ مطبوعہ مجتبائی دہلی ۲/ ۲۳ ۲ فتاوی ہندیہ کتاب الکراہیۃ مطبوعہ نورانی کتب خانہ پشاور ۵/ ۳۰۹ ۳ ردالمحتار کتاب الحظر والاباحۃ مطبوعہ مصطفی البابی مصر ۵/ ۲۴۳ صفحہ 483 از 761

Fatawa Razawiyya Volume 4

Arabic Text

In the book [it is written]: "I prefer that he pours the water and performs Tayammum, but if he performs Wudu with it and prays, his prayer is valid." [1] (Translated)

And in al-Hindiyyah, it is quoted from al-Tatarkhaniyyah: "A man bought meat. After taking possession of it, a reliable Muslim informed him that it had been mixed with pork. It is not permissible for him to eat it." [2] (Translated)

I say: The contrary concept (Mafhum al-Mukhalafah) is considered in the books as explicitly stated by the Imams and scholars. In Radd al-Muhtar, it is quoted from al-Dhakhirah: "In the case of a transgressor (fasiq), investigation is necessary, and in the case of a protected non-Muslim (dhimmi), it is recommended (mustahab)." [3] (Translated). And in Sharh al-Tanwir, it is quoted from Sharh al-Niqayah, al-Khulasah, and al-Khaniyyah: "As for a disbeliever, when his truthfulness outweighs his falsehood, even then pouring out that (water) is more preferred." [4] (Translated)

Urdu Translation (Summary)

[If he] is truthful in [his] words, then it is stated in the book: "I prefer that he pours the water and performs Tayammum, but if he performs Wudu with it and prays, that is also permissible." (T)

And in Fatawa Hindiyyah, it is quoted from Tatarkhaniyyah that a man bought meat. When he had taken possession of it, a pious Muslim informed him that it was mixed with pork, so there is no scope for him to eat it. (T)

I say that the contrary concept is considered in the books as the Imams and scholars have clarified. In Radd al-Muhtar, it is quoted from Dhakhirah that in the case of a transgressor, contemplation and deliberation are necessary, and in the case of a dhimmi, it is recommended. (T) And in Sharh al-Tanwir, it is quoted from Sharh Niqayah, Khulasah, and Khaniyyah that when a disbeliever's truth outweighs his falsehood, even then, pouring away that (water) is more preferred. (T)

Sixth Introduction: The fact that something is far from the realm of precaution, or that a community is careless, lacks awareness, and is indifferent to impurity (najasat) and prohibition (hurmat), does not necessarily mean that such things, or items used or manufactured by that community, should be declared absolutely impure or forbidden. If there is certainty about their carelessness, even then, carelessness does not necessitate constant occurrence [of impurity]. What remains then but ill

suspicions and thoughts regarding the thing itself, which the Purified Sharia has disregarded in such instances, as we mentioned in the Second Introduction (as we have...

Footnotes: [1] Fatawa Qazi Khan, Chapter on Acceptance of a Single Report, printed Nawal Kishore, Lucknow, 4/478. [2] Fatawa Hindiyyah, Book of Disliked Matters, printed Noorani Kutubkhana, Peshawar, 5/309. [3] Radd al-Muhtar, Book of Prohibition and Permission, printed Mustafa al-Babi, Egypt, 5/224. [4] Durr al-Mukhtar, Book of Prohibition and Permission, printed Mujtabai, Delhi, 2/237.

फ़तावा रज़विया, खंड 4

अरबी पाठ

किताब में कहा गया है: "मुझे यह अधिक पसंद है कि वह पानी को बहा दे और तयम्मुम (मिट्टी से वज़ू) करे, और अगर उसने उसी पानी से वज़ू करके नमाज़ पढ़ ली, तो नमाज़ भी जायज़ है।" [1] (त)

और फ़तावा हिन्दिया में तातारख़ानिया से उद्धृत है कि एक व्यक्ति ने मांस खरीदा, जब उसने उस पर कब्ज़ा कर लिया तो एक विश्वसनीय मुसलमान ने उसे बताया कि इसमें सूअर का मांस मिला हुआ है, तो उसके लिए इसे खाना जायज़ नहीं है। [2] (त)

मैं कहता हूँ कि किताबों में विपरीत अर्थ (मफ़हूम मुखालिफ) को माना गया है जैसा कि इमामों और विद्वानों ने स्पष्ट किया है। रद्दुल मुहतार में 'ज़खीरा' से उद्धृत है कि एक फ़ासिक़ (पापी) के मामले में छानबीन करना ज़रूरी है और एक ज़िम्मी के मामले में मुस्तहब (पसंदीदा) है। [3] (त)। और शरह तनवीर में शरह निक़ाया, खुलासा और ख़ानिया से उद्धृत है कि एक काफ़िर का सच जब उसके झूठ पर भारी हो, तब भी उस (पानी) को बहा देना अधिक पसंदीदा है। [4] (त)

उर्दू अनुवाद (सारांश)

बात में सच्चाई है तो किताब में फ़रमाया: "मुझे ज़्यादा पसंद है कि पानी बहा दे और तयम्मुम करे और अगर उसके साथ वज़ू करके नमाज़ पढ़ी तो भी जायज़ है।" (त)

और फ़तावा हिन्दिया में तातारख़ानिया से नक़्ल किया है कि एक आदमी ने गोश्त खरीदा जब उस पर क़ब्ज़ा कर लिया तो उसे किसी सालेह (नेक) मुसलमान ने ख़बर दी कि इसमें ख़िनज़ीर (सूअर) का गोश्त मिला हुआ है तो उसके लिए खाने की गुंजाइश नहीं। (त)

मैं कहता हूँ कि किताबों में मफ़हूम-ए-मुखालिफ़ का एतबार किया गया है जैसा कि अइम्मा व उलमा ने इसकी तसरीह (व्याख्या) की, रद्दुल मुहतार में ज़ख़ीरा से मनक़ूल है कि फ़ासिक़ के सिलसिले में सोच व विचार ज़रूरी है और ज़िम्मी के बारे में मुस्तहब है। (त) और शरह तनवीर में शरह निक़ाया, ख़ुलासा और ख़ानिया से मनक़ूल है कि काफ़िर का सच जब उसके झूठ पर ग़ालिब (प्रभावी) हो तब भी उस (पानी) का बहा देना ज़्यादा पसंदीदा है। (त)

छठी प्रस्तावना (मुक़दमा सादिस): किसी चीज़ का एहतियात (सावधानी) के स्थान से दूर होना या किसी समुदाय का असावधान और नासमझ होना और अपवित्रता एवं वर्जनाओं के प्रति परवाह न करना इस बात के लिए अनिवार्य नहीं है कि वह चीज़ या उस समुदाय की उपयोग की गई या बनाई गई चीज़ें पूर्णतः अपवित्र या हराम और प्रतिबंधित घोषित कर दी जाएं। क्योंकि अगर उनकी

असावधानी का यकीन हो भी जाए, तब भी असावधानी का मतलब यह नहीं है कि हमेशा अपवित्रता ही घटित होगी। फिर चीज़ के बारे में केवल बुरे विचारों और शंकाओं के अलावा क्या बचता है, जिसे पाक शरीयत ने ऐसे स्थानों में नज़रअंदाज़ कर दिया है, जैसा कि हमने दूसरी प्रस्तावना में उल्लेख किया है (जैसा कि हमने...

फुटनोट: [1] फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, फ़सल फ़ीमा यक़बलु क़ौलुल वाहिद, नवल किशोर, लखनऊ, 4/478। [2] फ़तावा हिन्दिया, किताबुल कराहिया, नूरानी कुतुबखाना, पेशावर, 5/309। [3] रद्दुल मुहतार, किताबुल हज़्र वल इबाहा, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 5/224। [4] दुर्र-ए-मुख़्तार, किताबुल हज़्र वल इबाहा, मुजतबाई, दिल्ली, 2/237।

पृष्ठ 484 का 761

عربی متن

في الكتاب احب الي ان يريق الماء ثم يتيمم ولو توضأ وصلى جازت صلاته ۱^

اه و فی الهندية عن التاتارخانية رجل اشترى لحما فلما قبضه فاخبره مسلم ثقة انه قد خالطه لحم الخنزير لم يسعه ان يأكله ۲^ اه

قلت ومفهوم المخالفة معتبر فی الكتب كما صرح به الائمة والعلماء وفی رد المحتار عن الذخيرة انه فی الفاسق يجب التحرى وفی الذمی يستحب ۳^ اه وفی شرح التنوير عن شرح النقاية والخلاصة والخانية اما الكافر اذا غلب صدقه على كذبه ففارقته احب ۴^ اه

اردو ترجمہ

بات میں سچا ہے تو کتاب میں فرمایا: مجھے زیادہ پسند ہے کہ پانی بہا دے اور تیمم کرے اور اگر اس کے ساتھ وضو کرکے نماز پڑھی تو بھی جائز ہے (ت)

اور فتاوٰی ہندیہ میں تاتارخانیہ سے نقل کیا ہے کہ ایک آدمی نے گوشت خریدا جب اس پر قبضہ کرلیا تو اسے کسی صالح مسلمان نے خبر دی کہ اس میں خنزیر کا گوشت ملا ہوا ہے تو اس کے لئے کھانے کی گنجائش نہیں اہ (ت)

میں کہتا ہوں کتب میں مفہوم مخالف کا اعتبار کیا گیا ہے جیسا کہ ائمہ وعلما نے اس کی تصریح کی، ردالمحتار میں ذخیرہ سے منقول ہے کہ فاسق کے سلسلے میں سوچ و بچار ضروری ہے اور ذمی کے بارے میں مستحب ہے اہ (ت) اور شرح تنویر میں شرح نقایہ، خلاصہ اور خانیہ سے منقول ہے کہ کافر کا سچ جب اس کے جھوٹ پر غالب ہو تب بھی اس (پانی) کا بہا دینا زیادہ پسندیدہ ہے اہ (ت)

مقدمہ سادسہ: کسی شے کا محل احتیاط سے دور یا کسی قوم کا بے احتیاط و شعور اور پروائے نجاست و حرمت سے مہجور ہونا اسے مستلزم نہیں کہ وہ شے یا اس قوم کی استعمالی خواہ بنائی ہوئی چیزیں مطلقاً ناپاک یا حرام و ممنوع قرار پائیں کہ اس سے اگر یقین ہوا تو ان کی بے احتیاطی پر اور بے احتیاطی مقتضی وقوع دائم نہیں پھر نفس شے میں سوءظنون و خیالات کے کیا باقی رہا جنہیں امثال مقام میں شرع مطہر لحاظ سے ساقط فرما چکی کما ذکرنا في المقدمة الثانية (جیسا کہ ہم نے

حواشی: 1۔ فتاوٰی قاضی خان فصل فیما یقبل قول الواحد مطبوعہ نولکشور لکھنو ۴۷۸/۴ 2۔ فتاوٰی ہندیہ کتاب الکراہیة مطبوعہ نورانی کتب خانہ پشاور ۳۰۹/۵ 3۔ ردالمحتار کتاب الحظر والاباحہ مطبوعہ مصطفٰی البابی مصر ۲۲۴/۵ 4۔ در مختار کتاب الحظر والاباحہ مطبوعہ مجتبائی دہلی ۲۳۷/۲

Fatawa Ridawiyya, Volume 4

It has been mentioned in the second introduction. (T) And from 'Tawdih al-Maram Masail Masail Sharah', it is appropriate to mention some of its examples here, as it clarifies the rule, provides more benefit, and cures misgivings. Allah Almighty is the Grantor of success.

(1) Look, how common is the carelessness regarding those wells from which disbelievers, sinners, ignorant villagers, indiscreet children, and women of all kinds draw water, yet the purified Sharia rules them pure and permits drinking and performing ablution from them as long as impurity is not certain.

In *Al-Tatarkhaniyya*, then *Radd al-Muhtar*: Whoever doubts whether impurity has touched their vessel, clothes, or body, it remains pure as long as there is no certainty (of impurity). Similarly, wells, ponds, and large pots placed on the roads from which small and large, Muslims and disbelievers drink (are pure). [Al-Tatarkhaniyya then Radd al-Muhtar]

I say: This matter has continued from the first era until our time. No critic finds fault with it, nor does any denier reject it; thus, it is a consensus (Ijma). (T)

(2) Consider, there are even more suspicions and thoughts about those shoes worn through all kinds of streets and alleys. Yet the scholars say if they fall into a well and no impurity is visible on them, the well remains pure, although as a precaution for the heart's satisfaction, ten or twenty buckets are recommended to be drawn.

In *Al-Tariqa* and *Al-Hadiqa*, from *Al-Tatarkhaniyya*: Imam al-Khujandi was asked about a 'rakiyya', which is a well, in which... [Al-Tariqa and Al-Hadiqa from Al-Tatarkhaniyya]

The first is explicitly mentioned in some books, and the second is based on a rule established by Imam Muhammad (may Allah have mercy on him), considering that among the reported statements in the Hadith, twenty (20) is the smallest number, as in *Al-Khaniyya*. This is more worthy of being followed. And Allah Almighty knows best. 12 (T)

1. Radd al-Muhtar, Book of Purification, printed by Mustafa al-Babi, Egypt, 1/111. Page 485 of 761

फ़तावा रज़विया, जिल्द चौथी

दूसरी प्रस्तावना में इसका ज़िक्र किया गया है। (त) और 'तौज़ीह अल-मराम मसायल मसायल शरह' से इसके कुछ उदाहरण यहाँ देना उचित है क्योंकि इसमें एक तो नियम स्पष्ट होता है, दूसरा बहुत फ़ायदा है, और तीसरा शंकाओं का इलाज है। अल्लाह तआला ही सफलता देने वाला है।

(१) देखो, उन कुओं के बारे में कितनी लापरवाही है जिनसे काफ़िर, पापी, जाहिल गँवार, नादान बच्चे, और नासमझ औरतें हर तरह के लोग पानी भरते हैं, फिर भी पाक शरीअत उनकी पाकी का हुक्म देती है और उनसे पीना और वज़ू करना जायज़ मानती है जब तक कि नजासत (गंदगी) का पता न चले।

'अत-तातारखानीया' और फिर 'रद अल-मुहतार' में है: जिसे अपने बर्तन, कपड़े या शरीर के बारे में संदेह हो कि उसे गंदगी लगी है या नहीं, तो जब तक (गंदगी लगने का) यकीन न हो वह पाक है। इसी तरह कुएँ, हौज़ और रास्तों में रखे मटके जिनसे छोटे-बड़े, मुसलमान और काफ़िर (सब) पीते हैं, वे भी पाक हैं। [अत-तातारखानीया फिर रद अल-मुहतार]

मैं कहता हूँ: यह बात पहले दौर से लेकर हमारे समय तक जारी है। कोई दोष निकालने वाला इसमें दोष नहीं निकालता और न ही कोई इसका खंडन करता है, इसलिए यह इजमा (आम सहमति) है। (त)

(२) उन जूतों के बारे में तो और भी अधिक संदेह और विचार आते हैं जिन्हें गली-कूचों और हर तरह की जगहों पर पहनकर घूमा जाता है। फिर भी विद्वान फरमाते हैं कि यदि वे कुएँ में गिर जाएँ और उन पर कोई नजासत (गंदगी) ज़ाहिर न हो, तो कुआँ पाक है, हालाँकि दिल की तसल्ली के लिए दस-बीस बाल्टी निकालने का सुझाव दिया गया है।

'अत-तरीका' और 'अल-हदीक़ा' में 'अत-तातारखानीया' से उद्धृत है: इमाम अल-खुजंदी से 'रक़िया' के बारे में पूछा गया, जो एक कुआँ है, जिसमें... [अत-तरीका और अल-हदीक़ा अत-तातारखानीया से]

पहला कुछ किताबों में स्पष्ट रूप से वर्णित है, और दूसरा उस नियम के आधार पर है जिसे इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) ने इस बात का ध्यान रखते हुए बनाया है कि हदीसों में आए कथनों में

संख्या के आधार पर सबसे कम बीस (२०) का कथन है, जैसा कि 'खानिया' में है। इस पर अमल करना ही उचित है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। १२ (त)

1. रद अल-मुहतार, किताब अल-तहारत, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस, मिस्र १/१११। पृष्ठ ४८५/७६१

دوسرے مقدمہ میں ذکر کیا ہے۔ ت) اور توضیع للمرام مسائل مسائل شرح سے اس کے چند نظائر بھی معرض بیان میں آنا مناسب کہ اس میں ایک تو ایضاح قاعدہ دوسرے اکثر فائدہ تیسرے علاج وساوس واللہ تعالٰی الموفق۔

(۱) دیکھو کیا کم ہے ان کنوؤں کی بے احتیاطی جن سے کفار فجار جہاں گنوار نادان بچے بے تمیز عورتیں سب طرح کے لوگ پانی بھرتے ہیں پھر شرع مطہر ان کی طہارت کا حکم دیتی اور شرب و وضو روا فرماتی ہے جب تک نجاست معلوم نہ ہو۔

فی التتارخانیۃ ثم ردالمحتار من شك في انائه اوثوبه اوبدنه اصابته نجاسة اولا فهو طاهر مالم يستيقن وكذا الآبار والحياض والحباب الموضوعة فی الطرقات ويستقی منها الصغار والكبار والمسلمون والكفار اھـ تتارخانیہ پھر ردالمحتار میں ہے جس کو اپنے برتن، کپڑے یا بدن میں شک ہو کہ اسے نجاست پہنچی ہے یا نہیں، تو جب تک (نجاست لگنے کا) یقین نہ ہو وہ پاک ہے اسی طرح کنویں، حوض اور راستوں میں رکھے ہوئے مٹکے جن میں سے چھوٹے اور بڑے، مسلمان اور کفار (سب) پیتے ہیں (پاک ہیں) اھـ

اقول: وھذا امر مستمر من لدن الصدر الاول الی زماننا ھذا لا یعیبه عائب ولا ینکرہ منکر فکان اجماعًا۔ اقول: یہ بات پہلے دور سے ہمارے زمانے تک جاری ہے کوئی عیب لگانے والا اسے عیب نہیں لگاتا اور نہ کوئی منکر اس کا انکار کرتا ہے پس اجماع ہوا۔ (ت)

(۲) خیال کرو اس سے زیادہ ظنوں و خیالات ہیں ان جوتوں کے بارے میں جنہیں گلی کوچوں ہر قسم کی جگہوں میں پہنے پھرے پھر علما فرماتے ہیں مجوتا کنویں سے نکلے اور اس پر کوئی

نجاست ظاہر نہ ہو کنواں طاہر اگرچہ تطیبًا للقلب (دل کی تسلی کے لئے) دس بیس ۲۰ عہ ڈول تجویز کیے گئے۔

فی الطریقة والحدیقة عن التاترخانیة سئل الامام الخجندی عن رکیة وھی البئر وجدفیھا طریقہ محمدیہ اور حدیقہ ندیہ میں تاتارخانیہ سے منقول ہے امام خجندی سے رکیہ کے بارے میں پوچھا گیا اور یہ ایک

عہ: الاول مصرح بہ بعض الکتب والثانی لضابطة وضعھا محمد نظرا الی ان العشرین اقل ماورد کما فی الخانیة وھذا ھو الاولی بالاخذ واللہ اعلم ۱۲ منہ (م) پہلے کی تصریح بعض کتب میں موجود ہے اور دوسرا اس ضابطہ کی بناء پر جسے امام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ نے وضع کیا ہے اس کی رعایت کرتے ہوئے کہ احادیث میں وارد شدہ اقوال میں تعداد کے اعتبار سے سب سے کم بیس ۲۰ کا قول ہے جیسا کہ خانیہ میں ہے یہ وہ ہے جس پر عمل کرنا اولی ہے واللہ تعالیٰ اعلم ۱۲ منہ (ت)

1 ردالمحتار کتاب الطھارة مطبوعہ مصطفی البابي مصر ۱/۱۱۱ Page 485 of 761

Fatawa Ridawiyyah - Volume 4

[Left Column - Arabic Text] A leather sock (Khuff), i.e., a shoe that is worn and its owner walks in it through paths, is found in a well. It is not known when it fell into it, and there is no trace of impurity (Najasah) on it. Is the water ruled to be impure? He [the jurist] said: No. (Summary) I say: Rather, it has been authentically narrated from the Holy Prophet (may peace and blessings of Allah be upon him) and his noble Companions (may Allah be pleased with them) that they prayed in shoes with which they used to walk on paths, as mentioned in the Hadith regarding removing shoes narrated by Imam Ahmad, Abu Dawud, and a group of Hadith scholars on the authority of Abu Sa'id al-Khudri (may Allah be pleased with him). And the leading scholars Ahmad, Bukhari, Muslim, Tirmidhi, and Nasa'i narrated from Sa'id bin Yazid that he said: I asked Anas (may Allah be pleased with him), "Did the Prophet (may peace and blessings of Allah be upon him) pray in his shoes?" He said, "Yes." And it was also narrated by Abu Dawud, Hakim, Ibn Hibban, and Bayhaqi with an authentic chain, and Tabarani in al-Kabir with a chain whose authenticity is disputed from Shaddad bin Aws, and al-Bazzar with a weak chain from Anas as a marfu' narration, and this is the first Hadith: "Be different from the Jews (and in a narration: and the Christians), for they do not pray in their shoes nor in their leather socks." Indeed, there are numerous verbal and practical Hadiths, both marfu' and mawquf, found with this meaning.

[Right Column - Urdu Translation] [The question is about a] well in which a leather sock, meaning a shoe, was found, which the wearer used to walk in on paths. It is not known when it fell in, and there is no mark of impurity on it. Will the water be ruled as impure? He said: No. (Summary) I say: Rather, the performance of prayer in those shoes with which they walked on roads is established correctly from the Holy Prophet (peace be upon him) and the noble Companions (may Allah be pleased with them), as in the Hadith of removing shoes, which Imam Ahmad, Abu Dawood, and a group of Muhadditheen (scholars of Hadith) have narrated from the narration of Hazrat Abu Sa'id al-Khudri (may Allah be pleased with him). And Imam Ahmad, Bukhari and Muslim, Tirmidhi, and Nasa-i have narrated from Hazrat Sa'id bin Yazid, who said: I asked Hazrat Anas (may Allah be pleased with him) whether the Holy Prophet (peace be upon him) used to pray in the blessed shoes (Na'layn)? He said: Yes. And Abu Dawood, Hakim, Ibn Hibban, and Bayhaqi with a Sahih (authentic) chain, and Tabarani in Al-Kabir with such a chain whose authenticity is disputed from Shaddad bin Aws, and Bazzar with a weak chain from Hazrat Anas (may Allah be pleased with

him) have narrated as Marfu', and this is the first Hadith: "Oppose the Jews (in one narration: and the Christians as well) because they do not pray in their shoes and leather socks." Verbal, practical, Marfu', and Mawquf Hadiths are found in abundance with this meaning. (T)

[Footnotes] 1. Al-Hadiqa al-Nadiyya, Second Section of the two sections, etc., printed at Nuria Ridawiyyah Faisalabad, 2/276. 2. Musnad Ahmad bin Hanbal, on the authority of Abu Sa'id al-Khudri (may Allah be pleased with him), printed at Dar al-Fikr Beirut, 3/92. 3. Sahih al-Bukhari, Chapter on Prayer in Shoes, printed at Qadeemi Kutub Khana Karachi, 1/56. 4. Sunan Abi Dawud, Chapter on Prayer in Shoes, printed at Aftab-e-Alam Press Lahore, 1/95.

फ़तावा रिज़विया - जिल्द 4

[बायां कॉलम - अरबी पाठ] एक चमड़े का मोज़ा (ख़ुफ़), यानी एक जूता जिसे पहना जाता है और उसका मालिक उससे रास्तों पर चलता है, एक कुएं में पाया जाता है। यह नहीं पता कि वह उसमें कब गिरा, और उस पर अशुद्धता (नजासत) का कोई निशान भी नहीं है। क्या पानी के नापाक होने का हुक्म दिया जाएगा? उन्होंने (फकीह ने) फरमाया: नहीं। (सारांश) मैं कहता हूँ: बल्कि, नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और उनके सहाबा किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से उन जूतों में नमाज़ पढ़ना सही तौर पर साबित है जिनके साथ वे रास्तों पर चलते थे, जैसा कि जूता उतारने वाली हदीस में है जिसे इमाम अहमद, अबू दाऊद और मुहाद्दिसीन की एक जमात ने हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ियल्लाहु अन्हु) की रिवायत से नक़ल किया है। और इमामों अहमद, बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी और नसाई ने हज़रत सईद बिन यज़ीद से रिवायत की है, उन्होंने कहा: मैंने अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से पूछा, "क्या नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपने जूतों में नमाज़ पढ़ते थे?" उन्होंने फरमाया, "हाँ।" और इसे अबू दाऊद, हाकिम, इब्न हिब्बान और बैहक़ी ने सही सनद के साथ, और तबरानी ने अल-कबीर में एक ऐसी सनद के साथ जिसकी सेहत विवादित है, शद्दाद बिन औस से, और अल-बज़ार ने एक कमज़ोर सनद के साथ अनस से मरफ़ूअ रिवायत के रूप में वर्णित किया है: "यहूदियों के विपरीत कार्य करो (और एक रिवायत में: और ईसाइयों के भी), क्योंकि वे न तो अपने जूतों में नमाज़ पढ़ते हैं और न ही अपने चमड़े के मोज़ों में।" वास्तव में, इस अर्थ के साथ कई मौखिक और व्यावहारिक हदीसें, मरफ़ूअ और मौक़ूफ़ दोनों, प्रचुर मात्रा में पाई जाती हैं।

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद] [सवाल है कि एक] कुआं है जिसमें मोज़ा यानी जूता पाया गया जिसे पहनने वाला पहनकर रास्तों पर चलता है। उसे मालूम नहीं कि वह उसमें कब गिरा, और उस पर नजासत का कोई निशान भी नहीं है। तो क्या पानी के नापाक होने का हुक्म दिया जाएगा? उन्होंने फरमाया: नहीं। (सारांश) मैं कहता हूँ: बल्कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और सहाबा किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से उन जूतों में जिनके साथ वे रास्तों में चलते थे, नमाज़ पढ़ना सही तौर पर साबित है जैसा कि जूता उतारने वाली हदीस में है जिसे इमाम अहमद, अबू दाऊद और मुहाद्दिसीन की एक जमात ने हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ियल्लाहु अन्हु) की रिवायत से नक़ल किया है। और इमाम अहमद, बुख़ारी व मुस्लिम, तिर्मिज़ी और नसाई ने हज़रत सईद बिन यज़ीद से रिवायत की है, वे फरमाते हैं कि मैंने हज़रत अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से पूछा कि क्या नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) नअ़लैन मुबारक (जूतों) में नमाज़ पढ़ते थे? उन्होंने फरमाया: हाँ। और

अबू दाऊद, हाकिम, इब्न हिब्बान और बैहक़ी ने सही सनद के साथ और तबरानी ने कबीर में ऐसी सनद के साथ जिसकी सेहत में विवाद है शद्दाद बिन औस से और बज़ार ने ज़ईफ़ सनद के साथ हज़रत अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से मरफ़ूअन रिवायत किया और यह पहली हदीस है कि यहूदियों की मुख़ालिफ़त करो (एक रिवायत में है और ईसाइयों की भी) क्योंकि वे अपने जूतों और मोज़ों में नमाज़ नहीं पढ़ते। इस मफ़हूम में क़ौली, फ़ेअली, मरफ़ूअ और मौक़ूफ़ हदीसें ब-कसरत पाई जाती हैं। (त)

[पादलेख] 1. अल-हदीक़ा अन-नदिय्या, दो वर्गों में से दूसरा वर्ग, आदि, नूरिया रिज़विया फैसालाबाद में मुद्रित, 2/276। 2. मुसनद अहमद बिन हंबल, हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से, दार अल-फ़िक्र बेरूत में मुद्रित, 3/92। 3. सही अल-बुख़ारी, जूतों में नमाज़ का अध्याय, कदीमी कुतुब ख़ाना कराची में मुद्रित, 1/56। 4. सुनन अबी दाऊद, जूतों में नमाज़ का अध्याय, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर में मुद्रित, 1/95।

[بایاں کالم - عربی متن] خف ای نعل تلبس و یمشی بها صاحبها في الطرقات لا یدری متی وقع فیها ولیس علیه اثر النجاسة هل یحکم بنجاسة الماء قال لا اھ ملخصا۔ اقول: بل قد صح عن النبي صلی الله تعالی علیه وسلم واصحابه الصلاة في النعال التی کانوا یمشون بها فی الطرقات 2 کما في حدیث خلع النعال عند احمد وابي داود جمع المحدثین عن ابی سعید الخدری رضی الله تعالی عنه واخرج الائمة احمد والشیخان والترمذی والنسائی عن سعید بن یزید سألت انسًا اکان النبی صلی الله تعالی علیه وسلم یصلی في نعلیه 3 قال نعم واخرج وابوداود والحاکم وابن حبان والبیهقی باسناد صحیح والطبراني فی الکبیر علی نزاع في صحته عن شداد بن اوس والبزار بسند ضعیف عن انس مرفوعًا وهذا حدیث الاول خالفوا الیهود (وفي روایة والنصاری) فانهم لا یصلون فی نعالهم ولا خفافهم 4 وقد کثرت الاحادیث القولیة والفعلیة فی هذا المعنی مرفوعات وموقوفات۔

[دایاں کالم - اردو ترجمہ] کنواں ہے کہ اس میں موزہ یعنی جوتا پایا گیا جس کو پہننے والا پہن کر راستوں پر چلتا ہے اسے معلوم نہیں کہ اس میں کب گرا اور اس پر نجاست کا نشان بھی نہیں تو کیا پانی کے ناپاک ہونے کا حکم دیا جائے گا؟ انہوں نے فرمایا: نہیں اھ تلخیص۔ اقول: بلکہ نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم اور صحابہ کرام رضی اللہ عنہم سے ان جوتوں میں جن کے ساتھ وہ راستوں میں چلتے تھے، نماز پڑھنا صحیح طور پر ثابت ہے جیسا کہ جوتا اتارنے والی حدیث میں ہے جسے امام احمد، ابوداؤد اور محدثین کی ایک جماعت نے حضرت ابوسعید خدری رضی اللہ عنہ کی روایت سے نقل کیا ہے۔ اور امام احمد، بخاری ومسلم، ترمذی اور نسائی نے حضرت سعید بن زید رضی اللہ عنہ سے روایت کی وہ فرماتے ہیں میں نے حضرت انس رضی اللہ عنہ سے پوچھا کہ کیا نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نعلین مبارک میں نماز پڑھتے تھے؟ انہوں نے فرمایا: ہاں۔ اور

ابوداؤد، حاکم، ابن حبان اور بیہقی نے صحیح سند کے ساتھ اور طبرانی نے کبیر میں ایسی سند کے ساتھ جس کی صحت میں نزاع ہے شداد بن اوس سے اور بزار نے ضعیف سند کے ساتھ حضرت انس رضی اللہ عنہ سے مرفوعاً روایت کیا اور یہ پہلی حدیث ہے کہ یہودیوں کی مخالفت کرو (ایک روایت میں ہے اور نصاریٰ کی بھی) کیونکہ وہ اپنے جوتوں اور موزوں میں نماز نہیں پڑھتے اس مفہوم میں قولی، فعلی، مرفوع اور موقوف احادیث بکثرت پائی جاتی ہیں۔(ت)

[حواشی] 1 الحدیقۃ الندیۃ الصنف الثانی من الصنفین الخ مطبوعہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۲ / ۲۷۶

2 مسند احمد بن حنبل عن ابی سعید الخدری رضی اللہ عنہ مطبوعہ دارالفکر بیروت ۳ / ۹۲ 3 صحیح البخاری باب الصلوۃ فی النعال مطبوعہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۵۶ 4 سنن ابی داؤد باب الصلوۃ فی النعال مطبوعہ آفتاب عالم پریس لاہور ۱/۹۵

Fatawa Razawiya, Volume 4

I say: I have authored an excellent booklet regarding this issue and the investigation of its ruling, which, with the help of the Powerful King, contains refined gems and noble benefits. I named it "Jamal al-Ijmal li-Tawqif Hukm al-Salat fi al-Ni'al" (The Beauty of Briefing for Understanding the Ruling of Prayer in Shoes). The gist of what I investigated in it is that praying in new and clean shoes that are safe from places of impurity and areas of doubt is permissible without dislike, and there is no harm in it. The same ruling applies to Indian shoes, provided they are not so hard and tight as to prevent spreading the toes and leaning on them; rather, it has even been said that it is recommended. As for other than that, it shall be prohibited, as well as walking in them in mosques. Although it was a concession in the early period, many rulings vary with the change of times. And Allah Almighty knows best.

(3) Consider how many doubts there are regarding children's bodies and clothes, as they lack the ability to be cautious. Yet, the jurists rule that the water in which a child puts their hand or foot is pure until impurity is confirmed.

In the aforementioned text and commentary (Tariqah and Hadiqah), it states: "Similarly is the ruling of water in which a child has put their hand, because children do not avoid impurity. However, a ruling is not given based on doubt and suspicion. But if the essence of impurity or its trace becomes apparent, then a ruling of impurity will be given." Summarized.

(4) Observe how broad the scope is: in linseed oil from which soap is made, its vats remain open, and a mouse...

1. Al-Hadiqah al-Nadiyyah, Fourth Light in Explaining the Disagreement of Jurists, etc., printed by Nuriyah Razawiyya, Faisalabad, 2/117.

फ़तावा रज़विया, खंड 4

मैं कहता हूँ: मैंने इस मसले और इसके हुक्म की तहक़ीक़ में एक उम्दा रिसाला (पुस्तिका) लिखा है, जो शक्तिशाली बादशाह की मदद से उम्दा मोतियों और महान लाभों पर आधारित है। मैंने इसका नाम "जमाल अल-इजमाल ली-तौक़ीफ़ हुक्म अस-सलात फ़ी अन-निआल" (जूतों सहित नमाज़ पढ़ने के हुक्म की वाक़िफ़ियत का उम्दा संक्षिप्त वर्णन) रखा है। मैंने इसमें जो तहक़ीक़ की है उसका सारांश यह है कि नए और पाक जूतों में, जो नजासत (गंदगी) की जगहों और संदेह के स्थानों से सुरक्षित हों, बिना किसी नापसंदगी के नमाज़ पढ़ना जायज़ है और इसमें कोई हर्ज नहीं है। हिंदुस्तानी जूते का भी यही हुक्म है जब तक कि वह इतना सख्त और तंग न हो कि उंगलियाँ बिछाने और उन पर टेक लगाने में बाधा उत्पन्न करे; बल्कि इसके मुस्तहब (पसंदीदा) होने का भी उल्लेख किया गया है। लेकिन इसके अलावा जूतों में नमाज़ पढ़ने और उनके साथ मस्जिदों में चलने से मना किया जाएगा, हालाँकि शुरुआती दौर में इसकी अनुमति थी। समय के बदलने के साथ कई हुक्म बदल जाते हैं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

(3) विचार करें कि बच्चों के शरीर और कपड़ों के बारे में कितने संदेह हो सकते हैं, क्योंकि उनमें सावधानी बरतने की क्षमता नहीं होती। फिर भी फ़क़ीह (इस्लामी न्यायविद) हुक्म देते हैं कि जिस पानी में बच्चा हाथ या पैर डाल दे, वह तब तक पाक है जब तक नजासत साबित न हो जाए।

उल्लिखित मूल पाठ और व्याख्या (तरीक़ा और हदीक़ा) में है: "उसी तरह उस पानी का हुक्म है जिसमें बच्चे ने हाथ डाला हो, क्योंकि बच्चे नजासत से परहेज नहीं करते। लेकिन केवल शक और संदेह के आधार पर हुक्म नहीं दिया जाएगा। अलबत्ता अगर नजासत का कोई अंश या उसका प्रभाव दिखाई दे जाए, तो नजासत का हुक्म दिया जाएगा।" सारांशित।

(4) देखें कि गुंजाइश किस हद तक है: अलसी के तेल (रौगन-ए-कतान) में जिससे साबुन बनता है, उसके कड़ाहे खुले रहते हैं और चूहा...

1. अल-हदीक़ा अन-नदिया, चौथा प्रकाश, फ़कीहों के मतभेदों के वर्णन में आदि, नूरिया रज़विया, फ़ैसलाबाद द्वारा मुद्रित, 2/117।

पृष्ठ 487 / 761

قلت وقد افرزت فی هذه المسئلة وتحقیق الحکم فیها کراهة لطیفة تحتوی بعون الملك القوی علی فرائد نظیفة وفوائد شریفة سمیتها جمال الاجمال لتوقیف حکم الصلاة فی النعال حاصل ما حققت فیها ان الصلاة فی الحذاء الجدید والنظیف المصون عن مواضع الدفق ومواقع الریبة تجوز بلا کراهة ولا بأس وکذا النعل الهندیة اذا لم تکن صلبة ضیقة تمنع افتراش اصابع القدم والاعتماد علیها بل قد یقال باستحبابه واما غیر ذلك فیمنع منه ومن المشی بها فی المساجد وان کانت رخصة فی الصدر الاول فکم من حکم یختلف باختلاف الزمان واللہ تعالی اعلم۔

میں کہتا ہوں میں نے اس مسئلہ اور اس کے حکم کی تحقیق میں ایک عمدہ کتابچہ لکھا ہے جو طاقت والے بادشاہ کی مدد سے عمدہ موتیوں اور عظیم فوائد پر مشتمل ہے میں نے اس کا نام جمال الاجمال لتوقیف حکم الصلاۃ فی النعال (جو توں سمیت نماز پڑھنے کے حکم کی واقفیت کا عمدہ اجمالی بیان۔ ت) رکھا ہے۔ میں نے اس میں جو تحقیق کی ہے اس کا خلاصہ یہ ہے کہ نئے اور پاک جوتے میں جو نجاست کی جگہوں اور شک وشبہ کے مقامات سے محفوظ ہو، بلا کراہت نماز پڑھنا جائز ہے اور اس میں کوئی حرج نہیں ہندوستانی جوتے کا بھی یہی حکم ہے جب کہ وہ ایسا سخت اور تنگ نہ ہو جو انگلیاں بچھانے اور ان پر ٹیک لگانے میں رکاوٹ ہو، بلکہ اس کے مستحب ہونے کا قول بھی کیا جاتا ہے۔ لیکن اس کے علاوہ جوتے میں نماز پڑھنے اور اس کے ساتھ مساجد میں چلنے سے بھی منع کیا جائے گا اگرچہ پہلے دور میں اس کی اجازت تھی کچھ احکام اختلاف زمانہ سے بدل جاتے ہیں واللہ تعالٰی اعلم (ت)

(۳) غور کرو کیا کچھ گمان ہیں بچوں کے جسم وجامہ میں کہ وہ احتیاط کرنے کی صلاحیت ہی نہیں رکھتی پھر فقہا حکم دیتے ہیں جس پانی میں بچہ ہاتھ یا پاؤں ڈال دے پاک ہے جب تک نجاست تحقیق نہ ہو۔

فی المتن والشرح المذکورین کذلك حکم الماء الذی ادخل الصبی یده فیه لان الصبیان لا یتقون النجاسة لکن لا یحکم بها بالشك والظن حتی لو ظهرت عین النجاسة او اثرها حکم بالنجاسة ۱اهـ ملخصاً۔

مذکور متن و شرح (طریقہ وحدیقہ) میں ہے "اسی طرح اس پانی کا حکم ہے جس میں بچے نے ہاتھ داخل کیا کیونکہ بچے نجاست سے اجتناب نہیں کرتے لیکن شک اور گمان کی بنیاد پر اس کا حکم نہیں دیا جائے گا البتہ عین نجاست یا اس کا اثر ظاہر ہو جائے تو نجاست کا حکم دیا جائے گا اھ ملخصا (ت)

(۴) لحاظ کرو کس درجہ مجال وسیع ہے روغنِ کتان میں جس سے صابون بنتا ہے اس کی کلیاں کھلی رہتی ہیں اور چوہا

۱ الحدیقة الندیة النور الرابع فی بیان اختلاف الفقهاء الخ مطبوعہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۱۱۷/۲

It (the mouse) runs at its smell and drinks it however it can, and often falls into it. Then the Imams say, "We cannot call the oil impure (najis) based on this, because it is only a conjecture. Who knows if it actually happened or not?"

In both [Al-Tariqa and Al-Hadiqa], citing Tatar-Khaniya and Al-Muhit al-Burhani, it is reported that according to some people, soap is impure because it is made from linseed oil, and linseed oil is impure because its containers are usually open-mouthed, and mice try to drink it and often fall into it. However, we, the group of Hanafis, do not issue a fatwa for the impurity of soap because we do not issue a fatwa for the impurity of the oil. This is because a mouse falling into it is mere conjecture, and impurity is not proven by conjecture. [Summary]

In both [Al-Tariqa and Al-Hadiqa], citing Tatar-Khaniya and Al-Muhit al-Burhani, it is reported that according to some people, soap is impure because it is made from linseed oil, and linseed oil is impure because its containers are usually open-mouthed, and mice try to drink it and often fall into it. However, we, the group of Hanafis, do not issue a fatwa for the impurity of soap because we do not issue a fatwa for the impurity of the oil. This is because a mouse falling into it is mere conjecture, and impurity is not proven by conjecture. [Summary (T)]

(5) Look at how wretched the condition is of those foods and sweets that disbelievers and Hindus make. Do we not have certainty regarding their extreme carelessness? Can we not say that any of their things is free from dung and other impurities? Do we not know that according to them, the dung of cows and buffaloes and the urine of a calf is not just clean and pure, but purifying and extremely blessed and sacred? When they intend to take full care of purity and cleanliness, they do not consider any thing to have more excellence than this. Yet, scholars consider eating these things permissible.

It is narrated in Radd al-Muhtar from Al-Tatarkhaniya that things made by polytheists or ignorant Muslims, such as ghee, bread, food, and clothes, are pure. [Summary]

It is narrated in Radd al-Muhtar from Al-Tatarkhaniya that things made by polytheists or ignorant Muslims, such as ghee, bread, food, and clothes, etc., are pure. [Summary (T)]

Rather, the Master of the Messengers himself (peace and blessings of Allah be upon him), with perfect kindness, mercy, humility, gentleness, and to win over their hearts, accepted invitations from disbelievers. Peace and blessings of Allah be upon him.

Imam Ahmad from Anas (may Allah be pleased with him) that...	Imam Ahmad has narrated from Hazrat Anas (may Allah be pleased with him) that...

1. Al-Hadiqa al-Nadiyya, second category from the two categories regarding what is reported from our Hanafi Imams, printed by Nooriya Razawiyya, Faisalabad, 2/675.
2. Radd al-Muhtar, Book of Purification, printed by Mustafa al-Babi, Egypt, 1/111.

वह (चूहा) उसकी गंध पर दौड़ता है और जैसे बन पड़े पीता है और अक्सर उसमें गिर भी जाता है। फिर इमाम फरमाते हैं कि हम इस आधार पर तेल को नापाक नहीं कह सकते क्योंकि यह केवल एक अनुमान है। क्या पता कि ऐसा हुआ ही हो या नहीं।

इन दोनों [तरीका और हदीका] में तातारखानीया और अल-मुहीत अल-बुरहानी के हवाले से उद्धृत है कि कुछ लोगों के अनुसार साबुन नापाक है क्योंकि यह अलसी के तेल से बनाया जाता है और अलसी का तेल नापाक है क्योंकि इसके बर्तन आम तौर पर खुले मुंह वाले होते हैं और चूहे इसे पीना चाहते हैं और अक्सर इसमें गिर जाते हैं। लेकिन हम हनफ़ी समूह साबुन के नापाक होने का फतवा नहीं देते क्योंकि हम तेल की नापाकी पर फतवा नहीं देते। ऐसा इसलिए है क्योंकि चूहे का गिरना केवल एक अनुमान है और अनुमान से नापाकी साबित नहीं होती। [संक्षिप्त]

इन दोनों (तरीका और हदीका) में तातारखानीया और अल-मुहीत अल-बुरहानी के हवाले से उद्धृत है कि कुछ लोगों के अनुसार साबुन नापाक है क्योंकि वह कतान (अलसी) के तेल से बनाया जाता है और कतान का तेल नापाक है क्योंकि इसके बर्तन आम तौर पर खुले मुंह वाले होते हैं और चूहे इसको पीना चाहते हैं और अक्सर इसमें गिर पड़ते हैं लेकिन हम गिरोह-ए-अहनाफ साबुन के नापाक होने का फतवा नहीं देते क्योंकि तेल की नजासत पर हमारा फतवा नहीं है इसलिए कि चूहे का गिरना महज़ गुमान है और गुमान से नजासत साबित नहीं होती। [संक्षिप्त] (त)

(5) देखो उन खानों और मिठाइयों की कितनी रद्दी हालत है जो काफिर और हिंदू बनाते हैं। क्या हमें उनकी घोर लापरवाही पर विश्वास नहीं है? क्या हम नहीं कह सकते कि उनकी कोई चीज़ गोबर आदि अशुद्धियों से खाली नहीं है? क्या हमें नहीं पता कि उनके अनुसार गाय-भैंस का गोबर और बछिया का पेशाब न केवल स्वच्छ और शुद्ध है, बल्कि शुद्ध करने वाला और अत्यंत पवित्र और पावन है? जब वे पवित्रता और स्वच्छता का पूरा ख्याल रखना चाहते हैं, तो वे इससे अधिक श्रेष्ठता किसी और चीज़ में नहीं जानते। फिर भी विद्वान इन चीज़ों को खाना जायज़ समझते हैं।

रद्दुल मुहतार में ततारखानीया से उद्धृत है कि जो चीज़ मुशरिक (बहुदेववादी) या अज्ञानी मुसलमान बनाते हैं जैसे घी, रोटी, भोजन और कपड़े, वे पाक (शुद्ध) हैं। [संक्षिप्त]

रद्दुल मुहतार में ततारखानीया से उद्धृत है कि जो चीज़ मुशरिकीन और जाहिल मुसलमान बनाते हैं मसलन घी, रोटी, खाने और कपड़े वगैरह वो पाक हैं। [संक्षिप्त] (त)

बल्कि स्वयं आकाए कायनात, रसूलो के सरदार (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने पूर्ण दया, करुणा, विनम्रता, कोमलता और दिल जीतने के लिए काफ़िरों का निमंत्रण स्वीकार किया। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

इमाम अहमद, अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से कि...

इमाम अहमद ने हज़रत अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की है कि...

---

1. अल-हदीक़तुल नदिया, हमारे हनफ़ी इमामों से जो कुछ वर्णित है उसके दो श्रेणियों में से दूसरी श्रेणी, नूरिय्या रज़विया, फैसलाबाद द्वारा मुद्रित, 2/675।
2. रद्दुल मुहतार, किताबुत तहारत, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र द्वारा मुद्रित, 1/111।

اُس کی بُو پر دوڑتا اور جیسے بن پڑے پیتا اور اکثر اُس میں گِر بھی جاتا ہے پھر ائمہ ارشاد کرتے ہیں ہم اس بنا پر روغن کو ناپاک نہیں کہہ سکتے کہ یہ فقط ظن ہے کیا معلوم کہ خواہی نخواہی ایسا ہوا ہی۔

فیھما عن التاتارخانیۃ عن المحیط البرھانی قد وقع عند بعض الناس ان الصابون نجس لانہ یؤخذ من دھن الکتان ودھن الکتان نجس لانہ اوعیتہ تکون مفتوحۃ الرأس عادۃ والفأرۃ تقصد شربھا وتقع فیھا غالبا ولکنا معشر الحنفیۃ لانفتی بنجاسۃ الصابون لانا لا نفتی بنجاسۃ الدھن لان وقوع الفأرۃ مظنون ولانجاسۃ بالظن اھ ملخصا۔

ان دونوں (طریقہ و حدیقہ) میں بحوالہ تتارخانیہ، محیطِ برہانی سے منقول ہے کہ بعض لوگوں کے نزدیک صابن ناپاک ہے کیونکہ وہ کتان کے تیل سے بنایا جاتا ہے اور کتان کا تیل ناپاک ہے کیونکہ اس کے برتن عام طور پر کھلے منہ ہوتے ہیں اور چوہے اس کو پینا چاہتے ہیں اور اکثر اس میں گر پڑتے ہیں لیکن ہم گروہِ احناف صابن کے ناپاک ہونے کا فتوٰی نہیں دیتے کیونکہ تیل کی نجاست پر ہمارا فتوٰی نہیں ہے اس لئے کہ چوہے کا گرنا محض گمان ہے اور گمان سے نجاست ثابت نہیں ہوتی اھ ملخص (ت)

(۵) نظر کرو کتنی ردی حالت ہے اُن کھانوں اور مٹھائیوں کی جو کفار و ہنود بناتے ہیں کیا ہمیں اُن کی سخت بے احتیاطوں پر یقین نہیں کیا ہم نہیں کہہ سکتے کہ اُن کی کوئی چیز گوبر وغیرہ نجاسات سے خالی نہیں کیا ہمیں نہیں معلوم کہ اُن کے نزدیک گائے بھینس کا گوبر اور بچھیا کا پیشاب نظیف طاہر بلکہ طہور و مطہر بلکہ نہایت مبارک و مقدس ہے کہ جب طہارت و نظافت میں

اہتمام تمام منظور رکھتے ہیں تو ان سے زائد یہ فضیلت کسی شے سے حاصل نہیں جانتے پھر علماء ان چیزوں کا کھانا جائز رکھتے ہیں۔

فی ردالمحتار عن التترخانیۃ طاھر ما یتخذہ اھل الشرك او الجھلۃ من المسلمین کالسمن والخبز والاطعمۃ والثیاب اھ ملخصا۔ ردالمحتار میں تتارخانیہ سے منقول ہے کہ جو چیز مشرکین اور جاہل مسلمان بناتے ہیں مثلاً گھی، روٹی، کھانے اور کپڑے وغیرہ وہ پاک ہیں اھ ملخصا (ت)

بلکہ خود حضور سید المرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے بکمالِ رافت و رحمت و تواضع ولینت و تالیف و استمالت کفار کی دعوت قبول فرمائی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم۔

الامام احمد عن انس رضی اللہ تعالٰی عنہ امام احمد نے حضرت انس رضی اللہ عنہ سے روایت کیا ہے ان

---

1 الحدیقۃ الندیۃ الصنف الثانی من الصنفین فیما ورد عن ائمتنا الحنفیۃ مطبوعہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۲/۶۷۵ 2 ردالمحتار کتاب الطھارۃ مطبوعہ مصطفیٰ البابی مصر ۱/۱۱۱

Fatawa Rizvia, Volume 4

[Arabic]: ¹- یھودیا دعا النبی صلی اللہ تعالی علیہ وآلہ وسلم الی خبز شعیر واھالۃ سخنۃ فاجابہ
[Urdu]: A Jew invited the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) to barley bread and old oil, and he accepted it. (T)

(6) Look, who does not know what the vessels of polytheists are like? They drink wine in those same vessels, taste pork, and eat impure meat of slaughtered animals. Yet, Sharia states that as long as there is no knowledge of impurity, the ruling is of purity.

[Arabic]: فی الحدیقۃ اوعیۃ الیھود والنصاری والمجوس لا تخلو عن نجاسۃ لکن لا یحکم بھا بالاحتمال والشك ² اھ ملخصا۔
[Urdu]: It is stated in Al-Hadiqa that the vessels of Jews, Christians, and Magians are often not free from impurity, but they will not be judged as such based on mere probability and doubt. - Condensed (T).

Even the Sahaba (Companions) themselves would freely use the vessels obtained as spoils of war in front of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), and he did not forbid it.

[Arabic]: احمد فی المسند و ابوداود فی السنن عن جابر رضي اللہ تعالی عنہ قال کنا نغزو مع رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فنصیب من آنیۃ المشرکین واسقیتھم و نستمتع بھا فلا یعیب ذلك علینا ³ ، قال المحقق النابلسی ای ننتفع بالانیۃ والاسقیۃ من غیر غسلھا فلا یعیب علینا فضلا عن نھیہ وھو دلیل الطھارۃ وجواز الاستعمال ⁴ اھ ملخصا-
[Urdu]: Imam Ahmad in his Musnad and Imam Abu Dawood in his Sunan narrated from Jabir (may Allah be pleased with him) who said: "We used to go on expeditions with the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) and we would obtain vessels and water skins of the polytheists and we would use them, and he did not find that objectionable for us." (Footnote 3). The researcher Al-Nabulsi (may Allah have mercy on him) says: "Meaning we would use those vessels and water skins without washing them and you did not find it objectionable for us, let alone forbidding it. This is evidence of purity and permissibility of use." - Condensed. (T) I say: Nay, it is authentically proven that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) performed ablution from the water skin of a polytheist woman.

[Arabic]: اقول: بل قد صح عن النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم التوضؤ من مزادۃ مشرکۃ

1. Musnad Ahmad bin Hanbal, narrated from Anas (may Allah be pleased with him), published by Dar al-Ma'rifah Al-Maktab al-Islami Beirut, 3/20, 77.
2. Al-Hadiqa al-Nadiyya, Explanation of differences among jurists regarding purity and impurity, published by Nooria Rizwia Faisalabad, 2/117.

3. Sunan Abi Dawood, Chapter on the use of vessels of the People of the Book, published by Aftab Alam Press, Lahore, 2/180.
4. Al-Hadiqa al-Nadiyya, Explanation of differences among jurists regarding purity and impurity, etc., published by Nooria Rizwia Faisalabad, 2/127.

फतावा रज़विया, खंड 4

[अरबी]: یھودیا دعا النبی صلی اللہ تعالی علیہ وآلہ وسلم الی خبز شعیر واھالۃ سخنۃ فاجابہ -[1] [उर्दू]: एक यहूदी ने नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को जौ की रोटी और पुराने तेल की दावत दी, जिसे आपने स्वीकार कर लिया। (त)

(6) देखो, कौन नहीं जानता कि मुशरिकों (बहुदेववादियों) के बर्तन कैसे होते हैं? वे उन्हीं बर्तनों में शराब पीते हैं, सुअर का मांस चखते हैं और झटके का नापाक मांस खाते हैं। फिर भी, शरीयत कहती है कि जब तक नजासत (अशुद्धता) का निश्चित ज्ञान न हो, तब तक हुक्म पाकी (पवित्रता) का ही है।

[अरबी]: فی الحدیقۃ اوعیۃ الیھود والنصاری والمجوس لا تخلو عن نجاسۃ لکن لا یحکم بھا بالاحتمال والشك اھ ملخصا۔[2] [उर्दू]: अल-हदीका में है कि यहूदियों, ईसाइयों और मजूसीयों (अग्निपूजकों) के बर्तन अक्सर पाक नहीं होते, लेकिन केवल संभावना और संदेह के आधार पर उन पर अशुद्धता का हुक्म नहीं दिया जाएगा। - सारांश (त)।

यहाँ तक कि स्वयं सहाबा किराम हुज़ूर सैयदुल आलमीन (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सामने गनीमत (युद्ध के दौरान प्राप्त सामान) के बर्तन बेझिझक इस्तेमाल करते थे और हुज़ूर ने मना नहीं फरमाया।

[अरबी]: احمد فی المسند و ابوداود فی السنن عن جابر رضي اللہ تعالی عنہ قال کنا نغزو مع رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فنصیب من آنیۃ المشرکین واسقیتھم و نستمتع بھا فلا یعیب ذلك علینا[3] ، قال المحقق النابلسی ای ننتفع بالانیۃ والاسقیۃ من غیر غسلھا فلا یعیب علینا فضلا عن نھیہ وھو دلیل الطھارۃ وجواز الاستعمال اھ ملخصا[4] -[उर्दू]: इमाम अहमद ने मुसनद में और इमाम अबू दाऊद ने सुनन में हज़रत जाबिर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत नकल की है कि वे फरमाते हैं: "हम रसूल अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ जिहाद में जाते तो हमें मुशरिकों के बर्तन और मश्कीज़े (चमड़े के पानी के थैले) मिलते और हम उनसे फायदा उठाते, और हुज़ूर (अलैहिस्सलाम) इस बात को हमारे लिए बुरा नहीं समझते थे।" (पादलेख 3)। शोधकर्ता नबुलसी (रहमतुल्लाह अलैह) फरमाते हैं: "अर्थात हम उन बर्तनों और मश्कीज़ों को बिना धोए इस्तेमाल करते तो आप हमारे लिए बुरा नहीं समझते थे, रोकना तो दूर की बात है। यह पाकी और इस्तेमाल की वैधता की दलील है।" - सारांश। (त) मैं कहता हूँ: बल्कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम) का एक मुशरिक महिला के तोशादान (पानी के पात्र) से वज़ू करना सही तौर पर साबित है।

[अरबी]: اقول: بل قد صح عن النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم التوضؤ من مزادة مشركة

1. मुसनद अहमद बिन हंबल, अनस (रज़ि.) से, दारुल मारिफ़ा अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत, 3/20, 77.
2. अल-हदीक़तुल नदिय्याह, पाकी और नापाकी के मामले में फ़ुक़हा के मतभेद का बयान, नूरिया रज़विया फ़ैसलाबाद, 2/117.
3. सुनन अबी दाऊद, अहले किताब के बर्तनों के इस्तेमाल का अध्याय, आफ़ताबे आलम प्रेस लाहौर, 2/180.
4. अल-हदीक़तुल नदिय्याह, पाकी और नापाकी के मामले में फ़ुक़हा के मतभेद का बयान आदि, नूरिया रज़विया फ़ैसलाबाद, 2/127.

یھودیا دعا النبی صلی اللہ تعالی علیہ وآلہ وسلم الی خبز شعیر واھالۃ سخنۃ فاجابہ -[1] کہ ایک یہودی نے نبی اکرم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو جو کی روٹی اور پرانے تیل کی دعوت دی آپ نے قبول فرمائی۔ (ت)

(۶) نگاہ کرو مشرکوں کے برتن کون نہیں جانتا جیسے ہوتے ہیں وہ انہی ظروف میں شرابیں پیئں سور چکھیں جھٹکے کے ناپاک گوشت کھائیں، پھر شرع فرماتی ہے جب تک علم نجاست نہ ہو حکم طہارت ہے۔

فی الحدیقۃ اوعیۃ الیھود والنصاری والمجوس لا تخلو عن نجاسۃ لکن لا یحکم بھا بالاحتمال والشك [2] اھ ملخصا۔ حدیقہ میں ہے یہودیوں، عیسائیوں اور مجوسیوں کے برتن اکثر پاک نہیں ہوتے لیکن محض احتمال اور شک کی بنا پر اس کا حکم نہیں دیا جائیگا اھ تلخیص (ت)

یہاں تک کہ خود صحابہ کرام حضور سید العالمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے سامنے غنیمت کے برتن بے تکلف استعمال کرتے اور حضور منع نہ فرماتے۔

احمد فی المسند و ابوداود فی السنن عن جابر رضي اللہ تعالی عنہ قال کنا نغزو مع رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فنصیب من آنیۃ المشرکین واسقیتھم و نستمتع بھا فلا یعیب ذلك علینا [3] ، قال المحقق النابلسی ای ننتفع بالانیۃ والاسقیۃ من غیر غسلھا فلا یعیب علینا فضلا عن نھیہ وھو دلیل الطھارۃ وجواز الاستعمال [4] اھ ملخصا۔ امام احمد نے مسند میں اور امام ابوداؤد نے سنن میں حضرت جابر رضی اللہ عنہ سے روایت نقل کی ہے فرماتے ہیں ہم رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ جہاد میں جاتے تو ہمیں مشرکین کے برتن اور مشکیزے ملتے اور ان سے ہم فائدہ حاصل کرتے اور

حضور علیہ السلام اس بات کو ہمارے لئے معیوب نہ جانتے۔ محقق نابلسی رحمہ اللہ فرماتے ہیں یعنی ہم ان برتنوں اور مشکیزوں کو بغیر دھوئے استعمال کرتے تو آپ ہمارے لئے معیوب نہ سمجھتے، روکنا تو الگ بات ہے۔ یہ طہارت اور جواز استعمال کی دلیل ہے اھ تلخیص۔ (ت) میں کہتا ہوں، بلکہ نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کا مشرکہ عورت کے توشہ دان سے وضو کرنا صحیح طور پر ثابت ہے

اقول: بل قد صح عن النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم التوضؤ من مزادۃ مشرکۃ

1 مسند احمد بن حنبل عن انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ مطبوعہ دار المعرفۃ المکتب الاسلامی بیروت ۳/۲۰ ۷۷ 2 الحدیقۃ الندیۃ بیان اختلاف الفقہاء فی امر الطہارۃ والنجاسۃ مطبوعہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۲/ ۱۱۷ 3 سنن ابی داؤد باب فی استعمال آنیۃ اھل الکتاب مطبوعہ آفتاب عالم پریس، لاہور ۲/۱۸۰ 4 الحدیقۃ الندیۃ بیان اختلاف الفقہاء فی امر الطہارۃ والنجاسۃ الخ مطبوعہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۲/ ۱۲۷

Fatawa-e-Razviya, Volume 4

And it is narrated from the Commander of the Faithful, Umar (may Allah be pleased with him), that he performed ablution (Wudu) from the pitcher of a Christian woman, despite knowing that Christians do not avoid impurities; rather, in their view, nothing is impure except menstrual blood, as mentioned in Imam Ibn al-Hajj's 'Al-Madkhal'. The two Sheikhs (Bukhari and Muslim), in a long Hadith narrated from Imran bin Husayn (may Allah be pleased with him) and all the companions, reported that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and his companions performed ablution from the water-skin of a polytheist woman. Imam Shafi'i, Abdur Razzaq, and others narrated from Sufyan bin Uyaynah, from Zaid bin Aslam, from his father, that Umar (may Allah be pleased with him) performed ablution from the water in a Christian woman's pitcher. (T)

I say: Imam Bukhari (may Allah have mercy on him) mentioned it as a 'Mu'allaq' (suspended) narration, saying that Umar performed ablution with warm water and from the house of a Christian woman. (Ah - in 'Al-Tariqa' and its commentary). And Imam Ghazali said in 'Al-Ihya'...

Note: I say: When it is known that Imam Bukhari only cited it as a 'Mu'dal' (problematic/broken chain) report, then attributing it generally to him (as occurred with Shah Waliullah Dehlawi in 'Izalat al-Khafa') contains an obscurity (error) as is not hidden. (T)

Footnotes: 1. Al-Tariqa al-Muhammadiya, Chapter 3, printed at Islam Steam Press, Lahore, 2/309. 2. Al-Tariqa al-Muhammadiya, Chapter 3, printed at Islam Steam Press, Lahore, 2/334. 3. Sahih al-Bukhari, Chapter on a man performing Wudu with his wife... printed at Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/32.

Page 490 of 761

फ़तावा-ए-रजविया, खंड 4

और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने एक ईसाई औरत के घड़े से वज़ू किया, बावजूद इसके कि उन्हें मालूम था कि ईसाई नापाकी से परहेज़ नहीं करते; बल्कि उनके नज़दीक हैज़ के खून के अलावा कोई चीज़ नापाक नहीं है, जैसा कि इमाम इब्न अल-हाज की 'अल-मदखल' में है। शैखैन (बुखारी और मुस्लिम) ने इमरान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु और सभी सहाबा से एक लंबी हदीस में रिवायत की है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा ने एक मुशरिका औरत के मश्कीज़े से वज़ू किया। इमाम शाफ़ई, अब्दुर रज्जाक और अन्यों ने सुफ़यान बिन उयैना से, उन्होंने ज़ैद बिन असलम से, उन्होंने अपने वालिद से रिवायत की कि उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक ईसाई औरत के घड़े के पानी से वज़ू फ़रमाया। (त)

मैं (लेखक) कहता हूँ: इमाम बुखारी रहमहुल्लाह ने इसे तालीक़न ज़िक्र करते हुए फ़रमाया कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने गर्म पानी से और एक ईसाई औरत के घर से वज़ू किया। (अह - 'अत-तरीका' और उसकी शराह में)। और इमाम गज़ाली ने 'अल-इहया' में कहा...

नोट: मैं कहता हूँ: जब यह मालूम हो गया कि इमाम बुखारी ने इसे केवल 'मुअज़ल' (टूटी हुई सनद वाला) के रूप में पेश किया है, तो इसे मुतलक तौर पर उनकी तरफ़ मंसूब करना (जैसा कि शाह वलीउल्लाह देहलवी से 'इज़ालतुल खफ़ा' में हुआ है) एक 'खफ़ा' (गलती) है जैसा कि पोशीदा नहीं है। (त)

पाद-टिप्पणियाँ: 1. अत-तरीका अल-मुहम्मदिया, अध्याय 3, इस्लाम स्टीम प्रेस, लाहौर, 2/309. 2. अत-तरीका अल-मुहम्मदिया, अध्याय 3, इस्लाम स्टीम प्रेस, लाहौर, 2/334. 3. सहीह अल-बुखारी, अध्याय: मर्द का अपनी बीवी के साथ वज़ू करना... पुरानी कुतुब खाना, कराची, 1/32.

पृष्ठ 490/761

وعن امیر المؤمنین عمر رضی اللہ تعالٰی عنہ من جرۃ نصرانیۃ مع علمہ بان النصارٰی لایتوقون الانجاس بل لانجس عندھم الادم الحیض کما فی مدخل الامام ابن الحاج، الشیخان فی حدیث طویل عن عمران بن حصین رضی اللہ تعالٰی عنہ وعن جمیع الصحابۃ ان النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم واصحابہ توضؤا من مزادۃ امرأۃ مشرکۃ ، الشافعی وعبدالرزاق وغیرہما عن سفیان بن عیینۃ عن زید بن اسلم عن ابیہ ان عمر رضی اللہ تعالٰی عنہ توضأ من ماء فی جرۃ نصرانیۃ - اور حضرت عمر رضی اللہ عنہ نے ایک نصرانی عورت کے گھڑے سے وضو کیا حالانکہ آپ کو معلوم تھا کہ عیسائی نجاست سے اجتناب نہیں کرتے بلکہ ان کے نزدیک خون حیض کے علاوہ کوئی چیز ناپاک نہیں، جیسا کہ امام ابن الحاج کی مدخل میں ہے۔ امام بخاری و مسلم نے ایک طویل روایت میں حضرت عمران بن حصین اور تمام صحابہ کرام سے نقل کیا ہے کہ نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم اور آپ کے صحابہ کرام نے ایک مشرکہ عورت کے توشہ دان سے وضو کیا۔ امام شافعی اور عبدالرزاق وغیرہ نے سفیان بن عیینہ سے انہوں نے زید بن اسلم سے انہوں نے اپنے والد سے روایت کیا کہ حضرت عمر رضی اللہ عنہ نے ایک نصرانی عورت کے گھڑے کے پانی سے وضو فرمایا۔ (ت)

قلت وقد علقہ عہ خ فقال توضأ عمر بالحمیم ومن بیت نصرانیۃ ۳ اھ فی الطریقۃ وشرحھا وقال الامام الغزالی فی الاحیاء میں کہتا ہوں، امام بخاری رحمہ اللہ نے تعلیقاً روایت کرتے ہوئے فرمایا کہ حضرت عمر رضی اللہ عنہ نے گرم پانی سے اور ایک عیسائی عورت کے گھر سے

عہ: اقول: واذ قد علمت ان البخاری انما اورده معضلا فإطلاق العزو الیہ کما وقع عن الشاہ ولی اللہ الدہلوی فی ازالۃ الخفاء فیہ خفاء کمالایخفی ۱۲ منہ (م) اقول: جب یہ معلوم ہوگیا کہ امام بخاری نے

اسے معضلاً ذکر کیا تو مطلقاً تعلیق کی طرف منسوب کرنے (جیسا کہ شاہ ولی اللہ دہلوی سے ازالۃ الخفاء میں واقع ہوا ہے) میں خفاء (غلطی) ہے جیسا کہ مخفی نہیں۔ (ت)

1 الطریقۃ المحمدیۃ الباب الثالث مطبوعہ مطبع اسلام اسٹیم پریس لاہور ۳۰۹/۲ 2 الطریقۃ المحمدیۃ الباب الثالث مطبوعہ مطبع اسلام اسٹیم پریس لاہور ۳۳۴/۲ 3 صحیح البخاری باب وضوء الرجل مع امرأتہ و فضل وضوء المراۃ مطبوعہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۳۲/۱

Fatawa-e-Razvia Volume 4

Arabic Text: The way of the early generations was to immerse all their concern in purifying the heart and being lenient, i.e., not exaggerating, in purifying the exterior, and not being overly concerned with cleaning the body, clothes, and places from impurities. Even Umar (may Allah be pleased with him), despite his high position, performed ablution with water from a Christian woman's jar, knowing that Christians do not avoid impurity and it was their habit to put wine in jars. (Summary from Tariqah Muhammadiyah and its commentary).

Urdu Explanation: It is mentioned in Tariqah Muhammadiyah and its commentary: "Imam Muhammad Ghazali (may Allah have mercy on him) stated in Ihya al-Ulum: The character of earlier people was that the focus of all their thought and concern was the purification of hearts, while they were lenient in purifying the exterior and did not care much for attaining purity of the body, clothes, and places. It is even proven about Hazrat Umar (may Allah be pleased with him) that despite being in a high position, he performed wudu (ablution) from the jar of a Christian woman, although he knew that Christians do not abstain from impurity and their habit is to keep wine in jars." (Summary).

(7) Reflect on how much they are a source of negligence, rather a repository of all kinds of filth, especially the clothes of non-believers, particularly those who drink wine, and especially their trousers, for they never observe Istinja (cleaning after relief) nor abstain from impurities like wine and urine. Yet, the scholars rule that they are pure, and if a Muslim wears them without washing and prays, it is correct and permissible as long as the contamination is not evident.

Arabic Text: In Durr al-Mukhtar: The clothes of the transgressors (Fasiq) and the protected non-Muslims (Dhimmis) are pure. And in al-Hadiqa: The trousers of non-believers from Jews, Christians, and Zoroastrians are likely impure because they do not perform Istinja, but as long as this does not take hold in the heart, prayer in them is valid because the base rule is certainty of purity. (Summary).

Urdu Explanation: In Durr al-Mukhtar, it is stated that the clothes of the transgressors and Dhimmis (protected non-Muslims) are pure. And in Hadiqa, it says that the trousers of Jews, Christians, Zoroastrians, and other non-believers are impure according to common assumption because they do not perform Istinja. However, if this thought does not settle in the heart, then prayer performed in them is correct because the original principle is the certainty of purity. (Summary).

Annotation 1: I say, linguistically and semantically, it is better to replace "absence" (Adam) with "paucity" (Qillat). (T)

Annotation 2: Meaning they showed little care, i.e., they used to abandon deep delving into it. (T)

1. Al-Hadiqa al-Nadiyya, Chapter on Purity and Impurity, Printed by Nooria, Faisalabad, 2/658
2. Durr al-Mukhtar, Chapter on Istinja, Printed by Mujtabai, Delhi, 1/57
3. Al-Hadiqa al-Nadiyya, Explanation of differences among Jurists regarding Purity and Impurity, Printed by Nooria, Faisalabad, 2/611

फ़तावा-ए-रज़विया खंड 4

अरबी पाठ: प्रारंभिक पीढ़ियों का तरीका यह था कि वे अपनी पूरी चिंता दिल को शुद्ध करने में लगाते थे और बाहरी शुद्धि में उदार थे, यानी शरीर, कपड़ों और स्थानों को अशुद्धियों से साफ करने में बहुत अधिक परवाह नहीं करते थे। यहाँ तक कि हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु), अपने उच्च पद के बावजूद, एक ईसाई महिला के घड़े के पानी से वज़ू किया, जबकि वे जानते थे कि ईसाई अशुद्धि से नहीं बचते और उनकी आदत है कि वे घड़ों में शराब रखते हैं। (तरीका-ए-मुहम्मदिया और उसकी शरह से सारांश)।

उर्दू व्याख्या: तरीका-ए-मुहम्मदिया और उसकी शरह में है: "इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली (रहमतुल्लाह अलैहि) ने इह्या अल-उलूम में फ़रमाया: पहले लोगों का चरित्र यह था कि उनकी पूरी सोच और चिंता का केंद्र दिलों की शुद्धि थी, जबकि वे ज़ाहिर (बाहरी) को पाक करने में सुस्ती करते और बदन, कपड़ों और जगहों की पाकीज़ागी हासिल करने की ज़्यादा परवाह नहीं करते थे। यहाँ तक कि हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से साबित है कि आपने बुलंद मन्सब पर फ़ाइज़ होने के बावजूद एक ईसाई औरत के घड़े سے वज़ू किया, हालाँकि आप जानते थे कि ईसाई नजासत (गंदगी) से परहेज़ नहीं करते और उनकी आदत है कि वे घड़ों में शराब रखते हैं।" (सारांश)।

(7) विचार करें कि वे कितनी लापरवाही का स्रोत हैं, बल्कि हर तरह की गंदगी का खज़ाना हैं, विशेष रूप से काफ़िरों के कपड़े, ख़ासकर उनके जो शराब पीते हैं, और विशेष रूप से पतलून (पाजामा), क्योंकि वे कभी इस्तिंजा का ध्यान नहीं रखते और न ही शराब, पेशाब आदि जैसी अशुद्धियों से बचते हैं। फिर भी उलेमा हुक्म देते हैं कि वे पाक (शुद्ध) हैं और यदि कोई मुसलमान उन्हें बिना धोए पहनकर नमाज़ पढ़ ले, तो वह सही और जायज़ है जब तक कि गंदगी स्पष्ट न हो।

अरबी पाठ: दुर्र-ए-मुख्तार में है: फासिक और ज़िम्मी लोगों के कपड़े पाक हैं। और अल-हदीका में है: यहूदियों, ईसाइयों और पारसियों के पतलून के बारे में प्रबल संभावना यही है कि वे अपवित्र हैं क्योंकि वे इस्तिंजा नहीं करते, लेकिन जब तक दिल इस बात को पूरी तरह स्वीकार न कर ले, तब तक उनमें नमाज़ पढ़ना जायज़ है क्योंकि मूल सिद्धांत पवित्रता का निश्चित होना है। (सारांश)।

उर्दू व्याख्या: दुर्र-ए-मुख्तार में है कि फासिक और ज़िम्मी लोगों के कपड़े पाक हैं। और हदीका में है कि यहूदियों, ईसाइयों, मजूसी (पारसी) वगैरह काफ़िरों ؏ पाजामा ग़ालिब गुमान (प्रबल संभावना) के

मुताबिक नापाक है क्योंकि वे इस्तिंजा नहीं करते। लेकिन जब यह बात दिल में न बैठे तो उसके साथ नमाज़ सही है क्योंकि असल चीज़ तहारत (पवित्रता) का यक़ीन है। (सारांश)।

टिप्पणी 1: मैं कहता हूँ कि भाषाई और अर्थ की दृष्टि से "अदम" (अभाव) को "किल्लत" (कमी) से बदल देना बेहतर है। (त)

टिप्पणी 2: यानी वे कम परवाह करते थे, अर्थात पाकीज़ागी में बहुत गहराई में जाने को छोड़ देते थे। (त)

1. अल-हदीका अल-नदिय्या, तहारत और नजासत का अध्याय, नूरिया, फैसलाबाद द्वारा मुद्रित, 2/658
2. दुर्र-ए-मुख्तार, इस्तिंजा का अध्याय, मुजतबाई, दिल्ली द्वारा मुद्रित, 1/57
3. अल-हदीका अल-नदिय्या, तहारत और नजासत के मामले में फकीहों के मतभेदों का विवरण, नूरिया, फैसलाबाद द्वारा मुद्रित, 2/611

سیرۃ الاولین استغراق جمیع لاھم فی تطھیر القلوب والتساھل ای عدم عہ المبالاۃ فی تطھیر الظاھر وعدم الاکتراث عہ بتنظیف البدن والثیاب والاماکن من النجاسات حتی ان عمر مع علو منصبہ توضأ بماء فی جرۃ نصرانیۃ مع علمہ بان النصاری لایتحامون النجاسۃ وعادتھم انھم یضعون الخمر فی الجرار ۱ اھ ملخصاً۔

وضو فرمایا اھ طریقہ محمدیہ اور اس کی شرح میں ہے "امام محمد غزالی رحمۃ اللہ نے احیاء العلوم میں فرمایا : پہلے لوگوں کی سیرت یہ ہے کہ ان کے تمام فکر و غم کا محور دلوں کی تطہیر ہوتی تھی جبکہ ظاہر کو پاک کرنے میں سُستی کرتے اور بدن، کپڑوں اور جگہوں کی پاکیزگی حاصل کرنے کی زیادہ پرواہ نہیں کرتے تھے یہاں تک کہ حضرت عمر رضی اللہ عنہ سے ثابت ہے کہ آپ نے باوجود بلند منصب پر فائز ہونے کے ایک عیسائی عورت کے گھڑے سے وضو کیا حالانکہ آپ جانتے تھے کہ عیسائی نجاست سے پرہیز نہیں کرتے اور ان کی عادت ہے کہ وہ گھڑوں میں شراب رکھتے ہیں اھ تلخیص (ت)۔

(۷) تامل کرو کس قدر معدن بے احتیاطی بلکہ مخزن ہر گونہ گندگی ہیں کفار خصوصاً ان کے شراب نوش کے کپڑے علی الخصوص پاجامے کہ وہ ہرگز استنجاء کا لحاظ رکھیں نہ شراب پیشاب وغیرہ ہما نجاسات سے احتراز کریں پھر علماء حکم دیتے ہیں کہ وہ پاک ہیں اور مسلمان بے دھوئے پہن کر نماز پڑھ لے تو صحیح و جائز جب تک تلوث واضح نہ ہو۔

فی الدرالمختار ثیاب الفسقة واھل الذمة طاھرة ۲ وفی الحدیقة سراویل الکفرة من الیھود والنصاری والمجوس یغلب علی الظن نجاستہ لانھم لایستنجون من غیر ان یأخذ القلب بذلك فتصح الصلاة فیہ لان الاصل الیقین بالطھارة ۳ اھ ملخصاً۔

درمختار میں ہے فاسق اور ذمی لوگوں کے کپڑے پاک ہیں اھ اور حدیقہ میں ہے یہودیوں، عیسائیوں، مجوسیوں وغیرہ کفار کی شلوار غالب گمان کے مطابق ناپاک ہے کیونکہ وہ استنجاء نہیں کرتے لیکن جب یہ بات دل میں نہ بیٹھے تو اس کے ساتھ نماز صحیح ہے کیونکہ اصل چیز طہارت کا یقین ہے اھ تلخیص (ت)۔

عہ ۱: اقول الاولی لفظاً ومعنویً تبدیل العدم بالقلة ۱۲ منہ (م) میں کہتا ہوں لفظی اور معنوی اعتبار سے بہتری "عدم" کو "قلت" سے تبدیل کردینے میں ہے ۱۲ منہ (ت)

عہ ۲: ای قلتہ ای ترک التعمق فیہ ۱۲ منہ (م) یعنی کم پرواہ کرتے یعنی پاکیزگی میں کوشش کو ترک کرتے تھے۔ (ت)

1 الحدیقة الندیة الدرقة امر الطہارة والنجاسة مطبوعہ نوریہ فیصل آباد ۲ / ۶۵۸ 2 درمختار فصل الاستنجاء مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱ / ۵۷ 3 الحدیقة الندیة بیان اختلاف الفقہاء فی امر الطہارة والنجاسة مطبوعہ نوریہ فیصل آباد ۲ / ۶۱۱

Rather, since the era of the Sahaba (may Allah be pleased with them all) until today, it has been inherited among Muslims that they perform prayers in clothes obtained as spoils of war without giving way to doubts and misgivings.

| In Al-Hilyah: The inheritance among Muslims regarding praying in clothes obtained as spoils from disbelievers before washing is ongoing (Al-Hilyah). | It is in Al-Hilyah: It has been passed down through generations among Muslims to pray in the clothes obtained as spoils of war from disbelievers before washing them. (Hilyat al-Mahalli) |

These are seven examples, and if one were to conduct a thorough investigation, a massive book would have to be written. The reason is what we mentioned above: purity and its cause are the original state and certain, and certainty can only be displaced by certainty. Therefore, the habit of the religious scholars is that they consider a minor probability sufficient for a ruling of purity, and the opposite is never observed—that a ruling of impurity is applied based on mere thoughts. Look, if cows, goats, and similar animals fall into a well and come out alive, the ruling of purity is absolute. Even though who can say that their thighs are free from splashes of urine? But scholars say it is possible they fell into a large body of water before this and their bodies were washed clean.

| In the Hashiyah of Ibn Abidin Afandi (may Allah Almighty have mercy on him): It is stated in Al-Bahr [al-Ra'iq]: "We have restricted this with knowledge (certainty) because they [scholars] said regarding cows and similar animals that if they come out alive, nothing is required to be drained, even though it is apparent that their thighs are covered in urine. However, there is a possibility of their purity because they fell into abundant water after which the impurity was washed away and they became pure. Moreover, purity is the original state." Similar is stated in Al-Fath [al-Qadir]. The weak servant [the author], may Allah Almighty forgive him, says: "I have written a note here on the margin of Radd al-Muhtar, the text of which is..." | It is in the Hashiyah of Ibn Abidin Afandi: "In Al-Bahr al-Ra'iq, it is stated: We have restricted it with knowledge (certainty) because they said concerning cows and their like which emerge alive (from a well) that it is not obligatory to extract anything, even though it is apparent that their thighs are smeared with urine. However, there is a possibility that after falling into much water, the impurity was washed away and it became pure. Furthermore, purity is the default state." And similarly it is in Fath al-Qadir. The weak

servant, may Allah Almighty grant him forgiveness, says that I have written something on the margin of Radd al-Muhtar at this place, the text of which is (T). |

1. Hilyat al-Mahalli
2. Radd al-Muhtar, Chapter on the Well, published by Mujtabai, Delhi, 1/124.

बल्कि सहाबा किराम (अल्लाह उन सभी से प्रसन्न हो) के युग से लेकर आज तक मुसलमानों में यह विरासत चली आ रही है कि वे गनीमत के कपड़ों में नमाज़ पढ़ते हैं और संदेहों और वसवसों को स्थान नहीं देते।

| फिल-हिलिया: फिल-हिलियातित्-तवारुसु जारिम-फिमा बैनुल मुस्लिमीन फ़िस-सलाति बिज्-ज़ियाबिल मग़्नुमति मिनल-कुफ्फ़ाति कबलल-ग़ुस्लि (अह) | हिलिया में है कि काफ़िरों से माल-ए-गनीमत में प्राप्त कपड़ों को धोने से पहले उनमें नमाज़ पढ़ना मुसलमानों में पीढ़ी दर पीढ़ी चला आ रहा है। |

ये सात उदाहरण हैं और यदि विस्तृत जांच की जाए तो एक विशाल पुस्तक लिखनी होगी। कारण वही है जिसका हमने ऊपर उल्लेख किया है कि पवित्रता और उसका कारण मूल स्थिति और निश्चित है, और निश्चितता को केवल निश्चितता से ही बदला जा सकता है। इसीलिए, धार्मिक विद्वानों की आदत यह है कि वे पवित्रता के निर्णय के लिए मामूली संभावना को पर्याप्त मानते हैं, और इसका विपरीत कभी नहीं देखा गया कि केवल विचारों के आधार पर अशुद्धता का निर्णय दिया जाए। देखो, यदि गाय, बकरी और उनके समान जानवर कुएं में गिरकर जीवित निकल आएं तो पवित्रता का निर्णय निश्चित है। हालांकि कौन कह सकता है कि उनकी जांघें पेशाब के छींटों से पाक होती हैं? लेकिन विद्वान कहते हैं कि यह संभव है कि वे इससे पहले किसी बड़े जल निकाय में गिरे हों और उनका शरीर धुलकर साफ हो गया हो।

| इब्न आबिदीन आफ़ंदी (अल्लाह उन पर दया करे) के हाशिये (टीका) में है: अल-बहर [अल-राइक] में कहा गया है: "हमने इसे ज्ञान (निश्चितता) के साथ प्रतिबंधित किया है क्योंकि उन्होंने गाय और उसके समान जानवरों के बारे में कहा है कि यदि वे जीवित निकलें, तो कुछ भी निकालना अनिवार्य नहीं है, हालांकि यह स्पष्ट है कि उनकी जांघों पर पेशाब लगा होता है। लेकिन इस बात की संभावना है कि वे प्रचुर जल में गिरने के बाद अशुद्धता धुल गई हो और वे पाक हो गए हों। इसके अतिरिक्त, पवित्रता मूल स्थिति है।" इसी प्रकार अल-फ़तह [अल-क़दीर] में भी है। दुर्बल सेवक [लेखक], अल्लाह सर्वशक्तिमान उसे क्षमा करे, कहता है: "मैंने इस स्थान पर रद अल-मुहतार के हाशिये पर कुछ लिखा है, जिसका पाठ इस प्रकार है..." | इब्न आबिदीन आफ़ंदी के हाशिये में है: "अल-बहरुल राइक में फ़रमाया: हमने इसे इल्म (यकीन) के साथ मुक़य्यद किया है क्योंकि उन्होंने गाय और उसके

मिसल जो (कुएं से) ज़िंदा निकलें, के बारे में कहा है कि किसी चीज़ का निकालना वाजिब नहीं अगरचे ज़ाहिर यह है कि उनकी रानों पर पेशाब लगा होता है लेकिन इस बात का एहतिमाल है कि इसके ज़्यादा पानी में दाख़िल होने के बाद नजासत धुल गई हो और वो पाक हो गई हो। अलावा अज़ीं, तहारत असल है (अह)। और इसी तरह फ़तहुल क़दीर में है (अह)। बंदा ज़ईफ़, अल्लाह तआला उसकी बख़्शिश फ़रमाए, कहता है कि मैंने इस मक़ाम पर रद अल-मुहतार के हाशिये पर कुछ तहरीर किया है जिसकी इबारत यह है (त)। |

1. हिलियतुल महल्ली
2. रद अल-मुहतार, फ़सल फ़िल बीर, मतबुआ मुजतबाई दिल्ली, 1/124.

पृष्ठ 492 / 761

بلکہ عہد صحابہ کرام رضوان اللہ تعالٰی اجمعین سے آج تک مسلمین میں متوارث کہ لباس غنیمت میں نماز پڑھتے ہیں اور ظنون وساوس کو دخل نہیں دیتے۔

| فی الحلیۃ التوارث جارفیما بین المسلمین فی الصلوٰۃ بالثیاب المغنومۃ من الکفرۃ قبل الغسل 1 اھ | حلیہ میں ہے کہ کفار سے مال غنیمت میں حاصل ہونے والے کپڑوں کو دھونے سے پہلے ان میں نماز پڑھنا مسلمانوں میں نسل در نسل سے چلا آرہا ہے اھ (ت) |

یہ سات نظیریں ہیں اور اگر استقصا ہو تو کتاب ضخیم لکھنا ہو تو وجہ کیا ہے وہی جو ہم اوپر ذکر کر آئے کہ طہارت وعلت اصل و متیقن اور ازلہ یقین کو یقین ہی متعین۔ وللہذ اعادت علماے دین یوں ہے کہ حکم بطہارت کے لئے ادنٰی احتمال کافی سمجھتے ہیں اور اس کا عکس ہر گز معہود نہیں کہ محض خیالات پر حکم نجاست لگا دیں۔ دیکھو گائے بکری اور ان کی امثال اگر کنویں میں گر کر زندہ نکل آئیں قطعاً حکم طہارت ہے حالانکہ کون کہہ سکتا ہے کہ اُن کی رانیں پیشاب کی چھینٹوں سے پاک ہوتی ہیں مگر علما فرماتے ہیں محتمل کہ اس سے پہلے کسی آب کثیر میں اُتری ہوں اور اُن کا جسم دھل کر صاف ہو گیا ہو۔

| فی حاشیۃ ابن عابدین افندی رحمہ اللہ تعالٰی قال فی البحر وقیدنا بالعلم لانھم قالوا فی البقر ونحوہ یخرج حیا لا یجب نزح شیئ وان کان الظاھر اشتمال بولھا علی افخاذھا لکن یحتمل طھارتھا بان سقطت عقب دخولھا ماء کثیرا مع ان الاصل الطھارۃ اھ ومثلہ فی الفتح 2 اھ یقول العبد الضعیف غفر اللہ تعالٰی لہ علقت ھھنا علی ھامش رد المحتار ما نصہ۔ | حاشیہ ابن عابدین آفندی میں ہے : "البحر الرائق میں فرمایا ہم نے اسے علم (یقین) کے ساتھ مقید کیا ہے کیونکہ انہوں نے گائے اور اس کی

مثل جو (کنویں سے) زندہ نکلیں، کے بارے میں کہا ہے کہ کسی چیز کا نکالنا واجب نہیں اگرچہ ظاہر یہ ہے کہ ان کی رانوں پر پیشاب لگا ہوتا ہے لیکن اس بات کا احتمال ہے کہ اس کے زیادہ پانی میں داخل ہونے کے بعد نجاست دھل گئی ہو اور وہ پاک ہو گئی ہو علاوہ ازیں طہارت اصل ہے اھ اور اسی طرح فتح القدیر میں ہے اھ بندہ ضعیف، اللہ تعالٰی اس کی بخشش فرمائے، کہتا ہے کہ میں نے اس مقام پر رد المحتار کے حاشیہ پر کچھ تحریر کیا ہے جس کی عبارت یہ ہے (ت) |

1 حلیۃ المحلی 2 ردالمحتار فصل فی البئر مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۱۲۴

I say: Were it not for the awe of the absolute scholar and researcher, who is close to the rank of Ijtihad, the author of 'Al-Fath' (may Allah Almighty be pleased with him), I would have said that this possibility only applies to all or some of the free-grazing animals. As for the stall-fed animals, their states are generally not hidden from their owners, and the ruling is general, so another explanation is necessary. It appears to me—and Allah Almighty knows best—that this possibility is an apparent one that leads to a preponderance of opinion (Ghalabah al-Zann) without reaching the level of certainty. This is because urine does not necessarily fall on the thighs, and proximity does not always dictate contamination. Sometimes they (animals) spread their legs and lower themselves during voiding, and thus certain knowledge of impurity is not achieved. The end of the researcher's discourse points to this, where he says: 'It was said that all the water should be bailed out for a sheep, whereas the legal principles reject this as long as its impurity is not known with certainty.' Yes, a manifestation that leads to a preponderance of opinion dictates the desirability of avoidance (Tanzuh), and there is no doubt about this. They have recommended bailing out twenty buckets in this matter, as stated in 'Al-Khaniyah.' So understand, and Allah Almighty knows best. This is what I noted on the margin.

Note: Then the Lord, Glorified and Exalted, opened another way—healing, sufficient, clear, and bright—as we have presented in the chapter on wells. All praise is for Allah, the Subtle, the Aware. So refer to it, for it is a significant matter. (End of quote from him, may he be forgiven).

1. Fath al-Qadir, Chapter on Wells, printed by Nuriya Razawiyya Sukkur, 1/92.
2. Fatawa Qadhi Khan, Section on Wells, printed by Naval Kishore Lucknow, 1/5.

मैं कहता हूँ: यदि निरपेक्ष विद्वान और शोधकर्ता, जो इज्तिहाद के पद के करीब हैं, 'अल-फतह' के लेखक (अल्लाह उन पर प्रसन्न हों) का भय न होता, तो मैं कहता कि यह संभावना केवल चराई करने वाले सभी या कुछ जानवरों के बारे में है। जहाँ तक घर में चारा खाने वाले जानवरों का संबंध है, उनकी स्थिति आमतौर पर मालिकों से छिपी नहीं होती है, और नियम सामान्य है, इसलिए किसी अन्य स्पष्टीकरण की आवश्यकता है। मुझे यह प्रतीत होता है—और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है—कि यह संभावना एक स्पष्ट बात है जो राय की प्रबलता (ग़ालबा-ए-ज़न्न) की ओर ले जाती है, बिना निश्चितता के स्तर तक पहुँचे। ऐसा इसलिए है क्योंकि पेशाब जांघों पर नहीं गिरता है, और निकटता हमेशा दूषित होने का फैसला नहीं करती है। कभी-कभी वे (जानवर) टांगें फैलाकर और झुककर पेशाब करते हैं और इस तरह वे इसे बहा देते हैं, इसलिए अशुद्धता का निश्चित ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ। शोधकर्ता के शब्दों का अंतिम भाग भी इसी ओर इशारा करता है जब उन्होंने कहा: 'कहा गया है कि भेड़ (के गिरने) से पूरा पानी निकाल दिया जाए, जबकि नियम इसकी मनाही करते हैं जब तक कि उसके नापाक होने का यकीन न हो।' हाँ, ऐसा प्रकटीकरण जो राय की प्रबलता तक पहुँचाए, बचने (तन्ज़ुह) की वांछनीयता का आदेश देता है, और इसमें कोई संदेह नहीं है। उन्होंने इस मामले में बीस बाल्टी पानी निकालने की सिफारिश की है, जैसा कि 'अल-खनिया' में स्पष्ट किया गया है। तो समझें, और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। यह वह है जो मैंने हाशिये पर नोट किया है।

टिप्पणी: फिर प्रभु, पवित्र और सर्वोच्च, ने एक और तरीका प्रकट किया जो उपचारात्मक, पर्याप्त, स्पष्ट और उज्ज्वल है, जैसा कि हमने कुओं के अध्याय में पहले उल्लेख किया है, और सभी प्रशंसाएँ अल्लाह के लिए हैं जो सूक्ष्म और जागरूक है। अतः इसकी ओर संदर्भ लें क्योंकि यह एक महत्वपूर्ण मामला है। (उनसे, अल्लाह उन्हें क्षमा करे)।

1. फतह अल-कदीर, कुओं पर अध्याय, नूरिया रज़विया सुक्कुर प्रेस, 1/92।
2. फतावा काज़ी खान, कुओं पर मुल्ताकी खंड, नवल किशोर लखनऊ प्रेस, 1/5।

فتاوی رضویہ - جلد چہارم اقول: اگر محقق علی الاطلاق اور منصب اجتہاد کا قرب رکھنے والے صاحب فتح القدیر کی ہیبت کا خیال نہ ہوتا تو میں کہتا کہ یہ احتمال سال بھر چرنے والے تمام یا بعض جانوروں کے بارے میں ہے جہاں تک گھر میں چارہ کھانے والے جانوروں کا تعلق ہے تو عام طور پر مالک سے ان کا حال پوشیدہ نہیں ہوتا اور حکم عام ہے لہذا کسی دوسری توجیہ کی ضرورت ہے۔ مجھ پر یہ بات ظاہر ہوئی اور اللہ بہتر جانتا ہے کہ پیشاب کا رانوں سے لگا ہونا ظاہراً غلبہ ظن ہے درجہ یقین کو نہیں پہنچتا کیوں کہ پیشاب رانوں پر نہیں اترتا اور قرب ہمیشہ ملوث ہونے کا فیصلہ نہیں کرتا اور بعض جانور ٹانگیں پھیلا کر اور جھک کر پیشاب کرتے ہیں اور اس طرح وہ اسے بہا دیتے ہیں لہذا نجاست کا یقین حاصل نہ ہوا۔ کلام محقق کا آخری حصہ بھی اسی کی طرف اشارہ کرتا ہے جب انہوں نے فرمایا کہا گیا ہے کہ بکری (کے گرنے) سے پورا پانی نکالا جائے حالانکہ قواعد اس کی نفی کرتے ہیں جب تک اس کے ناپاک ہونے کا یقین نہ ہوا۔ ہاں ایسا ظہور جو غلبہ ظن تک پہنچائے باستحباب التنزہ وھذا لا شک فیہ قد استحبوا فی ھذہ المسئلۃ نزح عشرین دلواً کما نص علیہ فی الخانیۃ فافہم واللہ تعالٰی اعلم اھ ما علقتہ علی الھامش۔

عہ: پھر مولٰی سبحانہ نے ایک دوسری وجہ ظاہر فرمائی جو شافی، کافی، واضح اور روشن ہے جیسا کہ ہم نے اسے فصل فی البئر میں پہلے ذکر کیا ہے، اور سب خوبیاں اللہ لطیف و خبیر کے لئے ہیں پس اس کی طرف رجوع کرو کہ یہ ایک بڑا معاملہ ہے۔ (ت) منہ غفرلہ (م)

1 فتح القدیر فصل فی البئر مطبوعہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۹۲ 2 فتاوی قاضی خان فصل ملتقع فی البئر مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ۱/ ۵ Page 493 of 761

Fatawa Ridawiyya, Volume 4

(Top Section): ...declares it recommended to purify. And there is no doubt that the jurists have stated in this matter that drawing twenty (20) buckets is recommended, as explained in 'Khania'. So understand, and Allah Almighty knows best. Ah, this is what I have commented on in the margin, but there should be no objection to what we want to prove here, which is that it is known among scholars that 'probability' (ihtimal) is presented to manifest the ruling of purity (taharah), not its opposite. And this (purity) is still attained, as is not hidden from any person of understanding. (T)

Seventh Introduction: Extreme lack of precaution, due to which in most cases the prevalence, occurrence, and widespread nature of impurity and contamination occurs, is certainly a cause for the preponderance of conjecture (Ghalib al-Zann). Ghalib al-Zann is religiously valid and serves as the basis for rulings in jurisprudence (Fiqh). However, there are two forms of it: One is that the heart has such trust and confidence in the preferred side that it completely disregards the other side and considers it absolutely unworthy of attention, as if its existence or non-existence were the same. Such a predominant conjecture in jurisprudence is treated as equivalent to certainty (Yaqeen), as it will perform the function of certainty everywhere and will fully resist and nullify any prior certainty against it. Generally, in the terminology of scholars, 'Ghalib al-Zann' and 'Akbar ar-Ra'y' (the greater opinion) are applied to this.

(Bottom Section): In 'Ghamz al-Uyun wa al-Basair', the commentary of 'al-Ashbah wa al-Nazair', it is stated: "Doubt (Shakk), linguistically, refers to absolute hesitation. In the terminology of the Principles of Jurisprudence (Usul al-Fiqh), it is the equality of two sides of a thing and standing between two things such that the heart does not incline towards either of them. If one of them gains preference but the other is not discarded, then it is conjecture (Zann). If the other side is discarded, then it is predominant conjecture (Ghalib al-Zann), which is at the level of certainty. If no preference is obtained for either side, it is mere illusion/baseless thought (Wahm)." (T) According to some later scholars of principles, there is another phrasing which is shorter than what we mentioned, with an addition.

फ़तवा रिज़विया, जिल्द चार

(ऊपरी भाग): ...शुद्ध करना मुस्तहब (पसंदीदा) करार देता है। और इसमें कोई शक नहीं कि फ़ुक़हा-ए-किराम (धर्मशास्त्री) ने इस मसले में बीस (२०) डोल निकालना मुस्तहब कहा है, जैसा कि 'खानिया' में इसे बयान किया गया। तो समझ लो, और अल्लाह तआला खूब जानता है। अ.ह. यह वह है जो मैंने हाशिये पर टिप्पणी की है, लेकिन इसके साथ इस बात पर आपत्ति नहीं करनी चाहिए जो हम यहाँ साबित करना चाहते हैं, वह यह कि विद्वानों के बीच यह ज्ञात है कि 'संभावना' (इहतिमाल) शुद्धि के हुक्म को प्रकट करने के लिए लाई जाती है न कि इसके विपरीत। और यह (शुद्धि) अभी तक प्राप्त है, जैसा कि किसी भी बुद्धिमान व्यक्ति से छिपा नहीं है। (त)

सातवाँ प्रस्तावना: अत्यधिक असावधानी, जिसके कारण अधिकांश परिस्थितियों में अशुद्धि और प्रदूषण की प्रबलता, घटना और व्यापक प्रसार होता है, निश्चित रूप से 'ग़ालिब-ए-ज़न्न' (प्रबल धारणा) का कारण बनता है। और ग़ालिब-ए-ज़न्न शरीअत में मान्य है और फ़िक़्ह (धर्मशास्त्र) में आदेशों का आधार है। हालाँकि, इसके दो रूप हैं: पहला यह कि प्रबल पक्ष पर हृदय को इस स्तर का विश्वास और भरोसा हो कि वह दूसरे पक्ष को पूरी तरह से नज़रअंदाज़ कर दे और उसे पूरी तरह से उपेक्षा के योग्य समझे, मानो उसका होना या न होना एक समान हो। ऐसी प्रबल धारणा फ़िक़्ह में निश्चितता (यक़ीन) के साथ जुड़ी हुई है, क्योंकि यह हर जगह निश्चितता का कार्य करेगी और अपने विपरीत पिछली निश्चितता का पूरी तरह से विरोध करेगी और उसे रद्द कर देगी। सामान्यतः विद्वानों की शब्दावली में 'ग़ालिब-ए-ज़न्न' और 'अकबर-ए-राय' इसी पर लागू होते हैं।

(निचला भाग): 'अल-अशबाह व अन-नज़ाइर' की व्याख्या 'ग़मज़ुल उयून वल बसाइर' में है: "शक, भाषाई तौर पर पूर्ण हिचकिचाहट को कहते हैं। और उसूल-ए-फ़िक़्ह की शब्दावली में, किसी चीज़ के दो पक्षों का बराबर होना और दो चीज़ों के बीच इस तरह ठहर जाना कि हृदय उनमें से किसी एक की ओर भी न झुके। यदि उनमें से एक को वरीयता प्राप्त हो जाए लेकिन दूसरे को छोड़ा न जाए, तो वह 'ज़न्न' (धारणा) है। यदि दूसरे को छोड़ दिया जाए, तो वह 'ग़ालिब-ए-ज़न्न' (प्रबल धारणा) है जो निश्चितता के स्तर पर है। यदि किसी भी पक्ष को वरीयता न मिले, तो वह 'वहम' है।" (त) कुछ बाद के उसूल विद्वानों के अनुसार एक और इबारत है जो हमारी उल्लेखित इबारत से अधिक संक्षिप्त है।

पृष्ठ ७६१ में से ४९४

جلد چہارم فتاوی رضویہ

[عربی حصہ]: لکن لا یعکر به علی ما أردنا اثباته ههنا من ان المعهود من العلماء ابداء الاحتمال للحکم بالطهارة دون العکس فان هذا حاصل بعد کما لیس بخاف علی ذي فهم- [اردو حصہ]: پاک کرنا مستحب قرار دیتا ہے۔ اور اس میں کوئی شک نہیں فقہاء کرام نے اس مسئلے میں بیس ۲۰ ڈول نکالنا مستحب کہا ہے جیسا کہ خانیہ میں اسے بیان کیا۔ پس سمجھ لو، اور اللہ تعالیٰ خوب جانتا ہے اھ یہ وہ ہے جو میں نے حاشیے پر تعلیق کی ہے لیکن اس کے ساتھ اس بات پر اعتراض نہیں کرنا چاہئے جو ہم یہاں ثابت کرنا چاہتے ہیں وہ یہ کہ علماء سے معروف ہے کہ احتمال ، حکم طہارت کو ظاہر کرنے کیلئے لایا جاتا ہے کہ نہ کہ اس کا عکس۔ اور یہ (طہارت) ابھی تک حاصل ہے جیسا کہ کسی بھی ذی فہم پر مخفی نہیں۔ (ت)

مقدمہ سابعہ: شدّتِ بے احتیاطی جس کے باعث اکثر احوال میں نجاست وآلودگی کا غلبہ و وقوع و کثرتِ شیوع ہو بیشک باعث غلبہ ظن اور ظن غالب شرعاً معتبر اور فقہ میں بنائے احکام، مگر اس کی دو صورتیں ہیں: ایک تو یہ کہ جانبِ راجح پر قلب کو اس درجہ وثوق و اعتماد ہو کہ دوسری طرف کو بالکل نظر سے ساقط کر دے اور محض ناقابل التفات سمجھے گویا اُس کا عدم وجود یکساں ہو ایسا ظن غالب فقہ میں ملحق بیقین کہ ہر جگہ کارِ یقین دے گا اور اپنے خلافِ یقین سابق کا پُورا مزاحم و رافع ہوگا اور غالباً اصطلاح علما میں غالب ظن واکبر راے اسی پر اطلاق کرتے ہیں۔

[عربی حصہ]: فی غمز العیون و البصائر شرح الاشباه والنظائر الشك لغة مطلق التردد وفي اصطلاح الاصول استواء طرفي الشیئ وهو الوقوف بین الشیئین بحیث لایمیل القلب الی احدهما فان ترجح احدهما ولم یطرح الآخر فهو ظن فان طرحه فهو غالب الظن وهو بمنزلة الیقین وان لم یترجح فهو

وھم- ولبعض متأخری اصولیین عبارۃ اخری اوجز مما ذکرناہ مع زیادۃ علی [اردو حصہ]: الاشباہ والنظائر کی شرح غمز العیون والبصائر میں ہے "شک، لغت میں مطلق تردد کو کہتے ہیں اور اصول فقہ کی اصطلاح میں کسی چیز کی دونوں طرفوں کا برابر ہونا اور دو چیزوں کے درمیان یوں ٹھہر جانا کہ دل، ان میں سے ایک کی طرف بھی مائل نہ ہو اگر ان میں سے ایک کو ترجیح حاصل ہو جائے اور دوسری کو چھوڑا نہ جائے تو وہ ظن ہے اگر دوسری کو چھوڑ دیا جائے تو یہ ظن غالب ہے جو یقین کے درجہ میں ہے اور اگر کسی جانب ترجیح نہ ملے تو وہم ہے (ت) بعض متاخرین اصولیوں کے نزدیک ایک دوسری عبارت ہے جو ہماری مذکورہ عبارت سے زیادہ مختصر ہے

[Arabic Section]: That is, certainty (Yaqin) is the conviction of the heart based on definitive evidence, while belief (I'tiqad) is the conviction of the heart without basing it on definitive evidence, such as the belief of a layman. Assumption (Zann) is the consideration of two possibilities where one is stronger than the other. Illusion (Wahm) is the consideration of two possibilities where one is weaker than the other. Doubt (Shakk) is the consideration of two possibilities where neither has an advantage over the other. Ended - summarizing the gist.

I say: And with the help of Allah, our purpose from this text is only what the noble master (may Allah have mercy on him) mentioned regarding the distinction between 'Assumption' (Zann) and 'Predominant Assumption' (Ghalib al-Zann). As for the rest of the text, it follows the established practice of the noble scholars of not delving deeply into the words when the meaning is clear. There is no harm if I mention it for the sake of completeness of benefit, even if it is foreign to this place. Regarding his statement (may Allah have mercy on him), "the equality of the two sides of a thing," I say this is an explanation by a broader term, as it includes both the intellectual and the sensory, like the equality of the two sides of a square basin, for example. Even if "in the view of the intellect" was added, it would not have helped because just as the two sides of a square are equal in reality, they are also equal in the mind. Rather, if it were said, 'the equality...

[Urdu Section]: But there is also something added to this, which is that certainty refers to the firmness of the heart when there is also the certificate of a definitive proof in it. Belief is the firmness of the heart, but it is not attributed to any definitive proof, like the belief of a common man. Assumption is to declare two things as permissible in such a way that one of them is stronger than the other. Illusion is to declare two things as permissible (in this way) that one of them is weaker than the other. And doubt is to declare two things as permissible in such a way that neither of them has any superiority over the other. Summarized end.

I say with the success granted by Allah Almighty, whatever Syed Fazil (may Allah have mercy on him) has mentioned, our purpose from his wording is the distinction between assumption (zann) and predominant assumption (zann-e-ghalib). As far as the rest of the speech is concerned, it continues on what is well-known among the noble scholars that after the purpose becomes clear, the words are not deliberated upon. And if I mention it to gain satiety in benefit, there is no harm even if this

discussion is foreign in this place. Regarding his statement "the equality of both sides of a thing," I say that this is a definition with the more general term because it includes the rational and the sensory, like the equality of both sides of a square tank. If the restriction of "according to the intellect" were added, it would still not be beneficial because just as both sides of a square are equal in the external world, they are also equal in the mind, and if "equality...

Footnote 1: Ghamz 'Uyun al-Basa'ir Sharh al-Ashbah wa al-Naza'ir, First Art from the Second Rule, published by Idara al-Qur'an wal-'Ulum al-Islamiyyah, Karachi, 1/84.

[अरबी अनुभाग]: यानी, यकीन (निश्चितता) दिल की वो दृढ़ता है जो निर्णायक साक्ष्य (दलील-ए-क़तई) पर आधारित हो, जबकि विश्वास (एतिकाद) दिल की वो दृढ़ता है जो किसी निर्णायक साक्ष्य पर आधारित न हो, जैसे कि एक आम आदमी का विश्वास। अनुमान (ज़न) दो बातों को इस तरह संभव मानना है कि उनमें से एक दूसरे की तुलना में अधिक प्रबल हो। भ्रम (वहम) दो बातों को इस तरह संभव मानना है कि उनमें से एक दूसरे की तुलना में कमजोर हो। और संदेह (शक़) दो बातों को इस तरह संभव मानना है कि उनमें से किसी एक को दूसरे पर कोई प्राथमिकता प्राप्त न हो। समाप्त - संक्षेप में।

मैं अल्लाह तआला की तौफीक से कहता हूँ कि इस इबारत से हमारा उद्देश्य वही है जो सैय्यद फाज़िल (रहमतुल्लाहि अलैहि) ने 'अनुमान' (ज़न) और 'प्रबल अनुमान' (ज़न-ए-ग़ालिब) के बीच अंतर के संबंध में उल्लेख किया है। जहाँ तक शेष कथन का संबंध है, तो वह उसी पद्धति पर है जो विद्वानों के बीच प्रसिद्ध है कि उद्देश्य स्पष्ट हो जाने के बाद शब्दों पर अधिक गहराई से विचार नहीं किया जाता। और यदि मैं लाभ की पूर्णता के लिए इसका उल्लेख करूँ तो कोई हर्ज नहीं, भले ही यह चर्चा इस स्थान के लिए अप्रासंगिक हो। उनके कथन "किसी चीज़ के दोनों पक्षों की समानता" के बारे में मैं कहता हूँ कि यह अधिक व्यापक (आम) शब्द के साथ व्याख्या है क्योंकि इसमें बौद्धिक और प्रत्यक्ष दोनों शामिल हैं, जैसे कि एक वर्गाकार हौज (तालाब) के दोनों किनारों की समानता। उदाहरण के लिए, यदि "बुद्धि की दृष्टि में" की शर्त जोड़ी जाती, तब भी कोई लाभ नहीं होता क्योंकि जिस प्रकार एक वर्ग की दोनों भुजाएँ वास्तविकता में बराबर होती हैं, वैसे ही वे मन में भी बराबर होती हैं। बल्कि, यदि कहा जाता 'समानता...

[उर्दू अनुभाग]: लेकिन इसमें कुछ अतिरिक्त भी है, वो ये कि यक़ीन दिल की दृढ़ता को कहते हैं जबकि इसमें दलील-ए-क़तई का प्रमाण भी हो। विश्वास (एतिकाद) दिल की दृढ़ता है लेकिन किसी निर्णायक प्रमाण की ओर इसका कोई सम्बन्ध नहीं होता जैसे आम आदमी का विश्वास। अनुमान (ज़न), दो बातों को इस तरह जायज़ करार देना है कि उनमें से एक दूसरी की तुलना में अधिक मजबूत हो। भ्रम (वहम), दो बातों को (इस तरह) जायज़ करार देना है कि उनमें से एक दूसरी की तुलना में कमज़ोर हो। और संदेह (शक़), दो बातों को इस तरह जायज़ करार देना है कि उनमें से किसी एक को दूसरे पर कोई श्रेष्ठता प्राप्त न हो। समाप्त - संक्षेप में।

मैं अल्लाह तआला की तौफीक से कहता हूँ, जो कुछ सैयद फाज़िल (रहमतुल्लाह अलैहि) ने ज़िक्र किया है, उनकी इबारत से हमारा मक़सद ज़न (अनुमान) और ज़न-ए-ग़ालिब (प्रबल अनुमान) के बीच अंतर करना है। जहाँ तक बाक़ी कलाम का संबंध है, तो वो उसी पर आधारित है जो उलेमा-ए-किराम के बीच प्रसिद्ध है कि मक़सद साफ़ हो जाने के बाद शब्दों पर सोच-विचार नहीं किया जाता। और अगर मैं फ़ायदे की पूर्णता के लिए इसका ज़िक्र करूँ तो कोई हर्ज नहीं, हालाँकि ये बहस इस मक़ाम पर गैर-जरूरी है। उनके इस कौल "किसी चीज़ के दोनों पक्षों की समानता" के बारे में मैं कहता हूँ कि ये अधिक व्यापक (आम) के साथ व्याख्या है क्योंकि इसमें तर्कसंगत (माक़ूल) और प्रत्यक्ष (महसूस) दोनों शामिल हैं जैसे वर्गाकार हौज के दोनों किनारों का बराबर होना। अगर वो "अक्ल के नज़दीक" की शर्त बढ़ाते तो भी फ़ायदा न होता क्योंकि वर्ग के दोनों पक्ष जिस तरह वास्तविकता में बराबर होते हैं, ज़ेहन में भी उसी तरह होते हैं, और अगर "समानता...

पादलेख 1: ग़म्ज़ उयून अल-बसायर शरह अल-अशबाह व अन-नज़ायर, अल-फन अल-अव्वल, अल-क़ायदा अल-सानिया, प्रकाशित इदारा-ए-कुरान वल-उलूम अल-इस्लामिया, कराची, 1/84।

[عربی حصہ]: ذلک وھی ان الیقین جزم القلب مع الاستناد الی الدلیل القطعی والاعتقاد جزم القلب من غیر استناد الی الدلیل القطعی کاعتقاد العامي والظن تجویز امرین احدھما اقوی من الأخر والوھم تجویز امرین احدھما اضعف من الأخر والشك تجویز امرین لامزیة لاحدھما علی الأخر انتھی اھ ملخصا۔

اقول: وباللہ التوفیق انما یتعلق غرضنا من ھذہ العبارۃ بما ذکر السید الفاضل رحمہ اللہ تعالی من التفرقۃ بین الظن وغالب الظن واما بقیۃ کلام فماش علی المعھود من العلماء الکرام من عدم التعمق في الالفاظ عند اتضاح المرام ولا بأس ان اذکرہ اشباعا للفائدۃ وان کان اجنبیا عن المقام۔ (قولہ رحمہ اللہ تعالی استواء طرفی الشئ اقول تفسیر بالأعم فانہ یشمل المعقول والمحسوس کاستواء طرفی حوض مربع مثلا ولوزید عند العقل لما نفع ایضا لان المربع کما یستوی طرفاہ في الخارج فکذا في الذھن بل لوقیل استواء

[اردو حصہ]: لیکن اس میں کچھ اضافہ بھی ہے وہ یہ ہے کہ یقین، دل کی پختگی کو کہتے ہیں جبکہ اس میں دلیل قطعی کی سند بھی ہو اعتقاد، دل کی پختگی ہے لیکن کسی دلیل قطعی کی طرف اضافت نہیں ہوتی جیسے عام آدمی کا اعتقاد۔ ظن، دو باتوں کا یوں جائز قرار دینا کہ ان میں سے ایک دوسری کی نسبت زیادہ قوی ہو۔ وہم، دو باتوں کا (اس طرح) جائز قرار دینا کہ ان میں سے ایک، دوسری کی نسبت ضعیف ہو۔ اور شک، دو باتوں کا یوں جائز قرار دینا کہ ان میں سے ایک کو دوسری پر کوئی فوقیت حاصل نہ ہو اھ ملخصا۔

میں اللہ تعالی کی توفیق سے کہتا ہوں جو کچھ سید فاضل رحمہ اللہ تعالی نے ذکر کیا ہے ان کی عبارت سے ہماری غرض ظن اور ظن غالب کے درمیان تفریق ہے جہاں تک باقی کلام کا تعلق ہے

تو وہ اسی پر جاری ہے جو علماء کرام کے درمیان معروف ہے کہ مقصد واضح ہونے کے بعد الفاظ میں غور و فکر نہیں کیا جاتا اور اگر میں فائدے میں سیری حاصل کرنے کے لئے ذکر کروں تو کوئی حرج نہیں اگر چہ یہ بحث اس مقام میں اجنبی ہے۔ ان کے قول " کسی چیز کی دونوں طرفوں کے برابر ہونے " کے بارے میں میں کہتا ہوں کہ یہ اعم کے ساتھ تفسیر ہے کیونکہ یہ معقول اور محسوس کو شامل ہے جیسے مربع حوض کی دونوں طرفوں کا برابر ہونا، اگر وہ "عند العقل" کی قید کا اضافہ کرتے تو بھی نفع نہ دیتا کیونکہ مربع کی دونوں اطراف جس طرح خارج میں برابر ہوتی ہیں ذہن میں بھی اسی طرح ہوتی ہیں، اور اگر "استواء

حاشیہ 1: غمز عیون البصائر شرح الاشباہ والنظائر، الفن الاول من القاعدۃ الثانیۃ مطبوعہ ادارۃ القرآن والعلوم الاسلامیہ کراچی ۱/ ۸۴

Fatawa Razawiyya, Volume 4.

Even if the condition of "both sides of the intellect" (equality of both sides) is applied, the definition would still not be complete because it holds true for the mentioned 'pool' at the level of the known. This is whether we say things are acquired in their essence, as many followers of philosophers argued, or through their semblances, which is the truth. This definition is also not complete because both sides remain general, whereas the intention is affirmation and negation. Furthermore, their equality is absolute, which also doesn't make the definition perfect, whereas what's intended is the consideration of judgment in the heart's inclination, not any other reason like suitability for a purpose, etc.

Regarding their statement "and it is pausing/stopping" (وهو الوقوف), I say: this is also general; for example, it can include a traveler standing between two paths to a city, with his heart not inclining towards either, and other such cases.

Regarding their statement "if one of them becomes preferred" (فان ترجح احدهما), I say: for example, this includes the 'recommended' (Mustahabb) act because performing it is preferred over leaving it, despite leaving it also being permissible. This also applies to natural and habitual matters and others. Sometimes a person faces two things in food, clothing, medicine, marriage, etc., and he has a greater inclination towards one than the other, without discarding the other.

Regarding their statement "if he discards it" (فان طرحہ)...

फ़तवा रज़विया, जिल्द 4.

यदि "तर्फी अल-माक़ूल" (बुद्धि के दोनों पक्षों की समानता) की शर्त लगाई जाए, तब भी परिभाषा पूर्ण नहीं होगी क्योंकि यह ज्ञात के स्तर पर उल्लिखित 'कुंड' (हौज़) पर लागू होती है। चाहे हम यह कहें कि वस्तुओं की प्राप्ति उनके सार (ज़ात) के साथ होती है, जैसा कि दार्शनिकों के कई अनुयायियों ने तर्क दिया है, या उनकी छवियों (अशबाह) के माध्यम से, जो कि सत्य है। यह परिभाषा इसलिए भी पूर्ण नहीं है क्योंकि दोनों पक्ष सामान्य बने रहते हैं, जबकि उद्देश्य सकारात्मकता (ईजाब) और नकारात्मकता (सल्ब) है। इसके अलावा, उनकी समानता पूर्ण (मुतलक) है, जिससे परिभाषा पूर्ण नहीं होती, जबकि हृदय के झुकाव में निर्णय का विचार करना अभिप्रेत है, न कि कोई अन्य कारण जैसे किसी उद्देश्य की उपयुक्तता आदि।

उनका कथन "और वह रुकना है" (वह उल-वुक़ूफ़), मैं कहता हूँ: यह भी सामान्य है; उदाहरण के लिए, इसमें वह यात्री भी शामिल हो सकता है जो किसी शहर की ओर जाने वाले दो रास्तों के बीच खड़ा हो और उसका हृदय किसी एक की ओर भी झुका हुआ न हो, और इसके अलावा भी (अभिप्रेत हो सकता है)।

उनके कथन "यदि उनमें से एक प्रबल हो जाए" (फ़ान तरज्जह अहदहुमा) के बारे में मैं कहता हूँ: उदाहरण के लिए, इसमें 'मुस्तहब' (अनुशंसित) कार्य भी शामिल है क्योंकि इसे करना छोड़ने पर वरीयता रखता है, इसके बावजूद कि इसे छोड़ना भी जायज़ है। यह प्राकृतिक और आदतन मामलों और अन्य में भी लागू होता है। कभी-कभी मनुष्य के सामने भोजन, कपड़े, दवा, विवाह आदि में दो चीज़ें होती हैं और वह एक की ओर दूसरे की तुलना में अधिक झुकाव रखता है, बिना दूसरे को छोड़े।

उनके कथन "यदि वह उसे छोड़ दे" (फ़ान तरहह) के बारे में...

पेज 496/761

فتاویٰ رضویہ، جلد چہارم

"طرفی المعقول" (معقول کی دونوں طرفوں کا برابر) کی قید لگائی جائے تو بھی تعریف کامل نہ ہوگی کیونکہ مرتبہ معلوم میں یہ حوض مذکور پر صادق آتی ہے چاہے ہم ذات کے ساتھ اشیاء کے حصول کا قول کریں جیسا کہ اکثر متبعین فلاسفہ نے اسے اختیار کیا یا مشابہ ذات کے ساتھ اشیاء کے حصول کا قول کریں جیسا کہ یہی حق ہے یہ تعریف اس لئے بھی تام نہیں ہوتی کہ دونوں اطراف عموم پر باقی رہتی ہیں حالانکہ مقصود تو ایجاب اور سلب ہے نیز ان کا برابر ہونا مطلق ہے اس سے بھی تعریف کامل نہیں حالانکہ میلان قلب میں حکم کا اعتبار مراد ہے کوئی دوسری وجہ مثلاً کسی غرض کا پایا جانا وغیرہ مراد نہیں ہے۔

ان کا قول "وھو الوقوف" (اور وہ ٹھہرنا ہے)، میں کہتا ہوں یہ بھی عام ہے مثلاً اس کو بھی شامل ہوسکتا ہے جو کسی شہر کی طرف جانے والے دو راستوں کے درمیان کھڑا ہوا اور اس کا دل کسی ایک کی طرف بھی مائل نہ ہو، اس کے علاوہ بھی (مراد ہوسکتا ہے)

ان کے قول "فان ترجح احدھما" (اگر ان میں سے ایک راجح ہو جائے) کے بارے میں میں کہتا ہوں مثال کے طور پر یہ مستحب کو بھی شامل ہے کیونکہ اس کا کرنا، چھوڑنے پر ترجیح رکھتا ہے باوجودیکہ ترک بھی کیا جاتا ہے اور یہ طبعی وعادی امور اور اس کے علاوہ میں بھی جاری ہونا ہے۔ بعض اوقات انسان کے سامنے دو چیزیں ہوتی ہیں اشیاء خوردنی و لباس و دوا و نکاح وغیرہ میں وہ ان میں سے ایک کی طرف دوسرے کی نسبت زیادہ میلان رکھتا ہے لیکن دوسرے کو چھوڑنا بھی نہیں چاہتا۔

ان کے قول "فان طرحہ" (اگر وہ اسے چھوڑ دے)

Fatawa Razawiyya Volume 4

I say: It applies to the obligatory (wajib), and similarly, the discussion can be about non-sharia matters. Moreover, 'Zann' (speculative knowledge/opinion) is more general than 'Ghalib-ul-Zann' (preponderant opinion). There is no doubt that applying the former to the latter is correct. The meaning of contrasting them, as mentioned, is that this specific type is designated by this name.

Regarding his statement: "And if it (one side) does not preponderate, then it is 'Wahm' (delusion/illusion)," I say: The lack of preponderance includes equality. Furthermore, it is better to state that 'Zann' and 'Wahm' both occur on one thing, and it is the preponderance of one of the two sides. This is because, in terms of existence, neither of them is inseparable from its counterpart. Thus, according to research, they are necessary for each other, even if they are distinct in terms of truth/validity. Therefore, it would have been safer to say: "If one of them preponderates over the other, then the preponderant is 'Maznun' (thought to be so), and it is specifically called 'Ghalib' if the other is discarded, and the non-preponderant is 'Marjouh' (less likely) or 'Mauhum' (fancied)."

Regarding his statement: "With addition to that," I say: It appears that he brought all that was mentioned previously with some addition, whereas he added something and omitted something else, namely the statement of the difference between 'Zann' and its preponderance ('Ghalib').

Regarding his statement: "And 'I'tiqad' (belief) is the firm conviction of the heart," I say: It is well-known that 'I'tiqad' includes 'Zann'. For this reason, you hear them defining 'Zann' as the preponderant 'I'tiqad', as stated in the commentary.

Page 497 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द 4

मैं कहता हूँ: यह वाजिब (अनिवार्य) पर भी लागू होता है, और इसी तरह गैर-शरीयत मामलों में भी बात हो सकती है। इसके अलावा, 'ज़न्न' (अनुमानित ज्ञान/राय), 'ग़ालिब-उल-ज़न्न' (प्रबल राय) से अधिक सामान्य है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि पहले का दूसरे पर प्रयोग सही है। उनके बीच मुकाबले का अर्थ, जैसा कि बताया गया है, यह है कि यह विशेष प्रकार इस नाम के साथ विशिष्ट है।

उनके कथन "और यदि वह (एक पक्ष) प्रबल न हो तो वह 'वहम' (भ्रम) है" के बारे में मैं कहता हूँ: प्रबल न होना बराबरी को शामिल करता है। फिर बेहतर बात यह है कि 'ज़न्न' और 'वहम' दोनों एक ही चीज़ पर आधारित होते हैं और वह दो पक्षों में से एक की प्रधानता है। क्योंकि अस्तित्व के तौर पर उनमें से हर एक अपने साथी से अलग नहीं होता। अतः शोध के अनुसार, वे एक-दूसरे के लिए आवश्यक हैं, भले ही वे सत्यता के आधार पर अलग-अलग हों। इसलिए, अधिक सुरक्षित बात यह होती कि वह कहते "यदि उनमें से एक दूसरे पर प्रबल हो तो प्रबल 'मज़नून' (सोचा गया) होगा, और फिर यदि दूसरे पक्ष को छोड़ दिया जाए तो वह 'ग़ालिब' के साथ विशिष्ट होगा (ग़ालिब-ए-ज़न्न होगा), और जिसे प्राथमिकता नहीं मिली वह 'मौहूम' (कल्पित) होगा।"

उनके कथन "उस पर कुछ अतिरिक्त के साथ" के बारे में मैं कहता हूँ: इससे स्पष्ट होता है कि वे पिछली पूरी इबारत को कुछ अतिरिक्त के साथ लाए हैं, जबकि उन्होंने कुछ जोड़ा और कुछ यानी 'ज़न्न' और 'ग़ालिब-ए-ज़न्न' के बीच के अंतर के वर्णन को कम कर दिया।

उनके कथन "और 'एतिकाद' (विश्वास) दिल की दृढ़ता है" के बारे में मैं कहता हूँ: प्रसिद्ध यह है कि 'एतिकाद' में 'ज़न्न' शामिल है। इसी कारण आप उन्हें 'ज़न्न' को प्रबल 'एतिकाद' के रूप में परिभाषित करते हुए सुनते हैं, जैसा कि टीका में वर्णित है।

पृष्ठ 497 का 761

اقول: (میں کہتا ہوں) یہ واجب پر بھی صادق آتا ہے اسی طرح غیر شرعی امور میں بھی کلام ہو سکتا ہے علاوہ ازیں ظن، ظن غالب سے عام ہے اور اس میں کوئی شک نہیں کہ پہلے کا دوسرے پر اطلاق صحیح ہے اور ان دونوں میں مقابلہ سے مراد جیسا کہ ذکر کیا گیا ہے اس قسم کا اس نام کے ساتھ خاص ہونا ہے۔

ان کے قول "وان لم یترجح فھو وھم" (اگر ایک جانب راجح نہ ہو تو وہم ہے) کے بارے میں میں کہتا ہوں کہ راجح نہ ہونا برابری کو شامل ہے پھر احسن بات یہ ہے کہ ظن اور وہم اکٹھے ایک چیز پر مرتب ہوتے ہیں اور وہ دو جانبوں میں سے ایک کا راجح ہونا ہے کیونکہ وجودی طور پر ان میں سے ہر ایک اپنے ساتھی سے جدا نہیں ہوتا پس تحقیق کے اعتبار سے وہ ایک دوسرے کو لازم ہیں اگرچہ صدق کے اعتبار سے جدا جدا ہوں، لہذا زیادہ محفوظ بات یہ تھی کہ فرماتے "اگر ان میں سے ایک، دوسرے پر راجح ہو تو وہ ظن ہوگا پھر اگر دوسری جانب کو چھوڑ دیا گیا تو غالب کے ساتھ مختص ہوگا (ظنِ غالب ہوگا) اور جسے ترجیح حاصل نہیں ہوئی وہ موہوم ہوگا۔"

ان کے قول "مع زیادۃ علی ذلك" (اس پر کچھ اضافے کے ساتھ) کے بارے میں میں کہتا ہوں اس سے ظاہر ہوتا ہے کہ وہ گزشتہ تمام عبارت کچھ اضافے کے ساتھ لائے ہیں حالانکہ انہوں نے کچھ اضافہ کیا اور کچھ یعنی ظن اور غالب ظن کے درمیان فرق کا بیان کم کر دیا۔

ان کے قول "والاعتقاد جزم القلب" (دل کی پختگی کو اعتقاد کہا جاتا ہے) کے بارے میں میں کہتا ہوں معروف یہ ہے کہ اعتقاد، ظن کو شامل ہے اسی وجہ سے آپ انہیں سنتے ہیں کہ وہ ظن کی تعریف اعتقادِ راجح سے کرتے ہیں جیسا کہ شرح میں اس پر نص موجود ہے۔

Fatawa Razawiyya Volume 4

[Right Column] It also includes 'Zann' (speculative thought), which is why you will hear from them that they define 'Zann' as a predominant belief, as explicitly stated in the first objective (Maqsad) of the fifth observatory (Marsad) of the first station (Mawqif) in Sharh al-Mawaqif. However, they may form their own technical term by specifying it for certain (Jazim) conviction. I say that their (the terminologists') statement that a solitary report (Khabar al-Wahid) does not yield certain belief is a witness to this; so understand. Regarding their statement "min ghayri istinad" (without reference/attribution), I say—and Allah Almighty knows best—that they have restricted 'belief' (I'tiqad) to imitation (Taqlid). We, however, have seen that the science of principles (Ilm al-Usul) is called the science of beliefs (Ilm al-Aqa'id). Sometimes we hear the eminent Imams saying, "We believe so-and-so because the proof is so-and-so," and "We held such a belief because the evidence was such." Imam-e-Azam Abu Hanifa (may Allah have mercy on him) says at the beginning of Al-Fiqh al-Akbar: "The essence of monotheism (Tawhid) is something else, the belief in which is correct..." (until the end). Do you think the meaning is that certain conviction (Jazm) is valid without reference to a definitive proof? Regarding their statement "And 'Zann' is the permission of two matters, etc.," I say that this includes the permissibility of both 'Azimah (determined resolve) and Rukhsah (concession), though 'Azimah is stronger. Regarding their statement "And 'Wahm' (illusion), etc.," I say firstly that it includes the permissibility of both Rukhsah and 'Azimah, and Rukhsah is weaker; and secondly...

[Left Column] Al-Mawaqif from the first objective of the fifth observatory of the first station. O Allah, unless they agree on a technical term to specify it as certain (Jazim) conviction. I say: Their statement that solitary reports do not yield belief may bear witness to this; so understand. (Regarding the statement "without reference/ attribution, etc.") I say: Allah knows best what he meant by restricting belief to imitation. As for us, we have seen that the science of principles is called the science of beliefs. Perhaps we hear the Imams saying, "We believe this, the proof is this," and "We believed that, the demonstration is that." This Imam-e-Azam (may Allah Almighty have mercy on him) says at the beginning of Al-Fiqh al-Akbar: "The essence of monotheism and that upon which belief is valid..." etc. Do you think the meaning is what can be certain about without reference to a definitive proof? (Regarding the statement "And 'Zann' is the permission of two matters, etc.") I say: It includes the permission of determined resolve ('Azimah) and concession (Rukhsah), and 'Azimah is

stronger. (Regarding the statement "And 'Wahm', etc.") I say: Firstly, it includes the permission of concession and resolve, and concession is weaker; and secondly...

[Footer] 1 Al-Fiqh al-Akbar, beginning of the book, printed by Malik Sirajuddin and Sons, Lahore, p. 2. Page 498 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द चहारुम

[दायां कॉलम] ज़न्न (अंदाज़ा) को भी शामिल है, इसी लिए तुम उनसे सुनोगे कि वे ज़न्न की परिभाषा 'एतकाद-ए-राजिह' (प्रबल विश्वास) के साथ करते हैं जैसा कि 'शरह मवाक़िफ़' के मवाक़िफ़-ए-अव्वल में मरसद-ए-खामिस के मक़सद-ए-अव्वल में इसकी तसरीह (स्पष्ट व्याख्या) है। अलबत्ता यह कि वे जाज़िम (निश्चितता) की तख़सीस (विशिष्टता) के साथ अपनी इस्तिलाह (पारिभाषिक शब्दावली) बना लें। मैं कहता हूँ इस पर उन (इस्तिलाह बनाने वालों) का क़ौल कि 'ख़बर-ए-वाहिद' एतकाद (विश्वास) का फ़ायदा नहीं देती, गवाही है; समझ लो। उनके क़ौल "मन ग़ैर-ए-इस्तिनाद" (बिना किसी निस्बत व इज़ाफ़त के) के मुतअल्लिक़ मैं कहता हूँ और अल्लाह तआला खूब जानता है कि उन्होंने एतकाद को तक़लीद पर महदूद कर दिया। हमने तो यह देखा है कि इल्म-ए-उसूल को 'इल्म-उल-अक़ाइद' कहा जाता है और कभी-कभी हम अइम्मा-ए-किराम को कहते हुए सुनते हैं कि हम फ़लां दलील की बुनियाद पर यह एतकाद रखते हैं और फ़लां बुरहान (प्रमाण) की बुनियाद पर हमारा यह अक़ीदा है। इमाम-ए-आज़म अबू हनीफ़ा (रहमतुल्लाह अलैहि) 'फ़िक़ह अकबर' के शुरू में फ़रमाते हैं: असल तौहीद और है जिसका एतकाद रखना सही है... (आख़िर तक)। क्या तुम्हारे ख्याल में इसका मतलब यह है कि किसी क़तई दलील की तरफ़ निस्बत किए बिना जिस पर जज़्म (निश्चितता) सही हो? उनके क़ौल "वल्ज़न्नु तजवीज़ु अमरैन" (दो बातों को जाइज़ क़रार देना ज़न्न है) वग़ैरा के बारे में मैं कहता हूँ कि यह अज़ीमत और रुख़सत के जवाज़ को भी शामिल है, हालांकि अज़ीमत ज़्यादा क़वी (मज़बूत) होती है। उनके क़ौल "वलवहम" वग़ैरा के मुतअल्लिक़ मैं कहता हूँ पहली बात यह है कि यह रुख़सत व अज़ीमत को जाइज़ क़रार देने पर मुश्तमिल है, हालांकि रुख़सत...

[बायां कॉलम] 'अल-मवाक़िफ़' मक़सद-ए-अव्वल से, मरसद-ए-खामिस से, मवाक़िफ़-ए-अव्वल से। ऐ अल्लाह, मगर ये कि वे इसे जाज़िम के साथ मख़सूस करने की इस्तिलाह बना लें। मैं कहता हूँ और उनके इस क़ौल से इसकी ताईद होती है कि ख़बर-ए-वाहिद एतकाद का फ़ायदा नहीं देती, पस समझ लो। (उनके क़ौल "मन ग़ैर-ए-इस्तिनाद" वग़ैरा के बारे में) मैं कहता हूँ: अल्लाह बेहतर जानता है कि एतकाद को तक़लीद तक सीमित रखने से उनका क्या मतलब था। जहाँ तक हमारा ताल्लुक है, हमने देखा है कि इल्म-ए-उसूल को इल्म-उल-अक़ाइद कहा जाता है। और शायद हम अइम्मा को कहते सुनते हैं कि हम ऐसा एतकाद रखते हैं, दलील ये है, और हमारा ये एतकाद था, बुरहान ये है। और ये इमाम-ए-आज़म (रहमतुल्लाह तआला अलैहि) 'फ़िक़ह अकबर' के आग़ाज़ में फ़रमाते हैं: असल तौहीद और जिस पर एतकाद सही है... वग़ैरा। क्या तुम समझते हो कि इसका अर्थ वह है

जिस पर बिना किसी क़तई दलील के जज़्म सही हो? (उनके क़ौल "वल्ज़न्नु तजवीज़ु अमरैन" वग़ैरा के बारे में) मैं कहता हूँ: इसमें अज़ीमत और रुख़सत का जवाज़ शामिल है और अज़ीमत अधिक प्रबल है। (उनके क़ौल "वलवहम" वग़ैरा के बारे में) मैं कहता हूँ: पहली बात यह है कि इसमें रुख़सत और अज़ीमत का जवाज़ शामिल है और रुख़सत कमज़ोर है; और दूसरी बात...

[फुटर] 1 फ़िक़्ह अकबर शुरू किताब, मतबूआ मलिक सिराजुद्दीन एंड संस लाहौर, पृ. 2 पृष्ठ 761 का 498

[دائیں کالم] ظن کو بھی شامل ہے اسی لئے تم ان سے سنو گے کہ وہ ظن کی تعریف، اعتقادِ راجح کے ساتھ کرتے ہیں جیسا کہ شرحِ مواقف کے موقفِ اول میں مرصدِ خامس کے مقصدِ اول میں اس کی تصریح ہے البتہ یہ کہ وہ جازم کی تخصیص کے ساتھ اپنی اصطلاح بنا لیں۔ میں کہتا ہوں اس پر ان (مصطلحین) کا قول کہ خبرِ واحد اعتقاد کا فائدہ نہیں دیتی، شہادت ہے، سمجھ لو۔ ان کے قول "من غیر استناد" (کسی نسبت واضافت کے بغیر) کے متعلق میں کہتا ہوں اور اللہ تعالیٰ خوب جانتا ہے کہ انہوں نے اعتقاد کو تقلید پر بند کر دیا ہم نے تو یہ دیکھا ہے کہ علم اصول کو علم العقائد کہا جاتا ہے اور کبھی کبھی ہم ائمہ کرام کو کہتے ہوئے سنتے ہیں کہ ہم فلاں دلیل کی بنیاد پر یہ اعتقاد رکھتے ہیں اور فلاں برہان کی بنیاد پر ہمارا یہ عقیدہ ہے۔ امام اعظم ابوحنیفہ رحمہ اللہ فقہ اکبر کے شروع میں فرماتے ہیں اصل توحید اور ہے جس کا اعتقاد رکھنا صحیح ہے (آخر تک) کیا تمہارے خیال میں اس کا مطلب یہ ہے کہ کسی قطعی دلیل کی طرف نسبت کیے بغیر جس پر جزم صحیح ہو؟ ان کے قول "والظن تجویز امرین" (دو باتوں کو جائز قرار دینا ظن ہے) الخ کے بارے میں میں کہتا ہوں کہ یہ عزیمت اور رخصت کے جواز کو بھی شامل ہے حالانکہ عزیمت زیادہ قوی ہوتی ہے۔ ان کے قول "والوھم الخ" (اور وہم الخ) کے متعلق میں کہتا ہوں پہلی بات یہ ہے کہ یہ رخصت وعزیمت کو جائز قرار دینے پر مشتمل ہے حالانکہ رخصت

[بائیں کالم] المواقف من المقصد الاول من المرصد الخامس من الموقف الاول اللھم الا ان یصطلح علی تخصیصہ بالجازم قلت وقد یشھد لہ قولھم ان الآحاد لا تفید الاعتقاد فافھم۔ (قولہ من غیر استناد الخ) اقول: اللہ اعلم بما افاد من قصر الاعتقاد علی التقلید اما نحن قدر أینا ان علم الاصول یقال لہ علم العقائد وربما نسمع الائمۃ یقولون نعتقد کذا الدلیل کذا واعتقدنا کذا البرھان کذا وھذا الامام الاعظم رحمہ اللہ

تعالى يقول في صدر الفقه الاكبر اصل التوحيد وما يصح الاعتقاد عليه الخ افترى ان المعنى ما يصح الجزم به من دون استناد الى قاطع (قوله والظن تجويز امرين الخ) اقول: يشمل تجويز العزيمة والرخصه والعزيمة اقوى۔ (قوله والوهم الخ) اقول اولا يشمل تجويز الرخصه والعزيمة والرخصه اضعف وثانيا

[فٹر] 1 فقہ اکبر شروع کتاب مطبوعہ ملک سراج الدین اینڈ سنز لاہور ص ۲ Page 498 of 761

Vol. 4 - Fatawa Razawiya

Arabic Text

There is no difference between the interpretations of 'Zann' (conjecture) and 'Wahm' (delusion). Permitting two matters where one is stronger is exactly the same as permitting two matters where one is weaker. Regarding the statement "And Doubt... till the end", I say: this includes permissibility and choice. In summary, none of the eight mentioned interpretations of doubt, delusion, and conjecture are free from doubts. Therefore, the clearest and shortest definition I state is: when you do not have certainty in a judgment of affirmation or negation, if both are equal to you, it is doubt; otherwise, the subordinate one is delusion and the dominant one is conjecture. If the dominance reaches such an extent that the heart discards the other side, it is 'Ghalib-uz-Zann' (predominant conjecture) and 'Akbar-ur-Rai' (greater opinion). Allah knows best, and let us return to what we were on. (T)

Urdu Translation

The weakest point is that there is no difference in the interpretations of 'Zann' and 'Wahm'. Thus, declaring two things permissible, one of which is stronger, is exactly like declaring two things permissible, one of which is weaker. Regarding their statement "And Doubt" (and doubt - until the end), I say that this includes permissibility and choice. The summary of the discussion is that the eight mentioned interpretations regarding doubt, delusion, and conjecture are not free from doubts. Therefore, the most clear and concise statement in their definition is what I say (i.e.), when you do not have any definite matter in the command of affirmation and negation, then if both are equal to you, it is doubt; otherwise, what is subordinate is delusion and the dominant is conjecture. And if the preference reaches such a limit that the heart leaves the other side, then it is predominant thought and a greater opinion. Allah Almighty knows best and we should return towards Him in whom we were. (T)

Secondly, the heart is not yet firmly fixed on the dominant side, and does not consider the subordinate side as completely vanished, but the mind still goes there, albeit weakly and minimally. This situation does not function as certainty, nor does it oppose the contrary certainty; rather, it is considered in the stage of doubt and hesitation. In the words of scholars, this is also sometimes called predominant conjecture, though in reality, it is merely conjecture, not predominance of conjecture.

Arabic Text

In 'Al-Hadiqa an-Nadiyya', it is stated that when the heart does not accept predominant conjecture, it is like doubt. And certainty is not removed by doubt. End. In 'Sharh al-Mawaqif', conjecture itself is expressed as predominance of conjecture because its reality contains preference, therefore its...

Urdu Translation

It is in 'Hadiqa Nadiya' that when the heart does not accept predominant conjecture, it is like doubt. And certainty is not removed by doubt. End. And in 'Sharh-e-Mawaqif', conjecture itself is expressed as predominance of conjecture because preference is found in its reality, therefore its...

1 Al-Hadiqa an-Nadiyya, Explanation of disagreement of jurists regarding purity and impurity, printed by Nooriya Razawiya Faisalabad 2/117.

खंड चार - फतावा रज़विया

अरबी पाठ

'ज़न्न' (अनुमान) और 'वहम' (भ्रम) की व्याख्याओं में कोई अंतर नहीं है। दो बातों को अनुमत मानना जिनमें से एक अधिक मजबूत हो, बिल्कुल वैसा ही है जैसे दो बातों को अनुमत मानना जिनमें से एक अधिक कमजोर हो। उनके कथन "और संदेह... अंत तक" के बारे में मैं कहता हूँ: इसमें अनुमति और चयन शामिल है। संक्षेप में, संदेह, भ्रम और अनुमान की आठों उल्लेखित व्याख्याएँ शंकाओं से मुक्त नहीं हैं। इसलिए, इनकी परिभाषा में सबसे स्पष्ट और संक्षिप्त बात वह है जो मैं कहता हूँ (यानी): जब आपको किसी निर्णय की पुष्टि या निषेध में कोई निश्चित बात प्राप्त न हो, तो यदि वे आपके लिए बराबर हैं तो यह संदेह है, अन्यथा जो गौण है वह भ्रम है और जो प्रमुख है वह अनुमान होगा। और यदि प्रमुखता उस सीमा तक पहुँच जाए कि दिल दूसरी तरफ को छोड़ दे, तो वह 'ग़ालिब-उज़-ज़न्न' (प्रबल अनुमान) और 'अकबर-उर-रय' (बड़ी राय) है। अल्लाह बेहतर जानता है और हमें उसी की तरफ लौटना चाहिए जिस पर हम थे। (त)

उर्दू अनुवाद

सबसे कमज़ोर बात यह है कि ज़न्न और वहम की व्याख्याओं में कोई अंतर नहीं है, इसलिए (ऐसी) दो बातों को जायज़ करार देना जिनमें से एक ज़्यादा मज़बूत हो, हुबहू उन दो बातों को जायज़ करार देना है जिनमें से एक ज़्यादा कमज़ोर हो। उनके कथन "और संदेह" (और संदेह - अंत तक) के बारे में मैं कहता हूँ कि इसमें अनुमति और चुनाव शामिल है। चर्चा का सार यह है कि संदेह, वहम और ज़न्न के बारे में उल्लेखित आठ व्याख्याएँ संदेहों से मुक्त नहीं हैं, इसलिए उनकी परिभाषा में सबसे स्पष्ट और संक्षिप्त बात वह है जो मैं कहता हूँ (अर्थात्) जब पुष्टि और निषेध के नियम में तुम्हें कोई निश्चित बात प्राप्त न हो, तो यदि तुम्हारे निकट वे दोनों बराबर हैं तो यह संदेह है, अन्यथा जो गौण है वह भ्रामक है और जो प्रमुख है वह अनुमानित होगा। और यदि प्राथमिकता उस सीमा तक पहुँच जाए कि दिल दूसरी दिशा को छोड़ दे, तो वह प्रबल अनुमान और बड़ी राय है। अल्लाह सर्वोच्च बेहतर जानता है और हमें उसी की ओर लौटना चाहिए जिसमें हम थे। (त)

दूसरे यह कि अभी दिल प्रमुख पक्ष पर पूरी तरह नहीं टिका है और गौण पक्ष को पूरी तरह मिटा हुआ नहीं मानता, बल्कि मन उधर भी जाता है, यद्यपि कमज़ोरी और कमी के साथ। यह स्थिति न तो निश्चितता का काम देती है और न ही विपरीत निश्चितता का विरोध करती है, बल्कि इसे संदेह और

हिचकिचाहट के स्तर पर ही समझा जाता है। विद्वानों के शब्दों में कभी-कभी इसे भी प्रबल अनुमान कहा जाता है, हालांकि वास्तव में यह केवल अनुमान है, अनुमान की प्रबलता नहीं।

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
'अल-हदीक़ा अन-नदिय्या' में है कि जब प्रबल अनुमान को दिल स्वीकार न करे तो वह संदेह की तरह है। और निश्चितता, संदेह के साथ समाप्त नहीं होती। (अंत)। और 'शरह अल-मवाक़िफ़' में है कि अनुमान को ही अनुमान की प्रबलता के रूप में व्यक्त किया जाता है क्योंकि इसकी वास्तविकता में प्राथमिकता पाई जाती है, इसलिए इसकी...	'हदीक़ा नदिय्या' में है कि जब प्रबल अनुमान को दिल स्वीकार न करे तो वह संदेह की तरह है। और निश्चितता, संदेह के साथ समाप्त नहीं होती। अंत। और 'शरह-ए-मवाक़िफ़' में ज़न्न को ही ग़ालिब-ए-ज़न्न (प्रबल अनुमान) के साथ व्यक्त किया जाता है क्योंकि इसकी वास्तविकता में प्राथमिकता पाई जाती है, इसलिए इसकी...

1 अल-हदीक़ा अन-नदिय्या, शुद्धता और अशुद्धता के मामले में न्यायविदों के मतभेद का वर्णन, नूरिया रज़विया फैसलाबाद द्वारा मुद्रित 2/117।

| لا فرق بین تفسیری الظن والوھم فتجویز امرین احدھما اقوی ھو بعینہ تجویز امرین احدھما اضعف ۔ (قولہ والشك الخ) اقول: یشمل الاباحة والتخییر وبالجملة فلا یخلو شئ من التفاسیر الثمانیة المذکورة للشك والوھم والظن من الشکوك فالا وضح الاخصر في حدھا ما اقول: اذا لم تجزم في حکم بایجاب ولا سلب فان استوىٰ عندك فھو الشك والا فالمرجوح موھوم والراجح مظنون فان بلغ الرجحان بحیث طرح القلب الجانب الاخر فھو غالب الظن واکبر الرأی واللہ تعالیٰ اعلم ولنرجع الی ماکنا فیہ۔ | زیادہ ضعیف بات یہ ہے کہ ظن اور وہم کی تفسیروں میں کوئی فرق نہیں پس (ایسی) دو باتوں کو جائز قرار دینا جن میں سے ایک زیادہ قوی ہو بعینہ ان دو باتوں کو جائز قرار دینا ہے جن میں سے ایک زیادہ ضعیف ہو۔ ان کے قول "والشک" (اور شک ۔ آخر تک) کے بارے میں میں کہتا ہوں کہ یہ اباحت و تخییر کو شامل ہے حاصل کلام یہ ہے کہ شک وہم اور ظن کے بارے میں مذکورہ آٹھ تفاسیر شکوک سے خالی نہیں لہذا ان کی تعریف میں نہایت واضح اور بہت مختصر بات وہ ہے جو میں کہتا ہوں (یعنی) جب ایجاب و سلب کے حکم میں تمہیں کوئی قطعی بات حاصل نہ ہو تو اگر تمہارے نزدیک وہ دونوں برابر ہیں تو یہ شک ہے ورنہ جو مرجوح ہے وہ موہوم اور راجح مظنون ہوگا۔ اور اگر ترجیح اس حد کو پہنچ جائے کہ دل دوسری جانب کو چھوڑ جائے تو وہ غالب گمان اور بڑی رائے ہے۔ اللہ تعالیٰ بہتر جانتا ہے اور ہمیں اسی کی طرف لوٹنا چاہیے جس میں ہم تھے۔ (ت) |

دوسرے یہ کہ ہنوز جانب راجح پر دل ٹھیک ٹھیک نہ جمے اور جانب مرجوح کو محض مضمحل نہ سمجھے بلکہ اُدھر بھی ذہن جائے اگرچہ بضعف وقلت یہ صورت نہ یقین کا کام دے نہ یقین

خلاف کا معارضہ کرے بلکہ مرتبہ شک و تردد ہی میں سمجھی جاتی ہے کلمات علماء میں کبھی اسے بھی ظن غالب کہتے ہیں اگرچہ حقیقتہً یہ مجرد ظن ہے نہ غلبہ ظن۔

| بفی الحدیقة الندیة غالب الظن اذا لم یأخذ به القلب فهو بمنزلة الشك والیقین لا یزول بالشك [1] اه وفی شرح المواقف الظن هو المعبر عنه بغلبة الظن لان الرجحان مأخوذ في حقیقته فان ماهیته هو | حدیقہ ندیہ میں ہے کہ جب ظن غالب کو دل قبول نہ کرے تو وہ شک کی طرح ہے۔ اور یقین، شک کے ساتھ زائل نہیں ہوتا اھ اور شرح مواقف میں ہے ظن ہی کو غلبہ ظن کے ساتھ تعبیر کیا جاتا ہے کیونکہ اس کی حقیقت میں ترجیح پائی جاتی ہے اس لئے اس کی |

[1] الحدیقۃ الندیہ بیان اختلاف الفقہاء فی امر الطہارہ والنجاسۃ مطبوعہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۲/۱۱۷

Fatawa Razawiyyah Volume Four

[Arabic Box]: The preponderant belief is as if it were said: "Or the preponderance of belief, which is conjecture." The benefit of turning to this expression is to draw attention to the fact that preponderance, i.e., preference, is inherent in its essence (1) - End (T).

[Urdu Box]: The essence is indeed a preponderant belief, as if it were said "or the preponderance of belief which is conjecture," and the benefit of turning towards this phrase is to caution that the meaning of preponderance, i.e., preference, is found in its essence. - End (T).

Yes, this kind of consideration is given to the extent that caution is deemed better and more superior, not that acting upon it becomes obligatory and mandatory. Look at the trousers of disbelievers, the vessels of polytheists, the food cooked by them, the hands and feet of children, etc. – those places where there is such a preponderance, abundance, and intensity of impurity that while the mind may lean toward purity once, it leans toward impurity ten or twenty times. However, since we cannot definitively declare any of these things impure without seeing them, and the heart accepts that they might be pure, the scholars have clarified that performing ablution with this water, consuming that food, using those vessels, and praying in those clothes is valid and permissible. The doer is by no means a sinner or deserving of punishment. The answer given regarding that preponderance of conjecture is that while most situations might be as such, there is no absolute verification or certainty. Thus, how can the original ruling of purity be revoked? Of course, in view of preponderance and apparent state, avoidance is superior and better, and the act is 'Makruh Tanzihi' (disliked but not sinful), meaning it is inappropriate to commit it without necessity; but if done, there is no harm.

[Arabic Box]: In Al-Tariqah al-Muhammadiyyah and its commentary: But here, i.e., in the preponderance of conjecture which the heart does not accept, it is recommended to avoid it, and its use is Makruh Tanzihi, such as the trousers of disbelievers, the leftover of a free-roaming hen, water in which a child has put their hand, and the vessels of polytheists. It is stated in Al-Dhakhirah: It is disliked to eat and drink from the vessels of polytheists before washing because the overwhelming apparent state of their vessels is impurity, for they deem drinking wine, eating carrion, and pork as lawful; they drink and eat those in their bowls and vessels, so it is disliked for Muslims to eat and drink...

[Urdu Box]: It is stated in Al-Tariqah al-Muhammadiyyah and its commentary: "But here, i.e., in the preponderance of conjecture that the heart does not accept, avoiding it is recommended (Mustahabb), and its use is Makruh Tanzihi, such as the trousers of disbelievers, the leftover of a hen roaming in the streets, water in which a child has inserted their hand, and the vessels of polytheists." In Al-Dhakhirah, it is stated: "It is disliked (Makruh) to eat and drink in the vessels of polytheists before washing because their vessels are apparently and predominantly impure; they consider drinking alcohol, eating carrion, and pork as permissible, they eat and drink it and use it in their bowls and other vessels, so before washing them three times, Muslims should not..."

(1) Sharh al-Mawaqif, Fifth Observatory, Second Objective, Qom Iran 1/498-499.

फ़तावा रज़विय्या जिल्द चहारम (चौथा खंड)

[अरबी बॉक्स]: प्रबल विश्वास ऐसा है मानो कहा गया हो: "या विश्वास की प्रबलता जो कि अनुमान (ज़न्न) है।" इस अभिव्यक्ति की ओर मुड़ने का लाभ इस तथ्य पर ध्यान आकर्षित करना है कि प्रबलता, यानी वरीयता, इसके सार (1) में निहित है - समाप्त (त)।

[उर्दू बॉक्स]: सार प्रबल विश्वास ही है, जैसे कि कहा गया हो "या विश्वास की प्रबलता जो अनुमान है" और इस वाक्यांश की ओर मुड़ने का लाभ यह सचेत करना है कि इसके सार में प्रबलता यानी वरीयता का अर्थ पाया जाता है। - समाप्त (त)।

हाँ, इस प्रकार का इतना ध्यान रखा जाता है कि सावधानी को बेहतर और श्रेष्ठ समझा जाता है, न कि उस पर अमल करना अनिवार्य और ज़रूरी हो जाए। काफ़िरों के पाजामे, मुशरिकों (बहुदेववादियों) के बर्तन, उनके पकाए हुए खाने, बच्चों के हाथ-पैर आदि को देखें; वे स्थान जहाँ अपवित्रता (नजासत) की प्रबलता, बहुतायत और तीव्रता इस कदर होती है कि यदि मन एक बार पवित्रता की ओर जाता है, तो दस-बीस बार अपवित्रता की ओर जाता है। फिर भी, चूँकि हम अभी तक इनमें से किसी भी चीज़ को देखे बिना निश्चित रूप से अपवित्र नहीं कह सकते, और मन स्वीकार करता है कि शायद वे पवित्र हों, इसलिए विद्वानों ने स्पष्ट किया है कि ऐसे पानी से वज़ू करना, वह खाना खाना, उन बर्तनों का उपयोग करना और उन कपड़ों में नमाज़ पढ़ना सही और जायज़ है। ऐसा करने वाला कतई गुनहगार या सज़ा का पात्र नहीं है। और उस प्रबल अनुमान का यही उत्तर दिया गया है कि अक्सर हालात ऐसे ही सही, पर शोध और निश्चितता तो नहीं है, फिर मूल पवित्रता का हुक्म कैसे समाप्त हो? हाँ, प्रबलता और ज़ाहिरी तौर पर परहेज़ करना अफ़ज़ल और बेहतर है, और यह कार्य 'मकरूह तन्ज़ीही' है, यानी बिना ज़रूरत ऐसा करना उचित नहीं है; लेकिन अगर किया तो कोई हर्ज भी नहीं।

[अरबी बॉक्स]: 'अत-तरीक़ा अल-मुहम्मदिया' और उसकी शरह (व्याख्या) में है: लेकिन यहाँ यानी उस प्रबल अनुमान में जिसे दिल स्वीकार न करता हो, उससे बचना मुस्तहब (पसंदीदा) है और उसका उपयोग मकरूह तन्ज़ीही है, जैसे काफ़िरों के पाजामे, गलियों में फिरने वाली मुर्गी का जूठा, वह पानी जिसमें बच्चे ने अपना हाथ डाला हो और मुशरिकों के बर्तन। 'अल-ज़खीरा' में कहा गया है: धोने से पहले मुशरिकों के बर्तनों में खाना-पीना मकरूह है क्योंकि उनके बर्तनों की ज़ाहिरी और अक्सर स्थिति अपवित्रता है, क्योंकि वे शराब पीना, मुर्दार खाना और सूअर के मांस को हलाल

समझते हैं; वे अपने प्यालों और बर्तनों में इनका सेवन करते हैं, इसलिए मुसलमानों के लिए खाना-पीना मकरूह है...

[उर्दू बॉक्स]: 'अत-तरीक़ा अल-मुहम्मदिया' और उसकी शरह में है: "लेकिन यहाँ यानी उस प्रबल अनुमान में जिसे दिल स्वीकार न करता हो, उससे बचना मुस्तहब है और इसका उपयोग मकरूह तन्ज़ीही है जैसे काफ़िरों के पाजामे, गलियों में फिरने वाली मुर्गी का जूठा, वह पानी जिसमें बच्चे ने अपना हाथ डाला हो और मुशरिकों के बर्तन।" 'ज़खीरा' में फ़रमाया: "मुशरिकों के बर्तन धोने से पहले उनमें खाना-पीना मकरूह है क्योंकि उनके बर्तन ज़ाहिरन और ग़ालिबन नापाक हैं, वे शराब पीना, मुर्दार खाना और सूअर के गोश्त को हलाल जानते हैं, इसे खाते-पीते और अपने प्यालों और दूसरे बर्तनों में इस्तेमाल करते हैं, अतः उन्हें तीन बार धोने से पहले मुसलमानों को उनका..."

(1) शरह अल-मवाक़िफ़, पाँचवाँ वेधशाला, दूसरा उद्देश्य, क़ोम ईरान 1/498-499।

पृष्ठ 500/761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

[عربی باکس]: الاعتقاد الراجح فکانه قیل او غلبة الاعتقاد التی هی الظن وفائدة العدول الی هذه العبارة هی التنبیه علی ان الغلبة ای الرجحان مأخوذة في ماهیته^1 اهـ (ت)

[اردو باکس]: ماہیت اعتقاد راجح ہی ہے گویا کہا گیا "یا غلبہ اعتقاد جو ظن ہے" اور اس عبارت کی طرف رخ کرنے کا فائدہ اس بات پر تنبیہ کرنا ہے کہ اس کی ماہیت میں غلبہ یعنی ترجیح کے معنی پائے جاتے ہیں اھ (ت)

ہاں اس قسم کا اتنا لحاظ کرتے ہیں کہ احتیاط کو بہتر و افضل جانتے ہیں نہ کہ اُس پر عمل واجب و متحتم ہو جائے دیکھو کافروں کے پاجامے مشرکوں کے برتن اُن کے پکائے کھانے بچوں کے ہاتھ پاؤں وغیرہ ذلک وہ مقامات جہاں اس قدر غلبہ و کثرت و وفور شدت سے نجاست کا جوش کہ اکثر اوقات وغالب احوال تلوث و تنجس جس کے سبب اگر طہارت کی طرف ایک بار ذہن جاتا ہے تو نجاست کی جانب دس بیس مرتبہ مگر از انجا کہ ہنوز ان میں کسی چیز کو بے دیکھے تحقیق طور پر ناپاک نہیں کہہ سکتے اور قلب قبول کرتا ہے کہ شاید پاک ہوں لہٰذا علماء نے تصریح کی کہ اس پانی سے وضو اور اُس کھانے کا تناول اور اُن برتنوں کا استعمال اور ان کپڑوں میں نماز صحیح وجائز اور فاعل زنہار آثم و مستحق عقاب نہیں اور اُس غلبہ ظن کا یہی جواب عطا فرمایا کہ اکثر احوال یوں سہی پر تحقیق و تیقن تو نہیں پھر اصل طہارت کا حکم کیونکر مرتفع ہو البتہ باعتبار غلبہ و ظہور احتراز افضل و بہتر اور فعل مکروہ تنزیہی یعنی مناسب نہیں کہ بے ضرورت ارتکاب کرے اور کیا تو کچھ حرج بھی نہیں۔

[عربی باکس]: في الطريقة المحمدية وشرحها لكن هنا ای في غلبة الظن من غير ان يأخذ به القلب لے يستحب الاحتراز عنه ويكره تنزيها استعماله كسراويل الكفرة وسؤر الدجاجة المخلاة والماء الذی ادخل الصبی يده فيه واوانی المشركين وقال في الذخيرة يكره الاكل والشرب في اواني المشركين قبل الغسل لان الغالب الظاهر من حال اوانيهم النجاسة فانهم يستحلون شرب الخمر واكل الميتة ولحم الخنزير ويشربون ذلك ويأكلون فی قصاعهم واوانيهم فيكره للمسلمين الاكل والشرب

[اردو باکس]: طریقہ محمدیہ اور اس کی شرح میں ہے "لیکن یہاں پر یعنی غلبہ ظن میں کہ اسے دل قبول نہ کرتا ہو اس سے احتراز مستحب ہے اور اس کا استعمال مکروہ تنزیہی ہے جیسے کفار کی شلوار پاجامے ، گلیوں میں پھرنے والی مرغی کا جھوٹا ، وہ پانی جس میں بچے نے اپنا ہاتھ داخل کیا اور مشرکین کے برتن ، ذخیرہ میں فرمایا "مشرکین کے برتن دھونے سے پہلے ان میں کھانا پینا مکروہ ہے کیونکہ ان کے برتن بظاہر غالباً نجس ہیں وہ شراب نوشی ، مردار خوری اور خنزیر کے گوشت کو حلال جانتے ، اسے کھاتے پیتے اور اپنے پیالوں اور دوسرے برتنوں میں استعمال کرتے ہیں پس ان کو تین بار دھونے سے پہلے مسلمانوں کو ان کا

18 شرح المواقف المرصد الخامس مقصد الثانی قم ایران ۱/ ۴۹۸۔ ۴۹۹

Fatawa Razawiya - Volume 4

(Context: Washing vessels three times before use). This amount is such that if impurity were present on these vessels, a predominant opinion of their purity would be attained. This is to repel misgivings, considering the apparent state of those vessels. Just as it is disliked (makruh) to perform ablution (wudhu) with the leftover water of a free-roaming chicken because it generally does not avoid impurity. The apparent understanding for the intellect is that it does not distinguish nor refrain from using that (impurity). Similarly, it is disliked to perform ablution with a small amount of water into which a child has put their hand, because the apparent, obvious, and common habit is that a child does not avoid impurity. Also, just as considering the apparent state, it is disliked to pray in the trousers of polytheists (mushrikin) because they do not perform purification (istinja) after urinating or defecating, and the apparent state of their trousers is impurity. Despite this—i.e., the predominant apparent state of their vessels being impurity—if one eats or drinks from them before washing, it is permissible, and the eating or drinking would not be forbidden (haram). This is because purity is the original state (asl), for Allah Almighty did not create anything impure in its original creation. Rather, impurity is accidental. Thus, the origin of urine is pure water, and likewise blood, semen, and wine are originally pure juices, then impurity befell them. Therefore, the established original ruling applies until the occurrence of the accident (impurity) is known. And if someone says that the predominant apparent state in the mentioned things is impurity, we say: Yes, but purity [is the original state].

(संदर्भ: उपयोग से पहले बर्तनों को तीन बार धोना)। यह मात्रा ऐसी है कि यदि इन बर्तनों पर अशुद्धि (नजासत) लगी होती, तो उनकी पवित्रता के बारे में एक प्रबल धारणा प्राप्त हो जाती। यह संशय (वसवसा) को दूर करने के लिए है, उन बर्तनों की प्रकट स्थिति पर विचार करते हुए। जैसे कि खुले घूमने वाले मुर्गे के छोड़े हुए पानी (झूठे) से वज़ू करना नापसंद (मक़रूह) है क्योंकि वह आमतौर पर अशुद्धि से नहीं बचता। प्रकट समझ यह है कि वह उस (अशुद्धि) के उपयोग में न तो अंतर करता है और न ही उससे बचता है। इसी तरह, थोड़े पानी से वज़ू करना नापसंद है जिसमें एक बच्चे ने अपना हाथ डाला हो, क्योंकि प्रकट, स्पष्ट और सामान्य आदत यह है कि वह अशुद्धि से नहीं बचता। साथ ही, जैसे प्रकट को ध्यान में रखते हुए, मुशरिकों (बहुदेववादियों) की पतलून में नमाज़ पढ़ना नापसंद है क्योंकि वे पेशाब या शौच के बाद शुद्धि (इस्तिन्जा) नहीं करते हैं, और उनकी पतलून की प्रकट स्थिति अशुद्धि है। इसके बावजूद—अर्थात उनके बर्तनों की प्रबल प्रकट स्थिति अशुद्धि होने के बावजूद—यदि कोई धोने से पहले उनमें खाता या पीता है, तो यह जायज़ है, और खाना-पीना हराम (वर्जित) नहीं होगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि पवित्रता मूल स्थिति (अस्ल) है, क्योंकि अल्लाह तआला ने अपनी मूल रचना में किसी भी चीज़ को अशुद्ध पैदा नहीं किया। बल्कि, अशुद्धि आकस्मिक है। इस प्रकार, पेशाब का मूल शुद्ध जल है, और इसी तरह रक्त, वीर्य और शराब मूल रूप से शुद्ध रस हैं, फिर उन पर अशुद्धि आ गई। इसलिए, स्थापित मूल नियम तब तक लागू होता है जब तक कि आकस्मिक (अशुद्धि) की घटना का पता न चल जाए। और यदि कोई कहता है कि उल्लिखित चीजों में प्रबल प्रकट स्थिति अशुद्धि है, तो हम कहते हैं: हाँ, लेकिन पवित्रता [मूल स्थिति है]।

पृष्ठ 501 / 761

فیها قبل الغسل ثلاث مرات- وذلك مقدار ما یغلب علی ظنه انها طهرت لو كانت متحققة النجاسة دفعاً للوسواس اعتباراً للظاهر من حال تلك الاوانی كما كره التوضی بسؤر الدجاجة المخلاة لانها لا تتقی عن النجاسة في الغالب والظاهر المتبادر للافهام لعدم تمییزها وعدم تحاشیها عن استعمال ذلك وكما كره التوضی بماء قلیل ادخل الصبي یده فیه لانه لا یتقی من النجاسة فی الظاهر المتبادر والغالب الكثیر المعتاد وكما كره الصلاة في سراویل المشركین اعتباراً للظاهر فانهم لا یستنجون اذا بالوا و تغوطوا وكان الظاهر من سراویلهم النجاسة ومع هذا ای كون الغالب الظاهر من حال اوانیهم النجاسة لو اكل او شرب فیها قبل الغسل جاز ولا یكون اكلا ولا شاربا حراما لان الطهارة اصل لان الله تعالی لم یخلق شیئا نجسا من اصل خلقته وانما النجاسة عارضة فاصل البول ماء طاهر وكذلك الدم والمنی والخمر عصیر طاهر ثم عرضت النجاسة فیجری علی الاصل المحقق حتی یعلم بحدوث العارض وما یقول الانسان بان الظاهر الغالب في الاشیاء المذكورة النجاسة قلنا نعم

استعمال مکروہ ہے۔ اور یہ مقدار وہ ہے کہ اگر ان برتنوں پر نجاست لگی ہوئی ہو تو اس سے اس کے پاک ہونے کا غالب گمان حاصل ہو جائے اس طرح ان برتنوں کے ظاہری حالت سے پیدا ہونے والا وسوسہ دُور ہو جائے گا جیسا کہ گلیوں میں پھرنے والی مُرغی کے جھوٹے سے وضو مکروہ ہے کیونکہ عام طور پر وہ نجاست سے نہیں بچتی۔ اور ذہنوں میں ظاہر ومتبادر بات یہ ہے کہ وہ اس (نجاست) کے استعمال میں نہ تمیز کرتی ہے اور نہ ہی اس سے بچتی ہے۔ اور جیسا کہ اس قلیل پانی سے وضو کرنا مکروہ ہے جس میں بچے نے اپنے ہاتھ ڈالا کیونکہ ظاہر اور متبادر اور غالب نیز عام عادت یہ ہے کہ وہ نجاست سے نہیں بچتا۔ اور جیسے ظاہر کا اعتبار کرتے ہوئے مشرکین کی شلواروں میں نماز پڑھنا مکروہ ہے کیونکہ وہ پیشاب اور قضائے حاجت کے بعد

استنجاء نہیں کرتے اور ان کی شلواروں کا ظاہری حال ناپاکی ہے اور اس کے باوجود یعنی ان کے برتنوں کے بارے میں ظاہر وغالب یہی ہے کہ وہ ناپاک ہیں، اگر دھونے سے پہلے ان میں کھایا یا پیا تو جائز ہے اور کھانا پینا حرام نہ ہوگا کیونکہ طہارت اصل ہے اس لئے کہ اللہ تعالیٰ نے حقیقت میں کسی چیز کو ناپاک پیدا نہیں کیا نجاست (بعد میں) لاحق ہوتی ہے پس پیشاب کی اصل پاک پانی ہے اسی طرح خون، منی اور شراب پاک رس ہے پھر ان کو نجاست لاحق ہوئی پس حکم اصل پر جاری ہو گئی جو ثابت ہے یہاں تک کہ عارض کے پیدا ہونے کا علم ہوجائے۔ اور اگر کوئی شخص کہتا ہے کہ ظاہر اً مذکورہ اشیا میں گمان نجاست ہے ہم کہتے ہیں ہاں لیکن طہارت

But purity is established with certainty, and certainty is not removed except with absolute certainty; similarly, it concludes. Then it was stated in "Al-Dhakhira": "There is no harm in all types of food from Jews and Christians, without exception of one food over another, as long as it is permissible, whether it is from slaughtered animals or otherwise. This is because the command of Allah the Almighty is: 'The food of those who were given the Scripture is lawful for you.' There is no distinction in the noble verse between slaughtered and non-slaughtered animals, between people of war and those not at war, or between the Children of Israel, such as the Christians of the Arabs. Furthermore, there is no harm in any food from the Magians (Zoroastrians) except for their slaughtered animals."

It was narrated in another place in "Al-Dhakhira" from Ibn Sirin (may Allah have mercy on him) that the Companions of the Messenger of Allah (may Allah bless him and grant him peace) used to prevail over the polytheists and eat and drink from their vessels, and it was not reported that they would wash them before use. It is also narrated from the Companions of the Noble Prophet (may Allah bless him and grant him peace) that when they gathered at the gate of Khosrow, they found pots in his kitchen containing various types of food. They inquired about them and were told it was broth. Consequently, they ate it and sent some to Hazrat Umar Farooq (may Allah be pleased with him). Hazrat Umar (may Allah be pleased with him) and the rest of the Companions also consumed it. Thus, the Companions (may Allah be pleased with them) ate the food cooked by the Magians, because essentially their food is permissible, and prohibition is not established through mere suspicion. Moreover, the Companions cooked in their pots before washing them, which serves as proof that purity is the original state.

फ़तावा रज़विया, जिल्द चौथी

लेकिन पाकी (शुद्धता) यक़ीन के साथ साबित है और यक़ीन यक़ीन-ए-कामिल (पूर्ण निश्चितता) के साथ ज़ायल (समाप्त) होता है। फिर ज़ख़ीरा में फ़रमाया: "यहूद व नसारा (ईसाइयों) के तमाम खानों में बिना किसी अपवाद के कोई हर्ज नहीं है कि यह खाना हो या वह, बशर्ते कि वह मुबाह (अनुमेय) हो, चाहे वह ज़बीहा हो या उसके सिवा, क्योंकि अल्लाह तआला का इरशाद है: 'और अहले किताब का खाना तुम्हारे लिए हलाल है।' आयत-ए-करीमा में ज़बीहा और ग़ैर-ज़बीहा, अहले हर्ब, ग़ैर-अहले हर्ब और बनी इसराइल जैसा कि अरब के ईसाइयों के दरमियान कोई तफ़सील (विस्तार) नहीं है। और मजूसियों (अग्निपूजकों) के ज़बीहा के अलावा उनके तमाम खानों में कोई हर्ज नहीं है।"

ज़ख़ीरा में एक दूसरे स्थान पर इब्ने सीरीन (अल्लाह उन पर रहम करे) से नक़ल किया गया है कि सहाबा किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) मुशरिकों पर हमला करके ग़ालिब आते थे, तो उनके बर्तनों में खाते-پیتے थे और यह बात मनक़ूल (वर्णित) नहीं है कि वे उन्हें धोकर इस्तेमाल करते थे। नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सहाबा किराम (रज़ियल्लाहु अन्हु) से मरवी (वर्णित) है कि जब वे किसरा के दरवाज़े पर जमा हुए, तो उन्होंने उसके बावर्ची खाने में हांडियाँ पाईं जिनमें तरह-तरह के खाने थे। उन्होंने उनके बारे में पूछा, तो बताया गया कि यह शोरबा है। चुनाँचे उन्होंने उसे खाया और कुछ हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) की ख़िदमत में भी भेज दिया। तो हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) और बाकी सहाबा किराम ने भी उसे खाया। पस सहाबा किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) ने उस खाने से खाया जिसे मजूसियों ने पकाया था क्योंकि असल में उनका खाना हलाल है और गुमान से हुरमत (वर्जना) साबित नहीं होती। साथ ही सहाबा किराम ने उनकी हांडियों को धोने से पहले उनमें खाना पकाया, इस बात की दलील यह है कि तहारत (शुद्धता) ही असल (मूल) है।

पृष्ठ 502 / 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

یقین سے ثابت ہے اور یقین یقین کامل کے ساتھ زائل ہوتا ہے اھ پھر ذخیرہ میں فرمایا: "یہود و نصاری کے تمام کھانوں میں بغیر استثناء کوئی حرج نہیں کہ یہ کھانا ہو وہ نہ ہو جبکہ وہ مباح ہو ذبیحہ ہو یا اس کے سوا، کیونکہ اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے: 'اور اہل کتاب کا کھانا تمہارے لئے حلال ہے' آیت کریمہ میں ذبیحہ اور غیر ذبیحہ، اہل حرب، غیر اہل حرب اور بنی اسرائیل جیسا کہ عرب کے عیسائی کے درمیان کوئی تفصیل نہیں ہے اور مجوسیوں کے ذبیحہ کے علاوہ تمام کھانوں میں کوئی حرج نہیں ذخیرہ میں ایک دوسرے مقام پر ابن سیرین رحم اللہ سے نقل کیا کہ صحابہ کرام رضی اللہ عنہم حملہ کرکے مشرکین پر غالب آتے تو ان کے برتنوں میں کھاتے پیتے تھے اور یہ بات منقول نہیں کہ وہ ان کو دھو کر استعمال کرتے تھے نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کے صحابہ کرام رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ وہ کسری کے دروازے پر جمع ہوئے تو ان کے باورچی خانہ میں ہانڈیاں پائیں جن میں طرح طرح کے کھانے تھے انہوں نے ان کے بارے میں پوچھا تو بتایا گیا کہ یہ شوربہ ہے۔ چنانچہ انہوں نے اسے کھایا اور کچھ حضرت عمر فاروق رضی اللہ عنہ کی خدمت میں بھیج دیا تو حضرت عمر رضی اللہ عنہ اور باقی صحابہ کرام نے بھی اسے تناول فرمایا۔ پس صحابہ کرام رضی اللہ عنہم نے اس کھانے سے کھایا جس کو مجوسیوں نے پکایا تھا کیونکہ اصل میں اُسکا کھانا حلال ہے اور گمان سے حُرمت ثابت نہیں ہوتی نیز صحابہ کرام نے ان کی ہانڈیوں کو دھونے سے پہلے ان میں پکایا، اس بات کی دلیل یہ ہے کہ طہارت اصل ہے۔

صفحہ 502 از 761

Fatawa Razawiyya - Volume 4

[Arabic Column]: Impurity is accidental, and doubt has occurred in the accidental state. Purity established by original principle is not removed. And as for the one who says the apparent state is impurity, we say yes, but purity was established with certainty, and certainty is not removed by doubt or conjecture, but only by certainty. Don't you see that if a person's limb or clothing is hit by a substantial amount of the saliva of a free-roaming chicken, or a small amount of water in which a child put his hand or foot, and he prayed with that, his prayer is valid. And if he prayed in the trousers of polytheists, it is also valid because we are certain of purity and doubt impurity, so it is not established by doubt. Similarly here, regarding the food of the Magians and their pots, impurity is not established by doubt, even if caution suggests otherwise in similar cases. And we do not say this regarding the events of the Companions (may Allah be pleased with them) because of the possibility that this caution might be countered by another matter, such as the need for food at that time or to explain permissibility for the followers, as they were people of guidance. As the Prophet (peace and blessings be upon him) said: "Hold fast to my Sunnah and the Sunnah of the Rightly Guided Caliphs after me." End of what was quoted from Al-Dhakhira. This is what I have quoted from both of them in summary and...

[Urdu Column]: And impurity is an accidental thing, and doubt has occurred regarding its incidence, due to which the purity established from the beginning will not end. And as for what someone might say—that apparently it is impurity—we say yes, but purity was established with certainty, and certainty is not lost through doubt and conjecture; it is only removed by certainty. Have you not seen that when a person's limb or cloth is touched by a large amount of the leftover of a chicken roaming in the streets, or a small quantity of water in which a child has put his hand or foot, and he prays with it, the prayer is valid? And if he offers prayer in the trousers of polytheists, that is also valid because we have certainty of purity and doubt regarding impurity, so it will not be established through doubt. Similarly, here, impurity will not be established through doubt regarding the food and pots of the Magians, although in such cases, caution lies in regarding it as impure. And we do not say this regarding the incident of the Companions because against this caution there is another matter, such as the need for food at that time or a statement of permissibility for a person in need, because those people were among those who were followed. As the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) said: "Following my Sunnah and the Sunnah of the Rightly Guided Caliphs after me is

mandatory for you." That which was quoted from Dhakhira has been completed. What I have summarized from both of them and...

---

1 Al-Hadiqa al-Nadiyya and the fourth type regarding differences among jurists, printed at Nooriya Razawiyya Faisalabad 2/711. Page 503 of 761

फतवा रज़विया - खंड 4

[अरबी कॉलम]: अशुद्धि आकस्मिक है, और आकस्मिकता में संदेह उत्पन्न हुआ है। मूल नियम से स्थापित पवित्रता समाप्त नहीं होती है। और जो कहता है कि प्रत्यक्ष रूप से अशुद्धि है, हम कहते हैं हाँ, लेकिन पवित्रता निश्चितता (यकीन) के साथ स्थापित हुई थी, और निश्चितता संदेह या अनुमान से समाप्त नहीं होती है, बल्कि केवल निश्चितता से ही होती है। क्या आपने नहीं देखा कि जब किसी व्यक्ति के अंग या कपड़े पर गलियों में घूमने वाली मुर्गी का जूठा अधिक मात्रा में लग जाए, या थोड़े पानी में बच्चे ने अपना हाथ या पैर डाल दिया हो, और उसने उसी स्थिति में नमाज़ पढ़ी हो, तो उसकी नमाज़ जायज़ होगी। और यदि वह मुशरिकों (बहुदेववादियों) की शलवार में नमाज़ अदा करे, तो यह भी जायज़ है क्योंकि हमें पवित्रता का यकीन है और अशुद्धि में संदेह है, इसलिए वह संदेह के साथ स्थापित नहीं होगी। इसी तरह यहाँ मजूसी (अग्निपूजकों) के भोजन और उनकी हांडियों में संदेह से अशुद्धि स्थापित नहीं होगी, भले ही इसके समकक्ष मामलों में एहतियात (सावधानी) अपवित्रता न होने में ही हो। और हम सहाबा किराम के मामले में यह बात नहीं कहते क्योंकि उस एहतियात के मुकाबले एक दूसरा मामला हो सकता है जैसे उस समय भोजन की आवश्यकता या मजबूर इंसान के लिए अनुमेयता (जवाज़) का बयान, क्योंकि वे लोग उन लोगों में से थे जिनका अनुसरण किया जाता है। जैसा कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "तुम पर मेरी और मेरे बाद खुलाफा-ए-राशिदीन की सुन्नत का पालन करना अनिवार्य है।" अल-ज़खीरा से जो कुछ उद्धृत किया गया है वह समाप्त हुआ। मैंने इन दोनों से जो कुछ संक्षेप में उद्धृत किया है और...

[उर्दू कॉलम]: और अशुद्धि लाहक (आने वाली) होने वाली चीज़ है, और उसके लाहक होने में संदेह उत्पन्न हुआ, जिससे वह पवित्रता जो मूल रूप से स्थापित है, समाप्त नहीं होगी। और वह जो कहने वाला कहता है कि प्रत्यक्षतः यह अशुद्धि ही है, हम कहते हैं हाँ, लेकिन पवित्रता यकीन (निश्चितता) के साथ स्थापित हुई थी और यकीन संदेह और अनुमान के साथ समाप्त नहीं होता है, वह केवल यकीन से ही दूर होता है। क्या नहीं देखा गया कि जब किसी इंसान के अंग या कपड़े को गलियों में घूमने वाली मुर्गी का जूठा अधिक मात्रा में पहुँच जाए, या थोड़ा पानी जिसमें बच्चे ने अपना हाथ या पाँव डाला और वह उसके साथ नमाज़ पढ़े तो नमाज़ जायज़ होगी? और जब मुशरिकों की शलवार में नमाज़ अदा करे तो यह भी जायज़ है क्योंकि हमें पवित्रता का यकीन है और अशुद्धि में संदेह है, अतः वह संदेह के साथ स्थापित नहीं होगी। जिस तरह यहाँ मजूसी के खाने और हांडियों में संदेह से अशुद्धि स्थापित नहीं होगी, भले ही इसके समान मामलों में एहतियात अपवित्रता ही है। और सहाबा

किराम के वाकये में हम यह बात नहीं कहते क्योंकि इस एहतियात के मुकाबले एक दूसरा मामला है जैसे उस समय भोजन की ज़रूरत या मजबूर इंसान के लिए जवाज़ (अनुमेयता) का बयान, क्योंकि वे लोग उन लोगों में से थे जिनका अनुसरण किया जाता है। जैसा कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "तुम पर मेरी और मेरे बाद खुलाफा-ए-राशिदीन की सुन्नत का पालन करना अनिवार्य है।" जो कुछ ज़खीरा से उद्धृत किया गया था वह पूरा हो गया। जो कुछ मैंने इन दोनों से संक्षेप में उद्धृत किया और...

---

1 अल-हदिक़ा-अन-नदिया और फकीहों के मतभेदों पर चौथा प्रकार, नूरिया रज़विया फैशलाबाद द्वारा मुद्रित 2/711 पृष्ठ 503 का 761

[عربی کالم]: والنجاسة عارضة وقد وقع الشك في العارض ولا ترتفع الطهارة الثابتة بقضية الاصل وما يقول القائل ان الظاهر هو النجاسة قلنا نعم ولكن الطهارة كانت ثابتة بيقين واليقين لا يزول بالشك والظن الابيقين الايرى انه اذا اصاب عضو انسان او ثوبه مقدار فاحش من سؤر الدجاجة المخلاة او الماء القليل الذى ادخل الصبي يده او رجله فيه وصلى مع ذلك جازت صلاته واذا صلى في سراويل المشركين جازت ايضا لانا قد تيقنا الطهارة وشككنا في النجاسة فلم تثبت بالشك كذا هنا في طعام المجوس وقدورهم لا تثبت النجاسة بالشك وان كان الاحتياط عدم ذلك في نظيره ولانقول بهذا في واقعة الصحابة رضى الله تعالى عنهم لاحتمال معارضة هذا الاحتياط امر آخر كالحاجة الى الطعام في ذلك الوقت او بيان الجواز للقاصر لانهم من اهل القدوة كما قال عليه الصلاة والسلام عليكم بسنتى وسنة الخلفاء الراشدين من بعدى انتهى ما نقله عن الذخيرة اه مانقلته عنهما بتلخيص و

[اردو کالم]: اور نجاست لاحق ہونے والی اور اور لاحق ہونے والی میں شک واقع ہوا جس سے وہ طہارت جو اصل سے ثابت ہے، ختم نہیں ہوگی۔ اور وہ جو کچھ کہنے والا کہنا ہے کہ ظاہر ، نجاست ہی ہے ہم کہتے ہیں ہاں لیکن طہارت یقین کے ساتھ ثابت ہوئی تھی اور یقین شک اور گمان کے ساتھ زائل نہیں ہوتا وہ صرف یقین سے دور ہوتا ہے کیا نہیں دیکھا گیا کہ جب کسی انسان کے عضو یا کپڑے کو گلیوں میں پھرنے والی مرغی کا جھوٹا زیادہ مقدار میں پہنچ جائے یا قلیل پانی جس میں بچے نے اپنا ہاتھ یا پاؤں ڈالا اور وہ اس کے ساتھ نماز پڑھے تو نماز جائز ہوگی اور جب مشرکین کی شلوار میں نماز ادا کرے تو یہ بھی جائز ہے کیونکہ ہمیں طہارت کا یقین اور نجاست میں شک ہے پس وہ شک کے ساتھ ثابت نہ ہوگی جس طرح یہاں مجوسی کے کھانے اور ہانڈیوں میں شک سے نجاست ثابت نہ ہوگی اگرچہ اس کی مثل میں احتیاط عدم طہارت ہی ہے اور صحابہ

کرام کے واقعہ میں ہم یہ بات نہیں کہتے کیونکہ اس احتیاط کے مقابل ایک دوسرا معاملہ ہے جیسے اس وقت کھانے کی حاجت یا مجبور انسان کے لئے بیان جواز، کیونکہ وہ لوگ ان لوگوں میں سے تھے جن کی اقتداء کی جاتی ہے جیسا کہ نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: تم پر میری اور میرے بعد خلفاء راشدین کی سنت کی پیروی لازم ہے" اھ جو کچھ ذخیرہ سے نقل کیا ہے وہ مکمل ہوگیا۔ جو کچھ میں نے ان دونوں سے تلخیص اور

---

1 الحدیقۃ الندیہ والنوع الرابع فی اختلاف الفقہاء مطبوعہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۲/۷۱۱ Page 503 of 761

Fatawa Razawiyya Volume Four

[Arabic Passage]: Al-Iltiqat wa huwa kama tara kalamun nafeesun yufeedul nafa'isa wa yubeedul wasawisa wallahul hafizu min sharril dasa'is. [Urdu Translation]: It has been cited as a selection; as you see, it is an exquisite discourse that provides precious benefits and destroys doubts. And Allah is the Protector from the evil of plots. (T)

I say (Aqool): It is appropriate to note here regarding their previous statement—that it has not been reported from the Sahaba (Companions) (may Allah be pleased with them) that they used to wash the utensils and bowls from the spoils of war—that they meant they did not always wash them nor did they make it mandatory. Otherwise, a command from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) to wash them is established in an authentic Hadith.

This Hadith has been narrated by Imam Ahmad, Imam Bukhari, Muslim, Abu Dawood, Tirmidhi, and others from Abu Thalaba (may Allah be pleased with him). He said: I submitted, "O Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), we live in a land of the People of the Book. Can we eat in their utensils?" He said, "If you find utensils other than theirs, do not eat in them; but if you do not find others, then wash them and eat in them."

In the wording of Abu Dawood: "They eat pork and drink wine, so what should we do with their utensils and pots?" (Hadith). In one of the two narrations of Abu Isa (Tirmidhi), the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) was asked about the pots of the Magians (fire-worshippers)...

---

1. Sahih Bukhari, Book of Slaughtering, Chapter: Hunting with a Bow, Qadimi Kutub Khana edition, opposite Aram Bagh, Karachi, 2/823.
2. Musnad Ahmad bin Hanbal from Abu Thalaba (may Allah be pleased with him), Dar al-Fikr edition, Beirut, 4/194.

फतावा रज़विया भाग चार

[अरबी पाठ]: अल-इल्तिकात व हुवा कमा तरा कलामुन नफ़ीसुन युफ़ीदुल नफ़ा'इसा व युबीदुल वसाविसा वल्लाहुल हाफ़िज़ु मिन शररिल दसा'इस। [उर्दू अनुवाद का हिंदी रूपांतरण]: चयन के रूप में उद्धृत किया गया है; जैसा कि आप देख रहे हैं, यह एक उत्कृष्ट प्रवचन है जो बहुमूल्य लाभ प्रदान करता है और संदेहों को दूर करता है। और अल्लाह ही साज़िशों की बुराई से रक्षा करने वाला है। (त)

अक़ूल (मैं कहता हूँ): यहाँ इस बात पर गौर करना उचित है कि उनके पिछले कथन का मतलब—कि सहाबा किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से यह वर्णित नहीं है कि वे युद्ध के माल के बर्तनों और प्यालों को धोते थे—यह है कि वे हमेशा नहीं धोते थे और न ही इसे अनिवार्य मानते थे। अन्यथा, सही हदीस में नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से उन्हें धोने का आदेश सिद्ध है।

इस हदीस को इमाम अहमद, इमाम बुखारी, मुस्लिम, अबू दाऊद और तिरमिज़ी आदि ने हज़रत अबू सालबा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। वह कहते हैं कि मैंने अर्ज़ किया: "या रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), हम अहले किताब (किताब वाले लोगों) के क्षेत्र में रहते हैं, तो क्या हम उनके बर्तनों में खा सकते हैं?" आपने फरमाया: "अगर तुम उनके अलावा बर्तन पाओ तो उनमें न खाओ, और अगर न पाओ तो उन्हें धोकर उनमें खा लो।"

अबू दाऊद के शब्दों में है कि वे सुअर का मांस खाते हैं और शराब पीते हैं, तो हम उनके बर्तनों और हाँडियों के साथ क्या करें (हदीस)। अबू ईसा (तिरमिज़ी) की दो रिवायतों में से एक में है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से मजूसीयों (अग्निपूजकों) की हाँडियों के बारे में पूछा गया...

---

1. बुखारी शरीफ, किताबुज़ ज़बायह, बाब: तीर से शिकार, कदीमी कुतुब खाना संस्करण, आराम बाग के सामने, कराची, 2/823।
2. मुसनद अहमद बिन हंबल, हज़रत अबू सालबा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से, दारुल फिक्र संस्करण, बेरूत, 4/194।

पृष्ठ 504/761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

التقاط وھو کماتری کلام نفیس یفید النفائس ویبید الوساوس واللہ الحافظ من شر الدسائس۔ انتخاب کے طریقے پر نقل کیا ہے وہ جیسا کہ تم دیکھ رہے ہو نفیس کلام ہے جو عمدہ باتوں کا فائدہ دیتا اور وسوسوں کو دور کرتا ہے اور اللہ تعالٰی ہی سازشوں کے شر سے حفاظت فرمانے والا ہے۔ (ت)

اقول: ومما ینبغی التنبہ لہ ان قولہ فیما مر انہ لم ینقل عن الصحابۃ رضی اللہ تعالی عنھم انھم کانوا یغسلون اوانی الغنائم وقصاعھا کانہ اراد بہ الادامۃ والالتزام والا فقد صح عن النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم الامر بغسلھا احمد والشیخان وابوداؤد والترمذی وغیرھم عن ابی ثعلبۃ رضی اللہ تعالی عنہ قال قلت یارسول اللہ انا بارض قوم اھل کتاب افناکل فی انیتھم قال ان وجدتم غیرھا فلا تأکلوا فیھا وان لم تجدوا فاغسلوھا وکلوا فیھا 1 وفی لفظ ابی داؤد انھم یأکلون لحم الخنزیر ویشربون الخمر فکیف نصنع بانیتھم وقدورھم 2 الحدیث

اقول: (میں کہتا ہوں) یہاں اس بات پر آگاہی مناسب ہے کہ ان کے گزشتہ قول یعنی صحابہ کرام رضی اللہ عنہم سے منقول نہیں کہ وہ غنیمتوں کے برتن اور پیالے دھوتے تھے، ان سے مراد یہ ہے کہ وہ ہمیشہ نہیں دھوتے تھے اور نہ اس کا التزام کرتے تھے ورنہ صحیح حدیث میں نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم سے ان کے دھونے کا حکم ثابت ہے۔ اس حدیث کو امام احمد، امام بخاری و مسلم، ابوداؤد اور ترمذی وغیرہ نے حضرت ابو ثعلبہ رضی اللہ عنہ سے روایت کیا ہے وہ فرماتے ہیں میں نے عرض کیا: یا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ہم اہل کتاب کے علاقے میں رہتے ہیں تو کیا ہم ان کے برتنوں میں کھا سکتے ہیں؟ آپ نے فرمایا: اگر تم ان کے علاوہ برتن پاؤ تو ان میں نہ کھاؤ اور اگر نہ پاؤ تو ان کو دھو کر ان میں کھالو۔ ابوداؤد کے الفاظ میں ہے کہ وہ خنزیر کا گوشت کھاتے اور شراب پیتے ہیں تو ہم ان کے برتنوں اور ہانڈیوں کے ساتھ کیا کریں (الحدیث)

وفی احدی روایتي ابی عیسی سئل رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیه وسلم عن قدور المجوس ابوعیسیٰ

کی دو روایتوں میں سے ایک میں ہے کہ نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم سے مجوسیوں کی

---

1 بخاری شریف کتاب الذبائح باب صید القوس مطبوعہ قدیمی کتب خانہ مقابل آرام باغ کراچی ۸۲۳/۲ 2 مسند احمد بن حنبل عن ابی ثعلبہ رضی اللہ عنہ مطبوعہ دارالفکر بیروت ۱۹۴/۴

- He said: "Cleanse them by washing and cook in them." - 1 Regarding pots, it was asked, and you said: "Wash them to make them pure and cook in them."
- According to Ahmad from Ibn Umar, Abu Tha'labah (may Allah be pleased with them) asked the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him): "Give us a ruling regarding the vessels of the Magians (fire-worshippers) when we are forced to use them." He said: "When you are forced to use them, wash them with water and cook in them." - 2 - When the command was established, then the washing was also established in practice, even if it is not specifically narrated, because the Companions (may Allah be pleased with them) would neither oppose the command of the Noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) nor would they ever fail to implement it. Choose it. And whoever ponders over our previous arguments will be certain that the command in this hadith is for recommendation (Istihbab) and the prohibition is for discouragement (Tanziyah), and Allah Almighty knows best. (T)
- Imam Ahmad narrated from Hazrat Ibn Umar (may Allah be pleased with him) that Abu Tha'labah (may Allah be pleased with him) requested in the presence of the Noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): "Tell us the ruling regarding the vessels of the Magians when we are forced to use them." You said: "When you are forced to use them, wash them with water and cook in them." When the command was established, then practically washing was also established, even though it is not specifically narrated because the Noble Companions (may Allah be pleased with them) would not oppose the command of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and would always carry it out; choose to do so. And the person who ponders over our past arguments will be convinced that the command is for recommendation and the prohibition is for discouragement, Allah Almighty knows best. (T)
- In "Nisab al-Ihtisab", after briefly quoting what is in "al-Dhakhirah", the servant (author) says - may Allah Almighty reform him -: "And what we are afflicted with regarding the purchase of ghee, vinegar, milk, cheese, and other liquids from Hindus is based on this possibility of their vessels being contaminated, as their women do not avoid dung, and similarly, they eat the meat of what they kill [themselves]."

- After briefly quoting the discussion of "al-Dhakhirah" in "Nisab al-Ihtisab", the humble servant says - may Allah Almighty reform him - that the buying of ghee, vinegar, milk, cheese, and other liquids from Hindus that we are involved in, despite the possibility of their vessels being contaminated (with impurity), as their women do not avoid dung, and similarly they eat the meat of their own killed animals.

---

1. Tirmidhi Sharif, Chapter: Eating from the vessels of disbelievers, Aftab Alam Press, Mujtabai Printing, Lahore 2/2
2. Musnad Ahmad ibn Hanbal from Abdullah ibn Amr (may Allah be pleased with him), published by Al-Maktab al-Islami, Beirut 184/2 Page 505 of 761

- उन्होंने कहा: "उन्हें धोकर साफ करो और उनमें पकाओ।" - 1 हांडियों के बारे में पूछा गया तो आपने फ़रमाया कि उन्हें धोकर पाक कर लो और उनमें पकाओ।

- इमाम अहमद ने हज़रत इब्न उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया कि अबू सालबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में अर्ज़ किया: "हमें मजूसीयों (अग्निपूजकों) के बर्तनों के बारे में हुक्म बताइए जब हम उनके इस्तेमाल पर मजबूर हों।" आपने फ़रमाया: "जब तुम उनके इस्तेमाल पर मजबूर हो तो उन्हें पानी से धो लो और उनमें पकाओ।" - 2 - जब हुक्म साबित हुआ तो अमली तौर पर धोना भी साबित हो गया, हालाँकि वह खास तौर पर मंकूल नहीं क्योंकि सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम न तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म की मुखालफ़त करते थे और न ही उसे हमेशा-हमेशा बजा लाने से गुरेज़ करते थे, इसे इख्तियार कीजिये। और जो शख्स हमारी गुज़श्ता दलाइल पर गौर करेगा उसे इस बात का यकीन हो जाएगा कि इस हदीस में हुक्म मुस्तहब (पसंदीदा) होने के लिए है और मनाही तनज़ीह (नापसंदगी) के लिए है, और अल्लाह तआला खूब जानता है। (त)

- इमाम अहमद ने हज़रत इब्न उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया कि अबू सालबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में अर्ज़ किया: "हमें मजूसीयों के बर्तनों के बारे में हुक्म बताइए जब हम उनके इस्तेमाल पर मजबूर हों।" आपने फ़रमाया: "जब तुम उनके इस्तेमाल पर मजबूर हो तो उन्हें पानी से धोकर उनमें पकाओ।" जब हुक्म साबित हुआ तो अमली तौर पर धोना भी साबित हो गया अगरचे वह खास तौर पर मंकूल नहीं क्योंकि सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम न तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म की मुखालफ़त करते थे और न हमेशा हमेशा बजा लाते इसे इख्तियार कीजिये। और जो शख्स हमारे गुज़श्ता दलाइल पर गौर करेगा उसे इस बात का यकीन हो जाएगा कि हुक्म मुस्तहब के लिए है और मनाही तनज़ीह के लिए है, अल्लाह तआला खूब जानता है। (त)

- "नसाबुल एहतसाब" में "ज़खीरा" की बहस को संक्षेप में नक़ल करने के बाद बंदा अर्ज़ करता है - अल्लाह तआला इसकी इस्लाह करे - "और जो हम घी, सिरका, दूध, पनीर और अन्य तरल चीज़ें हिंदुओं से खरीदने के सिलसिले में मुब्तला हैं, हालांकि उनके बर्तनों के(नजासत से)

मलूस होने का एहतमाल है, उनकी औरतें गोबर से परहेज़ नहीं करतीं और इसी तरह वे अपने मारे हुए का गोश्त खाते हैं।"

- नसाबुल एहतसाब में ज़खीरा की बहस को संक्षेप में नक़ल करने के बाद फ़रमाया कि बंदा अर्ज़ करता है अल्लाह तआला इसकी इस्लाह करे और जो हम घी, सिरका, दूध, पनीर और अन्य तरल चीज़ें हिंदुओं से खरीदने के सिलसिले में मुब्तला हैं, हालांकि उनके बर्तनों के (नजासत से) मलूस होने का एहतमाल है, उनकी औरतें गोबर से परहेज़ नहीं करतीं और इसी तरह वे अपने मक़तुल (मारे हुए) का गोश्त [खाते हैं]...

---

1. तिर्मिज़ी शरीफ़, बाब: काफ़िरों के बर्तनों में खाना, आफ़ताब आलम प्रेस, मतबा मुज्तबाई लाहौर 2/2
2. मसनद अहमद बिन हंबल, हज़रत अब्दुल्ला बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु से, मतबुआ अल-मक्तब अल-इस्लामी बेरूत 184/2 पृष्ठ 761 में से 505

فتاوی رضویہ جلد چہارم

فقال انقوھا غسلا واطبخوا فیھا - 1 ہانڈیوں کے بارے میں پوچھا گیا تو آپ نے فرمایا ان کو دھو کر پاک کرلو اور ان میں پکاؤ۔

وعند احمد عن ابن عمر ان ابا ثعلبة رضی اللہ تعالی عنھم سأل رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم افتنا فی آنیة المجوس اذا اضطررنا الیھا قال اذا اضطررتم الیھا فاغسلوھا بالماء واطبخوا فیھا - 2 - فاذا ثبت الامر فقد ثبت الغسل وان لم ینقل بخصوصہ اذ ما کانوا لیخالفوا امر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ولا یأتمروا بہ ابدا ھذا ومن نظر فی الدلائل التی اسلفنا یوقن ان الامر فی ھذا الحدیث للندب والنھی للتنزیہ واللہ تعالی اعلم۔ امام احمد نے حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہ سے روایت کیا کہ ابو ثعلبہ رضی اللہ عنہ نے نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں عرض کیا: ہمیں مجوسیوں کے برتنوں کے بارے میں حکم بتائیے جب ہم ان کے استعمال پر مجبور ہوں۔ آپ نے فرمایا: جب تم ان کے استعمال پر مجبور ہو تو ان کو پانی سے دھو کر ان میں پکاؤ۔ جب حکم ثابت ہوا تو عملاً دھونا بھی ثابت ہو گیا اگرچہ وہ خاص طور پر منقول نہیں کیونکہ صحابہ کرام رضی اللہ عنہم نہ تو نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کے حکم کی مخالفت کرتے تھے اور نہ ہمیشہ ہمیشہ بجا لاتے اسے اختیار کیجئے۔ اور جو شخص ہمارے گزشتہ دلائل پر غور کرے گا اسے اس بات کا یقین ہو جائیگا کہ امر، استحباب کے لئے ہے اور نہی تنزیہ کے لئے، اللہ تعالیٰ خوب جانتا ہے۔(ت)

وفی نصاب الاحتساب بعد نقل ما فی الذخیرة بالاختصار قال العبد اصلحہ اللہ تعالی وما ابتلینا من شراء السمن والخل واللبن والجبن وسائر المائعات من الھنود علی ھذا الاحتمال تلویث اوانیھم وان نساء ھم لا یتوقین عن السرقین وکذا یأکلون لحم ما قتلوہ نصاب الاحتساب میں ذخیرہ کی بحث بالاختصار نقل کرنے کے بعد فرمایا بندہ عرض کرتا ہے اللہ تعالیٰ اس کی اصلاح کرے اور جو ہم گھی، سرکہ،

دودھ، پنیر اور دیگر مائع چیزیں ہندوں سے خریدنے کے سلسلے میں مبتلا ہیں حالانکہ ان کے برتنوں کے (نجاست سے) ملوث ہونے کا احتمال ہے ان کی عورتیں گوبر سے اجتناب نہیں کرتیں اور اسی طرح وہ اپنے مقتول کا گوشت

---

1 ترمذی شریف باب جاء فی الاکل فی آنیة الکفار آفتاب عالم پریس مطبع مجتبائی لاہور ۲/۲ 2 مسند احمد بن حنبل عن عبد اللہ بن عمرو رضی اللہ عنہ مطبوعہ المکتب الاسلامی بیروت ۱۸۴/۲ Page of 761 505

Fatawa Razawiyya, Volume 4

...and that is a carcass, so permissibility is the legal ruling (fatwa) and caution is piety (taqwa). I say: Meaning, it is eaten while it is a carcass; so according to the fatwa, it is permissible, but piety lies in abstaining from it. In summary: By permissibility, it is meant that which carries no sin, and by piety, it means avoiding doubts. So understand this. (T)

Great Benefit: The weak servant, may the Kind Master be gracious to him, says: Know that what we have asserted and relied upon previously—that 'Makruh Tanzihi' (a mildly disliked action) does not involve any sin, neither major nor minor, and the servant does not deserve any punishment for it, whether much or little—is the clear truth from which there is no turning away. This has been explicitly stated by several scholars. In the book 'Radd al-Muhtar', under the chapter of 'Al-Hazr', concerning the statement 'As for what is disliked with Tanzihi dislike, it is closer to permissibility (al-hila) by consensus,' it means that its perpetrator will not be punished at all, but the one who abandons it will receive some reward. (Talwih)

I say: Being 'closer to permissibility' means 'ibahah' (general permissibility), otherwise, the permissibility which is the opposite of prohibition is established without doubt. In the end of the chapter 'Al-Ashriba' (Drinks), it is quoted from Allama Abu al-Saud that 'Makruh Tanzihi' is compatible with 'ibahah'. (T)

I say: This means it is palatable, not prohibited, free of hardship, and not forbidden. Otherwise, the equality of the two sides (doing or not doing) would contradict the preference for one side, even if...

Footnotes: 1. Nisab al-Ihtisab. 2. Radd al-Muhtar, Book of Prohibition and Permissibility, printed by Mustafa al-Babi, Egypt, 5/214. 3. Radd al-Muhtar, end of the Chapter of Drinks, printed by Mustafa al-Babi, Egypt, 5/377.

Page 506 of 761

फतावा रज़विया, जिल्द चारम

...और वह मुर्दार (शव) है, अतः वैधता (इबाहा) फतवा है और बचाव तक़वा (धर्मपरायणता) है। मैं कहता हूँ: मतलब, लोग इसे खाते हैं जबकि यह मुर्दार है; तो फतवे के अनुसार यह जायज़ है, लेकिन तक़वा यह है कि इससे बचा जाए। संक्षेप में: वैधता से तात्पर्य वह है जिसमें कोई पाप न हो, और तक़वा से तात्पर्य संदेहास्पद चीज़ों से बचना है। तो इसे समझ लें। (त)

महान लाभ: दुर्बल सेवक, जिस पर दयालु स्वामी कृपा करे, कहता है: जान लो कि हमने जो कुछ पहले दृढ़ता से कहा और जिस पर भरोसा किया—कि 'मकरूह तन्ज़ीही' (हल्का नापसंद कार्य) में कोई पाप नहीं है, न बड़ा और न छोटा, और सेवक इसके लिए किसी भी प्रकार के दंड का पात्र नहीं होता, न अधिक और न ही कम—यही स्पष्ट सत्य है जिससे मुंह नहीं मोड़ा जा सकता। कई विद्वानों ने इसे स्पष्ट रूप से व्यक्त किया है। 'रद्द अल-मुह्तार' की किताब 'अल-हज़र' में इस कथन के तहत कि "जहाँ तक तन्ज़ीही नापसंदगी का सवाल है, वह सर्वसम्मति से वैधता (हिलत) के अधिक निकट है," इसका अर्थ है कि इसके कर्ता को बिल्कुल भी दंडित नहीं किया जाएगा, लेकिन इसे छोड़ने वाले को कुछ न कुछ सवाब (पुण्य) मिलेगा। (तलवीह)

मैं कहता हूँ: "वैधता के अधिक निकट" होने से तात्पर्य 'इबाहा' (सामान्य वैधता) है, अन्यथा वह 'हिलत' जो 'हुरमत' (प्रतिबंध) के विपरीत है, बिना किसी संदेह के सिद्ध है। 'अशरिबा' (पेय पदार्थ) अध्याय के अंत में अल्लामा अबू अल-सऊद से उद्धृत किया गया है कि 'मकरूह तन्ज़ीही' और 'इबाहा' एक साथ हो सकते हैं। (त)

मैं कहता हूँ: इसका अर्थ यह है कि यह स्वीकार्य है, निषिद्ध नहीं है, इसमें कोई कठिनाई नहीं है और कोई रोक नहीं है। अन्यथा, दोनों पक्षों की समानता एक पक्ष की प्राथमिकता के विरुद्ध होगी, भले ही...

पाद-टिप्पणियाँ: 1. निसाब अल-इहतिसाब। 2. रद्द अल-मुह्तार, किताब अल-हज़र वल-इबाहा, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र द्वारा मुद्रित, 5/214। 3. रद्द अल-मुह्तार, अशरिबा अध्याय का अंत, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र द्वारा मुद्रित, 5/377।

पृष्ठ 506 का 761

وذلك میتة فالاباحة فتوی والتحرز تقوی اھ کہاتے ہیں اور یہ مردار ہوتا ہے پس فتوی کے اعتبار سے وہ مباح ہے لیکن تقوی یہ ہے کہ اجتناب کرے اھ ملخصا قول اباحت سے مراد وہ ہے جس میں گناہ نہ ہو اور تقوی سے مراد شبہات سے بچنا ہے پس سمجھ لو۔ (ت) ملخصا اقول: واراد بالاباحة ما لا اثم فیه وبالتقوی الرعة فافهم۔ فائدة جلیلة: یقول العبد الضعیف لطف به المولی اللطیف اعلم ان هذا الذی جزمنا به وعولنا علیه فیما مر من ان المکروه تنزیها لیس من الاثم في شئ لا کبیرة ولا صغیرة ولا یستحق العبد به معاقبة مالا کثیرة ولا یسیرة هو الحق الناصع الذي لا محید منه وبه صرح غیر واحد من العلماء ففي حظر ردالمحتار تحت قوله اما المکروه کراهة تنزیه فالی الحل اقرب اتفاقا بمعنی انه لا یعاقب فاعله اصلا لکن یثاب تارکه ادنی ثواب تلویح اھ عظیم فائدہ: بندہ ضعیف، اس پر لطف و کرم کا مالک رحم فرمائے، کہتا ہے جان لو جو کچھ پہلے گزر چکا ہے اور اس پر ہم نے جزم اور بھروسا کیا وہ یہ ہے کہ مکروہ تنزیہی پر صغیرہ، کبیرہ کوئی گناہ نہیں اور اس سے بندہ کسی قسم کی سزا کا مستحق نہیں ہوتا نہ زیادہ اور نہ ہی کم کا، یہی واضح حق ہے جس سے علیحدگی اختیار نہیں کی جا سکتی اور معتمد علماء نے اس کی تصریح کی ہے ردالمحتار کے باب الحظر میں اما المکروہ کراھة تنزیة کے تحت ہے کہ بالاتفاق حلّت کے زیادہ قریب ہے یعنی اس کے مرتکب کو بالکل عذاب نہیں ہوگا۔ لیکن تارک کو کچھ نہ کچھ ثواب ملے گا، تلویح اھ اقول : والی الحل اقرب یعنی الاباحة والافالحل المقابل للحرمة ثابت لاشك وفیه آخر الاشربة عن العلامة ابي السعود المکروه تنزیها یجامع الاباحة اھ اقول : حلت کے زیادہ قریب ہونے سے مراد اباحت ہے ورنہ وہ حلّت جو حرمت کے مقابلے میں ہے ثابت ہے اس میں کوئی شک نہیں، اور اس میں اشربہ کے آخر میں علامہ ابوالسعود سے نقل کیا ہے کہ مکروہ تنزیہی اباحت کے ساتھ جمع ہوتی ہے اھ (ت) اقول :

یعنی الاساغة وعدم الحظر ونفی الحرج وسلب الحجر والا فاستواء الطرفین یباین ترجح احد الجانبین

ولو اقول : اس سے جائز، غیر ممنوع، حرج کی نفی اور رکاوٹ کا سلب مراد ہے ورنہ دونوں طرفوں کا برابر ہونا ایک جانب کی ترجیح کے خلاف ہے اگرچہ

1. نصاب الاحتساب
2. ردالمحتار کتاب الحظر والاباحة مطبوعه مصطفی البابی مصر ۵/۲۱۴
3. ردالمحتار آخر باب الاشربة مطبوعه مصطفی البابی مصر ۵/۳۷۷

Fatawa Rizvia - Volume 4

[Arabic Section]: ...without intent. In the discussion of prayer, it appears that he intended by 'permissible' (mubah) that which is not prohibited, so it does not contradict Makruh Tanzih (slight dislike) [1]. - End of quote. And in 'Sharh al-Tawali', under the discussion of 'Ismah (sinlessness): Leaving the better option (tark al-awla) is not a sin. Thus, doing what is better and its opposite are both equal in being permissible actions [2]. - End of quote. I say: The meaning is what we mentioned, namely, concession (rukhsah) and the absence of strictness expressed by the phrase 'no harm in it' (la ba'sa bihi). And you know that if it were a sin, it would not be combined with permissibility, for no sin is permissible. It would have been among those things that are prohibited, for every sin, even if it is a minor one (saghirah), is forbidden. And it would not have been correct to express it by 'no harm in it' because in every sin there is 'harm' (ba's). Nor would it have been correct to assert the negation of punishment for it, for it is established in the creeds that punishment for minor sins is possible. Yes, the scholars have clarified that every Makruh Tahrimi (prohibitively disliked action) is among the minor sins [3]—as mentioned in the section on prayer in 'Radd al-Muhtar' from 'al-Bahr [al-Ra'iq]'. The author of 'al-Bahr al-Ra'iq' wrote in some of his treatises, and this is what is understood from the words of others on this point. However, the foot of some famous contemporaries [note 'e'] slipped, as they claimed that Makruh Tanzih is a minor sin, and if persisted in...

[Middle Note 'e']: Arabic: Note 'e': meaning Maulana Abdul Hayy al-Lucknowi in a treatise on smoking tobacco (Shurb al-Dukhan) (12) from him (M). Urdu: Meaning a slip occurred by Maulana Abdul Hayy al-Lucknowi in his treatise on smoking tobacco. (T)

[Urdu Section]: ...without intent. And in the discussion of prayer within it: "The apparent meaning is that by permissible is meant what is not prohibited, so it will not be contrary to Makruh Tanzih." - End of quote. In the discussion of 'Ismah in 'Sharh al-Tawali', it is stated that leaving the better option is not a sin, thus the better and its opposite act are equal in being permissible. - End of quote. I say: What we have mentioned means concession and absence of strictness, which is expressed as 'la ba'sa bihi' (no harm in it). And you know that if it were a sin, it would not be joined with permissibility because no sin is permissible, and it would be among those that are forbidden because every sin, whether small, is forbidden. And its expression with 'la ba'sa bihi' would not have occurred because there is a problem/harm in every sin, and they would not have asserted the negation of punishment because it is proven in

the creeds that punishment for minor sins is possible. Yes, the scholars have made it clear that every Makruh Tahrimi is from the minor sins, as quoted from 'Bahr al-Ra'iq' in the mention of prayer in 'Radd al-Muhtar'. The author of 'Bahr al-Ra'iq' wrote in some of his treatises; at this point, the same benefit is obtained from the words of others too. Some famous people from the scholars of the era (for example...

[Footnotes]: 1. Radd al-Muhtar, end of the chapter on drinks, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 5/427. 2. Sharh al-Tawali. 3. Radd al-Muhtar, section: Makruh Tahrimi is from minor sins, H.M. Saeed Company Karachi, 1/456.

फ़तावा रिज़विया - भाग 4

[अरबी अनुभाग]: ...बिना इरादे के। नमाज़ की चर्चा में, यह प्रतीत होता है कि 'मुबाह' (अनुमेय) से उनका अभिप्राय वह है जो वर्जित नहीं है, इसलिए यह मकरूह तंज़ीही (हल्की नापसंदगी) के विपरीत नहीं है [1]। - उद्धरण समाप्त। और 'शरह अल-तवाली' में 'इस्मत' (पापहीनता) की चर्चा के अंतर्गत: बेहतर विकल्प को छोड़ना (तर्क अल-औला) पाप नहीं है। अत; बेहतर कार्य करना और उसका विपरीत, अनुमेय कार्य होने में समान हैं [2]। - उद्धरण समाप्त। मैं कहता हूँ: इसका अर्थ वही है जो हमने उल्लेख किया है, यानी रियायत (रुख़सत) और सख्ती की कमी जिसे 'इसमें कोई हर्ज नहीं' (ला बासा बिही) वाक्यांश द्वारा व्यक्त किया गया है। और आप जानते हैं कि यदि यह पाप होता, तो इसे अनुमति (मुबाह) के साथ नहीं जोड़ा जाता, क्योंकि कोई भी पाप अनुमेय नहीं है। यह उन चीज़ों में से होता जो वर्जित हैं, क्योंकि हर पाप, चाहे वह छोटा (सग़ीरा) ही क्यों न हो, वर्जित है। और इसे 'इसमें कोई हर्ज नहीं' के रूप में व्यक्त करना सही नहीं होता क्योंकि हर पाप में हर्ज/नुकसान होता है। न ही इसके लिए सज़ा के अभाव का दावा करना सही होता, क्योंकि अक़ीदों (सिद्धांतों) में यह स्थापित है कि छोटे पापों पर सज़ा संभव है। हाँ, विद्वानों ने स्पष्ट किया है कि हर मकरूह तहरीमी (कठोरता से नापसंद) छोटे पापों में से है [3]—जैसा कि 'रद्द अल-मुह्तार' में नमाज़ के अध्याय में 'अल-बहर [अल-राईक़]' से उद्धृत है। 'अल-बहर अल-राईक़' के लेखक ने अपने कुछ शोध-पत्रों में ऐसा लिखा है, और दूसरों के शब्दों से भी इसी बात का बोध होता है। हालाँकि, कुछ समकालीन प्रसिद्ध विद्वानों [नोट 'e'] का पैर फिसल गया, क्योंकि उन्होंने दावा किया कि मकरूह तंज़ीही एक छोटा पाप है, और यदि इस पर ज़ोर दिया जाए...

[मध्य नोट 'e']: अरबी: नोट 'e': यानी मौलाना अब्दुल हई लखनवी ने धूम्रपान (शर्ब अल-दुखान) पर अपने एक शोध-पत्र में (12) (M)। उर्दू: यानी मौलाना अब्दुल हई लखनवी से धूम्रपान पर अपने शोध-पत्र में चूक हुई। (T)

[उर्दू अनुभाग]: ...बिना इरादे के। और इसी में नमाज़ की चर्चा में है: "ज़ाहिर यह है कि मुबाह से मुराद वह है जो मना न हो, पस वह कराहत तंज़ीही के मुनाफ़ी (विपरीत) न होगा।" - उद्धरण समाप्त। 'शरह अल-तवाली' की बहस 'इस्मत' में है कि औला का छोड़ना गुनाह नहीं है, पस औला और उसका मुक़ाबिल कार्य मुबाह होने में बराबर हैं। - उद्धरण समाप्त। मैं कहता हूँ: जो कुछ हमने ज़िक्र किया है उसका मतलब रुख़सत (रियायत) और अदम-ए-तशदीद (सख्ती की कमी) है जिसे 'ला बासा बिही' से ताबीर (व्यक्त) किया गया है। और आप जानते हैं कि अगर वह गुनाह होता तो मुबाह

के साथ जमा न होता क्योंकि कोई गुनाह मुबाह नहीं है, और वह उनमें से होता जो ममनू (वर्जित) हैं क्योंकि हर गुनाह चाहे वह छोटा ही हो ममनू है। और 'ला बासा बिही' के साथ उसकी ताबीर न होती क्योंकि हर गुनाह में हर्ज है, और वे अज़ाब की नफ़ी (नकारने) का जज़्म (दृढ़ता) न करते क्योंकि अक़ायद (सिद्धांतों) में सग़ीरा गुनाहों पर अज़ाब का जायज़ होना साबित है। हाँ, उलमा (विद्वानों) ने वाज़ेह (स्पष्ट) किया है कि हर मकरूह-ए-तहरीमी सग़ायर (छोटे पापों) में से है जैसा कि 'रद्द अल-मुह्तार' में नमाज़ के ज़िक्र में 'बहर अल-राईक़' से नक़्ल किया। साहिब-ए-'बहर अल-राईक़' ने अपने बाज़ (कुछ) रसाईल (लेखों) में लिखा है, इस मक़ाम पर दूसरों के कलिमात (शब्दों) से भी इसी बात का फ़ायदा हासिल होता है। बाज़ उलमा-ए-अस्र (समकालीन विद्वानों) में से बाज़ मशहूर हज़रात (मसलन...

[पाद टिप्पणियाँ]: 1. रद्द अल-मुह्तार, पेय पदार्थों के अध्याय का अंत, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, 5/427। 2. शरह अल-तवाली। 3. रद्द अल-मुह्तार, मकरूह तहरीमी के छोटे पापों में से होने के विषय में, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/456।

पृष्ठ 507/761

[عربی حصہ]: دون عزم وفيه من الصلاة الظاهر انه اراد بالمباح مالا يمنع فلا ينا في كراهة التنزيه ١ اه، وفي شرح الطوالع من بحث العصمة ترك الاولى ليس بذنب فالاولى ومايقابله يشتركان في اباحة الفعل ٢ اه، اقول: والمعنى ما ذكرنا اعنى الرخصه وعدم التشديد المعبر عنه بنفي البأس وانت تعلم ان لو كان اثما لما جامع الاباحة اذ لا شيئ من الاثم بمباح ولكان مما يمنع فان كل اثم ولو صغيرة محظور ولما جاز التعبير عنه بلا بأس به اذ ما من اثم إلا وفيه بأس ولما ساغ الجزم بنفي العقاب عليه فقد ثبت في العقائد تجويز العقاب على الصغائر نعم قد افصح العلماء ان كل مكروه تحريما من الصغائر ٣۔ كما في صلاة ردالمحتار عن البحر صاحب البحر في بعض رسائله وهو المستفاد من كلمات غيره في هذا المقام ۔ وقد زلت قدم بعض عه المشاهير من ابناء العصر فزعم ان المكروه تنزيها صغيرة فاذا اصر

[درمیانی حاشیہ عہ]: عربی: عه : يعني المولوي عبدالحي اللكنوي في رسالة في شرب الدخان ١٢ منه (م) اردو: یعنی مولوی عبدالحئی لکھنوی سے اپنے رسالہ فی شرب الدخان میں لغزش ہوئی۔ (ت)

[اردو حصہ]: قصد نہ ہو۔ اور اسی میں نماز کی بحث میں ہے "ظاہر یہ ہے کہ مباح سے مراد وہ ہے جو منع نہ ہو پس وہ کراہت تنزیہی کے منافی نہ ہوگا" اھ شرح الطوالع کی بحث عصمت میں ہے کہ اولیٰ کا چھوڑنا گناہ نہیں پس اولیٰ اور اس کا مقابل فعل کے مباح ہونے میں برابر ہیں اھ، اقول: جو کچھ ہم نے ذکر کیا ہے اس کا مطلب رخصت اور عدم تشدید ہے جس کو "لا باس به" سے تعبیر کیا گیا ہے اور تُو جانتا ہے کہ اگر وہ گناہ ہوتا تو مباح کے ساتھ جمع نہ ہوتا کیونکہ کوئی گناہ مباح نہیں، اور وہ ان میں سے ہوتا جو ممنوع ہیں کیونکہ ہر گناہ چاہے وہ چھوٹا ہی ہو ممنوع ہے اور "لا باس به" کے ساتھ اس کی تعبیر نہ ہوتی کیونکہ ہر گناہ میں حرج ہے اور وہ عذاب کی نفی کا جزم نہ کرتے کیونکہ عقائد میں صغیرہ گناہوں پر عذاب کا جائز ہونا ثابت ہے۔ ہاں علماء نے

واضح کیا ہے کہ ہر مکروہِ تحریمہ صغائر سے ہے جیسا کہ ردالمحتار میں نماز کے ذکر میں بحر الرائق سے نقل کیا صاحب البحر الرائق نے اپنے بعض رسائل میں لکھا ہے اس مقام پر دوسروں کے کلمات سے بھی اسی بات کا فائدہ حاصل ہوتا ہے۔ بعض علماء عصر میں سے بعض مشہور حضرات (مثلاً

[فٹ نوٹ]: 1 ردالمختار آخر باب الاشربة، مطبوعہ مصطفی البابی مصر، ۵/ ۴۲۷ 2 شرح الطوالع 3 ردالمختار مطلب المکروہ تحریما من الصغائر مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۴۵۶/۱

Fatawa Razawiyya Volume Four

It becomes a major sin as he explicitly stated in a treatise of his, and we have discussed this objective in detail in another treatise. And Allah is the One who grants success.

Maulana Abdul Hayy Lucknowi (mercy of Allah be upon him) made a slip. He thought that Makruh Tanzihi (mildly disliked) is a minor sin which becomes a major sin if repeated frequently, as he wrote in his treatise (Shurb al-Dukhan). We have fully discussed this matter in another treatise. And Allah Almighty alone is the One who grants success. (T)

Eighth Introduction: The certainty of impurity and prohibition in a type or class of thing due to contact with filth or mixing with the prohibited can only lead to the necessity of avoiding every individual instance of it when it is known and verified that this contact and mixing is general and inclusive. For example, if it is proven regarding a certain thing that alcohol or pig fat is added to it and the manufacturers are committed to this practice, then its use is completely impermissible and prohibited. In such a case, the possibility that "we did not see this specific instance being made, nor did we receive reliable news specifically about it, maybe it wasn't added" will not be entertained. Because when the commitment is known to be general, such a possibility is of the kind that the heart does not accept or pay attention to, and considers it completely weak and fading. As we have said before, such a possibility is of no use, nor does it demote the dominant opinion (Zann Ghalib) to the level of equality with certainty. Thus, the certainty of original purity is removed and lost by this dominant opinion. Unless the safety of this specific instance becomes clear through a similar certainty, then indeed a ruling of its permissibility will be given. Therefore, scholars have stated that Persian silk (deebaj) is impure; praying in it is simply impermissible because they mix urine to increase its shine and luster, and then they do not wash it in a way that would remove the color.

[Arabic]: In Durr al-Mukhtar: The silk (deebaj) of the Persians is impure because they put urine in it for its luster [1]. And in Al-Hilya from...

[Urdu]: It is stated in Durr al-Mukhtar that the silk (deebaj - silk cloth) of the Persians is impure because to create luster in it, urine [is used]...

[Arabic]: Note: Then, by the grace of Allah Almighty, we composed a separate treatise on this issue, which we named "Jumal Mujliyah an al-Makruh 1304 AH Tanziha Laysa bi-Ma'siyah" (Clear sentences on Makruh Tanzihi not being a sin). 12 from him (M).

[Urdu]: By the grace of Allah Almighty, we then wrote a separate treatise about this issue, the name of which we kept as "Jumal Mujliyah an al-Makruh Tanziha Laysa bi-Ma'siyah". 12 from him (T).

---

1 Durr al-Mukhtar, Chapter on Istinja, printed by Mujtabai Delhi, 1/75. Page 508 of 761

यह एक बड़ा पाप बन जाता है जैसा कि उन्होंने अपनी एक किताब में स्पष्ट किया है, और हमने इस उद्देश्य पर एक अन्य पुस्तक में विस्तार से चर्चा की है। और अल्लाह ही सफलता देने वाला है।

मौलाना अब्दुल हई लखनवी (अल्लाह की उन पर रहमत हो) से एक चूक हुई। उन्होंने सोचा कि मकरूह तंज़ीही (हल्का नापसंद) एक छोटा पाप है जो बार-बार करने से बड़ा पाप बन जाता है, जैसा कि उन्होंने अपनी पुस्तक (शर्ब अद-दुखान) में लिखा है। हमने एक अन्य पुस्तक में इस विषय पर पूरी बात की है। और अल्लाह तआला ही तौफीक देने वाला है। (त)

आठवीं प्रस्तावना: किसी वस्तु के प्रकार या श्रेणी में अपवित्रता या निषिद्ध चीज़ के मेल या मिश्रण के कारण अपवित्रता और निषेध का निश्चय, उसके हर व्यक्तिगत उदाहरण से बचने का कारण तभी बन सकता है जब यह ज्ञात और प्रमाणित हो कि यह मेल और मिश्रण सामान्य और व्यापक है। उदाहरण के लिए, यदि किसी चीज़ के बारे में यह सिद्ध हो जाए कि उसमें शराब या सूअर की चर्बी डाली जाती है और बनाने वाले इसके प्रति प्रतिबद्ध हैं, तो उसका उपयोग पूरी तरह से नाजायज़ और हराम है। वहां इस संभावना की कोई गुंजाइश नहीं दी जाएगी कि "हमने इस विशेष टुकड़े को बनते हुए नहीं देखा, न ही इसके बारे में कोई विश्वसनीय समाचार मिला, हो सकता है इसमें न डाला गया हो।" क्योंकि जब सामान्य रूप से प्रतिबद्धता ज्ञात हो, तो यह संभावना उसी श्रेणी की है जिसे हृदय स्वीकार नहीं करता और न ही उस पर ध्यान देता है, और उसे बिल्कुल कमज़ोर और मिटा हुआ मानता है। जैसा कि हम पहले कह चुके हैं कि ऐसी संभावना किसी काम की नहीं है, न ही वह 'ज़न्न-ए-ग़ालिब' को यकीन के बराबर ला सकती है। अतः मूल पवित्रता का निश्चय इस प्रबल धारणा से समाप्त हो गया। हाँ, यदि उस विशेष वस्तु की शुद्धता किसी ऐसे ही निश्चय से स्पष्ट हो जाए, तो अवश्य उसके जायज़ होने का आदेश दिया जाएगा। इसीलिए विद्वानों ने फरमाया कि फारसी रेशम (दीबाज) नापाक है; उसमें नमाज़ पढ़ना केवल इसलिए नाजायज़ है क्योंकि वे उसकी चमक बढ़ाने के लिए पेशाब मिलाते हैं और फिर उसे इस तरह नहीं धोते कि रंग निकल जाए।

[अरबी]: दुर्रुल मुख़्तार में है: फारस के लोगों का रेशम (दीबाज) नापाक है क्योंकि वे उसमें चमक लाने के लिए पेशाब डालते हैं [१]। और अल-हिलिया में ... से

[अरबी]: नोट: फिर अल्लाह तआला की तौफीक से हमने इस मसले पर एक स्वतंत्र किताब लिखी जिसका नाम हमने "जुमल मुजलिया अन अल-मकरूह १३०४ हिजरी तंज़ीहन लैसा बि-म'सिया" रखा। १२ उन्हीं से (म)

[उर्दू]: दुर्रुल मुख़्तार में है कि फारस के लोगों का दीबाज (रेशमी कपड़ा) नापाक है क्योंकि वे इसमें चमक पैदा करने के लिए पेशाब...

[उर्दू]: अल्लाह तआला की तौफीक से फिर हमने इस मसले के बारे में एक मुस्तकिल (स्वतंत्र) रिसाला लिखा जिसका नाम "जुमल मुजलिया अन अल-मकरूह तंज़ीहन लैसा बि-म'सिया" रखा है। १२ उन्हीं से (त)

---

१ दुर्रुल मुख़्तार, फ़स्ल अल-इस्तिंजा, मुजतबाई दिल्ली द्वारा मुद्रित १/ ७५ पृष्ठ ५०८/ ७६१

یکون کبیرۃ کما نص علیہ فی رسالۃ لہ وقد استوفینا الکلام علی ھذا المرام فی رسالۃ اخری واللہ الموفق۔

مولانا عبدالحی لکھنوی رحمہ اللہ سے لغزش ہوئی۔ اور انہوں نے گمان کیا کہ مکروہ تنزیہی صغیرہ گناہ ہے جو بار بار کرنے سے گناہ کبیرہ بن جاتا ہے جیسا کہ انہوں نے اپنے رسالے (شرب الدخان) میں لکھا ہے ہم نے ایک دوسرے رسالے میں اس مقصد پر پورا کلام کیا ہے۔ اور اللہ تعالٰی ہی توفیق دینے والا ہے۔ (ت)

مقدمہ ثامنہ: کسی شے کی نوع و صنف میں بوجہ ملاقات نجس یا اختلاط حرام نجاست و حرمت کا تیقن اُس کے ہر فرد سے منع و احتراز کا موجب اُسی وقت ہو سکتا ہے جب معلوم و محقق ہو کہ یہ ملاقات و اختلاط بوجہ عموم و شمول ہے مثلاً جس شے کی نسبت ثابت ہو کہ اس میں شراب یا شحم خنزیر پڑتی ہے اور بنانے والوں کو اس کا التزام ہے تو اس کا استعمال کلیتہً ناجائز و حرام ہے اور وہاں اس احتمال کو گنجائش نہ دیں گے کہ ہم نے یہ فرد خاص مثلاً خود بنتے ہوئے نہ دیکھی نہ دیکھی نہ خاص اس کی نسبت معتبر خبر پائی ممکن کہ اس میں نہ ڈالی گئی ہو کہ جب علی العموم التزام معلوم تو یہ احتمال اُسی قبیل سے ہے جسے قلب قابل قبول و التفات نہیں جانتا اور بالکل متضائل و مضمحل مانتا ہے اور ہم پہلے کہہ چکے کہ ایسا احتمال کچھ کار آمد نہیں نہ وہ ظن غالب کو مساوات یقین سے نازل کرے تو اصل طہارت کا یقین اس غلبہ ظن سے ذاہب و زائل ہو گیا مگر یہ کہ اس فرد خاص کی محفوظی کسی ایسے ہی یقین سے واضح ہو جائے تو البتہ اس کے جواز کا حکم دیا جائے گا ولہذا علماء نے فرمایا دیبائے فارسی ناپاک ہے اُس سے نماز محض ناجائز کہ وہ اس کی چمک بھڑک زیادہ کرنے کو پیشاب کا خلط کرتے ہیں اور پھر دھوتے یوں نہیں کہ رنگ کٹ جائے گا ۔

فی الدر المختار دیباج اھل فارس نجس لجعلھم فیہ البول لبریقہ ۱ اہ وفی الحلیۃ عن

دُر مختار میں ہے کہ اہل فارس کا دیباج (ریشمی کپڑا) ناپاک ہے کیونکہ وہ اس میں چمک پیدا کرنے کیلئے پیشاب

عہ : ثم الفنا فیہ بتوفیق اللہ تعالی رسالۃ مستقلۃ سمیناھا جمل مجلیہ ان المکروہ ۱۳۰۴ھ تنزیھا لیس بمعصیہ ۱۲ منہ (م)

اللہ تعالیٰ کی توفیق سے پھر ہم نے اس مسئلہ کے بارے ایک مستقل رسالہ لکھا جس کا نام جمل مجلیہ ان المکروہ تنزیہا لیس بمعصیہ رکھا ہے ۱۲ منہ (ت)

---

1 در مختار فصل الاستنجاء مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۷۵ Page 508 of 761

Fatawa Rizvia - Volume 4

Arabic Text	Urdu Translation
Al-Bada'i states: Regarding the silk (dibaj) woven by the people of Persia, prayer is not permissible in it because they use urine during the weaving process, claiming it enhances its beauty. Furthermore, they do not wash it because washing ruins it.[1]	They use it [urine]. And in *Al-Hilya*, it is quoted from *Al-Bada'i* that they [the scholars] said: The silk woven by the Persians is not permissible to pray in because they use urine while weaving it, believing it increases its adornment. Then they do not wash it because it gets ruined by washing, etc. (T)

And if it is not so, but only established that such things occur occasionally, and there is no specific characteristic in being impure or forbidden that makes them intentionally adhere to it, then based on this, the ruling of absolute prohibition and impurity is not permissible at all. Here, those possibilities will certainly be considered: that when there is no generality, it is possible that the specific item we wish to use is among the protected ones. The original certainty of purity and lawfulness makes doubts and assumptions unworthy of consideration. Look, do we not have complete certainty regarding the food, clothing, and vessels of non-believers that there are undoubtedly impure things among them? Yet, what effect did that certainty have? Why was the use of those items not made absolutely forbidden? The reason is the same: general impurity is not known regarding their food, clothing, and vessels. And when there are also pure ones among them, even if few, how do we know that the specific item we wish to use is not one of them?

Arabic Text	Urdu Translation
In *Al-Ihya*: The probability (prevalence) that is not supported by a sign related to the specific thing under consideration should be ignored.[2]	In *Ihya al-Ulum* it is stated: That probability should be set aside which is not attributed to a sign having a connection with the particular thing being considered. (T)

Listen more clearly: It is explicitly stated in *Majma' al-Fatawa* and others that in our country, the skins that are tanned—they neither wash the blood from their necks nor do they avoid impurities during the tanning process. Then they spread them out on impure grounds and do not wash them afterwards (see with what degree of clarity and explicitness the occurrence of impurity is described regarding the type). Despite this, a decisive ruling was given that they are pure without any hesitation. Use their

dry or wet forms to make socks, book bindings, water skins, or buckets; there is no harm.

Arabic Text	Urdu Translation
In *Al-Tariqa* [it is quoted] from him, and in it [the same source], in *Al-Ghunya* and others from *Al-Qunya*: The skins that are tanned in our lands, whose place of slaughter is not washed, nor are impurities avoided...	In *Al-Tariqa al-Muhammadiyya*, it is quoted from it (*Majmu'a al-Fatawa*), and in it, it is stated that in *Al-Ghunya* etc., it is quoted from *Al-Qunya* that: In our cities, the skins that are tanned...

[1] *Bada'i al-Sana'i*, Section explaining the quantity by which a place becomes impure, etc., H.M. Saeed Company, Karachi, 1/81. [2] *Ihya Ulum al-Din*, Second part regarding doubts, printed at Al-Mashhad Al-Husayni, Cairo, 2/106.

फ़तावा रज़विया - जिल्द चौथी

अरबी पाठ

अल-बदाइ' में कहा गया है: पारस के लोगों द्वारा बुने गए रेशम (दीबाज) के बारे में, इसमें नमाज़ जायज़ नहीं है क्योंकि वे बुनाई के दौरान इसमें पेशाब का उपयोग करते हैं और दावा करते हैं कि इससे इसकी सुंदरता बढ़ती है। फिर वे इसे धोते नहीं हैं क्योंकि धोना इसे खराब कर देता है।[1]

उर्दू अनुवाद

वे इसका [पेशाब का] उपयोग करते हैं। और अल-हिलिया में अल-बदाइ' से उद्धृत है कि उन्होंने कहा: पारसियों द्वारा बुना गया रेशम नमाज़ के लिए जायज़ नहीं है क्योंकि वे इसे बुनते समय पेशाब का उपयोग करते हैं, यह मानते हुए कि इससे इसकी सजावट बढ़ती है। फिर वे इसे धोते नहीं हैं क्योंकि धोने से यह खराब हो जाता है आदि। (T)

और यदि ऐसा नहीं है, बल्कि केवल इतना प्रमाणित है कि ऐसा भी होता है, और अपवित्र और निषिद्ध होने में कोई ऐसी विशिष्टता नहीं है जिसके कारण वे जानबूझकर इसे अपनाते हैं, तो इस आधार पर पूर्ण रूप से निषेध और अपवित्रता का आदेश देना कतई जायज़ नहीं है। यहाँ वे संभावनाएँ निश्चित रूप से सुनी जाएँगी कि जब व्यापकता नहीं है, तो संभव है कि जिस वस्तु का हम उपयोग करना चाहते हैं, वह सुरक्षित वस्तुओं में से हो। पवित्रता और वैधता का मूल निश्चित होना संदेहों और अनुमानों को विचार के अयोग्य बना देता है। देखो, क्या हमें गैर-मुस्लिमों के भोजन, वस्त्र और बर्तनों के बारे में पूर्ण विश्वास नहीं है कि उनमें निस्संदेह अपवित्र भी हैं? फिर उस निश्चितता ने क्या काम किया? उन वस्तुओं का उपयोग पूर्णतः निषिद्ध क्यों नहीं हुआ? कारण वही है: उनके भोजन, वस्त्र और बर्तनों में सामान्य अपवित्रता ज्ञात नहीं है। और जब उनमें पवित्र वस्तुएँ भी हैं, चाहे वे कम ही क्यों न हों, तो हमें कैसे पता चलेगा कि जिस वस्तु का हम उपयोग करना चाहते हैं, वह उनमें से एक नहीं है?

अरबी पाठ

अल-इहया में: उस प्रबलता (संभावना) को नज़रअंदाज़ कर दिया जाना चाहिए जो किसी ऐसे चिह्न पर आधारित न हो जिसका संबंध उस विशिष्ट वस्तु से हो जिस पर विचार किया जा रहा है।[2]

उर्दू अनुवाद

इहया उलूम अल-दीन में है: उस प्रबलता को छोड़ दिया जाना चाहिए जो किसी ऐसे चिह्न की ओर संकेत न करती हो जिसका संबंध उस निश्चित चीज़ से हो जिस पर विचार किया जा रहा है। (T)

और अधिक स्पष्ट रूप से सुनें: मजमा अल-फ़तावा आदि में स्पष्ट किया गया है कि हमारे देश में जो खालें कमाई (तैयार की) जाती हैं, न तो उनकी गर्दनों से खून धोया जाता है और न ही तैयारी के दौरान अपवित्रता से बचा जाता है। फिर उन्हें वैसी ही अपवित्र ज़मीनों पर डाल दिया जाता है और बाद में धोया भी नहीं जाता (देखें कि उस प्रकार की खालों के बारे में अपवित्रता की घटना का कितनी स्पष्टता और विस्तार से वर्णन किया गया है)। इसके बावजूद, यह स्पष्ट आदेश दिया गया कि वे बिना किसी संकोच के पवित्र हैं। उनकी सूखी या गीली खाल से मोज़े बनाएँ किताबों की जिल्दें बनाएँ पानी पीने के लिए मशक या डोल बनाएँ कोई हर्ज नहीं है।

अरबी पाठ

अल-तरीका में उनसे, और उसी में, अल-ग़ुनिया आदि में अल-कुनिया से: वे खालें जो हमारे देशों में कमाई जाती हैं, और उनके ज़ब्ह की जगह को धोया नहीं जाता और न ही अपवित्रता से बचा जाता है...

उर्दू अनुवाद

अल-तरीका अल-मुहम्मदिया में इससे (मजमुआ अल-फ़तावा) उद्धृत है, और उसी में है कि ग़ुनिया आदि में कुनिया से उद्धृत है कि: हमारे शहरों में जिन खालों को कमाया जाता है...

---

[1] बदाइ' अल-सनाइ', खंड: उस मात्रा के वर्णन में जिससे स्थान अपवित्र हो जाता है आदि, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/81। [2] इहया उलूम अल-दीन, भाग दो, संदेह के बारे में, अल-मशहद अल-हुसैनी द्वारा मुद्रित, काहिरा, 2/106।

| البدائع قالوا فی الدیباج الذی ینسجه اهل فارس لا تجوز الصلاة فیه لانهم یستعملون فیه البول عند النسج ویزعمون انه یزید فی تزینه ثم لا یغسلونه فأن الغسل یفسده ۱ اهـ | استعمال کرتے ہیں اھ، اور حلیہ میں بدائع سے منقول ہے انہوں نے کہا اہل فارس جو دیباج بنتے ہیں اس میں نماز جائز نہیں کیونکہ وہ بنتے وقت اس میں پیشاب استعمال کرتے ہیں اور ان کا خیال ہے کہ اس سے اس کی زینت میں اضافہ ہوتا ہے پھر وہ اسے دھوتے نہیں کیونکہ دھونے سے وہ خراب ہو جاتا ہے الخ (ت) |

اور اگر ایسا نہیں بلکہ صرف اتنا محقق کہ ایسا بھی ہوتا ہے نہ کہ خاص ناپاک و حرام میں کوئی خصوصیت ہے جس کے باعث قصداً اس کا التزام کرتے ہیں تو اس بنا پر ہر گز ہر گز حکم تحریم و تنجیس علی الاطلاق روا نہیں اور یہاں وہ احتمالات قطعاً مسموع ہوں گے کہ جب عموم نہیں تو جس فرد کا ہم استعمال چاہتے ہیں ممکن کہ افراد محفوظ سے ہو اور اصل متیقن طہارت و حلت تو شکوک و ظنون نا قابل عبرت۔ دیکھو کیا ہم کو مطعوم و ملبوس و ظروف کفار کی نسبت یقین کامل نہیں کہ بے شبہ ان میں ناپاک بھی ہیں پھر اس یقین نے کیا کام دیا اور ان اشیاء کا استعمال مطلق حرام کیوں نہ ہوا تو وجہ وہی ہے کہ ان کے طعام و لباس و ظروف پر عموم نجاست معلوم نہیں اور جب ان میں طاہر بھی ہیں اگرچہ کم ہوں تو کیا معلوم کہ جس فرد کا ہم استعمال چاہتے ہیں ان میں سے نہیں۔

| فی الاحیاء الغالب الذی لا یستند الی علامة تتعلق بعین ما فیه النظر مطرح ۲ اهـ | احیاء العلوم میں ہے وہ غالب چھوڑ دیا جائے جو کسی ایسی علامت کی طرف منسوب نہ ہو جس کا اس معین چیز کے ساتھ تعلق ہے جس میں غور کیا جا رہا ہے اھ (ت) |

واضح تر سنیئے مجمع الفتاوی وغیرہ میں تصریح کی کہ ہمارے ملک میں جو کھالیں پکائی جاتی ہیں نہ ان کے گلوں سے خون دھوئیں نہ پکانے میں نجاستوں سے بچیں پھر ویسے ہی ناپاک زمینوں پر ڈال دیتے ہیں اور بعد کو دھوتے بھی نہیں (دیکھو نوع کی نسبت کس درجہ وضاحت و صراحت کے ساتھ وقوع نجاست بیان فرمایا) با اینہمہ حکم ناطق دیا کہ وہ بے دغدغہ پاک ہیں ان کے خشک وتر سے موزے بناؤ کتابوں کی جلدیں بناؤ پانی پینے کو مشک ڈول بناؤ کچھ مضائقہ نہیں۔

| فی الطریقة عنه وفیها فی الغنیة وغیرها عن القنیة الجلود التی تدبغ فی بلادنا ولا یغسل مذبحها ولا تتقی النجاسات | الطریقة المحمدیة میں اس (مجموعہ الفتاوی) سے منقول ہے اور اسی میں ہے کہ غنیہ وغیرہ میں قنیہ سے منقول ہے کہ ہمارے شہروں جن چمڑوں کو دباغت |

---

1 بدائع الصنائع فصل فی بیان مقدار مایصیر بہ المحل نجسا الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۸۱ 2 احیاء علوم الدین المشار الثانی للشبہۃ مطبوعہ المشہد الحسینی قاہرہ ۲/۱۰۶

Fatawa Rizvia, Volume 4

[Top Box] Arabic: In tanning it (hides), and throwing them on impure ground, and not washing them after the completion of tanning, they are pure. It is permissible to make shoes, book covers, water-skins, and buckets from them, whether wet or dry. (1) Urdu: Hides are treated and their slaughterhouses are not washed, nor is impurity avoided during the tanning process; rather, they are placed on impure ground and are not washed even after the tanning is complete. Despite this, they are pure; making shoes, book covers, water-skins, and buckets from them is permissible, whether they are wet or dry. (T)

[Main Body Text] Urdu: So in such a case, the Imams have given the ruling that each specific individual case should be observed, and the general certainty felt regarding a type should not be considered equal for all individuals. For example, we certainly know about the non-believers, especially the people of war (Ahl al-Harb), that they do not care about impurities and use whatever they find. Then, for a fur garment that comes tanned from the land of war (Dar al-Harb), the scholars say it should be examined. If it is verified that it was tanned with an impure substance, then prayer in it without washing is invalid; if it is proven to be from something pure, then it is definitely permissible; and if there is doubt, washing it is better, but its use is not considered a sin or forbidden.

[Second Box] Arabic: In 'al-Durr al-Mukhtar': Whatever comes from Dar al-Harb, such as squirrel fur, if its tanning with a pure substance is known, it is pure; or if with an impure substance, it is impure. If there is doubt, then washing it is better. (2) And the same is in 'al-Munyah' etc. Urdu: In 'Durr al-Mukhtar', it is stated: whatever comes from Dar al-Harb, like squirrel fur, if it is known that its tanning was done with a pure thing, it is pure; and if it was with an impure thing, it is impure. If there is doubt, washing it is better. The same is in 'Munyah' etc. (T)

[Third Section] Urdu: Similarly, the reviser of the school of thought, our master Imam Muhammad (may Allah be pleased with him), states: When a child puts their hand or foot in water, look at that specific child. If impurity is proven at the time of putting it in, then it is impure; if purity is apparent, then it is pure; and if nothing is clear, then it is merely recommended (Mustahab) to use other water. However, if one performs wudu (ablution) with it and prays, the prayer is undoubtedly valid.

[Fourth Box] Arabic: In 'Sirat al-Ahmadiyya' by Allama Muhammad al-Rumi al-Ahmadi, from 'al-Tatarkhaniyya', from the original work of Imam Muhammad (may Allah have

mercy on him): When a child puts his hand into a water jug or a large vessel, if it is known that his hand is pure... Urdu: In the book 'Sirat al-Ahmadiyya' by Muhammad Rumi Afandi, it is narrated from the original work (al-Mabsut) of Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) with reference to 'Tatarkhaniyya' that when a child puts his hand or foot in a water jug (lota, etc.), if it is known with certainty that his...

[Footnotes] 1. Al-Tariqah al-Muhammadiyyah with Al-Hadiqah al-Nadiyyah, Al-Saff al-Thani... Nuriya Rizvia, Faisalabad, 2/282 2. Dur al-Mukhtar, Kitab al-Taharah, Mujtabai Press, Delhi, 1/38

फतावा रज़विया, जिल्द 4

[ऊपरी बॉक्स] अरबी: खालों को पकाने (टैनिंग) और उन्हें अशुद्ध ज़मीन पर फेंकने, और टैनिंग पूरी होने के बाद उन्हें न धोने के मामले में, वे शुद्ध हैं। उनसे जूते, किताबों की जिल्द, मशक और डोल बनाना जायज़ है, चाहे वे गीले हों या सूखे। (1) उर्दू: खालों को पकाया जाता है और उनके बूचड़खानों को नहीं धोया जाता, और न ही टैनिंग के दौरान अशुद्धियों से बचा जाता है; बल्कि वे उन्हें अशुद्ध ज़मीन पर डालते हैं और टैनिंग पूरी होने के बाद भी नहीं धोते हैं। इसके बावजूद वे शुद्ध हैं; उनसे जूते बनाना, किताबों की जिल्द बनाना, मशक और डोल बनाना जायज़ है, चाहे वे गीले हों या सूखे। (त)

[मुख्य पाठ] उर्दू: तो ऐसी स्थिति में, इमामों ने यह नियम दिया है कि प्रत्येक विशिष्ट व्यक्ति के मामले को देखा जाना चाहिए, और किसी वर्ग के संबंध में जो सामान्य धारणा है उसे सभी व्यक्तियों के लिए समान नहीं माना जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, हम गैर-विश्वासियों, विशेष रूप से युद्धरत लोगों (अहल अल-हर्ब) के बारे में निश्चित रूप से जानते हैं कि उन्हें अशुद्धियों की परवाह नहीं है और वे जो कुछ भी पाते हैं उसका उपयोग करते हैं। फिर, एक खाल के कपड़े के लिए जो युद्ध क्षेत्र (दार अल-हर्ब) से पककर आता है, विद्वान कहते हैं कि उसे देखा जाना चाहिए। यदि यह सत्यापित हो जाए कि इसे किसी अशुद्ध चीज़ से पकाया गया है, तो बिना धोए इसमें नमाज़ पढ़ना नाजायज़ है; यदि यह किसी शुद्ध चीज़ से प्रमाणित हो जाए, तो यह निश्चित रूप से जायज़ है; और यदि संदेह हो, तो धोना बेहतर है, न कि इसका उपयोग पाप या वर्जित माना जाए।

[दूसरा बॉक्स] अरबी: 'अल-दुर्र अल-मुख्तार' में: दार अल-हर्ब से जो कुछ भी निकलता है, जैसे गिलहरी की खाल, यदि उसकी टैनिंग शुद्ध वस्तु से होना ज्ञात हो, तो वह शुद्ध है; या अशुद्ध वस्तु से, तो अशुद्ध है। यदि संदेह हो, तो उसे धोना बेहतर है। (2) और 'अल-मुन्याह' आदि में भी ऐसा ही है। उर्दू: 'दुर्र अल-मुख्तार' में लिखा है: जो कुछ दार अल-हर्ब से निकले, जैसे गिलहरी की खाल, अगर मालूम हो कि उसकी टैनिंग किसी शुद्ध चीज़ के साथ हुई है, तो वह शुद्ध है; और अगर अशुद्ध चीज़ के साथ हुई है, तो वह अशुद्ध है। अगर शक हो तो धोना बेहतर है। 'मुन्याह' वगैरह में भी इसी तरह है। (त)

[तीसरा खंड] उर्दू: इसी तरह, मज़हब के संशोधक, हमारे स्वामी इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) फरमाते हैं: जब बच्चा पानी में अपना हाथ या पैर डाल दे, तो उस विशिष्ट बच्चे को देखें।

अगर डालते समय अशुद्धता साबित हो जाए, तो अशुद्ध है; अगर शुद्धता ज़ाहिर हो, तो शुद्ध है; और अगर कुछ भी स्पष्ट न हो, तो केवल मुस्तहब (पसंदीदा) है कि दूसरे पानी का उपयोग करें। फिर भी, यदि कोई इससे वुज़ू कर ले और नमाज़ पढ़ ले, तो वह बिना किसी संदेह के जायज़ है।

[चौथा बॉक्स] अरबी: अल्लामा मुहम्मद अल-रूमी अल-अहमदी की 'सीरत अल-अहमदिया' में, 'अल-ततरीखानिया' से, इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर दया करे) की मूल कृति से उद्धृत है: जब बच्चा अपना हाथ पानी के जग या बड़े बर्तन में डालता है, यदि ज्ञात हो कि उसका हाथ शुद्ध है... उर्दू: मुहम्मद रूमी आफ़ंदी की किताब 'सीरत अल-अहमदिया' में 'ततरीखानिया' के हवाले से इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर दया करे) की असल (मबसूत) से उद्धृत है कि जब बच्चा अपना हाथ या पैर पानी के बर्तन (लोटा वगैरह) में डाले, अगर यकीन के साथ मालूम हो कि उसका...

[पाद लेख] 1. अल-तरीका अल-मुहम्मदिया मआ अल-हदीका अल-नदिया, अल-सफ़ अल-सानी... नूरिया रज़विया, फैसलाबाद, 2/282 2. दुर्र अल-मुख्तार, किताब अल-तहारत, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/38

[اوپری باکس] عربی: فی دبغہا ویلقونہا علی الارض النجسۃ ولا یغلسونہا بعد تمام الدبغ فہی طاہرۃ یجوز اتخاذ الخفاف منہا و غلاف الکتب والقرب والدلاء رطباً ویابساً 1 اہ اردو: دی جاتی ہے اور ان کے مذبح کو دھویا نہیں جاتا اور نہ ہی دباغت کے دوران نجاستوں سے اجتناب کیا جاتا ہے بلکہ وہ اسے ناپاک زمین پر ڈالتے ہیں اور دباغت مکمل ہونے کے بعد بھی نہیں دھوتے تو وہ پاک ہیں ان سے جوتا بنانا، کتابوں کی جلدیں مشک اور ڈول بنانا جائز ہے چاہے تر ہوں یا خشک اھ (ت)

[مرکزی عبارت] اردو: بس ایسی صورت میں ائمہ نے یہی حکم عطا فرمایا کہ ہر فرد خاص کو ملاحظہ کریں گے اور نوع کی نسبت جو اجمالی یقین ہوا اسے تمام افراد میں مساوی نہ مانیں گے مثلاً کفار خصوصاً اہل حرب کو ہم یقیناً جانتے ہیں کہ انہیں پروائے نجاست نہیں اور بیشک وہ جیسی چیز پاتے ہیں استعمال میں لاتے ہیں پھر وہ پوستین کہ دار الحرب سے پک کر آئے علما فرماتے ہیں اسے دیکھنا چاہے کہ اس کا پکنا نجس چیز سے تحقیق ہو تو بے دھوئے نماز ناجائز اور طاہر سے ثابت ہو تو قطعاً جائز اور شک رہے تو دھونا افضل نہ کہ استعمال گناہ و ممنوع ٹھہرے۔

[دوسرا باکس] عربی: فی الدر المختار ما یخرج من دار الحرب کسنجاب ان علم دبغہ بطاہر فطاہر او بنجس فنجس وان شک فغسلہ افضل اھ و مثلہ فی المنیۃ وغیرہا 2 اردو: در مختار میں ہے جو کچھ دار الحرب سے نکلے جیسے سنجاب اگر معلوم ہو کہ پاک چیز کے ساتھ اس کی دباغت ہوئی ہے تو پاک ہے اور ناپاک کے ساتھ ہوئی ہے تو ناپاک ہے اگر شک ہو تو دھونا افضل ہے اھ منیہ وغیرہ میں اس کی مثل ہے۔ (ت)

[تیسرا حصہ] اردو: یونہی خود منقح مذہب سیدنا امام محمد رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں۔ بچہ جب پانی میں اپنا ہاتھ یا پاؤں ڈال دے تو خاص اُس بچہ کو رکھ پاؤں دیکھیں اگر ڈالتے وقت نجاست ثابت ہو تو ناپاک اور پاکی ظاہر ہو تو طاہر اور کچھ نہ کھلے تو صرف مستحب ہے کہ اور پانی استعمال کریں اور اگر اسی سے وضو کر لے نماز پڑھ لے تاہم بے شبہ جائز۔

[چوتھا باکس] عربی: فی سیرۃ الاحمدیہ للعلامۃ محمد الرومی احمدی عن التاتار خانیۃ عن اصل الامام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ الصبی اذا دخل یدہ فی کوز ماء اور جلہ فان علم ان یدہ طاہرہ اردو: محمد رومی آفندی کی کتاب سیرت احمدیہ میں تاتار خانیہ کے حوالے سے امام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ کی اصل (مبسوط) سے منقول ہے کہ جب بچہ اپنا ہاتھ یا پاؤں پانی کے کوزے (لوٹے وغیرہ) میں ڈالے اگر یقین کے ساتھ معلوم ہوا کہ اس کا

[حواشی] 1 الطریقۃ المحمدیہ مع الحدیقۃ الندیۃ الصف الثانی من الصفین الخ مطبوعہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۲۸۲/۲ 2 دُرِ مختار کتاب الطہارۃ مطبوعہ مجتبائی دہلی ۳۸/۱

(Arabic): With certainty (as in he washed it himself or it was washed in his presence etc. Nabulsi) it is permissible to perform ablution with this water. And if it is known that his hand was certainly impure (as in traces of filth were seen on it, etc. Hadiqah) then performing ablution with it is not permissible. And if it is not known whether it is pure or impure, it is preferable to perform ablution with other water because a child typically does not avoid impurities. Despite this, if someone performs ablution with it, it will suffice. etc. | (Urdu): The hand was pure (meaning he himself washed it or it was washed in his presence etc. Nabulsi), so performing ablution with this water is permissible. If it is known with certainty that it was impure (for example, physical filth or its trace was seen on it etc. Hadiqah), then ablution with it is not permissible. And if it is not known whether it is pure or impure, then it is desirable (Mustahabb) to perform ablution with other water because a child generally does not avoid impurities. Nevertheless, if someone performs ablution with it, it will be sufficient. etc. (T)

Take note of the clarification of a special rule, Sayyiduna Imam Muhammad (Mercy of Allah be upon him) says:

(Arabic): We adopt this as long as we do not know of anything specifically prohibited in itself. This is the opinion of Abu Hanifa and his companions [2] etc. narrated by the exalted Imam Zahir-ud-Din in his fatwas and others in their books. | (Urdu): We will adopt this as long as we do not have knowledge of anything being prohibited (Haram) in itself. This is the same opinion of Imam Abu Hanifa and his companions (disciples), may Allah have mercy on them. The exalted Imam Zahir-ud-Din mentioned this in his fatwas and others in their respective books. (T)

It is mentioned in Hadiqah:

(Arabic): Prohibition is based on certainty and knowledge, and he was not certain nor did he know that the specific thing he took was prohibited. And Allah does not burden a soul beyond its capacity. [3] etc. | (Urdu): Prohibition occurs with certainty and knowledge, and he does not know, nor is he certain that what he has taken is prohibited in itself. And Allah Almighty does not burden anyone beyond their capacity. etc. (T)

(Arabic) I say: Although this is regarding the issue of gifts, prohibition due to usurpation is not without prohibition. | (Urdu) I say: Although this is regarding the

issue of gifts, in the ruling of avoidance, that which becomes prohibited in the case of usurpation (Ghasab) is [different] from that which is prohibited on the basis of impurity.

---

1. Al-Hadiqah al-Nadiyya, Ikhtilaf al-Fuqaha' fi amr al-Taharah wa al-Najasah, printed by Nuriya Razawiya Faisalabad, 2/127.
2. Fatawa Hindiyah, Chapter on Gifts and Hospitality, printed by Noorani Kutub Khana Peshawar, 5/322.
3. Al-Hadiqah al-Nadiyya, Section Two of the Three Sections in the Clarification of the Ruling of Piety (Tawara'), etc., printed by Nuriya Razawiya Faisalabad, 2/217.

जिल्द चौथी फ़तावा रज़विया

(अरबी): निश्चित रूप से (जैसे कि उसने इसे स्वयं धोया या उसके सामने धोया गया, आदि नाबुलसी) इस पानी से वज़ू करना जायज़ है। और यदि यह ज्ञात हो कि उसका हाथ निश्चित रूप से नापाक था (जैसे कि उस पर गंदगी का अंश या उसका निशान देखा गया, आदि हदीक़ह) तो इससे वज़ू करना जायज़ नहीं है। और यदि यह ज्ञात न हो कि वह पाक है या नापाक, तो मुस्तहब (पसंदीदा) है कि दूसरे पानी से वज़ू करे क्योंकि बच्चा आमतौर पर गंदगी से परहेज़ नहीं करता। इसके बावजूद यदि कोई इसके साथ वज़ू करे, तो पर्याप्त होगा। आदि। | (उर्दू): हाथ पाक था (यानी उसने खुद इसे धोया है या उसके सामने धोया गया है अह् नाबुलसी), तो इस पानी के साथ वज़ू जायज़ है। अगर यकीन के साथ मालूम हो कि वह नापाक था (मिसाल के तौर पर उस पर ऐन नजासत या उसका निशान देखा अह् हदीक़ह), तो उससे वज़ू जायज़ नहीं। और अगर मालूम न हो कि वह पाक है या नापाक, तो मुस्तहब है कि इसके ग़ैर से वज़ू करे क्योंकि बच्चा आम तौर पर नजासतों से परहेज़ नहीं करता, इसके बावजूद अगर इसके साथ वज़ू करे तो काफ़ी होगा अह्। (त)

विशेष नियम का स्पष्टीकरण सुनिए, सय्यिदुना इमाम मुहम्मद (अल्लाह तआला उन पर रहमत फ़रमाए) फ़रमाते हैं:

(अरबी): हम इसे तब तक अपनाते हैं जब तक हमें विशेष रूप से किसी चीज़ के हराम (वर्जित) होने का पता न चले। यह अबू हनीफ़ा और उनके साथियों [2] का मत है, आदि। इसे इमाम अजल ज़हीर-उद-दीन ने अपने फ़तावा में और दूसरों ने अपनी पुस्तकों में उद्धृत किया है। | (उर्दू): हम इसी को अख्तियार करेंगे जब तक हमें मयैना तौर पर किसी चीज़ के हराम होने का इल्म न हो जाए। इमाम अबू हनीफ़ा और आपके असहाब (शागिर्दों) रहमहुमुल्लाह का यही कौल है, इसे इमाम अजल ज़हीर-उद-दीन ने अपने फ़तावा में और दूसरों ने अपनी कुतुब में ज़िक्र किया है। (त)

हदीक़ह में है:

(अरबी): हराम होना निश्चितता और ज्ञान पर आधारित है, और वह न तो निश्चित था और न ही उसे पता था कि जो चीज़ उसने ली है वह हराम है। और अल्लाह किसी आत्मा पर उसकी क्षमता से अधिक बोझ नहीं डालता। [3] आदि। | (उर्दू): हुरमत (वर्जना), यकीन और इल्म के साथ होती है और वह नहीं जानता और न उसे यकीन है कि जो कुछ उसने लिया है वह मयैना तौर पर हराम है और अल्लाह तआला किसी को उसकी ताक़त से ज़्यादा तकलीफ़ नहीं देता अह् (त)

(अरबी) मैं कहता हूँ: यद्यपि यह उपहारों के मसले में है, फिर भी ज़बरदस्ती कब्ज़े (ग़सब) के कारण हराम होना बिना हराम के नहीं है। | (उर्दू) अक़ूल (मैं कहता हूँ): यह अगरचे तहाइफ़ (उपहारों) के मसले में है, पस इज्तनाब (परहेज) के हुक्म में ग़सब की सूरत में हराम होने वाला, नजासत की बुनियाद पर हराम होने वाले से [अलग है]।

---

1. अल-हदीक़ह अल-नदिय्या, इख़्तिलाफ़ अल-फ़ुक़हा फ़ी अम्र अल-तहारह व अल-नजासह, मुद्रित नूरिया रज़विया फ़ैसलाबाद, 2/127.
2. फ़तावा हिन्दिया, उपहारों और आतिथ्य सत्कार का अध्याय, मुद्रित नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 5/322.
3. अल-हदीक़ह अल-नदिय्या, तवरा (परहेजगारी) आदि के हुक्म के बयान में तीन खंडों का दूसरा खंड, मुद्रित नूरिया रज़विया फ़ैसलाबाद, 2/217. पेज 511 of 761

بیقین (بان غسلها له او غسلت عنده اهـ نا بلسي) یجوز التوضی بهذا الماء وان علم ان یده نجسة بیقین (بان رأی علیها عین النجاسة اواثرها اهـ حدیقة) لا یجوز التوضی به وان کان لا یعلم انه طاهرا ونجس فالمستحب ان یتوضأ بغیره لان الصبی لا یتوقی عن النجاسات عادة ومع هذا لوتوضأ به اجزأه اهـ | ہاتھ پاک تھا (یعنی اس نے خود اسے دھویا ہے یا اس کے سامنے دھویا گیا ہے اھ نابلسی) تو اس پانی کے ساتھ وضو جائز ہے اگر یقین کے ساتھ معلوم ہو کہ وہ ناپاک تھا (مثلاً اس پر عین نجاست یا اس کا نشان دیکھا اھ حدیقہ) تو اس سے وضو جائز نہیں اور اگر معلوم نہ ہو کہ وہ پاک ہے یا ناپاک، تو مستحب ہے کہ اس کے غیر سے وضو کرے کیونکہ بچہ عام طور پر نجاستوں سے پرہیز نہیں کرتا اس کے باوجود اگر اس کے ساتھ وضو کرے تو کافی ہوگا اھ (ت)

خاص ضابطہ کی تصریح لیجئے سیدنا امام محمد رحمۃ اللہ تعالٰی فرماتے ہیں:

به نأخذ مالم نعرف شیئاً حراماً بعینه وهو قول ابی حنیفة واصحابه ۲ اهـ نقله الامام الاجل ظهیر الدین فی فتاواه وغیره فی غیرها۔ | ہم اسی کو اختیار کریں گے جب تک ہمیں بعینہ کسی چیز کے حرام ہونے کا علم نہ ہو جائے امام ابوحنیفہ اور آپ کے اصحاب (شاگردوں) رحمہم اللہ کا یہی قول ہے اسے امام اجل ظہیر الدین نے اپنے فتاوی میں اور دوسروں نے اپنی کتب میں ذکر کیا ہے۔ (ت)

حدیقہ میں ہے:

الحرمة بالیقین والعلم وهو لم یتیقن ولم یعلم ان عین ما اخذه حرام ولا یکلف الله نفسا الا وسعها اهـ | حرمت، یقین اور علم کے ساتھ ہوتی ہے اور وہ نہیں جانتا اور نہ اسے یقین ہے کہ جو کچھ اس نے لیا ہے وہ بعینہ حرام ہے اور اللہ تعالٰی کسی کو اس کی طاقت سے زیادہ تکلیف نہیں دیتا اھ (ت)

اقول: وهذا وان كان فی مسئلة الجوائز فلیس الحرام للغصب بدون الحرام | اقول: یہ اگرچہ تحائف کے مسئلہ میں ہے پس اجتناب کے حکم میں غصب کی صورت میں حرام ہونے والا نجاست کی بنیاد پر حرام ہونے والے سے

---

1 الحدیقۃ الندیۃ اختلاف الفقہاء فی امر الطہارۃ والنجاسۃ مطبوعہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۲ / ۱۲۷

2 فتاوی ہندیہ باب فی الہدایا والضیافات مطبوعہ نورانی کتب خانہ پشاور ۳۲۲/۵ 3 الحدیقۃ الندیۃ الفصل الثانی من الفصول الثلاثۃ فی بیان حکم التورع الخ مطبوعہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۲ / ۲۱۷

Fatawa Rizvia Volume Four

Regarding the ruling on avoiding impurity, as is not hidden. | It is not less, as it is not hidden. (T) In summary, in such a case, the general ruling is that a non-general certainty regarding a species does not mandate a general prohibition; rather, individual cases will be considered. And Allah Almighty knows best.

Ninth Introduction: When halal and haram are mixed in a market generally or within a specific category, and no distinguishing mark or differentiating sign is found, then the pure Shariah does not command to avoid purchasing, because after all, there is halal among them as well. Thus, in every item, the possibility of being halal remains, and this is sufficient for concession and permissibility. This claim is also clear from our previous discourses, and the refuge of the school (of thought), Abu Abdullah Ash-Shaibani (may Allah be pleased with him), has explicitly stated this in Al-Mabsut, which is among the books of Zahir al-Riwayah.

Arabic Original	**Urdu Translation**
From Al-Ashbah, quoting Al-Asl: If halal and haram are mixed in a city, it is established that it is permissible, unless evidence is established that it is from the haram.	It is quoted from Al-Asl (Al-Mabsut) in Al-Ashbah that when halal and haram become mixed in a city, then its purchase and taking is permissible, unless some evidence of its being haram is established.
In Al-Hamawiyyah: The fact that haram is prevalent in the market does not necessitate that what is bought is haram, because it is possible that it is from the minority halal, and the original principle is permissibility (halal).	And in Al-Hamawiyyah, it is stated that the abundance of haram in the market does not necessitate that whatever is bought is also haram because it is possible that this thing is from the minority halal and the original fact is permissibility. (T)

Alert: I say, and by the grace of Allah (and I say with the success granted by Allah - T), this rule of acting upon the possibility of permissibility, looking at the jurisprudential branches, is specific to the case where all those items in which the existence of haram is certain and in every individual's consumption of them there is a possibility of consuming haram, are not in the ownership of the one consuming them. Otherwise, using any of them would not be permissible except in three cases. One of them is that when the cause of prohibition is capable of removal, it should be removed from any of them, so that now instead of a hindrance, there is doubt, and certainty about an unknown location (majhul al-mahal), whose specific location is not

known through determination, is removed by such doubt. For example, a corner of a sheet was certainly impure but the specific corner is not remembered; whichever corner is washed, the ruling of purity will be given.

Note: This alert was added later but remained incomplete. 12 H (M)

1. Al-Ashbah wal-Naza'ir, The Second Principle from the First Art, printed by Idara al-Quran wal-Ulum al-Islamiyya, Karachi, 1/128.
2. Al-Hamawiyyah known as Ghamz al-Uyun with Al-Ashbah, printed by Idara al-Quran wal-Ulum al-Islamiyya, Karachi, p. 128.

फ़तवा रिज़विया खंड 4

अपवित्रता से बचने के नियम के बारे में, जैसा कि छिपा नहीं है। | यह कम नहीं है, जैसा कि छिपा नहीं है। (टी) संक्षेप में, ऐसी स्थिति में, सामान्य नियम यह है कि किसी प्रजाति के संबंध में गैर-सामान्य निश्चितता सामान्य निषेध का आदेश नहीं देती है; बल्कि, व्यक्तिगत मामलों पर विचार किया जाएगा। और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे अच्छा जानता है।

नौवीं प्रस्तावना: जब बाजार में हलाल और हराम पूरी तरह से या किसी विशेष श्रेणी में मिल गए हों और कोई स्पष्ट पहचान या अंतर करने वाला चिह्न न मिले, तो शरीयत-ए-मुतहरा खरीदारी से बचने का आदेश नहीं देती है, क्योंकि आखिर उनमें हलाल भी है। इस प्रकार, हर वस्तु में हलाल होने की संभावना बनी रहती है और रियायत और अनुमति के लिए इतना ही पर्याप्त है। यह दावा हमारे पिछले प्रवचनों से भी स्पष्ट है और खुद मज़हब के पनाहगाह अबू अब्दुल्ला शैबानी (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) ने 'मबसूत' में, जो ज़ाहिर अल-रिवाया की किताबों में से है, इस पर स्पष्ट रूप से आदेश दिया है।

अरबी मूल	**उर्दू अनुवाद**
अल-अशबाह में 'अल-अस्ल' से उद्धृत है: यदि किसी शहर में हलाल और हराम मिल जाएं तो यह तब तक हलाल माना जाता है जब तक कि इसके हराम होने का कोई प्रमाण न मिल जाए।	अशबाह में असल (मबसूत) से उद्धृत किया गया है कि जब शहर में हलाल और हराम मिल जाएं तो उसे खरीदना और लेना जायज़ है जब तक कि उसके हराम होने पर कोई दलील न मिल जाए।
अल-हमविय्याह में: बाजार में हराम की बहुतायत होने का मतलब यह नहीं है कि जो खरीदा गया है वह हराम है, क्योंकि यह संभव है कि वह अल्पसंख्यक हलाल में से हो, और मूल नियम हलाल (वैधता) है।	और हमविय्याह में है कि बाजार में हराम की बहुतायत होने से यह आवश्यक नहीं होता कि जो कुछ खरीदा है वह भी हराम हो क्योंकि हो सकता है कि यह चीज़ अल्पसंख्यक हलाल में से हो और असल बात हलाल होना है। (टी)

चेतावनी: मैं कहता हूँ, और अल्लाह की तौफीक से (और अल्लाह तआला की तौफीक से मैं कहता हूँ- टी), हलाल की संभावना पर अमल करने का यह नियम फ़िक़्ही शाखाओं को देखते हुए उस स्थिति के लिए विशिष्ट है कि वे सभी चीजें जिनमें हराम का होना निश्चित है और उनमें से प्रत्येक व्यक्ति के सेवन में हराम के सेवन की संभावना है, सेवन करने वाले के स्वामित्व में न हों। अन्यथा उनमें से किसी का उपयोग जायज़ नहीं होगा, सिवाय तीन स्थितियों के। उनमें से एक यह है कि जब हराम

होने का कारण दूर किया जा सकता हो, तो उनमें से किसी से उसे दूर कर दिया जाए, ताकि अब बाधा के बजाय संदेह हो जाए, और अनिश्चित स्थान (मजहूल अल-महल) के बारे में निश्चितता, जिसका विशिष्ट स्थान निर्धारित रूप से ज्ञात न हो, ऐसे संदेह से समाप्त हो जाती है। उदाहरण के लिए, चादर का एक कोना निश्चित रूप से अपवित्र था और स्थान याद न रहे, तो जो भी कोना धो लिया जाए, उसे पवित्र होने का आदेश दिया जाएगा।

नोट: यह चेतावनी बाद में जोड़ी गई थी लेकिन अधूरी रही। 12 एच (एम)

1. अल-अशबाह वल-नज़ायर, प्रथम कला का दूसरा सिद्धांत, इदारा अल-क़ुरान वल-उलूम अल-इस्लामिया, कराची द्वारा मुद्रित, 1/128।
2. अल-हमविय्याह जिसे ग़मज़ अल-उयून के नाम से जाना जाता है, साथ में अल-अशबाह, इदारा अल-क़ुरान वल-उलूम अल-इस्लामिया, कराची द्वारा मुद्रित, पृष्ठ 128।

पृष्ठ 761 में से 512

للنجاسة في حكم الاجتناب كمالا يخفى۔ | کم نہیں ہے جیسا کہ مخفی نہیں (ت) بالجملہ ایسی صورت میں حکم کلی یہی ہے کہ نوع کی نسبت غیر کلی یقین منع کلی کا موجب نہیں بلکہ خصوص افراد کا لحاظ کریں گے واللہ تعالٰی اعلم۔

مقدمہ تاسعہ: جب بازار میں حلال و حرام مطلقاً یا کسی جنس خاص میں مختلط ہوں اور کوئی ممیز و علامت فارقہ نہ ملے تو شریعت مطہرہ خریداری سے اجتناب کا حکم نہیں دیتی کہ آخر ان میں حلال بھی ہے تو ہر شے میں احتمال حلت قائم اور رخصت و اباحت کو اسی قدر کافی، یہ دعوٰی بھی ہماری تقریرات سابقہ سے واضح اور خود ملاذ مذہب ابو عبد اللہ شیبانی رضی اللہ تعالٰی عنہ نے مبسوط میں کہ کتب ظاہر الروایۃ سے ہے اس پر نص فرمایا۔

عربی متن	اردو ترجمہ
فی الاشباہ عن الاصل اذاختلط الحلال بالحرام فی البلد تقوم دلالۃ علی انہ من الحرام اھـ	اشباہ میں اصل (مبسوط) سے نقل کیا گیا ہے کہ جب شہر میں حلال و حرام مخلوط ہو جائے تو اس کا خریدنا اور لینا جائز ہے مگر یہ کہ اس کے حرام ہونے پر کوئی دلالت قائم ہو جائے اھـ
وفی الحموية كون الغالب فی السوق الحرام لايستلزم كون المشترى حراما لجواز كونہ من الحلال المغلوب والاصل الحل 2اھـ	اور حمویہ میں ہے بازار میں حرام کی بکثرت پائے جانے سے لازم نہیں آتا کہ جو کچھ خریدا ہے وہ بھی حرام ہو کیونکہ ہو سکتا ہے کہ یہ چیز حلال مغلوب سے ہو اور اصل بات حلت ہے اھ (ت)

تنبیہ اقول: وب اللہ التوفیق (اور اللہ تعالٰی کی توفیق سے میں کہتا ہوں۔ت) یہ احتمال حل پر عمل کا قاعدہ نظر بفروع فقیہہ اس صورت سے مخصوص ہے کہ وہ سب اشیا جن میں وجود حرام کا تیقن اور ان میں سے ہر فرد کے تناول میں تناول حرام کا احتمال ہے اس تناول کرنے والے کی ملک میں نہ ہوں ورنہ ان میں سے کسی کا استعمال جائز نہ ہوگا مگر تین صورتوں سے ایک یہ کہ وجہ حرمت جب صالح ازالہ ہو تو ان میں کسی سے اسے زائل کر دیا جائے کہ اب بجائے مانع میں شک ہو گیا اور یقین مجہول المحل جس کا محل خاص بالتعین معلوم نہ ہو ایسے شک سے زائل ہو جاتا ہے مثلاً چادر کا ایک گوشہ یقیناً ناپاک تھا اور تعیین یاد نہ رہے کوئی سا کونا دھو لے پاکی کا حکم دیں گے عہ۔

عہ: تنبیہ بعد کو اضافہ فرمائی تھی مگر نامکمل رہی ۱۲ ح (م)

1. الاشباہ والنظائر القاعدۃ الثانیۃ من الفن الاول مطبوعہ ادارۃ القرآن والعلوم اسلامیہ کراچی، ۱/ ۱۲۸

2. حمویۃ المعروف غمز العیون مع الاشباہ مطبوعہ ادارۃ القرآن والعلوم اسلامیہ کراچی ص ۱۲۸

Volume Four Fatawa Ridawiyya Tenth Introduction: God Almighty did not task us with using only those things that are pure and lawful in reality and essence, such that knowing them would be beyond our power.

[Arabic Quranic Verse: Allah does not burden a soul beyond that it can bear. (Quran 2:286)] | The Command of God Almighty is, "Allah does not burden any soul beyond its capacity." (T)

Nor did He command us to use only those things which we know and are certain to be clean and pure according to our knowledge, for in that too would be great hardship, and hardship is removed by clear text.

[Arabic Quranic Verses: He has not laid upon you in religion any hardship (Quran 22:78) and Allah intends for you ease and does not intend for you hardship (Quran 2:185)] | Allah Almighty said: "He has not placed any hardship upon you in religion." And He said: "Allah intends ease for you and does not intend hardship for you." (T)

O Dear Friend! This religion, by the grace of Allah, has come with ease and generosity. Whoever takes it as such will always find gentleness and kindness in it. But whoever chooses the path of excessive depth and severity, this religion will become hard for him. To the extent that he himself will grow weary and will suffer regret for his own strictness. The Prophet (peace and blessings be upon him) said:

[Arabic Hadith Text: Verily, the religion is easy, and no one ever makes the religion difficult but that it overpowers him. So follow the right path, be close to it, and give glad tidings... It was narrated by Bukhari and Nasai from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him). Baihaqi in 'Shu'ab al-Iman' recorded it with the words: "The religion is easy, and no person tries to overpower the religion but that it (the religion) overpowers him." And Ahmed, Nasai, Ibn Majah, and Hakim narrated with a sound chain from Ibn Abbas (may Allah be pleased with him):] | Indeed, the religion is easy. No one makes the religion difficult except that it overpowers him. So be steadfast, keep close to the mark, and give glad tidings. (Al-Hadith). It was narrated by Bukhari and Nasai from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him). Baihaqi in 'Shu'ab al-Iman' brought it with these words: "The religion is easy, and no person tries to strive against the religion except that it (the religion) overpowers him."

1. Al-Quran 2/286
2. Al-Quran 22/78
3. Al-Quran 2/185

4. Sahih al-Bukhari, Chapter: The religion is easy, published by Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/10
5. Shu'ab al-Iman, Moderation in Worship, Hadith 3881, published by Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 3/401

खंड चार फ़तावा रज़विया दसवीं प्रस्तावना: ईश्वर सर्वशक्तिमान ने हमें यह आदेश नहीं दिया कि हम केवल उन्हीं चीज़ों का उपयोग करें जो वास्तविकता और सार में पवित्र और हलाल हैं, क्योंकि इसका ज्ञान हमारी शक्ति से बाहर है।

[अरबी आयत: अल्लाह किसी जान पर उसकी क्षमता से अधिक बोझ नहीं डालता (क़ुरान 2:286)] | अल्लाह सर्वशक्तिमान का आदेश है, "अल्लाह किसी भी आत्मा पर उसकी क्षमता से अधिक भार नहीं डालता"। (त)

न ही उन्होंने हमें केवल उन्हीं चीज़ों का उपयोग करने का निर्देश दिया जिन्हें हम अपने ज्ञान और विश्वास के अनुसार स्वच्छ और पवित्र जानते हैं, क्योंकि इसमें भी बड़ी कठिनाई होगी, और कठिनाई को स्पष्ट पाठ (नस्स) द्वारा हटा दिया गया है।

[अरबी आयत: उसने धर्म के मामले में तुम पर कोई तंगी नहीं रखी (क़ुरान 22:78) और अल्लाह तुम्हारे लिए सुगमता चाहता है और तुम्हारे लिए कठिनाई नहीं चाहता (क़ुरान 2:185)] | अल्लाह सर्वशक्तिमान ने फ़रमाया: "धर्म के सिलसिले में तुम्हें किसी कठिनाई में नहीं डाला"। और फ़रमाया: "अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है और तंगी नहीं चाहता"। (त)

ऐ अज़ीज़! यह दीन अल्लाह की कृपा से आसानी और उदारता के साथ आया है। जो इसे इसी रूप में लेगा, उसके लिए इसमें हमेशा नरमी और दया होगी। लेकिन जो गहराई और कठोरता का रास्ता अपनाएगा, यह दीन उसके लिए कठिन होता जाएगा। यहाँ तक कि वह खुद थक जाएगा और अपनी ही सख़्ती पर पछताएगा। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

[अरबी हदीस: निश्चित रूप से दीन आसान है, और कोई भी व्यक्ति दीन में सख़्ती नहीं करेगा मगर वह उस पर हावी हो जाएगा। इसलिए सीधे रास्ते पर चलो, उसके करीब रहो और खुशख़बरी सुनाओ... इसे बुख़ारी और नसाई ने हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। बैहक़ी ने 'शुअब अल-ईमान' में इन शब्दों के साथ उल्लेख किया है: "दीन आसान है, और कोई भी व्यक्ति दीन पर हावी होने की कोशिश नहीं करता मगर वह (दीन) उस पर हावी हो जाता है।" अहमद, नसाई, इब्न माजा और हाकिम ने इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) से सही सनद के साथ रिवायत किया है:] | बेशक दीन आसान है और कोई भी व्यक्ति दीन में सख़्ती नहीं करेगा मगर वह उस पर ग़ालिब आ जाएगा। इसलिए ठीक-ठीक चलो, करीब हो जाओ और खुशख़बरी सुनाओ। (हदीस)। इसे बुख़ारी और नसाई ने हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। बैहक़ी 'शुअब अल-ईमान' में

इन शब्दों के साथ लाए हैं: "दीन आसान है और कोई भी व्यक्ति दीन पर ग़ालिब आने की कोशिश नहीं करता मगर वह (दीन) उस पर ग़ालिब आ जाता है।"

1. अल-क़ुरान 2/286
2. अल-क़ुरान 22/78
3. अल-क़ुरान 2/185
4. सहीह अल-बुख़ारी, बाब अल-दीन यसर, पुरानी कुतुब खाना, कराची, 1/10
5. शुअब अल-ईमान, अल-क़स्द फ़िल इबादत, हदीस 3881, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत, 3/401

पृष्ठ 513/761

جلد چہارم فتاوٰی رضویہ مقدمہ عاشرہ: حضرت حق جل وعلا نے ہمیں یہ تکلیف نہ دی کہ ایسی ہی چیز کو استعمال کریں جو واقع ونفس الامر میں طاہر وحلال ہو کہ اس کا علم ہمارے حیطہ قدرت سے ورا۔ قال اللہ تعالٰی لاَ یُکَلِّفُ اللہُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَہَا ط ۱۔ | ارشاد باری تعالٰی ہے "اللہ تعالٰی کسی نفس کو اسکی طاقت سے زیادہ تکلیف نہیں دیتا"۔ (ت) نہ یہ تکلیف فرمائی کہ صرف وہی شے برتیں جسے ہم اپنے علم ویقین کی رُو سے طیب وطاہر جانتے ہیں کہ اس میں بھی حرج عظیم اور حرج مدفوع بالنص۔ قال تعالٰی مَا جَعَلَ عَلَیْکُمْ فِی الدِّیْنِ مِنْ حَرَجٍ ط ۲ وقال تعالٰی یُرِیْدُ اللہُ بِکُمُ الْیُسْرَ وَلَا یُرِیْدُ بِکُمُ الْعُسْرَ ط ۳ | اللہ تعالٰی نے فرمایا: "دین کے سلسلے میں تمہیں کسی حرج میں نہیں ڈالا"۔ اور فرمایا: "اللہ تعالٰی تمہارے لئے آسانی چاہتا ہے اور تنگی نہیں چاہتا"۔ (ت) اے عزیز! یہ دین بحمد اللہ آسانی وسماحت کے ساتھ آیا جو اسے اس کے طور پر لے گا اس کے لئے ہمیشہ رفق ونرمی ہے اور جو تعمق وتشدد کو راہ دے گا یہ دین اُس کے لئے سخت ہوتا جائے گا۔ یہاں تک کہ وہی تھک رہے گا اور اپنی سخت گیری کی آپ ندامت اٹھائے گا۔ نبی صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں : ان الدین یسر ولن یشاد الدین احد الاغلبہ فسددوا وقاربوا وابشروا ۴ الحدیث اخرجہ البخاری والنسائی عن ابی ہریرۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ وصدرہ عند البہیقی فی شعب الایمان بلفظ الدین یسر ولن یغالب الدین احد الاغلبہ ۵ واخرج احمد والنسائی وابن ماجۃ والحاکم باسناد صحیح عن ابن عباس رضی اللہ | بے شک دین آسان ہے اور ہر گز کوئی شخص دین میں سختی نہ کرے گا مگر وہ اس پر غالب آجائے گا پس ٹھیک ٹھیک چلو، قریب ہو جاؤ اور خوشخبری دو، (الحدیث) اسے بخاری اور نسائی نے حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت کیا، اور بیہقی شعب الایمان میں ان الفاظ کے ساتھ لائے ہیں "دین آسان ہے اور کوئی شخص دین پر غالب آنے کی کوشش نہیں کرتا مگر وہ (دین) اس پر غالب آجاتا ہے"

۱ القرآن ۲/۲۸۶ ۲ القرآن ۲۲/۷۸ ۳ القرآن ۲/۱۸۵ ۴ صحیح البخاری باب الدین یسر مطبوعہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۱۰ ۵ شعب الایمان القصد فی العبادۃ حدیث ۳۸۸۱ مطبوعہ دار الکتب العلمیہ بیروت ۳/۴۰۱

Fatawa Razawiya Volume IV

Arabic Text Section: Narrated from the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him): "Beware of extremism in religion, for those before you were only destroyed by extremism in religion." 1- And Ahmad narrated with a chain of authentic narrators, and Al-Bayhaqi in 'Al-Shu'ab', and Ibn Sa'd in 'Al-Tabaqat' from Ibn al-Adra' (may Allah be pleased with him) from the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him): "Indeed, you will never overcome this matter by striving [excessively]." 2- And Ahmad narrated in 'Al-Musnad', Al-Bukhari in 'Al-Adab al-Mufrad', and At-Tabarani in 'Al-Kabir' with a fair (Hasan) chain from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both) from the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him): "The most beloved religion to Allah is the easy Haneefiyyah (primordial way)." 3- These same authors also narrated with a good (Jayyid) chain from Muhjin bin al-Adra' al-Aslami, and At-Tabarani also in 'Al-Kabir' from Imran bin Husayn, and in 'Al-Awsat', and Ibn Adi, Ad-Diya, and Ibn Abd al-Barr in 'Al-Ilm' from Anas (may Allah be pleased with them) from the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him): "The best of your religion is the easiest of it." 4- And Abu al-Qasim bin Bashran narrated in his 'Amali' from the Commander of the Faithful Umar (may Allah be pleased with him) from the Prophet.

Urdu Translation/Explanation Section: Imam Ahmad, Nasai, Ibn Majah, and Hakim narrated with a sound (Sahih) chain from Hazrat Ibn Abbas (may Allah be pleased with both) that he narrated from the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him): "Avoid excess in religion; for those before you were destroyed because of excess in religion." Imam Ahmad with sound narrations, Bayhaqi in 'Shu'ab al-Iman', and Ibn Sa'd in 'Tabaqat' narrated from Hazrat Ibn al-Adra' (may Allah be pleased with him) that the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) said: "You can never master this religion through overpowering (extreme rigor)." (i.e., act upon the commands given; do not make permissible matters obligatory upon yourself). Imam Ahmad in his 'Musnad', Imam Bukhari in 'Al-Adab al-Mufrad', and Tabarani in 'Mu'jam al-Kabir' with a fair (Hasan) chain narrated from Hazrat Abdullah Ibn Abbas (may Allah be pleased with both) that the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) said: "The most beloved religion to Allah is the pure way of ease and leniency." Furthermore, they narrated in their books with a good chain from Hazrat Muhjin bin al-Adra' al-Aslami, and Tabarani in 'Al-Kabir' from Imran bin Husayn, and in 'Al-Awsat', as well as Ibn Adi, Diya, and Ibn Abd al-Barr in the discourse of knowledge from Hazrat Anas (may Allah be pleased with him) that

the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) said: "The best of your religion is that which is easiest."

Footnotes: 1. Sunan Nasai, Chapter: Picking up Pebbles, printed by Noor Muhammad Karkhana Tijarat Kutub Karachi, 28/2. 2. Musnad Imam Ahmad, Hadith of Ibn al-Adra', printed by Al-Maktab al-Islami Beirut, 33/712. 3. Bukhari Sharif, Chapter: Religion is Easy, printed by Qadeemi Kutub Khana Karachi, 10/1. 4. Musnad Imam Ahmad bin Hanbal, Hadith of Muhjin bin al-Adra', printed by Dar al-Fikr Beirut, 338/4.

फतावा रज़विया, खंड 4

अरबी पाठ अनुभाग: नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत है: "दीन में अतिवाद से बचो, क्योंकि तुमसे पहले के लोग दीन में अतिवाद के कारण ही नष्ट हुए थे।" 1- और अहमद ने प्रामाणिक वर्णनकर्ताओं की श्रृंखला के साथ, और अल-बैहकी ने 'अल-शुअब' में, और इब्न साद ने 'अल-तबात' में इब्न अल-अद्रअ (रज़ियल्लाहु अन्हु) से नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के हवाले से रिवायत की: "निस्संदेह, तुम [अत्यधिक] कठोरता के साथ इस मामले पर कभी विजय प्राप्त नहीं कर पाओगे।" 2- और अहमद ने 'मसनद' में, अल-बुखारी ने 'अल-अदब अल-मुफ़रद' में, और अत-तबरानी ने 'अल-कबीर' में एक हसन (अच्छी) सनद के साथ इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के हवाले से रिवायत की: "अल्लाह को सबसे प्रिय दीन सरल हनीफ़ियत (प्रकृति का मार्ग) है।" 3- इन्हीं लेखकों ने महजन बिन अल-अद्रअ अल-असलमी से उम्दा सनद के साथ, और अत-तबरानी ने 'अल-कबीर' में इमरान बिन हुसैन से, और 'अल-औसत' में, और इब्न अदी, अज़-ज़िया और इब्न अब्दुल बर्र ने 'अल-इल्म' में अनस (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के हवाले से रिवायत की: "तुम्हारे दीन का सबसे अच्छा हिस्सा वह है जो सबसे आसान है।" 4- और अबू अल-कासिम बिन बशरन ने अपनी 'अमाली' में अमीरुल मोमिनीन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से नबी के हवाले से रिवायत की।

उर्दू अनुवाद/व्याख्या अनुभाग: इमाम अहमद, नसाई, इब्न माजा और हाकिम ने सही सनद के साथ हजरत इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत की कि उन्होंने नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत की: "दीन में ज्यादती करने से बचो; तुम से पहले लोग दीन में ज्यादती की वजह से हलाक हुए"। इमाम अहमद ने सही रिवायतों के साथ, बैहकी ने 'शुअबुल ईमान' में और इब्न साद ने 'तबात' में हजरत इब्नुल अदरअ (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "तुम इस दीन को मुगालिबा (अत्यधिक कठोरता) के साथ हरगिज़ नहीं पा सकते"। (यानी जो हुक्म मिले उस पर अमल करो; खुद मुबाह कार्यों को वाजिब करार न दो)। इमाम अहमद ने अपनी मसनद में, इमाम बुखारी ने 'अल-अदब अल-मुफ़रद' में और तबरानी ने 'मोजम कबीर' में सनद हसन के साथ हजरत अब्दुल्ला इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत की कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "अल्लाह तआला के यहाँ पसंदीदा दीन कामिल वाबस्तगी और नरमी अख्तियार करना है"। साथ ही उन्होंने अपनी किताबों में उम्दा सनद के साथ हजरत महजन बिन अदरअ अल-सलमी से और तबरानी ने 'कबीर' में इमरान बिन

हसीन से और 'औसत' में भी, और इब्न अदी, ज़िया और इब्न अब्दुल बर्र ने इल्म के बयान में हजरत अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "तुम्हारा बेहतरीन दीन वो है जो सबसे ज्यादा आसान हो"।

फुटनोट्स: 1. सुनन नसाई, बाब अल-तिकात अल-हसा, नूर मुहम्मद कारख़ाना तिजारते कुतुब कराची, 28/2 2. मुसनद इमाम अहमद, हदीस इब्नुल अदरअ, अल-मकतबतुल इस्लामी बेरूत, 33/712 3. बुखारी शरीफ, बाब अद-दीनु युसरुन, कदीमी कुतुब खाना कराची, 1/10 4. मुसनद इमाम अहमद बिन हंबल, हदीस महजन बिन अदरअ, दारुल फिक्र बेरूत, 338/4

فتاوی رضویہ جلد چہارم

تعالی عن النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ایاکم والغلو فی الدین فانما ھلک من کان قبلکم بالغلو فی الدین 1- واخرج احمد برجال الصحیح والبھیقی فی الشعب وابن سعد فی الطبقات عن ابن الادرع رضی اللہ تعالیٰ عنہ عن النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم انکم لن تدرکوا ھذا الامر بالمغالبۃ 2- واخرج احمد فی المسند والبخاری فی الادب المفرد والطبرانی فی الکبیر بسند حسن عن ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنھما عن النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم احب الدین الی اللہ الحنیفۃ السمحۃ 3 واخرج ایضاً ھؤلاء فیھا بسند جید عن محجن بن ادرع الاسلمی والطبرانی ایضاً فی الکبیر عن عمران بن حصین وفی الاوسط وابن عدی والضیاء وابن عبدالبر فی العلم عن انس رضی اللہ تعالیٰ عنھم عن النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم خیر دینکم الیسرہ 4 واخرج ابوالقاسم بن بشران فی امالیہ عن امیر المؤمنین عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ عن النبی

امام احمد، نسائی، ابن ماجہ اور حاکم نے صحیح سند کے ساتھ حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے انہوں نے نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم سے روایت کیا "دین میں زیادتی کرنے سے بچو تم سے پہلے لوگ دین میں زیادتی کی وجہ سے ہلاک ہوئے"۔ امام احمد نے صحیح روایتوں کے ساتھ، بیہقی نے شعب الایمان میں اور ابن سعد نے طبقات میں حضرت ابن الادرع رضی اللہ عنہ سے روایت کیا کہ نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا "تم اس دین کو مغالبہ کے ساتھ ہرگز نہیں پا سکتے"۔ (یعنی جو حکم ملے اس پر عمل کرو خود مباح امور کو واجب قرار نہ دو)۔ امام احمد نے اپنی مسند میں امام بخاری نے الادب المفرد میں اور طبرانی نے معجم کبیر میں سند حسن کے ساتھ حضرت عبداللہ ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کیا کہ نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: "اللہ تعالیٰ کے ہاں پسندیدہ دین کامل وابستگی اور نرمی اختیار کرنا ہے" نیز انہوں

نے اپنی کتب میں عمدہ سند کے ساتھ حضرت محجن بن ادرع السلمی سے اور طبرانی نے کبیر میں عمران بن حصین سے اور اوسط میں نیز ابن عدی، ضیاء اور ابن عبدالبر نے علم کے بیان میں حضرت انس رضی اللہ عنہ سے روایت کیا کہ نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: "تمہارا بہترین دین وہ ہے جو سب سے زیادہ آسان ہو"۔

1 سنن نسائی باب التقاط الحصی مطبوعہ نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ۲۸/۲ 2 مسند امام احمد حدیث ابن الادرع مطبوعہ المکتب الاسلامی بیروت ۳۳/۷۱۲ 3 بخاری شریف باب الدین یسر مطبوعہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱۰/۱ 4 مسند امام احمد بن حنبل حدیث محجن بن الادرع مطبوعہ دارالفکر بیروت ۳۳۸/۴

Fatawa Razawiya, Volume Four

Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: Beware of deepening (over-complication) in the religion, for Allah has made it easy. Hadith. Abu al-Qasim ibn Bashran narrated in his 'Amali' from the Commander of the Faithful, Hazrat Umar Farooq (may Allah be pleased with him), who narrated from the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), that he said: Refrain from going into the depths (minutiae) of religion; Allah the Almighty has made it easy. - Hadith (T)

Rather, the only command is that they should use things that are fundamentally halal and pure, and we should not have knowledge of any impediment or impurity occurring to it. Therefore, as long as there is no strong suspicion of prohibition or restriction in the specific thing one wants to use, there is no need for investigation and inquiry. It is permissible for a Muslim to act upon the original permissibility and purity and not give room to terms like "possible," "likely," "perhaps," or "maybe."

In 'Al-Hadiqa': There is no prohibition without knowledge because the original state is permissibility. It is not mandatory for a person to ask about something until they become aware of its prohibition and it is verified, then it becomes forbidden for them. Summarized from 'Al-Hadiqa'. And in it, quoted from 'Jami' al-Fatawa': One should not ask about the purity of a pool as long as the dominant thought is not of its impurity, and one should not stop performing ablution based on mere suspicion because the original state of things is purity. It is mentioned in 'Hadiqa' that there is no prohibition without knowledge because original state is permissibility. It is not necessary for a person to ask about something until its prohibition is known, and thus by investigating it, make it forbidden for oneself. Summarized from 'Hadiqa'. And in the same, it is quoted from 'Jami' al-Fatawa' that as long as there is no prevailing suspicion of impurity, one should not ask about the purity of the pond/ pool and should not refrain from performing wudu based on mere suspicion because things are fundamentally pure. (T)

Rather, it is narrated from the Leader of the Messengers (peace and blessings of Allah be upon him) himself: When any of you goes to his Muslim brother's house and he feeds him from his food, he should eat it and ask nothing, and if he gives him something to drink, he should drink it and inquire nothing.

Al-Hakim recorded in 'Al-Mustadrak', At-Tabarani in 'Al-Awsat', and Al-Bayhaqi in 'Ash-Shu'ab' with an acceptable chain of narration, on the authority of Abu Hurairah (may Allah be pleased with him), that... Hakim in 'Mustadrak', Tabarani in 'Awsat', and

Bayhaqi in 'Shu'ab al-Iman' narrated with a chain of transmission that has no flaw, from Hazrat Abu Huraira (may Allah be pleased with him).

1. Al-Jami' al-Saghir with Fayd al-Qadir, Hadith 2933, published by Dar al-Ma'rifat Beirut 132/3.
2. Al-Hadiqa al-Nadiyya, explanation of the ruling on piety and caution regarding the food of officials, published by Nooriya Rizviya Faisalabad 38/2.
3. Al-Hadiqa al-Nadiyya, the second category of two, regarding what was narrated from our Hanafi Imams, published by Nooriya Rizviya Faisalabad 662/2.

फ़तावा रज़विया, चौथा खंड

पैगंबर (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) ने कहा: धर्म में अत्यधिक गहराई (बारीकियों) में जाने से बचें, क्योंकि अल्लाह ने इसे आसान बना दिया है। हदीस। अबू अल-कासिम बिन बशरान ने अपनी 'अमाली' में अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया कि उन्होंने नबी-ए-करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत की, आपने फ़रमाया: दीन की गहराइयों (बारीकियों) में जाने से परहेज़ करो, अल्लाह तआला ने इसे आसान बनाया है। - हदीस (त)

बल्कि हुक्म केवल इतना ही है कि वे उन चीज़ों को उपयोग में लाएँ जो अपनी असल में हलाल और पाक हों, और हमारे ज्ञान में इसके आड़े आने वाली किसी नजासत (अशुद्धता) का होना न हो। इसलिए, जब तक किसी विशिष्ट वस्तु जिसे इस्तेमाल करना चाहता है, उसमें हराम होने या पाबंदी का कोई मज़बूत संदेह न पाया जाए, तब तक जाँच-पड़ताल और तहकीकात की ज़रूरत नहीं है। मुसलमान के लिए जायज़ है कि वह चीज़ों की असल हलाल और पाकीज़गी पर अमल करे और "हो सकता है", "शायद", "संभव है" जैसी बातों को जगह न दे।

'अल-हदीका' में है: बिना ज्ञान के कोई पाबंदी नहीं है क्योंकि मूल स्थिति हलाल है। मनुष्य के लिए तब तक किसी चीज़ के बारे में पूछना ज़रूरी नहीं है जब तक कि उसे उसकी पाबंदी का पता न चल जाए और वह प्रमाणित न हो जाए, तब वह उसके लिए हराम हो जाती है। 'अल-हदीका' से सारांशित। और उसी में 'जामे अल-फ़तावा' से उद्धृत है: तालाब की पवित्रता के बारे में तब तक नहीं पूछना चाहिए जब तक कि उसके नापाक होने का प्रबल संदेह न हो, और केवल संदेह के आधार पर वज़ू करने से नहीं रोकना चाहिए क्योंकि चीज़ों में मूल स्थिति पवित्रता है। हदीका में है कि बिना ज्ञान के हराम नहीं है क्योंकि मूल स्थिति हलाल होना है और इंसान पर लाज़िम नहीं कि वह किसी चीज़ के बारे में सवाल करे यहाँ तक कि उसकी हरामियत (पाबंदी) पर वाकिफ़ हो जाए और इस तरह उसकी तहकीक करके अब अपने ऊपर हराम कर ले। हदीका सारांशित। और इसी में जामे अल-फ़तावा से नक़ल है जब तक कि नजासत का प्रबल अनुमान न हो, हौज (तालाब) की पाकी के बारे में सवाल न करे और केवल संदेह की बुनियाद पर वज़ू करने से न रोके क्योंकि चीज़ों में असल पाकी है। (त)

बल्कि खुद सैयदुल मुरसलीन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत है: जब तुम में से कोई अपने मुसलमान भाई के यहाँ जाए और वह उसे अपने खाने में से खिलाए तो खा ले और कुछ न पूछे, और अपने पीने की चीज़ में से पिलाए तो पी ले और कुछ दरयाफ़्त (पूछताछ) न करे।

हाकिम ने 'अल-मुस्तदरक' में, तबरानी ने 'अल-औसत' में और बैहकी ने 'अश-शुअब' में एक ऐसी सनद के साथ रिवायत किया है जिसमें कोई बुराई नहीं है, अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से, कि... हाकिम ने मुस्तदरक में, तबरानी ने औसत में और बैहकी ने शुअबल ईमान में ऐसी सनद के साथ जिसमें कोई हर्ज नहीं, हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया।

1. अल-जामे अल-सगीर मय फ़ैज़ अल-क़दीर, हदीस 2933, मतबूआ दारुल मारिफ़त बेरूत 132/3
2. अल-हदीका अन-नदिया, बयान हुक्म अत-तवर्रा वत-तौकी मिन तआम अह्ल अल-वज़ायफ़, मतबूआ नूरिया रजविया फ़ैसलाबाद 38/2
3. अल-हदीका अन-नदिया, दूसरा वर्ग उन दो वर्गों में से जो हमारे हनफी इमामों से रिवायत है, मतबूआ नूरिया रजविया फ़ैसलाबाद 662/2

पृष्ठ 515 / 761

فتاوی رضویہ، جلد چہارم

صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ایاکم والتعمق فی الدین فان اللہ قد جعلہ سھلا الحدیث- ابو القاسم بن بشران نے اپنی امالی میں امیر المومنین حضرت عمر فاروق رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے انہوں نے نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم سے روایت کیا، آپ نے فرمایا: دین کی گہرائی (باریکیوں) میں جانے سے پرہیز کرو اللہ تعالیٰ نے اسے آسان بنایا ہے- الحدیث (ت)

بلکہ صرف اس قدر حکم ہے کہ وہ چیز تصرف میں لائیں جو اپنی اصل میں حلال و طیب ہو اور اسے مانع و نجاست کا عارض ہونا ہمارے علم میں نہ ہو لہٰذا جب تک خاص اس شئے میں جسے استعمال کرنا چاہتا ہے کوئی مظنہ قویہ حظر و ممانعت کا نہ پایا جائے تفتیش و تحقیقات کی بھی حاجت نہیں مسلمان کو روا کہ اصل حل و طہارت پر عمل کرے اور یمکن و یحتمل و شاید و لعل کو جگہ نہ دے-

فی الحدیقۃ لاحرمۃ الامع العلم لان الاصل الحل ولا یلزمہ السؤال عن شیئ حتی یطلع علی حرمتہ ویتحقق بھا فیحرم علیہ اہ ملخصا وفیھا عن جامع الفتاوی لا یلزم السؤال عن طھارۃ الحوض مالم یغلب علی ظنہ نجاستہ و بمجرد الظن لا یمنع من التوضئ لان الاصل في الاشیاء الطھارۃ اہ حدیقہ میں ہے علم کے بغیر حرمت نہیں کیونکہ اصل حلّت ہے اور انسان پر لازم نہیں کہ وہ کسی چیز کے بارے میں سوال کرے حتی کہ اس کی حرمت پر مطلع ہو جائے اور یوں وہ اس کی تحقیق کر کے اب اپنے اوپر حرام کر لے، حدیقہ ملخصاً اور اسی میں جامع الفتاوی سے منقول ہے جب تک اس کو نجاست کا غالب گمان نہ ہو جائے حوض کی طہارت کے بارے میں سوال نہ کرے اور محض گمان کی بنیاد پر وضو کرنے سے نہ روکے کیونکہ اشیاء میں اصل طہارت ہے-(ت)

بلکہ خود سید المرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے مروی جب تم میں سے کوئی اپنے بھائی مسلمان کے یہاں جائے اور وہ اسے اپنے کھانے میں سے کھلائے تو کھالے اور کچھ نہ پوچھے اور اپنے پینے کی چیز سے پلائے تو پی لے اور کچھ دریافت نہ کرے۔

اخرج الحاکم فی المستدرک والطبراني في الاوسط والبیهقي في الشعب باسناد لا بأس به عن ابي هریرة رضی اللہ تعالیٰ عنه عن حاکم نے مستدرک، طبرانی نے اوسط اور بیہقی نے شعب الایمان میں ایسی سند کے ساتھ جس میں کوئی حرج نہیں، حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت کیا

1 الجامع الصغیر مع فیض القدیر حدیث ۲۹۳۳ مطبوعہ دار المعرفت بیروت ۱۳۲/۳ 2 الحدیقة الندیہ بیان حکم التورع والتوقی من طعام اہل الوظائف مطبوعہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۳۸/۲ 3 الحدیقة الندیہ الصنف الثانی من الصنفین فیمیا ورد عن ائمتنا الحنفیہ مطبوعہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۶۶۲/۲

Fatawa Rizvia Volume 4

The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "When one of you enters upon his Muslim brother and he feeds him from his food, let him eat and not ask about it. And if he gives him something to drink from his beverage, let him drink and not ask about it." (T)

Commander of the Faithful 'Umar (may Allah be pleased with him) passed by a pond accompanied by 'Amr ibn al-'As (may Allah be pleased with him). The latter began to ask the owner of the pond, "Do predators also drink from your pond?" The Commander of the Faithful said, "O owner of the pond! Do not tell us."

From Malik in his Muwatta from Yahya ibn 'Abd al-Rahman that 'Umar (may Allah be pleased with him) went out with a group of riders, among whom was 'Amr ibn al-'As (may Allah be pleased with him). They came to a pond, and 'Amr said, "O owner of the pond, do predators frequent your pond?"

Imam Malik (may Allah have mercy on him) narrated in his Muwatta from Hazrat Yahya ibn 'Abd al-Rahman (may Allah be pleased with him) that Hazrat 'Umar (may Allah be pleased with him) set out in a party of riders, and Hazrat 'Amr ibn al-'As (may Allah be pleased with him) was among them. When they reached a pond, Hazrat 'Amr ibn al-'As [asked the owner]...

(Note 1): Similarly, a Hadith like that is narrated from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) from the Hadith of Ibn 'Umar (may Allah be pleased with them both). He said: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) went out on one of his journeys. They traveled by night and passed by a man at his cistern (Miqrah). 'Umar said, "O owner of the cistern, did predators lap from your cistern tonight?" The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said, "O owner of the cistern, do not inform him. This is burdensome for him. What they carry in their bellies belongs to them, and what remains is for us for drinking and purification." - 12 (From him)

Similarly, a Hadith is narrated from the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) which Ibn 'Umar narrated, saying: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) went on some of his journeys. Once they started traveling at night and passed by a person who had his own pond. Hazrat 'Umar said, "O owner of the pond! Did predators drink water from your pond tonight?" The Master of the Worlds (peace and blessings of Allah be upon him) said, "O owner of

the pond! Do not inform him of this. He is charged [with its care]. Whatever is in their bellies belongs to them, and what remains is for us to drink and for purification." (T) "Al-Miqrah" with a kasrah is the place where rainwater collects. (T)

(Note 2): Al-Miqrah with a kasrah is a gathering of water. (M)

1. Shu'ab al-Iman, Chapter on Foods, Hadith 5801, published by Dar al-Kutub al-'Ilmiyah, Beirut, Lebanon, 5/157; Al-Mustadrak, Book of Foods, published by Dar al-Fikr, Beirut, 4/126.
2. Sunan al-Daraqutni, Book of Purification, 1/26.

फ़तावा रिज़विया जिल्द 4

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "जब तुम में से कोई अपने मुसलमान भाई के पास जाए और वह उसे अपने खाने में से खिलाए, तो वह उसे खा ले और उसके बारे में सवाल न करे। और अगर वह उसे अपने पेय में से पिलाए, तो वह उसे पी ले और उसके बारे में कुछ न पूछे।" (त)

अमीरुल मोमिनीन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) एक तालाब के पास से गुज़रे, उनके साथ अम्र इब्न अल-आस (रज़ियल्लाहु अन्हु) भी थे। उन्होंने तालाब के मालिक से पूछना शुरू किया, "क्या तुम्हारे तालाब में जंगली जानवर भी पानी पीते हैं?" अमीरुल मोमिनीन ने फ़रमाया: "ऐ तालाब वाले! हमें मत बताओ।"

मालिक ने मुवत्ता में यह्या इब्न अब्दुर रहमान से रिवायत की है कि हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) सवारों के एक दस्ते में बाहर निकले जिनमें हज़रत अम्र इब्न अल-आस (रज़ियल्लाहु अन्हु) भी शामिल थे। वे एक तालाब पर पहुँचे, तो अम्र ने कहा, "ऐ तालाब के मालिक, क्या जंगली जानवर तुम्हारे तालाब पर आते हैं?"

इमाम मालिक (रहमतुल्लाह अलैहि) ने अपनी मुवत्ता में हज़रत यह्या बिन अब्दुर रहमान (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की है कि हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) सवारों के एक दस्ते में तशरीफ़ ले गए, उनमें हज़रत अम्र इब्न अल-आस (रज़ियल्लाहु अन्हु) भी थे। जब वे एक तालाब पर पहुँचे तो हज़रत अम्र इब्न अल-आस ने [पूछा]...

(नोट 1): इसी तरह की एक हदीस नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) की हदीस से वर्णित है। उन्होंने कहा: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपनी कुछ यात्राओं पर निकले। उन्होंने रात में सफ़र किया और एक ऐसे व्यक्ति के पास से गुज़रे जिसके पास उसका अपना हौज़ (मिकराह) था। उमर ने कहा, "ऐ हौज़ वाले, क्या आज रात जंगली जानवरों ने तुम्हारे हौज़ से पानी पिया है?" नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, "ऐ हौज़ वाले, उसे मत बताओ। यह उस पर भार डालने वाला है। जो उन्होंने अपने पेट में लिया वह उनका है, और जो बच गया वह हमारे पीने और पाकी (सफ़ाई) के लिए है।" - 12 (मिनहु)

इसी तरह की नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से वह हदीस रिवायत है जो इब्न उमर ने रिवायत की है, फ़रमाया: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपने कुछ सफ़रों में तशरीफ़ ले गए। एक दफ़ा रात को सफ़र शुरू किया तो एक ऐसे शख़्स पर गुज़र हुआ जिसके पास उसका अपना

तालाब था। हज़रत उमर ने कहा, "ऐ तालाब वाले! क्या रात को तेरे तालाब से जंगली जानवरों ने पानी पिया है?" सरकारे दो आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, "ऐ तालाब वाले! उसे इस बात की ख़बर न दो। वह इस पर नियुक्त (या ज़िम्मेदार) है। जो उनके पेटों में है वह उनके लिए है, और जो बाक़ी है वह हमारे पीने और तहारत (पवित्रता) के लिए है।" (त) "मिकराह" कसराह (ज़ेर) के साथ वह जगह है जहाँ बारिश का पानी जमा हो। (त)

(नोट 2): मिकराह कसराह के साथ पानी जमा होने की जगह है। (म)

1. शुअबुल ईमान, भोजन का अध्याय, हदीस 5801, दार अल-कुतुब अल-इलमिया, बेरूत, लेबनान द्वारा प्रकाशित, 5/157; अल-मुस्तदरक, भोजन की पुस्तक, दार अल-फ़िक्र, बेरूत द्वारा प्रकाशित, 4/126।
2. सुनन अद-दाराकुतनी, तहारत (पवित्रता) की पुस्तक, 1/26।

فتاوی رضویہ جلد چہارم

النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اذادخل احد کم علی اخیہ المسلم فاطعمہ من طعامہ فلیاکل ولا یسأل عنہ وان سقاہ من شرابہ فلیشرب ولایسأل عنہ ۱۔ کہ نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: جب تم میں سے کوئی اپنے مسلمان بھائی کے پاس جائے اور وہ اسے اپنے کھانے سے کھلائے تو کھالے اور اس کے بارے میں سوال نہ کرے اور اگر وہ اپنے مشروب سے پلائے تو پی لے اور اس کے بارے میں کچھ نہ پوچھے ۔ (ت)

امیر المومنین عمر ۱ رضی اللہ عنہ ایک حوض پر گزرے عمرو بن عاص رضی اللہ تعالیٰ عنہ ساتھ تھے حوض والے سے پوچھنے لگے کیا تیرے حوض میں درندے بھی پانی پیتے ہیں؟ امیر المومنین نے فرمایا : اے حوض والے! ہمیں نہ بتا،

مالك في مؤطاہ عن یحیی بن عبدالرحمن ان عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ خرج فی رکب فیھم عمرو بن العاص رضی اللہ تعالیٰ عنہ حتی وردوا حوضا فقال عمرو یاصاحب الحوض ھل ترد حوضك امام مالک رحمہ اللہ نے اپنے مؤطا میں حضرت یحیی بن عبدالرحمن رضی اللہ عنہ سے روایت کیا کہ حضرت عمر رضی اللہ عنہ سواروں کے ایک دستہ میں تشریف لائے ان میں حضرت عمرو بن عاص رضی اللہ عنہ بھی تھے ایک حوض پر پہنچے تو حضرت عمرو بن عاص

عـ ۱ : ویروی مثل ذلک عن النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم من حدیث ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنھما قال خرج رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فی بعض اسفارہ فسار لیلا فمروا علی رجل عند مقراۃ لہ ۲ فقال عمر یا صاحب المقراۃ اولغت السباع اللیلۃ فی مقراتك فقال صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم یا صاحب المقراۃ لاتخبرہ ھذا مکلف لھا احملت فی بطونھا ولنا ما بقی شراب وطھور ۱۲ منہ۔ اسی

طرح کی نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے وہ حدیث مروی ہے جو ابن عمر نے روایت کی ہے فرمایا : رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اپنے بعض سفروں میں تشریف لے گئے ایک دفعہ رات کو سفر شروع کیا تو ایک ایسے شخص پر گزر ہوا جس کے پاس اس کا اپنا تالاب تھا تو حضرت عمر نے کہا اے تالاب والے! کیا رات کو تیرے تالاب سے درندوں نے پانی پیا ہے؟ سرکار دو عالم صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا اے تالاب والے! اسے اس بات کی خبر نہ دو یہ مکلف ہے جو ان کے پیٹوں میں ہے وہ ان کے لئے ہے اور باقی ہے وہ ہمارے پینے اور طہارت کے لئے ہے۔ (ت)

"المقراۃ" کسرہ کے ساتھ وہ جگہ جہاں بارش کا پانی جمع ہو ۔ (ت)

عـ ۲ : المقراۃ بالکسر مجتمع الماء (م)

1 شعب الایمان باب فی المطاعم حدیث ۵۸۰۱ مطبوعہ دار الکتب علمیہ بیروت لبنان ۵/ ۱۵۷، المستدرک کتاب الاطعمہ مطبوعہ دار الفکر بیروت ۴/ ۱۲۶ 2 سنن دار قطنی کتاب الطہارۃ ۱/ ۲۶

Fatawa Ridawiyya - Volume 4

[...the predators.] Then Umar ibn al-Khattab (may Allah be pleased with him) asked: "O owner of the pool! Do predators also come to your pool?" Umar ibn al-Khattab (may Allah be pleased with him) said: "O owner of the pool! Do not inform us, for we go to the predators and they come to us." [1] My master Abdul Ghani (may Allah have mercy on him) said: "Perhaps it was a small pool, otherwise he wouldn't have asked." End of summary. And under the phrase "Do not inform us," he says: "Meaning, even if you know that predators frequent it, because we do not know that, the water is pure for us. Thus, if we were to use it, we would be using pure water. 'And Allah does not burden a soul beyond its capacity.' [3]"

The weak servant—may the Strong, Kind, Exalted, and High Lord grant him forgiveness—says: The noble master, may Allah Almighty have mercy on him, has interpreted this Hadith, as you see, based on what we have previously established: that what is required is the absence of knowledge of impurity, not the knowledge of the absence of impurity. It is not mandatory for us to investigate, for even if a thing is actually impure in reality, it is pure for us as long as we do not know of its impurity. That is why the pool was interpreted as a small pool that can be contaminated. The prominent scholar of his time, my master Zayn ibn Nujaym al-Misri (may Allah Almighty have mercy on him), preceded him in this interpretation in 'Al-Bahr al-Ra'iq.' (T)

Marginal Note (ah): i.e., in our case, even if it is contrary to that in reality. 12 From him (m) | Meaning, it is pure in our right although it might be contrary to reality. 12 From him (t)

Footnotes: 1. Al-Muwatta Imam Malik, Chapter: Purity for Ablution, printed by Mir Muhammad Kutub Khana, Karachi, p. 17. 2. Al-Hadiqa al-Nadiyya, Part 1 regarding what was narrated from the Prophet (peace and blessings be upon him), printed by Nooriya Ridawiyya, Faisalabad, 256/2. 3. Al-Hadiqa al-Nadiyya, Part 1 regarding what was narrated from the Prophet (peace and blessings be upon him), printed by Nooriya Ridawiyya, Faisalabad, 256/2.

[...दरिंदे।] फिर उमर बिन अल-खत्ताब (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने पूछा: "ऐ हौज़ के मालिक! क्या तुम्हारे हौज़ पर दरिंदे भी आते हैं?" हज़रत उमर बिन अल-खत्ताब (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने फ़रमाया: "ऐ हौज़ वाले! हमें न बताना, क्योंकि हम दरिंदों के पास जाते हैं और वे हमारे पास आते हैं।" [१] मेरे आक़ा सैयदी अब्दुल ग़नी (रहमतुल्लाह अलैह) ने फ़रमाया: "शायद वह छोटा हौज़ था, वरना वे न पूछते।" संक्षिप्त विवरण समाप्त। और उनके कथन "हमें न बताना" के बारे में वे कहते हैं: "अर्थात, भले ही तुम जानते हो कि दरिंदे वहाँ आते-जाते हैं, लेकिन चूँकि हम इसे नहीं जानते, इसलिए हमारे लिए वह पानी पाक है। अतः यदि हम इसे इस्तेमाल करेंगे, तो हम पाक पानी ही इस्तेमाल करेंगे। 'और अल्लाह किसी जान पर उसकी क्षमता से अधिक बोझ नहीं डालता।' [३]"

कमज़ोर बंदा—जिसकी बख़्शिश मज़बूत, मेहरबान और बुलंद-ओ-बाला रब्ब फ़रमाए—कहता है कि आदरणीय मौलाना ने इस हदीस को जैसा कि आप देख रहे हैं, उस आधार पर लिया है जैसा कि हमने पहले ज़िक्र किया है: कि आवश्यक बात अशुद्धि (नजासत) का ज्ञान न होना है, न कि शुद्धता (अदम-ए-नजासत) का ज्ञान होना। और हम पर शोध करना अनिवार्य नहीं है, क्योंकि यदि कोई वस्तु वास्तव में अशुद्ध है, तब भी जब तक हमें उसकी अशुद्धि का पता नहीं चलता, वह हमारे लिए शुद्ध है। इसीलिए इस हौज़ को छोटे हौज़ के रूप में माना गया है जो अशुद्ध हो सकता है। उनके समय के प्रसिद्ध विद्वान सैयदी ज़ैन बिन नुजैम मिस्री (रहमतुल्लाह अलैह) ने उनसे पहले 'अल-बहरुल राइक' में इसी व्याख्या को अपनाया है। (त)

हाशिया (अह): यानी हमारे हक़ में, चाहे वह वास्तव में इसके विपरीत हो। १२ मुनहु (म) | यानी हमारे हक़ में पाक है अगरचे वह हक़ीक़त में इसके ख़िलाफ़ हो। १२ मुनहु (त)

पाद-टिप्पणियाँ (Footnotes): १. अल-मुवत्ता इमाम मालिक, अत्तहूरु लिल-वुज़ू, मीर मुहम्मद कुतुब ख़ाना, कराची, पृ. १७ २. अल-हदीक़तुल नदिय्या, नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से संबंधित पहला भाग, नूरिया रिज़विया, फ़ैसलाबाद, २५६/२ ३. अल-हदीक़तुल नदिय्या, नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से संबंधित पहला भाग, नूरिया रिज़विया, फ़ैसलाबाद, २५६/२

पृष्ठ ७६१ में से ५१७

السباع فقال عمر بن الخطاب یا صاحب الحوض لا تخبرنا فإنا نرد علی السباع وترد علینا 1 رضی اللہ عنہ نے پوچھا: اے حوض والے! کیا تیرے حوض میں درندے بھی آتے ہیں؟ حضرت عمر بن خطاب رضی اللہ عنہ نے فرمایا: اے صاحبِ حوض! ہمیں نہ بتانا کیوں کہ ہم درندوں کے پاس اور وہ ہمارے ہاں آتے جاتے ہیں۔

قال سیدي عبد الغني ولعله کان حوضاً صغیراً وإلا لما سأل 2 اھ ملخصاً وقال تحت قولہ لا تخبرنا اي ولو کنت تعلم انہ تردد السباع لاننا نحن لا نعلم ذلك فالماء طاھر عندنا فلو استعملناہ لاستعملنا ماء طاھراً عہ ولا یکلف اللہ نفساً إلا وسعھا 3 اھ سیدی عبدالغنی رحمہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا: شاید وہ چھوٹا حوض تھا ورنہ وہ نہ پوچھتے، انتہی تلخیص۔ وہ "لا تخبرنا" (ہمیں نہ بتانا) کے تحت فرماتے ہیں یعنی اگرچہ تو جانتا بھی ہو کہ درندے آتے ہیں، کیونکہ ہم اس بات کو نہیں جانتے، پس ہمارے نزدیک پانی پاک ہے پس اگر ہم اسے استعمال کریں گے تو پاک پانی استعمال کریں گے۔ اور ہر نفس کو اللہ تعالیٰ اس کی طاقت کے مطابق تکلیف دیتا ہے۔ (ت)

یقول العبد الضعیف غفر لہ القوي اللطیف جل وعلا قد حمل المولی الفاضل رحمہ اللہ تعالی ھذا الحدیث کما تری علی ما قدمنا من ان المطلوب عدم العلم بالنجاسة لا العلم بعدم النجاسة ولیس علینا ان نبحث فان الشیئ وان کان متنجسا في الواقع فانہ طاھر لنا مالم نعلم بذلك ولذا حمل الحوض علی حوض صغیر یحمل الخبث وقد سبقہ الی ھذا الحمل علامة عصرہ سیدي زین بن نجیم المصري رحمہ اللہ تعالی بندہ ضعیف "قوی و مہربان اور بلند و بالا ذات باری اس کی بخشش فرمائے" کہتا ہے کہ فاضل مولانا نے اس حدیث کو جیسا کہ تم دیکھتے ہو اس بات پر محمول کیا ہے جس کا ہم نے پہلے ذکر کیا ہے یعنی مطلوب، نجاست کا علم نہ ہونا ہے نہ کہ عدم نجاست کا علم ہونا ہے اور ہم

پر لازم نہیں کہ ہم بحث کریں کیونکہ کوئی چیز اگرچہ فی الواقع ناپاک بھی ہو تو ہمارے نزدیک پاک ہوگی جب تک ہمیں اس کے نجس ہونے کا علم نہ ہو۔ اسی لئے حوض کو چھوٹے حوض پر محمول کیا گیا ہے جو نجس ہو جاتا ہے۔ اپنے زمانے کے علامہ سیدی زین بن نجیم رحمہ اللہ تعالیٰ نے البحر الرائق (ت)

عه: اي في حقنا وان كان على خلاف ذلك في الواقع ۱۲ منہ (م) | یعنی ہمارے حق میں پاک ہے اگرچہ وہ حقیقۃً اس کے خلاف ہو ۱۲ منہ (ت)

1 الموطأ امام مالك الطهور للوضوء مطبوعہ میر محمد کتب خانہ کراچی ص ۱۷ 2 الحديقة الندية الصنف الاول فيما ورد عن النبي صلى الله عليه وسلم مطبوعہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۲۵۶/۲ 3 الحديقة الندية الصنف الاول فيما ورد عن النبي صلى الله عليه وسلم مطبوعہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۲۵۶/۲

Fatawa Ridawiyya Volume 4

In 'Al-Bahr', it is stated under the section (Sub-topics), citing from 'Al-Khulasah' which refers to 'Al-Asl', that one may perform ablution from a reservoir about which there is a fear of impurity but no certainty. It is not mandatory to inquire about it when in need in the absence of evidence, as the default state (purity) is the evidence that allows usage. And Hazrat Umar (may Allah be pleased with him) said... so he mentioned the aforementioned Hadith in meaning. You know that his speech is regarding a small reservoir, as is not hidden. He used the Hadith as evidence for the non-obligatoriness of asking and investigating about it, even if there is a fear of impurity, based on the principle of original purity. So, this weak servant (the author) adhered to this position in this place following both of them. However, the Hadith has multiple interpretations and facets. It has been said that it means if the water is abundant, it does not become impure by the drinking of predatory animals, and Sheikh al-Muhaqqiq al-Dehlawi (may Allah have mercy on him) followed this in the commentary of 'Mishkat'. However, the question of 'Amr bin al-Aas (may Allah be pleased with him) complicates this matter, as indicated by Mulla Ali Qari (may Allah have mercy on him). The gnostic An-Nabulsi (may Allah have mercy on him) said that if it had been large, the size of ten by ten (cubits), he would not have asked about its impurity, because in that case...

---

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/86.

फतावा रिज़विया जिल्द 4

'अल-बहर' में (शाखाओं) के अंतर्गत, 'अल-ख़ुलासा' का हवाला देते हुए, जो 'अल-अस्ल' की ओर संकेत करता है, कहा गया है कि उस हौज़ (जलाशय) से वुज़ू किया जा सकता है जिसके गंदा होने की आशंका हो लेकिन यकीन न हो। साक्ष्य के अभाव में ज़रूरत के समय इसके बारे में पूछना वाजिब नहीं है, क्योंकि मूल अवस्था (शुद्धता) ही साक्ष्य है जो उपयोग की अनुमति देती है। और हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा... फिर उन्होंने अर्थ के अनुसार उपर्युक्त हदीस का उल्लेख किया। आप जानते हैं कि उनकी बात छोटे हौज़ के बारे में है, जैसा कि छिपा नहीं है। उन्होंने हदीस को इस बात के प्रमाण के रूप में पेश किया कि मूल शुद्धता के आधार पर इसके बारे में पूछना और जांच करना वाजिब नहीं है, भले ही इसके नापाक होने का डर हो। अत; इस कमज़ोर बंदे (लेखक) ने इन दोनों का अनुसरण करते हुए इस स्थान पर इसी बात को अपनाया। हालाँकि, हदीस के कई पहलू और अर्थ हैं। कहा गया है कि इसका मतलब यह है कि यदि पानी बहुत अधिक है, तो दरिंदों के मुँह डालने से वह नापाक नहीं होगा, और शेख अल-मुहक्क़िक़ अल-देहलावी (रहमतुल्लाहि अलैहि) ने 'मिश्कात' की शरह (व्याख्या) में इसी बात का पालन किया है। लेकिन हज़रत अम्र बिन अल-आस (रज़ियल्लाहु अन्हु) का सवाल इस बात को उलझा देता है, जैसा कि मुल्ला अली क़ारी (रहमतुल्लाहि अलैहि) ने इसकी ओर इशारा किया है। आरिफ़ नाबलुसी (रहमतुल्लाहि अलैहि) ने कहा कि यदि वह दस बाई दस (हाथ) की मात्रा में बड़ा होता, तो आप उसकी नजासत (अशुद्धता) के बारे में नहीं पूछते, क्योंकि उस स्थिति में...

---

1. अल-बहर अल-राइक, किताब अत-तहारह, एच.एम. सईद कंपनी, कराची 1/86.

पृष्ठ 518 का 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

في البحر حيث قال (فروع) في الخلاصة معزيا الى الاصل يتوضأ من الحوض الذى يخاف فيه قذر ولايتيقنه ولايجب ان يسأل اذا لحاجة اليه عند عدم الدليل والاصل دليل يطلق الاستعمال وقال عمر رضى الله تعالى عنه الخ فذكر الحديث المذكور بمعناه وانت تعلم ان كلامه انما هو فى الحوض الصغير كما لا يخفى وقد استشهد بالحديث على عدم وجوب السؤال والتفتيش عنه وان خشى التنجس بناء على اصابة الطهارة فالعبد الضعيف تمسک به فى هذا المقام تبعاً لهما لكن الحديث ذو وجوه وشجون فقد قيل يعنى ان الماء كثير فلايحتمل التنجس بولوغ السباع وعليه درج الشيخ المحقق الدهلوى رحمه الله تعالى فى شرح المشكوة ويكدره سؤال عمروبن العاص رضى الله تعالى عنه كما اشار اليه على القارى وقال العارف النابلسى لوكان كثيرا مقدار العشر لما سأل لانه لايتنجس ح الابقهور اثر النجاسة فيه اجماعاً وظهور الاثر يعرف بالحس فلا يحتاج

میں اس حمل کی طرف سبقت کی ہے جب انہوں نے فرمایا: (فروع) خلاصہ میں مبسوط کی طرف نسبت کرتے ہوئے فرمایا کہ اس حوض سے وضو کر سکتا ہے جس کے گندہ ہونے کا گمان ہو لیکن اس کا یقین نہ ہو اور اس پر سوال کرنا واجب نہیں کیونکہ اس کی ضرورت دلیل نہ ہونے کی صورت میں ہوتی ہے اور اصل (طہارت) دلیل ہے جو استعمال کا اطلاق کرتی ہے اور حضرت عمر رضی اللہ عنہ نے فرمایا (آخر تک) انہوں نے حدیث مذکور کو معنوی طور پر ذکر کیا اور تم جانتے ہو کہ ان کا کلام چھوٹے حوض کے بارے میں ہے جیسا کہ مخفی نہیں اور انہوں نے حدیث شریف سے شہادت پیش کی ہے کہ اس کے بارے میں پوچھنا اور تفتیش کرنا واجب نہیں اگر چہ اس کے ناپاک ہونے کا اندیشہ ہو کیونکہ طہارت اصل ہے۔ پس اس ضعیف بندے نے اس مقام پر ان دونوں کی اتباع میں اسی بات کو اختیار کیا لیکن حدیث کی کئی وجوہ اور مفاہیم ہیں کہا گیا ہے اس

سے مراد یہ ہے کہ پانی زیادہ ہے تو درندوں کے منہ ڈالنے سے ناپاک نہیں ہوگا۔ حضرت شیخ عبد الحق محدث دہلوی رحمہ اللہ نے مشکوۃ شریف کی شرح میں یہی بات درج فرمائی لیکن حضرت عمرو بن عاص رضی اللہ عنہ کا سوال اس بات کو مکدر کر دیتا ہے جیسا کہ اس کی طرف حضرت ملا علی قاری رحمہ اللہ نے اشارہ فرمایا۔ عارف نابلسی رحمہ اللہ نے فرمایا اگر وہ زیادہ دہ در دہ کی مقدار ہوتا تو آپ اس کی نجاست کا سوال نہ فرماتے کیونکہ اس صورت میں

---

1. البحر الرائق کتاب الطہارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱ / ۸۶

Fatawa Razawiya - Volume 4

[Regarding] the question 1. etc. It was not for 'Amr that the ruling of abundant water should be hidden from him, nor was he among those who suffer from obsessive doubts. Thus, his questioning is the clearest evidence that the water was small [in quantity] and susceptible to carrying impurity. He was in an open field, which was a likely place for wild beasts to frequent. Based on this, the question arose, and 'Umar dismissed it by setting aside the probability. One should take note that his narration of consensus (Ijma') only considers abundant water, regardless of any specific interpretation, and not limited to the specific measure of ten-by-ten, as is evident. This is the exposition of his speech according to his intention. (T)

I say (Aqool): It appears to me that there is room for a question here in two ways. Firstly, since we have informed you that the consensus is only that abundant water does not become impure except by change (in its properties), however, as for the definition of 'abundant,' there is a well-known dispute and a great difference recorded in books. Often, something is 'abundant' for one group while 'small' for others, and vice-versa. And since the matter is as we have described to you, what makes you know? Perhaps the water was 'small' in the view of 'Amr, so he inquired, while it was 'abundant' in the view of 'Umar, so it did not become numerous... and the matter is clearer according to the opinion.

Footnote: 1. Al-Hadiqa al-Nadiyya regarding what was narrated from the Prophet (may Allah bless him and grant him peace), printed at Nooriya Razawiya Faisalabad, 2/256. Page 519 of 761

फ़तावा रज़विया - जिल्द 4

प्रश्न 1 के संबंध में... और हज़रत 'अम्र' ऐसे नहीं थे कि उन पर प्रचुर पानी का हुक्म छिपा रहे, और न ही वे वसवसा (संदेह) करने वालों में से थे। अतः उनका प्रश्न इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण है कि पानी कम था जो अशुद्ध हो सकता था। वह जंगल में थे जहाँ दरिंदों के आने की संभावना थी। इसी आधार पर प्रश्न उत्पन्न हुआ, जिसे हज़रत 'उमर' रज़ियल्लाहु अन्हु ने संभावनाओं को नज़रअंदाज़ करते हुए खारिज कर दिया। यह जान लेना चाहिए कि उनका इजमा (सहमति) नक़ल करना केवल प्रचुर पानी के संदर्भ में था, किसी विशेष व्याख्या से परे, न कि विशेष रूप से 'दस-बाय-दस' की मात्रा तक सीमित, जैसा कि स्पष्ट है। यह उनके उद्देश्य के अनुसार उनके शब्दों की व्याख्या है। (त)

मैं कहता हूँ (अकूल): मुझे यह प्रतीत होता है कि यहाँ दो प्रकार से प्रश्न की गुंजाइश है। पहला: जैसा कि हम आपको बता चुके हैं कि इजमा केवल इस बात पर है कि प्रचुर पानी बिना रंग-रूप या स्वाद बदले अशुद्ध नहीं होता। लेकिन 'प्रचुर पानी' की सीमा निर्धारित करने में प्रसिद्ध मतभेद है और किताबों में बड़ा विवाद दर्ज है; अक्सर एक चीज़ एक समूह के निकट 'प्रचुर' होती है तो दूसरों के निकट 'थोड़ी', और कभी इसके विपरीत। जब मामला वैसा ही है जैसा हमने बयान किया, तो आपको क्या पता—शायद हज़रत 'अम्र' बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु के निकट पानी थोड़ा था, इसलिए उन्होंने पूछताछ की, और हज़रत 'उमर' के निकट वह प्रचुर था, अतः वह प्रचुर नहीं हुआ... और मामला राय के अनुसार अधिक स्पष्ट है।

पाद-टिप्पणी: 1. अल-हदीका अल-नदिया, नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से वर्णित हदीसों के संबंध में, मुद्रित: नूरिया रज़विया, फैसलाबाद, 2/256। पृष्ठ 519/761

وہ بالا جماع اسی وقت ناپاک ہوتا ہے جب اس میں نجاست کا اثر ظاہر ہو اور اثر کا ظاہر ہونا جس کے ساتھ پہچانا جاتا ہے پس وہ سوال کا محتاج نہ ہوگا اھ یعنی حضرت عمر و بن عاص رضی اللہ تعالٰی کی یہ شان نہ تھی کہ آپ پر زیادہ پانی کا حکم مخفی رہتا اور نہ ہی آپ وسوسہ کرنے والوں میں سے تھے لہذا آپ کا سوال اس بات کی بہت بڑی دلیل ہے کہ پانی تھوڑا تھا جو ناپاک ہو جاتا ہے اور وہ جنگل میں تھا لہذا وہاں درندوں کے آنے کا گمان ہو سکتا تھا اس بنیاد پر سوال پیدا ہوا جسے حضرت عمر رضی اللہ عنہ نے ترک احتمال کے ساتھ رد کردیا۔ آگاہ رہنا چاہئے کہ ان کا اجماع نقل کرنا خاص تفسیر سے قطع نظر محض زیادہ پانی کی بنیاد پر تھا دس ۱۰ کی مقدار سے تخصیص کرتے ہوئے نہیں جیسا کہ مخفی نہیں یہ ان کے مقصد کے مطابق ان کے کلام کی تقریر ہے۔ (ت)

اقول: (میں کہتا ہوں۔ ت) مجھ پر یہ بات ظاہر ہوئی ہے کہ یہاں دو طرح سے سوال ہو سکتا ہے۔

اوّل: جب ہم نے تمہیں بتایا کہ اجماع اس بات پر ہے کہ کثیر پانی تبدیلی کے بغیر ناپاک نہیں ہوتا لیکن کثیر کی حد بندی میں اختلاف مشہور ہے اور بہت بڑا اختلاف جو کتب میں تحریر ہے اکثر ایک چیز کسی قوم کے نزدیک کثیر ہوتی ہے اور دوسروں کے نزدیک قلیل اور کبھی اس کے خلاف ہوتا ہے اور جب معاملہ ایسا ہو جیسا کہ ہم نے بیان کیا تو تمہیں کیا خبر کہ حضرت عمر و بن عاص رضی اللہ تعالٰی عنہ کے نزدیک پانی تھوڑا ہو لہذا انہوں نے [تحقیق کی اور حضرت عمر کے نزدیک کثیر ہو پس وہ کثیر نہ ہوا اور معاملہ قول پر زیادہ ظاہر ہے]۔

حاشیہ: ۱ الحدیقۃ الندیہ فیما ورد عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم مطبوعہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۲۵۶/۲ صفحہ ۵۱۹ از ۷۶۱

Fatawa Razawiya Volume 4

[Arabic Text Section] Our companions [state] that "much" in the right of everyone is what he considers to be much. It appears to me as an answer to this that a Mujtahid (jurist) has no right to compel another Mujtahid to follow his own Taqlid (imitation) or to prevent him from acting according to his own Madhhab (school of law). This is why the scholar of Medina [Imam Malik] objected to Harun al-Rashid when the latter sought his permission to hang the Muwatta on the Kaaba and force the people to follow what it contained. He said, "Do not do that, for the companions of the Messenger of Allah (peace be upon him) differed in secondary matters (Furu') and dispersed throughout various lands, and each of them was correct." This is narrated from him by Abu Nu'aym in 'Al-Hilya'. And similarly, [he objected] to Al-Mansur when he intended to send his books to the main cities and command the Muslims not to exceed them. He said, "Do not do this, for opinions have already reached the people; they have heard hadiths and narrated reports, and every people took what reached them first and followed it as their religion. So, leave the people and what each city's residents have chosen for themselves." Ibn Sa'd narrated this from him in 'Al-Tabaqat'. Thus, neither a Mujtahid nor even an ordinary person (Aami) should be forced to follow the opinion of another in matters that are delegated to the judgement of the person affected (the Mubtala), as is stipulated in 'Al-Bahr [Al-Ra'iq]' and others. Based on this, the statement...

[Urdu Text Section] ...debated, and according to Hazrat Umar (may Allah be pleased with him), it was more; therefore, he did not worry about it. Based on the statement of our companions, it is evident that for each person, 'much' is what they deem to be much. The answer to this became clear to me as follows: no Mujtahid has the right to encourage another Mujtahid to follow his Taqlid and prevent him from practicing his own school of thought. This is why the scholar of Medina refused to agree with Harun al-Rashid when he sought permission to hang the Muwatta on the wall of the Kaaba and encourage people to act upon it. The scholar said: "Do not do this. The companions of the Messenger of Allah (peace be upon him) differed in secondary branches (Furu') and spread across various cities, and each one is on the right path." This is narrated from Abu Nu'aym in 'Hilya'. And when Mansur intended to send their books to different cities and command the Muslims not to transgress them, the scholar of Medina, while refusing, said: "Do not do this. Information has reached the people; they have heard Hadiths and narrated traditions, and whichever reached which people, they adopted it and began acting upon it. Therefore, leave the people

to what the residents of each city have adopted for themselves." Ibn Sa'd recorded this in 'Tabaqat'. Similarly, no Mujtahid or ordinary person should be forced to follow someone else's assumption in matters left to the discretion of the one involved (mubtala), as described in 'Bahr al-Ra'iq', etc. On this basis, it is inappropriate to interpret Hazrat Umar's (may Allah be pleased with him) statement "La tukhbirna" (Do not inform us) to mean that "In my view, the water is plenty; even if in your view it is a little, even then act upon my opinion and do not ask," but rather on this basis...

फतावा रज़विया जिल्द चौथी

[अरबी पाठ अनुभाग] हमारे साथियों का कहना है कि हर किसी के हक में "ज़्यादा" वही है जिसे वह ज़्यादा समझे। इस सवाल के जवाब में मुझे यह महसूस होता है कि किसी मुज्तहिद (धर्मशास्त्री) को यह अधिकार नहीं है कि वह दूसरे मुज्तहिद को अपनी तक़लीद (अनुसरण) करने के लिए मजबूर करे या उसे अपने मज़हब के अनुसार कार्य करने से रोके। यही कारण है कि मदीना के विद्वान [इमाम मालिक] ने हारून रशीद को मना कर दिया जब उसने मोता (Muwatta) को काबा की दीवार पर लटकाने और लोगों को उसमें जो कुछ है उसका पालन करने के लिए मजबूर करने की अनुमति मांगी थी। उन्होंने कहा, "ऐसा मत करो, क्योंकि अल्लाह के रसूल (शांति उन पर हो) के साथियों ने माध्यमिक मामलों (फुरोअ) में असहमति जताई और विभिन्न देशों में फैल गए, और उनमें से प्रत्येक सही था।" यह उनके माध्यम से अबू नुएम द्वारा 'अल-हिलया' में वर्णित है। और इसी तरह, [उन्होंने] अल-मंसूर को [मना किया] जब उन्होंने अपनी किताबें मुख्य शहरों में भेजने और मुसलमानों को उनसे आगे न बढ़ने का आदेश देने का इरादा किया था। उन्होंने कहा, "ऐसा मत करो, क्योंकि लोगों तक राय पहले ही पहुँच चुकी है; उन्होंने हदीस सुनी हैं और रिपोर्ट सुनाई हैं, और प्रत्येक समुदाय ने वही अपनाया जो उन तक पहले पहुँचा और उसे अपने धर्म के रूप में पालन किया। इसलिए, लोगों को और प्रत्येक शहर के निवासियों ने अपने लिए जो चुना है, उसे छोड़ दें।" इब्न साद ने इसे 'अल-तबाक़ात' में उनसे वर्णित किया है। इस प्रकार, न तो किसी मुज्तहिद और न ही किसी साधारण व्यक्ति (आमी) को उन मामलों में दूसरे की राय का पालन करने के लिए मजबूर किया जाना चाहिए जो प्रभावित व्यक्ति (मुब्तला) के निर्णय को सौंपे गए हैं, जैसा कि 'अल-बहर [अल-राइक]' और अन्य में निर्धारित है। इसके आधार पर, कथन...

[उर्दू पाठ अनुभाग] ...बहस की, और हज़रत उमर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के अनुसार, यह अधिक था; इसलिए, उन्होंने इसके बारे में चिंता नहीं की। हमारे साथियों के बयान के आधार पर, यह स्पष्ट है कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए, 'ज़्यादा' वह है जिसे वे ज़्यादा मानते हैं। इसका उत्तर मुझे इस प्रकार स्पष्ट हुआ: किसी भी मुज्तहिद को दूसरे मुज्तहिद को अपनी तक़लीद करने के लिए प्रोत्साहित करने और उसे अपनी विचारधारा का अभ्यास करने से रोकने का अधिकार नहीं है। यही कारण है कि मदीना के विद्वान ने हारून रशीद से सहमत होने से इनकार कर दिया जब उसने काबा की दीवार पर मोता लटकाने और लोगों को उस पर अमल करने के लिए प्रोत्साहित करने की अनुमति मांगी थी। विद्वान ने कहा: "ऐसा मत करो। अल्लाह के रसूल (शांति उन पर हो) के साथियों ने माध्यमिक शाखाओं

(फ़ुरोअ) में मतभेद किया और विभिन्न शहरों में फैल गए, और हर कोई सही रास्ते पर है।" यह अबू नुएम से 'हिलया' में वर्णित है। और जब मंसूर ने अपनी किताबें अलग-अलग शहरों में भेजने और मुसलमानों को उनका उल्लंघन न करने का आदेश देने का इरादा किया, तो मदीना के विद्वान ने मना करते हुए कहा: "ऐसा मत करो। सूचना लोगों तक पहुँच गई है; उन्होंने हदीस सुनी है और परंपराओं को सुनाया है, और जो भी जिस लोगों तक पहुँचा, उन्होंने उसे अपना लिया और उस पर अमल करना शुरू कर दिया। इसलिए, लोगों को वही करने दें जो प्रत्येक शहर के निवासियों ने अपने लिए अपनाया है।" इब्न साद ने इसे 'तबाक़ात' में दर्ज किया है। इसी तरह, किसी भी मुज्तहिद या साधारण व्यक्ति को उन मामलों में किसी और के अनुमान का पालन करने के लिए मजबूर नहीं किया जाना चाहिए जो शामिल व्यक्ति (मुब्तला) के विवेक पर छोड़ दिए गए हैं, जैसा कि 'बहर अल-राइक' आदि में वर्णित है। इस आधार पर, हज़रत उमर के(अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) कथन "ला तुख़बिरना" (हमें सूचित न करें) की व्याख्या करना अनुचित है कि "मेरे विचार में, पानी प्रचुर मात्रा में है; भले ही आपके विचार में यह थोड़ा ही क्यों न हो, फिर भी मेरी राय पर अमल करें और न पूछें," बल्कि इस आधार पर...

[Arabic Text Column] اصحابنا ان الکثیر فی حق کل ما یستکثرہ- ویتراءی لی فی الجواب عنه ان المجتهد لیس له ان یحمل المجتهد الأخر علی تقلید نفسه ویصده عن العمل بمذهبه ولذا انکر عالم المدینة علی هارون الرشید اذا استأذنه ان یعلق المؤطا علی الکعبة ویحمل الناس علی مافیه فقال لا تفعل فان اصحاب رسول الله صلی تعالی علیه وسلم اختلفوا في الفروع وتفرقوا في البلدان وکل مصیب ابونعیم عنه في الحلیة وعلی المنصور اذ هم ان یبعث بکتبه الی الامصار ویأمر المسلمین ان لا یتعدوها فقال لا تفعل هذا فان الناس قد سبقت الیهم الاقاویل وسمعوا احادیث ورووا روایات واخذ کل قوم بما سبق الیهم ودانوا به فدع الناس وما اختار کل اهل بلد منهم لانفسهم ابن سعد عنه في الطبقات ففکذا لا یجبر مجتهد بل عامی علی تقلید ظن الغیر فیما یفوض الی رأی المبتلی کما نص علیه فی البحر وغیره فعلی هذا قول

[Urdu Text Column] بحث کی اور حضرت عمر رضی اللہ عنہ کے نزدیک زیادہ ہو لہذا انہوں نے اس کی پروا نہ کی۔ ہمارے اصحاب کے قول پر بات ظاہر ہے کہ ہر ایک کے حق میں وہی کثیر ہے جس کو وہ کثیر سمجھے۔ اس کا جواب مجھ پر یوں ظاہر ہوا کہ کسی مجتہد کو حق نہیں پہنچتا کہ کسی دوسرے مجتہد کو اپنی تقلید کی ترغیب دے اور اسے اس کے اپنے مذہب پر عمل کرنے سے روکے یہی وجہ ہے کہ مدینہ کے عالم نے ہارون الرشید کی بات ماننے سے انکار کردیا جب اس نے مؤطا کو کعبتہ اللہ کی دیوار پر لٹکانے اور لوگوں کو اس پر عمل کی ترغیب دینے کی اجازت طلب کی۔ عالم نے فرمایا: ایسا نہ کرو رسول اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے صحابہ نے فروع میں اختلاف کیا اور مختلف شہروں میں پھیل گئے اور ہر ایک حق پر ہے۔ یہ بات حلیہ میں ابونعیم سے مروی ہے۔ اور جب منصور نے مختلف شہروں میں انکی کتابیں بھیجنے اور

مسلمانوں کو حکم دینے کا ارادہ کیا کہ وہ ان سے تجاوز نہ کریں، تو اس کا انکار کرتے ہوئے عالم مدینہ نے فرمایا: "ایسا مت کرو لوگوں تک باتیں پہنچ چکی ہیں انہوں نے احادیث سُنی ہیں روایات نقل کی ہیں اور جس قوم تک جو پہنچا انہوں نے اسے اختیار کرکے اس پر عمل پیرا ہو گئے پس لوگوں کو اسی چیز پر چھوڑ دیجئے جو ہر شہر والوں نے اپنے لئے اختیار کرلی"۔ اسے ابن سعد نے طبقات میں نقل کیا۔ اسی طرح کسی مجتہد اور کسی عامی کو بھی اس چیز میں جو مبتلا کی رائے پر چھوڑی گئی ہے دوسرے کے گمان کی تقلید پر مجبور نہ کیا جائے جیسا کہ بحرالرائق وغیرہ میں بیان کیا ہے۔ اس بنیاد پر حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے قول "لا تخبرنا" (ہمیں خبر نہ دینا) کو اس بات پر محمول کرنا مناسب نہیں کہ میرے نزدیک پانی زیادہ ہے اگر تمہارے نزدیک تھوڑا بھی ہو تب بھی تم میری رائے پر عمل کرو اور سوال نہ کرو، بلکہ اس بنیاد پر

Volume Four Fatawa Razawiyya

[Right Column - Urdu Translation/Explanation of the Arabic Text] ...the meaning would also be that following conjecture was prohibited. The intent is that even though you consider the water to be a small amount, you are not certain of its impurity; therefore, their statement will be directed towards what is our objective. Second: We do not concede that there is no need for questioning regarding a large quantity of water, because sometimes it becomes foul-smelling or its color changes. Thus, there is a possibility that this happened due to long stagnation or the entry of impurity; hence, it being a subject for questioning is established. It is thus known that in a situation of doubt and possibility, the need for questioning to reveal the true state is equal for both small and large quantities. Furthermore, in a large quantity, the suspicion (of impurity) is based purely on sensory matters, meaning one of its qualities changes, unlike in a small quantity. Knowledge will not be attributed to mere sensation based just on this much, because the thing perceived along with the senses is not sufficient to clarify the matter and remove doubt, as is not hidden. Divine Grace: Allah Almighty bestowed the grace of this answer. Although this is a harm, may Allah Almighty make it beneficial, that if you speak this in the context of this Hadith...

[Left Column - Original Arabic Text] 'Umar (RA), do not inform us. It should not be interpreted as meaning that the water is abundant in my view, even if it is little in yours, so act according to my opinion and do not ask. Rather, the meaning here too is the prohibition of following conjectures; that is, although you consider the water little, you are not certain of its impurity. Thus, the discourse returns to what we intended. Secondly: Because we do not concede that abundant water does not require questioning. For sometimes water becomes foul-smelling and its color changes, so it is possible that this happened due to long stagnation or the entry of impurity. Therefore, it is established as a cause for questioning. Thus, it is known that the small and the large are equal in the need for questioning to reveal the situation when there is suspicion and possibility. However, in abundant liquids, suspicion is based on a sensory matter, meaning the change of one of the qualities, unlike with a small quantity. With this much, knowledge is not based on mere sensation because that which is perceived by sense is not sufficient for clarifying the matter and removing ambiguity, as is not hidden. And Allah poured out the answer to it, that this harm returns as pure benefit. So if you say this in the narrative of the Hadith...

[Footnote] (Ar): If you say: There is no scope for this in... (Ur): If you say that from this incident of the Hadith (continued on the next page)

[दायां कॉलम - उर्दू पाठ का अनुवाद] ...भी मतलब यह होगा कि अनुमान के पीछे चलने से रोका गया है। मतलब यह है कि हालांकि तुम पानी को कम समझते हो लेकिन तुम्हें इसकी नापाकी (अशुद्धि) का यकीन नहीं है। इसलिए उनकी बात को उसी ओर मोड़ा जाएगा जो हमारा उद्देश्य है। दूसरा: हम यह नहीं मानते कि अधिक पानी के बारे में पूछने की जरूरत नहीं होती क्योंकि कभी-कभी वह बदबूदार हो जाता है या उसका रंग बदल जाता है। अतः इस बात की संभावना है कि ऐसा लंबे समय तक ठहरे रहने या नापाकी (गंदगी) शामिल होने के कारण हुआ हो, इसलिए इसका पूछताछ का स्थान होना सिद्ध हो गया। अतः ज्ञात हुआ कि जब संदेह और संभावना की स्थिति हो, तो स्थिति स्पष्ट करने के लिए पूछताछ की आवश्यकता में थोड़ा और अधिक (पानी) बराबर हैं। इसके अलावा अधिक में (नापाकी का) संदेह मात्र इंद्रियबोध पर आधारित होता है यानी उसका कोई गुण बदल जाता है, जबकि थोड़े में ऐसा नहीं है। और केवल इतनी सी बात से ज्ञान को मात्र इंद्रियबोध की ओर श्रेय नहीं दिया जाएगा क्योंकि जिसके साथ किसी चीज़ का बोध होता है, वह बात को स्पष्ट करने और संदेह दूर करने के लिए पर्याप्त नहीं है, जैसा कि छिपा नहीं है। दिव्य कृपा: अल्लाह ताला ने इसके उत्तर की कृपा प्रदान की। यद्यपि यह नुकसानदेह है, अल्लाह ताला इसे लाभकारी बनाए कि यदि तुम इस हदीस के संदर्भ में यह बात करते हो...

[बायां कॉलम - अरबी पाठ का अनुवाद] 'उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु), हमें न बताएं। इसे इस तरह नहीं समझा जाना चाहिए कि पानी मेरे नज़दीक बहुत है, भले ही तुम्हारे नज़दीक कम हो, इसलिए मेरी राय पर अमल करो और पूछो मत। बल्कि, यहाँ भी अर्थ अनुमानों के अनुसरण का निषेध है। अर्थात, भले ही आप पानी को कम समझें, लेकिन आपको इसकी अशुद्धता का यकीन नहीं है। इस प्रकार, बात उसी ओर लौटती है जो हमने चाहा था। दूसरी बात: हम यह स्वीकार नहीं करते कि अधिक पानी में पूछताछ की आवश्यकता नहीं होती। क्योंकि कभी-कभी पानी बदबूदार हो जाता है या उसका रंग बदल जाता है। तो यह संभावना है कि यह लंबे समय तक रुकने या गंदगी के प्रवेश के कारण हुआ हो। अतः यह प्रश्न का विषय बन गया। तो ज्ञात हुआ कि संदेह और संभावना के समय स्थिति स्पष्ट करने के लिए पूछताछ की आवश्यकता में कम और अधिक बराबर हैं। सिवाय इसके कि अधिक मात्रा वाले पेय पदार्थों में संदेह इंद्रियगत बात पर आधारित होता है, मेरा मतलब है कि गुणों में से एक का परिवर्तन, कम के विपरीत। और इतनी मात्रा से ज्ञान केवल इंद्रियों पर आधारित नहीं होगा, क्योंकि जो इंद्रियों द्वारा अनुभव किया जाता है वह मामले को स्पष्ट करने और भ्रम को दूर करने के

लिए पर्याप्त नहीं है, जैसा कि स्पष्ट है। और अल्लाह ने इसका उत्तर प्रचुरता से दिया कि यह हानि शुद्ध लाभ के रूप में लौटती है। तो अगर आपने हदीस की कहानी में इसके बारे में कहा...

[पाद लेख] (अरबी): यदि आप कहें: इसमें कोई गुंजाइश नहीं है... (उर्दू): यदि तुम कहो कि हदीस की इस घटना से (बाकी अगले पृष्ठ पर)

جلد چہارم فتاوی رضویہ

[دایاں کالم] بھی مفہوم یہ ہوگا کہ گمان کی اتباع سے روکا گیا مطلب یہ کہ اگرچہ تم پانی کو تھوڑا سمجھتے ہو لیکن تمہیں اس کی نجاست کا یقین نہیں پس ان کے کلام کو اس کی طرف پھیرا جائے گا جو ہماری مراد ہے۔ دوم: ہم نہیں مانتے کہ زیادہ پانی کے بارے میں سوال کی ضرورت نہیں ہوتی کیونکہ بعض اوقات وہ بدبودار ہو جاتا ہے یا اس کا رنگ بدل جاتا ہے۔ پس اس بات کا احتمال ہے کہ زیادہ دیر ٹھہرنے یا نجاست داخل ہونے کے باعث ایسا ہوا ہو لہذا اس کا مقام سوال ہونا ثابت ہو گیا۔ پس معلوم ہوا کہ جب گمان و احتمال والی صورت ہو تو کشف حال کے لئے سوال کی ضرورت میں قلیل و کثیر برابر ہیں۔ علاوہ ازیں کثیر میں (نجاست کا) گمان محض امر حسی کی بنیاد پر ہوتا ہے یعنی اس کا کوئی وصف بدلتا ہے بخلاف قلیل کے۔ اور محض اتنی سی بات سے علم، مجرد حس کی طرف منسوب نہیں ہوگا کیونکہ جس کے ساتھ جس چیز کا ادراک ہوتا ہے وہ بات کو واضح کرنے اور شک کو دور کرنے کے لئے کافی نہیں جیسا کہ مخفی نہیں۔ فیضان الہی: اللہ تعالیٰ نے اس کے جواب کا فیضان عطا فرمایا اگرچہ یہ ضرر ہے اللہ تعالیٰ اسے نفع بخش فرمائے کہ اگر تم اس حدیث کے ضمن میں یہ بات کرتے ہو

[بایاں کالم] عمر لا تخبرنا لا ینبغی حمله علی ان الماء کثیر عندی وان کان قلیلا عندك فبرأیي فاعمل ولا تسأل بل المعنی علی هذا ایضاً هو المنع عن اتباع الظنون ای ان الماء وان تستقله لکن لست علی یقین من نجاسته فانصرف الکلام الی ما اردنا۔ واما ثانیاً: فلانا لا نسلم ان الکثیر لا یحتاج فیه الی السؤال فلربما ینتن الماء فیتغیر لونه فیحتمل انه لطول المکث او حلول الخبث فیتحقق مثار للسؤال فعلم ان القلیل والکثیر سواء فی حاجة السؤال لکشف الحال عند المظنة والاحتمال بید ان الکثیر فی الاشربة المظنة کالامر الحسی اعنی تغیر احد الاوصاف بخلاف القلیل وبهذا القدر لا یستند العلم الی مجرد الحس لان

الذى يدرك بالحس لا يكفى لبتين الامر وزوال اللبس كما لا يخفى۔ وافاض الله الجواب عنه بان هذا مضر يعود نفعاً محضاً فلئن قلتم به فى قصة الحديث عه فقد تركتم

[حاشیہ] عه : فان قلت لا مساغ لهذا في عه : اگر تو کہے کہ حدیث کے اس واقعہ سے (باقی بر صفحہ آئندہ)

Fatawa Ridawiyya, Volume 4

(Arabic text translation): You have abandoned your objective and admitted our intent because the basis of 'Amr's (may Allah be pleased with him) question was the possibility of impurity, and the basis of 'Umar's (may Allah be pleased with him) answer was following the original state (purity). This is what we were seeking. Your position based on the Hadith was that since large quantities of water do not carry impurity, do not inform us, meaning whether you inform us or not is the same. Based on this reasoning, a large quantity would be like a small quantity, as you admitted. So, your abundance did not benefit you at all. And Allah is the Granter of success. This is it.

And it is said (referring to 'Ayn-Haa') that rather, 'Umar (may Allah be pleased with him) held the view of the purity of the leftovers of predatory animals, as the three Imams say, though they differ regarding dogs and pigs. So his saying 'do not inform us' means it is the same to us whether you inform us or not, for we consider what is left by predatory animals to be pure.

(Urdu text translation): So you abandoned your purpose and admitted our meaning because at that time, the reliance of Hazrat Amr's (may Allah be pleased with him) question was on the endurance of impurity, and the basis of Hazrat Umar's (may Allah be pleased with him) answer was the following of the original principle, and we are in search of that. In the light of the Hadith, your stance is that (since) a large amount of water does not become impure from filth, therefore do not inform us; meaning, your informing or not informing are both equal. On the basis of this explanation, the large amount would become like the small amount, as you admitted. Thus, your abundance did not benefit you at all. And Allah Almighty alone is the one who gives success. (T)

And it has been said that Hazrat Umar (may Allah be pleased with him) considers the leftovers of beasts to be pure, just as the three Imams are proponents of this regarding dogs and pigs (their leftovers), although there is some difference of opinion among them. So their saying 'do not inform us' means that whether you inform us or not, it is equal for us because we consider the leftovers of beasts to be pure. (T)

(Footnote continued from previous page): Its justification is not proven everywhere because a large quantity of water does not change merely by the lapping and drinking of beasts. I say yes, because the word of the Hadith is 'hal taridu' (do they

arrive?), not 'hal talghu' (do they lap?), and it is possible that several groups of beasts arrive at the water and, after going into the water, they urinate and defecate, so that the impurity overcomes some of the qualities of the water. (T) 'Ayn-Haa': This is conjoined with the previous 'it is said'. 12 Minhu (T)

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4

(अरबी पाठ का अनुवाद): तुमने अपना उद्देश्य छोड़ दिया और हमारी मुराद को स्वीकार कर लिया क्योंकि उस समय हज़रत अम्र (रज़ियल्लाहु अन्हु) के प्रश्न का आधार नजासत (अशुद्धि) की संभावना थी, और हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) के उत्तर का आधार असल (मूल स्थिति) का पालन था। यही हम खोज रहे थे। हदीस के आलोक में तुम्हारा रुख यह था कि (चूंकि) अधिक पानी नजासत से नापाक नहीं होता, इसलिए हमें खबर न दो, यानी तुम्हारा खबर देना और न देना दोनों बराबर हैं। इस व्याख्या के आधार पर अधिक पानी कम पानी के समान हो जाएगा जैसा कि तुमने स्वीकार किया। अतः तुम्हारी अधिकता ने तुम्हें कोई लाभ नहीं दिया। और अल्लाह ही सफलता देने वाला है। यह है।

और कहा गया है कि हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) दरिंदों के झूठे को पाक (शुद्ध) समझते हैं जैसा कि अइम्मा सलासा (तीन इमाम) कुत्ते और सूअर के(झूठे के) बारे में इसके कायल हैं, हालांकि उनमें कुछ मतभेद भी है। अतः उनका यह कहना कि 'हमें खबर न देना' का अर्थ यह है कि खबर दो या न दो, हमारे लिए बराबर है क्योंकि हम दरिंदों के झूठे को पाक समझते हैं।

(उर्दू पाठ का अनुवाद): तो तुमने अपना उद्देश्य छोड़कर हमारी मुराद को स्वीकार कर लिया क्योंकि उस समय हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु के प्रश्न का दारोमदार (आधार) नजासत (गंदगी) को बर्दाश्त करने पर है और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के उत्तर की बुनियाद असल की पैरवी है और हम उसी की तलाश में हैं। हदीस की रोशनी में तुम्हारा रुख यह है कि (चूंकि) अधिक पानी नजासत से नापाक नहीं होता, इसलिए हमें खबर न दो, यानी तुम्हारा खबर देना और न देना दोनों बराबर हैं। इस तक़रीर (व्याख्या) के आधार पर अधिक पानी, थोड़े की तरह हो जाएगा जैसा कि तुमने स्वीकार किया। अतः तुम्हारी अधिकता ने तुम्हें कोई लाभ नहीं दिया। और अल्लाह तआला ही इसकी तौफीक देने वाला है। (त)

और कहा गया है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु दरिंदों के झूठे को पाक समझते हैं जैसा कि अइम्मा सलासा कुत्ते और सूअर के(झूठे के) बारे में इसके कायल हैं अगरचह उनमें कुछ मतभेद भी है। अतः उनका यह कहना कि 'हमें खबर न देना' का मतलब यह है कि खबर दो या न दो हमारे लिए बराबर है क्योंकि हम दरिंदों के झूठे को पाक समझते हैं। (त)

(पिछले पृष्ठ के हाशिए का शेष भाग): इसका औचित्य हर जगह सिद्ध नहीं होता क्योंकि कसीर (अधिक) पानी महज़ दरिंदों के चाटने और पीने से मुतग़य्यिर (परिवर्तित) नहीं होता। मैं कहता हूँ हाँ

क्योंकि हदीस का शब्द 'हल तरिदु' (क्या वे वहाँ आते हैं) है, 'हल तलगु' (क्या वे चाटते हैं) नहीं, और संभव है कि दरिंदों के कई समूह पानी पर आते हों और पानी में जाकर मल-मूत्र त्याग करते हों, जिससे पानी के कुछ गुणों पर नजासत हावी हो जाए। (त) 'ऐन-हा': पहले गुज़रे हुए 'क़ीला' पर मअतूफ़ (जुड़ा हुआ) है। 12 मिन्हु (त)

पृष्ठ 522/761

ما قصدتم واعترفتم بما نرید اذکان مثار سؤال عمرو ح ھو احتمال الخبث ومبنی جواب عمر ھو اتباع الاصل وذلك ماکنا نبغ وانما کنتم تذھبون بالحدیث الی ان الماء کثیر لا یحمل الخبث فلا تخبرنا ای اخبارك وعدمه سواء وعلی ھذا التقریر یصیر الکثیر نظیر الیسیر کما اعترفتم فلم تغن عنکم کثرتکم شیئا واللہ الموفق ھذا۔ تو تم نے اپنا مقصود چھوڑ کر ہماری مراد کا اعتراف کرلیا کیونکہ اس وقت حضرت عمرو رضی اللہ عنہ کے سوال کا دارومدار ، نجاست کو برداشت کرنے پر ہے اور حضرت عمر رضی اللہ عنہ کے جواب کی بنیاد ، اصل کی اتباع ہے اور ہم اسی کی تلاش میں ہیں۔ حدیث کی روشنی میں تمہارا موقف یہ ہے کہ (چونکہ) زیادہ پانی نجاست سے ناپاک نہیں ہوتا لہٰذا تو ہمیں خبر نہ دے یعنی تیرا خبر دینا اور نہ دینا دونوں برابر ہیں اس تقریر کی بنیاد پر زیادہ، تھوڑے کی مثل ہو جائے گا جیسا کہ تم نے اعتراف کیا۔ پس تمہاری کثرت نے تم کو کوئی فائدہ نہ دیا۔ اور اللہ تعالٰی ہی اس کی توفیق دینے والا ہے۔ (ت)

وقیل عه بل ذھب عمر رضی اللہ تعالی عنه الی طھارة سؤر السباع کما تقوله الائمة الثلثة علی خلاف بینھم فی الکلب والخنزیر فقوله لا تخبرنا ای سواء علینا اخبرتنا اولم تخبرنا فانا نطھر ماتفضل السباع۔ اور کہا گیا ہے کہ حضرت عمر رضی اللہ عنہ درندوں کے جھوٹے کو پاک سمجھتے ہیں جیسا کہ ائمہ ثلاثہ کتے اور خنزیر کے (جھوٹے کے) بارے میں اس کے قائل ہیں اگرچہ ان میں کچھ اختلاف بھی ہے پس ان کا قول کہ "ہمیں خبر نہ دینا " کا مطلب یہ ہے کہ خبر دو یا نہ دو ہمارے لئے برابر ہے کیونکہ ہم درندوں کے جھوٹے کو پاک سمجھتے ہیں (ت)

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) قصة الحدیث اصلا اذا الماء الکثیر لا یتغیر بمجرد ولوغ السباع وشرب الماء قلت بلی فان لفظ الحدیث ھل ترد لاھل تلغ ویمکن ان ترد جماعات منھن وتقع فی الماء وتبول فیه

وتقضی الحاجة فتغلب النجاسة علی بعض اوصاف الماء ۱۲ منہ (م) اس کا جواز ہر جگہ ثابت نہیں ہوتا کیونکہ کثیر پانی محض درندوں کے چاٹنے اور پینے سے متغیر نہیں ہوتا۔ میں کہتا ہوں ہاں کیونکہ حدیث کا لفظ "ھل ترد" ہے "ھل تلغ" نہیں اور ممکن ہے کہ درندوں کے کئی گروہ پانی پر وارد ہوتے ہوں اور پانی میں جاکر بول و براز کرتے ہوں تو پانی کے بعض اوصاف پر نجاست غالب آجائے۔ (ت) عہ: معطوف علی قیل السابق منہ (م) پہلے گزرے ہوئے قیل پر معطوف ہے ۱۲ منہ (ت)

Fatawa-e-Razviya Volume 4

I say: This is alluded to, despite what is in it, in his saying in the Hadith: "We visit the wild animals and they visit us" [1], and as Razin added from some narrators: "I heard the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) saying to them: 'What they took in their bellies is for them, and what remains is pure for us'" [2]. And what Imam al-Shafi'i narrated from 'Amr ibn Dinar that 'Umar ibn al-Khattab (may Allah be pleased with him) came to the pool of Mujannah, and it was said: "A dog has just lapped from it." He said: "He only lapped with his tongue," then he drank and performed ablution from it [3]. Both this and the one before it are troubled because you have leaned in speech towards the opposite of what is apparent from it. For the outward meaning of the prohibition is the dislike of informing, and that is only for fear that if informed, it would be necessary to exercise caution. So he intended expansion by maintaining the state of purity as long as it is not known. If the matter were as you mentioned, such as the large amount of water or the purity of the leftover, informing would not have caused any harm, so why would he forbid it? Rather, the right speech should have been...

---

1. Al-Muwatta Imam Malik, Kitab al-Tahurah lil-Wudu, published by Mir Muhammad Kutub Khana, Karachi, p. 17.
2. Mishkat al-Masabih, Chapter on Rulings of Water, published by Mujtabai, Delhi, p. 51.
3. Musannaf Abd al-Razzaq, Hadith 249, Chapter on Water Visited by Dogs and Beasts, published by Al-Maktab al-Islami, Beirut, 1/6. Page 523 of 761

फतावा रज़विया जिल्द चार

मैं कहता हूँ: हदीस शरीफ़ में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के अल्फ़ाज़ कि "हम दरिंदों के पास जाते हैं और वे हमारे पास आते हैं" [1] में इसी बात की ओर इशारा है। साथ ही रज़ीन ने कुछ रावियों (वर्णनकर्ताओं) से जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का यह कथन अतिरिक्त उद्धृत किया है कि "मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आपने फ़रमाया: 'जो कुछ इन जानवरों ने अपने पेट में ले लिया वह उनके लिए है और जो बाक़ी रह गया वह हमारे लिए पाक है'" [2]। इसी तरह जो इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैहि ने उमर बिन दीनार रज़ियल्लाहु अन्हु से नक़ल किया कि हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु मुजन्ना के हौज (कुंड) पर तशरीफ़ ले गए तो कहा गया कि अभी यहाँ कुत्ते ने मुँह मारा है। तो आपने फ़रमाया: "उसने अपनी ज़ुबान से चाटा है।" फिर आपने उससे पिया और वज़ू फ़रमाया [3]। यह और इससे पहले की तमाम बहस से यह बात मुश्किल हो जाती है क्योंकि आपका कलाम उस बात के ख़िलाफ़ झुका हुआ है जो साफ़ तौर पर ज़ेहन में आती है, क्योंकि मनाही से ज़ाहिर होता है कि ख़बर देना मकरूह (नापसंद) है और यह इस डर की बुनियाद पर है कि अगर ख़बर देगा तो मुश्किल में पड़ना लाज़िम आएगा। लिहाज़ा उनकी मुराद यह थी कि जब तक इल्म न हो, पाकी हासिल करने में विस्तार होना चाहिए। और अगर वह बात होती जिसका आपने ज़िक्र किया कि पानी ज़्यादा था या वे जूठे को पाक समझते थे, तो ऐसी सूरत में उनका ख़बर देना नुक़सानदेह न होता, फिर उन्होंने क्यों मना किया? बल्कि सही कलाम तो यह होना चाहिए था...

---

1. अल-मुवत्ता इमाम मालिक, तहूर लिल-वज़ू, प्रकाशित मीर मुहम्मद कुतुब ख़ाना कराची, पृष्ठ 17.
2. मिश्कात अल-मसाबीह, पानी के अहकाम का अध्याय, प्रकाशित मुजतबाई दिल्ली, पृष्ठ 51.
3. मुसन्निफ़ अब्द अल-रज़्ज़ाक़, हदीस 249, कुत्तों और दरिंदों द्वारा पिए गए पानी का अध्याय, प्रकाशित अल-मकतब अल-इस्लामी बेरूत, 1/6. पृष्ठ 761 में से 523

اقول: وقد یلمح الیه علی ما فیه قوله في الحدیث "فانا نرد علی السباع وترد علینا"[1] وقوله کما زاد رزین عن بعض الرواة واني سمعت رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم یقول لها ما اخذت في بطونها وما بقی فهو لنا طهور[2]- وما اخرج الامام الشافعي عن عمر بن دینار ان عمر بن الخطاب رضي الله تعالی عنه ورد حوض مجنة فقیل انما ولغ الکلب انفا فقال انما ولغ بلسانه فشرب وتوضأ[3]- ویکدر هذا والذی قبله جمیعاً انکم ملتم بالکلام الی خلاف ما یتبادر منه فان ظاهر النهي کراهة الاخبار وما ذاك الا خشیة ان لواخبر لزمه التحرج فاراد التوسیع باستصحاب الطهارة مالم یعلم ولو کان الامر کما ذکرتم من کثرة الماء او طهارة السؤر لما ضر اخباره شیئاً فعلی ما ینهاه عنه بل کان حق الکلام

اقول: حدیث شریف میں حضرت عمر رضی اللہ عنہ کے الفاظ کہ "ہم درندوں کے پاس جاتے اور وہ ہمارے پاس آتے ہیں" میں اسی بات کی طرف اشارہ ہے، نیز رزین نے بعض راویوں سے جو حضرت عمر رضی اللہ عنہ کا یہ قول زائد نقل کیا ہے کہ میں نے رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم سے سنا، آپ نے فرمایا: "جو کچھ ان جانوروں نے اپنے پیٹوں میں لے لیا وہ ان کے لئے ہے اور جو باقی رہ گیا ہے وہ ہمارے لئے پاک ہے۔ اسی طرح جو امام شافعی رحمہ اللہ نے عمر بن دینار رضی اللہ عنہ سے نقل کیا کہ حضرت عمر بن خطاب رضی اللہ عنہ مجنہ کے حوض پر تشریف لے گئے تو کہا گیا ابھی یہاں کتے نے منہ مارا ہے۔ تو آپ نے فرمایا: اس نے اپنی زبان سے چاٹا ہے۔ پھر آپ نے اس سے پیا اور وضو فرمایا۔ اس میں بھی اسی بات کی طرف اشارہ ہے۔ (ت) یہ اور اس سے پہلے کی تمام بحث سے یہ بات مکدر ہو جاتی ہے کیونکہ تمہارے کلام کا میلان اس بات کے خلاف ہے جو واضح طور پر ذہن میں آتی ہے کیونکہ نہی سے ظاہر ہوتا ہے کہ خبر دینا مکروہ ہے اور یہ اس ڈر کی بنیاد پر ہے کہ اگر خبر دے گا تو حرج میں پڑنا لازم آئے گا لہذا ان

کی مراد یہ تھی کہ جب تک علم نہ ہو حصول طہارت میں وسعت ہونی چاہئے۔ اور اگر وہ بات ہوتی جس کا تم نے ذکر کیا پانی زیادہ تھا یا وہ جھوٹے کو پاک سمجھتے تھے تو اس صورت میں ان کا خبر دینا نقصان دہ نہ ہوتا پس انہوں نے کس

---

1 الموطأ امام مالك الطهور للوضوء مطبوعه مير محمد كتب خانہ كراچی ص ۱۷ 2 مشكوة المصابيح باب احكام المياه مطبوعه مجتبائی دہلی ص ۵۱ 3 مصنف عبدالرزاق حديث ۲۴۹ باب الماء ترده الكلاب والسباع مطبوعہ المكتب الاسلامی بيروت ۶/۱ Page 523 of 761

...to say to Amr, "What do you intend by this inquiry? The water is plenty. Even if a beast licks it or if its leftovers remain, it is pure. So what would you do?" Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) indicated this when he said, after narrating the Hadith in his Muwatta: "If the pool is so large that moving one side does not cause the other side to move, the water does not become impure if a beast licks it or if filth falls into it, unless it affects its smell, taste, or color. If it is a small pool where moving one side moves the other side, and a beast drinks from it or filth falls in it, then wudu should not be performed from it. Don't you see that Umar bin Khattab (may Allah be pleased with him) disliked being informed and forbade him from it? This is all the school of Imam Abu Hanifa (may Allah have mercy on him)." (End)

I say: Based on this, the meaning of his statement, "We go to them and they come to us..." and his citation of the guidance of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), if established, would be that we know water is rarely safe from the arrival of beasts, but we were not commanded to investigate or go to trouble. We were commanded to rely on the original state of purity as long as we do not know that impurity has occurred.

1. Al-Muwatta by Imam Muhammad, Chapter of Wudu from what beasts drink from and lick, printed by Noor Muhammad, Asah Al-Matabi, Aram Bagh, Karachi, p. 66. Page 524 of 761

...अम्र से कहना कि "तुम इस पूछताछ से क्या चाहते हो? पानी बहुत है। चाहे इसमें (दरिंदा) मुँह डाले या उनका जूठा हो, वह पाक है। तो तुम क्या करोगे?" इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) ने भी इसी ओर इशारा किया है जब उन्होंने अपनी मुअत्ता में यह हदीस बयान करने के बाद फ़रमाया: "जब हौज (तालाब) इतना बड़ा हो कि उसके एक किनारे को हिलाने से दूसरा किनारा न हिले, तो उसमें दरिंदों के पानी पीने या गंदगी गिरने से पानी नापाक नहीं होता, बशर्ते कि उसकी गंध, स्वाद या रंग पर असर न पड़े। और अगर हौज इतना छोटा हो कि उसके एक तरफ हिलाने से दूसरी तरफ हरकत हो, और उसमें से किसी दरिंदे ने पानी पिया या गंदगी गिर गई, तो उससे वज़ू नहीं किया जाएगा। क्या नहीं देखा गया कि हज़रत उमर फारूक (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने यह नापसंद किया कि वह उन्हें खबर दे और उन्हें इससे मना फरमाया? यह सब इमाम अबू हनीफा (रहमतुल्लाह अलैह) का मसलक (विचारधारा) है।" (त)

मैं कहता हूँ: इस आधार पर उनके कथन "हम दरिंदों के पास जाते हैं और वे हमारे पास आते हैं" और नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के मार्गदर्शन से उनके तर्क का अर्थ, यदि वह साबित हो, यह होगा कि हम जानते हैं कि पानी दरिंदों की आवाजाही से बहुत कम सुरक्षित होता है, लेकिन हमें शोध और कष्ट उठाने का आदेश नहीं दिया गया है। हमें तब तक मूल पवित्रता पर भरोसा करने का आदेश दिया गया है जब तक कि हमें अशुद्धता के होने का पता न चले।

1. अल-मुअत्ता इमाम मुहम्मद, अध्याय: वज़ू उन चीज़ों से जिनसे दरिंदे पीते और चाटते हैं, मुद्रित: नूर मुहम्मद, अस्सह अल-मताबि, आराम बाग, कराची, पृष्ठ 66। पृष्ठ 761 का 524

بنا پر اس سے منع فرمایا بلکہ اس وقت حق کلام یہ تھا کہ حضرت عمر رضی اللہ عنہ، حضرت عمرو رضی اللہ عنہ سے فرماتے خبر حاصل کرنے سے تمہارا کیا مقصد ہے پانی زیادہ ہے اگرچہ اس میں (درندہ) منہ ڈالے یا ان کا جھوٹا ہو پاک ہے پس تم کیا کروگے امام محمد رحمہ اللہ نے بھی اسی کی طرف اشارہ کیا ہے جب انہوں نے اپنے مؤطا میں یہ حدیث روایت کرنے کے بعد فرمایا جب حوض اتنا بڑا ہو کہ اس کی ایک جانب کو حرکت دی جائے تو دوسری جانب حرکت نہ کرے تو اس میں درندے کے پانی پینے یا نجاست گرنے سے پانی ناپاک نہیں ہوتا مگر یہ کہ اس کی بو اور ذائقے پر غالب آ جائے اور اگر حوض اتنا چھوٹا ہو کہ اس کی ایک طرف کو حرکت دینے سے دوسری جانب متحرک ہو اور اس میں سے درندے نے پانی پیا یا نجاست پڑ گئی تو اس سے وضو نہ کیا جائے۔ کیا نہیں دیکھا گیا کہ حضرت عمر فاروق رضی اللہ عنہ نے ناپسند کیا کہ وہ ان کو خبر دے اور اس سے منع فرما دیا یہ تمام حضرت امام ابو حنیفہ رحمہ اللہ کا مسلک ہے۔ (ت)

اقول: اس بنیاد پر ان کے قول "ہم درندوں کے پاس جاتے اور وہ ہمارے ہاں آتے ہیں" اور نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کے ارشاد گرامی سے انکے استدلال، بشرطیکہ وہ ثابت ہو، کا مفہوم یہ ہوگا کہ ہم جانتے ہیں کہ پانی، درندوں کی آمدورفت سے بہت کم محفوظ ہوتے ہیں لیکن ہمیں بحث اور تکلف کا حکم نہیں دیا گیا ہمیں اصل طہارت پر بھروسا کرنے کا حکم دیا گیا ہے جب تک نجاست کے واقع ہونے کا

1 الموطا للامام محمد باب الوضوء مما یشرب منه السباع وتلغ فیه مطبوعه نور محمد اصح المطابع آرام باغ کراچی ص ۶۶ Page 524 of 761

Fatawa Rizvia, Volume 4

(Left Column - Arabic Context): ...what they have carried in their bellies (is for them), because the water of Allah is permissible for every living creature with a warm liver. For us, what remains is pure, because there is no certainty of the occurrence of any prohibited impurity. The conclusion of the discussion leads back to what we described to you: that general certainty regarding the occurrence of impurity in a species does not dictate the impurity of every individual instance of it. In short, the Hadith has several interpretations, and the most appropriate one is what we have mentioned. Therefore, the argument that asking is not obligatory based on mere suspicion or possibility is correct. Our foremost leader in this regard is our Imam Muhammad (may Allah be pleased with him). (Note) However, a doubt arises here that prohibiting informing based on this would be a prohibition of sincere advice to Muslims and protecting them from engaging in something forbidden in religion. For whoever knows that there is impurity on a worshipper's clothes, for example, while the worshipper is unaware, it is obligatory for them to inform him if it is expected that he will accept it, because in reality, his action is contrary to the command of Allah (Exalted be He) in itself, even if the sin is removed due to a lack of knowledge.

The answer to this, as clarified by Arif al-Nabulsi, is that Hazrat Umar ibn al-Khattab (may Allah be pleased with him) did not know whether the owner of the pond knew that wild beasts frequented it, such that his statement would be a hindrance or prevention from 'commanding of good and forbidding of evil' and sincere advice in religion. His ultimate goal was that he intended (to inquire about the purity of water...)

(Right Column - Urdu Translation/Explanation): ...the owner of the pond may not know, so what those animals have taken into their bellies is for them. Because Allah's water is permissible for every warm-livered creature and whatever remains is pure for us because we do not have knowledge of any impure thing falling into it. So, what we have said results in this: that general certainty of a species being impure does not demand the impurity of every individual of it. The summary of the discussion is that the Hadith (its meaning) consists of several aspects, but the most suitable is the one we mentioned. Thus, the argument for the non-obligatoriness of asking due to suspicion or possibility is correct, and our first guide in this is Imam Muhammad (may Allah be pleased with him). (Note) But here a doubt arises that preventing informing on this basis would be to prevent sincere advice to Muslims regarding religion and to prevent protecting them from being occupied in evil. Because the

person who knows that there is impurity on a worshipper's clothes and he (the worshipper) does not know, it is obligatory on him to inform him if there is a thought of its acceptance because in reality, this act of his is against the command of Allah Almighty, although he was not a sinner due to lack of knowledge. The answer to this is that as derived from Arif Nabulsi (may Allah have mercy on him), Hazrat Umar bin Khattab (may Allah be pleased with him) did not know if the owner of the pond knew about the coming and going of wild animals to it, because of which your saying would prevent or be an obstacle to "commanding of good and forbidding of evil" and sincere advice in religion. The result was that you, regarding the purity of water...

फ़तावा रज़विया, खंड 4

(बायां कॉलम - अरबी संदर्भ): ...जो उनके पेट में है (वह उनके लिए है), क्योंकि अल्लाह का पानी हर गर्म जिगर वाले जीव के लिए जायज़ है। हमारे लिए, जो शेष है वह शुद्ध है, क्योंकि किसी भी निषिद्ध अशुद्धि के होने की कोई निश्चितता नहीं है। चर्चा का निष्कर्ष उसी ओर ले जाता है जो हमने आपको बताया था: कि किसी प्रजाति में अशुद्धि होने की सामान्य निश्चितता उसके प्रत्येक व्यक्तिगत उदाहरण की अशुद्धि का आदेश नहीं देती है। संक्षेप में, हदीस की कई व्याख्याएं हैं, और सबसे उपयुक्त वही है जिसका हमने उल्लेख किया है। इसलिए, यह तर्क कि केवल संदेह या संभावना के आधार पर पूछना अनिवार्य नहीं है, सही है। इस संबंध में हमारे सबसे पहले मार्गदर्शक हमारे इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) हैं। (नोट) हालाँकि, यहाँ एक संदेह पैदा होता है कि इसके आधार पर सूचित करने से रोकना मुसलमानों को ईमानदार सलाह देने और उन्हें धर्म में वर्जित चीज़ों में शामिल होने से बचाने से रोकना होगा। उदाहरण के लिए, जो कोई भी जानता है कि नमाज़ी के कपड़ों पर अशुद्धि है, जबकि नमाज़ी अनजान है, तो उसे सूचित करना अनिवार्य है यदि यह उम्मीद हो कि वह इसे स्वीकार करेगा, क्योंकि वास्तव में, उसका कार्य स्वयं अल्लाह (सर्वोच्च) के आदेश के विपरीत है, भले ही ज्ञान की कमी के कारण पाप हटा दिया गया हो।

इसका उत्तर, जैसा कि आरिफ अल-नाबुलसी ने स्पष्ट किया है, यह है कि हज़रत उमर इब्न अल-खत्ताब (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) को नहीं पता था कि तालाब के मालिक को पता था कि जंगली जानवर वहाँ आते थे, जिससे कि उनका बयान 'अच्छाई का आदेश देने और बुराई से रोकने' और धर्म में ईमानदार सलाह देने में बाधा या रोकथाम बन जाए। उनका अंतिम लक्ष्य यह था कि वे चाहते थे (पानी की शुद्धता के बारे में पूछताछ करना...)

(दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या): ...तालाब के मालिक को पता न हो, इसलिए उन जानवरों ने अपने पेट में जो कुछ ले लिया है वह उनके लिए है। क्योंकि अल्लाह का पानी हर गर्म जिगर वाले जीव के लिए जायज़ है और जो कुछ बचता है वह हमारे लिए शुद्ध है क्योंकि हमें उसमें किसी अशुद्ध चीज़ के गिरने का ज्ञान नहीं है। तो, हमने जो कहा उसका परिणाम यह है कि किसी प्रजाति के अशुद्ध होने का सामान्य विश्वास उसके हर व्यक्ति की अशुद्धि की मांग नहीं करता है। चर्चा का सारांश यह है कि हदीस (इसका अर्थ) कई पहलुओं से बना है, लेकिन सबसे उपयुक्त वह है जिसका हमने उल्लेख किया है। इस प्रकार, संदेह या संभावना के कारण न पूछने की अनिवार्यता का तर्क सही है, और इसमें हमारे पहले मार्गदर्शक इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) हैं। (नोट)

लेकिन यहाँ एक संदेह पैदा होता है कि इस आधार पर सूचित करने से रोकना मुसलमानों को धर्म के संबंध में ईमानदार सलाह देने से रोकना और उन्हें बुराई में व्यस्त होने से बचाने से रोकना होगा। क्योंकि जो व्यक्ति जानता है कि नमाज़ी के कपड़ों पर अशुद्धि है और उसे (नमाज़ी को) पता नहीं है, तो उसे सूचित करना उस पर अनिवार्य है यदि इसकी स्वीकृति का विचार हो क्योंकि वास्तव में, उसका यह कार्य अल्लाह सर्वशक्तिमान के आदेश के विरुद्ध है, हालाँकि वह ज्ञान की कमी के कारण पापी नहीं था। इसका उत्तर यह है कि जैसा कि आरिफ नाबुलसी (अल्लाह उन पर रहम करे) से लिया गया है, हज़रत उमर बिन खत्ताब (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) को पता नहीं था कि तालाब के मालिक को जंगली जानवरों के आने-जाने के बारे में पता था या नहीं, जिसके कारण आपका कहना "अच्छाई का हुक्म देना और बुराई से रोकना" और धर्म में नेक सलाह देने से रोकता या बाधा बनता। परिणाम यह हुआ कि आपने, पानी की शुद्धता के संबंध में...

(بائیں کالم میں موجود عربی عبارت): ما حملت فی بطونها لان ماء الله مباح علی کل ذات کبد حراء ولنا ما غیر طهور لعدم التیقن بعروض المحذور فأل الکلام الی ما وصفنا لك من ان الیقین الاجمالي بعروض النجاسة لنوع لا یقضی بتنجس کل فرد منه وبالجملة فالحدیث ذو وجوه والاوجه ما ذکرنا فصح الاستدلال علی عدم وجوب السؤال لاجل ظن او احتمال وکان اول قدوة لنا فیه امامنا محمد رضی الله تعالی عنه-لکن یرتاب فیه بان النهی عن الاخبار علی هذا یکون نهیا عن مناصحة المسلمین وصونهم عن تعاطی المنکر فی الدین فان من علم ان فی ثوب المصلی نجاسة مثلا وهو لا یدری وجب علیه اخباره بذلك ان ظن قبوله لان فعله علی خلاف امر الله سبحانہ وتعالی فی نفسہ وان ارتفع الاثم لعدم العلم۔

والجواب عنہ کما افاد العارف النابلسی ان عمر بن الخطاب رضی الله تعالی عنہ لا یعلم ان صاحب الحوض یعلم ان السباع ترده حتی یکون قولہ ذلک کفا ومنعا من الامر بالمعروف والنهی عن المنکر ومن النصیحة فی الدین غایتہ انہ ارادـــ

(دائیں کالم میں موجود اردو ترجمہ و تشریح): علم نہ ہو پس جو ان جانوروں نے اپنے پیٹوں میں لے لیا وہ ان کے لئے ہے۔ کیونکہ اللہ تعالٰی کا پانی ہر گرم جگر والی چیز کیلئے مباح ہے اور جو کچھ باقی ہے وہ ہمارے لئے پاک ہے کیونکہ ناپاک چیز کے گرنے کا ہمیں علم نہیں۔ پس ہم نے جو کچھ کہا اس کا نتیجہ یہ ہے کہ کسی نوع کے ناپاک ہونے کا اجمالی یقین اس کے ہر فرد کی نجاست کا تقاضہ نہیں کرتا۔ خلاصہ کلام یہ ہے کہ حدیث (کا مفہوم) کئی وجوہ پر مشتمل ہے لیکن زیادہ مناسب وہ ہے جو ہم نے ذکر کیا، پس ظن یا احتمال کی وجہ سے سوال واجب نہ ہونے پر استدلال صحیح ہے اور اس میں ہمارے پہلے مقتدا امام محمد رضی اللہ تعالٰی عنہ ہیں۔ (ت) لیکن یہاں شک

پیدا ہوتا ہے کہ اس بنیاد پر خبر دینے سے روکنا دین کے سلسلے میں مسلمانوں کی خیر خواہی اور برائی میں مشغول ہونے سے ان کی حفاظت سے روکنا ہو کیونکہ جو شخص جانتا ہے کہ نمازی کے کپڑے پر نجاست لگی ہوئی ہے اور اسے (نمازی کو) معلوم نہیں تو اس پر واجب ہے کہ اسے خبر کردے اگر اس کی قبولیت کا گمان ہو کیونکہ حقیقت میں اسکا یہ فعل اللہ تعالیٰ کے حکم کے خلاف ہے اگرچہ عدم علم کی وجہ سے وہ گناہ گار نہ ہوا۔ اس کا جواب یہ ہے کہ جیسا کہ عارف نابلسی رحمہ اللہ سے مستفاد ہے کہ حضرت عمر بن خطاب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو معلوم نہ تھا کہ حوض والے کو اس پر درندوں کے آنے جانے کا علم ہے جس کی وجہ سے آپ کا وہ قول "امر بالمعروف اور نہی عن المنکر" اور دین میں خیر خواہی سے باز رکھتا اور رکاوٹ بنتا ہو نتیجہ یہ ہوا کہ آپ نے پانی کی طہارت کے سلسلے میں---

(May Allah be pleased with him) denied whispers regarding the purity of water and forbade excessive questioning in matters based on certainty, for the original state of water is purity. (T)

I say: The summary is that the prohibition, i.e., forbidding the forbidding of evil, is based on knowledge of it being evil, and that is based on knowledge of it being impure. Since this (knowledge of impurity) is not present, then that (knowledge of it being evil) is not present. Therefore, the prohibition of forbidding evil was not found either. And it was not the case that the owner of the pond intended to inform, so Hazrat Umar (may Allah be pleased with him) forbade him so that it might be a denial after the assumption that he knew something. Rather, Hazrat Amr (may Allah be pleased with him) asked, and he did not know what the one questioned had. So, Hazrat Umar Farooq (may Allah be pleased with him) intended to close the door of assumptions and to point out that we have not been commanded to do this. If we were to open such a door for ourselves, we would fall into hardship, and hardship is removed by the Sharia text. So contemplate as it deserves to be contemplated. And do not think that the matter lies between the benefit of expansion and the harm of forbidding the forbidding of evil; rather, it lies between repelling the harm of whispering and deep delving, and the harm that I mentioned. The former is present and certain, while the latter is potential and imaginary. Thus, preference is given to the first. Understand, and Allah Almighty knows best. (T)

---

1 Al-Hadiqat al-Nadiyyah, the second part of the two parts regarding what has been narrated from our Hanafi Imams, printed at Nuria Razwiaabad 2/256.

(अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) उन्होंने पानी की पवित्रता के बारे में संदेहों को नकारा और निश्चितता पर आधारित मामलों में अत्यधिक प्रश्न पूछने से मना किया, क्योंकि पानी की मूल स्थिति पवित्रता है। (त)

मैं कहता हूँ: इसका सारांश यह है कि निषेध, यानी बुराई को रोकने से रोकना, इस बात पर आधारित है कि उसके बुरा होने का ज्ञान हो, और वह इस बात पर आधारित है कि उसके अशुद्ध होने का ज्ञान हो। जब यह बात (यानी उसके नापाक होने का ज्ञान) नहीं है, तो वह (यानी उसके बुरा होने का ज्ञान) भी नहीं है, अतः बुराई को रोकने से रोकने का निषेध भी नहीं पाया गया। और यह बात भी नहीं थी कि हौज (तालाब) के मालिक ने खबर देने का इरादा कर लिया था, तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें रोक दिया ताकि इस धारणा के बाद कि वह कुछ जानते थे, यह निषेध कहलाए। हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने सवाल किया और उन्हें पता नहीं था कि जिससे सवाल किया गया है उसके पास क्या जवाब है, तो हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख्यालों और गुमानों का दरवाज़ा बंद करने का इरादा किया और इस बात पर सचेत किया कि हमें इस बात का हुक्म नहीं दिया गया है और अगर हम अपने सामने इस तरह का दरवाज़ा खोल देंगे तो हम कठिनाई में पड़ जाएंगे और शरीयत में कठिनाई को दूर किया गया है। अतः वैसे ही विचार करें जैसा विचार करने का हक है। और यह न सोचें कि यह मामला रियायत की भलाई और बुराई को रोकने से रोकने की खराबी के बीच है, बल्कि संदेह और बहुत गहराई में जाने के बिगाड़ को दूर करने और उस बिगाड़ के बीच है जिसका मैंने उल्लेख किया है, और वह मौजूदा यकीनी (निश्चित) है जबकि इसमें संभावना और वहम है, अतः पहले को प्राथमिकता दी जाएगी। समझ लें, और अल्लाह बेहतर जानता है। (त)

---

1 अल-हदीक़त अन-नदिय्यह, हमारे हनफी इमामों से जो वर्णित है उसके बारे में दो भागों में से दूसरा भाग, नूरिया रिज़वीआबाद 2/256 में मुद्रित।

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم

رضی اللہ تعالٰی عنہ نفی الوسواس فی طھارۃ الماء و النھی عن کثرۃ السؤال فی الامور المبنیۃ علی الیقین فی ان الاصل فی الماء الطھارۃ اھـ (ت)

وسوسوں کی نفی فرمائی اور جو امور یقین پر مبنی ہیں ان کے بارے میں کثرت سوال سے منع فرمایا کیونکہ پانی میں اصل طہارت ہے اھـ (ت)

قلت وحاصلہ ان المحذور ای کون النھی نھیًا عن النھی عن المنکر مبنی علی العلم بکونہ منکرا وھو مبتن علی العلم بالتنجس واذلیس ھذا فلیس ذاک فلیس ذلک ولم یکن ان صاحب الحوض ھم بالاخبار فنھاہ عمر حتی یکون نھیا بعد الظن بأنہ یعلم شیئاً وانما سأل عمرو ولا یدری ما عند المسئول عنہ فاراد سدباب الظنون والتنبیہ علی انا لم نؤمر بذلک ولو فتحنا مثل ھذا الباب علی وجوھنا لوقعنا فی الحرج والحرج مدفوع بالنص فتأمل حق التأمل ولاتظنّن ان الامر دار بین مصلحۃ التوسیع ومفسدۃ النھی عن النھی عن المنکر بل بین دفع مفسدۃ الوسوسۃ والتعمق والمفسدۃ التی ذکرتُ وتلک حاضرۃ متیقنۃ وھذہ محتملۃ متوھمۃ فترجح الاول فافھم واللہ تعالٰی اعلم۔

قلت اس کا حاصل یہ ہے کہ ممنوع یعنی نہی عن المنکر سے روکنے کی ممانعت اس پر مبنی ہے کہ اس کے منکر ہونے کا علم ہو اور وہ اس پر مبنی ہے کہ اس کے نجس ہونے کا علم ہو۔ پس جب یہ بات (اس کا ناپاک ہونا) نہیں تو وہ (یعنی اس کے منکر ہونے کا علم نہیں) لہٰذا نہی عن المنکر سے روکنے کی ممانعت بھی نہ پائی گئی اور یہ بات بھی نہیں کہ حوض کا مالک خبر دینے کا ارادہ کر چکا تھا تو حضرت عمر رضی اللہ تعالٰی عنہ نے روک دیا تا کہ اس ظن کے بعد کہ وہ کچھ جانتا تھا یہ نفی کہلائے حضرت عمرو رضی اللہ عنہ نے سوال کیا اور ان کو معلوم نہ تھا کہ

مسئول عنہ کے پاس اس کا کیا جواب ہے، تو حضرت عمر فاروق رضی اللہ عنہ نے خیالات و گمان کا دروازہ بند کرنا ارادہ کیا اور اس بات پر تنبیہ فرمائی کہ ہمیں اس بات کا حکم نہیں دیا گیا اور اگر ہم اپنے سامنے اس قسم کا دروازہ کھول دیں تو حرج میں پڑ جائیں گے اور شرعی طور پر حرج دُور کیا گیا ہے، پس غور کرو جیسے غور کرنے کا حق ہے۔ اور یہ خیال نہ کرو کہ یہ معاملہ توسیع کی مصلحت اور نہی عن المنکر سے روکنے کی خرابی کے درمیان دائر ہے بلکہ وسوسہ اور بہت گہرائی میں جانے کے فساد کو دُور کرنے اور اس فساد کے درمیان دائر ہے جس کا میں نے ذکر کیا اور وہ موجود یقینی ہے جبکہ اس میں احتمال اور وہم ہے پس پہلے کو ترجیح حاصل ہوگی۔ سمجھ لو، واللہ تعالٰی اعلم (ت)

---

1 الحدیقۃ الندیۃ الصف الثانی من الصفین فیما ورد عن ائمتنا الحنفیۃ مطبوعہ نوریہ رضویہ آباد ۲/۲۵۶

Fatawa Razawiya, Volume 4

Yes, there is no doubt that investigation and questioning are better in places of doubt when some benefit is expected to arise from it.

In 'al-Bahr al-Ra'iq', it is narrated from 'al-Siraj al-Hindi', who narrated from 'al-Faqih Abu al-Layth' that the non-obligatoriness of questioning is as a matter of legal ruling, and if one does question, it is more cautious for one's religion, etc. (T)

And this is also only until such time as this caution and piety do not lead to the violation of a more important and emphasized matter, because in the Pure Shariah, the removal of harm takes precedence over the attainment of benefit. For example, a Muslim has invited [someone to a meal]; they are investigating his wealth and food: from where did he bring it, how did he earn it, is it halal or haram, has any impurity been mixed into it? Verily, these things are off-putting, and to conduct such an investigation based on suspicion of a Muslim is to cause him pain. Especially if that person is legally (Shari'ah-wise) venerable and respected, like a scholar of religion, a true spiritual guide, parents, a teacher, or a respected Muslim leader of a community. In that case, he has done more than what is unjustified: firstly, suspicion; secondly, off-putting words; thirdly, a lack of respect for elders. And do not think that 'I will conduct a secret investigation'; God forbid! If the news reaches him—and it would be surprising if it didn't, as nowadays many people are informants—then in that case, there is more cause for grief than merely being asked by a passerby, as is known from experience. (As is known from experience. T). Nor should one think, 'I will treat friends in this way.' Far from it! When is it permissible to cause grief to friends? And the thought that 'perhaps he won't feel the pain'—we say, 'perhaps he will feel the pain.' If one acts upon such a 'perhaps', then why not act upon 'perhaps' regarding the lawfulness and purity of his wealth and food? Furthermore, even if no pain was caused and he informed out of informality, the privacy of a Muslim was still violated, which is Shari'ah-wise impermissible. In short, in such situations, there are only two ways of piety and caution: either avoid it in such a way that he does not become aware of the avoidance and withdrawal, or question and investigate those matters whose inquiry does not cause pain. For example, someone is wearing shoes and wants to put their feet in them after performing ablution; they should find out if the feet are wet [before] putting them on, and so on. Or if some sinful, bold, public sinner has reached such a level of brazenness and shamelessness that he has no hesitation in not telling, nor would he be shocked by the inquiry, nor is any discord expected from him, nor would it be a violation of privacy in exposing what is already

manifest, then upon investigation, there is no harm in inquiring from him either. Otherwise, in the name of piety and caution, one should never cause hatred and aversion among Muslims, or cause their disgrace and ignominy, or engage in spying on faults and sins, as all these matters are impermissible. And not practicing piety in the case of doubts and suspicions is [also] not permissible. It is strange that to avoid a permissible matter, one commits several unlawful acts. This is also a deception of Satan, that he has made him completely incautious under the guise of becoming cautious. O dear friend! Be courteous to people, and maintain affection and sociability.

फतावा रज़विया, खंड 4

हाँ, इसमें कोई संदेह नहीं है कि संदेह के स्थान पर जाँच और प्रश्न करना बेहतर है जब उससे कोई लाभ होने की संभावना हो।

'अल-बहर अल-रईक़' में 'अल-सिराज अल-हिंदी' से उद्धृत है, उन्होंने 'अल-फ़कीह अबू अल-लैथ' से उद्धृत किया है कि प्रश्न करना अनिवार्य न होना शरीअत के नियम के अनुसार है, और यदि कोई प्रश्न करता है, तो यह धर्म के दृष्टिकोण से अधिक सावधानी है, आदि। (त)

और यह भी तब तक है जब तक कि इस सावधानी और परहेजगारी में किसी महत्वपूर्ण और आवश्यक बात का उल्लंघन न हो, क्योंकि शुद्ध शरीअत में लाभ प्राप्त करने से अधिक बुराई को दूर करने को प्राथमिकता दी जाती है। उदाहरण के लिए, एक मुसलमान ने दावत दी है; वे उसके धन और भोजन की जाँच कर रहे हैं: वह उसे कहाँ से लाया, उसने इसे कैसे कमाया, क्या यह हलाल है या हराम, क्या इसमें कोई अशुद्धि तो नहीं मिली है? वास्तव में, ये बातें अरुचिकर हैं, और एक मुसलमान पर संदेह करके ऐसी जाँच करना उसे पीड़ा पहुँचाना है। विशेष रूप से यदि वह व्यक्ति शरीअत के अनुसार प्रतिष्ठित और सम्मानित हो, जैसे कि कोई धार्मिक विद्वान, सच्चा आध्यात्मिक मार्गदर्शक, माता-पिता, शिक्षक या समुदाय का कोई सम्मानित मुस्लिम नेता। ऐसे में उसने और भी अनुचित कार्य किया है: पहला, संदेह; दूसरा, अरुचिकर बातें; तीसरा, बड़ों के प्रति सम्मान की कमी। और यह न सोचें कि 'मैं गुप्त जाँच करूँगा'; ईश्वर न करे! यदि उसे खबर मिल गई—और यह आश्चर्य की बात होगी अगर न मिले, क्योंकि आजकल बहुत से लोग मुखबिर हैं—तो उस स्थिति में, केवल राहगीर द्वारा पूछे जाने की तुलना में दुख का अधिक कारण होगा, जैसा कि अनुभव से ज्ञात है। (जैसा कि अनुभव से ज्ञात है। त)। न ही यह सोचना चाहिए कि 'मैं मित्रों के साथ ऐसा व्यवहार करूँगा।' यह तो बहुत दूर की बात है! मित्रों को दुख पहुँचाना कब जायज़ है? और यह विचार कि 'शायद उसे दुख न हो'—हम कहते हैं, 'शायद उसे दुख हो।' यदि ऐसे 'शायद' पर कार्य किया जाता है, तो उसके धन और भोजन की वैधता और शुद्धता के बारे में 'शायद' पर कार्य क्यों नहीं किया जाता? इसके अलावा, यदि दुख नहीं भी पहुँचा और उसने अनौपचारिक रूप से बता दिया, तब भी एक मुसलमान की गोपनीयता का उल्लंघन हुआ, जो शरीअत के अनुसार नाजायज़ है। संक्षेप में, ऐसी स्थितियों में परहेजगारी और सावधानी के केवल दो ही तरीके हैं: या तो इस तरह बचा जाए कि उसे बचने और अलग रहने का पता न चले, या उन मामलों में प्रश्न और जाँच की जाए जिनकी जाँच से दुख न हो। उदाहरण के तौर पर, कोई जूते पहने हुए है और वज़ू करने के बाद उसमें पैर रखना चाहता है; उसे

यह पता लगा लेना चाहिए कि पैर गीले तो नहीं हैं, और इसी तरह। या यदि कोई पापी, निर्भीक, सार्वजनिक रूप से पाप करने वाला इस स्तर की बेशर्मी और निर्लज्जता पर पहुँच गया हो कि उसे बताने में कोई संकोच न हो, न ही पूछताछ से उसे कोई सदमा पहुँचे, न ही उससे किसी कलह की अपेक्षा हो, न ही जो प्रकट है उसे प्रकट करने में गोपनीयता का उल्लंघन हो, तो जाँच करने पर उससे पूछताछ करने में भी कोई हर्ज नहीं है। अन्यथा, परहेजगारी और सावधानी के नाम पर मुसलमानों के बीच घृणा और विरक्ति पैदा नहीं करनी चाहिए, या उनके अपमान और बदनामी का कारण नहीं बनना चाहिए, या दोषों और पापों की जासूसी नहीं करनी चाहिए, क्योंकि ये सभी मामले नाजायज़ हैं। और संदेहों और शंकाओं के मामलों में परहेजगारी न बरतना भी जायज़ नहीं है। यह आश्चर्य की बात है कि एक जायज़ बात से बचने के लिए, वह कई नाजायज़ काम करता है। यह भी शैतान का एक धोखा है कि उसने उसे सावधान बनने के बहाने पूरी तरह से असावधान बना दिया। ऐ प्यारे! लोगों के साथ शिष्टाचार बरतें, और प्रेम तथा मेलजोल बनाए रखें।

पृष्ठ 527 का 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

ہاں اس میں شک نہیں کہ شبہ کی جگہ تفتیش و سوال بہتر ہے جب اس پر کوئی فائدہ مترتب ہوتا سمجھے،

في البحر الرائق عن السراج الهندی عن الفقیه ابی اللیث ان عدم وجوب السؤال من طریق الحکم وان سأل کان احوط لدینه الخ۔ البحرالرائق میں سراج ہندی سے منقول ہے انہوں نے فقیہ ابواللیث سے نقل کیا کہ سوال کا واجب نہ ہونا شرعی حکم کے طریقے پر ہے اور اگر سوال کرے تو یہ دینی اعتبار سے زیادہ محتاط ہونا ہے الخ (ت)

اور یہ بھی اسی وقت تک ہے جب اس احتیاط وورع میں کسی امر اہم و اکد کا خلاف نہ لازم آئے کہ شرع مطہر میں مصلحت کی تحصیل سے مفسدہ کا ازالہ مقدم تر ہے مثلاً مسلمان نے دعوت کی یہ اس کے مال و طعام کی تحقیقات کر رہے ہیں کہاں سے لایا، کیونکر پیدا کیا، حلال ہے یا حرام، کوئی نجاست تو اس میں نہیں ملی ہے کہ بیشک یہ باتیں وحشت دینے والی ہیں اور مسلمان پر بدگمانی کرکے ایسی تحقیقات میں اُسے ایذا دینا ہے خصوصاً اگر وہ شخص شرعاً معظم و محترم ہو، جیسے عالم دین یا سچا مرشد یا ماں باپ یا استاذ یا ذی عزت مسلمان سردارِ قوم تو اس نے اور بے جا کیا ایک تو بد گمانی دوسرے موحش باتیں تیسرے بزرگوں کا ترکِ ادب، اور یہ گمان نہ کرے کہ خفیہ تحقیقات کر لوں گا حاشا و کلا اگر اسے خبر پہنچی اور نہ پہنچنا تعجب ہے کہ آج کل بہت لوگ پرچہ نویس ہیں تو اس میں تنہا، رہرو پوچھنے سے زیادہ رنج کی صورت ہے کما ھو مجرب معلوم (جیسا کہ تجربہ سے معلوم ہے۔ت) نہ یہ خیال کرے کہ احباب کے ساتھ ایسا برتاؤ برتوں گا "ہیہات" احباب کو رنج دینا کب روا ہے۔ اور یہ گمان کہ شاید ایذا نہ پائے ہم کہتے ہیں

شاید ایذا پائے اگر ایسا ہی شاید پر عمل ہے تو اُس کے مال و طعام کی حلت و طہارت میں شاید پر کیوں نہیں عمل کرتا۔ معہذا اگر ایذا نہ بھی ہوئی اور اُس نے براہِ بے تکلفی بتادیا تو ایک مسلمان کی پردہ دری ہوئی کہ شرعاً ناجائز۔ غرض ایسے مقامات میں ورع و احتیاط کی دو ہی صورتیں ہیں یا تو اس طور پر بچ جائے کہ اُسے اجتناب و دامن کشی پر اطلاع نہ ہو یا سوال و تحقیق کرے تو اُن امور میں جن کی تفتیش موجبِ ایذا نہیں ہوتی مثلاً کسی کا جوتا پہنے ہے وضو کرکے اُس میں پاؤں رکھنا چاہتا ہے دریافت کرلے کہ پاؤں تر ہیں یوں ہی پہن لوں وعلی ہٰذا القیاس یا کوئی فاسق بیباک مجاہر معلن اس درجہ وقاحت و بیحیائی کو پہنچا ہوا ہو کہ اُسے نہ بتادینے میں باک ہو نہ دریافت سے صدمہ گزرے نہ اُس سے کوئی فتنہ متوقع ہو نہ اظہارِ ظاہر میں پردہ دری ہو تو عند التحقیق اُس سے تفتیش میں بھی جرج نہیں ورنہ ہر گز بنام ورع و احتیاط مسلمانوں کی نفرت و وحشت یا اُن کی رُسوائی و فضیحت یا تجسس عیوب و معصیت کا باعث نہ ہو کہ یہ سب امور ناجائز ہیں اور شکوک و شبہات میں ورع نہ برتنا جائز نہیں عجب کہ امر جائز سے بچنے کے لئے چند ناروا باتوں کا ارتکاب کرے یہ بھی شیطان کا ایک دھوکا ہے کہ اسے محتاط بننے کے پردے میں محض غیر محتاط کردیا اے عزیز! مداراتِ خلق والفت و موانست

Fatawa Razawiyya, Volume Four It is among the important matters.

It is narrated from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): "I have been sent to treat people with kindness." [1] (Reported by al-Tabarani in al-Kabir from Jabir). And he (peace and blessings of Allah be upon him) said: "The peak of wisdom after belief in Allah is loving people." [2] (Reported by al-Tabarani in al-Awsat from Ali, by al-Bazzar in al-Musnad from Abu Hurairah, by al-Shirazi in al-Alqab from Anas, and by al-Bayhaqi in al-Shu'ab from all of them, may Allah be pleased with them).

It is narrated from the Noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), who said: "I have been sent for the hospitality and kindness of people." This was narrated by al-Tabarani in al-Kabir from Hazrat Jabir (may Allah be pleased with him). And the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "After having faith in Allah Almighty, the perfection of intellect is to love human beings." This was narrated by al-Tabarani in al-Awsat from Hazrat Ali (may Allah be pleased with him). Al-Bazzar narrated it in his Musnad from Hazrat Abu Hurairah (may Allah be pleased with him), Al-Shirazi in Al-Alqab from Hazrat Anas (may Allah be pleased with him), and Al-Bayhaqi in Shu'ab al-Iman from all of them, may Allah be pleased with them. (T)

But as long as there is no compromise in religion nor involvement in any Shariah sin for it.

Allah Almighty says: "They do not fear the blame of any critic." [3] And He says: "Let not pity for them withhold you from [enforcing] the religion of Allah." [4] And He says: "But Allah and His Messenger are more worthy for them to satisfy, if they should be believers." [5] And he (peace and blessings of Allah be upon him) said: "There is no obedience to anyone in disobedience to Allah; obedience is only in what is good." [6] (Bukhari and Muslim).

Allah Almighty says: "They do not fear the blame of any critic regarding Allah." And the Divine command is: "You should not show softness in the religion of God regarding those two (adulterer and adulteress)." Divine command says: "And Allah and His Messenger have more right that... [they satisfy them]."

Footnotes: 1. Shu'ab al-Iman, section on forbearance and gentleness etc., Hadith 8757, published by Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 6/351. 2. Shu'ab al-Iman, section on forbearance and gentleness etc., Hadith 8747, published by Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 6/344. 3. Al-Quran 54/5 (Surah 5, Verse 54) 4. Al-Quran 2/24 (Surah 24,

Verse 2) 5. Al-Quran 62/9 (Surah 9, Verse 62) 6. Sahih al-Bukhari, Book of Akhbar al-Ahad, published by Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/108.

फ़तावा रज़विया, जिल्द चौथी अहम उमूर (महत्वपूर्ण मामलों) में से है।

नबी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) से रिवायत है: "मुझे लोगों के साथ विनम्रता (मुदारात) बरतने के लिए भेजा गया है।" [1] (तबरानी ने अल-कबीर में जाबिर से इसे रिवायत किया)। और नबी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "अल्लाह पर ईमान लाने के बाद अक़्ल की पराकाष्ठा (कामिल अक़्ल) लोगों से मोहब्बत करना है।" [2] (इसे तबरानी ने अल-औसत में हज़रत अली से, बज़ार ने अल-मुसनद में अबू हुरैरा से, शीराज़ी ने अल-अल्क़ाब में अनस से और बैहक़ी ने अल-शुअब में उन सभी से रिवायत किया है, अल्लाह उन सब से राज़ी हो)।

नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) से वर्णित है, आपने फ़रमाया: "मुझे लोगों के प्रति शिष्टाचार और खातिरदारी के लिए भेजा गया है।" इसे तबरानी ने कबीर में हज़रत जाबिर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से वर्णित किया है। और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला पर ईमान लाने के बाद, बुद्धि की पूर्णता मनुष्यों से प्रेम करना है।" इसे तबरानी ने औसत में हज़रत अली (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत किया। बज़ार ने मुसनद में हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से, शीराज़ी ने अल्क़ाब में हज़रत अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से और बैहक़ी ने शुअबुल-ईमान में उन सभी से रिवायत किया है, अल्लाह उन सब से राज़ी हो। (त)

लेकिन जब तक दीन (धर्म) में कोई समझौता न हो और न ही इसके लिए किसी शरीअत के गुनाह में लिप्त होना पड़े।

अल्लाह तआला फ़रमाता है: "वे (अल्लाह की राह में) किसी मलामत करने वाले की मलामत से नहीं डरते।" [3] और वह फ़रमाता है: "उन दोनों (व्यभिचारी और व्यभिचारिणी) के मामले में तुम्हें अल्लाह के दीन में नरमी नहीं बरतनी चाहिए।" [4] और वह फ़रमाता है: "और अल्लाह और उसका रसूल इस बात के अधिक हकदार हैं कि वे उन्हें प्रसन्न करें, यदि वे मोमिन हैं।" [5] और आपने (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फ़रमाया: "अल्लाह की नाफ़रमानी में किसी की आज्ञाकारिता नहीं है; आज्ञाकारिता केवल नेक कामों (मअरूफ़) में है।" [6] (शैख़ैन - बुखारी और मुस्लिम)।

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है: "वे अल्लाह तआला के बारे में किसी मलामत करने वाले की मलामत से नहीं डरते।" और ईश्वर का आदेश है: "उन दोनों (ज़ानी और ज़ानिया) के बारे में तुम्हें ईश्वर

के दीन में नरमी नहीं करनी चाहिए।" ईश्वर का फ़रमान है: "और अल्लाह और उसका रसूल इस बात का ज़्यादा हक़ रखते हैं कि वे उन्हें राज़ी करें..."

पाद टिप्पणियाँ: 1. शुअबुल-ईमान, हिल्म और सौम्यता आदि पर अध्याय, हदीस 8757, दारुल-कुतुबुल-इल्मिया, बेरूत द्वारा प्रकाशित, 6/351। 2. शुअबुल-ईमान, हिल्म और सौम्यता आदि पर अध्याय, हदीस 8747, दारुल-कुतुबुल-इल्मिया, बेरूत द्वारा प्रकाशित, 6/344। 3. अल-कुरआन 54/5 (सूरह 5, आयत 54) 4. अल-कुरआन 2/24 (सूरह 24, आयत 2) 5. अल-कुरआन 62/9 (सूरह 9, आयत 62) 6. सहीह अल-बुखारी, किताब अख़बारुल-आहाद, कदीमी कुतुब खाना कराची द्वारा प्रकाशित, 2/108।

فتاویٰ رضویہ جلد چہارم اہم امور سے ہے۔

عن النبي صلى الله تعالى عليه وسلم بعثت بمدارة الناس 1 الطبرانی فی الکبیر عن جابر وقال صلى الله تعالى عليه وسلم رأس العقل بعد الايمان بالله التحبب الى الناس 2 الطبرانی فی الاوسط عن علی والبزار فی المسند عن ابی هريرة والشيرازی فی الالقاب عن انس والبيهقی فی الشعب عنهم جميعاً رضی الله تعالى عنهم۔

نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے مروی ہے، فرمایا: "مجھے لوگوں سے خاطر مدارات کے لئے بھیجا گیا ہے"۔ اسے طبرانی نے کبیر میں حضرت جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے بیان کیا۔ اور رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: "اللہ تعالیٰ پر ایمان لانے کے بعد کمالِ عقل انسانوں سے محبت کرنا ہے"۔ اس کو طبرانی نے اوسط میں حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا۔ اور بزار نے مسند میں حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ سے اور شیرازی نے القاب میں حضرت انس رضی اللہ عنہ سے اور بیہقی نے شعب الایمان میں ان تمام سے روایت کیا رضی اللہ تعالیٰ عنہم (ت)

مگر جب تک نہ دین میں مداہنت نہ اُس کے لئے کسی گناہ شرعی میں ابتلا ہو۔

قال الله تعالى لَا يَخَافُونَ لَوْمَةَ لَآبِمٍ 3 وقال تعالى لَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا رَاْفَةٌ فِي دِينِ اللهِ 4 وقال تعالى وَاللهُ وَ رَسُوْلُهٗ اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ 5 وقال صلى الله تعالى عليه وسلم لاطاعة لاحد في معصية الله انما الطاعة في المعروف 6 الشيخان و

اللہ تعالیٰ ارشاد فرماتا ہے: "وہ اللہ تعالیٰ کے بارے میں کسی ملامت کرنے والے کی ملامت سے نہیں ڈرتے"۔ اور ارشادِ خداوندی ہے: "ان دونوں (زانی اور زانیہ) کے بارے میں تمہیں دینِ

خداوندی میں نرمی نہیں کرنی چاہئے"۔ ارشادِ باری تعالیٰ ہے: "اور اللہ تعالیٰ اور اس کا رسول اس بات کا زیادہ حق رکھتے ہیں کہ

1 شعب الایمان فصل فی الحلم والتؤدۃ الخ حدیث ۸۷۵۷ مطبوعہ دارالکتب العلمیہ بیروت ۳۵۱/۶ 2 شعب الایمان فصل فی الحلم والتؤدۃ الخ حدیث ۸۷۴۷ مطبوعہ دارالکتب العلمیہ بیروت ۳۴۴/۶ 3 القرآن ۵۴/۵ 4 القرآن ۲/۲۴ 5 القرآن ۶۲/۹ 6 صحیح البخاری کتاب اخبار الاحاد مطبوعہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱۰۸/۲

...and Abu Dawood and Nasa'i narrated from Ali (may Allah Almighty ennoble his face). And he (peace and blessings of Allah Almighty be upon him) said: "There is no obedience to a creature in disobedience to the Creator." Reported by Imam Ahmad, and Muhammad al-Hakim from Imran and al-Hakam ibn Amr al-Ghifari (may Allah be pleased with them).

"They (people) should please Him if they are believers." The Holy Prophet (peace and blessings of Allah Almighty be upon him) said: "There is no obedience to anyone in the disobedience of Allah Almighty; obedience is only in good matters." This Hadith is narrated by Imams Bukhari, Muslim, Abu Dawood, and Nasa'i from Hazrat Ali (may Allah ennoble his face). And the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Obedience to a creature is not permissible in the disobedience of the Creator." This was narrated by Imam Ahmad and Muhammad Hakim from Hazrat Imran and Hakam bin Amr Ghifari (may Allah be pleased with them). (T)

Therefore, the universal rule in these matters that must be memorized is to prioritize performing obligatory duties and refraining from forbidden acts over pleasing the creation. In these matters, do not care for anyone at all. For performing recommended acts (Mustahabb) and leaving the non-ideal (ghair awla), consider pleasing people and caring for their hearts as important. Guard yourself strictly against being a cause for discord, hatred, harm, or alienation. Similarly, regarding customs and traditions prevalent among people whose prohibition or vileness is not proven by the pure Sharia, do not act contrary to or separate from them for the sake of your own elevation or sanctity. All these matters are contrary to harmony and intimacy and are opposite to the desire and preference of the Lawgiver (peace be upon him). Yes, be vigilant and attentive there, for this is a beautiful point, a magnificent wisdom, a safe path, and a noble way that many dry ascetics and people of spiritual unveiling are negligent of and ignorant about. They consider themselves cautious and religious in their own estimation, but in reality, they fall far from the core of wisdom and the objective of Sharia. Be warned and hold firm; in these few lines lies abundant knowledge. Success is from Allah, and to Him is the return. (This is all by the grace of Allah Almighty, and to Him is the recourse. T)

The Imam, Proof of Islam, Sage of the Ummah, Dispeller of Grief, Abu Hamid Muhammad bin Muhammad bin Muhammad al-Ghazali (may Allah Almighty be pleased with him) said in the blessed Ihya (Ihya Ulum al-Din): "I say: It is not for him

to ask him, but if he wishes to be scrupulous, he should be gentle in declining. And if he must go, then let him eat without asking, for asking is harmful."

Hujjat al-Islam, Hakim al-Ummah, Kashif al-Ghummah Imam Abu Hamid Muhammad bin Muhammad bin Muhammad Ghazali (may Allah be pleased with him) said in Ihya al-Ulum al-Sharif: "I say (it is not permissible for the one invited to question him (the host); rather, if he wants to adopt piety (Taqwa), he should decline with kindness, and if it is necessary to go (to the invitation), he should eat without asking because questioning...

---

1 Musnad of Imam Ahmad bin Hanbal from Ali, published by Dar al-Kutub al-Islamiyyah, Beirut 1/129 Page 529 of 761

...और अबू दाऊद और नसाई ने अली (अल्लाह तआला उनके चेहरे को मुकर्रम करे) से रिवायत की है। और उन्होंने (अल्लाह तआला उन पर दुरूद और सलाम भेजे) फरमाया: "खालिक की नाफरमानी में मख्लूक की कोई फरमाबरदारी नहीं है।" इसे इमाम अहमद और मुहम्मद अल-हाकिम ने इमरान और अल-हकम बिन अम्र अल-ग़िफारी (अल्लाह उन सबसे राज़ी हो) से रिवायत किया है।

वे (लोग) उन्हें राजी करें अगर वे ईमानदार हैं।" नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "अल्लाह तआला की नाफरमानी में किसी की इताअत (आज्ञापालन) नहीं है, फरमाबरदारी सिर्फ नेक उमूर (अच्छे कामों) में है।" इस हदीस को इमाम बुखारी, मुस्लिम, अबू दाऊद और नसाई ने हज़रत अली करमल्लाह वज्हहु से रिवायत किया है। और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "खालिक की नाफरमानी में मख्लूक की इताअत जायज़ नहीं"। इसे इमाम अहमद और मुहम्मद हाकिम ने हज़रत इमरान और हकम बिन अम्र गिफारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से रिवायत किया। (त)

पस इन उमूर (मामलों) में ज़ाबता कुलिया वाजिबतुल हिफ्ज़ (कंठस्थ करने योग्य सार्वभौमिक नियम) यह है कि फर्ज़ कामों को करने और हराम कामों को छोड़ने को मख्लूक (सृष्टि/लोग) की रज़ामंदी पर मुकद्दम (प्राथमिकता) रखे और इन उमूर में किसी की मुतलकन परवाह न करे। और मुस्तहब्ब (पसंदीदा कार्य) करने और गैर-औला (जो बेहतर न हो) को छोड़ने में मख्लूक की दिलजोई और उनके दिलों के ख्याल को अहम जाने और फितना, नफरत, ईज़ा (कष्ट) और वहशत का सबब (कारण) बनने से बहुत बचे। इसी तरह जो आदतें और रस्में मख्लूक में जारी हों और शरीअत-ए-मुतह्हरा से उनकी हुरमत (मनाही) और शनाअत (बुराई) साबित न हो, उनमें अपने तरफ्फुअ (उच्चता) और तनज्जुह (पवित्रता) के लिए उनके खिलाफ और उनसे जुदा न हो, क्योंकि ये तमाम उमूर मेल-जोल और मोहब्बत के मुखालिफ हैं और शारिअ (क़ानून देने वाले) के पसंदीदा और मकसूद के खिलाफ हैं। हाँ, वहाँ होशियार और चौकन्ने रहें क्योंकि यह वह नुक्ता-ए-जमीला (सुंदर बिंदु) और हिकमत-ए-जलीला (महान बुद्धिमत्ता) और सलामती का कूचा (रास्ता) और करामत की राह है जिससे बहुत से खुश्क ज़ाहिद और बा-कमाल लोग गाफिल और जाहिल होते हैं। वे अपने ख्याल में एहतियात बरतने वाले और दीनदार बनते हैं, जबकि हकीकत में वे हिकमत के मग़्ज़ (सार) और शरीअत के मक्सद से दूर जा पड़ते हैं। खबरदार रहें और मज़बूती से थाम लें; इन चंद लाइनों में

बहुत सा इल्म भरा है। तौफीक अल्लाह की तरफ से है और उसी की तरफ लौटना है। (यह सब अल्लाह तआला की तौफीक से है और उसी की तरफ रुजू करना है। त)

इमाम हुज्जतुल इस्लाम, हकीमुल उम्मत, काशिफुल गुम्मह अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-ग़ज़ाली (अल्लाह तआला उनसे राज़ी हो) ने मुबारक किताब 'इह्या' में फरमाया: "मैं कहता हूँ: उसके लिए जायज़ नहीं कि वह उससे सवाल करे, बल्कि अगर वह परहेज़गारी (तकवा) अख्तियार करना चाहे तो नरमी से मना कर दे, और अगर जाना ज़रूरी हो तो बिना पूछे खा ले क्योंकि सवाल करना ईज़ा (तकलीफ) है।"

हुज्जतुल इस्लाम, हकीमुल उम्मत, काशिफुल गुम्मह इमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इह्या-उल-उलूम शरीफ में फरमाया: "मैं कहता हूँ (जिसे दावत दी गई) उसके लिए जायज़ नहीं कि वह उस (दावत देने वाले) से सवाल करे, बल्कि अगर वह तकवा (परहेज़गारी) अख्तियार करना चाहता है तो नरमी के साथ छोड़ दे और अगर (दावत में) जाना ज़रूरी हो तो पूछे बगैर खाए क्योंकि सवाल...

---

1 मुसनद इमाम अहमद बिन हंबल अन अली, मतबुआ दारुल कुतुबुल इस्लामिया, बेरुत 1/129 पेज 529 of 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

وابوداؤد والنسائی عن علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ۔ وقال صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم لاطاعۃ لمخلوق فی معصیۃ الخالق احمد الامام ومحمد الحاکم عن عمران والحکم بن عمرو الغفاری رضی اللہ تعالیٰ عنہم۔

وہ (لوگ) انہیں راضی کریں اگر وہ ایمان دار ہیں۔" نبی اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: "اللہ تعالیٰ کی نافرمانی میں کسی کی اطاعت نہیں فرمانبرداری صرف نیک امور میں ہے" اس حدیث کو امام بخاری، مسلم، ابوداؤد اور نسائی نے حضرت علی کرم اللہ وجہہ سے روایت کیا ہے۔ اور نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: "خالق کی نافرمانی میں مخلوق کی اطاعت جائز نہیں"۔ اسے امام احمد اور محمد حاکم نے حضرت عمران اور حکم بن عمر و غفاری رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے روایت کیا۔ (ت)

پس ان امور میں ضابطہ کلیہ واجبۃ الحفظ یہ ہے کہ فعل فرائض و ترک محرمات کو ارضائے خلق پر مقدم رکھے اور ان امور میں کسی کی مطلقاً پروانہ کرے اور اتیان مستحب و ترک غیر اولیٰ پر مدارات خلق و مراعات قلوب کو اہم جانے اور فتنہ و نفرت وایذا و وحشت کا باعث ہونے سے بہت بچے۔ اسی طرح جو عادات ورسوم خلق میں جاری ہوں اور شرع مطہر سے ان کی حرمت وشناعت نہ ثابت ہو ان میں اپنے ترفع و تنزہ کے لئے خلاف وجدائی نہ کرے کہ یہ سب امور ایتلاف و موانست کے معارض اور مراد و محبوب شارع کے مناقض ہیں ہاں وہاں ہوشیار و گوش دار کہ یہ وہ نکتہ جمیلہ و حکمت جلیلہ و کوچہ سلامت و جادہ کرامت ہے جس سے بہت زاہدان خشک واہل تکشف غافل وجاہل ہوتے ہیں وہ اپنے زعم میں محتاط و دین پرور بنتے ہیں اور فی الواقع مغز حکمت و مقصود شریعت سے دور پڑتے ہیں خبردار و محکم گیر یہ چند سطروں میں

علم غزیر و باللہ التوفیق والیہ المصیر (یہ سب اللہ تعالیٰ کی توفیق سے ہے اور اسی کی طرف رجوع کرنا ہے۔ ت)

قال الامام حجۃ الاسلام حکیم الامۃ کاشف الغمۃ ابوحامد محمد بن محمد بن محمد الغزالی رضی اللہ تعالیٰ عنہ فی الاحیاء المبارک اقول لیس لہ ان یسألہ بل ان کان یتورع فیتلطف في الترك وان کان لابد لہ فلیأکل بغیر سؤال ایذاء

حجتہ الاسلام، حکیم الامہ ، کاشف الغمہ امام ابوحامد محمد بن محمد بن محمد غزالی رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے احیاء العلوم شریف میں فرمایا: "میں کہتا ہوں (جس کو دعوت دی گئی اس کے لئے جائز نہیں کہ وہ اس (داعی) سے سوال کرے بلکہ اگر وہ تقویٰ اختیار کرنا چاہتا ہے تو نرمی کے ساتھ چھوڑ دے اور اگر (دعوت میں) جانا ضروری ہو تو پوچھے بغیر کھائے کیونکہ سوال

---

1 مسند امام احمد بن حنبل عن علی مطبوعہ دار الکتب الاسلامی بیروت ۱۲۹/۱ صفحہ 529 از 761

Fatawa Rizvia, Volume 4

...uncovering secrets and causing aversion, and this is undoubtedly forbidden. If you say, "Perhaps he won't be harmed," then I say, "Perhaps he will be harmed." So you are asking out of caution based on "perhaps". If you were satisfied with "perhaps", then perhaps his wealth is lawful (meaning you wouldn't consider it forbidden). The prevailing sentiment among people is aversion towards investigation. It is not permissible for him to ask about others in a way they are aware of, for the harm in that is greater. And if he asks in a way they are unaware of, then it involves ill-thinking, uncovering secrets, and spying, which causes backbiting even if it is not explicit. All of this is forbidden in a single verse (Surah Al-Hujurat, verse 12). And how many an ignorant ascetic causes hearts to feel aversion through investigation and speaks with harsh, harmful words. In fact, Satan makes this seem good to him in pursuit of fame for eating what is lawful. If his motive were purely religion, his fear of hurting a Muslim's heart would be greater than his fear of his stomach receiving wealth he does not know about, for he is not held accountable for what he does not know, as long as there is no sign that necessitates avoidance. Let it be known that the path of piety is leaving [questioning] without spying. If eating is necessary, then piety lies in eating and thinking well [of the source]. This was the custom of the Companions, may Allah be pleased with them, and those who...

Page 530 of 761

फतावा रिज़विया, खंड 4

...पर्दाफाश करना और नफरत पैदा करना, और यह निस्संदेह हराम है। अगर तुम कहो कि शायद उसे तकलीफ न हो, तो मैं कहूंगा कि शायद उसे तकलीफ हो। तुम 'शायद' की सावधानी की वजह से सवाल कर रहे हो। अगर तुम 'शायद' पर संतोष करते तो अच्छा था क्योंकि मुमकिन है कि उसका माल हलाल हो (यानी तुम उसे हराम न समझते)। लोगों में आम बात यह है कि छानबीन से नफरत पैदा होती है। उसके लिए यह जायज़ नहीं है कि वह दूसरों के बारे में ऐसे पूछे कि उन्हें पता चल जाए, क्योंकि इसमें तकलीफ ज्यादा है। और अगर वह ऐसे पूछे कि उसे पता न चले, तो इसमें बदगुमानी, पर्दाफाश करना और जासूसी शामिल है, जो गीबत (पीठ पीछे बुराई) का कारण बनता है, भले ही यह स्पष्ट न हो। ये सभी बातें एक ही आयत (सूरह हुजुरात, आयत 12) में मना की गई हैं। और कितने ही अज्ञानी वैरागी (ज़ाहिद) हैं जो छानबीन के ज़रिए दिलों में नफरत पैदा करते हैं और बेहद सख्त व तकलीफदेह बातें करते हैं। हकीकत में शैतान इसे उसकी नज़रों में अच्छा बनाकर पेश करता है ताकि वह हलाल खाने वाले के तौर पर मशहूर हो जाए। अगर इसका मकसद सिर्फ दीन होता, तो किसी मुसलमान के दिल को दुखाने का डर, उसके पेट में अनजाने माल के चले जाने के डर से ज़्यादा होता, क्योंकि जिसके बारे में वह नहीं जानता उस पर उसकी पकड़ नहीं होगी, जब तक कि वहां कोई ऐसी निशानी न हो जिससे बचना ज़रूरी हो जाए। तो जान लो कि परहेज़गारी का रास्ता सवाल छोड़ देना है, जासूसी करना नहीं। और अगर खाना ज़रूरी हो, तो खाना और अच्छा गुमान रखना ही परहेज़गारी है। सहाबा किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) का यही तरीका था, और जो...

पृष्ठ 761 का 530

کرنے میں ایذاء رسانی، پردہ دری اور وحشت پیدا کرنا ہے اور یہ بلاشبہ حرام ہے۔ اگر تم کہو کہ شاید اسے ایذاء نہ پہنچے ۔ تو میں کہوں گا شاید اسے تکلیف پہنچے اور تم لفظ "لعل"۔ "شاید " پر قناعت کرتے تو اچھا تھا کیونکہ ممکن ہے اس کا مال حلال ہو (یعنی اس کو حرام نہ سمجھتے) اور غالب بات یہ ہے کہ تفتیش سے لوگوں کو وحشت ہوتی ہے اور جب وہ جانتا ہو تو اس کے لئے جائز نہیں کہ دوسرے سے سوال کرے کیونکہ اس میں ایذاء رسانی زیادہ ہے اور اگر یوں پوچھتا ہے کہ اُسے معلوم نہیں تو اس میں بد گمانی اور پردہ دری ہے نیز اس میں تجسس ہے جو غیبت کا باعث بنتا ہے اگرچہ یہ صریح نہ ہو اور یہ تمام باتیں ایک آیت (سورہ حجرات آیت ۱۲) میں ممنوع قرار دی گئی ہیں اور کتنے ہی جاہل زاہد ہیں جو تفتیش کے ذریعے دلوں میں وحشت پیدا کرتے ہیں اور نہایت سخت اور ایذاء رساں کلام استعمال کرتے ہیں در حقیقت شیطان اس کی نظروں میں اسے اچھا قرار دیتا ہے تاکہ وہ حلال خور مشہور ہو، اور اگر اس کا باعث محض دین ہو تو پھر مسلمانوں کے دل کو اذیت پہنچانے کا خوف ایسی چیز کو پیٹ میں داخل کرنے کے خوف سے زیادہ ہے جس کے بارے میں وہ نہیں جانتا کیونکہ جس بات کو وہ نہیں جانتا اس پر مواخذہ نہیں ہوگا۔ جب وہاں ایسی علامت نہ ہو جس کی وجہ سے اجتناب لازم ہوتا ہے تو جان لو پرہیزگاری ترک سوال میں ہے تجسس میں نہیں اور اگر کھانا ضروری ہو تو کھانے اور اچھا گمان کرنے میں پرہیز گاری ہے۔ صحابہ کرام رضی اللہ عنہم کو یہی طریقہ پسند ہے، اور جو

Fatawa Ridawiyya, Volume 4

Whoever exceeds them in piety (war'a) is a misguided innovator and not a follower. [Summarized]

In this context, Hazrat Harith al-Muhasibi (may Allah have mercy on him) said: "If a person has a friend or a brother and he is safe from his anger if he were to ask him, it is still not appropriate to ask for the sake of piety. This is because sometimes something might be revealed to him that was hidden from him, thus he would have prompted the violation of privacy, which then leads to hatred. Even if he has some doubt about him, he should not ask, but should think well of him—that he feeds him from pure things and keeps him away from the foul. If his heart is not at peace with him, he should withdraw gently and not violate his privacy by questioning, for I have not seen any of the scholars doing so." [Summarized]

In 'Al-Tariqa' and 'Al-Hadiqa', it is stated: "That which cannot be fully achieved—which is avoiding all types of doubts in all transactions—should not be entirely abandoned. Therefore, it is better and more cautious to refrain from things where there is a clear sign of prohibition, which is a strong doubt. Similarly, one should avoid those who have a complete reputation for injustice, usurpation, and theft, etc."

1. Ihya' al-'Ulum, Chapter 3 on Investigation and Questioning, first part, Matba'at al-Mashhad al-Husayni, Cairo, 2/119
2. Ihya' al-'Ulum, Chapter 3 on Investigation and Questioning, second part, Matba'at al-Mashhad al-Husayni, Cairo, 2/124

फ़तवा रिज़विया, जिल्द 4

जो व्यक्ति परहेज़गारी में उनसे आगे बढ़ने की कोशिश करे, वह गुमराह और बिदअती है, मुत्तबी (अनुयायी) नहीं है। [संक्षेप]

और इसी सिलसिले में हज़रत हारिस मुहासिबी (रहमतुल्लाह अलैह) ने फरमाया: "अगर किसी व्यक्ति का दोस्त या भाई हो और उसे सवाल करने पर उसके गुस्से का डर न हो, तब भी परहेज़गारी हासिल करने के लिए सवाल करना मुनासिब नहीं है। क्योंकि कभी-कभी उसके सामने वह बात ज़ाहिर हो जाती है जो उससे छिपी हुई थी, तो वह उसे पर्दा-दरी (गोपनीयता के उल्लंघन) पर उकसाएगा, जो फिर नफरत की ओर ले जाता है। और अगर उसे उसमें कुछ संदेह हो, तब भी सवाल न करे, बल्कि उसके बारे में यही गुमान रखे कि वह उसे पाक चीज़ें खिलाता है और नापाक चीज़ों से दूर रखता है। अगर उसका दिल मुतमईन न हो, तो अत्यंत विनम्रता से किनारा कर ले, लेकिन सवाल करके उसकी पर्दा-दरी न करे, क्योंकि मैंने किसी विद्वान को ऐसा करते नहीं देखा।" [संक्षेप]

और 'अल-तरीका' और 'अल-हदीका' में है: "जो चीज़ पूरी तरह से हासिल न हो सके—जो कि सभी लेन-देन में हर प्रकार के संदेह से बचना है—उसे पूरी तरह नहीं छोड़ा जाना चाहिए। अत; उन चीज़ों से परहेज़ करना बेहतर और अधिक एहतियात वाला है जिनमें हराम होने का स्पष्ट संकेत है और वह मज़बूत संदेह है। इसी तरह उनसे भी बचना चाहिए जो ज़ुल्म, ग़सब और चोरी आदि के लिए पूरी तरह मशहूर हों।"

1. इहया उलूम अल-दीन, अध्याय 3, जांच और सवाल पर, पहला हिस्सा, मतबअत अल-मशहद अल-हुसैनी, काहिरा, 2/119
2. इहया उलूम अल-दीन, अध्याय 3, जांच और सवाल पर, दूसरा हिस्सा, मतबअत अल-मशहद अल-हुसैनी, काहिरा, 2/124

पेज 531 / 761

فتاوی رضویہ، جلد چہارم

شخص پرہیز گاری کے سلسلے میں ان سے آگے بڑھنے کی کوشش کرے وہ گمراہ اور بدعتی ہے، متبع نہیں ہے تلخیص۔

اور اسی سلسلے میں حضرت حارث محاسبی رحمہ اللہ نے فرمایا: "اگر کسی شخص کا دوست یا بھائی ہو اور سوال کرنے میں اس کی ناراضگی کا ڈر نہ ہو تو بھی پرہیز گاری کے حصول کیلئے سوال کرنا مناسب نہیں کیونکہ بعض اوقات اس کے سامنے وہ بات ظاہر ہو جاتی ہے جو اس سے پوشیدہ رکھی گئی ہے پس وہ اسے پردہ دری پر برانگیختہ کرے گی پھر دشمنی تک پہنچائے گی اور اگر اسے اس میں کچھ شک ہو تب بھی سوال نہ کرے بلکہ اس کے بارے میں یہی گمان رکھے کہ وہ اسے پاکیزہ چیزیں کھلاتا اور خبیث چیزوں سے دور رکھتا ہے اگر اس پر اس کا دل مطمئن نہ ہو تو نہایت نرم طریقے سے کنارہ کش ہو جائے لیکن سوال کر کے اس کی پردہ دری نہ کرے، کیونکہ میں نے کسی عالم کو ایسا کرتے نہیں دیکھا، تلخیص۔

اور الطریقۃ المحمدیہ اور الحدیقۃ الندیۃ میں ہے "جس چیز کو مکمل طور پر نہ پایا جاسکے اور وہ تمام معاملات میں ہر قسم کے شبہ سے بچنا ہے تو سب کو نہ چھوڑا جائے پس زیادہ بہتر اور مناسب یہ ہے کہ ان چیزوں سے احتراز کیا جائے جن میں حرمت کی نشانی واضح ہے اور وہ قوی شبہ ہے اور اسی طرح اس سے بھی اجتناب کیا جائے جو ظلم، غصب، چوری، خیانت اور دھوکہ دہی وغیرہ

1 احیاء العلوم الباب الثالث في البحث والسؤال المشار الاول مطبعۃ المشہد الحسینی قاہرہ ۱۱۹/۲ 2 احیاء العلوم الباب الثالث في البحث والسؤال المشار الثانی مطبعۃ المشہد الحسینی قاہرہ ۱۲۴/۲

[Arabic Column]: Or deceit or counterfeiting or similar acts like usury and illicit taxes on wealth and highway robbery are things from which it is possible to abstain without neglecting what is better. That is, abstaining from them is better than doing them, or doing what is better to be left. This is a precaution against what might follow from avoiding the wealth of the aforementioned people, leading to a neglect of respect for them if they are among those whose respect is mandatory or appropriate, such as sultans, rulers, judges of Sharia, parents, professors, teachers [Footnote 1], the elderly, neighborhood elders, and friends. It is not appropriate, rather it is impermissible, to harbor bad suspicion about them. Whenever this leads to something like that, then avoiding those doubts is not better nor is it caution, because it is countered by the neglect of respect or harboring bad suspicion about someone whose respect is mandatory or appropriate. It is not good [Footnote 2] to harbor bad suspicion about them. This is among the most difficult matters; one intends the recommended (mustahab) but falls into the prohibited (haram). End of summary.

[Urdu Column]: For example, someone who is famous for taking interest, causing financial loss, or highway robbery—these are things that can be avoided without neglecting what is better. The meaning is that acting upon it is better than leaving it, and similarly, things that are better to leave than to do can also be avoided without doing them. The point is that if avoiding the wealth of the aforementioned people results in neglecting the respect due to them, it is a precaution. This applies when they are people whose respect is mandatory or appropriate, such as kings, rulers, Sharia judges, parents, professors, teachers [Footnote 1], the elderly, elders of the neighborhood, and friends. Having a bad opinion of them is inappropriate, rather impermissible. When this (avoiding their invitation) leads to such a situation, then avoiding those doubts is neither better nor more cautious. This is because in this situation, one has to give up respecting those people, and a bad opinion arises about those whose respect is mandatory or appropriate, and having a bad opinion about them is not (permissible). This is a very difficult matter; while intending to do what is recommended (mustahab), one might fall into what is forbidden (haram). (Summary)

[Footnotes]: 1: i.e., even if he is a teacher of any craft or trade, as mentioned by Arif al-Nabulsi himself in some places of this commentary. 12 Minhu (M/T) 2: i.e., it is not permissible (impermissible) as mentioned before. 12 (M/T)

[Bottom]: 1 Al-Hadiqa al-Nadiyya, explanation of the ruling on piety and caution regarding the food of officials, published by Nooriya Razawiyya Faisalabad, 2/40.
Page 532 of 761

[अरबी स्तंभ]: या धोखा या जालसाज़ी या इसी तरह के काम जैसे सूदखोरी और धन पर अवैध कर और डकैती ऐसी चीज़ें हैं जिनसे बेहतर काम की उपेक्षा किए बिना बचना संभव है। यानी इनसे बचना उन्हें करने से बेहतर है, या वह करना जो छोड़ना बेहतर है। यह उन चीज़ों के विरुद्ध एक एहतियात है जो उपर्युक्त लोगों के धन से बचने के परिणामस्वरूप हो सकती हैं, जिससे उनके प्रति सम्मान की उपेक्षा हो सकती है यदि वे उनमें से हों जिनका सम्मान अनिवार्य या उचित है, जैसे सुल्तान, शासक, शरिया के न्यायाधीश, माता-पिता, प्रोफेसर, शिक्षक [पाद-टिप्पणी १], वृद्ध, मोहल्ले के बुजुर्ग और मित्र। उनके बारे में बुरा संदेह करना उचित नहीं है, बल्कि यह नाजायज़ है। जब भी यह ऐसी किसी बात की ओर ले जाए, तो उन संदेहों से बचना न तो बेहतर है और न ही सावधानी है, क्योंकि यह उन लोगों के सम्मान की उपेक्षा या उनके बारे में बुरा संदेह करने से संतुलित होता है जिनका सम्मान अनिवार्य या उचित है। उनके बारे में बुरा संदेह करना अच्छा नहीं है [पाद-टिप्पणी २]। यह सबसे कठिन मामलों में से है; व्यक्ति मुस्तहब (पसंदीदा) का इरादा रखता है लेकिन हराम (वर्जित) में पड़ जाता है। सारांश समाप्त।

[उर्दू स्तंभ]: उदाहरण के लिए, कोई जो ब्याज खाने, आर्थिक नुकसान पहुँचाने या डकैती के लिए प्रसिद्ध हो—ये ऐसी चीज़ें हैं जिनसे बेहतर काम को छोड़े बिना भी बचा जा सकता है। इसका अर्थ यह है कि इस पर अमल करना इसे छोड़ने से बेहतर है, और इसी तरह, जिन चीज़ों को करना छोड़ने से बेहतर है, उन्हें किए बिना भी उन चीज़ों से बचा जा सकता है। यह बात कि जिन लोगों का ज़िक्र किया गया, उनके धन से बचने के कारण उनके सम्मान को छोड़ना अनिवार्य हो जाता है, यह इस बात से बचाव है कि जब वे ऐसे लोग हों जिनका सम्मान करना अनिवार्य या उचित हो, जैसे राजा, शासक, शरिया न्यायाधीश, माता-पिता, उस्ताद, शिक्षक [पाद-टिप्पणी १], वृद्ध, मोहल्ले के बुजुर्ग और मित्र। उनके बारे में बुरा विचार रखना अनुचित है, बल्कि नाजायज़ है। जब यह बात (उनके आमंत्रण से बचना) ऐसी स्थिति की ओर ले जाए, तो उन संदेहों से बचना न तो बेहतर है और न ही अधिक सतर्कतापूर्ण। क्योंकि इस स्थिति में उन लोगों का सम्मान छोड़ना पड़ता है और उनके बारे में बुरा विचार पैदा होता है जिनका सम्मान अनिवार्य या उचित है, और उनके बारे में बुरा विचार (जायज़) नहीं है। यह अत्यंत कठिन मामला है; वह मुस्तहब का इरादा करते-करते हराम में पड़ जाएगा। (संक्षेप)

[पाद-टिप्पणियाँ]: १: यानी, चाहे वह किसी भी हुनर या पेशे का शिक्षक हो, जैसा कि स्वयं आरिफ़ अल-नाबुलसी ने इस शरह (व्याख्या) के कुछ स्थानों पर उल्लेख किया है। २: यानी, यह जायज़ नहीं है जैसा कि पहले बताया गया है।

[नीचे]: १ अल-हदीक़ा अन-नादिय्या, ओहदेदारों के भोजन के संबंध में परहेज़गारी और सावधानी के हुक्म का बयान, नूरिया रज़विया.फ़ैसलाबाद द्वारा प्रकाशित, २/४०। पृष्ठ ७६१ में से ५३२

[عربی کالم]: او الخانية او التزوير او نحوها من الربو والمكس في الاموال وقطع الطريق مما يمكن الاحتراز عنه من غير ترك ما فعله اولی منه ای من ترکه او فعل ما ترکه کذلك ای اولی من فعله وهذا احتراز عما اذا ترتب علی اجتنابه عن اموال من ذکر وترك الاحترام لهم اذا کانوا مما یجب احترامهم او ینبغي له کالسلاطین والحکام وقضاة الشرع والابوین والاستاذ والمعلم عه۱ والکبیر في السن وشیخ المحلة والصدیق ولا ینبغي بل لا یجوز اساءة الظن بهم ومتی ادی ذلك الی شيء من هذا لم یکن الاولی ولا الاحتیاط الاحتراز عن تلك الشبهات لما یعارضها من ترك الاحترام او اساءة الظن بمن یجب او ینبغي احترامه ولا یحسن عه۲ اساءة الظن به وهذا من اصعب الامور یرید المستحب فیقع فی الحرام اھ ملخصاً۔

[اردو کالم]: مثلاً سود کھانے، مالی نقصان پہنچانے اور ڈاکزنی میں مشہور ہو یہ وہ چیزیں ہیں کہ اولیٰ کو چھوڑے بغیر بھی ان سے اجتناب ممکن ہے مراد یہ ہے کہ اس پر عمل اسے چھوڑنے سے اولیٰ ہے اسی طرح جس چیز کا چھوڑنا اسے بجالانے سے بہتر ہے اسے کئے بغیر بھی ان چیزوں سے اجتناب ہوسکتا ہے۔ یہ بات کہ جن لوگوں کا ذکر کیا گیا ان کے مال سے بچنے کی بنا پر ان کے احترام کو چھوڑنا لازم آتا ہے یہ اس بات سے احتراز ہے کہ جب وہ ایسے لوگ ہوں جن کا احترام واجب یا مناسب ہے جیسے بادشاہ، حکام، قاضی شرع، ماں باپ، استاذ، معلم، عمر رسیدہ، محلہ کے بزرگ اور دوست تو ان کے بارے میں بدگمانی نامناسب بلکہ ناجائز ہے اور جب یہ بات (ان کی دعوت سے احتراز) ایسی بات کی طرف پہنچائے تو ان شبہات سے بچنا نہ اولیٰ ہے اور نہ ہی زیادہ محتاط، کیونکہ اس صورت میں ان لوگوں کا احترام چھوڑنا پڑتا ہے اور ان کے بارے میں

بدگمانی پیدا ہوتی ہے جن کا احترام واجب یا مناسب ہے اور ان کے بارے میں بدگمانی (جائز) نہیں یہ نہایت مشکل کام ہے وہ مستحب کا ارادہ کرتے کرتے حرام میں پڑجائے گا، تلخیص (ت)

[حواشی]: عہ۱: ای ولو لحرفة من الحرف کما ذکرہ العارف النابلسی بنفسہ فی بعض المواضع من ھذا الشرح ۱۲ منہ (م) یعنی پیشوں میں سے اگر چہ وہ کسی بھی پیشے کا معلم ہو جیسا کہ خود عارف نابلسی نے اسی شرح کے بعض مواضع پر اس کا ذکر کیا ہے ۱۲ منہ (ت) عہ۲: ای لا یجوز کما سبق ۱۲ (م) یعنی لا یجوز (ناجائز ہے) جیسا کہ گزرا ۱۲ (ت)۔

[نیچے]: 1 الحدیقة الندیة بیان حکم التورع والتوقی من طعام اہل الوظائف مطبوعہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۴۰/۲ Page 532 of 761

Fatawa Razawiyya Volume IV

[Left Column - Arabic Text] I say: It is as you see, explicit or like explicit regarding abstaining from questioning, even if the majority of his wealth is from haram (unlawful sources). He mentioned those famous for theft, highway robbery, usurpation, and usury but did not go into detail absolutely. As for Imam Hujjat-ul-Islam (Imam Ghazali), he leaned towards the obligation of questioning when haram wealth is predominant. He said, 'We have made questioning obligatory when it is confirmed that most of his wealth is haram. In such a case, one should not care about his anger or the like; rather, it is obligatory to cause the oppressor even more distress than that. It is likely that such a person will not get angry at such a question.'

I say: The basis for this is that eating with someone whose majority of wealth is haram is forbidden. This falls into the first category we mentioned, where one should not care about anyone's displeasure or fear the blame of any critic. This is more appropriate according to our masters (scholars). Faqih al-Samarqandi and others gave fatwas on this, and it was authenticated in Al-Dhakhirah. The correct, chosen, and relied-upon view in the school of thought, upon which fatwa is given, is absolute permission as long as a specific thing is not known to be haram. This is the view of Ibrahim al-Nakha'i, Abu Hanifa, and his companions. Muhammad said: 'And with it, we take (it is our position).' Thus, how can the fatwa of Abu al-Layth oppose the fatwa of Abu Hanifa, and the authentication of Al-Dhakhirah oppose the preference of Muhammad? While Abu Hanifa is the Imam.

[Right Column - Urdu Translation] I say: This is explicit or as good as explicit regarding abstaining from questioning, as you see. Even if most of his wealth is from haram (illegal earnings), he mentions those famous for theft, robbery, usurpation, and usury but does not go into details at all. Imam Hujjat-ul-Islam's tendency is towards the obligation of questioning in case of an abundance of haram wealth. He said: 'We have declared questioning obligatory in this case when it is proven that most of his wealth is haram. In this state, one should not care about his anger etc., rather, it is obligatory to cause even more distress to the oppressor, and the likelihood is that such a person does not get angry at such a question.' (T)

I say: Its basis is that eating at the place of one whose majority of wealth is haram is prohibited. This will be included in the first category we mentioned, that in this regard one should not care about anyone's displeasure nor fear the blame of any critic. This is more appropriate according to our masters. Faqih Samarqandi and

others have given fatwas on this; it was declared correct in Dhakhirah. And the correct and chosen point in the reliable school of thought and the fatwa-based saying is absolute permission as long as the prohibition of a specific thing is not known. This is the same school of Ibrahim Nakha'i, Imam Abu Hanifa, and your companions. Imam Muhammad says: 'We adopt this.' Thus, how can the fatwa of Abu al-Layth oppose the fatwa of Imam Abu Hanifa and the authentication of Dhakhirah oppose the preference of Imam Muhammad, while Imam Abu Hanifa is the Great Imam (Imam-e-Azam).

---

1. Ihya al-Ulum, Chapter Three on Investigation and Questioning, Second Section, Matba'at al-Mashhad al-Husayni, Cairo, 2/124. Page 533 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द चतुर्थ

[बायां कॉलम - अरबी पाठ] मैं कहता हूँ: यह वैसा ही है जैसा आप देख रहे हैं, सवाल न पूछने के बारे में स्पष्ट या स्पष्ट जैसा है, भले ही उसकी अधिकांश संपत्ति हराम (अवैध) हो। उन्होंने चोरी, डकैती, ज़बरदस्ती कब्ज़ा और सूद के लिए मशहूर लोगों का ज़िक्र किया है, लेकिन विस्तार में पूरी तरह से नहीं गए। जहाँ तक इमाम हुज्जतुल इस्लाम (इमाम ग़ज़ाली) का सवाल है, उन्होंने हराम माल की अधिकता की स्थिति में सवाल पूछना वाजिब (अनिवार्य) माना है। उन्होंने कहा, 'हमने इस स्थिति में सवाल पूछना तब वाजिब करार दिया है जब यह साबित हो जाए कि उसका अधिकांश माल हराम है। ऐसी स्थिति में उसके गुस्से आदि की परवाह नहीं की जानी चाहिए; बल्कि ज़ालिम को इससे भी ज़्यादा तकलीफ पहुँचाना वाजिब है। और संभावना यही है कि इस प्रकार का व्यक्ति ऐसे सवाल पर गुस्सा नहीं करेगा।'

मैं कहता हूँ: इसका आधार यह है कि जिसका अधिकांश माल हराम हो, उसके यहाँ खाना हराम है। यह उस पहली श्रेणी में शामिल होगा जिसका हमने ज़िक्र किया था कि इस मामले में किसी की नाराज़गी की परवाह न करें और न ही किसी निंदा करने वाले की निंदा से डरें। हमारे आचार्यों (बुजुर्गों) के अनुसार यह अधिक उपयुक्त है। फकीह समरकंदी और अन्य लोगों ने इसी पर फतवा दिया है और 'अद-ज़खीरा' में इसे सही करार दिया गया है। लेकिन मज़हब में सही, चुना हुआ, विश्वसनीय और जिस पर फतवा दिया जाता है, वह बात यह है कि जब तक किसी विशेष वस्तु का हराम होना ज्ञात न हो, तब तक सामान्य अनुमति है। यह इब्राहीम नखई, इमाम अबू हनीफा और उनके साथियों का मज़हब है। इमाम मुहम्मद फरमाते हैं कि हम इसी को अपनाते हैं। तो फिर अबू लैथ का फतवा इमाम अबू हनीफा के फतवे का और 'ज़खीरा' का प्रमाणीकरण इमाम मुहम्मद की प्राथमिकता का विरोध कैसे कर सकता है? जबकि इमाम अबू हनीफा तो इमाम-ए-आजम हैं।

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद] मैं कहता हूँ: यह सवाल न पूछने के बारे में स्पष्ट है या स्पष्ट जैसा है, जैसा कि आप देख रहे हैं। भले ही उसकी अधिकांश संपत्ति हराम (अवैध) हो, क्योंकि उसने चोरी, डकैती, ज़बरदस्ती कब्ज़ा और सूद के लिए मशहूर लोगों का ज़िक्र किया है लेकिन विस्तार में पूरी तरह से नहीं गया। जहाँ तक इमाम हुज्जतुल इस्लाम (इमाम ग़ज़ाली) का सवाल है, उन्होंने हराम माल अधिक होने की स्थिति में सवाल पूछने को वाजिब (अनिवार्य) माना है। उन्होंने कहा कि हमने इस स्थिति में सवाल करना तब वाजिब करार दिया है जब यह साबित हो जाए कि उसका अधिकांश माल हराम है। ऐसी स्थिति में उसके गुस्से आदि की परवाह नहीं की जानी चाहिए, बल्कि ज़ालिम को इससे

भी ज़्यादा तकलीफ पहुँचाना वाजिब है। और संभावना यही है कि इस प्रकार का व्यक्ति ऐसे सवाल पर गुस्सा नहीं करेगा। (त)

मैं कहता हूँ: इसका आधार यह है कि जिसका अधिकांश माल हराम हो, उसके यहाँ खाना हराम है। यह उस पहली श्रेणी में शामिल होगा जिसका हमने ज़िक्र किया था कि इस मामले में किसी की नाराज़गी की परवाह न करें और न ही किसी निंदा करने वाले की निंदा से डरें। हमारे आचार्यों (बुजुर्गों) के अनुसार यह अधिक उपयुक्त है। फकीह समरकंदी और अन्य लोगों ने इसी पर फतवा दिया है और 'ज़खीरा' में इसे सही करार दिया गया है। लेकिन मज़हब में सही, चुना हुआ, विश्वसनीय और जिस पर फतवा दिया जाता है, वह बात यह है कि जब तक किसी विशेष वस्तु का हराम होना ज्ञात न हो, तब तक सामान्य अनुमति है। यह इब्राहीम नखई, इमाम अबू हनीफा और आपके साथियों का मज़हब है। इमाम मुहम्मद फरमाते हैं कि हम इसी को अपनाते हैं। तो फिर अबू लैथ का फतवा इमाम अबू हनीफा के फतवे का और 'ज़खीरा' का प्रमाणीकरण इमाम मुहम्मद की प्राथमिकता का विरोध कैसे कर सकता है? जबकि इमाम अबू हनीफा तो इमाम-ए-आजम हैं।

---

1. इह्या उलूम-उद-दीन, अन्वेषण और पूछताछ पर तीसरा अध्याय, दूसरा खंड, मतबा अल-मशहद अल-हुसैनी, काहिरा, 2/124। पृष्ठ 533/761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

[بایاں کالم - عربی عبارت] اقول: وھو کما تری صریح او کالصریح في ترك السؤال ولو کان اکثر ماله من الحرام فانه ذکر المشھورین بالسرقة وقطع الطریق والغصب والربو ولم یفصل مطلقاً اما الامام حجة الاسلام فجنح عند کثرة الحرام الی ایجاب السؤال وقال انما اوجبنا السؤال اذا تحقق ان اکثر ماله حرام وعند ذلك لا یبالي بغضب مثله بل یجب ایذاء الظالم باکثر من ذلك والغالب ان مثل ھذا لا یغضب من السؤال اھ قلت ومبني ذلك تحریمه الاکل عند من غالب ماله حرام فیدخل في القسم الاول الذي ذکرنا انه لا یبالي فیه بسخط احد ولا لومة لائم وھذا وجه عند مشایخنا وبه افتی الفقیه السمرقندی وغیره وصححه في الذخیرة والصحیح المختار في المذھب المعول علیه المفتی به اطلاق الرخصة مالم یعرف شیئاً حراماً بعینه وھو مذھب ابراھیم النخعي وابي حنیفة واصحابه قال محمد وبه نأخذ فانی یعارض فتوی ابی اللیث فتوی ابی حنیفة وتصحیح الذخیرة ترجیح محمد۔ وابو حنیفة ھو الامام

[دایاں کالم - اردو ترجمہ] اقول: یہ ترک سوال میں صریح یا صریح کی طرح ہے جیسا کہ دیکھ رہے ہو اور اگر اس کا زیادہ مال حرام (کی کمائی) سے ہو تو وہ چوری، ڈا کے، غصب اور سود میں مشہور لوگوں کا ذکر کرے لیکن تفصیل میں مطلقاً نہ جائے، امام حجۃ الاسلام کا میلان حرام مال زیادہ ہونے کی صورت میں وجوب سوال کی طرف ہے انہوں نے فرمایا ہم نے اس صورت میں سوال کرنا واجب قرار دیا ہے جب ثابت ہو جائے کہ اس کا زیادہ مال حرام ہے اس حالت میں اس کے غصہ وغیرہ کی پروا نہ کی جائے بلکہ ظالم کو اس سے بھی زیادہ ایذا پہنچانا واجب ہے اور غالب یہ ہے کہ اس قسم کا آدمی ایسے سوال پر غصہ نہیں کرتا ھ (ت) قلت اس کی بنیاد یہ ہے کہ جس کا اکثر مال حرام ہو اس کے ہاں کھانا حرام ہے، یہ پہلی قسم میں داخل ہوگا جس کا ہم نے ذکر کیا کہ اس سلسلے میں کسی کی ناراضگی کی پروا نہ کرے اور نہ ہی کسی ملامت کرنے

والے کی ملامت سے ڈرے ہمارے مشائخ کے نزدیک یہ زیادہ مناسب ہے فقیہ سمرقندی وغیرہ نے اسی پر فتویٰ دیا ہے ذخیرہ میں اسے صحیح قرار دیا اور قابل اعتماد مذہب اور مفتی بہ قول میں صحیح اور مختار بات مطلق رخصت ہے جب تک کسی معین چیز کا حرام ہونا معلوم نہ ہو ابراہیم نخعی، امام ابوحنیفہ اور آپ کے اصحاب کا یہی مذہب ہے۔ امام محمد فرماتے ہیں ہم اسی کو اختیار کرتے ہیں پس ابواللیث کا فتویٰ امام ابوحنیفہ کے فتویٰ کا اور تصحیح ذخیرہ امام محمد کی ترجیح کا معارض کیسے ہوگا حالانکہ امام ابوحنیفہ جو امام اعظم ہیں۔

---

1 احیاء العلوم الباب الثالث فی البحث والسوال المشار الثانی مطبعۃ المشھد الحسینی القاہرۃ ۲/ ۱۲۴

Fatawa Razawiyya, Volume 4

(Arabic Text Column): ...the Great (Imam Abu Hanifa) and (Imam) Muhammad are the compilers of the school of thought (Madhhab), therefore, Allama Birkali's statement is absolute and we followed him in that. However, it appears to me that piety (wara') is commendable in itself, and it has been praised in numerous hadiths with a concurrent meaning. We have detailed some of them in our blessed book, God willing, "Matla' al-Qamarayn fi Ibanat Sabqat al-Umrayn." It is only abandoned when it is left due to a stronger opposing factor. Why should I say it should be abandoned? It should never be abandoned. Rather, in that case, piety would lie in leaving what a meticulous person considers to be piety. Thus, where opposing factors such as causing harm, breaching privacy, or inciting strife are not found—as we described to you regarding that bold, public person—then there is no meaning in abandoning piety when the requirement exists and there is no obstacle. Therefore, we opted for its exception. And Allah is the Giver of success. This is also mentioned in 'Ayn al-Ilm wa al-Asrar bi al-Musa'adah': regarding matters that have not been forbidden and have become a custom in their time, it is good, even if it is a commendable innovation (bid'ah hasanah), or regarding customs, as indicated by the restriction 'regarding matters that have not been forbidden.' Something similar is found in 'Ihya' al-Ulum.' And Allah Almighty knows best. (T)

(Urdu Translation Column): And Imam Muhammad is the compiler of their Madhhab, therefore, Allama Birkali's statement is absolute and we followed him in that regard. However, it became apparent to me that personal piety is worthy of praise; its praise has come in hadiths of concurrent meaning. We will narrate some of them (hadiths) in detail in our blessed book "Matla' al-Qamarayn fi Ibanat Sabqat al-Umrayn," God willing. Where it is abandoned, it is due to some very strong opposing circumstance. Why should I say it should be abandoned? It will never be abandoned; but at that time, piety will be in leaving that which a person who knows the reality of the situation considers piety. Thus, where circumstances like causing harm, breaching privacy, and inciting strife are not found—as we described for you the conduct of that bold public prohibitor—there is no sense in abandoning piety because the requirement (for inquiry) is present there and there is no obstacle either. Therefore, we have adopted the path of its exception. And Allah is the Granter of success. And in "Ayn al-Ilm wa al-Asrar bi al-Musa'adah" it is stated that something which has not been prohibited and has become a habit in their time is a good thing even if it is a commendable innovation, or if they are customs as is benefited by the restriction

"not being prohibited from it." The like of it is also in Ihya al-Ulum. And Allah Almighty knows best. (T)

---

1. Ayn al-Ilm, Chapter on Silence and the Calamity of the Tongue, printed by Islamic Press Lahore, p. 206.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4

(अरबी पाठ स्तंभ): ...अज़म (इमाम अबू हनीफ़ा) और (इमाम) मुहम्मद मज़हब के मुहर्रिर (लिखने वाले) हैं, इसलिए अल्लामा बिरकली का क़ौल मुतलक़ (निरपेक्ष) है और हमने उस सिलसिले में उनकी पैरवी की है। लेकिन मुझे यह प्रतीत होता है कि तक़वा (परहेज़गारी) अपने आप में सराहनीय है और इसके बारे में कई हदीसें आई हैं। हमने अपनी बरकत वाली किताब "मतलउल-क़मरैन फ़ी इबानति सबक़तिल-उमरैन" में उनमें से कुछ का विस्तार से वर्णन किया है, इंशा अल्लाह। जहाँ इसे छोड़ा जाता है, वहाँ किसी अत्यंत प्रबल कारण से छोड़ा जाता है। मैं कैसे कहूँ कि इसे छोड़ दिया जाए? इसे कभी नहीं छोड़ना चाहिए। बल्कि उस समय तक़वा उसी चीज़ को छोड़ने में होगा जिसे एक सावधान व्यक्ति तक़वा समझता है। अतः जहाँ हानि पहुँचाने, पर्दा हटाने या फ़ितना फैलाने जैसी बाधाएँ नहीं हैं - जैसा कि हमने आपको उस निडर व्यक्ति के बारे में बताया - वहाँ तक़वा छोड़ने का कोई अर्थ नहीं है जब तक कि आवश्यकता मौजूद है और कोई बाधा नहीं है। इसलिए हमने इसके अपवाद का मार्ग चुना है। अल्लाह ही सफलता देने वाला है। 'ऐनुल इल्म वल-असरार' में भी यही है: जिन चीज़ों से मना नहीं किया गया और वे उनके समय में चलन बन गई हैं, वे अच्छी हैं, चाहे वे बिदअत-ए-हसना ही क्यों न हों। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। (त)

(उर्दू अनुवाद स्तंभ): और इमाम मुहम्मद उनके मज़हब को तहरीर करने वाले हैं इसी लिये अल्लामा बिरकली का क़ौल मुतलक़ है और हमने इस सिलसिले में उसकी इत्तेबा' की लेकिन मुझ पर ज़ाहिर हुआ कि ज़ाती तौर पर परहेज़गारी क़ाबिले-तारीफ़ है अहादीस मुतवातिरुल-मानी में इसकी तारीफ़ आई है हम उनमें से कुछ (अहादीस) अपनी मुबारक किताब "मतलउल-क़मरैन फ़ी इबानति सबक़तिल-उमरैन" में तफ़्सील से नक़्ल करेंगे इन शा अल्लाह तआला, जहाँ छोड़ा जाता है वहाँ किसी निहायत मज़बूत आरिज़ा की वजह से छोड़ा जाता है, मुझे क्या है कि मैं कहूँ कि छोड़ा जाए, हरगिज़ नहीं छोड़ा जाएगा लेकिन उस वक़्त परहेज़गारी उस चीज़ को छोड़ने में होगी जिसको हक़ीक़त-ए-हाल मालूम करने वाला परहेज़गारी ख़याल करता है पस जहाँ ईज़ा-रसानी, पर्दा-दरी और फ़ितना-परवरी जैसे अवारिज़ नहीं पाए जाएंगे जैसा कि हमने तुम्हारे लिये इस जुर्रत मंद ए'लानिया रोकने वाले की शान बयान की वहां परहेज़गारी छोड़ने का कोई मतलब नहीं क्योंकि वहां उससे (पूछ-गछ) का मुक़्तज़ी भी मौजूद है और कोई माने' भी नहीं इसी लिये हमने उसके इस्तिस्ना का रास्ता अपनाया है वल्लाहुल मुवफ़्फ़िक़ हाज़ा। और "ऐनुल-इल्म वल-असरार बिल-मुसाअदह" में है कि जिस चीज़ से रोका नहीं गया और वो उनके ज़माने में आदत बन गई हो वो अच्छी चीज़ है अगरचे वो बिदअत-ए-

हसना ही हो या वो आदात हों जैसा कि "उससे न रोका गया हो" की क़ैद से फ़ायदा हासिल होता है एहयाउल-उलूम में भी इसी की मिसल है वल्लाहु तआला आलम। (त)

---

1. ऐनुल इल्म, बाब फ़िस-समत व आफ़तुल लिसान, मतबूआ मतबअ इस्लामिया लाहौर, पृ. 206

الاعظم ومحمد ھو المحرر للمذھب فلذا اطلق العلامۃ البرکلی القول وتبعناہ فی ذلك لکن یظھر لی ان التورع محمود فی نفسہ وقد مدح فی احادیث متواترۃ المعنی فصلنا جملۃ منھا فی کتابنا المبارك ان شاء اللہ تعالی مطلع القمرین فی ابانۃ سبقۃ العمرین" وانما یترك حیث یترك لاجل عارضۃ اقوی مالی اقول یترك کلا لا یترك ولکن ح یکون الورع فی ترك ما یظنہ المتقشف ورعاً فحیث لا توجد العوارض کالا یذاء وھتك الستر واثارۃ الفتنۃ کما وصفنا لك من شان ذاك الجرئ المجاھر فلا معنی لترك الرعۃ ح مع وجود المقتضی وعدم المانع فلذا ذھبنا الی استثنائہ واللہ الموفق ھذا وفی عین العلم والاسرار بالمساعدۃ فیما لم ینہ عنہ وصار معتادا فی عصرھم حسن وان کان بدعۃ 1 اھ ای حسنۃ او فی العادات کما یفیدہ التقیید بمالم ینہ عنہ ومثلہ فی الاحیاء واللہ تعالی اعلم. اور امام محمد ان کے مذہب کو تحریر کرنے والے ہیں اسی لئے علامہ برکلی کا قول مطلق ہے اور ہم نے اس سلسلے میں اس کی اتباع کی لیکن مجھ پر ظاہر ہوا کہ ذاتی طور پر پرہیزگاری قابلِ تعریف ہے احادیث متواتر المعنی میں اس کی تعریف آئی ہے ہم ان میں سے کچھ (احادیث) اپنی مبارک کتاب "مطلع القمرین فی ابانۃ سبقۃ العمرین" میں تفصیل سے نقل کریں گے ان شاء اللہ تعالیٰ، جہاں چھوڑا جاتا ہے وہاں کسی نہایت مضبوط عارضہ کی وجہ سے چھوڑا جاتا ہے، مجھے کیا ہے کہ میں کہوں کہ چھوڑا جائے، ہرگز نہیں چھوڑا جائے لیکن اس وقت پرہیزگاری اس چیز کو چھوڑنے میں ہوگی جس کو حقیقت حال معلوم کرنے والا پرہیزگاری خیال کرتا ہے پس جہاں ایذا رسانی، پردہ دری اور فتنہ پروری جیسے عوارض نہیں پائے جائیں گے جیسا کہ ہم نے تمہارے لئے اس جرات مند اعلانیہ روکنے والے کی شان بیان کی وہاں پرہیزگاری چھوڑنے کا کوئی مطلب نہیں کیونکہ وہاں اس سے (پوچھ گچھ) کا مقتضی بھی موجود ہے اور کوئی مانع بھی نہیں اسی لئے ہم نے اس کے استثناء کا راستہ اپنایا ہے

واللہ الموفق ہذا۔ اور "عین العلم والاسرار بالمساعدۃ" میں ہے کہ جس چیز سے روکا نہیں گیا اور وہ ان کے زمانے میں عادت بن گئی ہو وہ اچھی چیز ہے اگرچہ وہ بدعت حسنہ ہی ہو یا وہ عادات ہوں جیسا کہ "اس سے نہ روکا گیا ہو" کی قید سے فائدہ حاصل ہوتا ہے احیاء العلوم میں بھی اسی کی مثل ہے واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

---

1 عین العلم باب فی الصمت وافۃ اللسان مطبوعہ مطبع اسلامیہ لاہور ص ۲۰۶

Volume 4 Fatawa Razawiyya The Introductions Have Concluded (The introductions are complete. T) Establishing a General Principle in this Chapter and Differentiating the Ruling on Bones and Alcohol An explanation of the general principle in this chapter and an explanation of the difference in the ruling between alcohol and bones. I say: And with Allah is success. Let it be clear that certainty regarding the mixing of a prohibited or impure (najis) thing into another thing is of two types: (1) Personal (Shakhsi), which means certainty regarding a specific individual instance; for example, seeing with one's own eyes that impurity has fallen into this particular well. (2) And Kind-wise (Naw'i), which means certainty regarding an absolute kind. This is further divided into two types: One is summary (Ijmali), meaning it is established to the extent that mixing occurs in this kind, but not that knowledge exists regarding every individual instance in general, such as the vessels, clothes, and wells of non-believers. The second is universal (Kulli) regarding the kind. When, by way of inclusion, generality, permanence, and necessity, the proof of this meaning is established. For example, it is verified that a certain impure or prohibited thing is a specific ingredient of this composition, that they include it when making it. This happens when the makers have a specific purpose for adding it. Otherwise, a mandatory certainty without reason cannot exist. For instance, cleaning something with bones in water etc., as there is no specific quality in impure or prohibited bones for purification that cannot be achieved through pure and lawful bones at all, as is evident (as it is not hidden. T). And those items whose mixing in any food, drink, or other usable items is heard of, causing hesitation, concern, and prompting questions and investigation, are of two types: One is 'safe from prohibition' (Ma'mana Mahzoor), meaning those in which all kinds of individual instances are present; some among them are prohibited and impure, while others are lawful and pure, such as bones. Here, the basis of doubt is only the recklessness and lack of caution of those under whose management the item is made. When prohibited and impure things are also present among these items and they lack care and precaution, who knows what kind of thing was added here? That is why when that factory is associated with reliable Muslims, no hesitation will come to mind at all, and a sound mind will not gravitate towards the occurrence of a prohibition. Note: By 'kind' (Naw'), he meant what is not 'personal' (Shakhsi) by way of comparison. Since here Kind-wise is the opposite of Personal, it will encompass both species and genus. 12 minhu (T) It includes the sub-class and genus. 12 minhu (M) Page 536 of 761

जिल्द ४ फ़तावा रज़विया भूमिकाएँ समाप्त हुईं (भूमिकाएँ पूरी हो गईं। त) इस अध्याय में सामान्य नियम स्थापित करना और हड्डियों और शराब के हुक्म में अंतर करना इस अध्याय में सामान्य नियम का वर्णन और शराब और हड्डियों के हुक्म में अंतर का वर्णन। मैं कहता हूँ: और अल्लाह से ही सफलता है। स्पष्ट हो कि किसी हराम या नापाक (नजिस) चीज़ का दूसरी चीज़ में मिल जाने का निश्चय दो प्रकार का होता है: (१) व्यक्तिगत (शख्सी), यानी किसी विशेष व्यक्ति या वस्तु के संबंध में निश्चय; उदाहरण के लिए, आँखों से देखना कि इस कुएँ में गंदगी गिरी है। (२) और श्रेणीगत (नौई), यानी सामान्य श्रेणी के संबंध में निश्चय। इसके भी फिर दो प्रकार हैं: एक संक्षिप्त (इजमाली), यानी इस हद तक साबित हो कि इस श्रेणी में मिश्रण होता है, न कि सामान्य रूप से इसके हर उदाहरण के बारे में ज्ञान हो, जैसे काफ़िरों के बर्तन, कपड़े और कुएँ। दूसरा श्रेणी के संबंध में पूर्ण (कुल्ली) है। यह तब होता है जब व्यापकता, सामान्यता, निरंतरता और अनिवार्यता के कारण इसका प्रमाण हो। उदाहरण के लिए, यह सत्यापित हो जाए कि फलां नापाक या हराम चीज़ इस मिश्रण का एक विशेष हिस्सा है, जिसे वे बनाते समय उसमें मिलाते हैं। और यह वहीं होगा जहाँ बनाने वालों का इसे डालने का कोई विशेष उद्देश्य हो। अन्यथा बिना किसी कारण के अनिवार्य निश्चय नहीं हो सकता। जैसे पानी आदि को हड्डियों से साफ करना, क्योंकि शोधन (सफ़ाई) में नापाक या हराम हड्डियों की ऐसी कोई विशेषता नहीं है जो पाक और हलाल हड्डियों से बिल्कुल भी प्राप्त न हो सके, जैसा कि स्पष्ट है (जैसा कि छिपा नहीं है। त)। और वे वस्तुएँ भी, जिनके बारे में किसी खाने-पीने की या अन्य उपयोग की चीज़ों में मिश्रण की बात सुनी जाती है, जिससे हिचकिचाहट, चिंता और सवाल व जांच-पड़ताल की स्थिति पैदा होती है, दो प्रकार की हैं: एक 'मामना महज़ूर' (प्रतिषेध से सुरक्षित), यानी वे जिनमें हर प्रकार के व्यक्तिगत उदाहरण मौजूद हैं; उनमें से कुछ हराम और नापाक भी हैं और कुछ हलाल और पाक, जैसे हड्डियाँ। यहाँ संदेह का आधार केवल उन लोगों का बेबाक और असावधान होना है जिनके प्रबंधन में वह चीज़ बनती है। जब इन चीज़ों में हराम और नापाक भी मौजूद हों और उनमें देखभाल और सावधानी की कमी हो, तो क्या पता कि यहाँ किस प्रकार की चीज़ डाली गई है? इसीलिए जब वह कारखाना भरोसेमंद मुसलमानों से संबंधित हो, तो मन में बिल्कुल भी हिचकिचाहट नहीं आएगी और एक स्वस्थ मस्तिष्क प्रतिषेध के होने की ओर नहीं जाएगा। नोट: 'नौ' (श्रेणी) से तात्पर्य वह है जो 'व्यक्तिगत' (शख्सी) नहीं है, जैसा कि तुलना से स्पष्ट है। चूँकि यहाँ श्रेणीगत, व्यक्तिगत के विपरीत है, तो यह श्रेणी (नौ) और वंश (जिन्स) दोनों के लिए सामान्य होगी। १२ मिन्हु (त) इसमें उप-वर्ग (सिन्फ़) और वंश (जिन्स) शामिल हैं। १२ मिन्हु (म) पृष्ठ ५३६ का ७६१

جلد چہارم فتاوٰی رضویہ تمت المقدمات (مقدمات پورے ہو گئے۔ ت) وضع ضابطہ کلیہ دریں باب وتفرقہ در حکم عظام و شراب اس باب میں ضابطہ کلیہ کا بیان اور شراب اور ہڈیوں کے حکم میں فرق کا بیان اقول: وباللہ التوفیق واضح ہو کہ کسی شے حرام خواہ نجس کے دوسری چیز میں خلط ہونے پر یقین دو قسم ہے: (۱) شخصی یعنی ایک فرد خاص کی نسبت تیقن مثلاً آنکھوں سے دیکھا کہ اس کنویں میں نجاست گری ہے۔ (۲) اور نوعی یعنی عہ مطلق نوع کی نسبت یقین۔ اور اس کی پھر دو قسمیں ہیں: ایک اجمالی یعنی اس قدر ثابت کہ اس نوع میں اختلاط واقع ہوتا ہے نہ یہ کہ علی العموم اس کے ہر فرد کی نسبت علم ہو جیسے کفار کے برتن، کپڑے، کنویں۔ دوسرا کلی یعنی نوع کی نسبت۔ بروجہ شمول و عموم و دوام والتزام اس معنی کا ثبوت ہو مثلاً تحقیق پائے کہ فلاں نجس یا حرام چیز اس ترکیب کا جزو خاص ہے کہ جب بناتے ہیں اُسے شریک کرتے ہیں اور یہ وہیں ہوگا کہ بنانے والوں کو بالخصوص اس کے ڈالنے سے کوئی غرض خاص مقصود ہو ورنہ بلاوجہ التزام متیقن نہیں ہو سکتا جیسے پانی وغیرہ کسی شے کو ہڈیوں سے صاف کریں کہ تصفیہ میں ناپاک یا حرام استخواں کی کوئی خصوصیت نہیں جو مقصود ان سے حاصل پاک و حلال ہڈیوں سے بھی قطعاً تیسر کمالایخفی (جیسا کہ مخفی نہیں۔ت) اور وہ اشیاء بھی جن کا کسی ماکول و مشروب یا اور استعمالی چیزوں میں خلط سُنا جانا موجب تردد و تشویش و باعث سوال و تفتیش ہو دو قسم ہیں: ایک مامنہ محذور یعنی وہ جن میں ہر قسم کے افراد موجود بعض اُن میں حرام و نجس بھی ہیں اور بعض حلال وطاہر جیسے عظام یہاں منشاء تو ہم صرف اُن لوگوں کا بیباک و نامحتاط ہونا ہے جن کے اہتمام سے وہ چیز بنتی ہے کہ جب ان اشیاء میں حرام و نجس بھی موجود اور اُن کو پرواہ و احتیاط مفقود تو کیا خبر کہ یہاں کس قسم کی چیز ڈالی گئی ہے اسی لئے جب وہ کارخانہ ثقہ مسلمانوں کے تعلق ہو تو خاطر پر اصلاً تردد نہ آئے گا اور صدورِ محذور کی طرف ذہنِ سلیم

نہ جائے گا۔ عہ: اراد بالنوع مالیس بشخص بدلیل المقابلۃ | نوع سے مراد وہ ہے جو شخصی نہ ہو کیونکہ یہاں نوعی، شخصی کے مقابل ہے تو یہ نوع اور جنس دونوں کو عام ہوگی ۱۲ منہ (ت)

فیعم الصنف والجنس ۱۲ منہ (م) Page 536 of 761

The second category is "Mahu Mahzoor," i.e., things that are absolutely forbidden (haram) or purely impure (najis), for which no instance is lawful (halal) or pure (tahir), such as alcohol in all its forms according to the school of Imam Muhammad (may Allah have mercy on him), which is the basis for the fatwa. Here, the reason for avoidance and abstaining is the nature of the substance itself, not the boldness of the manufacturers. So much so that knowing the reliability and justice of the factory owners from the start will not resolve the concern here; rather, hearing this might cast doubt on their reliability and caution. This is why in these two situations, a difference occurs during the examination and refinement of the ruling due to a distinction.

In the first situation, the mere presence of something, like bone, doesn't bring certainty—whether it's individual, general-vague, or universal—that a haram or najis element has been mixed into this specific part or type. It's possible that only pure and permissible individuals were used. Similarly, certainty regarding the use of specific forbidden and impure individuals does not, in an absolute sense, result in a general-vague ruling of prohibition (tahreem) and impurity (tanjees), because the possibility of using pure and halal individuals in every specific part remains. Therefore, the mixing of the two types in the market does not prevent sharing or consuming, as one cannot give a definitive ruling on a specific instance, as we have thoroughly researched in the eighth and ninth introductions (As we have investigated all of these matters in the eighth and ninth introduction. -T). Contrary to the second situation, where the certainty of its mere presence, whether individual or universal-type, is sufficient for the impurity and prohibition of that specific part or the entire type, after which no further discussion remains. Those possibilities which were present in the first situation due to the variety of individuals are absolutely cut off here, as is not hidden (As it is not hidden. -T). Similarly, in the first situation, if there is such certainty particularly about the presence of forbidden and impure individuals, i.e., individual or universal-type, then the ruling is the same because, in this estimation, the first situation has reverted to the second.

Due to the absence of variety among individuals, certainty is linked particularly to forbidden and impure individuals, and they are not divided into prohibited and non-prohibited categories.

Because the diversity in individuals is negated, specific certainty will relate to haram and impure individuals, and it is not divided into forbidden and non-forbidden. (T)

However, general-vague certainty is not useless here either; when certainty is not established generally and necessarily, then the protection of every individual is possible until the state of a specific part is investigated, at which time this certainty will revert to individual certainty, and it is a deterrent, as we mentioned (As we mentioned, it is a deterrent. -T).

In summary, the crux of the rule is that in what is "Ma Minhu Mahzoor" (permissible), every type of certainty is not useful until it reverts to "Mahu Mahzoor" (prohibited). And in "Mahu Mahzoor," every type of certainty is sufficient, except for general-vague certainty which is dropped and doesn't establish a prohibition until it inclines toward individual certainty. This fine rule is worth memorizing, as it might not be found elsewhere except in this brief treatise, although whatever is there is derived from the words of the scholars and is the result of following in their footsteps. And all praise is due to Allah, the Lord of all worlds.

फतावा रज़विया, खंड 4

दूसरी श्रेणी "माहु महज़ूर" है, यानी वे चीज़ें जो पूर्णतः हराम या पूरी तरह से नापाक हैं, जिनका कोई भी अंश हलाल या पाक नहीं है, जैसे शराब अपने सभी प्रकारों के साथ, इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाहि अलैह) के मज़हब के अनुसार जिस पर फतवा है। यहाँ परहेज़ और शुद्धता का कारण स्वयं उस वस्तु की स्थिति है, न कि बनाने वालों का साहस और निर्भीकता। यहाँ तक कि कारखाने के लोगों की विश्वसनीयता और न्यायपरकता का शुरू से ही पता होना इस स्थान पर चिंता का समाधान नहीं होगा, बल्कि यह सुनकर उनकी विश्वसनीयता और सावधानी पर संदेह हो सकता है। इसी कारण इन दो स्थितियों में निर्णय के विचार और शोध के दौरान अंतर होने के कारण फर्क पड़ता है।

पहली स्थिति में, केवल किसी वस्तु के होने पर, जैसे हड्डी के होने पर, सामान्य रूप से निश्चितता नहीं होती, चाहे वह व्यक्तिगत हो या प्रकार के अनुसार अस्पष्ट हो या सार्वभौमिक हो, कि इस विशेष भाग या प्रकार में हराम या नापाक का मिश्रण है। यह संभव है कि केवल शुद्ध और जायज़ इकाइयों का ही उपयोग किया गया हो। इसी तरह, विशेष रूप से हराम और नापाक इकाइयों के उपयोग पर प्रकार के अनुसार अस्पष्ट निश्चितता भी पूर्णतः हराम और नापाक होने का कारण नहीं बनती, क्योंकि प्रत्येक विशेष भाग में पाक और हलाल इकाई के उपयोग की संभावना बनी रहती है। इसलिए बाजार में दो प्रकार की वस्तुओं का मिश्रण उपभोग या उपयोग को नहीं रोकता, क्योंकि किसी विशेष पर निश्चित रूप से निर्णय नहीं दिया जा सकता, जैसा कि हमने आठवें और नौवें परिचय में विस्तार से शोध किया है (जैसा कि हमने आठवें और नौवें परिचय में इन तमाम बातों की तहकीक की है। -त)। दूसरी स्थिति के विपरीत, जहाँ केवल उसके होने की निश्चितता, चाहे वह व्यक्तिगत हो या प्रकार के अनुसार सार्वभौमिक हो, उस विशेष भाग या पूरे प्रकार के नापाक और हराम होने के लिए पर्याप्त है, जिसके बाद कोई चर्चा शेष नहीं रह जाती। वे संभावनाएँ जो पहली स्थिति में इकाइयों की विविधता के कारण मौजूद थीं, यहाँ पूरी तरह से समाप्त हो जाती हैं, जैसा कि स्पष्ट है (जैसा कि ढका-छिपा नहीं है। -त)। इसी तरह, पहली स्थिति में यदि विशेष रूप से हराम और नापाक इकाइयों के होने की ऐसी ही निश्चितता हो, यानी व्यक्तिगत या प्रकार के अनुसार सार्वभौमिक, तो उसका भी यही आदेश है कि इस स्थिति में पहली स्थिति दूसरी स्थिति में बदल गई है।

क्योंकि इकाइयों में विविधता का अभाव है, इसलिए निश्चितता विशेष रूप से हराम और नापाक इकाइयों से जुड़ी है और वे प्रतिबंधित और गैर-प्रतिबंधित श्रेणियों में विभाजित नहीं हैं।

क्योंकि व्यक्तियों में विविधता का निषेध है, इसलिए विशिष्ट निश्चितता हराम और नापाक व्यक्तियों से संबंधित होगी और यह प्रतिबंधित और गैर-प्रतिबंधित में विभाजित नहीं होती है। (त)

हालाँकि, प्रकार के अनुसार अस्पष्ट निश्चितता यहाँ भी बेकार नहीं है, क्योंकि जब सामान्य और अनिवार्य रूप से निश्चितता नहीं होती, तो प्रत्येक इकाई की सुरक्षा संभावित होती है जब तक कि किसी विशेष भाग की स्थिति की जाँच न हो जाए, उस समय यह निश्चितता व्यक्तिगत निश्चितता की ओर मुड़ जाएगी और वह निवारक है जैसा कि हमने उल्लेख किया है (जैसा कि हमने ज़िक्र किया है, वह निवारक है। -त)।

संक्षेप में, नियम का सार यह है कि जिसमें निषेध (मा मिन्हु महज़ूर) नहीं है, उसमें हर प्रकार की निश्चितता तब तक उपयोगी नहीं है जब तक कि वह निषेध (माहु महज़ूर) की ओर न मुड़ जाए। और निषेध (माहु महज़ूर) में हर प्रकार की निश्चितता पर्याप्त है, सिवाय प्रकार के अनुसार अस्पष्ट निश्चितता के जो गिर जाती है और निषेध को सिद्ध नहीं करती जब तक कि वह व्यक्तिगत निश्चितता की ओर न झुके। यह बेहतरीन नियम याद रखने योग्य है, जो शायद इस संक्षिप्त शोध पत्र के अलावा कहीं और न मिले, हालाँकि जो कुछ भी है वह विद्वानों के वचनों से लिया गया है और उनके पदचिन्हों पर चलने का फल है। और सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे जहानों का रब है।

पृष्ठ 537 / 761

دوسرے ماہو محذور یعنی وہ کہ حرام مطلق یا نجس محض ہیں جن کا کوئی فرد حلال و طاہر نہیں جیسے شراب بجمیع اقسامہا علی مذہب محمد المأخوذ للفتوی (اپنی تمام اقسام کے ساتھ، امام محمد رحمہ اللہ کے مذہب کے مطابق اسی پر فتوٰی ہے۔ ت) یہاں باعث احتراز و تنزہ خود اس شے کی نفس حالت ہے نہ بنانے والوں کو جرات و جسارت یہاں تک کہ ابتداء اہل کارخانہ کی وثاقت و عدالت معلوم ہونا اس مقام پر علاج اندیشہ نہ ہوگی بلکہ یہ سُن کر ان کی وثاقت و احتیاط میں شک آسکتا ہے۔ اسی وجہ سے ان دو صورتوں میں ہنگام نظر و تنقیح حکم بوجہ فرق واقع ہوتا ہے۔

صورت اولٰی میں مجرد اس شے مثلاً استخواں کے پڑنے پر تیقن عام ازاں کہ شخصی ہو یا نوعی اجمالی ہو یا کلی خواہی اس جزئی یا نوع میں مخالطت حرام یا نجس کا یقین نہیں دلاتا۔ ممکن کہ صرف افراد طیبہ و مباحہ استعمال میں آئے ہوں۔ اسی طرح خاص افرادِ محرمہ و نجسہ کے استعمال پر یقین نوعی اجمالی بھی علی الاطلاق تحریم و تنجیس کا مورث نہیں کہ ہر جزئی خاص میں استعمالِ فردِ طاہر و حلال کا احتمال قائم و لہذا افراد قسمین کا بازار میں اختلاط مانع اشترا و تناول نہیں کہ کسی معین پر حکم بالجزوم نہیں کرسکتے کما حققنا کل ذلك في المقدمة الثامنة والتاسعة (جیسا کہ ہم نے آٹھویں اور نویں مقدمہ میں ان تمام باتوں کی تحقیق کی ہے۔ ت). بخلاف صورتِ ثانیہ کہ وہاں صرف اس کے پڑنے کا یقین شخصی خواہ نوعی کلی اُس جزئی خاص یا تمام نوع کی تنجیس و تحریم میں بس ہے جس کے بعد کچھ کلام باقی نہیں رہتا اور وہ احتمالات کی بوجہ تنوع افراد صورتِ اولٰی میں متحقق ہوتے تھے یہاں قطعاً منقطع کما لا یخفی (جیسا کہ پوشیدہ نہیں۔ ت) اسی طرح صورتِ اولٰی میں اگر بالخصوص افرادِ حرام و ناپاک ہی پڑنے کا ایسا ہی یقین

یعنی یا نوعی کلی ہو تو اس کا بھی یہی حکم کہ اس تقدیر پر صورتِ اولٰی صورتِ ثانیہ کی طرف رجوع کر آئی۔

لانتفاء التنوع فی الافراد فان الیقین تعلق بخصوص الافراد المحرمۃ والنجسۃ وھی لاتتنوع الی محذور وغیر محذور۔

کیونکہ افراد میں تنوع کی نفی ہے پس یقینِ خاص حرام و ناپاک افراد سے متعلق ہوگا اور وہ ممنوع و غیر ممنوع میں تقسیم نہیں ہوتا۔ (ت)

البتہ یقینِ نوعی اجمالی یہاں بھی بیکار آمد نہیں کہ جب علٰی وجہ العموم والالتزام تیقن نہیں تو ہر فرد کی محفوظی محتمل جب تک کسی جزئی خاص کا حال تحقیق نہ ہو کہ اس وقت یہ یقین یقینِ شخصی کی طرف رجوع کر جائے گا وھو مانع کماذکرنا (جیسا کہ ہم نے ذکر کیا وہ مانع ہے۔ ت)

بالجملہ خلاصہ ضابطہ یہ ہے کہ مامنہ محذور میں ہر قسم کا یقین بیکار آمد نہیں جب تک وہ ماہو محذور کی طرف رجوع نہ کرے اور ماہو محذور میں ہر قسم کا یقین کافی مگر صرف نوعی اجمالی کہ ساقط و غیر مثبت ممانعت ہے جب تک یقینِ شخصی کی طرف مائل نہ ہو یہ نفیس ضابطہ قابلِ حفظ ہے کہ شاید اس رسالہ عجالہ کے سوا دوسری جگہ نہ ملے اگرچہ جو کچھ ہے کلماتِ علماء سے مستنبط اور انہی کی کفش برداری کا تصدق والحمد للہ رب العلمین۔

Volume IV Fatawa Razawiyyah

Starting the Answer with the Success Given by the Bestower (Al-Wahhab) (Starting the answer with the success of Allah the Almighty. - T)

Yesterday's news about alcohol being found in ice is worth considering and requires investigation. Keeping in mind the discourse of Introductions 2 and 5, consideration is necessary. If these reports are mere market rumors or the end of a chain of narration from some polytheists and infidels, then they are completely rejected and unreliable. However, in the latter case, if one's heart is convinced of their truth, then caution is better, yet it is not a sin. If it is not even that much, then there is absolutely no concern. And if the news is from sinners of bad deeds or those whose state is unknown, then referring to the testimony of the heart is reliable. If the heart inclines towards their lying in this matter, then there is no harm. However, avoidance is better, for after all, they are Muslims; it is not surprising that they might be telling the truth, especially those whose state is hidden, for as long as their uprightness is not known, their open sinfulness is also not proven. And if the heart bears witness to their truthfulness, then avoidance is certainly required, because in such a situation, investigative judgment (taharri) is a legal proof (hujjat-e-shari'yah), even though the report itself was not a proof. However, the degree of prohibition here will not exceed to the level of absolute forbiddenness (hurmat-e-qat'iyyah).

Because investigative judgment (taharri) is susceptible to error, as mentioned in Al-Hidayah, and conjectures are sometimes lies, as mentioned in the noble Hadith.	Because there is also a possibility of error in deliberation and thinking, as is in Al-Hidayah, and conjectures are sometimes false, as is in the noble Hadith. (T)

And that too is only for the one whose heart inclines towards their truthfulness.

For the testimony of your heart is not a proof except against you, and that is in definitive matters like intuition; so what about conjectures?	Because the testimony of your heart will only go against you, and that is for a definitive thing like intuition, so what would be the state in the case of conjecture? (T)

So, if someone else's heart is convinced of their falsehood, the first ruling applies to them: avoidance is better, otherwise it is permissible.

In the prayer section of Radd al-Muhtar, it is derived from what was mentioned that after	In Radd al-Muhtar, in the discussion on prayer, it is derived from the

the inability to find the aforementioned proofs, it is necessary for him to perform investigative judgment (taharri) and not follow someone like himself, because a mujtahid does not follow another mujtahid, etc.	mentioned discourse that after the inability to find the past proofs, it is obligatory for him to reflect and deliberate and not follow someone like himself because a mujtahid does not follow a mujtahid, etc. (T)

Yes, if the news is from such a large group that reason does not permit their agreement on a lie, then certainly a ruling of absolute forbiddenness (hurmat-e-qat'iyyah) will be given unconditionally, and no other factor will be considered, even if all the reporters are sinners and transgressors, or even polytheists and infidels.

For uprightness ('adalah), and even Islam itself, are not stipulated in...	Because according to the majority (jumhoor), uprightness, or even Islam, is not a condition for mass transmission (tawatur)...

---

[1] Radd al-Muhtar, Chapter on the Ruling of Following (Taqlid) and Retracting from it, printed by Mujtabai Delhi, 1/51.

जिल्द चौथी फ़तावा रज़विया

अल-शुरू' फ़िल-जवाब बि-तौफ़ीक़िल-वहाब (वहाब (अल्लाह तआला) की तौफ़ीक़ से जवाब का आग़ाज़ है। - त)

कल की बर्फ़ में शराब मिलने की ख़बर ग़ौर करने के क़ाबिल और वाजिब-उल-नज़र है। मुक़द्दमा २ और ५ की तक़रीर सामने रख कर लिहाज़ दरकार है। अगर ये ख़बरें बाज़ार की अफ़वाहें या कुछ मुशरिकों और काफ़िरों की सनद का सिलसिला है, तो वे पूरी तरह से रद्द और महज़ बे-एतबार हैं। हाँ, आख़िरी सूरत में अगर उनका सच दिल पर जम जाए तो एहतियात बेहतर है, फिर भी गुनाह नहीं। और अगर इतना भी न हो तो सिरे से कोई परवाह नहीं। और अगर बद-अमल फ़ासिकों या ऐसे लोगों की ख़बर हो जिनका हाल मालूम नहीं, तो दिल की गवाही (शहादत-ए-क़ल्ब) की तरफ़ रुजू' करना मो'तबर है। अगर दिल इस मामले में उनके झूठ की तरफ़ झुके तो कोई हर्ज नहीं, लेकिन बचना अफ़ज़ल है क्योंकि आख़िरकार वे मुसलमान हैं; अचरज क्या कि वे सच कह रहे हों, ख़ास तौर पर वे जिनका हाल छुपा हुआ है, क्योंकि जब तक उनकी अदालत (नेकी) मालूम नहीं, तो उनका फ़िस्क़ (गुनाहगारी) भी साबित नहीं। और अगर दिल उनके सच पर गवाही दे, तो बेशक परहेज़ करना चाहिए क्योंकि ऐसे मक़ाम पर 'तहरी' (जांच-पड़ताल) शरीयत की हुज्जत है, हालांकि वह ख़बर ख़ुद में हुज्जत नहीं थी, लेकिन यहाँ मनाही का दर्जा क़तई हराम होने तक नहीं पहुँचेगा।

क्योंकि 'तहरी' (सोच-विचार) में ग़लती का भी एहतमाल होता है जैसा कि हिदाया में है, और गुमान बाज़ औक़ात झूठे होते हैं जैसा कि हदीस शरीफ़ में है।

क्योंकि सोच-विचार में ग़लती का भी एहतमाल होता है जैसा कि हिदाया में है, और गुमान बाज़ औक़ात झूठे होते हैं जैसा कि हदीस शरीफ़ में है। (त)

और वह भी उसी के हक़ में जिसका दिल उनके सच की तरफ़ झुके।

क्योंकि तुम्हारे दिल की गवाही तुम्हारे ही ख़िलाफ़ होगी, और वह क़तई चीज़ (वजदान) की तरह है, तो गुमान की सूरत में क्या हालत होगी।

क्योंकि तुम्हारे दिल की गवाही तो तुम्हारे ही ख़िलाफ़ जाएगी और वह क़तई चीज़ वजदान की तरह है, तो गुमान की सूरत में क्या कैफ़ियत होगी। (त)

लिहाज़ा अगर किसी दूसरे के दिल पर उनके झूठ का यक़ीन हो जाए, तो उसके हक़ में वही पहला हुक्म है कि बचना बेहतर है वरना इजाज़त है।

रद-उल-मुह्तार में नमाज़ की बहस में है कि ज़िक्र किए गए कलाम से फ़ायदा हुआ कि गुज़िश्ता दलीलों से आजिज़ होने के बाद उस पर लाज़िम है कि वह ग़ौर-ओ-फ़िक्र करे और अपने जैसे की तक़लीद न करे क्योंकि मुजतहिद दूसरे मुजतहिद की तक़लीद नहीं करता, इत्यादि।	रद-उल-मुह्तार में नमाज़ की बहस में है कि ज़िक्र किए गए कलाम से यह फ़ायदा हुआ कि पिछली दलीलों के बाद उस पर लाज़िम है कि ग़ौर-ओ-फ़िक्र करे और अपने जैसे की तक़लीद न करे क्योंकि मुजतहिद, मुजतहिद की तक़लीद नहीं करता, इत्यादि। (त)

हाँ, अगर इतने बड़े गिरोह की ख़बर हो जिनके झूठ पर एक साथ होने को अक़्ल तस्लीम न करे, तो बेशक मुतलक़ तौर पर क़तई हराम होने का हुक्म दिया जाएगा और इसके अलावा किसी और बात का लिहाज़ नहीं किया जाएगा, चाहे वे तमाम ख़बर देने वाले फ़ासिक़ और बदकार हों, बल्कि मुशरिक और काफ़िर ही क्यों न हों।

क्योंकि 'अदालत' बल्कि 'इस्लाम' भी 'तवातुर' में शर्त नहीं है...	क्योंकि जमहूर के नज़दीक तवातुर में अदालत बल्कि इस्लाम की शर्त (नहीं है)...

---

[1] रद-उल-मुह्तार, तक़लीद के हुक्म और उससे रुजू' के बारे में मतलब, मतबूआ मुज्तबाई दिल्ली, १/५१।

جلد چھارم فتاوی رضویہ

الشروع فی الجواب بتوفیق الوھاب (وہاب (اللہ تعالیٰ) کی توفیق سے جواب کا آغاز ہے۔ ت)

کل کی برف میں شراب ملنے کی خبر قابلِ غور و واجب النظر اب مقدمہ ۲ و ۵ کی تقریر پیشِ نگاہ رکھ کر لحاظ درکار اگر یہ اخبار افواہِ بازار یا منتہائے سند بعض مشرکین و کفار تو بالکل مردود و محض بے اعتبار ہاں صورتِ اخیرہ میں اگر ان کا صدقِ دل پر جمے تو احتیاط بہتر تاہم گناہ نہیں اور اتنا بھی نہ ہو تو اصلاً پرواہ نہیں اور اگر فساقِ بد اعمال یا مستور نا معلوم الحال کی خبر تو شہادتِ قلب کی طرف رجوع معتبر اگر دل اس امر میں ان کے کذب کی طرف جھکے تو کچھ باک نہیں مگر احتراز افضل کہ آخر مسلمان ہیں عجب کیا کہ سچ کہتے ہوں خصوصاً مستور کہ اس کی عدالت معلوم نہیں تو فسق بھی تو ثابت نہیں اور اگر قلب اُن کے صدق پر گواہی دے تو بیشک احتراز چاہئے کہ ایسے مقام پر تحری حجتِ شرعیہ ہے اگرچہ وہ خبر بنفسہ حجت نہ تھی مگر یہاں ممانعت کا درجہ حرمتِ قطعیہ تک تجاوز نہ کرے گا۔

لان التحری محتمل للخطاء کما فی الھدایۃ والظنون ربما تکذب کما في الحدیث۔ کیونکہ سوچ و بچار میں خطاء کا بھی احتمال ہوتا ہے جیسا کہ ہدایہ میں ہے اور گمان بعض اوقات جھوٹے ہوتے ہیں جیسا کہ حدیث شریف میں ہے (ت)

اور وہ بھی اُسی کے حق میں جس کا دل اُن کے صدق کی طرف جائے۔

فان شھادۃ قلبك لیست حجۃ الاعلیك وذلك في القاطع کالوجدان فکیف بالظنون۔ کیونکہ تمہارے دل کی گواہی تو تمہارے خلاف ہی جائیگی اور وہ قطعی چیز وجدان کی طرح ہے تو گمان کی صورت میں کیا کیفیت ہوگی۔(ت)

پس اگر دوسرے کے دل پر اُن کا کذب جمے اُس کے حق میں وہی پہلا حکم ہے کہ احتراز بہتر ورنہ اجازت۔

في صلاة ردالمحتار استفيذ مما ذكر ردالمحتار میں نماز کی بحث میں ہے مذکورہ کلام سے انه بعد العجز عن الادلة المارة عليه مستفید ہوا کہ گذشتہ دلائل سے عجز کے بعد اس پر لازم ہے ان يتحرى ولا يقلد مثله لان المجتهد لا کہ غور و فکر کرے اور اپنے جیسے کی تقلید نہ کرے يقلد مجتهداً الخ۔ کیونکہ مجتہد، مجتہد کی تقلید نہیں کرتا الخ (ت)

ہاں اگر اس قدر جماعتِ کثیر کی خبر ہو جن کا کذب پر اتفاق عقل تجویز نہ کرے تو بیشک علی الاطلاق حرمتِ قطعی کا حکم دیا جائیگا اور اس کے سوا کسی امر پر لحاظ نہ کیا جائے گا اگرچہ وہ سب مخبر فساق و فجار بلکہ مشرکین و کفار ہوں۔

فان العدالة بل والاسلام ايضا لا يشترط کیونکہ جمہور کے نزدیک تو اتر میں عدالت بلکہ اسلام کی شرط في

---

[1] ردالمحتار مطلب في حكم التقليد والرجوع عنہ مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/۵۱

Fatawa Rizwia, Volume 4

[Table 1] Left (Arabic): Al-Tawatur (successive narration) according to the majority is contrary to Imam Fakhr al-Islam as is well known, although his speech, may his secret be sanctified, is also not explicit in [stating it as] a condition, as Mawla Bahr al-Ulum pointed out in al-Fawatih. And Allah knows best. Right (Urdu): [It is] also not [so], however, there is a difference of opinion of Imam Fakhr al-Islam in this as is well known, but despite that, his speech is also not explicit in setting a condition, as Bahr al-Ulum gave the benefit of this point in Fawatih. And Allah Almighty knows best (T).

Similarly, if the end of the chain of transmission is a just Muslim, even if it is only one, then avoidance is obligatory and snow is forbidden and impure.

[Table 2] Left (Arabic): For in religious matters, number is not a condition and the report of a single just person is accepted without hesitation. Right (Urdu): Because in religious matters counting is not a condition and the news of one just person is accepted without any hesitation. (T)

But it is necessary that he reports based on his own observation, otherwise, reporting based on hearsay is not considered his own word. To the extent that when it was written regarding the senior Persian scholars that urine falls into it, Imam Allama Malik al-Ulama Abu Bakr bin Mas'ud al-Kashani (may his secret be sanctified by the Lord) and other leaders said: "If this matter is verified, prayer with it will be impermissible." So why was it that these scholars themselves did not witness it? Therefore, the matter still requires investigation.

[Table 3] Left (Arabic): In al-Bada'i', then al-Hilya, after mentioning what we narrated from them in the eighth preamble: "If it is true that they do so, then there is no doubt that prayer is not permissible with it" end. And in Radd al-Muhtar on what we related from al-Durr al-Mukhtar: "Then if it is so, there is no doubt that it is impure," Tatar khaniyah, end. Right (Urdu): In Bada'i', then in Hilya, after what we quoted from both of them in the eighth preface, it is said: "If it is correctly proven that they do so, then there is no doubt that prayer is not permissible with it (end)." And in Radd al-Muhtar, regarding what we quoted there from Durr al-Mukhtar, it is: "If it is like this, then there is no doubt in its being impure," Tatar Khaniya, end. (T)

Similarly, the meaning of 'tawatur' (successive narration) is that such a large group narrates from their own specific observation, not that there are thousands of sayers

but whoever is asked narrates based on hearsay. In this case, if the original narrator is not known, then it is merely market rumor, otherwise...

---

1. Fawatih al-Rahmut, Discussion on Knowledge through Tawatur, printed by al-Matba'ah al-Amiriyyah, Bulaq, Egypt, 118/2.
2. Bada'i' al-Sana'i', Section on explaining the amount by which a place becomes impure, etc., printed by HM Saeed Company, Karachi, 81/1.
3. Radd al-Muhtar, before the Book of Prayer, printed by Mustafa al-Babi, Egypt, 1/257.

फतावा रिज़विया, खंड 4

[तालिका 1] बायाँ (अरबी): बहुमत के अनुसार तवातुर (निरंतर वर्णन) इमाम फख्र अल-इस्लाम के विपरीत है जैसा कि प्रसिद्ध है, हालांकि उनका भाषण (उनका रहस्य पवित्र हो) भी शर्त रखने में स्पष्ट नहीं है, जैसा कि मौला बहरुल उलूम ने फवातिह में इस बात का संकेत दिया है। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। दायाँ (उर्दू): भी नहीं, अलबत्ता इसमें इमाम फख्र अल-इस्लाम का मतभेद है जैसा कि प्रसिद्ध है लेकिन इसके बावजूद उनका कलाम भी शर्त रखने में स्पष्ट नहीं जैसा कि बहरुल उलूम ने फवातिह में इस बात का लाभ दिया। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है (त)।

इसी तरह अगर सनद के अंत में एक भी न्यायप्रिय मुस्लिम हो, तब भी उससे बचना अनिवार्य है और बर्फ हराम और नापाक (नजिस) है।

[तालिका 2] बायाँ (अरबी): क्योंकि धार्मिक मामलों में संख्या शर्त नहीं है और एक न्यायप्रिय व्यक्ति की बात बिना किसी हिचकिचाहट के स्वीकार की जाती है। दायाँ (उर्दू): क्योंकि धार्मिक मामलों में गिनती शर्त नहीं है और एक न्यायप्रिय व्यक्ति की खबर बिना किसी हिचकिचाहट के स्वीकार की जाती है। (त)

लेकिन यह ज़रूरी है कि वह अपनी आँखों देखी खबर दे, वरना सुनी-सुनाई बात कहने में उसका कथन स्वयं का नहीं रहता। यहाँ तक कि जब फ़ारसी के बड़े विद्वानों के बारे में लिखा गया कि उसमें पेशाब गिरता है, तो इमाम अल्लामा मलिकुल उलमा अबूबक्र बिन मसूद काशानी और अन्य इमामों ने कहा: "अगर यह बात प्रमाणित हो जाए तो इसके साथ नमाज़ जायज़ नहीं होगी।" तो क्या कारण था कि उन विद्वानों ने स्वयं इसे नहीं देखा, इसलिए मामला अभी भी जाँच का विषय है।

[तालिका 3] बायाँ (अरबी): अल-बदई में, फिर अल-हिलिया में, आठवें प्रस्तावना में उनसे उद्धृत करने के बाद: "यदि यह सच है कि वे ऐसा करते हैं, तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि इसके साथ नमाज़ जायज़ नहीं है" समाप्त। और रद-अल-मुह्तार में जो हमने अल-दुर्र अल-मुख्तार से उद्धृत किया है: "फिर यदि ऐसा है, तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह नापाक है," तातार खानिया, समाप्त। दायाँ (उर्दू): बदई फिर हिलिया में इसके बाद जिसे हमने उन दोनों से आठवें प्रस्तावना में उद्धृत किया है, कहा है कि "अगर सही तौर पर साबित हो जाए कि वे ऐसा करते हैं तो इसमें शक नहीं कि उसके साथ नमाज़ जायज़ नहीं (अंत)।" और रद-अल-मुह्तार में इस बात पर जो हमने वहां दुर्र-ए-

मुख्तार से नक़ल की है, यह है कि "अगर इसी तरह है तो उसके नजिस होने में कोई शक नहीं," तातार खानिया समाप्त। (त)

इसी प्रकार तवातुर का अर्थ यह है कि एक इतना बड़ा समूह अपने विशिष्ट अवलोकन (आँखों देखी) से वर्णन करे, न कि कहने वाले तो हज़ारों हों लेकिन जिससे भी पूछा जाए वह सुनी-सुनाई बात बताए। इस स्थिति में यदि असली वर्णनकर्ता का पता नहीं है, तो वह केवल बाज़ारी अफ़वाह है, वरना...

---

1. फवातिह अल-रहमूत, तवातुर द्वारा ज्ञान पर चर्चा, मुद्रित अल-मतबा अल-अमीरिया, बुलाक, मिस्र, 118/2।
2. बदई अल-सनई, उस मात्रा के विवरण पर खंड जिससे स्थान नजिस हो जाता है आदि, मुद्रित एचएम सईद कंपनी, कराची, 81/1।
3. रद-अल-मुह्तार, नमाज़ की किताब से पहले, मुद्रित मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र, 1/257।

पृष्ठ 539/761

فتاوی رضویہ، جلد چہارم

[جدول 1] بایاں (عربی): التواتر عند الجمهور خلافا للامام فخر الاسلام علی مااشتهر مع ان کلامه قدس سره ایضا غیر نص فی الاشتراط کما افاده المولی بحر العلوم فی الفواتح واللہ اعلم۔ دایاں (اردو): بھی نہیں البتہ اس میں امام فخر الاسلام کا اختلاف ہے جیسا کہ مشہور ہے لیکن اس کے باوجود ان کا کلام بھی شرط رکھنے میں صریح نہیں جیسا کہ بحر العلوم نے فواتح میں اس بات کا فائدہ دیا و اللہ تعالٰی اعلم (ت)

اسی طرح اگر منتہائے سند مسلمان عادل اگرچہ ایک ہی ہو جب بھی احتراز واجب اور برف حرام و نجس۔

[جدول 2] بایاں (عربی): فان فی الدیانات لایشترط العدد ویقبل خبر الواحد العدل بلا تردد۔ دایاں (اردو): کیونکہ دیانتوں میں گنتی شرط نہیں اور ایک عادل آدمی کی خبر کسی تردد کے بغیر قبول کی جاتی ہے۔ (ت)

مگر یہ ضرور ہے کہ وہ خود اپنے معاینہ سے خبر دے ورنہ سنی سنائی کہنے میں اس کا قول خود اس کا قول نہیں یہاں تک کہ جب اکابر علمائے دیبائے فارسی کی نسبت لکھا اس میں پیشاب پڑتا ہے۔ امام علامہ ملک العلماء ابوبکر بن مسعود کاشانی قدس سرہ الربانی وغیرہ ائمہ نے فرمایا : اگر یہ بات تحقیق ہو جائے تو اس سے نماز ناجائز ہو گی تو کیا وجہ کہ ان علماء کا خود مشاہدہ نہ تھا لہذا ہنوز معاملہ تحقیق طلب رہا۔

[جدول 3] بایاں (عربی): فی البدائع ثم الحلیة بعد ذکر مانقلنا عنهما في المقدمة الثامنة فان صح انهم یفعلون ذلك فلاشك انه لا تجوز الصلاة معه اه وفي رد المحتار علی ما اثرنا عن الدر المختار ثمہ ان

كان كذلك لاشك انه نجس تاتر خانية اه دایاں (اردو): بدائع پھر حلیہ میں اس کے بعد جس کو ہم نے ان دونوں سے آٹھویں مقدمہ میں نقل کیا ہے کہا ہے کہ "اگر صحیح طور پر ثابت ہو جائے کہ وہ ایسا کرتے ہیں تو اس میں شک نہیں کہ اس کے ساتھ نماز جائز نہیں (انتہی) اور ردالمحتار میں اس بات پر جو ہم نے وہاں در مختار سے نقل کی ہے ، یہ ہے کہ اگر اسی طرح ہے تو اس کے نجس ہونے میں کوئی شک نہیں، تاترخانیہ اھ (ت)

اسی طرح تواتر کے یہ معنی کہ اس قدر جماعت کثیر خاص اپنے معاینہ سے بیان کرے نہ یہ کہ کہنے والے تو ہزار ہے مگر جس سے پوچھی سننا بیان کرتا ہے کہ اس صورت میں اگ اصل منجبر کا پتا نہیں تو وہ ہی افواہ بازاری ہے ورنہ

---

1 فواتح الرحموت بحث العلم بالتواتر حق مطبوعہ المطبعۃ الامیریہ بولاق مصر ۲/۱۱۸ 2 بدائع الصنائع فصل فی بیان مقدار ما یصیر بہ المحل نجسا الخ مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۸۱ 3 رد المحتار قبیل کتاب الصلوۃ مطبوعہ مصطفی البابی مصر ۱/ ۲۵۷

Fatawa-e-Razawiya, Volume 4

The ultimate report stays with the original reporter, and the intermediaries are dropped from consideration. It will only rely on the state of the original source. This point should also be remembered: often, such news is confused with 'mutawatir' (continuous/mass-transmitted reports) by the general public or the less knowledgeable, whereas, upon investigation, there is not even a scent of 'tawatur' (continuity/mass transmission).

[Box Content] (Arabic): Our advising master, Maulana Abdul Ghani (may his secret be sanctified), said in the discussion regarding the 'affliction of dancing' in the commentary on 'Al-Tariqa al-Muhammadiyya': As for the report of mass transmission among people from one to another in this regard, it is rejected because all of it is based on conjecture, illusion, and guesswork. The gaining of the report from one to another is such that if you asked each of them about seeing and witnessing it, they would say, 'I did not witness it, I only heard about it.' And whoever says 'I witnessed it,' then investigate his condition, and you will find him relying on suppositions, imaginary signs, and conjectural marks. Perhaps if you reflected and investigated, you would find that the report of that mass transmission which you claim is entirely based in origin on the report of one or two individuals... until the end of his long and excellent discussion. May Allah have mercy on him.

(Urdu Translation): Our advising master, Maulana Abdul Ghani (may his secret be sanctified), mentioned the affliction of dancing in the commentary on Al-Tariqa al-Muhammadiyya and stated: To consider the reports among people about this as 'mutawatir' (mass-transmitted) is incorrect because they all depend on conjecture, illusion, and guesswork. The same is the case with those receiving this news; if you ask each one of them about seeing it, they will say, 'I haven't seen it, I have only heard.' And whoever claims to have seen it, find out about his condition, and you will see that he attributes it to mere assumptions, imaginary signs, and conjectural marks. And when you reflect and investigate, you will find that what you consider 'tawatur' is attributed to only one or two people. Until the end of your long discussion. May Allah have mercy on you. (T)

[Bottom Section] In short, when it is proven by a reliable Shari'ah report that wine is an ingredient in this composition, then there is no dispute regarding the prohibition and impurity of ice. Generally, all its instances are prohibited and restricted. The possibility that 'perhaps it was not added to this specific piece' is merely futile and

rejected, as it is a specific certainty in what is prohibited. In such cases, these possibilities are completely weak and insufficient (see the text of the general rule and...)

Note (عه): i.e., with the mentioned flaws of those claiming Sufism through lies when reporting such things about a specific man. (M)

Note (T): Meaning, when news is given about the mentioned flaws (dancing, etc.) of false claimants of Sufism regarding any person. (T)

---

1 Al-Hadiqat al-Nadiyya, Part Nine, Regarding Afflictions of the Body, etc., published by Nuriya Razawiya, Faisalabad, 2/5219.

फ़तावा रज़विया, खंड 4

रिपोर्ट का अंतिम सिरा मूल रिपोर्टर तक ही रहेगा और बीच के संचारक हट जाएंगे। यह केवल मूल स्रोत की स्थिति पर निर्भर करेगा। यह बिंदु भी याद रखने योग्य है कि अक्सर इस प्रकार की खबरें आम लोगों या कम जानकारों के पास 'मुतवातिर' (लगातार/सामूहिक रूप से प्रसारित) से मिल जाती हैं, जबकि जांच करने पर 'तवातुर' (निरंतरता) की कोई गंध भी नहीं होती।

[बॉक्स सामग्री] (अरबी): हमारे सलाहकार स्वामी मौलाना अब्दुल गनी (उनका रहस्य पवित्र हो) ने 'अल-तरीक़ा अल-मुहम्मदिया' की व्याख्या में 'नृत्य की बीमारी' की चर्चा में कहा है: जहाँ तक इस संबंध में लोगों के बीच एक-दूसरे से होने वाली सामूहिक प्रसारण (तवातुर) की रिपोर्ट की बात है, तो यह अस्वीकार्य है क्योंकि यह सब अटकलों, भ्रम और अनुमान पर आधारित है। एक-दूसरे से रिपोर्ट प्राप्त करना ऐसा है कि यदि आप उनमें से प्रत्येक से इसे देखने और गवाही देने के बारे में पूछें, तो वे कहेंगे, 'मैंने इसे नहीं देखा, मैंने तो बस सुना है।' और जो कोई कहे कि 'मैंने इसे देखा है,' तो उसकी स्थिति की जाँच करें, और आप उसे धारणाओं, काल्पनिक संकेतों और अनुमानित चिह्नों पर भरोसा करते हुए पाएंगे। शायद यदि आप विचार और छानबीन करें, तो आप पाएंगे कि उस सामूहिक प्रसारण की रिपोर्ट जिसका आप दावा करते हैं, वह पूरी तरह से मूल रूप में एक या दो व्यक्तियों की रिपोर्ट पर आधारित है... उनकी लंबी और उत्कृष्ट चर्चा के अंत तक। अल्लाह उन पर दया करे।

(उर्दू अनुवाद): हमारे सलाहकार स्वामी मौलाना अब्दुल गनी (उनका रहस्य पवित्र हो) ने 'अल-तरीक़ा अल-मुहम्मदिया' की व्याख्या में नृत्य की बीमारी का उल्लेख करते हुए फरमाया: लोगों के बीच इस बारे में फैली खबरों को 'मुतवातिर' मानना गलत है क्योंकि ये सभी अटकलों, कल्पना और अनुमान पर आधारित हैं। यही हाल इस खबर से लाभ उठाने वालों का भी है; यदि आप उनमें से प्रत्येक से इसके प्रत्यक्ष गवाह होने के बारे में पूछें, तो वह कहेगा, 'मैंने इसे नहीं देखा, मैंने तो बस सुना है।' और जो कहे कि 'मैंने देखा है,' उसकी स्थिति की जांच करें, तो आप पाएंगे कि वह इसे महज गुमान, काल्पनिक संकेतों और अनुमानित चिह्नों की ओर जोड़ रहा है। जब आप विचार और छानबीन करेंगे, तो पाएंगे कि जिसे आप 'तवातुर' समझते हैं, वह वास्तव में केवल एक या दो व्यक्तियों से जुड़ा है। आपकी लंबी चर्चा के अंत तक। अल्लाह आप पर दया करे। (त)

[निचला खंड] संक्षेप में, जब एक विश्वसनीय शरिया रिपोर्ट से यह साबित हो जाता है कि शराब इस मिश्रण का एक हिस्सा है, तो बर्फ के हराम (प्रतिबंध) और अपवित्र होने में कोई विवाद नहीं है।

सामान्य रूप से, इसके सभी उदाहरण प्रतिबंधित और वर्जित हैं। यह संभावना कि 'शायद इस विशेष टुकड़े में नहीं डाली गई होगी' केवल व्यर्थ और अस्वीकार्य है, क्योंकि यह जो वर्जित है उसमें एक विशिष्ट निश्चितता है। ऐसी जगहों पर ये संभावनाएं पूरी तरह से कमजोर और अपर्याप्त हैं (सामान्य नियम का लेख देखें और...)

नोट (عہ): अर्थात, झूठ के माध्यम से सूफीवाद का दावा करने वालों की उल्लिखित खामियों के साथ, जब किसी विशिष्ट व्यक्ति के बारे में ऐसी रिपोर्ट दी जाती है। (म)

नोट (त): अर्थात, जब सूफीवाद के झूठे दावेदारों की उल्लिखित खामियों (नृत्य आदि) के बारे में किसी व्यक्ति के संबंध में खबर दी जाती है। (त)

---

1 अल-हदिक़त अल-नदिय्या, नौवां भाग, शरीर के कष्टों आदि के संबंध में, नूरिया रज़विया, फैसलाबाद द्वारा प्रकाशित, 2/5219.

انتہائے خبر اُس مخبر پر رہے گی اور ناقلین درمیان سے ساقط ہوجائیں گے صرف نظر اس اصل کے حال پر اقتصار کرے گی یہ نکتہ بھی یاد رکھنے کا ہے کہ اکثر اس قسم کی خبریں عوام یا کم علموں کے نزدیک متواترات سے ملتبس ہو جاتی ہیں حالانکہ عند التحقیق تواتر کی بو نہیں۔

[باکس کا مواد] (عربی): قال المولی الناصح سیدی عبد الغنی قدس سرہ فی مبحث آفة الرقص من شرح الطریقة اما خبر التواتر من الناس لبعضهم بعضا بذلك عه فهو ممنوع لاستناد الکل فیه الی الظن والتوهم والتخمین واستفادة الخبر من بعضهم لبعض بحیث لوسألت کل واحد منهم عن روية ذلك ومعاینة لقال لم اعاینه وانما سمعت ومن قال عاینته تستکشف عن حاله فتراه مستندا الی ظنون وامارات وهمیة وعلامات ظنیة وربما اذ تأملت وتفحصت وجدت خبر ذلك التواتر الذی تزعمه کله مستندا فی الاصل الی خبر واحد او اثنین ۱ الی آخر ما اطال واطاب رحمه الله تعالی -

(اردو ترجمہ): نصیحت کرنے والے ہمارے سردار مولانا عبدالغنی قدس سرہ نے الطریقۃ المحمدیہ کی شرح میں رقص کی مصیبت ذکر کرتے ہوئے فرمایا لوگوں کی اس بارے خبر کو متواتر قرار دینا غلط ہے کیونکہ یہ تمام ظن، وہم اور اندازے کی طرف منسوب ہیں، اور یہی حال اس خبر کے مستفید ہونے کا ہے کہ اگر تم ان میں سے ہر ایک سے اس کے دیکھنے کے بارے میں پوچھو تو کہے گا میں نے اسے نہیں دیکھا میں نے تو سنا ہے۔ اور جو کہے کہ میں نے دیکھا ہے اس کا حال معلوم کرو تو دیکھو گے کہ وہ محض گمان، وہمی نشانیوں اور ظنی علامتوں کی طرف نسبت کرے گا اور جب تم غور وفکر اور چھان بین کروگے تو جسے تم تواتر سمجھتے ہو اس کو ایک یا دو شخصوں کی طرف منسوب پاؤ گے۔ آخر تک جو آپ نے طویل بحث کی ہے۔ اللہ آپ پر رحم فرمائے۔ (ت)

[نیچے والا حصہ] الحاصل جب خبر معتبر شرعی سے ثابت ہوجائے کہ شراب اس ترکیب کا جز ہے تو برف کی حرمت و نجاست میں کلام نہیں اور علی العموم اس کے تمام افراد ممنوع و محذور اور یہ احتمال کہ شاید اس فرد خاص میں نہ پڑی ہو محض مہمل و مہجور کہ یہ ما ہو محذور میں یقین نوعی کلی ہے اور ایسی جگہ یہ احتمالات یک لخت مضمحل و غیر کافی (دیکھو ضابطہ کلیہ کی تحریر اور

عه: ای بماذکر من معائب المتصوفة المدعین له بالکذب اذا اخبر بذلك عن رجل معین ۱۲ منه (م)

(ت): یعنی تصوف کے جھوٹے دعویدار حضرت کے مذکورہ عیوب (رقص وغیرہ) کی جب کسی شخص کے بارے خبر دی جائے ۱۲ منہ

---

1 الحدیقۃ الندیۃ الصنف التاسع فی آفات البدن الخ مطبوعہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۲/۵۲۱۹

Volume 4 Fatawa-e-Razviyah (Introduction 8, Main Address) Even the use of such a thing in medicine is unlawful unless there is no alternative and there is absolute certainty that it will provide a definite cure. For instance, in a state of extreme necessity, the Pure Shari'ah has permitted a thirsty person to drink wine or a hungry person to eat carrion, because the removal of thirst and hunger through them is certain. This is not based merely on the words of physicians, which never bring about certainty. Often, physicians prescribe remedies and have full confidence in their efficacy, yet experience shows a thousand times that they are not effective; instead, they sometimes cause harm instead of benefit. Who does not know the exaggerations of pharmacopoeias? To the extent that the saying "more mendacious than the pharmacopoeia of physicians" has become a proverb. Particularly in this regard, the word of modern doctors is even less acceptable, as they have neither concern nor regard for the lawful and prohibited (Halal and Haram) in Islam, nor do they possess complete proficiency and total skill in understanding the temperaments, methods of treatment, precision in causes, and investigation of symptoms for the people of this country.

[Arabic Box Content:] "And this which we have chosen regarding the issue of treatment with prohibited substances is the clear truth through which reconciliation is achieved. It is stated in 'Radd al-Muhtar': 'Regarding the statement that there is disagreement over treatment with prohibited substances, it is reported in "An-Nihayah" from "Ad-Zakhirah" that it is permissible if it is known to contain a cure and no other medicine is known. And in "Al-Khaniyah", concerning the meaning of the Prophet's (peace and blessings be upon him) statement: "Allah did not place your cure in what He has forbidden for you," as narrated by Bukhari, it says that there is no harm in what contains a cure, just as wine is permissible for a thirsty person in necessity. This was also chosen by the author of "Al-Hidayah" in "At-Tajnis".' (From Al-Bahr). And my master Abdul Ghani stated that no difference appears in their statements due to their agreement."

[Urdu Box Content:] Regarding the issue of treatment with prohibited substances, we have adopted this stance; it is better and more clear, through which harmony is attained. The imams of criticism and research have also preferred it. It is stated in 'Radd al-Muhtar': Regarding the (Durr al-Mukhtar) statement that there is disagreement over treatment with prohibited substances, it is reported in 'An-Nihayah' from 'Az-Zakhirah' that it is permissible provided it is known to contain healing and no other medicine is known. And in 'Al-Khaniyah', while explaining the

meaning of the blessed saying of the Noble Prophet (peace and blessings be upon him): "Allah did not keep your cure in that which He has declared forbidden for you," as narrated by Imam Bukhari, it is stated that there is no harm (in using) that which contains healing, just as wine is permissible for a thirsty person at a time of need. The author of 'Al-Hidayah' preferred this in 'At-Tajnis'. (Bahr ar-Raiq). And My master Abdul Ghani (Nabulsi) may Allah have mercy on him, stated that no difference appears in the statements of these (jurists).

जिल्द चौथी (भाग 4) फ़तावा-ए-रज़विया (भूमिका 8 का मुख्य भाषण) यहाँ तक कि दवा में ऐसी चीज़ का इस्तेमाल तब तक नाजायज़ है जब तक कि उसके सिवा कोई और दवा न हो और यह पक्का यकीन न हो कि इससे निश्चित रूप से शिफ़ा (आरोग्य) मिलेगी। जैसे मजबूरी की हालत में प्यासे के लिए शराब पीना या भूखे के लिए मुर्दार का मांस खाना पाक शरीयत ने जायज़ करार दिया है क्योंकि इससे प्यास और भूख का मिटना निश्चित है। यह केवल वैद्यों (हकीमों) के कहने पर आधारित नहीं होना चाहिए, क्योंकि उनकी बातें यकीन पैदा नहीं करतीं। कई बार वैद्य नुस्खे लिखते हैं और उनके सफल होने पर पूरा भरोसा रखते हैं, लेकिन हज़ारों बार का अनुभव है कि वे सही साबित नहीं होते, बल्कि कभी-कभी फायदे की जगह नुकसान पहुँचाते हैं। और औषध-कोषों (फार्माकोपिया) की अतिशयोक्ति को कौन नहीं जानता? यहाँ तक कि 'वैद्यों के औषध-कोष से भी अधिक झूठा' एक कहावत बन गई है। विशेष रूप से इस मामले में डॉक्टरों की बात तो और भी कम स्वीकार्य है, क्योंकि उन्हें न तो दीन-ए-इस्लाम के हलाल और हराम की कोई परवाह है, और न ही इस देश के लोगों के मिज़ाज, इलाज के तरीकों, रोगों के सूक्ष्म कारणों और लक्षणों की पहचान में उन्हें पूर्ण निपुणता और महारत हासिल है।

[अरबी पाठ बॉक्स:] "और हराम चीज़ों से इलाज के मसले में हमने जिसे चुना है, वही स्पष्ट सत्य है जिससे सामंजस्य प्राप्त होता है। 'रद्दुल मुहतार' में कहा गया है: जहाँ तक हराम चीज़ों से इलाज के मतभेद का सवाल है, 'अन-निहाया' में 'अज़-ज़खीरा' के हवाले से लिखा है कि यह जायज़ है यदि ज्ञात हो कि इसमें शिफ़ा है और कोई दूसरी दवा मालूम न हो। और 'अल-खालिया' में नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के इस इरशाद के बारे में: 'बेशक अल्लाह ने तुम्हारी शिफ़ा उन चीज़ों में नहीं रखी जिन्हें तुम पर हराम किया गया है', जैसा कि इमाम बुखारी ने रिवायत किया है, कहा गया है कि जिस चीज़ में शिफ़ा हो उसके इस्तेमाल में कोई हर्ज नहीं है, जैसे प्यासे के लिए मजबूरी में शराब जायज़ है। यही बात 'अल-हिदाया' के लेखक ने 'अत-तजनीस' में अपनाई है।" (अल-बहर से)। और मेरे आका अब्दुल ग़नी ने फरमाया कि उनके कथनों में कोई मतभेद नज़र नहीं आता क्योंकि वे एकमत हैं।

[उर्दू अनुवाद बॉक्स:] हराम चीज़ के साथ इलाज के मसले में हमने इस बात को चुना है; यही बेहतर और स्पष्ट है जिससे सामंजस्य प्राप्त होता है। शोध और आलोचना के इमामों ने भी इसे पसंद किया है। 'रद्दुल मुहतार' में फरमाया: इस (दुर्रे मुख्तार) बात पर कि हराम चीज़ से इलाज करने में मतभेद है, तो 'निहाया' में 'ज़खीरा' से नक़ल है कि यह जायज़ है बशर्ते कि उसे इसमें शिफ़ा का इल्म (ज्ञान)

हो और किसी दूसरी दवा का इल्म न हो। और 'खालिया' में नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का इरशाद-ए-गरामी: "अल्लाह तआला ने उस चीज़ में तुम्हारे लिए शिफ़ा नहीं रखी जिसे तुम पर हराम करार दिया।" जैसा कि इसे इमाम बुखारी ने रिवायत किया है, का अर्थ बयान करते हुए कहा कि जिस चीज़ में शिफ़ा हो उसके(इस्तेमाल) में कोई हर्ज नहीं है जैसा कि ज़रूरत के वक्त प्यासे के लिए शराब हलाल है, 'हिदाया' के लेखक ने 'तजनीस' में इसे पसंद किया है। (बहरुर रायक)। और मेरे आका अब्दुल ग़नी (नाबुलसी) रहमतुल्लाह अलैहि ने बताया कि इन (फ़ुक़्हा/ धर्मशास्त्रियों) के कलाम में कोई मतभेद ज़ाहिर नहीं होता।

جلد چہارم فتاوٰی رضویہ مقدمہ ۸ کی صدر تقریر) یہاں تک کہ ایسی شے کا دوا میں بھی استعمال ناروا مگر جب اس کے سوا دوا نہ ہو اور یقینِ کامل ہو کہ اس سے قطعاً شفا ہوجائے گی جیسے بحالتِ اضطرار پیاسے کو شراب پینا یا بھوکے کو گوشتِ مردار کھانا شرعِ مطہر نے جائز فرمایا کہ اس سے پیاس اور اس سے بھوک کا جانا یقینی ہے نہ مجرد قولِ اطباء کہ ہرگز موجبِ یقین نہیں بارہا اطبا نسخے تجویز کرتے اور ان کے موافق آنے پر اعتمادِ کلی رکھتے ہیں پھر ہزار دفعہ کا تجربہ ہے کہ ہرگز ٹھیک نہیں اترتے بلکہ کبھی بجائے نفع مضرت کرتے ہیں اور قرابادین کی بالاخوانیں کون نہیں جانتا یہاں تک کہ اکذب من قرابادین الاطباء (فلاں) اطباء کی قرابادین (دواؤں کی ڈکشنری) سے زیادہ جھوٹا ہے۔ ت) مثل ہوگئی علی الخصوص اس بارہ میں ڈاکٹروں کا قول تو بدرجہ اولٰی قابلِ قبول نہیں کہ نہ انہیں دینِ اسلام کے حلال و حرام کا غم و اہتمام نہ اس ملک والوں کی معرفتِ مزاج و طریقِ علاج و تدقیقِ علل و تحقیقِ علامات میں حذاقتِ کامل و مہارتِ تام۔

[Arabic Column:] وھذا الذی اخترناہ فی مسئلہ التداوی بالمحرم ہو الصواب الواضح الذی بہ یحصل التوفیق قال فی رد المحتار قولہ اختلف فی التداوی بالمحرم ففی النہایۃ عن الذخیرۃ یجوز ان علم فیہ شفاء ولم یعلم دواء آخر وفی الخانیۃ فی معنی قولہ علیہ الصلاۃ والسلام ان اللہ لم یجعل شفاءکم فیما حرم علیکم کما رواہ البخاری ان ما فیہ شفاء لابأس بہ کما یحل الخمر للعطشان فی الضرورۃ وکذا اختارہ صاحب الہدایۃ فی التجنیس اہ من البحر۔ وافاد سیدی عبدالغنی انہ لا یظہر الاختلاف فی کلامہم لاتفاقہم

[Urdu Column:] حرام چیز کے ساتھ علاج کے مسئلہ میں ہم نے اس بات کو اختیار کیا ہے یہی بہتر اور واضح ہے جس کے ساتھ توفیق حاصل ہوتی ہے تنقید و تحقیق کے ائمہ نے بھی اسے پسند کیا ہے، رد المحتار میں فرمایا: اس (درمختار) قول کہ حرام چیز سے علاج کرنے میں اختلاف

ہے تو نہایہ میں ذخیرہ سے منقول ہے کہ جائز ہے بشرطیکہ اسے اس میں شفاء کا علم ہو اور کسی دوسری دوا کا علم نہ ہو۔ اور خانیہ میں نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کا ارشادِ گرامی: "اللہ تعالیٰ نے اس چیز میں تمہارے لئے شفا نہیں رکھی جسے تم پر حرام قرار دیا۔" جیسا کہ اسے امام بخاری نے روایت کیا ہے، کا مفہوم بیان کرتے ہوئے کہا کہ جس چیز میں شفاء ہو اس (کے استعمال) میں حرج نہیں جیسا کہ ضرورت کے وقت پیاسے کیلئے شراب حلال ہے، صاحبِ ہدایہ نے تجنیس میں اسے پسند کیا ہے اھ (بحر الرائق)۔ اور سیدی عبدالغنی (نابلسی) رحمہ اللہ نے بتایا کہ ان (فقہاء) کے کلام میں اختلاف ظاہر نہیں ہوتا۔

Volume 4 Fatawa Razawiyya

Because there is consensus on permissibility due to necessity. And the condition of knowledge set by the author of Al-Nihayah is not contradicted by the condition of healing set by those after him. Therefore, my honorable father stated in the commentary of Al-Durar that his statement "not for medical treatment" is predicated on the state of conjecture; otherwise, its permissibility in certain cases is agreed upon, as clarified in Al-Musaffa. End of quote.

I say: This is apparent and agrees with the reasoning for the Imam's statement that has preceded. However, you know that knowledge is not obtained from the words of physicians, and it is apparent that through experience, only a predominant opinion is attained, not certainty, unless they mean predominant opinion by "knowledge," which is common in their speech. Reflect. End of summary from Radd al-Muhtar. (T)

I say: As for what was mentioned regarding experiences, the weak slave has a noble refinement here, and I intend to research the matter in some of my treatises if the Almighty Lord makes it easy. As for attributing the Hadith to Al-Bukhari, I have not seen it in Al-Bahr nor in Al-Khaniyyah. Rather, it was narrated by Al-Tabarani in Al-Mu'jam al-Kabir with an authentic chain according to Hanafi principles.

Note: He said this because its narrators are the narrators of Sahih despite the interruption in it. 12 from him (M)

---

1. Radd al-Muhtar, Topic: Treatment with prohibited things, published by Mustafa al-Babi, Egypt, 1/154.

क्योंकि आवश्यकता के कारण अनुमति पर सर्वसम्मति है। और 'निहाया' के लेखक ने जो ज्ञान की शर्त रखी है, उसके बाद वालों द्वारा उपचार की शर्त लगाना उसके विपरीत नहीं है। इसीलिए मेरे पूज्य पिता ने 'अल-दुरर' की व्याख्या में कहा है कि उनका कथन "चिकित्सा के लिए नहीं" केवल धारणा की स्थिति पर आधारित है; अन्यथा, निश्चितता की स्थिति में इसकी अनुमति सर्वसम्मत है, जैसा कि 'अल-मुसफ़्फ़ा' में स्पष्ट किया गया है। अंत।

मैं कहता हूँ: यह स्पष्ट है और इमाम के कथन के उस तर्क के अनुकूल है जो पहले बीत चुका है। लेकिन आप जानते हैं कि चिकित्सकों की बातों से ज्ञान प्राप्त नहीं होता है और यह स्पष्ट है कि अनुभव से केवल प्रबल अनुमान प्राप्त होता है, निश्चितता नहीं, जब तक कि वे ज्ञान से प्रबल अनुमान न लेते हों, और यह उनके भाषण में आम है। इस पर विचार करें। 'रद्दुल मुहतार' से संक्षेप में। (त)

मैं कहता हूँ: जहाँ तक अनुभवों की बात की गई है, यहाँ इस कमज़ोर बंदे की ओर से एक सराहनीय स्पष्टीकरण है और मैं चाहता हूँ कि अपने कुछ लेखों में इस मसले की जाँच करूँ अगर अल्लाह तआला इसे मेरे लिए आसान कर दे। बाकी उन्होंने हदीस को इमाम बुखारी की ओर अनुदित किया है, मैंने इसे 'बहरुल राइक' और 'खानिया' में नहीं देखा। इसे तबरानी ने 'मोजम कबीर' में सहीह सनद के साथ हनफी नियमों के अनुसार वर्णित किया है।

नोट: उन्होंने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि इस हदीस के सभी रावी विश्वसनीय और प्रामाणिक हदीसों के रावी हैं, इस आधार पर कि इसमें विच्छेद (इनक़िता) है। 12 उनकी ओर से (म)

---

1. रद्दुल मुहतार, विषय: हराम चीज़ों से इलाज, मुस्तफा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, 1/154।

على الجواز للضرورة واشتراط صاحب النهاية العلم لاينافيه اشتراط من بعده الشفاء ولذا قال والدي في شرح الدرر ان قوله لالتداوی محمول علی المظنون والا فجوازه بالیقینی اتفاقی کما صرح به في المصفی اهـ کیونکہ ضرورت کے تحت جواز پر سب کا اتفاق ہے۔ اور صاحبِ نہایہ نے جو علم کی شرط لگائی ہے بعد والوں کا شفاء کی قید لگانا اس کے منافی نہیں اسی لئے میرے والد ماجد نے الدرر کی شرح میں فرمایا کہ اس کا قول "نہ دوائی کیلئے" حالتِ ظن پر محمول ہے ورنہ یقینی صورت میں اس کا جواز متفق علیہ ہے، جیسا کہ المصفٰی میں اس کی تصریح ہے انتہیٰ۔

اقول: وهو ظاهر موافق لمأمر في الاستدلال لقول الامام لکن قد علمت ان قول الاطباء لا یحصل به العلم والظاهر ان التجربة یحصل بها غلبة الظن دون الیقین الا ان یریدوا بالعلم غلبة الظن وهو شائع في کلامهم تأمل اهـ ما في رد المحتار مع بعض اختصار - میں کہتا ہوں یہ ظاہر ہے اور امام صاحب کے قول کا جو استدلال گزر چکا ہے اس کے موافق ہے لیکن تم جانتے ہو کہ اطباء کے قول سے علم حاصل نہیں ہوتا اور ظاہر ہے کہ تجربہ سے محض غالب گمان حاصل ہوتا ہے یقین نہیں مگر یہ کہ وہ علم سے غالب گمان مراد لیں اور یہ بات ان کے کلام میں عام ہے اس پر غور کرو اھ اختصاراً از رد المحتار ۔ (ت)

اقول: اما ما ذکر من امر التجارب فللعبد الضعیف ههنا تنقیح شریف وارید ان احقق المسئلة في بعض رسائلی ان یسر المولی سبحانه وتعالی واما عزوه الحدیث للبخاری فلم اره فی البحر ولا فی الخانیة وانما رواه الطبرانی في المعجم الکبیر بسند صحیح علی اصول الحنفیة۔ اقول: وہ تجربات کا ذکر کیا گیا ہے اس کے بارے میں یہاں بندہ ضعیف کی قابلِ قدر تنقیح ہے اور میں چاہتا ہوں کہ اپنے بعض رسائل میں مسئلہ کی تحقیق کروں گا اگر اللہ تعالیٰ اسے میرے لئے آسان کردے باقی انہوں نے

حدیث امام بخاری کی طرف منسوب کی ہے میں نے اسے بحرالرائق اور خانیہ میں نہیں دیکھا۔

اسے طبرانی نے معجم کبیر میں صحیح سند کے ساتھ حنفی قواعد کے

عہ: قالہ لان رجالہ رجال الصحیح علی ما فیہ من انقطاع ۱۲ منہ (م) یہ اس لئے کہا کہ اس حدیث کے سب راوی ثقہ و معتمد صحیح کے راوی ہیں اس بنا پر کہ اس میں انقطاع ہے ۱۲ منہ (ت)

---

1 رد المحتار مطلب فی التداوی بالمحرم مطبوعہ مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۵۴

Fatawa Razawiya, Volume 4

[Table/Box Start] Left side (Arabic): It has been narrated accordingly. Yes, I have seen it in the book of drinks in Sahih Bukhari, in the chapter 'Drinking Sweets and Honey', as a suspended (mu'allaq) narration from Ibn Mas'ud (may Allah be pleased with him). So let it be noted. And Allah (the Exalted) knows best. Right side (Urdu translation): It has been narrated according to the report. Yes, I have seen it in the Book of Drinks of Sahih Bukhari, in the chapter 'Drinking Sweets and Honey', recorded as a suspended narration from Hazrat Abdullah bin Mas'ud (may Allah be pleased with him). So be informed of this. And Allah (the Exalted) knows best. (T) [Table/Box End]

And if there is no proof from such a report, then at most, by way of piety and caution in testimony, one should avoid it; but a ruling of prohibition (tahrim) or impurity (tanjis) without Sharia evidence is never permissible. A brief explanation of this has been given previously, and God willing, we will return to this point at the end of the treatise. "And returning is more praiseworthy" (meaning repeating the point is better). This is the original jurisprudential ruling. If you look at the facts, this report does not reach the level of proof, nor is there any known reason to mix alcohol in the water used for freezing ice. Thus, the ruling on ice remains one of permissibility. And Allah (the Exalted) knows best the right path. (And Allah knows best. T). Yes, in English medicines, all liquid medicines called tinctures definitely contain alcohol. They are all both forbidden (Haram) and impure (Najis). It is not lawful to consume them, nor permissible to apply them to the body, nor lawful to buy or sell them.

[Table/Box Start] Left side (Arabic): As we have established in our Fatwas, spirit, which is the essence of fermented drink (nabidh), is definitely wine; in fact, it is among the foulest of wines. Therefore, it is forbidden and an impurity that is heavy (najasa ghaliza), like urine. The ease some ignorant people, who call themselves scholars among the prominent members of the forsaken 'Nadwa', found in it is among the foulest of sayings. We ask Allah for protection in every movement and word. Right side (Urdu translation): As we have proven in our fatwas, spirit is the essence of nabidh and is categorically wine; rather, it is the most foul of all wines. Therefore, it is forbidden like urine, impure, and constitutes heavy impurity. The point from which the low and disgraced members of Nadwa—who call themselves scholars despite being ignorant—attained comfort is an extremely foul saying. We ask in the court of God for protection in every action and word. (T) [Table/Box End]

Muslims should understand this well and avoid these impurities and filths in medical treatments. It is especially a severe calamity if death occurs during such treatments and a Muslim dies in a state where, God forbid, there is wine in their stomach. We seek refuge with Allah, the Lord of the worlds. (May the Lord of the two worlds, Allah, protect us. T). Similarly, the fact that this sugar is refined with bones is so certain that there is no room for denial. However, first, it is necessary to consider the effect of bones on sugar in this refining process...

---

1 Sahih al-Bukhari, Chapter on Drinking Sweets and Honey, Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/840 Page 543 of 761

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4

[टेबल/बॉक्स प्रारंभ] बायां भाग (अरबी): इसके अनुसार रिवायत की गई है। हाँ, मैंने इसे सहीह बुखारी की 'किताब अल-अशरबा' के अध्याय 'मीठी चीज़ें और शहद पीना' में हज़रत इब्न मसूद (रज़ियल्लाहु अन्हु) की रिवायत से 'ता'लीक़न' (निलंबित) वर्णित देखा है। अतः इस पर सचेत रहें। और अल्लाह (तआला) सबसे बेहतर जानता है। दायां भाग (उर्दू अनुवाद): इसके अनुसार रिवायत की गई है। हाँ, मैंने इसे सहीह बुखारी की 'किताब अल-अशरबा' के अध्याय 'मीठी चीज़ें और शहद पीना' में हज़रत अब्दुल्ला बिन मसूद (रज़ियल्लाहु अन्हु) की रिवायत से 'ता'लीक़न' मरुवी देखा है, अतः इस पर आगाह हो जाओ। और अल्लाह (तआला) सबसे बेहतर जानता है। (त) [टेबल/बॉक्स अंत]

और अगर ऐसी ख़बर से प्रमाण नहीं मिलता, तो परहेज़गारी और बचाव के हुक्म के तहत गवाही से बचा जाए; लेकिन बिना शरीयती सबूत के किसी चीज़ को हराम या नापाक (नजिस) घोषित करना हरगिज़ जायज़ नहीं है। इसका कुछ बयान पहले गुज़र चुका है और इंशा अल्लाह तआला रिसाले के अंत में हम फिर इसकी तरफ लौटेंगे। "और लौटना अधिक प्रशंसनीय है" (यानी बात को दोहराना बेहतर है)। यह तो असल फ़िक़्ही (न्यायशास्त्रीय) हुक्म है। और वास्तविकता पर नज़र डालें तो इस ख़बर की सच्चाई साबित नहीं होती, न ही उस पानी में जिसे जमाया जाता है शराब मिलाने की कोई वजह मालूम होती है। तो बर्फ़ पर जायज़ होने का ही हुक्म है। और अल्लाह तआला ही सही राह जानता है। (और अल्लाह खूब जानता है। त)। हाँ, अंग्रेज़ी दवाओं में जितनी दवाएँ तरल होती हैं जिन्हें टिंचर कहते हैं, उन सब में यक़ीनन शराब होती है। वे सब हराम भी हैं और नापाक भी, न उनका खाना हलाल है, न बदन पर लगाना जायज़ है, न उन्हें खरीदना हलाल है और न बेचना जायज़ है।

[टेबल/बॉक्स प्रारंभ] बायां भाग (अरबी): जैसा कि हमने अपने फ़तावा में प्रमाणित किया है कि स्पिरिट, जो नबीज़ (किण्वित पेय) का सत्त है, निश्चित रूप से शराब है; बल्कि यह शराबों में सबसे घृणित है। इसलिए यह हराम और भारी अशुद्धि (नजासत-ए-ग़लीज़ा) है, जैसे पेशाब। कुछ अज्ञानियों, जो बहिष्कृत 'नदवा' के प्रमुख सदस्यों में से हैं और अज्ञानता के बावजूद स्वयं को विद्वान कहते हैं, उन्होंने इससे जो राहत पाई है, वह सबसे घृणित कथनों में से एक है। हम अल्लाह से हर हरकत और शब्द में सुरक्षा की प्रार्थना करते हैं। दायां भाग (उर्दू अनुवाद): जैसा कि हमने अपने फ़तावा में साबित किया है कि स्पिरिट, नबीज़ की रूह और क़तई तौर पर शराब है बल्कि यह सबसे ज़्यादा ख़बीस शराब है। लिहाज़ा यह पेशाब की तरह हराम है, नापाक है और नजासत-ए-ग़लीज़ा है। नदवा के ज़लील और रुसवा अराकीन (सदस्यों) ने, जो जाहिल होने के बावजूद अपने आप को आलिम

कहलाते हैं, जिस बात से राहत हासिल की वह निहायत ख़बीस क़ौल (कथन) है। हम बारगाह-ए-खुदावंदी में हर हरकत और क़ौल की हिफ़ाज़त का सवाल करते हैं। (त) [टेबल/बॉक्स अंत]

मुसलमान इसे अच्छी तरह समझ लें और डॉक्टरी इलाज में इन नापाक नजासतों से बचें, विशेष रूप से वह समय बहुत बड़ी आफ़त है जब इन इलाजों के दौरान मौत आ जाए और मुसलमान इस हाल में मरे कि मआज़ अल्लाह (अल्लाह की पनाह) उसके पेट में शराब हो। 'वल-इयाज़ु बिल्लाहि रब्बिल-आलमीन' (दोनों जहानों का रब अल्लाह बचाए। त)। इसी तरह बेशक इस शक्कर का हड्डियों से साफ़ किया जाना इतना यक़ीनी है कि इसके इनकार की गुंजाइश नहीं, मगर पहले इस पर गौर करना वाजिब है कि इस सफ़ाई में हड्डियों पर शक्कर का...

---

1 सहीह अल-बुखारी, बाब शर्बुल हलवा वल-अस्ल, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 2/840 पृष्ठ 543/761

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم

نعم رأیته فی اشربة الجامع الصحیح باب شرب الحلوء والعسل عن ابن مسعود رضی الله تعالی عنه من قوله تعلیقاً فلیتنبه ۱ والله تعالی اعلم۔ | مطابق روایت کیا ہے۔ ہاں میں نے اسے صحیح بخاری کے کتاب الاشربہ کے باب "شرب الحلوء والعسل" میں حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ عنہ کی روایت سے تعلیقاً مروی دیکھا ہے پس اس پر آگاہ ہو جاؤ، واللہ تعالٰی اعلم (ت)

اور اگر ایسی خبر سے ثبوت نہیں تو غایت درجہ اس قدر کہ بحکم تورع واجتناب شہادت احتراز کرے مگر تحریم و تنجیس کا حکم بے دلیل شرعی ہر گز روا نہیں قدرے بیان اس کا آگے گزرا اور ان شاء اللہ تعالٰی خاتمہ رسالہ میں ہم پھر اس طرف عود کریں گے والعود احمد (اور عود زیادہ بہتر ہے۔ ت) یہ تو اصل حکم فقہی ہے اور واقع پر نظر کیجئے تو اس خبر کی کچھ حقیقت پایہ ثبوت کو نہیں پہنچتی نہ اس پانی میں جسے منجمد کرتے ہیں شراب ملانے کی کوئی وجہ معلوم ہوتی ہے تو برف پر حکم جواز ہی ہے واللہ تعالٰی اعلم بالصواب (اور اللہ تعالٰی خوب جانتا ہے۔ ت) ہاں انگریزی دواؤں میں جتنی دوائیں رقیق ہوتی ہیں جنہیں ٹنچر کہتے ہیں ان سب میں یقیناً شراب ہوتی ہے وہ سب حرام بھی ہیں اور ناپاک بھی، نہ ان کا کھانا حلال نہ بدن پر لگانا جائز، نہ خریدنا حلال نہ بیچنا جائز۔

کما حققناه فی فتاؤنا ان اسبارتو وهی روح النبیذ خمر قطعاً بل من اخبث الخمور فهی حرام ورجس نجس نجاسة غلیظة کالبول وما استروح به بعض الجهلة المتسمین بالعلم من کبراء اراکین الندوة المخذولة فمن اخبث القول نسأل الله العصمة فی کل حرکة وکلمة۔ | جیسا کہ ہم نے اپنے فتاوٰی میں ثابت کیا ہے کہ اسپرٹ، نبیذ کی روح اور قطعی طور پر شراب ہے بلکہ یہ سب سے زیادہ خبیث شراب ہے پس یہ پیشاب کی طرح حرام ہے ناپاک ہے اور نجاست غلیظہ ہے ندوہ کے ذلیل ورسوا

اراکین نے جو جاہل ہونے کے باوجود اپنے آپ کو عالم کہلاتے ہیں جس بات سے راحت حاصل کی وہ نہایت خبیث قول ہے ہم بارگاہ خداوندی میں ہر حرکت اور قول کی حفاظت کا سوال کرتے ہیں۔ (ت)

مسلمان اسے خوب سمجھ لیں اور ڈاکٹری علاج میں ان ناپاکیوں نجاستوں سے بچیں خصوصاً سخت آفت اس وقت ہے کہ ان علاجوں میں قضا آجائے اور مسلمان اس حالت میں مرے کہ معاذ اللہ اس کے پیٹ میں شراب ہو والعیاذ باللہ رب العلمین (دو جہانوں کا پروردگار اللہ بچائے۔ ت) اسی طرح بیشک اس شکر کا ہڈیوں سے صاف کیا جانا ایسا یقینی جس کے انکار کی گنجائش نہیں مگر اولاً غور واجب کہ اس تصفیہ میں ہڈیوں پر شکر کا

---

۱ صحیح البخاری باب شرب الحلوء والعسل قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/۸۴۰ Page 543 of 761

Fatawa Ridawiyya, Volume 4

It is only a matter of passing through without any of their parts remaining in the sugar, just as water is purified by dripping it through coal and bones so that the clear, settled water in the vessel becomes transparent, and no part of the bones or coal is allowed to mix in it. In such a case, for the lawfulness (halal status) of this sugar, only the purity of those bones is required, even if they are not from halal or edible animals.

[Boxed Text] Arabic: As it is not hidden from any sane person, and that is because it did not mix with the forbidden, so its consumption is pure; and passing over a pure thing, even if it is forbidden, does not cause a prohibition. Urdu: As it is not hidden from any wise person, and this is because there is no mixture of the forbidden in it, so its eating is clear; and falling onto a pure thing, even if it is forbidden, does not necessarily result in prohibition. (T)

And in the case of passing through, it is apparent that they narrow the pores and let the juice pass through like droplets, as this is the apparent way to remove filth. Simply flowing over the bones would probably not be a cause for purification. Therefore, on this premise, in the case of impurity of the bones, there is no doubt about the impurity of the juice and the prohibition of the sugar; otherwise*, it is undoubtedly pure and lawful.

And if bone particles are ground and mixed into the juice, and they remain in it, mixed and indistinguishable, then the lawfulness of the sugar will certainly require not just the purity of those bones but also their lawfulness (halal status). If the bones were from non-edible animals or carrion, then on this premise, their parts would also be consumed along with the sugar "due to mixture and lack of distinction" (T). And eating them, even if they are pure, is forbidden, so the sugar would also become forbidden. It is stated in Al-Durr al-Mukhtar and other books: "If something like a frog decomposes in it, wudu with it is permissible, but not drinking it, because of the prohibition of its meat. End quote." (In Al-Durr al-Mukhtar and other major books, it says: if frogs etc. swell in the water, wudu with it is permissible but drinking it will not be permissible because its meat is forbidden. T). The detailed rulings on Russian sugar, once its actual state of production is researched and known, are clear from our discourse. The ruling regarding the purity, impurity, lawfulness, and prohibition of bones has been mentioned earlier (see Introduction 1).

Secondly: How can it be correct, based on these notions, to declare Russian sugar absolutely impure and forbidden? Rather, in general, the fatwa will be given for its purity and lawfulness until the specific state of a case is researched. For, to this extent, one cannot be certain about the impurity and prohibition of all instances; these are merely conjectures and notions that Shari'ah does not consider (see Introduction 2).

Admittedly, the manufacturers are careless; admittedly, they do not care about pure, impure, forbidden, or lawful; admittedly, among the bones, there are also...

*Note: i.e., if the bones are not impure or the juice just passes over them in its flow. 12 (Amna) (M)

---

1 Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Waters, published by Mujtabai, Delhi, 1/35.

यह केवल गुज़रने और पार होने का मामला है, बिना इसके कि उनके कुछ हिस्से चीनी में रह जाएँ, ठीक उसी तरह जैसे पानी को कोयले और हड्डियों के माध्यम से टपका कर साफ किया जाता है ताकि बर्तन में साफ पानी पारदर्शी आ जाए और हड्डियों या कोयले का कोई हिस्सा उसमें शामिल न हो पाए। तब तो इस चीनी की हलालियत के लिए केवल उन हड्डियों की पवित्रता (पाकी) की आवश्यकता है, भले ही वे हलाल और खाने योग्य जानवरों की न हों।

[बॉक्स टेक्स्ट] अरबी: जैसा कि बुद्धिमान पर छिपा नहीं है, और वह इसलिए कि वह हराम के साथ मिश्रित नहीं हुआ, तो उसका खाना शुद्ध है; और पाक चीज़ पर से गुज़रना, भले ही वह हराम हो, पाबंदी का कारण नहीं बनता। उर्दू: जैसा कि यह किसी भी बुद्धिमान व्यक्ति पर छिपा नहीं है और यह इसलिए कि इसमें हराम का मिश्रण नहीं है, अतः इसका खाना स्पष्ट है और पाक चीज़ पर गिरने से भले ही वह हराम हो, मनाही अनिवार्य नहीं होती। (त)

और गुज़रने की स्थिति में, ज़ाहिर यही है कि वे छिद्रों को संकीर्ण करते हैं और रस को बूंदों की तरह गुज़ारते हैं, क्योंकि गंदगी दूर करने का ज़ाहिर तरीका यही है। हड्डियों पर केवल बहाव शायद शुद्धिकरण का कारण न बने। तो इस अनुमान पर, हड्डियों के नापाक होने की स्थिति में, रस की नापाकी और चीनी की हरामियत में कोई संदेह नहीं है; अन्यथा*, निस्संदेह यह पाक और हलाल है।

और यदि हड्डी के टुकड़ों को पीसकर रस में मिलाया जाए और वे उसमें मिश्रित और अविभाज्य होकर रह जाएँ, तो चीनी की हलालियत के लिए केवल उन हड्डियों की पाकी पर्याप्त नहीं होगी। यदि हड्डियाँ गैर-माकूल (न खाने योग्य) या मुर्दार की हुईं, तो इस अनुमान पर चीनी के साथ उनके हिस्से भी खाने में आएँगे "मिश्रण और पहचान न होने के कारण" (त)। और उनका खाना, भले ही वे पाक हों, हराम है, तो चीनी भी हराम हो जाएगी। अल-दुर्रुल मुख्तार और अन्य पुस्तकों में है: "यदि उसमें मेंढक जैसी कोई चीज़ गल जाए, तो उससे वज़ू जायज़ है लेकिन पीना नहीं, क्योंकि उसका मांस हराम है। समाप्त।" (दुर्रे मुख्तार आदि बड़ी किताबों में है कि अगर इस पानी में मेंढक वगैरह फूल जाएँ तो उससे वज़ू जायज़ होगा लेकिन उसका पीना जायज़ न होगा क्योंकि उसका मांस हराम है। त)। रूसी चीनी, जिसका वास्तविक हाल शोध से ज्ञात हो कि वह विशेष रूप से कैसे बनी है, के नियमों का विवरण हमारे इस लेख से स्पष्ट है। हड्डियों की पाकी, नापाकी, हलालियत और हरामियत का नियम पहले बताया जा चुका है (देखें प्रस्तावना 1)।

दूसरा: इन विचारों के आधार पर रूसी चीनी को पूर्णतः नापाक और हराम कह देना कैसे सही हो सकता है? बल्कि सामान्य स्थिति में इसकी पाकी और हलालियत पर ही फतवा दिया जाएगा जब तक कि किसी स्थिति के विशेष हाल का पता न चल जाए। क्योंकि इस हद तक सभी उदाहरणों की नापाकी और हरामियत पर यकीन नहीं किया जा सकता; ये केवल शंकाएँ और विचार हैं जिन्हें शरीयत मान्यता नहीं देती (देखें प्रस्तावना 2)।

माना कि बनाने वाले असावधान हैं, माना कि उन्हें पाक-नापाक और हराम-हलाल की परवाह नहीं है, माना कि हड्डियों में वे भी...

*नोट: यानी अगर हड्डियाँ नापाक न हों या रस अपने बहाव में उन पर से गुज़र जाता हो। 12 (आमिना) (म)

---

1 अल-दुर्रुल मुख्तार, बाबुल मियाह, मुजतबाई दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 1/35।

पृष्ठ संख्या 761 में से 544

صرف مرور و عبور ہوتا ہے بغیر اس کے کہ ان کے کچھ اجزاء شکر میں رہ جاتے ہوں جس طرح پانی کو کوئلوں اور ہڈیوں سے متقاطر کر کے صاف کرتے ہیں کہ برتن میں نتھرا پانی شفاف آجاتا ہے اور انکشافِ واستخواں کا کوئی جز اس میں شریک نہیں ہونے پاتا جب تو اس شکر کی حلت کو صرف ان ہڈیوں کی طہارت درکار ہے اگر چہ حلال و ماکول نہ ہوں۔

[جدول/باکس] عربی: کمالایخفی علی عاقل وذٰلك لانه لم یختلط بالحرام فیتمحض فی الاکل والمرور علی طاھر ولو حراما لایورث منعاً۔ اردو: جیسا کہ یہ کسی بھی عقلمند پر مخفی نہیں اور یہ اس لئے کہ اس میں حرام کی آمیزش نہیں پس اس کا کھانا واضح ہے اور پاک چیز پر گرنے سے اگر چہ وہ حرام ہو ممانعت لازم نہیں آتی۔(ت)

اور در صورت مرور ظاہر یہی ہے کہ منافذ کو تنگ کرتے اور بطور تقاطر رس کو عبور دیتے ہوں کہ ازالہ کثافت کی ظاہر ا یہی صورت ہڈیوں پر صرف بہاؤ میں نکل جانا غالباً باعث تصفیہ نہ ہوگا تو اس تقدیر پر در صورت نجاست استخوان نجاست عصیر وحرمت شکر میں شک نہیں ورنہ عہ بلاریب طیب وحلال۔

اور اگر اجزائے استخوان پیس کر رس میں ملاتے اور وہ مخلوط و غیر متمیز ہو کر اس میں رہ جاتے ہیں تو حلتِ شکر کو ان ہڈیوں کی حلت بھی ضرور صرف طہارت کفایت نہ کریگی کہ اگر غیر ماکول یا مردار کے استخواں ہوئے تو اس تقدیر پر شکر کے ساتھ ان کے اجزاء بھی کھانے میں آئیں گے للاختلاط وعدم الامتیاز (اختلاط اور عدم امتیاز کی وجہ سے۔ ت) اور ان کا کھانا گو طاہر ہوں حرام، تو شکر بھی حرام ہو جائے گی فی الدر المختار وغیرہ من الاسفار لوتفتت فیه نحو

ضفدع جاز الوضوء به لاشر به لحرمة لحمه اھ (درمختار وغیرہ بڑی کتب میں ہے اگر اس پانی میں مینڈک وغیرہ پھول جائیں تو اس سے وضو جائز ہوگا لیکن اس کا پینا جائز نہ ہوگا کیونکہ اس کا گوشت حرام ہے۔ت) روسر کی جس شکر کا حال تحقیقاً معلوم ہو کہ یہ بالخصوص کیونکر بنی ہے اس کے تفاصیل احکام ہماری اس تقریر سے ظاہر اور استخواں کی طہارت نجاست حلت حرمت کا حکم پہلے معلوم ہو چکا (دیکھو مقدمہ ا)

ثانیا : کیف مکان ان خیالات پر مطلق شکرِ روسر کو نجس و حرام کہہ دینا صحیح نہیں بلکہ مقامِ اطلاق میں طہارت وحلت ہی پر فتوٰی دیا جائیگا تاوقتیکہ کسی صورت کا خاص حال تحقیق نہ ہو کہ اس قدر سے تمام افراد کی نجاست و حرمت پر یقین نہیں صرف ظنون و خیالات ہیں جنہیں شرع اعتبار نہیں فرماتی (دیکھو مقدمہ ۲)

مانا کہ بنانے والے بے احتیاط ہیں مانا کہ انہیں نجس وطاہر و حرام وحلال کی پرواہ نہیں مانا کہ ہڈیوں میں وہ بھی

عہ: یعنی اگر ہڈیاں ناپاک نہ ہوں یا رس اپنے بہاؤ میں ان پر گزر جاتا ہو ۱۲ امنہ (م)

---

1 در مختار باب المیاہ مطبوعہ مجتبائی دہلی ۳۵/۱

Volume 4 Fatawa Ridawiyya

[Bone fragments/substances] are found which, when mixed, would make a thing forbidden (haram) or impure (najis), but not all bones are like that; rather, lawful (halal) and pure ones are also abundant. There is no compulsion on those who do not process them to believe that they must have been cleaned in a specific way that leads to prohibition or impurity. There is nothing special about impure or forbidden bones that gives them an advantage in the refining process, which would cause people to choose them specifically. When this is not the case, and one only knows for certain that things are cleaned with bones, is it not possible that those bones were pure and lawful? Consider this: if a person finds a small pit in the forest filled with water and sees tracks of wild animals at its edge, and also sees water splashed on the edge from an animal drinking—even suppose an animal is seen walking away but due to distance or the darkness of night it cannot be identified—then to assume without reason that it must have been a predator or a pig and to consider the water impure and avoid it is by no means a commandment of Sharia, but rather a misgiving (waswasa). Granted, there are predators and pigs in the forest; granted, they also drink from these waters; granted, the animal seen walking away might have been a pig; but is it not also possible that it was an animal whose meat is permissible to eat?

Arabic Text

It is stated in Al-Hadiqa, after quoting what we previously presented from Jami' al-Fatawa at the beginning of the tenth introduction, that "mere suspicion does not prevent ablution (wudu) etc." (Quoted saying 12). However, before that, it was quoted that if someone saw (meaning the author of Al-Majma' 12) tracks of wild animals near small water, he should not perform ablution with it. (End of quote). It is appropriate to restrict this to cases where one strongly suspects they are wild animal tracks; otherwise, there is also the possibility that they are tracks of animals whose meat is eaten. Therefore, a ruling of impurity should not be given based on

Urdu Translation

We quoted at the beginning of the tenth introduction, with reference to Hadiqa al-Nadiyya from Jami' al-Fatawa, that mere suspicion does not become an obstacle to wudu, etc. After quoting this, the author of Hadiqa says: But the author of Al-Majma' had previously quoted that if a person sees tracks of predators near a small amount of water, he should not perform wudu from it. (End). It is appropriate to restrict this point to when he has a strong suspicion that these are tracks of predators; otherwise, there will also be the probability that these are tracks of those animals whose meat is eaten. Therefore, the ruling of impurity

Arabic Text	Urdu Translation
doubt. It should also be restricted by the condition that he saw water splashes around that small amount of water and other such indications proving that wild animals drank from it; otherwise, impurity is not established by mere doubt. (End of quote). I say, he was preceded in this interpretation.	will not be applied based on doubt. And this restriction should also be there: when he sees splashes of water around that small amount of water and other such indications that point to the fact that predators have drunk from it. Otherwise, impurity will not be proven based on mere doubt. (End). (T) I say: this is interpreted based on the point (that the water is a small amount).

1 Al-Hadiqa al-Nadiyya, the second of the two categories regarding what has been narrated from our Hanafi Imams, printed by Nooria Rizvia, Faisalabad, 2/266. Page 545 of 761

[हड्डियों के टुकड़े/पदार्थ] पाए जाते हैं जिनके मिलने से कोई चीज़ हराम (वर्जित) या नजिस (अशुद्ध) हो सकती है, लेकिन सभी हड्डियाँ ऐसी नहीं होतीं; बल्कि हलाल (वैध) और पाक (शुद्ध) हड्डियाँ भी प्रचुर मात्रा में होती हैं। जो लोग इन्हें नहीं बनाते, उनके लिए यह मानना अनिवार्य नहीं है कि इन्हें उसी विशेष तरीके से साफ किया गया होगा जो हराम या नापाकी का कारण बनता है। नापाक या हराम हड्डियों में ऐसी कोई विशेषता नहीं है जो उन्हें शोधन प्रक्रिया में अधिक उपयोगी बनाती हो, जिसके कारण लोग विशेष रूप से उन्हीं को चुनें। जब ऐसा नहीं है, और केवल इस बात का निश्चय है कि वे हड्डियों से साफ करते हैं, तो क्या यह संभव नहीं है कि वे हड्डियाँ पाक और हलाल हों? देखिए, यदि किसी व्यक्ति को जंगल में पानी से भरा एक छोटा सा गड्ढा मिले और उसके किनारे पर जंगली जानवरों के पैरों के निशान मिलें, और वह जानवर के पीने से किनारे पर पानी गिरा हुआ भी देखे—बल्कि मान लीजिए कि जानवर जाता हुआ भी दिखाई दे लेकिन दूरी या रात के अंधेरे के कारण उसकी पहचान न हो सके—तो बिना किसी कारण के यह मान लेना कि वह कोई दरिंदा (हिंसक जानवर) या विशेष रूप से सूअर ही था और पानी को नापाक समझकर उससे परहेज करना हरगिज़ शरीअत का हुक्म नहीं है बल्कि वसवसा (भ्रम) है। माना कि जंगल में दरिंदे और सूअर भी हैं, माना कि वे भी इन पानियों से पीते हैं, माना कि जो जानवर जाता हुआ देखा वह संभवतः सूअर हो, लेकिन क्या यह संभव नहीं है कि वह कोई ऐसा जानवर हो जिसका मांस खाना जायज़ है?

अरबी पाठ

अल-हदीका में जामि अल-फ़तावा के हवाले से दसवीं प्रस्तावना के आरंभ में जो हमने पहले प्रस्तुत किया था, उसे उद्धृत करने के बाद कहा गया है कि "केवल संदेह वुज़ू (आचमन) को नहीं रोकता आदि" (उद्धृत कथन 12)। लेकिन उससे पहले यह उद्धृत किया गया था कि यदि किसी ने (अर्थात अल-मजमा के लेखक ने 12) थोड़े पानी के पास जंगली जानवरों के पैरों के निशान देखे, तो वह उससे वुज़ू न करे। (इति)। उचित है कि इसे इस बात से प्रतिबंधित किया जाए जब उसका प्रबल

उर्दू अनुवाद

हमने दसवीं प्रस्तावना की शुरुआत में हदीका अन-नदिया के हवाले से जामि अल-फ़तावा से उद्धृत किया कि केवल संदेह वुज़ू में रुकावट नहीं बनता आदि। इसे उद्धृत करने के बाद हदीका के लेखक कहते हैं: लेकिन मजमा के लेखक ने इससे पहले उद्धृत किया था कि यदि कोई व्यक्ति थोड़े पानी के पास दरिंदों के कदम देखे तो वह उससे वुज़ू न करे। (इति)। इस बात को प्रतिबंधित करना उचित है कि जब उसे प्रबल अनुमान हो कि ये दरिंदों के कदम हैं,

अरबी पाठ

अनुमान हो कि ये जंगली जानवरों के पैरों के निशान हैं; अन्यथा यह संभावना भी होगी कि ये उन जानवरों के निशान हैं जिनका मांस खाया जाता है। इसलिए संदेह के आधार पर अपवित्रता का आदेश नहीं दिया जाएगा। और इसे इस शर्त से भी प्रतिबंधित किया जाना चाहिए कि उसने उस थोड़े पानी के चारों ओर पानी की छीटें और इसी तरह के अन्य संकेत देखे हों जो इस बात पर संकेत करते हों कि जंगली जानवरों ने उससे पिया है; अन्यथा मात्र संदेह के आधार पर अपवित्रता सिद्ध नहीं होगी। (इति)। मैं कहता हूँ, इस व्याख्या में उनसे पहले भी ऐसा कहा जा चुका है।

उर्दू अनुवाद

अन्यथा यह संभावना भी होगी कि ये उन जानवरों के कदम हों जिनका मांस खाया जाता है। इसलिए संदेह के आधार पर नजासत (अपवित्रता) का हुक्म नहीं लगाया जाएगा। और यह शर्त भी होनी चाहिए कि जब वह उस थोड़े पानी के चारों ओर पानी के छींटे देखे और इसी तरह के अन्य संकेत जो इस बात पर प्रमाण हों कि दरिंदों ने उससे पिया है। अन्यथा मात्र संदेह के आधार पर नजासत साबित नहीं होगी। (इति)। (त) मैं कहता हूँ: इसे इस बात पर (कि पानी थोड़ा हो) आधारित किया गया है।

1 अल-हदीका अन-नदिया, हमारे हनफी इमामों से जो कुछ वर्णित है उसके बारे में दो श्रेणियों में से दूसरी, नूरिया रज़विया, फैसलाबाद द्वारा मुद्रित, 2/266। पृष्ठ 545 / 761

پائی جاتی ہیں جن کے اختلاط سے شے حرام یا نجس ہو جائے مگر نہ سب ہڈیاں ایسی ہی ہیں بلکہ حلال و طاہر بھی بکثرت نہ بنانے والوں کو خواہی نخواہی التزام کہ خاص ایسے ہی طریقہ سے صاف کریں جو موجب تحریم و تنجیس ہو نہ کچھ ناپاک یا حرام ہڈیوں میں کوئی خصوصیت کہ انہیں تصفیہ میں زیادہ دخل ہو جس کے سبب وہ لوگ انہیں کو اختیار کریں اور جب ایسا نہیں تو صرف اس قدر پر یقین حاصل ہوا کہ ہڈیاں سے صاف کرتے ہیں کیا ممکن نہیں کہ وہ ہڈیاں طاہر وحلال ہوں دیکھو اگر آدمی کو جنگل میں ایک چھوٹا سا گڑھا پانی سے بھرا ملے اور اس کے کنارے پر اقدام وحوش کا پتا چلے اور پانی بھی جانور کے پینے سے کنارہ پر گرا دیکھے بلکہ فرض کیجئے کہ جانور بھی جاتا ہوا نظر پڑے مگر بوجہ بعد یا ظلمت شب پہچان میں نہ آئے تو اس سے خواہی نخواہی یہ ٹھہرا لینا کہ کوئی درندہ یا خاص خنزیر ہی تھا اور پانی کو ناپاک جان کر اس سے احتراز کرنا ہر گز حکم شرع نہیں بلکہ وسوسہ ہے۔ مانا کہ جنگل میں سباع و خنزیر بھی ہیں، مانا کہ وہ بھی انہیں پانیوں سے پیتے ہیں، مانا کہ یہ جانور جو جاتے دیکھا ممکن کہ سوئر ہو مگر کیا ممکن نہیں کہ کوئی ماکول اللحم جانور ہو۔

عربی عبارت	اردو ترجمہ
قال في الحديقة بعد نقل ما قدمنا عنها عن جامع الفتاوى اول المقدمة العاشرة من ان بمجرد الظن لا يمنع التوضئ الخ (مقولة قال ١٢) لكن نقل قبل ذلك قال لو رأى (يعني صاحب المجمع ١٢)	ہم نے دسویں مقدمہ کے شروع میں بحوالہ حدیقۃ الندیۃ جامع الفتاوی سے نقل کیا کہ محض گمان وضو میں رکاوٹ نہیں بنتا الخ اسے نقل کرنے کے بعد صاحب حدیقہ فرماتے ہیں لیکن صاحب مجمع نے اس سے پہلے نقل کیا کہ کوئی شخص تھوڑے پانی کے پاس درندوں کے قدم دیکھے تو

عربی عبارت	اردو ترجمہ
اقدام الوحوش عند الماء القليل لا يتوضأ به انتهى وينبغي تقييد ذلك بما اذا غلب على ظنه انها اقدام الوحوش والا فيحتمل انها اقدام مأكول اللحم فلا يحكم بالنجاسة بالشك ويقيد ايضا بانه رأى رشاش الماء حول ذلك الماء القليل ونحو ذلك من القرائن الدالة على ان الوحوش شربت منه والا فلا نجاسة بالشك ١ اهـ قلت فقد سبقه بهذا الحمل	اس سے وضو نہ کرے انتہی، اسے اس بات سے مقید کرنا مناسب ہے کہ جب اسے غالب گمان ہو کہ یہ درندوں کے قدم ہیں ورنہ یہ بھی احتمال ہوگا کہ ان جانوروں کے قدم ہوں جن کا گوشت کھایا جاتا ہے لہذا شک کی بنیاد پر نجاست کا حکم نہیں لگایا جائے گا اور یہ قید بھی ہونی چاہیے کہ جب وہ اس قلیل پانی کے گرد پانی کے چھینٹے دیکھے اور اس طرح کے دوسرے قرائن جو اس بات پر دلالت کرتے ہوں کہ درندوں نے اس سے پیا ہے ورنہ محض شک کی بنیاد پر نجاست ثابت نہ ہوگی اھـ (ت) قلت اس بات پر (کہ پانی تھوڑا ہو) محمول

1 الحديقة الندية الصنف الثاني من الصنفين فيما ورد عن ائمتنا الحنفية مطبوعہ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۲/۲۶۶

Fatawa Rizvia - Volume 4

[Top Box - Left: Arabic, Right: Urdu Translation] Arabic: Al-Bahr mentioned in Al-Bahr, and in Al-Mubtagha (with the dotted 'ghayn'): If tracks of wild beasts are seen near a small body of water, one should not perform ablution with it. If a wild beast passed by the well and it is most likely in one's thought that it drank from it, then it becomes impure, otherwise not. It is appropriate to interpret the first case as being when it is most likely in his thought that wild beasts drank from it, based on the evidence of the second branch; otherwise, mere doubt does not prevent ablution with it, based on what we have previously presented, citing from Al-Asl, etc.

Urdu: In doing so, the author of Al-Bahr al-Raiq preceded them and said in Al-Bahr that it is in Al-Mubtagha: if footprints of wild beasts are seen near a small amount of water, do not perform wudu from it. If a beast passed by a well and if there is a strong presumption (Ghalib Guman) that it drank from it, then it will become impure; otherwise, not. And it is appropriate to interpret the first instance as being when there is a strong presumption that wild beasts drank from it because the second subsidiary point (the passing of the beast) is evidence for this, otherwise mere doubt does not prohibit wudu with it. Its evidence is what we (the author of Bahr al-Raiq) have previously quoted from the original (Mabsut), etc. (that wudu can be performed from a pool where there is fear of impurity falling in, but no certainty). (T)

[Bottom Section - Urdu Text] Or if there was such certainty that they are indifferent, then what is gained in the state of doubt except suspicions? Greater than that are the carelessnesses and thoughts which are established in some previously mentioned issues (see Introduction 6). Rather, where due to prevalence and abundance of extreme carelessness, a strong presumption (Ghalib-e-Zan) not joined with certainty is achieved, even there the scholars do not give a ruling of impurity (Tanjees) or prohibition (Tehreem), but only state it is disliked (Karahat-e-Tanzihi) (see Introduction 7). Then, in the matter at hand, who can say that even such a state exists? Who can say that they mostly throw impure and forbidden bones and pure and clean ones are rare?

Or if there was such certainty that they practice their indifference and throw all kinds of bones, then it is not that they always adopt only that method which would make it impure and forbidden. And when it is like this and like that, then in every doubt, a mere protected presumptive possibility can never lead to a ruling of impurity and prohibition (see Introduction 8). Rather, as long as no sound reason for doubt or

suspicion is found in any place, there is no need for investigation. In fact, wherever investigation might lead to strife (fitna), or causing pain to the believers, or disrespecting elders, or revealing the secrets of a Muslim, or any other prohibited thing, then one should never follow these thoughts and suspicions (see Introduction 10).

[Annotations] Annotation (Left): This is what we have presented from it, from Al-Khulasa from Al-Asl at the beginning of the tenth introduction. 12 from it. (M) Annotation (Right): This is what we have explained in the beginning of the tenth introduction from the original, through Al-Khulasa and Al-Bahr al-Raiq. 12 from it. (T)

[Footer] 1 Al-Bahr al-Raiq, Book of Purification, published by H.M. Saeed Company Karachi, 1/78. Page 546 of 761

फ़तावा रज़विया - जिल्द चौथी

[शीर्ष बॉक्स - बायां: अरबी, दायां: उर्दू अनुवाद] अरबी: 'अल-बहर' में 'अल-बहर' ने कहा, और 'अल-मुबतग़ा' (बिंदु वाले 'ग़ैन' के साथ) में है: यदि छोटे जलाशय के पास जंगली जानवरों के पैरों के निशान देखे जाते हैं, तो उससे वज़ू नहीं किया जाएगा। यदि कोई जंगली जानवर कुएं के पास से गुज़रा और उसके बारे में प्रबल अनुमान (ग़ालिब गुमान) हो कि उसने उससे पिया है, तो वह अशुद्ध (नापाक) हो जाएगा, अन्यथा नहीं। यह उचित है कि पहले मामले को उस स्थिति पर लागू किया जाए जब उसके मन में प्रबल अनुमान हो कि जंगली जानवरों ने उससे पिया है, दूसरे उप-बिंदु के प्रमाण के आधार पर; अन्यथा, केवल संदेह उसके साथ वज़ू करने से नहीं रोकता है, जैसा कि हमने पहले प्रस्तुत किया है, 'अल-अस्ल' आदि से उद्धृत करते हुए।

उर्दू: ऐसा करने में, 'अल-बहर अल-रैक' के लेखक ने उनसे पहल की और 'बहर' में कहा कि 'अल-मुबतग़ा' में है: यदि थोड़े पानी के पास दरिंदों (जंगली जानवरों) के कदमों के निशान देखें, तो उससे वज़ू न करें। यदि कोई दरिंदा कुएं के पास से गुज़रा, और अगर प्रबल अनुमान (ग़ालिब गुमान) हो कि उसने उससे पिया है, तो वह नापाक हो जाएगा, अन्यथा नहीं। और उचित है कि पहले को इस बात पर आधारित माना जाए कि जब उसे प्रबल अनुमान हो कि दरिंदों ने उससे पिया है क्योंकि इस पर दूसरा उप-बिंदु (दरिंदे का गुज़रना) दलील है वरना महज़ शक उसके साथ वज़ू को मना नहीं करता। इसकी दलील वह है जिसे हमने (बहरुल रैक के लेखक) इससे पहले 'अस्ल' (मब्सूत) से नक़ल किया है आदि (कि उस हौज़ से वज़ू किया जा सकता है जिसमें नजासत गिरने का डर हो लेकिन यक़ीन न हो)। (त)

[नीचे का अनुभाग - उर्दू पाठ] या इतना यक़ीन हुआ कि वे लापरवाह हैं, फिर शक की स्थिति में अनुमानों के अलावा क्या हासिल? इससे कहीं बढ़कर वे लापरवाहियां और विचार हैं जो पहले बताए गए कुछ मुद्दों में सिद्ध हैं (देखें प्रस्तावना 6)। बल्कि जहां अत्यधिक लापरवाही के कारण प्रबल अनुमान (ग़ालिब-ए-ज़न्न) प्राप्त हो जो यक़ीन के साथ न जुड़ा हो, वहां भी विद्वान अशुद्धता (तन्जीस) और निषेध (तहरीम) का आदेश नहीं देते, बल्कि केवल नापसंदगी (कराहत-ए-तन्ज़ीही) कहते हैं (देखें प्रस्तावना 7)। फिर वर्तमान मामले में तो इस स्थिति का अस्तित्व भी विचारणीय है। कौन कह सकता है कि वे अक्सर नापाक और हराम हड्डियां ही डालते होंगे और शुद्ध और पाक हड्डियां बहुत कम होंगी।

या इतना यक़ीन हुआ कि वे अपनी लापरवाही को व्यवहार में लाते हैं और हर तरह की हड्डियाँ डालते ही हैं, फिर भी ऐसा नहीं है कि वे हमेशा केवल वही तरीका अपनाते हैं जो उसे नापाक और हराम कर दे। और जब स्थिति ऐसी और वैसी दोनों हो, तो हर शक में महज़ एक अनुमानित संभावना के आधार पर कभी भी नजासत और हराम होने का हुक्म नहीं दिया जा सकता (देखें प्रस्तावना 8)। बल्कि जब तक किसी स्थान पर संदेह या संशय का कोई ठोस कारण न पाया जाए, जांच-पड़ताल की भी आवश्यकता नहीं है। वास्तव में, जहाँ जांच-पड़ताल से कोई फितना (अशांति), या ईमान वालों को कष्ट, या बुजुर्गों का अनादर, या किसी मुसलमान का पर्दाफाश होना, या कोई अन्य वर्जित चीज़ होने का डर हो, वहां तो इन विचारों और अनुमानों का पालन बिल्कुल न करे (देखें प्रस्तावना 10)।

[टिप्पणियां] टिप्पणी (बायां): यह वही है जो हमने दसवीं प्रस्तावना की शुरुआत में 'अल-अस्ल' से 'ख़ुलासा' के माध्यम से प्रस्तुत किया था। 12 इसमें से। (म) टिप्पणी (दायां): यह वह है जो हमने दसवीं प्रस्तावना के शुरू में असल से ख़ुलासा से 'अल-बहरुल रैक' से बयान किया है। 12 इसमें से। (त)

[फ़ुटर] 1 अल-बहरुल रैक, पवित्रता की पुस्तक, प्रकाशक: एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/78।

[اوپر والا خانہ - بایاں: عربی، دایاں: اردو ترجمہ] عربی: البحر فی البحر حیث قال وفی المبتغی بالغین المعجمۃ وبرؤیۃ اثر اقدام الوحوش عند الماء القلیل لایتوضأ بہ سبع مر بالرکیۃ وغلب علی ظنہ شربہ منھا تنجس والافلا اھ وینبغی ان یحمل الاول علی ما اذا غلب علی ظنہ ان الوحوش شربت منہ بدلیل الفرع الثانی والا فمجرد الشک لایمنع الوضوء بہ بدلیل ما قدمنا عہ نقلہ عن الاصل الخ۔

اردو: کرنے میں بحر الرائق کے مصنف نے ان سے سبقت کرتے ہوئے بحر میں کہا المبتغی میں ہے کہ تھوڑے پانی کے پاس درندوں کے قدموں کے نشانات دیکھے تو اس سے وضو نہ کرے۔ ایک درندہ کنویں کے پاس سے گزرا، اگر غالب گمان ہو کہ اس نے اس سے پیا ہے تو وہ ناپاک ہوجائے گا ورنہ نہیں اھ اور مناسب ہے کہ پہلے کو اس بات پر محمول کیا جائے کہ جب اسے گمان غالب ہو کہ درندوں نے اس سے پیا ہے کیونکہ اس (مفہوم) پر فرع ثانی (درندے کا گزرنا) دلیل ہے ورنہ محض شک اس کے ساتھ وضو کو منع نہیں کرتا اس کی دلیل وہ ہے جسے ہم (صاحب بحرالرائق) نے اس سے پہلے اصل (مبسوط) سے نقل کیا ہے الخ (کہ اس حوض سے وضو کیا جاسکتا ہے جس میں نجاست گرنے کا خوف ہو لیکن یقین نہ ہو)۔ (ت)

[نیچے والا حصہ - اردو عبارت] یا اتنا یقین ہوا کہ وہ بے پرواہ ہیں پھر نفسِ شکر میں سوا ظنون کے کیا حاصل اس سے بدر جہاز زیادہ ہیں وہ بے احتیاطیاں اور خیالات جو بعض مسائل سابقۃ الذکر میں متحقق (دیکھو مقدمہ ۶) بلکہ جہاں بوجہ غلبہ و کثرت وفور و شدت بے احتیاطی غلبہ ظن غیر ملتحق بالیقین حاصل ہو وہاں بھی علما تنجیس و تحریم کا حکم نہیں دیتے صرف کراہت تنزیہی فرماتے ہیں (دیکھو مقدمہ ۷) پھر ما نحن فیہ تو اس حالت کا وجود بھی محلِ نظر کون کہہ سکتا ہے کہ اکثر ناپاک و حرام ہڈیاں ہی ڈالتے ہوں گے اور طیب و طاہر شاذ و نادر۔ یا اتنا یقین ہوا

کہ وہ اپنی بے پرواہی کو وقوع میں لاتے اور ہر طرح کی ہڈیاں ڈالتے ہی ہیں پھر یہ تو نہیں کہ دائماً صرف وہی طریقہ برتتے ہیں جو نجس و حرام کردے اور جب یوں بھی ہے اور یوں بھی تو ہر شکر میں احتمالِ محفوظ ظنی تو ہر گز حکمِ نجاست وحرمت نہیں دے سکتے (دیکھو مقدمہ ۸) بلکہ جب تک کسی جگہ کوئی وجہ وجیہ ریب و شبہ کی نہ پائی جائے تحقیقات کی بھی حاجت نہیں بلکہ جہاں تحقیق پر کوئی فتنہ یا ایذائے اہلِ ایمان یا ترکِ ادبِ بزرگان یا پردہ دری مسلمان یا اور کوئی محذور سمجھے وہاں تو ہر گز ان خیالات وظنون کی پابندی نہ کرے (دیکھو مقدمہ ۱۰)

[حواشی] حاشیہ (بایاں): عہ ھو ما قدمناہ عنہ عن الخلاصۃ عن الاصل اول المقدمۃ العاشرۃ ۱۲ منہ (م) حاشیہ (دایاں): یہ وہ ہے جو ہم نے دسویں مقدمہ کے شروع میں اصل سے خلاصہ سے البحر الرائق سے بیان کیا ہے ۱۲ م نہ (ت)

[فٹر] 1 البحر الرائق کتاب الطھارۃ مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱ / ۷۸ صفحہ 546 از 761

Fatawa Ridawiyya, Volume IV

Yes, undoubtedly, if a person sees with their own eyes that specifically carcasses or forbidden (haram) bones were taken and mixed into sugar in his presence in such a way that they cannot be separated now, or he observes with his own eyes that specifically impure bones were brought and added to it before him while it was still in a liquid state, and that same juice solidified to become sugar; then specifically that sugar, which was made before his eyes in this manner, is forbidden (haram) for him. It is not permissible to eat it, nor to feed it to others, nor to take it, nor to give it. Similarly, concerning a specific batch of sugar where reliable Sharia information (as described in Introduction 5) reaches the level of proof, and a trustworthy narrator says, "I recognize this; it is the specific sugar in which such a process was carried out," then its use would also not be allowed. Except for these cases, there is absolutely no prohibition. And if he saw it himself or heard from a reliable source, but when the sugar came to the market for sale it got mixed and there was no distinction left, then the ruling reverts to permissibility. There is no harm in purchasing and using it unless a Sharia proof is established again regarding any specific batch of sugar (see Introduction 9). This is the ruling of Sharia, and there is no ruling except for Sharia. May Allah Almighty bestow blessings and peace upon its possessor (the Prophet ﷺ). Amen!

Conclusion: May Allah grant us a good end. Amen.

By the grace of Allah Almighty, we have spoken so clearly and plainly on every aspect of this sugar that the ruling of Sharia is no longer hidden in any respect. Now, let the people of Islam see: if any of the forms are present here for which we have given the ruling of prohibition and impurity, then that is the ruling. Otherwise, being bound by mere assumptions and delusions is nothing but harshness and ignorance. There is no 'caution' in declaring something haram and forbidden without investigation; rather, caution lies in accepting permissibility until a clear contrary evidence is found (see Introduction 3). We believe that if the door to such thoughts and imaginations is opened, the circle will become extremely narrow for beginners. Not just Russian sugar, but thousands of things will have to be abandoned: the ghee of milkmen, the oil of oil-pressers, the milk of confectioners, every kind of sweet, the extracts and syrups of non-Muslim perfumers—what a calamity! And what clear, definitive evidence exists regarding their purity without adhering to the original principle (of everything being pure unless proven otherwise)? Expanding this circle would lead to hardship for the Ummah and accusing thousands of Muslims of sin and

transgression, which the pure Sharia—a model of perfection, ease, and tolerance—does not tolerate at all. May Allah Almighty bestow blessings and peace upon its possessor (the Prophet ﷺ).

In Al-Hashiyah al-Shamiyya: "In this (declaring things forbidden based on doubt) is a great hardship, because it necessitates attributing sin to the Ummah. (End of quote)." And in the same source: "This is more compassionate for the people of this time."

---

1 Radd al-Muhtar, Chapter on one who has intercourse with someone brought to him, printed by H.M. Saeed Company, Karachi, 4/26. Page 547 of 761

फ़तावा रज़विया, जिल्द चौथी

हाँ बेशक, जो शख़्स अपनी आँखों से देख ले कि खास मुर्दार या हराम हड्डियाँ ली गईं और उसके सामने शक्कर में इस तरह मिला दी गईं कि अब जुदा नहीं हो सकतीं, या अपनी आँखों से मुआयना करे कि खास तौर पर नापाक हड्डियाँ लाई गईं और उसके सामने जब शक्कर तरल अवस्था में थी उसमें शामिल की गईं और वही रस जम कर शक्कर बना; तो विशेष रूप से वही शक्कर जो उसकी नज़रों के सामने इस तरह बनी, उस पर हराम है। उसका खाना जायज़ नहीं, खिलाना जायज़ नहीं, लेना जायज़ नहीं और देना जायज़ नहीं। इसी तरह जिस खास शक्कर के बारे में मोतबर शरीई ख़बर (जैसा कि मुक़द्दमा 5 में बयान हुआ) सुबूत के दर्जे तक पहुँच जाए और कोई मोतबर शख़्स कहे कि मैं पहचानता हूँ कि यह वही खास शक्कर है जिसमें ऐसा अमल किया गया है, तो उसका इस्तेमाल भी जायज़ न रहेगा। इन सूरतों के अलावा हरगिज़ पाबंदी नहीं। और अगर उसने खुद देखा या किसी मोतबर से सुना, मगर जब बाज़ार में शक्कर बिकने आई तो वह आपस में मिल गई और कोई तमीज़ (फर्क़) न रही, तो फिर जवाज़ (जायज़ होने) का हुक्म होगा और खरीदारी व इस्तेमाल में कोई हरज नहीं जब तक कि किसी खास शक्कर पर फिर से शरीई दलील कायम न हो (देखें मुक़द्दमा 9)। यह शरीयत का हुक्म है और शरीयत के अलावा कोई हुक्म नहीं। अल्लाह तआला इसके साहिब (नबी ﷺ) पर रहमतें और बरकतें नाज़िल फरमाए। आमीन!

खातिमा (निष्कर्ष): अल्लाह हमें अच्छा अंत प्रदान करे। आमीन।

अल्हम्दुलिल्लाह, हमने इस शक्कर के बारे में हर सूरत पर ऐसी साफ़ और स्पष्ट बात की है कि किसी भी पहलू पर शरीयत का हुक्म छिपा नहीं रहा। अब अहल-ए-इस्लाम गौर करें कि अगर यहाँ उन सूरतों में से कोई शकल मौजूद है जिन पर हमने हुरमत (हराम होने) और नजासत (नापाक होने) का हुक्म दिया है, तो वही हुक्म लागू होगा। वरना सिर्फ वहम और गुमानों की पाबंदी करना सख्ती और नासमझी है। बिना तहकीक के किसी चीज़ को हराम और ममनू (वर्जित) कह देने में कोई एहतियात नहीं, बल्कि एहतियात तो उसे जायज़ मानने में ही है जब तक कि इसके खिलाफ कोई स्पष्ट दलील न मिल जाए (देखें मुक़द्दमा 3)। हमारा यकीन है कि अगर इन ख्यालों और कल्पनाओं का दरवाज़ा खोला गया, तो दीन के नए चलने वालों के लिए दायरा बहुत तंग हो जाएगा। फिर सिर्फ रशियन शक्कर ही क्यों, हज़ारों चीज़ें छोड़नी पड़ेंगी: घोषियों (ग्वालों) का घी, तेलियों का तेल, हलवाइयों का दूध, हर किस्म की मिठाई, गैर-मुस्लिम अत्तारों (इत्र बेचने वालों) के अर्क और शरबत—ये सब क्या बला हैं? और इनकी पाकीजगी पर असल सिद्धांत को छोड़े बिना कौन सी साफ़ और कतई दलील

मौजूद है? इस दायरे की तौसीअ (विस्तार) में उम्मत पर तंगी होगी और हज़ारों मुसलमानों को गुनाहगार ठहराना पड़ेगा, जिसे शरीयत-ए-मुतह्हरा, जो कमाल-ए-आसानी और उदारता है, हरगिज़ गंवारा नहीं करती। अल्लाह तआला इसके साहिब (नबी ﷺ) पर रहमतें और बरकतें नाज़िल फरमाए।

हाशिया शामी में है: "इसमें बहुत बड़ा हरज (कठिनाई) है क्योंकि इसमें उम्मत की तरफ गुनाह की निस्बत लाज़िम आती है। (इन्तेहा)" और इसी में है कि: "यह इस दौर के लोगों के लिए ज़्यादा आसान है।"

---

1 रद-उल-मुहतार, मतलब फीमन वतअ मन ज़फत इलैया, मत्तबुआ एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 4/26 पेज 547 / 761

ہاں بے شک جو شخص اپنی آنکھ سے دیکھ لے کہ خاص مردار یا حرام ہڈیاں لی گئیں اور اس کے سامنے شکر میں اس طور پر ملا دی گئیں کہ اب جدا نہیں ہو سکتیں یا بچشم خود معاینہ کرے کہ بالخصوص ناپاک استخواں لائے گئے اور اس کے روبرو اس میں بے حالت جریان شامل ہوئے اور وہی رس منعقد ہو کر شکر بنا تو بالخصوص وہی شکر جو اس کے پیش نظر یوں بنی اس پر حرام جس کا کھانا جائز نہ کھلانا جائز نہ لینا جائز نہ دینا جائز۔ یونہیں جس خاص شکر کی نسبت خبر معتبر شرعی سے جس کا بیان مقدمہ ۵ میں گزرا ایسا برتاؤ درجہ ثبوت کو پہنچے اور معتمد بیان کرنے والا کہے میں پہچانتا ہوں یہ خاص وہی شکر ہے جس میں ایسا عمل کیا گیا تو اس کا استعمال بھی روا نہ رہے گا بغیر ان صورتوں کے ہرگز ممانعت نہیں اور اگر اس نے خود دیکھا یا معتبر سے سنا مگر جب بازار میں شکر بکنے آئی مخلوط ہو گئی اور کچھ تمیز نہ رہی تو پھر حکم جواز سے اور خریداری و استعمال میں مضائقہ نہیں جب تک کسی خاص شکر پر پھر دلیل شرعی قائم نہ ہو (دیکھئے مقدمہ ۹) یہ ہے حکم شرع اور حکم نہیں مگر شرع کے لئے ،صلی اللہ تعالیٰ علی صاحبہ و بارک وسلم آمین!

خاتمہ: رزقنا اللہ حسنہا آمین

بجداللہ تعالیٰ ہم نے اس شکر کے بارے میں ہر صورت پر وہ واضح و بین کلام کیا کہ کسی پہلو پر حکم شرع مخفی نہ رہا اب اہل اسلام نظر کریں اگر یہاں ان صورتوں میں سے کوئی شکل موجود جن پر ہم نے حکم حرمت و نجاست دیا تو وہی حکم ہے ورنہ مجرد ظنون و اوہام کی پابندی محض تشدد و ناواقفیت نہ بے تحقیق کسی شے کو حرام و ممنوع کہہ دینے میں کچھ احتیاط بلکہ احتیاط اباحت ہی ماننے میں ہے جب تک دلیل خلاف واضح نہ ہو (دیکھو مقدمہ ۳) ہم یقین کرتے ہیں کہ

ان خیالات و تصورات کا دروازہ کھولا جائے گا تو مبتدیوں پر دائرہ نہایت تنگ ہو جائے گا ایک روسری کی شکر کیا ہزار ہا چیزیں چھوڑنی پڑیں گی گھوسیوں کا گھی، تیلیوں کا تیل، حلوائیوں کا دودھ، ہر قسم کی مٹھائی، کافر عطاروں کا عرق شربت کیا بلا ہے اور ان کی طہارت پر بے تمسک باصل کو نسا بینہ قاطعہ ملا ہے اس دائرہ کی توسیع میں امت پر تضییق اور ہزاروں مسلمانوں کی تآثیم و تفسیق جسے شرع مطہر کہ کمال یسر و سماحت ہے ہر گز گوارا نہیں فرماتی صلی اللہ تعالیٰ علی صاحبہ و بارک وسلم۔

فی الحاشیۃ الشامیۃ فیہ حرج عظیم لانہ یلزم منہ تاثیم الامۃ ۱ اہ و فیہا ھو ارفق باھل ھذا الزمان حاشیہ شامی میں ہے کہ اس میں بہت بڑا حرج ہے کیونکہ اس میں امت کی طرف گناہ کی نسبت لازم آتی ہے اھ اور اسی میں ہے کہ اس میں موجودہ دور کے لوگوں کے لیے زیادہ نرمی ہے۔

---

۱ ردالمختار مطلب فیمن وطء من زفت الیہ مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲۶/۴ Page 547 of 761

[Table Top Row] [Left Column - Arabic]: So that they do not fall into transgression and disobedience. [End of quote]. And indeed the scholars of every school of thought have said: whenever a matter becomes narrow, it expands. And from the established principles: hardship brings ease. [End of quote]. (T) [Right Column - Urdu]: There is more leniency for the people so that they do not fall into disobedience and sin. The scholars of every religion say that when any matter causes hardship, an expansion occurs in it, and it is from the accepted rules that hardship brings ease. (T)

[Table Second Row] [Left Column - Urdu/Arabic]: Scholars clearly state that our era is not one for avoiding doubts; it is a boon if a person avoids manifest forbidden acts seen with their own eyes. In Fatawa of Imam Qazi Khan, they said: our time is not a time for avoiding doubts; rather, it is upon the Muslim to avoid visible forbidden acts. [End of quote]. And in Tajnis of Imam Burhan al-Din from Abu Bakr Ibrahim: this is not the time for doubts; indeed, the forbidden has enriched us [made us independent of doubts], meaning if you avoid the forbidden, it suffices you. [End of quote - summarized]. And from both of them in Al-Ashbah, something similar. And in Al-Tariqah and its commentary, after citing from the two contemporary Imams (may Allah Almighty have mercy on them), their era, i.e., the era of Qazi Khan and the author of Al-Hidaya (may Allah Almighty have mercy on them), was six hundred years before the Prophet's Hijrah. And the date today has reached, i.e., in the time of the author of this book (may Allah Almighty have mercy on him), nine hundred... [Right Column - Urdu]: Scholars clearly state that our era is not one for avoiding doubts; it is a boon if a person avoids manifest forbidden acts seen with their own eyes. It is in Fatawa Qazi Khan that the jurists say: our time is not a time for avoiding doubts; it is mandatory for a Muslim to avoid forbidden acts seen with eyes. In the 'Tajnis' of Imam Burhan al-Din, it is narrated from Abu Bakr bin Ibrahim that this is not a time of doubts, for indeed the forbidden has made us independent, meaning if you avoid the forbidden, it is sufficient. (Summary). And from both of them in 'Al-Ashbah' it is similar to this. In 'Al-Tariqa al-Muhammadiya' and its commentary, after citing from two contemporary Imams (may Allah have mercy on them), it was said that the era of those two—namely Qazi Khan and the author of 'Al-Hidaya'—is six hundred years ago according to the Hijri year. And today in the time of this author it has become 980 AH, and today (at the time of writing the commentary) it is 1093 AH, and this fact is not hidden that the era of Prophethood...

[Footnotes] 1. Radd al-Muhtar, chapter on clothing, printed by H.M. Saeed Company, Karachi, 6/353. 2. Al-Ashbah wal-Nazair, First Art, Fourth Rule, printed by Idara-tul-Quran, Karachi, 1/117. 3. Al-Ashbah wal-Nazair, First Art, Fourth Rule, printed by Idara-tul-Quran, Karachi, 1/105. 4. Fatawa Qazi Khan, Al-Hazr wal-Ibaha, Nawal Kishore, Lucknow, 3/277. 5. Ghamz Uyun al-Basair with Al-Ashbah, book Al-Hazr wal-Ibaha, printed by H.M. Saeed Company, Karachi, 2/108.

[तालिका पहली पंक्ति] [बायां कॉलम - अरबी]: ताकि वे उल्लंघन और अवज्ञा में न पड़ें। और वास्तव में हर पंथ के विद्वानों ने कहा है: जब भी कोई मामला संकीर्ण होता है, तो वह विस्तृत हो जाता है। और स्वीकृत सिद्धांतों में से है: कठिनाई आसानी लाती है। (त) [दायां कॉलम - उर्दू]: लोगों के लिए अधिक नरमी है ताकि वे अवज्ञा और पाप में न पड़ें। हर धर्म के विद्वान कहते हैं कि जब कोई मामला कठिनाई का कारण बनता है, तो उसमें विस्तार आ जाता है, और यह स्वीकृत नियमों में से है कि कठिनाई सुगमता लाती है। (त)

[तालिका दूसरी पंक्ति] [बायां कॉलम - उर्दू/अरबी]: विद्वान स्पष्ट करते हैं कि हमारा युग संदेहों से बचने का नहीं है; यह गनीमत है कि व्यक्ति अपनी आँखों से देखे जाने वाले हराम (वर्जित) से बचे। इमाम क़ाज़ी खान के फ़तवों में है: हमारा समय संदेहों से बचने का समय नहीं है; बल्कि मुसलमान के लिए अनिवार्य है कि वह प्रत्यक्ष हराम से बचे। और इमाम बुरहानुद्दीन की 'तजनीस' में अबू बकर इब्राहिम से है: यह संदेहों का समय नहीं है; वास्तव में हराम ने हमें (संदेहों से) स्वतंत्र कर दिया है, अर्थात यदि आप हराम से बचें तो वह आपके लिए पर्याप्त है। (सारांश)। और 'अल-अश्बाह' में दोनों से इसी तरह का उल्लेख है। और 'अल-तरीक़ा' और उसकी व्याख्या में, दो समकालीन इमामों (अल्लाह उन पर दया करे) से उद्धरण के बाद, उनका युग यानी क़ाज़ी खान और 'अल-हिदाया' के लेखक का समय नबी की हिजरत से छह सौ साल पहले था। और आज की तारीख, यानी इस किताब के लेखक के समय में नौ सौ... [दायां कॉलम - उर्दू]: विद्वान स्पष्ट रूप से कहते हैं कि हमारा समय संदेहों से बचने का नहीं है; यह गनीमत है कि व्यक्ति आँखों देखे हराम से बचे। फ़तावा क़ाज़ी खान में है कि न्यायविद कहते हैं: हमारा समय संदेहों से बचने का समय नहीं है; मुसलमान पर अनिवार्य है कि वह आँखों देखे हराम से बचे। इमाम बुरहानुद्दीन की 'तजनीस' में अबू बकर बिन इब्राहिम से वर्णित है कि यह संदेहों का समय नहीं है, क्योंकि हराम ने हमें स्वतंत्र कर दिया है, यानी अगर तुम हराम से बचो तो काफी है। (सारांश)। और उन दोनों से 'अल-अश्बाह' में इसी के समान है। 'अल-तरीक़ा अल-मुहम्मदिया' और उसकी व्याख्या में दो समकालीन इमामों से उद्धृत करने के बाद कहा गया कि उन दोनों का समय यानी क़ाज़ी खान और साहिब-ए-हिदाया का समय हिजरी वर्ष के अनुसार छह सौ साल पहले का है। और आज इस लेखक के समय में 980 हिजरी हो गई है, और आज (व्याख्या लिखते समय) 1093 हिजरी है, और यह बात छिपी नहीं है कि नबूवत का युग...

[पाद टिप्पणियाँ] 1. रद अल-मुह्तार, वेशभूषा पर अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी कराची द्वारा प्रकाशित, 6/353। 2. अल-अश्बाह वल-नज़ायर, पहली कला, चौथा नियम, इदारा-तुल-क़ुरआन कराची द्वारा प्रकाशित, 1/117। 3. अल-अश्बाह वल-नज़ायर, पहली कला, चौथा नियम, इदारा-तुल-क़ुरआन कराची द्वारा प्रकाशित, 1/105। 4. फ़तावा क़ाज़ी खान, अल-हज़र वल-इबाहा, नवल किशोर लखनऊ, 3/277। 5. ग़म्ज़ उयून अल-बसायर अल-अश्बाह के साथ, किताब अल-हज़र वल-इबाहा, एच.एम. सईद कंपनी कराची द्वारा प्रकाशित, 2/108।

[جدول کی پہلی سطر] [بایاں کالم - عربی]: لئلا یقعوا في الفسق والعصیان 1 اھ وقد قالت العلماء من کل مذھب کلما ضاق امرا تسع 2 ومن القواعد المسلّمة المشقة تجلب التیسیر 3 ۔ اھ (ت) [دایاں کالم - اردو]: لوگوں کے لئے زیادہ نرمی ہے تاکہ وہ نافرمانی اور گناہ میں نہ پڑیں اھ ہر مذہب کے علماء فرماتے ہیں جب کوئی معاملہ سختی کا باعث ہو تو اس میں وسعت آجاتی ہے اور مسلمہ قواعد سے ہے کہ مشقت آسانی کو لاتی ہے۔ (ت)

[جدول کی دوسری سطر] [بایاں کالم - اردو/عربی]: علماء تصریح فرماتے ہیں ہمارا زمانہ اتقائے شبہات کا نہیں غنیمت ہے کہ آدمی آنکھوں دیکھے حرام سے بچے۔ فی فتاوی الامام قاضی خان قالوا لیس زماننا زمان اجتناب الشبھات وانما علی المسلم ان یتقی الحرام المعاین 4 اھ و فی تجنیس الامام برہان الدین عن ابی بکر ابراھیم لیس ھذا زمان الشبھات ان الحرام اغنانا یعنی ان اجتنبت الحرام کفاك 5 اھ ملخصا وعنھما في الاشباہ نحو ذلک و فی الطریقة وشرحہا بعد النقل علی الامامین المعاصرین رحمھما اللہ تعالیٰ زمانھما ای زمان قاضی خان و صاحب الھدایة رحمھما اللہ تعالیٰ قبل ستمائة سنة من الھجرة النبویة وقد بلغ التاریخ الیوم ای فی زمان المصنف لھذا الکتاب رحمہ اللہ تعالیٰ تسعمائة [دایاں کالم - اردو]: علماء تصریح فرماتے ہیں ہمارا زمانہ اتقائے شبہات کا نہیں غنیمت ہے کہ آدمی آنکھوں دیکھے حرام سے بچے۔ فتاویٰ قاضی خان میں ہے فقہاء فرماتے ہیں ہمارا زمانہ شبہات سے اجتناب کا زمانہ نہیں مسلمان پر لازم ہے کہ آنکھوں دیکھے حرام سے بچے اھ امام برہان الدین کی تجنیس میں ابوبکر بن ابراہیم سے منقول ہے کہ یہ شبہات کا زمانہ نہیں ہے بیشک حرام نے ہمیں مستغنی کردیا یعنی اگر تو حرام سے بچے تو کافی ہے اھ (تلخیص) اور ان دونوں سے الاشباہ میں اسی کی مثل ہے۔ الطریقۃ المحمدیہ اور اس کی شرح میں دو معاصر ائمہ رحمہم اللہ سے

نقل کرنے کے بعد فرمایا ان دونوں یعنی قاضی خان اور صاحبِ ہدایہ کا زمانہ سنِ ہجری کے اعتبار سے چھ سو سال پہلے کا ہے اور آج اس مصنف کے زمانے میں ۹۸۰ھ ہوگئی ہے اور آج (شرح لکھتے وقت) ۱۰۹۳ھ ہے اور یہ بات مخفی نہیں کہ عہد نبوت...

[حواشی] 1 رد المحتار فصل في اللبس مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۳۵۳/۶ 2 الاشباہ والنظائر الفن الاول ، القاعدة الرابعة مطبوعہ ادارة القرآن کراچی ۱۱۷/۱ 3 الاشباہ والنظائر الفن الاول ، القاعدة الرابعة مطبوعہ ادارة القرآن کراچی ۱۰۵/۱ 4 فتاوی قاضی خان الحظر والاباحہ نولکشور لکھنؤ ۲۷۷/۳ 5 غمز عیون البصائر مع الاشباہ کتاب الحظر والاباحہ مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۰۸/۲

Fatawa Razawiyya Volume Four

Arabic / Source Text	Urdu Translation / Explanation
...and eighty years from the Hijra, and the date has reached today one thousand and ninety-three years from the Hijra. It is no secret that corruption and change increase with the passage of time due to its distance from the era of Prophethood[1] (summarized). In al-Alamgiriyya, quoted from Jawahir al-Fatawa on the authority of some of its masters: 'You must abandon purely forbidden matters in this age, for you will not find anything that is free from doubt'[2].	Due to the distance, as time progresses, corruption and change also increase (summarized). In Fatawa Alamgiri, quoting Jawahir al-Fatawa, it is mentioned from some spiritual masters: 'In this age, it is obligatory for you to avoid what is purely forbidden, because today you will not find anything in which there is no doubt.' (T)

Glory be to Allah! When the Imams of the religion have been saying such things since the sixth century, or even before, what hope is there for us remnants in this fourteenth century? 'To Allah we belong and to Him we shall return.' For such reasons, it is mentioned in the Hadith:

Arabic / Source Text	Urdu Translation / Explanation
"Verily, you are in a time when whoever among you abandons even a tenth of what he has been commanded will perish. Then there will come a time when whoever among you acts upon even a tenth of what he has been commanded will find salvation."[3] Reported by al-Tirmidhi and others from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him) from the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him).	"You (O Companions) are in an era where if anyone among you abandons even a tenth of what he has been commanded, he will perish. Then an era will come when whoever among you acts upon even a tenth of what he has been commanded will find salvation." Tirmidhi and others narrated from Abu Huraira (may Allah be pleased with him), who narrated from the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him). (T)

Yes, the person who by command...

Arabic / Source Text	Urdu Translation / Explanation
His saying (may Allah's peace and blessings be upon him): "How [can it be]? and it has been said." Reported[4]	The saying of the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) which Imam Bukhari and others narrated from

Arabic / Source Text	Urdu Translation / Explanation
by Bukhari and others from Uqbah bin al-Harith al-Nawfali. And his saying (may Allah's peace and blessings be upon him)...	Uqbah bin Harith Nawfali: "How can this be (that you have intercourse with her) while it has been said (that you are her brother?)"

[1] Al-Hadiqa al-Nadiyya, Second Chapter of the Three Chapters, Nuriyya Razawiyya Press, Faisalabad, 2/201. [2] Fatawa Hindiyya, Book of Disliked Acts, Chapter 25 on Sales, etc., Noorani Kutub Khana, 5/364. [3] Jami' al-Tirmidhi, Chapters of Trials, printed by Amin Company Kutub Khana Rashidiya, Delhi, 2/51. [4] Sahih al-Bukhari, Chapter on Traveling for a Revealed Matter, printed by Qadeemi Kutub Khana, Karachi, 1/19.

फ़तावा रज़विया जिल्द चार

अरबी / मूल पाठ

...और हिजरत से अस्सी साल, और आज तारीख हिजरत से एक हज़ार तिरानवे साल तक पहुँच गई है। यह छुपा नहीं है कि नुबुव्वत के दौर से दूरी की वजह से वक़्त गुज़रने के साथ फ़साद और बदलाव में इज़ाफ़ा होता जाता है[1] (संक्षिप्त)। और अल-आलमगीरिया में, जवाहर अल-फ़तावा के हवाले से बाज़ मशाइख़ से नक़ल किया गया है: 'तुम्हें इस ज़माने में महज़ हराम चीज़ों को छोड़ने का पाबंद होना चाहिए, क्योंकि तुम्हें ऐसी कोई चीज़ नहीं मिलेगी जिसमें कोई शुब्हा न हो'[2]।

उर्दू अनुवाद / व्याख्या

दूरी की वजह से जैसे-जैसे ज़माना बढ़ता जाता है फ़साद और बदलाव में भी इज़ाफ़ा होता जाता है (संक्षिप्त)। फ़तावा आलमगीरी में जवाहरुल फ़तावा के हवाले से बाज़ मशाइख़ से नक़ल किया गया है कि इस ज़माने में तुम पर महज़ हराम का छोड़ना वाजिब है क्योंकि आज तुम कोई ऐसी चीज़ नहीं पाओगे जिस में शुब्हा न हो। (त)

सुब्हान अल्लाह! जब आइम्मा-ए-दीन छठी सदी बल्कि उससे पहले से यूँ इरशाद फ़रमाते आए तो हम पसमांदों को इस चौदहवीं सदी में क्या उम्मीद है। फ़ा इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। ऐसी ही वुजूह हैं कि हदीस में आया:

अरबी / मूल पाठ

"बेशक, तुम एक ऐसे ज़माने में हो कि तुम में से जो कोई भी जो उसे हुक्म दिया गया है उसका दसवाँ हिस्सा छोड़ देगा वह हलाक हो जाएगा। फिर एक ज़माना आएगा कि तुम में से जो आदमी उसे दिए गए हुक्म के दसवें हिस्से पर भी अमल करेगा वह नजात पाएगा।"[3] इसे तिर्मिज़ी और अन्य ने अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से और उन्होंने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत किया है।

उर्दू अनुवाद / व्याख्या

"तुम (ऐ सहाबा किराम) उस ज़माने में हो कि तुम में से जो शख़्स उस चीज़ का दसवाँ हिस्सा भी छोड़ दे जिस का उसे हुक्म दिया गया है तो हलाक हो जाएगा फिर एक ज़माना आएगा कि तुम में से जो आदमी उस चीज़ के दसवें हिस्से पर भी अमल करेगा जिस का उसे हुक्म दिया गया है तो वह नजात पाएगा। तिर्मिज़ी वग़ैरा ने अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से, उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से रिवायत किया। (त)"

हाँ जो शख़्स हुक्म से...

अरबी / मूल पाठ	उर्दू अनुवाद / व्याख्या
रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का इरशाद: "कैसे? जबकि कहा गया है।" जिसे इमाम बुख़ारी[4] और अन्य ने उक़बा बिन अल-हारिस अल-नौफ़ली से रिवायत किया है। और आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का इरशाद...	रसूल अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का इरशाद जिसे इमाम बुख़ारी वग़ैरा ने उकबा बिन हारिस नौफ़ली से रिवायत किया कि यह कैसे हो सकता है (कि तू उस से मुबाशरत करे) जबकि कहा गया है (तू उस का भाई है)

[1] अल-हदीक़ा अन-नदिय्या, अल-फ़सुल अस-सानी मिन अल-फ़सुल अस-सलासा, मतबा नूरिया रज़विया फ़ैसलाबाद, 2/201। [2] फ़तावा हिंदिया, किताबुल कराहिया, बाब नंबर 25 फ़िल-बैअ वग़ैरा, नूरानी कुतुब ख़ाना, 5/364। [3] जामि' अत-तिर्मिज़ी, अबवाबुल फ़ितन, मतबूआ अमीन कंपनी कुतुब ख़ाना रशीदिया दिल्ली, 2/51। [4] सहीह अल-बुख़ारी, बाब अर-रिहला फ़िल मसअला अन-नाज़िला, मतबूआ क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 1/19।

فتاوی رضویہ جلد چہارم

عربی متن	اردو ترجمہ / تشریح
وثمانين سنة من الهجرة وبلغ التاريخ اليوم الى الف وثلث وتسعين سنة من الهجرة ولاخفاء ان الفساد والتغير يزيدان بزيادة الزمان لبعده عن عهد اه ملخصاً۔ فتاوٰی عالمگیری میں بحوالہ جواہر النبوۃ $1^$ اہ ملخصاً وفي العلمكيرية عن جواهر الفتاوى عن بعض مشايخه عليك بترك الحرام المحض فی هذا الزمان فانك لا تجد شيئاً لا شبهة فيه $2^$ اهـ	سے دُوری کی وجہ سے جوں جوں زمانہ بڑھتا جاتا ہے فساد و تغیر میں بھی اضافہ ہوتا جاتا ہے الفتاوٰی بعض مشائخ سے نقل کیا گیا ہے کہ اس زمانے میں تم پر محض حرام کا چھوڑنا واجب ہے کیونکہ آج تم کوئی ایسی چیز نہیں پاؤ گے جس میں شبہ نہ ہو۔ (ت)

سبحن اللہ جبکہ چھٹی صدی بلکہ اُس سے پہلے سے ائمہ دین یوں ارشاد فرماتے آئے تو ہم پسماندوں کو اس چودھویں صدی میں کیا اُمید ہے فانا للہ وانا الیہ راجعون ایسی ہی وجوہ ہیں کہ حدیث میں آیا :

عربی متن	اردو ترجمہ / تشریح
انكم في زمان من ترك منكم عشر ما امر به هلك ثم يأتی زمان من عمل منهم بعشر ما امر به نجا $3^$ اخرجه الترمذی وغيره عن ابی هريرة رضی الله تعالی	تم (اے صحابہ کرام) اس زمانے میں ہو کہ تم میں سے جو شخص اس چیز کا دسواں حصہ بھی چھوڑ دے جس کا اسے حکم دیا گیا ہے تو ہلاک ہو گا پھر ایک زمانہ آئے گا کہ تم میں سے جو آدمی اس چیز کے دسویں حصے پر بھی عمل کرے گا جس کا اسے حکم دیا گیا ہے تو وہ نجات پائے گا۔ ترمذی وغیرہ

عربی متن	اردو ترجمہ / تشریح
عنه عن النبی صلی الله تعالی علیه نے ابوہریرہ رضی الله تعالیٰ عنہ سے، انہوں نے نبی کریم صلی وسلم۔	الله تعالیٰ علیہ وسلم سے روایت کیا۔ (ت)

ہاں جو شخص بحکم

عربی متن	اردو ترجمہ / تشریح
قوله صلی الله تعالی علیه وسلم کیف وقد قیل اخرجه $4^$ خ وغیره عن عقبة بن الحارث النوفلی۔ وقوله صلی الله تعالی علیه وسلم	رسول اکرم صلی الله تعالیٰ علیہ وسلم کا ارشاد جسے امام بخاری وغیرہ نے عقبہ بن حارث نوفلی سے روایت کیا کہ یہ کیسے ہو سکتا ہے (کہ تو اس سے مباشرت کرے) جبکہ کہا گیا ہے (تو اس کا بھائی ہے)

$1^$ الحدیقة الندیة الفصل الثانی من الفصول الثلاثة مطبع نوریہ رضویہ فیصل آباد ۲/۲۰۱ $2^$ فتاویٰ ہندیة کتاب الکراہیة باب نمبر ۲۵ فی البیع الخ نورانی کتب خانہ ۵/۳۶۴ $3^$ جامع الترمذی ابواب الفتن، مطبوعہ امین کمپنی کتب خانہ رشیدیہ دہلی ۵۱/۲ $4^$ صحیح البخاری باب الرحلة فی المسئلة النازلة مطبوعہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱۹/۱

Fatawa Razawiyya Volume 4 “Whoever guards against dubious matters, he has protected his religion and his honor.” And the Noble Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) said: "The person who avoids doubts has saved his religion and honor." This hadith has been narrated by the authors of the Sahah Sittah from Hazrat Nu'man bin Bashir (may Allah be pleased with them). (T) One should abstain, and keeping in mind the matters we mentioned in the tenth introduction is better, superior, and an extremely commendable act. However, the ruling of his piety (wara') applies only to himself, not that he starts calling the original thing prohibited because of it, or begins criticizing and objecting to the Muslims who use it, or considers them inferior to himself. In such a case, abandoning this piety would have been a thousand times better, as he would at least have remained safe from slander against Shariah and from reviling and belittling Muslims. And Allah, Blessed and Exalted be He, said: “And do not say about what your tongues falsely describe, 'This is lawful and this is prohibited,' to invent lies against Allah. Indeed, those who invent lies against Allah will not succeed.” And He, Whose glory is exalted, said: “And do not insult one another.” i.e., let not some of you mock others. And 'al-lamz' refers to taunting with the tongue. And Abu Dawood and Ibn Majah narrated from Abu Huraira (may Allah be pleased with him) from the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him): “The property, honor, and blood of every Muslim are sacred to another Muslim. It is enough of an evil for a man to look down upon his fellow Muslim brother.” (T)

Footnotes: 1. Sahih al-Bukhari, Chapter on the Virtue of Protecting One's Religion, published by Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/13 2. Al-Qur'an 16/116 3. Al-Qur'an 49/11 4. New Annotations from reliable commentaries for solving Al-Jalalayn with Al-Jalalayn, published by Asah-ul-Matabi, Delhi, 2/228 5. Sunan Ibn Majah, Chapter on the Sanctity of the Blood and Wealth of a Believer, published by H.M. Saeed Company, Karachi, p. 290 Page 550 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द 4 "जिसने संदेहास्पद चीजों से परहेज किया, उसने अपने धर्म और अपने सम्मान की रक्षा की।" और नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "जिस व्यक्ति ने संदेहों से परहेज किया, उसने अपना दीन और अपनी इज़्ज़त बचा ली।" इस हदीस को सहाह सित्ता के लेखकों ने हज़रत नुमान bin बशीर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत किया है। (त) परहेज करना चाहिए और उन मामलों का ध्यान रखना चाहिए जिनका हमने दसवें प्रस्तावना में उल्लेख किया है, यह बेहतर, श्रेष्ठ और अत्यंत सराहनीय कार्य है। लेकिन उसके इस तकवे (परहेजगारी) का हुक्म केवल उसी की ज़ात पर है, न कि वह उसके कारण मूल चीज़ को मना कहने लगे या जो मुसलमान उसका उपयोग करते हों उन पर ताना और आपत्ति करे और उन्हें अपनी नज़र में तुच्छ समझे। इससे तो इस तकवे को छोड़ देना हज़ार गुना बेहतर था, ताकि वह शरीयत पर झूठा आरोप लगाने और मुसलमानों की बुराई और अपमान से सुरक्षित रहता। और अल्लाह तबारक व तआला ने फरमाया: "और अपनी ज़बानों के बोले हुए झूठ के कारण यह न कहो कि यह हलाल है और यह हराम है, ताकि अल्लाह पर झूठ बांधो। बेशक जो लोग अल्लाह पर झूठ बांधते हैं वे कभी सफल नहीं होंगे।" और उसने, जिसकी महिमा बुलंद है, फरमाया: "और अपनों पर ताना न मारो।" यानी एक दूसरे पर ताना न मारो। ज़बान से ताना मारने को "अल-लमज़" कहते हैं। अबू दाऊद और इब्न माजा ने हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) की रिवायत से, नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से नक़ल किया कि आप ने फरमाया: "एक मुसलमान का माल, इज़्ज़त और जान दूसरे मुसलमान पर हराम है। किसी व्यक्ति के बुरा होने के लिए इतना ही काफी है कि वह अपने मुसलमान भाई को तुच्छ समझे।" (त)

पाद-टिप्पणियाँ: 1. सहीह अल-बुखारी, दीन की रक्षा करने की फज़ीलत का अध्याय, प्रकाशित कदीमी कुतुब खाना, कराची, 1/13 2. अल-कुरान 16/116 3. अल-कुरान 49/11 4. अल-जलालैन को हल करने के लिए विश्वसनीय तफसीरों से नई टिप्पणियाँ जलालैन के साथ, प्रकाशित असह-उल-मताबे, दिल्ली, 2/228 5. सुनन इब्न माजा, मोमिन के खून और माल की हुरमत का अध्याय, प्रकाशित एच.एम. सईद कंपनी, कराची, पृ. 290 पेज 550 का 761

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم مَنِ اتَّقَی الشُّبُہَاتِ فَقَدِ اسْتَبْرَأَ لِدِینِہٖ وَعِرْضِہٖ اور نبی اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا: "جو شخص شبہات سے بچا اس نے اپنا دین اور عزت بچالی"۔ اس حدیث کو اصحاب صحاح ستہ نے حضرت نعمان بن بشیر رضی اللہ عنہم سے روایت کیا ہے (ت) بچنا چاہیے اور ان امور کا کہ ہم مقدمہ دہم میں ذکر کر آئے لحاظ رکھے بہتر وافضل اور نہایت محمود عمل مگر اس کے ورع کا حکم صرف اسی کے نفس پر ہے نہ کہ اس کے سبب اصل شے کو ممنوع کہنے لگے یا جو مسلمان اُسے استعمال کرتے ہوں ان پر طعن و اعتراض کرے انہیں اپنی نظیر میں حقیر سمجھے اس سے تو اس ورع کا ترک ہزار درجہ بہتر تھا کہ شرح پر افترا اور مسلمانوں کی تشنیع و تحقیر سے تو محفوظ رہتا۔ وقال اللہ تبارک وتعالٰی لَا تَقُولُوا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُکُمُ الْکَذِبَ ھٰذَا حَلٰلٌ وَ ھٰذَا حَرَامٌ لِتَفْتَرُوْا عَلَی اللہِ الْکَذِبَ اِنَّ الَّذِیْنَ یَفْتَرُوْنَ عَلَی اللہِ الْکَذِبَ لَا یُفْلِحُوْنَ ۲ وقال جل مجدہ وَلَا تَلْمِزُوا اَنْفُسَکُمْ ۳ ای لایعب بعضکم بعضاً واللمز ھو الطعن باللسان ۴ و لابی داؤد و ابن ماجۃ عن ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ عن النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کل المسلم علی المسلم حرام مالہ وعرضہ ودمہ حسب امریء من الشران یحتقر اخاہ المسلم ۵ ۔ اور اللہ تعالٰی نے فرمایا: "اور نہ کہو اسے جو تمہاری زبانیں جھوٹ بیان کرتی ہیں یہ حلال ہے اور یہ حرام کہ اللہ پر جھوٹ باندھو، بیشک جو اللہ تعالٰی پر جھوٹ باندھتے ہیں ان کا بھلا نہ ہوگا" اور اللہ بزرگ و برتر نے فرمایا: اپنے آپ پر طعن نہ کرو۔ یعنی ایک دوسرے پر طعن نہ کرو۔ زبان سے طعنہ زنی کو "اللمز" کہتے ہیں۔ ابوداؤد اور ابن ماجہ نے بروایت حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ، نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم سے نقل کیا آپ نے فرمایا: "مسلمان کا مال، عزت اور جان دوسرے مسلمان پر حرام ہے۔ کسی انسان کے بُرا ہونے کے لئے یہی کافی ہے کہ وہ اپنے مسلمان بھائی کو حقیر جانے۔ (ت)

حاشیہ: ۱ صحیح البخاری باب فضل من استبرء الدین مطبوعہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۱۳ ۲ القرآن ۱۱۶/۱۶ ۳ القرآن ۱۱/۴۹ ۴ تعلیقات جدیدة من التفاسیر المعتبرة لحل الجلالین مع الجلالین مطبوعہ اصح المطابع دہلی ۲۲۸/۲ ۵ سُنن ابن ماجہ باب حرمت دم المؤمن و مالہ مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۲۹۰ Page 550 of 761

Fatawa Ridawiyya, Volume 4 It is strange that someone aims for piety yet falls into absolute prohibitions; this is purely a result of extremism and over-complication. Verily, the true religion and Sunnah are the straight path. Just as deficiency (tafreet) makes a person negligent, excess (ifraat) causes one to fall into these types of calamities. "He has not made therein any crookedness" (He did not place any deviation in it at all). Both (extremes) are blameworthy. Why complain about the poor common folk, when today many ignorant people attributed to knowledge and perfection follow this same path? They write so much to warn and repel people from things they consider forbidden in their own view—be they disliked acts (makroohat), permissible acts (mubahat), or even recommended acts (mustahabbat)—that they do not even hesitate to declare them acts of polytheism (shirk) and disbelief (kufr). It's not as if it's a slip of the pen in one or two places that they would correct in ten other places. No, they reinforce it in various ways, bringing forward convoluted arguments. Then, when taken to task, they make excuses according to the proverb 'the excuse for a sin is worse than the sin itself,' saying that their intention was extremism for the purpose of scaring and deterring. Glory be to Allah! What a wonderful 'extremism' it is that they themselves commit sins worse than those they decry. Do they not know how severe and grave it is to call a Muslim a disbeliever (kafir) or polytheist (mushrik) without reason, and especially to make it an article of faith (aqeedah) through persistence? What a heinous and disastrous innovation (bid'ah) this harshness is in the easy, kind, generous, and pure Hanifi religion! There is no power or might except with Allah, the Mighty, the Wise. The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Make things easy and do not make them difficult, and give good tidings and do not repel (people)."

Arabic Original

Ahmad, al-Bukhari, Muslim, and al-Nasa'i from Anas (may Allah be pleased with him) narrated marfu'an: "Make things easy and do not make them difficult, and give glad tidings and do not repel (people)." [1] - And in Muslim and Abu Dawud from Abu Musa al-Ash'ari (may Allah be pleased with him): Whenever the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon

Urdu Translation

Imam Ahmad, Bukhari, Muslim, and Nasa'i (may Allah have mercy on them) relate from Hazrat Anas (may Allah be pleased with him) that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Create ease, do not create hardship; give glad tidings, do not create hatred." Imam Muslim and Abu Dawood (may Allah have mercy on them) relate from Hazrat Abu Musa al-Ash'ari (may Allah be pleased with him) that whenever

Arabic Original	Urdu Translation
him) would send one of his companions for some matter, he would say: "Give glad tidings and do not repel, and make things easy and do not make them difficult." [2]	the Master of both worlds (peace and blessings be upon him) sent any companion for some task, he would say: "Give glad tidings, do not make them repelled; create ease, do not put them in difficulty." (T)

And he (peace and blessings of Allah be upon him) said: "You have been sent to make things easy, not to make things difficult."

| Ahmad and the Six [books] except Muslim from Abu Hurairah | Imam Ahmad and the authors of the Sahih Sittah except for Imam Muslim |

---

1 Sahih al-Bukhari, Chapter: How the Prophet (peace be upon him) used to take care of them with admonition etc., published by Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/16 2 al-Sahih li Muslim, Chapter: Appointment of the Imam for the Commanders etc., published by Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/82

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4 यह आश्चर्यजनक है कि कोई पवित्रता का लक्ष्य रखे और स्पष्ट रूप से हराम कार्यों में पड़ जाए; यह केवल कट्टरता और गहराई में जाने का परिणाम है। वास्तव में, सच्चा धर्म और सुन्नत सीधा रास्ता है। जिस तरह कमी (तफ़रीत) से आदमी लापरवाह हो जाता है, उसी तरह अधिकता (इफ़रात) से वह इस प्रकार की आपदाओं में घिर जाता है। "उसने इसमें कोई टेढ़ापन नहीं रखा" (उसने इसमें बिल्कुल भी विचलन नहीं रखा)। दोनों (चरम) निंदनीय हैं। आम लोगों की क्या शिकायत करें, आज बहुत से अज्ञानी जो स्वयं को ज्ञान और पूर्णता से जोड़ते हैं, इसी मार्ग पर चलते हैं। वे उन चीजों से लोगों को डराने और दूर करने के लिए इतना कुछ लिख देते हैं जिन्हें वे अपनी समझ में वर्जित मानते हैं—चाहे वे नापसंद (मकरूहात), जायज (मुबाहात) या यहाँ तक कि अनुशंसित (मुस्तहब्बात) कार्य हों—कि वे उन्हें शिर्क और कुफ्र घोषित करने में भी संकोच नहीं करते। ऐसा नहीं है कि यह शायद एक या दो जगह कलम से निकल जाए जिसे वे दस अन्य स्थानों पर सुधार लें। नहीं, बल्कि वे इसे विभिन्न तरीकों से पुख्ता करते हैं, उल्टी-सीधी दलीलें लाते हैं। फिर जब उनसे पूछताछ की जाए, तो वे 'पाप का बहाना पाप से भी बुरा है' की तर्ज पर बहाना करते हैं कि डराने और धमकाने की दृष्टि से कट्टरता ही उनका उद्देश्य है। सुभान अल्लाह! क्या ही 'कट्टरता' है कि वे स्वयं उन पापों से भी बुरे पाप कर बैठते हैं जिन्हें वे रोक रहे थे। क्या वे नहीं जानते कि एक मुसलमान को बिना वजह काफिर और मुशरिक कहना, और विशेष रूप से हठपूर्वक इसे अपना अकीदा (विश्वास) बना लेना कितना गंभीर और बड़ा मामला है? इस सरल, दयालु, उदार और शुद्ध हनीफ धर्म में यह कठोरता कितनी घिनौनी और विनाशकारी नवाचार (बिदअत) है! अल्लाह के सिवा कोई शक्ति और सामर्थ्य नहीं है, जो अत्यंत शक्तिशाली और बुद्धिमान है। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फरमाते हैं: "आसानी करो और कठिनाई में न डालो, और खुशखबरी दे और नफरत न फैलाओ।"

अरबी मूल	**उर्दू अनुवाद**
अहमद, बुखारी, मुस्लिम और नसाई ने अनस (रजि.) से रिवायत किया है: "आसानी करो और तंगी न करो, खुशखबरी दो और नफरत न फैलाओ।" [1] - और मुस्लिम और अबू दाऊद में अबू मूसा अल-अशअरी (रजि.) से रिवायत है: जब अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु	इमाम अहमद, बुखारी, मुस्लिम और नसाई (रह.) हज़रत अनस (रजि.) से मरफ़ूअन् रिवायत करते हैं कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया: "आसानी पैदा करो, तंगी न करो, खुशखबरी दो, नफरत पैदा न करो।" इमाम मुस्लिम और अबू दाऊद (रह.) हज़रत अबू मूसा अशअरी

अरबी मूल	उर्दू अनुवाद
अलैहि व सल्लम) अपने साथियों में से किसी को किसी काम के लिए भेजते, तो फरमाते: "खुशखबरी दो और नफरत न फैलाओ, और आसानी करो और तंगी न करो।" [2]	(रजि.) से रिवायत करते हैं कि सरकार-ए-दो आलम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जब किसी सहाबी को किसी काम के लिए भेजते तो फरमाते: "खुशखबरी दो, नफरत न फैलाओ, आसानी पैदा करो, तंगी में न डालो।" (त)

और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फरमाते हैं: "तुम्हें आसानी पैदा करने वाला बनाकर भेजा गया है, कठिनाई में डालने वाला नहीं।"

| अबू हुरैरा से अहमद और इमाम मुस्लिम के अलावा सिहाह सित्ता | इमाम अहमद और इमाम मुस्लिम को छोड़कर सिहाह सित्ता (छह प्रामाणिक पुस्तकें) के लेखक |

---

1 सहीह अल-बुखारी, अध्याय: नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कैसे उन्हें उपदेश आदि से संभालते थे, प्रकाशित: कदीमी कुतुब खाना कराची, 1/16 2 अल-सहीह ली मुस्लिम, अध्याय: सेनापतियों आदि के लिए इमाम की नियुक्ति, प्रकाशित: कदीमी कुतुब खाना कराची, 2/82

فتاوی رضویہ، جلد چھارم عجب اس سے کہ ورع کا قصد کرے اور محرمات قطعیہ میں پڑے یہ صرف تشدد و تعمق کا نتیجہ ہے اور واقعی دین وسنت صراط مستقیم ہیں ان میں جس طرح تفریط سے آدمی مداہن ہو جاتا ہے یونہی افراط سے اس قسم کے آفات میں ابتلا پاتا ہے لم یجعل لہ عوجا (اس میں اصلاً کجی نہ رکھی ت) دونوں مذموم۔ بھلا عوام بیچاروں کی کیا شکایت آج کل بہت جہال منتسب بنام علم و کمال یہی روش چلتے ہیں مکروہات کہ مباحات بلکہ مستحبات جنہیں بزعم خود ممنوع سمجھ لیں ان سے تحذیر و تنفیر کو کیا کچھ نہیں لکھ دیتے حتی کہ نوبت تابہ اطلاق شرک وکفر پہنچانے میں باک نہیں رکھتے۔ پھر یہ نہیں کہ شاید ایک آدھ جگہ قلم سے نکل جائے تو دس جگہ اس کا تدارک عمل میں آئے۔ نہیں نہیں بلکہ اسے طرح طرح سے جمائیں، الٹی سیدھی دلیلیں لائیں۔ پھر جب مؤاخذہ کیجئے تو ہوا خواہ بفحوائے عذر گناہ بدتر از گناہ تاویل کریں کہ بنظر تخویف و ترہیب تشدد مقصود ہے۔ سبحن اللہ اچھا تشدد ہے کہ ان سے زیادہ بدتر گناہوں کا خود ارتکاب کر بیٹھے کیا نہیں جانتے کہ مسلمان کو کافر و مشرک بتانا بلا لکہ براہ اصرار اسے عقیدہ ٹھہرانا کتنا شدید و عظیم اور دین حنیف سہل لطیف سمح نظیف میں یہ سخت گیری کیسی بدعت شنیع و وخیم ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العزیز الحکیم نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

"آسانی کرو اور دقت میں نہ ڈالو اور خوشخبری دو اور نفرت نہ دلاؤ"

| احمد والبخاري ومسلم والنسائي عن انس رضی اللہ تعالی عنہ مرفوعًا یسروا ولا تعسروا وبشروا ولا تنفروا 1 - ولمسلم وابی داؤد عن ابی موسی الاشعری رضی اللہ تعالی عنہ کان صلی اللہ تعالی علیہ وسلم اذا بعث احدًا من اصحابہ في بعض امرہ قال بشروا ولا تنفروا ویسروا ولا تعسروا 2 - |

امام احمد، بخاری، مسلم اور نسائی رحمہم اللہ حضرت انس رضی اللہ عنہ سے مرفوعاً روایت کرتے ہیں نبی اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: آسانی پیدا کرو، تنگی نہ کرو، خوشخبری

دو، نفرت پیدا نہ کرو۔ امام مسلم اور ابوداؤد رحمہما اللہ حضرت ابو موسیٰ اشعری رضی اللہ عنہ سے روایت کرتے ہیں کہ سرکارِ دو عالم صلی اللہ علیہ وسلم جب کسی صحابی کو کسی کام کے لئے بھیجتے تو فرماتے خوشخبری دو، متنفر نہ کرو، آسانی پیدا کرو، تنگی میں نہ ڈالو (ت) |

اور فرماتے ہیں صلی اللہ علیہ وسلم تم آسانی کرنے والے بھیجے گئے ہو، نہ دشواری میں ڈالنے والے۔

| احمد والستة ما خلا مسلما عن ابي هريرة | امام احمد اور اصحابِ صحاح ستہ ماسوائے امام مسلم کے |

---

1 صحیح البخاری باب ماکان النبی صلی اللہ علیہ وسلم یتخولہم بالموعظہ الخ مطبوعہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۱۶ 2 الصحیح لمسلم باب تا میر الامام الامراء الخ مطبوعہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۸۲/۲

Fatawa Razawiyya, Volume 4

[Arabic]: It is narrated from [Abu Hurairah] (may Allah be pleased with him) that the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) said: "You have been sent to make things easy, and you have not been sent to make things difficult." (1). [Urdu]: (May Allah have mercy on them) It is narrated from Hazrat Abu Huraira (may Allah be pleased with him) that the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) said: "You have been sent to create ease; you have not been sent to create difficulty." (T)

And he (may Allah's peace and blessings be upon him) says: "Perished are those who are extremist and harsh."

[Arabic]: Ahmad, Muslim, and Abu Dawud related from Ibn Mas'ud (may Allah be pleased with him) that the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) said: "Perished are the excessive [in speech or action]." (2). [Urdu]: Imam Ahmad, Muslim, and Abu Dawud (may Allah have mercy on them) relate from Hazrat Abdullah bin Mas'ud (may Allah be pleased with him) that the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) said: "Those who adopt harshness in speech have perished." (T)

And it is narrated that he (may Allah's peace and blessings be upon him) said: "I have been sent with a lenient Shariah that turns away from all falsehood; whoever goes against my way is not from my group."

[Arabic]: Al-Khatib narrated in [his] Tarikh from Jabir (may Allah be pleased with him) that the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) said: "I have been sent with the easy and pure Monotheism (Al-Hanifiyyah al-Samhah), and whoever opposes my Sunnah is not from me." Besides these, there are other hadiths whose mention would be lengthy; what we have mentioned is sufficient. We ask Allah the Almighty for forgiveness and well-being. Amen. [Urdu]: Khatib al-Baghdadi narrated in his 'Tarikh' from Hazrat Jabir (may Allah be pleased with him) that the Master of both worlds (may Allah's peace and blessings be upon him) said: "I have been sent with the easy Shariah that is distinct from every falsehood, and whoever opposed my Sunnah is not from me." Apart from these, there are other hadiths whose mention would cause lengthiness; what we have mentioned is sufficient and complete. We ask Allah the Almighty for forgiveness and well-being. (T)

This humble person (may Allah forgive him) has neither seen this form of 'tashakkur' (thanksgiving/ceremony) till today, nor ever ordered it to be brought here, nor intends to order it in the future. However, despite this, I do not consider it forbidden at all, nor do I consider those Muslims who use it to be sinners or reckless, nor [does it lack] piety and...

---

1. Sahih al-Bukhari, Chapter: Pouring water over urine in the mosque, published by Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/35.
2. Sunan Abi Dawud, Chapter on adherence to the Sunnah, published by Aftab-e-Alam Press, Lahore, 2/79.
3. Tarikh Baghdad, Hadith No. 3678, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 7/209.

फतावा रज़विया, जिल्द चौथी

[अरबी]: (हज़रत अबू हुरैरा) रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "तुम्हें आसानी पैदा करने वाला बनाकर भेजा गया है और तुम्हें कठिनाई पैदा करने वाला बनाकर नहीं भेजा गया।" (1). [उर्दू]: (अल्लाह उन पर रहम करे) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "तुम्हें आसानी पैदा करने वाला बनाकर भेजा गया है, तंगी में डालने वाला बनाकर नहीं भेजा गया।" (त)

और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: "हलाक हुए गुलू और शिद्दत (अतिवाद) वाले।"

[अरबी]: अहमद, मुस्लिम और अबू दाऊद हज़रत इब्ने मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "हलाक हुए वे लोग जो अत्यधिक गहराई (कठोरता) में जाने वाले हैं।" (2). [उर्दू]: इमाम अहमद, मुस्लिम और अबू दाऊद (अल्लाह उन पर रहम करे) हज़रत अब्दुल्ला बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "गुफ़्तगू में शिद्दत (कठोरता) इख़्तियार करने वाले हलाक हुए।" (त)

और वारिद हुआ है कि आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: "मैं एक ऐसी नर्म शरीअत लेकर भेजा गया हूँ जो हर बातिल से किनारा करने वाली है; जो मेरे तरीक़े के ख़िलाफ़ करे वह मेरे गिरोह से नहीं।"

[अरबी]: ख़तीब बग़दादी ने अपनी 'तारीख़' में हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "मैं आसानी वाली हनिफ़ी शरीअत के साथ भेजा गया हूँ और जिसने मेरी सुन्नत की मुख़ालफ़त की वह मुझसे नहीं।" इसके इलावा ऐसी अहादीस हैं जिनका ज़िक्र लंबा होगा; जो हमने ज़िक्र किया वह काफ़ी और वाफ़ी है। हम अल्लाह सुब्हानहू से अफ़ू व आफ़ियत (क्षमा और सलामती) का सवाल करते हैं। आमीन। [उर्दू]: ख़तीब बग़दादी ने अपनी 'तारीख़' में हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया कि सरकार-ए-दो-आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "मुझे आसानी और हर बातिल से जुदा शरीअत के साथ भेजा गया है और जिसने मेरी सुन्नत की मुख़ालफ़त की वह मुझसे नहीं।" इसके इलावा अहादीस हैं जिनका ज़िक्र

तवालत (लंबाई) का बाइस होगा; जो कुछ हमने ज़िक्र किया वह काफ़ी और वाफ़ी है। हम अल्लाह तआला से अफ़ू व आफ़ियत का सवाल करते हैं। (त)

फ़क़ीर (अल्लाह उसे माफ़ करे) ने आज तक इस 'तशक्कुर' की सूरत नहीं देखी, न कभी अपने यहाँ मंगवाई, न आगे मँगवाने का इरादा है, मगर इसके बावजूद मैं इसे हरगिज़ मना नहीं मानता और न ही उन मुसलमानों को गुनहगार या बेबाक समझता हूँ जो इसका इस्तेमाल करते हैं, न ही इसमें परहेज़गारी की कोई कमी है और...

---

1. सही अल-बुख़ारी, बाब: मस्जिद में पेशाब पर पानी डालना, कदीमी कुतुब खाना कराची, 1/35।
2. सुनन अबी दाऊद, बाब: सुन्नत की पाबंदी, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर, 2/79।
3. तारीख़ बग़दाद, हदीस नंबर 3678, दार अल-कुतुब अल-अरबिया बेरुत, 7/209।

رضی اللہ تعالٰی عنہ عن النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم انما بعثتم میسرین ولم تبعثوا معسرین (1)۔ | (رحمہم اللہ) حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کرتے ہیں نبی اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا: تمہیں آسانی پیدا کرنے والا بنا کر بھیجا گیا ہے تنگی میں ڈالنے والا بنا کر نہیں بھیجا گیا۔ (ت)

اور فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم: "ہلاک ہوئے غلو و تشدد والے"۔

احمد ومسلم وابوداؤد عن ابن مسعود رضی اللہ تعالی عنہ عن النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم ھلك المتنطعون (2)۔ | امام احمد، مسلم اور ابوداؤد رحمہم اللہ حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ عنہ سے روایت کرتے ہیں نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا: گفتگو میں شدت اختیار کرنے والے ہلاک ہوئے۔ (ت)

اور وارد ہوا فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم میں نرم شریعت ہر باطل سے کنارہ کرنے والی لے کر بھیجا گیا جو میرے طریقے کا خلاف کرے میرے گروہ سے نہیں۔

الخطیب فی التاریخ عن جابر رضی اللہ تعالٰی عنہ عن النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم بعثت بالحنیفیۃ السمحۃ ومن خالف سنتی فلیس منی الی غیر ذلک من احادیث یطول ذکرھا والتی ذکرنا کافیۃ وافیۃ نسأل اللہ سبحانہ العفو والعافیۃ آمین۔ | خطیب بغدادی نے اپنی تاریخ میں حضرت جابر رضی اللہ عنہ سے روایت کیا سرکار دوعالم صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: مجھے آسانی اور ہر باطل سے جدا شریعت کے ساتھ بھیجا گیا ہے اور جس نے میری سنّت کی مخالفت کی وہ مجھ سے نہیں۔ اس

کے علاوہ احادیث ہیں جن کا ذکر باعث طوالت ہے جو کچھ ہم نے ذکر کیا وہ کافی و وافی ہے ہم اللہ تعالٰی سے عفو و عافیت کا سوال کرتے ہیں۔ (ت)

فقیر غفرلہ اللہ تعالٰی لہ، نے آج تک اس تشکر کی صورت دیکھی نہ کبھی اپنے یہاں منگائی نہ آگے منگائے جانے کا قصد، مگر بایں ہمہ ہرگز ممانعت نہیں مانتا نہ جو مسلمان استعمال کریں انہیں آثم خواہ بیباک جانتا ہے نہ تورع و

---

1 صحیح البخاری باب صب الماء علی البول فی المسجد مطبوعہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۳۵ 2 سنن ابی داؤد باب فی لزوم السنۃ مطبوعہ آفتاب عالم پریس لاہور ۲ / ۷۹ 3 تاریخ بغداد حدیث نمبر ۳۶۷۸ دار الکتب العربیہ بیروت ۷ / ۲۰۹

Fatawa Razawiyya Volume Four

One should not malign the common believers in the name of caution, nor should one arrogate superiority and arrogance over them for the sake of one's own lowly, insignificant, and wretched self.

And with Allah is all success, and I seek refuge in Him from hypocrisy and causing narrowness. He, Glorified and Exalted, knows best, and His knowledge, Glorified be His Majesty, is most perfect and firm. Know that, by the grace of the Lord, Glorified and Exalted, we have other discussions on this subject which are even more subtle and elevated. However, they are of deep derivation, profound source, difficult to attain, and long-winding. We have fulfilled the need in clarifying the truth and establishing the answer, so we have limited ourselves in this matter and folded up their mention. So here is a concise yet comprehensive answer, by the grace of the Mighty King: "If no heavy rain reaches it, then a drizzle is sufficient" (Quran 2:265). It is known that what is brief and sufficient is better than what is abundant and distracting. This was stated by the Chosen One (Prophet Muhammad), upon him be the best praise and light, and it was narrated by Abu Ya'la and Diya al-Maqdisi from Abu Sa'id al-Khudri. May Allah be pleased with him and with every saint. Ameen. (T)

Admonition: This humble servant, may Allah forgive him, states that whoever has thoroughly understood the issues and proofs presented in these ten introductions, can himself know the ruling on all such particulars, for example, biscuits, bread, the crust of colored breads, milk from Europe, butter, soap, sweets, etc. In short, in every situation, examine the quality of the report, the condition of the reporter, the actual occurrence, the method of entry of prohibited or impure substances, the distinction between suspicion and certainty, the levels of conjecture, and observe the general rules and the paths of piety and dealing with people. If these mentioned matters are clarified and observed, then, if Allah wills, no particular issue will arise whose ruling cannot be derived from these discourses.

---

1. Al-Quran 2/265
2. Musnad Abi Ya'la from Abu Sa'id al-Khudri, Hadith 1048, published by Mu'assasat 'Ulum al-Quran Beirut 2/17 Page 553 of 761

एहतियात (सावधानी) का नाम बदनाम करके आम मोमिनों पर तंज न करें, और न ही अपने ज़लील, तुच्छ और नीच नफ़्स के लिए उन पर बड़ाई और तकब्बुर करें।

और अल्लाह ही तौफीक देने वाला है, मैं पाखंड और तंगी पैदा करने से उसकी पनाह चाहता हूँ, और वह पाक और बुलंद ज़ात सबसे ज़्यादा जानने वाली है, और उसका इल्म कामिल और मज़बूत है। जान लो कि अपने मौला सुब्हानहु व तआला की तौफीक से इस मक़सद पर हमारे पास कुछ और बहसें भी हैं जो निहायत बारीक और आला हैं, लेकिन उनका हासिल करना निहायत बारीक़-बीनी का काम है और उनका स्रोत निहायत गहराई में है, उनको पाना दुश्वार है और उनका दामन निहायत तवील (लंबा) है। हमने हक़ राह को ज़ाहिर करने और जवाब की तहक़ीक़ में मक़सद हासिल कर लिया है, हमने इस मामले में इसी पर इक्तिफ़ा (संतोष) किया और उसका ज़िक्र खत्म कर दिया। तो यह रहा वह जवाब जो संक्षिप्त है लेकिन निहायत रहनुमाई करने वाला है, बादशाह (अल्लाह) के फ़ज़्ल से: "अगर तेज़ बारिश न पहुँचे तो ओस ही काफी है" (कुरान २/२६५)। और यह बात मालूम है कि जो बात मुख़्तसर (संक्षिप्त) और किफ़ायत करने वाली हो, वह उस बात से बेहतर है जो ज़्यादा हो और ग़ाफ़िल करने वाली हो। हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यही बात फ़रमाई, इसे अबू यअला और ज़िया मुक़दसी ने हज़रत अबू सईद खुदरी से रिवायत किया। अल्लाह तआला उनसे और हर वली से राज़ी हो। आमीन। (त)

तन्बीह (चेतावनी): फ़क़ीर (अल्लाह उसे माफ़ करे) ने इन दस मुक़द्दमों में जो मसाइल और दलीलें पेश की हैं, जिसने उन्हें अच्छी तरह समझ लिया है, वह इस किस्म के तमाम जुज़ियात (उदाहरणों) जैसे बिस्कुट, रोटी, रंगीन रोटियों की पपड़ी, यूरोप से आया हुआ दूध, मक्खन, साबुन, मिठाइयों वगैरह का हुक्म खुद जान सकता है। सारांश यह है कि हर जगह ख़बर की असलियत, ख़बर देने वाले की हालत, वाक़ये की हक़ीक़त, हराम और नजासत (गंदगी) के शामिल होने के तरीक़े, शक और यक़ीन के बीच अंतर, गुमान के दर्जे और कुलिया ज़ाबतों (सामान्य नियमों) और तक़वे और लोगों के साथ बर्ताव के रास्तों को परख लें और उनका लिहाज़ करें। फिर इंशाअल्लाह कोई ऐसा जुज़िया सामने नहीं आएगा जिसका हुक्म इन तक़रीरों से न मिल सके।

---

1. कुरान २/२६५

2. मसनद अबू यअला, हज़रत अबू सईद खुदरी से, हदीस १०४८, मुअस्ससतु उलूमुल कुरान बेरूत २/१७ द्वारा प्रकाशित। पृष्ठ ५५३ का ७६१

فتاوی رضویہ جلد چہارم

احتیاط کا نام بد نام کرکے عوام مؤمنین پر طعن کرنے نہ اپنے نفس ذلیل مہین رذیل کے لئے ان پر ترفع و تعلی روا رکھے۔

وباللہ التوفیق والعیاذ من المداھنۃ والتضییق، وھو سبحانہ وتعالی اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم واحکم، واعلم ان لنا في الکلام علی ھذا المرام بتوفیق المولی سبحانہ وتعالی مباحث اخری ادق واعلی لکنھا دقیقۃ المنزع عمیقۃ المشرع عریصۃ المنال طویلۃ الازیال، وقد قضینا الوطر عن ابانۃ الصواب وتحقیق الجواب فکیفنا امرھا فطوینا ذکرھا فھاك جواباً قل ودل بفضل الملك عزوجل فَإِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ۱۔ ومعلوم ان ما قل وکفی خیر مما کثر والھی ۲۔ قالہ المصطفی علیہ افضل الثناء والضیاء المقدسی عن ابی سعیدن الخدری رضی اللہ تعالی عنہ وعن کل ولی آمین۔

اور اللہ ہی توفیق دینے والا ہے، منافقت اور تنگی پیدا کرنے سے اس کی پناہ چاہتا ہوں، اور اس پاک اور بلند ذات کا علم زیادہ ہے اس کی ذات بلند اور اس کا علم نہایت مکمل اور مضبوط و محکم ہے۔ جان لو اپنے مولی سبحانہ و تعالیٰ کی توفیق سے اس مقصد پر ہمارے پاس کچھ اور مباحث بھی ہیں جو نہایت باریک اور اعلیٰ ہیں لیکن ان کا حصول نہایت باریک بینی کا کام ہے اور ان کا منبع نہایت گہرائی میں ہے ان کو پانا دشوار ہے اور ان کا دامن نہایت طویل ہے۔ ہم نے راہِ حق کے اظہار اور جواب کی تحقیق میں مقصود حاصل کر لیا ہے ہم نے اس معاملہ میں اسی پر اکتفاء کیا اور اس کا ذکر ختم کر دیا کہ جواب عزت و بزرگی والے بادشاہ کے فضل سے قلیل لیکن زیادہ رہنمائی کرنے والا ہے اگر تیز بارش نہ بھی پہنچے تو اوس کافی ہے۔ اور یہ بات معلوم ہے کہ جو بات مختصر اور کفایت کرنے والی ہو وہ زیادہ اور غافل کرنے والی سے بہتر ہے حضرت محمد

مصطفیٰ علیہ افضل الثناء نے یہی بات فرمائی، اسے ابویعلیٰ اور ضیاء مقدسی نے حضرت ابوسعید خدری سے روایت کیا اللہ تعالیٰ ان سے اور ہر ولی سے راضی ہو۔ آمین (ت)

تنبیہ: فقیر غفر اللہ تعالیٰ لہ نے ان مقدمات عشرہ میں جو مسائل و دلائل تقریر کیے جو انہیں اچھی طرح سمجھ لیا ہے اس قسم کے تمام جزئیات مثلاً بسکٹ، نان پاؤ رنگت کی پٹڑیوں، یورپ کے آئے ہوئے دودھ، مکھن، صابون، مٹھائیوں وغیرہ کا حکم خود جان سکتا ہے۔ غرض ہر جگہ کیفیت خبر و حالت مخبر و حاصل واقعہ و طریقہ مداخلت حرام و نجس و تفرقہ ظن و یقین و مدارج ظنون و ملاحظہ ضابطہ کلیہ و مسالک ورع و مدارات خلق و غیرہا امور مذکورہ کی تنقیح و مراعات کر لیں پھر ان شاء اللہ تعالیٰ کوئی جزئیہ ایسا نہ نکلے گا جس کا حکم تقاریر

---

۱ القرآن ۲/۲۶۵ ۲ مسند ابی یعلیٰ عن مند ابی سعید الخدری حدیث ۱۰۴۸ مطبوعہ مؤسسۃ علوم القرآن بیروت ۲/۱۷

Volume 4 Fatawa Razawiyya ...so it should not become clear from the previous.

[Table Start] [Left Column - Arabic] And Allah, Glory be to Him, is the Granter of success and the Helper—and from Him we seek help at all times. And may the blessings of Allah Almighty be upon the leader of the Messengers and the Seal of the Prophets—Muhammad, and upon all his family and companions, and upon us with them, by Your mercy, O Most Merciful of those who show mercy. Amen, Amen, Amen, O True God, Amen. The pen rested from its writing within three days at the end of the sacred month of Dhu al-Qa'dah—the last of them being Saturday, the twenty-sixth of that honored month—in the year one thousand three hundred and three since the migration of the Leader of the World—may the blessings and peace of Allah Almighty be upon him and upon his family and companions—while being preoccupied with refuting the people of misguidance and other matters. And praise be to Allah, the Exalted, the Greatest, as long as salt is salty and gratitude is loved. And Allah Almighty knows best, and His knowledge is more perfect and His judgment is most firm.

[Right Column - Urdu Translation] Allah, Glory be to Him, is indeed the Granter of success and the Helper, and we seek help from Him at all times. May there be mercy upon the leader of the messengers and the final prophet, Hazrat Muhammad Mustafa, and all your family and companions, and upon us along with them, O most merciful, with your mercy. O Allah! Accept our prayer, O Allah! Accept our prayer, O true Deity! Accept our prayer. The pen finished writing this within three days at the end of the sacred Dhu al-Qa'dah. Saturday, 26th Dhu al-Qa'dah 1303 AH, was the last day. Although I was mentally occupied with refuting misguided people and other matters, praise be to Allah, the Great and Exalted. (T) [Table End]

Problem 183: From Nainital near Sukhatal, sent by Hafiz Muhammad Ibrahim Khan, Muhar Patti Director Colonel Major State Gwalior, 14 Dhu al-Hijjah 1315 AH.

Venerable Master, may your blessings continue. After humble servant-like greetings, I request you to honor this slave soon regarding the following issue: Is the sweetness touched by the hand of a Christian fit for use or not? For example, Zaid is a Christian and Bakr is a Muslim. Zaid bought sweets from the market and gave them to Bakr with care before eating them himself; can Bakr use them or not? Bakr, the Muslim, gives katha (catechu) and lime to Zaid from his own place, and when needed, Bakr adds water etc. from his place into that katha and lime, and with his own water Bakr soaks betel leaf etc. In fact, Zaid himself takes care that when needed, he gets water

from Bakr's place for use in it. In this situation, can Bakr use the betel leaf prepared by Zaid's hand or not?

भाग 4 फ़तावा रज़विया ...ताकि पिछली बातों से स्पष्ट न हो जाए।

[तालिका प्रारंभ] [बायाँ स्तंभ - अरबी] और अल्लाह, जो पवित्र है, सफलता देने वाला और सहायक है - और हम हर समय उसी से मदद मांगते हैं। और अल्लाह तआला की रहमत हो प्रेरितों के सरदार और नबियों की मुहर - मुहम्मद और उनके सभी परिवार और साथियों पर, और उनके साथ हम पर भी, अपनी दया से, हे सबसे दयालु। आमीन, आमीन, आमीन, हे सच्चे ईश्वर, आमीन। कलम ने पाक महीने ज़ुल-क़ादा के अंत के तीन दिनों के भीतर अपने लेखन से विश्राम लिया - उनमें से आखिरी शनिवार था, उस सम्मानित महीने की छब्बीसवीं तारीख - दुनिया के नेता के हिजरत के एक हजार तीन सौ तीन साल बाद - अल्लाह तआला उन पर और उनके परिवार और साथियों पर रहमत और सलामती भेजे - जबकि मन गुमराह लोगों के खंडन और अन्य मामलों में व्यस्त था। और अल्लाह के लिए प्रशंसा है, जो सबसे ऊँचा और सबसे महान है, जब तक नमक नमकीन है और कृतज्ञता प्रिय है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है, और उसका ज्ञान सबसे पूर्ण है और उसका निर्णय सबसे दृढ़ है।

[दायाँ स्तंभ - उर्दू अनुवाद] अल्लाह सुब्हानहू व तआला ही तौफ़ीक देने वाला और मदद करने वाला है और हर वक्त हम उसी से मदद मांगते हैं। रसूलो के सरदार और आखिरी नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा और आप के तमाम आल व असहाब पर रहमत हो, और उनके साथ हम पर भी, ऐ सब से ज़्यादा रहम करने वाले तेरी रहमत के साथ। या अल्लाह! हमारी दुआ कबूल फरमा, या अल्लाह! हमारी दुआ कबूल फरमा, ऐ सच्चे माबूद! हमारी दुआ कबूल फरमा। हुरमत वाले ज़ीकाद के आख़िर में तीन दिन के अन्दर कलम इसकी तहरीर से फारिग हो गया। २६ ज़ीकाद १३०३ हिजरी बरोज़ हफ़्ता आख़िरी दिन था। बावजूद इसके कि मैं गुमराह लोगों के रद और दूसरे उमूर में कल्बी तौर पर मशगूल था, अल्लाह बुजुर्ग व बरतर के लिये हम्द है। (त) [तालिका समाप्त]

मसाला १८३: नैनीताल के पास सूखाताल से, हाफ़िज़ मुहम्मद इब्राहिम ख़ान, मुहर पट्टी डायरेक्टर कर्नल मेजर रियासत ग्वालियर द्वारा भेजा गया, १४ ज़ुल-हिज्जा १३१५ हिजरी।

हज़रत मखदूमी, आपकी बरकतें बनी रहें। खादिमाना आदाब के बाद अर्ज़ है कि निम्न मसले पर जल्द ही इस गुलाम को सरफ़राज़ फरमाएं क्या ईसाई के हाथ की छुई हुई मिठाई इस्तेमाल के काबिल है या नहीं? मिसाल के तौर पर, जैद एक ईसाई है और बक्र एक मुसलमान है। जैद ने बाज़ार से मिठाई ली और बक्र को अपने खाने से पहले सावधानी के साथ दे दी; क्या बक्र उसका इस्तेमाल

कर सकता है या नहीं? बक्र मुसलमान अपने यहाँ से कत्था-चूना ज़ैद को दे देता है और जब ज़रूरत होती है तो बक्र अपने यहाँ से पानी वगैरह उस कत्थे-चूने में डाल देता है और अपने ही यहाँ के पानी से बक्र पान वगैरह भिगो देता है, बल्कि ज़ैद खुद एहतियात रखता है कि जब ज़रूरत होती है तो पानी बक्र के यहाँ से उसमें इस्तेमाल के वास्ते मंगवा लेता है। इस हालत में बक्र जैद के हाथ का बना पान इस्तेमाल कर सकता है या नहीं?

पृष्ठ 554 का 761

جلد چہارم فتاوی رضویہ سابقہ سے واضح نہ ہوجائے۔

واللہ سبحانہ الموفق والمعین - و بہ نستعین فی کل حین - وصلی اللہ تعالی علی سید المرسلین وخاتم النبین- محمد وآلہ وصحبہ اجمعین وعلینا معھم برحمتك یا ارحم الراحمین - آمین آمین آمین اللہ الحق آمین- استراح القلم من تحریرہ فی ثلثۃ ایام من اواخر ذی القعدۃ المحرم- اخرھا یوم السبت السادس والعشرون من ذاك الشھر المکرم - سنۃ ثلث بعد الالف وثلثمائۃ من ھجرۃ حضرۃ سید العالم- صلی اللہ تعالی علیہ وعلی آلہ وصحبہ وبارك وسلم - مع اشتغال البال برد اھل الضلال وشیون أخر والحمد للہ العلی الاکبر مائذا الملح وحبّ الشکر واللہ تعالی اعلم وعلمہ اتم وحکمہ احکم۔ | اللہ سبحنہ و تعالیٰ ہی توفیق دینے والا اور مدد کرنے والا ہے اور ہر وقت ہم اسی سے مدد مانگتے ہیں۔ رسولوں کے سردار اور آخری نبی حضرت محمد مصطفیٰ اور آپ کے تمام آل و اصحاب پر رحمت ہو، اور ان کے ساتھ ہم پر بھی، اے سب سے زیادہ رحم کرنے والے تیری رحمت کے ساتھ۔ یا اللہ! ہماری دعا قبول فرما، یا اللہ! ہماری دعا قبول فرما، اے سچے معبود! ہماری دعا قبول فرما۔ حرمت والے ذیقعد کے آخر میں تین دن کے اندر قلم اس کی تحریر سے فارغ ہو گیا۔ ۲۶ ذی القعدہ ۱۳۰۳ھ بروز ہفتہ آخری دن تھا۔ باوجودیکہ میں گمراہ لوگوں کے رد اور دوسرے امور میں قلبی طور پر مشغول تھا، اللہ بزرگ و برتر کے لئے حمد ہے۔(ت)

مسئلہ ۱۸۳: از نینی تال متصل سوکھاتال مرسلہ حافظ محمد ابراہیم خاں محر پٹی ڈائریکٹر کرنل میجر ریاست گوالیار ۱۴ ذی الحجہ ۱۳۱۵ھ

حضرت مخدومی دامت برکا تہم بعد آداب خادمانہ التماس خدمت اطہر کہ مسئلہ مندرجہ ذیل سے جلد غلام کو سرفراز فرمائیں، عیسائی کے ہاتھ کی چھوئی ہوئی شیرینی قابل استعمال ہے یا نہیں۔ مثلاً زید عیسائی ہے اور بکر مسلمان ہے زید نے بازار سے مٹھائی لی اور بکر کو قبل اپنے کھانے کے

احتیاط کے ساتھ دے دی تو بکر استعمال کر سکتا ہے یا نہیں۔ بکر مسلمان اپنے یہاں سے کتھا چونا زید کو دے دیتا ہے اور جب ضرورت ہوتی ہے تو بکر اپنے یہاں سے پانی وغیرہ اُس کتھے چونے میں ڈال دیتا ہے اور اپنے ہی یہاں کے پانی سے بکر پان وغیرہ بھگو دیتا ہے بلا لکہ زید خود احتیاط رکھتا ہے کہ جب ضرورت ہوتی ہے تو پانی بکر کے یہاں سے اُس میں استعمال کے واسطے منگوا لیتا ہے اس حالت میں بکر پان زید کے ہاتھ کا استعمال کر سکتا ہے یا نہیں؟

Volume Four Fatawa Razawiya

The Answer: In the religion of the Christians, except for menstrual blood, wine, urine, feces—in short, nothing is fundamentally impure. They laugh at those who avoid these things and consider it against their self-made civilization. Thus, their outward state remains contaminated with impurity. Imam Ibn al-Hajj al-Makki states in 'Al-Madkhal':

[Table/Columns] (Arabic): It is mandatory for the person in authority to remove from the markets those from the People of the Book who are engaged in this profession (meaning selling medicinal drinks like jujube syrup, violet syrup, and such) because Christians consider their urine pure and do not adhere to the avoidance of human impurity except for menstruation. Therefore, drinks obtained from Christians are, according to predominant opinion, impure[1].

(Urdu Translation/Explanation): It is the duty of the person in authority to remove from the markets those People of the Book who are engaged in this work (i.e., selling medicinal drinks like jujube and violet syrup, etc.) because Christians consider their urine pure and do not hold the belief of avoiding any impurity other than menstrual blood. Therefore, a drink obtained from Christians is impure according to the dominant assumption. (T)

In the seventeenth inquiry of 'Istifsarat Radd-e-Nasara' (Refutations of Christians), it is stated: Muslims consider being stained with urine, feces, and blood as intellectually reprehensible, while Christians mock them for this. Therefore, the use of moist things touched by them is religiously disliked and undesirable, like wet betel leaves even if soaked with a Muslim's water, as we have thoroughly investigated in our book 'Al-Ahla min as-Sukkar li Talabati Sukkurusur' (As we have explained with research in our book 'Al-Ahla min as-Sukkar li Talabati Sukkurusur'. T). Besides this, there is a fine point here that makes this dislike apply to both wet and dry things, and more severely. In the pure Shariah, just as it is mandatory to avoid sin, it is also necessary to avoid suspicious situations. Opening the door of criticism against oneself without a Shari'i reason is impermissible, and committing causes that lead Muslims into backbiting and speaking ill is prohibited, and making them feel aversion towards oneself is ugly and heinous. There are hundreds of proofs for this from the Hadiths and sayings of the Imams of religion. We have mentioned some of them in 'Kitab al-Hazr' of our Fatawa and in our other compositions, among which is the Sahih Hadith: 'Give glad tidings and do not create aversion'[2] (We have mentioned part of it in 'Kitab

al-Hazr' of our fatwas and other compositions; a Sahih Hadith from it is: Give good news, do not cause hatred. T) and the Hadith: 'Beware of that for which an apology must be made.'

[1] Al-Madkhal, Chapter on the mention of the drink used by the sick, Matba' Dar al-Kitab al-Arabiya, Beirut, 2/154. [2] Sahih al-Bukhari, Chapter on what the Prophet (PBUH) used to teach, Kutub Khana Karachi, 1/16.

जिल्द चार फ़तावा रज़विया

अल-जवाब: ईसाइयों के मज़हब में खून-ए-हैज़ के सिवा शराब, पेशाब, पाखाना, ग़रज़ कोई चीज़ असल में नापाक नहीं है। वह इन चीज़ों से बचने पर हँसते हैं और अपनी बनाई हुई तहज़ीब के ख़िलाफ़ समझते हैं, तो उनका ज़ाहिरी हाल नजासत (गंदगी) से भरा ही रहता है। इमाम इब्न अल-हाज अल-मक्की 'मदख़ल' में फरमाते हैं:

[तालिका/कॉलम] (अरबी): अधिकार रखने वाले व्यक्ति पर अनिवार्य है कि वह बाज़ारों से उन अहले किताब को हटा दे जो इस काम में लगे हैं (यानी औषधीय पेय जैसे बेर का शरबत, बनफशा का शरबत आदि बेचना), क्योंकि ईसाइयों के यहाँ उनका पेशाब पाक है और वे हैज़ के अलावा किसी मानवीय नजासत को छोड़ने का अक़ीदा (विश्वास) नहीं रखते। इसलिए ईसाइयों से हासिल किया गया शरबत ग़ालिब गुमान (प्रबल संभावना) के मुताबिक नापाक है।[1]

(उर्दू अनुवाद/व्याख्या): साहब-ए-अख़्तियार का फर्ज़ है कि वह उन अहले किताब को बाज़ारों से हटा दे जो इस काम में मशगूल हैं (यानी दवाइयों पर आधारित मशरूबात जैसे उनाब और बनफ़्शा वग़ैरह का शरबत बेचते हैं) क्योंकि ईसाई अपने पेशाब को पाक समझते हैं और वे खून-ए-हैज़ के अलावा किसी नजासत को छोड़ने का अक़ीदा नहीं रखते। लिहाज़ा ईसाइयों से हासिल किया गया मशरूब ग़ालिब गुमान के मुताबिक़ नापाक होता है। (त)

'इस्तिफ़सारात रद-ए-नसारा' के सत्रहवें इस्तिफ़सार में है: मुसलमान लोग पेशाब, पाखाना और खून से लथपथ रहने को अक़्लन भी बुरा समझते हैं और ईसाई लोग इस बात पर उन्हें हँसा करते हैं। तो उनकी छुई हुई तर (गीली) चीज़ों का इस्तेमाल शरअन मुतलक़न मकरूह और नापसंद है जैसे भीगे हुए पान चाहे मुसलमान के ही पानी से भीगे हों, जैसा कि हमने अपनी किताब "अल-अहला मिन अस-सुक्कर ली तलबती सक्कर-रूसर" में तहक़ीक़ के साथ बयान किया है (जैसा कि हमने इसे अपनी किताब "अल-अहला मिन अल-सुक्कर ली तलबती सक्करूसर" में शोध के साथ बताया है। त)। और इसके सिवा यहाँ एक बारीक नुक्ता है जो इस कराहत को तर और खुश्क दोनों के लिए शामिल और अधिक कामिल (पूर्ण) करता है। शरीयत-ए-मुतह्हरा में जिस तरह गुनाह से बचना फर्ज़ है, वैसे ही तोहमत (आरोप) के मौक़ों से बचना ज़रूरी है। और बिना किसी शरई वजह के अपने ऊपर तंज़ का दरवाज़ा खोलना नाजायज़ है और मुसलमानों को अपनी ग़ीबत और बुराई करने में मुब्तला करने के कारणों को करना मना है और उन्हें अपने से नफरत दिलाना बुरा और घिनौना है।

हदीसों और दीनी इमामों के अक़वाल से इस पर सैकड़ों दलीलें हैं। हमने अपने फ़तावा की "किताब अल-हज़्र" और अपनी दूसरी तसनीफ़ात में इसका कुछ हिस्सा ज़िक्र किया है, उनमें से एक सहीह हदीस यह है: "बशिरू वला तुनफ़्फ़िरू"[2] (हमने अपने फतवों की "किताब अल-हज्र" और अन्य रचनाओं में इसका हिस्सा उल्लेख किया है; एक सहीह हदीस यह है: खुशखबरी दो, नफरत न फैलाओ। त)। और हदीस: "इय्याका व मा युअतज़रु" (उस काम से बचो जिसके लिए माफ़ी मांगनी पड़े)।

[1] अल-मदख़ल, बीमारों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले शरबत के ज़िक्र का बाब, मतबा दार अल-किताब अल-अरबिया बेरूत, 2/154. [2] सहीह अल-बुखारी, बाब कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) क्या सिखाते थे, कुतुब खाना कराची, 1/16.

الجواب: نصاریٰ کے مذہب میں خون حیض کے سوا شراب پیشاب پاخانہ غرض کوئی بلا اصلا نا پاک نہیں وہ ان چیزوں سے بچنے پر ہنستے اور اپنی ساختہ تہذیب کے خلاف سمجھتے ہیں تو ان کا ظاہر حال نجاست سے ملوث ہی رہتا ہے۔ امام ابن الحاج مکی مدخل میں فرماتے ہیں:

یتعین علی من لہ امران یقیم من الاسواق من یشتغل بھذا السبب (یرید بیع الاشربۃ الدوائیۃ کشراب العناب وشراب البنفسج وغیر ذلك) من اھل الکتاب لان النصاری عندھم ابوالھم طاھرۃ ولایتدینون بترك نجاسۃ الادم الحیض فقط فالشراب الماخوذ من النصاری الغالب علیہ انہ متنجس[1]۔

صاحب اختیار کا فرض ہے کہ وہ ان اہل کتاب کو بازاروں سے اٹھادے جو اس کام میں مشغول ہیں (یعنی دوائیوں پر مبنی مشروبات جیسے عناب اور بنفشہ وغیرہ کا شربت بیچتے ہیں) کیونکہ عیسائی اپنے پیشاب کو پاک سمجھتے ہیں اور وہ خون حیض کے علاوہ کسی نجاست کو چھوڑنے کا عقیدہ نہیں رکھتے۔ لہذا عیسائیوں سے حاصل کردہ مشروب غالب گمان کے مطابق ناپاک ہوتا ہے۔ (ت)

استفسارات رد نصاریٰ کے سترھویں استفسار میں ہے مسلمان لوگ بول و براز اور خون سے آلودہ رہنے کو عقلاً بھی نامستحسن جانتے ہیں اور عیسائی لوگ اس بات پر انہیں ہنسا کرتے ہیں تو ان کی چھوئی ہوئی تر چیزوں کا استعمال شرعاً مطلقاً مکروہ ناپسند جیسے بھیگے ہوئے پان اگرچہ مسلمان ہی کے پانی سے بھیگے ہوں کما حققنا ذلك في کتابنا الاحلی من السکر لطلبۃ سکرروسر (جیسا کہ ہم نے اسے اپنی کتاب "الاحلی من السکر لطلبۃ سکرروسر" میں تحقیق سے بیان کیا ہے۔ ت) اور اس کے سوا یہاں ایک دقیقہ انیقہ اور ہے جو اس کراہت کو تر و خشک دونوں کو شامل

اور اشد و کامل کرتا ہے شرع مطہر میں جس طرح گناہ سے بچنا فرض ہے یونہی مواضع تہمت سے احتراز ضرور ہے اور بلاوجہ شرعی اپنے اوپر دروازہ طعن کھولنا ناجائز اور مسلمانوں کو اپنی غیبت وبدگوئی میں مبتلا کرنے کے اسباب کا ارتکاب ممنوع اور انہیں اپنے سے نفرت دلانا قبیح و شنیع ۔ احادیث واقوال ائمہ دین سے اس پر صدہا دلائل ہیں وقد ذکرنا بعضها في كتاب الحظر من فتاؤنا وفي غيره من تصانيفنا منها الحديث الصحيح بشروا ولا تنفروا[2] (ہم اپنے فتاویٰ کی "کتاب الحظر" اور دوسری تصانیف میں اس کا کچھ حصہ ذکر کیا ہے اس سے ایک صحیح حدیث یہ ہے: خوشخبری دو متنفر نہ کرو۔ ت) وحدیث ایاک وما یعتذر

[1] المدخل فصل فی ذکر الشراب الذی یستعمله المریض مطبعہ دار الکتاب العربیہ بیروت ۲ / ۱۵۴ [2] صحیح البخاری باب ماکان النبی صلی اللہ علیہ وسلم یعلم کتب خانہ کراچی ۱ / ۱۶

Fatawa Razawiya Volume 4

...from it 1 (avoid that for which you have to offer an excuse - T) and the Hadith: "Beware of that which sounds bad to the ears" 2 (avoid that which does not sound good to the ears - T) and the Hadith: "Whoever believes in Allah and the Last Day, let him not stand in places of suspicion," and other texts like this 3 (Whoever believes in Allah Almighty and the Day of Judgment should not stand in a place of accusation; there are other texts besides this - T). Therefore, giving your own slaked lime, soaking the betel leaf in your own water, taking all precautions, but the betel leaf being from a Christian's hand—what benefit is there in this except that Muslims will feel revulsion, defame you, consider you suspect, and fall into backbiting? Similarly, when the sweets from his place open the door to these evils, then avoiding them is also required by Sharia. And Allah Almighty knows best.

Issue 184: 29 Safar 1317 AH: What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid said to Amr, "If you now keep the earthenware vessel after purifying it, I will stab you with a knife." Now, what is the ruling for Zaid according to the noble Sharia? Please explain and be rewarded.

The Answer: In the mentioned scenario, Zaid has committed three sins: 1. Unjustly threatening a Muslim, 2. Insisting on keeping wealth (property) wasted, 3. Vehement denial of a Sharia ruling. It is mandatory for Zaid to repent and also seek forgiveness from Amr for his fault. And Allah Almighty knows best.

Issue 185: From Pilibhit, Qazi Mohalla, sent by Qazi Mumtaz Hussain Sahib Mumtaz, 20 Ramadan 1317 AH: If a garment becomes defiled with urine equal to or less than the size of a dirham, and then that garment is folded such that the impurity spreads throughout, will that garment remain pure or not?

The Answer: When impurity reaches a cloth and spreads from one layer to another, the impurity of each layer will be counted separately. If all combined exceed the size of a dirham, the prayer will be invalid, whether those layers are of a single garment, like a double-layered dress, or several garments layered on the body, like inner and outer wear.

1. Ithaf al-Sadat al-Muttaqin, Chapter on Censure of Greed and Avarice, published by Dar al-Fikr, Beirut, Lebanon, 8/160.
2. Musnad Ahmad bin Hanbal, Hadith of Abu al-Ghadhiya (may Allah be pleased with him), published by Dar al-Fikr, Beirut, Lebanon, 4/86; Majma' al-Zawa'id,

Chapter on what to avoid in speech, published by Dar al-Kitab, Beirut, Lebanon, 8/95.

3. Maraqi al-Falah with Hashiyah al-Tahtawi, Chapter on Attaining the Obligatory, published by Karkhana Tijarat Kutub, Karachi, p. 249.

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

...उससे 1 (जिस बात के लिए माफ़ी माँगनी पड़े, उससे बचो। -त) और हदीस: "उस चीज़ से बचो जो कानों को बुरी लगे" 2 (जो बात कान को अच्छी न लगे, उससे बचो। -त) और हदीस: "जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है, वह शक वाली जगहों पर खड़ा न हो," और इसी तरह की अन्य नस्सें 3 (जो व्यक्ति अल्लाह तआला और क़यामत के दिन पर ईमान रखता है, वह तोहमत की जगह पर खड़ा न हो, इसके अलावा अन्य नस्सें भी हैं - त)। तो अपना चूना देना, अपने पानी से पान भिगोना, सारी एहतियात बरतना, लेकिन पान किसी ईसाई के हाथ का होना—इसमें इसके सिवा क्या फ़ायदा है कि मुसलमान नफ़रत करें, बदनाम करें, संदिग्ध मानें और ग़ीबत (पीठ पीछे बुराई) में पड़ें? इसी तरह, जब उसके यहाँ की मिठाई इन बुराइयों का दरवाज़ा खोलती हो, तो उससे भी बचना शरीयत के लिहाज़ से ज़रूरी है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला १८४: २९ सफ़र १३१७ हिजरी: दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद ने अम्र से कहा, "अगर तुमने अब मिट्टी के बर्तन को पाक करके रखा, तो मैं तुम्हें चाकू मार दूँगा।" अब ज़ैद के लिए शरीयत के अनुसार क्या हुक्म है? बयान करें और पुण्य पायें।

जवाब: बताई गई स्थिति में ज़ैद ने तीन गुनाह किए हैं: १. एक मुसलमान को नाहक़ धमकी देना, २. माल को बर्बाद रखने पर ज़ोर देना, ३. शरई मसले का कड़ा विरोध करना। ज़ैद पर लाज़िम है कि तौबा करे और अम्र से भी अपनी ग़लती की माफ़ी माँगे। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला १८५: पीलीभीत, क़ाज़ी मोहल्ला से, प्रेषक क़ाज़ी मुमताज़ हुसैन साहब मुमताज़, २० रमज़ान १३१७ हिजरी: अगर कोई कपड़ा दिरहम के बराबर या उससे कम पेशाब से नापाक हो गया और फिर वह कपड़ा तह करके रखा गया जिससे गंदगी पूरी तरह फैल गई, तो वह कपड़ा पाक रहेगा या नहीं?

जवाब: जब कपड़े पर नजासत (गंदगी) पहुँचे और एक तह से दूसरी तह तक फैल जाए, तो हर तह की नजासत अलग गिनी जाएगी। अगर सब मिलकर दिरहम की मात्रा से ज़्यादा हो जाए, तो नमाज़

फ़ासिद (अमान्य) हो जाएगी, चाहे वे तहें एक ही कपड़े की हों, जैसे दोहरा लिबास, या शरीर पर तह-दर-तह कई कपड़े हों, जैसे अंदरूनी और बाहरी कपड़े।

1. इत्हाफ-उस-सादात-इल-मुत्तक़ीन, हिर्स और लोभ की निंदा का बयान, दारुल फ़िक्र, बेरूत, लेबनान, ८/१६०।
2. मुसनद अहमद बिन हंबल, हदीस अबू अल-ग़ादिया (रज़ियल्लाहु अन्हु), दारुल फ़िक्र, बेरूत, लेबनान, ४/८६; मज्म-उज़-ज़वाइद, बातचीत में बचने वाली बातों का अध्याय, दारुल किताब, बेरूत, लेबनान, ८/९५।
3. मराक़िल फ़लाह मअ हाशिया अत-तहतवी, फ़रीज़ा पाने का अध्याय, कारखाना तिजारत कुतुब, कराची, पृ. २४९।

पृष्ठ ५५६/७६१

فتاوی رضویہ جلد چہارم

منہ ۱ (جس بات سے عذر پیش کرنا پڑے اس سے بچو۔ ت) وحدیث ایاک ومایسوء الاذن ۲ (جو بات کان کو اچھی نہ لگے اس سے بچو۔ ت) وحدیث من کان یؤمن باللہ والیوم الآخر فلا یقفن مواقف التھم الی غیر ذلک من النصوص ۳ (جو شخص اللہ تعالٰی اور روزِ قیامت پر ایمان رکھتا ہے وہ تہمتوں کی جگہ پر کھڑا نہ ہو، اسکے علاوہ دیگر نصوص ہیں، ت) تو اپنا کھتا چونہ دینا اپنے پانی سے پان بھگو نا ساری احتیاط کرنا مگر پان عیسائی کے ہاتھ کا ہونا اس میں سوا اس کے کیا نفع ہے کہ مسلمان نفرت کھائیں بدنام کریں متہم جانیں غیبت میں پڑیں اسی طرح جب اُس کے یہاں کی شیرینی ان مفاسد کا دروازہ کھولتی ہو تو اُس سے بھی احتراز شرعاً درکار واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۸۴ : ۲۹ صفر ۱۳۱۷ھ : کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے عمرو سے کہا کہ تم مٹی کے برتن کو اب پاک کر کے رکھو تو میں تمہارے چاقو مار دوں ، اب زید کے لئے کیا حکم ہے بموجب شرع شریف کے ، بینوا توجروا۔

الجواب: صورت مذکورہ میں زید نے تین ۳ گناہ کئے: مسلمان کو ناحق تہدید ، مال ۲ کو ضائع رکھنے کی تاکید ، مسئلہ ۳ شرعیہ پر انکار شدید۔ زید پر لازم ہے کہ توبہ کرے اور عمرو سے بھی اپنا قصور معاف کرائے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۸۵ : از پیلی بھیت قاضی محلہ مرسلہ قاضی ممتاز حسین صاحب ممتاز ۲۰ رمضان ۱۳۱۷ھ اگر کپڑا بقد ر درم کے یا اس سے کم پیشاب سے پلید ہو گیا اور پھر وہ کپڑا تہہ توڑ کر سب میں اثر پلیدی سرایت کر گیا تو وہ کپڑا پاک رہے گا یا نہیں۔

الجواب: جب کپڑے کو نجاست پہنچے اور ایک تہہ سے دوسری تہہ تک سرایت کرے تو ہر تہہ کی نجاست جدا شمار میں آئیگی اگر سب مل کر قدر درم سے زائد ہو نماز فاسد ہو خواہ وہ تہیں ایک ہی کپڑے کی ہوں جیسے دوہرے لباس یا چند کپڑے تہہ بہ تہہ بدن پر ہوں جیسے شعار و دثار۔

۱ اتحاف السادة المتقین بیان ذم الحرص والطمع مطبوعہ دارالفکر بیروت لبنان ۱۶۰/۸ ۲ مسند احمد بن حنبل حدیث ابو الفاد یہ رضی اللہ عنہ مطبوعہ دارالفکر بیروت لبنان ۸۶/۴ ، مجمع الزوائد باب فیما یجنب من الکلام مطبوعہ دار الکتاب بیروت لبنان ۹۵/۸ ۳ مراقی الفلاح مع حاشیۃ الطحطاوی باب ادراک الفریضہ مطبوعہ کارخانہ تجارت کتب کراچی ص ۲۴۹

Fatawa Rizvia Volume Four

| In Radd al-Muhtar, Al-Bahr and others, it is stated that the penetration of the quantity to the other side is not considered if the cloth is single, unlike when it has two layers, such as a dirham being impure on both sides, etc. And Allah Almighty knows best. | In Radd al-Muhtar and Bahr al-Ra'iq etc. it is mentioned that the seepage of the quantity to the other side will not be considered if the cloth is single, contrary to when it has two layers like both sides of a dirham being impure etc. And Allah Almighty knows best. (T) |

Mas'alah 186: From Bazaria Inayat Ganj Bareilly Old City, 26 Safar 1318 AH: Is the urine of a breastfeeding infant pure or impure?

Al-Jawab: The urine of a human infant, even if only one day old, is impure, even if it is a boy. (This matter is found frequently in the books of texts and commentaries - T). And Allah Almighty knows best.

Mas'alah 187: From Etawah, Collectorate Court, residence of Munshi Inayatullah, 12 Shaban 1318 AH: If some impurity has certainly touched the body and there is swelling there, for example on the abdomen or if the swelling has reached the thighs, should the impurity be washed off or not? Please explain and be rewarded.

Al-Jawab: If pouring water causes harm, then wash it with some extract, for example, lukewarm Black Nightshade (Makoh) extract etc. Real impurity is also purified with these things. Yes, in bathing (Ghusl) or ablution (Wudu), nothing else besides water is effective. And if harm is caused by these as well, then soak a cloth well in water or extract and rub the place of impurity with it; repeat with a second and third soaked cloth, and purity will be attained. If this too is harmful, then as long as the state of harm persists, one should pray as is; it is pardoned. And Allah Almighty knows best.

Mas'alah 188: From Farashi Mohalla, 7 Rajab 1320 AH: What do the scholars of religion say regarding this issue: if cotton-filled items like quilts, mattresses etc. become impure, can they be purified by washing them along with the cotton, or will they be purified by separating the cotton and washing the cloth and cotton separately? And if the cotton is spun into yarn, can that yarn be purified by washing without making it into a rug etc.? Please explain and be rewarded.

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Impurities, printed at Mujtabai Delhi, 1/211. Page 557 of 761

फतावा रज़विया जिल्द चौथी

| रद अल-मुह्तार, अल-बहर आदि में है कि मात्रा का दूसरी तरफ प्रवेश करना विश्वसनीय नहीं माना जाएगा यदि कपड़ा एक हो, इसके विपरीत जब इसके दो परत हों जैसे दिरहम के दोनों तरफ अपवित्र हों आदि। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। | रद अल-मुह्तार और बहर-ए-राइक आदि में है कि मात्रा का दूसरी तरफ रिसना मान्य नहीं होगा यदि कपड़ा एक हो, इसके विपरीत जब यह दो परतों वाला हो जिस तरह दिरहम के दोनों किनारे नापाक हों आदि। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त) |

मसला 186: बजरिया इनायत गंज बरेली पुराने शहर से, 26 सफर 1318 हिजरी: स्तनपान कराने वाले बच्चे का पेशाब पाक है या नापाक?

अल-जवाब: मनुष्य का बच्चा चाहे एक दिन का हो, उसका पेशाब नापाक है, चाहे वह लड़का ही क्यों न हो। (यह मसला मूल पाठों और व्याख्याओं की पुस्तकों में अक्सर पाया जाता है। - त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 187: इटावा कचहरी कलेक्टरी, मुंशी इनायत उल्लाह का मकान, 12 शाबान 1318 हिजरी: यदि शरीर पर निश्चित रूप से कोई नजासत (गंदगी) लग गई हो और वहां सूजन हो, उदाहरण के लिए पेट पर या सूजन जांघों तक पहुंच गई हो, तो नजासत को धोना चाहिए या नहीं? बयान फरमाएं ताकि आपको सवाब मिले।

अल-जवाब: यदि पानी बहाना हानिकारक हो, तो किसी अर्क जैसे मकोह के अर्क आदि को गुनगुना करके धोएं। वास्तविक नजासत इन चीजों से भी पाक हो जाती है। हाँ, नहाने या वज़ू में पानी के अलावा कोई दूसरी चीज़ काम नहीं देती। और अगर इनसे भी नुकसान हो तो कपड़े को पानी या अर्क में अच्छी तरह भिगोकर उससे नजासत वाली जगह को मलें, दोबारा दूसरा कपड़ा, तीसरी बार भिगोकर मलने से पवित्रता प्राप्त हो जाएगी। और अगर यह भी नुकसानदेह हो तो जब तक नुकसान की स्थिति बनी रहे, वैसे ही नमाज़ पढ़े, माफ़ है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 188: फराशी मोहल्ला से, 7 रजब 1320 हिजरी: दीन के उलमा इस मसले में क्या फरमाते हैं कि यदि लिहाफ, तोशक आदि रुई वाले कपड़े नापाक हो जाएं तो क्या वे रुई के साथ धुल कर पाक हो सकते हैं या रुई को अलग करके कपड़ा अलग और रुई अलग धोने से पाक होगा? और यदि रुई

का सूत कात लिया जाए तो क्या वह सूत बिना दरी आदि बनवाए धोने से पाक हो सकता है या नहीं? बयान फरमाएं ताकि आपको सवाब मिले।

1. रद अल-मुह्तार, बाब अल-अन्जास, मुजतबाई दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 1/211. पृष्ठ 761 का 557

| فی ردالمحتار فی البحر وغیرہ لایعتبر نفوذ المقدار الی الوجہ الاخر لو الثوب واحدا بخلاف ما اذاکان ذاطاقین کدر ھم متنجس الوجھین اہ الخ واللہ تعالٰی اعلم۔ | ردالمحتار اور بحر الرائق وغیرہ میں ہے کہ مقدار کا دوسری طرف سرایت کرنا معتبر نہ ہوگا اگر کپڑا ایک ہو، بخلاف اس کے جب دو تہوں والا ہو جس طرح درہم کی دونوں طرفیں ناپاک ہوں الخ واللہ تعالٰی اعلم (ت) |

مسئلہ ۱۸۶: ازبزریہ عنایت گنج بریلی شہر کہنہ ۲۶ صفر ۱۳۱۸ھ: شیر خوار بچہ کا پیشاب پاک یا ناپاک؟

الجواب: آدمی کا بچہ اگر چہ ایک دن کا ہو اس کا پیشاب ناپاک ہے اگرچہ لڑکا ہو والمسألۃ دوارۃ متونا وشروحا (یہ مسئلہ متن وشرح کی کتب میں اکثر پایا جاتا ہے ۔ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۸۷: از اٹا وہ کچہری کلکٹری مکان منشی عنایت اللہ ۱۲ شعبان ۱۳۱۸ھ جسم پر اگر کوئی نجاست بالتحقیق لگ چکی ہو اور وہاں ورم ہو مثلاً شکم پر ہو یا رانوں تک ورم پہنچا ہو تو نجاست دھوئیں یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: اگر پانی بہانا ضرر کرے تو کسی عرق مثلاً عرق مکوہ وغیرہ سے گنگنا کر کے دھوئے نجاست حقیقی ان چیزوں سے بھی پاک ہو جاتی ہے، ہاں نہانے یا وضو میں پانی کے سوا دوسری چیز کام نہیں دیتی اور اگر ان سے بھی ضرر ہو تو کپڑا پانی یا عرق میں خوب بھگو کر اس سے موضع نجاست کو ملے دوبارہ دوسرا کپڑا سہ بارہ تیسرا بھگو کر ملے طہارت ہو جائے گی اور اگر یہ بھی نقصان دے تو جب تک حالت ضرر کی رہے ویسے ہی نماز پڑھے، معاف ہے، واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۸۸: از فراشی محلہ ۷۔ رجب ۱۳۲۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ لحاف توشک وغیرہ روئی دار کپڑے ناپاک ہو جائیں تو وہ مع روئی کے دھل کر پاک ہو سکتے ہیں یا روئی علیحدہ ہو کر کپڑا الگ اور روئی الگ دھونے سے پاک ہوگا اور اگر روئی کا سوت کات لیا جائے تو وہ سوت بغیر اسی کے کہ دری وغیرہ بنوائی جائے دھونے سے پاک ہو سکتا ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

1۔ رد المحتار باب الانجاس مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۲۱۱ Page 557 of 761

Fatawa Razawiya Volume 4

The Answer: Those clothes that can be wrung out, such as light mattresses, quilts, etc., will become pure by washing in this manner. Otherwise, place them in a flowing river or pour water over them until there is a strong conviction (Zann) that the impurity is no longer present, or wash them three times, allowing enough time between each wash for the previous water to drain away.

Arabic Text

In Al-Durr al-Mukhtar: The place of an invisible (impurity) becomes pure based on the prevailing thought (Ghalba-e-Zann) of the person washing it regarding the purity of the place, without a specific number. This is the given fatwa. For someone suffering from obsessive thoughts (waswasa), the measure for this is washing and wringing three times for items that can be wrung, and three times of drying, i.e., the cessation of dripping, for other items that absorb impurity. All of this applies when washing in a basin. However, if washed in a large reservoir or if plenty of water is poured over it and water flows over it, it becomes pure unconditionally, without the conditions of wringing, drying, and repeated dipping. This is the preferred (Mukhtar) view. Briefly.

Urdu Translation

In Durr al-Mukhtar, it is stated that a place where an invisible impurity is present becomes pure according to the prevailing thought of the washer that the place has now become pure, even without a specific count. This is what the fatwa is based on. If someone has obsessive thoughts (waswasa), they should wash and wring it three times, provided it is something that can be wrung. If it cannot be wrung, it should be dried three times, meaning the droplets of impurity absorbed within it should cease. All these points apply when washing in a tub, etc. If washed in a large pond, or if a lot of water is poured over it, or if water is made to flow over it, it will become pure unconditionally, without the requirement of wringing, drying, or repeated dipping. This is the preferred (Mukhtar) view. Summary (T).

Impure cotton yarn can be purified well by washing. In fact, purifying yarn by making a rug out of it is easier because it can then be easily wrung out, as is not hidden. And Allah, Glorified and Exalted, knows best.

Issue 189: From the Old City, 27 Rajab 1320 AH: Is it disliked (Makruh) or not to take water from a bathroom's small tank (Chah-bacha) using a pitcher and then wash it and bring it into use?

The Answer: It is not disliked, but without necessity, this should not be done using a pitcher meant for drinking, performing ablution (Wudu), or cooking.

Arabic Text	Urdu Translation
Because natural dispositions feel aversion towards this, and the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: Give glad tidings.	Because natural temperaments find it repulsive, and the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: Give good news.

1. Durr al-Mukhtar, Chapter of Impurities, printed by Mujtabai Delhi, 1/56 Page 558 of 761

फतावा रज़विया, खंड 4

उत्तर: जो कपड़े निचोड़े जा सकते हैं जैसे हल्की तोशक, रज़ाई आदि, वे इस प्रकार धोने से पवित्र (पाक) हो जाएँगे। अन्यथा उन्हें बहती नदी में रखें या उन पर पानी बहाएँ जब तक कि अशुद्धि (नजासत) शेष न रहने का दृढ़ विश्वास (ज़न्न) प्राप्त न हो जाए, या उन्हें तीन बार धोएँ और प्रत्येक बार इतना अंतराल (वक़्फ़ा) दें कि पिछला पानी निकल जाए।

अरबी पाठ

'अद-दुर्र अल-मुख्तार' में है: अदृश्य (नजासत) का स्थान, धोने वाले के इस प्रबल विचार (ग़ालिब गुमान) के साथ कि स्थान अब पवित्र हो गया है, बिना किसी विशिष्ट संख्या के भी पवित्र हो जाता है। इसी पर फतवा है। जिसे वसवसा (भ्रम) होता हो, उसके लिए इसका पैमाना उन चीज़ों के लिए तीन बार धोना और निचोड़ना है जो निचोड़ी जा सकती हैं, और जो चीज़ें नजासत सोख लेती हैं उनके लिए तीन बार सुखाना (यानी टपकना बंद होना) है। यह सब तब है जब टब आदि में धोया जाए। यदि बड़े जलाशय में धोया जाए या उस पर बहुत सा पानी डाला जाए और पानी ऊपर से बह जाए, तो वह निचोड़ने, सुखाने और बार-बार डुबाने की शर्तों के बिना बिल्कुल पाक हो जाएगा। यही पसंदीदा (मुख्तार) राय है। संक्षेप में।

उर्दू अनुवाद

दुर्रे मुख्तार में है कि (नजासत) न दिखाई देने वाली जगह धोने वाले के प्रबल विचार के साथ कि अब जगह पाक हो गई है, किसी खास संख्या के बिना भी पाक हो जाती है और इसी पर फतवा है। यदि वसवसा करने वाला हो तो तीन बार धोकर हर बार निचोड़े, बशर्ते वह ऐसी चीज़ हो जो निचोड़ी जा सके। यदि निचोड़ी न जा सके तो तीन बार सुखा लिया जाए, यानी जो नजासत उसके भीतर समा गई थी उसकी बूंदें खत्म हो जाएँ। ये सभी बातें तब हैं जब टब आदि में धोया जाए। यदि बड़े तालाब में धोया जाए या उस पर बहुत अधिक पानी डाला जाए या पानी प्रवाहित किया जाए, तो निचोड़ने या सुखाने और बार-बार गोता देने की शर्त के बिना बिल्कुल पाक हो जाएगी। यही मुख्तार है। संक्षेप (त)।

अशुद्ध रुई का सूत धोने से भली-भांति शुद्ध हो सकता है। वास्तव में, सूत को दरी बनाकर शुद्ध करना अधिक सरल है क्योंकि उसे निचोड़ना आसान हो जाता है, जैसा कि स्पष्ट है। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है।

मसला 189: पुराने शहर से, 27 रजब 1320 हिजरी: स्नानघर के चह-बच्चा (छोटे हौज) का पानी घड़े से निकालना और फिर उसे धोकर उपयोग में लाना मकरूह (नापसंद) है या नहीं?

उत्तर: मकरूह नहीं है, लेकिन आवश्यकता के बिना पीने, वज़ू करने या खाना पकाने के घड़े से यह काम न लिया जाए।

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
क्योंकि मानवीय स्वभाव इससे घृणा करता है और पैगंबर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: खुशखबरी दो।	क्योंकि स्वभाव इससे नफरत करते हैं और नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: खुशखबरी दो।

1. दुर्रे मुख्तार, नजासत का अध्याय, मुद्रित मुजतबाई दिल्ली, 1/56 पृष्ठ 761 का 558

الجواب: جو کپڑے نچوڑنے میں آ سکیں جیسے ہلکی تو شک رضائی وغیرہ وہ یوں ہی دھونے سے پاک ہو جائیں گے ورنہ بہتے دریا میں رکھیں یا ان پر پانی بہائیں یہاں تک کہ نجاست باقی نہ رہنے پر ظن حاصل ہو یا تین بار دھوئیں اور ہر بار اتنا وقفہ کریں کہ پہلا پانی نکل جائے۔

عربی متن

فی الدر المختار یطھر محل غیر مرئیة بغلبة ظن غاسل طھارة محلھا بلاعدد به یفتی وقدر ذلك لموسوس بغسل وعصر ثلثا فیما ینعصر وتثلیث جفاف ای انقطاع تقاطر فی غیرہ مما یتشرب النجاسة وھذا کله اذا غسل فی اجانة اما لوغسل فی غدیر اوصب علیه ماء کثیرا وجری علیه الماء طھر مطلقا بلاشروط عصر وتجفیف وتکرار غمس ھو المختار اھ باختصار۔

اردو ترجمہ

در مختار میں ہے (نجاست) نہ دکھائی دینے والی جگہ دھونے والے کے غالب گمان کے ساتھ کہ اب جگہ پاک ہو گئی کسی خاص تعداد کے بغیر بھی پاک ہو جاتی ہے اور اسی پر فتوی ہے اگر وسوسہ کرنے والا ہو تو تین بار دھو کر ہر بار نچوڑے جبکہ وہ ایسی چیز ہو جو نچوڑی جا سکتی ہے اگر نچوڑی نہ جا سکتی ہو تین بار خشک کر لیا جائے یعنی جو نجاست اس کے اندر جذب ہوئی اس کے قطرے ختم ہو جائیں یہ تمام باتیں اس صورت میں ہیں جب ٹب وغیرہ میں دھوئے اگر بڑے تالاب میں دھوئے یا اس پر بہت سا پانی ڈالے یا اس پر پانی جاری کرے تو نچوڑنے یا خشک کرنے اور بار بار غوطہ دینے کی شرط کے بغیر مطلقاً پاک ہو جائے گی یہی مختار ہے اھ تلخیص (ت)

ناپاک روئی کا سوت دھونے سے بخوبی پاک ہو سکتا ہے بلکہ دری بنا کر پاک کرنے سے سوت کی تطہیر آسان ہے کہ وہ نچوڑنے میں سہل آ سکتا ہے کما لا یخفی واللہ سبحنہ وتعالی اعلم۔

مسئلہ ۱۸۹: از شہر کہنہ ۲۷ رجب ۱۳۲۰ھ: غسل خانہ کے چہ بچہ کا پانی گھڑے سے نکالنا اور پھر اس کو دھو کر استعمال میں لانا مکروہ ہے یا نہیں؟

الجواب: مکروہ نہیں مگر بے ضرورت پینے یا وضو یا کھانا پکانے کے گھڑے سے یہ کام نہ لیا جائے۔

عربی متن	اردو ترجمہ
لان الطباع تتنفر عن هذا وقد قال صلی اللہ تعالی علیه وسلم بشروا	کیونکہ طبیعتیں اس سے نفرت کرتی ہیں اور نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: خوشخبری دو

1 در مختار باب الانجاس مطبوعہ مجتبائی دہلی ۵۶/۱ Page 558 of 761

Fatawa Ridawiyya Volume Four

...and do not create aversion. 1. And Allah Almighty knows best. (T)

Question 190: Ahmad Yar Khan, village Theri Ni'abat Khan, District and Tehsil Bareilly. What do the scholars of religion and followers of the firm Shariah say about this matter: a person in a state of ritual impurity (junub) first washes his hands, cleans the impurity below the navel, and then, wearing a clean lungi (waist wrap), performs the sunnah ritual bath (ghusl) in an open field. In this state, will that lungi remain clean or become impure? After the bath, has that person become ritually pure or remained impure? And are the splashes of that water clean or impure for another person? State the answer, may you be rewarded.

The Answer: The lungi will remain clean. The water used for the ritual bath is clean; no impurity will come from its splashes. Regarding the validity of the ritual bath (ghusl): if the lungi is such that water flows over every single part of the body underneath it, then the ghusl will be valid, otherwise not. And Allah Almighty knows best.

Question 191: From District Gurgaon, place Rewari, adjacent to the Tehsil. Hakim Jalaluddin, Tuesday, 14 Safar al-Muzaffar 1332 AH. Dogs lick the cauldrons of confectioners. In these same cauldrons, they make sweets and heat milk. Is it permissible to buy and eat or drink sweets or milk from them or not? State the answer, may you be rewarded.

The Answer: In the matter of outward cleanliness and impurity, the general rule of the purified Shariah is that impurity is not established by mere possibility. Only that specific thing whose impurity is known is impure and forbidden, that's all. Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him) says: "Be na'khudh ma lam na'rif shay'an haraman bi-'aynihi" 2. We will adopt this as long as we do not have knowledge of a specific thing being forbidden. (T) The complete research and detail of this matter is in our treatise 'Al-Ahla min al-Sukkar'. And Allah Almighty knows best.

Question 192: From Kot, District Bijnor, neighborhood Kotra. Asked by Imtiaz Hussain Sahib, 7 Shaban 1330 AH. What do the scholars of religion and jurists of the firm Shariah say: if clay utensils like bowls and basins etc. are contaminated with heavy

impurity like feces and urine, and they are washed with water to purify them and dried in the sun, in the same way...

1. Abu Dawood Sharif, Chapter on Dislike of Water, published by Aftab Alam Press, Lahore, 2/309
2. Fatawa Hindiyya, Chapter Twelve on Gifts and Entertainments, published by Noorani Kutub Khana, Peshawar, 5/322 Page 559 of 761

...और नफ़रत न फैलाओ। 1. और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला १९०: अहमद यार खां, मौज़ा ठरी नेआबत खां, ज़िला व तहसील बरेली। उलेमा-ए-दीन और शरीअत-ए-मतीन के पैरोकार इस मसले में क्या फ़रमाते हैं: एक जुनुबी (नापाक) शख़्स पहले हाथ धोकर नाफ़ से नीचे की नापाकी धो ले, फिर पाक तहबंद बांध कर मैदान में सुन्नत के मुताबिक़ ग़ुस्ल (धार्मिक स्नान) करे। ऐसी हालत में वह तहबंद पाक रहेगा या नापाक? और ग़ुस्ल से वह आदमी पाक हो गया या नापाक रहा? और उस पानी की छींटें दूसरे शख़्स के लिए पाक हैं या नापाक? बयान फ़रमाएं, आपको सवाब मिले।

अल-जवाब: तहबंद पाक रहेगा। ग़ुस्ल का पानी पाक है, उसकी छींटों से कोई नापाकी नहीं आएगी। रहा ग़ुस्ल का अदा होना: अगर तहबंद ऐसा है कि पानी उसके नीचे बदन के हर ज़र्रे-ज़र्रे पर बह जाएगा, तो ग़ुस्ल अदा हो जाएगा वरना नहीं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला १९१: ज़िला गुड़गांव, मक़ाम रेवाड़ी, मुत्तसिल तहसील। हकीम जलालुद्दीन, बरोज़ सह-शंबा (मंगलवार), १४ सफ़र अल-मुज़फ़्फ़र १३३२ हिजरी। हलवाइयों की कड़ाहियों को कुत्ते चाटते हैं। उन्हीं कड़ाहियों में वे मिठाई बनाते हैं और दूध गर्म करते हैं। उनके यहाँ से मिठाई या दूध लेकर खाना-पीना दुरुस्त है या नहीं? बयान फ़रमाएं, आपको सवाब मिले।

अल-जवाब: ज़ाहिरी पाकी और नापाकी के मामले में शरीअत-ए-मुतह्हरा का कायदा यह है कि सिर्फ़ शक या सम्भावना से नापाकी साबित नहीं होती। जिस ख़ास चीज़ की नापाकी यक़ीनी तौर पर मालूम हो, वही ख़ास चीज़ नजिस (गंदी) और हराम है, बस। इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) फ़रमाते हैं: "बे नाख़ुज़ मा लम नारिफ़ शैअन हरामन बि-ऐनीही" २. हम इसी को अख़्तियार करेंगे जब तक हमें किसी ख़ास चीज़ के हराम होने का इल्म न हो। (त) इस मसले की पूरी तहक़ीक़ और तफ़सील हमारे रिसाले 'अल-अहला मिन अस-सुक्कर' में है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला १९२: कोट, ज़िला बिजनौर, मोहल्ला कोटड़ा। सायल इम्तियाज़ हुसैन साहब, ७ शाबान १३३० हिजरी। क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरीअत-ए-मतीन कि अगर मिट्टी के बर्तन

जैसे प्याले और कुंडे वग़ैरा में नजासत-ए-ग़लीज़ा (भारी गंदगी) जैसे पाख़ाना और पेशाब लग जाए, और उसे पानी से धोकर पाक करें और धूप में सुखा दें, इसी तरह...

1. अबू दाऊद शरीफ़, बाब फ़ी कराहियत अल-मा, मतबुआ आफ़ताब आलम प्रेस लाहौर, ३०९/२
2. फ़तावा हिंदिया, अल-बाब अस-सानी अशर फ़ी अल-हदाया वल-ज़ियाफ़ात, मतबुआ नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, ३२२/५ पृष्ठ ५५९/७६१

فتاوی رضویہ جلد چہارم

ولا تنفروا ۱۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ اور متنفر نہ کرو۔ (ت)

مسئلہ ۱۹۰: احمد یار خان موضع ٹھری نجابت خاں ضلع و تحصیل بریلی علماء دین اتباع شرع متین کیا فرماتے ہیں مسئلہ ہذا میں جنبی شخص پیشتر ہاتھ دھو کر ناف سے نیچے ناپاکی دھولے بعد وہ تہبند پاک باندھ کر میدان میں مسنون غسل ادا کرے تو اس حالت میں وہ تہبند پاک رہے گا یا ناپاک اور غسل سے وہ آدمی پاک ہوگیا یا ناپاک رہا اور اُس پانی کی چھینٹ دیگر شخص کے واسطے پاک ہے یا ناپاک؟ بینوا توجروا۔

الجواب: تہبند پاک رہے گا غسل کا پانی پاک ہے اُسکی چھینٹ سے کوئی ناپاکی نہ آئے گی رہا غسل ادا ہوجانا اگر تہبند ایسا ہے کہ پانی اس کے نیچے کے تمام بدن پر بھی ذرہ ذرہ پر بہ جائے گا تو غسل ادا ہوجائے گا ورنہ نہیں واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۹۱: از ضلع گورگانوہ مقام ریواڑی متصل تحصیل حکیم جلال الدین بروز سہ شنبہ بتاریخ ۱۴ صفر المظفر ۱۳۳۲ھ حلوائیوں کی کڑاہیوں کو کتے چاٹتے ہیں انہی کڑاہیوں میں وہ شیرینی بناتے ہیں اور دودھ گرم کرتے ہیں اُن کے یہاں کی شیرینی یا دودھ لے کر کھانا پینا درست ہے یا کہ نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: طہارت و نجاست ظاہری میں شرع مطہر کا قاعدہ کلیہ یہ ہے کہ احتمال سے نجاست ثابت نہیں ہوتی جس خاص شے کی نجاست معلوم ہو وہی خاص نجس وحرام ہے وبس۔ امام محمد رحمہ اللہ تعالٰی فرماتے ہیں: بہ نأخذ مالم نعرف شیأ حراماً بعینہ ۲۔ ہم اسی کو اختیار کرینگے جب تک

ہمیں کسی خاص چیز کے حرام ہونے کا علم نہ ہو۔ (ت) مسئلہ کی تمامتر تحقیق و تفصیل ہمارے رسالہ الاحلی من السکر میں ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۹۲: از کوٹ ضلع بجنور محلہ کوٹڑہ مسئولہ امتیاز حسین صاحب ۷ شعبان ۱۳۳۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین کہ اگر مٹی کے برتن مثل پیالے و کونڈے وغیرہ میں نجاست غلیظہ مثل پاخانہ و پیشاب لگ جائے اور اس کو پانی سے دھو کر پاک کریں اور دھوپ میں خشک کردیں اسی طرح

1 ابو داؤد شریف باب فی کراہیۃ الماء مطبوعہ آفتاب عالم پریس لاہور ۳۰۹/۲ 2 فتاوٰی ہندیہ الباب الثانی عشر فی الہدایا والضیافات مطبوعہ نورانی کتب خانہ پشاور ۳۲۲/۵ Page 559 of 761

Fatawa Razvia Volume 4 If it is purified three times, does it become pure according to Sharia and fit for use, or does it remain impure?

Answer: Yes, it becomes pure. A glazed earthenware vessel whose pores are closed, like a pot, becomes pure just like a copper vessel by washing it only three times. And if it is not like that, such as water pitchers etc., wash them once and leave them until no more drops fall and no moisture remains, then wash again and leave them similarly; do this three times and it will become pure. A porcelain vessel that has a hairline crack should also be dried and washed three times in the same way. If it is intact, washing it only three times is sufficient. However, if the impurity has a physical body, it is necessary to remove that body. The meaning of drying is that it should not be so moist that the hand gets wet upon touching it; it doesn't matter if it remains slightly damp or clammy. Neither sun nor shade is a condition for this. In 'Durr-e-Mukhtar' it is stated:

(Arabic Text)	(Urdu Translation)
Amount of drying is fixed at three times, i.e., the cessation of dripping in non-squeezable items that absorb impurity; otherwise, by its removal as previously mentioned.	Drying three times has been prescribed, meaning for things that cannot be squeezed and absorb impurity, until the drops cease; otherwise, the impurity itself should be removed, as mentioned before. (T)

In 'Radd-ul-Muhtar' it is stated:

(Arabic Text)	(Urdu Translation)
His statement 'cessation of dripping' - Al-Quhistani added 'and the disappearance of moisture'. In Al-Tatarkhaniyah: the limit of drying is that it reaches a state where the hand does not get wet from it, and it is not a condition for it to become extremely dry. And Allah Almighty knows best.	To his (Durr-e-Mukhtar's) statement "cessation of dripping", Quhistani added that moisture should end. In Tatarkhaniyah, the limit of drying is that the hand should no longer get wet from it; it is not a condition for it to be completely bone-dry. (T)

Issue 193: Questioned by Maulvi Saleemullah Sahib, General Secretary Anjuman Numaniya Lahore, 30 Rabi al-Thani 1332 AH.

What do the scholars of religion and muftis of the clear Sharia say regarding this matter: can a Muslim use a leather well-bucket, a leather bucket, or a leather hookah used by non-believers after washing and cleaning it?

1. Durr-e-Mukhtar, Chapter of Impurities, printed by Mujtabai Delhi, 1/56
2. Radd-ul-Muhtar, Chapter of Impurities, printed by Mujtabai Delhi, 1/221

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 4 तीन मर्तबा पाक कर लिया जाए तो वह शरीयत के अनुसार पाक और इस्तेमाल के क़ाबिल रहा या नापाक है।

जवाब: हाँ, पाक हो गया। मिट्टी का चिकना बर्तन जिसके रोम (pores) बंद हो गए हों जैसे हांडी, वह तो तांबे के बर्तन की तरह सिर्फ़ तीन बार धो डालने से पाक हो जाता है। और जो ऐसा न हो जैसे पानी के घड़े वग़ैरा, उन्हें एक बार धोकर छोड़ दें कि फिर बूंद न टपके और तरी न रहे, दोबारा धोएं और इसी तरह छोड़ दें, तीन बार ऐसा ही करें तो पाक हो जाएगा। चीनी का बर्तन जिसमें बाल (दरार) हो, उसे भी इसी तरह सुखाकर तीन बार धोया जाएगा और यदि वह साबुत हो तो सिर्फ़ तीन बार धो देना काफ़ी है। मगर नजासत (गंदगी) अगर ठोस है तो उसका ठोस हिस्सा छुड़ा देना बहरहाल लाज़िम है। सुखाने के ये मायने हैं कि इतनी तरी न रहे कि हाथ लगाने से हाथ भीग जाए, सिर्फ़ नमी या सीलन का रहना कोई हर्ज़ नहीं। इसके लिए धूप या साया शर्त नहीं है। 'दुर्रे मुख़्तार' में है:

(अरबी पाठ)

नजासत सोखने वाली ऐसी चीज़ों में जो निचोड़ी नहीं जा सकतीं, सुखाने की मात्रा तीन बार है, यानी बूंदों का टपकना बंद हो जाना; वरना नजासत को दूर करने से, जैसा कि पहले गुज़रा।

(उर्दू अनुवाद)

तीन बार सुखाना तय किया गया है, यानी जो चीज़ निचोड़ी न जा सके और नजासत को सोख ले, उसके कतरे ख़त्म हो जाएं वर्ना उसकी नजासत को दूर किया जाए, जैसा कि गुज़रा। (त)

'रद्दुल मुहतार' में है:

(अरबी पाठ)

उनके(दुर्रे मुख़्तार) कथन "बूंदों का टपकना बंद होना" में क़ुहिस्तानी ने यह जोड़ा है "और नमी का चला जाना"। तातारख़ानिया में है: सुखाने की हद यह है कि वह ऐसी हालत में हो जाए कि उससे हाथ न भीगे और उसका बहुत ज़्यादा सूख जाना शर्त नहीं है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

(उर्दू अनुवाद)

इस (दुर्रे मुख़्तार) के क़ौल "इनक़िताअ-ए-तक़ातुर" (बूंदों का रुकना) में क़ुहिस्तानी ने इज़ाफ़ा किया है कि रुतूबत (नमी) ख़त्म हो जाए। तातारख़ानिया में है सुखाने की हद यह है कि अब उससे हाथ तर न हो, बिल्कुल खुश्क होना शर्त नहीं। (त)

मसला 193: सायल (पूछने वाले) मौलवी सलीम उल्लाह साहब, जनरल सेक्रेटरी अंजुमन नोमानिया लाहौर, 30 रबी-उल-आख़िर 1332 हिजरी।

क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरअ-ए-मतीन इस मसले में कि काफ़िरों का इस्तेमाल किया हुआ चर्स (बड़ा चमड़े का डोल) या चमड़े का डोल या चमड़े का हुक़्क़ा धोकर और साफ़ करके मुसलमान इस्तेमाल कर सकता है।

---

1. दुर्रे मुख़्तार, बाबुल अनजास, मुतबुआ मुज्तबाई दिल्ली, 1/56
2. रद्दुल मुहतार, बाबुल अनजास, मुतबुआ मुज्तबाई दिल्ली, 1/221

فتاوی رضویہ جلد چہارم تین مرتبہ پاک کر لیا جائے تو وہ عندالشرع پاک قابل استعمال رہا یا نجس ہے۔

الجواب: ہاں پاک ہو گیا مٹی کا برتن چکنا استعمالی جس کے مسام بند ہو گئے ہوں جیسے ہانڈی، وہ تو تانبے کے برتن کی طرح صرف تین بار دھو ڈالنے سے پاک ہو جاتا ہے اور جو ایسا نہ ہو جیسے پانی کے گھڑے وغیرہ ان کو ایک بار دھو کر چھوڑ دیں کہ پھر بوند نہ ٹپکے اور تری نہ رہے دوبارہ دھوئیں اور اسی طرح چھوڑ دیں سہ بارہ ایسا ہی کریں کہ پاک ہو جائیگا چینی کا برتن جس میں بال ہو وہ بھی یوں ہی خشک کر کے تین بار دھویا جائے گا اور ثابت ہو تو صرف تین بار دھو دینا کافی ہے مگر نجاست اگر جرم دار ہے تو اس کا جرم چھڑا دینا بہر حال لازم ہے خشک کرنے کے یہ معنی ہیں کہ اتنی تری نہ رہے کہ ہاتھ لگانے سے ہاتھ بھیگ جائے خالی نم یا سیل کا رہنا مضائقہ نہیں نہ اس کے لئے دھوپ یا سایہ شرط در مختار میں ہے :

| قدر بتثلیث جفاف ای انقطاع تقاطر فی غیر منحصر مما یتشرب النجاسۃ والا فبقلعھا کما مر۔ | تین بار خشک کرنا مقرر کیا ہے یعنی جو چیز نچوڑی نہ جا سکتی ہو اور نجاست کو جذب کرلے اس کے قطرے ختم ہوجائیں ورنہ اس کی نجاست کو دُور کیا جائے، جیسا کہ گزرا۔ (ت) |

ردالمحتار میں ہے:

| قولہ انقطاع تقاطر زاد القھستانی وذھاب النداوۃ وفی التاترخانیۃ حد التجفیف ان یصیر بحال لاتبتل منہ الید ولایشترط صیرورتہ یابسا جدا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ | اس (در مختار) کے قول "انقطاع تقاطر" میں قہستانی نے اضافہ کیا ہے کہ رطوبت ختم ہوجائے۔ تاتارخانیہ میں ہے خشک کرنے کی حد یہ ہے کہ اب اس سے ہاتھ تر نہ ہو بالکل خشک ہونا شرط نہیں۔ (ت) |

مسئلہ ۱۹۳: مسئولہ مولوی سلیم اللہ صاحب جنرل سیکریٹری انجمن نعمانیہ لاہور ۳۰ ربیع الآخر ۱۳۳۲ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ کفار کا استعمال کیا ہوا چرس یا ڈول چرمی یا حقہ چرمی دھو کر اور صاف کر کے مسلمان استعمال کر سکتا ہے۔

---

1. در مختار باب الانجاس مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/۵۶
2. رد المحتار باب الانجاس مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/۲۲۱

Fatawa Ridawiyya, Volume 4

Answer: After washing and cleaning, no doubt remains; its use is undoubtedly permissible. It is narrated in Sahihayn, Musnad of Imam Ahmad, Sunan Abu Dawud, and Jami' al-Tirmidhi from Abu Tha'laba (may Allah be pleased with him):

And the wording is from Tirmidhi: He said the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) was asked about the pots of the Magians. He said: "Clean them by washing and cook in them." And Allah knows best.

The words are from Imam Tirmidhi; he says that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) was asked regarding the pots of the Magians, so he replied: Wash them to make them pure and cook in them. (T)

Problem 194 to 197: From Lucknow, Chobdari neighborhood, adjacent to the old Spectacle Makers' mansion, house number 103, sent by Hazrat Syed Muhammad Mian Sahib Marehrawi, 5 Muharram 1334 AH.

(1) A part of a cloth or body becomes impure. Water was poured on it for the first time, then the droplets were wiped off by hand. Similarly, water was poured three times, and with the same hand that wiped the first droplets, the droplets were wiped without washing that hand. Would this washed limb and that hand both become pure, given that the washed limb was touched by the hand that wiped the washing-water (ghusala) of the first, second, and third times and was not itself washed with separate water? (2) If purity cannot be achieved by this method, what should be done? (3) After washing the body and shaking it, all the drops fell off, except for those at the roots of hair or very fine ones that don't fall even by shaking. In such a case, will washing the limb three times make it pure or not? If not, what should be done, especially when both hands are impure? (4) In purifying the body, is it necessary for the dripping (taqatur) to cease after each wash, or is it necessary to remove every single drop, even if small, which just spreads over the body by wiping?

The Answer: In purifying the body, it is not necessary to clean small droplets and wash again, nor is it required to wait for the dripping to stop. Leaving aside droplets and dripping, it's not even mandatory for the stream of water to stop. If the impurity is visible (mar'iyya), then the goal is the removal of its substance, even if it happens in one wash. If it is invisible (ghayr mar'iyya), then the goal is the predominance of opinion (ghalaba-e-zann) of its removal, which is estimated by doing it three times (tathlith) where squeezing (asr) is a condition but is difficult.

1 Jami' al-Tirmidhi, Chapter on Eating in the Vessels of Non-Believers, published by Kutub Khana Rashidiya Delhi, 2/4

फ़तावा रज़विया, खंड 4

उत्तर: धोने और साफ कर लेने के बाद कोई संदेह नहीं रहता, उपयोग निसंदेह जायज़ है। सहीहैन, मसनद इमाम अहमद, सुनन अबू दाऊद और जामी' तिरमिज़ी शरीफ़ में अबू सालबा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है:

और शब्द तिरमिज़ी के हैं: उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से मजूसियों (अग्निपूजकों) के बर्तनों के बारे में पूछा गया। उन्होंने फ़रमाया: "उन्हें धोकर साफ कर लो और उनमें पकाओ।" और अल्लाह बेहतर जानता है।

ये शब्द इमाम तिरमिज़ी के हैं; वे कहते हैं कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से मजूसियों की हांडियों के बारे में पूछा गया तो आपने फरमाया: उन्हें धोकर पाक कर लो और उनमें पकाओ। (त)

मसाला 194 से 197: लखनऊ से, चोबदारी मोहल्ला, पुरानी ऐनक साज़ों की कोठी के पास, मकान नंबर 103, प्रेषित हज़रत सैयद मुहम्मद मियां साहब मारहरवी, 5 मुहर्रम 1334 हिजरी।

(1) कपड़े या शरीर का कोई हिस्सा नापाक (अशुद्ध) हो गया। उस पर पहली बार पानी डाला गया, फिर हाथ से उसकी बूंदें पोंछ दी गईं। इसी तरह तीन बार पानी डाला गया और उसी हाथ से, जिससे पहली बार की बूंदें पोंछी थीं, बिना उसे धोए बूंदें पोंछ दी गईं। क्या यह धुला हुआ अंग और वह हाथ दोनों पाक हो जाएंगे, जबकि धुले हुए अंग को वह हाथ लगा है जिसने पहली, दूसरी और तीसरी बार के धुलाई के पानी (ग़साला) को पोंछा था और जिसे खुद अलग पानी से नहीं धोया गया था? (2) यदि इस विधि से पाकी हासिल न हो सके तो क्या किया जाए? (3) शरीर को धोकर झटक दिया गया और सब बूंदें गिर गईं, सिवाय उन बूंदों के जो बालों की जड़ों में हैं या बहुत ही बारीक हैं जो झटकने से भी नहीं गिरतीं। ऐसी स्थिति में क्या अंग को तीन बार धोने से वह पाक हो जाएगा या नहीं? यदि नहीं, तो क्या किया जाए, विशेष रूप से उस स्थिति में जब दोनों हाथ नापाक हों? (4) शरीर पाक करने में क्या हर बार धोने के बाद टपकना बंद होना ज़रूरी है, या हर बूंद को, चाहे वह छोटी ही क्यों न हो और पोंछने से सिर्फ शरीर पर फैल जाती हो, उसे भी दूर करना यानी वही फैला देना ज़रूरी है?

उत्तर: शरीर पाक करने में न तो छोटी बूंदों को साफ करके दोबारा धोना ज़रूरी है और न ही टपकना बंद होने का इंतज़ार करना आवश्यक है। बूंदों और टपकने की तो बात ही छोड़िए, पानी की धारा का रुकना भी अनिवार्य नहीं है। यदि गंदगी दिखने वाली (मरइय्या) है, तो उसकी असल चीज़

का हटना ही अपेक्षित है, चाहे वह एक ही बार में हो जाए। और यदि गंदगी न दिखने वाली (ग़ैर मरइय्या) है, तो उसके हटने का प्रबल विचार (ग़लबा-ए-ज़न्न) प्राप्त करना है, जिसका अनुमान तीन बार (तस्लीस) धोने से लगाया गया है जहाँ निचोड़ना (अस्र) शर्त है और वह कठिन हो।

---

1 जामी' तिरमिज़ी, गैर-मुस्लिमों के बर्तनों में खाने का अध्याय, कुतुब खाना रशीदिया दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 2/4

فتاوی رضویہ جلد چہارم

الجواب : دھونے نے صاف کر لینے کے بعد کوئی شبہ نہیں رہتا، استعمال بلا شبہ جائز ہے۔

صحیحین و مسند امام احمد و سنن ابی داؤد و جامع ترمذی شریف میں ابوثعلبہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ہے :

واللفظ للترمذی قال سئل رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم عن قدور المجوس فقال انقوھا غسلا واطبخوا فیھا - واللہ تعالیٰ اعلم۔

الفاظ امام ترمذی کے ہیں فرماتے ہیں نبی اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے مجوسیوں کی ہانڈیوں کے متعلق پوچھا گیا تو آپ نے فرمایا: انہیں دھو کر پاک کرلو اور ان میں پکاؤ۔ (ت)

مسئلہ ۱۹۴ تا ۱۹۷: از لکھنؤ چوبداری محلہ متصل کوٹھی قدیم عینک سازان مکان نمبر ۱۰۳ مرسلہ حضرت سید محمد میاں صاحب مارہروی ۵ محرم ۱۳۳۴ھ

(۱) کپڑے یا بدن پر کوئی حصہ نجس ہو گیا اُس پر پانی پہلی مرتبہ ڈالا پھر ہاتھ سے اس کے قطرے پونچھ ڈالے ، اسی طرح تین مرتبہ پانی ڈالا اور اُسی ہاتھ سے جس سے پہلی مرتبہ قطرے پونچھے تھے اُس کو دھوئے بغیر قطرے پونچھے تو آیا یہ عضو مغسول اور وہ ہاتھ دونوں پاک ہو جائیں گے بحالیکہ عضو مغسول کو وہ ہاتھ لگا ہے جس نے پہلی اور دوسری تیسری مرتبہ کے غسالہ کو پونچھا تھا اور خود الگ پانی سے دھویا نہ گیا تھا۔ (۲) اگر اس ترکیب سے پاکی نہ ہوسکے تو کیا کیا جائے؟ (۳) بدن کو دھو کر جھٹک دیا سب قطرے گر گئے ہاں وہ رہ گئے جو بال کی جڑ میں ہیں یا بہت ہی باریک ہیں یا بہت ہی باریک میں جھٹکنے سے بھی نہیں گرتے تو ایسی صورت میں عضو تین بار دھو ڈالے پاک ہو جائیگا یا نہیں ، اگر نہیں تو کیا کرے ، خاص کر

اُس صورت میں جب دونوں ہاتھ نجس ہوں۔ (۴) بدن پاک کرنے میں ہر بار کے دھونے میں تقاطر جانا رہنا ضرور ہے یا مطلقاً ہر قطرہ کا خواہ وہ چھوٹا ہی ہو اور پونچھنے سے صرف بدن پر پھیل کر رہ جاتا ہو اس کا بھی دُور کرنا یعنی وہی پھیلا دینا ضرور ہے۔ الجواب: بدن پاک کرنے میں نہ چھوٹے قطرے صاف کر کے دوبارہ دھونا ضرور نہ انقطاعِ تقاطر کا انتظار درکار بلکہ قطرات و تقاطر درکنار دھار کا موقوف ہونا لازم نہیں نجاست اگر مرئیہ ہو جب تو اُس کے عین کا زوال مطلوب اگرچہ ایک ہی بار میں ہو جائے اور غیر مرئیہ ہے تو زوال کا غلبہ ظن جس کی تقدیر تثلیث سے کی گئی جہاں عصر شرط ہے اور وہ متعذر ہو

---

1 جامع ترمذی باب ما جاء في الأكل في آنية الكفار مطبوعہ کتب خانہ رشیدیہ دہلی ۲/۴

Volume 4 Fatawa Razawiyya Just as with a clay pot or something that can be squeezed, like a heavy carpet, rug, mattress, or quilt, the cessation of dripping or the disappearance of moisture is considered equivalent to squeezing. In the case of the body, squeezing is not required because there is no need for it; it is sufficient for water to flow over it three times. Even if the first stream is still on the lower part—for example, if there was invisible impurity on the leg, water was poured from above once and it was still flowing from the heel, then water was poured again from above while its flow below was still remaining, then poured a third time—when this water drains off, purification is achieved. In fact, according to one school of thought, waiting for the cessation of dripping is not permissible. If one waits, purification will not occur because, according to them, in the purification of the body, instead of squeezing, consecutive washings (i.e., three washings in succession) are necessary. Although this is not necessary in the more preferred (Arjah) school of thought, it is appropriate to observe it to avoid contradiction. With this explanation, the answers to the last three questions have been provided. It is stated in Durr al-Mukhtar:

Arabic

The place of visible impurity is purified by removing its essence and its trace, even if it is once or more than three times according to the most correct opinion. The remaining of a persistent trace is not harmful. The place of invisible impurity is purified by the strong conviction of the washer regarding its purity without a specific number; this is what the fatwa is based on. It is estimated by washing and squeezing three times for what can be squeezed, with exaggeration such that it no longer drips. And for what cannot be squeezed but absorbs impurity, it is purified by drying three times, i.e., the cessation of dripping; otherwise, it is by its removal.

Urdu Translation

According to the most correct school of thought, the place of visible impurity becomes pure by removing the essence of the impurity and its trace, whether it happens in one time or more than three times; this is the most correct school of thought. The remaining of an inevitable (non-removable) trace is not harmful. And where the impurity is not visible, if the person washing attains a dominant belief that the place has become pure, it will become pure. In this, counting is not a condition, and the fatwa is based on this. A thing that can be squeezed becomes pure by washing it three times and squeezing it well so that no drop remains. And that whose squeezing is not possible and in which impurity is absorbed, it becomes pure by

Arabic	Urdu Translation
	drying it three times, i.e., the ending of the drops; otherwise, it should be removed. (T)

It is stated in Radd al-Muhtar:

Arabic	Urdu Translation
By drying three times, it means the drying of each wash of the three washings. This is a condition for things other than the body and the like. As for the body, consecutive washing three times takes its place. It is stated in Al-Hilyah that the more apparent view is that in both, succession and...	Drying three times means that it should be dried after each wash. This condition is for things other than the body, etc. In the case of the body, washing three times consecutively will be its equivalent. In Hilyah, it is stated that the most apparent thing is that in this, succession and...

1 Durr al-Mukhtar, Chapter of Impurities, published by Mujtabai, Delhi, 1/56.

खंड चार फ़तावा रज़विया जैसे मिट्टी ۵ घड़ा या जिसे निचोड़ा जा सके जैसे भारी कालीन, दरी, गद्दा, लिहाफ़, वहाँ टपकने का रुकना या नमी का गायब होना निचोड़ने के बराबर माना गया है। शरीर के मामले में निचोड़ना आवश्यक नहीं है क्योंकि उसकी ज़रूरत नहीं है; केवल تین बार पानी बह जाना पर्याप्त है। भले ही पहली धारा अभी निचले हिस्से पर बाकी हो—उदाहरण के लिए, पैर पर अदृश्य अशुद्धि (नजासत) थी, ऊपर से एक बार पानी बहाया गया और वह بهی। एड़ी से बह रहा है, फिर ऊपर से दोबारा पानी बहाया गया जबकि उसका नीचे बहना अभी बाकी था, फिर तीसरी बार बहाया गया—जब यह पानी उतर जाए, तो शुद्धता (तहरीर) हो गई। बल्कि एक पंथ (मज़हब) के अनुसार तो टपकना रुकने का इंतज़ार करना जायज़ नहीं है। यदि कोई इंतज़ार करेगा, तो शुद्धता नहीं होगी क्योंकि उनके अनुसार शरीर की शुद्धता में निचोड़ने के स्थान पर लगातार धोना (यानी तीन बार लगातार धोना) आवश्यक है। यद्यपि सबसे पसंदीदा (अरजह) मत में इसकी भी आवश्यकता नहीं है, लेकिन मतभेद से बचने के लिए इसका पालन करना उचित है। इस विवरण से अंतिम तीन प्रश्नों का उत्तर मिल गया। 'दुर-अल-मुख्तार' में है:

अरबी

दृश्य अशुद्धि के स्थान को उसकी सत्ता और निशान को हटाने से शुद्ध किया जाता है, चाहे वह एक बार में हो या तीन बार से अधिक, सबसे सही मत के अनुसार। एक अनिवार्य निशान का रह जाना हानिकारक नहीं है। और अदृश्य अशुद्धि का स्थान धोने वाले के इस दृढ़ विश्वास से शुद्ध हो जाता है कि वह स्थान शुद्ध हो गया है, बिना किसी संख्या के, इसी पर फतवा दिया जाता है। और जिसे निचोड़ा जा सकता है, उसे तीन बार धोने और खूब निचोड़ने से मापा जाता है, इस हद तक कि वह अब टपके नहीं। और जो निचोड़ा नहीं जा सकता लेकिन अशुद्धि सोख लेता है, उसे तीन

उर्दू अनुवाद

सबसे सही मत के अनुसार, दृश्य अशुद्धि के स्थान को अशुद्धि की मूल वस्तु और उसके प्रभाव को दूर करने से शुद्ध किया जाता है, चाहे वह एक बार में हो या तीन बार से अधिक, यही सबसे सही मत है। इससे अनिवार्य (न हटने वाले) प्रभाव का बाकी रहना कुछ हानिकारक नहीं है। और जहाँ अशुद्धि दिखाई न दे, यदि धोने वाले को उस स्थान के शुद्ध होने का प्रबल अनुमान हो जाए, तो वह शुद्ध हो जाएगा। इसमें गिनती शर्त नहीं है और इसी पर फतवा है। जिस चीज़ को निचोड़ा जा सकता है वह तीन बार धोने और खूब निचोड़ने के साथ कि अब कोई बूंद बाकी न रहे, शुद्ध हो जाती है। और जिसका निचोड़ना संभव न हो और उसमें अशुद्धि सोख ली गई हो, वह तीन बार सुखाने यानी बूंदों के खत्म होने

अरबी	उर्दू अनुवाद
बार सुखाने यानी बूंदों के खत्म होने से शुद्ध किया जाता है; अन्यथा इसे हटा दिया जाए।	से शुद्ध हो जाती है, अन्यथा उसे हटा दिया जाना चाहिए। (त)

'रद्द अल-मुह्तार' में है:

अरबी	उर्दू अनुवाद
तीन बार सुखाने से तात्पर्य है तीन धुलाइयों में से प्रत्येक धुलाई का सूखना। यह शरीर के अलावा अन्य चीज़ों के लिए शर्त है। जहाँ तक शरीर का प्रश्न है, तीन बार लगातार धोना इसके बराबर होगा। 'अल-हिल्या' में कहा गया है कि अधिक स्पष्ट बात यह है कि इन दोनों में निरंतरता और...	तीन बार सुखाने का मतलब यह है कि हर बार धोने के बाद सुखाया जाए। यह शर्त शरीर आदि के अलावा अन्य चीज़ों में है। शरीर में तीन बार लगातार धोना इसके बराबर होगा। 'हिल्या' में फरमाया कि सबसे स्पष्ट बात यह है कि इसमें निरंतरता और...

1 दुर-अल-मुख्तार, अशुद्धियों का अध्याय, मुजतबाई दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 1/56।

جلد چہارم فتاوی رضویہ جیسے مٹی کا گھڑا یا معتصر ہو جیسے بھاری قالین دری توشک لحاف وہاں انقطاع تقاطر یا ذباب تری کو قائم مقام عصر رکھا ہے بدن میں عصر ہی درکار نہیں کہ ان کی حاجت ہو صرف تین بار پانی بہہ جانا چاہئے اگرچہ پہلی دھار ابھی حصہ زیریں پر باقی ہے مثلاً ساق پر نجاست غیر مرئیہ تھی اوپر سے پانی ایک بار بہایا وہ ابھی ایڑی سے بہہ رہا ہے دوبارہ اوپر سے پھر بہایا ابھی اس کا سیلان نیچے باقی تھا سہ بارہ پھر بہایا جب یہ پانی اتر گیا تطہیر ہو گئی بلکہ ایک مذہب پر تو انقطاع تقاطر کا انتظار جائز نہیں اگر انتظار کرے گا طہارت نہ ہو گی کہ ان کے نزدیک تطہیر بدن میں عصر کی جگہ توالی غسلات یعنی تینوں غسل پے در پے ہونا ضرور ہے مذہب ارجح میں اگرچہ اس کی بھی ضرورت نہیں مگر خلاف سے بچنے کے لئے اس کی رعایت ضرور مناسب ہے اس تقریر سے تین سوال اخیر کا جواب ہو گیا۔ در مختار میں ہے:

عربی **اردو ترجمہ**

یطھر محل نجاسة مرئیة بقلعھا اصح مذہب کے مطابق نظر آنے والی نجاست کی جگہ عین نجاست

ای زوال عینھا واثرھا ولو بمرة اور اس کے اثر کو دُور کرنے سے پاک ہو جاتی ہے اگرچہ ایک

او بما فوق ثلث فی الاصح ولا مرتبہ سے ہو یا تین بار سے زیادہ یہ اصح مذہب ہے۔ اس سے

یضر بقاء اثر لازم ومحل غیر لازم ہونے والے (نہ دُور ہونے والے) اثر کا باقی رہنا کچھ نقصان

مرئیة بغلبة ظن غاسل طھارة دہ نہیں اور جہاں نجاست نظر نہ آتی ہو اگر دھونے والے کو اس

محلھا بلا عدد بہ یفتی وقدر جگہ کے پاک ہونے کا غالب گمان حاصل ہو جائے تو پاک ہو

بغسل وعصر ثلثا فیما ینعصر جائیگی۔ اس میں گنتی شرط نہیں اور اسی پر فتوٰی ہے۔ جس چیز

مبالغا بحیث لا یقطر و بتثلیث کو نچوڑا جا سکتا ہے وہ تین بار دھونے اور خوب نچوڑنے کے

جفاف ای انقطاع تقاطر فی غیر ساتھ کہ اب کوئی قطرہ باقی نہ ہو، پاک ہو جاتی ہے۔ اور جس کا

عربی	اردو ترجمہ
منعصر مما یتشرب النجاسة والا فبقلعها 1۔	نچوڑنا ممکن ہو اور اس میں نجاست جذب ہوتی ہو وہ تین بار خشک کرنے یعنی قطرات کے ختم ہونے سے پاک ہو جاتی ہے ورنہ اسے زائل کیا جائے۔ (ت)

ردالمختار میں ہے:

عربی	اردو ترجمہ
بتثلیث جفاف ای جفاف کل غسلة من الغسلات الثلاث وھذا شرط فی غیر البدن ونحوہ اما فیه فیقوم مقامه توالی الغسل ثلثا قال فی الحلیة والاظھر ان کلا من التوالی	تین بار خشک کرنے کا مطلب یہ ہے کہ ہر بار دھونے کے بعد خشک کیا جائے یہ شرط غیر بدن وغیرہ میں ہے بدن میں تین بار مسلسل دھونا اس کے قائم مقام ہو گا حلیہ میں فرمایا اظہر بات یہ ہے کہ اس میں تسلسل اور

1 درمختار باب الانجاس مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/۵۶

Fatawa Razviya, Volume 4

"And drying (neither of them) is not a condition in it. This has been clearly stated in Al-Nawazil, and Al-Dhakhira contains what agrees with it. [End quote] This was affirmed in Al-Bahr al-Ra'iq. (T)"

Regarding the first question, it has become clear that wiping the droplets every time was pointless; rather, it was making the hand impure without reason. However, since he did so—for example, if there was impurity on the foot, he took a lota (water vessel) in his right hand and poured water over it, and the droplets that remained were wiped with the left hand—this hand became impure. But it is such an impurity that would become pure with two washings. This is because the foot had been washed once; now, water had to be poured twice more on the foot. After the second time, water had to be poured only once more. But after washing again, he wiped the droplets with the impure hand, so the foot became contaminated with that impurity which requires two washings. Thus, the foot needed to be washed twice again, and the hand remained impure with that same impurity without any reduction because water did not flow over it. Now, the water for the third time on the foot is in the ruling of the second time, meaning it needs one more washing after it. But even after that, if he used the same impure hand to wipe the droplets, then the foot again required washing twice. And so on (and thus it is. -T). Therefore, it is necessary for him to pour water twice on the foot and not wipe the droplets, and wash that hand separately twice. It is stated in Radd al-Muhtar:

"It is said in Al-Imdad: The three waters differ in their impurity. The first water, whatever it touches, is purified by washing three times; the second, by washing twice; and the third, by washing once. Similarly, for the three vessels in which something was washed one after another. It is also said: the third vessel becomes pure just by pouring out the water, the second by one washing, and the first by two washings. [End quote] And Allah Almighty knows best. (T)"

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Impurities, Mujtabai Press, Delhi, 1/221
2. Radd al-Muhtar, Chapter on Impurities, Mujtabai Press, Delhi, 1/222

फतावा रज़विया, जिल्द चौथी

"और सुखाना (दोनों में से) कोई बात भी शर्त नहीं है। अल-नवाज़िल में इसकी स्पष्ट व्याख्या है, अल-ज़खीरा में इसके अनुकूल बात मौजूद है। [समाप्त] बहरुल रैक में इसे बरक़रार रखा गया है। (त)"

रहा पहला सवाल, तो यह ज़ाहिर हो गया कि हर बार बूंदों को पोंछना फ़ुज़ूल था, बल्कि बिना वजह हाथ नापाक कर लेना था। मगर चूंकि उसने ऐसा किया, मिसाल के तौर पर पैर पर नजासत (गंदगी) थी, उसने सीधे हाथ में लोटा लेकर उस पर पानी बहाया और जो बूंदें बाकी रहीं उन्हें बाएं हाथ से पोंछ लिया, तो यह हाथ नापाक हो गया। मगर ऐसी नजासत से कि जो दो बार धोने से पाक हो जाएगी। इसलिए कि एक बार धुल चुकी, अब पैर पर दो बार पानी डालना था। दूसरी बार के बाद एक ही बार डालना था, लेकिन उसने दोबारा धोकर नापाक हाथ से फिर उसके कतरे पोंछे, तो अब पैर को वह नजासत लग गई जो दो बार धोने की मोहताज है। तो पैर को फिर दो बार धोने की ज़रूरत हो गई और हाथ उसी नजासत से बदस्तूर नापाक रहा, उसमें कमी नहीं हुई क्योंकि उस पर पानी नहीं बहा। अब पैर पर तीसरी बार का पानी दोबारा के हुक्म में है कि इसके बाद एक बार और धोने की ज़रूरत है। लेकिन उसने इसके बाद भी उसी नापाक हाथ से कतरे साफ़ करने में इस्तेमाल किया, तो अब फिर पैर को दो बार धोने की ज़रूरत हो गई। और इसी तरह है (व कज़ा -त)। लिहाज़ा उस पर लाज़िम है कि पैर पर दो बार पानी बहाए और कतरे न पोंछे, और उस हाथ को अलग से दो बार धो ले। रद्दुल मुख्तार में है:

"अल-इमदाद में फ़रमाया: नजासत के मामले में तीनों पानी अलग-अलग हुक्म रखते हैं। पहला पानी जिस चीज़ को लग जाए, वह तीन बार धोने से पाक होती है। दूसरा पानी जिसे पहुंचे वह दो बार, और तीसरे पानी जिसे पहुंचे वह एक बार धोने से पाक हो जाती है। इसी तरह वे तीनों बर्तन जो एक के बाद एक उसमें धोए गए। और कहा गया है कि तीसरा बर्तन महज़ पानी बहाने से पाक हो जाएगा, दूसरा एक बार धोने से और पहला दो बार धोने से पाक होगा। [समाप्त] और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)"

1. रद्दुल मुख्तार, बाबुल अनजास, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/221
2. रद्दुल मुख्तार, बाबुल अनजास, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/222

पृष्ठ 761 का 563

فتاوی رضویہ جلد چہارم

والجفاف لیس بشرط فیه وقد صرح به في النوازل وفی الذخیرة ما یوافقه 1 اھ واقره في البحر- اور خشک کرنے (دونوں) میں سے کوئی بات بھی شرط نہیں نواز ل میں اس کی تصریح ہے، ذخیرہ میں اس کے موافق ہے اھ بحر الرائق میں اس کو بر قرار رکھا ہے۔ (ت)

رہا سوال اول یہ تو ظاہر ہو گیا کہ ہر بار قطرات کا پونچھنا فضول تھا بلکہ بلا وجہ ہاتھ ناپاک کر لینا مگر جبکہ اس نے ایسا کیا، مثلاً پاؤں پر نجاست تھی سیدھے ہاتھ میں لوٹالے کر اُس پر پانی بہایا اور جو قطرات باقی رہے بائیں ہاتھ سے پونچھ لیے تو یہ ہاتھ ناپاک ہو گیا مگر ایسی نجاست سے کہ دو بار دھونے سے پاک ہو جائے گی اس لیے کہ ایک بار دھل چکی اب پاؤں پر دوبار پانی ڈالنا تھا دوسری بار کے بعد ایک ہی بار ڈالنا تھا لیکن اس نے دوبارہ دھو کر نجس ہاتھ سے پھر اس کے قطرے پونچھے تو اب پاؤں کو وہ نجاست لگ گئی جو دو بار دھونے کی محتاج ہے تو پاؤں کو پھر دو بار دھونے کی ضرورت ہو گئی اور ہاتھ بدستور اُسی نجاست سے نجس رہا اُس میں تخفیف نہ ہوئی کہ اُس پر سیلانِ آب نہ ہوا اب پاؤں پر سہ بارہ کا پانی دوبارہ کے حکم میں ہے کہ اس کے بعد ایک بار اور دھونے کی حاجت ہے لیکن اس نے اس کے بعد بھی وہی نجس ہاتھ سے قطرات صاف کرنے میں استعمال کیا تو اب پھر پاؤں کو دو ۲ بار دھونے کی ضرورت ہو گئی وہکذا (اور اسی طرح ہے۔ت) لہذا اُسے لازم کہ پاؤں پر دو بار پانی بہائے اور قطرات نہ پونچھے اور وہ ہاتھ جدا دو بار دھو لے۔ ردالمحتار میں ہے:

قال في الامداد والمیاه الثلثة متفاوتة فی النجاسة فالاولي یطهر ما اصابته بالغسل ثلثا والثانیة بالثنتین والثالثة بواحدة وکذا الاوانی الثلثة التی غسل فیها واحدة بعد واحدة وقیل یطهر الاناء الثالث بمجرد الاراقة والثانی بواحدة والاول بثنتین 2 اھ واللہ تعالی اعلم۔ "الامداد" میں فرمایا نجاست میں تینوں

پانی الگ الگ حکم رکھتے ہیں پہلا پانی جس چیز کو لگ جائے وہ تین بار دھونے سے پاک ہے۔ دوسرا پانی جسے پہنچے وہ دو بار، اور تیسرے پانی جسے پہنچے ایک بار دھونے سے پاک ہو جاتی ہے۔ اسی طرح وہ تینوں برتن جو یکے بعد دیگرے اس میں دھوئے گئے۔ اور کہا گیا ہے تیسرا برتن محض پانی بہانے سے پاک ہو جائے گا دوسرا ایک بار دھونے سے اور پہلا دو بار دھونے سے پاک ہو گا اھ واللہ تعالی اعلم (ت)

1 ردالمحتار باب الانجاس مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۲۲۱ 2 ردالمحتار باب الانجاس مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۲۲۲

Fatawa Razawiyya Volume IV

Problem 198: From Sarnaya district Bareilly, requested by Amir Ali Sahib Razavi, 16 Shawwal 1322 AH. If splashes of ox urine, dung, etc. have fallen on the clothes and there is no opportunity to change clothes, will the prayer be valid in such a state or not?

Answer: If the splashes cover less than a quarter of the clothes, the prayer will be valid, otherwise not. Not having time due to farm work is not considered a valid excuse. And Allah Almighty knows best.

Problem 199: From the village of Bhota Bhoti, Basutoland, Africa, sent by Haji Ismail Miyan Sahib Siddiqui Hanafi Qadri son of Amir Miyan, 23 Safar 1336 AH. Ghee was hot, a chicken chick fell into it and died immediately. Is it permissible to eat this ghee or not?

Answer: The ghee has become impure; eating it without purifying it is forbidden. There are three ways to purify it: One is to mix as much water into it and stir it until all the ghee comes to the top, then remove it. Do the same with a second portion of water. Then wash it a third time in the same manner. If the ghee has cooled and solidified, then mix equal amounts of water all three times and boil it until the ghee comes to the top and then remove it. I say: Boiling is only needed the first time, after which the ghee will become liquid, and just stirring with water will suffice. It is stated in Radd al-Muhtar: "It is said in al-Durar: If oil becomes impure, water is poured on it and it is boiled, so the oil rises above the water. Then it is lifted off with something. This is done three times." In al-Durar, it is said that if oil becomes impure, water should be poured on it and boiled, so that the oil dominates the water and comes up. This should be done three times. This is according to Imam Abu Yusuf (may Allah have mercy on him). Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) differs on this. There is more breadth in this opinion, and the fatwa is based on it, as quoted in the commentary of Sheikh Ismail from Jami' al-Fatawa. And it is said in al-Fatawa al-Khayriyya: the word "fayughla" (it is boiled) was mentioned in some books and it is apparent that it is an addition by the copyist because we have not seen from some...

फ़तावा रज़विया जिल्द 4

मसाला 198: सरनाया ज़िला बरेली से, मुस्तउला अमीर अली साहब रिज़वी 16 शव्वाल 1322 हिजरी। अगर कपड़ों पर बैलों के पेशाब, गोबर वगैरह की छींटें पड़ी हैं और कपड़े बदलने की फ़ुर्सत नहीं है, तो नमाज़ ऐसी हालत में होगी या नहीं?

जवाब: अगर छींटें कपड़े के चौथाई हिस्से से कम पर पड़ी हैं तो नमाज़ हो जाएगी, वरना नहीं। और खेत के काम से फ़ुर्सत न होने का कोई एतबार नहीं। वल्लाह तआला आलम।

मसाला 199: मौज़ू भोता भोती बसुटोलैंड, मुल्क अफ्रीका से मुर्सला हाजी इस्माइल मियां साहब सिद्दीकी हनफी कादरी इब्न अमीर मियां 23 सफर 1336 हिजरी। घी गर्म था, उसमें मुर्गी का बच्चा गिरा और फ़ौरन मर गया, यह घी खाना जायज़ है या नहीं?

जवाब: घी नापाक हो गया, बिना पाक किए इसका खाना हराम है। पाक करने के तीन तरीके हैं: एक यह कि उतना ही पानी इसमें मिलाकर हिलाएं यहाँ तक कि सब घी ऊपर आ जाए उसे उतार लें। और दूसरा पानी इसी कदर मिलाकर यूँ ही करें। फिर उतार कर तीसरे पानी से इसी तरह धोएं। और अगर घी ठंडा होकर जम गया हो तो तीनों बार इसके बराबर पानी मिलाकर जोश दें यहाँ तक कि घी ऊपर आ जाए उतार लें। अक़ूल (मैं कहता हूँ): जोश देने की पहली ही बार हाजत है फिर तो घी रक़ीक़ (तरल) हो जाएगा और पानी मिलाकर हिलाना काफी होगा। रद्दुल मुहतार में है: "अल-दुरर में कहा गया है: अगर तेल नापाक हो जाए तो उस पर पानी डालकर उबाला जाए, जिससे तेल पानी पर ग़ालिब होकर ऊपर आ जाएगा। फिर उसे किसी चीज़ से उतार लिया जाए। ऐसा तीन बार किया जाए।" दुरर में फ़रमाया कि अगर तेल नापाक हो जाए तो उस पर पानी डाल कर जोश दिया जाए इस तरह तेल पानी पर ग़ालिब आकर कुछ ऊपर आ जाएगा। यूँ ही तीन बार किया जाए। यह इमाम अबू यूसुफ रहमतुल्लाह अलैह के नज़दीक है, इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह का इसमें इख़्तिलाफ़ है, इसमें ज़्यादा गुंजाइश है और इसी पर फ़तवा है जैसे शरह शेख इस्माइल में जामे उल-फ़तावा से मंक़ूल है। और फ़तावा खैरिया में फ़रमाया: "फ़युग़ला" (जोश दिया जाए) का लफ्ज़ बाज़ किताबों में ज़िक्र हुआ और ज़ाहिर यह है कि यह कातिब की तरफ़ से बढ़ा दिया गया है क्योंकि हमने बाज़ से नहीं देखा...

पृष्ठ 564 / 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

مسئلہ ۱۹۸: از سرنیا ضلع بریلی مسئولہ امیر علی صاحب رضوی ۱۶ شوال ۱۳۲۲ھ اگر کپڑوں پر بیلوں کے پیشاب گوبر وغیرہ کی چھینٹیں پڑی ہیں اور کپڑے بدلنے کی فرصت نہیں ہے نماز ایسی حالت میں ہوگی یا نہیں؟ الجواب: اگر چھینٹیں چہارم کپڑے سے کم پر پڑی ہیں نماز ہو جائے گی ورنہ نہیں اور کھیت کے کام سے فرصت نہ ہونے کا کچھ اعتبار نہیں، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۹۹: از موضع بھوٹا بھوٹی بسوٹولینڈ ملک افریقہ مرسلہ حاجی اسمعیل میاں صاحب صدیقی حنفی قادری ابن امیر میاں ۲۳ صفر ۱۳۳۶ھ گھی گرم تھا اس میں مرغی کا بچہ گرا اور فوراً مر گیا یہ گھی کھانا جائز ہے یا نہیں؟ الجواب: گھی ناپاک ہوگیا، بے پاک کیے اس کا کھانا حرام ہے۔ پاک کرنے کے تین طریقے ہیں: ایک یہ کہ اتنا ہی پانی اس میں ملا کر جنبش دیتے ہیں یہاں تک کہ سب گھی اوپر آجائے اسے اتار لیں۔ اور دوسرا پانی اسی قدر ملا کر یو نہی کریں۔ پھر اتار کر تیسرے پانی سے اسی طرح دھوئیں ۔ اور اگر گھی سرد ہو کر جم گیا ہو تو تینوں بار اس کے برابر پانی ملا کر جوش دیں یہاں تک کہ گھی اوپر آجائے اتار لیں۔ اقول: جوش دینے کی پہلی ہی بار حاجت ہے پھر تو گھی رقیق ہو جائے گا اور پانی ملا کر جنبش دینا کفایت کرے گا۔ ردالمحتار میں ہے: قال في الدرر لوتنجس الدهن يصب عليه الماء فيغلى فيعلوا الدهن الماء فيرفع بشيئ هكذا ثلاث مرات اھ الدرر میں فرمایا اگر تیل ناپاک ہو جائے تو اس پر پانی ڈال کر جوش دیا جائے اس طرح تیل پانی پر غالب آکر کچھ اوپر آجائے گا۔ یوں ہی تین بار کیا جائے اھ یہ امام ابو یوسف رحمہ اللہ کے نزدیک ہے امام محمد رحمہ اللہ کا اس میں اختلاف ہے، اس میں زیادہ وسعت ہے اور اسی پر فتوی ہے جیسے شرح شیخ اسمعیل میں جامع الفتاوی سے منقول ہے۔ اور فتاوی خیریہ میں فرمایا: "فیغلی" (جوش دیا جائے) کا لفظ بعض وھذا عند ابي يوسف خلافا لمحمد وھو اوسع وعليه الفتوى

كمافى شرح الشيخ اسمعيل عن جامع الفتاوى وقال في الفتاوى الخيرية لفظة فيغلى ذكرت في بعض الكتب والظاهر انها من زيادة الناسخ فانا لم نر من بعض

Fatawa Rizwia Volume Four

[Table containing Arabic and Urdu columns]

[Arabic Column] Requirement for purifying oil: Boiling is mentioned in books along with frequent transport regarding this issue. Upon investigation, it is evident that this is an addition by the authors because we have not seen the condition of boiling for purifying oil, although this issue is narrated extensively and has been scrutinized thoroughly. Unless 'boiling' is taken metaphorically to mean movement; it is explicitly stated in Majma-ul-Riwayah and Sharh Quduri that an equal amount of water should be poured on it and stirred. So ponder, or it can be applied to the case when the oil solidifies after becoming impure. Then I saw the commentator clarifying this in Al-Khazain, saying: water should be poured into liquid oil, and solidified oil should be boiled until it rises to the top, etc. (T)

[Urdu Column] It is mentioned in the books, and it is apparent that this is an addition from the side of the writers because we have not seen the condition of boiling to purify oil, although this issue is narrated very much and has been investigated a lot. However, if by this "boiling" movement is meant metaphorically, then it is clarified in Majma-ul-Riwayah and Sharh Quduri that water of the same amount should be poured on it and it should be moved; so consider this or it can also be carried on to the situation when it solidifies after becoming impure. Then I saw that the commentator in Al-Khazain clarified this and said water should be put in liquid oil and solidified oil should be boiled until it comes on top etc. (T)

Second: If the impure ghee in a vessel has become inclined towards solidifying, melt it on fire and continue adding similarly melted pure ghee into that vessel until it overflows with ghee. All the ghee will become pure. It is stated in Jami-al-Rumuz:

[Boxed Text] "Liquid things like water, molasses, etc., are purified by making them flow while mixed with their own kind." 2

If a flowing thing like water, syrup etc. is mixed with its own kind and made to flow, it becomes pure. (T)

Third: Take another pure ghee and for example sitting on a platform, keep an empty vessel below and pour that pure ghee into something like a spout. After that, pour this impure ghee into the same spout in such a way that both their streams fall into the vessel. In this way, pour both pure and impure ghee mixed until all the impure

ghee reaches the vessel in one stream with the pure ghee; then all has become pure. In Khazanah it is:

[Boxed Text] "Two vessels, one of whose water is pure and the other impure, they were poured from a high place and they mixed in the air."

If the water in one of two vessels is pure and the other's is impure, then they should be dropped from a high place and they...

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Impurities, printed by Mujtabai Delhi, 1/222
2. Jami al-Rumuz, Chapter on Purifying Things, printed by Maktaba Islamia, Gunbad Qamus, Iran, 1/95 Page 565 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

[अरबी और उर्दू कॉलम वाली तालिका]

[अरबी कॉलम] तेल को शुद्ध करने की शर्त: किताबों में इस मामले में उबालने के साथ-साथ बार-बार स्थानांतरण का ज़िक्र है। जाँच करने पर ज़ाहिर होता है कि यह लेखकों की तरफ़ से एक इज़ाफ़ा है क्योंकि हमने तेल को पाक करने के लिए उबालने की शर्त नहीं देखी, हालाँकि यह मसला बहुत ज़्यादा रिवायत किया गया है और इसकी काफ़ी छानबीन की गई है। अलबत्ता यह कि इस 'उबालने' से मज़ाज़न हरकत देना (हिलाना) मुराद लिया जाए; मज्मअ-उर-रिवाया और शरह कुदूरी में इसकी वज़ाहत की गई है कि इस पर उतना ही पानी डाला जाए और हरकत दी जाए। तो ग़ौर करें, या इसे इस सूरत पर भी महमूल किया जा सकता है कि जब वह नापाक होने के बाद जम जाए। फिर मैंने देखा कि शारह ने 'अल-ख़ज़ाइन' में इसकी वज़ाहत करते हुए फ़रमाया: बहने वाले तेल में पानी डाला जाए और जमे हुए को उबाला जाए यहाँ तक कि वह ऊपर आ जाए, इत्यादि। (त)

[उर्दू कॉलम] कुतुब में मज़कूर है और ज़ाहिर है कि यह लिखने वाले की तरफ़ से इज़ाफ़ा है क्योंकि हमने तेल को पाक करने के लिए जोश देने की शर्त नहीं देखी हालाँकि यह मसला बहुत ज़्यादा मन्क़ूल है और इसकी छान-बीन भी बहुत ज़्यादा की गई अलबत्ता यह कि इस "जोश देने" से मज़ाज़न हरकत देना मुराद लिया जाए, मज्मअ-उर-रिवाया और शरह कुदूरी में इसकी तसरीह की गई कि इस पर इतना ही पानी डाला जाए और हरकत दी जाए, पस ग़ौर करो अह् या इसे इस सूरत पर भी महमूल किया जा सकता है कि जब वह नापाक होने के बाद जम जाए। फिर मैंने देखा कि शारह ने अल-ख़ज़ाइन में इसकी वजाहत करते हुए फ़रमाया बहने वाले तेल में पानी डाला जाए और जमे हुए को जोश दिया जाए यहाँ तक कि वह ऊपर आ जाए अलू (त)

दूसरा: नापाक घी जिस बर्तन में है अगर वह जमने की तरफ़ माइल (प्रवृत्त) हो गया हो, तो आग पर पिघला लें और वैसा ही पिघला हुआ पाक घी उस बर्तन में डालते जाएँ यहाँ तक कि बर्तन घी से भरकर उबल जाए। सारा घी पाक हो जाएगा। जामे-उर-रुमूज़ में है:

[बॉक्स वाला पाठ] "बहने वाली चीज़ें जैसे पानी, शीरा आदि की पाकी उनके हम-जिन्स (समान प्रकार) के साथ मिलाकर बहाने से है।" 2

बहने वाली चीज़ जैसे पानी और शीरा वग़ैरह को उसके हम-जिन्स के साथ मिलाकर जारी (प्रवाहित) किया जाए तो पाक हो जाती है। (त)

तीसरा: दूसरा पाक घी लें और मिसाल के तौर पर तख़्त पर बैठकर नीचे एक खाली बर्तन रखें और परनाले जैसी किसी चीज़ में वह पाक घी डालें। उसके बाद यह नापाक घी उसी परनाले में डालें इस तरह कि दोनों की धारें बर्तन में गिरें। इस तरह पाक और नापाक दोनों घी मिलाकर डालें यहाँ तक कि सब नापाक घी पाक घी से एक धार होकर बर्तन में पहुँच जाए, तो सब पाक हो गया। 'ख़ज़ाना' में है:

[बॉक्स वाला पाठ] "दो बर्तन, उनमें से एक का पानी पाक हो और दूसरे का नापाक, तो उन्हें बुलंद मक़ाम से गिराया गया और वे हवा में मिल गए।"

दो बर्तनों में से एक का पानी पाक और दूसरे का नापाक हो तो उनको बुलंद मक़ाम से गिराया जाए और वो...

---

1. रद्द-अल-मुह्तार, बाब-अल-अन्जास, मुजतबाई दिल्ली, 1/222
2. जामे-उर-रुमूज़, फ़स्ल युतहिर-उश-शै, मकतबा इस्लामिया, गुंबद क़ामूस ईरान, 1/95 पृष्ठ 565 / 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

[عربی اور اردو کالموں پر مشتمل جدول]

[عربی کالم] شرط لتطهير الدهن الغليان مع كثرة النقل في المسألة والتتبع لها الا ان يراد به التحريك مجازاً فقد صرح في مجمع الرواية وشرح القدورى انه يصب عليه مثله ماء ويحرك فتأمل اھ او يحمل على ما اذا جمد الدهن بعد تنجسه ثم رأيت الشارح صرح بذلك في الخزائن فقال والدهن السائل يلقى فيه الماء والجامد يغلى به حتى يعلو الخ۔

[اردو کالم] کتب میں مذکور ہے اور ظاہر ہے کہ یہ لکھنے والے کی طرف سے اضافہ ہے کیونکہ ہم نے تیل کو پاک کرنے کیلئے جوش دینے کی شرط نہیں دیکھی حالانکہ یہ مسئلہ بہت زیادہ منقول ہے اور اس کی چھان بین بھی بہت زیادہ کی گئی البتہ یہ کہ اس "جوش دینے" سے مجازاً حرکت دینا مراد لیا جائے، مجمع الروایہ اور شرح قدوری میں اس کی تصریح کی گئی کہ اس پر اتنا ہی پانی ڈالا جائے اور حرکت دی جائے، پس غور کرو اھ یا اسے اس صورت پر بھی محمول کیا جاسکتا ہے کہ جب وہ ناپاک ہونے کے بعد جم جائے۔ پھر میں نے دیکھا کہ شارح نے الخزائن میں اس کی وضاحت کرتے ہوئے فرمایا بہنے والے تیل میں پانی ڈالا جائے اور جمے ہوئے کو جوش دیا جائے یہاں تک کہ وہ اوپر آجائے الخ (ت)

دوم : ناپاک گھی جس برتن میں ہے اگر جمنے کی طرف مائل ہو گیا ہو آگ پر پگھلالیں اور ویسا ہی پگھلا ہوا پاک گھی اُس برتن میں ڈالتے جائیں یہاں تک کہ گھی سے بھر کر اُبل جائے سب گھی پاک ہو جائیگا۔ جامع الرموز میں ہے :

[باکس والا متن] المائع كالماء والدبس وغيرهما طهارته باجرائه مع جنسه مختلطاً به 2۔

بہنے والی چیز جیسے پانی اور شیرہ وغیرہ کو اس کے ہم جنس کے ساتھ ملا کر جاری کیا جائے تو پاک ہو جاتی ہے۔ (ت)

سوم : دوسرا گھی پاک لیں اور مثلاً تخت پر بیٹھ کر نیچے ایک خالی برتن رکھیں اور پرنالے کی مثل کسی چیز میں وہ پاک گھی ڈالیں اُس کے بعد یہ ناپاک گھی اُسی پر نالے میں ڈالیں یوں کہ دونوں کی دھاریں برتن میں گریں اس طرح پاک و ناپاک دونوں گھی ملا کر ڈالیں یہاں تک کہ سب ناپاک گھی پاک گھی سے ایک دھار ہو کر برتن میں پہنچ جائے سب پاک ہو گیا، خزانہ میں ہے :

[باکس والا متن] اناء ان ماء احدھما طاھر والأخر نجس فصبا من مکان عال فاختلطا في الھواء

دو برتنوں میں سے ایک کا پانی پاک اور دوسرے کا ناپاک ہو تو ان کو بلند مقام سے گرایا جائے اور وہ

---

1 رد المحتار باب الانجاس مطبوعہ مجتبائی دہلی ۲۲۲/۱ 2 جامع الرموز فصل یطھر الشی مطبوعہ مکتبہ اسلامیہ گنبد قاموس ایران ۹۵/۱ صفحہ 565 از 761

Fatawa Ridawiyya Volume Four

"Then let it all descend clean" (Arabic) | If they descend and mix in the air, then all the water will become pure. (T)

In the first method, washing ghee three times with water carries the risk of the ghee spoiling, and in the second method, some ghee will be lost through boiling. The third method is perfectly clean, but it requires great care so that no drop of impure ghee falls into the pure ghee either before or after, and while pouring it into the channel, no splash should fly off and fall into the separate vessel of pure ghee; otherwise, everything that has reached or will reach the vessel will become impure. And Allah Almighty knows best.

Problem 200: From Lucknow, Bakhshi Bazaar, adjacent to the Molvi Sahib Mosque, sent by Dawar Ali Khan Sahab Sahawari, 8 Jumada al-Ula 1336 AH. If impurity gets on a finger and it is licked off, will the finger become pure and will the mouth also remain pure?

Answer: Licking impurity from a finger to clean it is the work of a severely filthy and impure soul. To consider it permissible is a fabrication and accusation against the Sharia, the making of something forbidden (Haram) as permissible (Halal), and it breaks the bounds of Islam. To say the mouth remains pure is a sheer lie; it definitely becomes impure by licking impurity. Although after repeatedly swallowing that impure saliva until the trace of impurity is washed from the mouth and goes into the stomach, it will become pure, but only one who eats filth would consider this licking and swallowing permissible.

"Impure women are for impure men, and impure men are for impure women; and pure women are for pure men, and pure men are for pure women. Those are innocent of what they say." (Arabic - Quran 24:26) | Impure women are for impure men, and impure men for impure women. Pure women for pure men and pure men for pure women. They are innocent of what people say about them. (T) And Allah Almighty knows best.

Problem 201: From Bangalore Bazaar, sent by Qazi Abdul Ghaffar Sahab, dated 11 Jumada al-Ula 1336 AH. Is the use of edible items from Hindus like milk, curd, ghee, vegetables, sweets etc., whether wet or dry, correct according to the Ahl-e-Sunnat or forbidden? And regarding the verse "Indeed, the polytheists are impure" (Verily

polytheists are impure. T), what is the view of the Shiites on the aforementioned items and what is the fatwa of the Mujaddid (Renovator) in this matter?

Answer: The noble verse "Indeed, the polytheists are impure" refers to the impurity of their hearts and religion, not their bodies.

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Impurities, published by Mujtabai, Delhi, 1/21
2. Al-Quran 24/26
3. Al-Quran 9/28

फ़तावा रज़विया जिल्द चार

"फिर वे सब पाक होकर उतरें" (अरबी) | हवा में मिलकर उतरें तो सारा पानी पाक हो जाएगा। (त)

पहले तरीके में घी को पानी से तीन बार धोने में घी के खराब होने का डर है और दूसरे तरीके में उबलकर थोड़ा घी बर्बाद हो जाएगा। तीसरा तरीका बिल्कुल साफ है मगर इसमें बहुत सावधानी की ज़रूरत है कि बर्तन में नापाक घी की कोई बूंद पाक घी से पहले या बाद में न गिरे, न ही नाली में बहाते वक्त उसकी कोई छींट उड़कर पाक घी वाले अलग बर्तन में गिरे, वरना बर्तन में जितना घी पहुँचा है या अब पहुँचेगा, सब नापाक हो जाएगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 200: लखनऊ बख्शी बाज़ार, मौलवी साहब की मस्जिद के पास से, मुर्सला दावर अली ख़ान साहब सहावरी, 8 जुमाद अल-उला 1336 हिजरी। अगर उंगली पर नजासत (गंदगी) लग जाए और उसे चाट लिया जाए तो क्या उंगली पाक हो जाएगी और मुँह भी पाक रहेगा?

जवाब: उंगली की नजासत चाटकर पाक करना किसी अत्यंत गंदी और नापाक रूह का काम है और इसे जायज़ समझना शरीयत पर इफ़्तरा (झूठा आरोप) और तोहमत लगाना, हराम को हलाल ठहराना और इस्लाम के ख़िलाफ़ है। यह कहना बिल्कुल झूठ है कि मुँह पाक रहेगा; नजासत चाटने से मुँह निश्चित रूप से नापाक हो जाएगा। हालाँकि बार-बार उस नापाक थूक को निगलने से जब तक नजासत का असर मुँह से धुलकर पेट में न चला जाए, मुँह पाक हो जाएगा, मगर इस चाटने-निगलने को वही जायज़ समझेगा जो गंदगी खाने वाला है।

"नापाक औरतें नापाक मर्दों के लिए हैं, और नापाक मर्द नापाक औरतों के लिए। पाक औरतें पाक मर्दों के लिए हैं और पाक मर्द पाक औरतों के लिए। वे लोग उन बातों से बरी हैं जो वे (झूठ बोलने वाले) कहते हैं।" (अरबी - क़ुरआन 24:26) | नापाक औरतें नापाक मर्दों के लिए, और नापाक मर्द नापाक औरतों के लिए। पाक औरतें पाक मर्दों के लिए और पाक मर्द पाक औरतों के लिए। वे उन बातों से पाक हैं जो लोग कहते हैं। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 201: बैंगलोर बाज़ार से, मुर्सला क़ाज़ी अब्दुल ग़फ़्फ़ार साहब, तारीख़ 11 जुमाद अल-उला 1336 हिजरी। हिंदुओं से खाने-पीने की चीज़ें जैसे दूध, दही, घी, तरकारी, मिठाई आदि, गीली हो या सूखी, इनका इस्तेमाल अहल-ए-सुन्नत के नज़दीक सही है या हराम? और आयत "बेशक मुशरिक (मूर्तिपूजक) नजिस (नापाक) हैं" (बेशक मुशरिक नजिस हैं। त) के बारे में अहल-ए-तशीअ (शियाओं) का इन चीज़ों के बारे में क्या विचार है और मुजद्दिद साहब का इस बारे में क्या फ़तवा है?

जवाब: आयत-ए-करीमा "बेशक मुशरिक नजिस हैं" उनके दिलों की नजासत और उनके धर्म की नजासत के बारे में है, जिस्मों (शरीरों) के बारे में नहीं।

1. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-अंजास, मुजतबाई प्रेस दिल्ली 1/21
2. अल-क़ुरआन 24/26
3. अल-क़ुरआन 9/28

فتاوی رضویہ جلد چہارم

ثم ننزلا طھر کلہ ۱ | فضا میں مل کر اُتریں تو تمام پانی پاک ہو جائے گا۔ (ت)

پہلے طریقہ میں پانی سے گھی کو تین بار دھونے میں گھی خراب ہونے کا اندیشہ ہے اور دوسرے طریقہ میں اُبل کر تھوڑا گھی ضائع جائے گا۔ تیسرا طریقہ بالکل صاف ہے مگر اس میں احتیاط بہت درکار ہے کہ برتن میں ناپاک گھی کی کوئی بوند نہ پاک گھی سے پہلے نہ بعد کو گرے نہ پر نالے میں بہاتے وقت اُس کی کوئی چھینٹ اُڑ کر پاک گھی سے جدا برتن میں گرے ورنہ جتنا برتن میں پہنچا یا اب پہنچے گا سب ناپاک ہو جائے گا واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۰۰: از لکھنؤ بخشی بازار متصل مسجد مولوی صاحب مرسلہ داور علی خان صاحب سہاو ری ۸۔ جمادی الاولی ۱۳۳۶ھ اُنگلی پر نجاست لگ جائے اور اسے چاٹ لیا جائے تو انگلی پاک ہو جائے اور منہ بھی پاک رہے۔

الجواب: اُنگلی کی نجاست چاٹ کر پاک کرنا کسی سخت گندی ناپاک روح کا کام ہے اور اسے جائز جاننا شریعت پر افترا و اتہام اور تحلیل حرام اور قاطع اسلام ہے اور یہ کہنا محض جھوٹ ہے کہ منہ بھی پاک رہے گا نجاست چاٹنے سے قطعاً ناپاک ہو جائے گا اگرچہ بار بار وہ نجس ناپاک تھوک یہاں تک نگلنے سے کہ اثر نجاست کا منہ سے ڈھل کر سب پیٹ میں چلا جائے گا پاک ہو جائے گا مگر اس چاٹنے لگنے کو وہی جائز رکھے گا جو نجس کھانے والا ہے۔

اَلْخَبِیْثٰتُ لِلْخَبِیْثِیْنَ وَالْخَبِیْثُوْنَ لِلْخَبِیْثٰتِ وَالطَّیِّبٰتُ لِلطَّیِّبِیْنَ | ناپاک عورتیں ناپاک مردوں کے لئے، اور ناپاک مرد ناپاک وَالطَّیِّبُوْنَ لِلطَّیِّبٰتِ اُولٰٓئِکَ مُبَرَّءُوْنَ مِمَّا یَقُوْلُوْنَ ۲ - واللہ | عورتوں کیلئے۔ پاک

عورتیں پاک مردوں کے لئے اور پاک مرد پاک تعالیٰ اعلم۔ | عورتوں کے لئے۔ وہ ان باتوں سے پاک ہیں جو لوگ کہتے ہیں (ت)

مسئلہ ۲۰۱: از بنگلور بازار مرسلہ قاضی عبدالغفار صاحب مورخہ ۱۱ جمادی الاولی ۱۳۳۶ھ ہنود سے اشیاء خوردنی جیسے دودھ دہی گھی ترکاری شیرینی وغیرہ تریا خشک کا استعمال اہل سنت کے نزدیک درست ہے یا حرام، اور آیہ اِنَّمَا الْمُشْرِکُوْنَ نَجَسٌ ۳ (بے شک مشرکین نجس ہیں۔ ت، سے اہل تشیع کا اشیاء مذکورہ میں کیا خیال ہے اور مجدد صاحب کا اس امر میں کیا فتوی ہے؟

الجواب: آیہ کریمہ اِنَّمَا الْمُشْرِکُوْنَ نَجَسٌ اُن کے نجاست قلب و نجاست دین کے بارے میں ہے اجسام

۱ رد المحتار باب الانجاس مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۲۱ ۲ القرآن ۲۶/۲۴ ۳ القرآن ۲۸/۹

Fatawa Rizvia - Volume 4

If they are contaminated with impurity, they are impure, otherwise they are not. All books of jurisprudence (Fiqh), original texts, commentaries, and fatwas are full of such clarifications. Meat from them is certainly prohibited (haram), but in a situation where a Muslim has slaughtered it for Allah, the Mighty and Sublime, and it was not out of the sight of Muslims during the process of preparation, cooking, and bringing —at least one Muslim was watching it—then it is lawful (halal) at that time. Otherwise, it is prohibited. Other items in which impurity or prohibition is confirmed and established are impure and prohibited, otherwise they are pure and lawful, as the fundamental nature of things is purity and lawfulness. Allah, the Exalted, says:

[Box 1] Arabic: خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا English: He created for you all that is in the earth. (Quran 2:29)

As long as the removal of this fundamental principle is not proven by an incidental cause, the ruling will remain according to the original state. The recorder of the school (Madhhab), our master Imam Muhammad (may Allah be pleased with him), says:

[Box 2] Arabic: به ناخذ مالم نعرف شيئاً حراماً بعينه English: We will act upon this as long as we do not know of a specific thing being prohibited.

However, there is no doubt that Hindus, and indeed most disbelievers, often remain contaminated with impurity; rather, many impurities are considered pure by them. In fact, some impurities are even considered cleansing in the view of Hindus. Therefore, as far as it is not difficult, avoiding them is better. In short, the fatwa is for permissibility, while piety (taqwa) lies in avoidance. The opinion of the Rafidites is misguidance, and I do not recall any opinion of Hazrat Mujaddid on this issue at this time. And Allah, the Exalted, knows best.

Problem 202: From Post Office Ramu Chakha Kol, District Chittagong, Madrasa Aziziyah, sent by Sayyid Muhammad Mufiz-ur-Rahman, 9th Jumada al-Akhirah 1336 AH.

If a land that was impure has become pure due to sunlight, and now if someone places a wet foot on this land and mud sticks to it, will the foot become impure?

The Answer: Since the ruling of purity has been given to the land after the disappearance of the effect (of impurity), it will not become impure now due to water

falling on it. Therefore, placing a foot on it will not make it impure. And Allah, the Exalted, knows best.

---

1. Al-Quran 2/29
2. Fatawa 'Alamgiri, Chapter 12 on Gifts and Hospitalities, published by Noorani Kutub Khana Peshawar, 5/342.

फ़तावा रज़विया - खंड 4

यदि वे अशुद्धि (नजासत) से दूषित हैं तो अशुद्ध हैं, अन्यथा नहीं। फ़िक़्ह (इस्लामी न्यायशास्त्र) की सभी पुस्तकें मूल ग्रंथ, व्याख्याएं और फ़तवे इसके स्पष्टीकरण से भरे पड़े हैं। उनके यहाँ का मांस तो निश्चित रूप से हराम (वर्जित) है, लेकिन ऐसी स्थिति में जहाँ किसी मुसलमान ने अल्लाह अज़्व-व-जल्ल के लिए ज़ब्ह किया हो और तैयार करने, पकाने और लाने के समय वह मुसलमानों की दृष्टि से ओझल न हुआ हो—कोई न कोई मुसलमान उसे देखता रहा हो—तो उस समय वह हलाल (वैध) है। अन्यथा वह हराम है। अन्य चीज़ें जिनमें अशुद्धि या हराम होना प्रमाणित और स्थापित हो, वे अशुद्ध और हराम हैं, अन्यथा वे शुद्ध और हलाल हैं क्योंकि वस्तुओं का मूल स्वभाव शुद्धता और वैधता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

[बॉक्स 1] अरबी: خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيْعًا। हिन्दी: उसने तुम्हारे लिए वह सब कुछ पैदा किया जो ज़मीन में है। (क़ुरआन 2/29)

जब तक किसी आकस्मिक कारण से इस मूल का पतन सिद्ध न हो जाए, तब तक हुक्म मूल के लिए ही रहेगा। मज़हब के लेखक हमारे आका इमाम मुहम्मद (रज़ियल्लाहु अन्हा) फ़रमाते हैं:

[बॉक्स 2] अरबी: به ناخذ مالم نعرف شيئاً حراماً بعينه हिन्दी: हम इसी पर अमल करेंगे जब तक कि हमें किसी विशेष चीज़ के हराम होने का ज्ञान न हो जाए।

लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि हिंदू बल्कि अधिकांश काफ़िर अक्सर नजासत (अशुद्धि) में डूबे रहते हैं, बल्कि उनके नज़दीक कई अशुद्धियाँ शुद्ध हैं। वास्तव में, हिंदुओं के विचार में कुछ अशुद्धियाँ शुद्ध करने वाली होती हैं। अतः जहाँ तक कठिनाई न हो, उनसे बचना ही उत्तम है। संक्षेप में, फ़तवा अनुमति का है और तक़्वा (परहेज़गारी) बचने में है। राफ़ज़ियों का विचार गुमराह करने वाला है और मुझे इस समय इस मुद्दे पर हज़रत मुजद्दिद का कोई विचार याद नहीं है। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

मसला 202: डाकखाना रामू चखा कोल, ज़िला चटगाँव, मदरसा अज़ीज़िया से, प्रेषक सैयद मोहम्मद मफ़ीज़ुर रहमान साहिब, 9 जमादी-उल-आख़िरह 1336 हिजरी।

जो ज़मीन नापाक (अशुद्ध) थी और धूप की वजह से पाक (शुद्ध) हो गई, अब अगर उस ज़मीन पर कोई गीला पैर रख दे और मिट्टी लग जाए तो क्या पैर नापाक हो जाएगा?

अल-जवाब (उत्तर): जब अशुद्धि का प्रभाव समाप्त होने के बाद ज़मीन को पाकी (शुद्धता) का हुक्म दे दिया गया, तो अब वह पानी पड़ने से नापाक नहीं होगी। इसलिए उस पर पैर रख देने से पैर नापाक नहीं होगा। वल्लाहु तआला आलम।

---

1. अल-क़ुरआन 2/29
2. फ़तावा आलमगीरी, उपहार और आतिथ्य पर 12वाँ अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर द्वारा प्रकाशित 5/342।

पृष्ठ 567 का 761

اگر ملوث بہ نجاست ہیں نجس ہیں ورنہ نہیں تمام کتب فقہ متون وشروح وفتاوٰی اس کی تصریحات سے مالامال ہیں ان کے یہاں کا گوشت تو ضرور حرام ہے مگر اس حالت میں کہ مسلمان نے اللہ عزوجل کے لئے ذبح کیا اور بنانے پکانے لانے کے وقت مسلمانوں کی نگاہ سے غائب نہ ہوا کوئی نہ کوئی مسلمان اسے دیکھتا رہا تو اس وقت حلال ہے ورنہ حرام اور باقی اشیا جن میں نجاست یا حرمت متحقق و ثابت ہو نجس و حرام ہیں اور نہ طاہر و حلال کہ اصل اشیا میں طہارت و حلت ہے قال تعالٰی:

[باکس ۱] خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا زمین میں جو کچھ ہے وہ سب تمہارے فائدے کے لئے پیدا فرمایا۔ (ت)

جب تک کسی عارض سے اس اصل کا زوال ثابت نہ ہو حکم اصل ہی کیلئے رہے گا۔ محرر المذہب سیدنا امام محمد رضی اللہ تعالٰی عنہ فرماتے ہیں:

[باکس ۲] به ناخذ مالم نعرف شیئاً حراماً بعینه ہم اسی پر عمل کرینگے جب تک کسی معین چیز کے حرام ہونے کا علم نہ ہوجائے۔ (ت)

مگر اس میں شک نہیں کہ ہنود بلکہ تمام کفار اکثر ملوث بہ نجاست رہتے ہیں بلکہ اکثر نجاستیں ان کے نزدیک پاک ہیں بلکہ بعض نجاستیں ہنود کے خیال میں پاک کنندہ ہیں تو جہاں تک دشواری نہ ہو ان سے بچنا اولٰی ہے غرض فتوٰی جواز اور تقوٰی احتراز روافض کا خیال ضلال ہے اور اس مسئلہ میں حضرت مجدد کا کوئی خیال مجھے اس وقت یاد نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۰۲: از ڈاکہانہ رامو چکھا کول ضلع چٹاکانگ مدرسہ عزیزیہ مرسلہ سید محمد مفیض الرحمان صاحب ۹۔ جمادی الاخرہ ۱۳۳۶ھ

جو زمین ناپاک دھوپ کی وجہ سے پاک ہوگئی ہو اب اس زمین پر اگر کوئی گیلا پیر رکھ دے اور مٹی لگ جائے تو کیا پیر ناپاک ہوگا؟

الجواب: جب زمین کو زوال اثر کے بعد حکم طہارت دے دیا گیا اب وہ پانی پڑنے سے ناپاک نہ ہوگی تو پاؤں اس پر رکھ دینے سے ناپاک نہ ہوگا، واللہ تعالٰی اعلم۔

---

1 القرآن ۲۹/۲ 2 فتاوٰی عالمگیری الباب الثانی عشر فی الہدایا والضیافات مطبوعہ نورانی کتب خانہ پشاور ۵ / ۳۴۲

Fatawa Razvia, Volume 4 Issue 203 & 204: From the old city, 12th Ramadan 1326 AH (1) Children used to urinate and defecate on the ground. Treacle (Raab) fell on it. It was all picked up and put in a basket (khanchi) and then on a cart (khajar). Now, has that raw sugar become pure, or is it to be made pure, or how can it be purified? (2) If droppings of a 'Kursi' (a type of insect/lizard) or a mouse are found in food, what should be done? Answer: (1) When children defecate on the ground, it is removed and the ground is scraped. When they urinate, it dries up and its effect disappears, thus the ground becomes pure. To harbor doubts and illusions is prohibited. And Allah Almighty knows best. (2) 'Kursi' droppings will make liquid food like soup impure. In food that does not have such moisture, like rice, if it falls after cooking, the grains around it should be removed. If it fell when there was water (during cooking), then everything is impure; feed it to animals. If the droppings are from a goat, the same ruling applies. If it is from a mouse and found in grains like bread, porridge, pulses, pilaf, or khichdi, it is excused, provided it is not so much that its taste is felt in the food. If it is found in a soupy curry, it should not be eaten. And Allah Almighty knows best.

Issue 205: From District Ballia, petitioner Syed Muhammad Raza What do the scholars of religion say regarding this matter: A person took a bath in the mosque's washroom. He accidentally placed a pitcher of water on the ground for a minute. Now, did the bottom of the pitcher become pure and clean, fit for use, after being dipped three times in pure water, or not? If it became pure, then why is a price like that of the Hindus being demanded from the person who placed the pitcher on the ground? Was it not purified by dipping? Did it remain impure? If it remained so, then the practice of Hindus was followed. Secondly, if an ignorant person calls himself a Maulvi, what is the Sharia ruling for him? Please grant a clear answer to the above situations, adorned with signatures and seals. Answer: It cannot become pure merely by dipping three times. Nor does placing it on the ground make it impure unless the impurity of the ground is transferable due to moisture or if the impurity of the ground is proven. There is no need to demand a price. Rather, if it became impure, it should be purified through a process that involves not just dipping but washing it three times and drying it each time. If people call someone a Maulvi, there is no blame on him; yes, if he himself says "call me a Maulvi," then he is to blame. And Allah Almighty knows best.

फ़तावा रज़विया, खंड 4 मसला 203 और 204: पुराने शहर से, 12 रमज़ान 1326 हिजरी (1) बच्चे ज़मीन पर पेशाब-पाखाना करते थे, उस पर राब (शीरा) गिर गई। वह सब उठा कर टोकरी (खांची) में डाली गई और फिर खच्चर (खाजर) के सवार पर पड़ी। अब वह कच्ची शक्कर पाक (शुद्ध) हुई या उसे पाक करना होगा या किस तरह पाक होगी? (2) कुर्सी (एक प्रकार का कीड़ा/छिपकली) या चूहे की मिंगनी (विष्ठा) खाने में निकल आए तो क्या किया जाए? उत्तर: (1) जब बच्चे ज़मीन पर पाखाना करते हैं तो उसे उठा दिया जाता है और ज़मीन खुरच दी जाती है। जब वे पेशाब करते हैं तो वह सूख जाता है और उसका प्रभाव समाप्त हो जाता है, जिससे ज़मीन पाक हो जाती है। संदेह और भ्रम पालना मना है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (2) कुर्सी की मिंगनी तरी वाले खाने जैसे शोरबे को नापाक (अशुद्ध) कर देगी। जिस खाने में ऐसी तरी न हो जैसे चावल, अगर पकने के बाद गिरी तो उसके पास के दाने अलग कर दिए जाएं। और अगर उस समय गिरी जब पानी था (पकते समय), तो सब नापाक है, इसे जानवरों को खिला दें। और मिंगनी अगर बकरी की है तो उसका भी यही हुक्म है। और अगर चूहे की है और अनाज जैसे रोटी, दलिया, दाल, पुलाव या खिचड़ी में निकली तो वह माफ है, बशर्ते कि इतनी न हो कि उसका स्वाद खाने में आ जाए। और अगर शोरबेदार सालन में निकली तो उसे नहीं खाना चाहिए। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 205: जिला बलिया से, प्रार्थी सैयद मुहम्मद रज़ा दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक व्यक्ति ने मस्जिद के गुस्लखाने में गुस्ल (स्नान) किया और पानी का घड़ा इत्तेफ़ाक़ से एक मिनट के लिए ज़मीन पर रख दिया। अब क्या घड़े का पेंदा तीन बार शुद्ध जल में डुबाने से पाक व ताहिर (शुद्ध) हो गया और इस्तेमाल के काबिल हुआ या नहीं? अगर पाक हो गया तो फिर उस व्यक्ति से, जिसने घड़ा ज़मीन पर रखा था, हिंदुओं की तरह कीमत क्यों माँगी जा रही है? क्या वह डुबाने से पाक नहीं हुआ और नापाक ही रहा? अगर ऐसा रहा तो हिंदुओं की पैरवी की गई। और दूसरी बात यह कि अगर कोई जाहिल (अज्ञानी) व्यक्ति अपने आप को मौलवी कहे तो शरीयत में उसके लिए क्या हुक्म है? उपरोक्त स्थितियों का साफ़-साफ़ जवाब हस्ताक्षर और मुहर के साथ प्रदान करें। उत्तर: सिर्फ तीन बार डुबोने से पाक नहीं हो सकता। और न ही ज़मीन पर रख देना उसे नापाक करता है जब तक कि तरी की वजह से ज़मीन की नापाकी लगने की संभावना न हो या ज़मीन की नापाकी साबित न हो। कीमत माँगने की ज़रूरत नहीं है। बल्कि अगर नापाक हुआ हो तो उसे उस तरीके से पाक कराया जाए जो न सिर्फ डुबोने बल्कि तीन बार धोने और हर बार सुखाने से होगा। लोग अगर

किसी को मौलवी कहें तो उस पर कोई इल्ज़ाम नहीं है; हाँ, अगर वह खुद कहे कि मुझे मौलवी कहो, तो इल्ज़ाम है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

पेज 568 / 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم مسئلہ ۲۰۳ و ۲۰۴ : از شہر کہنہ ۱۲۔ رمضان ۱۳۲۶ھ (۱) بچے زمین پر پیشاب پاخانہ کرتے تھے اس پر راب گر گئی وہ سب اٹھا کر اڑے میں اس کی کھانچی پڑی کھاجر کے سوار پڑا اب وہ کچی شکر پاک ہوئی یا کچا کر پاک یا کس طرح پاک ہو؟ (۲) کرسی یا چوہے کی مینگنی کھانے میں نکل آئے تو کیا کیا جائے ؟ الجواب: (۱) جب بچے زمین پر پاخانہ پھرتے ہیں وہ اٹھا دیا جاتا ہے زمین کھرچ دی جاتی ہے، پیشاب کرتے ہیں وہ خشک ہو جاتا ہے اس کا اثر زائل ہو جاتا ہے زمین پاک ہو جاتی ہے شبہ اور وہم پالنا منع ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔ (۲) کرسی تر کھانے جیسے شوربے کو ناپاک کر دے گی اور جس میں ایسی تری نہ ہو جیسے چاول، اگر پک جانے کے بعد گری تو اس کے پاس کے دانے جدا کر دیے جائیں اور اگر جس وقت پانی تھا اس وقت گری تو سب ناپاک ہے جانور کو کھلا دے۔ اور مینگنی اگر بکری کی ہے تو اس کا یہی حکم ہے اور چوہے کی ہے اور اناج مثلاً روٹی یا دلیہ یا دال پلاؤ کھچڑی میں نکلی تو معاف ہے جبکہ اتنی نہ ہو کہ اس کا مزہ کھانے میں آگیا ہو اور اگر شوربے دار سالن میں نکلی تو اسے نہ کھانا چاہئے واللہ تعالیٰ اعلم۔ مسئلہ ۲۰۵: از ضلع بیلیا مسئولہ سید محمد رضا کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے غسل خانہ مسجد میں غسل کیا گھڑا پانی کا اتفاقاً ایک منٹ زمین پر رکھ دیا اب وہ گھڑے کا پیندا تین مرتبہ آب طاہر سے غوطہ دینے سے پاک وطاہر ہوا قابل استعمال کے ہو گیا یا نہیں اگر پاک ہو گیا تو کیوں قیمت اس کی مثل ہنود کے اس شخص گھڑا زمین پر رکھنے والے سے طلب کی جاتی ہے کیا وہ غوطہ دینے سے پاک نہیں ہوا نجس کا نجس رہا اگر ایسا رہا تو متابعت ہنود کی کی گئی اور دوسرا امر یہ ہے کہ اگر کوئی جاہل شخص اپنے تئیں مولوی کہلائے تو شرع میں اس کے لئے کیا حکم ہے تھائے مذکورہ بالا میں صاف صاف جواب مزین بدستخط و مہر مرحمت ہو۔ الجواب: فقط تین غوطے دینے سے پاک نہیں

ہو سکتا نہ زمین پر رکھ دینا ناپاک کرے جب تک زمین کی ناپاکی قابل سرایت بوجہ تری سہو یا زمین ثابت نہ ہو نہ قیمت مانگنے کی ضرورت بلکہ ناپاک ہوا ہو تو اس سے پاک کرایا جائے جو نہ صرف غوطے بلکہ تین بار دھونے اور ہر بار خشک کرنے سے ہوگا۔ لوگ مولوی کہیں تو اس پر الزام نہیں، ہاں وہ خود کہے کہ مجھے مولوی کہو تو الزام ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔

Volume 4 Fatawa Ridawiyya

Question 206: From Bareilly, Muhallah Gundanala, asked by Muhammad Jan Sahib, 11 Shawwal 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: food was kept in a vessel on a bed, and a dog was seen standing near it. No one saw it putting its mouth in, but there were some signs of food spilled, and some space was seen empty in the vessel on the side where the dog was standing. What is the ruling in this situation?

Answer: Since there is no other apparent reason for the vessel to be empty on that side or for the food to be spilled, and a dog is present, it is certain that it ate, and the food has become impure (najis). If it is liquid, like milk or broth, then all of it is impure. If it is dry, like cooked rice, then remove and discard the part where the mouth touched; the rest is pure. And Allah Almighty knows best.

Question 207: From Bareilly old city, asked by Syed Gohar Ali Hussain Sahib, acting secretary of Anjuman Khadim al-Muslimeen, Bareilly, 24 Dhu al-Qi'dah 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: water is filled in tanks for the purpose of sprinkling on roads, and often hands, faces, and clothes etc. are washed in it. The water carriers (Bhishtis) take water from these same tanks, fill their water skins, and sprinkle it. Afterwards, they wash the water skins once with water and then fill water for the residents of the neighborhood. Is this water fit for consumption and is it pure? It should be noted that even non-Muslims express disgust at these actions of the water carriers.

Answer: In the situation asked about, the ruling is of permissibility as long as impurity is not proven in a specific instance.

[Arabic Table Text]: Explicitly mentioned in the books of the [Hanafi] school. Among those who have explained it best are the author and commentator of al-Tariqah al-Muhammadiyyah (may their souls be sanctified), and we have mentioned it in detail in 'al-Ahla min al-Sukkar'. (T)

The disgust or approval of non-believers is not to be considered. The vats of confectioners (halwais), which dogs lick all night, are washed in the morning with water suspected of being impure and wiped with a loincloth worn for a year that would contain about a 'chhatank' (approx. 58g) of urine - this is not considered disgusting, and their milk and sweets are considered pure, yet that water is called

impure? Shari'ah does not make such absurd distinctions. And Allah Almighty knows best.

खण्ड 4 फ़तावा रज़विया

मसला 206: बरेली, मोहल्ला गुन्दानाल से, प्रेषक मुहम्मद जान साहिब, 11 शव्वाल 1337 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि खाना पलंग पर एक बर्तन में रखा था और पास ही एक कुत्ते को खड़ा देखा गया। किसी ने उसे मुँह डालते नहीं देखा, लेकिन खाना गिरने के कुछ निशान थे और बर्तन में उस तरफ, जिस तरफ कुत्ता खड़ा था, कुछ जगह खाली देखी गई। इस स्थिति में क्या हुक्म (आदेश) है?

उत्तर: चूँकि उस तरफ बर्तन खाली होने और खाना गिरने का कोई और कारण स्पष्ट नहीं है और कुत्ता मौजूद है, तो निश्चित रूप से उसने खाया और खाना नापाक हो गया। अगर खाना तरल है जैसे दूध या शोरबा, तो पूरा नापाक है। और अगर सूखा है जैसे चावल, तो जहाँ मुँह लगा है वहाँ से निकाल कर फेंक दें, बाकी पाक (पवित्र) है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 207: बरेली पुराना शहर से, प्रेषक सैयद गौहर अली हुसैन साहिब, कार्यवाहक सचिव अंजुमन खादिमुल मुस्लिमीन, बरेली, 24 ज़ीकादा 1337 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि सड़कों पर छिड़काव के उद्देश्य से हौज़ों (टैंकों) में पानी भरा जाता है और उसमें अक्सर हाथ, मुँह और कपड़े आदि धोये जाते हैं। छिड़काव करने वाले भिश्ती उन्हीं हौज़ों से पानी लेकर अपनी मशकों में भरकर छिड़काव करते हैं और बाद में मशकों को एक बार पानी से धोकर मोहल्ले वालों के लिए पानी भरते हैं। क्या यह पानी खाने-पीने में इस्तेमाल करने के योग्य है और पाक है? स्पष्ट रहे कि गैर-मुस्लिम भी भिश्तियों की इन हरकतों पर घृणा व्यक्त करते हैं।

उत्तर: पूछे गए मामले में, जब तक किसी विशेष स्थिति में अशुद्धता (नजासत) सिद्ध न हो जाए, तब तक अनुमति का हुक्म है।

काफिरों की नफरत या पसंद का कोई महत्व नहीं है। हलवाइयों की कड़ाही, जिन्हें रात भर कुत्ते चाटते हैं, सुबह वे उसे अपने संदिग्ध अशुद्ध पानी से धोते हैं और साल भर से बंधे हुए लंगोट से पोंछते हैं जिसमें लगभग एक छटाँक पेशाब होगा - यह कुछ घृणा के योग्य नहीं लगता और उनका दूध और मिठाई पवित्र है, और वह पानी नापाक? शरीअत ऐसे बेतुके अंतर नहीं करती। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

पृष्ठ 569/761

جلد چہارم فتاوی رضویہ

مسئلہ ۲۰۶: از بریلی محلہ گندانالہ مسئولہ محمد جان صاحب ۱۱ شوال ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ کھانا پلنگ پر کسی برتن میں رکھا تھا اور قریب ہی ایک کتے کو کھڑا دیکھا کسی نے منہ ڈالتے نہیں دیکھا البتہ کچھ نشانات کھانے کے گرنے کے اور برتن میں بھی اس طرف جس طرف کتا کھڑا تھا کچھ جگہ خالی دیکھی اس صورت میں کیا حکم ہے؟

الجواب: جبکہ اس طرف برتن خالی ہونے اور کھانا گرنے کی اور کوئی وجہ ظاہر نہ ہو اور کتا موجود ہے تو ضرور اس نے کھایا اور کھانا ناپاک ہو گیا اگر تر مثل شیر وشوربہ ہے تو سب اور خشک مثل بر نج ہے تو جہاں منہ لگا ہے وہاں سے اتار کر پھینک دیں باقی پاک ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۰۷: از بریلی شہر کہنہ مسئولہ سید گوہر علی حسین صاحب قائم مقام معتمد انجمن خادم المسلمین، بریلی ۲۴ ذیقعدہ ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ سڑکوں پر چھڑکاؤ کرنے کی غرض سے پانی حوضوں میں بھرا جاتا ہے اور اس میں اکثر ہاتھ منہ اور کپڑے وغیرہ دھوئے جاتے ہیں چھڑکاؤ کرنے والے بہشتی انہی حوضوں سے پانی لے کر اور مشکوں میں بھر کر چھڑکاؤ کرتے ہیں اور بعدہ مشکوں کو ایک دفعہ پانی سے دھو کر اہل محلہ کے یہاں پانی بھرتے ہیں آیا یہ پانی خوردونوش میں استعمال کرنے کے قابل ہے اور پاک ہے واضح رائے عالی رہے کہ غیر مسلم بھی بہشتیوں کی ان حرکات پر نفرین کرتے ہیں۔

الجواب: صورت مسئولہ میں حکم جواز ہے جب تک کسی خاص حالت میں نجاست ثابت نہ ہو۔

| نص علیہ فی کتب المذہب قاطبۃ ومن احسن من بینہ مصنف الطریقۃ المحمدیۃ وشارحھا قدس سرھما وقد فصلناہ فی الاحلی من السکر۔ | کتب مذہب میں اس کی تصریح موجود ہے طریقہ محمدیہ کے مصنف اور شارح نے اسے بہت ہی اچھا بیان کیا، ہم نے "الاحلی من السکر" میں اسے تفصیل کے ساتھ ذکر کیا ہے۔ (ت) |

کفار کی نفرین و آفرین کچھ ملحوظ نہیں حلوائیوں کی کڑھائیاں جن کو شب بھر کتے چاٹیں صبح وہ اپنے مظنون النجاسۃ پانی سے دھوئیں اور سال بھر کے باندھے ہوئے لنگوٹھے سے پونچھیں جس میں تقریباً چھٹانک بھر پیشاب ہو گا یہ کچھ قابل نفریں نہیں اور ان کا دودھ مٹھائی طیب اور وہ پانی نجس۔ شریعت ایسے مہمل فرق نہیں فرماتی۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

Fatawa Razawiya Volume 4

Problem 208: From Bareilly city, Biharipur, Normal School Madrasa. Questioner: Khaliq Dad Khan Sahib, 16 Dhu al-Qi'dah 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A sweeper (khakrob) touched a water-carrier's (saqqa) wet leather water bag (mashk). In this case, does that bag remain pure (paak) or become impure (napaak)? And if it is impure, can it be purified in any way, or not?

The Answer: Pour water over that spot three times. (This is for the peace of the heart. -T) And Allah Almighty knows best.

Problem 209: From Pilibhit, Mohalla Bhore Khan. Sent by: Syed Muhammad Moin Sahib, 15 Muharram-ul-Haram 1337 AH. What do the scholars say regarding this matter: Liquid yellow oil (ghee) was kept in a pot. A dog entered the room and must have opened the pot and eaten from it. When someone immediately went into the room and shooed the dog away, ghee was seen dripping from its mouth, but the dog wasn't seen actually eating. Is that ghee still fit for consumption or not? And if it is, in what manner?

The Answer: The ghee has become impure. If it is liquid, the whole amount is impure; if it is solid, only the part from where it was eaten is impure, the rest remains pure. The popular belief among the ignorant that it won't be impure because it wasn't seen with one's own eyes is pure ignorance. And Allah Almighty knows best.

Problem 210: From Sasni, Shishgarh Post Office, District Bareilly. Sent by: Ali Jan Khan, 6 Rabi-ul-Awwal 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A sweeper bought puffed rice (khiliyan) from a shopkeeper and took them in his clothes. Later, due to some argument, he returned them to the pile of puffed rice. Are those puffed rice pieces now pure or impure? Furthermore, if a sweeper takes sweets like laddoo, peda, or jalebi in his hand or clothes, do they remain pure or become impure? Please explain and may you be rewarded.

The Answer: If there is filth (najasa) on his hand and the hand or the item he took is wet, then that item will become impure. Taking a dry item with a dry hand or clothes will not make it impure. However, people feel aversion (tanfur) towards things touched by a sweeper (bhangi), therefore one should avoid it. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Give glad tidings and do not cause aversion." 1 (Make them happy and do not repel them - T). And Allah Almighty knows best.

1 Sahih al-Bukhari, Chapter: How the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) used to take care of people through preaching, Qadeemi Kutub Khana Karachi, 1/16. Page 570 of 761

फतावा रज़विया जिल्द 4

मसला 208: बरेली शहर, बिहारीपुर, नॉर्मल स्कूल मदरसा से। प्रेषक: ख़ालिक़ दाद खां साहब, 16 ज़िल्कादा 1337 हिजरी। धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं कि एक सफाई कर्मचारी (ख़ाकरोब) ने एक पानी भरने वाले (सक्का) की गीली मशक छू ली है। इस स्थिति में वह मशक पाक (शुद्ध) रही या नापाक (अशुद्ध)? और यदि नापाक है, तो क्या वह किसी तरह से पाक हो सकती है या नहीं?

अल-जवाब: उस जगह पर तीन बार पानी बहा दें। (यह दिल की तसल्ली के लिए है। - त) और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 209: पीलीभीत, मोहल्ला भोरे खां से। प्रेषक: सैय्यद मुहम्मद मुईन साहब, 15 मुहर्रम-उल-हराम 1337 हिजरी। विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं कि पतीली के अंदर तरल घी रखा था, कुत्ता अंदर गया और संभवतः पतीली खोलकर खाया होगा। तुरंत कोठरी में जाकर कुत्ते को हटाया तो उसके मुँह से घी गिरता नज़र आया, लेकिन खाते हुए नहीं देखा। क्या वह घी खाने के लायक रहा या नहीं? और अगर रहा तो किस स्थिति में?

अल-जवाब: घी नापाक हो गया। यदि वह तरल (पतला) है तो सारा घी, और यदि जमा हुआ है तो जहाँ से खाया वह जगह नापाक हुई बाकी पाक रहा। जाहिलों (अज्ञानी लोगों) में जो यह मशहूर है कि इस सूरत में नापाक न होगा क्योंकि अपनी आँखों से खाते नहीं देखा, यह कोरी जहालत है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 210: ससनी, डाकखाना शीशगढ़, ज़िला बरेली से। प्रेषक: अली जान खां, 6 रबी-उल-अव्वल 1338 हिजरी। धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं कि एक सफाई कर्मचारी ने एक दुकानदार से 'खिलें' (लाई) खरीदीं और अपने कपड़े में ले लीं, बाद में किसी विवाद पर उन्हें खिलों के ढेर पर लौटा दिया। अब वे खिलें पाक हैं या नापाक? इसके अलावा मिठाई, लड्डू पेड़ा, जलेबी अगर सफाई कर्मचारी हाथ में या कपड़े में ले ले तो वह पाक रही या नापाक? कृपया उत्तर दें, पुण्य के भागी बनें।

अल-जवाब: यदि उसके हाथ में गंदगी (नजासत) हो और उसका हाथ या जो चीज़ उसने ली है गीली हो, तो वह चीज़ नापाक हो जाएगी। सूखी चीज़ को सूखे हाथ या कपड़े में लेने से नापाक नहीं होगी, मगर सफाई कर्मचारी की छुई हुई चीज़ से लोग घृणा (तनफ़ुर) करते हैं, इसलिए इससे बचना चाहिए।

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: "ख़ुशखबरी दो और नफ़रत न फैलाओ।" 1 (ख़ुश करो और घृणा पैदा न करो - त)। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

---

1 सहीह अल-बुख़ारी, अध्याय: नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) नसीहत के ज़रिए लोगों का ध्यान रखते थे, कदीमी कुतुब खाना कराची, 1/16। पेज 570 का 761

فتاویٰ رضویہ جلد چہارم

مسئلہ ۲۰۸: از شہر بریلی بہاری پور مدرسہ نارمل اسکول مسئولہ خالق داد خان صاحب ۱۶ ذیقعدہ ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک خاکروب نے ایک سقہ کی تر مشک چھودی ہے اس صورت میں وہ مشک پاک رہی یا ناپاک۔ اور اگر ناپاک ہے تو کسی طرح سے وہ پاک ہوسکتی ہے یا نہیں؟

الجواب : تین بار اس جگہ پر پانی بہا دیں تطیب القلب (دل کے اطمینان کے لئے ہے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۲۰۹: از پیلی بھیت محلہ بھورے خان مرسلہ سید محمد معین صاحب ۱۵ محرم الحرام ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے کرام اس مسئلہ میں کہ روغن زرد رقیق دیگچی کے اندر رکھا تھا، کتا اندر گیا اور جاکر کتے نے دیگچی کھول کر کھایا ہو گا فوراً کوٹھری میں جا کر کتے کو ہٹایا تو اس کے منہ سے گھی گرتا نظر آیا مگر کھاتے ہوئے نہیں دیکھا آیا وہ گھی قابل کھانے کے رہا یا نہیں اور رہا تو کس صورت میں۔

الجواب : گھی ناپاک ہو گیا، اگر رقیق ہے تو سب اور جما ہوا ہے تو جہاں سے کھایا وہ جگہ ناپاک ہوئی باقی پاک رہا، یہ جو جاہلوں میں مشہور ہے کہ اس صورت میں ناپاک نہ ہو گا کہ آنکھ سے تو نہ دیکھا محض جہالت ہے واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۱۰: از سسونہ ڈاک خانہ شیش گڑھ ضلع بریلی مرسلہ علی جان خاں ۶ ربیع الاول شریف ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک خاکروب نے کھیلیں دکاندار سے خریدیں اور اپنے کپڑے میں لے لیں بعد کو کسی حجت پر کھلوں کے ڈھیر پر لوٹ دیں اب وہ

کھیلیں پاک ہیں یا ناپاک ، علاوہ اس کے شیرینی لڈو پیڑہ جلیبی اگر خاکروب ہاتھ میں یا کپڑے میں لے لے تو وہ پاک رہی یا ناپاک ؟ بینوا توجروا۔

الجواب : اگر اس کے ہاتھ میں نجاست ہو اور ہاتھ یا جو چیز اس نے لی تر ہو تو وہ شے ناپاک ہو جائے گی اور خشک چیز خشک ہاتھ یا کپڑے میں لینے سے ناپاک نہ ہوگی مگر بھنگی کی چھوئی ہوئی چیز سے لوگ تغفر کرتے ہیں لہذا اس سے بچنا چاہئے۔ رسول اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: بشرو ولا تنفرو ۱ (خوش کرو و تنفر نہ کرو ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

---

1 صحیح البخاری باب ماکان النبی صلی اللہ علیہ وسلم یتخولہم من الموعظہ قدیمی کتب خانہ کراچی

Fatawa-e-Razvia Volume 4

Issue 211: From Imam Pur, sent by Mr. Gul Ahmad Afghan Khurasani, 19 Shawwal-ul-Mukarram 1338 AH. What do the scholars of religion and jurists of the firm Sharia say on this issue: A person bathes his elephant near a well, and its splashes fall into the well. Also, the same bucket from which the elephant drinks water is repeatedly lowered into the well. In such a case, what is the ruling regarding the well? Is it permissible to use its water for Ghusl (ritual bath), Wudu (ablution), eating, and drinking? And if someone performed Wudu or Ghusl with it, must the prayers be repeated or not? Explain and be rewarded.

The Answer: Although the splashes from an elephant's body are not impure (najis) according to the more correct opinion, the water it has drunk from and the bucket from which it drank are definitely impure. When that same bucket was lowered into the well, all the water became impure. Its use for Wudu, Ghusl, and eating/drinking is forbidden (haram). If Wudu or Ghusl was performed with it, the body and clothes must be purified, and prayers must be repeated. The elephant owner should be stopped from this forbidden act. And Allah Almighty knows best.

Issue 212: Questioned by Nanhe Khan, Kankar Tola, Old City, 14 Muharram 1339 AH. What do the scholars of religion and jurists of the firm Sharia say on this issue: Is the semen from which a human is born pure or impure?

The Answer: Semen is absolutely impure, except for the pure drops from which the Prophets (peace be upon them) were created. The semen of the Prophets (peace be upon them) is pure, just as their urine is pure, and so are all their bodily wastes. And Allah Almighty knows best.

Issue 213: From Buldana Berar, Baswa Station, related to Malkapur Islamic School, questioned by Sirajuddin Sahib, 13 Ramadan 1339 AH. What do the scholars of religion say on this issue: A bullock cart driver has only one shirt and one pair of trousers. This is his profession; he earns his living from the cart's rent. While driving the bulls, splashes of their urine and dung fall everywhere due to the bulls wagging their tails. Large stains appear on the clothes, and there is no opportunity to wash them. What is the teaching of the noble Sharia for performing the five daily prayers in this state? Explain and be rewarded.

The Answer: The dung and urine of bulls are minor impurities (Najis-e-Khafifa). As long as it does not cover a quarter of the garment, or if scattered droplets, when

combined, would amount to a quarter of the garment, the clothing will not be ruled as impure. Prayer will be permissible in them. And if, for instance, it... [continues on the next page]

फतावा रज़विया जिल्द चौथी

मसला 211: इमाम पुर से, प्रेषक जनाब गुल अहमद साहब अफगान खुरासानी, 19 शव्वाल-उल-मुकर्रम 1338 हिजरी। दीन के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस मसले में क्या फरमाते हैं कि: एक व्यक्ति अपने हाथी को कुएं के पास नहलाता है और उसके छींटे कुएं के अंदर जाते हैं, और जिस डोल (बाल्टी) से हाथी पानी पीता है, वही बार-बार कुएं में डालता है। ऐसी स्थिति में कुएं का क्या हुक्म है? इसके पानी का उपयोग गुस्ल (स्नान), वज़ू, खाने और पीने में करना सही है या नहीं? और अगर इससे वज़ू या गुस्ल किया हो तो नमाज़ों को दोहराया जाएगा या नहीं? बयान फरमाएं, पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: हाथी के शरीर के छींटे हालांकि सही मज़हब (विचार) के अनुसार नापाक नहीं हैं, लेकिन उसका पिया हुआ पानी और वह बाल्टी जिससे पानी पिया गया, निश्चित रूप से नापाक हैं। जब वही बाल्टी कुएं में डाली गई, तो सारा पानी नापाक हो गया। इसका उपयोग वज़ू, गुस्ल और खाने-पीने में हराम है। और अगर वज़ू या गुस्ल किया गया, तो शरीर और कपड़े पाक किए जाएं और नमाज़ें दोहराई जाएं। हाथी वाले को इस हराम काम से रोका जाए। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 212: प्रश्नकर्ता नन्हे खां, कंकर टोला, शहर कोहना, 14 मुहर्रम 1339 हिजरी। दीन के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस मसले में क्या फरमाते हैं कि: वह वीर्य जिससे मनुष्य का जन्म होता है, पाक है या नापाक?

जवाब: वीर्य पूर्ण रूप से नापाक ही है, सिवाय उन पाक बूंदों के जिनसे अंबिया अलैहिमुस्सलाम (पैगंबरों) की रचना हुई। अंबिया अलैहिमुस्सलाम का वीर्य पाक है, जैसे उनका पेशाब भी पाक है, इसी तरह उनके तमाम शारीरिक अपशिष्ट। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 213: बुलडाना बरार बसवा स्टेशन, मलकापुर मदरसा इस्लामिया से संबंधित, प्रश्नकर्ता सिराजुद्दीन साहब, 13 रमज़ान 1339 हिजरी। दीन के विद्वान इस मसले में क्या फरमाते हैं कि: एक बैलगाड़ी हांकने वाला जिसके पास केवल एक कुर्ता और एक ही पायजामा है। यही उसका पेशा है; वह गाड़ी के किराए से अपना पेट भरता है। बैलों को हांकते समय बैलों की पूंछ हिलाने से उनके पेशाब और गोबर के छींटे हर जगह लग जाते हैं। कपड़ों पर बड़े-बड़े दाग आ जाते हैं, और उन्हें धोने का समय नहीं मिलता। इस स्थिति में पांचों वक्त की नमाज़ अदा करने के बारे में शरीयत की क्या शिक्षा है? बयान फरमाएं, पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: बैलों का गोबर और पेशाब 'नजासत-ए-ख़फ़ीफ़ा' (हल्की गंदगी) है। जब तक यह कपड़े के एक-चौथाई हिस्से को न भर दे, या अलग-अलग पड़े छींटे मिलकर कपड़े के एक-चौथाई हिस्से के बराबर न हो जाएं तब तक कपड़े को नापाक नहीं माना जाएगा। और उससे नमाज़ जायज़ होगी। और फर्ज़ करें कि अगर उससे... [अगले पृष्ठ पर जारी]

فتاوی رضویہ جلد چہارم

مسئلہ ۲۱۱: از امام پور مرسلہ جناب گل احمد صاحب افغان خراسانی ۱۹ شوال المکرم ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص اپنے ہاتھی کو قریب کنویں کے نہلاتا ہے اور اس کی چھینٹیں کنویں کے اندر جاتی ہیں اور جس ڈول میں ہاتھی پانی پیتا ہے وہی بار بار کنویں میں ڈالتا ہے ایسی صورت میں کنویں کا کیا حکم ہے اس کے پانی کا استعمال غسل، وضو، کھانے پینے میں کرنا درست ہے یا نہیں اور اگر اس سے وضو یا غسل کیا ہو تو نمازوں کا اعادہ کیا جائے گا یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: ہاتھی کے بدن کی چھینٹیں اگرچہ مذہبِ راجح میں ناپاک نہیں مگر اس کا پیا ہوا پانی اور وہ ڈول جس میں پانی پیا یقیناً ناپاک ہیں جب وہی ڈول کنویں میں ڈالا سب پانی ناپاک ہوگیا اس کا استعمال وضو، غسل و خوردونوش میں حرام ہے اور وضو و غسل کیا تو بدن اور کپڑے پاک کیے جائیں اور نمازیں پھیری جائیں اور ہاتھی والے کو اس حرام حرکت سے باز رکھا جائے واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۱۲: مسئولہ ننھے خاں کا نکر ٹولہ شہر کہنہ ۱۴ محرم ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں جو کہ نطفہ آدمی کی پیدائش کا قرار پاتا ہے وہ پاک ہے یا ناپاک؟

الجواب: منی مطلق ناپاک ہی ہے سوائن پاک نطفوں کے جن سے تخلیقِ حضراتِ انبیاء علیہم الصلوۃ والسلام ہوئی اور خواہ انبیاءِ کرام علیہم الصلوۃ والسلام کے نطفے کہ ان کا پیشاب بھی پاک ہے یونہی تمام فضلات واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۱۳: از بلڈانہ برار بسوہ اسٹیشن متعلق ملکہ پور مدرسہ اسلامیہ مسئولہ سراج الدین صاحب ۱۳ رمضان ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ بیل گاڑی ہانکنے والا جس کے پاس ایک کرتا اور ایک ہی پاجامہ ہے یہی پیشہ ہے گاڑی کے کرائے سے شکم سیری کرتا ہے بیلوں کو ہانکنے کے وقت بیلوں کے پیشاب و گوبر کی چھینٹ دُم بیل کے ہلانے سے سب جگہ لگی بڑے بڑے داغ کپڑوں پر آئے دھونے کی فرصت نہیں ملی اس حالت میں نماز پنجگانہ ادا کرنے کی شرح شریف میں کیا تعلیم ہے، بینوا توجروا۔

الجواب: بیلوں کا گوبر پیشاب نجاستِ خفیفہ ہے جب تک چہارم کپڑا نہ بھر جائے یا متفرق اتنی پڑی ہوں کہ جمع کرنے سے چہارم کپڑے کی مقدار ہو جائے کپڑے کو نجاست کا حکم نہ دیں گے اور اس سے نماز جائز ہوگی اور بالفرض اگر اس سے

Even if there are additional spots and washing them would cause true hardship (i.e., severe distress), the prayer is valid.

Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) declared it pure in view of the general necessity (Umum-e-Balwa), as mentioned in *Durr-ul-Mukhtar*. (T)

Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) declared it pure in view of 'Umum-e-Balwa' (public necessity), as mentioned in *Durr-ul-Mukhtar*. (T)

Al-Mukhtar - And Allah Almighty knows best.

Issue 213: From the city of Gaya, Nazir Ganj neighborhood, asked by Mr. Shamsuddin and Ahmadullah Khan, Shawwal 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this issue: for what specific reason were pigs, dogs, and elephants made impure (najis)? Provide a reasoned answer based on arguments from the verses of the Holy Quran. Explain so that you may be rewarded.

The Answer:

For the same specific reason you were made pure, and Allah Almighty knows best.

(Note): The scribe distorted it; its correct statement is at the end, i.e., in his (Imam Muhammad's) final command when he entered 'Rayy' with the Caliph and saw the people afflicted by the roads and inns being filled with dung. The jurists (Mashayikh) based the ruling on the soil of Bukhara on this statement of Imam Muhammad. *Al-Fath* and the Mujaddid of the present century, my master and father Ala Hazrat (may his soul be sanctified), chose this to remove hardship from farmers and those who work like them. Memorize this. For this reason, the statement of the *Shaikhayn* (Imam Abu Hanifa and Imam Abu Yusuf) regarding animal droppings (khashi/ mengni) was chosen here, stating they are a light impurity (mukhaffafa). This was made apparent in *Al-Shurunbulaliyah* and attributed to *Mawahib al-Rahman*. However, in *Al-Nukat* by Allama Qasim, it is mentioned that the Imam's statement regarding heavy impurity (taghleez) was preferred in *Al-Mabsut* and others; hence, the authors of the texts (Ashab al-Mutun) adopted it. (T)

The scribe distorted it; its correct statement is at the end, i.e., in his (Imam Muhammad's) final command when he entered 'Rayy' with the Caliph and saw the people afflicted by the roads and shops being filled with dung. The jurists (Mashayikh) based the ruling on the soil of Bukhara on this statement of Imam Muhammad. *Al-Fath* and the Mujaddid of the present century, my master and father Ala Hazrat (may his soul be sanctified), chose this to remove hardship from farmers and those who work like them. Memorize this. For this reason, the statement of the *Shaikhayn* regarding animal droppings (mengni) was chosen here. This was made apparent in *Shurunbulaliyah* and attributed to *Mawahib al-Rahman*. However, in *Al-Nukat* by Allama Qasim, it is stated that the Imam's statement is regarding heavy impurity (najasat-e-ghaliza); this has been preferred in *Al-Mabsut* and others; hence, the authors of the texts (Ashab al-Mutun) adopted it. (T)

The humble Hamid Raza Qadri al-Razvi al-Barelwi. (T) 12

---

[1] *Durr-ul-Mukhtar*, Chapter of Impurities, Printed by Mujtabai Delhi, 1/55

फ़तावा-ए-रज़विया, खंड 4

यदि अतिरिक्त धब्बे भी हों और उन्हें धोने से सच्ची बाधा यानी गंभीर कठिनाई हो, तो नमाज़ जायज़ है।

इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) ने 'उमूम-ए-बलवा' के मद्देनज़र इसे पाक घोषित किया है, जैसा कि 'दुर्र-ए-मुख्तार' में है। (त)

इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) ने 'उमूम-ए-बलवा' (सार्वजनिक आवश्यकता) के मद्देनज़र इसे पाक घोषित किया है, जैसा कि 'दुर्र-ए-मुख्तार' में है। (त)

अल-मुख्तार - और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 213: गया शहर, नज़ीर गंज मोहल्ला से, सायल शम्सुद्दीन और अहमदउल्लाह खान, शव्वाल 1339 हिजरी। दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि सूअर, कुत्ता और हाथी किस खास वजह से नापाक (नजिस) करार दिए गए हैं? पवित्र कुरान की आयतों के दलीलों के साथ स्पष्ट करें। बयान करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर:

उसी खास वजह से जिससे तुम पाक किए गए हो, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

(नोट): कातिब (लेखक) ने इसे बिगाड़ दिया है; इसका सही बयान अंत में है, यानी उनके (इमाम मुहम्मद के) अंतिम आदेश में जब वह खलीफा के साथ 'रय' शहर में दाखिल हुए और लोगों को रास्तों और सरायों के गोबर से भरे होने के कारण आम परेशानी में देखा। मशायख ने बुखारा की मिट्टी को इमाम मुहम्मद के इसी कौल (कथन) पर कयास (अनुमान) किया है। 'अल-फ़तह' और मौजूदा सदी के मुजद्दिद मेरे आका और वालिद आला हज़रत (क़ुद्दसा सिर्रहु) ने किसानों और उनके जैसा काम करने वालों की मुश्किल दूर करने के लिए इसी को अपनाया है। इसे याद कर लें। इसी लिए यहाँ मेंगनी (खशी) के बारे में 'शेखैन' का कौल अपनाया गया कि वह नजासत-ए-मुखफ़्फ़ा (हल्की अशुद्धि) है। 'अश-शुरुनबुलालीय' में इसी को स्पष्ट किया गया है और इसे 'मवाहिब-उर-रहमान' की ओर मंसूब किया गया है। लेकिन अल्लामा कासिम की 'अन्-नुकत' में यह है कि इमाम का कौल 'तग़लीज़' (भारी अशुद्धि) के साथ है, 'अल-मबसूत' आदि में इसी को तरजीह दी गई है, इसीलिए 'अस्हाब-ए-मुतून' ने इसे अपनाया है। (त)

कातिब (लेखक) ने इसे बिगाड़ दिया है; इसका सही बयान अंत में है, यानी उनके (इमाम मुहम्मद के) अंतिम आदेश में जब वह खलीफा के साथ 'रय' शहर में दाखिल हुए और लोगों को रास्तों और दुकानों के गोबर से भरे होने के कारण आम परेशानी में देखा। मशायख ने बुखारा की मिट्टी को इमाम मुहम्मद के इसी कौल पर कयास किया है। 'फ़तह' और मौजूदा सदी के मुजद्दिद मेरे आका और वालिद आला हज़रत (क़ुद्दसा सिर्रहु) ने किसानों और उनके जैसा काम करने वालों की मुश्किल दूर करने के लिए इसी को अपनाया है। इसे याद कर लें। इसी लिए यहाँ मेंगनी के बारे में 'शेखैन' का कौल अपनाया गया। 'शुरुनबुलालीय' में इसी को स्पष्ट किया गया है और इसे 'मवाहिब-उर-रहमान' की ओर मंसूब किया गया है। लेकिन अल्लामा कासिम की 'नुकत' में यह है कि इमाम का कौल 'नजासत-ए-ग़लीज़ा' के साथ है, 'मबसूत' आदि में इसी को तरजीह दी गई है, इसीलिए 'अस्हाब-ए-मुतून' ने इसे अपनाया है। (त)

अल-फ़क़ीर हामिद रज़ा क़ादरी। अल-रज़वी अल-बरेलवी। (त) 12

---

[1] दुर्र-ए-मुख्तार, नजासत का अध्याय, मुजतबाई दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 1/55

زائد بھی دھبے ہوں اور دھونے سے سچی معذوری یعنی حرج شدید ہو تو نماز جائز ہے۔

فقد طہرہ محمد[1] اخذہ عموم البلوی کما فی الدر

امام محمد رحمہ اللہ نے عموم بلوی کے پیشِ نظر اسے پاک قرار دیا ہے جیسا کہ دُرِ مختار میں ہے۔ (ت)

المختار - واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۱۳ : از شہر گیا محلہ نذر گنج مسئولہ شمس الدین واحمد اللہ خان صاحبان شوال ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ سؤر اور کتا اور ہاتھی کس وجہ خاص سے نجس کیے گئے ہیں، مدلل بدلائلِ آیاتِ قرآنِ مجید۔ بینوا توجروا۔

الجواب:

جس وجہ خاص سے تم طاہر کیے گئے ہو، واللہ تعالیٰ اعلم

عہ: مسخہ الناسخ وصوابہ اخرا ای فی آخر امرہ حین دخل الری مع الخلیفۃ ورأی ببلوی الناس من امتلاء الطرق والخانات وقاس المشایخ علی قولہ ھذا طین بخاری فتح واختارہ مجدد المائۃ الحاضرۃ سیدی ووالدی اعلحضرت قدس سرہ دفعاً للحرج عن الفلاحین ومن حذا حذوھم ھذا ولذا اختار ھھنا فی الخشی قولھما انھا مخففۃ واستظھرہ فی الشرنبلالیۃ وعزاہ الی مواھب الرحمن لکن فی النکت للعلامۃ قاسم ان قول الامام بالتغلیظ رجحہ فی المبسوط وغیرہ ولذا جری علیہ اصحاب المتون اھ

کاتب نے اس کو مسخ کر دیا ہے، اس کا درست بیان آخر میں یعنی آپ کے آخری حکم میں ہے جب آپ خلیفہ کے ساتھ ری میں داخل ہوئے اور راستوں اور دکانوں کے گوبر سے بھرے ہونے کی وجہ سے لوگوں کو ابتلاء عام میں دیکھا اور مشائخ نے امام محمد کے اسی قول پر بخاری کی مٹی کو قیاس کیا ہے فتح اور مجدد مائۃ حاضرہ میرے آقا و والد اعلیٰ حضرت قدس سرہ نے کسانوں اور ان جیسا کام کرنے والوں سے حرج کو دور کرنے کے لئے اسی کو اختیار فرمایا ہے اسے محفوظ کر لو، اسی لئے یہاں مینگنی کے بارے میں شیخین کا قول اختیار فرمایا۔ شرنبلالیہ میں اسی کو ظاہر فرمایا ہے اور اس کو مواہب الرحمن کی طرف منسوب کیا ہے۔ لیکن علامہ قاسم کی نکت میں یہ ہے کہ امام کا قول نجاستِ غلیظہ کے ساتھ ہے مبسوط وغیرہ میں اسی کو ترجیح دی ہے اسی لئے اصحابِ متون نے اسے اختیار فرمایا اہ ۱۲ (ت)

الفقیر حامد رضا قادری الرضوی البریلوی ۱۲ (ت)

---

[1] در مختار باب الانجاس مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/۵۵

Volume Four

Problem 214: From Nagina, District Bijnor, Mohalla Sheikh ki Saraye Takiya Manharan, asked by Hafiz Bashir Ahmed Sahib, 10 Shawwal 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: one person says that unwashed market-bought cloth, whether local or English, bought for a price, is permissible to wear without washing and prayer is valid in it. Another person says prayer is not valid without washing because there is no certainty of it being pure. Whose statement is correct? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: Certainty of purity is not fundamentally required. When a person sleeps in clothes, what certainty is there upon waking that no impurity touched them? For using clothes and praying in them, it is only required that they are not known to be impure. Whether local or English, however many clothes are bought or received for free, they are pure until their impurity is known. The thought that they become pure only by paying for them is baseless. And Allah knows best.

Problem 215: From Mauza Khurd Mou, Post Office Badusarai, District Barabanki, sent by Safdar Ali Sahib, 6 Rabi-ul-Awwal Sharif 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: is the use of current local or foreign soap permissible or impermissible for the living and the dead? A definitive decision is needed.

The Answer: Soap made by a Muslim is permissible. Soap made by a Hindu, Magian, or Christian, which contains fat, even if it is of a cow or goat, is impure and forbidden (haram), whether local or foreign. And the soap that does not contain fat is permissible. And Allah knows best.

Problem 216: Sent by Haji Ismail bin Haji Amir Miyan Qadri Kathiawari from South Africa, located at Bhota Bhoti, British Basutoland. If an animal that is haram, for example, a mouse, cat, dog, or pig etc., died in or touched hot or cold oil or ghee, how will that ghee and oil etc. become pure, and is eating it correct or not?

The Answer: If the ghee is thin and liquid, then the method of purifying it has been mentioned in the fifth problem previously, and if it is solid, then that animal or its— Footnote: In response to one of the 111 questions from Haji Ismail Miyan Sahib, the method mentioned is on page 563 of this book under problem 199. (M)

Page 573 of 761

जिल्द चौथी

मसला 214: नगीना, जिला बिजनौर, मोहल्ला शेख की सराय तकिया मनहारन से, हाफ़िज़ बशीर अहमद साहिब द्वारा पूछा गया, 10 शव्वाल 1339 हिजरी। धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं: एक व्यक्ति कहता है कि बाज़ार से खरीदा हुआ कोरा कपड़ा, चाहे वह देसी हो या अंग्रेज़ी, जिसे कीमत देकर खरीदा गया हो, उसे बिना धोए पहनना जायज़ है और उसमें नमाज़ सही है। दूसरा कहता है कि बिना धोए नमाज़ जायज़ नहीं क्योंकि उसके पाक (शुद्ध) होने का यकीन नहीं है। किसका कथन सही है? बयान करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: पाक होने पर यकीन की मौलिक रूप से आवश्यकता नहीं है। कोई व्यक्ति जो कपड़े पहनकर सोता है, जागने पर उसे क्या यकीन है कि उन पर कोई अशुद्धि (नजासत) नहीं पहुँची? कपड़ों के उपयोग और उनमें नमाज़ पढ़ने के लिए केवल इतना आवश्यक है कि उनका नापाक होना ज्ञात न हो। देसी हो या अंग्रेज़ी, जितने भी कपड़े खरीदे जाएं या बिना खरीदे मिलें, जब तक उनकी अशुद्धि का पता न चले, वे पाक हैं। यह विचार निराधार है कि वे कीमत देने से पाक होंगे। और अल्लाह ही बेहतर जानता है।

मसला 215: मौज़ा खुर्द मू, डाकखाना बदोसराय, जिला बाराबंकी से सफ़दर अली साहिब द्वारा भेजा गया, 6 रबी-उल-अव्वल शरीफ 1338 हिजरी। धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं कि वर्तमान देसी या विदेशी साबुन का उपयोग जीवितों और मृतकों के लिए जायज़ है या नाजायज़? एक अंतिम निर्णय होना चाहिए।

उत्तर: मुसलमान का बनाया हुआ साबुन जायज़ है। हिंदू, मजूसी (अग्निपूजक), या ईसाई का बनाया हुआ साबुन जिसमें चर्बी पड़ती हो, चाहे वह गाय या बकरी की ही क्यों न हो, नापाक और हराम है, चाहे वह देसी हो या विदेशी। और जिस साबुन में चर्बी न हो, वह जायज़ है। और अल्लाह ही बेहतर जानता है।

मसला 216: दक्षिण अफ्रीका के भूटा भूटी, ब्रिटिश बसुटोलैंड से हाजी इस्माइल बिन हाजी अमीर मियां कादरी काठियावाड़ी द्वारा भेजा गया। यदि तेल या घी गरम हो या ठंडा, उसमें कोई हराम जानवर जैसे चूहा, बिल्ली या कुत्ता या सूअर आदि गिरकर मर जाए या उसे जूठा कर जाए, तो वह घी और तेल आदि कैसे पाक होगा और उसका खाना सही होगा या नहीं?

उत्तर: घी यदि पतला और तरल है, तो उसे पाक करने का तरीका पांचवें मसले में गुज़रा है। और अगर वह जमा हुआ है, तो उस जानवर या उसके— नोट: हाजी इस्माइल मियां साहिब के111 सवालों में से पांचवें सवाल के जवाब में वह तरीका बताया गया है जो इस किताब के पेज 563 पर मसला 199 में दर्ज है। (म)

पेज 573 का 761

جلد چہارم

مسئلہ ۲۱۴: از نگینہ ضلع بجنور محلہ شیخ کی سرائے تکیہ منہار ان مسئولہ حافظ بشیر احمد صاحب ۱۰ شوال ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص کہتا ہے کہ کورا کپڑا بازار کا خریدا ہوا دیسی ہو یا انگریزی جبکہ قیمت دے کر خریدا گیا ہو وہ بلا دھوئے ہوئے پہننا جائز ہے اور نماز اس پر درست ہے ، دوسرا کہتا ہے بغیر دھوئے نماز جائز نہیں کہ اس کے طاہر ہونے کا یقین نہیں ، کس کا قول صحیح ہے بینوا توجروا۔

الجواب: طاہر ہونے پر یقین کی اصلاً حاجت نہیں آدمی جو کپڑے پہنے سوتا ہے جاگنے پر کیا یقین ہے کہ انہیں کوئی نجاست نہ پہنچی۔ کپڑے کے استعمال اور اس سے نماز پڑھنے کے لئے صرف اتنا درکار ہے کہ اس کا نجس ہونا معلوم نہ ہو دیسی یا انگریزی جتنے کپڑے خریدے جائیں یا بے خریدے ملیں جب تک ان کی نجاست معلوم نہ ہو پاک ہیں یہ خیال بے اصل ہے کہ قیمت دینے سے پاک ہوں گے ، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۱۵: از موضع خور دمو ڈاکخانہ بدوسرائے ضلع بارہ بنکی مرسلہ صفدر علی صاحب ۶ ربیع الاول شریف ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ صابون دیسی یا ولایتی مروجہ کا استعمال زندہ اور مردہ کے لئے جائز ہے یا ناجائز۔ قطعی فیصلہ ہونا چاہئے۔

الجواب: مسلمان کا بنایا ہوا صابون جائز ہے اور ہندو یا مجوسی یا نصرانی کا بنایا ہوا صابون جس میں چربی پڑتی ہو اگر چہ گائے یا بکری کی، ناپاک وحرام ہے دیسی ہو یا ولایتی اور جس میں چربی نہ ہو جائز ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۱۶: مرسلہ حاجی اسمعیل بن حاجی امیر میاں قادری کاٹھیاواڑی از جنوبی افریقہ بمقام بھوٹا بھوٹی برٹش باسوٹولینڈ۔ اگر تیل یا گھی گرم ہو یا سرد اُس میں حرام جانور مثلاً چوہا ، بلی یا کتا یا خنزیر وغیرہ جانور اندر مر گیا یا جھوٹا کر گیا اب وہ گھی و تیل وغیرہ کیسے پاک ہوگا اور ہو کھانا درست ہوگا یا نہیں؟

الجواب: گھی اگر رقیق پتلا ہے تو اس کے پاک کرنے کا طریقہ مسئلہ پنجم عہد میں گزرا اور اگر جما ہوا ہے تو اُس جانور یا اُس کے عہ: حاجی اسمعیل میاں صاحب کے ایک سوگیارہ سوالات میں سے سوال پنجم کے جواب میں وہ طریقہ ذکر فرمایا کہ اس کتاب کے صفحہ ۵۶۳ پر مسئلہ ۱۹۹ میں مذکور ہے ۱۲ (م)

Fatawa-e-Razawiyya Volume Four Scrape off and throw away a little bit of the ghee from the place where it was touched by the mouth, the rest is pure. Ahmad and Abu Dawood narrated from Abu Huraira, and Darimi narrated from Abdullah bin Abbas (may Allah be pleased with them) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

Arabic	**Urdu**
If a mouse falls into ghee, and if it is solid, then throw away the mouse and what is around it. - And Allah Almighty knows best.	If a mouse falls into solidified ghee, then remove and throw away the mouse and the ghee surrounding it.

1 Sunan Abi Dawud Sharif, Chapter: Concerning mice that fall into ghee, printed by Aftab-e-Alam Press Lahore, 181/2. Page 574 of 761

फ़तवा-ए-रज़विया जिल्द चार (खंड 4) जहाँ मुँह लगा हो, वहाँ से थोड़ा सा घी खुरच कर फेंक दें, बाकी पाक (शुद्ध) है। अहमद और अबू दाऊद ने अबू हुरैरा से, और दारीमी ने अब्दुल्ला बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

अरबी	उर्दू
"इज़ा वक़अतिल फ़ारतु फ़िस समि्न फ़इन काना जामिदन फलक़ूहा वमा हवलहा" - वल्लाह ताआला आलम।	अगर जमे हुए घी में चूहा गिर जाए, तो चूहा और उसके आस-पास का घी निकाल कर फेंक दो।

1 सुनन अबी दाऊद शरीफ़, बाब: फ़िल फ़ारति तक़उ फ़िस समि्न, मुतबूआ आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर 181/2 पृष्ठ 761 में से 574

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم منہ لگنے کی جگہ سے تھوڑا سا گھی کھرچ کر پھینک دیں باقی پاک ہے، احمد وابوداؤد ابوہریرہ اور دارمی عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالی عنہم سے راوی رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے فرمایا:

عربی	اردو
اذا وقعت الفأرة في السمن فان كان جامداً فالقوها وما حولها - والله تعالى اعلم-	اگر جمے ہوئے گھی میں چوہا گر جائے تو چوہا اور اس کے آس پاس کا گھی نکال کر پھینک دو۔

1 سنن ابی داؤد شریف باب فی الفارۃ تقع فی السمن مطبوعہ آفتاب عالم پریس لاہور ۱۸۱/۲ Page of 761 574

Fatawa Ridawiyya - Volume 4

Chapter of Istinja (This is regarding the description of Istinja)

Question 71: What do the scholars of religion say regarding this matter: A person performed wudu (ablution) from a vessel (lota), and some water remained in it. How is it to perform minor or major istinja (cleansing after excretion) or wudu with this leftover water, and is it permissible to throw it away or not? Explain and be rewarded.

The Answer: To throw it away is a waste of wealth (tazyi' al-maal), which is strictly forbidden in Sharia. Performing wudu with it is certainly permissible, unless so much "used water" (ma-e-must'amal) has fallen into it that it exceeds the "unused water". As for istinja, there is no doubt about its permissibility either; nor has any prohibition of it come across the sight of this humble servant in any book. Yes, this much is certain that there is religious respect and honor for the leftover water of wudu. It is proven from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) that after performing wudu, he drank the remaining water while standing. It has been narrated in a Hadith that drinking it is a cure for 70 diseases. In these matters, it resembles Zamzam water. Therefore, it is not appropriate to perform istinja with such water. It is stated in the etiquettes of wudu in "Tanwir":

"And he should drink after it from the remainder of his wudu while facing the Qibla standing." [1]

He should drink the leftover water of wudu while standing and facing the Qibla. (T)

[1] Durr al-Mukhtar with Tanwir al-Absar, Chapter of Recommended Acts of Wudu, published by Mujtabai Delhi, 1/23.

Page 576 of 761

फ़तावा रिज़विया - जिल्द 4

बा-बुल इस्तिंजा (यह बात इस्तिंजा के बयान में है)

मसअला 71: क्या फ़रमाते हैं उलमा-ए-दीन इस मसअले में कि एक शख़्स ने लोटे से वज़ू किया, उस में पानी बच रहा, उस बचे हुए पानी से छोटा-बड़ा इस्तिंजा या वज़ू करना कैसा है और उसे फेंक देना जाइज़ है या नहीं? बयिनू तूउजरू।

अल-जवाब: फेंक देना तो तज़ई-ए-माल (माल की बर्बादी) है जो शरअ में क़तअन ममनूअ (प्रतिबंधित) है और वज़ू करना बेशक जाइज़ है, मगर ये कि उस में 'मा-ए-मुस्तअमल' (इस्तेमाल शुदा पानी) इस क़दर गिर गया हो कि ग़ैर-मुस्तअमल (शुद्ध पानी) पर ग़ालिब हो गया। रहा इस्तिंजा, जवाज़ में तो उसके भी शुबहा नहीं, न किसी किताब में इसकी मुमानअत (मनाही) नज़ीर-ए-फ़क़ीर (इस विनम्र लेखक) की नज़र से गुज़री। हाँ, इस क़दर है कि बक़िया वज़ू के लिए शरअन अज़मत-ओ-एहतराम है और नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से साबित है कि हुज़ूर ने वज़ू फ़रमा कर बक़िया आब (पानी) को खड़े होकर नोश फ़रमाया (पिया) और एक हदीस में रिवायत किया गया कि इसका पीना 70 मर्ज़ (बीमारियों) से शिफ़ा है। तो वह इन उमूर (मामलों) में आब-ए-ज़मज़म से मुशाबहत (سماں تا) रखता है, ऐसे पानी से इस्तिंजा मुनासिब नहीं। 'तन्वीर' के आदाब-ए-वज़ू में है:

"और वह इसके बाद अपने वज़ू के बचे हुए पानी से किबला की तरफ़ मुँह करके खड़े होकर पिए।" [1]

वज़ू के बाद वज़ू का पसमांदा (बचा हुआ पानी) क़िबला रुख़ खड़े होकर पिए। (त)

[1] दुर्र-ए-मुख़्तार मअ तन्वीरुल अबसार, बाब मुस्तहबातुल वज़ू, मतबुआ मुजतबाई देहली, 1/23.

पृष्ठ 576/761

فتاوی رضویہ - جلد چہارم

باب الاستنجاء (یہ بات استنجا کے بیان میں ہے)

مسئلہ ۷۱ : کیا فرماتے ہیں علماء دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے لوٹے سے وضو کیا اس میں پانی بچ رہا، اس بچے ہوئے پانی سے چھوٹا بڑا استنجا یا وضو کرنا کیسا ہے اور اسے پھینک دینا جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: پھینک دینا تو تضییع مال ہے کہ شرع میں قطعاً ممنوع اور وضو کرنا بیشک جائز، مگر یہ کہ اُس میں مائے مستعمل اس قدر گر گیا ہو کہ غیر مستعمل پر غالب ہو گیا۔ رہا استنجا، جواز میں تو اس کے بھی شبہہ نہیں، نہ کسی کتاب میں اس کی ممانعت نظیر فقیر سے گزری۔ ہاں اس قدر ہے کہ بقیہ وضو کیلئے شرعاً عظمت و احترام ہے اور نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے ثابت کہ حضور نے وضو فرما کر بقیہ آب کو کھڑے ہو کر نوش فرمایا اور ایک حدیث میں روایت کیا گیا کہ اس کا پینا ستر ۷۰ مرض سے شفا ہے۔ تو وہ ان امور میں آب زمزم سے مشابہت رکھتا ہے ایسے پانی سے استنجا مناسب نہیں۔ تنویر کے آداب وضو میں ہے:

وان یشرب بعدہ من فضل وضوئہ مستقبل القبلۃ قائماً ۱۔ وضو کے بعد وضو کا پسماندہ (پانی) قبلہ رخ کھڑے ہو کر پئے۔ (ت)

۱ درمختار مع تنویر الابصار باب مستحبات الوضوء مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۲۳

Fatawa-e-Razvia Volume 4

It is stated in 'Durr-e-Mukhtar': Just like Zamzam water [1] (Note: Similarly to Zamzam water). It is narrated in Jami' al-Tirmidhi from Sayyiduna 'Ali (May Allah Almighty ennoble his countenance) that he drank the remaining water of his ablution (Wudu) while standing, then said:

[Arabic Text]: "I wanted to show you how the purification (Wudu) of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) was." [2] **[Urdu Translation]:** I wanted to show you what the method of Wudu of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) was.

It is stated in 'Radd al-Muhtar':

[Arabic Text]: "Zamzam water is a cure, and so is the leftover water of Wudu. In the commentary of 'Hadiyyat Ibn al-Imad', Sayyidi Abdul Ghani al-Nabulsi says: 'From what I have experienced, whenever I fall ill, I intend to seek healing by drinking the leftover water of Wudu, and I receive healing. This has been my practice, relying on the saying of the Truthful One (peace and blessings of Allah be upon him) regarding this authentic prophetic medicine.' [3] And Allah the Glorified and Exalted knows best what is correct."

[Urdu Translation]: Zamzam water is a cure, and so is the leftover water of Wudu. In the commentary of 'Hadiyyat Ibn al-Imad', 'Allamah Abdul Ghani al-Nabulsi (may Allah have mercy on him) says: "I have experienced that when I fall ill, I intend to seek healing from the remaining water of Wudu, and I obtain healing. I have adopted this method relying on the noble saying of the Truthful Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) found in this authentic prophetic medicine." And Allah the Glorified and Exalted knows best what is correct. (Note)

Issue 218: Haji Allah Yar Khan Sahib, 22 Ramadan Mubarak 1307 AH. What do the scholars of the religion say regarding this issue: A person praying has injured his left hand such that he cannot move it. He is unable to perform 'Istinja' (cleaning after relieving oneself) with water. However, he can clean himself with clods of earth using his right hand. Can such a person offer prayer, and is his leadership in prayer (Imamat) permissible or not? Please clarify, and may you be rewarded.

The Answer: Performing 'Istinja' with the right hand, although prohibited and sinful, is forbidden by the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) in a Sahih (authentic) Hadith, as recorded by Ahmad and the Two Sheikhs from Abu

Qatada (may Allah be pleased with him). (Just as Imam Ahmad and the Two Sheikhs (Imam Bukhari and Muslim) (may Allah Almighty have mercy on them) narrated this Hadith from Hazrat Abu Qatada (may Allah be pleased with him). - Note) However, when there is an excuse (necessity), there is no accountability, for "Necessities make prohibited things permissible." (Necessities make prohibitions permissible. - Note) From 'Durr-e-Mukhtar'.

---

[1] Durr al-Mukhtar with al-Tanwir, Chapter: Recommended acts of Wudu, published by Mujtabai Delhi, 1/23. [2] Jami' al-Tirmidhi, Chapter: How was the Wudu of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), published by Kutub Khana Rashidiyah Delhi, 1/8. [3] Radd al-Muhtar, Discussion regarding drinking while standing, published by Mujtabai Delhi, 1/88.

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

'दुर्र-ए-मुख्तार' में है: जमजम के पानी की तरह [1] (नोट: आब-ए-जमजम की तरह)। जामे तिर्मिज़ी में सैयदुना अली (करमल्लाहु तआला वज्हहु) से रिवायत है कि उन्होंने खड़े होकर वज़ू का बचा हुआ पानी पिया फिर फ़रमाया:

[अरबी इबारत]: "अहबबतु अन उरियकुम कैफ़ा काना तहूरु रसूलील्लाहि सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम" [2] **[उर्दू तर्जुमा]:** मैंने चाहा कि तुम्हें दिखाऊं कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के वज़ू का तरीक़ा कैसा था।

'रद्दुल मुहतार' में है:

[अरबी इबारत]: "जमजम का पानी शिफा है और इसी तरह वज़ू का बचा हुआ पानी भी। 'हदीय्यत इब्नुल इमाद' की शरह में सैयदी अब्दुल ग़नी नाबुलसी फरमाते हैं: 'मेरे तजुर्बे में यह बात आई है कि जब भी मैं बीमार होता हूँ, तो वज़ू के बचे हुए पानी से शिफा हासिल करने का इरादा करता हूँ और मुझे शिफा मिल जाती है। यह मेरा मामूल रहा है नबी-ए-सादिक़ सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इस सहीह तिब्ब-ए-नबवी में मौजूद इरशाद-ए-गिरामी पर एतिमाद करते हुए।' [3] और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है।"

[उर्दू तर्जुमा]: आब-ए-जमजम शिफा है और इसी तरह वज़ू का बचा हुआ पानी भी। 'हदीय्यत इब्नुल इमाद' की शरह में अल्लामा अब्दुल ग़नी नाबुलसी (रहमतुल्लाह अलैहि) फ़रमाते हैं: "मैंने तजुर्बा किया है कि जब मैं बीमार होता हूँ तो वज़ू के बक़िया पानी से शिफा हासिल करने का इरादा करता हूँ, बस मुझे शिफा हासिल हो जाती है। नबी-ए-सादिक़ सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इस सहीह तिब्ब-ए-नबवी में पाए जाने वाले इरशाद-ए-गिरामी पर एतिमाद करते हुए मैंने यह तरीक़ा इख़्तियार किया है।" और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है। (नोट)

मसला २१८: हाजी अल्लाह यार खान साहब, २२ रमज़ान मुबारक १३०७ हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि नमाज़ी के बाएं हाथ में ऐसी चोट लग गई है कि वह हरकत नहीं कर सकता। वह पानी से इस्तंजा करने से मअज़ूर (मजबूर) है। अलबत्ता, वह दाहिने हाथ से ढेलों (मिट्टी के टुकड़ों) से साफ़ कर सकता है। क्या ऐसा शख्स नमाज़ पढ़ सकता है और उसकी इमामत जाइज़ है या नहीं? बयान फरमाएं सवाब पायें।

अल-जवाब: दाहिने हाथ से इस्तंजा करना अगरचे मना और गुनाह है, हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहीह हदीस में इससे मना फ़रमाया है जैसा कि इमाम अहमद और शैख़ैन (इमाम बुखारी व मुस्लिम) ने हज़रत अबू क़तादा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से इस हदीस को नक़्ल किया है। (जैसा कि इमाम अहमद और शैख़ैन (इमाम बुखारी और मुस्लिम) रहमतुल्लाह तआला अलैहिम ने हज़रत अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु से इस हदीस को नक़्ल किया है - नोट)। मगर जब उज़्र (मजबूरी) है तो कोई पकड़ नहीं है, क्योंकि "ज़रूरतें वर्जित चीज़ों को जायज़ कर देती हैं।" (ज़रूरतें वर्जित चीज़ों को जायज़ कर देती हैं। - नोट) - 'दुर्र-ए-मुख्तार' से।

---

1. दुर्र-ए-मुख्तार मअत तनवीर, बाब मुस्तहब्बातुल वज़ू, मतबुआ मुज्तबाई देहली, १/२३
2. जामे तिर्मिज़ी, बाब वज़ू-ए-नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कैफ़ा काना, मतबुआ कुतुब खाना रशीदिया देहली, १/८
3. रद्दुल मुहतार, मतलब फी मबाहिसुश शुरब क़ाइमन, मतबुआ मुज्तबाई देहली, १/८८

पृष्ठ ५७७ / ७६१

فتاوی رضویہ جلد چہارم

در مختار میں ہے: کماء زمزم ۱(آب زمزم کی طرح۔ت) جامع ترمذی میں سیدنا علی کرم اللہ تعالٰی وجہہ سے مروی کہ انہوں نے کھڑے ہو کر بقیہ وضو پیا پھر فرمایا:

احببت ان اریکم کیف کان طھور رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ۲۔ | میں نے چاہا کہ تمہیں دکھاؤں نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا طریقہ وضو کیونکر تھا۔

رد المحتار میں ہے:

ماء زمزم شفاء وکذا فضل الوضوء وفي شرح ھدیۃ ابن العماد لسیدي عبدالغنی النابلسی ومما جربتہ انی اذا اصابنی مرض اقصد الاستشفاء بشرب فضل الوضوء فحصل لی الشفاء وھذا دابی اعتمادًا علی قول الصادق صلی اللہ تعالی علیہ وسلم في ھذا الطب النبوی الصحیح ۳ اھ واللہ سبحنہ وتعالی اعلم بالصواب۔ | آب زمزم شفا ہے اور اسی طرح وضو کا بچا ہوا پانی بھی۔ ہدیہ ابن العماد کی شرح میں علامہ عبدالغنی نابلسی رحمہ اللہ فرماتے ہیں میں نے تجربہ کیا ہے کہ جب میں بیمار ہوتا ہوں تو وضو کے بقیہ پانی سے شفا حاصل کرنے کا ارادہ کرتا ہوں پس مجھے شفا حاصل ہو جاتی ہے نبی صادق صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے اس صحیح طب نبوی میں پائے جانے والے ارشاد گرامی پر اعتماد کرتے ہوئے میں نے یہ طریقہ اختیار کیا ہے اھ واللہ سبحٰنہ وتعالی اعلم بالصواب (ت)

مسئلہ ۲۱۸: حاجی اللہ یار خان صاحب ۲۲ رمضان مبارک ۱۳۰۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مصلی کے بائیں ہاتھ میں ایسی چوٹ لگ گئی ہے کہ حرکت نہیں کرسکتا پانی سے استنجا کرنے سے معذور ہے البتہ داہنے ہاتھ سے ڈھیلوں سے صاف کرسکتا ہے ایسا شخص نماز پڑھ سکتا ہے اور امامت اس کی جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: دہنے ہاتھ سے استنجا اگرچہ ممنوع و گناہ ہے صحیح حدیث میں حضور اقدس صلی اللہ علیہ وسلم نے اس سے نہی فرمائی کما اخرجہ احمد والشیخان عن ابی قتادۃ رضی اللہ تعالی عنہ (جیسا کہ امام احمد اور شیخان (امام بخاری و مسلم) رحمہم اللہ تعالیٰ نے حضرت ابو قتادہ رضی اللہ عنہ سے اس حدیث کو نقل کیا ہے۔ت) مگر جب عذر ہے تو کچھ مواخذہ نہیں فان الضرورات تبیح المحظورات (ضرورتیں ممنوعات کو جائز کردیتی ہیں۔ت) در مختار

---

۱ درمختار مع التنویر، باب مستحبات الوضوء، مطبوعہ مجتبائی دہلی، ۱/ ۲۳ ۲ جامع الترمذی باب وضوء النبی صلی اللہ علیہ وسلم کیف کان مطبوعہ کتب خانہ رشیدیہ دہلی ۱/ ۸ ۳ رد المحتار مطلب فی مباحث الشرب قائما مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۸۸

Volume Four Fatawa Rizvia It is stated in:

[Arabic]: كره تحريماً بيمين ولا عذر بيساره اه ملخصاً [Urdu]: Performing istinja (cleansing after excretion) with the right hand when there is no physical excuse for not using the left hand is prohibited-disliked (Makruh Tahrimi). Abbreviated (T).

When impurity does not exceed the amount of a dirham beyond the exit points for urine and stool, dry clods of earth are sufficient; using water after them is only a Sunnah. It is stated in Durr al-Mukhtar:

[Arabic]: الغسل بالماء بعد الحجر سنة اه ملخصاً [Urdu]: Washing with water after using a stone (for cleansing) is a Sunnah. Abbreviated (T).

This Sunnah as well, although it is like other emphasized Sunnahs (Sunan Mu'akkadah) whose omission is certainly a cause for dislike,

[Arabic]: على ماحققه المحقق على الاطلاق فى الفتح وتبعه تلميذه المحقق ابن امير الحاج فى الحلية [Urdu]: As established by the Absolute Researcher (Muhaqqiq 'ala al-Itlaq), may Allah have mercy on him, in 'Fath al-Qadir', and followed by his student, the researcher Ibn Amir al-Haj in 'Al-Hilyah'. (T)

However, a state of valid excuse is always an exception, and the omission of a Sunnah does not interfere with the validity of prayer. Therefore, in the case under inquiry, without hesitation, there is neither harm in that person's own prayer nor any deficiency in their leading of prayer (imamate). However, if the impurity exceeds the size of a dirham beyond the point of exit, purification cannot be achieved without washing with water. It is stated in Durr al-Mukhtar:

[Arabic]: يجب اى غسله ان جاوز المخرج نجس مانع ويعتبر القدر مانع للصلاة فيما وراء موضع الاستنجاء [Urdu]: If the impurity that prevents prayer exceeds the exit point, washing it becomes mandatory (Wajib). The estimation of the amount of impurity that invalidates prayer will be based on the impurity that is beyond the place of istinja. (T)

In such a situation, if a person cannot manage water with either hand in any way, their own prayer will be valid. It is stated in Durr al-Mukhtar: "If both hands are paralyzed, the obligation of purification is completely waived." (T). But as for imamate...

---

1. Durr al-Mukhtar, Chapter on Istinja, Published by Mujtabai Delhi, 1/56
2. Durr al-Mukhtar, Chapter on Istinja, Published by Mujtabai Delhi, 1/56

3. Durr al-Mukhtar, Chapter on Istinja, Published by Mujtabai Delhi, 1/56
4. Durr al-Mukhtar, Chapter on Istinja, Published by Mujtabai Delhi, 1/56

जिल्द चहारम फ़तावा-ए-रिज़विया में है:

[अरबी]: کرہ تحریماً بیمین ولا عذر بیسارہ اہ ملخصاً उर्दू: यदि बाएँ हाथ में कोई उज़्र (बाधा) न हो, तो दाएँ हाथ से (इस्तिंजा) करना मकरूह-ए-तहरीमी (सख्त नापसंद) है। सारांशतः(त)

और जब नजासत (गंदगी) पेशाब और पाखाने के निकास द्वार (मख़रज) से एक दिरहम की मात्रा से अधिक न बढ़े, तो ढेले (मिट्टी के सूखे टुकड़े) काफी होते हैं, उनके बाद पानी लेना केवल सुन्नत है। 'दुर्रे मुख़्तार' में है:

[अरबी]: الغسل بالماء بعد الحجر سنة اہ ملخصاً

यह सुन्नत भी, हालांकि अन्य सुन्नत-ए-मुअक्कदा के समान है जिसका त्याग निश्चित रूप से मकरूह (नापसंद) होने का कारण है,

[अरबी]: على ماحققه المحقق على الاطلاق فى الفتح وتبعه تلميذه المحقق ابن امير الحاج فى الحلية उर्दू: जैसा कि मोहक़्क़िक़ अलल इतलाक़ (रहमतुल्लाह अलैह) ने 'फ़तह उल क़दीर' में और उनके अनुसरण में उनके शिष्य मोहक़्क़िक़ इब्न अमीरुल हाज ने 'हिलिया' में इसका शोध (तहक़ीक़) किया है। (त)

मगर उज़्र (मजबूरी) की स्थिति हमेशा अपवाद होती है और सुन्नत का त्याग नमाज़ में बाधा नहीं डालता। अतः विचारणीय मामले में, बिना किसी संकोच के न तो उस व्यक्ति की अपनी नमाज़ में कोई हर्ज है और न ही इमामत (नमाज़ का नेतृत्व) में कोई दोष है। अलबत्ता, यदि नजासत मख़रज के अलावा एक दिरहम की मात्रा से अधिक हो, तो उस समय पानी से धोए बिना पवित्रता प्राप्त नहीं होती। 'दुर्रे मुख़्तार' में है:

[अरबी]: یجب ای غسلہ ان جاوز المخرج نجس مانع ویعتبر القدر مانع للصلاۃ فیما وراء موضع الاستنجاء

ऐसी स्थिति में यदि वह किसी भी तरह किसी भी हाथ से पानी पर नियंत्रण न पा सके तो उसकी अपनी नमाज़ हो जाएगी। 'दुर्रे मुख़्तार' में है: 'लौ शललता सक़ता अस्लन' (अगर दोनों हाथ बेकार/पंगु हो जाएं तो पवित्रता का दायित्व पूरी तरह समाप्त हो जाएगा। त) मगर इमामत...

---

1. दुर्रे मुख़्तार, फ़सल अल-इस्तिंजा, मुजतबाई दिल्ली, 1/56

2. दुर्रे मुख़्तार, फ़सल अल-इस्तिंजा, मुजतबाई दिल्ली, 1/56
3. दुर्रे मुख़्तार, फ़सल अल-इस्तिंजा, मुजतबाई दिल्ली, 1/56
4. दुर्रे मुख़्तार, फ़सल अल-इस्तिंजा, मुजतबाई दिल्ली, 1/56

पृष्ठ 578 का 761

جلد چہارم فتاوٰی رضویہ میں ہے:

کرہ تحریماً بیمین ولا عذر بیسارہ اہ ملخصاً- | بائیں ہاتھ میں کوئی عذر نہ ہو تو دائیں ہاتھ سے (استنجا) مکروہ تحریمی ہے اھ ملخصاً (ت)

اور نجاست جب مخرج بول و براز سے مقدار درہم سے زیادہ تجاوز نہ کرے تو ڈھیلے کافی ہوتے ہیں ان کے بعد پانی لینا فقط سنّت ہے در مختار میں ہے:

الغسل بالماء بعد الحجر سنة اہ ملخصاً- | پتھر (استعمال کرنے) کے بعد پانی سے دھونا سنّت ہے اھ ملخصاً

یہ سنّت بھی اگر چہ باقی سنن مؤکدہ کے مثل ہے جس کا ترک بیشک باعثِ کراہت،

علی ماحققه المحقق علی الاطلاق فی الفتح وتبعه تلمیذه المحقق ابن امیر الحاج فی الحلیة- | جیسا کہ محقق علی الاطلاق رحمہ اللہ نے فتح القدیر میں اور ان کی اتباع میں ان کے شاگرد محقق ابن امیر الحاج نے حلیہ میں اس کی تحقیق کی ہے۔ (ت)

مگر حالتِ عذر ہمیشہ مستثنٰی ہوتی ہے اور ترک سنّت نماز میں خلل انداز نہیں پس صورت مستفسرہ میں بلا تامل نہ اُس شخص کی اپنی نماز میں حرج نہ امامت میں نقصان البتہ اگر نجاست مخرج کے علاوہ قدرِ درہم سے زیادہ ہو تو اُس وقت پانی سے دھوئے بغیر طہارت نہیں ہوتی۔ در مختار میں ہے:

یجب ای غسله ان جاوز المخرج نجس مانع ویعتبر القدر مانع للصلاة فیما وراء موضع الاستنجاء- | اگر (طہارت سے) مانع نجاست مخرج سے تجاوز کر جائے تو اس کا دھونا واجب اور نماز سے مانع نجاست کے اندازے کا اعتبار اس نجاست سے ہوگا جو جائے استنجا کے علاوہ ہے۔ (ت)

ایسی حالت میں اگر پانی پر کسی طرح کسی ہاتھ سے قدرت نہ پائے تو اس کی اپنی نماز ہو جائے گی، در مختار میں ہے: لوشلتا سقط اصلا (اگر دونوں ہاتھ شل ہو جائیں تو طہارت بالکل ساقط ہو جائیگی۔ ت) مگر امامت

---

1 در مختار فصل الاستنجاء مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/۵۶ 2 در مختار فصل الاستنجاء مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/۵۶ 3 در مختار فصل الاستنجاء مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/۵۶ 4 در مختار فصل الاستنجاء مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/۵۶

Fatawa Rizvia Volume Four

...cannot do as is not hidden, and Allah Subhanu wa Ta'ala knows best. (As it is not hidden, Allah Ta'ala knows best. - T)

Question 219: 2 Jumada al-Ukhra 1312 AH: What do the scholars of religion say regarding this matter, that the Noble Messenger (may Allah's peace and blessings be upon him) and the companions, did they mostly perform Istinja (cleansing) after urination with water or with stones? Explain and you shall be rewarded.

The Answer:

The habit of the Companions (may Allah be pleased with them) was varied in this chapter. Amir al-Mu'minin Farooq al-Azam (may Allah be pleased with him) mostly performed Istinja with soil, and Hudhayfah (may Allah be pleased with him) with water. It is stated in Kashf al-Ghumma:

Kan Umar bin al-Khattab radhiyallahu ta'ala 'anhu yabul kathiran thumma yamsahu bit-turab aw al-ha'it thumma yaqul hakadha 'ullimna wa lam yablughna annahu kana yaghsiluhu bil-ma'i ba'du wa kana Hudhayfah la yajma'u bayn al-ma'i wal-hajar idha bala wa kadhalika 'Aisha radhiyallahu ta'ala 'anhuma fakana yaghsilani bil-ma'i faqat 1.

Hazrat Umar bin al-Khattab (may Allah be pleased with him) used to urinate frequently then wipe with soil or a wall then say, "This is what we were taught, and it has not reached us that he would wash it with water afterwards." And Hudhayfah would not combine water and stones when he urinated, and similarly Hazrat Aisha (may Allah be pleased with them both); they both used to wash with water only. (T)

And both forms are proven from the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him). Umm al-Mu'minin Siddiqah (may Allah be pleased with her) narrated that the Master of the World (may Allah's peace and blessings be upon him) used to perform Istinja with water after urination.

Ahmad wa al-Tirmidhi wa sahhahahu wa al-Nasa'i 'anha radhiyallahu ta'ala 'anha qalat murna azwajakunna an yaghsilu athara al-gha'iti wal-bawli fa'inna al-Nabiyya sallallahu 'alayhi wa sallama kana yaf'aluhu 2.

Imam Ahmad, Tirmidhi (who authenticated it), and Nasa'i (may Allah have mercy on them) relate from Umm al-Mu'minin Hazrat Aisha (may Allah be pleased with her) that she said: Tell your husbands that they should wash the trace of excrement and

urine with water, for the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) used to do so. Imam Tirmidhi has declared this Hadith to be authentic (Sahih). (T)

And she (Aisha Siddiqah may Allah be pleased with her) relates that once the Radiant Messenger (may Allah's peace and blessings be upon him) urinated, Amir al-Mu'minin Farooq al-Azam (may Allah be pleased with him) stood up holding water. He asked: "What is this?" He submitted:

1. Kashf al-Ghumma, Chapter on the Method of Istinja, printed by Dar al-Fikr, Beirut, Lebanon, 1/48
2. Jami' at-Tirmidhi, Chapter on Istinja with Water, printed by Kutub Khana Rashidiyah, Delhi, 1/5

फ़तावा रिज़विया जिल्द चौथी

...नहीं कर सकता जैसा कि छिपा नहीं है, और अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है। (जैसा कि छिपा नहीं है, अल्लाह तआला खूब जानता है। - त)

प्रश्न 219: 2 जुमादा अल-उखरा 1312 हिजरी: दीन के उलमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि हज़रत रसूले मक़बूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) और सहाबा ने पेशाब के बाद अक्सर मर्तबा इस्तिंजा पानी से किया या ढेलों से? बयान करें, सवाब पाएंगे।

उत्तर:

इस बारे में सहाबा किराम (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम) की आदत अलग-अलग थी। अमीरुल मोमिनीन फ़ारूक़े आज़म (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) अक्सर मिट्टी से इस्तिंजा फ़रमाते और हुज़ैफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) पानी से। 'कश्फ़ुल ग़ुम्मा' में है:

[अरबी उद्धरण]

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) बहुत ज़्यादा पेशाब करते फिर मिट्टी या दीवार से खुश्क करते, इसके बाद फ़रमाते "हमें इसी तरह मालूम है"। और हम तक यह बात नहीं पहुँची कि इसके बाद वह पानी के साथ धोते हों। हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) पेशाब करते तो पानी और पत्थर को जमा नहीं करते थे। हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) का भी यही तरीक़ा था, ये दोनों सिर्फ़ पानी से धोते थे। (त)

और हुज़ूर अक़दस (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) से दोनों सूरतें साबित हैं। उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) ने रिवायत की कि सैयदे आलम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) पेशाब के बाद पानी से इस्तिंजा फ़रमाते।

[अरबी उद्धरण]

इमाम अहमद, तिर्मिज़ी और नसाई (रहमहुमुल्लाह) उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) से रिवायत करते हैं कि आपने फ़रमाया कि अपने शौहरों से कहो कि वह क़ज़ाये हाजत और पेशाब का असर पानी से धो लें क्योंकि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) भी यूँही करते थे। इमाम तिर्मिज़ी ने इस हदीस को सहीह क़रार दिया है। (त)

और वही (आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) रिवायत फ़रमाती हैं कि एक बार हुज़ूर पुरनूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने पेशाब फ़रमाया, अमीरुल मोमिनीन फ़ारूक़े आज़म (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) पानी लेकर खड़े हुए। फ़रमाया: "क्या है?" अर्ज़ की:

1. कश्फ़ुल ग़ुम्मा, फ़स्ल फ़ी कैफ़ियतुल इस्तिंजा, मतबुआ दारुल फ़िक्र बेरूत, लेबनान 1/48
2. जामे' तिर्मिज़ी, बाबुल इस्तिंजा बिल-मा, मतबुआ कुतुब खाना रशीदिया दिल्ली 1/5

पृष्ठ 579/761

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم

نہیں کرسکتا کما لا یخفی واللہ سبحنہ وتعالی اعلم (جیسا کہ مخفی نہیں ، اللہ تعالٰی خوب جانتا ہے۔ ت)

مسئلہ ۲۱۹ : ۲ جمادی الاخری ۱۳۱۲ ھ : کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ حضرت رسول مقبول صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے اور اصحابوں نے پیشاب کے بعد اکثر مرتبہ استنجا پانی سے کیا یا ڈھیلوں سے ؟ بینوا توجروا ۔

الجواب :

صحابہ رضی اللہ تعالٰی عنہم کی عادت اس باب میں مختلف تھی امیر المومنین فاروق اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ اکثر مٹی سے استنجا فرماتے اور حذیفہ رضی اللہ عنہ پانی سے۔ کشف الغمہ میں ہے :

کان عمر بن الخطاب رضی اللہ تعالی عنہ یبول کثیرا ثم یمسح بالتراب او الحائط ثم یقول ھکذا علمنا ولم یبلغنا انہ کان یغسلہ بالماء بعد وکان حذیفۃ لا یجمع بین الماء والحجر اذا بال وکذلک عائشۃ رضی اللہ تعالی عنھما فکانا یغسلان بالماء فقط ۱ ۔

حضرت عمر بن خطاب رضی اللہ تعالٰی عنہ بہت زیادہ پیشاب کرتے پھر مٹی یا دیوار سے خشک کرتے اس کے بعد فرماتے "ہمیں اس طرح معلوم ہے "۔ اور ہم تک یہ بات نہیں پہنچی کہ اس کے بعد وہ پانی کے ساتھ دھوتے ہوں۔ حضرت حذیفہ رضی اللہ عنہ پیشاب کرتے تو پانی اور پتھر کو جمع نہیں کرتے تھے۔ حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا کا بھی یہی طریقہ تھا یہ دونوں صرف پانی سے دھوتے تھے۔ (ت)

اور حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے دونوں صورتیں ثابت ہیں ام المومنین صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا نے روایت کی کہ سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم پیشاب کے بعد پانی سے استنجا فرماتے۔

احمد والترمذی وصححہ والنسائی عنہا رضی اللہ تعالی عنہا قالت مرن ازواجکن ان یغسلوا اثر الغائط والبول فان النبی صلی اللہ علیہ وسلم کان یفعلہ ۲۔

امام احمد ، ترمذی اور نسائی رحمہم اللہ ام المومنین حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا سے روایت کرتے ہیں آپ نے فرمایا کہ اپنے خاوندوں کو کہو کہ وہ قضائے حاجت اور پیشاب کا اثر پانی سے دھولیں کیونکہ نبی اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم بھی یونہی کرتے تھے۔ امام ترمذی نے اس حدیث کو صحیح قرار دیا ہے۔ (ت)

اور وہی (عائشہ صدیقہ رضی اللہ عنہا) روایت فرماتی ہیں کہ ایک بار حضور پر نور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے پیشاب فرمایا امیر المومنین فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ پانی لیکر کھڑے ہوئے۔ فرمایا : کیا ہے ؟ عرض کی :

۱ کشف الغمہ فصل فی کیفیۃ الاستنجاء مطبوعہ دار الفکر بیروت، لبنان ۱/۴۸ ۲ جامع الترمذی باب الاستنجاء بالماء مطبوعہ کتب خانہ رشیدیہ دہلی ۱/۵

Fatawa Rizvia Volume 4

Water for Istinja (cleaning after urination). It is said: It has not been made obligatory for me to perform purification with water after every urination.

Arabic Text

Abu Dawud and Ibn Majah narrated with a good chain from the Mother of the Believers, Aisha (may Allah be pleased with her), that she said: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) urinated, then Umar stood behind him with a vessel of water. He asked: "What is this, O Umar?" He replied: "Water for you to perform ablution (wudhu) with." He said: "I have not been commanded to perform ablution every time I urinate; if I were to do so, it would become a Sunnah."

Urdu Translation

Imam Abu Dawud and Ibn Majah (may Allah have mercy on them) narrated with a sound chain from the Mother of the Believers, Aisha (may Allah be pleased with her), that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) urinated, then Hazrat Umar (may Allah be pleased with him) stood behind him holding a vessel of water. The Prophet (peace be upon him) asked, "O Umar! what is this?" He submitted, "This is water for you to perform wudhu with." He (peace be upon him) said, "I have not been commanded to perform wudhu every time I urinate. If I were to do so, it would become a Sunnah (established practice)." (T)

It is in 'Hilya': | Arabic Text | Urdu Translation | | :--- | :--- | | What is meant by wudhu here is cleaning with water (istinja), as mentioned by Al-Nawawi. | Here, by wudhu, istinja (cleaning) is meant, as Imam Nawawi (may Allah have mercy on him) has mentioned. (T) |

And the ruling is that performing istinja with both clods of earth and water is permissible. Whichever is used will be sufficient, and it is superior to combine both. In 'Al-Hindiyyah', quoted from 'Al-Tabyin': "It is better to combine both." (In Fatawa Alamgiri, it is quoted from Al-Tabyin that combining both is better. T). And Allah Almighty knows best, and the knowledge of the Exalted and Glorious One is most perfect and firm. (Allah Almighty knows best and the knowledge of that Great and Supreme Being is complete and absolute. T).

(T) Issue 220: From Gilgit, sent by Sardar Amir Khan, servant of Captain Stovold, 21 Dhu al-Hijjah 1312 AH. What do the scholars of religion say regarding this issue: If in some place old cloth, or a clod of clay, or sand is not available, then how is it to dry (clean) after istinja with a stone? And if everything is available a short distance away

but one is negligent and dries with a stone, then how is it? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: In drying for istinja, every valueless, useless, pure thing that absorbs moisture and cleans the area, whether it be a clod of earth or...

---

1. Sunan Abu Dawud Sharif, Book of Purification, Chapter on Istibra, published by Aftab-e-Alam Press, Lahore, 1/7.
2. Hilya (The mentioned book could not be found).
3. Fatawa Hindiyyah, Third Section on Istinja, published by Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/48.

फ़तावा रिज़विया, खंड 4

इस्तिन्जा के लिए पानी। फ़रमाया: मुझ पर यह अनिवार्य नहीं किया गया है कि मैं हर बार पेशाब करने के बाद पानी से शुद्धि करूँ।

अरबी पाठ

अबू दाऊद और इब्न माजाह ने एक अच्छी श्रृंखला के साथ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने पेशाब किया, फिर उमर उनके पीछे पानी का एक पात्र लेकर खड़े हो गए। उन्होंने पूछा: "ऐ उमर, यह क्या है?" उन्होंने उत्तर दिया: "यह पानी है ताकि आप इससे वज़ू करें।" आपने फ़रमाया: "मुझे इस बात का हुक्म नहीं दिया गया है कि जब भी पेशाब करूँ तो वज़ू करूँअगर ऐसा करूँ तो यह सुन्नत बन जाएगा।"

उर्दू अनुवाद

इमाम अबू दाऊद और इब्न माजाह (रहिमाहुमल्लाह) ने सनद-ए-हसन के साथ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से रिवायत किया कि रसूल-ए-अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने पेशाब फ़रमाया तो हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) आपके पीछे पानी का लोटा लेकर खड़े हो गए। हुज़ूर (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया: ऐ उमर! यह क्या है? उन्होंने अर्ज़ किया: यह पानी है आप इससे वज़ू फ़रमाएँ। आपने फ़रमाया: मुझे इस बात का हुक्म नहीं दिया गया है कि जब भी पेशाब करूँ तो वज़ू करूँअगर ऐसा करूँ तो सुन्नत बन जाएगा। (त)

'हिलिया' में है: | अरबी पाठ | उर्दू अनुवाद | | :--- | :--- | | यहाँ वज़ू से मुराद पानी से इस्तिन्जा करना है जैसा कि नववी ने ज़िक्र किया है। | यहाँ वज़ू से इस्तिन्जा करना मुराद है जैसा कि इमाम नववी (रहिमाहुल्लाह) ने ज़िक्र किया है। (त) |

और मसला (नियम) यह है कि ढेले और पानी दोनों से इस्तिन्जा जायज़ है। जिससे भी करे काफ़ी होगा और बेहतर यह है कि दोनों को मिलाए। 'अल-हिंदिया' में 'अत-तबीन' से उद्धृत है: "दोनों को मिलाना बेहतर है।" (फ़तावा आलमगीरी में 'अत-तबीन' से उद्धृत है कि दोनों को मिलाना अफ़ज़ल (बेहतर) है। त)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है, और उस महान और श्रेष्ठ सत्ता का ज्ञान पूर्ण और दृढ़ है। (अल्लाह तआला बेहतर जानता है और उस बुज़ुर्ग व बरतर ज़ात का इल्म मुकम्मल व मुहकम है। त)।

(त) मसला २२०: गिलगित से, सरदार अमीर ख़ान, कप्तान स्टोवोल्ट के सेवक द्वारा भेजा गया, २१ ज़िल-हिज्जा १३१२ हिजरी। दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं: अगर किसी जगह पुराना कपड़ा या मिट्टी का ढेला या रेत न हो, तो वहाँ पत्थर से इस्तिन्जा सुखाना कैसा है? और अगर थोड़ी दूर पर हर चीज़ मौजूद है और किसी ने कोताही (लापरवाही) की और पत्थर से सुखाया तो कैसा है? बयान करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: इस्तिन्जा सुखाने में हर बेक़ीमत, बेकार, पाक चीज़ जो नमी को सोख ले और जगह को साफ़ कर दे, चाहे वह ढेला हो या...

---

1. सुनन अबू दाऊद शरीफ़, किताबत-तहारत, बाब फ़िल-इस्तिबरा, मुद्रित आफ़ताबे आलम प्रेस लाहौर १/७।
2. हिलिया (उल्लिखित पुस्तक उपलब्ध नहीं हो सकी)।
3. फ़तावा हिंदिया, तीसरा खंड इस्तिन्जा पर, मुद्रित नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर १/४८।

فتاوی رضویہ جلد چہارم

استنجے کے لئے پانی۔ فرمایا: مجھ پر واجب نہیں کیا گیا کہ ہر پیشاب کے بعد پانی سے طہارت کروں۔

| ابوداؤد وابن ماجۃ بسند حسن عن ام المؤمنین عائشۃ رضی اللہ تعالٰی عنہا قالت بال رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فقام عمر خلفہ بکوز من ماء فقال ماھذا یا عمر فقال ماء تتوضؤ بہ قال ماامرت کلما بلت ان اتوضأ ولو فعلت لکانت سنۃ 1- | امام ابوداؤد اور ابن ماجہ رحمہما اللہ نے سندِ حسن کے ساتھ ام المؤمنین حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا سے روایت کیا کہ رسولِ اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے پیشاب فرمایا تو حضرت عمر رضی اللہ عنہ آپ کے پیچھے پانی کا لوٹا لے کر کھڑے ہوگئے، حضور علیہ السلام نے فرمایا: اے عمر! یہ کیا ہے؟ انہوں نے عرض کیا: یہ پانی ہے آپ اس سے وضو فرمائیں۔ آپ نے فرمایا: مجھے اس بات کا حکم نہیں دیا گیا کہ جب بھی پیشاب کروں تو وضو کروں، اگر ایسا کروں تو سنّت بن جائے گا۔ (ت) |

حلیہ میں ہے: | المراد بالوضوء ھنا الاستنجاء بالماء کماذکرہ النووي 2- | یہاں وضو سے استنجا کرنا مراد ہے جیسا کہ امام نووی رحمہ اللہ نے ذکر کیا ہے (ت) |

اور مسئلہ یہ ہے کہ ڈھیلے اور پانی دونوں سے استنجا جائز ہے جس سے کرے کافی ہوگا اور افضل یہ ہے کہ دونوں کو جمع کرے فی الھندیہ عن التبیین الافضل ان یجمع بینھما 3 (فتاوی عالمگیری میں التبیین سے منقول ہے کہ دونوں کو جمع کرنا افضل ہے۔ت) واللہ تعالٰی اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم واحکم (اللہ تعالٰی بہتر جانتا ہے اور اس بزرگ و برتر ذات کا علم مکمل و محکم ہے۔ ت)

(ت) مسئلہ ۲۲۰: از گلگت مرسلہ سردار امیر خاں ملازم کپتان اسٹووٹ ۲۱ ذی الحجہ ۱۳۱۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں اگر کسی جگہ پُرانا کپڑا یا مٹی کا ڈھیلا یا ریت نہ ہو تو وہاں پتھر سے استنجا سکھانا کیسا ہے اور اگر تھوڑی دُور پر ہر شے موجود ہے اور یہ کوتاہی کر گیا اور پتھر سے سکھایا تو کیسا ہے بینوا توجروا۔

الجواب: استنجا خشک کرنے میں ہر بے قیمت بیکار پاک چیز کہ رطوبت کو جذب کر کے موضع کو صاف کردے ڈھیلا ہو یا

---

1 سنن ابوداؤد شریف کتاب الطہارۃ، باب فی الاستبراء مطبوعہ آفتاب عالم پریس لاہور ۱/۷ 2 حلیہ (مذکورہ کتاب دستیاب نہ ہوسکی) 3 فتاوی ہندیہ الفصل الثالث فی الاستنجاء مطبوعہ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۴۸

Fatawa Rizvia, Volume Four

Whether it is stone, soil, an old piece of cloth, ground, or a wall, it is all the same (for cleaning after waste). However, it should not be bone, coal, baked brick, pottery shard, or lime. It is stated in Durr-e-Mukhtar:

(Arabic) (Istinja is a confirmed Sunnah with something like a stone) from a substance that is pure, capable of removing impurity, and of no monetary value, like a cleansing clod of earth. And it is disliked with bone, dung, baked brick, pottery shard, glass, and coal, as well as the property of others and anything that is beneficial (1).

(Urdu Translation) Performing Istinja with something like a stone is a confirmed Sunnah (Sunnah Mu'akkadah). This means a substance that is pure, removes the impurity, and is of no value, like a cleansing clod. Performing Istinja with bone, dung, baked bricks, pottery shards, gypsum/lime, and charcoal is Makruh (disliked). Furthermore, using someone else's property or a beneficial item is also Makruh. (T)

It is in Nur al-Idah: (Arabic) Istinja with gypsum is disliked (2). Summarized. (Urdu Translation) Performing Istinja with lime/gypsum is Makruh. Summarized (T).

It is in Radd al-Muhtar: (Arabic) It is stated in Bada'i' that the Sunnah is to perform Istinja with pure things like stones, clods, soil, and old rags. Similarly, a wall, provided it is not someone else's wall, such as an endowment (waqf) property etc. A tenant may perform Istinja using a wall even if the wall is wet (3). Summarized. And Allah Almighty knows best. (Urdu Translation) It is mentioned in Bada'i' that it is Sunnah to perform Istinja with pure things, for example, stones, clods, soil, and pieces of old cloth. A wall is also similar, but it should not be someone else's wall, such as a waqf property etc. A tenant can perform Istinja with the wall even if it is wet. Summarized (T).

Problem 221: 27th Safar, from Khandwa, Nimar District, sent by Maulvi Allah Yar Khan Sahib. From the residence of Munshi Habibullah Tehsildar, with the utmost respect and kneeling, this request is submitted on behalf of those seeking knowledge before the presence of the one overflowing with grace. There is a need regarding a ruling from the book 'Munyat al-Musalli' in this area. Therefore, to the service of the one of high rank and grace, the reviver of the rituals of Sharia, the eradicator of innovations (Bid'ah), the manifester of the virtues of the radiant nation, the source of blessings of the illustrious Sharia... (Right Column) ...kneeling with excellent etiquette, a petition from those who benefit from the grace and blessings of his presence is presented

concerning a problem in 'Munyat al-Musalli' that exists in this region. To the one of high degree of grace, high rank, of high Sharia, the one who revives the traditions of Sharia, who removes the necessities of bid'ah...

(Footnotes) 1. Durr-e-Mukhtar, Chapter on Istinja, printed at Mujtabai, Delhi 1/56 2. Nur al-Idah, Chapter on Istinja, printed at Alimi Kutub Khana, Lahore p. 6 3. Radd al-Muhtar, Chapter on Istinja, printed at Mujtabai, Delhi 1/224

फ़तावा रज़विया, जिल्द चार

पत्थर, मिट्टी हो या पुराना कपड़ा, ज़मीन हो या दीवार सब बराबर है। हाँ, हड्डी या कोयला या पकी हुई ईंट या ठीकरी या चूना न हो, दुर-ए-मुख़्तार में है:

(अरबी) (पत्थर जैसी चीज़ से इस्तिन्जा सुन्नत-ए-मुअक्कदा है) जो कि एक पाक चीज़ हो, नजासत (गंदगी) को दूर करने वाली हो और कीमती न हो जैसे पाक करने वाला ढेला। हड्डी, गोबर, पकी ईंट, ठीकरी, शीशा और कोयले से इस्तिन्जा करना मकरूह (नापसंद) है, साथ ही दूसरे की मिल्कियत और हर फायदेमंद चीज़ से भी (1)।

(उर्दू अनुवाद) पत्थर जैसी चीज़ के साथ इस्तिन्जा सुन्नत-ए-मुअक्कदा है यानी वह चीज़ जो पाक हो, नजासत को दूर करने वाली हो और कीमती न हो जैसा कि साफ़ करने वाला ढेला। हड्डी, गोबर, पकी ईंट, ठीकरी, जिप्सम और कोयले के साथ इस्तिन्जा मकरूह है, साथ ही दूसरे की मिल्कियत और लाभ देने वाली चीज़ के साथ भी मकरूह है (त)।

नूरुल ईज़ाह में है: (अरबी) जिप्सम (चूने) के साथ इस्तिन्जा मकरूह है (2)। सारांश। (उर्दू अनुवाद) चूने के साथ इस्तिन्जा मकरूह है। सारांश (त)।

रद्दुल मुह्तार में है: (अरबी) बदाइ' में कहा गया है कि सुन्नत पाक चीज़ों जैसे पत्थरों, ढेलों, मिट्टी और पुराने कपड़ों से इस्तिन्जा करना है। दीवार का भी यही हुक्म है लेकिन वह किसी और की दीवार न हो जैसे वक्फ़ की हुई दीवार आदि। किराएदार दीवार से इस्तिन्जा कर सकता है भले ही दीवार गीली हो (3)। सारांश। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (उर्दू अनुवाद) बदाइ' में फ़रमाया कि पाक चीज़ मसलन पत्थरों, ढेलों, मिट्टी, पुराने कपड़े के टुकड़ों से इस्तिन्जा करना सुन्नत है। दीवार भी इसी तरह है लेकिन किसी दूसरे की दीवार न हो मसलन वक्फ़ शुदा वग़ैरा। किराएदार दीवार से इस्तिन्जा कर सकता है अगरचे दीवार तर हो। सारांश (त)।

मस्अला 221: 27 सफ़र, खंडवा, ज़िला निमाड़ मुल्क-ए-मुतवस्सति से, मौलवी अल्लाह यार ख़ाँ साहब द्वारा प्रेषित। मुंशी हबीबउल्लाह तहसीलदार के निवास से, बेहतरीन अदब के साथ और घुटने टेककर (अदब से बैठकर), ज्ञान प्राप्त करने वालों की ओर से हुज़ूर की खिदमत में अर्ज़ की जाती है। इस क्षेत्र में किताब 'मुनियतुल मुसल्ली' के एक मस्अले के बारे में ज़रूरत पेश आई है। इसलिए, आला मकाम और फ़ैज़ के मालिक, शरीयत की रस्मों को जीवित करने वाले, बिदअत (नवाचार) को मिटाने वाले, रौशन कौम की खूबियों को ज़ाहिर करने वाले, शरीयत-ए-ग़र्रा की बरकतों के सोते...

(दायां कॉलम) ...बेहतरीन अदब के साथ घुटने मोड़कर बैठते हुए, उन हज़रात की एक अर्ज़ है जो हुज़ूर के फ़ैज़ और बरकतों से लाभ उठा रहे हैं, जो इस क्षेत्र में 'मुनियतुल मुसल्ली' के एक मस्अले के सिलसिले में है। आला मर्तबा, फ़ैज़ के मालिक, आला शरीयत वाले, शरीयत के रिवाजों को ज़िंदा करने वाले, बिदअत के तत्वों को...

(पाद-टिप्पणियाँ) 1. दुर-ए-मुख़्तार, फ़स्ल अल-इस्तिन्जा, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, 1/56 2. नूरुल ईज़ाह, फ़स्ल फ़िल इस्तिन्जा, अलीमी कुतुब ख़ाना, लाहौर, पृष्ठ 6 3. रद्दुल मुह्तार, फ़स्ल अल-इस्तिन्जा, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, 1/224

فتاوی رضویہ جلد چہارم

پتھر مٹی ہو یا پرانا کپڑا زمین ہو یاد یوار سب برابر ہے ہاں ہڈی یا کوئلہ یا پکی اینٹ یا ٹھیکری یا چونا نہ ہو، درمختار میں ہے:

(الاستنجاء سنة مؤكدة بنحو حجر) مما هو عين طاهرة قالعة لاقيمة لها كمدر (منق وكره بعظم وورث وأجر وخزف وزجاج وفحم) وحق غير وكل ما ينتفع به 1۔ پتھر جیسی چیز کے ساتھ استنجا سنت مؤکدہ ہے یعنی وہ چیز جو پاک ہو نجاست کو دُور کرنے والی ہو اور قیمتی نہ ہو جیسا کہ صاف کرنے والا ڈھیلا ہڈی ، گوبر ، پکی اینٹ ، ٹھیکری ، گچ اور کوئلے کے ساتھ استنجاء مکروہ ہے نیز غیر کی ملکیت اور نفع بخش چیز کے ساتھ بھی مکروہ ہے (ت)

نور الایضاح میں ہے: یکرہ الاستنجاء بجبص 2اہ ملخصین۔ | چونے کے ساتھ استنجاء مکروہ ہے اھ تلخیص (ت)

رد المحتار میں ہے: قال في البدائع السنة هو الاستنجاء بالاشياء الطاهرة من الاحجار والامداد والتراب والخرق البوالی اہ ومثله الجدار الاجدار غيره كالوقف ونحوه وللمستأجر الاستنجاء بالحائط ولولد ار مسبلة 3اہ ملخصا واللہ تعالٰی اعلم بدائع میں فرمایا پاک چیز مثلاً پتھروں، ڈھیلوں، مٹی، پرانے کپڑے کے ٹکڑوں سے استنجا کرنا سنت ہے اھ دیوار بھی اسی طرح ہے لیکن کسی دوسرے کی دیوار نہ ہو مثلاً وقف شدہ وغیرہ۔ کرایہ دار دیوار سے استنجا کر سکتا ہے اگرچہ دیوار تر ہو۔ اھ تلخیص (ت)

مسئلہ ۲۲۱: ۲۷ صفر از کھنڈوا ضلع نماز ملک متوسط مرسلہ مولوی اللہ یار خاں صاحب از مکان منشی حبیب اللہ تحصیلدار باحسن آداب زانوائے ادب تہ کردہ بعرض مستفیضان باریا بان حضور

فیض معمور میر ساند دیر نوالا ضرورت در مسئلہ کتاب منیة المصلی واقع ست لہذا بخدمت فیض درجت عالی منقبت محی مراسم شریعت ماحی لوازم بدعت مظہر حسنات ملت بیضا مصدر برکات شریعت غرا عمدہ آداب کے ساتھ زانوائے ادب تہ کرتے ہوئے آنحضور کے فیوض و برکات سے مستفیض ہونے والے حضرات کی ایک عرض جو اس علاقے میں منیة المصلی کے ایک مسئلہ کے سلسلے میں ہے فیضدرجت ، عالی مرتبت ، عالی شریعت ، شریعت کے رسوم کو زندہ کرنے والے، بدعت کے لوازم کو

1 درمختار، فصل الاستنجاء، مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۵۶ 2 نور الایضاح فصل فی الاستنجاء مطبوعہ علیمی کتب خانہ لاہور ص ۶ 3 رد المحتار فصل الاستنجاء مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۲۲۴

Fatawa Razawiyya Volume 4

Janab Maulvi Ahmad Raza Khan Sahib (may Allah perpetuate his blessings, charisma, and favors) has been sent an inquiry along with the text: "It is disliked for someone wearing a ring containing something from the Quran to enter the 'Makhraj' because it entails a lack of respect." Please explain the meaning of "entering the Makhraj" in Urdu with clarification, stating the author's intent and the literal and technical meanings of the word 'Makhraj' here. Explain so that you may be rewarded. (T)

To the one who reveals the virtues of the enlightened nation, the source of the blessings of the shining Shariah, Hazrat Maulana Muhammad Ahmad Raza Khan, may Allah Almighty keep his benefits, shadow of affection, and blessings forever. An inquiry is presented with the text: "For a person who has such a ring on his hand in which something from the Holy Quran is written, it is disliked for him to enter the 'Makhraj' because in this, respect is abandoned." In response, write the meaning of entering the Makhraj in the Urdu language with clarification and tell what the author means and what is the literal and technical meaning of the word Makhraj at this place, explain so that you may get the reward. (T)

Answer: Respected Maulana, may Allah Almighty honor you. Peace be upon you and the mercy of Allah and His blessings. 'Makhraj' means a place of exit. Here, it refers to the toilet (Bait-ul-Khala), as it is the place of exit for waste. Urine and feces are called 'Kharij' (that which comes out), as mentioned in Radd al-Muhtar regarding the etiquettes of Istinja: "And bury the 'Kharij' (urine and feces) [in the ground]." The reason given for shaving the hair of the anus is so that the 'Kharij' does not stick to them. It is possible that calling the toilet 'Makhraj' is like calling a perilous desert 'Mafaza' (a place of success/salvation), because entering the toilet is purely out of necessity, and the one entering has the intention of leaving immediately upon entry. So it is as if it is not a place of entry (Madkhal) but a place of exit (Makhraj). Understand this. In short, the meaning of 'Dukhool-ul-Makhraj' is going into the toilet. The summary of the matter is that whoever has a ring on their finger that has something from the Quran or any of the Exalted Names...

1. Munyat al-Musalli, before the section on Tayammum, published by Maktaba Qadriya, Jamia Nizamia, Lahore, p. 45.
2. Radd al-Muhtar, Etiquettes of Istinja, published by Mujtabai, Delhi, 1/230.

फतावा रज़विया जिल्द 4

जनाब मौलवी अहमद रज़ा खान साहब (अल्लाह उनके फ़ैज़, करिश्मे और बरकतों को हमेशा कायम रखे) की सेवा में इस इबारत के साथ एक प्रश्न भेजा गया है: "जिस व्यक्ति की उंगली में ऐसी अंगूठी हो जिसमें क़ुरआन का कुछ अंश हो, उसका 'मख़रज' में प्रवेश करना मकरूह है क्योंकि इसमें अदब की कमी है।" कृपया उर्दू भाषा में स्पष्टीकरण के साथ 'मख़रज में प्रवेश' का अर्थ लिखें और बताएं कि लेखक का क्या तात्पर्य है, और यहाँ 'मख़रज' शब्द का शाब्दिक और तकनीकी अर्थ क्या है। बयान करें ताकि आप सवाब के पात्र बनें। (त)

रोशन कौम की अच्छाइयों को प्रकट करने वाले, चमकती हुई शरीयत की बरकतों के स्रोत, हज़रत मौलाना मुहम्मद अहमद रज़ा खान, अल्लाह तआला उनके फ़ैज़, साया-ए-आतिफ़त और बरकतों को हमेशा बाकी रखे, की सेवा में इबारत के साथ इस्तिफ़्ता (प्रश्न) पेश करते हैं। इबारत यह है: "जिस आदमी के हाथ में ऐसी अंगूठी हो जिसमें क़ुरआन पाक से कुछ लिखा हो, उसका मख़रज में दाखिल होना मकरूह है क्योंकि इसमें ताज़ीम (सम्मान) को छोड़ना है।" उत्तर में स्पष्टता के साथ उर्दू भाषा में 'दखूल-ए-मख़रज' का अर्थ लिखें और बताएं कि लेखक का क्या इरादा है और इस स्थान पर मख़रज शब्द का शाब्दिक और तकनीकी अर्थ क्या है, बयान फरमाएं ताकि अज्र (पुण्य) पाएं। (त)

उत्तर: मौलाना अल-मुकर्रम, अल्लाह तआला आपको इज़्ज़त बख्शे, अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह। 'मख़रज' निकलने की जगह को कहते हैं। यहाँ 'बैत-उल-ख़ला' (शौचालय) मुराद है, जो कि गंदगी निकलने का स्थान है। पेशाब और पाखाने को 'ख़ारिज' (निकलने वाला) कहा जाता है, जैसा कि 'रद्दुल मुहतार' के आदाब-ए-इस्तिंजा में फ़रमाया गया: "और ख़ारिज (पेशाब और पाखाना) को (ज़मीन में) दबा दे।" और मलद्वार के बाल मूंडने का कारण यह बताया गया कि उनके साथ 'ख़ारिज' न लग जाए। यह संभव है कि शौचालय को मख़रज कहना उसी तरह हो जैसे किसी भयानक मरुस्थल को 'मफ़ाज़ा' यानी सफलता की जगह कहा जाता है, क्योंकि शौचालय में प्रवेश केवल आवश्यकता के कारण होता है, और प्रवेश करने वाला प्रवेश के समय तुरंत निकलने के इरादे पर होता है, तो मानो वह 'मदख़ल' (प्रवेश स्थान) नहीं बल्कि मख़रज है। इसे समझ लें। सारांश यह है

कि 'दखूल-उल-मख़रज' का अर्थ शौचालय में जाना है। मसले का सारांश यह है कि जिसके पास ऐसी अंगूठी हो जिस पर क़ुरआन की कोई चीज़ या सम्मानित नाम लिखे हों...

1. मुनयतुल मुसल्ली, तैम्मुम के अध्याय से पहले, मकतबा कादरिया, जामिया निज़ामिया, लाहौर, पृष्ठ 45।
2. रद्दुल मुहतार, आदाब-ए-इस्तिंजा, मुजतबाई प्रकाशन, दिल्ली, 1/230।

पृष्ठ 582/761

فتاوی رضویه جلد چہارم

جناب مولوی احمد رضا خان صاحب ادام اللہ فیضہم و طلسم و برکاتہم استفتامع عبارت یکرہ دخول المخرج لمن فی اصبعہ خاتم فیہ شیئ من القرآن لمافیہ من ترک التعظیم ارسال می نمایند معنی دخول المخرج بتصریح ترجمہ اردو ارشاد فرمایند کہ چہ مراد مؤلف ست و معنی لغوی و اصطلاحی صیغہ مخرج درینجا چیست۔ بینواتوجروا۔

مٹانے والے روشن ملت کی اچھائیوں کو ظاہر کرنے والے، چمکتی ہوئی شریعت کی برکات کے منبع حضرت مولانا محمد احمد رضا خان اللہ تعالیٰ ان کے فیوض، سایہ عاطفت اور برکات کو ہمیشہ باقی رکھے، کے حضور عبارت کے ساتھ استفتاء پیش کرتے ہیں، عبارت یہ ہے "جس آدمی کے ہاتھ میں ایسی انگوٹھی ہو جس میں قرآن پاک سے کچھ لکھا ہو اس کا مخرج میں داخل ہونا مکروہ ہے کیونکہ اس میں تعظیم کو چھوڑنا ہے"۔ جواباً وضاحت کے ساتھ اردو زبان میں دخول مخرج کا معنی لکھیں اور بتائیں کہ مؤلف کی کیا مراد ہے اور اس جگہ لفظ مخرج کا لغوی اور اصطلاحی معنی کیا ہے، بیان فرمائیں اجر پائیں۔ (ت)

الجواب: مولانا المکرم اکرمک اللہ تعالی و کرّم السلام علیکم و رحمۃ اللہ و برکاتہ، مخرج جائے خروج و اینجا مراد بیت الخلاء ست کہ محل خروج خارج ست خارج بول و براز را نامند چنانچہ در ردالمختار اور آداب استنجا فرمود و یدفن الخارج و حلق موئے دُبر را تعلیل نمود و کیلا یتعلق بہ شیئ من الخارج و تواند کہ خلارا مخرج گفتن ازاں عالم باشد کہ بیابان ملکہ را مفازہ یعنی جائے فوز و نجات خوانند زیرا کہ دخول خلا محض بضرورت ست و داخل در عین دخول بر قصد تعجیل خروج پس گویا اومد خل نیست مخرج ست فافہم بالجملہ معنی دخول المخرج پاخانہ میں جانا و حاصل مسئلہ آنکہ ہر کہ درست او خاتمی ست کہ بروجیزے از قرآن یا از اسمائے معظمہ

مولانا المکرم، اللہ تعالیٰ آپ کو عزت بخشے، السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ، "مخرج" نکلنے کی جگہ کو کہتے ہیں یہاں بیت الخلاء مراد ہے کہ نجاست خارج کرنے کی جگہ ہے بول و براز کو خارج کہتے ہیں جیسا کہ ردالمختار کے آدابِ استنجاء میں فرمایا: "اور خارج (پیشاب و پاخانہ) کو (زمین میں) دبادے"۔ اور دُبر کے بال مونڈنے کی علّت یہ بیان کی کہ ان کے ساتھ خارج (پیشاب و پاخانہ) نہ لگ جائے اور ممکن ہے کہ خلا کو مخرج کہنا یوں ہو جیسے بیابانِ مہلکہ کو مفازہ یعنی جائے فوز و فلاح کہتے ہیں کیونکہ دخولِ خلا محض ضرورت کے پیش نظر ہوتا ہے۔ اور داخل ہونے والا دخول کے وقت فوراً نکلنے کے ارادے پر ہوتا ہے تو گویا وہ مدخل

1 منیتہ المصلی قبیل فصل فی التمیم مطبوعہ مکتبہ قادریہ جامعہ نظامیہ لاہور ص ۴۵ 2 ردالمحتار آداب استنجاء مطبوعہ مجتبائی دہلی، ۱/ ۲۳۰

Fatawa Razawiyya Volume Four

If the Name of Allah, the Great Quran, the names of Prophets, or Angels (peace and blessings be upon them) are inscribed [on something like a ring], one is commanded that when entering a place for relieving oneself, they should remove the ring from their finger and leave it outside. This is most excellent. If there is a fear of it being lost, one may put it in their pocket or wrap it in something else, as this is also permissible, although avoiding it without necessity is better. If none of these measures are taken and one enters the washroom in that state, it is disliked (Makruh). Allama Ibrahim al-Halabi (may Allah have mercy on him) states in 'Ghunyat al-Mustamli Sharih Munyat al-Musalli' under this very text: It is disliked to enter the place of exit, meaning the washroom, while on one's finger is a ring containing anything from the Quran or from the Names of Allah Almighty, because it involves a lack of reverence. It is said that it is not disliked if the stone of the ring is turned toward the palm of the hand. And if one has something in their pocket (such as a notebook etc.) which contains a portion of the Holy Quran or the Great Name of Allah Almighty, there is no harm; similarly, if it is enclosed in an envelope, there is no harm, but avoiding it is much better. In 'Maraqi al-Falah' it is stated: For a person who has something with them on which the blessed name of Allah Almighty or an ayah of the Holy Quran is written, it is disliked for him to enter the washroom. Allama Tahtawi said...

1. Ghunyat al-Mustamli, Sunan al-Ghusl, published by Suhail Academy Lahore, p. 60.
2. Maraqi al-Falah, Chapter on Istinja, published by Nur Muhammad Karkhana Tijarat Kutub Karachi, p. 30.

यदि अल्लाह का नाम, महान कुरान, नबियों के नाम, या फरिश्तों (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के नाम [किसी वस्तु जैसे अंगूठी पर] लिखे हों, तो उसे आदेश है कि जब वह शौचालय जाए, तो अंगूठी उंगली से निकालकर बाहर रख दे। यही सबसे उत्तम है। यदि इसके खो जाने का भय हो, तो उसे जेब में रख ले या किसी अन्य वस्तु में लपेट ले, क्योंकि यह भी जायज़ है, यद्यपि बिना आवश्यकता के इससे बचना ही बेहतर है। यदि इनमें से कोई भी उपाय न किया जाए और व्यक्ति उसी अवस्था में शौचालय चला जाए, तो यह मकरूह (नापसंद) है। अल्लामा इब्राहिम अल-हलबी (अल्लाह उन पर दया करे) 'ग़ुनियत अल-मुस्तमली शरह मुनियत अल-मुसल्ली' में इसी पाठ के अंतर्गत फरमाते हैं: निकास के स्थान अर्थात शौचालय में प्रवेश करना मकरूह है जब उंगली में ऐसी अंगूठी हो जिसमें कुरान का कुछ अंश या अल्लाह सर्वशक्तिमान के नाम हों, क्योंकि इसमें सम्मान की कमी निहित है। कहा गया है कि यदि अंगूठी का नग हथेली की ओर कर लिया जाए तो यह मकरूह नहीं है। और यदि किसी की जेब में कोई ऐसी वस्तु (जैसे कॉपी आदि) हो जिसमें पवित्र कुरान का कोई अंश या अल्लाह सर्वशक्तिमान का महान नाम हो, तो इसमें कोई हर्ज नहीं है; इसी प्रकार यदि वह किसी लिफाफे में बंद हो, तो भी कोई हर्ज नहीं है, परंतु बचना अधिक बेहतर है। 'मराक़ी अल-फ़लाह' में है: जिस व्यक्ति के पास ऐसी कोई चीज़ हो जिसमें अल्लाह सर्वशक्तिमान का मुबारक नाम या पवित्र कुरान की कोई आयत लिखी हो, उसके लिए शौचालय में प्रवेश करना मकरूह है। अल्लामा तहतावी ने कहा...

1. ग़ुनियत अल-मुस्तमली, सुनन अल-ग़ुस्ल, मुद्रित सुहैल अकादमी लाहौर, पृष्ठ 60।
2. मराक़ी अल-फ़लाह, इस्तिन्जा का अध्याय, मुद्रित नूर मुहम्मद कारखाना तिजारत कुतुब कराची, पृष्ठ 30।

فتاوی رضویه جلد چہارم

مثل نام الہی یا نام قرآن عظیم یا اسما انبیاء یا ملائکہ علیہم الصلوٰۃ والثنا نوشتہ است او مامور است کہ چوں بخلا رود خاتم از دست کشیدہ بیرون نہد افضل ہمیں ست واگر خوف ضیاع باشد درجیب اندازد یا بجیزے دگر بپوشد کہ اینہم رواست اگر چہ بے ضرورت احتراز و اولی ست اگر ازینہا بیچ نکرد و ہمچناں در خلا رفت مکروہ باشد علامہ ابراہیم حلبی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ در غنیۃ المستملی شرح منیۃ المصلی زیر ہمیں عبارت مذکور فرماید یکرہ دخول المخرج ای الخلاء وفی اصبعہ خاتم فیہ شیئ من القرآن او من اسمائہ تعالی لمافیہ من ترك التعظیم وقیل لایکرہ ان جعل فصہ الی باطن الکف و لو کان ما فیہ شیئ من القرآن او من اسمائہ تعالی فی جیبہ لابأس بہ وکذا لوکان ملفوفاً فی شیئ والتحرز اولیٰ ۱ در مراقی الفلاح ست یکرہ دخول الخلاء و معہ شیئ مکتوب فیہ اسم اللہ او قرآن ۲ علامہ طحطاوی در حاشیہ ش فرمود لما روی ابوداؤد والترمذی عن انس رضی اللہ تعالٰی عنہ قال کان رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم اذا دخل الخلاء نزع

نہیں مخرج ہے۔ اسے سمجھو بالجملہ دخول مخرج کا معنی پاخانے میں جانا ہے اور حاصل مسئلہ یہ ہے کہ جس کے ہاتھ میں ایسی انگوٹھی ہو جس پر قرآن پاک میں سے کچھ (کلمات) یا متبرک نام جیسے اللہ تعالیٰ کا اسم مبارک یا قرآن حکیم کا نام یا اسمائے انبیاء و ملائکہ علیہم الصلوٰۃ والثناء (لکھے) ہوں تو اسے حکم ہے کہ جب وہ بیت الخلاء میں جائے تو اپنے ہاتھ سے انگوٹھی نکال کر باہر رکھ لے بہتر یہی ہے اور اس کے ضائع ہونے کا خوف ہو تو جیب میں ڈال لے یا کسی دوسری چیز میں لپیٹ لے کہ یہ بھی جائز ہے اگر چہ بے ضرورت اس سے بچنا بہتر ہے اگر ان صورتوں میں کوئی بھی بجا نہ لائے اور یوں ہی بیت الخلاء میں چلا جائے تو ایسا کرنا مکروہ ہے علامہ ابراہیم حلبی رحمۃ اللہ علیہ نے غنیۃ المستملی شرح منیۃ المصلی میں اسی عبارت مذکور کے تحت

فرمایا مخرج یعنی بیت الخلاء میں داخل ہونا مکروہ ہے جب اس کی انگلی میں ایسی انگوٹھی ہو جس پر قرآن میں سے کچھ (کلمات) یا اللہ تعالیٰ کا کوئی اسم مبارک (لکھا ہوا) ہو کیونکہ اس میں ترک تعظیم ہے اور کہا گیا ہے کہ اگر اس کا نگینہ ہتھیلی کی طرف کرے تو مکروہ نہیں اور اگر اس کی جیب میں کوئی ایسی چیز (کاپی وغیرہ) ہو جس میں قرآن پاک کا کچھ حصہ اللہ تعالیٰ کا اسم گرامی ہو تو کوئی حرج نہیں اسی طرح اگر کسی لفافے میں بند ہو تو بھی حرج نہیں لیکن بچنا زیادہ بہتر ہے۔ مراقی الفلاح میں ہے جس آدمی کے پاس کوئی ایسی چیز ہو جس میں اللہ تعالیٰ کا نام مبارک یا قرآن پاک کی کوئی آیت لکھی ہو تو اس کے لئے بیت الخلاء میں داخل ہونا مکروہ ہے۔ علامہ طحطاوی نے

۱ غنیۃ المستملی سنن الغسل مطبوعہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۶۰ ۲ مراقی الفلاح فصل فی الاستنجاء مطبوعہ نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ص ۳۰

Fatawa Razawiya - Volume 4

[Arabic Text]: Regarding his ring, because its engraving was "Muhammad is the Messenger of Allah". I say, rather, it was narrated by the four (compilers of Hadith), Ibn Hibban and Al-Hakim, and some of its chains of narration are authentic. Then he said, meaning Al-Tahtawi: Al-Tayyibi said it contains evidence for the necessity of setting aside, for the one performing istinja (cleansing), the name of Allah Almighty, the name of His Messenger, and the Quran. Al-Abhari said: And likewise, all other Messengers. Ibn Hajar said: It is inferred from it that it is recommended for one intending to relieve themselves to set aside everything upon which is something venerated, such as the name of Allah Almighty, a Prophet, or an Angel. If one goes against this, it is disliked (makruh) due to the abandonment of veneration. This is in accordance with our school of law, as mentioned in the Commentary of Al-Mishkat.

[Urdu Translation/Explanation of the above]: It is stated in its marginal notes because Imam Abu Dawood and Tirmidhi (may Allah have mercy on them) narrated from Hazrat Anas (may Allah be pleased with him) that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) used to take off his ring when going to the restroom because "Muhammad is the Messenger of Allah" was engraved on it. I say, rather, the four compilers of Hadith (Imam Tirmidhi, Imam Abu Dawood, Imam Nasa'i, Imam Ibn Majah) along with Ibn Hibban and Al-Hakim narrated it, and some of its chains of narration are authentic. Then Imam Al-Tahtawi said: At-Tayyibi said that there is evidence in this for the obligation of the person cleaning themselves to set aside the name of Allah Almighty, the name of His Messenger, and the Quran. Al-Abhari said: Similarly, the names of all other messengers. Ibn Hajar Al-Asqalani says: From this, it is understood that it is recommended for one intending to relieve themselves to set aside everything that has something honorable on it, for example, the name of Allah Almighty, any prophet, or an angel. If one does otherwise, it will be disliked (makruh) due to the abandonment of veneration. This is in accordance with our school of thought as mentioned in Sharh al-Mishkat. In Durr-e-Mukhtar, it is stated that entering the restroom with an amulet wrapped in a cover is not disliked, but avoiding it is better, and Allah knows best. (T)

Problem 222: From Patna, sent by Abul Masakin Maulvi Ziauddin Sahib, 6 Dhu al-Hijjah 1320 AH. What do the scholars of religion and muftis of the firm Shariah say regarding this matter: that in most cities of India, such as Lucknow and Patna, many people after urinating do not use clods of earth (kulukh) for purification (istinja), but only suffice with water. Does their pajama or sarong become impure or not? And is

there any fault in the leadership (imamat) of such a person? Also, some people say that taking water causes drops to stop; is this just their imagination or a reality? Please explain, and may you be rewarded.

The Answer: Using both clods of earth and water is best. The Sunnah itself is fulfilled by either one; the most superior is both together, then water alone.

Footnotes: 1. Hashiya al-Tahtawi with Maraqi al-Falah, Section on Istinja, printed at Noor Muhammad Kar-Khana Tijarat Kutub Khana, Karachi, p. 30. 2. Hashiya al-Tahtawi with Maraqi al-Falah, Section on Istinja, printed at Noor Muhammad Kar-Khana Tijarat Kutub Khana, Karachi, p. 30. 3. Durr-e-Mukhtar, Ruling on touching the Mushaf and legal books, printed at Mujtabai, Delhi, 1/43. Page 584 of 761

फ़तावा रज़विया - जिल्द चौथी

[अरबी पाठ]: उनकी अँगूठी के बारे में, क्योंकि उसकी नक़्श (नक्काशी) "मुहम्मद रसूलुल्लाह" थी। मैं कहता हूँ, बल्कि इसे चारों (हदीस संकलनकर्ताओं), इब्न हिब्बान और अल-हाकिम ने रिवायत किया है और इसकी कुछ सनदें सही हैं। फिर उन्होंने कहा, यानी अल-तहतवी ने: अल-तैयबी ने कहा कि इसमें इस बात की दलील है कि इस्तिन्जा (शौच के बाद सफाई) करने वाले के लिए अल्लाह तआला का नाम, उनके रसूल का नाम और क़ुरआन को अलग रखना वाजिब है। अल-अभरी ने कहा: और इसी तरह अन्य सभी रसूलो के नाम। इब्न हजर ने कहा: इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि शौच करने का इरादा रखने वाले के लिए मुस्तहब (पसंदीदा) है कि वह हर उस चीज़ को अलग कर दे जिस पर अल्लाह तआला, किसी नबी या फरिश्ते का नाम जैसा कोई सम्मानीय शब्द हो। यदि कोई इसके विपरीत करता है, तो यह ताज़ीम (सम्मान) छोड़ने के कारण मकरूह होगा। यह हमारे मज़हब के अनुकूल है, जैसा कि शरह अल-मिशकात में है।

[उर्दू अनुवाद/व्याख्या]: इसके हाशिये में फरमाया क्योंकि इमाम अबू दाऊद और तिर्मिज़ी (रहमतुल्लाहि अलैहिमा) ने हज़रत अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बैतुल खला (शौचालय) जाते समय अपनी अंगूठी उतार लिया करते थे क्योंकि उसमें "मुहम्मद रसूलुल्लाह" उत्कीर्ण था। मैं कहता हूँ बल्कि इसे चारों मुहद्दिसीन (इमाम तिर्मिज़ी, इमाम अबू दाऊद, इमाम नसाई, इमाम इब्न माजा), इब्न हिब्बान और हाकिम ने रिवायत किया है और इसकी कुछ सनदें सही हैं। फिर इमाम तहतावी ने फ़रमाया: तैयबी ने कहा है कि इसमें इस बात की दलील है कि इस्तिंजा करने वाला अल्लाह तआला और रसूल अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पाक नाम और क़ुरआन पाक को अलग कर दे। अभरी ने कहा इसी तरह बाकी तमाम रसूलो के नाम अलग कर दे। इब्न हजर असकलानी फरमाते हैं इससे मालूम हुआ कि कज़ा-ए-हजत (शौच) का इरादा करने वाले के लिए मुस्तहब है कि हर वह चीज़ अलग कर दे जिसमें कोई काबिले-ताज़ीम बात हो मसलन अल्लाह तआला, किसी नबी या फरिश्ते का नाम हो। अगर इसके खिलाफ करेगा तो तर्कए-ताज़ीम (सम्मान न करने) की वजह से मकरूह होगा। यही बात हमारे मज़हब के मुवाफ़िक़ (अनुकूल) है जैसा कि शरह मिश्कात में है। दुर्रे मुख़्तार में है कि ग़िलाफ़ में लिपटे हुए तावीज़ के साथ बैतुल खला में दाखिल होना मकरूह नहीं लेकिन बचना अफ़ज़ल है, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला २२२: पटना से प्रेषित अबुल मसाकीन मौलवी ज़ियाउद्दीन साहब ६ ज़िल-हिज्जा १३२० हिजरी। धर्म के विद्वान और मुफ्ती इस मामले में क्या फरमाते हैं: कि हिंदुस्तान के अक्सर शहरों में जैसे लखनऊ और पटना में, अक्सर लोग मूत्र त्याग के बाद ढेले (कुलुख) से इस्तिंजा नहीं करते बल्कि केवल पानी पर निर्भर रहते हैं। क्या उनका पाजामा या तहबंद नापाक हो जाता है या नहीं? और ऐसे व्यक्ति की इमामत (प्रार्थना का नेतृत्व) में कोई खराबी आती है या नहीं? साथ ही, कुछ लोगों का कहना है कि पानी लेने से बूँदें रुक जाती हैं; क्या यह केवल उनका विचार है या वास्तविकता है? कृपया स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

अल-जवाब: ढेले और पानी दोनों का उपयोग करना सबसे उत्तम (अफ़ज़ल) है। सुन्नत हर एक से अदा हो जाती है; सबसे श्रेष्ठ दोनों का मेल है, फिर केवल पानी।

पाद-टिप्पणियाँ: 1. हाशिया अल-तहतवी मा मराक़ी अल-फलाह, फसल फी अल-इस्तिंजा, नूर मुहम्मद कारख़ाना तिज़ारत कुतुब खाना, कराची, पृ. ३०। 2. हाशिया अल-तहतवी मा मराक़ी अल-फलाह, फसल फी अल-इस्तिंजा, नूर मुहम्मद कारख़ाना तिज़ारत कुतुब खाना, कराची, पृ. ३०। 3. दुर्रे मुख़्तार, हुक्म मस अल-मुसहफ व अल-कुतुब अल-शरिया, मुजतबाई दिल्ली १/४३। पृष्ठ ५८४/७६१

خَاتَمِهِ أَي لِأَنَّ نَقْشَهُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ اھ قلت بل رواہ الاربعۃ وابن حبان والحاکم وبعض اسانیدہ صحیح ثم قال اعني الطحطاوی قال الطیبي فیہ دلیل علی وجوب تنحیۃ المستنجی اسم اللہ تعالی واسم رسولہ والقرآن اھ وقال الابھري وکذا سائر الرسل وقال ابن حجر استفید منہ انہ یندب لمرید التبرز ان ینجی کل ماعلیہ معظم من اسم اللہ تعالی اونبي اوملك فان خالف کرہ لترك التعظیم اھ وھو الموافق لمذھبنا کما في شرح المشکوۃ۔

اس کے حاشیہ میں فرمایا کیونکہ امام ابوداؤد اور ترمذی رحمہما اللہ نے حضرت انس رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا کہ نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم بیت الخلاء میں جاتے وقت انگوٹھی اتار لیتے کیونکہ اس میں "محمد رسول اللہ" کا منقش تھا اھ میں کہتا ہوں بلکہ اسے چاروں محدثیں (امام ترمذی، امام ابوداؤد، امام نسائی، امام ابن ماجہ رحمہم اللہ) ابن حبان اور حاکم نے روایت کیا ہے اور اس کی بعض سندیں صحیح ہیں۔ پھر امام طحطاوی نے فرمایا: طیبی نے کہا ہے کہ اس میں اس بات کی دلیل ہے کہ استنجا کرنے والا اللہ تعالٰی اور رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کے اسم گرامی نیز قرآن پاک کو الگ کر دے اھ اور ابہری نے کہا اسی طرح باقی تمام رسولوں کے نام الگ کر دے۔ ابن حجر عسقلانی فرماتے ہیں اس سے معلوم ہوا کہ قضائے حاجت کا ارادہ کرنے والے کے لئے مستحب ہے کہ ہر وہ چیز الگ کر دے جس میں کوئی قابلِ تعظیم بات مثلاً اللہ تعالٰی، کسی نبی یا فرشتے کا نام ہو اگر اس کے خلاف کرے گا تو ترکِ تعظیم کی وجہ سے مکروہ ہو گا اھ یہی بات ہمارے مذہب کے موافق ہے جیسا کہ شرح مشکوٰۃ میں ہے۔ در مختار میں ہے غلاف میں لپٹے ہوئے تعویذ کے ساتھ بیت الخلاء میں داخل ہونا مکروہ نہیں لیکن بچنا افضل ہے، اور اللہ تعالٰی بہتر جانتا ہے۔ (ت)

در مختار ست رقیہ فی غلاف متجاف لم یکرہ دخول الخلاء بہ والاحتراز افضل و اللہ تعالی اعلم۔

مسئلہ ۲۲۲: از پٹنہ مرسلہ ابوالمساکین مولوی ضیاء الدین صاحب ۶ ذی الحجہ ۱۳۲۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ ہندوستان کے اکثر شہروں میں مثل لکھنو و پٹنہ عظیم آباد اکثر لوگ بعد فراغت بول کلوخ سے استنجا نہیں کرتے بلکہ صرف پانی پر اکتفاء کرتے ہیں آیا اُن کا پاجامہ یا تہبند نجس ہوتا ہے یا نہیں اور ایسے شخص کی امامت میں کوئی خرابی لازم آتی ہے یا نہیں اور بعض آدمیوں کا بیان ہے کہ پانی لینے سے قطرہ رک جاتا ہے یہ صرف اُن کا خیال ہی خیال ہے یا واقعی امر ہے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: کلوخ و آب میں جمع افضل ہے نفس سنّت ہر ایک سے ادا ہو جاتی ہے سب سے اولیٰ جمع ہے پھر تنہا آب

1 حاشیة الطحطاوی مع مراقی الفلاح فصل فی الاستنجاء مطبوعہ نور محمد کارخانہ تجارت کتب خانہ کراچی ص ۳۰ 2 حاشیة الطحطاوی مع مراقی الفلاح فصل فی الاستنجاء مطبوعہ نور محمد کارخانہ تجارت کتب خانہ کراچی ص ۳۰ 3 درمختار حکم مس المصحف والکتب الشرعیۃ مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/۴۳ Page 584 of 761

Volume Four Fatawa Razawiyya Furthermore, relying solely on a clod of earth instead of water does not make the clothes impure; there is no harm in prayer and leadership (imamat). These issues are mentioned in Al-Hilya, Radd al-Muhtar, etc. (T). Water, especially cold water, in most temperaments, necessarily helps in stopping droplets due to condensation. Scholars have attributed the wisdom behind the command in the Hadith to wash the genitals upon the discharge of madhi (prostatic fluid) to this very point, as conveyed by Imam al-Tahawi in 'Sharh Ma'ani al-Athar' (As explained by Imam Tahawi in Sharh Ma'ani al-Athar. T). And in the state of bladder coldness, it supports the descent of droplets. And Allah Almighty knows best. Problem 223: 2 Rajab al-Murajjab 1321 AH: What do the scholars of religion say about this issue: Why is it prohibited to perform istinja (cleansing after defecation or urination) with a bone? Is there any basis for the saying that it is food for the Jinn? And if it is food for the Jinn, does it belong to their disbelievers or to the Muslims among them as well? Please provide an answer and be rewarded. The Answer: When a delegation from the Jinn community presented themselves before the radiant presence of the Master of the Worlds, peace and blessings of Allah be upon him, and requested food for themselves and their animals, they were told: "For you is every bone on which the name of Allah, the Exalted, is mentioned, that comes into your hands. It will be as full of meat as it ever was. And every piece of dung is fodder for your beasts."[1] Every bone on which the pure name of Allah, the Mighty and Sublime, is mentioned is for you. That is, the bone of a lawfully slaughtered animal. It will be in your hands in the state it was when it was full and complete with meat (i.e., you will find the de-fleshed bone covered with meat again). And every dung-pellet is fodder for your beasts. (M) Then he addressed the humans saying: "Do not perform istinja with these two, for they are the food of your brothers."[2] Reported by Muslim in his Sahih from Abu Mas'ud, may Allah be pleased with him. And Allah Almighty knows best. Do not perform istinja with a bone or a dung-pellet because they are the food of your brothers. (M) This was narrated by Imam Muslim (may Allah have mercy on him) in his Sahih from Hazrat Abu Mas'ud (may Allah be pleased with him). And Allah Almighty knows best. (T) 1. Sahih Muslim, Chapter on cleansing with stones, etc., published by Qadimi Kutub Khana Karachi 1/184 2. Sahih Muslim, Chapter on cleansing with stones, etc., published by Qadimi Kutub Khana Karachi 1/184 Page 585 of 761

चौथा खंड फ़तवा रज़विया इसके अलावा, पानी के बजाय केवल मिट्टी के ढेले पर भरोसा करने से कपड़े अपवित्र नहीं होते; प्रार्थना (नमाज़) और नेतृत्व (इमामत) में कोई हर्ज नहीं है। ये मसले 'अल-हिलिया', 'रद्द अल-मुह्तार' आदि में मौजूद हैं (त)। पानी, विशेष रूप से ठंडा पानी, अधिकांश स्वभावों में, संघनन के कारण बूंदों को रोकने में सहायक होता है। हदीस में मज़ी (वीर्य जैसा तरल) निकलने पर गुप्तांगों को धोने के हुक्म के पीछे विद्वानों ने इसी हिकमत (बुद्धिमत्ता) को माना है, जैसा कि इमाम अल-तहावी ने 'शराह मानी अल-असार' में बताया है (जैसा कि इमाम तहावी ने शराह मानी अल-असार में बताया है। त)। और मूत्राशय की ठंडक की स्थिति में, यह बूंदों के उतरने में सहायक होता है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। मसला २२३: २ रजब अल-मुरज्जब १३२१ हिजरी: दीन के विद्वान इस मसले के बारे में क्या कहते हैं: हड्डी से इस्तिंजा (मल-मूत्र के बाद सफाई) करना क्यों मना है? क्या इस बात का कोई आधार है कि यह जिन्नों का भोजन है? और अगर यह जिन्नों का भोजन है, तो क्या यह उनके काफिरों का है या उनमें से मुसलमानों का भी? कृपया उत्तर दें और पुण्य प्राप्त करें। उत्तर: जब जिन्न समुदाय का एक प्रतिनिधिमंडल संसार के स्वामी, प्रकाशमान आका सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में उपस्थित हुआ और अपने और अपने जानवरों के लिए भोजन की प्रार्थना की, तो उनसे फरमाया गया: "तुम्हारे लिए हर वह हड्डी है जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो जो तुम्हारे हाथों में आए। वह वैसी ही मांस से भरपूर होगी जैसी कभी थी। और हर गोबर की मेंगनी तुम्हारे जानवरों के लिए चारा है।"[1] तुम्हारे लिए हर वह हड्डी है जिस पर अल्लाह अज़्वजल का पवित्र नाम लिया गया हो। यानी हलाल तरीके से ज़बह किए गए जानवर की हड्डी। वह तुम्हारे हाथ में उसी स्थिति में होगी जैसी वह उस समय थी जब वह मांस से भरी हुई और पूरी थी (यानी हड्डी पर मांस फिर से आ जाएगा)। और हर मेंगनी तुम्हारे चौपायों के लिए चारा है। (म) फिर इंसानों से फरमाया: "इन दोनों से इस्तिंजा न करो क्योंकि ये तुम्हारे भाइयों का भोजन हैं।"[2] इसे इमाम मुस्लिम ने अपनी सहीह में अबू मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। हड्डी और मेंगनी से इस्तिंजा न करो क्योंकि वे तुम्हारे भाइयों का भोजन हैं। (म) इसे इमाम मुस्लिम रहमतुल्लाह अलैहि ने अपनी सहीह में हज़रत अबू मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त) १. सहीह मुस्लिम, पत्थर आदि से सफाई का अध्याय, पुरानी कुतुब खाना कराची १/१८४ द्वारा प्रकाशित २. सहीह मुस्लिम, पत्थर आदि से सफाई का अध्याय, पुरानी कुतुब खाना कराची १/१८४ द्वारा प्रकाशित पेज 585 of 761

جلد چہارم فتاوٰی رضویہ پھر تنہا کلوخ صرف پانی پر قناعت سے کپڑا نجس نہیں ہوتا، نماز و امامت میں کوئی حرج نہیں والمسائل فی الحلیۃ ورد المحتار وغیرہا (مسائل حلیہ اور ردالمحتار وغیرہ میں ہیں۔ت) پانی خصوصاً سرد اکثر امزجہ میں بوجہ تکثیف ضرور انسداد قطرہ پر معین ہوتا ہے۔ حدیث میں خروج مذی پر غسل مذاکیر کے حکم کو علماء نے اسی پر حکمت پر محمول کیا ہے کما افادہ الامام الطحاوی فی شرح معانی الاثار (جیسا کہ امام طحاوی نے شرح معانی الاثار میں بتایا۔ت) اور بحالِ برودت مثانہ نزول قطرہ کا اور مؤید ہوتا ہے واللہ تعالٰی اعلم۔ مسئلہ ۲۲۳: ۲رجب مرجب ۱۳۲۱ھ: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہڈی سے استنجا کس وجہ سے ناجائز ہے اور یہ جو کہتے ہیں کہ وہ خوراک جن کی ہے اس کی اصل ہے یا نہیں اور اگر خوراک جن کی ہے تو ان کے کفاروں کی ہے یا مسلمانوں کی بھی۔بینوا توجروا۔ الجواب: قوم جن کے وفد جو بارگاہ اقدس حضور پُر نور سید العالمین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم میں حاضر ہوئے اور اپنے اور اپنے جانوروں کے لئے خوراک طلب کی اُن سے ارشاد ہوا: لکم کل عظم ذکر اسم اللہ یقع فی ایدیکم اوفر مایکون لحما و کل بعرۃ علف لدوابکم 1۔ تمہارے لئے ہر ہڈی ہے جس پر اللہ عزوجل کا نام پاک لیا جائے یعنی حلال مذکٰی جانور کی ہڈی ہو وہ تمہارے ہاتھ میں اُس حال پر ہوگی جیسی اُس وقت تھی جب اُس پر گوشت پورا اور کامل تھا (یعنی گوشت چھڑائی ہوئی ہڈی تمہیں مع گوشت ملے گی) اور ہر مینگنی تمہارے چوپایوں کے لئے چارہ ہے۔ (م) پھر انسانوں سے ارشاد فرمایا: فلا تستنجوا بہما فانہما طعام اخوانکم 2 رواہ مسلم فی صحیحہ عن ابی مسعود رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ ہڈی اور مینگنی سے استنجاء نہ کرو کہ وہ تمہارے بھائیوں کی خوراک ہے۔ (م) اسے امام مسلم رحمہ اللہ نے اپنی صحیح میں حضرت ابو مسعود رضی اللہ عنہ سے روایت کیا ہے۔ اور اللہ تعالٰی بہتر جانتا ہے۔(ت) 1 الصحیح لمسلم باب الجسر بالقراۃ الخ مطبوعہ قدیمی کتب خانہ

کراچی ۱/ ۱۸۴ 2 الصحیح لمسلم باب الجسر بالقراۃ الخ مطبوعہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۱۸۴

Fatawa Razawiyya Volume Four Problem 224: Questioned by Sayyid Shah Mahdi Hasan Miyan Sahab from Sarkar Marehra Sharif, 3 Shaban al-Mu'azzam 1328 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: a disciple of Rashid Ahmad Gangohi says that there is no dislike in urinating while standing, as it is proven from Hadith. Please state the ruling in this regard from Hadith and Fiqh, and your reward is with Allah the Almighty. (Your reward is upon the grace of Allah Almighty. - Translator)

Answer: I say: There are four harms in urinating while standing: First: Splashing on the body and clothes, making the body and clothing impure without Sharia necessity, and this is forbidden (haram). It is mentioned in 'Al-Bahr al-Ra'iq' from 'Bada'i':

[Arabic]: As for making a pure thing impure, it is forbidden. It is mentioned in the discussion of used water. | [Urdu Translation]: Making a pure thing impure is haram. It is mentioned in the discussion of used water. (T)

In 'Radd al-Muhtar' it is stated:

[Arabic]: What is mentioned in 'Sharh al-Munyah' regarding impurities is that being stained with impurity is disliked (makruh). It appears this applies to cases without an excuse, while intercourse is an excuse. | [Urdu Translation]: In 'Sharh Munyat al-Musalli', in the discussion of impurities, it is stated that being stained with impurity is disliked. It appears this refers to situations without an excuse, whereas intercourse is an excuse. (T)

In the same [source]:

[Arabic]: Some Shafi'is have issued a fatwa on the prohibition of intercourse for someone whose penis is impure before washing it, unless they have urinary incontinence (salas), in which case it is permissible like intercourse with a woman experiencing prolonged bleeding (mustahada) while the flow continues. It appears that according to us (Hanafis) it is similar, as it involves being smeared with impurity unnecessarily since washing it is possible, unlike intercourse with a mustahada or someone with incontinence. Reflect. | [Urdu Translation]: Some Shafi'is have issued a fatwa that for a man whose penis is impure, intercourse before washing it is forbidden, unless he is a patient of urinary incontinence, in which case it is permissible just as intercourse with a mustahada is permissible despite the blood flow. It appears that according to us as well, it is similar because it involves being

stained with impurity without necessity since washing is possible, unlike intercourse with a mustahada or one with urinary incontinence. Reflect. (T)

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Book of Purification, printed by HM Saeed Company Karachi, 1/93
2. Radd al-Muhtar, Discussion on the difference between practical/definitive obligation and mandatory, printed by Mujtabai Delhi, 1/198
3. Radd al-Muhtar, Regarding the ruling on intercourse with a mustahada and one who has impurity on their penis, printed by Mujtabai Delhi, 1/198

फ़तावा रज़विया जिल्द चार मसला 224: प्रेषक सैय्यद शाह मेहदी हसन मियां साहिब, सरकार मारहरा शरीफ, 3 शाबान अल-मुअज़्ज़म 1328 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: रशीद अहमद गंगोही का एक शिष्य कहता है कि खड़े होकर पेशाब करने में कोई बुराई नहीं है, यह हदीस से साबित है। इस विषय में जो भी हुक्म हो हदीस और फ़िक़्ह से बयान फरमाएं। और आपका अजर अल्लाह तआला पर है। (आपका प्रतिफल अल्लाह तआला की दया पर निर्भर है। -त)

जवाब: मैं कहता हूँ: खड़े होकर पेशाब करने में चार नुकसान हैं: पहला: शरीर और कपड़ों पर छींटें पड़ना, शरीर और लिबास को बिना शरीयत की ज़रूरत के नापाक करना, और यह हराम है। 'बह़रुर रइक़' में 'बदाइ' से है:

[अरबी]: शुद्ध वस्तु को अशुद्ध करना हराम है। इसका उल्लेख प्रयुक्त जल की चर्चा में किया गया है। | [उर्दू अनुवाद]: पाक चीज़ को नापाक करना हराम है, इसे मुस्तअमल पानी की बहस में ज़िक्र किया गया है। (त)

'रद अल-मुह्तार' में है:

[अरबी]: 'शरह अल-मुनया' में अशुद्धियों के बारे में जो है कि अशुद्धि से लिप्त होना मकरूह है; ज़ाहिर है कि यह उस स्थिति पर लागू होता है जब कोई बहाना न हो, जबकि संभोग एक बहाना है। | [उर्दू अनुवाद]: 'शरह मुनियतुल मुसल्ली' में नजासत की बहस में है कि नजासत से लथपथ होना मकरूह है। ज़ाहिर है कि इसे बिना उज़्र की सूरत पर माना जाएगा और संभोग एक उज़्र है। (त)

उसी में है:

[अरबी]: कुछ शाफ़इयों ने फतवा दिया है कि जिस व्यक्ति का लिंग अशुद्ध हो, उसके धोने से पहले संभोग करना हराम है, जब तक कि उसे मूत्र असंयम न हो, ऐसी स्थिति में यह जायज़ है जैसे रक्तस्राव जारी रहने के बावजूद मुस्तहाज़ा के साथ संभोग करना जायज़ है। प्रतीत होता है कि हमारे यहाँ भी ऐसा ही है क्योंकि इसमें बिना ज़रूरत के अशुद्धि से लथपथ होना है, क्योंकि धोना संभव है, मुस्तहाज़ा और मूत्र असंयम वाले के साथ संभोग के विपरीत। गौर करो। | [उर्दू अनुवाद]: कुछ शाफ़इयों ने फ़तवा दिया है कि जिस आदमी का अंग-ए-तनासुल नापाक हो उसके लिए उसे धोने से पहले जिमा (संभोग) करना हराम है, मगर यह कि सलसुल बोल का मरीज़ हो तो जायज़ है जैसे मुस्तहाज़ा से खून जारी होने के बावजूद जिमा करना जायज़ है। ज़ाहिर है कि हमारे नज़दीक भी इसी

तरह है क्योंकि इसमें बिना ज़रूरत नजासत से लथपथ होना है क्योंकि धोना मुमकिन है, मुस्तहाज़ा और सलसुल बोल वाले के साथ संभोग करने के विपरीत। गौर करो। (त)

1. अल-बह्रुर रइक़, किताबुत तहारत, मुद्रित एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/93
2. रद अल-मुह्तार, मतलब: फ़र्ज़-ए-अमली, क़तई और वाजिब के बीच अंतर, मुद्रित मुजतबाई दिल्ली, 1/198
3. रद अल-मुह्तार, मुस्तहाज़ा के साथ संभोग और जिसके लिंग पर नजासत हो उसके हुक्म में, मुद्रित मुजतबाई दिल्ली, 1/198

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم مسئلہ ۲۲۴: مسئولہ سید شاہ مہدی حسن میاں صاحب از سرکار مارہرہ شریف ۳ شعبان معظم ۱۳۲۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ رشید احمد گنگوہی کا ایک مرید کہتا ہے کہ کھڑے ہو کر پیشاب کرنے میں کوئی کراہت نہیں وہ حدیث سے ثابت ہے اس باب میں جو حکم ہو حدیث و فقہ سے بیان فرمائیں واجر کم علی اللہ تعالٰی (تمہارے لئے اس کا اجر اللہ تعالٰی کے ذمہ کرم پر ہے۔ت)

الجواب: اقول: کھڑے ہو کر پیشاب کرنے میں چار حرج ہیں: اول: بدن اور کپڑوں پر چھینٹیں پڑنا جسم و لباس بلا ضرورت شرعیہ ناپاک کرنا اور یہ حرام ہے بحر الرائق میں بدائع سے ہے:

اما تنجیس الطاھر فحرام اہ ذکرہ في بحث الماء المستعمل۔ | پاک چیز کو ناپاک کرنا حرام ہے اھ اسے مستعمل پانی کی بحث میں ذکر کیا ہے۔ (ت)

رد المحتار میں ہے:

مافي شرح المنیة في الانجاس من ان التلوث بالنجاسة مکروہ فالظاھر حملہ علی مااذاکان بلاعذر والوطء عذر۔ | شرح منیۃ المصلی میں انجاس کی بحث میں ہے کہ نجاست سے ملوث ہونا مکروہ ہے ظاہر یہ ہے کہ اسے غیر عذر کی صورت پر محمول کیا جائے گا اور وطی عذر ہے۔ (ت)

اُسی میں ہے:

افتی بعض الشافعیة بحرمة جماع من تنجس ذکرہ قبل غسلہ الا اذا کان بہ سلس فیحل کوطء المستحاضة مع الجریان ویظھر انہ عندنا کذلك لمافیہ من التضمخ بالنجاسة بلا ضرورة لامکان غسلہ بخلاف وطء المستحاضة ووطء السلس تأمل ۳۔ | بعض شافعیہ نے فتوٰی دیا ہے کہ جس آدمی کا آلہ تناسل ناپاک ہو اس کے لئے اسے دھونے سے پہلے جماع کرنا حرام ہے مگر یہ کہ سلسل البول کا

مریض ہو تو جائز ہے جیسے مستحاضہ سے خون جاری ہونے کے باوجود جماع کرنا جائز ہے ظاہر یہ ہے کہ ہمارے نزدیک بھی اسی طرح ہے کیونکہ اس میں بلا ضرورت نجاست سے ملوث ہونا ہے اس لئے کہ دھونا ممکن ہے ، بخلاف مستحاضہ اور سلسل البول والے کی وطی کرنے کے۔ غور کرو۔ (ت)

1 البحر الرائق کتاب الطہارۃ مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۹۳ 2 ردالمختار ، مطلب الفرق بین الفرض العملی والقطعی والواجب مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/۱۹۸ 3 ردالمختار فی حکم وطء المستحاضۃ ومن بذکرہ نجاسۃ مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/۱۹۸

Fatawa Razawiya Volume Four

Second: Bringing upon oneself the entitlement to the punishment of the grave due to these splashes. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

"Protect yourselves from urine, for most of the punishment of the grave is because of it." Narrated by ad-Daraqutni from Anas (may Allah be pleased with him) with a sound chain of narration. Al-Hakim reported it with the wording "Keep yourselves clean" and stated it is sound according to the conditions of the two (Bukhari and Muslim). (T)

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) saw two persons being punished in the grave. He said:

"One of them did not protect himself from his urine, and the other used to go around spreading gossip (malicious talk)." Narrated by the Six (compilers of the Sahih Sittah) from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them). (T)

Third: Whether on a pathway or where people are present, it causes indecency; when sitting, the thighs and knees provide cover, but when standing, there is complete nakedness, and this brings about the curse of Allah. It is mentioned in the Hadith:

"Allah's curse is on the looking person and the person being looked at." This is how it is in my memory, and it does not occur to me at this time who narrated it. Allah knows best. (T)

Fourth: This is imitation of the Christians and following their blameworthy practice. Those who have developed this desire today have this very cause, and it is a reason for punishment and retribution. Allah Almighty says: "And do not follow the footsteps of Satan." - Do not walk on the footsteps of Satan. (T) The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

"He who imitates a people is one of them." (T)

1. Al-Daraqutni, Chapter on the Impurity of Urine, printed by Dar al-Mahasin for Printing, Cairo, 1/127.
2. Nasb al-Rayah, Book of Purification, Hadith 43, printed by al-Maktabah al-Islamiyyah, Beirut, 1/128.
3. Tirmidhi Sharif, Chapter on Severity regarding Urine, printed by Kutub Khana Rashidiyah Amin Company Delhi, 1/11.

4. Mishkat Sharif, Chapter on Looking at the Betrothed, printed by Mujtabai Delhi, p. 207.
5. The Holy Quran, 2/168.
6. Musnad Imam Ahmad bin Hanbal, Hadith of Ibn Umar, printed by al-Maktab al-Islami Beirut Lebanon, 2/50.

फ़तावा रज़विया जिल्द चहारुम

दूसरा: इन छींटों के कारण कब्र के अज़ाब की पात्रता अपने ऊपर लेना। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़रमाते हैं:

"पेशाब से बहुत बचो, क्योंकि कब्र का अधिकांश अज़ाब इसी के कारण होता है।" (म) इसे दारक़ुत्नी ने हज़रत अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से सहीह सनद के साथ रिवायत किया है। हाकिम ने 'इस्तंज़िहू' (साफ़ रहो) शब्द के साथ रिवायत किया है और कहा कि यह उन (बुखारी और मुस्लिम) की शर्त पर सहीह है। (त)

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने दो व्यक्तियों को कब्र के अज़ाब में देखा। फ़रमाया:

"उनमें से एक तो अपने पेशाब से ओट (बचाव) नहीं करता था और दूसरा चुगली करता था।" (म) इसे छह मुहाद्दिसीन (अहले सुन्नत की छह प्रमुख किताबों के लेखकों) ने हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत किया है। (त)

तीसरा: रास्ते पर हो या जहाँ लोग मौजूद हों, तो यह बेपर्दगी का कारण होगा। बैठने में जांघों और घुटनों की ओट मिल जाती है, लेकिन खड़े होने में पूरी तरह से बेपर्दगी (नग्नता) होती है और यह अल्लाह की लानत का कारण है। हदीस में है:

"अल्लाह की लानत है देखने वाले पर और जिसे देखा जाए उस पर (सतर न ढंकने पर)।" (म) मेरी याद में ऐसा ही है, लेकिन इस समय मुझे याद नहीं कि इसकी तख़रीज (स्रोत) किसने की है। अल्लाह बेहतर जानता है। (त)

चौथा: यह ईसाइयों की नकल और उनके निंदनीय तरीके का अनुसरण है। आज कल जिन लोगों में यह शौक़ जागा है, उसका यही कारण है और यह अज़ाब और सज़ा का कारण है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: "और शैतान के नक्शेक़दम पर न चलो।" - शैतान के कदमों पर न चलो। (त) अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़रमाते हैं:

"जो व्यक्ति जिस कौम की समानता अपनाए, वह उन्हीं में से है।" (त)

1. अल-दारक़ुत्नी, बाब नजासतुल बोल, मुद्रित दारुल महासिन, काहिरा, 1/127

2. नसबुल राया, किताबुत तहारत, हदीस 43, मुद्रित अल-मकतबुल इस्लामिया, बेरुत, 1/128
3. तिर्मिज़ी शरीफ़, बाबुत तशदीद फ़िल बोल, मुद्रित कुतुब खाना रशीदिया अमीन कंपनी दिल्ली, 1/11
4. मिश्कात शरीफ़, बाबुल नज़रि इलल मख़तूबा, मुद्रित मुजतबाई दिल्ली, पृ. 207
5. अल-कुरानुल हकीम, 2/168
6. मुसनद इमाम अहमद बिन हंबल, हदीस इब्ने उमर, मुद्रित अल-मकतबुल इस्लामी बेरुत लेबनान, 2/50

دوم: ان چھینٹوں کے باعث عذاب قبر کا استحقاق اپنے سر پر لینا رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: تنزہوا من البول فان عامۃ عذاب القبر منہ 1 رواہ الدار قطنی عن انس رضی اللہ تعالٰی عنہ بسند صحیح وللحاکم بلفظ استنزہوا و قال صحیح علی شرطہما 2 - پیشاب سے بہت بچو کہ اکثر عذاب قبر اسی سے ہے (م) اسے دارقطنی نے حضرت انس رضی اللہ تعالٰی عنہ سے بسند صحیح روایت کیا۔ حاکم لفظ "استنزہوا" لائے ہیں اور فرمایا کہ یہ ان (بخاری و مسلم) کی شرط پر صحیح ہے۔ (ت) رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے دو شخصوں پر عذاب قبر ہوتے دیکھا۔ فرمایا: کان احدھما لایستر من بولہ وکان الآخر یمشی بالنمیمۃ 3 رواہ الستۃ عن ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما۔ ان میں ایک تو اپنے پیشاب سے آڑ نہ کرتا تھا اور دوسرا چغلخوری کرتا۔ (م) اسے چھ محدثین (اصحاب ستہ) نے حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہما سے روایت کیا ہے (ت) سوم: رہگزر پر ہو یا جہاں لوگ موجود ہوں تو باعثِ بے پردگی ہوگا بیٹھنے میں رانوں اور زانوؤں کی آڑ جاتی ہے اور کھڑے ہونے میں بالکل بے ستری اور یہ باعث لعنت الٰہی ہے۔ حدیث میں ہے: لعن اللہ الناظر والمنظور الیہ 4 ھکذا فی حفظی ولا یحضرنی الآن من خرجہ واللہ تعالٰی اعلم۔ جو دیکھے اس پر بھی لعنت اور دکھائے اس پر بھی لعنت۔ (م) میرے ذہن میں اسی طرح ہے لیکن اس وقت مجھے یاد نہیں کہ اس کی تخریج کس نے کی ہے۔ اللہ تعالٰی بہتر جانتا ہے۔ (ت) چہارم: یہ نصاری سے تشبہ اور ان کی سنّت مذمومہ میں ان کا اتباع ہے آج کل جن کو یہاں یہ شوق جاگا ہے اس کی یہی علّت اور یہ موجب عذاب و عقوبت ہے۔ اللہ عز وجل فرماتا ہے: "لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوَاتِ الشَّیْطٰنِ" 5 - شیطان کے قدموں پر نہ چلو۔ (ت) رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: من تشبہ بقوم فھو منھم 6 - جو شخص جس قوم سے مشابہت اختیار کرے وہ انہی میں سے ہے۔ (ت)

1 الدارقطنی باب نجاسۃ البول مطبوعہ دار المحاسن للطباعۃ قاہرہ 1/ 127 2 نصب الرایۃ کتاب الطہارۃ حدیث ۴۳ مطبوعہ المکتبۃ الاسلامیہ بیروت ۱/ ۱۲۸ 3 ترمذی شریف باب التشدید في البول مطبوعہ کتب خانہ رشیدیہ امین کمپنی دہلی ۱/ ۱۱ 4 مشکوۃ شریف باب النظر الی المخطوبۃ مطبوعہ مجتبائی دہلی ص ۲۰۷ 5 القرآن الحکیم ۱۶۸/۲ 6 مسند امام احمد بن حنبل، حدیث ابن عمر، مطبوعہ المکتب الاسلامی بیروت لبنان ۵۰/۲

Fatawa Razawiyya (Volume 4) Authentic and reliable Hadiths have been recorded regarding the prohibition of this act and its being disrespectful, a grievance, and contrary to the Sunnah of the Prophet Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him).

First Hadith: Imam Ahmad, Tirmidhi, Nasai, and Ibn Hibban narrate in their Sahih from the Mother of the Believers, Aisha Siddiqah (may Allah be pleased with her):

Arabic	Urdu Translation
"Whoever tells you that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) used to urinate while standing, do not believe him; he did not urinate except while sitting."	"Whoever tells you that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) used to urinate while standing, do not believe him to be truthful; the Prophet did not urinate except while sitting." (M)

Imam Tirmidhi says:

Arabic	Urdu Translation
"The Hadith of Aisha is the best and most authentic narration in this chapter."	"Among all the Hadiths that have come regarding this issue, this Hadith is the best and most authentic." (M)

This same Hadith is in Sahih Abu 'Awanah and Mustadrak al-Hakim with these words:

Arabic	Urdu Translation
"He never urinated while standing since the Quran was revealed to him."	"Since the Holy Quran was revealed to the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), he never urinated while standing." (M)

I Say (A'la Hazrat): This dispels the doubt encountered by the two Imams, Shihab Ibn Hajar al-Asqalani in 'Fath al-Bari' and Badr Mahmoud al-Ayni in 'Umdat al-Qari', where they said (the words belong to Al-Ayni): "The answer to the Hadith of Aisha (may Allah be pleased with her) is that it is based on her knowledge, so it is applied to what occurred from him in the homes. However, the Mother of the Believers was not aware of what happened outside the homes, which was recorded by Hazrat Hudhayfah (may Allah be pleased with him)."

I Say (A'la Hazrat): This dispels the doubt that occurred to the two Imams, Shihab Ibn Hajar al-Asqalani in 'Fath al-Bari' and Badr Mahmoud al-Ayni in 'Umdat al-Qari', where they said (the words are of Al-Ayni): The answer to the Hadith of Hazrat Aisha (may Allah be pleased with her) is that it is attributed to her information, so it will be

applied to the instances that occurred from you in homes. But the Mother of the Believers was not informed about other than homes, Hazrat Hudhayfah (may Allah be pleased with him) has [noted/recorded it].

1 Jami' al-Tirmidhi Sharif, Chapter on Prohibition of Urinating Standing, printed by Kutubkhana Rashidiya Delhi, 1/4 2 Jami' al-Tirmidhi Sharif, Chapter on Prohibition of Urinating Standing, printed by Kutubkhana Rashidiya Delhi, 1/4 3 Al-Mustadrak lil-Hakim, Urinating Standing and Sitting, printed by Dar al-Fikr Beirut, 181/1

फ़तावा रज़विया (खंड 4) इस कृत्य की मनाही और इसे अनादर, अन्याय और सुन्नत-ए-मुस्तफा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के विपरीत होने के बारे में कई सहीह और विश्वसनीय हदीसें मौजूद हैं।

पहली हदीस: इमाम अहमद, तिर्मिज़ी, नसाई और इब्न हब्बान ने 'सहीह' में उम्मुल मोमिनीन सिद्दीका (रज़ियल्लाहु अन्हा) से रिवायत की है:

अरबी	उर्दू अनुवाद
"जो कोई तुमसे कहे कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) खड़े होकर पेशाब करते थे, उसे सच्चा न समझना; वह कभी बैठकर ही पेशाब करते थे।"	"जो तुमसे कहे कि हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) खड़े होकर पेशाब फरमाते थे, उसे सच्चा न मानना; हुज़ूर कभी बैठकर ही पेशाब फरमाते थे।" (M)

इमाम तिर्मिज़ी फरमाते हैं:

अरबी	उर्दू अनुवाद
"आयशा की हदीस इस विषय में सबसे बेहतर और सबसे सहीह है।"	"इस मसले में जितनी हदीसें आई हैं, उनमें से यह हदीस सबसे बेहतर और सबसे सहीह है।" (M)

यही हदीस 'सहीह अबू अवाना' और 'मुस्तदरक हाकिम' में इन शब्दों में है:

अरबी	उर्दू अनुवाद
"जब से उन पर कुरान नाज़िल हुआ, उन्होंने कभी खड़े होकर पेशाब नहीं किया।"	"जब से हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर कुरान मजीद उतरा, उन्होंने कभी खड़े होकर पेशाब नहीं फरमाया।" (M)

मैं (आला हज़रत) कहता हूँ: इससे वह शंका दूर हो गई जो दो इमामों, शहाब इब्न हजर अल-असकलानी को 'फ़तह अल-बारी' में और बद्र महमूद अल-ऐनी को 'उमदतुल क़ारी' में हुई, जहाँ उन्होंने फरमाया (शब्द ऐनी के हैं): "हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की हदीस का जवाब यह है कि यह उनकी जानकारी पर आधारित है, इसलिए इसे उन परिस्थितियों पर लागू किया जाएगा जो घरों में घटित हुईं। लेकिन घरों के बाहर जो हुआ, उम्मुल मोमिनीन उससे वाकिफ नहीं थीं, जिसे हज़रत हुज़ैफा (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने (सुरक्षित/वर्णित किया) है।"

मैं कहता हूँ: इससे वह शंका दूर हो गई जो दो इमामों अल-शहाब इब्न हजर अल-असकलानी को 'फ़तह अल-बारी' में और अल-बद्र महमूद अल-ऐनी को 'उमदतुल क़ारी' में पेश आई कि उन्होंने फरमाया (शब्द ऐनी के हैं) हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की हदीस का जवाब यह है कि यह उनकी जानकारी से संबंधित है, इसलिए इसे उस स्थिति पर माना जाएगा जो आपसे घरों में हुई। लेकिन घरों के अलावा पर उम्मुल मोमिनीन को जानकारी नहीं थी, इसे हज़रत हुज़ैफा रज़ियल्लाहु अन्हु ने [सुरक्षित किया है]।

1 जामी' अल-तिर्मिज़ी शरीफ़, खड़े होकर पेशाब करने की मनाही का अध्याय, कुतुबखाना रशीदिया दिल्ली द्वारा मुद्रित, 1/4 2 जामी' अल-तिर्मिज़ी शरीफ़, खड़े होकर पेशाब करने की मनाही का अध्याय, कुतुबखाना रशीदिया दिल्ली द्वारा मुद्रित, 1/4 3 अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम, खड़े होकर और बैठकर पेशाब करना, दार अल-फ़िक्र बेरूत द्वारा मुद्रित, 181/1

पृष्ठ 588 / 761

فتاویٰ رضویہ (جلد چہارم) اس حرکت سے نہی اور اس کے بے ادبی و جفا و خلاف سنت مصطفی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ہونے میں احادیث صحیحہ معتمدہ وارد ہیں۔

حدیث اول: امام احمد و ترمذی و نسائی و ابن حبان صحیح میں اُم المومنین صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے راوی:

| من حدثکم ان النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کان یبول قائماً فلاتصدقوہ ماکان یبول الاقاعداً | جو تم سے کہے کہ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کھڑے ہو کر پیشاب فرماتے اُس سچانہ جاننا حضور پیشاب نہ فرماتے تھے مگر بیٹھ کر۔ (م) |

امام ترمذی فرماتے ہیں:

| حدیث عائشۃ احسن شیئ في ھذا الباب واصح | جتنی حدیثیں اس مسئلہ میں آئیں ان سب سے یہ حدیث بہتر و صحیح تر ہے۔ (م) |

یہی حدیث صحیح ابو عوانہ و مستدرک حاکم میں ان لفظوں سے ہے:

| مابال قائما منذانزل علیہ القرآن | جب سے حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم پر قرآن مجید اترا کبھی کھڑے ہو کر پیشاب نہ فرمایا۔ (م) |

اقول: وبہ اندفع ماوقع للامامین الشھاب ابن حجر العسقلانی فی فتح الباري والبدر محمود العینی فی عمدۃ القاری حیث قالا واللفظ للعینی الجواب عن حدیث عائشۃ رضی اللہ تعالی عنھا انہ مستند الی علمھا فیحمل علی ماوقع منہ فی البیوت واما في غیر البیوت فلاتطلع ھی علیہ وقد حفظہ حذیفۃ رضی اللہ عنہ

اقول: اس سے وہ شبہ دُور ہوگیا جو دو اماموں الشہاب ابن حجر عسقلانی کو فتح الباری میں اور البدر محمود عینی کو عمدۃ القاری میں پیش آیا کہ انہوں نے فرمایا (الفاظ عینی کے ہیں) حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا کی حدیث کا جواب یہ ہے کہ یہ ان کی معلومات سے منسوب ہے پس اسے اس صورت پر محمول کیا جائیگا جو آپ سے گھروں میں وقوع پذیر ہوئیں۔ لیکن گھروں کے علاوہ پر ام المومنین مطلع نہیں ہوئیں اسے حضرت حذیفہ رضی اللہ عنہ نے

1 جامع الترمذی شریف باب النہی عن البول قائما، مطبوعہ کتب خانہ رشیدیہ دہلی، ۱/۴ 2 جامع الترمذی شریف، باب النہی عن البول قائما، مطبوعہ کتب خانہ رشیدیہ دہلی ۱/۴ 3 المستدرک للحاکم البول قائما و قاعدا مطبوعہ دارالفکر بیروت ۱۸۱/۱

[Keep in mind] and he was among the noble and high-ranking companions. Also, the Mother of the Believers was born five years after the revelation of the Quran began; therefore, how can it be interpreted based on what the Mother of the Believers saw of the Holy Prophet’s (peace and blessings be upon him) practice inside homes? You are narrating based on information provided (i.e., this Hadith is 'Mauquf'). This gives preference to the point that the narration of Hazrat Huzaifa (may Allah be pleased with him) is based on an excuse, and excuses are exempt both rationally and legally. Then, when this Sunnah of yours was established in the solitude of the holy house, it was also established by implication for the outside, because there is even more need to maintain covering and observe etiquette outside of homes. Imam Ayni says it is also possible that Hazrat Aisha's (may Allah be pleased with her) statement "He never urinated while standing" meant that he did not urinate while standing at home, and she had no information about what occurred outside. End of quote. (T)

I say: The point is the same as the first one, and you already know its rejection. Thus, I do not know what the meaning of their word "Also" (Aydan) is. (T)

Second Hadith: Al-Bazzar narrates in his Musnad with a sound chain from Bureidah (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) said: "Three things are from discourtesy: that a man urinates while standing, or wipes his forehead before finishing his prayer..." Three things are from unmannerliness and discourtesy: that a person urinates while standing, or [wipes sweat/dust] from his forehead during prayer (for example).

---

1. Umdat-ul-Qari, Chapter on Urinating Standing and Sitting, published by Idara-tul-Taba'at al-Muniriyyah, Beirut, 3/153.
2. Umdat-ul-Qari, Chapter on Urinating Standing and Sitting, published by Idara-tul-Taba'at al-Muniriyyah, Beirut, 3/153.

[याद रखें] और वह महान और उच्च श्रेणी के सहाबा में से थे। इसके अलावा, उम्मुल मोमिनीन कुरान के अवतरण शुरू होने के पांच साल बाद पैदा हुई थीं; इसलिए इसे उस पर कैसे आधारित किया जा सकता है जो उम्मुल मोमिनीन ने घरों के भीतर नबी अकरम (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के अभ्यास के बारे में देखा? आप तो जानकारी के आधार पर बयान कर रही हैं (यानी यह हदीस 'मौकूफ़' है)। इससे इस बात को प्राथमिकता मिलती है कि हज़रत हुज़ैफ़ा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) का वर्णन एक बहाने या मजबूरी पर आधारित है, और तर्कसंगत और शरीयत के अनुसार बहाने अपवाद होते हैं। फिर, जब आपकी यह सुन्नत पवित्र घर के एकांत में स्थापित हो गई, तो यह संकेत के रूप में बाहर के लिए भी स्थापित हो गई, क्योंकि घरों के बाहर परदा और शिष्टाचार बनाए रखने की अधिक आवश्यकता होती है। इमाम ऐनी कहते हैं कि यह भी संभव है कि हज़रत आयशा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के कथन "आपने खड़े होकर पेशाब नहीं किया" का मतलब यह हो कि आपने घर में खड़े होकर पेशाब नहीं किया, और उन्हें बाहर के बारे में जानकारी नहीं थी। उद्धरण समाप्त। (त)

मैं कहता हूँ: बात वही पहली है और आप उसका खंडन पहले ही जान चुके हैं। अतः मुझे समझ नहीं आता कि उनके शब्द "भी" (ऐज़न) का क्या अर्थ है। (त)

दूसरी हदीस: अल-बज़ार ने अपनी मुसनद में एक सही सनद के साथ बुरैदाह (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से रिवायत की है कि अल्लाह के रसूल (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) ने फरमाया: "तीन बातें अशिष्टता में से हैं: कि कोई व्यक्ति खड़े होकर पेशाब करे, या अपनी प्रार्थना समाप्त करने से पहले अपना माथा पोंछे..." तीन बातें बेअदबी और अशिष्टता से हैं: कि व्यक्ति खड़े होकर पेशाब करे, या नमाज़ के दौरान अपने माथे से [पसीना आदि] पोंछे(उदाहरण के लिए)।

---

1. उम्दतुल क़ारी, खड़े और बैठकर पेशाब करने का अध्याय, इदारातुल तबात अल-मुनीरियाह, बेरूत द्वारा प्रकाशित, 3/153।
2. उम्दतुल क़ारी, खड़े और बैठकर पेशाब करने का अध्याय, इदारातुल तबात अल-मुनीरियाह, बेरूत द्वारा प्रकाशित, 3/153।

تعالی عنہ وھو من کبار الصحابۃ اھ وذلك انھا رضی اللہ تعالٰی عنھا انما ولدت بعد نزول القرآن بخمس سنین فکیف یحمل علی ما رأت من فعلہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فی البیوت وانما تقولہ عن توقیف وبہ یترجح ان حدیث حذیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کان لعذر والاعذار مستثناۃ عقلا وشرعا ثم اذا ثبتت ھذہ سنتہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم مختلیا فی بیتہ الکریم تثبت دلالۃ فی الخارج فان خارج البیوت احوج الی الستر والتزام الادب قال العینی وایضا یمکن ان یکون قول عائشۃ رضی اللہ تعالٰی عنھا ما بال قائماً یعنی فی منزلہ والا اطلاع لھا علی ما فی الخارج اھ

یاد رکھا اور وہ جلیل القدر صحابہ کرام میں سے تھے۔ نیز ام المومنین نزول قرآن کے پانچ سال بعد پیدا ہوئیں لہذا اسے کیسے اس پر محمول کیا جائے جو ام المومنین نے نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کا علم گھروں میں دیکھا آپ تو بتانے سے بیان فرما رہی ہیں (یعنی یہ حدیث موقوف ہے) اس سے اس بات کو ترجیح حاصل ہو گئی کہ حضرت حذیفہ رضی اللہ عنہ کی روایت ایک عذر کی بنیاد ہے اور عذر عقلی اور شرعی طور پر مستثنٰی ہوتے ہیں۔ پھر جب آپ کی یہ سنت خانہ اقدس کی خلوت میں ثابت ہوگئی تو بطور دلالت باہر بھی ثابت ہوگئی کیونکہ گھروں سے باہر ستر اور آداب کا خیال رکھنے کی زیادہ ضرورت ہوتی ہے، امام عینی فرماتے ہیں نیز ممکن ہے حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا کا قول کہ "آپ نے کھڑے ہو کر پیشاب نہیں فرمایا" سے مراد یہ ہو کہ آپ نے گھر میں کھڑے ہو کر پیشاب نہیں فرمایا آپ کو باہر کے بارے میں اطلاع نہیں تھی اھ (ت)

اقول: ماھو الا الاول وقد علمت ردہ فلا ادری ما معنی قولہ وایضا۔ اقول: بات تو وہی پہلی ہے اور تمہیں اس کا رد معلوم ہوچکا ہے پس مجھے معلوم نہیں کہ ان کے قول "ایضاً" کا کیا مطلب ہے۔ (ت)

حدیث دوم: بزار اپنی مسند میں بسند صحیح بریدہ رضی اللہ عنہ سے روایت کرتے ہیں رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: ثلاث من الجفاء ان یبول الرجل قائما او یمسح جبھتہ قبل ان یفرغ من صلاتہ تین باتیں جفا وبے ادبی سے ہیں یہ کہ آدمی کھڑے ہو کر پیشاب کرے یا نماز میں اپنی پیشانی سے (مثلاً) پونچھے

---

1 عمدۃ القاری باب البول قائماً وقاعداً مطبوعہ ادارۃ الطباعۃ المنیریۃ بیروت ۳/ ۱۵۳ 2 عمدۃ القاری باب البول قائماً وقاعداً مطبوعہ ادارۃ الطباعۃ المنیریۃ بیروت ۳/ ۱۵۳

Volume 4 Fatawa Razawiya "And he blows in his prostration[1] -" Blowing away dust or sweat (while wiping or prostrating (for example, to clear dust on the ground)). (M) In 'Taysir' it is: its narrators are the narrators of Sahih[2] (The narrators of this hadith are reliable and authentic narrators of Sahih. M). In 'Umda al-Qari' it is: Narrated by al-Bazzar with a Sahih chain of narrators[3] (Bazzar narrated it with a Sahih chain. M). He said: And al-Tirmidhi said the narration of Buraydah in this is not preserved, and the saying of al-Tirmidhi is rejected by it[4] (And said that Imam Tirmidhi said: In this series, the narration of Hazrat Buraydah (may Allah be pleased with him) is not preserved. And the statement of Imam Tirmidhi is rejected by it. T). Third Hadith: Tirmidhi (Note 1) and Ibn Majah and Bayhaqi narrate from the Commander of the Faithful Farooq al-A'zam (may Allah be pleased with him):

[Table/Box 1] Arabic: He said: The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) saw me urinating while standing, and said: "O Umar! Do not urinate while standing." Since that day, I never urinated while standing.[5] Urdu Translation: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) saw me urinating while standing and said: "O Umar! Do not urinate while standing." Since that day, I never urinated while standing. (M)

Fourth Hadith: Ibn Majah (Note 2) and Bayhaqi narrate from Jabir (may Allah be pleased with him):

[Table/Box 2] Arabic: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) forbade a man from urinating while standing.[6] Urdu Translation: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) forbade a man from urinating while standing. (M)

Imam Khatim al-Huffaz says: This hadith is Hasan. As for the hadith of Hudhayfah (may Allah be pleased with him):

[Table/Box 3] Note 1: He limited himself in Umda al-Qari to attributing it to al-Bayhaqi, which is not appropriate. 12 minhu ghafaralahu. (M) | In Umda al-Qari, he limited himself to attributing this hadith to Bayhaqi, whereas doing so is not appropriate. (T) Note 2: Similarly, here too he restricted himself to attributing it to al-Bayhaqi. 12 minhu ghafaralahu. (M) | Similarly, here too, he limited himself to attributing this hadith to Bayhaqi. (T)

Footnotes: 1. Kashf al-Astar 'an Zawa'id al-Bazzar, Chapter: What is forbidden in prayer, Published by Mu'assasat al-Risalah, Beirut, 1/266. 2. Fayd al-Qadir Sharh al-

Jami' al-Saghir, under the mentioned hadith, Published by Dar al-Ma'rifah, Beirut, 3/293. 3. Umda al-Qari, Chapter: Urinating standing and sitting, Al-Matba'at al-Muniriyyah, Beirut, 3/135. 4. Umda al-Qari, Chapter: Urinating standing and sitting, Al-Matba'at al-Muniriyyah, Beirut, 3/135. 5. Jami' al-Tirmidhi, Chapter: The prohibition of urinating while standing, Published by Kutub Khana Rashidiyah, Amin Company, Delhi, 2/7. 6. Sunan Ibn Majah, Chapter: Regarding urinating standing and sitting, Published by Qadimi Kutub Khana, Karachi, p. 27.

जिल्द चहारुम फ़तावा रज़विया "और अपनी सजदे में फूँकना[1] -" मिट्टी या पसीना पोंछने या सजदा करते समय (जैसे ज़मीन पर धूल साफ करने के लिए) फूँकना। (म) 'तयसीर' में है: इसके रावी सहीह के रावी हैं[2] (इस हदीस के रावी विश्वसनीय और सहीह के रावी हैं। म)। 'उमदतुतुल क़ारी' में है: बज़ार ने सहीह सनद के साथ रिवायत किया[3] (इसे बज़ार ने सहीह सनद के साथ रिवायत किया। म)। उन्होंने कहा: और तिर्मिज़ी ने कहा कि इस मामले में बुरायदा की रिवायत महफूज़ नहीं है और तिर्मिज़ी की बात इससे रद्द की जाती है[4] (और कहा कि इमाम तिर्मिज़ी ने फ़रमाया: इस सिलसिले में हज़रत बुरायदा रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत ग़ैर महफूज़ है। और इमाम तिर्मिज़ी का कौल इसके साथ रद्द कर दिया जाता है। त)। तीसरी हदीस: तिर्मिज़ी (नोट 1) और इब्ने माजा और बैहक़ी अमीरुल मोमिनीन फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रावी हैं:

[बॉक्स 1] अरबी: उन्होंने कहा: नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मुझे खड़े होकर पेशाब करते देखा तो फ़रमाया: "ऐ उमर! खड़े होकर पेशाब मत करो।" उस दिन के बाद मैंने कभी खड़े होकर पेशाब नहीं किया।[5] अनुवाद: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मुझे खड़े होकर पेशाब करते देखा तो फ़रमाया: "ऐ उमर! खड़े होकर पेशाब न करो"। उस दिन से मैंने कभी खड़े होकर पेशाब नहीं किया। (म)

चौथी हदीस: इब्ने माजा (नोट 2) और बैहक़ी जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रावी हैं:

[बॉक्स 2] अरबी: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदमी के खड़े होकर पेशाब करने से मना फ़रमाया।[6] अनुवाद: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने खड़े होकर पेशाब करने से मना फ़रमाया। (म)

इमाम खातिमुल हुफ़्फ़ाज़ फ़रमाते हैं: यह हदीस हसन है। रही हुज़ैफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की हदीस:

[बॉक्स 3] नोट 1: उन्होंने उमदतुल क़ारी में इसे बैहक़ी की ओर मंसूब करने पर इक्तिसार किया है, जो कि उचित नहीं है। (म) | उमदतुल क़ारी में इस हदीस को बैहक़ी की ओर मंसूब करने पर इक्तिसार किया है हालाँकि ऐसा करना मुनासिब नहीं। (त) नोट 2: इसी तरह यहाँ भी उन्होंने इसे बैहक़ी की ओर मंसूब करने पर इक्तिसार किया है। (म) | इसी तरह यहाँ भी इस हदीस को बैहक़ी की ओर मंसूब करने पर इक्तिसार किया है। (त)

फुटनोट्स: 1. कश्फ़ुल अस्तार अन ज़वाइदुल बज़ार, बाब: नमाज़ में मनाही की बातें, मुअस्सतुर रिसाला बेरूत, 1/266. 2. फ़ैज़ुल क़दीर शरह अल-जामि' अस-सगीर, वर्णित हदीस के तहत, दारुल मारिफ़ा बेरूत, 3/293. 3. उमदतुल क़ारी, बाब: खड़े और बैठकर पेशाब करना, अल-मतबअतुल मुनीरिया बेरूत, 3/135. 4. उमदतुल क़ारी, बाब: खड़े और बैठकर पेशाब करना, अल-मतबअतुल मुनीरिया बेरूत, 3/135. 5. जामिअतुल तिर्मिज़ी, बाब: खड़े होकर पेशाब करने की मुमानियत, कुतुब खाना रशीदिया, अमीन कंपनी दिल्ली, 2/7. 6. सुनन इब्ने माजा, बाब: खड़े और बैठकर पेशाब करने के बारे में, पुरानी कुतुब खाना कराची, पृ. 27.

पृष्ठ 590/761

جلد چہارم فتاوٰی رضویہ اوینفخ في سجودہ[1]- مٹی یا پسینہ (پونچھنے یا سجدہ کرتے وقت (زمین پر مثلاً غبار صاف کرنے کو) پھونکنا۔ (م) تیسیر میں ہے: رجالہ رجال الصحیح[2] (اس حدیث کے سبب راوی ثقہ معتمد صحیح کے راوی ہیں۔ م) عمدۃ القاری میں ہے: رواہ البزار بسند صحیح[3] (اسے بزار نے بسند صحیح روایت کیا۔ م) قال وقال الترمذی حیث بریدۃ في ھذا غیر محفوظ وقول الترمذی یردُّ بہ[4] (اور کہا کہ امام ترمذی نے فرمایا: اس سلسلے میں حضرت بریدہ رضی اللہ عنہ کی روایت غیر محفوظ ہے۔ اور امام ترمذی کا قول اس کے ساتھ رد کیا جاتا ہے۔ ت) حدیث سوم: ترمذی عہ[1] و ابن ماجہ و بیہقی امیر المومنین فاروق اعظم رضی اللہ تعالی عنہ سے راوی:

[ٹیبل / باکس 1] قال رأی النبي صلی اللہ تعالی علیہ وسلم ابول قائماً فقال یاعمر لاتبُل قائما فما بلت قائما بعد[5]- | رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے مجھے کھڑے ہو کر پیشاب کرتے دیکھا تو فرمایا: "اے عمر! کھڑے ہو کر پیشاب نہ کرو"۔ اس دن سے میں نے کبھی کھڑے ہو کر پیشاب نہ کیا۔ (م)

حدیث چہارم: ابن ماجہ عہ[2] و بیہقی جابر رضی اللہ عنہ سے راوی:

[ٹیبل / باکس 2] نھی رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم ان یبول الرجل قائما[6]- | رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے کھڑے ہو کر پیشاب کرنے سے منع فرمایا۔ (م)

امام خاتم الحفاظ فرماتے ہیں: یہ حدیث حسن ہے۔ رہی حدیث حذیفہ رضی اللہ تعالی عنہ:

[ٹیبل / باکس 3] عہ۱: اقتصر في عمدۃ القاري علی عزوہ للبیھقي وھو مما لا ینبغی ۱۲ منہ غفرلہ۔ (م) | عمدۃ القاری میں اس حدیث کو بیہقی کی طرف منسوب کرنے پر اقتصار کیا ہے حالانکہ ایسا

کرنا مناسب نہیں۔ (ت) عہ۲: کذا اقتصر ھھنا علی عزوہ للبیھقي ۱۲ منه غفرله (م) | اسی طرح یہاں بھی اس حدیث کو بیہقی کی طرف منسوب کرنے پر اقتصار کیا ہے۔ (ت)

حواشی: 1 کشف الاستار عن زوائد البزار باب ما نہی عنہ فی الصلوٰۃ مطبوعہ موسسۃ الرسالۃ بیروت ۲۶۶/۱ 2 فیض القدیر شرح الجامع الصغیر زیر حدیث مذکور مطبوعہ دارالمعرفۃ بیروت ۲۹۳/۳ 3 عمدۃ القاری باب البول قائماً وقاعداً الطباعۃ المنیریۃ بیروت ۱۳۵/۳ 4 عمدۃ القاری باب البول قائماً وقاعداً الطباعۃ المنیریۃ بیروت ۱۳۵/۳ 5 جامع الترمذی، باب النہی عن البول قائماً، مطبوعہ کتب خانہ رشیدیہ امین کمپنی دہلی، ۲/۷ 6 سنن ابن ماجہ باب فی البول قائماً و قاعداً مطبوعہ قدیمی کتب خانہ کراچی ص ۲۷

Fatawa Ridawiyya - Volume 4

“The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) came to the refuse dump of a tribe and urinated while standing.” - Narrated by the two Sheikhs (Bukhari and Muslim).

The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) visited a refuse dump and urinated there while standing. (Narrated by the two Sheikhs) (T)

Eminent Imams and scholars have given several answers to this. First: This Hadith is abrogated by the report from the Mother of the Believers, Siddiqah (may Allah be pleased with her). This was the view adopted by Imam Abu Awanah in his 'Sahih' and Ibn Shahin in 'Kitab al-Sunnah'.

Al-Asqalani and Al-Ayni followed them up and said: The correct view is that it is not abrogated. Al-Ayni added: Because the words of Aisha and Hudhayfah (may Allah be pleased with them both) were based on what they witnessed. (T)

I say: It is known that the narration of Hudhayfah (may Allah be pleased with him) was not from the final period of the life of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), whereas the Mother of the Believers (may Allah be pleased with her) saw him until the day he met Allah, the Mighty and Sublime, and was aware of his noble actions, and the final practice is what is adopted. Therefore, the Prophet's final action will be followed. Thus, reporting based on individual observation does not preclude abrogation when we know that one of the two observations is later and continuous. The ruling on abrogation would be encompassed by his (peace and blessings of Allah be upon him) saying which is authentically proven that "it is a hardship/harshness", and the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) is the most complete...

---

1. Jami' al-Bukhari, Chapter on urinating standing or sitting, Published by Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/359
2. Umdat al-Qari, Chapter on urinating standing or sitting, Idarat al-Tiba'at al-Muniriyyah Beirut, 3/135
3. Umdat al-Qari, Chapter on urinating standing or sitting, Idarat al-Tiba'at al-Muniriyyah Beirut, 3/135

फतावा रज़विया - खंड 4

"नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) एक कबीले के कूड़े के ढेर पर आए और वहां खड़े होकर पेशाब किया।" - (बुखारी और मुस्लिम द्वारा वर्णित)। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) एक कूड़े के ढेर पर तशरीफ ले गए और वहां खड़े होकर पेशाब फरमाया। (बुखारी और मुस्लिम द्वारा वर्णित) (त)

प्रतिष्ठित इमामों और विद्वानों ने इसके कई उत्तर दिए हैं। पहला: यह हदीस उम्मुल मोमिनीन सिद्दीका (रज़ियल्लाहु अन्हा) से मनसूख (निरस्त) है। यह मत इमाम अबू अवाना ने अपनी 'सहीह' में और इब्न शाहीन ने 'किताबुस सुन्नाह' में अपनाया है।

इमाम अस्कलानी और ऐनी ने इन दोनों का खंडन करते हुए कहा: सही बात यह है कि यह मनसूख नहीं है। ऐनी ने और जोड़ा कि क्योंकि आयशा और हुज़ैफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) दोनों ने जो कुछ देखा, उसकी खबर दी। (त)

मैं कहता हूँ: यह बात ज्ञात है कि हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) की रिवायत नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अंतिम काल की नहीं है, जबकि उम्मुल मोमिनीन (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने आपको वसाल (निधन) तक देखा और आपके मुबारक कार्यों से अवगत रहीं, और अंतिम कार्य को ही अपनाया जाता है, इसलिए आपके अंतिम कार्य पर अमल होगा। अत; प्रत्येक का अपने अवलोकन के अनुसार रिपोर्ट करना निरसन (नस्ख) को नहीं रोकता है जब हमें ज्ञात हो कि दो अवलोकनों में से एक बाद का है और निरंतर है। निरसन का नियम आपके(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उस कथन से सिद्ध होगा जो प्रामाणिक रूप से साबित है कि "यह कठोरता है", और नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तमाम...

---

1. जामी अल-बुखारी, खड़े होकर या बैठकर पेशाब करने का अध्याय, पुरानी कुतुब खाना कराची द्वारा प्रकाशित, 1/359
2. उम्दतुल क़ारी, खड़े होकर या बैठकर पेशाब करने का अध्याय, इदारतुल तिबाअत अल-मुनीरिया बेरूत, 3/135
3. उम्दतुल क़ारी, खड़े होकर या बैठकर पेशाब करने का अध्याय, इदारतुल तिबाअत अल-मुनीरिया बेरूत, 3/135

पृष्ठ 591 का 761

فتاوی رضویہ - جلد چہارم

اتی النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سباطۃ قوم فبال قائماً - رواہ الشیخان۔ نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ایک گھورے پر تشریف لے گئے اور وہاں کھڑے ہو کر پیشاب فرمایا۔ (رواہ الشیخان) (ت)

ائمہ کرام علمائے اعلام نے اس سے بہت جواب دیے: اول: یہ حدیث ام المؤمنین صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہما سے منسوخ ہے۔ یہ امام ابو عوانہ نے اپنی صحیح اور ابن شاہین نے کتاب السنۃ میں اختیار کیا،

وتعقبہما العسقلانی والعینی فقالا الصواب انہ غیر منسوخ زاد العینی لان کلام عائشۃ وحذیفہ رضی اللہ تعالٰی عنہما اخبربما شاھدۃ 2 اہـ اقول: معلوم ان حدیث حذیفہ رضی اللہ تعالٰی عنہ لم یکن فی اخر عمرہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم وقدرأتہ ام المؤمنین رضی اللہ تعالٰی عنہا واطلعت علی افعالہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم الی یوم لحق اللہ عزوجل وانما یؤخذ بالآخر فالآخر من افعالہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فکون کل اخبر بما شاہد لایمنع النسخ اذا علمنا ان احدی المشاھدتین متأخرۃ مستمرۃ والحاوی علی حکم النسخ ما صح من قولہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم انہ من الجفاء 3

امام عسقلانی اور عینی نے ان دونوں کا تعاقب کرتے ہوئے فرمایا: صحیح بات یہ ہے کہ یہ غیر منسوخ ہے کیونکہ حضرت عائشہ اور حضرت حذیفہ رضی اللہ عنہما دونوں نے جو کچھ دیکھا اس کی خبر دی اہـ (ت) اقول: یہ بات معلوم ہے کہ حضرت حذیفہ رضی اللہ عنہ کی روایت نبی اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے آخری دور کی نہیں جبکہ حضرت ام المؤمنین رضی اللہ تعالٰی عنہا نے آپ کو وصال تک دیکھا اور آپ کے افعال مبارکہ پر مطلع رہیں اور آخری عمل کو اپنایا جاتا ہے لہذا آپ کے بھی آخری فعل پر عمل ہوگا۔ بنابریں ہر ایک کا اپنے مشاہدے کے مطابق خبر دینا

نسخ کو منع نہیں کرتا جب ہمیں معلوم ہو جائے کہ دو مشاہدوں میں سے ایک متاخر بھی ہے اور جاری بھی اور حکم نسخ پر آپ کا وہ قول حاوی ہوگا جو صحیح طور پر ثابت ہے کہ یہ ظلم ہے اور نبی اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم تمام

---

1 جامع البخاری، باب البول قائماً و قاعداً، مطبوعہ قدیمی کتب خانہ کراچی، ۱/۳۵۹ 2 عمدة القاری باب البول قائماً و قاعداً ادارة الطباعة المنیریہ بیروت ۳/ ۱۳۵ 3 عمدة القاری باب البول قائماً و قاعداً ادارة الطباعة المنیریہ بیروت ۳/ ۱۳۵

Fatawa Razawiyya - Volume 4

And he (peace and blessings of Allah be upon him) was the most distant of people from it (impurity). (T)

Second: At that time, there was a wound in his blessed knee, and he could not sit. This has been narrated from Abu Huraira (may Allah be pleased with him); Al-Hakim, Ad-Daraqutni, and Al-Bayhaqi are narrators from him:

[Arabic]: "Indeed, the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) urinated while standing due to a wound in his popliteal fossa (back of the knee). However, these two (Daraqutni and Bayhaqi) and Ibn Asakir in 'Ghara'ib Malik' weakened it, and Al-Dhahabi followed them, saying it is 'munkar' (rejected)." [Urdu]: The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) urinated standing up because of a wound on the inner side of his knee. But those two (Daraqutni and Bayhaqi) and Ibn Asakir in 'Ghara'ib Malik' declared it weak, and Dhahabi also followed them and said it is 'munkar' (denied). (T)

Third: There was no place to sit because of impurities; Imam Abdul Azim Zakiuddin al-Mundhiri preferred this view.

[Arabic]: "Al-Ayni said: Al-Mundhiri said: Perhaps there were wet impurities in the rubbish heap, and it was soft ground, so he feared that it (urine) would splash back on him. Al-Ayni said: It was said that this is subject to criticism because the one standing is more prone to this fear than the one sitting. Al-Tahawi said: This is because it (the ground) is easy (soft), so the urine descends into it and does not splash back on the person urinating." [Urdu]: Ayni said that Mundhiri says there might have been wet impurities in the heap and it was soft, and there was a fear of getting contaminated. Imam Ayni says it has been said that this point is debatable because a person standing is more susceptible to this fear than one sitting. Imam Tahawi says that due to the softness of the ground, urine seeps into it and does not splash back towards the person urinating. (T)

[Arabic]: "I say: This (explanation) was directed towards Al-Mundhiri because of his increased fear of splashing. If he had said what I said, he would have been safe (from criticism), for it might be a collection of wet impurities where there is no place to sit. Then I saw in 'Al-Mirqat' where he said: Sayyid Jamaluddin said: It was said he did that because he did not find a place to sit due to the area being full." [Urdu]: I say: Imam Mundhiri focused on this interpretation because he felt a greater fear of splashes

leaping up. If he had said what we said, he would have escaped objection, because where wet impurities are gathered, sometimes there is no place to sit. Then I saw in 'Mirqat', the author of 'Mirqat' states that Sayyid Jamaluddin said that it has been said...

---

1. Al-Mustadrak 'ala al-Sahihayn, Urinating Standing and Sitting, published by Dar al-Fikr, Beirut, Lebanon, 1/182; Al-Sunan al-Kubra by al-Bayhaqi, Chapter on Urinating Standing, published by Dar Sadir, Beirut, 1/101.
2. 'Umdat al-Qari, Chapter on Urinating Standing and Sitting, published by Idarat al-Tiba'at al-Muniriyya, Beirut, 136/3.

फतावा रज़विया - खंड चार

और वे (अल्लाह उन पर कृपा और शांति बरसाए) लोगों में इससे सबसे अधिक परहेज करने वाले थे। (त)

दूसरा: उस समय उनके मुबारक घुटने में घाव था और वे बैठ नहीं सकते थे। यह हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है; हाकिम, दारकुतनी और बैहकी उनके रावी (वर्णनकर्ता) हैं:

[अरबी]: "निश्चित रूप से नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपने घुटने के पीछे के घाव के कारण खड़े होकर पेशाब किया। हालांकि, इन दोनों (दारकुतनी और बैहकी) और इब्न असाकिर ने 'ग़राइब मालिक' में इसे कमज़ोर करार दिया, और ज़हबी ने भी उनका अनुसरण करते हुए इसे 'मुनकर' (अस्वीकार्य) कहा।" [उर्दू]: नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने घुटने के अंदरूनी हिस्से में घाव के कारण खड़े होकर पेशाब फरमाया। लेकिन उन दोनों (दारकुतनी और बैहकी) और इब्न असाकिर ने 'ग़राइब मालिक' में इसे ज़ईफ़ (कमज़ोर) करार दिया और ज़हबी ने भी उनका अनुसरण करते हुए कहा कि यह मुनकर है। (त)

तीसरा: वहां गंदगी (नजासत) के कारण बैठने की जगह नहीं थी; इमाम अब्दुल अज़ीम ज़कीउद्दीन मुन्ज़िरी ने इसे प्राथमिकता दी।

[अरबी]: "ऐनी ने कहा: मुन्ज़िरी कहते हैं: शायद कूड़े के ढेर में गीली गंदगी थी और वह जगह नरम थी, इसलिए उन्हें डर था कि छींटें उन पर न पड़ें। ऐनी ने कहा: यह कहा गया है कि यह बात विचारणीय है क्योंकि खड़े रहने वाला व्यक्ति बैठने वाले की तुलना में इस डर के अधिक पात्र है। अल-तहावी ने कहा: ऐसा इसलिए है क्योंकि वह (जमीन) नरम है, इसलिए पेशाब उसमें उतर जाता है और पेशाब करने वाले की ओर वापस नहीं लौटता।" [उर्दू]: ऐनी ने कहा कि मुन्ज़िरी कहते हैं शायद ढेर में गीली नजासतें (गंदगियां) थीं और वे नरम थीं और आपको दूषित होने का डर हुआ। इमाम ऐनी फरमाते हैं कि यह कहा गया है कि यह बात बहस का विषय है क्योंकि खड़ा होने वाला बैठने वाले की तुलना में इस डर के अधिक योग्य है। इमाम तहावी फरमाते हैं कि ज़मीन के नरम होने के कारण पेशाब उसमें समा जाता है और पेशाब करने वाले की ओर वापस नहीं लौटता। (त)

[अरबी]: "मैं कहता हूँ: मुन्ज़िरी का ध्यान इस ओर इसलिए गया क्योंकि उन्हें छींटों के उड़ने का अधिक डर था। यदि उन्होंने वह कहा होता जो मैंने कहा, तो वे सुरक्षित रहते, क्योंकि यह गीली नजासतों का संग्रह हो सकता है जहाँ बैठने की कोई जगह न हो। फिर मैंने 'मिर्कात' में देखा जहाँ

उन्होंने कहा: सैय्यद जमालुद्दीन ने कहा: यह कहा गया है कि उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि जगह भरी होने के कारण उन्हें बैठने की जगह नहीं मिली।" [उर्दू]: मैं कहता हूँ: इमाम मुन्ज़िरी इस व्याख्या की ओर इसलिए मुड़े क्योंकि उन्होंने छींटों के उड़कर लगने का अधिक डर महसूस किया। अगर वे हमारी वाली बात कहते तो वे आपत्ति से बच जाते क्योंकि जहाँ गीली नजासतें जमा हों, वहाँ कभी-कभी बैठने की जगह नहीं होती। फिर मैंने 'मिर्कात' में देखा, 'मिर्कात' के लेखक कहते हैं कि सैय्यद जमालुद्दीन ने फरमाया है कि ऐसा कहा गया है...

---

1. अल-मुस्तदरक अलस सहीहैन, पेशाब करना खड़े होकर और बैठकर, दारुल फिक्र, बेरूत, लेबनान, 1/182; अस-सुनन अल-कुबरा लिल बैहकी, अध्याय खड़े होकर पेशाब करना, दार सादिर बेरूत, 1/101.
2. उम्दतुल क़ारी, अध्याय खड़े होकर और बैठकर पेशाब करना, इदारतुल तिबाअतुल मुनीरिया, बेरूत, 136/3.

وقد کان صلی اللہ تعالی علیہ وسلم ابعد الناس عنہ۔ لوگوں سے بڑھ کر اس سے پرہیز کرتے تھے۔ (ت)

دوم: اُس وقت زانوئے مبارک میں زخم تھا بیٹھ نہ سکتے تھے۔ یہ ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے مروی ہوا، حاکم و دار قطنی و بیہقی اُن سے راوی :

ان النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم بال قائما من جرح کان بمأبضہ 1 لکن ضعفہ ھذان وابن عساکر فی غرائب مالك وتبعھم الذھبی فقال منکر۔ نبی اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے اس زخم کی وجہ سے جو زانو کے اندرونی طرف تھا کھڑے ہو کر پیشاب فرمایا۔ لیکن ان دونوں (دارقطنی اور بیہقی) اور ابن عسا کر نے غرائب مالک میں اسے ضعیف قرار دیا اور ذہبی نے بھی ان کی اتباع کرتے ہوئے فرمایا یہ منکر ہے۔ (ت)

سوم: وہاں نجاست کے سبب بیٹھنے کی جگہ نہ تھی امام عبدالعظیم زکی الدین منذری نے اس کی ترجی کی۔

قال العینی قال المنذری لعلہ کانت فی السباطۃ نجاسات رطبۃ وھی رخوۃ فخشی ان یتطایر علیہ قال العینی قیل فیہ نظر لان القائم اجدر بھذہ الخشیۃ من القاعد وقال الطحاوی لکون ذلك سھلا ینحدر فیہ البول فلا یرتد علی البائل 2اھ عینی نے کہا منذری کہتے ہیں شاید ڈھیری میں تر نجاستیں تھیں اور وہ نرم تھیں اور آپ کو ملوث ہونے کا ڈر ہوا۔ امام عینی فرماتے ہیں کہا گیا ہے کہ یہ بات محلِ نظر ہے کیونکہ کھڑا ہونے والا بیٹھنے والے کی نسبت اس ڈر کے زیادہ لائق ہے۔ امام طحاوی فرماتے

ہیں زمین کے نرم ہونے کی وجہ سے پیشاب اس میں اُتر جاتا ہے اور پیشاب کرنے والے کی طرف نہیں لوٹتا اھ (ت)

اقول: انما اتجه هذا على المنذری لزيادته خشية التطاير ولوقال كما قلت لسلم فقد تكون مجمع نجاسات رطبة لا يوجد معها موضع جلوس ثم رأيت في المرقاة قال قال السيد جمال الدين قيل فعل ذلك لانه لم يجد مكانا للقعود لامتلاء الموضع اقول: امام منذری اس تاویل کی طرف اس لئے متوجہ ہوئے کہ انہوں نے چھینٹے اُٹھ کر لگنے کا زیادہ ڈر محسوس کیا اور وہ ہمارے والی بات کہتے تو وہ اعتراض سے بچ جاتے کیونکہ جہاں تر نجاستیں جمع ہوں وہاں بعض اوقات بیٹھنے کی جگہ نہیں ہوتی۔ پھر میں نے مرقاۃ میں دیکھا صاحبِ مرقاۃ فرماتے ہیں سید جمال الدین نے فرمایا کہا گیا ہے

---

1 المستدرك على الصحيحين البول قائما و قاعدا مطبوعہ دارالفكر بيروت لبنان ۱/۱۸۲ ، السنن الكبرى للبيہقی باب البول قائما مطبوعہ دار صادر بيروت ۱/۱۰۱ 2 عمدة القاری باب البول قائما و قاعدا مطبوعہ ادارۃ الطباعة المنير يہ بيروت ۳/۱۳۶

Fatawa Rizwia, Volume 4 ...with impurity. This is what I mentioned, and it is the correct point in the answer. You did this because the entire place was filled with impurity, so you did not find a place to sit. Thus, this is what I have mentioned and this is better for an answer. (T)

Fourth: The slope there was such that there was no opportunity to sit; this was narrated by al-Abhari and others.

Al-Ayni said: Some have said that he (may Allah's blessings and peace be upon him and his family) did not find a place to sit because the side next to the manure heap was high and elevated. Mulla Ali al-Qari said in al-Mirqat: Al-Abhari said: It is said that what was in front of him from the manure heap was high and behind it was a steep slope. If he had sat facing the manure heap, he would have fallen backward, and if he had sat with his back to it, his private parts would have been exposed to people. A few lines later, he said: It is said he did this because if he turned his back to the manure heap, his private parts would be exposed to passers-by, and if he faced it, there was a fear of falling on his back along with the possibility of urine splashing back towards him.

I say, firstly: In these additions, I have learned that standing was more appropriate. Secondly: If the side toward which he (may Allah's blessings and peace be upon him) faced was high and elevated, he would certainly not have chosen it due to the splashing back of urine; rather, the correct point in this is...

Footnotes: 1. Mirqat Sharh Mishkat, Book of Toilet Etiquettes, Second Section, published by Maktaba Imdadia Multan, 1/363. 2. Umdat al-Qari, Chapter on urinating standing and sitting, published by Idara al-Tiba'ah al-Munirah Beirut, 3/136. 3. Mirqat Sharh Mishkat, Book of Toilet Etiquettes, Second Section, published by Maktaba Imdadia Multan 1/363.

Page 593 of 761

फ़तावा रिज़विया, खंड 4 ...नजासत (अशुद्धि) के साथ। यही वह है जो मैंने उल्लेख किया है और उत्तर में यही सही है। आपने ऐसा इसलिए किया क्योंकि पूरी जगह नजासत से भरी होने के कारण आपको बैठने की जगह नहीं मिली। तो यह वह है जिसका मैंने उल्लेख किया है और उत्तर में यही बेहतर है। (त)

चौथा: उसमें ढलान ऐसी थी कि बैठने का कोई अवसर नहीं था, इसे अबहरी और अन्य लोगों ने उद्धृत किया है।

अल-ऐनी ने कहा: कुछ लोगों ने कहा है कि उन्होंने (अल्लाह उन पर और उनके परिवार पर कृपा और शांति बरसाए) बैठने के लिए कोई जगह नहीं पाई क्योंकि कूड़े के ढेर की बगल वाला हिस्सा ऊँचा और उठा हुआ था। मुल्ला अली क़ारी ने मिरक़ात में कहा: अबहरी कहते हैं कि कहा गया है कि उनके सामने वाला कूड़े का ढेर ऊँचा था और उसके पीछे ढलान थी। यदि वे ढेर की ओर मुँह करके बैठते तो पीछे की ओर गिर जाते और यदि पीठ फेरकर बैठते तो लोगों के सामने पर्दा (सत्र) खुल जाता। कुछ पंक्तियों के बाद कहा गया: कहा जाता है कि आपने ऐसा इसलिए किया कि यदि आप ढेर की ओर पीठ करते तो राहगीरों के सामने पर्दा खुल जाता और यदि उसकी ओर मुँह करते तो पीठ के बल गिरने का डर था और साथ ही पेशाब के वापस आने की संभावना भी थी। (त)

मैं कहता हूँ, पहले: इन सभी विवरणों से पता चला कि खड़ा होना अधिक उचित था। दूसरा: यदि उस ओर जहाँ आपका पवित्र चेहरा था, ऊँची जगह होती तो पेशाब के वापस आने के कारण आप इसे कदापि नहीं चुनते; बल्कि इसमें सही बात वही है जो...

पादलेख: 1. मिरक़ात शरह मिश्क़ात, बाब आदाब अल-ख़ला, दूसरा खंड, मुद्रित मकतबा इमदादिया मुल्तान, 1/363। 2. उम्दत अल-क़ारी, बाब अल-बौल क़ाइमन व क़ा'इदन, मुद्रित इदारा अत-तिबा'ह अल-मुनीरा बेरूत, 3/136। 3. मिरक़ात शरह मिश्क़ात, बाब आदाब अल-ख़ला, दूसरा खंड, मुद्रित मकतबा इमदादिया मुल्तान 1/363।

पृष्ठ 593/761

فتاوی رضویہ، جلد چہارم بالنجاسة 1اھ فهذا مأذكرت وهو الصواب في الجواب۔ آپ نے ایسا اس لئے کیا کہ تمام جگہ نجاست سے بھری ہونے کی وجہ سے آپ کو بیٹھنے کی جگہ نہ ملی اھ پس یہ ہے جو کچھ میں نے ذکر کیا اور جواب میں یہی بہتر ہے۔ (ت)

چہارم: اس میں ڈھال ایسا تھا کہ بیٹھنے کا موقع نہ تھا اسے ابہری وغیرہ نے نقل کیا۔

قال العینی قال بعضهم لانه صلی الله تعالی علیه وآله وسلم لم یجد مکاناً للقعود لکون الطرف الذی یلیه من السباطة علیاً مرتفعاً 2اھ وقال القاری في المرقاة قال الابهری قیل کان مایقابله من السباطة عالیاً ومن خلفه منحدرا مستقلا لوجلس مستقبل السباطة سقط الی خلفه ولوجلس مستدبرا لها بدا عورته للناس اه وقال بعد اسطر قیل فعل ذلك لانه ان استدبر للسباطة تبدو العورة للمارة وان استقبلها خیف ان یقع علی ظهره مع احتمال ارتداد البول الیه 3اھ۔ عینی نے فرمایا بعض نے کہا ہے کہ نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے بیٹھنے کے لئے جگہ نہ پائی کیونکہ جس طرف آپ تھے ادھر سے ڈھیر بلند تھا۔ حضرت ملا علی قاری رحمہ اللہ نے مرقات میں فرمایا ابہری فرماتے ہیں کہا گیا ہے کہ آپ کے سامنے کی طرف ڈھیر بلند تھا اور پچھلی جانب جھکا ہوا پست تھا اگر ڈھیر کی طرف منہ کر کے بیٹھتے تو پیچھے کی طرف گر پڑتے اور ادھر پیٹھ کر کے بیٹھتے تو لوگوں کے سامنے ستر ننگا ہوتا اھ چند سطروں کے بعد فرمایا کہا گیا ہے آپ نے ایسا اس لئے کیا کہ اگر ڈھیر کی طرف پیٹھ کرتے تو گزرنے والوں کے سامنے ستر ننگا ہوتا اور اگر منہ ادھر کرتے تو پیٹھ کے بل گرنے کا ڈر تھا اور اس کے ساتھ ساتھ آپ کی جانب پیشاب کے لوٹنے کا احتمال بھی تھا اھ (ت)

اقول اولاً : في هذه الزیادة مأعلمت ان القائم اجدر به۔ وثانیاً: لوکان مایستقبله صلی الله تعالی علیه وسلم منها عالیاً مرتفعاً لم یکن ان یختاره لهذا الارتداد البول ح قطعاً بل الصواب فیه اقول اول: ان تمام اضافوں سے معلوم ہوا کہ کھڑا ہونا زیادہ مناسب تھا۔ دوم: اگر اس جانب جدھر آپ کا چہرہ مبارک

تھا بلند جگہ ہوتی پیشاب کے لوٹنے کی وجہ سے آپ اسے قطعاً اختیار نہ فرماتے بلکہ اس میں بہتر بات وہی ہے جو

1 مرقاۃ شرح مشکوۃ باب آداب الخلاء فصل ثانی مطبوعہ مکتبہ امدادیہ ملتان، ۱/۳۶۳ 2 عمدۃ القاری، باب البول قائماً و قاعداً، مطبوعہ ادارۃ الطباعۃ المنیرۃ بیروت، ۳/۱۳۶ 3 مرقاۃ شرح مشکوۃ باب آداب الخلاء فصل ثانی مطبوعہ مکتبہ امدادیہ ملتان ۱/۳۶۳

What Ibn Hibban said, as quoted from him in Fath al-Bari, is that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) did not find a suitable place to sit, so he stood because the side of the rubbish heap next to him was high. Thus, he was safe from any urine splashing back on him. End of quote. So he considered the place he stood on to be high and what was opposite to it to be sloping, making it the reason for safety from urine splashback. Thus, the matter became reversed for the one who quoted from Al-Abhari, as he made the place he stood on sloping and what was opposite to it high, making it the reason for fear of falling while sitting, even though it is also like that while standing, except rarely.

If you say: This objection also applies to Ibn Hibban, as the difference in such a case between standing and sitting is not apparent, because if the slope is such that the sitter cannot remain stable on it, then the stander is also like that.

I say: Yes, it may be shaped like a triangle with a thin edge on which the stander can remain stable if he places the middle of his feet on it due to the balance of weight on both sides, unlike the sitter, for whom there is no place to rest except for his feet and shins, while there is nothing to carry the weight of the rest of his body. (T)

---

1. Fath al-Bari, Chapter: Urinating near a people's rubbish heap, published by Mustafa al-Babi, Egypt, 1/343. Page 594 of 761

इब्न हिब्बान ने जैसा कहा, जैसा कि फ़तह अल-बारी में उनसे उद्धृत किया गया है कि नबी-ए-करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को बैठने के लिए कोई उपयुक्त जगह नहीं मिली, इसलिए वह खड़े हो गए क्योंकि उनके पास का कचरे का ढेर ऊँचा था। अतः वह पेशाब के वापस आने के खतरे से सुरक्षित हो गए। (अंत)। तो उन्होंने खड़े होने की जगह को ऊँचा और सामने वाली जगह को ढलान वाली माना और इसे पेशाब के वापस न आने का कारण बताया। तो मामला उस व्यक्ति के विपरीत हो गया जिससे अल-अबहरी ने उद्धृत किया, क्योंकि उसने खड़े होने की जगह को ढलान वाली और सामने वाली जगह को ऊँचा माना और इसे बैठने की स्थिति में गिरने के डर का कारण बताया, हालांकि खड़े होने की स्थिति में भी अक्सर ऐसा ही होता है।

अगर आप कहें: यह आपत्ति इब्न हिब्बान पर भी लागू होती है, क्योंकि ऐसी स्थिति में खड़े होने और बैठने के बीच का अंतर स्पष्ट नहीं होता, क्योंकि यदि ढलान ऐसी है कि बैठने वाला उस पर स्थिर नहीं रह सकता, तो खड़े होने वाला भी वैसा ही होगा।

मैं कहता हूँ (अकूल): हाँ, कभी-कभी यह एक त्रिकोणीय आकार में होता है जिसके किनारे पतले होते हैं, जिस पर खड़ा होने वाला व्यक्ति स्थिर रह सकता है यदि वह अपने पैरों के मध्य भाग को उस पर रखता है, क्योंकि दोनों तरफ वजन संतुलित होता है, बैठने वाले के विपरीत, जिसके लिए बैठने के लिए केवल पैर और पिंडलियां ही जगह हैं, जबकि शरीर के बाकी हिस्से का वजन उठाने के लिए कुछ भी नहीं है। (त)

---

1. फ़तह अल-बारी, अध्याय: कौम के कचरे के ढेर के पास पेशाब करना, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र द्वारा प्रकाशित, 1/343। पृष्ठ 761 का 594

ماقال ابن حبان کما نقل عنہ فی فتح الباری انہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم لم یجد مکانا یصلح للقعود فقام لکون الطرف الذي یلیه من السباطة کان عالیا فأمن ان یرتد الیه شیئ من بوله اھ فجعل ماقام علیه عالیا ومایقابله منحدرا وجعله سبب الامن من ارتداد البول فأنقلب الامر علی من نقل عنه الابھری فجعل ماقام علیه منحدرا ومایقابله عالیا وجعله سبب خوف السقوط فی القعود مع انه کذلك فی القیام الانادرا۔ ابن حبان نے کہی ہے جیسا کہ فتح الباری میں ان سے نقل کیا گیا کہ نبی اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے بیٹھنے کیلئے مناسب جگہ نہ پائی تو کھڑے ہوئے کیونکہ آپ کے سامنے سے ڈھیر بلند تھا پس آپ پیشاب لوٹنے کے خطرہ سے بے خوف ہو گئے اھ پس انہوں نے کھڑے ہونے کی جگہ کو بلند قرار دیا اور سامنے کی جگہ کو پست قرار دیا اور اسے پیشاب کے لوٹنے سے امن کا باعث خیال کیا تو معاملہ اس شخص کے خلاف ہو گیا جس سے ابہری نے نقل کیا کیونکہ اس نے کھڑے ہونے کی جگہ کو پست اور مقابل کی جگہ کو بلند قرار دیا اور اسے بیٹھنے کی صورت میں گرنے کے ڈر کا باعث قرار دیا حالانکہ اکثر کھڑے ہونے کی صورت میں بھی اسی طرح ہوتا ہے۔

فان قلت ھذا یرد علی ابن حبان ایضا اذ لایظھر الفرق فی مثله بین القیام والقعود لان الصبب اذا کان بحیث لایستقر علیه القاعد فکذا القائم۔ اگر تم کہو کہ یہ اعتراض ابن حبان پر بھی ہوتا ہے کیونکہ ایسی صورت میں کھڑے ہونے اور بیٹھنے میں فرق ظاہر نہیں ہوتا کیونکہ جب نشیبی جگہ ایسی صورت میں ہو کہ وہاں بیٹھنے والا نہ ٹھہر سکے تو کھڑا ہونے والا بھی اسی طرح ہوگا۔

اقول: ببلی قد تکون کھیأة مثلث له حرف دقیق یستقر علیه القائم اذا وضع علیه وسط قدمیه لاعتدال الثقل فی الجانبین بخلاف القاعد فانه لامستقر علیه الالقدمیه وساقیه وثقل سائر جسمه لاحامل له۔ اقول: (میں کہتا ہوں) ہاں کبھی وہ تکونی شکل میں ہوتی ہے اس کے کنارے باریک ہوتے ہیں اگر کھڑا

ہونے والا اس پر قدم کا درمیانہ حصہ رکھے تو وہ ٹھہر سکتا ہے کیونکہ دونوں طرف بوجھ برابر ہوتا ہے بخلاف بیٹھنے والے کے، کیونکہ اس کے لئے تو صرف پاؤں اور پنڈلیوں کے ٹھہرنے کی جگہ ہے جبکہ باقی جسم کے بوجھ کو اٹھانے والی کوئی چیز نہیں۔ (ت)

---

1. فتح الباری باب البول عند سباطۃ قوم مطبوعہ مصطفیٰ البابی مصر ۱ / ۳۴۳ صفحہ 594 از 761

Fatawa Ridawiyya Volume 4 Fifthly: At that time, there was pain in the blessed back, and according to the Arabs, this act [urinating while standing] is a means of seeking a cure for it. This is the response from Imam Shafi'i and Imam Ahmad (may Allah be pleased with them both). Forty physicians agree that doing this in a bathhouse is a medicine for seventy diseases.

[Arabic Source Text] | [Urdu Translation and Explanation] - It was mentioned by al-Qari from Zayn al-Arab from Hujjat al-Islam. | Mulla Ali Qari mentioned this from Zayn al-Arab, who mentioned it from Hujjat al-Islam. - Al-Ayni said: Al-Shafi'i said when Hafs al-Fard asked him about the benefit of urinating while standing, "The Arabs seek cure for back pain by urinating while standing, so we see that he [the Prophet] had it at that time." | Imam Ayni says: When Hafs al-Fard asked Imam Shafi'i about the benefit of urinating while standing, he replied in response: "Arab people treat back pain by urinating while standing, so it is our view that the Messenger (peace be upon him) had this ailment at that time." (End of quote) - 1. And in Fath al-Bari, it is narrated similarly from al-Shafi'i and Ahmad. Al-Ayni said: "I say that the recently mentioned narration of Abu Hurayrah (may Allah be pleased with him) clarifies this." 2. (End of quote) | And in Fath al-Bari, it is mentioned similarly from Imam Shafi'i and Imam Ahmad (may Allah have mercy on them). Imam Ayni says: "I say the narration of Hazrat Abu Hurayrah (may Allah be pleased with him) that just passed clarifies this." (End of quote) (T) - I say: I do not know what this is. Where is the act of seeking cure from an illness intentionally, without being compelled, in comparison to doing it despite a lack of choice due to necessity? | I say: I do not know what this is. What status does choosing an action for the sake of cure from a disease without any compulsion have in comparison to your act where you did not choose it despite necessity? (T)

Sixthly: Al-Mazari claimed in 'Kitab al-Ilm' that he did that because it is a state in which one is safe from the exit of impurity from the other passage, unlike while sitting. From this is the saying of Umar (may Allah be pleased with him): "Urinating while standing is better for the posterior." 3. (End of quote). It was narrated in al-Umdah; al-Asqalani added: "He did that because it was close [at hand]." | Sixthly: Mazari expressed this view in 'Kitab al-Ilm' that this action of yours was because in this state there is no fear of impurity (gas etc.) exiting from the other passage, unlike while sitting. In this context, there is also the saying of Hazrat Umar (may Allah be

pleased with him) that urinating while standing protects the posterior. This was quoted in al-Umdah; Imam Asqalani [reported it].

1. Umdat al-Qari, Chapter on urinating standing and sitting, printed by Idara al-Tiba'ah al-Muniriyyah, Beirut, 136/3
2. Umdat al-Qari, Chapter on urinating standing and sitting, printed by Idara al-Tiba'ah al-Muniriyyah, Beirut, 136/3
3. Umdat al-Qari, Chapter on urinating standing and sitting, printed by Idara al-Tiba'ah al-Muniriyyah, Beirut, 136/3 Page 595 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द 4 पांचवां: उस समय पवित्र पीठ में दर्द था और अरबों के नज़दीक यह कार्य उससे स्वास्थ्य लाभ पाने का एक ज़रिया है। यह इमाम शाफ़ई और इमाम अहमद (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) का उत्तर है। चालीस हकीमों का इस बात पर इत्तेफ़ाक़ (सहमति) है कि स्नानगृह में ऐसा करना सत्तर बीमारियों की दवा है।

[अरबी स्रोत पाठ] | [उर्दू अनुवाद और व्याख्या] - इसे अल-क़ारी ने ज़ैन अल-अरब से और उन्होंने हुज्जतुल इस्लाम से उल्लेख किया है। | मुल्ला अली क़ारी ने ज़ैन अल-अरब से और उन्होंने हुज्जतुल इस्लाम से यह उल्लेख किया। - अल-ऐनी ने कहा: अल-शाफ़ई ने कहा जब हफ़्स अल-फ़र्द ने उनसे खड़े होकर पेशाब करने के फायदे के बारे में पूछा, "अरबी लोग खड़े होकर पेशाब करने से पीठ के दर्द का इलाज करते हैं, इसलिए हम देखते हैं कि उस समय उन्हें यह [दर्द] था।" | इमाम ऐनी फरमाते हैं कि जब हफ़्स अल-फ़र्द ने इमाम शाफ़ई से खड़े होकर पेशाब करने का फायदा पूछा, तो उन्होंने जवाब में फ़रमाया: अरबी लोग खड़े होकर पेशाब करने से पीठ के दर्द का इलाज करते हैं, इसलिए हमारा विचार है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को उस समय यही तकलीफ़ थी। (समाप्त) - 1. और 'फ़तह अल-बारी' में इमाम शाफ़ई और अहमद से इसी तरह वर्णित है। अल-ऐनी ने कहा: "मैं कहता हूँ कि अभी पहले ज़िक्र की गई हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) की हदीस इसकी व्याख्या करती है।" 2. (समाप्त) | और 'फ़तह अल-बारी' में इमाम शाफ़ई और इमाम अहमद (अल्लाह उन पर रहम करे) से इसी तरह ज़िक्र है, इमाम ऐनी फरमाते हैं: "मैं कहता हूँ कि अभी गुज़री हुई हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) की रिवायत इसकी वज़ाहत (व्याख्या) करती है।" (समाप्त) (त) - मैं कहता हूँ: मुझे नहीं पता कि यह क्या है। बीमारी से शिफ़ा के लिए जानबूझकर बिना किसी मजबूरी के किसी कार्य को चुनना, मजबूरी के कारण बेबसी में उसे चुनने की तुलना में क्या स्थिति रखता है? | मैं कहता हूँ: मुझे नहीं पता कि यह क्या है। बीमारी से शिफ़ा के लिए जानबूझकर बिना किसी मजबूरी के किसी कार्य को चुनने की तुलना में क्या स्थिति है कि आपने मजबूरी के बावजूद उसे नहीं चुना। (त)

छठा: अल-माज़री ने 'किताब अल-इल्म' में यह दावा किया कि उन्होंने ऐसा किया क्योंकि यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें दूसरे रास्ते से 'हदस' (हवा आदि) निकलने का डर नहीं होता, बैठने के विपरीत। इसमें हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) का कथन भी शामिल है: "खड़े होकर पेशाब करना मलाशय के लिए बेहतर है।" 3. (समाप्त)। इसे 'उम्दत' में उद्धृत किया गया है; अल-असक़लानी ने जोड़ा: "उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह [स्थान] निकट था।" | छठा: माज़री ने 'किताब अल-इल्म' में

यह विचार व्यक्त किया कि आपका यह कार्य इसलिए था क्योंकि इस सूरत में दूसरे रास्ते से 'हदस' (हवा वगैरह) निकलने का डर नहीं होता, बैठने के बरअक्स (विपरीत)। इसी सिलसिले में हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) का कौल (कथन) भी है कि खड़े होकर पेशाब करना मलाशय को सुरक्षित रखता है। इसे 'उम्दत' में नक़ल किया गया है; इमाम असक़लानी ने इसका उल्लेख किया है।

1. उम्दतुल क़ारी, खड़े और बैठकर पेशाब करने का अध्याय, मुद्रित इदारा अल-तिबा'ह अल-मुनीरिय्या, बेरूत, 136/3
2. उम्दतुल क़ारी, खड़े और बैठकर पेशाब करने का अध्याय, मुद्रित इदारा अल-तिबा'ह अल-मुनीरिय्या, बेरूत, 136/3
3. उम्दतुल क़ारी, खड़े और बैठकर पेशाब करने का अध्याय, मुद्रित इदारा अल-तिबा'ह अल-मुनीरिय्या, बेरूत, 136/3 पृष्ठ 595/761

فتاوی رضویہ جلد چہارم پنجم: اس وقت پشت مبارک میں درد تھا اور عرب کے نزدیک یہ فعل اس سے استشفاء ہے۔ یہ جواب امام شافعی و امام احمد رضی اللہ تعالیٰ عنہما کا ہے۔ چالیس طبیبوں کا اتفاق ہے کہ حمام میں ایسا کرنا ستر مرض کی دوا ہے،

ذکرہ القاری عن زین العرب عن حجۃ الاسلام | ملا علی قاری نے زین العرب سے انہوں نے حجۃ الاسلام سے یہ ذکر کیا۔

قال العینی قال الشافعی لما سألہ حفص الفرد عن الفائدہ فی بولہ قائماً العرب تستشفی لوجع الصلب بالبول قائماً فنری انہ کان بہ اذ ذاك | امام عینی فرماتے ہیں امام شافعی سے جب حفص فرد نے کھڑے ہو کر پیشاب کرنے کا فائدہ پوچھا تو انہوں نے جواباً فرمایا عربی لوگ کھڑے ہو کر پیشاب کرنے سے پیٹھ کے درد کا علاج کرتے ہیں پس ہمارا خیال ہے کہ حضور علیہ السلام کو اس وقت یہی تکلیف تھی اھ

[1]اھ و فی فتح الباری روی عن الشافعی واحمد فذکر نحوہ قال العینی قلت یوضح ذلك حدیث ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالی عنہ المذکور انفاً [2]اھ | اور فتح الباری میں امام شافعی اور امام احمد رحمہما اللہ سے اسی طرح مذکور ہے، امام عینی فرماتے ہیں میں کہتا ہوں ابھی گزرنے والی حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ کی روایت اس کی وضاحت کرتی ہے اھ (ت)

اقول : لادری ما ھذا فاین فعل شیئ للاستشفاء من مرض قصدا غیر مضطر الیہ من فعلہ مع عدم الاختیار لاجل الاضطرار۔ | اقول : میں نہیں جانتا کہ یہ کیا ہے آپ کا کسی عمل کو کسی مجبوری کے بغیر قصداً بیماری سے شفاء کے لئے اختیار کرنا اس کے مقابلے میں کیا حیثیت رکھتا ہے کہ آپ نے اضطرار کے باوجود اسے اختیار نہ کیا۔ (ت)

ششم: زعم المارزی فی کتاب العلم فعل ذلک لانها حالة یؤمن فیها خروج الحدث من السبیل الآخر بخلاف القعود ومنه قول عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ البول قائماً احسن للدبر [3]اھـ نقله فی العمدة زاد العسقلانی ففعل ذلك لكونه قريباً | ششم : مارزی نے کتاب العلم میں یہ خیال ظاہر کیا کہ آپ کا یہ عمل اس لئے تھا کہ اس صورت میں دوسرے راستے سے حدث (ہوا وغیرہ) نکلنے کا خوف نہیں ہوتا۔ بخلاف بیٹھنے کے۔ اسی سلسلے میں حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا قول بھی ہے کہ کھڑے ہو کر پیشاب کرنا دبر کو محفوظ رکھتا ہے اھ، اسے عمدة میں نقل کیا امام عسقلانی

1 عمدة القاری باب البول قائماً و قاعداً مطبوعہ ادارة الطباعة المنیریة بیروت ۱۳۶/۳ 2 عمدة القاری باب البول قائماً و قاعداً مطبوعہ ادارة الطباعة المنیریة بیروت ۱۳۶/۳ 3 عمدة القاری باب البول قائماً و قاعداً مطبوعہ ادارة الطباعة المنیریة بیروت ۱۳۶/۳ Page 595 of 761

Fatawa Rizwia - Volume 4

...from the houses [close to houses]. End quote. I say: I find such rationalizations regarding the actions of the Prophet (Peace and blessings of Allah be upon him) distasteful, as Allah the Almighty protected him from everything that is considered unseemly. (T) Seventh: Al-Ayni said, they (the scholars of Hadith) discussed the reason for the Prophet (Peace and blessings of Allah be upon him) urinating while standing. Qadi Iyad (may Allah have mercy on him) said he did so because he was occupied with the affairs of the Muslims; perhaps the gathering lasted so long that he was pressed to urinate and it was not possible for him to go far away according to his habit. He intended for the 'subata' (rubbish heap) because of its softness [of the ground], and he had Hudhayfah stand to screen him from people. End quote. (T) I say: What connection does this have to being the reason for the action [of urinating] while standing? Rather, it is the reason for his (Peace and blessings of Allah be upon him) leaving off going to the usual distance. This was mentioned in Fath al-Bari. This explanation needs, for its fortification, to be joined with what al-Maziri mentioned, otherwise it becomes invalid, just as what al-Maziri mentioned needs to be joined with this for its support, as Ibn Hajar did, otherwise it remains weak. (T)

1. Fath al-Bari, Chapter of Urinating at the Rubbish Heap of a People, published by Mustafa al-Babi Egypt, 1/324.
2. Umdat al-Qari, Chapter of Urinating Standing and Sitting, published by Idarat al-Tiba'at al-Muniriyya Beirut, 3/126. Page 596 of 761

फ़तावा रिज़विया - खंड 4

...बस्तियों से [घरों के करीब होने के कारण]। (समाप्त) मैं कहता हूँ: पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के कार्यों के बारे में इस तरह के तर्क देना मुझे बहुत बुरा लगता है, क्योंकि अल्लाह सर्वशक्तिमान ने उन्हें हर उस चीज़ से सुरक्षित रखा है जिसे घृणित माना जाता है। (टी) सातवाँ: अल-ऐनी ने कहा, (हदीस विद्वानों ने) पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के खड़े होकर पेशाब करने के कारण के बारे में चर्चा की। काजी अयाज़ (रहमतुल्लाह अलैहि) ने कहा कि उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वे मुसलमानों के मामलों में व्यस्त थे; शायद बैठक इतनी लंबी हो गई कि पेशाब ने उन्हें रोक दिया और अपनी आदत के अनुसार दूर जाना उनके लिए संभव नहीं रहा। उन्होंने कचरे के ढेर ('सुबाता') का इरादा किया क्योंकि वह जगह नरम थी, और उन्होंने हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) को खड़ा किया ताकि लोगों से पर्दा रहे। (समाप्त) (टी) मैं कहता हूँ: खड़े होकर पेशाब करने के कारण के साथ इसका क्या संबंध है? बल्कि, यह पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) द्वारा सामान्य दूरी तक जाने को छोड़ने का कारण है। इसे उन्होंने फतह अल-बारी में उल्लेख किया है। अत; अपनी मजबूती के लिए इसे अल-माज़िरी द्वारा उल्लेखित बातों के साथ जोड़ने की आवश्यकता है, अन्यथा यह निरर्थक हो जाएगा, ठीक उसी तरह जैसे अल-माज़िरी द्वारा उल्लेखित बात को इसके साथ जोड़ने की आवश्यकता है, जैसा कि इब्न हज़र ने किया, अन्यथा वह कमजोर रह जाएगा। (टी)

1. फतह अल-बारी, लोगों के कचरे के ढेर पर पेशाब करने का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र द्वारा प्रकाशित, 1/324।
2. उमदत अल-क़ारी, खड़े होकर और बैठकर पेशाब करने का अध्याय, इदारात अल-तिबाअत अल-मुनीरिया बेरूत द्वारा प्रकाशित, 3/126। पृष्ठ 596 का 761

نے اضافہ کیا کہ آپ نے یہ اس لئے کیا کہ آپ گھروں کے زیادہ قریب تھے اھ۔ (ت) اقول: نبی اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے افعال مبارکہ کی ایسی توجیہات کو میں نہایت بد ذوقی سمجھتا ہوں اللہ تعالٰی نے آپ کو ہر اس چیز سے محفوظ فرمایا جسے قبیح سمجھا جاتا ہے۔ (ت) ہفتم: (محدثین نے) نبی اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے کھڑے ہو کر پیشاب کرنے کے بارے میں گفتگو کی ہے قاضی عیاض رحمہ اللہ نے فرمایا آپ نے ایسا اس لئے کیا کہ آپ مسلمانوں کے کاموں میں مشغول تھے اور ممکن ہے مجلس طویل ہو گئی حتی کہ پیشاب نے آپ کو روک دیا اور عادت کے مطابق آپ کے لئے دور جانا ممکن نہ ہوا اور آپ نے (کوڑے کرکٹ کے) ڈھیر کا ارادہ فرمایا کیونکہ وہ جگہ نرم تھی اور حضرت حذیفہ رضی اللہ عنہ کو کھڑا کیا تاکہ لوگوں سے پردہ ہو اھ (ت) اقول: یہ بات کھڑے ہو کر پیشاب کرنے کا سبب کیسے بن گئی یہ تو نبی اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے عادت کے مطابق دُور جانے کو چھوڑنے کی وجہ ہے۔ اسے انہوں نے فتح الباری میں ذکر کیا ہے پس یہ اپنی مضبوطی کے لئے اس بات کا محتاج ہے کہ جو کچھ مارزی نے ذکر کیا اسے بھی اس کے ساتھ ملا لیا جائے ورنہ یہ باطل ہو جائیگا جیسا کہ مارزی کا ذکر کردہ قول اپنی تائید کے لئے اس کے ملانے کا محتاج ہے جیسا کہ ابن حجر نے کیا ورنہ وہ کمزور رہ جائیگا۔ (ت)

1 فتح الباری باب البول عند سباطۃ قوم مطبوعہ مصطفٰی البابی مصر، ۱/ ۳۲۴ 2 عمدۃ القاری باب البول قائماً وقاعداً مطبوعہ ادارۃ الطباعۃ المنیریۃ بیروت ۳/۱۲۶ صفحہ 596 از 761

Eighth: Abu al-Qasim Abdullah ibn Ahmad ibn Mahmud al-Balkhi stated in his book titled "Qabul al-Akhbar wa Ma'rifat al-Rijal" that this narration from Hazrat Hudhayfah (may Allah be pleased with him) is abominable and rejected (munkar); it is only reported by some heretics (zanadiqa). Imam al-Ayni, after quoting this, says: "This is evil speech, not worthy of being heard, while the hadith is perfectly authentic (sahih)." After mentioning the narration of Hudhayfah, Mullah Ali Qari says: "It is agreed upon (muttafaq alayh)." The Shaykh states: "If this hadith were proven authentic, it would make the previous explanations unnecessary. However, Al-Daraqutni and Al-Bayhaqi have classified it as weak (da'if). The more apparent view is that he (the Prophet) did so to demonstrate permissibility." This was reported by al-Abhari.

I say (Aqul): The Shaykh refers to Imam Ibn Hajar al-Asqalani, and he made this statement regarding the previous hadith of Abu Hurayrah (may Allah be pleased with him). Thus, I do not know from whom this confusion originated, whether from al-Abhari or from Mullah Ali Qari. (T)

I say (Aqul), and success is through Allah: This act occurred once from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). It is established through authentic hadiths that from the day the Holy Quran was revealed until the end of his holy life, his blessed habit was always to urinate while sitting. It is also proven through authentic hadiths that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) described urinating while standing as a sign of harshness and disrespect. Prohibition and restriction have come in numerous hadiths. Therefore, it is obligatory that it be considered prohibited, and those (prohibitory) hadiths should be given preference over this (one instance) for several reasons:

Firstly: That was a one-time incident that is subject to a hundred different interpretations.

---

1 Umdat al-Qari, Chapter on Urinating Standing and Sitting, published by Idarat al-Tiba'at al-Muniriyya, Beirut, 3/136. 2 Mirqat Sharh al-Mishkat, Chapter on Manners of the Toilet, Second Section, published by Maktabah Imdadiyya, Multan, 1/363.

आठवां: अबू अल-क़ासिम अब्दुल्ला इब्न अहमद इब्न महमूद अल-बल्ख़ी ने अपनी पुस्तक "क़बूल अल-अख़बार व मारिफत अल-रिजाल" में कहा कि हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) की यह रिवायत घृणित और अस्वीकार्य (मुनकर) है; इसे केवल कुछ पाखंडी (ज़िंदीक़) बयान करते हैं। इमाम अल-ऐनी ने इसे उद्धृत करने के बाद कहा: "यह बुरा कलाम है, इसे सुनना सही नहीं है, जबकि हदीस पूरी तरह से सही (सहीह) है।" मुल्ला अली क़ारी ने हुज़ैफ़ा की रिवायत का उल्लेख करने के बाद कहा है कि यह 'मुत्तफ़क़ अलैह' (सर्वसम्मत) है। शेख कहते हैं: "यदि यह हदीस सही प्रमाणित होती, तो यह पहले के बयानों से बेनियाज़ी (अनावश्यकता) पैदा करती। लेकिन अल-दारक़ुत्नी और अल-बैहक़ी ने इसे कमज़ोर (ज़ईफ़) करार दिया है। अधिक स्पष्ट बात यह है कि आपने (नबी ने) अनुमति दर्शाने के लिए ऐसा किया था।" इसे अल-अबहरी ने उद्धृत किया है। (त)

मैं कहता हूँ (अक़ूल): शेख से तात्पर्य इमाम इब्न हजर अल-अस्क़लानी से है और उन्होंने यह बात हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) की पिछली हदीस के बारे में कही है। अत; मैं नहीं जानता कि यह भ्रम किससे हुआ, अल-अबहरी से या मुल्ला अली क़ारी से। (त)

मैं कहता हूँ (अक़ूल), और सफलता अल्लाह के माध्यम से है: नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से यह कृत्य एक बार घटित हुआ। सही हदीस से प्रमाणित है कि क़ुरान करीम के अवतरण के दिन से लेकर पवित्र जीवन के अंत तक, आपकी मुबारक आदत हमेशा बैठकर ही पेशाब करने की थी। और सही हदीस से यह भी प्रमाणित है कि हुज़ूर अक़दस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने खड़े होकर पेशाब करने को कठोरता और अशिष्टता बताया। अनेक हदीसों में इसकी मनाही और निषेध आया है। अत; यह अनिवार्य है कि इसे वर्जित माना जाए और उन (निषेधात्मक) हदीसों को इन पर प्राथमिकता दी जाए, इसके कई कारण हैं:

पहला: वह एक बार की घटना है जो सैकड़ों संभावित व्याख्याओं के अधीन है।

---

1 उम्दत अल-क़ारी, खड़े और बैठकर पेशाब करने का अध्याय, मुद्रित इदारात अल-तिबा'त अल-मुनीरिया, बेरुत, 3/136। 2 मिरक़ात शरह अल-मिश्क़ात, शौचालय के शिष्टाचार का अध्याय, दूसरा भाग, मुद्रित मकतबा इमदादिया, मुल्तान, 1/363।

هشتم: قال ابوالقاسم عبدالله بن احمد بن محمود البلخی فی کتابه المسمی بقبول الاخبار ومعرفة الرجال حدیث حذیفة هذا فاحش منکر لانراه الامن قبل بعض الزنادقة قال الامام العینی بعد نقله هذا کلام سوء لایساوی سماعه وهو فی غایة الصحة اهـ ووقع للقاری عقب ذکر حدیث الحذیفة وانه متفق علیه قال الشیخ لو صح هذا الحدیث لکان فیه غنی عن جمیع ما تقدم لکن ضعفه الدارقطني والبیهقی والاظهر انه فعل ذلك لبیان الجواز نقله الابهری اهـ

هشتم: ابو القاسم عبد اللہ بن احمد بن محمود بلخی نے اپنی کتاب مسمیٰ "قبول الاخبار ومعرفة الرجال" میں فرمایا کہ حضرت حذیفہ رضی اللہ عنہ کی یہ روایت قبیح منکر ہے یہ بعض زندیق بیان کرتے ہیں امام عینی اسے نقل کرنے کے بعد فرماتے ہیں یہ بُرا کلام ہے اسے سننا صحیح نہیں جبکہ حدیث بالکل صحیح ہے اھ حضرت ملّا علی قاری روایت حذیفہ ذکر کرنے کے بعد فرماتے ہیں یہ متفق علیہ ہے۔ شیخ فرماتے ہیں اگر یہ حدیث صحیح ثابت ہو تو اس میں پہلے بیان سے بے نیازی ہوگی۔ لیکن دار قطنی اور بیہقی نے اسے ضعیف قرار دیا ہے۔ زیادہ ظاہر یہ ہے کہ آپ نے بیانِ جواز کے لئے ایسا کیا، اسے ابہری نے نقل کیا اھ (ت)

اقول: الشیخ هو الامام ابن حجر العسقلانی وانما قال هذا فی حدیث ابی هریرة المار فلا ادری ممن وقع هذا التخلیط من الابهری اومن القاری۔

اقول: شیخ سے مراد امام ابن حجر عسقلانی ہیں اور انہوں نے یہ بات حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ کی گزشتہ حدیث کے بارے میں کہی ہے، پس میں نہیں جانتا کہ یہ گڑبڑ کس سے واقع ہوئی، ابہری سے یا ملّا علی قاری سے۔ (ت)

اقول: وباللہ التوفیق (میں اللہ تعالیٰ کی توفیق سے کہتا ہوں) نبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے ایک بار یہ فعل وارد ہوا اور صحیح حدیث سے ثابت کہ روزِ نزولِ قرآن کریم سے آخر عمر اقدس تک عادت کریمہ ہمیشہ بیٹھ ہی کر پیشاب فرمانے کی تھی اور صحیح حدیث سے ثابت ہوا کہ حضور اقدس صلی اللہ علیہ وسلم نے کھڑے ہو کر پیشاب کرنے کو جفا وبے ادبی فرمایا اور متعدد احادیث میں اس سے نہی وممانعت آئی تو واجب کہ ممنوع ہو اور انہیں احادیث کو ان پر ترجیح ہو وجوہِ ہو:

اولاً: وہ ایک بار کا واقعہ حال ہے کہ صد گونہ احتمال ہے۔

---

1 عمدۃ القاری باب البول قائماً وقاعداً مطبوعہ ادارۃ الطباعۃ المنیریہ بیروت ۳/ ۱۳۶ 2 مرقاۃ شرح مشکوۃ باب آداب الخلاء فصل ثانی مطبوعہ مکتبہ امدادیہ ملتان ۱/ ۳۶۳

Secondly: When there is a conflict between action and speech, speech is obligatory to follow because an action may have specific contexts or interpretations. Thirdly: When permissible and prohibited conflict, prohibition takes precedence. Then I say: (Then I say. T) The Hadith of Hudhayfah (may Allah be pleased with him) itself is a rebuttal to those followers of Christianity. There was sufficient height there, and the slope below and the ground were soft due to manure, so there was no possibility of splashes. There was a wall in front, and the manure was in the courtyard of a house, not a thoroughfare. Hudhayfah (may Allah be pleased with him) was made to stand behind, thus providing a screen for that side as well. In this state, he did not even like anyone looking at his blessed back. Such a practice was reported only once in his entire blessed life despite these precautions. Are the claimants of this "new light" (modernity) proponents of such a scenario? Glory be to Allah! Where is this, and where are the unrefined actions of these insolent people, and their reliance on Hadith for them, God forbid! There is no power or might except with Allah, the Most High, the Most Great.

Do not judge the deeds of the holy ones by yourself. (Do not compare the actions of pure people to your own.) O you who thought that I did what you did, When can a fault-seeker see the difference? (He thought that I had performed an action like him; how can a seeker of evil see the difference?) And Allah, Glorified and Exalted, knows best.

Problem 225: From village Mansoorpur, near Post Office town Shishgarh, Tehsil Baheri, District Bareilly, sent by Muhammad Shah Khan, 30 Muharram 1331 AH. What do the scholars of religion say regarding this issue: is Istinja (cleaning after relief) and Wudhu (ablution) with one lota (vessel) of water valid or not? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: If the meaning is whether Wudhu can be performed with the water left over from Istinja, then the answer is that there is no harm. And if the meaning is to perform both Istinja and Wudhu with such a small amount of water, then the answer is that in Istinja, purification is a condition, washing enough so that the greasiness is removed from the body. In Wudhu, it is obligatory (Fardh) to wash the whole face from the hairline to below the chin and from one ear to the other once, and both hands from the nails to above the elbows once, and both feet up to the ankles once. And three times is Sunnah, such that water flows over every single particle of these

parts of the body. If any particle remains without water flowing over it, even if a wet hand passes over it, the Wudhu will not be valid and prayer will not be valid. And if water does not flow three times completely over every single particle, the Sunnah will not be fulfilled. At the beginning of Wudhu, washing hands up to the wrists three times, rinsing the mouth three times up to the root of the throat, and putting water up to the top of the nose three times [are also Sunnah]. Page 598 of 761

फ़तावा रज़विया खंड 4

दूसरा: जब कर्म और वचन में विरोधाभास हो, तो वचन पर अमल करना अनिवार्य है क्योंकि कर्म में विशिष्टता आदि की संभावना होती है। तीसरा: जब जायज़ और वर्जित के बीच विरोधाभास हो, तो वर्जित को प्राथमिकता दी जाती है। फिर मैं कहता हूँ: (फिर मैं कहता हूँ। ट) हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) की हदीस स्वयं उन ईसाइयत के पैरोकारों पर प्रहार है। वहाँ पर्याप्त ऊँचाई थी और नीचे ढलान और खाद के कारण ज़मीन नरम थी कि किसी तरह छींटे आने की कोई संभावना नहीं थी। सामने दीवार थी और खाद घर के आँगन में थी, न कि रास्ते में। हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) को पीछे खड़ा कर दिया गया था, इस तरह उस तरफ का भी परदा कर लिया गया था। इस स्थिति में उन्होंने अपनी पवित्र पीठ पर नज़र पड़ना भी पसंद नहीं किया। इन सावधानियों के साथ उनके पूरे मुबारक जीवन में केवल एक बार ऐसा उल्लेख मिलता है। क्या इस "नई रोशनी" (आधुनिकता) के दावेदार ऐसी ही स्थिति के समर्थक हैं? सुभानअल्लाह! कहाँ यह और कहाँ उन बदतमीज़ों के अशोभनीय कृत्य और उन पर माज़अल्लाह हदीस से तर्क। 'ला हौला वला.कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलीयिल अज़ीम'।

नेक लोगों के कामों की तुलना अपने आप से मत करो। (पवित्र लोगों के काम को अपने ऊपर कयास न करो) ऐ वह जिसने यह गुमान किया कि मैंने वैसा ही किया जैसा उसने किया, बुराई ढूँढने वाला अंतर कब देख सकता है? (उसने गुमान किया कि मैंने उसके जैसा काम किया, वह बुराई ढूँढने वाला अंतर कब देख सकता है?) और अल्लाह सुब्हानहू व तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 225: मौज़ा मंसूरपुर, डाकखाना कस्बा शीशगढ़, तहसील बहेड़ी, ज़िला बरेली से, प्रेषक मुहम्मद शाह खान, 30 मुहर्रम 1331 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि एक लोटा पानी से इस्तिन्जा (शौच के बाद सफाई) और वज़ू (आचमन) जायज़ है या नहीं? बयान करें, पुण्य पायें।

जवाब: अगर मतलब यह है कि इस्तिन्जा के बचे हुए पानी से वज़ू किया जाए या नहीं, तो जवाब यह है कि कोई हर्ज नहीं। और अगर मतलब यह है कि इतने थोड़े पानी में इस्तिन्जा और वज़ू दोनों कर लेना, तो जवाब यह है कि इस्तिन्जा में पाकी शर्त है, इतना धोना कि शरीर से चिकनाई हट जाए। और वज़ू में बालों के उगने की जगह से ठुड्डी के नीचे तक और एक कान से दूसरे कान तक पूरे चेहरे को, और नाखूनों से कोहनियों के ऊपर तक दोनों हाथों को, और टखनों तक दोनों पैरों को एक-एक बार

धोना फ़र्ज़ है। और तीन-तीन बार सुन्नत इस तरह है कि शरीर के इन हिस्सों के हर-हर ज़र्रे पर पानी बहता हुआ गुज़रे। अगर कोई ज़र्रा पानी बहने से रह जाएगा, भले ही उस पर भीगा हाथ फिर जाए, तो वज़ू नहीं होगा, नमाज़ नहीं होगी। और अगर तीन बार पूरी तरह हर-हर ज़र्रे पर पानी न बहा तो सुन्नत अदा नहीं होगी। और वज़ू की शुरुआत में तीन बार कलाइयों तक हाथ धोना, तीन बार पूरे मुँह को गले की जड़ तक धोना, तीन बार पूरी नाक में ऊपर तक पानी चढ़ाना [भी सुन्नत है]। पृष्ठ 598/761

ثانیا: فعل و قول میں جب تعارض ہو قول واجب العمل ہے کہ فعل احتمال خصوص وغیرہ رکھتا ہے۔ ثالثا: مبٰیح و حظر جب متعارض ہوں حظر مقدم ہے۔ ثم اقول: (پھر میں کہتا ہوں۔ت) نفس حدیث حذیفہ رضی اللہ تعالی عنہ ان مقلدان نصرانیت پر رد ہے وہاں کافی بلندی تھی اور نیچے ڈھال اور زمین گھورے کے سبب نرم کہ کسی طرح چھینٹ آنے کا احتمال نہ تھاسامنے دیوار تھی اور گھورا فنائے دار میں تھا نہ کہ گزر گاہ پس پشت حذیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو کھڑا کر لیا تھا اس طرف کا بھی پردہ فرمایا اس حالت میں پشت اقدس پر بھی نظر پڑنا پسند نہ آیا ان احتیاطوں کے ساتھ تمام عمر مبارک میں ایک بار ایسا منقول ہوا، کیا یہ نئی روشن کے مدعی ایسی ہی صورت کے قائل ہیں سبحان اللہ کہاں یہ اور کہاں ان بے ادبوں کے نامہذب افعال اور ان پر معاذ اللہ حدیث سے استدلال لا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم ع

کار پاکاں را قیاس از خود مگیر (پاک لوگوں کے کام کو اپنے اوپر قیاس نہ کرو) اے او گمان بردہ کہ من کردم چواد فرق راکے بیند آں استیزہ جو (اس نے گمان کیا کہ میں نے اس جیسا عمل کیا، وہ بُرائی ڈھونڈنے والا فرق کب دیکھ سکتا ہے) واللہ سبحنہ وتعالی اعلم

مسئلہ ۲۲۵: از موضع منصور پور متصل ڈاک خانہ قصبہ شیش گڑھ تحصیل بہیڑی ضلع بریلی مرسلہ محمد شاہ خان ۳۰ محرم ۱۳۳۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک لوٹا پانی سے استنجاء ووضو درست ہے یا نہیں۔ بینوا توجروا۔ الجواب: اگر یہ مطلب ہے کہ استنجاء کے بچے ہوئے کہ پانی سے وضو کیا جائے یا نہیں، تو جواب یہ ہے کہ حرج نہیں، اور اگر یہ مطلب ہے کہ اتنے تھوڑے پانی میں استنجاء و وضو دونوں کر لینا تو جواب یہ ہے کہ استنجاء میں تطہیر شرط ہے اتنا دھونا کہ بدن پر سے چکنائی جاتی رہے اور وضو میں بُن موسے ٹھوڑی کے

نیچے اور ایک کان سے دوسرے کان تک سارے منہ اور ناخنوں سے کہنیوں کے اوپر تک دونوں ہاتھ اور گٹوں تک دونوں پاؤں ایک ایک بار دھونا فرض ہے اور تین تین بار سنت یوں کہ اتنے جسم کے ایک ایک ذرہ پر پانی بہتا ہوا گزرے اگر کوئی ذرہ پانی بہنے سے رہ جائے گا اگرچہ بھیگا ہاتھ اس پر گزر جائے تو وضو نہ ہوگا نماز نہ ہوگی اور اگر تین بار کامل ہر ہر ذرہ پر نہ بہا تو سنت ادا نہ ہوگی اور ابتدائے وضو میں تین بار کلائیوں تک ہاتھ دھونا تین بار سارادہن حلق کی جڑ تک دھونا تین بار ساری ناک میں اوپر تک پانی چڑھانا

Fatawa Razawiyya Volume 4 It is Sunnah, and one handful of water is required for wiping the head. All these tasks should be performed without excess or deficiency in as much water as is necessary; there is no specific requirement for one or two jugs of water. And Allah Almighty knows best.

Problem 226: From Nagpur district, Post Office Mohalla Naya Bazar, Hafiz Muhammad Akbar, on Saturday, 24th Rajab 1332 AH. What do the scholars of the firm religion of the Messenger of Allah, peace and blessings be upon him, say regarding this matter: Is it permissible to pledge allegiance, i.e., to become a disciple of Ashraf Ali Deobandi through documents or not? And should one openly follow his pamphlets or discard them after using them for istinja (cleaning after toilet)? According to the jurists, 'it is permissible to perform istinja with written pages of logic' (it is permissible to perform istinja with pages of logic - T), and these pamphlets are even worse than logic. Give a ruling and you shall be rewarded.

The Answer: Pledging allegiance at the hand of Ashraf Ali is absolutely forbidden, whether in person or through writing. In fact, let alone pledging allegiance, the scholars of the Two Holy Harams have unanimously written: 'Whoever doubts his punishment and his disbelief, has indeed disbelieved.' He who, after becoming aware of his statements, doubts his disbelief is himself a disbeliever. The books of Ashraf Ali and all those with Deobandi beliefs are worse than books of logic, or even the religious books of Hindus, because there isn't as much expectation for a Muslim's faith to be corrupted by seeing those as there is with these books. Seeing them is certainly forbidden, but to use their pages for istinja is an excess, and that statement of some jurists is not acceptable. Respect for letters (script) is mandatory; moreover, their books also contain 'Allah said' and 'The Messenger said,' which they use to deceive the common people. An Imam once passed by some youth who had written the name of Abu Jahl on a target and were practicing archery at it. The Imam forbade them. When he returned, he noticed they had separated the letters of the name 'Abu Jahl' and were now shooting at them. He said, 'I did not tell you to respect the name of Abu Jahl, but rather to respect the letters.' And Allah Almighty knows best.

Problem 227 & 228: Questioned through Adamji Seth, residing at the threshold of Ala Hazrat Qibla. Saturday, 1st Shaban 1334 AH. (1) Should a woman use a clay clod after urinating or just perform istinja with water? (2) How is it to give salam, reply to salam, or greet someone who is in the process of using a clay clod after urinating?

The Answer: (1) Combining both (clay and water) is better, and for her, a cloth is better than a clay clod.

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी सुन्नत है और एक चुल्लू पानी सर के मसह के लिए चाहिए। ये सब बातें बिना किसी इफ़रात-ओ-तफ़रीत के जितने पानी में अदा हो जाएं उतने ही पानी की ज़रूरत है; लोटे या दो लोटे की कोई विशेष पाबंदी नहीं है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला २२६: जिला नागपुर, डाकखाना मोहल्ला नया बाज़ार, हाफ़िज़ मोहम्मद अकबर की ओर से, शनिवार, २४ रजब १३३२ हिजरी। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के मतीन दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि अशरफ़ अली देवबंदी के हाथ पर बैअत करना यानी मुरीद होना कागजात के ज़रिए जायज़ है या नहीं? और क्या उनके रिसालों पर खुलेआम अमल किया जाए या इस्तिनजा (शौच के बाद सफ़ाई) करके उन्हें फेंक दिया जाए? फ़ुक़हा (धर्मशास्त्रियों) के अनुसार 'तर्कशास्त्र (मंतिक) के कागजों से इस्तिनजा करना जायज़ है' (मंतिक के लिखे हुए पन्नों से इस्तिनजा जायज़ है - त) और ये रिसाले तो मंतिक से भी ज़्यादा खराब हैं। बयान फ़रमाएं ताकि आप सवाब पाएं।

अल-जवाब: अशरफ़ अली के हाथ पर बैअत करना क़तई हराम है, चाहे वह आमने-सामने हो या लेखन के माध्यम से। बल्कि बैअत की तो बात ही छोड़िए, हरमैन तैय्यबैन के उलेमा ने एकमत होकर लिखा है: 'जिसने उसकी सज़ा और उसके कुफ़्र में शक किया, वह खुद काफ़िर हो गया।' जो उसके कथनों से अवगत होने के बाद उसके कुफ़्र में शक करे, वह खुद काफ़िर है। अशरफ़ अली और तमाम देवबंदी अक़ीदे वालों की किताबें मंतिक की किताबों, बल्कि हिंदुओं की पोथियों से भी बदतर हैं क्योंकि उन्हें देखकर किसी मुसलमान के बिगड़ने की उतनी उम्मीद नहीं है जितनी इन किताबों से है। उन्हें देखना बेशक हराम है, लेकिन उनके पन्नों से इस्तिनजा करना ज्यादती है और कुछ फ़ुक़हा का वैसा लिख देना मान्य नहीं है। हुरूप (अक्षरों) का सम्मान करना अनिवार्य है, इसके अलावा उनकी किताबों में 'अल्लाह ने फ़रमाया' और 'रसूल ने फ़रमाया' भी होता है, जिससे वे आम लोगों को धोखा देते हैं। एक इमाम का कुछ युवाओं के पास से गुज़रना हुआ जिन्होंने निशाने पर अबू जहल का नाम लिखकर लगाया था और उस पर तीरंदाजी कर रहे थे। इमाम ने उन्हें मना फ़रमाया। जब वह वहाँ से वापस लौटे, तो देखा कि उन्होंने अबू जहल के नाम के अक्षरों को अलग-अलग कर दिया था और अब उन पर तीर चला रहे थे। इमाम ने फ़रमाया, 'मैंने तुम्हें अबू जहल के नाम के सम्मान के लिए नहीं कहा था, बल्कि अक्षरों के सम्मान के लिए कहा था।' और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला २२७ और २२८: मसऊला मा'रफ़त आदम जी सेठ, मुक़ीम दर-ए-दौलत आला हज़रत क़िबला। शनिवार, १ शाबान १३३४ हिजरी। (१) औरत पेशाब के बाद कलूख (मिट्टी का ढेला) ले या

सिर्फ़ पानी से इस्तिनजा करे? (२) पेशाब के बाद कलूख की हालत में सलाम करना या सलाम का जवाब देना या कलूख करने वाले को सलाम करना कैसा है?

अल-जवाब: (१) दोनों को जमा करना अफ़ज़ल (बेहतर) है और उसके हक़ में कलूख से बेहतर कपड़ा है।

فتاوی رضویہ جلد چہارم سنّت ہے اور ایک چُلّو پانی مسحِ سر کو چاہیے۔ یہ سب باتیں بلا افراط و تفریط جتنے پانی میں ادا ہوجائیں اُسی قدر درکار ہے لوٹے دولوٹے کی کوئی تخصیص نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۲۶: از ضلع ناگپور ڈاکخانہ محلہ نیا بازار حافظ محمد اکبر بروز شنبہ ۲۴ رجب ۱۳۳۲ھ چہ می فرمایند علمائے دین متین رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم دریں مسئلہ کہ بیعت کردن یعنی مرید شدن بدست اشرف علی دیوبندی بہ کاغذات جائز ست یا نہ۔ اور ان کے رسالوں پر اعلانیہ عمل کریں یا استنجا کر کے پھینک ڈالیں بقول فقہاء کے یجوز الاستنجاء باوراق المنطق (منطق کے مکتوب اوراق سے استنجا جائز ہے۔ ت) اور یہ رسالے منطق سے بھی زیادہ خراب ہیں۔ بینوا توجروا۔

الجواب: اشرف علی کے ہاتھ پر بیعت حرامِ قطعی ہے بالمشافہہ ہو خواہ بذریعہ تحریر بلکہ بیعت درکنار علمائے حرمین طیبین نے بالاتفاق تحریر فرمایا: من شک فی عذابہ و کفرہ فقد کفر۔ جو اس کے اقوال پر مطلع ہو کر اس کے کفر میں شک کرے وہ خود کافر۔ اشرف علی اور تمام دیوبندی عقیدے والوں کی کتابیں کتبِ منطق بلکہ ہنود کی پوتھیوں سے بدتر ہیں کہ انہیں دیکھ کر مسلمان کے بگڑنے کی اتنی توقع نہیں جو ان کتابوں سے ہے ان کا دیکھنا بیشک حرام ہے مگر وہ کہ ان کے ورقوں سے استنجا کیا جائے یہ زیادتی ہے اور بعض فقہاء کا وہ لکھ دینا مقبول نہیں حروف کی تعظیم لازم ہے کہ نہ ان کی کتابوں میں قال اللہ و قال الرسول بھی ہے جس سے وہ عوام کو دھوکا دیتے ہیں ایک امام کا بعض نوجوانوں پر گزر ہوا جنہوں نے نشانہ پر ابو جہل کا نام لکھ کر لگایا اور اس پر تیر اندازی کر رہے تھے امام نے انہیں منع فرمایا جب اُدھر سے واپس تشریف

لائے ملاحظہ فرمایا کہ اُنہوں نے نام ابو جہل کے حروف متفرق کر دیے اب ان پر تیر لگارہے ہیں فرمایا میں نے تمہیں نام ابو جہل کی تعظیم کو نہ کہا تھا بلکہ حروف کی تعظیم کو۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۲۷ و ۲۲۸: مسئولہ معرفت آدم جی سیٹھ مقیم بردردولت اعلیحضرت قبلہ۔ شنبہ یکم شعبان ۱۳۳۴ھ (۱) عورت بعد پیشاب کلوخ لے یا صرف پانی سے استنجا کرے۔ (۲) بعد پیشاب حالت کلوخ میں سلام کرنا یا سلام کا جواب یا کلوخ کرتے ہوئے کو سلام کرنا کیسا ہے؟

الجواب (۱) دونوں کا جمع کرنا افضل ہے اور اس کے حق میں کلوخ سے کپڑا بہتر ہے۔

Fatawa Ridawiyya Volume 4 (2) He should not be greeted with Salam, nor should he offer Salam, nor should he respond. And Allah Almighty knows best.

Issue 229: From Bhuta Bhoti Basor Tuland, Africa, sent by Haji Ismail Mian Sahib Hanafi Qadri son of Amir Mian, 23 Safar 1332 AH. Is it permissible for a Muslim to urinate while standing? Zaid says it is permissible on an elevated place.

The Answer: Urinating while standing is disliked (makruh) and is the custom of the Christians. The Messenger of Allah (peace be upon him) said: "It is a sign of coarseness/rude behavior that a man urinates while standing."[1] Narrated by al-Bazzar with a sound chain from Buraydah (may Allah be pleased with him). (The full investigation into this, along with the removal of doubts, is in our fatwa collection. And Allah Almighty knows best.)

Question 230 Second: After relieving oneself, is it permissible to perform istinja (cleaning) with paper? Zaid says it is correct in a train.

The Answer: Performing istinja with paper is disliked, forbidden, and is the custom of the Christians. Paper is commanded to be respected, even if it is blank, and even more so if it has writing on it. It is stated in Durr al-Mukhtar: "It is strictly forbidden (makruh tahrimi) with anything respectable."[2] (It is strictly forbidden with anything respectable. T) It is in Radd al-Muhtar:

[Table content] Arabic Text: Paper is included in this. It is said in al-Siraj that it refers to writing paper, and it is also said it refers to tree leaves. Whichever it is, it is disliked. This was confirmed in al-Bahr and others. The reason regarding tree leaves is that they are fodder for animals or because of their smoothness, thus they smear [impurity] without removing it. Likewise, writing paper, due to its smoothness and value, and it also has respect because it is a tool for writing knowledge. Therefore, it is reasoned in al-Tatarkhaniyya that... Urdu Translation: This includes paper as well. It is stated in al-Siraj that it refers to writing paper, and it is also said that it refers to tree leaves. Whichever it is, it is disliked. This is maintained in al-Bahr al-Ra'iq etc. The reason for tree leaves [being disliked] is their being fodder for animals or their smoothness; thus it smears [impurity] rather than removing it.

---

1 2 Durr al-Mukhtar, Chapter of Istinja, printed at Mujtabai Delhi, 1/56.

फतावा रज़विया जिल्द 4 (2) न उसे सलाम किया जाए, न वह सलाम करे और न ही जवाब दे। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 229: मुकाम भुटा भुटी बसोर टुलैंड, अफ्रीका से, प्रेषक हाजी इस्माइल मियां साहब हनफी कादरी पुत्र अमीर मियां, 23 सफर 1332 हिजरी। क्या किसी मुसलमान के लिए खड़े होकर पेशाब करना जायज़ है या नहीं? ज़ैद कहता है कि ऊँची जगह पर जायज़ है।

उत्तर: खड़े होकर पेशाब करना मकरूह है और ईसाइयों का तरीका है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "यह बदतमीज़ी और असभ्यता है कि आदमी खड़े होकर पेशाब करे।"[1] अल-बज़ार ने इसे सही सनद के साथ हज़रत बुरैदा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। (इसकी पूरी तहकीक संदेहों के निवारण के साथ हमारे फतावा में मौजूद है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।)

सवाल 230 दूसरा: शौच से फारिग होने के बाद कागज़ से इस्तिंजा करना जायज़ है या नहीं? ज़ैद कहता है कि रेलगाड़ी में यह सही है।

उत्तर: कागज़ से इस्तिंजा करना मकरूह, मना और ईसाइयों का तरीका है। कागज़ का सम्मान करने का हुक्म है, चाहे वह सादा हो, और अगर उस पर कुछ लिखा हो तो और भी ज़्यादा। दुर्र-ए-मुख्तार में है: "किसी सम्मानजनक चीज़ से (इस्तिंजा करना) मकरूह-ए-तहरीमी है।"[2] (किसी सम्मानजनक चीज़ के साथ इस्तिंजा मकरूह-ए-तहरीमी है। त) रद-उल-मुह्तार में है:

[तालिका सामग्री] अरबी पाठ: इसमें कागज़ शामिल है। अस-सिराज में कहा गया है कि यह लिखने वाला कागज़ है, और यह भी कहा गया है कि इससे पेड़ के पत्ते मुराद हैं। जो भी हो, यह मकरूह है। अल-बहर और अन्य ग्रंथों में भी इसे बरकरार रखा गया है। पेड़ के पत्तों के बारे में कारण यह है कि वे जानवरों का चारा हैं या उनकी चिकनाई की वजह से, जिससे वे गंदगी को फैलाते हैं, साफ नहीं करते। इसी तरह लिखने वाला कागज़ भी अपनी चिकनाई और मूल्य के कारण, और इसका सम्मान भी है क्योंकि यह इल्म लिखने का एक साधन है। इसीलिए अल-ततारखनिया में इसका कारण यह बताया गया है कि... उर्दू अनुवाद: इसमें कागज़ भी शामिल है। सिराज में फ़रमाया गया है कि वह लिखने वाला कागज़ है, और यह भी कहा गया है कि इससे पेड़ का पत्ता मुराद है। जो भी हो मकरूह है। बहर-उर-राइक वगैरह में भी इसे बरकार रखा गया है। पेड़ के पत्ते (मकरूह होने) का कारण

उनका जानवरों का चारा होना या उनकी नरमी है; इसलिए यह गंदगी को फैलाने वाला है, दूर करने वाला नहीं।

---

1 2 दुर्र-ए-मुख्तार, इस्तिंजा का अध्याय, मुजतबाई दिल्ली द्वारा मुद्रित, 1/56।

فتاویٰ رضویہ جلد چہارم (۲) نہ اُس پر سلام کیا جائے نہ وہ سلام کرے اور نہ جواب دے واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۲۹: از مقام بھوٹا بھوٹی بسور ٹولانڈ ملک افریقہ مرسلہ حاجی اسمعیل میاں صاحب حنفی قادری ابن امیر میاں ۲۳ صفر ۱۳۳۲ھ مسلمان کو کھڑے ہو کر پیشاب کرنا جائز ہے یا نہیں۔ زید کہتا ہے بلند مکان پر جائز ہے۔

الجواب: کھڑے ہو کر پیشاب کرنا مکروہ و سنتِ نصاریٰ ہے۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے: من الجفاء ان یبول الرجل قائما[1] بے ادبی و بدتہذیبی ہے یہ کہ آدمی کھڑے ہو کر پیشاب کرے۔ رواہ البزار بسند صحیح عن بریدہ رضی اللہ تعالٰی عنہ (اسے بزار نے بسند صحیح حضرت بریدہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا ہے۔ ت) اس کی پوری تحقیق مع ازالہ اوہام ہمارے فتاویٰ میں ہے واللہ تعالٰی اعلم۔

سوال ۲۳۰ دوم: بعد فراغت جائے ضرور کے کاغذ سے استنجا پاک کرنا جائز ہے یا نہیں۔ زید کہتا ہے ریل گاڑی میں درست ہے۔

الجواب: کاغذ سے استنجا کرنا مکروہ و ممنوع و سنت نصاریٰ ہے کاغذ کی تعظیم کا حکم ہے اگر چہ سادہ ہو، اور لکھا ہوا ہو تو بدرجہ اولٰی۔ دُرِّ مختار میں ہے کرہ تحریما بشیئ محترم[2] (کسی قابل احترام چیز کے ساتھ (استنجا) مکروہ تحریمی ہے۔ ت) ردالمختار میں ہے:

[جدول] عربی: یدخل فیه الورق قال في السراج قیل انه ورق الکتابة وقیل ورق الشجر وایهما کان فأنه مکروه اه واقره في البحر وغیره والعلة في ورق الشجر کونه علفا للدواب او نعومته فیکون ملوثا غیر مزیل وکذا ورق الکتابة لصقالته وتقومه وله احترام ایضا لکونه الة لکتابة العلم ولذا علله في التاتارخانیة

بان اردو: اس میں کاغذ بھی داخل ہے سراج میں فرمایا گیا ہے کہ وہ کتابت کا ورق (کاغذ) ہے اور یہ بھی کہا گیا ہے کہ اس سے درخت کا ورق (پتہ) مراد ہے جو بھی ہو مکروہ ہے اھ بحر الرائق وغیرہ میں بھی اسے برقرار رکھا گیا ہے درخت کے پتے (مکروہ ہونے کی) علت اس کا جانوروں کے لئے چارہ ہونا یا اس کی نرمی ہے پس یہ ملوث کرنے والا ہے (نجاست کو) دُور کرنیوالا نہیں۔

---

2 1 درمختار فصل الاستنجاء مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۵۶

Fatawa Razawiya Volume 4

(Text in Box - Arabic): "Venerating it is part of the etiquette of religion. It has been transmitted to us that letters have sanctity, even when disjointed. Some reciters mentioned that the alphabet is part of the Quran revealed to Hud, peace and blessings be upon him." 1

(Text in Box - Urdu translation): "No, similarly, because the paper is clean and valuable, it is Makruh-e-Tahrimi (prohibitively disliked). Furthermore, it is worthy of respect because it is a tool for writing knowledge. For this reason, in Tatarkhaniyya, the reason for this is stated as such: its veneration is among the etiquettes of religion. The (respected jurists) have transmitted that, according to us, letters are to be honored even if they are cut off. Some reciters said that the alphabet letters are also part of the Quran which was revealed to Prophet Hud, peace be upon him. (T)"

(Main Text - Urdu): And why is the excuse of the rail (train) only applicable to Zaid and not to other Muslims? Can they not keep clods of earth or an old piece of cloth? Yes, if following the Sunnah of Christians is intended, then this is a disease of the heart that needs medicine. And Allah Almighty knows best.

Problem 231: From the town of Vaswar, District Kathiawar, sent by Syed Ahmad Sahib, Imam, 24 Rabi al-Awwal 1326 AH. A person took a clod of earth after urinating and forgot to perform istinja (cleaning with water). After that, he performed prayer, or during the performance of prayer, or after prayer, he remembered that he forgot istinja. Is the prayer valid or should it be repeated?

The Answer: If the urine did not spread over an area larger than a Rupee (coin size), then the clod alone is sufficient for purification; the prayer is valid. And if it spread over an area larger than a Rupee, purification cannot be achieved with the clod alone; washing with water is obligatory. If he remembers during prayer, he should leave immediately and perform istinja. It is recommended that he performs ablution (wudu) again and prays again. And if he remembers after prayer, then he should perform istinja now and pray again. And Allah Almighty knows best.

Problem 232: From village Chada, Post Office Basi, District Purnea, sent by Kaleemuddin, 25 Rabi al-Awwal 1326 AH. Is it valid or not to perform istinja with only water after urinating in the same sitting without using a clod? Or is it a condition to use a clod? Some scholars say that the Beloved Messenger (peace and blessings of

Allah be upon him) used to perform istinja with only water in the same sitting without a clod; why would it be impermissible for us?

The Answer: It is not impermissible. It is only better (afzal) that water is used after the clod. And if it is in the same sitting without a clod, there is no harm for strong people who have no fear of drops (dribbling) or those for whom drops come due to heat and stop with water. Otherwise...

---

1 Radd al-Muhtar, Chapter on Istinja, Published by Mujtabai Delhi, 1/72. Page 601 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द 4

(बॉक्स में पाठ - अरबी): "इसका सम्मान करना धर्म के शिष्टाचार का हिस्सा है। हमारे यहाँ यह बताया गया है कि अक्षरों की पवित्रता होती है, चाहे वे अलग-अलग हों। कुछ पाठकों ने उल्लेख किया है कि वर्णमाला कुरान का हिस्सा है जो हज़रत हूद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) पर अवतरित हुई थी।" 1

(बॉक्स में पाठ - उर्दू अनुवाद): "नहीं, इसी प्रकार कागज़ के साफ़ और कीमती होने के कारण यह मकरूह-ए-तहरीमी (कड़ाई से नापसंद) है, साथ ही वह सम्मान के योग्य है क्योंकि वह ज्ञान लिखने का एक उपकरण है। इसी कारण तातारखानिया में इसका कारण इस प्रकार बताया गया है कि उसका सम्मान धर्म के शिष्टाचारों में से है। (विद्वान न्यायविदों) ने उल्लेख किया है कि हमारे यहाँ अक्षरों का सम्मान है चाहे वे कटे हुए ही क्यों न हों। कुछ पाठकों ने कहा कि वर्णमाला के अक्षर भी कुरान हैं जो हज़रत हूद अलैहिस्सलाम पर अवतरित हुए थे। (त)"

(मुख्य पाठ - उर्दू): और रेल का बहाना केवल ज़ैद पर ही क्यों लागू होता है और अन्य मुसलमानों पर क्यों नहीं? क्या वे मिट्टी के ढेले या पुराने कपड़े का टुकड़ा नहीं रख सकते? हाँ, यदि ईसाइयों की सुन्नत का पालन करना ही उद्देश्य है, तो यह दिल की बीमारी है जिसका इलाज ज़रूरी है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 231: कस्बा वासवाड़, ज़िला काठियावाड़ से, सैयद अहमद साहब पेश इमाम द्वारा प्रेषित, 24 रबी उल अव्वल 1326 हिजरी। एक व्यक्ति ने पेशाब के बाद मिट्टी का ढेला लिया और इस्तिंजा (पानी से सफाई) करना भूल गया। उसके बाद उसने नमाज़ पढ़ी, या नमाज़ पढ़ते समय, या नमाज़ के बाद उसे याद आया कि वह इस्तिंजा भूल गया। क्या नमाज़ हो गई या इसे दोहराना चाहिए?

जवाब: यदि पेशाब एक रुपये के सिक्के से अधिक जगह में नहीं फैला था, तो केवल ढेला पवित्रता के लिए पर्याप्त है; नमाज़ हो गई। और यदि वह एक रुपये से अधिक जगह में फैल गया था, तो केवल ढेले से पवित्रता प्राप्त नहीं हो सकती; पानी से धोना फ़र्ज़ है। यदि नमाज़ के दौरान याद आए तो तुरंत अलग हो जाए और इस्तिंजा करे। मुस्तहब यह है कि उसके बाद वज़ू भी फिर से करे और नमाज़ भी फिर से पढ़े। और यदि नमाज़ के बाद याद आया तो अब इस्तिंजा करके दोबारा पढ़े। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 232: गाँव चड़ा, डाकखाना बासी, ज़िला पूर्णिया से, कलीमुद्दीन द्वारा प्रेषित, 25 रबी उल अव्वल 1326 हिजरी। पेशाब करने के बाद उसी बैठक में बिना ढेले के केवल पानी से इस्तिंजा करना सही है या नहीं? या ढेला लेना शर्त है? कुछ विद्वान कहते हैं कि रसूल-ए-मक़बूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बिना ढेले के केवल पानी से उसी बैठक में इस्तिंजा करते थे; हमारे लिए यह नाजायज़ क्यों होगा?

जवाब: नाजायज़ नहीं है। केवल बेहतर (अफ़ज़ल) यह है कि ढेले के बाद पानी का उपयोग हो। और यदि बिना ढेले के उसी बैठक में हो, तो उन मज़बूत लोगों के लिए कोई हर्ज नहीं है जिन्हें कतरा (पेशाब की बूंद टपकने) का डर न हो या जिन्हें गर्मी के कारण कतरा आता हो और पानी से रुक जाता हो। अन्यथा...

---

1 रद अल-मुहतार, अध्याय इस्तिंजा, मुजतबाई दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 1/72. पेज 601 of 761

جلد چہارم فتاوٰی رضویہ

تعظیمه من ادب الدین ونقلوا عندنا ان للحروف حرمة ولمقطعة وذکر بعض القراء ان حروف الهجاء قرآن انزلت علی هود علیه الصلوة والسلام 1-

نہیں اسی طرح کاغذ، صاف اور قیمتی ہونے کی وجہ سے مکروہ تحریمی ہے، نیز وہ قابلِ احترام ہے کیونکہ وہ کتابتِ علم کا آلہ ہے اسی لئے تاتارخانیہ میں اس کی علت یوں بیان کی ہے کہ اس کی تعظیم آدابِ دین سے ہے (فقہاء کرام) نے نقل کیا ہے کہ ہمارے نزدیک حروف کی عزت ہے اگر چہ وہ کٹے ہوئے ہوں بعض قراء نے فرمایا کہ حروف تہجی بھی قرآن ہیں جو حضرت ہود علیہ السلام پر نازل ہوئے۔ (ت)

اور ریل کا عذر صرف زید ہی کو لاحق ہوتا ہے اور مسلمانوں کو کیوں نہیں ہوتا، کیا ڈھیلے یا پرانا کپڑا نہیں رکھ سکتے، ہاں سنّت نصاریٰ کا اتباع منظور ہو تو یہ قلب کا مرض ہے دوا چاہئے واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۳۱: از قصبہ واسواڑ ضلع کاٹھیا واڑ مرسلہ سید احمد صاحب پیش امام ۲۴ ربیع الاول ۱۳۲۶ھ ایک شخص نے بعد پیشاب کلوخ لیا اور استنجا کرنا بھول گیا بعد اس کے نماز ادا کرلی یا ادائیگی نماز یا بعد نماز یاد آیا کہ میں استنجا بھول گیا، نماز ہو گئی یا اعادہ کرنا چاہئے۔

الجواب: اگر پیشاب روپے بھر سے زیادہ جگہ میں نہ پھیلا تھا تو صرف ڈھیلا طہارت کیلئے کافی ہے نماز ہوگئی اور اگر روپے بھر سے زائد جگہ میں پھیل گیا تھا تو ڈھیلے سے طہارت نہیں ہوسکتی پانی سے دھونا فرض ہے اگر نماز میں یاد آئے فوراً جدا ہو جائے اور استنجا کرے اور

مستحب یہ ہے کہ اس کے بعد وضوء بھی پھر کرے اور نماز پھر پڑھے اور اگر نماز کے بعد یاد آیا تو اب استنجا کرکے دوبارہ پڑھے واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۳۲: از موضع چڑا ڈاک خانہ باسی ضلع پورینہ مرسلہ کلیم الدین ۲۵ ربیع الاول ۱۳۲۶ھ پیشاب کرکے اسی جلسہ میں بغیر کلوخ کے استنجا کرنا صرف پانی سے درست ہے یا نہیں؟ یا کلوخ سے لینا شرط ہے۔ بعض علماء فرماتے ہیں کہ رسول مقبول صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم بغیر کلوخ کے صرف پانی سے استنجا اسی جلسہ میں کرتے تھے ہم لوگوں کے واسطے کیوں ناجائز ہوگا؟

الجواب: ناجائز نہیں ہے صرف افضل ہے کہ ڈھیلے کے بعد پانی ہو اور بغیر ڈھیلے کے اسی جلسہ میں ہو تو اقویا کے لئے جن کو قطرہ آنے کا اندیشہ نہ ہو یا جن کو قطرہ حرارت سے آتا اور پانی سے بند ہو جاتا ہو ان کے لئے کوئی حرج نہیں ورنہ

1 ردالمحتار فصل الاستنجا مطبوعہ مجتبائی دہلی ۷۲/۱ Page 601 of 761

Fatawa Ridawiyya, Volume 4 It is impermissible, as istibra (cleansing after urination) is obligatory, meaning performing such an act that ensures no more drops will come out. And Allah Almighty knows best.

Masala 233: From Kathiawar Gondal, sent by Seth Abdul Sattar Sahib Qadri Rizwi, 9 Jumadi al-Ula 1337 AH. Here, the urinals in the Jame Masjid are built such that during use, a person faces east and their back is toward the west. How is this? Despite several scholars prohibiting this, the local people are indifferent and do not try to change these urinals; what is the ruling regarding them? Also, regarding a person who always uses these urinals with his face towards the east and back towards the west, is it permissible to pray behind him (make him Imam) or not?

The Answer: During urination, neither facing the Qibla nor having one's back towards it is permissible. Those who do so are in error. It is obligatory upon the mosque managers or the local people to change their orientation to north-south. Until this is done, it is mandatory for those urinating to change their angle; it is possible that those who are aware do so. One should have a good opinion of a Muslim; his leadership in prayer (Imamat) cannot be called impermissible solely for this reason. And Allah Almighty knows best.

Masala 234: Questioned by Shah Muhammad of Darul Uloom Manzar Islam. What do the scholars of religion say about this matter: Zaid was performing dry istinja (cleansing with a stone/clod). Amr came and said 'Salam alaikum' to him. Should Zaid, who is performing dry istinja, answer the Salam or not? If he answers, is it a sin or not? And if it is a sin, what is the proof for it? (T)

The Answer: It is like saluting someone while they are urinating, because dry cleansing happens while there is still a possibility of remaining urine drops. And Allah Almighty knows best. (T)

Masala 235: From Chauhar Kot Barkhan, Balochistan, sent by Qadir Bakhsh Sahib, 14 Rabi al-Awwal Sharif 1337 AH. What do the scholars of religion say about this matter, that a person who has a habit...

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 4 नाज़ायज़ है क्योंकि इस्तिबरा (पेशाब के बाद की सफ़ाई) वाजिब है, यानी ऐसा काम करना जिससे इत्मीनान हो जाए कि अब कोई क़तरा नहीं आएगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसअला 233: काठियावाड़ गोंडल से, मुरसला सेठ अब्दुल सत्तार साहब क़ादरी रिज़वी, 9 जमादी-उल-उला 1337 हिजरी। यहाँ जामे मस्जिद के पेशाब खानों में पेशाब करने वाले का चेहरा पूरब की ओर और पीठ पश्चिम की ओर होती है। कई उलमा के मना करने के बावजूद मोहल्ले वाले बेपरवाह हैं और ऐसे पेशाब खानों को बदलने की कोशिश नहीं करते। उनके लिए क्या हुक्म है? और जो व्यक्ति हमेशा इन पेशाब खानों में पूरब की ओर मुँह और पश्चिम की ओर पीठ करके पेशाब करता है, उसकी इमामत जायज़ है या नहीं?

अल-जवाब: पेशाब के वक्त न क़िबले की ओर मुँह होना जायज़ है न पीठ। जो लोग ऐसा करते हैं वे ग़लती पर हैं। मस्जिद के मुंतज़िमीन (प्रबंधकों) या मोहल्ले वालों पर वाजिब है कि उनका रुख़ उत्तर-दक्षिण की ओर करें। जब तक ऐसा न हो, पेशाब करने वालों पर लाज़िम है कि तिरछा बैठें। संभव है कि जो लोग वाक़िफ़ हैं वे ऐसा ही करते हों। मुसलमान के प्रति अच्छा गुमान रखना चाहिए; महज़ इसी वजह से उनकी इमामत को नाज़ायज़ नहीं कहा जा सकता। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसअला 234: मुस्तफ़ा शाह मोहम्मद अज़ दारुल उलूम मंज़र-ए-इस्लाम। क्या फ़रमाते हैं उलमा-ए-दीन इस मसअले में कि: ज़ैद खुश्क इस्तिनजा (ढेले से सफ़ाई) कर रहा था, अम्र आया और उसे सलाम किया। क्या ज़ैद को सलाम का जवाब देना चाहिए? अगर वह जवाब दे तो गुनाह है या नहीं? और अगर गुनाह है तो उसकी दलील क्या है? (त)

अल-जवाब: इस्तिनजा करते हुए व्यक्ति को सलाम नहीं करना चाहिए। यह वैसा ही है जैसे किसी को पेशाब करते समय सलाम कहना, क्योंकि खुश्क इस्तिनजा के समय पेशाब के क़तरे बाक़ी होने की संभावना होती है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसअला 235: चौहर कोट बार खान मुल्क बलूचिस्तान से, मुरसला क़ादिर बख्श साहब, 14 रबीउल अव्वल शरीफ़ 1337 हिजरी। क्या फ़रमाते हैं उलमा-ए-दीन इस मसअले में कि एक शख़्स जिसकी आदत...

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم ناجائز ہے کہ استبرا واجب ہے یعنی وہ فعل کرنا کہ اطمینان ہو جائے کہ اب قطرہ نہ آئے گا واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۳۳: از کاٹھیاواڑ گوندل مرسلہ سیٹھ عبد الستار صاحب قادری رضوی ۹ جمادی الاولٰی ۱۳۳۷ھ یہاں مسجد جامع میں پیشاب خانے اس طرح بنے ہوئے ہیں کہ استنجے کے وقت آدمی کا رخ مشرق اور پشت مغرب کی طرف ہوتی ہے یہ کیسا ہے باوجود چند علماء کے منع کرنے کے بھی اہل محلہ بے پرواہی کر کے ایسے پیشاب خانے بدلنے کی کوشش نہیں کرتے ان کے حق میں کیا حکم ہے ، نیز اس شخص کے لئے جو ہمیشہ ان پیشاب خانوں میں مشرق کی طرف منہ اور مغرب کی طرف پشت کر کے پیشاب وغیرہ کرتا ہو اس کی امامت جائز ہے یا نہیں ؟

الجواب : پیشاب کے وقت منہ نہ قبلہ کو ہونا جائز ہے نہ پشت ، جو لوگ ایسا کریں خطا کار ہیں مہتممین مسجد یا اہل محلہ پر واجب ہے کہ ان کا رخ جنوباً شمالاً کریں اور جب تک ایسا نہ ہو پیشاب کرنے والوں پر لازم ہے کہ رخ بدل کر بیٹھیں ممکن ہے کہ جو لوگ واقف ہوں وہ ایسا ہی کرتے ہوں مسلمان پر نیک گمان چاہئے صرف اتنی وجہ سے ان کی امامت ناجائز نہیں کہی جاسکتی واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۳۴ : مسئولہ شاہ محمد از دارالعلوم منظر اسلام کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید در وقت خشک کردن استنجاء بر عمرو سلام علیک گفت آیا عمرو کہ زید نے استنجا خشک کرتے وقت عمرو کو سلام کیا، کیا عمرو، جو استنجا خشک میکند جواب سلام زید را بدھد یا نہ و اگر دھد چہ گناہ ست واگر خشک کر رہا ہے زید کے سلام کا جواب دے یا نہ؟ اگر دے تو گناہ ہے گناہ ست دلیل چیست۔ اور اگر گناہ ہے تو اس کی دلیل کیا ہے؟ (ت)

الجواب: او بیخنان ست کہ بہ کسے ہنگام کمیز انداختنش سلام کنی کہ خشک کردن وہ ایسے ہی ہے جیسے کہ تم کسی کو پیشاب کرتے وقت سلام کہو نمود مگر بسبب بقائے قطرات بول واللہ تعالی اعلم ۔ کیونکہ خشک کرنا اسی وقت ہوتا ہے جب پیشاب کے قطرے باقی ہوں ۔ (ت)

مسئلہ ۲۳۵ : از چوہبر کوٹ بار کھان ملک بلوچستان مرسلہ قادر بخش صاحب ۱۴ ربیع الاول شریف ۱۳۳۷ھ چہ می فرماند علمائے دین دریں مسئلہ کہ شخص را عادت کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص کی

Fatawa Razawiyya, Volume 4

Question: There is a condition where when the male organ moves, urine comes up to the tip but does not flow out. If it does not move, urine does not appear at the tip. In this case, does the wudu (ablution) break or not? If wudu breaks, will he be considered excused (ma'zoor) or not? Or should he be told not to worry and ignore it? Should he perform wudu only when urine actually exits? Please provide guidance. If this was his habit and he continued to pray without performing wudu again, must he repeat all those prayers, or are they forgiven due to excessive hardship (haraj)? Please forgive any perceived disrespect in asking this question. (T)

Answer: As long as urine does not reach the edge (opening) of the organ, wudu remains intact. The prayers offered in this state are valid without any flaw. Squeezing (istibra) the organ after urination is only a Sunnah, not more than that (not fard or wajib). If he believes that every time he squeezes, something will come out and it won't stop, but if he doesn't squeeze, nothing will come out, then in this case, there is no need to squeeze. Similarly, he should perform wudu, offer prayer, and not let any kind of misgivings (waswasa) enter his heart. And Allah Almighty knows best. (T)

Mas'ala 236: City of Bareilly (Darul Uloom) Manzar-e-Islam, questioned by Maulvi Hashmat Ali Sahib, a student of the aforementioned Darul Uloom, on 9 Rabi-ul-Akhir 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: The courtyard of a mosque is such that half of the pond has the mosque courtyard to its right and left, and around the other half is just open ground at point 'Alif' where there are stairs. Zaid has an ailment such that if he does not use a clod (dheela) and immediately wash with water for istinja, a drop comes out. Now he has come after performing istinja; the pond water... [text ends]

Page 603 of 761

फतावा रज़विया, खंड 4

प्रश्न: एक स्थिति ऐसी है कि जब जननांग में हलचल होती है, तो पेशाब उसके सिरे पर आकर रुक जाता है, बाहर नहीं निकलता। और अगर हलचल न हो, तो पेशाब ज़ाहिर नहीं होता। क्या इस स्थिति में वज़ू टूट जाता है या नहीं? यदि वज़ू टूट जाता है, तो क्या उसे 'माज़ूर' (विवश) माना जाएगा या नहीं? या उसे इस पर ध्यान न देने का आदेश दिया जाए? क्या वह केवल तभी वज़ू करे जब पेशाब वास्तव में बाहर निकले? कृपया मार्गदर्शन करें। यदि यह उसकी आदत थी और वह बिना (नया) वज़ू किए नमाज़ पढ़ता रहा, तो क्या उसे वे सभी नमाज़ें फिर से पढ़नी होंगी, या अत्यधिक कठिनाई के कारण वे क्षम्य हैं? कृपया प्रश्न पूछने में किसी भी अनादर के लिए क्षमा करें। (त)

उत्तर (अल-जवाब): जब तक पेशाब अंग के किनारे (छोर) तक नहीं आता, वज़ू कायम रहता है। इस स्थिति में जो नमाज़ें पढ़ी गई हैं, उनमें कोई खराबी नहीं है। पेशाब के बाद अंग को सहलाना/निचोड़ना (इस्तिबरा) केवल सुन्नत है, उससे अधिक (फ़र्ज़ या वाजिब) नहीं। यदि वह समझता है कि जितनी बार वह निचोड़ेगा, कुछ न कुछ बाहर आएगा और पेशाब खत्म नहीं होगा, लेकिन अगर वह नहीं निचोड़ेगा तो कुछ नहीं आएगा, तो ऐसी स्थिति में निचोड़ने की आवश्यकता नहीं है। इसी तरह वह वज़ू करे, नमाज़ पढ़े और मन में किसी भी प्रकार के वसवसे (शंका) को जगह न दे। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (त)

मसअला 236: शहर बरेली (दारुल उलूम) मंज़रे इस्लाम, प्रश्नकर्ता मौलवी हशमत अली साहब, विद्यार्थी दारुल उलूम उपरोक्त, 9 रबी-उल-आख़िर 1337 हिजरी। धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं: एक मस्जिद का सहन इस प्रकार है कि आधा हौज (कुण्ड) के दाएँ-बाएँ मस्जिद का सहन है और आधे के चारों ओर सिर्फ ज़मीन है, बिंदु 'अलिफ़' पर उसकी सीढ़ियाँ हैं। ज़ैद को यह रोग है कि यदि वह ढेला लेकर तुरंत पानी से इस्तिंजा (शौच के बाद सफाई) न करे, तो पेशाब की बूंद आ जाती है। अब वह इस्तिंजा करता हुआ आया है; हौज का पानी... [पाठ समाप्त]

पेज 603 का 761

فتاوی رضویہ، جلد چہارم

سوال: عادت ہے جب اس کا آلہ تناسل حرکت میں آتا ہے تو پیشاب اس کے (آلہ تناسل) کے سرکے اوپر آکر ٹھہر جاتا ہے جاری نہیں ہوتا اور اگر حرکت نہ کرے تو اس کے اوپر پیشاب ظاہر نہیں ہوتا کیا اس صورت میں اس کا وضو ٹوٹ جاتا ہے یا نہیں، اگر اس صورت میں وضو ٹوٹ جائے تو کیا وہ معذور شمار ہوگا یا نہ؟ یا اسے نہ اچھلنے والے کا حکم دیا جائے اور کسی قسم کا وسوسہ نہ کرے جب پیشاب نکلے تو وضو کرے جو کچھ آنجناب فرمائیں۔ اور اگر اس کی یہ عادت تھی اور وضو کیے بغیر نمازیں پڑھتا رہا تو کیا تمام نمازیں لوٹائے یا زیادہ حرج کے باعث معاف ہے۔ سوال کرنے پر بے ادبی سے معاف فرمائیں۔ (ت)

الجواب : پیشاب جب تک عضو کے کنارے پر نہ آئے وضو قائم ہے جو نمازیں اس حال میں پڑھی ہیں ان میں کوئی خرابی نہیں۔ پیشاب کے بعد عضو کو جھاڑنا صرف سنت ہے اس سے زیادہ (فرض یا واجب) نہیں، اگر سمجھتا ہو کہ جب بھی جھاڑے گا کچھ نہ کچھ باہر آئے گا اور پیشاب ختم نہیں ہوگا اور اگر نہیں جھاڑے گا تو نہیں آئے گا اس صورت میں جھاڑنے کی ضرورت نہیں۔ اسی طرح وضو کر کے نماز پڑھے اور دل میں کسی قسم کے وسوسہ کو جگہ نہ دے واللہ تعالی اعلم (ت)

مسئلہ ۲۳۶: شہر بریلی (دارالعلوم) منظر الاسلام مسئولہ مولوی حشمت علی صاحب طالب علم دار العلوم مذکور ۹ ربیع الآخر ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک مسجد کا صحن اس طرح پر ہے کہ نصف حوض کے داہنے بائیں صحن مسجد ہے اور نصف کے ارد گرد صرف زمین مقام الف میں اُس کے سیڑھیاں ہیں زید کو مرض ہے کہ اگر ڈھیلا لے کر فوراً علی

الاتصال پانی سے استنجا پاک نہ کرے تو قطرہ آجاتا ہے اب وہ استنجا کرتا ہوا آیا ہے پانی حوض...

[عبارت ختم]

صفحہ 603 از 761

Fatawa Rizwia Volume Four ...has become very low, and leftover wudu water is kept here and there in lotas (ewers). Can a person bring water in their hand from point 'B' across the wall/boundary to point 'A' while wrapped in a quilt or shawl?

The map is as follows: [Diagram with labels: Mosque Courtyard (Sahn-e-Masjid), Boundary Wall (Faseel), Alif (A), Pool (Hauz), Ba (B)]

The Answer: Since the person stayed only on the boundary wall of the pool and was wrapped in a shawl without stepping into the mosque's courtyard, bringing water this way and performing Istinja in the washroom is not problematic at all. The pool and its boundary wall are outside the mosque proper; therefore, performing wudu or giving Adhan there is permissible without any dislike (karahat). Allah Almighty knows best.

Problem 237: From Rangoon, sent by Seth Abdul Sattar son of Ismail Sahib Rizvi, 8 Shaban 1337 AH. What do the scholars of the religion say about this: after urinating, instead of using a clod of earth (kulukh), can one use absorbent paper (English-made blotting paper) if needed for cleaning (Istinja)?

The Answer: Using paper for cleaning (Istinja) is a practice of Christians and is prohibited in Shari'ah if it's suitable for writing or valuable. Even if it's not, it's necessary to avoid the practice of Christians without absolute necessity. It is mentioned in Radd al-Muhtar:

[Arabic Text Block]: It is strictly disliked (Makruh Tahrimi) to use something honorable, which includes paper. It is said this means writing paper, and some say it means tree leaves; whichever it is, it is disliked. Writing paper is respected because it is a tool for writing knowledge, hence the explanation in Tatarkhaniyya is that honoring it is part of religious etiquette. If the reason is its being a writing tool, then it follows that there is no dislike for using what is not suitable for writing, provided it removes impurity and has no monetary value, as mentioned before.

[Urdu Translation Block]: Performing Istinja with an honorable object is strictly disliked (Makruh Tahrimi), and paper is included in this. It is said that this means writing paper, while others say it refers to tree leaves. Whichever it may be, it is disliked. Writing paper is worthy of respect because it is an instrument for recording knowledge. This is why in Tatarkhaniyya, the reason given is that its veneration is part of religious etiquette. When the reason is its utility as a writing tool, then its...

फ़तावा रिज़विया खंड चार ...बहुत नीचा हो गया है और इधर-उधर लोटों में वज़ू का बचा हुआ पानी रखा है। क्या कोई व्यक्ति रज़ाई या चादर ओढ़े हुए बिंदु 'ब' से दीवार (फ़सील) के साथ बिंदु 'अलिफ़' तक हाथ में पानी ला सकता है या नहीं?

नक्शा यह है: [नक्शा जिसमें लेबल हैं: मस्जिद का आँगन, दीवार, अलिफ़, हौज़ (कुंड), ब]

उत्तर: चूंकि वह केवल हौज़ की दीवार पर ही गया और चादर ओढ़े हुए था, उसने मस्जिद के आँगन में कदम नहीं रखा, इसलिए इस तरह पानी लाना और ग़ुसलखाने में इस्तिन्जा (शौच के बाद सफाई) करना बिल्कुल भी आपत्तिजनक नहीं है। हौज़ और उसकी दीवार मस्जिद की सीमा से बाहर हैं; इसलिए वहां वज़ू करना या अज़ान देना बिना किसी नापसंदगी (कराहत) के जायज़ है। अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है।

समस्या २३७: रंगून से, सेठ अब्दुल सत्तार इब्न इस्माइल साहब रिज़वी द्वारा प्रेषित, ८ शाबान १३३७ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि पेशाब करने के बाद सफाई (इस्तिन्जा) के लिए मिट्टी के ढेले (कुलुख) के बजाय ज़रूरत पड़ने पर सोखने वाले कागज (अंग्रेजी बनावट का ब्लॉटिंग पेपर) का उपयोग किया जा सकता है या नहीं?

उत्तर: कागज़ से इस्तिन्जा करना ईसाइयों की सुन्नत (तरीका) है और शरीयत में मना है यदि वह लिखने योग्य या कीमती हो। और अगर ऐसा न भी हो, तो बिना ज़रूरत के ईसाइयों के तरीके से बचना ज़रूरी है। रद-अल-मुह्तार में लिखा है:

[अरबी पाठ]: किसी सम्मानित वस्तु से सफाई करना सख्त नापसंद (मक़रूहे तहरीमी) है, जिसमें कागज़ भी शामिल है। कहा गया है कि इससे लिखने का कागज़ मुराद है, और कुछ ने कहा कि इससे मुराद पेड़ के पत्ते हैं। इनमें से जो भी हो, वह नापसंद है। लिखने का कागज़ सम्मान के योग्य है क्योंकि यह ज्ञान लिखने का एक उपकरण है। इसीलिए तातरखानिया में इसका कारण यह बताया गया है कि उसका सम्मान करना धार्मिक शिष्टाचार का हिस्सा है। यदि कारण इसका लेखन उपकरण होना है, तो इसका अर्थ यह है कि जो कागज़ लिखने योग्य न हो और गंदगी हटाने वाला हो और उसका कोई मूल्य न हो, उसे इस्तेमाल करने में कोई नापसंदगी नहीं है, जैसा कि पहले बताया गया है।

[उर्दू अनुवाद]: किसी सम्मानित चीज़ के साथ इस्तिन्जा करना मक़रूहे तहरीमी है और इसमें कागज़ भी शामिल है। कहा गया है कि इससे लिखने का कागज़ मुराद है और किसी ने कहा इससे मुराद पेड़

का पत्ता है। इनमें से जो भी हो मक़रूह है। लेखन का कागज़ इसलिए सम्मान के योग्य है कि वह ज्ञान के लेखन का साधन है। इसीलिए तातरखानिया में इसका कारण यह बयान किया गया है कि इसका सम्मान धार्मिक शिष्टाचार में से है। और जब इसका कारण यह हो कि वह लेखन उपकरण है तो उसका...

पृष्ठ ६०४ का ७६१

فتاوی رضویہ جلد چہارم میں بہت نیچا ہو گیا ہے اور ادھر ادھر لوٹوں میں وضو کا بچا ہوا پانی رکھا ہے وہ مقام ب سے فصیل فصیل مقام الف تک ہاتھ میں درحالیکہ (درحالیکہ رضائی یا چادر وغیرہ اوڑھے ہو) جا کر پانی لاسکتا ہے یا نہیں۔

نقشہ یہ ہے: [صحن مسجد، فصیل، الف، حوض، ب]

الجواب: جبکہ حوض کی فصیل ہی پر گیا اور چادر اوڑھے ہے صحن مسجد میں قدم نہ رکھا، یوں جاکر پانی لے آیا اور غسل خانہ میں استنجا کیا تو اصلا کسی قسم کا حرج نہیں حوض و فصیل حوض مسجد سے خارج ہے و لہٰذا اس پر وضو و اذان بلا کراہت جائز ہے واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۲۳۷: از رنگون مرسلہ سیٹھ عبدالستار ابن اسمعیل صاحب رضوی ۸ شعبان ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ بعد استنجا لینے پیشاب کرنے کے بجائے کلوخ کے وقت ضرورت جاذب (انگریزی ساخت کا بلٹنگ) کا استعمال کر سکتے ہیں یا نہیں؟

الجواب: کاغذ سے استنجا سنتِ نصاریٰ ہے اور شرعاً منع ہے جبکہ قابل کتابت یا قیمتی ہو۔ اور ایسا نہ بھی ہو تو بلا ضرورت سنتِ نصاریٰ سے بچنا ضرور ہے۔ ردالمحتار میں ہے:

[عربی متن]: کرہ تحریما بشیئ محترم یدخل فیه الورق قیل انه ورق الکتابة وقیل ورق الشجر وایهما کان فانه مکروه اه ورق الکتابة له احترام لکونه الة لکتابة العلم ولذا علله فی التاترخانیة بان تعظیمه من ادب الدین واذا کانت العلة لکونه الة للکتابته یوخذ منها عدم الکراهة فیما لایصلح لها اذ اکان قالعا للنجاسة غیر متقوم کما قدمنا من

[اردو ترجمہ]: کسی قابل احترام چیز کے ساتھ استنجاء کرنا مکروہ تحریمی ہے اور اس میں ورق بھی داخل ہے کہا گیا ہے کہ اس سے لکھنے کا کاغذ مراد ہے اور کسی نے کہا اس سے مراد

درخت کا پتا ہے، ان میں سے جو بھی ہو مکروہ ہے اھ کتابت کا کاغذ اس لئے قابلِ عزت ہے کہ وہ کتابتِ علم کا آلہ ہے اسی لئے تاترخانیہ میں اس کی علّت یہ بیان کی ہے کہ اس کی تعظیم آدابِ دین سے ہے اور جب اس کی علّت یہ ہو کہ وہ آلہ کتابت ہے تو اس کا

Fatawa Rizwia Volume Four

Permissibility [of istinja] with old rags[1] — The result is that if the paper is not suitable for writing, is capable of removing impurity, and is not valuable, then there is no dislike in its use, just as we have previously stated the permissibility of performing istinja (cleansing after toilet) with pieces of old cloth. (T)

For urine, water alone is also sufficient if there is no excuse. It is stated in Radd al-Muhtar: Combining water and stone is superior, followed in merit by limiting to water, followed by limiting to stone. The Sunnah is fulfilled by all, even if the merit varies, as stated in al-Imdad and others.[2] Combining water and stone is better. There is merit in sufficing with only water, and performing istinja with only stones is also a source of merit. Through each, the Sunnah is acted upon, although there is a difference in excellence, as explained in Al-Imdad etc. (T)

Old cloth is also sufficient, as is cleaning with the earth or a wall. Regarding this, there is a Hadith narrated from the Leader of the Faithful, al-Farooq al-Azam, may Allah be pleased with him. (In this regard, a Hadith is narrated from Hazrat Amir al-Mu'minin Farooq al-Azam, may Allah be pleased with him. T) Yes, if no other means is available, purification can also be achieved with an absorbent material, provided it absorbs the impurity without spreading it over an area larger than a dirham. And Allah Almighty knows best.

Problem 238: From Shahr-e-Kuhna, asked by Muhammad Zahoor Sahib, 11 Shawwal 1337 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: what is the ruling for one who performs istinja, whether for minor or major relief, using only water even when clay clods are available?

The Answer: It is contrary to what is superior, especially for major istinja. And Allah Almighty knows best.

Problem 239: From Bikaner Marwar, Mahawtan neighborhood, sent by Qazi Qamar-ud-Din Sahib, 9 Rabi-ul-Awwal 1338 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: how is spitting in the toilet? Is it prohibited to spit there? Please answer and be rewarded.

The Answer: Yes, spitting in the toilet is prohibited, because a Muslim's mouth is the path for the Great Quran, through it he performs the remembrance of Allah...

[1] Radd al-Muhtar, Chapter on Istinja, printed at Mujtabai Delhi, 1/22 [2] Radd al-Muhtar, Chapter on Istinja, printed at Mujtabai Delhi, 1/226

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

पुराने चिथड़ों से इसका जायज़ होना[1] — नतीजा यह हुआ कि अगर काग़ज़ लिखने के योग्य न हो, गंदगी दूर करने वाला हो और कीमती भी न हो, तो उसके इस्तेमाल में कोई नापसंदगी (कराहियत) नहीं है, जैसा कि इससे पहले हमने पुराने कपड़े के टुकड़ों से इस्तिंजा (शौच के बाद सफाई) की अनुमति बयान की है। (त)

पेशाब के लिए केवल पानी भी काफी है अगर कोई मजबूरी न हो। रद अल-मुह्तार में है: पानी और पत्थर दोनों का उपयोग करना सबसे उत्तम है, उसके बाद केवल पानी का उपयोग, और उसके बाद केवल पत्थर का उपयोग। सुन्नत सभी से पूरी हो जाती है, चाहे उनके दर्जे में अंतर हो, जैसा कि अल-इमदाद आदि में बताया गया है।[2] पानी और पत्थर को मिलाना सबसे बेहतर है। केवल पानी पर निर्भर रहने में भी श्रेष्ठता है, और केवल पत्थरों से इस्तिंजा करना भी श्रेष्ठता का कारण है। प्रत्येक से सुन्नत पर अमल हो जाता है, हालाँकि उनकी श्रेष्ठता में अंतर है जैसा कि अल-इमदाद आदि में बताया गया है। (त)

पुराना कपड़ा भी काफी है, ज़मीन या दीवार से साफ करना भी काफी है। इस बारे में अमीरुल मोमिनीन फ़ारूक़-ए-आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु से हदीस वर्णित है। (इस बारे में हज़रत अमीरुल मोमिनीन फ़ारूक़-ए-आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु से हदीस रिवायत की गई है। त) हाँ, यदि कोई अन्य साधन उपलब्ध न हो, तो सोखने वाली चीज़ से भी पवित्रता प्राप्त हो जाएगी, बशर्ते वह गंदगी को एक दिरहम से अधिक जगह में फैलाए बिना सोख ले। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसला 238: शहर-ए-कुहना से, मुस्तौ़ला मोहम्मद ज़ुहूर साहब, 11 शव्वाल 1337 हिजरी दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि मिट्टी के ढेले उपलब्ध होने के बावजूद, छोटे या बड़े इस्तिंजा के लिए केवल पानी का उपयोग करने वाले के बारे में क्या हुक्म है?

अल-जवाब: यह उत्तम के विपरीत है, विशेष रूप से बड़े इस्तिंजा के लिए। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसला 239: बीकानेर मारवाड़, मोहल्ला महौतां से, कज़ी क़मरुद्दीन साहब द्वारा प्रेषित, 9 रबी-उल-अव्वल 1338 हिजरी दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि शौचालय में थूकना कैसा है? क्या वहां थूकने की मनाही है? कृपया बताएं और सवाब पाएं।

अल-जवाब: हाँ, शौचालय में थूकने की मनाही है, क्योंकि मुसलमान का मुँह क़ुरान-ए-अज़ीम का रास्ता है, वह उससे अल्लाह का ज़िक्र करता है...

[1] रद अल-मुह्तार, फ़स्लुल इस्तिंजा, प्रिंटेड मुज्तबाई दिल्ली, 1/22 [2] रद अल-मुह्तार, फ़स्लुल इस्तिंजा, प्रिंटेड मुज्तबाई दिल्ली, 1/226

فتاوی رضویہ جلد چہارم

جوازہ بالخرق البوالی ۱۸ 1 - نتیجہ یہ ہوا کہ اگر کاغذ تحریر کی صلاحیت نہ رکھتا ہو اور نجاست کو زائل کرنے والا ہو اور قیمتی بھی نہ ہو تو اسکے استعمال میں کوئی کراہت نہیں جیسا کہ اس سے پہلے ہم نے پرانے کپڑے کے ٹکڑوں سے استنجاء کا جواز بیان کیا ہے۔ (ت)

پیشاب کے لئے خالی پانی بھی کافی ہے اگر کوئی عذر نہ ہو۔ ردالمحتار میں ہے : الجمع بین الماء والحجر افضل ویلیه في الفضل الاقتصار علی الماء ویلیه الاقتصار علی الحجر وتحصل السنة بالکل وان تفاوت الفضل کما افاده في الامداد وغیره ۱۸ 2 - پانی اور پتھر کو جمع کرنا افضل ہے صرف پانی پر اکتفاء کرنے میں بھی فضیلت ہے اور صرف پتھروں سے استنجاء کرنا بھی باعث فضیلت ہے ہر ایک سے سنت پر عمل ہو جاتا ہے اگرچہ فضیلت میں فرق ہے جیسا کہ الامداد وغیرہ میں بیان کیا ہے (ت)

پرانا کپڑا بھی کافی ہے، زمین یا دیوار سے صاف کردینا بھی کافی ہے وفیه عن امیر المؤمنین الفاروق الاعظم رضی اللہ تعالی عنه (اس سلسلے میں حضرت امیر المومنین فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے حدیث مروی ہے۔ت) ہاں کوئی صورت میسر نہ ہو تو جاذب سے بھی طہارت ہو جائیگی جبکہ نجاست کو درہم بھر سے زیادہ جگہ میں پھیلائے بغیر جذب کرلے واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۳۸: از شہر کہنہ مسئولہ محمد ظہور صاحب ۱۱ شوال ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ استنجا چھوٹا خواہ بڑا باوجود دستیاب ہونے مٹی کے ڈھیلے کے محض پانی سے کرنے والے کی نسبت کیا حکم ہے؟

الجواب: خلاف افضل ہے خصوصاً بڑا استنجاء واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۳۹: از بیکانیر مارواڑ محلہ مہاوتاں مرسلہ قاضی قمرالدین صاحب ۹ ربیع الاول ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ پائخانہ میں تھوکنا کیسا ہے کہ اس کی ممانعت ہے کہ وہاں نہ تھوکے،بینواتوجروا۔

الجواب: ہاں پاخانہ میں تھوکنے کی ممانعت ہے کہ مسلمان کا منہ قرآن عظیم کا راستہ ہے وہ اس سے ذکر الہی

1۸ ردالمحتار فصل الاستنجاء مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۲۲ 2۸ ردالمحتار فصل الاستنجاء مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۲۲۶

Volume Four Fatawa Razawiyya

If he does so, then it is improper to put his saliva on an impure place, as stated in Radd al-Muhtar:

[Arabic Box] "He should not spit in urine." (End of quote) I say, the evidence is more general as you know. (T)

However, there is no harm in spitting on a wall, etc., where there is no impurity. And Allah Almighty knows best.

Problem 220: From Banaras, Mohalla Audhopura, sent by Muhammad Bashiruddin bin Muhammad Qasim Sahib, 16 Rabi' al-Awwal Sharif 1338 AH.

What do the scholars of religion say regarding this problem: While the preacher (Khatib) was delivering the sermon, he felt a doubt that a drop [of urine] had come out. He touched his private part with his hand but felt no moisture, so he did not perform ablution (wudhu) and led the Friday prayer in this state of doubt. Since he had this doubt before several times but used to perform wudhu, this time he didn't. After the Friday prayer, when most people had left, he inspected his private part; from above, no moisture was felt. When he squeezed it like milking a cow, a tiny bit of moisture was felt. Is the prayer of the people valid or not? If not, what should be done? It is also not known how many and from where people were in the Friday prayer. The preacher is very anxious. What can be the way for his salvation before God? And what command does the pure Sharia give in this? Explain and be rewarded.

Answer: In the mentioned case, neither was wudhu lost nor was the prayer disturbed. There is no need to inform anyone, nor is it permitted to act upon obsessive whispers (waswasah). It is stated in the Hadith that Satan spits to deceive, causing an apprehension of moisture. When he checked with his hand and there was no moisture, then what was the point of misgiving? Long after the prayer, when most people had left, even if moisture was seen upon inspection, it cannot affect the completed prayer because "a newly occurring event is attributed to the nearest possible time" (impurity found later is attributed to the most recent time), not to that earlier time. Furthermore, moisture was not found; if something came out by squeezing like milking, then it certainly came out just then. Now, at this moment, wudhu is lost, not from before. Imam Abdullah bin Mubarak (Allah be pleased with him), the great student of our Master Imam-e-Azam (Allah be pleased with him), said that when the state of certainty is such that you can say under oath that wudhu is

gone, only then will it be considered. As long as there is a doubt about which you cannot swear an oath, wudhu remains. [As stated by] the great Imam Ibrahim Nakha'i.

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter on the difference between Istibra, Istinqa, and Istinja, printed by Mustafa al-Babi, Egypt, 1/254.

जिल्द चौथी फतावा रजविया

अगर वह ऐसा करता है, तो उसके थूक को किसी अपवित्र स्थान पर डालना अनुचित है, जैसा कि रद्दुल मुख्तार में है:

[अरबी बॉक्स] "पेशाब में नहीं थूकना चाहिए।" (उद्धरण समाप्त) मैं कहता हूँ कि दलील आम (सामान्य) है जैसा कि आप जानते हैं। (T)

अलबत्ता वहां की दीवार वगैरह पर जहाँ गंदगी न हो, थूकने में कोई हर्ज नहीं है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 220: बनारस, मोहल्ला औधोपुरा से, प्रेषक मुहम्मद बशीर उद्दीन बिन मुहम्मद कासिम साहब, 16 रबी उल अव्वल शरीफ 1338 हिजरी।

क्या फरमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले में कि एक खतीब (प्रवचनकर्ता) को खुतबे के दौरान शक महसूस हुआ कि पेशाब की बूंद उतर आई है। उसने हाथ से चेक किया पर कोई नमी नहीं मिली, इसलिए उसने वूज़ू नहीं किया और इसी शक की हालत में जुमे की नमाज़ पढ़ा दी। चूंकि उसे पहले भी कई बार ऐसा शक हो चुका था लेकिन वह वूज़ू कर लिया करता था, इस बार उसने वूज़ू नहीं किया। नमाज़ के बाद, जब अक्सर लोग चले गए, उसने फिर से चेक किया तो ऊपर से कोई नमी नहीं थी, मगर दूध दुहने की तरह दबाने पर थोड़ी सी नमी मिली। क्या लोगों की नमाज़ हो गई या नहीं? अगर नहीं हुई, तो अब क्या करना चाहिए? यह भी नहीं मालूम कि नमाज़ में कितने और कहाँ-कहाँ के लोग थे। खतीब बहुत घबराया हुआ है और उसकी निजात की क्या सूरत हो सकती है कि खुदा के पास उसकी पकड़ न हो? शरीयत इस पर क्या हुक्म देती है? बयान फरमाएं और सवाब पाएं।

जवाब: उपरोक्त स्थिति में न वूज़ू गया और न ही नमाज़ में कोई खलल आया। न तो किसी को बताने की ज़रूरत है और न ही ऐसे वसवसों (भ्रम) पर अमल करने की इजाज़त है। हदीस शरीफ में आया है कि शैतान धोखा देने के लिए थूक देता है जिससे नमी का अंदेशा होता है। जब हाथ से चेक करने पर नमी नहीं थी, तो फिर संदेह की क्या जगह रही? नमाज़ के काफी देर बाद अगर नमी नज़र भी आई, तो उससे खत्म हो चुकी नमाज़ पर कोई असर नहीं पड़ेगा क्योंकि नया वाकया (नजासत) उसके सबसे करीबी समय की ओर मनसूब (attributed) किया जाएगा, न कि पुराने समय की ओर। इसके

अलावा, पहले नमी नहीं थी; अगर दबाने पर कुछ निकला तो वह यकीनन उसी वक्त निकला है। अब इस वक्त वूज़ू टूटा है, पहले नहीं। इमाम अब्दुल्ला बिन मुबारक (अल्लाह उनसे खुश हो), जो इमाम-ए-आज़म के महान शिष्य थे, उन्होंने फरमाया कि जब तक आप कसम खाकर यह न कह सकें कि वूज़ू टूट गया है, तब तक वूज़ू बरकरार माना जाएगा। जब तक केवल शक हो जिस पर कसम न खाई जा सके वूज़ू कायम है। इमाम इब्राहिम नखई।

---

1. रद्दुल मुख्तार, इस्तिबरा, इस्तिनका और इस्तिंजा के अंतर पर चर्चा, मुस्तफा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, 1/254।

جلد چہارم فتاوی رضویہ

کرتا ہے تو اس کا لعاب ناپاک جگہ پر ڈالنا بیجا ہے، ردالمختار میں ہے :

لا یبزق فی البول ۱ اھ قلت والدلیل اعم کما علمت۔ پیشاب میں نہ تھوکا جائے اھ میں کہتا ہوں اور دلیل عام ہے جیسا کہ تم جانتے ہو (ت)

البتہ وہاں کی دیوار وغیرہ جہاں نجاست نہ ہو اس پر تھوکنے میں حرج نہیں واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۲۰: از بنارس محلہ اودھو پورہ مرسلہ محمد بشیر الدین بن محمد قاسم صاحب ۱۶ ربیع الاول شریف ۱۳۳۸ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ خطیب کو خطبہ پڑھتے وقت شک معلوم ہوا کہ مجھ کو قطرہ اتر آیا اور خطبہ اس نے آلہ تناسل کو ہاتھ سے چھوا تو کچھ تری معلوم نہ ہوئی تو اس نے وضو نہ کیا اور اس شک کی حالت میں نماز جمعہ پڑھا دی چونکہ اس کو شک تھا کیونکہ ایسا واقعہ اس سے قبل کئی مرتبہ اس کو ہو چکا تھا مگر اور مرتبہ وضو کر لیتا تھا اس مرتبہ اس نے وضو نہ کیا تو بعد نماز جمعہ جب اکثر لوگ چلے گئے تو اس نے آلہ تناسل کو دیکھا تو اوپر سے کچھ تری معلوم نہ ہوئی تو اس نے دودھ دوہنے کی طرح دوہا تو ذرا سی تری معلوم ہوئی تو اب لوگوں کی نماز ہوئی یا نہیں اگر نہیں ہوئی تو اس میں کیا کرنا چاہئے یہ بھی نہیں معلوم کہ نماز جمعہ میں کتنے لوگ اور کہاں کہاں کے آدمی تھے خطیب بہت گھبرایا ہے اور اس کی نجات کی کیا صورت ہو سکتی ہے کہ خدا کے پاس رہائی ہو اور شریعت مطہرہ کیا حکم اس میں دیتی ہے، بینوا توجروا۔

الجواب: صورت مذکورہ میں نہ وضو گیا نہ نماز میں خلل آیا نہ کسی کو اطلاع دینے کی حاجت نہ وسوسہ پر عمل کی اجازت۔ حدیث میں ارشاد ہوا ہے کہ شیطان دھوکا دینے کے لئے تھوک دیتا ہے جس سے تری کا شبہ ہوتا ہے۔ جب ہاتھ سے دیکھ لیا تری نہ تھی پھر دغدغہ کا کیا محل رہا، بعد نماز دیر کے بعد جب اکثر لوگ چلے گئے اگر دیکھنے سے تری نظر بھی آئی تو اس سے ختم شدہ نماز پر کچھ اثر نہیں ہوسکتا فان الحادث یضاف لاقرب اوقاتہ (نوپید (نجاست) کو قریب وقت کی طرف منسوب کیا جائے گا۔) نہ کہ اس وقت نیز تری نہ پائی دودھ کی طرح دوہنے سے اگر کچھ نکلی تو وہ یقینا ابھی نکلی اب اس وقت وضو گیا نہ کہ پہلے سے جاتا رہا۔ امام عبداللہ بن مبارک رضی اللہ تعالیٰ عنہ شاگرد جلیل سیدنا امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا کہ جب حالت ایسے یقین کی ہو کہ تم قسم کھا کر کہہ سکو کہ وضو نہ رہا اس وقت سے اعتبار کیا جائے گا اور جب تک شک ہو جس پر قسم نہ کھا سکو وضو برقرار ہے امام اجل ابراہیم نخعی

---

۱ ردالمختار مطلب فی الفرق بین الاستبراء والاستنقائ والاستنجائ مطبوعہ مصطفی البابی مصر ۱/ ۲۵۴

Fatawa Razawiyya Volume 4

The teacher of teachers, our master Imam al-Azam (may Allah be pleased with him) says: "Do not act upon the whispers of Satan. If he troubles you too much, tell him, 'I will pray even without wudu (ablution), I will not listen to you.' In this way, that wretched one stops. If you listen to him, he troubles you even more." Yes, if the situation was such that there was a strong presumption (zann-e-ghalib) of drops falling and a juristic certainty (yaqeen-e-fiqhi) that the wudu no longer remained, and then the prayer was led intentionally, then the prayer would definitely not be valid. It would be a most severe major sin (kabira) and deserve severe punishment. It would be obligatory to inform all followers (muqtadis) either verbally or by sending a letter. For those who remain unknown, an announcement should be made in several congregations that such-and-such Friday prayer was invalid, perform the qaza (makeup) of Zuhr. But such is very far from being expected of a Muslim. And Allah Almighty knows best.

Problem 241: From Bulandshahr, near Jamia Masjid, sent by Allah Sahib, 5 Rabi al-Akhir Sharif 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding this problem: An Imam has a condition that for two or three months during the cold season, drops [of urine] come out due to the cold. Specifically, even after cleansing (istinja) and drying with another cloth, there remains a suspicion that a drop has come out. When checked, there is no drop, yet sometimes it does come. During prayer as well, the Imam often suspects that a drop has come, though it hasn't. If he keeps a clean loincloth (tahmad) or a clean diaper (langot) underneath while praying or leading prayer, will the prayer be valid or not? In reality, drops don't come this way and there is peace of mind because warmth is maintained, and due to warmth, drops actually don't come. Give your verdict and be rewarded.

The Answer: Since the leakage stops with a diaper/cloth or its use, then wearing it is obligatory. It is stated in Al-Bahr [al-Ra'iq]:

Whenever one is able to stop the flow by tying or stuffing, it is obligatory to stop it. | When it is possible to stop the flow by tying (a cloth etc.) or by placing some extra thing, then stopping it is obligatory. (T)

Problem 242: From Sahaswan, District Budaun, asked by Syed Parwarish Ali Sahib, 1st Dhu al-Qi'dah 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this problem: After urinating, for the sake of removing dislike (karahat), water is poured over it a few times and then istinja (cleansing) is performed with only water at that same spot?

The Answer: If the ground is paved or hard, such that pouring water three times gives a strong presumption that it has washed away the impurity, then at that same time, right there...

---

1 Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter on Menstruation, printed by H.M. Saeed Company, Karachi, Pakistan, 1/216. Page 607 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द चारम

उस्ताद-उल-उस्ताद सैयदना इमाम-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) फ़रमाते हैं: "शैतान के वसवसे पर अमल न करो। अगर वह ज़्यादा परेशान करे तो उससे कहो, 'मैं बे-वज़ू ही पढ़ूँगा, तेरी नहीं सुनूँगा।' इस तरह वह खबीस बाज़ आता है और उसकी सुनो तो और ज़्यादा परेशान करता है।" हाँ, अगर यह हालत होती कि कतरे उतरने का ज़न्न-ए-गालिब (प्रबल धारणा) हो गया था और वज़ू न रहने पर यक़ीन-ए-फ़िक़्ही (शरियाई विश्वास) हो चुका था, फिर जानबूझकर नमाज़ पढ़ा दी, तो ज़रूर नमाज़ न होती और सख़्त से सख़्त गुनाह-ए-कबीरा होता और अज़ाब-ए-शदीद-ए-अज़ीम का इस्तहक़ाक़ होता और तमाम मुक्तदियों को इत्तला देना फ़र्ज़ होता, ज़बानी या ख़त भेजकर। और जो गैर-मारूफ़ रहें उनके लिए मुतअद्दिद मजमुओं/जमाअतों में ऐलान करना होता कि फलां जुमा की नमाज़ बातिल थी, ज़ोहर की क़ज़ा पढ़ो। लेकिन मुसलमान से इसकी तवक़्क़ो बहुत बईद (दूर) है। वल्लाहु तआला आलम।

मसला २४१: अज़ बुलंदशहर क़रीब जामिअ मस्जिद मुर्सला अल्लाह साहब ५ रबी-उल-आख़िर शरीफ़ १३३८ हि. उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या इर्शाद फ़रमाते हैं कि एक इमाम साहब को यह आरिज़ा (रोग) है कि दो-तीन महीने जब सर्दी पड़ती है तो उन्हें सर्दी से कतरा आ जाता है और ख़ुसूसन इस्तिंजा पाक करके और दूसरे कपड़े से खुश्क करके भी यही गुमान रहता है कि कतरा आ गया और जब देखते हैं तो कतरा नहीं, और कभी-कभी आ भी जाता है। इमाम साहब को नमाज़ में भी अक्सर यह गुमान गुज़रता है कि कतरा आ गया है और नहीं आता, तो वह अगर नीचे एक पाक तहबंद नमाज़ पढ़ने-पढ़ाने के वक्त या पाक लंगोट रख लें तो नमाज़ होगी या नहीं? और हक़ीक़त में इस तरह कतरा भी नहीं आता है और इत्मीनान भी रहता है क्योंकि गर्माहट रहती है और गर्माहट से वाक़ई कतरा भी नहीं आता। बैनू तौजरू।

अल-जवाब: जबकि लंगोट या लंगोटनुमा चीज़ से कतरा बंद हो जाता है तो उनका बांधना वाजिब है। बहर में है:

मता क़दरा अला रद्दिस-सय्यालान बि-रिबातिन औ हशविन वजबा रद्दहू | जब (कपड़ा वगैरह) बांधने या कोई ज़ायद चीज़ रखने के ज़रिए जरियान (बहाव) को रोकने पर क़ादिर हो तो रोकना वाजिब है। (त)

मसला २४२: अज़ सहसवान ज़िला बदायूं मसूला सैयद परवरिश अली साहब १ ज़ीक़ादा १३३९ हि. क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले में कि पेशाब करके रफ़-ए-कराहत के वास्ते उस पर चंद बार पानी बहाकर उसी वक़्त उसी जगह सिर्फ पानी से इस्तिंजा किया है?

अल-जवाब: ज़मीन अगर पुख़्ता या सख़्त हो जिस पर तीन बार पानी बहा देने से ज़न्न-ए-गालिब हो कि नजासत को बहा ले गया तो उसी वक़्त वहीं...

---

1 अल-बहर-उर-रायिक़, बाबुल हैज़, मतबुआ एच.एम. सईद कंपनी कराची, पाकिस्तान १/२१६ पेज ६०७ ऑफ ७६१

فتاویٰ رضویہ جلد چہارم

استاذ الاستاذ سید نا امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہم فرماتے ہیں: "شیطان کے وسوسے پر عمل نہ کرو اگر وہ زیادہ پریشان کرے تو اس سے کہے میں بے وضو ہی پڑھوں گا تیری نہ سنوں گا، یوں وہ خبیث باز آتا ہے اور اس کی سنو تو اور زیادہ پریشان کرتا ہے۔" ہاں اگر یہ حالت ہوتی کہ قطرے اترنے کا ظن غالب ہو گیا تھا اور وضو نہ رہنے پر یقین فقہی ہو چکا تھا پھر دانستہ نماز پڑھادی تو ضرور نماز نہ ہوتی اور سخت سے سخت گناہ کبیرہ ہوتا اور عذاب شدید عظیم کا استحقاق ہوتا اور تمام مقتدیوں کو اطلاع دینی فرض ہوتی زبانی یا خط بھیج کر۔ اور جو غیر معروف رہے ان کے لئے متعدد مجموعوں جماعتوں میں اعلان کرنا ہوتا کہ فلاں جمعہ کی نماز باطل تھی ظہر کی قضا پڑھو۔ لیکن مسلمان سے اس کی توقع بہت بعید ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۴۱: از بلند شہر قریب جامع مسجد مرسلہ اللہ صاحب ۵ ربیع الآخر شریف ۱۳۳۸ھ علمائے دین اس مسئلہ میں کیا ارشاد فرماتے ہیں کہ ایک امام صاحب کو یہ عارضہ ہے کہ دو تین مہینے جبکہ سردی پڑتی ہے تو ان کو سردی سے قطرہ آجاتا ہے اور خصوصاً استنجا پاک کر کے اور دوسرے کپڑے سے خشک کر کے بھی یہی گمان رہتا ہے کہ قطرہ آگیا اور جب دیکھتے ہیں تو قطرہ نہیں اور کبھی کبھی آ بھی جاتا ہے اور امام صاحب کو نماز میں بھی اکثر یہ گمان گزر جاتا ہے کہ قطرہ آگیا ہے اور نہیں آتا تو وہ اگر نیچے ایک پاک تہمد نماز پڑھنے پڑھانے کے وقت یا پاک لنگوٹ رکھ لیں تو نماز ہوگی یا نہیں اور حقیقت میں اس طرح قطرہ بھی نہیں آتا ہے اور اطمینان بھی رہتا ہے کیونکہ گرمائی رہتی ہے اور گرمائی سے واقعی قطرہ بھی نہیں آتا۔ بینوا توجروا۔

الجواب: جبکہ لنگوٹ یا لنگوٹ سے قطرہ بند ہو جاتا ہے تو ان کا باندھنا واجب ہے۔ بحر میں ہے:

متی قدر علی رد السیلان برباط او حشو وجب ردہ | جب (کپڑا وغیرہ) باندھنے یا کوئی زائد چیز رکھنے کے ذریعے جریان کو روکنے پر قادر ہو تو روکنا واجب ہے۔ (ت)

مسئلہ ۲۴۲: از سہسوان ضلع بدایوں مسئولہ سید پرورش علی صاحب یکم ذی القعدہ ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ پیشاب کر کے رفع کراہت کے واسطے اس پر چند بار پانی بہا کر اسی وقت اسی جگہ صرف پانی سے استنجا کیا ہے؟

الجواب: زمین اگر پختہ یا سخت ہو جس پر تین بار پانی بہادینے سے ظن غالب ہو کہ نجاست کو بہالے گیا تو اسی وقت وہیں

---

1 البحر الرائق باب الحیض مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی پاکستان ۱/۲۱۶ Page 607 of 761

Fatawa Razawiya, Volume 4

There is no harm in performing istinja (cleaning after urination/defecation) with water. And Allah the Almighty knows best.

Problem 243: From Baswa Station, Taluka Malkapur, District Buldana, Berar, Madrasa Islami Baswa Station. Questioned by Sirajuddin, 13 Ramadan 1335 AH. What do the scholars of religion say about cleaning istinja with baked brick because clay soil spoils clothes? After using the piece of brick for cleaning istinja, can it be purified in any way to be used again for cleaning istinja or not? Explain and be rewarded.

Answer: Performing istinja with a baked brick is forbidden and disliked (makruh), and there is also a fear of disease in it. The clod etc. with which small istinja (after urination) has been performed can be used again after drying. And Allah the Almighty knows best.

Problem 244: From Madrasa Manzar-e-Islam, Bareilly. Questioned by Maulana Abdullah Bihari, 3 Shawwal 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding the issue where drops of urine always come out after performing istinja with clods and water? What is the ruling in such a case? Explain and be rewarded.

Answer: If drops come out after performing istinja with water, then perform istinja only with clods. If the urine has not spread to an area larger than a rupee coin, it will become pure by clods alone. If drops come out when performing istinja with a clod but stop with water, then istinja with water is necessary. If they come out in both cases, then it is mandatory to wait and adopt those measures which stop the drops. If they don't stop in any way and the time of one prayer passes from beginning to end such that one does not get enough time to perform wudu and pray the fard (obligatory) prayer, then he is excused (ma'zoor). As long as it continues to come at least once during every prayer time, it will be sufficient for him to perform fresh wudu. And Allah the Almighty knows best.

Problem 245 to 272: From Kathiawar. Questioned by Husain son of Qasim, Manager of Madrasa Islami Batwa Shab. 17 Dhu al-Hijjah 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding these issues: (1) Is it permissible to face or turn one's back towards the Qibla while urinating or defecating? (2) Is it permissible to face or turn one's back towards South or North while urinating or defecating? If it is permissible, is facing North better or South?

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4

पानी से इस्तिन्जा (शौच के बाद सफाई) करने में कोई हर्ज नहीं है, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 243: मकाम बसवा स्टेशन, ताल्लुका मलकापुर, ज़िला बुलडाणा, बरार, मदरसा इस्लामिया बसवा स्टेशन से। सालिल सिराजुद्दीन, 13 रमज़ान 1335 हिजरी। उलमा-ए-दीन क्या फ़रमाते हैं कि चिकनी मिट्टी से कपड़े खराब होने के कारण पक्की ईंट से इस्तिन्जा साफ़ करना, क्या ईंट का वह टुकड़ा जिससे इस्तिन्जा साफ़ किया गया हो, किसी सूरत से पाक होकर फिर इस्तिन्जा साफ़ करने के काम आ सकता है या नहीं? बयान फरमाएं और सवाब पाएं।

अल-जवाब: पक्की ईंट से इस्तिन्जा करना मना और मकरूह है और इसमें बीमारी का अंदेशा भी है। जिस ढेले वग़ैरह से छोटा इस्तिन्जा (पेशाब के बाद की सफाई) किया गया हो, सूखने के बाद उसे दोबारा काम में ला सकते हैं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 244: मदरसा मंज़र-ए-इस्लाम बरेली से। सालिल मौलवी अब्दुल्ला बिहारी, 3 शव्वाल 1339 हिजरी। उलमा-ए-दीन क्या फ़रमाते हैं इस मसले में कि ढेले और पानी से इस्तिन्जा करने पर पेशाब का कतरा हमेशा आ जाता है, ऐसी सूरत में क्या हुक्म है। बयान फरमाएं और सवाब पाएं।

अल-जवाब: अगर पानी से इस्तिन्जा करने पर कतरा आता है तो सिर्फ़ ढेले से इस्तिन्जा करे। अगर पेशाब रुपये भर (एक पुराने सिक्के की माप) से ज़्यादा जगह में न फैला हो तो ढेले ही से पाक हो जाएगा। और अगर ढेले से इस्तिन्जा पर कतरा आता है और पानी से बंद हो जाता है तो पानी से इस्तिन्जा ज़रूरी है। और अगर दोनों तरह से आता है तो इंतज़ार करना और वह तदबीरें अमल में लाना जिनसे कतरा रुके वाजिब है। और अगर किसी तरह न रुके और एक नमाज़ का वक़्त शुरू से आख़िर तक गुज़र जाए कि वुज़ू करके फ़र्ज़ पढ़ने की मोहलत न पाए तो वह मज़ूर (विवश/बीमार) है। जब तक नमाज़ के हर वक़्त में कम से कम एक बार आता रहेगा, उसे ताज़ा वुज़ू कर लेना काफ़ी होगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 245 से 272: काठियावाड़ से। सालिल हुसैन वल्द कासिम, मोहतमिम मदरसा इस्लामिया बांटवा शब। 17 ज़िल हिज्जा 1339 हिजरी। उलमा-ए-दीन इन मसाइल में क्या फ़रमाते हैं कि: (1) क्या पेशाब पाख़ाने के वक़्त क़िबले की तरफ़ मुंह या पीठ करना जायज़ है? (2) क्या पेशाब पाख़ाने के

वक़्त उत्तर और दक्षिण की तरफ़ मुंह या पीठ करने की अनुमति है? अगर अनुमति है तो उत्तर की तरफ़ मुंह करना अफ़ज़ल है या दक्षिण की तरफ़?

فتاوی رضویہ جلد چہارم

پانی سے استنجا کرنے میں حرج نہیں واللہ تعالیٰ اعلم۔ مسئلہ ۲۴۳: از مقام بسوہ اسٹیشن تعلق ملکا پور ضلع بلڈانہ برار مدرسہ اسلامی بسوہ اسٹیشن مسئولہ سراج الدین ۱۳ رمضان ۱۳۳۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین کہ چکنی مٹی سے کپڑے خراب ہونے کے سبب اینٹ پختہ سے استنجا صاف کرنا، بعد اینٹ کے ٹکڑے جس سے استنجا صاف کیا گیا وہ کسی صورت سے پاک ہو کر پھر استنجا صاف کرنے کے کام میں آسکتی ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔ الجواب: پختہ اینٹ سے استنجا منع و مکروہ ہے اور اُس میں اندیشہ مرض بھی ہے جس ڈھیلے وغیرہ سے چھوٹا استنجا کیا گیا ہو بعد خشکی دوبارہ کام میں لا سکتے ہیں واللہ تعالیٰ اعلم۔ مسئلہ ۲۴۴: از مدرسہ منظر اسلام بریلی مسئولہ مولوی عبداللہ بہاری ۳ شوال ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں ڈھیلے اور پانی سے استنجا کرنے پر قطرہ پیشاب کا ہمیشہ آجاتا ہے ایسی صورت میں کیا حکم ہے۔ بینوا توجروا۔ الجواب: اگر پانی سے استنجا کرنے پر قطرہ آتا ہے تو صرف ڈھیلے سے استنجا کرے اگر پیشاب روپے بھر سے زائد جگہ میں نہ پھیلا ہو تو ڈھیلے ہی سے پاک ہو جائے گا اور اگر ڈھیلے سے استنجا پر قطرہ آتا ہے اور پانی سے بند ہو جاتا ہے تو پانی سے استنجا ضرور ہے اور اگر دونوں طرح آتا ہے تو انتظار کرنا اور وہ تدبیریں بجالانا جن سے قطرہ رکے واجب ہے اور اگر کسی طرح نہ رکے اور ایک نماز کا وقت اول سے آخر تک گزر جائے کہ وضو کر کے فرض پڑھنے کی مہلت نہ پائے تو وہ معذور ہے جب تک نماز کے ہر وقت میں کم از کم ایک بار آتا رہے گا اسے وضو تازہ کر لینا کافی ہوگا واللہ تعالیٰ اعلم۔ مسئلہ ۲۴۵ تا ۲۷۲: از کاٹھیاواڑ مسئولہ حسین ولد قاسم مہتمم مدرسہ اسلامیہ باٹوہ شب۔ ۱۷ ذی الحجہ ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسائل میں کہ: (۱) کیا استقبال واستدبارِ قبلہ بوقتِ پیشاب پاخانہ جائز ہے۔ (۲)

کیا استقبال واستدبار جنوب و شمال بوقتِ پیشاب و پاخانہ مرخص ہے اگر مرخص ہے تو استقبال بسوئے شمال افضل ہے یا بجنوب۔

Fatawa Rizvia, Volume 4 (3) Regarding facing the North, common people and even some knowledgeable persons talk that Bayt al-Maqdis was the Qibla of the Prophets (peace be upon them), especially the leader of Prophets, the crown of the chosen ones, may my soul be sacrificed for him. And it is located to the North. Also, the shrine of Sheikh Syed Abdul Qadir Jilani (may his secret be sanctified) is towards the North. Therefore, facing North is a height of disrespect. So, are these two holy places located to the North, and is there any prohibition in Sharia regarding facing North? Provide a verdict and be rewarded. The Answer: (1) Both facing (istiqbal) and turning one's back (istidbar) towards the honorable Kaaba while defecating or urinating are impermissible. And Allah Almighty knows best. (2) There is no specification for North or South. As long as one is neither facing nor turning their back to the Qibla, sitting in any direction is permissible. And Allah Almighty knows best. (3) Neither Bayt al-Maqdis nor Baghdad Sharif is exactly to the North from here. Rather, both are towards the West, although slightly inclined towards the North. Addition to Sharia is not allowed. And if their claim is assumed to be true that they are towards the North, then not only facing but also turning one's back would be disrespectful. Now, facing East or West is forbidden because it would mean facing or turning one's back to the honorable Kaaba. And North and South would be forbidden because it would mean facing or turning one's back to Bayt al-Maqdis or Baghdad Sharif. Thus, there would be no direction left to face during one's need. How can this be possible? The ruling for each direction extends up to 45 degrees on both sides, just like facing the Qibla in prayer. In this way, all directions would be covered, and there would be no way to answer the call of nature. And Allah Almighty knows best. Issue 246: From Adh Nagla, Post Office Achnera, District Agra. Questioned by Mr. Muhammad Sadiq Ali Khan, Ramadan 1330 AH. Question: For the protection of children, small copies of the Holy Quran are placed in tin amulets (ta'weez), covered with clean cloth, and hung around children's necks. This is done with great care. Or sometimes just one or two verses. Children go to the toilet, and various forms of disrespect occur. Is this practice permissible in Sharia or not? Provide a verdict and be rewarded. The Answer: It is permissible to put an amulet in a separate casing (like wax cloth etc.) and hang it around children's necks, even if it contains some Quranic verses. And it is also permissible to take it into the toilet with this precaution. However, it is better to avoid it. It is stated in Durr-e-Mukhtar: | An incantation (Ruqyah) in a separate casing is not disliked to enter | Entering the toilet with an amulet wrapped in a casing |

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4 (3) उत्तर (उत्तर दिशा) की ओर मुँह करने के बारे में आम लोग बल्कि कुछ जान-पहचान वाले लोग भी ये बातें करते हैं कि बैतुल मुक़द्दस अंबिया (अलैहिमुस्सलाम) का क़िबला था, ख़ुसूसन नबियों के सरदार, अस्फिया के सरताज, मेरी जान उन पर फ़िदा हो, का क़िबला भी बैतुल मुक़द्दस ही था और वह उत्तर में स्थित है। और शेख सैयद अब्दुल क़ादिर जिलानी (कुद्दिसा सिर्रहुल अज़ीज़) का रौज़ा भी उत्तर की ओर है। इसलिए उत्तर की ओर मुँह करना बहुत बड़ी बेअदबी है। तो क्या ये दोनों पवित्र स्थान उत्तर में स्थित हैं और क्या शरीअत में उत्तर की ओर मुँह करने की कोई मनाही है? जवाब दें और सवाब पायें। अल-जवाब (उत्तर): (1) पाखाना-पेशाब के समय काबा मुअज़्ज़मा की ओर मुँह करना (इस्तेक़बाल) और पीठ करना (इस्तेदबार), दोनों ना-जायज़ हैं। वल्लाहु तआला आलम। (2) उत्तर या दक्षिण की कोई विशेषता नहीं है। जब तक काबा की ओर न मुँह हो और न पीठ, तब तक किसी भी दिशा में बैठना जायज़ है। वल्लाहु तआला आलम। (3) न तो बैतुल मुक़द्दस यहाँ से ठीक उत्तर में है और न ही बग़दाद शरीफ़। बल्कि दोनों यहाँ से पश्चिम की ओर हैं, हालांकि उत्तर की ओर थोड़े झुके हुए हैं। और शरीअत में अपनी तरफ से कुछ बढ़ाने की इजाज़त नहीं है। और अगर उन लोगों की बात मान ली जाए कि वे उत्तर दिशा में ही हैं, तो सिर्फ़ सामने मुँह करना ही बेअदबी नहीं होगी, बल्कि पीठ करना भी होगी। अब पूरब या पश्चिम की ओर मुँह करना तो इसलिए मना हुआ कि काबा की ओर मुँह या पीठ होगी, और उत्तर-दक्षिण इसलिए मना हुआ कि बैतुल मुक़द्दस या बग़दाद शरीफ़ की ओर मुँह या पीठ होगी। तो फिर किसी भी दिशा में मुँह करने की इजाज़त नहीं रहेगी। ये कैसे मुमकिन है? हर दिशा का हुक्म उसके दोनों पहलुओं में 45-45 डिग्री तक रहता है, जिस तरह नमाज़ में क़िबला की ओर मुँह करना। इस तरह पूरी दुनिया की तमाम दिशाएं घिर जाएंगी और हाजत पूरी करने की कोई सूरत नहीं बचेगी। वल्लाहु तआला आलम। मसला 246: आध नगला, डाकख़ाना अचेनेरा, ज़िला आगरा। सायल जनाब मोहम्मद सादिक अली ख़ान साहब, रमज़ान 1330 हिजरी। क्वेश्चन (प्रश्न): बच्चों की हिफ़ाज़त के लिए उनके गले में टीन के तावीज़ में छोटी हमायल शरीफ़ और उसके ऊपर पाक कपड़ा चढ़ाकर डालते हैं। यह काम बहुत एहतियात से होता है। या सिर्फ एक-दो आयतें। बच्चे पाखाने में जाते हैं और कई तरह की बेअदबियाँ होती हैं। क्या यह काम शरीअत में जायज़ है या नहीं? जवाब दें और सवाब पायें। अल-जवाब (उत्तर): तावीज़ को मोम जामा वगैरह करके अलग ग़िलाफ़ (कवर) में रखकर बच्चों के गले में डालना जायज़ है, चाहे उसमें कुछ क़ुरआनी आयतें ही क्यों न हों। और इस एहतियात के साथ पाखाने में ले जाना भी जायज़ है, हाँ परहेज़ करना बेहतर है। 'दुर्रे मुख़्तार' में है: | अलग कवर में रखी हुई दुआ (रुक़्या) के साथ

[शौचालय में] जाना मकरूह नहीं है | कवर में लिपटे हुए तावीज़ के साथ बैतुल ख़ला (शौचालय) जाना |

पृष्ठ 609 का 761

فتاویٰ رضویہ، جلد چہارم (۳) درباره استقبالِ شمال عوام بلکہ دانستہ حضرات چہ میگوئیاں کرتے ہیں کہ بیت المقدس انبیاء علیہم السلام کا قبلہ خصوصاً سرورِ انبیاء سرتاجِ اصفیاء روحی فداہ کا قبلہ بھی بیت المقدس ہی تھا اور وہ واقع بہ شمال ہے اور روضہ شیخ سید عبدالقادر جیلانی قدس سرہ العزیز بھی بسوئے شمال ہے لہذا استقبالِ شمالی میں کمال درجہ کی بے ادبی ہے تو کیا یہ ہر دو مقاماتِ اقدس واقع بہ شمال ہیں اور استقبالِ شمال میں کوئی ممانعت شرع میں پائی جاتی ہے؟ بینوا توجروا۔ الجواب: (۱) پاخانہ پیشاب کے وقت قبلہ معظمہ کا استقبال واستدبار دونوں ناجائز ہیں واللہ تعالیٰ اعلم۔ (۲) شمال جنوب کی کوئی تخصیص نہیں قبلہ کو نہ منہ ہو نہ پیٹھ پھر جس طرف بھی بیٹھے جائز ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔ (۳) نہ بیت المقدس یہاں سے ٹھیک شمال کو ہے نہ بغداد شریف، بلکہ دونوں یہاں سے جانب مغرب ہی ہیں اگرچہ شمال کو قدرے جھکے ہوئے اور شریعت پر زیادت کی اجازت نہیں اور اگر ان لوگوں کا کہنا فرض کر لیا جائے کہ وہ جانب شمال ہی ہیں تو فقط استقبال ہی بے ادبی نہیں بلکہ استدبار بھی۔ اب مشرق یا مغرب کو منہ کرنا تو یوں منع ہوا کہ کعبہ معظمہ کو منہ یا پیٹھ ہوگی اور جنوب و شمال کو یوں منع ہوا کہ بیت المقدس یا بغداد شریف کو رُو یا پشت ہوگی تو قضائے حاجت کے وقت کسی طرف منہ کرنے کی اجازت نہ رہی۔ یہ کیونکر ممکن۔ ہر جہت کا حکم اس کے دونوں پہلوؤں میں ۴۵، ۴۵ درجے تک رہتا ہے جس طرح نماز میں استقبال قبلہ، تو تمام آفاق کا احاطہ ہو گیا اور قضائے حاجت کی کوئی صورت نہ رہی۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ مسئلہ ۲۴۶: ازادھ نگلہ ڈاکخانہ اچنیزہ ضلع آگرہ مسئولہ جناب محمد صادق علی خاں صاحب رمضان ۱۳۳۰ھ بچوں کے گلے میں بچوں کی حفاظت کے لئے چھوٹی حمائل شریف ٹین کے تعویذ میں اور اُوپر اس کے کپڑا پاک چڑھا کر ڈالتے ہیں غرض بہت احتیاط سے یہ کام ہوتا ہے یا فقط ایک دو آیت، بچے پاخانے میں جاتے ہیں طرح طرح کی بے ادبیاں ظہور میں آتی

ہیں یہ کام شرع میں جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔ الجواب: تعویذ موم جامعہ وغیرہ کرکے غلافِ جداگانہ میں رکھ کر بچوں کے گلے میں ڈالنا جائز ہے اگرچہ اس میں بعض آیاتِ قرآنیہ ہوں اور اس احتیاط کے ساتھ پاخانے میں لے جانا بھی جائز ہے، ہاں افضل احتراز ہے، در مختار میں ہے:

| رقية في غلاف متجاف لم يكره دخول | غلاف میں لپٹے ہوئے تعویذ کے ساتھ بیت الخلاء |

Fatawa-e-Razvia Volume Four

“Entering the washroom with it [is permissible, but] avoiding it is better[1].” | It is not disliked to enter [with it], however, avoiding it is superior. (T)

In Radd al-Muhtar, it is stated: “It appears that what is meant by it is what they call nowadays ‘Haikal’ or ‘Hamail,’ which contains Quranic verses. If its cover is separate from it, such as wax cloth or the like, then it is permissible to enter the washroom with it, and it is also permissible for a person in a state of ritual impurity (Junub) to touch it and carry it[2].” | The apparent meaning is that it refers to what is called a Haikal or Hamail today, consisting of Quranic verses. When its cover is distinct, like wax cloth etc., it is permissible to enter the washroom with it; likewise, it is permissible for a person in ritual impurity to touch or carry it. (T)

Precaution should be taken against disrespect, yet this matter does not prevent benefit as the intention of those who put it on is for blessings (Tabarruk). “Verily, actions are judged by intentions[3].” And the Commander of the Faithful, Umar (may Allah be pleased with him), wrote on the thighs of the camels given in charity, “Restrained in the path of Allah.” | The reward of deeds depends on intentions. Hadrat Umar (may Allah be pleased with him) wrote on the thighs of camels, “Devoted in the path of Allah.” (T)

The detail of this objective is in our treatise 'Al-Harf al-Hasan fi al-Kitaba 'ala al-Kafan', but comparing the Great Quran and the Noble Mushaf to an amulet is not possible. Firstly: Even if the Holy Quran is in ten covers, taking it into a toilet is undoubtedly heinous in the eyes of Muslims and will be considered disrespectful in their custom. The basis of respect and insult depends on custom. An amulet that contains some verses, those verses are certainly part of the Great Quran, but it will be called an 'amulet', not the 'Quran'. For example, a book of grammar (Nahw) contains Quranic verses in the examples of its rules; the ruling for it will be that of a grammar book, not that of the Noble Mushaf. It is forbidden to take the Noble Mushaf into the Dar al-Harb (abode of war), but no one has forbidden taking a book. It is forbidden to touch the cover of the Mushaf without ablution (wudu), but touching the pages of such a book is permissible. Secondly: Placing it in a tin box and sealing it, or sewing it within a wax cloth or fabric cover is itself contrary to the Shari'ah as it prevents its recitation. The predecessor imams considered putting a strap on the cover of the Noble Mushaf as disliked because tying a strap would apparently be a form of prohibition. So, keeping it in a tin etc. and sewing it up forever, which is a real

prohibition, is to what extent disliked and a subject of condemnation? It is stated in Tabyin al-Haqa'iq:

[1] Durr al-Mukhtar, Book of Purification, printed by Mujtabai Delhi, 1/34 [2] Radd al-Muhtar, Chapter on Supplicating with what contains Praise, printed by Mujtabai Delhi, 1/131 [3] Sahih al-Bukhari, Chapter on how the Revelation began to the Messenger of Allah, printed by Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/2 Page 610 of 761

फ़तावा-ए-रज़विया, खंड 4

"इसके साथ [शौचालय में] प्रवेश करना [जायज़ है, लेकिन] बचना बेहतर है[1]।" | इसमें प्रवेश करना मकरूह नहीं है, अलबत्ता बचना अफ़ज़ल है (त)।

रद्द अल-मुह्तार में है: "प्रतीत होता है कि इससे अभिप्राय वह है जिसे वे आज 'हैकल' या 'हमाइल' कहते हैं, जिसमें कुरान की आयतें शामिल होती हैं। यदि उसका कवर उससे अलग हो, जैसे मोम का कपड़ा आदि, तो उसके साथ शौचालय में प्रवेश करना जायज़ है, और एक अशुद्ध (जुनुब) व्यक्ति के लिए उसे छूना और ले जाना भी जायज़ है[2]।" | ज़ाहिर यह है कि इससे मुराद वह चीज़ है जिसे आज कल हैकल या हमाइल कहते हैं और वह आयत-ए-कुरानिया पर मुश्तमिल होती है। जब उसका ग़िलाफ़ अलग हो जैसे मोम जामा व़गैरह तो उसके साथ भी बैतुल खला में दाखिल होना जायज़ है, नीज़ जुनबी आदमी का उसे हाथ लगाना और उठाना भी जायज़ है। (त)

बे-अदबियों से बचने की एहतियात की जाए, फिर भी यह बात फ़ायदे से नहीं रोकती क्योंकि पहनाने वालों की नीयत तबर्रुक है। "बेशक, कार्यों का दारोमदार नीयतों पर है[3]।" और अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने सदक़े के ऊंटों की रानों पर लिखा, "अल्लाह की राह में रोका हुआ"। | आमाल (के सवाब) का दारोमदार नीयतों पर है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ऊंटों की रानों पर लिखा "अल्लाह की राह में रोका हुआ"। (त)

इस मक़सद की तफ़्सील हमारे रिसाले 'अल-हर्फ़ अल-हसन फ़ी अल-किताबत अलल कफ़न' में है, मगर तावीज़ पर क़ुरआन-ए-अज़ीम और मुसहफ़-ए-करीम का क़यास नहीं हो सकता। पहला: क़ुरआन-ए-मजीद चाहे दस ग़िलाफ़ों में हो, पाख़ाने में ले जाना निस्संदेह मुसलमानों की नज़र में घृणित है और उनके उर्फ़ में बे-अदबी माना जाएगा। अदब और तौहीन का आधार उर्फ़ पर है। तावीज़ जो कुछ आयतों पर मुश्तमिल हो, वे आयतें यक़ीनन क़ुरआन-ए-अज़ीम हैं, मगर उसे तावीज़ कहेंगे न कि क़ुरआन। जैसे नह्व की किताब कि उसके नियमों के उदाहरणों में क़ुरआनी आयतें शामिल होती हैं, उसके लिए नह्व की किताब का ही हुक्म होगा न कि मुसहफ़-ए-शरीफ़ का। मुसहफ़-ए-शरीफ़ को दारुल हरब में ले जाना मना है और किताब ले जाने से किसी ने मना नहीं किया। मुसहफ़ की जिल्द को बिना वज़ू छूना हराम है और उस किताब के पन्ने को छूना जायज़ है। दूसरा: उसे टिन में रखकर बंद कर देना या मोम जामा या कपड़े के ग़िलाफ़ में सी देना, यह स्वयं शरीयत के खिलाफ है क्योंकि इससे उसकी तिलावत रुक जाती है। पूर्वज इमामों ने तो मुसहफ़-ए-

शरीफ़ के ग़िलाफ़ में बंद लगाने को मकरूह माना था क्योंकि बंद बांधना ज़ाहिरी तौर पर मना करने की एक सूरत होगी। तो इस तरह टिन व़गैरह में रखकर हमेशा के लिए सी देना, जो कि हक़ीक़तन मना करना है, किस दर्जे मकरूह और निंदनीय है? तब्यीन अल-हक़ायिक़ में फ़रमाया:

[1] दुर्र-ए-मुख्तार, किताबुत तहारत, मुजतबाई दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 1/34 [2] रद्द अल-मुह्तार, मतलूब अद-दुआ अला मा यशतमिलु अस-सना, मुजतबाई दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 1/131 [3] सहीह अल-बुख़ारी, बाब कैफ काना बदउल वही इला रसूलिल्लाह, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची द्वारा प्रकाशित, 1/2 पृष्ठ 610/761

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم

الخلاء بہ والاحتراز افضل[1] | میں داخل ہونا مکروہ نہیں البتہ بچنا افضل ہے (ت)

رد المحتار میں ہے : الظاھر ان المراد بھا مایسمونہ الأن بالھیکل | ظاہر یہ ہے کہ اس سے مراد وہ چیز ہے جسے آج کل ہیکل یا والحمائل المشتمل علی الأیات القرانیۃ فاذاکان | حمائل کہتے ہیں اور وہ آیات قرآنیہ پر مشتمل ہوتی ہے جب اس غلافہ منفصلا عنہ کالمشمع ونحوہ جاز دخول | کا غلاف الگ ہو جیسے موم جامع وغیرہ تو اس کے ساتھ بھی الخلاء بہ و مسہ و حملہ للجنب [2]۔ | بیت الخلا میں داخل ہونا جائز ہے، نیز جنبی آدمی کا اسے ہاتھ لگانا اور اٹھانا بھی جائز ہے۔ (ت)

بے ادبیوں کی احتیاط کی جائے پھر یہ امر مانع انتفاع نہیں کہ پہنانے والوں کی نیت تبرک ہے۔

وانما الاعمال بالنیات[3] وقد کتب امیر المؤمنین | اعمال (کے ثواب) کا دارومدار نیتوں پر ہے۔ حضرت عمر رضی عمر رضی اللہ تعالی عنہ علی افخاذ اھل الصدقۃ | اللہ تعالیٰ عنہ نے اونٹوں کی رانوں پر لکھا "اللہ کی راہ میں روکا حبیس في سبیل اللہ۔ | ہوا"۔ (ت)

اس مقصد کی تفصیل ہمارے رسالہ الحرف الحسن فی الکتابۃ علی الکفن میں ہے مگر تعویذ پر قرآن عظیم و مصحف کریم کا قیاس نہیں ہوسکتا۔ اولاً: قرآن مجید اگرچہ دس غلافوں میں ہو پاخانے میں لے جانا بلاشبہ مسلمانوں کی نگاہ میں شنیع اور اُن کے عرف میں بے ادبی ٹھہرے گا اور ادب وتوہین کا مدار عرف پر ہے تعویذ کہ بعض آیات پر مشتمل ہو وہ آیات ضرور قرآن عظیم ہیں مگر اُسے تعویذ کہیں گے نہ قرآن، جیسے کتاب نحو کہ امثلہ قواعد میں آیات قرآنیہ پر مشتمل، اُس کے لئے کتاب نحو ہی کا حکم ہوگا نہ کہ مصحف شریف کا۔ مصحف شریف دارالحرب میں لے جانا منع ہے اور کتاب لے جانے سے کسی نے منع نہ کیا مصحف کے پٹھے کو بے وضو چھونا حرام اور

اُس کتاب کے ورق کو بھی چھونا جائز۔ ثانیاً: اُس کا ٹین میں رکھ کر بند کر دینا یا موم جامے یا کپڑے ہی کے غلاف میں سی دینا یہ خود خلاف شرع ہے کہ اُس کی تلاوت سے منع ہے ائمہ سلف تو غلاف مصحف شریف میں بند لگانے کو مکروہ جانتے تھے کہ بند باندھنا بظاہر منع کی صورت ہوگا تو یوں ٹین وغیرہ میں رکھ کر ہمیشہ کیلئے سی دینا کہ حقیقۃً منع ہے کس درجہ مکروہ و مورد شنیع ہے۔ تبیین الحقائق میں فرمایا:

[1] دُر مختار کتاب الطہارۃ مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/۳۴ [2] رد المحتار، مطلب الدعاء علی مایشتمل الثناء، مطبوعہ مجتبائی دہلی، ۱/۱۳۱ [3] صحیح البخاری باب کیف کان بدء الوحی الی رسول اللہ مطبوعہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۲ Page 610 of 761

Fatawa Rizvia Volume 4

[Arabic Boxed Text]: كان المتقدمون يكرهون شد المصاحف واتخاذ الشد لها لئلا يكون في صورة المنع فاشبه الغلق على باب المسجد[1]۔ [Urdu Translation in Box]: The predecessors used to consider it disliked (Makruh) to lock up the Holy Quran (in something) and to adopt the method of locking it, so that a situation of preventing (access) does not arise, as it would then resemble closing the door of a mosque. (T)

Thirdly: Writing the Great Quran in a small format or making it into amulets is legally disliked (Makruh) and disapproved. The Commander of the Faithful, Umar Farooq (may Allah be pleased with him), saw someone with a finely written Quran; he considered it disliked, struck the person, and said: "Magnify the Book of Allah[2]." Narrated by Abu Ubayd in *Fada'il al-Qur'an* (Honor the Book of Allah. Abu Ubayd narrated it in *Fada'il al-Qur'an*. T). The Commander of the Faithful Ali (may Allah honor his face) disliked making the Mushaf small[3], narrated by Abd al-Razzaq in his *Musannaf*, and similarly by Abu Ubayd in his *Fada'il* (Abd al-Razzaq narrated it in his *Musannaf*, and Abu Ubayd quoted its meaning in *Fada'il*. T). Similarly, Ibrahim al-Nakha'i said it is disliked[4], narrated by Ibn Abi Dawud in *al-Masahif* (Ibn Abi Dawud mentioned it in *al-Masahif*. T). In *Durr al-Mukhtar*: "It is disliked to make the Mushaf small"[5] (Bringing the Holy Quran into a small format is disliked. T). In *Radd al-Muhtar*: "i.e., reducing its size[6]." (Meaning reducing its volume. T) So making it so small that, God forbid, it becomes a toy and a spectacle, how can that be acceptable? And those daring people do this rejected act for the sake of amulets; if Muslims did not make them into amulets, why would they buy them, and if they didn't buy them, why would they print them? So making them into amulets is the cause of this act of theirs, and by abandoning it, it would be stopped. Therefore, making it into an amulet is certainly deserving of being abandoned. A grand detail of this proof is in our treatise *al-Kashf al-Shafiya fi Hukm al-Phonographia*. And Allah the Almighty knows best.

---

1. Tabyin al-Haqa'iq, Section on disliking facing the Qibla with private parts, etc., printed in Bulaq, Egypt, 1/168.
2.
3.
4.
5. In *Durr al-Mukhtar*, Book of Prohibition and Permission, Section on Sales, printed in Mujtabai, Delhi, 2/245.

6. *Radd al-Muhtar*, Book of Prohibition and Permission, Section on Sales, Mustafa al-Babi, Egypt, 5/27.

फ़तावा रिज़विया खंड 4

[अरबी बॉक्स टेक्स्ट]: كان المتقدمون يكرهون شد المصاحف واتخاذ الشد لها لئلا يكون في صورة المنع فاشبه الغلق على باب المسجد[1]۔ [बॉक्स में उर्दू अनुवाद]: पूर्वजों ने पवित्र कुरान को (किसी चीज़ में) बंद करने और उन्हें बंद करने का तरीका अपनाने को मकरूह (नापसंद) माना था ताकि (उससे) रोकने की स्थिति पैदा न हो, क्योंकि ऐसा करना मस्जिद का दरवाज़ा बंद करने के समान होगा। (त)

तीसरा: महान कुरान को छोटे आकार में लिखना या उसे ताबीज़ के रूप में बनाना शरीयत की दृष्टि से मकरूह और नापसंद है। अमीरुल मोमिनीन उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने एक व्यक्ति के पास बारीक लिखा हुआ कुरान मजीद देखा; उन्होंने इसे मकरूह माना, उस व्यक्ति को मारा और कहा: "अल्लाह की किताब का सम्मान करो[2]।" इसे अबू उबैद ने 'फ़ज़ाइल अल-कुरान' में रिवायत किया है (अल्लाह की किताब का सम्मान करो। अबू उबैद ने इसे फ़ज़ाइल अल-कुरान में रिवायत किया। त)। अमीरुल मोमिनीन अली (करमल्लाहु वजहुल करीम) मुसहफ़ को छोटा बनाना मकरूह समझते थे[3], इसे अब्दुर रज्ज़ाक ने अपनी 'मुसन्नफ़' में और अबू उबैद ने अपनी 'फ़ज़ाइल' में रिवायत किया है (अब्दुर रज्ज़ाक ने इसे अपनी मुसन्नफ़ में रिवायत किया, और अबू उबैद ने फ़ज़ाइल में इसका अर्थ उद्धृत किया है। त)। इसी तरह इब्राहिम नख़ई ने इसे मकरूह कहा है[4], जिसे इब्न अबी दाऊद ने 'अल-मसाहिफ़' में रिवायत किया है (इब्न अबी दाऊद ने इसे मसाहिफ़ में वर्णित किया है। त)। 'दुर्र-ए-मुख्तार' में है: "मुसहफ़ को छोटा करना मकरूह है"[5] (पवित्र कुरान को छोटे आकार में लाना मकरूह है। त)। 'रद्दुल मुहतार' में है: "यानी इसके आकार को छोटा करना[6]।" (अर्थात इसके आयतन को कम करना। त) तो इसे इतना छोटा बनाना कि - खुदा न करे - यह एक खिलौना और तमाशा बन जाए, यह कैसे स्वीकार्य हो सकता है? और वे साहसी लोग यह निंदनीय कार्य ताबीज़ों के लिए करते हैं; यदि मुसलमान उन्हें ताबीज़ न बनाएँ तो वे क्यों खरीदेंगे, और यदि वे न खरीदें तो वे इसे क्यों छापेंगे? इसलिए उन्हें ताबीज़ बनाना उनके इस कृत्य का कारण है, और इसे छोड़ने से यह रुक जाएगा। इसलिए इसका ताबीज़ बनाना निश्चित रूप से त्यागने योग्य है। इस दलील का विस्तृत विवरण हमारे रिसाले 'अल-कश्फ़ अल-शाफ़िया फ़ी हुक्म अल-फ़ोनोग्राफ़िया' में है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

1. तबीन अल-हक़ाएक़, अध्याय क़िबला की ओर मुँह करने की नापसंदगी आदि, बुलाक, मिस्र, 1/168।
2.
3.
4.
5. दुर्र-ए-मुख्तार, किताब अल-हज़र वल-इबाह, बिक्री का अध्याय, मुजतबाई, दिल्ली, 2/245।
6. रद्दुल मुहतार, किताब अल-हज़र वल-इबाह, बिक्री का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 5/27।

فتاوی رضویہ جلد چہارم

کان المتقدمون یکرھون شد المصاحف واتخاذ الشد لھا لئلا یکون فی صورۃ المنع فاشبہ الغلق علی باب المسجد[1]۔ متقدمین ، قرآن پاک کو (کسی چیز میں) بند کر دینے اور انہیں بند کرنے کا طریقہ اختیار کرنے کو مکروہ سمجھتے تھے تاکہ (اس سے) روکنے کی صورت نہ پیدا ہو تو اس طرح وہ مسجد کا دروازہ بند کرنے کے مشابہ ہو جائے گا (ت)

ثالثاً: قرآن عظیم چھوٹی تقطیع پر لکھنا حمائل بنانا شرعاً مکروہ ناپسند ہے، امیر المومنین عمر فاروق رضی اللہ تعالٰی عنہ نے ایک شخص کے پاس قرآن مجید باریک لکھا ہوا دیکھا اسے مکروہ رکھا اور اس شخص کو مارا اور فرمایا عظّموا کتاب اللہ[2]۔ رواہ ابو عبید فی فضائل القرآن کتاب اللہ کی عظمت کرو۔ (ابوعبید نے اسے فضائل قرآن میں روایت کیا۔ ت) امیر المومنین علی کرم اللہ وجہہ الکریم مصحف کو چھوٹا بنانا مکروہ رکھتے[3] رواہ عنہ عبد الرزاق فی مصنفہ وبمعناہ ابوعبید فی فضائلہ (عبدالرزاق نے اسے اپنے مصنف میں روایت کیا، اور ابوعبید نے فضائل میں اس کا مفہوم نقل کیا ہے۔ ت) اسی طرح ابراہیم نخعی نے اسے مکروہ فرمایا[4] رواہ ابن ابی داؤد فی المصاحف (ابن داؤد نے اسے مصاحف میں بیان کیا ت) در مختار میں ہے: یکرہ تصغیر مصحف [5] (قرآن پاک کو چھوٹی تقطیع میں لانا مکروہ ہے۔ ت) ردالمحتار میں ہے: ای تصغیر حجمہ[6] (یعنی اس کا حجم چھوٹا کرنا۔ ت) تو اس قدر چھوٹا بنانا کہ معاذ اللہ ایک کھلونا اور تماشہ ہو کس طرح مقبول ہو سکتا ہے اور وہ جری لوگ یہ فعل مردود نہیں تعویذوں کی خاطر کرتے ہیں اگر مسلمان ان کو تعویذ نہ بنائیں تو کیوں خریدیں اور نہ خریدیں تو وہ کیوں اسے چھاپیں تو ان کا تعویذ بنانا ان کے اس فعل کا باعث ہے اور اس کے ترک میں اس کا انسداد تو اس کا تعویذ بنانا ضرور مستحق

الترک ہے اس دلیل کی تفصیل جلیل ہمارے رسالہ الکشف الشافیا فی حکم فونو جرافیا میں ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔

---

1. تبیین الحقائق فصل کرہ استقبال القبلۃ بالفرج الخ مطبوعہ بولاق مصر ۱/ ۱٦۸

.2

.3

.4

5. در مختار کتاب الحظر والاباحۃ فصل فی البیع مطبوعہ مجتبائی دہلی ۲/ ۲٤٥

6. ردالمحتار کتاب الحظر والاباحۃ فصل فی البیع مصطفی البابی مصر ٥/ ۲۷

Fatawa Razawiyya Volume Four Detailed jurisprudential issues under "Fa" in the margins of Fatawa Razawiyya Volume One (Old)

Sublime Benefits (Fawa'id-e-Jalila)

Arrangement and Categorization: Maulana Hafiz Muhammad Abdul Sattar Saeedi Director of Education, Jamia Nizamia Razvia, Lahore

www.dawateislami.net I.T. Majlis of Dawat-e-Islami Page 612 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी फ़तावा रज़विया जिल्द अव्वल (क़दीम) के हाशिए पर "फ़" के तहत मबसूत फ़िक़्ही मसाइल

फ़वाइदे जलीला (भव्य लाभ)

तरतीब व तबवीब (व्यवस्था और वर्गीकरण): मौलाना हाफ़िज़ मुहम्मद अब्दुल सत्तार सईदी नाज़िम-ए-ता'लीमात जामिआ निज़ामिया रज़विया लाहौर

www.dawateislami.net आई. टी. मज्लिस दावत-ए-इस्लामी पृष्ठ 761 में से 612

فتاویٰ رضویہ جلد چہارم فتاویٰ رضویہ جلد اول (قدیم) کے حاشیہ پر "ف" کے تحت مبسوط فقہی مسائل

فوائدِ جلیلہ

ترتیب و تبویب مولانا حافظ محمد عبدالستار سعیدی ناظم تعلیمات جامعہ نظامیہ رضویہ لاہور

www.dawateislami.net I.T. Majlis of Dawat-e-Islami Page 612 of 761

Volume Four | Fatawa Rizvia

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful Book of Purification Chapter on Ablution

Topics

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
1	Issue: Do not close eyes tightly during ablution, yet the ablution will be valid.	4	14
2	Issue: If a layer of henna remains on a woman's hands or feet and she is unaware, then the ablution and ritual bath (ghusl) will be valid. However, once she becomes aware, she should remove it and pour water over that area.	1	14
3	Issue: If kohl remains in the corner of the eye or on the eyelid and one is unaware, then apparently there is no harm; and if it is felt in the corner after prayer, it is not impure at all.	2	14
4	Issue: If a layer of ink remains on a writer's nail and he was unaware, then apparently there is no harm.	3	14

Page 614 of 761

जिल्द चहारुम (भाग 4) | फ़तावा रज़विया

बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम किताबुल तहारत (पवित्रता की पुस्तक) बाबुल वुज़ू (वुज़ू का अध्याय)

उनवानात (शीर्षक)

नंबर शुमार	उनवानात	फ़ायदा नंबर	सफ़हा नंबर
१	मसला: वुज़ू में आँखें ज़ोर से बंद न करें लेकिन वुज़ू हो जाएगा।	४	१४
२	मसला: औरत के हाथ-पाँव पर मेहंदी की तह लगी रह गई और ख़बर न हुई तो वुज़ू और ग़ुस्ल हो जाएगा। हाँ जब जानकारी हो तो उसे छुड़ा कर वहाँ पानी बहा दे।	१	१४
३	मसला: सुरमा आँख के कोने या पलक में रह गया और ख़बर न हुई तो ज़ाहिरन कोई हर्ज नहीं और नमाज़ के बाद कोने में महसूस हुआ तो असल में नापाक नहीं।	२	१४
४	मसला: कातिब (लेखक) के नाख़ून पर रोशनाई (स्याही) की तह लगी रह गई और ख़बर न हुई तो ज़ाहिरन कोई हर्ज नहीं।	३	१४

पृष्ठ ६१४ का ७६१

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم ط کتاب الطھارۃ باب الوضوء

عنوانات

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱	مسئلہ: وضو میں آنکھیں زور سے نہ بند کرے مگر وضو ہو جائے گا	۴	۱۴
۲	مسئلہ: عورت کے ہاتھ پاؤں پر مہندی کا جرم لگارہ گیا اور خبر نہ ہوئی تو وضو و غسل ہو جائیگا۔ ہاں جب اطلاع ہو چھڑا کر وہاں پانی بہادے۔	۱	۱۴
۳	مسئلہ: سرمہ آنکھ کے کوئے یا پلک میں رہ گیا اور اطلاع نہ ہوئی تو ظاہر ا حرج نہیں اور بعد نماز کوئے میں محسوس ہوا تو اصلاً پاک نہیں۔	۲	۱۴
۴	مسئلہ: کاتب کے ناخن پر روشنائی کا جرم لگا رہ گیا اور خبر نہ ہوئی تو ظاہر ا حرج نہیں۔	۳	۱۴

Fatawa-e-Razvia Volume IV

S. No.	Titles / Subjects	Benefit No.	Page
5	Problem: It is obligatory to ensure water reaches the skin in Wudu and Ghusl even if not by one's own action, for example, if rain falls and a quarter of the head becomes moist, the obligation of wiping (Masah) the head is fulfilled.	2	15
6	Problem: There is a consensus (Ijma) on washing the feet; no one except a small group has spoken for wiping (Masah) over the feet. The research is that this small group recanted their position.	1	16
7	Problem: If the lips are closed tightly while performing Wudu and the mouth is not rinsed (Kulli), the Wudu will not be valid.	2	17
8	Problem: If the hair of the eyebrows, mustache, and sideburns are sparse, it is obligatory to wash them and the skin beneath them in Wudu.	3	17
9	Problem: In Wudu, it is also obligatory to flow water over the temples.	1	18
10	Problem: Wiping (Masah) of the hair that hangs down below the level of the head is not sufficient.	3	18
11	Problem: If a cap or scarf is such that moisture from it certainly reaches a quarter of the head, then it is sufficient; otherwise, not.	4	18
12	Essential Problem: It is obligatory to flow water over every single particle of the face, hands, and feet. Merely touching with a wet hand is not obligatory; at least two drops should flow over every part.	1	19
13	Problem: Detailed research shows that in cases of necessity, just as the unintentional presence of dried mud or clay does not prevent the validity of Wudu and Ghusl, similarly for hard substances like flour, etc.	3	19
14	Problem: In Wudu and Ghusl, there is no such obligation (Wajib) whose omission makes one a sinner, provided purity is achieved.	3	20
15		4	20

S. No.	Titles / Subjects	Benefit No.	Page
	Problem: In our school of thought (Madhab), starting Wudu with 'Bismillah' is only a Sunnah, not obligatory (Wajib), although Imam Ibn al-Humam leaned towards its obligation.		
16	Problem: The length of the Miswak should not exceed one hand-span (Balisht).	2	22
17	Problem: The water used for Wudu will be placed in the scale of good deeds on the Day of Resurrection.	1	25
18	Problem: It is better not to flick water off the hands in Wudu or Ghusl, but it is not forbidden; the Hadith mentioning it as "Satan's fan" is weak (Da'if).	4	27
19	Problem: After performing Istinja with water, it is recommended (Mustahab) to dry thoroughly with a cloth; if a cloth is not available, then repeatedly with the left hand until dry.	5	29

फतावा-ए-रजविया जिल्द चौथी

क्र.सं.	शीर्षक	फ़ायदा नं.	पृष्ठ
५	मसअला: वज़ू और ग़ुस्ल में पानी पहुँचाना फ़र्ज़ है चाहे वह अपने अमल से न हो, जैसे बारिश की फुहार पड़ी और चौथाई सर नम हो गया, तो सर का मसह करने का फ़र्ज़ अदा हो गया।	२	१५
६	मसअला: पाँव धोने पर इजमा (सर्वसम्मति) है, एक छोटे समूह के अलावा किसी ने पाँव के मसह की बात नहीं कही। शोध यह है कि उस छोटे समूह ने भी अपने रुख से रुजू कर लिया।	१	१६
७	मसअला: अगर होंठ बहुत ज़ोर से बंद करके वज़ू किया और कुल्ली नहीं की, तो वज़ू नहीं होगा।	२	१७
८	मसअला: अगर भौंहों, मूँछों और कनपटी के बाल विरल (पतले) हों, तो वज़ू में उन बालों और उनके नीचे की खाल को धोना फ़र्ज़ है।	३	१७
९	मसअला: वज़ू में कनपटी के ऊपर भी पानी बहाना फ़र्ज़ है।	१	१८
१०	मसअला: सर के नीचे जो बाल लटकते हैं, उनका मसह काफ़ी नहीं है।	३	१८
११	मसअला: टोपी या दुपट्टा अगर ऐसा हो कि उसके ऊपर से नमी निश्चित रूप से सर के चौथाई हिस्से तक पहुँच जाए, तो काफ़ी है, वर्ना नहीं।	४	१८
१२	मसअला ज़रूरिया: मुँह, हाथ और पाँव के ज़र्रे-ज़र्रे पर पानी बहाना फ़र्ज़ है। केवल भीगा हाथ फेरना फ़र्ज़ नहीं है, कम से कम हर हिस्से से दो बूँदें बहें।	१	१९
१३	मसअला: बड़ी तहक़ीक़ कि ज़रूरत की जगहों पर जिस तरह बिना जानकारी के मिट्टी या गारे का लगा रह जाना वज़ू और ग़ुस्ल में बाधक नहीं है, वैसे ही सख़्त चीज़ों जैसे आटा वग़ैरह का भी।	३	१९
१४	मसअला: वज़ू और ग़ुस्ल में ऐसा कोई वाजिब नहीं है जिसके न करने से इंसान गुनहगार हो, बशर्ते कि पाकी (पवित्रता) हासिल हो जाए।	३	२०
१५		४	२०

क्र.सं.	शीर्षक	फ़ायदा नं.	पृष्ठ
	मसअला: हमारे मज़हब में 'बिस्मिल्लाह' से वज़ू की शुरुआत करना सिर्फ़ सुन्नत है, वाजिब नहीं, हालाँकि इमाम इब्नुल हुमाम का रुझान इसके वाजिब होने की ओर था।		
१६	मसअला: मिसवाक की लंबाई एक बालिश्त (एक बित्ता) से ज़्यादा नहीं होनी चाहिए।	२	२२
१७	मसअला: क़यामत के दिन वज़ू का पानी नेकियों के पलड़े में रखा जाएगा।	१	२५
१८	मसअला: वज़ू या ग़ुस्ल में हाथों से पानी झटकना बेहतर नहीं है मगर मना भी नहीं है, और इस बारे में जो हदीस आई है कि वह 'शैतान का पंखा' है, वह ज़ईफ़ (कमज़ोर) है।	४	२७
१९	मसअला: पानी से इस्तिंजा करने के बाद कपड़े से अच्छी तरह सुखा लेना मुस्तहब (पसंदीदा) है, अगर कपड़ा न हो तो बाएं हाथ से बार-बार पोंछें जब तक कि सूख न जाए।	५	२९

فتاوی رضویہ جلد چہارم

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ
۵	مسئلہ: وضو و غسل میں پانی پہنچانا فرض ہے اگرچہ اپنے فعل سے نہ ہو مثلاً پھوہار برسی اور چوتھائی کو نم پہنچ گئی مسح سر کا فرض اتر گیا۔	۲	۱۵
۶	مسئلہ: پاؤں کے دھونے پر اجماع ہے ایک جماعت قلیلہ کے سوا کسی نے پاؤں کے مسح کا قول نہیں کیا۔ تحقیق یہ ہے کہ اس جماعت قلیلہ نے اپنے موقف سے رجوع کرلیا۔	۱	۱۶
۷	مسئلہ: اگر لب خوب زور سے بند کرکے وضو کیا اور کلی نہ کی وضو نہ ہوگا۔	۲	۱۷
۸	مسئلہ: بھنویں، مونچھیں، پپٹی کے بال چھدرے ہوں تو ان کا اور ان کے نیچے کی کھال سب کا دھونا وضو میں فرض ہے۔	۳	۱۷
۹	مسئلہ: وضو میں کنپٹیوں پر بھی پانی بہانا فرض ہے۔	۱	۱۸
۱۰	مسئلہ: سر کے نیچے جو بال لٹکتے ہیں ان کا مسح کافی نہیں۔	۳	۱۸
۱۱	مسئلہ: ٹوپی یا دوپٹہ اگر ایسا ہو کہ اس پر سے نم سر کے چوتھائی حصہ پر یقیناً پہنچ جائے تو کافی ہے ورنہ نہیں۔	۴	۱۸
۱۲	مسئلہ ضروریہ: منہ ہاتھ پاؤں کے ذرے ذرے پر پانی بہانا فرض ہے۔ فقط بھیگا ہاتھ پہنچنا فرض نہیں کم از کم ہر پرزے پر سے دو قطرے بہیں۔	۱	۱۹

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱۳	مسئلہ: تحقیق جلیل کہ مواضع ضرورت میں جس طرح بے اطلاع مٹی گارے کا لگارہ جانا مانع وضو و غسل نہیں یونہی سخت چیزوں مثلاً آٹے وغیرہ کا بھی۔	۳	۱۹
۱۴	مسئلہ: وضو و غسل میں ایسا واجب کوئی نہیں جس کے نہ کرنے سے گنہگار ہو مگر طہارت ادا ہوجائے۔	۳	۲۰
۱۵	مسئلہ: ہمارے مذہب میں بسم اللہ سے وضو کی ابتدا صرف سنت ہے واجب نہیں اگرچہ امام ابن الہمام کا خیال وجوب کی طرف گیا۔	۴	۲۰
۱۶	مسئلہ: مسواک کا طول بالشت بھر سے زیادہ نہ چاہیے۔	۲	۲۲
۱۷	مسئلہ: وضو کا پانی روزِ قیامت نیکیوں کے پلے میں رکھا جائیگا۔	۱	۲۵
۱۸	مسئلہ: وضو یا غسل میں پانی سے ہاتھ نہ جھٹکنا بہتر ہے مگر منع نہیں اور اس بارے میں جو حدیث آئی ہے کہ وہ شیطان کا پنکھا ہے ضعیف ہے۔	۴	۲۷
۱۹	مسئلہ: پانی سے استنجے کے بعد کپڑے سے خوب صاف کر لینا مستحب ہے کترانہ ہو تو بار بار بائیں ہاتھ سے یہاں تک کہ خشک ہو جائے۔	۵	۲۹

Fatawa Rizviya - Volume 4

Sr. No.	Topics / Titles	Benefit No.	Page No.
20	Ruling: Do not wipe the rest of the limbs with the cloth used to dry the water of Istinja.	6	29
21	Ruling: It is remembered that one went to the latrine and sat to relieve oneself, but it is not remembered whether urination etc. occurred or not; then it will be established that it did occur and Wudu (ablution) is obligatory.	5	132
22	Ruling: Sitting with water to perform Wudu is remembered, but performing Wudu is not remembered; it will be determined that Wudu has been performed.	6	132
23	Ruling: A woman whose both passages have merged into one due to the tearing of the separating curtain, if wind passes, she should perform Wudu as a precaution, even if there is a possibility that this wind came from the vagina.	7	132
24	Ruling: The washing of both hands up to the wrists three times at the beginning of Wudu is Sunnah; the Sunnah is that when washing the hands after washing the face, both palms should be included again and washed three times from the tips of the nails to above the elbows.	5	145
25	Ruling: If there is any impurity on the body, for example, wet itching, a wound, a boil, or if one slept after urination without performing Istinja such that there is a possibility of moisture reaching due to sweat, then washing hands up to the wrists beforehand is Sunnah Mu'akkadah (emphasized Sunnah), even if one has not slept, provided that the hand reaching that impurity is probable. And if there is no impurity on the body, washing them is Sunnah but not Mu'akkadah even if one has woken up from sleep. Similarly, if there is impurity but it is known that the hand did not reach it, i.e., one is awake and remembers that the hand did not reach there, then in this case also it is not Sunnah Mu'akkadah, yes, it is Sunnah in absolute terms.	1	146
26		2	148

Sr. No.	Topics / Titles	Benefit No.	Page No.
	Ruling: If a Miswak is available, rubbing teeth with a finger is not sufficient for the fulfillment of Sunnah and the attainment of reward. Yes, if a Miswak is not available, a finger or a rough cloth will fulfill the Sunnah. And for women, even if a Miswak is available, Misi (tooth powder/stain) is sufficient.		
27	Ruling: Miswak should be performed after washing it, and it should be washed after use, and it should be at least three times with three waters.	1	155
28	Ruling: A fixed quantity of water for Ghusl (ritual bath) and Wudu for everyone, as is famous among the common people, is purely false. One person is giant-sized, another very frail and thin, one is very tall, another extremely short, one body is soft, delicate and moist, another dry and rough, one has hair on all limbs, another's body is clean, one has a large and thick beard, another is beardless or has a few hairs, one has large thick hair on the head, another's head is shaved. How is it possible for one quantity for all of them? Rather, for a single person, the quantity changes due to the change of seasons, cities, age, and temperament. In the rainy season, there is moisture in the body, water runs quickly; in winter, there is dryness, and so on.	4	161

फ़तावा रज़विया - जिल्द 4

क्रम सं.	विषय / शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
20	मसला: जिस कपड़े से इस्तिंजा का पानी सुखाया जाए, उससे शरीर के बाकी अंगों को न पोंछें।	6	29
21	मसला: यह याद है कि शौचालय गए और हाजत पूरी करने के लिए बैठे थे, लेकिन यह याद नहीं कि पेशाब आदि हुआ या नहीं, तो यही माना जाएगा कि हुआ था और वज़ू ज़रूरी है।	5	132
22	मसला: वज़ू के लिए पानी लेकर बैठना याद है लेकिन वज़ू करना याद नहीं, तो यही तय किया जाएगा कि वज़ू कर लिया।	6	132
23	मसला: जिस महिला के दोनों मार्ग (मल और मूत्र द्वार) बीच का पर्दा फटने से एक हो गए हों, उसे अगर हवा (ریح) आए तो एहतियातन वज़ू करे, भले ही संभावना हो कि यह हवा योनि (فرج) से आई हो।	7	132
24	मसला: वज़ू की शुरुआत में जो दोनों हाथ कलाइयों तक तीन बार धोए जाते हैं वह सुन्नत है; सुन्नत यह है कि चेहरा धोने के बाद जो हाथ धोए जाएँ उनमें फिर से दोनों हथेलियों को शामिल करे और नाखूनों की नोक से कोहनियों के ऊपर तक तीन बार धोए।	5	145
25	मसला: यदि शरीर पर कोई नापाकी हो, जैसे गीली खुजली, ज़ख्म या फोड़ा हो, या पेशाब के बाद बिना इस्तिंजा किए सो गया हो जिससे पसीने के कारण नमी पहुँचने की संभावना हो, तो गट्टों तक हाथ पहले धोना सुन्नत मुअक्कदा है, भले ही वह सोया न हो, बशर्ते कि हाथ का उस नापाकी तक पहुँचना मुमकिन हो। और अगर शरीर पर नापाकी नहीं है तो उन्हें धोना सुन्नत है लेकिन मुअक्कदा नहीं, भले ही वह सोकर उठा हो। इसी प्रकार यदि नापाकी है लेकिन यह ज्ञात है कि हाथ वहाँ नहीं पहुँचा, यानी जाग रहा है और याद है कि हाथ वहाँ नहीं पहुँचा, तो इस स्थिति में भी सुन्नत मुअक्कदा नहीं है, हाँ सामान्य रूप से सुन्नत है।	1	146

क्रम सं.	विषय / शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
26	मसला: मिस्वाक मौजूद हो तो उंगली से दाँत मांजना सुन्नत अदा करने और सवाब पाने के लिए पर्याप्त नहीं है। हाँ, अगर मिस्वाक न हो तो उंगली या खुरदरा कपड़ा सुन्नत पूरी कर देगा। और महिलाओं के लिए मिस्वाक मौजूद होने पर भी मिस्सी पर्याप्त है।	2	148
27	मसला: मिस्वाक धोकर किया जाए और करने के बाद उसे धो लें, और कम से कम तीन बार तीन अलग-अलग पानियों से हो।	1	155
28	मसला: सभी के लिए गुस्ल और वज़ू में पानी की एक निश्चित मात्रा, जैसा कि आम लोगों में मशहूर है, पूरी तरह से गलत है। एक व्यक्ति विशालकाय है, दूसरा बहुत कमज़ोर और दुबला-पतला, एक बहुत लंबा है, दूसरा बहुत छोटा, एक शरीर कोमल, नाजुक और नम है, दूसरा सूखा और खुरदरा, एक के सभी अंगों पर बाल हैं, दूसरे का शरीर साफ है, एक की दाढ़ी बड़ी और घनी है, दूसरा बिना दाढ़ी वाला या कुछ बालों वाला है, एक के सिर पर बड़े-बड़े घने बाल हैं, दूसरे का सिर मुंडा हुआ है। इन सभी के लिए एक ही मात्रा कैसे संभव हो सकती है? बल्कि एक ही व्यक्ति के लिए मौसमों, शहरों, उम्र और स्वभाव के बदलने से मात्रा बदल जाती है। बरसात में शरीर में नमी होती है, पानी जल्दी फैलता है; जाड़ों में खुश्की होती है, और इसी तरह आगे भी।	4	161

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۲۰	مسئلہ : جس کپڑے سے استنجے کا پانی خشک کرے اس سے باقی اعضاء نہ پونچھے۔	۶	۲۹
۲۱	مسئلہ : یہ یاد ہے کہ بیت الخلاء میں گیا اور قضاء حاجت کے لئے بیٹھا تھا مگر یہ یاد نہیں کہ پیشاب وغیرہ کچھ ہوا یا نہیں تو یہی ٹھہرائیں گے کہ ہوا تھا وضو لازم ہے۔	۵	۱۳۲
۲۲	مسئلہ : وضو کیلئے پانی لیکر بیٹھنا یاد ہے مگر وضو کرنا یاد نہیں تو یہی قرار دیں گے کہ وضو کر لیا۔	۶	۱۳۲
۲۳	مسئلہ : جس عورت کے دونوں مسلک پردہ پھٹ کر ایک ہو گئے اسے جو ریح آئے احتیاطاً وضو کرے اگر چہ احتمال ہے کہ یہ ریح فرج سے آئی ہو۔	۷	۱۳۲
۲۴	مسئلہ : وضو کی ابتدا میں جو دونوں ہاتھ کلائیوں تک تین بار دھوئے جاتے ہیں سنت یہ ہے کہ منہ دھونے کے بعد جو ہاتھ دھوئے اس میں پھر دونوں کف دست کو شامل کرے سر ناخن سے کہنیوں کے اوپر تک تین بار دھوئے۔	۵	۱۴۵
۲۵	مسئلہ : بدن پر کوئی نجاست ہو مثلاً تر خارش ہے یا زخم یا پھوڑا یا پیشاب کے بعد بے استنجا سو رہا کہ پسینہ آکر تری پہنچنے کا احتمال ہے جب تو گٹوں تک ہاتھ پہلے دھونا سنت مؤکدہ ہے اگر چہ سویا نہ ہو جبکہ ہاتھ کا اس	۱	۱۴۶

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	نجاست پر پہنچنا محتمل ہو اور اگر بدن پر نجاست نہیں تو ان کا دھونا سنت ہے مگر مؤکدہ نہیں اگر چہ سو کر اٹھا ہو یونہی اگر نجاست ہے اور اس پر ہاتھ نہ پہنچنا معلوم ہے یعنی جاگ رہا اور یاد ہے کہ ہاتھ وہاں نہ پہنچے تو اس صورت میں بھی سنت مؤکدہ نہیں، ہاں سنت مطلقاً ہے		
۲۶	مسئلہ : مسواک موجود ہو تو انگلی سے دانت مانجھنا ادائے سنت و حصول ثواب کے لئے کافی نہیں، ہاں مسواک نہ ہو تو انگلی یا کھرکھرا کپڑا ادائے سنت کر دے گا اور عورتوں کے لئے مسواک موجود ہو جب بھی مسی کافی ہے۔	۲	۱۴۸
۲۷	مسئلہ : مسواک دھو کر کی جائے اور کر کے دھولیں اور کم از کم تین تین بار تین پانیوں سے ہو۔	۱	۱۵۵
۲۸	مسئلہ : سب کے لئے غسل و وضو میں پانی کی ایک مقدار جس طرح عوام میں مشہور ہے محض باطل ہے، ایک شخص دیو قامت ہے ایک نہایت نحیف و دبلا پتلا، ایک بہت دراز قد ہے دوسرا کمال ٹھگنا، ایک بدن نرم و نازک وتر ہے دوسرا خشک کھردرا ایک کے تمام اعضاء پر بال ہیں دوسرے کا بدن صاف، ایک کی داڑھی بڑی اور گھنی دوسرا بے ریشہ یا چند بال۔ ایک کے سر پر بڑے بڑے بال انبوہ دوسرے کا سر منڈا ہوا، ان سب کے لئے ایک مقدار کیونکر ممکن بلکہ شخص واحد کے لئے فصلوں اور شہروں اور عمر و مزاج	۴	۱۶۱

کے تبدل سے مقدار بدل جاتی ہے۔ برسات میں بدن میں تری ہوتی ہے۔ پانی جلد دوڑتا ہے، جاڑے میں خشکی ہوتی ہے وعلیٰ ہذا القیاس۔

Fatawa Razawiyya Volume 4

Serial No. | Titles | Benefit No. | Page 29 | Ruling: If the ring is loose, rotating it and pouring water during Wudu is Sunnah, and if it's tight so that water doesn't reach without moving it, it is Fard (obligatory). The same rule applies to earrings etc. | 4 | 172 30 | Ruling: Splashing water forcefully on the face during Wudu is Makruh (disliked), rather it shouldn't be poured so forcefully on any limb that splashes fly onto the body or clothes. | 5 | 172 31 | Ruling: Rubbing the limbs while washing is Sunnah in both Wudu and Ghusl. | 6 | 172 32 | Ruling: While washing Wudu limbs, extending the wash slightly beyond the Sharia limit such that no doubt remains about the complete coverage of the Sharia limit is Wajib (incumbent). | 7 | 172 33 | Ruling: In Wudu, washing the right hand and similarly the right foot before the left, i.e., starting from the right, is Sunnah, although many books describe it as Mustahabb (desirable). | 12 | 172 34 | Ruling: Just as the sequence of other limbs is Sunnah - washing the face first, then the hands, then wiping the head, then washing the feet - similarly it is Sunnah in Madmadah (rinsing the mouth) and Istinshaq (inhaling water into the nose), i.e., to rinse the mouth first and then put water in the nose. | 13 | 172 35 | Ruling: Neglecting to rinse the mouth or put water in the nose during Wudu is Makruh, and one who makes it a habit will be a sinner. Those people should remember this well who don't gargle such that everything is washed up to the throat, and those whose water just touches the nose but they don't sniff it up; all these people are sinners, and in Ghusl, if this is not done, then the Ghusl will not be valid at all, nor the prayer. | 1 | 176 36 | Ruling: One who makes it a habit not to make Niyyah (intention) in Wudu will be a sinner; making Niyyah in it is Sunnah Mu'akkadah. | 1 | 177 37 | Ruling: In purification, washing each limb fully three times is Sunnah Mu'akkadah; making a habit of neglecting this will make one a sinner. | 2 | 177 38 | Ruling: The count of pouring water is not what matters; what matters is that water flows completely over the area commanded to be washed. For example, if water is poured once on the hand and it flows over one-third of the wrist, while the rest is just wiped with a wet hand, then poured a second time and the second third is washed, then a third time and the last third is washed, this is counted as washing only once. Had water flowed over the entire hand up to the elbow each time, covering every bit, then it would have been three times. Making it a habit to wash like this (the incorrect way) makes one a sinner. And if water is poured a hundred times but flows only in one place and doesn't flow over some parts at any

time, even if a wet hand was wiped over them, then the Wudu itself will not be valid. | 3 | 177

फ़तावा रज़विया जिल्द चहारम (खंड 4)

क्रम संख्या | शीर्षक | फ़ायदा नंबर | पृष्ठ 29 | मसला: अंगूठी ढीली हो तो वुज़ू में उसे घुमाकर पानी डालना सुन्नत है और अगर तंग हो कि बिना हिलाए पानी न पहुँचे तो फ़र्ज़ है। यही हुक्म बाली (झुमके) वग़ैरह का भी है। | 4 | 172 30 | मसला: वुज़ू में चेहरे पर ज़ोर से पानी का छपाका मारना मकरूह है, बल्कि किसी भी अंग पर इतनी ज़ोर से पानी न डालें कि छींटें शरीर या कपड़ों पर पड़ें। | 5 | 172 31 | मसला: वुज़ू और ग़ुस्ल दोनों में अंगों को मल-मल कर धोना सुन्नत है। | 6 | 172 32 | मसला: वुज़ू के अंगों को धोते समय शरीयत की सीमा से थोड़ा अधिक धोना ताकि पूरी सीमा तक पानी पहुँचने में कोई संदेह न रहे, वाजिब है। | 7 | 172 33 | मसला: वुज़ू में बाएँ से पहले दायाँ हाथ और इसी तरह दायाँ पाँव धोना, यानी दाएँ से शुरुआत करना सुन्नत है, हालाँकि कई किताबों में इसे मुस्तहब लिखा गया है। | 12 | 172 34 | मसला: जिस तरह अन्य अंगों को धोने में क्रम सुन्नत है कि पहले चेहरा धोएँ, फिर हाथ, फिर सर का मसह करें और फिर पैर धोएँ, वैसे ही कुल्ली करने (मज़मज़ह) और नाक में पानी डालने (इस्तिनशाक़) में भी सुन्नत है कि पहले कुल्ली करें और उसके बाद नाक में पानी डालें। | 13 | 172 35 | मसला: वुज़ू में कुल्ली करने या नाक में पानी डालने को छोड़ना मकरूह है, और इसकी आदत डालने वाला गुनहगार होगा। यह मसला वे लोग अच्छी तरह याद रखें जो गरारा नहीं करते कि गले तक हर चीज़ धुल जाए, और वे जो पानी सिर्फ़ नाक को छूता है लेकिन उसे ऊपर नहीं खींचते; ये सभी लोग गुनहगार हैं और ग़ुस्ल में अगर ऐसा न हुआ तो न ग़ुस्ल होगा और न ही नमाज़। | 1 | 176 36 | मसला: वुज़ू में नीयत न करने की आदत से इंसान गुनहगार होगा, इसमें नीयत करना सुन्नत-ए-मुअक्कदह है। | 1 | 177 37 | मसला: पाकी (पवित्रता) प्राप्त करने में हर अंग को तीन बार पूरा धोना सुन्नत-ए-मुअक्कदह है, इसे छोड़ने की आदत से इंसान गुनहगार होगा। | 2 | 177 38 | मसला: पानी डालने की गिनती का महत्व नहीं है, बल्कि उस हिस्से पर पानी का पूरी तरह बह जाना मान्य है जिसे धोने का हुक्म है। उदाहरण के लिए, हाथ पर एक बार पानी डाला और वह कलाई के एक तिहाई हिस्से पर बहा और बाक़ी पर सिर्फ़ गीला हाथ फेर दिया, फिर दूसरी बार दूसरी तिहाई धुली और तीसरी बार तीसरी, तो यह केवल एक ही बार धोना हुआ। यदि हर बार पूरे हाथ पर कोहनी सहित पानी के कण-कण पर पानी बहता, तब तीन बार होता। इस तरह धोने की आदत से इंसान गुनहगार होगा। और अगर सौ बार पानी डाला और वह एक ही जगह पर बहा और किसी भी बार कुछ हिस्सों पर नहीं बहा, भले ही गीला हाथ फेरा गया हो, तो वुज़ू ही नहीं होगा। | 3 | 177

فتاویٰ رضویہ جلد چہارم

نمبر شمار | عنوانات | فائدہ نمبر | صفحہ ۲۹ | مسئلہ: انگوٹھی ڈھیلی ہو تو وضو میں اسے پھرا کر پانی ڈالنا سنّت ہے اور تنگ ہو کہ بے جنبش دیئے پانی نہ پہنچے تو فرض۔ یہی حکم بالی وغیرہ کا ہے۔ | ۴ | ۱۷۲ ۳۰ | مسئلہ: وضو میں منہ پر زور سے چھپاکا مارنا مکروہ ہے، بلکہ کسی عضو پر اس زور سے نہ ڈالے کہ چھینٹیں اُڑ کر بدن یا کپڑوں پر جائیں۔ | ۵ | ۱۷۲ ۳۱ | مسئلہ: اعضاء کا مل مل کر دھونا وضو اور غسل دونوں میں سنّت ہے۔ | ۶ | ۱۷۲ ۳۲ | مسئلہ: اعضاء وضو دھونے میں حدِ شرعی سے اتنی خفیف تحریر بڑھانا جس سے حدِ شرعی تک استیعاب میں شبہ نہ رہے واجب ہے۔ | ۷ | ۱۷۲ ۳۳ | مسئلہ: وضو میں ہاتھ اور یونہی پاؤں بائیں سے پہلے دہنا دھونا یعنی سیدھے سے ابتداء کرنا سنّت ہے، اگر چہ بہت کتب میں اسے مستحب لکھا۔ | ۱۲ | ۱۷۲ ۳۴ | مسئلہ: جہاں اور اعضاء میں ترتیب سنّت ہے کہ پہلے منہ دھوئے پھر ہاتھ پھر سر کا مسح پھر پاؤں دھونا یونہی مضمضہ واستنشاق میں بھی یعنی سنّت ہے کہ پہلے کلی کرے اس کے بعد ناک میں پانی ڈالے۔ | ۱۳ | ۱۷۲ ۳۵ | مسئلہ: وضو میں کلی یا ناک میں پانی ڈالنے کا ترک مکروہ ہے، اور اس کی عادت ڈالے تو گنہگار ہو گا۔ یہ مسئلہ وہ لوگ خوب یاد رکھیں جو گلیاں ایسی نہیں کرتے کہ حلق تک ہر چیز کو دھوئیں اور وہ کہ پانی جن کی ناک کو چھو جاتا ہے سونگھ کر اوپر نہیں چڑھاتے یہ سب لوگ گنہگار ہیں اور غسل میں تو ایسا نہ ہو تو سرے سے نہ غسل ہو گا نہ نماز۔ | ۱ | ۱۷۶ ۳۶ | مسئلہ: وضو میں نیت نہ کرنے کی عادت سے گنہگار ہو گا اس میں نیت سنّت مؤکدہ ہے۔ | ۱ | ۱۷۷ ۳۷ | مسئلہ: طہارت میں ہر عضو کا پورا تین بار دھونا سنّت مؤکدہ ہے، ترک کی عادت سے گنہگار ہو گا۔ | ۲ | ۱۷۷ ۳۸ | مسئلہ: پانی ڈالنے کی گنتی معتبر نہیں جتنا دھونے کا حکم ہے اس پر پورا پانی بہہ جانا معتبر ہے مثلاً ہاتھ

پر ایک بار پانی ڈالا کہ تہائی کلائی پر بہا باقی پر بھیگا ہاتھ پھیرا دوبارہ دوسری تہائی دُھلی سہ بارہ تیسری، تو یہ ایک ہی بار دھونا ہوا ہر بار پورے ہاتھ پر کہنی سمیت پانی ذرہ ذرہ پر بہتا تو تین بار ہوتا۔ اس طرح دھونے کی عادت سے گنہگار ہو گا اور اگر سو بار پانی ڈالا اور ایک ہی جگہ بہا کچھ حصے پر کسی دفعہ نہ بہا اگرچہ بھیگا ہاتھ پھیرا تو وضو ہی نہ ہو گا۔ | ۳ | ۱۷۷

Fatawa Razvia, Volume 4

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
39	Issue: If water is scarce, or if the cold is severe, or if water is needed for some other necessity, then it is not objectionable to wash the limbs once each for this reason.	4	177
40	Issue: Some have stated that renewing Wudu (Wudu over Wudu) is only recommended (Mustahabb) if one has already performed a prayer, a prostration of recitation (Sajda-e-Tilawat), or any other act for which being in a state of Wudu is commanded. Without doing so, renewing Wudu is disliked (Makruh). Others have said that renewing it once is recommended even without such an act, but more than once without it is disliked. The author's research is that the words of our Imams and the Hadiths of the Best of Mankind (peace and blessings be upon him) generally declare the renewal of Wudu as recommended, and no evidence for these restrictions is apparent.	1	185
41	Issue: Remaining in a state of Wudu at all times is recommended, and its virtues.	4	185
42	Issue: Recommended Wudu will not be valid without intention (Niyyat).	5	187
43	Issue: Some have said that performing Wudu twice in one sitting is disliked. Some have said it is recommended up to twice, and more than that is disliked. The author's research is that the Hadiths and the words of the Imams are general, and no proof for these limitations is apparent.	3	189
44	Issue: One should not rush in Wudu, but should do it with delay and caution. The common saying among people that "Wudu should be like the young, prayer like the old" is incorrect regarding Wudu.	5	208
45	Issue: It is recommended to rub a wet hand over the limbs before washing them, especially in winter.	1	209
46		3	209

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
	Issue: After washing each limb, one should rub their hand over it so that the dripping of water stops, preventing it from dripping onto the body or clothes.		
47	Issue: The Sunnah is to pour water from the nails of the hands and feet towards the elbows and ankles, and not to bring it from the other direction.	4	210

फतावा रजविया, खंड 4

क्रम संख्या	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
39	मसला: यदि पानी कम हो या ठंड बहुत अधिक हो या किसी अन्य आवश्यकता के लिए पानी की आवश्यकता हो, तो इस कारण अंगों को एक-एक बार धोने में कोई हर्ज नहीं है।	4	177
40	मसला: कुछ ने कहा है कि वज़ू पर वज़ू करना उसी समय मुस्तहब (पसंदीदा) है जब पहले वज़ू से कोई नमाज़ या सजदा-ए-तिलावत आदि कोई ऐसा कार्य कर लिया गया हो जिसके लिए बा-वज़ू होना अनिवार्य है, इसके बिना वज़ू को दोहराना मकरूह (नापसंद) है। कुछ ने कहा है कि एक बार दोहराना तो इसके बिना भी मुस्तहब है, हाँ, इसके बिना एक से अधिक बार मकरूह है। और लेखक का शोध यह है कि हमारे इमामों के कथन और श्रेष्ठतम मानव (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की हदीसें सामान्य रूप से वज़ू को दोहराने को मुस्तहब मानती हैं, और इन प्रतिबंधों का कोई प्रमाण स्पष्ट नहीं है।	1	185
41	मसला: हर समय बा-वज़ू रहना मुस्तहब है और इसके गुण।	4	185
42	मसला: मुस्तहब वज़ू बिना नीयत (इरादे) के अदा नहीं होगा।	5	187
43	मसला: कुछ ने कहा है कि एक बैठक में दो बार वज़ू करना मकरूह है। कुछ ने कहा है कि दो बार तक मुस्तहब है और उससे अधिक मकरूह है। लेखक का शोध यह है कि हदीसें और इमामों के शब्द सामान्य हैं और इन सीमाओं का कोई प्रमाण स्पष्ट नहीं है।	3	189
44	मसला: वज़ू में जल्दी नहीं करनी चाहिए बल्कि धैर्य और सावधानी के साथ करना चाहिए। आम लोगों में जो प्रसिद्ध है कि "वज़ू युवाओं जैसा और नमाज़ बूढ़ों जैसी", यह वज़ू के बारे में गलत है।	5	208
45	मसला: मुस्तहब है कि अंगों को धोने से पहले उन पर भीगा हाथ फेर लिया जाए, विशेष रूप से सर्दियों में।	1	209

क्रम संख्या	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
46	मसला: हर अंग को धोकर उस पर हाथ फेर देना चाहिए ताकि पानी की बूंदें टपकना बंद हो जाएं और शरीर या कपड़ों पर न टपकें।	3	209
47	मसला: सुन्नत यह है कि पानी हाथ और पैरों के नाखूनों की ओर से कोहनियों और टखनों के ऊपर तक डाला जाए, न कि दूसरी तरफ से।	4	210

فتاویٰ رضویہ، جلد چہارم

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۳۹	مسئلہ: اگر پانی کم ہو یا سردی سخت ہو یا اور کسی ضرورت کے لئے پانی درکار ہے۔ اس وجہ سے اعضاء ایک ایک بار دھوئے تو مضائقہ نہیں۔	۴	۱۷۷
۴۰	مسئلہ: بعض نے فرمایا کہ وضو پر وضو اسی وقت مستحب ہے کہ پہلے وضو سے کوئی نماز یا سجدہ تلاوت وغیرہ کوئی فعل جس کے لئے باوضو ہونے کا حکم ہے ادا کر چکا ہو بغیر اس کے تجدید وضو مکروہ ہے بعض نے فرمایا ایک بار تجدید تو بغیر اس کے بھی مستحب ہے ہاں ایک سے زیادہ بے اس کے مکروہ ہے اور مصنف کی تحقیق کہ ہمارے ائمہ کا کلام اور نیز احادیث خیر الانام علیہ افضل الصلاۃ والسلام مطلقاً تجدید وضو کو مستحب فرماتی ہیں، اور ان قیدوں کا کوئی ثبوت ظاہر نہیں۔	۱	۱۸۵
۴۱	مسئلہ: ہر وقت باوضو رہنا مستحب ہے اور اس کے فضائل۔	۴	۱۸۵
۴۲	مسئلہ: وضوئے مستحب بے نیت ادا نہ ہو گا۔	۵	۱۸۷
۴۳	مسئلہ: بعض نے فرمایا ایک جلسہ میں دو بار وضو مکروہ ہے۔ بعض نے فرمایا دو بار تک مستحب اس سے زائد مکروہ ہے اور مصنف کی تحقیق کہ احادیث و کلمات ائمہ مطلق ہیں اور ان تحدیدوں کا ثبوت ظاہر نہیں۔	۳	۱۸۹
۴۴		۵	۲۰۸

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: وضو میں جلدی نہ چاہئے بلکہ درنگ واحتیاط کے ساتھ کرے عوام میں جو مشہور ہے کہ وضو جوانوں کا، نماز بوڑھوں کی سی۔ یہ وضو کے بارے میں غلط ہے۔		
۴۵	مسئلہ: مستحب ہے کہ اعضاء دھونے سے پہلے بھیگا ہاتھ پھیر لے خصوصاً جاڑے میں۔	۱	۲۰۹
۴۶	مسئلہ: ہر عضو دھو کر اس پر ہاتھ پھیر دینا چاہئے کہ پانی کی بوندیں ٹپکنا موقوف ہو جائیں تاکہ بدن یا کپڑے پر نہ ٹپکیں۔	۳	۲۰۹
۴۷	مسئلہ: سنت یہ ہے کہ پانی ہاتھ پاؤں کے ناخن کی طرف سے کہنیوں اور گٹوں کے اوپر تک ڈالے اُدھر سے ادھر کو نہ لائیں۔	۴	۲۱۰

Volume 4 Fatawa Rizvia

Sr. No.	Titles	Benefit No.	Page No.
48	Ruling: It is sunnah to sprinkle water on a handkerchief after wudu.	2	212
49	Ruling: If there is a handled jug, it is recommended to hold its handle while pouring water and not to place the hand over its mouth.	2	212
50	Ruling: It is recommended to wash the handle of the jug three times before starting wudu.	3	212
51	Ruling: It is recommended to perform wudu from an earthen vessel.	4	212
52	Ruling: While washing the face, water should not be poured forcefully on the cheeks, nose, or forehead; these are actions of the ignorant. Instead, it should be poured gently from above the forehead so that it flows down below the chin.	1	219
53	Necessary Ruling: It is essential for water to flow over the entire limb by itself. If water was poured on the lower part of the hand or foot and did not reach the elbows or ankles, and then the hand was used to rub it over to the end of the limb, wudu will not be valid. This is because it was not flowing, but rather smearing.	2	219
54	Ruling: Washing hands up to the wrists three times and rinsing the mouth three times before eating is sunnah, even if one already has wudu.	-	-
55	Ruling: If water falling from the mouth during wudu is taken on, for example, the wrist and made to flow, wudu will not be valid with it. However, in Ghusl, for example, water from the head will continue to purify wherever it passes down to the feet; fresh water is not required there.	2	239
56	Ruling: If a person sits down to perform wudu but cannot complete it due to some obstacle, they will receive a reward for whatever actions they performed, even if the wudu was not completed.	4	248
57		5	248

Sr. No.	Titles	Benefit No.	Page No.
	Ruling: Someone who intentionally decides to only do half wudu will not receive a reward for those actions.		
58	Ruling: Similarly, someone who sits to perform wudu and leaves it incomplete without a valid reason should also not be entitled to a reward for whatever actions they performed.	6	248
59	Ruling: Wiping the entire head (Masah) is sunnah. The method some have mentioned—placing three fingers of each hand on the front part of the head (excluding the thumb and index finger) and sliding these six fingers back to the nape over the middle of the head, then using palms to wipe the sides of the head, using thumbs for the back of the ears and index fingers for the front, and the back of the fingers for the neck—is not necessary. It involves complications and is without reason. Instead, just pull both whole hands from the front of the head to the nape, such that fingers are placed on the middle of the head at the front on both sides, and palms are on the sides of the head. This will cover the entire head.	4	258

खंड 4 फ़तावा रज़विया

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
48	मसअला: सुन्नत है कि वुज़ू के बाद रूमाल पर छींटा दे ले।	2	212
49	मसअला: दस्ता-दार लोटा हो तो मुस्तहब यह है कि पानी डालते वक्त उसका दस्ता थामे, उसके मुँह पर हाथ न रखे।	2	212
50	मसअला: मुस्तहब है कि वुज़ू से पहले लोटे का दस्ता तीन बार धो ले।	3	212
51	मसअला: मुस्तहब है कि वुज़ू मिट्टी के बर्तन से करे।	4	212
52	मसअला: मुँह धोने में न गालों पर डाले न नाक पर न ज़ोर से पेशानी पर, ये सब जाहिलों के काम हैं बल्कि नरमी से पेशानी के ऊपर से डाले कि ठोड़ी से नीचे तक बहता आए।	1	219
53	ज़रूरी मसअला: ख़ुद पानी का तमाम वज़ू के अंग पर बहना ज़रूरी है, अगर हाथ या पाँव के नीचे पानी डाला और वह कोहनियों या टखनों तक नहीं पहुँचा था कि बीच में हाथ लगाकर उसे अंग के आख़िर तक फेर दिया तो वुज़ू न होगा क्योंकि यह बहना नहीं हुआ बल्कि पोतना (मसलना) हुआ।	2	219
54	मसअला: खाने से पहले कलाइयों तक हाथ तीन बार धोना और तीन बार कुल्ली करना सुन्नत है, चाहे वुज़ू हो।	-	-
55	मसअला: वुज़ू में मुँह से गिरता हुआ पानी मान लीजिए कलाई पर लिया और बहा लिया, तो उससे वुज़ू न होगा। और ग़ुस्ल में मान लीजिए सिर का पानी पाँव तक जहाँ जहाँ से गुज़रेगा पाक करता जाएगा, वहाँ नए पानी की ज़रूरत नहीं।	2	239
56	मसअला: आदमी वुज़ू करने बैठा फिर किसी रुकावट के कारण उसे पूरा न कर सका, तो जितने काम उसने कर लिए उन पर सवाब पाएगा, चाहे वुज़ू न हुआ हो।	4	248
57	मसअला: जिसने ख़ुद ही इरादा किया कि आधा वुज़ू करेगा, वह इन कामों पर सवाब न पाएगा।	5	248

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
58	मसअला: इसी तरह जो वुज़ू करने बैठा और बिना किसी वजह के अधूरा छोड़ दिया, उसे भी किए गए कामों पर सवाब नहीं मिलना चाहिए।	6	248
59	मसअला: पूरे सिर का मसह सुन्नत है। इसके लिए जो तरीका कुछ लोगों ने बताया है—कि हर हाथ की तीन उंगलियाँ सिर के अगले हिस्से पर रखे (अंगूठा और कलमे की उंगली और हथेली न लगाए), इन छह उंगलियों को आगे से गुद्दी (गर्दन के पीछे) तक सिर के बीच में ले जाए, फिर हथेलियों से सिर के किनारों का मसह करे, अंगूठों से कानों के पिछले हिस्से का और शहादत की उंगलियों के पेट से अगले हिस्से का और उंगलियों की पीठ से गर्दन के पिछले हिस्से का मसह करे—इस तरीके की कोई ज़रूरत नहीं है। इसमें बेकार की पेचीदगियाँ हैं। बल्कि पूरे हाथ सिर के आगे से गुद्दी तक इस तरह खींच कर ले जाए कि सिर के अगले हिस्से में बीचों-बीच दोनों तरफ़ उंगलियाँ रखे और सिर के किनारों पर हथेलियाँ। इससे पूरे सिर का मसह हो जाएगा।	4	258

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۴۸	مسئلہ: سنّت ہے کہ وضو کے بعد رومال پر چھینٹادے لے۔	۲	۲۱۲
۴۹	مسئلہ: دستہ دار لوٹا ہو تو مستحب یہ ہے کہ پانی ڈالتے وقت اس کا دستہ تھامے اس کے مُنہ پر ہاتھ نہ رکھے۔	۲	۲۱۲
۵۰	مسئلہ: مستحب ہے کہ وضو سے پہلے لوٹے کا دستہ تین بار دھولے۔	۳	۲۱۲
۵۱	مسئلہ: مستحب ہے کہ وضو مٹی کے برتن سے کرے۔	۴	۲۱۲
۵۲	مسئلہ: منہ دھونے میں نہ گالوں پر ڈالے نہ ناک پر نہ زور سے پیشانی پر، یہ سب افعالِ جہّال کے ہیں بلکہ باہستگی بالائے پیشانی سے ڈالے کہ ٹھوڑی سے نیچے تک بہتا آئے۔	۱	۲۱۹
۵۳	مسئلہ ضرور یہ: خود پانی کا تمام عضو پر بہنا ضرور ہے اگر ہاتھ یا پاؤں کے نیچے پر پانی ڈالا کہنیوں گٹّوں تک نہ پہنچا تھا کہ بیچ میں ہاتھ لگا کر آخر عضو تک پھیر دیا تو وضو نہ ہوگا کہ یہ بہانا نہ ہوا بلکہ چھبڑنا ہوا۔	۲	۲۱۹
۵۴	مسئلہ: کھانے سے پہلے کلائیوں تک ہاتھ تین بار دھونا، تین گلیاں کرنا سنت ہے اگرچہ وضو ہو۔	-	-
۵۵		۲	۲۳۹

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: وضو میں منہ سے گرتا ہوا پانی مثلاً کلائی پر لیا اور بہالیا اس سے وضو نہ ہوگا اور غسل میں مثلاً سر کا پانی پاؤں تک جہاں جہاں گزرے گا پاک کرتا جائیگا وہاں نئے پانی کی ضرورت نہیں۔		
۵۶	مسئلہ: آدمی وضو کرنے بیٹھا پھر کسی مانع کے سبب تمام نہ کرسکا تو جتنے افعال بجالایا اُن پر ثواب پائیگا اگرچہ وضو نہ ہوا۔	۴	۲۴۸
۵۷	مسئلہ: جس نے خود ہی قصد کیا کہ آدھا وضو کرے گا وہ ان افعال پر ثواب نہ پائیگا۔	۵	۲۴۸
۵۸	مسئلہ: یو نہی جو وضو کرنے بیٹھا اور بلا عذرِ ناقص چھوڑ دیا وہ بھی جتنے افعال بجالا یا اُن پر مستحقِ ثواب نہ ہونا چاہئے۔	۶	۲۴۸
۵۹	مسئلہ: سارے سر کا مسح سنّت ہے اور اس کا جو یہ طریقہ بعض نے رکھا ہے کہ ہر ہاتھ کی تین انگلیاں سر کے اگلے حصے پر رکھے انگوٹھا اور کلمہ کی انگلی اور ہتھیلی نہ لگائے ان چھ انگلیوں کو آگے سے گدّی تک وسطِ سر پر لے جائے اور ہتھیلیوں سے سر کی کروٹوں پر مسح کرے اور کانوں کے پچھلے حصے کو انگوٹھوں اور اگلے کو انگشتانِ شہادت کے پیٹ اور گردن کے پچھلے حصہ کو انگلیوں کی پشت سے مسح کرے۔ اس طریقہ کی کچھ حاجت نہیں اس میں تکلفات ہیں اور وہ بھی بلا وجہ بلکہ سارے ہاتھ سر کے آگے سے گدّی تک کھینچ لے جائے یوں کہ سر کے اگلے حصے میں وسطِ سر	۴	۲۵۸

پر دونوں طرف انگلیاں رکھے اور سر کی کروٹوں پر ہتھیلیاں۔ اس میں سر کا استیعاب ہو جائیگا۔

Fatawa Rizvia Volume 4

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
60	Ruling: If one finger is placed on the head and dragged such that it reaches the extent of one-fourth of the head, the wiping (Masah) will not be valid.	5	258
61	Ruling: Similarly, Masah will not be valid with two fingers. However, if three fingers are placed and dragged so that it covers one-fourth of the head, then Masah will be valid.	1	259
62	Ruling: If the fingertips of three fingers are applied to the head and dragged such that it covers one-fourth of the head, Masah will not be valid if the moisture disappears before reaching one-fourth of the head.	2	259
63	Ruling: If the fingertips are placed on the head and dragged until they reach one-fourth of the head. If water keeps dripping from the fingertips until the end, then by consensus Masah is done. And if the dripping stops in the middle, even then the correct view is that Masah will be done, provided the moisture remains until the end, even if the dripping of drops has ceased.	3	259
64	Ruling: If rain drops fall on the head such that one-fourth of the head gets wet, Masah is done, even if the person did neither touch it with hands nor intend it.	6	259
65	Ruling: Hands are not necessary for Masah; if a wet stick is passed over the head such that one-fourth of the head becomes wet, Masah is done.	1	260
66	Ruling: If one finger is wetted and placed on the head, then wetted again and placed on another part of the head, and this is repeated until moisture reaches one-fourth of the head, Masah is done.	5	260
67	Ruling: If one sits bareheaded in dew and it wets the equivalent of one-fourth of the head, Masah is done.	3	410
68	Ruling: Performing ablution (Wudu) with such hot or cold water that cannot be poured properly over the body, thus	1	412

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
	preventing the completion of Sunnah, is disliked (Makruh). And if it prevents the fulfillment of any obligatory act (Fard), then the Wudu will not be valid.		

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
६०	मसला: यदि एक उंगली सिर पर रखकर खींची जाए कि वह सिर के एक चौथाई हिस्से तक पहुँच जाए, तो मसह (पोंछना) नहीं होगा।	५	२५८
६१	मसला: इसी प्रकार दो उंगलियों से भी मसह नहीं होगा। हाँ, तीन उंगलियां रखकर इतनी खींची जाएं कि एक चौथाई सिर की मात्रा पूरी हो जाए, तो मसह हो जाएगा।	१	२५९
६२	मसला: तीन उंगलियों के पोरों को सिर पर लगाए और इतना खींचे कि एक चौथाई सिर की मात्रा हो गई, तो मसह नहीं होगा यानी जबकि तरी एक चौथाई सिर तक पहुँचने से पहले ही खत्म हो गई हो।	२	२५९
६३	मसला: उंगलियों के पोरों को सिर पर रखकर खींचे यहाँ तक कि एक चौथाई सिर की मात्रा तक पहुँच गए। यदि अंत तक पोरों से पानी टपकता रहा तो सर्वसम्मति से मसह हो गया और यदि बीच में टपकना बंद हो गया, तब भी सही यही है कि मसह हो जाएगा यानी जबकि तरी अंत तक रही हो, भले ही बूंदों का टपकना रुक गया हो।	३	२५९
६४	मसला: यदि सिर पर बारिश की बूंदें इतनी गिरीं कि एक चौथाई सिर भीग गया तो मसह हो गया, भले ही उस व्यक्ति ने हाथ न लगाया हो और न ही इरादा (क़स्द) किया हो।	६	२५९
६५	मसला: मसह के लिए हाथ की ज़रूरत नहीं है, यदि लकड़ी भिगोकर सिर पर फेर दी कि एक चौथाई सिर गीला हो गया तो मसह हो गया।	१	२६०
६६	मसला: यदि एक उंगली भिगोकर सिर पर रखे और दोबारा भिगोकर सिर की दूसरी जगह और इस तरह बार-बार किया यहाँ तक कि एक चौथाई सिर तक तरी पहुँच गई, तो मसह हो गया।	५	२६०
६७	मसला: ओस में सिर नंगा करके बैठा और उससे एक चौथाई सिर के बराबर भीग गया, तो मसह हो गया।	३	४१०

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
६८	मसला: इतने गर्म या इतने ठंडे पानी से वज़ू करना मकरूह है जिसे बदन पर अच्छी तरह न डाला जा सके, जो सुन्नत पूरी न करने दे, और अगर कोई फ़र्ज़ पूरा करने में रुकावट बना तो वज़ू ही नहीं होगा।	१	४१२

पृष्ठ ६२०/७६१

فتاوی رضویہ جلد چہارم

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۶۰	مسئلہ: ایک انگلی سر پر رکھ کر کھینچ دی جائے کہ چہارم سر کی قدر تک پہنچ گئی مسح نہ ہوگا۔	۵	۲۵۸
۶۱	مسئلہ: یوں ہی دو انگلیوں سے بھی مسح نہ ہوگا۔ ہاں تین انگلیاں رکھ کر اتنی کھینچے کہ چہارم سر کی مقدار ہو جائے تو مسح ہو جائیگا۔	۱	۲۵۹
۶۲	مسئلہ: تین انگلیوں کے پورے سر کو لگائے اور اس قدر کھینچے کہ چہارم سر کی مقدار ہو گئی تو مسح نہ ہوگا یعنی جبکہ تری چہارم سر تک پہنچنے سے پہلے فنا ہو گئی ہو۔	۲	۲۵۹
۶۳	مسئلہ: انگلیوں کے پورے سر پر رکھ کر کھینچے یہاں تک کہ چہارم سر کی مقدار تک پہنچ گئے۔ اگر اخیر تک پوروں سے پانی ٹپکتا رہا تو بالاتفاق مسح ہو گیا اور بیچ میں تقاطر فنا ہو گیا جب بھی صحیح یہ ہے کہ مسح ہو جائیگا یعنی جبکہ تری اخیر تک رہی ہوا گرچہ بوندیں ٹپکنا موقوف ہو گیا ہو۔	۳	۲۵۹
۶۴	مسئلہ: اگر سر پر مینہ کی بوندیں اتنی گریں کہ چہارم سر بھیگ گیا مسح ہو گیا اگرچہ اس شخص نے ہاتھ لگایا نہ قصد کیا۔	۶	۲۵۹
۶۵	مسئلہ: مسح کے لئے ہاتھ کی ضرورت نہیں اگر لکڑی بھگو کر سر پر پھیر دی کہ چہارم سر تر ہو گیا مسح ہو گیا۔	۱	۲۶۰

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۶۶	مسئلہ: اگر ایک انگلی بھگو کر سر پر رکھے اور دوبارہ بھگو کر سر کی دوسری جگہ اور اس طرح مکرر کیا یہاں تک کہ چہارم سر کو تری پہنچ گئی مسح ہو گیا۔	۵	۲۶۰
۶۷	مسئلہ: اوس میں سر برہنہ بیٹھا اور اس سے چہارم سر کے قدر بھیگ گیا مسح ہو گیا۔	۳	۴۱۰
۶۸	مسئلہ: اتنے گرم یا اتنے سرد پانی سے وضو مکروہ ہے جو بدن پر اچھی طرح نہ ڈالا جائے، تکمیل سنّت نہ کرنے دے، اور اگر کوئی فرض پورا کرنے سے مانع ہوا تو وضو ہی نہ ہوگا۔	۱	۴۱۲

Fatawa Razawiya | Volume 4

Serial No. | Topics | Benefit No. | Page No. 69 | Problem: Purification from water leftover from a woman's ablution (Wudu) or other purification is disliked (Makruh). | 5 | 412 70 | Problem: In ablution, it is recommended (Mustahabb) that if a water pot (Aftaba) has a handle, one should wash the handle with three waters, and while washing limbs, keep the hand on the handle, not on the top of the pot. | 3 | 455 71 | Problem: If there is a thin, non-solid medicine like oil on the head, wiping (Masah) over it is permissible. If it is solid, one should avoid it and wipe the remaining fourth part of the head; wiping over it will not be permissible. | 1 | 463 72 | Problem: If no water other than a donkey's leftover water is available, one must perform both Wudu with it and Tayammum; otherwise, the prayer will not be valid. | 4 | 464 73 | Problem: A person sat to perform Wudu, took water in a handful, and then an impurity occurred. This handful can only be used for washing hands. | 2 | 606 74 | Problem: During Wudu, after washing the face, one took water in a handful to wash the wrists when an impurity occurred. The face's state of purity is gone, but that water can be used to wash the wrists. | 5 | 606 75 | Problem: After washing hands, one took water in a handful to wash the face when an impurity occurred. This water can only be used for washing the face, it shouldn't be otherwise. | 7 | 606 76 | Problem: Ghusl (washing) and Masah (wiping with wet hands) can be combined. If washing a limb is harmful, one should perform Masah on it and wash the others. In fact, on a single limb, if water is harmful to certain parts, perform Masah on those parts and wash the rest. | 4 | 647 77 | Problem: Washing feet and Masah on leather socks (Khuffayn) cannot be combined. It is not permissible to wash one foot and perform Masah on the sock of the other. | 5 | 647 78 | Problem: Washing and Masah on a bandage can be combined. For example, if a bandage is tied on one hand or foot, perform Masah on it and wash the other, or on a single limb, perform Masah where the bandage is and wash the rest. | 6 | 647

फ़तावा-ए-रज़विया | खंड 4

क्रम संख्या | विषय | फ़ायदा नंबर | पृष्ठ संख्या 69 | मसला: जिस पानी से किसी महिला ने वज़ू या अन्य कोई शुद्धि की हो, उसके बचे हुए पानी से शुद्धि करना मकरूह (नापसंद) है। | 5 | 412 70 | मसला: वज़ू में मुस्तहब (पसंदीदा) है कि यदि आफ़ताब (लोटा) हत्थेदार हो, तो हत्थे को तीन बार धो लें और अंग धोते समय हाथ हत्थे पर रखें, आफ़ताब के सिरे पर नहीं। | 3 | 455 71 | मसला: यदि सिर पर तेल जैसी कोई पतली, बिना परत वाली दवा लगी हो, तो उसी पर मसह करना जायज़ है। और यदि वह परतदार हो, तो उससे बचाकर सिर के चौथाई भाग का मसह करें, उस पर मसह जायज़ नहीं होगा। | 1 | 463 72 | मसला: गधे के जूठे पानी के अलावा और पानी न मिले तो उससे वज़ू भी करे और तयम्मुम भी ज़रूर करे, अन्यथा नमाज़ नहीं होगी। | 4 | 464 73 | मसला: वज़ू करने बैठा, चुल्लू में पानी लिया, उसके बाद ह़दथ (अशुद्धि) हो गई, तो इस चुल्लू के पानी को केवल हाथ धोने में इस्तेमाल किया जा सकता है। | 2 | 606 74 | मसला: वज़ू में चेहरा धो लिया, फिर चुल्लू में कलाईयां धोने के लिए पानी लिया कि ह़दथ हो गई। चेहरे की पाकी (शुद्धि) जाती रही, लेकिन उस पानी को कलाईयां धोने में इस्तेमाल किया जा सकता है। | 5 | 606 75 | मसला: हाथ धो लिए, फिर चेहरा धोने के लिए चुल्लू में पानी लिया कि ह़दथ हो गया। यह पानी चेहरा धोने में इस्तेमाल हो सकता है, नहीं होना चाहिए। | 7 | 606 76 | मसला: ग़ुस्ल यानी धोना और मसह यानी गीला हाथ फेरना जमा हो सकते हैं कि जिस अंग का धोना हानिकारक हो उसका मसह करे और दूसरों को धोए, बल्कि एक ही अंग में जितने हिस्से को पानी नुकसान पहुँचाता हो उतने पर मसह करे और बाकी को धोए। | 4 | 647 77 | मसला: पाँव धोना और मोज़ों पर मसह जमा नहीं हो सकते। यह जायज़ नहीं है कि एक पाँव धोए और दूसरे के मोज़े पर मसह करे। | 5 | 647 78 | मसला: धोना और पट्टी पर मसह जमा हो सकते हैं। जैसे एक हाथ या पाँव पर पट्टी बंधी है, उसका मसह करें और दूसरा धोएँ, या एक ही अंग में जहाँ तक पट्टी है उस पर मसह करें और बाकी का ग़ुस्ल (धोना)। | 6 | 647

पृष्ठ 621 का 761

فتاویٰ رضویہ | جلد چہارم

نمبر شمار | عنوانات | فائدہ نمبر | صفحہ نمبر ۶۹ | مسئلہ: عورت نے جس پانی سے وضو وغیرہ کوئی طہارت کی اس سے بچے ہوئے پانی سے طہارت مکروہ ہے۔ | ۵ | ۴۱۲ ۷۰ | مسئلہ: وضو میں مستحب ہے کہ اگر آفتابہ دستہ دار ہو دستہ تین پانیوں سے دھو لے اور اعضا دھوتے وقت دستہ پر ہاتھ رکھے آفتابہ کے سر پر نہیں۔ | ۳ | ۴۵۵ ۷۱ | مسئلہ: اگر سر پر تیل وغیرہ کوئی رقیق بے جرم دوا لگی ہے تو اُسی پر مسح جائز ہے۔ اور اگر جرم دار ہے تو اس سے بچا کر چہارم سر کا مسح کرے اس پر مسح جائز نہ ہوگا۔ | ۱ | ۴۶۳ ۷۲ | مسئلہ: گدھے کے جھوٹے پانی کے سوا اور پانی نہ ملے تو اُس سے وضو بھی کرے اور تیمم بھی ضرور کرے ورنہ نماز نہ ہوگی۔ | ۴ | ۴۶۴ ۷۳ | مسئلہ: وضو کرنے بیٹھا چلو میں پانی لیا اُس کے بعد حدث واقع ہوا، یہ چلو ہاتھ دھونے میں صرف کرسکتا ہے۔ | ۲ | ۶۰۶ ۷۴ | مسئلہ: وضو میں منہ دھو لیا پھر لپ میں پانی کلائیاں دھونے کو لیا کہ حدث واقع ہو گیا منہ کی طہارت جاتی رہی مگر اس پانی کو کلائیاں دھونے میں استعمال کرسکتا ہے۔ | ۵ | ۶۰۶ ۷۵ | مسئلہ: ہاتھ دھو لیے پھر پانی منہ دھونے کو لپ میں لیا کہ حدث ہو گیا یہ پانی منہ دھونے میں صرف ہو سکتا نہ چاہی۔ | ۷ | ۶۰۶ ۷۶ | مسئلہ: غسل یعنی دھونا اور مسح یعنی بھیگا ہاتھ پھیرنا جمع ہو سکتے ہیں کہ جس عضو کا دھونا مضر ہو مسح کرے اوروں کو دھوئے بلکہ ایک ہی عضو میں جتنے ٹکڑے کو پانی ضرر دیتا ہو اُتنے پر مسح کرے باقی کو دھوئے۔ | ۴ | ۶۴۷ ۷۷ | مسئلہ: پاؤں دھونا اور مسح موزہ جمع نہیں ہو سکتے یہ جائز نہیں کہ ایک پاؤں دھوئے اور ایک میں موزہ پر مسح کرے۔ | ۵ | ۶۴۷ ۷۸ | مسئلہ: دھونا اور پٹی کا مسح جمع ہو سکتے ہیں مثلاً ایک ہاتھ یا پاؤں پر پٹی بندھی ہے

اس کا مسح کریں اور دوسرا دھوئیں یا ایک ہی عضو میں جہاں تک پٹی ہے اس پر مسح باقی کا غسل۔ | ۶ | ۶۴۷

Fatawa Rizvia Volume 4

Serial No. | Topics | Benefit No. | Page No. 79 | Issue: If limbs are cracked due to cold etc., wash them if possible. If cold water causes harm, then using hot water is obligatory if possible. If hot water also causes harm, perform Masah (wiping). If Masah also harms, then pour water over the bandage or dressing. If this too causes harm, perform Masah over the entire bandage or dressing. If even that is harmful, then leave it; it is excused. | 4 | 648 80 | Issue: A nail broke and a medicine, ointment, or piece of skin/membrane is tied over it. If washing or wiping the nail itself is harmful, or if the nail is not harmed but removing the medicine is harmful, then pour water over the medicine. If that causes harm, perform Masah over the medicine. If even that is harmful, it is excused. | 6 | 648 81 | Issue: Wasting or throwing away water uselessly is forbidden (Haraam). | 1 | 649 82 | Issue: If a non-believer performs Wudu or takes a bath and then accepts Islam, and no state of ritual impurity (Hadath) occurs after that Wudu or bath, he can pray with that same Wudu. | 3 | 662 83 | Issue: In wiping (Masah) over the head and socks, even if wiped once, the condition is that it should be done with most of the palm. However, if one finger is applied repeatedly to different parts of the head or socks such that the amount of the majority (of the area) is covered, the Masah is valid. | 2 | 722 84 | Issue: The best method for wiping (Masah) the head in Wudu is to wet the entire palms including the fingertips (people who only wet their fingers should not do so). Then, keeping both thumbs and index fingers separate, place the other three fingers completely (not just the tips as the ignorant do) on the forehead and slide them (pressing down) to the back of the head (not as the ignorant do by barely touching such that it touches some parts and misses others). Then wipe both sides of the head with both palms, wipe the back part of the ears with the inner part of both thumbs, and the front part with the inner part of the index fingers, and rub the backs of the palms over the neck. | 5 | 729 85 | Issue: If the moisture on the fingers is exhausted while wiping the head, fresh water must be taken for wiping the ears. | 1 | 730 86 | Issue: To fulfill the Sunnah of wiping the head, it is also sufficient to place the fingers on the front of the head and palms on the sides, then press down and pull the hands back to the nape of the neck. | 2 | 730 87 | Issue: After Wudu, if some water remains in the vessel and it can be used for another Wudu, but people throw it away; this is forbidden (Haraam). | |

फतावा रिज़विया जिल्द चौथी

क्रम संख्या | विषय | लाभ संख्या | पृष्ठ संख्या ७९ | मसअला: सर्दी आदि से अंग फट गए हों, यदि धोना संभव हो तो धोएँ। यदि ठंडा पानी नुकसान पहुँचाए तो गर्म पानी का प्रयोग करना वाजिब है यदि संभव हो। यदि गर्म पानी से भी नुकसान हो तो मसह (गीले हाथ फेरना) करें। यदि मसह से भी नुकसान हो तो उस पर बँधी पट्टी या मरहम के लेप पर पानी बहाएँ। यदि इससे भी हानि हो तो पूरी पट्टी या लेप पर मसह करें। यदि उससे भी नुकसान हो तो छोड़ दें, यह माफ है। | ४ | ६४८ ८० | मसअला: नाखून टूट गया और उस पर दवा, मरहम या खाल की झिल्ली बँधी है। यदि स्वयं नाखून को धोना या मसह करना हानिकारक हो, या नाखून को तो नुकसान नहीं किंतु दवा हटाना हानिकारक हो, तो दवा पर पानी बहाएँ। यदि उससे नुकसान हो तो दवा पर मसह करें। यदि उससे भी नुकसान हो तो माफ है। | ६ | ६४८ ८१ | मसअला: पानी को बेकार खर्च करना या फेंक देना हराम है। | १ | ६४९ ८२ | मसअला: कोई काफ़िर वुज़ू करके या नहाकर इस्लाम लाया और उस वुज़ू या ग़ुस्ल के बाद कोई ह़दथ (अशुद्धि) नहीं हुई, तो वह उसी वुज़ू से नमाज़ पढ़ सकता है। | ३ | ६६२ ८३ | मसअला: सर और मोज़ों के मसह में भी एक बार मसह किया जाए तो अधिकांश हथेली का उपयोग शर्त है। परंतु यदि एक ही उँगली बार-बार सर या मोज़ों के विभिन्न स्थानों पर लगाई गई जिससे अधिकांश मात्रा पूरी हो गई, तो मसह हो गया। | २ | ७२२ ८४ | मसअला: वुज़ू में सर के मसह का सबसे अच्छा तरीका यह है कि अपनी पूरी हथेलियाँ उँगलियों के पोरों तक गीली करें (लोग जो केवल उँगलियाँ भिगो लेते हैं, ऐसा नहीं करना चाहिए)। फिर दोनों अँगूठे और कलिमे की उँगलियाँ (तर्जनी) अलग रखकर शेष तीन-तीन उँगलियाँ पूरी तरह (न कि केवल पोरों से जैसा अज्ञानी करते हैं) माथे पर रखकर सर के अंत तक (हाथ जमाकर) फेरें (न कि उस तरह जैसा अज्ञानी करते हैं कि हाथ हल्के से ले जाते हैं जिससे कहीं पानी लगता है और कहीं नहीं)। फिर सर के दोनों ओर दोनों हथेलियों से मसह करें, और कानों के पिछले हिस्से का मसह दोनों अँगूठों के अंदरूनी हिस्से से करें और अगले हिस्से का कलिमे की उँगलियों के अंदरूनी हिस्से से, तथा हथेलियों की पीठ गर्दन पर फेरें। | ५ | ७२९ ८५ | मसअला: यदि सर के मसह में उँगलियों की नमी समाप्त हो गई हो, तो कानों के मसह के लिए नई नमी (ताज़ा पानी) लेनी होगी। | १ | ७३० ८६ | मसअला: सर के मसह में सुन्नत की अदायगी के लिए यह भी पर्याप्त है कि उँगलियाँ सर के अगले हिस्से पर रखें और हथेलियाँ सर के किनारों पर, और हाथ जमाकर गुद्दी (गर्दन के जोड़) तक खींचते ले जाएँ। | २ | ७३० ८७ | मसअला:

वुज़ू किया और लोटे में पानी बच गया जो दूसरे वुज़ू में काम आ सकता है, लोग जो उसे फेंक देते हैं, यह हराम है। | |

فتاوی رضویہ جلد چہارم

نمبر شمار | عنوانات | فائدہ نمبر | صفحہ نمبر ۷۹ | مسئلہ: سردی وغیرہ سے اعضا پھٹ گئے، دھو سکے دھوئے ٹھنڈا پانی نقصان کرے تو گرم پانی اگر کر سکتا ہو کرنا واجب، اگر گرم سے بھی نقصان ہو تو مسح کرے اگر مسح بھی نقصان دے تو اس پر جو پٹی بندھی یاد واکا ضماد ہے اُس پر پانی بہائے، یہ بھی ضرر دے تو اس پٹی یا ضماد پورے پر مسح کرے اس سے نقصان ہو تو چھوڑ دے، معاف ہے۔ | ۴ | ۶۴۸ ۸۰ | مسئلہ: ناخن ٹوٹ گیا اس پر دوامر ہم گوند ہتے کا پوست بندھا ہے اگر خود ناخن کا دھونا یا مسح کرنا مضر ہو، وہ تو مضر نہیں مگر دوا کا چھڑانا مضر ہے تو دوا پر پانی بہائے اس سے ضرر ہو تو دوا پر مسح کرے، اس سے نقصان ہے تو معاف۔ | ۶ | ۶۴۸ ۸۱ | مسئلہ: پانی بیکار صرف کرنا پھینک دینا حرام ہے۔ | ۱ | ۶۴۹ ۸۲ | مسئلہ: کافر وضو کر کے یا نہا کر اسلام لایا اور اس وضو یا غسل کے بعد حدث نہ ہوا اُسی وضو سے نماز پڑھ سکتا ہے۔ | ۳ | ۶۶۲ ۸۳ | مسئلہ: سر اور موزوں کے مسح میں بھی ایک بار مسح کرے تو اکثر کف سے ہونا شرط ہے مگر اگر ایک انگلی بار بار کر کے سر یا موزوں کے مختلف مواضع پر لگائی کہ اکثر کی مقدار کو پہنچ گئی مسح ہو گیا۔ | ۲ | ۷۲۲ ۸۴ | مسئلہ: وضو میں مسح سر کا بہتر طریقہ یہ ہے کہ اپنی ساری ہتھیلیاں انگلیوں کے سرے تک تر کرے (لوگ جو فقط انگلیاں بھگو لیتے ہیں ، نہ چاہیے) پھر دونوں انگوٹھے اور کلمے کی انگلیاں اور ہتھیلیاں جُدا رکھ کر باقی تین تین انگلیاں پوری (نہ فقط پورے جس طرح جاہل کرتے ہیں) پیشانی پر رکھ کر آخر سر تک (ہاتھ جما کر) پھیرے (نہ جس طرح جاہل چھوتے ہوئے ہاتھ لے جاتے ہیں کہ کہیں لگے کہیں نہیں) پھر سر کی دونوں کروٹیں دونوں ہتھیلیوں سے مسح کرے اور کانوں کا پچھلا حصہ دونوں انگوٹھوں کے پیٹ سے مسح کرے اور اگلا حصہ کلمے کی انگلیوں کے پیٹ سے اور ہتھیلیوں کی

پشت گردن پر پھیرے۔ | ۵ | ۷۲۹ ۸۵ | مسئلہ: اگر سر کے مسح میں انگلیوں کی تری ختم ہو گئی کانوں کے مسح کو نئی تری لینی ہو گی۔ | ۱ | ۷۳۰ ۸۶ | مسئلہ: مسح سر میں ادائے سنت کو یہ بھی کافی ہے کہ انگلیاں سر کے اگلے حصے پر رکھے اور ہتھیلیاں سر کی کروٹوں پر اور ہاتھ جما کر گُدی تک کھینچتا لے جائے۔ | ۲ | ۷۳۰ ۸۷ | مسئلہ: وضو کیا لوٹے میں پانی بچ رہا وہ دوسرے وضو میں کام آسکتا ہے، لوگ جو اسے پھینک دیتے ہیں یہ حرام ہے۔ | |

Fatawa Razawiyya - Volume 4

Page	Benefit No.	Topics	Serial No.
816	4	Ruling: 'Masah' (wiping) as part of ablution means reaching of moisture in any way. If the head is washed, or immersed in water, or rain falls on the head, 'masah' is fulfilled.	88
816	5	Ruling: Washing the head instead of performing 'masah' in ablution is disliked (Makruh) and against the Sunnah, although the obligation of 'masah' will be fulfilled.	89
		Section on things that nullify ablution (Fasal fil-Nawaqiz)	
31	1	Ruling: If something that breaks ablution occurs while performing ablution, one should perform ablution again from the beginning.	1
32	2	Ruling: If water was taken in a handful and not yet used when an impurity-causing event occurred; according to some, that water can be used for ablution, but the author's research is that this is against the correct view, that handful cannot be used for ablution.	2
34	1	Ruling: No matter how much a cold flows, it does not break ablution.	3
34	2	Ruling: Vomiting of phlegm, no matter how much, will not break ablution.	4
34	4	Ruling: Tears flowing from sore or watery eyes, or water flowing from grains, ulcers, or any disease in the eye, ear, chest, navel, etc., will break the ablution.	5
35	7	Ruling: This is a general principle that any fluid flowing from the body, if it is not impure (Najis), then it is not a breaker of ablution.	6
36	3	Ruling: Vomiting wine is also not a breaker of ablution if it is not a mouthful.	7
37	2	Ruling: The research is that whatever flows due to pain and disease is a breaker of ablution at that time if there is a possibility of it being mixed with blood or other impurities.	8

Page	Benefit No.	Topics	Serial No.
37	3	Ruling: If yellow water flows out of the navel, the ablution is broken.	9
37	4	Ruling: Even if the water from a pimple/grain is clean, the correct view is that it is also impure and a breaker of ablution.	10
37	5	Ruling: The water that flows from a blind person's eye is impure and a breaker of ablution.	11
38	1	Ruling: The research is that if moisture flows due to pain or illness, the mere possibility of it containing blood or pus is sufficient to make ablution obligatory, although in 'Fath' and 'Hulyah' it is considered recommended (Mustahabb).	12

फ़तावा रज़विया - खंड 4

पृष्ठ	लाभ संख्या	विषय	क्रम संख्या
816	4	मसला: वज़ू में 'मसह' का अर्थ है किसी भी तरह से नमी का पहुंचना। यदि सिर धो लिया जाए या पानी में डुबो दिया जाए या बारिश का पानी सिर पर गिरे तो मसह पूरा हो गया।	88
816	5	मसला: वज़ू में मसह के स्थान पर सिर धोना मकरूह (नापसंद) और सुन्नत के विरुद्ध है, यद्यपि मसह का फ़र्ज़ पूरा हो जाएगा।	89
		फ़सल फ़िल नवाक़िज़ (वज़ू तोड़ने वाली चीज़ों का अध्याय)	
31	1	मसला: वज़ू करते समय यदि वज़ू तोड़ने वाली कोई बात हो जाए, तो नए सिरे से वज़ू करना चाहिए।	1
32	2	मसला: चुल्लू में पानी लिया और अभी इस्तेमाल नहीं किया था कि कोई अपवित्रता की घटना हो गई; कुछ लोगों के अनुसार उस पानी का वज़ू में इस्तेमाल किया जा सकता है, लेकिन लेखक का शोध यह है कि यह सही विचार के विरुद्ध है, वह चुल्लू वज़ू में काम नहीं आ सकता।	2
34	1	मसला: ज़ुकाम कितना ही बहे, वज़ू नहीं टूटता।	3
34	2	मसला: बलगम की क़य (उल्टी) कितनी ही अधिक हो, वज़ू नहीं जाएगा।	4
34	4	मसला: दुखती या बहती आँखों के आँसू, या आँख, कान, छाती, नाभि आदि से किसी दाने, नासूर या किसी बीमारी के कारण बहने वाला पानी वज़ू तोड़ देता है।	5
35	7	मसला: यह एक सामान्य नियम है कि शरीर से बहने वाला कोई भी तरल पदार्थ यदि अशुद्ध (नजिस) नहीं है, तो वह वज़ू तोड़ने वाला भी नहीं है।	6
36	3	मसला: शराब की क़य भी वज़ू तोड़ने वाली नहीं है यदि वह मुंह भर कर न हो।	7
37	2		8

पृष्ठ	लाभ संख्या	विषय	क्रम संख्या
		मसला: शोध यह है कि दर्द और बीमारी के कारण जो कुछ भी बहता है, वह उस समय वज़ू तोड़ने वाला है जब उसमें रक्त या अन्य अशुद्धियों के मिलने की संभावना हो।	
37	3	मसला: नाभि से पीला पानी बहकर निकले तो वज़ू टूट जाता है।	9
37	4	मसला: दाने का पानी भले ही साफ-सुथरा हो, सही बात यह है कि वह भी अशुद्ध और वज़ू तोड़ने वाला है।	10
37	5	मसला: अंधे व्यक्ति की आँख से जो पानी बहता है वह अशुद्ध और वज़ू तोड़ने वाला है।	11
38	1	मसला: शोध यह है कि यदि दर्द या बीमारी के कारण नमी बहती है, तो उसमें केवल रक्त और मवाद की संभावना होना ही वज़ू अनिवार्य (वाजिब) करने के लिए पर्याप्त है, हालाँकि 'फ़त्ह' और 'हुलिया' में इसे मुस्तहब (पसंदीदा) माना गया है।	12

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ
۸۸	مسئلہ: مسح کہ وضو میں ہے، اُس سے مراد تری پہنچنا ہے کسی طرح ہو۔ اگر سر دھولیا یا غوطہ لگایا یا مینہ سر پر پڑا مسح ادا ہو گیا۔	۴	۸۱۶
۸۹	مسئلہ: وضو میں مسح کی جگہ سردھونا مکروہ خلافِ سنّت ہے اگرچہ فرضِ مسح ادا ہو جائے گا۔	۵	۸۱۶
	فصل فی النواقض		
۱	مسئلہ: وضو کرتے وقت ناقضِ وضو واقع ہو تو نئے سرے سے وضو کرے۔	۱	۳۱
۲	مسئلہ: پانی چُلّو میں لیا اور ابھی استعمال نہ کیا تھا کہ حدث واقع ہوا بعض کے نزدیک اس پانی کو وضو میں استعمال کر سکتا ہے اور مصنّف کی تحقیق کہ یہ خلافِ صحیح ہے وہ چُلّو وضو میں کام نہیں دے سکتا۔	۲	۳۲
۳	مسئلہ: زکام کتنا ہی بہے وضو نہیں جاتا۔	۱	۳۴
۴	مسئلہ: بلغم کی قے کتنی ہی کثیر ہو وضو نہیں جائیگا۔	۲	۳۴
۵	مسئلہ: آنکھیں دُکھنے یا دُھلکنے میں جو آنسو بہے یا آنکھ، کان، چھاتی، ناف وغیرہ سے دانے ناسور خواہ کسی مرض کے سبب پانی بہے وضو جاتا رہے گا۔	۴	۳۴
۶		۷	۳۵

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: یہ کلیہ ہے کہ جو رطوبت بدن سے بہے اگر نجس نہیں تو ناقضِ وضو بھی نہیں۔		
۷	مسئلہ: شراب کی قے بھی اگر منہ بھر کر نہ ہو ناقضِ وضو نہیں۔	۳	۳۶
۸	مسئلہ: تحقیق یہ ہے کہ درد اور مرض سے جو کچھ بہے اُس وقت ناقض ہے کہ اُس میں آمیزشِ خون وغیرہ نجاسات کا احتمال ہو۔	۲	۳۷
۹	مسئلہ: ناف سے زرد پانی بہہ کر نکلے وضو جاتا رہے۔	۳	۳۷
۱۰	مسئلہ: دانے کا پانی اگرچہ صاف سُتھرا ہو صحیح یہ کہ وہ بھی ناپاک اور ناقضِ وضو ہے۔	۴	۳۷
۱۱	مسئلہ: اندھے کی آنکھ سے جو پانی بہے ناپاک و ناقضِ وضو ہے۔	۵	۳۷
۱۲	مسئلہ: تحقیق یہ ہے کہ درد یا علّت سے جو رطوبت بہے اس میں صرف احتمالِ خون و ریم ہو نا ہی وجوبِ وضو کو کافی ہے اگرچہ فتح و حلیہ میں استحباب مانا۔	۱	۳۸

Fatawa Razawiya Volume 4

Sr. No.	Topics	Point No.	Page No.
13	Issue: Clear water that comes out of a pimple is pure according to several narrations, and it does not break the wudu. Those with itching problems have a lot of leeway in this; they can act upon it in case of necessity, even though the correct opinion is against it.	2	39
14	Issue: Wudu is not invalidated by a thread of guinea worm (Naru) coming out of the body.	3	39
15	Issue: If fluid flows from a guinea worm (Naru), wudu will be invalidated, even if it is clear white water.	4	39
16	Issue: Wudu is not invalidated by sweat during a crisis (fever).	5	39
17	Issue: One who has a nosebleed and simultaneously has a cold, and the discharge is reddish, even if at that moment actual blood flow is not apparent, this discharge also invalidates wudu.	1	40
18	Issue: The author's research states that anything that habitually flows from the body and does not break wudu—such as tears, sweat, milk, phlegm, nasal discharge—will not break wudu no matter how much it flows, even if this excessive flowing is considered a disease in itself.	3	40
19	Issue: If a drop of blood is touched by a finger and a stain appears, or blood appears on the finger while using a miswak or brushing teeth, or if something is bitten with the teeth and a trace of blood is found on it, or if the nose is cleaned with a finger and redness appears on it, and that blood was not capable of moving from its place, then wudu will not be broken and that blood is also pure.	1	41
20	Issue: If blood or pus flows inside a blister but only reaches the opening of the blister and stays there, then wudu will not be broken.	2	41
21	Issue: There is just stickiness on pimples of itchiness etc. If cloth touches it repeatedly and gets covered in many places, it will not become impure, nor will wudu be broken.	3	41
22	Issue: The same ruling applies to dripped blood; neither does the cloth become impure from it, nor is wudu invalidated.	4	41

Sr. No.	Topics	Point No.	Page No.
23	Issue: If blood or pus is capable of flowing but is caught by cloth and does not get to flow, wudu will still be broken, and if it exceeds the size of a dirham, the cloth will also become impure.	5	41
24	Issue: If a drop of blood emerges due to a needle prick or any other reason and remains like a small bubble without flowing down, the fatwa is that it is pure and wudu will not be broken.	6	41

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी (4)

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा संख्या	पृष्ठ संख्या
13	मसला: दाने से जो साफ़-सुथरा पानी निकले वह कई रिवायतों में पाक है और इससे वज़ू नहीं जाता। खुजली वालों के लिए इसमें बहुत गुंजाइश है, ज़रूरत के वक़्त इस पर अमल कर सकते हैं, हालाँकि सही कौल इसके ख़िलाफ़ है।	2	39
14	मसला: शरीर से नारुवा (गिनी कृमि) का धागा निकलने से वज़ू नहीं जाएगा।	3	39
15	मसला: नारुवा से नमी बहे तो वज़ू जाता रहेगा, चाहे वह साफ़ सफ़ेद पानी ही क्यों न हो।	4	39
16	मसला: संकट (बुखार) के पसीने से वज़ू नहीं जाता।	5	39
17	मसला: जिसे नाक से खून बहता हो और उसी समय उसे ज़ुकाम हो और डिस्चार्ज लाल रंग का हो, भले ही उस समय खून बहता हुआ महसूस न हो, तो यह डिस्चार्ज भी वज़ू तोड़ने वाला है।	1	40
18	मसला: लेखक का शोध है कि जो चीज़ शरीर से सामान्य रूप से बहती है और उससे वज़ू नहीं टूटता, जैसे आँसू, पसीना, दूध, बलगम, नाक का डिस्चार्ज, वह चाहे कितनी ही अधिकता से निकले वज़ू नहीं तोड़ेगा, भले ही यह अधिकता स्वयं में एक बीमारी मानी जाए।	3	40
19	मसला: उंगली से खून का दाग छुआ और उस पर दाग आ गया, या मिस्वाक या दांत साफ़ करते समय उंगली में खून आ गया, या दांत से कोई चीज़ काटी और उस पर खून का असर पाया गया, या नाक उंगली से साफ़ की और उस पर लाली आ गई, और वह खून अपनी जगह से हटने के काबिल नहीं था, तो वज़ू नहीं टूटेगा और वह खून भी पाक है।	1	41
20	मसला: खून या मवाद छाले के अंदर से बहकर छाले के मुँह तक आकर रुक जाए तो वज़ू नहीं टूटेगा।	2	41

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा संख्या	पृष्ठ संख्या
21	मसला: खुजली आदि के दानों पर केवल चिपचिपाहट है, कपड़ा उससे बार-बार लगकर बहुत जगह में भर गया, तो वह नापाक नहीं हुआ और न ही वज़ू गया।	3	41
22	मसला: टपकते हुए खून का भी यही हुक्म है कि न तो उससे कपड़ा अपवित्र होगा और न ही वज़ू समाप्त होगा।	4	41
23	मसला: खून या मवाद बहने के काबिल हो लेकिन कपड़े में लगकर बहने न पाए तो वज़ू टूट जाएगा और अगर वह दिरहम से अधिक हो तो कपड़ा भी अपवित्र हो जाएगा।	5	41
24	मसला: सुई चुभने से या किसी भी तरह से खून की बूंद उभरी और हल्की सी बुलबुले जैसी होकर रह गई, ढलकी नहीं, तो फतवा इस पर है कि वह पाक है और वज़ू नहीं जाएगा।	6	41

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: دانے سے جو صاف ستھرا پانی نکلے متعدد روایات میں پاک ہے اور		
۱۳	اس سے وضو نہیں جاتا۔ کھجلی والوں کو اس میں بہت وسعت ہے، بحال ضرورت اس پر عمل کر سکتے ہیں اگر چہ قول صحیح اس کے خلاف ہے۔	۲	۳۹
۱۴	مسئلہ: بدن سے ناروا کا ڈورا نکلنے سے وضو نہ جائے گا۔	۳	۳۹
۱۵	مسئلہ: نارو سے رطوبت بہے تو وضو جاتا رہے گا اگرچہ صاف سفید پانی ہو۔	۴	۳۹
۱۶	مسئلہ: بحران کے پسینہ سے وضو نہیں جاتا۔	۵	۳۹
	مسئلہ: جسے ناک سے خون جاتا ہو اُسی حالت میں اُسے زکام ہو اور ریزش		
۱۷	سرخی لیے نکلے اگرچہ اُس وقت خون بہنا معلوم نہیں ہوا اُس کی یہ ریزش بھی ناقض وضو ہے۔	۱	۴۰
	مسئلہ: مصنف کی تحقیق کہ جو چیز عادتاً بدن سے بہا کرتی ہو اور اُس سے		
۱۸	وضو نہ جاتا ہو، جیسے آنسو، پسینہ، دودھ، بلغم، ناک کی ریزش وہ اگر چہ کتنی ہی کثرت سے نکلے ناقض وضو نہیں اگرچہ اس کی یہ کثرت بجائے خود ایک مرض گنی جاتی ہو۔	۳	۴۰
۱۹		۱	۴۱

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: خون چھنکا انگلی سے چھوا اور اس پر داغ آگیا یا مسواک یا دانت مانجھتے وقت انگلی میں لگ آیا یا کوئی چیز دانت سے کاٹی اور اس پر خون کا اثر پایا یا ناک انگلی سے صاف کی اس پر سرخی آگئی وہ خون آپ جگہ سے ہٹنے کے قابل نہ تھا وضو نہ جائیگا اور وہ خون بھی پاک ہے۔		
۲۰	مسئلہ: خون یارم آبلے کے اندر سے بہ کر آبلے کے منہ تک آکر رہ جائے تو وضو نہ جائے گا۔	۲	۴۱
۲۱	مسئلہ: خارش وغیرہ کے دانوں پر خالی چپک ہے کپڑا اس سے بار بار لگ کر بہت جگہ میں بھر گیا ناپاک نہ ہوا نہ وضو گیا۔	۳	۴۱
۲۲	مسئلہ: یہی حکم چھنکے ہوئے خون کا ہے کہ نہ اُس سے کپڑا نجس ہو نہ وضو ساقط۔	۴	۴۱
۲۳	مسئلہ: خون یا ریم بہنے کے قابل ہو مگر کپڑے میں لگ کر بہنے نہ پائے وضو جاتا رہے گا اور درم بھر سے زائد ہو تو کپڑا بھی نجس ہو جائے گا۔	۵	۴۱
۲۴	مسئلہ: سُوئی چبھو کر خواہ کسی طرح خون کی بُوند اُبھری اور ہولا سا ہو کر رہ گئی ڈھلکی نہیں، تو فتویٰ اس پر ہے کہ وہ پاک ہے وضو نہ جائے گا۔	۶	۴۱

Fatawa Razawiyya Volume IV

Sr. No.	Topics	Benefit No.	Page No.
25	Issue: Blood or pus emerged but was not enough to flow, it was wiped with clothes. If this happened repeatedly after long intervals, Wudu is not invalidated and the cloth remains pure. However, if it emerged repeatedly in a single sitting and would have flowed if left unwiped, then Wudu is invalidated and it is impure.	7	41
26	Issue: Blood emerged and soil was put on it, then it emerged again and soil was put on it; Wudu is invalidated if in one sitting enough blood emerged that it would have flowed if combined.	1	42
27	Issue: Whether the total blood that emerged separately in one sitting would have flowed if collected together, this depends on estimation.	2	42
28	Issue: If impure kohl (surma) was applied and some impurity reached the eyeball, washing it is excused.	3	42
29	Issue: If blood or pus flowed within the eye but did not come out of the eye, Wudu is not invalidated. If wiped with a cloth and that cloth is put in water, it will not be impure.	4	42
30	Issue: If blood flowed in the hard bone of the nose and did not reach the soft part, the more well-known opinion is that Wudu is not invalidated.	5	42
31	Issue: A bandage is tied over a wound and blood etc. got on it; if it was such that it would have flowed if not for the bandage, then Wudu is gone, otherwise not; nor is the bandage impure.	6	42
32	Issue: If a drop descended or blood etc. flowed inside the penis, as long as it does not come out of its opening, Wudu is not invalidated; for urine, just appearing at the opening's tip is sufficient.	1	43
33	Issue: Just the fact that, for example, blood from the nose or tooth got on a finger, then checked again and found an effect, is not sufficient for invalidating Wudu unless there is a presumption of its inherent power to flow.	2	43

Sr. No.	Topics	Benefit No.	Page No.
34	Issue: If vomiting is a mouthful, it invalidates Wudu. Then if it comes in small amounts several times such that total becomes a mouthful, if it came from the same nausea, Wudu is invalidated even if it occurred in different sittings. If nausea had stopped and then more came from a second instance of nausea, they will not be combined even if occurring in the same gathering.	3	46
35	Issue: If menstrual blood or any impurity descends into the internal vagina, as long as it does not cross its opening into the external vagina, neither Ghusl nor Wudu will be obligatory.	2	52
36	Issue: If impurity reaches the internal surface of the exit point, Wudu is not invalidated as long as it does not appear on the edge.	3	55

फतावा रजविया खंड IV

क्रम संख्या	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
25	मसला: रक्त या पीप उभरा और बहने के योग्य नहीं था, उसे कपड़ों से पोंछ लिया गया। देर-देर के बाद बार-बार ऐसा ही हुआ, वूज़ू नहीं टूटेगा और कपड़ा पाक रहेगा। हाँ, यदि एक ही बैठक में बार-बार उभरा और पोंछ लिया गया और छोड़ देते तो सब मिलकर बह जाता, तो वूज़ू नहीं रहता और वह नापाक है।	7	41
26	मसला: रक्त उभरा और उस पर मिट्टी डाल दी गई, फिर उभरा फिर मिट्टी डाल दी, वूज़ू नहीं रहा यदि एक ही बैठक में इतना उभरा कि मिलकर बह जाता।	1	42
27	मसला: एक ही बैठक में अलग-अलग समय पर जितना रक्त उभरा, वह जमा होकर बह जाता या नहीं, इसका आधार अनुमान पर है।	2	42
28	मसला: नापाक सुरमा लगाया और कोई गंदगी आँख की पुतली तक पहुँची, उसे धोना माफ है।	3	42
29	मसला: रक्त या पीप आँख के अंदर बहा लेकिन आँख से बाहर नहीं गया तो वूज़ू नहीं टूटेगा। उसे कपड़े से पोंछकर पानी में डाल दें तो नापाक नहीं होगा।	4	42
30	मसला: नाक की कठोर हड्डी में रक्त बहा और नरम हिस्से में नहीं आया, तो अधिक प्रसिद्ध मत यह है कि वूज़ू नहीं जाएगा।	5	42
31	मसला: घाव पर पट्टी बंधी है, उसमें रक्त आदि लग गया। यदि वह ऐसा था कि यदि पट्टी न होती तो बह जाता, तो वूज़ू चला गया अन्यथा नहीं, न ही पट्टी नापाक हुई।	6	42
32	मसला: लिंग के अंदर कोई बूंद उतरी या रक्त आदि बहा, जब तक वह उसके छिद्र से बाहर न आए वूज़ू नहीं जाएगा, और मूत्र का केवल छिद्र के मुँह पर चमकना ही पर्याप्त है।	1	43

क्रम संख्या	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
33	मसला: केवल इतनी बात कि उदाहरण के लिए नाक या दांत से उंगली पर रक्त लग गया, फिर दोबारा देखा और असर पाया, वूज़ू जाने के लिए पर्याप्त नहीं है जब तक कि उसमें स्वयं बहने की शक्ति का अनुमान न हो।	2	43
34	मसला: यदि वमन (उल्टी) मुँह भरकर हो तो वूज़ू तोड़ने वाला है। फिर यदि कई बार में थोड़ी-थोड़ी आए कि सबको मिलाकर मुँह भर हो जाए, तो यदि एक ही मतली से आई है तो वूज़ू जाता रहेगा चाहे वह अलग-अलग बैठकों में आई हो। और यदि मतली रुक गई थी और फिर दूसरी मतली से और आई, तो उन्हें जोड़ा नहीं जाएगा चाहे वह एक ही मजलिस में आई हो।	3	46
35	मसला: भीतरी योनि में मासिक धर्म का रक्त या कोई गंदगी उतर आए, जब तक वह उसके मुँह को पार करके बाहरी योनि में नहीं आएगी, तब तक न गुस्ल और न ही वूज़ू कुछ अनिवार्य होगा।	2	52
36	मसला: यदि गंदगी निकास द्वार की आंतरिक सतह तक आ जाए तो वूज़ू नहीं जाएगा जब तक कि वह किनारे पर दिखाई न दे।	3	55

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۲۵	مسئلہ: خون یا ریم ابھرا اور ڈھلکنے کے قابل نہ تھا اسے کپڑوں سے پونچھ لیا دیر دیر کے بعد بار بار ایسا ہی ہوا وضو نہ جائے گا اور کپڑا پاک رہا، ہاں اگر ایک ہی جلسے میں بار بار ابھرا اور پونچھ لیا اور چھوڑ دیتے تو تب مل کر ڈھلک جاتا تو وضو نہ رہتا اور وہ ناپاک ہے۔	۷	۴۱
۲۶	مسئلہ: خون ابھرا اور اس پر مٹی ڈال دی پھر ابھرا پھر مٹی ڈال دی وضو نہ رہا جبکہ ایک جلسے میں اتنا ابھرا کہ مل کر بہہ جاتا۔	۱	۴۲
۲۷	مسئلہ: ایک جلسے میں متفرق طور پر جتنا خون ابھرا یہ جمع ہو کر بہہ جاتا ہے یا نہیں اس کا مدار اندازے پر ہے۔	۲	۴۲
۲۸	مسئلہ: ناپاک سرمہ لگایا اور کوئی نجاست آنکھ کے ڈھیلے کو پہنچی اس کا دھونا معاف ہے۔	۳	۴۲
۲۹	مسئلہ: خون یا پیپ آنکھ میں بہا مگر آنکھ سے باہر نہ گیا تو وضو نہ جائے گا اسے کپڑے سے پونچھ کر پانی میں ڈال دیں تو ناپاک نہ ہوگا۔	۴	۴۲
۳۰	مسئلہ: ناک سے سخت بانسے میں خون بہا اور نرم حصے میں نہ آیا تو مشہور تر یہ ہے کہ وضو نہ جائیگا۔	۵	۴۲
۳۱		۶	۴۲

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: زخم پر پٹی بندھی ہے اُس میں خون وغیرہ لگ گیا اگر اس قابل تھا کہ بندش نہ ہوتی تو بہہ جاتا تو وضو گیا ورنہ نہیں، نہ پٹی ناپاک۔		
۳۲	مسئلہ: قطرہ اترا یا خون وغیرہ ذکر کے اندر بہا جب تک اُس کے سوراخ سے باہر نہ آئے وضو نہ جائیگا، اور پیشاب کا صرف سوراخ کے منہ پر چمکنا کافی ہے۔	۱	۴۳
۳۳	مسئلہ: فقط اتنی بات کہ مثلاً ناک یا دانت سے انگلی پر خون لگ آیا دوبارہ دیکھا پھر اثر پایا وضو جانے کو کافی نہیں جب تک اس میں خود بہنے کی قوت مظنون نہ ہو۔	۲	۴۳
۳۴	مسئلہ: قے اگر منہ بھر کر ہو ناقضِ وضو ہے پھر اگر چند بار میں تھوڑی تھوڑی آئے کہ سب ملانے سے منہ بھر کر ہو جائے تو اگر ایک ہی متلی سے آئی ہے وضو جاتا رہے گا اگرچہ مختلف جلسوں میں آئی ہو اور اگر متلی تھم گئی تھی اور پھر دوسری متلی سے اور آئی تو ملائی نہ جائیگی اگرچہ ایک ہی مجلس میں آئی ہو۔	۳	۴۶
۳۵	مسئلہ: فرج داخل میں خون حیض وغیرہ کوئی نجاست اتر آئے جب تک اس کے منہ سے تجاوز کر کے فرج خارج میں نہ آئے گی غسل یا وضو کچھ واجب نہ ہوگا۔	۲	۵۲
۳۶	مسئلہ: نجاست اگر مخرج کی اندرونی سطح تک آجائے وضو نہ جائے گا جب تک کنارے پر ظاہر نہ ہو۔	۳	۵۵

Volume Four Fatawa Razawiyya

Serial Number	Titles / Topics	Benefit No.	Page
37	Problem: If a leech or a large insect clings to the body and sucks so much blood that if it had come out on its own, it would have flowed, then the wudu (ablution) will be broken. If it is a small amount, like a small insect, then wudu is not broken. Similarly, wudu is not broken by the bite of a bedbug or mosquito.	1	56
38	Problem: If swelling is spread over a large area and even wiping (masah) over it is harmful, and it bursts from the top and blood or pus flows over the swelling towards the healthy part of the body, then some books state that wudu is not broken. However, the author's research is that it will be broken. If washing or wiping over this swelling is possible, then by consensus, it breaks the wudu.	3	57
39	Problem: Even if a wound is spread deep inside the body and only its opening is visible, if blood etc. continues to flow within its circumference, there is no harm. When it drips from the opening, wudu will be broken, even if it does not move beyond the surface of the wound.	5	61
40	Problem: If a wound is spread over the outer body but is long and thin like a line or thread, such that its inner surface is not visible from the outside, then it appears that its ruling will be like that of a purely internal wound. There is no harm if blood circulates inside it or reaches its edges. As long as it doesn't drip, it's fine. If it boils up to the upper edge and drips onto the skin of the body, wudu will not remain, even if it does not move beyond the boundary of the wound.	1	62
41	Problem: An open wide wound whose inner surface is visible from the outside. It appears that as long as it does not heal, it is considered internal to the body. If blood etc. boils inside it and reaches its edges, or only boils up on its upper part and stays inside without coming out, wudu will not be	2	62

Serial Number	Titles / Topics	Benefit No.	Page
	broken. That blood is considered pure as long as it is still circulating within its place.		
42	Problem: The author of Hidaya stated in a book that blood which comes out little by little, such that the amount from one instance is not enough to flow, even if the total amount collected would be large, it does not break wudu at all, even if it happens in one sitting. This opinion is contrary to the famous and majority view. It is not permissible to act upon this without necessity. However, for someone suffering from such wounds or blisters from which a small amount of blood or pus frequently comes out—such that a single instance's discharge isn't enough to flow, but the total from one sitting would be—and repeated wudu and cleaning of clothes cause great hardship without reaching the level of disability, then acting upon this provides great ease.	3	62

जिल्द चहारुम (खंड चार) फ़तावा रजविया

क्र. सं.	शीर्षक / विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ
37	मसला: जोंक या बड़ी कतली (कीड़ा) बदन से चिपटी और उसने इतना खून चूस लिया कि अगर वह खुद निकलता तो बह जाता, तो वज़ू टूट जाएगा। और अगर थोड़ा सा जैसे छोटी कतली हो तो वज़ू नहीं जाएगा। इसी तरह खटमल या मच्छर के काटने से वज़ू नहीं जाता।	1	56
38	मसला: सूजन ज़्यादा जगह में फैली हुई है और उस पर मसह (गीले हाथ से पोंछना) करना भी नुकसानदेह है, और वह ऊपर से फटी और खून या पीब सूजन पर बहकर स्वस्थ बदन की तरफ बढ़ा, तो कुछ किताबों में कहा गया है कि वज़ू नहीं गया। और लेखक का शोध यह है कि वज़ू टूट जाएगा। और अगर इस सूजन को धोना या मसह करना मुमकिन हो, तो सर्वसम्मति से वज़ू तोड़ने वाला (नाकिज़) होगा।	3	57
39	मसला: घाव अगर शरीर के अंदर दूर तक फैला हो और केवल उसका मुँह दिखाई दे रहा हो, तो उसके घेरे में खून आदि का बहते रहना कोई हर्ज नहीं। जब वह मुँह पर आकर ढलकेगा (टपकेगा), तो वज़ू टूट जाएगा, चाहे वह घाव की सतह से आगे न बढ़े।	5	61
40	मसला: घाव अगर शरीर की बाहरी सतह पर ही दूर तक फैला हो लेकिन एक रेखा या धागे की तरह लंबा और पतला हो, कि उसकी आंतरिक सतह बाहर से दिखाई न दे, तो स्पष्ट रूप से इसका हुक्म भी उसी शुद्ध आंतरिक घाव की तरह होगा कि खून अंदर घूमे तो कोई हर्ज नहीं और उसके किनारों तक आ जाए तो भी कोई हर्ज नहीं जब तक कि टपके नहीं। और अगर वह ऊपर के किनारे तक उबल कर बदन की खाल पर टपका, तो वज़ू नहीं रहेगा, चाहे घाव की सीमा से आगे न बढ़े।	1	62
41	मसला: खुला हुआ चौड़ा घाव जिसकी आंतरिक सतह बाहर से दिखाई दे। स्पष्ट यह है कि जब तक वह ठीक न हो, वह शरीर के भीतरी भाग के हुक्म में है। अगर उसके अंदर खून आदि उबले और उसके किनारों तक आ जाए या केवल उसके	2	62

क्र. सं.	शीर्षक / विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ
42	ऊपरी हिस्से पर उबल कर उसके अंदर ही रहे, बाहर न निकले, तो वज़ू नहीं जाएगा। वह खून तब तक नापाक नहीं जब तक वह अपने स्थान पर ही घूम रहा है। मसला: 'हिदाया' के लेखक ने एक किताब में कहा है कि जो खून थोड़ा-थोड़ा निकले कि एक बार का निकला हुआ बहने के काबिल न हो, भले ही वह इकट्ठा करने पर कितना ही ज़्यादा हो जाए, वह वज़ू तोड़ने वाला नहीं है, चाहे वह एक ही बैठक में निकला हो। यह कथन प्रसिद्ध और बहुसंख्यक मत (जमहूर) के विपरीत है। बिना ज़रूरत इस पर अमल करना जायज़ नहीं है। हाँ, जो व्यक्ति ऐसे घावों या छालों से पीड़ित हो जिनसे अक्सर थोड़ा खून या मवाद निकलता रहता है कि एक बार का निकला हुआ बहने के काबिल नहीं होता लेकिन एक ही बैठक का जमा किया हुआ बहने के काबिल हो जाता है, और बार-बार वज़ू करना और कपड़ों की सफाई बहुत ज़्यादा कठिनाई का कारण हो, जबकि वह लाचारी (माज़ूरी) की सीमा तक न पहुँचा हो, उसके लिए इस पर अमल करने में बहुत आसानी है।	3	62

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ
	مسئلہ: جونک یا بڑی کٹلی بدن کو لپٹی اگر اتنا خون چوس لیا کہ خود نکلتا تو		
۳۷	بہہ جاتا تو وضو جاتا رہے گا اور تھوڑا جو سا چھوٹی کٹلی تھی تو وضو نہ جائے گا۔ یونہی کھٹمل یا مچھر کے کاٹنے سے وضو نہیں جاتا۔	۱	۵۶
	مسئلہ: ورم زیادہ جگہ میں پھیلا ہوا ہے اور اُسے مسح بھی نقصان کرتا ہے اور وہ اوپر سے پھوٹا اور خون یا پیپ ورم پر بہا صحیح بدن کی طرف بڑھا تو		
۳۸	بعض کتب میں فرمایا وضو نہ گیا۔ اور مصنف کی تحقیق یہ ہے کہ جاتا رہے گا، اور اگر اس ورم کو غسل یا مسح کر سکتے ہو تو بالاتفاق ناقضِ وضو ہو گا۔	۳	۵۷
	مسئلہ: زخم اگرچہ جسم کے اندر دُور تک پھیلا ہوا اور صرف منہ ظاہر ہے تو		
۳۹	اس کے گھیراؤ میں خون وغیرہ بہتے رہیں کچھ حرج نہیں جب منہ پر آکر ڈھلکے گا وضو جاتا رہے گا اگرچہ زخم کی سطح سے آگے نہ بڑھے۔	۵	۶۱
	مسئلہ: زخم اگر ظاہرِ جسم ہی پر دُور تک پھیلا ہوا ہے مگر ایک خط یا ڈورے کی طرح دراز و باریک ہے کہ اُس کی اندرونی سطح باہر سے نظر نہیں آتی		
۴۰	تو ظاہر یہ ہے کہ اس کا حکم بھی اُسی محض اندرونی زخم کی طرح ہوگا کہ خون اندر دورہ کرے تو مضائقہ نہیں اور اُس کے کناروں تک آجائے تو مضائقہ نہیں جب تک ڈھلکے نہیں اور اگر اس کے بالائی کنارے تک اُبل کر	۱	۶۲

نمبر شمار	عنوانات	صفحہ نمبر	فائدہ
	بدن کی جلد پر ڈھلکا تو وضو نہ رہے گا اگرچہ زخم کی حد سے آگے نہ بڑھے۔		
۴۱	مسئلہ: کھلا ہوا چوڑا گھاؤ جس کی اندرونی سطح باہر سے دکھائی دے۔ ظاہر یہ ہے کہ جب تک اچھا نہ ہو باطنِ بدن کے حکم میں ہے اگر اس کے اندر خون وغیرہ اُبلے کہ اُس کے کناروں تک آجائے یا صرف اس کے بالائی حصے پر اُبل کر اُس کے اندر اندر ہی رہے باہر نہ نکلے تو وضو نہ جائیگا وہ خون ناپاک ہو کہ ہنوز اپنے مقام ہی میں دورہ کر رہا ہے۔	۶۲	۲
۴۲	مسئلہ: صاحبِ ہدایہ نے ایک کتاب میں فرمایا کہ خون جو تھوڑا تھوڑا نکلے کہ کسی دفعہ کا نکلا ہوا بہنے کے قابل نہ ہو اگرچہ جمع کرنے سے کتنا ہی ہو جائے اصلاً ناقضِ وضو نہیں اگرچہ ایک ہی مجلس میں نکلے یہ قول خلافِ مشہور و مخالفِ جمہور ہے۔ بے ضرورت اس پر عمل جائز نہیں ہاں جو ایسے زخم یا آبلوں میں مبتلا ہو جس سے اکثر وقت خون یا ریم قلیل نکلتا رہتا ہے کہ ایک بار کا نکلا ہوا بہنے کے قابل نہیں ہوتا مگر جلسہ واحدہ کا جمع کئے سے ہو جاتا ہے اور بار بار وضو اور کپڑوں کی تطہیر موجبِ ضیقِ کثیر ہے کہ معذوری کی حد تک نہ پہنچا اس کے لئے اس پر عمل میں بہت آسانی ہے۔	۶۲	۳

Volume 4 | Fatawa Rizvia

Serial No.	Titles/Topics	Benefit No.	Page
43	Issue: Wudu (ablution) is not nullified by the exposure of knees or other private parts, nor by looking at one's own or another's private parts.	1	66
44	Issue: Wudu is not nullified by running or jumping.	3	67
45	Issue: Wudu will not be nullified no matter how high one falls from, unless some blood etc. is discharged or one becomes unconscious.	4	67
46	Issue: As long as consciousness remains and the nature is occupied to some extent in some work, wudu will not be nullified, such as studying a book or meditation in remembrance of Allah.	5	67
47	Issue: If semen is discharged without desire due to lifting a load, falling, or any other reason, wudu will become obligatory, not Ghusl (ritual bath).	7	67
48	Issue: A boil has completely healed and its dead skin remains which has an opening at the top and a cavity inside; if water gets filled in it during bathing and is then squeezed out, wudu will not be nullified nor will that water be impure.	8	67
49	Issue: If blood etc. moisture still remains in a boil and bathing water gets into it and comes out flowing, wudu will be nullified because that water became impure.	2	68
50	Issue: Water was drunk and went down into the stomach and then came out in a vomit as clear clean water; wudu is nullified if it was a mouthful, and that water is also impure.	3	68
51	Issue: If, God forbid, worms or a snake are vomited, wudu will not be nullified even if it is a mouthful.	6	68
52	Issue: A person was sitting on a chair or stool with feet hanging and fell asleep; wudu is not nullified, but it will be nullified by sleeping on a European-style chair that has a large hole in the center of the seat.	3	71
53		4	71

Serial No.	Titles/Topics	Benefit No.	Page
	Issue: If there is a saddle on the horse and one fell asleep while riding it, wudu will not be nullified even if going down a slope.		
54	Issue: If riding on bareback and fell asleep, if the path is level or uphill, wudu will not be nullified; if it is downhill, it will be nullified.	5	71

क्रम सं.	विषय	लाभ सं.	पृष्ठ
43	मसला: घुटने या अन्य सतर (गुप्त अंग) खुलने से या अपना या किसी और का सतर देखने से वज़ू नहीं टूटता।	1	66
44	मसला: दौड़ने या कूदने से वज़ू नहीं टूटता।	3	67
45	मसला: कितनी ही ऊँचाई से गिर पड़े वज़ू नहीं जाएगा जब तक कि खून आदि न निकले या बेहोश न हो जाए।	4	67
46	मसला: जब तक होश बाकी है और प्रकृति किसी कार्य में व्यस्त है वज़ू नहीं जाएगा, जैसे कि किताब का अध्ययन या अल्लाह की याद में ध्यान लगाना।	5	67
47	मसला: बोझ उठाने, गिरने या किसी और वजह से बिना कामुकता (शहवत) के वीर्य निकल गया तो वज़ू वाजिब होगा, गुस्ल नहीं।	7	67
48	मसला: फोड़ा बिल्कुल ठीक हो गया और उसकी मृत खाल बाकी है जिसमें ऊपर मुँह और अंदर खाली जगह है, नहाने में उसमें पानी भर गया फिर दबाकर निकाल दिया तो वज़ू नहीं जाएगा और न ही वह पानी नापाक हुआ।	8	67
49	मसला: फोड़े में अगर अभी खून आदि नमी बाकी है और नहाने का पानी उसमें भरकर बहकर निकला तो वज़ू टूट जाएगा क्योंकि वह पानी नापाक हो गया।	2	68
50	मसला: पानी पिया और पेट में उतर गया और उल्टी के रूप में वैसा ही साफ़ पानी निकल गया, तो वज़ू टूट जाएगा यदि उल्टी मुँह भरकर हो और वह पानी भी नापाक है।	3	68
51	मसला: अगर अल्लाह न करे कीड़े या सांप की उल्टी हो, तो वज़ू नहीं जाएगा चाहे मुँह भरकर ही क्यों न हो।	6	68
52	मसला: कुर्सी या मूढ़े पर पैर लटकाकर बैठा था और सो गया तो वज़ू नहीं गया, लेकिन यूरोपीय शैली की कुर्सी जिसके बैठने वाली जगह के बीच में एक बड़ा छेद होता है, उस पर सोने से वज़ू टूट जाएगा।	3	71
53		4	71

क्रम सं.	विषय	लाभ सं.	पृष्ठ
	मसला: घोड़े पर ज़ीन है और उस पर सवारी करते हुए सो गया तो वज़ू नहीं जाएगा चाहे ढाल (ढलान) में उतर रहा हो।		
54	मसला: नंगी पीठ पर सवार है और सो गया तो अगर रास्ता समतल या चढ़ाई वाला है तो वज़ू नहीं जाएगा, अगर ढलान है तो वज़ू टूट जाएगा।	5	71

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ
۴۳	مسئلہ: گھٹنے یا اور ستر کھلنے یا اپنا یا پرایا ستر دیکھنے سے وضو نہیں جاتا۔	۱	۶۶
۴۴	مسئلہ: دوڑنے یا کودنے سے وضو نہیں جاتا۔	۳	۶۷
۴۵	مسئلہ: کتنی ہی بلندی پر سے گر پڑے وضو نہ جائیگا مگر یہ کہ خون وغیرہ کچھ خارج ہو یا بے ہوش ہو جائے۔	۴	۶۷
۴۶	مسئلہ: جب تک ہوش باقی ہیں طبیعت کسی قدر کسی کام میں مشغول ہو وضو نہ جائیگا جیسے کتاب کا مطالعہ یاد الہی کا مراقبہ۔	۵	۶۷
۴۷	مسئلہ: بوجھ اٹھانے یا گر پڑنے یا کسی وجہ سے منی بے شہوت اپنے محل سے جدا ہو کر نکل گئی وضو واجب ہوگا غسل نہیں۔	۷	۶۷
۴۸	مسئلہ: پھڑیا بالکل اچھی ہو گئی اور اس کا مردہ پوست باقی ہے جس میں اوپر منہ اور اندر خلا ہے، نہانے میں اس میں پانی بھر گیا پھر دبا کر نکال دیا وضو نہ جائے گا نہ وہ پانی ناپاک ہوا۔	۸	۶۷
۴۹	مسئلہ: پھڑیا میں اگر ابھی خون وغیرہ رطوبت باقی ہے نہانے کا پانی اس میں بھر اور بہہ کر نکلا وضو جاتا رہے گا کہ وہ پانی نجس ہو گیا۔	۲	۶۸
۵۰		۳	۶۸

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: پانی پیا اور معدے میں اتر گیا اور قے آتے ہو کر ویسا ہی صاف نتھرا پانی نکل گیا وضو جاتا رہا جبکہ منہ بھر کر ہو اور وہ پانی بھی ناپاک ہے۔		
۵۱	مسئلہ: اگر معاذ اللہ کیڑے قے ہوئے یا سانپ، وضو نہ جائے گا اگرچہ منہ بھر کر ہو۔	۶	۶۸
۵۲	مسئلہ: کرسی مونڈھے پر پاؤں لٹکائے بیٹھا تھا سو گیا وضو نہ گیا مگر یورپین ساخت کی کرسی جس کی وسط نشست گاہ میں ایک بڑا سوراخ رکھتے ہیں اس پر سونے سے جاتا رہے گا۔	۳	۷۱
۵۳	مسئلہ: گھوڑے پر زین ہے اس کی سواری میں سو گیا وضو نہ جائے گا اگرچہ ڈھال میں اترتا ہو۔	۴	۷۱
۵۴	مسئلہ: ننگی پیٹھ پر سوار ہے اور سو گیا تو اگر راستہ ہموار یا چڑھائی ہے وضو نہ جائے گا اتار ہے تو جاتا رہے گا۔	۵	۷۱

Fatawa Razawiya Volume 4

Titles

Serial No. | Subjects | Benefit No. | Page No.

55: Ruling: If someone leaned against a wall etc. and slept so deeply that if the support were removed, they would fall, the fatwa is that wudhu (ablution) is still not broken as long as both buttocks are firmly seated. | 6 | 71

56: Ruling: If one falls asleep in any posture of prayer like standing (Qiyam), sitting (Ta'ud), bowing (Ruku), or prostrating (Sujud), even if it's in a posture outside of prayer, wudhu will not be broken. However, for sitting, the condition is that both buttocks must be firmly seated, and for prostration, it should be in the manner sunnah for men: arms away from sides and belly away from thighs. | 7 | 71

57: Ruling: Apparently, the ruling for a saddle is like that of a bare back, and sleeping on a European-style saddle which has a hole in the middle will definitely break wudhu. | 9 | 71

58: Ruling: Even in the specific prostration of prayer, if one sleeps in such a position that the forearms are spread on the ground, the stomach is touching the thighs, and the shins are touching the ground—similar to how women prostrate—then wudhu will be broken. It can also be expressed as: if a woman sleeps while in prostration, wudhu is invalidated; if a man sleeps in his sunnah prostration, it remains intact. | 10 | 71

59: Ruling: If one falls asleep sitting on the edge of a hot clay oven (tandoor) with legs hanging inside, it is better to perform wudhu. | 1 | 72

60: Ruling: A sick person was praying while lying down, fell asleep, wudhu was broken. | 3 | 72

61: Ruling: The general rule for sleeping during prayer is that if one sleeps in any of the ten positions where wudhu is not broken, then neither wudhu is broken nor the prayer is invalidated. However, if an entire pillar (rukn) of prayer is performed while completely asleep, it will not be counted and must be repeated. If started while awake and sleep came during that pillar, the part performed while awake will be valid; if it was sufficient to fulfill the pillar, it is enough. In these rulings, intentional sleeping and unintentional falling asleep are equal. And if one sleeps in one of those ten positions where wudhu is broken, then wudhu is definitely gone. If one slept

intentionally, the prayer is also invalidated; otherwise, perform wudhu and complete the remaining prayer from where sleep occurred. | 4 | 72

62: Ruling: Drowsiness does not break wudhu as long as the state of alertness is predominant. | 5 | 72

फ़तावा रज़विया, जिल्द चार

विषय-सूची

क्रम संख्या | विषय | फ़ायदा नं. | पृष्ठ संख्या

५५: मसअला: अगर दीवार वगैरह से सहारा लिया है और इतना गाफ़िल सो गया कि वो चीज़ हटा ली जाए तो गिर पड़ेगा, तो फ़तवा इस पर है कि यूँ भी वज़ू नहीं जाएगा जब कि दोनों कूल्हे अच्छी तरह जमे हों। | ६ | ७१

५६: मसअला: क्याम, तऊद, रुकू सुजूद नमाज़ की किसी भी हालत पर सो जाए अगरचे नमाज़ के इलावा भी इसी मुद्रा (हैयत) पर हो, वज़ू नहीं जाएगा। मगर कऊद (बैठने) में वही शर्त है कि दोनों कूल्हे जमे हों और सुजूद (सजदा) की शक्ल वो हो जो मर्दों के लिए सुन्नत है कि बाजू पहलू से अलग हों और पेट रानों (जाँघों) से अलग। | ७ | ७१

५७: मसअला: ज़ाहिर है कि जीन (काठी) का हुक्म भी नंगी पीठ की तरह है और यूरोपीय बनावट की जीन जिसके बीच में छेद होता है, उस पर सोने से मुतलक़न (निश्चित रूप से) वज़ू जाता रहेगा। | ९ | ७१

५८: मसअला: ख़ास नमाज़ के सजदे में भी अगर इस हालत में सोया कि कलाइयाँ ज़मीन पर बिछी हैं, पेट रानों से लगा है, पिंडलियाँ ज़मीन से मिली हैं जैसा कि औरतों का सजदा होता है, तो वज़ू जाता रहेगा। इसे यूँ भी कह सकते हैं कि औरत सजदे में सोए तो वज़ू साक़ित (ख़त्म) और मर्द सोए तो बाक़ी। | १० | ७१

५९: मसअला: गरम तन्दूर के किनारे उस पर पाँव लटकाए बैठ कर सो गया तो बेहतर है कि वज़ू करे। | १ | ७२

६०: मसअला: बीमार लेट कर नमाज़ पढ़ रहा था, नींद आ गई, वज़ू नहीं रहा। | ३ | ७२

६१: मसअला: नमाज़ में सोने का नियम यह है कि अगर उन दस सूरतों (स्थितियों) पर सोया जिनमें वज़ू नहीं जाता, तो न वज़ू जाएगा न नमाज़ फ़ासिद (भंग) होगी। हाँ, अगर कोई रुकन बिल्कुल सोते में अदा किया तो उसका एतबार न होगा, उसका दोहराना ज़रूरी है। और जो जागते में शुरू किया और उस रुकन में नींद आ गई, उसका जागते का हिस्सा मान्य रहेगा; अगर वह रुकन अदा करने के बराबर था तो काफ़ी है। इन अहकाम (नियमों) में जानबूझ कर सोना और बिना इरादा सो जाना

बराबर है। और अगर उन दस सूरतों पर सोया जिनमें वज़ू जाता रहता है, तो वज़ू तो गया ही, फिर अगर जानबूझ कर सोया तो नमाज़ भी फ़ासिद हो जाएगी, वरना वज़ू करे और जहाँ सोया था वहीं से बाक़ी नमाज़ अदा कर सकता है। | ४ | ७२

६२: मसअला: ऊंघने से वज़ू नहीं जाता जब तक कि होश्यारी का हिस्सा ग़ालिब (प्रभावी) हो। | ५ | ७२

पृष्ठ ६२८ का ७६१

فتاوی رضویہ جلد چہارم

عنوانات

نمبر شمار | عنوانات | فائدہ نمبر | صفحہ نمبر

۵۵: مسئلہ: اگر دیوار وغیرہ سے تکیہ لگایا ہے اور اتنا غافل سو گیا وہ شئے ہٹالی جائے تو گر پڑے گا فتوی اس پر ہے کہ یوں بھی وضو نہ جائے گا جب کہ دونوں سرین خوب جمی ہوں۔ | ۶ | ۷۱ |

۵۶: مسئلہ: قیام، تعود، رکوع، سجود نماز کی کیسی ہی حالت پر سو جائے اگرچہ غیر نماز میں اس ہیات پر ہو وضو نہ جائیگا مگر قعود میں وہی شرط جو کہ دونوں سرین جمے ہوں اور سجود کی شکل وہ ہو جو مردوں کے لئے سنت ہے کہ بازو پہلو سے جدا ہوں اور پیٹ رانوں سے الگ۔ | ۷ | ۷۱ |

۵۷: مسئلہ: ظاہراً کاٹھی کا حکم بھی ننگی پیٹھ کی طرح ہے اور یورپین ساخت کی کاٹھی جس کے بیچ میں سوراخ ہوتا ہے اس پر سونے سے مطلقاً وضو جاتا رہے گا۔ | ۹ | ۷۱

۵۸: مسئلہ: خاص نماز کے سجدے میں بھی اگر اس وضع پر سویا کہ کلائیاں زمین پر بچھی ہیں پیٹ رانوں سے لگا ہے پنڈلیاں زمین سے ملی ہیں جیسے عورتوں کا سجدہ ہوتا ہے تو وضو جاتا رہے گا اسے یوں بھی تعبیر کر سکتے ہیں کہ عورت سجدے میں سوئے تو وضو ساقط اور مرد سوئے تو باقی۔ | ۱۰ | ۷۱

۵۹: مسئلہ: گرم تنور کے کنارے اس پر پاؤں لٹکائے بیٹھ کر سو گیا تو مناسب ہے کہ وضو کرے۔ | ۱ | ۷۲

۶۰: مسئلہ: بیمار لیٹ کر نماز پڑھتا تھا نیند آگئی وضو نہ رہا۔ | ۳ | ۷۲

۶۱: مسئلہ: نماز میں سونے کا کلیہ یہ ہے کہ اگر ان دس صورتوں پر سویا جن میں وضو نہیں جاتا تو نہ وضو جائے نہ نماز فاسد ہو، ہاں اگر رکن بالکل سوتے میں ادا کیا اس کا اعتبار نہ ہوگا اس کا اعادہ ضرور ہے اور جو جاگتے میں شروع کیا اور اس رکن میں نیند آگئی اس کا جاگتے کا حصہ معتبر رہے گا اگر وہ بقدر ادائے رکن تھا کافی ہے ان احکام میں قصد اسونا اور بلا قصد سو جانا برابر ہے۔ اور اگر ان دس صورتوں پر سویا جن میں وضو جاتا رہتا ہے تو وضو تو گیا ہی پھر اگر قصداً سویا تو نماز بھی فاسد ہو گی ورنہ وضو کرے جہاں سویا وہاں سے باقی نماز ادا کر سکتا ہے۔ | ۴ | ۷۲

۶۲: مسئلہ: اونگھنے سے وضو نہیں جاتا جبکہ ہوشیاری کا حصہ غالب ہو۔ | ۵ | ۷۲

Fatawa Razawiyya Volume 4

Serial No.	Topics	Rule No.	Page No.
63	Issue: Drowsing while sitting does not nullify wudu, even if one buttock is occasionally lifted.	6	76
64	Issue: If someone swayed and fell but their eyes opened immediately, the wudu is not lost.	7	76
65	Issue: In the ten cases where wudu is nullified, the condition is that sleep must occur in those postures. Otherwise, if one slept in a posture that doesn't break wudu and moved into a posture that does while asleep but woke up immediately without delay upon reaching that posture, wudu is not lost.	8	76
66	Issue: Sleep itself is not a nullifier of wudu, but rather because there is a strong presumption of passing wind while asleep.	3	90
67	Issue: Insanity nullifies wudu.	2	92
68	Issue: In prayers other than the funeral prayer, if an adult laughs while awake such that the sound of laughter reaches others, then the wudu will also be nullified.	3	92
69	Issue: Becoming 'Bohra' (senile/mentally impaired), meaning God forbid a mental disturbance occurs making it dysfunctional; if a person sometimes speaks like sane people and sometimes like the insane, behaving like a madman hitting or swearing at people, wudu is not lost just by the onset of this state.	5	92
70	Issue: Fainting and unconsciousness nullify wudu, but they are not nullifiers in themselves, rather because of the presumption of passing wind etc.	-	-
71	Issue: Someone who has a flatulence ailment to the point of being classified as excused (Ma'zur), their wudu should not be nullified by sleep.	8	93
72	Issue: If both buttocks are firmly on the ground while sleeping, wudu is not lost, but repeating wudu is still recommended (Mustahabb).	2	192

Serial No.	Topics	Rule No.	Page No.
73	Issue: It is recommended to perform wudu after scratching the armpit if there is an odor in it.	3	192
74	Issue: It is also recommended to perform a new wudu after touching someone with leprosy or vitiligo.	4	192
75	Issue: Touching a cross (worshipped by Christians) or idols of Hindus etc. also requires a new wudu.	5	192
76	Issue: When things that make repeating wudu recommended occur during the act of performing wudu, it is recommended to start the wudu again from the beginning.	1	193

फ़तावा रज़विया जिल्द 4

क्रम संख्या	विषय	नियम संख्या	पृष्ठ संख्या
63	मसला: बैठे-बैठे नींद के झोंके लेने से वज़ू नहीं जाता, चाहे कभी एक कूल्हा उठ जाता हो।	6	76
64	मसला: झूम कर गिर पड़ा लेकिन तुरंत आँख खुल गई, वज़ू नहीं गया।	7	76
65	मसला: उन दस सूरतों में जिनसे वज़ू जाता है, यही शर्त है कि उन्हीं सूरतों पर सोना पाया जाए, वर्ना अगर इस सूरत पर सोया कि वज़ू न जाता और नींद में उस शक्ल पर आ गया जिसमें जाता है, मगर जैसे ही वह शक्ल पैदा हुई बिना किसी देरी के जाग उठा, तो वज़ू नहीं जाएगा।	8	76
66	मसला: नींद स्वयं वज़ू को तोड़ने वाली नहीं है, बल्कि इसलिए कि सोते समय हवा निकलने (पादने) का प्रबल अनुमान होता है।	3	90
67	मसला: पागलपन से वज़ू टूट जाता है।	2	92
68	मसला: जनाज़ा की नमाज़ के अलावा अन्य नमाज़ों में यदि कोई वयस्क जागते हुए इस प्रकार हँसे कि हँसी की आवाज़ दूसरों तक पहुँचे, तो वज़ू भी टूट जाएगा।	3	92
69	मसला: 'बोहरा' हो जाना यानी दिमाग में अल्लाह न करे कोई विकार पैदा होने से वह खराब हो जाए; आदमी कभी समझदारों वाली बातें करे और कभी पागलों की तरह लोगों को मारता-गालियां देता हो, तो इस स्थिति के पैदा होने से वज़ू नहीं जाता।	5	92
70	मसला: बेहोशी और मूर्च्छा से वज़ू टूट जाता है, लेकिन यह स्वयं वज़ू तोड़ने वाली नहीं है, बल्कि हवा निकलने आदि के प्रबल अनुमान के कारण है।	-	-
71	मसला: जिसे हवा निकलने की बीमारी उस सीमा तक हो कि वह 'माज़ूर' (विवश) की श्रेणी में आ जाए, उसका वज़ू सोने से नहीं टूटना चाहिए।	8	93
72	मसला: सोते समय यदि दोनों कूल्हे ज़मीन पर टिके हों तो वज़ू नहीं जाता, लेकिन फिर भी वज़ू दोहराना मुस्तहब (पसंदीदा) है।	2	192

क्रम संख्या	विषय	नियम संख्या	पृष्ठ संख्या
73	मसला: बगल खुजलाने से वज़ू मुस्तहब है, जबकि उसमें दुर्गंध हो।	3	192
74	मसला: कोढ़ी या सफेद दाग वाले व्यक्ति को छूने से भी नया वज़ू करना मुस्तहब है।	4	192
75	मसला: सलीब (क्रॉस) जिसे ईसाई पूजते हैं और हिंदुओं के बुत आदि छूने से भी नया वज़ू करना चाहिए।	5	192
76	मसला: जिन बातों से वज़ू दोहराना मुस्तहब है, यदि वे वज़ू करने के दौरान ही घटित हों, तो बेहतर है कि वज़ू फिर से शुरू से किया जाए।	1	193

فتاوی رضویہ جلد چہارم

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۶۳	مسئلہ: بیٹھے بیٹھے نیند کے جھونکے لینے سے وضو نہیں جاتا اگرچہ کبھی ایک سرین اٹھ جاتا ہو۔	۶	۷۶
۶۴	مسئلہ: جھوم کر گر پڑا مگر معاً آنکھ کھل گئی وضو نہ گیا۔	۷	۷۶
۶۵	مسئلہ: ان دسوں صورتوں میں جن سے وضو جاتا ہے یہی قید ہے کہ انہیں صورتوں پر سونا پایا جائے ورنہ اگر سویا اس صورت پر کہ وضو نہ جاتا اور نیند میں اس شکل پر آگیا جس میں جاتا ہے مگر معاً شکل پیدا ہوتے ہی بلا وقفہ جاگ اٹھا وضو نہ جائے گا۔	۸	۷۶
۶۶	مسئلہ: نیند خود ناقض وضو نہیں بلکہ اس وجہ سے کہ سوتے میں خروج ریح کا ظن غالب ہے۔	۳	۹۰
۶۷	مسئلہ: جنون سے وضو جاتا رہتا ہے۔	۲	۹۲
۶۸	مسئلہ: نماز جنازہ کے سوا اور نماز میں بالغ آدمی جاگتے ہیں ایسا ہنسے کہ اوروں تک ہنسی کی آواز پہنچی تو وضو بھی جاتا رہے گا۔	۳	۹۲
۶۹	مسئلہ: بو ہرا ہو جانا یعنی دماغ میں معاذ اللہ خلل پیدا ہونے سے فاسد ہو جائے آدمی کبھی عاقلوں کی سی باتیں کرے کبھی پاگلوں کی سی مجنون کی	۵	۹۲

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	طرح لوگوں کو مارتا گالیاں دیتا ہو تو اس حالت کے پیدا ہونے سے وضو نہیں جاتا۔		
۷۰	مسئلہ: غش و بیہوشی سے وضو جاتا ہے مگر یہ خود ناقض وضو نہیں بلکہ اسی ظن خروج ریح وغیرہ کے سبب۔	-	-
۷۱	مسئلہ: جسے ریح کا عارضہ حد معذوری تک ہو اس کا وضو سونے سے نہ جانا چاہئے۔	۸	۹۳
۷۲	مسئلہ: سوتے میں دونوں سرین زمین پر جمے ہوں تو وضو نہیں جاتا مگر اعادہ وضو مستحب جب بھی ہے۔	۲	۱۹۲
۷۳	مسئلہ: بغل کھجانے سے وضو مستحب ہے جبکہ اس میں بدبو ہو۔	۳	۱۹۲
۷۴	مسئلہ: جذامی یا برص والے سے مس کرنے میں بھی جدید وضو مستحب ہے۔	۴	۱۹۲
۷۵	مسئلہ: صلیب جسے نصاریٰ پوجتے ہیں اور ہنود کے بُت وغیرہ کے چھونے سے بھی نیا وضو چاہئے۔	۵	۱۹۲
۷۶	مسئلہ: جن باتوں سے اعادہ وضو مستحب ہے جب وہ وضو کرنے میں واقع ہوں تو مستحب ہے کہ پھر سرے سے وضو شروع کرے۔	۱	۱۹۳

Fatawa Razawiya | Volume 4

Serial No.	Titles	Note No.	Page No.
77	Ruling: There is a difference of opinion among scholars whether the ritual impurity (Hadath) which breaks Wudu, also spreads throughout the entire body like the ritual impurity of Janabat (major ritual impurity). The Shari'ah, for the sake of ease, has prescribed its removal through Wudu only. This impurity exists only in the organs of Wudu; this second view is the most correct. (For the author's detailed research and verification on this issue, refer to Fatawa Razawiya).	5	252
78	Ruling: The correct view is that minor impurity (Hadath-e-Asghar) occurs only in four organs, and not that it occurs in the whole body and for ease, Shari'ah has declared the purification of only four organs as purification of the entire body. Just like Tayammum for Janabat, where the impurity is in the whole body but by wiping only the face and hands, the entire body becomes pure; this is not the case with Wudu. Therefore, if a person makes it mandatory to perform Ghusl instead of Wudu, it will not be considered a virtuous act or worthy of reward; rather, it will be an innovation (Bid'at) and a cause for accountability and reprimand.	2	257
79	Ruling: Laughing out loud (Qahqaha) during the funeral prayer (Namaz-e-Janazah) does not break Wudu.	4	257
80	Ruling: If blood comes out from between the teeth and it is red, Wudu is broken; if it is yellow due to mixture with saliva, it is not.	1	522
81	Ruling: Impurity flowing out by its own force is a breaker of Wudu, even if more pure moisture is mixed with it.	1	523
82	Ruling: Vomiting liquid blood absolutely breaks Wudu, whether it comes from the head or from the interior (stomach), whether it is a small or large amount.	2	523
83	Ruling: If clotted blood is vomited from the interior and it is a mouthful, it breaks Wudu, otherwise not.	3	523
84	Ruling: Vomiting phlegm does not break Wudu, no matter how much it is.	4	523

Serial No.	Titles	Note No.	Page No.
85	Ruling: The difference between a small and large mixture with saliva, i.e., the difference between yellow and red color, applies to blood that comes from some part of the mouth itself. Blood that comes from the chest or stomach in vomit is, according to the research of Imam Zayla'i, absolutely a breaker of Wudu, even if it turns yellow upon entering the mouth due to mixture with saliva.	5	523
86	Ruling: Exercising does not break Wudu unless something that breaks Wudu occurs.	1	583

फतावा रज़विया | जिल्द ४

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
77	मसअला: विद्वानों के बीच इस पर मतभेद है कि वूज़ू तोड़ने वाली अशुद्धि (हदाथ) भी जनाबत (बड़ी नापाकी) की तरह पूरे शरीर में फैलती है। शरीयत ने आसानी के लिए सिर्फ वूज़ू से इसे दूर करने का प्रावधान किया है। यह नापाकी केवल वूज़ू के अंगों में होती है; यही दूसरा मत अधिक सही है। (इस विषय पर लेखक का विस्तृत शोध और स्पष्टीकरण फतावा रज़विया में देखें)।	५	२५२
78	मसअला: सही मत यही है कि छोटी नापाकी (हदाथ-ए-असगर) केवल चार अंगों में होती है, न कि पूरे शरीर में और आसानी के लिए शरीयत ने केवल चार अंगों की पवित्रता को पूरे शरीर की पवित्रता घोषित कर दिया है। जैसे जनाबत के लिए तयम्मुम में नापाकी पूरे शरीर में होती है लेकिन केवल चेहरे और हाथों के मसह से पूरा शरीर पवित्र हो जाता है; वूज़ू में ऐसा नहीं है। इसलिए, यदि कोई व्यक्ति वूज़ू की जगह गुस्ल (स्नान) को अनिवार्य बना लेता है, तो यह पुण्य का कार्य या सवाब का कारण नहीं होगा, बल्कि यह एक बिदअत (नवाचार) और जवाबदेही और फटकार का कारण होगा।	२	२५७
79	मसअला: जनाज़ा की नमाज़ में ठहाका लगाकर हंसने से वूज़ू नहीं टूटता।	४	२५७
80	मसअला: यदि दांतों से खून निकले और वह लाल हो, तो वूज़ू टूट जाता है; और यदि लार मिलने के कारण पीला हो, तो नहीं।	१	५२२
81	मसअला: अपनी शक्ति से बहकर निकलने वाली अशुद्धि वूज़ू तोड़ने वाली है, भले ही इसके साथ और अधिक शुद्ध नमी मिली हो।	१	५२३
82	मसअला: पतले खून की उल्टी से निश्चित रूप से वूज़ू टूट जाएगा, चाहे वह सिर से आए या पेट से, कम हो या ज़्यादा।	२	५२३
83	मसअला: उल्टी में जमा हुआ खून अगर पेट से आए और मुंह भर कर हो, तो वूज़ू टूट जाता है, अन्यथा नहीं।	३	५२३

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
84	मसअला: बलगम की उल्टी से वूज़ू नहीं टूटता, चाहे वह कितनी ही ज़्यादा क्यों न हो।	४	५२३
85	मसअला: लार के कम या ज़्यादा मिश्रण, यानी रंग की पीली और लाल रंग की भिन्नता उस खून में है जो स्वयं मुंह के किसी हिस्से से आए। वह खून जो सीने या पेट से उल्टी के माध्यम से आए, इमाम ज़ैलई के शोध के अनुसार पूर्णतः वूज़ू तोड़ने वाला है, भले ही वह मुंह में आकर लार के मिश्रण से पीला हो जाए।	५	५२३
86	मसअला: व्यायाम करने से वूज़ू नहीं टूटता जब तक कि वूज़ू तोड़ने वाली कोई चीज़ न हो जाए।	१	५८३

पृष्ठ ६३० का ७६१

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۷۷	مسئلہ: علماء کا اختلاف ہے کہ نواقضِ وضو میں بھی نجاستِ حکمیہ جنابت کی طرح تمام بدن میں سرایت کرتی ہے۔ شرع نے تخفیف کیلئے صرف وضو سے اس کا ازالہ مقرر فرمایا یہ نجاست فقط اعضاءِ وضو ہی میں ہوتی ہے راجح تر یہی قول دوم ہے۔ (مصنف کی اس مسئلہ میں تحقیق و تنقیح فتاویٰ رضویہ میں ملاحظہ فرمائیں)	۵	۲۵۲
۷۸	مسئلہ: راجح یہی ہے کہ حدثِ اصغر صرف چار اعضاء میں ہوتا ہے نہ یہ کہ ہو تو سارے بدن میں اور تخفیف کے لئے شرع نے صرف چار عضووں کی طہارت کو کل بدن کی تطہیر فرما دیا جیسے جنابت کا تیمم کہ حدث سارے بدن میں ہے اور صرف منہ اور ہاتھوں کے مسح سے سب بدن پاک ہو سکتا ہے وضو میں ایسا نہیں ولہذا اگر کوئی شخص وضو کی جگہ غسل کا التزام کرے عزیمت و باعث ثواب نہ ہوگا بلکہ بدعت و مورث مواخذہ و عتاب۔	۲	۲۵۷
۷۹	مسئلہ: نماز جنازہ میں اگر چہ قہقہہ سے ہنسے وضو نہیں جاتا۔	۴	۲۵۷
۸۰	مسئلہ: دانتوں میں سے خون نکلا اگر سُرخ ہے وضو جاتا رہا اور آب دہن کے خلط سے زرد ہے تو نہیں۔	۱	۵۲۲
۸۱	مسئلہ: نجاست کا اپنی قوت سے بہہ کر نکلنا ناقضِ وضو ہے اگر چہ اس کے ساتھ اور پاک رطوبت اس سے زائد مخلوط ہو۔	۱	۵۲۳

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۸۲	مسئلہ: رقیق خون کی قے کی مطلقاً وضو جاتا رہے گا سر سے آیا ہو خواہ جوف سے، قلیل ہو یا کثیر۔	۲	۵۲۳
۸۳	مسئلہ: قے میں بستہ خون جوف سے آیا اگر منہ بھر کر ہو ناقضِ وضو ہے ورنہ نہیں۔	۳	۵۲۳
۸۴	مسئلہ: بلغم کی قے سے وضو نہیں جاتا خواہ کتنا ہی کثیر ہو۔	۴	۵۲۳
۸۵	مسئلہ: آمیزش آب دہن قلیل و کثیر یعنی رنگ کی زردی سرخی کا فرق اس خون میں ہے کہ خود منہ کے کسی حصے سے آئے وہ خون کہ سینے یا معدہ سے قے میں آئے امام زیلعی کی تحقیق میں مطلقاً ناقض وضو ہے اگر چہ منہ میں آکر آمیزش آب دہن سے زرد ہو جائے۔	۵	۵۲۳
۸۶	مسئلہ: ورزش کرنے سے وضو نہیں جاتا جب تک کوئی ناقضِ وضو نہ صادر ہو۔	۱	۵۸۳

Fatawa Razawiyya Volume 4

Sr. No. | Topics | Benefit No. | Page 87 | Ruling: The author's research that the death of a Muslim is a state of ritual impurity (hadath), not physical impurity (najasah). Praise be to Allah. | 15 | 611 88 | Ruling: Minor ritual impurity (hadath asghar) is that which only necessitates wudu (ablution), not bathing (ghusl). | 5 | 815 89 | Ruling: Research into the fact that everything necessitating ghusl also necessitates wudu. | 3 | 816

Chapter on Ritual Bathing (Bab al-Ghusl)

1 | Ruling: It is not mandatory for a woman to undo her braided hair during ghusl; it is sufficient for the roots of the hair to get wet. However, if the braid is so tightly woven that water cannot reach the roots, it must be undone. | 1 | 15 2 | Ruling: If drying the limbs is proven to be harmful, then drying them may become mandatory. | 4 | 26 3 | Ruling: It is evident that the water used for ghusl will also be placed in the scale of good deeds. | 3 | 29 4 | Ruling: It is recommended for a woman during ghusl to wash inside the vaginal area by inserting a finger, but it is not mandatory; ghusl is valid without it. | 1 | 55 5 | Ruling: If a hard substance is stuck in the roots or gaps of the teeth, it must be removed and the mouth rinsed, otherwise the ghusl will not be valid. | 1 | 95 6 | Ruling: Traces of lime or missi (tooth powder/dye) whose removal would cause harm are excused. | 2 | 95 7 | Ruling: Gargling is sunnah in wudu and ghusl, but it is disliked (makruh) for someone who is fasting. | 3 | 95 8 | Ruling: In ghusl, it is obligatory (fard) to have water flow over every part of the mouth up to the throat and to draw water up into both nostrils until the start of the nasal bone. In wudu, this is a emphasized sunnah (sunnat mu'akkadah). | 4 | 95 9 | Ruling: If there is any dried mucus/dirt in the nose, its removal is obligatory in ghusl and sunnah in wudu. | 1 | 96 10 | Ruling: In wudu and ghusl, it is sunnah to draw water up to the bridge of the nose, but the fasting person should avoid this; however, drawing water up to the soft part of the nose is necessary even for them. | 2 | 96 11 | Ruling: In areas requiring caution, a strong probability (zann-e-ghalib) of water reaching is sufficient, meaning the heart should be at peace that water has reached. However, this satisfaction is not sufficient for the careless who knowingly act without caution, nor is the satisfaction of the obsessive person who finds it hard to believe even after seeing with their own eyes. Rather, the satisfaction of a pious and cautious person is required. | 1 | 99

फतवा रज़विया जिल्द चौथी

क्रम संख्या | शीर्षक / विषय | फायदा नंबर | पृष्ठ 87 | मसला: लेखक का शोध कि मुसलमान की मृत्यु 'हदस' (आध्यात्मिक अशुद्धि) है, 'नजासत' (भौतिक अशुद्धि) नहीं, अल्लाह का शुक्र है। | 15 | 611 88 | मसला: 'हदस-ए-असगर' (लघु अशुद्धि) वही है जिससे केवल वुज़ू अनिवार्य हो, स्नान नहीं। | 5 | 815 89 | मसला: इसका शोध कि हर वह चीज़ जो ग़ुस्ल (स्नान) अनिवार्य करती है, वुज़ू भी अनिवार्य करती है। | 3 | 816

स्नान का अध्याय (बाब अल-ग़ुस्ल)

1 | मसला: ग़ुस्ल में औरत के लिए गूँथी हुई चोटी खोलना ज़रूरी नहीं है, बालों की जड़ों का भीग जाना काफी है। हाँ, अगर चोटी इतनी कसकर गूँथी हो कि जड़ों तक पानी न पहुँचे, तो उसे खोलना ज़रूरी है। | 1 | 15 2 | मसला: यदि अंगों को पोंछने से नुकसान साबित हो, तो पोंछना अनिवार्य तक हो सकता है। | 4 | 26 3 | मसला: यह स्पष्ट है कि ग़ुस्ल का पानी भी नेक कार्यों के पलड़े में रखा जाएगा। | 3 | 29 4 | मसला: ग़ुस्ल में औरत के लिए मुस्तहब (पसंदीदा) है कि योनि के अंदर उंगली डालकर धो ले, लेकिन यह अनिवार्य नहीं है; इसके बिना भी ग़ुस्ल हो जाएगा। | 1 | 55 5 | मसला: यदि दाँतों की जड़ों या छिद्रों में कोई सख्त चीज़ जमी हो, तो उसे छुड़ाकर कुल्ली करना अनिवार्य है, अन्यथा ग़ुस्ल नहीं होगा। | 1 | 95 6 | मसला: चूना या मिस्सी के निशान जिनके छुड़ाने में नुकसान हो, वे माफ हैं। | 2 | 95 7 | मसला: वुज़ू और ग़ुस्ल में गरारा करना सुन्नत है, लेकिन रोज़ेदार के लिए मकरूह (नापसंद) है। | 3 | 95 8 | मसला: मुँह के हर हिस्से पर गले तक पानी बहना और दोनों नथुनों में नाक की हड्डी शुरू होने तक पानी चढ़ाना ग़ुस्ल में फर्ज़ (अनिवार्य) है और वुज़ू में सुन्नत-ए-मुअक्कदा है। | 4 | 95 9 | मसला: यदि नाक में कोई गन्दगी जमी हो, तो उसे पहले छुड़ाना ग़ुस्ल में फर्ज़ और वुज़ू में सुन्नत है। | 1 | 96 10 | मसला: वुज़ू और ग़ुस्ल में सुन्नत है कि नाक की जड़ तक पानी चढ़ाए, लेकिन रोज़ेदार इससे बचे, हाँ नाक के नरम हिस्से तक पानी पहुँचाना उसके लिए भी ज़रूरी है। | 2 | 96 11 | मसला: सावधानी वाले अंगों में पानी पहुँचने का प्रबल अनुमान (ज़न्न-ए-ग़ालिब) काफी है, यानी दिल को इत्मीनान (संतुष्टि) हो कि पानी पहुँच गया। लेकिन यह इत्मीनान उन लापरवाहों के लिए काफी नहीं है जो जानबूझकर सावधानी नहीं बरत रहे हैं, और न ही उस वहमी व्यक्ति का इत्मीनान जिसे आँखों से देखकर भी यकीन नहीं आता। बल्कि एक धर्मपरायण और सावधान व्यक्ति की संतुष्टि चाहिए। | 1 | 99

فتاوی رضویہ جلد چہارم

نمبر شمار | عنوانات | فائدہ نمبر | صفحہ ۸۷ | مسئلہ : مصنف کی تحقیق کہ مسلمان کی موت حدث ہے نجاست نہیں واللہ الحمد۔ | ۱۵ | ۶۱۱ ۸۸ | مسئلہ : حدث اصغر وہی ہے جس سے فقط وضو واجب ہو نہا نہا نہ ہو۔ | ۵ | ۸۱۵ ۸۹ | مسئلہ : اس کی تحقیق کہ ہر موجب غسل موجب وضو ہے۔ | ۳ | ۸۱۶

باب الغسل

۱ | مسئلہ : عورت کو غسل میں گندھی چوٹی کھولنی ضرور نہیں بالوں کی جڑیں بھیگ جانا کافی ہے، ہاں چوٹی اتنی سخت گندھی ہو کہ جڑوں تک پانی نہ پہنچے گا تو کھولنا ضرور ہے۔ | ۱ | ۲ ۱۵ | مسئلہ : اگر اعضاء پونچھنے سے ضرر ثابت ہو تو پونچھنا واجب تک ہو سکتا ہے۔ | ۴ | ۳ ۲۶ | مسئلہ : غسل کا پانی بھی نیکیوں کے پلے میں رکھا جانا ظاہر ہے۔ | ۳ | ۴ ۲۹ | مسئلہ : مسئلہ : غسل میں عورت کو مستحب ہے کہ فرج داخل کے اندر انگلی ڈال کر دھولے ہاں واجب نہیں بغیر اس کے غسل اتر جائے گا۔ | ۱ | ۵ ۵۵ | مسئلہ : دانتوں کی جڑ یا کھڑکی میں سخت چیز جمی ہو تو چھڑا کر کلی کرنا لازم ورنہ غسل نہ اترے گا۔ | ۱ | ۶ ۹۵ | مسئلہ : چونا یا مسی کی ریخیں جن کے چھڑانے میں ضرر ہو معاف ہیں۔ | ۲ | ۷ ۹۵ | مسئلہ : وضو و غسل میں غرغرہ سنت ہے مگر روزہ دار کو مکروہ۔ | ۳ | ۸ ۹۵ | مسئلہ : منہ کے ہر ذرہ پر حلق تک پانی بہنا اور دونوں نتھنوں میں ناک کی ہڈی شروع ہونے تک پانی چڑھنا غسل میں فرض اور وضو میں سنت مؤکدہ ہے۔ | ۴ | ۹ ۹۵ | مسئلہ : ناک میں کوئی کثافت جمی ہو تو پہلے اس کا چھڑالینا غسل میں فرض اور وضو میں سنت ہے۔ | ۱ | ۱۰ ۹۶ | مسئلہ : وضو و غسل میں سنت ہے کہ ناک کی جڑ تک پانی چڑھائے مگر روزہ دار اس سے بچے ہاں تمام نرم بانسے تک چڑھانا

اسے بھی ضروری ہے۔ | ۲ | ۹۶ ۱۱ | مسئلہ : مواضع احتیاط میں پانی پہنچنے کا ظنِ غالب کافی ہے یعنی دل کو اطمینان ہو کہ ضرر پہنچ گیا مگر یہ اطمینان نہ بے پرواہوں کا کافی ہے جو دیدہ ودانستہ بے احتیاطی کر رہے ہیں نہ وہمی وسوسہ زدہ کا اطمینان ضرور جسے آنکھوں دیکھ کر بھی یقین آنا مشکل بلکہ متدین محتاط کا اطمینان چاہئے۔ | ۱ | ۹۹

Fatawa Razawiyya - Volume 4

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page No.
12	Issue: It is permissible to bind a loose tooth with silver wire or fix it with filling material; in this case, during Ghusl (ritual bath), it should be pardoned if water does not flow under the wire or filling.	3	99
13	Issue: If impure kohl (surma) is applied to the eyes, there is no command to wash the inside of the eyes.	1	100
14	Issue: When water harms some parts of the body but not others, the majority (condition) is considered.	1	101
15	Issue: If someone faints due to illness etc., or God forbid, becomes unconscious from intoxication, and upon regaining consciousness finds 'mandi' (pre-ejaculatory fluid) on their clothes or body, Ghusl will not be mandatory except for Wudu. This ruling is not like waking up from sleep and seeing mandi, where Ghusl becomes mandatory.	1	109
16	Issue: If ejaculation occurred and one took a bath, but then semen (mani) came out again, taking a bath again will be mandatory even if it came out without lust this time; unless one had urinated, slept, or walked a lot before the second discharge, in which case repeating the Ghusl is not necessary.	4	118
17	Issue: If a wet dream (ihtilam) occurred during prayer but the semen did not come out until the prayer was completed, then Ghusl will become mandatory after it descends, but the prayer is valid because the person was not 'junub' (ritually impure) until that moment.	5	118
18	Issue: If a wet dream occurred at night, and upon waking no wetness was found, one performed Wudu and prayed; later, if semen came out, Ghusl becomes mandatory then, and the prayer is valid.	6	118
19	Issue: If one remembers a wet dream clearly upon waking but finds no wetness, then later 'mandi' comes out, Ghusl is not required.	1	119

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page No.
20	Issue: For Ghusl to be mandatory, lust (shahwat) is required at the time the semen leaves its original place (the man's back, the woman's chest). If it later comes out without lust, Ghusl is still mandatory. For example, if semen descended with lust due to a dream, looking, thinking, or any way other than penetration, and the person held the organ tightly so it wouldn't come out until the lust subsided; or some people stop the descended semen by holding their breath; or in some, due to weak lust, the semen stops because of a change in thought, turning over, sitting up, or splashing water on the back—in short, if semen that descended at the time of lust was stopped in any way, and then it came out after the lust was gone, then according to Imam Azam and Imam Muhammad, Ghusl will become mandatory because lust was present at the time of descent, even if not at the time of exit. According to Imam Abu Yusuf, it will not be mandatory as he considers lust at the time of exit also a condition. Yes, until it actually comes out, Ghusl is unanimously not mandatory as exit is an essential condition.	6	119

फ़तावा रज़विया - जिल्द चौथी

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा नं.	पृष्ठ संख्या
12	मसला: हिलते हुए दांत को चांदी के तार से बांधना या मसाले से जमाना जायज़ है और उस समय गुस्ल (धार्मिक स्नान) में इस तार या मसाले के नीचे पानी न बहना माफ़ होना चाहिए।	3	99
13	मसला: नापाक सुरमा आँखों में लगा लिया तो आँखें अंदर से धोने का हुक्म नहीं।	1	100
14	मसला: जब बदन के कुछ हिस्सों पर पानी नुकसान पहुँचाता हो और कुछ पर नहीं, तो अक्सर (बहुमत) का एतबार है।	1	101
15	मसला: बीमारी आदि से गश आ गया या अल्लाह न करे नशे से बेहोश हुआ, उसके बाद जब होश आया तो अपने कपड़े या बदन पर 'मंदी' (एक प्रकार का तरल) पाई, तो उस पर वज़ू के सिवा गुस्ल न होगा। इसका हुक्म सोते से जाग कर मंदी देखने के समान नहीं है जहाँ गुस्ल वाजिब होता है।	1	109
16	मसला: इंजाल (वीर्यपात) हुआ और नहा लिया, उसके बाद फिर मनी (वीर्य) निकली तो दोबारा नहाना वाजिब होगा, चाहे इस बार बिना शहवत (उत्तेजना) के निकली हो; मगर यह कि पेशाब कर चुका हो या सो लिया हो या ज़्यादा चल लिया हो, उसके बाद मनी बिना शहवत के निकली तो गुस्ल दोहराना ज़रूरी नहीं।	4	118
17	मसला: नमाज़ में एहतलाम (स्वप्नदोष) हुआ और मनी बाहर नहीं आई कि नमाज़ पूरी कर ली, उसके बाद उतरी तो गुस्ल वाजिब होगा मगर नमाज़ हो गई क्योंकि उस समय तक जुनूब (अशुद्ध) नहीं हुआ था।	5	118
18	मसला: रात को एहतलाम हुआ, जागा तो तरी नहीं पाई, वज़ू करके नमाज़ पढ़ ली, उसके बाद मनी बाहर आई तो गुस्ल अब वाजिब हुआ और नमाज़ सही हो गई।	6	118
19		1	119

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा नं.	पृष्ठ संख्या
	मसला: जागने पर एहतलाम खूब याद है मगर तरी नहीं है, फिर मंदी निकली तो गुस्ल न होगा।		
20	मसला: मनी को अपने स्थान यानी पुरुष की पीठ और स्त्री के सीने से अलग होते समय शहवत चाहिए, फिर अगर बिना शहवत के निकले तो गुस्ल वाजिब होगा। उदाहरण के लिए, एहतलाम हो या देखने या सोचने या संभोग के सिवा किसी और तरीके से मनी शहवत के साथ उतरी, उसने अंग को मज़बूती से थाम लिया कि निकलने न दी यहाँ तक कि शहवत खत्म हो गई; या कुछ लोग सांस ऊपर चढ़ा कर उतरी हुई मनी को रोक लेते हैं; या कुछ में कमज़ोर शहवत के कारण विचार बदलने, करवट लेने, उठ बैठने या पीठ पर पानी छिड़कने से रुक जाती है—संक्षेप में, किसी तरह शहवत के समय उतरी हुई मनी को रोक लिया या खुद रुक गई और फिर जब शहवत खत्म हो गई तब निकली, तो इमाम आज़म और इमाम मुहम्मद के नज़दीक गुस्ल वाजिब हो जाएगा क्योंकि उतरते समय शहवत थी चाहे निकलते समय न हो। और इमाम अबू यूसुफ के नज़दीक नहीं होगा क्योंकि उनके नज़दीक निकलते समय भी शहवत शर्त है। हाँ, जब तक निकलेगी नहीं, गुस्ल सर्वसम्मति से वाजिब न होगा क्योंकि निकलना अनिवार्य शर्त है।	6	119

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ : ہلتا ہوا دانت چاندی کے تار سے باندھنا یا مسالے سے جمانا جائز ہے		
۱۲	اور اس وقت غسل میں اس اتار یا مسالے کے نیچے پانی نہ بہنا معاف ہونا چاہئے۔	۳	۹۹
۱۳	مسئلہ : ناپاک سرمہ آنکھوں میں لگا لیا آنکھیں اندر سے دھونے کا حکم نہیں۔	۱	۱۰۰
۱۴	مسئلہ : جب بدن کے بعض حصے پر پانی ضرر دیتا ہو بعض پر نہیں تو اکثر کا اعتبار ہے۔	۱	۱۰۱
۱۵	مسئلہ : بیماری وغیرہ سے غش آگیا یا معاذ اللہ نشہ سے بیہوش ہوا اس کے بعد جو ہوش آیا تو اپنے کپڑے یا بدن پر مندی پائی تو اس پر سواء وضو کے غسل نہ ہوگا اس کا حکم سوتے سے جاگ کر مندی دیکھنے کے مثل نہیں کہ وہاں غسل واجب ہوتا ہے۔	۱	۱۰۹
۱۶	مسئلہ : انزال ہوا اور نہا لیا اس کے بعد پھر منی نکلی دوبارہ نہانا واجب ہوگا اگرچہ اس بارے بے شہوت نکلی ہو مگر یہ کہ پیشاب کر چکا یا سو لیا یا زیادہ چل لیا اس کے بعد منی بے شہوت نکلی تو غسل کا اعادہ نہیں۔	۴	۱۱۸
۱۷	مسئلہ : نماز میں احتلام ہوا اور منی باہر نہ آئی کہ نماز تمام کر لی اس کے بعد اتری تو غسل واجب ہوگا مگر نماز ہوگئی کہ اس وقت تک جنب نہ ہوا تھا۔	۵	۱۱۸

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱۸	مسئلہ : رات کو احتلام ہوا جاگا تو تری نہ پائی وضو کر کے نماز پڑھ لی اس کے بعد منی باہر آئی تو غسل اب واجب ہوا اور نماز صحیح ہوگئی۔	۶	۱۱۸
۱۹	مسئلہ : جاگا احتلام خوب یاد ہے مگر تری نہیں پھر مندی نکلی غسل نہ ہوگا۔	۱	۱۱۹
۲۰	مسئلہ : منی کو اپنے محل یعنی مرد کی پشت ، عورت کے سینہ سے جدا ہوتے وقت شہوت چاہئے پھر اگر بلا شہوت نکلے غسل واجب ہوگا مثلاً احتلام ہو یا نظر یا فکر یا کسی اور طریق سوائے ادخال کے منی بشہوت اتری اس نے عضو کو مضبوط تھام لیا کہ نہ نکلنے دی یہاں تک کہ شہوت جاتی رہی یا بعض لوگ سانس اوپر چڑھا کر اتری ہوئی منی کو روک لیتے ہیں یا بعض میں ضعف شہوت کے سبب منی خیال بدلنے یا کروٹ لینے یا اٹھ بیٹھنے یا پشت پر پانی کا چھینٹا دینے سے رک جاتی ہے غرض کسی طرح شہوت کے وقت اتری ہوئی منی کو روک لیا یا خود رک گئی اور پھر جب شہوت جاتی رہی نکلی تو امام اعظم و امام محمد کے نزدیک غسل واجب ہو جائیگا کہ اترتے وقت شہوت تھی اگرچہ نکلتے وقت نہ تھی اور امام ابو یوسف کے نزدیک نہ ہوگا کہ ان کے نزدیک نکلتے وقت بھی شہوت شرط ہے ہاں جب تک نکلے گی نہیں غسل بالاتفاق واجب نہ ہوگا کہ نکلنا ضرور شرط ہے۔	۶	۱۱۹

Fatawa Ridawiyya, Volume 4

Serial No.	Subjects	Benefit No.	Page
21	Ruling: If semen comes out without desire after sleeping, walking, or urinating following intercourse or wet dream, Ghusl (ritual bath) is not mandatory. Some have specified forty steps for walking, but the correct view is that walking should be enough to gain certainty that any remaining semen from the first instance has come out. If it comes out without desire after that, Ghusl is not required.	1	121
22	Ruling: After urination, Istibra (ensuring all urine drops are out) is obligatory for men. This means performing actions that provide certainty that all drops have come out and no more will follow, such as clearing the throat, walking, or pressing the organ by placing one thigh over the other, etc. Regarding the distance to walk, some have set it at forty steps, others say up to forty years of age this much is needed, and after that, one step more for every additional year. The correct view is to walk until certainty is reached, whether it is less or more than forty steps.	1	122
23	Ruling: The previously mentioned ruling that Ghusl is not required if semen comes out after urination is conditioned on the absence of sexual desire at that time; otherwise, it will be considered a new ejaculation.	3	122
24	Ruling: If the husband's semen comes out of the wife's vagina, Wudu (ablution) becomes obligatory for her, but Ghusl is not required because of it.	5	122
25	Ruling: If semen comes out without desire due to an injury, a fall, or lifting a heavy weight, Ghusl is not mandatory; only Wudu is necessary.	2	125
26	Ruling: If a woman remembers having a wet dream but finds no wetness upon waking, then like a man, Ghusl is not mandatory for her. This is the established doctrine and the basis for fatwa. However, some noble scholars state that if she	6	125

Serial No.	Subjects	Benefit No.	Page
27	remembers the pleasure of ejaculation in the dream, Ghusl is obligatory. Some say if she was lying on her back at that time, Ghusl is obligatory. Therefore, in these cases, it is better to take a bath. Ruling: If intercourse was performed on a woman's thigh and semen entered her vagina, or if intercourse was performed with a virgin and her hymen was not ruptured, then in both cases, Ghusl is not obligatory for the woman. Neither was her ejaculation established, nor did the glans enter the internal vagina (otherwise the hymen would have been broken). However, if she becomes pregnant from these acts of intercourse, she will then be ordered that Ghusl was obligatory from that same intercourse, and she must repeat all prayers performed before taking that Ghusl, because pregnancy proves she also had an ejaculation, otherwise pregnancy would not have occurred.	8	130

फतावा रज़विया, जिल्द चौथी

क्रमांक	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
21	मसला: जिमा (संभोग) या एहतलाम (स्वप्नदोष) के बाद सोने, चलने-फिरने या पेशाब करने के बाद जो मनी (वीर्य) बिना कामेच्छा के निकले, उससे गुस्ल अनिवार्य नहीं होगा। चलने की मात्रा कुछ लोगों ने चालीस कदम बताई है, लेकिन सही बात यह है कि इतना चलना चाहिए जिससे यह संतोष हो जाए कि पहली मनी का बचा हुआ हिस्सा निकल चुका है। इसके बाद अगर बिना कामेच्छा के मनी निकले तो गुस्ल वाजिब नहीं।	1	121
22	मसला: पेशाब के बाद पुरुष पर इस्तिबरा (पूरी तरह पेशाब के कतरे सुखाना) वाजिब है, यानी वे कार्य करना जिससे यह तसल्ली हो जाए कि कतरे निकल चुके हैं और अब नहीं आएंगे, जैसे खंखारना, टहलना या जांघ पर जांघ रखकर अंग को दबाना आदि। टहलने की मात्रा कुछ लोगों ने चालीस कदम रखी है, कुछ ने कहा कि चालीस वर्ष की आयु तक इतना ही और उसके बाद प्रति वर्ष एक कदम अधिक। सही बात यह है कि जब तक तसल्ली न हो जाए, चाहे वह चालीस कदम से कम हो या अधिक।	1	122
23	मसला: वह मसला जो गुज़रा कि पेशाब के बाद मनी निकले तो गुस्ल नहीं, उसमें यह शर्त है कि उस समय कामेच्छा न हो, वरना यह नया इज़ाल (वीर्यपात) माना जाएगा।	3	122
24	मसला: पति की मनी अगर पत्नी की शर्मगाह से निकले तो उस पर वुज़ू वाजिब होगा, इसके कारण गुस्ल वाजिब नहीं होगा।	5	122
25	मसला: चोट लगने, गिरने या भारी बोझ उठाने से अगर बिना कामेच्छा के मनी निकल जाए तो गुस्ल वाजिब नहीं होगा, केवल वुज़ू करना अनिवार्य होगा।	2	125
26	मसला: यदि महिला को एहतलाम (स्वप्नदोष) याद हो लेकिन जागने पर तरी (गीलापन) न पाए, तो पुरुष की तरह उस पर भी गुस्ल वाजिब नहीं है, यही	6	125

क्रमांक	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
	मज़हब है और इसी पर फतवा है। लेकिन कुछ बुज़ुर्ग विद्वान कहते हैं कि अगर सपने में इज़ाल (वीर्यपात) की लज्जा याद हो तो गुस्ल वाजिब है। कुछ कहते हैं कि अगर उस समय चित लेटी हो तो गुस्ल वाजिब है। अतः इन स्थितियों में बेहतर यही है कि वह नहा ले।		
27	मसला: यदि महिला की जांघ पर जिमा किया गया और मनी उसकी शर्मगाह में चली गई, या कुंवारी के साथ जिमा किया गया और उसका कौमार्य भंग नहीं हुआ, तो इन दोनों स्थितियों में महिला पर गुस्ल वाजिब नहीं होगा। न तो उसका इज़ाल साबित हुआ और न ही शर्मगाह के अंदरूनी हिस्से में हशफ़ा (लिंग का अगला भाग) गायब हुआ, अन्यथा कौमार्य समाप्त हो जाता। हाँ, अगर इन जिमाओं से महिला गर्भवती हो गई, तो अब उसे उसी जिमा से गुस्ल वाजिब होने का हुक्म दिया जाएगा और गुस्ल से पहले आज तक उसने जितनी नमाज़ें पढ़ी हैं, सब दोबारा पढ़े, क्योंकि गर्भ ठहरना इस बात का सबूत है कि महिला को स्वयं भी इज़ाल हुआ था, अन्यथा गर्भ नहीं ठहरता।	8	130

نمبر شمار	عنوانات	صفحہ نمبر	فائدہ
۲۱	مسئلہ: جماع یا احتلام پر سونے چلنے پھرنے یا پیشاب کرنے کے بعد جو اور منی بلا شہوت نکلے اس سے غسل نہ ہوگا۔ اور چلنے کی بعض نے چالیس قدم تعداد بتائی اور صحیح یہ ہونا چاہئے کہ جب اتنا چل لیا جس سے اطمینان ہو گیا کہ پہلی منی کا بقیہ ہوتا تو نکل چکتا اس کے بعد بلا شہوت نکلی تو غسل نہیں۔	۱۲۱	۱
۲۲	مسئلہ: پیشاب کے بعد مرد پر استبراء واجب ہے یعنی وہ افعال کرنا جس سے اطمینان ہو جائے کہ قطرات نکل چکے اب نہ آئیں گے مثلاً کھنکارنا یا ٹہلنا یاران پر ران رکھ کر عضو کو دبانا وغیرہ ذلک۔ اس میں ٹہلنے کی مقدار بعض نے چالیس قدم رکھی بعض نے یہ کہ چالیس برس کی عمر تک اسی قدر اور زیادہ پر فی برس ایک قدم اور صحیح یہ کہ جہاں تک میں اطمینان حاصل ہو خواہ چالیس سے کم یا زائد۔	۱۲۲	۱
۲۳	مسئلہ: وہ جو مسئلہ گزرا کہ پیشاب کے بعد منی اترے تو غسل نہیں اس میں یہ شرط ہے کہ اس وقت شہوت نہ ہو ورنہ یہ جدید انزال ہو گا۔	۱۲۲	۳
۲۴	مسئلہ: زوج کی منی اگر عورت کی فرج سے نکلے تو اس پر وضو واجب ہوگا اس کے سبب غسل نہ ہو گا۔	۱۲۲	۵

نمبر شمار	عنوانات	صفحہ نمبر	فائدہ
۲۵	مسئلہ: چوٹ لگنے یا گرنے یا بوجھ اٹھانے سے منی بے شہوت نکل جائے تو غسل نہ ہوگا صرف وضو لازم ہو گا۔	۱۲۵	۲
۲۶	مسئلہ: عورت کو اگر احتلام یاد ہو اور جاگ کر تری نہ پائے تو مرد کی طرح اس پر بھی غسل نہیں یہی مذہب ہے اور اسی پر فتویٰ مگر بعض مشائخ کرام فرماتے ہیں اگر خواب میں انزال ہونے کی لذت یاد ہو تو غسل واجب ہے بعض فرماتے ہیں اس وقت چت لیٹی ہو تو غسل واجب۔ لہذا ان صورتوں میں بہتر یہ ہے کہ نہالے۔	۱۲۵	۶
۲۷	مسئلہ: عورت کی ران پر جماع کیا اور منی اس کی فرج میں چلی گئی یا کنواری کی فرج میں جماع کیا اور اس کی بکارت زائل نہ ہوئی تو ان دونوں صورتوں میں عورت پر غسل نہ ہوگا، نہ اس کا انزال ثابت ہوا نہ اس کی فرج داخل میں حشفہ غائب ہوا ورنہ بکارت جاتی رہتی ، ہاں ان جماعوں سے اگر عورت کو حمل رہ گیا تو اب اس پر اسی جماع سے غسل واجب ہونے کا حکم دیں گے اور آج تک جتنی نمازیں قبل غسل پڑھی ہیں سب پھیرے کہ حمل رہ جانے سے ثابت ہوا کہ عورت کو خود بھی انزال ہو گیا ورنہ حمل نہ رہتا۔	۱۳۰	۸

Fatawa Rizvia Volume 4

Serial No.	Topics	Note No.	Page No.
28	Problem: A child was born perfectly clean with absolutely no trace of blood, nor did blood appear afterwards. Even then, as a precaution, Ghusl (ritual bath) is obligatory for the mother.	8	132
29	Problem: It is permissible for a husband and wife to perform Ghusl Janabat (ritual bath after intercourse) together from one vessel, even if they are naked before each other, and they can speak at that time concerning the necessity of the bath. For example, if one finishes quickly, the other can say "leave some water for me."	1	141
30	Problem: There is a consensus among Muslims that no specific quantity of water is mandatory for Wudu (ablution) and Ghusl.	1	157
31	Problem: Spending more than one 'Sa' (a measure) in Ghusl is preferable as long as it does not reach the limit of wastefulness without reason or due to obsession (waswasa).	2	157
32	Problem: If a woman's hair is braided and there is doubt about reaching the scalp by pouring water three times, she can pour water five times.	3	195
33	Problem: It is recommended (Mustahabb) to perform Ghusl after washing a dead body.	4	238
34	Problem: All areas that are obligatory to wash in Wudu or Ghusl must be washed until every single particle is wet; otherwise, the washed limbs will not be considered in a state of Wudu or purity. For instance, if a particle on the foot remains unwashed but the hands and face have been washed well, one cannot touch the Quran with hands, sleeves, or hem, nor can a Junub (one needing a bath) recite it until that particle on the foot is washed.	4	246
35	Problem: A minor never becomes 'without Wudu' or 'Junub' (ritually impure). Commanding them to perform Wudu and Ghusl is to instill a habit and teach etiquettes; otherwise, their Wudu is not broken by any minor impurity, nor is Ghusl obligatory for them.	3	247

Serial No.	Topics	Note No.	Page No.
36	Problem: The way Hindus and other non-believers bathe does not remove the state of Janabat (major ritual impurity). If they embrace Islam, it is mandatory to teach them the rules of Ghusl and ensure its correctness, otherwise their prayers will not be valid.	1	331

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

क्रम संख्या	शीर्षक	लाभ संख्या	पृष्ठ
28	मसला: बच्चा बिल्कुल साफ़ पैदा हुआ जिसके साथ खून का बिल्कुल निशान नहीं था, न ही बाद में खून आया, फिर भी प्रसूता स्त्री पर सावधानी के तौर पर ग़ुस्ल वाजिब है।	8	132
29	मसला: यह जायज़ है कि पति-पत्नी दोनों एक ही बर्तन से एक साथ जनाबत का ग़ुस्ल करें, चाहे वे एक-दूसरे के सामने नग्न हों, और उस समय ग़ुस्ल की ज़रूरत से संबंधित बात भी कर सकते हैं, जैसे कि यदि एक पहले समाप्त कर ले तो दूसरा कह सकता है "मेरे लिए पानी रहने दो"।	1	141
30	मसला: मुसलमानों का आम सहमति (इज्मा) है कि वज़ू और ग़ुस्ल में पानी की कोई विशेष मात्रा अनिवार्य नहीं है।	1	157
31	मसला: ग़ुस्ल में एक 'साअ' (एक माप) से अधिक खर्च करना बेहतर है जब तक कि वह बिना किसी कारण या वहम (वसवसा) के फिजूलखर्ची की सीमा तक न पहुँच जाए।	2	157
32	मसला: यदि स्त्री के बाल गुंथे हुए हों और सिर पर तीन बार पानी बहाने से त्रय-क्षालन (तीन बार धोने) में संदेह हो, तो वह पाँच बार बहा सकती है।	3	195
33	मसला: मुर्दे को नहलाकर ग़ुस्ल करना मुस्तहब (पसंदीदा) है।	4	238
34	मसला: वज़ू या ग़ुस्ल में जिस जगह को धोना फर्ज़ है, उसे तब तक धोना चाहिए जब तक उसका एक-एक कण न धुल जाए। धोए हुए अंग भी तब तक वज़ू या पाकी की स्थिति में नहीं माने जाएंगे जब तक पूरा न धुल जाए। उदाहरण के लिए, यदि पैर में एक कण धोना रह गया है और हाथ-मुँह अच्छी तरह धो लिए गए हैं, तो वह न हाथ से क़ुरआन को छू सकता है, न आस्तीन या पल्ले से, और न ही जुनूब (अशुद्ध व्यक्ति) तिलावत कर सकता है जब तक कि पैर का वह कण भी न धुल जाए।	4	246
35		3	247

क्रम संख्या	शीर्षक	लाभ संख्या	पृष्ठ
	मसला: नाबालिग कभी न तो बे-वज़ू होता है और न ही जुनूब। उन्हें वज़ू और ग़ुस्ल का हुक्म आदत डालने और शिष्टाचार सिखाने के लिए है, वरना किसी अपवित्रता से उनका वज़ू नहीं टूटता और न ही उन पर ग़ुस्ल फर्ज़ होता है।		
36	मसला: हिंदू और अन्य गैर-मुस्लिम जिस तरह नहाते हैं, उससे जनाबत का ग़ुस्ल नहीं उतरता। यदि वे इस्लाम स्वीकार करते हैं, तो उन्हें ग़ुस्ल के नियम सिखाकर उसे सही कराना अनिवार्य है, अन्यथा उनकी नमाज़ नहीं होगी।	1	331

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۲۸	مسئلہ : بچہ بالکل صاف پیدا ہوا جس کے ساتھ خون کا اصلاً نشان نہیں ، نہ بعد کو خون آیا پھر بھی زچہ پر احتیاطاً غسل واجب ہے۔	۸	۱۳۲
۲۹	مسئلہ : جائز ہے کہ زن و شوہر دونوں ایک برتن سے ایک ساتھ غسل جنابت کریں اگرچہ باہم ستر نہ ہو اور اس وقت متعلق ضرورت غسل بات بھی کرسکتے ہیں مثلاً ایک سبقت کرے تو دوسرا کہے میرے لیے پانی رہنے دو۔	۱	۱۴۱
۳۰	مسئلہ : مسلمانوں کا اجماع ہے کہ وضو و غسل میں پانی کی کوئی مقدار خاص لازم نہیں۔	۱	۱۵۷
۳۱	مسئلہ : غسل میں ایک صاع سے زیادہ خرچ کرنا افضل ہے جب تک حد اسراف بے سبب یا وسوسہ کی حالت نہ ہو۔	۲	۱۵۷
۳۲	مسئلہ : عورت کے بال گندھے ہوں اور تین بار سر پر پانی بہانے سے تثلیث میں شبہ رہے تو پانچ بار بہاسکتی ہے۔	۳	۱۹۵
۳۳	مسئلہ : میت کو نہلا کر غسل کرنا مستحب ہے۔	۴	۲۳۸
۳۴	مسئلہ : جتنی جگہ کا وضو یا غسل میں دھونا فرض ہے جب تک اس کا ایک ایک ذرہ نہ دھلے دھوئے ہوئے عضو بھی باوضو یا بے جنابت نہ ٹھہریں گے مثلاً پاؤں میں ایک ذرہ دھونے سے باقی ہے اور ہاتھ منہ خوب دھولیے	۴	۲۴۶

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	ہیں تو ابھی قرآن مجید نہ ہاتھ سے چھو سکتا ہے نہ آستین یا دامن سے نہ جو جنب تھا ابھی تلاوت کرسکتا ہے جب تک پاؤں کا بھی وہ ذرہ نہ دھولے۔		
	مسئلہ : نابالغ نہ کبھی بے وضو ہو نہ جنب۔ انہیں وضو و غسل کا حکم عادت		
۳۵	ڈالنے اور ادب سکھانے کے لئے ہے ورنہ کسی حدث سے ان کا وضو نہیں جاتا نہ ان پر غسل فرض ہو۔	۳	۲۴۷
	مسئلہ : ہنود و غیر ہم کفار جس طرح نہاتے ہیں اس سے غسل جنابت نہیں		
۳۶	اترتا اسلام لائیں تو قواعد غسل سکھا کر تصحیح غسل لازم ہے ورنہ ان کی نماز نہ ہوگی۔	۱	۳۳۱

Volume Four Fatawa Razawiyya

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
37	Problem: A person went as a guest somewhere, and the women of the household were also in the same house. At night, he felt the need to bathe (due to potential nocturnal emission), so he held his organ firmly and did not let the semen come out. When the lust subsided, he let go, and the semen that had descended with lust came out without lust. In this situation, the ruling of the Madhhab is that Ghusl (ritual bath) has become obligatory because the descent of semen with lust is sufficient for the obligatoriness of Ghusl, even if lust is not present at the time of exit. However, Imam Abu Yusuf does not consider Ghusl obligatory in this case. If the guest feels ashamed that bathing at that time would lead to suspicion about him, then he may act upon the Madhhab of Imam Abu Yusuf, perform his prayer, and then repeat it after bathing once that situation has passed.	1	630
38	Problem: If washing the head is harmful for a woman, she should bathe from the neck down and perform Masah (wiping) over the entire head.	1	647
39	Problem: In Wudu or Ghusl, if washing a limb which is commanded to be washed is harmful, then wiping (Masah) that limb stands in place of washing it.	3	647
40	Problem: After every ejaculation, one should urinate before bathing so that the remainder of the semen is expelled.	1	806
41	Problem: If after intercourse one did not urinate, sleep, or walk around enough for the remaining semen to come out, and bathed, and after that, the remainder of the same semen—which had separated from the back with lust and some had come out while some remained according to habit—was expelled, then it will be mandatory to bathe again.	2	806
42	Problem: Lust is necessary at the time semen separates from its place, i.e., the back of a man or the chest of a woman. If	3	812

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
	there was no lust at that time, Ghusl will not be obligatory, for example, if it descended due to lifting a heavy weight or, God forbid, in the condition of spermatorrhea (jaryan). Yes, if it separated with lust, Ghusl will become obligatory even if there is no lust at the time of exit from the orifice. In short, lust is a condition at the time of separation from the place; it is not necessary at the time of exit. However, for the obligatoriness of Ghusl, exit is definitely a condition; if it descended with lust but did not come out, then as long as it does not come out, Ghusl will not be obligatory.		
43	Note: Every semen that comes out with lust is necessarily preceded by Madhi (pre-seminal fluid).	3	815

क्रमांक	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
३७	मसला: कोई व्यक्ति कहीं मेहमान गया, घर की औरतें भी उसी मकान में हैं। रात को उसे नहाने की हाजत होने को थी कि उसने अंग को मजबूती से थाम लिया और मनी (वीर्य) नहीं निकलने दी। जब कामवासना (शहवत) जाती रही, उस समय छोड़ा तो मनी जो शहवत के साथ उतरी थी, बिना शहवत के बाहर हुई। इस स्थिति में मज़हब यह है कि ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो गया क्योंकि मनी का शहवत के साथ उतरना ही ग़ुस्ल के वाजिब होने के लिए काफी है, भले ही निकलते समय शहवत न रहे। मगर इमाम अबू यूसुफ़ इस सूरत में ग़ुस्ल वाजिब नहीं मानते। अगर मेहमान को शर्मिंदगी हो कि इस वक्त नहाऊँगा तो मेरे बारे में बुरा गुमान (संदेह) होगा, तो इमाम अबू यूसुफ़ के मज़हब पर अमल करके नमाज़ पढ़ ले, फिर वह मौका निकल जाने पर नहाकर नमाज़ दोहराए।	१	६३०
३८	मसला: औरत को सिर धोना नुकसान करे तो गले से नहाए और पूरे सिर पर मसह (हाथ फेरना) करे।	१	६४७
३९	मसला: वुज़ू या ग़ुस्ल में जिस अंग को धोने का हुक्म है, अगर धोना हानिकारक हो तो उसका मसह करना धोने के स्थान पर है।	३	६४७
४०	मसला: हर इन्ज़ाल (स्खलन) में पेशाब करने के बाद नहाना चाहिए ताकि मनी का बचा हुआ हिस्सा निकल जाए।	१	८०६
४१	मसला: अगर संभोग के बाद न पेशाब किया, न सोया, न इतना चला-फिरा कि बची हुई मनी निकल जाती और नहा लिया, उसके बाद उसी मनी का बचा हुआ हिस्सा निकला जो कामवासना के साथ पीठ से अलग हुआ था और कुछ निकलकर आदत के अनुसार कुछ बाकी रह गया था, तो दोबारा नहाना लाज़िम होगा।	२	८०६
४२		३	८१२

क्रमांक	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
	मसला: मनी अपने स्थान यानी मर्द की पीठ या औरत के सीने से अलग होते समय कामवासना (शहवत) होना ज़रूरी है। उस समय अगर शहवत न थी तो ग़ुस्ल वाजिब न होगा, जैसे कि भारी बोझ उठाने से उतर आई या खुदा न करे जर्यान (धातु रोग) की स्थिति में। हाँ, जब शहवत से अलग हुई हो तो छिद्र से निकलते समय शहवत अगर न भी हो, ग़ुस्ल वाजिब हो जाएगा। संक्षेप में, स्थान से अलग होने के समय शहवत शर्त है, निकलने के समय ज़रूरी नहीं। मगर बहरहाल ग़ुस्ल के वाजिब होने के लिए निकलना ज़रूर शर्त है; अगर शहवत से उतरी और नहीं निकली, तो जब तक नहीं निकलेगी ग़ुस्ल वाजिब न होगा।		
४३	फ़ायदा: हर मनी जो शहवत से निकले, उससे पहले मज़्ज़ी (कामुक द्रव) ज़रूर निकलती है।	३	८१५

पृष्ठ ७६१ का ६३५

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۳۷	مسئلہ: کوئی شخص کہیں مہمان گیا صاحب خانہ کی عورتیں بھی اسی مکان میں ہیں رات کو اسے نہانے کی حاجت ہونے کو تھی کہ اس نے عضو کو مضبوط تھام لیا اور منی نہ نکلنے دی جب شہوت جاتی رہی اس وقت چھوڑا کہ منی جو شہوت کے ساتھ اتری تھی بلا شہوت باہر ہوئی اس صورت میں مذہب یہ ہے کہ غسل فرض ہو گیا کہ منی کا شہوت کے ساتھ اترنا ہی وجوب غسل کو کافی ہے اگرچہ نکلتے وقت شہوت نہ رہے مگر امام ابو یوسف اس صورت میں غسل واجب نہیں مانتے اگر مہمان کو ندامت ہو کہ اس وقت نہاؤں گا تو میری طرف بد گمانی ہو گی تو مذہب امام ابو یوسف پر عمل کر کے نماز پڑھ لے پھر وہ موقع نکل جانے پر نہا کر پھیرے۔	۱	۶۳۰
۳۸	مسئلہ: عورت کو سردھونا نقصان کرے گلے سے نہائے اور سارے سر پر مسح کرے۔	۱	۶۴۷
۳۹	مسئلہ: وضو یا غسل میں جس عضو کے دھونے کا حکم ہے اگر دھونا مضر ہو تو اس کا مسح دھونے کے قائم ہے۔	۳	۶۴۷
۴۰	مسئلہ: ہر انزال میں پیشاب کرنے کے بعد نہانا چاہئے کہ منی کا بقیہ خارج ہو جائے۔	۱	۸۰۶

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۴۱	مسئلہ: اگر بعد جماع نہ پیشاب کیا نہ سویا نہ اتنا چلا پھرا کہ بقیہ منی نکل جاتا اور نہا لیا اس کے بعد اسی منی کا بقیہ خارج ہوا جو بشہوت پشت سے جدا ہوئی اور بعض نکل کر حسب عادت بعض باقی رہ گئی تھی تو دوبارہ نہانا لازم ہوگا۔	۲	۸۰۶
۴۲	مسئلہ: منی اپنے محل یعنی مرد کی پشت یا عورت کے سینے سے جدا ہوتے وقت شہوت ضرور ہے اس وقت اگر شہوت نہ تھی غسل واجب نہ ہو گا مثلاً بھاری بوجھ اٹھانے سے اتر آئی یا معاذ اللہ عارضہ جریان میں۔ ہاں جب شہوت سے جدا ہوئی ہو تو سوراخ سے نکلتے وقت شہوت اگر نہ بھی ہو غسل واجب ہو جائے گا غرض انفصال محل کے وقت شہوت شرط ہے خروج کے وقت ضرور نہیں مگر بہرحال وجوب غسل کے لئے خروج ضرور شرط ہے اگر شہوت سے اتری اور نہ نکلی تو جب تک نہ نکلے گی غسل واجب نہ ہوگا۔	۳	۸۱۲
۴۳	ف: ہر منی کہ شہوت سے نکلے اس سے پہلے مذی ضرور نکلتی ہے۔	۳	۸۱۵

Fatawa Razawiyya, Volume 4

Serial No. | Subjects | Benefit No. | Page No. 44 | Ruling: A woman's menstruation ended and she had not yet bathed when she had a nocturnal emission in her sleep, making ghusl (bath) obligatory again. Just as she woke up, her husband had intercourse; as soon as the glans entered, ghusl became obligatory for the third time. Finally, the woman reached orgasm during intercourse, making it obligatory for the fourth time. Similarly, if nocturnal emission, intercourse, or orgasm occur many times before bathing—even a hundred or a thousand times—a single bath will suffice for all of them. And if she dies in this state before ghusl, then one funeral bath (ghusl-e-mayyit) will suffice for all. | 5 | 821

Chapter on Waters 1 | Ruling: Water was taken in the palm but not yet used when a state of ritual impurity (hadath) occurred. According to some, this water can be used for wudu (ablution), but the author's research is that this is against the correct view; that palmful of water cannot be used for wudu. | 2 | 32 2 | Ruling: The correct view is that for a body in a state of ritual impurity, merely touching the water and it separating from it is enough to make it 'used' (musta'mal). It is not a condition for the person in impurity to pour the water themselves, or to have an intention, or for the water to settle on another body part, cloth, or ground after separating from the body. | 4 | 32 3 | Ruling: It is permissible to perform wudu with the water remaining in a vessel after wudu. | 1 | 234 4 | Ruling: During wudu or ghusl, if water from a body part falls into a vessel as a stream, the water in the vessel remains pure for ritual purification. Yes, if so much falls that it exceeds the volume of water originally in the vessel, then wudu and ghusl cannot be performed with it. | 2 | 234 5 | Ruling: If a child urinates in a pool measuring seven and a half square yards, it will not become impure. | 1 | 236 6 | Ruling: A pool of ten by ten (dah dar dah) does not become impure at all by filth unless its color, taste, or smell changes due to that specific impurity. | 2 | 236 7 | Ruling: If someone does not have wudu and water is in a container like a narrow-necked pot (koli) which cannot be tilted, they should wash their hands using a bowl etc., or have a person with wudu or a minor child take it out. If even this is not available, they should wash their hands by taking water in their palm; the water will not become 'used' (musta'mal) because of this necessity. If it were done without necessity, it would become 'used'. | 3 | 237 8 | Ruling: If even a tiny part of a limb that has not yet been purified of a person in a state of major ritual impurity (junub) or without wudu is submerged in a large pot full of water, then

according to the most correct school of thought, the water will no longer be suitable for ritual purification. | 4 | 237

फ़तावा रजविया, जिल्द 4

क्रम संख्या | विषय | फायदा नंबर | पृष्ठ संख्या 44 | मसला: औरत का हैज़ (मासिक धर्म) खत्म हुआ और अभी नहाई नहीं थी कि सोते में एहतिलाम (स्वप्नदोष) हुआ, दोबारा ग़ुस्ल (स्नान) वाजिब हुआ। सोते से उठी ही थी कि शौहर ने जमाअ (संभोग) किया, हशफ़ा (लिंग का अगला भाग) गायब होते ही तीसरी बार ग़ुस्ल वाजिब हुआ। आखिर में संभोग के दौरान औरत को इन्ज़ाल (चरम सुख) हुआ, अब चौथी बार वाजिब हुआ। इसी तरह अगर नहाने से पहले एहतिलाम, जमाअ और इन्ज़ाल कितनी ही बार क्यों न हो जाए—चाहे सौ बार या हज़ार बार—सबके लिए एक ही बार नहाना काफी होगा। और अगर इसी हालत में ग़ुस्ल से पहले उसकी मौत हो जाए, तो मैय्यत का एक ग़ुस्ल सबको काफी होगा। | 5 | 821

बाबुल मियाह (पानी का अध्याय) 1 | मसला: पानी अंजलि (चुल्लू) में लिया और अभी इस्तेमाल नहीं किया था कि हदस (अशुद्धि) वाक़िअ हुई। कुछ के नज़दीक उस पानी को वज़ू में इस्तेमाल किया जा सकता है, और मुसन्निफ (लेखक) की तहकीक यह है कि यह सहीह कौल के खिलाफ है; वह अंजलि वज़ू में काम नहीं दे सकती। | 2 | 32 2 | मसला: सहीह यह है कि जिस बदन पर हदस हो, पानी का उसे छूकर उससे जुदा होना ही उसे 'मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ) करने के लिए काफी है। खुद हदस वाले का पानी डालना या उसकी नियत, या बदन से जुदा होकर दूसरे बदन या कपड़े या ज़मीन पर ठहर जाना कोई शर्त नहीं है। | 4 | 32 3 | मसला: वज़ू से जो पानी बर्तन में बच रहा, उससे वज़ू जायज़ है। | 1 | 234 4 | मसला: वज़ू या ग़ुस्ल में अगर किसी अंग का पानी धार बनकर बर्तन में गिरा, तो बर्तन का पानी पाक रहेगा। हाँ, अगर इतना गिरा कि बर्तन के पानी से ज़्यादा हो गया, तो उससे वज़ू और ग़ुस्ल नहीं हो सकेगा। | 2 | 234 5 | मसला: साढ़े सात गज़ मुरब्बा (वर्ग) हौज़ में किसी बच्चे ने पेशाब कर दिया, तो वह नापाक नहीं होगा। | 1 | 236 6 | मसला: हौज़ 'दह दर दह' (10x10 हाथ) गंदगी से असल में नापाक नहीं होता जब तक कि खास गंदगी की वजह से उसका रंग, स्वाद या गंध न बदल जाए। | 2 | 236 7 | मसला: वज़ू नहीं है और पानी कोली (संकीर्ण मुँह वाले बर्तन) वगैरह में है जिसे झुकाया नहीं जा सकता, तो कटोरे वगैरह से लेकर हाथ धोए या किसी बा-वज़ू या नाबालीग बच्चे से निकलवाए। और अगर यह भी उपलब्ध न हो, तो अंजलि (चुल्लू) से लेकर हाथ धो ले; पानी इस ज़रूरत की वजह से मुस्तअमल नहीं होगा। बिना ज़रूरत होता तो मुस्तअमल हो जाता। | 3 | 237 8 | मसला: जुनूब (बड़ी नापाकी की हालत वाला) या बे-वज़ू का

अगर वह अंग जिसकी अभी तक तहारत (शुद्धि) नहीं की गई है, ज़रा सा भी मटके भर पानी में डूब जाए, तो सबसे सहीह मज़हब के अनुसार पानी तहारत के काबिल नहीं रहेगा। | 4 | 237

فتاویٰ رضویہ، جلد چہارم

نمبر شمار | عنوانات | فائدہ نمبر | صفحہ نمبر ۴۴ | مسئلہ : عورت کا حیض ختم ہوا اور ابھی نہائی نہ تھی کہ سوتے میں احتلام ہوا دوبارہ غسل آیا۔ سوتے سے اٹھی ہی تھی کہ شوہر نے جماع کیا قدر حشفہ غائب ہوتے ہی تیسری بار وجوب غسل ہوا آخر جماع میں عورت کو انزال ہوا اب چوتھی بار وجوب ہوا۔ یونہی اگر نہانے سے پہلے احتلام و جماع و انزال کتنی ہی بار واقع ہوں کہ سو بار یا ہزار بار وجوب غسل ہو سب کے لئے ایک ہی نہانا کافی ہوگا۔ اور اگر اسی حالت میں قبل غسل مر جائے تو ایک غسل میت سب کو کفایت۔ | ۵ | ۸۲۱

باب المیاہ ۱ | مسئلہ : پانی چلّو میں لیا اور ابھی استعمال نہ کیا تھا کہ حدث واقع ہوا بعض کے نزدیک اس پانی کو وضو میں استعمال کر سکتا ہے اور مصنف کی تحقیق کہ یہ خلاف صحیح ہے وہ چلّو وضو میں کام نہیں دے سکتا۔ | ۲ | ۲ ۳۲ | مسئلہ : صحیح یہ ہے کہ جس بدن پر حدث ہو پانی کا اسے چھو کر اس سے جدا ہونا ہی اس کے مستعمل کر دینے کو بس ہے خود صاحبِ حدث کا پانی ڈالنا یا اس کی نیت یا اس بدن سے جدا ہو کر دوسرے بدن یا کپڑے یا زمین پر ٹھہر جانا کچھ شرط نہیں۔ | ۴ | ۳ ۳۲ | مسئلہ : وضو سے جو پانی برتن میں بچ رہا اس سے وضو جائز ہے۔ | ۱ | ۴ ۲۳۴ | مسئلہ : وضو یا غسل میں اگر کسی عضو کا پانی دھار بندھ کر برتن میں گرا برتن کا پانی قابل طہارت رہے گا، ہاں اگر اتنا گرا کہ برتن کے پانی سے زائد ہو گیا تو اس سے وضو و غسل نہ ہوسکے گا۔ | ۲ | ۵ ۲۳۴ | مسئلہ : ساڑھے سات گز مربع حوض میں کسی بچہ نے پیشاب کر دیا ناپاک نہ ہوگا۔ | ۱ | ۶ ۲۳۶ | مسئلہ : حوض دہ در دہ نجاست سے اصلاً ناپاک نہیں ہوتا جب تک خاص نجاست کے سبب اس کا رنگ یا مزہ یا بو بدل نہ جائے۔ | ۲ | ۲۳۶ ۷ | مسئلہ : وضو نہیں اور پانی کولی وغیرہ میں ہے جسے جھکا نہیں سکتا تو کٹورے وغیرہ سے

لیکر ہاتھ دھوئے یا کسی باوضو یا نابالغ بچہ سے نکلوائے اور یہ بھی مہیا نہ ہو تو چلّو سے لیکر ہاتھ دھو لے پانی اس ضرورت کے سبب مستعمل نہ ہوگا بے ضرورت ہوتا تو مستعمل ہو جاتا۔ | ۳ | ۸ ۲۳۷ | مسئلہ : جنب یا بے وضو کا اگر وہ عضو جس کی ابھی طہارت نہ کی ذرہ بھر بھی اگر مٹکے بھر پانی میں ڈوب جائیگا تو مذہب اصح میں پانی قابل طہارت نہ رہے گا۔ | ۴ | ۲۳۷

Fatawa Rizwia Volume 4

Serial Number Titles/Topics Faida (Benefit) Number Page Number

9 Issue: If after performing Wudu in a basin, this used water is mixed with a pitcher full of water, then all of it becomes suitable for Wudu because when used and unused water mix, the dominant one is considered. 1 238 10 Issue: Wudu and Ghusl cannot be performed with anything other than pure water (Aab-e-Mutlaq), such as milk, rose water, screwpine water, etc. 1 240 11 Issue: Throwing or sprinkling water from Wudu or Ghusl in a mosque is forbidden (Haram). If Wudu was performed with rose water, it is not valid, but that rose water can be sprinkled in the mosque. 2 240 12 Issue: If a person who already has Wudu washes their parents' clothes or fruits for them to eat, or washes the mosque floor for the sake of reward, the water will not become 'Mustamal' (used water for purification), even though these acts are for the sake of proximity (to Allah). 4 241 13 Issue: The water through which sharia-required proximity is sought washes away the human's sins. The ruling impurity (Najasat-e-Hukmiya) of sins is transferred to it, therefore it becomes 'Mustamal'. 2 242 14 Issue: Preference for the view that for water to become 'Mustamal', simply separating from the body is enough; 'Istiqrar' (staying on the body) is not a condition anywhere. 4 242 15 Issue: If a person cannot focus on worship or studying due to heat and bathes or washes their hands and face with the intention of cooling down, there is certainly proximity, but the water will not become 'Mustamal' if the person already had Wudu. 2 244 16 Issue: Keeping the body clean and removing dirt is desired in Sharia because Islam is based on cleanliness. If a person who already has Wudu washes their body with this intention, it is certainly an act of proximity, but the water did not become 'Mustamal'. 4 244 17 Issue: Sunnah and recommended Ghusls such as those for Friday, Eids, Arafah, or Ihram, etc., can only be performed with pure water; they cannot be performed with rose water or screwpine water. 5 244 18 Issue: If a minor without Wudu dips their hand in water, the water is not spoiled and Wudu with it is permissible. However, if there is suspicion of impurity, it is better not to perform Wudu with it. 5 247 19 Issue: Washing the inner eye will not make the water 'Mustamal', even if a person in a state of major ritual impurity (Junub) washes it. 1 257 20 Issue: The author's research that water also becomes 'Mustamal' through wiping (Masah), and the removal of misconceptions therein. 5 257

फतावा रज़विया जिल्द चहारुम

क्रम संख्या विषय फ़ायदा नंबर पृष्ठ संख्या

9 मसला: लगन में वज़ू करके यह मुस्तअमल पानी घड़े भर पानी में मिला दिया, सब काबिले वज़ू हो गया कि मुस्तअमल और गैर-मुस्तअमल पानी के मिलने में ज़ायद (अधिकता) का एतबार है। 1 238 10 मसला: आबे मुतलक़ (शुद्ध जल) के सिवा दूध, गुलाब, केवड़ा वगैरह किसी चीज़ से वज़ू और गुस्ल नहीं हो सकता। 1 240 11 मसला: वज़ू या गुस्ल का पानी मस्जिद में डालना या छिड़कना हराम है और गुलाब से वज़ू किया तो वज़ू न हुआ और वह गुलाब मस्जिद में छिड़क सकते हैं। 2 240 12 मसला: बा-वज़ू (जिसने वज़ू कर रखा हो) ने माँ-बाप के कपड़े या उनके खाने के लिए फल या मस्जिद का फ़र्श सवाब के लिए धोया, पानी मुस्तअमल न होगा अगरचे ये अफ़आल कुर्बत (पुण्य कार्य) के हैं। 4 241 13 मसला: जिस पानी से कुर्बते मतलूब शरअन की जाती है, वह इंसान के गुनाह धोता है। गुनाहों की नजासत-ए-हुकमिया उसकी तरफ़ मुंतकिल होती है, लिहाज़ा मुस्तअमल हो जाता है। 2 242 14 मसला: इसकी तरजीह कि मुस्तअमल होने के लिए सिर्फ बदन से जुदा होना काफ़ी है, कहीं इस्तेक़रार शर्त नहीं। 4 242 15 मसला: गर्मी के सबब इबादत या मुताला-ए-किताब में दिल नहीं जमता, इस नियत से ठंडक पहुँचाने को नहाया या हाथ-मुँह धोए तो कुर्बत ज़रूर है मगर पानी मुस्तअमल न होगा अगर बा-वज़ू था। 2 244 16 मसला: बदन सुथरा रखना, मैल दूर करना शरअ में मतलूब है कि इस्लाम की बिना सुथराई पर है। इस नियत से बा-वज़ू ने बदन धोया तो कुर्बत बेशक है मगर पानी मुस्तअमल न हुआ। 4 244 17 मसला: जुमा या ईदैन या अरफ़ा या एहराम वगैरह के गुस्ल जो सुन्नत व मुस्तहब हैं, सिर्फ़ आबे मुतलक़ से अदा होंगे, गुलाब व केवड़ा से अदा न होंगे। 5 244 18 मसला: बे-वज़ू नाबालिक का हाथ पानी में डूब जाने से पानी खराब नहीं होता, उससे वज़ू रवा (जायज़) है। हाँ नजासत का शक हो तो बेहतर यह है कि उससे वज़ू न करे। 5 247 19 मसला: बातिने चश्म (आँख का अंदरूनी हिस्सा) धोने से पानी मुस्तअमल न होगा अगरचे जुनुब धोए। 1 257 20 मसला: मुसन्निफ़ की तहक़ीक़ कि मसह से भी पानी मुस्तअमल हो जाता है, और इसमें औहाम का इज़ाला। 5 257

पृष्ठ 637 का 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

نمبر شمار عنوانات فائدہ نمبر صفحہ نمبر

۹ مسئلہ: لگن میں وضو کر کے یہ مستعمل پانی گھڑے بھر پانی میں ملا دیا سب قابل وضو ہو گیا کہ مستعمل و غیر مستعمل پانی کے ملنے میں زائد کا اعتبار ہے۔ ۱ ۲۳۸ ۱۰ مسئلہ: آب مطلق کے سوا دودھ گلاب کیوڑے وغیرہ کسی چیز سے وضو و غسل نہیں ہوسکتا۔ ۱ ۲۴۰ ۱۱ مسئلہ: وضو یا غسل کا پانی مسجد میں ڈالنا چھڑکنا حرام ہے اور گلاب سے وضو کیا تو وضو نہ ہوا اور وہ گلاب مسجد میں چھڑک سکتے ہیں۔ ۲ ۲۴۰ ۱۲ مسئلہ: باوضو نے ماں باپ کے کپڑے یا ان کے کھانے کیلئے پھل یا مسجد کا فرش ثواب کیلئے دھویا پانی مستعمل نہ ہو گا اگرچہ یہ افعال قربت کے ہیں۔ ۴ ۲۴۱ ۱۳ مسئلہ: جس پانی سے قربت مطلوبہ شرعاً کی جاتی ہے وہ انسان کے گناہ دھوتا ہے گناہوں کی نجاست حکمیہ اس کی طرف منتقل ہوتی ہے لہٰذا مستعمل ہو جاتا ہے۔ ۲ ۲۴۲ ۱۴ مسئلہ: اس کی ترجیح کہ مستعمل ہونے کیلئے صرف بدن سے جدا ہونا کافی ہے کہیں استقرار شرط نہیں۔ ۴ ۲۴۲ ۱۵ مسئلہ: گرمی کے سبب عبادت یا مطالعہ کتاب میں دل نہیں جمتا اس نیت سے ٹھنڈک پہنچنے کو نہایا یا ہاتھ منہ دھوئے تو قربت ضرور ہے مگر پانی مستعمل نہ ہو گا اگر با وضو تھا۔ ۲ ۲۴۴ ۱۶ مسئلہ: بدن ستھرا رکھا میل دور کرنا شرع میں مطلوب ہے کہ اسلام کی بنا ستھرائی پر ہے۔ اس نیت سے با وضو نے بدن دھویا تو قربت بے شک ہے مگر پانی مستعمل نہ ہوا۔ ۴ ۲۴۴ ۱۷ مسئلہ: جمعہ یا عیدین یا عرفہ یا احرام وغیرہ ہا کہ جو غسل سنت و مستحب ہیں صرف آب مطلق سے ادا ہوں گے گلاب کیوڑے سے ادا نہ ہوں گے۔ ۵ ۲۴۴ ۱۸ مسئلہ: بے وضو نابالغ کا ہاتھ پانی میں ڈوب جانے سے پانی خراب نہیں ہوتا اس سے وضو روا ہے۔ ہاں نجاست کا شک ہو تو بہتر یہ ہے کہ اس سے وضو نہ کرے۔ ۵ ۲۴۷ ۱۹ مسئلہ: باطن چشم دھونے سے پانی

مستعمل نہ ہو گا اگرچہ جنب دھوئے ۔ ۱ ۲۵۷ ۲۰ مسئلہ: مصنف کی تحقیق کہ مسح سے بھی پانی مستعمل ہو جاتا ہے۔ اور اس میں اوہام کا ازالہ۔ ۵ ۲۵۷

Fatawa Razawiyya, Volume 4

Serial Number	Topics	Benefit No.	Page No.
21	Issue: A person without ablution (wudu) put their head in a water vessel to the extent that one-fourth of the head touched the water; the wiping (masah) was performed, and the water in the vessel did not become 'used' (mustamal).	6	257
22	Issue: If a clean hand or any part of the body of a minor, even if without wudu, is put in water, it will remain fit for wudu.	1	261
23	Issue: Water that touches a dead body before the ritual bath (ghusl), even if touched without the intention of ghusl, will not remain fit for wudu.	2	262
24	Issue: If a woman's hand is placed in water while her menstruation (hayd) or post-natal bleeding (nifas) has not yet ended, the water will remain fit for wudu as usual.	2	263
25	Issue: Placing a hand in water without necessity does not make the water 'used'. Yes, placing it more than necessary will make it 'used'.	3	263
26	Issue: The hand was put in out of necessity, then the intention was made to wash it in the water itself; it became 'used'.	4	263
27	Issue: Just as putting the whole hand makes water 'used', similarly, a nail or any part [of the hand].	5	263
28	Issue: Used (mustamal) water is pure; clothes can be washed with it, but wudu cannot be performed with it, and drinking it or kneading flour with it is disliked (makruh).	2	264
29	Issue: Proof from the texts of forty Imams and books that in water less than ten-by-ten (dah-dar-dah), putting a limb unnecessarily that has ritual impurity (najis-e-hukmiya) - meaning it is required to be washed in wudu or ghusl and has not yet been washed - makes the water 'used' and unfit for wudu.	3	264
30		1	265

Serial Number	Topics	Benefit No.	Page No.
31	Issue: The foot of a person in a state of ritual impurity (junub) or without wudu fell into a basin; the water became 'used'. Similarly, if water was to be taken from a basin in a cupped hand out of necessity because no other vessel was nearby, and more of the hand than necessary for cupping was put into the basin, the water is no longer fit for purification. Issue: A bowl fell and sank into a vessel of water and no other vessel is available, nor is there water anywhere else to wash hands before putting them in the vessel; out of this necessity, a person without wudu or in a state of ritual impurity put their hand in the vessel to retrieve the bowl; the water did not become 'used' even if the hand had to be inserted up to the elbow or armpit, as what is done out of necessity is pardoned.	2	265

फ़तावा रजविया, जिल्द 4

क्रम संख्या	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
21	मसला: बिना वज़ू वाले व्यक्ति ने पानी के बर्तन में अपना सिर डाला यहाँ तक कि चौथाई सिर को पानी लग गया, मसह अदा हो गया और बर्तन का पानी मुस्तमल (इस्तेमाल किया हुआ) नहीं हुआ।	6	257
22	मसला: नाबालिग का पाक हाथ या शरीर का कोई हिस्सा चाहे बिना वज़ू हो, पानी में डालने से वह पानी वज़ू के योग्य रहेगा।	1	261
23	मसला: मय्यत (मृत शरीर) के बदन से ग़ुस्ल से पहले जो पानी, चाहे बिना ग़ुस्ल के इरादे के छुए, वह वज़ू के योग्य नहीं रहेगा।	2	262
24	मसला: हैज़ (मासिक धर्म) और निफ़ास (प्रसवोत्तर रक्तस्राव) अभी खत्म नहीं हुआ, इस हालत में महिला का हाथ पानी में पड़ने से वह पानी पहले की तरह वज़ू के योग्य रहेगा।	2	263
25	मसला: बिना ज़रूरत हाथ डालने से पानी मुस्तमल नहीं होता। हाँ, ज़रूरत से ज़्यादा डालने पर मुस्तमल कर देगा।	3	263
26	मसला: ज़रूरत से हाथ डाला फिर पानी ही में धोने की नीयत कर ली, तो वह मुस्तमल हो गया।	4	263
27	मसला: जिस तरह सारा हाथ पड़ने से पानी मुस्तमल होता है, वैसे ही नाखून या कोई हिस्सा।	5	263
28	मसला: मुस्तमल पानी पाक है, इससे कपड़ा धो सकते हैं मगर इससे वज़ू नहीं हो सकता और इसका पीना या इससे आटा गूँधना मकरूह (नापसंद) है।	2	264
29	मसला: चालीस इमामों और किताबों के ग्रंथों से इस मसले का प्रमाण कि दह-दर-दह (एक निश्चित माप) से कम पानी में बिना ज़रूरत किसी ऐसे अंग का पड़ जाना जिस पर नजासत-ए-हुकमिया हो यानी वज़ू या ग़ुस्ल में उसके	3	264

क्रम संख्या	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
	धोने का हुक्म हो और अभी न धोया हो, इस कारण पानी को मुस्तमल और वज़ू के अयोग्य कर देता है।		
30	मसला: जुनूबी (अशुद्ध अवस्था में) या बिना वज़ू वाले का पैर लगन (तसले) में पड़ गया तो पानी मुस्तमल हो गया। इसी तरह अगर लगन में से ज़रूरत के कारण अंजुली में पानी लेना था क्योंकि और कोई बर्तन पास नहीं था और उसे जितना हाथ अंजुली लेने के लिए डालना था उससे ज़्यादा लगन में डाल दिया, तो पानी पवित्रता के योग्य नहीं रहा।	1	265
31	मसला: पानी की कटोरी में कटोरा गिर कर डूब गया और कोई बर्तन मौजूद नहीं है, न ही कहीं और पानी है कि उससे हाथ धोकर बर्तन में डाले; इस ज़रूरत से बिना वज़ू या जुनूबी ने बर्तन में हाथ डालकर कटोरा निकाल लिया तो पानी मुस्तमल नहीं हुआ, चाहे कोहनी या बगल तक हाथ डालना पड़ा हो, क्योंकि जो ज़रूरत के कारण हो वह माफ़ है।	2	265

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۲۱	مسئلہ: بے وضو شخص نے پانی کے برتن میں اپنا سر داخل کیا یہاں تک کہ چہارم سر کو پانی لگ گیا مسح ادا ہوگیا اور برتن کا پانی مستعمل نہ ہوا۔	۶	۲۵۷
۲۲	مسئلہ: نابالغ کا پاک ہاتھ یا بدن کا کوئی جز اگرچہ بے وضو ہو پانی میں ڈالنے سے قابل وضو رہے گا۔	۱	۲۶۱
۲۳	مسئلہ: میت کے بدن سے قبل غسل جو پانی اگرچہ بے قصد غسل مس کرے قابل وضو نہ رہے گا۔	۲	۲۶۲
۲۴	مسئلہ: حیض و نفاس ابھی ختم نہ ہوا اس حالت میں عورت کا ہاتھ پانی میں پڑنے سے بدستور قابل وضو رہے گا۔	۲	۲۶۳
۲۵	مسئلہ: بغیر ضرورت ہاتھ ڈالنے سے پانی مستعمل نہیں ہوتا۔ ہاں ضرورت سے زائد مستعمل کردے گا۔	۳	۲۶۳
۲۶	مسئلہ: ہاتھ ڈالا ضرورت سے پھر پانی ہی میں دھونے کی نیت کر لی مستعمل ہوگیا۔	۴	۲۶۳
۲۷	مسئلہ: جس طرح سارا ہاتھ پڑنے سے پانی مستعمل ہوتا ہے یوں ہی ناخن یا کوئی حصہ۔	۵	۲۶۳
۲۸		۲	۲۶۴

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: مستعمل پانی پاک ہے اس سے کپڑا دھو سکتے ہیں مگر اس سے وضو نہیں ہو سکتا اور اس کا پینا یا اس سے آٹا گوندھنا مکروہ ہے۔		
۲۹	مسئلہ: چالیس ائمہ و کتب کے نصوص سے اس مسئلہ کا اثبات کہ دہ در دہ سے کم پانی میں بے ضرورت کسی ایسے عضو کا پڑ جانا جس پر نجاست حکمیہ ہو یعنی وضو یا غسل میں اس کے دھونے کا حکم ہو اور ابھی نہ دھویا اس سبب پانی کو مستعمل و نا قابل وضو کر دیتا ہے۔	۳	۲۶۴
۳۰	مسئلہ: جنب یا بے وضو کا پاؤں لگن میں پڑ گیا پانی مستعمل ہو گیا۔ یوں ہی اگر لگن میں سے بضرورت چلو میں پانی لینا تھا کہ اور کوئی برتن پاس نہ تھا اور اسے جتنا ہاتھ چلو لینے کیلئے داخل کرنا ہوتا اس سے زائد لگن میں ڈال دیا یا پانی طہارت کے قابل نہ رہا۔	۱	۲۶۵
۳۱	مسئلہ: پانی کی کٹوری میں کٹورا گر کر ڈوب گیا اور کوئی برتن موجود نہیں، نہ کہیں اور پانی ہے کہ اس سے ہاتھ دھو کر کٹوری میں ڈالے اس ضرورت سے بے وضو یا جنب نے کٹوری میں ہاتھ ڈال کر کٹورا نکال لیا تو پانی مستعمل نہ ہوا اگر چہ کہنی یا بغل تک ہاتھ داخل کرنا پڑا ہو کہ جو بضرورت ہے معاف ہے۔	۲	۲۶۵

Fatawa Razawiyya, Volume 4

Sr. No.	Topics	Benefit No.	Page No.
32	Issue: If a person puts their unwashed hand completely into water to cool down, the water will no longer be suitable for wudu (ablution) as this is without necessity.	3	265
33	Issue: If a bucket falls into a well and a person enters the well without bathing to retrieve it, the water will not become spoiled as long as there is no actual impurity (najasat) on their body or clothes, and they do not intend to remove ritual impurity (raf' al-hadath).	1	266
34	Issue: If a person dives into a well with the intention of performing a mandatory bath (ghusl), the water will unanimously become 'used' (musta'mal).	2	266
35	Issue: If a person with wudu enters a well, for example, to retrieve a bucket, and there they intend to bathe for spiritual proximity (qurbat), the water becomes 'used' (musta'mal).	1	267
36	Issue: The issue of 'Entering the Well' has many differences of opinion. The refined and reliable view is that if a person in a state of major ritual impurity (junub) or without wudu enters a well, the parts of the body that water passes over become pure. As for the well water, if they entered without necessity, it becomes 'used' (musta'mal), otherwise not. And according to Imam Azam (may Allah have mercy on him), the necessity of retrieving a fallen bucket from the well is not considered valid [enough to prevent water becoming used], so the water will become 'used'.	2	267
37	Issue: A woman during menstruation (haiz) or post-natal bleeding (nifas), if the bleeding has not yet stopped, is like a pure person in the sense that the command for ghusl is not yet applicable. If she enters a well to cool down, the water will not become 'used'. Contrary to after the bleeding stops, as now the command for ghusl is applicable to her; thus if she enters the well without necessity, the water will become 'used'.	3	267
38		4	267

Sr. No.	Topics	Benefit No.	Page No.
	Issue: If a person in a state of junub dives into ten wells to bathe, the water of the first three becomes 'used' because pouring water three times is Sunnah. From the fourth well to the last, the ruling of 'used' will not apply, unless they intend to bathe for spiritual proximity or if ritual impurity occurs after leaving the third well. As for the junub person, whichever part of their body water reaches becomes pure, to the point that if water passes over the entire body during a dive and they rinse their mouth and nose, the ghusl is complete.		
39	Issue: The same rulings that applied to the person in state of junub bathing in ten wells apply to a person in state of minor impurity (muhdith) if, for example, they wash their limbs for wudu in ten wells.	5	267

फ़तावा रज़विया, खंड 4

क्रम संख्या	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
32	मसला: यदि कोई व्यक्ति ठंडक पाने के लिए अपना बिना धुला हाथ पूरा पानी में डाल देता है, तो वह पानी वज़ू के योग्य नहीं रहेगा क्योंकि यह बिना आवश्यकता के है।	3	265
33	मसला: यदि कुएं में डोल गिर जाए और कोई व्यक्ति बिना नहाए उसे निकालने के लिए कुएं में उतरे, तो पानी खराब नहीं होगा जब तक कि उसके शरीर या कपड़ों पर कोई वास्तविक अशुद्धि (नजासत) न हो और वह हदस (अशुद्धि) दूर करने की नियत न करे।	1	266
34	मसला: यदि कोई व्यक्ति ग़ुस्ल (स्नान) उतारने की नियत से कुएं में गोता लगाए, तो सर्वसम्मति से पानी मुस्तअमल (इस्तेमाल किया हुआ) हो जाएगा।	2	266
35	मसला: वज़ू वाला व्यक्ति कुएं में उतरे, उदाहरण के लिए डोल निकालने के लिए, और वहां अल्लाह की निकटता (क़ुर्बत) की नियत से नहाने का इरादा कर ले, तो पानी मुस्तअमल हो जाएगा।	1	267
36	मसला: "मसलतुत बीर हब्त" (कुएं में उतरने का मसला) में बहुत मतभेद हैं और परिष्कृत एवं विश्वसनीय मत यह है कि यदि जुनुब (बड़ी नापाकी की स्थिति में) या बिना वज़ू वाला व्यक्ति कुएं में उतरे, तो उसके शरीर के जितने हिस्सों पर पानी गुजरा वे तो पाक हो गए। जहाँ तक कुएं के पानी की बात है, यदि वह बिना आवश्यकता के उतरा तो पानी मुस्तअमल हो गया अन्यथा नहीं। और इमाम-ए-आज़म रहमतुल्लाहि अलैहि के अनुसार कुएं से गिरे हुए डोल को निकालने की आवश्यकता मान्य नहीं है, अतः पानी मुस्तअमल हो जाएगा।	2	267
37	मसला: यदि मासिक धर्म (हैज़) या प्रसवोपरांत रक्तस्राव (निफ़ास) वाली महिला का खून अभी बंद नहीं हुआ है, तो वह एक पाक व्यक्ति की तरह है क्योंकि अभी तक उस पर ग़ुस्ल का हुक्म लागू नहीं हुआ है। यदि वह ठंडक	3	267

क्रम संख्या	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
	पाने के लिए कुएं में उतरेगी तो पानी मुस्तअमल नहीं होगा। इसके विपरीत रक्त बंद होने के बाद, अब उस पर ग़ुस्ल का हुक्म लागू है, इसलिए यदि वह बिना आवश्यकता के कुएं में जाएगी तो पानी मुस्तअमल हो जाएगा।		
38	मसला: यदि किसी जुनुब (नापाक व्यक्ति) ने नहाने के लिए दस कुओं में गोता लगाया, तो पहले तीन का पानी मुस्तअमल हो गया क्योंकि तीन बार पानी डालना सुन्नत है। चौथे कुएं से अंत तक 'इस्तेमाल' का हुक्म नहीं होगा, सिवाय इस स्थिति के कि वह इबादत की नियत से नहाए या तीसरे कुएं से निकलने के बाद उसे पुनः अशुद्धि लग जाए। जहाँ तक जुनुब का प्रश्न है, उसके शरीर के जितने हिस्से पर पानी पहुँचा वह पाक हो गया, यहाँ तक कि यदि गोते में पूरे शरीर पर पानी गुजर गया और उसने कुल्ली कर ली तथा नाक में पानी पहुँचा दिया तो ग़ुस्ल हो गया।	4	267
39	मसला: जो नियम दस कुओं में नहाने वाले जुनुब व्यक्ति के लिए हैं, वही नियम मुहदिस (बिना वज़ू वाले) के लिए भी हैं, यदि वह उदाहरण के लिए दस कुओं में अपने वज़ू के अंगों को धोए।	5	267

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۳۲	مسئلہ: ٹھنڈک لینے کو ہاتھ ایک پورا ہی بے ڈھلا ڈالے گا تو پانی وضو کے قابل نہ رہے گا کہ یہ بے ضرورت ہے۔	۳	۲۶۵
۳۳	مسئلہ: کنویں میں ڈول گر گیا اس کے نکالنے کو آدمی بے نہائے گھسا پانی خراب نہ ہو گا جبکہ اس کے بدن یا کپڑے پر کوئی نجاستِ حقیقیہ نہ ہو رفعِ حدث کی نیت کرے۔	۱	۲۶۶
۳۴	مسئلہ: اگر غسل اتارنے کی نیت سے کنویں میں غوطہ لگایا پانی بالاتفاق مستعمل ہو جائیگا۔	۲	۲۶۶
۳۵	مسئلہ: باوضو آدمی کنویں میں مثلاً ڈول نکالنے کو گھسا اور وہاں باقصد قربت نہانے کی نیت کر لی پانی مستعمل ہو گیا۔	۱	۲۶۷
۳۶	مسئلہ: مسئلۃ البئر ھبط میں بکثرت اختلافات ہیں اور قولِ منقح و معتمد یہ ہے کہ اگر جنب یا بے وضو کنویں میں گھسے تو اس کے جتنے بدن پر پانی گزرا وہ تو پاک ہو گیا رہا کنویں کا پانی اگر بے ضرورت گھسا تو مستعمل ہو گیا ورنہ نہیں۔ اور کنویں سے گرا ہوا ڈول نکالنے کی ضرورت امام اعظم رحمہ اللہ کے نزدیک معتبر نہیں تو پانی مستعمل ہو جائے گا۔	۲	۲۶۷
۳۷		۳	۲۶۷

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: حیض یا نفاس والی کا بھی خون منقطع نہ ہوا تو وہ مثلِ طاہر ہے کہ ہنوز اس پر حکمِ غسل نہیں اگر ٹھنڈک لینے کو کنویں میں گھسے پانی مستعمل نہ ہو گا۔ بخلاف بعد انقطاع کہ اب اس پر حکمِ غسل متوجہ ہے تو اگر بے ضرورت کنویں میں جائے گی پانی مستعمل ہو جائے گا۔		
۳۸	مسئلہ: جنب نے دس کنووں میں نہانے کیلئے غوطہ لگایا پہلے تین کا پانی مستعمل ہو گیا کہ تین بار تک پانی ڈالنا سنت ہے چوتھے کنویں سے آخر تک حکمِ استعمال نہ ہو گا مگر اس حالت میں کہ بقصد قربت نہانے کی نیت کرے یا تیسرے کنویں سے نکلنے کے بعد حدث واقع ہو جائے، رہا جنب اس کے جتنے بدن پر پانی پہنچا اتنا پاک ہو گیا یہاں تک کہ اگر غوطے میں تمام بدن پر پانی گزر گیا اور کلی کر لی ناک میں پانی پہنچا دیا غسل اتر گیا۔	۴	۲۶۷
۳۹	مسئلہ: جو احکام جنب کے دس کنووں میں نہانے کے گزرے ہیں وہی احکام محدث کے لئے ہیں جبکہ مثلاً دس کنووں میں اپنے اعضاء وضو کیلئے دھوئے۔	۵	۲۶۷

Fatawa Rizwia - Volume 4

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page No.
40	Problem: All sides of a ten-by-ten (dah-dar-dah) water body are equal. Even if visible impurity has fallen into it, performing wudu (ablution) from that specific side is also permissible.	1	26
41	Problem: Performing wudu or ghusl (bath) with the water leftover from a woman's drink or her wudu/ghusl is permissible for a man, just as performing wudu/ghusl with the water leftover from a man is permissible for a woman.	1	270
42	Problem: The research is that according to all our Imams (Allah be pleased with them), used water (Ab-e-Musta'mal) is pure, but it cannot purify from ritual impurity (hadath).	1	273
43	Problem: The research is that no part of ten-by-ten water becomes impure by filth falling into it, even if it is close to the filth and even if the filth is visible.	3	281
44	Problem: A pond or lake is ten-by-ten, but if moss, crops, or other types of things grow in it, even if they are close together, the water will be considered 'Katheer' (abundant), and the places where they grow will be excluded so that it does not become less than ten-by-ten.	1	286
45	Problem: A basin is ten-by-ten and moss has formed on the water. If the feet are put inside to wash during wudu; if the moss is so hard that it doesn't move when the water is stirred, wudu will not be valid; if it is not so hard, it will be.	2	286
46	Problem: Water in a ten-by-ten basin is frozen from ice; if it is still soft enough to break when moved, putting wudu limbs inside and washing them is permissible and wudu will be valid. If it is in hard pieces that do not break by moving, then wudu will not be valid by putting limbs inside; the water surrounded by ice pieces will become 'used' (musta'mal) when a limb needing wudu is put in. Yes, if a hand was put in to take water in a vessel or for a handful, then it is forgiven.	3	286
47		3	290

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page No.
	Problem: A basin is ten-by-ten from the top and smaller from the bottom. As long as it is full, it will not become 'used' by bathing or putting wudu limbs in it, nor will it become impure by filth falling into it. And when water remains only at the bottom part, or is filled only that much from the start where it is less than ten-by-ten, it will become 'used' by wudu and impure by filth.		
48	Problem: If a basin is ten-by-ten at the bottom and smaller at the top, then as long as the water is up to the ten-by-ten part at the bottom, it will neither become impure by filth nor 'used' by wudu or ghusl. If it is filled completely where the top surface is less than ten-by-ten, it will become 'used' as well as impure by filth, i.e., the upper part until where it is less than ten-by-ten (will be affected), the lower part will remain pure. This is the most correct view. Hindiyah from Al-Muheet.	4	290

फ़तावा रज़विया - जिल्द चौथी

क्रम संख्या	शीर्षक (उनवानात)	फायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
40	मसला: दस-दर-दस (दह दर दह) पानी के सभी किनारे बराबर हैं। अगर उसमें दिखाई देने वाली नजासत (गंदगी) भी पड़ी हो, तो भी विशेष रूप से उस ओर से भी वज़ू करना जायज़ है।	1	26
41	मसला: औरत के पिये हुए या उसके वज़ू या ग़ुस्ल से बचे हुए पानी से मर्द को, और इसी तरह मर्द के बचे हुए पानी से औरत को वज़ू और ग़ुस्ल करना जायज़ है।	1	270
42	मसला: तहक़ीक़ (शोध) यह है कि हमारे सभी इमामों (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के नज़दीक प्रयुक्त जल (आब-ए-मुस्तअमल) पाक है, लेकिन वह अशुद्धि (हदस) से पवित्र करने वाला नहीं है।	1	273
43	मसला: तहक़ीक़ यही है कि दस-दर-दस पानी का कोई भी हिस्सा नजासत गिरने से नापाक नहीं होता, चाहे वह हिस्सा नजासत के बिल्कुल पास ही क्यों न हो और चाहे नजासत दिखाई ही क्यों न दे रही हो।	3	281
44	मसला: तालाब या झील दस-दर-दस है, लेकिन उसमें काई या खेती या अन्य प्रकार की चीजें उगी हुई हैं, भले ही वे पास-पास हों, पानी 'कसीर' (अधिक) ही माना जाएगा और उनके उगने का स्थान छोड़कर भी वह दस-दर-दस से कम नहीं माना जाएगा।	1	286
45	मसला: हौज दस-दर-दस है और पानी पर काई जमी हुई है। वज़ू में पैर उसके अंदर डालकर धोएं अगर काई इतनी सख्त है कि पानी को हिलाने से वह नहीं हिलती, तो वज़ू नहीं होगा और अगर ऐसी नहीं है, तो हो जाएगा।	2	286
46	मसला: बर्फ से दस-दर-दस हौज का पानी जम गया। अगर अभी नरम है कि हिलाने से फट जाता है, तो वज़ू के अंगों को उसके अंदर डालकर धोना जायज़ है और वज़ू हो जाएगा। और अगर सख्त टुकड़े-टुकड़े हैं जो हिलाने	3	286

क्रम संख्या	शीर्षक (उनवानात)	फायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
	से नहीं टूटते, तो अंग उसके अंदर डालकर धोने से वज़ू नहीं होगा। बर्फ के टुकड़ों के बीच घिरा हुआ वह पानी, जिसमें बिना वज़ू वाला अंग डाला गया, मुस्तअमल हो जाएगा। हाँ, बर्तन से पानी निकालने या चुल्लू लेने के लिए हाथ डाला, तो यह माफ़ है।		
47	मसला: हौज ऊपर से दस-दर-दस है और नीचे से कम, तो जब तक वह भरा हुआ है, न तो उसमें नहाने या वज़ू के अंग डालने से वह मुस्तअमल होगा और न ही नजासत गिरने से नापाक होगा। और जब पानी सिर्फ नीचे रह जाए या पहले से ही इतना भरा हो जहाँ वह दस-दर-दस से कम है, तो वज़ू करने से मुस्तअमल हो जाएगा और नजासत गिरने से नापाक।	3	290
48	मसला: अगर हौज नीचे से दस-दर-दस है और ऊपर से कम, तो जब तक पानी नीचे वाले दस-दर-दस हिस्से तक है, न तो वह नजासत से नापाक होगा और न ही वज़ू व ग़ुस्ल से मुस्तअमल। और अगर पूरा भर दिया जाए जहाँ ऊपर की सतह दस-दर-दस से कम है, तो वह मुस्तअमल भी हो जाएगा और नजासत से नापाक भी, यानी ऊपर का हिस्सा जहाँ तक वह दस-दर-दस से कम है, नीचे का हिस्सा पाक ही रहेगा। यही सबसे सही (असह) बात है। हिन्दिया अनुल मुहीत।	4	290

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۴۰	مسئلہ : دہ دردہ پانی کی سب جوانب یکساں ہیں۔ نجاست نظر آنے والی پڑی ہو جب بھی خاص اس طرف سے بھی وضو جائز ہے۔	۱	۲۶
۴۱	مسئلہ : عورت کے پئے ہوئے یا اس کے وضو یا غسل سے بچے ہوئے پانی سے مرد کو یوں ہی مرد کے بقیہ سے عورت کو وضو و غسل جائز ہے۔	۱	۲۷۰
۴۲	مسئلہ : تحقیق یہ ہے کہ ہمارے سب ائمہ رضی اللہ عنہم کے نزدیک آب مستعمل پاک ہے اور حدث سے پاک کرنے والا نہیں۔	۱	۲۷۳
۴۳	مسئلہ : تحقیق یہ ہی ہے کہ دہ دردہ پانی کا کوئی حصہ نجاست گرنے سے ناپاک نہیں ہوتا اگرچہ خاص اس کے پاس کا، اگرچہ نجاست نظر آنے کی ہو۔	۳	۲۸۱
۴۴	مسئلہ : تالاب یا جھیل دہ دردہ ہے مگر اس میں کائی یا کھیتی یا اور قسم کی اشیاء اگی ہیں اگرچہ قریب قریب ہوں پانی کثیر ہی مانا جائیگا اور ان کے اگنے کی جگہ مستثنی ہو کر دہ دردہ سے کم نہ قرار پائے گا۔	۱	۲۸۶
۴۵	مسئلہ : حوض دہ دردہ ہے اور پانی پر کائی جمی ہوئی ہے وضو میں پاؤں اس کے اندر ڈال کر دھوئے اگر کائی اتنی سخت ہے کہ پانی کو ہلانے سے جنبش نہ کرے گی تو وضو نہ ہوگا اور اگر ایسی نہیں تو ہو جائے گا۔	۲	۲۸۶
۴۶		۳	۲۸۶

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ : برف سے دہ دردہ حوض کا پانی جم گیا اگر ابھی نرم ہے کہ جنبش دینے سے پھٹ جاتا ہے تو اعضاء وضو اس کے اندر ڈال کر دھونا جائز ہے وضو ہو جائے گا اور اگر سخت ٹکڑے ٹکڑے ہیں کہ ہلانے سے نہیں ٹوٹتے تو اعضاء اس کے اندر ڈال کر دھونے سے وضو نہ ہوگا اتنا پانی برف کے ٹکڑوں میں گھرا ہوا اس کے اندر عضو بے وضو ڈالا مستعمل ہو جائیگا ، ہاں برتن پانی نکالنے کو نہیں چلو لینے کو ہاتھ ڈالا تو یہ معاف ہے۔		
	مسئلہ : حوض اوپر سے دہ دردہ ہے اور نیچے سے کم تو جب تک بھرا ہے نہ اس میں نہانے یا اعضاء وضو ڈالنے سے مستعمل ہوگا نہ نجاست پڑنے		
۴۷	سے ناپاک اور جب پانی صرف نیچے اتنی جگہ رہ جائے یا اول سے اتنا ہی بھرا ہو جہاں دہ دردہ سے کم ہے، تو وضو سے مستعمل ہو جائیگا اور نجس سے ناپاک۔	۳	۲۹۰
	مسئلہ : اگر حوض نیچے دہ دردہ اور اوپر کم ہے تو جب تک پانی نیچاہ دہ دردہ کی جگہ تک ہے نہ نجاست سے ناپاک ہوگا نہ وضو و غسل سے		
۴۸	مستعمل اور اگر پورا بھر دیا جہاں بالائی سطح دہ دردہ سے کم ہے تو مستعمل بھی ہو جائے گا اور نجاست سے ناپاک بھی یعنی اوپر کا حصہ جہاں تک دہ دردہ سے کم ہے نیچے کا حصہ پاک رہے گا یہی اصح ہے ہندیہ عن المحیط۔	۴	۲۹۰

Fatawa Rizvia, Volume 4

Serial No.	Titles	Point No.	Page No.
49	Problem: This is a jurisprudential riddle: what is the water which, as long as it is abundant, bathing in it makes it 'used' (mustamal) and falling of impurity makes it impure, but when it decreases, it becomes neither used nor impure.	5	290
50	Problem: The correct view is that it is not necessary for water to be in a ten-by-ten (dah-dar-dah) square. It only needs to be in an area of one hundred square hands. If it is one hundred hands long and one hand wide, or two hundred hands long and one span wide, then it is also considered ten-by-ten. And the author's research in this matter.	6	290
51	Problem: A branch of a small pond is taken out from a large pond, pool or river, whose enclosure is separate from its enclosure. Apparently, it will not be considered separate water as all water is mixed. So this pond itself, even if not ten-by-ten, should not become impure due to impurity, nor should putting limbs of one without wudu into it make it 'used' (mustamal) as it is a part of that large body of water. However, Khaniya states the opposite.	1	293
52	Problem: In a small pond, water enters from one side and leaves from the other. It is absolutely running water (aab-e-jari), even if it is wide enough that water seems to pause to spread before exiting, rather than flowing out instantly. In any case, it will not be made impure by impurity.	2	293
53	Problem: There are springs in a pool less than ten-by-ten, with a channel on its slope. Water constantly boils up from the springs and leaves through the channel. This pool is under the ruling of a flowing spring and will not become impure from impurity. This is the correct view, and the specific place from where the water drains out is unanimously considered flowing.	3	293
54	Problem: No matter how much water from wudu or ghusl is poured into a well, if there is no impurity in it, the well will	2	301

Serial No.	Titles	Point No.	Page No.
	remain pure and the water will not even become 'used' (mustamal). As long as the amount of 'used' water does not exceed the amount of water in the well, there is no need to take out even a single bucket.		
55	Problem: If a person without wudu or one in a state of ritual impurity (junub) enters a well, the water will become 'used' (mustamal). To make it purifying (mutahhir) again, twenty (20) buckets must be drawn out.	1	308

फतावा रिज़विया, जिल्द 4

क्रम सं.	शीर्षक	फायदा नं.	पृष्ठ सं.
49	मसला: यह एक फ़िक़्ही (कानूनी) पहेली है: वह कौन सा पानी है जो जब तक प्रचुर मात्रा में है, उसमें नहाने से वह 'मुस्तमल' (इस्तेमाल किया हुआ) हो जाएगा और गंदगी गिरने से अपवित्र, लेकिन जब वह कम हो जाए, तो वह न तो मुस्तमल रहेगा और न ही अपवित्र।	5	290
50	मसला: सही बात यही है कि पानी का दस-बाई-दस (दह-दर-दह) हाथ चौकोर होना ज़रूरी नहीं है, बल्कि सौ वर्ग हाथ के क्षेत्रफल में होना काफ़ी है। अगर यह सौ हाथ लंबा और एक हाथ चौड़ा हो, या दो सौ हाथ लंबा और एक बालश्त चौड़ा हो, तो वह भी दस-बाई-दस ही माना जाएगा। और इस बारे में लेखक के शोध।	6	290
51	मसला: एक बड़े हौज़, तालाब या नदी से एक छोटे हौज़ की शाखा निकाली गई जिसका घेरा उसके घेरे से अलग है। ज़ाहिर है कि यह अलग पानी नहीं समझा जाएगा क्योंकि सारा पानी आपस में मिला हुआ है। इसलिए यह हौज़ स्वयं भले ही दस-बाई-दस न हो, गंदगी से अपवित्र नहीं होना चाहिए, और बिना वज़ू वाले अंगों को इसमें डालने से यह 'मुस्तमल' नहीं होना चाहिए क्योंकि यह उसी बड़े पानी का हिस्सा है। हालाँकि, 'ख़ानिया' में इसके विपरीत उल्लेख है।	1	293
52	मसला: एक छोटे हौज़ में पानी एक तरफ से आता है और दूसरी तरफ से निकल जाता है। वह पूरी तरह से 'आब-ए-जारी' (बहता पानी) है, भले ही वह इतना चौड़ा हो कि पानी उसमें फैलने के लिए रुकता हुआ निकले और तुरंत न निकल जाए। बहरहाल, वह गंदगी से अपवित्र नहीं होगा।	2	293
53	मसला: दस-बाई-दस से कम के एक चश्मे (कुंड) में सोत (पानी के सोते) हैं और उसके ढलान की तरफ एक नाली है। पानी हर समय सोतों से उबलता है और नाली से निकलता है। तो यह चश्मा 'जारी' (बहते हुए) के हुक्म में है और गंदगी	3	293

क्रम सं.	शीर्षक	फायदा नं.	पृष्ठ सं.
	से अपवित्र नहीं होगा। यही सही है और जहाँ से पानी निकलता है वह तो सर्वसम्मति से 'जारी' है।		
54	मसला: कुएँ में वज़ू या गुस्ल का कितना ही पानी डाल दिया जाए, अगर उसमें कोई गंदगी न हो, तो कुआँ पाक ही रहेगा और वह पानी 'मुस्तमल' भी नहीं होगा। जब तक मुस्तमल पानी की मात्रा कुएँ के पानी से ज़्यादा न हो जाए, तब तक उससे एक डोल निकालने की भी ज़रूरत नहीं है।	2	301
55	मसला: यदि बिना वज़ू वाला व्यक्ति या 'जुनुब' (नापाक व्यक्ति) कुएँ में घुस जाए, तो पानी 'मुस्तमल' हो जाएगा। उसे फिर से 'मुतह्हिर' (पाक करने वाला) बनाने के लिए बीस (20) डोल पानी निकाला जाना चाहिए।	1	308

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۴۹	مسئلہ: یہ فقہی چیستان ہے کہ کون سا پانی ہے کہ جب تک کثیر ہے اس میں نہانے سے مستعمل ہو جائے گا اور نجاست پڑنے سے ناپاک، لیکن جب گھٹ جائے تو اب نہ مستعمل ہو نہ نجس۔	۵	۲۹۰
۵۰	مسئلہ: صحیح یہی ہے کہ پانی کا دہ در دہ مربع ہونا کچھ ضروری نہیں صرف سو ہاتھ کی مساحت میں ہونا درکار ہے اگر سو ہاتھ طول ایک ہاتھ عرض یا دو سو ہاتھ طول ایک بالشت عرض ہے تو وہ بھی دہ در دہ ہے۔ اور اس بارہ میں مصنف کی تحقیقات۔	۶	۲۹۰
۵۱	مسئلہ: بڑے حوض یا تالاب یا دریا سے ایک چھوٹے حوض کی شاخ نکالی جس کا احاطہ اس کے احاطہ سے جدا ہے بظاہر یہ جدا پانی نہ سمجھا جائے گا کہ سب پانی ملا ہوا ہے، تو خود یہ حوض اگرچہ دہ در دہ نہ ہو نجاست سے ناپاک نہ ہونا چاہئے بے وضو اعضاء اس میں ڈالنے سے مستعمل نہ ہو کہ اسی بڑے پانی کا ٹکڑا ہے، مگر خانیہ میں اس کے خلاف ہے۔	۱	۲۹۳
۵۲	مسئلہ: ایک چھوٹے حوض میں پانی ایک طرف سے آتا دوسری طرف سے نکل جاتا ہے۔ وہ مطلقاً آب جاری ہے اگرچہ اتنا چوڑا ہو کہ پانی اس میں پھیلنے کے لئے رکتا ہوا نکلے فوراً نکلا چلا نہ جائے بہر حال نجاست سے ناپاک نہ ہوگا۔	۲	۲۹۳

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۵۳	مسئلہ: دہ در دہ سے کم ایک چشمہ میں سوت ہیں اور اس کے ڈھال کی طرف نالی ہے پانی ہر وقت سوتوں سے ابلتا اور نالی سے نکلتا ہے۔ تو یہ چشمہ جاری کے حکم میں ہے نجاست سے ناپاک نہ ہو گا یہی صحیح ہے اور خاص جہاں سے پانی کا نکاس ہے وہ تو بالاتفاق جاری ہے۔	۳	۲۹۳
۵۴	مسئلہ: کنویں میں وضو یا غسل کا پانی کتنا ہی ڈال دیا جائے اگر اس میں کچھ نجاست نہ ہو کنواں پاک تو رہے گا ہی مستعمل بھی نہ ہوگا۔ جب تک مستعمل پانی کنویں کے پانی سے مقدار میں زیادہ نہ ہو اور اس سے ایک ڈول نکالنے کی بھی حاجت نہیں۔	۲	۳۰۱
۵۵	مسئلہ: بے وضو یا جنب کنویں میں گھسے پانی مستعمل ہو جائے گا اس کے مطہر کرنے کو بیس ۲۰ ڈول نکالے جائیں۔	۱	۳۰۸

صفحہ 761 میں سے 641

Fatawa Razawiyya Volume 4

Serial No.	Titles/Topics	Note No.	Page No.
56	Issue: Large reservoirs are built in the wild in Arab countries which fill with rainwater and serve as storage for use. Investigation of their ruling: they do not come under the ruling of a well. If impurity falls in, removing some buckets like from a well won't suffice, except in case of extreme difficulty.	2	308
57	Issue: A container (goli), no matter how large, even if half-buried in the ground, cannot be under the ruling of a well. If impure water falls into it without necessity, removing some buckets will not suffice to make it pure or purifying. Rather, the method is to fill it to the brim with good water and let it overflow.	5	30
58	Issue: If there are reeds or crops in the water, even if they are close together, their area will not be considered less than ten-by-ten (dah-dar-dah).	1	315
59	Issue: If the color, smell, or taste of the impurity itself appears in a large body of water (ab-e-kathir), it becomes impure. However, things that became impure due to impurity, like rose water, vinegar, or saffron, their color, smell, or taste is not considered.	1	320
60	Issue: If a pool is an equilateral triangle, each of its sides must be 15 1/5 cubits for its area to be equal to a ten-by-ten square.	4	328
61	Issue: According to another opinion, for an equilateral triangular pool to be ten-by-ten, each side should be 21 1/2 cubits and 3/8 girah.	1	329
62	Issue: If a wine drinker has long moustaches and wine gets on them, as long as the moustaches are not purified, whatever water he drinks, both the water and the vessel will become impure.	6	332
63	Issue: If platforms are made on a riverbank for taking water or performing ablution by using planks, if that area enclosed by planks is ten-by-ten, or if the river water is below the planks, then it's clearly a large body of water in every way. But if the water meets the planks and this area is less than ten-by-ten, it will be	1	341

Serial No.	Titles/Topics	Note No.	Page No.
	considered a separate pool and will become impure with impurity and used (musta'mal) with use. Apparently, this condition is based on the extension of both length and width. And Allah knows best.		
64	Issue: The water of a large pond has frozen into ice. Ice was broken from one place and opened up. Its ruling is also like that of the aforementioned platform.	2	341

फतावा रज़विया जिल्द 4

क्रम संख्या	शीर्षक	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
56	मसला: अरब शरीफ में बड़े-बड़े हौज जंगल में बनाए जाते हैं जो बारिश के पानी से भरते हैं और खर्च के लिए खजाने के रूप में रहते हैं। उनके हुक्म की तहकीक कि वे कुएं के हुक्म में नहीं हैं। यदि उनमें नजसत (गंदगी) गिर जाए, तो कुएं की तरह कुछ डोल निकालना काफी नहीं होगा, सिवाय बहुत कठिनाई की स्थिति में।	2	308
57	मसला: गोली (एक प्रकार का पात्र) चाहे कितनी भी बड़ी हो, चाहे वह आधी ज़मीन में गड़ी हो, कुएं के हुक्म में नहीं हो सकती। अपवित्र पानी बिना किसी ज़रूरत के गिरने पर उसे पवित्र या शोधक बनाने के लिए कुछ डोल निकालना काफी नहीं होगा, बल्कि इसका सही तरीका यह है कि इसे अच्छे पानी से लबालब भर कर बहा दें।	5	30
58	मसला: पानी में सरकंडा या फसल अगर पास-पास भी हो, तो उसके क्षेत्रफल को 'दह-दर-दह' (10x10) से कम नहीं माना जाएगा।	1	315
59	मसला: यदि आब-ए-कसीर (बड़ी जलराशि) में स्वयं नजसत का रंग, गंध या स्वाद आ जाए तो वह नापाक हो जाएगा। नजसत से जो चीज नापाक हुई हो जैसे गुलाब जल, सिरका या केसर, उनके रंग, गंध या स्वाद का एतबार नहीं है।	1	320
60	मसला: यदि हौज समबाहु त्रिभुज (equilateral triangle) हो, तो सवा हाथ क्षेत्रफल होने के लिए उसकी प्रत्येक भुजा 15 1/5 होनी चाहिए।	4	328
61	मसला: दूसरे मत के अनुसार, समबाहु त्रिभुजाकार हौज के'दह-दर-दह' होने के लिए प्रत्येक भुजा 21 1/2 हाथ 3/8 गिरह होनी चाहिए।	1	329
62	मसला: शराब पीने वाले की मूंछें बड़ी हों और उन पर शराब लग गई हो, तो जब तक मूंछें पाक न हो जाएं, वह जो पानी पिएगा, वह पानी और बर्तन दोनों नापाक हो जाएंगे।	6	332

क्रम संख्या	शीर्षक	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
63	मसला: नदी के किनारे पानी लेने या वज़ू करने के लिए तख्तों से घाट बनाए गए हों, यदि वह हिस्सा तख्तों से घिरा हुआ 'दह-दर-दह' है या नदी का पानी तख्तों से नीचे है, तो ज़ाहिर है कि वह हर तरह से आब-ए-कसीर है। और यदि पानी तख्तों से आकर मिल गया और यह हिस्सा 'दह-दर-दह' से कम है, तो इसे अलग हौज माना जाएगा और नजसत से नापाक और इस्तेमाल से मुस्तअमल (प्रयुक्त) हो जाएगा। ज़ाहिर तौर पर यह शर्त लंबाई और चौड़ाई दोनों के विस्तार पर आधारित है। वल्लाहु तआला आलम।	1	341
64	मसला: बड़े तालाब का पानी बर्फ बनकर जम गया है। एक जगह से बर्फ तोड़कर कुछ हिस्सा खोला गया, तो उसका हुक्म भी उसी घाट की तरह है।	2	341

فتاوی رضویہ جلد چہارم

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۵۶	مسئلہ: عرب شریف میں بڑے بڑے حوض جنگل میں بنائے جاتے ہیں جو بارش کے پانی سے بھرتے اور خرچ کے لئے خزانہ رہتے ہیں ان کے حکم کی تحقیق کہ وہ کنوئیں کے حکم میں نہیں نجاست پڑے تو کنوئیں کی طرح کچھ ڈول نکالنا کافی نہ ہوگا مگر بحالت حرج۔	۲	۳۰۸
۵۷	مسئلہ: گولی اگرچہ کتنی بڑی ہو اگرچہ آدھی زمین میں گڑی ہو کنوئیں کے حکم میں نہیں ہوسکتی ناپاک پانی بے ڈھلا بے ضرورت پڑنے پر اسے پاک یا مطہر کرنے کیلئے کچھ ڈول کافی نہ ہوں گے بلکہ اس کا یہی طریقہ ہے کہ اچھے اچھے پانی سے لبریز کر کے ابال دیں۔	۵	۳۰
۵۸	مسئلہ: پانی میں نرکل یا کھیتی اگرچہ قریب قریب ہو اس کی مساحت کو دہ در دہ سے کم نہ کریں گے۔	۱	۳۱۵
۵۹	مسئلہ: آب کثیر میں خود عین نجاست کا رنگ یا بو یا مزہ آجائے تو ناپاک ہوگا نجاست سے جو چیز ناپاک ہوئی جیسے گلاب یا سرکہ یا زعفران اس کے رنگ بو مزے کا اعتبار نہیں۔	۱	۳۲۰
۶۰	مسئلہ: حوض اگر مثلث متساوی الاضلاع ہو سوا ہاتھ مساحت ہونے کیلئے اس کی ہر ضلع ۱۵ ۱/۵ ہونی چاہئے۔	۴	۳۲۸

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۶۱	مسئلہ: دوسرے قول پر حوض مثلث متساوی الاضلاع کے دہ در دہ ہونے کے لئے ہر ضلع ۲۱ ۱/۲ ہاتھ ۳/۸ گرہ ہونا چاہئے۔	۱	۳۲۹
۶۲	مسئلہ: شراب خور کی مونچھیں بڑی ہوں ان کو شراب لگ گئی جب تک مونچھیں پاک نہ ہو جائیں جو پانی پیئے گا پانی اور برتن دونوں ناپاک ہو جائیں گے۔	۶	۳۳۲
۶۳	مسئلہ: نہر کے کنارے پانی لینے وضو کرنے کو تختہ بندی کر کے گھاٹ بنائے اگر وہ حصہ کو تختوں نے گھیرادہ دردہ ہے یا نہر کا پانی تختوں سے نیچے ہے جب تو ظاہر ہے کہ ہر طرح آب کثیر ہے اور گر پانی تختوں سے آکر مل گیا اور یہ حصہ دہ دردہ سے کم ہے تو یہ جدا حوض مانا جائے گا اور نجاست سے نجس اور استعمال سے مستعمل ہو جائیگا ظاہر ایہ اشتراط ہر دو امتداد طول و عرض پر مبنی ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔	۱	۳۴۱
۶۴	مسئلہ: بڑے تالاب کا پانی برف سے جم گیا ایک جگہ سے برف توڑ کر کچھ کھول لیا اس کا بھی حکم اسی گھاٹ کی طرح ہے۔	۲	۳۴۱

Fatawa Razawiyya Volume IV

S.No	Titles	Benefit No.	Page No.
65	Issue: In these cases, it will be used or impure only if that specific spot or piece of ice which was used or where impurity fell is removed. Taking water from another adjacent spot or after removing ice is pure and purifying.	3	341
66	Issue: If a branch is taken from a large pond into a small pond, this pond will be considered separate. It will become impure and non-purifying by impurity and use. Its apparent basis is also on this condition. Allah knows best.	4	341
67	Issue: A protruding corner in a canal, pond, or large reservoir that is less than two and a half cubits wide will not be considered an independent reservoir; it will follow the large one. Yes, if it is two and a half cubits wide, it is independent.	1	342
68	Issue: Water is spread in a ten-by-ten (dah-dar-dah) area such that it did not become impure by impurity falling. If this same water, after impurity falls, shrinks into a small space, it will still remain pure provided no impurity remains; otherwise, it will now become impure. For example, there is a drain to drain water from a ten-by-ten reservoir. A dead mouse fell into the reservoir; it did not become impure because it is 'Ab-e-Katheer' (abundant water). Now that drain was opened, and there is a well equal to the reservoir. Water came out and collected in the well. If the mouse was taken out and thrown away or did not come into the well with the water, the well is pure. If the mouse also came into the well, then it is now impure.	1	343
69	Issue: Impurity fell into a well which is equal to a ten-by-ten reservoir. Water was drawn and put into a reservoir such that it spread in a ten-by-ten space; it will not become pure through this, even if the impurity was taken out and thrown away.	2	343
70	Issue: Impurity fell into a large pond such that it did not become impure. Now, no matter how much it decreases due to excessive	1	344

S.No	Titles	Benefit No.	Page No.
	use or extreme heat, it will not be impure if the impurity is no longer there.		
71	Issue: There is water at the bottom of a large pond; impurity fell so it became impure. Now even if you take out the impurity and fill it to the brim, according to the rulings of common books, it will remain impure until it overflows.	2	344
72	Issue: The general rule is that the abundance or scarcity of water is looked at the time it meets impurity. If it was abundant at that time, it will not become impure even if it decreases or shrinks, provided the impurity is not present then. And if it was scarce at that time, it will not become pure even if it increases or spreads until it flows after mixing with pure water.	3	344

फतावा रज़विया जिल्द चौथी

क्रम संख्या	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
65	मसला: इन सूरतों में मुस्तअमल (इस्तेमाल किया हुआ) या नापाक होगा तो सिर्फ वही घाट या बर्फ हटाया हुआ टुकड़ा जिसमें इस्तेमाल या वुक़ूअ-ए-नजासत (नजासत गिरना) हुआ, बराबर का दूसरा घाट या बर्फ हटाकर जो पानी लें वह ताहिर मुतहर (पाक और पाक करने वाला) है।	3	341
66	मसला: बड़े हौज से एक छोटे हौज की शाख (धारा) निकाली तो यह हौज जुदा समझा जाएगा। नजासत और इस्तेमाल से नापाक व नामुतहर हो जाएगा। ज़ाहिर है इसकी बुनियाद भी इसी शर्त पर है। वल्लाहु तआला आलम।	4	341
67	मसला: नहर या तालाब या हौज-ए-कलां (बड़े हौज) में जो बाहर निकला हुआ कुंज (कोना) ढाई हाथ से कम चौड़ा हो, स्वतंत्र हौज नहीं गिना जाएगा। वह उसी बड़े हौज के ताबे (अधीन) रहेगा। हाँ, ढाई हाथ चौड़ा स्वतंत्र है।	1	342
68	मसला: पानी दह-दर-दह (दस बाई दस) जगह में फैला हुआ है कि नजासत पड़ने से नापाक न हुआ। यही पानी नजासत पड़ने के बाद अगर सिमट कर थोड़ी जगह में हो जाए तब भी पाक ही रहेगा बशर्ते कि नजासत बाकी न रही हो वरना अब नापाक हो जाएगा। मसलन दह-दर-दह हौज में पानी निकाल देने के लिए एक नाली है। हौज में मरा हुआ चूहा गिर गया, नापाक न हुआ क्योंकि आब-ए-कसीर (बहुत अधिक पानी) है। अब वह नाली खोल दी और हौज के बराबर एक कुआँ है, पानी निकल कर कुएँ में जमा हो गया। अगर चूहा निकाल कर फेंक दिया या पानी के साथ कुएँ में नहीं आया तो कुआँ पाक है और चूहा भी कुएँ में आ गया तो अब नापाक हो गया।	1	343
69	मसला: कुएँ में नजासत गिरी जो दह-दर-दह हौज के बराबर है। पानी खींच कर हौज में डाल दिया कि दह-दर-दह जगह में फैल गया। इससे वह पाक नहीं हो जाएगा चाहे नजासत निकाल कर फेंक दी गई हो।	2	343

क्रम संख्या	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
70	मसला: बड़े तालाब में नजासत पड़ी कि नापाक न हुआ। अब वह कसरत-ए-खर्च (ज़्यादा इस्तेमाल) या शिद्दत-ए-गर्मी से सूख कर कितना ही कम रह जाए, नापाक न होगा अगर नजासत अब बाकी नहीं है।	1	344
71	मसला: बड़े तालाब की तली में पानी है, नजासत पड़ी कि नापाक हो गया। अब चाहे नजासत निकाल कर लबालब भर भी दें, आम किताबों के हुक्म के मुताबिक वह नापाक ही रहेगा जब तक छलक कर उबल न जाए।	2	344
72	मसला: कुलिया (नियम) यह है कि पानी की कसरत (ज़्यादा) और किल्लत (कम) नजासत से मिलते वक़्त देखी जाती है। अगर उस वक़्त कसीर (ज़्यादा) था तो घट या सिमट कर भी नापाक न होगा जबकि नजासत उस वक़्त बाकी न हो। और अगर उस वक़्त क़लील (कम) था तो बढ़ या फैल कर भी पाक न होगा जब तक पाक पानी से मिल कर जारी न हो जाए।	3	344

فتاوی رضویہ جلد چہارم

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: ان صورتوں میں مستعمل یا ناپاک ہوگا تو صرف وہی گھاٹ یا برف		
۶۵	ہٹایا ہوا ٹکڑا جس میں استعمال یا وقوع نجاست ہوا برابر کا دوسرا گھاٹ یا برف ہٹا کر جو پانی لیں طاہر مطہر ہے۔	۳	۳۴۱
	مسئلہ: بڑے حوض سے ایک چھوٹے حوض کی شاخ نکالی تو یہ حوض جدا		
۶۶	سمجھا جائیگا نجاست اور استعمال سے ناپاک و نامطہر ہو جائے گا ظاہر اس کی بناء بھی اسی اشتراط پر ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔	۴	۳۴۱
	مسئلہ: نہر یا تالاب یا حوض کلاں میں جو باہر نکلا ہوا کنج ڈھائی ہاتھ سے کم		
۶۷	چوڑا ہو مستقل حوض نہ شمار کیا جائیگا اسی کبیر کا تابع رہے گا ، ہاں ڈھائی ہاتھ چوڑا مستقل ہے۔	۱	۳۴۲
	مسئلہ: پانی دہ دردہ جگہ میں پھیلا ہوا ہے کہ نجاست پڑنے سے ناپاک نہ ہوا یہی پانی نجاست پڑنے کے بعد اگر سمٹ کر تھوڑی جگہ میں ہو جائے جب بھی پاک ہی رہے گا بشرطیکہ نجاست باقی نہ رہی ورنہ اب ناپاک ہو جائے گا۔		
۶۸	مثلاً دہ دردہ حوض میں پانی نکال دینے کو ایک نالی ہے حوض میں مردہ چوہا گر گیا ناپاک نہ ہوا کہ آب کثیر ہے اب وہ نالی کھول دی اور حوض کے برابر ایک کنواں ہے پانی نکل کر کنویں میں جمع ہو گیا اگر چوہا نکال کر	۱	۳۴۳

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	پھینک دیا یا پانی کے ساتھ کنویں میں نہ آیا کنواں پاک ہے اور چوہا بھی کنویں میں آگیا تو اب ناپاک ہو گیا۔		
	مسئلہ: کنویں میں نجاست گری برابر دہ دردہ حوض ہے پانی کھینچ کر حوض		
۶۹	میں ڈال دیا کہ دہ دردہ جگہ میں پھیل گیا اس سے پاک نہ ہو جائے گا اگرچہ نجاست نکال کر پھینک دی ہو۔	۲	۳۴۳
	مسئلہ : بڑے تالاب میں نجاست پڑی کہ ناپاک نہ ہوا اب وہ کثرت خرچ یا شدت		
۷۰	گرما سے سوکھ کر کتنا ہی کم رہ جائے ناپاک نہ ہوگا اگر نجاست ہنوز باقی نہیں۔	۱	۳۴۴
	مسئلہ: بڑے تالاب کی تلی میں پانی ہے نجاست پڑی کہ ناپاک ہو گیا۔ اب چاہے		
۷۱	نجاست نکال کر لبالب بھر بھی دیں عام کتب متداولہ کے حکم سے ناپاک ہی رہے گا جب تک چھلک کر اُبل نہ جائے۔	۲	۳۴۴
	مسئلہ: کلیہ یہ ہے کہ پانی کی کثرت وقلت نجاست سے ملتے وقت دیکھی جاتی ہے اگر اس وقت کثیر تھا تو گھٹ یا سمٹ کر بھی ناپاک نہ ہو گا جبکہ نجاست		
۷۲	اس وقت باقی نہ ہو اور اگر اس وقت قلیل تھا تو بڑھ یا پھیل کر بھی پاک نہ ہوگا جب تک پاک سے مل کر جاری نہ ہو۔	۳	۳۴۴

Fatawa Rizwia, Volume 4

Serial Number	Titles	Benefit Number	Page Number
73	Ruling: Every flowing thing becomes pure by flowing together with a pure substance of its kind or pure water.	1	325
74	Ruling: In this flowing, length, width, or depth is not a condition; even in a small plate, it will become pure by overflowing.	2	325
75	Ruling: There are three conditions for this flowing: first, a pure substance like water or that impure item (e.g., milk or oil) entering the vessel; second, some of it flowing out from the other side; and third, this entry and exit occurring simultaneously at the end.	3	325
76	Ruling: If impure water is at the bottom of a pool or bowl and it is filled with pure water until it is brimful, it will remain impure. When it overflows, both the water and the place will become pure.	4	325
77	Ruling: Water is coming into a bathhouse pool from a tap, and people are constantly taking water from it so that the movement of the water does not stop. In this state, it will not become impure due to filth (najis) because it is flowing. Yes, if impurity falls after the movement stops, or if the initial impurity remains, it will then become impure.	1	326
78	Ruling: An ablution pool into which water is coming from a drain while someone is bathing or people are performing ablution, such that the movement of water does not cease. In this case, it will not become impure due to filth. If the water stops and filth falls or remains, it will then be impure.	2	326
79	Ruling: Water is coming into a well from a spring and is being drawn from above with a wheel or bucket so that the water does not settle. In this state, it will not	3	326

Serial Number	Titles	Benefit Number	Page Number
	become impure due to filth. Yes, if impurity remains when it settles, it will become impure.		
80	Ruling: Regarding the overflow condition in this flowing, no specific distance is required for it to flow away; rather, it becomes pure as soon as it overflows because it is considered flowing. As long as it continues to overflow, the rule of flowing will apply. It will not become impure by any filth. When the overflowing stops and it is not a large body of water (dah dar dah), then if filth falls or the previous filth is still present, it will become impure.	4	326

फ़तावा रिज़विया, खंड 4

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
73	मसला: हर बहने वाली चीज़ अपनी तरह की पाक चीज़ या पाक पानी के साथ मिलकर बहने से पाक हो जाती है।	1	325
74	मसला: इस बहने में लंबाई, चौड़ाई या गहराई की कोई शर्त नहीं है; छोटी सी थाली में भी उबलने (छलकने) से पाक हो जाएगा।	2	325
75	मसला: इस बहने में तीन शर्तें हैं: एक तरफ से पानी या उसी नापाक हुई चीज़ (जैसे दूध या तेल) की पाक चीज़ का उस बर्तन में दाखिल होना; दूसरी तरफ से उसका कुछ हिस्सा बहना; और यह दाखिला और निकलना आखिर में एक साथ होना।	3	325
76	मसला: हौज या कटोरे में जो नापाक पानी नीचे है और उसे पाक पानी से लबालब भर दिया जाए, तो जब तक वह भरता रहेगा नापाक रहेगा। जब वह भरकर उबलने लगेगा, तो वह पानी और जगह सब पाक हो जाएंगे।	4	325
77	मसला: हम्माम के हौज में नल से पानी आ रहा है और लोग उससे बराबर पानी ले रहे हैं जिससे पानी की हलचल रुक नहीं पा रही है। इस हालत में वह नजासत से नापाक नहीं होगा क्योंकि वह जारी (बहता हुआ) है। हाँ, हलचल रुकने के बाद अगर नजासत गिरी या पहली नजासत बाकी रही, तो अब नापाक हो जाएगा।	1	326
78	मसला: वज़ू का हौज जिसमें नाली से पानी आ रहा हो और दूसरी तरफ कोई नहा रहा हो या लोग वज़ू कर रहे हों कि पानी का हिलना बंद नहीं होता, इस हालत में नजासत से नापाक नहीं होगा। पानी रुक गया और नजासत गिरी या रही, तो अब नजिस होगा।	2	326
79	मसला: कुएँ में सोत (झरने) से पानी आ रहा है और ऊपर से चरखी या डोल से लिया जा रहा है कि पानी ठहरने नहीं पाता, इस हालत में नजासत से नापाक नहीं होगा। हाँ, ठहरने पर नजासत रही तो नापाक हो जाएगा।	3	326

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
80	मसला: इस बहने में जहाँ उबलना (छलकना) शर्त है, उसके लिए कोई तय मात्रा ज़रूरी नहीं कि वह इतनी दूर बहकर जाए; बल्कि उबलते ही पाक हो जाएगा क्योंकि वह जारी हो गया। हाँ, जब तक उबलता रहेगा, बहने का नियम लागू रहेगा। किसी नजासत से नापाक नहीं होगा। जब उबलना रुकेगा और वह 'दह दर दह' (बड़ा तालाब) नहीं है, तो अब अगर नजासत गिरी या पहली नजासत बाकी हो, तो नजिस हो जाएगा।	4	326

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۷۳	مسئلہ: ہر بہتی چیز اپنی جنس طاہر یا پاک پانی کے ساتھ مل کر بہنے سے پاک ہو جاتی ہے۔	۱	۳۲۵
۷۴	مسئلہ: اس بہنے میں طول عرض عمق کچھ شرط نہیں چھوٹی سی تھالی میں بھی ابلنے سے پاک ہو جائے گی۔	۲	۳۲۵
۷۵	مسئلہ: اس بہنے میں تین شرطیں ہیں ایک طرف سے پانی یا اسی ناپاک شدہ چیز مثلاً دودھ یا تیل کی طاہر جنس اس ظرف میں داخل ہو نا دوسری طرف سے اس کے بعض کا بہنا اور یہ دخول و خروج آخر میں ایک ساتھ ہونا۔	۳	۳۲۵
۷۶	مسئلہ: حوض یا کٹورے میں جو ناپاک پانی تہہ میں ہے اور پاک سے بھرا جب تک لبالب بھر جائے گا سب ناپاک ہوتا جائے گا۔ جب بھر کر ابلے گا وہ پانی اور محل سب پاک ہو جائیگا۔	۴	۳۲۵
۷۷	مسئلہ: حمام کے حوض میں نل سے پانی آرہا ہے اور ادھر لوگ برابر اس میں سے پانی لے رہے ہیں کہ پانی کی جنبش تھمنے نہیں پاتی اس حالت میں وہ نجاست سے وہ ناپاک نہ ہو گا کہ جاری ہے۔ ہاں جنبش تھمنے کے بعد نجاست پڑی یا پہلی نجاست باقی رہی تو اب ناپاک ہو جائیگا۔	۱	۳۲۶
۷۸		۲	۳۲۶

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۷۹	مسئلہ: وضو کا حوض جس میں نالی سے پانی آرہا ہو اور دوسری طرف کوئی نہا رہا ہو یا لوگ وضو کر رہے ہیں کہ پانی کا ہلنا موقوف نہیں ہوتا اس حالت میں نجاست سے ناپاک نہ ہوگا پانی تھم گیا اور نجاست پڑی یا رہی تو اب نجس ہوگا۔ مسئلہ: کنویں میں سوت سے پانی آرہا ہے اور اوپر سے چرخ یا ڈول سے لیا جا رہا ہے کہ پانی ٹھہرنے نہیں پاتا اس حالت میں نجاست سے ناپاک نہ ہوگا۔ ہاں تھمنے پر نجاست رہی تو ناپاک ہو جائیگا۔	۳	۳۲۶
۸۰	مسئلہ : ۸۰ مسئلہ: اس بہنے میں کہ اُبلنا شرط ہے اس کے لئے کوئی مقدار معین ضروری نہیں کہ اتنی دور بہہ کر جائے، نہیں بلکہ اُبلتے ہی پاک ہو جائے گا کہ جاری ہو گیا۔ ہاں جب تک اُبلتا رہے گا جریان کا حاکم باقی رہے گا۔ کسی نجاست سے ناپاک نہ ہوگا۔ جب ابلنا تھمے گا اور دہ دردہ نہیں تو اب اگر نجاست پڑی یا پہلی ہی نجاست باقی ہو تو نجس ہو جائیگا۔	۴	۳۲۶

Fatawa Razawiya Volume 4

Serial No.	Topics / Rulings	Benefit No.	Page No.
81	Ruling: In this boiling, the vessel and the water inside etc. have become pure. When it overflowed and came out, it is also pure, whatever flowing substance it may be like milk or heated ghee or oil etc. And if it is water, it is not just pure but also purifying (mutahhir). Wudu (ablution) can be performed with it.	1	347
82	Ruling: If a bucket becomes impure from the inside and is filled with water and boiled, it becomes pure. But if it is impure from the outside, then just boiling will not suffice until flowing water passes over the specific impure spot with such frequency that there is a dominant probability (zann-e-ghalib) of the impurity being removed. And if the bottom of the vessel is impure from the outside, it will not become pure by boiling because water will not reach there. This same ruling applies to every vessel.	2	347
83	Ruling: In boiling, if the water returns to the same side from which it entered, it will not be sufficient.	3	347
84	Ruling: If a vessel is placed tilted on uneven ground and water is poured from above so that it flows out from the other tilted side, it becomes pure. And if water is poured into the tilted side such that it returns to that same side, it will not become pure.	6	348
85	Ruling: The movement of water within the cavity (jouf) of a space is not considered flow (jaryan) for it unless it enters from the outside and makes it boil over. However, if a small vessel is placed inside its cavity and it fills and boils over, it will become pure, even if the larger vessel is not filled.	7	348
86	Ruling: If the impurity was invisible (ghair mar'iya) or visible (mar'iya) but removed, then boiling it makes it pure unconditionally. If the visible impurity was left and it was	8	348

Serial No.	Topics / Rulings	Benefit No.	Page No.
	boiled, it is pure as long as it is boiling; as soon as the boiling stops, it will become impure again.		
87	Ruling: Its investigation (tahqeeq) is that no part of flowing water or a large body of water (dah dar dah) will become impure regardless of what kind of impurity falls into it, as long as its color, taste, or smell does not change. Even the part directly connected to where the visible impurity fell is pure. Although most or all of the water passes over that impurity, the fatwa (religious verdict) is on this. The second opinion, though present in many books, is not reliable (mutamad).	1	349
88	Ruling: The characteristics (ousaf) of flowing water changed due to impurity such that it became impure, then the impurity settled at the bottom and the water became clear, and the change in characteristics disappeared; it became pure by itself.	2	349

फ़तावा रज़विया खंड 4

क्रम सं.	विषय / मसले	फायदा नं.	पृष्ठ सं.
81	मसला: इस उबाल में बर्तन और अंदर का पानी वगैरह तो पाक हो ही गया, उबल कर जब बाहर निकला वह भी पाक है, चाहे वह कोई भी बहने वाली चीज़ हो जैसे दूध या गर्म किया हुआ घी या तेल वगैरह। और अगर पानी है तो केवल पाक ही नहीं बल्कि मुतहिर (पवित्र करने वाला) भी है। इससे वज़ू हो सकता है।	1	347
82	मसला: डोल अगर अंदर से नापाक हो जाए और उसे पानी भरकर उबाल दें तो पाक हो गया। लेकिन अगर बाहर से नापाक है तो सिर्फ उबाल काफी न होगा जब तक बहता हुआ पानी खास नजासत वाली जगह पर इतनी अधिकता से न गुज़रे कि नजासत न रहने का गुमान ग़ालिब (प्रबल संभावना) हो जाए। और अगर बाहर से तला नापाक हो तो उबाल से पाक न होगा कि वहां पानी न पहुँचेगा। यही हुक्म हर बर्तन का है।	2	347
83	मसला: उबालने में पानी जिस तरफ से दाखिल हुआ उसी तरफ लौट आया तो काफी न होगा।	3	347
84	मसला: बर्तन अगर झुका हुआ उबड़-खाबड़ ज़मीन पर रखा है, ऊपर से पानी डाला कि दूसरी झुकी हुई जानिब से निकल गया तो पाक हो गया। और अगर झुकी हुई जानिब में पानी डाला कि उधर ही को लौट आया तो पाक न होगा।	6	348
85	मसला: किसी स्थान के खोखलेपन (जौफ़) में पानी की हरकत उसके लिए 'प्रवाह' (जरियान) नहीं है जब तक कि बाहर से दाखिल होकर उसे उबाल न दे। लेकिन उसके खोखलेपन में अगर छोटा बर्तन रखा हो और वह भरकर उबल गया तो वह पाक हो जाएगा, भले ही बड़ा बर्तन न भरे।	7	348
86	मसला: अगर नजासत अदृश्य (ग़ैर मरइया) थी या दृश्य (मरइया) निकाल दी, उसके बाद उबाला तो मुतलकन (पूर्ण रूप से) पाक हो गया। और अगर दृश्य नजासत बाकी रखी और उबाला तो जब तक उबल रहा है पाक है, उबाल थमते ही फिर नापाक हो जाएगा।	8	348

क्रम सं.	विषय / मसले	फायदा नं.	पृष्ठ सं.
87	मसला: इसकी तहकीक यह है कि बहते पानी या बड़े जलाशय (दह दर दह) का कोई हिस्सा कैसी ही नजासत उसमें गिरने से नापाक न होगा जब तक कि उसका रंग, स्वाद या गंध न बदले, यहाँ तक कि जहाँ दृश्य नजासत पड़ी है उसका सटा हुआ हिस्सा भी पाक है। हालाँकि अक्सर या सारा पानी उस नजासत पर से होकर गुज़रे, इसी पर फतवा है। और दूसरा कथन (कौल), हालाँकि बहुत सी किताबों में है, मोतमिद (विश्वसनीय) नहीं है।	1	349
88	मसला: बहते पानी के गुण (औसाफ) नजासत से बदल गए कि नापाक हो गया, फिर नजासत नीचे बैठ गई और पानी साफ़ हो गया, गुणों का बदलाव जाता रहा तो वह खुद-ब-खुद पाक हो गया।	2	349

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۸۱	مسئلہ: اس ابال میں برتن اور اندر کا پانی وغیرہ تو پاک ہو ہی گیا اُبل کر جب باہر نکلا وہ بھی پاک ہے جو کچھ بہتی چیز ہو دودھ یا گرم کیا ہوا گھی یا تیل وغیرہ اور اگر پانی ہے تو فقط پاک نہیں مطہر بھی ہے۔ اس سے وضو ہو سکتا ہے۔	۱	۳۴۷
۸۲	مسئلہ: ڈول اگر اندر سے ناپاک ہو جائے اور اسے پانی بھر کر ابال دیں پاک ہو گیا لیکن اگر باہر سے ناپاک ہے تو صرف ابال کافی نہ ہو گا جب تک بہتا ہوا پانی خاص موضع نجس پر اتنی کثرت سے نہ گزرے کہ نجاست نہ رہنے کا ظن غالب ہو جائے اور اگر باہر سے تلا ناپاک ہو تو اُبال سے پاک نہ ہو گا کہ وہاں پانی نہ پہنچے گا۔ یہی حکم ہر برتن کا ہے۔	۲	۳۴۷
۸۳	مسئلہ: اُبالنے میں پانی جس طرف سے داخل ہوا اسی طرف لوٹ آیا تو کافی نہ ہو گا۔	۳	۳۴۷
۸۴	مسئلہ: برتن اگر جھکا ہوا ناہموار زمین پر رکھا ہے اوپر سے پانی ڈالا کہ دوسری جھکی ہوئی جانب سے نکل گیا پاک ہو گیا، اور اگر جھکی ہوئی جانب میں پانی ڈالا کہ ادھر ہی کو لوٹ آیا تو پاک نہ ہو گا۔	۶	۳۴۸
۸۵	مسئلہ: کسی محل کے جوف میں پانی کی حرکت اس کے حق میں جریان نہیں جب تک باہر سے داخل ہو کر اسے اُبال نہ دے لیکن اس کے جوف میں اگر	۷	۳۴۸

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	چھوٹا ظرف رکھا ہو اور وہ بھر کر اُبل گیا وہ پاک ہو جائیگا اگرچہ بڑا ظرف بھرے بھی نہیں۔		
	مسئلہ: اگر نجاست غیر مرئیہ تھی یا مرئیہ نکال دی اس کے بعد ابالا تو مطلقاً		
۸۶	پاک ہو گیا اور اگر مرئیہ باقی رکھی اور اُبالا تو جب تک اُبل رہا ہے پاک ہے ابال تھمتے ہی پھر ناپاک ہو جائیگا۔	۸	۳۴۸
	مسئلہ: اس کی تحقیق کی پانی جاری یا دہ در دہ کا کوئی حصہ کیسی ہی نجاست اس میں واقع ہو ناپاک نہ ہو گا جب تک اس سے رنگ یا مزہ یا بو نہ		
۸۷	بدلے یہاں تک کہ جہاں نجاست مرئیہ پڑی ہے اس کا متصل حصہ بھی پاک ہے۔ اگرچہ اکثر یا کل پانی اس نجاست پر ہو کر گزرے اسی پر فتویٰ ہے اور دوسرا قول اگرچہ بہت کتب میں ہے معتمد نہیں۔	۱	۳۴۹
	مسئلہ: جاری پانی کے اوصاف نجاست سے بدل گئے کہ ناپاک ہو گیا پھر		
۸۸	نجاست تہہ نشین ہو کر پانی صاف ہو گیا، اوصاف کا تغیر جاتا رہا خود پاک ہو گیا۔	۲	۳۴۹

Fatawa Razawiya, Volume 4

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
89	Mas'ala: The entire bed of a canal is impure, but water is flowing over it; as long as none of its qualities change, the water will remain pure even if the water is so shallow that the impurities at the bottom are visible.	3	349
90	Mas'ala: If a non-flowing body of water of 'Dah dar Dah' (10x10 cubits) size changes its qualities due to impurity, and then, for example, the impurity settles and it stabilizes on its own, it should become pure like flowing water. However, Sayyidi Abdul Ghani has stated otherwise.	1	350
91	Mas'ala: When water continues to flow out, its expansion in width does not prevent it from being considered 'flowing'. The fatwa is based on this.	2	350
92	Mas'ala: Whirlpool water is also considered flowing water, even if it exits after rotating in circles.	3	350
93	Mas'ala: A large pond dried up in summer, and animals dropped dung and humans defecated in it. During the rainy season, water came and filled it. If the side where the water entered the pond was clean over an area of 'Dah dar Dah' and there was no impurity, and the water met the impurities only after reaching 'Dah dar Dah' volume, then the entire pond remains pure as long as its qualities are not altered by the impurity. If there wasn't such space on that side and the water met impurity before reaching 'Dah dar Dah' volume, then the whole pond is now impure, even if it later expands a hundredfold. And if some part of it freezes into ice, that part too will be impure. Yes, if the incoming water fills it to the point of overflowing, then it all becomes pure. This is the view in most reliable books. Another view of some is that a large pond remains absolutely pure in every way, even if the water meets impurities as soon as it enters the pond and it doesn't overflow. A discussion on this appears in 'Tajdid al-Nazar'.	4	350

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
94	Mas'ala: No matter how many impurities are on the bank outside the pond, if the water flows over them and then enters the pond, according to the correct school of thought, it remains absolutely pure as long as it is not altered. If the impurities are inside the pond on the edge or before reaching 'Dah dar Dah' size, and this water passes over them, then according to the majority, the entire pond becomes impure.	1	351
95	Mas'ala: If the water in a large pond is reduced or dried up, and then impurity falls into it making it impure, and then rainwater fills it up, the same scenarios apply. If this pure water meets the impure water inside the pond after reaching 'Dah dar Dah' volume, then everything is pure; otherwise, everything is impure until it overflows. According to the second view, everything is absolutely pure.	2	351

फतावा रज़विया, जिल्द चौथी

क्रम संख्या	विषय	फायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
89	मसला: नहर का पूरा तल अशुद्ध है और उसके ऊपर पानी बह रहा है; जब तक उसका कोई गुण न बदले, पानी शुद्ध रहेगा, चाहे पानी इतना कम हो कि तल की अशुद्धियाँ दिखाई देती हों।	3	349
90	मसला: 'दह दर दह' (10x10 हाथ) पानी जो बहता नहीं है, यदि अशुद्धि के कारण उसके गुण बदल गए, फिर उदाहरण के लिए अशुद्धि नीचे बैठ गई और वह स्वयं संभल गया, तो उसे भी बहते पानी की तरह शुद्ध हो जाना चाहिए। लेकिन सैयदी अब्दुल गनी ने इसके विरुद्ध फरमाया है।	1	350
91	मसला: जब पानी निकलता चला जाता है, तो चौड़ाई में उसका फैलना उसे 'बहता हुआ' मानने से नहीं रोकता। फतवा इसी पर है।	2	350
92	मसला: भंवर का पानी भी बहता पानी माना जाता है, भले ही वह चक्कर काटकर निकलता हो।	3	350
93	मसला: गर्मियों में एक बड़ा तालाब सूख गया, उसमें जानवरों ने गोबर किया और इंसानों ने पाखाना फेरा। बरसात में पानी आया और उसने तालाब भर दिया। यदि जिस ओर से पानी तालाब में प्रवेश किया, वहां 'दह दर दह' के क्षेत्रफल तक जगह साफ थी और कोई अशुद्धि नहीं थी, और पानी 'दह दर दह' होने के बाद अशुद्धियों से मिला, तो पूरा तालाब तब तक शुद्ध रहेगा जब तक अशुद्धि से उसके गुण न बदलें। और यदि उस दिशा में इतनी जगह नहीं थी और पानी 'दह दर दह' होने से पहले अशुद्धि से मिल गया, तो अब पूरा तालाब अशुद्ध हो गया, चाहे बाद में वह सौ गुना ही क्यों न हो जाए। और यदि बर्फ से उसका कुछ हिस्सा जम जाए, तो वह भी अशुद्ध होगा। हाँ, अगर आने वाला पानी उसे भरकर उबल (छलक) दे, तो सब शुद्ध हो जाएगा। अधिकांश विश्वसनीय पुस्तकों में यही है। और कुछ का एक मत यह भी है कि बड़ा तालाब हर तरह से बिल्कुल शुद्ध रहेगा, भले ही पानी तालाब	4	350

क्रम संख्या	विषय	फायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
	में प्रवेश करते ही अशुद्धियों से मिल जाए और भरकर न छलके। इसका वर्णन 'तजदीद-उन-नज़र' में आता है।		
94	मसला: तालाब के बाहर उसके किनारे पर कितनी ही अशुद्धियाँ हों, यदि पानी उनके ऊपर से बहता हुआ तालाब में प्रवेश करता है, तो सही मत के अनुसार वह बिल्कुल शुद्ध रहेगा जब तक कि उसके गुण न बदल जाएँ। और यदि अशुद्धियाँ तालाब के अंदर किनारे पर या 'दह दर दह' होने से पहले हैं और उन पर से यह पानी गुजरा, तो अधिकांश विद्वानों के अनुसार पूरा तालाब अशुद्ध हो गया।	1	351
95	मसला: बड़े तालाब का पानी खर्च होने या सूखने के कारण थोड़ा रह गया और अब उसमें अशुद्धि गिर गई जिससे वह अशुद्ध हो गया, फिर बारिश के पानी ने उसे भर दिया, तो इसमें भी वही स्थितियाँ हैं। यदि यह शुद्ध पानी तालाब के अंदर 'दह दर दह' होने के बाद उस अशुद्ध पानी से मिला, तो सब शुद्ध है; अन्यथा सब अशुद्ध है जब तक कि वह उबल न जाए। और दूसरे मत के अनुसार सब बिल्कुल शुद्ध है।	2	351

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: نہر کا سارا پیٹ ناپاک ہے اور اوپر پانی جاری ہے جب تک اس کا		
۸۹	کوئی وصف نہ بدلے پانی پاک رہے گا اگر چہ پانی اتنا کم ہو کہ تہہ کی نجاستیں نظر آتی ہوں۔	۳	۳۴۹
	مسئلہ: دہ در دہ پانی کہ جاری نہیں اگر نجاست سے اس کے اوصاف بدل گئے		
۹۰	پھر مثلاً نجاست تہہ نشین ہو کر خود ہی سنبھل گئے تو یہ بھی مثلِ جاری کے پاک ہو جانا چاہئے مگر سیدی عبدالغنی نے اس کے خلاف فرمایا۔	۱	۳۵۰
۹۱	مسئلہ: پانی جب نکلتا چلا جاتا ہے تو عرض میں اس کا پھیلنا مانع جریان نہیں اسی پر فتویٰ ہے۔	۲	۳۵۰
۹۲	مسئلہ: بھنور کا پانی بھی آب جاری ہے اگر چہ چکر کھا کر نکلتا ہے۔	۳	۳۵۰
	مسئلہ: گرمیوں میں بڑا تالاب خشک ہو گیا اس میں جانوروں نے گوبر کئے ۔ آدمیوں نے پاخانے پھرے برسات میں پانی آیا اور اسے بھر دیا اگر یہ آنے والا پانی جس طرف سے تالاب میں داخل ہوا وہاں دہ در دہ کی مساحت تک جگہ		
۹۳	صاف تھی کوئی نجاست نہ تھی پانی دہ در دہ ہونے کے بعد نجاستوں سے ملا پھر چاہے آخر تک نجاستیں ہوں سارا تالاب پاک رہے گا جب تک نجاست سے متغیر نہ ہو اور اگر اس جانب اتنی جگہ نہیں پانی دہ در دہ ہونے سے پہلے نجاست سے ملا تو اب سارا تالاب ناپاک ہو گیا ۔ اگر چہ اس کے بعد صد در	۴	۳۵۰

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	صد ہو جائے۔ اور اگر برف سے اس کا کچھ حصہ جم جائے تو وہ بھی ناپاک ہو گا۔ ہاں اگر آنے والا پانی اسے بھر کر ابال دے تو سب پاک ہو جائیگا۔ اکثر کتبِ معتمدہ میں یہی ہے ۔ اور ایک قول بعض یہ بھی ہے کہ بڑا تالاب ہر طرح مطلقاً پاک رہے گا اگر چہ پانی تالاب میں داخل ہوتے ہی نجاستوں سے ملا اور بھر کر نہ ابلا اس کا بیان تجدید النظر میں آتا ہے۔		
	مسئلہ: تالاب سے باہر اس کے لب پر کتنی ہی نجاستیں ہوں پانی کہ بہتا ہوا اوپر گزرنے کے بعد تالاب میں داخل ہوگا صحیح مذہب میں مطلقاً پاک رہے گا		
۹۴	جب تک متغیر نہ ہو جائے۔ اور اگر تالاب کے اندر کنارے پر یا دہ در دہ سے پہلے نجاستیں ہیں اور ان پر یہ پانی گزرا تو جمہور کے نزدیک سارا تالاب ناپاک ہو گیا۔	۱	۳۵۱
	مسئلہ: بڑے تالاب کا پانی خرچ یا خشک ہو کر تھوڑا رہ گیا اور اب اس میں نجاست پڑی کہ ناپاک ہو گیا پھر بارش کے پانی نے اسے بھر دیا اس میں بھی		
۹۵	وہی صورتیں ہیں اگر یہ پاک پانی تالاب کے اندر دہ در دہ ہونے کے بعد اس نجس پانی سے ملا تو سب پاک ہے ورنہ سب ناپاک جب تک اُبل نہ جائے اور دوسرے قول پر مطلقاً سب پاک ہے۔	۲	۳۵۱

Fatawa Rizwia Volume 4

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
96	Masala: Impurity on cloth or body that is purified by washing three times; these three waters are impure.	4	351
97	Masala: During washing of impurity, as long as water is circulating in the cloth or body, it is pure; when it separates, then it will be called impure.	5	351
98	Masala: If cloth is washed with three waters in a basin, it is better to place the cloth in the basin first and pour water over it. If reversed, then according to Imam Shafi'i (may Allah have mercy on him), purity will not be attained.	6	351
99	Masala: The correct view is that the ruling for clothes and body is the same. Hand and foot are impure, dipped in basin water, then changed and dipped again, then a third time, thus becoming pure.	7	351
100	Masala: Impure cloth in a basin and water to wash it; this water will not be called impure as long as it doesn't separate from the cloth. However, apparently this is only regarding that specific cloth. If another cloth falls into this water and it absorbs more than a dirham's worth, it should apparently become impure.	1	352
101	Masala: Poured a stream of water from a lota onto hand for istinja; as long as this stream hasn't reached the hand, it is running water. In this state, if a droplet of urine falls on this stream, it will not be impure.	2	352
102	Masala: Upon falling into running or abundant water, impurity remains; yes, it does not affect them.	1	353
103	Masala: If running water falls on invisible impurity, it will completely vanish and extinguish it.	2	353
104	Masala: There was invisible or visible impurity on the ground which was completely separated; now water was poured on the spot of impurity such that it flowed over the entire area for about a hand span. The ground became pure and this	3	353

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
	flowed water is also pure. But, if traces of impurity remain on ground it won't be pure; similarly if water's quality changes by it, it will become impure.		

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4

क्रमांक	शीर्षक	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
96	मसला: कपड़े या शरीर की अशुद्धि जो तीन बार धोने से शुद्ध होती है, ये तीनों पानी अशुद्ध हैं।	4	351
97	मसला: अशुद्धि धोने के दौरान जब तक पानी कपड़े या शरीर में घूम रहा है, वह शुद्ध है; जब वह अलग होगा, तब उसे अशुद्ध कहा जाएगा।	5	351
98	मसला: यदि कपड़े को एक टब में तीन पानी से धोया जाए, तो बेहतर यह है कि पहले कपड़े को टब में रखें और ऊपर से पानी डालें। यदि इसके विपरीत किया गया, तो इमाम शाफ़ई (रहमतुल्लाह अलैह) के अनुसार पवित्रता प्राप्त नहीं होगी।	6	351
99	मसला: सही यह है कि कपड़ों और शरीर का एक ही हुक्म है। हाथ-पैर अशुद्ध हैं, टब के पानी में डाले और उसे बदलकर दोबारा डाला, फिर तीसरी बार, तो शुद्ध हो गए।	7	351
100	मसला: टब में अशुद्ध कपड़ा और उसे धोने के लिए पानी है; जब तक यह पानी कपड़े से अलग न हो जाए, इसे अशुद्ध नहीं कहा जाएगा। लेकिन ज़ाहिर है कि यह उसी कपड़े के हक़ में है। यदि दूसरा कपड़ा इस पानी में गिर जाए और एक रुपए (वजन) से अधिक सोख ले, तो ज़ाहिर है उसे अशुद्ध हो जाना चाहिए।	1	352
101	मसला: इस्तिंजा करने के लिए लोटे से हाथ पर धार डाली; जब तक यह धार हाथ तक नहीं पहुँची, यह बहता पानी है। इस स्थिति में अगर पेशाब की कोई बूंद इस धार पर गिर जाए, तो वह अशुद्ध नहीं होगी।	2	352
102	मसला: बहते हुए या अधिक पानी पर अशुद्धि आने से वह शेष रहती है; हाँ, उनमें कोई असर नहीं करती।	1	353
103	मसला: बहता पानी यदि अदृश्य अशुद्धि पर पड़े, तो उसे पूरी तरह नष्ट और समाप्त कर देगा।	2	353

क्रमांक	शीर्षक	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
104	मसला: ज़मीन पर अदृश्य या दृश्य अशुद्धि थी जो पूरी तरह अलग कर दी गई थी; अब अशुद्धि वाले स्थान पर पानी डाला कि वह उस पूरी जगह से गुज़रता हुआ एक हाथ आगे बह गया। ज़मीन भी शुद्ध हो गई और यह बहा हुआ पानी भी शुद्ध है। लेकिन अगर ज़मीन पर अशुद्धि का असर बाकी रहे तो वह शुद्ध नहीं होगी; इसी तरह अगर पानी के गुण इससे बदल जाएँ तो वह अशुद्ध हो जाएगा।	3	353

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۹۶	مسئلہ: کپڑے یا بدن کی نجاست کہ تین بارے دھونے سے پاک ہوئی یہ تینوں پانی ناپاک ہیں۔	۴	۳۵۱
۹۷	مسئلہ: نجاست دھونے میں جب تک پانی کپڑے یا بدن میں دورہ کر رہا ہے پاک ہے جب جدا ہوگا اس وقت ناپاک کہا جائیگا۔	۵	۳۵۱
۹۸	مسئلہ: کپڑا اگر طشت میں تین پانیوں سے دھوئیں، بہتر یہ ہے کہ طشت میں پہلے کپڑا رکھیں اوپر سے پانی ڈالیں اگر عکس کیا تو امام شافعی علیہ الرحمۃ کے نزدیک طہارت نہ ہوگی۔	۶	۳۵۱
۹۹	مسئلہ: صحیح یہ ہے کہ کپڑے اور بدن کا ایک حکم ہے ہاتھ پاؤں ناپاک ہے طشت کے پانی میں ڈالا اور وہ بدل کر دوبارہ ڈالا پھر سہ بارہ تو پاک ہو گیا۔	۷	۳۵۱
۱۰۰	مسئلہ: طشت میں ناپاک کپڑا اور اس کے دھونے کو پانی ہے یہ پانی جب تک کپڑے سے جدا نہ ہو ناپاک نہ کہا جائیگا مگر ظاہرًا یہ اسی کپڑے کے حق میں ہے دوسرا کپڑا اگر اس پانی میں پڑ جائے گا اور روپے بھر سے زیادہ بھر جائے گا بظاہر ناپاک ہو جانا چاہئے۔	۱	۳۵۲
۱۰۱		۲	۳۵۲

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: استنجا کرنے کیلئے لوٹے سے ہاتھ پر دھار ڈالی یہ دھار جب تک ہاتھ پر نہ پہنچی آب جاری ہے اس حالت میں اگر پیشاب کی چھینٹ اس دھار پر پڑ جائے گی ناپاک نہ ہوگی۔		
۱۰۲	مسئلہ: جاری یا کثیر پانی پر نجاست وارد ہونے سے باقی رہتی ہے ہاں ان میں اثر نہیں کرتی۔	۱	۳۵۳
۱۰۳	مسئلہ: جاری پانی نجاست غیر مرئیہ پر وارد ہو تو اسے بالکل فنا و معدوم کر دیگا۔	۲	۳۵۳
۱۰۴	مسئلہ: زمین پر نجاست غیر مرئیہ تھی یا مرئیہ بالکل جدا کر دی گئی اب موضع نجاست پر پانی ڈالا کہ اس ساری جگہ پر گزرتا ہوا ہا تھ بھر آگے بہہ گیا زمین بھی پاک ہوگئی اور یہ بہایا ہوا پانی بھی پاک ہے، لیکن زمین پر نجاست کا اثر باقی رہے تو پاک نہ ہوگی، یونہی اگر پانی کا وصف اس سے بدلا تو ناپاک ہو جائیگا۔	۳	۳۵۳

Fatawa Razawiyya, Volume 4

Serial No.	Titles/Subjects	Benefit No.	Page No.
105	Issue: If water, milk, heated ghee, or oil, or any flowing liquid becomes impure, take pure water or the same kind of pure substance in a second vessel and pour them into a third vessel in such a way that both pure and impure streams merge in the air before reaching the third vessel, and no drop of the impure substance falls separately, then all of it will become pure.	4	353
106	Issue: In the same scenario, if pure and impure are mixed and poured, for example, on a raw roof so that they flow as one, then all of it becomes pure.	5	353
107	Issue: Flowing water passed over impurities like dung etc., and they got mixed and became completely trace-less. Now, if this water stays in a place less than ten by ten (cubits), it will not be impure because the impurity has become invisible, and the flow of water over such impurity eliminates it.	6	353
108	Issue: A small quantity of water had visible impurity, which over a long time transformed into soil. After that, if this water is flowed, it becomes pure.	7	353
109	Issue: There is a shortage of water during travel. The desire is to perform ablution (wudu) with the available water and still have it remain suitable for wudu. The strategy is: if there is a wide drain nearby in which limbs can be placed for wudu, keep it elevated and have water poured into it, and place an empty vessel under the other end. While water is flowing in the drain, perform wudu by placing limbs in it. This flowing water collected in that vessel will remain suitable for wudu and drinking.	4	358
110	Issue: If a dam is built at the top of a canal but the flow continues below, it still won't become impure from filth.	1	359
111	Issue: A channel was dug from a small pool and water was flowed into it. If wudu is performed in this flowing water, the water will not become 'used' (musta'mal). So much so that if it	4	359

Serial No.	Titles/Subjects	Benefit No.	Page No.
	collects in a pit, wudu can be performed from it again. Similarly, if someone digs a channel from that pit and performs wudu, it can be done a third time, and so on.		
112	Issue: There are two small pools at some distance. Water flows from one and enters the other. In the intervening distance where it is flowing, performing wudu in it will not make it 'used'.	5	359

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4

क्रमांक	विषय	फ़ायदा नं.	पृष्ठ नं.
105	मसला: यदि पानी, दूध, गर्म किया हुआ घी या तेल, या कोई बहती हुई चीज़ नापाक हो जाए, तो दूसरे बर्तन में पानी या उसी चीज़ की शुद्ध वस्तु लेकर तीसरे बर्तन में इस तरह गिराएं कि पाक और नापाक दोनों धाराएं हवा में एक होकर उसमें पहुँचें, और नापाक की कोई बूंद अलग न गिरे, तो सब पाक हो जाएगा।	4	353
106	मसला: इसी स्थिति में यदि पाक और नापाक को मिलाकर, उदाहरण के लिए, किसी कच्ची छत पर बहाएं कि दोनों एक होकर बहें, तो सब पाक हो गया।	5	353
107	मसला: बहता पानी गोबर आदि गंदगियों पर से गुज़रा और वे उसमें मिलकर बिल्कुल बेनिशान हो गईं। अब यह पानी यदि दह-در-दह (10x10 हाथ) से कम जगह में ठहरेगा, तो नापाक न होगा क्योंकि गंदगी अदृश्य हो गई है, और ऐसी गंदगी पर पानी का बहाव उसे खत्म कर देता है।	6	353
108	मसला: थोड़े पानी में दृश्य गंदगी (नजासत मरईया) थी, जो लंबे समय के बाद मिट्टी में बदल गई। इसके बाद उस पानी को बहाया गया, तो वह पाक हो गया।	7	353
109	मसला: सफ़र में पानी की कमी है। इच्छा है कि पास के पानी से वज़ू कर लें और वह फिर वज़ू के लायक रहे। इसकी तरकीब यह है कि यदि पास में कोई चौड़ा परनाला (नाला) है जिसमें अंग डालकर वज़ू किया जा सके तो उसे ऊँचा रखकर उसमें पानी डलवाएं और दूसरे किनारे के नीचे कोई खाली बर्तन रख दें। जब पानी उस नाले में बह रहा हो, तो उसमें अंग डालकर वज़ू करें। यह बहता पानी जो उस बर्तन में जमा होगा, वह फिर वज़ू और पीने के काबिल रहेगा।	4	358
110		1	359

क्रमांक	विषय	फ़ायदा नं.	पृष्ठ नं.
	मसला: नहर के ऊपर बांध बांध दिया गया, नीचे पानी पहले की तरह बह रहा है, तो अब भी नजासत से नापाक न होगा।		
111	मसला: एक छोटे हौज़ से नहर खोदकर उसमें पानी बहाया गया और उस बहते पानी में वज़ू किया गया, तो पानी 'मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ) नहीं होगा। यहाँ तक कि अगर वह किसी गड्ढे में जमा हो जाए, तो दोबारा उससे वज़ू हो सकता है। इसी तरह उस गड्ढे से नहर खोदकर कोई वज़ू करे तो तीसरी बार हो सकता है, इसी तरह जहाँ तक संभव हो।	4	359
112	मसला: दो छोटे हौज़ कुछ दूरी पर हैं। एक से पानी निकलकर दूसरे में जाता है। वह बीच की दूरी में बह रहा है, उसमें वज़ू करने से पानी मुस्तअमल नहीं होगा।	5	359

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱۰۵	مسئلہ : پانی یا دودھ یا تپایا ہوا گھی یا تیل کوئی بہتی چیز ناپاک ہو جائے تو دوسرے برتن میں پانی یا اسی شے کی جنس طاہر لے کر تیسرے برتن میں اس طرح گرائیں کہ پاک ناپاک دونوں دھاریں ہوا میں ایک ہو کر اس میں پہنچیں ناپاک کی کوئی بوند جدا نہ گرے تو سب پاک ہو جائیگا۔	۴	۳۵۳
۱۰۶	مسئلہ : اسی صورت میں اگر پاک و ناپاک ملا کر مثلاً کسی کچی چھت پر بہائیں کہ دونوں ایک ہو کر بہیں تو سب پاک ہو گیا۔	۵	۳۵۳
۱۰۷	مسئلہ : بہتا پانی گوبر وغیرہ نجاستوں پر گزرا اور وہ اس میں مخلوط ہو کر بے نشان محض ہو گئیں۔ اب یہ پانی اگر دہ در دہ سے کم جگہ میں ٹھہرے گا ناپاک نہ ہوگا کہ نجاست غیر مرئیہ ہو گئی ، اور ایسی نجاست پر پانی کا جریان اسے فنا کر دیتا ہے۔	۶	۳۵۳
۱۰۸	مسئلہ : قلیل پانی میں نجاست مرئیہ تھی طول مدت سے مٹی کی طرف مستحیل ہو گئی اس کے بعد اس پانی کو بہایا پاک ہو گیا۔	۷	۳۵۳
۱۰۹	مسئلہ : سفر میں پانی کی کمی ہے چاہا یہ کہ پاس جو پانی ہے اس سے وضو کرلے اور پھر قابل وضو رہے اس کی تدبیر یہ ہے کہ اگر وسیع پر نالہ پاس ہے جس کے اندر اعضاء ڈال کر وضو ہوسکتا ہے اسے اونچا رکھ کر اس میں پانی ڈلوائے اور دوسرے کنارے کے نیچے کوئی خالی برتن رکھ دے	۴	۳۵۸

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	جب پانی اس پر نالے میں جاری ہو اس کے اندر اعضاء ڈال کر وضو کرے۔ یہ بہتا پانی جو اس برتن میں جمع ہوگا پھر وضو اور پینے کے قابل رہے گا۔		
۱۱۰	مسئلہ : نہر کا اوپر سے مینڈھا باندھ دیا گیا ، نیچے پان بدستور جاری ہے اب بھی نجاست سے ناپاک نہ ہوگا۔	۱	۳۵۹
۱۱۱	مسئلہ : حوضِ صغیر سے ایک نہر کھود کر اس میں پانی بہایا اور اس بہتے کے اندر وضو کیا پانی مستعمل نہ ہوگا یہاں تک کہ اگر کسی گڑھے میں جمع ہو تو دوبارہ اس سے وضو ہو سکتا ہے یونہی اس گڑھے سے نہر کھود کر کوئی وضو کرے تو سہ بارہ ہو سکتا ہے اسی طرح جہاں تک ہو۔	۴	۳۵۹
۱۱۲	مسئلہ : دو چھوٹے حوض کچھ فاصلے سے ہیں ایک سے پانی نکل کر دوسرے میں جاتا ہے وہ بیچ کے فاصلے میں جاری ہے اس کے اندر وضو سے مستعمل نہ ہوگا۔	۵	۳۵۹

Fatawa Ridawiyya Volume 4

Serial Number | Topics | Benefit No. | Page No. 113 | Problem: In these ponds, there is no distance; as soon as water leaves one, it enters the other. In this state, performing wudu in it will make it 'mustamal' (used). - Benefit No.: 1 | Page No.: 360

114 | Problem: No matter how much impure water flows by itself, it will not become pure until it flows mixed with pure water. - Benefit No.: 1 | Page No.: 362

115 | Problem: Further investigation that the water of a spring-fed well is considered 'flowing' as long as it is moving due to the action of taking water. - Benefit No.: 4 | Page No.: 362

116 | Problem: Summary: Flow is of three types: 1) A liquid flowing in open space, for which the definition of flow we gave is sufficient. 2) What is inside a cavity of a place, its flow requires coming out of that place. 3) Annexed to flowing, in which it is also necessary that the water's movement remains continuous. - Benefit No.: 2 | Page No.: 363

117 | Problem: Rainwater is considered 'flowing' as long as it is flowing on a roof or ground or falling from a drainpipe. - Benefit No.: 4 | Page No.: 365

118 | Problem: No matter how much impurity is on the roof or in the drainpipe itself, and rainwater flowing from the roof passes through that drainpipe, it will not become impure until there is a change in its color, taste, or smell due to the impurity. This is the correct and reliable view. - Benefit No.: 5 | Page No.: 365

119 | Problem: It is raining and there are impurities on the roof, and the roof leaks; this water is pure as long as it is raining and there is no change in the color, taste, or smell of this leaked water. - Benefit No.: 1 | Page No.: 366

120 | Problem: Water that leaks after the rain has stopped, and there is impurity on the roof at that spot, this water is impure even if none of its qualities (color, taste, smell) have changed. - Benefit No.: 2 | Page No.: 366

121 | Problem: Passing pure water over impure water will not make it pure until the impure water flows mixed with the pure water. - Benefit No.: 3 | Page No.: 366

122 | Problem: In the abundance or scarcity of a single body of water, only the surface of the water is considered. - Benefit No.: 2 | Page No.: 368

123 | Problem: The upper water of a large pond has frozen into ice. A hole was made by breaking the ice in one place, and water came out and spread over a ten-by-ten area on top of the ice. If this water has such depth that if lifted by hand, the ice beneath doesn't get exposed, then performing wudu by dipping limbs into it is permissible, otherwise not. - Benefit No.: 1 | Page No.: 369

फतावा रज़विया जिल्द 4

क्रम संख्या | विषय | लाभ संख्या | पृष्ठ संख्या 113 | मसला: इन हौज़ों में फासला कुछ नहीं है, एक से निकलते ही दूसरे में पानी दाखिल हो जाता है, इस हालत में इसमें वज़ू करने से वह पानी 'मुस्तअमल' (उपयोग किया हुआ) हो जाएगा। - लाभ संख्या: 1 | पृष्ठ संख्या: 360

114 | मसला: नापाक पानी खुद कितना ही बह जाए, वह पाक नहीं होगा जब तक कि वह पाक पानी के साथ मिलकर न बहे। - लाभ संख्या: 1 | पृष्ठ संख्या: 362

115 | मसला: इसकी मजीद तहक़ीक़ कि सोते वाले कुएं का पानी जब तक पानी लेने की हरकत से हिल रहा है, वह 'जारी' (बहता हुआ) है। - लाभ संख्या: 4 | पृष्ठ संख्या: 362

116 | मसला: खुलासा यह कि 'जरियान' (प्रवाह) तीन प्रकार का है: पहला वह जो खुली हवा में बह रहा हो, उसके लिए वह परिभाषा पर्याप्त है जो हमने जरियान की दी है; दूसरा वह जो किसी स्थान के अंदर हो, उसके प्रवाह के लिए उस स्थान से बाहर निकलना आवश्यक है; तीसरा 'मुलहक़ बिल जारी' (प्रवाह के साथ जुड़ा हुआ), जिसमें यह भी आवश्यक है कि पानी की गति निरंतर बनी रहे। - लाभ संख्या: 2 | पृष्ठ संख्या: 363

117 | मसला: बारिश का पानी जब तक छत या ज़मीन पर बह रहा हो या परनाले से गिर रहा हो, वह 'जारी' है। - लाभ संख्या: 4 | पृष्ठ संख्या: 365

118 | मसला: छत पर कितनी ही गंदगी पड़ी हो या खुद परनाले में हो, और बारिश का पानी जो छत से बहकर उस परनाले से गुज़रे, वह तब तक नापाक नहीं होगा जब तक कि गंदगी के कारण उसके रंग, स्वाद या गंध में बदलाव न आए। यही सही और विश्वसनीय मत है। - लाभ संख्या: 5 | पृष्ठ संख्या: 365

119 | मसला: बारिश हो रही है और छत पर गंदगियां हैं और छत टपकी, तो यह पानी पाक है जब तक बारिश हो रही हो और उस टपके हुए पानी के रंग, स्वाद या गंध में कोई अंतर न आया हो। - लाभ संख्या: 1 | पृष्ठ संख्या: 366

120 | मसला: बारिश रुकने के बाद जो पानी टपका और छत पर वहां गंदगी है, तो यह पानी नापाक है चाहे इसका कोई गुण (रंग, स्वाद, गंध) न बदला हो। - लाभ संख्या: 2 | पृष्ठ संख्या: 366

121 | मसला: नापाक पानी पर पाक पानी का गुज़रना उसे पाक नहीं करेगा जब तक कि नापाक पानी पाक पानी के साथ मिलकर बह न जाए। - लाभ संख्या: 3 | पृष्ठ संख्या: 366

122 | मसला: एक ही पानी की अधिकता या कमी में केवल पानी की सतह का विचार किया जाता है। - लाभ संख्या: 2 | पृष्ठ संख्या: 368

123 | मसला: बड़े तालाब का ऊपरी पानी बर्फ बनकर जम गया। एक जगह बर्फ तोड़कर छेद किया गया और पानी उसमें से निकलकर बर्फ के ऊपर 'दह-दर-दह' (दस गुणा दस) जगह में फैल गया। अगर उस पानी की गहराई इतनी है कि हाथ से उठाने पर नीचे की बर्फ न दिखाई दे, तो उसमें अंग डालकर वज़ू करना जायज़ है, अन्यथा नहीं। - लाभ संख्या: 1 | पृष्ठ संख्या: 369

पृष्ठ 649 का 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

نمبر شمار | عنوانات | فائدہ نمبر | صفحہ نمبر ۱۱۳ | مسئلہ: ان حوضوں میں مسافت کچھ نہیں ایک سے نکلتے ہی دوسرے میں پانی داخل ہو جاتا ہے اس حالت میں اس میں وضو کرنے سے مستعمل ہو جائے گا۔ - فائدہ نمبر: ۱ | صفحہ نمبر: ۳۶۰

۱۱۴ | مسئلہ: ناپاک پانی خود کتنا ہی جاری ہو جائے پاک نہ ہو گا جب تک پاک کے ساتھ مل کر نہ بہے۔ - فائدہ نمبر: ۱ | صفحہ نمبر: ۳۶۲

۱۱۵ | مسئلہ: اس کی مزید تحقیق کہ سوت والے کنویں کا پانی جب تک پانی لینے کی حرکت سے ہل رہا ہے جاری ہے۔ - فائدہ نمبر: ۴ | صفحہ نمبر: ۳۶۲

۱۱۶ | مسئلہ: خلاصہ یہ کہ جریان تین قسم ہے جو مائع فضا میں بہہ رہا ہو اس میں صرف اسی قدر کافی جو تعریف جریان میں ہم نے بیان کیا دوسرا جو کسی محل کے جوف میں ہو اس کے جریان کو اس محل سے باہر نکلنا ضرور تیسرا ملحق بالجاری اس میں یہ بھی لازم کہ پانی کی جنبش مستمر رہے۔ - فائدہ نمبر: ۲ | صفحہ نمبر: ۳۶۳

۱۱۷ | مسئلہ: مینہ کا پانی جب تک چھت یا زمین پر بہہ رہا ہو یا پر نالے سے گر رہا ہے جاری ہے۔ - فائدہ نمبر: ۴ | صفحہ نمبر: ۳۶۵

۱۱۸ | مسئلہ: چھت پر کتنی ہی نجاستیں پڑی ہوں یا عین پر نالے میں ہوں اور مینہ کا پانی کہ چھت پر سے بہتا اس پر نالے سے گزرتا اترانا پاک نہ ہوگا جب تک نجاست سے اس کے رنگ یا مزے یا بُو میں فرق نہ آئے۔ یہی صحیح اور معتمد ہے۔ - فائدہ نمبر: ۵ | صفحہ نمبر: ۳۶۵

۱۱۹ | مسئلہ: مینہ برس رہا ہے اور چھت پر نجاستیں ہیں اور چھت ٹپکی تو یہ پانی پاک ہے جب تک بارش ہو رہی ہو اور اس ٹپکے ہوئے پانی کے رنگ مزے بُو میں فرق نہ آیا۔ - فائدہ نمبر: ۱ | صفحہ نمبر: ۳۶۶

۱۲۰ | مسئلہ: بارش تھمنے کے بعد جو پانی ٹپکا اور چھت پر وہاں نجاست ہے یہ پانی ناپاک ہے اگر چہ اس کا کوئی وصف نہ بدلا ہو۔ - فائدہ نمبر: ۲ | صفحہ نمبر: ۳۶۶

۱۲۱ | مسئلہ: نجس پانی پر پاک پانی کا گزرنا اسے پاک نہ کر دے گا جب تک نجس پانی پاک کے ساتھ مل کر بہہ نہ جائے۔ - فائدہ نمبر: ۳ | صفحہ نمبر: ۳۶۶

۱۲۲ | مسئلہ: آب واحد کی کثرت وقلت میں صرف رُوئے آب کا اعتبار ہے۔ - فائدہ نمبر: ۲ | صفحہ نمبر: ۳۶۸

۱۲۳ | مسئلہ: بڑے تالاب کا بالائی پانی برف سے جم گیا۔ ایک جگہ برف توڑ کر سوراخ کیا گیا پانی اس میں سے نکل کر برف کے اوپر دہ در دہ جگہ میں پھیل گیا۔ اگر اس پانی کا اتنا ڈل ہے کہ ہاتھ سے اٹھائیں تو نیچے کا برف نہ کھل جائے تو اس کے اندر اعضاء ڈال کر وضوء جائز ہے ورنہ نہیں۔ - فائدہ نمبر: ۱ | صفحہ نمبر: ۳۶۹

Fatawa Rizvia Volume 4

Serial No.	Subjects	Point No.	Page No.
124	Issue: Just as width is not a condition in running water, depth is also not necessary at all.	2	475
125	Issue: According to the author's research and reconciliation, no depth is required for a large body of water (Ma-e-Kaseer) in itself, provided that the ground is not exposed anywhere within an area of a hundred hands. Yes, while taking water, enough depth is required so that the ground is not exposed by that act for it to remain 'Kaseer'.	1	478
126	Issue: Rain is running water. If one gargles, rinses the nose up to the soft bone, and stands naked in the rain such that water reaches all parts of the body, the ritual bath (Ghusl) will be valid.	1	479
127	Issue: In the author's research, neither the specialty of a handful (Chulloo) nor a double handful (Lap) is required. Instead, in whatever way water is taken, the ground should not be exposed, whether it was a handful, a double handful, or a vessel.	3	479
128	Issue: According to the author's research, such depth should only be necessary where the water is taken from, even if in the rest of the area it's only as deep as a barley grain.	4	479
129	Issue: If the water is so abundant that upon lifting it with a hand or a vessel, even if the ground is exposed, but the remaining part on every side remains a hundred hands in area, then such exposure is not harmful.	1	480
130	Issue: If by lifting water the ground is exposed and it no longer remains ten-by-ten (Dah dar Dah), then if there was any impurity present beforehand, it will become impure as soon as the ground is exposed, and water reuniting later will be of no benefit. Similarly, if an unwashed hand is dipped without necessity, the water will become used (Musta'mal) as soon as the ground is exposed. Similarly, if a state of ritual impurity (Hadath) occurs while the ground is exposed, it will become used. If these situations do not occur, it will remain pure and purifying.	2	480

Serial No.	Subjects	Point No.	Page No.
131	Issue: It is better (Awla) that a woman should not perform purification with the leftover water of a man.	6	484
132	Issue: Ablution (Wudu) is permissible with water in which a child has put their hands or feet, as long as there is no certainty of impurity. Yes, it is better to avoid it as long as there is no certainty of its purity.	2	485
133	Issue: If the water of a pool smells, ablution from it is permissible as long as no impurity is known.	5	485
134	Issue: God forbid, the use of water from land upon which divine wrath descended, or performing Tayammum with its soil, is all disliked (Makruh), except for the well of the camel of Salih (peace be upon him) in the land of Thamud.	6	485

फतावा रिज़विया जिल्द चौथी

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
124	मसला: बहते पानी में जिस तरह चौड़ाई शर्त नहीं है, गहराई भी बिलकुल ज़रूरी नहीं है।	2	475
125	मसला: लेखक के शोध और समन्वय के अनुसार, 'आब-ए-कसीर' (बड़ी मात्रा में पानी) के लिए अपने आप में कोई गहराई आवश्यक नहीं है, बस इतना हो कि सौ हाथ के क्षेत्रफल में ज़मीन कहीं खुली न हो। हाँ, पानी लेते समय 'कसीर' बने रहने के लिए उतनी गहराई ज़रूरी है कि उसे लेने से ज़मीन न खुले।	1	478
126	मसला: बारिश बहता पानी है। जब कुल्ली करके और नाक में नरम हड्डी तक पानी चढ़ाकर कोई बारिश में नंगा खड़ा हो जाए कि पानी उसके पूरे शरीर पर फिर जाए, तो ग़ुस्ल (स्नान) हो जाएगा।	1	479
127	मसला: लेखक के शोध में न तो 'चुल्लू' की विशेषता चाहिए और न 'लप' की, बल्कि जिस तरह भी पानी लिया गया हो, उससे ज़मीन नहीं खुलनी चाहिए, चाहे वह चुल्लू हो, लप हो या बर्तन।	3	479
128	मसला: लेखक के शोध में इतनी गहराई केवल वहीं आवश्यक होनी चाहिए जहाँ से पानी लिया जाए, चाहे बाकी क्षेत्रफल में वह जौ के बराबर ही गहरा क्यों न हो।	4	479
129	मसला: पानी अगर इतना अधिक है कि हाथ या बर्तन से पानी उठाने पर चाहे ज़मीन खुल जाए, लेकिन हर तरफ का हिस्सा क्षेत्रफल में सौ हाथ ही रहे, तो ऐसा खुलना हानिकारक नहीं है।	1	480
130	मसला: पानी उठाने से ज़मीन खुलकर अगर 'दह दर दह' (दस गुणा दस) न रहे, तो यदि उसमें पहले से कोई अपवित्रता (नजासत) मौजूद थी, तो ज़मीन खुलते ही वह अपवित्र हो जाएगा और बाद में पानी का मिल जाना कोई फ़ायदा नहीं देगा। इसी तरह यदि बिना ज़रूरत के बिना धुला हाथ डाला	2	480

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
	और ज़मीन खुलते ही पानी 'मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ) हो जाएगा। इसी तरह अगर ज़मीन खुली होने के समय 'हदस' (अशुद्धि) घटित हुई तो वह मुस्तअमल हो जाएगा। यदि ये स्थितियाँ न हों तो वह पाक और पाक करने वाला रहेगा।		
131	मसला: बेहतर (औला) यह है कि पुरुष के बचे हुए पानी से महिला भी पवित्रता प्राप्त न करे।	6	484
132	मसला: जिस पानी में बच्चे ने हाथ-पाँव डाल दिए हों, उससे वज़ू जायज़ है जब तक कि अपवित्रता का यकीन न हो। हाँ, बचना बेहतर है जब तक पवित्रता का यकीन न हो।	2	485
133	मसला: यदि हौज (कुंड) के पानी से दुर्गंध आती हो, तो उससे वज़ू तब तक जायज़ है जब तक अपवित्रता का पता न चले।	5	485
134	मसला: अल्लाह की पनाह, जिस ज़मीन पर ईश्वरीय प्रकोप (ग़ज़ब) उतरा हो, उसके पानी का किसी भी तरह का उपयोग और उसकी मिट्टी से तयम्मुम करना सब मकरूह (नापसंद) है, सिवाय समूद की ज़मीन में हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की ऊँटनी के कुएँ के।	6	485

فتاوی رضویہ جلد چہارم

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱۲۴	مسئلہ: جاری پانی میں جس طرح عرض شرط نہیں عمق بھی کچھ ضرور نہیں۔	۲	۴۷۵
۱۲۵	مسئلہ: مصنف کی تحقیق اور توفیق کی فی نفسہ آبِ کثیر کے لئے کچھ عمق درکار نہیں صرف اتنا ہو کہ سو ہاتھ کی مساحت میں زمین کہیں کھلی نہ ہو، ہاں پانی لیتے وقت کثیر رہنے کے لئے ضرور اتنا عمق درکار کہ اس لینے سے زمین نہ کھل جائے۔	۱	۴۷۸
۱۲۶	مسئلہ: بینہ جاری پانی ہے جب کلی کر کے ناک میں نرم بانسے کی حد تک پانی چڑھا کر مینہ میں ننگا کھڑا ہو کہ پانی اس کے سب بدن پر پھر جائے غسل ہو جائے گا۔	۱	۴۷۹
۱۲۷	مسئلہ: مصنف کی تحقیق میں نہ چلو کی خصوصیت چاہیئے نہ لپ کی بلکہ جس طرح پانی لیا گیا اس سے زمین نہ کھلی ہو چلو تھا یا لپ یا برتن۔	۳	۴۷۹
۱۲۸	مسئلہ: مصنف کی تحقیق میں اتنا ڈال صرف وہیں درکار ہونا چاہئے جہاں سے پانی لیں اگر چہ باقی مساحت میں جو ہی بھر ہو۔	۴	۴۷۹
۱۲۹		۱	۴۸۰

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: پانی اگر اتنا کثیر ہے کہ ہاتھ خواہ برتن سے پانی اٹھانے پر اگر چہ زمین کھل گئی مگر ہر طرف کا ٹکڑا مساحت میں سو ہاتھ رہا تو ایسا کھلنا کچھ مضر نہیں۔		
۱۳۰	مسئلہ: پانی اٹھانے سے زمین کھل کر ٹکڑے دہ در دہ نہ رہے تو اگر اس میں پہلے سے کوئی نجاست موجود تھی زمین کھلتے ہی ناپاک ہو جائے گا اور اس کے بعد پھر پانی کا مل جانا فائدہ نہ دے گا یوں ہی اگر بے ضرورت بے ڈھلا ہاتھ ڈالا زمین کھلتے ہی پانی مستعمل ہو جائیگا۔ یوں ہی اگر جس وقت زمین کھلی اسے حدث واقع ہوا مستعمل ہو جائیگا اور یہ صورتیں نہ ہوں تو طاہر مطہر رہے گا۔	۲	۴۸۰
۱۳۱	مسئلہ: اولیٰ یہ ہے کہ مرد کے بچے پانی سے عورت بھی طہارت نہ کرے۔	۶	۴۸۴
۱۳۲	مسئلہ: جس پانی میں بچے نے ہاتھ پاؤں ڈال دیا اس سے وضو جائز ہے جب تک نجاست پر یقین نہ ہو۔ ہاں بچنا اولیٰ ہے جب تک طہارت پر یقین نہ ہو۔	۲	۴۸۵
۱۳۳	مسئلہ: حوض کے پانی میں بدبو آتی ہو اس سے وضو جائز ہے جب تک نجاست معلوم نہ ہو۔	۵	۴۸۵
۱۳۴	مسئلہ: معاذ اللہ جس زمین پر غضب اترا اس کے پانی کا کسی طرح استعمال اس کی مٹی سے تیمم سب مکروہ ہے مگر زمین ثمود میں ناقہ صالح علیہ السلام کا کنواں۔	۶	۴۸۵

Fatawa Rizwia Volume 4

Serial No. Titles Benefit No. Page No. 135 Ruling: If someone else's water is taken without permission, even if by force or theft, wudu (ablution) with it will be valid, but it is forbidden (haram). 3 416 136 Ruling: If water is drawn from someone's private well despite their prohibition, using it is permissible. 4 416 137 Ruling: If a stream of used water (ma-e-musta'mal) or clear drops of it fall into water, it is better not to perform wudu with it. 2 440 138 Ruling: If sand or mud gets mixed in water, as long as it remains liquid, wudu with it is permissible. I say: However, performing wudu with muddy water without necessity is forbidden as it constitutes 'muthla' (disfigurement), and this is shari'atically forbidden. 3 440 139 Ruling: If leaves fall into a pond and the color of the water changes so much that it appears green even when taken in a handful, according to the correct school of thought, wudu with it is still permissible, but it is inappropriate due to being contrary to propriety. 1 442 140 Ruling: A horse's leftover water is suitable for wudu. 1 446 141 Ruling: Similarly, the leftover water of cows, buffaloes, goats, and other lawful (halal) animals, provided no impurity is known on their mouths at that time. 2 446 142 Ruling: Some have said the leftover water of their males is impure, but the correct view is that it is also pure as long as no impurity is known. 3 446 143 Ruling: If an ox is seen sniffing female urine, or a goat is seen licking its genitals etc., and then puts its mouth in water before the mouth becomes pure, the water will become impure. 3 447 144 Ruling: Wudu with water in which something smelly has mixed is disliked (makruh), especially if the smell remains during prayer, it will be prohibitively disliked (makruh-e-tahrimi). 5 447 145 Ruling: If only date-juice (nabiz-e-tamr) is found, it is recommended to perform both wudu with it and tayammum, so that purification is achieved by consensus. However, if only tayammum is performed, there is no harm. 4 450 146 Ruling: It is Sunnah to wash the miswak (tooth-stick) after using it. The water used to wash it will not remain suitable for wudu, but performing wudu with it is disliked (makruh). 1 455

फतावा रज़विया जिल्द चौथी

क्रम सं. शीर्षक फायदा नंबर पृष्ठ सं. 135 मसला: पराया पानी बिना अनुमति के लिया गया, चाहे ज़बरदस्ती या चुराकर, तो उससे वज़ू हो जाएगा मगर हराम है। 3 416 136 मसला: किसी के निजी कुएँ से उसकी मनाही के बावजूद पानी भर लिया, उसका इस्तेमाल जायज़ है। 4 416 137 मसला: जिस पानी में प्रयुक्त पानी (मा-ए-मुस्तअमल) की धार पहुँची या स्पष्ट बूँदें गिरीं, उससे वज़ू न करना बेहतर है। 2 440 138 मसला: पानी में रेत कीचड़ मिल जाए तो जब तक वह पतला रहे उससे वज़ू जायज़ है। मैं कहता हूँ: लेकिन बिना ज़रूरत कीचड़ मिले पानी से वज़ू करना मना है क्योंकि यह 'मुसला' (रूप बिगाड़ना) है और यह शरीअत में हराम है। 3 440 139 मसला: हौज में पत्ते गिरकर पानी का रंग इतना बदल गया कि अंजुली में उठाने पर भी हरियाली महसूस होती है, तो सही मत के अनुसार अब भी इससे वज़ू जायज़ है, लेकिन अनुपयुक्त होने के कारण मुनासिब नहीं। 1 442 140 मसला: घोड़े का झूठा पानी वज़ू के काबिल है। 1 446 141 मसला: इसी तरह गाय, भैंस, बकरी आदि हलाल जानवरों का झूठा, जब तक कि उस समय उनके मुँह पर कोई गंदगी न पता हो। 2 446 142 मसला: कुछ ने कहा कि उनके नर का झूठा नापाक है, और सही यह है कि वह भी पाक है जब तक कि गंदगी मालूम न हो। 3 446 143 मसला: अगर देखा कि बैल आदि ने मादा का पेशाब सूंघा या बकरे ने अपना जननांग चाटा और मुँह साफ होने से पहले पानी में डाल दिया, तो पानी नापाक हो जाएगा। 3 447 144 मसला: जिस पानी में कोई बदबूदार चीज़ मिल जाए उससे वज़ू मकरूह है, विशेष रूप से अगर उसकी बदबू नमाज़ के दौरान बनी रहे तो यह मकरूह-ए-तहरीमी होगा। 5 447 145 मसला: यदि केवल नबीज़-ए-तमर (खजूर का शरबत) मिले तो मुस्तहब है कि उससे वज़ू भी करे और तयम्मुम भी कर ले ताकि सर्वसम्मति से पाकी हासिल हो जाए। और अगर केवल तयम्मुम किया तब भी कोई हर्ज नहीं। 4 450 146 मसला: मिस्वाक करने के बाद उसे धोकर रखना सुन्नत है। धोने वाला पानी वज़ू के लायक नहीं रहेगा, लेकिन उससे वज़ू करना मकरूह है। 1 455

पृष्ठ 651 का 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

نمبر شمار عنوانات فائدہ نمبر صفحہ نمبر ۱۳۵ مسئلہ: پرایا پانی بے اجازت لے لیا اگرچہ زبردستی یا چرا کر اس سے وضو ہوجائے مگر حرام ہے۔ ۳ ۴۱۶ ۱۳۶ مسئلہ: کسی کے مملوک کنوئیں سے اس کی ممانعت پر بھی پانی بھر لیا اس کا استعمال جائز ہے۔ ۴ ۴۱۶ ۱۳۷ مسئلہ: جس پانی میں مائے مستعمل کی دھار پہنچی یا واضح قطرے گرے اس سے وضو نہ کرنا بہتر۔ ۲ ۴۴۰ ۱۳۸ مسئلہ: پانی میں ریت کیچڑ مل جائے تو جب تک رقیق رہے اس سے وضو جائز ہے اقول: مگر بلا ضرورت کیچڑ ملے ہوئے سے وضو کرنا منع ہے کہ مثلہ یعنی صورت بگاڑنا ہے اور یہ شرعاً حرام ہے۔ ۳ ۴۴۰ ۱۳۹ مسئلہ: حوض میں پتے گر کر پانی کا رنگ اتنا بدل گیا کہ چلو میں اٹھائے سے بھی سبزی معلوم ہوتی ہے تو صحیح مذہب میں اب بھی اس سے وضو جائز ہے مگر بوجہ خلاف مناسب نہیں۔ ۱ ۴۴۲ ۱۴۰ مسئلہ: گھوڑے کا جھوٹا پانی قابلِ وضو ہے۔ ۱ ۴۴۶ ۱۴۱ مسئلہ: یوں ہی گائے بھینس بکری وغیرہ حلال جانوروں کا جھوٹا جبکہ اس وقت ان کے منہ کی نجاست معلوم نہ ہو۔ ۲ ۴۴۶ ۱۴۲ مسئلہ: بعض نے کہا ان کے نَر کا جھوٹا ناپاک ہے اور صحیح یہ کہ وہ بھی پاک ہے جب تک نجاست معلوم نہ ہو۔ ۳ ۴۴۶ ۱۴۳ مسئلہ: اگر دیکھا کہ بیل وغیرہ نے مادہ کا پیشاب سونگھا یا بکرے نے آلہ تناسل مندی وغیرہ نکلتے میں چوسا اور قبل منہ پاک ہو جانے کے پانی میں ڈال دیا تو پانی ناپاک ہو جائے گا۔ ۳ ۴۴۷ ۱۴۴ مسئلہ: جس پانی میں کوئی بدبودار چیز مل جائے اس سے وضو مکروہ ہے خصوصاً اگر اس کی بدبو نماز میں باقی رہے کہ مکروہِ تحریمی ہوگی۔ ۵ ۴۴۷ ۱۴۵ مسئلہ: صرف نبیز تمر پائے تو مستحب کہ اس سے وضو بھی کرے اور تیمم بھی کرلے کہ بالاتفاق طہارت ہوجائے اور اگر صرف تیمم کیا جب بھی حرج نہیں۔ ۴ ۴۵۰

۱۴۶ مسئلہ: مسواک کرنے کے بعد اسے دھو کر رکھنا سنت ہے نہ پانی قابلِ وضو رہے گا مگر اس سے وضو مکروہ ہے۔ ۱ ۴۵۵

Fatawa Razawiya, Volume 4

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page No.
147	Issue: It is Sunnah to wash the Miswak before using it. Ablution with this water is not even disliked (makruh) if the Miswak is new or has been washed before.	2	455
148	Issue: For warding off the evil eye, it is mentioned in the Hadith that the limbs of the one whose eye was cast should be washed, and that water should be poured over the head of the victim of the evil eye. The person who cast the eye is ordered not to refuse when asked to wash.	4	455
149	Issue: The washings (ghusala) of the sacred relics of the Holy Prophet (may peace and blessings of Allah be upon him), such as the sacred cloak (jubba) and blessed sandals, are a source of healing and blessing, suitable for ablution, and bestowers of purity, but they should not be poured over the feet.	1	456
150	Issue: Regarding 'Nabiz-e-Tamar' (date-water), the Imams have provided a very fine reconciliation of the sayings and narrations of the Imam. Once, the question was in a situation where dates were put in water but the water had not yet become Nabiz, though a slight sweetness and color had appeared. It was said that ablution is permissible with it. The second question was in a situation where the water had become Nabiz; it was said that ablution is not permissible with it, and if water is not found, one should perform Tayammum. The third question was in a situation where there is doubt or hesitation whether it has become Nabiz or not; it was said that one should perform both ablution and Tayammum, so if it has not yet become Nabiz, purity will be attained through ablution, and if it has, then through Tayammum. The example of this disagreement from the Imam is the question regarding the kiss of a fasting person asked of the Holy Prophet (may peace and blessings of Allah be upon him), which is coming up soon.	4	484
151	Issue: If something like Sattu (roasted flour) etc. is put in water such that it settles at the bottom and the water on top remains	1	498

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page No.
	clear, or with a slight mixture that does not hinder fluidity, even if it becomes another substance, there is no harm in performing ablution with it.		
152	Benefit: A couplet for defining the meaning of fluidity (riqqat) to be added to the verses defining 'absolute water' (maa-e-mutlaq): Fluidity is that which flows together as one surface, Free from solid matter if no obstacle comes in its way.	2	498

फ़तावा रज़विया, जिल्द चहारुम (भाग 4)

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
147	मसला: मिस्वाक करने से पहले भी इसे धो लेना सुन्नत है। इस पानी से वज़ू मकरूह भी नहीं अगर मिस्वाक नई या पहले धुली हुई है।	2	455
148	मसला: नज़र उतारने के लिए हदीस में इरशाद हुआ है कि जिसकी नज़र लगी उसके आज़ा (अंग) वज़ू वग़ैरह धोकर वो पानी चश्मज़दा (नज़र लगे व्यक्ति) के सर पर डाला जाए और उसे हुक्म है कि जब उससे धोने को कहा जाए तो इनकार न करे।	4	455
149	मसला: हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के आसार-ए-शरीफ़ा जैसे जुब्बा-ए-अकदस और न'ल-ए-मुबारक का गुसाला (धोवन) शिफ़ा और बरकत, वज़ू के काबिल और तहारत देने वाला है, मगर पाँव पर न डाला जाए।	1	456
150	मसला: अइम्मा ने नबीज़-ए-तमर (खजूर का पानी) के बारे में इमाम के अक़वाल और रिवायात में निहायत नफ़ीस तत्वीक़ (समन्वय) फरमाई है कि एक बार सवाल इस सूरत से था कि छुहारे डाले और अभी पानी नबीज़ नहीं हुआ हालाँकि हल्की मिठास और रंगत आ गई। फरमाया इससे वज़ू जायज़ है। दूसरा सवाल इस सूरत से हुआ कि पानी नबीज़ हो गया, फरमाया इससे वज़ू जायज़ नहीं और पानी न मिले तो तयम्मुम करे। तीसरा सवाल इस सूरत से था कि नबीज़ होने या न होने में शक या तरद्दुद है, न तो ये कह सकते हैं कि नबीज़ हो गया न ये कि नहीं हुआ, फरमाया इससे वज़ू भी करे और तयम्मुम भी कि अगर अभी नबीज़ न हुआ हो तो वज़ू से पाकी हासिल हो जाएगी और अगर हो गया तो तयम्मुम से। इमाम से इस इख़्तिलाफ़ की नज़ीर (उदाहरण) हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रोज़ेदार के बोसे के बारे में सवाल है जो आगे आएगा।	4	484
151		1	498

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
152	मसला: पानी में अगर सत्तू वग़ैरह कोई चीज़ डाली जाए कि तह-नशीन (नीचे बैठ) जाए, ऊपर निथरा पानी रहे या कुछ हल्के मिश्रण के साथ जो तरलता (रिक़्क़त) में बाधा न हो, वो कोई दूसरी चीज़ हो जाए तो उससे वज़ू में हर्ज़ नहीं। फ़ायदा: तरलता (रिक़्क़त) के अर्थ को स्पष्ट करने का शे'र ताकि मा-ए-मुतलक (शुद्ध जल) की परिभाषा वाले शे'रों में जोड़ा जाए: रिक़्क़त आं वां कि बसीलां हम यक सतह शोद खाली अज़ जुर्म अगर मान'अ ऊ नायद पेश (तरलता वह है जो बहते समय एक ही सतह पर रहे, ठोस कणों से मुक्त हो यदि कोई रुकावट सामने न आए।)	2	498

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱۴۷	مسئلہ: مسواک کرنے سے پہلے بھی اسے دھولینا سنت ہے۔ اس پانی سے وضو مکروہ بھی نہیں اگر مسواک نئی یا پہلے دھلی ہوئی ہے۔	۲	۴۵۵
۱۴۸	مسئلہ: دفعِ نظر کے لئے حدیث میں ارشاد ہوا ہے کہ جس کی نظر لگی اس کے اعضاء وضو وغیرہ دھو کر وہ پانی چشم زدہ کے سر پر ڈالا جائے اور اسے حکم ہے کہ جب اُس سے دھونے کو کہا جائے انکار نہ کرے۔	۴	۴۵۵
۱۴۹	مسئلہ: حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے آثارِ شریفہ مثلِ جبہ اقدس و نعل مبارک کا غسالہ شفا و برکت قابل وضو اور معطیِ طہارت ہے مگر پاؤں پر نہ ڈالا جائے۔	۱	۴۵۶
۱۵۰	مسئلہ: ائمہ نے دوبارہ نبیذِ تمر اقوال و روایات امام میں نہایت نفیس تطبیق فرمائی ہے کہ ایک بار سوال اس صورت سے تھا کہ چھوہارے ڈالے اور ہنوز پانی نبیذ نہ ہوا اگرچہ خفیف حلاوت اور رنگت آگئی۔ فرمایا اس سے وضو جائز ہے دوسرا سوال اس صورت سے ہوا کہ پانی نبیذ ہو گیا فرمایا اس سے وضو جائز نہیں اور پانی نہ ملے تو تیمم کرے۔ تیسرا سوال اس صورت سے تھا کہ نبیذ ہونے نہ ہونے میں شک یا تردد ہے نہ تو یہ کہہ سکتے ہیں کہ نبیذ ہو گیا نہ یہ کہ نہ ہوا، فرمایا اس سے وضو بھی کرے اور تیمم بھی کہ اگر ہنوز نبیذ نہ ہوا تو اس سے طہارت ہو جائے گی اور ہو گیا تو تیمم سے امام	۴	۴۸۴

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	سے اس اختلاف کی نظیر وہ ہے کہ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے سوال بوسہ صائم میں ابھی آتی ہے۔		
	مسئلہ: پانی میں اگر ستو وغیرہ کوئی چیز ڈالی جائے کہ تہ نشین ہو جائے اوپر		
۱۵۱	نتھرا پانی رہے یا کچھ خفیف آمیزش کے ساتھ جو مانع رقت نہ ہو وہ کوئی چیز دگر ہو جائے تو اس سے وضو میں حرج نہیں۔	۱	۴۹۸
	فائدہ: معنی رقت کے انضباط کا شعر کہ اشعار تعریف مائے مطلق میں ضم کیا جائے		
۱۵۲	رقت آں واں کہ بسیلاں ہم یک سطح شود خالی از جرم اگر مانع او ناید پیش	۲	۴۹۸

Fatawa Razawiyya, Volume 4

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page
53	Problem: The fluidity of water is lost even by the addition of some flowing things, such as enough honey to make it viscous (Dildar).	1	499
154	Problem: Recurring clarifications that cooking something in water will not keep it as 'pure water' (Aab-e-Mutlaq) only when it is capable of becoming thick upon cooling.	2	503
155	Problem: If a chhatak (approx 58g) of meat is cooked in a large pot full of water, the water remains suitable for ablution (Wudu).	3	508
156	Problem: If a thing cooked in water makes it actually thick such that it doesn't fully spread when poured and remains thick, it is no longer suitable for ablution at all, even if the purpose was increased cleanliness like soap etc. If it hasn't actually become thick, ablution is permissible if that thing is like soap for increased cleanliness. If it's not such a thing and water becomes capable of becoming thick upon cooling, even if not yet thick, ablution is absolutely impermissible. And if water is not like that, but due to cooking it becomes another thing intended for a different purpose, then ablution is not allowed, otherwise it is.	4	508
157	Problem: While filling a water skin (Mashk), water falling from the bucket into the skin is considered flowing until it enters the mouth of the skin. If it touches any impurity in between, it will not become impure (Najis).	2	555
158	Problem: If a newborn calf of a cow, goat or any clean animal falls into a well or basin while still wet from birth and comes out alive, the water remains pure.	1	563
159	Problem: If a woman wearing a lehenga (long skirt) draws water from a well, it will not affect the purity of the water unless it is known and proven that an impure drop from her body fell into the water.	1	564

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page
160	Problem: A mule whose mother is a mare is treated like a horse; its leftovers (saliva) are pure, and eating its meat is disliked (Makruh) but not forbidden (Haram).	2	644
161	Problem: If a person in a state of minor ritual impurity (Muhdith) who only needs ablution puts their head into a water vessel, the wiping (Masah) will be done and the water will not become used (Mustamal). However, if even the tip of an unwashed finger or nail touches water less than 'dah-dar-dah' (approx 5x5 meters surface area), all the water becomes 'Mustamal'. Similarly, if a person in major impurity (Junub) or a menstruating woman after cessation of menses touches the water with their head or even a single hair, it will all become 'Mustamal'.	2	726

फतावा रज़विया, खंड 4

क्रम संख्या	शीर्षक	लाभ संख्या	पृष्ठ
53	मसला: कुछ बहने वाली चीजों के मिलने से भी पानी का पतलापन चला जाता है, जैसे कि इतना शहद कि उसे गाढ़ा (दिलदार) कर दे।	1	499
154	मसला: बार-बार स्पष्ट किया गया है कि पानी में किसी चीज़ को पकाने से वह तब 'आब-ए-मुतलक़' (शुद्ध जल) नहीं रहेगा जब वह ठंडा होकर गाढ़ा होने के योग्य हो जाए।	2	503
155	मसला: पतीली भर पानी में छटाँक भर मांस डालकर पकाया गया तो पानी वज़ू के योग्य रहेगा।	3	508
156	मसला: पानी में पकाई गई चीज़ अगर उसे वास्तव में गाढ़ा कर दे कि उँडेलने पर पूरी तरह न फैले और गाढ़ापन बना रहे, तो वह बिल्कुल वज़ू के योग्य नहीं रहा, भले ही उस चीज़ का उद्देश्य साबुन आदि की तरह अधिक स्वच्छता ही क्यों न हो। और यदि वह वास्तव में गाढ़ा नहीं हुआ, तो उससे वज़ू करना बिल्कुल जायज़ है बशर्ते वह चीज़ साबुन आदि जैसी स्वच्छता बढ़ाने के लिए हो। और यदि वह ऐसी चीज़ नहीं है और पानी इस योग्य हो गया कि ठंडा होने पर गाढ़ा हो जाएगा, भले ही अभी वास्तव में नहीं हुआ है, तो उससे वज़ू करना बिल्कुल नाजायज़ है। और यदि पानी ऐसा नहीं हुआ, लेकिन पकने के बाद किसी अन्य उद्देश्य के लिए दूसरी वस्तु बन गया, तो उससे वज़ू जायज़ नहीं है, अन्यथा है।	4	508
157	मसला: मश्क (पानी की खाल) भरते समय, डोल से निकलकर मश्क में जा रहा पानी तब तक बहता हुआ माना जाता है जब तक कि वह मश्क के मुँह में प्रवेश न कर जाए। इस बीच यदि वह किसी अशुद्धि से मिलता है, तो वह नापाक नहीं होगा।	2	555
158		1	563

क्रम संख्या	शीर्षक	लाभ संख्या	पृष्ठ
	मसला: गाय, बकरी या किसी पाक जानवर का बच्चा पैदा होते ही, जन्म के समय उसके शरीर पर होने वाली गीलापन की स्थिति में यदि कुएँ या बर्तन में गिर जाए और जीवित निकल आए, तो पानी पाक रहेगा।		
159	मसला: लहंगे वाली औरत अगर कुएँ से पानी भरे, तो पानी की पवित्रता में कोई फर्क नहीं आएगा जब तक कि यह ज्ञात और सिद्ध न हो जाए कि उसके शरीर से कोई नापाक बूंद टपक कर पानी में गिरी।	1	564
160	मसला: खच्चर जिसकी माँ घोड़ी हो, घोड़े के हुक्म में है; उसका जूठा पाक है और उसे खाना मकरूह (नापसंद) है, हराम (वर्जित) नहीं।	2	644
161	मसला: वह व्यक्ति जिसे केवल वज़ू की आवश्यकता है (मुहदिथ), यदि पानी के बर्तन में अपना सिर डालेगा तो मसा (सिर का पोंछा जाना) हो जाएगा और पानी 'मुस्तमल' (इस्तेमाल किया हुआ) नहीं होगा। लेकिन बिना धुली उँगली या नाखून का किनारा भी 'दह-दर-दह' (लगभग 5x5 मीटर सतह) से कम पानी को छू जाएगा तो सारा पानी मुस्तमल हो जाएगा। इसी तरह यदि 'जुनुब' (नापाक व्यक्ति) या मासिक धर्म समाप्त होने के बाद महिला अपना सिर या एक बाल भी पानी से छू दे, तो सब मुस्तमल हो जाएगा।	2	726

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ
۵۳	مسئلہ: پانی کی رقت بعض بہتی چیزوں کے ملنے سے بھی جاتی رہتی ہے جیسے اتنا شہد کہ اُسے دلدار کر دے۔	۱	۴۹۹
۱۵۴	مسئلہ: تصریحاتِ متواترہ کہ پانی میں کسی شے کا پکانا اسی وقت اسے آبِ مطلق نہ رکھے گا جب وہ ٹھنڈا ہو کر گاڑھا ہو جانے کے قابل ہو جائے۔	۲	۵۰۳
۱۵۵	مسئلہ: دیگچہ بھر پانی میں چھٹانک بھر گوشت ڈال کر پکایا تو پانی قابلِ وضو رہے۔	۳	۵۰۸
۱۵۶	مسئلہ: جو چیز پانی میں پکائی جائے اگر پانی اس سے بالفعل گاڑھا ہو جائے کہ بہانے میں پورا نہ پھیلے دل باقی رہے تو مطلقاً قابلِ وضو نہ رہا اگرچہ اس چیز سے مقصود صابون وغیرہ کی طرح زیادتِ نظافت ہی ہو اور اگر بالفعل گاڑھا نہ ہوا تو اس سے وضو مطلقاً جائز ہے جبکہ وہ شے مثل صابون وغیرہ زیادتِ نظافت کیلئے ہو اور اگر وہ چیز ایسی نہیں اور پانی اس قابل ہو گیا کہ ٹھنڈا ہو کر دلدار ہو جائے گا اگرچہ بالفعل نہیں تو اس سے وضو مطلقاً ناجائز ہے۔ اور اگر پانی اس قابل نہ ہوا تو اگر پک کر دوسری شئی مقصودِ دیگر کیلئے ہوگئی تو اس سے وضو روا نہیں ورنہ ہے۔	۴	۵۰۸
۱۵۷		۲	۵۵۵

نمبر شمار	عنوانات	صفحہ نمبر	فائدہ
۱۵۸	مسئلہ: مشک بھرتے وقت پانی کہ ڈول سے نکل کر مشک میں جا رہا ہے جب تک دہانہ مشک میں داخل نہ ہو جاری ہے۔ اس بیچ میں اگر کسی نجاست سے ملے گا ناپاک نہ ہوگا۔ مسئلہ: گائے بکری کسی پاک جانور کا بچہ پیدا ہوتے ہیں اسی تری کی حالت میں جو وقتِ پیدائش اس کے بدن پر ہوتی ہے کنویں یا لگن میں گر جائے اور زندہ نکل آئے پانی پاک رہے گا۔	۵۶۳	۱
۱۵۹	مسئلہ: لہنگے والی عورت اگر کنویں سے پانی بھرے پانی کی طہارت میں فرق نہ آئیگا جب تک معلوم و ثابت نہ ہو کہ اس کے بدن سے کوئی ناپاک بوند ٹپک کر پانی میں پہنچی۔	۵۶۴	۱
۱۶۰	مسئلہ: خچر جس کی ماں گھوڑی ہو گھوڑے کے حکم میں ہے اس کا جھوٹا پاک ہے اور کھانا مکروہ ہے حرام نہیں۔	۶۴۴	۲
۱۶۱	مسئلہ: محدث جسے صرف حاجتِ وضو ہے اگر پانی کے برتن میں اپنا سر ڈالے گا مسح ہو جائیگا اور پانی مستعمل نہ ہوگا۔ مگر بے دھوئے انگلی یا ناخن کا کنارہ بھی دہ دردہ سے کم پانی کو لگ جائیگا سارا پانی مستعمل ہو جائیگا۔ یوں ہی اگر جنب یا حائض بعد انقطاعِ حیض اگر اپنا سر بلکہ ایک بال ہی پانی سے چھو دیں سب مستعمل ہو جائے گا۔	۷۲۶	۲

Fatawa Razawiyya Volume 4

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page No.
162	Issue: If a bandage on which wiping (masah) is required due to illness, or a sock (moza) of the foot is dipped in water instead of wiping, the wiping will be considered performed, and the water will not become 'must’amal' (used water).	3	726
	Chapter on the Well		
1	Issue: If a well becomes impure and its rim is higher than the ground, and it's full of water or filled up, and a hole is made to let some out, the whole well becomes pure, even if the command was to drain all the water.	7	362
2	Issue: If a pond or even the deepest well is filled to the top and then overflowed with pure water, everything down to the bottom will become pure.	1	368
3	Issue: A well from which women, children, and villagers draw water is not impure.	8	412
4	Issue: Putting a pitcher or similar vessel that is kept on the ground into a well will not make it impure unless impurity is known.	9	412
5	Issue: Putting a lota (small pot), which is used for the toilet but kept away from the site of impurity, into a well will also not make it impure unless impurity is known.	10	412
6	Issue: The well water of Hindus and other non-believers, and their vessels, will not be called impure unless there is knowledge of impurity, although there is definitely a dislike (karahat); the same applies to their clothes.	11	412
7	Issue: If a piece of a child's bedding (nihalcha) falls into a well, it won't be impure without knowledge of impurity. However, twenty buckets should be drawn out.	3	415
8	Issue: The same rule applies to used shoes (i.e., they won't be impure without knowledge of impurity; as a precaution, twenty buckets will be drawn out).	4	415
9		1	573

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page No.
	Issue: When there is a command to drain all water, all the water present in the well at the time the impurity was removed must be drawn out, even if it's ten thousand buckets. The estimate of two hundred buckets was for the wells of Baghdad Sharif; it cannot be applied here.		

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी (भाग 4)

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
१६२	मसला: पट्टी जिस पर बीमारी की वजह से मसह करना है या पाँव का मोज़ा अगर मसह की बजाय पानी में डाल दे तो मसह अदा हो जाएगा और पानी 'मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ) नहीं होगा।	३	७२६
	कुएँ का अध्याय (फस्ल फिल बिअर)		
१	मसला: कुआँ नापाक हो गया, उसका घेरा ज़मीन से ऊँचा है और पानी यहाँ तक भरा है या भर दिया गया है, यहाँ एक छेद करके कुछ पानी निकाल दिया तो सब पाक हो गया, चाहे पूरा पानी निकालने का हुक्म हो।	७	३६२
२	मसला: हौज़ या गहरे से गहरा कुआँ जब ऊपर तक भरकर पाक पानी से बहा दिया जाए, तो तह तक सब पाक हो जाएगा।	१	३६८
३	मसला: जिस कुएँ से औरतें, बच्चे और गँवार पानी भरें, वह नापाक नहीं है।	८	४१२
४	मसला: घड़ा वग़ैरह जो बर्तन ज़मीन पर रखा जाता हो, कुएँ में डालने से नापाक न होगा जब तक नजासत (गंदगी) का पता न हो।	९	४१२
५	मसला: लोटा जिसे शौचालय ले जाते हैं और नजासत की जगह से अलग रखते हैं, कुएँ में उसे डालने से भी नापाक न होगा जब तक नजासत का पता न हो।	१०	४१२
६	मसला: हिन्दुओं और अन्य काफ़िरों के कुएँ का पानी और उनके बर्तन नापाक नहीं कहे जाएंगे जब तक नजासत का इल्म न हो, लेकिन कराहत (नापसंदगी) ज़रूर है; यही हाल उनके कपड़ों का है।	११	४१२
७	मसला: बच्चे के बिछौने का टुकड़ा कुएँ में गिर गया, नजासत की जानकारी के बिना नापाक न होगा। हाँ, मगर बीस डोल (बाल्टी) निकाल लें।	३	४१५
८		४	४१५

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
	मसला: यही हुक्म इस्तेमाल किए हुए जूतों का है (यानी नजासत की जानकारी के बिना नापाक न होगा; एहतियात के तौर पर बीस डोल निकाल लेंगे)।		
९	मसला: जब पूरा पानी निकालने का हुक्म हो, तो नजासत निकलने के समय कुएँ में जितना पानी है सब निकाला जाएगा, चाहे दस हज़ार डोल हों। दो सौ डोल का अनुमान बग़दाद शरीफ़ के कुओं के लिए था; यहाँ उस पर अमल नहीं हो सकता।	१	५७३

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱۶۲	مسئلہ: پٹی جس پر بوجہ مرض مسح کرنا ہے یا پاؤں کا موزہ اگر بجائے مسح پانی میں ڈال دے مسح ادا ہو جائیگا اور پانی مستعمل نہ ہوگا۔	۳	۷۲۶
	فصل فی البئر		
۱	مسئلہ: کنواں ناپاک ہوگیا اس کا گولا زمین سے اونچا ہے اور پانی یہاں تک بھرا ہے یا بھر دیا گیا ہے یہاں ایک سوراخ کرکے کچھ نکال دیا سب پاک ہو گیا اگرچہ کل پانی نکالنے کا حکم ہو۔	۷	۳۶۲
۲	مسئلہ: حوض یا گہرے سے گہرا کنواں جب اوپر تک بھر کر پاک پانی سے بہا دیا جائے تہہ تک سب پاک ہو جائے گا۔	۱	۳۶۸
۳	مسئلہ: جس کنویں سے عورتیں بچے گنوار پانی بھریں ناپاک نہیں۔	۸	۴۱۲
۴	مسئلہ: گھڑا وغیرہ جو برتن زمین پر رکھا جاتا ہو کنویں میں ڈالنے سے ناپاک نہ ہوگا جب تک نجاست معلوم نہ ہو۔	۹	۴۱۲
۵	مسئلہ: لوٹا کہ پاخانے کو لے جاتے اور موضع نجاست سے الگ رکھتے ہیں کنویں میں اس کے ڈالنے سے بھی ناپاک نہ ہو گا جب تک نجاست معلوم نہ ہو۔	۱۰	۴۱۲
۶		۱۱	۴۱۲

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: ہندو و غیرہ کافروں کے کنویں کا پانی اور ان کے برتن ناپاک نہ کہے جائینگے جب تک نجاست کا علم نہ ہو مگر کراہت ضرور ہے، یونہی ان کے کپڑے۔		
۷	مسئلہ: بچے کے نہالچے کا ٹکڑا کنویں میں گر گیا بے علم نجاست ناپاک نہ ہوگا۔ ہاں مگر وہ بئیس ڈول نکالیں۔	۳	۴۱۵
۸	مسئلہ: یہی حکم استعمالی جوتے کا ہے (یعنی بے علم نجاست ناپاک نہ ہو گا احتیاطاً بئیس ڈول نکالیں گے)	۴	۴۱۵
۹	مسئلہ: جب کل پانی نکالنے کا حکم ہو نجاست نکلنے کے وقت کنویں میں جتنا پانی ہے سب نکالا جائے گا اگرچہ دس ہزار ڈول ہو، دو سو ڈول کا تخمینہ بغداد شریف کے کنوؤں کے لئے تھا یہاں اس پر عمل نہیں ہو سکتا۔	۱	۵۷۳

Fatawa Razawiyya - Volume 4

Serial No.	Subjects	Note No.	Page No.
10	Ruling: If droppings (of sheep/goats), dung (of cattle), or manure, dry or wet, whole or in pieces, fall into a well, and if the amount is small (such that an observer would call it little), the well will not become impure, whether it is in a city or a village, and whether the well is covered or not. However, if it is a large amount, then all the water must be removed.	5	573
11	Ruling: This ruling is for necessity. Where there is no necessity, for example, if someone throws a pitcher smeared with dung into a well, the well will become impure if it is not a matter of common occurrence. However, if it is a public well that cannot be restricted and non-believers and rustics fill from it and often throw dung-smeared pitchers, then this also falls under the category of necessity and hardship, provided there is no other well there. Otherwise, leave the well for the filthy for the filthy themselves.	6	573
12	Ruling: There is a cesspool of impurity near the well. If the impurity seeps from it into the well such that its effect on color, taste, or smell becomes apparent in the well, the well will become impure, regardless of how far the cesspool is located.	1	574
13	Ruling: Whether the command is to remove all the water or a certain number of buckets, it is not necessary to remove it all at once. If removed gradually, it is also sufficient. For example, if the command is for 20 buckets and one bucket is removed daily, it will become pure in 20 days. If the command is to remove all the water and at the time the impurity was removed there were three thousand buckets of water, and one hundred buckets are removed daily, it will become pure in a month.	1	575

Chapter on Tayammum

Serial No.	Subjects	Note No.	Page No.
1		1	32

Serial No.	Subjects	Note No.	Page No.
	Ruling: If one struck the ground for Tayammum and before it could be rubbed on the face or hands, an event occurs that invalidates ritual purity (hadath), one must strike the ground anew.		
2	Ruling: If wiping (mash) was done with two fingers during Tayammum, the Tayammum will not be valid. Three fingers are necessary for this.	4	259
3	Ruling: If Tayammum was done with one or two fingers and they were repeatedly placed on the soil and rubbed on the body, the Tayammum will still not be valid.	4	260
4	Ruling: If someone rolled in dust with the intention of Tayammum and the dust reached the entire face and both hands completely, the Tayammum is valid.	1	260

क्रमांक	विषय	फ़ायदा नं.	पृष्ठ नं.
10	मसला: मेंगनी, गोबर, लीद सूखी या तर, साबुत या रेज़ा-रेज़ा (टुकड़े-टुकड़े) कुएँ में गिर जाए, अगर वह थोड़ी मात्रा में है जिसे देखने वाला कम कहे, तो कुआँ नापाक (अपवित्र) नहीं होगा, चाहे वह शहर में हो या गाँव में, कुएँ पर ढक्कन हो या न हो। हाँ, अगर ज़्यादा हो तो सारा पानी निकाला जाएगा।	5	573
11	मसला: यह हुक्म ज़रूरत के लिए है। जहाँ ज़रूरत न हो, मिसाल के तौर पर कोई शख़्स गोबर लगा हुआ घड़ा कुएँ में डाल दे, तो कुआँ नापाक हो जाएगा बशर्ते कि यह आम बात (इब्तिला-ए-आम) न हो। हाँ, अगर आम कुआँ है जिसे रोका नहीं जा सकता और काफ़िर और गँवार लोग उससे पानी भरते हैं और अक्सर गोबर लगे घड़े डालते हैं, तो यह भी ज़रूरत और हर्ज (कठिनाई) का स्थान माना जाएगा, बशर्ते कि वहाँ दूसरा कुआँ न हो। वर्ना गंदों का कुआँ गंदों पर छोड़ दें।	6	573
12	मसला: कुएँ के पास गंदगी का गड्ढा है। अगर गंदगी उससे कुएँ तक रिस जाए जिससे कुएँ में उसका असर यानी रंग, स्वाद या गंध ज़ाहिर हो, तो कुआँ नापाक हो जाएगा, चाहे वह गड्ढा कितनी ही दूरी पर क्यों न हो।	1	574
13	मसला: सारा पानी या कुछ बाल्टियाँ निकालने का हुक्म हो, तो एक साथ निकालना ज़रूरी नहीं है। अगर धीरे-धीरे निकालें तब भी काफ़ी है। मिसाल के तौर पर 20 बाल्टियों का हुक्म हो और रोज़ एक बाल्टी निकाली जाए, तो 20 दिन में कुआँ पाक हो जाएगा। अगर सारा पानी निकालने का हुक्म है और गंदगी निकलने के समय उसमें तीन हज़ार बाल्टी पानी था, तो रोज़ सौ-सौ बाल्टी निकाली जाए तो महीने भर में पाक हो जाएगा।	1	575

बाब-उत-तयम्मुम (तयम्मुम का अध्याय)

क्रमांक	विषय	फ़ायदा नं.	पृष्ठ नं.
1	मसला: तयम्मुम के लिए हाथ ज़मीन पर मारा और अभी चेहरे या हाथ पर नहीं मली थी कि कोई ऐसी बात पेश आई जिससे वज़ू टूट जाता है (हदस), तो दोबारा हाथ मारना चाहिए।	1	32
2	मसला: अगर तयम्मुम में दो उंगलियों से मसह किया तो तयम्मुम नहीं होगा, इसमें तीन उंगलियां ज़रूरी हैं।	4	259
3	मसला: एक या दो उंगलियों से तयम्मुम किया और बार-बार उन्हें मिट्टी पर लगाकर बदन पर फेरा, तब भी तयम्मुम नहीं होगा।	4	260
4	मसला: अगर तयम्मुम की नीयत से धूल में लोट लगाया और धूल मुँह और दोनों हाथों पर पूरी तरह पहुँच गई, तो तयम्मुम हो गया।	1	260

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱۰	مسئلہ : مینگنی گوبر لید خشک یا تر ثابت یا ریزہ ریزہ کنویں میں گر جائے اگر قلیل ہے جسے دیکھنے والا کم کہے تو کنواں ناپاک نہ ہوگا شہر میں ہو خواہ گاؤں میں، کنویں پر ڈھکنا ہو یا نہ ہو، ہاں کثیر ہو تو سب پانی نکالا جائے گا۔	۵	۵۷۳
۱۱	مسئلہ : یہ حکم ضرورت کیلئے ہے جہاں ضرورت نہ ہو مثلاً گوبر کا سنا ہوا گھڑا کوئی شخص کنویں میں ڈال دے تو کنواں ناپاک ہو جائے گا جبکہ اس میں ابتلائے عام نہ ہو، ہاں اگر عام کنواں ہے جس کی بندش نہیں ہو سکتی اور کفار اور گنوار بھرنے اور اکثر گوبر کے سنے گھڑے ڈالتے ہیں تو یہ بھی محلِ ضرورت و حرج میں آگیا جبکہ اور کنواں وہاں نہ ہو ورنہ گندوں کا کنواں گندوں پر چھوڑیں۔	۶	۵۷۳
۱۲	مسئلہ : کنویں کے پاس نجاست کا چھ بچہ ہے اگر نجاست اس سے کنویں تک سرایت کرے کہ کنویں میں اُس کا اثر رنگ یا مزہ یا بو ظاہر ہو تو کنواں ناپاک ہو جائے گا اگرچہ وہ چھ بچہ کتنے ہی فاصلہ پر ہو۔	۱	۵۷۴
۱۳	مسئلہ : کل پانی خواہ کچھ ڈول جتنے نکالنے کا حکم ہو ایک ساتھ نکالنا ضرور نہیں اگر بتدریج نکالیں جب بھی کافی ہے مثلاً بیس ۲۰ ڈول کا حکم ہو ایک ایک ڈول روز نکالیں تو بیس ۲۰ دن میں پاک ہو جائے گا کل پانی	۱	۵۷۵

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	نکالنے کا حکم ہے اور اس میں نجاست نکلنے کے وقت تین ہزار ڈول پانی تھا سو سو ڈول روز نکالے تو مہینہ بھر میں پاک ہو جائے گا۔		
	باب التیمم		
۱	مسئلہ : تیمم کی ضرب کی اور ابھی منہ یا ہاتھ پر نہ ملنے پایا تھا کہ حدث واقع ہوا تو از سرِ نو ضرب کرے۔	۱	۳۲
۲	مسئلہ : اگر تیمم میں دو اُنگلیوں سے مسح کیا تیمم نہ ہوگا اس میں تین انگلیاں ضرور ہیں۔	۴	۲۵۹
۳	مسئلہ : ایک یادو انگلیوں سے تیمم کیا اور بار بار انہیں مٹی پر لگا کر بدن پر پھیرا جب بھی تیمم نہ ہوگا۔	۴	۲۶۰
۴	مسئلہ : اگر خاک میں بنیت تیمم لوٹا اور غبار منہ اور دونوں ہاتھوں کو بالاستیعاب پہنچ گیا تیمم ہو گیا۔	۱	۲۶۰

Fatawa Rizvia Volume Four

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
5	Problem: Water for ablution (Wudu) decreased during travel, the shortage can be fulfilled with water from a hookah (Hukka); completing it is obligatory, and Tayammum (dry ablution) is not allowed.	2	434
6	Problem: During travel, if there's a genuine fear that if the water at hand is used for Wudu or Ghusl (ritual bath), then you or another Muslim, or your animal, even a dog whose keeping is permissible, will remain thirsty, or water won't be available for kneading flour or cleaning enough impurity to make prayer valid, then in all these cases, perform Tayammum.	4	440
7	Problem: If the water for Wudu or Ghusl can be kept in a vessel for the animal, then Tayammum is not permissible solely due to consideration for the animal's thirst.	5	440
8	Problem: The same rule should apply to the thirst of a Dhimmi (non-Muslim citizen) obedient to Islam; one should perform Tayammum and save water for them. However, Tayammum is not allowed for the thirst of a Harbi (hostile) kafir.	3	441
9	Problem: Funeral prayer has started, some do not have Wudu, water is available, and they are healthy. If they perform Wudu, they will miss the funeral prayer. They can join by performing Tayammum. However, with this Tayammum, they cannot offer any other prayer nor touch the Holy Quran.	2	582
10	Problem: A sick person for whom Wudu is harmful, or a healthy person where water is unavailable, who performed Tayammum for the funeral prayer, can offer every prayer with this Tayammum until they have power/access to water.	3	582
11	Problem: Impurity fell on the ground and dried up such that no trace of its color, smell, etc., remains at all; it becomes pure for the purpose of prayer. However, Tayammum cannot be performed with it until it is washed and purified.	8	587

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
12	Problem: Hands that are struck against the ground, wall, stone, or any substance of the earth's nature with the intention of Tayammum, by divine command, these hands themselves come under the ruling of the earth's nature. Wiping the face and hands with them serves the same purpose as wiping with the substance of the earth.	3	591
13	Problem: Once the palms are touched to the earth's nature with intention, there is no need for the earth's nature thereafter. Rather, the command is to shake the palms after striking the ground so that any dust that has attached falls off. Only clean hands should be rubbed over the face and hands.	4	591

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी (खंड 4)

क्रम संख्या	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
5	मसअला: यात्रा में वज़ू का पानी कम हो गया, हुक्के के पानी से वह कमी पूरी की जा सकती है; उसे पूरा करना फर्ज़ है और तयम्मुम की अनुमति नहीं दी जा सकती।	2	434
6	मसअला: यात्रा में यदि यह सही आशंका हो कि साथ में जो पानी है उससे वज़ू या गुस्ल करने पर आप या कोई अन्य मुसलमान, या अपना जानवर यहाँ तक कि वह कुत्ता जिसका पालना जायज़ है, प्यासा रह जाएगा, या आटा गूँथने या उतनी नजासत साफ़ करने के लिए जिससे नमाज़ जायज़ हो जाए पानी नहीं मिलेगा, तो इन सभी स्थितियों में तयम्मुम करें।	4	440
7	मसअला: यदि वज़ू या गुस्ल के पानी को जानवर के लिए किसी बर्तन में सुरक्षित रखा जा सकता है, तो जानवर की प्यास के विचार से तयम्मुम जायज़ नहीं है।	5	440
8	मसअला: किसी काफ़िर ज़िम्मी (इस्लाम के अधीन रहने वाला गैर-मुस्लिम) की प्यास के लिए भी यही नियम होना चाहिए कि तयम्मुम करे और पानी उसके लिए बचाए, हाँ काफ़िर हर्बी (शत्रु) की प्यास के लिए तयम्मुम की अनुमति नहीं है।	3	441
9	मसअला: जनाज़े की नमाज़ शुरू हो गई, कुछ लोगों का वज़ू नहीं है, पानी उपलब्ध है और वे स्वस्थ हैं, मगर वज़ू करें तो जनाज़े की नमाज़ छूट जाएगी; वे तयम्मुम करके शामिल हो सकते हैं, लेकिन इस तयम्मुम से न दूसरी नमाज़ पढ़ सकते हैं और न ही कुरआन मजीद छू सकते हैं।	2	582
10	मसअला: मरीज़ जिसके लिए वज़ू हानिकारक है या स्वस्थ व्यक्ति जहाँ पानी नहीं है, यदि जनाज़े की नमाज़ के लिए तयम्मुम किया, तो इस तयम्मुम से वह हर नमाज़ पढ़ सकता है जब तक पानी पर सामर्थ्य न हो।	3	582
11		8	587

क्रम संख्या	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
	मसअला: ज़मीन पर नजासत गिरकर सूख गई कि उसका रंग, गंध आदि का कोई प्रभाव बिल्कुल न रहा, तो नमाज़ के हक में वह पाक (शुद्ध) हो गई, लेकिन उससे तयम्मुम नहीं हो सकता जब तक उसे धोकर पाक न कर लिया जाए।		
12	मसअला: तयम्मुम की नीयत से जो हाथ ज़मीन, दीवार, पत्थर या ज़मीन की प्रकृति की किसी भी चीज़ पर मारे जाते हैं, ईश्वरीय आदेश से वे हाथ स्वयं ज़मीन की प्रकृति के हुक्म में हो जाते हैं, कि उनसे चेहरे और हाथों का मसह करना वही काम देता है जो ज़मीन की प्रकृति से मसह करना।	3	591
13	मसअला: नीयत के साथ हथेलियाँ जब ज़मीन की प्रकृति से मिला ली गईं, तो उसके बाद ज़मीन की प्रकृति की बिल्कुल आवश्यकता नहीं रहती, बल्कि आदेश है कि हथेलियाँ ज़मीन पर मारकर झाड़ लें ताकि जो गर्द-ओ-गुबार लगा हो वह झड़ जाए, और केवल साफ़ हाथों को चेहरे और हाथों पर फेरा जाए।	4	591

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۵	مسئلہ: سفر میں وضو کا پانی گھٹ گیا، حقہ کے پانی سے وہ کمی پوری ہو سکتی ہے اس کی تکمیل فرض ہے اور تیمم کی اجازت نہیں ہو سکتی۔	۲	۴۳۴
۶	مسئلہ: سفر میں اگر صحیح اندیشہ ہو کہ پانی جو ساتھ ہے اس سے وضو یا غسل کرے تو آپ یا دوسرا مسلمان یا اپنا خواہ اس کا جانور یہاں تک کہ وہ کتا جس کا پالنا جائز ہے پیاسا رہ جائے گا یا آٹا گوندھنے یا اتنی نجاست پاک کرنے کو جس سے نماز جائز ہو جائے پانی نہ ملے گا تو ان سب صورتوں میں تیمم کرے۔	۴	۴۴۰
۷	مسئلہ: اگر وضو یا غسل کا پانی جانور کے لئے کسی ظرف میں محفوظ رکھ سکتا ہے تو جانور کی پیاس کے خیال سے تیمم جائز نہیں۔	۵	۴۴۰
۸	مسئلہ: کسی کافر ذمی مطیع الاسلام کی پیاس کیلئے بھی یہی حکم ہونا چاہئے کہ تیمم کرے اور پانی اس کے لئے بچائے ، ہاں کافر حربی کی پیاس کے لئے تیمم کی اجازت نہیں۔	۳	۴۴۱
۹	مسئلہ: نماز جنازہ قائم ہوئی بعض کا وضو نہیں پانی موجود ہے، تندرست ہیں مگر وضو کریں تو نماز جنازہ فوت ہو تیمم کرکے شامل ہو سکتے ہیں مگر اس تیمم سے نہ دوسری نماز پڑھ سکتے ہیں نہ قرآن مجید چھو سکتے ہیں۔	۲	۵۸۲

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: مریض نے جس کو وضو مضر ہے یا تندرست نے جہاں پانی نہیں		
۱۰	نماز جنازہ کے لئے تیمم کیا اس تیمم سے ہر نماز پڑھ سکتا ہے جب تک پانی پر قدرت نہ ہو۔	۳	۵۸۲
	مسئلہ: زمین پر نجاست پڑ کر خشک ہوگئی کہ اس کا رنگ و بو وغیرہ کوئی		
۱۱	اثر اصلاً نہ رہا نماز کے حق میں پاک ہوگئی مگر اس سے تیمم نہیں ہو سکتا جب تک دھو کر پاک نہ کر لی جائے۔	۸	۵۸۷
	مسئلہ: ہاتھ جو تیمم کے ارادے سے زمین یا دیوار یا پتھر غرض جنس زمین		
۱۲	سے کسی شے پر مارے جاتے ہیں بحکم الہی یہ ہاتھ ہی خود جنس زمین کے حکم میں ہو جاتے ہیں کہ منہ اور ہاتھوں کا ان سے مسح وہی کام دیتا ہے جو جنس ارض سے مسح۔	۳	۵۹۱
	مسئلہ: ہتھیلیاں کہ نیت کے ساتھ جنس زمین سے ملائی گئیں ان کے بعد جنس		
۱۳	زمین کی اصلاً حاجت نہیں رہتی بلکہ حکم ہے کہ ہتھیلیاں زمین پر مار کر جھاڑ لیں کہ جو گرد و غبار لگا بھی ہو جھڑ جائے نرے صاف ہاتھ منہ اور ہاتھوں پر پھیرے جائیں	۴	۵۹۱

Fatawa Rizvia | Volume 4

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
14	Issue: For Tayammum, when placing hands on the surface of the earth, the Sunnah is to move the hands forward over it and then pull them back towards oneself.	4	593
15	Issue: It is permissible to ask another person to perform Tayammum for one. They strike their hands on the earth and wipe the person's face and hands. In this case, the intention of the one who asked is a condition; the intention of the one who was asked does not count.	1	594
16	Issue: A storm blew and dust fell on the face and hands. If, while the dust is on them, one wipes their face and hands with the intention of Tayammum, the Tayammum will be valid; otherwise not.	2	594
17	Issue: Someone stood in front of a storm so that dust would fall on them, or demolished a wall and dust fell on their face and hands; until they wipe their hands over it with the intention of Tayammum, Tayammum will not be valid.	1	595
18	Issue: Sweeping was done or wheat was weighed, and flying dust fell on the face and hands; the ruling is the same: if one wipes over it with the intention of Tayammum, it will be valid; otherwise not.	2	595
19	Issue: Rolling on soil with the intention of Tayammum; if the soil reaches the face and both hands, Tayammum is done; otherwise not.	3	595
20	Issue: Someone placed their face and both hands into a dusty area with the intention of Tayammum such that the dust covered the entire face and hands up to above the elbows; Tayammum is done.	4	595
21	Issue: A wall fell and dust rose from it which enveloped the person's body; they moved their face and hands within that rising dust with the intention of Tayammum; Tayammum is done.	5	595

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
22	Issue: Someone poured soil or sand on their face and hands such that it touched all parts of the face and hands; Tayammum is not valid. Yes, if the dust is still present on the limbs and in that state one wipes the face and hands with the intention of Tayammum, it will be valid.	6	595
23	Issue: Dust was poured on the face and hands and its dust is flying around those limbs; in this state, if one moves the hands and face within that rising dust with the intention of Tayammum, Tayammum is done.	7	795
24	Issue: Passing through a place where dust is flying while walking; if, while the dust is raised around the limbs, one moves the limbs with the intention of Tayammum, it will be valid; otherwise not.	8	595

क्रम संख्या	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
14	मसला: तयम्मुम के लिए हाथ ज़मीन की सतह पर रखे तो सुन्नत यह है कि हाथ उस पर आगे बढ़ाए फिर अपनी तरफ लाए।	4	593
15	मसला: यह जायज़ है कि दूसरे से कहे कि मुझे तयम्मुम करा दे, वह अपने हाथ ज़मीन पर मारकर उसके चेहरे और हाथों पर मसह करे। इस स्थिति में कहने वाले की नीयत शर्त होगी, जिससे कहा गया उसकी नीयत का कोई श्रेय नहीं है।	1	594
16	मसला: आंधी चली और चेहरे व हाथों पर धूल पड़ गई। यदि उस धूल के पड़ने की अवस्था में तयम्मुम की नीयत से चेहरे और हाथों पर हाथ फेरे तो तयम्मुम हो जाएगा अन्यथा नहीं।	2	594
17	मसला: आंधी के सामने खड़ा हुआ कि धूल आकर पड़े या दीवार ढहाई कि चेहरे और हाथों पर धूल पड़ी, जब तक तयम्मुम की नीयत से उस पर हाथ न फेरे तयम्मुम नहीं होगा।	1	595
18	मसला: झाड़ू दी या गेहूँ तौले और उड़ती धूल चेहरे और हाथों पर पड़ी, वही नियम है कि यदि तयम्मुम की नीयत से उस पर हाथ फेरे तो तयम्मुम हो जाएगा अन्यथा नहीं।	2	595
19	मसला: तयम्मुम की नीयत से मिट्टी पर लोटा, यदि मिट्टी चेहरे और दोनों हाथों तक पहुँच गई तो तयम्मुम हो गया अन्यथा नहीं।	3	595
20	मसला: किसी धूल वाली जगह अपना चेहरा और दोनों हाथ तयम्मुम की नीयत से डाले कि वह धूल पूरे चेहरे और कोहनियों से ऊपर तक हाथों को घेर ले तो तयम्मुम हो गया।	4	595
21	मसला: दीवार गिरी और उससे गर्द उठी जिसने उसके शरीर को घेर लिया, उसने उस उड़ती धूल में अपने चेहरे और हाथों को तयम्मुम की नीयत से हिलाया (जुम्बिश दी) तो तयम्मुम हो गया।	5	595

क्रम संख्या	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
22	मसला: अपने चेहरे और हाथों पर मिट्टी या रेत गिराई कि चेहरे और हाथों के सभी हिस्सों को छू गई, तो तयम्मुम नहीं हुआ। हाँ, अगर गर्द अभी अंगों पर मौजूद है और उस स्थिति में चेहरे और हाथों पर तयम्मुम की नीयत से हाथ फेरे तो तयम्मुम होगा।	6	595
23	मसला: चेहरे और हाथों पर गर्द गिराई और उसकी धूल उन अंगों के चारों ओर उड़ रही है, इस स्थिति में उस उड़ती धूल में तयम्मुम की नीयत से हाथ और चेहरे को हिलाया तो तयम्मुम हो गया।	7	795
24	मसला: जहाँ धूल उड़ रही है वहां से पैदल गुज़रा, यदि उस स्थिति में जब गर्द अंगों पर उठी हुई है, अंगों को तयम्मुम की नीयत से हिलाया तो तयम्मुम हो जाएगा अन्यथा नहीं।	8	595

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱۴	مسئلہ: تیمم کے لئے ہاتھ جنس ارض پر رکھے تو سنت یہ ہے کہ ہاتھ اس پر لے آگے بڑھائے پھر اپنی طرف لائے۔	۴	۵۹۳
۱۵	مسئلہ: جائز ہے کہ دوسرے سے کہے کہ مجھے تیمم کرادے وہ اپنے ہاتھ جنس زمین پر مار کر اسکے منہ اور ہاتھوں پر مسح کرے اس صورت میں اس کہنے والے کی نیت شرط ہوگی جس سے کہا اس کی نیت کا اعتبار نہیں۔	۱	۵۹۴
۱۶	مسئلہ: آندھی چلی غبار چہرے اور ہاتھوں پر غبار پڑ گیا۔ اگر تیمم کی نیت سے اس غبار پڑے ہونے کی حالت میں چہرے اور ہاتھوں پر ہاتھ پھیرے تیمم ہو جائیگا ورنہ نہیں۔	۲	۵۹۴
۱۷	مسئلہ: آندھی کے سامنے کھڑا ہوا کہ غبار آکر پڑے یا دیوار ڈھائی کہ غبار منہ اور ہاتھوں پر پڑا جب تک تیمم کی نیت سے اس پر ہاتھ نہ پھیرے تیمم نہ ہوگا۔	۱	۵۹۵
۱۸	مسئلہ: جھاڑو دی یا گیہوں تولے غبار اڑ کر منہ اور ہاتھوں پر پڑا وہی حکم ہے کہ تیمم کی نیت سے اس پر ہاتھ پھیرے تیمم ہو جائے گا ورنہ نہیں۔	۲	۵۹۵
۱۹		۳	۵۹۵

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: تیمم کی نیت سے خاک پر لوٹا اگر خاک چہرہ وبر دو دست کو پہنچ گئی تیمم ہو گیا ورنہ نہیں۔		
۲۰	مسئلہ: کسی غبار کی جگہ اپنا منہ اور دونوں ہاتھ تیمم کی نیت سے داخل کیے کہ وہ غبار سارے منہ اور کہنیوں سے اوپر تک ہاتھوں کو محیط ہو گیا تیمم ہو گیا۔	۴	۵۹۵
۲۱	مسئلہ: دیوار گری اس سے گرد اٹھی جو اس کے بدن کو محیط ہوئی اس نے اس غبار بلند میں اپنے منہ اور ہاتھوں کو تیمم کو نیت سے جنبش دی تیمم ہو گیا۔	۵	۵۹۵
۲۲	مسئلہ: اپنے منہ اور ہاتھوں پر خاک یا ریت گرائی کہ سارے منہ اور ہاتھوں کے سب کروٹوں کو چھو گیا تیمم نہ ہوا، ہاں اگر گرد اس کے اعضاء پر ابھی موجود ہے اور اس حالت میں منہ اور ہاتھوں پر تیمم کی نیت سے ہاتھ پھیرے تو تیمم ہو گا۔	۶	۵۹۵
۲۳	مسئلہ: منہ اور ہاتھوں پر گرد گرائی اور اس کا غبار ان اعضاء کے گرد اڑ رہا ہے اس حالت میں اس غبار بلند میں بنیت تیمم ہاتھ منہ کو جنبش دی تیمم ہو گیا۔	۷	۷۹۵
۲۴	مسئلہ: جہاں غبار اڑ رہا ہے راہ چلتا اس کے اندر ہو کر گزرا اگر اس حالت میں کہ گرد اعضاء پر بلند ہے اور اعضاء کو بہ نیت تیمم جنبش دی تیمم ہو جائے گا ورنہ نہیں۔	۸	۵۹۵

Fatawa Rizvia, Volume 4

Serial No.	Topics	Reference No.	Page
25	Ruling: A condition for Tayammum is that the person performs an action that itself causes contact between their limbs and the substance of the earth. Indirect contact is not valid, such as standing in front of a dust storm so that dust falls on the limbs. This action is not the direct cause of the contact.	9	595
26	Ruling: One method of Tayammum from dust is, for example, to strike a cloth with dust on it or shake it so that the dust rises. Now, place your palms in the air under the dust so that the dust falls on them. Wipe the face with this dust. If that same dust is still in the air, place your palms under it again; when the dust falls on them, wipe the hands with that dust. If no dust remains in the air, shake the cloth again to create dust once more and perform the mentioned method.	2	596
27	Ruling: If dust falls on an impure cloth or similar item while it was wet, Tayammum with that dust is not permissible. However, if the impure thing has dried and then dust falls on it, Tayammum with it is allowed.	3	596
28	Ruling: A person whose hands are paralyzed should rub their hands on the ground and their face against a wall, performing it to the best of their ability. Whatever part of the hands or face remains without contact with the substance of the earth after wiping will be excused, and the Tayammum will be valid. I say: That is, when no one else is found to perform Tayammum for them, even if for a fee, provided they can afford it. And Allah Almighty knows best.	4	596
29	Ruling: The author's research states that there are four scenarios for Tayammum. If the substance of the earth is far from one's face and hands, there are two ways: one is to wipe the palms on it and then rub them over the face and both hands. This is the traditional and famous method.	5	601

Serial No.	Topics	Reference No.	Page
	Second is either to rub the substance of the earth over the limbs, for example by picking up a piece of stone, or to rub the limbs against it, whether from above, like rubbing the face against a wall and hands on the ground, or a person rolling on the soil with the intention of Tayammum so that soil touches the entire face and the hands up to the elbows. Or, place the limbs inside the soil, sand, or dust with the intention of Tayammum. If the substance of the earth is already in contact with both limbs, there are two scenarios. One is that it is only clinging to the limbs without a thick layer above them, such as dust blown by the wind or raised by the person themselves (e.g., by demolishing a wall, sweeping, weighing wheat, or striking/shaking a cloth). In any case, if the dust has settled or fallen on the limbs without flying away, Tayammum is possible by rubbing the hands over the dusty face and hands with the intention of Tayammum. Second is if there is a thick layer of dust above the limbs, e.g., someone stayed in sand out of fear, or dust was raised by wind or by themselves and it hasn't settled yet but is swirling around the limbs; moving the face and hands within that sand or dust with the intention of Tayammum will complete the Tayammum.		

फ़तावा रज़विया, जिल्द चौथी

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ
25	मसला: तयम्मुम में शर्त यह है कि व्यक्ति वह कार्य करे जो स्वयं उसके अंगों और पृथ्वी की वस्तु के बीच संपर्क का कारण बने। अप्रत्यक्ष कारण मान्य नहीं है, जैसे धूल भरी आँधी के सामने खड़े हो जाना कि धूल आकर अंगों पर गिरे। उसका कार्य स्वयं संपर्क का कारण नहीं बना।	9	595
26	मसला: धूल से तयम्मुम का एक तरीका यह है कि मान लीजिए जिस कपड़े पर धूल हो उस पर हाथ मारें या उसे झाड़ें ताकि उसकी धूल उड़ने लगे। अब अपनी हथेलियों को हवा में उस धूल के नीचे रखें कि धूल हथेलियों पर गिरे। इस धूल से चेहरे का मसह करें। फिर अगर वही धूल अभी हवा में बाकी हो, तो दोबारा हथेलियाँ उसके नीचे करें; जब धूल उन पर पड़े तो उस धूल से हाथों का मसह करें। और अगर वह धूल हवा में न रही तो कपड़े को दोबारा झाड़ें ताकि फिर उसी तरह धूल पैदा हो और बताए गए तरीके पर अमल करें।	2	596
27	मसला: अगर धूल किसी नापाक कपड़े आदि पर उस समय पड़ी जब वह गीला था, तो उस धूल से तयम्मुम जायज़ नहीं है। हाँ, नापाक चीज़ के सूख जाने के बाद उस पर धूल पड़ी तो उससे तयम्मुम जायज़ है।	3	596
28	मसला: जिसके हाथ लकवाग्रस्त हों, वह हाथों को ज़मीन पर रगड़े और चेहरे को दीवार पर, इस प्रकार अपनी यथाशक्ति करे। मसह करने से हाथ या चेहरे का जितना हिस्सा ज़मीन की चीज़ से वंचित रह जाएगा, उसे माफ़ किया जाएगा और उतने ही से उसका तयम्मुम सही हो जाएगा। मैं कहता हूँ: यानी जब तक कोई दूसरा ऐसा न मिले जो तयम्मुम करा दे, चाहे शुल्क लेकर ही क्यों न हो, बशर्ते वह शुल्क दे सकता हो। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।	4	596
29	मसला: लेखक के शोध के अनुसार तयम्मुम की चार स्थितियाँ हैं। अगर ज़मीन की चीज़ चेहरे और हाथों से दूर हो तो दो तरीके हैं: एक यह कि उससे अपनी	5	601

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ

हथेलियाँ मसह करके अपने चेहरे और दोनों हाथों पर फेरें। यही तरीका रिवायत में है और मशहूर है। दूसरा यह कि या तो उस ज़मीन की चीज़ को अपने अंगों पर फेरें, जैसे पत्थर का कोई टुकड़ा उठाकर, या अपने अंगों को उससे मलें, चाहे ऊपर से जैसे चेहरे को दीवार पर और हाथों को ज़मीन पर मलना, या किसी व्यक्ति का तयम्मुम की नीयत से मिट्टी पर लोटना जिससे मिट्टी पूरे चेहरे और कोहनियों के ऊपर तक हाथों को छू जाए। या अपने अंगों को मिट्टी, रेत या धूल के अंदर तयम्मुम की नीयत से दाखिल करे। और अगर ज़मीन की चीज़ दोनों अंगों से जुड़ी हुई है, तो उसकी दो स्थितियाँ हैं। एक यह कि वह केवल उसके अंगों से चिपकी हुई हो और उसके ऊपर उसकी अधिक मात्रा न हो, जैसे धूल हवा से उड़कर आई या उसने खुद उड़ाई, जैसे दीवार गिराई या झाड़ू दी या गेहूँ तौले या कपड़े आदि पर हाथ मारा। बहरहाल, अब धूल बैठ गई या अपने अंगों पर इस तरह गिर गई कि उड़ी नहीं, अंगों पर गिरकर ठहर गई या उड़ी तो अब बैठ गई, इससे तयम्मुम इस प्रकार संभव है कि तयम्मुम की नीयत से अपने उन धूल भरे चेहरे और हाथों पर हाथ फेरे। दूसरा यह कि अंगों के ऊपर उसकी अधिक मात्रा हो, जैसे कोई व्यक्ति किसी डर से रेत के अंदर रहा हो या धूल उड़कर आई हो या खुद उड़ाई हो और वह अभी ठहरी नहीं है, अंगों के चारों ओर उड़ रही है, तो उस रेत या धूल में अगर अपने चेहरे और हाथों को तयम्मुम की नीयत से हरकत देगा, तो तयम्मुम हो जाएगा।

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ صفحہ نمبر
۲۵	مسئلہ: تیمم میں شرط یہ ہے کہ یہ شخص وہ فعل کرے جو بذاتِ خود اس کے اعضاء اور جنس زمین کے اتصال کا باعث ہو بالواسطہ باعث ہونا معتبر نہیں جیسے آندھی کے سامنے کھڑا ہو جانا کہ یوں غبار آکر اعضا پر پڑے گا۔ اس کا فعل بذاتہ موجب اتصال نہ ہوا۔	۹ ۵۹۵
۲۶	مسئلہ: غبار سے تیمم کا ایک طریقہ یہ ہے کہ مثلاً جس کپڑے پر گرد ہو اس پر ہاتھ مارے یا اسے جھاڑ کر اس کا غبار اٹھے اب اپنی ہتھیلیاں ہوا میں اس غبار کے نیچے رکھے کہ گرد ہتھیلیوں پر پڑے اس غبار سے منہ کا مسح کرے پھر اگر وہی غبار ابھی ہوا میں باقی ہو دوبارہ ہتھیلیاں اس کے نیچے کرے جب غبار ان پر پڑے اس گرد سے ہاتھوں کا مسح کرے اور اگر وہ غبار ہوا میں نہ رہا کپڑا دوبارہ جھاڑے کہ پھر اسی طرح غبار پیدا ہو اور طریق مذکور بجالائے۔	۲ ۵۹۶
۲۷	مسئلہ: گرد اگر کسی ناپاک کپڑے وغیرہ پر اس حالت میں پڑی کہ وہ تر تھا تو اس غبار سے تیمم جائز نہیں، ہاں ناپاک چیز خشک ہو جانے کے بعد اس پر غبار پڑا تو اس سے تیمم روا۔	۳ ۵۹۶
۲۸	مسئلہ: جس کے ہاتھ شل ہوں وہ ہاتھوں کو زمین پر رگڑے اور منہ کو دیوار پر، یوں بقدرِ امکان بجالائے جتنا حصہ ہاتھ یا منہ کا جنس ارض پر مسح سے	۴ ۵۹۶

نمبر شمار	عنوانات	صفحہ نمبر	فائدہ

باقی رہ جائے معاف کیا جائے گا اسی قدر سے اس کا تیمم صحیح ہو جائیگا۔

اقول: یعنی جبکہ کوئی دوسرا ایسا نہ ملے کہ تیمم کر دے اگر چہ اُجرت لیکر، جبکہ یہ اجرت دے سکتا ہو واللہ تعالی اعلم۔

مسئلہ: مصنف کی تحقیق کہ تیمم کی چار صورتیں ہیں اگر جنس زمین اپنے چہرہ و دست سے دُور ہو تو دو طریقے ہیں ایک یہ کہ اس سے اپنی ہتھیلیاں مسح کر کے اپنے چہرہ و ہر دو دست پر پھیرے۔ یہی طریقہ ماثور و مشہور ہے دوسرے یہ کہ یا تو اس جنسِ ارض کو اپنے اعضاء پر پھیرے مثلاً پتھر کا کوئی ٹکڑا اٹھا کر یا اپنے اعضا کو اس سے ملے خواہ اوپر سے جیسے لٹھے کا منہ دیوار اور ہاتھ زمین پر ملنا یا کسی شخص کا بنیتِ تیمم خاک پر لوٹنا جس سے خاک سارے منہ اور کہنیوں کے اوپر تک ہاتھوں کو چھو جائے خواہ اندر سے یوں کہ اپنے اعضا کو خاک یا ریتے یا غبار کے اندر بنیتِ تیمم داخل کرے۔ اور اگر جنس زمین دونوں عضووں سے متصل ہے تو اس کی دو صورتیں ہیں۔ ایک یہ کہ وہ صرف اس کے عضووں سے لپٹی ہوئی ہو ان سے اوپر اس کا کثیر ذر نہ ہو جیسے گرد ہوا سے اڑ کر آئی یا اس نے خود اڑائی، مثلاً دیوار ڈھائی یا جھاڑو دی یا گیہوں تولے یا کپڑے وغیرہ پر ہاتھ مارا یا اسے جھاڑا بہر حال اب گرد بیٹھ گئی یا اپنے اعضاء پر اس طرح جھڑ گئی کہ اڑی نہیں اعضاء پر گر کر ٹھہر گئی یا اڑی تو اب بیٹھ گئی اس سے تیمم یوں ہی ممکن ہے کہ بنیتِ تیمم اپنے ان گرد آلود چہرہ و دست پر ہاتھ پھیرے

۲۹	۵	۶۰۱

فائدہ نمبر	عنوانات	صفحہ نمبر

دوسرے یہ کہ اعضاء کے اوپر اس کا کثیر ذر ہو مثلاً کوئی شخص کسی خوف سے ریتے کے اندر رہا ہو یا گرد اُڑ کر آئی ہو یا خود اڑائی اور وہ ابھی ٹھہری نہیں اعضاء کے گرد اڑ رہی ہے بلند ہے تو اس ریتے یا غبار میں اگر اپنے منہ اور ہاتھوں کو بنیتِ تیمم جنبش دے گا تیمم ہو جائے گا۔

صفحہ 658 کا 761

Fatawa Razawiyya, Volume 4

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page No.
30	Ruling: If dust is flying from a whirlwind etc., and one enters it with the intention of Tayammum such that the dust covers the face and hands, Tayammum is performed. And if one did not go with the intention of Tayammum, or if the dust came flying by itself from a storm etc., then as long as it is airborne, moving the face and hands in it with the intention of Tayammum is sufficient for Tayammum to occur. And if it settled on the limbs, then wiping hands over it with the intention of Tayammum is now necessary.	1	603
31	Ruling: According to the author's research, if intending Tayammum while striking the earth's surface is a condition, and at that time there was no intention, then making the intention afterwards will not be sufficient.	4	603
32	Ruling: Just as washing each limb three times is Sunnah in Wudu, repetition is not Sunnah in Tayammum; rather, wiping the face and hands once each is Sunnah.	6	603
33	Ruling: Just by striking the earth's surface with the intention of Tayammum, that much of the hands becomes pure; for example, if one leaves such pieces as the palms untouched while wiping, they have been wiped once.	7	603
34	Ruling: It is Sunnah that the strike on the earth's surface be with the palms, not just with the back of the hands.	1	604
35	Ruling: As much of the face and hands as is obligatory to wash in Wudu, wiping them is obligatory in Tayammum. If even a tiny spot remains unwiped, Tayammum will not be valid. Therefore, if one only strikes the palms on the ground and does not rub the back of the hands while wiping, Tayammum is not completed.	2	604
36	Ruling: If during the strike, the back of the hands also hits the earth's surface, they will also be considered wiped and should not be wiped again.	3	604

फ़तावा रज़विया, जिल्द चौथी

क्रमांक	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
30	मसअला: कहीं बगोले वगैरह से धूल उड़ रही है, तयम्मुम की नीयत से उसके अंदर चला गया कि धूल उसके चेहरे और हाथों को घेर ले, तो तयम्मुम हो गया। और अगर तयम्मुम की नीयत से नहीं गया था या धूल आंधी वगैरह से खुद उड़कर आई है, तो जब तक वह हवा में है, तयम्मुम की नीयत से उसमें चेहरे और हाथों को हिला देना ही तयम्मुम होने के लिए काफ़ी है। और अगर अंगों पर बैठ गई, तो अब तयम्मुम की नीयत से उस पर हाथ फेरना ज़रूरी है।	1	603
31	मसअला: मुसन्निफ़ (लेखक) की तहक़ीक़ के अनुसार, अगर ज़मीन की जिन्स पर हाथ मारते समय तयम्मुम की नीयत होना शर्त है और उस समय नीयत नहीं थी, तो बाद में नीयत कर लेना काफ़ी नहीं होगा।	4	603
32	मसअला: जिस तरह वज़ू में हर अंग को तीन-तीन बार धोना सुन्नत है, तयम्मुम में दोहराना सुन्नत नहीं है, बल्कि एक-एक बार चेहरा और हाथों का मसह करना सुन्नत है।	6	603
33	मसअला: ज़मीन की जिन्स पर तयम्मुम की नीयत से हाथ मारते ही उतने हाथों की पाकी (शुद्धि) हासिल हो जाती है; मसह करने में अगर हथेलियों जैसे कुछ हिस्सों को छोड़ दे, तो उनका एक बार मसह हो गया।	7	603
34	मसअला: सुन्नत है कि ज़मीन की जिन्स पर ज़रब (चोट) हथेलियों से हो, न कि सिर्फ़ पीठ की तरफ़ से।	1	604
35	मसअला: वज़ू में चेहरे और हाथों का जितना हिस्सा धोना फ़र्ज़ है, तयम्मुम में उतने का मसह करना फ़र्ज़ है। अगर उनमें से रत्ती बराबर हिस्सा भी मसह से रह जाए, तो तयम्मुम नहीं होगा। इसलिए अगर सिर्फ़ हथेलियाँ ज़मीन पर मारीं और मसह करते समय हाथों की पीठ पर हाथ नहीं फेरा, तो तयम्मुम नहीं हुआ।	2	604

क्रमांक	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
36	मसअला: अगर ज़रब (मारने) में हाथों की पीठ भी ज़मीन की जिन्स पर लग जाए, तो उसका भी मसह हो जाएगा, उसे दोबारा मसह नहीं किया जाएगा।	3	604

فتاوی رضویہ جلد چہارم

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۳۰	مسئلہ: کہیں بگولے وغیرہ سے غبار اڑ رہا ہے بنیت تیمم اس کے اندر چلا گیا کہ غبار اس کے چہرہ و دست کو محیط ہوا تیمم ہو گیا۔ اور اگر تیمم کی نیت سے نہ گیا تھا یا غبار آندھی وغیرہ سے خود اڑ کر آیا ہے تو جب تک بلند ہے منہ اور ہاتھوں کو بنیت تیمم اس میں جنبش دینا ہی تیمم ہو جانے کو بس ہے اور اگر اعضاء پر بیٹھ گیا تو اب بنیت تیمم اس پر ہاتھ پھیرنا ضرور ہے۔	۱	۶۰۳
۳۱	مسئلہ: مصنف کی تحقیق کی اگر جنس زمین پر ہاتھ مارتے وقت تیمم کی نیت ہونا شرط ہے اس وقت نیت نہ تھی تو بعد کو نیت کر لینا کافی نہ ہوگا۔	۴	۶۰۳
۳۲	مسئلہ: جس طرح وضو میں ہر عضو کو تین تین بار دھونا سنّت ہے تیمم میں تکرار سنت نہیں بلکہ ایک ایک بار منہ اور ہاتھوں کا مسح سنت ہے۔	۶	۶۰۳
۳۳	مسئلہ: جنس زمین پر بنیت تیمم ہاتھ مارتے ہی سے اتنے ہاتھوں کی طہارت ہو جاتی ہے ہاتھوں پر مسح کرنے میں اتنے ٹکڑے مثلاً ہتھیلیاں خالی چھوڑ دے کہ ان کا ایک بار مسح ہو گیا۔	۷	۶۰۳
۳۴	مسئلہ: سنّت ہے کہ جنس زمین پر ضرب ہتھیلیوں سے ہو نہ صرف پشت دست سے۔	۱	۶۰۴

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۳۵	مسئلہ: جتنے منہ اور ہاتھوں کا وضو میں دھونا فرض ہے تیمم میں انوں کا مسح فرض ہے اگر ان میں سے کوئی ذرہ مسح سے رہ جائے تیمم نہ ہوگا ولہٰذا اگر صرف کف دست زمین پر مارے اور مسح کرنے میں پشت دست پر ہاتھ نہ پھیرا تیمم نہ ہوا۔	۲	۶۰۴
۳۶	مسئلہ: اگر ضرب میں پشت دست بھی جنس ارض پر مارے اس کا بھی مسح ہو جائے گا دوبارہ انہیں مسح نہ کیا جائے گا۔	۳	۶۰۴

Fatawa Razawiyya | Volume 4

Serial No.	Topics	Note No.	Page No.
37	Issue: The author's research is that once the palms are placed on the earth for Tayammum, it is disliked (Makruh) to rub the hands on it again.	4	602
38	Issue: Just as it is rewarding for a person with Wudu (ablution) to perform Wudu again, performing Tayammum again while already having Tayammum is not rewarding at all, but rather futile and disliked.	5	602
39	Issue: Repeating the wiping (Masah) of any limb during Tayammum is disliked by consensus; whether with a new strike (on earth) or the same strike, it is futile. I say: unless there is a doubt about covering the entire area.	6	602
40	Issue: The best method for wiping the hands in Tayammum mentioned in Zakheera and Kaafi is to place the left palm on the back of the right hand, leaving the thumb and index finger, wipe with the remaining three fingers over the back of the wrist up to above the elbows, then wipe the palm side of the wrist with those two fingers moving downwards from above. Then do the same for the left hand.	7	602
41	Issue: In Tuhfa, Badai, Zad-ul-Fuqaha, Muheet Sarakhsi, and Muheet Razawi, the best method described is to wipe with the four fingers of the left hand from the tips of the fingers on the back of the right hand up to above the elbows, then with the left palm wipe the palm side of the right wrist from above the elbows to the beginning of the palm, and pass the palm side of the left thumb over the back of the right thumb. Then do the same for the left hand.	8	602
42	Issue: It is Sunnah to strike the earth with both the palm and the back of the hand; first place the palms, then their backs.	9	602
43	Issue: If after striking the earth, some dust or soil sticks to the hands, it is Sunnah to shake them off as many times as needed to clean the hands before rubbing (wiping).	2	605

Serial No.	Topics	Note No.	Page No.
44	Issue: If hands were placed on the ground without the intention of Tayammum and enough dust stuck to them for Tayammum, and then the intention for Tayammum is made, one can use those same hands. There is no need for another strike this time.	4	605
45	Issue: The author's research is that if a state of ritual impurity (Hadath) occurs after striking the ground, that strike becomes void. One cannot perform Masah (wiping) with it; one must strike again.	5	605

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा संख्या	पृष्ठ संख्या
३७	मसला: लेखक का शोध यह है कि जब हथेलियाँ तयम्मुम के लिए ज़मीन पर रखी जाएँ, तो अब दोबारा उन पर हाथ फेरना मकरूह (नापसंद) है।	४	६०२
३८	मसला: जिस तरह बा-वज़ू (वज़ू की हालत में) व्यक्ति को दोबारा वज़ू करना सवाब (पुण्य) का काम है, तयम्मुम की हालत में दोबारा तयम्मुम करना कोई सवाब नहीं, बल्कि व्यर्थ और मकरूह है।	५	६०२
३९	मसला: तयम्मुम में किसी अंग पर दोबारा मसह (हाथ फेरना) करना सर्वसम्मति से मकरूह है, यानी नई मार (ज़मीन पर) या उसी मार से भी व्यर्थ है। मैं कहता हूँ: सिवाय इसके कि जब पूरे हिस्से के कवर होने में संदेह हो।	६	६०२
४०	मसला: तयम्मुम में हाथों के मसह का सबसे अच्छा तरीका 'ज़खीरा' और 'काफ़ी' में यह बताया गया है कि बाईं हथेली को अपने दाहिने हाथ की पीठ पर रखे और अंगूठा व तर्जनी (इंडेक्स फिंगर) को छोड़कर बाकी तीन उंगलियों से कलाई की पीठ पर कोहनियों के ऊपर तक मसह करे, फिर नीचे से उन दो उंगलियों से कलाई के भीतरी भाग का मसह करे जो ऊपर से नीचे की ओर आए, फिर इसी तरह बाएं हाथ पर करे।	७	६०२
४१	मसला: 'तुहफ़ा', 'बदाए', 'ज़ाद-उल-फ़ुक़हा', 'मुहीत सरखसी' और 'मुहीत रज़वी' में इसका बेहतर तरीका यह बताया गया है कि बाएं हाथ की चारों उंगलियों से दाहिने हाथ की पीठ पर उंगलियों के सिरों से कोहनियों के ऊपर तक मसह करे, फिर अपनी बाईं हथेली से दाहिनी कलाई के भीतरी भाग का कोहनियों के ऊपर से हथेली के शुरू होने तक मसह करे और बाएं अंगूठे के भीतरी हिस्से को दाहिने अंगूठे की पीठ पर फेरे, फिर इसी तरह बाएं हाथ पर करे।	८	६०२
४२		९	६०२

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा संख्या	पृष्ठ संख्या
	मसला: सुन्नत यह है कि ज़मीन पर हथेली और हाथ की पीठ दोनों से मार करे, पहले हथेलियाँ रखे फिर उनकी पीठ।		
४३	मसला: अगर ज़मीन पर हाथ मारने से कुछ मिट्टी या धूल हाथ में लग जाए, तो सुन्नत है कि उन्हें मलने से पहले झाड़ ले, जितनी बार झाड़ने से हाथ साफ हो जाएं।	२	६०५
४४	मसला: ज़मीन पर बिना नियत (इरादे) के तयम्मुम के लिए हाथ रखे थे और उनमें इतनी मिट्टी लग गई जो तयम्मुम के लिए काफी हो, अब तयम्मुम की नियत की तो उन्हीं हाथों को मल सकता है। इस बार फिर से ज़मीन पर हाथ मारने की ज़रूरत नहीं।	४	६०५
४५	मसला: लेखक का शोध यह है कि अगर ज़मीन पर हाथ मारने के बाद हदस (अशुद्धि) हो जाए, तो वह मार बातिल (शून्य) हो गई। उससे मसह नहीं कर सकता, फिर से ज़मीन पर हाथ मारे।	५	६०५

पृष्ठ ७६१ में से ६६०

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۳۷	مسئلہ: مصنف کی تحقیق کہ جب ہتھیلیاں تیمم کے لئے جنس ارض پر رکھیں اب دوبارہ ان پر ہاتھ پھیرنا مکروہ ہے۔	۴	۶۰۲
۳۸	مسئلہ: جس طرح باوضو کو دوبارہ وضو کرنا ثواب ہے تیمم ہوتے ہوئے دوبارہ تیمم کرنا کچھ ثواب نہیں بلکہ عبث اور مکروہ ہے۔	۵	۶۰۲
۳۹	مسئلہ: تیمم میں کسی عضو پر مکرر مسح کرنا بالا جماع مکروہ ہے یعنی ضرب جدید اور ضرب واحد سے بھی عبث ہے اقول مگر جبکہ استیعاب میں شبہ ہو۔	۶	۶۰۲
۴۰	مسئلہ: تیمم میں ہاتھوں کے مسح کا بہتر طریقہ ذخیرہ وکافی میں یہ فرمایا کہ بائیں ہتھیلی اپنے داہنے پشت دست پر رکھے اور انگوٹھا اور کلمے کی انگلی چھوڑ کر باقی تین انگلیوں سے کلائی کی پشت پر کہنیوں کے اوپر تک مسح کرے نیچے سے پھر ان دو انگلیوں سے کلائی کے پیٹ کا مسح کرے اوپر سے نیچے اترتا ہوا، پھر یوں ہی بائیں ہاتھ پر کرے۔	۷	۶۰۲
۴۱	مسئلہ: تحفہ، بدائع، وزاد الفقہاء و محیط سرخسی و محیط رضوی میں اس کا بہتر طریقہ یہ فرمایا کہ بائیں ہاتھ کی چاروں انگلیوں سے داہنے ہاتھ کی پشت انگلیوں کے سروں سے کہنیوں کے اوپر تک مسح کرے، پھر اپنے بائیں ہتھیلی سے داہنی کلائی کے پیٹ کا کہنیوں کے اوپر سے ہتھیلی کے شروع	۸	۶۰۲

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	تک مسح کرے اور بائیں انگوٹھے کا پیٹ داہنے انگوٹھے کی پشت پر پھیرے، پھر یونہی بائیں ہاتھ پر کرے۔		
۴۲	مسئلہ: سنت یہ ہے کہ جنس ارض پر کف دست و پشت دست دونوں سے ضرب کرے، پہلے ہتھیلیاں رکھے پھر ان کی پیٹھ۔	۹	۶۰۲
۴۳	مسئلہ: اگر ہاتھ جنس ارض پر مارنے سے کچھ مٹی گرد غبار ہاتھ میں لگ جائے تو سنت ہے کہ ملنے سے پہلے انہیں جھاڑ لے جتنی بار جھاڑنے میں ہاتھ صاف ہو جائیں۔	۲	۶۰۵
۴۴	مسئلہ: زمین پر بے نیت تیمم ہاتھ رکھے تھے اور ان میں اتنی مٹی لگ گئی کہ تیمم کو کافی ہو اب تیمم کی نیت کی تو انہی ہاتھوں کو مل سکتا ہے۔ اس بار ضرب کی حاجت نہیں۔	۴	۶۰۵
۴۵	مسئلہ: مصنف کی تحقیق کہ اگر جنس زمین پر ہاتھ مارنے کے بعد حدث ہو گیا وہ ضرب باطل ہو گئی اس سے مسح نہیں کر سکتا پھر ضرب کرے۔	۵	۶۰۵

Fatawa Razawiyya | Volume 4

Serial No.	Titles / Subjects	Point No.	Page No.
46	Ruling: Zaid asked Amr to perform Tayammum for him. Amr struck the earth with his hands. After that, Zaid experienced ritual impurity. In Allama Haddadi's discussion, this strike became void, but in the author's research, it did not.	2	607
47	Ruling: Zaid asked Amr to perform Tayammum for him. Amr struck the earth with his hands. After that, Amr experienced ritual impurity. In Allama Bahr's discussion, this strike is useful, but in the author's research, it became void; he should strike again.	5	607
48	Point: The author's unique research and resolution of a thousand-year-old dispute that both strikes are pillars for standard Tayammum, not for non-standard ones.	8	607
49	Ruling: 'Striking' for Tayammum only means touching the earth with the hands; striking hard is not necessary, though better.	4	608
50	Ruling: If water is one mile away even within one's own city, Tayammum is permissible.	1 (A)	612
51	Ruling: If a traveler expects to find water ahead, it is recommended to wait until just before the disliked time. If he performs Tayammum and prays immediately without waiting, it is still permissible if water is a mile away.	2 (A)	612
52	Ruling: During travel, if water is available at the local market price at that time and the person has funds beyond basic essential needs, buying it is obligatory and Tayammum is impermissible, even if a water-skin costs one rupee, as happens during the Hajj season in some places.	1	613
53	Ruling: If funds are not present but available elsewhere, and the seller agrees to sell on credit, buying remains obligatory.	2	613
54	Ruling: If he does not have the price and someone offers a loan, suggesting to buy water with borrowed money, accepting it is not obligatory.	3	613
55		4	613

Serial No.	Titles / Subjects	Point No.	Page No.
	Ruling: In Wudu or Ghusl, a mere fear of harm from water is not enough, nor is the word of any doctor, a transgressor (fasiq), or an incompetent physician. Rather, one of three Shar'i proofs is necessary: either a clear, evident sign, or sound experience, or the statement of a skilled, non-transgressor Muslim physician.		

क्रम सं.	विषय	फ़ायदा नं.	पृष्ठ सं.
४६	मसला: ज़ैद ने अम्र से कहा कि मुझे तयम्मुम करा दे। अम्र ने ज़मीन पर हाथ मारे, उसके बाद ज़ैद को हदस (अशुद्धि) हो गई। अल्लामा हद्दादी की बहस में यह ज़र्ब (चोट) बेकार हो गई, और मुसन्निफ़ (लेखक) की तहक़ीक़ (शोध) में बेकार नहीं हुई।	२	६०७
४७	मसला: ज़ैद ने अम्र से कहा कि मुझे तयम्मुम करा दे। अम्र ने ज़मीन पर हाथ मारे, उसके बाद अम्र को हदस हो गया। अल्लामा बहर की बहस में यह ज़र्ब उपयोगी है और मुसन्निफ़ की तहक़ीक़ में बेकार हो गई, फिर ज़र्ब करे।	५	६०७
४८	फ़ायदा: मुसन्निफ़ की अनूठी तहक़ीक़ और हज़ार साला विवाद का फ़ैसला कि दोनों ज़र्ब तयम्मुम-ए-मऊद के लिए रुकन हैं, ग़ैर-मऊद के लिए नहीं।	८	६०७
४९	मसला: तयम्मुम की ज़र्बों से केवल इतना तात्पर्य है कि हाथों से ज़मीन को स्पर्श करना, कुछ सख़्ती से मारना आवश्यक नहीं, हाँ, बेहतर है।	४	६०८
५०	मसला: यदि अपने ही शहर में पानी एक मील दूर हो, तो तयम्मुम कर सकता है।	१ (अलिफ़)	६१२
५१	मसला: यदि यात्री को आशा हो कि आगे पानी मिल जाएगा, तो मुस्तहब है कि इतनी देरी करे कि कराहत का समय न आ जाए। और यदि बिना प्रतीक्षा किए अभी तयम्मुम से नमाज़ पढ़ ले, तब भी जायज़ है जबकि पानी एक मील दूर हो।	२ (अलिफ़)	६१२
५२	मसला: सफ़र में यदि पानी उस क़ीमत पर मिले जो उस समय उस स्थान के बाज़ार का भाव है और उतनी क़ीमत उसकी अनिवार्य ज़रूरतों से अधिक उसके पास है, तो ख़रीदना वाजिब है और तयम्मुम नाजायज़, चाहे एक मश्कीज़ा एक रुपये का हो, जैसा कि हज के सीज़न में कुछ स्थानों पर हो जाता है।	१	६१३
५३		२	६१३

क्रम सं.	विषय	फ़ायदा नं.	पृष्ठ सं.
	मसला: यदि क़ीमत पास नहीं है बल्कि दूसरी जगह है और बेचने वाला उधार देने पर राज़ी हो, तब भी ख़रीदना वाजिब है।		
५४	मसला: यदि उसके पास क़ीमत नहीं है और कोई व्यक्ति ऋण देने को कहता है कि मुझसे पैसे उधार लेकर पानी ख़रीद लो, तो लेना वाजिब नहीं।	३	६१३
५५	मसला: वज़ू या ग़ुस्ल में पानी से हानि का केवल संदेह पर्याप्त नहीं, न ही किसी डॉक्टर या फ़ासिक़ (पापी) या अयोग्य हकीम का कहना पर्याप्त है, बल्कि तीन शरीय दलीलों में से एक का होना आवश्यक है: या तो स्पष्ट लक्षण, या सही अनुभव, या किसी कुशल मुसलमान हकीम (जो फ़ासिक़ न हो) का कथन।	४	६१३

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۴۶	مسئلہ : زید نے عمرو سے کہا مجھے تیمم کرادے عمرو نے جنس ارض پر ہاتھ مارے اس کے بعد زید کو حدث ہو گیا علامہ حدادی کی بحث میں یہ ضرب بیکار ہوگئی اور مصنف کی تحقیق میں بیکار نہ ہوئی۔	۲	۶۰۷
۴۷	مسئلہ : زید نے عمرو سے کہا مجھے تیمم کرادے عمرو نے جنس ارض پر ہاتھ مارے اس کے بعد عمرو کو حدث ہو گیا علامہ بحر کی بحث میں یہ ضرب بیکار آمد ہے اور مصنف کی تحقیق میں بیکار ہوگئی، پھر ضرب کرے۔	۵	۶۰۷
۴۸	فائدہ : مصنف کی تحقیق مفرد اور نزاع ہزار سالہ کا فیصلہ کہ دونوں ضربیں تیمم معہود کے لئے رکن ہیں غیر معہود کے لئے نہیں۔	۸	۶۰۷
۴۹	مسئلہ : تیمم کی ضربوں سے صرف اس قدر مراد ہے کہ ہاتھوں سے جنس ارض کو مس کرنا کچھ سختی سے مارنا ضرور نہیں، ہاں اولیٰ ہے۔	۴	۶۰۸
۵۰	مسئلہ : اگر خود اپنے شہر میں پانی میل بھر دُور ہو تیمم کر سکتا ہے۔	۱ الف	۶۱۲
۵۱		۲ الف	۶۱۲

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ : اگر مسافر کو امید ہو کہ آگے چل کر پانی مل جائے گا تو مستحب ہے کہ اتنی تاخیر کرے کہ وقتِ کراہت نہ آجائے اور اگر بلا انتظار ابھی تیمم سے پڑھ لے جب بھی جائز ہے جبکہ پانی میل بھر دُور ہو۔		
۵۲	مسئلہ : سفر میں پانی اگر اتنی قیمت کو ملے جتنی قیمت اس جگہ اس وقت بازار کا بھاؤ ہے اور اتنی قیمت حاجتِ ضرور یہ سے زائد اس کے پاس ہے تو خریدنا واجب اور تیمم ناجائز اگرچہ ایک مشکیزہ ایک روپے کو ہو جیسے موسم حج میں بعض مواقع پر ہو جاتا ہے۔	۱	۶۱۳
۵۳	مسئلہ : اگر قیمت پاس نہیں دوسری جگہ ہے اور بیچنے والا ادھار دینے پر راضی ہو جب بھی خریدنا واجب۔	۲	۶۱۳
۵۴	مسئلہ : اگر یہ قیمت نہیں رکھتا اور کوئی شخص قرض دینے کا کہتا ہے کہ مجھ سے دام قرض لے کر پانی خریدلے تو لینا واجب نہیں۔	۳	۶۱۳
۵۵	مسئلہ : وضو یا غسل میں پانی سے نقصان کا نرا اندیشہ کافی نہیں، نہ کسی ڈاکٹر یا فاسق یا ناقص طبیب کا کہنا کافی، بلکہ تین دلائل شرعیہ سے ایک کا ہونا ضرور یا تو ظاہر واضح روشن علامت یا صحیح تجربہ یا طبیبِ حاذق مسلمان غیر فاسق کا بیان۔	۴	۶۱۳

Fatawa-e-Razvia | Volume 4

TITLES

Sr. No. | Subject | Point No. | Page No. 56 | Issue: No matter how severe the cold is, Tayammum is not permissible in place of Wudu because of it, unless it is proven by any of the three Shari'i arguments that if one performs Wudu, they will fall ill. | 5 | 613 57 | Issue: If an enemy is at the water source and forbids Wudu and Ghusl, and threatens harm which he is capable of, then one should pray with Tayammum and then repeat (the prayer) with Wudu. If there is a fear and apprehension within oneself due to the presence of an enemy there, and there is no prohibition from him, then perform Tayammum and no repetition is required. | 1 | 616 58 | Issue: If a man or woman needs to bathe and there are other men or women present, or a woman needs to perform Wudu and non-mahram men are present; if a screen is possible, then Ghusl and Wudu are mandatory and Tayammum is not permissible. If a screen is impossible, there are two scenarios: first, they do not allow a screen because they have imprisoned the person or threaten harm for making a screen; in this case, perform Tayammum and no repetition is needed later. Second, the person themselves is unable to create a screen, for example, due to illness or there is no place for a screen like on a boat; in this case, the person should ask them to turn their backs or close their eyes. If they comply, perform Ghusl and Wudu, and if they do not, perform Tayammum, and it appears that in this case too, the ruling is for repetition. | 3 | 616 59 | Issue: A Tayammum performed due to shortage of time cannot be used for another act of worship without purification, as it was for that specific necessity. Where there is no necessity, that Tayammum is also invalid. | 3 | 618 60 | Issue: 'Hiba' means making someone the owner, and 'Ibaha' (permission) is that one retains the ownership but gives permission to use or spend it. By making someone the owner, power can be gained over everything, but by making it permissible, power is not considered over anything except water. | 4 | 630 61 | Issue: Let alone permission, even just a promise like "I will give you water" apparently makes one capable of obtaining water, as fulfillment of the promise is expected. | 5 | 630 62 | Issue: Someone promised to give water for Wudu. The person waited until they saw that the time would lapse in waiting, so they started the prayer with Tayammum. Meanwhile, the water arrived. If the person knows that by breaking their intention and performing Wudu they can catch the prayer within the time, then the Tayammum is gone; they should perform Wudu and pray. If they know that there is

no time for Wudu now, the Tayammum remains valid; they should not break their intention, complete the prayer, and later repeat it after performing Wudu. | 6 | 630

फ़तावा-ए-रज़विया | जिल्द 4

विषय (अनवानाह)

क्रम सं. | विषय | फ़ायदा नं. | पृष्ठ सं. 56 | मसला: कितनी भी तेज़ सर्दी हो, उसके कारण वज़ू की जगह तयम्मुम जायज़ नहीं है, जब तक कि तीन शरई दलीलों में से किसी एक दलील से यह साबित न हो जाए कि वज़ू किया तो वह बीमार हो जाएगा। | 5 | 613 57 | मसला: अगर पानी पर दुश्मन है और वह वज़ू व ग़ुस्ल से मना करता है और नुक़सान पहुँचाने की धमकी देता है जिस पर वह सक्षम है, तो तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ले और फिर वज़ू करके उसका इआदा (दोहराना) करे। और अगर वहाँ दुश्मन की मौजूदगी से खुद उसे डर और अंदेशा है, दुश्मन की तरफ से कोई मनाही नहीं है, तो तयम्मुम करे और इआदा की ज़रूरत नहीं है। | 1 | 616 58 | मसला: अगर किसी मर्द या औरत को नहाना है और वहाँ कुछ और मर्द या औरतें भी मौजूद हैं, या औरत को वज़ू करना है और वहाँ गैर-महरम मर्द हैं; अगर ओट (पर्दा) संभव हो तो ग़ुस्ल और वज़ू अनिवार्य है, तयम्मुम जायज़ नहीं। अगर ओट असंभव हो तो दो स्थितियाँ हैं: पहली यह कि वे ओट नहीं करने देते क्योंकि उन्होंने उसे कैद कर रखा है या ओट करने पर नुक़सान पहुँचाने की धमकी देते हैं; इस स्थिति में तयम्मुम करे और बाद में इआदा ज़रूरी नहीं। दूसरी यह कि वह खुद ओट करने में सक्षम नहीं है, जैसे बीमारी के कारण या वहाँ ओट की जगह ही नहीं है जैसे कि नाव पर; तो ऐसी स्थिति में वह उनसे कहे कि पीठ फेर लें या आँखें बंद कर लें। अगर वे मान लें तो ग़ुस्ल व वज़ू करे और अगर न मानें तो तयम्मुम करे, और ज़ाहिर यही है कि इस स्थिति में भी इआदा का हुक्म होगा। | 3 | 616 59 | मसला: जो तयम्मुम समय की कमी के कारण किया गया हो, उससे दूसरी इबादत बिना पाकी (पवित्रता) के जायज़ नहीं क्योंकि वह उसी ज़रूरत के लिए था। जहाँ ज़रूरत नहीं, वहाँ वह तयम्मुम भी बातिल (अमान्य) है। | 3 | 618 60 | मसला: 'हिबा' (दान) का मतलब है मालिक बना देना, और 'इबाहत' (अनुमति) यह है कि मिल्कियत तो अपनी ही रखी जाए लेकिन उसे इस्तेमाल करने या खर्च करने की इजाज़त दे दी जाए। मालिक बना देने से हर चीज़ पर कुदरत (अधिकार) हासिल हो सकती है, लेकिन मुबाह (अनुमति प्राप्त) करने से पानी के अलावा किसी चीज़ पर कुदरत नहीं समझी जाएगी। | 4 | 630 61 | मसला: इबाहत तो दूर, केवल इतना वादा कि "मैं तुझे पानी दूँगा", ज़ाहिरन पानी पर कादिर (सक्षम) बनाता है, क्योंकि वादे का पूरा होना ज़ाहिर है। | 5 | 630 62 | मसला: किसी ने उसे वज़ू के लिए पानी देने का वादा किया। वह इंतज़ार करता रहा, जब देखा कि अब इंतज़ार में वक़्त निकल जाएगा, तो नमाज़ तयम्मुम से शुरू कर दी। इतने में वह पानी ले आया। अगर उसे

मालूम हो कि नीयत तोड़कर वज़ू करके वक़्त के अंदर नमाज़ मिल जाएगी, तो तयम्मुम जाता रहा; वज़ू करके नमाज़ पढ़े। और अगर उसे मालूम हो कि अब वज़ू करने का वक़्त नहीं है, तो तयम्मुम बाक़ी है; नीयत न तोड़े, नमाज़ पूरी करे और बाद में वज़ू करके दोबारा पढ़े। | 6 | 630

فتاویٰ رضویہ | جلد چہارم

عنوانات

نمبر شمار | عنوانات | فائدہ نمبر | صفحہ نمبر ۵۶ | مسئلہ: کیسی ہی سخت سردی ہو اس کے سبب وضو کی جگہ تیمم جائز نہیں مگر جبکہ انہیں تین دلائل شرعیہ میں کسی دلیل سے ثابت ہو کہ وضو کیا تو بیمار ہو جائے گا۔ | ۵ | ۶۱۳ ۵۷ | مسئلہ: اگر پانی پر دشمن ہے اور وہ وضو و غسل کو منع کرتا اور ضرر رسانی کی دھمکی دیتا ہے جس پر وہ قادر ہے جب تو تیمم سے پڑھ لے اور پھر وضو سے اعادہ کرے اور اگر وہاں دشمن کے موجود ہونے سے خود اسے خوف و اندیشہ ہے اس کی طرف سے ممانعت نہیں تو تیمم کرے اور اعادہ نہیں۔ | ۱ | ۶۱۶ ۵۸ | مسئلہ: اگر مرد یا عورت کو نہانا ہے اور وہاں کچھ مرد خواہ عورتیں اور بھی ہیں یا عورت کو وضو کرنا ہے اور وہاں نامحرم مرد ہیں اگر آڑ ممکن ہو غسل و وضو لازم ہے تیمم کرنا جائز نہیں اور اگر آڑ نا ممکن ہو تو دو صورتیں ہیں ایک یہ کہ وہ آڑ نہیں کرنے دیتے کہ اسے قید کر رکھا ہے یا آڑ کرنے میں ضرر رسانی سے دھمکاتے ہیں اس صورت میں تیمم کرے اور بعد کو اعادہ نہیں۔ دوسرے یہ کہ خود ہی آڑ پر قادر نہیں مثلاً بوجہ مرض یا اس لئے کہ وہاں آڑ کی جگہ ہی نہیں جیسے کشتی تو اس صورت میں یہ ان سے کہے کہ پیٹھ پھیر لیں یا آنکھیں بند کرلیں۔ اگر وہ مان لیں غسل و وضو کرے اور نہ مانیں تو تیمم کرے اور ظاہر یہ ہے کہ اس صورت میں بھی اعادہ کا حکم ہو۔ | ۳ | ۶۱۶ ۵۹ | مسئلہ: جو تیمم تنگی وقت کے لئے کیا ہو اس سے دوسری عبادت کے بے طہارت جائز نہیں کہ یہ اس ضرورت کے لئے تھا جہاں ضرورت نہیں اس کے لئے وہ تیمم بھی باطل۔ | ۳ | ۶۱۸ ۶۰ | مسئلہ: ہبہ مالک کردینے کو کہتے ہیں اور اباحت یہ کہ ملک تو اپنی ہی رکھی مگر اسے برتنے خرچ کرنے کی اجازت دی مالک کردینے سے ہر چیز پر قدرت حاصل

ہو سکتی ہے لیکن مباح کرنے سے پانی کے سوا کسی چیز پر قدرت نہ سمجھی جائے گی۔ | ۴ | ۶۳۰ ۶۱ | مسئلہ: اباحت در کنار فقط اتنا وعدہ کہ میں تجھے پانی دوں گا ظاہرًا پانی پر قادر کرتا ہے کہ ظاہر وفاء وعدہ ہے۔ | ۵ | ۶۳۰ ۶۲ | مسئلہ: کسی نے اسے وضو کیلئے پانی دینے کا وعدہ کیا یہ منتظر رہا جب دیکھا کہ اب انتظار میں وقت جائے گا نماز تیمم سے شروع کردی اتنے میں وہ پانی لے آیا اگر جانے کہ نیت توڑ کر وضو کرکے وقت میں نماز پالوں گا تو تیمم جاتا رہا وضو کرکے پڑھے اور اگر جانے کہ اب وضو کا وقت نہیں تو تیمم باقی ہے نیت نہ توڑے نماز پوری کرے بعد کو وضو کرکے پھیرے۔ | ۶ | ۶۳۰

Fatawa Razvia Volume 4

Serial No.	Topics	Point No.	Page No.
63	Ruling: Tayammum was performed due to the unavailability of water, then the person became so ill that Wudu would be harmful, and then water was found. One should perform Tayammum for illness again, as the Tayammum performed for lack of water is now invalid.	1	631
64	Ruling: Tayammum was performed due to lack of water. Now water is found, but there is an enemy or a predator near it, preventing access to the water. The first Tayammum will not break.	3	631
65	Ruling: The meaning of water being "unavailable" for Tayammum is that it is not in one's possession and reaching it would cause difficulty or harm.	5	631
66	Ruling: If water is present before one's eyes but cannot be reached, it will be considered unavailable.	6	631
67	Ruling: I say: If the reason for inability to use water remains the same, but the cause's underlying reason changes, the first Tayammum will not break. For example, there was an enemy at the water, posing a threat to life. Before that could pass, a thief appeared, posing a threat to property. As soon as the thief arrived, the enemy left. The Tayammum performed out of fear of the enemy will remain valid.	1	632
68	Ruling: In winter, performing Wudu will feel very cold and uncomfortable, but if there is no fear of illness, Tayammum is not permitted.	5	632
69	Ruling: If one needs a bath and can heat water or has money beyond basic needs to pay for a public bath, Tayammum due to fear of cold is not permitted.	7	633
70	Ruling: Recitation of the Holy Quran is not permissible with the Tayammum performed specifically for leaving the mosque.	2	637
71	Ruling: If, due to an excuse, one cannot go outside, Tayammum must now be performed for prayer. However, the Tayammum	3	637

Serial No.	Topics	Point No.	Page No.
	performed for staying in the mosque will not suffice for prayer or recitation; a new Tayammum must be performed using the floor or wall of the mosque. The conditions previously mentioned for the Tayammum of leaving will not apply here.		

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

क्रम संख्या	विषय	फायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
63	मसला: पानी न होने के कारण तयम्मुम किया था, फिर ऐसा बीमार हो गया कि वज़ू नुकसान करेगा, और पानी मिल गया, तो दोबारा बीमारी का तयम्मुम करे क्योंकि पानी न होने वाला तयम्मुम जाता रहा।	1	631
64	मसला: पानी न होने के कारण तयम्मुम किया था, अब पानी तो मिला मगर उस पर दुश्मन या दरिंदा वगैरह है जिसके कारण पानी नहीं ले सकता, तो पहला तयम्मुम नहीं टूटेगा।	3	631
65	मसला: तयम्मुम के लिए पानी "मौजूद न होने" का अर्थ यह है कि उसके पास न हो और उस तक पहुँचने में कठिनाई या नुकसान हो।	5	631
66	मसला: पानी अगर आँखों के सामने मौजूद है मगर उस तक पहुँच नहीं सकता, तो वह पानी न होने के बराबर ही माना जाएगा।	6	631
67	मसला: मैं कहता हूँ: अगर पानी का उपयोग न कर पाने का मूल कारण न बदले, लेकिन उस कारण का प्रेरक बदल जाए, तो इससे पहला तयम्मुम नहीं टूटेगा। उदाहरण के लिए, पानी पर दुश्मन था जिससे जान का खतरा था। वह जा न पाया था कि चोर आ गया जिससे माल का खतरा है, और चोर के आते ही दुश्मन चला गया, तो वह तयम्मुम जो दुश्मन के डर से किया गया था, बाकी रहेगा।	1	632
68	मसला: सर्दी के मौसम में वज़ू करने से बहुत ठंड महसूस होगी और तकलीफ होगी, मगर यदि किसी बीमारी का डर नहीं है तो तयम्मुम की अनुमति नहीं है।	5	632
69	मसला: नहाने की ज़रूरत में अगर पानी गर्म कर सकता है या हम्माम (स्नानागार) का किराया मौलिक आवश्यकताओं से अधिक मौजूद है, तो सर्दी के डर से तयम्मुम की अनुमति नहीं है।	7	633
70		2	637

क्रम संख्या	विषय	फायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
	मसला: वह तयम्मुम जो मस्जिद से निकलने के लिए किया गया हो, उससे कुरान मजीद की तिलावत (पाठ) जायज़ नहीं है।		
71	मसला: अगर किसी मजबूरी के कारण बाहर न जा सके तो अब नमाज़ के लिए तयम्मुम करना ज़रूरी होगा। लेकिन वह तयम्मुम जो मस्जिद में ठहरने के लिए किया गया था, काफी नहीं होगा; नमाज़ या तिलावत के लिए दोबारा तयम्मुम करना होगा, चाहे मस्जिद की ज़मीन से हो या दीवार से। और अब वे शर्तें जल्दी नहीं होंगी जो हमने निकलने के तयम्मुम के लिए बयान की थीं।	3	637

نمبر شمار	عنوانات	صفحہ نمبر	فائدہ
۶۳	مسئلہ: پانی نہ ہونے کے سبب تیمم کیا تھا پھر ایسا بیمار ہو گیا کہ وضو نقصان کرے گا اور پانی پایا تو دوبارہ بیماری کا تیمم کرے کہ وہ تیمم کہ پانی نہ ہونے کا تھا جاتا رہا۔	۶۳۱	۱
۶۴	مسئلہ: پانی نہ ہونے کے سبب تیمم کیا تھا اب پانی تو ملا مگر اس پر دشمن یا درندہ وغیرہ ہے جس کے سبب پانی لے نہیں سکتا پہلا تیمم نہ ٹوٹے گا۔	۶۳۱	۳
۶۵	مسئلہ: تیمم کیلئے پانی معدوم ہونے کے یہ معنی ہیں کہ اس کے پاس نہ ہو اور اس تک پہنچنے میں حرج و ضرر ہو۔	۶۳۱	۵
۶۶	مسئلہ: پانی اگر آنکھوں کے سامنے موجود ہے مگر اس تک پہنچ نہیں سکتا، تو وہ پانی معدوم ہی ٹھہرے گا۔	۶۳۱	۶
۶۷	مسئلہ: اقول اگر پانی سے عجز کا سبب تو نہ بدلے مگر سبب کا مسبّب بدل جائے تو اس سے پہلا تیمم نہ ٹوٹے گا، مثلاً پانی پر دشمن تھا جس سے جان کا اندیشہ۔ وہ جانے نہ پایا تھا کہ چور آگیا جس سے مال کا اندیشہ تو اس کے آتے ہی دشمن چلا گیا تو وہ تیمم جو خوفِ دشمن سے کیا تھا باقی رہے گا۔	۶۳۲	۱
۶۸	مسئلہ: جاڑے میں وضو کرنے سے سردی بہت معلوم ہوگی اس کی تکلیف ہوگی مگر کسی مرض کا اندیشہ نہیں تو تیمم کی اجازت نہیں۔	۶۳۲	۵

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: نہانے کی حاجت میں اگر پانی گرم کر سکتا ہے یا حمام کی اجرت		
۶۹	حاجتِ اصلیہ سے زائد موجود ہے تو سردی کے خوف سے تیمم کی اجازت نہیں۔	۷	۶۳۳
۷۰	مسئلہ: جو تیمم کہ مسجد سے نکلنے کے لئے کیا اس سے تلاوتِ قرآن مجید حلال نہیں ہو سکتی۔	۲	۶۳۷
۷۱	مسئلہ: اگر بوجہ عذر باہر نہ جاسکے اب نماز کے لئے ضرور تیمم کرنا ہوگا۔ مگر وہ تیمم کہ مسجد میں ٹھہرنے کیلئے کیا تھا کافی نہ ہوگا نماز یا تلاوت کے لئے دوبارہ تیمم کرنا ہوگا مسجد کی زمین خواہ دیوار سے اور اب وہ شرطیں جلدی کہیں اس میں نہ ہوں گی جو ہم نے نکلنے کے تیمم میں بیان کیں۔	۳	۶۳۷

Volume 4 Fatawa Rizvia Titles

S. No. 72: Mas'ala: There is a need to bathe, and the pool is smaller than ten-by-ten cubits, and there is no vessel to take water. If one goes inside the pool to bathe, all the water will become spoiled and used (must'amal) due to it being a small quantity. If that water is waqf (endowed) or the owner has not given permission, then bathing in it is impermissible; one should perform tayammum. If the owner has given permission, or the water is one's own property, or it is permissible (mubah) water in a forest, then bathing is obligatory and tayammum is impermissible. (Benefit No. 1, Page 641)

S. No. 73: Mas'ala: Water is available and one has full power to use it, but there is a prohibition from Sharia to spend it for purification. This is also a form of inability, and tayammum is permitted. For example, water provided on the way for drinking (sabeel); performing wudu with it is not permissible. Or if one has gifted water to someone; now, although one can take it back with their consent or through the compulsion of a judge, but taking back a gifted item is a sin, therefore inability is established. (Benefit No. 1, Page 643)

S. No. 74: Mas'ala: If leftover water from a donkey or nabidh (date water) is present, where there is doubt whether it has become nabidh or is still water, the ruling in these cases is to perform both wudu with those waters and tayammum. It is better to perform wudu first. In any case, intention (niyyah) is a condition for this wudu, unlike other wudus which can be valid without intention if water flows over the limbs of wudu, even if there was no intention to perform wudu at all—such as getting wet in rain, diving into a river, or someone forcibly pouring water over the limbs; wudu is accomplished in every way. This is not the case with these two types of water; rather, it is mandatory to perform wudu with a specific intention for purification. (Benefit No. 1, Page 644)

S. No. 75: Mas'ala: Regarding the ruling that if most or half of the limbs involved in wudu have wounds, one should perform tayammum, and here "most" refers to the count. The head is also included in this count. I say: However, for other limbs, it is sufficient to have a wound or pimple anywhere on the site of wudu. For the head, it is necessary that more than three-fourths be injured, because the limb of wudu is only one-fourth of the head. So, as long as one-fourth of the head is safe, the head will not be considered "injured". Just as if the arms above the elbows to the armpits, or the legs above the ankles to the thighs are injured, they will not be considered

injured because the site of wudu is healthy. Also, it is necessary that wiping (masah) it would cause harm. If washing is harmful, then wudu is absolutely correct regarding the head, because washing it is not required in wudu. (Benefit No. 1, Page 645)

जिल्द चहारुम (भाग 4) फ़तावा रज़विया शीर्षक

क्रम संख्या 72: मसअला: नहाने की ज़रूरत है और हौज़ दस-दर-दस (दस हाथ चौड़ा और दस हाथ लंबा) से कम है और पानी लेने के लिए कोई बर्तन नहीं है। अगर हौज़ के अंदर जाकर नहाए तो सारा पानी कम होने के कारण ख़राब और मुस्तअमल (इस्तेमाल किया हुआ) हो जाएगा। अगर वह पानी वक़्फ़ है या मालिक की इजाज़त नहीं है, तो उसमें नहाना जायज़ नहीं है; तयम्मुम करे। और अगर मालिक की इजाज़त है या पानी खुद उसकी मिल्कियत है या जंगल का मुबाह (अनुमत) पानी है, तो नहाना लाज़िम (अनिवार्य) है और तयम्मुम नाजायज़। (फ़ायदा नंबर 1, पेज 641)

क्रम संख्या 73: मसअला: पानी मौजूद हो और उस पर हर तरह से कुदरत (अधिकार) हो, लेकिन पाकी हासिल करने में उसे खर्च करने से शरीअत की मनाही हो, तो यह भी लाचारी की सूरत है और तयम्मुम की इजाज़त है। जैसे रास्ते में पीने के लिए रखी गई सबील; उससे वज़ू जायज़ नहीं है। या पानी किसी को तोहफे में दे दिया हो; अब अगरचे उसकी रज़ामंदी या हाकिम के ज़ोर से वापस ले सकता है, लेकिन दी हुई चीज़ वापस लेना गुनाह है, इसलिए लाचारी साबित है। (फ़ायदा नंबर 1, पेज 643)

क्रम संख्या 74: मसअला: अगर गधे का जूठा पानी या वह नबीज़ (खजूर का पानी) मौजूद हो, जिसमें शक हो कि वह नबीज़ बन गया है या अभी पानी ही है, तो ऐसी सूरतों में हुक्म यह है कि उन पानियों से वज़ू भी करे और तयम्मुम भी। और बेहतर यह है कि पहले वज़ू करे। बहरहाल इस वज़ू में नियत शर्त है, जैसे और वज़ू बिना नियत के भी हो जाते हैं कि पानी वज़ू के अंगों पर बह जाए अगरचे वज़ू करने का इरादा न हो, बल्कि बिल्कुल इरादा न हो जैसे बारिश में भीग गया या दरिया में गोता लगाया या किसी ने ज़बरदस्ती अंगों पर पानी बहा दिया, हर तरह वज़ू हो गया। इन दो पानियों में ऐसा नहीं है, बल्कि खास पाकी की नियत के साथ वज़ू करना लाज़िम है। (फ़ायदा नंबर 1, पेज 644)

क्रम संख्या 75: मसअला: यह जो हुक्म है कि वज़ू के ज़्यादातर या आधे अंगों में ज़ख्म हो तो तयम्मुम करे, और यहाँ गिनती में 'ज़्यादातर' मुराद है। इस गिनती में सिर भी शामिल है। मैं कहता हूँ (अक़ूल): मगर अन्य अंगों में तो वज़ू की जगह पर कहीं भी ज़ख्म या दाना होना काफी है। सिर में ज़रूरी है कि तीन-चौथाई से ज़्यादा ज़ख्मी हो, क्योंकि वज़ू का अंग सिर का सिर्फ एक चौथाई हिस्सा (रुब-ए-सर) है। तो जब तक एक चौथाई सिर सुरक्षित है, सिर ज़ख्मी नहीं माना जाएगा। जैसे अगर हाथ कोहनियों से ऊपर बगलों तक या पैर टखनों से ऊपर जाँघों तक ज़ख्मी हों, तो उन्हें ज़ख्मी नहीं माना जाएगा

क्योंकि वज़ू की जगह सही-सलामत है। साथ ही, यह भी ज़रूरी है कि उस पर मसह करना नुकसानदेह हो। अगर धोना नुकसानदेह हो, तो वज़ू में सिर के लिए बिल्कुल सही है क्योंकि वज़ू में उसे धोना नहीं होता। (फ़ायदा नंबर 1, पेज 645)

جلد چہارم فتاویٰ رضویہ عنوانات

نمبر شمار ۷۲: مسئلہ: نہانے کی حاجت ہے اور حوض دہ در دہ سے کم اور کوئی برتن پانی لینے کو نہیں حوض کے اندر جا کر نہائے تو تمام پانی قلیل ہونے کے سبب خراب و مستعمل ہو جائیگا اگر وہ پانی وقف ہے یا مالک کی اجازت نہیں تو اس میں نہانا جائز ہے تیمم کرے اور اگر مالک کی اجازت ہے یا پانی خود اس کی ملک ہے یا جنگل کا مباح پانی ہے تو نہانا لازم اور تیمم ناجائز۔ (فائدہ نمبر ۱، صفحہ ۶۴۱)

نمبر شمار ۷۳: مسئلہ: پانی موجود ہو صرف پر ہر طرح قدرت ہو لیکن طہارت میں اسے خرچ کرنے سے شرع مطہر کی ممانعت ہو تو یہ بھی عجز کی صورت اور تیمم کی اجازت ہے جیسے راہ میں پینے کی سبیل کہ اس سے وضو جائز نہیں یا پانی کسی کو ہبہ کردیا اب اگرچہ اس کی رضا یا حاکم کے جبر سے واپس لے سکتا ہے مگر دی ہوئی چیز واپس لینا گناہ ہے اس لئے عجز ثابت ہے۔ (فائدہ نمبر ۱، صفحہ ۶۴۳)

نمبر شمار ۷۴: مسئلہ: اگر گدھے کا جھوٹا پانی یا وہ نبیز موجود ہے جس کے نبیز ہو جانے یا ابھی پانی رہنے میں شبہ ہے اور ان صورتوں میں حکم یہ ہے کہ ان پانیوں سے وضو بھی کرے اور تیمم بھی اور بہتر یہ ہے کہ پہلے وضو کرے بہر حال اس وضو میں نیت شرط ہے جیسے اور وضو بے نیت بھی ہو جاتے ہیں کہ پانی اعضاء وضو پر بہہ جائے اگرچہ اس کا ارادہ وضو کرنے کا نہ ہو بلکہ اصلاً ارادہ نہ ہو جیسے مینہ میں بھیگ گیا یا دریا میں غوطہ لگایا یا کسی نے زبردستی اعضاء پر پانی بہادیا ہر طرح وضو ہو گیا۔ ان دو پانیوں میں ایسا نہیں بلکہ خاص نیت طہارت کے ساتھ وضو کرنا لازم ہے۔ (فائدہ نمبر ۱، صفحہ ۶۴۴)

نمبر شمار ۷۵: مسئلہ: یہ جو حکم ہے کہ وضو کے اکثر یا نصف اعضاء میں زخم ہو تو تیمم کرے اور یہاں گنتی میں اکثر مراد ہے اس گنتی میں سر بھی داخل ہے اقول: مگر اور اعضاء میں تو محل وضو سے کسی جگہ کوئی زخم یا دانہ ہونا کافی ہے۔ سر میں ضرور ہے کہ تین چہارم سے زیادہ مجروح ہو کہ عضو وضو صرف رُبع سر ہے تو جب تک چہارم سر محفوظ ہے سر مجروح نہ ٹھہریگا جس طرح ہاتھ، اگر کہنیوں سے اوپر بغلوں تک یا پاؤں گٹوں سے اوپر رانوں تک مجروح ہوں تو مجروح نہ ٹھہریں گے کہ محل وضو سالم ہے۔ نیز لازم ہے کہ اسے مسح ضرر کرے اگر دھونا مضر ہو تو وضو میں سر مطلقاً صحیح ہے کہ وضو میں اس کا دھونا نہیں۔ (فائدہ نمبر ۱، صفحہ ۶۴۵)

Fatawa Razawiya, Volume 4

Serial No.	Topics	Point No.	Page No.
76	Mas'ala: If wiping (Masah) the head in ablution (Wudu) causes harm, it is obligatory to tie a bandage on the head and wipe over a portion of it that covers one-fourth of the head with a wet hand. If even this causes harm, then leave the Masah entirely, it is excused; performing Tayammum is not allowed. And if washing the head in Ghusl (ritual bath) is harmful, then one should wipe over every single hair of the head from beginning to end. If Masah also causes harm, then tie a bandage over the affected area and pour water over it all. If this too causes harm, then wipe over it all with a wet hand. If this also causes harm, then bathe from the neck down and leave the head entirely; it is excused, and Tayammum is not permissible.	1	646
77	Mas'ala: There is a disease in the head where washing is harmful, and the vapors that would rise while bathing from the neck down would also cause harm, based on valid experience or the advice of an expert, practicing Muslim physician; then one should not even bathe from the neck down and should perform Tayammum.	8	647
78	Mas'ala: If water was known to be available but it was thought to have been consumed, and prayer was performed with Tayammum, and later it was discovered that water remained; then by consensus, the prayer was not valid. One should perform Wudu and pray again, even if the time has passed.	2	650
79	Mas'ala: If water belongs to the son, and before reaching that extent the father had said that he would take that water, then the son's Tayammum will not break upon reaching that water because he has no power over it due to his father's prohibition. But if the father had not said so, the son's Tayammum will be voided upon reaching the water. Now, if the father takes that water, the son will have to perform Tayammum again.	3	653
80	Mas'ala: In a forest, a person in a state of major ritual impurity (Junub), a menstruating woman (Haiz), a person in a state of minor ritual impurity (Muhdith), and a deceased person found	4	653

Serial No.	Topics	Point No.	Page No.
	permissible (Mubah) water sufficient for only one person. It is better for the Junub to bathe with it, and the others should perform Tayammum.		
81	Mas'ala: If this water belongs to one of them, then obviously he is most entitled to it. And if they all have a share in it, then it is appropriate that everyone gives their share for the deceased person to be bathed, and they themselves perform Tayammum because they cannot use their share for their own needs. I say: even if one of them is an heir to the deceased, the water is needed for the deceased himself, and his needs for bathing, shrouding, and burial take precedence over inheritance and even debts. They can give their share to him. I say: this is because a 'Muhdith' is only an adult. Yes, if a minor 'Muhdith' is assumed, then both the deceased and the living will have to perform Tayammum because the minor's share cannot be spent on another.		

फतावा रज़विया, खंड 4

क्र. सं.	विषय	लाभ सं.	पृष्ठ सं.
76	मसला: यदि वज़ू में सिर का मसह करना नुकसान पहुँचाता हो, तो वाजिब है कि सिर पर पट्टी बांधकर उसके इतने हिस्से पर भीगा हाथ फेरे जो सिर का चौथाई हिस्सा हो। अगर इससे भी नुकसान हो तो मसह बिल्कुल छोड़ दे, माफ़ है; तयम्मुम की इजाज़त नहीं। और गुस्ल में सिर धोना नुकसानदेह हो तो पूरे सिर पर एक-एक बाल पर शुरू से आखिर तक मसह करे। अगर मसह भी नुकसान दे तो नुकसान वाली जगह पर पट्टी बांधकर उस सब पर पानी बहाए। अगर इससे भी नुकसान हो तो उस सब पर भीगा हाथ फेरे। अगर इससे भी नुकसान हो तो गर्दन से नीचे नहा ले, सिर बिल्कुल छोड़ दे; माफ़ है, तयम्मुम जायज़ नहीं।	1	646
77	मसला: सिर में बीमारी है जहाँ धोना नुकसानदेह है, और गर्दन से नीचे नहाने पर उठने वाले वाष्प (भाप) भी सही अनुभव या किसी माहिर, दीनदार मुस्लिम हकीम के कहने के अनुसार नुकसान पहुँचाएंगे; तो गर्दन से भी न नहाए और तयम्मुम करे।	8	647
78	मसला: अगर पानी का पता था लेकिन यह समझा गया कि वह खर्च हो गया है, और तयम्मुम से नमाज़ पढ़ ली, बाद में पता चला कि पानी बचा हुआ था; तो सर्वसम्मति से नमाज़ नहीं हुई, वज़ू करके दोबारा पढ़े चाहे कज़ा ही क्यों न हो जाए।	2	650
79	मसला: पानी अगर बेटे की मिल्कियत है और उस सीमा तक पहुँचने से पहले बाप ने कह दिया था कि वह पानी मैं लूँगा, तो बेटे का उस समय का तयम्मुम उस पानी तक पहुँचने से भी नहीं टूटेगा क्योंकि बाप की पाबंदी के कारण उसका उस पर अधिकार नहीं है। और अगर बाप ने ऐसा नहीं कहा था, तो पानी पर पहुँचकर बेटे का तयम्मुम खत्म हो जाएगा। अब अगर बाप उस पानी को लेगा, तो बेटे को दोबारा तयम्मुम करना होगा।	3	653
80	मसला: जंगल में जुनुब (बड़ी नापाकी वाला), हाएज़ (मासिक धर्म वाली), मुहदिस (छोटी नापाकी वाला) और मय्यत (मृतक) के लिए ऐसा मुबाह पानी मिला जो केवल	4	653

एक के लिए काफी हो, तो बेहतर यह है कि जुनुब उससे नहा ले और बाकियों के लिए तयम्मुम है।

81 मसला: अगर यह पानी उनमें से किसी एक का है तो ज़ाहिर है कि वही उसका हक़दार है। और अगर उसमें सबका हिस्सा है तो उचित यह है कि सब अपना हिस्सा मय्यत को दे दें और उसे नहला दें और खुद तयम्मुम करें, क्योंकि वे अपना हिस्सा अपने इस्तेमाल में नहीं ला सकते। अक़ूल: हालाँकि उनमें से कोई मय्यत का वारिस हो, पर पानी अभी खुद मय्यत के लिए ज़रूरी है और उसकी गुस्ल, कफ़न और दफ़न की ज़रूरतें विरासत और यहाँ तक कि कर्ज़ से भी पहले हैं। वे अपना हिस्सा उसे दे सकते हैं। अक़ूल: ऐसा इसलिए है क्योंकि मुहदिस केवल बालिग ही होता है। हाँ, अगर किसी नाबालिग को मुहदिस मान लिया जाए, तो लाज़मी तौर पर मय्यत और जीवित सभी को तयम्मुम करना होगा क्योंकि नाबालिग का हिस्सा दूसरे पर खर्च नहीं किया जा सकता।

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۷۶	مسئلہ: وضو میں اگر سر کا مسح نقصان کرتا ہو واجب ہے کہ سر پر پٹی باندھ کر اس کے اتنے ٹکڑے پر بھیگا ہاتھ پھیرے جو چہارم سر پر واقع ہے اگر اس سے بھی نقصان ہو تو مسح بالکل چھوڑ دے معاف ہے تیمم کی اجازت نہیں اور غسل میں سر کا دھونا ضرر دیتا ہو تو سارے سر پر ایک ایک بال پر اول سے آخر تک مسح کرے۔ مسح بھی ضرر دے تو محل نقصان پر پٹی باندھ کر اس سب پر پانی بہائے۔ اس سے بھی نقصان ہو تو اس سب پر بھیگا ہاتھ پھیرے۔ اس سے بھی ضرر ہو تو گلے سے نہالے سر بالکل چھوڑ دے معاف ہے تیمم روا نہیں۔	۱	۶۴۶
۷۷	مسئلہ: سر میں مرض ہے دھونا مضر ہے اور گلے سے نہانے میں بخارات جو اٹھ کر جائیں گے صحیح تجربے یا طبیب حاذق مسلم مستور کے کہنے سے ضرر دیں گے تو گلے سے بھی نہ نہائے تیمم کرے۔	۸	۶۴۷
۷۸	مسئلہ: اگر پانی معلوم تھا اور یہ سمجھا کہ خرچ ہو گیا، تیمم سے نماز پڑھ لی، بعد کو معلوم ہوا کہ پانی باقی تھا بالاتفاق نماز نہیں ہوئی وضو کر کے پھر پڑھے اگرچہ قضا۔	۲	۶۵۰
۷۹	مسئلہ: پانی اگر بیٹے کی ملکیت ہے اور اس حد تک پہنچنے سے پہلے باپ نے کہہ دیا تھا کہ وہ پانی میں لوں گا جب تو بیٹے کا اگر اس وقت تیمم ہے اس	۳	۶۵۳

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	پانی پر پہنچنے سے بھی نہ ٹوٹے گا کہ باپ کی ممانعت کے سبب اس پر قدرت نہیں اور اگر باپ نے ایسا نہ کہہ دیا تھا تو پانی پر پہنچ کر بیٹے کا تیمم جاتا رہے گا اب اگر باپ اس پانی کو لے گا بیٹے کو دوبارہ تیمم کرنا ہوگا۔		
۸۰	مسئلہ: جنگل میں جنب وحائض و محدث ومیت میں مباح پانی ملا کہ ایک کو کافی ہے بہتر یہ ہے کہ جنب اس سے نہالے باقیوں کے لئے تیمم۔	۴	۶۵۳
۸۱	مسئلہ: اگر یہ پانی ان میں سے کسی ایک کی ملک ہے جب تو ظاہر کہ وہی مستحق ہے اور اگر اس میں سب کی شرکت ہے تو مناسب یہ ہے کہ سب اپنے حصے میت کو دے دیں اسے نہلا دیں اور آپ تیمم کریں کہ اس کا حصہ یہ اپنے صرف میں نہیں لاسکتے۔ اقول: اگرچہ ان میں کوئی میت کا وارث بالحصہ ہو کہ پانی ابھی خود میت کو درکار ہے اور اس کی حاجات غسل وکفن ودفن توریت کیا دیون پر بھی مقدم ہیں) اور یہ اپنا حصہ اسے دے سکتے ہیں اقول: اس لئے کہ محدث بھی نہیں ہوتا مگر بالغ، ہاں اگر نابالغ محدث فرض کیا جائے تو لاجرم میت واحیاء سب کو تیمم ہوگا کہ حصہ نابالغ بھی دوسرے پر صرف نہیں ہوسکتا۔		

Fatawa Razawiyya, Volume 4

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
82	Ruling: A person in a state of major ritual impurity (junub), menstruation (ha'id), or minor ritual impurity (muhdith) was performing tayammum. Permissible water was found in a quantity sufficient for only one person. Everyone's tayammum is invalidated. For example, if the person in major ritual impurity bathes with it due to priority, the others should perform tayammum again afterwards.	1	652
83	Ruling: No matter how little permissible water is, as many people as get it, each will be considered capable of it separately. For example, a hundred people performed tayammum; some had tayammum for ghusl (full bath), some for wudu (ablution). Some, while bathing, had a spot as big as a palm left on their back where water didn't flow, which one handful of water would suffice. For some, a part of the left foot remained unwashed in wudu. For instance, there were sixty such people and forty who didn't get water for wudu or ghusl at all. Now, one handful of permissible water is available, or the tayammum of those forty remains. The tayammum of those sixty is invalidated. When one of them uses it, the other 59 should then perform tayammum.	2	652
84	Ruling: Some people have performed tayammum. One person brings water suitable for wudu from his own property and says, "Whoever among you wants, perform wudu with this," or says, "This water is for whoever desires it." The tayammum of all those who had tayammum for wudu is invalidated, while the tayammum of those who had it for ghusl remains valid.	3	652
85	Ruling: A son cannot resist his father if the father wants to take a certain amount of water. This situation will also be considered a state of inability (ajz) for the son.	4	652
86	Ruling: Certain water was the ill-gotten (fasid) property of several people. They willingly gave permission to one among them to use it, and it is sufficient for his wudu or ghusl, and he	5	652

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
	is in a state of tayammum. His tayammum will not be invalidated. Having power over water will not be established by this permission because that ownership is vile (khabeeth), and its use is prohibited by Sharia.		
87	Ruling: A person who has performed purification with water can pray behind someone who has performed tayammum, but the opposite is better, provided they are fit for leadership (imamat).	7	652
88	Ruling: If water is present and there is power to use it, tayammum is not permissible for anything other than that obligatory (fard), necessary (wajib), or emphasized sunnah (sunnat-e-mu'akkada) worship which is without compensation. If one does it, it will be purely futile.	3	659

फतवा रज़विया, खंड 4

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा संख्या	पृष्ठ संख्या
82	मसला: जुनब (महा-अशुद्धि), हईज़ (मासिक धर्म) वाली और मुहद्दिस (लघु-अशुद्धि) वाले तैयम्मुम से थे। इतना मुबाह (अनुमेय) पानी मिला जो केवल एक व्यक्ति के लिए पर्याप्त हो। सभी का तैयम्मुम टूट गया। उदाहरण के लिए, जब वरीयता के कारण जुनब उससे स्नान कर ले, तो उसके बाद बाकी लोग दोबारा तैयम्मुम करें।	1	652
83	मसला: मुबाह पानी चाहे कितना ही कम हो, जितने लोगों को मिलेगा, वे सभी अलग-अलग उस पर सक्षम समझे जाएंगे। उदाहरण के लिए, सौ लोग तैयम्मुम से थे; कुछ का तैयम्मुम ग़ुस्ल (पूर्ण स्नान) के लिए था, कुछ का वुज़ू (अशन) के लिए। कुछ के नहाने में, उदाहरण के लिए, पीठ पर इतनी जगह पानी बहने से रह गई थी जिसे एक चुल्लू पानी पर्याप्त होता। कुछ का वुज़ू में बाएं पैर का उतना ही हिस्सा धोने से रह गया था। उदाहरण के लिए, साठ ऐसे थे और चालीस वे जिन्हें वुज़ू और ग़ुस्ल के लिए पानी मिला ही नहीं था। अब एक चुल्लू मुबाह पानी मिला या उन चालीस का तैयम्मुम बाकी है। उन साठ का तैयम्मुम टूट गया। जब उनमें से एक उसे इस्तेमाल कर ले, तो फिर अन्य 59 तैयम्मुम करें।	2	652
84	मसला: कुछ लोग तैयम्मुम से हैं। एक व्यक्ति अपनी मिल्कियत से वुज़ू के लायक पानी लाया और कहा, "तुम में से जो चाहे इससे वुज़ू कर ले" या कहा, "यह पानी उसके लिए है जो चाहे।" उन सभी का तैयम्मुम टूट गया जिनका तैयम्मुम वुज़ू के लिए था, और जिनका ग़ुस्ल के लिए था उनका बना रहा।	3	652
85	मसला: पिता जिस पानी को लेना चाहे, बेटे को इसकी रोक-टोक की अनुमति नहीं है। यह स्थिति बेटे के लिए विवशता (अज़्र) की मानी जाएगी।	4	652
86		5	652

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा संख्या	पृष्ठ संख्या
	मसला: कुछ पानी कई व्यक्तियों की फासिद (अनुचित) मिल्कियत था। उन्होंने स्वेच्छा से अपने में से एक को उसके उपयोग की अनुमति दे दी और यह उसके वुज़ू या ग़ुस्ल के लिए पर्याप्त है, और वह तैयम्मुम से है। उसका तैयम्मुम नहीं टूटेगा। इस अनुमति से पानी पर अधिकार साबित नहीं होगा क्योंकि वह मिल्कियत खबीस (अपवित्र) है और उसका उपयोग शरीयत में वर्जित है।		
87	मसला: तैयम्मुम वाले के पीछे पानी से तहारत (शुद्धि) वाला नमाज़ पढ़ सकता है, लेकिन इसका उल्टा (यानी पानी वाले के पीछे तैयम्मुम वाला) अफजल (बेहतर) है, बशर्ते वह इमामत के योग्य हो।	7	652
88	मसला: यदि पानी मौजूद हो और उसके उपयोग की क्षमता हो, तो उस फ़र्ज़, वाजिब या सुन्नत-ए-मुअक्कदा इबादत के अलावा जो बिना मुआवज़े (बदले) के हो, किसी अन्य चीज़ के लिए तैयम्मुम जायज़ नहीं है। यदि वह ऐसा करेगा, तो वह पूरी तरह व्यर्थ होगा।	3	659

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۸۲	مسئلہ: جنب و حائض و محدث تیمم سے تھے مباح پانی اتنا ملا کہ ایک ہی کو کافی ہو سب کا تیمم ٹوٹ گیا، جب مثلاً بوجہ اولویت جنب اس سے نہالے اس کے بعد باقی دوبارہ تیمم کریں۔	۱	۶۵۲
۸۳	مسئلہ: مباح پانی اگرچہ کتنا ہی قلیل ہو جتنوں کو ملے گا سب جدا جدا اس پر قادر سمجھے جائیں گے مثلاً سو آدمی تیمم سے تھے بعض کا تیمم غسل کا تھا بعض کا وضو کا ، بعض کو نہانے میں مثلاً پیٹھ پر اتنی جگہ پانی بہنے سے رہ گئی تھی جسے ایک چلو پانی بس ہوتا بعض کو وضو میں بائیں پاؤں کا اتنا ہی حصہ دھونے سے رہ گیا تھا۔ مثلاً ساٹھ ایسے تھے اور چالیس وہ جن کو وضو و غسل کے لئے پانی ملا ہی نہ تھا اب ایک چلو پانی مباح یا ان چالیس کا تیمم باقی ہے، ان ساٹھ کا ٹوٹ گیا جب اُن میں سے ایک اسے استعمال کرے ۵۹ پھر تیمم کریں۔	۲	۶۵۲
۸۴	مسئلہ: کچھ لوگ تیمم سے ہیں ایک شخص وضو کے قابل پانی اپنی ملک سے لایا اور کہا تم میں جو چاہے اس سے وضو کرلے یا کہا یہ پانی اس کے لئے ہے جو خواہش کرے جتنوں کا تیمم وضو کا تھا سب کا ٹوٹ گیا جتنوں کا غسل کا تھا باقی رہا۔	۳	۶۵۲
۸۵		۴	۶۵۲

نمبر شمار	عنوانات	نمبر	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: باپ جس پانی کو لینا چاہے بیٹے کو اس کی مزاحمت نہیں پہنچتی یہ صورت بھی بیٹے کے لئے عجز کی ہوگی۔			
۸۶	مسئلہ: ایک پانی چند شخصوں کی ملک فاسد تھا انہوں نے بخوشی اپنے میں ایک کو اس کے صرف کی اجازت دے دی اور یہ اُس کے وضو یا غسل کو کافی ہے اور وہ تیمم سے ہے تیمم نہ جائیگا اس اجازت سے پانی پر قدرت نہ ثابت ہوگی کہ وہ ملک خبیث ہے اور اس میں تصرف شرعاً ممنوع۔	۵		۶۵۲
۸۷	مسئلہ: تیمم والے کے پیچھے پانی سے طہارت والا نماز پڑھ سکتا ہے مگر افضل عکس ہے۔ جبکہ وہ لائق امامت ہو۔	۷		۶۵۲
۸۸	مسئلہ: پانی موجود اور استعمال پر قدرت ہو تو سواء اُس عبادت فرض یا واجب یا سنتِ مؤکدہ کے جو بلا عوض ہو باقی کسی شے کے لئے تیمم جائز نہیں اگر کرے گا لغو محض ہوگا۔	۳		۶۵۹

Fatawa Razawiyyah Volume Four

Serial Number	Titles	Benefit Number	Page
89	Issue: Where Tayammum was permitted due to water being unknown, the condition is that the place should not be inhabited nor near an inhabited area, i.e., at a distance of less than a mile; nor should there be obvious signs indicating the proximity of water, such as green grass, a gathering of birds or animals, or a reliable person saying that water is available within a mile. If one performs Tayammum without searching for water despite these conditions, it will be void and the prayer will not be valid, even if it later turns out that water was actually not nearby. Yes, where these four conditions are absent and one prays with Tayammum without searching for water, the prayer is valid, even if it later turns out that water was present right there.	4	659
90	Issue: In a forest where water is expected, it is obligatory to seek water only to the extent that it causes no harm to oneself nor delay to one's companions.	1	662
91	Issue: Where water is unavailable, an infidel performs Tayammum for the purpose of embracing Islam and then becomes a Muslim; he cannot pray with that Tayammum nor perform any act for which purity is necessary. Rather, he must perform Tayammum again after becoming a Muslim.	4	662
92	Issue: In the absence of water, one of two conditions is required for the permissibility of Tayammum: either the intention of absolute purification and removal of ritual impurity (which is a general and complete intention) or the intention of any act of worship whatsoever, even if it is not intended or conditional.	2	662
93	Issue: While water is available, Tayammum is permissible only for that emphasized act of worship which would be	3	662

Serial Number	Titles	Benefit Number	Page
	missed without a substitute if purification was done with water.		
94	Issue: A person without ablution who does not need a bath but wants to sit in the mosque for the remembrance of Allah and water is unavailable, it is better for him to perform Tayammum, but prayer will not be valid with this Tayammum.	4	662
95	Issue: Sleeping in a mosque is not an act of worship; Tayammum for it is purely futile and void, even if there is no access to water. Yes, if a person in a state of major ritual impurity (Junub) needs to stay in the mosque due to some fear and cannot find water, they should perform Tayammum with the intention of purification for the purpose of staying in the mosque. Therefore, prayer will not be permissible with it because staying in the mosque is not a primary intended act of worship.	5	662
96	Issue: If one performs Tayammum for touching the Quran or for recitation while water is available, it will be futile and void. Neither will touching the Holy Quran be lawful with it, nor will recitation be lawful for a person in a state of major ritual impurity.	6	662

फतावा रज़विया जिल्द चार

क्रम संख्या	शीर्षक	फायदा नंबर	पृष्ठ
89	मसला: जहाँ पानी अज्ञात होने के कारण तयम्मुम की अनुमति थी, वहाँ शर्त यह है कि वह स्थान न तो आबादी वाला हो और न ही आबादी के पास हो, यानी एक मील से कम की दूरी पर; न ही वहाँ ऐसे स्पष्ट संकेत हों जिनसे पानी की समीपता का पता चले, जैसे कि हरी घास, पक्षियों या पशुओं का जमावड़ा, या किसी विश्वसनीय व्यक्ति का यह कहना कि पानी यहाँ एक मील से कम की दूरी पर उपलब्ध है। इन बातों के होते हुए यदि कोई बिना पानी की खोज किए तयम्मुम करता है, तो वह व्यर्थ होगा और नमाज़ नहीं होगी, भले ही बाद में यह स्पष्ट हो जाए कि वास्तव में पानी वहाँ से निकट नहीं था। हाँ, जहाँ ये चारों बातें न हों और बिना खोज किए तयम्मुम से नमाज़ पढ़ ली जाए, तो नमाज़ हो गई, भले ही बाद में पता चले कि पानी वहीं मौजूद था।	4	659
90	मसला: जंगल में जहाँ पानी होने की संभावना हो, वहाँ पानी की खोज केवल उस सीमा तक करना अनिवार्य है जिससे न तो उसे कोई नुकसान हो और न ही उसके साथियों को इंतज़ार करना पड़े।	1	662
91	मसला: जहाँ पानी न हो, यदि किसी काफ़िर ने इस्लाम स्वीकार करने के लिए तयम्मुम किया और फिर मुसलमान हो गया, तो वह उस तयम्मुम से नमाज़ नहीं पढ़ सकता और न ही ऐसा कोई कार्य कर सकता है जिसके लिए पवित्रता अनिवार्य है। बल्कि उसे इस्लाम स्वीकार करने के बाद पुनः तयम्मुम करना चाहिए।	4	662
92	मसला: पानी न होने की स्थिति में तयम्मुम की अनुमति के लिए दो में से एक शर्त आवश्यक है: या तो पूर्ण पवित्रता और अशुद्धि दूर करने की नियत (जो एक सामान्य और पूर्ण नियत है) या फिर किसी भी इबादत की नियत, चाहे वह अभीष्ट (मक्सूदा) न हो और न ही अनिवार्य (मशरूता) हो।	2	662
93		3	662

क्रम संख्या	शीर्षक	फायदा नंबर	पृष्ठ
	मसला: पानी उपलब्ध होने पर तयम्मुम केवल उसी ताकीदी इबादत (मुअक्कदा) के लिए जायज़ है जो पानी से पवित्रता प्राप्त करने के दौरान बिना किसी विकल्प के छूट जाती हो।		
94	मसला: बिना वज़ू वाला व्यक्ति जिसे स्नान की आवश्यकता नहीं है, यदि अल्लाह के ज़िक्र के लिए मस्जिद में बैठना चाहता है और पानी उपलब्ध नहीं है, तो बेहतर है कि वह तयम्मुम करे, लेकिन इस तयम्मुम से नमाज़ नहीं होगी।	4	662
95	मसला: मस्जिद में सोना कोई इबादत नहीं है, इसके लिए तयम्मुम पूरी तरह से व्यर्थ और अमान्य है, भले ही पानी पर नियंत्रण न हो। हाँ, यदि कोई जुनुब (महा-अशुद्ध अवस्था में) किसी डर के कारण मस्जिद में ठहरना चाहे और उसे पानी न मिले, तो वह तयम्मुम करे, क्योंकि यह तयम्मुम मस्जिद में ठहरने के उद्देश्य से पवित्रता की नियत से होगा। अतः इससे नमाज़ जायज़ नहीं होगी क्योंकि मस्जिद में ठहरना कोई अभीष्ट इबादत नहीं है।	5	662
96	मसला: पानी होते हुए यदि कोई कुरान को छूने या तिलावत के लिए तयम्मुम करता है, तो वह व्यर्थ और अमान्य होगा। न तो इससे कुरान शरीफ को छूना हलाल होगा और न ही जुनुब के लिए तिलावत करना।	6	662

نمبر شمار	عنوانات	صفحہ نمبر	فائدہ
۸۹	مسئلہ: جہاں پانی نا معلوم ہونے کے سبب تیمم کی اجازت تھی وہاں شرط ہے کہ وہ جگہ نہ آبادی ہو نہ آبادی کے قریب یعنی میل بھر سے کم فاصلے پر نہ وہاں ظاہر علامتیں ایسی ہوں جن سے پانی کا قرب معلوم ہو جیسے ہری دوب یا پرندوں چرندوں کا ہجوم یا کسی ثقہ کا کہنا کہ پانی یہاں میل سے کم پر موجود ہے ان باتوں کے ہوتے ہوئے پانی بے تلاش کیے تیمم کریگا تو باطل ہوگا نماز نہ ہوگی اگرچہ بعد کو یہی ظاہر ہو کہ واقع میں پانی وہاں سے قریب نہ تھا۔ ہاں جہاں یہ چاروں باتیں نہ ہوں اور پانی بے تلاش کیے تیمم سے نماز پڑھ لی نماز ہو گئی اگرچہ بعد کو ظاہر ہو کہ پانی وہیں موجود تھا۔	۶۵۹	۴
۹۰	مسئلہ: جنگل میں جہاں مظنہ آب ہے پانی صرف اس حد تک طلب کرنا واجب ہے جس میں نہ اسے ضرر ہو نہ انتظار میں اس کے رفیقوں کو۔	۶۶۲	۱
۹۱	مسئلہ: جہاں پانی نہیں کافر نے اسلام لانے کیلئے تیمم کیا پھر مسلمان ہوا اس تیمم سے نماز نہیں پڑھ سکتا نہ کوئی ایسا فعل کر سکتا ہے جس کے لئے طہارت ضروری ہو بلکہ اس کے لئے بعد اسلام پھر تیمم کرے۔	۶۶۲	۴
۹۲	مسئلہ: پانی نہ ہونے کی حالت میں جواز تیمم کیلئے دو میں سے ایک شرط ہے یا تو مطلق تطہیر و رفع حدث کہ یہ نیت تو عام و تام ہے یا مطلقاً کسی عبادت کی نیت اگرچہ نہ مقصودہ ہو نہ مشروطہ۔	۶۶۲	۲

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ
۹۳	مسئلہ: پانی ہوتے ہوئے صرف اسی عبادت مؤکدہ کے لئے تیمم جائز ہے جو پانی سے طہارت کرنے میں بلا بدل فوت ہوتی ہو۔	۳	۶۶۲
۹۴	مسئلہ: بے وضو شخص جسے نہانا نہیں مسجد میں ذکر الہی کے لئے بیٹھنا چاہتا ہے اور پانی نہیں بہتر ہے کہ تیمم کرے مگر اس تیمم سے نماز نہ ہوگی۔	۴	۶۶۲
۹۵	مسئلہ: مسجد میں سونا کوئی عبادت نہیں اس کے لئے تیمم محض لغو و باطل ہے اگرچہ پانی پر قدرت نہ ہو، ہاں اگر جنب کسی خوف کی ضرورت سے مسجد میں ٹھہرنا چاہے اور پانی نہ پائے تیمم کرے کہ یہ تیمم بنیت تطہیر بغرض قرار فی المسجد ہوگا۔ ولہذا اس سے نماز جائز نہ ہوگی کہ قرار فی المسجد کوئی عبادت مقصودہ نہیں۔	۵	۶۶۲
۹۶	مسئلہ: پانی ہوتے ہوئے مس مصحف یا تلاوت کے لئے تیمم کیا تو لغو و باطل ہوگا نہ اس سے مصحف شریف کا چھونا حلال ہو سکے گا نہ جنب کو تلاوت۔	۶	۶۶۲

Fatawa Rizwia Volume 4

Serial No.	Titles	Ref. No.	Page No.
97	Ruling: Tayammum performed solely due to a shortage of time for Tahajjud, Chasht, or lunar eclipse prayers while water is available is futile and void. These prayers will not be valid with such Tayammum.	7	664
98	Ruling: Tayammum performed for visiting graves, visiting the sick, or for sleeping while water is available is void.	8	664
99	Ruling: Merely having the intention that "I am performing Tayammum" is not sufficient for the validity of Tayammum.	1	666
100	Ruling: It is not necessary to intend a distinction between minor ritual impurity (hadath) and major ritual impurity (janabat); a general (summary) intention is sufficient.	2	666
101	Ruling: If a person in a state of major ritual impurity (junub) performs Tayammum with the intention of Wudu, it is valid. Therefore, if Tayammum for Wudu is performed with the intention of Ghusl, it is valid to an even greater degree.	3	666
102	Ruling: The burial of a deceased Muslim is also among the acts of worship of Allah. One should be in a state of Wudu; if water is not available, one should perform Tayammum.	4	666
103	Ruling: The time for Tayammum, Wudu, or Ghusl—every form of purification for a person not under compulsion—is when the factors negating purification, such as menstruation, postpartum bleeding, minor ritual impurity, blood, etc., have ceased. Attempting purification while the state of impurity persists is futile and void.	5	666
104	Ruling: Tayammum performed with the last two out of ten intentions also removes legal ritual impurity, but not absolutely. It applies specifically to that act for which the Tayammum was intended. For example, if Tayammum was performed in the absence of water for entering a mosque, touching the Quran, visiting graves, visiting the sick, burying the dead, giving 'Salam', or responding to 'Salam', purification is attained for those specific	4	667

Serial No.	Titles	Ref. No.	Page No.
	acts. Similarly, if Tayammum is performed when water is available for funeral prayers, Eid prayers, giving 'Salam', or responding to 'Salam'—the fourteen items mentioned in numbers 7 and 8—then purification is achieved for those items.		
105	Ruling: In a substance where earthy and non-earthy elements are mixed, if the earthy elements predominate, it is considered as being from the earth; otherwise, it is not.	2	685
106	Note: Tayammum with powdered antimony (surma) without necessity is prohibited, although it will be valid.	1	696

फ़तावा रिज़विया जिल्द 4

क्रम संख्या	विषय-वस्तु	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
97	मसला: पानी होते हुए केवल समय की कमी के कारण तहज्जुद या चाश्त या चंद्र ग्रहण की नमाज़ के लिए तयम्मुम व्यर्थ और बातिल है। इससे ये नमाज़ें जायज़ नहीं हो सकेंगी।	7	664
98	मसला: पानी होते हुए क़ब्रों की ज़ियारत या मरीज़ की इयादत या सोने के लिए तयम्मुम बातिल है।	8	664
99	मसला: केवल इतनी नियत कि "तयम्मुम करता हूँ" तयम्मुम की शुद्धि के लिए काफ़ी नहीं है।	1	666
100	मसला: हदस (लघु अशुद्धि) और जनाबत (गुरु अशुद्धि) में अंतर की नियत करना ज़रूरी नहीं है, संक्षिप्त नियत काफ़ी है।	2	666
101	मसला: अगर जुनबी (गुरु अशुद्धि वाला व्यक्ति) वज़ू की नियत से तयम्मुम करे तब भी सही है, तो अगर वज़ू का तयम्मुम गुस्ल की नियत से करे तो वह और भी बेहतर (बदरजा-ए-औला) है।	3	666
102	मसला: मुसलमान के शव को दफ़नाना भी अल्लाह की इबादतों में से है, इसके लिए बा-वज़ू होना चाहिए। अगर पानी न मिले तो तयम्मुम करे।	4	666
103	मसला: तयम्मुम, वज़ू और ग़ुस्ल—हर तरह की पाकी (शुद्धि) किसी ग़ैर-मजबूर के लिए उसी समय हो सकती है जब वे चीज़ें जो पाकी के विरूद्ध हैं जैसे हैज़ (मासिक धर्म), निफ़ास, हदस और ख़ून आदि रुक जाएँ। अशुद्धि की स्थिति में पाकी हासिल करना फ़िज़ूल और व्यर्थ है।	5	666
104	मसला: दस नियतों में से आख़िरी दो नियतों से जो तयम्मुम किया जाता है उससे भी हक़ीक़ी अशुद्धि (नजासत-ए-हुकमिया) दूर होती है, मगर पूरी तरह नहीं बल्कि केवल उसी चीज़ के लिए जिसकी नियत से तयम्मुम किया गया। जैसे पानी न होने की स्थिति में मस्जिद में प्रवेश, क़ुरान छूने, क़ब्रों की ज़ियारत, मरीज़ की इयादत, दफ़न, सलाम या सलाम का जवाब देने के	4	667

क्रम संख्या	विषय-वस्तु	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
	लिए तयम्मुम किया, तो उन चीज़ों के लिए पाकी हासिल हो गई। इसी तरह अगर पानी होने के बावजूद नमाज़े जनाज़ा, ईद, सलाम या सलाम के जवाब आदि उन चौदह चीज़ों के लिए तयम्मुम किया जिनका ज़िक्र नंबर 7 और 8 में हुआ, तो उन चीज़ों के लिए पाकी हो गई।		
105	मसला: जिस चीज़ में मिट्टी और अन्य तत्वों का मिश्रण हो, अगर मिट्टी के तत्व अधिक हैं तो वह मिट्टी की श्रेणी में आएगा अन्यथा नहीं।	2	685
106	फ़: पिसे हुए सुरमे से बिना ज़रूरत तयम्मुम करना मना है, हालाँकि वह सही हो जाएगा।	1	696

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۹۷	مسئلہ: پانی ہوتے صرف تنگی وقت کے باعث تہجد یا چاشت یا چاند گہن کی نماز کیلئے تیمم لغو و باطل ہے اس سے یہ نمازیں جائز نہ ہوسکیں گی۔	۷	۶۶۴
۹۸	مسئلہ: پانی ہوتے ہوئے زیارت قبور یا عیادت مریض یا سونے کیلئے تیمم باطل ہے۔	۸	۶۶۴
۹۹	مسئلہ: صرف اتنی نیت کہ تیمم کرتا ہوں صحت تیمم کو کافی نہیں۔	۱	۶۶۶
۱۰۰	مسئلہ: حدث و جنابت میں تمیز کی نیت کچھ ضرور نہیں مجمل کافی ہے۔	۲	۶۶۶
۱۰۱	مسئلہ: جنب اگر وضو کی نیت سے تیمم کرے جب بھی صحیح ہے تو اگر وضو کا تیمم غسل کی نیت سے کرے تو بدرجہ اولیٰ۔	۳	۶۶۶
۱۰۲	مسئلہ: دفن میت مسلم بھی منجملہ عبادات الٰہی ہے باوضو ہونا چاہئے پانی نہ ملے تو تیمم کرے۔	۴	۶۶۶
۱۰۳	مسئلہ: تیمم و وضو و غسل ہر طہارت غیر معذور کے لئے اُس وقت ہونے کا محل ہے جب وہ چیزیں کہ طہارت کی منافی ہیں جیسے حیض و نفاس، حدث و خون وغیرہ منقطع ہو لیں حدث باقی ہونے کی حالت میں طہارت فضول و لغو ہے۔	۵	۶۶۶
۱۰۴		۴	۶۶۷

عنوانات	نمبر شمار	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
مسئلہ: دسوں نیتوں میں سے پچھلی دو نیتوں سے جو تیمم کیا جاتا ہے اس سے بھی نجاست حکمیہ دُور ہوتی ہے مگر نہ مطلقاً بلکہ خاص اس شے کے حق میں جس کی نیت سے تیمم کیا مثلاً پانی نہ ہونے کی حالت میں دخول مسجد یا مس مصحف یا زیارت قبور یا عیادت مریض یا دفن میت یا سلام یا جواب سلام کے لئے تیمم کیا ان چیزوں کے حق میں طہارت حاصل ہو گئی یوں ہی اگر پانی موجود ہونے کی حالت میں نماز جنازہ یا عید یا سلام یا جواب سلام وغیرہ ان چودہ اشیاء کے لئے تیمم کیا جن کا ذکر نمبر ۷ ۸ میں گزرا تو اُن اشیاء کے لئے طہارت ہو گئی۔			
مسئلہ: جس چیز میں اجزائے ارضیہ و غیر ارضیہ کا خلط ہو اس میں اگر اجزائے ارضیہ غالب ہیں جنس ارض سے ہے ورنہ نہیں۔	۱۰۵	۲	۶۸۵
ف: پسے ہوئے سُرمہ سے بے ضرورت تیمم منع ہے اگرچہ صحیح ہو جائے گا۔	۱۰۶	۱	۶۹۶

Fatawa Razvia Volume Four

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
107	Ruling: Tayammum is permissible on stone pavements, roads, and plain ground even in a state where no impurity like droppings, dung, or urine has fallen on them, or if it had fallen, heavy rain washed it away making it pure, or it was washed and purified.	1	697
108	Note: If an uneven stone, wall, ground, etc., which is from the genus of earth, is such that striking it does not bring the entire surface of the palm into contact, it is necessary to move the hands back and forth so that the entire palm or its major part touches it, otherwise Tayammum will not be valid.	1	698
109	Ruling: If the entire palm has touched the genus of earth, then wiping most of the face and both hands with it is sufficient. If most of the palm was used for wiping, it is necessary that this major part, or that much portion which qualifies as 'major part of the palm', should wipe the face and hands, otherwise Tayammum will not be valid.	2	698
110	Ruling: If during the strike, the entire palms do not touch the genus of earth, it is mandatory to wipe the remaining part of the palms as well. If the remaining part is not determined, then wipe the whole palms along with the wrists, otherwise Tayammum will not be valid.	3	698
111	Ruling: Kahriba (amber) is not a stone, Tayammum cannot be performed on it.	1	701
112	Ruling: Sang-e-Basri is not a stone, Tayammum cannot be performed on it.	3	701
113	Ruling: If nothing except mud is available for Tayammum, and if there is enough time, one should coat a cloth or, for example, their own foot with it, and when it dries, perform Tayammum with it.	5	702
114		1	705

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
	Ruling: The command to dry the mud for Tayammum applies when there is enough time; otherwise, Tayammum with wet mud itself is mandatory.		
115	Ruling: If performing Tayammum with mud out of necessity, it is mandatory to rub both palms well so that the mud falls off and dryness remains. Yes, if there is no time for even that, then perform Tayammum as is and pray.	2	705
116	Ruling: If there is enough time, then the procedure of drying the mud before Tayammum is not just recommended but mandatory.	3	705
117	Ruling: If dung was mixed with soil, but soil was dominant, and it was burnt for so long that the dung was completely destroyed or some parts remained as ash but were overcome by the soil, then in this case Tayammum on that soil will be permissible.	3	707

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

क्र. सं.	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
१०७	मसअला: खंरजे (पत्थर की सड़क), सड़क और सादा ज़मीन पर भी उस हालत में तयम्मुम जायज़ है कि उन पर लीद, गोबर, पेशाब जैसी कोई नजासत न पड़ी हो या पड़ी हो और ज़ोर की बारिश ने उसे धोकर पाक कर दिया हो या खुद धोकर पाक कर ली हो।	१	६९७
१०८	फ़: ऊबड़-खाबड़ पत्थर, दीवार, ज़मीन वग़ैरह जो ज़मीन की जिन्स से हो, जिस पर ज़रब (हाथ मारने) से हथेली की पूरी सतह न लगे, उस पर ज़रूरी है कि हाथ आगे-पीछे इस तरह फेरें कि पूरी हथेली या उसके अक्सर (ज़्यादातर) हिस्से का उससे स्पर्श हो जाए, वरना तयम्मुम सही न होगा।	१	६९८
१०९	मसअला: अगर पूरी हथेली का ज़मीन की जिन्स से स्पर्श हो गया, तो उसके अक्सर हिस्से से चेहरे और दोनों हाथों का मसह (पोंछना) काफ़ी है। और अगर हथेली के अक्सर हिस्से से मसह हुआ, तो लाज़िम है कि यही अक्सर हिस्सा या इसका इतना हिस्सा जिस पर हथेली का अक्सर हिस्सा सादिक़ आए, चेहरे और हाथों का मसह करे, वरना तयम्मुम न होगा।	२	६९८
११०	मसअला: अगर ज़रब में पूरी हथेलियाँ ज़मीन की जिन्स से स्पर्श न करें, तो वाजिब है कि हथेलियों के बाकी हिस्सों पर भी हाथ फेरे और अगर बाकी हिस्सा मुतअय्यन (निश्चित) नहीं है तो कलाइयों के साथ सारी हथेलियों पर हाथ फेरे, वरना तयम्मुम न होगा।	३	६९८
१११	मसअला: कहरबा पत्थर नहीं है, इस पर तयम्मुम नहीं हो सकता।	१	७०१
११२	मसअला: संग-ए-बसरी पत्थर नहीं है, इस पर तयम्मुम नहीं हो सकता।	३	७०१
११३	मसअला: अगर कीचड़ के सिवा तयम्मुम के लिए कुछ न मिले, तो अगर समय में गुंजाइश है, तो कपड़ा या अपना पाँव मिसाल के तौर पर उससे सान ले (लपेट ले), जब सूख जाए तो उससे तयम्मुम करे।	५	७०२
११४		१	७०५

क्र. सं.	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
	मसअला: कीचड़ सुखाकर तयम्मुम का हुक्म उस समय है जब समय में गुंजाइश हो, वरना गीले से ही तयम्मुम वाजिब है।		
११५	मसअला: मजबूरी में कीचड़ से तयम्मुम करे, तो वाजिब है कि दोनों हथेलियाँ खूब मलें कि कीचड़ छूट जाए और खुश्की आ जाए। हाँ, अगर समय में इसकी भी गुंजाइश न हो, तो यूँ ही तयम्मुम करके नमाज़ पढ़े।	२	७०५
११६	मसअला: समय में गुंजाइश हो, तो वह तरकीब कि कीचड़ खुश्क करके तयम्मुम किया जाए, सिर्फ मुस्तहब नहीं बल्कि वाजिब है।	३	७०५
११७	मसअला: अगर मिट्टी में गोबर मिला था और मिट्टी ग़ालिब (ज़्यादा) थी और उसे इतनी देर तक जलाया गया कि गोबर बिल्कुल फ़ना (नष्ट) हो गया या उसके कुछ हिस्से राख बनकर रहे जो मिट्टी से दबे रहे, तो इस सूरत में उस मिट्टी पर तयम्मुम जायज़ होगा।	३	७०७

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: کھرنجے اور سڑک اور سادہ زمین پر بھی اس حالت میں تیمم جائز		
۱۰۷	ہے کہ ان پر لید گوبر پیشاب کوئی نجاست نہ پڑی ہو یا پڑی اور زور کا مینہ برسا کر پاک کر گیا یا دھو کر پاک کرلی۔	۱	۶۹۷
۱۰۸	ف: ناہمواری پتھر دیوار زمین وغیرہ ہا جنس ارض جس پر ضرب سے ہتھیلی کی پوری سطح اس سے نہ لگے اس پر ضرور ہے کہ ہاتھ آگے پیچھے اس طرح پھیریں کہ پورے کف دست یا اس کے اکثر حصے کو اُس سے مس ہو جائے ورنہ تیمم صحیح نہ ہوگا۔	۱	۶۹۸
۱۰۹	مسئلہ: اگر پورے کف دست کا جنس ارض سے مس ہو گیا جب تو اس کے اکثر سے چہرہ وہر دو دست کا مسح کافی ہے اور اگر اکثر کف کا مسح ہوا تو لازم ہے کہ یہی اکثر یا اس کا اتنا حصہ جس پر اکثر کف صادق آئے چہرہ و دست کا مسح کرے ورنہ تیمم نہ ہوگا۔	۲	۶۹۸
۱۱۰	مسئلہ: اگر ضرب میں پوری ہتھیلیاں جنس ارض سے مس نہ کریں تو واجب ہے کہ ہتھیلیوں کی باقی پر بھی ہاتھ پھیرے اور اگر باقی حصہ متعین نہیں تو کلائیوں کے ساتھ ساری ہتھیلیوں پر ہاتھ پھیرے ورنہ تیمم نہ ہوگا۔	۳	۶۹۸
۱۱۱	مسئلہ: کہر با پتھر نہیں اس پر تیمم نہیں ہو سکتا۔	۱	۷۰۱

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱۱۲	مسئلہ: سنگ بصری پتھر نہیں اس پر تیمم نہیں ہو سکتا۔	۳	۷۰۱
۱۱۳	مسئلہ: اگر کیچڑ کے سوا تیمم کو کچھ نہ ملے تو اگر وقت میں وسعت ہے کپڑا یا اپنا پاؤں مثلاً اس سے سان لے جب خشک ہو جائے تو اس سے تیمم کرے۔	۵	۷۰۲
۱۱۴	مسئلہ: کیچڑ سکھا کر تیمم کا حکم اس وقت ہے کہ وقت میں گنجائش ہو ورنہ گیلے ہی سے تیمم واجب۔	۱	۷۰۵
۱۱۵	مسئلہ: بضرورت کیچڑ سے تیمم کرے تو واجب ہے کہ دونوں ہتھیلیاں خوب ملیں کہ کیچڑ چھوٹ جائے اور خشکی آجائے ہاں وقت میں اس کی بھی گنجائش نہ ہو تو یو نہی تیمم کر کے پڑھے۔	۲	۷۰۵
۱۱۶	مسئلہ: وقت میں گنجائش ہو تو وہ ترکیب کہ کیچڑ خشک کرکے تیمم کی بتائی گئی صرف مستحب نہیں بلکہ واجب ہے۔	۳	۷۰۵
۱۱۷	مسئلہ: اگر مٹی میں گوبر ملا تھا اور مٹی غالب اور اس قدر دیر تک جلایا کہ گوبر بالکل فنا ہو گیا یا کچھ اجزاء اس کی راکھ کے رہے تو مٹی سے مغلوب رہے اس صورت میں اس مٹی پر تیمم جائز ہوگا۔	۳	۷۰۷

Fatawa Rizvia, Volume 4

Serial No.	Topics	Point No.	Page No.
118	Problem: The ruling that Tayammum is permissible on a non-earth substance only when striking it leaves finger marks applies specifically to dust settling on non-earth materials. However, if there is a thin, dry coating of clay, for example, on which hand marks are not visible after striking, there is no doubt about the validity of Tayammum on it.	5	717
119	Problem: A condition for Tayammum is that the substance used must not be known to be impure at the time, nor should its impurity be proven later.	1	719
120	Problem: Any place or thing suspected of being impure, such as the floor of a toilet, cannot be used for Tayammum, even if its impurity is not known at that time.	2	719
121	Problem: If Tayammum was performed on something and later a reliable, upright Muslim informed that the object was impure, or a hidden person or a sinner gave such news and the heart believed it, then that Tayammum is not valid. If prayer was offered with it, it must be repeated. If the heart did not believe it, then it is not necessarily considered. And if a non-believer gave such news, even if he recites the Kalima, it is absolutely rejected.	1	720
122	Problem: If the object used for Tayammum was neither suspected of impurity nor was its impurity proven later, the Tayammum is valid even if it was actually impure.	2	720
123	Problem: Having someone else perform Tayammum for you without necessity is disliked (Makruh).	4	720
124	Problem: It is necessary that the other person performs the Tayammum by the individual's command, whether that command is explicit or implied, details of which will follow.	5	720
125	Problem: When the other person strikes (the earth), it is necessary for the one giving the command to make the	6	720

Serial No.	Topics	Point No.	Page No.
	intention at that time; the intention of the other person will not suffice.		
126	Problem: If in Tayammum the intention was not made for obtaining purity, removing ritual impurity, or for the permissibility of prayer, but only 'I am doing Tayammum' or 'I intended Tayammum', then the Tayammum will not be valid.	4	721
127	Problem: In traditional Tayammum, it is necessary to wipe the face and hands with most of the palm. If wiped with one or two fingers, even if covering the entire face and hands by striking repeatedly, Tayammum will not be valid.	1	722
128	Problem: In traditional Tayammum, striking specifically with the hand and wiping the face and hands with it is a condition. If a stick, cloth, or paper is touched to an earth-like substance and then wiped over the face and hands, Tayammum will not be valid.	4	722

फतवा रज़विया, खंड 4

क्रम संख्या	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
118	मसला: यह नियम कि तयम्मुम गैर-ज़मीनी चीज़ पर तब जायज़ है जब उस पर हाथ मारने से उंगलियों के निशान बनें, केवल उस धूल के मामले में है जो गैर-ज़मीनी चीज़ पर पड़ी हो। वरना अगर उस पर मान लीजिए मिट्टी की एक बारीक सूखी परत जमी हो जिस पर हाथ फेरने से निशान न बने, तो उस पर तयम्मुम की वैधता में कोई संदेह नहीं है।	5	717
119	मसला: तयम्मुम की शर्त यह है कि जिस चीज़ पर तयम्मुम किया जाए, न उस समय उसकी नापाकी का पता हो और न ही बाद में वह सिद्ध हो।	1	719
120	मसला: जो जगह या चीज़ नापाकी की संभावना वाली हो, जैसे शौचालय की ज़मीन, उस पर तयम्मुम नहीं हो सकता, भले ही उस समय उसकी नापाकी का ज्ञान न हो।	2	719
121	मसला: किसी चीज़ पर तयम्मुम किया गया, बाद में किसी विश्वसनीय मुसलमान ने बताया कि वह चीज़ अपवित्र थी, या किसी छिपे हुए व्यक्ति या पापी ने सूचना दी और दिल ने उसे सच मान लिया, तो वह तयम्मुम सही नहीं हुआ। यदि उससे नमाज़ पढ़ी गई हो तो उसे दोहराया जाए। और यदि दिल में विश्वास न जमा हो, तो उसका लिहाज़ करना ज़रूरी नहीं। और यदि किसी काफिर ने सूचना दी, भले ही वह कलमा पढ़ने वाला हो, तो वह पूरी तरह से अस्वीकार्य है।	1	720
122	मसला: जिस चीज़ पर तयम्मुम किया गया, न तो वह नापाकी की संदिग्ध जगह थी और न ही बाद में उसका नापाक होना साबित हुआ, तो तयम्मुम सही हो गया, भले ही वास्तव में वह नापाक रही हो।	2	720
123	मसला: बिना ज़रूरत किसी और से अपना तयम्मुम कराना मकरूह (नापसंद) है।	4	720
124		5	720

क्रम संख्या	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
	मसला: यह ज़रूरी है कि दूसरा व्यक्ति उसके आदेश से उसे तयम्मुम कराए, चाहे वह आदेश स्पष्ट न हो बल्कि सांकेतिक हो, जिसका विवरण आगे आएगा।		
125	मसला: जिस समय वह दूसरा व्यक्ति (ज़मीन पर) हाथ मारे, तो ज़रूरी है कि आदेश देने वाला व्यक्ति उसी समय नीयत करे; दूसरे व्यक्ति की नीयत पर्याप्त नहीं होगी।	6	720
126	मसला: अगर तयम्मुम में पाकी हासिल करने या नापाकी दूर करने या नमाज़ की अनुमति की नीयत न की गई हो, बल्कि केवल इतना कहा हो कि 'मैं तयम्मुम कर रहा हूँ' या 'मैंने तयम्मुम की नीयत की', तो तयम्मुम नहीं होगा।	4	721
127	मसला: पारंपरिक तयम्मुम में हथेली के अधिकांश भाग से चेहरे और हाथों का मसह करना अनिवार्य है। यदि एक या दो उंगलियों से मसह किया गया, भले ही बार-बार हाथ मारकर पूरे चेहरे और हाथों को कवर कर लिया गया हो, तब भी तयम्मुम नहीं होगा।	1	722
128	मसला: पारंपरिक तयम्मुम में विशेष रूप से हाथ का प्रहार और उससे चेहरे व हाथों का मसह शर्त है। यदि लकड़ी, कपड़े या कागज को ज़मीनी चीज़ से स्पर्श करके चेहरे और हाथों पर फेरा जाए, तो तयम्मुम नहीं होगा।	4	722

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱۱۸	مسئلہ: یہ حکم کہ تیمم غیر جنس ارض پر اس وقت روا ہے جب اس پر ہاتھ پھیرے سے انگلیوں کا نشان بنے صرف مسئلہ غبار میں ہے جو غیر جنس ارض پر پڑا ہو ورنہ اگر اس پر مثلاً مٹی کا باریک لیس خشک ہو جس پر ہاتھ پھیرے سے نشان نہ بنے گا اس پر جواز تیمم میں شبہ نہیں۔	۵	۷۱۷
۱۱۹	مسئلہ: تیمم کی شرط یہ ہے کہ جس چیز پر تیمم کرے نہ اس وقت اس کی ناپاکی معلوم ہو نہ بعد کو ثابت ہو۔	۱	۷۱۹
۱۲۰	مسئلہ: جو جگہ یا چیز مظنہ نجاست ہے جیسے بیت الخلا کی زمین اس پر تیمم نہیں ہو سکتا اگرچہ اس وقت اس کی نجاست اس کے علم میں نہ ہو۔	۲	۷۱۹
۱۲۱	مسئلہ: کسی شے پر تیمم کیا بعد کو کسی مسلمان ثقہ عادل نے خبر دی کہ وہ شے نجس تھی یا کسی مستور یا فاسق نے خبر دی اور اس کے دل پر اس کا صدق جما تو وہ تیمم صحیح نہ ہوا اس سے نماز پڑھی ہو تو وہ پھیرے اور دل پر نہ جما ہو تو اس کا لحاظ ضرور نہیں اور اگر کسی کافر نے خبر دی اگرچہ کلمہ گو ہو تو وہ مطلقاً مردود ہے۔	۱	۷۲۰
۱۲۲	مسئلہ: جس چیز پر تیمم کیا نہ وہ مظنہ نجاست تھی نہ بعد کو اس کا نجس ہونا ثابت ہوا تیمم صحیح ہو گیا اگرچہ واقع میں وہ نجس تھی۔	۲	۷۲۰

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱۲۳	مسئلہ: دوسرے سے اپنا تیمم کرانا بلا ضرورت مکروہ ہے۔	۴	۷۲۰
۱۲۴	مسئلہ: ضرور ہے کہ دوسرا اس کے حکم سے اسے تیمم کرائے اگر چہ وہ حکم صراحۃً نہ ہو دلالۃً ہو جس کی تفصیل آتی ہے۔	۵	۷۲۰
۱۲۵	مسئلہ: جس وقت وہ دوسرا ضرب کرے ضرور ہے کہ یہ حکم دینے والا اس وقت نیت کرے اس دوسرے کی نیت کافی نہ ہوگی۔	۶	۷۲۰
۱۲۶	مسئلہ: اگر تیمم میں حصول طہارت یا رفع حدث یا جواز نماز کی نیت نہ کی بلکہ صرف اتنی کہ میں تیمم کرتا ہوں یا میں نے تیمم کی نیت کی تو تیمم نہ ہوگا۔	۴	۷۲۱
۱۲۷	مسئلہ: تیمم معہود میں اکثر کف سے چہرے اور ہاتھوں کو مسح کرنا لازم ہے اگر ایک یادو انگلیوں سے مسح کیا اگرچہ انہیں بار بار ضرب کرکے سارے چہرے و دست کا استیعاب کر لیا تیمم نہ ہوگا۔	۱	۷۲۲
۱۲۸	مسئلہ: تیمم معہود میں خاص ہاتھ کی ضرب اور اس سے چہرہ و دست کا مسح شرط ہے اگر لکڑی یا کپڑے یا کاغذ کو جنس ارض پر مس کرکے منہ اور ہاتھوں پر پھیرے گا تیمم نہ ہوگا۔	۴	۷۲۲

Fatawa Razawiyya Volume 4

S. No.	Topics	Benefit No.	Page No.
129	Problem: Paper, cloth, or any object was rubbed on the earth until it was well-filled with dust. Now, with the intention of Tayammum, it was rubbed on the face and hands so that dust reached all parts of the Tayammum area itself. The Tayammum is valid.	5	722
130	Problem: If gloves are worn and hands are struck on a substance of the earth, and then rubbed on the face and hands, Tayammum should be valid, just as in the case of giving Tayammum to a deceased person by wrapping cloth around the hands as mentioned in numbers 164 to 166.	7	722
131	Problem: If there is a paste on the palms and it has dried, and removing it is harmful, then in this state, strike the palms on a substance of the earth and perform Tayammum.	2	723
132	Problem: A single strike of a palm can only wipe one organ, whether it is the face, right hand, or left hand. A single strike of one palm is not enough for two organs.	3	723
133	Problem: If Tayammum is performed for a deceased person or a sick person, from the first strike, wipe their face with both palms; from the second strike with both palms, wipe one of their hands. Now, a fresh strike is necessary for the second hand. This applies to the situation where Tayammum cannot be done with only two strikes.	4	723
134	Problem: Order is not a condition in Tayammum; whether the hands are wiped first or the face, Tayammum will be valid in any way.	5	723
135	Problem: In the customary Tayammum, following the order is Sunnah.	7	723
136	Problem: In Tayammum, for the face and both hands as far as they are obligatory to wash in Wudu, if even the tip of a single hair remains untouched while wiping hands in customary	1	724

S. No.	Topics	Benefit No.	Page No.
	Tayammum or while earth reaches them in non-customary way, Tayammum will not be valid.		
137	Problem: It is necessary to remove rings, bands, and all ornaments of fingers and wrists to perform Tayammum, or to wipe by moving them.	2	724
138	Problem: From wherever a person has performed Tayammum, if they do it a thousand times from the same place, or if thousands of people do Tayammum from that specific spot, there is no harm because substances of the earth do not become 'used' (must'amal) by performing Tayammum.	1	725
139	Problem: The dust that falls off from the faces and hands of those performing Tayammum, if it is collected to the extent that a strike can be made on it, then thousands of times Tayammum can be performed on it too; because no matter how much a substance of the earth is used, it does not become 'used' (must'amal) in any way.	4	726

फ़तावा रज़विया, जिल्द चौथी

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
129	मसला: कागज़, कपड़ा या कोई चीज़ ज़मीन की किस्म पर रगड़ी गई कि उसमें मिट्टी अच्छी तरह भर गई। अब तयम्मुम की नीयत से उसे चेहरे और हाथों पर इस तरह फेरा कि तयम्मुम के तमाम मक़ामात पर खुद मिट्टी लग गई, तो तयम्मुम हो गया।	5	722
130	मसला: अगर दस्ताने पहने हुए ज़मीन की किस्म पर हाथ मारकर चेहरे और हाथों पर फेरा, तो तयम्मुम हो जाना चाहिए, जिस तरह मय्यत को तयम्मुम कराने में हाथों पर कपड़ा लपेटकर तयम्मुम कराना नंबर 164 से 166 में गुज़रा।	7	722
131	मसला: हथेलियों पर कोई लेप लगा है और वह सूख गया है और उसका छुड़ाना नुकसानदेह है, तो इसी हालत में हथेलियां ज़मीन की किस्म पर मारकर तयम्मुम करे।	2	723
132	मसला: हथेली की एक ज़रब (चोट) से एक ही अंग का मसह किया जा सकता है, चाहे वह चेहरा हो या दायां हाथ या बायां। दो अंगों के लिए एक हथेली की एक ही ज़रब काफी नहीं।	3	723
133	मसला: मय्यत या बीमार को तयम्मुम कराया, पहली ज़रब से दोनों हथेलियां उसके चेहरे पर फेरें, दूसरी से दोनों हथेलियों से उसके एक हाथ का मसह किया, अब दूसरे हाथ के लिए नई ज़रब ज़रूरी है। यह सूरत वह है जहाँ तयम्मुम दो ज़रबों से नहीं हो सकता।	4	723
134	मसला: तयम्मुम में तरतीब (क्रम) शर्त नहीं है, चाहे पहले हाथों का मसह करे या चेहरे का, हर तरह से तयम्मुम हो जाएगा।	5	723
135	मसला: मामूल के तयम्मुम में तरतीब सुन्नत है।	7	723
136	मसला: तयम्मुम में चेहरा और दोनों हाथ जहाँ तक वज़ू में धोना फ़र्ज़ है, उनमें एक रोएँ की नोक के बराबर जगह भी अगर मामूल के तयम्मुम में	1	724

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
	हाथ फेरने या ग़ैर-मामूल तरीक़े से ज़मीन की किस्म पहुँचने से रह गई, तो तयम्मुम नहीं होगा।		
137	मसला: लाज़िम है कि अंगूठी, छल्ले, उंगलियों और कलाइयों के हर ज़ेवर को उतारकर तयम्मुम किया जाए या उन्हें हटा-हटाकर मसह करें।	2	724
138	मसला: आदमी ने जहाँ से तयम्मुम किया, अगर वह वहीं से हज़ार बार तयम्मुम करे या जहाँ से एक शख़्स ने तयम्मुम किया, वहाँ से हज़ारों आदमी तयम्मुम करें, तो कोई हर्ज नहीं, क्योंकि ज़मीन की किस्म तयम्मुम करने से मुस्तअमल (इस्तेमाल शुदा) नहीं होती।	1	725
139	मसला: तयम्मुम करने वालों के चेहरे और हाथों से जो मिट्टी गिरती है, अगर वह जमा होकर इतनी हो जाए कि उस पर ज़रब लग सके, तो उस पर भी हज़ारों बार तयम्मुम हो सकता है क्योंकि ज़मीन की किस्म चाहे कितनी ही इस्तेमाल की जाए, वह किसी भी तरह मुस्तअमल नहीं होती।	4	726

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱۲۹	مسئلہ: کاغذ کپڑا کوئی چیز جنس ارض پر پھیری کہ اس میں مٹی خوب بھر گئی اب اسے بہ نیت تیمّم چہرہ و دست پر پھیرا کہ سارے محل تیمّم پر خود مٹی لگ گئی تیمّم ہو گیا۔	۵	۷۲۲
۱۳۰	مسئلہ: اگر دستانے پہنے ہوئے جنس ارض پر ہاتھ مار کر چہرہ و دست پر پھیرا تیمّم ہو جانا چاہئے جس طرح میت کو تیمّم کرانے میں ہاتھوں پر کپڑا لپیٹ کر تیمّم کرانا نمبر ۱۶۴ تا ۱۶۶ میں گزرا۔	۷	۷۲۲
۱۳۱	مسئلہ: ہتھیلیوں پر کوئی لیپ لگا ہے اور وہ خشک ہو گیا اور اس کا چھڑانا مضر ہے اسی حالت میں ہتھیلیاں جنس ارض پر مار کر تیمّم کرے۔	۲	۷۲۳
۱۳۲	مسئلہ: ہتھیلی ایک ضرب سے ایک ہی عضو کو مسح کر سکتی ہے خواہ منہ ہو یا داہنا ہاتھ یا بایاں دو عضووں کو ایک ہتھیلی کی ضرب واحد کافی نہیں۔	۳	۷۲۳
۱۳۳	مسئلہ: میت یا مریض کو تیمّم کرایا پہلی ضرب سے دو ہتھیلیاں اس کے چہرے پر پھیریں، دوسری سے دونوں ہتھیلیوں سے اس کے ایک ہاتھ کو مسح کیا اب دوسرے ہاتھ کیلئے جدید ضرب ضرور ہے یہ صورت وہ ہے کہ تیمّم دو ضربوں سے نہیں ہو سکتا۔	۴	۷۲۳

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱۳۴	مسئلہ: تیمّم میں ترتیب شرط نہیں چاہے پہلے ہاتھوں کا مسح کرے یا منہ کا ہر طرح تیمّم ہو جائے گا۔	۵	۷۲۳
۱۳۵	مسئلہ: تیمّم معہود میں ترتیب سنّت ہے۔	۷	۷۲۳
۱۳۶	مسئلہ: تیمّم میں چہرہ و ہر دو دست جہاں تک وضو میں دھونا فرض ہیں ان میں ایک رونگٹے کی نوک بھی اگر تیمّم معہود میں ہاتھ پھیرنے یا غیر معہود میں جنس ارض پہنچنے سے رہ جائے گی تیمّم نہ ہو گا۔	۱	۷۲۴
۱۳۷	مسئلہ: لازم ہے کہ انگوٹھی چھلے انگلیوں کلائیوں کے ہر گہنے کو اتار کر تیمّم کیا جائے یا انہیں ہٹاہٹا کر مسح کریں۔	۲	۷۲۴
۱۳۸	مسئلہ: آدمی نے جہاں سے تیمّم کیا اگر ہزار بار وہیں سے تیمّم کرے یا جہاں سے ایک شخص نے تیمّم کیا اگر ہزاروں آدمی خاص اسی جگہ سے تیمّم کریں کچھ حرج نہیں کہ جنس ارض سے تیمّم سے مستعمل نہیں ہوتی۔	۱	۷۲۵
۱۳۹	مسئلہ: تیمّم کرنے والوں کے منہ اور ہاتھوں کو جو مٹی تیمّم میں لگ کر چھوٹی اگر جمع کرنے سے اتنی ہو جائے کہ اس پر ضرب ہو سکتی ہے تو اس پر بھی ہزاروں بار تیمّم ہو سکتا ہے کہ جنس ارض کتنی ہی استعمال کی جائے کسی طرح مستعمل نہیں ہوتی۔	۴	۷۲۶

Fatawa Razvia, Volume 4

Serial No.	Headings	Faidah No.	Page No.
140	Issue: Wiping one limb with a single strike; multiple strikes for a single limb is unanimously disliked (Makruh).	4	729
141	Issue: Performing Tayammum on a wall does not constitute a disposal/alteration of the wall.	4	734
142	Issue: After completing prayer with Tayammum, it was discovered that someone else had water; the prayer is valid. If he provides water now, the Tayammum will break for the future.	1	750
143	Issue: If water is found during prayer, Tayammum breaks and the prayer is invalidated, even if it is found after 'At-Tahiyyat' but before the 'Salam'.	2	750
144	Issue: If water is found after turning for the first 'Salam', the prayer is complete and valid.	3	750
145	Issue: A hundred people are praying with Tayammum. Someone brings water and tells a specific person, "Take this water"; only that person's Tayammum is invalidated and the others' prayers remain valid. However, if he is the Imam, everyone's is invalidated. And if he says, "Whoever wishes, take this water," then everyone's is invalidated.	4	750
146	Issue: If a non-believer (Kafir) says there is water, his word is not reliable. Complete the prayer and then ask for water; if he gives it, repeat the prayer, otherwise it is valid.	5	750
147	Issue: If for some reason it is known regarding a non-believer that he is not speaking mockingly, then one should break the intention (of the prayer).	7	750
148	Issue: If there is a suspicion about a sinful mocker that he is speaking out of mockery, permission to break the intention is not granted.	8	750
149	Issue: During prayer, it is discovered or remembered that someone else has water; if it is highly probable (Zann-e-Ghalib)	9	750

Serial No.	Headings	Faidah No.	Page No.
	that he will give it if asked, break the intention, otherwise it is not permissible.		
150	Issue: While praying, one's gaze falls on a mirage; if there is a strong assumption (Guman-e-Ghalib) that it is water, break the intention. If it is then seen not to be water, Tayammum remains valid, repeat the prayer. If there was no strong assumption of it being water, breaking the intention is not permissible. If after the prayer it is checked and found to be water, repeat the prayer, otherwise the prayer is valid and Tayammum remains.	1	751

फ़तावा रज़विया, खंड 4

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा संख्या	पृष्ठ संख्या
140	मसला: एक अंग को एक ही प्रहार से मसह करे; एक ही अंग के लिए कई बार प्रहार करना सर्वसम्मति से मकरूह (नापसंद) है।	4	729
141	मसला: किसी दीवार पर तयम्मुम करने से दीवार में कोई बदलाव नहीं होता।	4	734
142	मसला: तयम्मुम से नमाज़ पढ़ने के बाद पता चला कि किसी दूसरे के पास पानी मौजूद था, नमाज़ हो गई। अगर वह अब पानी देगा तो आगे के लिए तयम्मुम टूट जाएगा।	1	750
143	मसला: नमाज़ के दौरान पानी मिल गया तो तयम्मुम टूट गया और नमाज़ समाप्त हो गई, भले ही 'अत्तहियात' के बाद 'सलाम' से पहले पानी मिले।	2	750
144	मसला: एक सलाम फेरने के बाद पानी मिला तो नमाज़ हो गई।	3	750
145	मसला: सौ लोग तयम्मुम से नमाज़ पढ़ रहे हैं। एक व्यक्ति पानी लाया और किसी खास व्यक्ति से कहा कि "यह पानी ले लो", तो सिर्फ उसी का तयम्मुम टूटा और नमाज़ गई, उनकी (बाकियों की) नमाज़ हो गई। हाँ, अगर वह इमाम है तो सबकी गई। और अगर यूँ कहा कि "जिसके जी में आए यह पानी ले ले", तो सबकी गई।	4	750
146	मसला: अगर कोई काफ़िर (अविश्वासी) कहे तो उसका भरोसा नहीं। नमाज़ पढ़कर पानी मांगे, अगर दे दे तो नमाज़ दोबारा पढ़े, वरना हो गई।	5	750
147	मसला: अगर किसी वजह से किसी काफ़िर के बारे में मालूम हो कि वह मज़ाक में नहीं कह रहा है, तो नीयत तोड़ देनी चाहिए।	7	750
148	मसला: अगर किसी फ़ासिक (पापी) मज़ाकिया व्यक्ति पर संदेह हो कि वह मज़ाक में कह रहा है, तो नीयत तोड़ने की अनुमति नहीं है।	8	750
149		9	750

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा संख्या	पृष्ठ संख्या
	मसला: नमाज़ में पता चला या याद आया कि दूसरे के पास पानी है। अगर प्रबल संभावना (ज़न्न-ए-ग़ालिब) हो कि मांगने पर दे देगा, तो नीयत तोड़ दे, वरना जायज़ नहीं।		
150	मसला: नमाज़ पढ़ते समय मृगतृष्णा (सरब) पर नज़र पड़ी, अगर प्रबल संभावना (ग़ुमान-ए-ग़ालिब) हो कि यह पानी है, तो नीयत तोड़ दे। अगर देखे कि पानी नहीं है, तो तयम्मुम बाकी है, नमाज़ फिर पढ़े। और अगर पानी होने की प्रबल संभावना न हो, तो नीयत तोड़ना जायज़ नहीं। नमाज़ के बाद देखे, अगर पानी है तो नमाज़ फिर से पढ़े, वरना नमाज़ हो गई और तयम्मुम बाकी है।	1	751

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ
۱۴۰	مسئلہ: ایک عضو کو ایک ہی ضرب سے مسح کرے عضو واحد کے لئے متعدد ضربیں بالاجماع مکروہ ہیں۔	۴	۷۲۹
۱۴۱	مسئلہ: کسی دیوار پر تیمم دیوار میں کوئی تصرف نہیں۔	۴	۷۳۴
۱۴۲	مسئلہ: تیمم سے نماز پڑھ لینے کے بعد معلوم ہوا کہ دوسرے کے پاس پانی موجود تھا، نماز ہو گئی اگر وہ اب پانی دے گا آئندہ کے لئے تیمم ٹوٹے گا۔	۱	۷۵۰
۱۴۳	مسئلہ: نماز میں پانی پایا تیمم ٹوٹ گیا نماز جاتی رہی اگرچہ التحیات کے بعد سلام سے پہلے پائے۔	۲	۷۵۰
۱۴۴	مسئلہ: ایک سلام پھیرنے کے بعد پانی پایا نماز ہوگئی۔	۳	۷۵۰
۱۴۵	مسئلہ: سو آدمی تیمم سے نماز پڑھ رہے ہیں ایک شخص پانی لایا اور خاص ایک سے کہا کہ یہ پانی لے تو اسی کی گئی اور ان کی ہو گئی۔ ہاں اگر وہ امام ہے تو سب کی گئی اور اگر یوں کہا کہ جس کے جی میں آئے یہ پانی لے تو سب کی گئی۔	۴	۷۵۰
۱۴۶	مسئلہ: اگر کافر کہے تو اس کا اعتبار نہیں نماز پڑھ کر پانی مانگے دے دے تو نماز پھیرے ورنہ نہ ہوگئی۔	۵	۷۵۰
۱۴۷		۷	۷۵۰

نمبر شمار	عنوانات	صفحہ نمبر	فائدہ
	مسئلہ: اگر کسی وجہ سے کسی کافر کی نسبت معلوم ہو کہ یہ تمسخر سے نہیں کہتا تو نیت توڑنی چاہئے۔		
۱۴۸	مسئلہ: اگر کسی فاسق مسخرہ پر ظن ہو کہ یہ براہِ تمسخر کہتا ہے نیت توڑنے کی اجازت نہیں۔	۷۵۰	۸
۱۴۹	مسئلہ: نماز میں معلوم ہوا یا یاد آیا کہ دوسرے کے پاس پانی ہے اگر ظنِ غالب ہو کہ مانگے سے دے دے گا نیت توڑ دے ورنہ جائز نہیں۔	۷۵۰	۹
۱۵۰	مسئلہ: نماز پڑھتے میں سراب پر نظر پڑی اگر گمانِ غالب ہوا کہ یہ پانی ہے نیت توڑ دے اگر دیکھے کہ پانی نہیں تیمم باقی ہے نماز پھر پڑھے اور اگر پانی ہونے کا گمانِ غالب نہ ہو نیت توڑنا جائز نہیں بعد نماز دیکھے اگر پانی ہے نماز پھیر ورنہ نماز ہو گئی اور تیمم باقی ہے۔	۷۵۱	۱

Fatawa Razawiya Volume 4

S. No.	Topics	Benefit No.	Page
151	Issue: When it is highly likely that someone will give it if asked, then breaking the intention [of prayer] is obligatory.	2	751
152	Issue: Prayer with Tayammum is complete; Tayammum is also complete purification according to us.	4	751
153	Issue: There is absolutely no dislike for one who has performed wudu to follow one who has performed tayammum in prayer, although the reverse is better. I say: that is when the one with tayammum is more knowledgeable, more virtuous, and more worthy of leading the prayer.	5	751
154	Issue: When there is a strong presumption that someone will give [water] if asked, then asking is obligatory; if there is doubt, it is recommended; and if there is a strong presumption that they won't give, then it is not even recommended.	6	751
155	Issue: If there is a strong presumption that water is somewhere nearby, less than a mile away, then searching is obligatory; if there is doubt, it is recommended; otherwise, it is not even recommended.	7	751
156	Issue: If during prayer it becomes known that water is with someone else and there's a strong presumption they'll give it if asked, then although breaking intention to ask is obligatory, neither the tayammum nor the prayer is invalidated just by this strong presumption. So much so that if one disobeyed and completed the prayer, then asked and the person refused, the prayer is valid and tayammum remains.	8	751
157	Issue: A group is performing tayammum. A person brings water and says, 'I gift this to all of you.' They took possession. No one's tayammum is invalidated. I say: meaning if that water is not enough for everyone—e.g., there are 10 people and water is only enough for 9—then by consensus [it's not invalidated]. And if it's enough for everyone, even more than enough, then according to Imam (may Allah be pleased with him), their tayammum will still	3	752

S. No.	Topics	Benefit No.	Page
	not break. According to the 'Sahibain' (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad), it will break. The fatwa is based on the Imam's view.		
158	Issue: If he gifted it to only one person among them, then after possession, only that person's tayammum is invalidated; others' remains. If a congregational prayer is ongoing and the gift was made to the Imam, then everyone's prayer is invalidated, even if others' tayammum didn't break. I say: and if he gifted to several and the water was enough for them, then according to the Sahibain, on condition of possession, their tayammum is gone; while according to the Imam, everyone's remains except the one whose share is divided and possession given.	4	752
159	Issue: A congregational prayer with tayammum is in progress. A person brings water and says, 'I gift this to all of you,' or says to someone other than the Imam, 'I gift this to you.' After the salam, the Imam asked him for water and he gave it; everyone's prayer is invalidated.	5	752

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

क्रम संख्या	विषय	फायदा नंबर	पृष्ठ
151	मसला: जब गुमान-ए-ग़ालिब (प्रबल संभावना) हो कि माँगने से दे देगा तो नीयत तोड़ना वाजिब है।	2	751
152	मसला: तयम्मुम से नमाज़ कामिल (पूर्ण) है, तयम्मुम भी हमारे नज़दीक तहारत-ए-कामिना (पूर्ण पवित्रता) है।	4	751
153	मसला: वुज़ू वाले को तयम्मुम वाले की इक्तिदा (पीछे नमाज़ पढ़ना) में असल में कोई कराहत (नापसंदगी) नहीं है, हालाँकि इसके विपरीत होना अफ़ज़ल (बेहतर) है। अक़ूल (मैं कहता हूँ): यानी जबकि तयम्मुम वाला अधिक ज्ञानवान, अधिक गुणवान और इमामत का अधिक पात्र हो।	5	751
154	मसला: जब ज़न्न-ए-ग़ालिब (प्रबल धारणा) हो कि माँगने से दे देगा तो माँगना वाजिब है; और शक हो तो मुस्तहब (पसंदीदा); और ज़न्न-ए-ग़ालिब हो कि नहीं देगा, तो मुस्तहब भी नहीं।	6	751
155	मसला: अगर ज़न्न-ए-ग़ालिब हो कि पानी यहाँ कहीं पास में एक मील से कम दूरी पर है, तो तलाश करना वाजिब है; और शक हो तो मुस्तहब, वरना मुस्तहब भी नहीं।	7	751
156	मसला: नमाज़ के दौरान मालूम हुआ कि पानी किसी दूसरे के पास है और ज़न्न-ए-ग़ालिब हुआ कि माँगने से दे देगा, तो हालाँकि नीयत तोड़कर माँगना वाजिब है, मगर सिर्फ इस प्रबल धारणा से न तयम्मुम टूटेगा न नमाज़ जाएगी, यहाँ तक कि अगर उसने आदेश के विरुद्ध नमाज़ पूरी कर ली, फिर माँगा और उसने नहीं दिया, तो नमाज़ हो गई और तयम्मुम बाक़ी है।	8	751
157	मसला: एक जमाअत तयम्मुम से है, एक व्यक्ति पानी लाया और कहा, 'यह मैंने तुम सबको हिबा (उपहार) किया,' उन्होंने उस पर कब्ज़ा कर लिया। तयम्मुम किसी का नहीं गया। अक़ूल: यानी अगर वह पानी सबके लिए पर्याप्त न हो—जैसे 10 व्यक्ति हैं और पानी सिर्फ9 के लिए काफी है—तो सर्वसम्मति	3	752

क्रम संख्या	विषय	फायदा नंबर	पृष्ठ
	से [तयम्मुम नहीं टूटेगा]। और अगर सबके लिए पर्याप्त बल्कि पर्याप्त से भी अधिक है, तो इमाम (रज़ियल्लाहु अन्हु) के नज़दीक भी उनका तयम्मुम नहीं टूटेगा। साहिबैन (इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद) के नज़दीक टूट जाएगा। फ़तवा इमाम के कथन पर है।		
158	मसला: अगर उनमें से एक व्यक्ति को हिबा किया, तो कब्ज़े के बाद केवल उसी का तयम्मुम गया, दूसरों का बाक़ी है। और अगर जमाअत हो रही है और इमाम को हिबा किया, तो नमाज़ सबकी गई, चाहे दूसरों का तयम्मुम न गया हो। अक़ूल: और अगर कई लोगों को हिबा किया और उन लोगों के लिए पानी काफी था, तो साहिबैन के नज़दीक कब्ज़े की शर्त पर उनका तयम्मुम चला गया, जबकि इमाम के नज़दीक सबका बाक़ी है, सिवाय उसके जिसका हिस्सा विभाजित करके कब्ज़ा दिया जाए।	4	752
159	मसला: तयम्मुम से जमाअत हो रही है और एक व्यक्ति पानी लाया और कहा, 'यह मैंने तुम सबको हिबा किया,' या इमाम के अलावा किसी और से कहा, 'यह मैंने तुझे हिबा किया।' सलाम के बाद इमाम ने उससे पानी माँगा और उसने दे दिया, तो सबकी नमाज़ गई।	5	752

فتاوی رضویہ جلد چہارم

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱۵۱	مسئلہ : جب گمان غالب ہو کہ مانگنے سے دے دے گا تو نیت توڑنا واجب ہے	۲	۷۵۱
۱۵۲	مسئلہ : تیمم سے نماز کامل ہے، تیمم بھی ہمارے نزدیک طہارتِ کاملہ ہے	۴	۷۵۱
۱۵۳	مسئلہ : وضو والے کو تیمم والے کی اقتدا میں اصلاً کراہت نہیں اگرچہ عکس افضل ہے۔ اقول یعنی جبکہ تیمم والا اعلم وافضل واحق بالامامۃ ہو۔	۵	۷۵۱
۱۵۴	مسئلہ : جب ظن غالب ہو کہ مانگنے سے دے دے گا تو مانگنا واجب ہے اور شک ہو تو مستحب اور ظن غالب ہو کہ نہ دے گا تو مستحب بھی نہیں۔	۶	۷۵۱
۱۵۵	مسئلہ : اگر ظن غالب ہو کہ پانی یہاں کہیں قریب ایک میل سے کم فاصلے پر ہے تو تلاش کرنا واجب ہے اور شک ہو تو مستحب ورنہ مستحب بھی نہیں۔	۷	۷۵۱
۱۵۶	مسئلہ : نماز میں پانی دوسرے کے پاس معلوم ہوا اور ظن غالب ہوا کہ مانگنے سے دے دے گا تو اگرچہ نیت توڑ کر مانگنا واجب ہے مگر فقط اس غلبہ ظن سے نہ تیمم ٹوٹے نہ نماز جائے یہاں تک کہ اگر اس نے خلافِ حکم کر کے نماز پوری کرلی پھر مانگا اور اس نے نہ دیا تو نماز ہوگئی اور تیمم باقی ہے۔	۸	۷۵۱
۱۵۷	مسئلہ : ایک جماعت تیمم سے ہے ایک شخص پانی لایا اور کہا یہ میں نے تم سب کو ہبہ کیا انھوں نے اس پر قبضہ کر لیا تیمم کسی کا نہ گیا اقول یعنی اگر وہ پانی سب کو کافی نہ ہو مثلاً دس ۱۰ شخص ہیں اور پانی صرف نو کو	۳	۷۵۲

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	کافی، تو بالاتفاق، اور اگر سب کو کافی بلکہ کافی سے بھی زائد ہے تو امام رضی اللہ عنہ کے نزدیک بھی ان کا تیمم نہ ٹوٹے گا صاحبین کے نزدیک ٹوٹ جائے گا، اور فتویٰ قول امام پر ہے۔		
۱۵۸	مسئلہ : اگر ان میں ایک شخص کو ہبہ کیا تو بعد قبضہ صرف اسی کا تیمم گیا اوروں کا باقی ہے، اور اگر جماعت ہورہی ہے اور امام کو ہبہ کیا تو نماز سب کی گئی اگرچہ اوروں کا تیمم نہ گیا۔ اقول اور اگر چند کو ہبہ کیا اور اُنتوں کے لیے پانی کافی تھا تو صاحبین کے نزدیک بشرطِ قبضہ اُنتوں کا تیمم جاتا رہا اور امام کے نزدیک سب کا باقی ہے مگر وہ جس کا حصہ تقسیم کر کے قبضہ دے۔	۴	۷۵۲
۱۵۹	مسئلہ : تیمم سے جماعت ہورہی ہے اور ایک شخص پانی لایا اور کہا یہ میں نے تم سب کو ہبہ کیا، یا امام کے سوا کسی اور کو کہا یہ میں نے تجھے ہبہ کیا بعد سلام امام نے اس سے پانی مانگا اس نے دے دیا سب کی نماز گئی۔	۵	۷۵۲

Fatawa Rizwiya | Volume Fourth

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page No.
160	Issue: Before starting prayer, if it is known that another person has water, and if there is a strong likelihood that he will give it upon request, then asking for it is mandatory (Wajib). Performing prayer with Tayammum without asking is prohibited. If there is doubt, then asking is recommended (Mustahab), otherwise it is not even recommended.	5	753
161	F: It is said that water is normally given freely, meaning no one feels trouble in giving it. This applies to drinking water, especially at the place of residence. Water for purification, especially for an obligatory bath (Ghusl) during a journey, is not freely given; rather, giving it involves more difficulty than many other things.	1	758
162	F: Ten situations in which there is a strong presumption of water being given: when the person with water is one's child, full brother, friend, servant, or subject; or if he fears him or has some greed; or if it's known that this person is neither stingy nor petty-minded nor an opponent, and he has enough water such that after giving it to me, sufficient water remains for his needs until reaching the destination; or if he is sick, lame, or has a paralyzed hand and is standing at a well; or it's known that he is noble-hearted and feels ashamed to refuse a request.	1	759
163	Issue: A thing because of which one cannot perform Tayammum, if that thing is found while in the state of Tayammum, it will break the Tayammum.	2	762
164	Issue: Here, the real credit goes to the reality. If one presumed he wouldn't give and prayed with Tayammum without asking, but after prayer, the person gave it himself or upon asking, the prayer is void; he must perform wudhu and pray again. If he presumed he would give, prayed with Tayammum without asking, then asked and the person didn't give, the prayer is valid and Tayammum remains. Yes, if he didn't ask at all, nor	1	763

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page No.
	did the person give it himself, nor was the situation revealed in any other way, the ruling will be based on the presumption; if he presumed he would give and didn't ask, the prayer is void, otherwise it's valid.		
165	Issue: If someone is in a wilderness and doesn't know the status of water whether it's far or near, and someone is present there who is likely to know about water, he asked him but he didn't tell, so he prayed with Tayammum. Afterward, if he told him, the prayer is valid; for the next prayer, he should perform wudhu.	2	763

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
160	मसला: नमाज़ शुरू करने से पहले अगर दूसरे के पास पानी होने का पता चले, और यदि प्रबल संभावना (ग़ालिब गुमान) हो कि मांगने पर वह दे देगा, तो माँगना वाजिब है। बिना मांगे तयम्मुम से नमाज़ पढ़ना मना है। और अगर संदेह हो तो माँगना मुस्तहब है, अन्यथा मुस्तहब भी नहीं।	5	753
161	फ़: यह जो कहा जाता है कि पानी आम तौर पर दिया जाने वाला है, यानी इसे देने में किसी को कोई कष्ट नहीं होता, यह पीने के पानी के बारे में है, विशेषकर निवास स्थान पर। शुद्धता के लिए, विशेषकर यात्रा के दौरान ग़ुस्ल का पानी आम तौर पर नहीं दिया जाता, बल्कि इसे देने में कई अन्य वस्तुओं से अधिक कठिनाई होती है।	1	758
162	फ़: दस स्थितियाँ जिनमें पानी मिल जाने की प्रबल संभावना होती है: जिसके पास पानी है वह उसकी संतान हो, सगा भाई हो, मित्र हो, सेवक हो या प्रजा हो; या वह उससे डरता हो या कोई लालच रखता हो; या उसे ज्ञात हो कि यह व्यक्ति न तो कंजूस है, न ही संकीर्ण विचारधारा वाला और न ही मेरा विरोधी है, और उसके पास इतना पानी है कि मुझे देने के बाद गंतव्य तक पहुँचने के लिए उसकी आवश्यकताओं हेतु पर्याप्त पानी शेष रहेगा; या वह रोगी, लंगड़ा हो या उसका हाथ सुन्न हो और वह कुएं पर खड़ा हो; या उसे ज्ञात हो कि वह उदार हृदय का है और अनुरोध ठुकराने में लज्जा अनुभव करता है।	1	759
163	मसला: जिस वस्तु की उपस्थिति में तयम्मुम न किया जा सके तयम्मुम की स्थिति में जब वह वस्तु मिल जाएगी, तो वह तयम्मुम को तोड़ देगी।	2	762
164	मसला: यहाँ वास्तविक महत्व वास्तविकता का है। यदि उसे आभास हो कि वह नहीं देगा और बिना मांगे तयम्मुम से नमाज़ पढ़ ली, फिर नमाज़ के बाद उसने स्वयं या माँगने पर दे दिया, तो नमाज़ नहीं हुई; वज़ू करके पुनः पढ़े। और यदि आभास था कि दे देगा और बिना मांगे तयम्मुम से नमाज़ पढ़ ली,	1	763

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
	फिर माँगा और उसने नहीं दिया, तो नमाज़ हो गई और तयम्मुम शेष रहा। हाँ, यदि बिल्कुल नहीं माँगा, न उसने स्वयं दिया, न ही किसी अन्य प्रकार से स्थिति स्पष्ट हुई, तो आभास पर ही निर्णय रहेगा; यदि देने का आभास था और नहीं माँगा, तो नमाज़ नहीं हुई, अन्यथा हो गई।		
165	मसला: यदि कोई निर्जन स्थान में है और उसे जल की स्थिति ज्ञात नहीं है कि वह दूर है या निकट, और वहां कोई ऐसा व्यक्ति उपस्थित है जिससे जल की स्थिति ज्ञात होने की संभावना हो, उसने उससे पूछा किंतु उसने नहीं बताया, अतः उसने तयम्मुम से नमाज़ पढ़ ली। इसके पश्चात उसने बता दिया, तो नमाज़ हो गई; अगली नमाज़ के लिए वज़ू करे।	2	763

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱۶۰	مسئلہ : شروع نماز سے پہلے اگر دوسرے کے پاس پانی معلوم ہوا اگر غالب گمان ہے کہ مانگنے سے دے دے گا مانگنا واجب ہے بے مانگے تیمم سے نماز پڑھنا منع ہے۔ اور اگر شک ہو تو مانگنا مستحب ہے ورنہ مستحب بھی نہیں۔	۵	۷۵۳
۱۶۱	ف : یہ جو کہا جاتا ہے کہ پانی عادۃً مبذول ہے یعنی اس کے دینے میں کسی کو تکلیف نہیں ہوتی پینے کے پانی میں ہے خصوصاً جائے اقامت میں طہارت خصوصاً غسل کا پانی سفر میں مبذول نہیں بلکہ اس کے دینے میں بہت اشیاء سے زیادہ تکلف ہوتا ہے۔	۱	۷۵۸
۱۶۲	ف : دس صورتیں جن میں پانی دے دینے کا ظن غالب ہوتا ہے کہ جس کے پاس پانی ہے اس کی اولاد ہو یا سگا بھائی یا دوست یا نوکر یا رعیت یا اس سے ڈرتا یا کچھ طمع رکھتا ہو یا اسے معلوم ہو کہ یہ شخص نہ تو بخیل ہے نہ پست خیال نہ میرا مخالف اور اس کے پاس اتنا پانی ہے کہ مجھے دے کر منزل تک پہنچنے تک اس کی حاجتوں کے لیے کافی پانی بچ رہے گا یا یہ بیمار لنگڑا یا ہا تھ شل ہو اور وہ کنویں پر کھڑا ہے یا اسے معلوم ہے کہ وہ کریم النفس ہے سوال رد کرتے شرماتا ہے۔	۱	۷۵۹
۱۶۳		۲	۷۶۲

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ : جس چیز کے ہوتے ہوئے تیمم نہ کر سکتا ہو تیمم کی حالت میں جب وہ شے پائی جائے گی اسے توڑ دے گی۔		
۱۶۴	مسئلہ : یہاں اصل اعتبار واقع کا ہے اگر اسے گمان ہو کہ نہ دے گا اور بے مانگے تیمم سے پڑھ لی بعد نماز اس نے خود یا اس کے مانگنے سے دے دیا نماز نہ ہوئی وضو کر کے پھر پڑھے اور اگر گمان تھا کہ دے دے گا اور بے مانگے تیمم سے پڑھ لی پھر مانگا اور اس نے نہ دیا تو نماز ہو گئی تیمم باقی رہا۔ ہاں اگر اصلاً نہ مانگا نہ اس نے آپ دیا نہ اور طرح حال کھلا تو گمان پر حکم رہے گا اگر دینے کا گمان تھا اور نہ مانگا نماز نہ ہوئی ورنہ ہو گئی۔	۱	۷۶۳
۱۶۵	مسئلہ : جنگل میں ہے اسے پانی کا حال معلوم نہیں کہ دور ہے یا نزدیک، اور وہاں کوئی ایسا موجود ہے جس کی نسبت پانی کا حال جاننا مظنون ہو اس سے پوچھا اس نے نہ بتایا اس نے تیمم سے پڑھ لی اس کے بعد اس نے بتایا یا نماز ہو گئی آئندہ نماز کیلئے وضو کرے۔	۲	۷۶۳

Fatawa Ridawiyya, Volume 4

Serial Number	Titles	Benefit Number	Page Number
166	Ruling: A person who could have informed was present, but he did not ask and performed the prayer. Later he inquired, and the person informed him that water was nearby; the prayer was not valid.	3	763
167	Ruling: He asked, the person heard but remained silent, and informed him after the prayer; the prayer was valid.	4	763
168	Ruling: He strongly suspected that the person would not give water, so he prayed with Tayammum. Meanwhile, more water became available to the person and he offered it. If the assumption of refusal was due to water scarcity, then providing it after abundance shouldn't prove his mistake. But if it was due to other reasons like a grudge etc., his mistake is certainly proven; he must repeat the prayer.	5	763
169	Ruling: He strongly suspected that the person would give water. After prayer, he asked, and the person refused, or the water had decreased in the meantime. If the person used it for his own need, the mistake of that suspicion is evident, and there's no need to repeat the prayer. But if he gave it to another, the error of that assumption is proven, and the prayer must be repeated.	6	763
170	Ruling: During prayer, he saw water with someone but did not strongly suspect they would give it. After prayer, he asked and the person said, "The water is finished; if you had asked earlier, I would have given it." This statement is not credible; the prayer was valid.	4	764
171	Ruling: Before prayer, he saw water and did not strongly suspect it would be given, so he performed Tayammum. He had already finished earlier. After	5	764

Serial Number	Titles	Benefit Number	Page Number
	some time he asked, and received the same reply: "It's finished, if you asked before I would have had no excuse to refuse." Even with this statement, Tayammum remains valid; let him pray with that Tayammum.		
172	Ruling: The person had water but made a false excuse saying he didn't, adding that if asked earlier he would have given it. This has no effect on the prayer, nor does Tayammum become invalid even if it's known that he made a false excuse.	1	765
173	Ruling: By promising to give water, one is considered capable of obtaining water only for that specific time. It will have no effect on any future time.	2	765
174	Ruling: Apparently, capability from a promise is established from the time of the promise, not before.	1	766
175	Ruling: It is the start of the prayer time, and water is one mile away, and there is strong hope of reaching it by the middle of the prayer time. Even then, delay is not obligatory; it is permissible to pray with Tayammum now. Yes, delay is recommended if one knows that a disliked (makruh) time will not set in before getting water and performing purification.	1	767

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 4

क्रमांक	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
166	मसला: बताने वाला मौजूद था और उसने नहीं पूछा और नमाज़ पढ़ ली, फिर मालूम किया और उसने पानी करीब बताया तो नमाज़ नहीं हुई।	3	763
167	मसला: उसने पूछा और उसने सुना और कुछ न बोला, नमाज़ के बाद बताया तो नमाज़ हो गई।	4	763
168	मसला: गुमान ग़ालिब था कि नहीं देगा, तयम्मुम से पढ़ ली। इसी बीच उसके पास बहुत पानी आ गया और उसने दे दिया। अगर न देने का गुमान पानी की कमी की वजह से था तो बाद में ज़्यादा पानी देने से उसकी ग़लती साबित नहीं होनी चाहिए। और अगर अन्य कारणों जैसे नाराज़गी आदि की वजह से था तो उसकी ग़लती ज़रूर साबित हुई, नमाज़ दोहराए।	5	763
169	मसला: गुमान ग़ालिब था कि दे देगा, नमाज़ के बाद माँगा तो उसने इनकार कर दिया या इसलिए कि इस बीच पानी खर्च होकर कम रह गया था। अगर यह खर्च खुद उसने अपनी ज़रूरत में किया तो ज़ाहिर है कि उस गुमान की ग़लती साबित हुई, नमाज़ दोहराने की ज़रूरत नहीं। और अगर किसी और को दे दिया तो उस गुमान की ख़ता साबित हुई, नमाज़ का एआदा (दोहराना) चाहिए।	6	763
170	मसला: नमाज़ में किसी के पास पानी देखा और देने का गुमान ग़ालिब न हुआ, नमाज़ के बाद माँगा तो उसने कहा पानी खर्च हो गया पहले माँगते तो मैं दे देता। इस कहने का एतबार नहीं, नमाज़ हो गई।	4	764
171	मसला: नमाज़ से पहले पानी देखा और देने का गुमान ग़ालिब न हुआ, तयम्मुम कर लिया। पहले कर चुका था, कुछ देर बाद माँगा तो उसने वही जवाब दिया कि हो चुका, पहले माँगते तो मुझे देने में उज़्र (बहाना) न होता। इस कहने से भी तयम्मुम नहीं जाएगा, उसी तयम्मुम से नमाज़ पढ़े।	5	764
172		1	765

क्रमांक	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
	मसला: पानी उसके पास था और उसने गलत हीला (बहाना) कर दिया कि नहीं रहा, पहले माँगते तो दे देता। तो इसका भी नमाज़ पर कुछ असर नहीं, न तयम्मुम जाए अगरचे मालूम ही हो जाए कि उसने झूठ हीला कहा।		
173	मसला: पानी देने का वादा करने से उसी वक्त तक के लिए पानी पर कादिर समझा जाएगा, किसी आइंदा वक्त पर उसका असर न होगा।	2	765
174	मसला: ज़ाहिरन वादे से कुदरत वादे के वक्त से साबित होगी, पहले से नहीं।	1	766
175	मसला: अव्वल वक्त है और पानी एक मील है और उम्मीद-ए-वासिक है कि औसत वक्त में वहाँ तक पहुँच जाएगा, तब भी इस पर ताख़ीर (देरी) वाजिब नहीं, जायज़ है कि अभी तयम्मुम से पढ़ ले। हाँ ताख़ीर मुस्तहब है जबकि जाने कि पानी मिलने और तहारत करने में वक्त-ए-मक़रूह न आ जाएगा।	1	767

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱۶۶	مسئلہ: بتانے والا موجود تھا اور اس نے نہ پوچھا اور نماز پڑھ لی، پھر دریافت کیا اور اس نے پانی قریب بتایا نماز نہ ہوئی۔	۳	۷۶۳
۱۶۷	مسئلہ: اس نے پوچھا اور اس نے سنا اور کچھ نہ بولا بعد نماز بتایا نماز ہوگئی۔	۴	۷۶۳
۱۶۸	مسئلہ: ان غالب تھا کہ نہ دے گا تیمم سے پڑھ لی اتنے میں اُس کے پاس اور پانی کثیر آگیا اور دے دیا اگر وہ نہ دینے کا گمان بر بنائے قلتِ آب تھا تو بعد کثرت دینے سے اُس کی غلطی ثابت نہ ہونی چاہیے اور اگر اور وجوہ مثل رنجش وغیرہ کی بنا پر تھا تو اُس کی غلطی ضرور ثابت ہوئی نماز پھیرے۔	۵	۷۶۳
۱۶۹	مسئلہ: گمان غالب تھا کہ دے دے گا بعد نماز مانگا اُس نے انکار کر دیا یا اس لیے کہ اتنے میں پانی خرچ ہو کر کم رہ گیا تھا اگر یہ خرچ خود اس نے اپنی حاجت میں کیا تو ظاہر اُس گمان کی غلطی ثابت ہوئی اعادہ نماز کی حاجت نہیں اور اگر دوسرے کو دے دیا تو اُس ظن کی خطا ثابت ہوئی نماز کا اعادہ چاہیے۔	۶	۷۶۳

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱۷۰	مسئلہ: نماز میں کسی کے پاس پانی دیکھا اور دینے کا گمان غالب نہ ہوا نماز کے بعد مانگا اُس نے کہا پانی خرچ ہو گیا پہلے مانگتے تو میں دے دیتا اس کہنے کا اعتبار نہیں نماز ہوگئی۔	۴	۷۶۴
۱۷۱	مسئلہ: نماز سے پہلے پانی دیکھا اور دینے کا گمان غالب نہ ہوا تیمم کر لیا پہلے کر چکا تھا کچھ دیر بعد مانگا اُس نے وہی جواب دیا کہ ہو چکا پہلے مانگتے تو مجھے دینے میں عذر نہ ہوتا اس کہنے سے بھی تیمم نہ جائے گا اُسی تیمم سے نماز پڑھے۔	۵	۷۶۴
۱۷۲	مسئلہ: پانی اس کے پاس تھا اور اُس نے غلط حیلہ کر دیا کہ نہ رہا پہلے مانگتے تو دے دیتا تو اس کا بھی نماز پر کچھ اثر نہیں، نہ تیمم جائے اگر چہ معلوم ہی ہو جائے کہ اُس نے جھوٹ حیلہ کہا۔	۱	۷۶۵
۱۷۳	مسئلہ: پانی دینے کا وعدہ کرنے سے اُسی وقت تک کیلئے پانی پر قادر سمجھا جائے گا کسی آئندہ وقت پر اُس کا اثر نہ ہوگا۔	۲	۷۶۵
۱۷۴	مسئلہ: ظاہر اً وعدے سے قدرت وقت وعدہ سے ثابت ہو گی پہلے سے نہیں۔	۱	۷۶۶
۱۷۵	مسئلہ: اول وقت ہے اور پانی ایک میل ہے اور امید واثق ہے کہ اوسط وقت میں وہاں تک پہنچ جائے گا جب بھی اس پر تاخیر واجب نہیں جائز ہے کہ ابھی تیمم سے پڑھ لے۔ ہاں تاخیر مستحب ہے جبکہ جانے کہ پانی ملنے اور طہارت کرنے میں وقت مکروہ نہ آجائے گا۔	۱	۷۶۷

Fatawa Rizvia Volume 4

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page No.
	(6) Water is present but kept for drinking. If wudu (ablution) is performed, there won't be enough for drinking, and there is a strong probability (zann-e-ghalib) that more water will be available later. (7) There is a bandit, enemy, or predatory animal near the water, and there is a strong probability that they will leave soon. (8) It is pitch dark, the way to the water cannot be seen, and there is a strong probability that it will become light by the end of the time or a light source will become available. (9) A person is sick, or lame, or paralyzed, or their hands are useless, or extremely old; in short, there is some ailment such that they are not capable of drawing water or performing wudu themselves. They have sent their son or servant for some work, and there is a strong probability that they will return at a time when they can draw water for the person to perform wudu and pray. (10) There is recurring fever with chills, which always subsides after an hour or two; at that time, they will be capable of drawing water, performing wudu, or bathing, but not right now. (11) Someone else has water; they have gone for some work, and it is hoped that they will give it if asked, and there is a strong probability that they will return by the end of the time. (12) Bathing or a woman performing wudu is required; people are present who won't leave, and there is a strong probability that they will go away and time will be available. (13) Goods or a child are nearby; one cannot leave them to go get water, and there is a strong probability that a companion will arrive by the end of the time to guard them or bring water. (14) Water is in the mosque and one needs to bathe; there is a strong probability that in a short while someone will be found who will bring water. It is recommended (mustahabb) to wait. If one didn't wait, performed tayammum, brought water from the mosque and bathed, there is no harm.	3	772
178		1	775

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page No.
	Ruling: If someone is in a jungle and does not know if water is one mile away or less, and they perform tayammum and pray, the prayer is valid whether there was hope of finding water at the end of the time or not. It is not even obligatory to search for it unless there is a strong suspicion that it is less than a mile away.		
179	Ruling: It is known that water is less than two miles away and one can reach it within the recommended (mustahabb) time, but it's unknown if it is exactly one mile or less. It is permissible to perform tayammum and pray. Then, even if it turns out to be less than a mile, the prayer is valid. However, if there was a strong probability that it was less than a mile, and one did not search and prayed with tayammum, the prayer is not valid, even if it later turns out to be one mile or further away.	3	775

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
	(6) पानी मौजूद है लेकिन पीने के लिए रखा है। यदि वज़ू कर लिया गया तो पीने के लिए नहीं रहेगा और प्रबल संभावना (ज़न्न-ए-ग़ालिब) है कि अंत में अतिरिक्त पानी मिल जाएगा। (7) पानी के पास लुटेरा, दुश्मन या हिंसक जानवर है और प्रबल संभावना है कि वह जल्द ही चला जाएगा। (8) घोर अंधेरा है, पानी तक का रास्ता नहीं सूझ रहा है और प्रबल संभावना है कि समय के अंत तक उजाला हो जाएगा या रोशनी का कोई साधन मिल जाएगा। (9) मरीज़ है या लंगड़ा है या अपंग है या हाथ सुन्न हैं या बहुत बूढ़ा है, सारांश यह कि कोई ऐसी बीमारी है कि खुद पानी भरने या वज़ू करने पर सक्षम नहीं है और अपने बेटे या नौकर को किसी काम के लिए भेजा है और प्रबल संभावना है कि वह ऐसे समय वापस आएगा कि पानी भरकर मुझे वज़ू करा दे और मैं नमाज़ पढ़ लूँ। (10) बारी का बुखार आता है और हमेशा एक-दो घंटे रहकर उतर जाता है, उस समय पानी भरने, वज़ू करने या नहाने में सक्षम हो जाएगा, अभी नहीं। (11) दूसरे के पास पानी मौजूद है, वह कहीं काम से गया हुआ है और उम्मीद है कि मांगने पर दे देगा और प्रबल संभावना है कि वह समय के अंत में वापस आ जाएगा। (12) नहाना है या औरत को वज़ू करना है, लोग मौजूद हैं जो हट नहीं रहे और प्रबल संभावना है कि वे चले जाएँगे और समय मिल जाएगा। (13) सामान या बच्चा पास है, उसे छोड़कर पानी लेने नहीं जा सकता और प्रबल संभावना है कि समय के अंत में कोई साथी आ जाएगा जो उसकी हिफाज़त करेगा या पानी ला देगा। (14) पानी मस्जिद में है और उसे नहाना है और प्रबल संभावना है कि थोड़ी देर में कोई ऐसा मिल जाएगा जो पानी ला दे। बेहतर (मुस्तहब) है कि इंतज़ार करे और अगर इंतज़ार न किया और तयम्मुम करके पानी मस्जिद में से ले आया और नहा लिया तो कोई हर्ज़ नहीं।	3	772
178		1	775

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
179	मसला: जंगल में है और पता नहीं कि पानी एक मील दूर है या कम और तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली तो नमाज़ हो गई चाहे समय के अंत में पानी मिलने की उम्मीद हो या न हो, उस पर तलाश करना भी लाज़िम नहीं जब तक एक मील से कम होने की प्रबल संभावना न हो। मसला: मालूम है कि पानी दो मील से कम है, मुस्तहब समय में वहां तक पहुँच जाऊँगा और यह मालूम नहीं कि एक मील है या उससे भी कम, तो जायज़ है कि तयम्मुम करके पढ़ ले फिर चाहे एक मील से कम ही निकले, नमाज़ हो गई। हाँ अगर यह प्रबल संभावना थी कि एक मील से कम है और तलाश न किया और तयम्मुम से पढ़ ली तो नमाज़ न हुई चाहे बाद में एक मील या उससे भी ज़्यादा दूर होना ज़ाहिर हो।	3	775

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	(۶) پانی موجود ہے مگر پینے کے لئے رکھا ہے وضو کر لیا تو پینے کو نہ رہے گا اور ظن غالب ہے کہ آخر میں اور فاضل پانی مل جائے گا۔ (۷) پانی پر رہزن یا دشمن یا درندہ ہے اور گمان غالب ہے کہ جلد چلا جائے گا۔ (۸) سخت اندھیری ہے پانی تک راہ نہ سوجھے گی اور ظن غالب ہے کہ آخر وقت میں اُجالا ہو جائے گا یا روشنی کا سامان مل جائے گا۔ (۹) مریض یا لنگھیا یا لولا ہے یا ہاتھ شل ہیں یا نہایت بوڑھا ہے غرض کوئی عارضہ ایسا ہے کہ خود پانی بھرنے یا وضو کرنے پر قادر نہیں اور اپنے بیٹے یا نوکر کو کسی کام کیلئے بھیجا ہے اور گمان غالب ہے کہ ایسے وقت واپس آئے گا کہ پانی بھر کر مجھے وضو کرادے اور میں نماز پڑھ لوں۔ (۱۰) باری سے جاڑا آتا ہے اور ہمیشہ گھنٹہ دو گھنٹے رہ کر اُتر جاتا ہے اس وقت پانی بھرنے، وضو کرنے یا نہانے پر قادر ہو جائے گا ابھی نہیں۔ (۱۱) دوسرے کے پاس پانی موجود ہے وہ کہیں کام کو گیا ہوا ہے اور امید ہے کہ مانگے سے دے دے گا اور ظن غالب ہے کہ آخر وقت میں واپس آئے گا۔ (۱۲) نہانا یا عورت کو وضو کرنا ہے لوگ موجود ہیں اڑ نہیں اور گمان غالب ہے کہ چلے جائیں گے اور وقت مل جائے گا۔ (۱۳) مال یا بچہ پاس ہے اسے چھوڑ کر پانی لینے جانہیں سکتا اور ظن غالب ہے کہ آخر وقت میں کوئی رفیق آجائے گا جو اس کی حفاظت کرے	۳	۷۷۲

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	یا پانی لادے۔ (۱۴) پانی مسجد میں ہے اور اسے نہانا ہے اور گمان غالب ہے کہ تھوڑی دیر میں کوئی ایسا مل جائے گا کہ پانی لادے مستحب ہے کہ انتظار کرے اور اگر انتظار نہ کیا اور تیمم کر کے پانی مسجد میں سے لے آیا اور نہا لیا کچھ مضائقہ نہیں۔		
۱۷۸	مسئلہ: جنگل میں ہے اور معلوم نہیں کہ پانی ایک میل دور ہے یا کم اور تیمم کر کے نماز پڑھ لی نماز ہوگئی خواہ آخر وقت میں پانی ملنے کی امید ہو یا نہ ہو اس پر تلاش کرنا بھی لازم نہیں جب تک ایک میل سے کم ہونے کا ظن نہ ہو۔	۱	۷۷۵
۱۷۹	مسئلہ: معلوم ہے کہ پانی دو میل سے کم ہے وقت مستحب میں اُس تک پہنچ جاؤں گا اور یہ معلوم نہیں کہ ایک میل ہے یا اس سے بھی کم جائز ہے کہ تیمم کر کے پڑھ لے پھر اگرچہ ایک میل سے کم ہی نکلے نماز ہو گئی۔ ہاں اگر یہ ظن غالب تھا کہ ایک میل سے کم ہے اور تلاش نہ کیا اور تیمم سے پڑھ لی نماز نہ ہوئی اگرچہ بعد کو ایک میل یا زیادہ ہی دور ہونا ظاہر ہو۔	۳	۷۷۵

Fatawa Rizvia, Volume 4

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
180	Issue: A promise to provide water after the [prayer] time is not effective at all.	1	777
181	Issue: A promise that gives hope of getting water within the time, if made before prayer, is absolutely effective, even if it is not fulfilled later.	2	777
182	Issue: A promise to give within the time, if made after prayer, and water is given within the time, the prayer must be repeated. If it is not given due to an excuse, it still doesn't need to be repeated. If it's not given without an excuse, then apparently there is no need to repeat it.	1	778
183	Issue: Refusal to give can sometimes be explicit, e.g., "I will not give," and sometimes implicit, e.g., one asked for water and the owner used it for himself or threw it away, even if enough remains for purification.	1	779
184	Issue: If one asked and the owner gave the water to someone else as a permission for use but did not make them the owner, this is also a refusal. If the owner made someone else the owner, although it was a refusal from their side, now that other person is the owner of the water. The same issues will apply to them; if it's expected that they will give it upon being asked, then asking becomes obligatory, etc.	2	779
185	Issue: Remaining silent upon being asked is also a refusal if there's no indication to the contrary.	3	779
186	Issue: It is necessary to consider the circumstances of the time, the asker, and the silent person, and their mutual relations, as it sometimes becomes clear that silence was not based on refusal.	6	779
187	Issue: One saw water but did not ask, neither before nor after prayer, and became aware of the need after the time passed and brought water, then the prayers should be repeated.	1	781
188		1	782

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
	Issue: One saw water and did not ask, and prayed with Tayammum while the water remained visible, and water was given after the time had passed, then apparently the prayer should still be repeated.		

फतवा रिज़विया, खंड 4

क्रमांक	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
180	मसला: यह वादा कि वक्त के बाद दूंगा, कुछ भी प्रभावी नहीं है।	1	777
181	मसला: वह वादा जिससे वक्त में पानी मिलने की उम्मीद हो, अगर नमाज़ से पहले हो तो वह पूरी तरह प्रभावी है, चाहे बाद में वह पूरा न भी हो।	2	777
182	मसला: वक्त में देने का वादा अगर नमाज़ के बाद हो और फिर वक्त के अंदर ही दे दे, तो नमाज़ ज़रूर दोहरानी होगी। और अगर वक्त में किसी बहाने से न दे, तो भी नमाज़ दोहरानी नहीं होगी। और बिना किसी बहाने के न दे, तो ज़ाहिरी तौर पर नमाज़ दोहराने की ज़रूरत नहीं है।	1	778
183	मसला: देने से इंकार कभी स्पष्ट होता है, जैसे "नहीं दूंगा", और कभी इशारे से, जैसे किसी ने माँगा और मालिक ने पानी अपने इस्तेमाल में ले लिया या फेंक दिया, चाहे इतना बचा हो जो वज़ू के लिए काफी न हो।	1	779
184	मसला: अगर किसी ने माँगा और मालिक ने पानी दूसरे को इस्तेमाल की अनुमति के तौर पर दे दिया, मालिक नहीं बनाया, तो यह भी देने से इंकार है। और अगर दूसरे को मालिक बना दिया, तो हालाँकि उसकी तरफ से इंकार हो गया, लेकिन अब वह दूसरा पानी का मालिक है। वही मसले उसकी तरफ लागू होंगे कि अगर माँगे जाने पर उसका पानी दे देना मुमकिन हो, तो माँगना वाजिब है इत्यादि।	2	779
185	मसला: माँगने पर चुप रहना भी इंकार है, अगर इसके खिलाफ कोई संकेत न हो।	3	779
186	मसला: उस वक्त माँगने वाले और चुप रहने वाले की हालत और उनके आपसी रिश्तों पर गौर करना ज़रूरी है, क्योंकि इससे कभी ज़ाहिर होता है कि चुप्पी इंकार की वजह से नहीं थी।	6	779
187		1	781

क्रमांक	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
	मसला: पानी देखा और नहीं माँगा, न नमाज़ से पहले और न बाद में, और वक्त बीत जाने के बाद उसकी ज़रूरत का अहसास हुआ और पानी लाया, तो नमाज़ें दोहरानी चाहिए।		
188	मसला: उसने पानी देखा और नहीं माँगा, और तयम्मुम से नमाज़ पढ़ी और वह देखता रहा और पानी वक्त के बाद दिया, तो ज़ाहिरी तौर पर अब भी नमाज़ दोहराना चाहिए।	1	782

पृष्ठ ७६१ का ६७८

فتاوی رضویہ، جلد چہارم

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱۸۰	مسئلہ: یہ وعدہ کہ وقت کے بعد دوں گا کچھ موثر نہیں۔	۱	۷۷۷
۱۸۱	مسئلہ: وہ وعدہ جس سے وقت میں پانی ملنے کی امید ہوا گر نماز سے پہلے ہو مطلقاً موثر ہے اگرچہ بعد کو وفا بھی نہ ہو۔	۲	۷۷۷
۱۸۲	مسئلہ: وقت میں دینے کا وعدہ اگر بعد نماز ہو پھر وقت کے اندر ہی دے دے ضرور نماز پھیرنی ہوگی اور اگر وقت میں کسی عذر سے نہ دے جب بھی پھیر نہ ہوگی اور بلاعذر نہ دے تو ظاہراً پھیرنے کی حاجت نہیں۔	۱	۷۷۸
۱۸۳	مسئلہ: دینے سے انکار کبھی صراحۃً ہوتا ہے مثلاً نہ دوں گا کبھی دلالۃً مثلاً اس نے مانگا اس نے پانی اپنے خرچ میں کر لیا یا پھینک دیا اگرچہ اتنا باقی رہا کہ اس کی طہارت کو کافی نہیں۔	۱	۷۷۹
۱۸۴	مسئلہ: اگر اس نے مانگا اور اس نے پانی دوسرے کو بطور اباحت دے دیا مالک نہ کیا تو یہ بھی دینے سے انکار ہے اور اگر دوسرے کو مالک کر دیا تو اگرچہ اس کی طرف سے انکار ہو گیا مگر اب وہ دوسرا پانی کا مالک ہے وہی مسائل اس کی طرف متوجہ ہوں گے کہ اس کے مانگنے سے اس کا دے دینا مظنون ہے تو مانگنا واجب و غیر ذلک۔	۲	۷۷۹
۱۸۵		۳	۷۷۹

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: مانگے پر چپ رہنا بھی انکار ہے اگر کوئی قرینہ اس کے خلاف نہ ہو۔		
۱۸۶	مسئلہ: اُس وقت اور مانگنے والے اور سکوت کرنے والے کی حالتوں اور باہمی تعلقات پر نظر ضرور ہے کہ اس سے کبھی ظاہر ہوتا ہے کہ سکوت بربنائے منع نہ تھا۔	۶	۷۷۹
۱۸۷	مسئلہ: پانی دیکھا اور نہ مانگا نہ نماز سے پہلے نہ بعد، اور اسے وقت نکل جانے کے بعد اس کی حاجت پر اطلاع ہوئی اور پانی لایا تو نمازیں پھیرنا چاہیئے۔	۱	۷۸۱
۱۸۸	مسئلہ: اُس نے پانی دیکھا اور نہ مانگا اور تیمم سے پڑھی اور وہ دیکھتا رہا اور پانی بعد وقت دیا تو ظاہراً اب بھی اعادہ نماز چاہیے۔	۱	۷۸۲

Fatawa Razawiyya | Volume 4

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
189	Ruling: Refusing to give water and then giving it is of no benefit, unless it is given before the prayer is completed; in that case, both tayammum and prayer will be void.	1	783
190	Ruling: In a forest, a person who could be asked about water was present, but one prayed after performing tayammum without asking him. If after the prayer, the person informs that water is less than a mile away, the prayer is invalid, whether they provided this information upon being asked or voluntarily.	5	793
191	Rule 1: If someone provided water without it being requested, even if after the prayer time had started, or upon being requested they neither promised nor refused nor remained silent but gave water immediately, whether before tayammum or after it but before prayer, or during the prayer, or after the prayer, and whether they saw the person praying with tayammum before asking and remained silent or didn't see - in any case, whether the person had a strong belief or a doubt about the water being given, and regardless of whether they became aware of the water being available during prayer or before, in all these cases, giving the water is effective. That is, if given before tayammum, tayammum is not permissible; if tayammum was already performed, it becomes void. If water was given during prayer or after it, both the prayer and tayammum are void. In any case, one must perform wudu and repeat that prayer.	1	799
192	Rule 2: If a promise is made to provide water within the time, whether before tayammum or after it but before prayer or during prayer, this too is absolutely effective in the aforementioned sense. Meaning, it invalidates and prevents tayammum, and if it happens during prayer, it interrupts it. This applies regardless of whether the water was seen during prayer or before, whether the person promised on their own or upon being asked, and whether they provide it later within the	2	799

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
	time or after the time, or not at all, whether due to some excuse or intentional breach of promise, and regardless of whether there was an expectation of the water being given or not before this promise; it is effective in any case.		
193	Rule 3: If one has already performed prayer with tayammum, and after that, someone promised to provide water within the time, but then did not provide it without any valid excuse, or provided it after the time had passed, in this case, the prayer is valid. This applies whether the promise was made voluntarily or after the prayer upon being asked, and whether awareness of this water occurred during the prayer or before, regardless of whether the person saw the prayer being performed with tayammum or not, and whether there was any expectation or doubt prior to the promise.	3	799
194	Rule 4: If a promise was made after the prayer was completed and the water was provided within the time, or the failure to provide it was due to some reason and not a breach of promise, then in all such cases, the prayer must be repeated, regardless of which scenario from Rule 3 occurred.	4	799

क्रमांक	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
189	मसला: देने से इंकार करके देना कुछ लाभदायक नहीं है, सिवाय इसके कि नमाज़ पूरी होने से पहले दे दे, तो तयम्मुम और नमाज़ दोनों बातिल (अमान्य) हो जाएंगे।	1	783
190	मसला: जंगल में वह व्यक्ति जिससे पानी का हाल पूछा जा सकता था मौजूद था, लेकिन बिना पूछे तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली। इसके बाद उसने बताया कि पानी एक मील से भी कम दूरी पर है, तो नमाज़ नहीं हुई, चाहे उसने पूछने पर बताया हो या खुद ही बता दिया हो।	5	793
191	कायदा 1: यदि किसी ने बिना मांगे पानी दे दिया, चाहे समय बीतने के बाद या मांगने पर न वादा किया, न मना किया, न चुप रहा बल्कि तुरंत पानी दे दिया, चाहे तयम्मुम से पहले या उसके बाद नमाज़ से पहले या नमाज़ के दौरान या नमाज़ के बाद, चाहे सवाल से पहले उसे तयम्मुम से नमाज़ पढ़ते देखा और चुप रहा या नहीं देखा, बहरहाल उसे देने या न देने का ग़ुमान-ए-ग़ालिब (प्रबल धारणा) था या शक था, चाहे नमाज़ के दौरान उसके पास पानी होने का पता चला या पहले, इन सभी स्थितियों में वह देना प्रभावी है। यानी तयम्मुम से पहले दिया तो तयम्मुम जायज़ नहीं और अगर तयम्मुम कर चुका था तो टूट गया, और नमाज़ के दौरान या बाद में दिया तो नमाज़ और तयम्मुम दोनों गए। बहरहाल वुज़ू करके उस नमाज़ को फिर से पढ़े।	1	799
192	कायदा 2: तयम्मुम से पहले या नमाज़ से पहले या नमाज़ के दौरान उसी समय में पानी देने का वादा किया तो यह भी उपरोक्त अर्थ में बिल्कुल प्रभावी है। यानी तयम्मुम को तोड़ने वाला और रोकने वाला है और अगर नमाज़ में हो तो उसे काटने वाला है, चाहे उसने पानी नमाज़ में देखा या उससे पहले, और उसने खुद वादा किया या मांगने पर, और बाद में समय रहते दिया या समय बीतने के बाद, या बिल्कुल नहीं दिया चाहे किसी बहाने	2	799

क्रमांक	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
	से या जानबूझकर वादा खिलाफी से, और चाहे इस वादे से पहले उसे देने या न देने की उम्मीद हो या न हो, बहरहाल प्रभावी है।		
193	कायदा 3: यह तयम्मुम से नमाज़ पढ़ चुका, इसके बाद उसने वादा किया कि पानी समय में देगा और फिर बिना किसी बहाने के नहीं दिया या दिया तो समय बीत जाने पर दिया, इस स्थिति में नमाज़ हो गई चाहे यह वादा उसने खुद किया हो या नमाज़ के बाद उसके पूछने पर, और उस पानी की जानकारी उसे नमाज़ में हुई हो या पहले, चाहे उसने उसे उक्त नमाज़ तयम्मुम से पढ़ते देखा हो या नहीं और वादे से पहले उसे कोई गुमान हो या शक।	3	799
194	कायदा 4: नमाज़ पढ़ लेने के बाद वादा किया और समय रहते दे दिया, या न देना किसी वजह से हुआ न कि वादा खिलाफी से, तो इसमें बिल्कुल नमाज़ को दोहराना होगा, चाहे कायदा तीन की बताई गई स्थितियों में से कोई भी स्थिति हो।	4	799

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱۸۹	مسئلہ: دینے سے انکار کر کے دینا کچھ مفید نہیں مگر یہ کہ نماز پوری ہونے سے پہلے دے دے تو تیمم و نماز جاتے رہیں گے۔	۱	۷۸۳
۱۹۰	مسئلہ: جنگل میں جس سے پانی کا حال پوچھا جاتا ہے موجود تھا اور بے پوچھے تیمم سے پڑھ لی اس کے بعد اس نے پانی میل بھر سے کم دور بتایا نماز نہ ہوئی خواہ اس کے پوچھنے پر بتائے یا آپ ہی۔	۵	۷۹۳
۱۹۱	قاعدہ ۱: اگر اس نے اسے بے مانگے پانی دیا اگرچہ وقت کے بعد یا اس کے مانگنے پر نہ وعدہ کیا نہ منع نہ سکوت بلکہ فوراً پانی دے دیا خواہ تیمم سے پہلے یا اس کے بعد نماز سے پہلے یا عین نماز میں یا نماز کے بعد خواہ قبل سوال اسے تیمم سے پڑھتے دیکھا اور خاموش رہا یا نہ دیکھا بہر حال اسے گمانِ غالب اس کے دینے یا نہ دینے کا تھا یا شک تھا عام ازیں کہ یہ نماز میں اس کے پاس پانی ہونے پر مطلع ہوا یا پہلے ان سب صورتوں میں وہ دینا مؤثر ہے یعنی تیمم سے پہلے دیا تو تیمم جائز نہیں اور تیمم کر چکا تھا تو ٹوٹ گیا اور عین نماز میں دیا یا بعد تو نماز و تیمم دونوں گئے بہر کیف وضو کر کے اس نماز کو پڑھے۔	۱	۷۹۹
۱۹۲	قاعدہ ۲: تیمم سے پہلے یا بعد نماز سے پہلے یا عین نماز میں اسی وقت میں پانی دینے کا وعدہ کیا تو یہ بھی بمعنی مذکور مطلقاً مؤثر ہے یعنی تیمم کا	۲	۷۹۹

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	ناقض و مانع اور نماز میں ہو تو اس کا قاطع عام ازیں کہ اس نے پانی نماز میں دیکھا یا اس سے پہلے اور اس نے خود وعدہ کیا یا اس کے مانگنے پر اور بعد کو وقت میں دے یا بعد وقت یا اصلا نہ دے خواہ کسی عذر سے یا بالقصود وعدہ خلافی سے اور عام ازیں کہ اس وعدے سے پہلے اسے دینے یا نہ دینے کا ظن ہو یا نہ ہو بہر حال مؤثر ہے۔		
۱۹۳	قاعدہ ۳: یہ تیمم سے نماز پڑھ چکا اس کے بعد اس نے وعدہ کیا کہ پانی وقت میں دے گا اور پھر بلا عذر نہ دیا یا دیا تو وقت گزر جانے پر دیا اس صورت میں نماز ہو گئی خواہ یہ وعدہ اس نے خود کیا ہو یا بعد نماز اس کے سوال پر اور اس پانی پر اطلاع اسے نماز میں ہوئی ہو یا پہلے عام ازیں کہ اس نے اسے نماز مذکور تیمم سے پڑھتے دیکھا ہو یا نہیں اور اسے پیش از وعدہ کوئی ظن ہو یا شک۔	۳	۷۹۹
۱۹۴	قاعدہ ۴: اس کے نماز پڑھ لینے کے بعد وعدہ کیا اور وقت میں دے دیا یا نہ دینا کسی وجہ سے ہوا نہ وعدہ خلافی سے اس میں مطلقاً نماز کا اعادہ کرنا ہو گا صور مذکورہ قاعدہ سوم سے کوئی بھی صورت واقع ہو۔	۴	۷۹۹

Fatawa Razawiyya, Volume 4

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
195	**Rule 5:** He asked for water, the person remained silent but gave the water within the prayer time. Seeing him praying with tayammum, the person did not remain silent. This giving is also absolutely effective, i.e., it invalidates or prevents tayammum, or nullifies or interrupts the prayer. This applies whether the asking and giving occurred before tayammum, or after it but before prayer, or during the prayer itself, or even after the prayer but still within the prayer time. It doesn't matter if he became aware of the water during the prayer or before, or if there was a strong probability (zann) or doubt (shakk) about whether the water would be given.	1	800
196	**Rule 6:** He asked, the person remained silent, and then either didn't give water at all, or gave it after the time passed, or saw him praying with tayammum and gave it after the prayer but within the time. This applies whether he became aware during the prayer or before, and whether he asked before tayammum or after, before the prayer, during the prayer, or after. Regardless of whether there was a strong probability or doubt, the prayer is complete and there is no need to repeat it.	2	800
197	**Rule 7:** On being asked, the person refused but then gave the water before the prayer finished. This giving is absolutely effective in the sense mentioned in Rule 2. He must perform wudu and pray or repeat this prayer. This applies whether the asking and giving were before tayammum or after it but before the prayer, or during the prayer, and whether awareness happened during the prayer or before, and whether there was a strong probability or doubt about the giving.	3	800
198	**Rule 8:** He asked before tayammum or prayer, or during prayer, or after it, and the person refused and didn't give it at all, or gave it after the time passed, or within the time but after the prayer. This applies whether the person saw him praying	4	800

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
	with tayammum or not. In any case, the prayer is valid, regardless of when awareness occurred or whether there was probability or doubt.		
199	**Rule 9:** Neither did he ask, nor did the person give it within the time or after, but during the prayer or before it, if he became aware of the water and had a strong probability (zann-e-ghalib) that the person would give it if asked, the prayer is invalid and must be repeated.	5	800
200	**Rule 10:** In the aforementioned situation, if he did not think the person would give it, but rather had a strong probability or doubt that he wouldn't, then the prayer is valid.	6	800
201	**Rule 11:** On his own initiative or upon being asked, the person said the water is finished, "had you asked earlier I would have given it," but then gave it before the prayer ended. This is still effective; he should perform wudu and pray or repeat the prayer, regardless of when he became aware or what probability or doubt he had.	1	801

फ़तावा रज़विया, जिल्द चौथी

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
१९५	**नियम ५:** उसने पानी माँगा, वह चुप रहा लेकिन वक़्त के अंदर पानी दे दिया और उसे तयम्मुम से नमाज़ पढ़ते देख कर खामोश न रहा था, तो यह देना भी मुतलक़न (पूर्णत) प्रभावी है, यानी तयम्मुम को तोड़ने वाला या रोकने वाला, या नमाज़ को बातिल (अमान्य) करने वाला या काटने वाला है। चाहे उसका माँगना और उसका देना तयम्मुम से पहले हो या उसके बाद नमाज़ से पहले, या नमाज़ के दौरान, या नमाज़ के बाद भी नमाज़ के वक़्त के अंदर। इसमें यह अंतर नहीं पड़ता कि उसे नमाज़ में पानी की सूचना मिली या पहले, और देने या न देने का गुमान (ज़न्न) था या शक।	१	८००
१९६	**नियम ६:** उसके माँगने पर वह चुप रहा और फिर पानी बिल्कुल नहीं दिया या वक़्त के बाद दिया या उसे तयम्मुम से नमाज़ पढ़ते देखा और नमाज़ के बाद वक़्त के ही अंदर दिया। इसमें यह अंतर नहीं पड़ता कि उसे नमाज़ में सूचना मिली या पहले, और तयम्मुम से पहले माँगा या बाद में, नमाज़ से पहले या नमाज़ में या बाद में, और कोई गुमान था या शक। बहरहाल नमाज़ पूरी हो गई, दोहराने की आवश्यकता नहीं है।	२	८००
१९७	**नियम ७:** माँगने पर इनकार कर दिया लेकिन नमाज़ खत्म होने से पहले दे दिया। यह देना मुतलक़न नियम २ में बताए गए अर्थ में प्रभावी है। वुज़ू करके यह नमाज़ पढ़नी या लौटानी होगी। चाहे यह माँगना और देना तयम्मुम से पहले हो या उसके बाद नमाज़ से पहले, या नमाज़ के दौरान हो, और सूचना नमाज़ में मिली हो या पहले, और देने या न देने का गुमान हो या शक।	३	८००
१९८	**नियम ८:** उसने तयम्मुम या नमाज़ से पहले या नमाज़ में या उसके बाद माँगा और उसने इनकार करके बिल्कुल नहीं दिया या वक़्त गुज़रने पर दिया या वक़्त ही में लेकिन नमाज़ के बाद दिया, चाहे तयम्मुम से नमाज़	४	८००

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
	पढ़ते देखा या नहीं। बहरहाल नमाज़ हो गई, चाहे सूचना कभी भी मिली हो और गुमान हुआ हो या शक।		
१९९	**नियम ९:** न उसने माँगा न उसने वक़्त में दिया न बाद में, लेकिन नमाज़ में या उससे पहले पानी की सूचना मिलने पर उसे प्रबल गुमान (ज़न्न-ए-ग़ालिब) हुआ था कि माँगने पर दे देगा, तो नमाज़ नहीं हुई, फिर से पढ़े।	५	८००
२००	**नियम १०:** उपरोक्त स्थिति में उसे देने का गुमान नहीं हुआ बल्कि न देने का प्रबल गुमान या शक था तो नमाज़ हो गई।	६	८००
२०१	**नियम ११:** खुद या उसके माँगने पर कहा पानी खत्म हो चुका है, पहले कहते तो दे देता, फिर नमाज़ खत्म होने से पहले दे दिया। यह बदस्तूर प्रभावी है, वुज़ू करके नमाज़ पढ़े या लौटाए, चाहे कभी भी सूचना मिली हो और कोई गुमान या शक किया हो।	१	८०१

पृष्ठ ७६१ का ६८०

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱۹۵	**قاعدہ ۵:** اس نے مانگا وہ چپ رہا مگر وقت میں پانی دے دیا اور اسے تیمم سے نماز پڑھتے دیکھ کر خاموش نہ رہا تھا تو یہ دینا بھی مطلقاً موثر ہے یعنی تیمم کا ناقض یا مانع یا نماز کا مبطل یا قاطع خواہ اس کا مانگنا اور اس کا دینا تیمم سے پہلے ہو یا اس کے بعد نماز سے پہلے یا عین نماز میں یا نماز کے بعد بھی بعد وقت نماز میں عام ازیں کہ اسے نماز میں پانی پر اطلاع ہوئی ہو یا پہلے اور دینے نہ دینے کا ظن ہو یا شک۔	۱	۸۰۰
۱۹۶	**قاعدہ ۶:** اس کے مانگے پر چپ رہا اور پھر پانی اصلاً نہ دیا یا وقت کے بعد دیا یا اسے تیمم سے نماز پڑھتے دیکھا اور بعد نماز وقت ہی میں دیا عام ازیں کہ اسے نماز میں اطلاع ہوئی ہو یا پہلے اور تیمم سے پہلے مانگا یا بعد، نماز سے پہلے یا نماز میں یا بعد اور کوئی ظن تھا یا شک، بہر حال نماز پوری ہو گئی اعادہ کی حاجت نہیں۔	۲	۸۰۰
۱۹۷	**قاعدہ ۷:** مانگنے پر انکار کر دیا مگر نماز ختم ہونے سے پہلے دے دیا یہ دینا مطلقاً بمعنی مذکور قاعدہ دوم موثر ہے وضو کر کے یہ نماز پڑھنی یا پھیرنی ہو گی خواہ یہ مانگنا اور دینا تیمم سے پہلے یا اس کے بعد نماز سے پہلے یا عین نماز میں ہو اور اطلاع نماز میں ہوئی ہو یا پہلے اور دینے نہ دینے کا ظن ہو یا شک۔	۳	۸۰۰

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	قاعدہ ۸: اس نے تیمم یا نماز سے پہلے یا نماز میں یا اس کے بعد مانگا اور اس نے انکار کر کے اصلاً نہ دیا یا وقت گزرنے پر دیا یا وقت ہی میں مگر نماز کے بعد دیا خواہ تیمم سے نماز پڑھتے دیکھا یا نہیں بہر حال نماز ہو گئی خواہ اطلاع کبھی ہوئی اور ظن ہوا یا شک۔	۴	۸۰۰
	قاعدہ ۹: نہ اس نے مانگا نہ اس نے وقت میں دیا نہ بعد مگر نماز میں خواہ		
۱۹۹	اس سے پہلے پانی پر مطلع ہو کر اسے ظن غالب ہوا تھا کہ مانگے سے دے دے گا نماز نہ ہوئی پھر پڑھے۔	۵	۸۰۰
	قاعدہ ۱۰: صورت مذکورہ میں اسے دینے کا گمان نہ ہوا بلکہ نہ دینے کا ظن غالب یا شک تھا تو نماز ہو گئی۔	۶	۸۰۰
	قاعدہ ۱۱: خود یا اس کے مانگنے پر کہا پانی ختم ہو چکا پہلے کہتے تو دے		
۲۰۱	دیتا پھر نماز ختم ہونے سے پہلے دے دیا یہ بدستور موثر ہے وضو کر کے نماز پڑھے یا پھیرے کبھی مطلع ہوا اور کوئی ظن یا شک کیا۔	۱	۸۰۱

Serial No.	Titles (Rule Descriptions)	Rule No.	Page No.
202	Rule 12: Said this and did not provide water at all, or after the time, whether within the time or after prayer, being informed of the prayer or without being informed, gave it; it is absolutely not effective on those tayammums, prayer is valid, however if he gives water then for the future he should perform wudu.	2	801
203	Rule 13: Promised to give after the time but gave within the time before the prayer ended, then the ruling is like Rule 11.	3	801
204	Rule 14: In this type of promise, if water was not given before the end of prayer, the ruling and detail is like Rule 12.	4	801
205	Rule 15: It has not been spent yet and remains in the ownership of the giver, but he forbade it; there are hundreds of scenarios in this, however, the ruling is that its use has now become unlawful, perform tayammum.	1	802
206	Rule 16: Promised and then refused; if the promise was before tayammum due to which tayammum had become unlawful, now by refusing it becomes lawful; and if the promise was after tayammum, then tayammum is broken, refusal will not rejoin it, perform tayammum again. Similarly, if he promised during prayer, both prayer and tayammum are gone, refusal will not bring them back; then perform tayammum and repeat the prayer. And if the promise was after prayer, the prayer is complete, and this refusal has further strengthened its completion.	1	803
207	Rule 17: He had refused upon being asked for water, after that now he promised that he will give within the time; if this promise is before tayammum, then tayammum becomes unlawful; and if it's after tayammum, it's broken; and if it's during prayer, then both prayer and tayammum are gone. In any case, wait until the end of time; if water is found, perform wudu and pray; if not found and he sees time is passing, then perform tayammum and pray, then repeat it. And if after refusal this promise was made after having prayed, the prayer is valid, it has no effect on it.	2	803

Serial No.	Titles (Rule Descriptions)	Rule No.	Page No.
208	Rule 18: He remained silent upon being asked and then refused; prayer and tayammum are all valid, whether refusal was after prayer or before.		
209	Rule 19: After silence upon being asked, he promised to give within the time; if this promise is before tayammum or after it before prayer, or during prayer, or after prayer but in a state where he did not see him praying with tayammum, then in these cases this promise is effective: it nullifies or prevents tayammum, and invalidates or interrupts prayer. And if he was informed of him praying with tayammum and still remained silent, and then promised after that, the prayer is valid.	4	803

क्रम संख्या	विषय (नियम विवरण)	नियम संख्या	पृष्ठ संख्या
202	नियम 12: ऐसा ही कहा और पानी बिल्कुल नहीं दिया या समय बीतने के बाद, चाहे समय के भीतर या नमाज़ के बाद नमाज़ की जानकारी होने पर या बिना जानकारी के दिया, तो उन तयम्मुम पर इसका कोई असर नहीं पड़ेगा, नमाज़ हो गई; हाँ, अगर पानी दे दे तो भविष्य के लिए वुज़ू करे।	2	801
203	नियम 13: समय के बाद देने का वादा किया लेकिन समय के भीतर नमाज़ खत्म होने से पहले दे दिया, तो हुक्म नियम 11 जैसा है।	3	801
204	नियम 14: इस प्रकार के वादे में अगर नमाज़ खत्म होने से पहले पानी नहीं दिया, तो हुक्म और विवरण नियम 12 जैसा है।	4	801
205	नियम 15: अभी खर्च नहीं हुआ और देने वाले के मालिकाना हक़ में ही है कि उसने मना कर दिया; इसमें सैकड़ों स्थितियाँ हैं, बहरहाल हुक्म यही है कि अब उसका उपयोग नाजायज़ हो गया है, तयम्मुम करे।	1	802
206	नियम 16: वादा करके मना कर दिया; अगर वादा तयम्मुम से पहले था जिसके कारण तयम्मुम नाजायज़ हो गया था, तो अब मना करने से जायज़ हो गया। और अगर तयम्मुम के बाद वादा था, तो तयम्मुम टूट गया, मना करना उसे वापस नहीं जोड़ पाएगा, दोबारा तयम्मुम करे। इसी तरह अगर नमाज़ के बीच में वादा किया, तो नमाज़ और तयम्मुम दोनों गए, मना करना उन्हें वापस नहीं लाएगा; फिर तयम्मुम करके नमाज़ दोबारा पढ़े। और अगर वादा नमाज़ के बाद था, तो नमाज़ पूरी हो गई और इस मनाही ने उसके पूरा होने को और मज़बूत कर दिया।	1	803
207	नियम 17: पानी माँगने पर मना कर दिया था, उसके बाद अब वादा कर लिया कि समय के भीतर दे देगा; अगर यह वादा तयम्मुम से पहले है तो तयम्मुम नाजायज़ हो गया, और अगर तयम्मुम के बाद है तो टूट गया, और अगर नमाज़ के बीच में है तो नमाज़ और तयम्मुम दोनों गए। बहरहाल	2	803

क्रम संख्या	विषय (नियम विवरण)	नियम संख्या	पृष्ठ संख्या
	आखिरी समय तक इंतज़ार करे; अगर पानी मिल जाए तो वुज़ू करके नमाज़ पढ़े; अगर न मिले और समय निकलता देखे तो तयम्मुम करके पढ़ ले, फिर उसे दोबारा पढ़े। और अगर मना करने के बाद यह वादा नमाज़ पढ़ लेने के बाद किया, तो नमाज़ हो गई, इसका उस पर कोई प्रभाव नहीं है।		
208	नियम 18: माँगने पर चुप रहा फिर मना कर दिया; नमाज़ और तयम्मुम सब जायज़ हैं, चाहे मना करना नमाज़ के बाद हो या पहले।		
209	नियम 19: माँगने पर खामोश रहने के बाद समय के भीतर देने का वादा कर लिया; अगर यह वादा तयम्मुम से पहले या उसके बाद नमाज़ से पहले या नमाज़ के बीच में है, या नमाज़ के बाद है लेकिन इस स्थिति में कि उसने उसे तयम्मुम से नमाज़ पढ़ते नहीं देखा, तो इन स्थितियों में यह वादा प्रभावी है: यह तयम्मुम को तोड़ने वाला या रोकने वाला और नमाज़ को बातिल करने वाला या काटने वाला है। और अगर उसे तयम्मुम से नमाज़ पढ़ने का पता चला फिर भी चुप रहा, उसके बाद वादा किया, तो नमाज़ हो गई।	4	803

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۲۰۲	قاعدہ ۱۲: یہی کہا اور پانی اصلاً نہ دیا یا بعد وقت خواہ وقت میں یا بعد نماز نماز پر مطلع ہو کر یا بے اطلاع دیا انہیں تیمموں پر مطلقاً مؤثر نہیں نماز ہو گئی ہاں پانی دے دے تو آئندہ کے لیے وضو کرے۔	۲	۸۰۱
۲۰۳	قاعدہ ۱۳: وعدہ وقت کے بعد دینے کا کیا مگر وقت میں نماز ختم ہونے سے پہلے دے دیا تو حکم مثل قاعدہ ۱۱ ہے۔	۳	۸۰۱
۲۰۴	قاعدہ ۱۴: اسی قسم کے وعدہ میں پانی ختم نماز سے پہلے نہ دیا تو حکم و تفصیل مثل قاعدہ ۱۲ ہے۔	۴	۸۰۱
۲۰۵	قاعدہ ۱۵: ابھی خرچ نہ ہوا اور دینے والے کی ملک پر باقی ہے کہ اس نے منع کر دیا اس میں صدہا صورتیں ہیں بہر حال حکم یہی ہے کہ اب اس کا استعمال ناجائز ہو گیا تیمم کرے۔	۱	۸۰۲

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	قاعدہ ۱۶: وعدہ کر کے انکار کر دیا اگر وعدہ تیمم سے پہلے تھا جس کے باعث تیمم ناجائز ہو گیا تھا اب انکار کر دینے سے جائز ہو گیا اور اگر تیمم کے بعد وعدہ تھا تو تیمم ٹوٹ گیا انکار اسے جوڑ نہ دے گا دوبارہ تیمم کرے	۱	۸۰۳
۲۰۶	یوں ہی اگر عین نماز میں وعدہ کیا نماز و تیمم دونوں گئے انکار انہیں پھیر نہ لائے گا پھر تیمم کر کے نماز پھیرے اور اگر وعدہ بعد نماز تھا نماز پوری ہو گئی اور اس انکار نے اس کے پورا ہو جانے کو اور مضبوط کر دیا۔		
	قاعدہ ۱۷: پانی مانگنے پر انکار کر دیا تھا اس کے بعد اب وعدہ کر لیا کہ وقت میں دے گا اگر یہ وعدہ تیمم سے پہلے ہے تو تیمم ناجائز ہو گیا اور تیمم کے بعد ہے تو ٹوٹ گیا اور عین نماز میں ہے تو نماز و تیمم دونوں گئے بہر		
۲۰۷	حال آخر وقت تک انتظار کرے اگر پانی مل جائے تو وضو کر کے نماز پڑھے نہ ملے اور وقت جاتا دیکھے تو تیمم کر کے پڑھ لے پھر پھیرے اور اگر بعد انکار یہ وعدہ نماز پڑھ لینے کے بعد کیا تو نماز ہو گئی اس پر اس کا کچھ اثر نہیں۔	۲	۸۰۳
۲۰۸	قاعدہ ۱۸: مانگنے پر خاموش ہو رہا پھر انکار کر دیا نماز و تیمم سب جائز ہیں انکار بعد نماز کیا ہو خواہ پہلے۔		
	قاعدہ ۱۹: سوال پر سکوت کے بعد وقت میں دینے کا وعدہ کر لیا اگر یہ وعدہ		
۲۰۹	تیمم سے پہلے یا اس کے بعد نماز سے پہلے یا عین نماز میں ہے یا نماز کے بعد مگر اس حال میں کہ اسے تیمم سے نماز پڑھتے نہ دیکھا تو ان صورتوں	۴	۸۰۳

میں یہ وعدہ مؤثر ہے تیمم کا ناقض یا مانع اور نماز کا مبطل یا قاطع اور اگر تیمم سے نماز پڑھنے پر مطلع ہو ا جب بھی ساکت رہا اس کے بعد وعدہ کیا تو نماز ہو گئی۔

Fatawa Razawiyya Volume 4

Serial No.	Titles/Topics	Benefit No.	Page No.
210	Issue: One who is in need of a bath (ghusl) and also has an occurrence requiring wudu (minor ritual impurity), for example, someone who slept and then had a nocturnal emission, or urinated after ejaculation, and the situation is such that they cannot bathe but can perform wudu, yet water is only sufficient for wudu; or bathing is harmful but wudu is not; or they woke up so late in the morning that if they only perform wudu they will join the prayer, but not if they bathe – in all these cases, the ruling is to not perform wudu at all and only perform tayammum. That tayammum will suffice for both major and minor ritual impurities.	1	804
211	Issue: Tayammum due to shortage of time is the position (madhhab) of Imam Zufar; further support for this from reliable books.	2	804
212	Issue: Water and soil cannot be combined in a single state of purification. For instance, if wudu is required and water is just enough to wash all parts once but a portion of one foot remains unwashed, then one should not wash anything and only perform tayammum. Similarly, if a bath is required and water is only sufficient for wudu, one should not perform wudu; or if it's enough to wash the entire body except for a space of a few fingers, one should still not wash anything and only perform tayammum.	3	804
213	Issue: Every ritual impurity, whether small or large, comes all at once and leaves all at once; it does not happen in fragments.	4	804
214	Issue: If most of the organs of wudu are injured, only perform tayammum. Similarly, in a bath, if water cannot be poured on most of the body, then do not pour it even on parts where it could be poured; perform only tayammum.	5	804
215	Issue: If someone performed wudu or ghusl and some part remained dry and the water finished, they should perform	6	804

Serial No.	Titles/Topics	Benefit No.	Page No.
	tayammum. This tayammum will be their state of purification; whatever part of the body was washed became useless. I say: That is to say, the ritual impurity was not lifted and the prayer was not valid, otherwise, the obligation was certainly dropped from the parts where water had passed. To the extent that if, for example, a hand-span area was left in a bath and tayammum was performed, if later enough water is found to flow over that hand-span area, the tayammum will break. And when water is poured there, the entire ghusl will be completed by that much. Likewise in wudu, if no new ritual impurity occurred after that washing.		
216	Issue: A person in a state of major ritual impurity (junub) had only enough water for wudu and performed only tayammum as per the ruling. Now, if any minor ritual impurity occurs, they should perform wudu; the previous tayammum cannot suffice for the subsequent ritual impurity.	5	806

फ़तावा रज़विया जिल्द 4

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
210	मसला: जिसे नहाने की ज़रूरत हो और उसके साथ कोई ऐसा कार्य भी हुआ हो जिससे वुज़ू टूटता है (हदस), मसलन सोया फिर एहतलाम (स्वप्नदोष) हुआ या इंजाल के बाद पेशाब किया और स्थिति यह हो कि नहा नहीं सकता और वुज़ू कर सकता है, मगर पानी सिर्फ़ वुज़ू के लायक मौजूद है; या नहाना हानिकारक है वुज़ू में नुक़सान नहीं; या सुबह को इतने कम समय में उठा कि सिर्फ़ वुज़ू करके नमाज़ मिल जाएगी, नहाने से नहीं मिलेगी – तो इन सब सूरतों में हुक्म है कि वुज़ू बिल्कुल न करे सिर्फ़ तयम्मुम करे, वही जनाबत (बड़ी नापाकी) और हदस (छोटी नापाकी) दोनों के लिए काफ़ी हो जाएगा।	1	804
211	मसला: समय की कमी के लिए तयम्मुम इमाम ज़ुफ़र का मज़हब है; विश्वसनीय किताबों से इसका और समर्थन।	2	804
212	मसला: एक ही पाकी (शुद्धि) में पानी और मिट्टी जमा नहीं हो सकते। मसलन वुज़ू की ज़रूरत है और पानी इतना है कि पूरा वुज़ू एक-एक बार हो जाएगा लेकिन एक पैर का हिस्सा बच रहेगा, तो कुछ भी न धोए सिर्फ़ तयम्मुम करे। इसी तरह नहाने की ज़रूरत में पानी केवल वुज़ू के योग्य हो तो वुज़ू न करे; या पूरे शरीर को धोने के योग्य हो मगर कुछ उंगलियों जितनी जगह बाकी रह जाए, तब भी कुछ न धोए सिर्फ़ तयम्मुम करे।	3	804
213	मसला: हर हदस (नापाकी) चाहे छोटी हो या बड़ी, एक साथ आती है और एक साथ जाती है, इसके टुकड़े नहीं होते।	4	804
214	मसला: अगर वुज़ू के ज़्यादातर अंग ज़ख्मी हों तो सिर्फ़ तयम्मुम करे। इसी तरह नहाने में अगर शरीर के ज़्यादातर हिस्से पर पानी नहीं डाल सकता, तो जितने पर डाल सकता है उस पर भी न डाले, सिर्फ़ तयम्मुम करे।	5	804
215		6	804

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
216	मसला: वुज़ू किया या नहाया और कुछ जगह बाकी रह गई और पानी खत्म हो गया तो तयम्मुम करे, यही तयम्मुम उसकी पाकी होगी; जितना शरीर धोया था वह बेकार हो गया। अक़ूल (मैं कहता हूँ): यानी इससे हदस दूर नहीं हुआ और नमाज़ जायज़ नहीं हुई, वरना जितने शरीर पर पानी गुज़र गया उस पर से फ़र्ज़ ज़रूर साक़ित (समाप्त) हो गया। यहाँ तक कि अगर मिसाल के तौर पर नहाने में एक बालिश्त (हथेली भर) जगह बच रही थी और तयम्मुम किया, अब अगर इतना पानी मिले कि उस बालिश्त भर जगह पर बह सके तो तयम्मुम टूट जाएगा और जब वहाँ पानी बहा लेगा तो उतने से ही पूरा ग़ुस्ल (स्नान) उतर जाएगा। इसी तरह वुज़ू में भी, अगर उस धोने के बाद नया हदस न हुआ हो। मसला: जुनूब (बड़ी नापाकी की अवस्था वाला) के पास सिर्फ़ वुज़ू के लायक पानी था और उसने हुक्म के मुताबिक़ केवल तयम्मुम कर लिया। अब अगर कोई (छोटा) हदस पेश आया तो वुज़ू करे; पिछला तयम्मुम बाद वाले हदस में काम नहीं दे सकता।	5	806

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۲۱۰	مسئلہ: جسے نہانے کی حاجت ہو اور اس کے ساتھ کوئی حدث موجب وضو بھی ہو مثلاً سویا پھر احتلام ہوا یا انزال کے بعد پیشاب کیا اور حالت یہ ہو کہ نہا نہیں سکتا اور وضو کرسکتا ہے مگر پانی صرف وضو کے لائق موجود ہے یا نہانا مضر ہے وضو میں ضرر نہیں یا صبح کو اتنے تنگ وقت میں اٹھا کہ فقط وضو کرکے نماز مل جائے گی نہانے سے نہ ملے گی تو ان سب صورتوں میں حکم ہے کہ وضو اصلاً نہ کرے صرف تیمم کرے وہی جنابت وحدث دونوں کیلئے کافی ہوجائے گا۔	۱	۸۰۴
۲۱۱	مسئلہ: تنگی وقت کے لئے تیمم کہ مذہب امام زفر ہے معتمد کتابوں سے اس کی تائید مزید۔	۲	۸۰۴
۲۱۲	مسئلہ: ایک طہارت میں پانی اور مٹی جمع نہیں ہو سکتے مثلاً وضو کی حاجت ہے اور پانی اتنا ہے کہ سارا وضو ایک ایک بار ہو جائے گا ایک پاؤں کا حصہ بچ رہے گا تو کچھ نہ دھوئے صرف تیمم کرے، یونہی نہانے کی حاجت میں پانی فقط وضو کے قابل ہو وضو نہ کرے یا سارا بدن دھولینے کے قابل ہو مگر چند انگل جگہ باقی رہ جائے گی جب بھی کچھ نہ دھوئے صرف تیمم کرے۔	۳	۸۰۴
۲۱۳		۴	۸۰۴

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: ہر حدث چھوٹا ہو یا بڑا، آتا ہے تو ایک ساتھ، جاتا ہے تو ایک ساتھ، اس میں ٹکڑے نہیں۔		
	مسئلہ: اکثر اعضائے وضو زخمی ہیں صرف تیمم کرے، یونہی نہانے میں		
۲۱۴	اکثر بدن پر پانی نہیں ڈال سکتا تو جتنے پر ڈال سکتا ہے اس پر بھی نہ ڈالے فقط تیمم کرے۔	۵	۸۰۴
۲۱۵	مسئلہ: وضو کیا یا نہایا اور کچھ جگہ باقی رہ گئی اور پانی ختم ہو چکا تیمم کرے یہ تیمم ہی اس کی طہارت ہوگا جتنا بدن دھویا تھا بیکار ہو گیا۔ اقول: یعنی اس سے رفع حدث نہ ہوا نماز جائز نہ ہوئی ورنہ جتنے بدن پر پانی گزر گیا اس پر سے فرض ضرور ساقط ہو گیا یہاں تک کہ اگر مثلاً نہانے میں ایک بالشت جگہ بچ رہی تھی اور تیمم کیا اب جو اتنا پانی ملے گا کہ اس بالشت بھر جگہ پر بہہ سکے تیمم ٹوٹ جائے گا اور جب وہاں اسے بہا لے گا اسی قدر سے پورا غسل اتر جائے گا یوں ہی وضو میں اگر اس دھونے کے بعد حدثِ جدید نہ ہوا ہو۔	۶	۸۰۴
	مسئلہ: جنب کے پاس صرف وضو کے قابل پانی تھا اور اس نے حسب الحکم		
۲۱۶	فقط تیمم کر لیا اب کوئی حدث واقع ہوا تو وضو کرے اگلا تیمم بعد کے حدث میں کام نہیں دے سکتا۔	۵	۸۰۶

Fatawa Rizvia, Volume 4

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page No.
217	Issue: During bathing, a certain part was left unwashed and no water remained. One should perform tayammum. After this, if minor ritual impurity (hadath) occurs, another tayammum should be performed for it, just as wudu becomes mandatory if impurity occurs after bathing.	1	807
218	Issue: One bathed and, for example, the back was left dry, and water finished. Now some water is found sufficient to wash half the back, it is appropriate to wash it, as the less the state of 'janabat' (major ritual impurity) remains, the better; in the future, even a little water will suffice.	3	808
219	Issue: During bathing, for example, a part of the back and the wudu organs remained unwashed, so tayammum was performed. Now enough water is available to either wash the back or perform wudu; the person has a choice. It is better to perform wudu because both Sunnah and Fard (obligatory) acts are fulfilled in it.	4	808
220	Issue: If a person in a state of janabat (major ritual impurity) performs wudu, those parts of the body will be purified as long as no new minor impurity occurs. Now, even if water is found, washing those parts again will not be necessary; washing the rest of the body will remove the janabat. Their purification means just that, not that actions forbidden for a 'junub' (person in major impurity) become permissible. One cannot touch the Quran even if the hands are washed, cannot recite the Quran even if the tongue is washed, and cannot enter a mosque even if the feet are washed. All these things only become permissible when the full ghusl (ritual bath) is completed. If even a hair's breadth remains unwashed, none of these actions can be performed.	3	814
221	Issue: A person in janabat bathed and some part of the back remained dry when water ran out. Then a minor impurity (hadath) occurred. One tayammum is performed for both.	6	822

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page No.
	After this, if enough water is found for both wudu and the remaining part of the bath, then the tayammum is voided for both; one must perform wudu and wash the remaining part. If it is not enough for either, the tayammum remains valid for both. If it is enough for only one, tayammum is voided for that one, and the water should be used for it while tayammum remains valid for the other. If it is enough for each individually but not for both, then wash the remaining part of janabat and, according to Imam Muhammad, perform tayammum again for the minor impurity.		
222	Issue: If something whose presence would have prevented tayammum initially is found after performing tayammum, the tayammum will be invalidated. And if something whose presence would not have prevented tayammum is found after tayammum, it will not be an invalidator.	1	823

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा संख्या	पृष्ठ संख्या
217	मसला: नहाने में कुछ जगह बाकी रह गई और पानी न रहा, तो तैयममुम करे। इसके बाद अगर हदस (लघु अशुद्धता) हो तो उसके लिए दूसरा तैयममुम करे, जैसे नहाने के बाद हदस वाक़े होने पर वुज़ू करना लाज़िम होता है।	1	807
218	मसला: नहाया और मिसाल के तौर पर पीठ बाकी रह गई और पानी खत्म हो चुका, अब इतना पानी पाया कि आधी पीठ धो ले तो मुनासिब है कि धो ले कि जनाबत (महा अशुद्धता) जितनी कम हो बेहतर है, आइंदा थोड़ा ही पानी काफ़ी हो जाएगा।	3	808
219	मसला: नहाने में मिसाल के तौर पर पीठ का हिस्सा और वुज़ू के अंग बाकी रह गए और तैयममुम कर लिया, अब इतना पानी मिला कि चाहे पीठ धो ले चाहे वुज़ू कर ले, तो उसे इख़्तियार (विकल्प) है। बेहतर यह है कि वुज़ू करे क्योंकि इसमें सुन्नत और फ़र्ज़ दोनों की अदायगी है।	4	808
220	मसला: अगर जुनबी (महा अशुद्धता वाला) वुज़ू कर ले तो उन अंगों की पवित्रता हो जाएगी जब तक दोबारा कोई हदस न हो। अब अगर पानी मिले तब भी उन अंगों का धोना ज़रूरी न होगा, सिर्फ़ बाकी शरीर धोने से जनाबत दूर हो जाएगी। उनकी पवित्रता का मतलब यह है, न कि यह कि उन अंगों से वे काम जायज़ हो जाएं जो जुनबी के लिए मना थे। इस वुज़ू से वह कुरआन मजीद नहीं छू सकता हालाँकि हाथ धुल गए, कुरआन मजीद पढ़ नहीं सकता हालाँकि ज़बान धुल गई, मस्जिद में कदम नहीं रख सकता हालाँकि पाँव धुल गए। ये सब बातें उसी वक़्त जायज़ होंगी जब पूरा ग़ुस्ल (स्नान) कर ले। एक रोंगटा भी धोने से रह जाएगा तो इनमें से कुछ नहीं कर सकता।	3	814
221		6	822

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा संख्या	पृष्ठ संख्या
	मसला: जुनबी नहाया और पीठ का कुछ हिस्सा बाकी था कि पानी न रहा, अब हदस हुआ तो दोनों के लिए एक ही तैयममुम करे। इसके बाद अगर पानी इतना मिला कि वुज़ू और बाकी ग़ुस्ल दोनों के लिए काफ़ी है, तो यह तैयममुम दोनों के हक़ में टूट जाएगा; वुज़ू भी करे और बाकी ग़ुस्ल भी। और अगर किसी के लिए भी काफ़ी न हो तो तैयममुम दोनों के हक़ में बाकी है। और अगर किसी एक के लिए काफ़ी है तो उसके हक़ में तैयममुम टूटा, पानी उसमें खर्च करे, दूसरे के हक़ में तैयममुम बाकी है। और अगर उनमें से हर एक के लिए काफ़ी हो पर दोनों के लिए न हो सके, तो जनाबत का बाकी हिस्सा धोए और इमाम मोहम्मद के नज़दीक हदस का तैयममुम दोबारा करे।		
222	मसला: जिस चीज़ का होना तैयममुम से रोकने वाला था, अगर तैयममुम के बाद पाई जाएगी तो तैयममुम टूट जाएगा। और जिस चीज़ का होना तैयममुम से रोकने वाला न था, अगर बाद में पाई जाएगी तो वह तोड़ने वाली न होगी।	1	823

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۲۱۷	مسئلہ: نہانے میں کچھ جگہ رہ گئی اور پانی نہ رہا تیمّم کرے اس کے بعد اگر حدث ہو تو اس کے لئے دوسرا تیمّم کرے جیسے نہانے کے بعد حدث واقع ہو تو پھر وضو کرنا لازم ہوتا ہے۔	۱	۸۰۷
۲۱۸	مسئلہ: نہایا اور مثلاً پیٹھ باقی رہ گئی اور پانی ختم ہو چکا اب اتنا پانی پایا کہ نصف پیٹھ دھولے تو مناسب ہے کہ دھولے کہ جنابت جتنی کم ہو بہتر ہے آئندہ تھوڑا ہی پانی کافی ہو جائے گا۔	۳	۸۰۸
۲۱۹	مسئلہ: نہانے میں مثلاً پیٹھ کا حصہ اور اعضائے وضو باقی رہ گئے تیمّم کر لیا اب اتنا پانی ملا کہ چاہے پیٹھ دھولے چاہے وضو کر لے تو اسے اختیار ہے جس میں چاہے صرف کرے اور بہتر یہ کہ وضو کرے کہ اس میں سنت و فرض دونوں کی ادا ہے۔	۴	۸۰۸
۲۲۰	مسئلہ: اگر جنب وضو کر لے اتنے اعضا کی طہارت ہو جائے گی جب تک دوبارہ کوئی حدث نہ ہو، اب اگر پانی ملے جب بھی ان اعضاء کا دھونا ضرور نہ ہوگا صرف باقی بدن دھونے سے جنابت زائل ہو جائے گی، ان کی طہارت اسی معنی پر ہے نہ یہ کہ ان اعضاء سے وہ کام جائز ہو جائیں جو جنب کو ناجائز تھے اس وضو سے قرآن مجید نہیں چھو سکتا اگرچہ ہاتھ دھل گئے، قرآن مجید پڑھ نہیں سکتا اگرچہ زبان دھل گئی مسجد میں قدم نہیں رکھ سکتا	۳	۸۱۴

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	اگرچہ پاؤں دھل گئے یہ سب باتیں تو اسی وقت جائز ہوں گی جب پورا غسل کر لے ایک رونگٹا بھی دھونے سے رہ جائے گا تو ان میں سے کچھ نہیں کر سکتا۔		
۲۲۱	مسئلہ: جنب نہایا اور پیٹھ کا کچھ حصہ باقی تھا کہ پانی نہ رہا اب حدث ہوا دونوں کیلئے ایک ہی تیمّم کرے اس کے بعد اگر پانی اتنا ملا کہ وضو اور اس کا بقیہ دونوں کو کافی ہے تو یہ تیمّم دونوں کے حق میں ٹوٹ جائے گا وضو بھی کرے اور بقیہ بھی دھوئے اور کسی کو کافی نہ ہو تو تیمّم دونوں کے حق میں باقی ہے اور خاص ایک کو کافی ہے تو اس کے حق میں تیمّم ٹوٹا اس میں پانی صرف کرے دوسرے کے حق میں تیمّم باقی ہے اور اگر ان میں ہر ایک کو کافی ہو مگر دونوں نہ ہو سکیں تو جنابت کا بقیہ دھوئے اور امام محمد کے نزدیک حدث کا تیمّم دوبارہ کرے۔	۶	۸۲۲
۲۲۲	مسئلہ: جس چیز کا ہونا تیمّم سے مانع ہوا اگر بعد تیمّم پائی جائے گی تیمّم ٹوٹ جائے گا اور جس کا ہونا تیمّم سے مانع نہ ہوا اگر بعد تیمّم پائی جائے گی ناقض بھی نہ ہو گی۔	۱	۸۲۳

صفحہ 761 کا 683

Fatawa Razawiyya, Volume 4

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page
223	Ruling: If a thing exists at the time of performing Tayammum which would invalidate Tayammum if found later, the Tayammum will not be valid. And things which do not invalidate Tayammum, their presence during Tayammum will not prevent its validity.	1	824
224	Ruling: A part of the back remained unwashed during Ghusl, then Hadath (minor impurity) occurred, and Tayammum was performed. Now, enough water is found to wash whichever part one wants, but it's not enough for both. In this case, the command was to wash the remaining part of Janabat (major impurity). If they acted contrary and performed Wudu, their Tayammum regarding Janabat is unanimously invalidated; they must perform Tayammum again.	2	824
225	Ruling: A person in a state of Janabat (Junub) hasn't washed any limb or performed Tayammum yet when Hadath occurs. Now, whether they bathe or perform Tayammum, both Janabat and Hadath will be removed by either act. However, if the Junub has already washed the limbs of Wudu but Janabat remains on the rest or part of the body, and then Hadath occurs, washing only that part which remained will complete the Ghusl, but Hadath won't be removed. For that, one must perform Wudu, or Tayammum if water is unavailable.	3	825
226	Ruling: Water is a specific purifier, meaning it only purifies the area it passes over. However, soil is a comprehensive purifier because, in Tayammum, passing hands over just the face and both hands purifies the whole body.	4	825
227	Ruling: Although soil is a comprehensive purifier, when a distinct Hadath exists alongside Janabat in an area not covered by Janabat, Tayammum will only purify the state for which the condition (inability to use water) is met. For example, if a Junub performed Wudu but Janabat remains on the rest or part of the body, then Hadath occurs, and they perform Tayammum for	5	825

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page
	Janabat: if there's no water even for Wudu, both Janabat and Hadath are removed by Tayammum. But if water is available for Wudu but not for the remaining Janabat, then Tayammum only removes Janabat; performing Wudu for Hadath is necessary because this Hadath is separate from the site of Janabat, thus it cannot be subordinate to it.		
228	Ruling: Tayammum was done for Janabat, then Hadath occurred and Wudu was done. Then water for bathing was found but they didn't bathe, so Janabat returned, but the purity of the Wudu organs remained.	1	826
229	Ruling: In the mentioned case, if Hadath occurs again after Janabat returns, whether before or after performing Tayammum for Janabat again, and water for Wudu is found, one must perform Wudu. This Tayammum for Janabat will not remove that Hadath because it's in a separate location and not subordinate to Janabat.	2	826

फतवा रज़विया, खंड 4

क्रम संख्या	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ
223	मसला: जिस चीज़ के पाए जाने से तयम्मुम टूट जाता है, अगर तयम्मुम के समय वह मौजूद थी तो तयम्मुम सही न होगा। और जिससे तयम्मुम नहीं टूटता, उसका तयम्मुम के समय होना मना नहीं करेगा।	1	824
224	मसला: नहाने में पीठ का हिस्सा रह गया, फिर हदथ (अशुद्धि) हुई और तयम्मुम किया। अब इतना पानी मिला कि जिसे चाहे धो ले, दोनों के लिए पर्याप्त नहीं। इस स्थिति में उसे हुक्म था कि जनाबत का शेष हिस्सा धो ले। अगर उसने इसके विपरीत वुज़ू कर लिया तो उसका तयम्मुम जनाबत के हक़ में भी सर्वसम्मति से टूट गया, दोबारा तयम्मुम करे।	2	824
225	मसला: जुनुब (बड़ी अशुद्धि की स्थिति में व्यक्ति) ने अभी कोई अंग नहीं धोया और न ही तयम्मुम किया था कि हदथ हो गया। अब चाहे वह नहाए या तयम्मुम करे, प्रत्येक से जनाबत और हदथ दोनों समाप्त हो जाएंगे। लेकिन अगर जुनुब वुज़ू के अंग धो चुका है और बाकी पूरे या कुछ शरीर में जनाबत बाकी है, उसके बाद हदथ हुआ, तो अब जितना शरीर जनाबत में धोने से रह गया था, उतना ही धोने से ग़ुस्ल पूरा हो जाएगा, मगर हदथ दूर नहीं होगा। उसके लिए वुज़ू करे या पानी न रहने पर तयम्मुम।	3	825
226	मसला: पानी सीमित शोधक है, यानी वह जितनी जगह से गुज़रेगा उतने को ही पाक (शुद्ध) करेगा। मगर मिट्टी व्यापक शोधक है कि तयम्मुम में हाथ सिर्फ चेहरे और दोनों हाथों पर गुज़रने से पूरा शरीर पाक हो जाता है।	4	825
227	मसला: मिट्टी यद्यपि व्यापक शोधक है, लेकिन जब जनाबत के साथ स्वतंत्र हदथ मौजूद हो जिसका स्थान जनाबत के घेरे में नहीं है, तो उनमें तयम्मुम उसी के लिए शोधक होगा जिसके लिए पानी की कमी की शर्त पूरी हो, अन्यथा नहीं। उदाहरण के लिए, जुनुब ने वुज़ू कर लिया, बाकी शरीर पूरा या कुछ बाकी रहा, फिर हदथ हुआ। अब जनाबत के लिए तयम्मुम किया। अगर वुज़ू के लायक भी	5	825

क्रम संख्या	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ
	पानी नहीं है, तो तयम्मुम से जनाबत और हदथ दोनों दूर हो जाएंगे। और अगर वुज़ू के लायक पानी मौजूद है लेकिन शेष जनाबत के लायक नहीं, तो तयम्मुम सिर्फ जनाबत को दूर करेगा, हदथ के लिए वुज़ू करना अनिवार्य होगा क्योंकि यह हदथ जनाबत के स्थान से अलग है, इसलिए उसका अधीनस्थ नहीं हो सकता।		
228	मसला: जनाबत के लिए तयम्मुम किया फिर हदथ हुआ, वुज़ू किया फिर नहाने का पानी पाया और नहीं नहाया तो जनाबत लौट आई, मगर वुज़ू के अंगों की पाकी (शुद्धता) नहीं गई।	1	826
229	मसला: उक्त स्थिति में, जनाबत लौटने के बाद अगर फिर हदथ हो, चाहे दोबारा तयम्मुम जनाबत से पहले हो या बाद में, और वुज़ू के लायक पानी पाए, तो हर हाल में वुज़ू करना होगा। यह तयम्मुम जनाबत उस हदथ को दूर नहीं करेगा क्योंकि यह हदथ अलग स्थान पर है, जनाबत के अधीनस्थ नहीं।	2	826

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: جس چیز کے پائے جانے سے تیمم ٹوٹ جاتا ہے اگر تیمم کے وقت وہ		
۲۲۳	موجود تھی تیمم صحیح نہ ہوگا اور جس سے تیمم نہیں ٹوٹتا وہ اگر وقتِ تیمم ہو منع نہ کرے گی۔	۱	۸۲۴
	مسئلہ: نہانے میں پیٹھ کا حصہ رہ گیا پھر حدث ہوا اور تیمم کیا اب پانی اتنا ملا کہ ان میں جسے چاہے دھوئے دونوں کو کافی نہیں اس صورت میں اسے حکم		
۲۲۴	تھا کہ جنابت کا بقیہ دھو لے اگر اس نے ان کا خلاف کرکے وضو کر لیا تو وہ تیمم جنابت کے حق میں بھی بالاتفاق ٹوٹ گیا دوبارہ تیمم کرے۔	۲	۸۲۴
	مسئلہ: جنب نے ابھی کوئی عضو نہ دھویا نہ تیمم کیا کہ حدث ہوا اب نہائے خواہ تیمم کرے ہر ایک سے جنابت وحدت دونوں زائل ہو جائیں گے لیکن اگر جنب اعضائے وضو دھو چکا اور باقی کل یا بعض بدن میں جنابت باقی ہے اس		
۲۲۵	کے بعد حدث ہوا اب جتنا بدن جنابت میں دھونے سے رہ گیا تھا اتنا ہی دھونے سے غسل اتر جائے گا مگر حدث نہ زائل ہوگا اس کیلئے وضو کرے یا پانی نہ رہے تو تیمم۔	۳	۸۲۵
	مسئلہ: پانی مطہر مقطر ہے یعنی جتنی جگہ گزرے گا اسی قدر کو پاک کرے		
۲۲۶	گا مگر مٹی مطہر شامل ہے کہ تیمم میں ہاتھ صرف چہرہ و ہر دو دست پر گزرنے سے سارا بدن پاک ہو جاتا ہے۔	۴	۸۲۵

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۲۲۷	مسئلہ: مٹی اگر چہ مطہر شامل ہے مگر جب جنابت کے ساتھ مستقل حدث موجود ہو جس کے محل کو جنابت محیط نہیں تو ان میں تیمم اسی کیلئے مطہر ہو گا جس میں اس کی شرط یعنی پانی سے عجز متحقق ہو ورنہ نہیں مثلاً جنب نے وضو کر لیا باقی بدن کل یا بعض باقی رہا پھر حدث ہوا اب جنابت کیلئے تیمم کیا اگر وضو کے قابل بھی پانی نہیں تو تیمم سے جنابت وحدت دونوں اتر جائیں گے اور اگر وضو کے لائق پانی موجود ہے بقیہ جنابت کے لائق نہیں تو تیمم صرف جنابت کو زائل کرے گا حدث کیلئے وضو کرنا لازم ہو گا کہ یہ حدث محلِ جنابت سے جدا ہے لہٰذا اس کا تابع نہیں ہو سکتا۔	۵	۸۲۵
۲۲۸	مسئلہ: جنابت کے لئے تیمم کیا پھر حدث ہوا وضو کیا پھر نہانے کا پانی پایا اور نہ نہایا تو جنابت لوٹ آئی مگر اعضائے وضو کی طہارت نہ گئی۔	۱	۸۲۶
۲۲۹	مسئلہ: صورتِ مذکورہ میں جنابت لوٹ آنے کے بعد اگر اسے پھر حدث ہو خواہ دوبارہ تیمم جنابت سے پہلے یا بعد اور وضو کے قابل پانی پائے بہر حال وضو کرنا ہو گا یہ تیمم جنابت اس حدث کو زائل نہ کرے گا کہ یہ حدث محلِ جدا میں ہے تابع جنابت نہیں۔	۲	۸۲۶

Fatawa Rizvia, Volume 4

Serial No.	Topics	Point No.	Page No.
230	Ruling: In this case, if water is not available for wudu and one performs tayammum for janabat, minor impurity (hadath) will also be removed. However, this is only until water for wudu is unavailable. If water for wudu becomes available but not enough for washing janabat, then wudu must be performed, while tayammum remains valid for janabat.	3	826
231	Ruling: When any part of the minor impurity (hadath) is separate from the area of major impurity (janabat), that hadath is independent and not subordinate to janabat. If water is available for that part, washing it is necessary. If not available for the other, tayammum will be done for it. If water is available for neither, one tayammum will suffice for both. However, this tayammum is apparently one but effectively two: one for janabat and one for hadath. If water becomes available for one of them, it will break for that one. If it remains unavailable for the other, it will remain valid for that.	4	826
232	Ruling: When janabat encompasses the entire area of hadath, that hadath is subordinate to janabat and has no independent ruling. Even if water is sufficient for wudu but not for ghusl, wudu is not required; only tayammum is sufficient. And after tayammum, even if water sufficient only for wudu is found, the tayammum will not be invalidated, nor will wudu be necessary.	5	826
233	Ruling: A person in a state of major ritual impurity (junub) performed tayammum, then minor ritual impurity (hadath) occurred. He hadn't performed wudu when water sufficient for bathing became available, but he didn't bathe. As a result, janabat returned and remained. He traveled more than a mile away from the water. Now, if he finds water only sufficient for wudu, wudu is not required.	6	826
234	Ruling: In the aforementioned case, even if multiple minor impurities occur after the return of janabat, that same tayammum for janabat will remove them all. Wudu will not be	1	827

Serial No.	Topics	Point No.	Page No.
235	needed. Yes, if after the return of janabat, tayammum or wudu was performed and then minor impurity occurred, then wudu will be mandatory. Ruling: A junub person prayed before performing tayammum, then hadath occurred. There is enough water for wudu; he should do wudu for the next prayer. Now, if he performs wudu, wears leather socks (khuffayn), then passes by water and leaves it without bathing, traveling a mile or more until he is without water again. Now it's prayer time and water for wudu is available; wudu is not needed, he should do tayammum for janabat. After this tayammum, if hadath occurs, he should do wudu. But now he cannot wipe (mash) over the socks; he must take them off and wash his feet because he is in a state of janabat, and wiping over socks is not allowed during janabat. Yes, if he didn't pass by water during this time which would make janabat return, then wiping over socks is permissible as long as its duration remains.	3	827

क्रमांक	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
230	मसला: इस स्थिति में यदि वज़ू के लिए भी पानी न मिले और जनाबत के लिए तयम्मुम करे, तो हदस (लघु अशुद्धि) भी दूर हो जाएगी। लेकिन यह तब तक है जब तक वज़ू के लायक पानी न मिले। यदि वज़ू के लिए पानी मिल जाए लेकिन जनाबत धोने (ग़ुस्ल) के लिए पर्याप्त न हो, तो वज़ू करना होगा, जबकि जनाबत के हक में तयम्मुम बना रहेगा।	3	826
231	मसला: जब हदस का कोई हिस्सा जनाबत के स्थान से अलग हो, तो वह हदस स्वतंत्र है, जनाबत के अधीन नहीं। जिसके लिए पानी उपलब्ध होगा उसे धोना अनिवार्य होगा। दूसरे के लिए उपलब्ध न होने पर उसके लिए तयम्मुम करेगा। और यदि किसी के लिए भी उपलब्ध नहीं है, तो दोनों के लिए एक तयम्मुम पर्याप्त होगा। लेकिन यह तयम्मुम स्पष्ट रूप से एक है पर अर्थ के लिहाज़ से दो तयम्मुम होंगे: एक जनाबत का और एक हदस का। इनमें से जिसके लिए पानी मिल जाएगा, उसके हक में वह टूट जाएगा। दूसरे के लिए न मिला तो उसके हक में बना रहेगा।	4	826
232	मसला: जब जनाबत हदस के पूरे स्थान को घेरे हुए हो, तो वह हदस जनाबत के अधीन है और उसका कोई स्वतंत्र नियम नहीं है। यदि पानी ग़ुस्ल के लिए पर्याप्त नहीं है और वज़ू के लिए पर्याप्त है, तब भी वज़ू की आवश्यकता नहीं है, केवल तयम्मुम पर्याप्त है। और तयम्मुम के बाद केवल वज़ू के लायक पानी मिलने पर भी न तो तयम्मुम जाएगा और न ही वज़ू अनिवार्य होगा।	5	826
233	मसला: एक जुनुब (बड़ी नापाकी वाला व्यक्ति) ने तयम्मुम किया, फिर हदस हुआ और उसने उसके लिए वज़ू नहीं किया था कि नहाने के लायक पानी मिला पर उसने नहीं नहाया, जिससे जनाबत वापस लौट आई और बनी रही। वह पानी छोड़कर एक मील से अधिक दूर चला गया। अब यदि पानी केवल वज़ू के लायक मिले, तो वज़ू की ज़रूरत नहीं है।	6	826

क्रमांक	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
234	मसला: उपर्युक्त स्थिति में जनाबत के वापस लौटने के बाद भी चाहे कितने ही हदस हों, वही जनाबत वाला तयम्मुम उन सबको दूर कर देगा। वज़ू की ज़रूरत नहीं होगी। हाँ, यदि जनाबत लौटने के बाद तयम्मुम या वज़ू कर लिया और फिर हदस हुआ, तो वज़ू अनिवार्य होगा।	1	827
235	मसला: एक जुनुब ने तयम्मुम से पहले नमाज़ पढ़ ली, फिर हदस हुआ और वज़ू के लायक पानी है; अगली नमाज़ के लिए वज़ू करे। अब यदि उसने वज़ू करके मोज़े पहन लिए, फिर पानी के पास से गुज़रा और बिना नहाए उसे छोड़कर एक मील या अधिक दूर चला गया कि फिर से पानी रहित हो गया। अब नमाज़ का समय आया और वज़ू के लिए पानी मौजूद है; वज़ू की ज़रूरत नहीं, जनाबत के लिए तयम्मुम करे। इस तयम्मुम के बाद यदि हदस हो तो वज़ू करे। और अब मोज़ों पर मसह नहीं कर सकता, मोज़े उतारकर पैर धोए, क्योंकि उसे जनाबत लगी है और जनाबत में मोज़ों का मसह नहीं होता। हाँ, यदि इस बीच वह ऐसे पानी के पास से नहीं गुज़रा जिससे जनाबत वापस लौटती, तो मसह मोज़ा जायज़ है जब तक उसकी अवधि शेष हो।	3	827

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۲۳۰	مسئلہ : اس صورت میں اگر وضو کے قابل بھی نہ ملے اور جنابت کیلئے تیمّم کرے حدث بھی اٹھ جائے گا مگر اسی وقت تک کہ وضو کے قابل پانی نہ ملے اگر ملے گا اور جنابت دھونے کے قابل نہ ہوگا تو وضو کرنا ہوگا جنابت کے حق میں تیمّم باقی رہے گا۔	۳	۸۲۶
۲۳۱	مسئلہ : جب حدث کا کوئی ذرہ محل جنابت سے جدا ہو تو وہ حدث مستقل ہے جنابت کا تابع نہیں جس کے قابل پانی موجود ہوگا اسے دھونا لازم ہوگا دوسرے کے قابل نہ ہوا تو اس کیلئے تیمّم کرے گا اور اگر کسی کے قابل نہیں تو دونوں کیلئے ایک تیمّم کافی تو ہوگا مگر یہ تیمّم ظاہراً ایک اور بلحاظ معنی دو تیمّم ہوں گے ایک جنابت کا ایک حدث کا ان میں جس کے قابل پانی پائے گا اس کے حق میں ٹوٹ جائے گا دوسرے کے قابل نہ ہوا تو اس کے حق میں باقی رہے گا۔	۴	۸۲۶
۲۳۲	مسئلہ : جنابت جبکہ تمام موضعِ حدث کو شامل ہو وہ حدث تابع جنابت ہے اس کیلئے کوئی مستقل حکم نہیں اگر پانی غسل کو کافی نہیں اور وضو کو کافی ہے جب بھی وضو کی حاجت نہیں صرف تیمّم کافی ہے اور تیمّم کے بعد صرف وضو کے قابل پانی ملا جب بھی تیمّم نہ جائے گا نہ وضو ضرور ہوگا۔	۵	۸۲۶
۲۳۳		۶	۸۲۶

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ : جنب نے تیمّم کیا پھر حدث ہوا اور اس کیلئے وضو نہ کیا تھا کہ پانی نہانے کے قابل ملا اور نہ نہایا جس سے جنابت عود کرکے باقی رہی اور پانی چھوڑ کر میل بھر سے زیادہ چلا گیا اور اب پانی صرف وضو کے قابل پایا وضو کی حاجت نہیں۔		
	مسئلہ : صورتِ مذکورہ میں بعد عودِ جنابت بھی کتنے حدث ہوں سب کو وہی		
۲۳۴	تیمّم جنابت رفع کر دے گا وضو کی حاجت نہ ہوگی۔ ہاں اگر جنابت عود کرنے کے بعد تیمّم یا وضو کر لیا اور پھر حدث ہوا تو وضو لازم ہوگا۔	۱	۸۲۷
	مسئلہ : جنب نے تیمّم سے پہلے نماز پڑھ لی پھر حدث ہوا اور وضو کے لائق پانی ہے آئندہ نماز کیلئے وضو کرے اب اگر اس نے وضو کر کے موزے پہن لیے پھر پانی پر گزرا اور بے نہائے چھوڑ کر ایک میل یا زیادہ چلا گیا کہ پھر بے آب ہو گیا اب نماز کا وقت آیا اور وضو کو پانی موجود ہے وضو کی		
۲۳۵	حاجت نہیں جنابت کیلئے تیمّم کرے اس تیمّم کے بعد اگر حدث ہو تو وضو کرے اور اب موزوں پر مسح نہیں کر سکتا، موزے اتار کر پاؤں دھوئے اس لیے کہ اسے جنابت لاحق ہے اور جنابت میں موزوں کا مسح نہیں ہاں اگر اس بیچ میں پانی پر نہ گزرا جس سے جنابت عود کرتی تو مسح موزہ جائز ہے جب تک اس کی مدت باقی ہو۔	۳	۸۲۷

Fatawa Rizvia, Volume 4

Serial No.	Titles / Topics	Benefit No.	Page
236	Problem: A person in a state of major ritual impurity (Junub) performed ablution (Wudu), then ritual impurity (Hadath) occurred again, and then they washed the entire limb except for one joint of one finger. In this case, although they will perform Tayammum (dry ablution) for Janabat (major impurity), if they find enough water for that joint, they must wash it; Tayammum will not suffice.	2	833
237	Problem: If a person in a state of Janabat also experiences minor ritual impurity (Hadath), and bathing is harmful but Wudu is not, then only Tayammum is sufficient. However, if they performed Tayammum and then ritual impurity occurred, performing Wudu will be necessary.	3	833
238	Problem: If a person in a state of minor impurity (Muhdith) finds only enough water to wash their face, hands, and feet once each, and wipe their head, but cannot wash them three times each, nor will there be enough left for rinsing the mouth or nose, then Tayammum is not permissible for them. They should perform Wudu to that extent; it will be complete. If they had performed Tayammum and then found this much water, the Tayammum would become invalid.	1	834
239	Problem: Whether it is minor ritual impurity (Hadath) or major impurity (Janabat), or both, one Tayammum with the intention of whichever one they choose is sufficient. There is no specific requirement to specify whether it is for removing minor or major impurity.	1	835
240	Problem: A person is traveling, needs Wudu, and has an amount of impurity on their clothes that prevents prayer, and the water is only enough to either perform Wudu or wash the impurity. It is mandatory for them to wash the impurity and perform Tayammum for the ritual impurity (Hadath).	1	846
241		7	848

Serial No.	Titles / Topics	Benefit No.	Page
	Problem: It is the mercy of Allah Almighty that He considers even a single penny of a needy servant. It is considered even to the point of kneading dough; if no water is left for kneading dough, perform Tayammum. If water for a clod (used for cleaning after ritual bathroom use) costs a 'paisa', do not spend even half a paisa more; perform Tayammum.		
242	Problem: If one needs to perform Wudu and wash away impurity, and the water is sufficient for only one, then wash the impurity and one has the choice for Tayammum for Hadath, whether they do it before washing the impurity, but it is more cautious to do it after. If they have already done it before, they should do it again after.	1	849

फ़तावा रज़विया, जिल्द चहारुम (भाग 4)

क्रम संख्या	शीर्षक / विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ
236	मसला: जुनुब (बड़ी नापाकी की हालत में व्यक्ति) ने वुज़ू किया फिर हदस (छोटी नापाकी) हुआ फिर सारा अंग धोया मगर एक उंगली का एक पोर छोड़ दिया, तो अगरचे जनाबत के लिए तयम्मुम करेगा मगर उस पोर के लायक पानी मिले तो उसे धोना ज़रूरी है, तयम्मुम काफ़ी न होगा।	2	833
237	मसला: जुनुब को हदस भी हुआ और नहाना नुक़सानदेह हो पर वुज़ू नुक़सानदेह न हो, तो सिर्फ़ तयम्मुम काफ़ी है लेकिन अगर तयम्मुम कर लिया फिर हदस हुआ तो वुज़ू ज़रूर होगा।	3	833
238	मसला: मुहदिस (बिना वुज़ू वाला) अगर इतना पानी पाए कि मुँह, हाथ, पाँव एक-एक बार धो ले, और सर का मसह कर ले, न तीन-तीन बार धो सकेगा न कुल्ली करने और नाक में पानी डालने को बचेगा, तो उसे तयम्मुम जायज़ नहीं हो सकता, इसी क़दर करे वुज़ू हो गया और अगर तयम्मुम से था और इतना पानी पाया तो तयम्मुम जाता रहा।	1	834
239	मसला: हदस हो या जनाबत या दोनों, एक तयम्मुम इनमें से जिसकी नियत से चाहे कर ले काफ़ी है, कुछ विशिष्टता ज़रूरी नहीं कि हदस-ए-असग़र (छोटा) दूर करता हो या अकबर (बड़ा)।	1	835
240	मसला: सफ़र में है वुज़ू की हाजत है और कपड़े पर नमाज़ रोकने वाली मात्रा के बराबर कोई नजासत है और पानी इतना है कि चाहे वुज़ू कर ले चाहे नजासत धो ले, उस पर लाज़िम है कि नजासत धोये और हदस के लिए तयम्मुम करे।	1	846
241	मसला: अल्लाह अज़्ज़वजल की रहमत कि मोहताज बंदे के एक-एक पैसे का लिहाज़ फ़रमाया, आटा गूँधने तक का लिहाज़ फ़रमाया कि आटा गूँधने को पानी न रहेगा तो तयम्मुम कर लो, ढेले का पानी पैसे को मिलता है तो धेला (आधा पैसा) ज़्यादा न दो तयम्मुम कर लो।	7	848

क्रम संख्या	शीर्षक / विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ
242	मसला: वुज़ू करना है और नजासत धोना और पानी एक ही को काफ़ी है तो नजासत धोये और हदस के लिए तयम्मुम का अख़्तियार है चाहे नजासत धोने से पहले करे मगर ज़्यादा एहतियात इसमें है कि बाद को करे और अगर पहले कर चुका है तो बाद को फिर कर ले।	1	849

نمبر شمار	عنوانات	صفحہ نمبر	فائدہ
۲۳۶	مسئلہ: جنب نے وضو کیا پھر حدث ہوا پھر سارا عضو دھویا مگر ایک انگلی کی ایک پور چھوڑ دی تو اگرچہ جنابت کے لیے تیمم کرے گا مگر اس پور کے قابل پانی ملے تو اسے دھونا ضرور ہے تیمم کافی نہ ہوگا۔	۸۳۳	۲
۲۳۷	مسئلہ: جنب کو حدث بھی ہوا اور نہانا مضر ہو وضو مضر نہ ہو تو صرف تیمم کافی ہے لیکن اگر تیمم کر لیا پھر حدث ہوا تو وضو ضرور ہوگا۔	۸۳۳	۳
۲۳۸	مسئلہ: محدث اگر اتنا پانی پائے کہ منہ ہاتھ پاؤں ایک ایک بار دھولے، اور سر کا مسح کر لے نہ تین تین بار دھو سکے گا نہ کلی کرنے اور ناک میں پانی ڈالنے کو بچے گا تو اسے تیمم جائز نہیں ہو سکتا اسی قدر کرے وضو ہو گیا اور اگر تیمم سے تھا اور اتنا پانی پایا تیمم جاتا رہا۔	۸۳۴	۱
۲۳۹	مسئلہ: حدث ہو یا جنابت یادونوں ایک تیمم ان میں سے جس کی نیت سے چاہے کر لے کافی ہے کچھ تخصیص ضرور نہیں کہ حدث اصغر رفع کرتا ہو یا اکبر۔	۸۳۵	۱
۲۴۰	مسئلہ: سفر میں ہے وضو کی حاجت اور کپڑے پر بقدر مانع نماز کوئی نجاست ہے اور پانی اتنا ہے کہ چاہے وضو کر لے چاہے نجاست دھولے، اس پر لازم ہے کہ نجاست دھوئے اور حدث کیلئے تیمم کرے۔	۸۴۶	۱

نمبر شمار	عنوانات	صفحہ نمبر	فائدہ
۲۴۱	مسئلہ: اللہ عزوجل کی رحمت کہ محتاج بندے کے ایک ایک پیسے کا لحاظ فرمایا آٹا گوندھنے تک کا لحاظ فرمایا کہ آٹا گوندھنے کو پانی نہ رہے گا تو تیمم کر لو ڈھیلے کا پانی پیسے کو ملتا ہے تو دھیلا زیادہ نہ دو تیمم کر لو۔	۸۴۸	۷
۲۴۲	مسئلہ: وضو کرنا ہے اور نجاست دھونا اور پانی ایک ہی کو کافی ہے تو نجاست دھوئے اور حدث کیلے تیمم کا اختیار ہے چاہے نجاست دھونے سے پہلے کرے مگر زیادہ احتیاط اس میں ہے کہ بعد کو کرے اور اگر پہلے کر چکا ہے تو بعد کو پھر کرلے۔	۸۴۹	۱

Fatawa Razawiya, Volume 4

Sr. No.	Topics	Benefit No.	Page
243	Mas'ala: Ablution is to be performed and a portion of ritual impurity (janabat) remains to be washed, and the available water is sufficient for only one action. Wash the part affected by ritual impurity, and it is mandatory to perform tayammum for the minor ritual impurity (hadath) after that. If tayammum was performed first, it will not be valid; perform it again after the water is used.	2	849

फ़तावा रज़विया, खंड 4

क्रम संख्या	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ
243	मसअला: वुज़ू करना है और जनाबत (अपवित्रता) का कुछ हिस्सा धोना बाकी है, और पानी केवल एक ही काम के लिए पर्याप्त है। जनाबत वाले हिस्से को धोएं और इसके बाद हदस (अशुद्धि) के लिए तयम्मुम करना अनिवार्य है। यदि पहले तयम्मुम कर लिया गया, तो वह जायज़ नहीं होगा; पानी खर्च होने के बाद फिर से करें।	2	849

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۲۴۳	مسئلہ: وضو کرنا ہے اور جنابت کا کچھ حصہ باقی ہے وہ بھی دھونا ہے اور پانی ایک ہی کے قابل ہے جنابت کا حصہ دھوئے اور لازم ہے کہ حدث کیلئے تیمّم اس کے بعد کرے پہلے کرلیا تو جائز نہ ہوگا پانی خرچ ہونے کے بعد دوبارہ کرے۔	۲	۸۴۹

Fatawa Ridawiyya - Volume 4

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
2	Issue: Verses or even entire Surahs that are purely supplication and praise, a person in ritual impurity (Junub) or menstruation (Haiz) can recite them without the intention of the Quran, but only with the intention of supplication and praise, like Al-Hamdu and Ayat al-Kursi.	4	222
3	Issue: Reciting a portion of a verse equal to a short verse with the intention of reciting the Quran is unanimously prohibited for a person in ritual impurity or menstruation.	1	223
4	Issue: The correct view is that even one letter is not permitted with the intention of reciting the Quran for a person in ritual impurity or menstruation.	4	223
5	Issue: With the intention of teaching, the Holy Quran remains the Quran; just this intention is not enough for a person in ritual impurity or menstruation.	3	226
6	Issue: It is forbidden for a person in ritual impurity to recite those verses of praise even with the intention of praise in which Allah Almighty has used first-person pronouns for Himself.	1	232
7	Issue: Regarding verses of supplication and praise that begin with 'Qul' (Say), a person in ritual impurity should recite them with the intention of supplication while omitting this word; otherwise, it is not permissible.	2	232
8	Issue: He/she is not permitted to use supplications containing Huroof-e-Muqatta'at (isolated letters).	2	232
9	Issue: Verses that are not purely supplication and praise cannot be recited by a person in ritual impurity or menstruation even with the intention of 'amal (spiritual practice).	6	232
10	Issue: Only with the intention of putting into practice ('amal), a person in ritual impurity or menstruation cannot recite even pure verses of supplication and praise.	6	232

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
11	Issue: For the purpose of 'Dam' (healing breath/incantation), a person in ritual impurity can only recite those pure verses of supplication and praise without the intention of the Quran, specifically with the intention of supplication and praise.	7	232
12	Issue: Only the intention of seeking healing cannot exclude the Holy Quran from being the Quran.	1	233
13	Issue: A person in ritual impurity cannot change the written Quran with their intention; for example, if Surah Al-Fatiha is written alone somewhere, and they intend that it is a supplication and touch it, this is not permissible.	5	233
14	Issue: It is permissible to recite verses of supplication and praise with the intention of supplication and praise; writing them should not be permitted. Even if the intention is only for supplication, a person in ritual impurity should not write any amulet (Taweez) with any intention if it contains Quranic verses.	6	233

फ़तावा रज़विया - जिल्द चौथी

क्रम संख्या	शीर्षक / विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
२	मसला: जो आयत बल्कि पूरी सूरत खालिस दुआ-ओ-सना (शुद्ध प्रार्थना और प्रशंसा) हो, जुनब (अशुद्ध अवस्था वाला व्यक्ति) और हाएज़ (मासिक धर्म वाली महिला) बिना क़ुरआन की नियत के केवल दुआ-ओ-सना की नियत से उसे पढ़ सकते हैं जैसे 'अल-हम्द' और 'आयतल कुर्सी'।	४	२२२
३	मसला: क़ुरआन की किसी आयत का इतना टुकड़ा जो एक छोटी आयत के बराबर हो, उसे क़ुरआन की नियत से पढ़ना जुनब और हाएज़ के लिए सर्वसम्मति से मना है।	१	२२३
४	मसला: सही बात यह है कि क़ुरआन की नियत से एक अक्षर पढ़ने की भी जुनब और हाएज़ को अनुमति नहीं है।	४	२२३
५	मसला: पढ़ाने की नियत से क़ुरआन मजीद, क़ुरआन ही रहेगा; केवल इतनी नियत जुनब और हाएज़ के लिए पर्याप्त नहीं है।	३	२२६
६	मसला: जुनब के लिए उन सना (प्रशंसा) वाली आयतों को सना की नियत से भी पढ़ना हराम है जिनमें अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपने लिए उत्तम पुरुष (First person) के सर्वनामों का ज़िक्र फ़रमाया है।	१	२३२
७	मसला: जिन दुआ-ओ-सना की आयतों के शुरू में 'कुल' (कहो) है, जुनब उनमें यह शब्द छोड़कर दुआ की नियत से पढ़े, अन्यथा जायज़ नहीं।	२	२३२
८	मसला: उसे हुरूफ़-ए-मुक़त्ताआत (कटे हुए अक्षरों) वाली दुआ की अनुमति नहीं है।	२	२३२
९	मसला: जिन आयतों में शुद्ध दुआ-ओ-सना नहीं है, उन्हें जुनब या हाएज़ 'अमल' (अभ्यास) की नियत से भी नहीं पढ़ सकते।	६	२३२
१०	मसला: केवल अमल में लाने की नियत से जुनब और हाएज़ शुद्ध दुआ-ओ-सना की आयतें भी नहीं पढ़ सकते।	६	२३२
११		७	२३२

क्रम संख्या	शीर्षक / विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
	मसला: दम (झाड़-फूँक) करने के लिए भी जुनब वही शुद्ध दुआ-ओ-सना की आयतें बिना क़ुरआन की नियत के, विशेष रूप से दुआ-ओ-सना की नियत से ही पढ़ सकता है।		
१२	मसला: केवल शिफ़ा (स्वास्थ्य लाभ) लेने की नियत क़ुरआन मजीद को क़ुरआन होने से बाहर नहीं कर सकती।	१	२३३
१३	मसला: लिखे हुए क़ुरआन को जुनब अपनी नियत से नहीं बदल सकता; उदाहरण के लिए यदि सूरह फ़ातिहा कहीं अकेले लिखी है और वह यह नियत कर ले कि यह एक दुआ है और उसे हाथ लगाए, तो यह जायज़ नहीं।	५	२३३
१४	मसला: दुआ-ओ-सना की आयतों को दुआ-ओ-सना की नियत से पढ़ने की अनुमति है, लेकिन लिखने की अनुमति नहीं होनी चाहिए। भले ही दुआ की नियत करे, जुनब वह तावीज़ किसी भी नियत से न लिखे जिसमें क़ुरआनी आयतें हों।	६	२३३

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ : جو آیت بلکہ پوری سورت خالص دعا و ثنا ہو جنب و حائض بے		
۲	نیت قرآن صرف دعا و ثنا کی نیت سے اسے پڑھ سکتے ہیں جیسے الحمد و آیۃ الکرسی۔	۴	۲۲۲
۳	مسئلہ : کسی آیت کا اتنا ٹکڑا کہ ایک چھوٹی آیت کے برابر ہو بہ نیت قرآن پڑھنا جنب و حائض کو بالاتفاق ممنوع ہے۔	۱	۲۲۳
۴	مسئلہ : صحیح یہ ہے کہ بہ نیت قرآن ایک حرف کی بھی جنب و حائض کو اجازت نہیں۔	۴	۲۲۳
۵	مسئلہ : تعلیم کی نیت سے قرآن مجید قرآن ہی رہے گا صرف اتنی نیت جنب و حائض کو کافی نہیں۔	۳	۲۲۶
۶	مسئلہ : جنب کو وہ آیات ثنا بہ نیت ثنا بھی پڑھنا حرام ہے جن میں رب عزوجل نے اپنے لیے متکلم کی ضمیریں ذکر فرمائیں۔	۱	۲۳۲
۷	مسئلہ : جن آیات دعا و ثنا کے اول میں قل ہے ان میں جنب یہ لفظ چھوڑ کر بہ نیت دعا پڑھے ورنہ جائز نہیں۔	۲	۲۳۲
۸	مسئلہ : اسے حروف مقطعات والی دعا کی اجازت نہیں۔	۲	۲۳۲
۹		۶	۲۳۲

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ : جن آیات میں خالص دعا و ثنا نہیں انہیں جنب یا حائض بہ نیت عمل بھی نہیں پڑھ سکتے۔		
۱۰	مسئلہ : صرف عمل میں لانے کی نیت سے جنب و حائض خالص آیات دعا و ثنا بھی نہیں پڑھ سکتے۔	۶	۲۳۲
۱۱	مسئلہ : دم کرنے کیلئے بھی جنب وہی خالص آیات دعا و ثنا بے نیت قرآن خاص بہ نیت دعا و ثنا ہی پڑھ سکتا ہے۔	۷	۲۳۲
۱۲	مسئلہ : فقط شفا لینے کی نیت قرآن مجید کو قرآنیت سے خارج نہیں کر سکتی۔	۱	۲۳۳
۱۳	مسئلہ : لکھے ہوئے قرآن کو جنب اپنی نیت سے نہیں بدل سکتا مثلاً سورہ فاتحہ تنہا کہیں لکھی ہے اس میں یہ نیت کرلے کہ یہ ایک دعا ہے اور اسے ہاتھ لگائے یہ جائز نہیں۔	۵	۲۳۳
۱۴	مسئلہ : آیاتِ دعا و ثنا کو بہ نیتِ دُعا و ثنا پڑھنے کی اجازت ہے لکھنے کی اجازت نہ ہونی چاہیے اگرچہ دعا ہی کی نیت کرے تو جنب وہ تعویذ کسی نیت سے نہ لکھے جس میں آیاتِ قرآنیہ ہوں۔	۶	۲۳۳

Fatawa Razvia, Volume 4

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page
15	Ruling: It is recommended for a woman in menstruation or post-childbirth bleeding to perform ablution and engage in Tasbih, Tahleel, and reciting Durood Sharif during prayer times for as long as this state persists. If she has a habit of Tahajjud, she should do so at that time as well.	2	238
	Impurities (Anjas)		
1	Ruling: Impurity is washed with three waters. The object touched by the first water becomes pure after washing three times, the second water twice, and the third water only once.	1	33
2	Ruling: Impure drops. If they fall on a vessel containing water, or fall inside but splash above the water level and then fall back, the water will not become impure as long as it is stagnant and the drop does not pass over the internal drop.	2	33
3	Ruling: Saliva that flows while sleeping is pure, even if it comes from the stomach and even if it is foul-smelling.	1	35
4	Ruling: Anything that comes out of a person's body and does not break the ablution is not impure. However, it is not necessary that something which is not impure does not break the ablution.	4	35
5	Ruling: The correct view is that wind (gas) passed by a human being is pure.	5	35
6	Ruling: The correct view is that nasal mucus is pure.	6	35
7	Ruling: Blood, urine, and other wastes are not impure until they come out of the body.	2	36
8	Ruling: Water that comes out of a dead person's mouth is impure.	4	36
9	Ruling: An impure thing can become impure again. Therefore, if wine falls into urine and then becomes vinegar, it will not become pure.	5	36
10		4	68

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page
	Ruling: If a child drinks milk and immediately vomits it before it reaches the stomach, that milk is impure if it is a mouthful. If it gets on something in an area larger than a rupee coin, it will make it impure.		
11	Ruling: If water is drunk and it comes out through the nose while still in the chest, it is not impure, nor does it break the ablution. The same applies to milk.	5	68

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द ४

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ
१५	मसला: हैज़ (मासिक धर्म) और निफ़ास (प्रसवोत्तर रक्तस्राव) वाली महिला के लिए मुस्तहब (पसंदीदा) है कि जब तक यह स्थिति रहे, वुज़ू करके नमाज़ के समय तस्बीह, तहलील और दरूद शरीफ पढ़ लिया करे। अगर तहज्जुद की आदत हो, तो उस समय भी ऐसा ही करे।	२	२३८
	अनजास (अशुद्धियाँ)		
१	मसला: नजासत जो तीन पानियों से धोई जाती है। पहला पानी जिस चीज़ को लगे वह तीन बार धोने से पाक (शुद्ध) होगी, दूसरा पानी लगे तो दो बार, और तीसरा तो एक ही बार धोने से पाक हो जाएगी।	१	३३
२	मसला: नापाक बूंदें। बर्तन के ऊपर गिरें और अंदर पानी है या अंदर ही बूंद गिरी, मगर जहाँ पानी था उस जगह से ऊपर गिरी, तो पानी नापाक नहीं होगा जब तक कि ठहरे हुए होने की स्थिति में अंदर की बूंद पर न गुज़रे।	२	३३
३	मसला: सोते समय जो लार बहती है, वह पाक है, चाहे वह पेट से ही क्यों न आई हो और चाहे बदबूदार ही क्यों न हो।	१	३५
४	मसला: मुकल्लफ़ (वयस्क) के शरीर से जो चीज़ निकले और वुज़ू न जाए, वह नापाक नहीं है। लेकिन यह ज़रूरी नहीं कि जो चीज़ नापाक न हो, उससे वुज़ू न जाए।	४	३५
५	मसला: सही यह है कि इंसान के शरीर से जो हवा (गैस) निकलती है, वह पाक है।	५	३५
६	मसला: सही यह है कि नाक का पानी पाक है।	६	३५
७	मसला: खून, पेशाब आदि गंदगी जब तक शरीर से बाहर न निकले, नापाक नहीं है।	२	३६
८	मसला: मृत व्यक्ति के मुँह से जो पानी निकलता है, वह नापाक है।	४	३६
९		५	३६

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ
	मसला: नजिस चीज़ दोबारा नजिस हो सकती है। इसलिए अगर शराब पेशाब में गिर जाए और फिर सिरका बन जाए, तो वह पाक नहीं होगी।		
१०	मसला: बच्चे ने दूध पिया और अभी पेट (आमाशय) तक पहुँचा ही था कि तुरंत निकाल दिया, तो वह दूध नापाक है जब वह मुँह भर कर हो। अगर वह किसी चीज़ पर एक रुपये के सिक्के से ज़्यादा जगह पर लग जाए, तो उसे नापाक कर देगा।	४	६८
११	मसला: पानी पिया और अभी सीने तक ही पहुँचा था कि ओछू(गलत नली) से निकल गया, तो वह नापाक नहीं है और न ही उससे वुज़ू जाएगा। दूध का भी यही नियम है।	५	६८

पृष्ठ ७६१ में से ६८९

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: حیض و نفاس والی کو مستحب ہے کہ جب تک یہ حالت رہے وضو		
۱۵	کر کے نماز کے اوقات پر تسبیح و تہلیل درود شریف پڑھ لیا کرے تہجد کی عادت ہو تو اس وقت بھی۔	۲	۲۳۸
	انجاس		
	مسئلہ: نجاست کہ تین پانیوں سے دھوئی جاتی ہے۔ پہلا پانی جس چیز کو		
۱	لگے وہ تین بار دھونے سے پاک ہوگی اور دوسرا پانی لگے تو دو بار اور تیسرا تو ایک ہی بار دھونے سے پاک ہو جائے گی۔	۱	۳۳
	مسئلہ: ناپاک بوندیں۔ برتن کے اوپر گریں اور اندر پانی ہے یا اندر ہی بوند		
۲	گری مگر جہاں پانی تھا اس جگہ سے اوپر گری تو پانی ناپاک نہ ہوگا جب تک ٹھہرے ہوئے ہونے کی حالت میں اندر کی بوند پر نہ گزرے۔	۲	۳۳
۳	مسئلہ: سوتے میں جو رال بہے اگر چہ پیٹ سے آئی اگر چہ بدبودار ہو پاک ہے۔	۱	۳۵
۴	مسئلہ: بدن مکلف سے جو چیز نکلے اور وضو نہ جائے وہ ناپاک نہیں مگر یہ ضرور نہیں کہ جو ناپاک نہ ہو اس سے وضو نہ جائے۔	۴	۳۵
۵	مسئلہ: صحیح یہ ہے کہ ریح جو انسان سے خارج ہوتی ہے پاک ہے۔	۵	۳۵

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ
۶	مسئلہ: صحیح یہ ہے کہ آب بینی پاک ہے۔	۶	۳۵
۷	مسئلہ: خون پیشاب وغیرہ فضلات جب تک بدن سے باہر نہ نکلیں ناپاک نہیں۔	۲	۳۶
۸	مسئلہ: میت کے منہ سے جو پانی نکلتا ہے ناپاک ہے۔	۴	۳۶
۹	مسئلہ: نجس چیز دوبارہ نجس ہو سکتی ہے و لہٰذا اگر شراب پیشاب میں پڑ جائے پھر سرکہ ہو جائے پاک نہ ہوگی۔	۵	۳۶
۱۰	مسئلہ: بچے نے دودھ پیا اور معدے تک پہنچا ہی تھا کہ فوراً ڈال دیا وہ دودھ نجس ہے جب کہ منہ بھر کر ہو روپے بھر جگہ سے زیادہ جس چیز پر لگ جائے گا ناپاک کر دے گا۔	۴	۶۸
۱۱	مسئلہ: پانی پیا اور ابھی سینے ہی تک پہنچا تھا کہ اوچھو سے نکل گیا وہ ناپاک نہیں نہ اس سے وضو جائے یوں ہی دودھ	۵	۶۸

صفحہ 761 کا 689

Fatawa Razawiyya Volume IV

S.No	Topics	Benefit No.	Page No.
12	Issue: Every living being is altogether under the ruling of its urine; for example, a person's vomit is a heavy impurity (Najasat-e-Ghaliza), while for horses and cows, it is a light impurity (Najasat-e-Khafifa).	7	68
13	Issue: Every animal's cud is under the ruling of its dung/ droppings; for example, the impurity of camels, cows, buffaloes, and goats is light (Khafifa), and for Jalalah (animals eating filth), it is heavy (Ghaliza).	8	68
14	Issue: Fine droplets of impure water or urine, the size of a needlepoint, falling on clothes or body will be pardoned, even if their total area exceeds a rupee coin, provided water did not reach and wash them away. However, if that cloth falls into non-flowing water, it will become impure, and now the cloth will also be considered impure due to its impurity.	6	135
15	Issue: If a mouse dies in solidified ghee, remove it and throw away a little ghee from around it as far as there is a suspicion of impurity spreading; the rest is pure.	2	277
16	Issue: If a pure cloth is wrapped in an impure one, or an impure one in a pure one, and only moisture remained in the impure one, and that moisture reaches the pure one, it will not become impure. However, if wetness reaches it, it will become impure.	2	278
17	Issue: If lime is spread on impure soil, this is a case of non-visible impurity (Najasat-e-Ghayr Mar'iyya), even though lime is visible.	2	320
18	Issue: While squeezing grape juice, it is flowing and a splatter of blood etc. falls into it but its effect is not apparent, the juice will remain pure and Halal.	5	360
19	Issue: A flowing substance became impure and then solidified; it will become pure by washing. I say: Apparently this applies to things that are difficult to return to a flowing state after solidifying. Otherwise, if heated ghee became impure and	4	366

S.No	Topics	Benefit No.	Page No.
	solidified in winter, and a piece is taken to pour water over it, or ice is formed from impure water and washed, and it becomes pure inside—this point requires contemplation and needs clarification. And Allah Almighty knows best.		
20	Issue: If a suckling goat kid dies, the milk in its stomach will remain pure; it will not become impure due to its death. This is the correct position of the Imam, while according to the Sahibayn (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad), it will become impure. But when it solidifies, washing the surface will make it pure.	1	367

फतावा रज़विया जिल्द चौथी

क्र. सं.	विषय	लाभ सं.	पृष्ठ सं.
12	मसला: हर जानदार मुकम्मल तौर पर अपने पेशाब के हुक्म में है, जैसे आदमी की कै(वमन) नजासते गलीज़ा (भारी अशुद्धि) है, और घोड़े व गाय की नजासते खफीफा (हल्की अशुद्धि)।	7	68
13	मसला: हर जानवर की जुगाली उसके गोबर और मेंगनी के हुक्म में है, जैसे ऊंट, गाय, भैंस, बकरी की नजासत खफीफा और जलाला (गंदगी खाने वाले पशु) की नजासत गलीज़ा है।	8	68
14	मसला: सुई की नोक के बराबर बारीक-बारीक बूंदें नापाक पानी या पेशाब की कपड़े या बदन पर पड़ जाएं तो वे माफ हैं, चाहे वे जमा करने पर एक रुपये के सिक्के से ज़्यादा जगह घेर लें, बशर्ते पानी वहां न पहुँचा हो और न बहा हो। लेकिन अगर वह कपड़ा ठहरे हुए (गैर-जारी) पानी में गिर जाए तो वह नापाक हो जाएगा और अब उस नजासत की वजह से कपड़ा भी नापाक माना जाएगा।	6	135
15	मसला: जमे हुए घी में चूहा मर जाए तो उसे निकाल दें और उसके आसपास का थोड़ा घी फेंक दें जहाँ तक नजासत फैलने का अंदेशा हो, बाकी पाक है।	2	277
16	मसला: नापाक कपड़े में पाक कपड़ा लपेटा गया या पाक में नापाक, और उस नापाक में सिर्फ नमी बाकी थी, वह नमी पाक कपड़े में भी आ जाए तो वह नापाक नहीं होगा। हाँ, अगर गीलापन (तरी) आ जाए तो नापाक हो जाएगा।	2	278
17	मसला: चूना अगर नापाक मिट्टी में बिछाया गया हो, तो यह नजासते गैर-मरईया (न दिखने वाली अशुद्धि) की सूरत है, हालांकि चूना खुद मरई (दृश्यमान) है।	2	320
18	मसला: अंगूर का रस निचोड़ते समय वह बह रहा हो और उसमें खून आदि का छींटा पड़ जाए जिसका असर जाहिर न हो, तो रस पाक और हलाल रहेगा।	5	360
19	मसला: बहने वाली चीज़ नापाक होकर जम गई, तो धोने से पाक हो जाएगी। मैं कहता हूँ: ज़ाहिर तौर पर यह उन चीज़ों के लिए है जिनका जमने के बाद दोबारा बहने वाली हालत में आना मुश्किल हो। वरना सर्दियों में पिघला हुआ घी नापाक	4	366

क्र. सं.	विषय	लाभ सं.	पृष्ठ सं.
20	होकर जम जाए, तो उसका टुकड़ा लेकर ऊपर से पानी बहाएं या नापाक पानी से बर्फ जमाकर उसे धो लें और वह अंदर तक पाक हो जाए—यह विषय विचारणीय है और इस पर स्पष्टीकरण की आवश्यकता है। वल्लाह तआला आलम। मसला: बकरी का दूध पीने वाला बच्चा मर गया, उसके पेट में जो दूध है वह पाक रहेगा, उसकी मौत से वह नापाक नहीं होगा। इमाम का सही मज़हब यही है, जबकि साहिबैन (इमाम अबू यूसुफ और इमाम मुहम्मद) के नज़दीक वह नापाक हो जाएगा। लेकिन जब वह जम जाए तो ऊपर से धो लेने से पाक हो जाएगा।	1	367

فتاوی رضویہ جلد چہارم

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱۲	مسئلہ: ہر جاندار کلّبتاً اس کے پیشاب کے حکم میں ہے مثلاً آدمی کے قئے نجاست غلیظہ ہیں، گھوڑے گائے کے نجاست خفیفہ۔	۷	۶۸
۱۳	مسئلہ: ہر جانور کی جگالی اس کے گوبر مینگنی کے حکم میں ہے مثلاً اونٹ، گائے، بھینس، بکری کی نجاست خفیفہ اور جلالہ کی غلیظہ۔	۸	۶۸
۱۴	مسئلہ: سوئی کی نوک کے برابر باریک باریک بندکیاں نجس پانی یا پیشاب کی کپڑے یا بدن پر پڑ گئیں معاف رہیں گی اگرچہ جمع کرنے سے روپے بھر سے زائد جگہ میں ہوجائیں مگر پانی پہنچا اور نہ بہا، یا غیر جاری پانی میں وہ کپڑا گر گیا تو نجس ہوجائے گا اور اب اس کی نجاست سے کپڑا بھی ناپاک ٹھہرے گا۔	۶	۱۳۵
۱۵	مسئلہ: جمے ہوئے گھی میں چوہا مر جائے اسے نکال کر آس پاس سے تھوڑا گھی پھینک دیں جہاں تک اس کی نجاست سرایت کرنے کا ظن ہو باقی پاک ہے۔	۲	۲۷۷
۱۶	مسئلہ: ناپاک کپڑے میں پاک کپڑا لپیٹا یا پاک میں ناپاک اور اس ناپاک میں صرف سیل باقی تھی وہ سیل پاک میں بھی آجائے تو اس سے ناپاک نہ ہوگا، ہاں تری آجائے تو ناپاک ہوجائے گا۔	۲	۲۷۸

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱۷	مسئلہ: چونا اگرچہ ناپاک مٹی میں بچھایا گیا ہو تو یہ صورت نجاست غیر مرئیہ کی ہے اگرچہ چونا مرئی ہے۔	۲	۳۲۰
۱۸	مسئلہ: شیرہ انگور نچوڑتا اور وہ بہہ رہا ہے کہ خون وغیرہ کی چھینٹ اس میں پڑ گئی جس کا اثر ظاہر نہ ہوا شیرہ پاک وحلال رہے گا۔	۵	۳۶۰
۱۹	مسئلہ: بہتی چیز ناپاک ہو کر جم گئی دھونے سے پاک ہو جائے گی اقول ظاہراً یہ اس شے میں ہو کہ جمنے کے بعد پھر سیلان کی طرف اس کا اعادہ دشوار ہو ورنہ جاڑے میں تایا ہوا گھی ناپاک ہو کر جم گیا اس کا ٹکڑا لے کر اوپر سے پانی بہائیں یا ناپاک پانی سے برف جما کر دھولیں، اور اندر تک پاک ہو جائے یہ محل تامل و محتاج تصریح ہے واللہ تعالی اعلم۔	۴	۳۶۶
۲۰	مسئلہ: بکری کا شیر خوار بچہ مر گیا اس کے پیٹ میں جو دودھ ہے پاک رہے گا اس کی موت سے ناپاک نہ ہوگا۔ یہی صحیح مذہب امام ہے اور صاحبین کے نزدیک ناپاک ہو جائے گا لیکن جب جم جائے اوپر سے دھوڈالیں پاک ہو جائے گا۔	۱	۳۶۷

Fatawa-e-Razvia | Volume 4

Serial No. | Titles | Benefit No. | Page No. 21 | Ruling: In washing impurity, it is necessary that the washing water is removed and there is a strong presumption of the removal of impurity, which has been quantified as three washes for non-visible impurity. | 2 | 367 22 | Ruling: The silkworm, its water, and its excrement are also pure. | 3 | 411 23 | Ruling: A creature born from impurity is pure itself because due to transformation of essence, impurity no longer remains. Yes, it is impure due to the effect of impurity on its body, until it is washed; then if it falls into water, it will not cause harm. And if it's more than the amount of a dirham, there is no harm if prayer is performed while it is tied in cloth. | 4 | 411 24 | Ruling: While threshing (daen chalana), if oxen urinate or dung, some part of the grain definitely becomes impure, but it remains indistinguishable and the location is unknown. Now if that grain is distributed, both parts become pure, or if some of it is gifted to someone or given to a beggar, the ruling of purity applies to both sides; the part that went out is pure for them, and what remains is pure too. | 3 | 438 25 | Ruling: A cloth became impure and the location was forgotten; if it's purified from anywhere, it will be pure. Yes, if it is remembered later that the impurity was on the other side, it must be purified again and the prayers performed must be repeated. | 4 | 438 26 | Ruling: Silkworm, its eggs, its excrement, and insects born from wounds etc. are all pure. | 1 | 445 27 | Ruling: An animal that does not have flowing blood will not make water impure by dying in it, even if it breaks into pieces. Yes, when it becomes impossible to separate its parts, drinking it or making broth from it will be prohibited. This will remain permissible only for two animals: the Gateri and the fish that dies naturally and floats up. | 2 | 445 28 | Ruling: An animal's mouth was impure, it put its mouth into four vessels; the first three became impure, the fourth one remained pure. | 4 | 477 29 | Ruling: The blood of meat that remains in the meat itself after the blood from veins has flowed out is pure, and if the animal is halal, it is also halal. | 6 | 477

फ़तावा रज़विया | जिल्द चौथी

क्रम संख्या | शीर्षक | लाभ संख्या | पृष्ठ संख्या 21 | मसला: नजासत (अशुद्धि) धोने में यह आवश्यक है कि धोने वाला पानी ज़ाइल (समाप्त) हो जाए और नजासत के ज़वाल (समाप्ति) का ज़न्ने-गालिब (प्रबल धारणा) हो जाए, जिसे ग़ैर-मरिया (अदृश्य अशुद्धि) में तीन बार धोने से मुक़द्दर (निर्धारित) किया गया है। | 2 | 367 22 | मसला: रेशम का कीड़ा और उसका पानी और उसकी बीट (मल) भी पाक है। | 3 | 411 23 | मसला: नजासत से जो कीड़ा पैदा होता है वह स्वयं पाक है क्योंकि क़ल्बे-माहियत (स्वभाव परिवर्तन) से नजासत नहीं रही, हाँ उसके बदन पर जो नजासत का असर है उससे नापाक है यहाँ तक कि अगर उसे धो दें फिर पानी में गिरे तो हर्ज़ न करेगा और क़दरे-दिरहम से ज़्यादा अगर कपड़े में बंधे हुए नमाज़ पढ़े तो मुज़ाइक़ा (कोई हर्ज़) नहीं। | 4 | 411 24 | मसला: दाएं चलाने (अनाज की मड़ाई) में बैल पेशाब और गोबर कर दें तो अनाज का कुछ हिस्सा ज़रूर नापाक हो जाता है मगर तमीज़ (पहचान) नहीं रही, महल मजहूल (स्थान अज्ञात) हो गया। अब अगर वह अनाज बँट गया तो दोनों हिस्से पाक हो गए या उसमें से कुछ किसी को हिबा (दान) कर दिया या फ़क़ीर को दे दिया, तब भी दोनों जानिब तहारत (शुद्धता) का हुक्म है; जो हिस्सा निकल गया उसके लिए पाक है और जो बाक़ी रहा उसके लिए भी पाक है। | 3 | 438 25 | मसला: कपड़ा नापाक हो गया और जगह याद न रही, कहीं से भी पाक कर लिया जाए तो पाक हो जाएगा। हाँ अगर बाद में याद आया कि नापाकी दूसरी तरफ़ थी तो फिर पाक करना होगा और जो नमाज़ें पढ़ी गई हैं वे दोहराई जाएँगी। | 4 | 438 26 | मसला: रेशम का कीड़ा और उसका तुख़्म (अंडे) और बीट और कीड़ा जो ज़ख़्म वग़ैरह की नजासतों से पैदा हो, सब पाक हैं। | 1 | 445 27 | मसला: जो जानवर बहता हुआ ख़ून नहीं रखता हो, पानी उसके मर जाने से नापाक न होगा चाहे वह रेज़ा-रेज़ा (टुकड़े-टुकड़े) हो जाए। हाँ, जब उसके अज़्ज़ा (अंगों) को जुदा करना मुमकिन न रहेगा तो उसे पीना या उसका शोरबा बनाना हराम हो जाएगा। सिर्फ़ दो जानवरों में यह भी हलाल रहेगा: गाटेरी और वह मछली जो स्वयं मर कर ऊपर आ गई हो। | 2 | 445 28 | मसला: जानवर का मुँह नापाक हो गया था, उसने चार बर्तनों में मुँह डाला; पहले तीन नापाक हो गए, चौथा पाक रहा। | 4 | 477 29 | मसला: गोश्त का वह ख़ून जो रगों का ख़ून निकल जाने के बाद स्वयं गोश्त में बाक़ी रहता है, पाक है और अगर जानवर हलाल हो तो वह भी हलाल है। | 6 | 477

पृष्ठ संख्या 691 (कुल 761 में से)

نمبر شمار | عنوانات | فائدہ نمبر | صفحہ نمبر ۲۱ | مسئلہ: نجاست دھونے میں ضرور ہے کہ دھونے والا پانی زائل ہو جائے اور نجاست کے زوال کا ظن غالب ہو جائے جسے غیر مرئیہ میں تین بار دھونے سے مقدر کیا ہے۔ | ۲ | ۳۶۷ ۲۲ | مسئلہ: ریشم کا کیڑا اور اس کا پانی اور اس کی بیٹ بھی پاک ہے۔ | ۳ | ۴۱۱ ۲۳ | مسئلہ: نجاست سے جو کیڑا پیدا ہوتا ہے وہ خود پاک ہے کہ قلبِ ماہیت سے نجاست نہ رہی ہاں اس کے بدن پر جو نجاست کا اثر ہے اس سے ناپاک ہے یہاں تک کہ اگر اسے دھو دیں پھر پانی میں گرے حرج نہ کرے گا اور قدرِ درم سے زیادہ اگر کپڑے میں بندھے ہوئے نماز پڑھے مضائقہ نہیں۔ | ۴ | ۴۱۱ ۲۴ | مسئلہ: دائیں چلانے میں بیل پیشاب گوبر کر دیں ناج کا کچھ حصہ ضرور ناپاک ہو جاتا ہے مگر تمیز نہ رہی محل مجہول ہوگیا اب اگر وہ ناج بٹ گیا دونوں حصے پاک ہو گئے یا اس میں سے کچھ کسی کو ہبہ کردیا یا فقیر کو دے دیا جب بھی دونوں جانب طہارت کا حکم ہے جو حصہ نکل گیا اس کے لئے پاک ہے اور جو باقی رہا اس کے لئے پاک ہے۔ | ۳ | ۴۳۸ ۲۵ | مسئلہ: کپڑا ناپاک ہوگیا اور جگہ یاد نہ رہی کہیں سے پاک کرلیا جائے پاک ہو جائے گا، ہاں اگر بعد کو یاد آیا کہ ناپاکی دوسری طرف تھی تو پھر پاک کرنا ہوگا اور جو نمازیں پڑھی ہیں پھیری جائیں گی۔ | ۴ | ۴۳۸ ۲۶ | مسئلہ: ریشم کا کیڑا اور اس کا تخم اور بیٹ اور کیڑا کہ زخم وغیرہ نجاستوں سے پیدا ہوں سب پاک ہیں۔ | ۱ | ۴۴۵ ۲۷ | مسئلہ: جو جانور بہتا خون نہ رکھتا ہو پانی اس کے مر جانے سے ناپاک نہ ہوگا اگرچہ ریزہ ریزہ ہو جائے، ہاں جب اس کے اجزاء جدا کرنا ممکن نہ رہے گا تو اسے پینا یا اس کا شوربا بنانا حرام ہو جائے گا صرف دو جانوروں میں یہ بھی حلال رہے گا گاٹیری اور وہ مچھلی کہ خود مر کر اتر آئی ہو۔ | ۲ | ۴۴۵ ۲۸ | مسئلہ: جانور کا منہ ناپاک ہو گیا تھا اس نے چار برتنوں میں منہ

ڈالا، پہلے تین ناپاک ہو گئے چوتھا پاک رہا۔ | ۴ | ۴۷۷ ۲۹ | مسئلہ: گوشت کا خون کہ رگوں کا خون نکل جانے کے بعد خود گوشت میں باقی رہتا ہے پاک ہے اور حلال جانور ہو تو حلال بھی ہے۔ | ۶ | ۴۷۷

Fatawa Razawiyya | Volume 4

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
30	Issue: Washing with milk, ghee, oil, or olive oil does not purify impurity.	3	486
31	Issue: Vinegar, chickpea, or broad bean water will purify impurity as long as it has not thickened. I say: but it is not permissible to wash with such items without necessity because it is a waste of wealth and disrespect to sustenance in chickpeas etc. It is narrated in Zarqani 'ala al-Mawahib that on every grain, this text is written by the pen of power: "In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. This is the sustenance of so-and-so, son of so-and-so." After the 'Bismillah Sharif', this grain is the sustenance of so-and-so, son of so-and-so. That grain cannot go into anyone else's stomach but theirs. This humble one says that there must be many grains such that after being ground into flour, some of its parts went into one bread eaten by Zaid and others into another bread eaten by 'Amr; so, on that part of the grain, Zaid's name with his father's name would be written, and on this part, 'Amr's. Similarly, if that grain was divided among four people, four names would be inscribed on the four parts. And some grains go to waste just like that, with no one's name on them. Glory be to Allah the Almighty over what He wills, exalted is His majesty and universal is His bounty. 12 May he be forgiven and protected by his Lord, Blessed and Exalted.	4	486
32	Issue: Regarding solid heavy impurity (Najast-e-Ghaliza), a weight of four and a half mashas is considered; more than this invalidates the prayer. Washing it is obligatory (Fard). Within this amount, it is Makruh Tahrimi (prohibitively disliked) and washing is Wajib (necessary). Less than that is Isaa'at (wrongdoing) and washing is Sunnah. For liquid impurity, the area of a rupee coin is considered, provided it hasn't spread beyond that area; the rulings for more, equal, and less are the same.	2	487

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
33	Issue: If impure oil falls on clothing and was not the size of a rupee at that time but then spreads and becomes more, the correct view is that it prevents the validity of prayer. To the extent that if two rak'ahs were prayed and it had not spread that much until then, that prayer is valid; immediately after, two more rak'ahs were prayed and during them, before the salam, it spread more than the size of a rupee, this prayer is invalid.	3	487
34	Issue: The author's research on the true nature of liquidity (riqqat), flow (sailan), and solidity (jamid) will not be found except in this Fatawa.	4	487
35	F: In the terminology of jurists, 'liquid' (raqeeq) and 'without body' (be-jurm) have one meaning, and 'thick' (katheef), 'heavy' (ghaleez), 'viscous' (thakheen), and 'having body' (zi-jurm) have another.	1	491

नंबर शुमार	उनवानात (विषय)	फ़ायदा नंबर	सफ़ा नंबर
30	मसला: दूध, घी, तेल, जैतून के तेल से धोना नजासत को पाक नहीं करता।	3	486
31	मसला: सिरका या चने या बाकला का पानी जब तक गाढ़ा न हो गया हो नजासत को पाक कर देगा। अक़ुल (मैं कहता हूँ): मगर बिना ज़रूरत ऐसी चीज़ों से धोना जायज़ नहीं कि माल ज़ाया करना है और चने वगैरह में रिज़्क़ की बे-अदबी भी, ज़रक़ानी अलल मवाहिब में रिवायत है कि हर दाने पर क़लम-ए-कुदरत से इतनी इबारत लिखी होती है: "बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम, हाज़ा रिज़्क़ु फ़ुलाँ बिन फ़ुलाँ।" बिस्मिल्लाह शरीफ़ के बाद यह दाना फ़ुलाँ बिन फ़ुलाँ का रिज़्क़ है। वह दाना उसके सिवा किसी दूसरे के पेट में नहीं जा सकता। फ़क़ीर कहता है बहुत दाने ऐसे होते होंगे कि आटा पिस कर उसके कुछ अजज़ा (हिस्से) एक रोटी में गए जिसे ज़ैद ने खाई, कुछ दूसरी में जिसे अमर ने, तो ऐसे दाने के उस हिस्से पर ज़ैद का नाम मय वलदियत (पिता के नाम सहित) लिखा होगा और उस हिस्से पर अमर का, इसी तरह अगर वह दाना चार शख़्सों में तकसीम हुआ तो चारों हिस्सों पर चारों नाम दर्ज होंगे और बाज़ दाने यूँ ही ज़ाया हो जाते हैं उन पर किसी का नाम न होगा। पस पाक है अल्लाह क़दीर उस पर जो वह चाहे, बुलंद है उसकी शान और आम है उसका फ़ज़्ल। 12 मग़फ़िरत हो उसके लिए और हिफ़ाज़त करे उसका रब तबारक व तआला।	4	486
32	मसला: ठोस नजासत-ए-ग़लीज़ा (बड़ी गंदगी) में साढ़े चार माशे वज़न का एतबार है कि इससे ज़्यादा में नमाज़ बातिल (अमान्य) होगी, इसका धोना फ़र्ज़ है और इस मिकदार (मात्रा) में मकरूह-ए-तहरीमी और धोना वाजिब, और कम में इसाअत और धोना सुन्नत। और रक़ीक़ (पतली) नजासत में रुपये भर के फैलाव का एतबार है कि इतनी जगह में फैली हुई न हो, और उससे ज़्यादा, बराबर और कम में वही अहकाम (नियम) हैं।	2	487
33		3	487

नंबर शुमार	उनवानात (विषय)	फ़ायदा नंबर	सफ़ा नंबर
	मसला: नापाक तेल कपड़े पर पड़ा उस वक़्त रुपये भर न था फिर फैल कर ज़्यादा हो गया तो सही तरजीह (राय) यह है कि नमाज़ होने से रोकेगा, यहाँ तक कि अगर दो रकअतें पढ़ीं उस वक़्त तक इतना न फैला तो वह नमाज़ हो गई; फौरन दो रकअतें और पढ़ीं और उनमें सलाम से पहले फैल कर रुपये भर से ज़्यादा हो गया तो यह नमाज़ न हुई।		
34	मसला: तरलता (रिक़्क़त), बहाव (सैलान) और ठोस होने की असल हक़ीक़त में मुसन्निफ़ (लेखक) की तहक़ीक़ कि इस फ़तावा के सिवा कहीं न मिलेगी।	4	487
35	फ़: फ़ुक़हा (इस्लामी न्यायविदों) की परिभाषा में रक़ीक़ और बे-जुर्म (बिना शरीर) के एक ही मायने हैं और कसीफ़, ग़लीज़, सख़ीन और ज़ी-जुर्म के एक।	1	491

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۳۰	مسئلہ: دودھ، گھی، تیل، روغن زیتون سے دھونا نجاست کو پاک نہیں کرتا۔ مسئلہ: سرکہ یا چنے یا باقلا کا پانی جبکہ گاڑھا نہ ہو گیا ہو نجاست کو پاک کردے گا اقول: مگر بلا ضرورت ایسی اشیاء سے دھونا جائز نہیں کہ مال ضائع کرنا ہے اور چنے وغیرہ میں رزق کی بے ادبی بھی، زرقانی علی المواہب میں روایت میں ہے کہ ہر دانے پر قلم قدرت سے اتنی عبارت لکھی ہوتی ہے: بسم اللہ الرحمن الرحیم ہذا رزق فلان بن فلان۔ بسم اللہ شریف کے بعد یہ دانہ فلاں بن فلاں کا رزق ہے۔ وہ دانہ اس کے سوا کسی دوسرے کے پیٹ	۳	۴۸۶
۳۱	میں نہیں جاسکتا۔ فقیر کہتا ہے بہت دانے ایسے ہوتے ہوں گے کہ آنا پس کر اس کے کچھ اجزاء ایک روٹی میں گئے کہ زید نے کھائی کچھ دوسری میں کہ عمرو نے، تو ایسے دانے کے اس حصے پر زید کا نام مع ولدیت لکھا ہوگا اور اس حصے پر عمرو کا، یوں ہی اگر وہ دانہ چار شخصوں میں منقسم ہوا تو چاروں حصوں پر چاروں نام درج ہوں گے اور بعض دانے یونہی ضائع ہوجاتے ہیں ان پر کسی کا نام نہ ہوگا۔ فسبحن اللہ القدیر علی مایشاء عز جلالہ وعم نوالہ ۱۲ غفرلہ وحفظہ ربہ تبارک وتعالی۔	۴	۴۸۶
۳۲	مسئلہ: دلدار نجاست غلیظہ میں ساڑھے چار ماشے وزن معتبر ہے کہ اس سے زائد میں نماز باطل ہوگی اس کا دھونا فرض ہے اور اس قدر میں مکروہ	۲	۴۸۷

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	تحریمی اور دھونا واجب اور کم میں اساءت اور دھونا سنت، اور رقیق میں روپے بھر کی مساحت کا اعتبار ہے کہ اتنی جگہ میں پھیلی ہوئی نہ ہو اور زائد و مساوی و کم میں وہی احکام۔		
۳۳	مسئلہ: ناپاک تیل کپڑے پر پڑا اس وقت روپے بھر نہ تھا پھر پھیل کر زیادہ ہو گیا تو صحیح تریہ ہے کہ مانع جواز نماز ہوگا یہاں تک کہ اگر دو رکعتیں پڑھیں اس وقت تک اتنا نہ پھیلا وہ نماز ہوگئی معاً دو رکعتیں اور پڑھیں اور ان میں سلام سے پہلے پھیل کر روپے بھر سے زیادہ ہو گیا یہ نماز نہ ہوئی۔	۳	۴۸۷
۳۴	مسئلہ: رقت اور سیلان اور جامد ہونے کی اصل حقیقت میں مصنف کی تحقیق کہ اس فتاوی کے سوا کہیں نہ ملے گی۔	۴	۴۸۷
۳۵	ف: عرف فقہاء میں رقیق و بے جرم کے ایک معنی ہیں اور کثیف و غلیظ و تخین و ذی جرم کے ایک۔	۱	۴۹۱

Fatawa Rizvia, Volume 4

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
36	Issue: If a solid impurity like horse dung or cow dung sticks to socks or shoes, or if liquid impurity like urine becomes solid due to sand or soil, then rubbing it enough so that its trace is removed will make it pure. Therefore, if the sole of a shoe passes over a place of impurity and then walks over clean ground or sand, and soil or sand mixes with it, dries, and falls off, the shoe becomes pure.	2	491
37	Issue: If urine droplets fall on the upper part of socks or shoes where sand or soil does not reach. If the sole became impure with urine and dried without becoming thick from soil etc., then purity will not be achieved without washing.	1	492
38	Issue: Solid (zi-jurm) is that whose raised core remains after drying, and non-solid (be-jurm) is that which spreads completely, leaving no core at all, and no swelling is visible upon drying, even if the color remains.	2	492
39	Issue: A general principle of Sharia is that doubt and suspicion regarding impurity are not considered; and useful examples of this.	1	555
40	Issue: Vaginal discharge is pure.	2	563
41	Issue: As long as a martyr's blood is on them, it is pure. If someone carries them and prays, it is valid. However, if it separates from them and gets on the prayer's body or clothes more than the size of a Dirham, the prayer will not be valid because after separating from the martyr, it is ruled as impure.	5	563
42	Issue: If urine falls on the ground and dries until no trace remains, it becomes pure. One can pray on it, but Tayammum cannot be performed with it.	2	575
43	Issue: Droplets or streams of urine that fall on the bodies of animals like cows, goats, horses, etc., their bodies become pure once it dries in any case.	1	576

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
44	Issue: If solid impurity sticks to a shoe and it dries and falls off due to sand or soil while walking, the shoe will become pure.	2	576
45	Issue: If animal dung or droppings stick to the bodies of animals like cows, goats, horses, etc., when they dry and are cleared off by lying down, rolling, or scratching, their bodies become pure.	3	576

फ़तावा रिज़विया, खंड 4

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा संख्या	पृष्ठ संख्या
36	मसला: मोज़े या जूते में कोई ठोस नजासत जैसे घोड़े की लीद या गोबर लग जाए, या पेशाब जैसी पतली नजासत मिट्टी या रेत से ठोस हो जाए, तो इतना रगड़ने से कि उसका प्रभाव मिट जाए, वह पवित्र हो जाएगा। इसलिए जूते के तलवे जो नजासत वाली जगह से गुजर कर पवित्र ज़मीन या रेत पर चलें और मिट्टी या रेत उससे मिल कर सूख कर झड़ जाए, तो जूता पवित्र हो गया।	२	४९१
37	मसला: मोज़े या जूते के ऊपरी हिस्से पर पेशाब की छींटें पड़ें जहाँ रेत या मिट्टी न पहुँची हो। तलवा पेशाब से नापाक हुआ और बिना मिट्टी आदि के गाढ़ा हुए सूख गया, तो अब बिना धोए पवित्रता नहीं होगी।	१	४९२
38	मसला: 'ज़ी जुर्म' (ठोस) वह है जिसका सूखने के बाद उभरा हुआ हिस्सा बाकी रहे, और 'बे जुर्म' वह है जो पूरी तरह फैल जाए और सूखने पर कोई उभार नज़र न आए, चाहे रंग बाकी रहे।	२	४९२
39	मसला: शरीयत का सामान्य नियम है कि नजासत के मामले में संदेह और धारणा का कोई महत्व नहीं है; और इसके उपयोगी उदाहरण।	१	५५५
40	मसला: गर्भाशय की नमी पवित्र है।	२	५६३
41	मसला: शहीद का खून जब तक उन पर है, पवित्र है। यदि उसे उठा कर नमाज़ पढ़ी जाए तो सही है। हाँ, यदि वह उनसे अलग होकर नमाज़ी के शरीर या कपड़े पर एक दिरहम से अधिक लग जाए, तो नमाज़ नहीं होगी क्योंकि शहीद से अलग होने के बाद उसे नजासत का हुक्म दिया जाता है।	५	५६३
42	मसला: ज़मीन पर पेशाब गिर कर सूख गया और उसका असर न रहा, तो वह पवित्र हो गई। इस पर नमाज़ पढ़ सकते हैं लेकिन तयम्मुम नहीं हो सकता।	२	५७५
43		१	५७६

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा संख्या	पृष्ठ संख्या
	मसला: गाय, बकरी, घोड़े आदि जानवरों के शरीर पर पेशाब करते समय जो छींटें पड़ती हैं या धार पड़ती है, वह सूख जाने पर उनका शरीर पवित्र हो जाता है।		
44	मसला: जूते में कोई ठोस नजासत लगे और चलने में रेत मिट्टी से सूख कर झड़ जाए, तो जूता पवित्र हो जाएगा।	२	५७६
45	मसला: गाय, बकरी, घोड़े आदि जानवरों के शरीर पर जो लीद, गोबर या मेंगनियां लग जाती हैं, जब वे सूख कर लेटने, लोटने या शरीर खुजलाने से झड़ कर साफ़ हो जाएँ, तो उनका शरीर पवित्र हो जाता है।	३	५७६

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: موزے یا جوتے میں کوئی جرم دار نجاست مثل لید، گوبر کے لگ جائے یا پیشاب وغیرہ رقیق نجاست مٹی یا ریت سے جرم دار ہوجائے تو اتنا		
۳۶	رگڑ دینے سے کہ اس کا اثر زائل ہو جائے طہارت ہو جائے گی ولذا جوتے	۲	۴۹۱
	کے تلے کہ موضع نجاست پر گزر کر پاک زمین یا ریت پر چلے اور مٹی یا ریت اس سے مل کر سوکھ کر جھڑ گئی جوتا پاک ہو گیا۔		
	مسئلہ: موزے یا جوتے پر اوپر کی جانب پیشاب کی چھینٹیں پڑیں کہ وہاں		
۳۷	ریتا مٹی نہ پہنچایا۔ تلا پیشاب سے ناپاک ہوا اور بغیر مٹی وغیرہ سے دلدار	۱	۴۹۲
	ہوئی سوکھ گیا تو اب بے دھوئے طہارت نہ ہوگی۔		
	مسئلہ: ذی جرم وہ ہے کہ سوکھنے کے بعد اس کا ابھرا ہوا دل باقی رہے اور		
۳۸	بے جرم وہ کہ بالکل پھیل جائے دل اصلاً نہ رہے خشک ہونے پر ابھار نظر	۲	۴۹۲
	نہ آئی اگرچہ رنگ باقی رہے۔		
۳۹	مسئلہ: شریعت کا قاعدہ کلیہ ہے کہ درباره نجاست شک و ظن کا اعتبار نہیں اور اس کی مفید مثالیں۔	۱	۵۵۵
۴۰	مسئلہ: رحم کی رطوبت پاک ہے۔	۲	۵۶۳
۴۱		۵	۵۶۳

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: شہید کا خون جب تک اس پر ہے پاک ہے اگر اسے اٹھا کر نماز پڑھی صحیح ہے ، ہاں اگر اس سے جدا ہو کر مصلی کے بدن یا کپڑے کو درم بھر سے زائد لگ جائے نماز نہ ہوگی کہ شہید سے جدا ہونے کے بعد اسے حکم نجاست دیا جاتا ہے۔		
۴۲	مسئلہ: زمین پر پیشاب پڑ کر خشک ہو گیا اثر نہ رہا پاک ہو گئی اس پر نماز پڑھ سکتے ہیں مگر تیمم نہیں ہو سکتا۔	۲	۵۷۵
۴۳	مسئلہ: گائے، بکری، گھوڑے وغیرہ جانوروں کے بدن پر جو پیشاب کرنے میں چھینٹیں پڑتی ہیں یا دھار پڑے بہر حال خشک ہو کر ان کا بدن پاک ہو جاتا ہے۔	۱	۵۷۶
۴۴	مسئلہ: جوتے میں کوئی جرم دار نجاست لگے اور چلنے میں ریت مٹی سے خشک ہو کر جھڑ جائے جوتا پاک ہو جائے گا۔	۲	۵۷۶
۴۵	مسئلہ: گائے، بکری، گھوڑے وغیرہ جانوروں کے بدن پر جو لید گوبر مینگنیاں لگ جاتی ہیں جب سوکھ کر لیٹنے، لوٹنے، بدن کھجانے سے جھڑ کر صاف ہو جائیں ان کا بدن پاک ہو جاتا ہے۔	۳	۵۷۶

Vol. 4 - Fatawa Razawiyya

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page
46	Ruling: For example, if a horse is bathed and splashes fall on one's clothes or body, there is no harm as long as impurity is not proven.	4	576
47	Ruling: The sweat of a horse is pure as long as it is not verified that there is impurity on that specific part of its body.	5	576
48	Ruling: A rider took a horse into the water, and it shook its wet tail, splashing the rider's body and clothes; there is no problem as long as it is not verified that its tail was impure at that time and splashes occurred before it passed through enough water to become pure.	6	576
49	Ruling: If a lamb is born and its body is still wet with womb moisture, picking it up and praying is not harmful. If it falls into water, the water will not become impure because the moisture of the vagina is pure. If picked up to pray after it dries or falls into water after drying, there is no harm by consensus, as according to Sahibayn (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad), even if womb moisture was impure, the body becomes pure upon drying.	7	576
50	Ruling: Soil does not become completely clean from impurity just by drying; a slight impurity remains which is excused for things other than Tayammum, such as prayer, etc.	1	588
51	Ruling: A thing being impure for a person or another thing means that due to impurity, it is not permissible for that person to use it. Being pure for them means such impurity no longer remains that its use is prohibited, even if some impurity remains in reality.	2	588
52	Ruling: Regarding invisible impurity like urine etc., the command is to wash three times and wring it each time so that not a drop falls. Now, if Zaid wrung a cloth such that no more drops fell from his wringing, but Amr is stronger than Zaid and if he wrung it, more would have dropped; in this case, the cloth	3	588

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page
	is pure for Zaid, and he can pray wearing it, but it is impure for Amr and not permissible for him.		

जिल्द चतुर्थ - फ़तावा रज़विया

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नं.	पृष्ठ
46	मसअला: मिसाल के तौर पर घोड़े को नहलाया, उसकी छींटें उसके कपड़ों या बदन पर पड़ीं, कोई हर्ज नहीं जब तक नजासत (गंदगी) साबित न हो।	4	576
47	मसअला: घोड़े का पसीना पाक है जब तक तहक़ीक़ न हो कि उसके बदन पर ख़ास उस जगह नजासत है।	5	576
48	मसअला: सवार ने घोड़ा पानी में उतारा, उसने भीगी दुम हिलाई जिसकी छींटें उसके बदन और कपड़ों पर आईं, कुछ मुज़ाइक़ा (हरज) नहीं जब तक तहक़ीक़ न हो कि उस वक़्त उसकी दुम नापाक थी और इतने पानी पर गुज़रने से पहले जिससे पाक हो जाती उसकी छींटें आईं।	6	576
49	मसअला: बकरी का बच्चा उस वक़्त पैदा हुआ कि अभी उसका बदन रुतूबत-ए-रहम (गर्भाशय की नमी) से गीला है, गोद में उठाकर नमाज़ पढ़ी कुछ हर्ज नहीं और अगर पानी में गिर गया पानी नापाक न होगा कि फ़र्ज की रुतूबत पाक है और खुश्क होने के बाद उसे उठाकर नमाज़ पढ़ी या पानी में गिरा तो बिल-इत्तेफ़ाक़ (सर्वसम्मति से) कुछ हर्ज नहीं कि साहिबैन के नज़दीक अगरचे रहम की रुतूबत नापाक थी, खुश्क होने से उसका बदन पाक हो गया।	7	576
50	मसअला: ज़मीन खुश्क होने से नजासत से बिल्कुल साफ़ नहीं हो जाती, ख़फ़ीफ़ (हल्की) नजासत बाक़ी रहती है जो ग़ैर-तयम्मुम मिस्ल नमाज़ वग़ैरा में अफ़ू (माफ़) है।	1	588
51	मसअला: किसी शै (चीज़) का किसी शख़्स या शै के हक़ में नजिस होना इसके ये मानी हैं कि बवजह नजासत उस शख़्स के लिए या उस शै में जाइज़ुल इस्तेमाल नहीं और उसके हक़ में पाक होना ये कि ऐसी नजासत न रही कि उसको या उसमें इस्तेमाल नारवा (नाजायज़) हो अगरचे वाक़ई में कुछ नजासत बाक़ी हो।	2	588
52		3	588

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नं.	पृष्ठ
	मसअला: नजासत-ए-ग़ैर-मरईया (न दिखने वाली गंदगी) मिस्ल पेशाब वग़ैरा में तीन बार धोने और हर बार इतना निचोड़ने का हुक्म है कि बूंद न टपके। अब अगर एक कपड़ा ज़ैद ने निचोड़ा कि उसके निचोड़ने से अब उसमें से बूंद न टपक सकी लेकिन अम्र कि ज़ैद से ज़ियादा क़वी (ताक़तवर) है, अगर निचोड़ता तो अभी और टपकती, इस सूरत में वो कपड़ा ज़ैद के हक़ में पाक हो गया, उसे पहन कर नमाज़ पढ़ सकता है मगर अम्र के हक़ में नापाक है, उसे जाइज़ नहीं।		

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ
۴۶	مسئلہ: مثلاً گھوڑے کو نہلایا اس کی چھینٹیں اس کے کپڑوں یا بدن پر پڑیں کچھ حرج نہیں جب تک نجاست ثابت نہ ہو۔	۴	۵۷۶
۴۷	مسئلہ: گھوڑے کا پسینہ پاک ہے جب تک تحقیق نہ ہو کہ اس کے بدن پر خاص اس جگہ نجاست ہے۔	۵	۵۷۶
۴۸	مسئلہ: سوار نے گھوڑا پانی میں اتارا اس نے بھیگی دُم ہلائی جس کی چھینٹیں اس کے بدن اور کپڑوں پر آئیں کچھ مضائقہ نہیں جب تک تحقیق نہ ہو کہ اس وقت اس کی دم ناپاک تھی اور اتنے پانی پر گزرنے سے پہلے جس سے پاک ہو جاتی اس کی چھینٹیں آئیں۔	۶	۵۷۶
۴۹	مسئلہ: بکری کا بچہ اس وقت پیدا ہوا کہ ابھی اس کا بدن رطوبت رحم سے گیلا ہے گود میں اٹھا کر نماز پڑھی کچھ حرج نہیں اور اگر پانی میں گر گیا پانی ناپاک نہ ہوگا کہ فرج کی رطوبت پاک ہے اور خشک ہونے کے بعد اسے اٹھا کر نماز پڑھی یا پانی میں گرا تو بالاتفاق کچھ حرج نہیں کہ صاحبین کے نزدیک اگرچہ رحم کی رطوبت ناپاک تھی خشک ہونے سے اس کا بدن پاک ہو گیا۔	۷	۵۷۶

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۵۰	مسئلہ: زمین خشک ہونے سے نجاست سے بالکل صاف نہیں ہو جاتی خفیف نجاست باقی رہتی ہے جو غیر تیمم مثل نماز وغیرہ میں عفو ہے۔	۱	۵۸۸
۵۱	مسئلہ: کسی شے کا کسی شخص یا شے کے حق میں نجس ہونا اس کے یہ معنی ہیں کہ بوجہ نجاست اس شخص کے لیے یا اس شے میں جائز الاستعمال نہیں اور اس کے حق میں پاک ہونا یہ کہ ایسی نجاست نہ رہی کہ اس کو یا اس میں استعمال ناروا ہو اگرچہ واقع میں کچھ نجاست باقی ہو۔	۲	۵۸۸
۵۲	مسئلہ: نجاست غیر مرئیہ مثل پیشاب وغیرہ میں تین بار دھونے اور ہر بار اتنا نچوڑنے کا حکم ہے کہ بوند نہ ٹپکے اب اگر ایک کپڑا زید نے نچوڑا کہ اس کے نچوڑنے سے اب اس میں سے بوند نہ ٹپک سکی لیکن عمرو کہ زید سے زیادہ قوی ہے۔ اگر نچوڑتا تو ابھی اور ٹپکتی اس صورت میں وہ کپڑا زید کے حق میں پاک ہو گیا اسے پہن کر نماز پڑھ سکتا ہے مگر عمرو کے حق میں ناپاک ہے اسے جائز نہیں۔	۳	۵۸۸

صفحہ 761 کا 694

Fatawa Razawiyyah Volume 4

Serial No.	Titles / Topics	Benefit No.	Page No.
53	Ruling: Things that are decreed to become pure without washing, such as land by drying, semen by dusting off, shoes by rubbing, skin by tanning, a knife by wiping; there is disagreement on whether they become impure if water falls on them. The correct view in all of these is that they do not become impure.	8	588
54	Ruling: The research is that land by drying, semen by dusting off, shoes by rubbing, skin by tanning—even though they become pure such that impurity does not return even if water falls on them—this is not actually perfect purity and total removal of all parts of impurity. Rather, slight parts remain which are excused even in the case of water.	1	589
55	Ruling: Death creates physical impurity (najasat-e-haqiqi) in the body of the deceased, and according to some, it is legal impurity (najasat-e-hukmi). The latter is closer to reason and more appropriate.	1	611
56	Note: Committing sins and detestable acts also brings a type of legal impurity (najasat-e-hukmi), though ablution (wudu) is not invalidated by them.	5	611
57	Ruling: If any limb of the deceased falls into a small quantity of water before bathing, as a precaution, the water will be called impure (ghayr-tahir).	17	612
58	Ruling: The corpse of a disbeliever is certainly filthy, vile, and impure—impure in its essence (najasat-e-ayn). Even if washed in a million rivers, it cannot become pure. Verse: Whatever you wash becomes even more filthy. Even if a single hair of theirs falls into water less than 'dah-dar-dah' (approx. 5x5 meters), it will make everything impure like urine.	18	612
59	Ruling: If impurity was washed well three times and the cloth was squeezed fully each time, but the stain, smell, or	6	632

Serial No.	Titles / Topics	Benefit No.	Page No.
	greasiness of impure oil remains, it is excused. The cloth has become pure, and there is no need to use soap, hot water, or souring agents.		
60	Ruling: Legal impurity (najasat-e-hukmi) is stricter than physical impurity (najasat-e-haqiqi). If physical impurity is heavy (ghaliza), up to a dirham's size is excused, and if it is light (khafifa), less than a quarter of the garment is excused. But even an atom of legal impurity is not excused.	1	648

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

क्रम संख्या	शीर्षक / विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
53	मसला: वे चीज़ें जिनके बारे में बिना धोये पाक हो जाने का हुक्म दिया गया है, जैसे सूखने से ज़मीन, झाड़ने से मनी (वीर्य), रगड़ने से जूता, दबात (कमाना) से खाल, पोंछने से छुरी; इनमें मतभेद है कि उन पर पानी पड़ने से वे नापाक होंगी या नहीं। इन सब में सही यही है कि वे नापाक नहीं होंगी।	8	588
54	मसला: शोध यही है कि सूखने से ज़मीन, झाड़ने से मनी, रगड़ने से जूता, दबात से खाल अगरचे ऐसी पाक हो जाती हैं कि पानी पड़ने से भी नजासत (अपवित्रता) वापस नहीं आती, मगर यह हक़ीक़तन कामिल (पूर्ण) पाकी और नजासत के तमाम अंशों का ख़त्म होना नहीं है, बल्कि मामूली अंश बाक़ी रहते हैं जो पानी के हक़ में भी माफ़ हैं।	1	589
55	मसला: मौत से मय्यित (मृतक) के बदन में नजासत-ए-हक़ीक़ी (वास्तविक अपवित्रता) पैदा होती है और कुछ के नज़दीक नजासत-ए-हुक्मी (कानूनी अपवित्रता), ज़्यादा दलील के करीब और मुनासिब यही (दूसरी बात) है।	1	611
56	फ़: गुनाहों और मकरूहात (अप्रिय कार्यों) का करना भी एक तरह की नजासत-ए-हुक्मी लाता है, हालाँकि उनसे वुज़ू नहीं टूटता।	5	611
57	मसला: ग़ुस्ल (स्नान) से पहले अगर मय्यित का कोई अंग थोड़े पानी (आब-ए-क़लील) में पड़ जाए, तो एहतियात के तौर पर पानी को ग़ैर-ताहिर (अशुद्ध) कहा जाएगा।	17	612
58	मसला: काफ़िर का मुर्दा निश्चित रूप से नजिस (अपवित्र), ख़बीस और नापाक है, वह नजासत-ए-ऐन (स्वयं अपवित्रता) है। उसे लाखों दरियाओं से नहला दें, वह पाक नहीं हो सकता। शेर: जो भी धोओगे और ज़्यादा गंदा होगा।	18	612

क्रम संख्या	शीर्षक / विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
	उसका रोंगटा भी अगर 'दह-दर-दह' से कम पानी में पड़ जाएगा, तो पेशाब की तरह सबको नजिस कर देगा।		
59	मसला: नजासत तीन बार अच्छी तरह धो ली और कपड़ा हर बार पूरा निचोड़ लिया, लेकिन नजासत का धब्बा, गंध या नजिस तेल की चिकनाई नहीं गई, तो यह माफ़ है। कपड़ा पाक हो गया और साबुन या गर्म पानी से धोने या खटाई वगैरह लगाने की ज़रूरत नहीं।	6	632
60	मसला: नजासत-ए-हुक्मी, नजासत-ए-हक़ीक़ी से ज़्यादा सख़्त है। नजासत-ए-हक़ीक़ी अगर ग़लीज़ा (भारी) हो तो एक दिरहम के बराबर और अगर ख़फ़ीफ़ा (हल्की) हो तो कपड़े के चौथाई हिस्से से कम माफ़ है, और हुक्मी का एक ज़र्रा (कण) भी माफ़ नहीं।	1	648

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۵۳	مسئلہ: جو چیزیں کہ بے دھوئے پاک ہو جانے کا حکم دیا ہے جیسے خشک ہونے سے زمین، جھاڑنے سے منی، رگڑنے سے جوتا، دباعت سے کھال، پونچھنے سے چھری، ان میں اختلاف ہے کہ پانی پڑنے سے ناپاک ہوں گی یا نہیں اور صحیح سب میں یہ ہے کہ ناپاک نہ ہوں گی۔	۸	۵۸۸
۵۴	مسئلہ: تحقیق یہی ہے کہ خشک ہونے سے زمین، جھاڑنے سے منی، رگڑنے سے جوتا، دباعت سے کھال اگرچہ ایسی پاک ہو جاتی ہیں کہ پانی پڑنے سے بھی نجاست عود نہیں کرتی مگر یہ حقیقۃً کمال طہارت وزوال جملہ اجزائے نجاست نہیں بلکہ خفیف اجزاء باقی رہتے ہیں جو پانی کے حق میں بھی معاف ہیں۔	۱	۵۸۹
۵۵	مسئلہ: موت سے بدن میت میں نجاست حقیقیہ پیدا ہوتی ہے اور بعض کے نزدیک حکمیہ، زیادہ قرین قیاس وہ ہے اور زیادہ مناسب یہ۔	۱	۶۱۱
۵۶	ف: معاصی و مکروہات کا ارتکاب بھی ایک طرح کی نجاست حکمیہ لاتا ہے اگرچہ ان سے وضو نہیں جاتا۔	۵	۶۱۱
۵۷	مسئلہ: غسل سے پہلے اگر میت کا کوئی عضو آب قلیل میں پڑ جائے تو احتیاطاً پانی غیر طاہر کہا جائے گا۔	۱۷	۶۱۲

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: کافر کا مردہ یقیناً نجس خبیث ناپاک نجاست عین ہے لاکھ دریاؤں سے نہلائیں پاک نہیں ہو سکتا۔		
۵۸	ع: ہرچہ شوئی پلید تر باشد	۱۸	۶۱۲
	اس کا رونگٹا بھی اگر دہ دردہ سے کم پانی میں پڑ جائے گا پیشاب کی طرح سب کو نجس کر دے گا۔		
۵۹	مسئلہ: نجاست تین بار خوب دھولی اور کپڑا ہر بار پورا نچوڑ لیا مگر نجاست کا دھبا یا بو یا نجس شدہ تیل کی چکنائی نہیں جاتی تو یہ معاف ہے کپڑا پاک ہو گیا اور صابون یا گرم پانی سے دھونے یا کھٹائی وغیرہ لگانے کی ضرورت نہیں۔	۶	۶۳۲
۶۰	مسئلہ: نجاست حکمیہ نجاست حقیقیہ سے سخت تر ہے نجاست حقیقیہ اگر غلیظ ہو تو درم بھر اور خفیفہ ہو تو ربع ثوب سے کم معاف ہے اور حکمیہ کا ذرہ بھی معاف نہیں۔	۱	۶۴۸

Volume Four Fatawa Rizwia

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page No.
61	Issue: When impurities like cow dung etc. are completely burnt to ashes such that no essence remains, then that ash is pure. Essential Warning: I say: As long as there is fire and it hasn't become ash, its essence certainly remains; until then it is by no means pure. Some ignorant people of Budaun were seen placing frankincense on a fire of dung cakes in a bowl on the grave of the late Maulvi Abdul Qadir Sahib. Firstly, God forbid, the grave and fire, and that too of impure dung cakes. It's a blessing that they removed it when forbidden. 12 Muhiuddin (may he be forgiven)	5	707
62	Issue: Impurity attached to an animal's body becomes pure upon drying and being cleaned.	2	447

Istinja (Ablution after waste excretion)

1	Issue: In major istinja, the Sunnah is to sit with legs well spread and exert pressure downwards with breath so that as much of the exit part as possible becomes visible so all impurity can be washed away.	4	55
2	Issue: This Sunnah method mentioned for major istinja is not for a fasting person; he should not do so.	5	55
3	Issue: After performing major istinja with clods and doing wudu, one remembers not using water. If he performs istinja with water according to the Sunnah method by spreading legs and exerting downward breath pressure, his wudu will be nullified. If he does it normally, then in our view, it won't be nullified.	6	55
4	Issue: Washing both hands up to the wrists three times before istinja is Sunnah, even if not waking from sleep. Yes, if waking from sleep and there was impurity on the body, then it is more emphasized to the extent of being Sunnah Mu'akkadah.	4	145
5	Issue: Specific water is not a condition for performing istinja; any pure thing that removes impurity is sufficient.	1	316

6	Issue: Istinja with a clod provides complete purity as long as the impurity has not spread more than the size of a rupee (coin).	5 408
7	Issue: If impurity has not spread beyond the site of excretion, it becomes pure by using a clod. After that, the water used for istinja will not be impure. However, if it spread slightly beyond that site, it won't be cleaned by a clod at that spot; it will only dry, and the istinja water will become impure. If it spread more than a 'dirham' away from that site and prayer is offered without cleaning with water, the prayer will not be valid. If it was exactly a 'dirham' size, repeating the prayer is obligatory, and if it was less than that, repeating is better.	1 565

जिल्द चौथी फ़तावा रिज़विया

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
६१	मसला: गोबर आदि जैसी नजासतें जब जलकर बिल्कुल राख हो जाएं जिसमें रत्ती भर भी जान न रहे तो वह राख पाक है। ज़रूरी चेतावनी: अक़ोल (मैं कहता हूँ): जब तक आग है और राख नहीं हुई, तब तक उसमें निश्चित रूप से जान बाकी है; तब तक वह हरगिज़ पाक नहीं है। बदायूं के कुछ जाहिलों को देखा गया कि एक प्याली में उपले की आग पर लोबान डालकर मौलवी अब्दुल क़ादिर साहब मरहूम की क़ब्र पर रखी। अव्वल तो मआज़ल्लाह क़ब्र और आग और वह भी उपले की नापाक नजासत। गनीमत है कि मना करने पर उठा ली। १२ मुहीउद्दीन अफ़ा अन्हु	५	७०७
६२	मसला: जानवर के बदन पर जो नजासत लगी हो वह सूख कर साफ़ होने पर पाक हो जाती है।	२	४४७

इस्तिंजा

१	मसला: बड़े इस्तिंजा में सुन्नत यह है कि खूब पैर फैलाकर बैठें और सांस के ज़रिए नीचे की ओर ज़ोर दें ताकि मख़रज (निकास) का जितना हिस्सा ज़ाहिर हो सके हो जाए ताकि तमाम नजासत धुल जाए।	४	५५
२	मसला: बड़े इस्तिंजा में ज़िक्र किया गया यह मसनून तरीका रोज़ेदार के लिए नहीं है, उसे ऐसा नहीं करना चाहिए।	५	५५
३	मसला: ढेलों से बड़ा इस्तिंजा करके वज़ू कर लिया, अब याद आया कि पानी से नहीं किया था। अगर पानी से इस्तिंजा उस मसनून तरीके पर पैर फैलाकर और सांस का ज़ोर नीचे की तरफ़ देकर करेगा तो वज़ू जाता रहेगा, और अगर वैसे ही कर ले तो हमारे नज़दीक वज़ू नहीं जाएगा।	६	५५
४		४	१४५

मसला: इस्तिंजा से पहले दोनों हाथों को कलाईयों तक तीन बार धोना सुन्नत है, चाहे सोकर न उठा हो। हाँ, अगर सोकर उठा और बदन पर कोई नजासत थी तो यहाँ तक ज़्यादा ताकीद है कि सुन्नत-ए-मुअक्कदा है।

५	मसला: इस्तिंजा करने के लिए विशेष पानी की शर्त नहीं है, हर पाक चीज़ जो नजासत दूर कर दे काफ़ी है।	१ ३१६
६	मसला: ढेले से इस्तिंजा पूरी तरह पाकी है बशर्ते कि नजासत एक रुपये (सिक्के) के बराबर से ज़्यादा न फैली हो।	५ ४०८
७	मसला: अगर नजासत पेशाब-पाखाने की जगह से आगे न बढ़ी हो तो ढेला लेने से पाक हो जाती है, इसके बाद जो पानी से इस्तिंजा करेंगे वह पानी नापाक नहीं होगा। हाँ, अगर उस जगह से कुछ आगे बढ़ी थी तो उतनी जगह ढेले से पाक नहीं होगी, सिर्फ़ सूख जाएगी, इस्तिंजा का पानी नापाक हो जाएगा। और अगर वह उस जगह से अलग एक 'दिरहम' से ज़्यादा फैली थी और बिना पानी के पाक किए नमाज़ पढ़ी तो नमाज़ नहीं होगी, और अगर पूरे एक दिरहम के बराबर लगी थी तो नमाज़ लौटाना वाजिब होगा और उससे कम थी तो लौटाना बेहतर है।	१ ५६५

جلد چہارم فتاوی رضویہ

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۶۱	مسئلہ : گوبر وغیرہ نجاسات جب جل کر بالکل راکھ ہو جائیں جس میں اصلاً جان نہ رہے تو وہ راکھ پاک ہے۔	۵	۷۰۷
	تنبیہ ضروری : اقول: جب تک آگ ہے راکھ نہ ہوئی ضرور اس میں جان باقی ہے اس وقت تک وہ ہر گز پاک نہیں بعض جاہلان بدایوں کو دیکھا گیا کہ ایک پیالی میں اُپلے کی آگ پر لوبان ڈال کر مولوی عبدالقادر صاحب مرحوم قبر پر رکھی اول تو معاذ اللہ قبر اور آگ اور وہ بھی اُپلے کی نجس ناپاک۔ غنیمت ہے کہ منع کئے سے اٹھالی۔ ۱۲ محی الدین عفا عنہ		
۶۲	مسئلہ : جانور کے بدن کو جو نجاست لگی سوکھ کر صاف ہو کر پاک ہو جاتی ہے۔	۲	۴۴۷
	استنجاء		
۱	مسئلہ : بڑے استنجاء میں سنت یہ ہے کہ خوب پاؤں پھیلا کر بیٹھے اور سانس سے نیچے کو زور دے کہ جتنے حصہ مخرج کا ظاہر ہو سکے ظاہر ہو کہ سب نجاست دھل جائے۔	۴	۵۵
۲	مسئلہ : یہ مسنون طریقہ کہ بڑے استنجاء میں مذکور ہوا روزہ دار کے لیے نہیں وہ ایسا نہ کرے۔	۵	۵۵

مسئلہ : بڑا استنجاء ڈھیلوں سے کرکے وضو کرلیا اب یاد آیا کہ پانی سے نہ کیا تھا اگر
۳ پانی سے استنجاء اس مسنون طریقہ پر پاؤں پھیلا کر سانس کا زور نیچے کو دے کر ۶ ۵۵
کرے گا وضو جاتا رہے گا اور ویسے ہی کرلے گا تو ہمارے نزدیک نہ جائے گا۔

مسئلہ : استنجاء سے پہلے تین بار دونوں ہاتھ کلائیوں تک دھونا سنت ہے اگرچہ سوتے
۴ سے نہ اٹھا ہو، ہاں سوتے سے اٹھا اور بدن پر کوئی نجاست تھی تو زیادہ تاکید یہاں تک ۴ ۱۴۵
کہ سنت مؤکدہ ہے۔

مسئلہ : استنجاء کرنے کے لئے خاص پانی شرط نہیں ہر چیز پاک کہ نجاست کا ازالہ
۵ ۱ ۶ ۳۱ کردے کافی ہے۔

مسئلہ : ڈھیلے سے استنجاء پوری طہارت ہے جبکہ نجاست روپے بھر سے زیادہ نہ
۶ ۵ ۸ ۴۰ پھیلی ہو۔

مسئلہ : اگر نجاست موضع بول و براز سے آگے نہ بڑھی ہو تو ڈھیلا لینے سے پاک ہو
جاتی ہے اس کے بعد جو پانی سے استنجاء کریں وہ پانی ناپاک نہ ہوگا ہاں اگر اس
موضع سے کچھ آگے بڑھی تھی تو اتنی جگہ ڈھیلے سے پاک نہ ہوگی صرف خشک ہو
۷ ۱ ۶۵ ۵ جائے گی استنجاء کا پانی ناپاک ہو جائے گا اور اگر درم بھر سے زیادہ اس موضع سے
جدا پھیلی تھی اور بغیر پانی سے پاک کی نماز پڑھے نماز نہ ہوگی اور پورے درم بھر
لگی تھی تو نماز پھرنی واجب ہوگی اور اس سے کم تھی تو پھرنا بہتر ہے۔

Fatawa Razawiyya, Volume 4

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
	Issues of Prayer		
1	Issue: If prayer is performed wearing only one long robe (jubba) such that no part of the knees is exposed during bowing (ruku), prostration (sujud), or any other state, there is no harm.	3	66
2	Issue: If the collar of such a robe is so wide that one's gaze falls inside towards the private area ('awrah), there is no harm; however, looking intentionally is disliked (makruh), though the prayer or ablution (wudu) will still not be invalidated.	4	66
3	Issue: A man had given his wife a revocable divorce (talaq raj'i); while he was praying, his gaze accidentally fell upon the internal part of the woman's private area with desire; the revocation of divorce occurred, and there is no defect in the prayer or ablution, though doing so intentionally is disliked.	5	66
4	Issue: If a man was in prayer and a woman kissed him, causing desire in the man, the prayer is invalidated even though it was not his own act. If a woman is praying and a man kisses her, causing desire in the woman, her prayer is not invalidated.	1	67
5	Issue: If during prayer, one's gaze falls upon the private area of an unrelated woman, the prayer and ablution are still not affected, but the woman's mother and daughters will become prohibited (haram) for him if the gaze fell on the internal part with desire. If done intentionally, it is a severe sin, but prayer and ablution will still not be void.	2	67
6	Issue: Maintaining perfect cleanliness of the mouth during prayer is necessary; otherwise, it causes great distress to the angels.	2	156
7		2	158

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
	Issue: Praying in only trousers (pajamas, without a shirt covering the upper body adequately) is prohibitively disliked (makruh tahrimi).		
8	Issue: In prayer, if one looks around with the corner of the eyes without turning the neck, it is not disliked; however, doing so without need is contrary to what is best (khilaf-e-awla).	5	171

फतावा रज़विया, जिल्द 4

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
	नमाज़ के मसाइल		
1	मसला: सिर्फ एक जुब्बा पहन कर नमाज़ पढ़ी जिससे रुकू व सुजूद वगैरह किसी हालत में ज़ानू (घुटने) का कोई हिस्सा भी ज़ाहिर नहीं होता, तो कोई हर्ज नहीं।	3	66
2	मसला: ऐसे जुब्बे का गरेबान इतना वसीअ (चौड़ा) है कि उसके अंदर से अपने सतर तक नज़र जा पड़ी, तो कोई हर्ज नहीं, हाँ क़स्दन (जानबूझकर) देखना मकरूह है, नमाज़ या वुज़ू तब भी फ़ासिद (बातिल) नहीं होंगे।	4	66
3	मसला: औरत को तलाक़-ए-रजई दी थी, यह नमाज़ पढ़ रहा था, इत्तिफ़ाक़न औरत की फ़र्ज-ए-दाख़िल पर नज़र ब-शहवत (शहवत के साथ) जा पड़ी, रुजूअ (तलाक की वापसी) हो गई और नमाज़ व वुज़ू में कोई ख़लल नहीं, हाँ क़स्दन ऐसा करे तो कराहत है।	5	66
4	मसला: मर्द नमाज़ में था औरत ने उसका बोसा लिया, इससे मर्द को ख़्वाहिश पैदा हुई, नमाज़ जाती रही अगरचे यह उसका अपना फ़ेल (काम) न था। और औरत नमाज़ पढ़ती हो, मर्द बोसा ले और औरत को ख़्वाहिश पैदा हो, तो औरत की नमाज़ नहीं जाएगी।	1	67
5	मसला: नमाज़ में अगर बेगाना औरत की शर्मगाह पर नज़र जा पड़ी तब भी नमाज़ व वुज़ू में ख़लल नहीं, मगर औरत की माएँ बेटियाँ उस पर हराम हो जाएँगी जब कि फ़र्ज-ए-दाख़िल पर नज़र ब-शहवत पड़ी हो, और अगर क़स्दन ऐसा करे तो सख़्त गुनाह है मगर नमाज़ व वुज़ू जब भी बातिल न होंगे।	2	67
6	मसला: नमाज़ में मुँह की कमाल सफ़ाई का लिहाज़ लाज़िम है वरना फ़रिश्तों को सख़्त ईज़ा (तकलीफ) होती है।	2	156

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
7	मसला: खाली पाजामा से नमाज़ मकरूह-ए-तहरीमी है।	2	158
8	मसला: नमाज़ में अगर कनखियों से बे-गर्दन फेरे इधर-उधर देखे तो मकरूह नहीं, हाँ बे-हाजत हो तो ख़िलाफ़-ए-औला है।	5	171

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسائلِ نماز		
۱	مسئلہ: صرف ایک جبہ پہن کر نماز پڑھی جس سے رکوع و سجود وغیرہ کسی حالت میں زانو کا کوئی حصہ بھی ظاہر نہیں ہوتا کچھ حرج نہیں۔	۳	۶۶
۲	مسئلہ: ایسے جبے کا گریبان اتنا وسیع ہے کہ اس کے اندر سے اپنے ستر تک نظر جا پڑی کچھ حرج نہیں، ہاں قصداً دیکھنا مکروہ ہے نماز میں یا وضو فاسد جب بھی نہ ہوں گے۔	۴	۶۶
۳	مسئلہ: عورت کو طلاق رجعی دی تھی یہ نماز پڑھ رہا تھا اتفاقاً عورت کی فرج داخل پر نظر بشہوت جا پڑی رجعت ہو گئی اور نماز و وضو میں کچھ خلل نہیں، ہاں قصداً ایسا کرے تو کراہت ہے۔	۵	۶۶
۴	مسئلہ: مرد نماز میں تھا عورت نے اس کا بوسہ لیا اس سے مرد کو خواہش پیدا ہوئی نماز جاتی رہی اگرچہ یہ اس کا اپنا فعل نہ تھا اور عورت نماز پڑھتی ہو مرد بوسہ لے عورت کو خواہش پیدا ہو عورت کی نماز نہ جائے گی۔	۱	۶۷
۵	مسئلہ: نماز میں اگر بیگانہ عورت کی شرمگاہ پر نظر جا پڑی جب بھی نماز و وضو میں خلل نہیں مگر عورت کی مائیں بیٹیاں اس پر حرام ہوجائیں گی	۲	۶۷

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	جبکہ فرج داخل پر نظر بشہوت پڑی ہو اور اگر قصداً ایسا کرے تو سخت گناہ ہے مگر نماز و وضو جب بھی باطل نہ ہوں گے۔		
۶	مسئلہ: نماز میں منہ کی کمال صفائی کا لحاظ لازم ہے ورنہ فرشتوں کو سخت ایذا ہوتی ہے۔	۲	۱۵۶
۷	مسئلہ: خالی پاجامہ سے نماز مکروہ تحریمی ہے۔	۲	۱۵۸
۸	مسئلہ: نماز میں اگر کن اکھیوں سے بے گردن پھیرے ادھر ادھر دیکھے تو مکروہ نہیں، ہاں بے حاجت ہو تو خلاف اولیٰ ہے۔	۵	۱۷۱

Fatawa-e-Razvia Volume 4

Sr. No.	Topics	Benefit No.	Page No.
9	Ruling: Raising hands during Takbir-e-Tahrima is a Sunnat-e-Muakkada. Habitually abandoning it makes one a sinner; otherwise, it is certainly Makruh.	7	176
10	Ruling: It is Makruh to lift the garment's hem in prayer to protect it from dust.	2	202
11	Ruling: If sweat comes on the face during prayer in such a way that it causes distress or distraction, then wiping it is not Makruh. Otherwise, it is Makruh Tanzihi.	3	202
12	Ruling: In the summer season, if the hem or pajama sticks to the buttocks and reveals their shape, shaking the cloth to the right or left to avoid this is not Makruh but desired; doing so without need is Makruh.	4	202
13	Ruling: For a person praying, any action that is beneficial for the prayer is permissible and not Makruh. Any action whose benefit does not return to the prayer is at least Makruh and contrary to what is best.	6	202
14	Ruling: If dust on the forehead during prostration causes distress, e.g., it contains fine pebbles or is excessive and falls on the eyes and eyelashes, then there is absolutely no harm in wiping it. It is not Makruh before finishing the final Tashahhud, and there is no harm before the Salam. Cleaning it after the Salam is recommended. In fact, if there is a thought of ostentation (Riya) so that people might see the mark and consider one a prayerful person, then keeping it is forbidden (Haram).	7	202
15	Ruling: If the clothing is very expensive, like a silk warp for a man or pure silk for a woman, and one is praying on bare ground with wet soil such that not protecting the cloth would cause it to be ruined by mud and damaged by washing, then in such a state, there should be permission to protect it. And Allah Almighty knows best.	1	203

Sr. No.	Topics	Benefit No.	Page No.
16	Ruling: It is recommended (Mustahab) that the head be placed directly on the earth during prostration without any barrier.	9	203
17	Ruling: Doubts of drops [of urine] or passing gas can occur in prayer due to Satan's spitting and blowing. The order is that unless there is such certainty that one can swear by it, one should not pay attention to it. If Satan says your wudu is gone, answer in your heart that "You, O wicked one, are a liar," and stay occupied in your prayer.	1	212

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 4

क्रमांक	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
9	मसला: तकबीर-ए-तहरीमा के समय रफ़अ यदैन (हाथ उठाना) सुन्नत-ए-मुअक्कदा है। इसे छोड़ने की आदत डालने से व्यक्ति गुनहगार होगा, वरना यह निश्चित रूप से मकरूह है।	7	176
10	मसला: नमाज़ में मिट्टी से बचाने के लिए दामन उठाना मकरूह है।	2	202
11	मसला: नमाज़ में चेहरे पर पसीना इस तरह आए कि दुख दे या दिल बहके तो उसे पोंछना मकरूह नहीं है, वरना मकरूह-ए-तन्ज़ीही है।	3	202
12	मसला: गर्मी के मौसम में यदि दामन या पाजामा नितंबों से चिपक कर उनकी आकृति स्पष्ट करे, तो इससे बचने के लिए नमाज़ में कपड़े को दाएं बाएं झटकना मकरूह नहीं बल्कि वांछनीय है; बिना आवश्यकता के ऐसा करना मकरूह है।	4	202
13	मसला: नमाजी के लिए हर वह कार्य जो नमाज़ में लाभदायक हो, जायज़ और गैर-मकरूह है। और हर वह कार्य जिसका लाभ नमाज़ की ओर न हो, वह कम से कम मकरूह और ख़िलाफ़-ए-औला है।	6	202
14	मसला: सजदे में माथे पर लगी मिट्टी यदि कष्ट दे, उदाहरण के लिए उसमें बारीक कंकड़ हों या वह इतनी अधिक हो कि आँखों और पलकों पर गिरे, तो उसे पोंछने में कोई हर्ज नहीं है। आख़िरी अत्तहिय्यात ख़त्म होने से पहले यह मकरूह नहीं है और सलाम से पहले भी कोई हर्ज नहीं। सलाम के बाद इसे साफ़ कर देना मुस्तहब है। बल्कि यदि रिया (दिखावे) का ख़याल हो कि लोग माथे पर निशान देखकर नमाजी समझेंगे, तो उसे बाकी रखना हराम होगा।	7	202
15	मसला: यदि कपड़ा बहुत कीमती हो, जैसे पुरुष के लिए रेशमी ताने वाला या स्त्री के लिए शुद्ध रेशमी, और वह खाली ज़मीन पर नमाज़ पढ़ रहा हो जहाँ मिट्टी गीली हो जिससे कपड़ा न बचाने पर कीचड़ से ख़राब हो जाए	1	203

क्रमांक	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
	और धोने से बिगड़ जाए, तो ऐसी स्थिति में उसे बचाने की अनुमति होनी चाहिए। वल्लाहु तआला आलम।		
16	मसला: मुस्तहब है कि सजदे में सिर बिना किसी बाधा के सीधे मिट्टी पर हो।	9	203
17	मसला: शैतान के थूकने और फूँकने से नमाज़ में बूंदों या हवा (गैस) का संदेह हो सकता है। हुक्म यह है कि जब तक ऐसा अटूट विश्वास न हो जिस पर कसम खाई जा सके, तब तक इस पर ध्यान न दें। यदि शैतान कहे कि तुम्हारा वुज़ू टूट गया है, तो दिल में जवाब दें कि 'ऐ ख़बीस, तू झूठा है' और अपनी नमाज़ में मशगूल रहें।	1	212

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۹	مسئلہ: تکبیر تحریمہ کے وقت رفع یدین سنت مؤکدہ ہے ترک کی عادت سے گنہگار ہوگا ورنہ مکروہ ضرور ہے۔	۷	۱۷۶
۱۰	مسئلہ: نماز میں مٹی سے بچانے کیلئے دامن اٹھانا مکروہ ہے۔	۲	۲۰۲
۱۱	مسئلہ: نماز میں منہ پر پسینہ ایسا آیا کہ ایذا دیتا اور دل بٹتا ہے تو اس کا پونچھنا مکروہ نہیں ورنہ مکروہ تنزیہی ہے۔	۳	۲۰۲
۱۲	مسئلہ: گرمی کے موسم میں دامن یا پاجامہ سرین سے مل کر ان کی صورت ظاہر کرتا ہے اس سے بچنے کیلئے کپڑا داہنے بائیں نماز میں جھٹک دینا مکروہ نہیں بلکہ مطلوب ہے اور بلا حاجت کراہت۔	۴	۲۰۲
۱۳	مسئلہ: نمازی کو ہر وہ عمل کہ نماز میں مفید ہو جائز و غیر مکروہ ہے اور ہر وہ عمل جس کا فائدہ نماز کی طرف عائد نہ ہو کم از کم مکروہ و خلاف اولیٰ ہے۔	۶	۲۰۲
۱۴	مسئلہ: سجدہ میں ماتھے پر لگی ہوئی مٹی اگر ایذا دے مثلاً اس میں باریک کنکریاں ہوں یا کثیر ہو کہ آنکھوں پلکوں پر جھڑتی ہے جب تو مطلقاً اسے پونچھنے میں حرج نہیں اور نہ اخیر التحیات کے ختم سے پہلے مکروہ ہے اور اس کے بعد سلام سے پہلے حرج نہیں اور سلام کے بعد اسے صاف کر	۷	۲۰۲

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	دینا تو مستحب ہے بلکہ اگر ریا کا خیال ہو کہ لوگ ٹیکا دیکھ کر نمازی سمجھیں جب تو اس کا باقی رکھنا حرام ہوگا۔		
۱۵	مسئلہ: اگر کپڑا بیش قیمت ہے جیسے ریشمیں تانے کا مرد کیلئے یا خالص ریشمی عورت کیلئے اور نماز خالی زمین پر پڑھ رہا ہے اور مٹی گیلی ہے کہ کپڑا نہ بچائے تو کیچڑ سے خراب ہوگا اور دھونے سے بگڑ جائے گا تو ایسی حالت میں بچانے کی اجازت ہونی چاہیے واللہ تعالیٰ اعلم۔	۱	۲۰۳
۱۶	مسئلہ: مستحب ہے کہ سجدہ میں سر خاک پر بلا حائل ہو۔	۹	۲۰۳
۱۷	مسئلہ: شیطان کے تھوک اور پھونک سے نماز میں قطرے اور ریح کا شبہ ہو جاتا ہے حکم ہے کہ جب تک ایسا یقین نہ ہو جس پر قسم کھا سکے اس پر لحاظ نہ کرے شیطان کہے کہ تیرا وضو جاتا رہا تو دل میں جواب دے لے کہ خبیث تو جھوٹا ہے اور اپنی نماز میں مشغول رہے۔	۱	۲۱۲

Fatawa Razawiyya, Volume 4 Serial No. | Subjects | Benefit No. | Page No. 18 | Ruling: If a person praying gives a prompt (luqma) in the Holy Quran to someone other than their own Imam, the prayer will be invalidated. | 5 | 226 19 | Ruling: If someone is praying and another person tells them to recite a certain verse or Surah, and they recite it with the intention of obeying that person, their prayer will be invalidated. | 6 | 226 20 | Ruling: If one recites Surah Al-Fatiha or another Surah in prayer with the intention of supplication (Dua) or praise (Thana) rather than recitation (Qira'at), the prayer will still be valid. | 5 | 227 21 | Ruling: If during prayer, one intends to address someone or answer them using a Quranic verse or remembrance of Allah (Dhikr)—for example, saying 'Alhamdulillah' (Praise be to Allah) upon hearing good news, or 'Inna lillahi wa inna ilayhi raji'un' (Indeed to Allah we belong and to Him we return) upon hearing sad news—the prayer will be invalidated. However, if someone calls them and they say 'SubhanAllah' or 'La ilaha illAllah' etc., just to signify they are praying, the prayer will not be invalidated. | 3 | 230 22 | Ruling: Standing and praying on impure ground while wearing pure shoes or socks is not valid. However, if one takes off the shoes and stands on them, the prayer will be valid. | 6 | 255 23 | Ruling: Regarding the timing of Isha, the fatwa given by some based on the opinion of Sahibayn is not reliable according to Allama Nuh. | 9 | 398 24 | Ruling: If one forgets to say the salam to the left side in prayer, they should say it as long as they haven't turned away from the Qibla. | 7 | 403 25 | Ruling: Combining two prayers into one time is forbidden (Haram) and a major sin (Gunah-e-Kabira). | 1 | 582 26 | Ruling: If one knows that by sleeping now the prayer time will pass, then sleeping at that time is not permissible unless they rely on someone to wake them up. | 3 | 582 27 | Ruling: If one sleeps at a time when they usually wake up before the prayer time ends, but unexpectedly did not wake up, they are not a sinner. | 4 | 582 28 | Ruling: If a funeral prayer is offered while carrying a corpse before it has been washed (Ghusl), then as a precaution, the prayer will be ruled as invalid. | 16 | 611 29 | Ruling: For one who is hiding due to fear of the police, the obligation of Friday prayer (Jumu'ah) and congregational prayer (Jama'at) is waived. | 2b | 612 Page 699 of 761

फ़तावा रज़विया, जिल्द चौथी क्रम संख्या | विषय | फ़ायदा नंबर | पृष्ठ संख्या 18 | मसला: नमाज़ी अगर अपने इमाम के अलावा किसी और को क़ुरान मजीद में लुक़्मा (सुझाव) देगा तो नमाज़ टूट जाएगी। | 5 | 226 19 | मसला: नमाज़ी नमाज़ में है, उस वक़्त किसी ने कहा कि फ़लां आयत या सूरत पढ़ो, उसने उसका कहना मानने की नियत से पढ़ी तो नमाज़ टूट जाएगी। | 6 | 226 20 | मसला: नमाज़ में सूरह फ़ातिहा या कोई सूरत पढ़ी और क़िरात (पठन) की नियत न की, बल्कि दुआ और सना की नियत की, तब भी नमाज़ हो जाएगी। | 5 | 227 21 | मसला: नमाज़ में अगर किसी आयत या ज़िक्रे इलाही से किसी व्यक्ति को संबोधित करना या बात का जवाब देना चाहेगा, जैसे खुशी की खबर पर 'अलहम्दुलिल्लाह' और दुख की खबर पर 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन' कहना, तो नमाज़ टूट जाएगी। हाँ, अगर किसी ने पुकारा और उसे यह जताने के लिए कि मैं नमाज़ पढ़ रहा हूँ 'सुब्हान अल्लाह' या 'ला इलाहा इल्लल्लाह' वगैरह कहा तो नमाज़ नहीं टूटेगी। | 3 | 230 22 | मसला: नापाक ज़मीन पर पाक जूता या मोज़े पहन कर खड़ा हुआ और नमाज़ पढ़ी तो नमाज़ नहीं होगी। हाँ, जूते उतार कर उन पर पाँव रख कर खड़ा हो तो हो जाएगी। | 6 | 255 23 | मसला: ईशा के वक़्त के बारे में साहिबैन के कौल (विचार) पर कुछ लोगों ने जो फतवा दिया है, अल्लामा नूह ने फ़रमाया कि उस पर एतमाद (भरोसा) जायज़ नहीं। | 9 | 398 24 | मसला: नमाज़ में बाईं तरफ का सलाम फेरना भूल गया, जब तक क़िब्ला से मुड़ा न हो, कह ले। | 7 | 403 25 | मसला: दो नमाज़ें एक ही वक़्त में मिलाकर पढ़ना हराम और गुनाहे कबीरा है। | 1 | 582 26 | मसला: जब जाने कि अब सोने से नमाज़ कज़ा हो जाएगी (छूट जाएगी), उस वक़्त सोना हलाल नहीं है, सिवाय इसके कि जगा देने वाले पर भरोसा हो। | 3 | 582 27 | मसला: ऐसे वक़्त में सोया कि आदतन वक़्त में आँख खुल जाती थी और इत्तिफ़ाक़न (संयोग से) नहीं खुली तो वह गुनहगार नहीं। | 4 | 582 28 | मसला: गुस्ल (स्नान) से पहले अगर किसी मुर्दे को उठाकर नमाज़ पढ़ी गई तो एहतियातन नमाज़ फासिद (रद्द) होने का हुक्म दिया जाएगा। | 16 | 611 29 | मसला: जो पुलिस के डर से छिपा बैठा हो, उस पर से जुमा और जमाअत साक़ित (माफ़) हैं। | 2ब | 612 पेज 761 में से 699

فتاویٰ رضویہ، جلد چہارم نمبر شمار | عنوانات | فائدہ نمبر | صفحہ نمبر ۱۸ | مسئلہ : نمازی اگر اپنے امام کے سوا کسی کو قرآن مجید میں لقمہ دے گا نماز جاتی رہے گی۔ | ۵ | ۲۲۶ ۱۹ | مسئلہ : نمازی نماز میں ہے اس وقت کسی نے کہا فلاں آیت یا سورت پڑھ، اس نے اس کا کہنا ماننے کی نیت سے پڑھی نماز جاتی رہے گی۔ | ۶ | ۲۲۶ ۲۰ | مسئلہ : نماز میں سورۃ فاتحہ یا سورت پڑھی اور قرأت کی نیت نہ کی دعا وثنا کی نیت کی جب بھی نماز ہو جائے گی۔ | ۵ | ۲۲۷ ۲۱ | مسئلہ : نماز میں اگر کسی آیت یا ذکر الٰہی سے کسی شخص کو خطاب یا بات کا جواب چاہے گا مثلاً بقصد جواب خوشی کی خبر پر الحمد للہ، رنج کی خبر پر انا للہ وانا الیہ راجعون کہا نماز جاتی رہے گی، ہاں اگر کسی نے پکارا اسے یہ جتانے کیلئے کہ میں نماز پڑھ رہا ہوں سبحان اللہ یا لا الہ الا اللہ وغیرہ کہا نماز نہ جائے گی۔ | ۳ | ۲۳۰ ۲۲ | مسئلہ : ناپاک زمین پر پاک جوتا یا موزے پہن کر کھڑا ہوا اور نماز پڑھے نماز نہ ہو گی، ہاں جوتے اتار کر ان پر پاؤں رکھ کر کھڑا ہو تو ہو جائے گی۔ | ۶ | ۲۵۵ ۲۳ | مسئلہ : دربارہ وقت عشاء جو قول صاحبین پر بعض نے فتویٰ دیا علامہ نوح نے فرمایا اس پر اعتماد جائز نہیں۔ | ۹ | ۳۹۸ ۲۴ | مسئلہ : نماز میں بائیں طرف کا سلام پھیرنا بھول گیا جب تک قبلہ سے نہ پھر اہو کہہ لے۔ | ۷ | ۴۰۳ ۲۵ | مسئلہ : دو نمازیں ایک وقت میں ملا کر پڑھنا حرام و گناہِ کبیرہ ہے۔ | ۱ | ۵۸۲ ۲۶ | مسئلہ : جب جانے کے اب سویا تو نماز جاتی رہے گی اس وقت سونا حلال نہیں مگر جبکہ کسی جگا دینے والے پر اعتماد ہو۔ | ۳ | ۵۸۲ ۲۷ | مسئلہ : ایسے وقت میں سویا کہ عادۃً وقت میں آنکھ کھل جاتی اور اتفاقاً نہ کھلی تو گنہگار نہیں۔ | ۴ | ۵۸۲ ۲۸ | مسئلہ : پیش از غسل اگر کسی مردے کو اٹھا کر نماز پڑھی احتیاطاً فسادِ نماز کا حکم دیا جائے گا۔ | ۱۶ | ۶۱۱ ۲۹ | مسئلہ : جو پولیس کے خوف سے چھپا بیٹھا ہو اس پر سے جمعہ و جماعت ساقط ہیں۔ | ۲ب | ۶۱۲ Page

Fatawa Rizvia, Volume 4

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
30	Ruling: An elderly, weak person is on a horse or camel and is unable to dismount or mount by themselves, and there is no one to help, or they demand a fee that the person cannot pay, or they ask for more than the usual rate, or they want cash which the person doesn't have at the moment; in all these cases, they should offer prayer while mounted.	1	617
31	Ruling: A woman is on a mount and has neither her husband nor a Mahram to help her mount or dismount; she should pray while mounted. This situation often occurs for women in litters during Hajj. This is also a wisdom of the Shari'ah, for which reason it has forbidden a woman from traveling without a Mahram.	2	617
32	Ruling: During a journey, if the horse is restless (difficult to mount) and won't let the rider remount after dismounting, the rider should offer prayer while mounted.	6	617
33	Ruling: If dismounting and mounting will increase an illness, one should offer prayer while mounted.	1	618
34	Ruling: If standing causes a wound to bleed or drops to leak, it is necessary to offer prayer while sitting.	2	618
35	Ruling: Praying behind an open sinner (fasiq-e-mu'lin) is Makruh Tahrimi (prohibitively disliked), such that praying is a sin and repeating it is obligatory. Yes, if Friday prayer occurs in only one place in a city and its Imam is a sinner, then out of necessity, pray behind him so as not to miss the Friday prayer elsewhere. If Friday prayer is held in multiple places, then even in that case, it is forbidden to pray behind a sinner. I say: except in the case where the congregation led by righteous people has already finished and it won't be found elsewhere, or due to illness etc., one does not have the strength to go elsewhere.	6	618
36		7	618

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
	Ruling: Eid prayers cannot be offered behind every Imam; rather, like Friday prayer, it is necessary that the Imam be the Sultan of Islam himself, his deputy, or an authorized person. If none of these are present, then out of necessity, the person appointed by the Muslims as the Friday Imam [should lead].		
37	Ruling: During a solar eclipse as well, only the designated Friday Imam can lead the prayer.	8	618
38	Ruling: Congregation is not mandatory for a solar eclipse prayer; it is only recommended if the Friday Imam is present. It is also permissible for everyone to pray alone at home or in the mosque.	9	618
39	Ruling: If the eclipse ends, there is no eclipse prayer after that.	11	618
40	Ruling: If the initial sunnahs of Zuhr or Friday prayer could not be performed due to the commencement of the congregational prayer, they can be made up (qada) as long as the time remains; they cannot be made up after the time expires.	12	618
41	Ruling: Tahajjud prayer is recommended (mustahab).	4	619

फ़तावा रज़विया, जिल्द चौथी

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
30	मसला: बूढ़ा कमज़ोर व्यक्ति घोड़े या ऊँट पर सवार है और खुद उतरने-चढ़ने में सक्षम नहीं है और कोई मदद करने वाला नहीं है, या वह मज़दूरी मांगता है और यह दे नहीं सकता, या वह सामान्य से अधिक मज़दूरी मांगता है, या नकद चाहता है और यहाँ इसके पास नहीं है; इन सभी स्थितियों में वह सवारी पर ही नमाज़ पढ़े।	1	617
31	मसला: औरत सवारी पर है और चढ़ाने-उतारने के लिए न शौहर है न महरम; वह सवारी पर ही नमाज़ पढ़े। हज में हौदे (शकदफ़) में बैठने वाली औरतों को अक्सर यह स्थिति पेश आती है। यह भी शरीयत की एक हिकमत है, जिसके लिए उसने बिना महरम के औरत के सफ़र को हराम फ़रमाया।	2	617
32	मसला: सफ़र में घोड़ा अड़ियल (बद-रकाब) है, उतरने के बाद फिर से चढ़ने नहीं देगा, तो वह उसी पर नमाज़ पढ़े।	6	617
33	मसला: अगर उतरने-चढ़ने से बीमारी बढ़ेगी, तो सवारी पर ही नमाज़ पढ़े।	1	618
34	मसला: अगर खड़े होने से ज़ख्म बहे या कतरा आए, तो बैठकर नमाज़ पढ़ना लाज़िम है।	2	618
35	मसला: खुले गुनहगार (फ़ासिक़-ए-मोअ्लिन) के पीछे नमाज़ मकरूह-ए-तहरीमी है, यानी पढ़ना गुनाह है और दोहराना वाजिब। हाँ, अगर शहर में जुमा एक ही जगह होता हो और उसका इमाम फ़ासिक़ हो, तो मजबूरी में उसके पीछे पढ़े ताकि दूसरी जगह जुमा न मिल सके। और अगर जुमा कई जगहों पर होता हो, तो ऐसी सूरत में भी फ़ासिक़ के पीछे पढ़ना मना है। मैं कहता हूँ: मगर उस सूरत में कि नेक लोगों की इमामत में जुमा पहले हो चुका हो और अब दूसरी जगह न मिलेगा, या बीमारी आदि की वजह से दूसरी जगह जाने की ताक़त नहीं है।	6	618

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
36	मसला: ईद की नमाज़ हर इमाम के पीछे नहीं हो सकती, बल्कि इसमें भी जुमे की तरह ज़रूरी है कि इमाम खुद सुल्तान-ए-इस्लाम हो या उसका नायब या माज़ून (अधिकृत व्यक्ति)। अगर इनमें से कोई न हो, तो मजबूरी में जिसे मुसलमानों ने जुमे का इमाम मुक़र्रर किया हो।	7	618
37	मसला: सूरज ग्रहण में भी सिर्फ़ जुमे का मुक़र्रर इमाम ही इमामत कर सकता है।	8	618
38	मसला: सूरज ग्रहण में जमाअत ज़रूरी नहीं, सिर्फ़ मुस्तहब है जबकि जुमे का इमाम हाज़िर हो। यह भी जायज़ है कि हर व्यक्ति अपने घर या मस्जिद में अकेला पढ़े।	9	618
39	मसला: ग्रहण समाप्त हो जाए, तो उसके बाद ग्रहण की नमाज़ नहीं है।	11	618
40	मसला: ज़ुहर या जुमे की पहली सुन्नतें अगर जमाअत खड़ी होने के कारण नहीं पढ़ सका, तो जब तक वक़्त बाक़ी है उनकी क़ज़ा का हुक्म है, वक़्त बीतने के बाद नहीं हो सकेगी।	12	618
41	मसला: तहज्जुद की नमाज़ मुस्तहब है।	4	619

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۳۰	مسئلہ: بوڑھا ضعیف شخص گھوڑے یا اونٹ پر سوار ہے اور خود اترنے چڑھنے پر قادر نہیں اور کوئی مدد دینے والا نہیں یا وہ اجرت مانگتا ہے اور یہ دے نہیں سکتا یا اجرت مثل سے زیادہ مانگتا ہے یا نقد چاہتا ہے اور یہاں اس کے پاس نہیں ان سب صورتوں میں سواری ہی پر نماز پڑھے۔	۱	۶۱۷
۳۱	مسئلہ: عورت سواری پر ہے اور چڑھانے اتارنے کو نہ شوہر نہ محرم سواری ہی پر نماز پڑھے۔ حج میں شقدف نشین عورتوں کو یہ صورت اکثر پیش آتی ہے یہ بھی ایک مصلحت شرع ہے جس کیلئے اس نے بغیر محرم کے عورت پر سفر حرام فرمایا۔	۲	۶۱۷
۳۲	مسئلہ: سفر میں گھوڑا بد رکاب ہے اتر کر چڑھنے نہ دے گا اسی پر نماز پڑھے۔	۶	۶۱۷
۳۳	مسئلہ: اترنے چڑھنے میں مرض بڑھے گا سواری ہی پر نماز پڑھے۔	۱	۶۱۸
۳۴	مسئلہ: کھڑا ہو تو زخم بہے یا قطرہ آئے بیٹھ کر نماز پڑھنی لازم ہے۔	۲	۶۱۸
۳۵	مسئلہ: فاسق معلن کے پیچھے نماز مکروہ تحریمی ہے کہ پڑھنی گناہ اور پھیرنی واجب، ہاں اگر جمعہ شہر میں ایک ہی جگہ ہوتا ہے اور اس کا امام فاسق ہے تو بمجبوری اس کے پیچھے پڑھے کہ دوسری جگہ جمعہ نہ مل	۶	۶۱۸

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	سکے گا اور اگر جمعہ متعدد جگہ ہوتا ہو تو اسے بھی فاسق کے پیچھے پڑھنا منع۔ اقول: مگر اس صورت میں کہ صالحین کی امامت سے جمع پہلے ہو چکا اب دوسری جگہ نہ ملے گا یا اسے بوجہ مرض وغیرہ اور جگہ جانے کی طاقت نہیں۔		
۳۶	مسئلہ: عیدین کی نماز ہر امام کے پیچھے نہیں ہو سکتی بلکہ اس میں بھی مثل جمعہ لازم کہ امام خود سلطانِ اسلام یا اس کا نائب یا ماذون ہو اور ان میں کوئی نہ ہو تو بمجبوری جسے مسلمانوں نے امام جمعہ مقرر کیا ہو۔	۷	۶۱۸
۳۷	مسئلہ: سورج گہن میں بھی صرف امام معینِ جمعہ امامت کر سکتا ہے۔	۸	۶۱۸
۳۸	مسئلہ: سورج گہن میں جماعت ضروری نہیں صرف مستحب ہے جبکہ امام جمعہ حاضر ہو۔ یہ بھی جائز کہ ہر شخص اپنے گھر یا مسجد میں تنہا پڑھے۔	۹	۶۱۸
۳۹	مسئلہ: گہن چھوٹ جائے تو اس کے بعد گہن کی نماز نہیں۔	۱۱	۶۱۸
۴۰	مسئلہ: ظہر یا جمعہ کی پہلی سنتیں اگر قیام جماعت کے سبب نہ پڑھ سکا تو جب تک وقت باقی ہے ان کی قضا کا حکم ہے بعد وقت نہ ہوسکے گی۔	۱۲	۶۱۸
۴۱	مسئلہ: نماز تہجد مستحب ہے۔	۴	۶۱۹

Fatawa-e-Razvia - Volume 4

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
42	Issue: If the Sunnah prayers of Fajr are missed, then after the rising of the sun until before Zuha-e-Kubra, their makeup (Qaza) is only recommended (Mustahabb).	5	619
43	Issue: The author's research is that if the time for a recommended (Mustahabb) prayer is expiring, then Tayammum (dry ablution) is not permissible for it.	1	620
44	Issue: The Lunar Eclipse prayer is only recommended (Mustahabb), while the Solar Eclipse prayer is Sunnat-e-Mu'akkadah, close to being obligatory (Wajib).	2	621
45	Issue: For the Solar Eclipse prayer, it is appropriate to pray in an Eidgah or a Jami' Masjid.	3	622
46	Issue: Seek refuge in Allah from terrifying events such as strong winds, thunder, earthquakes, continuous rain or snow, daytime becoming dark like night, or fearful lights. In all such cases, it is recommended for Muslims to turn to their Lord through voluntary (Nafal) prayers.	7	622
47	Issue: Performing voluntary (Nafal) prayers on a vehicle outside the city through gestures is permissible. However, if mounting and dismounting is possible and water is less than a mile away, Tayammum is not allowed.	1	623
48	Issue: If by performing purification with water, one can catch the obligatory (Fard) prayer within its time, but Sunnah or Witr prayers will be missed, Tayammum is not permitted. One should purify with water and pray only the Fard prayer, then perform Qaza for Witr; the Sunnahs are lost.	3	623
49	Issue: If a traveler is in a place where the entire ground is wet and impure, and there's no place to pray; if they can quickly leave and find pure ground for prayer, they should do so. If they see that time is running out, they should pray there with gestures, and it is not necessary to repeat that prayer.	3	624
50		4	626

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
	Issue: The difference between short and long travel exists in three matters: shortening of prayer (Qasr), breaking of fast (Iftar), and wiping over socks (Masah). For Tayammum due to water being a mile away, or praying voluntary (Nafal) prayers on a vehicle outside inhabited areas, no minimum travel duration is required. Even if one goes out of their city for leisure, hunting, or work, these permissions apply.		
51	Issue: If several men are naked and have only one cloth suitable for covering themselves, such that one person ties it and prays then gives it to the next; if someone knows their turn will come after the prayer time has passed, they should wait until near the end of the time and then pray as they are (naked), then repeat the prayer later.	3	627

फ़तावा-ए-रज़विया - खंड 4

क्रम संख्या	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
42	मसला: यदि फज्र की सुन्नतें कज़ा हो जाएँ तो सूर्योदय के बाद और ज़ुहा-ए-कुबरा से पहले उनकी कज़ा केवल मुस्तहब (पसंदीदा) है।	5	619
43	मसला: लेखक का शोध यह है कि यदि मुस्तहब नमाज़ का समय समाप्त हो रहा हो, तो उसके लिए तयम्मुम जायज़ नहीं है।	1	620
44	मसला: चंद्र ग्रहण की नमाज़ केवल मुस्तहब है, जबकि सूर्य ग्रहण की नमाज़ सुन्नत-ए-मुअक्कदह है, जो वाजिब के निकट है।	2	621
45	मसला: सूर्य ग्रहण की नमाज़ के लिए उपयुक्त यह है कि ईदगाह या जामा मस्जिद में पढ़ी जाए।	3	622
46	मसला: अल्लाह की पनाह उन भयानक बातों से जैसे तेज़ आँधी, कड़क, भूकंप, लगातार बारिश या बर्फ का गिरना, दिन का रात जैसा अंधेरा हो जाना या डरावनी रोशनी। इन सब स्थितियों में मुस्तहब है कि मुसलमान नफिल नमाज़ के ज़रिए अपने रब की ओर मुड़ें।	7	622
47	मसला: शहर के बाहर सवारी पर इशारे से नफिल नमाज़ पढ़ना जायज़ है। लेकिन अगर चढ़ना-उतरना मुमकिन हो और पानी एक मील से कम दूरी पर हो, तो तयम्मुम की अनुमति नहीं है।	1	623
48	मसला: अगर पानी से पाकी हासिल करके समय के भीतर फ़र्ज़ नमाज़ मिल सकती है, लेकिन सुन्नतें या वित्र नहीं हो पाएंगे, तो तयम्मुम की अनुमति नहीं है। पानी से पाकी हासिल करके अकेले फ़र्ज़ पढ़ ले और वित्र की कज़ा पढ़े; सुन्नतें छूट गईं।	3	623
49	मसला: मुसाफ़िर ऐसी जगह है जहाँ पूरी ज़मीन गीली और नापाक है, नमाज़ पढ़ने की कोई जगह नहीं है। अगर वह जल्दी से वहाँ से निकलकर नमाज़ के लिए पाक ज़मीन पा सकता है, तो वैसा ही करे। और अगर देखे कि	3	624

क्रम संख्या	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
	समय समाप्त हो जाएगा, तो वहीं इशारे से पढ़ ले और उस नमाज़ को दोहराना भी ज़रूरी नहीं है।		
50	मसला: छोटी या लंबी यात्रा का अंतर तीन मसलों में है: नमाज़ को छोटा करना (क़स्र), रोज़ा खोलना (इफ्तार) और मोज़ों पर मसह करना। पानी एक मील दूर होने पर तयम्मुम करने या आबादी से बाहर सवारी पर नफिल नमाज़ पढ़ने के लिए यात्रा की किसी निश्चित अवधि की आवश्यकता नहीं है। यदि कोई अपने शहर से बाहर सैर-सपाटे, शिकार या किसी काम से गया हो, तब भी ये अनुमतियाँ लागू होती हैं।	4	626
51	मसला: कुछ आदमी निर्वस्त्र हैं और उनके पास तन ढकने के लिए केवल एक कपड़ा है, जिसे एक बाँधकर नमाज़ पढ़ता है और फिर दूसरे को देता है। उनमें से जिसे यह लगे कि उसकी बारी तब आएगी जब समय बीत चुका होगा, वह समय के अंत के करीब इंतज़ार करे और फिर वैसे ही (निर्वस्त्र) पढ़ ले, फिर बाद में नमाज़ दोहराए।	3	627

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۴۲	مسئلہ: صبح کی سنتیں قضا ہو جائیں تو بلندیِ آفتاب کے بعد ضحوہ کبریٰ سے پہلے تک ان کی قضا صرف مستحب ہے۔	۵	۶۱۹
۴۳	مسئلہ: مصنف کی تحقیق کہ مستحب نماز کا وقت جاتا ہو تو اس کیلئے تیمم روا نہیں۔	۱	۶۲۰
۴۴	مسئلہ: چاند گہن کی نماز صرف مستحب ہے اور سورج گہن کی سنت مؤکدہ قریب بواجب۔	۲	۶۲۱
۴۵	مسئلہ: سورج گہن کی نماز میں مناسب یہ ہے کہ عیدگاہ میں پڑھیں یا مسجد جمعہ میں۔	۳	۶۲۲
۴۶	مسئلہ: معاذ اللہ جو بات ہولناک ہو جیسے سخت آندھی، کڑک، زلزلہ، مینہ یا برف لگاتار برسے جانا دن کو اندھیری رات کو خوفناک روشنی ان سب میں مستحب ہے کہ مسلمان نفل نماز سے اپنے رب کی طرف رجوع کریں۔	۷	۶۲۲
۴۷	مسئلہ: شہر سے باہر سواری پر نمازِ نفل اشارے سے جائز ہے مگر چڑھنا اترنا ممکن اور پانی میل بھر سے کم دور ہو تو تیمم اجازت نہیں۔	۱	۶۲۳
۴۸		۳	۶۲۳

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: اگر پانی سے طہارت کر کے وقت میں فرض پاسکتا ہے سنتیں یا وتر نہ ہو سکیں گے تو تیمم کی اجازت نہیں پانی سے طہارت کر کے تنہا فرض پڑھ لے اور وتروں کی قضا پڑھے سنتیں گئیں۔		
۴۹	مسئلہ: مسافر ایسی جگہ ہے کہ ساری زمین بھیگی ہوئی اور ناپاک ہے کہیں نماز پڑھنے کی جگہ نہیں اگر جلدی کر کے وہاں سے نکل سکتا اور پاک زمین نماز کیلئے پاسکتا ہو تو ایسا ہی کرے اور اگر دیکھے کہ جب تک وقت جاتا رہے گا تو وہیں اشارے سے پڑھ لے اور اس نماز کا پھیرنا بھی ضرور نہیں۔	۳	۶۲۴
۵۰	مسئلہ: سفر قلیل یا کثیر کا فرق تین مسئلوں میں ہے قصر نماز و افطارِ صوم و مسح موزہ۔ باقی پانی میل بھر دور ہونے کیلئے تیمم یا آبادی سے باہر سواری پر نفل پڑھنے میں کچھ مدّت سفر درکار نہیں اپنے شہر سے باہر سیر و شکار یا کسی کام کو گیا ہو جب بھی یہ اجازتیں ہیں۔	۴	۶۲۶
۵۱	مسئلہ: چند آدمی برہنہ ہیں ان کے پاس سترِ عورت کے لائق صرف ایک کپڑا ہے کہ ایک اسے باندھ کر پڑھ لیتا ہے تو دوسرے کو دیتا ہے ان میں جو یہ جانے کہ مجھ تک باری اس وقت پہنچے گی کہ وقت جاتا رہے گا وہ اخیر وقت کے قریب انتظار کر کے یونہی پڑھ لے پھر پھیرے۔	۳	۶۲۷

Fatawa Rizviya Volume 4

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page No.
52	Problem: People are gathered in a boat, train, or any cramped space where there is no room to stand for prayer. When one sees the time is running out, they should pray sitting down and then repeat it later.	4	627
53	Problem: Clothes are impure, and there are no pure clothes available to cover the body (Satr), and water for washing is present, but by the time it's cleaned, the prayer time will lapse. One should pray as is and then repeat it later.	5	627
54	Problem: A sick person cannot stand for prayer at this time but strongly believes they will be able to stand after some time. However, waiting will cause the time to lapse. They should pray sitting down, and there is no need to repeat it.	6	627
55	Problem: A sick person is currently unable to perform Wudu or Ghusl but knows they will be able after the time lapses. For example, needing a bath in the morning, cold water is harmful, but there would be no harm after sunrise. In this case, one should pray with Tayammum within the time, and no repetition is needed.	7	627
56	Problem: Someone with clothes says to a naked person, "Let me pray first, then I will give you the clothes." After waiting until near the end of the time, they should pray as they are, and no repetition is needed.	8	627
57	Problem: After eye surgery, the doctor has forbidden movement. One should pray by gestures, and no repetition is needed.	3	628
58	Problem: If in Fajr, Jumu'ah, or Eid prayers, the time is so short that performing the Sunnahs like reciting tasbihs three times in Ruku and Sujud, Subhanak Allahumma, A'udhu, Durood, and Du'a will cause the time to lapse, then one should suffice with only the Wajibat (obligatory acts). And if there isn't even time for Wajibat like reciting Surah Al-Fatihah and another		

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page No.
	Surah, then one should limit to only the Fard, i.e., reciting one verse, and then repeat the prayer later.		
	I say: The situation of omitting 'At-Tahiyyat' will not arise here because these four prayers have two rak'ahs, and in the final sitting (Qa'da Akhira), although reciting 'At-Tahiyyat' is not Wajib but sitting for the duration it takes to recite the full 'At-Tahiyyat' is Fard. So, when one performs this Fard, this Wajib will also be fulfilled along with it, so omitting it is not permissible.	8	628

फतावा रजविया खंड 4

क्रम संख्या	शीर्षक	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
52	मसला: नाव, रेल या किसी तंग जगह में लोग जमा हैं जहाँ खड़े होकर नमाज़ पढ़ने की जगह नहीं है। जब देखे कि वक्त निकला जा रहा है, तो बैठकर पढ़ ले, फिर बाद में लौटाए।	4	627
53	मसला: कपड़ा नापाक है और उसके अलावा सतर (शरीर ढकने) के लिए पाक कपड़ा नहीं है और धोने के लिए पानी मौजूद है, लेकिन जितनी देर में उसे पाक करे वक्त चला जाएगा, तो ऐसे ही पढ़ ले, फिर बाद में लौटाए।	5	627
54	मसला: मरीज़ इस समय खड़ा होकर नहीं पढ़ सकता लेकिन प्रबल संभावना है कि कुछ देर बाद खड़े होने में सक्षम हो जाएगा, परंतु इंतज़ार करने में वक्त चला जाएगा। वह बैठकर पढ़ ले और दोहराने की ज़रूरत नहीं है।	6	627
55	मसला: मरीज़ इस समय वज़ू या ग़ुस्ल करने से असमर्थ है लेकिन जानता है कि वक्त गुज़रने के बाद सक्षम हो जाएगा। उदाहरण के लिए, सुबह नहाने की ज़रूरत है, ठंडे वक्त में पानी से नुकसान होता है लेकिन दिन चढ़ने पर नुकसान नहीं होगा, तो वक्त के भीतर तयम्मुम से नमाज़ पढ़ ले और दोहराना नहीं है।	7	627
56	मसला: कपड़े वाले ने निर्वस्त्र व्यक्ति से कहा कि मैं नमाज़ पढ़ लूँ तो तुझे कपड़े दे दूँगा। वक्त खत्म होने के करीब तक इंतज़ार करके वैसे ही पढ़ ले और दोहराना नहीं है।	8	627
57	मसला: आँख बनवाई (ऑपरेशन करवाया) हकीम ने हिलने-डुलने से मना किया है, तो इशारे से नमाज़ पढ़े और दोहराना नहीं है।	3	628
58	मसला: अगर फ़ज्र, जुमा या ईदैन की नमाज़ में वक्त इतना कम हो कि नमाज़ में सुन्नतें जैसे रुकू और सजदा की तस्बीह तीन-तीन बार कहना, सुब्हानक अल्लाहुम्मा, अऊज़ु, दुरूद और दुआ पढ़ने से वक्त निकल		

क्रम संख्या	शीर्षक	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या

जाएगा, तो केवल वाजिबात पर कनाअत (संतोष) करे। और अगर वाजिबात जैसे सूरह फ़ातिहा और कोई सूरह पढ़ने लायक भी वक्त नहीं है, तो केवल फ़र्ज़ यानी एक आयत पर इक्तिसार (सीमित) करे और बाद में नमाज़ लौटाए।

कथन: मैं कहता हूँ: यहाँ अत-तहियात छोड़ने की स्थिति नहीं बनेगी क्योंकि ये चारों नमाज़ें दो रकात वाली हैं और आखिरी कायदा (बैठने) में यद्यपि अत-तहियात पढ़ना वाजिब नहीं है, लेकिन इतनी देर बैठना जिसमें पूरी अत-तहियात पढ़ी जा सके फर्ज़ है। तो जब इस फर्ज़ को अदा करेगा, तो उसके साथ यह वाजिब भी अदा हो जाएगा, अतः इसे छोड़ना जायज़ नहीं है। | 8 | 628 |

पृष्ठ संख्या 702/761

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۵۲	مسئلہ: کشتی یا ریل یا کسی تنگ مکان میں لوگ جمع ہیں کہ کھڑے ہو کر نماز کی گنجائش نہیں جب وقت جاتا دیکھے بیٹھ کر پڑھ لے پھر پھیرے۔	۴	۶۲۷
۵۳	مسئلہ: کپڑا نا پاک ہے اور اس کے سوا ستر عورت کے قابل پاک کپڑا نہیں اور پانی دھونے کو موجود ہے مگر جتنی دیر میں اسے پاک کرے وقت جاتا رہے گا یوں ہی پڑھ لے پھر پھیرے۔	۵	۶۲۷
۵۴	مسئلہ: مریض اس وقت کھڑے ہو کر نہیں پڑھ سکتا مگر ظن غالب ہے کہ کچھ دیر کے بعد قیام پر قادر ہو جائے گا لیکن انتظار میں وقت جاتا ہے بیٹھ کر پڑھ لے اور اعادہ کی حاجت نہیں۔	۶	۶۲۷
۵۵	مسئلہ: مریض اس وقت وضو یا غسل سے عاجز ہے مگر جانتا ہے کہ وقت نکل جانے کے بعد قادر ہو جائے گا۔ مثلاً صبح کو نہانے کی حاجت ہے ٹھنڈے وقت میں اسے پانی سے ضرر ہوتا ہے دن چڑھے نقصان نہ ہو گا تو وقت میں تیمم سے پڑھ لے اور اعادہ نہیں۔	۷	۶۲۷
۵۶	مسئلہ: کپڑے والے نے برہنہ سے کہا کہ میں نماز پڑھ لوں تو تجھے کپڑا دے دوں گا آخر وقت کے قریب تک انتظار کر کے یوں ہی پڑھ لے اور اعادہ نہیں۔	۸	۶۲۷

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۵۷	مسئلہ: آنکھ بنوائی طبیب نے جنبش سے منع کیا اشارے سے نماز پڑھے اور اعادہ نہیں۔	۳	۶۲۸
۵۸	مسئلہ: اگر نماز صبح یا جمعہ یا عیدین میں وقت اتنا تنگ ہو کہ نماز میں سنتیں مثلاً رکوع سجدہ کی تسبیحیں تین تین بار سبحانک اللہم اعوذ درود و دعا بجالانے سے وقت نکل جائے گا تو صرف واجبات پر قناعت کرے اور اگر واجبات مثلاً قراءت فاتحہ و سورت کے قابل بھی وقت نہیں تو صرف فرض یعنی ایک آیت پر اقتصار کرے بعد کو نماز پھیرے۔		

اقول: یہاں ترک التحیات کی صورت نہ نکلے گی کہ یہ چاروں نمازیں دو رکعتی ہیں اور قعدہ اخیرہ میں اگرچہ التحیات پڑھنی واجب نہیں مگر اتنی دیر بیٹھنا جس میں پوری التحیات پڑھی جائے فرض ہے تو جب اس فرض کو ادا کرے گا تو اسی کے ساتھ یہ واجب بھی ادا ہو سکے گا تو اس کا ترک جائز نہیں۔ | ۸ | ۶۲۸ |

Fatawa Ridawiyya, Volume 4

Serial No.	Subjects	Benefit No.	Page No.
59	Issue: The valid fear of an increase in illness or falling sick due to bathing in cold weather is based on strong probability, experience, or the statement of a skilled Muslim physician who is not a transgressor. If bathing later in the day will not cause harm, then the person in a state of major ritual impurity should perform Tayammum to offer the morning prayer, and no repetition is required.	3	629
60	Issue: If there is an enemy, thief, beast, snake, or fire at the water source, one should pray using Tayammum. Waiting for them to leave or for the fire to be extinguished is not mandatory. However, if there is hope for their quick departure, waiting until the end of the recommended (Mustahab) time is preferred. In any case, there is no need for repetition.	4	629
61	Note: When a person intends to offer prayer at its time, they should not be stopped, and they will be ordered to pray according to their current capacity, even if it is expected that a better condition will be available later. However, if there is hope for a better condition within the recommended time, waiting is better.	5	629
62	Issue: If someone promised to give clothes to a person who has none, they should wait until the end of the recommended time and then pray as they are; there is no need for repetition.	2	630
63	Issue: If the night is so dark that the path to the mosque is not visible, or if there is such darkness in the morning due to a dense black cloud or because a black storm has passed at any time, then this is an excuse for not attending the congregation. I say: Similarly, this last scenario is an excuse for skipping the Friday prayer because it falls under the ruling of a blind person. The reason scholars did not mention it there is that such darkness is generally found at night, not during the day. (T)	2	632

Serial No.	Subjects	Benefit No.	Page No.
64	Issue: If standing increases the illness, delays recovery, or causes unbearable severe pain, then praying while sitting is permitted. Mere discomfort is not an excuse.	4	632
65	Issue: If a lamp or lantern is available that can be taken to the mosque, or if it can be prepared without difficulty—for example, oil and matches are present—then no matter how dark it is, it cannot be an excuse for skipping congregational prayer.	2	633

फतावा रज़विया, जिल्द 4

क्रम संख्या	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
59	मसला: ठंडे समय नहाने से बीमारी बढ़ने या बीमार पड़ जाने का सही डर, प्रबल संभावना (ज़न्न-ए-गालिब), अनुभव, या किसी कुशल मुसलमान चिकित्सक जो गुनाहगार (फासिक) न हो, के बयान पर आधारित है। यदि दिन चढ़ने पर नहाने से नुकसान न हो, तो अब वह व्यक्ति जो जनाबत की हालत में है, सुबह की नमाज़ तयम्मुम से पढ़ ले और उसे दोहराने की ज़रूरत नहीं है।	3	629
60	मसला: पानी के स्थान पर दुश्मन, चोर, दरिंदा, सांप या आग लगी हो, तो तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ले। उनके जाने या आग बुझने का इंतज़ार करना फ़र्ज़ नहीं है। हाँ, यदि जल्द ही उनके हट जाने की उम्मीद हो, तो मुस्तहब समय के अंत तक इंतज़ार करना मुस्तहब है। बहरहाल, नमाज़ दोहराने की आवश्यकता नहीं है।	4	629
61	फ: जब कोई व्यक्ति समय पर नमाज़ का इरादा करे तो उसे रोका नहीं जाएगा, और उस समय वह जिस तरह सक्षम है, उसी के अनुसार हुक्म दिया जाएगा, चाहे बाद में बेहतर स्थिति मिलने का गुमान हो। हाँ, अगर मुस्तहब समय के भीतर बेहतर स्थिति होने की उम्मीद हो, तो इंतज़ार करना बेहतर है।	5	629
62	मसला: किसी ने नंगे व्यक्ति को कपड़े देने का वादा किया, तो वह मुस्तहब समय के अंत तक इंतज़ार करे और फिर वैसे ही नमाज़ पढ़ ले; इसे दोहराने की ज़रूरत नहीं है।	2	630
63	मसला: यदि रात इतनी अंधेरी हो कि मस्जिद तक का रास्ता न दिखे, या सुबह काली बदली छा जाने से या किसी समय काली आंधी चलने के कारण ऐसा अंधेरा हो, तो यह जमात में न आने का उज़्र (बहाना/कारण) है। मैं कहता हूँ: इसी प्रकार, यह अंतिम स्थिति जुमा छोड़ने के लिए भी उज़्र है	2	632

क्रम संख्या	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
	क्योंकि यह अंधे व्यक्ति के हुक्म में है। विद्वानों ने इसे वहां इसलिए ज़िक्र नहीं किया क्योंकि आम तौर पर ऐसा अंधेरा रात के समय पाया जाता है, दिन में नहीं। (त)		
64	मसला: यदि खड़े होने से बीमारी बढ़े, ठीक होने में देरी हो, या दर्द इतना तीव्र हो जिसे सहन न किया जा सके, तो बैठकर नमाज़ पढ़ने की अनुमति होगी। मात्र थोड़ी सी तकलीफ होना उज़्र नहीं है।	4	632
65	मसला: यदि चिराग या लालटेन उपलब्ध हो जिसे मस्जिद तक ले जाया जा सके, या उसे तैयार करने में कठिनाई न हो - उदाहरण के लिए तेल और दियासलाई मौजूद है - तो अंधेरा चाहे कैसा भी हो, जमात छोड़ने के लिए उज़्र नहीं हो सकता।	2	633

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۵۹	مسئلہ: ٹھنڈے وقت نہانے سے مرض کی زیادت یا بیمار پڑ جانے کا صحیح اندیشہ ظن غالب تجربے یا طبیب مسلم حاذق غیر فاسق کے بیان سے ہے اور دن چڑھے نہائے تو نقصان نہ ہوگا اب یہ صبح کو جنب اٹھا تیمّم سے نماز پڑھے اور اعادہ نہیں۔	۳	۶۲۹
۶۰	مسئلہ: پانی پر دشمن یا چور یا درندہ یا سانپ یا آگ لگی ہوئی ہے تیمّم سے پڑھ لے اُن کے چلے جانے یا آگ بجھ جانے کا انتظار فرض نہیں، ہاں جلد زوال کی امید ہو تو اخیر وقت مستحب تک انتظار مستحب ہے بہر حال اعادہ کی حاجت نہیں۔	۴	۶۲۹
۶۱	ف: آدمی جب وقت پر نماز کا ارادہ کرے منع نہ کیا جائے گا اور اس وقت جس طرح قادر ہے اسی قدر کا حکم دیا جائے گا اگرچہ دیر کے بعد اس سے بہتر حالت ملنے کا گمان ہو، ہاں اگر وقت مستحب کے اندر بہتر حالت ہو جانے کی امید ہو تو انتظار بہتر ہے۔	۵	۶۲۹
۶۲	مسئلہ: ننگے سے کسی نے کپڑا دینے کا وعدہ کیا آخر وقت مستحب تک انتظار کر کے یوں ہی پڑھ لے اور پھیرنے کی حاجت نہیں۔	۲	۶۳۰
۶۳	مسئلہ: اگر رات اتنی اندھیری ہے کہ مسجد تک راستہ نظر نہیں آتا یا صبح کو سیاہ بدلی محیط ہونے سے یا کسی وقت سیاہ آندھی چل چکنے سے ایسی	۲	۶۳۲

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	تاریکی ہے تو یہ جماعت میں حاضر نہ ہونے کا عذر ہے۔ اقول: یوں ہی یہ صورت اخیرہ ترکِ جمعہ کیلئے عذر ہے لکونہ فی معنی الاعمیٰ وانما لم یذکر وہ فیھا لان الغالب وجود مثل الظلمۃ باللیل دون النھار (کیونکہ وہ نابینا کے حکم میں ہے اور علماء نے اس صورت کو اس لئے ذکر نہیں کیا کہ اس طرح کی تاریکی عموماً رات کے وقت پائی جاتی ہے دن کو نہیں۔ ت)		
۶۴	مسئلہ: اگر کھڑے ہونے سے مرض بڑھے یا دیر میں اچھا ہو یا درد شدید ناقابلِ تحمل ہو تو بیٹھ کر نماز کی اجازت ہوگی خالی تکلیف ہونا عذر نہیں۔	۴	۶۳۲
۶۵	مسئلہ: چراغ یا لالٹین مہیا ہو جسے مسجد تک لے جاسکے یا مہیا کرنے میں دقت نہیں مثلاً تیل دیا سلائی موجود ہے تو کیسی ہی اندھیری ہو ترکِ جماعت کیلئے عذر نہیں ہو سکتی۔	۲	۶۳۳

Fatawa Razawiyya - Volume 4

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
66	Ruling: Someone who does not have means of illumination, e.g., only has one lamp and there are family members at home such that if he takes it to the mosque, they will be unable to perform chores, or children will be afraid in the dark, or a woman is alone and feels fear; in such a state, if it is so dark that the path to the mosque is not visible, it is an excuse for leaving the congregational prayer.	3	633
67	Ruling: Going to a dark mosque holds great merit. The Messenger of Allah (peace and blessings be upon him and his family) says: "Give glad tidings of complete light on the Day of Resurrection to those who are accustomed to attending the mosque in the dark."	4	633
68	Ruling: The Legislator (peace and blessings be upon him and his family) emphasized the congregation to such an extent that a blind man presented himself in the holy presence and submitted: O Messenger of Allah! I have no one to hold my hand and bring me to the mosque; grant me permission to pray at home. Permission was granted; as he was leaving, he was called back and it was asked: Does the sound of the Adhan reach you? He submitted: Yes. He said: Then be present. Abdullah ibn Maktum (may Allah be pleased with both of them), who was also visually impaired, presented himself and submitted: O Messenger of Allah! There are many snakes, scorpions, and wolves in the pure city of Medina; do I have permission to pray at home? He asked: Does the sound of 'Haya 'ala al-Salah' and 'Haya 'ala al-Falah' reach you? He submitted: Yes. He said: Then be present. For a blind person who cannot find his way and has no one to lead him, especially when there is fear of snakes and wolves, there is certainly a concession. However, the Prophet (peace be upon him) guided them to act upon what is superior so that people learn a lesson —those who pray at home without an excuse and fall into	5	633

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
	misguidance and error by not attending the mosque. "If you abandon the Sunnah of your Prophet, you will go astray. And in Sunan Abi Dawud, it is said: You will become disbelievers. And Allah is the refuge."		
69	Ruling: Unbearable scorching sun, and similarly intense shivering cold, or terrifying storms, earthquakes, lightning strikes, heavy hail, excessive mud, and deep darkness—all these things are excuses for skipping Friday and congregational prayers.	1	637

फ़तावा रज़विया - जिल्द चौथी

क्रम सं.	विषय	फ़ायदा सं.	पृष्ठ सं.
66	मसला: जिसके पास रोशनी का सामान नहीं है, जैसे कि सिर्फ एक ही चिराग है और घर में परिवार के लोग हैं कि यदि वह इसे मस्जिद ले जाए तो वे काम-काज से रुक जाएँगे या बच्चे अंधेरे में डरेंगे या कोई औरत अकेली है और उसे डर लग रहा है; ऐसी स्थिति में, यदि इतनी घनी अंधेरी हो कि मस्जिद तक का रास्ता न सूझे, तो यह जमात छोड़ने के लिए एक उज़्र (वैध बहाना) है।	3	633
67	मसला: अंधेरी मस्जिद की तरफ जाना बड़ी फ़ज़ीलत (महिमा) रखता है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "जो लोग अंधेरों में मस्जिद आने के आदी हैं, उन्हें क़यामत के दिन मुकम्मल (पूर्ण) नूर की बशारत (खुशखबरी) दे दो।"	4	633
68	मसला: शरीअत के मालिक (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम) ने जमात की इस हद तक ताकीद फ़रमाई है कि एक नाबीना (अंधा व्यक्ति) आपकी पाक महफ़िल में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे पास कोई ऐसा नहीं है जो मेरा हाथ पकड़कर मुझे मस्जिद लाया करे, मुझे घर में नमाज़ पढ़ने की इजाज़त दी जाए। इजाज़त दे दी गई, जब वह जाने लगा तो फिर बुलाकर फ़रमाया: क्या तुम्हें अज़ान की आवाज़ सुनाई देती है? उसने अर्ज़ किया: हाँ। फ़रमाया: तो हाज़िर हो। अब्दुल्ला इब्न मकतूम (रज़ियल्लाहु अन्हुमा), जो स्वयं भी आँखों से माज़ूर थे, हाज़िर हुए और अर्ज़ किया: ऐ अल्लाह के रसूल! मदीना तैयबा में साँप, बिच्छू और भेड़िये बहुत हैं, क्या मुझे इजाज़त है कि नमाज़ घर में पढ़ लिया करूँ? फ़रमाया: क्या तुम्हें 'हय्य अलल सलाह' और 'हय्य अलल फ़लाह' की आवाज़ पहुँचती है? अर्ज़ किया: हाँ। फ़रमाया: तो हाज़िर हो। एक नाबीना जिसे रास्ते का अंदाज़ा न हो और न ही कोई ले जाने वाला हो, विशेष रूप से जब साँप और भेड़ियों का डर हो, तो उसे ज़रूर रियायत (छूट) है। मगर हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उन्हें अफ़ज़ल (बेहतर) पर अमल करने की हिदायत फ़रमाई ताकि लोग सबक़ सीखें—वे जो बिना किसी उज़्र के घर में	5	633

क्रम सं.	विषय	फ़ायदा सं.	पृष्ठ सं.
	नमाज़ पढ़ते हैं और मस्जिद में हाज़िर न होकर गुमराह और भटक जाते हैं। "अगर तुम अपने नबी की सुन्नत छोड़ दोगे तो गुमराह हो जाओगे। और सुनन अबी दाऊद में है: तुम काफ़िर हो जाओगे। और अल्लाह की पनाह।"		
69	मसला: बहुत तेज़ चिलचिलाती धूप, और ऐसी ही कड़ाके की ठंड, या भयानक आंधी, भूकंप, बिजलियां गिरना, बहुत ज़्यादा ओले पड़ना, बहुत ज़्यादा कीचड़ और घोर अंधेरा—ये सभी चीज़ें जुमा और जमात छोड़ने के लिए उज़्र हैं।	1	637

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
66	مسئلہ: جس کے پاس روشنی کا سامان نہیں مثلاً ایک ہی چراغ ہے اور گھر میں اہل و عیال ہیں کہ یہ مسجد میں لے جائے تو وہ کاموں سے معطل رہ جائیں یا بچے اندھیرے میں ڈریں یا عورت اکیلی ہے اسے خوف آئی تو ایسی حالت میں وہ سخت اندھیری کہ مسجد تک راستہ نہ سوجھے ترک جماعت کیلئے عذر ہے۔	3	633
67	مسئلہ: اندھیری مسجد کو جانا بڑی فضیلت رکھتا ہے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم فرماتے ہیں: "جو اندھیروں میں حاضری مسجد کے عادی ہیں انہیں بشارت دو روزِ قیامت کامل نور کی۔"	4	633
68	مسئلہ: شارع صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے جماعت کی اس درجہ تاکید فرمائی ہے کہ ایک نابینا خدمت اقدس میں حاضر ہوئے عرض کی کہ یا رسول اللہ! میرے پاس کوئی ایسا نہیں کہ مجھے ہاتھ پکڑ کر مسجد میں لے آیا کرے مجھے گھر میں نماز پڑھ لینے کی اجازت عطا ہو، اجازت فرمائی جب وہ چلے پھر بلایا اور ارشاد فرمایا: اذان کی آواز تمہیں پہنچتی ہے؟ عرض کی: ہاں۔ فرمایا: تو حاضر ہو۔ عبداللہ ابن مکتوم رضی اللہ تعالیٰ عنہما کہ یہ بھی آنکھوں سے معذور تھے حاضر ہوئے اور عرض کی: یا رسول اللہ! مدینہ طیبہ میں سانپ بچھو بھیڑیے بہت ہیں، کیا مجھے اجازت ہے کہ نماز گھر میں پڑھ لیا	5	633

نمبر شمار	عنوانات	نمبر	فائدہ نمبر	صفحہ

کروں۔ فرمایا: کیا تمہیں حی علی الصلوۃ و حی علی الفلاح کی آواز پہنچتی ہے؟ عرض کی: ہاں۔ فرمایا: تو حاضر ہو۔ نابینا کہ اٹکل نہ رکھتا ہو نہ کوئی لے جانے والا ہو خصوصاً جب سانپ بھیڑیوں کا اندیشہ ہو تو ضرور رخصت ہے مگر حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے انہیں افضل پر عمل کرنے کی ہدایت فرمائی کہ لوگ سبق سیکھ لیں جو بلا عذر گھر میں پڑھتے اور مسجد میں حاضر نہ ہو کر ضلالت و گمراہی میں پڑتے ہیں کہ ان ترکتم سنۃ نبیکم لضللتم و فی ابی داؤد لکفرتم والعیاذ باللہ تعالیٰ (اگر تم اپنے نبی کی سنت چھوڑو گے تو گمراہ ہو جاؤ گے۔ اور سنن ابی داؤد میں ہے تو کافر ہو جاؤ گے۔ والعیاذ باللہ تعالیٰ ت)

مسئلہ: تڑا قے کی دھوپ ناقابل برداشت اور ایسی ہی شدت کی ٹھٹھر یا ہولناک آندھی زلزلہ بجلیاں تڑپ کر گرنا، کثرت کا اولاً، بشدت کیچڑ اندھن یہ سب چیزیں جمعہ و جماعت میں عذر ہیں۔ 69 1 637

صفحہ 704 کا 761

Fatawa Razawiyya Volume IV

Serial No.	Topics / Issues	Benefit No.	Page No.
70	Issue: Those who cannot go to the mosque, such as the lame, disabled, or paralyzed patients, weak elderly who cannot walk, the blind who lack a guide, those with night blindness at night, or back pain etc. making them unable to walk; Friday and congregational prayer are not obligatory for these people.	2	636
71	Issue: Water was known to be with someone but was not requested, and prayer was performed with Tayammum; now if requested and they give it, the prayer is void, even if the initial thought was that they wouldn't give it. If they didn't give it, the prayer is valid, even if it was thought they would.	5	661
72	Issue: If in a wilderness and there is no one to point out the direction of the Qibla, one should do 'Tahari' (personal judgment), meaning whichever direction the heart is inclined towards as being the Qibla, pray in that direction. If after praying it is known that the direction was wrong, there is no harm, the prayer is valid.	6	661
73	Issue: In this state, if one prayed in a direction opposite to where the heart was inclined, the prayer is void, even if it is later confirmed that the Qibla was indeed in the direction they prayed, because their Qibla is the direction towards which the heart is inclined.	7	661
74	Issue: One who is in a place where there is neither water nor pure soil should perform the actions of prayer at prayer times without the actual intention of prayer, then perform the Qadha (make-up) of those prayers upon regaining ability.	3	702
75	Issue: A 'Sahib-e-Tarteeb' (one who follows sequential order of prayers) remembers a missed prayer and there is enough time to pray it before the current time's prayer, yet contrary to the rule, prays the current time's prayer first. For now, it cannot be said if this prayer is valid or not. Rather, it will be seen if, before praying the missed one, they pray four more current time's	1	786

Serial No.	Topics / Issues	Benefit No.	Page No.
	prayers and the time for the last one ends, then it will be ruled that all these prayers are valid. But if in between they pray the missed one, then all current time's prayers prayed before it (from one to five) must be repeated as Qadha; those prayers remained merely voluntary (Nafil).		
76	Issue: A person who leads a four-rak'ah prayer in a place of residence (city or village) and performs Salam after two rak'ahs, it is necessary for the followers (Muqtadis) to know the status of the Imam, whether he is a traveler or a resident, whether the follower is a resident or traveler. If the Imam neither stated his traveler status before nor after the prayer and left, and his status of travel or residence remained unknown, the prayer of the followers will not be valid; they must repeat it. Yes, if in a wilderness or at a station he prayed two and left, their prayer will also be valid; it will be assumed he was a traveler.	3	790

फ़तावा रज़विया जिल्द-4

क्रम संख्या	शीर्षक / मसले	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
70	मसला: जो मस्जिद तक न जा सके जैसे लंगड़ा, अपाहिज या वह लकवाग्रस्त मरीज़, कमज़ोर बूढ़ा कि चल नहीं सकते, अंधा कि जिसे अंदाज़ा नहीं, रात को रतौंधी वाला या कमर दर्द वग़ैरह चलने से मजबूर होने के कारण, इन लोगों पर जुम्मा और जमाअत वाजिब नहीं।	2	636
71	मसला: पानी किसी के पास होने का मालूम था और माँगा नहीं, तयम्मुम से नमाज़ पढ़ ली। अब माँगा तो अगर उसने दे दिया तो नमाज़ जाती रही, चाहे पहले यही विचार था कि नहीं देगा। और अगर नहीं दिया तो नमाज़ हो गई, चाहे उसे यह गुमान था कि दे देगा।	5	661
72	मसला: जंगल में है और कोई क़िबला की सिम्त (दिशा) बताने वाला नहीं है, तो 'तहरी' करे यानी जिस तरफ दिल जमे कि उधर क़िबला होगा, उस तरफ पढ़े। अगर नमाज़ पढ़ने के बाद मालूम हो कि दिशा ग़लत थी, तो कोई हर्ज़ नहीं, नमाज़ हो गई।	6	661
73	मसला: इस हालत में अगर जिस तरफ दिल जम रहा था उसके विरुद्ध दिशा में नमाज़ पढ़ी, तो नमाज़ बातिल (अमान्य) हुई, चाहे बाद में जाँच से यह पता चले कि क़िबला उसी तरफ ठीक था जिधर उसने पढ़ी थी। उसका क़िबला वही है जिस तरफ दिल जमे।	7	661
74	मसला: जो ऐसी जगह हो जहाँ न पानी हो न पाक मिट्टी, वह नमाज़ों के समय नमाज़ की सूरत (नक़ल) अदा करे, वास्तव में नमाज़ की नीयत न हो। फिर सामर्थ्य होने पर उन नमाज़ों की क़ज़ा पढ़े।	3	702
75	मसला: साहिब-ए-तरतीब को क़ज़ा नमाज़ याद है और वक़्त में इतनी गुंजाइश है कि उसे पढ़कर वक़्त की नमाज़ पढ़ सके, इसके बावजूद उसने हुक्म के ख़िलाफ़ वक़्त की नमाज़ पढ़ ली। इस नमाज़ को अभी न यह कह सकते हैं कि नहीं हुई, न यह कि हो गई। बल्कि देखेंगे कि अगर इसी तरह	1	786

क्रम संख्या	शीर्षक / मसले	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
	क़ज़ा नमाज़ पढ़ने से पहले चार और वक़्त की नमाज़ें पढ़ लेगा और उनमें पिछली का वक़्त ख़त्म हो जाएगा, तो हुक्म देंगे कि ये सब नमाज़ें हो गईं। और अगर इस बीच में उस क़ज़ा शुदा को पढ़ लेगा, तो उसके पढ़ने से पहले एक से पाँच तक जितनी वक़्त की नमाज़ें पढ़ी थीं, उन सब की क़ज़ा फिर से पढ़नी होगी, वे नमाज़ें मात्र नफ़्ल रह गईं।		
76	मसला: जो व्यक्ति मक़ाम-ए-इक़ामत यानी शहर या गाँव में चार रकअत वाली नमाज़ पढ़ाई और दो पर सलाम फेर दे, तो ज़रूरी है कि मुक्तदी को इमाम का हाल मालूम हो कि मुसाफ़िर है या मुक़ीम, चाहे मुक्तदी स्वयं मुक़ीम हो या मुसाफ़िर। अगर इमाम ने न नमाज़ से पहले अपना मुसाफ़िर होना बताया न बाद को और चला गया, और उसका सफ़र व इक़ामत का हाल मालूम न हुआ, तो मुक्तदियों की नमाज़ नहीं होगी, वे फिर से पढ़ें। हाँ, अगर जंगल में या पड़ाव पर दो पढ़कर चला गया, तो उनकी नमाज़ भी हो जाएगी; यही समझा जाएगा कि मुसाफ़िर था।	3	790

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ : جو مسجد تک نہ جا سکے جیسے لنگھا اپاہج یا وہ مفلوج مریض نقیہ		
۷۰	بوڑھا کہ چل نہیں سکتے اندھا کہ اٹکل نہیں رکھتا رات کو رتوند والا یادرد کمر وغیرہ باعث چلنے سے معذور، ان لوگوں پر جمعہ و جماعت واجب نہیں۔	۲	۶۳۶
	مسئلہ : پانی کسی کے پاس معلوم ہوا اور نہ مانگا تیمم سے نماز پڑھ لی اب		
۷۱	مانگا تو اگر اس نے دے دیا نماز جاتی رہی اگرچہ پہلے سے یہی ظن تھا کہ نہ دے گا اور اگر نہ دیا نماز ہوگئی اگرچہ اسے یہ گمان تھا کہ دے دے گا۔	۵	۶۶۱
	مسئلہ : جنگل میں ہے اور کوئی سمت قبلہ بتانے والا نہیں تحری کرے یعنی		
۷۲	جس طرف دل جمے کہ ادھر قبلہ ہوگا اس طرف پڑھے اگر بعد پڑھنے کے معلوم ہو کہ جہت غلط تھی کچھ مضائقہ نہیں نماز ہوگئی۔	۶	۶۶۱
	مسئلہ : اس حالت میں اگر جس طرف دل جمتا تھا اس کے خلاف طرف میں		
۷۳	نماز پڑھی نماز باطل ہوئی اگرچہ بعد کو تحقیق ہو جائے کہ قبلہ اسی طرف ٹھیک تھا جدھر اس نے پڑھی کہ اس کا قبلہ وہی ہے جس طرف دل جمے۔	۷	۶۶۱
	مسئلہ : جو ایسی جگہ ہو جہاں نہ پانی نہ پاک مٹی وہ نمازوں کے وقت نماز		
۷۴	کی صورت ادا کرے حقیقۃً نماز کی نیت نہ ہو پھر قدرت پانے پر ان نمازوں کی قضا پڑھے۔	۳	۷۰۲

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۷۵	مسئلہ : صاحب ترتیب کو قضا نماز یاد ہے اور وقت میں اتنی گنجائش ہے کہ اسے پڑھ کر وقت کی پڑھتا باوجود اس کے اس نے خلاف حکم کر کے وقت کی پڑھ لی اس نماز کو ابھی نہ یہ کہہ سکتے ہیں کہ نہ ہوئی نہ یہ کہ ہوگئی بلکہ دیکھیں گے اگر اسی طرح قضا شدہ کے پڑھنے سے پہلے چار نمازیں وقت کی اور پڑھ لے گا اور اُن میں پچھلی کا وقت ختم ہو جائے گا تو حکم دیں گے کہ یہ سب نمازیں ہو گئیں اور اگر اس بیچ میں اس قضا شدہ کو پڑھ لے گا تو اس کے پڑھنے سے پہلے ایک سے پانچ تک جتنے وقت کی پڑھی تھیں سب کی قضا پھیرنی ہو گی وہ نمازیں نری نفل رہ گئیں۔	۱	۷۸۶
۷۶	مسئلہ : جو شخص محل اقامت یعنی شہر یا گاؤں میں چار رکھتی نماز پڑھائی اور دو پر سلام پھیر دے تو ضرور ہے کہ مقتدی کو امام کا حال معلوم ہو کہ مسافر ہے یا مقیم خواہ مقتدی خود مقیم ہو یا مسافر۔ اگر امام نے نہ نماز سے پہلے اپنا مسافر ہونا بتایا نہ بعد کو اور چلا گیا اور اس کا حال سفر واقامت معلوم نہ ہوا تو مقتدیوں کی نماز نہ ہو گی پھر پڑھیں۔ ہاں اگر جنگل میں یا منزل پر دو پڑھ کر چلا گیا تو ان کی نماز بھی ہو جائے گی یہی سمجھا جائے گا کہ مسافر تھا۔	۳	۷۹۰

Fatawa Rizvia Volume Four

Serial Number	Topics	Benefit Number	Page Number
77	Issue: A person performing tayammum found water during prayer; the prayer is invalidated, even if it is after the Tashahhud.	2	750
78	Issue: Water was found after performing one salutation; the prayer is valid.	3	750
79	Issue: In a place of residence, an imam led a four-rak'ah prayer but left after two, and the followers did not know if he was a resident or a traveler; their prayer is not valid even if they themselves are travelers. Yes, if this happened in a forest or at a halting place, their prayer is also valid, and the resident should complete his four.	3	790

Rules of the Mosque

Serial Number	Topics	Benefit Number	Page Number
1	Issue: Miswak should not be used in the mosque; spitting or rinsing the mouth in the mosque is forbidden unless it's into a vessel or the builder of the mosque designated a specific place for this purpose at the time of construction, otherwise, it is not permitted.	4	152
2	Issue: If there is a foul odor in the mouth, it is forbidden to enter the mosque or perform prayer until it is cleaned.	3	155
3	Issue: As long as any odor remains on the body or clothes, it is forbidden to enter the mosque and participate in the congregation.	1	334

Serial Number	Topics	Benefit Number	Page Number
4	Issue: If a mosque is deserted and there is no way to populate it, and its equipment cannot be protected, the ruling now is that its beams, planks, etc., can be given to another mosque.	1	393
5	Issue: It is forbidden for a non-mu'takif (someone not in seclusion) to sleep in the mosque.	3	636
6	Issue: Just as staying in the mosque in a state of impurity is forbidden, walking or passing through the mosque is also forbidden.	1	637
7	Issue: A person in a state of major ritual impurity (junub) forgot their state and wanted to enter the mosque; they had taken one step when they remembered; they should immediately step back out and not wait to perform tayammum there.	4	637
8	Issue: A person's house door opens into the mosque such that they must pass through the mosque to come and go, and they cannot move the door to the other side nor find another house to live in; even for them, passing through the mosque in a state of major ritual impurity is not permissible; if they cannot find water, tayammum is necessary for coming and going.	3	638

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

क्रम संख्या	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
77	मसला: तयम्मुम करने वाले को नमाज़ के दौरान पानी मिल गया; नमाज़ टूट गई, चाहे वह तशाहुद (अत्तहियात) के बाद ही क्यों न हो।	2	750
78	मसला: एक सलाम फेरने के बाद पानी मिला; नमाज़ हो गई।	3	750
79	मसला: निवास स्थान (इक़ामत) में इमाम चार रकअत वाली नमाज़ दो पढ़कर चला गया और मुक़्तदियों को पता नहीं चला कि वह मुक़ीम (निवासी) है या मुसाफ़िर; उनकी नमाज़ नहीं हुई चाहे वे खुद मुसाफ़िर हों। हाँ, अगर जंगल में या पड़ाव पर ऐसा हुआ तो उनकी भी हो गई, जो मुक़ीम है वह अपनी चार पूरी कर ले।	3	790

मस्जिद के अहकाम (नियम)

क्रम संख्या	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
1	मसला: मस्जिद में मिस्वाक नहीं करनी चाहिए, मस्जिद में कुल्ली करना हराम है सिवाय इसके कि किसी बर्तन में हो या मस्जिद बनाने वाले ने मस्जिद बनाते समय इसके लिए कोई विशेष स्थान बनाया हो, अन्यथा अनुमति नहीं है।	4	152
2	मसला: मुँह में बदबू हो तो जब तक साफ़ न कर लें मस्जिद में जाना या नमाज़ पढ़ना मना है।	3	155
3	मसला: जब तक शरीर या कपड़ों में कोई गंध बाकी हो, मस्जिद में जाना हराम है और जमाअत में शामिल होना मना है।	1	334
4	मसला: जो मस्जिद वीरान हो और उसके आबाद होने की कोई सूरत न हो और उसके साज़-ओ-सामान की सुरक्षा न हो सके तो अब फ़तवा इस पर है कि उसकी कड़ियाँ, तख्ते आदि दूसरी मस्जिद में दिए जा सकते हैं।	1	393
5		3	636

क्रम संख्या	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
	मसला: गैर-मुअतकिफ़ (जो ऐतिकाफ़ में न हो) को मस्जिद में सोना मना है।		
6	मसला: जिस तरह नापाकी की हालत में मस्जिद में ठहरना हराम है, वैसे ही मस्जिद में से गुज़रना या चलना भी हराम है।	1	637
7	मसला: जुनुब (बड़ी नापाकी वाला) को अपनी हालत याद न रही और उसने मस्जिद में जाना चाहा, एक कदम रखा था कि याद आ गया; उसे तुरंत वह कदम बाहर कर लेना चाहिए, यहाँ तयम्मुम का इंतज़ार न करे।	4	637
8	मसला: एक व्यक्ति के मकान का दरवाज़ा मस्जिद में है कि उसे आते-जाते मस्जिद में से गुज़रना पड़ता है और वह दरवाज़ा दूसरी तरफ़ नहीं कर सकता और न ही उसे रहने के लिए कोई और मकान मिलता है; उसके लिए भी जनाबत की हालत में मस्जिद में से गुज़रना जायज़ नहीं है, अगर पानी न पाए तो आने-जाने के लिए तयम्मुम ज़रूरी है।	3	638

فتاوی رضویہ جلد چہارم

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۷۷	مسئلہ: تیمم والے نے نماز میں پانی پایا نماز ٹوٹ گئی اگرچہ التحیات کے بعد۔	۲	۷۵۰
۷۸	مسئلہ: ایک سلام پھیرنے کے بعد پانی پایا نماز ہو گئی۔	۳	۷۵۰
۷۹	مسئلہ: محل اقامت میں امام چار رکعت کی نماز دو پڑھ کر چلا گیا اور مقتدیوں کو اس کا حال معلوم نہ ہوا کہ مقیم ہے یا مسافر ان کی نماز نہ ہوئی اگرچہ یہ خود مسافر ہوں، ہاں اگر جنگل میں یا منزل پر ایسا ہوا تو ان کی بھی ہو گئی جو مقیم ہے اپنی چار پوری کرلے۔	۳	۷۹۰

احکام مسجد

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱	مسئلہ: مسجد میں مسواک نہ کرنی چاہی، مسجد میں کلی کرنا حرام ہے مگر یہ کہ کسی برتن میں ہو یا بانی مسجد نے وقت بنائے مسجد اس میں کوئی جگہ خاص اس کام کیلئے بنا دی ہو ورنہ اجازت نہیں۔	۴	۱۵۲
۲	مسئلہ: منہ میں بدبو ہو تو جب تک صاف نہ کرلیں مسجد میں جانا یا نماز پڑھنا منع ہے۔	۳	۱۵۵

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۳	مسئلہ: جب تک بدن یا کپڑے میں کوئی بُو باقی ہو مسجد میں جانا حرام جماعت میں شریک ہونا منع۔	۱	۳۳۴
۴	مسئلہ: جو مسجد ویران ہو اور اس کی آبادی کی کوئی صورت نہ ہو اور اس کے آلات کی حفاظت نہ ہو سکے تو اب فتوی اس پر ہے کہ اس کے کڑی تختے وغیرہ دوسری مسجد میں دیے جاسکتے ہیں۔	۱	۳۹۳
۵	مسئلہ: غیر معتکف کو مسجد میں سونا منع ہے۔	۳	۶۳۶
۶	مسئلہ: جس طرح ناپاکی کی حالت میں مسجد میں ٹھہرنا حرام ہے یونہی مسجد میں گزرنا چلنا بھی حرام ہے۔	۱	۶۳۷
۷	مسئلہ: جنب کو اپنا جنب ہونا یاد نہ رہا مسجد میں جانا چاہا ایک قدم رکھا تھا کہ یاد آگیا فوراً وہ قدم باہر کرلے یہاں تیمم کا انتظار نہ کرے۔	۴	۶۳۷
۸	مسئلہ: ایک شخص کے مکان کا دروازہ مسجد میں ہے کہ آتے جاتے مسجد میں گزرنا پڑتا ہے اور نہ دوسری طرف دروازہ پھیر سکتا ہے نہ اور مکان رہنے کو پاتا ہے اسے بھی بحال جنابت مسجد میں گزرنا جائز نہیں اگر پانی نہ پائی تو آنے جانے کے لیے تیمم ضرور ہے۔	۳	۶۳۸

Fatawa Razawiya Volume Four

Sr. No.	Topics	Advantage No.	Page No.
9	Mas'ala: Bathing (Ghusl) in a mosque is prohibited except in three situations: first, if the founder of the mosque had built a place for bathing before making it a mosque, then one can bathe there; second, in a large vessel such that all water falls inside it and no droplets splash into the mosque; third, by spreading very heavy cotton clothes like quilts, mattresses, etc., and bathing on them such that no droplets go outside and the water does not penetrate the clothes to reach the ground of the mosque.	1	639
10	Mas'ala: If someone's ablution (Wudu) is invalidated while listening to the sermon on Friday, they should leave if there's a way out, perform ablution, and return. If there's no way, jumping over people's necks is not allowed. If water is available in the mosque and there's a cloth that will absorb water and not a single drop will seep through to the mosque, then spread it and perform ablution.	2	639
11	Mas'ala: Performing ablution (Wudu) in a mosque is also prohibited, and the three conditions for its permissibility are the same as those mentioned for bathing (Ghusl).	3	639
12	Mas'ala: In Bahr al-Raiq etc., only a person in seclusion (Mu'takif) is allowed to perform ablution in a vessel, not a non-Mu'takif. According to the author, the investigation is that if the vessel is so small that splashes will definitely fall in the mosque, then even the Mu'takif is not allowed. If it is large enough that certainly no splash can go out, then it is allowed for the non-Mu'takif as well. If the condition is such that there is a strong presumption that splashes won't go out, it's permissible for the Mu'takif but not for the non-Mu'takif.	4	639
13	Mas'ala: It is mandatory to protect the mosque from any loathsome thing even if it is pure, like saliva, nasal discharge, or water of ablution. Warning: Some people, after ablution,	5	733

Sr. No.	Topics	Advantage No.	Page No.
	wipe water from their faces and hands and shake their hands in the mosque; this is purely haram (forbidden) and impermissible.		
14	Mas'ala: Dust and dirt brought from outside by the wind into the mosque will not become part of the mosque's components; the order is to clean it.	1	734
15	Mas'ala: Wiping mud with the dust spread on the mosque floor or against a mosque wall or pillar, whether brick or wooden, even if the mud is pure, is prohibited and impermissible.	2	734

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
9	मसला: मस्जिद में गुसल करना हराम है सिवाय तीन सूरतों के एक यह कि मस्जिद के बानी (संस्थापक) ने मस्जिद घोषित करने से पहले वहां गुसल के लिए कोई जगह बना दी हो तो उसमें नहा सकता है; दूसरा, किसी ऐसे बड़े बर्तन में कि सारा पानी उसी के अंदर गिरे, कोई छींटा उड़कर मस्जिद में न जाए; तीसरा, लिहाफ, तोशक वगैरह बहुत भारी रुई के कपड़े बिछाकर उन पर इस तरह नहाना कि न कोई छींटा बाहर जाए और न पानी कपड़ों को भेदकर मस्जिद की ज़मीन तक पहुँचे।	१	६३९
10	मसला: जुमे के दिन खुतबा सुन रहा था कि वुज़ू टूट गया, अगर निकलने का रास्ता मिले तो निकल जाए और वुज़ू करके फिर हाज़िर हो और अगर रास्ता न मिले तो लोगों की गर्दनों को फांदते हुए जाने की इजाज़त नहीं है। अगर मस्जिद में पानी मिले और कोई कपड़ा ऐसा हो जो पानी जज़्ब कर ले और उससे छनकर मस्जिद में कोई बूंद न जाएगी तो उसे बिछाकर वुज़ू करे।	२	६३९
11	मसला: मस्जिद में वुज़ू करना भी हराम है और इसके जायज़ होने की भी वही तीन सूरतें हैं जो गुसल में गुज़रीं।	३	६३९
12	मसला: बहरुर्राइक वगैरह में बर्तन में वुज़ू करने की सिर्फ मोतकिफ को इजाज़त दी गई है, गैर-मोतकिफ नहीं कर सकता। मुसन्निफ (लेखक) के नज़दीक इसकी तहक़ीक़ यह है कि बर्तन अगर इतना छोटा हो कि छींटें ज़रूर मस्जिद में पड़ेंगी तो मोतकिफ को भी इजाज़त नहीं हो सकती और अगर इतना बड़ा है कि यक़ीनन कोई छींटा बाहर नहीं जा सकता तो गैर-मोतकिफ को भी इजाज़त है। अगर हालत ऐसी है कि छींटा बाहर न जाने का गुमान-ए-गालिब (प्रबल संभावना) है तो मोतकिफ को जायज़ है, गैर-मोतकिफ को नहीं।	४	६३९

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
13	मसला: मस्जिद को हर घिनौनी चीज़ से बचाना वाजिब है चाहे वह पाक (शुद्ध) ही क्यों न हो जैसे थूक, नाक की गंदगी, वुज़ू का पानी। चेतावनी: कुछ लोग वुज़ू के बाद अपने मुंह और हाथों से पानी पोंछकर मस्जिद में हाथ झाड़ते हैं, यह सरासर हराम और नाजायज़ है।	५	७३३
14	मसला: गर्द-ओ-गुबार (धूल) वगैरह जो हवा बाहर से लाकर मस्जिद में डाल दे, वह मस्जिद का हिस्सा नहीं बन जाएगी, उसे साफ़ करने का हुक्म है।	१	७३४
15	मसला: मस्जिद की ज़मीन पर फैली हुई धूल से, या मस्जिद की दीवार या खम्भे से, चाहे ईंट का हो या लकड़ी का, कीचड़ पोंछना, चाहे कीचड़ पाक ही क्यों न हो, मना और नाजायज़ है।	२	७३४

فتاوی رضویہ جلد چہارم

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۹	مسئلہ: مسجد میں غسل کرنا حرام ہے مگر تین صورتوں میں ایک تو یہ کہ بانی مسجد نے مسجد کر دینے سے پہلے وہاں کوئی جگہ غسل کیلئے بنا دی ہو تو اس میں نہا سکتا ہے، دوسرے کسی ایسے بڑے برتن میں کہ سب پانی اسی کے اندر گرے کوئی چھینٹ اڑ کر مسجد میں نہ جائے، تیسرے لحاف توشک وغیرہ بہت بھاری روئی کے کپڑے بچھا کر ان پر اس طرح نہانا کہ نہ کوئی چھینٹ باہر جائے نہ پانی کپڑوں کو توڑ کر مسجد کی زمین تک پہنچے۔	۱	۶۳۹
۱۰	مسئلہ: جمعہ کے دن خطبہ سن رہا تھا کہ وضو جاتا رہا اگر نکلنے کا راستہ پائے تو نکل جائے اور وضو کر کے پھر حاضر ہو اور اگر راستہ نہ ملے تو لوگوں کی گردنیں پھلانگتے ہوئے جانے کی اجازت نہیں اگر مسجد میں پانی ملے اور کوئی کپڑا ایسا ہو کہ پانی جذب کرلے گا اور اس سے چھن کر مسجد میں کوئی بوند نہ جائے گی تو اسے بچھا کر وضو کرے۔	۲	۶۳۹
۱۱	مسئلہ: مسجد میں وضو بھی حرام ہے اور اس کے جواز کی بھی وہی تین صورتیں ہیں جو غسل میں گزریں۔	۳	۶۳۹
۱۲	مسئلہ: بحر الرائق وغیرہ میں برتن میں وضو کرنے کی صرف معتکف کو اجازت دی غیر معتکف نہیں کر سکتا۔ مصنف کے نزدیک اس کی تحقیق یہ ہے کہ برتن اگر ایسا چھوٹا ہو کہ چھینٹیں ضرور مسجد میں پڑیں گی جب تو	۴	۶۳۹

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	معتکف کو بھی اجازت نہیں ہو سکتی اور اگر اتنا بڑا ہے کہ یقینا کوئی چھینٹ باہر نہیں جا سکتی تو غیر معتکف کو بھی اجازت ہے اگر حالت ایسی ہے کہ چھینٹ باہر نہ جانے کا ظن غالب ہے تو معتکف کو جائز غیر معتکف نہ کرے۔		
۱۳	مسئلہ: مسجد کو ہر گھن کی چیز سے بچانا واجب ہے اگرچہ پاک ہو جیسے لعاب دہن آب بینی آب وضو۔ تنبیہ: بعض لوگ کہ وضو کے بعد اپنے منہ اور ہاتھوں سے پانی پونچھ کر مسجد میں ہاتھ جھاڑتے ہیں محض حرام اور ناجائز ہے۔	۵	۷۳۳
۱۴	مسئلہ: گردو غبار وغیرہ کہ ہوا باہر سے لا کر مسجد میں ڈالے اجزائے مسجد سے نہ ہو جائے گا اسے صاف کرنے کا حکم ہے۔	۱	۷۳۴
۱۵	مسئلہ: مسجد کی زمین پر جو گرد پھیلی ہے اس سے یا مسجد کی دیوار یا ستون خشتی خواہ چوبی سے کیچڑ پونچھنا اگر چہ پاک کیچڑ ہو ممنوع و ناجائز ہے۔	۲	۷۳۴

Fatawa-e-Razvia Volume 4

Serial Number	Topics	Reference Number	Page Number
16	Ruling: If dust from the mosque is collected in a corner, there is no harm in wiping mud-stained feet with it.	3	737
17	Ruling: A lamp lit for worshippers in a mosque can be used for reading, studying, or teaching books. Even if the worshippers have finished praying, one can still use it until one-third of the night has passed, as the lamp must remain lit for the mosque during that time. Beyond that, it is not permissible to use the mosque's oil and wick for personal work. I say: This applies where it is not customary for the mosque to remain lit longer. However, if it remains lit all night, as in the three holy mosques, then one can benefit from its light the whole night.	5	737

Funerals

1 | Ruling: If water passes over the entire body of the deceased in any way, it will become pure and the funeral prayer over it is permissible. However, the obligation upon the living to bathe the deceased will not be fulfilled without their intentional act. Therefore, if a dead person is found in a river, it is necessary to move them with the intention of bathing so that the obligation is discharged from the living. | 2 | 662 2 | Ruling: If the deceased was bathed to teach how to perform the bath and there was no intention of giving the ritual bath (Ghusl), the body still becomes pure and the obligation on the living is fulfilled because the intentional act is sufficient. However, without intention, there will be no spiritual reward (Sawab). | 3 | 662 3 | Ruling: Wash the head and beard of the deceased with hollyhock (khatmi) or else with pure soap. | 1 | 448 4 | Ruling: If water is not available or if there is no one for whom it is Shariah-permissible to bathe the deceased, then perform Tayammum (dry ablution) for the deceased. | 1 | 609 5 | Ruling: When Tayammum is performed for the deceased, the intention of the person performing it is a condition; it will not be valid without intention. | 8 | 611 6 | Ruling: Bathing the deceased once is obligatory (Fard), and pouring water three times is Sunnah. | 9 | 611 7 | Ruling: The funeral

prayer ends with the Takbirs; one cannot join after that even if the Salam has not yet been said. | 5 | 618

फ़तावा-ए-रज़विया भाग 4

क्रम संख्या	विषय	संदर्भ संख्या	पृष्ठ संख्या
16	मसला: मस्जिद की धूल झाड़कर एक कोने में जमा कर दी गई हो, तो उससे कीचड़ लगे पैर पोंछने में कोई हर्ज नहीं।	3	737
17	मसला: मस्जिद में नमाज़ियों के लिए चिराग रोशन है, उससे किताब देखना, पढ़ना, पढ़ाना सब जायज़ है। और अगर नमाज़ी नमाज़ पढ़ चुके हों, तब भी रात के एक तिहाई हिस्से तक उससे काम ले सकते हैं, क्योंकि उतने समय तक मस्जिद के लिए चिराग जलता रहना चाहिए। उसके बाद जायज़ नहीं कि मस्जिद का तेल और बत्ती अपने निजी काम में खर्च की जाए। अक़ूल: यह वहाँ के लिए है जहाँ मस्जिद में इससे अधिक समय तक रोशनी रहने की आदत न हो। और अगर पूरी रात रोशनी रहती है जैसे तीनों पाक मस्जिदों में, तो पूरी रात उसकी रोशनी से लाभ उठाया जा सकता है।	5	737

जनाइज़ (अंतिम संस्कार)

1 | मसला: मय्यत के पूरे बदन पर पानी किसी तरह बह जाए तो वह पाक हो जाएगा और उस पर नमाज़-ए-जनाज़ा जायज़ है। लेकिन जीवित लोगों पर जो उसे ग़ुस्ल (स्नान) देना फ़र्ज़ है, वह उनके इरादतन कार्य के बिना नहीं उतरेगा। इसलिए अगर मुर्दा दरिया में मिले, तो उसे ग़ुस्ल की नीयत से हिलाना लाज़िम है ताकि जीवितों पर से फ़र्ज़ साक़ित (समाप्त) हो जाए। | 2 | 662 2 | मसला: ग़ुस्ल-ए-मय्यत सिखाने के लिए मुर्दे को नहलाया और उसे ग़ुस्ल देने की नीयत नहीं की, तब भी वह पाक हो गया और जीवितों पर से भी फ़र्ज़ उतर गया क्योंकि जानबूझकर किया गया कार्य काफी है। हाँ, बिना नीयत के सवाब नहीं मिलेगा। | 3 | 662 3 | मसला: मय्यत के सिर और दाढ़ी को खत्मी से धोएं, अन्यथा पाक साबुन से। | 1 | 448 4 | मसला: पानी न हो या कोई ऐसा व्यक्ति न हो जिसे मय्यत को नहलाना शरीअत की दृष्टि से जायज़ हो, तो उन्हें भी तयम्मुम कराएं। | 1 | 609 5 | मसला: जब मय्यत को तयम्मुम कराया जाए, तो तयम्मुम कराने वाले की नीयत शर्त है; बिना नीयत के नहीं होगा। | 8 | 611 6 | मसला: मय्यत का ग़ुस्ल एक बार फ़र्ज़ है और तीन बार पानी बहाना

सुन्नत है। | 9 | 611 7 | मसला: नमाज़-ए-जनाज़ा तकबीरों पर समाप्त हो जाती है, उसके बाद कोई शामिल नहीं हो सकता, भले ही अभी सलाम न फेरा गया हो। | 5 | 618

पृष्ठ 708/761

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱۶	مسئلہ: مسجد سے گرد جھاڑ کر کسی گوشہ میں جمع کردی ہے اس سے کیچڑ کے سنے پاؤں پونچھنے میں حرج نہیں۔	۳	۷۳۷
۱۷	مسئلہ: مسجد میں نمازیوں کیلئے چراغ روشن ہے اس سے کتاب دیکھنا پڑھنا پڑھانا سب روا ہے اور اگر نمازی نماز پڑھ گئی جب بھی تہائی رات تک اس سے کام لے سکتا ہے کہ اتنے وقت تک مسجد ہی کیلئے چراغ روشن رہنا ہوگا اس کے بعد جائز نہیں کہ مسجد کا تیل بتی اپنے کام میں صرف کرنا ہوگا۔ اقول: یہ وہاں کہ اس سے زیادہ وقت تک مسجد میں روشنی کی عادت نہ ہو اور اگر ساری رات روشنی رہتی ہے جیسے تینوں مسجد کریم میں، تو رات بھر اس کی روشنی سے فائدہ لے سکتا ہے۔	۵	۷۳۷

جنائز

۱ | مسئلہ: میت کے سب بدن پر پانی کسی طرح گزر جائے وہ پاک ہو جائے گا اور اس پر نماز جنازہ جائز لیکن زندوں پر جو اسے غسل دینا فرض ہے وہ بے ان کے بالقصد فعل کے نہ اترے گا اس لیے اگر مردہ دریا میں ملے لازم ہے کہ اسے بقصد غسل جنبش دے لیں کہ ان پر سے فرض ساقط ہو۔ | ۲ | ۲۶۲ ۲ | مسئلہ: غسل میت سکھانے کے لیے مردہ کو نہلایا اور اسے غسل دینے کی نیت نہ کی وہ بھی پاک ہوگیا اور زندوں پر سے بھی فرض اتر گیا کہ فعل بالقصد کافی ہے، ہاں بے نیت ثواب نہ ملے گا۔ | ۳ | ۲۶۲ ۳ | مسئلہ: میت کے سروریش کو خطمی سے دھوئیں ورنہ

پاک صابون سے۔ | ۱ | ۴۴۸ ۴ | مسئلہ: پانی نہ ہو یا کوئی ایسا نہ ہو جسے میت کا نہلانا شرعاً جائز ہو تو اسے بھی تیمم کرائیں۔ | ۱ | ۶۰۹ ۵ | مسئلہ: جب میت کو تیمم کرایا جائے تیمم کرنے والے کی نیت شرط ہے بلانیت نہ ہوگا۔ | ۸ | ۶۱۱ ۶ | مسئلہ: میت کا غسل ایک بار فرض ہے اور تین بار پانی بہانا سنت۔ | ۹ | ۶۱۱ ۷ | مسئلہ: نماز جنازہ تکبیروں پر ختم ہو جاتی ہے اس کے بعد نہیں مل سکتا اگرچہ ابھی سلام نہ ہوا ہو۔ | ۵ | ۶۱۸

Fatawa Razawiya, Volume 4

Serial Number	Topics	Benefit Number	Page Number
8	Issue: Once the guardian (wali) has performed the funeral prayer, it cannot be repeated; the solar eclipse prayer can be performed a hundred times.	10	618
9	Issue: One cannot touch the hand of their own legal concubine who was an 'Umm al-Walad' (meaning she had a child from his sperm which he acknowledged as his own offspring) after her death, because she became free and a stranger (ajnabiyah) immediately upon death.	5	659
10	Issue: If the deceased did not leave any property, then the person who was responsible for their maintenance during their lifetime is also responsible for their shroud and burial.		
11	Issue: No matter how much wealth a woman leaves behind, her shroud is obligatory upon her husband.	9	659
12	Issue: If the deceased has no property and no one was responsible for their maintenance, then their shroud and burial are obligatory upon the Public Treasury (Bayt al-Mal). If there is no Public Treasury, as is the case here, then it is obligatory upon the Muslims who are informed, whether it is done by one person or through collection; if no one does it, then all those who were informed will be grave sinners.	10	659
13	Issue: Until the deceased is given a bath (ghusl), if their whole body is not covered with cloth, reciting the Holy Quran near them is prohibited according to common sheikhs. If recitation is desired, then cover their whole body with a sheet.	1	663
14	Issue: Visiting graves and visiting the sick are also acts of worship of Allah; it is recommended (mustahabb) to be in a state of ablution for them. If one is unable to	9	663

Serial Number	Topics	Benefit Number	Page Number
	access water, they should perform Tayammum, even if prayer cannot be performed with this Tayammum.		
15	Issue: Burying a Muslim is also among the acts of worship of Allah; one should be in a state of ablution. If water is not found, perform Tayammum.	4	666
16	Issue: If performing ablution would cause the funeral prayer to be missed, one may perform Tayammum out of necessity and pray. If another funeral arrives in the meantime and there was enough time to perform ablution but it was not done, and now there is no longer enough time, then one must perform Tayammum again for it; the first one is void.	2	667

फतावा रज़विया, जिल्द चौथी

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
८	मसला: जब वली (अभिभावक) ने जनाज़े की नमाज़ पढ़ ली, तो उसे दोबारा नहीं पढ़ा जा सकता; सूर्य ग्रहण की नमाज़ सौ बार पढ़ी जा सकती है।	१०	६१८
९	मसला: खुद अपनी शरई दासी जो कि 'उम्मुल वलद' थी (अर्थात उसके गर्भ से उसकी संतान हुई जिसे उसने अपनी संतान स्वीकार किया), उसकी मृत्यु के बाद उसका हाथ नहीं छू सकता क्योंकि वह मरते ही स्वतंत्र और अजनबी (अजनबिया) हो गई।	५	६५९
१०	मसला: यदि मृतक ने कोई संपत्ति नहीं छोड़ी, तो जीवन में जिस पर उसका भरण-पोषण (नफ़क़ा) अनिवार्य था, उसी पर उसका कफ़न-दफ़न भी अनिवार्य है।		
११	मसला: स्त्री चाहे कितनी भी संपत्ति छोड़े, उसका कफ़न उसके पति पर अनिवार्य है।	९	६५९
१२	मसला: यदि मृतक के पास न संपत्ति है और न ही कोई ऐसा व्यक्ति जिस पर उसका भरण-पोषण अनिवार्य था, तो उसका कफ़न-दफ़न बैतुल-माल (सार्वजनिक खजाना) से अनिवार्य है। यदि बैतुल-माल न हो, जैसा कि यहाँ, तो जिन मुसलमानों को सूचना हो उन पर अनिवार्य है, चाहे एक व्यक्ति करे या चंदा से; यदि कोई नहीं करेगा, तो जिन-जिन को खबर थी वे सब भारी गुनहगार होंगे।	१०	६५९
१३	मसला: मृतक को जब तक स्नान (गुस्ल) न करा लें, यदि उसका पूरा शरीर कपड़े से ढका न हो, तो उसके पास कुरान मजीद की तिलावत आम मशायख़ के नज़दीक मना है। यदि तिलावत करना चाहें, तो उसका पूरा शरीर चादर से ढंक दें।	१	६६३
१४	मसला: कब्रों की ज़ियारत और मरीज़ की मिज़ाजपुर्सी (इयादत) भी अल्लाह की इबादत हैं, उनके लिए बा-वज़ू होना मुस्तहब (पसंदीदा) है।	९	६६३

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
	यदि पानी उपलब्ध न हो, तो तयम्मुम करें, भले ही इस तयम्मुम से नमाज़ न हो सके।		
१५	मसला: मुस्लिम मृतक को दफ़नाना भी अल्लाह की इबादतों में से है, इसके लिए बा-वज़ू होना चाहिए। यदि पानी न मिले तो तयम्मुम करें।	४	६६६
१६	मसला: यदि वज़ू करने से जनाज़े की नमाज़ छूट जाती, तो इस ज़रूरत की वजह से तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ी, फिर उसी दौरान एक और जनाज़ा आ गया और उसमें वज़ू करने की इतनी मोहलत थी कि वह वज़ू कर लेता लेकिन उसने नहीं किया, और अब इतनी मोहलत नहीं रही, तो उसके लिए दोबारा तयम्मुम करे, पहला वाला खत्म हो गया।	२	६६७

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۸	مسئلہ : نماز جنازہ جب ولی پڑھ لے دوبارہ نہیں ہو سکتی سورج گہن کی نماز سو بار ہو سکتی ہے۔	۱۰	۶۱۸
۹	مسئلہ : خود اپنی کنیز شرعی کہ اُم ولد تھی یعنی اس کے نطفے سے اس کے اولاد ہوئی جسے اس نے اپنی اولاد تسلیم کیا اس کی موت کے بعد اس کا ہاتھ نہیں چھو سکتی کہ وہ مرتے ہی آزاد واجنبیہ ہو گئی۔	۵	۶۵۹
۱۰	مسئلہ : میت نے اگر کچھ مال نہ چھوڑا تو زندگی میں جس پر اس کا نفقہ واجب تھا اس کا کفن دفن بھی اسی پر واجب ہے۔		
۱۱	مسئلہ : عورت اگر چہ کتنا ہی مال چھوڑے اس کا کفن اس کے شوہر پر واجب ہے۔	۹	۶۵۹
۱۲	مسئلہ : اگر میت کے نہ مال ہے نہ کوئی ایسا جس پر اس کا نفقہ واجب تھا تو اس کا کفن دفن بیت المال سے واجب ہے۔ اگر بیت المال نہ ہو جیسے یہاں تو جن مسلمانوں کو اطلاع ہو ان پر واجب ہے خواہ ایک شخص کرے یا چندہ سے، اگر کوئی نہ کرے گا تو جن جن کو خبر تھی سب سخت گنہگار رہیں گے۔	۱۰	۶۵۹
۱۳		۱	۶۶۳

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ : میت کو جب تک غسل نہ دے لیں اگر اس کا سارا بدن کپڑے سے ڈھکا ہوا نہ ہو تو اس کے پاس قرآن مجید کی تلاوت عام مشائخ کے نزدیک منع ہے۔ اگر تلاوت چاہیں تو اس کا سارا جسم چادر سے ڈھانک دیں۔		
۱۴	مسئلہ : زیارت قبور و عیادت مریض بھی عبادت الٰہی ہیں ان کا باوضو ہونا مستحب ہے پانی قادر نہ ہو تو تیمّم کرے اگرچہ اس تیمّم سے نماز نہ ہو گی۔	۹	۶۶۳
۱۵	مسئلہ : دفن میت مسلم بھی منجملہ عبادت الٰہی ہے باوضو ہونا چاہیئے ، پانی نہ ملے تو تیمّم کرے۔	۴	۶۶۶
۱۶	مسئلہ : اگر وضو کرتا نماز جنازہ ہو چکتی اس ضرورت سے تیمّم کرکے پڑھی کہ اتنے میں اور جنازہ آگیا اور اس میں اتنی مہلت تھی کہ وضو کر لیتا مگر یہ نہ کیا اور اب اتنی مہلت نہ رہی تو اس کیلئے دوبارہ تیمّم کرے پہلا جاتا رہا۔	۲	۶۶۷

Fatawa Rizvia, Volume 4

Serial No.	Topics	Reference No.	Page No.
17	Ruling: A funeral prayer was performed with tayammum and then another funeral prayer became ready immediately. If there was no opportunity to perform wudu between the two prayers, then the first tayammum remains valid, and the second funeral prayer may also be offered with it.	3	667
	Masail-e-Zakat (Rulings on Zakat)		
1	Ruling: It is forbidden for one whose relatives are needy to give their charity to strangers. It is stated in a Hadith that the charity of such a person will not be accepted, and Allah Almighty will not look towards them on the Day of Resurrection.	3	182
	Masail-e-Roza (Rulings on Fasting)		
1	Ruling: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family) was asked whether a fasting person may kiss his wife. Once he granted permission and another time he forbade it. Upon observation, it was found that those he allowed were elderly and those he forbade were young.	6	484
2	Ruling: If blood comes from the teeth and is swallowed while fasting; if the taste of blood is felt in the throat, the fast is broken, otherwise not.	2	522
3	Ruling: The slight moisture remaining in the mouth after rinsing, which is not enough to go down the throat on its own, does not break the fast if it goes down with saliva.	6	523
4	Ruling: If such a slight trace of food or betel leaf remains in the mouth that it cannot go down the throat on its own, if it goes down with saliva, the fast will not be broken.	7	523
5	Ruling: The criterion for the small or large quantity of traces of food etc., in the research of Imam Muhaqqiq ala al-Itlaq, is that if its taste is felt in the throat while	8	523

Serial No.	Topics	Reference No.	Page No.
	swallowing, it is 'much' (kather) and the fast will be broken, otherwise not.		
6	Ruling: Anything that can go down the throat by itself is 'much' and breaks the fast. Anything that goes down with the help of saliva and is not capable of going down by itself is 'little' (qalil), and the fast will not be broken.	9	523
7	Ruling: If a fasting person intentionally swallowed a sesame seed, the fast is broken. If they kept it in their mouth and chewed it, then even if it goes down with saliva, the fast is not broken; however, in this case, if its taste is felt in the throat, the fast will be broken.	10	523

फ़तावा रज़विया, जिल्द 4 (भाग 4)

क्रम संख्या	विषय	संदर्भ संख्या	पृष्ठ संख्या
17	मसला: एक जनाज़ा तयम्मुम से पढ़ा था कि दूसरे की नमाज़ तैयार हो गई, दोनों नमाज़ों के बीच में वज़ू करने की मोहलत न थी तो पहला ही तयम्मुम बाकी है, उसी से दूसरा जनाज़ा भी पढ़े।	3	667
	मसाईल-ए-ज़कात (ज़कात के मसले)		
1	मसला: जिसके रिश्तेदार ज़रूरतमंद हों, उसे मना है कि उन्हें छोड़कर ग़ैरों को अपनी ज़कात दे। हदीस में फ़रमाया गया है कि ऐसे व्यक्ति का सदक़ा क़बूल न होगा और अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसकी तरफ़ नज़र नहीं फ़रमाएगा।	3	182
	मसाईल-ए-रोज़ा (रोज़े के मसले)		
1	मसला: रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से सवाल हुआ कि रोज़ेदार अपनी पत्नी का बोसा (चुंबन) ले; एक बार इजाज़त दी और एक बार मना किया। देखा गया तो जिन्हें इजाज़त दी वे बूढ़े थे और जिन्हें मना किया वे जवान।	6	484
2	मसला: दांतों से खून निकला, रोज़े में उसे निगल गया; अगर खून का स्वाद हलक़ में महसूस हो तो रोज़ा जाता रहा वरना नहीं।	2	522
3	मसला: कुल्ली के बाद जो हल्की तरी मुँह में रह जाती है कि अकेले हलक़ में जाने के क़ाबिल न हो, अगर लार के साथ चली जाए तो रोज़े में कोई ख़लल नहीं आएगा।	6	523
4	मसला: मुँह में खाने या पान का ऐसा हल्का असर रह जाए कि आप हलक़ में उतरने के क़ाबिल न हो, अगर लार के साथ उतर जाए तो रोज़ा नहीं जाएगा।	7	523
5	मसला: खाने वग़ैरह के इस असर की कमी या अधिकता का पैमाना इमाम मोहक़्क़िक़ अली-अल-इतलाक की तहक़ीक़ में यह है कि अगर उतरते	8	523

क्रम संख्या	विषय	संदर्भ संख्या	पृष्ठ संख्या
	वक़्त हलक़ में उसका स्वाद महसूस हुआ तो वह कसीर (अधिक) है और रोज़ा जाता रहेगा वरना नहीं।		
6	मसला: जो चीज़ खुद हलक़ में उतर सके वह कसीर है और रोज़ा तोड़ने वाली है, और जो लार के साथ उसकी मदद से उतर जाए और खुद उतरने के क़ाबिल न हो वह क़लील (कम) है, रोज़ा नहीं जाएगा।	9	523
7	मसला: तिल का एक दाना रोज़ेदार ने जानबूझकर निगला तो रोज़ा जाता रहा, और अगर मुँह में रखकर चबाया तो नहीं चाहे लार के साथ उतर जाए; हाँ, इस सूरत में अगर हलक़ में उसका स्वाद महसूस हो तो रोज़ा जाता रहेगा।	10	523

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: ایک جنازہ تیمم سے پڑھا تھا کہ دوسرے کی نماز تیار ہوگئی دونوں		
۱۷	نمازوں کے بیچ میں وضو کرلینے کی مہلت نہ تھی تو پہلا ہی تیمم باقی ہے اسی سے دوسرا جنازہ بھی پڑھے۔	۳	۶۶۷
	مسائل زکوۃ		
	مسئلہ: جس کے عزیز محتاج ہوں، اسے منع ہے کہ انہیں چھوڑ کر غیروں		
۱	کو اپنے صدقات دے حدیث میں فرمایا ایسے کا صدقہ قبول نہ ہوگا اور اللہ تعالی روز قیامت اس کی طرف نظر نہ فرمائے گا۔	۳	۱۸۲
	مسائل روزہ		
	مسئلہ: رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے سوال ہوا کہ روزہ دار اپنی		
۱	عورت کا بوسہ لے ایک بار اجازت فرمائی اور ایک بار منع۔ دیکھیں تو جن کو اجازت فرمائی وہ بوڑھے تھے اور جن کو منع فرمایا جوان۔	۶	۴۸۴
۲	مسئلہ: دانتوں سے خون نکلا روزہ میں اسے نگل گیا اگر خون کا مزہ حلق میں محسوس ہو روزہ جاتا رہا ورنہ نہیں۔	۲	۵۲۲
۳		۶	۵۲۳

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: کلی کے بعد جو خفیف تری منہ میں رہ جاتی ہے کہ تنہا حلق میں جانے کے قابل نہ ہو اگر لعاب دہن کے ساتھ چلی جائے روزہ میں خلل نہ آئے گا۔		
۴	مسئلہ: منہ میں کھانے یا پان کا ایسا ہلکا اثر رہ جائے کہ آپ حلق میں اترنے کے قابل نہ ہو اگر لعاب دہن کے ساتھ اتر جائے گا روزہ نہ جائے گا۔	۷	۵۲۳
۵	مسئلہ: کھانے وغیرہ کے اس اثر کی قلت و کثرت کی معیار امام محقق علی الاطلاق کی تحقیق میں یہ ہے کہ اگر اترتے وقت حلق میں اس کا مزہ محسوس ہوا تو کثیر ہے روزہ جاتا رہے گا ورنہ نہیں۔	۸	۵۲۳
۶	مسئلہ: جو چیز آپ حلق میں اتر سکے کثیر و ناقض صوم ہے اور جو آب دہن کے ساتھ اس کی مدد سے اتر جائے خود اترنے کے قابل نہ ہو قلیل ہے روزہ نہ جائے گا۔	۹	۵۲۳
۷	مسئلہ: تل کا ایک دانہ روزہ دار نے قصداً نگلا روزہ جاتا رہا اور اگر منہ میں رکھ کر چبایا تو نہیں اگرچہ آب دہن کے ساتھ اتر جائے، ہاں اس صورت میں اگر حلق میں اس کا مزہ محسوس ہو تو روزہ جاتا رہے گا۔	۱۰	۵۲۳

Fatawa Razvia, Volume 4

Serial No.	Subjects	Point No.	Page No.
8	Ruling: If one mistakenly engages in intercourse while fasting and then remembers, or if one was engaged since night and in the meantime dawn broke; if upon remembering or at dawn one immediately separates, the fast will be valid even if ejaculation occurs after separation. However, if one pauses for even a moment after remembering or dawn breaking, the fast is lost; complete the day and perform a compensatory (qada) fast later.	3	640

फतावा रज़विया, जिल्द चार

क्रम सं.	विषय	फ़ायदा नं.	पृष्ठ नं.
8	मसला: रोज़े में भूलकर संभोग में व्यस्त हुआ फिर याद आया, या रात से व्यस्त हुआ और इसी बीच सुबह सादिक हो गई; अगर याद आते ही या सुबह होते ही तुरंत अलग हो गया तो रोज़ा हो जाएगा, चाहे अलग होने के बाद वीर्यपात भी हो जाए। और अगर याद आने या सुबह होने पर एक पल भी रुका तो रोज़ा टूट गया; उस दिन का रोज़ा पूरा करे और बाद में उसकी कज़ा रखे।	3	640

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۸	مسئلہ: روزے میں بھول کر جماع میں مشغول ہوا پھر یاد آیا، یا رات سے مشغول ہوا اور اسی اثنا میں صبح صادق چمک آئی اگر یاد آتے ہی یا صبح ہوتے ہی معاً فوراً جدا ہو گیا تو روزہ ہو جائے گا اگرچہ جدا ہونے کے بعد انزال بھی ہو جائے اور اگر یاد آنے یا صبح چمکنے پر ایک لحظہ بھی توقف کیا تو روزہ گیا اسے پورا کرے اور قضا رکھے۔	۳	۶۴۰

Fatawa-e-Razvia Volume 4

Serial No.	Topics	Ref. No.	Page No.
7	Problem: Someone said to a beggar, "I have made my wealth permissible (mubah) for you for Hajj," meaning I have given you permission to take only as much of my money as is sufficient for Hajj and perform Hajj. Hajj will not become obligatory on him because of this, nor is it necessary for him to accept this permission.	3	630

Matters of Marriage

Serial No.	Topics	Ref. No.	Page No.
1	Problem: When a bride is brought home after marriage, it is commendable (Mustahab) to wash her feet and sprinkle that water in the four corners of the house; this brings blessings.	5	455
2	Problem: If a woman's milk is mixed in medicine and given to a nursing infant, according to Imam Abu Yusuf, if the taste or color of the milk remained, the prohibition of fosterage (hurmat-e-raza'at) is established. If both vanished due to the medicine, there will be no prohibition. According to Imam Muhammad, if the medicine changes it to such an extent that it no longer remains milk and cannot be nourishment for the infant, then prohibition will not occur; otherwise, it will, even if the color, taste, and smell all change, and this is the preferred view.	3	522
3	Problem: For the prohibition of fosterage, it is not necessary for the child to suckle directly from the breast; rather, if milk reaches the child's interior through the mouth or nose in any way, prohibition will be established.	4	522
4	Problem: If a woman's milk was mixed in food and that food was fed to a nursing infant, the prohibition will not be established at all.	1	522
5	Problem: If the remaining time for prayer is so short that there won't be enough time to bathe after intercourse, then intercourse is not permissible.	1	584

Serial No.	Topics	Ref. No.	Page No.
6	Problem: In many situations, intercourse with one's wife is prohibited (Haraam).	2	584
7	Problem: If a marriage (Nikah) was performed saying, "I have taken you in marriage for one month, or one year, or two hundred years," the marriage is not valid. However, if the marriage was performed unconditionally but the intention in the heart is to leave her after a month, a day, or even a minute, then it is valid.	6	643
8	Problem: When a woman does not have a father, grandfather, adult brother, nephew, or uncle, then her uncle's son (cousin) is her guardian (Wali). If he says to her, "I want to marry you," and she remains silent, and then he declares in front of two witnesses that "I have taken her into my marriage," the marriage is concluded. I say: meaning as long as he is her 'Kufu' (compatible match), i.e., in terms of religion, conduct, or profession, he is not so inferior that her marriage to him is conventionally considered disgraceful.	8	720

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द चौथी

क्रमांक	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
७	मसला: किसी ने फ़क़ीर से कहा, "मैंने अपना माल तुम्हारे लिए हज के लिए मुबाह (अनुमेय) कर दिया है", यानी तुम्हें अनुमति दी है कि तुम मेरे उतने ही पैसे लेकर हज करो जितने हज के लिए पर्याप्त हों। इससे उस पर हज फ़र्ज़ नहीं होगा और न ही उसके लिए इस अनुमति को स्वीकार करना अनिवार्य है।	३	६३०

निकाह के मसाइल (विवाह के मामले)

क्रमांक	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
१	मसला: जब दुल्हन को ब्याह कर लाएं तो मुस्तहब (पसंदीदा) है कि उसके पैर धोकर घर के चारों कोनों में छिड़कें, इससे बरकत होती है।	५	४५५
२	मसला: यदि किसी महिला का दूध दवा में मिलाकर स्तनपान करने वाले बच्चे को दिया गया, तो इमाम अबू यूसुफ के अनुसार, यदि दूध का स्वाद या रंग बाकी रहा तो रज़ाअत की हुरमत (स्तनपान के कारण निकाह का निषेध) स्थापित हो जाएगी, और यदि दवा के कारण दोनों चले गए तो हुरमत नहीं होगी। इमाम मुहम्मद के अनुसार, यदि दवा उसे इतना बदल दे कि वह दूध न रहे और बच्चे का आहार न बन सके तो हुरमत नहीं होगी, अन्यथा होगी, चाहे रंग, स्वाद और गंध सब बदल जाएं और यही मत अधिक मान्य है।	३	५२२
३	मसला: रज़ाअत की हुरमत के लिए बच्चे का सीधे स्तन से दूध पीना ही आवश्यक नहीं है, बल्कि जिस तरह भी मुँह या नाक के ज़रिए दूध उसके पेट में पहुँच जाए, हुरमत स्थापित हो जाएगी।	४	५२२
४	मसला: यदि खाने में महिला का दूध मिलाया गया और वह खाना स्तनपान करने वाले बच्चे को खिलाया गया, तो हुरमत बिल्कुल स्थापित नहीं होगी।	१	५२२

क्रमांक	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
५	मसला: नमाज़ का समय इतना कम बचा हो कि पत्नी से संभोग के बाद स्नान करने का समय न मिले, तो संभोग जायज़ नहीं है।	१	५८४
६	मसला: बहुत सी स्थितियों में पत्नी के साथ संभोग हराम होता है।	२	५८४
७	मसला: निकाह इस तरह किया कि "मैंने तुम्हें एक महीने या एक साल या दो सौ साल के लिए निकाह में लिया", तो निकाह नहीं हुआ। और यदि निकाह सामान्य रूप से किया गया लेकिन दिल में यह इरादा है कि एक महीने या एक दिन या एक मिनट बाद ही छोड़ दूँगा, तो जायज़ हो गया।	६	६४३
८	मसला: जब औरत के बाप, दादा, जवान भाई, भतीजा और चाचा न हों, तो चाचा का बेटा उसका वली (संरक्षक) है। अगर उसने उससे कहा, "मैं तुमसे निकाह करना चाहता हूँ" और वह चुप रही, फिर उसने दो गवाहों के सामने कह दिया कि "मैंने उसे अपने निकाह में लिया", तो निकाह हो गया। ८ अक़ूल (मैं कहता हूँ): यानी बशर्ते कि वह उसका कुफ़ू (योग्य जोड़ी) हो, यानी धर्म या आचरण या पेशे में इतना कम न हो कि उससे निकाह करना सामाजिक रूप से अपमानजनक समझा जाए।	८	७२०

فتاوی رضویہ جلد چہارم

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۷	مسئلہ: کسی نے فقیر سے کہا میں نے تجھے اپنا مال حج کیلئے مباح کیا یعنی تجھے اجازت دی کہ تو صرف حج کے لائق میرا روپیہ لے کر حج کر اس سے حج اس پر واجب نہ ہوگا نہ اسے اس اباحت کا قبول ضرور۔	۳	۶۳۰

مسائل نکاح

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱	مسئلہ: جب دلہن کو بیاہ کر لائیں مستحب ہے کہ اس کے پاؤں دھو کر مکان کے چاروں گوشوں میں چھڑکیں اس سے برکت ہوتی ہے۔	۵	۴۵۵
۲	مسئلہ: عورت کا دودھ دوا میں ملا کر شیر خوار بچہ کو دیا امام ابو یوسف کے نزدیک اگر دودھ کا مزہ یا رنگ باقی تھا حرمت رضاعت ثابت ہو گئی اور اگر دوا کے سبب دونوں جاتے رہے تھے تو حرمت نہ ہوگی اور امام محمد کے نزدیک اگر دوا اسے اس قدر بدل دے کہ دودھ نہ رہے بچہ کی غذا نہ ہو سکے تو حرمت نہ ہو گی ورنہ ہو گی اگر چہ رنگ، مزہ، بو سب بدل جائیں اور یہی راجح ہے۔	۳	۵۲۲
۳		۴	۵۲۲

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: حرمت رضاعت کیلئے بچے کا پستان سے پینا ہی ضرور نہیں بلکہ جس طرح منہ یا ناک کے ذریعہ سے دودھ اس کے جوف میں پہنچ گیا حرمت آئے گی۔		
۴	مسئلہ: کھانے میں عورت کا دودھ ملایا وہ کھانا شیر خوار بچہ کو کھلایا حرمت مطلقاً ثابت نہ ہوگی۔	۱	۵۲۲
۵	مسئلہ: نماز کا وقت اتنا ہے کہ بیوی سے صحبت کے بعد نہا کر وقت نہ ملے گا تو صحبت جائز نہیں۔	۱	۵۸۴
۶	مسئلہ: بہت صورتوں میں زوجہ سے صحبت حرام ہوتی ہے۔	۲	۵۸۴
۷	مسئلہ: نکاح یوں کیا کہ میں تجھے ایک مہینے یا ایک سال یا دو سو برس کیلئے نکاح میں لایا نکاح نہ ہوا اور اگر نکاح خالص طور پر کیا اور دل میں یہ ارادہ ہے کہ ایک مہینے یا ایک دن یا منٹ ہی بھر بعد چھوڑ دوں گا تو جائز ہوا۔	۶	۶۴۳
۸	مسئلہ: عورت کے جب باپ، دادا، جوان بھائی، بھتیجا اور چچا نہ ہوں تو چا کا بیٹا اس کا ولی ہے اگر اس نے اس سے کہا میں تجھ سے نکاح کرنا چاہتا ہوں اور وہ چپ رہی اس نے دو گواہوں کے سامنے کہہ دیا کہ میں اسے اپنے نکاح میں لایا نکاح ہو گیا اقول: یعنی جبکہ یہ اس کا کفو ہو یعنی مذہب یا چال چلن یا پیشے کسی بات میں ایسا کم نہ ہو کہ اس سے اس کا نکاح ہونا عرفاً معیوب سمجھا جائے۔	۸	۷۲۰

صفحہ 712 کا 761

Fatawa Razawiyya Volume 4

S. No.	Titles	Benefit No.	Page No.
9	Issue: Zaid was neither asked nor consulted; Amr, on his own, married him to Hindah. The marriage was valid but remained dependent on Zaid's permission. If he approved it, whether explicitly (e.g., 'I agree to this marriage') or implicitly (e.g., someone congratulated him and he accepted it, or he sent part of the dowry to the bride), it became valid; if he rejected it, it became void.	3	717

क्र.सं.	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
९	मसला: ज़ैद से न पूछा गया न सुना गया; अम्र ने अपनी मर्ज़ी से उसका निकाह हिंदा से कर दिया। निकाह सही हो गया लेकिन ज़ैद की इजाज़त पर निर्भर रहा। अगर उसने उसे जायज़ कर दिया, चाहे स्पष्ट रूप से (जैसे 'मैं इस निकाह पर राज़ी हुआ') या संकेत से (जैसे किसी ने उसे बधाई दी और उसने स्वीकार कर ली, या उसने दुल्हन को मेहर का कुछ हिस्सा भेजा), तो वह जायज़ हो गया; अगर उसने रद्द कर दिया, तो बातिल (अमान्य) हो गया।	३	७१७

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۹	مسئلہ: زید سے کہا نہ سنا عمرو نے بطور خود اس کا نکاح ہندہ سے کر دیا نکاح صحیح ہوگیا مگر اجازتِ زید پر موقوف رہا اگر جائز کر دیا خواہ صراحۃً مثلاً میں اس نکاح پر راضی ہوا یا دلالۃً مثلاً کسی نے مبارک بادی اسے قبول کیا یا منکوحہ کو کچھ حصہ مہر کا بھیجا تو جائز ہوگیا، رد کر دیا تو باطل۔	۳	۷۱۷

Fatawa Razawiya - Volume 4

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
2	Issue: An oath to not eat meat will not be broken by eating fish.	1	482
3	Issue: Swore not to drink water, then drank water mixed with saffron; if the mixture is slight such that it doesn't color, the oath is broken, otherwise not.	3	527
4	Issue: Swore not to refuse giving something to someone; they asked, and he promised; the oath is not broken as long as the promise is not for a time after their need has passed.	2	778
5	Issue: Swore not to give something to Zaid; Zaid asked, he promised; the oath won't break until he actually gives it.	3	778
6	Issue: If one doesn't have enough for expiation of an oath to feed ten poor people, he can feed five, and just fast for three days; there is no need to give half meals.	3	807
7	Issue: Swore not to perform ablution (wudu) due to a nosebleed, then urinated, followed by nosebleed, then performed wudu; the oath is broken. This wudu will also count for the nosebleed, even though wudu was initially broken by urination.	2	812

Issues of Hudud (Legal Punishments)

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
1	Issue: Drinking wine mixed with water or water mixed with wine is absolutely prohibited. However, if water is in greater quantity, the 'hadd' (legal punishment) will not be applied unless intoxication occurs.	11	523

Issues of Siyar (Expeditions/International Relations)

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
1		5	441

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
	Issue: All those who recite the Kalima of Islam but then deny any essential of religion, their ruling is like that of a hostile infidel (kafir harbi), for they are apostates.		
2	Issue: If the army of Islam besieged an enemy fortress and it's known there's a protected non-Muslim (dhimmi) inside, killing the people of that fortress is prohibited due to the risk of killing a dhimmi. Yes, if some people came out or were removed or were killed unlawfully, then killing the rest is permissible because the presence of a dhimmi becomes doubtful.	5	438

फ़तावा रज़विया - जिल्द 4

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
2	मसला: मांस न खाने की कसम मछली खाने से नहीं टूटेगी।	1	482
3	मसला: कसम खाई कि पानी नहीं पियूँगा, फिर वह पानी पिया जिसमें केसर मिला हुआ है; अगर मिलावट कम है कि रंग न आए तो कसम टूट गई, अन्यथा नहीं।	3	527
4	मसला: कसम खाई कि फलां चीज़ तुझे देने से इंकार नहीं करूँगा; उसने मांगी और उसने वादा कर लिया, तो कसम नहीं टूटी जब तक कि वादा ऐसे समय के लिए न हो जब उसकी आवश्यकता ही समाप्त हो जाए।	2	778
5	मसला: कसम खाई कि फलां चीज़ ज़ैद को नहीं दूँगा; उसने माँगी और वादा कर लिया, कसम तब तक नहीं टूटेगी जब तक वह दे न दे।	3	778
6	मसला: कसम का कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) देने के लिए इतना नहीं है कि दस मिस्कीनों (गरीबों) को खाना दे, तो वह पाँच मिस्कीनों को दे सकता है और केवल तीन दिन के रोज़े रख ले; आधा खाना देने की कोई ज़रूरत नहीं।	3	807
7	मसला: कसम खाई कि नकसीर फूटने से वज़ू नहीं करेगा, फिर पेशाब किया, उसके बाद नाक से खून बहा और वज़ू किया, तो कसम टूट गई। यह वज़ू नकसीर के लिए भी माना जाएगा, हालाँकि वज़ू शुरुआत में पेशाब से टूट चुका था।	2	812

मसाइल-ए-हुद्दूद (कानूनी दंड के मसले)

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
1	मसला: शराब में पानी या पानी में शराब मिलाकर पीना पूर्णतः हराम है। लेकिन अगर पानी अधिक मात्रा में है तो 'हद्द' (कानूनी सज़ा) नहीं लगेगी जब तक कि नशा न आ जाए।	11	523

मसाइल-ए-सियर (अभियान और अंतरराष्ट्रीय संबंधों के मसले)

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
1	मसला: जितने लोग कलमा-ए-इस्लाम पढ़ते हैं और फिर धर्म की आवश्यक चीज़ों में से किसी का इंकार करते हैं, उनका हुक्म 'काफ़िर-ए-हर्बी' की तरह है क्योंकि वे मुर्तद (धर्मत्यागी) हैं।	5	441
2	मसला: इस्लामी सेना ने काफ़िरों के किसी किले का घेरा किया और मालूम है कि उसमें कोई 'काफ़िर-ए-ज़िम्मी' (संरक्षित गैर-मुस्लिम) भी है, तो उस किले वालों को मारना हराम है क्योंकि ज़िम्मी के मारे जाने का डर है। हाँ, अगर उनमें से कुछ लोग बाहर निकल गए या निकाल दिए गए या नाजायज़ तौर पर मार दिए गए, तो अब बाकियों को मारना जायज़ है क्योंकि ज़िम्मी का वहाँ होना संदिग्ध हो गया है।	5	438

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۲	مسئلہ: گوشت کھانے کی قسم مچھلی کھانے سے نہ ٹوٹے گی۔	۱	۴۸۲
۳	مسئلہ: قسم کھائی پانی نہ پیئے گا پھر وہ پانی پیا جس میں زعفران مل گیا ہے اگر خلط قلیل ہے کہ رنگنے کے قابل نہ ہوا قسم ٹوٹ گئی ورنہ نہیں۔	۳	۵۲۷
۴	مسئلہ: قسم کھائی کہ فلاں چیز تجھے دینے سے انکار نہ کروں گا اس نے مانگی اس نے وعدہ کیا تو قسم نہ ٹوٹی جبکہ وہ وعدہ ایسے وقت کیلئے نہ ہو جس تک اس کی حاجت فوت ہو جائے گی۔	۲	۷۷۸
۵	مسئلہ: قسم کھائی کہ فلاں چیز زید کو نہ دوں گا اس نے مانگی اس پر وعدہ کر لیا قسم نہ ٹوٹے گی جب تک دے نہیں۔	۳	۷۷۸
۶	مسئلہ: قسم کا کفارہ دینے کو اتنا نہیں کہ دس مسکینوں کو کھانا دے پانچ مسکینوں کو دے سکتا ہے صرف تین روزے رکھے نصف کھانا دینے کی کچھ ضرورت نہیں۔	۳	۸۰۷
۷	مسئلہ: قسم کھائی کہ نکسیر پھوٹنے سے وضو نہ کرے گا پھر اس نے پیشاب کیا اس کے بعد ناک سے خون بہا اور وضو کیا قسم ٹوٹ گئی یہ وضو نکسیر سے بھی ٹھہرے گا اگرچہ وضو ابتدا بپیشاب سے ٹوٹ چکا تھا۔	۲	۸۱۲

مسائل حدود

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱	مسئلہ: شراب میں پانی یا پانی میں شراب ملا کر پی حرام مطلقاً ہے۔ مگر اگر پانی مقدار میں زیادہ ہے حد نہ لگے گی مگر یہ کہ نشہ آجائے۔	۱۱	۵۲۳

مسائل سیر

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱	مسئلہ: جتنے لوگ کلمہ اسلام پڑھتے اور پھر ضروریات دین سے کسی شے کا انکار کرتے ہیں ان کا حکم مثل کافر حربی ہے کہ وہ مرتد ہیں۔	۵	۴۴۱
۲	مسئلہ: لشکر اسلام نے کسی قلعہ کفار کا محاصرہ کیا اور معلوم ہے کہ اس میں کوئی کافر ذمی بھی ہے اس قلعہ والوں کا قتل حرام ہے کہ قتل ذمی کا اندیشہ ہے ہاں اس میں سے بعض لوگ نکل گئے یا نکال دئیے گئے یا نا جائز طور پر قتل ہی کر دئے تو اب باقیوں کا قتل جائز ہے کہ ذمی کا باقی رہنا مشکوک ہو گیا۔	۵	۴۳۸

Fatawa Razawiyya Volume Four

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page
3	Issue: Insulting a Sunni scholar of correct belief (Sahih al-Aqidah) is disbelief (kufr).	1	570
	Issues of Partnership (Sharikat)		
1	Issue: After the father, if all brothers continue working on the inheritance and the wealth increases, it belongs equally to all of them, even if some worked less and some more, or some gave better strategies that resulted in profit while others did not.	7	428
2	Issue: If a son assists his father in his work, and wealth is generated from the work of both, the owner of all the wealth is only the father; the son will be considered only a helper. Similarly, if in the relationship between husband and wife, the work is the man's and the woman assists, she will not be considered a partner in the wealth.	8	428
3	Issue: In acquiring a permissible (mubah) thing, if a son worked with his father, he will not be considered a helper but rather he alone will be the owner of whatever wealth he acquires, even if his food and drink are the father's responsibility.	10	428
4	Issue: If someone cut halfway through permissible wood and left it, and another person finished cutting and separated it; or two people joined forces to uproot a permissible tree until it became weak and capable of being uprooted by one person's strength, then one of them left and the other uprooted it. In these cases, this second person alone will be the owner of that wood or tree; the first will have no share. However, if they intended a partnership, the first will receive wages for his amount of work, and if he only assisted, he won't even receive wages.	12	428
5	Issue: If one person filled a bucket with water from a well but hadn't pulled it out yet, and another person took the bucket	13	428

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page
	and pulled it out of the well, the owner of this water will not be the one who filled it but rather the one who pulled it out.		
6	Issue: If one person flushed out and cornered game/prey, and another person caught it, the second person will be the owner, not the first.	14	428

फ़तावा रज़विया खंड चार

क्र.सं.	शीर्षक	फ़ायदा नं.	पृष्ठ
३	मसला: सही अक़ीदा वाले सुन्नी आलिम-ए-दीन का अपमान करना कुफ्र (अधर्म) है।	१	५७०
	साझेदारी के मसले (Masail-e-Shirkat)		
१	मसला: पिता के बाद यदि सभी भाई विरासत पर काम करते रहे और संपत्ति बढ़ गई, तो वह सब में बराबर है, भले ही किसी ने कम काम किया हो और किसी ने ज़्यादा, या किसी ने बेहतर रणनीतियाँ बताई हों जिनसे लाभ हुआ हो और किसी ने नहीं।	७	४२८
२	मसला: बेटा यदि पिता के काम में उसकी सहायता करता है और दोनों के काम से संपत्ति पैदा होती है, तो पूरी संपत्ति का स्वामी केवल पिता है; बेटा केवल सहायक माना जाएगा। इसी प्रकार, यदि पति-पत्नी के बीच काम पुरुष का है और महिला सहायता करती है, तो वह संपत्ति में हिस्सेदार नहीं होगी।	८	४२८
३	मसला: मुबाह (अनुमेय) वस्तु प्राप्त करने में यदि बेटे ने पिता के साथ काम किया, तो वह सहायक नहीं माना जाएगा, बल्कि वह जो कुछ भी धन प्राप्त करेगा, उसका स्वामी वही होगा, भले ही उसका खाना-पीना पिता की ज़िम्मेदारी हो।	१०	४२८
४	मसला: मुबाह लकड़ी को आधा काटकर छोड़ दिया और दूसरे ने काटकर अलग कर दिया; या किसी मुबाह पेड़ को जड़ से उखाड़ने के लिए दो लोगों ने मिलकर ज़ोर लगाया यहाँ तक कि वह कमज़ोर होकर एक की शक्ति से उखड़ने योग्य हो गया, अब उनमें से एक अलग हो गया और दूसरे ने उसे उखाड़ दिया। इन स्थितियों में उस लकड़ी और पेड़ का अकेला मालिक यह दूसरा व्यक्ति ही होगा; पहले का कोई हिस्सा नहीं होगा। हाँ, अगर दोनों ने साझेदारी चाही थी, तो पहला अपने काम की मज़दूरी पाएगा, और अगर उसने केवल सहायता की थी, तो मज़दूरी भी नहीं मिलेगी।	१२	४२८

क्र.सं.	शीर्षक	फ़ायदा नं.	पृष्ठ
५	मसला: कुएँ से पानी एक ने भरा, अभी पानी बाहर नहीं निकाला था कि दूसरे ने डोल लेकर कुएँ से बाहर निकाल लिया, इस पानी का मालिक भरने वाला नहीं होगा बल्कि बाहर निकालने वाला होगा।	१३	४२८
६	मसला: एक ने शिकार को भगाया और घेरकर लाया, दूसरे ने उसे पकड़ लिया, तो यह दूसरा व्यक्ति मालिक होगा, पहला नहीं।	१४	४२८

فتاوی رضویہ جلد چہارم

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۳	مسئلہ: عالم دین سنی صحیح العقیدہ کی توہین کفر ہے۔	۱	۵۷۰
	مسائل شرکت		
۱	مسئلہ: باپ کے بعد سب بھائی ترکہ میں کام کرتے رہے اور مال بڑھا تو وہ سب کا برابر ہے اگرچہ بعض نے کام کم کیا ہو بعض نے زیادہ، بعض نے تدبیریں اچھی بتائی ہوں جن سے نفع ہوا بعض نے نہیں۔	۷	۴۲۸
۲	مسئلہ: بیٹا باپ کے کام میں اسے مدد دیتا ہے دونوں کے کام سے اموال پیدا ہوئی تمام اموال کا مالک صرف باپ ہے باپ فقط مددگار سمجھا جائے گا یو نہی اگر زن وشو میں کام مرد کا ہے اور عورت مدد دیتی ہے مال میں حصہ دار نہ ٹھہرے گی۔	۸	۴۲۸
۳	مسئلہ: مباح چیز کے حاصل کرنے میں اگر بیٹے نے باپ کے ساتھ کام کیا تو مدد گار نہ ٹھہرے گا بلکہ جو کچھ یہ مال حاصل کرے گا اس کا یہی مالک ہو گا اگرچہ اس کا کھانا پینا باپ ہی کے ذمے ہو۔	۱۰	۴۲۸
۴	مسئلہ: مباح لکڑی آدھی کاٹ کر چھوڑ دی دوسرے نے کاٹ کر جدا کی یا کوئی مباح پیڑ جڑ سے اکھیڑنے کیلئے دو نے مل کر زور کیا یہاں تک کہ وہ کمزور ہو کر ایک کی طاقت سے اکھڑ آنے کے قابل ہو گیا اب ان میں ایک	۱۲	۴۲۸

نمبر شمار	عنوانات	صفحہ نمبر	فائدہ
	الگ ہو گیا دوسرے نے اکھیڑا ان صورتوں میں اس لکڑی اور پیڑ کا تنہا یہ دوسرا ہی مالک ہو گا پہلے کا حصہ نہ ہوگا پھر اگر دونوں نے شرکت چاہی تھی تو پہلا اپنے اتنے کام کی مزدوری پائے گا اور اگر اس نے صرف اسے مدد دی تھی تو اجرت بھی نہیں۔		
۵	مسئلہ: کنویں سے پانی ایک نے بھرا ابھی پانی باہر نہ نکالا تھا کہ دوسرے نے ڈول لے کر کنویں سے باہر نکال لیا اس پانی کا مالک بھرنے والا نہ ہوگا بلکہ یہ باہر نکالنے والا۔	۱۳	۴۲۸
۶	مسئلہ: ایک نے شکار کو ابھارا اور گھیر کر لایا دوسرے نے پکڑ لیا یہ دوسرا مالک ہو گا نہ پہلا۔	۱۴	۴۲۸

Fatawa Razawiyya Volume IV

Serial No. | Titles | Benefit No. | Page No. 7 | Issue: One person cut permissible wood, another collected it, or the first person had cut and collected it and the second one carried it away; in both cases, the owner of the wood will be the first person, and the second one will receive wages if it was not as assistance. | 1 | 429 8 | Issue: If two companions during travel or at home mix their belongings and eat together, there is no harm even if one eats more and the other less. | 3 | 430

Issues of Waqf (Endowment) 1 | Issue: It is forbidden to use the water of an endowment for a purpose other than what the endower specified, even for the endower himself. | 7 | 417 2 | Issue: Water in temporary schools is like an endowment. If it is for ablution (wudu), pouring it three times on a limb is permissible; the fourth time is forbidden. If there is a doubt about whether it was two or three times, and in reality, it was already three times, it is permissible to pour once more to remove the doubt. | 1 | 418 3 | Issue: If someone has set up a water station (Sabeel) for ablution, it is permissible to drink from it if the water belongs to someone. But if it is endowment water, it is necessary that at the time of endowment, the endower intended for drinking as well, or it is known at that time that people customarily drink from the ablution water station, otherwise drinking will not be permissible. | 2 | 418 4 | Issue: Movable property without immovable property can only be endowed if there is a custom of endowing it. | 4 | 418 5 | Issue: If there is a custom, money, gold coins, and notes can also be endowed. This can be done by giving them to the needy for trade so they can benefit from them. Then, if only the capital or a share in trade profits is agreed upon, take it back from them along with the profit and give it to other needy people, continuing this cycle. | 5 | 418 6 | Issue: If there is a custom, for example, a certain amount of wheat can be endowed by giving it as a loan for seed to a needy person. From its produce, take back the same amount of wheat and give it to another for seed, continuing this cycle. | 6 | 418

फतावा रज़विया जिल्द चौथी

क्रम संख्या | विषय | फ़ायदा नंबर | पृष्ठ संख्या 7 | मसला: जायज़ लकड़ी एक ने काटी, दूसरे ने इकट्ठा की या उसने काटकर इकट्ठा कर दी थी, यह उठा लाया। दोनों सूरतों में लकड़ी का मालिक पहला व्यक्ति होगा और यह दूसरा मज़दूरी पाएगा अगर वह सहायता के तौर पर न था। | 1 | 429 8 | मसला: सफ़र या हज़र में दो साथी अपना माल मिला लें और मिलकर खाएं तो इसमें कोई हर्ज नहीं, भले ही एक ज़्यादा खाए और दूसरा कम। | 3 | 430

वक़्फ़ (धर्मादा) के मसाइल 1 | मसला: वक़्फ़ का पानी जिस काम के लिए वाक़िफ़ (दानकर्ता) ने तय किया है, उसके अलावा किसी और चीज़ में खर्च करना हराम है, यहाँ तक कि स्वयं वाक़िफ़ के लिए भी। | 7 | 417 2 | मसला: वक़्ती मदरसों का पानी वक़्फ़ की तरह है। अगर वज़ू के लिए है तो अंग पर तीन बार पानी डालना जायज़ है, चौथी बार हराम। जबकि दो या तीन में संदेह हो और वास्तव में तीन बार डाल चुका हो, तो संदेह दूर करने के लिए एक बार और डालना जायज़ है। | 1 | 418 3 | मसला: जो सबील (जल-छत्र) किसी ने वज़ू के लिए लगाई हो, तो उससे पीना जायज़ है जबकि वह पानी किसी की मिल्कियत (स्वामित्व) हो। और अगर वक़्फ़ का पानी है तो ज़रूरी है कि वक़्फ़ के समय वाक़िफ़ ने पीने की भी नीयत की हो या उस समय उसे मालूम हो कि वज़ू की सबील का पानी लोग आमतौर पर पीते भी हैं, अन्यथा पीना जायज़ नहीं होगा। | 2 | 418 4 | मसला: चल संपत्तियां अचल संपत्ति के बिना वही वक़्फ़ हो सकती हैं जिनका वक़्फ़ करने का रिवाज हो। | 4 | 418 5 | मसला: अगर रिवाज हो तो रुपया, अशर्फी, नोट भी वक़्फ़ हो सकते हैं। इस तरह कि ज़रूरतमंदों को व्यापार के लिए दिए जाएं ताकि वे उनसे फ़ायदा उठाएं। फिर सिर्फ मूल धन या व्यापार के मुनाफ़े में हिस्सेदारी तय हुई है, तो मुनाफ़े के साथ उनसे लेकर दूसरे ज़रूरतमंदों को दें, इसी तरह यह चक्र चलता रहे। | 5 | 418 6 | मसला: अगर रिवाज हो तो उदाहरण के तौर पर इतने मन गेहूँ इस तरह वक़्फ़ हो सकते हैं कि ज़रूरतमंद को बुआई के लिए क़र्ज़ दिए जाएं उसकी उपज से उतने ही गेहूँ लेकर दूसरे को बुआई के लिए दिए जाएं इसी तरह करते रहें। | 6 | 418

पृष्ठ ७१६/७६१

فتاوی رضویہ جلد چہارم

نمبر شمار | عنوانات | فائدہ نمبر | صفحہ نمبر ۷ | مسئلہ: مباح لکڑی ایک نے کائی دوسرے نے اکٹھی کی یا اس نے کاٹ کر اکٹھی کردی تھی یہ اٹھا کر لایا دونوں صورتوں میں لکڑی کا مالک پہلا شخص ہوگا اور یہ دوسرا مز دوری پائے گا اگر بطور اعانت نہ تھا۔ | ۱ | ۴۲۹ ۸ | مسئلہ: سفر یا حضر میں دو رفیق اپنا مال ملا لیں اور مل کر کھائیں تو اس میں حرج نہیں اگرچہ ایک زیادہ کھائے گا دوسرا کم۔ | ۳ | ۴۳۰

مسائل وقف ۱ | مسئلہ: وقف کا پانی جس لیے واقف نے معین کیا اس کے غیر میں صرف کرنا حرام ہے حتی کہ خود واقف کو | ۷ | ۴۱۷ ۲ | مسئلہ: وقتی مدارس کا پانی مثل وقف ہے اگر وضو کیلئے ہے تو عضو پر تین بار ڈالنا جائز ہے چوتھی بار حرام، جبکہ دو یا تین میں شبہ ہوا اور واقع میں تین بار ڈال چکا تھا تو دفع شبہ کو ایک بار اور ڈالنا جائز ہے۔ | ۱ | ۴۱۸ ۳ | مسئلہ: جو سبیل کسی نے وضو کیلئے لگائے ہو تو اس سے پینا جائز ہے جبکہ وہ پانی کسی کی ملک ہو اور اگر واقف کا پانی ہے تو ضرور ہے کہ وقتِ وقف واقف نے پینے کی بھی نیت کی ہو یا اس وقت اسے معلوم ہو کہ سبیل وضو کا پانی لوگ عادۃً پیا بھی کرتے ہیں ورنہ پینا جائز نہ ہو گا۔ | ۲ | ۴۱۸ ۴ | مسئلہ: اشیائے منقولہ بغیر جائدادِ غیر منقولہ وہی وقف ہو سکتی ہیں جن کے وقف کرنے کا رواج ہو۔ | ۴ | ۴۱۸ ۵ | مسئلہ: اگر رواج ہو تو روپے اشرفی نوٹ بھی وقف ہو سکتے ہیں یوں کہ محتاجوں کو تجارت کیلئے دئے جائیں کہ ان سے فائدہ اٹھائیں پھر صرف یا نفع تجارت میں شرکت قرار پائی ہے تو مع نفع ان سے لے کر اور محتاجوں کو دیں یوں ہی الٹ پھیر کرتے رہیں۔ | ۵ | ۴۱۸ ۶ | مسئلہ: رواج ہو تو مثلاً اتنے من گیہوں یوں وقف ہو سکتے ہیں کہ

حاجت مند کو بیج کیلئے قرض دئے جائیں اس کی پیداوار سے اتنے گیہوں لے کر اور کو بیج کیلئے دئے جائیں یوں ہی کرتے رہیں۔ | ۶ | ۴۱۸

Fatawa Razawiya Volume IV

Serial No.	Titles/Topics	Benefit No.	Page No.
7	Issue: If there is a custom, cows, buffaloes, and goats can be endowed (waqf) such that their milk, yogurt, butter, and ghee are given to the needy.	7	418
8	Issue: Endowment of a cot and sheet for funerals, the Holy Quran for recitation, and books for study is permissible.	8	418
9	Issue: Endowment of bridges and water supply facilities (saqai) is valid.	9	418
10	Issue: Movable assets attached to immovable property can be endowed even without a custom, for example, oxen and plows with land.	10	418
11	Issue: Water cannot be endowed in any way.	1	419
12	Issue: An endowment (waqf) itself cannot be anyone's property; however, the produce of the waqf will become the property of the beneficiaries after being given to them. In an endowment for offspring, fruits, etc., will become their property according to their shares as they appear. If someone dies before distribution, their share will go to their heirs.	4	419
13	Issue: Water filled in mosques, madrasas, temporary water stations, and ponds from endowment funds falls under the rules of waqf. No one owns it, and it cannot be spent on anything other than the purpose intended by the endower.	5	419
14	Issue: Water from a public drinking facility (sabeel) set up by a person from their own property remains their property. However, its use is permissible for people, but only in the manner intended by the owner or for other tasks with the owner's permission.	6	419
15	Issue: It is forbidden (haram) to take water from mosque ponds or water stations intended for the ablution (wudu) of worshippers to one's home, even for performing wudu. However, it is allowed if the owner filled it from their own property and gave permission, or if the endower gave	7	419

Serial No.	Titles/Topics	Benefit No.	Page No.
	permission from the first day, provided it was not filled using endowment funds.		
16	Issue: In winter, water at mosque stations is heated. Some people take this water home; this is forbidden (haram) without the mentioned permission. Great caution is required.	1	420
17	Issue: If there is permission to take water from a drinking facility to homes for women to drink, then it is permissible.	2	420

फ़तावा रज़विया जिल्द चतुर्थ

क्रम सं.	विषय	लाभ सं.	पृष्ठ सं.
७	मसला: यदि प्रथा हो तो गाय, भैंस, बकरी इस प्रकार वक्फ की जा सकती है कि उनका दूध, दही, मक्खन, घी ज़रूरतमंदों को दिया जाए।	७	४१८
८	मसला: जनाजे के लिए चारपाई, चादर, पाठ के लिए कुरान मजीद और अध्ययन के लिए पुस्तकों का वक्फ जायज है।	८	४१८
९	मसला: पुल और पानी पिलाने की व्यवस्था (सक़ाई) का वक्फ सही है।	९	४१८
१०	मसला: अचल संपत्ति के साथ उससे जुड़ी चल वस्तुएं बिना प्रथा के भी वक्फ हो सकती हैं, जैसे ज़मीन के साथ हल और बैल।	१०	४१८
११	मसला: पानी किसी भी प्रकार वक्फ नहीं हो सकता।	१	४१९
१२	मसला: वक्फ स्वयं किसी की मिल्कियत (स्वामित्व) नहीं हो सकता, हाँ, वक्फ का लाभ लाभार्थियों को दिए जाने के बाद उनकी मिल्कियत हो जाएगा और औलाद के लिए वक्फ में फल आदि सामने आने पर उनके हिस्सों के अनुसार उनकी मिल्कियत हो जाएंगे। यदि बंटवारे से पहले उनमें से किसी की मृत्यु हो जाए, तो उसका हिस्सा उसके वारिसों को मिलेगा।	४	४१९
१३	मसला: मस्जिदों, मदरसों, अस्थायी प्याऊ और हौजों में जो पानी वक्फ के धन से भरा गया हो, वह वक्फ के हुक्म में है। उसका कोई मालिक नहीं है और वाकिफ (वक्फ करने वाले) ने जिस उद्देश्य के लिए रखा है, उसके अलावा किसी और कार्य में खर्च नहीं हो सकता।	५	४१९
१४	मसला: कोई व्यक्ति अपनी मिल्कियत से जो सबील (प्याऊ) लगाए, उसका पानी उसी की मिल्कियत रहता है, हाँ लोगों के लिए उसका उपयोग जायज है और वह भी उसी प्रकार जैसे मालिक ने रखा है या उसकी अनुमति से दूसरे कार्यों में।	६	४१९
१५	मसला: मस्जिद के हौज़ या प्याऊ जो मस्जिद में नमाजियों के वज़ू के लिए भरे जाते हैं, उनका पानी घरों में ले जाना हराम है, चाहे वज़ू के लिए ही क्यों न हो। परन्तु यदि मालिक ने अपनी मिल्कियत से भरवाया हो और अनुमति दी हो, या	७	४१९

क्रम सं.	विषय	लाभ सं.	पृष्ठ सं.
	पहले दिन से ही वाकिफ (वक्फकर्ता) की अनुमति हो, बशर्ते वह वक्फ के धन से न भरा गया हो।		
१६	मसला: सर्दियों में मस्जिद के प्याऊ का पानी गर्म किया जाता है, कुछ लोग पानी घर ले जाते हैं, यह बिना उपरोक्त अनुमति के हराम है। बहुत सावधानी बरतनी चाहिए।	१	४२०
१७	मसला: पीने की सबील से यदि महिलाओं के पीने के लिए पानी घरों में ले जाने की अनुमति है, तो जायज है।	२	४२०

पृष्ठ ७१७ / ७६१

فتاوی رضویہ جلد چہارم

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۷	مسئلہ : رواج ہو تو گائے بھینس بکری یوں وقف ہو سکتی ہے کہ دودھ دہی مکھن گھی محتاجوں کو دیا جایا کرے۔	۷	۴۱۸
۸	مسئلہ : جنازہ کیلئے چار پائی چادر، پڑھنے کیلئے قرآن مجید، مطالعہ کیلئے کتابوں کا وقف جائز ہے۔	۸	۴۱۸
۹	مسئلہ : پل اور سقائی کا وقف صحیح ہے۔	۹	۴۱۸
۱۰	مسئلہ : جائداد غیر منقولہ کے ساتھ اس کے توابع منقولات بغیر رواج بھی وقف ہو سکتے ہیں مثلاً زمین کے ساتھ ہل بیل۔	۱۰	۴۱۸
۱۱	مسئلہ : پانی کسی طرح وقف نہیں ہو سکتا۔	۱	۴۱۹
۱۲	مسئلہ : وقف خود کسی کی ملک نہیں ہو سکتا، ہاں وقف کا حاصل موقوف علیہم کو دئے جانے کے بعد ان کی ملک ہو جائے گا اور وقف علی الاولاد میں پھل وغیرہ ظاہر ہوتے ہیں حسب حصص ان کی ملک ہو جائیں گے اگر قبل تقسیم ان میں کوئی مر جائے اس کا حصہ اس کے وارثوں کو پہنچے گا۔	۴	۴۱۹
۱۳	مسئلہ : مساجد، مدارس، وقتی سقایوں، حوضوں میں جو پانی زرِ وقف سے بھرا گیا وہ حکم وقف میں ہے اس کا کوئی مالک نہیں اور واقف نے جس غرض کیلئے رکھا ہے اس کے غیر میں صرف نہیں ہو سکتا۔	۵	۴۱۹

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱۴	مسئلہ : آدمی اپنی ملک سے جو سبیل لگائے اس کا پانی اسی کی ملک رہتا ہے ہاں لوگوں کو اس کا صرف ہونا مباح ہے وہ بھی اسی طور پر جو مالک نے رکھا یا اس کی اجازت سے دوسرے کام میں۔	۶	۴۱۹
۱۵	مسئلہ : مسجد کے حوض یا سقائی جو نمازیان مسجد کے وضو کو بھرے جاتے ہیں ان کا پانی گھروں میں لے جانا حرام ہے اگرچہ وضو کو مگر باجازت مالک اگر کسی نے اپنی ملک سے بھر وائی یا اول روز سے اجازت واقف ہواگر زرِ وقف سے بھرے گئی۔	۷	۴۱۹
۱۶	مسئلہ : جاڑے میں مسجد کے سقائی گرم کی جاتے ہیں بعض لوگ پانی گھر کو لے جاتے ہیں یہ بلا اجازت مذکورہ حرام ہے بہت احتیاط چاہئے۔	۱	۴۲۰
۱۷	مسئلہ : پینے کی سبیل سے اگر عورتوں کے پینے کو گھروں میں لے جانے کی اجازت ہے تو جائز ہے۔	۲	۴۲۰

Fatawa Rizwia, Volume 4

Serial No.	Titles	Point No.	Page No.
18	Problem: If a Sabeel (water station) is specifically for travelers, taking water from it to homes is Haraam (forbidden). In fact, if it's for a specific type of traveler, it's only permissible for them. For instance, some ignorant people arrange sherbet during the ten days of Muharram specifically for those accompanying a Taziya; others cannot drink from it without permission. Even if it's made for a specific Taziya group, it's not permissible for another Taziya group to drink from it, although the Taziya itself is an innovation and impermissible.	3	440

Issues of Sale

1 | Problem: A sale by mutual conduct (Bay' al-Ta'ati) is permissible, where the seller and buyer say nothing verbally; one takes the item and the other takes the price. For example, if the standard price of bread is one paisa, and Zaid comes to Amr's shop, places four paisas in front of him, and takes four loaves of bread, and Amr says nothing, the sale is concluded. | 1 | 721 2 | Problem: Buying something with the intention of it being for Zaid does not make Zaid the owner. The buyer himself will be the owner. Ownership will transfer to Zaid only when he gives it to him. If he chooses not to give it, he is not to be blamed. However, if in the contract of sale, it is attributed to Zaid—for example, the buyer says, "Sell this item to Zaid," and the seller says, "I have sold it," and the buyer says, "I have accepted it on behalf of Zaid," or the seller says, "I have sold it to Zaid," and the buyer says, "I have accepted"—then indeed, this sale will be for Zaid. If he (Zaid) approves it, he will be the owner; if he does not, the sale will be nullified. | 2 | 721 3 | Problem: If someone sells something and the seller stipulates an option for himself for up to three days, saying "I may confirm or cancel the sale within this period," in this case, the ownership of the item will remain with the seller until the end of that period. Disposal of the item will not be permissible for the buyer, even if the seller has handed over the item to their possession. | 3 | 783 4 | Problem: If someone says, "Free your slave on my behalf for such-and-such amount of rupees," and he does so, then in this sale, there is no need for formal proposal (Ijab) and acceptance (Qabul). It is also not necessary that the master be capable of delivering the slave into possession, nor can he return the slave due to a defect or on the basis that he bought it without seeing it, because here the

sale is found within the context of manumission (setting free), not as a primary transaction. | 7 | 822

फतवा रज़विया, जिल्द 4

नम्बर शुमार	उनवानात् (शीर्षक)	फ़ायदा न.	सफ़्हा न.
18	मसअला: अगर सबील (प्याऊ) खास तौर पर मुसाफिरों के लिए है, तो उससे घर ले जाना हराम है। यहाँ तक कि अगर वह खास तरह के मुसाफिरों के लिए है, तो सिर्फ उन्हीं के लिए जायज़ है। जैसे कुछ जाहिल लोग मुहर्रम के दस दिनों में खास तौर पर ताज़िया वालों के लिए शरबत पिलाते हैं; दूसरे लोग बिना इजाज़त इसे नहीं पी सकते। यहाँ तक कि अगर यह किसी खास ताज़िया समूह के लिए बनाया गया है, तो दूसरे ताज़िया समूह वालों के लिए इसे पीना जायज़ नहीं है, हालाँकि ताज़िया खुद एक बिदअत और नाजायज़ काम है।	3	440

बय (खरीद-फरोख्त) के मसाइल

1 | मसअला: बय-ए-तआती (लेन-देन से सौदा) जायज़ है, जिसमें खरीदार और बेचने वाला ज़ुबान से कुछ न कहें; एक चीज़ ले ले और दूसरा कीमत। मिसाल के तौर पर, अगर रोटी की आम कीमत एक पैसा है, और ज़ैद अम्र की दुकान पर आया, उसके सामने चार पैसे रखे और चार रोटियाँ ले लीं, और अम्र ने कुछ नहीं कहा, तो बय (सौदा) हो गया। | 1 | 721 2 | मसअला: ज़ैद की नीयत से कोई चीज़ खरीदना ज़ैद को उसका मालिक नहीं बनाता। खरीदने वाला ही मालिक होगा। ज़ैद तब मालिक बनेगा जब वह उसे देगा। अगर वह न देना चाहे, तो उस पर कोई इल्ज़ाम नहीं है। हाँ, अगर खरीद-फरोख्त के अनुबंध में ज़ैद का नाम जोड़ा गया हो—मिसाल के तौर पर, खरीदार कहे, "यह चीज़ ज़ैद के हाथ बेच दो," बेचने वाला कहे, "मैंने बेच दी," और खरीदार कहे, "मैंने ज़ैद की तरफ से कुबूल की," या बेचने वाला कहे, "मैंने ज़ैद के हाथ बेची," और खरीदार कहे, "मैंने कुबूल की"—तो यकीनन यह बय ज़ैद के लिए होगी। अगर वह इसे जायज़ रखेगा (मंजूर करेगा), तो वही मालिक होगा; अगर वह मंजूर नहीं करेगा, तो बय रद्द हो जाएगी। | 2 | 721 3 | मसअला: अगर कोई चीज़ बेचे और बेचने वाला ज़्यादा से ज़्यादा तीन दिनों के लिए अपना अधिकार सुरक्षित रखने की शर्त रखे कि "मैं चाहूँ तो इस मुद्दत में बय कायम रखूँ या न रखूँ," तो इस सूरत में उस मुद्दत तक चीज़ की मिलकियत बेचने वाले की ही रहेगी। और खरीदार के लिए उसमें कोई फेरबदल (तसर्रुफ़) करना जायज़ नहीं होगा, भले ही बेचने वाले ने चीज़ उसके कब्ज़े में दे दी हो। | 3 | 783 4 | मसअला: अगर किसी ने

कहा, "मेरी तरफ से अपना गुलाम इतने रुपयों के बदले आज़ाद कर दो," और उसने कर दिया, तो इस बय में न तो ईजाब-ओ-कुबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) की ज़रूरत है, न ही यह ज़रूरी है कि मालिक गुलाम को कब्ज़े में देने में सक्षम हो, और न ही वह उसे किसी ऐब की वजह से या इस बिना पर कि "मैंने बिना देखे खरीदा था" वापस कर सकता है, क्योंकि यहाँ बय आज़ाद कर देने के साथ ही पूरी हो गई है, न कि एक अलग सौदे के तौर पर। | 7 | 822

نمبر شمار	عناوات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱۸	مسئلہ: سبیل اگر خاص راہگیروں کیلئے ہے اس میں سے گھروں کو لے جانا حرام ہے بلکہ اگر خاص ایک قسم کے راہگیروں کیلئے ہے تو صرف انہیں کیلئے جائز ہے جیسے بعض جاہل لوگ عشرہ محرم خاص ہمراہیان تعزیہ کیلئے شربت کرتے ہیں دوسرے اس میں سے بے اجازت نہیں پی سکتے بلکہ اگر خاص ایک تعزیہ والوں کیلئے کیا، تو دوسرے تعزیہ والوں کو پینا جائز نہیں اگر چہ تعزیہ خود بدعت و نا جائز ہے۔	۳	۴۴۰

مسائلِ بیع

۱ | مسئلہ: بیعِ تعاطی سے جائز ہے کہ بائع و مشتری زبان سے کچھ نہ کہیں یہ چیز لے لے وہ ثمن لے لے مثلاً روٹی کا عام بھاؤ ایک پیسہ ہے زید عمرو کی دکان پر آیا چار پیسے اس کے سامنے رکھے اور چار روٹیاں لے لیں عمرو نے کچھ نہ کہا بیع ہو گئی۔ | ۱ | ۲ ۷۲۱ | مسئلہ: زید کی نیت سے کوئی چیز خرید نا زید کو اس کا مالک نہیں کرتا یہ خریدنے والا ہی مالک ہو گا جب زید کو دے گا اس وقت زید کی ملک ہو گی اور اگر چاہے نہ دے تو اس پر کچھ الزام نہیں ہاں اگر عقدِ بیع میں زید کی طرف اضافت ہو مثلاً مشتری کہے یہ چیز زید کے ہاتھ بیچ کر دے بائع کہے میں نے بیچی مشتری کہے میں نے زید کے واسطے قبول کی یا بائع کہے میں نے زید کے ہاتھ بیچی مشتری کہے میں نے قبول کی تو البتہ یہ بیع زید کیلئے ہو گی اگر وہ جائز رکھے گا چیز کا مالک وہی ہو گا نہ جائز رکھے گا تو بیع رد ہو جائے گی۔ | ۲ | ۳ ۷۲۱ | مسئلہ: اگر کوئی

چیز بیچے اور بائع زیادہ سے زیادہ تین دن تک کیلئے اپنا اختیار شرط کرے کہ چاہوں تو اس مدت میں بیع قائم رکھوں یا نہ رکھوں اس صورت میں مدتِ مذکورہ تک بیع ملکِ بائع ہی پر رہے گی اور مشتری کو اس میں تصرف جائز نہ ہوگا اگر چہ بائع نے بیع اس کے قبضے میں دے دی ہو۔ | ۳ | ۴ ۷۸۳ | مسئلہ: کسی نے کہا میری طرف سے اپنا غلام اتنے روپوں کے بدلے آزاد کر دے اس نے کر دیا اس بیع میں نہ ایجاب و قبول کی حاجت ہے نہ یہ ضرور ہے کہ مولیٰ وہ غلام اس کے قبضے میں دینے پر قادر ہو نہ یہ اسے کسی عیب کے سبب یا اس بنا پر کہ میں نے بے دیکھے خریدا تھا واپس کر سکتا ہے کہ یہاں بیع آزاد کر دینے کے ضمن میں پائی گئی ہے نہ اصالۃً۔ | ۷ | ۸۲۲

Volume 4 Fatawa Razawiyya

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page No.
	Issues of Testimony		
1	Issue: A person who goes out in public wearing only pajamas is considered of fallen character and his testimony is rejected.	3	158
	Issues of Agency		
1	Issue: Someone was given a hundred rupees to buy a horse for the principal, without specifying a particular horse. The agent bought a horse for a hundred rupees but did not mention the principal's name in the contract, nor did he base the contract on the principal's money (i.e., did not say "I am buying this in exchange for this specific money"), nor had the principal given him the money yet. In this case, if the agent does not admit he bought it for the principal, the horse belongs to the agent; the principal has no claim. In the sight of Allah, it depends on intention: if he bought it for the principal, it belongs to the principal, even if he later denies it.	4	426
2	Issue: Someone was appointed as an agent to buy an unspecified item, for example, "Bring a roll of black brocade." If he attributed the contract to the principal, saying to the seller "Sell it for so-and-so," then it is clear the principal is the owner. If he bought it generally: if he attributed the contract to the principal's property (saying "Give it in exchange for this money"), then the principal is the owner. If he attributed it to his own property, he himself is the owner. If he made no attribution to specific property, it depends on intention. If he bought it with the intention for himself, he is the owner; if with intention for the principal, then the principal is. If there was no intention at the time of purchase and a dispute arises (e.g., agent says "I bought it for myself," principal says "He bought it for me," or vice-versa), then whoever's money was paid for the price will be considered the owner.	1	432
3		5	527

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page No.
	Issue: Someone was appointed as an agent to buy water. The agent bought water mixed with saffron. If it is still called water, it will belong to the principal. If it is called a "color/dye," it will not be binding on the principal; the agent will be considered to have bought it for himself.		

जिल्द चहारुम (खंड 4) फ़तावा रज़विया

क्रम संख्या	शीर्षक	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
	गवाही के मसले		
1	मसला: केवल पाजामा पहनकर रास्ते में निकलने वाला व्यक्ति चारित्रिक रूप से गिरा हुआ माना जाता है और उसकी गवाही अस्वीकार्य है।	3	158
	वकालत (एजेंसी) के मसले		
1	मसला: किसी को सौ रुपये दिए कि मेरे लिए घोड़ा खरीद दो, किसी विशेष घोड़े के लिए नहीं कहा। वकील (एजेंट) ने सौ रुपये में एक घोड़ा खरीदा और अनुबंध (अक़्द) में मुवक्किल (स्वामी) का नाम नहीं लिया, न ही अनुबंध को मुवक्किल के धन पर आधारित किया (यानी यह नहीं कहा कि इस धन के बदले खरीद रहा हूँ), और न ही मुवक्किल ने अभी तक रुपये दिए थे। इस स्थिति में यदि वकील यह स्वीकार न करे कि यह घोड़ा उसने मुवक्किल के लिए खरीदा है, तो घोड़ा वकील की ही मिल्कियत ठहरेगा; मुवक्किल का उस पर कोई दावा नहीं बनता। अल्लाह के निकट नीयत (इरादे) का भरोसा है; अगर उसने मुवक्किल के लिए खरीदा तो उसी का है, चाहे बाद में वह इनकार कर दे।	4	426
2	मसला: किसी को अनिश्चित वस्तु खरीदने का वकील बनाया गया, जैसे "काला ज़र्बफ़्त (ब्रोकेड) का एक थान ले आओ"। यदि उसने अनुबंध को मुवक्किल की ओर जोड़ा कि "फलां के लिए बेच दो", तो ज़ाहिर है कि मुवक्किल मालिक होगा। और अगर सामान्य रूप से खरीदा: यदि अनुबंध को मुवक्किल के धन की ओर जोड़ा कि "इस रुपये के बदले दे दो", तो मुवक्किल मालिक है। और यदि अपने धन की ओर जोड़ा तो स्वयं मालिक है। यदि किसी विशेष धन की ओर भी नहीं जोड़ा, तो नीयत पर निर्भर है। अपनी नीयत से खरीदा तो स्वयं मालिक है और मुवक्किल की नीयत से तो वह। और खरीद के समय कोई नीयत भी न थी, और नीयत में मतभेद हो	1	432

क्रम संख्या	शीर्षक	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
	गया, जैसे वकील कहे "मैंने अपने लिए खरीदा" और मुवक्किल कहे "मेरे लिए खरीदा" या इसके विपरीत, तो कीमत में जिसका धन दिया गया वही मालिक ठहरेगा।		
3	मसला: पानी खरीदने के लिए वकील बनाया गया। वकील ने केसर मिला हुआ पानी खरीदा। यदि उसे अभी भी "पानी" ही कहा जाएगा, तो वह मुवक्किल का ठहरेगा। और यदि उसे "रंग" कहा जाएगा, तो मुवक्किल पर (उसे लेना) अनिवार्य न होगा; वकील अपने लिए खरीदने वाला माना जाएगा।	5	527

पृष्ठ ७१९ का ७६१

جلد چہارم فتاوی رضویہ

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسائل شہادت		
۱	مسئلہ : تنہا پاجامہ پہنے راہ میں نکلنے والا ساقط العدالۃ مردود الشہادۃ ہے۔	۳	۱۵۸
	مسائل وکالت		
۱	مسئلہ : کسی کو سو روپے دئے کہ گھوڑا مجھے خرید دے کسی خاص گھوڑے کیلئے نہ کہا وکیل نے ایک گھوڑا سو روپے کو خریدا اور عقد میں موکل کا نام نہ لیا کہ اس کیلئے خریدانہ زر موکل پر عقد وارد کیا کہ اس مال کے بدلے خریدانہ قیمت میں خاص وہ روپے دئے یا موکل نے روپے دئے ہی نہ تھے اس صورت میں اگر وکیل اقرار نہ کرے کہ یہ گھوڑا میں نے موکل کیلئے خریدا ہے تو گھوڑا وکیل ہی کی ملک ٹھہرے گا موکل کو اس پر دعوی نہیں پہنچتا اور عند اللہ نیت کا اعتبار ہے اگر اس کیلئے خریدا اس کا ہے اگرچہ بعد کو منکر ہو جائے۔	۴	۴۲۶
۲	مسئلہ : کسی کو غیر معین چیز خریدنے کا وکیل کیا مثلاً ایک تھان زربفت کالے آؤ اگر اس نے عقد موکل کی طرف اضافت کیا کہ فلاں کے ہاتھ بیچ کردے اس نے کہا میں نے فلاں کے ہاتھ بیچ کی جب تو ظاہر ہے کہ موکل مالک ہوگا اور اگر مطلق خریدا تو اگر مال موکل کی طرف عقد اضافت کیا کہ	۱	۴۳۲

نمبر شمار	عنوانات	نمبر	فائدہ نمبر	صفحہ

اس روپے کے بدلے دے دے تو موکل مالک ہے اور اپنے مال کی طرف تو خود مالک ہے اور کسی خاص مال کی طرف اضافت بھی نہ کی تو نیت پر مدار ہے اپنی نیت سے خریدا تو خود مالک ہے اور موکل کی نیت سے تو وہ، اور خرید کے وقت نیت بھی کچھ نہ تھی نیت میں اختلاف پڑا مثلاً کہتا ہے میں نے اپنے لی خریدا موکل کہتا ہے میرے لی خریدا یا بالعکس تو قیمت میں جس کا مال دیا وہی مالک ٹھہرے گا۔

مسئلہ : پانی مول لینے کے لئے وکیل کیا وکیل نے زعفران ملا ہوا پانی خریدا

۳ اگر ہنوز اسے پانی ہی کہا جائے گا موکل کا ٹھہرے گا اور رنگ کہلائے گا تو ۵ ۵۲۷ موکل پر لازم نہ ہوگا وکیل اپنے لیے خریدنے والا ٹھہرے گا۔

Fatawa Rizwiya | Volume 4

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
	Issues of Litigation		
1	**Issue:** The claimant had no witnesses and sought an oath from the defendant. The judge asked him for the oath; he remained silent. This silence is also considered a denial, provided he is not mute or deaf.	4	779
2	**Issue:** In this case, it is recommended that the judge asks him for the oath three times. If he remains silent, it will be deemed a denial and the decree shall be granted to the claimant.	5	779
	Issues of Gift (Hiba)		
1	**Issue:** Parents can eat from food or drink items sent in the names of children, as the primary intention is to send them to the parents, and children's names are mentioned as a small gesture.	2	429
2	**Issue:** If it is known that the giver actually gave it to the child and did not intend to give it to the parents, then it is forbidden for the parents to eat from it, unless they are needy.	4	429
3	**Issue:** Property whose use is permitted by its owner to a person or group, such as water from a public fountain or food at a feast, or if someone says "whoever wants may eat the fruit of my garden," remains the property of the owner even at the time of use; it does not become the property of those taking it. Therefore, it is not permissible for a guest to give a piece of the food placed before him or left over from his meal to a poor person without the owner's permission. However, implicit permission is also sufficient when it is certainly known that such use will be tolerated and not disliked by him.	3	435
4	**Issue:** If a guardian gave something from his own property to a child for eating/drinking but did not make the child the owner, the guardian is permitted to give it to another. If it was from the minor's own property or he was made the owner after being given, then it cannot be given to anyone else now.	1	438

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
5	**Issue:** Taking back a gifted item is a sin, even if the recipient returns it happily.	5	623
6	**Issue:** The husband said to the wife in front of witnesses, "May Allah bless you for forgiving the dower (Mahr)." She said twice, "Yes, I have forgiven it." The witnesses said, "Should we become witnesses?" She said twice, "Yes, do." From the context and situation, it will be determined whether her saying this was genuine or sarcastic.	3	780

क्रम सं.	विषय	फ़ायदा नं.	पृष्ठ सं.
	दावे (मुक़दमेबाज़ी) के मसले		
1	**मसला:** मुद्दई (दावेदार) के पास गवाह नहीं थे, उसने मुद्दआ-अलैह (प्रतिवादी) से हलफ़ (शपथ) चाहा। हाकिम ने उससे हलफ़ के लिए कहा, वह चुप रहा। यह खामोशी भी इनकार माना जाएगा, बशर्ते कि वह गूंगा या बहरा न हो।	4	779
2	**मसला:** इस सूरत में मुस्तहब (पसंदीदा) है कि क़ाज़ी उससे तीन बार हलफ़ के लिए कहे। अगर वह खामोश रहे, तो इसे इनकार ठहराकर मुद्दई के हक़ में डिक्री दे दी जाए।	5	779
	हिबा (दान) के मसले		
1	**मसला:** खाने-पीने की चीज़ जो बच्चों का नाम लेकर भेजी जाती है, उसमें से माँ-बाप खा सकते हैं क्योंकि असल मक़सद माँ-बाप को भेजना होता है और चीज़ को मामूली समझकर बच्चों का नाम लिया जाता है।	2	429
2	**मसला:** अगर मालूम हो कि देने वाले ने वाकई बच्चे ही को दी है और माँ-बाप को देना मक़सद नहीं, तो माँ-बाप के लिए उसमें से खाना हराम है, सिवाय इसके कि वे मोहताज हों।	4	429
3	**मसला:** माल जिसका उपयोग उसके मालिक ने किसी व्यक्ति या समूह के लिए मुबाह (जायज़) कर दिया हो, जैसे सबील का पानी या दावत का खाना, या जिसने कह दिया हो कि मेरे बाग़ के फल जो चाहे खा ले, वह माल उपयोग के समय भी मालिक ही की मिल्कियत रहता है, लेने वालों की मिल्कियत नहीं हो जाता। इसलिए मेहमान के लिए जायज़ नहीं कि जो खाना उसके सामने रखा गया या उसके खाने से बचा, उसमें से बिना मालिक की इजाज़त के किसी फ़क़ीर को कोई टुकड़ा दे। हाँ, सांकेतिक अनुमति भी पर्याप्त है जब निश्चित रूप से ज्ञात हो कि वह इतने उपयोग को अनुमति देगा और उसे बुरा नहीं लगेगा।	3	435
4		1	438

क्रम सं.	विषय	फ़ायदा नं.	पृष्ठ सं.
	मसला: वली (अभिभावक) ने जो चीज़ बच्चे को खाने-पीने के लिए अपने माल से दी और उसे मालिक नहीं बनाया, उसमें से वली के लिए जायज़ है कि वह दूसरे को दे दे। और अगर वह नाबालिग के ही माल से थी या उसे देकर मालिक बना दिया गया, तो अब किसी को नहीं दे सकता।		
5	**मसला:** दी हुई चीज़ वापस लेना गुनाह है, चाहे जिसे दी गई हो (मौहूब लहू) वह ख़ुशी से वापस कर दे।	5	623
6	**मसला:** शौहर ने गवाहों के सामने औरत से कहा, "अल्लाह तेरा भला करे कि तूने महर बख़्श (माफ़) कर दिया।" उसने दो बार कहा, "हाँ, बख़्श दिया।" गवाहों ने कहा, "हम गवाह बन जाएँ" उसने दो बार कहा, "हाँ, बन जाओ।" हालात और संदर्भ से पता चलेगा कि उसका ऐसा कहना हकीकत है या तंज (व्यंग्य)।	3	780

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسائل دعوی		
۱	**مسئلہ:** مدعی کے پاس گواہ نہ تھے مدعاعلیہ کا حلف چاہا حاکم نے اس سے حلف کو کہا وہ چپ رہا یہ سکوت بھی انکار ہے جبکہ گونگا یا بہرہ نہ ہو۔	۴	۷۷۹
۲	**مسئلہ:** اس صورت میں مستحب ہے کہ قاضی اس سے تین بار حلف کو کہے اگر سکوت کرے انکار ٹھہرا کر مدعی کو ڈگری دے دے۔	۵	۷۷۹
	مسائل ہبہ		
۱	**مسئلہ:** کھانے پینے کی چیز جو بچوں کا نام کر کے بھیجتے ہیں اس میں سے ماں باپ کھا سکتے ہیں کہ اصل مقصود ماں باپ کو بھیجنا ہوتا ہے اور چیز تھوڑی سمجھ کر بچوں کا نام لیا جاتا ہے۔	۲	۴۲۹
۲	**مسئلہ:** اگر معلوم ہو کہ دینے والے نے واقعی بچے ہی کو دی ہے ماں باپ کو دینا مقصود نہیں تو ماں باپ کو اس میں سے کھانا حرام ہے مگر یہ کہ محتاج ہوں۔	۴	۴۲۹
۳	**مسئلہ:** مال جس میں تصرف اس کا مالک کسی شخص یا جماعت کو مباح کر دے جیسے سبیل کا پانی یا دعوت کا کھانا یا جس نے کہہ دیا ہو کہ میرے باغ کے پھل جو چاہے کھائی وہ مال تصرف کے وقت بھی مالک ہی کی ملک ہوتا	۳	۴۳۵

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	ہے لینے والوں کی ملک نہیں ہو جاتا ولہٰذا مہمان کو جائز نہیں کہ جو کھانا اس کے سامنے رکھا گیا یا اس کے کھانے سے بچ رہا اس میں سے بے اجازت مالک کسی فقیر کو کوئی ٹکڑا دے ، ہاں اجازت دلالتہً بھی کافی ہے جب یقینا معلوم ہو کہ اتنا تصرف وہ روا رکھے گا اسے ناگوار نہ ہوگا۔		
۴	**مسئلہ:** ولی نے جو چیز بچے کو کھانے پینے کیلئے اپنے مال سے دی اور اسے مالک نہ کر دیا اس میں سے ولی کو جائز ہے کہ دوسرے کو دے دے اور اگر نابالغ ہی کے مال سے تھی یا اسے دے کر مالک کر دیا تو اب کسی کو نہیں دے سکتا۔	۱	۴۳۸
۵	**مسئلہ:** دی ہوئی چیز پھر لینا گناہ ہے اگرچہ موہوب لہ خوشی سے پھیر دے۔	۵	۶۲۳
۶	**مسئلہ:** شوہر نے گواہوں کے سامنے عورت سے کہا اللہ تیرا بھلا کرے کہ تو نے مہر بخش دیا اس نے دو بار کہا ہاں بخش دیا۔ گواہوں نے کہا ہم گواہ ہو جائے اس نے دو بار کہا ہاں ہو جاؤ۔ قرینہ و حالت سے معلوم ہوگا کہ اس کا یہ کہنا واقعی ہے یا طنز سے۔	۳	۷۸۰

Fatawa Rizvia Volume Four

Serial No.	Benefit No.	Topics	Page No.
		Issues of Hiring (Ijara)	
1	1	Problem: An employee whose time is bought, for example, a servant hired on a monthly basis, is called a 'specific employee' (Ajeer-e-Khaas). He cannot work for someone else during that time, and his salary is not dependent on performing a specific task. If he makes himself available for time and no work was assigned to him, and he remained idle, he will still receive his salary. If he performed the assigned work and someone else came and ruined it, he will still receive his salary. He is not liable for anything broken or damaged in the course of his work.	424
2	2	Problem: If someone hires a servant for, say, one day or ten days to collect permissible things from the forest, such as wood, flowers, fruit, leaves, frost, water, etc., for him, it is permissible. He will receive the agreed-upon wages, and the person who hired the servant will be the owner of the items.	424
3	3	Problem: If the time was not fixed but a specific item was designated, for example, "this wood," then the hiring contract is invalid (fasid). Both parties will be sinners. The employee will receive an amount from the fixed wage that does not exceed the market rate. The item will still belong to the person who hired the servant.	424
4	4	Problem: If that wood belongs to the person who hired the servant and time was not fixed, but the specific wood was designated (as is common with woodcutters), then it is permissible, and the employee will receive the fixed wages.	424
5	1	Problem: If someone says to another, "Kill this lion or wolf and I will give you one rupee," and that animal is free (not captive), then this hiring contract is invalid. If such work is worth one rupee or more, he will receive only one rupee. If it's worth less,	425

Serial No.	Benefit No.	Topics	Page No.
		he will receive the lesser amount, and that prey will belong to the person who commissioned the task.	
6	7	Problem: If someone is hired to hunt, or for dog-fighting, or to contest a legal case, or to demand repayment of a debt, or to take possession, and the time is specified, for example, one day or one month, then the hiring contract is valid once the wages are fixed; otherwise, it is invalid. The lesser of the market wage (ujrat-e-misl) and the fixed wage will be paid. This issue must be memorized because nowadays lawyers are appointed without a fixed duration, except for those whose fee is determined per hearing.	425

फ़तावा रज़विया चौथा खंड

क्र. सं.	लाभ सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
		इज़ारा (किराया/रोज़गार) के मसले	
1	1	मसला: जिस कर्मचारी का समय खरीदा गया हो, उदाहरण के लिए, एक मासिक वेतन पर काम करने वाला नौकर, उसे 'अज़ीर-ए-खास' (विशिष्ट कर्मचारी) कहा जाता है। वह उस समय के दौरान किसी और का काम नहीं कर सकता, और उसका वेतन काम पूरा करने पर निर्भर नहीं है। यदि उसने समय दिया और उसे कोई काम नहीं मिला और वह खाली बैठा रहा, तो भी उसे वेतन मिलेगा। यदि उसने बताया गया काम किया और किसी और ने आकर उसे बिगाड़ दिया, तब भी उसे वेतन मिलेगा। उसके काम करने के दौरान जो चीज़ टूट-फूट जाए, उसके लिए वह ज़िम्मेदार नहीं है।	424
2	2	मसला: यदि किसी को मान लीजिए एक दिन या दस दिनों के लिए नौकर रखा गया कि वह जंगल से जायज़ चीज़ें जैसे लकड़ी, फूल, फल, पत्ते, ओस, पानी आदि उसके लिए इकट्ठा करके लाए, तो यह जायज़ है। जो मज़दूरी तय हुई है वह उसे मिलेगी और उन चीज़ों का मालिक नौकर रखने वाला व्यक्ति होगा।	424
3	3	मसला: यदि समय तय नहीं किया गया बल्कि वस्तु निश्चित कर दी गई, उदाहरण के लिए "यह लकड़ी", तो इज़ारा फ़ासिद (अमान्य) है। दोनों गुनहगार होंगे और कर्मचारी को तयशुदा मज़दूरी में से उतना मिलेगा जो बाज़ार दर से अधिक न हो। वह वस्तु अब भी उसी नौकर रखने वाले की होगी।	424
4	4	मसला: यदि वह लकड़ी नौकर रखने वाले की है और समय तय नहीं किया गया, बल्कि लकड़ी निश्चित कर दी गई जैसे लकड़ी चीरने वालों के साथ सामान्य व्यवहार है, तो यह जायज़ है और कर्मचारी को तय मज़दूरी मिलेगी।	424
5	1	मसला: किसी ने दूसरे से कहा कि इस शेर या भेड़िये को मार दो, मैं तुम्हें एक रुपया दूँगा, और वह जानवर आज़ाद है (कैद नहीं), तो यह इज़ारा फ़ासिद है। यदि ऐसा काम एक रुपये या उससे अधिक के लायक है, तो उसे केवल एक	425

क्र. सं.	लाभ सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
		रुपया मिलेगा, और यदि कम के लायक है तो कम मिलेगा, और वह शिकार काम सौंपने वाले का होगा।	
6	7	मसला: यदि किसी को शिकार करने, या कुत्ता लड़ाने, या मुक़दमा लड़ने, या अपने ऋण की मांग करने, या क़ब्ज़ा करने पर काम पर रखा गया और समय बता दिया गया कि मान लीजिए एक दिन या एक महीना, तो इज़ारा सही है जब मज़दूरी तय कर दी जाए; अन्यथा फ़ासिद है। बाज़ार की मज़दूरी और तय मज़दूरी में से जो कम होगी, वह दी जाएगी। यह मसला ज़रूर याद रखने वाला है क्योंकि आजकल वकीलों की नियुक्ति बिना समय तय किए होती है, सिवाय उन लोगों के जिनका शुल्क हर सुनवाई पर तय होता है।	425

عنوانات	فائدہ نمبر	شمار نمبر	صفحہ نمبر
مسائل اجارہ			
مسئلہ: جس اجیر کا وقت مول لیا مثلاً اتنے ماہوار پر خدمت گار وہ اجیر خاص کہلاتا ہے وہ اس وقت میں دوسرے کا کام نہیں کر سکتا اور اس کی تنخواہ کام پر موقوف نہیں اگر اس نے وقت دیا اور اسے کام نہ ملا خالی بیٹھا رہا تنخواہ پائے گا اور اگر اسے جو کام بتایا تھا اس نے کیا اور کسی نے آکر بگاڑ دیا جب بھی اسے تنخواہ ملے گی اور اس کے کام کرنے میں جو چیز ٹوٹے بگڑے اس پر اس کا تاوان نہیں۔	۱	۱	۴۲۴
مسئلہ: کسی کو مثلاً ایک دن یا دس دن کیلئے نوکر رکھا کہ جنگل کی مباح چیز مثلاً لکڑی پھول پھل پتے پالا پانی وغیرہ اس کیلئے جمع کر کے لائے یہ جائز ہے جو اجرت اس کی ٹھہری اسے ملے گی اور شے کا مالک یہ نوکر رکھنے والا ہوگا۔	۲	۲	۴۲۴
مسئلہ: اگر وقت مقرر نہ کیا بلکہ چیز معین کی مثلاً یہ لکڑی تو اجارہ فاسد ہے دونوں گنہگار ہوں گے اور اجیر اجرت مقررہ سے اس قدر پائے گا جو معمولی نرخ سے زیادہ نہ ہو وہ شے اب بھی اسی نوکر رکھنے والے کی ملک ہو گی۔	۳	۳	۴۲۴

شمار نمبر	فائدہ نمبر	عنوانات	صفحہ نمبر
		مسئلہ: اگر وہ لکڑی اس نوکر رکھنے والے کی ملک ہے اور اس کیلئے وقت	
۴	۴	مقرر نہ کیا بلکہ لکڑی معین کردی جیسے لکڑی چیرنے والوں کے ساتھ معمول ہے تو یہ جائز ہے اور اجیر اُجرت مقررہ پائے گا۔	۴۲۴
۵	۱	مسئلہ: کسی سے کہا کہ اس شیر یا بھیڑی کو قتل کرو تجھے ایک روپیہ دوں گا اور وہ جانور چھٹا ہوا ہے بند نہیں تو یہ اجارہ فاسد ہے ایسا کام اگر ایک روپے یا زیادہ کے قابل ہے تو اسے ایک ہی روپیہ ملے گا اور کم کے قابل ہے تو کم اور وہ شکار اس اجیر کرنے والے کی ملک ہوگا۔	۴۲۵
۶	۷	مسئلہ: اگر کسی کو شکار کرنے یا کتے یا مقدمہ لڑانے یا اپنے دین کا تقاضا کرنے یا قبضہ کرنے پر اجیر کیا اور وقت بیان کیا کہ ایک دن یا ایک مہینہ مثلاً تو اجارہ صحیح ہے جب اُجرت مقرر کر دی جائے گی ورنہ فاسد ہے اجرت مثل واجرت مقررہ میں جو کم ہو گا وہ دیا جائے گا یہ مسئلہ ضرور حفظ کرنے کا ہے کہ آج کل وکیلوں کا تقرر بلا تعین مدت ہوتا ہے سو ان کے جن کا ہر پیشی پر محنتانہ قرار پاتا ہے۔	۴۲۵

Fatawa Razawiyya Volume 4

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page No.
7	Issue: I told a baker, "I hire you for today to bake this flour for one rupee." This hiring (ijara) is void (fasid) because the contract of hiring was placed on both the work and the time.	8	425
8	Issue: If one said to a baker, "I hire you to bake this flour for one rupee on the condition that you bake it today," or said as is customary here, "Bake this flour today, I will give one rupee," then this is permissible because the hiring was for the work only.	1	426
9	Issue: If someone was hired to bring a permissible (mubah) thing, and neither the time of hiring was fixed nor that object was specified; then if he takes that mubah thing with his own intention, he will be the owner. If he takes it with the intention of the hirer, the hirer will be the owner. If there was no intention or there is a dispute in intention—he says "I took it for myself" and the hirer says "You took it for me"—then it will belong to the one in whose vessel he took it.	6	431
10	Issue: In Sharia, indication (dalalat) is also like an explicit statement (sareeh). However, when an explicit statement is contrary to it, then the indication is not credible. For example, it is prohibited to take a fee for reciting the Quran at a grave. What people fix, even if the word 'fee' (ujrat) is not mentioned in between, but they give and take later; this is also a fee because it is known by custom that they recite only to take it and they give only for reciting. Yes, if they clearly say that nothing will be given, then if they give later, there is no harm because the explicit negation (tasreehan nafi) takes precedence over the indication of that custom.	5	780

Issues of Restriction (Masail Hajar)

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page No.
1		1	430

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page No.
	Issue: If a slave is given permission to trade, he can host feasts according to the custom of merchants from that wealth.		
2	Issue: If a sensible child is authorized (mazoon), meaning his legal guardian (wali shari) has given him permission for buying and selling, one can buy his water or similar things that are his property from him at full price.	3	433
3	Issue: A minor, even if near puberty, cannot give a sip of water from his property to anyone for free, nor can he sell anything at such a reduction from market price that it is called clear deception (sareeh ghabn). Nor does his guardian have any authority over his property in these two situations at all.	4	433

फ़तावा रज़विया जिल्द चहारम (खंड 4)

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
7	मसअला: नानबाई से कहा मैंने तुझे आज के दिन के लिए इस पर अजीर किया कि यह आटा एक रुपये उजरत पर लगा दे, यह इजारा फ़ासिद है कि इसमें अमल और वक़्त दोनों पर अक्द-ए-इजारा वारिद किया।	8	425
8	मसअला: अगर नानबाई से यूँ कहा कि मैंने तुझे यह आटा पकाने के लिए एक रुपये पर अजीर किया इस शर्त पर कि आज ही पका दे या यूँ कहा जैसा यहाँ मामूल है कि यह आटा आज पका दे एक रुपया दूँगा तो यह जायज़ है कि इजारा फ़क़त अमल पर हुआ।	1	426
9	मसअला: जिसे किसी चीज़ मुबाह के लाने पर अजीर किया और न वक़्त-ए-इजारा मुक़र्रर किया न वह शै मुअय्यन की तो उस मुबाह को अगर अपनी नियत से लेगा खुद मालिक होगा, मुस्ताजिर की नियत से लेगा तो वह मालिक होगा और अगर कोई नियत न थी या नियत में इख्तिलाफ़ पड़ा, यह कहता है मैंने अपने लिए ली, मुस्ताजिर कहता है मेरे लिए ली, तो जिसके बर्तन में ली उसके लिए होगी।	6	431
10	मसअला: शरअ में दलालत भी मिस्ल-ए-सरीह है मगर जब सरीह इसके ख़िलाफ़ हो तो दलालत मोतबर नहीं मसलन क़ब्र पर क़ुरआन मजीद पढ़ने की उजरत लेनी मना है, लोग जो मुक़र्रर करते हैं और उजरत का नाम दरम्यान में नहीं आता बाद को लेते देते हैं यह भी उजरत ही है कि आदतन मालूम है कि वह लेने ही को पढ़ते हैं और यह पढ़ने ही पर देते हैं, हाँ अगर साफ़ कह दें कि दिया कुछ न जाएगा फिर दें तो हर्ज नहीं कि तसरीहन नफ़ी इस आदत की दलालत पर मुक़द्दम है।	5	780

मसाइल-ए-हज्र (प्रतिबंध के मामले)

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
1	मसअला: गुलाम को तिजारत का इज़्न दिया तो जो दावत ताजिरों का दस्तूर है गुलाम भी उस माल से कर सकता है।	1	430
2	मसअला: समझदार बच्चा अगर माज़ून है यानी उसके वली-ए-शरई ने उसे ख़रीद-ओ-फ़रोख़्त की इजाज़त दी है उसका पानी या इसी क़िस्म की और चीज़ जो उसकी मिल्क हो पूरे दामों को उससे ख़रीद सकते हैं।	3	433
3	मसअला: नाबालिग अगरचे क़रीब-ए-बुलूग़ हो वह अपनी मिल्क से एक घूँट पानी न किसी को मुफ़्त दे सकता है न कोई चीज़ बाज़ार के भाव से ऐसी कमी पर बेच सकता है जिसे सरीह ग़बन कहें, न उसके वली को उसके माल में इन दोनों सूरतों का असलन इख़्तियार।	4	433

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۷	مسئلہ: نان بائی سے کہا میں نے تجھے آج کے دن کیلئے اس پر اجیر کیا کہ یہ آٹا ایک روپے اجرت پر لگا دے یہ اجارہ فاسد ہے کہ اس میں عمل اور وقت دونوں پر عقد اجارہ وارد کیا۔	۸	۴۲۵
۸	مسئلہ: اگر نان بائی سے یوں کہا کہ میں نے تجھے یہ آٹا پکانے کیلئے ایک روپے پر اجیر کیا اس شرط پر کہ آج ہی پکا دے یا یوں کہا جیسا یہاں معمول ہے کہ یہ آٹا آج پکا دے ایک روپیہ دوں گا تو یہ جائز ہے کہ اجارہ فقط عمل پر ہوا۔	۱	۴۲۶
۹	مسئلہ: جسے کسی چیز مباح کے لانے پر اجیر کیا اور نہ وقتِ اجارہ مقرر کیا نہ وہ شے معین کی تو اس مباح کو اگر اپنی نیت سے لے گا خود مالک ہو گا مستاجر کی نیت سے لے گا تو وہ مالک ہو گا اور اگر کوئی نیت نہ تھی یا نیت میں اختلاف پڑا یہ کہتا ہے میں نے اپنے لی لی مستاجر کہتا ہے میرے لی لی تو جس کے برتن میں لی اس کیلئے ہوگی۔	۶	۴۳۱
۱۰	مسئلہ: شرع میں دلالت بھی مثل صریح ہے مگر جب صریح اس کے خلاف ہو تو دلالت معتبر نہیں مثلاً قبر پر قرآن مجید پڑھنے کی اجرت لینی منع ہے لوگ جو مقرر کرتے ہیں اور اجرت کا نام درمیان میں نہیں آتا بعد کو لیتے دیتے ہیں یہ بھی اجرت ہی ہے کہ عادۃً معلوم ہے کہ وہ لینے ہی کو پڑھتے	۵	۷۸۰

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	ہیں اور یہ پڑھنے ہی پر دیتے ہیں، ہاں اگر صاف کہہ دیں کہ دیا کچھ نہ جائے گا پھر دیں تو حرج نہیں کہ تصریحاً نفی اس عادت کی دلالت پر مقدم ہے۔		

مسائل حجر

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱	مسئلہ: غلام کو تجارت کا اذن دیا تو جو دعوت تاجروں کا دستور ہے غلام بھی اس مال سے کر سکتا ہے۔	۱	۴۳۰
۲	مسئلہ: سمجھ دار بچہ اگر ماذون ہے یعنی اس کے ولی شرعی نے اسے خرید و فروخت کی اجازت دی ہے اس کا پانی یا اسی قسم کی اور چیز جو اس کی ملک ہو پورے داموں کو اس سے خرید سکتے ہیں۔	۳	۴۳۳
۳	مسئلہ: نابالغ اگرچہ قریب بلوغ ہو وہ اپنی ملک سے ایک گھونٹ پانی نہ کسی کو مفت دے سکتا ہے نہ کوئی چیز بازار کے بھاؤ سے ایسی کمی پر بیچ سکتا ہے جسے صریح غبن کہیں، نہ اس کے ولی کو اس کے مال میں ان دونوں صورتوں کا اصلاً اختیار۔	۴	۴۳۳

Fatawa Razawiyya Volume Fourth

Serial No.	Titles	Point No.	Page No.
4	Issue: Definition of 'Ma'tu' (imbecile/mentally challenged) and that the ruling for him and a discerning child is the same. His filled water vessel holds the same ruling as that of a minor. Similarly, all his possessions are like those of a minor. To the extent that prayer is not obligatory for him; if he prays, it will be voluntary (Nafl). A sane adult cannot follow him in prayers (Iqtida) whether obligatory, mandatory (Wajib), Tarawih, or even voluntary prayers.	5	434
5	Issue: An action that is purely beneficial, such as accepting a gift (Hiba), a discerning child can do so without the guardian's permission. For actions involving both potential profit and loss, such as buying and selling, he can do so with the guardian's permission. Actions that are purely detrimental, such as divorcing a wife, freeing a slave, or giving away property, he can neither perform himself nor can the guardian grant permission for them.	8	437
	Issues of Usurpation (Masail-e-Ghasb)		
1	Issue: It was assumed that a certain thing with the father was Zaid's trust. Based on this assumption, it was given to Zaid's heirs. Later it was found it belonged to the father himself; it will be taken back from them. If they have spent it, compensation (tawan) will be taken.	3	423
2	Issue: Due to an error in accounting, it was assumed that I owed Zaid 100 rupees. Later it appeared that the accounts were already settled; those rupees will be taken back from him.	4	423
3	Issue: There is a difference of opinion regarding water, whether it is fungible (mithli) or non-fungible/valuable (qimi). For example, if someone used or threw away someone else's waterskin full of water, would they have to give a waterskin full of water or its price? The author's reconciliation is that water is fungible in the sense that its parts are in a uniform state; if you	4	449

Serial No.	Titles	Point No.	Page No.
	take water from one pitcher into two jugs, both portions of water will be identical, just as if you divide a seer of wheat into two parts, one will be like the other; this is called fungible (mithli). And it is called non-fungible/valuable (qimi) in the sense that it is not measured or weighed.		

फ़तावा रज़विया खंड 4

क्र. सं.	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
4	मसला: 'मअतूह' (मंदबुद्धि) की परिभाषा और यह कि उसका और समझदार बच्चे का नियम एक ही है। उसका भरा हुआ पानी भी वही नियम रखता है जो नाबालिग का होता है। इसी तरह उसकी हर मिल्कियत नाबालिग की मिल्कियत की तरह है। यहाँ तक कि उस पर नमाज़ फर्ज़ नहीं है; यदि वह पढ़ेगा तो वह नफ़्ल होगी। एक बुद्धिमान वयस्क फर्ज़, वाजिब, तरावीह और यहाँ तक कि नफ़्ल नमाज़ में भी उसकी इक़्तिदा (पीछे नमाज़ पढ़ना) नहीं कर सकता।	5	434
5	मसला: वह कार्य जो पूर्णतः लाभकारी है, जैसे उपहार (हिबा) स्वीकार करना, उसे समझदार बच्चा संरक्षक की अनुमति के बिना कर सकता है। जिसमें लाभ और हानि दोनों की संभावना हो, जैसे ख़रीद-ओ-फ़रोख़्त, उसे वह संरक्षक की अनुमति से कर सकता है। और जो केवल हानिकारक है, जैसे पत्नी को तलाक़ देना, गुलाम आज़ाद करना, या किसी को कुछ माल दान करना, वह न तो स्वयं कर सकता है और न ही संरक्षक इसकी अनुमति दे सकता है।	8	437
	ग़सब (अवैध कब्ज़ा) के मसले		
1	मसला: यह गुमान हुआ कि पिता के पास रखी कोई वस्तु ज़ैद की अमानत थी। इस गुमान पर वह ज़ैद के वारिसों को दे दी गई। बाद में पता चला कि वह पिता की ही थी; उनसे वापस ली जाएगी। और अगर वे उसे खर्च कर चुके हों, तो हर्जाना (तावान) लिया जाएगा।	3	423
2	मसला: हिसाब-किताब में गलती से यह गुमान हुआ कि मुझ पर ज़ैद के100 रुपये निकलते हैं। बाद में ज़ाहिर हुआ कि हिसाब बराबर हो चुका था, तो वे रुपये उससे वापस लिए जाएँगे।	4	423
3	मसला: पानी के बारे में मतभेद है कि वह 'मिस्ली' (समरूप वस्तु) है या 'क़ीमी' (मूल्यवान वस्तु)। उदाहरण के लिए, यदि किसी ने किसी का मशक भर पानी	4	449

क्र. सं.	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या

खर्च कर लिया या फेंक दिया, तो उसे मशक भर पानी देना होगा या उसकी कीमत? लेखक का समन्वय यह है कि पानी इस अर्थ में 'मिस्ली' है कि इसके भागों की स्थिति समान होती है; यदि एक घड़े से दो लोटों में पानी लें तो दोनों पानी एक जैसे होंगे, जैसे एक सेर गेहूं के दो हिस्से करें तो एक दूसरे के समान होगा, इसे ही 'मिस्ली' कहते हैं। और इसे इस अर्थ में 'क़ीमी' कहा गया है कि इसे मापा या तोला नहीं जाता।

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: معتوہ یعنی بوہرے کی تعریف اور یہ کہ اس کا اور سمجھ وال بچے کا ایک حکم ہے اس کا بھرا پانی بھی وہی حکم رکھتا ہے جو نابالغ کا۔ یوں ہی		
۴	اس کی ہر ملک مثل ملک نابالغ ہے۔ یہاں تک کہ اس پر نماز فرض نہیں پڑھے گا تو نفل ہو گی۔ عاقل بالغ فرض و واجب و تراویح بلکہ نفل میں بھی اس کی اقتدا نہیں کرسکتا۔	۵	۴۳۴
	مسئلہ: جو تصرف خالص نفع ہے جیسے ہبہ قبول کرنا وہ صبی عاقل بے اذن ولی کرسکتا ہے اور جس میں نفع و نقصان دونوں کا احتمال ہو جیسے خرید و		
۵	فروخت وہ ولی کی اجازت سے کرسکتا ہے اور جو محض ضرر ہے جیسے عورت کو طلاق دینا غلام آزاد کرنا کسی کو کچھ مال بخش دینا یہ نہ خود کرسکتا ہے نہ ولی اجازت دے سکتا ہے۔	۸	۴۳۷
	مسائل غصب		
	مسئلہ: گمان ہوا کہ فلاں چیز باپ کے پاس زید کی امانت تھی اس گمان پر زید		
۱	کے وارثوں کو دے دی پھر معلوم ہوا کہ وہ اس کے باپ ہی کی تھی ان سے واپس لے گا اور اگر وہ خرچ کر چکے تاوان لے گا۔	۳	۴۲۳
۲		۴	۴۲۳

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: حساب کتاب میں غلطی سے گمان ہوا کہ زید کے ۱۰۰ روپے مجھ پر آتے ہیں پھر ظاہر ہوا کہ حساب برابر ہو چکا تھا وہ روپے اس سے واپس لے گا۔		
	مسئلہ: پانی میں اختلاف ہے کہ مثلی ہے یا قیمی، مثلاً اگر کسی کا مشک بھر پانی کسی نے خرچ لیا یا پھینک دیا، تو اس مشک بھر پانی اسے دینا ہوگا یا اس کی قیمت اور مصنف کی تطبیق کہ پانی بایں معنیٰ مثلی ہے کہ اس کے		
۳	حصوں کی یکساں حالت ہوتی ہے ایک گھڑے سے دو لوٹوں میں پانی لوتو دونوں پانی ایک سے ہوں گے جیسے سیر بھر گیہوں کے دو حصے کرو تو ایک دوسرے کے مثل ہوگا اسی کو مثلی کہتے ہیں اور اسے بایں معنیٰ قیمی کہا گیا ہے کہ وہ مایا پاتولا نہیں جاتا۔	۴	۴۴۹

Volume 4 Fatawa Razawiyya

Serial No. | Titles | Benefit No. | Page

Issues of Division

1 | Issue: In fungible items (Mithli) like money, gold coins, or grain, an adult heir can separate their own share from the shares of minor heirs. This division will be acceptable as long as the minors' share remains safe for them. If it is destroyed, the division will be considered void, and it will be determined that what was lost came from the shares of both the adult and the minors, and the minors will be given their share from the remainder. | 2 | 439 2 | Issue: The same rule applies to present and absent partners in such items. The partner present can take their share themselves, and this division will be correct if the absent partner's share remains safe for them; otherwise, what was lost belonged to both, and what remains belongs to both. | 3 | 439

Issues of Prohibition and Permissibility

1 | Issue: Wiping the body with one's own garment edge or scarf is not prohibited by Sharia, but experienced elders forbid wiping the hands and face with the garment edge, saying it causes forgetfulness. | 1 | 30 2 | Issue: Hands should be wiped with paper after eating. | 3 | 30 3 | Issue: It is forbidden to wipe hands with one's turban or other clothing after eating. According to the author, this prohibition applies when the hands have not yet been washed, or if after washing, grease or odor remains that would spoil the cloth. | 4 | 30 4 | Issue: One who goes out on the road wearing only trousers (pajamas) is considered to have lost their credibility (Saqit-ul-Adala) and their testimony is rejected. | 3 | 158 5 | Issue: It is very necessary to remove a ring on which any sacred name is written at the time of cleansing (Istinja). | 8 | 171 6 | Issue: Absolute respect should be shown to letters, no matter what is written. | 9 | 171 7 | Issue: It is disliked (Makruh) to enter the toilet wearing a ring on which something is written. | 1 | 172 8 | Issue: If an amulet is in a cover, it is not disliked to enter the toilet wearing it. Even then, it is better to avoid it. | 2 | 172

जिल्द चहारुम फ़तावा रज़विया

क्रमांक | शीर्षक | लाभ संख्या | पृष्ठ

विभाजन के मसले

1 | मसला: रुपया, अशरफी, अनाज जैसी चीजें जो 'मिस्ली' (तुलनीय) हैं, उनमें वयस्क वारिस नाबालिगों के हिस्से से अपना हिस्सा खुद अलग कर सकते हैं और यह विभाजन तब तक मान्य रहेगा जब तक नाबालिगों का हिस्सा उनके लिए सुरक्षित रहे। यदि वह नष्ट हो जाए तो विभाजन अमान्य माना जाएगा और यह तय किया जाएगा कि जो नष्ट हुआ वह वयस्क और नाबालिग दोनों के हिस्सों से गया, और शेष में से नाबालिगों को हिस्सा दिया जाएगा। | 2 | 439 2 | मसला: ऐसी चीजों में उपस्थित और अनुपस्थित भागीदारों का भी यही नियम है। उपस्थित भागीदार अपना हिस्सा खुद ले सकता है और यह विभाजन सही रहेगा यदि अनुपस्थित भागीदार का हिस्सा उसके लिए सुरक्षित रहे; अन्यथा जो नष्ट हुआ वह दोनों का था और जो शेष है वह भी दोनों का है। | 3 | 439

वर्जन और अनुमति के मसले

1 | मसला: अपने दामन या आँचल से बदन पोंछना शरीयत में वर्जित नहीं है, लेकिन अनुभवी लोग दामन से हाथ-मुँह पोंछने से मना करते हैं क्योंकि इससे विस्मृति (भूलने की बीमारी) पैदा होती है। | 1 | 30 2 | मसला: खाने के बाद कागज से हाथ पोंछना चाहिए। | 3 | 30 3 | मसला: खाने के बाद अपने इमामे (पगड़ी) या अन्य कपड़ों से हाथ पोंछना मना है। लेखक के अनुसार यह मनाही तब है जब अभी हाथ न धोए गए हों या धोने के बाद चिकनाई या गंध बाकी हो जिससे कपड़ा खराब हो। | 4 | 30 4 | मसला: केवल पाजामा पहनकर रास्ते में निकलने वाला व्यक्ति 'साकित-उल-अदालत' (जिसकी गवाही अमान्य हो) है। | 3 | 158 5 | मसला: जिस अँगूठी पर कोई पवित्र नाम लिखा हो, इस्तिंजा (शौच के बाद सफाई) के समय उसे उतार लेना बहुत आवश्यक है। | 8 | 171 6 | मसला: अक्षरों का सामान्य रूप से सम्मान होना चाहिए, चाहे कुछ भी लिखा हो। | 9 | 171 7 | मसला: जिस अँगूठी पर कुछ लिखा हो, उसे पहनकर शौचालय जाना मकरूह (नापसंद) है। | 1 | 172 8 | मसला: ताबीज अगर गिलाफ (कवर) में हो, तो उसे पहनकर शौचालय जाना मकरूह नहीं है। फिर भी इससे बचना ही उत्तम है। | 2 | 172

पृष्ठ 724 का 761

جلد چہارم فتاوی رضویہ

نمبر شمار | عنوانات | فائدہ نمبر | صفحہ

مسائل قسمت

۱ | مسئلہ: روپیہ اشرفی غلہ جو چیزیں مثلی ہیں ان میں سے بالغ وارث بطور خود اپنا حصہ نابالغوں کے حصے سے جدا کر سکتے ہیں اور یہ تقسیم مقبول رہے گی اگر نابالغوں کا حصہ ان کیلئے سلامت رہے اگر وہ تلف ہو جائے تو تقسیم کالعدم ہو کر یہ ٹھہرائیں گے کہ جو جاتا رہا وہ بالغ نابالغ سب کے حصوں میں سے گیا باقی میں سے نابالغوں کو حصہ دیا جائے گا۔ | ۲ | ۴۳۹

۲ | مسئلہ: یہی حکم ایسی چیزوں میں شریک حاضر و غائب کا ہے جو شریک موجود ہے اپنا حصہ بطور خود لے سکتا ہے اور یہ تقسیم صحیح رہے گی اگر شریک غائب کا حصہ اس کیلئے سلامت رہے ورنہ جو گیا دونوں کا تھا اور جو باقی رہا دونوں کا ہے۔ | ۳ | ۴۳۹

مسائل حظر و اباحت

۱ | مسئلہ: اپنے دامن یا آنچل سے بدن پونچھنا شرعاً منع نہیں مگر دامن سے ہاتھ منہ پونچھنے سے اہل تجربہ منع فرماتے ہیں کہ اس سے بھول پیدا ہوتی ہے۔ | ۱ | ۲ ۳۰ | مسئلہ: کھانے کے بعد کاغذ سے ہاتھ پونچھنا چاہیے۔ | ۳ | ۳ ۳۰ | مسئلہ: کھانے کے بعد اپنے عمامہ وغیرہ لباس سے ہاتھ پونچھنا منع ہے۔ مصنف کے نزدیک یہ ممانعت اس وقت ہے کہ ابھی ہاتھ نہ دھوئے ہوں یا دھونے کے بعد چکنائی یا بو باقی ہو جس سے کپڑا خراب ہو۔ | ۴ | ۴ ۳۰ | مسئلہ: تنہا پاجامہ پہنے راہ میں نکلنے والا ساقط العدالۃ مردود الشہادۃ ہے۔ | ۳ | ۵ ۱۵۸ | مسئلہ: جس انگشتری پر کوئی متبرک نام لکھا ہو وقت استنجا اس کا اتار لینا بہت ضرور ہے۔ | ۸ | ۶ ۱۷۱ | مسئلہ: مطلقاً

حروف کی تعظیم چاہیے خواہ کچھ لکھا ہو۔ | ۹ | ۱۷۱ ۷ | مسئلہ: جس انگشتری پر کچھ لکھا ہو اسے پہن کر بیت الخلا میں جانا مکروہ ہے۔ | ۱ | ۱۷۲ ۸ | مسئلہ: تعویذ اگر غلاف میں ہو تو اسے پہن کر بیت الخلا میں جانا مکروہ نہیں۔ پھر بھی اس سے بچنا افضل ہے۔ | ۲ | ۱۷۲

Fatawa Rizvia Volume 4

Serial No. | Titles/Topics | Benefit No. | Page No. 9. Issue: Worldly conversation from the break of dawn (Subh-e-Sadiq) until sunrise is absolutely disliked (Makruh). | 2 | 197 10. Issue: Engaging in unnecessary worldly talk after the Isha prayer is disliked (Makruh). | 3 | 197 11. Note: Play, amusement, jest, frivolous talk, falsehood, and futility are similar in meaning. | 5 | 200 12. Issue: Occasionally engaging in a permissible (Mubah) activity, such as reciting or listening to permissible romantic poetry, to remove exhaustion and boredom and to gain freshness and comfort after religious worship and labor, is sharia-permitted, rather desirable. | 1 | 201 13. Issue: Maintaining family ties and helping relatives are excellent virtues, but if the intention is not for Allah's sake—for instance, due to blood relations or natural affection—then there is no reward for it from Allah. | 2 | 201 14. Issue: Cracking fingers during prayer is a sin and impermissible; similarly, if one is sitting waiting for prayer or going for prayer. Other than these, if there is a need, e.g., lethargy caused by vapors in the fingers, then it is purely permissible, but without need, it is contrary to what is better (Khilaf-e-Aula) and a lack of etiquette. | 1 | 205 15. Issue: All these rulings also apply to interlocking the fingers of one hand with those of the other. | 2 | 205 16. Issue: If there is hair on the hands, feet, chest, or back, it is better to remove it with hair removal powder (Nura), and the use of Nura for pubic hair is also mentioned. | 3 | 210 17. Note: Essential and very important warning: The Great Quran strictly forbids going to hear the lectures and calls of Aryas, priests, etc. | 6 | 214 18. Issue: It is forbidden (Haram) to make a clean thing impure without necessity. | 1 | 221 19. Issue: Touching an Ayah (verse) without ablution is itself forbidden, even if the Ayah is written in another book. However, touching even the plain margins, edges, or binding of the Holy Quran is forbidden. Yes, if it is in a book cover (Juzdan), then one may touch the cover. | 1 | 222

फतवा रिज़विया जिल्द चार

क्रम संख्या | शीर्षक | फायदा संख्या | पृष्ठ संख्या 9. मसला: सुब्ह-ए-सादिक से सूर्योदय तक सांसारिक बातचीत पूर्णतः मकरूह है। | 2 | 197 10. मसला: ईशा की नमाज़ के बाद बिना ज़रूरत सांसारिक बातों में व्यस्त होना मकरूह है। | 3 | 197 11. फ़ायदा: खेल, तमाशा, मज़ाक, फालतू बातें, असत्य और व्यर्थता अर्थ में समान हैं। | 5 | 200 12. मसला: धार्मिक इबादत और मेहनत के बाद थकान और ऊब दूर करने और ताजगी और आराम पाने के लिए कभी-कभी किसी जायज़ काम में व्यस्त होना, जैसे जायज़ रूमानी कविताएँ पढ़ना या सुनना, शरीयत में जायज़ बल्कि वांछनीय है। | 1 | 201 13. मसला: रिश्तों को निभाना और अपने रिश्तेदारों की मदद करना बेहतरीन नेकियों में से है, लेकिन अगर नीयत अल्लाह के लिए न हो, बल्कि उदाहरण के लिए खून के रिश्ते या प्राकृतिक प्रेम के कारण हो, तो अल्लाह के यहाँ इसका कोई फल नहीं है। | 2 | 201 14. मसला: नमाज़ में उँगलियाँ चटकाना गुनाह और नाजायज़ है; इसी तरह अगर नमाज़ के इंतज़ार में बैठा हो या नमाज़ के लिए जा रहा हो। इनके अलावा अगर ज़रूरत हो, उदाहरण के लिए उँगलियों में वाष्प के कारण सुस्ती पैदा हुई हो, तो यह शुद्ध रूप से जायज़ (मुबाह) है, और बिना ज़रूरत के यह बेहतर के खिलाफ (खिलाफ़-ए-औला) और शिष्टाचार के विरुद्ध है। | 1 | 205 15. मसला: ये सभी नियम एक हाथ की उँगलियों को दूसरे हाथ की उँगलियों में डालने पर भी लागू होते हैं। | 2 | 205 16. मसला: अगर हाथ, पैर, सीने या पीठ पर बाल हों, तो उन्हें नूरा (बाल हटाने वाला पाउडर) से हटाना बेहतर है और उपस्थ (प्राइवेट पार्ट्स) के बालों पर भी नूरा का उपयोग बताया गया है। | 3 | 210 17. फ़ायदा: ज़रूरी और बहुत ज़रूरी चेतावनी: आर्यों, पादरियों आदि के व्याख्यान और आह्वान सुनने जाने से कुरान-ए-अजीम सख्ती से मना करता है। | 6 | 214 18. मसला: बिना ज़रूरत किसी पाक (साफ) चीज़ को नापाक करना हराम है। | 1 | 221 19. मसला: बिना वज़ू के आयत को छूना तो स्वयं ही हराम है, चाहे आयत किसी और किताब में लिखी हो। मगर कुरान मजीद के सादे हाशिए, कोनों यहाँ तक कि जिल्द को छूना भी हराम है। हाँ, अगर वह जुज़दान (बस्ते) में हो तो जुज़दान को हाथ लगा सकता है। | 1 | 222

فتاوی رضویہ جلد چہارم

نمبر شمار | عنوانات | فائدہ نمبر | صفحہ نمبر ۹. مسئلہ : طلوع صبح صادق سے طلوع شمس تک دنیوی کلام مطلقاً مکروہ ہے۔ | ۲ | ۱۹۷ ۱۰. مسئلہ : نماز عشاء پڑھنے کے بعد بے حاجت دنیوی باتوں میں اشتغال مکروہ ہے۔ | ۳ | ۱۹۷ ۱۱. ف : لعب ولہو و ہزل ولغو و باطل و عبث متقارب المعنی ہیں۔ | ۵ | ۲۰۰ ۱۲. مسئلہ : عبادت و محنت دینیہ کے بعد دفع کلال و ملال و حصول تازگی و راحت کیلئے احیاناً کسی امر مباح میں مشغولی جیسے جائز اشعار عاشقانہ کا پڑھنا سننا شرعاً مباح بلکہ مطلوب ہے۔ | ۱ | ۲۰۱ ۱۳. مسئلہ : صلہ رحم اور اپنے اقرباء کی مواسات عمدہ حسنات سے ہے مگر اگر نیت بوجہ اللہ نہ ہو بلکہ مثلاً خون کی شرکت امور طبعی محبت کا تقاضا، تو اس سے عند اللہ کچھ فائدہ نہیں۔ | ۲ | ۲۰۱ ۱۴. مسئلہ : نماز میں انگلی چٹخانا گناہ و نا جائز ہے یوں ہی اگر نماز کے انتظار میں بیٹھا ہے یا نماز کیلئے جارہا ہے اور ان کے سوا اگر حاجت ہو مثلاً انگلیوں میں بخارات کے سبب کسل پیدا ہوا تو خالص اباحت ہے اور بے حاجت خلاف اولیٰ و ترک ادب ہے۔ | ۱ | ۲۰۵ ۱۵. مسئلہ : یہی سب احکام اپنے ایک ہاتھ کی انگلیاں دوسرے ہاتھ کی انگلیوں میں ڈالنے کے ہیں۔ | ۲ | ۲۰۵ ۱۶. مسئلہ : ہاتھ پاؤں سینہ پشت پر بال ہوں تو نورہ سے دور کرنا بہتر ہے اور موئے زیر ناف پر بھی استعمال نورہ آیا ہے۔ | ۳ | ۲۱۰ ۱۷. ف : تنبیہ ضروری بہت ضروری : آریوں پادریوں و غیرہم کے لکچر ندائیں سننے کو جانے سے قرآن عظیم سخت ممانعت فرماتا ہے۔ | ۶ | ۲۱۴ ۱۸. مسئلہ : بلا ضرورت پاک چیز کو ناپاک کرنا حرام ہے۔ | ۱ | ۲۲۱ ۱۹. مسئلہ : بے وضو آیت کو چھونا تو خود ہی حرام ہے اگرچہ آیت کسی اور کتاب میں لکھی ہو مگر قرآن مجید کے سادہ حاشیہ بلکہ پٹھوں بلکہ چولی کا بھی چھونا حرام ہے ہاں جزدان میں ہو تو جزدان کو ہاتھ لگا سکتا ہے۔ | ۱ | ۲۲۲

Fatawa Rizwia | Volume Four

S. No.	Titles	Benefit No.	Page No.
20	Ruling: If the translation of the Holy Quran is written separately without the Arabic text, touching it without ablution is also prohibited.	2	222
21	Ruling: In books of exegesis (Tafsir), Hadith, and jurisprudence (Fiqh), it is forbidden (Haram) to touch the specific place where a verse of the Quran is written without ablution; for the rest of the text, it is better to be with ablution.	3	222
22	Necessary Benefit: Apart from reciting the Quran or Hadith, it is forbidden to attribute sin to Adam (peace be upon him) or any other Prophet.	7	233
23	Ruling: It is Sunnah to clean the vessel by licking it after eating.	1	243
24	Ruling: One without ablution cannot touch the Holy Quran even with their chest.	3	255
25	Ruling: A corner of a long cloth is on the neck of a person without ablution, and they want to place the other corner on their hand and touch the Holy Quran; if the cloth is so long that their movement (sitting or standing) does not affect the other corner, it is permissible, otherwise not.	4	255
26	Ruling: Urinating in water is absolutely disliked (Makruh), even if it is in a river.	3	276
27	Ruling: The Messenger of Allah (peace and blessings be upon him and his family) prohibited eating at a Christian's place.	1	332
28	Ruling: The Messenger of Allah (peace and blessings be upon him and his family) said, as far as possible, stay away from the vessels of Christians; if vessels are not available, wash them first to make them pure and then use them.	2	332
29	Ruling: There is a prohibition in Hadith from standing in a place of accusation (a place that raises suspicion).	2	333

S. No.	Titles	Benefit No.	Page No.
30	Ruling: There are many Hadiths stating that one should not say things without a Sharia-compliant reason that sound bad to listeners and cause Muslims to feel aversion.	3	333
31	Ruling: It is disliked (Makruh) to say things without a Sharia-compliant reason that open the door to backbiting (Gheebat).	4	333
32	Ruling: There is a much stricter command to avoid eating and drinking with Christians compared to Hindus.	5	333
33	Ruling: Whether it is night or day, whether the woman is young or old, it is absolutely forbidden for women to go for Jumu'ah, Eid, the five daily congregational prayers, or a religious gathering (Majlis-e-Wa'z).	2	386

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
२०	मसला: क़ुरान मजीद का खाली तर्जुमा अगर अलग लिखा हो, तो उसे भी बिना वज़ू छूना मना है।	२	२२२
२१	मसला: तफ़सीर, हदीस और फ़िक़्ह की किताबों में जहाँ आयत लिखी हो, उस ख़ास जगह बिना वज़ू हाथ लगाना हराम है; बाकी इबारत में अफ़ज़ल (बेहतर) यह है कि बा-वज़ू हो।	३	२२२
२२	फ़ायदा ज़रूरिया: तिलावते क़ुरान या किराअते हदीस के अलावा अपनी तरफ से आदम अलैहिस्सलाम या किसी भी नबी की तरफ गुनाह (मअसियत) को मंसूब करना हराम है।	७	२३३
२३	मसला: खाना खाकर बर्तन को चाट कर साफ करना सुन्नत है।	१	२४३
२४	मसला: बिना वज़ू वाला अपने सीने से भी मुसहफ़ शरीफ़ (क़ुरान) को नहीं छू सकता।	३	२५५
२५	मसला: बिना वज़ू वाले की गर्दन पर लंबी चादर का एक कोना पड़ा हुआ है और वह उसके दूसरे कोने को हाथ पर रखकर मुसहफ़ शरीफ़ छूना चाहता है; अगर चादर इतनी लंबी है कि उस शख़्स के उठने-बैठने से उस दूसरे कोने तक हरकत न पहुंचे तो जायज़ है, वरना नहीं।	४	२५५
२६	मसला: पानी में पेशाब करना मुतलक़न (बिल्कुल) मकरूह है चाहे वह दरिया में हो।	३	२७६
२७	मसला: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नस्रानी (ईसाई) के यहाँ खाना खाने से मना फरमाया।	१	३३२
२८	मसला: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जहाँ तक हो सके ईसाइयों के बर्तनों से दूर रहो, और अगर बर्तन न मिलें तो पहले उन्हें धोकर पाक कर लो, उसके बाद इस्तेमाल में लाओ।	२	३३२
२९	मसला: तोहमत (संदेह) की जगह खड़े होने से हदीस में मनाही है।	२	३३३

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
३०	मसला: इस बारे में बहुत सी हदीसें हैं कि बिना शरई वजह के वह बात न की जाए जो सुनने में बुरी लगे और जिससे मुसलमानों को नफ़रत हो।	३	३३३
३१	मसला: बिना शरई वजह के वह बात करना मकरूह है जिससे ग़ीबत (चुगली) का दरवाज़ा खुले।	४	३३३
३२	मसला: यहाँ ईसाइयों के खाने-पीने से हिंदुओं के मुक़ाबले में बहुत ज़्यादा बचने का हुक्म है।	५	३३३
३३	मसला: रात हो या दिन, औरत जवान हो या बूढ़ी, जुमा हो या ईद या पांचों वक्त की जमात या वाज़ (प्रवचन) की महफ़िल, मुतलक़न (बिल्कुल) औरतों का जाना मना है।	२	३८६

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۲۰	مسئلہ: قرآن مجید کا خالی ترجمہ اگر جدا لکھا ہوا اسے بھی بے وضو چھونا منع ہے	۲	۲۲۲
۲۱	مسئلہ: کتبِ تفسیر وحدیث وفقہ میں جہاں آیت لکھی ہو خاص اس جگہ بے وضو ہاتھ لگانا حرام ہے باقی عبارت میں افضل یہ ہے کہ باوضو ہو۔	۳	۲۲۲
۲۲	فائدہ ضروریہ: تلاوت قرآن یا قرأتِ حدیث کے سوا اپنی طرف سے آدم علیہ الصلوٰۃ والسلام خواہ کسی نبی کو معصیت کی طرف منسوب کرنا حرام ہے۔	۷	۲۳۳
۲۳	مسئلہ: کھانا کھا کر برتن کو چاٹ کر صاف کرنا مسنون ہے۔	۱	۲۴۳
۲۴	مسئلہ: بے وضو اپنے سینہ سے بھی مصحف شریف کو مَس نہیں کر سکتا۔	۳	۲۵۵
۲۵	مسئلہ: بے وضو کی گردن پر لمبی چادر کا ایک کونا پڑا ہوا ہے اور وہ اس کے دوسرے کونے کو ہاتھ پر رکھ کر مصحف شریف چھونا چاہتا ہے اگر چادر اتنی لمبی ہے کہ اس شخص کے اٹھنے بیٹھنے سے اس دوسرے گوشہ تک حرکت نہ پہنچے گی تو جائز ہے ورنہ نہیں۔	۴	۲۵۵
۲۶	مسئلہ: پانی میں پیشاب کرنا مطلقاً مکروہ ہے اگر چہ دریا میں ہو۔	۳	۲۷۶
۲۷	مسئلہ: رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے نصرانی کے یہاں کا کھانا کھانے سے ممانعت فرمائی۔	۱	۳۳۲

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا جہاں تک بنے نصاریٰ		
۲۸	کے برتنوں سے دور رہو اور برتن نہ ملیں تو پہلے انہیں دھو کر پاک کرلو اس کے بعد استعمال میں لاؤ۔	۲	۳۳۲
۲۹	مسئلہ: تہمت کی جگہ کھڑے ہونے سے حدیث میں ممانعت ہے۔	۲	۳۳۳
۳۰	مسئلہ: بکثرت حدیثیں اس بارے میں کہ بلاوجہ شرعی وہ بات نہ کی جائے جو سننے سے بری معلوم ہو عذر کی حاجت پڑے مسلمانوں کو نفرت دلائے۔	۳	۳۳۳
۳۱	مسئلہ: بلاوجہ شرعی وہ بات کرنی مکروہ ہے جس سے اس کی غیبت کا دروازہ کھلے۔	۴	۳۳۳
۳۲	مسئلہ: یہاں نصاریٰ کے کھانے پینے سے بہ نسبت ہنود کے بہت زیادہ بچنے کا حکم ہے۔	۵	۳۳۳
۳۳	مسئلہ: رات ہو یا دن عورت جوان ہو یا بوڑھی جمعہ ہو یا عید یا جماعت پنجگانہ یا مجلس وعظ مطلقاً عورتوں کا جانا منع ہے۔	۲	۳۸۶

Fatawa Razawiyya, Volume 4

Serial No.	Benefit No.	Page No.	Titles/Topics
34	1	409	Note: One should not travel by sea without a correct and valid Shari'i need, for there is fire beneath it.
35	1	415	Issue: It is disliked (Makruh) to eat or drink from the utensils of Hindus and Christians, whether bought or obtained otherwise, without purifying them.
36	4	421	Issue: The Imams state that if in a forest a dog and a Harbi Kafir (hostile infidel) are dying of thirst, and a Muslim has enough water for only one, he should give it to the dog and not to the Harbi.
37	9	437	Issue: Begging, which is forbidden (Haram) without a Shari'i necessity, is not limited to asking for money; asking a stranger for any work or service is also included in begging, especially someone else's minor child, or a slave girl/boy. I say: Similarly, taking work from someone's servant when there is not that level of informal intimacy and frankness between them.
38	2	574	Issue: One should never eat or drink anything at a Rafidi's (Shi'ite's) place.
39	1	619	Issue: Delay in responding to a greeting (Salam) is not permissible.
40	2	619	Issue: Salam is at the beginning of a meeting; doing it after a delay or after some conversation is against the Sunnah.
41	2	656	Issue: As long as a child hasn't started speaking, both men and women can bathe them without a veil (uncovered). This is the age up to which there is no requirement to cover the private parts (Satr) at all.
42	4	656	Issue: The ruling regarding looking at or touching the body or hair of a dead person is the same as for the living. I say: In some cases, it's even stricter; a husband can touch his wife during her life, but after death, he cannot touch her body at all.
43	1	658	

Serial No.	Benefit No.	Page No.	Titles/Topics
			Issue: The ruling for another person's Shari'i slave girl is like that of one's Mahram woman; it is not permissible to see from the stomach to the back and from the navel to below the knees. It is permissible to see the rest, provided there is no fear of temptation (Fitna), and touching is also allowed if there is a Shari'i need.
44	2	658	Issue: Looking at only the face of a strange free woman (in which no part of the ears, neck, or hair is included) and the palms and soles, though not Haram, is indeed Makruh Tahrimi (prohibitively disliked) as it's abandoning an obligation. However, touching these parts is absolutely Haram, and thus it is Haram for a Sheikh to take allegiance (Bay'at) by holding a strange woman's hand.

फ़तावा रज़विया, जिल्द चौथी

क्रम संख्या	फ़ायदा संख्या	पृष्ठ संख्या	शीर्षक
34	1	409	नोट: बिना किसी सही और जायज़ शरीअत की ज़रूरत के समुद्र की यात्रा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि उसके नीचे आग है।
35	1	415	मसला: हिंदुओं और ईसाइयों के बर्तन अगर खरीदे जाएं या किसी भी तरह मिलें, तो उन्हें बिना पाक (शुद्ध) किए उनमें खाना-पीना मकरूह है।
36	4	421	मसला: इमाम फरमाते हैं कि अगर जंगल में एक कुत्ता और एक हरबी काफ़िर प्यास से मर रहे हों और एक मुसलमान के पास सिर्फ एक की प्यास बुझाने लायक पानी हो, तो वह कुत्ते को पिलाए और हरबी को न दे।
37	9	437	मसला: सवाल (मांगना) जो बिना शरीई ज़रूरत के हराम है, केवल धन मांगने तक सीमित नहीं है, बल्कि किसी अजनबी से किसी काम या सेवा के लिए कहना भी सवाल में शामिल है, विशेष रूप से दूसरे के नाबालिग बच्चे या दासी और गुलाम से। मैं कहता हूँ: इसी तरह किसी के नौकर से काम लेना जबकि आपस में उस हद तक बेतकुल्लुफ़ी और खुलापन न हो।
38	2	574	मसला: राफ़िज़ी (शिया) के यहाँ कुछ भी खाना-पीना हरगिज़ नहीं चाहिए।
39	1	619	मसला: सलाम का जवाब देने में देरी करना जायज़ नहीं है।
40	2	619	मसला: सलाम मुलाकात के शुरू में होता है; देरी के बाद या कुछ बात करने के बाद सलाम करना सुन्नत के खिलाफ है।
41	2	656	मसला: जब तक बच्चा बोलना न शुरू करे, उसे पुरुष और महिला सब बे-पर्दा नहला सकते हैं। यही वह उम्र है जब तक सतर (गुप्तांगों को ढंकना) की बिल्कुल ज़रूरत नहीं होती।
42	4	656	मसला: शरीर या बाल देखने या छूने में जो हुक्म ज़िंदा का था, वही मुर्दे का है। मैं कहता हूँ: बल्कि कुछ जगहों पर अधिक सख़्त है कि पति जीवन में

क्रम संख्या	फ़ायदा संख्या	पृष्ठ संख्या	शीर्षक
			छू सकता है और मौत के बाद उसके शरीर को बिल्कुल हाथ नहीं लगा सकता।
43	1	658	मसला: दूसरे की शरीई दासी का हुक्म अपनी मेहरम औरत की तरह है कि पेट, पीठ और नाभि से घुटने के नीचे तक देखना जायज़ नहीं है। इसके अलावा देखना जायज़ है बशर्ते फितने का डर न हो, और अगर शरीई ज़रूरत हो तो छूना भी जायज़ है।
44	2	658	मसला: अजनबी आज़ाद औरत के चेहरे का केवल वह हिस्सा जिसमें कान, गला या बालों का कोई हिस्सा शामिल न हो, और हथेलियां और तलवे देखना यद्यपि हराम नहीं है, लेकिन मकरूह-ए-तहरीमी है क्योंकि यह वाजिब का त्याग है। मगर इन जगहों को छूना भी मुतलकन (पूर्णत:) हराम है, और इसीलिए पीर (शेख) के लिए अजनबी औरत का हाथ पकड़कर बैत लेना हराम है।

فتاوی رضویہ، جلد چہارم

عنوانات	صفحہ نمبر	فائدہ نمبر	نمبر شمار
ف: بے کسی صحیح و جائز حاجت شرعی کے سمندر میں سوار ہونا نہ چاہیے کہ اس کے نیچے آگ ہے۔	۴۰۹	۱	۳۴
مسئلہ: ہنود و نصاری کے برتن اگر خریدے یا کسی طرح ملے ان میں بغیر پاک کیے کھانا پینا مکروہ ہے۔	۴۱۵	۱	۳۵
مسئلہ: ائمہ فرماتے ہیں اگر جنگل میں ایک کتا ایک حربی کافر پاس سے مرے جاتے ہوں اور مسلمان کے پاس ایک کی پیاس کے قابل پانی ہے کتے کو پلائے اور حربی کو نہ دے۔	۴۲۱	۴	۳۶
مسئلہ: سوال جو بے ضرورت شرعیہ حرام ہے کچھ مال ہی مانگنے پر موقوف نہیں بلکہ اجنبی سے کسی کام یا خدمت کو کہنا بھی سوال میں داخل ہے خصوصاً دوسرے کے نابالغ بچے یا کنیز وغلام سے اقول: یونہی کسی کے نوکر سے کام لینا جبکہ باہم انبساط و بے تکلفی اس حد تک نہ ہو۔	۴۳۷	۹	۳۷
مسئلہ: رافضی کے یہاں کچھ کھانا پینا ہر گز نہ چاہیے۔	۵۷۴	۲	۳۸
مسئلہ: جواب سلام میں دیر جائز نہیں۔	۶۱۹	۱	۳۹
مسئلہ: سلام شروع ملاقات کے وقت ہے دیر کے بعد یا کچھ کلام کرکے خلاف سنت ہے۔	۶۱۹	۲	۴۰

شمار	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر	عنوانات
۴۱	۲	۶۵۶	مسئلہ: بچے نے جب تک بات نہ کی ہو اسے مرد و عورت سب بے پردہ نہلا سکتے ہیں یہی وہ عمر ہے جس تک ستر عورت کی اصلاً حاجت نہیں۔
۴۲	۴	۶۵۶	مسئلہ: بدن یا بال دیکھنے یا چھونے میں جو حکم زندہ کا تھا وہی مردے کا ہے اقول: بلکہ بعض جگہ زائد کہ شوہر حیات میں مس کر سکتا ہے اور بعد موت اس کے بدن کو اصلاً ہاتھ نہیں لگا سکتا۔
۴۳	۱	۶۵۸	مسئلہ: دوسرے کی کنیز شرعی کا حکم مثل اپنی محرم عورت کے ہے کہ پیٹ پیٹھ اور ناف سے زانو کے نیچے تک دیکھنا جائز نہیں اس کے سوا میں جائز ہے بلکہ خوف فتنہ نہ ہو یا حاجت شرعیہ ہو تو چھونا بھی۔
۴۴	۲	۶۵۸	مسئلہ: اجنبی آزاد عورت کے منہ کی صرف ٹکی جس میں کان یا گلے یا بالوں کا کوئی ذرہ داخل نہیں اور ہتھیلیاں اور تلوے دیکھنا اگرچہ حرام نہیں، ہاں مکروہ تحریمی ہے کہ ترک واجب ہے مگر اس کے ان مواضع کا بھی چھونا مطلقاً حرام ہے ولذا شیخ کو حرام ہے کہ اجنبی عورت کا ہاتھ پکڑ کر بیعت لے۔

Fatawa-e-Razvia Volume Four

Serial No.	Titles / Subjects	Benefit No.	Page No.
45	Problem: If another person's legal slave girl applies oil to one's head, massages the hands or feet, or rubs the stomach or back during bathing, it is permissible provided there is no bad intention.	3	658
46	Problem: A most urgent and necessary issue: It is forbidden (Haram) for a free woman to touch the body of a non-Mahram man, even his hands or feet, and it is forbidden for the man to permit her. The contemporary spiritual leaders (Mashaikh) should take heed that foreign young female disciples—and they themselves are not weak—then kiss their feet, kiss their hands, and touch them to their eyes. It is obligatory (Farz) upon them to strictly prevent them from such actions. Similarly, some people have their hands, feet, or back rubbed by a barber woman or a maidservant while bathing; this is also forbidden and avoidance is obligatory. "La hawla wa la quwwata illa billahil 'Aliyyil 'Azeem". However, if the woman is very old and weak such that she is not a source of temptation (Fitna), or if the man is a very old and weak man and there is no possibility of mischief from either side, then shaking hands (Musafaha) is permitted. I say: Likewise, that woman shall not be prohibited from touching his feet, and by the same analogy, rubbing the back is permitted when there is safety from temptation in every way. And Allah Almighty knows best.	4	658
47	77 Problem: Recitation is disliked (Makruh) where any impurity is present.	2	663
48	Problem: If someone in a state of ritual impurity (Junub) or a woman in menstruation (Hayd) or postnatal bleeding (Nifas) is present nearby, there is no harm in reciting the Great Quran. In fact, if one is lying with his head in the lap of his menstruating or postnatal wife, he can still recite at that time.	3	663
49	Problem: In cloth, the weft (bana) is considered, not the warp (tana). If the weft is silk, it is unlawful for a man, even if the	2	679

Serial No.	Titles / Subjects	Benefit No.	Page No.
	warp is cotton. And if the weft is cotton, it is permissible even if the warp is silk.		
50	Problem: Eating clay is forbidden, meaning in large amounts that are harmful. It is permissible to taste a little from the sacred soil of healing (Khak-e-Shifa) for blessings, like lime in a betel leaf (pan), as stated in Insaf al-Ihtisab.	3	696
51	Problem: Lime made from sea shells is forbidden; it is forbidden to eat a betel leaf on which that lime is applied.	2	701
52	Problem: Without necessity, applying something on the forehead that disfigures the face is impermissible.	2	702

फ़तावा रज़विया खंड चार

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
45	मसला: दूसरे की शरई लौंडी (कनीज़) अगर उसके सिर में तेल डाले या हाथ-पाँव दबाए या नहलाने में उसका पेट-पीठ मले, तो जायज़ है बशर्ते कि नीयत बुरी न हो।	3	658
46	मसला: निहायत ही ज़रूरी मसला: आज़ाद औरत के लिए किसी गैर-महरम मर्द के बदन को छूना हराम है, चाहे वह हाथ-पाँव ही क्यों न हों, और मर्द पर उसे इसकी इजाज़त देना हराम है। ज़माने के मशाइख़ को इससे सबक लेना चाहिए कि अजनबी जवान मुरीदनियाँ, और वे स्वयं भी कमज़ोर नहीं हैं, फिर वे उनके कदम चूमती हैं, उनके हाथों को बोसा देती हैं, आँखों से लगाती हैं; उन पर फ़र्ज़ है कि उन्हें इन हरकतों से सख़्ती से रोकें। इसी तरह, कुछ लोग नहाने के दौरान नाई की बीवी या दासी से हाथ-पाँव या पीठ मलवाते हैं; यह भी हराम है और इससे बचना फ़र्ज़ है। "ला हौल वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम"। हाँ, अगर औरत बहुत ही वृद्ध हो कि फ़ितने (बुराई) की आशंका न हो, या मर्द बहुत बूढ़ा और कमज़ोर हो और दोनों तरफ से किसी भी प्रकार के बिगाड़ की संभावना न हो, तो मुसाफ़ा (हाथ मिलाने) की इजाज़त है। मैं कहता हूँ: तो इसी तरह उस औरत को उसके पैर छूने से मना नहीं किया जाएगा और इसी कयास (अनुमान) पर पीठ मलना भी जायज़ है जब हर तरह से फ़ितने से अमन हो। वल्लाहु तआला आलम।	4	658
47	77 मसला: जहाँ कोई गंदगी (नजासत) पड़ी हो, वहाँ तिलावत करना मकरूह है।	2	663
48	मसला: अगर कोई जुनबी (नापाक व्यक्ति) या हैज़ या निफ़ास वाली औरत पास मौजूद हो, तो कुरआन-ए-अज़ीम की तिलावत में कोई हर्ज नहीं है। बल्कि अगर कोई अपनी हैज़ या निफ़ास वाली पत्नी की गोद में सिर रखकर लेटा हो, तो उस वक़्त भी तिलावत कर सकता है।	3	663

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
49	मसला: कपड़े में बाने (चौड़ाई के धागे) का एतबार होता है, ताने (लंबाई के धागे) का लिहाज़ नहीं। बाना अगर रेशम हो, तो मर्द के लिए नाजायज़ है चाहे ताना सूत हो, और अगर बाना सूत है तो जायज़ है चाहे ताना रेशम हो।	2	679
50	मसला: मिट्टी खाना हराम है, यानी ज़्यादा मात्रा में जो नुकसानदेह हो। ख़ाक-ए-शिफ़ा शरीफ़ से बरकत के तौर पर थोड़ा सा चख लेना जायज़ है, जैसे पान में चूना, जैसा कि 'इंसाफ़ अल-इहतिसाब' में है।	3	696
51	मसला: सीप का चूना हराम है, जिस पान पर वह चूना लगा हो उसका खाना हराम है।	2	701
52	मसला: बिना ज़रूरत माथे पर कोई ऐसी चीज़ लगाना जिससे शक्ल बिगड़े, नाजायज़ है।	2	702

فتاوی رضویہ جلد چہارم

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۴۵	مسئلہ: دوسرے کی کنیز شرعی اگر اس کے سر میں تیل ڈالے یا ہاتھ پاؤں دبائے یا نہلانے میں اس کا پیٹ پیٹھ ملے جائز ہے جبکہ نیت بد نہ ہو۔	۳	۶۵۸
۴۶	مسئلہ: مسئلہ ضروریہ اشد ضروریہ: آزاد عورت کو حرام ہے کہ کسی نامحرم مرد کے بدن کو ہاتھ لگائے اگرچہ ہاتھ پاؤں کو، اور مرد پر حرام ہے کہ اسے اس کی اجازت دے، یہاں سے مشائخ زمانہ سبق لیں کہ اجنبی جوان مریدات اور وہ خود بھی ضعیف نہیں پھر یہ ان کے قدم لیتیں ان کے ہاتھوں کو بوسہ دیتیں آنکھوں سے لگاتی ہیں ان پر فرض ہے کہ انہیں ان حرکات سے بشدت روکیں، یوں ہی بعض لوگ نہانے میں نائن یا اصیل سے ہاتھ پاؤں یا پیٹھ ملواتے ہیں یہ بھی حرام ہے اور احتراز فرض لا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم۔ البتہ اگر عورت بہت ضعیفہ بڑھیا ہے کہ محل فتنہ نہیں یا یہ بہت ضعیف بوڑھا ہے اور طرفین سے کسی جانب احتمال فساد نہیں تو مصافحہ کی اجازت ہے۔ اقول: تو یو نہی اس کے پاؤں چھونے سے اس عورت کو ممانعت نہ کی جائے گی اور اسی قیاس پر پیٹھ ملنا جبکہ ہر طرح فتنہ سے امن ہو واللہ تعالیٰ اعلم۔	۴	۶۵۸
۴۷	۷۷ مسئلہ: جہاں کوئی نجاست پڑی ہو تلاوت مکروہ ہے۔	۲	۶۶۳
۴۸		۳	۶۶۳

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: اگر کوئی جنب یا حیض یا نفاس والی عورت پاس موجود ہو تو قرآن عظیم کی تلاوت میں کوئی حرج نہیں بلکہ اگر اپنی عورت حائضہ یا نفساء کی گود میں سر رکھے لیٹا ہو اس وقت بھی تلاوت کرسکتا ہے۔		
۴۹	مسئلہ: کپڑے میں بانے کا اعتبار ہوتا ہے تانے کا لحاظ نہیں، بانا اگر ریشم ہو مرد کو ناجائز ہے اگرچہ تانا سوت ہو اور بانا سوت ہے تو جائز اگرچہ تانا ریشم ہو۔	۲	۶۷۹
۵۰	مسئلہ: مٹی کھانا حرام ہے یعنی زیادہ کہ مضر ہے خاک شفا شریف سے تبرکاً قدرے چکھ لینا جائز ہے جیسے پان میں چونا، کما فی انصاف الاحتساب۔	۳	۶۹۶
۵۱	مسئلہ: سیپ کا چونا حرام ہے جس پان پر وہ چونا لگا ہو اس کا کھانا حرام ہے۔	۲	۷۰۱
۵۲	مسئلہ: بلا ضرورت دوامنہ پر کوئی ایسی چیز سانتا جس سے صورت بگڑے نا جائز ہے۔	۲	۷۰۲

Fatawa Rizwia - Volume 4

Serial Number	Titles / Topics	Benefit Number	Page Number
53	Issue: It is forbidden to mutilate (muthla) even combatant infidels in Jihad, i.e., cutting noses or ears after killing. However, during the actual fight, any blow that severs something brings great reward.	3	702
54	Necessary Issue: Some youths play with mud and rub it on each other's faces, or jokingly blacken someone's face while they are sleeping; all of this is forbidden.	4	702
55	Issue: Just as it is forbidden for someone without ablution (wudu) to touch the letters of the Holy Quran, so too is it forbidden to touch its blank margins, its binding, or its cloth cover attached to the spine. However, touching it when it is in a separate cover (juz-dan) or a hard case is permissible.	1	723
56	Issue: It is not permissible for a Muslim to voluntarily humiliate themselves, e.g., by serving an infidel. A Hadith has forbidden this.	3	755
57	Issue: If a Muslim is dying of hunger or thirst, it is obligatory for other Muslims to help. In such a situation, if he finds food or water with someone else, it is obligatory for him to ask for it, and it is obligatory for the other to give it if they are not in desperate need themselves.	8	755
58	Issue: Wasting water is forbidden.	8	807
59	Issue: Wasting wealth is forbidden.	1	808

Issues of Reviving Dead Lands

Serial Number	Titles / Topics	Benefit Number	Page Number
1	Issue: Wild grass does not belong to the landowner; it belongs to whoever cuts it. But if the land was	1	417

Serial Number	Titles / Topics	Benefit Number	Page Number
	plowed and watered so that grass would grow, then this grass becomes the owner's property, and others cannot take it without permission.		
2	Issue: Permissible things like river water or wild fruits/flowers in a forest belong to whoever reaches them first and takes possession, as per the details mentioned ahead.	2	422
3	Issue: It is not valid to make someone else one's deputy, agent, servant, or helper to bring a permissible thing. The person appointed as an agent will become the owner once they take possession.	4	422

फ़तावा रज़विया - जिल्द चौथी

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा संख्या	पृष्ठ संख्या
53	मसला: जिहाद में हरबी काफिरों के साथ भी मुसला करना यानी कत्ल के बाद नाक, कान काटना हराम है। हाँ ऐन किताल में जहाँ भी ज़रब हो जो कुछ भी कता किया जाए कमाल अज्र है।	3	702
54	मसला ज़रूरिया: बाज़ नौजवान जो आपस में कीचड़ से खेलते हैं एक दूसरे के मुँह पर कीचड़ मलते हैं या हँसी से किसी के सोते में उसके मुँह पर कालिख लगाते हैं ये सब हराम है।	4	702
55	मसला: जिस तरह बे वज़ू को कुरान मजीद के हर्फ़ों को छूना हराम है यूँही उसके हाशिये की सादा ब्याज़ को, यूँही उसकी जिल्द को, यूँही चोली को जो पट्ठों पर चढ़ी हुई है, हाँ जुज़दान या मक़व्वे में हो तो उनका छूना जायज़ है।	1	723
56	मसला: मुसलमान को जायज़ नहीं कि बाख्तियार खुद अपने नफ़्स को ज़िल्लत में डाले मसलन ख़िदमतगारी काफिर की नौकरी हदीस में इससे मना फ़रमाया।	3	755
57	मसला: अगर कोई मुसलमान भूख या प्यास से मरता हो उसकी एआनत मुसलमानों पर फ़र्ज़ है। ऐसी हालत में अगर वो दूसरे के पास खाना पानी पाए उस पर माँगना फ़र्ज़ है और ये खुद मजबूरन न मोहताज न हो तो उस पर देना फ़र्ज़ है।	8	755
58	मसला: पानी ज़ाया करना हराम है।	8	807
59	मसला: माल ज़ाया करना हराम है।	1	808

मसाइल एह्या-ए-मवात (बंजर भूमि को जीवित करने के मसले)

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा संख्या	पृष्ठ संख्या
1		1	417

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा संख्या	पृष्ठ संख्या
	मसला: खुद रौ घास मालिक की मिल्क नहीं होती जो काट ले उसी की है मगर अगर ज़मीन जोती उसे पानी दिया कि घास उगे तो अब ये घास उसकी मिल्क होगी दूसरा बे उसकी इजाज़त के नहीं ले सकता।		
2	मसला: मुबाह चीज़ जैसे दरियाओं का पानी जंगल का खुद रौ फल फूल उन पर जिसका हाथ पहले पहुँच जाए और कब्ज़ा करले वही मालिक हो जाता है उस तफ़सील पर जो आगे मज़कूर है।	2	422
3	मसला: किसी मुबाह चीज़ के लाने के लिए दूसरे को अपना नाएब या वकील या खादिम या मददगार बनाना सही नहीं जिसे वकील किया जब वो कब्ज़ा करेगा वही मालिक हो जाएगा।	4	422

पृष्ठ 729 का 761

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۵۳	مسئلہ: جہاد میں حربی کافروں کے ساتھ بھی مثلہ کرنا یعنی قتل کے بعد ناک، کان کاٹنا حرام ہے۔ ہاں عین قتال میں جہاں بھی ضرب ہو جو کچھ بھی قطع کیا جائے کمال اجر ہے۔	۳	۷۰۲
۵۴	مسئلہ ضرور یہ: بعض نوجوان جو آپس میں کیچڑ سے کھیلتے ہیں ایک دوسرے کے منہ پر کیچڑ ملتے ہیں یا ہنسی سے کسی کے سوتے میں اس کے منہ پر کالک لگاتے ہیں یہ سب حرام ہے۔	۴	۷۰۲
۵۵	مسئلہ: جس طرح بے وضو کو قرآن مجید کے حرفوں کو چھونا حرام ہے یونہی اس کے حاشیہ کی سادہ بیاض کو، یونہی اس کی جلد کو، یونہی چولی کو جو پٹھوں پر چڑھی ہوئی ہے، ہاں جزدان یا مقوے میں ہو تو ان کا چھونا جائز ہے۔	۱	۷۲۳
۵۶	مسئلہ: مسلمان کو جائز نہیں کہ باختیار خود اپنے نفس کو ذلت میں ڈالے مثلاً خدمت گاری کافر کی نوکری حدیث میں اس سے منع فرمایا۔	۳	۷۵۵

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۵۷	مسئلہ: اگر کوئی مسلمان بھوک یا پیاس سے مرتا ہو اس کی اعانت مسلمانوں پر فرض ہے۔ ایسی حالت میں اگر وہ دوسرے کے پاس کھانا پانی پائے اس پر مانگنا فرض ہے اور یہ خود مجبوراً نہ محتاج نہ ہو تو اس پر دینا فرض ہے۔	۸	۷۵۵
۵۸	مسئلہ: پانی ضائع کرنا حرام ہے۔	۸	۸۰۷
۵۹	مسئلہ: مال ضائع کرنا حرام ہے۔	۱	۸۰۸

مسائل احیاء موات

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: خود رو گھاس مالک کی ملک نہیں ہوتی جو کاٹ لے اسی کی ہے		
۱	مگر اگر زمین جوتی اسے پانی دیا کہ گھاس اُگے تو اب یہ گھاس اس کی ملک ہو گی دوسرا بے اس کی اجازت کے نہیں لے سکتا۔	۱	۴۱۷
	مسئلہ: مباح چیز جیسے دریاؤں کا پانی جنگل کا خود رو پھل پھول ان پر		
۲	جس کا ہاتھ پہلے پہنچ جائے اور قبضہ کرلے وہی مالک ہو جاتا ہے اس تفصیل پر جو آگے مذکور ہے۔	۲	۴۲۲
۳		۴	۴۲۲

مسئلہ: کسی مباح چیز کے لانے کیلئے دوسرے کو اپنا نائب یا وکیل یا خادم یا مددگار بنانا صحیح نہیں جسے وکیل کیا جب وہ قبضہ کرے گا وہی مالک ہو جائے گا۔

Fatawa-e-Razvia Volume 4

Serial No.	Titles / Topics	Point No.	Page No.
4	Ruling: If someone was asked without wages to bring wood or leaves etc. from the forest for me, or for example, to hunt a deer or fish, and he did so, he himself becomes the owner of the wood, leaves, or game. Similarly, if snow falling from the sky in the forest was asked to be brought, the person who picked it up will be the owner.	1	423
5	Ruling: Acquisition of permissible (mubah) things, such as taking grass, wood, game from an unowned forest, or water from a river, canal, or well; there can be no partnership in this such that one person acquires it and both become owners. Rather, whoever takes as much of something, he alone will be its owner. And things that both obtained together, for example, both cut a piece of wood, then both will be its owners. And if one took possession and the other was a helper, the thing will belong to the one who took possession, and the helper will receive the wages that are usually given for such work.	6	428
6	Ruling: Whoever digs a well in government land with the Sultan's permission, another person shall not be allowed to dig a well within forty yards around it.	4	573
	Rulings on Drinking		
1	Ruling: The water of a well does not belong to the owner of the well; it is the pure property of God.	5	416
2	Ruling: Rainwater that fills someone's vessel on its own, the owner of the vessel will not be its owner; whoever takes it, it belongs to them. Yes, his vessel cannot be used without his permission.	2	417
3	Ruling: If someone kept a vessel specifically for the purpose of collecting rainwater in it, then he alone will be the owner of that water; another cannot take it without his permission.	3	417
4		2	434

Serial No.	Titles / Topics	Point No.	Page No.
	Necessary Ruling: Water carriers' children often fill water at wells and people take water from them for drinking or ablution (wudu); this is forbidden (haram).		
5	Ruling: As long as a water carrier (saqqa) has not poured the water into someone's vessel, he himself is the owner of the water. If he filled a water-skin to take to Zaid's house and took it to his vessels, even then he has the choice not to pour it there and take it elsewhere or do as he pleases. Yes, once he has poured it into his (Zaid's) vessel, now he cannot take it back without his permission.	4	434

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

क्रमांक	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
4	मसला: अगर किसी से बिना मजदूरी के कहा गया कि मेरे लिए जंगल से लकड़ियाँ या पत्तियाँ आदि ले आओ या उदाहरण के लिए हिरण या मछली का शिकार कर लाओ, और उसने ऐसा किया, तो वह स्वयं उन लकड़ियों, पत्तियों या शिकार का मालिक बन गया। इसी तरह, जंगल में आसमान से गिरने वाली बर्फ मँगवाई गई, तो उसे उठाने वाला ही उसका मालिक होगा।	1	423
5	मसला: मुबाह (अनुमेय) चीजों की प्राप्ति, जैसे गैर-मलिकियाती जंगल से घास, लकड़ी, शिकार या नदी, नहर या कुएं से पानी लेना; इसमें ऐसी कोई साझेदारी नहीं हो सकती कि एक व्यक्ति इसे प्राप्त करे और दोनों मालिक बन जाएं। बल्कि जो जितना लेगा, वही अकेला उसका मालिक होगा। और जो चीजें दोनों ने मिलकर प्राप्त कीं, जैसे दोनों ने मिलकर एक लकड़ी काटी, तो दोनों उसके मालिक होंगे। और यदि एक ने कब्जा किया और दूसरा सहायक था, तो वस्तु कब्जा करने वाले की होगी और सहायक को वह मजदूरी मिलेगी जो आमतौर पर ऐसे काम के लिए दी जाती है।	6	428
6	मसला: जो सुल्तान की अनुमति से सरकारी जमीन में कुआं खोदे, उसके चारों ओर चालीस-चालीस हाथ तक दूसरे को कुआं खोदने की अनुमति नहीं होगी।	4	573
	पीने के मसले		
1	मसला: कुएं का पानी कुएं के मालिक का नहीं होता, वह विशुद्ध रूप से ईश्वर की संपत्ति है।	5	416
2	मसला: बारिश का पानी जो खुद-ब-खुद किसी के बर्तन में भर जाए, बर्तन वाला उसका मालिक नहीं होगा; जो उसे ले लेगा वह उसी का है। हाँ, उसके बर्तन का उपयोग उसकी अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता।	2	417

क्रमांक	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
3	मसला: यदि किसी ने इसी उद्देश्य से बर्तन रखा कि उसमें बारिश का पानी आए, तो वही उस पानी का मालिक होगा; दूसरा उसकी अनुमति के बिना उसे नहीं ले सकता।	3	417
4	ज़रुरी मसला: भिस्तियों (पानी भरने वालों) के बच्चे अक्सर कुओं पर पानी भरते हैं और लोग उनसे पीने या वज़ू के लिए पानी लेते हैं, यह हराम है।	2	434
5	मसला: जब तक पानी भरने वाला (सक्का) किसी के बर्तन में पानी न डाल दे, वह स्वयं उस पानी का मालिक है। यदि उसने ज़ैद के घर ले जाने के लिए मशक भरी और उसके बर्तनों तक ले गया, तब भी उसे यह अधिकार है कि वह वहाँ न डाले और कहीं और ले जाए या जो चाहे करे। हाँ, जब उसने उसके बर्तन में डाल दिया, तो अब वह उसकी अनुमति के बिना उसे नहीं ले सकता।	4	434

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۴	مسئلہ: کسی سے بلااجرت کہا جنگل سے میرے لئے لکڑیاں یا پتے وغیرہ لے آؤ یا مثلاً ہرن یا مچھلی شکار کر لاؤ اس نے کیا لکڑیوں پتوں شکار کا خود ہی مالک ہوا یوں ہی مالک ہوا یوں ہی جنگل میں جو برف آسمان سے گرا وہ منگوایا تو اٹھانے والا ہی مالک ہوگا۔	۱	۴۲۳
۵	مسئلہ: مباح چیزوں کی تحصیل، جیسے غیر مملوک جنگل سے گھاس لکڑی شکار یا دریا یا نہر کنویں سے پانی لینا اس میں شرکت نہیں ہو سکتی کہ ایک کرے اور دونوں کی ملک ہو بلکہ جو جتنی چیز لے گا وہی تنہا اس کا مالک ہوگا اور جو چیز دونوں نے مل کر حاصل کی مثلاً ایک لکڑی دونوں نے کاٹی تو دونوں اس کے مالک ہوں گے اور اگر ایک نے قبضہ کیا اور دوسرا مددگار تھا تو چیز قابل کی ہوگی اور مددگار کو مزدوری ملے گی جو کچھ ایسے کام پر ملتی ہو۔	۶	۴۲۸
۶	مسئلہ: جو سرکاری زمین میں باذن سلطان کنواں کھودے اس کے گرد چالیس چالیس ہاتھ تک دوسرے کو کنواں کھودنے کی اجازت نہ ہو گی۔	۴	۵۷۳
	مسائل شرب		
۱	مسئلہ: کنویں کا پانی کنویں کے مالک کا نہیں خالص ملک خدا ہے۔	۵	۴۱۶

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۲	مسئلہ: مینہ کا پانی جس کے برتن میں خود بھر جائے برتن والا اس کا مالک نہ ہوگا جو لے لے اسی کا ہے۔ ہاں اس کا برتن بے اس کی اجازت استعمال نہیں کر سکتا۔	۲	۴۱۷
۳	مسئلہ: اگر کسی نے برتن اسی غرض سے رکھا کہ اس میں مینہ کا پانی آئی تو اس پانی کا وہی مالک ہوگا دوسرا بے اس کی اجازت کے نہیں لے سکتا۔	۳	۴۱۷
۴	مسئلہ ضروریہ: بہشتیوں کے بچہ اکثر کنووں پر پانی بھرتے اور لوگ ان سے پینے یا وضو کو پانی لیتے ہیں یہ حرام ہے۔	۲	۴۳۴
۵	مسئلہ: سقاجب تک کسی کے برتن میں نہ ڈال دے پانی کا خود مالک ہے اگر زید کے گھر لے جانے کو مشک بھری اور اس کے برتنوں تک لے گیا اور اس وقت بھی اسے اختیار ہے کہ وہاں نہ ڈالے دوسری جگہ لے جائے یا جو چاہے کرے، ہاں جب اس کے برتن میں ڈال دیا اب بے اس کی اجازت کے نہیں لے سکتا۔	۴	۴۳۴

Fatawa Razawiya - Volume 4

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page
6	Issue: For water stored by a Bohr (a specific community) which is their property, even in a state of non-need, there is difficulty for their parents to derive benefit from it.	6	434
7	An extremely difficult issue: It is mentioned in highly reliable books that if a minor takes water from a pond or well and puts some of it back, then all the water in that pond or well becomes prohibited for everyone.	1	435
8	Issue: If someone brings a minor's owned water from their house and pours it into a well or a public (Mubah) pond, its use will also become prohibited in the same way.	4	435
9	Issue: The parents of this minor can use this water by consensus (Bil-Ittifaq) on the condition of need, and according to one report, even without need.	5	435
10	Issue: This water owned by a minor that has mixed into a well or a public pond cannot be purchased at any price, nor can it be sold by the minor or their guardian (Wali).	1	436
11	Issue: If water owned by a minor is mixed with someone else's owned water, for example, in a pitcher etc., then the use of that water will also become prohibited in the same way, even for its owner.	2	436
12	Issue: This is not specific to water etc.; whenever any property of a minor is mixed with something else such that it becomes indistinguishable—for example, a minor's water in someone's milk, or water mixed with juice, or wheat with wheat, or rice with rice—the same ruling applies: that item becomes prohibited even for the owner themselves.	3	436
13	Issue: Water filled from a well or public pond by someone's legal (Shar'i) slave or maidservant can be made permissible with the permission of the sane, adult owner. Permission may be given now, or if they are absent, permission can be given when they receive the news. If the owner is a minor or	6	436

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page
	mentally incapacitated (Ma'tooh), then permission will be required after they reach adulthood and sanity.		
14	Issue: These rulings are for stagnant water, even if it is a large pond (Dah-Dar-Dah) or more. If a minor's owned water is mixed into flowing water, its use will not be prohibited.	9	436

फ़तावा रज़विया - जिल्द चौथी

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नंबर	पेज
6	मसला: बोहरे के भरे हुए पानी से जो उसकी मिल्क (स्वामित्व) हो, बिना ज़रूरत की हालत में उसके माँ-बाप को उससे लाभ उठाने में भी कठिनाई है।	6	434
7	अत्यंत कठिन मसला: बहुत विश्वसनीय किताबों में है कि अगर नाबालिग ने हौज या कुएँ से पानी लेकर उसका कुछ हिस्सा उसमें डाल दिया, तो अब उस हौज या कुएँ का सारा पानी सब पर हराम (वर्जित) हो गया।	1	435
8	मसला: नाबालिग का स्वामित्व वाला पानी अगर उसके घर से लाकर भी कोई व्यक्ति कुएँ या मुबाह (सार्वजनिक) हौज में डाल देगा, तो उसका इस्तेमाल भी इसी तरह हराम हो जाएगा।	4	435
9	मसला: यह पानी उस नाबालिग के माता-पिता ज़रूरत की शर्त पर सर्वसम्मति (ब-इत्तिफ़ाक़) से इस्तेमाल कर सकते हैं और एक रिवायत (वर्णन) के अनुसार बिना ज़रूरत के भी।	5	435
10	मसला: नाबालिग की मिल्कियत का यह पानी जो कुएँ या मुबाह हौज में मिल गया, किसी भी तरह कितने ही दामों में खरीदा नहीं जा सकता, न इसकी बिक्री हो सकती है और न ही इसके वली (अभिभावक) द्वारा बेचना जायज़ है।	1	436
11	मसला: नाबालिग की मिल्कियत का पानी अगर किसी के स्वामित्व वाले पानी में मिल जाए, जैसे कि घड़े आदि में, तो उस पानी का इस्तेमाल भी उसी तरह हराम हो जाएगा, यहाँ तक कि उसके मालिक के लिए भी।	2	436
12	मसला: यह केवल पानी आदि के लिए विशिष्ट नहीं है; नाबालिग की मिल्कियत की कोई भी चीज़ जब दूसरी चीज़ में इस तरह मिल जाए कि पहचानना असंभव हो जाए—जैसे किसी के दूध में नाबालिग का पानी, या पानी में अर्क(रस), या गेहूँ में गेहूँ या चावल में चावल—तब भी यही हुक्म है कि वह चीज़ स्वयं मालिक पर भी हराम हो गई।	3	436

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नंबर	पेज
	मसला: किसी के शरई दास या दासी ने जो पानी कुएँ या मुबाह हौज से भरा, वह अक्ल वाले और बालिग मालिक की अनुमति से जायज़ हो सकता है।		
13	अनुमति अभी दे दे या यदि वह अनुपस्थित है तो समाचार पहुँचने पर अनुमति दे दे। और अगर उसका मालिक नाबालिग या मंदबुद्धि (मातूह) है, तो उसके बालिग और समझदार होने के बाद उसकी अनुमति आवश्यक है।	6	436
14	मसला: ये नियम ठहरे हुए पानी के लिए हैं, चाहे वह 'दह दर दह' (बड़ा तालाब) या उससे अधिक हो। यदि बहते पानी में नाबालिग की मिल्कियत का पानी मिल जाए, तो उसका इस्तेमाल नाजायज़ नहीं होगा।	9	436

فتاوی رضویہ - جلد چہارم

نمبر شمار	عنوانات	صفحہ نمبر	فائدہ نمبر
۶	مسئلہ: بوہرے کے بھرے ہوئے پانی سے جو اس کی ملک ہو بے حالتِ احتیاج اس کے ماں باپ کو انتفاع میں بھی دقت ہے۔	۴۳۴	۶
۷	مسئلہ بغایت مشکلہ: بہت معتمد کتابوں میں ہے کہ اگر نابالغ نے حوض یا کنویں سے پانی لے کر کچھ حصہ اس میں ڈال دیا اب اس حوض یا کنویں کا پانی سب پر حرام ہو گیا۔	۴۳۵	۱
۸	مسئلہ: نابالغ کا مملوک پانی اگر اس کے گھر سے لاکر بھی کوئی شخص کنویں یا مباح حوض میں ڈال دے گا اس کا استعمال بھی اسی طرح حرام ہو جائے گا۔	۴۳۵	۴
۹	مسئلہ: یہ پانی اس نابالغ کے والدین بشرطِ احتیاج بالاتفاق استعمال کر سکتے ہیں اور ایک روایت پر بلا احتیاج بھی۔	۴۳۵	۵
۱۰	مسئلہ: نابالغ کی ملک کا یہ پانی کہ کنویں یا مباح حوض میں مل گیا کسی طرح کتنے ہی داموں کو خریدا بھی نہیں جا سکتا نہ اس کی بیع نہ اس کے ولی کی۔	۴۳۶	۱
۱۱		۴۳۶	۲

نمبر شمار	عنوانات	صفحہ نمبر	فائدہ
	مسئلہ: نابالغ کی ملک کا پانی اگر کسی کے مملوک پانی میں مل جائے گا مثلاً گھڑے وغیرہ میں تو اس پانی کا استعمال بھی یو نہی حرام ہو جائے گا حتیٰ کہ اس کے مالک کو۔		
۱۲	مسئلہ: کچھ پانی وغیرہ کی خصوصیت نہیں نابالغ کی ملک کی کوئی چیز جب دوسری چیز میں اس طرح مل جائے گی کہ تمیز نا ممکن ہو مثلاً کسی کے دودھ میں نابالغ کا پانی یا پانی میں عرق یا گیہوں میں گیہوں یا چاول میں چاول جب بھی یہی حکم ہے کہ وہ چیز خود مالک پر بھی حرام ہو گئی۔	۴۳۶ ۳	
۱۳	مسئلہ: کسی کے غلام یا کنیز شرعی نے جو پانی کنویں یا مباح حوض سے بھرا وہ مالک عاقل بالغ کی اجازت سے جائز ہو سکتا ہے اب اجازت دے یا غائب ہے اور اسے خبر پہنچے اس وقت اجازت دے اور اگر اس کا مالک نابالغ یا معتوہ ہے تو عاقل بالغ ہونے کے بعد اس کی اجازت درکار ہے۔	۴۳۶ ۶	
۱۴	مسئلہ: یہ احکام ٹھہرے ہوئے پانی میں ہیں اگر چہ دہ دردہ یا زائد ہو جاری پانی میں اگر نابالغ کی ملک کا پانی مل جائے تو اس کا استعمال نا جائز نہ ہو گا۔	۴۳۶ ۹	

Fatawa Razawiya Volume 4

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page No.
15	Ruling: Water in which a minor's urine has been mixed cannot be used, nor can it be thrown away, nor can it be boiled. I say: However, when a well becomes impure, and there is a command to draw out all or some buckets of water, then apparently permission should be given for this. For the intention in this is rectification, not corruption. Don't you see that when a cistern owned by a minor contains water and it becomes impure, it is purified by parts [overflow/flow] and is not left spoiled for the child, so reflect. (Because the aim is to rectify the water, not its spoilage. Haven't you seen that when a cistern is a child's property and contains water which then becomes impure, the water is made to flow to purify it, and spoiled water is not left for the child? Ponder on it.) And the safer way is that if there is any animal belonging to the minor, give the amount of water he added to that animal to drink, or if any building is being constructed for him, put it in the mortar, or keep those buckets as accounted for which remain to be taken out from the well. This is what is evident to me, and Allah knows best.	2	437
16	Ruling: If it was evaporated or seeped away, it becomes permissible without difficulty.	3	437
17	Ruling: Praise be to Allah, a difficult matter made easy: whatever amount of water the minor put into the cistern or well, fill that much or more and give it to them; the use of the rest becomes permissible.	1	439
18	Ruling: For permissibility here, the flow of water is neither absolutely sufficient nor always necessary, rather as much water should be removed as the minor had added.	6	439
1	**Rules of Blood Money (Diyat)**	5	259

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page No.
	Ruling: Fingers are the primary part of the hand; therefore, if someone's fingers are cut off, the blood money (diyat) for the whole hand becomes mandatory.		
	Rules of Indebtedness (Madai'nat)		
1	Ruling: If someone owes another, for example, a hundred rupees, which they have withheld or for some other reason, and there is no hope of getting that money back, then one can take as much of their property as is equal to the value of a hundred rupees. Nowadays, a fatwa has been given on this, but the value of the property should be exactly one hundred rupees according to a true heart and market rate; if it is even one paisa more, it is haram upon haram (absolutely forbidden).	2	393

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

क्रम संख्या	शीर्षक	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
15	मसला: जिस पानी में नाबालिग का पेशाब मिल गया हो, उसे जिस तरह उपयोग में नहीं ला सकते, वैसे ही फेंक भी नहीं सकते और न ही उबाल सकते हैं। मैं कहता हूँ, लेकिन जब कुआँ नापाक (अशुद्ध) हो जाए, तो उस समय सभी या कुछ बाल्टी निकालने का हुक्म हो, तो जाहिर है इसकी अनुमति होनी चाहिए। क्योंकि इसमें उद्देश्य सुधार है न कि बिगाड़। क्या आपने नहीं देखा कि जब एक हौज़ किसी बच्चे के स्वामित्व में हो और उसमें पानी हो, फिर वह नापाक हो जाए, तो पानी बहाकर उसे पाक किया जाता है और बच्चे के लिए खराब पानी नहीं छोड़ा जाता, तो गौर करें। (क्योंकि इसमें पानी का सुधार करना उद्देश्य है, बिगाड़ना नहीं। क्या आपने नहीं देखा कि जब हौज़ बच्चे की मिल्कियत हो और उसमें पानी हो फिर नजिस हो जाए तो पानी जारी करके उसे पाक किया जाता है और फ़ासिद पानी को बच्चे के लिए नहीं छोड़ा जाता, ग़ौर करो।) और अधिक सुरक्षित यह है कि यदि उस नाबालिग का कोई जानवर हो, तो जितना पानी उसने डाला था, वह उस जानवर को पिला दें, या उसके लिए कोई इमारत बन रही हो, तो उसके गारे (मसाले) में डाल दें, या उन बाल्टियों को भी हिसाब में रखें जो कुएँ से निकाली जानी बाकी हों। यह वह है जो मुझ पर स्पष्ट हुआ और अल्लाह ताला बेहतर जानने वाला है।	2	437
16	मसला: यदि भाप या रिसाव के कारण वह उबल गया तो बिना किसी कठिनाई के वैध हो गया।	3	437
17	मसला: अलहम्दुलिल्लाह, मुश्किल काम आसान हुआ: हौज़ या कुएँ में नाबालिग ने जितना पानी डाला है, उतना या उससे अधिक भरकर उसे दे दें, बाकी का उपयोग वैध हो गया।	1	439
18		6	439

क्रम संख्या	शीर्षक	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
	मसला: यहाँ वैधता के लिए पानी का प्रवाह न तो पूर्णतः पर्याप्त है और न ही हमेशा आवश्यक है, बल्कि उतना पानी निकल जाना चाहिए जितना नाबालिग ने डाला था।		
	दियत के मसाइल (मुआवजे के नियम)		
1	मसला: हाथ में उंगलियां असल (मुख्य अंग) हैं, इसलिए यदि कोई किसी की उंगलियां काट दे, तो पूरे हाथ की दियत अनिवार्य होगी।	5	259
	मदाइनात के मसाइल (लेनदेन के नियम)		
1	मसला: जिसके किसी पर मान लीजिए सौ रुपये बकाया हों जिन्हें उसने दबा लिया हो या किसी और कारण से हो और उसे वह रुपया मिलने की उम्मीद न हो, तो सौ रुपये की कीमत तक उसका जो माल मिले, ले सकता है। आजकल इस पर फतवा दिया गया है, लेकिन सच्चे दिल से और बाज़ार भाव से माल सौ रुपये का ही होना चाहिए; यदि एक पैसा भी ज्यादा हो तो वह हराम दर हराम (पूरी तरह वर्जित) है।	2	393

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱۵	مسئلہ: جس پانی میں نابالغ کا پانی مل گیا اسے جس طرح صرف میں نہیں لاسکتے یوں ہی پھینک بھی نہیں سکتے ابال بھی نہیں کرسکتے۔ اقول مگر جب کہ کنواں ناپاک ہوجائے اس وقت کل یا بعض جتنے ڈول نکالنے کا حکم ہو بظاہر اس کی اجازت ہونی چاہئے فان القصد فیہ الی الاصلاح دون الافساد الاتری اذا کان حوضا مملوکا لصغیر فیہ ماؤہ فتنجس فانہ یطہر بالاجزاء ولا یترک فاسدا علی الصبی فلیتأمل (کیونکہ اس میں مقصود پانی کی اصلاح ہے پانی کا فساد مقصود نہیں۔ کیا آپ نے نہیں دیکھا کہ جب حوض بچے کی ملکیت ہو اور اس میں پانی ہو پھر نجس ہو جائے تو پانی جاری کر کے اسے پاک کیا جاتا ہے اور فاسد پانی کو بچے کیلئے نہیں چھوڑا جاتا، غور کر وت) اور اسلم یہ ہے کہ اس نابالغ کی ملک کا اگر کوئی جانور ہو جتنا پانی اس نے ڈالا تھا اس جانور کو پلادیں یا اس کی کوئی عمارت بنتی ہو اس کے گارے میں ڈال دیں یا ڈول بھی محسوب رکھیں جو باقی رہے کنویں سے اور نکال لیں ھذا ماعندی واللہ اعلم (یہ وہ ہے جو مجھ پر ظاہر ہوا اور اللہ تعالٰی زیادہ بہتر جاننے والا ہے۔ت)	۲	۴۳۷
۱۶	مسئلہ: اگر بینہ یا سیل نے اسے ابال دیا تو بلا دقت جواز ہوگیا۔	۳	۴۳۷
۱۷		۱	۴۳۹

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: الحمدللہ مشکل کی سہل آسانی حوض یا کنویں میں نابالغ نے جتنا پانی ڈالا ہے اتنا یا اس سے زائد بھر کر اسے دے دیں باقی کا استعمال جائز ہو گیا۔		
۱۸	مسئلہ: یہاں جواز کیلئے پانی کا جریان نہ مطلقا کافی نہ ہمیشہ ضرور بلکہ اتنا پانی نکل جانا چاہی جتنا نابالغ نے ڈالا تھا۔	۶	۴۳۹
	مسائل دیت		
۱	مسئلہ: ہاتھ میں انگلیاں اصل ہیں ولندا اگر کسی کی انگلیاں کاٹ دیں پورے ہاتھ کی دیت لازم آئی گی۔	۵	۲۵۹
	مسائل مدائناات		
۱	مسئلہ: جس کے کسی پر مثلاً سو روپئے آتے ہوں کہ اس نے دبالئے یا اور کسی وجہ سے ہوئی اور اسے اس روپیہ ملنے کی امید نہیں تو سو روپیے کی مقدار تک اس کا جو مال ملے لے سکتا ہے آج کل اس پر فتوی دیا گیا ہے مگر سچے دل سے بھاؤ سے سو ہی روپیے کا مال ہو زیادہ ایک پیسہ کا ہو تو حرام در حرام ہے۔	۲	۳۹۳

Fatawa-e-Razvia, Volume 4

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
2	Issue: If a decree is passed against a debtor, his wealth will be taken to pay the debt, but necessary wearing clothes cannot be taken.	7	659

फ़तावा-ए-रजविया, खंड 4

क्रम संख्या	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
2	मसला: यदि किसी ऋणी के विरुद्ध डिक्री पारित की जाती है, तो ऋण चुकाने के लिए उसकी संपत्ति ली जाएगी, लेकिन आवश्यक पहनने के कपड़े नहीं लिए जा सकते।	7	659

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۲	مسئلہ : مدیون پر ڈگری ہوئی اس کا مال ادائی دین میں لیا جائے گا مگر پہننے کے ضروری کپڑے نہیں لی جاسکتے۔	۷	۶۵۹

Fatawa Rizwia Volume Four

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page No.
9	Ruling: A teacher who has the authority to take service from a child can do this: ask the child to fetch water, provided he is sensible and has the strength to pull the vessel, such as a bucket or pitcher, out of the well after filling it. When he brings it to the top of the well, at that time the teacher should take it from his hand and pull it out of the well himself or have an adult student etc. take it out. Now the use of this water will be permissible.	1	434
10	Ruling: Parents, grandfathers, and grandmothers can take work from their child, either because they are needy, or they do not have the strength to hire a servant, or to instill the habit of teaching work and discipline to the child.	10	437
11	**Inheritance Matters (Masail Fara'id)**		
	Ruling: The need for ritual bathing (ghusl), shrouding (kafan), and burial (dafan) takes precedence even over the distribution of inheritance and the payment of debts. Until these are completed, no creditor will receive anything, no will (wasiyat) will be implemented, nor will anything be given to any heir.	6	659
	Jurisprudential Matters (Masail Fiqhiyya)		
1	Ruling: Greater caution is that Sadaqah al-Fitr, ransom (fidya) for fasts and prayers, expiation (kaffara) for oaths, etc., should be given in the measure of half a 'sa' (measure) of wheat or barley. That is, a vessel in which one hundred and forty rupees weight of barley comes up to a perfectly level surface, neither high nor low; consider that full vessel of wheat as one Sadaqah. We have experienced that in the half 'sa' measure of barley, using the Bareilly 'seer' (weight unit) which is of one hundred rupees weight, there comes one and three-quarter seers and half a rupee (athanni) weight of wheat. This much should be given per person.	1	144
2		1	145

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page No.
	Ruling: The sunnah amount of water for wudu alone, according to the Rampuri seer which is of ninety-six (96) rupees weight, is approximately one seer and half a 'pao' (one-eighth of a seer). And the rest for ghusl is nearly four and a half seers. Total for ghusl is a little more than five and a half seers and a 'chhatank'.		
3	Ruling: A command (hukm) is for a wisdom (hikmat), but the command does not depend on the wisdom. A servant must follow the command whether the wisdom known to him is present or not. For example, the reduction to two (2) rak'ahs during travel is for the wisdom that travel is a hardship and hardship seeks ease. Then, even if the king of the time faces no hardship in travel, but rather finds more comfort and joy from sightseeing and hunting, he will still perform Qasr (shortening prayers) because he is concerned with the command, not the wisdom.	6	244

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
9	मसला: उस्ताद जिसे बच्चे से सेवा लेने का अधिकार है, वह यह कर सकता है कि बच्चे से पानी भरने को कहे जबकि वह समझदार हो और उस बर्तन जैसे डोल या घड़े को भरकर कुएं से निकालने की शक्ति रखता हो। जब वह उसे भरकर कुएं तक ले आए, उस समय उस्ताद उसके हाथ से लेकर कुएं से बाहर स्वयं निकाल ले या किसी वयस्क शिष्य आदि से निकलवा ले। अब इस पानी का उपयोग जायज़ होगा।	1	434
10	मसला: माता-पिता, दादा-दादी अपने बच्चे से काम ले सकते हैं, या तो इसलिए कि वे मोहताज हैं या नौकर रखने की शक्ति नहीं रखते, या बच्चे को अदब (शिष्टाचार) सिखाने और काम सिखाने की आदत डालने के लिए।	10	437
11	**विरासत के नियम (मसाइल फराएज़)**		
	मसला: ग़ुस्ल (स्नान), कफ़न और दफ़न की ज़रूरत विरासत के वितरण और यहाँ तक कि ऋणों की अदायगी पर भी प्राथमिकता रखती है। जब तक इनसे छुट्टी न मिल जाए, कोई भी लेनदार कुछ नहीं पाएगा, न ही कोई वसीयत लागू की जाएगी और न ही किसी वारिस को कुछ दिया जाएगा।	6	659
	न्यायशास्त्र के मुद्दे (मसाइल फिक़्हीया)		
1	मसला: अधिक सावधानी यह है कि सदक़ा-ए-फ़ितर, रोज़ा-नमाज़ का फ़िदिया और क़सम का कफ़्फ़ारा आदि में आधा साअ (एक माप) गेहूँ जौ के पैमाने से दिए जाएँ। यानी जिस बर्तन में एक सौ चालीस रुपये के बराबर जौ ठीक समतल सतह तक आ जाएँ न ऊँचे हों न नीचे, उस बर्तन भर गेहूँ को एक सदक़ा समझा जाए। हमने अनुभव किया है कि आधा साअ जौ के पैमाने में, बरेली के'सेर' से जो सौ रुपये भार का है, पौने दो सेर और एक अठन्नी ऊपर गेहूँ आते हैं। प्रति व्यक्ति इतना दिया जाए।	1	144
2		1	145

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
	मसला: अकेले वुज़ू का सुन्नत पानी रामपुरी सेर से जो छियानवे (96) रुपये भार का है, लगभग सवा सेर (एक सेर और आधा पाव ऊपर) है, और बाकी ग़ुस्ल का साढ़े चार सेर के करीब है। कुल ग़ुस्ल का साढ़े पाँच सेर और एक छटाँक से कुछ ज़्यादा है।		
3	मसला: हुक्म (आदेश) हिकमत (तर्क/बुद्धिमत्ता) के लिए होता है, लेकिन हुक्म हिकमत पर निर्भर नहीं रहता। बंदे को हुक्म का पालन करना चाहिए, चाहे उसे मालूम हिकमत मौजूद हो या नहीं। जैसे सफ़र में दो (2) रकात की कमी (क़स्र) इस हिकमत के लिए है कि सफ़र मशक़्क़त (कठिनाई) है और मशक़्क़त आसानी चाहती है। फिर अगर समय के बादशाह को सफ़र में कोई कठिनाई न हो, बल्कि सैर-सपाटे और शिकार से और भी अधिक आराम और खुशी मिले, तब भी वह क़स्र करेगा क्योंकि उसे हुक्म से सरोकार है न कि हिकमत से।	6	244

فتاوی رضویہ جلد چہارم

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسئلہ: استاد جسے بچہ سے خدمت لینے کا اختیار ہے یہ کر سکتا ہے کہ بچہ سے پانی بھرنے کو کہے جبکہ وہ ہوشیار ہو اور اس برتن مثلاً ڈول یا گھڑے		
۹	کو بھر کر کنوئیں سے نکالنے کی طاقت رکھتا ہو جب وہ اسے بھر کر کنوئیں تک لائے اس وقت استاد اس کے ہاتھ سے لے کر کنوئیں سے باہر خود نکال لے یا کسی بالغ شاگرد وغیرہ سے نکلوائے اب اس پانی کا استعمال جائز ہوگا۔	۱	۴۳۴
	مسئلہ: ماں باپ دادا دادی اپنے بچے سے کام لے سکتے ہیں یا تو یوں کہ		
۱۰	محتاج ہیں یا نوکر رکھنے کی طاقت نہیں یا بچے کو ادب دینے کام سکھانے کی عادت ڈالنے کیلئے۔	۱۰	۴۳۷
۱۱	**مسائل فرائض**		
	مسئلہ: غسل کفن دفن کی حاجت تقسیم تر کہ بلکہ ادائے دیون پر بھی مقدم ہے		
	جب تک اس سے فراغ نہ ہو لے کوئی قرض خواہ بھی کچھ نہ پائے گا، نہ	۶	۶۵۹
	کوئی وصیت نافذ کی جائے گی نہ کسی وارث کو کچھ دیا جائے گا۔		
	مسائل فقہیہ		
	مسئلہ: زیادہ احتیاط یہ ہے کہ صدقہ فطر وفدیہ روزہ نماز و کفارہ قسم وغیرہ		
۱	میں نیم صاع گیہوں جو کے پیمانے سے دئے جائیں یعنی جس برتن میں ایک	۱	۱۴۴

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	سو چالیس روپے بھر جو ٹھیک ہموار سطح سے آجائیں کہ نہ اونچے رہیں نہ نیچے اس برتن بھر کر گیہوں کو ایک صدقہ سمجھا جائے ہم نے تجربہ کیا پیمانہ نیم صاع جو میں بریلی کے سیر سے کہ سوروپے بھر کا ہے اٹھنی بھر اوپر پونے دو سیر گیہوں آتے ہیں فی کس اتنے دئے جائیں۔		
۲	مسئلہ: تنہا وضو کا مسنون پانی رامپوری سیر سے کہ چھیانوے ۹۶ روپے بھر کا ہے تقریباً آدھ پاؤ اوپر سیر بھر ہے اور باقی غسل کا ساڑھے چار سیر کے قریب مجموع غسل کا چھٹانک اوپر ساڑھے پانچ سیر سے کچھ زیادہ۔	۱	۱۴۵
۳	مسئلہ: حکم حکمت کیلئے ہوتا ہے مگر حکمت پر اس کا مدار نہیں رہتا بندہ کو حکم کا اتباع چاہی حکمت جوا سے معلوم ہے موجود ہو یا نہیں، جیسے سفر میں دو ۲ رکعت کی تخفیف اس حکمت کیلئے ہے کہ سفر مشقت ہے اور مشقت طالب آسانی۔ پھر اگر بادشاہ وقت کو سفر میں کوئی مشقت نہ پہنچے بلکہ سیر و شکار سے اور زیادہ راحت و فرحت ہو جب بھی قصر کرے گا کہ اسے حکم سے کام ہے نہ کہ حکمت سے۔	۶	۲۴۴

Fatawa Rizwia Volume 4

Serial No.	Titles	Note No.	Page
4	Note: When 'muhdith' (one in a state of ritual impurity) is mentioned generally, it refers to one without wudu (ablution), not one for whom ghusl (ritual bath) is mandatory.	2	255
5	Ruling: In trust, gift, charity, partnership, mudarabah, and usurpation, the specific rupees or gold coins given are designated. For example, if 100 rupees are kept with Zaid as a trust, it is forbidden for Zaid to replace those rupees with another 100 rupees. Or if someone's gold coin is snatched, it is obligatory to return that exact gold coin; he cannot give another in replacement even if it is of the exact same mint and condition.	3	419
6	Ruling: In matters of jurisprudence (fiqh), a dominant presumption is like certainty, otherwise, it is like an unreliable delusion.	7	421
7	Note: One 'astar' is 1 Tola, 8 Masha, 2 Ratti, and one 'ratl' is 33 Tola, 9 Masha.	3	560
8	Ruling: The concessions granted by the pure Shariah—for example, a traveler can miss a fast and make it up later, perform two cycles instead of four obligatory ones, or perform tayammum (dry ablution) if water is a mile away—apply to both the obedient and the disobedient. If someone traveled for an unlawful purpose, he shall still shorten prayers (qasr) and make up fasts later. And one who, God forbid, becomes 'junub' (ritually impure) through adultery and finds no water shall perform tayammum.	6	636
9	Ruling: Always remember that slight hardship can never be an excuse for not fulfilling divine commands; only severe hardship constitutes an excuse.	3	632
10	Ruling: In matters of reward (thawab), one should not give preference to others over oneself, i.e., leaving an act so another can do it. I say: except in matters of etiquette (adab), where giving preference is a great closeness to God. For instance, in the funeral prayer, the command is to prioritize the father even if the	5	655

Serial No.	Titles	Note No.	Page
	son has the right. It is stated in 'Bada'i': "Advancing is forbidden so as not to disrespect the father, so his authority does not lapse by advancement."		
11	Ruling: Four types of worship: intended and conditional upon purity, intended and unconditional, conditional and unintended, unintended and unconditional, and their examples.	9	664
12	Ruling: It is recommended (mustahabb) to avoid the disagreement of Imams as much as possible, provided it doesn't lead to something disliked (makruh) in one's own school. For example, a person with wudu touches/scratches his private organ; according to us, wudu is not lost, but according to Imam Shafi'i (may Allah be pleased with him), it is. So, it's better to perform wudu. However, if he performed wudu and sat there and scratched again, he shouldn't perform wudu again right there because repeating wudu without changing the gathering is disliked; rather, he should change the place and then perform wudu.	5	808

फ़तावा रज़विया जिल्द 4

क्रमांक	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ
4	नोट: जब 'मुहद्दिस' (muhdith) शब्द का प्रयोग सामान्य रूप से किया जाता है, तो इसका अर्थ वह व्यक्ति होता है जिसने वुज़ू नहीं किया है, न कि वह जिस पर ग़ुस्ल अनिवार्य है।	2	255
5	मसला: अमानत, हिबा (उपहार), सदका, भागीदारी (शिरकत), मुज़ारबत और ग़सब (छीनने) में जो रुपये या अशरफ़ी दी जाती है, वही निर्धारित होती है। उदाहरण के लिए, यदि ज़ैद के पास अमानत के रूप में 100 रुपये रखे गए हैं, तो ज़ैद के लिए उन रुपयों को दूसरे 100 रुपयों से बदलना हराम है। या यदि किसी की अशरफ़ी छीनी गई है, तो वही विशेष अशरफ़ी उसे वापस करना फ़र्ज़ है; वह उसके बदले दूसरी अशरफ़ी नहीं दे सकता, भले ही वह बिल्कुल वैसी ही मुद्रा और वैसी ही स्थिति में हो।	3	419
6	मसला: फ़िक़्ह (इस्लामी न्यायशास्त्र) के मसलों में, यदि 'ज़न-ए-ग़ालिब' (प्रबल संभावना) हो तो वह यक़ीन के समान है, अन्यथा वह अविश्वसनीय भ्रम के समान है।	7	421
7	नोट: एक 'अस्तार' (astar) 1 तोला, 8 माशा, 2 रत्ती का होता है और 'रतल' (ratl) 33 तोले, 9 माशे का।	3	560
8	मसला: शरीयत-ए-मुतहरा जो रियायतें प्रदान करती है—उदाहरण के लिए, एक यात्री रोज़ा छोड़ सकता है और बाद में उसकी क़ज़ा कर सकता है, चार अनिवार्य रकातों की जगह दो पढ़ सकता है, यदि पानी एक मील दूर हो तो नमाज़ी तयम्मुम (सूखा वुज़ू) कर सकता है—इनमें आज्ञाकारी और अवज्ञाकारी सभी शामिल हैं। यदि किसी ने किसी नाजायज़ काम के लिए यात्रा की हो, तो वह भी क़स्र करेगा और रोज़े की क़ज़ा करेगा। और जो, अल्लाह न करे, व्यभिचार (ज़िना) के कारण 'जुनुब' (अपवित्र) हो गया हो और उसे पानी न मिले, वह तयम्मुम करेगा।	6	636

क्रमांक	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ
9	मसला: हमेशा याद रखें कि ईश्वरीय आदेशों के पालन में थोड़ी सी कठिनाई कभी बहाना नहीं हो सकती; केवल गंभीर कठिनाई ही एक बहाना है।	3	632
10	मसला: सवाब (पुण्य) के कार्य में दूसरे को स्वयं पर वरीयता देना कि वह कार्य करने के लिए आप उसे छोड़ दें, ऐसा नहीं करना चाहिए। मैं कहता हूँ: सिवाय अदब (शिष्टाचार) के स्थान पर, क्योंकि यहाँ वरीयता देना ही बड़ी निकटता है। जैसे कि जनाज़ा की नमाज़ में आदेश है कि पिता को आगे किया जाए, भले ही बेटे का हक़ हो। 'बदाइ' में है: "आगे बढ़ने से मना किया गया है ताकि पिता का अनादर न हो, अतः आगे बढ़ने से उसका अधिकार समाप्त नहीं होता।"	5	655
11	मसला: इबादत के चार प्रकार: शुद्धता पर आधारित और लक्षित, लक्षित लेकिन बिना शुद्धता की शर्त के, शुद्धता पर आधारित लेकिन अलक्षित, अलक्षित और बिना शुद्धता की शर्त के, और उनके उदाहरण।	9	664
12	मसला: जहाँ तक संभव हो, इमामों के मतभेद से बचना मुस्तहब (पसंदीदा) है, जब तक कि अपने पंथ (मज़हब) में कोई मकरूह (नापसंद) बात अनिवार्य न हो जाए। उदाहरण के लिए, वुज़ू वाले व्यक्ति ने अपने निजी अंग को खुजलाने के लिए हाथ लगाया; हमारे पास वुज़ू नहीं गया, लेकिन इमाम शाफ़ई (रज़ियल्लाहु अन्हु) के अनुसार चला गया, तो मुस्तहब है कि वह फिर से वुज़ू कर ले। लेकिन अगर उसने वुज़ू किया और वहीं बैठकर फिर खुजलाया, तो वह वहीं दोबारा वुज़ू न करे क्योंकि सभा (मजलिस) बदले बिना दोबारा वुज़ू करना मकरूह है; बल्कि उसे सभा बदलकर वुज़ू करना चाहिए।	5	808

فتاوی رضویہ جلد چہارم

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۴	ف: محدث جب مطلق ہو تو اس سے مراد بے وضو ہوتا ہے نہ وہ جس پر غسل ہے۔	۲	۲۵۵
۵	مسئلہ: امانت و ہبہ و صدقہ و شرکت و مضاربت و غصب میں روپے اشرفی جو دئے گئے وہی متعین ہوتے ہیں مثلاً سو روپے زید کے پاس امانت رکھے زید کو حرام ہے کہ ان روپوں کو دوسرے سو روپوں سے بدلے یا کسی کی اشرفی چھینی خاص وہی اشرفی اسے پھیر دینا فرض ہے دوسری بدل کر نہیں دے سکتا اگرچہ بعینہ وہی سکہ وہی حالت ہو۔	۳	۴۱۹
۶	مسئلہ: مسائل فقہ میں ظن اگر غالب ہو مثل یقین ہے ورنہ مثل وہم نامعتبر۔	۷	۴۲۱
۷	ف: استار ایک تولہ ۸ ماشہ دورتی ہے اور رطل ۳۳ تولے ۹ ماشے۔	۳	۵۶۰
۸	مسئلہ: شریعت مطہرہ جو رخصتیں عطا فرماتی ہے مثلاً مسافر روزہ قضا کر سکتا ہے چار رکعتیں فرض کی دو پڑھئے گا پانی میل بھر دور ہو تو نمازی تیمم کرے ان میں مطیع عاصی سب شریک ہوتے ہیں اگر کسی نے کسی ناجائز کام کیلئے سفر کیا ہو وہ بھی قصر کرے گا اور روزہ قضا کرے گا اور جو معاذ اللہ زنا سے جنب ہوا اور پانی نہ پایا تیمم کرے گا۔	۶	۶۳۶
۹		۳	۶۳۲

نمبر شمار	عنوانات	صفحہ نمبر	فائدہ
	مسئلہ: ہمیشہ یاد رہے کہ احکام الٰہیہ بجالانے میں قلیل مشقت کبھی عذر نہیں ہوسکتی مشقت شدید عذر ہے۔		
	مسئلہ: ثواب کی بات میں دوسرے کو اپنے اوپر ترجیح دینی کہ اس کے کرنے کیلئے آپ چھوڑنی یہ نہ چاہئے اقول: مگر محل ادب میں کہ یہاں اسے ترجیح		
۱۰	دینا ہی بڑی قربت ہے جیسے نمازِ جنازہ میں حکم ہے کہ باپ کو مقدم کرے اگرچہ بیٹے کا حق ہے بدائع میں ہے: منع التقدم لئلا یستخف بأبیہ فلم تسقط ولایتہ بالتقدیم۔	۵ ۶۵۵	
	مسئلہ: عبادت کی چار قسمیں مقصودہ مشروطہ بطہارت، مقصودہ غیر		
۱۱	مشروطہ، مشروطہ غیر مقصودہ، غیر مقصودہ و غیر مشروطہ اور ان کی مثالیں۔	۹ ۶۶۴	
	مسئلہ: اختلافِ ائمہ سے حتی الامکان بچنا مستحب ہے جب تک اپنے مذہب کا کوئی مکروہ نہ لازم آئے مثلاً باوضو نے اپنے عضو مخصوص کو کھجانے میں ہاتھ لگایا ہمارے نزدیک وضو نہ گیا امام شافعی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے		
۱۲	نزدیک جاتا رہا تو مستحب ہے کہ وضو کرلے لیکن اگر وضو کرکے وہیں بیٹھا ہے اور کھجایا تو وہیں دوبارہ وضو نہ کرے کہ بے مجلس بدلے دوبارہ وضو مکروہ ہے بلکہ مجلس بدل کر وضو کرنا چاہیے۔	۵ ۸۰۸	

Fatawa Razawiyya Volume 4

Serial Number	Titles	Note Number	Page Number
	Rasm al-Mufti		
1	Necessary Benefit: Discussions contrary to the Madhab (school of thought), even if by Imam Ibn al-Humam, are not acceptable when the contradiction does not arise from the changes of the times.	2	21
2	Note: A ruling mentioned in the books of Hadith commentary that contradicts the books of Fiqh is not reliable.	3	188
3	Note: If a thing is mentioned in absolute terms, it will itself indicate its causes, conditions, rulings, and effects.	7	190
4	Note: There are two meanings of 'Shar'i': acceptable in Sharia and required in Sharia.	1	202
5	Note: There are six things due to which the Imam's statement changes, hence actions are taken contrary to the apparent statement. Those six things are: 1. Necessity, 2. Removal of hardship, 3. Custom ('Urf), 4. Common practice (Ta'amul), 5. Achievement of an essential religious interest, 6. Elimination of an existing or strongly suspected corruption. In all these, in reality, it is still the Imam's statement that is being acted upon.	3	385
6	Note: For these same reasons, authentic and emphasized Hadiths are sometimes acted against, and that is not considered a contradiction. For example, the attendance of women in congregational, Jumu'ah, and Eid prayers; while it was the command during the Prophetic era, it is now absolutely forbidden.	1	386
7	Note: Allama Shami states: We have made the Taqleed (following) of Imam Azam obligatory upon ourselves	7	388

Serial Number	Titles	Note Number	Page Number
	and not anyone else's, therefore our Madhab is called Hanafi, and not Yusufi etc. after Imam Abu Yusuf etc.		
8	Note: Regarding the issues transmitted from the Imam for which the scholars (Mashaikh) have deduced proofs, even if the weakness of those proofs is established, it does not imply the weakness of the Imam's statement, let alone the Imam's proof. It is possible the Imam based his statement on a different proof.	2	389
9	Issue: When the Imam's statement is not found on a matter, action should be taken according to the statement of Imam Abu Yusuf. After him, Imam Muhammad, then Imam Zufar, then Imam Hasan bin Ziyad and others like Imam Abdullah bin Mubarak, Imam Asad bin Amr, Imam Zahid, Layth bin Sa'd, Imam Arif Dawud Ta'i and other great companions of the Imam (may Allah be pleased with him and them all).	6	400

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
	रस्म अल-मुफ़्ती		
१	ज़रूरी फ़ायदा: मज़हब के खिलाफ़ बहसें, चाहे वे इमाम इब्न अल-हुमाम की ही क्यों न हों, स्वीकार्य नहीं हैं जब तक कि विरोध समय के परिवर्तन के कारण न हो।	२	२१
२	फ़: हदीस की व्याख्या की किताबों में जो मसला फ़िक़्ह की किताबों के खिलाफ़ हो, वह विश्वसनीय नहीं है।	३	१८८
३	फ़: यदि किसी चीज़ का उल्लेख निरपेक्ष रूप से किया जाता है, तो वह स्वयं अपने कारणों, शर्तों, निर्णयों और प्रभावों को इंगित करेगी।	७	१९०
४	फ़: 'शरई' के दो अर्थ हैं: शरीयत में स्वीकार्य और शरीयत में अपेक्षित।	१	२०२
५	फ़: छह बातें ऐसी हैं जिनके कारण इमाम का कथन बदल जाता है, इसलिए ज़ाहिर कथन के विरुद्ध कार्य किया जाता है। वे छह बातें हैं: १. आवश्यकता, २. कठिनाई को दूर करना, ३. प्रथा ('उर्फ़), ४. आपसी व्यवहार (तआमुल), ५. धार्मिक रूप से आवश्यक हित की प्राप्ति, ६. किसी मौजूद या प्रबल अनुमानित भ्रष्टाचार का उन्मूलन। इन सब में भी वास्तव में इमाम के कथन पर ही अमल होता है।	३	३८५
६	फ़: इन्हीं कारणों से सही और पुख्ता हदीसों के खिलाफ़ किया जाता है और वह विरोध नहीं माना जाता। जैसे महिलाओं का जमाअत, जुमा और ईद की नमाज़ में उपस्थित होना, जो रिसालत के समय में हुक्म था और अब पूरी तरह से मना है।	१	३८६
७	फ़: अल्लामा शामी फ़रमाते हैं: हमने केवल इमाम-ए-आज़म की तक़लीद को अपने ऊपर अनिवार्य किया है न कि किसी और की, इसीलिए हमारा मज़हब हनफ़ी कहलाता है, न कि इमाम अबू यूसुफ़ आदि के नाम पर यूसुफ़ी आदि।	७	३८८

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
८	फ़: इमाम से जो मसाइल वर्णित हैं जिनके प्रमाण मशाइख़ ने निकाले हैं, यदि उनका कमज़ोर होना साबित भी हो जाए, तो इमाम के कथन का कमज़ोर होना तो दूर, इमाम के प्रमाण का कमज़ोर होना भी साबित नहीं होता। संभव है कि इमाम ने किसी और प्रमाण से बात कही हो।	२	३८९
९	मसला: जब किसी मसले में इमाम का कथन न मिले, तो इमाम अबू यूसुफ़ के कथन पर अमल किया जाए। उनके बाद इमाम मुहम्मद, फिर इमाम ज़ुफ़र, फिर इमाम हसन बिन ज़ियाद और अन्य जैसे इमाम अब्दुल्ला बिन मुबारक, इमाम असद बिन अम्र, इमाम ज़ाहिद, लैथ बिन साद, इमाम आरिफ़ दाऊद ताई और इमाम (रज़ियल्लाहु अन्हु) के अन्य महान साथियों के कथनों पर अमल किया जाए।	६	४००

पृष्ठ ७३६ का ७६१

فتاوی رضویہ جلد چہارم

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	رسم المفتی		
۱	فائدہ ضروریہ: خلاف مذہب بحثیں اگرچہ امام ابن الہمام کی ہوں مقبول نہیں جبکہ خلاف اختلاف زمانہ سے ناشی نہ ہو۔	۲	۲۱
۲	ف: کتب شروح حدیث میں جو مسئلہ کتب فقہ کے خلاف ہو معتبر نہیں۔	۳	۱۸۸
۳	ف: شئی اگرچہ مطلق ذکر کی جائے اپنے اسباب و شروط و احکام و آثار پر خود ہی دلالت کرے گی۔	۷	۱۹۰
۴	ف: شرعی کے دو معنی ہیں مقبول فی الشرع و مطلوب فی الشرع۔	۱	۲۰۲
۵	ف: چھ باتیں ہیں جن کے سبب قولِ امام بدل جاتا ہے لہٰذا قولِ ظاہر کے خلاف عمل ہوتا ہے اور وہ چھ باتیں ۱۔ ضرورت، ۲۔ دفع حرج، ۳۔ عرف، ۴۔ تعامل، ۵۔ دینی ضروری مصلحت کی تحصیل، ۶۔ کسی فسادِ موجود یا مظنون بظنِ غالب کا ازالہ ان سب میں بھی حقیقۃً قولِ امام ہی پر عمل ہے۔	۳	۳۸۵
۶	ف: انہیں وجوہ سے صحیح و مؤکد احادیث کا خلاف کیا جاتا ہے اور وہ خلاف نہیں ہوتا جیسے عورتوں کا جماعت و جمعہ و عیدین میں حاضر ہونا کہ زمانہ رسالت میں حکم تھا اور اب مطلقاً منع ہے۔	۱	۳۸۶
۷		۷	۳۸۸

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	ف: علامہ شامی فرماتے ہیں: ہم نے صرف تقلید امام اعظم اپنے اوپر لازم کی ہے نہ کسی اور کی ولذا ہمارا مذہب حنفی کہا جاتا ہے، نہ یوسفی وغیرہ امام ابویوسف وغیرہ کی نسبت سے۔		
۸	ف: امام سے مسائل منقول بین دلائل مشائخ نے استنباط کی ہیں ان کا ضعف اگر ثابت بھی ہو تو قولِ امام کا ضعف لازم آنا در کنار دلیل امام کا بھی ضعف ثابت نہیں ہوتا ممکن ہے کہ امام نے اور دلیل سے فرمایا ہو۔	۲	۳۸۹
۹	مسئلہ: جب کسی مسئلہ میں امام کا قول نہ ملے امام ابویوسف کے قول پر عمل ہو ان کے بعد امام محمد پھر امام زفر پھر امام حسن بن زیاد و غیرہم مثل امام عبداللہ بن مبارک و امام اسد بن عمر و امام زاہد و لیث بن سعد و امام عارف داؤد طائی و غیرہم اکابر اصحاب امام رضی اللہ تعالیٰ عنہ و عنہم کے اقوال پر عمل ہو۔	۶	۴۰۰

Fatawa Razawiya, Volume 4

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page No.
10	Benefit: Makruh Tahrimi (prohibitively disliked) can be called Haram (forbidden).	3	408
11	Benefit: In the same matter, a Mufti's fatwa can differ based on the way the question is asked. If asked about it one way, he might say it's permissible; if asked another way, he might say it's impermissible. This difference arises from the difference in circumstances.	3	484
12	Benefit: If a reliable Imam specifies a restriction in any issue and its contrary is not proven from others, it is obligatory to accept. I say, there are four scenarios: Others have neither affirmed nor denied it, which is the aforementioned scenario. Some others differed and preference is given to it [the restriction]. When the ruling is the same and preference is given to it, then the opposite. And if no one was given preference, then according to the custom, what is most cautious, easiest, most consistent, or most fitting should be considered and approved.	1	581
13	Benefit: The restriction by commentators is not a contradiction to the absolute statements of original texts, but rather an explanation of what is intended.	2	581
14	Benefit: Repetition of issues in the scholarly discourses is not a flaw. Imam Muhammad (may Allah be pleased with him) mentioned issues repeatedly in his books so that people would memorize them, whether they intended to or not.	9	820

Beliefs

1 | Great Benefit: Every good deed washes away sins, but the transfer of the legal impurity of sins towards what was spent in closeness (to God) occurs only in what the Pure Shari'ah specifically designated for the establishment of that closeness, like water in Wudu and Ghusl, or wealth in Zakat. If this rule were absolute, then a good deed would turn into an evil one. For instance, giving water to drink is certainly a rewarding act. Now, if the impurity of sins entered the water taken for drinking, the

water would become impure or spoiled, and giving impure or disliked water to drink would be an evil, not a good deed. From here it is clear that the humiliated Wahhabis, by analogizing with Zakat, describe the food of Niyaz of Awliya (saints) with the word 'Khabaathat' (filth), saying that filth has entered it due to it being Sadaqah, as is in Wahhabis' 'Barahin-e-Qati'ah' etc. This is merely the filth and folly of those filthy people. By Niyaz of Awliya, the food becomes blessed. Yes, it is filth for the filthy, as Allah Almighty says: | 7 | 244

"Evil women are for evil men, and evil men are for evil women; and good women are for good men, and good men are for good women. Those [good people] are innocent of what they [the slanderers] say. For them is forgiveness and a noble provision."

Filthy women are for filthy men, and filthy men are for filthy women; and pure women are for pure men, and pure men are for pure women. The pure men and pure women are free from the talk of those filthy ones. And praise be to Allah.

फ़तावा रज़विया, जिल्द चार

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
10	फ़ायदा: मकरूह तहरीमी को हराम कह सकते हैं।	3	408
11	फ़ायदा: एक ही चीज़ में सवाल के अंतर से मुफ्ती का फतवा बदल जाता है। इसी चीज़ को पूछेंगे तो जायज़ कहेगा, उसी को पूछेंगे तो नाजायज़ कहेगा। स्थितियों के अंतर से यह अंतर पैदा होता है।	3	484
12	फ़ायदा: किसी मसले में कोई विश्वसनीय इमाम जो पाबंदी ज़्यादा फ़रमाई और दूसरों से उसका विरोध सिद्ध न हो, तो वह स्वीकार करना वाजिब है। मैं कहता हूँ, स्थितियाँ चार हैं: दूसरों के यहाँ इसका कोई निषेध या प्रमाण नहीं है, यही वह उपरोक्त स्थिति है। कुछ दूसरों ने विरोध किया और प्राथमिकता इसे है। जब नियम वही हो और प्राथमिकता इसे हो, तो इसके विपरीत। और अगर किसी को प्राथमिकता नहीं दी गई तो नियम के अनुसार जो सबसे अधिक सावधान, आसान, संगत या उपयुक्त हो, उसे देखा और माना जाएगा।	1	581
13	फ़ायदा: टीकाकारों द्वारा लगाई गई पाबंदी मूल ग्रंथों के निरपेक्ष कथनों का विरोध नहीं है, बल्कि उसका अर्थ स्पष्ट करना है।	2	581
14	फ़ायदा: विद्वानों के प्रवचनों में मसलों का दोहराव कोई दोष नहीं है। इमाम मुहम्मद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने अपनी किताबों में मसले बार-बार ज़िक्र फ़रमाए ताकि लोग उन्हें चाहे-अनचाहे याद कर लें।	9	820

अक़ाइद

1 | फ़ायदा जलीला: हर नेक काम से गुनाह धुलते हैं, लेकिन जो चीज़ इबादत (क़ुर्बत) में खर्च की गई, उसकी तरफ़ गुनाहों की हुक्मी नापाकी (नजासत-ए-हुकमिया) का आना केवल उसी चीज़ में है जिसे विशेष रूप से शरीयत-ए-मुतह्हरा ने उस इबादत के लिए तय किया हो, जैसे वज़ू और गुस्ल में पानी या ज़कात में माल। यदि यह नियम निरपेक्ष होता, तो नेकी बदी में बदल जाती। उदाहरण के लिए, पानी पिलाना निश्चित रूप से सवाब का काम है। अब अगर पिलाने के लिए लिए गए पानी में

गुनाहों की नापाकी आ जाए, तो पानी नापाक या खराब हो जाएगा, और नापाक या मकरूह पानी पीने के लिए देना एक बुराई होगी, नेकी नहीं। यहाँ से स्पष्ट हुआ कि अपमानित वहाबियों का ज़कात पर क़यास (तुलना) करके औलिया की नियाज़ के खाने को, मआज़ल्लाह, 'खबात' (गंदगी) शब्द से संबोधित करना कि सदक़ा होने के कारण इसमें गंदगी आ गई है, जैसा कि वहाबियों की 'बराहीन-ए-क़ातिआ' आदि में है, यह केवल उन नापाकों की नापाकी और मूर्खता है। औलिया की नियाज़ से खाना बरकत वाला हो जाता है। हाँ, नापाकों के लिए वह नापाकी है, जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है: | 7 | 244

"खराब औरतें खराब मर्दों के लिए हैं और खराब मर्द खराब औरतों के लिए, और पाक औरतें पाक मर्दों के लिए हैं और पाक मर्द पाक औरतों के लिए। ये (पाक लोग) उन बातों से पाक हैं जो वो (बदनाम करने वाले) कहते हैं। उनके लिए मग़फ़िरत (क्षमा) और इज़्ज़त वाली रोज़ी है।"

गंदियां गंदों के लिए हैं और गंदे गंदियों के लिए, और सुथरी सुथरों के लिए और सुथरे सुथरियों के लिए। सुथरे और सुथरी उन गंदों की बातों से पाक हैं। और तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं।

पृष्ठ 737 का 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱۰	فائدہ: مکروہ تحریمی کو حرام کہہ سکتے ہیں۔	۳	۴۰۸
	فائدہ: ایک ہی چیز میں اختلاف سوال سے مفتی کا فتوی مختلف ہو جاتا ہے		
۱۱	اسی چیز کو پوچھیں کہے گا جائز ، اسی کو پوچھیں کہے ناجائز ، اختلاف احوال سے یہ اختلاف پیدا ہوتا ہے۔	۳	۴۸۴
	فائدہ: کسی مسئلہ میں کوئی امام معتمد جو قید زیادہ فرمائی اور اوروں سے اس کا خلاف ثابت نہ ہو واجب القبول ہے اقول صورتیں چار ہیں دوسروں کے		
۱۲	یہاں اس کی نفی اثبات کچھ نہیں یہی وہ صورت مذکور ہے بعض دیگر نے خلاف کیا اور ترجیح اسے ہے جب بی حکم وہی ہے اور ترجیح اسے ہے تو بالعکس اور کسی کو ترجیح نہ دی گئی تو حسب دستور احوط یا ایسر یا اوفق یا اوفق ملحوظ و منظور۔	۱	۵۸۱
۱۳	فائدہ: تقید شراح اطلاق متون کی مخالفت نہیں بلکہ بیان مراد ہے۔	۲	۵۸۱
	فائدہ: افادات علماء میں تکرار مسائل معیوب نہیں امام محمد رضی اللہ تعالیٰ		
۱۴	عنہ نے اپنی کتب میں مسائل مکرر ذکر فرمائی کہ لوگوں کو خود ہی خواہی نخواہی حفظ ہوجائیں۔	۹	۸۲۰

عقائد

۱ | فائدہ جلیلہ: ہر نیک کام سے گناہ دھلتے ہیں مگر جو چیز قربت میں صرف کی گئی اس کی طرف گناہوں کی نجاست حکمیہ منتقل ہونا صرف اس چیز میں ہے جسے بالخصوص شرع مطہر نے اس قربت کی اقامت کو معین فرمایا ہو جیسے وضو و غسل میں پانی یا زکوۃ میں مال۔ یہ حکم مطلق ہو تو نیکی الٹی بدی ہو جائے مثلاً پانی پلانا ضرور کارِ ثواب ہے اب جو پانی پلانے کیلئے لیا اگر گناہوں کی نجاست اس میں آجائے تو پانی ناپاک یا خراب ہو جائے تو نجس یا مکروہ پانی پینے کو دینا ٹھہرے اور یہ نیکی نہیں بدی ہے یہاں سے ظاہر ہوا کہ وہابیہ مخذولین کا زکوۃ پر قیاس کر کے نیاز اولیاء کے کھانے کو معاذ اللہ بلفظ خباثت تعبیر کرنا کہ صدقہ کی وجہ سے اس میں خباثت آگئی جیسا کہ وہابیہ کی براہین قاطعہ وغیرہ میں ہے یہ محض ان خبیثوں کی خباثت و حماقت ہے نیاز اولیاء سے کھانا متبرک ہو جاتا ہے ہاں خبیثوں کیلئے خباثت ہے کما قال اللہ تعالیٰ:

۲۴۴ | ۷ |

الْخَبِيثَاتُ لِلْخَبِيثِينَ وَالْخَبِيثُونَ لِلْخَبِيثَاتِ ۚ وَالطَّيِّبَاتُ لِلطَّيِّبِينَ وَالطَّيِّبُونَ لِلطَّيِّبَاتِ ۚ أُولَٰئِكَ مُبَرَّءُونَ مِمَّا يَقُولُونَ ۖ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ

گندیاں گندوں کیلئے ہیں اور گندے گندیوں کیلئے اور ستھریاں ستھروں کیلئے اور ستھرے ستھریوں کیلئے ، ستھرے اور ستھریاں ان گندوں کی باتوں سے پاک ہیں ، والحمد للہ ۱۲۔

Volume Four Fatawa Rizvia

Titles

S. No. | Titles | Benefit No. | Page No.

2 | Ruling: It is faith that Allah Almighty is the Sovereign Actor; whatever happens, happens by His will. There is no real influential force in the universe except His will. Neither does fire burn nor water extinguish, but burning and extinguishing occur by His will. He has established a connection between causes and effects according to His profound wisdom, which itself is always dependent on His will. If He wills, a thing can burn with water and be extinguished by fire, eyes can hear, ears can see, etc. If He wills, He can suspend causes; even if a million causes exist, the effect may not occur. If He wills, He can dismiss causes; even if no cause exists, the effect may occur. Know that Allah is Powerful over all things. (t) | 1 | 490

3 | Benefit: The fire of Hell is pitch black like intense darkness; there is absolutely no light in its flames. | 3 | 550

4 | Ruling: The animals that Muslims slaughter for the offerings (Niyaz) of saints are Halal, and the suspicion that they (God forbid) intend to worship other than God is strictly forbidden. | 1 | 558

5 | Ruling: If an ignorant person has such a cursed intention but utters the Takbir while slaughtering, the animal is Halal because here the intention of the slaughterer is considered, and calling it Haram is against the Great Quran. | 2 | 558

6 | Ruling: If an apostate or an idol-worshipping polytheist slaughters an animal, both opinions regarding the purity of its skin after slaughter are strong, and precaution lies in considering it impure. | 3 | 559

Page 738 of 761 T. Majlis of Dawat-e-Islami

जिल्द चहारुम (खंड चार) फ़तावा रिज़विया

विषय

क्रम संख्या | विषय | फ़ायदा नंबर | पृष्ठ संख्या

2 | मसला: ईमान है कि अल्लाह तआला फ़ाएल-ए-मुख़्तार है, जो कुछ होता है उसी के इरादे से होता है। उसके इरादे के सिवा दुनिया में कोई चीज़ हक़ीक़ी मुअस्सिर (वास्तव में प्रभावी) नहीं है, न आग जलाती है न पानी बुझाता है बल्कि उसी के इरादे से जलना और बुझना पैदा होता है। उसने अपनी हिकमत-ए-बालेग़ा के मुताबिक़ अस्बाब और मुसब्बबात (कारण और प्रभाव) में रब्त (सम्बन्ध) फ़रमा दिया है कि वो भी उसी के इरादे का हर वक़्त मोहताज है। वो चाहे तो चीज़ पानी से जल जाए, आग से बुझ जाए, आँखें सुनें, कान देखें वग़ैरह ज़ालिक। चाहे तो अस्बाब को मुअत्तल (निलंबित) कर दे, लाख सबब मौजूद हों और मुसब्बब (परिणाम) न हो सके। चाहे तो अस्बाब को माज़ूल फ़रमा दे, कोई सबब न हो और मुसब्बब मौजूद हो जाए। जान लो कि बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। (त) | 1 | 490

3 | फ़ायदा: जहन्नम की आग सख़्त अंधेरी की तरह काली तारीक अंधेरी है, इसकी लपट में असल में कोई रोशनी नहीं है। | 3 | 550

4 | मसला: मुसलमान जो जानवर नियाज़-ए-औलिया के लिए ज़ब्ह करते हैं वह हलाल है और उन पर यह बदगुमानी (बुरी धारणा) कि वो माअज़-अल्लाह ग़ैर-ख़ुदा की इबादत चाहते हैं, सख़्त हराम है। | 1 | 558

5 | मसला: अगर कोई जाहिल ऐसी मलऊन (धिक्कृत) नियत करे भी और ज़ाबिह (ज़ब्ह करने वाला) तकबीर कहकर ज़ब्ह करे तो जानवर हलाल है क्योंकि यहाँ ज़ाबिह की नियत का एतबार (मान्यता) है और उसे हराम कहना क़ुरआन-ए-अज़ीम के ख़िलाफ़ है। | 2 | 558

6 | मसला: अगर कोई मुर्तद (धर्मत्यागी) या मुशरिक बुतपरस्त कोई जानवर ज़ब्ह करे तो उस ज़ब्ह से उसकी खाल पाक हो जाने में दोनों क़ौल (विचार) बा-क़ुव्वत (मज़बूत) हैं और एहतियात (सावधानी) इसमें है कि उसे नापाक समझें। | 3 | 559

पृष्ठ 738 का 761 त. मजलिस दावत-ए-इस्लामी

جلد چہارم فتاویٰ رضویہ

عنونات

نمبر شمار | عنونات | فائدہ نمبر | صفحہ نمبر

۲ | مسئلہ: ایمان ہے کہ اللہ تعالیٰ فاعلِ مختار ہے جو کچھ ہوتا ہے اسی کے ارادے سے ہوتا ہے اس کے ارادہ کے سوا عالم میں کوئی شیئی مؤثر حقیقی نہیں، نہ آگ جلاتی ہے نہ پانی بجھاتا ہے بلکہ اسی کے ارادہ سے جلنا، بجھنا پیدا ہوتا ہے اس نے اپنی حکمتِ بالغہ کے مطابق اسباب و مسببات میں ربط فرما دیا ہے کہ وہ بھی اسی کے ارادہ کا ہر وقت محتاج ہے وہ چاہے تو چیز پانی سے جل جائے آگ سے بجھ جائے آنکھیں سنیں کان دیکھیں وغیرہ ذلک۔ چاہے تو اسباب کو معطل کر دے لاکھ سبب موجود ہوں اور مسبب نہ ہوسکے چاہے تو اسباب کو معزول فرمادے کوئی سبب نہ ہو اور مسبب موجود ہوجائے اعلم ان اللہ علی کل شیئی قدیر۔ (جان لو بیشک اللہ تعالیٰ ہر چیز پر قادر ہے۔ت) | ۱ | ۴۹۰

۳ | فائدہ: جہنم کی آگ سخت اندھیری کی طرح کالی تاریک اندھیری ہے اس کی لپٹ میں اصلاً روشنی نہیں۔ | ۳ | ۵۵۰

۴ | مسئلہ: مسلمان جو جانور نیاز اولیاء ذبح کرتے ہیں حلال ہے اور ان پر یہ بد گمانی کہ وہ معاذ اللہ غیر خدا کی عبادت چاہتے ہیں سخت حرام۔ | ۱ | ۵۵۸

۵ | مسئلہ: اگر کوئی جاہل ایسی ملعون نیت کرے بھی اور ذائح تکبیر کہہ کر ذبح کرے جانور حلال ہے کہ یہاں ذائح کی نیت کا اعتبار ہے اور اسے حرام کہنا قرآن عظیم کے خلاف ہے۔ | ۲ | ۵۵۸

۶ | مسئلہ: اگر کوئی مرتد یا مشرک بت پرست کوئی جانور ذبح کرے تو اس ذبح سے اس کی کھال پاک ہو جانے میں دونوں قول باقوت ہیں اور احتیاط اس میں ہے کہ ناپاک سمجھیں۔ | ۳ | ۵۵۹

Fatawa Razawiyya Volume 4

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
7	Matter: Prophets (peace and blessings be upon them) are always pure and clean, both in life and after death.	2	611
8	Matter of Belief: The death of the Prophets (peace and blessings be upon them), meaning the separation of their pure souls from their sacred bodies, is only for a moment; then they become alive just as they were in their physical life with both body and soul together. Therefore, their inheritance is not distributed, nor is marriage with their wives permissible after them.	3	611
9	Matter: It is forbidden to call the Prophets (peace and blessings be upon them) dead; rather, if it is done out of contempt, it is blatant disbelief (Kufr). Allah the Almighty has forbidden calling a martyr dead. The life of the Prophets (peace and blessings be upon them) is far superior to theirs. The life of a martyr is not according to the rules of this world. His inheritance will be distributed, and his wife can marry after the waiting period (Iddah). Unlike the noble Prophets (peace and blessings be upon them).	4	611
10	Matter: All disbelievers, even if they outwardly recite the Kalima and offer prayers, such as the Wahhabis etc., all of them are purely ignorant of Allah the Almighty. They do not know who Allah is, and what they call Allah in their conjecture is not Allah.	5	662
11	No one except Muslims knows Allah Almighty. Even if an apostate who recites the Kalima offers prayers and says "Allah says" and "the Prophet says," they do not know Allah Almighty at all.	3	735
12	Matter: All attributes of perfection are essential to the essence of Allah Almighty, and all defects and shortcomings, such as lying, ignorance, etc., are inherently impossible for Him, as	2	736

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
	there is absolutely no possibility of them. The Wahhabi who says they are possible is astray and irreligious.		
13	Belief: The Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) has more authority over the Muslims than their own lives.	4	755
14	Belief: The Messenger of Allah (peace and blessings be upon him and his family) is the owner of the lives and wealth of the Muslims. If he asks for something from a Muslim, God forbid it is not a 'request' but rather it is surely like a master taking a portion of his slave's earnings, for the slave and his earnings are all the property of the master. This is why Siddiq-e-Akbar (may Allah be pleased with him) submitted, "Are my person and my wealth anything but yours, O Messenger of Allah? I and my wealth belong to you, O Messenger of Allah!"	10	755

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

क्रमांक	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
7	मसला: अंबिया (पैग़म्बर) अलैहिमुस्सलाम अपने जीवन और मृत्यु दोनों ही अवस्थाओं में हमेशा हर समय पाक और पवित्र हैं।	2	611
8	अक़ीदा (विश्वास) का मसला: अंबिया अलैहिमुस्सलाम की मृत्यु, अर्थात उनके पवित्र शरीर से उनकी पाक रूहों का अलग होना, केवल एक क्षण के लिए होता है; फिर वे वैसे ही जीवित हो जाते हैं जैसे वे अपने भौतिक जीवन में शरीर और आत्मा के साथ थे। इसलिए, उनकी विरासत नहीं बाँटी जाती, और न ही उनके बाद उनकी पत्नियों से विवाह करना जायज़ है।	3	611
9	मसला: अंबिया अलैहिमुस्सलाम को 'मुर्दा' कहना हराम है; बल्कि अगर यह अपमान के तौर पर हो तो स्पष्ट कुफ्र (ईश-निंदा) है। अल्लाह अज़्ज़वजल ने शहीद को मुर्दा कहने से मना किया है। अंबिया अलैहिमुस्सलाम का जीवन शहीदों से कहीं बढ़कर है। शहीद का जीवन दुनिया के नियमों के अधीन नहीं है। उसकी विरासत बाँटी जाएगी और उसकी पत्नी इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के बाद विवाह कर सकेगी। इसके विपरीत अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम का मामला है।	4	611
10	मसला: सभी काफ़िर, चाहे वे ज़ाहिरी तौर पर कलिमा पढ़ने वाले और नमाज़ी हों, जैसे वहाबी आदि, ये सब अल्लाह अज़्ज़वजल से पूरी तरह अनभिज्ञ (जाहिल) हैं। वे अल्लाह को नहीं जानते, और जिसे वे अपनी सोच में अल्लाह कह रहे हैं, वह अल्लाह नहीं है।	5	662
11	मुसलमानों के अलावा अल्लाह तआला को कोई नहीं जानता। कलिमा पढ़ने वाला मुर्तद (धर्मत्यागी) चाहे नमाज़ें पढ़े और 'अल्लाह ने फ़रमाया', 'रसूल ने फ़रमाया' कहे, वह अल्लाह अज़्ज़वजल को बिल्कुल नहीं जानता।	3	735
12	मसला: पूर्णता के सभी गुण अल्लाह अज़्ज़वजल की ज़ात (अस्तित्व) के लिए अनिवार्य हैं, और सभी दोष और कमियाँ जैसे झूठ, अज्ञानता आदि, उसके	2	736

क्रमांक	विषय	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
	लिए स्वतः ही असंभव हैं, क्योंकि उनकी कोई संभावना ही नहीं है। वह वहाबी जो इन्हें संभव कहता है, गुमराह और बेदीन है।		
13	अक़ीदा: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मुसलमानों पर उनकी जानों से ज़्यादा अधिकार रखते हैं।	4	755
14	अक़ीदा: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व आलेही वसल्लम) मुसलमानों की जान और माल के मालिक हैं। यदि वे किसी मुसलमान से कुछ माँगें, तो माज़अल्लाह वह 'सवाला' (भीख) नहीं है, बल्कि निश्चित रूप से वैसा ही है जैसे कोई मालिक अपने गुलाम की कमाई का कुछ हिस्सा ले ले, क्योंकि गुलाम और उसकी कमाई सब मालिक की संपत्ति है। इसीलिए सिद्दीक़-ए-अकबर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने अर्ज़ किया, "क्या मैं और मेरा माल आपके सिवा किसी और के हैं, या रसूल अल्लाह? मैं और मेरा माल हुज़ूर ही के हैं, या रसूल अल्लाह!"	10	755

فتاوی رضویہ جلد چہارم

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۷	مسئلہ : انبیاء علیہم الصلوۃ والسلام حالِ حیات و حالِ وفات میں ہمیشہ ہر وقت طیب و طاہر ہیں۔	۲	۶۱۱
۸	مسئلہ عقائد : انبیاء علیہم الصلوۃ والسلام کی موت یعنی ان کے اجسام طیبہ سے ارواحِ طاہرہ کا جدا ہونا صرف ایک آن کیلئے ہوتا ہے پھر ویسے ہی زندہ ہو جاتے ہیں جیسے حیات ظاہری میں تھے جسم و روح سے معاً ولہٰذا ان کا ترکہ نہیں بٹتا نہ ان کے بعد ان کی ازواج سے نکاح جائز۔	۳	۶۱۱
۹	مسئلہ : انبیاء علیہم الصلوۃ والسلام کو مردہ کہنا حرام بلکہ بطورِ توہین ہو تو صریح کفر ہے اللہ عزوجل نے شہید کو مردہ کہنے سے منع فرمایا۔ انبیاء علیہم الصلوۃ والسلام کی حیات اُن سے بدرجہا زائد ہے شہید کی حیات احکامِ دنیا میں نہیں۔ اس کا ترکہ بٹے گا اس کی بی بی عدت کے بعد نکاح کر سکے گی۔ بخلاف انبیاء کرام علیہم الصلوۃ والسلام۔	۴	۶۱۱
۱۰	مسئلہ : تمام کافر اگرچہ بظاہر کلمہ گو نماز گزار ہوں جیسے وہابیہ وغیرہ ہم یہ سب اللہ عزوجل سے محض جاہل ہیں جو اللہ ہے اسے جانتے نہیں اور جسے اپنے زعم میں اللہ کہہ رہے ہیں وہ اللہ نہیں۔	۵	۶۶۲
۱۱		۳	۷۳۵

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	مسلمانوں کے سوا اللہ تعالیٰ کو کوئی نہیں جانتا کلمہ گو مرتد اگرچہ نمازیں پڑھیں قال اللہ تعالیٰ قال الرسول کہیں اللہ عزوجل کو ہرگز نہیں جانتے۔		
۱۲	مسئلہ : جمیع صفاتِ کمال اللہ عزوجل کیلئے لازمِ ذات ہیں اور جملہ عیوب و نقائص کذب جہل وغیرہ وغیرہ سب اس پر محالِ بالذات ہیں کہ اصلاً کسی طرح امکان نہیں رکھتے وہابی کہ ان کو ممکن کہتا ہے گمراہ بددین ہے۔	۲	۷۳۶
۱۳	عقیدہ : رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم مسلمانوں پر ان کی جانوں سے زیادہ اختیار رکھتے ہیں۔	۴	۷۵۵
۱۴	عقیدہ : رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم مسلمانوں کے جان و مال کے مالک ہیں اگر وہ کسی مسلمان سے کچھ طلب فرمائیں وہ معاذ اللہ سوال نہیں بلکہ یقیناً ایسا ہے جیسے مولیٰ اپنے غلام سے اس کی کمائی کا کچھ حصہ لے کہ غلام اور اس کی کمائی سب مولیٰ کی ملک ہے اسی لیے صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے عرض کی ھل انا و مالی الالک یا رسول اللہ میں اور میرامال کس کے ہیں حضور ہی کے ہیں یارسول اللہ !	۱۰	۷۵۵

Fatawa Razawiyya, Volume 4

S.No. | Titles | Benefit No. | Page

1 | Refutation of Misguided Sects Benefit: The absolute investigating Imam (Imam Muhaqqiq al-al-Itlaq), despite holding the rank of Ijtihad, did not dare to oppose the school of thought (madhhab) on the issue of saying Amen loudly (Jahr-e-Ameen) and said: "If I had some authority, I would have brought harmony between both views so that it is neither loud nor completely silent." Muslims, be just! This was the state of these great ones, and yet ignorant, senseless people who cannot even understand the speech of the greats are ready to challenge the Imam. | 7 | 398

2 | Issue: Individual following (Taqlid-e-Shakhsi) is mandatory, and the idea that one may act upon any school of thought on any issue as they wish is false. The leading Imams have explicitly stated its falsehood. Because of this, the non-conformist (Ghair-Muqallid) Wahhabis caused a major fitna in religion. | 1 | 401

3 | Translation of a Grand Benefit: Some scholars have written in the context of academic discussion that a person can act upon whichever saying they wish, but this is only for the sake of discussion. Even their own hearts do not like this; rather, they consider it bad. Wherever they fear public lawlessness in any matter, they clearly state that it should not be revealed to the common people so they don't gain audacity to tear down the school of thought. Furthermore, these same scholars spent their entire lives calling themselves Hanafi, Shafi'i, Maliki, or Hanbali; they never practiced lawlessness towards their school. They spent their lives supporting their respective madhhabs, major volumes were authored, and all the scholars of the Ummah reached a consensus on this. In fact, debating in support of one's own madhhab has continued since the time of the noble Companions. If madhhab was nothing and all options were equal for a person's practice, then all these debates, thousands of books, and the life-long works of the Imams and elders would be a waste of time, life, and wealth in vain and absurdity. What could be a worse disgrace than this? | 2 | 401

4 | Benefit: Christians explicitly believe in the Trinity but with an interpretation (ta'wil); therefore, the pure Shariah did not declare them polytheists (mushrik) and differentiated between their rulings and those of polytheists. However, the Wahhabis go beyond Allah and His Messenger and fabricate the word 'polytheist' at every turn for Muslims who believe in complete monotheism (Tawhid) and 'La ilaha illa Allah'. "And those who have wronged are going to know to what [kind of] return they will be

returned." [Quran 26:227] (And now the oppressors want to know what turn they will take. - T) | 1 | 738

Page 740 of 761

फ़तावा रज़विया, खंड 4

क्रम संख्या | शीर्षक | फ़ायदा नंबर | पृष्ठ

1 | गुमराह संप्रदायों का खंडन फ़ायदा: पूर्ण अन्वेषक इमाम (इमाम मुहक़्क़िक़ अल-अल-इतलाक़), इज्तिहाद के पद पर होने के बावजूद, 'जहर-ए-आमीन' (जोर से आमीन कहना) के मुद्दे पर मत (मज़हब) का विरोध करने का साहस नहीं किया और कहा: "अगर मेरे पास कुछ अधिकार होता, तो मैं दोनों कथनों में इस तरह समझौता कराता कि न तो ज़ोर से हो और न ही बिल्कुल धीरे।" मुसलमानों, न्याय करो! इन महान पूर्वजों की यह स्थिति थी, और अज्ञानी, विवेकहीन लोग जो बड़ों की बात भी नहीं समझ सकते, वे इमाम का मुकाबला करने के लिए तैयार हैं। | 7 | 398

2 | मसला: व्यक्तिगत तक़लीद (तक़लीद-ए-शख़्सी) अनिवार्य है और यह बात कि जिस मामले में जिस मज़हब पर चाहो अमल करो, असत्य है। महान इमामों ने इसके असत्य होने को स्पष्ट किया है। इसके कारण गैर-मुक़ल्लिद वहाबियों ने धर्म में एक बड़ा फ़ितना पैदा किया। | 1 | 401

3 | एक महान लाभ का अनुवाद: कुछ विद्वानों ने चर्चा के संदर्भ में लिखा तो है कि व्यक्ति जिस विचार पर चाहे अमल करे, लेकिन यह केवल चर्चा की हद तक की बात है। उनके अपने दिल भी इसे पसंद नहीं करते, बल्कि इसे बुरा मानते हैं। जहाँ कहीं भी वे किसी मामले में आम जनता की स्वच्छंदता का डर महसूस करते हैं, वे स्पष्ट रूप से कह देते हैं कि इसे जनता पर प्रकट न किया जाए ताकि वे मज़हब को गिराने का साहस न करें। फिर यही विद्वान जीवन भर खुद को हनफ़ी, शाफ़ई, मालिकी, हनबली कहते-कहलाते रहे, कभी मज़हब के प्रति स्वच्छंदता नहीं बरती। उन्होंने अपनी उम्रें अपने-अपने मज़हब के समर्थन में खर्च कीं और इसमें बड़े-बड़े ग्रंथ लिखे गए और उम्मत के सभी विद्वानों ने इस पर सर्वसम्मति (इज्मा) व्यक्त की। वास्तव में अपने-अपने मज़हब के समर्थन में बहस तो सहाबा-ए-किराम के समय से चली आ रही है। यदि मज़हब कोई चीज़ न होता और व्यक्ति के लिए अमल के लिए सब बराबर होते, तो ये सब बहसें और हज़ारों किताबें और इमामों और बड़ों के जीवन भर के कार्य सब व्यर्थ और निरर्थक होते और समय, जीवन और धन की बर्बादी होती। इससे बड़ी बदनामी और क्या हो सकती है। | 2 | 401

4 | फ़ायदा: ईसाई स्पष्ट रूप से त्रित्व (तस्लीस) के कायल हैं लेकिन तावील (व्याख्या) के साथ, इसलिए पाक शरीयत ने उन्हें मुशरिक (बहुदेववादी) नहीं ठहराया और उनके और मुशरिकों के आदेशों में अंतर किया। लेकिन वहाबी अल्लाह और उसके रसूल से आगे बढ़ते हैं और पूरी तौहीद

'ला इलाहा इल्लल्लाह' मानने वाले मुसलमानों के लिए बात-बात पर मुशरिक शब्द गढ़ते हैं। "और ज़ुल्म करने वाले जल्द ही जान लेंगे कि वे किस करवट पलटेंगे।" [कुरान 26:227] (और अब ज़ालिम जानना चाहते हैं कि वे किस करवट पलटेंगे। - त) | 1 | 738

पृष्ठ 740/761

فتاویٰ رضویہ، جلد چہارم

نمبر شمار | عنوانات | فائدہ نمبر | صفحہ

۱ | ردِّ بد مذہباں فائدہ: امام محقق علی الاطلاق نے باوصف مرتبہ اجتہاد مسئلہ جہر آمین میں مخالفت مذہب کی جرات نہ کی اور فرمایا مجھے کچھ اختیار ہوتا تو میں یوں دونوں قولوں میں اتفاق کراتا کہ نہ زور سے ہو نہ بالکل آہستہ۔ مسلمانوں انصاف! ان اکابر کی تو یہ کیفیت اور جاہلانِ بے تمیز کہ اکابر کا کلام بھی نہ سمجھ سکیں وہ امام کے مقابلہ کو طیار۔ | ۷ | ۳۹۸

۲ | مسئلہ: تقلیدِ شخصی واجب ہے اور یہ بات کہ جس مسئلہ میں جس مذہب پر چاہو عمل کرو باطل ہے اکابر ائمہ نے اس کے باطل ہونے کی تصریح فرمائی اس کے سبب غیر مقلد وہابیوں کا دین میں ایک بڑا فتنہ پیدا ہوا۔ | ۱ | ۴۰۱

۳ | ترجمہ فائدہ جلیلہ: بعض علماء بحث کی جگہ لکھ تو گئے ہیں کہ آدمی جس قول پر چاہے عمل کرے مگر یہ بحث ہی تک کہنے کی بات ہے دل ان کے بھی اسے پسند نہیں کرتے بلکہ بُرا جانتے ہیں جابجا جس کسی مسئلہ میں بیقیدیِ عوام کا اندیشہ سمجھتے ہیں صاف فرما دیتے ہیں کہ اسے عوام پر ظاہر نہ کیا جائے کہ وہ مذہب کے گرانے پر جرات نہ کریں پھر یہی علماء عمر بھر اپنے کو حنفی، شافعی، مالکی، حنبلی کہتے کہلاتے رہے کبھی مذہب سے بیقیدی نہ برتی عمریں اپنے اپنے مذہب کی تائید میں صرف کیں اور اس میں بڑے بڑے دفتر تصنیف ہوئے اور تمام علمائے امت نے اس پر اجماع کیا بلکہ اپنے اپنے مذہب کی تائید میں مناظرہ تو زمانہ صحابہ کرام سے چلا آتا ہے اگر مذہب کوئی چیز نہ ہوتا اور آدمی کو عمل کیلئے سب برابر ہوتے تو یہ سب کچھ

مناظرے اور ہزار ہا کتابیں اور ائمہ واکابر کی عمروں کی کارروائیاں سب لغو و فضول میں وقت و عمر و مال برباد کرنا ہوتا اس سے بدتر کون سی شناعت ہے۔ | ۲ | ۴۰۱

۴ | فائدہ: نصاریٰ صراحتہً تثلیث کے قائل ہیں مگر تاویل کے ساتھ لہٰذا شرع مطہر نے انہیں مشرک نہ ٹھہرایا اور ان کے اور مشرکوں کے احکام میں فرق فرمایا مگر وہابیہ اللہ و رسول سے آگے بڑھتے اور پوری توحید لا الہ الا اللہ ماننے والے مسلمانوں کیلئے بات بات پر مشرک کا لفظ گھڑتے ہیں وَسَیَعْلَمُ الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا اَیَّ مُنْقَلَبٍ یَّنْقَلِبُوْنَ (اور اب جاننا چاہتے ہیں ظالم کہ کس کروٹ پلٹا کھائیں گے۔ت) | ۱ | ۷۳۸

Fatawa Razawiyya - Volume 4

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page No.
	Benefits of Hadith		
1	Translation of original text: Recommendation (Istihbab) is established through weak Hadith, not Sunnah.	1	11
2	Benefit: Weak Hadith is acceptable by consensus in matters of recommendation and permissibility.	1	26
	Excellences and Merits		
1	Issue: The ablution (Wudu) of the Prophets (peace be upon them) is not invalidated by sleep.	1	91
2	Benefit: The eyes of the Prophets (peace be upon them) sleep, but their hearts never sleep.	2	91
3	Benefit: Malik al-Ulama Bahr al-Ulum Maulana Abdul Ali stated: if it is said that through the inheritance of the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him), Ghaus al-Azam (may Allah be pleased with him) also attained this rank—that his wudu was not invalidated by sleep, his eyes slept but his heart remained awake—and similarly for other great saints who reached this level, even if they cannot reach the ranks of Ghaus al-Azam, then saying this would not be far from the truth; and the author's support for this from Hadith.	4	91
4	Issue: Whether the ablution of the Prophets (peace be upon them) is invalidated by factors other than sleep is a matter of disagreement. Allama Quhistani and others stated that their wudu is not invalidated in any way. The author's research is that legal nullifiers (Nawaqidh-e-Hukmiya) like sleep and fainting do not invalidate it, but real nullifiers (Nawaqidh-e-Haqiqiya) like urination etc. do, due to their greatness of status.	1	92
5	Point (F): Some nullifiers of wudu are not nullifiers for the Prophets (peace be upon them) because their occurrence is impossible for them, such as insanity or loud laughter during prayer.	4	92

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page No.
6	Point (F): Fainting can also occur on the physical body of the Prophets (peace be upon them), but the blessed heart remains awake and aware even in that state.	3	93
7	Issue: All the noble excretions of the Master of the Universe (peace and blessings be upon him and his progeny), such as urine etc., were pure and clean (Tayyib and Tahir). Consuming them would be permissible (halal) for us and a source of healing and good fortune, but due to the greatness of the status of the Prophet (peace and blessings be upon him and his progeny), they fall under the ruling of impurity in his case.	5	93

फ़तावा रज़विया - खंड 4

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
	हदीस के फ़ायदे		
1	मूल इबारत का अनुवाद: कमज़ोर हदीस से इस्तेहबाब (सिफ़ारिश योग्य होना) साबित होता है, न कि सुन्नत होना।	1	11
2	फ़ायदा: कमज़ोर हदीस इस्तेहबाब और मुबाह (वैधता) के मामलों में सर्वसम्मति से स्वीकार्य है।	1	26
	फ़ज़ाइल और मुनाक़िब (विशेषताएं और गुण)		
1	मसला: अंबिया (नबियों) अलैहिमुस्सलाम का वज़ू सोने से नहीं टूटता।	1	91
2	फ़ायदा: अंबिया अलैहिमुस्सलाम की आँखें सोती हैं, दिल कभी नहीं सोता।	2	91
3	फ़ायदा: मलिक उल-उलेमा बहरुल उलूम मौलाना अब्दुल अली ने फरमाया: यदि यह कहा जाए कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की विरासत से हुज़ूर सैयदना गौस-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) को भी यह मर्तबा हासिल था कि हुज़ूर का वज़ू सोने से नहीं जाता था, आँखें सोती थीं मगर दिल जागता रहता था—और इसी तरह अन्य महान औलिया जो इस स्तर तक पहुँचे हों, भले ही वे गौस-ए-आज़म के मर्तबे तक न पहुँच सकें, तो यह कहना सच्चाई से दूर नहीं होगा; और लेखक का हदीस से इसका समर्थन करना।	4	91
4	मसला: नींद के अलावा वज़ू तोड़ने वाली अन्य चीज़ों से अंबिया अलैहिमुस्सलाम का वज़ू टूटता है या नहीं, इसमें मतभेद है। अल्लामा कुहिस्तानी आदि ने कहा कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम का वज़ू किसी भी तरह नहीं टूटता। लेखक का शोध यह है कि हुक्मी नवाकिज़ (जैसे नींद और बेहोशी) से नहीं टूटता, लेकिन हक़ीकी नवाकिज़ (जैसे पेशाब आदि) से उनकी शान की महानता के कारण टूट जाता है।	1	92
5		4	92

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
	फ़ (नोट): वज़ू तोड़ने वाली कुछ चीज़ें अंबिया अलैहिमुस्सलाम के लिए इसलिए तोड़ने वाली नहीं हैं क्योंकि उनका उनसे होना ही असंभव है, जैसे पागलपन या नमाज़ में ज़ोर से हँसना (क़हक़हा)।		
6	फ़ (नोट): बेहोशी अंबिया अलैहिमुस्सलाम के ज़ाहिरी शरीर पर भी छा सकती है, मगर मुबारक दिल उस हालत में भी जागता और खबरदार रहता है।	3	93
7	मसला: हुज़ूर सैय्यद-ए-आलम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मुकद्दस फ़ज़लात (उत्सर्जन) जैसे पेशाब आदि सब पाक और साफ़ थे, जिनका खाना-पीना हमारे लिए हलाल और शिफ़ा व सौभाग्य का कारण होता, लेकिन हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की अज़ीम शान के कारण वे हुज़ूर के मामले में नजासत (अशुद्धता) का हुक्म रखते थे।	5	93

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	فوائد حدیثیہ		
۱	ترجمہ اصل عبارت: حدیث ضعیف سے استحباب ثابت ہوتا ہے نہ کہ سنیت۔	۱	۱۱
۲	فائدہ: حدیث ضعیف استحباب واباحت میں بالا جماع مقبول ہے۔	۱	۲۶
	فضائل و مناقب		
۱	مسئلہ: انبیاء علیہم الصلوٰۃ والسلام کا وضو سونے سے نہیں جاتا۔	۱	۹۱
۲	فائدہ: انبیاء علیہم الصلوٰۃ والسلام کی آنکھیں سوتی ہیں دل کبھی نہیں سوتا۔	۲	۹۱
۳	فائدہ: ملک العلماء بحر العلوم مولانا عبدالعلی نے فرمایا اگر کہا جائے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی وراثت سے حضور سیدنا غوث اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو بھی یہ مرتبہ حاصل تھا کہ حضور کا وضو سونے سے نہ جاتا آنکھیں سوتیں دل بیدار رہتا۔ اور ایسے ہی اور اکابر اولیاء جو اس مرتبہ تک پہنچے ہوں اگرچہ حضور سیدنا غوث اعظم کے مراتب تک نہیں پہنچ سکتے تو یہ کہنا حق سے بعید نہ ہوگا اور مصنف کا حدیث سے اس کی تائید کرنا۔	۴	۹۱
۴	مسئلہ: نیند کے سوا باقی اور نواقض سے انبیاء علیہم الصلوٰۃ والسلام کا وضو جاتا ہے یا نہیں، اس میں اختلاف ہے علامہ قہستانی وغیرہ نے فرمایا انبیاء	۱	۹۲

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	علیہم الصلوٰۃ والسلام کا وضو کسی طرح نہ جاتا، اور مصنف کی تحقیق کہ نواقض حکمیہ مثل خواب و غشی سے نہ جاتا اور نواقض حقیقیہ مثل بول وغیرہ سے ان کی عظمت شان کے سبب جاتا رہتا۔		
۵	ف: بعض نواقض وضو انبیاء علیہم الصلوٰۃ والسلام کے لئے یوں ناقض نہیں کہ ان کا وقوع ہی ان سے محال ہے جیسے جنون یا نماز میں قہقہہ۔	۴	۹۲
۶	ف: غشی بھی انبیاء علیہم الصلوٰۃ والسلام کے جسم ظاہر پر طاری ہو سکتی ہے دل مبارک اس حالت میں بھی بیدار و خبر دار رہتا۔	۳	۹۳
۷	مسئلہ: حضور سید عالم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے فضلات شریفہ مثل پیشاب وغیرہ سب طیب طاہر تھے جن کا کھانا پینا ہمیں حلال و باعث شفا و سعادت مگر حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی عظمت شان کے سبب حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے حکم میں نجاست رکھتے۔	۵	۹۳

Fatawa Razawiyya, Volume 4

Serial No.	Titles/Topics	Benefit No.	Page No.
8	Benefit: What has been stated in the Hadiths that sins are washed away with the water of Wudu, the people of spiritual unveiling (Kashf) witness this with their eyes.	1	93
9	Benefit: Shafi'i Imams state that the underlying principles of the school of Imam-e-A'zam (may Allah be pleased with him) are so subtle that only the great saints (Awliya) can recognize them.	2	245
10	Benefit: The saints state that Imam-e-A'zam and Imam Abu Yusuf are the leaders of the people of spiritual unveiling and observation.	3	245
11	Issue: The water used for the Wudu and even the Ghusl (ritual bath) of the Holy Prophet (peace and blessings be upon him and his family) is pure and purifying for us; similarly for all the noble Prophets (peace be upon them all).	4	254
12	Great Benefit: Clarifications from eminent great Imams of religion, contemporaries of Imam-e-A'zam and others (may Allah be pleased with them), that the knowledge and intellect of Imam Abu Hanifa cannot be reached by the knowledge and intellect of others. Whoever opposed him did so due to a lack of access to his profound understandings.	5	389
13	Benefit: Imam A'mash, the teacher of scholars of Hadith, student of Hazrat Anas (may Allah be pleased with him) and teacher of Imam-e-A'zam, said to the Imam, "O group of jurists, you are the physicians and we Hadith scholars are the perfumers; and O Abu Hanifa! You have taken both sides (mastered both)."	6	389
14	Benefit: The great Imam Sufyan Thawri said to our Imam, "Such knowledge is revealed to you of which we are all heedless." He also said, "One who opposes Abu Hanifa needs to be higher in rank and greater in knowledge than him, and such a thing is far from reality."	7	389

Serial No.	Titles/Topics	Benefit No.	Page No.
15	Benefit: Imam Shafi'i said, "In the entire world, no one's intellect is like that of Abu Hanifa." Imam Ali bin Asim said: "If the intellect of Abu Hanifa were weighed against the intellects of half the people of the entire earth, the intellect of Imam Abu Hanifa would prevail." Imam Bakr bin Jaysh said: "If his intellect were weighed against the combined intellects of all the people of his time, then one Abu Hanifa's intellect would prevail over the intellects of all those Imams, elders, Mujtahids, Hadith scholars, and Gnostics."	8	389
16	Benefit: Imam Shara'ni Shafi'i narrates from his mentor and master Hazrat Sayyidi Ali Khawas Shafi'i that the profound understandings of Imam Abu Hanifa are so subtle that no one's knowledge reaches there except through the spiritual unveiling (Kashf) of the great saints.	1	390

फ़तावा रज़विया, जिल्द चार (खंड 4)

क्रम सं.	शीर्षक	फ़ायदा नं.	पृष्ठ नं.
8	फ़ायदा: हदीसों में जो इरशाद हुआ है कि वज़ू के पानी के साथ गुनाह निकलते हैं, अहले कश्फ़ (आध्यात्मिक रहस्यदर्शी) उसे आँखों से देखते हैं।	1	93
9	फ़ायदा: शाफ़ई इमाम फरमाते हैं कि इमाम-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के मज़हब की बारिकियाँ इतनी सूक्ष्म हैं जिन्हें केवल बड़े वली (औलिया) ही पहचान सकते हैं।	2	245
10	फ़ायदा: औलिया फरमाते हैं कि इमाम-ए-आज़म और इमाम अबू यूसुफ अहले कश्फ़ और मुशाहदा (आध्यात्मिक अवलोकन करने वालों) के सरदार हैं।	3	245
11	मसला: हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के वज़ू, बल्कि ग़ुस्ल-ए-जनाबत (स्नान) का पानी भी हमारे लिए पाक (पवित्र) और पाक करने वाला है; इसी तरह तमाम अंबिया किराम (अलैहिमुस्सलाम) के लिए भी।	4	254
12	फ़ायदा जलीला: दीन के बड़े और महान इमामों, इमाम-ए-आज़म के समकालीनों आदि (रज़ियल्लाहु अन्हु) के स्पष्टीकरण कि इमाम अबू हनीफ़ा के ज्ञान और बुद्धि तक दूसरों का ज्ञान और बुद्धि नहीं पहुँच सकती। जिसने भी उनका विरोध किया, उसने उनकी गहरी समझ तक पहुँच न होने के कारण किया।	5	389
13	फ़ायदा: उस्ताद-उल-मुहद्दीसीन इमाम आमश, जो हज़रत अनस (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के शागिर्द और इमाम-ए-आज़म के उस्ताद थे, उन्होंने इमाम से कहा, "ऐ फ़ुकहा (धर्मशास्त्रियों) के समूह, तुम हकीम (चिकित्सक) हो और हम मुहद्दीसीन (हदीस विद्वान) अत्तार (दवा विक्रेता) हैं; और ऐ अबू हनीफ़ा! तुमने तो दोनों किनारे थाम लिए (दोनों में माहिर हो)।"	6	389
14	फ़ायदा: इमाम अजल सुफ़यान सूरी ने हमारे इमाम से कहा, "आपको वह इल्म (ज्ञान) प्राप्त होता है जिससे हम सब गाफिल (अनभिज्ञ) हैं।" और फ़रमाया, "अबू	7	389

क्रम सं.	शीर्षक	फ़ायदा नं.	पृष्ठ नं.
	हनीफ़ा का विरोध करने वाले के लिए यह ज़रूरी है कि वह मर्तबे (पद) में उनसे बड़ा और इल्म में उनसे ज़्यादा हो, और ऐसा होना नामुमकिन के करीब है।"		
15	फ़ायदा: इमाम शाफ़ई ने फ़रमाया, "पूरी दुनिया में किसी की बुद्धि अबू हनीफ़ा के समान नहीं।" इमाम अली बिन आसिम ने कहा: "अगर अबू हनीफ़ा की बुद्धि को पूरी पृथ्वी के आधे लोगों की बुद्धि से तौला जाए, तो इमाम अबू हनीफ़ा की बुद्धि भारी पड़ेगी।" इमाम बक्र बिन जैश ने कहा: "अगर उनकी बुद्धि को उनके ज़माने के तमाम लोगों की कुल बुद्धि के साथ तौला जाए, तो अकेले अबू हनीफ़ा की बुद्धि उन तमाम इमामों, बड़ों, मुज्तहिदीन, मुहद्दीसीन और आरिफीन की बुद्धि पर भारी पड़ेगी।"	8	389
16	फ़ायदा: इमाम शरानी शाफ़ई अपने पीर-ओ-मुर्शिद हज़रत सय्यदी अली ख़वास शाफ़ई से रिवायत करते हैं कि इमाम अबू हनीफ़ा की समझ इतनी बारीक है कि बड़े औलिया के कश्फ़ के बिना किसी का ज्ञान वहाँ तक नहीं पहुँचता।	1	390

فتاویٰ رضویہ ، جلد چہارم

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۸	فائدہ: حدیثوں میں جو ارشاد ہوا کہ وضو کے پانی کے ساتھ اس کے گناہ نکلتے ہیں اہل کشف اسے آنکھوں سے دیکھتے ہیں۔	۱	۹۳
۹	فائدہ: ائمہ شافعیہ فرماتے ہیں کہ مذہب امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے مدارک ایسے دقیق ہیں جن کو اکابر اولیاء ہی پہچانتے ہیں۔	۲	۲۴۵
۱۰	فائدہ: اولیاء فرماتے ہیں کہ امام اعظم و امام ابویوسف سردارانِ اہل کشف و مشاہدہ ہیں۔	۳	۲۴۵
۱۱	مسئلہ: حضور اقدس صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے وضو بلکہ غسل جنابت کا بھی پانی ہمارے حق میں طاہر و مطہر ہے، اسی طرح تمام انبیاء کرام علیہم الصلوٰۃ والسلام۔	۴	۲۵۴
۱۲	فائدہ جلیلہ: اجلہ اکابر ائمہ دین معاصر انِ امام اعظم وغیرہم رضی اللہ عنہ وعنہم کی تصریحات کہ امام ابوحنیفہ کے علم و عقل کو اوروں کا علم و عقل نہیں پہنچتا جس نے ان کا خلاف کیا ان کے مدارک تک نارسائی سے کیا۔	۵	۳۸۹
۱۳	فائدہ: استاذ المحدثین امام اعمش شاگرد حضرت انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ و استاد امام اعظم نے امام سے کہا اے گروہ فقہاء تم طبیب ہو ہم محدثین عطار، اور اے ابوحنیفہ ! تم نے تو دونوں کنارے لیے۔	۶	۳۸۹

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱۴	فائدہ: امام اجل سفیان ثوری نے ہمارے امام سے کہا آپ کو وہ علم کھلتا ہے جس سے ہم سب غافل ہوتے ہیں اور فرمایا ابوحنیفہ کا خلاف کرنے والا اس کا محتاج ہے کہ ان سے مرتبہ میں بڑا اور علم میں زیادہ ہو اور ایسا ہونا دور ہے۔	۷	۳۸۹
۱۵	فائدہ: امام شافعی نے فرمایا تمام جہاں میں کسی کی عقل ابوحنیفہ کی مثل نہیں۔ امام علی بن عاصم نے کہا: اگر ابوحنیفہ کی عقل تمام روئے زمین کے نصف آدمیوں کی عقلوں سے تولی جائے تو امام ابوحنیفہ کی عقل غالب آئی۔ امام بکر بن جیش نے کہا: اگر ان کی عقل کا تمام اہل زمانہ کی مجموع عقلوں کے ساتھ وزن کریں تو ایک ابوحنیفہ کی عقل ان تمام ائمہ واکابر واجتہدین و محدثین و عارفین سب کی عقل پر غالب آئی۔	۸	۳۸۹
۱۶	فائدہ: امام شعرانی شافعی اپنے پیر و مرشد حضرت سیدی علی خواص شافعی سے راوی کہ امام ابوحنیفہ کے مدارک اتنے دقیق ہیں کہ اکابر اولیاء کے کشف کے سوا کسی کے علم کی وہاں تک رسائی نہیں ہوتی۔	۱	۳۹۰

Fatawa Ridawiyya Volume 4

Serial No.	Topics	Faidah No.	Page No.
17	Mas'ala: Bathing and performing Wudu with Zamzam Sharif is permissible without any dislike (karahat). However, performing Istinja with it after using a clod of earth is Makruh (disliked), and washing filth with it is a sin.	1	408
18	Faidah Jalila: Every good, every blessing, every desire, every wealth in religion, in this world, and in the hereafter—from the first day until today, and from today until eternity—whoever has received or will receive it, has received it or will receive it from the blessed hand of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family). The True Bestower is Allah Almighty, and the sole distributor of all His blessings is Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family). No one ever received any blessing or desire from anyone else.	3	535
19	19 Faidah: Allahu Akbar! In the house of Prophethood, fire would not be lit for two months; the family of purity lived only on dates and water.	6	550
20	Mas'ala: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family) did not gain honor from anything; rather, whatever was attributed to the Prophet gained honor.	3	552
21	Mas'ala: Allah Almighty also related non-superior things to His Beloved (peace and blessings of Allah be upon him and his family) so that those things might attain excellence. Therefore, the sacred birth took place in the month of Rabi' al-Awwal Sharif, not in the blessed month of Ramadan; it took place on the soul-illuminating day of Monday, not on the blessed day of Friday; and it occurred at the place of the sacred birth, not in the Kaaba Mu'azzama.	4	552
22	Proofs of the Excellence of Kauthar: (1) In the Hereafter, that which is superior is what is superior with Allah, and what is superior with Allah is superior in itself. And what is superior in		

Serial No.	Topics	Faidah No.	Page No.
	itself is superior wherever it is. So, what is superior in the Hereafter is also superior in this world. There is no doubt that Kauthar is superior in the Hereafter, so even now Kauthar is superior to Zamzam. (2) Zamzam is water of this world and Kauthar is of the end (hereafter), and Allah Almighty says: "Indeed, the Hereafter is greater in degrees and greater in excellence." (3) The water of Kauthar is from Paradise. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family) says: "Two pipes from Paradise are falling into Kauthar, one of gold and one of silver." And he says: "Listen, the wealth of Allah is precious; listen, the wealth of Allah is Paradise." (4) The water of Kauthar is most beneficial for the pardoned Ummah; one drop down the throat, and one will never be thirsty for all eternity, nor will any darkness ever come upon their face.		

फ़तावा रिज़विया जिल्द 4

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
१७	मसला: ज़मज़म शरीफ़ से ग़ुस्ल और वुज़ू बिना किसी नापसंदगी (कराहत) के जायज़ है, और ढेले के बाद इससे इस्तिन्जा करना मकरूह है, और इससे नजासत धोना गुनाह है।	१	४०८
१८	फ़ायदा जलीला: हर खैर, हर नेमत, हर मुराद, दीन और दुनिया व आख़िरत की हर दौलत—आदि काल से आज तक और आज से अनंत काल तक—जिसे मिली या मिलनी है, वह हुज़ूर अक़दस सैयदे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के मुबारक हाथों से ही मिली है और मिलनी है। असली अता करने वाला अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल है और उसकी तमाम नेमतों को बाँटने वाले केवल मोहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हैं। किसी और से किसी को कभी कोई नेमत या मुराद नहीं मिली।	३	५३५
१९	१९ फ़ायदा: अल्लाहु अकबर! नबूवत के घर में दो-दो महीने आग नहीं जलती थी, पवित्रता के घराने का गुज़ारा केवल खजूर और पानी पर होता था।	६	५५०
२०	मसला: रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने किसी चीज़ से सम्मान नहीं पाया, बल्कि जो चीज़ हुज़ूर की तरफ़ मंसूब हो गई, उसे सम्मान मिल गया।	३	५५२
२१	मसला: अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने गैर-अफ़ज़ल चीज़ों को भी अपने हबीब (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से जोड़ा ताकि उन चीज़ों को फ़ज़ीलत हासिल हो। इसलिए, पवित्र जन्म रबी-उल-अव्वल शरीफ़ के महीने में हुआ, न कि रमज़ान के मुबारक महीने में; और यह रूह को रौशन करने वाले सोमवार के दिन हुआ, न कि जुमा के मुबारक दिन; और यह पवित्र जन्म स्थान पर हुआ, न कि काबा मुअज़्ज़मा में।	४	५५२
२२			

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
	कौसर की अफ़ज़लियत के प्रमाण: (१) आख़िरत में वही श्रेष्ठ है जो अल्लाह के नज़दीक श्रेष्ठ है, और जो अल्लाह के नज़दीक श्रेष्ठ है वह वास्तव में श्रेष्ठ है। और जो वास्तव में श्रेष्ठ है, वह जहाँ भी हो श्रेष्ठ है। तो जो आख़िरत में श्रेष्ठ है, वही दुनिया में भी श्रेष्ठ है। और इसमें कोई संदेह नहीं कि आख़िरत में कौसर श्रेष्ठ है, इसलिए अब भी कौसर ज़मज़म से श्रेष्ठ है। (२) ज़मज़म दुनिया का पानी है और कौसर आख़िरत का, और अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल फ़रमाता है: "बेशक आख़िरत दर्जों में बड़ी है और फ़ज़ीलत में ज़्यादा।" (३) कौसर का पानी जन्नत से है। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "जन्नत से दो परनाले कौसर में गिर रहे हैं, एक सोने का और एक चाँदी का।" और फ़रमाते हैं: "सुन लो अल्लाह का माल अनमोल है, सुन लो अल्लाह का माल जन्नत है।" (४) कौसर का पानी उम्मत-ए-मरहूमा के लिए सबसे अधिक फ़ायदेमंद है; एक बूंद जिसके गले से नीचे उतर जाएगी, वह अनंत काल तक प्यासा नहीं होगा, और न ही कभी उसके चेहरे पर स्याही (कालापन) आएगी।		

فتاوی رضویہ جلد چہارم

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱۷	مسئلہ: زمزم شریف سے غسل و وضو بلا کراہت جائز ہے اور ڈھیلے کے بعد استنجاء مکروہ اور نجاست دھونا گناہ۔	۱	۴۰۸
۱۸	فائدہ جلیلہ: ہر خیر ہر نعمت ہر مراد ہر دولت دین میں دنیا میں آخرت میں روزِ اول سے آج تک آج سے ابدالآباد تک جسے ملی یا ملنی ہے حضور اقدس سید عالم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے دست اقدس سے ملی اور ملنی ہے معطی حقیقی اللہ عزوجل ہے اور اس کی تمام نعمتوں کے بانٹنے والے صرف محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم، دوسرے سے کوئی نعمت کوئی مراد کسی کو کبھی ملی نہ ملے۔	۳	۵۳۵
۱۹	۱۹ فائدہ: اللہ اکبر کاشانہ نبوت میں دو دو مہینے آگ روشن نہ ہوتی صرف کھجورے اور پانی پر اہلیت طہارت کی گزر رہتی۔	۶	۵۵۰
۲۰	مسئلہ: رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے کسی چیز سے شرف نہ پایا بلکہ جو چیز حضور کی طرف منسوب ہوگئی اسے شرف مل گیا۔	۳	۵۵۲
۲۱	مسئلہ: اللہ عزوجل نے غیر افضل اشیا کو بھی اپنے حبیب صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے متعلق فرماتا ہے تاکہ ان اشیا کو فضل حاصل ہو لہٰذا ولادتِ اقدس ماہِ ربیع الاول شریف میں ہوئی نہ ماہِ مبارک رمضان میں اور روزِ جان افروز	۴	۵۵۲

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	دوشنبہ ہوئی نہ روزِ مبارک جمعہ اور مکانِ مولدِ اقدس میں ہوئی نہ کعبہ معظمہ میں۔		
۲۲	دلائل افضلیت کوثر: (۱) آخرت میں وہی افضل ہے جو عند اللہ افضل ہے اور جو عند اللہ افضل ہے فی نفسہ افضل ہے اور جو فی نفسہ افضل ہے جہاں ہوا افضل ہے تو جو آخرت میں افضل ہے وہی دنیا میں افضل ہے اور شک نہیں کہ آخرت میں کوثر افضل ہے تو اب بھی کوثر زمزم سے افضل ہے۔ (۲) زمزم دنیا کا پانی ہے اور کوثر آخر کا، اور اللہ عزوجل فرماتا ہے بے شک آخرت درجوں میں بڑی ہے اور فضیلت میں زائد۔ (۳) کوثر کا پانی جنت سے ہے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم فرماتے ہیں: کوثر میں جنت سے دو پر نالے گر رہے ہیں ایک سونے کا ایک چاندی کا۔ اور فرماتے ہیں: سن لو اللہ کا مال بیش بہا ہے، سن لو اللہ کا مال جنت ہے۔ (۴) کوثر کا پانی اُمتِ مرحومہ کیلئے زیادہ نافع ہے ایک قطرہ جس کے حلق میں جائے گا ابدالآباد تک کبھی پیاسا نہ ہوگا نہ کبھی اس کے چہرے پر سیاہی آئے۔		

صفحہ 743 کا 761

Fatawa Razawiyya, Volume 4

Serial Number	Titles	Benefit Number	Page
(5)	Allah Almighty bestowed a great favor upon His Beloved, the Most Excellent of Messengers (peace and blessings be upon him and his family), through the gift of Kauthar: "Indeed, We have granted you [O Muhammad] al-Kauthar." Verily, We, Who are possessed of Greatness, have granted you, who are unique and peerless, al-Kauthar. In this, the plural pronoun in 'Inna' (We) and the singular 'kaf' (you) in 'Atainaka' point to this. How then can the greatness of Kauthar be estimated? May Allah Almighty grant us, poor and worthless ones, the fortune of drinking from it through the generous hands of His Noble Beloved (peace and blessings be upon him and his family). Amen!	6	552
23	Benefit: The Exalted Messenger (peace and blessings be upon him, his family, and companions) is a divine blessing for the whole world.	5	737

Fundamental Principles (Fawa'id Usuliyah)

Serial No.	Title	Benefit No.	Page No.
1	Ruling: Habitually abandoning Sunnah Mu'akkadah (emphasized Sunnah) leads to sin and deserves punishment.	5	95
2	Benefit: To the extent possible, it is recommended to avoid disagreement among scholars, as long as adhering to it does not necessitate something disliked (Makruh) in one's own school of thought.	1	98
3	Benefit: Sunnat-e-Huda is the name for Sunnah Mu'akkadah, and Sunnat-e-Za'idah is the name for Sunnah Ghair Mu'akkadah (non-emphasized Sunnah).	2	174
4	Ruling: Abandoning Sunnah Mu'akkadah once or twice earns reproach but is not a sin; however, if it becomes a habit, one becomes a sinner. In this regard, dispelling doubts and reconciling the statements of the noble scholars.	2	176

Serial No.	Title	Benefit No.	Page No.
5	Benefit: Although jurists use the general term 'disliked' (Karahat) for both specifically 'disliked towards prohibition' (Makruh Tahrimi) and 'disliked towards permissibility' (Makruh Tanzihi), the truth is that 'disliked' in an absolute sense refers to 'disliked towards prohibition' unless proven otherwise by evidence.	2	178
6	Benefit: Makruh Tanzihi is not linguistically or legally prohibited, even if its grammatical form is that of a prohibition.	2	179
7	Ruling: Wastefulness (Israf), which is impermissible and a sin, occurs in only two ways: first, spending and using for any sin; second, wasting wealth purely in vain.	1	184
8	Benefit: A recommended act (Mustahab) completes a Sunnah, a Sunnah completes an obligatory (Wajib) act, a Wajib act completes a compulsory (Fard) act, and a Fard act completes faith.	4	187
9	Ruling: It is recommended to respect the schools of thought of other Imams as long as it does not lead to something disliked (Makruh) in one's own school of thought.	3	414

फ़तावा रज़विया, खंड 4

क्रम संख्या	शीर्षक	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ
(5)	अल्लाह अज़-व-जल्ल ने कौसर प्रदान करके अपने हबीब अफ़ज़ल-उल-रुसुल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर महान उपकार किया कि "बेशक हमने आपको कौसर प्रदान किया"। वास्तव में हमने, जो महानता वाले हैं, आपको, जो अद्वितीय और बेजोड़ हैं, कौसर प्रदान किया। इसी ओर 'इन्ना' में बहुवचन सर्वनाम और 'अतयनाका' में 'काफ़' एकवचन का संकेत है। तो कौसर की महानता का क्या अंदाज़ा हो सकता है? अल्लाह अज़-व-जल्ल हम जैसे मूल्यहीन निर्धनों को भी अपने हबीब करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि वसल्लम) के करम वाले हाथों से उसमें से पीना नसीब फरमाए। आमीन!	6	552
23	फ़ायदा: हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सहबिहि वसल्लम) पूरे संसार के लिए ईश्वरीय नेमत (आशीर्वाद) हैं।	5	737

फ़वाइद उसूलिया (मौलिक सिद्धांत)

क्रम सं.	शीर्षक	फ़ायदा सं.	पृष्ठ सं.
1	मसला: सुन्नत मुअक्कदा को आदत के तौर पर छोड़ने से व्यक्ति गुनहगार और सजा का पात्र होता है।	5	95
2	फ़ायदा: यथासंभव विद्वानों के मतभेद से बचना मुस्तहब (पसंदीदा) है, जब तक कि उसका पालन करने में अपने मज़हब में कोई मकरूह (नापसंद काम) अनिवार्य न हो जाए।	1	98
3	फ़ायदा: सुन्नत-ए-हुदा सुन्नत मुअक्कदा का नाम है और सुन्नत-ए-ज़ायदा सुन्नत ग़ैर मुअक्कदा का।	2	174
4	मसला: सुन्नत मुअक्कदा को एक-दो बार छोड़ना डांट-फटकार का कारण है लेकिन गुनाह नहीं, हाँ अगर छोड़ने की आदत बना ली जाए तो गुनहगार होगा। इस बारे में शंकाओं को दूर करना और विद्वानों के कथनों का सामंजस्य।	2	176

क्रम सं.	शीर्षक	फ़ायदा सं.	पृष्ठ सं.
5	फ़ायदा: हालांकि फ़ुक़हा (विधिवेत्ता) मकरूह तनज़ीही और तहरीमी दोनों के लिए सामान्य रूप से 'कराहत' शब्द का प्रयोग करते हैं, लेकिन असलियत यह है कि जब कराहत शब्द का निरपेक्ष रूप से प्रयोग किया जाए, तो उसका अर्थ मकरूह तहरीमी होता है, जब तक कि प्रमाण से इसके विपरीत सिद्ध न हो जाए।	2	178
6	फ़ायदा: मकरूह तनज़ीही भाषाई और शरीयत की दृष्टि से वर्जित नहीं है, भले ही इसमें निषेधात्मक शब्द का प्रयोग किया गया हो।	2	179
7	मसला: इसराफ़ (फ़िज़ूलखर्ची), जो नाजायज़ और गुनाह है, केवल दो स्थितियों में होता है: पहला यह कि किसी गुनाह के काम में खर्च और इस्तेमाल करें, दूसरा यह कि माल को बिल्कुल बेकार ज़ाया करें।	1	184
8	फ़ायदा: मुस्तहब सुन्नत को पूरा करता है, सुन्नत वाजिब को, वाजिब फ़र्ज़ को और फ़र्ज़ ईमान को पूरा करता है।	4	187
9	मसला: जब तक अपने मज़हब का कोई मकरूह काम अनिवार्य न हो, तब तक अन्य इमामों के मज़हब का सम्मान करना मुस्तहब है।	3	414

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ
(۵)	اللہ عزوجل نے عطائے کوثر سے اپنے حبیب افضل الرسل صلی اللہ علیہ وسلم پر احسانِ عظیم رکھا کہ انا اعطینک الکوثر۔ بیشک ہم نے کہ عظمت والے ہیں تم کو کہ بے مثل و یکتا ہو کوثر عطا فرمایا۔ اسی طرف انا میں ضمیر جمع اور اعطینک میں کاف مفرد کا اشارہ ہے تو کوثر کی عظمت کا کیا اندازہ ہو سکتا ہے اللہ عزوجل ہم فقرائے بے قدر کو بھی اپنے حبیب کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے کفِ کرم سے اُس میں سے پینا نصیب فرمائے۔ آمین!	۶	۵۵۲
۲۳	فائدہ: حضور اقدس صلی اللہ علیہ وعلیٰ آلہ وصحبہ وسلم تمام جہان کیلئے نعمت الہیہ ہیں۔	۵	۷۳۷

فوائد اصولیہ

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ
۱	مسئلہ: سنت مؤکدہ کے ترک عادت سے گنہ گار و مستحق عذاب ہوتا ہے۔	۵	۹۵
۲	فائدہ: حتی الامکان اختلاف علماء سے بچنا مستحب ہے جب تک اس کی رعایت میں اپنے مذہب کا مکروہ نہ لازم آئے۔	۱	۹۸
۳	فائدہ: سنتِ ہُدیٰ سنتِ مؤکدہ کا نام ہے اور سنت زائدہ سنتِ غیر مؤکدہ کا۔	۲	۱۷۴

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۴	مسئلہ: سنت مؤکدہ کا ترک ایک آدھ بار مورثِ عتاب ہے مگر گناہ نہیں، ہاں ترک کی عادت کرے تو گنہ گار ہو گا اور اس بارے میں دفع اوہام و توفیقِ اقوالِ علمائے کرام۔	۲	۱۷۶
۵	فائدہ: اگر چہ فقہاء خاص مکروہ تنزیہی یا تحریمی دونوں سے عام پر اطلاقِ کراہت فرماتے ہیں مگر اصل یہی ہے کہ اس کے مطلق سے مراد کراہتِ تحریمی ہے جب تک دلیل سے اس کا خلاف نہ ثابت ہو۔	۲	۱۷۸
۶	فائدہ: مکروہ تنزیہی لغتہً و شرعاً منہی عنہ نہیں اگر چہ نحویوں کے طور پر اس میں صیغہ نہی ہو۔	۲	۱۷۹
۷	مسئلہ: اسراف کہ ناجائز و گناہ ہے صرف دو صورتوں میں ہوتا ہے ایک یہ کہ کسی گناہ میں صرف و استعمال کریں دوسرے بیکار محض مال ضائع کریں۔	۱	۱۸۴
۸	فائدہ: مستحب سنت کی تکمیل ہے سنت واجب کی واجب فرض کی فرض ایمان کی۔	۴	۱۸۷
۹	مسئلہ: جب تک اپنے مذہب کا کوئی مکروہ لازم نہ آئے اور اماموں کے مذہب کی رعایت مستحب ہے۔	۳	۴۱۴

Fatawa-e-Razvia Volume 4

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
10	Ruling: Abandoning a recommended (Mustahab) act is not disliked (Makruh).	4	414
11	Ruling: The certainty that exists in something unknown is removed by doubt.	2	438
12	Ruling: In the convention of the early scholars, even the forbidden is called disliked.	4	445
13	Ruling: Individual obligation (Fard al-Ayn) is stronger than communal obligation (Fard al-Kifayah).	4	655
14	Ruling: In a matter that is legally based on reality, and if knowledge of that reality can be obtained, then at that time, acting on conjecture and opinion is not permissible.		737
15	Benefit: It is the noble practice of the Holy Quran to express a universal rule (Kulliyah) with 'majority' (Akthariyah) in some places.	1	737
16	Benefit: Just as sometimes 'majority' is intended by 'all', similarly 'all' is intended by 'majority'.	2	737
17	Benefit: Sometimes 'scarcity' is spoken but 'non-existence' is intended.	3	737
18	Ruling: As long as definitive evidence is easily available, acting on speculative evidence is not permissible. I say, for this reason, following (Taqlid of) the jurist Imams is mandatory for a non-jurist, and leaving it to act directly on Hadith is forbidden. This is because he will not understand the Hadith nor will he be aware of its prevalent or non-prevalent nature, its abrogating or abrogated status, the authenticity of its chain or text, or its jurisprudential accuracy. Therefore, he cannot even reach a sound opinion on the divine command. Mistaking one's own delusion for a sound opinion is a different matter. And if he followed the word of the Imam, he has certainly fulfilled the divine command: "So ask the people of knowledge	2	786

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
	if you do not know." To abandon certainty and fall into doubt and delusion is forbidden.		
19	Benefit: The jurists (Fuqaha) often do not consider rare cases in legal rulings.	3	806
20	Ruling: Someone swore not to perform ablution (Wudu) due to a nosebleed. Later, he urinated, and then his nose bled, and he performed ablution. His oath is broken. This ablution will be attributed to the nosebleed, even though the state of purity was already lost initially by urination.	2	814

Natural Sciences (Tabiyat)

Serial No.	Topics	Benefit No.	Page No.
1	Benefit: Colors exist even in the dark; it is not as philosophers and Ibn Sina claim, that color disappears in the dark and reappears when there is light.	2	550
2	Benefit: A body with a weak composition cannot be flattened/malleable by fire.	3	680

फतावा-ए-रज़विया खंड 4

क्रम संख्या	शीर्षक	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
10	मसला: मुस्तहब (पसंदीदा कार्य) का त्याग करना मकरूह (नापसंद) नहीं है।	4	414
11	मसला: किसी अज्ञात वस्तु में जो निश्चितता होती है, वह संदेह से समाप्त हो जाती है।	2	438
12	मसला: पूर्ववर्ती इमामों के चलन में हराम (वर्जित) को भी मकरूह कहा जाता है।	4	445
13	मसला: फर्ज़-ए-ऐन (व्यक्तिगत अनिवार्य कर्तव्य) फर्ज़-ए-किफ़ाया (सामुदायिक अनिवार्य कर्तव्य) से अधिक प्रबल है।	4	655
14	मसला: वह बात जो शरई तौर पर वास्तविकता पर आधारित हो और यदि वह वास्तविकता का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता हो, तो उस समय अनुमान और धारणा पर कार्य करना जायज़ नहीं है।		737
15	फायदा: कुरान करीम की पवित्र परंपरा है कि कुछ स्थानों पर वह 'समग्र' (कुलिया) को 'बहुमत' (अकसरिया) से व्यक्त करता है।	1	737
16	फायदा: जैसे कभी 'संपूर्ण' से 'बहुमत' अभिप्रेत होता है, वैसे ही 'बहुमत' से 'संपूर्ण'।	2	737
17	फायदा: कभी 'अल्पता' (कल्लत) शब्द का प्रयोग किया जाता है लेकिन उसका अर्थ 'अनुपस्थिति' (अदम) होता है।	3	737
18	मसला: जब तक निश्चित प्रमाण (दलील-ए-क़तई) आसानी से उपलब्ध हो, तब तक अनुमानित प्रमाण पर कार्य करना जायज़ नहीं है। मैं कहता हूँ, इसीलिए एक गैर-मुज्तहिद (सामान्य व्यक्ति) के लिए मुज्तहिद इमामों का अनुसरण (तक़लीद) करना अनिवार्य है और उसे छोड़कर केवल हदीस पर कार्य करना वर्जित (हराम) है, क्योंकि वह हदीस को नहीं समझ पाएगा, न ही उसके प्रचलित या अप्रचलित, निरस्त करने वाले या निरस्त होने वाले होने, उसकी श्रृंखला की प्रामाणिकता, पाठ की प्रामाणिकता या विधिशास्त्रीय सटीकता से	2	786

क्रम संख्या	शीर्षक	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
	अवगत हो सकेगा। इस प्रकार उसे ईश्वरीय आदेश पर धारणा भी प्राप्त नहीं हो सकती; अपने भ्रम को धारणा समझ लेना अलग बात है। और यदि उसने इमाम के कथन पर कार्य किया, तो उसने निश्चित रूप से ईश्वरीय आदेश का पालन किया कि "तो ज्ञान वालों से पूछो यदि तुम नहीं जानते।" निश्चितता को छोड़कर संदेह और भ्रम में पड़ना वर्जित है।		
19	फायदा: प्रतिष्ठित न्यायविद्(फ़ुक़्हा) आदेशों में दुर्लभ स्थितियों का प्रायः ध्यान नहीं रखते।	3	806
20	मसला: किसी ने शपथ ली कि वह नकसीर फूटने के कारण वज़ू(शुद्धि) नहीं करेगा। फिर उसने पेशाब किया, उसके बाद नाक से खून बहा और उसने वज़ू किया। शपथ टूट गई। यह वज़ू नकसीर के कारण भी माना जाएगा, भले ही वज़ू शुरुआत में पेशाब के कारण टूट चुका था।	2	814

प्राकृतिक विज्ञान (तबीयत)

क्रम संख्या	शीर्षक	लाभ संख्या	पृष्ठ संख्या
1	फायदा: रंग अंधेरे में भी मौजूद रहते हैं; ऐसा नहीं है जैसा कि दार्शनिकों और इब्न सिना का मानना है कि अंधेरे में रंग लुप्त हो जाता है और प्रकाश होने पर पुनः प्रकट होता है।	2	550
2	फायदा: कमजोर संरचना वाला पिंड अग्नि द्वारा चपटा नहीं किया जा सकता।	3	680

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۱۰	مسئلہ : مستحب کا ترک مکروہ نہیں	۴	۴۱۴
۱۱	مسئلہ : جو یقین کسی مجہول میں ہو شک سے زائل ہو جاتا ہے۔	۲	۴۳۸
۱۲	مسئلہ : ائمہ متقدمین کے عرف میں حرام کو بھی مکروہ کہتے ہیں۔	۴	۴۴۵
۱۳	مسئلہ : فرضِ عین فرضِ کفایہ سے قوی تر ہے۔	۴	۶۵۵
۱۴	مسئلہ : جو بات شرعاً واقع پر مبنی ہو اور یہ علم واقع حاصل کر سکتا ہو اس وقت گمان و ظن پر عمل کرنا جائز نہیں۔		۷۳۷
۱۵	فائدہ: قرآن کریم کی سنتِ کریمہ ہے کہ بعض جگہ کلیہ کو اکثر یہ سے تعبیر فرماتا ہے۔	۱	۷۳۷
۱۶	فائدہ: جیسے کبھی کل سے اکثر مراد ہوتا ہے یونہی اکثر سے کل۔	۲	۷۳۷
۱۷	فائدہ: کبھی قلت بولتے ہیں اور مراد عدم۔	۳	۷۳۷
۱۸	مسئلہ : جب تک دلیلِ قطعی با آسانی ملے یادلیلِ ظنی پر عمل جائز نہیں۔ اقول اسی لیے غیر مجتہد پر ائمہ مجتہدین کی تقلید فرض اور اسے چھوڑ کر عمل بالحدیث حرام ہے کہ یہ حدیث کو نہ سمجھے گانہ اس کے رائج مرجوح ناسخ منسوخ صحتِ اسناد صحتِ متن صحتِ فقہی پر مطلع ہو سکے گا تو اسے حکمِ الٰہی پر ظن بھی نہیں مل سکتا اپنے وہم کو ظن سمجھ لینا دوسری بات ہے اور	۲	۷۸۶

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	امام کے قول پر عمل کیا تو قطعاً حکمِ الٰہی بجالایا کہ فَسْأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ علم والوں سے پوچھو اگر تمہیں علم نہ ہو، تو قطع ویقین کو چھوڑ کر شک و وہم میں پھنسنا حرام ہے۔		
۱۹	فائدہ: فقہائے کرام احکام میں نادر صورتوں کا اکثر لحاظ نہیں فرماتے۔	۳	۸۰۶
	مسئلہ : قسم کھائی کہ نکسیر پھوٹنے سے وضو نہ کرے گا پھر اس نے پیشاب		
۲۰	کیا اس کے بعد ناک سے خون بہا اور وضو کیا قسم ٹوٹ گئی یہ وضو نکسیر سے بھی ٹھہرے گا اگرچہ وضو ابتدا ء پیشاب سے ٹوٹ چکا تھا۔	۲	۸۱۴

طبیعات

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
	فائدہ : رنگتیں تاریکی میں بھی موجود رہتی ہیں نہ جیسے فلاسفہ و ابن		
۱	سینا کا زعم ہے کہ اندھیرے میں رنگ معدوم ہو جاتا ہے جب روشنی ہو پھر موجود ہوتا ہے۔	۲	۵۵۰
۲	فائدہ : ضعیف التركيب جسم منبطح بالنار نہیں ہو سکتا۔	۳	۶۸۰

Fatawa Rizwia - Volume 4

Serial No.	Titles	Benefit No.	Page No.
3	Benefit: Softening and melting are of two types; one where the knot opens and the other where it doesn't, remaining in its original form in fire.	1	682
4	Benefit: Earthly components also move forward without any intermediary.	4	685
5	Benefit: Everything in a mine is the offspring of the marriage of sulfur and mercury; sulfur is male and mercury is female.	1	690
	Miscellaneous		
1	Benefit: Even for a child, there are sins worthy of this; the suffering they experience is a compensation for those sins.	6	612
2	Benefit: No animal is slaughtered, no tree is cut down, no leaf falls except when it becomes heedless in the glorification of Allah.	7	612
3	Benefit: Research regarding mica (Abrak) is that it is also a stone; the floor stone is also a type of mica.	4	698
4	Benefit: Research on the application of "Rasaas" and that it refers to both tin and lead; yes, if "Abyaz" is said, it specifically means tin, and if "Aswad" is said, it specifically means lead. The specific name for tin is "Qalai" and "Qasdeer", and for lead, it is "Surb".	1	699
5	Benefit: The seven bodies, or seven metals, or seven minerals, or seven "mantar qa'at", i.e., the seven metals are: 1. Gold, 2. Silver, 3. Copper, 4. Iron, 5. Lead, 6. Tin, 7. Zinc. This zinc is called "Rui Tutiya", "Rooh Tutiya", or "Khaar-e-Seeni". Brass is not among them as it is a manufactured item made by mixing copper and zinc.	1	700
6	Benefit: "Zaaj" is not alum.	2	700
7	Benefit: Research that coral is a stone.	3	711
8	Benefit: The date tree has a part of vitality and animality, just as coral has a part of plant life.	5	711

फ़तावा रज़विया - जिल्द 4

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
३	फ़ायदा: नरमी और पिघलाव दो तरह के होते हैं; एक गाँठ खुलकर और दूसरा बिना खुले, आग में असली निशान इसी में हैं।	१	६८२
४	फ़ायदा: ज़मीनी हिस्से बिना किसी माध्यम के भी आगे बढ़ जाते हैं।	४	६८५
५	फ़ायदा: खान (खदान) की हर चीज़ गंधक और पारे के निकाह की संतान है; गंधक नर है और पारा मादा।	१	६९०
	विविध (متفرقات)		
१	फ़ायदा: बच्चे के लिए भी इसके योग्य गुनाह हैं; उसे जो तकलीफ़ पहुँचती है, वह उन गुनाहों का बदला (कफ़्फ़ारा) है।	६	६१२
२	फ़ायदा: कोई जानवर ज़ब्ह नहीं किया जाता, कोई पेड़ नहीं काटा जाता, कोई पत्ता नहीं गिरता, मगर तब जब वह अल्लाह की तस्बीह (महिमामंडन) में ग़फ़लत (लापरवाही) करता है।	७	६१२
३	फ़ायदा: अभ्रक के बारे में शोध यह है कि वह भी पत्थर है; बिछाने वाला पत्थर भी एक प्रकार का अभ्रक है।	४	६९८
४	फ़ायदा: 'रसास' के प्रयोग पर शोध और यह कि यह राँगा (टिन) और सीसा दोनों को कहते हैं; हाँ, अगर 'अबिअज़' (सफ़ेद) कहें तो ख़ास राँगा मुराद है और 'अस्वद' (काला) तो ख़ास सीसा। राँगे का ख़ास नाम 'क़लई' और 'क़स्दीर' है और सीसे का 'सर्ब'।	१	६९९
५	फ़ायदा: 'अजसाद-ए-सबा' या 'फ़िलज़ात-ए-सबा' या 'मादिन-ए-सबा' या 'मन्तर क़ात-ए-सबा' यानी सातों धातुएँ ये हैं: १. सोना, २. चाँदी, ३. ताँबा, ४. लोहा, ५. सीसा, ६. राँगा, ७. जस्त। इस जस्त को 'रुई तूतिया', 'रूह तूतिया' या 'ख़ार-ए-सीनी' कहते हैं। पीतल इनमें नहीं है क्योंकि वह एक निर्मित चीज़ है जो ताँबे और जस्त को मिलाकर बनाई जाती है।	१	७००
६	फ़ायदा: 'ज़ाज' फिटकरी नहीं है।	२	७००

क्रम संख्या	विषय	फ़ायदा नंबर	पृष्ठ संख्या
७	फ़ायदा: यह शोध कि मूंगा एक पत्थर है।	३	७११
८	फ़ायदा: खजूर के पेड़ में जीवंतता और पशुत्व का एक हिस्सा होता है, जिस तरह मूंगे में वनस्पति का एक हिस्सा होता है।	५	७११

पृष्ठ 746 का 761

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۳	فائدہ: لین و ذوبان دو طرح ہیں ایک گرہ کھل کر دوسرے بے کھلے آثار اصلیہ نار میں یہی ہے	۱	۶۸۲
۴	فائدہ: اجزائے ارضیہ بلا واسطہ بھی آگے ہو جاتے ہیں۔	۴	۶۸۵
۵	فائدہ: کان کی ہر چیز گندھک پارے کے نکاح کی اولاد ہے گندھک نر ہے اور پارہ مادہ۔	۱	۶۹۰
	متفرقات		
۱	فائدہ: بچے کیلئے بھی اس کے قابل گناہ ہیں اسے جو تکلیف پہنچتی ہے انہیں گناہوں کا عوض ہے۔	۶	۶۱۲
۲	فائدہ: کوئی جانور ذبح نہیں کیا جاتا، کوئی پیڑ کاٹا نہیں جاتا، کوئی پتا نہیں گرتا مگر جب کہ تسبیح الٰہی میں غفلت کرتا ہے۔	۷	۶۱۲
۳	فائدہ: ابرک کی نسبت تحقیق کہ وہ بھی پتھر ہے، بچھونے کا پتھر بھی ایک قسم کی ابرک ہے۔	۴	۶۹۸
۴	فائدہ: تحقیق اطلاق رصاص اور یہ کہ وہ رانگ اور سیسے دونوں کو کہتے ہیں، ہاں ابیض کہیں تو خاص رانگ مراد ہے اور اسود تو خاص سیسا رانگ کا خاص نام قلعی و قصدیہ ہے اور سیسے کا سرب۔	۱	۶۹۹

نمبر شمار	عنوانات	فائدہ نمبر	صفحہ نمبر
۵	فائدہ: اجساد سبعہ یا فلزات سبعہ یا معادن سبعہ یا منطر قات سبعہ یعنی ساتوں دھاتیں یہ ہیں: ۱۔ سونا، ۲۔ چاندی، ۳۔ تانبا، ۴۔ لوہا، ۵۔ سیسا، ۶۔ رانگ، ۷۔ جست اس جست کو روئی توتیا، روح توتیا خار صینی کہتے ہیں پیتل ان میں نہیں کہ مصنوع چیز ہے تانبا اور جست ملا کر بناتے ہیں۔	۱	۷۰۰
۶	فائدہ: زاج پھٹکری نہیں۔	۲	۷۰۰
۷	فائدہ: اس کی تحقیق کہ مونگا پتھر ہے۔	۳	۷۱۱
۸	فائدہ: کھجور کا درخت ایک حصہ جانداری و حیوانیت کا رکھتا ہے جس طرح مونگا ایک حصہ شجریت کا۔	۵	۷۱۱

Fatawa Rizvia Volume Four Titles

Serial No. Benefit No. Page No.

1 747

Benefit: Bringing rhymes without 'tasis' along with 'dal' and 'tasis' rhymes, such as 'bismil' and 'qatil', is not considered flawed in Persian, and it is also commonly prevalent in Urdu. However, in Arabic poetry, it is fundamentally not permissible. Tusi, in 'Mi'yar', describing the Arab tradition, says: "It is mandatory to observe 'tasis' throughout the entire poem and in every verse on a single rhyme." The Qadiani apostate, regarding a poem he wrote or attributed to himself (written by Nur-ud-Din), declared it his miracle and compared it to the Great Quran, claiming that just as Mustafa (peace and blessings of Allah be upon him and his family) received the Quran as a miracle, he received this poem as a miracle.

He said: May Allah seize him with the seizure of the All-Mighty, All-Powerful. And his speech was a miraculous sign for him. Likewise, I have a word that prevails over all.

Its foundation is on rhymes without 'tasis'. The opening verse (Matla) is: O land, extend thy hand, for thy hand is pearls, misguided and deceptive.

In its rhymes, he has frequently brought 'mu'assasa' rhymes, for example: - The dust of my bones has been scattered by the winds. - We have a helper whose like no other can imitate. - And he cast away those who insulted him to the daggers. - So is there any rushing towards suspicions after him? - So glad tidings for a people who obeyed me and gave preference. - And if Jesus was among the messengers, the last one.

And what a complaint against him! The accursed Iblis made Mirza a joker and inspired this 169th verse in the same poem: And do not consider the world like a dripper dripping, Do you know how the night of joy becomes morning?

He did not even realize whether it is 'raddi' or 'h'. And what else to complain about? Hardly any verse or hemistich in the entire poem is correct in meter. Mostly, for this unlucky person, they are out of meter. Thousands upon thousands of curses on your such 'miracles' and long, accursed claims.

Ended with goodness, and our final call is: All praise belongs to Allah, Lord of the Worlds.

Page 747 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी शीर्षक

क्रम संख्या फ़ायदा नंबर पृष्ठ संख्या

1 747

फ़ायदा: 'दाल' और 'तासीस' वाले क़ाफ़ियों के साथ लाना जैसे 'बिस्मिल' और 'क़ातिल' फ़ारसी में दोषपूर्ण नहीं है और उर्दू में भी बेझिझक प्रचलित है। लेकिन अरबी कविता में यह मूलतः जायज़ नहीं है। तूसी 'मेयार' में अरबों के मत का वर्णन करते हुए कहते हैं: "पूरी क़सीदे में और हर शेर में एक ही क़ाफ़िए पर तासीस का पालन करना अनिवार्य है।" क़ादियानी मुर्तद ने जो एक क़सीदा लिखा या नूरुद्दीन के लिखे हुए को अपनी तरफ़ मंसूब किया, बहरहाल उसने इसे अपना मोजज़ा (चमत्कार) क़रार दिया और क़ुरआन-ए-अज़ीम की तरह बताया कि जैसे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को क़ुरआन मोजज़ा मिला था, मुझे यह क़सीदा मोजज़ा मिला है।

उसने कहा: अल्लाह उसे एक शक्तिशाली और सर्वशक्तिमान की पकड़ में ले ले। और उसका कलाम उसके लिए एक मोजज़ा वाली निशानी थी। इसी तरह मेरे पास एक ऐसी बात है जो सब पर ग़ालिब है।

इसकी बुनियाद बिना 'तासीस' के क़ाफ़ियों पर है। मतला यह है: ऐ धरती, अपना हाथ फैला, क्योंकि तेरे हाथ मोती हैं, गुमराह और धोखेबाज।

इसके क़ाफ़ियों में जगह-जगह 'मुअस्ससा' क़ाफ़िया लाया है, मसलन: - मेरी हड्डियों की धूल को हवाओं ने बिखेर दिया है। - हमारे पास एक सहायक है जिसकी कोई दूसरा नकल नहीं कर सकता। - और उसने उसे फेंक दिया जिसने खंजरों को गाली दी। - तो क्या उसके बाद संदेह की ओर भागना है? - तो उन लोगों के लिए खुशखबरी है जिन्होंने मेरी आज्ञा मानी और प्राथमिकता दी। - और यदि ईसा प्रेरितों में से थे, तो अंतिम।

और उसकी क्या शिकायत! इबलीस लईन ने मिर्ज़ा को मज़ाक बनाकर इसी क़सीदे में 169वें नंबर का यह शेर इल्हाम किया: और दुनिया को टपकने वाले टपकाव की तरह मत समझो, क्या तुम जानते हो कि खुशी की रात कैसे सुबह होती है?

यह भी तमीज़ न हुई कि रदी है या 'ह'। और उसकी भी क्या शिकायत! पूरे क़सीदे में शायद ही कोई शेर या मिसरा वज़न में ठीक होगा। अक्सर इस बदक़िस्मत के लिए बे-बहरे (बिना वज़न के) हैं। हज़ारों-हज़ार लानत तुम्हारे ऐसे एजाज़ और मलऊन लंबे दावों पर।

खैर के साथ समाप्त हुआ और हमारी आखिरी पुकार है: तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है।

पृष्ठ 747 का 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم عنوانات

نمبر شمار فائدہ نمبر صفحہ نمبر

۷۴۷ ۱

فائدہ: بے تاسیس قافیہ دئیل و تاسیس والے قافیوں کے ساتھ لانا جیسے بسمل و قاتل فارسی میں معیوب نہیں اور اردو بھی بے تکلف رائج ہے لیکن نظم عربی میں اصلاً جائز نہیں طوسی معیار میں بیان مذہب عرب میں کہتا ہے اعتبار تاسیس در ہمہ قصیدہ و در ہر شعر بریک قافیہ بود واجب باشد قادیانی مرتد نے جو ایک قصیدہ لکھا یا نور الدین کا لکھا ہوا اپنی طرف نسبت کیا بہر حال اسے اپنا معجزہ قرار دیا اور قرآن عظیم کے مثل بتایا کہ جیسے مصطفی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو قرآن معجزہ ملا تھا مجھے یہ قصیدہ معجزہ ملا ہے۔

قال اخذہ اللہ اخذ عزیز مقتدر ہ وکان کلامہ معجزأیة لہ کذلک لی قول علی الکل یبھر

اس کی بنا قوانی بے تاسیس پر ہے مطلع یہ ہے: ایا ارض مد قد د فاک مد مروار داک ضلیل واغراک موغر

اس کے قوانی میں جابجا قوانی موسسہ لایا ہے مثلاً: ع غبار عظامی قد سفتھا صر اصر ع لدینا معین لا یحاکیہ آخر ع والقی من سب الی الخناجر ع فھل بعدہ نحو الظنون تبادر ع فطوبی لقوم طاوعولی و آثروا ع و انکان عیسی او من الرسل آخر

اور اس کی کیا شکایت! ابلیس لعین نے مرزا کو مسخرہ بنا کر اسی قصیدہ میں ۱۶۹ نمبر کا یہ شعر القاء کیا۔

ولا تحسب الدنیا کناطف ناطفی اتدری بلیل مسرة کیف تصبح

یہ بھی تمیز نہ ہوئی کہ ردی ہے یا ح اور اس کی بھی کیا شکایت قصیدے بھر میں کم کوئی شعر یا مصرع وزن میں ٹھیک ہو گا اکثر اس بے بہرے کیلئے بے بحرے ہیں ہزاروں ہزار لعنت تمہارے ایسے اعجاز اور ملعون دعاوی دراز پر۔

تمت بالخیر و آخر دعونا ان الحمدللہ رب العلمین

Fatawa Razvia Volume 4 Sources and References

Name	Author	Hijri Year of Death
1. Al-Ajza' fi al-Hadith	Abd al-Rahman bin Umar bin Muhammad al-Baghdadi known as al-Nahhas	416
2. Al-Ajnas fi al-Furu'	Abu al-Abbas Ahmad bin Muhammad al-Natafi al-Hanafi	446
3. Al-Ikhtiyar Sharh al-Mukhtar	Abdullah bin Mahmud (bin Mawdud) al-Hanafi	683
4. Al-Adab al-Mufrad lil-Bukhari	Muhammad bin Isma'il al-Bukhari	256
5. Irshad al-Sari Sharh al-Bukhari	Shihab al-Din Ahmad bin Muhammad al-Qastallani	923
6. Irshad al-'Aql al-Salim	Abu al-Sa'ud Muhammad bin Muhammad al-'Imadi	951
7. Al-Arkan al-Arba'	Maulana Abd al-Ali Bahr al-'Ulum	1225
8. Al-Ashbah wa al-Naza'ir	Sheikh Zain al-Din bin Ibrahim bin Nujaim	970
9. Ash'at al-Lam'at	Sheikh Abd al-Haq Muhaddith al-Dehlawi	1052
10. Usul al-Bazdawi	Ali bin Muhammad al-Bazdawi	482
11. Al-Islah lil-Wiqayah fi al-Furu'	Ahmad bin Sulayman bin Kamal Pasha	940
12. Akam al-Marjan fi Ahkam al-Jaan	Qadi Badr al-Din Muhammad bin Abdullah al-Shibli	769
13. Anfaj al-Wasa'il	Qadi Burhan al-Din Ibrahim bin Ali al-Tarsusi al-Hanafi	758
14. Imdad al-Fattah	Hasan bin Ammar al-Shurunbulali	1069
15. Anwar al-A'immah al-Shafi'iyyah	Imam Yusuf al-Ardabili al-Shafi'i	799
16. Al-Idah lil-Wiqayah fi al-Furu'	Ahmad bin Sulayman bin Kamal Pasha	940
17. Amali fi al-Hadith	Abd al-Malik bin Muhammad bin Muhammad Bishran	432

Name	Author	Hijri Year of Death
18. Al-Ijaz fi al-Hadith	Ahmad bin Muhammad known as Ibn al-Sunni	364
19. Alqab al-Ruwat	Ahmad bin Abd al-Rahman al-Shirazi	407

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द चौथा मआख़िज़ व मराजे (स्रोत और सन्दर्भ)

नाम	मुसन्निफ़ (लेखक)	सन वफ़ात हिजरी
1. अल-अजज़ा फ़िल हदीस	अब्दुर्रहमान बिन उमर बिन मुहम्मद अल-बग़दादी अल-मारूफ़ बिल-नहहास	416
2. अल-अजनास फ़िल फ़ुरूं	अबुल अब्बास अहमद बिन मुहम्मद अन-नातिफ़ी अल-हनफ़ी	446
3. अल-इख़्तियार शरह अल-मुख़्तार	अब्दुल्लाह बिन महमूद (बिन मौदूद) अल-हनफ़ी	683
4. अल-अदब अल-मुफ़रद लिल-बुख़ारी	मुहम्मद बिन इसमाईल अल-बुख़ारी	256
5. इर्शाद अल-सारी शरह अल-बुख़ारी	शिहाब अल-दीन अहमद बिन मुहम्मद अल-क़स्तलानी	923
6. इर्शाद अल-अक़्ल अस-सलीम	अबू सऊद मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-इमादी	951
7. अल-अरकान अल-अरबा	मौलाना अब्दुल अली बहरुल उलूम	1225
8. अल-अशबाह वन-नज़ायर	शेख़ जैनुद्दीन बिन इब्राहीम इब्ने नुजैम	970
9. अश्आतुल लमात	शेख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी	1052
10. उसूल अल-बज़दवी	अली बिन मुहम्मद अल-बज़दवी	482
11. अल-इस्लाह लिल-विक़ाया फ़िल फ़ुरूं	अहमद बिन सुलेमान बिन कमाल पाशा	940
12. आकाम अल-मर्जान फ़ी अहकाम अल-जान	क़ाज़ी बद्रुद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अश्-शिब्ली	769
13. अनफ़जुल वसाईल	क़ाज़ी बुरहानुद्दीन इब्राहीम बिन अली अत-तरसूसी अल-हनफ़ी	758
14. इमदाद अल-फ़त्ताह	हसन बिन अम्मर अश्-शुरुनबुलाली	1069

नाम	मुसन्निफ़ (लेखक)	सन वफ़ात हिजरी
15. अनवारुल आइम्मतुश शाफ़ेईया	इमाम युसूफ़ अल-अर्दबेली अश-शाफ़ेई	799
16. अल-ईज़ाह लिल-विक़ाया फ़िल फ़ुरूं	अहमद बिन सुलेमान बिन कमाल पाशा	940
17. अमाली फ़िल हदीस	अब्दुल मलिक बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद बिशरान	432
18. अल-ईजाज़ फ़िल हदीस	अहमद बिन मुहम्मद अल-मारूफ़ बि-इब्नुस सुन्नी	364
19. अलक़ाब अर-रुवात	अहमद बिन अब्दुर्रहमान अश्-शीराज़ी	407

نام	مصنف	سن وفات ہجری
۱۔ الاجزاء فی الحدیث	عبدالرحمن بن عمر بن محمد البغدادی المعروف بالنحاس	۴۱۶
۲۔ الاجناس فی الفروع	ابوالعباس احمد بن محمد الناطفی الحنفی	۴۴۶
۳۔ الاختیار شرح المختار	عبداللہ بن محمود (بن مودود) الحنفی	۶۸۳
۴۔ الادب المفرد للبخاری	محمد بن اسمٰعیل البخاری	۲۵۶
۵۔ ارشاد الساری شرح البخاری	شہاب الدین احمد بن محمد القسطلانی	۹۲۳
۶۔ ارشاد العقل السلیم	ابو سعود محمد بن محمد العمادی	۹۵۱
۷۔ الارکان الاربع	مولانا عبدالعلی بحر العلوم	۱۲۲۵
۸۔ الاشباہ والنظائر	شیخ زین الدین بن ابراہیم بابن نجیم	۹۷۰
۹۔ اشعۃ اللمعات	شیخ عبدالحق المحدث الدہلوی	۱۰۵۲
۱۰۔ اصول البزدوی	علی بن محمد البزدوی	۴۸۲
۱۱۔ الاصلاح للوقایۃ فی الفروع	احمد بن سلیمان بن کمال پاشا	۹۴۰
	قاضی بدر الدین محمد بن عبداللہ الشبلی	۷۶۹

نام	مصنف	سن وفات ہجری
۱۲۔ اکام المرجان فی احکام الجان		
۱۳۔ انفج الوسائل	قاضی برہان الدین ابراہیم بن علی الطرسوسی الحنفی	۷۵۸
۱۴۔ امداد الفتاح	حسن بن عمار الشرنبلالی	۱۰۶۹
۱۵۔ انوار الائمۃ الشافعیہ	امام یوسف الاردیبلی الشافعی	۷۹۹
۱۶۔ الایضاح للوقایۃ فی الفروع	احمد بن سلیمان بن کمال پاشا	۹۴۰
۱۷۔ امالی فی الحدیث	عبدالملک بن محمد بن محمد بشران	۴۳۲
۱۸۔ الایجاز فی الحدیث	احمد بن محمد المعروف بابن السنی	۳۶۴
۱۹۔ القاب الروات	احمد بن عبدالرحمن الشیرازی	۴۰۷

Fatawa Rizvia Volume Fourth

ب (B) 20- Bada'i al-Sana'i - Ala al-Din Abi Bakr bin Mas'ud al-Kasani - 587 21- Al-Bidayah (Bidayah al-Mubtadi) - Ali bin Abi Bakr al-Marghinani - 593 22- Al-Bahr al-Ra'iq - Shaykh Zayn al-Din bin Ibrahim ibn Nujaym - 970 23- Al-Burhan Sharh Mawahib al-Rahman - Ibrahim bin Mawla al-Tarabulsi - 922 24- Bustan al-Arifin - Faqih Abu al-Layth Nasr bin Muhammad al-Samarqandi - 372 25- Al-Basit fi al-Furu' - Hujjat al-Islam Muhammad bin Muhammad al-Ghazali - 505 26- Al-Binayah Sharh al-Hidayah - Imam Badr al-Din Abu Muhammad al-Ayni - 855

ت (T) 27- Taj al-Arus - Sayyid Muhammad Murtada al-Zabidi - 1205 28- Tarikh Ibn 'Asakir - Ali bin al-Hasan al-Dimashqi ibn 'Asakir - 571 29- Tarikh al-Bukhari - Muhammad bin Isma'il al-Bukhari - 256 30- Al-Tajnis wa al-Mazid - Burhan al-Din Ali bin Abi Bakr al-Marghinani - 593 31- Tahrir al-Usul - Kamal al-Din Muhammad bin Abd al-Wahid bin al-Humam - 861 32- Tuhfat al-Fuqaha - Imam Ala al-Din Muhammad bin Ahmad al-Samarqandi - 540 33- Tahqiq al-Husami - Abd al-Aziz bin Ahmad al-Bukhari - 730 34- Al-Tarjih wa al-Tashih 'ala al-Quduri - Allamah Qasim bin Qutlubugha al-Hanafi - 879 35- Al-Ta'rifat li-Sayyid Sharif - Sayyid Sharif Ali bin Muhammad al-Jurjani - 816 36- Tafsir Ibn Jarir (Jami' al-Bayan) - Muhammad bin Jarir al-Tabari - 310 37- Tafsir al-Baydawi - Abdullah bin Umar al-Baydawi - 691 38- Tafsir al-Jalalayn - Allamah Jalal al-Din al-Mahalli wa Jalal al-Din al-Suyuti - 911_8 39- Tafsir al-Jamal - Sulayman bin Umar al-Ujayli al-Shahir bi-al-Jamal - 1204 40- Tafsir al-Qurtubi - Abu Abdullah Muhammad bin Ahmad al-Qurtubi - 761 41- Al-Tafsir al-Kabir - Imam Fakhr al-Din al-Razi - 26

फ़तावा रिज़विया चौथी जिल्द (भाग 4)

ब 20- बदाई अल-सनाई - अला अल-दीन अबी बक्र बिन मसूद अल-कासानी - 587 21- अल-बिदाया (बिदाया अल-मुबतदी) - अली बिन अबी बक्र अल-मर्गीनानी - 593 22- अल-बहर अल-रैक - शेख़ ज़ैन अल-दीन बिन इब्राहिम इब्न नुजैम - 970 23- अल-बुरहान शरह मवाहिब अल-रहमान - इब्राहिम बिन मौला अल-तराबुलसी - 922 24- बुस्तान अल-आरिफ़ीन - फ़क़ीह अबू अल-लैस नस्र बिन मुहम्मद अल-समरक़ंदी - 372 25- अल-बसीत फ़ी अल-फुर - हुज्जतुल इस्लाम मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-ग़ज़ाली - 505 26- अल-बिनाया शरह अल-हिदाया - इमाम बद्र अल-दीन अबू मुहम्मद अल-ऐनी - 855

त 27- ताज अल-अरूस - सैय्यद मुहम्मद मुर्तज़ा अल-ज़ुबैदी - 1205 28- तारीख़ इब्न असाकिर - अली बिन अल-हसन अद-दिमश्की इब्न असाकिर - 571 29- तारीख़ अल-बुख़ारी - मुहम्मद बिन इस्माइल अल-बुख़ारी - 256 30- अत-तजनीस वल मज़ीद - बुरहान अल-दीन अली बिन अबी बक्र अल-मर्गीनानी - 593 31- तहरीर अल-उसूल - कमाल अल-दीन मुहम्मद बिन अब्दुल वाहिद बिन अल-हुमाम - 861 32- तुहफ़त अल-फ़ुक़्हा - इमाम अला अल-दीन मुहम्मद बिन अहमद अल-समरक़ंदी - 540 33- तहक़ीक़ अल-हुसामी - अब्दुल अज़ीज़ बिन अहमद अल-बुख़ारी - 730 34- अत-तरजीह वत-तसहीह अलल क़ुदूरी - अल्लामा क़ासिम बिन क़ुतलुबग़ा अल-हनफ़ी - 879 35- अत-तारीफ़ात लि-सैय्यद शरीफ़ - सैय्यद शरीफ़ अली बिन मुहम्मद अल-जुरजानी - 816 36- तफ़सीर इब्न जरीर (जामे अल-बयान) - मुहम्मद बिन जरीर अत-तब्री - 310 37- तफ़सीर अल-बैदावी - अब्दुल्लाह बिन उमर अल-बैदावी - 691 38- तफ़सीर अल-जलालैन - अल्लामा जलाल अल-दीन अल-महल्ली व जलाल अल-दीन अस-सुयूती - 911_8 39- तफ़सीर अल-जमल - सुलैमान बिन उमर अल-उजैली अल-शहीर बिल-जमल - 1204 40- तफ़सीर अल-क़ुर्तुबी - अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद अल-क़ुर्तुबी - 761 41- अत-तफ़सीर अल-कबीर - इमाम फ़ख़्र अल-दीन अर-राज़ी - 26

पृष्ठ 749/761

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم

ب ۲۰- بدائع الصنائع - علاء الدین ابی بکر بن مسعود الکاسانی - ۵۸۷ ۲۱- البدایة(بدایة المبتدی) - علی بن ابی بکر المرغینانی - ۵۹۳ ۲۲- البحر الرائق - شیخ زین الدین بن ابراہیم بابن نجیم - ۹۷۰ ۲۳- البرہان شرح مواہب الرحمان - ابراھیم بن مولٰی الطرابلسی - ۹۲۲ ۲۴- بستان العارفین - فقیہ ابواللیث نصر بن محمد السمرقندی - ۳۷۲ ۲۵- البسیط فی الفروع - حجۃ الاسلام محمد بن محمد الغزالی - ۵۰۵ ۲۶- البنایة شرح الہدایة - امام بدرالدین ابو محمد العینی - ۸۵۵

ت ۲۷- تاج العروس - سید محمد مرتضٰی الزبیدی - ۱۲۰۵ ۲۸- تاریخ ابن عساکر - علی بن الحسن الدمشقی بابن عساکر - ۵۷۱ ۲۹- تاریخ البخاری - محمد بن اسمعیل البخاری - ۲۵۶ ۳۰- التجنیس والمزید - برہان الدین علی بن ابی بکر المرغینانی - ۵۹۳ ۳۱- تحریر الاصول - کمال الدین محمد بن عبد الواحد بن الہمام - ۸۶۱ ۳۲- تحفة الفقہاء - امام علاء الدین محمد بن احمد السمرقندی - ۵۴۰ ۳۳- تحقیق الحسامی - عبد العزیز بن احمد البخاری - ۷۳۰ ۳۴- الترجیح والتصحیح علی القدوری - علامہ قاسم بن قطلوبغا الحنفی - ۸۷۹ ۳۵- التعریفات لسید شریف - سید شریف علی بن محمد الجرجانی - ۸۱۶ ۳۶- تفسیر ابن جریر (جامع البیان) - محمد بن جریر الطبری - ۳۱۰ ۳۷- تفسیر البیضاوی - عبداللہ بن عمر البیضاوی - ۶۹۱ ۳۸- تفسیر الجلالین - علامہ جلال الدین المحلی وجلال الدین السیوطی - ۹۱۱_۸ ۳۹- تفسیر الجمل - سلیمان بن عمر العجیلی الشہیر بالجمل - ۱۲۰۴ ۴۰- تفسیر القرطبي - ابو عبداللہ محمد بن احمد القرطبی - ۷۶۱ ۴۱- التفسیر الکبیر - امام فخر الدین الرازی - ۲۶

Fatawa Razawiyya Volume 4

42- At-Tafsir al-Naysaburi: Nizam al-Din al-Hasan b. Muhammad b. Husayn al-Naysaburi: 728 43- Taqrib al-Qarib: Abu Zakariyya Yahya b. Sharaf al-Nawawi: 911 44- At-Taqrir wa al-Tahbir: Muhammad b. Muhammad ibn Amir al-Hajj al-Halabi: 879 45- At-Taysir lil-Munawi: Abd al-Rauf al-Munawi: 1031 46- Tabyin al-Haqa’iq: Fakhr al-Din Uthman b. Ali al-Zayla’i: 723 47- Taqrib al-Tahdhib: Shihab al-Din Ahmad b. Ali ibn Hajar al-Asqalani: 852 48- Tanwir al-Miqyas: Abu Tahir Muhammad b. Yaqub al-Firuzabadi: 817 49- Tanwir al-Absar: Shams al-Din Muhammad b. Abdullah b. Ahmad al-Timurtashi: 1004 50- Ta'zim al-Salah: Muhammad b. Nasr al-Marwazi: 294 51- Tarikh Baghdad: Abu Bakr Ahmad b. Ali al-Khatib al-Baghdadi: 463 52- At-Tawshih fi Sharh al-Hidayah: Umar b. Ishaq al-Siraj al-Hindi: 773

J

53- Jami' at-Tirmidhi: Abu Isa Muhammad b. Isa at-Tirmidhi: 279 54- Jami' al-Rumuz: Shams al-Din Muhammad al-Khurasani: 962 55- Al-Jami' al-Sahih lil-Bukhari: Imam Muhammad b. Isma'il al-Bukhari: 256 56- Al-Jami' al-Saghir fi al-Fiqh: Imam Muhammad b. Hasan al-Shaybani: 189 57- Al-Jami' al-Sahih li-Muslim: Muslim b. Hajjaj al-Qushayri: 261 58- Jami' al-Fiqh (Jawami' al-Fiqh): Abu Nasr Ahmad b. Muhammad al-Atabi: 586 59- Jami' al-Fusulayn: Shaykh Badr al-Din Mahmud b. Isra'il ibn Qadi: 823 60- Al-Jami' al-Kabir: Abi al-Hasan Ubaydullah b. Husayn al-Karkhi: 340 61- Jawahir al-Akhlati: Burhan al-Din Ibrahim b. Abu Bakr al-Akhlati: . 62- Al-Jawahir al-Zakiyyah: Ahmad b. Turki b. Ahmad al-Maliki: 989 63- Jawahir al-Fatawa: Rukn al-Din Abu Bakr b. Muhammad b. Abi al-Mafakhir: 565 64- Al-Jawharah al-Nayyirah: Abu Bakr b. Ali b. Muhammad al-Haddad al-Yamani: 800 65- Al-Jarh wa al-Ta'dil fi Rijal al-Hadith: Yahya b. Ma'in al-Baghdadi: 233 66- Al-Jami' al-Saghir fi al-Hadith: Allamah Jalal al-Din Abd al-Rahman b. Abi Bakr al-Suyuti: 911

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी

42- अत-तफ़्सीर अल-नयसाहबूरी: निज़ाम अल-दीन अल-हसन बिन मोहम्मद बिन हुसैन अल-नयसाहबूरी: 728 43- तक़रीब अल-क़रीब: अबू ज़करिया यहया बिन शरफ़ अल-नववी: 911 44- अत-तकरीर वल-तहबीर: मोहम्मद बिन मोहम्मद इब्न अमीर अल-हज अल-हलाबी: 879 45- अत-तयसीर लिल-मुनावी: अब्दुल रऊफ़ अल-मुनावी: 1031 46- तब्यीन अल-हक़ा'इक़: फ़ख्र अल-दीन उस्मान बिन अली अल-ज़ैलई: 723 47- तक़रीब अत-तहज़ीब: शिहाब अल-दीन अहमद बिन अली इब्न हजर अल-अस्क़लानी: 852 48- तनवीर अल-मिक़्यास: अबू ताहिर मोहम्मद बिन याक़ूब अल-फ़िरोज़ाबादी: 817 49- तनवीर अल-अब्सार: शम्स अल-दीन मोहम्मद बिन अब्दुल्ला बिन अहमद अत-तिमुरताशी: 1004 50- ताज़ीम अस-सलाह: मोहम्मद बिन नस्र अल-मरवज़ी: 294 51- तारीख़ बग़दाद: अबू बक्र अहमद बिन अली अल-खतीब अल-बग़दादी: 463 52- अत-तौशीह फ़ी शरह अल-हिदाया: उमर बिन इसहाक़ अस-सिराज अल-हिन्दी: 773

ज

53- जामी' अत-तिर्मिज़ी: अबू ईसा मोहम्मद बिन ईसा अत-तिर्मिज़ी: 279 54- जामी' अर-रुमूज़: शम्स अल-दीन मोहम्मद अल-खुरासानी: 962 55- अल-जामी' अस-सहीह लिल-बुखारी: इमाम मोहम्मद बिन इस्माइल अल-बुखारी: 256 56- अल-जामी' अस-सगीर फ़िल-फ़िक़्ह: इमाम मोहम्मद बिन हसन अल-शबानी: 189 57- अल-जामी' अस-सहीह लि-मुस्लिम: मुस्लिम बिन हज्जाज अल-कुशैरी: 261 58- जामी' अल-फ़िक़्ह (जवामी' अल-फ़िक़्ह): अबू नस्र अहमद बिन मोहम्मद अल-अताबी: 586 59- जामी' अल-फ़ुसूलैन: शैख़ बद्र अल-दीन महमूद बिन इस्राइल इब्न क़ाज़ी: 823 60- अल-जामी' अल-कबीर: अबी अल-हसन उबैदुल्ला बिन हुसैन अल-करखी: 340 61- जवाहर अल-अख्लाती: बुरहान अल-दीन इब्राहीम बिन अबू बक्र अल-अख्लाती: . 62- अल-जवाहर अज़-ज़किया: अहमद बिन तुर्की बिन अहमद अल-मालिकी: 989 63- जवाहर अल-फ़तावा: रुकन अल-दीन अबू बक्र बिन मोहम्मद बिन अबी अल-मफ़ाखिर: 565 64- अल-जौहरा अन-नय्याराह: अबू बक्र बिन अली बिन मोहम्मद अल-हद्दाद अल-यमनी: 800 65- अल-जर्ह वत-ता'दील फ़ी रिजाल अल-हदीस: यहया बिन मईन अल-बग़दादी: 233 66- अल-जामी' अस-सगीर फ़िल-हदीस: अल्लामा जलाल अल-दीन अब्दुर रहमान बिन अबी बक्र अल-सुयुती: 911

فتاوی رضویہ جلد چہارم

42- التفسير النيشابورى : نظام الدين الحسن بن محمد بن حسين النيشابورى : 728 43- تقريب القريب : ابوزكريا يحيى بن شرف النووى : 911 44- التقرير والتحبير : محمد بن محمد ابن امير الحاج الحلبى : 879 45- التيسير للمناوى : عبدالرؤف المناوى : 1031 46- تبيين الحقائق : فخر الدين عثمان بن على الزيلعي : 723 47- تقريب التهذيب : شهاب الدين احمد بن على ابن حجر العسقلانى : 852 48- تنوير المقياس : ابوطاهر محمد بن يعقوب الفيروز آبادى : 817 49- تنوير الابصار : شمس الدين محمد بن عبد الله بن احمد التمرتاشي : 1004 50- تعظيم الصلوة : محمد بن نصر المروزى : 294 51- تاريخ بغداد : ابوبكر احمد بن على الخطيب البغدادى : 463 52- التوشيح في شرح الهداية : عمر بن اسحاق السراج الهندى : 773

ج

53- جامع الترمذى : ابو عيسى محمد بن عيسى الترمذى : 279 54- جامع الرموز : شمس الدين محمد الخراسانى : 962 55- الجامع الصحيح للبخارى : امام محمد بن اسمعيل البخارى : 256 56- الجامع الصغير في الفقه : امام محمد بن حسن الشيبانى : 189 57- الجامع الصحيح لمسلم : مسلم بن حجاج القشيرى : 261 58- جامع الفقه (جوامع الفقه) : ابو نصر احمد بن محمد العتابى : 586 59- جامع الفصولين : شيخ بدر الدين محمود بن اسرائيل بابن قاضى : 823 60- الجامع الكبير : ابى الحسن عبيد الله بن حسين الكرخى : 340 61- جواهر الاخلاطى : برہان الدين ابراہيم بن ابو بكر الاخلاطى : . 62- الجواهر الزكية : احمد بن تركي بن احمد المالكى : 989 63- جواهر الفتاوى : ركن الدين ابوبكر بن محمد بن ابى المفاخر : 565 64- الجوهرة النيرة : ابوبكر بن على بن محمد

الحداد اليمينى : 800 65- الجرح والتعديل فى رجال الحديث : يحيى بن معين البغدادى : 233 66-

الجامع الصغير في الحديث : علامه جلال الدين عبد الرحمن بن ابى بكر السيوطى : 911

Fatawa Rizwia, Vol 4

(Haa) 67. Hashiyah ala al-Durar - Muhammad bin Mustafa Abu Sa'id al-Khadimi - 1176 68. Hashiyah ibn Shalbi ala al-Tabyin - Ahmad bin Muhammad al-Shalbi - 1021 69. Hashiyah ala al-Durar - Abd al-Halim bin Muhammad al-Rumi - 1013 70. Hashiyah ala al-Durar li Mulla Khusraw - Qazi Muhammad bin Faramuz Mulla Khusraw - 885 71. Hashiyah ala al-Muqaddimah al-Ashmawiyyah - Allama Safati - * 72. Al-Hashiyah li Sa'di Efendi - Sa'd Allah bin Isa Efendi - 925 73. Al-Hadiqat al-Nadiyyah Sharh Tariqah Muhammadiyyah - Abd al-Ghani al-Nabulsi - 1143 74. Al-Hawi al-Qudsi - Qazi Jamal al-Din Ahmad bin Muhammad Nuh al-Qabisi al-Hanafi - 600 75. Hasr al-Masail fil Furu' - Imam Abu al-Layth Nasr bin Muhammad al-Samarqandi al-Hanafi - 372 76. Hilyat al-Awliya - Abu Nu'aym Ahmad bin Abdullah al-Asbahani - 430 77. Hilyat al-Mujalli - Muhammad bin Muhammad ibn Amir al-Hajj - 879

(Khaa) 78. Khizanat al-Riwayat - Qazi Jakan al-Hanafi 79. Khizanat al-Fatawa - Tahir bin Ahmad Abd al-Rashid al-Bukhari - 522 80. Khizanat al-Muftin - Husayn bin Muhammad al-Sam'ani al-Sayqani - After 740 81. Khulasat al-Dalail - Husam al-Din Ali bin Ahmad al-Makki al-Razi - 598 82. Khulasat al-Fatawa - Tahir bin Ahmad Abd al-Rashid al-Bukhari - 542 83. Khayrat al-Hissan - Shihab al-Din Ahmad bin Hajar al-Makki - 973

(Dal) 84. Al-Dirayah fi Takhrij Ahadith al-Hidayah - Shihab al-Din Ahmad bin Ali ibn Hajar al-Asqalani - 852 85. Al-Durar (Durar al-Hukkam) - Qazi Muhammad bin Faramuz Mulla Khusraw - 885 86. Al-Durr al-Mukhtar - Ala al-Din al-Haskafi - 1088 87. Al-Durr al-Nathir - Allama Jalal al-Din Abd al-Rahman al-Suyuti - 911

फ़तावा रज़विया, खंड ४

(ح) ६७. हाशियत अल-दुरार - मुहम्मद बिन मुस्तफ़ा अबू सईद अल-खादिमी - ११७६ ६८. हाशियत इब्न शल्बी अलत तबीन - अहमद बिन मुहम्मद अल-शल्बी - १०२१ ६९. हाशियत अल-दुरार - अब्दुल हलीम बिन मुहम्मद अल-रूमी - १०१३ ७०. हाशियत अल-दुरार लि मुल्ला खुसरो - काज़ी मुहम्मद बिन फ़रामुज़ मुल्ला खुसरो - ८८५ ७१. हाशियत अल-मुक़द्दिमतुल अश्माविया - अल्लामा सफ़ती - * ७२. अल-हाशियतुल सादी आफ़ंदी - साद उल्लाह बिन ईसा आफ़ंदी - ९२५ ७३. अल-हद्दीक़तुन नदिया शरह तरीक़तुल मुहम्मदिया - अब्दुल ग़नी अल-नाबुलसी - ११४३ ७४. अल-हावी अल-क़ुदसी - काज़ी जमालुद्दीन अहमद बिन मुहम्मद नूह अल-क़ाबिसी अल-हनफ़ी - ६०० ७५. हसरुल मसाइल फ़िल फुरूअ - इमाम अबुल लैस नस्र बिन मुहम्मद अल-समरकंदी अल-हनफ़ी - ३७२ ७६. हिल्यतुल औलिया - अबू नईम अहमद बिन अब्दुल्लाह अल-अस्बहानी - ४३० ७७. हिल्यतुल मुजल्ली - मुहम्मद बिन मुहम्मद इब्न अमीरुल हज - ८७९

(خ) ७८. खिज़ानतुल रिवायत - काज़ी जकन अल-हनफ़ी ७९. खिज़ानतुल फ़तावा - ताहिर बिन अहमद अब्दुल रशीद अल-बुखारी - ५२२ ८०. खिज़ानतुल मुफ़्तीन - हुसैन बिन मुहम्मद अल-समानी अल-सैक़ानी - ७४० के बाद ८१. खुलासातुल दलाइल - हुसामुद्दीन अली बिन अहमद अल-मक्की अल-राज़ी - ५९८ ८२. खुलासातुल फ़तावा - ताहिर बिन अहमद अब्दुल रशीद अल-बुखारी - ५४२ ८३. खैरातुल हिसान - शहाबुद्दीन अहमद बिन हजर अल-मक्की - ९७३

(د) ८४. अद-दिरया फ़ी तख़रीज अहादीस अल-हिदाया - शहाबुद्दीन अहमद बिन अली इब्न हजर अल-असक़लानी - ८५२ ८५. अद-दुरार (दुररुल हुक्काम) - काज़ी मुहम्मद बिन फ़रामुज़ मुल्ला खुसरो - ८८५ ८६. अद-दुर्रुल मुख्तार - अलाउद्दीन अल-हस्कफ़ी - १०८८ ८७. अद-दुर्रुल नज़ीर - अल्लामा जलालुद्दीन अब्दुर रहमान अल-सुयूती - ९११

पृष्ठ ७५१/७६१

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم

ح ۶۷۔ حاشیۃ علی الدرر - محمد بن مصطفٰی ابوسعید الخادمی - ۱۱۷۶ ۶۸۔ حاشیۃ ابن شلبی علی التبیین - احمد بن محمد الشلبی - ۱۰۲۱ ۶۹۔ حاشیۃ علی الدرر - عبدالحلیم بن محمد الرومی - ۱۰۱۳ ۷۰۔ حاشیۃ علی الدرر لملا خسرو - قاضی محمد بن فراموز ملا خسرو - ۸۸۵ ۷۱۔ حاشیۃ علی المقدمۃ العشماویۃ - علامہ سفطی - * ۷۲۔ الحاشیۃ لسعدی آفندی - سعد اللہ بن عیسٰی آفندی - ۹۲۵ ۷۳۔ الحدیقۃ الندیۃ شرح طریقہ محمدیۃ - عبدالغنی النابلسی - ۱۱۴۳ ۷۴۔ الحاوی القدسی - قاضی جمال الدین احمد بن محمد نوح القابسی الحنفی - ۶۰۰ ۷۵۔ حصر المسائل فی الفروع - امام ابو اللیث نصر بن محمد السمرقندی الحنفی - ۳۷۲ ۷۶۔ حلیۃ الاولیاء - ابو نعیم احمد بن عبداللہ الاصبہانی - ۴۳۰ ۷۷۔ حلیۃ المجلی - محمد بن محمد ابن امیر الحاج - ۸۷۹

خ ۷۸۔ خزانۃ الروایات - قاضی جکن الحنفی ۷۹۔ خزانۃ الفتاوٰی - طاہر بن احمد عبدالرشید البخاری - ۵۲۲ ۸۰۔ خزانۃ المفتین - حسین بن محمد السمعانی السیقانی - ۷۴۰ کے بعد ۸۱۔ خلاصۃ الدلائل - حسام الدین علی بن احمد المکی الرازی - ۵۹۸ ۸۲۔ خلاصۃ الفتاوٰی - طاہر بن احمد عبدالرشید البخاری - ۵۴۲ ۸۳۔ خیرات الحسان - شہاب الدین احمد بن حجر المکی - ۹۷۳

د ۸۴۔ الدرایۃ فی تخریج احادیث الہدایۃ - شہاب الدین احمد بن علی ابن حجر العسقلانی - ۸۵۲ ۸۵۔ الدرر (درر الحکام) - قاضی محمد بن فراموز ملا خسرو - ۸۸۵ ۸۶۔ الدر المختار - علاء الدین الحصکفی - ۱۰۸۸ ۸۷۔ الدر النثیر - علامہ جلال الدین عبدالرحمن السیوطی - ۹۱۱

Volume 4 Fatawa Rizvia

(ذ) 88- Dhakhirat al-Uqba — Yusuf ibn Junayd al-Halabi (Chalabi) — 905 89- Dhakhirat al-Fatawa — Burhan al-Din Mahmud ibn Ahmad — 616 90- Dhamm al-Ghibah — Abdullah ibn Muhammad ibn Abi al-Dunya al-Qurashi — 281

(ر) 91- Al-Rahmaniyya 92- Radd al-Muhtar — Muhammad Amin ibn Abidin al-Shami — 1252 93- Rahmat al-Ummah fi Ikhtilaf al-A'immah — Abu Abdullah Muhammad ibn Abd al-Rahman al-Dimashqi — 781 94- Ragha'ib al-Qur'an — Abu Marwan Abd al-Malik ibn Habib al-Sulami (al-Qurtubi) — 239 95- Raf' al-Ghasha' fi Waqt al-Asr wa al-Isha' — Shaykh Zayn al-Din ibn Nujaym — 970 96- Radd 'ala al-Jahmiyyah — Uthman ibn Sa'id al-Darimi — 280

(ز) 97- Zad al-Fuqaha — Shaykh al-Islam Muhammad ibn Ahmad al-Isbijabi (d. late 6th century) — 861 98- Zad al-Faqir — Kamal al-Din Muhammad ibn Abd al-Wahid, known as Ibn al-Humam — approx. 1016 99- Zawajir al-Jawahir — Muhammad ibn Muhammad al-Tamartashi — 189 100- Ziyadat — Imam Muhammad ibn Hasan al-Shaybani

(س) 101- Al-Siraj al-Wahhaj — Abu Bakr ibn Ali ibn Muhammad al-Haddad al-Yamani — 800 102- Al-Sunan by Ibn Majah — Abu Abdullah Muhammad ibn Yazid ibn Majah — 273 103- Al-Sunan by Ibn Mansur — Sa'id ibn Mansur al-Khurasani — 273 104- Al-Sunan by Abu Dawood — Abu Dawood Sulayman ibn al-Ash'ath — 275 105- Al-Sunan by al-Nasa'i — Abu Abd al-Rahman Ahmad ibn Shu'ayb al-Nasa'i — 303 106- Al-Sunan by al-Bayhaqi — Abu Bakr Ahmad ibn Husayn ibn Ali al-Bayhaqi — 458

Page 752 of 761

जिल्द चौथी (खंड 4) फ़तावा रज़विया

(ذ) 88- ज़ख़ीरत अल-उकबा — युसूफ बिन जुनैद अल-हलबी (चलबी) — 905 89- ज़ख़ीरत अल-फ़तावा — बुरहान अल-दीन महमूद बिन अहमद — 616 90- ज़म्म अल-ग़ीबा — अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद इब्न अबी अल-दुनिया अल-कुरशी — 281

(ر) 91- अल-रहमानिया 92- रद अल-मुह्तार — मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन अल-शामी — 1252 93- रहमत अल-उम्मा फ़ी इख़्तिलाफ़ अल-आइम्मा — अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अब्द अल-रहमान अल-दिमश्की — 781 94- रगाइब अल-कुरआन — अबू मरवान अब्द अल-मलिक बिन हबीब अल-सुलमी (अल-कुर्तुबी) — 239 95- रफ़ अल-ग़शा फ़ी वक़्त अल-असर व अल-इशा — शैख़ ज़ैन अल-दीन इब्न नुजैम — 970 96- रद अला अल-जहमिया — उस्मान बिन सईद अल-दारिमी — 280

(ز) 97- ज़ाद अल-फ़ुक़हा — शैख़ अल-इस्लाम मुहम्मद बिन अहमद अल-असबीजाबी (मृत्यु छठी शताब्दी के अंत में) — 861 98- ज़ाद अल-फ़क़ीर — कमाल अल-दीन मुहम्मद बिन अब्द अल-वाहिद, जिसे इब्न अल-हुमाम के नाम से जाना जाता है — लगभग 1016 99- ज़वाज़िर अल-जवाहिर — मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-तमरताशी — 189 100- ज़ियादात — इमाम मुहम्मद बिन हसन अल-शैबानी

(س) 101- अल-सिराज अल-वहाज — अबू बक्र बिन अली बिन मुहम्मद अल-हद्दाद अल-यमनी — 800 102- अल-सुनन इब्न माजा — अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन यज़ीद इब्न माजा — 273 103- अल-सुनन इब्न मंसूर — सईद बिन मंसूर अल-खुरासानी — 273 104- अल-सुनन अबू दाऊद — अबू दाऊद सुलेमान बिन अल-अशात — 275 105- अल-सुनन अल-नसाई — अबू अब्द अल-रहमान अहमद बिन शुऐब अल-नसाई — 303 106- अल-सुनन अल-बैहकी — अबू बक्र अहमद बिन हुसैन बिन अली अल-बैहकी — 458

पृष्ठ 752 / 761

جلد چهارم فتاویٰ رضویہ

ذ ۸۸- ذخیرة العقبی — یوسف بن جنید الحلبی (چلبی) — ۹۰۵ ۸۹- ذخیرة الفتاوی — برهان الدین محمود بن احمد — ۶۱۶ ۹۰- ذم الغیبة — عبد الله بن محمد ابن ابی الدنیا القرشی — ۲۸۱

ر ۹۱- الرحمانیة ۹۲- رد المحتار — محمد امین ابن عابدین الشامی — ۱۲۵۲ ۹۳- رحمة الامة فی اختلاف الائمة — ابو عبد الله محمد بن عبد الرحمن الدمشقی — ۷۸۱ ۹۴- رغائب القرآن — ابو مروان عبد الملک بن حبیب السلمی (القرطبی) — ۲۳۹ ۹۵- رفع الغشاء فی وقت العصر والعشاء — شیخ زین الدین ابن نجیم — ۹۷۰ ۹۶- رد علی الجهمیة — عثمان بن سعید الدارمی — ۲۸۰

ز ۹۷- زاد الفقهاء — شیخ الاسلام محمد بن احمد الاسبیجابی المتوفی اواخر القرن السادس — ۸۶۱ ۹۸- زاد الفقیر — کمال الدین محمد بن عبدالواحد المعروف بابن الهمام — تقریباً ۱۰۱۶ ۹۹- زواجر الجواهر — محمد بن محمد التمرتاشی — ۱۸۹ ۱۰۰- زیادات — امام محمد بن حسن الشیبانی

س ۱۰۱- السراج الوهاج — ابوبکر بن علی بن محمد الحداد الیمنی — ۸۰۰ ۱۰۲- السنن لابن ماجة — ابو عبد الله محمد بن یزید ابن ماجہ — ۲۷۳ ۱۰۳- السنن لابن منصور — سعید بن منصور الخراسانی — ۲۷۳ ۱۰۴- السنن لابی داؤد — ابوداؤد سلیمان بن اشعث — ۲۷۵ ۱۰۵- السنن للنسائی — ابو عبد الرحمن احمد بن شعیب النسائی — ۳۰۳ ۱۰۶- السنن للبیہقی — ابوبکر احمد بن حسین بن علی البیهقی — ۴۵۸

Fatawa Razawiyya Volume 4 107. Al-Sunan by al-Daraqutni | Ali bin Umar al-Daraqutni | 385 108. Al-Sunan by al-Darimi | Abdullah bin Abdul Rahman al-Darimi | 255 Sh 109. Al-Shafi | Shams al-A’immah Abdullah bin Mahmud al-Kardari 110. Commentary on Al-Arba'in by al-Nawawi | Shihab al-Din Ahmad bin Hajar al-Makki | 973 111. Commentary on Al-Arba'in by al-Nawawi | Ibrahim bin Atiyyah al-Maliki | 1106 112. Commentary on Al-Arba'in by al-Nawawi | Allama Ahmad bin al-Hijazi | 978 113. Commentary on Al-Ashbah wa al-Naza'ir | Ibrahim bin Husain bin Ahmad bin Muhammad ibn al-Biri | 1099 114. Commentary on Al-Jami' al-Saghir | Imam Qazi Khan Husain bin Mansur | 592 115. Commentary on Al-Durar | Sheikh Ismail bin Abdul Ghani al-Nabulsi | 1062 116. Commentary on Safar al-Sa'adah | Sheikh Abdul Haq Muhaddith Dehlawi | 1052 117. Commentary on Al-Sunnah | Husain bin Mansur al-Baghawi | 516 118. Commentary on Shir'at al-Islam | Yaqub bin Sidi Ali Zada | 931 119. Commentary on Mukhtasar al-Tahawi for al-Asbijabi | Abu Nasr Ahmad bin Mansur al-Hanafi al-Asbijabi | 480 120. Commentary on Al-Gharibayn 121. Commentary on Al-Muslim by al-Nawawi | Sheikh Abu Zakariya Yahya bin Sharaf al-Nawawi | 676 122. Commentary on Ma'ani al-Athar | Abu Ja'far Ahmad bin Muhammad al-Tahawi | 321 123. Commentary on Al-Manzumah by Ibn Wahban | Abdul Barr bin Muhammad ibn Shihna | 921 124. Commentary on Al-Manzumah regarding the Rules for a Mufti | Muhammad Amin ibn Abidin al-Shami | 1252 125. Commentary on Al-Munyah al-Saghir | Sheikh Muhammad Ibrahim al-Halabi | 956 126. Commentary on Mawahib al-Ladunniyah | Allama Muhammad bin Abdul Baqi al-Zurqani | 1122 127. Commentary on Muwatta Imam Malik | Allama Muhammad bin Abdul Baqi al-Zurqani | 1122 128. Commentary on Al-Muhadhdhab by al-Nawawi | Sheikh Abu Zakariya Yahya bin Sharaf al-Nawawi | 676 129. Commentary on Al-Niqayah | Maulana Abdul Ali al-Barjandi | 932 130. Commentary on Al-Wiqayah | Sadr al-Shariah Ubaidullah bin Masud | 747

फ़तावा रज़विया जिल्द चौथी 107. अल-सुनन अल-दारकुत्नी | अली उमर अल-दारकुत्नी | 385 108. अल-सुनन अल-दारिमी | अब्दुल्ला बिन अब्दुर रहमान अल-दारिमी | 255 श 109. अल-शाफ़ी | शम्सुल अइम्मा अब्दुल्ला बिन महमूद अल-करदरी 110. शरह अल-अरबईन लिन-नववी | शिहाबुद्दीन अहमद बिन हजर अल-मक्की | 973 111. शरह अल-अरबईन लिन-नववी | इब्राहिम इब्न अतिय्या अल-मालिकी | 1106 112. शरह अल-अरबईन लिन-नववी | अल्लामा अहमद बिन अल-हिजाज़ी | 978 113. शरह अल-अशबाह वल-नज़ायर | इब्राहिम बिन हुसैन बिन अहमद बिन मुहम्मद इब्न अल-बीरी | 1099 114. शरह अल-जामिउल सगीर | इमाम काज़ी खान हुसैन बिन मंसूर | 592 115. शरह अल-दुरर | शेख इस्माइल बिन अब्दुल गनी अल-नाबुलसी | 1062 116. शरह सफ़र अल-सआदा | शेख अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी | 1052 117. शरह अल-सुन्ना | हुसैन बिन मंसूर अल-बग़वी | 516 118. शरह शिरअतुल इस्लाम | याकूब बिन सैय्यदी अली ज़ादा | 931 119. शरह मुख्तसर अल-तहावी लिल-असबीजाबी | अबू नस्र अहमद बिन मंसूर अल-हनफी अल-असबीजाबी | 480 120. शरह अल-गरीबैन 121. शरह अल-मुस्लिम लिन-नववी | शेख अबू ज़करिया यहया बिन शरफ अल-नववी | 676 122. शरह मआनी अल-आसार | अबू जाफ़र अहमद बिन मुहम्मद अल-तहावी | 321 123. शरह अल-मंज़ूमा लि-इब्न वहबान | अब्दुल बर्र बिन मुहम्मद इब्न शिहना | 921 124. शरह अल-मंज़ूमा फ़ी रस्म अल-मुफ्ती | मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन अल-शमी | 1252 125. शरह अल-मुन्या अल-सगीर | शेख मुहम्मद इब्राहिम अल-हलबी | 956 126. शरह मवाहिब अल-लदुन्निया | अल्लामा मुहम्मद बिन अब्दुल बाक़ी अल-ज़ुरकानी | 1122 127. शरह मुवत्ता इमाम मालिक | अल्लामा मुहम्मद बिन अब्दुल बाक़ी अल-ज़ुरकानी | 1122 128. शरह अल-मुहज़्ज़ब लिन-नववी | शेख अबू ज़करिया यहया बिन शरफ अल-नववी | 676 129. शरह अल-निक़ाया | मौलाना अब्दुल अली अल-बरजंदी | 932 130. शरह अल-विक़ाया | सद्र अल-शरिया उबैदुल्ला बिन मसूद | 747

पेज 753 / 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم ۱۰۷۔ السنن لدار قطنی | علی عمر الدار قطنی | ۳۸۵ ۱۰۸۔ السنن لدارمی | عبداللہ بن عبدالرحمن الدارمی | ۲۵۵ ش ۱۰۹۔ الشافی | شمس الائمہ عبداللہ بن محمود الکردری ۱۱۰۔ شرح الاربعین للنووی | شہاب الدین احمد بن حجر المکی | ۹۷۳ ۱۱۱۔ شرح الاربعین للنووی | ابراہیم ابن عطیہ المالکی | ۱۱۰۶ ۱۱۲۔ شرح الاربعین للنووی | علامہ احمد بن الحجازی | ۹۷۸ ۱۱۳۔ شرح الاشباہ والنظائر | ابراہیم بن حسین بن احمد بن محمد ابن البیری | ۱۰۹۹ ۱۱۴۔ شرح الجامع الصغیر | امام قاضی خان حسین بن منصور | ۵۹۲ ۱۱۵۔ شرح الدرر | شیخ اسمعیل بن عبدالغنی النابلسی | ۱۰۶۲ ۱۱۶۔ شرح سفر السعادۃ | شیخ عبدالحق المحدث الدہلوی | ۱۰۵۲ ۱۱۷۔ شرح السنۃ | حسین بن منصور البغوی | ۵۱۶ ۱۱۸۔ شرح شرعۃ الاسلام | یعقوب بن سیدی علی زادہ | ۹۳۱ ۱۱۹۔ شرح مختصر الطحاوي للاسبیجابی | ابونصر احمد بن منصور الحنفی الاسبیجابی | ۴۸۰ ۱۲۰۔ شرح الغریبین ۱۲۱۔ شرح المسلم للنووی | شیخ ابوزکریا یحیی بن شرف النووی | ۶۷۶ ۱۲۲۔ شرح معانی الآثار | ابوجعفر احمد بن محمد الطحاوی | ۳۲۱ ۱۲۳۔ شرح المنظومۃ لابن وہبان | عبدالبر بن محمد ابن شحنۃ | ۹۲۱ ۱۲۴۔ شرح المنظومۃ فی رسم المفتی | محمد امین ابن عابدین الشامی | ۱۲۵۲ ۱۲۵۔ شرح المنیۃ الصغیر | شیخ محمد ابراہیم الحلبی | ۹۵۶ ۱۲۶۔ شرح مواہب اللدنیۃ | علامہ محمد بن عبدالباقی الزرقانی | ۱۱۲۲ ۱۲۷۔ شرح مؤطا امام مالک | علامہ محمد بن عبدالباقی الزرقانی | ۱۱۲۲ ۱۲۸۔ شرح المہذب للنووی | شیخ ابوزکریا یحیی بن شرف النووی | ۶۷۶ ۱۲۹۔ شرح النقایۃ | مولانا عبدالعلی البر جندی | ۹۳۲ ۱۳۰۔ شرح الوقایۃ | صدر الشریعۃ عبیداللہ بن مسعود | ۷۴۷

Volume Four Fatawa Ridawiyya

131 - Sharh al-Hidaya --- Muhammad bin Muhammad bin Muhammad ibn Shuhna --- 890 132 - Shir'at al-Islam --- Imam al-Islam Muhammad bin Abi Bakr --- 573 133 - Shu'ab al-Iman --- Abu Bakr Ahmad bin Husayn bin Ali al-Bayhaqi --- 458 134 - Sharh al-Jami' al-Saghir --- Ahmad bin Mansur al-Hanafi al-Isbijabi --- 480 135 - Sharh al-Jami' al-Saghir --- Umar bin Abdul Aziz al-Hanafi --- 536

Letter: Sa’d (ص) 136 - Sihah al-Jawhari --- Isma'il bin Hammad al-Jawhari --- 393 137 - Sahih Ibn Hibban --- Muhammad bin Hibban --- 352 138 - Sahih Ibn Khuzaymah --- Muhammad bin Ishaq ibn Khuzaymah --- 311 139 - al-Surah --- Abu al-Fadl Muhammad bin Umar bin Khalid al-Qurashi --- approximately 690

Letter: Ta’ (ط) 140 - al-Tahtawi 'ala al-Durr --- Sayyid Ahmad al-Tahtawi --- 1302 141 - al-Tahtawi 'ala al-Maraqi --- Sayyid Ahmad al-Tahtawi --- 1302 142 - al-Tariqa al-Muhammadiyya --- Muhammad bin Pir Ali, known as Birgivi --- 981 143 - Tulbat al-Tulaba --- Najm al-Din Umar bin Muhammad al-Nasafi --- 537

Letter: 'Ayn (ع) 144 - 'Umdat al-Qari --- Allama Badr al-Din Abi Muhammad Mahmud bin Ahmad al-'Ayni --- 855 145 - al-'Inaya --- Akmal al-Din Muhammad bin Muhammad al-Babarti --- 786 146 - 'Inayat al-Qadi --- Shihab al-Din al-Khafaji --- 1069 147 - 'Uyun al-Masa'il --- Abu al-Layth Nasr bin Muhammad al-Samarqandi --- 378 148 - 'Uqud al-Durriyya --- Muhammad Amin ibn Abidin al-Shami --- 1252 149 - 'Udda --- Kamal al-Din Muhammad bin Ahmad, known as Tashkuprizada --- 1030 150 - ---

Page 754 of 761

खंड चार फ़तावा रज़विया

131 - शरह अल-हिदाया --- मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद इब्न शुहना --- 890 132 - शिरअतुल इस्लाम --- इमामुल इस्लाम मुहम्मद बिन अबी बक्र --- 573 133 - शुअबुल ईमान --- अबू बक्र अहमद बिन हुसैन बिन अली अल-बैहकी --- 458 134 - शरह अल-जामे अल-सगीर --- अहमद बिन मंसूर अल-हनाफी अल-इसबीजाबी --- 480 135 - शरह अल-जामे अल-सगीर --- उमर बिन अब्दुल अजीज अल-हनाफी --- 536

अक्षर: साद (ص) 136 - सिहाह अल-जौहरी --- इस्माइल बिन हम्माद अल-जौहरी --- 393 137 - सहीह इब्न हिब्बान --- मुहम्मद बिन हिब्बान --- 352 138 - सहीह इब्न खुज़ैमा --- मुहम्मद बिन इसहाक इब्न खुज़ैमा --- 311 139 - अल-सुराह --- अबू अल-फ़ज़ल मुहम्मद बिन उमर बिन खालिद अल-कुरैशी --- लगभग 690

अक्षर: तोय (ط) 140 - अल-तहतावी अला अद-दुर --- सैयद अहमद अल-तहतावी --- 1302 141 - अल-तहतावी अला अल-मराकी --- सैयद अहमद अल-तहतावी --- 1302 142 - अल-तरीका अल-मुहम्मदिया --- मुहम्मद बिन पीर अली, जिन्हें बिरगीवी के नाम से जाना जाता है --- 981 143 - तुलबत अल-तुलबा --- नजमुद्दीन उमर बिन मुहम्मद अल-नसाफी --- 537

अक्षर: ऐन (ع) 144 - उम्दतुल कारी --- अल्लामा बदरुद्दीन अबी मुहम्मद महमूद बिन अहमद अल-ऐनी --- 855 145 - अल-इनाया --- अकमल उद्दीन मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-बाबरती --- 786 146 - इनायत अल-काजी --- शिहाब उद्दीन अल-खफ़ाजी --- 1069 147 - उयून अल-मसाइल --- अबुल लैथ नस्र बिन मुहम्मद अल-समरकंदी --- 378 148 - उकूद अल-दुर्रिया --- मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन अल-शमी --- 1252 149 - उद्दा --- कमालुद्दीन मुहम्मद बिन अहमद, जिन्हें ताशकुप्रिजादा के नाम से जाना जाता है --- 1030 150 - ---

पृष्ठ 754 का 761

جلد چہارم فتاوی رضویہ

۱۳۱ - شرح الہدایۃ --- محمد بن محمد بن محمد ابن شحنۃ --- ۸۹۰ ۱۳۲ - شرعۃ الاسلام --- امام الاسلام محمد بن ابی بکر --- ۵۷۳ ۱۳۳ - شعب الایمان --- ابوبکر احمد بن حسین بن علی البیہقی --- ۴۵۸ ۱۳۴ - شرح الجامع الصغیر --- احمد بن منصور الحنفی الاسبیجابی --- ۴۸۰ ۱۳۵ - شرح الجامع الصغیر --- عمر بن عبدالعزیز الحنفی --- ۵۳۶

ص (حرف: ص) ۱۳۶ - صحاح الجوہری --- اسماعیل بن حماد الجوہری --- ۳۹۳ ۱۳۷ - صحیح ابن حبان --- محمد بن حبان --- ۳۵۲ ۱۳۸ - صحیح ابن خزیمہ --- محمد بن اسحاق ابن خزیمۃ --- ۳۱۱ ۱۳۹ - الصراح --- ابو فضل محمد بن عمر بن خالد القرشی --- تقریباً ۶۹۰

ط (حرف: ط) ۱۴۰ - الطحطاوی علی الدر --- سید احمد الطحطاوی --- ۱۳۰۲ ۱۴۱ - الطحطاوی علی المراقی --- سید احمد الطحطاوی --- ۱۳۰۲ ۱۴۲ - الطریقۃ المحمدیۃ --- محمد بن پیر علی المعروف بیرکلی --- ۹۸۱ ۱۴۳ - طلبۃ الطلبۃ --- نجم الدین عمر بن محمد النسفی --- ۵۳۷

ع (حرف: ع) ۱۴۴ - عمدۃ القاری --- علامہ بدرالدین ابی محمد محمود بن احمد العینی --- ۸۵۵ ۱۴۵ - العنایۃ --- اکمل الدین محمد بن محمد البابرتی --- ۷۸۶ ۱۴۶ - عنایۃ القاضی --- شہاب الدین الخفاجی --- ۱۰۶۹ ۱۴۷ - عیون المسائل --- ابواللیث نصر بن محمد السمرقندی --- ۳۷۸ ۱۴۸ - عقود الدریۃ --- محمد امین ابن عابدین لشامی --- ۱۲۵۲ ۱۴۹ - عدۃ --- کمال الدین محمد بن احمد الشہیر بطاشکبری --- ۱۰۳۰ ۱۵۰ - ---

Fatawa Razawiya Volume Four

Letter Ghayn (غ) 151. Ghayat al-Bayan — Sheikh Qiwam al-Din Amir Katib ibn Amir al-Itqani — 758 152. Ghurar al-Ahkam — Qazi Muhammad bin Faramuz Mulla Khusrau — 885 153. Gharib al-Hadith — Abu al-Hasan Ali bin Mughirah al-Baghdadi, known as Athram — 230 154. Ghamz Uyun al-Basa'ir — Ahmad bin Muhammad al-Hamawi al-Hanafi — 1098 155. Ghunyat Dhul-Ahkam — Hassan bin Ammar bin Ali al-Shurunbulali — 1069 156. Ghunyat al-Mustamli — Muhammad Ibrahim bin Muhammad al-Halabi — 956

Letter Fa (ف) 157. Fath al-Bari Sharh al-Bukhari — Shihab al-Din Ahmad bin Ali ibn Hajar al-Asqalani — 852 158. Fath al-Qadir — Kamal al-Din Muhammad bin Abd al-Wahid ibn al-Humam — 861 159. Fatawa al-Nasafi — Imam Najm al-Din al-Nasafi — 537 160. Fatawa Bazzaziyya — Muhammad bin Muhammad bin Shihab ibn Bazzaz — 827 161. Fatawa Hujjah 162. Fatawa Khayriyya — Allama Khayr al-Din bin Ahmad bin Ali al-Ramli — 1081 163. Fatawa Sirajiyya — Siraj al-Din Ali bin Uthman al-Ushi — 575 164. Fatawa 'Ata bin Hamza — 'Ata bin Hamza al-Sughdi 165. Fatawa Ghiyathiyya — Dawud bin Yusuf al-Khatib al-Hanafi 166. Fatawa Qazi Khan — Hassan bin Mansur Qazi Khan — 592 167. Fatawa Hindiyya — Committee of Scholars, (period of) Aurangzeb Alamgir 168. Fatawa Zahiriyya — Zahir al-Din Abu Bakr Muhammad bin Ahmad — 619 169. Fatawa al-Walwalajiyya — Abd al-Rashid bin Abi Hanifa al-Walwalaji — 540 170. Fatawa al-Kubra — Imam Sadr al-Shahid Husam al-Din Umar bin Abd al-Aziz — 536 171. Fiqh al-Akbar — Al-Imam al-A'zam Abu Hanifa Nu'man bin Thabit al-Kufi — 150 172. Fath al-Mu'in — Sayyid Muhammad Abi al-Sa'ud al-Hanafi

फ़तावा रज़विया जिल्द चहारुम

अक्षर ग़ैन (غ) 151. ग़ायत अल-बयान — शेख क़वाम उद्दीन अमीर कातिब इब्न अमीर अल-इतक़ानी — 758 152. ग़ुरर अल-अहकाम — काज़ी मुहम्मद बिन फ़रामुज़ मुल्ला खुसरू — 885 153. ग़रीब अल-हदीस — अबुल हसन अली बिन मुग़ीरा अल-बग़दादी अल-मारूफ़ बा-अथरम — 230 154. ग़म्ज़ उयून अल-बसायर — अहमद बिन मुहम्मद अल-हमवी अल-हनफ़ी — 1098 155. ग़ुनिया ज़ुल-अहकाम — हसन बिन अम्मार बिन अली अल-शुरुनबुलाली — 1069 156. ग़ुनिया अल-मुस्तमली — मुहम्मद इब्राहिम बिन मुहम्मद अल-हलबी — 956

अक्षर फा (ف) 157. फ़तह अल-बारी शरह अल-बुखारी — शिहाब उद्दीन अहमद बिन अली इब्न हजर अल-अस्क़लानी — 852 158. फ़तह अल-क़दीर — कमाल उद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुल वाहिद इब्न अल-हुमाम — 861 159. फ़तावा अन-नस्फ़ी — इमाम नज्म उद्दीन अन-नस्फ़ी — 537 160. फ़तावा बज़ाज़िया — मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन शिहाब इब्न बज़ाज़ — 827 161. फ़तावा हुज्जह 162. फ़तावा खैरिया — अल्लामा खैर उद्दीन बिन अहमद बिन अली अल-रम्ली — 1081 163. फ़तावा सिराजिया — सिराज उद्दीन अली बिन उस्मान अल-औशी — 575 164. फ़तावा अता बिन हमज़ा — अता बिन हमज़ा अल-सुग़दी 165. फ़तावा गियासिया — दाऊद बिन यूसुफ़ अल-खतीब अल-हनफ़ी 166. फ़तावा काज़ी खान — हसन बिन मंसूर काज़ी खान — 592 167. फ़तावा हिन्दिया — जमीयत उलेमा, औरंगज़ेब आलमगीर 168. फ़तावा ज़हीरिया — ज़हीर उद्दीन अबू बक्र मुहम्मद बिन अहमद — 619 169. फ़तावा अल-वलवालजिया — अब्दुल रशीद बिन अबी हनीफ़ा अल-वलवालजी — 540 170. फ़तावा अल-कुबरा — इमाम सदर अल-शहीद हुसाम उद्दीन उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ — 536 171. फ़िक़्ह अल-अकबर — अल-इमाम अल-आज़म अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित अल-कूफ़ी — 150 172. फ़तह अल-मुईन — सैय्यद मुहम्मद अबी अल-सऊद अल-हनफ़ी

पृष्ठ 755 का 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

غ ۱۵۱- غایة البیان — شیخ قوام الدین امیر کاتب ابن امیر الاتقانی — ۷۵۸ ۱۵۲- غرر الاحکام — قاضی محمد بن فراموز ملا خسرو — ۸۸۵ ۱۵۳- غریب الحدیث — ابوالحسن علی بن مغیرة البغدادی المعروف باثرم — ۲۳۰ ۱۵۴- غمز عیون البصائر — احمد بن محمد الحموی الحنفی — ۱۰۹۸ ۱۵۵- غنیة ذو الاحکام — حسن بن عمار بن علی الشرنبلالی — ۱۰۶۹ ۱۵۶- غنیة المستملی — محمد ابراہیم بن محمد الحلبی — ۹۵۶

ف ۱۵۷- فتح الباری شرح البخاری — شہاب الدین احمد بن علی ابن حجر العسقلانی — ۸۵۲ ۱۵۸- فتح القدیر — کمال الدین محمد بن عبد الواحد ابن الہمام — ۸۶۱ ۱۵۹- فتاوی النسفی — امام نجم الدین النسفی — ۵۳۷ ۱۶۰- فتاوی بزازیہ — محمد بن محمد بن شہاب ابن بزاز — ۸۲۷ ۱۶۱- فتاوی حجّہ ۱۶۲- فتاوی خیریة — علامہ خیر الدین بن احمد بن علی الرملی — ۱۰۸۱ ۱۶۳- فتاوی سراجیة — سراج الدین علی بن عثمان الاوشی — ۵۷۵ ۱۶۴- فتاوی عطاء بن حمزہ — عطاء بن حمزہ السغدی ۱۶۵- فتاوی غیاثیہ — داؤد بن یوسف الخطیب الحنفی ۱۶۶- فتاوی قاضی خان — حسن بن منصور قاضی خان — ۵۹۲ ۱۶۷- فتاوی ہندیہ — جمعیت علماء اورنگ زیب عالمگیر ۱۶۸- فتاوی ظہیریة — ظہیر الدین ابوبکر محمد بن احمد — ۶۱۹ ۱۶۹- فتاوی الولو الجیہ — عبدالرشید بن ابی حنیفہ الوالواجی — ۵۴۰ ۱۷۰- فتاوی الکبری — امام صدر الشہید حسام الدین عمر بن عبدالعزیز — ۵۳۶ ۱۷۱- فقہ الاکبر — الامام الاعظم ابی حنیفہ نعمان بن ثابت الکوفی — ۱۵۰ ۱۷۲- فتح المعین — سید محمد ابی السعود الحنفی

Fatawa Ridawiyya - Volume 4

173- Fath al-Mubin Sharh Qurrat al-Ayn | Zayn al-Din bin Ali bin Ahmad al-Shafi'i | 928 174- Al-Futuhat al-Makkiyya | Muhyi al-Din Muhammad bin Ali ibn Arabi | 638 175- Fawatih al-Rahamut | Abd al-Ali Muhammad bin Nizam al-Din al-Laknawi | 1225 176- Al-Fawa'id | Tamam bin Muhammad bin Abdullah al-Bajali | 414 177- Fawa'id al-Mukhasasah | Muhammad Amin ibn Abidin al-Shami | 1252 178- Fayd al-Qadir Sharh al-Jami' al-Saghir | Abd al-Ra'uf al-Munawi | 1031 179- Fawa'id Samawiyya | Isma'il bin Abdullah, known as Samawiyya | 267

Qaf (ق) 180- Al-Qamus | Muhammad bin Yaqub al-Firuzabadi | 817 181- Qurrat al-Ayn | Allama Zayn al-Din bin Ali al-Malibari | 928 182- Al-Qunyah | Najm al-Din Mukhtar bin Muhammad al-Zahidi | 658 183- Al-Qur'an

Kaf (ک) 184- Al-Kafi fi al-Furu' | Hakim Shahid Muhammad bin Muhammad | 334 185- Al-Kamil li-Ibn Adi | Abu Ahmad Abdullah bin Adi | 365 186- Al-Kibrit al-Ahmar | Sayyid Abd al-Wahhab al-Sha'rani | 973 187- Kitab al-Athar | Imam Muhammad bin Hasan al-Shaybani | 189 188- Kitab al-Athar | Imam Abu Yusuf Yaqub bin Ibrahim al-Ansari | 182 189- Kitab al-Ilmam fi Adab Dukhul al-Hammam | Abu al-Abbas Muhammad bin Ali 190- Kitab al-Siwak | Abu Nu'aym Ahmad bin Abdullah | 430 191- Kitab al-Hadiyya li-Ibn Imad | Abd al-Rahman bin Muhammad Imad al-Din bin Muhammad al-Imadi | 1050 192- Kitab al-Tuhur | Li-Abi Ubayd 193- Kitab al-Ilal ala Abwab al-Fiqh | Abu Muhammad Abd al-Rahman ibn Abi Hatim Muhammad al-Razi | 327 194- Kitab al-Asl | Imam Muhammad bin Hasan al-Shaybani | 189 195- Kitab al-Waswasah | Abu Bakr bin Abi Dawud

Page 756 of 761

फ़तावा रज़विया - खंड 4

173- फ़त-अल-मुबीन शरह कुर्रत-अल-ऐन | ज़ैनुद्दीन बिन अली बिन अहमद अल-शाफ़ई | 928 174- अल-फ़ुतूहात अल-मक्कीय्या | मुहीउद्दीन मुहम्मद बिन अली इब्न अरबी | 638 175- फ़वातिह अल-रहमूत | अब्दुल अली मुहम्मद बिन निज़ामुद्दीन अल-कनौजवी | 1225 176- अल-फ़वाइद | तमाम बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अल-बजली | 414 177- फ़वाइद अल-मुख़स्सासा | मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन अल-शामी | 1252 178- फ़ैज़ अल-क़दीर शरह अल-जामी अल-सग़ीर | अब्दुल रऊफ़ अल-मुनावी | 1031 179- फ़वाइद समविया | इस्माईल बिन अब्दुल्लाह, लक़ब समविया | 267

क़ाफ़ (ق) 180- अल-क़ामूस | मुहम्मद बिन यअक़ूब अल-फ़िरोज़ाबादी | 817 181- कुर्रत-अल-ऐन | अल्लामा ज़ैनुद्दीन बिन अली अल-मलीबारी | 928 182- अल-कुन्याह | नजमुद्दीन मुख़्तार बिन मुहम्मद अल-ज़ाहीदी | 658 183- अल-क़ुरान

काफ़ (ک) 184- अल-काफ़ी फ़िल फ़ुरूअ | हाकिम शहीद मुहम्मद बिन मुहम्मद | 334 185- अल-कामिल लइब्ने अदी | अबू अहमद अब्दुल्लाह बिन अदी | 365 186- अल-किबरीत अल-अहमर | सैय्यद अब्दुल वहाब अल-शअरानी | 973 187- किताब-अल-आसार | इमाम मुहम्मद बिन हसन अल-शैबानी | 189 188- किताब-अल-आसार | इमाम अबू यूसुफ़ यअक़ूब बिन इब्राहीम अल-अंसारी | 182 189- किताब अल-इल्माम फ़ी आदाब दुख़ूल अल-हम्माम | अबुल अब्बास मुहम्मद बिन अली 190- किताब-अल-सिवाक | अबू नुऐम अहमद बिन अब्दुल्लाह | 430 191- किताब-अल-हदिय्या लइब्ने इमाद | अब्दुर्रहमान बिन मुहम्मद इमादुद्दीन बिन मुहम्मद अल-इमादी | 1050 192- किताब-अल-तुहूर | लअबी उबैद 193- किताब-अल-इलल अला अबवाबुल फ़िक़्ह | अबू मुहम्मद अब्दुर्रहमान इब्ने अबी हातिम मुहम्मद अल-राज़ी | 327 194- किताब-अल-अस्ल | इमाम मुहम्मद बिन हसन अल-शैबानी | 189 195- किताब-अल-वसवसा | अबू बक्र बिन अबी दाऊद

۱۷۳۔ فتح المبین شرح قرۃ العین | زین الدین بن علی بن احمد الشافعی | ۹۲۸ ۱۷۴۔ الفتوحات المکیۃ | محی الدین محمد بن علی ابن عربی | ۶۳۸ ۱۷۵۔ فواتح الرحموت | عبدالعلی محمد بن نظام الدین الکنوی | ۱۲۲۵ ۱۷۶۔ الفوائد | تمام بن محمد بن عبد اللہ البجلی | ۴۱۴ ۱۷۷۔ فوائد المخصصۃ | محمد امین ابن عابدین الشامی | ۱۲۵۲ ۱۷۸۔ فیض القدیر شرح الجامع الصغیر | عبدالرؤف المناوی | ۱۰۳۱ ۱۷۹۔ فوائد سمویۃ | اسمعیل بن عبد اللہ الملقب بسمویۃ | ۲۶۷

ق ۱۸۰۔ القاموس | محمد بن یعقوب الفیروزآبادی | ۸۱۷ ۱۸۱۔ قرۃ العین | علامہ زین الدین بن علی الملیباری | ۹۲۸ ۱۸۲۔ القنیۃ | نجم الدین مختار بن محمد الزاہدی | ۶۵۸ ۱۸۳۔ القرآن

ک ۱۸۴۔ الکافی فی الفروع | حاکم شہید محمد بن محمد | ۳۳۴ ۱۸۵۔ الکامل لابن عدی | ابواحمد عبد اللہ بن عدی | ۳۶۵ ۱۸۶۔ الکبریت الاحمر | سید عبدالوہاب الشعرانی | ۹۷۳ ۱۸۷۔ کتاب الآثار | امام محمد بن حسن الشیبانی | ۱۸۹ ۱۸۸۔ کتاب الآثار | امام ابویوسف یعقوب بن ابراہیم الانصاری | ۱۸۲ ۱۸۹۔ کتاب الالمام فی آداب دخول الحمام | ابوالعباس محمد بن علی ۱۹۰۔ کتاب السواک | ابونعیم احمد بن عبداللہ | ۴۳۰ ۱۹۱۔ کتاب الھدیۃ لابن عماد | عبدالرحمن بن محمد عماد الدین بن محمد العمادی | ۱۰۵۰ ۱۹۲۔ کتاب الطہور | لابی عبید ۱۹۳۔ کتاب العلل علی ابواب الفقہ | ابومحمد عبدالرحمن ابن ابی حاتم محمد الرازی | ۳۲۷ ۱۹۴۔ کتاب الاصل | امام محمد بن حسن الشیبانی | ۱۸۹ ۱۹۵۔ کتاب الوسوسۃ | ابوبکر بن ابی داؤد

Fatawa Razawiya - Volume 4

196- Kashf al-Asrar: Ala al-Din Abdul Aziz bin Ahmed al-Bukhari - 730 197- Kashf al-Rumuz: Alaqat al-Maqdisi 198- Kashf al-Astar 'an Zawa'id al-Bazzar: Amin al-Din Abdul Wahhab bin Wahban al-Dimashqi - 768 199- Kanz al-Ummal: Ala al-Din Ali al-Muttaqi bin Husam al-Din - 975 200- Al-Kifayah: Jalal al-Din bin Shams al-Din al-Khwarizmi approximately - 800 201- Kaff al-Ru'a': Shihab al-Din Ahmed bin Hajar al-Makki - 973 202- Kanz al-Daqaiq: Abdullah bin Ahmed bin Mahmoud - 710 203- Al-Kuna lil-Hakim: Abu Abdullah al-Hakim - 405 204- Al-Kawakib al-Durari: Shams al-Din Muhammad bin Yusuf al-Shafi'i al-Kirmani - 786 205- Kitab al-Jarh wa al-Ta'dil: Muhammad bin Hibban al-Tamimi - 352 206- Kitab al-Maghazi: Yahya bin Sa'id al-Qattan - 198 207- Kitab al-Samt: Abdullah bin Muhammad ibn Abi al-Dunya al-Qurashi - 281 208- Kitab al-Zuhd: Abdullah bin Mubarak - 180 209- Al-Kashshaf 'an Haqa'iq al-Tanzil: Jarullah Mahmoud bin Umar al-Zamakhshari - 538

L 210- Lama'at al-Tanqih: Allama Sheikh Abdul Haq Muhaddith Dehlavi - 1052 211- Laqt al-Marjan fi Akhbar al-Jan: Allama Jalal al-Din Abdur Rahman bin Muhammad al-Suyuti - 911

M 212- Mubariq al-Azhar: Al-Sheikh Abdul Latif bin Abdul Aziz bin Ibn al-Malik - 801 213- Mabsut Khwaharzada: Bakr Khwaharzada Muhammad bin Hasan al-Bukhari al-Hanafi - 483 214- Mabsut al-Sarakhsi: Shams al-A'immah Muhammad bin Ahmed al-Sarakhsi - 483 215- Majra al-Anhur Sharh Multaqa al-Abhur: Nur al-Din Ali al-Baqani - approx. 995 216- Majma' Bihar al-Anwar: Muhammad Tahir al-Siddiqui - 981 217- Majmu' al-Nawazil: Ahmed bin Musa bin Isa - 550 218- Majma' al-Anhur: Al-Sheikh Abdullah bin Muhammad bin Sulaiman known as Damad Afandi - 1078

Page 757 of 761

फ़तावा रज़विया - जिल्द चार

196- कश्फ़ अल-असरार: अलाउद्दीन अब्दुल अज़ीज़ बिन अहमद अल-बुखारी - 730 197- कश्फ़ अल-रुमूज़: अलाक़त अल-मक़दिसी 198- कश्फ़ अल-अस्तार अन ज़वाइद अल-बज़्ज़ार: अमीन उद्दीन अब्दुल वहाब बिन वहबान अल-दमिश्की - 768 199- कंज़ अल-उम्माल: अलाउद्दीन अली अल-मुत्तक़ी बिन हुसामुद्दीन - 975 200- अल-किफ़ाया: जलालुद्दीन बिन शम्सुद्दीन अल-ख़्वारिज़मी लगभग - 800 201- कफ़ अल-रुअ: शिहाबुद्दीन अहमद बिन हजर अल-मक्की - 973 202- कंज़ अल-दक़ाइक: अब्दुल्लाह बिन अहमद बिन महमूद - 710 203- अल-कुना लिल-हाकिम: अबू अब्दुल्लाह अल-हाकिम - 405 204- अल-कवाकिब अल-दुरारी: शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन यूसुफ अल-शाफ़ेई अल-किरमानी - 786 205- किताब अल-जर्ह व अल-तादील: मुहम्मद बिन हिब्बान अल-तमीमी - 352 206- किताब अल-मग़ाज़ी: यह्या बिन सईद अल-क़त्तान - 198 207- किताब अल-सम्त: अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद इब्न अबी अल-दुनिया अल-क़ुरशी - 281 208- किताब अल-ज़ुहद: अब्दुल्लाह बिन मुबारक - 180 209- अल-कश्शाफ़ अन हक़ाएक अल-तन्ज़ील: जारुल्लाह महमूद बिन उमर अल-ज़मख़शरी - 538

ल 210- लमआत अल-तनक़ीह: अल्लामा शेख़ अब्दुल हक़ मोहद्दिस देहलवी - 1052 211- लक़्त अल-मरजान फ़ी अख़बार अल-जान: अल्लामा जलालुद्दीन अब्दुर रहमान बिन मुहम्मद अल-सुयूती - 911

म 212- मुबारिक़ अल-अज़हार: अल-शेख़ अब्दुल लतीफ़ बिन अब्दुल अज़ीज़ बिन इब्न अल-मलिक - 801 213- मबसूत ख़्वाहरज़ादा: बक्र ख़्वाहरज़ादा मुहम्मद बिन हसन अल-बुखारी अल-हनफ़ी - 483 214- मबसूत अल-सरख़सी: शम्स अल-अइम्मा मुहम्मद बिन अहमद अल-सरख़सी - 483 215- मजरा अल-अन्हुर शरह मुल्तका अल-अबहुर: नूरुद्दीन अली अल-बाक़ानी - लगभग 995 216- मजमअ बिहार अल-अनवार: मुहम्मद ताहिर अल-सिद्दीक़ी - 981 217- मजमू अल-नवाज़िल: अहमद बिन मूसा बिन ईसा - 550 218- मजमअ अल-अन्हुर: अल-शेख़ अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन सुलेमान जो दामाद अफ़ंदी के नाम से जाने जाते हैं - 1078

पृष्ठ 757 का 761

۱۹۶- کشف الاسرار: علاء الدین عبدالعزیز بن احمد البخاری - ۷۳۰ ۱۹۷- کشف الرموز: علاقة المقدسی ۱۹۸- کشف الاستار عن زوائد البزار: امین الدین عبدالوہاب بن وہبان الدمشقی - ۷۶۸ ۱۹۹- کنز العمال: علاء الدین علی المتقی بن حسام الدین - ۹۷۵ ۲۰۰- الکفایہ: جلال الدین بن شمس الدین الخوارزمی تقریباً - ۸۰۰ ۲۰۱- کف الرعاع: شہاب الدین احمد بن حجر المکی - ۹۷۳ ۲۰۲- کنز الدقائق: عبداللہ بن احمد بن محمود - ۷۱۰ ۲۰۳- الکنی للحاکم: ابوعبداللہ الحاکم - ۴۰۵ ۲۰۴- الکواکب الدراری: شمس الدین محمد بن یوسف الشافعی الکرمانی - ۷۸۶ ۲۰۵- کتاب الجرح والتعدیل: محمد بن حبان التمیمی - ۳۵۲ ۲۰۶- کتاب المغازی: یحیٰی بن سعید القطان - ۱۹۸ ۲۰۷- کتاب الصمت: عبداللہ بن محمد ابن ابی الدنیا القرشی - ۲۸۱ ۲۰۸- کتاب الزہد: عبداللہ بن مبارک - ۱۸۰ ۲۰۹- الکشاف عن حقائق التنزیل: جاراللہ محمود بن عمر الزمخشری - ۵۳۸

ل ۲۱۰- لمعات التنقیح: علامہ شیخ عبدالحق المحدث الدہلوی - ۱۰۵۲ ۲۱۱- لقط المرجان فی اخبار الجان: علامہ جلال الدین عبدالرحمن بن محمد السیوطی - ۹۱۱

م ۲۱۲- مبارق الازہار: الشیخ عبداللطیف بن عبدالعزیز بن ابن الملک - ۸۰۱ ۲۱۳- مبسوط خواہرزادہ: بکر خواہر زادہ محمد بن حسن البخاری الحنفی - ۴۸۳ ۲۱۴- مبسوط السرخسی: شمس الائمۃ محمد بن احمد السرخسی - ۴۸۳ ۲۱۵- مجری الانہر شرح ملتقی الابحر: نورالدین علی الباقانی - تقریباً ۹۹۵ ۲۱۶- مجمع بحار الانوار: محمد طاہر الصدیقی - ۹۸۱ ۲۱۷- مجموع النوازل: احمد بن موسیٰ بن عیسیٰ - ۵۵۰ ۲۱۸- مجمع الانہر: الشیخ عبداللہ بن محمد بن سلیمان المعروف بداماد آفندی - ۱۰۷۸

Fatawa Razawiyya Volume Four 219- Al-Muhit al-Burhani Imam Burhan al-Din Mahmud bin Taj al-Din 616 220- Al-Muhit al-Radawi Radi al-Din Muhammad bin Muhammad al-Sarakhsi 176 221- Mukhtarat al-Nawazil Burhan al-Din Ali bin Abi Bakr al-Marghinani 593 222- Mukhtar al-Sihah Muhammad bin Abi Bakr Abdul Qadir al-Razi 660 223- Al-Mukhtara fil-Hadith Diya al-Din Muhammad bin Abdul Wahid 643 224- Al-Mukhtasar Allama Jalal al-Din al-Suyuti 911 225- Madkhal al-Shar' al-Sharif Ibn al-Hajj Abi Abdullah Muhammad bin Muhammad al-Abdari 737 226- Maraqi al-Falah bi-Imdad al-Fattah Sharh Nur al-Idah Hasan bin Ammar bin Ali al-Shurunbulali 1069 227- Mirqat Sharh Mishkat Ali bin Sultan Mulla Ali Qari 1012 228- Mirqat al-Su'ud Allama Jalal al-Din al-Suyuti 911 229- Mustakhlas al-Haqa'iq Ibrahim bin Muhammad al-Hanafi -- 230- Al-Mustadrak lil-Hakim Abu Abdullah al-Hakim 405 231- Al-Mustasfa Hafiz al-Din Abdullah bin Ahmad al-Nasafi 710 232- Musallam al-Thubut Muhibullah al-Bihari 1119 233- Musnad Abi Dawud Sulayman bin Dawud al-Tayalisi 202 234- Musnad Abi Ya'la Ahmed bin Ali al-Mawsili 307 235- Musnad Ishaq bin Rahawayh Hafiz Ishaq bin Rahawayh 238 236- Musnad al-Imam Ahmed bin Hanbal Imam Ahmed bin Muhammad bin Hanbal 241 237- Musnad al-Bazzar Abu Bakr Ahmed bin Amr bin Abd al-Khaliq al-Bazzar 292 238- Musnad Abd bin Humayd Abu Muhammad Abd bin Muhammad Humayd al-Kashshi 294 239- Musnad al-Firdaws Shahr-dar bin Shirawayh al-Daylami 558 240- Misbah al-Munir Ahmed bin Muhammad bin Ali 770 241- Al-Musaffa Hafiz al-Din Abdullah bin Ahmad al-Nasafi 710 242- Musannaf Ibn Abi Shaybah Abu Bakr Abdullah bin Muhammad Ahmed al-Nasafi 235 243- Musannaf Abd al-Razzaq Abu Bakr Abd al-Razzaq bin Hammam al-San'ani 211 244- Misbah al-Duja Imam Hasan bin Muhammad al-Saghani al-Hindi 650

Page 758 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द चार 219- अल-मुहीत अल-बुरहानी इमाम बुरहान अल-दीन महमूद बिन ताज अल-दीन 616 220- अल-मुहीत अल-रज़वी रज़ी अल-दीन मोहम्मद बिन मोहम्मद अल-सरख़सी 176 221- मुख़तारात अल-नवाज़िल बुरहान अल-दीन अली बिन अबी बकर अल-मरग़ीनानी 593 222- मुख़्तार अल-सिहाह मोहम्मद बिन अबी बकर अब्दुल क़ादिर अल-राज़ी 660 223- अल-मुख़्तारा फ़िल-हदीस ज़िया अल-दीन मोहम्मद बिन अब्दुल वाहिद 643 224- अल-मुख़्तसर अल्लामा जलाल अल-दीन अल-सुयूती 911 225- मदख़ल अल-शर' अल-शरीफ़ इब्न अल-हाज्ज अबी अब्दुल्लाह मोहम्मद बिन मोहम्मद अल-अब्दरी 737 226- मराक़ी अल-फ़लाह बि-इमदाद अल-फ़त्ताह शरह नूर अल-इज़ाह हसन बिन अम्मार बिन अली अल-शुरुनबुलाली 1069 227- मिरक़ात शरह मिश्क़ात अली बिन सुल्तान मुल्ला अली क़ारी 1012 228- मिरक़ात अल-सुऊद अल्लामा जलाल अल-दीन अल-सुयूती 911 229- मुस्तख़लस अल-हक़ाएक़ इब्राहीम बिन मोहम्मद अल-हनफ़ी -- 230- अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम अबू अब्दुल्लाह अल-हाकिम 405 231- अल-मुस्तसफ़ा हाफ़िज़ अल-दीन अब्दुल्लाह बिन अहमद अल-नसफ़ी 710 232- मुसल्लम अल-सुबूत मुहिबुल्लाह अल-बिहारी 1119 233- मुसनद अबी दाऊद सुलेमान बिन दाऊद अल-तयालिसी 202 234- मुसनद अबी याला अहमद बिन अली अल-मौसली 307 235- मुसनद इसहाक़ इब्न राहवैय हाफ़िज़ इसहाक़ इब्न राहवैय 238 236- मुसनद अल-इमाम अहमद बिन हंबल इमाम अहमद बिन मोहम्मद बिन हंबल 241 237- मुसनद अल-बज़ार अबू बकर अहमद बिन अम्र बिन अब्दुल ख़ालिक़ अल-बज़ार 292 238- मुसनद अब्द बिन हुमैद अबू मोहम्मद अब्द बिन मोहम्मद हुमैद अल-कशी 294 239- मुसनद अल-फ़िरदौस शहर-दार बिन शीरवैह अल-दैलामी 558 240- मिस्बाह अल-मुनीर अहमद बिन मोहम्मद बिन अली 770 241- अल-मुसफ़्फ़ा हाफ़िज़ अल-दीन अब्दुल्लाह बिन अहमद अल-नसफ़ी 710 242- मुसन्निफ़ इब्न अबी शैबा अबू बकर अब्दुल्लाह बिन मोहम्मद अहमद अल-नसफ़ी 235 243- मुसन्निफ़ अब्दुल रज़्ज़ाक़ अबू बकर अब्दुल रज़्ज़ाक़ बिन हम्माम अल-सनआनी 211 244- मिस्बाह अल-दुजा इमाम हसन बिन मोहम्मद अल-सग़ानी अल-हिन्दी 650

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم ۲۱۹۔ المحیط البرہانی امام برھان الدین محمود بن تاج الدین ۶۱۶ ۲۲۰۔ المحیط الرضوی رضی الدین محمد بن محمد السرخسی ۱۷۶ ۲۲۱۔ مختارات النوازل برھان الدین علی بن ابی بکر المرغینانی ۵۹۳ ۲۲۲۔ مختار الصحاح محمد بن ابی بکر عبدالقادر الرازی ۶۶۰ ۲۲۳۔ المختارۃ فی الحدیث ضیاء الدین محمد بن عبد الواحد ۶۴۳ ۲۲۴۔ المختصر علامہ جلال الدین السیوطی ۹۱۱ ۲۲۵۔ مدخل الشرع الشریف ابن الحاج ابی عبد اللہ محمد بن محمد العبدری ۷۳۷ ۲۲۶۔ مراقی الفلاح بامداد الفتاح شرح نور الایضاح حسن بن عمار بن علی الشرنبلالی ۱۰۶۹ ۲۲۷۔ مرقات شرح مشکوۃ علی بن سلطان ملا علی قاری ۱۰۱۲ ۲۲۸۔ مرقات الصعود علامہ جلال الدین السیوطی ۹۱۱ ۲۲۹۔ مستخلص الحقائق ابراھیم بن محمد الحنفی -- ۲۳۰۔ المستدرک للحاکم ابو عبد اللہ الحاکم ۴۰۵ ۲۳۱۔ المستصفی حافظ الدین عبد اللہ بن احمد النسفی ۷۱۰ ۲۳۲۔ مسلم الثبوت محب اللہ البہاری ۱۱۱۹ ۲۳۳۔ مسند ابی داؤد سلیمان بن داؤد الطیالسی ۲۰۲ ۲۳۴۔ مسند ابی یعلی احمد بن علی الموصلی ۳۰۷ ۲۳۵۔ مسند اسحق ابن راہویہ حافظ اسحق ابن راہویہ ۲۳۸ ۲۳۶۔ مسند الامام احمد بن حنبل امام احمد بن محمد بن حنبل ۲۴۱ ۲۳۷۔ مسند البزار ابوبکر احمد بن عمرو بن عبد الخالق البزار ۲۹۲ ۲۳۸۔ مسند عبد بن حمید ابو محمد عبد بن محمد حمید الکشی ۲۹۴ ۲۳۹۔ مسند الفردوس شھر دار بن شیر ویه الدیلمي ۵۵۸ ۲۴۰۔ مصباح المنیر احمد بن محمد بن علی ۷۷۰ ۲۴۱۔ المصفی حافظ الدین عبد اللہ بن احمد النسفی ۷۱۰ ۲۴۲۔ مصنّف ابن ابی شیبۃ ابوبکر عبد اللہ بن محمد احمد النسفی ۲۳۵ ۲۴۳۔ مصنّف عبد الرزاق ابوبکر عبد الرزاق بن ھمام الصنعانی ۲۱۱ ۲۴۴۔ مصباح الدجیٰ امام حسن بن محمد الصغانی الہندی ۶۵۰

صفحہ 758 از 761

Fatawa Rizwia Volume 4

1. Ma'rifat al-Sahaba Abu Nu'aym Ahmad bin Abdullah al-Asbahani 440
2. Al-Mu'jam al-Awsat Sulaiman bin Ahmad al-Tabarani 360
3. Al-Mu'jam al-Saghir Sulaiman bin Ahmad al-Tabarani 360
4. Al-Mu'jam al-Kabir Sulaiman bin Ahmad al-Tabarani 360
5. Mi'raj al-Diraya Qawam al-Din Muhammad bin Muhammad al-Bukhari 729
6. Mishkat al-Masabih Sheikh Wali al-Din al-Iraqi 722
7. Al-Mughni fi al-Usul Sheikh Umar bin Muhammad al-Khabbazi al-Hanafi 691
8. Al-Maghrib Abu al-Fath Nasir bin Abd al-Sayyid al-Mutarrizi 610
9. Mukhtasar al-Quduri Abu al-Husayn Ahmad bin Muhammad al-Quduri al-Hanafi 428
10. Mafatih al-Jinan Ya'qub bin Sidi Ali 931
11. Al-Mufradat lil-Imam Raghib Husayn bin Muhammad bin Mufaddal al-Asbahani 502
12. Al-Muqaddima al-Ashmawiyya Abu al-Abbas Abd al-Bari al-Ashmawi al-Maliki -
13. Al-Multaqat (fi Fatawa Nasiri) Nasir al-Din Muhammad bin Yusuf al-Husayni 556
14. Majma' al-Zawa'id Nur al-Din Ali bin Abi Bakr al-Haythami 807
15. Manaqib al-Kardari Muhammad bin Muhammad bin Shihab Ibn Bazzaz 827
16. Al-Muntaqa (fi al-Hadith) Abdullah bin Ali ibn Jarud 307
17. Al-Muntaqa fi Furu' al-Hanifiyya Al-Hakim al-Shahir Muhammad bin Muhammad bin Ahmad 334
18. Minhat al-Khaliq Muhammad Amin ibn Abidin al-Shami 1252
19. Minah al-Ghaffar Muhammad bin Abdullah al-Tumurtashi 1004
20. Multaqa al-Abhur Imam Ibrahim bin Muhammad al-Halabi 956
21. Minhaj Sheikh Abu Zakariya Yahya bin Sharaf al-Nawawi 676
22. Majma' al-Bahrayn Muzaffar al-Din Ahmad bin Ali bin Tha'lab al-Hanafi 694
23. Al-Mubtagha Sheikh Isa bin Muhammad ibn Inaj al-Hanafi -
24. Al-Mabsut Abd al-Aziz bin Ahmad al-Halwani 456
25. Musnad fi al-Hadith Al-Hafiz Abu al-Fath Nasr bin Ibrahim al-Harawi 510

फ़तावा रज़विया खंड 4

1. मआरिफ़त अल-सहाबा अबू नुऐम अहमद बिन अब्दुल्ला अल-असबहानी 440
2. अल-मुअजम अल-औसत सुलेमान बिन अहमद अल-तबरानी 360
3. अल-मुअजम अल-सगीर सुलेमान बिन अहमद अल-तबरानी 360
4. अल-मुअजम अल-कबीर सुलेमान बिन अहमद अल-तबरानी 360
5. मिराज अद-दिराया कवाम अद-दीन मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-बुखारी 729
6. मिश्कात अल-मसाबीह शेख वली अद-दीन अल-इराकी 722
7. अल-मुगनी फ़ी अल-उसूल शेख उमर बिन मुहम्मद अल-खब्बाज़ी अल-हनाफी 691
8. अल-मगरिब अबुल फ़तह नासिर बिन अब्द अस-सय्यद अल-मुतर्रिज़ी 610
9. मुख्तसर अल-कुदूरी अबुल हुसैन अहमद बिन मुहम्मद अल-कुदूरी अल-हनाफी 428
10. मफातीह अल-जिनान याकूब बिन सिदी अली 931
11. अल-मुफ़्रदात लिल-इमाम राकिब हुसैन बिन मुहम्मद बिन मुफ़द्दल अल-असबहानी 502
12. अल-मुकद्दिमा अल-अश्माविया अबू अल-अब्बास अब्द अल-बारी अल-अश्मावी अल-मालिकी -
13. अल-मुल्तक़त (फ़ी फ़तावा नासिरी) नासिर अद-दीन मुहम्मद बिन यूसुफ़ अल-हुसैनी 556
14. मजमा अल-ज़वाइद नूर अद-दीन अली बिन अबी बक्र अल-हैथमी 807
15. मनाकिब अल-करदरी मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन शिहाब इब्न बज़्ज़ाज़ 827
16. अल-मुंतका (फ़ी अल-हदीस) अब्दुल्ला बिन अली इब्न जारूद 307
17. अल-मुंतका फ़ी फ़ुरू अल-हनीफ़िया अल-हाकिम अल-शहीर मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन अहमद 334
18. मिन्हात अल-खालिक मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन अल-शामी 1252
19. मिनाह अल-ग़फ़्फ़ार मुहम्मद बिन अब्दुल्ला अल-तुमुरताशी 1004
20. मुल्तका अल-अबहुर इमाम इब्राहिम बिन मुहम्मद अल-हलबी 956
21. मिन्हाज शेख अबू ज़करिया यहया बिन शरफ़ अल-नववी 676
22. मजमा अल-बहरैन मुज़फ़्फ़र अद-दीन अहमद बिन अली बिन सालब अल-हनाफी 694
23. अल-मुब्तगा शेख ईसा बिन मुहम्मद इब्न ईनाज अल-हनाफी -
24. अल-मबसूत अब्द अल-अज़ीज़ बिन अहमद अल-हलवानी 456

25. मसनद फ़ी अल-हदीस अल-हाफ़िज़ अबुल फ़तह नस्र बिन इब्राहिम अल-हरवी 510

पृष्ठ 761 में से 759

فتاوٰی رضویہ جلد چہارم

245۔ معرفة الصحابة ابو نعیم احمد بن عبد الله الاصبهانی 440 246۔ المعجم الاوسط سلیمان بن احمد الطبرانی 360 247۔ المعجم الصغیر سلیمان بن احمد الطبرانی 360 248۔ المعجم الکبیر سلیمان بن احمد الطبرانی 360 249۔ معراج الدرایة قوام الدین محمد بن محمد البخاری 729 250۔ مشکوة المصابیح شیخ ولی الدین العراقی 722 251۔ المغنی فی الاصول شیخ عمر بن محمد الخبازی الحنفی 691 252۔ المغرب ابوالفتح ناصر بن عبد السید المطرزی 610 253۔ مختصر القدوری ابوالحسین احمد بن محمد القدوری الحنفی 428 254۔ مفاتیح الجنان یعقوب بن سیدی علی 931 255۔ المفردات للامام راغب حسین بن محمد بن مفضل الاصبهانی 502 256۔ المقدمة العشماویة ابو العباس عبد الباری العشماوی المالکی - 257۔ الملتقط (فی فتاوی ناصری) ناصر الدین محمد بن یوسف الحسینی 556 258۔ مجمع الزوائد نور الدین علی بن ابی بکر الہیثمی 807 259۔ مناقب الکردری محمد بن محمد بن شهاب ابن بزاز 827 260۔ المنتقی (فی الحدیث) عبد الله بن علی ابن جارود 307 261۔ المنتقی فی فروع الحنیفیه الحاکم الشہیر محمد بن محمد بن احمد 334 262۔ منحة الخالق محمد امین ابن عابدین الشامی 1252 263۔ منح الغفار محمد بن عبد الله التمرتاشی 1004 264۔ ملتقی الابحر امام ابراهیم بن محمد الحلبی 956 265۔ منهاج شیخ ابوزکریا یحیی بن شرف النووی 676 266۔ مجمع البحرین مظفر الدین احمد بن علی بن ثعلب الحنفی 694 267۔ المبتغی شیخ عیسیٰ بن محمد ابن ایناج الحنفی - 268۔ المبسوط عبد العزیز بن احمد الحلوانی 456 269۔ مسند فی الحدیث الحافظ ابوالفتح نصر بن ابراهیم الہروی 510

Fatawa Ridawiyya, Volume 4

270- Al-Musnad al-Kabir - Yaqub bin Shaybah al-Sadusi - 262 271- Munyat al-Musalli - Sadid al-Din Muhammad bin Muhammad al-Kashghari - 705 272- Muwatta Imam Malik - Imam Malik bin Anas al-Madani - 179 273- Mawarid al-Zam'an - Nur al-Din Ali bin Abi Bakr al-Haythami - 807 274- Mushkilat - Ahmad bin Muzaffar al-Razi - 642 275- Muhadhdhab - Abi Ishaq ibn Muhammad al-Shafi'i - 476 276- Mizan al-Sharia al-Kubra - Abdul Wahhab al-Sha'rani - 973 277- Mizan al-I'tidal - Muhammad bin Ahmad al-Dhahabi - 748 278- Al-Mustakhraj 'ala al-Sahih al-Bukhari - Ahmad bin Musa ibn Marduyah - 410 279- Makarim al-Akhlaq - Muhammad bin Ja'far al-Khara'iti - 327

Letter 'N' 280- Al-Nuqayah Mukhtasar al-Wiqa-yah - Abdullah bin Mas'ud - 745 281- Nasb al-Rayah - Abu Muhammad Abdullah bin Yusuf al-Hanafi al-Zayla'i - 762 282- Nur al-Idah - Hasan bin Ammar bin Ali al-Shurunbulali - 1069 283- Al-Nihayah - Husam al-Din Husayn bin Ali al-Sighnaqi - 711 284- Al-Nihayah li-Ibn Athir - Majd al-Din Mubarak bin Muhammad al-Jazari ibn al-Athir - 606 285- Al-Nahr al-Faiq - Umar bin Nujaym al-Misri - 1005 286- Nawadir fi al-Fiqh - Hisham bin Ubayd Allah al-Mazini al-Hanafi - 201 287- Nur al-Ayn - Muhammad bin Ahmad al-Ma'ruf bin Shanchi Zadah - 1031 288- Al-Nawazil fi al-Furu' - Abu al-Layth Nasr bin Muhammad bin Ibrahim al-Samarqandi - 376 289- Nawadir al-Usul fi Ma'rifat Akhbar al-Rasul - Abu Abdullah Muhammad bin Ali al-Hakim al-Tirmidhi - 255

Page 760 of 761

फ़तावा रज़विया, जिल्द चारम (खंड 4)

270- अल-मुसनद अल-कबीर - याक़ूब बिन शैबा अल-सदूसी - 262 271- मुनियत अल-मुसल्ली - सदीद अल-दीन मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-काश्घरी - 705 272- मुवत्ता इमाम मालिक - इमाम मालिक बिन अनस अल-मदनी - 179 273- मवारिद अल-ज़मआन - नूर अल-दीन अली बिन अबी बक्र अल-हयथमी - 807 274- मुश्किलात - अहमद बिन मुज़फ़्फ़र अल-राज़ी - 642 275- मुहज़्ज़ब - अबी इसहाक़ इब्न मुहम्मद अल-शाफ़ई - 476 276- मीज़ान अल-शरीया अल-कुबरा - अब्दुल वह्हाब अल-शेरानी - 973 277- मीज़ान अल-एतेदाल - मुहम्मद बिन अहमद अल-ज़हबी - 748 278- अल-मुस्तख़रज अला अल-सहीह अल-बुख़ारी - अहमद बिन मूसा इब्न मरदूयह - 410 279- मकारिम अल-अखलाक़ - मुहम्मद बिन जाफ़र अल-खराएती - 327

अक्षर 'न' 280- अल-नुक़ायह मुख़्तसर अल-विक़ायह - अब्दुल्ला बिन मसूद - 745 281- नसब अल-राय - अबू मुहम्मद अब्दुल्ला बिन यूसुफ़ अल-हनफ़ी अल-ज़ैलई - 762 282- नूर अल-ईज़ाह - हसन बिन अम्मार बिन अली अल-शुरुनबलाली - 1069 283- अल-निहाया - हुसाम अल-दीन हुसैन बिन अली अल-सिग़नाक़ी - 711 284- अल-निहाया लि-इब्न असीर - मज्द अल-दीन मुबारक़ बिन मुहम्मद अल-ज़ज़री इब्न अल-असीर - 606 285- अल-नहर अल-फ़ाएक़ - उमर बिन नुजैम अल-मिस्री - 1005 286- नवादिरा फ़िल फ़िक़ह - हिशाम बिन उबैदुल्लाह अल-माज़नी अल-हनफ़ी - 201 287- नूर अल-ऐन - मुहम्मद बिन अहमद अल-मारूफ़ बिन शानची ज़ादा - 1031 288- अल-नवाज़िल फ़िल फ़ुरू - अबुल लैथ नस्र बिन मुहम्मद बिन इब्राहिम अल-समरक़ंदी - 376 289- नवादिरा अल-उसूल फ़ी मारिफ़त अख़बार अल-रसूल - अबू अब्दुल्ला मुहम्मद बिन अली अल-हाकिम अल-तिर्मिज़ी - 255

पृष्ठ 760/761

فتاوی رضویہ، جلد چہارم

۲۷۰- المسند الکبیر - یعقوب بن شیبہ السدوسی - ۲۶۲ ۲۷۱- منیة المصلی - سدید الدین محمد بن محمد الکاشغری - ۷۰۵ ۲۷۲- موطا امام مالک - امام مالک بن انس المدنی - ۱۷۹ ۲۷۳- موارد الظمآن - نورالدین علی بن ابی بکر الہیثمی - ۸۰۷ ۲۷۴- مشکلات - احمد بن مظفر الرازی - ۶۴۲ ۲۷۵- مہذب - ابی اسحق ابن محمد الشافعی - ۴۷۶ ۲۷۶- میزان الشریعة الکبری - عبدالوہاب الشعرانی - ۹۷۳ ۲۷۷- میزان الاعتدال - محمد بن احمد الذہبی - ۷۴۸ ۲۷۸- المستخرج علی الصحیح البخاری - احمد بن موسیٰ ابن مردویہ - ۴۱۰ ۲۷۹- مکارم اخلاق - محمد بن جعفر الخرائطی - ۳۲۷ ن ۲۸۰- النقایة مختصر الوقایة - عبداللہ بن مسعود - ۷۴۵ ۲۸۱- نصب الرایة - ابو محمد عبداللہ بن یوسف الحنفی الزیلعی - ۷۶۲ ۲۸۲- نور الایضاح - حسن بن عمار بن علی الشرنبلالی - ۱۰۶۹ ۲۸۳- النہایة - حسام الدین حسین بن علی السغناقی - ۷۱۱ ۲۸۴- النہایة لابن اثیر - مجد الدین مبارک بن محمد الجزری ابن اثیر - ۶۰۶ ۲۸۵- النہر الفائق - عمر بن نجیم المصری - ۱۰۰۵ ۲۸۶- نوادر في الفقہ - ہشام بن عبید اللہ المازنی الحنفی - ۲۰۱ ۲۸۷- نور العین - محمد بن احمد المعروف بنشانچی زادہ - ۱۰۳۱ ۲۸۸- النوازل في الفروع - ابواللیث نصر بن محمد بن ابراہیم السمرقندی - ۳۷۶ ۲۸۹- نوادر الاصول فی معرفة اخبار الرسول - ابو عبداللہ محمد بن علی الحکیم الترمذی - ۲۵۵

Fatawa Razawiyya Volume Four

Waw 290_ Al-Wafi fi al-Furu' | Abdullah bin Ahmad al-Nasafi | 710 291_ Al-Wajiz fi al-Furu' | Abu Hamid Muhammad bin Muhammad al-Ghazali | 505 292_ Al-Wiqayah | Mahmud bin Sadr al-Shariah | 673 293_ Al-Wasit fi al-Furu' | Abi Hamid Muhammad bin Muhammad al-Ghazali | 505

He 294_ Al-Hidayah fi Sharh al-Bidayah | Burhan al-Din Ali bin Abi Bakr al-Marghinani | 593

Ya 295_ Al-Yawaqit wa al-Jawahir | Sayyid Abd al-Wahhab al-Sha'rani | 973 296_ Yanabi' fi Ma'rifat al-Usul | Abi Abdullah Muhammad ibn Ramadan al-Ruwi | 769

Page 761 of 761

फ़तावा रज़विया जिल्द चहारुम (भाग 4)

व (و) 290_ अल-वाफ़ी फ़िल फ़ुरू | अब्दुल्लाह बिन अहमद अन-नस्फ़ी | 710 291_ अल-वजीज़ फ़िल फ़ुरू | अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-ग़ज़ाली | 505 292_ अल-विकाया | महमूद बिन सदरुश शरीअह | 673 293_ अल-वसीत फ़िल फ़ुरू | अबी हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-ग़ज़ाली | 505

ह (ھ) 294_ अल-हिदाया फ़ी शरहिल बिदाया | बुरहानुद्दीन अली बिन अबी बक्र अल-मरग़ीनानी | 593

य (ی) 295_ अल-यवाक़ीत वल जवाहिरे | सय्यद अब्दुल वहाब अश्-शअ़रानी | 973 296_ यनाबीअ़ फ़ी मअ़रफ़तिल उसूल | अबी अब्दुल्लाह मुहम्मद इब्न रमज़ान अर-रूवी | 769

पृष्ठ 761 का 761

فتاوی رضویہ جلد چہارم

و ۲۹۰_ الوافی فی الفروع | عبداللہ بن احمد النسفی | ۷۱۰ ۲۹۱_ الوجیز فی الفروع | ابو حامد محمد بن محمد الغزالی | ۵۰۵ ۲۹۲_ الوقایۃ | محمود بن صدر الشریعۃ | ۶۷۳ ۲۹۳_ الوسیط فی الفروع | ابی حامد محمد بن محمد الغزالی | ۵۰۵

ھ ۲۹۴_ الہدایۃ فی شرح البدایۃ | برہان الدین علی بن ابی بکر المرغینانی | ۵۹۳

ی ۲۹۵_ الیواقیت والجواہر | سید عبدالوہاب الشعرانی | ۹۷۳ ۲۹۶_ ینابیع فی معرفۃ الاصول | ابی عبداللہ محمد ابن رمضان الروی | ۷۶۹

صفحہ 761 کا 761